Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

DESH DOOT

1946 G. K. U.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

RT-192

Stock Verification-2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

देशदूत

वर्ष ८ संख्या १६] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक रविवार, ६ जनवरी, १९४६

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

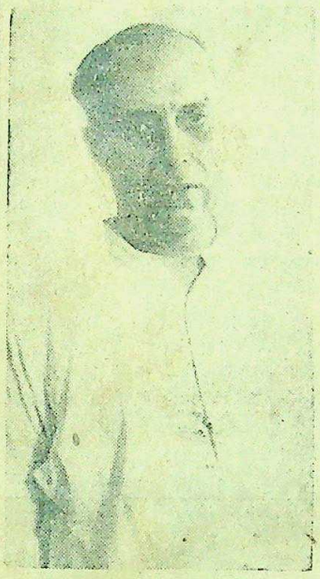

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उदयपुर में अखिल भारतीय देशी राज्य सम्मेलन का सभापतित्व किया था।

मास्को सम्मेलन में आखिरकार अमरीकन और ब्रिटिश वैदेशिक मंत्रियों को सफलता मिल ही गई। और मिलती क्यों न जब सफलता के लिए ही मास्को तक की दौड़ लगाई गई। स्टेलिन साहब मूंछ मरोड़ते हुए पहले तो भाग निकलने की सोचते रहे, मोलोटोव साहब भी अपनी लम्बी मूंछों पर ताव देते रहे लेकिन अन्त में दोनों कामरेड ठीक अपने सदर मुकाम मास्को में ही गिरफ़्तार कर लिए गये। जहाँ तीनों महान् राष्ट्र तीन घाट पर पानी पीना चाहते थे वहाँ अब किसी तरह एक घाट पर पानी पीने के लिए राज़ी हो गये हैं। समझौते की सन्धियों में अब वही राष्ट्र भाग ले सकेंगे जिन्होंने महायुद्ध में सक्रिय भाग लिया है। कहने का मतलब यह है कि चीन की अब पूछ न होगी और न योरोप के छोटे-मोटे राष्ट्रों की। एक संयुक्तराष्ट्र संघ का संगठन होगा। कोरिया स्वतन्त्र कर दिया जायेगा। किन्तु अभी पाँच वर्ष तक उसे अमरीका, ब्रिटेन और रूस के तलवे सहलाने पड़ेंगे। इस प्रकार चीन के भीतरी मामलों में तीनों राष्ट्रों में से एक भी दखल न दे सकेगा। इस तरह विश्व शान्ति का हलवा पकना शुरू हो गया है। अभी तीनों ने मिलकर आग लगाई है। हलुवा पका और सारे संसार ने खाना शुरू किया। कसर निकलने ही वाली है।

* * *

लेकिन अपने राम को यह पता न चला कि ईरान के मामले में तीनों दोस्तों ने क्या किया? मुमकिन है वह बताने लायक न समझा गया हो, इसीलिये अभी छिपाया गया हो। हाँ, इन्डोनेशिया आदि के बारे में क्या तय तमाम हुआ? जहाँ स्वाधीनता का आन्दोलन चल रहा है? जान यही पड़ता है कि जो जहाँ अपनी जितनी पूंछ दबा सका, वह दबाता गया क्योंकि सबका सब गुड़ गोबर होते देखकर कुछ न कुछ तो होना ही चाहिए था। फ़ारस के मामले में रूस की अकड़ देखकर अमरीका और ब्रटेन भीगी बिल्ली बन बैठे होंगे। इंडोनेशिया आन्दोलन के मामले में ब्रिटेन ने भी अपनी अकड़ दिखाई ही होगी, फिर सिवा इसके और क्या फ़ैसला होता कि जान जोखिम में खामोशी ही अच्छी है। इसलिए फ़ारस और इंडोनेशियन मामले खटाई में पड़ गये, ऐसी कुछ बात समझ में आती है। ठीक भी है कोई किसी के निजी स्वार्थों में क्यों दखल देता? फ़ारस और इंडोनेशिया का क्या किसी ने क़र्ज़ खाया था? अपने राम को तो खुशी इसी की है कि किसी तरह तीन-तीकट महाबीकट मिल तो गये? नहीं तो आसमान से गिरकर खजूर में अटक जाने की कहावत चरितार्थ होती। संयुक्तराष्ट्र संघ को किसी तरह ढर्रे पर लाने के लिए तैयारी तो हुई? फ़ारस और इंडोनेशिया का फैसला तो आगे-पीछे होता ही रहेगा लेकिन अगर तीन के तीनों एक दूसरे के चूना लगानेवाला दाँव-पेंच चलाते होते तब क्या होता?

* * *

अखिल भारतीय हिन्दी-पत्रकार सम्मेलन मथुरा में पलक मारते हो गया, यह निहायत खुशी की बात है। सबसे बड़ी बात यह हुई कि सुप्रसिद्ध पत्रकार पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी इस बार सभापति बनाये गये थे। अपने राम को सबसे पहले तो इसी बात से प्रसन्नता है कि पांच-छः वर्षों के बाद सम्मेलन ने पति-परिवर्तन तो किया, यह कम बड़ी बात नहीं है। सभापति ने क्या भाषण दिया, कितने प्रस्ताव पास हुए और कौन-कौन महापत्रकार सम्मेलन में पधारे इसकी उड़ती ख़बर तो जरूर मिली लेकिन ठीक ठिकाने से नहीं। क्यों, आख़िर क्या बात है? जो कुछ भी हो इस तरह के सम्मेलन का अधिवेशन तो घर में ही किया जा सकता था। कहा भी है कि जल्दी का काम शैतान का होता है। इसलिए जो कुछ हुआ अच्छा हुआ। पंडित बनारसीदास जी अब आये हैं, श्रमजीवी पत्रकारों के यह दादागुरु हैं, देखना है. दादागुरु अपने क्या-क्या करिश्मे दिखाते हैं। क्योंकि पाँच-छः वर्ष तक तो यह संचालकों की चकरबिरी में चक्कर लगाता रहा है, वेतन, कोटा और विज्ञापनी धुन का बोलबाला रहा किन्तु अब क्या होगा, यह तो आगे आयेगा। अपने राम उस दिन की प्रतीक्षा में हैं, जब यह सम्मेलन वाक़ई पत्रकार सम्मेलन का रूप ग्रहण करेगा।

* * *

एक बात समझ में नहीं आई कि दिल्ली और कानपुर के ही पत्रकार पत्रकार हैं, जो सम्मेलन पर रहना चाहते हैं? सम्मेलन नहीं छोड़ता या वह सम्मेलन नहीं छोड़ते? अपने राम की लूत की बीमारी दूर होनी श्रमजीवी पत्रकारों के हाथों की बागडोर आनी चाहिए। बनाना एक बात है और अब तक तो सचमुच गये हैं। खोल ही होती रही। यह कितने बात है कि वर्षों बीत गये, कोई निश्चित विधान ही बन है, न सारे के सारे हिन्दी सम्मेलन के सदस्य बन पाये और न जीवी पत्रकारों के लिए कोई क्रियात्मक काम ही किया गया। स्वीकृत हुए दर्जनों किये गये कितने भगवान् जाने! बहरहाल सम्मेलन डंके की चोट पर क़ायम रहा, केवल वेतन-लीला का प्रदर्शन होता रहा, दो एक पत्रों में कुछ को मिला-मिलाया भी! फिर क्या है अपना जेब गरम तो संसार का गरम! अपनी-अपनी यहां पड़ी है। सच तो यह है कि पाँच वर्ष के चौकरियाने से कुछ हुआ हुआया नहीं, हाँ अखिल भारतीयता की तूती जरूर बोलती रही। देखना है अब चतुर्वेदी जी बिखर सरपट भागने की फ़िक्र करते हैं।

* * *

ब्रिटिश पार्लियामेंटरी प्रतिनिधि-मंडल भारत आ रहा है। नये वर्ष में उसका स्वागत करना ही चाहिए। क्योंकि यह प्रतिनिधि-मंडल टोरी-दल की ओर से तो आ नहीं रहा है बल्कि विशुद्ध मजदूरों की ओर से। अपने राम की राय में भारत में प्रतिनिधि-मंडल सदा ही आता रहा और उसी तरह आज भी आ रहा है। कितने ही अकेले आये और नींबू-नून चाटते चले गये। अरे जब क्रिप्स साहब ही अपना मुंह लेकर लन्दन चले गये तो जो प्रतिनिधि-मंडल आ रहा है, वही कहां का अफलातून है जो अपना-सा मुंह लेकर वापस न जायेगा? मिस्टर जिन्ना और डाक्टर अम्बेडकर उसकी वाहवाही करें किन्तु कांग्रेस नेता तो पूरे सोंठ हैं, उन पर कोई असर होनेवाला नहीं। आओ-जाओ, जब तक घर तुम्हारा है, किन्तु जब घर अपना होगा तो कोई यहां आकर क्या भाड़ झोकेगा?

* * *

विद्यार्थियों को महात्मा गांधी का संदेश

[बंगाल-यात्रा के पूर्व महात्मा गांधी के पूना स्वास्थ्य-गृह से लौट कर नवम्बर ने अंतिम सप्ताह में वर्धा में निवास किया था। उन्हीं दिनों विद्यार्थी कांग्रेस के कुछ विद्यार्थियों ने गांधी जी को हाथ का कता सूत भेंट किया था। गांधी जी ने उन्हें निम्न संदेश दिया था]

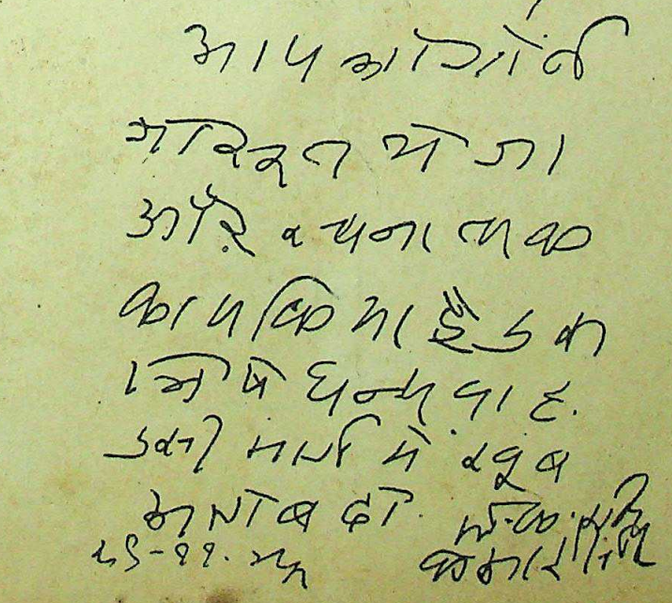

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

नया वर्ष सन् १९४६ प्रारम्भ हो गया और सन् १९४५ बीत गया। सन् १९४५ हमारे लिए कैसा रहा, इस पर विशेष प्रकाश डालने की आवश्यकता नहीं है। सन् १९३९ में जिस महायुद्ध का प्रारम्भ हुआ वह सन ४५ में एक लम्बे अर्से के बाद समाप्त हुआ। महायुद्ध के व्यापक प्रभाव से सारा संसार हिंसा और रक्तपात से व्याप्त हो गया। योरोपीय और एशियाई राष्ट्रों में युद्ध-जनित प्रभाव से ऐसी आपत्ति आई कि जनता का सामाजिक और दैनिक जीवन अस्त-व्यस्त हो गया। आर्थिक दृष्टि से सारा संसार त्रसित हो उठा, व्यापार और यवसाय तो अधोगति को प्राप्त ही हो गये ाथ ही वस्तुओं के आवागमन के प्रभाव ने ता को परेशानी में डाल दिया। यही ं महायुद्ध ने कितने ही राष्ट्रों को ध्वंस दिया। कई डिक्टेटरों को तो सदा के इस संसार से विदाई लेनी पड़ी। इटली और जापान ऐसे लड़ाक् की तूती सारी दुनिया में बोलती काल कवलित बन बैठे हैं। ाष्ट्रों को तो जर्मनी ने पहले ाया था। इसलिए उनकी का कुछ ठिकाना नहीं रहा। क्रान्ति-पथ के पथिक बन बैठे। पुरसाहाल नहीं दिखाई पड़ता वक्त की स्थिति देखकर कोई कुछ कह सकता था कि भविष्य में ा? किन्तु सन् ४५ अन्तिम वर्ष भाग्यशाली सिद्ध हुआ क्योंकि वर्ष संसारव्यापी युद्ध का अन्त हुआ अब तो नवीन वर्ष सन् ४६ के लगते ही निश्चय हो चुका है कि संसार में शीघ्र पुनः शान्ति और सुव्यवस्था स्थापित होगी और एक बार पुनः संसार में नवजीवन संचार के कार्यक्रम का उपक्रम रचा जायेगा।

सन् १९४६ का आगमन शुभ दिखाई दे रहा है। इस समय संसार के तीन महान् राष्ट्र अमरीका, ब्रिटेन और रूस शान्ति तथा सुरक्षा की स्थापना में प्रयत्नशील हो रहे हैं। सन् ४५ के अन्त तक तो यही अनुमान होता था कि क्या शीघ्र ही तीसरे महायुद्ध का मुक़ाबला करना पड़ेगा किन्तु मास्को-सम्मेलन के निर्णयों से यह स्पष्ट हो गया है कि अब सचमुच शान्ति-स्थापना के पूरे लक्षण दिखाई पड़ रहे हैं। एटमबम पर तीनों राष्ट्रों ने समझौता कर लिया है और भविष्य में संयुक्तराष्ट्रों का एक संघ स्थापित होगा और 'आटम-बम' का संरक्षण संघ के ही आधीन होगा। कोई भी राष्ट्र इसका उपयोग न कर सकेगा। इसमें सन्देह नहीं कि तीनों महान् राष्ट्र अब एक दूसरे के प्रति अविश्वसनीय न रह सकेंगे। यह सबसे बड़ी समस्या थी, जिसका हल मास्को में सरलतापूर्वक हो गया। नये राष्ट्र-संघ की स्थापना का निर्णय भी उचित ही हुआ है। यद्यपि हमें पिछले महायुद्ध के बाद स्थापित होनेवाले राष्ट्र-संघ की कथा का ज्ञान है और इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि भावी राष्ट्र-संघ संसार के लिए कितना उपयोगी सिद्ध होगा और शान्ति और सुरक्षा की स्थापना में वह कितना योग दान देगा, फिर भी अभी से निराशा का कोई कारण नहीं। यदि नवीन राष्ट्र-संघ शान्ति और सुरक्षा की स्थापना में पूर्ण सफल हुआ और तीनों महान् राष्ट्रों ने अपने स्वार्थों का बलिदान किया तो संभवतः वर्षों के लिए शान्ति की साँस लेने योग्य बन जायेगा। सबसे ज़रूरी तो यह है कि हिंसा और युद्ध की एकदम सफाई कर दी जाये और हथियारों पर प्रत्येक राष्ट्र पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाये कि वह अपने स्वार्थों के लिए एक दूसरे पर उसका उपयोग न कर सकें, तभी वास्तविक शान्ति की स्थापना हो सकती है किन्तु ऐसा होना कठिन ही जान पड़ता है। छोटे राष्ट्र निहत्थे अवश्य बन जायेंगे किन्तु बड़ों के मार्ग में किसी प्रकार का प्रतिबन्ध लागू होगा यह असम्भव है। फिर भी तत्काल तो वास्तविक शान्ति-स्थापना की आवश्यकता है ही। भविष्य के लिए अभी से परेशान होने की क्या आवश्यकता है?

इस वक्त आवश्यकता है लोगों के दैनिक जीवन को अधिक से अधिक सरल और व्यवस्थित बनाने की। खाने और कपड़े की सुविधा उत्पन्न करने और उद्योग-व्यवसाय की उन्नति की जिससे अधिक से अधिक उपयोगी वस्तुओं के अभाव की पूर्ति की जा सके। सरकार को इस ओर दृढ़ता और लगन से लगने की जरूरत है। तभी शान्ति और सुव्यवस्था की स्थापना हो सकेगी। सन् १९४६ का प्रारम्भ तो शुभ जान पड़ता है और आशा है भविष्य भी संसार के लिए सुखकर सिद्ध होगा। इसलिए हम नवीन वर्ष का स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि यह भारत ही नहीं समस्त संसार के लिए मंगलमय होगा। हम 'देशदूत' के पाठकों तथा लेखकों को भी नववर्ष पर बधाई देते हैं और आशा रखते हैं कि नया वर्ष सभी के लिए शान्ति प्रदान करनेवाला तथा शुभ होगा।

* * *

कांग्रेस हीरक-जयन्ती सारे देश में मनाई गई। कांग्रेस ने पिछली अशताब्दी में देश के लिए कितना त्याग और बलिदान किया यह किसी से छिपा नहीं है। भारतीय स्वाधीनता के लिए तो उसके नेता खप ही गये। अपने राम की राय में राष्ट्र के लिए वह शिव रूप में आई और सरकार तथा मुस्लिम लीग के लिए कालरूप में अवतरित हुई। ब्रिटिश सरकार पिछली शताब्दी से मौज कर रही है और ४० करोड़ पर चढ़ढी गाँठे हुए है किन्तु कांग्रेस जब से आई तब से वह परेशान ही रहती है। कांग्रेस पहले लिबरलों के हाथ में रही तब तक तो गनीमत थी किन्तु जब से गांधीवादी उस पर हावी हुए हैं तब से तो सचमुच तख्ता ही उलट गया है।

स्वर्गीय पंडित विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक

लेखक, श्री हरस्वरूप माथुर

इसमें सन्देह नहीं कि सुप्रसिद्ध कथाकार पंडित विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक के निधन से हिन्दी-साहित्य में एक श्रेष्ठ कहानीकार की कमी हो गई है। उनका कहानी-साहित्य पूर्ण तया मौलिक था। कहानी कला के विकास के साथ ही उन्होंने अपनी अधिक कहानियाँ सामाजिक समस्याओं को लेकर ही लिखी हैं। कौशिक जी की कहानियों में समाज-सुधार के भाव अच्छी मात्रा में प्राप्त होते हैं।

एक मध्यकोटि के हिन्दू परिवार में जन्म लेकर उन्होंने अपनी लेखन-शक्ति से हिन्दी-साहित्य के इतिहास में अमर स्थान प्राप्त कर लिया है। उन्होंने केवल मैट्रिक तक ही शिक्षा पाई थी किन्तु अपने स्वतन्त्र अध्ययन से उन्होंने उर्दू, बँगला, गुजराती इत्यादि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया था। कौशिक जी दत्तक पुत्र थे। कदाचित् इसी भावना ने 'माँ' उपन्यास में दत्तक पुत्र का वर्णन करने के लिए उन्हे बाध्य किया हो? एक श्रेष्ठ कहानीकार होने के अतिरिक्त कौशिक जी सुन्दर उपन्यासकार भी थे। 'भिखारिणी', 'माँ' और 'संघर्ष' इनके यह तीन मौलिक उपन्यास हैं जिनमें से 'माँ' की श्रेष्ठता हिन्दी-साहित्य क्षेत्र में स्वीकृत की गई है। इन्होंने तीन नाटकों की रचना भी की। यद्यपि नाटक के क्षेत्र में इन्हें अधिक सफलता इन्हीं प्राप्त हुई। कुछ अन्य विषयों पर भी न होंने लिखा है। वास्तव में इन्हें सफलता ही नहीं अपितु, श्रेष्ठ कहानियाँ लिखने के कारण ही, साहित्य प्रेमियों की ओर से सम्मान प्राप्त हुआ है।

* * *

पंडित विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक के कथा-साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनकी कहानियों के कथानक मौलिक तो होते ही हैं, पूर्णतया रोचक भी हैं। कहानियों के कथानक में विकास का क्रम उचित होता है और चरमसीमा तथा समाप्ति हृदय पर प्रभाव स्थापित किये बिना नहीं रहती। उन्हें हिन्दू समाज की बाहरी और भीतरी दशाओं का अच्छा अनुभव था, इसलिए समाज-सुधार सम्बन्धी उनकी कहानियाँ हमारे सम्मुख सच्चा चित्रण ही नहीं करती अपितु विचार करने के लिए सामान प्रस्तुत कर देती हैं। 'विधवा' तथा 'ताई' समाज से सम्बन्धित श्रेष्ठ कहानियाँ हैं। कौशिक जी की अन्तिम श्रेष्ठ कहानी कदाचित् 'सरिता' में प्रकाशित हुई थी।

सफल तथा रोचक कथानक की सृष्टि करने के अतिरिक्त उनकी एक और बड़ी विशेषता यह थी कि उनमें सबल, सुन्दर, स्वाभाविक संवाद लिखने की प्रशंसनीय क्षमता थी। स्थिति के अनुकूल संवाद उनकी प्रत्येक श्रेष्ठ कहानी में पाये जाते हैं। कहानी लेखक के लिए यह आवश्यक होना चाहिए कि वह अपने संवादों द्वारा अपनी कहानी की भावना तथा घटनायें अधिक से अधिक पाठकों को ज्ञात करा दे। कौशिक जी में यह क्षमता पूर्णतया थी। उनके सजीव कथोपकथन वास्तव में उनकी विशिष्टता के परिचायक हैं।

कौशिक जी ने गम्भीर समस्याओं को लेकर जो कहानियाँ लिखी हैं उनका श्रेष्ठ संग्रह 'चित्रशाला' है। 'चित्रशाला' की कहानियाँ वास्तव में कुशल कलाकार की लेखनी का प्रमाण हैं। जिस प्रकार कौशिक जी ने गम्भीर विषयों का अपनी कहानियों में सफलतापूर्वक प्रतिपादन किया है उसी प्रकार वट के हास्यरस श्रेष्ठ लेखक भी थे। इस क्षेत्र में उनकी प्रसिद्धि कम नहीं थी 'चाँद' में प्रकाशित होनेवाली 'दुबे जी की चिट्ठियाँ' इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। गम्भीर और व्यंग्यात्मक हास्य युक्त कहानियाँ लिखने में वे सिद्ध-हस्त तो थे ही साथ ही साथ उनमें कहानी-कला का भी पूर्ण मिश्रण रहता था।

कौशिक जी की अन्तिम कहानी का एक प्रथम अंश उनके विचारों के साथ ही साथ उनकी स्वच्छन्द भाषा का परिचायक है—

"मैं मर गया हूँ। हाँ! संसार के लिए मैं मर गया हूँ। मृत्युलोक में मेरा कोई अस्तित्व नहीं रहा। कभी कभी मेरे मित्र परिचित अथवा परिवार के लोग मेरी चर्चा करने लगते हैं। बस इस लोक में मेरा इतना ही अस्तित्व है। परन्तु अपने लिए मैं जीवित हूँ। आत्मा अमर है—यह मेरा विश्वास था और अब तो यह यह विश्वास निश्चय में बदल गया है। प्रत्यक्ष प्रमाण के सम्मुख कोई तर्क नहीं ठहरता। मुझे आत्मा की अमरता का प्रत्यक्ष प्रमाण मिल गया है।"

कौशिक जी ने कभी भी एक ही पत्र अथवा पत्रिका का पल्ला नहीं पकड़ा। वे समय समय पर विभिन्न पत्र अथवा पत्रिकाओं में लिखा करते थे। इधर कुछ समय से वे और भी उत्साह से कार्य करने के लिए प्रस्तुत थे किन्तु काल ने असमय ही उनको उठा लिया। कानपुर के प्रगतिशील लेखक-संघ को उनकी सहायता प्राप्त थी—वे अन्य सभा-संस्थाओं के प्रति भी उत्साहित थे किन्तु काल की कठोरता ने उनके पार्थिव शरीर को उठा लिया किन्तु कौशिक जी और उनका साहित्य हिन्दी के इतिहास में अमर है तथा रहेगा।

चरखा गीत

लेखक, श्री सियारामशरण गुप्त

चला हमारा अपना चरखा, चरखा मन का मीत,
गूंज उठा इसके भन भन में, जन जन का संगीत।
धसक रही धरती धक्कों में।
पुतली घर के उन चक्कों में॥
बँधे लोह के-से लच्छों में बहाँ सभी भयभीत,
यहां छूट है सबकी सबसे, जन जन की है जीत।
सीधे सच्चे इस तकुए का पक्का पतला तार,
बढ़ बढ़ कर कर ले सकता है सात समुन्दर पार।
लूट पाट करके औरों में।
जले फुंके उजड़े ठौरों में॥
बन ठठे जो सिरमौरों में भय उनका निस्सार,
यहां हमारे इस चरखे में सकल सुखी संसार।
सीधे सच्चे इस तकुए का पक्का पतला तार,
इस घर घर घर में आती है उन खेतों की याद;
उमड़ घुमड़ आया था जिन पर सावन का उन्माद।
खेत खेत में साख भरी थी।
आगे की अभिलाख खरी थी॥
धरती चारों ओर हरी थी, लाई थी संवाद—
युग युग से है अन्न-वसन की अमिट यहाँ मर्याद।
इस घर घर घर में आती है उन खेतों की याद॥

२६ दिसम्बर १९४५

लुटकारा

एक संयुक्त हिन्दू-परिवार का मर्म-स्पर्शी चित्रण इसमें अंकित किया गया है। सम्पत्ति के लिए भाई-भाई में होनेवाली सिरफुटौवल, एक भाई का अपने दूसरे भाई को सम्पत्ति-सम्बन्धी अधिकारों से वंचित करने का षड्यन्त्र रचना, आदि बातें इस उपन्यास में मनोरंजक ढंग से लिखी गई हैं। मूल्य १।-)

मैनेजर बुकडिपो,
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्रीय असेम्बली का नया चुनाव

प्रांतों के अनुसार यह छठवाँ सार्वजनिक चुनाव कैसा रहा ?

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

केन्द्रीय असेम्बली का निर्वाचन समाप्त हो गया। सार्वजनिक दृष्टि से असेम्बली का यह छठा निर्वाचन है। चुनाव का परिणाम कैसा रहा? भारतीय राजनैतिक दलों का प्रतिनिधित्व किस प्रकार का है तथा ऐतिहासिक दृष्टि से केन्द्रीय असेम्बली तथा उसके निर्वाचन की क्या परम्परा रही है और देश की शासन-पद्धति पर आज तक तथा भविष्य में उसका किस प्रकार का प्रभाव पड़ सकता है, इन सभी प्रश्नों तथा समस्याओं पर इस विशद और सुन्दर लेख में विद्वान् लेखक ने विवेचन किया है। केवल बंगाल के चुनाव का परिणाम समय पर न मिलने के कारण छोड़ दिया गया है। लेख अत्यन्त सामयिक, विशेष रूप से विचारणीय, पठनीय तथा ज्ञातव्य है।

महात्मा गांधी की सम्मति से कांग्रेस ने धारा-सभाओं के चुनाव में भाग लिया है।

केन्द्रीय असेम्बली का चुनाव समाप्त हो गया। माण्टेग्-चेम्सफ़ोर्ड सुधार-योजना के आधार पर बने इंडिया ऐक्ट १९१९ के अनुसार बनी। केन्द्रीय असेम्बली का यह छठा आम चुनाव था। इससे पहला चुनाव १९३४ में हुआ था। साधारणतः असेम्बली का जीवन-काल तीन साल का होता है पर १९३५ में बनी असेम्बली का जीवन-काल ग्यारह साल रहा। किसी धारा-सभा का इतना लम्बा जीवन-काल रहने का यह दूसरा उदाहरण है। ब्रिटिश पार्लियामेंट के जीवन में दो बार ऐसा मौका आया है, जब उसका निर्वाचन पाँच साल बाद न होकर लम्बे अर्से के बाद हुआ है। द्वितीय विश्व महायुद्ध में उसका चुनाव नहीं हुआ पर यह सब पार्टियों की सहमति से हुआ। इससे पहले जब कामवेल या जेम्स के समय चुनाव नहीं हुआ तब राजा और पार्लियामेंट के बीच लड़ाई-चल रही थी। पर भारत में केन्द्रीय असेम्बली का चुनाव अन्य कारणों से नहीं किया गया। भारत के प्रान्तों में १९३७ में होर-लिनलिथगो ऐक्ट लागू हुआ और प्रान्तीय स्वायत्त-शासन का प्रारम्भ हुआ। इंडिया ऐक्ट १९३५ के दो भाग थे। प्रान्तिक और फ़ेडरल। दूसरा भाग भारतीय नरेशों की सहमति से ही सम्भव था। भारतीय नरेशों की सहमति प्राप्त करने के प्रयत्न में ही चार साल लग गये और फ़ेडरेशन की स्थापना की आशा में केन्द्रीय असेम्बली का चुनाव १९३७ के बाद से स्थगित किया जाता रहा। १९३९ में लड़ाई छिड़ जाने पर ब्रिटिश गवर्नमेंट ने इंडिया ऐक्ट १९३५ के फ़ेडरल भाग को ताक पर रख दिया और युद्ध-प्रयत्नों में बाधा पड़ने के बहाने केन्द्रीय असेम्बली का चुनाव टाला जाता रहा। यद्यपि कनाडा, दक्षिण अफ़्रीका और आस्ट्रेलिया में युद्ध-काल में पार्लियामेंटों के चुनाव हुए पर भारत की नौकरशाही युद्ध-प्रयत्नों में बिना बाधा पहुँचाये चुनाव का इन्तज़ाम करने में अपने को असमर्थ पाती रही। ब्रिटेन में विमान बमवर्षा करते थे, अतः वहाँ चुनाव सम्भव न था। पर भारत में यह बात नहीं थी। ब्रिटिश पार्टियों ने चुनाव के सम्बन्ध में एक समझौता कर लिया था, पर भारत की सब पार्टियाँ चुनाव के पक्ष में थीं। इसलिए अब तक चुनाव रोके रखने का समर्थन नहीं किया जा सकता।

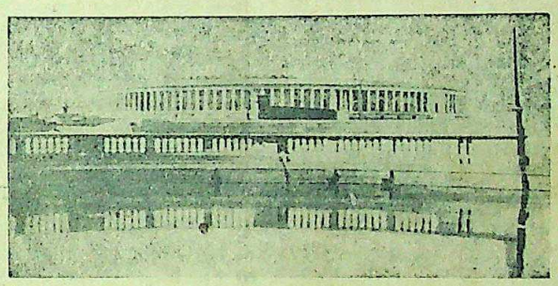

नई दिल्ली में केन्द्रीय असेम्बली के विशाल भवन का एक दृश्य।

छठी असेम्बली

१९२१ में पहले पहल केन्द्रीय असेम्बली अस्तित्व में आई थी। इम्पीरियल कौंसिल का स्थान इसने लिया था। यह १९४५ में चुनी गई छठी असेम्बली है। इन पच्चीस वर्षों में असेम्बली में आये परिवर्तन को देखकर सहज ही में कल्पना की जा सकती है कि भारतीय राजनीति में कितना भारी परिवर्तन हुआ है।

सङ्गठन

इस परिवर्तन को देखने के लिए केन्द्रीय असेम्बली का संगठन जिन तत्त्वों से हुआ है, उन पर विहंगम दृष्टि डालना आवश्यक है।

इंडिया एक्ट १९१९ के अनुसार केन्द्रीय असेम्बली के सदस्यों की संख्या १४० है, पर इस संख्या में वृद्धि की जा सकती है बशर्ते असेम्बली के सदस्य निर्वाचित हों, एक तिहाई नामजद गैर-सरकारी रहें। फलतः सदस्यों की संख्या १४३ रखी गई। भारत से बर्मा के अलग होने पर, बर्मा को दी गई चार सीटें कम हो गई और फिर सदस्यों की संख्या १३९ रह गई। असेम्बली के विसर्जन के समय इसके १०२ सदस्य निर्वाचित, १८ सरकारी और १९ नामजद सदस्य थे।

निर्वाचित सीटें

निर्वाचित सीटों का विभाजन इस प्रकार किया गया है :—३० मुस्लिम निर्वाचन-क्षेत्र हैं, जिनमें मतदाता और उम्मीदवार दोनों इस्लाम-धर्म के माननेवाले हैं। ४८ निर्वाचन-क्षेत्र गैर-मुस्लिम हैं। इनमें मतदाता मुसलमानों को छोड़कर पारसी, भारतीय ईसाई, ऐंग्लो-इंडियन, हरिजन और हिन्दू हैं। तीन आम निर्वाचन-क्षेत्र हैं, जिनमें मतदाता और उम्मीदवार किसी भी मत के हो सकते हैं—ये हैं दिल्ली, अजमेर, मेरवाड़ा और सीमा-प्रान्त। २ सिक्ख निर्वाचन-क्षेत्र हैं, ८ सीटें यूरोपियनों के लिए सुरक्षित हैं, ४ व्यापारिक निर्वाचन क्षेत्र हैं और ७ ज़मींदारों के निर्वाचन-क्षेत्र हैं।

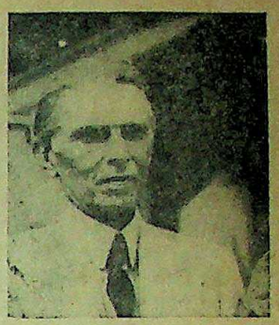

अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के प्रधान मिस्टर जिन्ना ने प्रसन्नता प्रगट की है कि केन्द्रीय असेम्बली में मुस्लिम लीग के सदस्य अधिक संख्या में चुने गये हैं।

प्रान्तवार सीटों का विभाजन इस प्रकार किया गया है—

मद्रास १६, यू० पी० १६, बम्बई १५, पंजाब १२, बिहार १०, सिन्ध २, उड़ीसा २, बंगाल १७, सी० पी० ६, आसाम ४, सीमाप्रान्त १, अजमेर-मेरवाड़ा १, दिल्ली १, यूरोपियनों ८, सिख २, और मुसलमानों ३०, के लिए सुरक्षित जगहों से इन्हीं वर्गों के चुने जाते हैं, आम निर्वाचन-क्षेत्रों ३, गैर-मुस्लिम निर्वाचन-क्षेत्रों ४८, ज़मींदार ७, और व्यापार-व्यवसाय ४ ये साम्प्रदायिक निर्वाचन-क्षेत्र नहीं हैं। गैर-मुस्लिम निर्वाचन-क्षेत्र हिन्दू-बाहुल्य होने के कारण साधारणतः हिन्दू को ही चुनते हैं, पर अहिन्दू भी खड़ा हो सकता है। जैसे बम्बई से १९३४ में सर कवास जी जहाँगीर श्री मुंशी को हराकर चुने गये थे और इस वर्ष श्री सीतलवाड़ी हिन्दू-महासभा के उम्मीदवार को पराजित करके चुने गये हैं। इसी प्रकार डी० सिल्वा नागपुर निर्वाचन-क्षेत्र से हिन्दू-महासभा के उम्मीदवार को हराकर चुने गये हैं। तीन आम निर्वाचन-क्षेत्र किसी को भी चुन सकते हैं। पर सीमाप्रान्त से पितली हिन्दू का आज की अवस्था में चुना शिकार संदिग्ध है। इसी प्रकार जमींदारों को कम्युनिकों व्यवसाय को ११ खास निर्वाचन-क्षेत्र दिये गये। खोज-से किसी भी धर्म और विश्वास के व्यक्ति दी जा सकते हैं। पर साधारणतः असेम्बली के छिन्न-धर्मानुसार निर्वाचित सदस्यों की संख्या देखकर इस प्रकार होती है—५८ हिन्दू, और मुसलमान, ८ यूरोपियन, २ सिख, १ ईसाई, १ पारसी।

असेम्बली के विसर्जन के समय असेम्बली में विभिन्न पार्टियों की शक्ति इस प्रकार थी—

कांग्रेस	३८
मुस्लिम लीग	२८
नेशनलिस्ट	१०

शेष स्वतन्त्र थे और बैलेट बाक्स के अनुसार वोट देते थे।

शेष पृष्ठ १३ पर देखिए

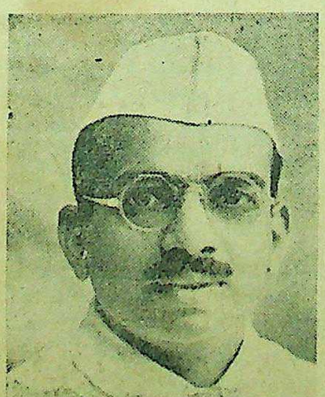

केन्द्रीय असेम्बली के लिए मध्यप्रान्त से निर्वाचित कांग्रेसी सदस्य सेठ गोविन्ददास।

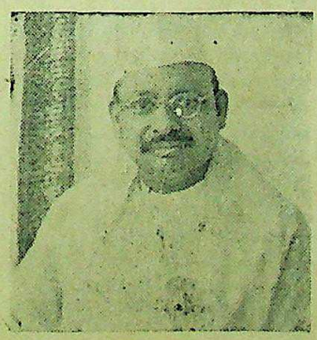

केन्द्रीय असेम्बली के लिए संयुक्त-प्रान्त से निर्वाचित कांग्रेसी सदस्य श्री श्रीप्रकाश।

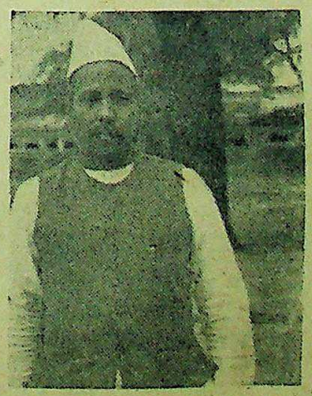

केन्द्रीय असेम्बली के लिए संयुक्त-प्रान्त से निर्वाचित कांग्रेसी सदस्य श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल।

कलकत्ता व्यवसाय-संघ की ओर से निर्वाचित सदस्य सेठ आनन्दीलाल पोद्दार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ० भा० हिन्दी पत्रकार-सम्मेलन

मथुरा-अधिवेशन का मनोरञ्जक वर्णन और संस्मरण

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

पिछले सप्ताह मथुरा में अखिल भारतीय हिन्दी पत्रकार-संघ का वार्षिक अधिवेशन पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी के सभापतित्व में हुआ था। श्री विद्यार्थी जी स्वयं अधिवेशन में पधारे थे। इस लेख में विद्यार्थी जी ने पत्रकार सम्मेलन का कुछ आँखों देखा वर्णन और संस्मरण लिखा है। लेख पठनीय तथा मनोरंजक है।

प्रातःकाल का समय था। जोरों से सर्दी पड़ रही थी। हाथ-पैर काँप रहे थे। बाहर निकलने की हिम्मत नहीं। सस्ता-साहित्य-मण्डल के कार्यालय में बैठा हुआ प्रभात का समाचार पढ़ रहा था। बाहर से दरवाजे पर ठोकर की आवाज आई। भाई चन्दूलाल जी चन्दावरकर (सहायक संपादक हिन्दुस्तान) ने कहा कि मथुरा चल रहे हैं या नहीं? मैंने कहा सर्दी बहुत पड़ रही है फिर भी चलने की इच्छा है। सवा रुपये में एक ताँगा करके हम लोग पुरानी दिल्ली के स्टेशन पर पहुँचे।

सात बजे थे। पंजाबमेल से जाने का इरादा था लेकिन कुछ समय बाद मालूम हुआ कि मेल लेट हो गई है। इतने में 'मिलाप' के संपादक लेखराम जी मिले। बातें होने लगी। 'अर्जुन' संपादक श्री कृष्णचन्द्र जी आ गये। एक-एक करके प्रायः दिल्ली के कई संपादक इकट्ठे हो गये। किसी की राय थी कि मेल से चलें, कोई कहता था पसिन्जर ट्रेन से चलना चाहिए। जल्दी किसी निर्णय पर पहुँच न सके। हर एक अपनी बात पर जोर देता था, अन्त में मेल लेट होने के कारण सबने तय किया कि पसिन्जर का टिकट बनवाना चाहिए। ११ बजे के लगभग पसिन्जर ट्रेन दिल्ली से खुली। हमारा डिब्बा साहित्यिकों का डिब्बा बन गया था।

'हिन्दुस्तान' संपादक भाई मुकुट-बिहारी जी वर्मा भी हमारे डिब्बे में आ गये। आप दूसरे दर्जे में जाने का विचार कर रहे थे लेकिन अपने साथियों को तीसरे दर्जे में जाते देखकर आपने कहा कि सबको एक ही दर्जे में यात्रा करनी चाहिए। उन्होंने दूसरे दर्जे का टिकट बदलवा कर तीसरे दर्जे का बनवा लिया। वर्मा जी के आने से हमारे डिब्बे की शोभा और बढ़ गई। अब तो सचमुच वह डिब्बा साहित्यिकों का बन गया था। पत्रकार जीवन की कई एक बातों पर आपने प्रकाश डाला। [illegible]ग २६ वर्ष से आप पत्रकार दुनिया में [illegible]र रहे हैं। सभी तरह के कड़ुवे मीठे [illegible]पको मिले हैं। श्रमजीवी पत्रकार [illegible]गी में अपना स्थान रखते हैं। [illegible]रह का व्यसन आपको नहीं है। [illegible]ल बहुत से पत्रकार अपना अधिक [illegible] और प्रचार चाहते हैं उस दुनिया [illegible]भी आप अलग हैं। चुपचाप अपने काम से मतलब रखते हैं। सचमुच आप एक सच्चे पत्रकार हैं। विदेशी टीम-टाम से आप एक दम अनभिज्ञ हैं।

हमारे डिब्बे में साहित्य, राजनीति, धर्म, समाज आदि विषयों पर चर्चा चलने लगी। कोई कहता था कि आज की राजनीति बहुत गन्दी है कोई कहता था देश में बड़ी जागृति आ गई है। महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल सफल नेता हैं। एक दिन अँगरेजों को हमारा देश छोड़ना पड़ेगा। एक सज्जन ने कहा इस देश को मार्क्स की नीति से बहुत धक्का लगेगा। धक्का लगने की बात सुनकर कई मित्रों ने कहा कि आप ग़लत कह रहे हैं। मार्क्स की फिलासफ़ी से ही हम दुनिया में शान्ति रख सकते हैं। मार्क्स मजलूम जनता का सच्चा प्रतिनिधि था। पूंजीवादी नीति दुनिया को सर्वनाश पथ पर ले जा रही है। एक न एक दिन हमें मार्क्स और लेनिन की नीति को ही अपनाना पड़ेगा। कौन कैसी कविता करता है, इस पर भी कुछ बहस छिड़ी। कुछ की राय थी कि दिनकर, नैपाली और 'हल्दीघाटी' के रचयिता अच्छी कविता करते हैं। हम लोगों के साथ एक अग्रवाल महाशय भी चल रहे थे। आपने कहा कि अब टंडन जी, सम्पूर्णानन्द जी हिन्दी के सम्बन्ध में हिन्दू महासभाइयों में मिलते जा रहे हैं। बड़े जोरों के साथ आपने अपनी बातों पर जोर दिया लेकिन थोड़ी देर बाद कुछ लोगों की दलीलों से अपनी ग़लती दबी जबान में स्वीकार कर ली। आप दिल्ली के किसी कमर्शियल स्कूल में शिक्षक हैं। आपने आगे एक तर्क यह उपस्थित किया कि यदि सारा देश उर्दू-लिपि सीख ले तो स्वराज्य कल मिल सकता है।

बहस छिड़ने पर कुछ लोगों ने कहा कि पंजाब, दिल्ली, यू० पी० और बिहार में लगभग सभी पढ़े-लिखे लोग दोनों भाषायें अच्छी तरह जानते हैं। हिन्दू तो उर्दू लिपि में बहुत निपुण हैं फिर भी वहाँ एकता अभी तक नहीं हुई। पंजाब में हिन्दू-मुसलमान सभी उर्दू-लिपि में अपना कारबार चलाते हैं। वहाँ की मातृभाषा उर्दू ही हो गई है। आर्यसमाजी भी उर्दू में ही अपना कारबार करते हैं फिर वहाँ सब लोगों में क्यों नहीं एकता होती? प्रोफ़ेसर साहब चुप रहे। ठीक उत्तर देने योग्य उनके पास कोई तर्क नहीं था। हाँ, उन्होंने यह बात मान ली कि उर्दू और हिन्दी-लिपि सबको अनिवार्य सीखने के लिए मजबूर नहीं करना चाहिए। अपनी इच्छा के अनुसार सबको लिपियाँ सीखने के लिए स्वतन्त्र होना चाहिए। एकता तो अँगरेजों का साम्राज्य समाप्त होने पर ही होनेवाला है। शिमला में जहाँ हिन्दू-मुसलमान पचास-पचास बराबरी का सीट पा रहे थे वहाँ वे एकमत न हो सके तब लिपियों की बराबरी पर एकमत होना तो बिलकुल असम्भव लगता है?

साढ़े तीन बजे के लगभग हमारी ट्रेन मथुरा स्टेशन पर आ गई। मुसाफ़िरों से डिब्बा खचाखच भर गया। निकलना मुश्किल हो गया। पीछे के दरवाजे से निकलना पड़ा। दिल्ली के सभी श्रमजीवी पत्रकार एक साथ मथुरा पहुँचे। स्टेशन पर स्वागत-समिति के कुछ स्वयंसेवक मिले। उन लोगों की सहायता से अखिल भारतीय पत्रकार सम्मेलन का जहाँ अधिवेशन हो रहा था, हम लोग पहुँचे। म्युनिसिपल स्कूल के एक बहुत बड़े स्कूल में सब प्रबन्ध किया गया था। वहीं ठहरने, खाने और अधिवेशन का प्रबन्ध हुआ था।

यह अधिवेशन श्रमजीवी पत्रकारों का छठा जलसा था। हम लोगों को बड़ी आशा थी कि बहुत से श्रमजीवी पत्रकार मथुरा आयेंगे लेकिन वहाँ पहुँचने पर देखा कि दिल्ली, आगरा, मथुरा, टीकमगढ़, कानपुर और ग्वालियर के चन्द पत्रकार पहुँचे हैं। प्रधानता दिल्लीवालों की ही थी।

बनारस, प्रयाग, कलकत्ता, कानपुर, पटना, बम्बई और नागपुर के श्रमजीवी पत्रकार यहाँ क्यों नहीं आये यह एक विचारणीय प्रश्न है। हर एक अपनी कल्पना की उड़ान बाँधने लगा। कोई कहता था कि संचालकों के दबाव के कारण नहीं आये होंगे। संचालक श्रमजीवी पत्रकारों के संगठन से कुछ भयभीत हो गये हैं। वे नहीं चाहते कि श्रमजीवी पत्रकार अपना मजबूत संगठन बनायें। कोई कहता था कि स्वागत-समिति के कुप्रबन्ध से समय पर लोगों को निमंत्रण-पत्र नहीं पहुँचा होगा। सभापति का चुनाव भी बहुत पीछे हुआ है। दलबन्दी के कारण ठीक समय पर स्वागत-समिति ने अपना काम नहीं किया। सारा दोष स्वागत-समिति का मालूम हो रहा था। दिल्ली से चलते समय भी हम लोगों को यह मालूम नहीं हो सका कि सभापति जी का भाषण कितने बजे होगा? क्या प्रोग्राम है? किसी तरह की सूचनायें पत्रों में प्रकाशनार्थ नहीं पहुँचीं। निमंत्रण-पत्र तो अलग रहा। खैर---दलबन्दी से ही हमारा देश गुलामी की जंजीर में कसा हुआ है। किसको दोष दिया जाये?

पंडित बनारसीदास जी चतुर्वेदी एक तपे हुए पत्रकार हैं। आपने मुसीबतों का धक्का खाया है। श्रमजीवी पत्रकारों के प्रति आपकी पूरी सहानुभूति है। लेकिन एक बात यह जरूर है कि संचालकों की चालबाजियों का कटु अनुभव आपको नहीं मिला होगा। 'विशाल भारत' के संचालक आपको किसी तरह के अनुशासन में नहीं रखते थे। आप अपने पत्र के स्वयं मालिक थे। जैसा लिखना चाहते थे लिख सकते थे। रामानन्द बाबू स्वयं स्वाधीन पत्रकार थे वैसी ही स्वाधीनता अपने नीचे के लोगों को दे रक्खी थी। चतुर्वेदी जी से वे कभी नहीं पूछते थे कि यह क्यों लिखा, वह क्यों छापा? 'विशाल भारत' चतुर्वेदी जी की नीति के अनुसार छपता था। आज के पत्र संचालकों की नीति पर छप रहे हैं।

* * *

सभापति महोदय ने अपने भाषण में कहा---"यह नहीं मालूम कि कल मुझे कहाँ जाना होगा। यदि आपने मुझे श्रमजीवी पत्रकारों के संकटमय जीवन का प्रतीक समझा है तो भी बड़ी भारी भूल की है। क्योंकि मेरी वर्तमान परिस्थिति परोपजीवी जैसी है और मेरा जीवन साधना तथा तप का कभी नहीं रहा।" आगे आपने फिर कहा---"पत्रकारों के संगठन में राजनैतिक दृष्टिकोणों को प्रधानता नहीं दी जानी चाहिए। विविध वादों के अनुयायी तथा सरकारी पत्रों के पत्रकार भी हमारे सदस्य हो सकते हैं। दस वर्षीय साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम हमें देश में बढ़नेवाले शिक्षाप्रसार की योजना के आधार पर आज से दस वर्ष बाद जो---शिक्षित व्यक्ति बढ़ेंगे उनके लिए साहित्य का निर्माण आरम्भ कर देना चाहिए। पत्रकारों पर पूंजीवाद का हमला हो गया है। आत्मरक्षा और साहित्य-सेवा की दृष्टियों से हमें यह कार्य हाथ में लेना आवश्यक है।" श्रमजीवी पत्रकारों की समस्या पर विचार करते हुए आपने कहा---"वह समय शीघ्र ही आनेवाला है श्रमजीवी पत्रकार, कवि, लेखक पत्र संचालक अलग-अलग वर्गों में संगठित होंगे किन्तु पत्र-संचालकों को चाहिए कि वह पत्रकारों के साथ सहानुभूति से विचार करके उस समय को टालने की चेष्टा करें।

पत्रकारों को अपने ज्ञान को विस्तृत करके अपने दृष्टिकोण को अन्तर्राष्ट्रीय बनाना चाहिए तभी वह आवश्यक होने पर नेताओं का पथ-प्रदर्शन कर सकेंगे। हमारे यहाँ भारतीय संघ और अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक संघों का होना आवश्यक है। हिन्दी पत्रों की जिम्मेदारी बहुत अधिक है। अँगरेजी पत्रकारों का जो स्थान है उसके अधिकारी हम हिन्दी के पत्रकार हो सकते हैं।"

सभापति का भाषण बहुत लम्बा था। हर एक विषयों पर प्रकाश डालने की कोशिश की गई थी। नगर के प्रमुख गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए थे। चतुर्वेदी जी के सभापति चुने जाने से श्रमजीवी पत्रकारों में बड़ी प्रसन्नता फैली हुई थी। हर एक को यह आशा हो गई है कि अगले वर्ष कुछ अवश्य काम होगा। पत्र-संचालकों से सभापति महोदय मिल-जुलकर कुछ रास्ता निकालने की कोशिश जरूर करेंगे।

हिन्दी-संसार के वयोवृद्ध पत्रकार श्री बाबू राव विष्णु पराडकर।

शाम तक बहुत से छोटे-बड़े पत्रकार पहुँच गये थे। आर्थिक और बौद्धिक विषयों पर चर्चा करने का मुख्य विषय सभा-मण्डप बन रहा था। हर एक यही कहता सुनाई पड़ रहा था---पत्र-संचालक पत्रों-द्वारा बहुत-सा धन कमा रहे हैं लेकिन हम लोगों की स्थिति ज्यों की त्यों बनी हुई है। हमारे वेतनों में कोई तरक्क़ी नहीं की गई। संचालक अपनी इच्छानुसार अपने पत्रों की नीति निर्धारित कर रहे हैं। आज हमें स्वतन्त्र विचार प्रकट करने का अधिकार नहीं है। दो तरह के पत्र प्रकाशित हो रहे हैं--एक श्रेणी में पूंजीवादी है, दूसरी श्रेणी में पार्टी पत्र चल रहे हैं। स्वतन्त्र लेखक और पत्र अब नहीं हैं।

हिन्दी पत्रकारों की आर्थिक दशा बहुत ही खराब है। जहाँ अँगरेजी, बँगला और गुजराती पत्रों के संपादक सैकड़ों रुपया महीना वेतन पाते हैं वहाँ हिन्दी के पत्रकार सौ रुपये भी पाने के हक़दार नहीं। 'जन्मभूमि' में सहायक संपादकों को दो-दो और चार-चार सौ रुपया मासिक वेतन मिलता है जब हिन्दी के प्रधान सम्पादक १००) पाते हैं उतनी बुरी दशा और किसी प्रान्तीय भाषा के प्रधान सम्पादकों की नहीं होगी। 'हिन्दुस्तान' और 'प्रताप' में सहायक सम्पादकों की नियुक्ति ही सौ रुपये मासिक पर अब होने लगी है।

जन्मभूमि (गुजराती) में हर एक विषय का एक एक सम्पादक नियुक्त किया गया है। किसी के जिम्मे आर्थिक विषय का सम्पादन है, किसी के जिम्मे राजनीति, समाचार-संग्रह, जिलों के समाचार-संग्रह का सम्पादन, प्रूफ़ का देखनेवाला अलग है। अपने-अपने विषय का एक-एक सम्पादक नियुक्त किया गया है। ऐसी ही नीति हिन्दी पत्रों को अपनानी चाहिए।

अधिवेशन समाप्त होने के बाद---कवि-सम्मेलन में बहुत लोग आये हुए थे। लेकिन प्रमुख कवियों में एक भी उपस्थित नहीं हो सका था। हाँ स्थानीय कवि थे। कुछ बहिनों ने भी भाग लिया। बहिनों की कविताओं पर लोगों का अच्छा मनोरंजन हुआ। एक बहिन तो कविता-पाठ करते समय अपने हाथों पर बहुत जोर देकर लोगों को ललकार रही थीं। "दिल्ली चलो, दिल्ली चलो।" श्री दीनानाथ चतुर्वेदी की कविता बहुत पसन्द की गई। आपने कहा "दीनहीन लोगों का झण्डा फहरायेगा।" इस पर लोगों ने बहुत हर्ष-ध्वनि की।

---शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ्रांस के नये चुनाव में क्या हुआ?

साम्राज्यवादी व्यवस्था अब अन्तिम साँसें गिन रही है

लेखक, श्री चन्द्रकुमार, बी० ए०

नवीन फ्रांस के निर्माण में जनवादी शक्तियां प्रबल रूप से सहायक बन रहा है। फ्रांस के वर्तमान प्रधान जनरल डिगाल ने जो नया मंत्रिमंडल बनाया है, उसे जनता के प्रतिनिधियों का भी सहयोग प्राप्त है। विद्वान लेखक ने इस लेख में फ्रांस की पूर्व तथा वर्तमान साम्राज्यवादी शासन-नीति पर प्रकाश डालते हुए यह स्पष्ट किया है कि फ्रांस प्रगतिशील शासन-नीति का समर्थक बनता जा रहा है। इसलिए उसका भविष्य उज्ज्वल है।

फ्रांसीसी प्रजातन्त्र के वर्तमान प्रधान जनरल डिगाल।

विगत मास में फ्रांस की सर्वोच्च धारा-सभा का चुनाव हुआ था। उसके परिणाम से पता लगता है कि फ्रांस की जनता 'लुई' १४वें और नेपोलियन बोनापार्ट की साम्राज्यवादी परम्परा को त्याग कर जनवादी आदर्शों को अपनाने की तरफ़, तेजी से बढ़ रही है। गत महायुद्ध के 'अवरोधात्मक आन्दोलन' के नेता मो० डिगाल की पार्टी, कैथोलिक रेडिकल्स (एम० आर० पी०) के ऊपर, समाजवादी आदर्शों को मानकर चलनेवाली सोशलिस्ट पार्टी और कम्युनिस्ट पार्टी की विजय से साफ़ हो जाता है कि फ्रांस की जनता जो 'हिटलरी जुल्म' के काल में साम्राज्यवादियों के जूतों की हील के नीचे पिसने की पीड़ा का अनुभव कर चुकी है, अब और दूसरे देशों की जनता को अपनी सरकार-द्वारा गुलाम रखा जाना नहीं पसन्द करती। उसने कम्युनिस्ट पार्टी को सबसे ज़ादा और सोशलिस्ट पार्टी को दूसरे नम्बर पर वोट देकर डिगाल की साम्राज्यवादी नीति के प्रति अपना विरोध प्रकट किया है।

समाचारपत्रों के साधारण पाठक के लिए चुनाव का यह परिणाम कोई विशेष उथल-पुथल का नहीं मालूम पड़ेगा—क्योंकि वे फ्रांसीसी हिन्द-चीन में अब भी साम्राज्यवादी अनाचार का ताण्डव देखते हैं, वे फ्रांस को डिगाल-संचालित सरकार को अमेरिका और ब्रिटेन जैसी प्रतिक्रियावादी और साम्राज्यवादी सरकारों का मुंह जोहते देखते हैं, और जिनके पास विदेशी समाचार जानने का साधन एकमात्र अँगरेजी एजेन्सी 'रायटर' है जिसकी साम्राज्यपक्षीय नीति स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है और जिसके बारे में 'कामन्स' में सवाल पूछे जाने पर बताया गया है कि ब्रिटिश सरकार उसे आर्थिक सहायता देती है। असल रोना तो भारतीय पत्र-कारिता के दिवालियापन के बारे में है। अच्छे-अच्छे राष्ट्रीय पत्र ब्रिटिश साम्राज्यवाद के प्रति उत्कट घृणा का भाव रखते हुए भी उसी साम्राज्यवाद की एजेन्ट और कट्टर प्रतिक्रियावादियों द्वारा नियन्त्रित 'रायटर एजेन्सी' द्वारा वितरित 'विदेशी जन-आन्दोलनों' की विकृत और मनमानी रिपोर्ट आँख मूंदकर छाप देते हैं। चीन के गृहयुद्ध, रूस-चीन सन्धि और उत्तरी ईरान की जनता के विद्रोह के समाचार और बाद की घटनाओं के मिलान से रायटर की प्रतिक्रियावादी नीति का भण्डाफोड़ हो जाता है। हमें प्रतिक्रियावादियों के सर्वग्रासी षड्यन्त्र की तफ़सील में नहीं जाना है—इतना सब इसलिए कि समाचारपत्रों के पाठक को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों की घटनाओं की गहराई तक पहुँचने के लिए प्रस्तुत घटना की पृष्ठभूमि की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। पिछले दिनों फ्रांस की राजनीति में जो क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है जन-स्वातन्त्र्य-युद्ध के लिए उसकी कितनी क़ीमत है उसे समझने के लिए प्रतिक्रियावादी रायटर एजेन्सी द्वारा दिमाग में बैठाई हुई छाप को दूर कर निष्पक्ष रूप से हमें फ्रांसीसी राजनीति के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन करना होगा।

युद्ध-पूर्व का फ्रांस

राजनीति का प्रत्येक विद्यार्थी जानता है कि पिछले ६०-७० वर्षों में फ्रांस की राज्य-व्यवस्था कितनी शिथिल रही है। इन दिनों फ्रांस का राजनैतिक ढाँचा इतना जर्जर था कि कोई भी सरकार स्थायी रूप से एकनीति नहीं चला पाती थी। फ्रांस में अनेकों राजनैतिक दल थे, जो नाम-मात्र को दल थे, जनता के संगठन और उसके मत के पुष्ट करने में उनका कोई हाथ नहीं रहता था। अधिकांश दलों का क्षेत्र या तो पेरिस या उसके आस-पास तक ही सीमित रहता था। चुनाव के दिनों में ही केवल उनकी सरगर्मी देखने को मिलती थी। इतने अधिक दलों के कारण चुनाव में किसी एक दल का बहुमत न हो सकने की वजह से संयुक्त सरकारें बनानी पड़ती थीं और इन दलों के प्रतिनिधियों के पास कोई रचनात्मक कार्यक्रम न होने और व्यक्तिगत सत्ता के स्वार्थ के होने के कारण सरकारें बहुत दिनों तक नहीं चल पाती थीं। इन दलों में घोर प्रतिक्रियावादी अनुदार विचारों-वालों से लेकर मध्यमार्गीय और तीव्र उग्रपन्थी सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट तक थे। इनमें अधिकतर दक्षिण-पन्थियों मध्य-मार्गियों और कभी-कभी नरम समाजवादियों से मिलकर संयुक्त मन्त्रिमण्डल बनते थे। लेकिन उस समय केवल कम्युनिस्ट पार्टी ही ऐसी थी जो पद-प्राप्ति के लिए उतनी लालायित नहीं रहती थी—उसका सारे फ्रांस में विस्तार था। संगठन, अनुशासन और ठोस कार्यक्रम के लिहाज से वही सबसे अच्छी पार्टी थी। लेकिन उसकी शक्ति बहुत कम थी इसलिए फ्रांस की देशी और विदेशी नीति में उसका असर नहीं हो पाता था। लेकिन मजदूर-आन्दोलन की प्रगति के साथ कम्युनिस्ट पार्टी भी शक्ति प्राप्त करती जा रही थी। यद्यपि बाह्य रूप से फ्रांस की हुकूमत पर कम्युनिस्टों का कोई प्रभाव दिखाई नहीं पड़ता था लेकिन विभिन्न दलों की मिली-जुली सरकारें कम्युनिस्ट संगठन और उसके कार्यक्रमों के प्रति जनता के आकर्षण से ईर्ष्या करती थीं, और हर समय उसकी शक्ति को तरह-नहस करने का प्रयत्न करती रहती थीं।

गीत

लेखक, श्री जगन्नाथ, एम० ए०

बिना चले ही चलना सीखो!
तम के पार निकल सकते हो
गम के पार निकल सकते हो
भ्रम के पार निकलना सीखो!
सबकी दृष्टि बदल सकते हो
सारी सृष्टि बदल सकते हो
अपने आप बदलना सीखो!
नयनों में प्रकाश तम भरता
दीप शलभ को अन्धा करता
बिना जलाये जलना सीखो!

युद्ध-काल का फ्रांस

पिछले संहारी युद्ध के तूफ़ानी वेग से घटित होनेवाली, बड़े-बड़े राष्ट्रों के अल्पकाल में ही भलुंठित हो जाने की, दुर्घटनाओं से हमें उस समय की योरोपीय सरकारों की आन्तरिक शोचनीय अवस्था का आभास मिल जायेगा। सन् १४ के महायुद्ध में द्वितीय समर शक्तियों में गिने जानेवाले फ्रांस का चन्द दिनों की लड़ाई में पतन हो गया। इसमें हिटलरी सेना के दुर्धर्ष पराक्रम की उतनी तारीफ़ नहीं है जितनी कि स्वयं फ्रांस में कमजोरी होना। फ्रांस आरम्भ से ही साम्राज्यवादी और सत्ता की लालसा रखनेवाला रहा है। बोर बॉन राजाओं के निरंकुश शासन से उत्पीड़ित फ्रांसीसी जनता के विरोध का जो स्वरूप १७८९ की राज्यक्रान्ति के रूप में प्रकट हुआ था उसने योरोपीय राज्यतन्त्र की जड़ें जरूर हिला दी थीं और सामन्तवादी दुरवस्था का घृणित रूप उघाड़कर जरूर रख दिया था लेकिन वह अपने में जनहितों की रक्षा और विकास के लिए कोई ठोस कार्यक्रम निहित न किये होने के फलस्वरूप केवल रक्तपात और हुल्लड़शाही आतंक की छाप डालकर ही रह गई। उसके बाद नेपोलियन बोनापार्ट की साम्राज्य-विस्तार की लालसा ने फ्रांसीसी जनता के विशेष भाग को फ्रांसीसी साम्राज्य स्थापित होने के प्रति उत्सुक बना दिया। नेपोलियन के पतन और उसके बाद की घटनाओं से भी फ्रांस की साम्राज्यवादी और सत्तावादी लिप्सा का ही पोषण होता रहा। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि युद्ध छिड़ने तक जनवादी पार्टी क्षीण शक्ति रही और राज्य-सत्ता पर प्रतिक्रियावादी स्वार्थपरता का अधिकार रहा। लेकिन हिटलरी आक्रमण के समय फ्रांसीसी जनता की आँखें खुल गईं। जब उसने देखा कि दारलां, लावाल और पेतां सरीखे फ्रांस के हितैषी, जर्मनों को निमन्त्रण दे रहे हैं। जिनके पास राजसत्ता थी जब वही शत्रु से मिले थे तो जनता का मनोबल कहाँ तक स्थिर रहता? वह पस्तहिम्मत हो फ़ासिस्ट बर्बरों के जुल्मों को बर्दाश्त करती रही। कठपुतली फ्रांसीसी विशी सरकार के समय में भी निरीह जनता पर बेतरह जुल्म होते थे। उस समय उसके त्राण के लिए कोई भी नहीं था। आज के फ्रांस के भाग्य-विधायक मो० डिगाल भी ब्रिटेन भाग गये थे। जनता के साथ रहे थे तो केवल कम्युनिस्ट। यद्यपि वे अल्पसंख्या में थे लेकिन फिर भी मौक़े की सेवाओं द्वारा उन्होंने अत्याचार-पीड़ित भगोड़ों के और देशद्रोहियों के प्रति क्रोध में भरी जनता का विश्वास प्राप्त कर लिया। कम्युनिस्ट पार्टी ने फ्रांस की दूसरी प्रगतिशील शक्तियों के साथ मिलकर मजबूत राष्ट्रीय मोर्चा बनाया। छापेमार फ़ौजें संगठित कर अवरोधात्मक आन्दोलन को तीव्र बनाकर रचनात्मक कार्यक्रमों को व्यवहारिक रूप देकर जनता के हृदय में घर कर लिया। जर्मन विरोध के स्वरूप फासिस्टों और कठपुतली विशी सरकार के दमन का जबर्दस्त शिकार भी उन्हीं को होना पड़ा। अनेकों कम्युनिस्ट गोली के शिकार बनाये गये। खोज-खोजकर उन्हें अत्यधिक यन्त्रणायें दी गईं लेकिन फिर भी उनका संगठन छिन्न-भिन्न न हो सका। उनका जीवट देखकर त्रस्त फ्रांसीसी जनता का मनोबल बढ़ा और वह जर्मन दरिन्दों का दुगुने वेग से प्रतिरोध करने को कटिबद्ध हो गई।

रूस में, जब फासिस्टों की लाल-सेना द्वारा हार हुई और जब विजयी लाल-सेना जर्मनों को खदेड़ती हुई बर्लिन की ओर बढ़ने लगी और जब योरप में दूसरा मोर्चा खुल गया तब फ्रांस की जनता ने भी अपने यहाँ से जर्मनों को मार भगाया। पेरिस के स्वतन्त्र होने में न तो अमरीकी सेनाओं का हाथ था और न लाल सेना की सहायता। पेरिस के छापेमारों और देशभक्तों ने निज के प्रयत्न से उसे जर्मनों के हाथ से छीना था। फासिस्ट-पंजे के नोच-खसोट से घायल फ्रांस साँसें लेने लगा। उजड़ी हुई आर्थिक राजनैतिक व्यवस्था को सुधारने की तैयारी होने लगी। मो० डिगाल इसी समय फ्रांस आये।

पुनः स्वतंत्रता प्राप्त फ्रांस

मो० डिगाल के समर्थकों और अनुयायियों ने उनका स्वागत किया और क्षत विक्षत जनता ने सुचारु व्यवस्था स्थापित होने के लिए मो० डिगाल से राज्य-संचालन की प्रार्थना की। कम्युनिस्ट देश में शीघ्र से शीघ्र शान्ति, सुव्यवस्था और जनता के कष्टों का त्राण चाहते थे इसलिए उन्होंने भी डिगाल को सहयोग दिया। लेकिन मो० डिगाल ने अपनी साम्राज्यवादी नीति बाक़ी रखी और हमें सीरिया, श्याम और लेबनान के प्रति फ्रांस की साम्राज्यवादी नीति

शेष पृष्ठ १० पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारा-सभा के अधिकारों की मखौल

हैदराबाद में नया शासन-सुधार जनता के हित अथवा रियासती सत्ता के लिए ?

लेखक, श्री मधुसूदनदास चतुर्वेदी, एम० ए० एस-सी०, 'विशारद'

हैदराबाद रियासत में भी ब्रिटिश भारत की भाँति धारा-सभा के निर्वाचन का कार्य प्रारम्भ हो गया है। धारा-सभा तथा उसके सदस्यों को किस प्रकार के अधिकार प्राप्त होंगे इन्हीं सब बातों की चर्चा इस लेख में की गई है। अधिकारों और नियमों को देखते हुए यह प्रश्न किया जा सकता है कि धारा-सभा जनता के हित के लिए संगठित की जा रही है अथवा सरकारी सुरक्षा के लिए ? लेख पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

हैदराबाद रियासत के नवाब बहादुर साहब।

हैदराबाद राज्य अँगरेज सरकार का परम मित्र है तथा राज्य-प्रबन्ध में अँगरेज सरकार के कानूनों की नकल उतारने में कभी विलंब नहीं करता। यदि ब्रिटिश भारत में 'डिफेन्स आफ इण्डिया' विधान बना तो यहाँ हैदराबाद रक्षा-विधान बना। जब उधर प्रान्तीय सरकारें स्थापित हुईं तो यहाँ भी उत्तर-दायित्वपूर्ण शासन की चर्चा चली। जब वहाँ भारतीय संघ-शासन की योजना चालू हो रही थी, तो यहाँ १७ जुलाई सन् ३९ को शासन-सुधार की घोषणा हुई। जब वहाँ संघ-योजना स्थगित कर दी गई तो यहाँ भी सुधार-योजना दफना दी गई। अब जब भारत-सरकार चुनाव-द्वारा पुनः स्वशासन की योजनाओं पर विचार कर रही है, तो यहाँ भी मतदाताओं की सूचियाँ तैयार हो रही हैं। जिस प्रकार ब्रिटिश सरकार स्वशासन के संबंध में जनता को भुलावे में डालने के प्रयत्न में है, उसी प्रकार हैदराबाद की सरकार भी सुधार का तमाशा दिखलाने को प्रस्तुत है। ब्रिटिश भारत की जागृत जनता के सम्मुख अब धोखा-धड़ी अधिक समय तक चलना संभव नहीं है, परन्तु हैदराबाद में संभव है, कुछ समय तक ऐसी योजना जनता को भुलावे में रख सके।

सन् १८९२ई० में भूतपूर्व शासक स्वर्गीय नवाब मीर महबूब अली खाँ ने उस समय की शासन-प्रणाली का परिचय देते हुए कहा था—"इस राज्य की प्रारंभिक शासन-प्रणाली वैयक्तिक शासन के रूप में थी। सालारजंग प्रथम ने उसे नियंत्रित राज्य-सत्ता के रूप में बदल दिया।" वर्त्तमान शासक के समय में एक मंत्रि-मंडल तथा एक धारा-सभा का अस्तित्व पुराने शासन-विधान पर उन्नत समझा जाता है परन्तु जब हम यह देखते हैं कि मंत्रि-मण्डल के सभी सदस्य वेतन-भोगी सरकारी कर्मचारी हैं तथा कौंसिल के २१ सदस्यों में से ११ सरकारी, ६ गैर-सरकारी (जिनमें २ जागीरदार २ वकील हाईकोर्ट तथा २ नामजद) तथा अन्य सदस्य विशेष हैं, तो उसकी शक्ति का अन्दाज भली भाँति लग जाता है। इस धारा-सभा के सीमित अधिकारों की चर्चा करना व्यर्थ है क्योंकि उसके निर्माण में भी जनता के प्रतिनिधियों को कोई विशेष स्थान नहीं है। हैदराबाद नगर के सुप्रसिद्ध नागरिक राजा पन्नालाल जी पिछली कई वर्ष तक इस धारा-सभा के सदस्य थे परन्तु जनमत का धारा-सभा में कोई विशेष आदर न देखकर आपने उससे पृथक होना ही गौरवपूर्ण समझा।

यह तो वर्त्तमान धारा-सभा का विवरण है अब भावी धारा-सभा पर विचार कीजिए जिसके लिए आजकल मतदाताओं की सूचियाँ तैयार की जा रही हैं। इस धारा-सभा के ४२ सदस्य निर्वाचित होंगे जो विभिन्न निर्वाचन-क्षेत्रों में इस प्रकार बँटे रहेंगे :—

समस्थानों के स्वामी और जागीरदार ४, माशदार २, कृषक (अ) पट्टीदार ८, (आ) जोता ८ अर्थात् १६, मजदूर २, उद्योग २, व्यापार २, साहूकार २, वकील २, डाक्टर व वैद्य २, विश्वविद्यालयों के उपाधिधारी २, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड २, जिला की म्युनिसिपलटी व कस्बों की कमेटी २, हैदराबाद कारपोरेशन २। कुल ४२।

इन निर्वाचित सदस्यों के साथ-साथ ३३ नामजद भी होंगे जिनमें ३ पाईगाहों से, १ पेशकारी स्टेट से तथा १ सालार-जंग की स्टेट का होना तथा १४ सरकारी और १४ गैर सरकारी सदस्य होंगे। इनके अतिरिक्त कार्यकारी मंडल के सदस्य तथा सर्फ़खास के ३ सदस्य भी इसके सदस्य होंगे। कार्यकारी मंडल (एक्जीक्यूटिव कौंसिल) के सदस्यों की संख्या ७ से कम नहीं है। इस प्रकार ४२ निर्वाचित सदस्यों की तुलना में ३३+१०=४३ नामजद सदस्य रखकर सरकारी पक्ष को प्रबल बनाया गया है। निर्वाचित होनेवाले ४२ सदस्यों में भी बहुत थोड़े सीधे-सादे जनता के प्रतिनिधि हो सकते हैं।

सुधार-योजना का आधारभूत जो सिद्धान्त है, वह भी मननीय है :—

"The head of the state represents the people directly in his own person, and his connection with them, therefore, is more natural and abiding than that of any passing elected representative. He is both supreme head of the state and the embodiment of his 'people's sovereignty.' Hence it is that in such a polity, the head of the state not merely retains the power to confirm or veto any piece of legislation, but also enjoys a special prerogative to make and unmake his executive or change the machinery of his government through which he meets the growing needs of his people. Such a sovereignty forms the basis on which our constitution rests, and has to be preserved."

"मुमल्कत का सदर (राज्य का शासक) अपनी जात में (स्वयं) अवाम (जनता) की बिलावास्ता नयाबत करता है (का प्रतिनिधि है) और उसका ताल्लुक अवाम के साथ नुमायन्दा जमाअतों के अराकीन के बनिस्बत ज्यादा फ़ितरी, ज्यादा मुस्तक़िल और ज्यादा गहरा होता है। दूसरे अल्फ़ाज (शब्दों) में वह मुमल्कत का सदर भी होता है और अवाम के इक्तदार आली की नुमायन्दगी भी करता है। इसलिए इस क़िस्म के निज़ाम सयासी में (राजनीतिक योजना) सदर मुमल्कत एक तरफ़ तो (१) क़ानूनसाज़ी के दायरे में तवैयक़ अतनाह veto के अख्तियारात का हामिल होता है और दूसरी तरफ़ (२) आबिलाना हुकूमत के दायरे में काबीना की तख़लीक़ और शिकस्त का मख़लूक़ अख्तियार भी इसको हासिल होता है—यह—हक़्तदार आली—दस्तूर की बुनियाद है और उसकी हिफ़ाज़त जरूरी है।" (जरीदा ग़ैर मामूली जिल्द ७० सं० ४ ता० १२ सहरेवर १३४८ फ़० ता० १७ जुलाई ३९ पृ० १५ पारा ४)

इस सिद्धान्त के रहते हुए जनमत का प्रभावशाली होना सम्भव नहीं है। धारा-सभा का निर्माण जिस आधार पर हुआ है तथा उसकी रचना दोनों ही लोकमत को बहुत गौण स्थान प्रदान करती हैं। इन सबके होते हुए भी धारा-सभा के अधिकार बहुत सीमित रखे गये हैं तथा सरकार-द्वारा मनोनीत सदस्यों में हरिजन, लिंगायत, महिलायें तथा पत्रकार और ठेकेदारों पर विशेष ध्यान देने की योजना है। हिन्दू और मुसलमानों की संख्या (निर्वाचित एवं नामजद दोनों प्रकार के सदस्यों में) बराबर रखना भी आवश्यक बतलाया गया है। इस धारा-सभा के सदस्यों को प्रश्न पूछने का अधिकार है परन्तु प्रश्न से सम्बन्धित अन्य प्रश्न पूछने का अधिकार अभी नहीं दिया गया है। कुछ विषयों में बिल पेश करने का अधिकार केवल सरकारी सदस्यों को ही है। कुछ विषयों में

हैदराबाद रियासत के वर्तमान प्रधान-मन्त्री नवाब छतारी।

सरकार की अनुमति लेकर ही बिल पेश किये जा सकते हैं। कुछ विषयों में धारा-सभा को बिना अनुमति लिये भी बिल पेश करने का अधिकार है। निश्चय ही ऐसी धारा-सभा द्वारा "स्वराज्य की छाया" प्राप्त नहीं होती। हाँ, इस धारा-सभा को एक वाद-विवाद क्लब कहा जा सकता है, जहाँ कुछ लोग सरकारी कारनामों पर विचार-विनिमय कर सकें।

निम्न विषयों पर धारा-सभा को न किसी प्रस्ताव रखने का अधिकार है और न प्रश्न पूछने का :—

(१) हिज एक्जोल्टेड हाईनेस, उनका घर और परिवार। (२) सर्फ़खास के सम्बन्ध में हिज एक्जोल्टेड हाईनेस के अधिकार। (३) हिज एक्जोल्टेड हाईनेस का ब्रिटिश राज्य के शासक से सम्बन्ध अथवा किसी दूसरे राज्य, रियासत या उसके शासक से सम्बन्ध। (४) बरार के सम्बन्ध में समस्यायें। (५) आला हजरत का पाईगाहों से सम्बन्ध। (६) कार्यकारी मंडल (Executive Council) (७) राज्य की सेना व पुलिस; खुफिया पुलिस तथा उसकी विशेष शाखा। (८) आला हजरत का जागीरों और समस्थानों से सम्बन्ध। (९) आला हजरत का भूमि तथा धन दान करने का अधिकार। (१०) आला हजरत-द्वारा दिये गये विशेषाधिकार। (११) दरबार तथा उसके रीति-रिवाज; उपाधियाँ, (१२) आला हजरत का विशेषाधिकार का प्रयोग; क्षमा का अधिकार। (१३) राज्य की भाषा। (१४) उपरोक्त विषयों के सम्बन्ध में किया गया व्यय अथवा

शेष पृष्ठ १० पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

एक अनुभव

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

रामदीन कुछ यों ही था। उसकी लछमन से जान-पहचान हुई। धीरे-धीरे घनिष्ठ मित्र बनकर घरेलू बन गये। रामदीन लछमन की पत्नी रामप्यारी की ओर आकर्षित हो उठा। उसने कुछ अनुभव तो किया किन्तु उसे रामप्यारी पर प्रगट करने का साहस न हुआ। एकाएक रामप्यारी की मृत्यु हो गई और रामदीन आज भी हृदय में रामप्यारी का अनुभव छिपाये हुए हैं। कहानी अत्यन्त भावपूर्ण है। मानव-जीवन की अनुभूतियों का चित्रण अत्यन्त सुन्दर है।

रामदीन कुछ सोचता हुआ घर से बाहर की ओर जा रहा है।

जीवन के अनेक पड़ावों पर बैठ-उठकर रामदीन अब ठीक चौराहे पर आकर टिक गया कि जहाँ से वह बहु-रंगी दुनियाओं को एक ही साथ देख पाता। अपने जन्म के बारह वर्ष बाद ही से वह अकेला और एकाकी बन गया। जीवन का शाश्वत और आध्यात्मिक पहलू उसने कभी नहीं देखा, समाज और अपने जीवन का नैतिक पहलू भी उसे नहीं दिखाई दिया। यही कारण था कि रामदीन सदा ही अपने में एक अभाव, उत्पीड़ा और क्रन्दन का भाव लिये रहा। वह देखता कि जीवन उसके पास भी था। उसके हृदय के तारों में भी मधुर गीत भरा था। पर, उन गीतों को, उसके मानस की उस मधुर तान को जब स्वयं वही नहीं सुन सका, तो दूसरा और कौन उसे सुनने के लिए आ सकता था और उसे मिल सकता था?

लेकिन समय आया और रामदीन बहुत से शहरों का चक्कर मारकर दिल्ली में आ बसा। दीखता था कि वह थक भी गया। इधर-उधर फिरते-फिरते उसका मन भी भर गया। दिल्ली में वह जिस मुहल्ले में आकर बसा, वहीं पर, एक दिन एकाएक उसका लछमन नाम के व्यक्ति से परिचय हो गया। रामदीन की तरह, लछमन भी गाँव का वासी था। पत्नी-सहित दिल्ली में रहता और एक लाला की दूकान पर मुनीमगीरी करता था।

जब रामदीन उस मुहल्ले में आकर बसा, तो उसके बाद ही, एक दिन उसने लछमन की पत्नी को देखा। देखते ही, उसने अनुभव किया कि लछमन और उसका विवाह शायद अभी हुआ है। उसने यह भी देखा कि जैसे उस नारी में अपने वर्तमान के प्रति असन्तोष और भविष्य को सुखकर बनाने तथा देखने का भाव भी निहित था। निदान, जब लछमन और रामदीन का परिचय हो गया और दोनों का एक-दूसरे के पास उठना-बैठना आरम्भ हो चला, तो सुगमता से रामदीन का लछमन के घर में भी प्रवेश हो गया।

जब-तब लछमन के घर में रामदीन जाकर बैठता, तो वह पर्दे की आड़ में बैठी और अपने कामों में लगी हुई लछमन की पत्नी का मुंह देखने की चेष्टा करता। वह युवा पत्नी जब अपनी चंचल और हँसोड़ आँखों से उसकी ओर देखती और मुस्कराती, तब रामदीन नारी के उस विमल रूप को पाकर, जैसे बरबस ही, अपने-आप में खो जाता। उसके हृदय के तारों पर कोई उँगली फेर देता और उनमें से जो मधुर स्वर निकलता, उससे वह तन्मय हो जाता।

यों ही कुछ समय तक लछमन की पत्नी का पर्दे के पीछे से आँखों से मुस्कराना और हँसना चलता रहा। यह देखकर निश्चय ही रामदीन ने समझा कि वह जितना सुन्दर है, उसका महत्त्व इस नारी ने समझ लिया है। इसके मन में भी वही बात है कि जिसका उसने किताबों और किस्से-कहानियों में वर्णन सुना है। भले ही, वह उसे व्यक्तिगत रूप से नहीं देख पाया, किन्तु अब उसी को देख-सुनकर उसमें नित्य अपने प्रति मोह और नारी के प्रति त्याग तथा सन्निहित होने का भाव भी समाविष्ट होने लगा।

किन्तु वह युवा और सबल लछमन इस ओर से अनजान था। वह रामदीन के प्रति ऐसी धारणा बना लेने का कोई कारण ही नहीं पाता कि रामदीन उसकी पत्नी को अच्छी दृष्टि से नहीं देखता। उसकी पत्नी रामप्यारी के मन में अपने पति के प्रति विद्रोह और रामदीन के लिए संलग्नता का भाव भी आ गया हो, ऐसा उसके मन के परमेश्वर ने एक दिन भी उसका अनुभव नहीं किया।

निदान, दोनों मित्रों का आपस का व्यवहार, उठना-बैठना और खाना-पीना बिना विरोध के चलता और चला जाता था।

रामदीन अब तक अपनी कमाई का प्रायः समूचा भाग स्वयं अपने आप पर ही व्यय कर देता और सदा खाली हाथ बना रहता, परन्तु अब आये दिन, किसी न किसी बहाने वह लछमन की पत्नी के लिए कोई न कोई वस्तु भेंट-स्वरूप ले आता। जब-तब लछमन इस पर कुछ कहना चाहता, तो रामदीन उसे मीठी झिड़की देकर कह देता—'भाई, एक तो जीवन में तुम मिले हो, अपने घरू जैसे, फिर भला क्यों न करूँ मैं यह सब! न, मुझे यही सोहाता है। बहू है, इसे मेरे द्वारा भी कुछ ले आना, तुम्हें क्यों नहीं सोहाता?'

इतना सुनकर लछमन निरुत्तर हो जाता। उसी समय रामदीन प्रसन्न होकर उसकी पत्नी को सुनाकर कह देता—'बहू, आज तो हलुआ खाना है...पूरी।' बस उस दिन रामदीन और लछमन को पूरी-हलुआ खाने को मिल जाता। वह दिन उनका हँसी-खुशी और स्वादिष्ठ खाना खाने में बीतता।

ऐसे समय, लछमन की बहू रामप्यारी के मन में भाव आता—'हाय! बेचारा अकेला है, यह रामदीन! मर्द-मानुष है, कभी तो घर का खाना खाने के लिए मन कर ही आता है।....और यह क्या, भला ऐसा भी क्या? किन्तु क्या इतना पैसा खर्च करना मुझे अच्छा लगता है। कहेंगी उनसे—लछमन से—इनसे कह दें, जो कमाते हैं, उसको खर्च कर देना, इन्हें क्यों अच्छा लगता है।

* * *

एक दिन लछमन ने रामप्यारी से कहा—'रामदीन तो अब हमारा सगा-सम्बन्धी जैसा बन गया है। कभी-कभी अपनों से ग़ैर अच्छे साबित होते हैं, ऐसा ही है, यह रामदीन! अगर तुम कहो तो उसका खाना भी यहीं बन जाया करे। वह बाजार में खाना खाता है। उससे बच जाये।'

रामप्यारी ने यह सुना और स्वीकार कर लिया।

उसी दिन लछमन ने रामदीन से कह दिया कि वह खाना यहीं घर पर खाया करे। उसके मकान में ऊपर कमरा खाली हुआ है, वह उसमें आ जाये। फलस्वरूप, रामदीन उसी मकान में आ गया और एक दो बार इनकार करने के बाद खाना भी वह लछमन के चौके में खाने लगा। एक प्रकार से अब वह लछमन के घर का ही एक सदस्य बन गया।

इस अवस्था में प्रायः ऐसा भी अवसर आता कि जब लछमन घर पर नहीं होता और रामदीन कोई वस्तु चाहता, तो वह रामप्यारी से माँग लेता। यों ही वह बातों का प्रसंग चलाता। अब तक रामप्यारी ने उससे बोलना आरम्भ नहीं किया था, किन्तु अब वह भी आरम्भ हो गया। ऐसे अवसर पर जब रामदीन उसकी हँसती और मुस्कराती हुई मधुर आँखों को देखता और उसके सुन्दर रूप को निकट से देख पाता, तो निश्चय ही, उसे अपने जीवन में अपूर्व और अनोखा सुख अनुभव होता। उसे लगता कि रामप्यारी जाने कितनी अलभ्य, अमोल और दुष्प्राप्य वस्तु के रूप में उसे देखती है। उस समय वह यह भी भूल जाता कि रामप्यारी उसके मित्र की पत्नी और उन दोनों के विश्वास पर ही उसकी वहाँ साख बँध सकी है। लेकिन उसकी भी विवशता यह थी कि उसने तभी तो ऐसा अवसर पाया कि जब वह एक सुन्दर, सुकोमल और मुस्कराती हुई, तथा सुवास भरे यौवन की दहलीज पर खड़ी हुई नारी से बात कर सका और उसकी सुन सका। उसके मन में केवल एक भाव था और वह जैसे पुरातन से ही उसके मानस में उद्घोष करता आया था कि जब कोई नारी हँसती अथवा मुस्कराती है, तो बरबस ही, वह अपने मन में प्यार का मीठा-सा अभिसार लिए कुछ कहना चाहती है। पर रामप्यारी कहती नहीं, शायद नहीं कह पा रही है, यही उसकी कठिनाई है और रामदीन में इतना साहस कहाँ कि वह स्वयं ही कहे और बताये—'ऐ, रामप्यारी! देख, मैं तुझे प्यार करता हूँ और मानता हूँ!' निःसन्देह उसने अनेक बार ऐसा साहस किया। मुंह तक बात को लाया, आँखों से भी कहना चाहा, पर वह कह एक दिन भी नहीं सका—नहीं!

उन्हीं दिनों एकाएक रामप्यारी बीमार पड़ी। जब देर तक वह बुखार-खाँसी में पड़ी रही, तो वैद्यों-द्वारा उसे तपेदिक़ की बीमारी बता दी गई। बेचारे लछमन के ऊपर जैसे

रामप्यारी ने लछमन से कहा कि वह अपने हाथ से रोटी क्यों बनाते हैं?

गाज गिर पड़ी। उस अवस्था में रामदीन ने तन-मन और धन से उसकी सहायता की। कभी ऐसी भी स्थिति आती कि रामदीन को ही रामप्यारी को पाखाना-पेशाब कराने के लिए उठाना-बैठाना पड़ता। अब उसके समक्ष पर्दे की प्रथा तो रह नहीं गई थी। इसलिए मन से न चाह कर भी, उस अवस्था में रामप्यारी उसका सहारा पाती और मन ही मन उसकी कृतज्ञ बन जाती। कभी वह रामदीन से कह भी देती—आपने यह किया...इतना....

उस समय विनम्र और विचलित होकर रामदीन, रामप्यारी की दयनीय अवस्था पर टिक जाता और नितान्त ममतामय बनकर कहता—'बहू, भला इसमें क्या....न, कुछ नहीं।'

और तब, रामदीन उस हड्डियों के ढाँचे में रामप्यारी को देखकर जैसे अपनी छाती पर घूंसा-सा खाता और तड़प जाता। वह उसी अवस्था में कह देता—'हाय! हाय! अब ऐसी हुई रामप्यारी...ऐसी!.....

वह तब इच्छा करते हुए भी रामप्यारी की ओर नहीं देख पाता—नहीं।

लेकिन जब एक दिन वह अन्य व्यक्तियों के साथ रामप्यारी को चिता पर सुलाकर घर आया, तब, उस विक्षिप्त हुए, लछमन के पास बैठकर चिता के जलने और रामप्यारी के हाड़-मांस के चट-चट चटखने की कल्पना करता हुआ अपने आप बोला—'तो अब....हाँ, यही था उसका अन्त...सबका ही!.....

एक अनुभव था, जिसे सहेजकर उसने अपने मन के गहनतम अन्धकार में उतार लिया था।

दर्ज़ी-विज्ञान

यह पुस्तक सरल हिन्दी में शिल्प-कला के सुप्रसिद्ध एवं विद्वान् प्रोफेसर द्वारा प्रकाशित हुई है। सिलाई-कटाई सीखने के लिए, यह सचित्र और वैज्ञानिक ढंग की नई पुस्तक है। इसके ३ भाग हैं। तीनों भागों का लागत मूल्य सिर्फ़ ४॥) है।

पता—हिन्दू टेलरिंग कालेज
पीलीभीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ्रांस के नये चुनाव में क्या हुआ?

(पेज ७ का शेष)

देखने को मिली। मो० डिगाल ने पराधीन जनता की पीड़ा का अनुभव नहीं किया था क्योंकि उस समय वे विदेश में विराजमान थे। इसलिए वे दूसरे देशों की पराधीन जनता की कराह कैसे सुन सकते थे? युद्धकाल होने के कारण नये चुनाव नहीं हो सकते थे इसलिए जनता अपने सही अभिमत का प्रदर्शन नहीं कर सकती थी। व्यवस्था स्थापित करने के लिए उस समय कामचलाऊ सरकार बन गई थी लेकिन जब डिगाल साहब ने योरप में उभरती हुई जनतंत्र की शक्तियों का साथ न देकर वाशिंगटन और लन्दन के चक्कर लगाने शुरू किये तो जनता को उनके असली रूप का पता लगने लगा। बाद के कम्युनिस्ट पार्टी और प्रान्तीय धारा-सभाओं में जनता प्रगतिशील विचारवालों को भेजने लगी। लेकिन तब भी डिगाल को अपने मित्र अमेरिका और ब्रिटेन की मदद का ज्यादा भरोसा था, इसलिए वे जनमत की ओर कोई ध्यान नहीं देते रहे।

फ्रांस का दूसरा प्रमुख दल सोशलिस्ट दल है। सन् ३७ के चुनाव में इसने काफ़ी बहुमत प्राप्त किया था। इसका असर कम्युनिस्ट पार्टी से ज्यादा था। इसके नेता मो० ब्लम ब्रिटिश लेबर पार्टी की मदद से कम्युनिस्टों के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकना चाहते हैं और इसी डर से वे डिगाल की साम्राज्यवादी नीति के खिलाफ़, कम्युनिस्टों के साथ संयुक्त मोर्चा नहीं बनाते। नेताओं की इस नीति के बावजूद साधारण सोशलिस्ट कम्युनिस्ट कार्यक्रम से प्रभावित होकर अपने नेताओं के ऊपर दोनों दलों के मेल के लिए जोर डालते रहते हैं।

युद्ध-काल में जनता का साथ देकर कम्युनिस्ट पार्टी सबसे ज्यादा लोकप्रिय हो गई है। उसके दस लाख सक्रिय सदस्य हैं। उसके अखबार ही सबसे ज्यादा संख्या में पढ़े जाते हैं। पिछले दिनों तक मन्त्रि-मण्डल में उसको कोई महत्त्वपूर्ण पद नहीं मिलता था, इसलिए यह सरकारी नीति-निर्धारण में अपना असर नहीं डाल सकती थी। इन दिनों इसके पास 'एयर' और 'हेल्थ' (वायुसेना और स्वास्थ्य) जैसे छोटे पद थे फिर भी उसने डिगाल सरकार की 'लेबनान' और 'हिन्द चीन' के मसले पर कड़ी निन्दा की।

डिगाल की अध्यक्षता में जो काम-चलाऊ सरकार बनी थी उसने वादा किया था कि वह शीघ्र ही उद्योग-धन्धों का राष्ट्रीय-करण करेगी, जर्मनपक्षीय पूंजीपतियों और अफ़सरों को दण्ड देगी, लेकिन उसने यह कुछ नहीं किया। इसलिए नये चुनाव होने पर जनता ने डिगाल की नीति के प्रति अपना मत प्रकट कर दिया। कम्युनिस्टों को ४५,५६,००० वोट और १५१ सीटें मिलीं। सोशलिस्टों को ४४,८८,००० वोट और १३९ सीटें मिलीं और डिगाल की पार्टी एम० आर० पी० को ४०,३२,००० वोट और १४२ सीटें मिलीं। किसी पार्टी का एकमात्र बहुमत न होने के कारण संयुक्त सरकार बनाने की बात आई। डिगाल ने कम्युनिस्टों के साथ संयुक्त सरकार बनाना इनकार कर दिया क्योंकि वह सबसे अधिक बहुमत में होने के कारण वैदेशिक मन्त्री, अर्थ-मन्त्री या गृहमन्त्री जैसे कोई महत्त्वपूर्ण पद की माँग करते थे और जो डिगाल देने को तैयार नहीं थे। फिर सोचा गया कि यदि सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट मिलकर चाहें तो डिगाल के बिना भी सरकार बना सकते हैं लेकिन सोशलिस्ट अपना कोई स्पष्ट निर्णय नहीं कर सके। अन्त में सब पार्टियों को बराबर-बराबर संख्या में पद देकर सरकार का निर्माण हुआ है जो फ्रांस का भविष्य विधान बनायेगी। डिगाल प्रधान-मन्त्री वैदेशिक मन्त्री विडौल्ट (उन्हीं की पार्टी के), अर्थमन्त्री, गृहमन्त्री, सोशलिस्ट पार्टी के और 'आरमामेंट' मन्त्री (सामरिक साधन) कम्युनिस्ट बनाये गये हैं। कम्युनिष्ट नेता मो० थोरेज को भी मन्त्रिमण्डल में शामिल किया गया है।

संयुक्त सरकार की इस बनावट से फ्रांस की वर्तमान नीति में शीघ्र परिवर्तन की आशा करना तो व्यर्थ है। लेकिन जन-वादी हितों के लिए लड़नेवाली कम्युनिस्ट पार्टी के शक्तिशाली होने के कारण मो० डिगाल और उनके हिमायती मो० ब्लम मनमानी नहीं कर सकेंगे। हिन्द-चीन के जन-स्वातन्त्र्य-आन्दोलन के प्रति कम्युनिस्ट पार्टी ने अपना रुख स्पष्ट कर दिया है। अभी हाल के वक्तव्य में कम्युनिस्ट पार्टी के मन्त्री ने हिन्द-चीनवासियों के स्वातन्त्र्य-युद्ध के प्रति सहानुभूति प्रकट की है और आश्वासन दिया है।

इस तरह हम देखते हैं कि अन्य योरोपीय देशों की भाँति फ्रांस में भी जन-वादी आदर्शों की समर्थक शक्ति बढ़ती जा रही है और डिगाल के प्रतिक्रियावादी समर्थकों की ताक़त कम होती जा रही है।

धारा-सभाओं के अधिकारों की मखौल

(पेज ८ का शेष)

नियुक्तियाँ, "Political charges" वेतन आदि, पेंशन, सार्वजनिक ऋण और Sinking Fund; राज्य के दान आदि। (१५) इन विषयों के सम्बन्ध में जाँच व आँकड़े। (१६) इस क़ानूनचा के किसी अंश का सुधार। (१७) अन्य कोई विषय जिसकी शासक-द्वारा सूचना दे दी जावे।

निम्न विषयों के सम्बन्ध में क़ानूनी मसविदे धारा-सभा के किसी भी सदस्य-द्वारा उपस्थित किये जा सकते हैं यदि उनमें धार्मिक सुधार का अंश न हो।

(१) कृषि, (२) मछली पालना, (३) व्यापार, (४) उद्योगों का विकास, (५) कारखाने, (६) मजदूरों की उन्नति, (७) मजदूरों के खानों में काम करने के नियम, (८) बेकारी व ग़रीबों की सहायता, (९) भिखारी, (१०) मार्ग (रेल व वायुयानों को छोड़कर), (११) पानी व सिंचाई, (१२) शिक्षा (उसके माध्यम का प्रश्न छोड़कर), (१३) पुस्तकालय व अजायबघर, (१४) राज्य की भूगर्भ-सम्बन्धी, वनस्पति व जीव-विज्ञान-सम्बन्धी पड़ताल; वेधशाला, (१५) व्यापारिक-संघ, (१६) साहूकारी, (१७) बीमा, (१८) साहित्यिक और वैज्ञानिक समितियाँ तथा सहयोग-समितियाँ, (१९) स्वास्थ्य और सफ़ाई; जन्म-मरण, (२०) मवेशी अस्पताल, (२१) पागलपन व उसके अस्पताल, (२२) छूत की बीमारियाँ, (२३) मिलावट; बाँट, (२४) जानवरों पर अत्याचार रोकना, (२५) धर्मशालायें व होटल, (२६) प्राचीन स्थानों की रक्षा, (२७) डाकख़ाना, (२८) लेखक के अधिकार आदि, (२९) भूमि प्राप्त करना, (३०) सार्वजनिक भवन आदि, (३१) नाटकालय व सिनेमा, (३२) जुआ, (३३) विवाह, तलाक़ आदि, (३४) वसीयत-नामा, (३५) जायदाद का क्रय-विक्रय, (३६) रजिस्ट्री, (३७) ट्रस्ट, (३८) ठेके, (३९) स्व-निर्णय, (४०) दिवालिया होना, (४१) अन्याय, (४२) शपथ लेना, (४३) दीवानी के नियम, (४४) किराया और भूमि-कर, (४५) अदालत की फ़ीस, (४६) वकील और डाक्टर, (४७) दान, (४८) हुण्डी आदि, (४९) कचहरियों के अधिकार, (५०) विशेष अध्ययन, (५१) इन विषयों से सम्बन्धित अपराध, (५२) इन विषयों से सम्बन्धित आँकड़े, (५३) शासक-द्वारा प्रस्तावित अन्य कोई विषय।

निम्नाङ्कित विषयों में केवल सरकार-द्वारा ही मसविदे उपस्थित किये जा सकते हैं:—

(१) रेल, वायुयान व तार, (२) हथियार, (३) शान्ति, (४) राज्य में प्रवेश व निषेध (बाहरवालों का), (५) कचहरियों के अधिकार व क्षेत्र, (६) अस्तियात, (७) खानें, (८) सरकारी बीमा व बैंक, (९) शासन-प्रबन्ध, (१०) स्थानीय स्वराज्य, (११) मुद्रा, (१२) कर, (१३) मनुष्य-गणना, (१४) शासक-द्वारा प्रस्तावित अन्य विषय।

इन तीनों सूचियों को देखकर धारा-सभा का कार्यक्षेत्र और भी स्पष्ट हो जाता है। इस धारा-सभा के लिए मताधिकार किन-किन को है, इस सम्बन्ध में इस वर्ष कुछ सूचनायें सरकारी गजट में प्रकाशित हुई हैं तथा मतदाताओं की सूचियाँ उनके आधार पर तैयार की जा रही हैं। परन्तु इस धारा-सभा को वास्तविक अधिकार शून्य के बराबर होने के कारण जनता में चुनाव के प्रति कोई उत्साह नहीं दिखलाई देता।

सम्भव है भारत-सरकार-द्वारा कुछ आवश्यक सुधार होने पर हैदराबाद में भी उसी ढंग के सुधार किये जावें। यह योजना ६ वर्ष पुरानी है। इन ६ वर्षों में संसार की कायापलट हो चुकी है। यदि इन सुधारों से केवल धारा-सभा में किस प्रकार विवाद करना चाहिए यह सिखलाना ही अभीष्ट है, तब तो इनका कुछ महत्त्व हो सकता है, परन्तु यदि इनके द्वारा जनता को शासना-धिकार देने की कल्पना है तो वह केवल एक मृगतृष्णा की भाँति है। न कुछ से कुछ अच्छा है, केवल इसी दृष्टि से हम इन सुधारों का स्वागत कर सकते हैं।

फ्रांस का इतिहास

में ईसा पूर्व २२५ से लेकर सन् १९२० ईसवी तक का इतिहास है। इसमें वहाँ की राज्यक्रान्ति के राजवंश, फ्यूडल प्रणाली, स्वतंत्र, राजतंत्र, शत-वर्षीय युद्ध, योरप में फ्रांस के प्रसार, राजवंश के उद्धार, सन १८४८ की क्रान्ति, राष्ट्रीय सभा और प्रजातंत्र आदि का वर्णन उत्तमता से किया गया है। पुस्तक में चित्र भी हैं। अच्छे कागज पर छपे साढ़े चार सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ४) चार रुपये।

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुप्रसिद्ध अभिनेत्री और संगीतज्ञा श्रीमती शोभना समर्थ

फिल्मी-जीवन और अभिनय-कला पर एक मनोरञ्जक वार्ता

लेखक, श्री उमेश जोशी

(२)

प्रश्न—विवाह की परिभाषा क्या है—इसका रूप कैसा होना चाहिए? क्या भारतीय नारी के लिए विवाह करना जरूरी है?

उत्तर—पुरुष और नारी के बीच के व्यवधान को आबद्ध करनेवाले पवित्र प्रेम का नाम ही विवाह है! प्रेम-बन्धन से ही हम पुरुष और नारी के हृदयों को जकड़कर इस प्रकार बाँध लेते हैं कि वह कहीं जीवन के चौराहे से भागकर विलास के अड्डों तक न चले जावें? जहाँ फ़ैशन की तितलियाँ अपनी चटकीली बहार दिखला रही हैं, वहाँ सुन्दरता चन्द चाँदी के टुकड़ों पर बिक रही है, जहाँ रंगीन मुस्कराहट का आनन्द लेने के लिए विवाह की सुदृढ़ जंजीरों को उच्छृंखल भावनाओं के असहनीय प्रहारों से तोड़ा जाता है, ऐसी रंगीन दुनिया से बचने के लिए विवाह का ताना-बाना स्त्री-पुरुष के बीच बुना जाता है। इस पर भी यदि इन्सान अपने को वासना के खँडहर में गिरने से न बचा सका, तो ऐसा विवाह ही होना व्यर्थ है। स्त्री-पुरुष की आकांक्षाओं की पूर्ति विवाह के बाद ही हो जानी चाहिए। यदि नहीं तो स्त्री-पुरुष के बीच कलह की दीवाल खड़ी हो जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि आपस में अविश्वास का जाल बिछ जाता है। यही अविश्वास दाम्पत्य-जीवन के लिए घातक हो जाता है। आजकल तलाक का सवाल विशेष उठ रहा है, क्योंकि आज के विवाह वास्तव में विवाह नहीं हैं। वह तो गुड़ियों के खेल हैं। फिर गुड़ियों के खेल में सम्बन्ध विच्छेद का सवाल उठे तो कोई बेजा नहीं है? जिस विवाह की बुनियाद मानव-हृदय की पवित्र अनुभूति पर रक्खी गई हो, वहाँ तलाक का प्रश्न कभी उठ ही नहीं सकता। तलाक का आविर्भाव वासना के दलदल से उठता है—जिस विवाह की बुनियाद वासना की नींव पर रक्खी गई हो—वह विवाह हम भारतीय नारियों के लिए जरूरी नहीं है। उससे तो कुमारी रहना लाख दर्जे अच्छा है। आजकल अस्सी फीसदी विवाह वासना-पूर्ति के लिए ही किये जाते हैं। कभी-कभी वासना को ही लोग प्रेम समझ बैठते हैं। मैं यहाँ प्रेम की भी परिभाषा बतलाये दे रही हूँ—प्राणों में प्राणों का परिचय, प्राणों से प्राणों का परिणय, प्राणों में प्राणों की लय,—दो का खिचकर एक हो जाना ही प्रेम का चरम परिणाम है—फिर बतलाइए इस तरह के प्रेम में तलाक का सवाल कैसे उठ सकता है?

प्रश्न—क्या नारी की भूल-चूक को माफ़ करना समाज का धर्म नहीं है?

उत्तर—समाज का धर्म, पुरुष या नारी चाहे जो भी हो सभी की भूल-चूक माफ़ करना होना चाहिए लेकिन आज ऐसा नहीं है। नारी की भूल-चूक माफ़ करना आज के समाज का धर्म नहीं है। पुरुष चाहे जितनी भी ग़लतियाँ करे उसके सब कसूर माफ़! हिन्दू-समाज की यह भेद-भाव की नीति मुझे कम से कम पसन्द नहीं। मैं तो यह चाहती हूँ कि नारी और पुरुष दोनों के साथ समानता का बर्ताव किया जावे। समाज के लिए दोनों ही बराबर हैं। दोनों के मेल की बुनियाद पर ही समाज का ढाँचा बनता है। दुनिया में भूल-चक किससे नहीं होती? जब यह चंचल मन लगाम तुड़ाकर जवानी के मैदान में चौकड़ी भरता है, तब कौन ऐसा इन्सान होगा, जिससे कुछ न कुछ भूल-चूक न हो? ऐसा कौन वीर है जो कि यौवन की आँधी में डट सके—थोड़ा बहुत फिसल जाना ही पड़ता है और जो फिसलकर संभल जाये तो फिर क्या उसको सहारा देना समाज का धर्म नहीं है? मैं पूछती हूँ समाज के ठेकेदारों से, जो समाज मनुष्य की कमजोरियों पर नजर रखकर अपना क़ानून नहीं बनाता, वह पत्थर का समाज इस जमाने में दकियानूसी ही रहेगा। आज हिन्दू-समाज में ग़लती करनेवालों के लिए जगह नहीं। जिसने ग़लती की वह हमेशा के लिए 'कलंकी' बना दिया गया। हिन्दू-समाज घाव करना जानता है घाव भरना नहीं।

आज ईसाइयों का स्त्रियों के लिए यह दावा ठीक-सा ही है—"तुम्हारी शराफत की फटी चादर को रफू करने की मशीन हिन्दू के घर में नहीं मिलेगी—तुम्हें रफू कराना है, तो हमारे घर आओ—वह रफू होगा—कि सूत से सूत मिल जाय—फिर तुम इसे सर पर ओढ़कर शरीफ़ों की महिफिल में बेखटके बैठ सकती हो।"

प्रश्न—हिन्दूपन बड़ा है या मानवता? इन दोनों में से किसकी आज देश को आवश्कता है?

उत्तर—सबसे पहले मैं "मानव" होना श्रेष्ठ समझती हूँ। इसके बाद हिन्दू होना। इंसानियत पहले बाद में धर्म। जिस धर्म में इंसानियत नहीं—वह धर्म जिन्दा रहते हुए भी मुर्दा है। जिस धर्म के हृदय में मानवता है वही धर्म गौरव के साथ जिन्दा रह सकता है। आज देश को "मानवता" की अधि जरूरत है। हिन्दू-समाज पतन की ओर इसीलिए अग्रसर हो रहा है कि उसमें "मानवता" लेशमात्र भी नहीं, पूज्य गांधी जी के प्रबल प्रयत्न से अब कुछ हिन्दुओं के अन्दर "मानवता" आती जा रही है लेकिन अभी यह दाल में नमक के बराबर है। जब तक मानवता का अनुपात समाज की आत्मा में बढ़ाया न जावेगा, तब तक हिन्दू-समाज विकसित नहीं हो सकता।

आज हमने जिन अछूतों को कूड़ा समझकर बुहार दिया हैउन हैं दूसरों ने उठाकर अपनी छाती से लगा लिया है। यदि हिन्दू-समाज इनको अपना बनाकर रखता तो यह बेचारे कभी उससे जुदा न होते। आज हम उन्हीं ईसाइयों का स्वागत करते हैं क्योंकि उन्होंने अपना धर्म बदल दिया। आज वह हिन्दू न रहे इसीलिए हम उनसे बड़े फक्र के साथ हाथ मिलाते हैं। क्या हिन्दू रहना ही पाप है? बन्धन है? गिरजे की साया में जाकर आज कितने ही अछूतों ने अपनी काया-पलट कर ली। यदि उनकी काया-पलट मन्दिर की पवित्र छाया में होती तो वह क्यों चर्च की छाया में जाते? मन्दिर की छाया ने तो इनको चमार-भंगी ही बनाये रखना श्रेष्ठ समझा। अब बतलाइए कौन उदार हुआ, मेरी राय में हिन्दूपन से मानवता बड़ी है, क्योंकि हिन्दूपन की बुनियाद मानवता के धरातल पर स्थिर है।

प्रश्न—आप फिल्मी-संसार में क्यों आईं? क्या किसी आदर्श-पूर्ति के लिए आपने सिनेमा की दुनिया में प्रवेश किया है?

उत्तर—मैं फिल्मी-संसार में ही क्यों आई—इसका जवाब मैं स्वयं नहीं जानती। मैं इस पर अकेले में सोचती हूँ लेकिन उलझन में पड़ जाती हूँ। मेरे सभी रिश्तेदार यहाँ तक मा-बाप भी सिनेमा के विरुद्ध थे। सिनेमा का नाम लेना वह बुरा समझते थे। उस वक्त मेरा यह सोचना कि मैं सिनेमा प्रवेश करूँगी कितना अत्याचार था? क्या मैंने किसी आदर्श-पूर्ति के लिए सिनेमा-प्रवेश किया है? जब मैं इस पर सोचती हूँ तब सिवाय निराशा के और कुछ मेरे पल्ले नहीं पड़ता। वास्तव में यदि देखा जाये तो मैं जिन्दगी की ऐसी विचित्र परिस्थितियों में पड़ गई थी कि मुझे सिनेमा की दुनिया में आना ही पड़ा। उस वक्त मुझे यह स्वप्न में भी ख्याल न था कि मैं एक सफल अभिनेत्री बन सकती हूँ। वैसे तो मैं अब भी नहीं सोचती कि मैं एक सफल अभिनेत्री बन गई हूँ। मेरे पिता काफी धनाढ्य थे। एक-मात्रा पुत्री होने के कारण उन्होंने मेरा लालन-पालन बड़ी शान-शौकत से किया, मुझे खूब पढ़ाया, लिखाया। मेरी प्रसन्नता ही उनकी प्रसन्नता थी। मैं यह जानती थी कि मेरा सिनेमा-प्रवेश करना मेरे पिता जी को दुःखदाई होगा। इसलिए कभी मैं उनके सामने यह प्रसंग उठाती ही नहीं थी। मैं सिनेमा में किस प्रकार आई, इसकी एक छोटी-सी कहानी है। उसको मैं बाद में बताऊँगी हाँ, आजकल मैंने अवश्य अपना एक आदर्श बना लिया है। मैं उन्हीं फिल्मों में कार्य करना पसंद करती हूँ जो मानवता की सच्ची परिचायक हो।

'संगम' फिल्म में सुप्रसिद्ध अभिनेत्री मीनाक्षी और अभिनेता विनायक।

प्रश्न—सिनेमा का वातावरण आजकल अच्छा है या बुरा?

उत्तर—जो बुरा है, उसके लिए सिनेमा भी बुरा है। जो अच्छा है, उसके लिए सिनेमा भी अच्छा है। सिनेमा खुद कोई बुरा नहीं है। उस पर तो जैसा रंग फेंका जायेगा वैसा ही वह बन जायेगा। यह तो इन्सान का दिल है जो कि "अच्छा या बुरा" अपने दिल के अनुसार गढ़ा करता है। एक ही चित्र के दो पहलू होते हैं। यह तो दर्शक के हृदय की स्वच्छता के ऊपर निर्भर है। जिस दर्शक का जितना हृदय स्वच्छ होगा, उसके विचार भी उतने ही स्वच्छ होंगे और जिसके विचार जितने स्वच्छ होंगे, उसकी रुचि भी उतनी स्वच्छ होगी। रुचि के ऊपर ही अच्छाई या बुराई की परिभाषा का निर्माण होता है। मेरे ख्याल से सिनेमा की गन्दगी देखने से पहले दर्शक अपने "मन की गहराई" में ही डुबकियाँ लगायें तो अच्छा है।

प्रश्न—आपका कौन-सा चित्र श्रेष्ठ है? या आप अपने किस चित्र को अधिक पसन्द करती हैं?

उत्तर—मेरा कोई भी चित्र श्रेष्ठ नहीं और न मैं अपने किसी भी चित्र को पसन्द करती हूँ। जनता ने व्यर्थ ही में मुझे ख्याति के सातवें आसमान पर चढ़ा दिया है। वैसे देखा जाय तो मैं इसके योग्य नहीं

पूर्वी देशों में अति प्राचीन तथा सर्वश्रेष्ठ.....

'मृत सञ्जीवनी सुरा' प्राचीन आयुर्वेदिक योग पर निर्मित एक पुष्टिकारक औषध है। इसका अमोघत्व सहस्र सहस्र उपभोक्ताओं द्वारा दीर्घकाल से सिद्ध किया जा चुका है। समय की कसौटी पर कसी जाने के पश्चात् हमारी 'मृत सञ्जीवनी सुरा' ने पूर्वी देशों में अति प्राचीन एवं सर्वश्रेष्ठ होने का अधिकार यथार्थ ही उपार्जन किया है

SAKTI'S
MRITASANJIBANI
SURA

प्रत्येक अवस्था के लिए अति प्राचीन, बलवर्द्धक औषध। अध्यक्ष मोहर बाबू का शक्ति-औषधालय ढाका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूँ--क्योंकि अभी मुझे अपनी प्रतिभा प्रदर्शन करने का अवसर ही नहीं मिला है। मेरा वही चित्र श्रेष्ठ होगा जिसमें मेरे हृदय की अनुभूति समाज को मानवता का सन्देश देगी। ऐसा अभिनव सन्देश जिससे सिसकती हुई मानवता जीवित हो उठे। जिसको सुनकर भूले-भटके ज़िन्दगी के प्रशस्त मार्ग पर आ जायें। जो अभिनय दर्शकों के जीवन का बोझ बन जाता है, या इधर देखा, उधर भूल गये। वह अभिनय अभिनय नहीं है। दरअसल वास्तविक अभिनय वही है जिसको देखकर मानव को कुछ सोचने-समझने को मिले। इस लिहाज से मेरा अब तक का अभिनय कसौटी पर खरा नहीं उतरता। मैं वह अभिनेत्री नहीं हूँ कि जनता की झूठी ख्याति की बाढ़ में अपने व्यक्तित्व को भी बहा दूं? मैं अपने अभिनय का परिणाम--अखबारों के पन्नों में नहीं देखती--बल्कि अपने ही मन से पूछती हूँ। जिस दिन मेरा मन अपने अभिनय से सन्तुष्ट हो जायेगा, उसी दिन मेरा जीवन भी सार्थक हो जायेगा।

प्रश्न--आपकी हाबी क्या क्या है?

उत्तर--मुझे अपने बच्चों से अधिक प्रेम है। मैं भी कभी-कभी उनके साथ बच्चा बन जाती हूँ! और उनको खुश करने के लिए उनके साथ ही खेला करती हूँ। मैं अपना खाली वक्त बच्चों की देख-भाल में ही अधिकतर लगाती हूँ। इसके बाद अमेरिकन-फ़िल्म देखने का भी शौक़ है। क्योंकि उन फ़िल्मों से मुझे आनन्द मिलता है। तैरना व घुड़सवारी दोनों मुझे बहुत भाते हैं। मैं अकसर तैरा करती हूँ। क्योंकि तैरने से मेरे शारीरिक सौन्दर्य का विकास होता है। कुत्तों के पालने का भी मुझे शौक़ है। उनको अपने साथ घुमाने के वक्त ले जाना भी मुझे अच्छा लगता है। फूलों में मुझे गुलाब का फूल अधिक प्रिय है। खुशबूदार अच्छे इत्र का भी मैं प्रयोग करती हूँ। किताबों का पढ़ना भी मुझे अच्छा लगता है। खासतौर से मैं कहानियां ही अधिक पढ़ा करती हूँ। मुझे खाना पकाने का भी शौक़ है।

प्रश्न--भारतीय महिलायें सिनेमा के क्षेत्र में आ सकती हैं या नहीं?

उत्तर--भारतीय महिलायें सिनेमा की दुनिया में आने से क्यों घबड़ाती हैं? वह घड़ल्ले से आ सकती हैं लेकिन अपने दिल से मर्दों का भय निकालते हुए। मर्द उनका बाल भी बांका नहीं कर सकते। बशर्ते कि नारी का व्यक्तित्व कमजोर न हो। सिनेमा में आने से पहले नारी को "सबल" बनना होगा। उसे दूसरे का संरक्षण लेकर जीवन के मार्ग पर नहीं चलना होगा। "अबलापन" ही नारियों के पतन का प्रतीक है। कुलीन घरानों की लड़कियों के लिए सिनेमा का दरवाजा हर वक्त खुला हुआ है--बशर्ते कि उनमें "कला" की सेवा की भावना हो।

प्रश्न--आज़ाद हिन्द-फ़ौज के लिए क्या आपकी सहानुभूति है या नहीं?

उत्तर--भला उसके लिए किसकी सहानुभूति न होगी? वह तो आज़ादी के सिपाही जो ठहरे--उन्होंने राष्ट्र के लिए अपने जीवन की भी परवाह नहीं की है। मैं तो यह भी सोचती हूँ कि उन पर जो मुक़दमा चलाया जा रहा है, वह ठीक नहीं है। क्या अपने देश से प्रेम करना ही पाप है? यदि मैं अभिनेत्री की जगह राष्ट्र-सेविका होती तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती। तब मुझे जीवन का सच्चा आनन्द मिलता--वैसे तो कला भी राष्ट्र का ही अंग है, लेकिन फिर भी मेरी ममता आज राष्ट्रसेविका में अधिक है। यह मेरा सौभाग्य कहाँ था कि मैं देश की दीवानी बनती। फिर भी जो कुछ मुझसे वतन की ख़िदमत होती है उसे मैं करती रहती हूँ। आज़ाद हिन्द-फ़ौज के कमाण्डर इन चीफ़ श्रीयुत सुभाषचन्द्र बोस के लिए भी मेरी अटूट श्रद्धा है। साथ ही साथ मैं परम आदरणीय पंडित जवाहरलाल जी को भी हृदय से चाहती हूँ। मेरी तो यही कामना है कि देश की नैया किसी तरह से गुलामी के कीचड़ से निकले और मुझे पूर्ण विश्वास है कि पंडित नेहरू के होते हुए हम कभी गुलाम नहीं रह सकते।

प्रश्न--आप अपना पारिवारिक परिचय दीजिए?

उत्तर--मेरे पिता का नाम श्रीयुत सिलोत्री था। वह बैंकर थे। मेरे पति का नाम श्री कुमारसेन समर्थ है, जो कि फ़िल्म-डाइरेक्टर भी हैं। उन्होंने "नल-दमयन्ती" चित्र बनाया है। दो लड़कियाँ हैं। लड़का एक भी नहीं। एक लड़की नौ साल की है और दूसरी अभी तो सिर्फ़ दो साल की है। वैसे तो मेरा परिवार काफ़ी लम्बा है यदि मैं पूरे परिवार की दास्तान लिखाने बैठूं तो एक किताब भर जायेगी।

प्रश्न--आपका सबसे पहला चित्र कौन-सा है--और आपने अब तक कौन-कौन से चित्रों में कार्य किया है?

उत्तर--मेरा सबसे पहला चित्र "बिलासी ईश्वर" था। जो कि कोल्हापुर सीनीटोन में निर्मित हुआ। मैंने अनेक चित्रों में अब तक कार्य किया है, जिनके नाम सिलसिलेवार ठीक से याद भी नहीं हैं। उन चित्रों में कुछ के नाम हैं--"राम-राज्य" "भरत-मिलाप" "तारामती" "सती अनसुइया", "विजयलक्ष्मी" "श्री कृष्णार्जुन युद्ध" "नल-दमयन्ती" "वीर कुणाल" और आजकल "आम्रपाली" में मैं कार्य कर रही हूँ।

(लेखक-द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

इधर उधर की

चूड़ो से शृङ्गार

विदेशी स्त्रियों की शृंगार-लिप्सा आजकल बहुत बढ़ती जा रही है। उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नये-नये आविष्कार किये जा रहे हैं। अभी हाल में एक चूड़ीवाले ने ऐसी चूड़ियाँ बनाई हैं जो देखने में तो ख़ूबसूरत हैं ही साथ ही उनसे स्त्रियाँ अपना शृंगार भी कर सकती हैं। चूड़ियों में लिपस्टिक, पाउडर, शीशा, पफ़ इत्यादि चीजें रखी रहती हैं। अतएव जब चाहे तब वे चूड़ी घुमाकर उन्हें काम में ला सकती हैं।

बिगबेन

संसार के सर्वश्रेष्ठ नगर लन्दन में संसार प्रसिद्ध बिगबेन नाम की एक घड़ी है। ठीक समय देने के लिए यह घड़ी संसार में अद्वितीय है। निरन्तर ठीक समय पर ही इसके घंटे बजते हैं। मरम्मत में जो समय लगा है उसके अतिरिक्त साल भर में इसमें केवल १९ बार समय में अन्तर पड़ा है और वह भी केवल एक सेकंड का।

पेट्रोल का अन्वेषण

आजकल संसार के बहुत से काम पेट्रोल से ही चलते हैं। आवागमन के अधिकांश साधनों के लिए पेट्रोल जरूरी है। इतना ही नहीं, अन्य कई कामों में पेट्रोल का प्रयोग होता है। पहले-पहल सन् १८४९ में पेट्रोल का पता लगा। एक दवा बेचनेवाले को कुछ थोड़ा-सा पेट्रोल प्राप्त हो गया। उसने उसे अनेक मर्जों की दवा समझ कर बोतलों में भरकर बेचना शुरू कर दिया। दस वर्ष बाद सबसे पहला पेट्रोल का कुआँ तैयार हुआ।

सिनेमा से रोग-निवारण

रूस में रोग-निवारण के नये-नये तरीक़ों की खोज की जा रही है। प्राफ़ेसर सुखपस्की ने कुछ रोगों के रोगियों की दवा सिनेमा-द्वारा करने का ढंग खोज निकाला है। वे उन्हें ऐसे स्थानों अथवा ऐसे ढंग के दृश्य दिखाते हैं जिससे उनका स्वास्थ्य अपने आप सुधरने लगता है और वे शीघ्र ही रोग से छुटकारा पा जाते हैं। सोवियट यूनियन में ऐसी बहुत-सी फ़िल्में बनाई गई हैं जिनसे रोगों का निवारण किया जाता है।

खाते समय अख़बार

अख़बारों का उपयोगिता दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। खाते समय भी अख़बार पढ़ने के लिए एक ऐसे लैम्प का निर्माण किया गया है जिसके द्वारा अख़बार आसानी से पढ़े जा सकते हैं। विदेशों में ऐसे लैम्पों का होटलों में अब प्रचलन हो गया है।

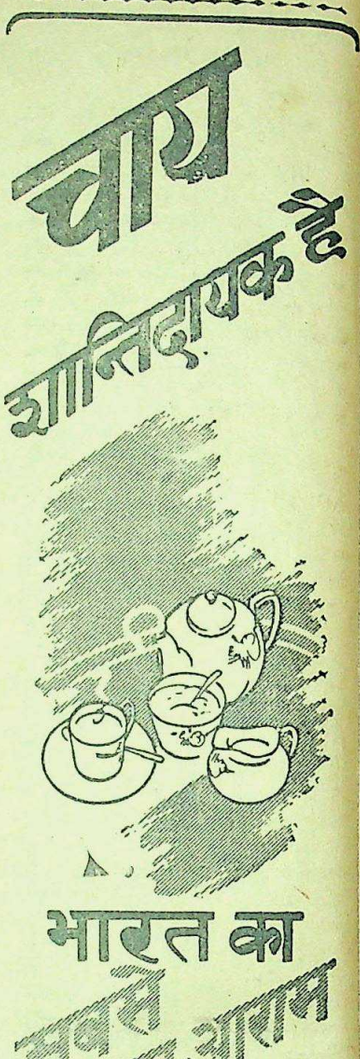

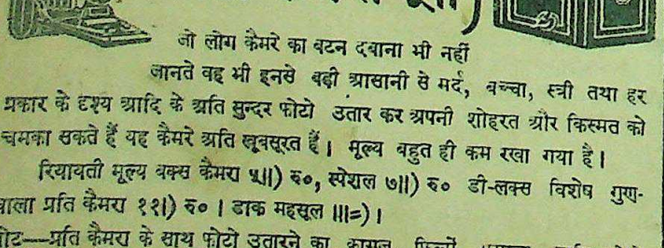

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्रीय असेम्बली का चुनाव

(पेज ५ का शेष)

राजनीतिक परिवर्तन

पहली असेम्बली में कांग्रेस नहीं थी। कांग्रेस ने निर्वाचन का बहिष्कार किया था। गांधी जी के नेतृत्व में नवीन भारत का उस समय जन्म हो रहा था। उस समय लिबरल पार्टी का प्राधान्य था। सर शिवस्वामी अय्यर, माननीय श्रीनिवास शास्त्री, डा० हृदयनाथ कुंजरू, सर हरिसिंह गौड़ आदि का प्राधान्य था। १९२४ में अस्तित्व में आई असेम्बली में स्वराज्य पार्टी स्वर्गीय त्यागमूर्ति श्री मोतीलाल नेहरू के नेतृत्व में आई। इसी समय से धारा-सभाओं के अन्दर संगठित पार्टी-पद्धति का उदय हुआ। पर इस असेम्बली में नेहरू जी के अलावा, महामना मालवीय जी, श्री कृष्णकान्त मालवीय, स्वर्गीय श्री विट्ठलभाई पटेल, श्री नृसिंह चिन्तामणि केलकर, सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास, मिस्टर जिन्ना, सर टी० रंगाचारी, श्री अणे, श्री रंगास्वामी आयंगर, सर कवास जी जहांगीर, सर फ़िरोज सेठना, स्वर्गीय श्री अभ्यंकर, दीवान चमनलाल, रायजादा हंसराज, दीवान हरविलास शारदा, श्री तुलसीचरण गोस्वामी, श्री रंगा अय्यर, श्री जमनादास मेहता, मिस्टर आर्थर मूर (स्टेट्समैन) आदि मुख्य थे। सर षण्मुखम चेटी उस समय 'सर' नहीं थे और स्वराज्य पार्टी के एक स्तम्भ थे। १९२५ में असेम्बली का निर्वाचित प्रेजीडेण्ट हुआ। तुमुल संघर्ष हुआ और प्रेजीडेण्ट स्वर्गीय पटेल चुने गये। महामना मालवीय जी मिस्टर जिन्ना के नेतृत्व में बनी इण्डिपेण्डेंट पार्टी के एक स्तम्भ थे। महामना मालवीय जी बाहर यद्यपि कांग्रेस के स्तम्भ थे पर असेम्बली में स्वराज्य पार्टी में नहीं थे। स्वराज्य पार्टी में यू० पी० से स्वर्गीय मिस्टर शेरवानी, मिस्टर यूसुफ़ और मिस्टर रफीअहमद किदवई और मद्रास के सैयद मुर्तजा भी थे। स्वराज्य पार्टी की बड़ी तोपों और अच्छे वक्ताओं में स्वर्गीय श्री अभ्यंकर, जो हथौड़ा के नाम से प्रसिद्ध थे, श्री दीवान चमनलाल, श्री गोस्वामी, श्रीरंगा अय्यर प्रसिद्ध थे। श्री श्यामलाल नेहरू भी अच्छे वक्ताओं में थे। महामना मालवीय जी मिस्टर जिन्ना के विषय में कुछ कहना व्यर्थ है। श्री अखिलचन्द्र दत्त और श्री क्षितीशचन्द्र नियोगी अच्छे विवादपटु थे। कट्टर सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व स्वर्गीय श्री आयंगर करते थे, यद्यपि वे स्वराज्य पार्टी में थे। लाला लाजपतराय भी इसके कुछ समय सदस्य रहे थे। श्री गयाप्रसादसिंह इन दिनों प्रश्न बहुत पूछते थे और प्रश्नकर्त्ता के रूप में ही साधारणतः आते थे। आप १९२४ से बराबर १९३४ तक असेम्बली के सदस्य रहे। कुमार गंगानन्दनसिंह भी आपके समान स्वराज्य पार्टी के अन्दर थे और ये दोनों सज्जन मन्त्री और सचेतक थे।

१९२७ की असेम्बली

असेम्बली के तीसरे चुनाव ने असेम्बली का रूप और बदल दिया। महामना मालवीय जी, लाला लाजपतराय और केलकर-जयकर के नेतृत्व में कांग्रेस के अन्दर इंडिपेण्डेण्ट कांग्रेस पार्टी का उदय हुआ। केलकर-जयकर के नेतृत्व में प्रति-सहयोगी दल का उदय हुआ था और श्री तारके स्वराज्य पार्टी के अनुशासन को भंग करके सी० पी० सरकार के गृह-सदस्य बन गये थे। स्वराज्य पार्टी का नियम पदों को न लेने का था। फलतः अपने को लोकमान्य तिलक की नीति का अनुयायी बतानेवालों ने प्रति-सहयोगी दल की स्थापना की थी। हिन्दू-हितों की स्वराज्य पार्टी उपेक्षा करती है, यह कहकर महामना मालवीय जी और स्वर्गीय लाला लाजपतराय ने इण्डिपेण्डेण्ट पार्टी की स्थापना की थी और इस पार्टी की ओर से चुनाव लड़ा गया था। इण्डिपेण्डेण्ट कांग्रेस पार्टी को पंजाब और यू० पी० में बहुत अधिक सफलता मिली। पंजाब की तीनों हिन्दू सीटें और यू० पी० की दो को छोड़कर शेष ग़ैर-मुस्लिम सीटें इस पार्टी ने हस्तगत की थीं। पर बंगाल, मद्रास और बिहार में इस पार्टी को एक भी सीट नहीं मिली। नागपुर में डाक्टर मुंजे और श्री अम्बेदकर से कड़ा मुक़ाबला था। डाक्टर मुंजे जीते। बरार में श्री अणे ही जीते। सिन्ध और बम्बई में भी इनको आंशिक सफलता मिली। १९२७ में बनी असेम्बली में तीन पार्टियां थीं। स्वराज्य पार्टी, इण्डिपेण्डेण्ट कांग्रेस पार्टी, इण्डिपेण्डेण्ट पार्टी। अनुशासन भंग करने पर पार्टी से निकलने की प्रणाली का आरम्भ उस समय नहीं हुआ था। यू० पी० में श्री घनश्यामदास बिड़ला ने स्वराज्य पार्टी के उम्मीदवार श्री श्रीप्रकाश को हराया था। गोरखपुर, बनारस निर्वाचन-क्षेत्र से ही उस समय भी श्री श्रीप्रकाश खड़े हुए थे। इस निर्वाचन-क्षेत्र में १९२४ में स्वराज्य पार्टी ने स्वर्गीय सर चिन्तामणि को भारी पराजय दी थी। श्री कृष्णकान्त मालवीय १९२७ में इण्डिपेण्डेण्ट कांग्रेस पार्टी में थे। श्री मोहनलाल सक्सेना को मुंशी ईश्वरीशरण ने, डाक्टर कैलाशनाथ काटजू को डाक्टर हृदयनाथ कुंजरू ने हराया था। पर मद्रास में स्वर्गीय श्री श्रीनिवास आयंगर के प्रयत्नों और प्रभाव से सर्वत्र स्वराज्य पार्टी की विजय हुई। इसी से वे गोहाटी-कांग्रेस के अध्यक्ष भी चुने गये। इण्डिपेण्डेण्ट कांग्रेस पार्टी के आन्दोलन का मुस्लिम सीटों पर कोई प्रभाव न पड़ा और यू० पी० और मद्रास, बंगाल और आसाम (मिस्टर अब्दुल मतीन चौधरी) की मुस्लिम सीटें स्वराज्य पार्टी ने १९२४ के समान जीतीं। १९२७ से कांग्रेस अप्रत्यक्ष रूप से चुनावों में भाग लेने लग गई थी। इस समय तक मुस्लिम लीग चुनाव लड़ने के लिए मैदान में आने का साहस नहीं करती थी। मिस्टर जिन्ना इस समय तक इण्डिपेण्डेण्ट पार्टी के, जो कि असम्प्रदायिक पार्टी थी—नेता थे। इस चुनाव ने साम्प्रदायिकता को बढ़ाया। जस्टिस पार्टी को गहरी चोट दी और मरणासन्न लिबरल पार्टी में कुछ जान डाल दी। असेम्बली के मुख्य व्यक्ति स्वर्गीय नेहरू जी के अलावा, स्वर्गीय श्रीनिवास आयंगर, रंगास्वामी आयंगर, लाला लाजपतराय, महामना मालवीय जी, मिस्टर जिन्ना, श्री जमनादास मेहता, श्री जयकर, सर पुरुषोत्तम ठाकुरदास, श्री हरविलास शारदा, मुंशी ईश्वरीशरण, बी० दास, डाक्टर मुंजे, सरषण्मुखम चेटी, श्री नियोगी, रायजादा हंसराज, सरदार सन्तसिंह, चौ० मुख्तयारसिंह, रंगा अय्यर, श्री घनश्यामदास बिड़ला, मिस्टर रफीअहमद किदवई, मिस्टर शेरवानी, मिस्टर यूसुफ़, सर हरिसिंह गौड़ और सैय्यद मुर्तजा आदि।

इस असेम्बली ने बाल-विवाह प्रतिबन्धक शारदा ऐक्ट पास किया। रुपया-पौंड का विनिमय दर १ शिलिंग ६ पेंस निश्चित किया। विरोधी दल १ शिलिंग ४ पेंस चाहता था। इस मुद्दे पर विरोधी दल को हारना पड़ा और वह भी थोड़े वोटों से ही। पर साइमन कमीशन के बहिष्कार का प्रस्ताव बहुत अधिक सम्मति से पास हुआ। यद्यपि सर हरिसिंह गौड़ की अध्यक्षता में एक कमेटी उससे सहयोग करने के लिए बन भी गई। पब्लिक सेफ्टी बिल प्रेजीडेण्ट पटेल ने ही पेश न होने दिया। मेरठ षड्यन्त्र-केस उस समय चल रहा था। रिजर्व बैंक बिल भी पेश न हो सका। भगतसिंह और बटुकेश्वरदत्त-द्वारा बम इसी असेम्बली पर फेंका गया था और पत्रकार श्री चमनलाल-द्वारा अटेची केस अर्थ सदस्य सर बेसिल ब्लकट पर इसी असेम्बली में गिराया गया था। इसका कार्य-काल एक साल बढ़ाया गया था। १९३० में सत्याग्रह आरम्भ होने पर कांग्रेस ने धारा-सभाओं का बहिष्कार करने की नीति अपनाई। आन्दोलन के जोर पकड़ने पर महामना मालवीय जी और प्रेजीडेण्ट पटेल भी बाहर आ गये पर श्री मुकुन्दराव जयकर बने रहे और वे ही विरोधी दल के नेता थे। सप्रू-जयकर की जोड़ी इसी समय से अस्तित्व में आई। लार्ड इरविन ने इनको नैनी और यरवदा जेल नेहरू-गांधी से समझौता करने के लिए भेजा था।

चौथी असेम्बली

सत्याग्रह-संग्राम १९३० में चल रहा था। कांग्रेस ने धारा-सभाओं का बहिष्कार कर रखा था। इस समय असेम्बली का चुनाव हुआ और निर्दल और स्वतन्त्र पक्ष के लोग असेम्बली में पहुंच गये। इनमें कुछ ऐसे लोग भी थे, जो पहले स्वराज्य पार्टी में थे, पर जेल न जाकर असेम्बली में पहुँच गये थे। इसमें बागला, हारून जैसे व्यवसायी भी थे। बी० दास, नियोगी, हरिसिंह गौड़, डाक्टर जियाउद्दीन, रंगा अय्यर, षण्मुखम चेटी, नवलराय, सन्त सिंह, राय स्वामी मुदालियर, गयाप्रसादसिंह आदि मुख्य थे। प्रेजीडेण्ट पहले सर इब्राहीम रहमतुल्ला थे, फिर उनके अवकाश लेने पर सर षण्मुखम चेटी चुने गये। विरोधी दल का नेतृत्व रामस्वामी मुदालियर, रंगा अय्यर, षण्मुखम चेटी, सर हरिसिंह गौड़, क्रमशः करते रहे। ओटावा पैक्ट इसी असेम्बली ने पास किया। राजबन्दियों को रिहा कराना तो दूर रहा, १९३२ में हुए दमन को रोकना या उस पर अंकुश रखने का भी काम इसने नहीं किया। १९३२ में महात्मा गांधी के आमरण उपवास करने पर यह हरिजन-बिल न पास कर सकी और राजा जी असेम्बली की सीढ़ियों पर दौड़ते नजर आये पर वे यह पास न करा सके। इस निराशा ने उन्हें धारा-सभावादी बना दिया और १९३४ में जब चुनाव हुआ तो कांग्रेस प्रत्यक्ष रूप से चुनाव लड़ने के लिए सामने आई। पटना-निर्णय इस कारण कांग्रेस ही नहीं देश के इतिहास में विशेष महत्त्व रखता है। तभी पार्लियामेंटरी बोर्ड का जन्म हुआ और कांग्रेस के कार्य का कौंसिल-राजनीति भी एक भाग माना गया।

विलिंगडन की चुनौती

लार्ड विलिंगडन को विश्वास था कि उनके दमन-प्रहार से कांग्रेस मर गई है और केन्द्रीय असेम्बली के चुनाव में कांग्रेस को सफलता न मिलेगी। अतः कांग्रेस की शक्ति-परीक्षा के लिए १९३४ में असेम्बली का चुनाव किया गया। लार्ड विलिंगडन के विशेष आदमी सर रामस्वामी मुदालियर को श्री सत्यमूर्ति ने करारी हार दी। सर षण्मुखम चेटी चोर दरवाजे से (व्यापार-निर्वाचन-क्षेत्र) से आना चाहते थे, पर वहाँ भी वे श्री वेंकटाचार्य चेटी द्वारा पराजित हुए। डाक्टर मुंजे बैरिस्टर अभ्यंकर से नागपुर में हारे। बम्बई शहर में कांग्रेस ने एक सीट खोई और सर कवास जी जहाँगीर चुने गये। यदि श्री नरीमैन खड़े रहते और अपना नाम न लौटाते तो यह सीट भी कांग्रेस ही पाती। सरदार पटेल की नरीमैन के प्रति नाराजगी का कारण यही है। महामना मालवीय जी ने कांग्रेस के साम्प्रदायिक-निर्णय के प्रति तटस्थता की नीति के विरुद्ध कांग्रेस नेशनलिस्ट पार्टी बनाई। महामना मालवीय जी और श्री अणे इसके नेता थे। महामना मालवीय जी का वोटर-सूची में नाम न होने से वे खड़े न हो सके और श्री श्रीप्रकाश प्रयाग-झाँसी सीट से खड़े हुए। अजमेर-मारवाड़ा की सीट भी कांग्रेस ने खोई और सेठ भागचन्द सोनी चुने गये। पंजाब में दीवान चमनलाल को भाई परमानन्द ने हराया। बंगाल में छः ग़ैर-मुस्लिम सीटें कांग्रेस नेशनलिस्ट पार्टी ने हस्तगत कीं। श्री शरत-चन्द्र बोस इसी पार्टी की ओर से खड़े हुए थे। नजरबन्द होते हुए भी निर्विरोध चुने गए थे। इसी चुनाव में पहले पहल डा० विधानचन्द्र राय ने विमान का व्यवहार किया।

इस चुनाव के फलस्वरूप श्री भूलाभाई देसाई, श्री गोविन्दवल्लभ पन्त, श्री सत्यमूर्ति, मिस्टर आसफ अली, श्री गाडगिल, डा० देशमुख, डा० खरे, डा० खान साहब, श्री श्रीप्रकाश, श्री कृष्णदत्त पालीवाल, श्री मोहनलाल सक्सेना, श्रीकृष्णकांत मालवीय, रायजादा हंसराज, श्री श्रीकृष्णसिंह, श्री अनुग्रहनारायणसिंह, डा० राजन आदि प्रसिद्ध कांग्रेस नेता असेम्बली में आए। इस चुनाव ने लिबरल पार्टी का अन्त कर दिया। सर कवास जी जहाँगीर एक-मात्र लिबरल चुने गए थे। डा० हृदयनाथ कुंजरू को भारी पराजय श्री पालीवाल ने दी। इसी तरह मद्रास के जस्टिस पार्टी का और महाराष्ट्र में श्री जेद्दा द्वारा अब्राह्मण पार्टी का अन्त हो गया। लोकशाही स्वराज्य दल की तो गर्भावस्था में ही हत्या हो गई। सेठ बालचंद हीराचंद तक हार गये। मि० जिन्ना इसी असेम्बली में आए। अकाली सिखों ने अलग ही चुनाव लड़ा और सरदार सन्तसिंह, सरदार मंगल सिंह चुने गए। कांग्रेस ने इनका मुकाबला नहीं किया था। बिहार में दालमियाँ को भारी हार मिली।

यह असेम्बली १९३५ से लेकर १९४५ तक रही। विरोधी दल का नेतृत्व श्री भूलाभाई देसाई ने किया। मि० जिन्ना इण्डिपेण्डेण्ट पार्टी के नेता थे। श्री अणे नेशनलिस्ट पार्टी के नेता थे। पर प्रान्तिक असेम्बलियों का चुनाव होने और प्रान्तों में मन्त्रिमण्डल बनने पर कांग्रेस के अनेक नेता—श्री गोविन्दवल्लभ पन्त, डा० खरे श्री श्रीकृष्णसिंह, श्री अनुग्रहनारायण सिंह, श्री द्वारकाप्रसाद मिश्र, डा० खरे साहब—प्रान्तों में चले गये। इनकी जगह कांग्रेस ने जो व्यक्ति भेजे उन्होंने कोई विशेष प्रभाव नहीं पैदा किया। मि० कयूम इसके एक अपवाद हैं। मि० जिन्ना ने असेम्बली में लीग-पार्टी संघटित की और नवाबजादा लियाकत अली खाँ उसके डिप्टी लीडर बने। मौ० शौकत अली की जगह वह चुनकर आये थे। इस असेम्बली की आत्मा स्व० श्री सत्यमूर्ति थे। सर अब्दुर्रहीम प्रेजीडेण्ड रहे और श्री अखिलचन्द्र दत्त डिप्टी प्रेजीडेण्ट। सर अब्दुर्रहीम ने ही यह निर्णय किया कि असेम्बली में दिये गये भाषणों को छापने के कारण कोई पत्र प्रेस ऐक्ट के शिकंजे से नहीं बच सकता। श्री कृष्णकान्त मालवीय का अविकल भाषण अभ्युदय ने छापा था और राजद्रोही भाषण बताकर उस पर वार किया गया। श्री सत्यमूर्ति ने लम्बा भाषण देने का महामना मालवीय जी द्वारा स्थापित रेकर्ड तोड़ दिया। डा० भगवानदास भी इस असेम्बली में कुछ काल रहे, पर उन्होंने असेम्बली को अपने अनुकूल नहीं पाया। श्री श्रीप्रकाश का विनोद असेम्बली-जीवन को सरस बनाता रहा। श्री आयंगर, श्री अविनाश लिंगम चेटी ने भी नाम पैदा किया। श्री नीलकण्ठदास के राजनीतिक जीवन का इस असेम्बली ने अन्त कर दिया। वे कांग्रेस के टिकट पर आये, पर नेशनलिस्ट पार्टी में जा मिले। फिर उससे भी अलग हो गये। श्री अनन्तमोहनदास, भाई परमानन्द और श्री जमनादास मेहता के साथ मिलकर हिन्दू-महासभा का प्रतिनिधित्व करने लगे। डाक्टर जियाउद्दीन अहमद रेलवे-विषय के विशेषज्ञ माने जाते रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजदूरों की ओर से श्री जोशी को गवर्नमेंट सदा नामजद करती रही और वे सदा विरोधी-दल का साथ देते रहे। हरिजनों का प्रतिनिधित्व पहले स्व० श्री राजा करते थे। अब उनका दो सदस्य करते थे। दो महिला सदस्यायें भी इस असेम्बली में थीं। श्रीमती सुब्बारायन कांग्रेस पार्टी की थीं। इस असेम्बली में डा० देशमुख ने अनेक सामाजिक सुधार के बिल पेश किये पर उनको विशेष सफलता नहीं मिली। मि० काजमी ने भी मुस्लिम विवाहों के सम्बन्ध में एक क़ानून बनवाया।

१९४६ की असेम्बली

१९४५ के चुनाव ने हिन्दू-महासभा का एक राजनीतिक पार्टी के रूप में अन्त कर दिया। शिमला कान्फरेन्स में लार्ड वेवेल ने हिन्दू-महासभा को नहीं बुलाया था, संभवतः इसकी वह पूर्व सूचना थी। लीग ने सारी मुस्लिम सीटें (३०) प्राप्त की हैं। बंगाल और यू० पी० में उसका मुक़ाबला हुआ और वहां वह विजयी हुई।

पर इस प्रसंग में जान लेना चाहिए कि केन्द्रीय असेम्बली के मतदाता सारी आबादी के केवल १ प्रतिशत हैं। दूसरे मुस्लिम और गैर-मुस्लिम निर्वाचन-क्षेत्रों में मतादाताओं की संख्या एक समान नहीं है। पंजाब और बंगाल में मुसलमानों की ज्यादा संख्या है, पर असेम्बली के लिए प्रतिसीट वोटरों की संख्या १५,९०८ और २९,५५९ है, जब कि गैर-मुस्लिम निर्वाचन क्षेत्र में वोटरों की संख्या क्रमशः १९,९४० और ३६,०४७ है। अन्य प्रान्तों में यह अन्तर और भी ज्यादा है। यथा:—

प्रति सीट मतदाता

	गैर-मुस्लिम	मुस्लिम
मद्रास	३७,९००	१४,५२०
बम्बई	१७,५७६	७,७३९
यू० पी०	३२,५९६	१०,१८५
बिहार	२१,६२०	८,१३७
सीमा-प्रान्त	३,५५७	४,९८०
सिन्ध	९,४३०	१३,०९७

इससे स्पष्ट है कि पिछले दो प्रान्तों को छोड़कर शेष सब प्रान्तों में मुसलमानों को न केवल सीटों में बल्कि निर्वाचन-क्षेत्रों में भी प्रश्रय दिया गया है। लीग की सफलता का विचार करते हुए इस बात को न भूलना चाहिए।

हिन्दू महासभा का अन्त

इस निर्वाचन की एक और विशेषता है। कांग्रेस के ३० सदस्य निर्विरोध चुने गये। इन स्थानों पर हिन्दू-महासभा ने कांग्रेस का मुक़ाबला करने का साहस तक नहीं किया। जहाँ उसने साहस किया वहाँ उसकी उम्मीदवार की जमानत भी जब्त हो गई। हिन्दू-महासभा का विरोध पाकिस्तान और लीग से था। नेहरू-पटेल ने यह घोषणा करके कि वे पाकिस्तान के विरोधी हैं और लीग से समझौता न करेंगे, हिन्दू-महासभा का बल आधा कर दिया और उसके पास की हवा खींच ली। श्री भूलाभाई देसाई और राजा जी लीग से समझौता करते हुए देसाई-लियाकत पैक्ट तक पहुँच गये थे और केन्द्र में हिन्दू-मुस्लिम समानता को स्वीकार कर लिया था। कांग्रेस ने इन दोनों नेताओं को असेम्बली के लिए खड़ा नहीं किया। इस प्रकार कांग्रेस का विरोध करने के लिए हिन्दू-महासभा के पास कोई बहाना नहीं रहा। डाक्टर गोकुलचन्द्र नारंग ने इस लिखित आश्वासन पर कि कांग्रेस पार्टी पाकिस्तान का विरोध करेगी, दीवान चमनलाल के पक्ष में हटकर हिन्दू-महासभा के पक्ष को सर्वथा निर्जीव कर दिया। बंगाल, पंजाब और महाराष्ट्र हिन्दू-महासभा के गढ़ हैं। पर हिन्दू-महासभा के अध्यक्ष डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी अपने अन्य तीन सहयोगियों के साथ वोट पड़ने से कुछ दिन पहले चुनाव के मैदान से हट गये। इसने हिन्दू-सभा के रहे-सहे अस्तित्व को भी राजनीतिक क्षेत्र से मिटा दिया। चुनाव का परिणाम यहाँ सूचित करता है—

यथा :—

प्रान्त	कांग्रेस	हिन्दू-महासभा
दिल्ली	८,०८७	१७९
बम्बई	४१,५६४	४,६६७
महाराष्ट्र	४९,३९१	८,८६९
कर्नाटक	१८,२४१	२,५३६
युक्तप्रान्त	४२,०३२	६९३
पंजाब	९,८९१	५८५
योग	१,६४,२०६	१७,५१९

ये अंक अपनी कहानी आप कह रहे हैं। पर ये पूरी कहानी प्रकट नहीं करते। पंजाब में भाई परमानन्द (५५९) और महाराष्ट्र में श्री भोपटकर (८८६९) की पराजय और भाई परमानन्द की जमानत का जब्त होना विशेष रूप से उल्लेख योग्य है। ये दोनों सज्जन हिन्दू-महासभा के संस्थापकों में से हैं। इनके पीछे लम्बी सेवा और त्याग का लेखा है। कभी ये कांग्रेस के नेता थे। भाई जी अन्दामन हो आये हैं। श्री भोपटकर कांग्रेस के पुराने नेता और १९३२ में भी जेल गये थे और उस समय तक महाराष्ट्र कांग्रेस कमेटी के प्रेजीडेण्ट थे। इनकी पराजय इस बात का सूचक है कि वीर सावरकर ने जिस हिन्दू-महासभा को प्राणवान और जिन्दा बनाया था, उसने उनकी आँखों के सामने ही; भागलपुर सत्याग्रह का नाटक खेलने के बाद भी—अपना दम तोड़ दिया और वे उसको जीवित न कर सके। हिन्दू-महासभा १९३३ से; जब वह भाई जी के नेतृत्व में आई; कांग्रेस-विरोधी होती गई और वीर सावरकर ने उसको कांग्रेस के मुक़ाबले खड़ा करने योग्य सशक्त बनाया। पर इस चुनाव के आघात से उसका प्राणान्त हो गया।

अकाली पार्टी

किन्तु कांग्रेस को अकाली पार्टी से हार खानी पड़ी है। देश में अकाली पार्टी को राष्ट्रीय समझा जाता है, यद्यपि वह भी मुस्लिम लीग के समान साम्प्रदायिक है। मास्टर तारासिंह कांग्रेस से इसी कारण अलग हुए थे कि कांग्रेस सरकार के युद्ध-प्रयत्नों से सहयोग करने को तैयार नहीं थी और इससे अकाली पार्टी को भय था कि सेना में सिखों का अनुपात कम हो जायगा और उनकी प्रधानता वहाँ नहीं रहेगी। यही नहीं यह पार्टी हाईकोर्ट की जजी और वाइसराय की कौंसिल में सिखों का अलग प्रतिनिधित्व साम्राज्य-सेवा के बल पर चाहती है और विभेदात्मक नीति की प्रसारक गवर्नमेंट ने इसको मान भी लिया। अकाली ही पार्टी है जिसने सिखों को राजनीतिक और सामाजिक दृष्टि से भी हिन्दुओं से अलग कर दिया है और अकाली अपने को हिन्दुओं से अलग मानने में अभिमान करते हैं। यू० पी० और बिहार में भी यह बीमारी फैल रही है। इसे रोकने और अकाली पार्टी और सिख पन्थ के मुस्लिम लीग के समान साम्प्रदायिक रूप को और भविष्य में इससे उत्पन्न होनेवाले खतरे को समझने की जरूरत है। सिख-मत के प्रचार में सहायता देने का परिणाम भविष्य में क्या होगा यह समझने की जरूरत है। भारत के राजनीतिक शरीर को विभक्त करनेवाली एक और शक्ति अकाली पार्टी के रूप में उत्पन्न हो गई है, जो कि सिख-पन्थ का देशहित से अलग हित समझती है। कांग्रेस ने पहली बार अकाली पार्टी के विरुद्ध मोर्चा लिया और उसमें वह हार गई। सरदार सन्तसिंह असेम्बली के विसर्जन तक कांग्रेस पार्टी में नहीं थे, पर उनको कांग्रेस ने अपना टिकट दिया। वे १९२४ से असेम्बली के सदस्य रहे हैं और कभी कांग्रेस-अनुशासन में नहीं रहे। इसलिए उनकी हार पर आश्चर्य न होना चाहिए। हाँ, सरदार कपूरसिंह की हार जरूर चिन्तनीय है। पर यह न भूलना चाहिए कि सरदार बलदेवसिंह पंजाब सरकार के एक मन्त्री हैं, और सरदार मंगलसिंह उनके नुमाइन्दे हैं। सरदार मंगलसिंह कुछ दिन पहले तक कांग्रेस पार्टी में थे और १९४२ में भी पकड़े गये थे। नेहरू-रिपोर्ट पर सरदार मंगलसिंह के भी दस्तखत हैं और उस समय वे कांग्रेस कार्य-समिति के सदस्य थे। पर उन्होंने जब-जब कांग्रेस और अकाली पार्टी के बीच चुनाव करने का प्रश्न आया है, सदा अकाली पार्टी और पन्थ का साथ दिया और कांग्रेस का परित्याग। इस बार भी उन्होंने ऐसा ही किया। सरदार सम्पूर्णसिंह कुछ दिन तक पंजाब असेम्बली में कांग्रेस पार्टी के नेता रहे हैं। व्यक्तिगत सत्याग्रह (१९४१) में अपनी नाटकीय गिरफ्तारी कराकर कांग्रेस से आप अलग हुए थे। सेना में सिखों के अनुपात को बनाये रखने की आपको भी चिन्ता थी। इनके चुनाव का परिणाम दर्शनीय है :—

कांग्रेस	६,१७७
अकाली	१२,१३४

ये वोट जहाँ कांग्रेस की हार बताते हैं, वहाँ साथ ही पंजाब में साम्प्रदायिकता की विजय को भी बताते हैं।

कांग्रेस ने जमींदारों के निर्वाचन-क्षेत्र में भी दो सीटें खोई हैं। बम्बई के इनामदारों के निर्वाचन-क्षेत्र में उसको छः वोटों से और बिहार के जमींदारों के निर्वाचन-क्षेत्र में लगभग २७ वोटों से पराजय मिली है। यू० पी० में उसने कुमार विजयनगरम् को निर्विरोध जाने दिया। मद्रास और बंगाल में उसने यह सीट लड़कर जीती है और सी० पी० में कांग्रेस उम्मीदवार निर्विरोध चुना गया। व्यवसाय-निर्वाचन-क्षेत्र की तीन सीटें कांग्रेस ने प्राप्त की हैं और बंगाल के निर्वाचित श्री आनन्दीलाल पोद्दार ने कांग्रेस पार्टी में सम्मिलित होने की इच्छा प्रकट की है। कांग्रेस पार्टी की असेम्बली में शक्ति लगभग ६० होगी। कांग्रेस पार्टी ने सब गैर-मुस्लिम सीटें (४८), सब जनरल सीटें (३), व्यवसाय की सब जगहें (४) और जमींदारों की (५) सीटें प्राप्त की हैं। असेम्बली में इतनी शक्ति इससे पहले कभी कांग्रेस पार्टी ने प्राप्त नहीं की थी।

जस्टिस पार्टी का अन्त

इस चुनाव ने बता दिया है कि केवल संगठित और व्यापक संगठनवाली पार्टी ही चुनाव लड़ सकती है। मद्रास में जस्टिस पार्टी को मिली हार इसी की सूचक है। कप्तान लक्ष्मी की माता श्रीमती स्वामीनाथन को १०,००० वोट मिले और उनके विरोधी बाला सुब्रह्मण्यम को केवल ३,००० वोट मिले। दोनों अब्राह्मण थे। इस कारण जस्टिस पार्टी की यह हार और भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। पराजित उम्मीदवार का यह कहना उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है कि भविष्य में जाति और धर्म का न ख्याल करके योग्यता का ही ख्याल करके उम्मीदवार खड़ा करना चाहिए। कांग्रेस की यह नैतिक विजय है। १९२६ में त्यागमूर्ति स्व० नेहरू ने कहा था कि कांग्रेस-रोलर के चलने पर सब विरोधी पार्टियों का अन्त हो जायगा। १९ साल बाद उनका कहना सच सिद्ध हुआ और आज कांग्रेस के मुक़ाबले गैर-मुस्लिम क्षेत्र में कोई पार्टी नहीं है।

सीमाप्रान्त

सीमाप्रान्त में संयुक्त निर्वाचन है और वहाँ कांग्रेस का मुकाबला खाकसार पार्टी ने किया था। वहाँ का परिणाम इस प्रकार है—

अलीमुल खान (कांग्रेस)	८,१५०
मोहम्मद अकबर (खाकसार)	५,३८१

खाकसार पार्टी के उम्मीदवार को केवल मुस्लिम वोट मिले होंगे। इसलिए ये अंक ज्यादा महत्त्वपूर्ण हैं। मिस्टर जिन्ना सीमाप्रान्त में बहुत समय रहे हैं। कांग्रेस पार्टी की शक्ति वहाँ कितनी है, इस पर ये अंक प्रकाश डालते हैं और बताते हैं कि प्रान्तिक चुनाव में कांग्रेस को कितने बड़े संघर्ष का सामना करना पड़ेगा।

लीग की सफलता

गैर-मुस्लिम निर्वाचन-क्षेत्र में जैसी सफलता कांग्रेस को मिली है, उसी प्रकार मुस्लिम निर्वाचन-क्षेत्रों में लीग को सफलता मिली है। जहाँ चुनाव हुए हैं, वहाँ लीग को इस प्रकार वोट मिले हैं—

	लीग	नेशनलिस्ट
बम्बई	५,२०२	३१०
बिहार	१,२३५	२४९
युक्त-प्रान्त	२३,४७०	६,६९५
पंजाब	११,२४५	२,७८१
सिन्ध	१७,१६५	७,८८७
योग	५८,३१७	१७,९२२

बंगाल के परिणाम को ध्यान में रखकर यह कहा जा सकता है कि निस्सन्देह मुस्लिम लीग ७५ प्रतिशत मुस्लिम वोटरों का प्रतिनिधित्व करती है और मुसलमानों में सबसे अधिक संगठित पार्टी है। लीग ने यह चुनाव पाकिस्तान के मुद्दे पर लड़ा था। मिस्टर जिन्ना पिछले २१ साल से बम्बई शहर की सीट से निर्विरोध चुने जाते रहे थे। पर फिर भी मिस्टर हुसेन भाईलाल जी को १२७ वोट मिले। मिस्टर जिन्ना के मुकाबले किसी का खड़ा होना, चाहे वह शिया पोलिटिकल कान्फ्रेंस का प्रेजीडेण्ट ही क्यों न हो, कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। इसी प्रकार नवाबजादा लियाकत अली खाँ, लीग के जनरल सेक्रेटरी के मुक़ाबले मिस्टर काजमी का २,७२२ वोट पाना गम्भीर अर्थ रखता है। यू० पी० लीग के प्रेजीडेण्ट नवाब मुहम्मद इस्माइल खाँ के एक अज्ञातनामा विरोधी को ८५१ वोट मिले। नेशनलिस्ट मुसलमान संगठित नहीं थे। उनका कोई संगठन भी नहीं था। चुनाव के मैदान में भी वे देर में आये। उनके उम्मीदवार प्रसिद्ध व्यक्ति भी नहीं थे। यह सब होने पर भी उनका इतने वोट प्राप्त करना यह सूचित करता है कि लीग समस्त मुसलमानों का प्रतिनिधित्व नहीं करती और न सब मुसलमान पाकिस्तान चाहते हैं। सिन्ध का निर्वाचन इस बात को और अधिक पुष्ट करता है। मुस्लिम निर्वाचन-क्षेत्र के वोटरों में से केवल ३५ प्रतिशत ने वोट दिया। इसका अर्थ है कि ६५ प्रतिशत मुस्लिम मतदाता पाकिस्तान की समस्या के प्रति उदासीन हैं; या तटस्थ हैं। जिन ३५ प्रतिशत वोटरों ने वोट दिया उनमें से भी ११ प्रतिशत ने पाकिस्तान के विरोध में मत दिया। जमायत-उल-उल्मा ने मिस्टर रशदी का समर्थन करते हुए स्पष्ट कर दिया था कि रशदी के पक्ष में दिये गये वोट पाकिस्तान के विरोध में हैं। इसलिए सिन्ध की ७५ प्रतिशत मुस्लिम आबादी में से केवल २४ प्रतिशत ही पाकिस्तान के पक्ष में कहे जा सकते हैं। इसलिए मुस्लिम लीग के पाकिस्तान के दावे को एक भारी धक्का लगा है।

केन्द्रीय असेम्बली के चुनाव के परिणाम को देखकर असन्दिग्ध रूप से कहा जा सकता है कि भारतीय राजनीति में राष्ट्रीयता का ज्वार फिर आ रहा है और साम्प्रदायिक पार्टियाँ और शक्तियाँ प्रतिदिन अपना बल खो रही हैं; यद्यपि मुस्लिम लीग और अकाली पार्टी को सफलता मिली है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

कांग्रेस और कौंसिल-चुनाव

महात्मा जी ने शान्ति-निकेतन के विद्यार्थियों से कहा है कि वह शान्ति के लिए प्रचार करें। महात्मा जी की यह आत्मा की आवाज है। महात्मा जी ने कांग्रेस से शान्ति क़ायम करने के लिए न कहकर आश्रमवासियों से जो यह कहा है कि वह उचित किया है। कांग्रेस राजनैतिक संस्था होने से स्वाधीनता की अग्नि प्रज्वलित कर सकती है। अशान्ति न होने से शान्ति का आनन्द फीका हो जाता है। प्रकृति ने इसी से दोनों को जन्म दिया है।

महात्मा जी धारा-सभाओं के चुनाव का आर्डर देकर देश की नस पहचान रहे हैं। उन त्यागियों के साथ उन्हें उस सिद्धान्त से लड़ना है जो सदा से संसार पर क़ब्ज़ा किये हुए है। मिटाने की भावना तो भरी है किन्तु मिटनेवाले उँगलियों पर गिने जा सकते हैं। महात्मा जी कमजोरी को हर तरफ़ से मिटाना चाहते हैं। थोड़ी कमजोरी भी मंज़िल पर पहुँचने में बाधक होगी। कांग्रेस को कहाँ जाना है यह उसे दिखलाई दे रहा है। अहिंसा से हुकूमत क़ायम करना आसान तभी है जब अपना बलिदान चढ़ाया जायेगा। आज़ादी बलिदान चाहती है। कांग्रेस भोग को नहीं त्याग को अच्छा समझती है अपने को मिटाना दूसरे को बनाना उसका ध्येय है। "बचन कर्म मन मोरि गति भजनु करहिं निःकाम। तिन्ह के हृदय कमल महुँ करउँ सदा बिश्राम॥" जब तक मनसा, वाचा, कर्मणा से कार्य न किया जायगा, तब तक सफलता न मिलेगी। कांग्रेस बार-बार अपने जोर को लगाती है मगर मंज़िल तक नहीं पहुँचती। इससे उसे सबक़ लेना चाहिए।

किन्तु भारत में शान्ति क़ायम करने का रास्ता साम्राज्यवाद का अन्त होने पर ही दिखलाई देता है। यह प्रणाली अपनत्व से दूषित है इसका अन्त होने में जो देरी होरही है वह अपनी कमजोरी है। सुभाष ने जो गौरव हासिल किया है वह अपनत्व के ठुकराने का ही फल है। कांग्रेस योग से तगड़ी और भोग से निर्बल होगी। उसकी जो ताकत आज अधिक दिखलाई देती ह वह कौंसिलों में पहुँचने और पद लेने से क्षीण हो जायेगी। मंज़िल अभी दूर है इससे भोग नहीं योग ही उपयोगी मार्ग है। साम्राज्यवाद को वही ख़तम कर सकता है जो मानव-हित का उपासक हो। साम्राज्यवाद-प्रणाली इससे दूषित है कि वह पूंजी को संचित करके श्रमिकों का शोषण करती है। श्रमिक अपने श्रम का मूल्य उचित नहीं पा रहा है। कांग्रेस भी उसी मार्ग पर जा रही है उसमें भी वही नेता हैं जिसके पास पूंजी है। त्याग पर नेतागीरी की नींव होने से विश्व का कल्याण है। पूंजी से नेतागीरी होने से साम्राज्यवाद का ही दूसरा ढाँचा बनेगा। आज जिस प्रणाली का अन्त होगा वह कल दूसरे रूप में संसार का शोषण करेगी। इससे कांग्रेस की प्रणाली भोग नहीं योग ही की होनी चाहिए।

पूज्य मालवीय जी ने सन् ४२ में विश्वविद्यालय के छात्रों से कहा था—"इस अशान्ति का कारण है ईश्वर को भुला देना" श्रद्धेय टंडन जी ने अभी कहा था कि—"महात्मा जी ने दुःख को सुख में परिणत करके इस अशान्ति में भी शान्ति का दर्शन करा दिया है।" पंडित वेंकटेशनारायण तिवारी ने प्रयाग ज़िला कांग्रेस कमेटी में एक बार कहा था—"कांग्रेस ने अपने को मिटाना और दूसरे को बनाने का ध्येय क़ायम किया है।" यह ऊँचे ख्याल हैं जिसने कांग्रेस को बढ़ाया है, उसे त्याग ही करना चाहिए। महात्मा जी का त्याग ही उसे पल्लवित कर रहा है। उसमें फल तभी लगेगा जब वह बलिदान रूपी खाद पायेगी। दूसरे का बलिदान नहीं क्योंकि वह हिंसा होगा? इससे कांग्रेस को अपना बलिदान करना और दूसरे के बढ़ाने से ही वह मंज़िल पर पहुँचेगी, कृष्ण का भी मार्ग दूसरों को बढ़ाना था। कांग्रेस में जो भोग की भावना है वही अशान्ति का कारण है। जो इससे परे हैं उन्हें अवश्य शान्ति मिलती होगी। तप करनेवाला भोग करने से पतित हो जाता है इससे इस अशान्ति में त्याग ही शान्तिदायक होगा।

जबलपुर —रामभरोस मालवीय
२८ दिसम्बर ४५

* * *

हिन्दुस्तानी और लिपि का प्रश्न

हिन्दुस्तानी भाषा के अधिकांश पोषकों तथा उन्नायकों के अनुसार, मौलिकता का, अपने पैरों खड़े होने का बड़ा महत्त्व है। राष्ट्रभाषा के लिए उन्होंने हिन्दुस्तानी की सृष्टि की जिससे अब अंजुमन तरक्क़ीए उर्दू और हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन दोनों नाक-भौं सिकोड़ते हैं। कोई चिन्ता नहीं, संसार की सभी भली वस्तुओं का पहले विरोध हुआ है। किन्तु 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात।'

यह भाषा हिन्दी, उर्दू और न जाने उर्दू से सम्बन्धित कौन-कौन-सी भाषाओं के सम्मिश्रण से बनी है? सहयोगिता का आदर्श उदाहरण है। यह वर्णसंकर भाषा साहित्य-सृजन के लिए कहाँ तक उपयोगी होगी यह उसके निर्माता ही जानें। 'प्रसाद' के कंकाल की भाँति, जो वर्णसंकर पात्रों के क्रिया-कलाप के योग से बना है, ही यह वर्णसंकर भाषा भी मनोरंजन के अतिरिक्त कोई स्वास्थ्यकर सक्रिय कार्य न कर सके—ऐसा भी हो सकता है। कुछ भी हो इसके पास वर्णसंकर शब्दकोष होजायगा जो, मेरी समझ में, जन-साधारण में पूर्व ही से प्रचलित कदापि न होगा। ऐसी दशा में इसे अपनी एक वर्ण-संकर लिपि भी रखनी चाहिए। अच्छा हो यदि जिन भाषाओं के शब्दों की खिचड़ी यह है उन्हीं की समवेत शक्ति से इसकी लिपि का भी निर्माण हो।

उर्दू का पक्ष लेनेवालों के विरुद्ध हिन्दी-वाले कहते हैं कि उर्दू लिपि का पढ़ना तथा सीखना कठिन है। इससे बचाव के लिए हिन्दी-प्रेमियों को, सम्भवतः जो हिन्दुस्तानी की ओर आकर्षित किये जानेवाले हैं, एक मार्ग प्रशस्त है। वे केवल उर्दू की मात्राएँ सीख लें। सब काम ठीक हो जायगा। यही मात्राएँ वे हिन्दी की वर्णमाला के अक्षरों में लगाया करें। वे मात्राओं के पंडित होकर, साइकिल में हवाई जहाज के ब्रेक लगाते हुए, देवनागरी लिपि के अक्षरों के साथ उर्दू की मात्राओं का प्रयोग करते हुए जितना चाहें लिख लें। यह वस्तु अनोखी और लिपियों के क्षेत्र में अद्वितीय होगी। उर्दूवालों को घबड़ाना न चाहिए उन्हें आगे चलकर और अधिकार दे दिया जायगा यदि वे अपनी मात्राएँ किसी प्रकार अधिक कर लेंगे। उनके लिए तो सारा मैदान ही पड़ा है। शक्ति बढ़ावें और अधिकार करें। अक्षरों के मोह से हिन्दीवाले इस लिपि से अनुराग करेंगे और मात्राओं के कारण उर्दूवाले। संघर्ष की आवश्यकता नहीं; शक्ति बढ़ाकर उसे एक सूत्र में बाँधना ही उपयुक्त होगा।

अब प्रश्न यह है कि उर्दू में मात्राएँ कम हैं तो जनाब लोगों को चाहिए कि उन्हीं पर सन्तोष करें। 'सन्तोषम् परमम् सुखम्'। पर यदि कोई मौलवी कुछ नई मात्राएँ बता सके तो उनका उपयोग हो। यदि अक्षरों का अधिकार उर्दू लिपि माँगे तो हमारी मात्राएँ उनके साथ चिपककर नहीं बैठेंगी और संख्या अधिक होने से उन्हें चारों तरफ़ से घेरकर परेशान करेंगी। पर उर्दू की मात्राएँ हिन्दी के अक्षरों के साथ काम दे जायेंगी चाहे उन्हें कुछ भ्रष्ट अवश्य कर दें।

मात्राओं का प्रश्न हल हो जाने पर विराम चिह्नों की बारी आती है। अँगरेजी के विराम चिह्न जो आज हिन्दी में प्रचलित हैं वे ठीक तो हैं किन्तु वे हिन्दीपन लिये होंगे। हिन्दुस्तानी में उर्दू के नुक्तों का अभी तक कोई समुचित स्थान नहीं निर्धारित हो सका है अतः विराम चाहे भाव अँगरेजी या हिन्दीवाले ही वहन करते हों पर उनके संकेत चिह्न नुक्तों से ही बनने चाहिए। इस प्रकार बिना नुक्ते की उर्दू के टक्कर का अविराम हिन्दुस्तानी लेख भी लिखा जा सकेगा। इस प्रकार उर्दू लिपि की यह विशेषता भी हिन्दुस्तानी में आ जायगी।

प्रगति का युग है। हिन्दुस्तानी को इस मामले में पिछड़ना न चाहिए। पूरी ताक़त लगाना चाहिए। कम से कम हाथ से लिखने के लिए कोई लिपि हिन्दुस्तानी के पोषकों को अवश्य निर्धारित कर लेनी चाहिए। बाद में मशीनें बन जायेंगी। पुस्तकें प्रकाशित होंगी और हिन्दुस्तानी लिपि का बोलबाला हो जायगा।

—लक्ष्मीचन्द्र दीक्षित

* * *

प्रान्तीय सम्मेलन कब हो?

मैं आपके सम्मानित पत्र-द्वारा युक्तप्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अधिकारियों का ध्यान निम्नलिखित बातों की ओर दिलाना चाहता हूँ।

संयुक्तप्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन प्रायः अप्रैल मास में ही होता है। अप्रैल मास में विश्वविद्यालयों एवं कालेजों में प्रायः वार्षिक परीक्षाएँ होती हैं। अस्तु, अप्रैल मास वार्षिक अधिवेशन के लिए उपयुक्त नहीं। विद्यार्थीगण परीक्षाओं में फँसे रहने के कारण 'अधिवेशन' में सम्मिलित होने के सुख से वंचित रहते हैं। एतदर्थ, 'अधिवेशन' मई मास में ही होना चाहिए। क्या ही अच्छा हो, यदि अगला अधिवेशन मैनपुरी (जैसा कि निश्चित किया जा चुका है) अथवा काशी में ६, ७ मई सन १९४६ को हो। आशा है, युक्तप्रान्तीय सम्मेलन के अधिकारी "देशदूत" द्वारा इसका उचित समाधान करेंगे। साथ-साथ हिन्दी-प्रेमियों से भी आशा है, कि वे इस सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करेंगे।

काशी
२७ दिसम्बर ४५ —श्रीनाथ पाण्डेय

* * *

अ० भा० कुमार हिन्दी-साहित्य-मण्डल

अखिल भारतीय कुमार हिन्दी-साहित्य-मंडल का दूसरा वार्षिक अधिवेशन सिनेमा गीतकार श्री रमेश गुप्ता के सभापतित्व में बम्बई में हो रहा है। इसमें मंडल के देश में फैली सम्बद्ध संस्थाओं व शाखाओं के प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। प्रत्येक नई संस्थायें इससे सम्बद्ध हो सकती हैं। आशा है कुमार-कुमारियाँ इस संस्था के सदस्य बनेंगे और विविध स्थानों पर प्रचार करने के लिए शाखायें खोलेंगे। पत्र-व्यवहार, मसूदन याज्ञिक, मंत्री % प्रभाकर श्रीलाल याज्ञिक, शेयर बाजार फ़ोर्ट, बम्बई के पते पर करें।"

—मधुसूदन याज्ञिक

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी का खेद प्रकाश

(निज संवाददाता-द्वारा)

'मधुकर' के सितम्बर के अंक में पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी ने राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति के कार्यालय के सम्बन्ध में प्रिंसिपल श्रीमन्नारायण अग्रवाल के एक वक्तव्य की आलोचना की थी। उस सिलसिले में श्रीमन्नारायण जी अग्रवाल ने जो पत्र पंडित बनारसीदास जी को लिखा था वह भी प्रकाशित हुआ था। श्रीमन्नारायण जी के पास पंडित बनारसीदास जी का एक पत्र आया है, जिसमें उन्होंने अपनी भूल के लिए क्षमा माँगी है। पंडित बनारसीदास जी लिखते हैं—"मुझे वास्तव में अपनी असंयत लेखनी पर खेद है। इस तरह की चीज लिखने का मुख्य कारण यह हुआ कि अपनी संकटमय बीमारी के दिनों में मेरा 'नर्वस सिस्टम' बहुत ही कमजोर हो गया था और उन दिनों कई व्यक्तियों से झगड़ा कर बैठा। मस्तिष्क का संतुलन 'बैलेंस आफ माइंड' बिलकुल ही ख़राब हो गया था। ....इस प्रकार यह अप्रिय प्रसंग इतने दिन चला। अब भी मैं अपनी स्वस्थ-दशा को प्राप्त नहीं कर पाया, तथापि अपनी भयंकर भूल को समझ गया हूँ। असंयम तो हर हालत में अक्षम्य है, फिर भी मुझे विश्वास है कि आप कृपा कर मुझे क्षमा कर देंगे। ऐसी बेवक़ूफ़ी भविष्य में न होगी।"

ज्ञात हुआ है कि पंडित बनारसीदास जी ने इस आशय की एक टिप्पणी भी 'मधुकर' के अगले अंक के लिए लिखी है।

* * *

निर्माण—प्रति दो मास में निकलनेवाली पुस्तिका है, यह हिन्दी में प्रचलित सभी पत्र-पत्रिकाओं से भिन्न है, क्योंकि इसमें स्थायी महत्त्व की वस्तु छपेगी। साहित्य तथा अन्य विषयों पर गंभीर लेख होंगे।

कोई भी साहित्य राजनीति से अलग नहीं रहा है, न रह सकेगा। प्रकट या निहित रूप से भिन्न-भिन्न वर्गों की परायणता साहित्य के आवरण में पतली रही है। साहित्य राजनीतिज्ञों को तैयार करता है। हमारा विश्वास है कि कोरी शुष्क राजनीतिक बहस साहित्य नहीं है। उसके पीछे सामाजिक चेतना का समष्टिगत या व्यक्तिगत रूप होना आवश्यक है। हमने नवीन लेखकों को खोज निकालने का भरसक प्रयत्न किया है और हम आशा करते हैं कि नवीन लेखक हमें निस्संकोच सहायता देंगे।

हर मंज़िल पर हम प्रति दो मास में एक नया क़दम बढ़ायेंगे, युग-युग में प्रकाश फैलाने के लिए हमें स्वस्थ जीवन की आवश्यकता है, जो समानता, स्वातन्त्र्य और प्रेममय हो, शोषण के पाप से दूर हो। लेखकों को पारिश्रमिक दिये बिना कोई लेख, कहानी, कविता, एकांकी आदि नहीं छपेंगे। सर्वाधिकार लेखकों-द्वारा सुरक्षित रहेंगे।

—रांगेयराघव एम० ए०
बागमुज़फ़्फ़र ख़ाँ, आगरा

माधवी-कङ्कण

यह सुप्रसिद्ध बाबू रमेशचन्द्र दत्त का लिखा ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें मुग़लों के समय की दशा के चित्रण के साथ-साथ प्रेमी-प्रेमिका की बड़ी विचित्र कथा है। यह उपन्यास बहुत लोकप्रिय है। इसका नया संस्करण अभी तैयार हुआ है। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने। मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विवेदी-स्मृति-दिवस

दौलतपुर में साहित्यिकों का समारोह

रायबरेली में द्विवेदी-साहित्य-संघ के उद्योग से गत २० दिसम्बर को कानपुर लखनऊ, प्रयाग, रायबरेली और दौलतपुर तथा समीप के ग्राम-निवासियों का एक बहुत बड़ा जनसमुदाय आचार्य महावीर-प्रसाद द्विवेदी की पुण्यस्मृति में अपनी श्रद्धांजलि अर्पण करने को आचार्य के निवासस्थान दौलतपुर में एकत्रित हुआ जिनमें पंडित लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक', पंडित यज्ञदत्त शुक्ल, पंडित केशवनाथ 'अशंक', श्री ब्रजकिशोर पाण्डेय, श्री ब्रजनन्दन, श्री शिवसरन, पंडित सिद्धिनाथ वकील तथा पंडित उमेशदत्त शुक्ल वकील उपस्थित थे। पंडित द्वारकाप्रसाद शुक्ल 'शंकर' कार्य-संचालक सभापति, द्विवेदी-साहित्य-संघ ने आचार्य जी के बाल-कालीन सखा वयोवृद्ध पंडित शिवगोपाल मिश्र से

स्वर्गीय आचार्य पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी।

सभापति का आसन ग्रहण करने की प्रार्थना करते हुए संघ के गत वर्ष के कार्यों तथा भावी कार्यक्रम पर प्रकाश डाला और अखिल भारतवर्षीय "द्विवेदी स्मारक" की रायबरेली नगर में स्थापना की योजना को अग्रसर करने के लिए एक डेप्यूटेशन द्वारा भारत के प्रमुख शहरों में धन-संचय करने की आवश्यकता बताई। पंडित केशवनाथ 'अशंक' के अनुमोदन पर पंडित शिवगोपाल मिश्र ने सभापति का आसन ग्रहण किया। फिर पंडित चन्द्रभाल मिश्र वकील उपमंत्री द्विवेदी-साहित्य-संघ ने आगत सज्जनों का स्वागत किया और 'द्विवेदी-दिवस' की महत्ता बतलाते हुए आचार्य के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित की। कविवर मैथिलीशरण गुप्त, प्रोफ़ेसर दीनदयाल गुप्त लखनऊ-विश्वविद्यालय, श्री चन्द्रभाल शुक्ल हड़दा सी० पी०, पंडित देवीदत्त शुक्ल 'सरस्वती' सम्पादक तथा पंडित लल्लीप्रसाद पाण्डेय तथा बाबू रामनारायण गोइनका ने कलकत्ता के सहानुभूति तथा शुभ कामनाओं के पत्र पढ़कर सुनाये। पंडित लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक' ने द्विवेदी जी को श्रद्धांजलि अपनी मधुर कविता द्वारा अर्पित की। कवि द्विवेदी, पत्रकार द्विवेदी समालोचक द्विवेदी, द्विवेदी जी की जीवनी तथा द्विवेदी जी के कुछ संस्मरणों पर क्रमशः श्री ब्रिजहंस, पंडित शिवसरन, श्री ब्रिजशंकर, श्री 'अशंक' तथा पंडित यज्ञदत्त शुक्ल बी० ए० ने लेख और कविताएँ पढ़ीं। इनके अतिरिक्त दौलतपुर के कई विद्वान् सज्जनों ने जिसमें वयोवृद्ध पंडित शम्भूनाथ तिवारी (आचार्य के परम मित्र) और पंडित भगवतीप्रसाद शास्त्री ने अपने संस्मरण सुनाये। पंडित गंगासागर मिश्र ने श्री सुखदेव मिश्र दौलतपुर-निवासी प्रकाण्ड प्राचीन सुकवि के अप्रकाशित दो ग्रंथ द्विवेदी-साहित्य-संघ को प्रकाशनार्थ समर्पित किये। द्विवेदी जी के भानजे पंडित कमलाकिशोर ने अस्वस्थ होते हुए भी आयोजन को सफल बनाने में यथाशक्य सहयोग दिया। रात्रि में आचार्य के सम्बन्धी पंडित यज्ञदत्त शुक्ल बी० ए० के सभापतित्व में एक कवि-सम्मेलन हुआ जिसमें 'निशंक', 'अशंक', 'प्रमोद', 'ब्रजनन्दन', 'शंकर' पंडित शम्भूनाथ तिवारी, पंडित मुन्नूलाल तथा अन्य स्थानीय कवियों ने भाग लिया। कविवर 'निशंक' को द्विवेदी-साहित्य-संघ की ओर से आचार्य को श्रद्धांजलि-सम्बन्धी रचनाओं पर एक पदक दिया गया। इस प्रकार यह साहित्यिक समारोह समाप्त हुआ।

—संवाददाता

संवाददातागण के पत्र

अ० भा० श्री सरयूपारीण ब्राह्मण महासभा

आजमगढ़ में वार्षिक अधिवेशन

अखिल भारतवर्षीय श्री सरयूपारीण ब्राह्मण महासभा का तेईसवाँ महाधिवेशन गत २४ और २५ दिसम्बर को आजमगढ़ में समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में गोरखपुर के एडवोकेट पण्डित हरिहरप्रसाद द्विवेदी ने अध्यक्ष-पदग्रहण किया था। स्वागताध्यक्ष थे आजमगढ़ जिले के रईस पण्डित कन्हैयाशरण मिश्र।

नियमानुसार वेदपाठ और मंगलगान के पश्चात् फ़ैज़ाबाद-निवासी रायबहादुर पण्डित रामशरण मिश्र एम० ए० के प्रस्ताव करने तथा आजमगढ़ के वयोवृद्ध—एडवोकेट पण्डित बैजनाथ मिश्र के अनुमोदन करने पर मनोनीत सभापति श्री हरिहरप्रसाद द्विवेदी ने अध्यक्ष-पद ग्रहण किया। बाद को स्वागत-समिति की ओर से सभापति तथा आगत प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए पण्डित कन्हैयाशरण मिश्र ने अपना जो छपा हुआ भाषण पढ़ा, उसके द्वारा संक्षेप में आजमगढ़ जिले के इतिहास तथा उसकी वर्तमान अवस्था पर प्रकाश डालते हुए उस जिले की सरयूपारीण जनता की अवस्था का दिग्दर्शन कराया। अन्त में जाति की विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने उन्हें सुलझाने के लिए जोरदार अपील की।

स्वागत-भाषण के पश्चात् सभापति महोदय का भाषण आरम्भ हुआ जिसके द्वारा उन्होंने स्वजातीय बन्धुओं से धर्मवान् बनने के साथ ही साथ व्यावहारिक जीवन की प्रतियोगिता में सफलतापूर्वक भाग लेने के लिए अपने आपको हर प्रकार से योग्य बनाने के लिए प्रार्थना की।

रात्रि में विषय-निर्धारिणी समिति की बैठक में प्रयाग के एडवोकेट पण्डित कन्हैयालाल मिश्र ने जातीय महासभा की प्रगति पर प्रकाश डालते हुए सभासदों से अनुरोध किया कि हम लोग महासभा के अधिवेशन में अगणित प्रस्तावों पर वाद-विवाद करने में अपने समय का अपव्यय न करके कोई ठोस कार्यक्रम बनावें जिससे हमारी जातीय महासभा में बल आवे और यह जाति का नेतृत्व करने के उपयुक्त एक प्रभावशालिनी संस्था बन सके। श्री कन्हैयाशरण जी के इस विचार को अधिकांश प्रतिनिधियों ने पसन्द किया। अन्त में उन्होंने एक प्रस्ताव के रूप में महासभा के सदस्यों की वृद्धि तथा जाति में शिक्षा-प्रचार करने के निमित्त एक कोष बनाने तथा जातीय पत्रिका के ग्राहकों की संख्या में वृद्धि करने आदि का एक कार्यक्रम बनाया जो विषय-निर्धारिणी समिति में और दूसरे दिन खुले अधिवेशन में स्वीकृत हुआ।

पण्डित श्रीनिवास उपाध्याय, (अयोध्या) के प्रस्ताव करने तथा पण्डित श्री सदायतन पाण्डेय (अहरौरा, मिर्ज़ापुर) के अनुमोदन करने पर संस्कृत-शिक्षा के प्रचारार्थ एक कोष बनाने का निश्चय किया गया। अन्त में महासभा के आगामी अधिवेशन के लिए गाज़ीपुर का निमन्त्रण स्वीकार किया गया और सभा की कार्यवाही समाप्त हुई।

—ठाकुरदत्त मिश्र

* * *

काशी में भारतीय बाल-मंडल नामक एक अखिल भारतीय संस्था स्थापित की गई है जिसका प्रधान कार्यालय १५—१ बीबीहटिया, काशी में है। राष्ट्रीय दृष्टिकोण से बच्चों की सर्वांगीण उन्नति में योग देना इसका उद्देश्य है। इसकी आयोजनानुसार समस्त भारतवर्ष में इसकी ओर से बाल-क्रीड़ा केन्द्र खोले जायेंगे और वहाँ बाल-साथियों के शिक्षण तथा मनोरंजन की पूरी व्यवस्था की जायेगी। स्थानीय सदस्यों के लिए खेल-कूद, पुस्तकालय तथा वाचनालय, मिलन-मन्दिर आदि का भी प्रबन्ध किया गया है। मण्डल के अन्तर्गत प्रतियोगिता-विभाग, प्रकाशन-विभाग, कलमसखा विभाग, असमर्थ विद्यार्थी सहायता कोष आदि हैं। इसके तत्त्वावधान में संचालित बाल-शिक्षा-प्रसार-समिति, बाल-शिक्षण-मन्दिर स्थापित करेगी, परीक्षायें लेगी तथा बाल-साथियों को अन्य प्रकार के प्रोत्साहन देगी। इसकी ओर से एक बाल-संग्रहालय भी खुलेगा जिसमें बाल-मनोरंजन की वस्तुएँ एकत्र की जायेंगी। मंडल के नवीन और विस्तृत कार्यक्रम का श्रीगणेश आगामी १ जनवरी १९४६ से किया गया।

—प्रधान मंत्री

* * *

जयपुर राज्य के भूतपूर्व प्रधान मंत्री मान्यवर श्री हरिनारायण पुरोहित बी० ए० के निधन पर हिन्दी-साहित्य-समिति मंडावा और छात्र-साहित्य-संघ ने शोक प्रकट किया। स्वर्गीय पुरोहित जी ने बड़े कष्ट से अध्ययन किया और जयपुर राज्य में वही पहले व्यक्ति थे जिन्होंने बी० ए० पास किया था। कहते हैं महाराज साहब ने उनका इस पर बड़ा स्वागत किया था। विद्यार्थी-काल में वे पढ़ते और कमाते भी थे। सारा खर्चा स्वयं ही अर्जित करते थे। पुरोहित जी की हिन्दी-सेवा, साहित्य में चिरस्मरणीय रहेगी। हिन्दी को उनकी हस्तलिखित संत-साहित्य-संग्रह की विशिष्ट देन है। उन्होंने सुन्दर ग्रन्थावली पर भी आलोचनात्मक पुस्तक लिखी है। इस प्रकार वे बहुत काल तक हिन्दी की सेवा करते रहे। हम परमात्मा से उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

—संवाददाता

* * *

वनस्थली (जयपुर) में (बड़े दिन की) रात्रि को विद्यापीठ में महात्मा ईसा की जयन्ती समारोह व उत्साहपूर्वक मनाई गई। विद्यापीठ में संसार के सब धर्मों के प्रवर्तकों (बुद्ध, मुहम्मद, ईसा आदि) की जयन्तियाँ मनाई जाती रही हैं। इस वर्ष की ईसा-जयन्ती पर छात्राओं-द्वारा ईसा के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं जैसे गिरि-प्रवचन के मर्मस्पर्शी दृश्य अभिनीत किये गये। ईसा के जीवन और उपदेश सन्देश पर अध्यापकों के भाषण भी हुए जिनमें ईसाई-धर्म के मूल भूततत्त्व और उनका अन्य धर्मों से समन्वय को स्पष्ट किया गया।

—संवाददाता

* * *

मथुरा में अखिल भारतीय हिन्दी पत्रकार-सम्मेलन के सभापति पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी ने ता० २६ दिसम्बर को ब्रज-साहित्य-परिषद् की एक बैठक में भाषण दिया। यह परिषद् ब्रज-साहित्य मंडल के वृन्दावन के कार्य के लिए स्थापित की गई है। ता० २७ दिसम्बर को अपने ब्रज-साहित्य-मंडल के प्रधान कार्यालय का निरीक्षण किया और मंडल के पदाधिकारी व कर्मचारियों से लगभग ३॥ घंटे ब्रज-साहित्य के सम्बन्ध में वार्तालाप किया।

—प्रभुदयाल मीतल

* * *

मद्रास दक्षिण-भारत हिन्दी-प्रचार-सभा के श्री सिद्धनाथ पन्त, संयोजक, रजत-जयन्ती प्रदर्शनी, निवेदन करते हैं:—

सभा की रजत-जयन्ती आगामी जनवरी १९४६ को मनाई जानेवाली है। महात्मा गांधी जी समारंभ के अध्यक्ष होंगे। जयन्ती के साथ बड़े पैमाने पर हिन्दुस्तानी प्रचार प्रदर्शनी होगी। प्रदर्शनी में हिन्दी प्रचार का क्रम विकास, साहित्य-निर्माताओं की तसवीरें और उनका जीवन-सन्देश, प्रमुख हिन्दी-उर्दू संस्थाओं का परिचय, हिन्दी-उर्दू पत्रिकायें और चुनी हुई पुस्तकों का विषयवार संग्रह, दक्षिण भारतीय विद्यार्थियों की हस्तलिखित पत्रिकायें, और अभिनन्दन लेखमाला, आधुनिक शिक्षण पद्धतियाँ, गांधी जी की जीवन-झाँकियाँ, हिन्दी आन्दोलन के नेता और दाता, व्यंग्य चित्र आदि दस विभाग होंगे। राष्ट्रभाषा के प्रचार में दिलचस्पी रखनेवालों से प्रार्थना है कि प्रदर्शनी के लिए उपयोगी सामग्री जनवरी ता० १० तक भेजने की कृपा करें।

—संवाददाता

* * *

चिरगाँव (झाँसी) "जिला रचनात्मक-समिति, झाँसी" का कार्यारम्भ समारोह स्थानीय नागरिकों की अच्छी उपस्थिति में समिति के कोषाध्यक्ष श्री नारायणदास जी चौदा के निवासस्थान पर बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। श्री सियारामशरण जी गुप्त ने अपना चरखा गीत, जो इसी अवसर के लिए लिखा गया था, स्वयं पढ़ा और सामूहिक कताई के साथ यह समारोह उल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ।

—मंत्री

* * *

उज्जैन के 'अर्चना' आदि पुस्तकों के प्रणेता, हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि और लेखक श्री भगवत्तशरण जौहरी एम० ए० को आल इंडिया रेडियो से कविता-पाठ का निमन्त्रण प्राप्त हुआ था किन्तु उन्होंने रेडियो की हिन्दी-विरोधी नीति में कोई परिवर्तन न होने के कारण उसे तत्काल अस्वीकृत कर दिया। लखनऊ स्टेशन ने उन्हें दो कविताओं के लिए १०५) का आकर्षण दिया था।

—संवाददाता

—सुमन, माधवनगर उज्जैन

हिन्दी-साहित्य : बीसवीं सदी

वर्तमान साहित्य की वैज्ञानिक समीक्षा करनेवाली श्रेष्ठ पुस्तक

यह श्री नन्ददुलारे वाजपेयी, एम० ए० हिन्दू विश्वविद्यालय की उत्तम रचना है। इसमें हिन्दी के धुरन्धर लेखकों और कवियों पर विवेचनात्मक १९ निबन्ध हैं। इसमें वर्तमान युग की रचना-धाराओं का समावेश है।

सुन्दर सजिल्द पुस्तक मूल्य ५)

इंडियन बुकडिपो, लखनऊ।

(इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग के एजेंट)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत का राष्ट्रपति कौन होगा?

सर्वश्री आजाद, नेहरू, पटेल या बोस ?

दिल्ली में होनेवाले कांग्रेस के आगामी अधिवेशन के लिए राष्ट्रपति का चुनाव ७ मार्च १९४६ को होगा। २८ फरवरी १९४६ तक अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के दफ़्तर में भावी राष्ट्रपति के चुनाव विषयक प्रस्तावों को भेज देना चाहिए। कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव के विषय में राजनीतिक क्षेत्रों में इस समय बड़ी चर्चा है।

राजनीतिज्ञों का एक दल चाहता है कि इस बार भी कांग्रेस के अध्यक्ष वर्तमान राष्ट्रपति मौलाना अब्दुल कलाम आजाद ही बनायें जायँ। मौलाना साहब ने कठिन समय में बड़ी बुद्धिमानी और धैर्य के साथ कांग्रेस-कार्य का संचालन किया है। मौलाना की स्पष्ट विचारधारा, राजनीतिज्ञ ज्ञान और दूसरों की बातें सुनने और समझने की प्रवृत्ति के कारण भारतीय समस्याओं को हल करने के लिए निकट भविष्य में ब्रिटिश सरकार से जो वार्ता चलेगी उससे बड़ी सहूलियत पैदा होगी। राष्ट्रपति मौलाना ने अटूट लगन और साहस के साथ कांग्रेस का कार्य-संचालन किया है।

कांग्रेस के गरम दलवालों का कहना है कि इस बार पंडित जवाहरलाल नेहरू

क्या पंडित जवाहरलाल नेहरू आगामी कांग्रेस के सभापति बनेंगे ?

राष्ट्रपति के पद पर चुने जायँ। इस कैम्प में श्री शरतचन्द्र बोस के चुनाव की भी चर्चा हो रही है। पंडित जी इसके पूर्व ३ बार कांग्रेस के अध्यक्ष चुने जा चुके हैं। उनका कार्य अनुपम था। इस समय भी कहा जाता है कि नेहरू जी देश के सर्वप्रिय नेता हैं। उनकी आर्थिक कार्यशक्ति और प्रभावोत्पादक भाषणों का प्रभाव भारतीय जनता पर विशेष रूप से पड़ेगा। फलतः कांग्रेस में और भी जनता खिंच जाएगी। और लोग दूने उत्साह के साथ काम करेंगे। कुछ लोगों का यह भी अनुमान है कि पंडित जी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के राजनीतिज्ञ हैं इसलिए यदि उन्हें राष्ट्रपति के पद पर इस बार चुन लिया गया तो भारतवर्ष को दिये जानेवाले वैधानिक पर भी इसका प्रभाव पड़ेगा।

कुछ लोगों का विचार है कि श्री शरतचन्द्र बोस भी बड़ी बुद्धिमानी से कांग्रेस का कार्य चला सकते हैं। श्री बोस ने भी देश के लिए बहुत कुछ त्याग किया है। उनके व्यक्तित्व का भी असर है। आजाद हिन्द-फौज और 'नेता जी' के कार्यों ने आज देश को अच्छी तरह जगा दिया है। इस वातावरण की पृष्ठ-भूमि में विचार करने से श्री बोस का स्थान अद्वितीय प्रतीत होता है। सेवापुर आश्रम में गांधी जी और श्री बोस के बीच जो कई वार्तायें हुई हैं उसे भी लोग महत्त्व दे रहे हैं। किन्तु कुछ लोगों की ऐसी धारणा है कि श्री शरतचन्द्र बोस इस वर्ष कांग्रेस के अध्यक्ष नहीं बनाये जा

सरदार वल्लभभाई पटेल क्या आगामी कांग्रेस के सभापति होंगे

सकते क्योंकि केन्द्रीय असेम्बली में कांग्रेस दल के नेता भी सम्भवतः श्री बोस ही बनाये जानेवाले हैं।

कांग्रेस के एक प्रभावशाली दल का कहना है कि इस वर्ष सरदार वल्लभ भाई पटेल को कांग्रेस का अध्यक्ष बनाना चाहिए। सरदार पटेल इस्पाती दृढ़ता के आदमी हैं। उनका मोटो केवल कार्य करना है। महात्मा गांधी की नीति में उन्हें पूर्ण विश्वास है। इस दल का कहना है कि सरदार पटेल को ही इस वर्ष कांग्रेस का अध्यक्ष बनाना चाहिए। इन लोगों का यह भी विचार है कि ब्रिटिश सरकार से समझौता होना कठिन है और कांग्रेस को भारतीय स्वतंत्रता के लिए स्वयं कोशिश करनी पड़ेगी। गत अगस्त-आन्दोलन की विफलता से भी हमें कटु अनुभव प्राप्त हुए हैं। जनता के त्याग की भावना से भविष्य आशाजनक है। फलतः नये प्रयत्न में हमें गत अनुभवों से काफी शिक्षा प्राप्त होगी। अहिंसा के सच्चे पुजारी तथा एक दृढ़ योद्धा के द्वारा ही यह कार्य पूरा हो सकता है। इस दल का ख्याल है कि सरदार वल्लभभाई पटेल ही इस काम को कर सकते हैं। इस समय कांग्रेस पार्लमेन्टरी ढंग से ब्रिटिश सरकार से मोर्चा लेने की तैयारी कर रही है। कांग्रेस चाहे जो भी नीति अपनावे सरदार वल्लभभाई पटेल के सेनापतित्व में देश निश्चय ही विजय के मार्ग की ओर अग्रसर होगा।

कांग्रेस हाई कमांड के अति निकट सम्पर्क में रहनेवालों का विचार है कि अध्यक्ष-पद के लिए कोई चुनाव नहीं होगा। लोगों का विश्वास है कि दिल्ली-अधिवेशन के अध्यक्ष सरदार वल्लभभाई पटेल ही बनाये जायेंगे।

महिषा दल में महात्मा गांधी

गांधी जी की आज सायंकाल की ईश-प्रार्थना में बहुसंख्यक लोग आये जिसके सामने भाषण करते हुए गांधी जी ने कहा कि "स्वराज्य के लिए आप लोगों ने चाहे जो भी कष्ट उठाये हों, पर वे बेकार नहीं हैं। एक दिन उसका फल मिलेगा, कोई भी बड़ा कार्य बिना आत्म-त्याग और बलिदान किये सफल नहीं होता।

गांधी जी ने आगे कहा कि आप लोगों को यह ध्यान में रखना चाहिए कि अच्छे काम के लिए बहुत कष्ट झेलने पड़ते हैं। इसलिए आप स्वराज्य भी बिना कष्ट सहन किये नहीं प्राप्त कर सकते।

गांधी जी ने अपनी कुटिया में कांग्रेस कार्यकर्ताओं से भेंट की। तामलुक सब-डिवीजनल कांग्रेस कमेटी के सदस्यों से गांधी जी ने आध घंटे तक बातें कीं।

कांग्रेस का अगला अधिवेशन

दिल्ली के गांधी मैदान में मि० आसफ-अली ने मासिक झंडाभिवादन के अवसर पर कांग्रेस के आगामी अधिवेशन को सफल बनाने के लिए ५००० स्वयंसेवक और १ हजार देश-सेविकाओं की भर्ती के लिए अपील की है। आपने आगे कहा कि २७ वर्ष के बाद यहाँ कांग्रेस का अधिवेशन हो रहा है। इस अधिवेशन में महत्त्व-पूर्ण निश्चय होंगे। दिल्ली-निवासियों का कर्त्तव्य है कि हृदय से सहयोग करें और कोष में उदारतापूर्वक दान दें। १५ लाख से अधिक रुपया खर्च होने की संभावना है। आपने लोगों से अपील की कि स्वागत-समिति के सदस्य बनें।

हीरक-जयन्ती पर सरदार पटेल

कांग्रेस की हीरक-जयन्ती मनाने के उपलक्ष में कल शाम को जो बृहत् सार्वजनिक सभा हुई थी उसमें भाषण देते हुए सरदार वल्लभभाई पटेल ने यह आशा प्रकट की कि भारत की राष्ट्रीय शक्तियाँ ब्रिटिश साम्राज्यवाद पर भविष्य में विजय प्राप्त करेंगी। सरदार पटेल ने यह घोषणा भी की कि भारत की स्वतंत्रता में अब और अधिक बिलम्ब नहीं किया जा सकता।

बम्बई में हड़ताल

मैजागान डाक के करीब ८,००० खलासियों ने कल से हड़ताल शुरू कर दी है।

मास्को-सम्मेलन में क्या हुआ ?

अमरीका, ब्रिटेन और रूस के निर्णय का एक संयुक्त वक्तव्य

तीन बड़े परराष्ट्र-मंत्रियों का सम्मेलन मास्को में समाप्त होने पर आज रात को लन्दन, मास्को तथा वाशिंगटन से ५ हजार शब्दों की एक विज्ञप्ति एक साथ प्रकाशित हुई है जिसमें निम्नलिखित मुख्य विषयों पर सम्मेलन का निर्णय घोषित किया गया है—

परमाणु शक्ति के नियन्त्रण के लिए मित्रराष्ट्रों का एक कमीशन स्थापित होगा। जापान के नियन्त्रण के लिए वर्तमान सुदूरपूर्व सलाहकार कमीशन की व्यवस्था को तोड़कर जापान के लिए एक मित्र कौंसिल का निर्माण होगा।

अमेरिका और ब्रिटेन की सरकारों द्वारा रूमानिया तथा बलगेरिया की सरकारों को स्वीकार की सुविधा के लिए जो व्यवस्था स्वीकार की गई है उसका विवरण भी विज्ञप्ति में घोषित किया गया है। कोरिया को स्वतंत्र राष्ट्र बनाने के प्रश्न पर भी निर्णय कर लिया गया है।

विज्ञप्ति ८ भागों में विभाजित है। अन्तिम भाग में परमाणु शक्ति नियन्त्रण कमीशन का उल्लेख किया गया है। इसमें बताया गया है कि रूस, अमेरिका तथा ब्रिटेन इस बात पर सहमत हुए हैं कि सुरक्षा-समिति के अन्य सदस्य राष्ट्रों फ्रांस, चीन तथा कनाडा को आमन्त्रित किया जाय कि वे मित्रराष्ट्रों की जनरल असेम्बली के जनवरी में होनेवाले प्रथम अधिवेशन में उक्त कमीशन की स्थापना के प्रस्ताव के नियोजक बन जायें।

ब्रिटिश परराष्ट्र मन्त्री श्री बेविन ने आज बताया कि यद्यपि मास्को की विज्ञप्ति में ईरान का कोई उल्लेख नहीं था फिर भी उस प्रश्न पर सम्मेलन में विस्तारपूर्वक विचार हुआ किन्तु अन्तिम समझौता न हो सका। अब कूटनीतिक सूत्रों से इस प्रश्न पर विचार हो रहा है।

ब्रिटिश पार्लामेंटरी दल

ज्ञात हुआ है कि भारत जानेवाला ब्रिटिश पार्लमेण्टरी शिष्ट मण्डल २ जनवरी के लगभग यहाँ से प्रस्थान करेगा। ५ जनवरी के लगभग दिल्ली पहुँचने पर शिष्ट मण्डल के सदस्य दो-एक दिन वाइसराय के अतिथि रूप में बितायेंगे तत्पश्चात् जब और जहाँ स्वेच्छानुकूल वे जा सकेंगे। उनका कार्यक्रम दिल्ली पहुँचने पर ही निर्धारित होगा। आशा की जाती है कि शिष्टमण्डल को ५-६ सप्ताह तक रहना होगा।

सच्चा सेवक

छोटा-सा नाटक है जिसमें सेवक के गुण सुन्दरता से दिखाये गये हैं। यह नाटक अभिनय करने के लिये लिखा गया है और खेला भी गया है। स्कूलों में उत्सव के समय छात्र इसका निर्दोष अभिनय करके प्रशंसा पाते हैं। मूल्य केवल ।–) पाँच आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

महादेवी का

विवेचनात्मक गद्य

संग्रहकर्ता—श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय, एम० ए०

(श्री महादेवी वर्मा के १० निबन्धों का संग्रह।)

एक मत :—

……ये लेख वैज्ञानिक या निरे बौद्धिक विश्लेषण-प्रधान न होकर एक प्रबुद्ध और सतत प्रज्वलनशील अनुभूति के परिणाम हैं। इनका सत्याकलन वैज्ञानिक अथवा दार्शनिक का तत्त्वचिन्तन न होकर कलाकार का सांगोपांग स्वरूपमय जीवन-दर्शन है। ……छायावाद और रहस्यवाद को लेकर जो अनेक भ्रान्त और निर्मूल धारणाएं हमारे साहित्य में रूढ़ हो चली थीं उनके विषय में महादेवी जी के इन पारदर्शी निबन्धों से अवश्य ही हम प्रकृत सत्य का परिचय पा सकेंगे।—'वीणा'

द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो गया है।

मूल्य दो रुपये बारह आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

गोविन्दगुप्त—रचयिता, श्री गंगा-प्रसाद 'कौशल'; प्रकाशक—सरला पुस्तक-माला, कदमकुआँ, पटना; दुरंगा आवरण; पृष्ठ-संख्या १००, मूल्य बारह आने।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध तरुण कवि और कहानीकार श्री कौशल जी ने प्रस्तुत पुस्तक में गुप्त-कालीन हिन्दू इतिहास का वह स्वर्णिम अध्याय अंकित किया है, जिसमें चन्द्रगुप्त द्वितीय के बाद उनके पुत्र कुमार-गुप्त सम्राट् होकर भी लोकप्रियता से कोसों दूर थे। रात-दिन वैभव-विलास की तरंगों पर बहना ही जिनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य रह गया था और एक रूपवती वेश्या को जो अपनी पट्ट-महारानी तक बना चुके थे। इन्हीं कुमारगुप्त के अनुज थे गोविन्दगुप्त, जो न केवल एक वीर पुरुष, प्रत्युत भारतीय संस्कृति की मर्यादा के परम रक्षक भी थे।

गोविन्दगुप्त जब तक जीवित रहे, पाटलिपुत्र के राज्य-सिंहासन पर सदा उचित अधिकारियों को ही प्रतिष्ठित कराते रहे और स्वयं आक्रमणकारी हूणों से युद्ध-स्थल में लोहा लेते रहे।

कुमारगुप्त का वैभव-विलास, उनकी आमोद-प्रियता और उनकी रासलीला का जहाँ कौशल जी ने अत्यन्त सरस और मोहक वर्णन कोमल-कान्त पदावली में किया है, वहीं गोविन्दगुप्त की वीरता, उनका त्याग, उनकी मर्यादा का भी इतना संयत और वीर-रस से ओतप्रोत चित्रण किया है कि सदियों पहले की यह ऐतिहासिक गाथा सजीव होकर हमारे सामने आ जाती और कौशल जी के कौशल की छाप छोड़ जाती है।

कुमारगुप्त की अनुचित रंगीनियों से परेशान होकर उनके वृद्ध महामात्य कहते हैं:—

एक बूंद भी रक्त रहेगा
जब तक मेरी काया में;
वृद्ध नहीं फँस सकता है
कभी किसी की माया में।

तत्कालीन भारतीय वीरता का यह ऐसा प्रमाण है जो अपने प्रभु को भी मर्यादा का सीमोल्लंघन करने पर क्षमा नहीं कर सकती थी। आज-जैसे चाटुकार और चापलूसों का युग वह नहीं था।

और, गोविन्दगुप्त अपने दुश्मन—हूणों—का सामना करने के लिए जब जाते हैं, तब अपने वीरों को प्रोत्साहित करते हुए कहते हैं:—

महाकाल के भी सम्मुख जा
दो-दो हाथ दिखायेंगे।
देश-प्रेम की बलिवेदी पर
हँस-हँस शीश चढ़ायेंगे।

अपने भाई के अनाचार पर गोविन्द-गुप्त नीतिपूर्ण बात कहने में भी नहीं हिचकते —

जब राजा बुजदिल हो जाता
राज्य नष्ट हो जाता है।
और क्रान्ति का जन-जन-उर में
बीज विषम बो जाता है।

वीर गति को प्राप्त होते समय इस सिंह की आकांक्षा देखिये:—

जियो-जियो तुम सदा देश-हित,
स्वाभिमान रखकर जग में।
आर्य-रक्त भी इज्जत रखता,
बहता है जो रग-रग में।

छन्दों की रचना कुछ स्थलों पर शृंगार, करुणा, वीर और वीभत्स रसों का उद्रेक करने में भी सफल हुई है। भाषा अत्यन्त सरल और प्रवाहपूर्ण भी है, यद्यपि कहीं-कहीं कुछ पंक्तियाँ मात्र-गद्य-सी रह गई हैं। उदाहरण के लिए पृष्ठ ६६ पर निम्नांकित छन्द की दूसरी और चौथी पंक्ति देखिये:—

किन्तु व्यर्थ अब हुआ दौड़ना,
वह तो प्राण खो चुकी थी।
राजपुत्र की प्यारी अरुणा
जलकर खाक हो चुकी थी।'

इसी तरह किसी-किसी छन्द में प्रूफ़ की भी अशुद्धियाँ प्रवाह में बाधक हो जाती हैं। एक बात और, इस पुस्तक की रचना—कौशल जी ने १९४१ में की थी। इधर पाँच वर्षों में उनका कवि जितना निखर चुका है, उस निखार को भी इस पुस्तक में खोजने का प्रयत्न करना, उनके साथ अन्याय करना होगा।

सब मिलाकर वीर-रस की यह काव्य गाथा हिन्दी-संसार-द्वारा समादर प्राप्त करने की अधिकारिणी है।

* * *

कीमती आसू—लेखक, श्री रामकृष्ण रघुनाथ खाडिलकर, बी० एस-सी०; प्रकाशक, शिवाजी प्रकाशन-मन्दिर, लखनऊ; पृष्ठ-संख्या ७६; दुरंगा आवरण; मूल्य बारह आने।

हिन्दी के सुपरिचित पत्रकार श्री खाडिलकर जी की बारह छोटी-छोटी, मौलिक कहानियों का यह संग्रह कला और आधुनिकतम कहानी के 'टेकनिक' से भले ही दूर समझा जाये; लेकिन मानव-समाज के ऐसे जीते-जागते चित्र इन कहानियों में अंकित किये गये हैं जो पाठक के हृदय में तीर की तरह घुसकर अपना प्रभाव डाल देने की क्षमता रखते हैं। शब्दाडम्बर से दूर रहकर खाडिलकर जी का कहानी-कार एक पत्रकार अथच आलोचक की गिद्ध-दृष्टि से ही मानव-समाज के समस्त व्यापारों को देखता है, जो उनके लिए स्वाभाविक ही कहा जायगा। संग्रह पठ-नीय है।

* * *

सङ्क्रम—लेखक, श्री नारायण श्याम-राव चिताम्बरे, बी० ए०; प्रकाशक—शिवाजी प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ; दुरंगा आवरण; सजिल्द प्रति, पृष्ठ-संख्या २००; मूल्य तीन रुपये।

हिन्दी के उदीयमान कथाकार श्री चिताम्बरे जी की सोलह कहानियाँ इस संग्रह में हैं। मानव-जीवन के विविध चित्रों को कुशलतापूर्वक अंकित करने में लेखक को अच्छी सफलता मिली है। नारी के मन को और उसकी मानसिक उथल-पुथल को कहानीकार ने बहुत ही निकट से पढ़ा-समझा है। मानसिक द्वन्द्व का मनो-विश्लेषण लेखक ने बहुत ही सफलतापूर्वक किया है।

आजकल हिन्दी में लिखी जानेवाली अधिकांश कहानियों में चिताम्बरे जी की ये कहानियाँ अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। सबसे बड़ी विशेषता तो यह है कि समान रूप से यह कहानी-संग्रह आबाल-वृद्ध-वनिता—सभी के हाथों में दिया जा सकता है।

कहानियों के पात्र सजीव, कथा-प्रवाह गतिशील और भाषा कवित्वमय है। इन कहानियों से हिन्दी पाठकों का न केवल मनोरंजन होगा, प्रत्युत समाजगत् विचार धारा का बहुमुखी प्रवाह भी उनके समक्ष लहरा उठेगा और तज्जन्य परिणामों का चित्रण उनकी सुप्त भावनाओं को जागृत करने में भी सहायक सिद्ध होगा।

हमें विश्वास है, यह कहानी-संग्रह समादरित होगा और चिताम्बरे जी भविष्य में इससे भी अच्छे और ठोस कहानी-संग्रह हिन्दी-पाठकों को भेंट कर अपनी प्रतिभा का परिचय देंगे।

—देवीदयाल चतुर्वेदी
'मस्त'

अ० भारतीय हिन्दी पत्रकार-सम्मेलन

(पेज ६ का शेष)

श्री गोपालप्रसाद जी व्यास ने 'आजाद हिन्द' पर-एक बड़ी सुन्दर रचना सुनाई। बार-बार लोगों ने कहा कि पूरी कविता सुनाइये। आपकी कविता बड़ी सामयिक रही। आप आज-कल के सामयिक कवियों में अपना स्वयं स्थान रखते हैं। आपकी कविता जन-साधारण में अपनाई जा रही है। कवि-सम्मेलनों की दो बातें बड़ी अनोखी रहीं। एक कवि अपने नशे में कविता-पाठ करने और प्रत्येक अङ्ग-प्रत्यङ्ग का प्रदर्शन करके कविता सुनाने लगे। बार-बार अपनी छाती पर हाथ रखकर मा-बहिनों के सामने प्रदर्शन करते थे। ऐसा वीभत्स रूप मालूम पड़ता था जिसे मैं यहाँ लिखकर अपना समय बर्बाद नहीं करना चाहता। दूसरे सज्जन एक युवक थे। आप किसी राज्य में कहीं कुछ काम करते हैं, अपनी रचना सुनाने लगे। अश्लील कविता के अच्छे सिद्धहस्त लेखक मालूम होते थे। उसका नतीजा यह निकला कि आप सभा-मण्डप में पीटे जाते, बच गये। कई आदमी खड़े हो गये और कहा तुम कितने गंदे कविहो, अपनी मा-बहिनों का शर्म तुम्हें नहीं है। बेचारे हक्का-बक्का बन गये। सी० पी० के एक प्रसिद्ध कवि दूसरे की रचना सुनाकर अपनी रचना कहने लगे। दूसरे दिन जब कुछ लोगों ने वही कविता उन्हें 'कुमार हृदय' की रचना बताई तब अपनी ग़लती दूसरे दिन खुले अधिवेशन में स्वीकार कर ली।

दूसरे दिन दोपहर बाद विषय-समिति की बैठक हुई। विधान में कुछ आवश्यक संशोधन किया गया और सदस्यों का चुनाव हुआ। हिन्दी-विरोधी नीति का तीव्र विरोध हुआ और इस बात पर जोर देकर प्रस्ताव पास हुआ—हिन्दी, उर्दू में अलग-अलग ब्राडकास्ट हों। कुल आठ प्रस्ताव पास किये गये। सब प्रस्ताव सामयिक थे। राष्ट्रीय सरकार बनाने पर जोर दिया गया था। देश की अशान्ति और घूंसखोरी मिटाने के लिए राष्ट्रीय सरकार की तुरन्त स्थापना होनी चाहिए। लेनिनग्राड विश्व-विद्यालय में सांस्कृतिक भाषा के प्रचार के लिए राहुल जी की नियुक्ति पर रूस सरकार को धन्यवाद का प्रस्ताव पास हुआ। आजाद हिन्द सैनिकों को तुरन्त रिहा कर देने का एक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किया गया। राजा महेन्द्रप्रताप की देशभक्ति देखते हुए उन्हें तुरन्त रिहा कर देना चाहिए। पत्रकारों की आर्थिक जाँच के सम्बन्ध में भी एक प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

सभाओं में प्रस्ताव तो स्वीकार होते ही रहते हैं लेकिन अवश्यता है प्रस्ताव को कार्यान्वित कराने की। कर्मठ और सच्चे नेता का होना। प्रचार से बहुत थोड़ा काम होता है यदि प्रचार के पीछे वास्तविक शक्ति हो तो हम अपने प्रस्तावों को बहुत जल्दी स्वीकार करा सकते हैं। दो एक सज्जनों के अतिरिक्त मुझे कर्मठ और लगन के कार्यशील व्यक्ति नहीं दिखाई पड़े। यदि मैं कहूँ तो सम्मेलन में दो विभूतियाँ नजर आ रही थीं, वह हैं। पं० चतुर्वेदी जी और भाई मुकुटबिहारी वर्मा इसका यह अर्थ न निकाला जाय कि बाकी सदस्य सब खराब थे। भाई गोपालचन्द्र विद्यालंकार भी एक अच्छे कार्यकर्ता हैं। माना कि आज अखिल भारतीय पत्रकार-संघ का वजन कम मालूम होता है लेकिन आशा है यह संस्था कर्मठ व्यक्तियों के हाथों में पहुँचते ही एक लड़ाकू श्रमजीवी पत्रकारों की संस्था बनेगी—परिस्थिति क्या नहीं बना सकती?

* * *

अखिल भारतीय पत्रकार सम्मेलन को मैं कभी नहीं भूल सकता। दो पत्रकार-लेखक थे। समाचार-पत्रों में, उनके नाम से अच्छी तरह परिचित था। मथुरा में स्वयं उनका दर्शन हुआ। मैं सुनी-सुनाई बातों को नहीं लिख रहा हूँ बल्कि अपनी आँखों देखी घटना लिख रहा हूँ। पाठकों से मैं यह कह देना अपना फ़र्ज समझता हूँ वे यह कल्पना हरगिज न करें कि अखिल भारतीय पत्रकार-सम्मेलन में ऐसे ही लोगों का प्रभुत्व है।

आप दोनों कवि थे। कहानीकार थे। देखने में साधारण पुरुष थे। किसी चे[illegible] का आकर्षण नहीं। लेकिन हिन्दी-जगत् अच्छी तरह आप लोगों से परिचित है। सब घटनाओं को मैं यहाँ लिखने में असमर्थ हूँ। प्रातःकाल का समय था आप लोग सम्मेलन के अतिथि-गृह से सोकर उठे थे। एक दूसरे को आपस में गालियाँ दे रहे थे। कल के बोतल का नशा अभी तक नहीं उतरा था। दूसरे दो बोतल पी गये थे। रात में ताश खेलने के पहले भी तो आधा-आधा बोतल छान गये थे। सिगरेट जलाने के लिए काग़ज का टुकड़ा चाहिए। न मिलने पर हाथ में पाँच रुपये का नोट पड़ा था। बत्ती से जलाकर आधे पैसे का सिगरेट सुलगा गये। कहने लगे पाँच रुपये का नोट जल गया। यह तो आप लोगों का पहला दर्शन है। दूसरा दर्शन बहुत करुणा-जनक है।

यदि कोई शक्ति किसी को सुधारती है तो मैं प्रार्थना करता हूँ कि इन्हें उन करुणाजनक और हृदय को हिला देनेवाली घटनाओं से बचाये। क्या यह किसी सभ्य परिवार के अतिथि बनने योग्य हैं?

(शेष अगले अंक में)

फ्रांस का इतिहास

में ईसा पूर्व २२५ से लेकर सन् १९२० ईसवी तक का इतिहास है। इसमें वहाँ की राज्यक्रान्ति के राजवंश, फ़्यूडल प्रणाली, स्वतंत्र, राजतंत्र, शत-वर्षीय युद्ध, योरप में फ्रांस के प्रसार, राजवंश के उद्धार, सन १८४८ की क्रान्ति, राष्ट्रीय सभा और प्रजातंत्र आदि का वर्णन उत्तमता से किया गया है। पुस्तक में चित्र भी हैं। अच्छे कागज पर छपे साढ़े चार सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ४) चार रुपये।

कुछ

यह प्रसिद्ध साहित्य-सेवी श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी बी० ए० के बढ़िया निबन्धों का संग्रह है। इसमें २० निबन्ध हैं जो भाषा, भाव और विवेचन की दृष्टि से विलक्षण हैं। यह इस वर्ष की अनुपम रचना है। पृष्ठ-संख्या २०० से ऊपर। मूल्य केवल १।) एक रुपया आठ आने।

स्वदेश-विदेश-यात्रा

श्रीयुत सन्तराम जी, बी० ए० और श्रीमती रामेश्वरी नेहरू की प्रसिद्ध रचना है। देश-देशान्तर की यात्रा करने से अनेक लाभ होते हैं। व्यवहार-ज्ञान और सामान्य बुद्धि की वृद्धि होती है। परन्तु पर्यटन का सुयोग सबको सुलभ नहीं होता। इसकी रुचि भी थोड़े लोगों को होती है। ऐसे लोगों को यात्रा-विषयक पुस्तकें पढ़ने से बड़ा लाभ हो सकता है। इस पुस्तक में कश्मीर और कुल्लू की सैर तथा आस्ट्रेलिया की यात्रा का वर्णन है। पुस्तक सचित्र है। अच्छे कागज पर छपी पौने दो सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल १।) एक रुपया चार आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड
इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"प्रत्येक सुबह का पहला काम"

आधुनिक जीवन-यापन की परिस्थितियाँ कस्थली में अम्लता पैदा कर देती हैं, सके कारण पाचन-सम्बन्धी शिकायत त्पन्न हो जाती है। ताज़गी देनेवाले नोज़ 'फ्रूट शाल्ट' का एक गिलास शारीक क्रियाओं को व्यवस्थित करता है, मस्त विषों का शमन करता है, लिवर स्फूर्ति देता है और अम्लता को निरारण करता है।

ईनोज़ "फ्रूट साल्ट"

इनो व "फ्रूट साल्ट" शब्द रजिस्टर्ड ट्रेड माक है।

पेट के दर्द के चंगुल में न फँसिए!

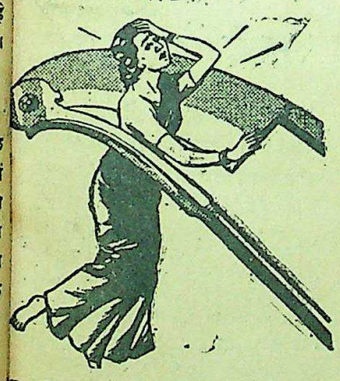

ट का दर्द जब आपको पीड़ा दे उसे कदम बन्द कर दीजिए। उसके चंगुल ा दृढ़ मत होने दीजिए अन्यथा घाव ोने का भय है।

PREPARED ACCORDING TO A SPECIALLY SELECTED FORMULA
MACLEAN Brand Stomach Powder

दिनों भार ने नकाला है १,००० के नोटों दाखिल दफ़्तर जाये क़ीमत पुड़िया बाँधने के का जायेगी। पुराने तो कम-क हुए रईसों पर आफ़त जरूर हज़ारों के नोटों की बदौ से मालामाल बन रहे थे उनकी आफ़त है। या तो

कठिन परिश्रम के बाद;

प्रत्येक मनुष्य का शरीर और मन दोनों ही थक जाता है। उसे फिर काम के योग्य बनाने के लिये आराम करना अत्यन्त आवश्यक है। आराम करने से शरीर की थकावट अवश्य दूर हो जाती है किन्तु मन के लिये विशेष प्रकार के भोजन की आवश्यकता होती है। भोजन पचने में हलका स्वादिष्ट और सात्विक होना चाहिये।

ये पाँच कहानी-संग्रह कठिन परिश्रम के बाद आराम करते समय पढ़ने योग्य हैं। इनमें वे ही गुण हैं जो मन को प्रफुल्लित करने के लिये आवश्यक हैं।

पुष्करिणी २)
अनुराग १)
कलंक १)
गल्पगुच्छ (चार भाग) ४॥।≡)
टाल्सटाय की कहानियाँ २)

मैनेजर—बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

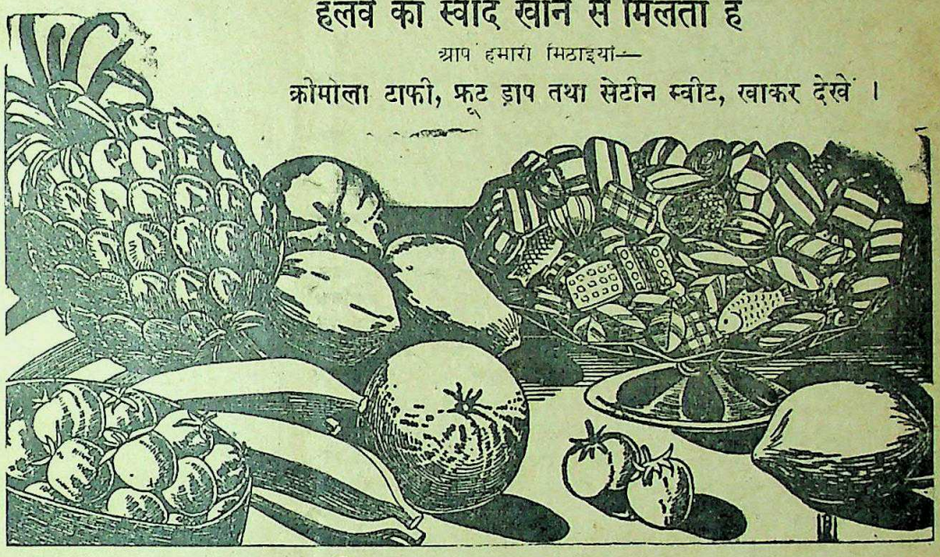

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

हजामत (शेविंग) के लिये भी 'गोदरेज' साबुन का व्यवहार कीजिये!

सावधानी से बनाने की विधि, प्राकृतिक औषधियों का मिश्रण और परीक्षित शुद्ध वनस्पति तेल का उपयोग ही अन्य गोदरेज नहाने के साबुन की तरह ही गोदरेज शेविंग सोप की भी विशेषताएँ हैं इसमें उपयोग किये गये वनस्पति तेल के फेन से आपके चर्म पर किसी भी तरह की जलन नहीं होगी। इसमें दो खास फायदे हैं—एक तो यह कड़ी से कड़ी दाढ़ी को मुलायम कर देता है जिससे हजामत बनाने में जरा भी कष्ट नहीं होता और दूसरा अत्यन्त कोमल चर्म को भी हजामत बनाने के बाद मुलायम और चिकना रखता है। इसके घने फेन की यह खास विशेषता है कि यह चेहरे पर जल्दी नहीं सूखता जिससे समय की बचत होती है। आप जिस प्रकार गोदरेज वनस्पति टायलेट साबुनों का उपयोग कर अपने शरीर को स्वस्थ और स्वच्छ रखते हैं उसी तरह गोदरेज शेविंग साबुन—स्टिक या 'राउन्ड'—का उपयोग कर अपने चेहरे की सुन्दरता को बढ़ाइये।

गोदरेज टायलेट साबुन नं० १ नं० २ 'वतनी' सन्दल लिमडा (नीम) फैमिली टर्किश बाथ शेविंग स्टिक शेविंग 'राउन्ड'
१०० प्रतिशत शुद्ध और पशु चर्बी रहित होने की गारन्टी।

Godrej गोदरेज
शेविंग स्टिक & शेविंग 'राउन्ड'

शेवि... रे को
[डब्ब... ल सकता है।
गोदरेज ... बम्बई : पी० लेकर सर्कस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Estd. 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस:—H.L.M.S. १०) H.M.B.S. १५) H.M.D.S. २५)। पुस्तक—अ० पारिवारिक १) बायोकेमिक १) १००० रेडलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्सनरियाँ १॥) आर्गेनन १), फार्माकोपिया १॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायँगी। डा० ख० माफ—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≫) ड्राम। आउन्स ॥) घरेलू बक्स ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.)

बालसखा का नया वार्षिकांक

ग्राहकों के अनुरोध से हमने इस वर्ष भी बालसखा का वार्षिकांक निकालने का निश्चय किया है। इसमें बहुत से चित्र कवितायें, कहानियाँ, बढ़िया लेख और उपयुक्त सामग्री रहेगी। पृष्ठ संख्या ३०० से ऊपर। यह अङ्क सन् १९४६ में बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होगा। मूल्य ३), बालसखा के ग्राहकों के लिए रियायती मूल्य २॥)

मैनेजर, बालसखा इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

AAA 461

हिन्दुस्तान को प्रति वर्ष

३०,००,००० टन अधिक

अनाज किस प्रकार मिल सकता है ?

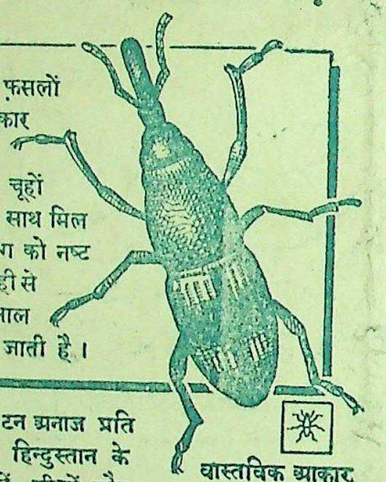

यह एक कीड़े का चित्र है जो फ़सलों का नाश करता है। (इसका आकार यहां बहुत कुछ बढ़ा कर दिखाया गया है।) यह कीटाणु चूहों तथा अन्य कीड़ों और नमी के साथ मिल कर हमारे अनाज के बीसवें भाग को नष्ट कर डालता है। हमारी लापरवाही से यह कीटाणु फैलता है। हर साल इसकी तादाद हज़ारों गुना बढ़ जाती है।

वास्तविक आकार

खराब संग्रह से ३० लाख टन अनाज प्रति वर्ष बरबाद हो जाता है। हिन्दुस्तान के प्रत्येक व्यक्ति को प्रति वर्ष चूहों, कीड़ों और नमी के कारण ८ सेर अनाज की हानि उठानी पड़ती है। अनाज भरने के इन बुद्धिमत्तापूर्ण तथा उपयोगी नियमों का पालन कर इस बरबादी को रोका जा सकता है और रोका जाना चाहिए।

यह ज़रूर कीजिए

भंडार में भरने से पहले सारे अन्न को साफ़ कर लीजिए और सुखा कर धरिए।

सिर्फ़ साफ़-सुथरे गोदामों में ही अनाज भरिए। दीवारों और फ़र्श को रगड़ कर साफ़ कर लीजिए; दीवारों में सफ़ेदी करवा दीजिए; अनाज रखने से पहले दीवारों और फ़र्श के सूराखों को भरवा दीजिए।

जिन गोदामों में पानी न जाता हो, उन्हें ही भंडार के काम में लाइए।

जिन गोदामों में चूहे न जा सकते हों, उन्हीं में भंडार बनाइए। सीमेण्ट और कांच के टूटे हुए टुकड़े बिलों में भर दीजिए। मोरी के मुंह पर जाली लगा दीजिए। घर के दरवाज़ों को चिपक कर बन्द होना चाहिए।

जहां तक संभव हो, अनाज को ढेर लगा कर धरिए। अगर बोरों में भरना हो, तो बोरे साफ़ होने चाहिएं; फ़र्श से उठे हुए हों और दीवारों से चिपके हुए न हों।

नियमित रूप से अनाज का निरीक्षण कीजिए। सूखे मौसम में रोशनी और हवा के लिए भरोखे खोल दीजिए।

यह मत कीजिए

अच्छे अनाज को गन्दे गोदामों या गन्दे बोरों में या घुन खाए अनाज के पास मत रखिए।

अनाज को सीली हुई हालत में मत भरिए।

गोदाम में या इसके निकट पानी, पुराने बोरे या गन्दा कूड़ा-करकट मत रहने दीजिए।

गोदामों के निकट अनाज साफ़ मत कीजिए।

खुश्क आबोहवा में चार महीने से अधिक और नम आबोहवा में तीन महीने से अधिक समय तक बोरों में अनाज मत रखिए।

रेल के खुले प्लेटफार्मों पर अनाज को पड़ा मत रहने दीजिए।

अन्न बचाइए—देश की सेवा कीजिए

गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया के फूड डिपार्टमेण्ट, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।

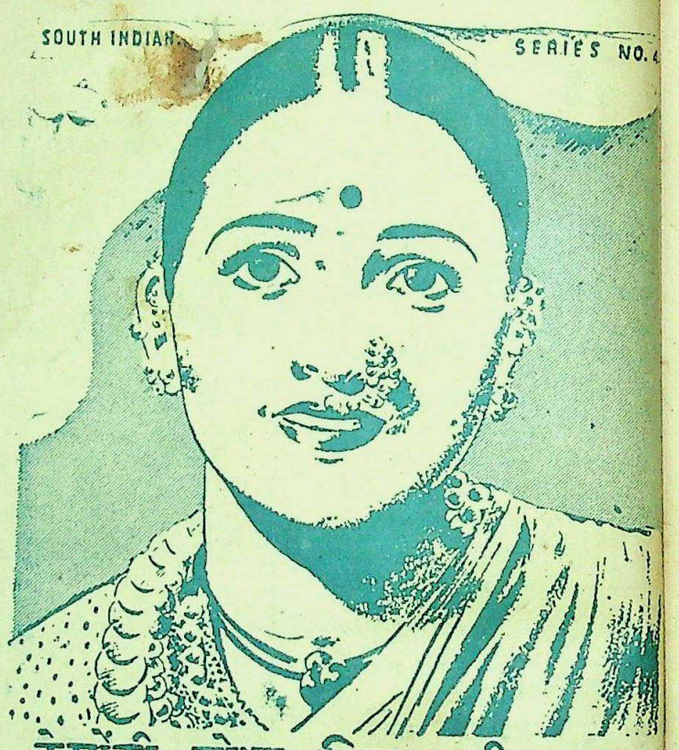

केशोंकी शोभा बिना सारी सुन्दरता फीकी पड़ जाती है

इसीलिये केशोंको सजाने व संवारनेके नित्य नये तरीके निकलते आ रहे हैं और निकलते जायंगे। इस विशाल भारतवर्षमें विभिन्न रुचिके लोग हैं और आज ७० वर्षोंसे जवाकुसुम, हर तरहके लोगोंको पसन्द आता रहा है। हमारे देशमें धूल-धक्कड़के मारे बालोंकी जड़में गर्दा बैठ जाता है। फिर गर्मी इतनी तेज पड़ती है कि मस्तिष्कके स्नायु बहुत जल्द गर्म हो जाते हैं। इ दोनों कारणोंसे ही बालोंकी स्वाभाविक कमनीयता और मजबूती नष्ट होती है

आयुर्वेदोक्त जड़ी-बूटियों से बना जवाकुसुम बड़ी आसानीसे मैलको निकाल देता है और बालोंकी जड़को मजबूत बनाता है। इसके स्निग्ध स्पर्शसे मस्तिष्क शीतल हो जाता है।

७० वर्षकी सुप्रसिद्धिका समृद्ध

जवाकुसुम

केशोंकी शोभा बढ़ाता...मस्तिष्क शीतल रखता

सी० के० सेन एण्ड कं० लि० · जवाकु

डिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड इलाहाबाद।

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमि

जाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष ८, संख्या २१] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक रविवार, २० जनवरी, १९४६

पण्डित जवाहरलाल नेहरू राजपूताने के दौरे से स्टेशन से उतर कर आनंद भवन की ओर जा रहे हैं।

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

भारत-सरकार कभी-कभी जरूरत से ज्यादा इंसाफ़ पसन्द बन जाती है। फिर हवा का रुख़ देखना तो बुद्धिमानों का फ़र्ज़ ही है। भारत-सरकार भी इस वक्त हवा के रुख़ पर चल रही है। लड़ाई के बाद भारत को स्वराज्य देने की हवा जब से ब्रिटिश सरकार ने बाँधना शुरू किया है तब से भारत-सरकार भी, बहती गंगा में हाथ धोने की नीयत से, कुछ आगे बढ़ने लगी है। युद्धकाल में चोरबाजार और घूसखोरी का बोलबाला रहा। लेकिन क्या भारत-सरकार को इन बातों का पता नहीं? लेकिन उस वक्त था कौन? केवल हमारी सरकार बहादुर और मुस्लिम लीग। किन्तु जब से कांग्रेसवाले जेल से छूटे हैं तब से होहल्ले का बाज़ार गरम हो गया है। सरकार भी सोचती है कि अच्छा है पिछले किये का थोड़ा बहुत प्रायश्चित्त कर डाला जाय तो क्या बेजा? क्योंकि इस नये प्रायश्चित्त से वह बदलेगी कि नहीं, इसे कौन जाने, लेकिन उसकी घात तो लग ही जायेगी, चित्त भी उसकी और पट्ट भी उसकी। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने चोरबाजार और घूसखोरी की जो आवाज लगाई कि हमारी सरकार बहादुर भी तत्ता कर खड़ी हो गई और ऐलान कर दिया गया कि घूसखोरों को नये दफ़्तरों से अलग करो और चोरबाजार से फ़ायदा उठानेवालों को पकड़ लो, जाने न पायें, ख़ूब जेबें भरी गई हैं, सरकार अब बरदाश्त करनेवाली नहीं। जिस शासन में घूसखोरी की बरक्कत हुई वही शासन अब उसकी तनज्जुली के लिए कमर बाँधकर खड़ा दिखाई देने लगा है। समय का फेर इसी को कहते हैं।

* * *

यही नहीं, पिछले दिनों भारत-सरकार ने एक नया आडिनेंस निकाला है कि ५००, १,००० और १०,००० के नोटों को फ़ौरन दाखिल दफ़्तर किया जाये नहीं तो उसकी क़ीमत पुड़िया बाँधने के काग़ज़ के भाव हो जायेगी। पुराने तो कम-कम, हों, नये बने हुए रईसों पर आफ़त जरूर आ गई है। जो हज़ारों के नोटों की बदौलत चोरबाजार से मालामाल बन रहे थे, अब सरासर उनकी आफ़त है। या तो नोटों को क़ीमत कौड़ी भाव का वह बना दे या उन्हें बैंकों में जमा करें। जमा करते हैं तो इनकम टैक्स तो सरकार वसूल ही कर लेगी, साथ ही यह भी पता चल जायेगा कि कितने नये रईसजादे लड़ाई के युग में अपने पर-पखने के साथ उड़े हैं। जो कुछ हो, आर्डिनेंस से खलभली तो जरूर मची है लेकिन भारत में ऐसे भी नये रईसज़ादे हैं जो सरकार के भी चूना लगाने की कला जानते हैं। जिन्होंने हज़ारों का सोना ख़रीद कर गाड़ दिया है, उनका यह सरकारी आर्डिनेंस क्या कर लेगा? नोट तो पुड़िया बाँधने के काम आ सकते हैं लेकिन सोना मिट्टी के भाव कभी नहीं हो सकता। फिर भी सरकार को सूझी ख़ूब! चलाते-चलते उसने सोचा कि क्यों न हाथ मारा जाये! कांग्रेस सरकारें आने ही वाली हैं, गड़े मुर्दे उखड़ने के दिन नजदीक आ रहे हैं, इसलिये भारत-सरकार ही क्यों न पहले पुण्य कमा ले, आमदनी की आमदनी और अनैतिकता को नेस्तनाबूद करने का तुर्रा अलग!

* * *

ब्रिटिश पार्लियामेंट का प्रतिनिधि मंडल इस वक्त सारे भारत का चक्कर काट रहा है। जगह-जगह सभी तरह के दलदली नेताओं से भेंट मुलाकात कर रहा है। शहर भी देखा जा रहा है और गाँव भी, गोरे भी देखे जा रहे हैं और काले भी। महल भी देखे जा रहे हैं और झोपड़ी भी। दाढ़ीवालों को भी देखा जा रहा है और सफाचटों को भी। तात्पर्य यह है कि प्रतिनिधि मंडल के सदस्य आज भारत में नई नई लीडरी की धुन में भ्रमण कर रहे हैं। जहाँ वह किसी से मिले और वक्तव्य साया हुआ। लेकिन अभी तक प्रतिनिधि मंडल के सदस्यों ने जो वक्तव्य दिये हैं उससे कोई ख़ास बात नहीं मालूम पड़ती। प्रतिनिधि-मंडल है ब्रिटिश पार्लियामेंट का लेकिन जेलों की कोठरियाँ देखने की उन्हें फ़ुरसत ही नहीं मिल रही है। खुदा जाने उन्हें फ़ुरसत नहीं मिल रही है या हमारी सरकार बहादुर ने ही उन पर सवारी कस दी है। अपने राम तो बिलकुल सफाई से कहते हैं कि यह पूरी घुमक्कड़ों की टोली है, सम्राट की सरकार के ख़र्च के बल पर यह टोली आनन्द लूट कर इंगलैंड वापस चली जायेगी और भारत को स्वराज्य दिलाने के लिए पार्लियामेंट में वाक्-युद्ध करेगी। ब्रिटिश प्रजातन्त्र तो इसी तरह का है ही। पहले काग़ज़ी और वाक्-युद्ध डटकर कर लिया जाये तब कहीं स्वराज्य की नौबत आये तो आये!

* * *

फिर हमारी ब्रिटिश सरकार बेवकूफ़ तो है नहीं। उसे दलदली राजनीति का तो नज़ला हो गया है। वह ४० करोड़ की आबादीवाले देश को स्वराज्य इसीलिए नहीं दे रही है कि बहुमत प्राप्त दल अल्पमत प्राप्त दल के साथ अन्याय हर्गिज न करने पाये। इसीलिए अंगरेज हिन्दुस्तान में शासन कर रहे हैं, नहीं तो उनकी जरूरत यहाँ क्या थी? ब्रिटिश शासन ही सबको एक घाट पानी पिला सकता है, दूसरे में ऐसी जुर्रत ही नहीं है। न्याय इसी का नाम है। भारत के ही साथ नहीं, अपने यहाँ इंगलैंड में भी तो वह ऐसा ही कर रहा है। पार्लियामेंट का प्रतिनिधि दल भारत आया है, उसमें दलदली राजनीतिज्ञों का बोलबाला है। लिबरल, कंजरवेटिव, मजदूर आदि सभी तरह के दलदली राजनीतिज्ञ प्रतिनिधि मंडल में शरीक होकर भारत की यात्रा कर रहे हैं। सब अपनी-अपनी आँखों से भारत में घूम-घामकर दर्शन कर रहे हैं। ब्रिटिश-सरकार जानती है कि जहाँ यह इंगलैंड पहुँचे वहाँ तरह-तरह की बोलियाँ बोलने लगे। लिबरल लिबरली बातें करेगा, टोरी टोरीवाद बघारेगा और मजदूर तो भारत की आजादी के लिए जान कुर्बान करने पर तैयार ही बैठा है। लेकिन ब्रिटिश सरकार, प्रधान मन्त्री एटली और भारत मंत्री लार्ड पेथिक लारेंस क्या अनुभव करेंगे? यही कि जब पार्लियामेंटरी प्रतिनिधि-मंडल के सदस्य ही एक मत नहीं हैं, और उनकी रायें अलग-अलग हैं तो जरूर भारत अभी स्वराज्य-प्राप्ति के काबिल नहीं हुआ है। अपने राम तो भली भाँति जानते हैं कि ब्रिटिश सरकार ऐसी मुतफन्नी तबीयत की है कि उसे कुछ न कुछ करते रहना चाहिए। एक तमाशा जारी रहे, बातों की लड़ाई होती रहे, काग़ज़ी घुड़दौड़ चलती रहे और यह भी घोषित किया जाता रहे कि सरकार तो भारत को सब कुछ देने को तैयार है लेकिन भारतवाले भी तो कुछ चाहें, तब तो वह स्वराज्य दे! पाँच वर्ष का लम्बा युद्ध सानन्द समाप्त हो गया हमारी सरकार बराबर बड़ी नेकनीयती से संसार के राष्ट्रों के चूना लगाती रही और अब तो लड़ाई ख़तम हो गई है, नई दुनिया बसाई जा रही है, अब उसे किसकी परवाह! भारत को स्वराज्य मिलेगा, यह उसका आदर्श है ही, फिर वक्त पर मिल ही जायेगा, ऐसी जल्दी कौन-सी है, न ब्रिटिश लोग ही भागे जाते हैं और न भारतवासी।

गजल

लेखक, युगप्रवर्तक कवि 'निराला'

विनोद प्राण भरे,
आनन्द रहने दे,
मिटा न दे जब तक तीर,
शान रहने दे।
कहीं की ख़ूबियों से
नाज़ का पड़ा पाला,
सितार रहने दे,
आलाप-तान रहने दे
मिला गला, जन गीतों का
राग जो बदला,
घुली बितान-मुकुल-सुकुल
कान रहने दे।
बुराई छोड़, किसी की
भलाई कर या न कर,
जमीं रहने दे, जा रहने दे,
जान रहने दे॥

इंडोनेशिया को स्वाधीनता के नेता डाक्टर सुकर्न ने इंडोनेशिया में शांति स्थापना के लिये संसार के अन्य राष्ट्रों से अपील की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी बात

२६ जनवरी

आगामी २६ जनवरी को भारतीय स्वाधीनता का पवित्र दिवस है। सारे देश में स्वाधीनता-दिवस मनाने की जोरदार तैयारियाँ हो रही हैं। कांग्रेस नेताओं के जेल में रहने के कारण पिछले तीन वर्ष की अपेक्षा अब स्वाधीनता-दिवस मनाने के लिए वातावरण भी मुक्त हो गया है। सरकारी प्रतिबंधों का अवसान कई अंशों में हो चुका है इसलिए भी स्वाधीनता-दिवस का राष्ट्रीय और पवित्र त्योहार समारोहपूर्वक मनाया जाना उचित ही है। आज कांग्रेस के सभी नेता जेलों के बाहर हैं, कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन की तैयारियाँ हो रही हैं, भारतीय स्वाधीन भावनाओं का अनुभव कर रहे हैं, ऐसी स्थिति में स्वाधीनता-दिवस का समारोह अधिक से अधिक व्यापक रूप में मनाये जाने की राष्ट्रीय चेतना व्याप्त हो उठी है।

यद्यपि भारत आज पराधीन है। वह सदियों से अपने गले से गुलामी का तौक फेंक देने के लिए लालायित हो रहा है और आज तो यह समस्या इतना उग्र-रूप ग्रहण कर चुकी है कि भारतीय स्वाधीनता का प्रश्न केवल भारत का ही नहीं समस्त संसार का प्रश्न बन गया। ४० करोड़ की जन-संख्यावाले राष्ट्र की आज की पराधीन-वृत्ति सचमुच स्वाधीनचेता राष्ट्रों के लिए दुखद हो तो आश्चर्य नहीं किन्तु साम्राज्यवाद के भूखे और छोटे-बड़े राष्ट्रों की स्वाधीनता की घोषणा करनेवालों का समय अब धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है। भारतीय कांग्रेस ने पिछली, अर्द्धशताब्दी में जन-जागरण का जो बिगुल फूंका है, साथ ही महात्मा गांधी ऐसे तपस्वी का जो नेतृत्व प्राप्त हुआ है, उसका शुभ फल प्राप्त हो रहा है और वह दिन अब दूर नहीं है जब कि भारत की संसार के प्रबल और स्वाधीन राष्ट्रों में प्रमुख रूप से गणना होगी। ब्रिटिश सरकार को अंत में झुकना पड़ेगा। भारत को स्वतंत्रता निश्चित रूप से प्राप्त होगी। संसार का कोई भी राष्ट्र सदा के लिए पराधीन नहीं रखा जा सकता और न वह साम्राज्यवाद का शिकार ही बनाया जा सकता है।

हाँ, यह सदा अवश्य है कि भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन सर्वथा अहिंसात्मक नीति, त्याग और बलिदान पर ही आधारित है। कांग्रेस ऐसी महान् राष्ट्रीय संस्था का आदर्श सदा से यही रहा है और आज भी वह अपने इसी आदर्श पर कायम है। 'स्वाधीनता दिवस' के समारोह भी इसी आदर्श को सामने रखकर होंगे। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि भारत स्वतंत्र होगा, और नेताओं के कथनानुसार तो दो-एक वर्ष में ही किन्तु निकट भविष्य में भारत स्वाधीन होगा, यह निस्संदेह है। 'स्वाधीनता दिवस' का पवित्र पर्व भावी स्वाधीनता की प्रतीक है। भारत में चाहे कितनी भी दल-बंदी हो, और किस देश में नहीं है—अमरीका और इंगलैंड भी इससे मुक्त नहीं हैं—किन्तु भारतीय कांग्रेस स्वतंत्र भारत की प्रतिनिधि संस्था है। इसे ब्रिटिश अधिकारी भी जानते हैं। कांग्रेस के आदेशानुसार ही समस्त राष्ट्र 'स्वाधीनता दिवस' मनाने जा रहा है। आचार्य कृपलानी ने 'स्वाधीनता दिवस' के अवसर पर पढ़े जानेवाले प्रतिज्ञा-पत्र का प्रकाशन किया है, जो सभाओं में दुहराया जायेगा और स्वाधीनता-प्राप्ति की प्रतिज्ञा की जायेगी। हमें आशा है कि २६ जनवरी का 'स्वाधीनता दिवस' आगामी वर्ष के वास्तविक स्वाधीनता दिवस मनाने का अभिनव संदेश प्रदान करेगी।

प्रेमयोगी राजा महेन्द्रप्रताप

विद्रोह और स्वतन्त्रता का वह दीवाना आज कहाँ है ?

लेखक, श्री बरसानेलाल चतुर्वेदी

प्रेम महाविद्यालय के संस्थापक प्रेमयोगी राजा महेन्द्रप्रताप आज कहाँ हैं? कम से कम वह इस समय भारत में नहीं हैं। राजा साहब निर्वासित हैं, किन्तु क्या अब भी वह भारत वापस आयेंगे? कौन जाने? इस सुन्दर लेख में राजा साहब के जीवन-कार्यों की एक सुन्दर झाँकी अंकित की गई है।

आज से चौदह साल पहले की बात है। मैं नौ साल का था। वृन्दावन 'रथ-का-मेला' देखने गया था। रास्ते में, यमुना के किनारे, लाल पत्थर की एक विशाल इमारत देखकर, पिता जी से पूछा।

"बेटा, राजा महेन्द्रप्रताप का बनवाया हुआ प्रेम महाविद्यालय है। यहाँ दूर-दूर से विद्यार्थी पढ़ने आते हैं।"

"राजा महेन्द्रप्रताप कौन हैं? कहाँ रहते हैं" कौतूहल-पूर्ण होकर मैंने पूछा।

"इस इमारत के बनवाने की वजह से सरकार ने उन्हें देश से निकाला दिया है, वे बहुत वर्षों से विदेश में रहते हैं।"

बात हो ही रही थी, पिता जी को उनके एक मित्र मिल गये। वे आपस में कुछ बात करने लगे। मेरे मन में पिता जी की यह बात कि विद्यालय बनवाने पर देश से निकाल देना, उस समय कुछ समझ में नहीं आई। कुछ क्षणों कौतूहल रहा।

* * *

"कल हुआ तुम्हारा राजतिलक,
बन गये आज ही वैरागी!
उत्फुल्ल मधुमदिर सरसिज में,
यह कैसी तरुण-अरुण आगी!"
प्रताप के प्रति—"भैरवी"

इन पंक्तियों में राजा महेन्द्रप्रताप की जीवन-झाँकी मिलती है। तरुण राजकुमार के मन में, जो अब तक दुलार में पला था, अमीरी के पलने में झूला था, त्याग की किरणें दमकीं। साँसों में दुखियों की आहें मिलीं, प्राणों के तार पर सिसकती मानवता के स्वर सधे और बजने लगे। रूप-यौवन का मधुमय संग और विलास के रंगीन स्वप्न उसे मिथ्या लगने लगे, मुलायम मखमली गद्दों की उपेक्षा कर कंटकों की सेज अपनाई। ३० दिसम्बर १९४५ को देश के कोने-कोने में राजा महेन्द्रप्रताप की ५९वीं वर्षगाँठ मनाई गई है।

बेसिक-शिक्षा के जन्मदाता

आज से ४० वर्ष पहले, जब ब्रिटिश राजनीति के चाणक्य मैकाले की क्लर्क-उत्पन्न करनेवाली शिक्षा-पद्धति का बोल-बाला था, राजा महेन्द्रप्रताप ने प्रेम महाविद्यालय की नींव वृन्दावन में डाली। गुलाम मनोवृत्ति पैदा करनेवाली शिक्षण-पद्धति के प्रति विद्रोह उनमें बचपन ही से था। बीसवीं सदी के प्रारम्भ में ही, राजा महेन्द्रप्रताप ने बेसिक-शिक्षा प्रारम्भ करने की ठानी। उनका विचार था कि व्यापार और उद्यम की शिक्षा की उपेक्षा कर केवल कलात्मक विषयों की शिक्षा देना दो कौड़ी का है। राष्ट्र की उन्नति के लिए औद्योगिक शिक्षा प्रारम्भ ही से अनिवार्य होनी चाहिए। किन्तु दुख है कि आधुनिक बेसिक-शिक्षा के महान् विद्वान कथित ठेकेदार उसके जन्मदाता का नाम या तो जानते ही नहीं या लेना पाप समझते हैं। वास्तव में राजा महेन्द्रप्रताप ही भारतवर्ष में बेसिक-शिक्षा के जन्मदाता थे। प्रेम महाविद्यालय, वृन्दावन में सबसे पहले शिक्षा को उद्योग से सम्बन्धित करने के प्रयोग किये गये।

यहाँ 'इंजीनियरिंग' 'मेकेनिकल' 'लकड़ी का काम' 'सुनार का काम' बनाई, सिलाई का काम एवं अन्य औद्योगिक विषयों की पढ़ाई से साधन जुटाये गये।

वतन के दीवाने ने अपने राज्य-कोष के दरवाजे प्रेम महाविद्यालय के लिए खोल दिये। वह देख चुके थे कि आधुनिक यूनीवर्सिटियों और कालेजों को जिनमें दीन-दुखियों के बालकों का कोई ठिकाना नहीं। राजा महेन्द्रप्रताप ने निःशुल्क विद्या-दान का प्रबन्ध किया। न किसी प्रकार की कालेज-फ़ीस, न छात्रावास के रहने का किराया। यही कारण था कि केवल संयुक्त-प्रान्त में ही नहीं बरन काश्मीर, आसाम और ट्रावनकोर के विद्यार्थी जो आर्थिक अभाव के कारण विद्याध्ययन की प्यास हृदय में बसाये बैठे थे, प्रेम-महाविद्यालय में आकर शिक्षा प्राप्त करने लगे। आज भारत के किसी कोने में प्रेम-महाविद्यालय के स्नातकों को उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर आसीन पाया जायेगा।

वह विद्यालय के वातावरण ने अपने विद्यार्थियों के रोम-रोम में पददलित भारत को स्वतन्त्र करने के भाव भर गये। विदेश के लिए क्रियात्मक कार्य करने का व्रत लेकर गये, भारत के कोने-कोने में औद्योगिक शिक्षा फैलाने का बीड़ा उठाकर निकले।

१९१४ वाली लड़ाई के समय राजा महेन्द्रप्रताप विद्यालय के लिए योग्य अध्यापकों को लाने एवं विदेशों की शिक्षण-पद्धति के बारे में अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए विलायत गये। स्विटज़रलैंड, टर्की, बग़दाद, इस्फान, जर्मनी इत्यादि देशों में गये और मिश्र में अब्बास हिलची तथा जर्मनी में कैसर से मुलाकात की। फिर क्या था, उनको संशय की दृष्टि से देखा जाने लगा। सरकार ने उन पर अनेकों प्रतिबन्ध लगाना प्रारम्भ किया और धीरे-धीरे वे निर्वासित घोषित कर दिये गये। आज राजा महेन्द्रप्रताप को अपने प्यारे देश की गोद से अलग हुए लगभग २० वर्ष हो गये—तभी से, मस्त फ़क़ीर का बाना ओढ़े, भारत की आज़ादी के लिए धूनी रमाये, विदेश की ख़ाक छानते फिर रहे हैं।

अछूतों के प्रति प्रेम

सोने और रूपे के सुनहले प्रासादों में जन्म लेकर जहाँ अछूतों की छाया भी नहीं फटकने पाई, वहाँ बचपन से ही राजा महेन्द्रप्रताप के हृदय में हरिजनों के प्रति प्रेम के अंकुर दृष्टिगोचर होने लगे। बड़े होने पर यही दर्द एक टीस बनकर उठा जिसकी दवा अछूतों को गले लगाना था। राजा महेन्द्रप्रताप प्रथम राजा हैं जिन्होंने खुलेआम आगरा में भंगियों के साथ बैठकर भोजन किया। क्या 'गीतांजलि' के ये वाक्य समाज के अभिशाप राजाओं-महाराजाओं की आँखें नहीं खोल सकते?

"Mother, it is no gain, thy bondage of finery, if it Keep one shut off from the healthful dust of the earth, if it rob one of the right of entrance to the great fair of common human life."

राजा महेन्द्रप्रताप से दरिया दिल थोड़े भी और मिल जायें तो क्या अस्पृश्यता की कोढ़ भारत से शीघ्रातिशीघ्र समाप्त नहीं हो सकती?

राजा महेन्द्रप्रताप का आज कोई पता नहीं। क्या संसार की तथाकथित सभ्यता त्याग का यही मोल करना जानती है? प्रेम महाविद्यालय रूपी चमन लगाकर उसका माली उससे जबर्दस्ती अलग कर दिया गया? अपने अधूरे स्वप्नों की दुनिया लिए, अपनी अभिलाशाओं की अकुलाहट हृदय में सँजोये, वह बेताज का बादशाह जाने कहाँ है? जब कभी उसे अपने प्रेम महाविद्यालय की, जिसको बड़े अरमानों के साथ बनवाया था, जिसको संसार में एक बड़े शिक्षा-केन्द्र बनाने का इरादा था, याद आती होगी उस समय क्या परकटे पंछी की भाँति उसकी आँखों से भी बेबसी के आँसू न बिखर बड़ते होंगे? जिसने कर्त्तव्य की बलिवेदी पर राजकुमारियों के प्यार के मीठे अभिसार को निछावर कर दिया, तन, मन, धन सब अर्पित कर दिये, उस महापुरुष की जीवन-संध्या के दिन ऐसे वेदनामय बीते। उसके सुहृदजन, उसका प्रेम-महाविद्यालय, अपने चिर-प्रवासी को देखने के लिए तड़प रहे हैं, छटपटा रहे हैं। भारत के नौनिहाल राजा महेन्द्रप्रताप को जल्दी जल्दी आज़ाद कराने में यत्नशील हैं। क्या ही अच्छा हो, यदि महाकवि 'शोपेनहावर' के अनुसार सरकार अपनी नादानी समझ ले:—

"Fool thou hast to be,
Oh! wisest of wise,
Then be the fool of
Virtue than of vice"

गीत

लेखक, श्री 'नीरव' एम० ए०

तुम भरो भाव के मधुर पात्र! तुम भरो।
फूटें फिर उर से मदिर प्राण के निर्झर,
सम हों जीवन के असम धरागिरि गह्वर,
प्लावित जग के सर, सरित, नगर, निर्जन, वन
तुम अमर, अमल अपने जीवन से करो।
करुणा के कोमल अधर अधर से छूकर—
अविकृत चिर नाचो द्रुत समीर गति लय पर
अपने चुम्बन गानों से मादक मधुमय
तुम हरो, त्रास मानव वसुधा का हरो।
वे मौन मधुव्रत मधु के अभिलाषी अलि
भर जाये उनकी मुक्त कामना अञ्जलि
पाकर मेरा संकेत शिशिर तरु के से—
सम्भार, रागमय कुसुम भार से झरो।
देखे जग यह दो हिलमिल खेलें अविकल
मेरे शिशु गीत तुम्हारे मृदु मुक्ताहल
निष्काम नील नभ की नीरव छाया में
पूर्ण-प्रकाम लो यह अपना धन धरो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

आजाद हिन्द-फौज के तीन सेनानी !?

कैप्टेन शाहनेवाज, सहगल और ढिल्लन का प्रथम दर्शन

लेखक, श्री मधुदयाल विद्यार्थी

आजाद हिन्द-फौज के तीन सेनानी—कैप्टन शाहनेवाज, कैप्टन सहगल और लेफ्टिनेंट ढिल्लन आजन्म कारावास की सजा से मुक्त कर दिये गये। समस्त राष्ट्र ने इन वीरों का स्वागत किया है। इस लेख में श्रीयुत विद्यार्थी जी ने इन मुक्त हुए सेनानियों के त्याग और बलिदान पर प्रकाश डालते हुए उनके अतीत तथा आज के जीवन का वर्णन किया है। लेख अत्यन्त सामयिक और सुन्दर है।

कैप्टेन शाहनेवाज।

सारी दिल्ली उमड़ी जा रही थी। छोटे-बड़े सभी आगे बढ़ते जा रहे थे। नई दिल्ली से पुरानी दिल्ली तक लोगों की भीड़ से सड़कें भरी हुई थीं। साइकिलों का ताँता लगा था। ताँगे के पीछे ताँगे कतार में चले जा रहे थे। मोटरें दौड़ रही थीं। दूकानें बन्द हो रही थीं। गांधी चौक में लाखों जनता इकट्ठी हो गई थी। क्योंकि आजादी के तीन वीरों का स्वागत होने जा रहा है। वह जेल से छोड़ दिये गये हैं यह वही तीन दिवाने वीर हैं जो नेता जी के आजाद हिन्द-फ़ौज के सिपहसालार थे।

लाल क़िले दिल्ली में इन्हीं पर कोर्ट-मार्शल का मुक़दमा चल रहा था। इन वीरों पर बादशाह सलामत के खिलाफ़ विद्रोह करने और साम्राज्य के खिलाफ़ आज़ादी की जंग छेड़ने का जुर्म लगाया गया था। बर्मा में आजाद हिन्द-फ़ौज का बहुत बड़ा संगठन किया गया था। अँगरेजों के खिलाफ़ मशीनगन चलाई थी। एक दिन वह था जब इन वीरों ने अँगरेजी राज्य के सामने शपथ खाई थी और कहा था कि हम राज्य के प्रति वफ़ादार रहेंगे। वफ़ादारी और साम्राज्य की रक्षा के निमित्त ही बर्मा लड़ने गये थे। लेकिन बदक़िस्मती कहिये या और कुछ, अँगरेजों को वहाँ मुंह-की खानी पड़ी। उलटे पाँव भागना पड़ा। अपने साथियों को मौत के मुंह में छोड़कर अपनी जान बचाई।

हिन्दुस्तानी सिपाही जापानियों की छावनियों में बन्द किये गये। हजारों हिन्दुस्तानी सिपाही बेबस होकर मौत की प्रतीक्षा करने लगे। नजरबन्द कैम्पों में अपनी जिन्दगी व्यतीत करने लगे। वीरों ने वहाँ देखा, सुना-सोचा और निर्णय किया कि तमाम मुल्कों में आजादी की लड़ाई छिड़ी हुई है। हम गुलाम होकर साम्राज्य-विस्तार करें? क्या सदैव हम गुलाम रहेंगे? गुलामी की रोटी कब तक तोड़ते रहेंगे? हम तो गुलाम हैं ही क्या हमारे बच्चे भी गुलाम ही रहेंगे? अब गुलामी तोड़ेंगे। बस फिर क्या आजादी की लहर हिन्दुस्तानी सिपाहियों में फैल गई। भारतवर्ष से निर्वासित किये गये स्वतंत्रताप्रिय नेताओं के भाषण हुए। इसी बीच राष्ट्रगौरव श्री सुभाष बाबू वहाँ आ गये। उनके नेतृत्व में आजाद हिन्द-फ़ौज की स्थापना हुई। सबने मिलकर स्वतंत्रता-प्रतिज्ञा ली। हिन्दुस्तान की जय-जयकार मची। 'जय हिन्द' का नया नारा चल पड़ा।

कैप्टेन सहगल।

सुभाष बाबू प्रधान सेनापति चुने गये। उन्हें स्वतंत्र भारत के राष्ट्रपति का मुकुट पहनाया गया। सारी सत्ता सुभाष बाबू के हाथों में सौंप दी गई। हिन्दुस्तानिओं की धमनियों में आजादी का खून दौड़ पड़ा। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, हरिजन और मराठों ने एक स्वर में कहा—'दिल्ली चलो। लाल क़िले पर तिरंगा झण्डा लहरायेंगे।'

आजादी की जंग छिड़ गई। 'नेता जी' को अपना नेता पाकर सबने अपने को धन्य माना। सबका दृढ़ विश्वास हो गया कि हम स्वतन्त्रता प्राप्त करेंगे। श्री शाहनेवाज, सहगल और ढिल्लन के जिम्मे फ़ौजी कमान का काम सौंपा गया। नेता जी की आज्ञा से हिन्दुस्तान की तरफ़ बढ़े। मुसीबतों का झोंका खाते हुए मणिपुर, इम्फाल और कोहिमा में तिरंगा झण्डा फहराया गया लेकिन फ़ौजी सामान और रसद की कमी के कारण पीछे लौट जाना पड़ा।

लड़ाई का रंग बदला। अँगरेजी फ़ौज के पैर बर्मा में जम गये। चारों तरफ़ कोहराम मच गया। किसी की हिम्मत नहीं कि अँगरेजों के सामने मुंह खोले। लेकिन नहीं—आजाद हिन्द के सैनिकों ने कहा—हमने अपनी आजादी के लिए जंग छेड़ी थी। हम पैसों के गुलाम नहीं। दूसरे देशों के समान हमको भी आजाद होने का हक़ है। हम जापानियों के इशारे पर नहीं नाचते थे। हमारा स्वतंत्र संगठन था, स्वतंत्र फ़ौज थी। ब्रिटिश अधिकारियों का दिल दहल गया। संगठन देखकर उनके होश-हवास उड़ गये। आजाद हिन्द-फ़ौज के सैनिकों से क्षमा माँगने के लिए भी कहा गया लेकिन सबने एकस्वर से कहा क्षमा किसके लिए? हमारा कोर्टमार्शल होना चाहिए। मृत्यु ग्रहण करेंगे। लेकिन नेता जी के दिये मंत्र को कलंकित नहीं करेंगे। मरते दम तक हमारा नारा होगा 'जय हिन्द'।

हम अवसरवादी होकर आजाद हिन्द-फ़ौज में सम्मिलित नहीं हुए थे। हमारा पूर्ण विश्वास था और है कि हमको आजादी प्राप्त होगी। हम बराबरी का सम्मान प्राप्त करेंगे। इसी लिए आजादी की शपथ खाई थी। हमारा अपराध केवल यही है न कि हम अपने देश को स्वाधीनता चाहते हैं?

आजाद हिन्द-फ़ौज के हजारों नौजवान गिरफ़्तार किये गये। आज हिन्दुस्तान की जेलों में बन्द पड़े हैं। कुछ लाल क़िलों में पड़े हैं। तीन अफ़सरों पर पहला मुक़दमा लाल क़िले दिल्ली में चला। देश में तूफ़ान मच गया। चारों तरफ़ से माँग हुई कि यह निर्दोष हैं, देश-भक्त हैं। इन्हें रिहा करो। किन्तु मुक़दमा चला। बड़े-बड़े बकील बैरिस्टर लाल क़िले में गये। पंडित जवाहरलाल नेहरू, श्री भूलाभाई देसाई, डाक्टर कैलाशनाथ काटजू और श्री आसफ-अली अभियुक्तों की तरफ़ से पैरवी करने के लिए खड़े हुए। श्री भूलाभाई देसाई ने दुनिया की अकाट्य नजीरें देकर साबित कर दिया कि यह निर्दोष हैं। फैसले की तारीख पड़ी। कोर्टमार्शल ने आजन्म और मौत की सजा सुनाई लेकिन कमाण्डर-इन-चीफ़ ने तीनों अफ़सरों की सजा माफ़ करके ३ जनवरी ४६ को अचानक शाम के वक्त क़िले से बाहर मुक्त कर दिया। दिल्ली और सारे मुल्क में हर्ष की लहर चन्द मिनटों में फैल गई। लोगों ने इस मौक़े पर मजबूर सरकार की जरा-सी सराहना की क्योंकि देश के प्रति यह उनका पहला क़दम था।

अपने तीन वीर पुत्रों को पाकर सारा राष्ट्र खुशी से नाच उठा। खुशी के दीपक जले। दिल्ली शहर में उनके दर्शन के लिए लाखों जनता गांधी पार्क में इकट्ठी हुई। लोग कहते हैं कि इतनी भीड़ दिल्ली में नहीं हुई। सभा में हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख सभी आये थे। सब लोगों ने उनका अभिनन्दन किया। वह फूलों से बोझिल हो गये। लाखों जनता उनसे कुछ सुनने के लिए उत्कंठित हो गई। कैप्टेन शाहनेवाज ने आजाद हिन्द-फ़ौज का कुछ हाल सुनाते हुए प्रारम्भ किया—"जय हिन्द, आजाद हिन्द-फ़ौज के हम तीनों आदमी आपकी सेवा में हिन्दुस्तान के लोगों को मुबारक-बाद देने के लिए उपस्थित हुए हैं। यह मुबारकबाद इसलिए नहीं कि हमारी जानें बच गईं, क्योंकि अपनी मातृभूमि की आजादी के जंग में लड़नेवाला सिपाही अपनी जान का कोई मूल्य नहीं समझता। बल्कि इसलिए कि भारतीय लोकमत के सामने ब्रिटिश साम्राज्य ने अपना सिर झुका दिया। आज अँगरेजों ने यह महसूस किया है कि हर एक गुलाम देश भी अपनी आजादी का जंग छेड़ सकता है। यह सम्मान हम लोगों का नहीं है बल्कि हमारे नेता जी का है जिन्होंने हमें इस योग्य बनाया है।"

"हम पर मुक़दमा चलने से पहले हमारे विरोधियों ने तरह-तरह की अफ़वाहें उड़ाई थीं कहा था कि हम जापानियों को इस देश पर शासन करने के लिए ला रहे थे परन्तु अदालत के सामने यह बात सिद्ध हो गई है कि आजाद हिन्द-फ़ौज नेता जी की कमान में केवल अपने देश को आजाद कराने के लिए लड़ी थी। यदि जापानी हमारे साथ जरा भी बेईमानी करते तो आजाद हिन्द-फ़ौज का एक-एक बच्चा-बच्चा वहीं अपना रक्त बहा देता।"

"पूर्वी एशिया में हम बर्तानिया की लड़ाई में लड़ने गये थे। बर्मा, मलाया और सिंगापुर के लोग हम लोगों को, जिनमें हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख आदि सभी शामिल थे, घृणा की दृष्टि से देखते थे और कहते थे कि आप न केवल स्वयं गुलाम हैं, बल्कि एशिया की अन्य क़ौमों को भी गुलामी की जंजीरों में जकड़ रहे हैं। ऐसी बातों को सुनकर हम लोगों की आँखें सचमुच खुल गईं और महसूस किया अपनी आजादी के लिए हमें भी कुछ करना दिखा जाती हैं। ये नई संस्थाएँ अपने अन्दर एक नई लहर लिए हुए बढ़ रही हैं।

इस स्थिति के कुछ मुख्य कारण हैं। एक तो काम करने की इच्छा का अभाव, शिक्षित महिलाओं में अपने विचार प्रकट करने की प्रवृत्ति। वर्ग-रूप में वे असफल रही हैं। नया नेतृत्व बहुत काफ़ी वक्त से अल्पशिक्षित और कभी-कभी अशिक्षित हाथों में रहा है। राष्ट्रीय जन-आन्दोलन जिन महिलाओं को अपनी ओर खींच सका है वे सब इसी वर्ग की हैं, न कि शिक्षित की। राजनीतिक और रचनात्मक इन्हीं अशिक्षित और अल्पशिक्षित ने कार्यकर्त्रियों की हैसियत से किया है और अब भी स्तुत्य रही हैं। उच्च शिक्षितों की ाद-रूप में है न कि नियमित कारण यह है कि इस वर्ग रना फ़ुरसत का वक्त लेफ्टि. एक व्यसन-मात्र है।

है। जहाँ तक वीरों उद्देश्य नहीं जिसके देखा कि हिन्दुस्ा बहुत बड़ा या रिकनों से कभी पीछे ा इरादा कितना ही १९४३ के दिनों में ह क्यों न हो, उनका बाबू हमारे बीच आ हो ही जायगा। बहु पूर्वी एशिया में इस तिरंजकल के समय में और उनके नेतृत्व में ाकांक्षाएँ, और कार्य-एक फ़ौजी संगठन बढ़ते हुए पैमाने पर हैं, आज्ञा से अपने ाल तरंगों की भाँति बिस्तृत छेड़ दी। और देर में होनेवाली वर्षा की ताज्जुब भाँति मिट्टी की तह तक जज़्ब कुछ विखेली जा रही हैं। यदि सम्मेलन अच्छी जनता की भावनाएँ सुरक्षित रखनी बर्ड उसका विश्वासपात्र बनना है तो उसे वास्तविक परिस्थिति के निर्माण के लिए अपने विधान और प्रोग्राम में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। जनता सम्मेलन को पराया न समझे, अपनी चेतना पृथक् रूप से जागृत न करे और अपने अन्दर हीनता की भावना का जन्म न होने दे। उसे यह अनुभव होना चाहिए कि सम्मेलन उसकी पहली चीज है, उसके सुनहरे सपनों और घास-आकांक्षाओं की प्रकृत और स्वाभाविक गोला-व्यक्ति है।

नहीं थी की प्राप्ति के लिए सम्मेलन को काम से हमारे पा अपना पुराना तरीका पूरी तरह था 'आजाद हिन्दोगा। अभी तक इसका बल हियो! तुम्हारे कार्य ही रहा है। मुहल्ले-रहे हैं। तुम घास-गाँव-गाँव की महिलाओं तक सा जीवन बिता रहे पको और बढ़ाना होगा। आ जाओ तुम्हें बहुत क मानव के दृष्टिकोण और तुम्हारे बाल-बच्चों लिए क़ानूनी माँगों दिया जावेगा।' हम लोगों नके प्रतिदिन की के जवाब में भेजा। हम घास-फूस की माँग मरना पसन्द करते हैं लेकिन गुलठिनाइयों से डबल रोटियाँ खाना अब हराम है, निकलना

"कोहिमा में राशन की कमी से क़रीब-हमारी सेना वापस लौट रही थी, तब मैंने हैं रास्ते में एक जख़मी नौजवान सिपाही को पा। देखा। उसके ज़ख़्मों पर हजारों कीड़े पड़ गये थे, उसने मुझे अपने निकट बुलाकर कहा—"मेरा एक छोटा-सा सन्देश नेता

शेष पृष्ठ १२ पर देखिए

कैप्टेन कुमारी लक्ष्मी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पनी बात

२६ जनवरी

आगामी २६ जनवरी को भारतीय
ाधीनता का पवित्र दिवस है। सारे देश में
ाधीनता-दिवस मनाने की जोरदार
यारियाँ हो रही हैं। कांग्रेस नेताओं के
ेल में रहने के कारण पिछले तीन वर्ष की
पेक्षा अब स्वाधीनता-दिवस मनाने के
लिए वातावरण भी सुवत हो गया
रकारी प्रतिबंधों का अवसान कर
में हो चुका है इसलिए भी स्लपयोगी है।
दिवस का राष्ट्रीय और पवि
समारोहपूर्वक मनाया जाना
आज कांग्रेस के सभी नेता
हैं, कांग्रेस के वार्षिक अधिवेश
हो रही हैं, भारतीय स्व
का अनुभव कर रहे हैं, ऐसे
धीनता-दिवस का सम्
अधिक व्यापक रूप
राष्ट्रीय चेतना व्याप्त

यद्यपि भारत ज
सदियों से अपने गले से
देने के लिए लालायित हैं
तो यह समस्या इतना
कर चुकी है कि भारतीय
का प्रश्न केवल भारत का
समस्त संसार का प्रश्न बन गया
करोड़ की जन-संख्यावाले राष्ट्र की
की पराधीन-वृत्ति सचमुच स्वाधीनचेतपर
राष्ट्रों के लिए दुखद हो तो आश्चर्य नहीं
किन्तु साम्राज्यवाद के भूखे और छोटे-बड़े
राष्ट्रों की स्वाधीनता की घोषणा करनेवालों
का समय अब धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है।
भारतीय कांग्रेस ने पिछली, अर्द्धशताब्दी
में जन-जागरण का जो बिगुल फूंका है,
साथ ही महात्मा गांधी ऐसे तपस्वी का जो
नेतृत्व प्राप्त हुआ है, उसका शुभ फल प्राप्त
हो रहा है और वह दिन अब दूर नहीं है जबकि
कि भारत की संसार के प्रबल और स्वार्थ के
राष्ट्रों में प्रमुख रूप से गणना होगी। कि समा-
सरकार को अंत में झुकना
भारत की स्वतंत्रता निश्चित रूप
होगी। संसार का कोई भी
लिए पराधीन नहीं रखा जा
न वह साम्राज्यवाद का
बनाया जा सकता है।

हाँ, यह सदा
स्वाधीनता आन्दो
नीति, त्याग और
रित है। कां
का आदर्श
भी बह
'स्वा
आ
भ

हिन्दी पत्रकार सम्मेलन के सभापति श्री बना-
रसीदास जी चतुर्वेदी, अपने भव्यवेश में।

जाने की कोशिश की जानी चाहिए।
राष्ट्रीय और देशभक्ति के साथ ही
पत्रों की उन्नति पर संचालकों का ध्यान
खींचना चाहिए। पाठकों की जेब से पैसा
लेते समय उनके योग्य सामग्री भी देनी
चाहिए। अँगरेजी पत्रों का जूठन खाना
अब बहुत खटकता है। सामयिक और
सुन्दर सचित्र पाठ्य-सामग्री जनता तक
पहुँचानी चाहिए।

गुजराती समाचार पत्रों से मैं परिचित
हूँ। आप उनमें रोज या दूसरे दिन एक
सामयिक लेख जरूर पढ़ने को पायेंगे।
हिन्दी पत्रों में महीनों बीत जाने पर भी
सचित्र सामयिक लेख नहीं मिलते।
आर्थिक, सामयिक और राजनैतिक सम-
स्याओं पर विशेष लेखमाला हिन्दी पत्रों
में कहाँ?

अच्छे और विशेषज्ञ संवाददाता नहीं
के बराबर हैं। आप देखेंगे कि अन्य प्रान्तीय
भाषाओं में अच्छे विशेष संवाददाता तैयार

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

कई हिन्दी पत्रकार—सर्वश्री भगवानप्रसाद त्रिपाठी (वर्धा), अशोक (दिल्ली), प्रभुदयाल विद्यार्थी, गोपालप्रसाद व्यास, कृष्णचन्द्र विद्यालंकार (अर्जुन), विश्वम्भर सहाय प्रेमी (मेरठ) और चन्द्रलाल चन्दाकर, मथुरा सम्मेलन में शरीक होने के बाद वापस लौट रहे हैं।

ोर-सम्मेलन

विश्लेषण और संस्मरण

विद्यार्थी

पहला संस्मरण 'देशदूत' के गत
का है। उसी लेख का यह दूसरा अंश
पत्रकारों के सम्मुख कुछ सुझाव प्रस्तुत
और हिन्दी पत्रकार जगत, श्रमजीवी पत्रकारों

नैपाल—एक स्वतन्त्र हिन्दू-राज्य

आधुनिक शासन-व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन

लेखक, पं० ज्योतिप्रसाद उपाध्याय, एम० ए०, एल-एल० बी०, एडवोकेट

भारतवर्ष में नैपाल एक स्वतन्त्र हिन्दू राज्य है। नैपाल अपने प्राचीन वैभव, संस्कृति और युद्धभूमि की वीरता के लिए सदा से ऐतिहासिक यश प्राप्त करता आया है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने नैपाल राज्य के प्राचीन गौरव का चित्रण करते हुए यह बतलाया है कि आज भी नैपाल उन्नति-पथ पर अग्रसर है। शासन की दृष्टि से वहाँ आज नये नये सुधार हो रहे हैं। लेख अत्यन्त उपयोगी और पठनीय है।

नैपाल भारत की सीमा पर एक पहाड़ी राज्य है। इसकी स्थिति भारतीय दृष्टि-कोण से महत्त्वपूर्ण है। भारतीय सरकार कैसी भी हो उसे नैपाल की ओर अपनी नीति सोच-समझकर निर्दिष्ट करनी पड़ेगी। नैपाल स्वाधीन राज्य है। वहाँ किसी अन्य-राष्ट्र का अधिपत्य नहीं है, न कोई उसकी आन्तरिक नीति में किसी प्रकार का हस्तक्षेप ही कर सकता है। पिछले १५ वर्ष में नैपाल ने बड़ी उन्नति की है। परन्तु तो भी आधु-निक राजनीतिक दृष्टिकोण से नैपाल संसार के पिछड़े हुए देशों में ही गिना जायेगा। यद्यपि महाराज चन्द्र, भीम तथा जुद्ध के शासनकाल में शासन-सुधार भी हुआ है, शिक्षा-प्रचार और औद्योगिक उन्नति इत्यादि के लिए भी बहुत कुछ किया गया है। हाल में नैपाल में एक विचित्र घटना हुई है। महाराज जुद्ध ने राज-पाट छोड़कर वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश किया है। ता० २९ नवम्बर को सिंह दरबार में अपने भाई, भारदार, सरदार तथा अफ़सरों को बुलाकर उन्होंने राज्य का परित्याग कर दिया और अपने भतीजे जनरल पद्म शमशेर को राजसिंहासन पर बिठा दिया। नैपाल में भाई राज्य का अधिकारी होता है, बेटा नहीं। यदि भाई न हो तो फिर भातीजों, बेटों में जो सबसे बड़ा हो, वह महाराजा के पद पर नियुक्त होता है। महाराज जुद्ध अन्तिम भ्राता थे, इसलिए राज्य सबसे वयो-वृद्ध भतीजे जनरल पद्म को दिया गया। महाराज ने अपने हाथ से अपने भतीजे के सिर पर राजमुकुट रक्खा और स्वयं गाड़ी में सवार होकर पहाड़ में स्थित रिडी नामक स्थान को चले गये। निस्संकोच उन्होंने राज-पाट, धन-धाम, ऐश्वर्य, अतुल सम्पत्ति सबको तिलांजलि दे दी। इस स्थान में जाकर वे तप करेंगे। अपने साथ बहुत थोड़े आद-मियों को ले गये हैं। महाराज की सदा से धर्म में बड़ी रुचि थी। ईश्वर की इच्छा से उन्हें वैराग्य हुआ और रिडी के वन में अपनी आध्यात्मिक उन्नति के प्रयत्न में लग गये हैं। वानप्रस्थ लेकर महाराज जुद्ध ने प्राचीन हिन्दू आदर्श को फिर से जीवित कर दिया है। नैपाल में दो राजा होते हैं—एक तो महाराजाधिराज और दूसरे महाराजा। महाराजाधिराज प्राचीन राजवंश के हैं परन्तु राज्य के काम से उनका कोई सम्बन्ध नहीं है। नैपाल का वास्तविक राजा प्राइम मिनिस्टर ही होता है। राज्य का सम्पूर्ण अधिकार उसी के हाथ में होता है। उसके काम में कोई दखल नहीं दे सकता। ता० ९ दिसम्बर को महाराज पद्म की सिन्दूर-यात्रा हुई। महाराजा-धिराज ने हनूमान दोना नामक प्राचीन महल में उनके माथे कर सिन्दूर का टीका लगाकर उन्हें प्राइम मिनिस्टर के सिंहासन पर बिठाया। वहाँ से एक भारी जुलूस असंख्य दर्शकों के बीच होता हुआ नगर की सड़कों से टूंडी खेल के मैदान में पहुँचा। सड़कें खूब सजाई गई, नगर में अपूर्व उत्साह था। स्त्री, पुरुष, बालक, युवा, वृद्ध, अमीर, गरीब हजारों की तादाद में महाराज का दर्शन करने के लिए आये। महाराज पद्म ने अपने भाषण में कहा कि मैं प्रजा का सेवक

स्वतंत्र हिन्दू-राष्ट्र नैपाल के महाराजाधिराज।

हूँ यथाशक्ति उसका हित सम्पादन करने की चेष्टा करूँगा इस प्रकार सिन्दूर- यात्रा समाप्त हुई। रास्ते भर महाराज पर लावा और सिन्दूर की वर्षा हुई। बड़े समारोह के साथ अपने चचा की गद्दी पर नये नरेश विराजमान हुए।

महाराज पद्म नैपाल के इने-गिने महापुरुषों में हैं। आपकी देश-भक्ति बढ़ी-चढ़ी है। युवावस्था ही से आप नैपाल के अनन्य सेवक रहे हैं और राज्य के हित के लिए बराबर प्रयत्न करते रहे हैं। आपका जीवन सदा से सादा रहा है। धर्म में आपकी अधिक अभिरुचि है। आप कट्टर सनातनी हिन्दू-धर्म के माननेवाले हैं और राजकार्य से जितना समय मिलता है उसे पूजा-पाठ में लगाते हैं। महाराज चन्द्र, भीम और जुद्ध के शासन-काल में महाराज पद्म ने देश की अधिक सेवायें कीं। जिन पदों पर आप नियुक्त रहे उनका काम अदम्य उत्साह के साथ किया और राज्य-द्वारा अनेक प्रकार से सम्मानित हुए। सन् १९३४ के भीषण भूकम्प में कमान्डर इन-चीफ की हैसियत से जनता की बड़ी सेवा की। महाराज की अनुपस्थिति में अपने कष्ट-पीड़ित प्रजा को हर तरह से सहायता पहुँचाई। आपके अदम्य उत्साह को देखकर लोग दंग रह गये। ऐसा स्वार्थ-त्याग कभी नैपाल में देखा नहीं गया था। लोग मुक्त कण्ठ से आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे।

राज्य के शासन में महाराज पद्म युवावस्था से ही भाग लिया है। उनका राष्ट्रीय आदर्श उच्चकोटि का है। नैपाल की शासन-पद्धति प्राचीन है। इन पद्धतियों की तरह सर्वथा दोषरहित नहीं है। इन त्रुटियों से महाराज पद्म भ

शेष पृष्ठ १६ पर दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ० भा० हिन्दी पत्रक भारतीय महिला-सम्मेलन

मथुरा-अधिवेशन का मनोरञ्जक

अखिल भारतीय पत्रकार सम्मेलन का ६ जनवरी के अंक में प्रकाशित हो चु है। इस लेख में विद्यार्थी जी ने हिन्द किये हैं। लेख अत्यन्त सुन्दर है तथा पत्र-संचालकों के लिए उ

अखिल भारतीय पत्र गत २५ दिसम्बर को मथुरा और इस हो गया। सम्मेलन कई कमलादेवी सफल रहा और कई दृ भी। अपनी-अपनी दृ यह अवश्य दिखाई दे लकों और पूंजीवालों मथुरा में सम्मेलन का कहीं प्रभुत्व नहीं के प्रयत्न से अतिथि भोजन मिल गया। रहे के दो पहलू हैं। भरतिया ने अतिथि-सत्कार सहयोग दिया। आप सा जानकार और प्रेमी हैं।

युक्तप्रान्तीय श्रमिक पत्रकार भी सम्मेलन हुआ लेकिन श्रमिक पत्रकारों की उपस्थिति बहुत कम थी। पत्रकारों ने अपनी गतिविधि प्रकाश डाला। गत वर्ष की कार्यवाही क रिपोर्ट पढ़कर सुनाई गई। सब लोगों ने सन्तोष प्रकट किया। श्री बनारसीदास जी चतुर्वेदी युक्तप्रान्तीय सम्मेलन के भी सभापति चुने गये।

मेरी राय में श्रमिक पत्रकारों को केवल अपने वेतन पर ही जोर नहीं देना चाहिए। वे जनता के पथ-प्रदर्श हैं। उनके मानसिक भोजन के भी विचार करना होगा। समाचा आकार-प्रकार, पाठ्य-सामग्री औ चारों के संकलन आदि पर और भी देना होगा। पाठकों को परिवार राजनैतिक घटनाओं से भिन्न हो गया परिचित कराने का प्रयत्न हो। लाखों आज देखा जाता है कि छेदन हो गया की घटनाओं पर हिन्दी डालते हैं। कभी-क गई; लालच की बाढ़ समाचारों का लगी। साधारण जनता इसकी कठिन निर्दय आघात का सामना हिन्दी-सम्। इन सबके बावजूद पुलिस की समाच और उसकी भय, ला और लन के नाम पर जिसको सरकार का एकाधिकार प्राप्त था, इन सबने जनता के हृदय में कटुता की एक जलती हुई भावना पैदा कर दी। हम सब इस सरकार से न सिर्फ़ ऊबे हुए ही हैं बल्कि अब इसको एक क्षण भी सहना हमारे लिए असम्भव हो गया है। आज कोई भी सजग नारी यह

अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन की भूतपूर्व सभानेत्री श्रीमती सरोजिनी नायडू।

जनता के युद्ध में नारियों का सहयोग क्यों?

लेखक, श्री प्रभुदयाल लेखिका, श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय

अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन की भूतपूर्व अध्यक्षा श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने इस विचारपूर्ण लेख में यह प्रगट किया है कि राष्ट्रीय स्वाधीनता की प्राप्ति में महिलाओं के सामूहिक संगठन और सहयोग की क्यों आवश्यकता है? साथ ही आपने यह भी सुझाव दिया है कि महिलायें स्वयं किस प्रकार के क्रियात्मक उपायों तथा सहयोग से संगठित हो सकती हैं। लेख विचारणीय और अत्यन्त सुन्दर है।

नहीं कह सकता कि उसका राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं। अब या तो शीघ्र स्वतंत्रता प्राप्त हो या प्रलय! यह बात कल्पनातीत है कि ऐसी ही परिस्थिति में हम एक दूसरे महायुद्ध का सामना कर सकते हैं। आज का महान् प्रयत्न स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए ही होना चाहिए। संसार की घटनायें काफी तेजी से बढ़ रही हैं। दबने और छोड़ने का अन्त होना चाहिए। दीवाल के लेख आज इतने स्पष्ट हैं कि हम उन पर न तो विहंगम दृष्टि ही डाल सकते हैं और न उन पर से अपनी आँखें ही हटा सकते हैं।

अखिल भारतवर्षीय महिला-सम्मेलन ने देश में अपने लिए एक स्थान बना लिया है। परन्तु राष्ट्रीय क्षेत्र में उसका स्थान अब भी सन्देहास्पद है। समय आ गया है जब उसे निर्णय करना चाहिए कि वह इस द्वारा महिला सम्मेलन को एक छोटे से समूह के रूप में विकसित हुआ था। वही बढ़कर आज एक कहीं बड़ी संस्था के रूप में सामने है। परन्तु जिन विचारों को ध्यान में रखकर इसका जन्म और गति-निर्देश हुआ था, उनके अनुसार इसका नेतृत्व बढ़ती हुई माँगों के साथ अपना क़दम सदा आगे नहीं बढ़ा सका। अतएव रूप-रेखा और कार्य-क्षेत्र के विस्तार की तुलना में इसका सम्बन्ध संकुचित रहा। इसका निर्माण भी कुछ चुने हुए हाथों तक ही सीमित रहा। सिद्धान्त की दृष्टि से यद्यपि इसका आधार बहुत ही उदार और महान् है परन्तु कार्यतः वह संकुचित और सीमित है। आज भारतीय जनता बड़ी तेजी से पूर्णतः जाग उठी है। इसके पहले देश में इतना अधिक उत्साह उमड़ता और लहरें मारता हुआ

श्रीमती रामेश्वरी नेहरू।

राजकुमारी अमृत कौर।

अखिल-भारतीय महिला-सम्मेलन की दो प्रमुख कार्य-कर्त्रियाँ और राष्ट्र सेविकायें।

ओर क्या करने जा रहा है? सम्मेलन अभी तक सभी पार्टियों से पृथक् एक ऐसी संस्था रही जिसका कार्य स्त्रियों से सम्बन्ध रखनेवाले मसलों को सुलझाना था। परन्तु अब अधिकाधिक अनुभव होता जा रहा है कि यह समस्यायें भारतीय स्वाधीनता की मुख्य समस्या से वास्तव में कभी पृथक् नहीं की जा सकतीं। हर नारी की हर एक समस्या अविच्छिन्न रूप से इस आधारगत समस्या से सम्बन्धित है; और जैसा कि हमने अनुभव किया है, अन्य सबको एक ओर रखकर हमें अपनी शक्ति इसी एक समस्या पर केन्द्रित करनी है। भविष्य की योजना में ऐसी किसी भी संस्था का जो इस ओर क़दम बढ़ाने में असफल रहेगी, कोई स्थान न रहेगा। हमारेसामने यह सवाल है कि सभी पार्टियों से अलग रहनेवाली अपनी इस विशेषता को जो एक प्रकार से अभी तक संस्था का बल रहा, क़ायम रखते हुए अपना उचित कर्त्तव्य कैसे निभायें?

एक संस्था की हैसियत से महिला सम्मेलन को कुछ रुकावटों का सामना करना पड़ता है। जहाँ वह खुले तौर पर भारतीय नारियों की 'माँगों' की आवाज उठाता आया है, वहाँ वह कार्य-क्षेत्र से अलग रहा है—जिनकी ओर से वह आवाज उठाने का दावा करता है, उन्हीं के सम्पर्क से बहुत दूर। आरम्भ में कुछ अनुभवी कार्यकर्ताओं के जोश और अभिव्यक्ति की इतनी तीव्र आकांक्षा कभी भी नहीं दिखाई देती थी। भारतीय जनता वास्तव में कार्य-तत्पर, भावुक और जीवन की संपूर्ण जागरुकता के प्रति सफलतापूर्वक उत्तरदायी हो रही है। कार्यकर्ता अभूतपूर्व रूप से रचनात्मक योजनाओं की ओर मुड़ रहे हैं। नव-जीवन के इस प्रवाह में महिला-सम्मेलन का भी हाथ रहा है। महिलायें सदस्या बनने और नई संस्थायें बनाने में बड़ा उत्साह दिखा रही हैं। परन्तु महिला-सम्मेलन परिस्थिति के अनुसार वास्तव में उठ नहीं सका है। प्राचीन, कठोर और अटूट रूढ़ियाँ अभी तक पहले ही की तरह अपरिवर्तित हैं। अखिल भारतीय संस्था की हैसियत से यह इन सुनहरे क्षणों का सदुपयोग करने, इस वेग को सँभाल कर एक बाँध के द्वारा उसकी प्रवाह-शक्ति की दिशा बदलने में असफल रहा है। दिखाई क्या पड़ रहा है कि देश भर में अनेकों छोटी-छोटी संस्थायें बन रही हैं (विशेषकर छोटे-छोटे और अप्रसिद्ध स्थानों में)। इनके द्वारा अपने विचारों को प्रकट करने का एक साधन मिल जाता है, काम करने की—बल्कि कुछ भी कर जाने की—इस भयानक भावना को मार्ग मिल जाता है। इस प्रकार जब कि इस सम्मेलन की अनेकानेक शाखाएँ और उपशाखायें निर्जीव पड़ी हैं—जो कभी-कभी अपने जीवन की झलक भर अवश्य दिखा जाती हैं। ये नई संस्थाएँ अपने अन्दर एक नई लहर लिए हुए बढ़ रही हैं।

इस स्थिति के कुछ मुख्य कारण हैं। एक तो काम करने की इच्छा का अभाव, शिक्षित महिलाओं में अपने विचार प्रकट करने की प्रवृत्ति। वर्ग-रूप में वे असफल रही हैं। नया नेतृत्व बहुत काफ़ी वक्त से अल्पशिक्षित और कभी-कभी अशिक्षित हाथों में रहा है। राष्ट्रीय जन-आन्दोलन जिन महिलाओं को अपनी ओर खींच सका है वे सब इसी वर्ग की हैं, न कि शिक्षित वर्ग की। राजनीतिक और रचनात्मक क्षेत्रों में इन्हीं अशिक्षित और अल्पशिक्षित महिलाओं ने कार्यकर्त्रियों की हैसियत से महान् कार्य किया है और अब भी स्तुत्य सहयोग दे रही हैं। उच्च शिक्षितों की उपस्थिति अपवाद-रूप में है न कि नियमित रूप में। इसका कारण यह है कि इस वर्ग के लिए काम करना फ़ुरसत का वक्त बिताने के लिए एक व्यसन-मात्र है। वह जीवन का ऐसा उद्देश्य नहीं जिसके लिए कोई भी बलिदान बहुत बड़ा या मूल्यवान् नहीं। उनका इरादा कितना ही सच्चा और प्रमाणित क्यों न हो, उनका कार्य-कलाप परिमित हो ही जायगा। वह भी विशेष रूप से आजकल के समय में जब कि भावनाएँ, आकांक्षाएँ, और कार्य-प्रणालियाँ सब एक बढ़ते हुए पैमाने पर हैं, जब कि वे उत्ताल तरंगों की भाँति विस्तृत हो रही हैं, और देर में होनेवाली वर्षा की बूँदों की भाँति मिट्टी की तह तक जज़्ब होती चली जा रही हैं। यदि सम्मेलन को जनता की भावनाएँ सुरक्षित रखनी हैं, उसका विश्वासपात्र बनना है तो उसे वास्तविक परिस्थिति के निर्माण के लिए अपने विधान और प्रोग्राम में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। जनता सम्मेलन को पराया न समझे, अपनी चेतना पृथक् रूप से जागृत न करे और अपने अन्दर हीनता की भावना का जन्म न होने दे। उसे यह अनुभव होना चाहिए कि सम्मेलन उसकी अपनी चीज है, उसके सुनहरे सपनों और आकांक्षाओं की प्रकृत और स्वाभाविक अभिव्यक्ति है।

इसकी प्राप्ति के लिए सम्मेलन को काम करने का अपना पुराना तरीका पूरी तरह से बदलना होगा। अभी तक इसका बल इसका प्रचार-कार्य ही रहा है। मुहल्ले-मुहल्ले और गाँव-गाँव की महिलाओं तक पहुँचकर उसे इसको और बढ़ाना होगा। उनके मसलों को एक मानव के दृष्टिकोण से उठाना होगा। उनके लिए क़ानूनी माँगों को ही न पेश करके उनके प्रतिदिन की दुर्दशाओं को शीघ्र ही मिटाने की माँग पेश करनी होगी। आर्थिक कठिनाइयों से महिलाओं को जीविका के लिए निकलना पड़ रहा है। निम्न, मध्यम वर्ग की क़रीब-क़रीब सभी महिलाएँ उसी दशा में हैं जिसमें लड़ाई के पहले श्रमहारा वर्ग था।

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

अखिल-भारतीय महिला-सम्मेलन की भूतपूर्व सभानेत्री श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

पनी बात

२६ जनवरी

आगामी २६ जनवरी को भारतीय
वाधीनता का पवित्र दिवस है। सारे देश में
वाधीनता-दिवस मनाने की जोरदार
यारियाँ हो रही हैं। कांग्रेस नेताओं के
ल में रहने के कारण पिछले तीन वर्ष की
पेक्षा अब स्वाधीनता-दिवस मनाने के
लिए वातावरण भी मुक्त हो गया
रकारी प्रतिबंधों का अवसान क
में हो चुका है इसलिए भी स्वप्रयोगी है।

दिवस का राष्ट्रीय और पवि
समारोहपूर्वक मनाया जाना
आज कांग्रेस के सभी नेता
हैं, कांग्रेस के वार्षिक अधिवे
हो रही हैं, भारतीय स्व
का अनुभव कर रहे हैं, ऐ
धीनता-दिवस का सम
अधिक व्यापक रूप में
राष्ट्रीय चेतना व्याप्त

यद्यपि भारत अ
सदियों से अपने गले से
देने के लिए लालायित है
तो यह समस्या इतना
कर चुकी है कि भारतीय
का प्रश्न केवल भारत का
समस्त संसार का प्रश्न बन गया
करोड़ की जन-संख्यावाले राष्ट्र की
की पराधीन-वृत्ति सचमुच स्वाधीनचेत
राष्ट्रों के लिए दुखद हो तो आश्चर्य नहीं
किन्तु साम्राज्यवाद के भूखे और छोटे-बड़े
राष्ट्रों की स्वाधीनता की घोषणा करनेवालों
का समय अब धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है।
भारतीय कांग्रेस ने पिछली, अर्द्धशताब्दी
में जन-जागरण का जो बिगुल फूँका है,
साथ ही महात्मा गांधी ऐसे तपस्वी का जो
नेतृत्व प्राप्त हुआ है, उसका शुभ फल प्राप्त क
हो रहा है और वह दिन अब दूर नहीं है ऊपर
कि भारत की संसार के प्रबल और स्वाधीन के
राष्ट्रों में प्रमुख रूप से गणना होगी। कि समा-
सरकार को अंत में झुकना ही ध्यान
भारत को स्वतंत्रता निश्चित सामयिक और
होगी। संसार का कोई भी शीघ्र से शीघ्र
लिए पराधीन नहीं रखा जा करना चाहिए।
न वह साम्राज्यवाद क कितनी ही महत्त्व
बनाया जा सकता है। पत्र देर से प्रकाश

हाँ, यह सदा भी भूल भी जाते हैं।
स्वाधीनता आन्दो अनुवाद अधूरा हो जाता है।
नीति, त्याग अ नाइयाँ समझी जा सकती हैं।
रित है। कां चार एजेन्सियाँ नहीं हैं। हिन्दी
का आदर्श र एजेन्सियाँ खोलने के लिए आन्दो-
भी वह करना होगा। जब तक हिन्दी समाचार
'स्वा जेन्सियाँ स्थापित नहीं होती हैं तब तक
आ रोमन-लिपि में तार लेने के लिए तार
भ घरवालों को मजबूर करना होगा। रोमन-
लिपि में लिखा समाचार तार घरवाले
आज नहीं लेते हैं। हिन्दी पत्रों का स्थान
अंगरेजी और बंगला पत्रों के बराबर ले

ोर-सम्मेलन नैपाल—एक नी

विद्वेर्णन और संस्मरण

। विद्यार्थी

। पहला संस्मरण 'देशदूत' के गत
का है। उसी लेख का यह दूसरा अंश
ी पत्रकारों के सम्मुख कुछ सुझाव प्रस्तुत
और हिन्दी पत्रकार जगत, श्रमजीवी पत्रकारों
है।

हिन्दी पत्रकार सम्मेलन के सभापति श्री बनारसीदास जी चतुर्वेदी, अपने भव्यवेश में।

जाने की कोशिश की जानी चाहिए। राष्ट्रीय और देशभक्ति के साथ ही पत्रों की उन्नति पर संचालकों का ध्यान खींचना चाहिए। पाठकों की जेब से पैसा लेते समय उनके योग्य सामग्री भी देनी चाहिए। अँगरेजी पत्रों का जूठन खाना अब बहुत खटकता है। सामयिक और सुन्दर सचित्र पाठ्य-सामग्री जनता तक पहुँचानी चाहिए।

गुजराती समाचार पत्रों से मैं परिचित हूँ। आप उनमें रोज या दूसरे दिन एक सामयिक लेख जरूर पढ़ने को पायेंगे। हिन्दी पत्रों में महीनों बीत जाने पर भी सचित्र सामयिक लेख नहीं मिलते। आर्थिक, सामयिक और राजनैतिक समस्याओं पर विशेष लेखमाला हिन्दी पत्रों में कहाँ?

अच्छे और विशेषज्ञ संवाददाता नहीं के बराबर हैं। आप देखेंगे कि अन्य प्रान्तीय भाषाओं में अच्छे विशेष संवाददाता तैयार

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

कई हिन्दी पत्रकार—सर्वश्री भगवानप्रसाद त्रिपाठी (वर्धा), अशोक (दिल्ली), प्रभुदयाल विद्यार्थी, गोपालप्रसाद व्यास, कृष्णचन्द्र विद्यालंकार (अर्जुन), विश्वम्भर सहाय प्रेमी (मेरठ) और चन्द्रलाल चन्दाकर, मथुरा सम्मेलन में शरीक होने के बाद वापस लौट रहे हैं।

आधुनिक शासन-व र्णन

लेखक, पं० ज्योतिप्रसाद उपाध्य

भारतवर्ष में नैपाल एक स्वत
वैभव, संस्कृति और युद्धभूमि की वीर
करता आया है। इस लेख में विद्वान्
गौरव का चित्रण करते हुए यह बतलाय
पर अग्रसर है। शासन की दृष्टि से वहाँ आ
अत्यन्त उपयोगी और पठनीय है।

नैपाल भारत की सीमा पर एक पहाड़ी राज्य है। इसकी स्थिति भारतीय दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है। भारतीय सरकार कैसी भी हो उसे नैपाल की ओर अपनी नीति सोच-समझकर निर्दिष्ट करनी पड़ेगी। नैपाल स्वाधीन राज्य है। वहाँ किसी अन्य-राष्ट्र का अधिपत्य नहीं है, न कोई उसकी आन्तरिक नीति में किसी प्रकार का हस्तक्षेप ही कर सकता है। पिछले १५ वर्ष में नैपाल ने बड़ी उन्नति की है। परन्तु तो भी आधुनिक राजनीतिक दृष्टिकोण से नैपाल संसार के पिछड़े हुए देशों में ही गिना जायेगा। यद्यपि महाराज चन्द्र, भीम तथा जुद्ध के शासनकाल में शासन-सुधार भी हुआ है शिक्षा-प्रचार और औद्योगिक इत्यादि के लिए भी बहुत कुछ कि है। हाल में नैपाल में एक विड़ना हुई है। महाराज जुद्ध ने राज वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश २९ नवम्बर को सिंह दर भाई, भारदार, सरदार तथ बुलाकर उन्होंने राज्य का दिया और अपने भतीजे जनर को राजसिंहासन पर बिठा में भाई राज्य का अधिकारी होत नहीं। यदि भाई न हो तो फिर बेटों में जो सबसे बड़ा हो, वह के पद पर नियुक्त होता है। महारा अन्तिम भ्राता थे, इसलिए राज्य सबसे व वृद्ध भतीजे जनरल पद्म को दिया गया महाराज ने अपने हाथ से अपने भतीजे के सिर पर राजमुकुट रक्खा और स्वयं गाड़ी में सवार होकर पहाड़ में स्थित रिडी नामक स्थान को चले गये। निस्संकोच उन्होंने राज-पाट, धन-धाम, ऐश्वर्य, अतुल सम्पत्ति सबको तिलांजलि दे दी। इस स्थान में जाकर वे तप करेंगे। अपने साथ बहुत थोड़े आदमियों को ले गये हैं। महाराज की सदा से धर्म में बड़ी रुचि थी। ईश्वर की इच्छा से उन्हें वैराग्य हुआ और रिडी के वन में अपनी आध्यात्मिक उन्नति के प्रयत्न में लग गये हैं। वानप्रस्थ लेकर महाराज जुद्ध ने प्राचीन हिन्दू आदर्श को फिर से जीवित कर दिया है। नैपाल में दो राजा होते हैं—एक तो महाराजाधिराज और दूसरे महाराजा। महाराजाधिराज प्राचीन राजवंश के हैं परन्तु राज्य के काम से उनका कोई सम्बन्ध नहीं है। नैपाल का वास्तविक राजा प्राइम मिनिस्टर ही होता है। राज्य का सम्पूर्ण अधिकार उसी के हाथ में होता है। उसके काम में कोई दखल नहीं दे सकता। ता० ९ दिसम्बर को महाराज पद्म की सिन्दूर-यात्रा हुई। महाराजाधिराज ने हनूमान दोना नामक प्राचीन महल में उनके माथे कर सिन्दूर का टीका लगाकर उन्हें प्राइम मिनिस्टर के सिंहासन पर बिठाया। वहाँ से एक भारी जुलूस असंख्य दर्शकों के बीच होता हुआ नगर की सड़कों से टूंडी खेल के मैदान में पहुँचा। सड़कें खूब सजाई गईं, नगर में अपूर्व उत्साह था। स्त्री, पुरुष, बालक, युवा, वृद्ध, अमीर, गरीब हजारों की तादाद में महाराज का दर्शन करने के लिए आये। महाराज पद्म ने अपने भाषण में कहा कि मैं प्रजा का सेवक

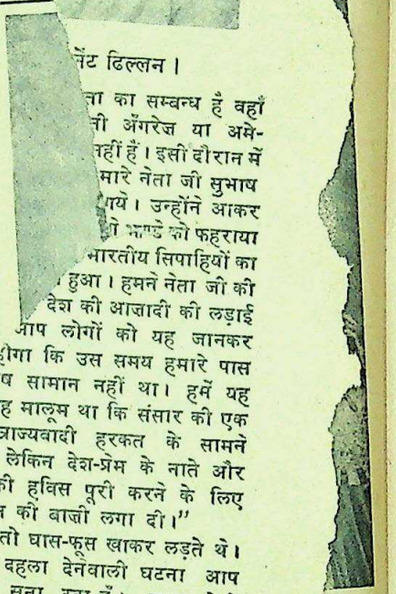

नेंट ढिल्लन।

ता का सम्बन्ध है वहाँ
नी अँगरेज या अमे-
नहीं हैं। इसी दौरान में
मारे नेता जी सुभाष
गये। उन्होंने आकर
ी झण्डे को फहराया
भारतीय सिपाहियों का
हुआ। हमने नेता जी की
देश की आजादी की लड़ाई
आप लोगों को यह जानकर
होगा कि उस समय हमारे पास
शेष सामान नहीं था। हमें यह
ी तरह मालूम था कि संसार की एक
साम्राज्यवादी हरकत के सामने
है लेकिन देश-प्रेम के नाते और
आजादी की हविस पूरी करने के लिए
अपनी जान की बाजी लगा दी।"

"हम तो घास-फूस खाकर लड़ते थे। एक हृदय दहला देनेवाली घटना आप लोगों को सुना रहा हूँ। घटना मेरी आँखों देखी है। जब हम लोग चिन्दविन की ड़ियों में लड़ रहे थे तब हमारे जवान फूस खाकर गुजारा कर रहे थे। बारूद और रसद भी, हमारे पास । इसी अवसर पर अँगरेजी फ़ौज स एक खत आया जिसमें लिखा न्द-फ़ौज के गुमराह सिपा-ाल-बच्चे तुम्हारी राह देख -फूस खाकर पशुओं का-हो। हाँ तुम हमारे पास अच्छी रसद मिलेगी चढ़ से तुम्हें मिला अनन्य ने इस खत लिए बरूस खाकर जीवन सदामी की अधिक अभि"

हिन्दू-धर्म के नव से जितना समय में लगाते हैं। मह के शासन-काल में की अधिक सेवाये आप नियुक्त रहे उनका काम अद उत्साह के साथ किया और राज्य-द्वा अनेक प्रकार से सम्मानित हुए। १९३४ के भीषण भूकम्प में कमा इन-चीफ की हैसियत से जनता की सेवा की। महाराज की अनुपस्थिति अपने कष्ट-पीड़ित प्रजा को हर तरह सहायता पहुँचाई। आपके अदम्य उत्स को देखकर लोग दंग रह गये। ऐसा स्व त्याग कभी नैपाल में देखा नहीं गया लोग मुक्त कण्ठ से आपकी भूरि-भूरि प्र करने लगे।

राज्य के शासन में महाराज युवावस्था से ही भाग लिया है। राष्ट्रीय आदर्श उच्चकोटि का है। की शासन-पद्धति प्राचीन है। पद्धतियों की तरह सर्वथा दोषरहित है। इन त्रुटियों से महाराज पद्म

शेष पृष्ठ १६ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ० भारतीय महिला-सम्मेलन

स्वाधीनता के युद्ध में नारियों का सहयोग क्यों?

लेखिका, श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय

अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन की भूतपूर्व अध्यक्षा श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने इस विचारपूर्ण लेख में यह प्रगट किया है कि राष्ट्रीय स्वाधीनता की प्राप्ति में महिलाओं के सामूहिक संगठन और सहयोग की क्यों आवश्यकता है? साथ ही आपने यह भी सुझाव दिया है कि महिलायें स्वयं किस प्रकार के क्रियात्मक उपायों तथा सहयोग से संगठित हो सकती हैं। लेख विचारणीय और अत्यन्त सुन्दर है।

भारत की सुप्रसिद्ध महिला-नेता और इस लेख की लेखिका श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय।

जनयुद्ध के बाद की दुनिया का सामना करने के ध्येय को लेकर अखिल भारतवर्षीय महिला-सम्मेलन का अधिवेशन पिछले मास में हुआ। ऐसे समय यह सिर्फ़ महसूस करने की चीज है कि युद्ध और शान्ति एक ही तसवीर के दो पहलू हैं। एक का दूसरे से अटूट तथा अनिवार्य सम्बन्ध है। पहला महायुद्ध, बीच का जमाना, दूसरा महायुद्ध और निकट भविष्य में दिखाई पड़नेवाला तीसरा, महायुद्ध यह सब एक ही बढ़ते हुए सूत्र अनेकानेक भागों की तरह हैं। इस प्रकार हम आज भी सदा की तरह विक्षिप्त और व्यथित संसार के सामने हैं। जो भी हो, हमारे मसले आज पहले से कहीं अधिक पेचीदे और बोझीले दिखाई पड़ रहे हैं।

यद्यपि भारतवर्ष नियमित रूप से युद्ध का क्षेत्र कभी नहीं रहा फिर भी यह उसकी चपेट में कहीं अधिक आ गया था। देश को आवश्यक वस्तुओं के अभाव का सामना करना पड़ा; जैसे भोजन और वस्त्र--वस्त्र का तो अभूतपूर्व तौर पर। जिसका कभी ध्यान भी नहीं किया जा सकता था, वह देखा गया। ग़रीबी की मार से व्याकुल करोड़ों भारतीय और भी ग़रीब होते जा रहे हैं। घर और परिवार का जीवन इस तरह छिन्न-भिन्न हो गया जैसे उसका विध्वंस हो रहा हो। लाखों का पूरी तरह से मूलोच्छेदन हो गया और उनकी स्थिति डावाँडोल बन गई। हुकूमत ख़राबियों से भर गई; लालच की बाढ़ उसे निकम्मी करने लगी। साधारण जनता एक निरन्तर निर्दय आघात का सामना कर रही थी। इन सबके बावजूद पुलिस की बेरहमी और उसकी भय, 'ला और आर्डर' के नाम पर जिसको सरकार का सहयोग प्राप्त था, इन सबने जनता के हृदय में कटुता की एक जलती हुई भावना पैदा कर दी। हम सब इस सरकार से न सिर्फ़ ऊबे हुए ही हैं बल्कि अब इसको एक क्षण भी सहना हमारे लिए असम्भव हो गया है। आज कोई भी सजग नारी यह नहीं कह सकती कि उसका राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं। अब या तो शीघ्र स्वतंत्रता प्राप्त हो या प्रलय! यह बात कल्पनातीत है कि ऐसी ही परिस्थिति में हम एक दूसरे महायुद्ध का सामना कर सकते हैं। आज का महान् प्रयत्न स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए ही होना चाहिए। संसार की घटनायें काफी तेजी से बढ़ रही हैं। दबने और छोड़ने का अन्त होना चाहिए। दीवाल के लेख आज इतने स्पष्ट हैं कि हम उन पर न तो विहंगम दृष्टि ही डाल सकते हैं और न उन पर से अपनी आँखें ही हटा सकते हैं।

अखिल भारतवर्षीय महिला-सम्मेलन ने देश में अपने लिए एक स्थान बना लिया है। परन्तु राष्ट्रीय क्षेत्र में उसका स्थान अब भी सन्देहास्पद है। समय आ गया है जब उसे निर्णय करना चाहिए कि वह इस ओर क्या करने जा रहा है? सम्मेलन अभी तक सभी पार्टियों से पृथक् एक ऐसी संस्था रही जिसका कार्य स्त्रियों से सम्बन्ध रखनेवाले मसलों को सुलझाना था। परन्तु अब अधिकाधिक अनुभव होता जा रहा है कि यह समस्यायें भारतीय स्वाधीनता की मुख्य समस्या से वास्तव में कभी पृथक् नहीं की जा सकतीं। हर नारी की हर एक समस्या अविच्छिन्न रूप से इस आधारगत समस्या से सम्बन्धित है; और जैसा कि हमने अनुभव किया है, अन्य सबको एक ओर रखकर हमें अपनी शक्ति इसी एक समस्या पर केन्द्रित करनी है। भविष्य की योजना में ऐसी किसी भी संस्था का जो इस ओर क़दम बढ़ाने में असफल रहेगी, कोई स्थान न रहेगा। हमारेसामने यह सवाल है कि सभी पार्टियों से अलग रहनेवाली अपनी इस विशेषता को जो एक प्रकार से अभी तक संस्था का बल रहा, क़ायम रखते हुए अपना उचित कर्त्तव्य कैसे निभायें?

एक संस्था की हैसियत से महिला सम्मेलन को कुछ रुकावटों का सामना करना पड़ता है। जहाँ वह खुले तौर पर भारतीय नारियों की 'माँगों' की आवाज उठाता आया है, वहाँ वह कार्य-क्षेत्र से अलग रहा है—जिनकी ओर से वह आवाज उठाने का दावा करता है, उन्हीं के सम्पर्क से बहुत दूर। आरम्भ में कुछ अनुभवी कार्यकर्ताओं के द्वारा महिला सम्मेलन को एक छोटे से समूह के रूप में विकसित हुआ था। वही बढ़कर आज एक कहीं बड़ी संस्था के रूप में सामने है। परन्तु जिन विचारों को ध्यान में रखकर इसका जन्म और गति-निर्देश हुआ था, उनके अनुसार इसका नेतृत्व बढ़ती हुई माँगों के साथ अपना क़दम सदा आगे नहीं बढ़ा सका। अतएव रूप-रेखा और कार्य-क्षेत्र के विस्तार की तुलना में इसका सम्बन्ध संकुचित रहा। इसका निर्माण भी कुछ चुने हुए हाथों तक ही सीमित रहा। सिद्धान्त की दृष्टि से यद्यपि इसका आधार बहुत ही उदार और महान् है परन्तु कार्यतः वह संकुचित और सीमित है। आज भारतीय जनता बड़ी तेजी से पूर्णतः जाग उठी है। इसके पहले देश में इतना अधिक उत्साह उमड़ता और लहरें मारता हुआ जोश और अभिव्यक्ति की इतनी तीव्र आकांक्षा कभी भी नहीं दिखाई देती थी। भारतीय जनता वास्तव में कार्य-तत्पर, भावुक और जीवन की संपूर्ण जागरुकता के प्रति सफलतापूर्वक उत्तरदायी हो रही है। कार्यकर्ता अभूतपूर्व रूप से रचनात्मक योजनाओं की ओर मुड़ रहे हैं। नवजीवन के इस प्रवाह में महिला-सम्मेलन का भी हाथ रहा है। महिलायें सदस्या बनने और नई संस्थायें बनाने में बड़ा उत्साह दिखा रही हैं। परन्तु महिला-सम्मेलन परिस्थिति के अनुसार वास्तव में उठ नहीं सका है। प्राचीन, कठोर और अटूट रूढ़ियाँ अभी तक पहले ही की तरह अपरिवर्तित हैं। अखिल भारतीय संस्था की हैसियत से यह इन सुनहरे क्षणों का सदुपयोग करने, इस वेग को सँभाल कर एक बाँध के द्वारा उसकी प्रवाह-शक्ति की दिशा बदलने में असफल रहा है। दिखाई क्या पड़ रहा है कि देश भर में अनेकों छोटी-छोटी संस्थायें बन रही हैं (विशेषकर छोटे-छोटे और अप्रसिद्ध स्थानों में)। इनके द्वारा अपने विचारों को प्रकट करने का एक साधन मिल जाता है, काम करने की—बल्कि कुछ भी कर जाने की—इस भयानक भावना को मार्ग मिल जाता है। इस प्रकार जब कि इस सम्मेलन की अनेकानेक शाखाएँ और उपशाखायें निर्जीव पड़ी हैं—जो कभी-कभी अपने जीवन की झलक भर अवश्य दिखा जाती हैं। ये नई संस्थाएँ अपने अन्दर एक नई लहर लिए हुए बढ़ रही हैं।

इस स्थिति के कुछ मुख्य कारण हैं। एक तो काम करने की इच्छा का अभाव, शिक्षित महिलाओं में अपने विचार प्रकट करने की प्रवृत्ति। वर्ग-रूप में वे असफल रही हैं। नया नेतृत्व बहुत काफ़ी वक्त से अल्पशिक्षित और कभी-कभी अशिक्षित हाथों में रहा है। राष्ट्रीय जन-आन्दोलन जिन महिलाओं को अपनी ओर खींच सका है वे सब इसी वर्ग की हैं, न कि शिक्षित वर्ग की। राजनीतिक और रचनात्मक क्षेत्रों में इन्हीं अशिक्षित और अल्पशिक्षित महिलाओं ने कार्यकर्त्रियों की हैसियत से महान् कार्य किया है और अब भी स्तुत्य सहयोग दे रही हैं। उच्च शिक्षितों की उपस्थिति अपवाद-रूप में है न कि नियमित रूप में। इसका कारण यह है कि इस वर्ग के लिए काम करना फ़ुरसत का वक्त बिताने के लिए एक व्यसन-मात्र है। वह जीवन का ऐसा उद्देश्य नहीं जिसके लिए कोई भी बलिदान बहुत बड़ा या मूल्यवान नहीं। उनका इरादा कितना ही सच्चा और प्रमाणित क्यों न हो, उनका कार्य-कलाप परिमित हो ही जायगा। वह भी विशेष रूप से आजकल के समय में जब कि भावनाएँ, आकांक्षाएँ, और कार्य-प्रणालियाँ सब एक बढ़ते हुए पैमाने पर हैं, जब कि वे उत्ताल तरंगों की भाँति विस्तृत हो रही हैं, और देर में होनेवाली वर्षा की बूँदों की भाँति मिट्टी की तह तक जज्ब होती चली जा रही हैं। यदि सम्मेलन को जनता की भावनाएँ सुरक्षित रखनी हैं, उसका विश्वासपात्र बनना है तो उसे वास्तविक परिस्थिति के निर्माण के लिए अपने विधान और प्रोग्राम में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। जनता सम्मेलन को पराया न समझे, अपनी चेतना पृथक् रूप से जागृत न करे और अपने अन्दर हीनता की भावना का जन्म न होने दे। उसे यह अनुभव होना चाहिए कि सम्मेलन उसकी अपनी चीज है, उसके सुनहरे सपनों और आकांक्षाओं की प्रकृत और स्वाभाविक अभिव्यक्ति है।

इसकी प्राप्ति के लिए सम्मेलन को काम करने का अपना पुराना तरीका पूरी तरह से बदलना होगा। अभी तक इसका बल इसका प्रचार-कार्य ही रहा है। मुहल्ले-मुहल्ले और गाँव-गाँव की महिलाओं तक पहुँचकर उसे इसको और बढ़ाना होगा। उनके मसलों को एक मानव के दृष्टिकोण से उठाना होगा। उनके लिए क़ानूनी माँगों को ही न पेश करके उनके प्रतिदिन की दुर्दशाओं को शीघ्र ही मिटाने की माँग पेश करनी होगी। आर्थिक कठिनाइयों से महिलाओं को जीविका के लिए निकलना पड़ रहा है। निम्न, मध्यम वर्ग की क़रीब-क़रीब सभी महिलाएँ उसी दशा में हैं जिसमें लड़ाई के पहले श्रमहारा वर्ग था।

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

श्रीमती रामेश्वरी नेहरू।

राजकुमारी अमृत कौर।

अखिल-भारतीय महिला-सम्मेलन की दो प्रमुख कार्य-कर्त्रियाँ और राष्ट्र सेविकायें।

अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन की भूतपूर्व सभानेत्री श्रीमती सरोजिनी नायडू।

अखिल-भारतीय महिला-सम्मेलन की भूतपूर्व सभानेत्री श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदर्भ प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन

भारत की राष्ट्रभाषा की समस्या

आये दिन हिन्दी, हिन्दुस्तानी और लिपि का प्रश्न

लेखक, श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन

राष्ट्रभाषा नचार समिति के प्रधान मंत्री श्री भदंत आनंद कौसल्यायन।

अन्य किसी भी प्लेटफ़ार्म की अपेक्षा मुझे हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्लेटफ़ार्म पर से कुछ भी कहने में अधिक प्रसन्नता होती है। इस प्लेटफ़ार्म पर खड़े होकर बोलते समय मैं अनुभव करता हूँ कि बोलनेवाले के पैरों में न किसी धार्मिक साम्प्रदायवाद की बेड़ी पड़ी है और न किसी राजनीतिक व साम्प्रदायवाद को।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन कुछ विचारों का नाम है और एक विशिष्ठ संगठन का। किसी खेत का और उसकी काँटेदार बाड़ का जो सम्बन्ध है वही किसी संस्था के विचारों और उसके संस्थान का। खेत के गिर्द यदि बाड़ न हो तो उसे कोई भी चर जा सकता है---और यदि खेत की उपज इस योग्य ही न हो कि उसके गिर्द बाड़ लगाई जाय तो बाड़ बेकार है। उसी प्रकार यदि विचार-विशेष की रक्षा करनेवाला कोई मज़बूत संगठन न हो तो विचार छिन्न-भिन्न हो जाता है और यदि विचार ही दो कौड़ी का हो तो उसकी रक्षा करनेवाले संगठन का कोई मूल्य नहीं।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन अपने स्थापना-दिवस से जिसे आज पूरे पैंतीस वर्ष हो गये हैं, राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्र-लिपि देवनागरी का प्रचारक रहा है। उसकी प्रथम नियमावली में ही राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्र-लिपि नागरी शब्द आये हैं। उसके इस कथन का विरोध अँगरेज़ी ने करना चाहा लेकिन उसने बता दिया कि जब तक विदेशी हुकूमत है तब तक अँगरेज़ी भले ही शासन की भाषा अथवा राजभाषा बनी रहे किन्तु वह हिन्द की राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती। उर्दू की ओर से भी यह आवाज़ बुलन्द हुई कि उर्दू ही इस देश की क़ौमी ज़बान है। हिन्दी का उर्दू से कोई विरोध नहीं, विरोध हो नहीं सकता। हिन्दी-उर्दू के सर्वनाम, प्रत्यय, क्रियायें सब कुछ एक हैं। हिन्दी अपनी ही एक शैली---उर्दू का विरोध कैसे करे? पिछले वर्षों में हिन्दी का जो राष्ट्रव्यापी प्रचार हुआ है उसने हिन्दी का देश में जो स्थान है वह निश्चित कर दिया और उसके साथ उर्दू का भी। भारतवर्ष में ही नहीं मैं तो कहता हूँ संसार के इतिहास में एक यह असाधारण बात है कि दक्षिण और शेष भारत के लाखों अहिन्दी-भाषा-भाषी विद्यार्थी राष्ट्रभाषा हिन्दी के अध्ययन में लगे हुए हैं और उसकी परीक्षायें पास कर रहे हैं और ऐसी परीक्षायें कि जिनके पास करने के साथ किसी सरकारी नौकरी आदि मिलने का लालच नहीं जुड़ा हुआ है। राष्ट्रभाषा हिन्दी की इस प्रगति को उसके आज तक के समर्थक भी यदि चाहें तो अब नहीं रोक सकते।

यह सब सही है लेकिन अँगरेज़ी और उर्दू के बाद इधर दो-तीन वर्ष से एक नई विचार-धारा ने अपना सिर उठाया है। उसका नाम है हिन्दुस्तानी विचार-धारा। जिस प्रकार किसी बोतल पर लगा हुआ लेबिल बना रहे लेकिन उसके अन्दर की चीज़ बदल जाय वही हाल हिन्दुस्तानी लेबिल का है। हम इस शब्द को हिन्दी के साथ-साथ काम में लाते रहे हैं---जैसे हिन्दी-हिन्दुस्तानी और यह हिन्दी का पर्यायवाची भी रहा है जैसे हिन्दी 'अथवा' हिन्दुस्तानी! लेकिन इधर इस 'अथवा' में आमूल परिवर्तन हो गया है। पहले इसका मतलब था कि चाहे हिन्दी कहो चाहे हिन्दुस्तानी कहो बात एक ही है। लेकिन अब इस 'अथवा' का अर्थ किया जा रहा है कि हिन्दी और हिन्दुस्तानी दोनों में से किसी एक का चुनाव करना होगा। यदि हिन्दी का, तो हिन्दुस्तानी का नहीं और हिन्दुस्तानी का, तो हिन्दी का नहीं।

हमारे इस प्रान्तीय सम्मेलन के द्वार पर आप सबने देखा होगा लिखा है 'जय हिन्द' यह इस समय का हमारा राष्ट्रीय उद्घोष है। जिस प्रकार हम, 'जय हिन्द' कहते हैं उसी प्रकार हमें 'जय हिन्दी' भी कहना चाहिए।

हम हिन्दीवाले वर्षों से प्रचार करते आये हैं कि क्योंकि हिन्दी राष्ट्रभाषा है इसलिए प्रत्येक हिन्दी को प्रत्येक भारत-वासी को इसे सीखना चाहिए। इस नई विचार-धारा ने जिससे हमें सावधान रहना चाहिए कहना आरम्भ किया है कि हिन्दी हिन्दुओं की भाषा है और उर्दू मुसलमानों। यह ठीक है कि हिन्दी हिन्दुओं की भी भाषा है किन्तु हिन्दुओं की ही नहीं---और इसी प्रकार उर्दू भी मुसल-मानों की ही नहीं। सर तेजबहादुर सप्रू उर्दू के प्रसिद्ध समर्थक हैं। वे मुसलमान नहीं काश्मीर के ब्राह्मण हैं। और अंजुमन तरक्कीये उर्दू की मुख्य पत्रिका 'हमारी जबान' के सम्पादक भी श्री ब्रजमोहन दत्तात्रेय हैं। उर्दूलिपि में आपका गोत्र ठीक-ठीक लिखा ही नहीं जा सकता। कोई भी भाषा किसी धर्म की बपौती नहीं, जो लोग हिन्दी को हिन्दुओं की भाषा कह-कहकर और उसी प्रकार उर्दू को मुसलमानों की भाषा कह-कहकर हिन्दुस्तानी के द्वारा हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य के सम्पादन की बात करते हैं, मुझे भय है कि इतिहास ऐसे लोगों को साम्प्रदायिकता के असाधारण प्रचारक न सिद्ध करे।

'हिन्दी' के राष्ट्रभाषा होने पर जो एक ओर आपत्ति उठाई जा रही है, वह उसके गुण को उसका दोष कहा जा रहा है। कहा जाता है कि ऐसी भाषा ही राष्ट्रभाषा हो सकती है? 'जिसमें न संस्कृत के शब्द हों---न अरबी-फ़ारसी के'। यदि हमारी राष्ट्रभाषा को वह सब काम करने हैं जो आज दिन हम अँगरेज़ी के माध्यम से करते हैं, तो ऐसी भाषा जिसमें 'न संस्कृत के शब्द हों न अरबी-फ़ारसी के' हमारे लिए तीन कौड़ी काम की भाषा न होगी। हमें यह निर्णय करना ही होगा कि विशेष शब्द आवश्यक ही नहीं अनिवार्य होने पर कहाँ से लें? स्याम में बैंक को धनागार कहते हैं और नोट को धन-पत्र। हम भारत में यदि इसी प्रकार बोलें और लिखें, तो उसमें किसी को भी क्या आपत्ति हो सकती है?

एक और मज़े की आपत्ति यह है कि लोगों की मातृभाषा हिन्दी में और लोगों की राष्ट्रभाषा हिन्दी में अन्तर होना चाहिए। अर्थात् जो हिन्दी किसी की मातृ-भाषा है वह राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती। स्काटलैंड और ब्रिटेन के लोगों का अँगरेज़ी से वही सम्बन्ध कहा जा सकता है जो मराठी भाषा-भाषी अथवा गुजराती भाषा-भाषी लोगों का हिन्दी से, इंगलिश इंगलैंड के लोगों की मातृभाषा होते हुए भी सारे ब्रिटेन की राज्य-भाषा है और सारे ब्रिटिश साम्राज्य की साम्राज्य भाषा। अब क्या एक तरह की अँगरेज़ी अँगरेज़ों की मातृ-भाषा और दूसरी तरह की अँगरेज़ी ब्रिटेन की राष्ट्रभाषा और तीसरी तरह की अँग-रेज़ी ब्रिटिश साम्राज्य की साम्राज्य भाषा है? अँगरेज़ी अँगरेज़ी है। आप उसे मातृ-भाषा मानकर सीखें, राष्ट्रभाषा मानकर सीखें, साम्राज्य भाषा मानकर सीखें। किन्तु हम पराधीन हिन्दुओं को सुझाया जाता है कि हिन्दी के दो रूप होने चाहिए---एक मातृभाषावाला रूप, एक राष्ट्रभाषा-वाला रूप। सच्ची बात यह है कि मातृ-भाषा के अर्थ में तो हिन्दी भारत के कुल चार-पाँच जिलों की भाषा होगी, शेष समस्त भारत की तो हिन्दी राष्ट्रभाषा ही है। और उसका स्वरूप निश्चित है। हमें आज उसका प्रचार करना है उसमें नये आवश्यक ग्रन्थों का निर्माण करना है और जो काम हमें नहीं करने बैठना है वह उसके स्वरूप की चर्चा है।

फिर यह भी कहा जाने लगा है कि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को क्या अधिकार है कि वह देश की राष्ट्रभाषा का निर्णय करें। यह काम तो हमारी राष्ट्रीय सरकार का है और जब तक उसकी स्थापना नहीं होती तब तक राष्ट्रीय महासभा का है। सरकार, चाहे फिर वह राष्ट्रीय ही क्यों न हो किसी पर कोई भाषा लाद नहीं सकती। श्री० शिवप्रसाद गुप्त ने जब काशी-विद्यापीठ जैसी राष्ट्रीय संस्था के लिए दस लाख रुपये का दान दिया तो उस दान की शर्तों में एक शर्त यह थी कि यह विद्यापीठ स्वराज्य सरकार से भी कभी किसी प्रकार की सहायता न लेगा। विदेशों में अनेक संस्थायें अपने आपको सरकारी सहायता के दुष्परिणाम से बचाये रखने के लिए प्रयत्नशील रहती हैं। जिस प्रकार शिक्षा को सरकारी प्रभाव से स्वतन्त्र रखने की आवश्यकता है वैसे ही भाषा को भी। कोई सरकार---भले ही वह राष्ट्रीय ही क्यों न हो हमें यह नहीं बता सकती कि यह तुम्हारी मातृभाषा है और यह राष्ट्र-भाषा। जहाँ तक आज की कांग्रेस की बात है, कांग्रेस ने कभी भी महात्मा गांधी जी की 'हिन्दुस्तानी' की कल्पना---दोनों शैलियों और दोनों लिपियों के अनिवार्य शिक्षण का समर्थन नहीं किया। कांग्रेस के अध्यक्ष मौलाना अब्दुलकलाम आज़ाद तक इस 'हिन्दुस्तानी' की नई कल्पना के साथ नहीं हैं। हिन्दुस्तानी सभा के कई सभासद तक साथ नहीं हैं। इतना होते हुए भी जिस बात के साथ महात्मा गांधी का व्यक्तित्व जुड़ जाता है उस पर हम सबको विचार करना अनिवार्य हो ही जाता है। क्योंकि गांधी जी, गांधी जी हैं। कौन है जो यह स्वीकार नहीं करेगा कि हिन्द का पिछले पच्चीस वर्षों का इतिहास महात्मा गांधी का जीवन-चरित्र-मात्र है।

यूँ भाषा ही मुख्य वस्तु है किन्तु, इस नये हिन्दुस्तानी आन्दोलन ने भाषा की अपेक्षा लिपियों की ही प्रधानता बढ़ा दी है। हमारे देश की सभी भाषाओं की सभी लिपियाँ नागरी लिपि ही हैं, केवल उर्दू-लिपि या फ़ारसी-लिपि एक अपवाद है। राष्ट्रीय एकता के कार्य-क्रम में जहाँ एक भाषा की बात की जाती है, वहाँ एक लिपि की नहीं। लिपियों के बारे में कहा जाता है कि बिना दोनों लिपियों के ज्ञान के हम एक क़दम आगे बढ़ ही नहीं सकते, और दोनों लिपियों के ज्ञान के प्रसार का मतलब व्यवहार में उर्दू-लिपि प्रचार-मात्र ही दिखाई दे रहा है। पिछले दिनों महात्मा गांधी ने यहाँ तक कहा कि "जो उर्दू-लिपि को पसन्द नहीं करता वह स्वराज्य नहीं चाहता।" अब महात्मा जी के इस कथन को कोई क्या कहे!

हिन्दुस्तानी की इस नई परिभाषा और कार्यक्रम के पीछे जो भावना है वह निस्सन्देह राष्ट्रहित की ही है, किन्तु किसी कार्यक्रम का हितकर वा अहितकर होना भावना पर ही निर्भर नहीं करता, कुछ उस कार्यक्रम पर भी निर्भर करता है; हिन्दुस्तानी भाषा के बारे में कहा जाता है कि जब हिन्दीवाले उर्दू, और उर्दूवाले हिन्दी सीख लेंगे तब दोनों के मेल से एक नई 'सरस्वती' पैदा होगी। कलियुग में तो आप जानते हैं कि 'सरस्वती' के पैदा होने की आशा नहीं। मेरा तो जी चाहता है यदि किसी का जी न दुखे तो हिन्दुस्तानी की नई विचार-धारा की उपमा प्रहलाद के पिता हिरण्यकश्यप से दूं। उसे वरदान प्राप्त था कि न दिन में मरूँ, न रात में मरूँ न अन्दर मरूँ, न बाहर मरूँ, न आदमी के हाथ से मरूँ, न किसी पशु के हाथ से मरूँ---उसका क्या हाल हुआ? उसी की तरह इस हिन्दुस्तानी भाषा का भी कहना है कि मैं वह भाषा हूँ जिसमें 'न संस्कृत के शब्द रहते हैं, न अरबी-फ़ारसी के, जो न हिन्दुओं की भाषा है, न मुसलमानों की; और जो न देवनागरी लिपि में ही लिखी जाती है, न उर्दू में ही।' यह सब हिरण्यकश्यप के नकारात्मक बचाव हैं। अभी तक इस हिरण्यकश्यपरूपी हिन्दुस्तानी के प्रचार के प्रयत्नों का जो प्रभाव देखने में आया है वह इतना ही कि अनेक कार्य-कर्ताओं में बुद्धि-भेद पैदा हो गया है और इतना निश्चय से कहा जा सकता है कि यदि हिन्दुस्तानी किसी को कुछ पढ़ा नहीं सकेगी तो अहिन्दी प्रान्तों में कुछ न कुछ लोगों को राष्ट्रभाषा हिन्दी पढ़ने से रोक अवश्य सकेगी।

जिनके लिए राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार-कार्य एक जीवन-व्रत है उनके लिए यह चिन्तन का ही विषय नहीं कुछ करने का आह्वान है।*

* नागपुर में होनेवाले मध्यप्रान्तीय विदर्भ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर दिया गया भाषण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस और कम्यूनिस्ट पार्टी

क्या पार्टी सचमुच हिन्दू-मुस्लिम-एकता की प्रतीक है?

लेखक, श्री लक्ष्मीकांत वर्मा

कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने यह निश्चय किया है कि कम्यूनिस्ट पार्टी के सदस्य कांग्रेस के सदस्य नहीं रह सकते क्योंकि कांग्रेस यह समझती है कि कम्यूनिस्ट पार्टी गत अगस्त-आन्दोलन में कांग्रेस से अलग रही। इस छोटे से लेख में यह बतलाया गया है कि कांग्रेस क्यों कम्यूनिस्टों के विरुद्ध है? लेख जानकारी से पूर्ण है।

भारतीय कम्यूनिष्ट पार्टी के प्रधान मन्त्री श्री पूर्णचन्द्र जोशी

मार्क्सवाद के मौलिक सिद्धान्तों और लेनिन के रचनात्मक आयोजनों पर यदि दृष्टिपात किया जाये तो यह सिद्ध हो जाता है कि लेनिन ने रूस में साम्यवादी शासन-व्यवस्था स्थापित करने में केवल सैद्धांतिक जड़ता का ही प्रयोग नहीं किया है वरन् अपनी परिस्थितियों और राष्ट्रीय समस्याओं के अनुकूल मार्क्सवाद के मूल सिद्धान्तों की आत्मा को ग्रहण करने की चेष्टा की है। मार्क्स ने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से कुछ सिद्धान्तों की रूप-रेखा में एक नवीन सामाजिक व्यवस्था की कल्पना की, उस कल्पना का आधार ढूंढने का प्रयत्न किया, उस आधार पर एक समाज की नींव डालने का प्रयत्न किया। लेनिन ने जब उस आधार पर कल्पित संसार की ओर बढ़ने का प्रयास किया तो उसे अनुभव हुआ कि जड़ता को काटना आवश्यक है। उन सिद्धान्तों को क्रियात्मक रूप में परिणित करने के लिए उसने काफ़ी नवीन और यथार्थ दृष्टिकोण से काम लिया। यही कारण है कि जन-विद्रोह के अग्रगण्य नेता ट्राटस्की को परिस्थितियों के अनुकूल न चल सकने के कारण ही देश निकाला और मृत्युदण्ड तक का अभियोग भोगना पड़ा। बोलशेविक शासन-व्यवस्था की सफलता के लिए ट्राटस्की का हटाया जाना आवश्यक था। चाहे वह स्वयं मार्क्सवाद के रहस्यों का स्टेलिन और लेनिन से अधिक मर्मज्ञ ही क्यों न रहा हो? इससे यह सिद्ध ही है कि यदि स्वतन्त्रता का अग्रगण्य सैनिक ट्राटस्की का स्टेलिन-द्वारा देशनिकाला और मृत्यु अनुचित नहीं है तो फिर भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन यदि कम्यूनिस्ट पार्टी (जिसकी प्रगतिशीलता रूस के लिए लाभदायक और भारत के लिए हानिकारक सिद्ध की जा सकती है) ऐसी संस्था प्रतिक्रियाशील होने के नाते कांग्रेस से अलग की जाती है तो इसमें किसी को आपत्ति करने की कोई आवश्यकता होनी ही नहीं चाहिए। भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी स्वतन्त्र संस्था न होकर एक विदेशी संस्था की नकल है; यह संस्था लेनिन के मार्क्सवाद से उतनी ही पृथक् है जितनी कि भारतीय राष्ट्रीयता से। भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी रूसी साम्यवाद की एक प्रतिछाया है जो भारतीय संस्कारों और परिस्थितियों के प्रतिकूल है। यही नहीं यदि आज मार्क्स स्वयं इस पृथ्वी पर जन्म ग्रहण कर अपने सिद्धान्तों की यह छीछालेदर देखे तो इसमें सन्देह नहीं कि वह स्वयं इन विश्लेषणों से परेशान हो जायेगा।

पंडित जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में यह सिद्ध हो गया कि भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी निश्चय रूप से ब्रिटिश शासन-व्यवस्था के साथ थी। यह माना जा सकता है कि कम्यूनिस्ट पार्टी ने साम्यवाद के सिद्धान्तों का अनुसरण केवल उसी सीमा तक किया जहाँ तक कि उसने अपने को रूस के समीप तक पहुँचाया था अन्यथा यदि लेनिन इस संसार में जीवित होता या वह भारतीय कम्यूनिस्टों के इस सरकारी मदद की बात सुनता तो इसमें सन्देह नहीं कि वह इन कम्यूनिस्टों के साथ वही व्यवहार करता जो आज कांग्रेस करने पर मजबूर है। वस्तुतः कोई भी अन्तर्राष्ट्रीयता केवल उसी समय तक सफल हो सकती है जब तक कि उसका सम्बन्ध राष्ट्र से है अन्यथा वह व्यर्थ का सिद्धान्त ही कहा जा सकता है।

अगस्त आन्दोलन जो जनता का आन्दोलन था उसके प्रति उनका जो रवैया था वह तो था ही किन्तु एक दूसरे क़िस्म की चीज़ जो इन्होंने करनी शुरू कर दी वह थी कांग्रेस और लीग एकता की। वस्तुतः कांग्रेस एक राजनैतिक संस्था है और लीग एक साम्प्रदायिक। किसी भी साम्प्रदायिक संस्था को बढ़ाकर किसी राष्ट्रीय संस्था के समान बनाना राष्ट्रीय संस्था का अपमान करना है। वस्तुतः साम्प्रदायिकता का निर्णय तो उस समय तक होना असम्भव है जब तक कि ब्रिटिश शासन-व्यवस्था की एक ईंट भी भारतीय भूमि पर वर्तमान है। जिस विचार धारा की पोषक कम्यूनिस्ट पार्टी अपने को घोषित करती है वह वस्तुतः राष्ट्रीय प्रगति को रोककर पीछे घसीटने की चेष्टा ही कही जा सकती है। एक ओर श्री जिन्ना इस आयोजना को परिभाषा धार्मिक दृष्टिकोण से देकर राष्ट्रीयता का नया निर्माण करना चाहते हैं; पाकिस्तान को भारत-व्यापी बता कर कुछ प्रान्तों तक सीमित करने लगते हैं और दूसरी ओर कम्यूनिस्ट पार्टी कांग्रेस को हिन्दू महासभाइओं की संस्था उसी प्रकार से कहती है जिस प्रकार से श्री जिन्ना कहते हैं। कम्यूनिस्ट पार्टी आत्म-निर्णय को पाकिस्तान समझती है, वह प्रतिक्रियाशील शक्तियों को इस बात का प्रोत्साहन दे सकती है कि वह प्रगतिशील राष्ट्रीय आन्दोलन में रोड़े अटकाये पर वह उस संस्था से यह नहीं कह सकती कि तुम भी राष्ट्रीय युद्ध करो और स्वतन्त्र भारत में अपने अधिकार की रक्षा भी। वरन् वह "कांग्रेस लीग ऐक्य" का नारा लगाकर जबर्दस्ती की एक शंका उत्पन्न करती है। उनके लिए "लीग देशभक्त" और "कांग्रेस देशभक्त" दोनों समान हैं। वह कांग्रेस और लीग को केवल वहीं तक देखते हैं जहाँ तक कि वह कांग्रेस के राष्ट्रीयता को भुलाने की चेष्टा करते हैं और लीग में जबर्दस्ती राष्ट्रीयता का विशेषण लगाते हैं।

कांग्रेस की नीति स्पष्ट होते हुए भी भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी ने स्वतन्त्र रूप से कांग्रेस के विरुद्ध नवीन से नवीन आयोजनाओं को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। जब कांग्रेस आत्म-निर्णय, सांस्कृतिक स्वतन्त्रता के सिद्धान्तों को मानने के लिए प्रस्तुत है तब कांग्रेस-नीति के विरोध में पाकिस्तान की जो एक नई आयोजना लाने की चेष्टा यह संस्था कर रही है, तब उसे कांग्रेस में रहने से क्या लाभ होगा यह भी एक विचारणीय बात है। वस्तुतः पाकिस्तान हारे हुए व्यक्तियों की पुकार है जिनका आधार केवल एक शंका है जो ब्रिटिश सरकार-द्वारा हिन्दू और मुसलमान के नाम से दो वर्गों के नाम से विभाजित किया गया है। इस सम्बन्ध में यह कहना ही पड़ेगा कि राष्ट्रीय आन्दोलन के विरुद्ध कम्यूनिस्ट पार्टी ने कांग्रेस के अनुशासन को नहीं माना है और जो संस्था राष्ट्रीय विचार-धारा के विरुद्ध रही है उसके ऊपर अनुशासन के अनुकूल कार्यवाही करना ग़लत नहीं सिद्ध किया जा सकता। कम्यूनिस्ट पार्टी ने हिन्दू-मुसलमान के ऐक्य का प्रश्न उठाकर बहुत से जगहों पर मुसलमानों को राष्ट्रीय कांग्रेस का सदस्य न बनने के बजाय मुस्लिम लीग का सदस्य बनने का आदेश दिया है, इस प्रकार से हिन्दू-मुसलमान-एक्य के बजाय दोनों को काफ़ी अलग-अलग बनाने में सहायता की है।

* * *

अपने "लोक-युद्ध" के आवरण में कम्यूनिस्ट पार्टी बंगाल के भुखमरी में भी अपनी ईमानदारी का प्रमाण नहीं दे सकी यह बात सच है कि बंगाल में अनाज होते हुए भी नफ़ाखोरों के कारण बंगाली जनता को नहीं मिल सका पर यह कहना कि नफ़ाखोर ही इसके कारण थे यह ग़लत है। मेरा अनुभव है कि कम्यूनिस्ट पार्टी ने अँगरेज़ी हुकूमत की बुराई करने से अपने को सदैव बचाया है। नौकरशाही की त्रुटियों को भुलाने की सदैव कोशिश की है। यही नहीं यदि उन दिनों का लोक-युद्ध उठाकर देखा जावे तो उससे साफ़-साफ़ यह मालूम होगा कि कम्यूनिस्ट पार्टी कांग्रेस के नेताओं और कांग्रेस के वे लोग जो जेल से बाहर किसी भी कारण से आ गये थे उन सबको "कायर" "हारे हुए" "जिनका नैतिक पतन हो गया है" इत्यादि शब्दों का प्रयोग करके कांग्रेस के ख़िलाफ़ आन्दोलन चलाने का प्रयत्न किया है। यह कहना कि बंगाल की भुखमरी केवल महाजनों के कारण हुई ग़लत है। उस समय के असेम्बली में पूछे गये बंगाल के गवर्नर के बारे में प्रश्नों से, डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी और फ़ज़लुल-हक़ जैसे व्यक्तियों को जनता के प्रतिनिधित्व से अलग करने से ब्रिटिश सरकार की नियत पूर्णरूप से ज़ाहिर थी कि वह उस समय अपने साम्राज्यशाही शक्तियों के प्रयोग से बंगाल को अपाहिज बना दे नहीं तो फ़ज़लुलहक़ को निकाला जा सकता था; डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी को भी निकाला जा सकता था पर नवाब निज़ामुद्दीन की सरकार से यह नहीं पूछा जा सकता था कि तुम ऐसे कामों को रोकने की कोशिश क्यों नहीं करते? ब्रिटिश सरकार के निकम्मेपन के ऊपर कटु आलोचना न करके कांग्रेस के नेतृत्व की आलोचना करने की पूर्ण आयोजना की गई थी। बंगाल के किरणशंकर रॉय और श्रीमती बिजयालक्ष्मी पंडित पर जो लेख उन दिनों 'लोक-युद्ध' में निकले हैं उससे पूर्णतया यह विदित होता है कि कम्यूनिस्ट पार्टी कांग्रेस को दफ़ना कर ऊपर उठना चाहती है।

आज हमें अपने भावी आन्दोलनों की संगठित शक्ति को केन्द्रित और गतिशील बनाने के लिए आवश्यक है कि हम उन समस्त प्रतिक्रियावादी शक्तियों को कांग्रेस से अलग करें जो समय-समय पर एक सीमित दृष्टिकोण लेकर भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेते आये हैं। कम्यूनिस्ट पार्टी के पास उस पर लगाये गये आरोपों का कोई भी जवाब नहीं है।

स्वयं चलनेवाला ६ फायर का पाकेट पिस्तौल

(लाइसेन्स की कोई आवश्यकता नहीं)

इसकी बनावट और आवाज़ ठीक असली पिस्तौल जैसी है। चोर, डाकू और खूंखवार जानवरों से रक्षा करने के लिए एक ही उपाय। इस तरह के ख़तरा आने पर फ़ायर कीजिये। आवाज़ और चमक दुश्मन को डरा देती है। एक ही बार में ६ फ़ायर। मूल्य २५ कारतूस के साथ नं० (१०) का ८), नं० (२०) का ९) और नं० (३०) का १०) रुपया। ५० कारतूस के साथ स्पेसल १२) और सबसे अच्छा १४) है। हर एक आर्डर के साथ १ नक़ली कलाई घड़ी और एक लाइट मुफ़्त। डाक और पैकिंग ख़र्च १)।

विक्टोरिया वॉच कम्पनी (डी० एस०)
पोस्ट बक्स नं० १२,२१६, कलकत्ता
(एच० जी०)।

सिर्फ उत्तम दवा ही आपके फेफड़ों के लिये गुणकारी है

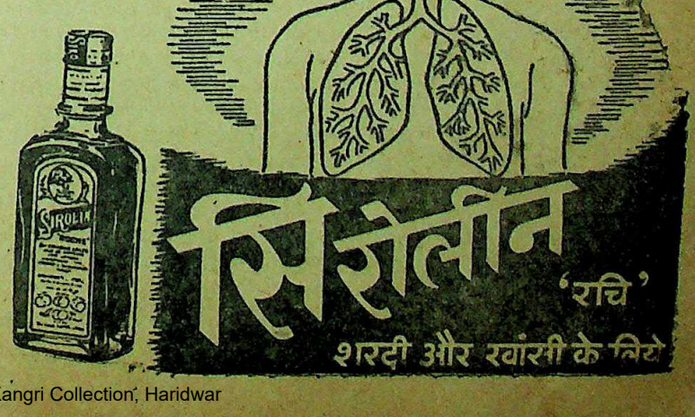

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या हम पुरुषों से शीघ्र छुटकारा पायेंगी ?

अनमेल विवाह के कुपरिणामों का क्या फल मिल रहा है?

लेखिका, कुमारी गोविन्दी पन्त

आजकल किसी भी समाचारपत्र को उठाकर देखा जाय तो लगभग प्रतिदिन कई ऐसे समाचार मिलेंगे जिसमें किसी स्त्री के किसी व्यक्ति-द्वारा भगाई जाने की, अथवा या स्त्री की आत्महत्या करने की, अथवा उसके स्वयं कहीं भाग जाने की चर्चा होती है। यूरोप तथा अमेरिका के समाचार-पत्र तो प्रायः इसी प्रकार के अथवा तलाक़ आदि के समाचारों से भरे रहते हैं। अभी उस दिन पढ़ा था कि इंगलैंड के भूतपूर्व प्रधान मंत्री मिस्टर चर्चिल की पुत्रवधू ने अपने पति को तलाक़ दे दिया है।

यदि हम इस सम्बन्ध में ध्यानपूर्वक विचार करें तो स्पष्ट हो जाता है कि इसका मूल कारण अनमेल विवाह है। इसी के फलस्वरूप स्त्री-पुरुष में विवाह होने के कुछ ही दिनों पश्चात् अनबन होने लगती है और वे एक-दूसरे से किसी न किसी रूप में छुटकारा पाने का प्रयत्न करते हैं।

अनमेल विवाह का अर्थ किसी लड़की अथवा लड़के को विवाह-बन्धन में बिना एक-दूसरे के स्वास्थ्य, उम्र, स्वभाव अथवा रहन-सहन से परिचित हुए बिना जकड़ देना है। हिन्दू-समाज में प्रायः ऐसे ही विवाह होते देखे जाते हैं। माता-पिता लड़की-लड़के को बिना उनकी इच्छा के विवाह-बंधन में बाँध देते हैं।

सभ्यता के इस युग में, जब कि लड़की और लड़के का विवाह काफ़ी अवस्था में होता है और दोनों सांसारिक अनुभवों से काफ़ी परिचित हो जाते हैं, तब इस बात की आवश्यकता का अनुभव होता है कि विवाह होने के पूर्व लड़की और लड़के एक दूसरे को एक बार अवश्य देख लें। कम से कम लड़की को यह विदित हो जाये कि जिसके हाथ में सौंपी जा रही है वह मुझे सुखपूर्वक रख भी सकेगा अथवा नहीं? आजकल पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रँगे हुए मनचले युवक पत्नी को अपनी इच्छानुसार न पाने के कारण उसे त्याग देते हैं, जिसके कारण पत्नी के लिए उस घर में रहना असम्भव हो जाता है और वह किसी न किसी रूप में वहाँ से छुटकारा पाने का प्रयत्न करने लगती है। विवाह दो संगियों के जीवन का अन्तिम और स्थायी निर्णय है। इसमें दुबारा विचार करने के लिए किसी बात का भेद-भाव नहीं रहता। यदि हम इतिहास के पन्ने पलटकर देखें तो विदित होगा कि वर-वधू को देखने की रीति और विवाह के पूर्व उनसे राय लेने की नीति प्राचीन काल से चली आ रही है। सीता, सावित्री, द्रौपदी, दमयन्ती तथा संयुक्ता आदि के अनेकों उदाहरण आज भी विद्यमान हैं।

मनचले पुरुषों-द्वारा शासित संसार में उनके द्वारा होनेवाले निर्दयता के कार्यों का वर्णन करना असम्भव है। यदि किसी पुरुष की स्त्री की मृत्यु हो गई हो तो वह बिना समझे-बूझे अपनी इच्छानुसार अपना विवाह पुनः कर लेगा। उसको इस बात का विचार कभी न रहेगा कि वह जिस लड़की के साथ विवाह करने जा रहा है वह उसके योग्य है अथवा नहीं, वह चाहे भले ही साठ वर्ष का हो। अगर उसके घरवाले उससे फिर शादी करने की राय लेंगे तो वह फ़ौरन बिना कुछ सोचे-समझे शादी करने के लिए तैयार हो जायेगा और अवश्य ही किसी बीस वर्ष की कन्या को अपने घर ले आयेगा। यही नहीं, पुरुष उस कन्या से यह आशा करेगा कि वह उसको हर प्रकार से प्रसन्न रक्खे परन्तु स्त्री को वह क्षणमात्र भी प्रसन्न करने का प्रयत्न न करेगा वरन् उसकी हर एक बातों में बाधा पहुँचायेगा। ऐसी स्थिति में यह समझने की बात है कि उन दोनों का भावी निर्वाह कैसे होगा?

अनमेल विवाह ही के कारण आज हमारे देश में विधवाओं की जनसंख्या काफ़ी बढ़ गई है। ऐसी कन्याओं को बूढ़ों के हाथ सौंपने के ही कारण उनका सोहाग-सिन्दूर ज़बर्दस्ती मिट्टी में मिलाया गया है और आज भी हमारी कितनी बहनों को अन्धकार के गर्त्त में ढकेला जा रहा है। अतः मैं अपनी प्यारी बहनों से प्रार्थना करती हूँ कि पुरुषों-द्वारा शासित संसार को यह बतला दें कि कन्यायें जानवर नहीं हैं, बल्कि वह भी मनुष्य हैं, और उनमें भी ईश्वर ने बुद्धि दी है।

अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन में भाषण देते हुए श्रीमती हंसा मेहता ने ठीक ही कहा था कि वे दिन अब दूर नहीं हैं जब कि हम पुरुषों से शीघ्र छुटकारा पायेंगी और हम स्वयं उनके ऊपर शासन करेंगी।

आपकी किस्मत में क्या लिखा है ?

अगर आप एक साल के अन्दर पेश आनेवाले अच्छे-बुरे हालतों को समय से पहले जानना चाहते हैं तो आप आज ही हमको सिर्फ पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी फूल का नाम लिखकर भेज दीजिए। बस फिर हम ज्योतिष विद्या के हिसाब से आपके आनेवाले १२ मास का नफा, नुकसान, किस तिजारत में फायदा होगा, किस जरिये रुपया मिलेगा, रोजगार कब मिलेगा, मुलाजमत में तरक्की, तबादला, तनज्जुली, औरत और औलाद का सुख, तन्दुरुस्ती, बीमारी, दूर का सफर, मुकद्दमा और इम्तिहान में सफलता, सगाई शादी, जमीन व जायदाद का सुख, किसी से नया मेल या नफा, सट्टा, लाटरी वा किसी अज्ञात कारण से धन का मिलना सारांश तारीख़ कार्ड से लेकर एक साल तक होनेवाली कुल बातों का खुलासा यानी माहवारी वर्षफल बनाकर सिर्फ एक रुपया चार आने में वी० पी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक ख़र्च अलग होगा। साथ में बदकिस्मती को खुश किस्मती में बदलने का उपाय भी लिखा जायगा ताकि आनेवाली मुश्किलों को दूर किया जाय। सिर्फ एक बार की परीक्षा आपको बतला देगी कि हम ज्योतिष विद्या के कितने जानकार हैं। ग़लत साबित होने पर कीमत वापिस।

श्री स्वामी सत्यनारायण ज्योतिष आश्रम, (D. D.) जालन्धर सिटी

विश्व-युवक-सम्मेलन में भाग लेनेवाली भारतीय युवती कुमारी किट्टी बोमला, जिनकी अवस्था अभी केवल २० वर्ष की है।

वितरक:
व्यापारी निर्यात-सम्बंधी पूछताछ के लिए लिखिए:
एच. डी. सेमूर एंड कंपनी इन्कार्पोरेटेड
१२० वाल स्ट्रीट, न्यू यार्क।

डा. वेस्ट्स टूथ ब्रुश और टूथ पेस्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

बैजू मामा

लेखिका, श्रीमती चम्पावती 'वीणा'

मनुष्य सोचता कुछ है और होता है कुछ और। भाग्य की प्रबल डोर के सहारे उसका भावी जीवन संचालित होता है। बैजू मामा की स्थिति भी कुछ ऐसी ही रही। जीवन भर उसे त्रास का शिकार बनना पड़ा और अन्त में वह अपने को बचा भी न सका। श्रीमती चम्पावती ने इस कहानी में बैजू मामा तथा उनके सम्बन्ध की घटनाओं का बड़ा स्वाभाविक और सुन्दर चित्रण किया है, जिसका हृदय पर प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता।

"बैजू मामा आ गये! बैजू मामा आ गये!" के नारे लगाते हुए, बच्चों का दल उसकी टाँगों से लिपट गया। उसे भय होने लगा कि धोती कहीं से फट न जाये? सारी रात जागकर कितनी कठिनता से सिलाई की और धोई, तब जाकर कहीं विवाह में सम्मिलित हो सका हूँ।"

बच्चों से पीछा छुड़ा, कुछ झिझकता हुआ वह अपनी दीदी के पास पहुँचा। दीदी काम में व्यस्त-सी थीं किन्तु ब्रजमोहन को देखते ही सदय-विकसित कमल की तरह उनका चेहरा खिल उठा, प्रसन्नता से आँखें चमकने लगीं, मुस्कराकर कुछ धमकाने के स्वर में कहा—'क्या अभी अभी चले आ रहे हो? मैंने कितना कहलाकर भेजा था कि काम बहुत है, सवेरे-सवेरे आ जाना, पर उधर तुम्हारे अपने ही काम नहीं समाप्त होते।'

'ओ मीरा! तुम्हारे बैजू मामा आये हैं, यह कहती हुई दीदी ब्रजमोहन का हाथ पकड़े उस कमरे में ले गई जहाँ मीरा अपनी सखियों के बीच नव-वधू के वेश में बैठी थीं। एक व्यंगपूर्ण अट्टहास से कमरा गूंज उठा, सहेलियों ने मीरा को साधारण-सा धक्का देते हुए कहा—'उठो! प्रणाम करो तुम्हारे मामा आये हैं।' मीरा ने इस व्यंग को क्रोध और उपेक्षा की दृष्टि से देखा। उसने उठकर बैजू को प्रणाम किया।

* * *

विवाह-उत्सव में उन्मत्त आनन्द का क्रीड़ास्थल बने हुए उस घर में हँसी आश्चर्य की बात नहीं। पर उसकी वेश-भूषा पर स्कूल की लड़कियों के खिलखिलाकर हँसने की ध्वनि बैजू के कानों में पड़ी तो जैसे किसी ने दुखते हुए फोड़े को बड़ी निर्दयता से नोच लिया हो। लज्जा, अपमान, ग्लानि से उसका अन्तर रो उठा।

निर्धनता, भगवान् का सबसे कठोर अभिशाप है। किन्तु हाय! इस संसार के लोग पता नहीं क्यों—गरीबों को अपनी निर्दयता से पीस डालना चाहते हैं? नहीं तो सभ्य, शिक्षित ब्रजमोहन उपहास का पात्र क्यों बना? उसके पास भी हृदय है, सोचने की क्षमता है और समझने का ज्ञान रहते हुए भी लोगों ने उसे मनुष्य नहीं समझा, क्योंकि वह निर्धन है। सांसारिक सुखों में लिपटे हुए प्राणी निर्धनों को समझना नहीं चाहते।

अभागा ब्रजमोहन जब पाँच वर्ष का ही था, तभी से वह माता-पिता के प्यार से वंचित हुआ। पड़ोसी मास्टर जी की पत्नी, अपनी सखी के अनाथ बच्चे को उठा लाई। सन्तान-हीन मास्टर जी ने अपनी सारी ममता इसी पर उँडेल दी। कितने स्नेह से पालित हुआ—आज वह दिन स्वप्न की तरह, अतीत के अंचल में छिप गये हैं। उसकी छाया यद्यपि छाया-मात्र ही है, उसकी याद हृदय में उथल-पुथल मचाने लगती है। कमला दीदी उसे कितना प्यार करती थीं। इसी घर में कभी बहुत सम्मान पा चुका था। आज पाँच वर्ष से निर्धनता, अपमान की चक्की में पिसते हुए उसके दिन बीत रहे थे।

मास्टर जी की पत्नी के देहावसान के साथ ही साथ ब्रजमोहन के भी सुखों का अवसान हुआ। संसार में जब अपने ही समय पर अपने नहीं रहते तो परायों का क्या भरोसा? इसी से मास्टर जी समय रहते सावधान हो गये, और शोडषवर्षीया को विवाह लाये। बैजू निर्वासित किया गया।

नवीन माता-द्वारा अपमानित बैजू, कमल दीदी की ससुराल में प्रायः एक वर्ष तक रहा। कमल के अतिरिक्त सभी उससे घृणा करते। दीदी की सास तो साधारण बातों के लिए भी अप्रसन्न हो उठतीं। जीजा जी भी कारण खोज-खोज क्रोध प्रगट करते। उस दिन जीजा जी के साथ दूकान पर सारे दिन काम करने पर भी वह कितना बिगड़े थे। रात को दूकान देर से बन्द हुई, तब घर के लोग सो गये थे। किससे माँगता खाने को, चुपचाप जाकर पड़ रहा। एक इन्दु ही ऐसी थी जो ब्रजमोहन की चिन्ता में जाग रही थी। वह दबे पाँव उसके कमरे में गई। ब्रजमोहन चटाई पर पड़ा न मालूम कितने आँसू चुपचाप अकेले में बहा रहा था.....धीरे...धीरे...इंदु ने उसके कंधे पर हाथ रख दिया, वह मृदु-कोमल स्पर्श कितना सुखकर था। उस स्पर्श में सब दुख दूर कर लेने की शक्ति थी.....चौंक पड़ा। कौन? 'इन्दु! तुम क्यों आई हो, कोई देख ले तो?'

'उँह! तो क्या मुझे खा जायेगा?

"नहीं! हीं!! तुम चली जाओ इन्दु"—ब्रजमोहन ने विनीत स्वर में कहा। हृदय की उठती हुई भावनाओं का न रोक पाकर इन्दु के सिर का चुम्बन ले लिया। वह अप्रस्तुत और लज्जित-सी हो उठी। व्याकुलता ने धैर्य का किनारा तोड़ डाला। मुँह पर पसीने की बूँदें बिखरकर अठखेलियाँ करने लगीं। सहसा ध्यान टूटा, जब वह कमला भाभी की परिचित ध्वनि कानों में पड़ी। आँचल के छोर से आँखें पोंछती कमरे से जब वह बाहर निकली तब घर के लोगों ने भी देखा।

कमल दीदी ने उत्सुकतावश बैजू के कमरे में प्रवेश किया। चाँद की उदास चाँदनी कमरे में छिटक रही थी। चटाई पर मठरियाँ पड़ी थीं। बैजू के सुन्दर नेत्रों में आँसुओं का एक-आध कण चमक रहा था। वह समझ गई कि आज बैजू भूखा है, स्नेह उमड़ आया। याद आई आज से बीस वर्ष पहले नन्हें से बैजू की, उसी की स्नेह-छाया

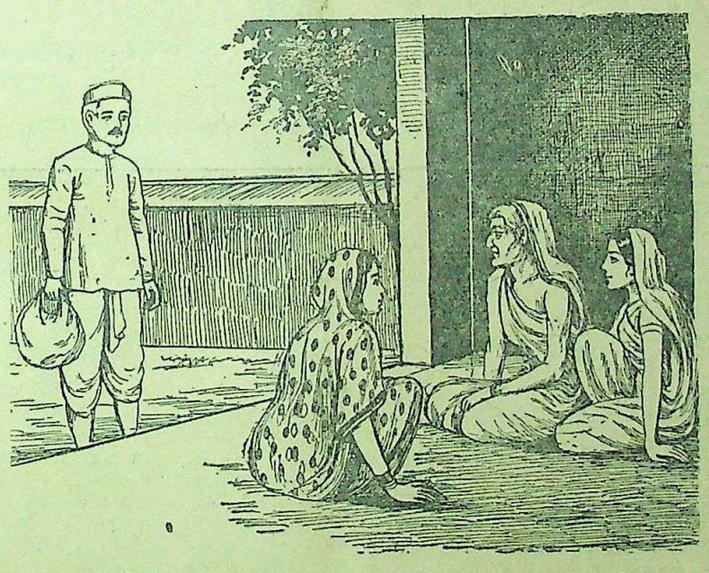

'तुम्हें दुखित न होना चाहिए, इन्दु पिछली बात अब भूल जाओ।'

इन्दु ने विनम्र हठ से पीछा नहीं छोड़ा और मोहन बाबू! तुम आज भूखे हो, यह लो...कहती हुई अपने आँचल से बहुत सी मठरियाँ निकाल कर चटाई पर रख दी.....। आँखों से सतृष्ण कृतज्ञता टपक रही थी। उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए वेदना जड़ित स्वर में कहा—'इन्दु! इस अभागे भिखारी के लिए इतनी ममता क्यों?' झर पड़े कुछ अश्रु इन्दु के हाथों पर। वह कुछ कहना चाहती थी, किन्तु कह न सकी, चुपचाप चेहरे की ओर देखने लगी। अँधेरे में उसकी आँखें चमक रही थीं। उसकी वह दृष्टि अभिभूत करने लगी। ब्रजमोहन सिहर उठा—'इन्दु! मैं दुखी हूँ, मेरे दुख में आज सहानुभूति प्रकट करनेवाला एक भी व्यक्ति नहीं है, किन्तु तुम...तुम क्यों आई हो इन्दु? यह कहते हुए भीतर धँसी हुई आँखें छलछला आईं।'

अस्फुट स्वर में इन्दु ने सिसकते हुए कहा—मोहन बाबू! तुम्हारा दुख मुझसे देखा नहीं जाता, तुम और कहीं चले जाओ। यह कहकर वह रो पड़ी। ब्रजमोहन ने मुहल्ले में ही रहना, रात-दिन खोमचे-वालों का संग, वही उसके पड़ोसी थे।

आज तक भी, पिछला अपमान भूला नहीं था तो भी दीदी के अनुरोध की उपेक्षा न कर सका क्योंकि दीदी की अपनी ही लड़की का विवाह है। दीदी के अतिरिक्त, अपना और है भी कौन?

दो दिन का भूखा बैजू पुराने इतिहास का मन्थन कर रहा था। मकान का किराया बाकी पड़ गया। टूटे-फूटे होटलवाले ने भी उधार खिलाना बन्द कर दिया। ऋण-वालों के नित्य के अपमान को सहन कर रहा था। जहाँ एक ही घर में पढ़ाने में उसे दस रुपया मिलते थे, वह लोग दो महीने से ऊपर हो गया, पहाड़ घूमने चले गये। जाते समय बैजू को वेतन के रुपये देने भूल गये। उसकी निर्धनता चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी। रह-रहकर एक व्यक्ति की याद आ रही थी। इसी तरह एक दिन का भूखा था तो आँचल में मठरियाँ लाई थी.....। पर—पर आज वह दो दिन का भूखा है। लड़कियों का व्यंग-उपहास उसके कानों में गूंज उठा, तीक्ष्ण शलाका की भाँति अन्त-स्थल में, जहाँ सबसे अधिक व्यथा थी, वहीं जाकर चुभ गया। शायद इस घर में सिवा अपमान और तिरस्कार के और कभी कुछ न मिलेगा।

खोजपूर्ण दृष्टि से वह चारों ओर देखने लगा। कमल दीदी बहुत से काम का भार सौंपते हुए वहाँ से चली गई। बरातियों को खाना खिला रहा था, तो भी ध्यान उसका एक ही स्थान पर केन्द्रित था। क्षुद्र आशा की क्षुद्र तृप्ति में पता नहीं क्या सुख है?

अचानक उसकी दृष्टि भण्डारे से निकलती हुई इन्दु पर पड़ी, दोनों ने एक-दूसरे को देखा। माथे पर पसीने की बूँदें झिलमिलाने लगीं। इधर-उधर अपने चारों ओर एक बार देखा और सबकी दृष्टि बचाकर उसी ओर चल पड़ा। अपने सम्मुख बैजू को देखकर इन्दु अपराधिनी की भाँति वहीं खड़ी हो गई। उस स्थान पर सीढ़ियों की छाया पड़कर, कुछ कुछ अन्ध-कार-सा हो गया था। वह आश्चर्य से उसके मुँह की तरफ सतृष्ण नेत्रों से देखने लगी। दोनों के चेहरों पर विषाद-नैराश्य की गहरी रेखायें छाई थीं। अन्तर में पीड़ा की लहर-सी दौड़ गई।

कुछ क्षण चुप रहने के बाद नीरवता को भंग करते हुए एक आह भरकर बैजू ने कहा—'अच्छी हो न इन्दु?'

एक फीकी-सी हँसी अधरों पर बिखर गई, छोटा-सा—'हाँ' कहकर वह चुप हो गई।

ब्रजमोहन कुछ सोचने-सा लगा। पर इन्दु के अश्रु-पूर्ण नेत्रों में किसने चित्र तैर रहे थे। हृदय का घाव भर चुका था, किसी सीमा तक, किन्तु चिह्न अभी बाकी ही था। पर इन चिह्नों को मिटा देने की सम्पूर्ण चेष्टा वह कर चुकी थी। मिट भी जाते, यदि धन के मद में मत्त, लम्पट पति के पाले न पड़ती। आज इतने दिनों बाद ब्रजमोहन को अपने सामने देखकर उसे महान् पीड़ा का अनुभव हुआ। सब घाव नवीन बनकर दुखने लग...।

डबडबाई आँखें ऊपर उठाकर उसने पूछा—'मोहन बाबू! कितने दिनों से बीमार हो?'

नहीं तो—मैं बीमार कहाँ हूँ। तुम भूल समझ रही हो।

'नहीं-नहीं—यह आँखें कभी भूल नहीं समझेंगी मोहन! तुम इतने दुर्बल क्यों हो गये?'

'तुम्हें दुखित नहीं होना चाहिए इन्दु! पिछली बात अब भूल जाओ। वह सब बातें पुरानी पड़ गई हैं, क्या लाभ?'

CC-0. In Public Domain: Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'पुरानी पड़ जाने पर भी तो भूलती नहीं मोहन ?'

'भूल जाने में ही सब का कल्याण है।'

'तुम भूल चुके हो ? तुम क्या अपना कल्याण नहीं चाहते ?'

मानो किसी ने काँटा चुभो दिया हो। व्यथित स्वर में वह बोला—'मेरा कल्याण इस जीवन में न हो सकेगा इन्दु ! इसकी आशा वृथा है। तुम्हारा बहुत बड़ा अहित होगा, यदि न भूली तो —पर तुम समझदार हो, इतनी बड़ी भूल मत करो। सभी के कल्याण की चेष्टा करो'—एक दीर्घ निःश्वास अन्तर से निकलकर इन्दु के शरीर को स्पर्श करता हुआ वायु में विलीन हो गया। इन्दु विचलित हो उठी—'मोहन ! जब मेरा अपना ही कल्याण मुझसे न हो सका तो दूसरों की चिन्ता मैं क्यों करूँ ? हो सकता है यह मेरी भूल हो, इस भूल के लिए तो अब जीवन भर रोना पड़ेगा। गला काँप गया, आँखें नीची हो गईं। व्रजमोहन के कन्धे पर सिर रखकर वह रो पड़ी—व्याकुलता से हृदय तड़प उठा। सान्त्वना-मिश्रित कोमल अँगुलियों को उसके सिर पर फेरते हुए बड़ी कठिनता से अपने को सँभाला और स्वर में कुछ दृढ़ता लाकर उसने कहा—चुप रहो इन्दु ! तुम पति की पत्नी अब एक बच्चे की मा हो, बड़े घराने की कुल-वधू हो, बहुत कुछ हो, सब कुछ होते हुए, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए मुझे क्षमा करना इन्दु ! मैं किस अशुभ मुहूर्त्त में तुम्हारे घर आया कि तुम्हारे सुख-पूर्ण पथ में काँटा बनकर रह गया। इस तरह रोते-रोते उसका स्वर डूब गया पर क्षण ही पागलों की भाँति उसके हाथ का एक चुम्बन लेकर एक ही झटके में वहाँ से चला गया। इन्दु वहीं खड़ी खड़ी अश्रु-सिक्त अपने हाथों को देखने लगी।

लोग खा रहे थे। बैजू परोस रहा था, किन्तु बीच-बीच में उसका सिर चकरा जाता और आँखों के आगे अन्धकार छा जाता। कई बार गिरते-गिरते बचा। अपने को सम्भाल लेता। तरह-तरह की मिठाइयों की भीनी सुगन्ध भूख को मिटा रही थीं। आज दो दिन का भूखा उसे किसी ने नहीं पूछा 'तुमने भी कुछ खाया है कि नहीं' इतनी भीड़-भाड़ में कौन उसकी चिन्ता करता ? भूख से व्याकुल प्राण छटपटा उठे। इन्दु भी अपनी नहीं ? पर-स्त्री है, उसकी तो चिन्ता करना भी पाप ही है। क्या संसार में मेरा कोई भी ऐसा सम्बन्ध या अधिकार नहीं है ? जहाँ क्षण भर भी अपने अधिकार की चिन्ता की जाये।

सब लोग खा-पी चुके तो, बैजू एकान्त देखकर उस कमरे के द्वार पर पहुँचा, जहाँ मिठाइयाँ पड़ी थीं। द्वार पर एक आदमी नींद में ऊँघ रहा था। घर के लोग विवाह-मण्डप में कोलाहल मचाये वहीं जुटे हैं। चारों तरफ दृष्टि दौड़ाई, दबे पाँव उस कोठरी में प्रवेश किया। एक पोटली-सी लिये बाहर निकला। पाँव के नीचे दबकर सूखे पत्तलों के पत्ते खड़खड़ा उठे। उसे भय हुआ, शायद कोई देख न ले ? उँह ! कह दूँगा कोई मोटर-ड्राइवर भूखा है, उसे ही देने जा रहा हूँ। देखेगा कौन ? लेकिन किसी ने भी बाहर निकलते नहीं देखा। निश्चित मन वह सबकी आँखें बचाकर निकला, और सीधे उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ पचासों मोटरें कतार बाँधे खड़ी थीं। विद्युत्-प्रकाश से घर का बाहरी भाग जगमगा रहा था। बड़ी सावधानी से अपने को मोटरों की आड़ में छिपाता हुआ, उस आनंदपुरी से निकला किन्तु परिचित कण्ठ-ध्वनि कानों में पड़ी बैजू मामा ! बैजू मामा !! झुँझलाहट-सी हुई। जल्दी-जल्दी पोटली को एक मोटर की पिछली सीट पर रख दिया। पेड़ की सघन छाया उस मोटर पर पड़ रही थी। ड्राइवर अपनी सीट पर पड़ा सो रहा था।

"हाय ! इतनी...बाधा..... कुएँ के पास पहुँच कर भी प्यासे लौटना पड़ेगा ?"

कमला दीदी ने अपने कमरे में बुलाया। बिजली के उज्ज्वल प्रकाश में देखा। इन्दु अपने दो वर्ष के बच्चे को थपकियाँ देकर सुला रही है। एक उड़ती-सी दृष्टि डाली। दीदी से पूछा—'दीदी ! क्यों बुलाया है ?' अपने आँचल से नोट खोलकर उन्हें पकड़ाती हुई बोली—हाँ बुलाया था, इसलिए कि कल दोपहर को मीरा की बिदाई है। तुम माली को कहकर ताजे फूलों की मालायें बनवा लाना। मोटर पर झालर फूलों की पड़ेगी। दस-ग्यारह बजे तक तुम पहुँच जाना।

बैजू दस-दस के तीन नोट लेकर जब चला तो भूख की तीव्रता से पाँव लड़खड़ा रहे थे। पोटली लिये निर्जन पथ....से चला जा रहा था। पहरेवालों ने भी मार्ग चलते कई बार बाधा दी...कुत्तों के भौंकने का शब्द कानों में पड़ रहा था। बड़ी कठिनता से उस समय मार्ग समाप्त हुआ, जब काली रजनी अपनी तथा जगत् की नश्वरता पर नेत्रों से ओस के कण बिखेरती अपना आँचल समेट विश्व से रोते-रोते बिदा माँग रही थी।

ब्राह्ममुहूर्त्त, मन्द-मन्द समीर बह रहा था। मिठाई की पोटली खोलकर एक टूटे-फूटे काठ के बक्स पर कागज बिछा रख दिया। हाथ-मुंह धो रात की थकान मिटाने के लिए, चटाई बिछाकर लेट गया।

मन ही मन जाने किन-किन विचारों में तल्लीन, हृदय में प्रसन्नता की एक लहर-सी दौड़ गई। दीर्घ चार वर्ष बाद आज उसे देखा है पर...पर अभी तक भी इन्दु मुझे भूली नहीं। पता नहीं इस भिखारी को क्यों याद रखती है, वह तो राजरानी है, ऐश्वर्य पाँवों पर लोटता है, पति-पुत्र, नौकर-चाकर सभी सुख के साधन उसके पास हैं फिर भी वह दुखित है, रोती है... नहीं ! नहीं !! सब अभिनय है। मेरे पास यदि इतना ऐश्वर्य होता तो मुझे काहे का दुख था ? ठीक है, नारी मायाविनी होती है तभी इतना रो रही थी, ठण्डी-ठण्डी हवा के झोंके उसके विचारों की पुष्टि करने लगे। कुछ झपकी-सी लग गई।

संसारवालों के लिए सुबह हो गई थी, किन्तु बैजू के भाग्याकाश में निविड़ अन्धकार की काली छाया घनीभूत होकर फैल चुकी थी।

मास्टर ! ओ मास्टर !! की कर्कश ध्वनि से नींद उचट गई। देखा सूर्यदेव ठीक मुंह पर आ गये हैं। आँखें मलते हुए बाहर निकलते ही यमदूत की तरह द्वार पर खड़े मकान-मालिक पर दृष्टि पड़ी। वज्र की तरह कठोर कर्कश शब्दों में गालियाँ बकता हुआ कमरे में घुस आया, बक्स पर पड़ी मिठाई पर दृष्टि पड़ते ही क्रोध की प्रचण्ड ज्वाला फूट निकली—इतनी-इतनी मिठाइयों से नाश्ता करते हो...हूँ ! और महीने बाद दो रुपल्ली भी इन हरामजादों के पास से नहीं निकलती ....बड़ी ही निर्दयता से कपड़े-लत्ते उठा-उठाकर बाहर फेंकने लगा।

हे भगवन् ! इस अभागे प्राणी को लेकर तुम निष्ठुर खेल, खेल रहे हो, व्रजमोहन शून्य-दृष्टि से आकाश की तरफ़ देखने लगा....अब तुम्हीं बताओ प्रभु इस..खेल का शेष कब होगा.....।

उन्मुक्त नीलाकाश, इस इतने बड़े विशाल विश्व के किसी कोने में उसे कहीं भी स्थान नहीं ? हाय ! अब शेष आश्रय कहाँ मिलेगा ? आँखों में अन्धकार छा गया, पृथ्वी घूमती हुई दृष्टिगोचर हुई। सिर पकड़ वहीं बैठ गया।

* * *

बनिया गालियाँ बकता हुआ, बाहर निकला, एक कठोर दृष्टि फेंक कनखियों से देखा, अचानक दृष्टि कमीज़ की जेब में पड़े हुए नोटों पर गई, एक ही झपट में नोट निकाल लिये...व्रजमोहन कुछ क्षण किंकर्तव्य-विमूढ़ वहीं बैठा रहा.. सहसा ध्यान टूटा...क्रोधावेश में तीर की तरह निकला, तीव्र गति से चल पड़ा... उसके पीछे..पीछे। आँखें धँसी हुईं.... बिखरे-बिखरे बाल शायद महीनों से सिर में तेल नहीं पड़ा, अस्त-व्यस्त-विक्षिप्त-सा सड़क पर के लोगों ने उसे पागल समझा।

थोड़ी ही दूर पहुँचा होगा कि जोर के झटके से पिशाच की तरह उसने बनिये का गला पकड़...लिया...सम्पूर्ण शक्ति से...दबाने...लगा।

* * *

पर क्षण ही धूल उड़ाती हुई, एक मोटर निकल..गई...उस धूल के गुबार में से लोगों के कानों में एक व्यथा-भरी... चीख सुनाई...पड़ी। लोग दौड़ पड़े, भीड़ में सम्मिलित होने के लिए।

'क्या है ? भाई !' अरे कुछ नहीं !! एक पगला मर गया मोटर के नीचे दबकर। एक घायल भी हो गया है।

एक बुढ़िया ने आँखें विस्फारित करते हुए कहा...'अरे ! वह पागल उसका गला दबा रहा था। अच्छा हुआ मर गया।

वैद्य या डाक्टर बनिये
घर बैठे मामूली पढ़े लिखे भी गवर्नमेंट रजिस्टर्ड कालेज से कम समय और थोड़े खर्च में वैद्य या डाक्टरी उपाधि (डिप्लोमा) प्राप्त कर सकते हो नियमावली मुफ्त मगाइये !
Premier Int. Agency
पता: भारत कं० रजि० शिकोहाबाद यू० पी०

दर्जी-विज्ञान

यह पुस्तक सरल हिन्दी में शिल्प-कला के सुप्रसिद्ध एवं विद्वान् प्रोफेसर द्वारा प्रकाशित हुई है। सिलाई-कटाई सीखने के लिए, यह सचित्र और वैज्ञानिक ढंग की नई पुस्तक है। इसके ३ भाग हैं। तीनों भागों का लागत मूल्य सिर्फ़ ४॥) है।

पता—हिन्दू टेलरिंग कालेज पीलीभीत

हमाम

हमाम की गाढ़ा और सुगंधित झाग ने उसे सारे भारत में एक सुप्रसिद्ध साबुन सिद्ध कर दिया है। हम इसकी बढ़ती हुई माँग को पूरा करते जा रहे हैं।

हर जगह इसका स्टाक उपस्थित है अपने दुकानदार से हमाम माँगिये।

HAMĀM
A TATA PRODUCT

जवाहर स्क्वायर इलाहाबाद
दो टाटा आयल मिल्स कं० लि०.

स्टैनिष्ट्रीट की अचूक दवायें

खाँसी

हर तरह की तकलीफों को दूर करने के लिये ही कैगमैग खास तौर पर बनाई गई है। नष्ट स्फूर्ति पुनः प्राप्त कराती और रात को दौरा होने पर भी नींद लाती है। कैगमैग खाँसी की अचूक दवा है और गले व फेफड़ों की तमाम खराबियों को जल्द आराम करती है।

सर्दी

स्टैनिष्ट्रीट का बनाया हुआ 'सिरप आफ हाइपोफौस-फाइट आफ लाइम' फेफड़े के तन्तुओं को सुदृढ़ बनाता है और बड़े अच्छे टानिक का काम करता है। बड़े धीमे और आहिस्ता से यह अपना असर डालता है। स्वादिष्ट है, मधुर है और फौरन आराम पहुँचाता है।

इन्फ्लुएञ्जा

एन्जौएड्स टिकियाँ एक भूतपूर्व जनस्वास्थ्य परिचालक के नुस्खे के अनुसार सावधानी से बनी हैं। इन पर चीनी चढ़ी होती हैं; एन्जौएड्स टिकियाँ इन्फ्लुएञ्जा की महामारी में लाभदायक प्रतिषेधक साबित हुई हैं। साधारण सर्दी से भी ये रक्षा करती हैं।

कैगमैग • स्टैनिष्ट्रीट सिरप • एन्जौएड्स

स्मेथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं० लि: कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर

SSK 110

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुप्रसिद्ध निर्माता और निर्देशक श्री विजय भट्ट

फिल्मी-जीवन, साहित्य और कला पर सुन्दर इंटरव्यू

लेखक, श्री उमेश जोशी

[१]

फिल्म-संसार के विख्यात निर्माता श्रीयुत विजय भट्ट से मिलने के लिए मैं "प्रकाश पिक्चर्स" गया। शनिवार का दिन था, संध्या के चार बजे थे। "विक्टोरिया-टर्मिनस" स्टेशन से "अँधेरी" के लिए टिकट कटाया। आध घण्टे में मैं "अँधेरी" पहुँच गया। यहाँ से कुर्ला रोड के लिए "बस" जाती है। कुर्ला रोड पर ही "प्रकाश-पिक्चर्स" स्थित है। केवल पाँच मिनट में मैं "प्रकाश-पिक्चर्स" की गेट पर पहुँचा। गेट पर एक ईरानी 'गेटमैन' खड़ा था। मैंने उससे कहा—"क्या डायरेक्टर विजय भट्ट अन्दर हैं या नहीं?" वह चुपचाप खड़ा हुआ मेरा मुँह ताकने लगा। मैंने पुनः अपना प्रश्न दुहराया। इसी बीच में एक दूसरा 'गेटमैन' आ गया। उसने आते ही कहा—"बाबू जी यह नया आया है, अभी इसने यहाँ की बोली नहीं सीखी है।" मैंने उसी से दरियाफ्त किया, उसने बतलाया कि श्रीयुत विजय भट्ट अपने आफिस में बैठे हैं, लेकिन कहीं जानेवाले हैं। मैंने जल्दी से अपना—"विजिटिंग-कार्ड" उसे दिया। मैं तब तक "विजटर्स-रूम" में बैठा रहा। उसी बीच में 'विजिटर्स-रूम' में से दो सुन्दर युवतियाँ मेरे बगल में आकर बैठ गईं। मैं कुछ सकपकाया। मैंने पीछे खसकने का प्रयत्न किया कि एक युवती ने हँसते हुए कहा—"क्या आपको मेरे यहाँ बैठने से कष्ट हो रहा है। यदि आपको तकलीफ होती हो तो मैं....।" बात काटकर मैंने कहा—"जी नहीं कष्ट कैसा? आप क्यों उठेंगी मैं ही उठा जाता हूँ।" दूसरी युवती जो अब तक चुप थी बोल उठी—"आप क्यों उठेंगे?" मैं प्रश्न का जवाब भी न देने पाया था कि गेटमैन मेरे पास आकर बोला—"बाबू जी चलिये, बिजूभाई आपको बुला रहे हैं। उन्होंने अपना बाहर का जाना स्थगित कर दिया है।" मैं उठ खड़ा हुआ। दोनों युवतियाँ हँस पड़ीं। जिसने प्रश्न किया था उसने आँखें नचाते हुए कहा—"अब मैं समझी, आप बिजू भाई से मिलने आये हैं, लेकिन वे तो किसी से मिलते नहीं, सिवाय हफ्ते में एक दिन। आप उनके खास आदमी मालूम पड़ते हैं।"

दिग्दर्शक श्री विजय भट्ट श्री बिजू भाई के नाम से ही स्टूडियो में प्रसिद्ध हैं। बिजू भाई आचार-विचार के पक्के सिद्धान्तवादी हैं। उनकी दुनिया में विलासपूर्ण रंगीनी लेश-मात्र भी नहीं फटकने पाती। पहिले तो उनको इतनी फुरसत ही नहीं है कि वह रंगीन दुनियाकी ओर दृष्टि उठाकर देख सकें। वह उन निर्देशकों और निर्माताओं की तरह अभिनेत्रियों को अपने बगल की शोभा नहीं बनाते, बल्कि उनको चित्र तक ही सीमित रखते हैं। वह विद्यार्थी की तरह सुबह-शाम पुस्तकों से ही उलझे रहते हैं। फिर उनके पास किसी भी अभिनेत्री को जाने का साहस नहीं होता—क्योंकि वह उनके स्वभाव को जानती हैं। यह श्रीयुत विजय भट्ट की प्रबल व्यक्तित्व की विशेषता है।

दूसरा गुण आपमें यह है कि आप कला के पुजारी हैं। आपका कहना है—"कला की पृष्ठ-भूमि पर जिन्दगी का सरसब्ज पोदा लगाना—मानव का सम्पूर्ण जीवन ही कलामय है—इसलिए हमें विकास की दुनिया में बढ़ने के लिए सबसे पहले कला को उपासना करनी होगी—बिना कला की उपासना के हम जीवन का सफल चित्र नहीं खींच सकते।"

तीसरी विशेषता—आप में है कि स्वार्थ के दलदल में अपने व्यक्तित्व को कभी नहीं फँसने देते। उससे बचाकर निकाल ले जाना ही आपका आदर्श है। वैसे आपका कहना है कि—"हर व्यक्ति के सामने कुछ न कुछ स्वार्थ है। किन्तु दुनिया में आकर कौन ऐसा प्राणी है, जो स्वार्थ की छाया में न पनपा हो? लेकिन पनपना गुनाह नहीं है, बल्कि मनोवृत्तियों पर स्वार्थ का पर्दा चढ़ाना गुनाह है।" श्री बिजू भाई भी प्रलोभन की दुनिया में रहते हुए भी सदा उससे अलग रहे, यह आपकी अनूठी विशेषता है।

चौथी विशेषता है आपका व्यक्तित्व। आपके व्यक्तित्व के इने-गिने ही सिनेमा-निर्माता हैं। शरीर गठा हुआ, रंग मामूली गोरा, कद जितना होना चाहिये उतना ही। आपसे जो भी मिलता है उस पर आपके व्यक्तित्व का प्रभाव अवश्य पड़ता है। मिलनेवाले का व्यक्तित्व, आपकी सुन्दर व्यक्तित्व के आगे प्रच्छन्न हो जाता है। चेहरे पर मुस्कराहट और संजीदगी।

पाँचवी विशेषता यह है—कि बात करने का ढंग आपका अपना निजी है। कोई भी प्रश्न आप इनसे पूछिये, उसका निहायत ही खूबी के साथ जवाब देंगे। ऐसा जवाब जो कि आपके दिल में घर कर ले। जब वह यह समझ जायेंगे कि आप उनके उत्तर से पूर्ण सन्तुष्ट हो गये, तभी वह आगे बढ़ेंगे। नहीं तो उसी प्रश्न पर बोलते रहेंगे, नाना प्रकार के उदाहरण देकर! विषय का स्पष्टीकरण आप खूब अच्छी तरह करते हैं। ऐसा नहीं कि आप मुख्य विषय को बातों की लपेट में उड़ा दें। इस बात का अनुभव मुझे अधिक है।

छठी विशेषता आपकी यह है कि—आप पात्रोंका चुनाव बड़ी कुशलता से कथानक के अनुरूप ही करते हैं। ऐसा मालूम होता है कि यह पात्र वास्तव में वही है जिसका कि वह अभिनय कर रहा है। पात्रों के चुनाव में वह छोटी से छोटी बात का भी ख्याल रखते हैं। "सम्राट—विक्रमादित्य" के लिए उनके सामने कई नाम थे। उन्होंने अपनी "सिने केबिनेट" बुलाई। सिर्फ मुख्य पात्र का चुनाव करने के लिए। लेकिन जिस पात्र का 'सिने केबिनेट' ने नाम दिया वह आपको पसन्द नहीं आया। आप पृथ्वीराज कपूर को 'विक्रमादित्य' बनाना चाहते थे। क्यों बनाना चाहते थे? उसके समझाने के लिए आपने एक लम्बा वक्तव्य दिया। सबों ने उसे स्वीकार किया। वह कोई बात दबाव से स्वीकार नहीं कराते, अपितु सरल युक्तियों से और जब सब उनके सहयोगी स्वीकार कर लेते हैं तभी वे आगे क़दम बढ़ाते हैं।

सातवीं विशेषता—आपमें यह है कि अपने सहकार्य-कर्त्ताओं के किसी के कार्य में हस्तक्षेप नहीं करते—यदि वे किसी के कार्य को देखने जाते हैं, तो दर्शक की हैसियत से, न कि एक अफ़सर की तरह। अपने नीचे काम करनेवालों को वह बढ़ाना खूब अच्छी तरह जानते हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण श्री के० जे० पारमार हैं, जो कि 'प्रकाश फिल्म-कम्पनी' के सुप्रसिद्ध डायरेक्टर हैं। मिस्टर के० जे० पारमार को ख्याति की दुनिया में बिठला देना यह श्री विजय भट्ट के ही वश की बात है। मिस्टर पारमार भी आपको अपना "गुरु" मानते हैं, वह आपके व्यक्तित्व से विशेष प्रभावित हैं। मिस्टर के० जे० पारमार को श्री बिजू भाई ने मुझसे कहा था—"यदि आप मेरे जिन्दगी के उत्थान के पृष्ठों को पलटेंगे, तो आप निश्चय उसमें बिजू भाई की सुन्दर तसवीर ही पायेंगे, क्योंकि मेरी तरक्की की बुनियाद बिजूभाई की सहानुभूति के धरातल पर रक्खी हुई है। आज से सात-आठ साल पहिले मैं भाग्य का निर्णय करने के लिए सिनेमा की दुनिया में इधर-उधर भटक रहा था। किसी ने भी मेरे अन्धकार-पूर्ण जीवन में आशा का दीपक नहीं दिखाया। नौकरी देना तो दूर की बात थी। मैं उसी निराशा के अन्धकार में टटोलते-टटोलते "प्रकाश-पिक्चर्स" के दरवाजे पर आया, और यहाँ पर मेरी भेंट बिजूभाई से हो गई। उन्होंने मुझे पहिली भेंट में ही अपना बना लिया। मुझे प्रोत्साहन दिया, और आज मैं जो कुछ भी हूँ, आपके सामने वह बिजूभाई के ही प्रबल प्रयत्नों का ही फल है। मुझ जैसी मामूली हस्ती को डायरेक्टर बना देना यह बिजूभाई का ही काम है। किसी दूसरे का नहीं हो सकता। मैं यह शब्द कोई बिजूभाई को प्रसन्न करने के लिए नहीं कह रहा हूँ वरन् यह मेरी आत्मा की पुकार है।"

इसी सिलसिले में मिस्टर परमार के सम्बन्ध में दो शब्द कह देना भी अनुचित न होगा। आप प्रकाश-पिक्चर्स के अच्छे डायरेक्टरों में से एक हैं। आपने श्री बिजू-भाई की देख-रेख में "पनघट," "चूड़ियाँ," "कविता" और आजकल "नई माँ" फिल्म बना रहे हैं। आप अपने परिश्रमशीलता के कारण ही श्री बिजूभाई के कृपापात्र बन गये हैं। कृपापात्र ही नहीं, बल्कि उनके दाहिने हाथ भी।

आठवीं विशेषता यह है कि—आप राष्ट्र-वादी हैं। राष्ट्र के लिए आप सब कुछ अपना उत्सर्ग करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। आपने राष्ट्र को ऐसे अनुपम चित्र प्रदान किये कि जिनको देखकर दर्शक सचरित्रता की ओर बढ़ता है, आपके चित्रों के नाम ये हैं "नरसीभगत", "भरत-मिलाप", "राम राज्य", "विक्रमादित्य" और आजकल "गौतम-बुद्ध" बनाने की फिक्र में हैं। आपके अन्दर राष्ट्रीयता कूट-कूटकर भरी है आपका कहना है—"चूंकि हम गुलाम हैं, इसलिए हम पूर्ण राष्ट्रीय चित्र नहीं बना सकते, जिस दिन हमको गुलामी से निजात मिलेगी, उसी दिन राष्ट्रीय-फिल्मों की बाढ़-सी आ जायगी। आजकल तो हम बेबस हैं, जब तक कि हमारी बेबसी का समय समाप्त न होगा, तब तक हम चित्रों में जितनी भी हमसे होती है, उतनी राष्ट्रीयता प्रगट करते हैं, क्योंकि राष्ट्रीयता ही हमारे जीवन का सच्चा चित्र है, सच्ची रोशनी है और इसी रोशनी में हमें आगे बढ़ना है।"

हाँ, तो मैं श्रीयुत विजय भट्ट के "व्यक्तिगत आफिस" में गया। उस वक्त छः बज गये थे। मेरे पहुँचते ही बिजूभाई ने मुझसे हाथ मिलाया। मैंने देखा कि उनके आफिस में गान्धी जी की मूर्ति चाँदी की बनी हुई एक छोटी-सी टेबिल पर रक्खी हुई है। मूर्ति के गले में फूलों की माला पड़ी है। उस मूर्ति के चारों तरफ "धूप" की बत्तियाँ जल रही थीं, जिनसे खुशबू निकलकर कमरे में फैल रही थी। विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर का एक बड़ा चित्र दीवार पर टँगा था—"गौतम-बुद्ध" "सरस्वती" के मनोहर चित्र भी उनके आफिस में शोभायमान हो रहे थे। इन चित्रों के अलावा और किसी किस्म के चित्र उनके आफिस में नहीं थे। वास्तव में उनका दफ्तर कला का प्रतिरूप है। मैं बम्बई में उनसे लगभग रोज ही मिलता रहा। मेरे ऊपर उनकी कृपा रही और आज भी है। यहाँ सीधे-सादे शब्दों में जो कुछ मुझसे और उनसे विचार-विमर्श हुआ वह संक्षेपरूप में इस प्रकार है—

प्रकाश पिक्चर्स के सुप्रसिद्ध निर्माता और डाइरेक्टर श्री विजयभट्ट और (बाईं ओर) इंटरव्यू लेते हुए श्री उमेश जोशी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न—आज फिल्म समालोचक की आवाज को फिल्म-निर्माता क्यों नहीं सुनते? क्यों नहीं उनके अनुकूल चित्र बनाते?

उत्तर—फिल्म-निर्माता, फिल्म-समालोचक की आवाज नहीं सुनता—यह कहना आपका गलत है—बल्कि बात दरअसल यह है कि फिल्म-समालोचक आज खुद मुगालते में है। वह खुद गलत-फहमी में है। फिर वह क्या फिल्म की समालोचना करेंगे? हमारे सामने एक ही फिल्म पर अनेक प्रकार की समालोचना आती है। उन समालोचनाओं को देखकर यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि फिल्म अच्छी है या बुरी? समालोचना स्पष्ट नहीं लिखी जाती—कभी वह एक ही चीज को बुरा भी कहते हैं और फिर उसी चीज को अच्छा भी कहने लगते हैं। उनकी इस बेतुकी नीति से तो हम परेशान हो गये हैं। हमारे सामने कोई जनता की सम्मति का स्पष्ट चित्र नहीं आता। जनता की सम्मति की उलझी हुई तसवीर ही हमेशा आज के समालोचक पेश करते हैं, जिनका क्रियात्मक मूल्य शून्य के बराबर होता है। आज हमें ऐसे ही समालोचकों की जरूरत है, जिनमें आत्म-निर्भरता हो अथवा आत्म-संयम हो। प्रतिभाशाली व्यक्ति ही श्रेष्ठ समालोचक बन सकते हैं। किन्तु जब तक हलके व्यक्तित्ववाले समालोचकों का "बायकाट" न होगा, तब तक जिम्मेदार प्रतिभाशाली व्यक्ति क्यों सर दर्द अपने सिर मोल लेंगे? गुजराती और मराठी के समालोचक तो फिर भी अच्छे हैं किन्तु इन हिन्दी के समालोचकों ने तो विचित्र स्थिति पैदा कर दी है। जब आलोचकों का व्यक्तित्व ही प्रलोभन की भूमि पर टिका हुआ है फिर उनसे चित्र की वास्तविक और सही समालोचना की क्या उम्मीद की जाये? मुझे हिन्दी के समालोचक कड़वे शब्दों के लिए माफ करें। मैं तो इनसे ज्यादा कड़वे शब्द उनके प्रतिकहता यदिमुझे इसवक्त याद पड़ते—मैं तो उसको जानी दुश्मन समझता हूँ जो कला की हत्या करता है।

प्रश्न—क्या महिलायें सिनेमा की दुनिया में आ सकती हैं या नहीं। आपका क्या ख्याल है?

उत्तर—जरूर आ सकती हैं, जब कि वे कालेज में लड़कों के साथ पढ़ सकती हैं, तब फिर उन्हें सिनेमा-संसार में आने में क्या आपत्ति हो सकती है? सिनेमा तो कला का क्रियात्मक क्षेत्र है। आज की यह धारणा कि सिनेमा व्यभिचार का अड्डा है, बिलकुल गलत है। यदि थोड़ी देर के लिए मान भी लिया जाय तो फिर आप दूर क्यों भागते हैं? क्यों नहीं उसमें अन्दर घुसकर सुधार करते? घर जल रहा है आपका—और आप यह महसूस भी कर रहे हैं, फिर भी आप घर छोड़कर भागने की फिराक में हैं। क्या यही आपका कर्तव्य है? जिस घर में आपने अपने जिन्दगी के कितने बसन्त, कितने पतझड़ बिताये, उसी घर को बता बताना कहाँ की अकलमन्दी है? सिर्फ दूसरों के कह देने पर कि 'तुम्हारे घरके पिछवाड़े आग लग गई है'—विश्वास कर लिया। क्या आपका यह कर्तव्य नहीं कि आप आग लगे हुए हिस्से को देखें? यदि वास्तव में आप आग लगी हुई पावें तो उसको बुझाने की कोशिश करनी चाहिये। आदमियों को बुलाना चाहिये आग बुझाने के लिए। तभी काम चलेगा न कि रहे-सहे आदमियों को भी भगाने की कोशिश करना। ऐसा ख्याल जो करते हैं वह मूर्खों की दुनिया में रहते हैं। इसी सिनेमा के जरिये जब कि अन्य राष्ट्र उत्थान की ओर दिन-प्रतिदिन अग्रसर होते चले जा रहे हैं और उसी को हम "व्यभिचार का अड्डा" बतलाकर उपेक्षा कर रहे हैं, मैं तो यह कहता हूँ कि अच्छे घरानों की लड़कियाँ बेखटके सिनेमा की दुनियाँ में आयें, अपने व्यक्तित्व का परिचय दें, और दिखा दें कि नारी-पुरुष मिलकर "कला-मंदिर" की शोभा में चार चाँद लगा देते हैं। हाँ, जो डरपोक हैं, उन्हें तो भूलकर भी इस क्षेत्र में कदम नहीं रखना चाहिये, क्योंकि प्रायः डरपोक व्यक्ति ही अपने सिद्धान्त की हत्या कर बैठते हैं।

(लेखक-द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

आजाद हिन्द-फौज के तीन सेनानी

(पेज ६ का शेष)

जी के पास लेते जाइये और नेता जी से मेरा जय हिन्द कहिएगा। और नेता जी तक मेरे यह दो शब्द भी कहना—मैं अपनी मातृभूमि के लिए सड़-सड़कर मर रहा हूँ परन्तु खुशी से मर रहा हूँ क्योंकि यह सारी तकलीफ़ वतन के लिए है।"

"हम सबने मिलकर एक ही मैदान जंग में अपना खून बहाया है। हमारी अब एक ही आरजू है और वह है कि उन शहीदों के नाम पर जो भारतमाता के लिए शहीद हो गये हैं जिनमें हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई सभी जाति के नौजवान शरीक हुए थे और वतन पर कुर्बान हो गये। हम आज फिर प्रतिज्ञा करें सब लोग मिलकर एक साथ अपने देश को जल्दी से जल्दी आजाद करें।"

कैप्टेन सहगल ने अपने भाषण में कहा—"आज का दिन वास्तव में हमारे लिए बहुत गौरव का है; क्योंकि पूर्वी एशिया में हमने जो काम किया उसकी आप लोगों ने क़द्र की है। सिंगापुर और मलाया में जब अँगरेजी फ़ौज हमें अपने भाग्य पर छोड़ चली आई तब हमें अपने लिए एक बहुत महत्त्वपूर्ण प्रश्न का फैसला करना पड़ा। हमने इतिहास पर दृष्टि डाली और उससे हमने यह सबक़ सीखा कि जब संसार की दूसरी क़ौमों ने भी अपने देशों से बाहर आजादी की लड़ाइयाँ लड़ी हैं तब हम क्यों नहीं अपनी मातृभूमि को आजाद कराने के लिए आन्दोलन आरम्भ करें। हमने फैसला किया कि हिन्दुस्तान से बाहर अहिंसा से हम आजादी प्राप्त करने में सफल नहीं हो सकते। हमें अपने तथा पूर्वी एशिया में रहनेवाले लाखों भारतीय भाई-बहनों के जान-माल की रक्षा के प्रश्न पर भी विचार करना था। हमें यह मालूम था कि हमारी शक्ति अँगरेजी फ़ौजों के मुक़ाबले में बहुत कम थी परन्तु हमारा विश्वास था हममें एक ऐसी नैतिक शक्ति है जिससे हम बड़ी शक्ति का मुक़ाबला कर सकते हैं। अतः इस फैसले को अमल में लाते हुए हमने एक आजाद फ़ौज बनाई। यह फ़ौज विशुद्ध रूप से एक स्वयंसेवक थी। या यह कहना चाहिए कि यह एक फ़कीरी की फ़ौज थी। जो लोग इस फ़ौज में भर्ती होते थे उनसे हम साफ़-साफ़ शब्दों में कहते थे कि आपको भूखों रहकर मैदान में जंग करना होगा।"

"पूर्वी एशिया में रहनेवाले भारतीयों ने तन-मन-धन से नेता जी की सहायता की थी। हजारों स्वयंसेवक प्रतिदिन भर्ती होने जाते थे यद्यपि हमारे पास उनकी ट्रेनिंग की कोई व्यवस्था नहीं थी। प्रवासी भारतीयों ने करोड़ों रुपया आजाद हिन्द फ़ौज के लिए नेता जी को भेंट किया। उन लोगों की गाढ़ी कमाई से खड़ी की गई आजाद हिन्द-फ़ौज भूखी और प्यासी रहकर भी अन्त समय तक लड़ती रही।"

लेफ्टिनेण्ट ढिल्लन साहब ने अपने जीवन की कुछ बातों पर प्रकाश डालते हुए कहा—"वास्तव में हम इस सम्मान के अधिकारी नहीं हैं। इस सम्मान के अधिकारी तो वे लोग हैं जो आज बर्मा की पहाड़ियों और मलाया के जंगलों में निष्प्राण सोये हुए हैं। या जो आज भी जेलों के सींखचों में बन्द हैं। हमें उन लोगों की रूहों का ख्याल करना चाहिए जिन्होंने आजाद हिन्द फ़ौज में लड़कर अपनी जानें दी हैं।"

इन तीन बहादुर देशभक्तों की आवाज ने मुर्दों में भी जान फूंक दी। उनकी जय से आकाश गूंज उठा। मुसलमानों ने भी इनकी देशभक्ति की सराहना की। अन्त में श्री ढिल्लन ने एक फ़ौजी गाना सुनाया और कहा कि यह गाना मैं वहाँ फ़ौज में गाया करता था। गीत इस प्रकार है।

उठो, सोये भारत के नसीबों को जगा दो,
आजादी यों लेते हैं जवानों लेकर दिखा दो।
खूंख्वार बनो मेरे शेर हिन्दी सिपाही,
दुश्मन की सफें तोड़ दो, इकतहलका मचा दो।
ऐ हिन्द के बदले में दुश्मन चीज भी क्या है,
रास्ते में हो तो भाई, उसे मार गिरा दो।
कर याद शहीदों का खूं देश की खातिर,
हो एक टोली भी हजारों दुश्मन से लड़ा दो।
हो भूख तकलीफ़, रुकावट हों थकावट,
खा जख्मे गिरा हमको भी हँस के दिखा दो।
क्यों लाल क़िला रहे, दुश्मन के हवाले,
लश्करे हिन्दी की वहाँ धूम मचा दो।
मीनारेक़ुतुब देखता है, राह तुम्हारी,
चल उसकी बलथी को तिरंगे से सजा दो।
कुछ और तमन्ना है न ख्वाहिश मेरे दिल में,
आजाद हिन्द वतन में जय हिन्द बुला दो।

नई दिल्ली ९ जनवरी १९४६

बटन ! बटन !! बटन !!!

कोटों और कमीजों के अच्छे बटनों की एजेंसी के लिए लिखें।

हंसराज इन्डस्ट्रीज़ लिमिटेड,
अमृतसर।

इतनी जल्दी थक गये ???

थकन तथा हतोत्साह का अन्त कर आनन्दमय
एवम्
उत्साहपूर्ण जीवन प्राप्त करने के लिए

वीरोजेन
VIROGEN
शारीरिक तन्द्रा को दूर कर
स्वास्थ्य तथा स्फूर्ति
को बढ़ाता
है

वी रो जे न वी रो जे

VIROGEN

शारीरिक तथा भीतरी कमजोरी अथवा इस प्रकार की अन्य बीमारियों के लिए बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुआ है।

यदि आपको बाजार में न मिले तो लिखें:—

बेंगाल इम्युनिटि कम्पनी, लि०, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

बीकानेर राज्य-साहित्य-सम्मेलन का बाँधवां अधिवेशन सादुलपुर में सभापतित्व पूर्वक रतनगढ़ के श्री माधवप्रसाद एम० ए० के सभापतित्व में सम्पन्न हुआ। दोपहर के बाद सभापति के निवास-स्थान से पंडाल तक जो स्टेट हाईस्कूल में बनाया गया था, सभापति जी का जुलूस निकाला गया। जुलूस के पंडाल पहुँचने पर प्रधानाधिवेशन का कार्य प्रारम्भ हुआ। बीकानेर राज्य के शिक्षा विभागाध्यक्ष ठाकुर श्री जुगलसिंह खीची बार-एट-ला ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। स्वागत मंत्री श्री परमेश्वरप्रसाद वैद्य ने बाहर से आये हुए सन्देश पढ़े। हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के प्रधान मन्त्री श्री मौलिचन्द्र शर्मा, श्री पुरुषोत्तमदास टंडन, श्री जनार्दन-राय नागर, रामचन्द्र जी एम० ए० आदि के सन्देश मुख्य थे। साहित्य एवं कला की सुन्दर प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री डाइरेक्टर साहब ने किया। श्री गजानन्द शास्त्री के सभापतित्व में साहित्य-परिषद् हुई, जिसमें श्री कन्हैयालाल गोस्वामी, श्री हनुमत-प्रसाद आचार्य, श्री काशीनाथ शास्त्री, श्री कालीचरण तथा श्री दातारांम के भाषण हुए। संस्कृत परिषद् श्री गौरीशंकर आचार्य के सभापतित्व में हुई। दोपहर में प्रधानाधिवेशन हुआ जिसमें सम्मेलन के प्रधान मन्त्री श्री ओंकारनाथ जी आचार्य ने वार्षिक रिपोर्ट पढ़कर सुनाई। इसके बाद श्री लक्ष्मीचन्द्र व्याकरणाचार्य को १०१) का श्री जगनराम पुरस्कार दिया गया। जाट हाईस्कूल संगरिया के छात्र का सुन्दर व्यायाम-प्रदर्शन हुआ। छात्र को २००) के क़रीब पुरस्कार में प्राप्त हुए। संगीत और कवि-सम्मेलन हुए। कवि-सम्मेलन में श्री कन्हैयालाल गोस्वामी और श्री मुकुल की कवितायें तो श्रेष्ठ थी हीं, पर तारानगर, चूरू और रतनगढ़ के कवियों की कवितायें भी काफ़ी अच्छी रहीं।

प्रातः नवीन स्थायी समिति की बैठक हुई। प्रधान कार्यालय और प्रचार एवं संगठन का कार्य सरदार शहर परीक्षाओं एवं साहित्य का कार्य बीकानेर साक्षरता एवं शिक्षा का चूरू और गंगानागर को सौंपा गया। ठाकुर जुगलसिंह एम० ए० के सभापतित्व में राजस्थान परिषद् हुई। जिसमें हिन्दी और राजस्थानी सम्बन्धी समस्याओं पर अनेक विद्वानों के भाषण हुए।

युवक भाषण प्रतियोगिता हुई जिसमें ७ संस्थाओं के छात्रों ने भाग लिया। चूरू कालेज के छात्र श्रीधर पाठक, गुप्तेश्वरसिंह प्रथम और द्वितीय तथा नागरिक भंडार के मुकुन्द गोस्वामी तृतीय रहे। चाँदी की चल-रजत विजय प्रतिमा (सरस्वती शील्ड) चूरू कालेज को प्राप्त हुई। पुस्तकालय सम्मेलन भी हुआ, जिसमें प्रायः राज्य के सभी पुस्तकालयों के प्रतिनिधि मौजूद थे। बाहर से क़रीब १२५ प्रतिनिधि आये थे। बीकानेर से श्री विद्याधर शास्त्री, श्री कन्हैयालाल गोस्वामी, श्री रामचन्द्र धूपवादी, श्री काशीनाथ आचार्य; रतनगढ़ से श्री गजानन्द शास्त्री, श्री सूर्यशंकर कवि, श्री मोतीलाल पारीक, सरदार शहर से श्री ओंकारनाथ आचार्य, श्री पन्नालाल वैद्य, श्री मोहनलाल दसाणी, चूरू से प्रिंसिपल इंटर कालेज श्री शिवप्रसाद शास्त्री, श्री शान्त शर्मा, श्री सुबोधकुमार, श्री मुरलीधर तथा अनेक कवि और वैद्य पधारे थे। इनके अतिरिक्त नोहर के वैद्य दाताराम, श्री रामेश्वर, गंगानगर के श्री हरिश्चन्द्र वकील, संगरिया के व्यायाम-शिक्षक, सुजानगढ़ के श्री ठंडूराम, तारा-नगर के श्री कालीचरण, श्री परमानन्द तथा श्री रामसुख उल्लेखनीय हैं।

सम्मेलन के अगले अधिवेशन के लिए तारानगर का निमंत्रण स्वीकार किया गया। स्वागत-समिति का प्रबन्ध सराहनीय था। स्कूल के अध्यापकों एवं विद्यार्थियों का सहयोग सम्मेलन की सफलता में विशेष सहायक था। आगामी वर्ष के लिए नवीन मंत्रिमंडल का निर्वाचन हुआ—

सभापति, श्री माधवप्रसाद जी एम० ए० रतनगढ़; कार्यवाहक उपसभापति, श्रीरामचन्द्र शर्मा बीकानेर; उप-सभापति, श्री विद्याधर जी शास्त्री एम० ए० बीकानेर; प्रधान मंत्री, श्री ओंकारनाथ आचार्य, सरदार शहर; साहित्य-मंत्री, श्री कन्हैया-लाल गोस्वामी एम० ए० बीकानेर; परीक्षा-मंत्री, श्री गौरीशंकर आचार्य गंगा-नगर; शिक्षा मंत्री, श्री मुरलीधर शर्मा 'साहित्य-रत्न' चूरू; अर्थमंत्री, श्री पन्नालाल जी वैद्य, सरदार शहर।

—स्वागत मन्त्री

* * *

वृन्दावन में म्युनिसिपलबोर्ड की मिटिंग में आज़ाद हिन्द-फ़ौज के तीनों अफ़सरों की रिहाई पर हर्ष प्रकट करते हुए बधाई का प्रस्ताव श्री गोस्वामी अद्वैत-कुमार ने पेश किया, जो सर्वसम्मति से पास हो गया।

म्युनिसिपलबोर्ड के सदस्यों ने सर्व-सम्मति से प्रोफ़ेसर कृष्णचन्द्र जी एम० एल० ए० को बोर्ड का चेयरमैन चुनना चाहा था पर आगरा के कमिनश्नर को यह स्वीकार नहीं हुआ। शायद कमिश्नर का कहना है कि प्रोफ़ेसर साहब चेयरमैन नहीं हो सकते। बोर्ड में एक प्रस्ताव-द्वारा कमिश्नर के इस कार्य की निन्दा की गई और दुबारा चेयरमैन के चुनाव के लिए प्रोफ़ेसर कृष्णचन्द्र जी का ही नाम भेजा गया है।

माननीय पंडित गोविन्दवल्लभ पंत १४ जनवरी को यहाँ आये। वृन्दावन की कांग्रेसी म्युनिसिपलबोर्ड ने उन्हें मानपत्र दिया। उनके स्वागत में बोर्ड-द्वारा १५०) खर्च किया गया। बोर्ड ने गोस्वामी अद्वैत-कुमार जी, गोस्वामी किशोरीलाल जी, छोटेलाल जी गौतम, प्रभुदयाल भार्गव की एक स्वागत-समिति बनाई थी। जनता-द्वारा पन्त जी को ५ हजार रुपये की थैली भेंट की गई। स्थानीय कांग्रेस कमेटी तथा गौरांग क्लब वाचनालय ने भी मानपत्र दिया। थैली में १ हजार रुपया शाह गौर-शरण जी गुप्ता एडवोकेट मालिक शाह जी मंदिर ने दिया है। डेढ़ हजार रुपया रंग जी मंदिर की ओर से दिया गया। तथा ५००) रुपया रमणरेती मुहल्ला के मारवाड़ी भाइयों ने दिया है।

व्रज-साहित्य-परिषद् वृन्दावन ने अपनी सभा में श्री विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक के निधन पर शोक-प्रस्ताव पास किया है।

—संवाददाता

* * *

'हिमालय' नाम का मासिक साहित्य पुस्तक-भण्डार, हिमालय प्रेस पटना से सुप्रसिद्ध साहित्यकार सर्वश्री शिवपूजन सहाय, श्री रामवृक्ष बेनीपुरी, श्री रामधारी-सिंह 'दिनकर' के संपादकत्व में आगामी वसंतपंचमी से प्रकाशित होने जा रहा है।

इसे सब तरह सरस, सुन्दर, पठनीय और दर्शनीय बनाने में पुस्तक-भण्डार कुछ भी उठा नहीं रखना चाहता। बशर्ते उसे हिन्दी-संसार का भी सहयोग प्राप्त हो। 'हिमालय' में प्रतिमास १०० पृष्ठ होंगे और वह कविता, कहानी, स्केच, एकांकी नाटक, आलोचना और सामयिक विचार-धारा का अलबम होगा। उसकी हर पुस्तक हिन्दी-संसार की सर्वोत्कृष्ट देन ही नहीं होगी, विश्वसाहित्य से हिन्दी-संसार का गठबंधन भी करा देगी। इसका वार्षिक मूल्य १०) और प्रति पुस्तक का एक रुपया होगा।

—संवाददाता

* * *

मण्डावा (जयपुर) श्री सनातनधर्म पुस्तकालय के प्रधान पंडित गोपालदत्त शर्मा ने साहित्य-प्रेमी श्री 'चंचल' के सद्भावनापूर्ण प्रयत्न से पुनः चालू कर देने का पक्का वचन दिया है। पुस्तकालय में संस्कृत और प्राचीन हिन्दी-साहित्य की लगभग २,५०० पुस्तकें, समाचारपत्र आदि संगृहीत हैं। पर किन्हीं कारणवश क़रीब दस वर्ष से जनता के उपयोग में कतई नहीं आ रही थीं।

—संवाददाता

* * *

कालाकाँकर (प्रतापगढ़) में गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी सुप्रसिद्ध साहित्यिक कुँवर सुरेशसिंह के सभापतित्व में "प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-प्रतियोगिता" २५ जनवरी सन् १९४६ शुक्रवार को हनुमत हाईस्कूल कालाकाँकर में होगी। प्रतियोगिता के दो अंग होंगे, एक गल्प अथवा एकांकी, ६० प्रतिशत अंक, दूसरे कविता, ४० प्रतिशत अंक।

प्रान्त के, केवल हाईस्कूल ही इसमें भाग ले सकेंगे। रचनायें, स्कूल के हिन्दी अध्यापक या प्रधान अध्यापक के हस्ताक्षर सहित उक्त तिथि से तीन दिन पूर्व मंत्री के पास आ जानी चाहिए। अधिक अंक पानेवाले हाईस्कूल को "रमेश-साहित्य-शील्ड" पुरस्कार में दी जायगी। प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय प्रतियोगी तो पुरस्कृत होंगे ही, एक विशेष पुरस्कार का भी आयोजन है।

—मंत्री

* * *

लहेरिया सराय (दरभंगा) से प्रकाशित होनेवाले 'बालक' पत्र का कार्यालय नये वर्ष (१९४६ ई०) से पटना चला आया है। उसका मुद्रण, प्रकाशन, सम्पादन, प्रबन्ध आदि सब कुछ अब यहीं से हुआ करेगा। अतएव हिन्दी-प्रेमियों से सविनय निवेदन है कि वे 'बालक'-सम्बन्धी सभी प्रकार के पत्र-व्यवहार यहीं के (नीचे लिखे) पते से किया करें। 'बालक'-कार्यालय, पुस्तकभंडार, गोविन्दमित्र रोड, बाँकीपुर (पटना)।

—संवाददाता

* * *

सागर में श्री केशव रामचन्द्र खांडेकर की अध्यक्षता में मोटर स्टैंड पर विद्यार्थी कांग्रेस की एक सभा हुई, जिसमें नगर के सभी कांग्रेसी नेता उपस्थित थे। विद्या-थियों ने आज़ाद हिन्द-फ़ौज के सेनानी सहगल, शाहनेवाज, ढिल्लन आदि की रिहाई पर अभिनन्दन किया तथा एक प्रस्ताव द्वारा सरकार से शेष सैनिकों को शीघ्र छोड़ने और बाक़ी मुक़दमें उठाने की माँग की। डाक्टर वी० जी० सप्रे ने अपने भाषण में आज़ाद हिन्द-फ़ौज की सहायतार्थ १०,०००) की अपील नगर की जनता से की। सर्वश्री वासुदेवराव सूबेदार, डाक्टर पी० जी० सप्रे, भाई अब्दुलग़नी, अब्बुल ग़फ़्फ़ार साहब आदि के भाषणों के बाद सभापति जी का सारगर्भित भाषण हुआ। श्री शिव-कुमारे तथा 'बेधड़क' का कविता-पाठ हुआ।

श्री मुहम्मद हुसैन की अध्यक्षता में मुस्लिम लीग की केन्द्रीय विजय की सभा हुई। जिसमें जबलपुर-निवासी नियाज अहमद साहब कबीरुद्दीन साहब तथा अब्बुलक़ादिर ब गनी साहब ने कांग्रेस को कोसते हुए पाकिस्तान को सराहा।

—संवाददाता

* * *

जयपुर में अखिल भारतीय मारवाड़ी कवि-सम्मलन का इस वर्ष का चुनाव इस प्रकार हुआ—सभापति, प्रोफ़ेसर विद्याधर शास्त्री एम० ए०, कार्यवाहक सभापति—श्री अद्भुत शास्त्री, प्रधानमन्त्री श्री माधव साहित्यालंकार, उपमन्त्री श्री कवि भुवनेश, प्रचारमन्त्री—शिवेन्द्र। कार्यकारिणी में—श्री गुलाबराय खेताण, आचार्य मदनमोहन, झाबरमल चौधरी, सोहनलाल भरतिया, श्री मदनसिंह का चुनाव हुआ।

सम्मेलन का कार्यालय रतनगढ़ (बीकानेर) से जयपुर आ गया है अतः सम्मेलन-सम्बन्धी पत्र-व्यवहार करनेवाले व्यक्ति "मन्त्री—अखिल भारतीय मार-वाड़ी कवि सम्मेलन—किशनपोल बाजार जयपुर सिटी" इस पते से करें।

—संवाददाता

* *

जयपुर में राजपूताना प्रान्तीय साहित्य-सम्मेलन का चुनाव इस प्रकार हुआ—सभापति—प्रोफ़ेसर विद्याधर शास्त्री एम० ए०, उपसभापति, साहित्य व्याकरणाचार्य विश्वनाथ शास्त्री, प्रधान मन्त्री—श्री अद्भुत शास्त्री, उपमन्त्री—श्री माधव साहित्यालंकार, प्रचार मन्त्री—श्री शिवेन्द्र। कार्यकारिणी में—सर्वश्री महेन्द्रकुमार जैन, कुँवर विजयसिंह, आचार्य मदनमोहन, रूपनारायण पाण्डेय, चंचल, चेतन आचार्य, प्रह्लादराम जी वैद्य, गणपतिचन्द्र भण्डारी, झाबरमल चौधरी कवि भुवनेश।

—संवाददाता

* *

प्रयाग—हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति का एक अधिवेशन तारीख़ २७ जनवरी १९४६ को २ बजे दिन से सम्मेलन कार्यालय में होगा। विचारणीय विषय हैं—स्थायी समिति की सदस्यता से कुछ सदस्यों के त्यागपत्र। आगामी अधि-वेशन के विषय में सिंध के प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्रधान जी का पत्र।

—रामलखन शुक्ल,

पेट के

दर्द के चंगुल में

न फँसिए!

पेट का दर्द जब आपको पीड़ा दे उसे एकदम बन्द कर दीजिए। उसके चंगुल को दृढ़ मत होने दीजिए अन्यथा घाव होने का भय है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ० भा० हिन्दी पत्रकार-सम्मेलन

(पेज ५ का शेष)

हो गये हैं। बड़े-बड़े सम्मेलनों, महत्त्व की सभाओं, राजनैतिक नेताओं के दौरों के समय अँगरेजी पत्रों के संवाददाता विशेष तौर से नियक्त होते हैं। लेकिन हिन्दी पत्र के संचालक बड़ी से बड़ी घटनाओं पर भी अपने विशेष संवाददाता नहीं भेजते। कभी-कभी यह भी देखने में आता है कि एक ही संवाददाता बहुत से पत्रों का संवाददाता नियुक्त हो जाता है। उससे किसी भी पत्र की उन्नति नहीं होती। पत्र की महत्ता नहीं बढ़ती। खोज-बीन कर अपने पत्र को समाचार नहीं भेजता। हाँ, यह लाभ अवश्य है कि पैसे की दृष्टि से समाचार पत्रों को बहुत से खर्च से बच जाना पड़ता है। १०), १५) रुपया खर्च करने से विशेष संवाददाता लिखने की हविश पूरी हो जाती है। पीछे वही समाचार आप कई पत्रों में पढ़ने को पाते हैं और सब पर विशेष संवाददाता लिखा रहता है। यदि ऐसा ही करना है तो वही समाचार आप यूनाइटेड प्रेस और एसोशियेटेड प्रेस से कुछ कम बेशी में प्रकाशित करने को पायेंगे।

विशेष संवाददाता का यह काम है घटना की तह तक जाकर पूरे प्रमाण के साथ अपने दैनिक या साप्ताहिक में जल्दी से जल्दी समाचार पहुँचा दें और अन्य पत्रों के मुकाबिले में उसका समाचार पहले प्रकाशित हो जाये।

हमारे हिन्दी पत्रों को जनता से सम्पर्क स्थापित करना होगा। अभी तक हम शहरों की खबरों को बहुत महत्त्व देकर प्रकाशित करते हैं। करना भी चाहिए लेकिन इसके मानी यह नहीं है कि हम देहातों की उपेक्षा करते हैं। आये दिन उन पर जमींदार, सेठ साहूकार, पटवारी और सरकारी कर्मचारी हृदय को दहला देनेवाले, अमानुषिक अत्याचार करते हैं। उन घटनाओं का भी प्रकाश आम जनता में होना चाहिए। गरीब प्रजा को भुलाकर हिन्दी पत्रकार कला आगे नहीं बढ़ सकती। पत्र-संचालक या सम्पादक जब यह कहते हैं कि हमारा पत्र जनता जनार्दन की सेवा करनेवाला है तब मैं उनसे नम्र शब्दों में यह जानना चाहता हूँ कि जनता जनार्दन कहाँ बसती है? क्या वह शहरों में है? थोड़ी देर के लिए हम संचालकों की यह—दलील मानते हैं कि पत्रों की खपत शहरों में होती है। विज्ञापन शहरों में मिलता है। हम अधिक से अधिक शहरों की खबरें प्रकाशित करने के लिए विवश हैं। यदि वह सच्चे दरिद्रनारायण की सेवा करने का दम भरते हैं तब उन्हें अवश्य देहातों की घटनाओं पर भी ध्यान देना चाहिए। देहातियों को शिक्षित करें और उनकी आर्थिक स्थिति सुधारें। हिन्दुस्तान सात लाख गाँवों में समाया हुआ है। झोपड़ियों में बसा है। आप उन पर होनेवाले अत्याचारों को बन्द कराइये। जमींदार उनकी जमीन जब्त कर लेता है। मकान जरा-सी बात पर गिरा दिये जाते हैं। कुओं पर पानी भरने नहीं दिया जाता। मकान बनाने के लिए जमींदार गाँव की मिट्टी नहीं लेने देता। हरे भरे खेतों को जरा-सी बात पर पशुओं से चरी करा लेता है। घर जला दिये जाते हैं। सारे मवेशी काँजीहौस में भेज दिये जाते हैं। बेगार लेते-लेते किसानों को तबाह कर डाला जाता है। क़ानूनी लगान से दूना तिगुना लगान वसूल किया जाता है।

१९४१ के दिनों में मैं पूर्वी यू० पी० के जिलों में भ्रमण कर रहा था। एक दिन मैं एक ऐसे ही देहात में पहुँचा। उस गाँव में ५०, ६० कच्चे मकान बने थे। सब गरीब थे। किसी तरह का वहाँ धंधा नहीं होता था। उसी गाँव में एक बूढ़ी बेवा औरत थी। उसके परिवार में कोई नहीं था। पड़ोसियों की मदद से वह दो-तीन बीघे जमीन की खेती करा लेती थी। खेत का लगान ८), ९) रुपये के लगभग था लेकिन जमींदार बूढ़ी बेवा से २५) रुपया हर साल वसूल करता था। बेगार लेने के लिए जबरन अपने खेत में ले जाकर सूखी या हरी घास साफ़ कराता था। घर के पीछे कुछ थोड़ी-सी जमीन में १६, १७ केले के पौधे लगाये थे। केलों के पेड़ों में फल आये। पकने पर तैयार होने का मौक़ा आया। दूरी पर एक देहाती बाजार में बेचकर कुछ कपड़ा, नमक और हंडुडी आदि लेने का विचार करती थी। दैव का दुर्दैव कहिये या मुसीबत में आटा गीला—जमींदार का कारिंदा आया सब केलों को कटवा ले गया। बूढ़ी जमींदार से शिकायत करने पहुँची। जमींदार ने जूते से मरम्मत करने का हुक्म फ़ौरन दे दिया। बेवा बूढ़ी कई महीनों से बीमार होकर चारपाई पर पड़ी थी।

ऐसे समाचारों को सप्ताह में एक बार देहाती दुनिया के रंग-मंच से आसानी से निकला जा सकता है। सरकार का ध्यान इन बुराइयों पर खींचना चाहिए। साल में दो चार बार या महीने में एक बार देहातों का दौरा करके वहाँ का समाचार संग्रह करना चाहिए। देहातों का भ्रमण करने से देहाती जीवन से सम्पर्क स्थापित होगा। खास-खास संवाददाता नियुक्त करके, देहातों का समाचार प्रकाशित करके उन्हें प्रोत्साहन देना चाहिए। गाँवों में जागृति फैलानी चाहिए। साप्ताहिक, मासिक समाचार-पत्र पढ़ने की उनमें आदत डालनी चाहिए।

स्वर्गीय गणेश जी की याद यहाँ आ जाती है। साप्ताहिक 'प्रताप' द्वारा उन्होंने आज से बहुत पहिले उनमें जागृति फैलाई थी। साप्ताहिक 'प्रताप' में किसानों पर होनेवाले जुल्मों का खूब विस्तार से हाल छपता था। 'प्रताप' किसानों का हार बना था। 'प्रताप' किसानों के लिए था। स्वर्गीय विद्यार्थी जी की मृत्यु के बाद किसानों का सच्चा साथी चला गया। किसानों के लिए विद्यार्थी जी जिन्दा थे। युक्तप्रान्त के किसानों को उन पर गर्व था। हर जिले के किसान विद्यार्थी जी को अपने प्राणों से अधिक चाहते थे। स्वर्गीय गणेश जी उनमें इतने प्रिय क्यों हुए थे? उन्होंने असली शक्ति पहचानी थी। गाँवों की शक्ति को जाना था। महात्मा गांधी इसीलिये कहते हैं कि गाँवों में जाओ, संगठन करो, स्वराज्य वहीं से प्राप्त होगा। उन्हीं के लिए स्वराज्य और शिक्षा लानी है। समाचार पत्रों को भी गाँवों में ले जाना है। वहीं इनकी ग्राहक-संख्या बढ़ेगी। आर्थिक मामलों में उन्हें सहायता और स्वतन्त्रता की भावनायें जागृत करें। देश की भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियों पर पत्रकारों को चर्चा करके अपना दृष्टिकोण बतलाना चाहिए। पथ-प्रदर्शक का काम करना होगा। हर एक दृष्टिकोण पर अपनी राय प्रकट करनी होगी। पत्रकार इन पंक्तियों के लेखक से बुद्धिमान और अन्वेषक हैं। ज्यादा विचार कर सकते हैं। लेकिन इस बात को आज सब मानेंगे बिना रुपये के सब कार्यक्रम बेकार होता है। देश की उन्नति में सब दलों का सहयोग मिलना चाहिए। श्रमिक पत्रकार अपने श्रम को एक जगह संगठित करके बहुत कुछ कर सकते हैं।

मथुरा से चलते समय हम लोग श्री केशवदेव शर्मा के मकान पर गये। आप सुन्दर कहानी लेखक हैं। आपको चित्रकारी से भी रुचि है। अँगरेजी साहित्य के ज्ञाता हैं। मिलनसार और जिन्दादिल तबिअत के हैं। पत्रकार-सम्मेलन के सभापति जी ने कहा कि आपकी लिखी कहानियों की पांडु-लिपि बहुत सुन्दर और शुद्ध होती है। आपने आये हुए पत्रकारों को सवेरे-सवेरे गर्म चाय पिलाई।

श्री रामगोपाल जी विद्यालंकार, अखिल भारतीय पत्रकार सम्मेलन के मंत्री हैं। आप पिछले साल भी इस पद पर रह चुके हैं। आप अच्छे विद्वान् पत्रकार हैं। आप मिलनसार तबिअत के हैं। परिश्रमी पुरुष हैं। सब लोग आपको चाहते हैं। इसीलिये अगले साल के लिए भी आप मंत्री चुने गये हैं। आप लोगों के पास आर्थिक मदद बहुत कम है। अपने वेतनों में से कुछ चन्दा देकर कार्यालय की व्यवस्था चलाते हैं।

नैपाल—एक स्वतन्त्र हिन्दू-राज्य

(पेज ५ का शेष)

भाँति परिचित हैं और सदैव उन्हें दूर करने का प्रयत्न करते हैं। जहाँ तक हमें ज्ञात हुआ है कि स्वतंत्रता, समानता तथा न्याय-प्रियता के पक्षपाती हैं और समाज में इनका प्रचार करना चाहते हैं। अपने व्यावहारिक जीवन में उन्होंने इन उत्कृष्ट आदर्शों का सदैव ध्यान रक्खा है। देश की सेवा में स्वार्थत्याग को वे ऊँचा स्थान देते हैं। उनकी धारणा है कि जब तक मनुष्य स्वार्थपरता को न छोड़ेगा तब तक वह न देश-सेवा कर सकता है और न लोक-सेवा। नैपाल रूढ़िवादी देश है। प्राचीन परम्परा पर वहाँ अधिक ध्यान दिया जाता है परन्तु अब ऐसे शिक्षित तथा देशभक्त लोग मौजूद हैं जो उन्नति के पथ पर चलने को तैयार हैं और राजनीतिक तथा सामाजिक उन्नति की ओर जिनका ध्यान पूर्ण रूप से आकृष्ट है। इस समय नैपाल-नरेश के सम्मुख गम्भीर समस्यायें उपस्थित हैं। संसार का भीषण युद्ध समाप्त हो गया। बहुत से राज्य छिन्न-भिन्न हो गये। बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ सामाजिक संगठन की चर्चा कर रहे हैं। प्रत्येक देश इस नवीन निर्माण की योजनाओं पर विचार कर रहा है। शिक्षा-प्रचार, औद्योगिक उन्नति, यातायात की सुविधाएँ, राष्ट्रीय संस्थाओं का सुधार, जन-साधारण की स्वास्थ्य-रक्षा इत्यादि नैपाल की समस्यायें हैं। महाराज पद्म उत्साही, देश-भक्त तथा विचारशील शासक हैं। यद्यपि उनका जन्म राजवंश में हुआ है तथापि वे साधारण जनता के दृष्टिकोण से अनभिज्ञ नहीं हैं। वे प्रजा की आवश्यकताओं को खूब समझते हैं और उनको पूरा करने के लिए सदा कटिबद्ध रहते हैं। उनकी प्रजावत्सलता नैपाल भर में प्रसिद्ध है। उनके राजनीतिक विचार संकुचित अथवा संकीर्ण नहीं हैं। हमें आशा है कि वे इस प्रश्नों पर विचार करेंगे और यथाशक्ति देश के कल्याण के साधनों का उपयोग करेंगे।

महाराज पद्म एक वीर योद्धा हैं और राजनीतिज्ञ भी। उन्होंने बड़े-बड़े संग्रामों में भाग लिया है और समय-समय पर अपनी शूरवीरता का परिचय दिया है। राजनीतिक मामलों का भी उन्हें बहुत ज्ञान है। भूतपूर्व महाराज उनकी सम्मति के बिना कोई काम नहीं करते थे और जहाँ तक हमें मालूम हुआ है महाराज पद्म प्रजा का हित करनेवाली ही सम्मति देते थे। इसी लिए आप महाराज जुद्ध के विश्वासपात्र बन गये। थे। गत १३-१४ वर्षों में आपने महाराज के साथ हृदय से सहयोग किया और उनकी योजनाओं को सफल बनाने का प्रयत्न किया।

नैपाल-नरेश का हम हृदय से स्वागत करते हैं। नैपाल ही अब संसार में हिन्दुओं का स्वाधीन राज्य है। नैपाल का धर्म, संस्कृति सब भारतवर्ष के-से हैं। भारत का नैपाल से सदैव सम्बन्ध रहा है। हमें आशा है कि नवीन महाराज भारतीय मित्रता को सुदृढ़ करेंगे और इस उन्नति के युग में अपने देश में अर्वाचीन संस्थायें स्थापित करेंगे। नैपाल में अभी तक प्राचीन हिन्दू आदर्शों के अनुकूल काम होता है। यह हमारे लिए बड़े गौरव की बात है। वहाँ पर हिन्दू-धर्म का बोलबाला है। परतंत्रता की बेड़ी पैरों में नहीं है। परन्तु इतना ही काफी नहीं नैपाल को संसार के देशों के साथ समानता स्थापित करने के लिए साधनों का उपयोग करना पड़ेगा। इस को किस प्रकार व्यावहारिक रूप में जायगा—यह प्रश्न नैपाल के राजनी के लिए है। वे ही अपने अनुभव से सकते हैं कि उनके लिए कौन-सी उपयुक्त होगी और किस प्रकार तथा धैर्य के साथ देश अपने लक्ष्य पर सकेगा। समय द्रुतगति से भाग रहा हमें पूर्ण आशा है कि नैपाल पीछे न रहे महाराज पद्म पर हमें पूरा भरोसा उनकी देशभक्ति, लोकप्रियता, आदर्श जीवन की सादगी, इस बात की गा करते हैं कि उनके शासनकाल में देश कल्याण होगा—

माधवी-कङ्कण

यह सुप्रसिद्ध बाबू रमेशचन्द्र का लिखा ऐतिहासिक उपन्यास इसमें मुगलों के समय की दशा के चित्र के साथ-साथ प्रेमी-प्रेमिका की बड़ी विचि कथा है। यह उपन्यास बहुत लोकप्रिय इसका नया संस्करण अभी तैयार है। मूल्य १।—) एक रुपया पाँच आने

छुटकारा

एक संयुक्त हिन्दू-परिवार का म स्पर्शी चित्रण इसमें अंकित किया गया सम्पत्ति के लिए भाई-भाई में होनेवाले सिरफुटौवल, एक भाई का अपने दूसरे भा को सम्पत्ति-सम्बन्धी अधिकारों से वंचि करने का षड्यन्त्र रचना, आदि बातें इ उपन्यास में मनोरंजक ढंग से लिखी ग हैं। मूल्य १।—)

मैनेजर बुकडिपो,
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रया

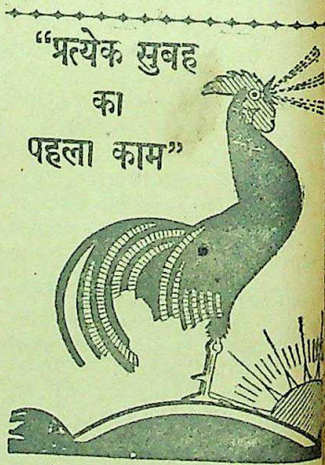

यदि आप किसी काम में शक्तिहीनता का अनुभव करते हैं तो दिन में एक गिलास निर्मल इनोज़ "फ्रूट साल्ट" को लीजिए। इनो रक्त को शीतल व निर्मल करता है; शरीर को स्फूर्ति देकर प्राकृतिक शक्ति व पोषण प्रदान करता है।

ईनोज़ "फ्रूट साल्ट"

इनो व "फ्रूट साल्ट" शब्द रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास परिहास

भंग की तरंग

सरकार ने सौ से ऊपर के नोटों का चलना बन्द कर दिया है। सरकार में बड़ी शक्ति है। जिसने रेलों का चलना बन्द कर दिया उसके सम्मुख काग़ज़ के नोट क्या चीज हैं?

* * *

चोर बाजार द्वारा रुपया पैदा करके जिन लोगों ने नोट घर पर रख छोड़े थे उनके नोट अब क्या होंगे? लोगों को हताश नहीं होना चाहिए। वह नोट रखना चाहिए, पाकिस्तान में चल जायेंगे।

* * *

गोहाटी में महात्मा गांधी ने महिलाओं को रचनात्मक कार्य करने के लिए कहा है। रचनात्मक कार्य में सिनेमा की तारिका बनना है कि नहीं यह नहीं पता है?

* * *

जर्मनी से भारत को भी दो प्रतिशत हर्जाना मिला है। पहले इंगलैंड के यहाँ जितना पावना है वही मिल जाय तो भाग्य समझिये हर्जाना तो हर्जाना ही है।

* * *

ब्रिटेन के समुद्रतट पर अब भी बहुत-सी सुरंगें बिछी हैं, ऐसा पता लगा है। इन सुरंगों को साफ़ करने में दो साल लग जायेंगे। साफ़ करनेवालों को सदा के लिए रख लेना चाहिए क्योंकि दो वर्ष के बाद फिर तीसरी लड़ाई भी तो होगी?

* * *

हमारे प्रान्त में चीनी का प्रायः अभाव हो गया है। नमक की बिक्री भी रोक दी जाय तो प्रान्त का स्वास्थ्य बहुत अच्छा हो जाने की सम्भावना है। यह दोनों वस्तुएँ स्वास्थ्य के लिए हानिकर हैं।

* * *

हंगरी के भूतपूर्व मंत्री गोली से उड़ा दिये गये। भूत तो पहले से ही थे अब शायद पिशाच बन गये होंगे।

* * *

नवीन जागृति

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

नव प्रभात आया प्रिये अब तो नया संसार होगा।
देश-पर बलिदान होने के लिए अब तुम चलोगी,
यज्ञ में स्वाधीनता के तुम बनी हवि सी जलोगी,
आज तुम दुर्गा बनोगी वैरियों का नाश होगा,
राक्षस समुदाय का अब शीघ्र सत्यानाश होगा,
गीत से उत्साह भरने का इधर उपचार होगा।
तुम बनोगी तारिका विख्यात सिनमा के गगन की,
पत्रिकाओं से भरेगा घर तुम्हारा भी, लगन की,
लोग आटोग्राफ़ लेने के लिए कुरबान होंगे,
एक चितवन के लिए कितने युवक बलिदान होंगे,
पत्रिकाओं का तुम्हारे चित्र से शृंगार होगा।
आज तुम स्वाधीन होंगी जो रहीं परतंत्र अब तक,
आज वह जीवित बनेंगी जो रहीं थीं यंत्र अब तक,
अब न कठपुतली पुरुष के हाथ की तुम बन सकोगी,
अब बराबर हो पुरुष के सामने तुम तन सकोगी,
अब तुम्हारे ही करों से देश का उद्धार होगा।
देश के उत्थानहित अखबार बेचोगी सड़क पर,
मधुर वाणी छोड़ लेक्चर झाड़ दोगी तुम कड़क कर,
अब न यमुना की कहानी मान राधा का न होगा,
रूस की रंगीन बातें मास्को का गान होगा,
तब हमारे देश में नवरक्त का संचार होगा।

ब्रिटिश पार्लिमेंट के प्रतिनिधि मंडल को बहुत जगहों से बुलाहट आ रही है। भोंगांव और शिकारपुरवालों को भी इन्हें बुलाना चाहिए। भारत के इन प्रसिद्ध स्थानों में यह लोग न गये तो भारत में आना बेकार है।

* * *

कायदेआजम ने दिल्ली में कहा है कि हिटलर और मुसोलिनी को जितनी सफलता नहीं मिली उतनी सफलता हमें केन्द्रीय असेम्बली के चुनाव में मिली है। जान पड़ता है कि मुस्लिम लीग नाजियों का भारतीय संस्करण है।

* * *

डाक्टर मेघनाद साहा ने बताया है कि साल में चार आटम बम भारत में भी बन सकता है। अहिंसावादी देश के लिए प्रदर्शनी में रखने के लिए इतना बहुत है।

* * *

कलकत्ता मेडिकल कालेज के अवैतनिक तथा सहायक डाक्टर हड़ताल करनेवाले हैं। यमराज के यहाँ भी हड़ताल होगी कि नहीं, नहीं तो मामला टेढ़ा हो जायगा।

* * *

लखनऊ के एक कवि की 'जयहिन्द' नामक कविताओं के संग्रह की एक प्रति पाँच सौ में बिकी। सरदार पटेल को एक चेक पाँच लाख का मिला है। साहित्य और राजनीति का कितना सुन्दर अनुपात है।

* * *

गंगासागर के मेले में एक सौ साठ यात्री स्वर्गलोक सिधारे। स्नान का पुण्य-फल इतनी शीघ्रता से बहुत कम मिलता है। कौन कहता है कि यह कलियुग है?

* * *

विलायत से भारत में अधिक ह्विस्की लाने का प्रबन्ध किया जा रहा है। लोगों को घबड़ाना नहीं चाहिए। सरकार स्वयं भारतवासियों के खान-पान की चिन्ता कर रही है। चीनी बिना चाय न मिले तो क्या ह्विस्की की कमी नहीं होने पायेगी?

* * *

बनारस की मुस्लिम लीग में फूट पड़ गई है। साल में दो-चार बार चुनाव हो तो फूट तो नहीं युद्ध होने लगेगा।

आदित्य शर्मा

मधुस्रवा में नवीन शैली की, जीवन में मधु बरसानेवाली सुन्दर रचनाएँ हैं। इसे पढ़कर प्रत्येक कविता-प्रेमी को अपना जीवनरस मधुर बनाना चाहिए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

स्टैनिस्ट्रीट की ब्रिलियन्टाइन हेयर ऑयल वेविंग परमानेंट

ठोस तरल

सुगंधित कैन्थराइडिन कैस्टर कोकोनट गोल्डेन

सैचेट्स फ्लुइड् लोशन तरल शैम्पू

स्टैनक्रीम

स्टैनिस्ट्रीट एण्ड कं० लिः कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ कराची अमृतसर
SSK 122

सौंदर्य की दो पीढ़ियाँ

यद्यपि इनकी उम्र में बीस साल का फ़र्क है, फिर भी माँ के सौन्दर्य में उतनी ही ताज़गी और उसकी त्वचा उतनी ही गुलाबी और मुलायम है जितनी कि उसकी सोलह वर्षीय बेटी की। इसका भेद यह है कि माँ ने, अपनी माँ की सलाह पर, बचपन से ही पियर्स साबुन और साफ़ पानी से अपनी कोमल त्वचा की रक्षा की। आज उसकी सुन्दर बेटी उसी तरीके से अपनी त्वचा की रक्षा करती है। इसलिये बीस वर्ष के बाद उसकी त्वचा भी निस्सदेह उसी तरह सुन्दर और ताज़ा रहेगी जिस तरह आज उसकी माँ की त्वचा है।

चालीस साल से हिन्दुस्तान की सुन्दरियों ने पियर्स साबुन को ही इस्तेमाल किया है। स्वाभाविक सुगन्धू और रेशमी झाग के कारण यह साबुन साधारण साबुनों से कहीं बढ़चढ़ कर है।

पियर्स साबुन

सौन्दर्य का सेवक

A. & F. PEARS ISLEWORTH, ENGLAND

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ० भारतीय महिला-सम्मेलन

(पेज ७ का शेष)

धीरे-धीरे मध्यम वर्ग भी इसी चपेट में आ रहा है। इसका अर्थ बड़े ही भयानक तौर पर पारिवारिक जीवन की उपेक्षा है। शासन और समाज अब इसकी और अधिक उपेक्षा नहीं कर सकता। बच्चों के पालन-पोषण की सार्वजनिक व्यवस्था, नर्सों का प्रबन्ध, किंडर गार्टन स्कूल, बच्चों के लिए औषधालय यह सब प्रत्येक स्थान की साधारण विशेषता होनी चाहिए। यह सब इतने बड़े पैमाने पर होना चाहिए जिससे हमारी आवश्यकताओं की पूर्णरूप से पूर्ति हो सके। श्रमवर्गीया माताओं को पारिवारिक जीवन सुचारु रूप से चलाने के लिए पर्याप्त 'फेमिली अलाउंस' की सार्वजनिक व्यवस्था होनी चाहिए जिससे वे आवश्यकता पड़ने पर अपनी नौकरी छोड़कर अपने बच्चों की पूरी तरह से देख-रेख कर सकें। पारिवारिक सहायता का अभाव, जिसकी आवश्यकता का महत्त्व समय की गति और बढ़ते हुए आद्योगीकरण के साथ बढ़ने के लिए बाध्य है, उन महिलाओं के लिए अत्यधिक कठिनाइयाँ उपस्थित करता है जो गत युग की सम्मिलित परिवार की महिलाओं के बरखिलाफ़ अलग-अलग परिवारों में रहती हैं और जिन्हें अपने ही कन्धों पर अपने परिवार और बच्चों की चिन्ता का भार उठाना पड़ता है। इनके कारण उनके पास कोई भी दूसरा काम करने के लिए न तो शक्ति बाक़ी रह जाती है और न समय। ऐसी महिलाओं के लिए सामूहिक रसोईघर, सामूहिक चिकित्सालय, मेहनत महफ़ूज रखनेवाली तजवीजें और ऐसी ही दूसरी चीजों की बड़ी आवश्यकता है। उन महिलाओं को, जो पर्याप्त रूप से शिक्षित नहीं हैं, जिन्हें उनके काम के लिए उचित ट्रेनिंग नहीं मिली है, जो शारीरिक परिश्रम के अयोग्य हैं, ट्रेनिंग की और घरेलू उद्योगों की उचित शिक्षा और सुविधा मिलनी चाहिए। जिससे वे अपनी आर्थिक कठिनाइयाँ दूर कर सकें। ऐसे ही कार्यों की योजना बनानी और नियमित रूप से चलानी है। मकानों की समस्या पर विशेष ध्यान देना है। मकानों की आजकल की हालत से हमारे पारिवारिक जीवन की स्थिति पूर्णतः दयनीय हो रही है। घरों में सदा एक भीड़-सी लगी रहती है, जहाँ एकान्त का सर्वथा अभाव रहता है और जहाँ का वायुमण्डल पूर्ण रूप से अस्वास्थ्यकर, दूषित और अरुचिकर रहता है। जिस तरह पिछले वर्ष सम्मेलन ने 'मिल्क फ़्रन्ट' (दूध के मोर्चे) पर काफ़ी सफलता के साथ धावा बोला था उसी तरह उसे एक धुआँधार प्रचार के साथ इन सभी मोर्चों पर आक्रमण करना चाहिए। अखिल भारतीय पैमाने पर चलाया गया ऐसा आन्दोलन सफल होकर ही रहेगा। प्रतिदिन की आवश्यकताओं को पूरा करने और बोझे को कम करने के लिए सभी वर्ग की महिलाओं में नियमित रूप से कार्य होना चाहिए। परन्तु यह उन्हीं कार्यकर्त्रियों-द्वारा सम्भव है जो अपना सब समय इस काम में दे सकें। इसके बदले में उन्हें आर्थिक झंझटों से पूरी तरह से निश्चिन्त रखा जाय।

जनता के बीच घुसकर उसके दिन-प्रतिदिन के उन रचनात्मक कार्यों को, जो उसके जीवन की अनिवार्यताओं से सम्बन्ध रखते हैं, करके ही कोई ही संस्था किसी देश के महिला-समाज का आवश्यक अंग बन सकती है। हमारे देश के महिला-समाज का एक बहुत बड़ा भाग आज मानव-जीवन के दो बहुत ही आवश्यक वस्तुओं—शिक्षा और आर्थिक निश्चिन्तता—के अति साधारण और प्रारम्भिक अधिकार से वंचित है। यदि महिला-सम्मेलन को हाथों से जाते हुए नेतृत्व को रोक रहा है और देश के भावी युग में अपने लिए स्थान प्राप्त करना है तो उसे अपना प्रोग्राम इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए बना पड़ेगा। यह कार्य ऐसा है कि यदि सामान्य कार्यों के साथ ही कार्य तत्पर से इन्हीं कार्यों के लिए अपना सारा देनेवाली पर्याप्त कार्यकर्त्रियों-द्वारा सम्पादित कराया जाय तो यही—केवल यही कार्य-सम्मेलन का सारा पूरा कर सकता है। आज ये सभी प्रा शाखाएँ जो दूध के केन्द्र चलाकर नगरों के निकट उद्योग-धन्धों की क खोलकर ही अपनी उपयोगिता सिद्ध रही हैं, काल की वर्तमान गति से पीछे हैं। कोई भी संस्था किसी समाज अन्तरंग तभी बन सकती है जब उ गति-विधि समाज के नस-नस से सम्बन्धि हो।

पूर्वी देशों में अति प्राचीन तथा सर्वश्रेष्ठ.....:

'मृत सञ्जीवनी सुरा' प्राचीन आयुर्वेदिक योग पर निर्मित एक पुष्टिकारक औषध है। इसका अमोघत्व सहस्र सहस्र उपभोक्ताओं द्वारा दीर्घकाल से सिद्ध किया जा चुका है। समय की कसौटी पर कसी जाने के पश्चात् हमारी 'मृत सञ्जीवनी सुरा' ने पूर्वी देशों में अति प्राचीन एवं सर्वश्रेष्ठ होने का अधिकार यथार्थ ही उपार्जन किया है

SAKTI'S
MRITASANJIBANI
SURA

प्रत्येक अवस्था के लिए अति प्राचीन, बलवर्द्धक औषध
अध्यक्ष माथुर बाबू का शक्ति-औषधालय ढाका

AD-SYN. D.S. 1256

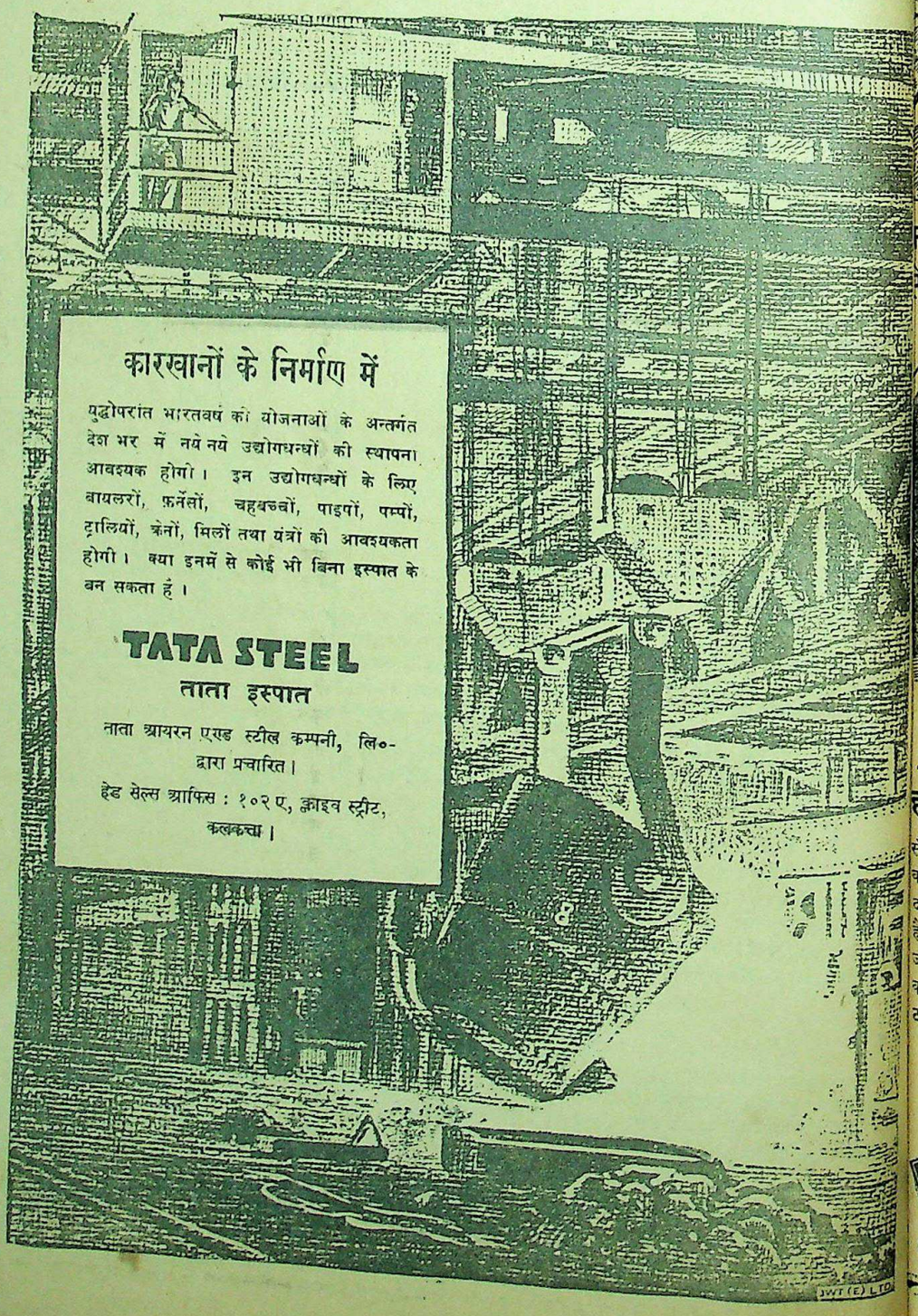

कारखानों के निर्माण में

युद्धोपरांत भारतवर्ष की योजनाओं के अन्तर्गत देश भर में नये नये उद्योगधन्धों की स्थापना आवश्यक होगी। इन उद्योगधन्धों के लिए बायलरों, फ़र्नेसों, चहबच्चों, पाइपों, पम्पों, ट्रालियों, क्रेनों, मिलों तथा यंत्रों की आवश्यकता होगी। क्या इनमें से कोई भी बिना इस्पात के बन सकता है।

TATA STEEL
ताता इस्पात

ताता आयरन एण्ड स्टील कम्पनी, लि०-द्वारा प्रचारित।

हेड सेल्स आफिस : १०२ ए, क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता।

JWT (E) LTD

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वत्र मिलता है स्था. १९४६

स्वदेशी

आशोंदा १८६६

नीलगिरि तेल

नमूना मुफ़्त

कॅलिप पेन बाम

दाद का मरहम

खाण्डालेकर बन्धु

बम्बई ४

...या आज आपने मेकलिन ...ने दाँत साफ़ किये हैं ?

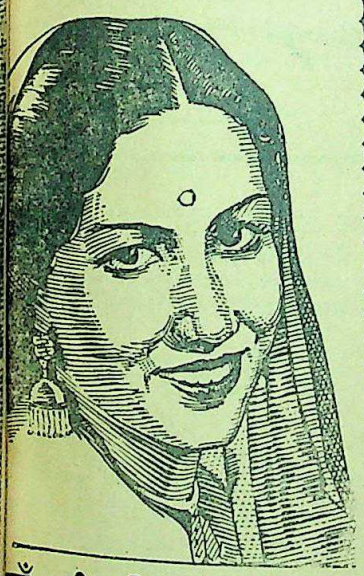

हाँ, यही उचित तरीका है।

सौभाग्य से मेकलिन पेराक्साइड टूथ पेस्ट का राशनिंग नहीं हुआ है। यह प्रसिद्ध दन्त-शोधक उन लोगों को अब भी प्राप्य है जो स्वच्छ व स्वस्थ दाँतों का मूल्य जानते हैं। प्रति रात्रि व सुबह प्रयोग करने से मेकलिन आपके मुख व मसूड़ों को ठीक दशा में रखती है।

सभी केमिस्टों के पास व स्टोरों में मिलता है

Copyright

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रॉमाला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटान स्वीट, खाकर देखें।

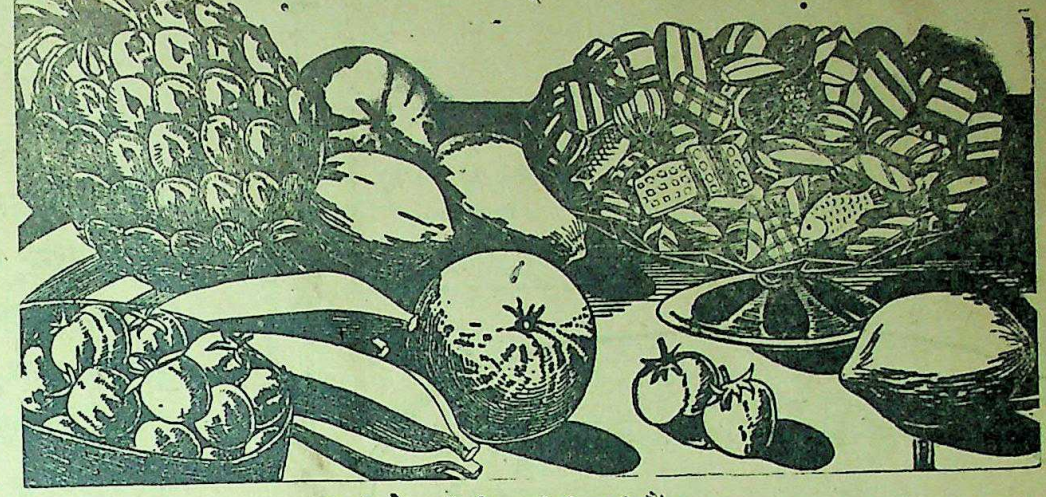

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

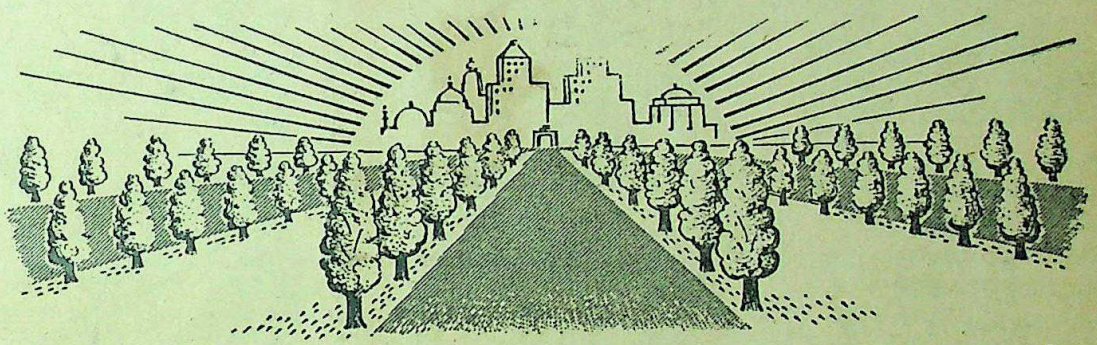

अच्छी सड़कें तरक्की के रास्ते हैं

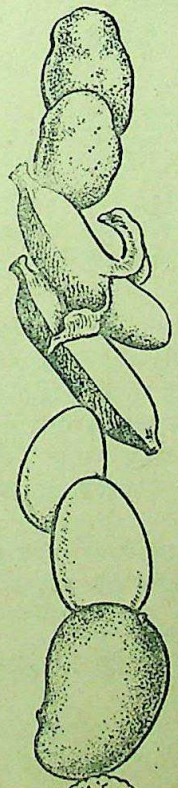

हिन्दुस्तान में अच्छी फ़सल उपजाने और अच्छी सड़कों की संख्या बढ़ाने के लिये "बर्म्मा-शेल" का यह अन्तिम विज्ञापन है।

शहर और देहात औद्योग और खेती, एक दूसरे पर निर्भर हैं। खेत की भांति-भांति की पैदावार काफ़ी तायदाद में शहरों को भेजी जानी चाहिये, क्योंकि कारखानों में काम करनेवाले आदमियों की तन्दुरुस्ती के लिये इसकी बड़ी जरूरत है। कारख़ानों की बनी चीजों की बिक्री को बढ़ाने के लिये यह आवश्यक है कि गांववालों की ख़रीदने की ताक़त को बढ़ाया जाय।

अब तक हिन्दुस्तान को, शहर और देहात के सम्बन्ध को क़ायम रखने के लिए, रेलवे और नदियों पर ही निर्भर करना पड़ा है। देश के भीतरी भाग के जलमार्ग बहुत कम उपयोगी हैं। रेलवे ने जोकुछ काम किया है वह बहुत महत्त्वपूर्ण है और हिन्दुस्तान को औद्योग के भारी माल की लम्बी ढुलाई के लिये उन्हीं पर निर्भर रहना चाहिये। लेकिन अच्छी सड़कें, जिनकी हिन्दुस्तान में बड़ी कमी है रेलवे और जलपथ की मददगार हैं, और विज्ञापनों के इस सिलसिले का लक्ष्य अच्छी सड़कों की कमी के कारण हिन्दुस्तान की उन्नति—रुकावट को दिखलाना है।

इस सिलसिले के ये सत्रह विज्ञापन दरखास्त देनेपर बर्म्मा-शेल, बम्बई, कलकत्ता, करांची, मद्रास या न्यू देहली से मिल सकती है।

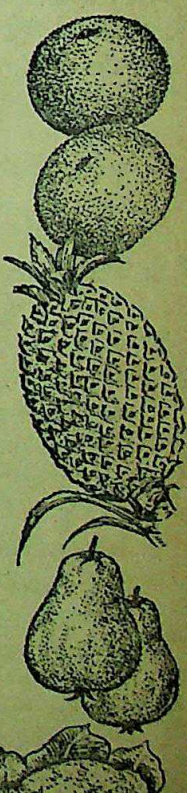

BS17

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Estd. 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस:—H.L.M.S. १०) H.M.B.S. १५) H.M.D.S. २५)। पुस्तक—अ० पारिभाषिक १) बायोकेमिक १) १००० रेडलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्सनरियाँ १॥) आर्गेनन १), फार्माकोपिया १॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायँगी। डा० ख० माफ—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≫) ड्राम। आउन्स ॥) घरेलू बक्स ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.)

मधुबन—लेखक, राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी० अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु घोलने की पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को सिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

इस तरह धोने से पटस्थे जाने के नुकसान से बचाव होता है

छेद, उधेड़ या फट जाना ...यदि कपड़ों को स्वच्छ करने के लिए उन्हें पुराने तरीके से कूटा जायगा तो कपड़ों को ऐसा अनावश्यक (और खर्चीला) नुकसान पहुँचता रहेगा।

1

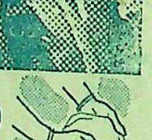

2

3

4

इन चित्रों को देखिये, ये आपको बिना नुक़सान पहुँचाए कपड़ों को धोने का तरीका बताती है।

(१) जिस कपड़े को धोना हो उसे पहले खूब भिगो लीजिए। यह आप नल के नीचे, टब में, तालाब में या नदी में कर सकते हैं—इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। (२) जब कपड़े को खूब भिगो चुकें तो सारे कपड़े में सनलाइट साबुन मलें। जो भाग अधिक मैला हो वहाँ सनलाइट ज़रा ज्यादा मलें। (३) साबुन लगे हुए कपड़े को हाथों से धीरे-धीरे गूँथिये। (इसे कूटिये नहीं) तबतक गूँथिये (ठीक उसी तरह जैसे रोटी का आटा गूँथा जाता है) जब तक साबुन की झाग कपड़े के हरेक तन्तु में प्रवेश पाजाए। कपड़े को जोर से रगड़ने की या बुरीतरह कूटनेकी आवश्यकता ही नहीं है। सनलाइट का "स्वयंकाम करनेवाला" फेन सरलता से सारे मैल को बाहर निकाल देगा—यदि आपको यह विश्वास हो जाये कि गूँथने से यह फेन कपड़े के मैल में घुस चुका है। इस शक्तिशाली फेन में जो साबुन है वह मैल को धूते ही तत्काल फुला देता है। फेन उसे जज़ब कर लेता है। ऐसे जब आप कपड़े को खूब धोएँगे तो फेनके साथ २ सब मैल निकल जायेगा। (४) फेन—जिसमें कि अब सारा मैल आचुका है—छुटाने के लिए कपड़े को खूब मलकर धो डालिए। ऐसे सनलाइट के तरीक़े से धोए हुए कपड़े बहुत समय तक चलते हैं।

सनलाइट साबुन कपड़ों की बचत करता है

S. 74-109 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

A.

"युद्ध समाप्त हो जाने पर भी राष्ट्रीय बचत की महत्ता कम नहीं हुई। राष्ट्र की भलाई इसी में है कि उस बचत को जो पिछले दिनों अनावश्यक व्यय को रोक कर की गई है अब निरर्थक सामग्री पर अपव्यय न करके उत्पादक योजनाओं के लिये सुरक्षित रखा जावे। युद्ध की समाप्ति पर राष्ट्रीय निर्माण सम्बन्धी योजनाओं में थोड़ी आय वाले मनुष्य के सहयोग की भी पूरी आवश्यकता होगी और वह नेशनल सेविंग्ज़ ख़रीद कर ही अपनी तथा देश की उन्नति कर सकता है।"

सर होमी. पी. मोदी, के. बी. ई.
डायरेक्टर टाटा सन्स लिमिटेड,
भूतपूर्व मेम्बर वाईसरायेज़ एक्ज़ेकिटिव कौन्सिल,
चेयरमैन सेन्ट्रल बैंक आफ़ इण्डिया लिमिटेड।

संक्षिप्त विवरण

(१) आप ५), १०), ५०), १००), ५००), १०००) या ५०००) के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) एक व्यक्ति ५००७ से अधिक मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स नहीं ख़रीद सकता। ये इतने उपयोगी हैं कि इनका राशन करना ही उचित समझा गया है। हां दो व्यक्ति मिलकर १०,०००) के सर्टिफिकेट्स मोल ले सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है।

(४) इस प्रकार अवधि पूरी होने पर ४-१/६% वार्षिक ब्याज मिलता है।

(५) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(६) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते (५) का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष पश्चात ही भुनाया जा सकता है) परन्तु वास्तविक लाभ इसी में है कि १२ वर्ष पहिले इन्हें न भुनायें।

(७) जिनकी बचत थोड़ी है वह १) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्पस ख़रीद सकते ५) के स्टेम्पस जमा होने पर एक नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट मिल जायेगा।

(८) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्पस डाकखानों सरकार द्वारा अधिकृत एजण्टों अथवा सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

आप अपनी बचत से ५०% लाभ उठाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिये।

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल-रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष ८, संख्या २२] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक रविवार, २७ जनवरी, १९४६

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

'स्वाधीनता दिवस' के आदि प्रवर्तक पंडित जवाहरलाल नेहरू।

बोलियाँ अनेक क़िस्म की इस दुनिया में हैं। संसार की बात जाने दीजिए, हिन्दुस्तानमें ही कितनी बोलियाँ बोली जाती हैं, इसका लेखा-जोखा भाषा-विज्ञान के पंडित जानें, किन्तु कहा जाता है कि भारत में ४० करोड़ आदमी हैं तो ४० करोड़ देवता भी हैं। बोलियों की संख्या भी करोड़ों तो हो ही सकती है। फिर अँगरेजी राज्य ने जब से हिन्दुस्तान में पैर जमाया है तब से अँगरेजी का बोल-बाला है। एक विदेशी बोली ने आकर यहाँ प्रभुत्व जमा लिया है। यों ही यहाँ बोलियों की कौन-सी कमी थी लेकिन नहीं अँगरेजों को अपनी बोली इस पराधीन देश पर तो लादनी ही थी। आजकल शहरों में इसी बोली का बोलबाला है। गांवों की न पूछिये। महात्मा कबीरदास ने कहा भी है--

चार कोस पै पानी बदलै,
तीन कोस पै बानी ॥

कहने का मतलब यह है कि हिन्दुस्तान खुद ही बोलियों का खजाना है, फिर वह दूसरों की बोलियाँ कहाँ तक सुने और कहाँ तक गुने? न बोलियों की कमी और न बोलनेवालों की।

* * *

बोलियाँ सभी बोलते हैं और अपने अपने रंग-ढंग की। फिर समय पर बोली जानेवाली बोली अधिक सुहाती है, नहीं तो बेवक्त की शहनाई कौन सुनता है? इस राजनैतिक युग में हमें नई-नई बोलियाँ सुनाई देती रहती हैं। भारतीय बोलियों को तो जाने दीजिये, पिछली सदी से विदेशियों की बोली सुनते-सुनते हमारे कान पक गये हैं और जब से हिन्दुस्तान की आज़ादी का सवाल पैदा हुआ है तब से तो ऐसे सुर और ताल की बोलियाँ ईजाद हुई हैं कि भाषा-विज्ञान का विद्यार्थी डाक्टरेट का कोई थीसिस लिखकर कम से कम पेरिस से तो डाक्टरी प्राप्त ही कर सकता है। आये दिन बड़ी बढ़िया बोलियाँ सुनने को मिलती हैं। जब से ब्रिटिश राज्य की कृपा हुई है तब से तो सचमुच बोलियाँ बेभाव की सुनने को मिलती हैं। अँगरेज स्वयं बढ़िया बोली बोलना जानते हैं। अपनी बोली की ही बदौलत वह आज सारी दुनिया को उँगली पर नचा रहे हैं। कहावत है कि न हर्र लगे न फिटकरी और रंग चोखा। केवल बोली बोलने ही से अगर काम निकल सकता है तो आगे बढ़ने की जरूरत क्या है? आजकल का युग तो केवल वाचालता का है, जो वाचालता में निपुण हुआ, समझिये उसके पौ बारह, अँगरेजों की वाचालता को कौन नहीं जानता? देखा-देखी जो भी उनकी छत्रछाया में रहते हैं वह भी वक्त जरूरत पर काम की बोली बोल लेते हैं। क्यों न बोलें हवा का रुख देखकर जो बोली बोली जाती है उसी की वाहवाही होती है।

* * *

पिछले सप्ताह नरेन्द्र-मण्डल के चांसलर नवाब भूपाल ने बढ़िया बोली बोली है। आपका रुख देश-प्रेम की ओर बढ़ रहा है। आप भारतीय राजनैतिक समस्या के हल में पूरी सहायता देने को तैयार हैं। क्यों नहीं, बोली समय की है, हवा ही ऐसी बही है। नवाब भोपाल ने पहले भी अनेक तरह की बोलियाँ बोली हैं, लेकिन आजकी बोली में कुछ परिवर्तन जान पड़ता है। यह नवाब साहब की परिवर्तित बोली है। अब युद्ध समाप्त हो ही गया है। अँगरेजों ने भी अपनी बोलियों में परिवर्तन कर दिया है। तब फिर हमारे राजा महाराजा क्यों न अपनी बोलियों में परिवर्तन करें? क्या सचमुच नवाब भोपाल ने जो कुछ कहा है, उसका वह सदुपयोग आगे करेंगे? अब तक देशी रियासतें भारतीय राजनीतिक अड़ंगे का कारण बनी रहीं और आज भी बनी हुई हैं, लेकिन अगर भाग्य से वह अब भी राजनैतिक अड़ंगे के हल करने में योग देने को तैयार हो जायें, तब भी गनीमत है लेकिन क्या करें नवाब भूपाल और क्या करें भारत के राजा-महाराजा! वह भी तो परतन्त्र हैं, जिस प्रकार से ब्रिटिश भारत! आज लार्ड वेवेल, लार्ड पेथिक लारेंस तथा मजदूर मंत्रिमंडल के सदस्य जब अच्छी बोलियाँ बोल रहे हैं तब नरेन्द्र मंडल के सदस्य भी अगर वक्त की बोली बोलने लगें तो उचित ही है। बड़े लोग जिस रास्ते पर चलते हैं वही ठीक रास्ता है। हमारे भाग्यविधाता जो चाल चल रहे हैं, महाराजाओं को उसका अनुगमन करना ही चाहिए।

* * *

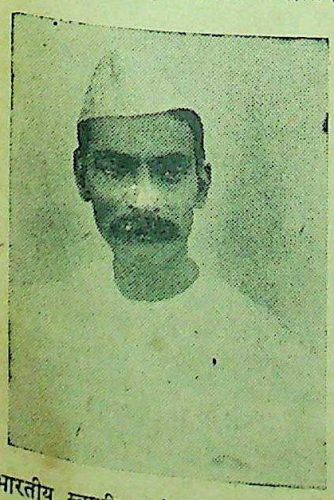

भारतीय स्वाधीनता के उज्ज्वल प्रकाश देशरत्न डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद।

लन्दन में नये राष्ट्र-संघ के निर्माण के लिए जो सम्मेलन हो रहा है, उसका रवैया कुछ अजीबोग़रीब-सा है। अमरीका ब्रिटेन तो क़रीब-क़रीब एक तरह की बोली बोलते ही हैं, किन्तु रूस कभी-कभी कुछ बहक जाता है। विशेषकर सोवियट रूस ब्रिटिश नीति के ख़िलाफ़ भी आवाज उठाने लगता है। आख़िर यह मामला क्या है? क्या तीनों महान राष्ट्रों में एकता नहीं है? राष्ट्रसंघ का निर्माण तो इसीलिये हो रहा है कि उससे संसार में शान्ति और सुरक्षा स्थापित हो, फिर यदि अभी से सिर फुड़ौवल शुरू होगी तो राष्ट्रसंघ का भाग्य विधाता ही के आधीन समझना चाहिए।

* * *

अभी-अभी पिछले दिनों संयुक्तराष्ट्र सम्मेलन में सोवियट और यूक्रेन के प्रतिनिधियों ने यह माँग की कि ग्रीस और इंडोनेशिया में ब्रिटेन ने जो फ़ौजी कार्यवाहियाँ की हैं, उस पर विचार करने के लिये यह मामला सुरक्षा-समिति के सामने लाया जाये। यह खूब रही। ऐसा तमाशा तो अक्सर होता ही रहता है। पिछले दिनों लन्दन में परराष्ट्र मंत्री सम्मेलन में भी कुछ इसी तरह का नाटक हुआ था। मोलोटोव साहब वहाँ से चलते बने थे। ब्रिटेन पोलैंड, ईरान का मामला सुरक्षा-समिति में जब लाने की माँग करेगा तब क्या होगा? क्या इसी तरह लड़-झगड़ कर नया राष्ट्रसंघ बनेगा? और समस्त संसार के राष्ट्रों का फैसला करने की योजना रची जायेगी? जो कुछ भी हो, है यह पूरा नाटक!

* * *

फ्रांस के प्रधान अधिकारी जनरल डिगाल ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया है। क्यों? इसलिये कि फ्रांसीसी असेम्बली इस वक्त कम्यूनिस्ट-वातावरण में फूल रही है। समाजवादीदल तराजू की डांडी बना है। समाजवादी अगर जनरल डिगाल के दल से मिल गये तो डिगाल-दल की जीत हुई और कम्यूनिस्टों की तरफ़ मिल गये तो डिगाल दल ग़ायब। इस वक्त समाजवादियों तथा कम्यूनिस्टों का गठ-बन्धन हो गया है। इसलिए डिगाल-दल गड़पड़ घोटाले में पड़ गया है। ऐसी स्थिति में डिगाल साहब इस्तीफ़ा नदें तो क्या करें? या तो इस्तीफ़ा देकर इज्जत बचाकर अलग बैठ जायें या भिडंत करके अपने साथ अपने दल को ले डूबने के लिए उतारू हो जायें। जनरल डिगाल को पहले ब्रिटेन से और बाद को अमरीका से राजनीति की शिक्षा मिली है। इसलिए वह काफी बुद्धिमान हो गये हैं। उन्होंने अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया है और समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। प्रतीक्षा करने से अच्छा ही फल मिलेगा, यही मित्रों की प्रमुख नीति है। देखना है जनरल डिगाल किस घाट लगते हैं और फ्रांस किन हाथों का कठपुतला बनता है?

* * *

पार्लियामेंटरी प्रतिनिधि दल इस वक्त भारत का दौरा कर रहा है। सबसे मिल-

भारतीय स्वाधीनता की साक्षात पूजनीय प्रतिमा महात्मा गांधी।

जुल रहा है और गरमागरम बातें हो रही हैं। प्रतिनिधि दल के सदस्य भी भारत को स्वतंत्रता दिलाने की हवा में बह रहे हैं। फ़रवरी के प्रथम सप्ताह में प्रतिनिधि दल लन्दन रवाना हो जायेगा, सम्भवतः मिस्टर सोरेन्सन अभी रह जायेंगे। प्रतिनिधियों ने भारत में क्या देखा क्या नहीं देखा, क्या समझा क्या नहीं समझा, यह तो बाद में खुलेगा ही लेकिन स्वतन्त्रता प्राप्ति में वह कितने सहायक होंगे, इसे तो भारतीय समझते ही हैं। अच्छा हुआ, कुछ दिन घूम-फिरकर हवाखोरी तो हुई, यात्रा का आनन्द तो उठाया गया, भारत को स्वतंत्र करने का जबानी जमा खर्च तो किसी क़दर हुआ? आज के युग में यही कम क्या है? बेचारे मजदूर मंत्रि-मंडल के सदस्य कम से कम बात तो करते हैं लेकिन चर्चिल साहब के राज्य में तो कोई चूँ भी नहीं कर सकता था।

* * *

जापानी राजगद्दी का दावेदार एक लकड़हारा बन रहा है। वह ५० वर्ष का है। उसके पास अनेक काग़ज़ पत्र हैं, जिनसे वह साबित कर रहा है कि जापानी गद्दी का वही दावेदार है। उसने अपने दावे की अर्ज़ी अमरीकन जनरल मैकआर्थर के सामने पेश कर दी है। अपने राम की राय में यह तो होना ही था। इसमें नई बात कौन-सी है? विदेशी शासकों ने जहाँ भी पैर जमाया वहाँ फिरके परस्ती शुरू हुई। अभी क्या एक लकड़हारा ही जापानी गद्दी का हक़दार पैदा हुआ है, ईश्वर ने चाहा और अमरीकनों की जापान पर कृपा बढ़ती गई, तो न जाने कितने धुनिया-जुलाहे जापानी गद्दी के दावेदार बन बैठेंगे। यह कोई नई बात नहीं है।

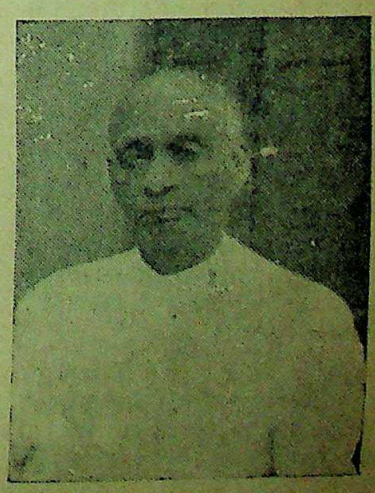

भारतीय स्वाधीनता के चिर जाग्रत प्रदीप सरदार वल्लभभाई पटेल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

स्वाधीनता-दिवस

२६ जनवरी को स्वाधीनता-दिवस का वार्षिक समारोह समस्त देश में मनाया जा रहा है। सबसे पहले सन् १९३० में यह पवित्र दिवस मनाया गया था और उसी वर्ष राष्ट्र ने यह प्रतिज्ञा की थी कि भारत पूर्ण स्वाधीनता प्राप्ति के लिए समस्त अहिंसात्मक उपायों का अवलंबन करेगा। पिछले १६-१७ वर्ष से लगातार 'स्वाधीनता-दिवस' के समारोह होते आये हैं और जनता स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए कांग्रेस-द्वारा घोषित प्रतिज्ञापत्र सार्वजनिक सभाओं में दोहराती आई है। इसके पूर्व भी 'स्वराज्य' प्राप्ति की प्रेरणा लोगों के हृदयों में वेगवती रूप ग्रहण करती जा रही थी किन्तु पूर्ण स्वाधीनता की प्रेरणा राष्ट्र को सन् १९३० से ही प्राप्त हुई। उन दिनों कांग्रेस का अधिवेशन पंजाब में हुआ था। पंडित जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रपति के आसन पर सुशोभित थे। उसी कांग्रेस में रावी-तट पर भारतीय स्वाधीनता की प्राप्ति की घोषणा हुई और जनता को यह संदेश प्राप्त हुआ कि 'स्वाधीनता-दिवस' के समारोह प्रतिवर्ष मनाये जायें और कांग्रेस-द्वारा निर्देशित प्रतिज्ञा दुहराई जाये। उसी आदेश का पालन राष्ट्र प्रत्येक वर्ष जनवरी के अन्तिम सप्ताह में करता है। इसलिए यह दिवस समस्त राष्ट्र का एक पवित्र पर्व और राष्ट्रीय दिवस है।

'स्वाधीनता-दिवस' राष्ट्रीय जागरण तथा स्वाधीनता की प्रतिज्ञाबद्ध राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक है। १६-१७ वर्ष का समय यद्यपि काफी हो गया है, फिर भी इस लम्बे अर्से के बाद भी भारतीय स्वाधीनता का आन्दोलन इतना व्यापक रूप ग्रहण कर चुका है वह कि अब केवल 'स्वराज्य' और वह भी औपनिवेशिक स्वराज्य की सीमा से लाँघ कर बहुत आगे निकल गया है, इसे भारतीय ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय जगत के महान राष्ट्र तथा साम्राज्यवाद का पृष्ठपोषक ब्रिटेन भी भली भाँति समझ गया है। ब्रिटेन अब यह अनुभव करने लगा है कि भारतीय राजनैतिक वातावरण की विक्षुब्धता केवल वैधानिक हेर-फेर से समाप्त होने की नहीं वरन् जब तक ९९ प्रतिशत आगे कदम नहीं बढ़ाया जाता तब तक राजनैतिक अड़ंगे का हल किसी प्रकार भी नहीं निकल सकता। भारत की करोड़ों जनता तथा राष्ट्र के नेताओं को अपने को वर्तमान स्थिति में लाने के लिए जिस महान् त्याग, बलिदान तथा संकटों का सामना करना पड़ा और पड़ रहा है, उसी का यह परिणाम हुआ है कि आज राष्ट्र स्वाधीन वातावरण में साँस ले रहा है और हम यह भी जानते हैं कि यदि स्वाधीनता के आन्दोलन का यही क्रम जारी रहा और त्याग, बलिदान और अहिंसा-द्वारा स्वाधीनता का युद्ध जारी रहा तो राष्ट्र को जल्दी से जल्दी स्वतंत्रता अवश्य प्राप्त होगी, ब्रिटेन स्वयं भारत को स्वतंत्रता प्रदान करेगा और आज की स्वाधीनता की प्रतिज्ञा समस्त राष्ट्र में साकार रूप में दिखाई पड़ेगी।

हाँ, यह बात जरूर है कि जहाँ एक ओर राष्ट्र पूर्ण स्वाधीनता की ओर अग्रसर हो रहा है वहाँ दूसरी ओ साम्प्रदायिकता भी व्यापक रूप ग्रहण करती जा रही है। १५-१६ वर्ष पूर्व इस देश में मुस्लिम लीग ऐसी साम्प्रदायिक जमात की क्या स्थिति थी और आज वह कितनी शक्तिशाली संस्था बन बैठी है, जो राष्ट्रीय-स्वाधीन चेतना के लिए अभिशाप-स्वरूप प्रमाणित हो रही है। साथ ही अन्य साम्प्रदायिक जमातों के भी पर-पखने निकलने लगे हैं, जो स्वाधीनता के मार्ग में बाधक सिद्ध हो रही हैं। किन्तु भारतीय बहुमत अब यह अनुभव करने लगा है कि साम्प्रदायिकता उस विदेशी शक्ति की देन है जो अपना शासन प्रभुत्व त्यागने को तैयार नहीं है। किन्तु यह सब कब तक चलेगा? कब तक साम्प्रदायिकता की आड़ में भारतीय स्वाधीनता-प्राप्ति के मार्ग में बाधायें खड़ी की जाती रहेंगी? इसके सिवा भारतीय स्वयं अब साम्प्रदायिक वातावरण और घेरे से बचने तथा उससे निकल भागने की कला में भी दक्ष, चतुर और अनुभवी हो गये हैं। वह विभाजन और बंदर-बाँट की राजनीति को भली भाँति समझ गये हैं। इसलिए यह निश्चय है कि भारतीय स्वाधीनता में अंततोगत्वा इस प्रकार की बाधायें बेकार सिद्ध होकर रहेंगी।

दूसरा संसारव्यापी युद्ध समाप्त हो गया है। संसार की समस्त प्रगतिशील शक्तियाँ आगे बढ़ रही हैं। शासन-विधानों में महान् परिवर्तन हो रहे हैं, साम्राज्यवादी विचार-धारा का स्थान प्रगतिशील विचार-धारायें ग्रहण करती जा रही हैं। युद्ध के बाद राष्ट्रों का पुनर्संगठन जिस आधार पर हो रहा है, उससे यह प्रमाणित है कि वहाँ भी वास्तविक प्रजातंत्रवादी वातावरण दिखाई दे रहा है। सोवियट रूस की विचार-धारा ने संसार के राष्ट्रों पर एक जादू का-सा प्रभाव डाला है। ब्रिटेन में भी हवा का रुख बदला है, कट्टरपंथीवल के हाथ से मजदूरदल ने शासन-सूत्र अपने हाथ में लिया है। हम यह जानते हैं कि मजदूर-मंत्रिमंडल भारत का कितना हित कर सकेगा, फिर भी हवा का रुख तो बदल ही गया है। कम से कम ब्रिटिश जनता और ब्रिटिश राजनीतिज्ञ भारत की स्वतंत्रता के लिए इच्छा प्रकट करने लगे हैं, हृदय से न सही जबानी ही सही। सच पूछा जाय तो दूसरे महायुद्ध ने समस्त संसार को स्वाधीनता का संदेश दिया है और यही कारण है कि दुनिया के समस्त राष्ट्र शोषक-शासन के विपरीत आवाज उठा रहे हैं। भारत को तो इस युद्ध ने एक अभिनव संदेश दिया है। 'आजाद हिन्द-फ़ौज' तथा 'आजाद हिन्द' संस्था की कल्पना भी किसी ने इस युद्ध के युग में नहीं की थी किन्तु आज भारत में स्वाधीनता प्राप्ति के लिए जैसी तीव्र लहर आई है, उससे यह सिद्ध है कि भारत सामूहिक रूप में स्वाधीनता प्राप्ति का इच्छुक है और जल्दी से जल्दी वह स्वतंत्रता की प्रतीक्षा में है। उसकी आशा की पूर्ति भी होगी, इसमें संदेह नहीं है।

'स्वाधीनता-दिवस' सारे राष्ट्र को यही संदेश दे रहा है कि भारतीय स्वाधीनता की प्राप्ति प्रत्येक भारतीय की अंतरध्वनि है। बिना स्वाधीनता के भारतीय-राजनैतिक कटुता दूर नहीं हो सकती। कांग्रेस की घोषणा है कि अहिंसात्मक नीति के अनुसार ही वह आगे कदम बढ़ाती जायेगी। भारतीय भी इसी मार्ग के पथिक हैं और दृढ़ प्रतिज्ञ हैं कि राष्ट्रीय-स्वाधीनता प्राप्त करेंगे। 'स्वाधीनता-दिवस' भारत का राष्ट्रीय पर्व है। यह पवित्र दिवस हमारी राष्ट्रीयता, स्वाधीनता तथा जनशक्ति का जीता जागता उदाहरण है।

* * *

बंगाल के नये गवर्नर मिस्टर एम० जे०ब्रोज

केन्द्रिय असेम्बली

भारत-सरकार की केन्द्रीय असेम्बली का बजट-अधिवेशन प्रारंभ हो गया। सन् १९४६ में केन्द्रीय असेम्बली के लिए भारतीय राजनैतिक दलों की ओर से जो सदस्य निर्वाचित हुए हैं, कुछ के अतिरिक्त, प्रायः सभी उपस्थित थे। कांग्रेस दल के नेता सुप्रसिद्ध राष्ट्रवादी श्री शरद्चन्द्र बोस चुने गये और मुस्लिम लीग के मिस्टर मोहम्मद अली जिन्ना। असेम्बली के प्रारंभ होते ही प्रोफेसर रंगा के एक कार्य स्थगित प्रस्ताव बिना मत-विभाजन के स्वीकृत हो गया। सभी राजनैतिक दलों के सदस्यों ने प्रस्ताव का समर्थन किया, प्रथम दिन के कार्यवाही की यह बड़ा भारी विशेषता थी। प्रोफेसर रंगा का प्रस्ताव का आशय यह था कि पूर्वी एशियाई छोटे-छोटे राष्ट्रों (इंडोनेशिया, जावा, सुमात्रा, मलाया) की स्वाधीनता को दबाने के लिए ब्रिटिश सरकार भारतीय फ़ौजों का उपयोग क्यों कर रही है और विदेशी सत्ता की स्थापना में क्यों सहायता पहुँचा रही है? सरकार के इसी आचरण की निंदा के लिए प्रोफेसर रंगा का कार्य स्थगित प्रस्ताव स्वीकृत हुआ है। किन्तु सरकार पर इसका प्रभाव कुछ भी पड़ता हुआ नहीं दिखाई पड़ा। उचित भी है, सरकार की यह प्रथा प्राचीन है, उस पर स्तुति का संभवतः कुछ प्रभाव पड़ भी जाता है किन्तु निंदा का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता क्योंकि इसकी वह आदी हो गई है। बिना मत-विभाजन के निंदात्मक प्रस्ताव स्वीकृत हो जाने का अर्थ होता है कि जिनके हाथों में शासन-सूत्र है वह अपने पदों से त्याग-पत्र दे दें किन्तु कौन सुनता है और कोई अपने पदों से क्यों त्यागपत्र दे दें? जब निंदा-स्तुति की ऐसी परम्परा ही चली आ रही है, तब सरकार इन बातों की परवाह क्यों करने लगी? इंडोनेशिया आदि में ब्रिटेन की ओर से भारतीय फ़ौजों का जो उपयोग अब तक किया गया है, और एक स्वतंत्र प्रदेश की स्वतंत्रता को जो आघात पहुँचाया गया है, वह आज की एक अंतर्राष्ट्रीय समस्या बन गई है इसे कौन नहीं जानता कि ब्रिटिश सरकार ने स्वतंत्रता-प्रिय छोटे-छोटे देशों की जनता की भावनाओं के विपरीत आचरण किया है? किन्तु असेम्बली में सर एडवर्ड बेंथल ने इतना कहकर ही संतोष प्राप्त कर लिया है कि पूर्वीय प्रदेशों से भारतीय फ़ौजें शीघ्र वापस बुला ली जायेंगी। अच्छा है, अब भी सही। कुछ होभी तो? इस प्रकार केन्द्रीय असेम्बली की कार्यवाही चालू है। इसमें संदेह नहीं है कि आज की असेम्बली पहले से अधिक सक्रिय और स्वतंत्र वातावरण से ओत-प्रोत है और भारत का बहुत कुछ हित इसके द्वारा भविष्य में होने की आशा भी है किन्तु साम्प्रदायिक दलों तथा सरकारी नामजद सदस्यों ने अड़ंगा न उत्पन्न किया तब, जिसे समय पर सरकार अपने बचाव का हथियार बना लेने में समर्थ हो जाती है। फिर भी लोकपक्ष और उनके हितों की उपेक्षा न होने पायेगी क्योंकि कांग्रेसी भाव और विचारवाले सदस्यों की इस बार असेम्बली में अधिकता है।

* * *

ठाकुर राममनोहरसिंह और श्रीश जी

बंबई के दैनिक 'विश्वमित्र' के संपादक ठाकुर राममनोहर सिंह का हृदय की गति रुक जाने से एकाएक स्वर्गवास हो गया, हिन्दी पत्रकार जगत के लिए यह अत्यन्त दुःखद घटना है। ठकुर राममनोहरसिंह हिन्दी के पुराने और सच्चे श्रमजीवी पत्रकार थे। उन्होंने बड़ी लगन, श्रम और योग्यतापूर्वक पत्रकार-जीवन की जिम्मेदारी वर्षों वहन की थी। हम ठाकुर साहब की स्वर्गीय आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि भेंट करते हैं, साथ ही कुटुम्बियों के प्रति सहानुभूति।

हमें यह जानकर अत्यन्त खेद हुआ कि काशी के सुप्रसिद्ध संस्कृत-हिन्दी के विद्वान् और कवि साहित्याचार्य श्री ईशदत्त शास्त्री 'श्रीश' का केवल २७ वर्ष की आयु में तपेदिक रोग से स्वर्गवास हो गया। श्रीश जी विद्यार्थी अवस्था समाप्त कर साहित्य-क्षेत्र में अवतीर्ण हुए और थोड़े ही समय में उन्होंने योग्यता प्रदर्शित करके विद्वानमंडली में अच्छी ख्याति अर्जित कर ली। उन्होंने कुछ समय तक 'संसार' के संपादकीय विभाग में बड़े ही श्रम से कार्य किया था। उनकी आर्थिक स्थिति सदैव से खराब रही, और हिन्दी तथा-साहित्य-सेवा में भी उन्हें अधिक श्रम करना पड़ा, इसी के परिणाम स्वरूप उन्हें तपेदिक का शिकार बनना पड़ा। लगभग १ वर्ष तक वह बीमार पड़े रहे किन्तु उनकी खबर किसी ने न ली। विशेष कर श्रमजीवी पत्रकारों तथा हिन्दी-सेवियों के विधाताओं को शायद इसकी खबर हीनहीं रही। इसलिए हमें श्रीश जी के स्वर्गवास पर विशेष रूप से हार्दिक क्लेश है। एक नवयुवक विद्वान का निधन, जिसमें, अर्थ का अभाव भी एक कारण है, वास्तव में बड़ा ही कष्टकर है। हम श्रीश जी की स्वर्गीय आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीका के प्रेसीडेंट ट्रुमन का नये राष्ट्र-संघ के निर्माण और संगठन में सक्रिय सहयोग प्राप्त है।

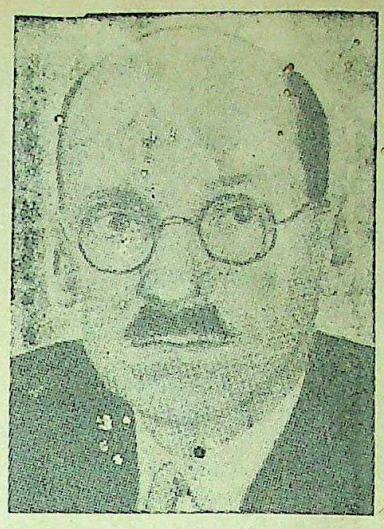

ब्रिटिश मजदूर-मंत्रिमंडल के प्रधान-मंत्री क्लेमेंट एटली संसार में शान्ति स्थापना के इच्छुक हैं।

सोवियट रूस के विधाता स्टेलिन की इच्छा है कि नया राष्ट्र-संघ पुनः जागृत और संगठित हो।

नय राष्ट्र-संघ में एशियाई स्वतंत्र राष्ट्रों के एकमात्र प्रतिनिधि जनरल च्यांगकाई शेक जिनकी साँप और छछूंदर की सी दशा हो रही है।

राष्ट्र-संघ के निर्माण की योजना

क्या संसार का भविष्य शांति और सुरक्षा से सुरक्षित है?

लेखक, श्री लक्ष्मीकांत वर्मा

इस समय लन्दन में समस्त संसार के ५१ राष्ट्रों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन 'नवीन राष्ट्रसंघ' निर्माण करने के लिए हो रहा है। सम्मेलन की योजना से यह स्पष्ट हो गया है कि शांति और सुरक्षा के पीछे सम्राज्यवादी राष्ट्रों का हाथ ही विशेष रूप से रहेगा, ऐसी दशा में संसार के छोटे राष्ट्रों की शांति और सुरक्षा की क्या गारंटी होगी? इस लेख में नवीन राष्ट्रसंघ के निर्माण और संगठन के सम्बन्ध में प्रकाश डाला गया है, जो सामयिक और सुन्दर है।

लन्दन में आयोजित संसार के ५१ राष्ट्रों का संयुक्त सम्मेलन का कार्य-क्रम चल रहा है। अभी-अभी समाप्त हुई लड़ाई की थकावट और भविष्य की आशायें इसी सम्मेलन में अंकुरित हो रही हैं। वस्तुतः फासिस्ट शक्तियों के अन्त हो जाने के बाद मित्र-राष्ट्रों की शक्ति के उचित संगठन पर ही समस्त संसार का भविष्य आधारित है। सम्मेलन के स्वरूप, उसके वैधानिक अस्तित्व और अन्तर्राष्ट्रीय विषयों और अनुशासनों पर ही छः वर्ष के कोलाहल और संघर्ष का परिणाम केन्द्रीभूत किया जा सकता है।

सुरक्षा कौंसिल और एशिया

संयुक्तराष्ट्र-सम्मेलन के चुनाव को देखने से यह पता चलता है कि इसकी रूप-रेखा ही पूर्वीय राष्ट्रों के पक्ष में नहीं है। सुरक्षा-कौंसिल के स्थायी मेम्बरों में से केवल चीन ही पूर्वी देशों में से प्रतिनिधि माना गया है। बाक़ी रूस, अमरीका, इंगलैंड और फ्रांस पूर्ण रूप से पाश्चात्य राष्ट्रों के प्रतिनिध हैं। अस्थायी सदस्यों में भी यदि देखा जाये तो केवल मिश्र को जो मध्य पूर्वीय देशों के प्रतिनिधि स्वरूप लिया गया है उसे छोड़कर ब्रेजील, मेक्सिको, पोलैंड, इंगलैंड और आस्ट्रेलिया भी एशिया या और किसी पूर्वीय राष्ट्र के प्रतिनिधि नहीं कहे जा सकते। इस प्रकार से सुरक्षा कौंसिल में सिवा पाश्चात्य आधिपत्य के और किसी की भी आवाज नहीं पहुँच सकती।

जहाँ तक इस सुरक्षा कौंसिल के अधिकार का प्रश्न है उसे हम निम्न-लिखित शीर्षकों में विभाजित कर सकते हैं—

(१) एटम शक्ति के ऊपर अनुशासन और नियंत्रण रखने का कमीशन।

(२) अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के होते हुए भी इस कौंसिल को पूर्ण अधिकार होगा कि वह किन्हीं दो राष्ट्रों के बीच के झगड़े का फ़ैसला करे और यदि वे राष्ट्र फ़ैसले को स्वीकार करने से इनकार करें तो कौंसिल संयुक्तराष्ट्रों की बैठक बुलाकर उस राष्ट्र के ख़िलाफ़ अनुशासन की कार्रवाई कर सकती है और हथियार या लड़ाई-द्वारा उसके विरोध को कुचल सकती है।

(३) फ़ौजी कार्रवाई करने के पहले फ़ौजी स्टाफ़ की सलाह लेना इस कौंसिल को अनिवार्य होगा। उस स्टाफ़ में रूस, अमरीका, फ्रांस, इंगलैंड और चीन के प्रतिनिधि होंगे।

(४) प्रत्येक सदस्य को केवल एक ही वोट का अधिकार होगा और यदि उन सदस्यों में से कोई स्वयं लड़ाई में भागी होगा तो उसे वोट देने का अधिकार नहीं होगा।

स्वर्गीय प्रेसीडेंट रूजवेल्ट ने जिस स्वतंत्रता की व्याख्या करते हुए सर्वप्रथम "भय और आतंक" से स्वतंत्रता के मूल-आधार पर संसार की शक्तियों को संगठित करने की घोषणा की थी, आज एटम बम के सामयिक आविष्कार से वह भय काफ़ी बढ़ गया है। उसके फल-स्वरूप आज का प्रश्न उतना सामाजिक और आर्थिक ढाँचे की रूप-रेखा पर नहीं है जितना कि इस बात पर है कि उस शक्ति के समुचित विकास को किस आधार पर केन्द्रीभूत किया जाये।

संयुक्त राष्ट्रों के इस संगठन को एटम शक्ति के प्रयोग करने की जैसी घोषणा मिस्टर एटली ने की है यदि उसी आधार पर इसका संगठन किया गया तो संभव है कि आनेवाले आतंकों से संसार की मुक्त हो सके लेकिन इतना होने पर भी एटम-शक्ति के प्रयोग का आधार उस संयुक्तराष्ट्र की संस्था के व्यवस्था और विधान की ईमानदारी पर ही है। यदि संयुक्त राष्ट्रों की उस संस्था में केवल अँग्रेज और अमेरिकन शक्तियों की हाँ में हाँ मिलानेवाले ही रह गये तब तो यदि वह अमरीका या ब्रिटेन के हाथ में रहे चाहे संयुक्त-राष्ट्रों के प्रतिनिधियों के हाथों में दोनों में कोई विशेष अन्तर नहीं मालूम पड़ता। यह इस बात से स्पष्ट हो सकता है कि उस कौंसिल का ढाँचा कैसा होगा?

दूसरा प्रश्न ट्रस्टीशिप का आता है। ट्रस्टीशिप की आयोजना भी इतनी खोखली है कि उसके होते हुए भी साम्राज्यवादी नीति में ब्रिटेन और अमेरिका अपनी निपुणता दिखला सकते हैं। वस्तुतः जिस विचारधारा के अन्तर्गत इन समस्त विभागों का सगंठन किया गया है उनमें और साम्राज्यशाही प्रवृत्तियों में बड़ा अन्तर है। यदि इधर भारतीय, इन्डोनेशियन और ईरान की समस्यायों पर हम गौर करें तो पता चलेगा कि संयुक्त राष्ट्र की यह संस्था एक ओर तो जन-शासन की हामी भरती है और दूसरी ओर खुले दिमाग से काम करने में काफी अड़चनों में बाधक है—अपने शाक्तियों के प्रभुत्व की स्थापना के लिए जो आंतरिक संघर्ष इस समय तीन बड़ों में चल रहा है उस खींचा-तानी में तो भविष्य अंधकारमय ही प्रतीत होता है।

इन्डोनेशिया को समस्या

इस समय विश्व-शक्तियों के सामने उनके प्रजातंत्रवाद को खुले आम चुनौती के रूप में दो समस्यायें यों हीं तत्पर हैं। पहली तो इंडोनेशियन की आजादी और स्वतंत्रता की समस्या है और दूसरी फ़िलिस्तीन की। उन दोनों के विषय में संयुक्त राष्ट्रों की यह सभा कोई विशेष उत्तरदायित्व लेने के लिए प्रस्तुत नहीं दिखलाई पड़ती। यही नहीं अँग्रेज और डच शासन-व्यवस्था की ओर से युद्ध स्थगित करने की जो माँग पेश की गई है उससे यह साफ़ पता चलता है कि इस संस्था का कमजोर विधान लीग आव नेशन्स से कम जर्जरित नहीं है। समझ में तो यह बात नहीं आती कि एटली साहब की घोषणा और आश्वासन के विपरीत यह कौन-सी चाल है जो आज उनसे विश्व की स्वतंत्रता के रूप में डच-साम्राज्य की रक्षा करवा रही है? ब्रिटिश नीति जैसी कि घोषणा द्वारा कई बार दोहराई गई है। एटली साहब ने साफ़-साफ़ इस बात पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि वह डच के मामले में युद्ध के लिए नहीं पड़ना चाहते क्योंकि उनका नैतिक सम्बन्ध कुछ ऐसा है जिसे वह तोड़ नहीं सकते। इस प्रकार अँगरेजी शासन-व्यवस्था की नैतिक निर्धारित नीति का अनुसरण अमरीका भी करेगा ही फिर रूस अकेले की शक्ति कहाँ तक टिक सकेगी।

इस प्रकार से हमारे सामने यह साफ़ हो जाता है कि ब्रिटिश प्रधान-मंत्री-द्वारा जो आश्वासन दिलाया गया है कि संस्था लीग आव नेशन्स से अधिक सशक्त होगी वह सर्वथा ग़लत है और उसके आधार में कोई मूलतत्त्व नहीं है।

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

लगन

लेखक, श्री गंगाप्रसाद पांडेय, एम० ए०

युगों से प्रणय-पंथ में दीप मेरा अचल जल रहा और जलता रहेगा!
तिमिर से भरे विश्व में निश्व लव से अमर साध लेकर मचलता रहेगा!
जलन को सजल प्राण की भेंट देकर
मदिर-ज्योति को लोचनों में सँजोता,
स्वयं गल-पिघल प्यास की मोतियों को
शिखा के करुण कंठ में है पिरोता;
शलभ स्नेह की साधना में निरंतर अथक चल रहा और चलता रहेगा!
विवश चाह को आँसुओं में समेटे
सरस साधकों की कथा है पुरानी,
विफल झर गये बाग़ के पुष्प जितने,
मलयवात कहता उन्हीं की कहानी;
विरह की लता में मिलन का अमृत फल फलता रहा और फलता रहेगा!
फिरे आ रहे स्वप्न सब सत्य होकर
कहीं दूर से बादलों के सहारे,
विकल वेदना बन गई बावली-सी
सफल हो रहे तृप्ति के भाव सारे;
कठिन कंटकों से वृथा प्रेम-पथ को समय छल रहा और छलता रहेगा!
सुरभि तोड़कर शूल की क्रूर कारा
पवन से पुलक प्यार अपना निभाती,
सघनतम गगन की घटा बीच ऊषा
पलक-पाँवड़े प्रात के हित बिछाती;
बँधा बंधनों में मगर मुक्त मानी हृदय पल रहा और पलता रहेगा!
युगों से प्रणय-पंथ में दीप मेरा अचल जल रहा और जलता रहेगा!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दशकव

१९४५ की योरपीय राजनीति

पिछले वर्ष की उथल-पुथल का एक संक्षिप्त लेखा-जोखा

लेखक, श्री रामेश्वरप्रसाद मेहरोत्रा

योरप के लिए १९४५ का वर्ष कैसा रहा? फैसिज्म के विनाश तथा नई शासन-व्यवस्थाओं की स्थापना में योरप उथल-पुथल तथा प्रगतिशील वातावरण की ओर अग्रसर हुआ और हो रहा है, इसमें संदेह नहीं। इस लेख में लेखक ने पिछले वर्ष की योरपीय राजनीति का संक्षिप्त वर्णन किया है, उसका लेखा-जोखा सामने आ जाता है। लेख जानकारी तथा ज्ञातव्यपूर्ण है।

सन् १९४४ ई० के अन्त तक जर्मनों के पैर रूस से उखड़ चुके थे। जर्मनी जिस प्रगति से शुरू में बढ़ता हुआ एक देश से दूसरे देश को गुलाम बनाता आगे बढ़ा था, उससे भी तीव्रगति से उसे परास्त होना पड़ा—और रूस की लाल फ़ौजों ने जर्मनी-साम्राज्य की कल्पना को तहस-नहस कर दिया। दुनिया भी लड़ते-लड़ते थक चुकी थी—चीजों के दाम आसमान पर चढ़ रहे थे। ईरान, चीन और भारत की अवस्था मुद्राप्रसार के कारण काफी खराब हो चुकी थी। इस पर भी १९४४ के अन्तिम दिवस को असें के बाद हिटलर की आवाज़ दुनिया को सुनाई दी। उससे यह कल्पना सहज ही की जा सकती थी कि दुनिया सन् १९४५ में युद्ध से मुक्ति पा सकेगी।

पर रूस की लाल फ़ौज ने असंभव को संभव और दुष्कर को सहज बना दिया। सोवियट की लाल सेना के आगे मग़रूर फ़ैसिस्ट जर्मन न टिक सके। २१ जनवरी १९४५ को लाल सेना ने पहली बार जर्मन इलाक़े में प्रवेश किया। जर्मन जनता-द्वारा लाल सेना का मुक़ाबला करने की अपील ३० जनवरी को हिटलर ने निकाली और ३० मार्च को लाल सेना आस्ट्रिया में घुस गई। २५ अप्रैल को जर्मनी में अमरीकन और रूसी फ़ौजों में सम्बन्ध कायम हो गया और जर्मनी की रीढ़ पूरी तरह से टूट गई।

विजय को देखने के अत्यन्त उत्सुक और द्वितीय महायुद्ध के अमेरिकन नेता राष्ट्रपति रूजवेल्ट जर्मनी को परास्त होते न देख सके। १२ अप्रैल १९४५ को ६३ साल की अवस्था में अकस्मात् उनका देहान्त हो गया।

सनफ्रांसिस्को कान्फरेंस

राष्ट्रपति रूजवेल्ट का देहावसान असामयिक हुआ पर उनकी आयोजित सनफ्रान्सिस्को की असफलता पर एतिहासिक कान्फ्रेंस २६ अप्रैल १९४५ को अमेरिका में शुरू हुई। इस कान्फ़रेंस में संभावित विजित और पराजित देशों में शान्तिमय और सुरक्षा के सम्बन्ध में विचार होनेवाला था। सम्मेलन में सभी मित्र-देशों के प्रतिनिधि शामिल हुए थे। गुलाम भारत में अँगरेजी सरकार ने तीन प्रतिनिधि रामस्वामी मुदालियर, कृष्णाचारी और फिरोज खाँ नून को भेजा। अमेरिकन और ब्रिटिश के साम्राज्यवादी राष्ट्रों ने जर्मनी की हार होते देख अपनी प्रतिक्रियावादी नीति को दुनिया पर थोपना चाहा पर रूस के प्रतिनिधि मोशियो मोलतोव ने इनकी अच्छी छीछालेदर की। भारत के तथाकथित प्रतिनिधियों को भारत का वास्तविक प्रतिनिधि मानने से मोलोटोव ने अस्वीकार करते हुए कहा कि 'वह समय दूर नहीं जब भारत अपना सच्चा नुमायन्दा भेज सकेगा।' इन शब्दों से गुलाम भारत ने यह अनुभव किया कि उसकी स्थिति को भी महसूस करनेवाला कोई इस कान्फ़रेंस में है। सम्मेलन में रूस ने निम्न बातें अत्यन्त जोर के साथ रखीं जिससे उसके प्रति लोगों की काफी सहानुभूति खिंच गई।

(१) सोवियट ने फासिस्ट अर्जेन्टाइना को सम्मेलन में स्थान देने का विरोध किया।

(२) सोवियट ने फैसिस्ट स्पेन की सख्त निन्दा की।

(३) सोवियट नेता मोलेटोव ने भारतीय स्वाधीनता की माँग का वजनदार शब्दों में समर्थन किया।

(४) उपनिवेशों को कुछ बड़े राष्ट्रों के संरक्षण में दे देने का प्रस्ताव (ट्रस्टीशिप की योजना) पर सोवियट ने स्पष्ट और अन्य सभी देशों से अधिक तर्कपूर्ण सम्मति प्रकट की। साथ ही उसने गुलाम देशों के अधिकारों का सबसे अधिक समर्थन किया।

इस सम्बन्ध में मोशियो मोलोटोव के शब्द यह थे "अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए यह आवश्यक है कि तमाम पराधीन देश जल्दी से जल्दी आजाद किये जायँ। पूर्ण राष्ट्रीय स्वाधीनता की ओर बढ़ने में इन देशों की मदद करना हमारा प्रथम कर्त्तव्य होना चाहिए।"

विजयी राष्ट्रों में उपनिवेशों के बाँट देने की योजना का तीव्र विरोध प्रकट करके मोलोटोव ने निम्न-योजना रखी—"उपनिवेशों की स्वाधीनता का दिन समीप लाने के लिए संयुक्त राष्ट्रों की ओर से एक विशेष संगठन की स्थापना की जाय। यह संगठन कोशिश करे कि तमाम राष्ट्र जल्दी से जल्दी आजाद हो जायें और दुनिया में सभी देशों के लिए पूर्ण आत्म-निर्णय के सिद्धान्त की स्थापना हो।" और "इस प्रश्न को पूर्ण करने के लिए सोवियट प्रतिनिधि पूरी-पूरी सहायता करेंगे।"—(फ़्रिस्को कान्फरेंस में मोलोटोव के शब्द)

यह बातें ब्रिटेन और अमेरिका के साम्राज्यशाही और पूँजीशाही के प्रतिकूल थीं। ब्रिटेन तो साम्राज्य-विस्तार की योजना सोच रहा था, अमेरिका बाजारों पर कब्जा करने की चालें चल रहा था। इससे सोवियट की बातें जैसे हवा में उड़ा-दी गईं। मोशियो मोलोटोव चिढ़कर चले गये। कान्फरेंस प्रायः असफल हो गई।

फैसिज्म और उसके पिताओं का अन्त

फ्रिस्को कान्फरेंस में फैसिज्म को दफनाने की कब्र तैयार की जा रही थी उसी समय २८ अप्रैल को इटालियन देश-भक्तों ने फैसिज्म के पिता मुसोलिनी को मिलन के निकट मार डाला। इस प्रकार मानो हिटलर के प्रायः दोनों बाजू टूट गये। ४ मई १९४५ को उत्तरी-पश्चिमी जर्मनी, हालैंड और कई जगहों पर जर्मन फौजों ने सामूहिक रूप से हथियार डाल दिये और तीन दिन बाद ही ७ मई को रीम्स में जर्मनों की बची-खुची फ़ौजों ने भी आत्म-समर्पण कर दिया। दुनिया को यह खबर भी पढ़ने को मिली कि हिटलर मर गया। जो अभी तक रहस्य बना हुआ है।

इस तरह ५ जून को जर्मनी पर नियंत्रण रखने के लिए एक राष्ट्रीय समझौते पर ब्रिटेन, अमेरिका, रूस और फ्रांस के हस्ताक्षर हुए। इस तरह योरप में खून की होली बन्द हुई और जर्मनी पर अस्थायी तौर पर महान् राष्ट्रों का संरक्षण हो गया।

साम्राज्यवादियों की जन-विरोधी चालें

योरप का युद्ध समाप्त हो गया। मग़रूर जर्मनी कुचल डाला गया। युद्ध-काल में—फैसिस्टों की गुलामी के सथम पूर्वी योरप को बहुत बुरे दिन देखने पड़े थे। लाल फ़ौज को बढ़ते देखकर अकाल और भुखमरी से पीड़ित पूर्वी योरप की जनता ने फैसिस्ट जर्मनी के विरुद्ध अपनी आजादी लेने के लिए जगह-जगह छापा-मार फ़ौजें संगठित कीं। वहाँ की जनता में इतने उत्साह की प्रेरणा लाल फ़ौज से ही मिली थी। अतएव जर्मनी के परास्त होने पर—इन देशों पर जो महारौरव से निकलकर खुली हवा में साँस ले सके थे—सोवियट के प्रति सहानुभूति होना स्वाभाविक था। मार्शल टिटो का युगोस्लाविया, चेकोस्लावाकिया, रूमानिया, बुलगेरिया और यूनान आदि का सोवियट के प्रति सहानुभूति बढ़ने का एक कारण और भी यह था कि इन मुल्कों के आर्थिक जीवन पर साम्राज्यवादियों का बहुत बड़ा कब्जा था। साम्राज्यवादी लड़ाई के समय थोड़ा सा भी खतरा देखकर यहाँ से भाग खड़े हुए। इन गरीब मुल्कों को बलदानी बकरे के समान फैसिस्ट शैतानों के बूट के नीचे कुचल जाने दिया—यहाँ की जनता से नहीं वरन् दौलत से मोहब्बत करनेवाले साम्राज्यवादियों को—जनता ने खूब अच्छी तरह से पहचान लिया। अतएव साम्राज्यशाहों की नफ़रत ने सोवियट की तरफ़ इन छोटे-छोटे मुल्कों को झुका दिया।

यह बातें भला साम्राज्यवादी क्यों पसन्द करने लगे? वे भी रोज नई-नई कूटनीतियाँ चलने लगे। रूस को बदनाम किया जाने लगा कि रूस साम्राज्यवादी हो गया है—लेनिन और स्टालिन का सोवियट अब अपना प्रभाव-क्षेत्र बढ़ा रहा है। रायटर ने अपने आक़ाओं की वफ़ादारी के साथ रूस को बदनाम करने के प्रचार में सहायता की। २६ जून फ़्रिस्को-कान्फ़रेंस का अन्तिम घोषणापत्र पढ़ा गया। १७ जुलाई १९४५ को चर्चिल, स्टालिन, ट्रूमन का परामर्श हुआ। १ अगस्त १९४५ में पोट्सडम कान्फ़रेंस बर्लिन में हुई पर त्रिनायकों में मतैक्य न हो सका। थकी हुई दुनिया इन सम्मेलनों से निराश हो गई। दुनिया में साम्राज्यवादी रूस को बदनाम करने लगे कि वह शान्ति नहीं चाहता। वह अपना साम्राज्य बढ़ाने की चालें सोच रहा है। दुनिया में शान्ति क़ायम करने को गोया अपने को ही निस्वार्थ ठेकेदार इन लोगों ने मान लिया। पर दुनिया सत्तर चूहा खानेवाले इन भक्तों को अच्छी तरह से जान चुकी थी। उनके सोवियट-विरोधी प्रचार ने उन्हें 'जनहितैषी' न सिद्ध कर सका।

पर बहुत दिनों तक रूस को कोरी गालियाँ न दे सके। उनका प्रचार लँगड़ा हो गया। अतएव ब्रिटेन के साम्राज्य-वादियों ने सोवियट विरोधी पश्चिमी राष्ट्रों का गुट तैयार करने की सोची। सोवियट विरोध क़ायम रखने के लिए जनतंत्र की दुहाई देनेवाले ब्रिटेन के छोटे-छोटे साम्राज्यवादियों की सहानुभूति बनाये रखने के लिए विचित्र तरह की हरकतें शुरू कर दीं। इंडोनेशिया के जन-आन्दोलन में डच से मिलकर वहाँ की जनता के विरोध का प्रयत्न यह नया और ठोस उदाहरण हैं। पर जनता के प्रबल प्रतिरोध ने साम्राज्यवादियों की तमाम कूटनीतियों को नाकामयाब कर दिया। फ्रांस में वामपक्षियों के प्रभाव में आने से इनकी सारी योजना मिट्टी में मिल गई। साम्राज्यवादियों के इन कूटनीतिक कार्यों से इनमें बड़ी खलबली मच गई।

नए योरप में जन-शक्ति का विकाश

योरप में साम्राज्यवादियों की तमाम छीछालेदर होने का एकमात्र कारण यह था कि योरप की जनता, इस युद्ध में काफ़ी सजग हो चुकी है। तमाम योरप में जो नये चुनाव हो रहे हैं उनसे स्पष्ट हो रहा है कि वहाँ जनवादी ताकतें जोरों के साथ बढ़ रही हैं।

ब्रिटेन में चर्चिल की टोरी पार्टी, और लेबरपार्टी दो प्रमुख राजनीतिक दल हैं। लेबरपार्टी पहले बड़ी प्रगतिशीलता का राग अलापती थी, अतएव ब्रिटेन के चुनाव में टोरियों को मुँह की खानी पड़ी और २६ जुलाई १९४५ को चुनाव-फल प्रकाशित हुआ जिसमें मजदूर दल (लेबरपार्टी) प्रभाव में आई।

फ्रांस में भी जो नया चुनाव हुआ है उसमें कम्युनिस्ट भारी तादाद में चुने गये हैं, वामपक्षियों की शक्ति बहुत असाधारण रूप से बढ़ गई है।

चेकोस्लावाकिया, युगोस्लाविया, बलगेरिया, फ़िनलैण्ड, नार्वे और अल्बानिया में जो चुनाव हुए हैं सर्वत्र वामपक्षियों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। इसमें से

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

जय हिन्द!

लेखक, श्री राजाराम श्रोवास्तव, बी० ए०, एल-एल० बी०

बोल दो 'जय हिन्द' वीरो, बोल दो 'जय हिन्द'
यह उबलते खून की आवाज है, आज इसमें जिन्दगी का राज है।
क़ैद इसमें क़ैदियों की मुक्ति है मुक्ति का यह साज है, अन्दाज है।
एक होकर, एक पथ पर, एक स्वर कर।
बोल दो 'जय हिन्द' वीरो, बोल दो 'जय हिन्द'

तुम न मानो, देश की यह साँस है। दासता की आखिरी उच्छ्वास है।
और पतझर के कुहू की टेर यह टेर दो मधुमास अपना दास है।
द्वेष तजकर, देश भजकर, क्लेश रजकर।
बोल दो 'जय हिन्द' वीरो, बोल दो 'जय हिन्द'।

यह निहत्थों की सजग तलवार है। युद्ध-भेरी की यही ललकार है।
मुक्ति-पथ के यह क़दम का जोश है मृत्यु पर यह जीत की हुंकार है।
साथ बढ़कर, साथ चढ़कर, साथ रणकर।
बोल दो 'जय हिन्द' वीरो, बोल दो 'जय हिन्द'।

भूमि देगा भूमिवालों को यहीं, अन्न, भूखे अन्नदाता को यहीं।
यहीं शोषित दुर्बलों की रीढ़ है यज्ञ की प्रत्येक आहुति है यहीं।
जोश भरकर, होश भरकर, रोष भरकर।
बोल दो 'जय हिन्द' वीरो, बोल दो 'जय हिन्द'।

है यही पथ-गीत राही का सफल। है यही पथ-मीत राही का सबल।
लक्ष मानो पास आकर कह रहा कर्मयोगी देख में कितना सरल।
मुक्ति डर में, मुक्ति घर में, मुक्ति कर में।
बोल दो 'जय हिन्द' वीरो, बोल दो 'जय हिन्द'।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेताजी की ५०वीं वर्ष-गाँठ पर

चिर-विद्रोही श्री सुभाषचन्द्र बोस

त्यागी, बलिदानी और गौरवपूर्ण जीवन की झाँकी

लेखक, श्री श्यामलाल

आजाद हिन्द-सेना तथा राष्ट्रभेदी 'जय हिन्द' नारे के प्रवर्तक चिर-विद्रोही श्री सुभाषचन्द्र बोस आज कहाँ हैं? वह जीवित हैं अथवा स्वर्गवासी हो गये हैं, इसे कौन जाने? सारे देश में गत २३ जनवरी को नेताजी की वर्ष-गाँठ बड़ी धूमधाम से मनाई गई है। इस लेख में नेता जी के बलिदान तथा चिर-विद्रोही जीवन पर सुंदर प्रकाश डालते हुए उनके प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई है। लेख सामयिक और पठनीय है।

चिर-विद्रोही श्री सुभाष बोस नेताजी आज कहाँ हैं?

२३ जनवरी को सुभाष बाबू का सारे देश में जन्म-दिवस मनाया गया है। भारत-वर्ष भर में अनेकों का जन्म-दिवस मनाया जाता है, पर क्या चिर-विद्रोही सुभाष-जैसे व्यक्तित्व आसानी से जन्म-दिवस मनाने के लिए मिलता है? यों तो आज सारा भारत विद्रोही है, गुलामी की शृंखला को चकनाचूर करने के लिए उतारू, पर आजन्म सुभाष ने जिस विद्रोह की ज्वाला जलाई है, वह हमारे लिए एक प्रेरक शक्ति प्रदान करती है। हम इस पुण्य-तिथि पर उनकी अनवरत साधना की एक झाँकी लें।

बचपन और शिक्षा

२३ जनवरी १८९७ को सुभाष बाबू एक सम्पन्न घराने में पैदा हुए। आपके पिता राय जानकीनाथ बोस एक सरकारी वकील थे और कटक में रहा करते थे। कटक में ही आपका जन्म हुआ। आपका पैतृक वासस्थान २४ परगने के कोडालिया नामक ग्राम में था। आप कुल आठ भाई थे। राय जानकीनाथ ने अपने सभी पुत्रों को ऊँची शिक्षा दिलाई। १९१३ में सुभाष बाबू ने मैट्रीकुलेशन कटक से पास किया। इसके बाद प्रेसीडेन्सी कालेज, कलकत्ते में आप दाखिल हुए। इसी समय उनके दिमाग में एक सनक सवार हुई और वे साधु के वेश में घर से किसी गुरु की खोज में निकल पड़े। प्रायः सभी तीर्थों की यात्रा करने के बाद भी जब आपको कोई उपयुक्त गुरु न मिला तो आप लौट आये।

प्रथम विद्रोह

१९१५ में एफ० ए० प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। बी० ए० में दर्शन लिया। कालेज के प्रभावशाली युवकों में आप थे। आपके संगठन-शक्ति की प्रतिभा वहीं से फूट पड़ती है। कालेज के प्रो० सी० एफ० ओटन हिन्दुस्तानी विद्यार्थियों के प्रति अच्छा बर्ताव नहीं करते थे। अपनी अँगरेजियत की शान में भला वे ऐसा क्यों करते। सुभाष इसे क्यों सहने लगे। इसके खिलाफ उन्होंने आवाज उठाई; विद्यार्थियों का संगठन किया; कालेज में हड़ताल हुई; प्रोफेसर साहब की मरम्मत भी की गई और तब जाकर शान्त हुए। भला कालेज के अधिकारी इसे क्यों सहने लगे। उन्होंने सुभाष बाबू को कालेज से निकाल दिया। सर आशुतोष की सहायता से १९१७ में कलकत्ता-विश्वविद्यालय से अध्ययन की आज्ञा मिली और आप स्काटिश चर्च कालेज में दाखिल हुए। प्रथम श्रेणी में दर्शनशास्त्र लेकर आपने बी० ए० किया। १९१९ में आप इंडियन सिविल सर्विस की प्रतियोगिता में भाग लेने विलायत गये, वहाँ उन्हें पूरी सफलता मिली। साथ ही केम्ब्रिज विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान तथा नीतिशास्त्र में आपने बी० ए० भी किया।

संघर्ष-क्षेत्र में

इस समय भारत में जो भीषण आन्दोलन चल रहा था उसमें आप बड़ी दिलचस्पी लेते थे और उसकी हर एक घटना का बड़े ध्यानपूर्वक अध्ययन कर रहे थे। पढ़ाई समाप्त करते ही उनके सामने यह प्रश्न आया कि अब क्या हो, अन्य सिविल-सर्विसवालों की तरह अँगरेजी बूट के नीचे अपनत्व खोकर देशवासियों के गले पर छुरियाँ रेतना या चिर-विद्रोह के ज्वाला-पथ पर चलकर आजन्म तिल-तिल झुलसना। देशबंधु चितरंजन दास की उस समय बड़ी धूम थी। उनकी पुकार पर हजारों नौजवान देश की बलिवेदी पर सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार थे। उनकी अपील युवकों पर बड़ा प्रभाव डालती थी। सुभाष बाबू उससे बहुत प्रभावित हुए और देश की आजादी का संकल्प कर लिया। विलायत से आकर उन्होंने देशबंधु के साथ काम करना शुरू किया।

प्रथम कारावास

आते ही देशबंधु दास ने उन्हें स्वयंसेवक संगठन का काम दिया। १९२१ की बेजवाड़ा कांग्रेस में एक करोड़ स्वयंसेवक और एक करोड़ रुपये एकत्र करने का निश्चय किया गया था। बंगाल में यह कार्य जोर-शोर से किया जाने लगा। सुभाष बाबू स्वयंसेवकों के कमाण्डर थे। सरकार इसे कब सह सकती थी। स्वयंसेवक-संगठन गैर-कानूनी करार दिया गया और सुभाष बाबू दिसम्बर १९२१ में प्रथम बार गिरफ्तार करके अलीपुर जेल में ठूंस दिये गये। उन्हें छः मास की सजा भी दे दी गई।

पीड़ितों की सेवा

जब वे जेल से मुक्त किये गये तब बंगाल में बाढ़ से तबाही मची हुई थी। सुभाष बाबू पीड़ितों की सेवा में जुट पड़े। लोगों ने आपको बाढ़-पीड़ित कमेटी का मंत्री बना दिया। उसमें आपने अपूर्व संगठन-शक्ति और कार्य-क्षमता का परिचय दिया।

स्वराज्यपार्टी का धारा में

देश में इसी समय चुनाव की चर्चा जोरों से चल पड़ी। देशबंधु दास ने स्वराज्य-पार्टी की स्थापना कर चुनाव लड़ना तय किया था। सुभाष बाबू देशबंधु के अनुयायी थे, अतः वे भी इस कार्य में जी-जान से जुट पड़े। चुनाव-कार्य की सफलता के लिए 'फारवर्ड' नामक एक पत्र पार्टी की ओर से निकाला गया और उसके सम्पादन का भार सुभाष बाबू पर ही पड़ा। चुनाव में बहुत बड़ी सफलता मिली। सुभाष बाबू ने अपने काम का संपादन पूरी योग्यता से किया।

कारपोरेशन के एक्जिक्यूटिव

इस समय कलकत्ते के कारपोरेशन का चुनाव हुआ। देशबंधु दास ने उसमें भी भाग लिया। उन्हें सफलता मिली और वे मेयर बनाये गये। सुभाष बाबू को उन्होंने एक्जिक्यूटिव आफिसर नियुक्त किया। अपने पद पर आप कुछ ही महीने रहे, पर इन कुछ ही महीनों में आपने जिस शासन-शक्ति और व्यवस्था-शक्ति का परिचय दिया वह बहुत कम लोगों में मिलेगा। अनेक सुधार किये गये और जनता का उनसे बड़ा हित हुआ। उन्होंने एक लोकप्रिय शासक का आदर्श उपस्थित कर दिया।

त्रिपुरी कांग्रेस के सभापति की हैसियत से नेताजी एक गाँव का निरीक्षण कर रहे हैं।

दूसरा आक्रमण

इसी समय बंगाल में कुछ आतंकवादी कार्य हुए। लार्ड लिटन की सरकार ने दमन का भीषण चक्र चलाया और सुभाष बाबू भी गिरफ्तार किये गये। लोगों ने इसका बड़ा विरोध किया। २५ अक्टूबर १९२४ को गिरफ्तार कर अलीपुर में कुछ दिन रखे गये। उसके बाद आप मांडले में जेल भेज दिये गये। भारतीय आन्दोलन के इतिहास में मांडले जेल का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। हमारे सभी गण्य-मान्य नेताओं ने उसका आश्रय प्राप्त किया है। सुभाष बाबू वहाँ अस्वस्थ रहने लगे। जेल-अधिकारियों के दुर्व्यवहार के विरोध में उन्होंने अनशन भी किया था। देश भर में तहलका मच गया। नजरबंदी का चारों ओर से घोर विरोध किया गया। उनका स्वास्थ्य इतना कमजोर हो गया कि उठने-बैठने में भी कष्ट होने लगा। बहुत आन्दोलन करने पर सरकार ने दो पाबन्दियाँ लगाकर सुभाष बाबू को जेल से बाहर करने की इच्छा प्रकट की—एक तो सुभाष बाबू जेल से निकलकर सीधे योरप चले जायें और दूसरा वे वहाँ तब तक रहें जब तक क्रिमिनल-ला अमेण्डमेन्ट एक्ट खतम न हो जाय। सुभाष ने इसे मानने से इनकार कर दिया। देश से बाहर अनिश्चित काल के लिए जीवन व्यतीत करने से जेल में घुल-घुलकर मरना उन्होंने पसन्द किया। उन्होंने अपना निर्णय अपने बड़े भाई शरत्चन्द्र बोस के पास सूचित करते हुए लिखा था—"मैं तो यह सोचता हूँ कि मैं भारत के विगत पापों का एक छोटे से रूप में प्रायश्चित्त कर रहा हूँ और इसी प्रायश्चित्त से मुझे आनन्द मिल रहा है।" अन्त में उनकी चिन्ताजनक स्थिति से सरकार लाचार हो गई और १७ मई १९२७ को उसने सुभाष बाबू को बिना शर्त मुक्त कर दिया।

कलकत्ता कांग्रेस में

१९२८ का कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन देश के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यहीं यह अल्टिमेटम दिया गया था कि सरकार एक वर्ष के अन्दर 'डोमिनियन स्टेट्स' की हमारी माँग स्वीकार कर ले। यह अधिवेशन हुआ भी था बड़ा शानदार। इसके कमाण्डर थे सुभाष बाबू। सुभाष बाबू की कार्य-कुशलता, प्रबन्ध पटुता और शासन-शक्ति का कलकत्ता कांग्रेस में अद्भुत परिचय देश को मिला। देश के सभी पत्रों और व्यक्तियों ने उस समय सुभाष की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस अधिवेशन की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना, जो सुभाष बाबू से सम्बन्ध रखती है, वह है 'नेहरू-कमेटी की रिपोर्ट के आधार पर बनाये गये मूल प्रस्ताव में संशोधन।' उस संशोधन को सुभाष बाबू ने ही पेश किया। उसमें कहा गया था कि हमारा उद्देश्य पूर्ण स्वराज्य ही रहे। हम तत्काल के लिए 'डोमिनियन स्टेट्स' भले ही स्वीकार कर लें। 'पूर्ण स्वतंत्रता' के समर्थन में इस संशोधन पर काफी बहस हुई। सुभाष बाबू ने एक जोरदार भाषण इसके समर्थन में दिया। आपने कहा था कि "आप कह सकते हैं कि हमें इस पूर्ण स्वतंत्रता के प्रस्ताव को स्वीकार कर क्या मिलता है? मैं कहूँगा कि हमें बहुत कुछ मिलता है। हम एक नई मानसिक प्रवृत्ति को ग्रहण करते हैं और हमें चाहिए ही क्या? हमारी पराधीनता का कारण तो हमारी गुलाम मनोवृत्ति ही है।"

मूल प्रस्ताव को गांधी जी ने पेश किया था। वोट लेने पर ९७३ सुभाष बाबू के संशोधन के पक्ष में और १३५० गांधी जी के मूल प्रस्ताव के पक्ष में आये। यदि गांधी जी का व्यक्तित्व मूल प्रस्ताव के पीछे काम न करता तो संशोधन पास हो जाता। इस संशोधन का महत्त्व इसलिए बढ़ जाता है कि अगले वर्ष जवाहरलाल जी की अध्यक्षता में लाहौर-कांग्रेस में यही 'पूर्ण स्वतंत्रता' की घोषणा का मूल प्रस्ताव बन जाता है।

पहला कदम

१९३० के आन्दोलन में सुभाष बाबू ने पहला कदम उठाया। सुभाष बाबू के कार्यों को सरकार सदा आशंका की दृष्टि से देखती रही है। उन्हें 'आतंकवादी', 'षड्यंत्रकारी' और 'क्रांतिकारी' आदि न जाने क्या-क्या कहकर दुनिया के सामने प्रकट करती रही है और उन पर वार करती रही है। २३ जनवरी १९३० में इन्हें राजद्रोह

शेष पृष्ठ १० पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी में 'साहित्यिक सगाइयों' का अभाव क्यों ?

पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी की कुछ नवीन योजनायें

लेखक, श्री शिवकुमार विद्यालंकार

अखिल भारतीय पत्रकार-सम्मेलन के नये सभापति पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी अधिवेशन से लौटकर पिछले दिनों दिल्ली गये थे। हिन्दी साहित्य-सभा के तत्त्वावधान में चतुर्वेदी जी ने अपने कुछ विचार व्यक्त किये और योजनायें प्रस्तुत कीं। उन्हीं का उल्लेख इस लेख में किया गया है। 'साहित्यिक सगाई' का नया प्रयोग भी हिन्दी लेखकों के लिये विचारणीय है।

हिन्दी-साहित्य-सभा नई दिल्ली की ओर से मिण्टो रोड क्लब, नई दिल्ली में एक हिन्दी-गोष्ठी का आयोजन किया गया। अखिल भारतीय हिन्दी पत्रकार सम्मेलन के सभापति पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी अध्यक्ष थे।

अपने भाषण में पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी ने हिन्दी-साहित्य-सभा नई दिल्ली के सामने अनेक उपयोगी और महत्त्वपूर्ण योजनायें पेश कीं। आपने कहा—

"भाई सत्यदेव विद्यालंकार ने आप लोगों को मेरा परिचय कराते हुए अभी यह बताया कि कलकत्ता तथा शान्ति-निकेतन में हिन्दी-भवन तैयार कराने में मैंने थोड़ी-सी सेवा की है। एक बार शान्ति-निकेतन के पान्थ-निवास की सैर करते हुए श्री हजारीलाल जी से मेरी यह बात-चीत हो गई कि इस आश्रम में एक हिन्दी-भवन होना चाहिए। हमने स्थान भी देख लिया था। उन दिनों हलवासिया ट्रस्ट की ओर से स्वर्गीय दीनबन्धु ऐन्ड्रूज अनुसन्धान का कार्य करते थे। तीन वर्ष के अनन्तर उस स्थान पर हिन्दी-भवन स्थापित हो गया।

"शान्तिनिकेतन के हिन्दी-भवन की तरह दक्षिण भारत में सत्यनारायण कुटीर भी ऐसा ही स्थान है। इन दोनों स्थानों का भ्रमण करने के बाद मेरे दिल में यह विचार उत्पन्न हुआ कि कलकत्ता में भी एक हिन्दी-भवन अवश्य होना चाहिए। मैंने देखा कि कलकत्ता के अनेक धनी-मानी महानुभाव आर्यसमाज आदि संस्थाओं को खूब दान देते हैं, किन्तु कलकत्ता में हिन्दी-भाषा के सिद्धान्तों को ठहराने के लिए कोई स्थान ही नहीं। क्यों न ऐसे दानियों से इस शुभ कार्य के लिए चन्दा लिया जाय। मेरे इस विचार को कलकत्ता के श्री दुर्गा-प्रसाद खेतान ने बहुत पसन्द ही नहीं किया, वरन् इसे कार्यान्वित करने का बीड़ा भी उठा लिया। उन्हीं के प्रयत्नों का यह फल है कि इस शुभ कार्य के लिए १४ हजार की रक़म जमा हो चुकी है।"

"साहित्यिक सगाई"

आपने कहा—"राजनैतिक, सामाजिक व साहित्यिक दृष्टि से दिल्ली का महत्त्व-पूर्ण स्थान है। यहाँ स्थापित कोई भी साहित्यिक संस्था दिल्ली के सांस्कृतिक जीवन के निर्माण में बहुत बड़ा काम कर सकती है। किन्तु ऐसी संस्थाओं के पास सबसे बड़ी कमी उन लगनवाले व्यक्तियों की हुआ करती है जो 'साहित्यिक सगाई' करा सकें। 'साहित्यिक सगाई' से अभिप्राय यह है कि एक व्यक्ति ऐसा होना चाहिए कि जो विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं का लगन-वाले और सेवाभावी धनपतियों के साथ सम्पर्क स्थापित कर सके। सारनाथ बौद्ध-विहार के स्वर्गीय अनागारिक धर्मपाल का नाम आपने सुना होगा। एक बार अमरीका की मेरी फ़ोल्टर, जो स्वामी विवेकानन्द के उपदेशों से अत्यधिक प्रभावित हो चुकी थी, धर्मपाल के पास आई और बोली कि मुझे क्रोध बहुत आता है। इसका कुछ इलाज होना चाहिए। बौद्धधर्म में अक्रोध के बारे में काफ़ी कुछ कहा गया है। बौद्ध भिक्षु धर्मपाल ने मेरी फ़ोल्टर को क्रोध शमन की विधि बता दी। उसका क्रोधी स्वभाव जाता रहा। इससे खुश होकर उसने कोलम्बो और भारत की महाबोधि सोसाइटी के लिए ८ लाख रुपया भिक्षु धर्मपाल को दान दिया।

अंजुमने-तरक्की-ए उर्दू के संचालक डाक्टर अब्दुलहक़ से हमारा कितना ही मतभेद क्यों न हो; किन्तु मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि हिन्दी को उन जैसे व्यक्तियों की परम आवश्यकता है। मेरा विश्वास तो यह है कि सरकारी खुनकियों से हम अपने हिन्दी आन्दोलन में प्रगति नहीं कर सकते। राज्याश्रय पाकर हिन्दी नहीं पनप सकती। हिन्दी को तो डाक्टर अब्दुल-हक़ जैसे व्यक्तियों की आवश्यकता है।

द्वार सबके लिए खुला हो

आपने कहा—"मेरा विश्वास है कि साहित्य-मंदिर का द्वार सबके लिए खुला होना चाहिए। हम हिन्दी-साहित्य-सेवियों को अन्य भाषाओं के सभी मनीषियों के साथ समय-समय पर मिलते रहना चाहिए। मैं जानता हूँ कि आज से कुछ दिन पूर्व एडवर स्नो, मैडम क्यूकी और आयर्लैण्ड के प्रसिद्ध कला-समालोचक जयपुर में विद्यमान थे। किन्तु खेद है कि हिन्दी का कोई भी साहित्य-सेवी उनसे नहीं मिला। श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने गुजराती साहित्य की अभिवृद्धि के लिए १८ लाख रुपया जमा किया था। हमने ले-देकर उन्हें हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का सभापति तो बना दिया। किन्तु हम में से एक भी व्यक्ति ने उनसे यह पूछने का कष्ट नहीं किया कि हम हिन्दी-साहित्य-सेवी हिन्दी-प्रचार में उनके अनुभवों से कहाँ तक लाभ उठा सकते हैं। क्या हम हिन्दीवालों में 'हीनता की भावना' इतनी अधिक घर कर गई है कि हमें दूसरों से मिलते भी संकोच होता है?"

हिन्दी-सभा से

आपने कहा—"मुझे यह जानकर खुशी हुई कि हिन्दी-साहित्य-सभा नई दिल्ली ठीक दिशा में काम कर रही है। लेकिन उसे दक्षिण-भारत की हिन्दी-प्रचारिणी-सभा के समान काफ़ी प्रगतिशील होना चाहिए। मद्रास जानेवाले किसी भी विदेशी साहित्यिक अथवा धनपति से काम लेने में उक्त संस्था काफ़ी प्रवीण है। उक्त संस्था के सर्वेसर्वा श्री सत्यनारायण से एक बार मेरी भेंट हुई थी। उन्होंने मेरे सामने यह सुझाव पेश किया था कि दिल्ली में तामिल व तैलगू का एक केन्द्र होना चाहिए। हिन्दी-साहित्य-सभा नई दिल्ली को चाहिए कि वह उन्हें आमंत्रित करे और यह विचार करे कि वह उनके स्वप्न पूरा करने में कहाँ तक सहायता कर सकती है।

"आप जानते ही हैं कि महापंडित राहुल सांकृत्यायन और डाक्टर वासुदेवशरण अग्रवाल ऐसे हिन्दी-साहित्य-सेवी जिधर हो जायं, उस ओर का पलड़ा भारी हो जाता है। आपको यह जानकर खुशी होगी कि डाक्टर वासुदेवशरण अग्रवाल विशेष काम से दिल्ली आ रहे हैं। आप उन्हें आमंत्रित करके एक गोष्ठी कीजिए। वे आपको अधिकारपूर्वक यह बता सकेंगे कि मिथिला, भोजपुर और काश्मीर की भाषा क्या है?"

हिन्दी-उर्दू लेखकों का सम्मेलन

आपने कहा—"हिन्दी-साहित्य-सभा नई दिल्ली को चाहिए कि वह समय-समय पर हिन्दी और उर्दू के लेखकों का सम्मेलन बुलाये। इन दोनों भाषाओं के लेखकों, कवियों व साहित्य-सेवियों के पारस्परिक सम्पर्क से दोनों भाषाओं की वृद्धि हो जायगी दोनों भाषाओं के सेवकों को मालूम हो जायगा कि अमुक विषय पर कितनी पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं? अन्य भाषाओं की किन पुस्तकों का उर्दू अथवा हिन्दी में उल्था हो चुका है। इस तरह विचारों के पारस्परिक आदान-प्रदान से दोनों भाषाओं को लाभ होगा। ऐसी साहित्यिक चर्चाएँ हिन्दी-भवन न होने पर भी कहीं भी की जा सकती हैं। आप जानते ही हैं कि वियना में साहित्यिक चर्चा चाय-भवन में ही हो जाया करती है।

'रहीम-भवन'

आपने कहा—"मुझे यह जानकर खुशी हुई कि हिन्दी-साहित्य-सभा नई दिल्ली एक हिन्दी-भवन बनाने का आयोजन कर रही है। कोई जरूरी नहीं कि इस भवन का नाम 'हिन्दी-भवन" ही हो। हिन्दी के सुविख्यात कवि रहीम की समाधि दिल्ली में ही है। यदि आप चाहें तो अपने भवन का नाम 'रहीम-भवन' रख सकते हैं। यदि आपको इस कार्य के लिए धन की आवश्यकता हो तो आप लोग लखनऊ के श्री नवलकिशोर से मिल सकते हैं। वे आजकल दिल्ली में आकर बस गये हैं। वे अपने पुरखों के नाम 'गुप्त-भवन' तैयार करने की फ़िक्र में हैं। यदि आप चाहें तो आप ही उनकी सहायता से अपने प्रस्तावित भवन का नाम 'गुप्त-भवन' रख लें और उसमें आपका जो पुस्तकालय हो उसका नाम 'रहीम पुस्तकालय' रख सकते हैं।

"आप चाहें तो अपनी ओर से भ्रमणशील पुस्तकालय स्थापित कर सकते हैं।

"आपको चाहिए कि आप विश्व के प्रगतिशील विचारकों के सन्देश मँगावें। कुमारी आशा या हैरीसन आजकल भारत आई हुई हैं। आपको चाहिए कि आप उनका सन्देश अवश्य मँगावें।"

साहित्यिक यात्राएँ

आपने कहा—"हिन्दी-साहित्य-सभा नई दिल्ली की ओर से आप लोग साहित्यिक गाथाओं का आयोजन करें। आप जानते ही हैं कि रहीम को अपनी एक-एक कविता पर छः-छः लाख रुपया मिलता था। सौभाग्य से उस रहीम की समाधि दिल्ली में ही है। आप चाहें तो अपने किसी कवि अथवा लेखक का जन्म-दिवस उस समाधि पर मना सकते हैं। यदि आप चाहें तो रहीम का जन्म-दिवस भी उसी की समाधि पर मनाया करें।"

रिपोर्टिङ्ग

अन्त में आपने कहा—"मुझे खेद है कि हिन्दी की गतिविधि का 'रिपोर्टिंग' बहुत कम होता है। अभी हाल ही में श्री देवदास गांधी से मिला था। मैंने उनसे यह निवेदन किया था कि वे अपने 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में हिन्दी-प्रचार की विभिन्न ख़बरों को स्थान अवश्य देते रहें। मैंने उनसे पूछा था कि देश-विदेश की अनेक ऊट-पटाँग ख़बरों को यदि अँगरेजी अख़बारों में स्थान मिल सकता है तो इस बेचारी हिन्दी ने क्या क़सूर किया है कि उसके प्रचार का स्थान ही नहीं मिलता? यही वजह है कि 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में मेरा सम्पादक के नाम पत्र प्रकाशित हो सका।

"स्वयं हिन्दीवाले भी हिन्दी के प्रचार का रिपोर्टिंग करने में उपेक्षा दिखाते हैं। अभी उस दिन हमने 'वीर अर्जुन' कार्यालय में हिन्दी के अनेक पत्रकारों के साथ विचार-विनिमय किया। किन्तु उसके सम्बन्ध में दिल्ली के हिन्दी पत्रों में जो कुछ छपा वह एकदम शोचनीय था। अतएव स्वयं हिन्दीवालों को भी अपनी बातों के रिपोर्टिंग में काफ़ी मुस्तैद होना चाहिए।

"अन्त में मैं इतना ही कहूँगा कि हिन्दी-साहित्य-सभा अब तक काफ़ी आशाप्रद काम करती रही है और भविष्य में भी करती रहेगी।"

दर्ज़ी-विज्ञान

यह पुस्तक सरल हिन्दी में शिल्प-कला के सुप्रसिद्ध एवं विद्वान् प्रोफेसर द्वारा प्रकाशित हुई है। सिलाई-कटाई सीखने के लिए, यह सचित्र और वैज्ञानिक ढंग की नई पुस्तक है। इसके ३ भाग हैं। तीनों भागों का लागत मूल्य सिर्फ़ ४॥) है।

पता—हिन्दू टेलरिंग कालेज
पीलीभीत

बटन ! बटन !! बटन !!!

कोटों और कमीजों के अच्छे बटनों की एजेंसी के लिए लिखें।

हंसराज इन्डस्ट्रीज़ लिमिटेड,
अमृतसर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौकरानी मारफ़ा जिसके लिए अकीनीव को लांछित होना पड़ा।

कहानी

चुगलख़ोर

लेखिका, कुमारी एम० तकम्मा मालिक, सरस्वती

मनुष्य की मनःस्थिति बड़ी विचित्र है, कभी कभी जब वह कोई ऐसा कार्य कर बैठता है जो उसके अंतःकरण के विपरीत होता है तब वह यह निर्णय नहीं कर पाता कि क्या करे, कैसे प्रायश्चित्त करे और अपनी आत्मा को किस प्रकार संतोष दे? समाज से भयभीत होकर अपने आपके संतोष के लिए वह जो कुछ करता है, उसी से उसे धोखा खाना पड़ता है। सुप्रसिद्ध कलाकार ने इस कहानी में मानव मनःस्थिति की भावनाओं का चित्रण बड़ी सुन्दरता तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टि से किया है, जो पठनीय है।

अध्यापक अकीनीव ने अपनी बेटी का विवाह एक दूसरे अध्यापक से कर दिया। विवाह की दावत धूम-धाम की थी। लोगों ने गाया, नाचा और अन्य आमोद-प्रमोद में भाग लिया। सफेद वस्त्रधारी नौकर-चाकर इधर-उधर दौड़ रहे थे। बाहर से भी शब्द-कोलाहल सुनाई दे रहा था, भूखे प्यासे-भिखरी दल का। वे ललचाई आँखों से खिड़की से होकर भीतर की ओर देख रहे थे। उनका सामाजिक बन्धन भीतर आने से उन्हें रोक रहा था।

रात की दावत की तैयारी कैसे हो रही है, यह जानने के लिए अकीनीव धीरे-धीरे रसोईघर में घुस आया। छत की तरफ काला धुआँ रेंग रहा है। चारों ओर तरकारियों की सुगन्ध फैल रही थी। अकीनीव के मुँह में पानी भर आया। चूल्हे में तरकारियाँ, मछली, माँस आदि खौल रहे हैं। दो टेबुलों पर पकी हुई चीजें, थालियाँ वगैरह सजाकर रखी थीं। वहाँ की मोटी नौकरानी--मारफा--आपने स्थूल-काय तथा लाल मुख एवं आँखों को लेकर--टेबुल के चारों ओर सामान लेती-रखती दौड़ रही थी।

गीले ओंठों में जीभ फेरकर अकीनीव ने पूछा--"अरी मारफा! वह बढ़िया मछलियाँ कहाँ रखी हैं? हाय! कैसी सुगन्धि आ रही है, मैं भी जरा देखूँ?"

मारफा ने दीवार के पास पड़े बेंच के पास जाकर, एक थाली के ऊपर से ढक्कन धीरे से उठाया मानो वह किसी पारसी सुन्दरी का मुखावरण (पर्दा) हटा रही हो। एक मोटी मछली उस थाली में पड़ी थी। अकीनीव की आँखों में खुशी झलकने लगी। उँगलियाँ हवा में ताल बजाने लगीं। एक बार ओंठ चबाया--एक धीमी आवाज निकली और एक मधुर ध्वनि।

"हा, हा! एक चुंबन का शब्द। तुम किसे चूम रहे हो जी, मारफा को?" किसी ने बगलवाले कमरे से पुकारा। दूसरे पल में उपाध्याय 'वानकिन' का आविर्भाव हुआ। "अजी! तुमने यहाँ किसे आलिंगन करके चूमा? वाह! मारफ़ा को! तुम तो बड़े चालाक हो। इस रात को, इस स्त्री के साथ तुम यहाँ?"

"मैंने किसी को भी चूमा नहीं" अकीनीव ने डरकर कहा। "किसने कहा मैंने चुंबन किया? अरे बेवकूफ, यह पकी हुई मछली देखकर लालच से जरा-सा पानी मेरे मुंह में आ गया, उसे मैं पी गया, वही आवाज थी।"

"अब ऐसा क्यों न कहो।" कनखियों से देखकर हँसता हुआ वानकिन बोला। उसी भाव मंगी से वह चला भी गया। अकीनीव का मुख पीला पड़ गया। "कौन जाने वह सियार अब क्या क्या बकेगा? सारी दुनिया में वह बेवकूफ झूठी बात फैला देगा" अकीनीव ने सोचा।

ड्राइंगरूम में अकीनीव वापस आया तो उसके मुख पर मलिनता छाई हुई थी। उसने वानकिन की ओर ध्यान से देखा कि वह कुर्सी में पड़े-पड़े इन्सपेक्टर की बेटी से धीरे-धीरे कुछ कह रहा है। वह खिल-खिलाकर हँस रही है।

"बेशक, वह मेरी ही बात है" अकीनीव ने सोचा, "बदमाश! मेरी निन्दा कर रहा है, हँसी उड़ा रहा है। बेवकूफ लड़की ने विश्वास भी कर लिया होगा। देखो, उसकी हँसी! नहीं, इस तरह छोड़ना मूर्खता है। अच्छी बात है। ऐसा उपाय करूँगा कि उसकी बात का कोई भी विश्वास न करे। उससे पहले ही बता दूँ तो उसकी बात पर सब हँसी उड़ाकर उसे बेवकूफ़ बनायेंगे।

अकीनीव एक अतिथि के पास जाकर कहने लगा--"थोड़ी देर पहले मैं रसोई-घर में यह देखने गया था कि सब प्रबन्ध ठीक है कि नहीं। तुमको मछली पसन्द है न? है, मैं जानता हूँ। मैंने ऐसी एक मछली मँगाई है जो बिरली ही इधर मिलती है। पाँच या छः फ़ीट लम्बी है। पकी हुई मछली देखकर सच कहता हूँ, मेरे मुंह में पानी भर आया। म पी गया तो एक आवाज हुई। वाह, वह मछली देखनी ही चाहिए। पीने की आवाज--'शि'--सुनकर वानकिन कमरे में घुस आया। रास्कल! 'हा हा, हू हू' करके पूछने लगा--"तुम किसे चूम रहे हो, मारफ़ा को?" जरा सोचो तो, यहाँ की नौकरानी, हाय, छिः कैसी बदसूरत है, गन्दी है। वह एक भूत है, बन्दर है नहीं मेंढक है। वह कहता है, मैंने उसे चूमा, उसकी आँखें नहीं है? बेवकूफ़ कहीं का।"

"बेवकूफ़ कौन है जी?" एक दोस्त ने प्रवेश करते ही प्रश्न किया।

'लो, बताता हूँ, हम वानकिन की एक मजेदार कथा कह रहे थे। उसने मुझसे पूछा मारफ़ा को चूमा क्यों?" फिर अकीनीव शुरू से कहानी कहने लगा। "मुझे उसकी बदमाशी पर हँसी आ रही है। मारफा को चूमने से अच्छा अपने कुत्ते को चूमना है।"

इतने में मिस्टर मासडा पास आकर पूछने लगा, "क्यों मिस्टर अकीनीव, कुत्ते को क्यों चूमते हो?"

"नहीं जी, हम वानकिन की बात कह रहे थे। रसोईघर में मैं मारफ़ा के पास खड़ा था, मछली देखने के लिए! वानकिन ने आकर पूछा--तुमने मारफ़ा को आलिंगन करके क्यों चूमा? कैसा प्रश्न है? उस बदमाश की खोपड़ी में कीचड़ है, उस बन्दर को मैं चूमूँगा? उसके कारण मैं पसीने से तर हो गया।"

'क्यों पसीने से तर कैसे हो गये मिस्टर अकीनीव?" मिसेस स्टेफिन ने कुर्सी खींचकर पास बैठते हुए पूछा--

"वही वानकिन। वह कहता है मैंने नौकरानी को चूमा। क्यों मेरी पत्नी नहीं है? उस राक्षसी को चूमने से अच्छा एक बतख को चूमना है।" अकीनीव बोला।

"बतख को क्यों चूमें?" अखबार से आँख उठाकर चश्मेवाले बूढ़े ने पूछा--अकीनीव ने वही कहानी दुहरा दी।

आध घंटे के भीतर सब लोगों ने अकीनीव की कहानी जान ली। सभी छः फ़ीट की मछली, अकीनीव, मारफा आदि की बात पर चर्चा करते रहे। अकीनीव ने सोचा--

"लो, अब वह चुगली करे! सभी लोग कहेंगे, बस करो जी, हम जानते हैं अकीनीव ने मारफ़ा को चूमा नहीं, मछली देखकर पानी निगल गया था।" कोई कहेंगे, "बस बस, हम सब कुछ जानते हैं, तुम अपना काम देखो।"

अकीनीव ने आश्वासन की साँस ली। रोज से अधिक शराब पी डाली। वधूवरों को शयनागार में भेजकर वह अपने रूम में चला गया। बिस्तर पर गिरते ही एक बच्चे के समान सो गया। सबेरा हुआ, आँखें खुलीं तो पिछली रात की वह बात ही भूल गया था। पर करे क्या? मनुष्य की आशा के विरुद्ध ही ईश्वर करता है। अकीनीव ने बड़ी चतुरता एवं होशियारी से जिस खतरे से मुक्त होने के लिए प्रबन्ध किया था उसका उलटा ही फल हुआ। उसकी विकट ज़बान ने उसे धोखा दिया।

एक हफ़्ता बीत गया। अकीनीव एक दिन क्लास ले रहा था तो विशिकिन डायरेक्टर ने उसे अपने पास बुलाकर कहा--"मिस्टर अकीनीव, माफ़ करो, मुझे कहने की जरूरत नहीं, तो भी मेरा कर्तव्य है, कहना ही पड़ता है। यहाँ बड़ी अफवाह है कि तुम और तुम्हारी नौकरानी में बड़ी मैत्री है। यह 'परसनल' बात है, तो भी मेरा कर्त्तव्य है उपदेश देना। तुम उससे मेल-जोल रखो, आलिंगन करो, चूमों, पर इस तरह खुल्लम-खुल्ला कुछ भी करना उचित है क्या? तुम एक मान्य व्यक्ति हो न? अध्यापक हो? कई सौ विद्यार्थियों के पथ-प्रदर्शक हो, यह न भूलना।"

अकीनीव बरफ की तरह ठंडा हो गया। सौ बिच्छू काटते, तो भी इतनी ग्लानि और दर्द न होता! किसी प्रकार घर की तरफ निकला। अकीनीव को लगा कि छोटे-बड़े, अमीर-गरीब, स्त्री-पुरुष सभी उसे ताक रहे हैं। घर पहुँचा तो और पहाड़ टूट पड़ा।

"चाय पीते क्यों नहीं?" पत्नी ने पूछा।

वह कुछ भी न बोल सका।

"आप क्या सोच रहे हैं? प्रेम-पीड़ा है? क्या मारफा के लिए आहें भर रहे हैं? मैं सब कुछ जान गई, पहले से ही जानती हूँ। अब लोगों ने मेरी आँखें खोलीं, नीग्रो स्त्री उस ताड़का का हाथ अकीनीव के

अध्यापक अकीनीव अपनी बदनामी की परेशानी में पड़ा हुआ कुछ सोच रहा है। गाल पर पड़ा। बेचारा कुर्सी से उठा, सीधे वानकिन के घर पहुँचा। भाग्य से वानकिन घर पर ही था। "अरे रास्कल, बेवकूफ़! लोगों के सामने मुझे कीचड़ में नहलाकर खड़ा किया है क्या? क्यों मेरे ऊपर झूठा कलंक लगा रहा है?" अकीनीव ने गरजकर पूछा।

"कलंक? तुम यह क्या कह रहे हो जी?" वानकिन ने पूछा।

"तुम्हीं ने ढिंढोरा पीटकर कहा है कि मैंने उस समय--नौकरानी को चूमा है--मारफा को चूमा है। तुमने ही कहा है न? बेवकूफ़, बदमाश, घातक?"

वानकिन ने आश्चर्य के साथ अकीनीव की ओर ताका। उसकी नसें उठ खड़ी हुईं। आकाश की ओर आँख उठाकर वह बोला--"काश, तुम यह क्या बकते हो। भगवान् की कसम, तुम्हारे बारे में मैंने एक शब्द किसी से भी नहीं कहा है। यह झूठ है तो मेरी आँखें फूट जायें।"

वानकिन की बात पर अकीनीव को विश्वास आया। उसने सोचा वानकिन ने यह झूठी बात फैलाई नहीं, तब फिर कौन है? उसने अपने आपसे प्रश्न किया। अपने सभी परिचितों का एक-एक करके स्मरण किया। पर यह जान नहीं सका कि किसने बात फैलाई! आखिर उस बेचारे ने फिर छाती पीटकर पूछा--"फिर कौन है?"*

* चेखोव की एक कहानी का सारांश।

स्वयं चलनेवाला ६ फायर का पाकेट पिस्तौल

(लाइसेन्स की कोई आवश्यकता नहीं)

इसकी बनावट और आवाज ठीक असली पिस्तौल जैसी है। चोर, डाकू और खूंख्वार जानवरों से रक्षा करने के लिए एक ही उपाय। इस तरह के खतरा आने पर फ़ायर कीजिये। आवाज और चमक दुश्मन को डरा देती है। एक ही बार में ६ फायर। मूल्य २५ कारतूस के साथ नं० (१०) का ८), नं० (२०) का ९) और नं० (३०) का १०) रुपया। ५० कारतूस के साथ स्पेसल १२) और सबसे अच्छा १४) है। हर एक आर्डर के साथ १ डेमी कलाई घड़ी और एक लाइट मुफ़्त। डाक और पैकिंग खर्च १।)।

विक्टोरिया वाच कम्पनी (डी० एस०) पोस्ट बक्स नं० १२,२१६, कलकत्ता (एच० जी०)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिर-विद्रोही श्री सुभाषचन्द्र बोस

(पेज ७ का शेष)

के जुर्म में पकड़कर एक साल की सजा दे दी। राष्ट्रपति जवाहरलाल ने इस समय कहा था—"बंगाल ने रास्ता दिखा दिया है, हमें बराबर आगे बढ़ते जाना चाहिए।"

जेल में अधिकारियों ने उन्हें सदा तरह-तरह से सताया है। सुभाष बाबू कहीं भी किसी प्रकार के अन्याय को सहने के अभ्यस्त नहीं रहे हैं। वे उसका तुरंत विरोध करते रहे हैं और निर्भय होकर करते रहे हैं। इसी समय जेल के कुछ अधिकारियों ने मछुआ बाजार बम-केस के कुछ बंदियों को पीटा। सुभाष ने उसका विरोध किया। फलतः उन पर भी मार पड़ी और बेहद पड़ी।

२६ जनवरी १९३१

जेल से मुक्त होने के बाद सुभाष बाबू बरहमपुर जाते हुए फिर पकड़े गये और ७ दिन की सजा काट आये। २६ जनवरी से दो दिन ही पहले आप जेल से छूटे थे। उन्होंने स्वाधीनता-दिवस खूब धूम से मनाने का कार्य-क्रम निश्चित किया। उस दिन का कार्यक्रम बना कि 'आक्टरलोनी स्मारक गृह' पर राष्ट्रीय झंडा फहराया जाय। सर्वप्रथम एक दल महिलाओं और स्वयंसेवकों का गया। वे गिरफ़्तार कर लिये गये। भीड़ बढ़ती गई। कई जुलूस आये और विभिन्न मार्गों से। एक में सुभाष बाबू भी थे। वहाँ के गोरे सार्जेंट बौखला पड़े और लगे सबों को पीटने। सुभाष बाबू पर भी मार पड़ी। और भीषण मार पड़ी वे घायल होकर गिर पड़े। उसी समय गिरफ़्तार किये जाकर जेल में बंद कर दिये गये। एक सप्ताह बाद वे छोड़ दिये गये।

११ नवम्बर ३१ को वे फिर गिरफ़्तार किये गये और कुछ ही समय बाद छोड़ दिये गये।

देश निर्वासन

लार्ड विलिंगडन के दमन के दौर में आप फिर ३ जनवरी ३२ में गिरफ़्तार कर अनिश्चित काल के लिए जेल में बंद कर दिये गये। वहाँ वे अस्वस्थ हुए। उनकी हालत चिन्ताजनक हो गई, पर सरकार उन्हें छोड़ने को तैयार न हुई। बहुत आन्दोलन करने पर सरकार ने उन्हें, बगैर सगे-संबंधियों से मिलने दिये, योरप भेज दिया। २३ फरवरी ३३ को वे बम्बई से रवाना कर दिये गये। योरप में सरकार ने न तो उनकी चिकित्सा का ही प्रबन्ध किया और न कुछ खर्च ही दिया।

योरप में सुभाष बाबू ने कई महत्त्वपूर्ण कार्य किये। भारत के बारे में लोगों को परिचित कराया और जगह-जगह भारतीयों का संगठन किया। कई कान्फ्रेंसों में भाग लेते रहे, कई देशों का चक्कर लगाया, बड़े-बड़े नेताओं से मिले और उन्हें भारत की समस्याओं से परिचित कराया।

भारत और फिर योरप

इस बीच सुभाष बाबू के पिता बीमार पड़ गये। उनकी हालत चिन्ताजनक हो गई, पर सरकार ने उन्हें आने की इजाजत नहीं दी। इसकी कुछ भी परवाह न कर ४ दिसम्बर ३४ को सुभाष बाबू वायुयान-द्वारा कलकत्ते पहुँच गये। घर पहुँचते ही सरकार ने उन्हें घेर लिया, किसी से मिलने नहीं दिया। यह प्रतिबंध भी लगा दिया गया कि वे घर की सीमा से बाहर नहीं जा सकते। आज्ञा का उल्लंघन करने पर सात साल की सजा की धमकी दी गई। सुभाष बाबू के पिता चल बसे। सुभाष बाबू को सरकारी हुक्म मिला कि वे एक सप्ताह में भारत से बाहर चले जायँ। मुश्किल से उन्हें एक महीना रहने दिया गया। उसके बाद फिर वे योरप चले गये।

भारतीय संघर्ष की जब्ती

योरप में उन्होंने एक पुस्तक लिखी—'इण्डियन स्ट्रगल'। भारत में वह किताब नहीं आ सकती थी। सरकार ने उस पर रोक लगा दी। उसकी विदेशों में बड़ी प्रशंसा की गई और बहुत खपत हुई। उसमें उन्होंने भारतीय आन्दोलन का सुन्दर वर्णन किया है।

कारागार या निर्वासन

सुभाष बाबू भारत में रहना चाहते थे, पर सरकार कहती थी कि भारत में रहना हो तो जेलों में रहो, नहीं तो योरप में ही। सुभाष बाबू के लिए यह कठिन हो गया कि अनिश्चित काल के लिए योरप में रहा जाय। उन्होंने स्वदेश की जेल में रहना पसन्द किया और योरप से चल पड़े। ८ अप्रैल १९३६ को वे बम्बई पहुँचे। वहाँ पहुँचते ही सरकार ने उन्हें गिरफ़्तार कर लिया और जेल भेज दिया। इस सरकारी कार्य से देश में बड़ा क्षोभ फैला, सारे देश में १० मई १९३६ को सुभाष-दिवस मनाया गया, पर सरकार विचलित नहीं हुई। उनका स्वास्थ्य धीरे-धीरे जेल में खराब होने लगा और जब उनकी हालत चिन्ताजनक हो गई तो १७ मार्च ३७ को सरकार ने उन्हें छोड़ दिया। देश ने उनकी रिहाई पर बड़ा हर्ष मनाया। अच्छे होते ही वे अपने काम में जुट पड़े, पर स्वास्थ्य अच्छा न होने के कारण विशेष कुछ नहीं कर पाते थे।

लन्दन में

डाक्टरों की सलाह से उन्हें फिर योरप जाना पड़ा। योरप में उन्हें इँगलैंड नहीं जाने दिया जाता था। इस बार उन्हें वहाँ जाने की भी आज्ञा मिल गई। वहाँ उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीति का भंडाफोड़ कर दिया। लोगों के सामने अँगरेजी हथकंडों का नग्न रूप खींचकर रख दिया। बहुतों से मिले-जुले और भारतीयों का संगठन भी किया।

काँटों के सिंहासन पर

जब आप लन्दन में ही थे तभी १६ जनवरी १९३८ को हरिपुरा कांग्रेस के राष्ट्रपति चुन लिये गये। वहाँ के शाही स्वागत और ठाट-बाट की चर्चा यहाँ व्यर्थ है। वर्ष भर के अन्दर अपने सारे देश का दौरा किया और कांग्रेस को मजबूत बनाया। युवकों ने आपके राष्ट्रपतित्व को इतना पसन्द किया कि अगले वर्ष १९३९ में भी आपको ही राष्ट्रपति का पद दिया गया। दुर्भाग्यवश महात्मा गांधी तथा कुछ अन्य नेताओं से आपका मतभेद हो गया और लाचार आपको अपने पद से इस्तीफा दे देना पड़ा। उसके बाद आपने 'अग्रगामी दल' की स्थापना की और अलग एक साम्राज्य-विरोधी मोर्चा बनाने की कोशिश की।

महासमर के दौरान में

१ सितम्बर १९३९ में महायुद्ध का प्रारंभ हो गया और आपने इस अवसर से लाभ उठाकर देश को आजाद करना चाहा, पर जल्दबाजी के कारण आपको अपने कार्यों में कुछ विशेष सफलता न मिल सकी। फिर भी आप अपने प्रयत्नों में लगे रहे। सुभाष बाबू के इन प्रयत्नों को सरकार कैसे सह सकती थी। उसने जुलाई १९४० में उन्हें गिरफ़्तार कर लिया। जेल में सुभाष बाबू ने देखा कि अब लड़ाई भर जेल से मुक्ति पाना मुश्किल है। अतः उनकी सारी योजनायें धूल में मिल जायँगी। बहुत सोच-विचार के बाद जेल से बाहर निकलने के लिए उन्होंने अनशन प्रारंभ कर दिया। यह अनशन ६ दिन तक चलता रहा। सारे देश में तहलका मच गया। सरकार सुभाष बाबू का जेल में मरना पसन्द नहीं कर सकती थी, अतः लाचार होकर एक महीने बाद फिर गिरफ़्तार करने का निश्चय कर सरकार ने उन्हें छोड़ दिया। उनके घर पर पुलिस का कड़ा पहरा लगा रहा और वे जेल में न रह घर पर ही एक प्रकार से नजर बंद किये गये।

महाभिनिष्क्रमण

इसी भीषण नजरबंदी से ब्रिटिश सरकार के सारे किये-कराये पर पानी फेरकर सुभाष बाबू न केवल अपने घर से निकल गये, बल्कि भारतभूमि से ही बाहर चले गये। २६ जनवरी १९४१ को जब यह खबर लोगों को मिली तो सारा देश हर्ष और आश्चर्य से भर गया।

देश से बाहर जाकर उन्होंने अपनी मातृभूमि की आजादी के लिए कहाँ क्या किया, कैसे जर्मनी और वहाँ से जापान पहुँचे, कैसे आजाद-हिन्द-फ़ौज और आजाद हिन्द सरकार की स्थापना की और कैसे उनके आह्वान पर लाखों नौजवान मरने के लिए तैयार हो गये, कैसे बात की बात में लाखों की वर्षा होती थी, यह उनके साहस, त्याग, तपस्या और कर्मण्यता की खून से लिखी अद्भुत कहानी है जिसे सुनकर आज सारा भारत १९४२ के बाद हुए दमन की मूर्च्छा से न केवल जाग पड़ा है, बल्कि इतना तैयार भी हो गया है कि पूरी आजादी की प्राप्ति के लिए आज वह सिंह की तरह दहाड़ रहा है।

वह जीवित हैं या नहीं ?

८ अगस्त १९४५ को जापान का पतन हो गया। १८ अगस्त को लाचार नेता जी को भी आजाद हिन्द सरकार के आत्म-समर्पण का प्रबंध करने बैंकाक से टोकियो के लिए रवाना होना पड़ा। विभिन्न सूत्रों से प्राप्त समाचारों का सार है कि उसी दिन फारमोसा द्वीप में उनका वायुयान जमीन से टकरा गया और वे घायल होकर मर गये। २३ अगस्त को टोकियो से इसकी घोषणा अधिकृत रूप से की गई। शाहनेवाज, सहगल और हबीबुर्रहमान का भी कहना है कि सचमुच नेता जी सुभाषचन्द्र बोस चल बसे। इतने प्रमाणों के बावजूद भी न केवल आजाद हिन्द-सेना के सैनिक बल्कि हमारे सर्वश्रेष्ठ नेता महात्मा गांधी भी कहते हैं और बार-बार कहते हैं कि सुभाष बाबू जीवित हैं और फिर भारत आवेंगे।

आज सारा देश आतुरता के साथ उस पुण्य-तिथि की प्रतीक्षा कर रहा है जिस दिन चिर-विद्रोही, आजादी की आग में तिल-तिल घुलनेवाले, वीरवर नेता जी सुभाषचन्द्र बोस भारत की भूमि में फिर पधारेंगे। आज उनके जन्म-दिवस के अवसर पर हम उनके दिये हुए 'महामंत्र' 'जय हिन्द' और 'दिल्ली चलो' के नारे को गली-गली में गुंजित कर उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि प्रकट करते हैं।

भारत सरकार के रजिस्टर्ड तथा पेटेन्ट
भारत कं० रजिस्टर्ड शिकोहाबाद यू.पी.
व्यापार में धोके और नक़लसे बचने के लिये ट्रेड मार्क, व लेबिल, डिज़ाइन, संस्था तथा दवाओं आदि के नाम की रजिस्ट्री नये एक्ट में हमारे द्वारा कराइये रजिस्ट्री नियम मुफ़्त मगाइये

सिर्फ उत्तम दवा ही आपके फेफसों के लिये गुणकारी है
सिरोलीन 'रचि'
शरदी और खांसी के लिये

"If it's ELGIN it's good!"
अगर यह एल्गिन है तो यह श्रेष्ठ है
टर्किश व हुक्काबेक टावेल, डस्टर, ड्रिल, टिबल, धोतियाँ, साड़ियाँ, चादरें जालीदार शार्टिंग, तकियेके कपड़े, स्नान की चटाइयाँ, रंगहीन फलालेनी सूती कपड़ा, जालियां, पट्टियां और बिस्तरे की चादरें सबके लिए एल्गिन।
सरकारी कपड़ा (गति) नियंत्रण आर्डर के कारण हम यू. पी., पंजाब, बिहार और बंगाल के मुकामों में सिर्फ गांठों की तादाद में ही थोक माल, व अधिकांश मालगाड़ी द्वारा ही भेज सकते है। भारतवर्ष के किसी भी हिस्से मे पोस्ट पार्सल या छोटे पार्सलो के रूपमें पेसेन्जर द्वारा निर्यात पूर्णतया बंद है। अतः फुटकर ग्राहक (सिर्फ इन चार प्रांतो मे ही) अपने नगरके व्यापारियों से ही हमारा माल लेने की चेष्टा करें।
दी एल्गिन मिल्स कं. लिमिटेड कानपूर
प्रमुख विक्रेता (थोक)
मेसर्स रूपनारायण रामचंद्र, ओल्ड जनरलगंज, कानपूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

श्री मनमथनाथ गुप्त का जेल में सातवाँ वर्ष

काकोरी केस के ख्यातिनामा नवयुवक श्री मनमथनाथ गुप्त का जेल में यह सातवाँ वर्ष चल रहा है। लड़ाई के प्रारम्भ में ही सरकार ने आप पर दफ़ा १२४ का मुक़दमा चलाकर दो साल की सजा दे दी थी। बाद में आपको जेल के अन्दर ही नजरबन्द कर लिया गया। लड़ाई कब की खतम हो गई पर आपको अभी तक रिहा नहीं किया गया। जेल में आपका ५० पौंड वज़न घट गया है। आपका स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन गिरता ही जा रहा है। इस समय फ़तेहगढ़ सेंट्रल जेल में आपको कैलसियम के इंजेक्शन लगाये जा रहे हैं।

सुप्रसिद्ध लेखक तथा राजनैतिक बन्दी श्री मनमथनाथ गुप्त फ़तेहगढ़ सेन्ट्रल जेल में नजरबंद हैं।

आपके स्वास्थ्य की चिन्ताजनक ख़बर को पाकर आपके मित्रों को बहुत चिन्ता हो रही है। श्री मनमथनाथ गुप्त ने जेल में साहित्य-रचना को ही अपने मनोरंजन का साधन बना रखा है। अब तक वह १० हज़ार पृष्ठ से ज्यादा का साहित्य जेल में लिख चुके हैं। ऐसे साहित्यिक, नवयुवक और होनहार का जेल के सींकचों में बन्द रहना दुर्भाग्य ही की बात है जब कि सरकार आज़ाद हिन्द-फ़ौज के वीर अफ़सरों तक को रिहा कर रही है। प्रजातन्त्र का दम भरनेवाली सरकार आज यदि इन राजबन्दियों को रिहा कर देगी तो उसका तख्त नहीं उलट जायेगा। सरकार के पास उसकी रक्षा को सी० आई० डी०—फ़ौज—पुलिस काफ़ी है। क्या सरकार डरती है? हमारी समझ में श्री मनमथनाथ गुप्त राजदेवसिंह, प्रोफ़ेसर जयचन्द्र विद्यालंकार, श्री जयप्रकाशनारायण, श्री डाक्टर राममनोहर लोहिया इनको शीघ्र ही रिहा कर सरकार अपनी उदारता का परिचय देगी?

—अद्वैतकुमार गोस्वामी

वृंदावन

* * *

बुन्देलखण्ड-प्रांत-निर्माण

हरपालपुर उत्तरी-पश्चिमी बुन्देलखंड के रियासती क्षेत्र में रेल, मोटर, डाक, तार और लोगों से मिलने-जुलने की सुविधाओं की दृष्टि से अच्छा छोटा-सा स्थान है। बुन्देलखंड के रियासती कार्यकर्त्ता सन् १९४०-४२ में यहाँ मिलते-जुलते रहे और सुयोग मिलने पर बुन्देलखंड सेवा-संघ का अधिवेशन भी यहीं करने का निश्चय किया गया। बुन्देलखंड की रियासतों में टीकमगढ़ के बाद राजनैतिक सभा, सम्मेलन और भाषण की स्वतंत्रता का द्वार हरपालपुर में ही खुला। अपने थोड़े से राजनीतिक जीवन में यहाँ की रियासतों में ऐसे जितने उत्सव-समारोह मैंने देखे, उनमें हरपालपुर का यह अधिवेशन सबसे आगे पाया गया।

इस अधिवेशन से बुन्देलखंड-प्रान्त-निर्माण की बात जन-साधारण तक पहुँचाने में कुछ सहायता मिली। अधिवेशन में आए हुए प्रस्ताव, बहस और स्वतंत्र भाषणों पर विचार करने से यह स्पष्ट है कि लोगों की दिलचस्पी बढ़ रही है। यह बुन्देलखंड की उन्नति का शुभ लक्षण है। प्रस्तावों के परिणामस्वरूप में इसी नतीजे पर पहुँचा कि इससे संघ की शक्ति की अपेक्षा जिम्मेवारी ही अधिक बढ़ी है। निकट-भविष्य में ऐसी बढ़ी हुई जिम्मेदारियों को पूरा करनेवाले नये सहयोगियों और सहायता के स्रोतों के मिलने की आशा मुझे कम दिखाई देती है।

बुन्देलखंड के सभी जिलों को मिलाकर प्रान्त बनाने के बोझ को ले चलने में जिलावासी हिचक रहे हैं, और रियासतों में जनतांत्रिक शासन कायम करने के लिए रियासती जनता का दम फूल रहा है। हमें जन-साधारण की शरण में जाकर शक्ति बटोरनी होगी। बुन्देलखंड-प्रान्त-निर्माण के सिद्धान्त, उसके लाभ तथा बुन्देलखंड एकीकरण की रचनात्मक योजना का जनता में प्रचार और प्रसार करना होगा। जैसे-जैसे जन-शक्तियों का एकीकरण होता जायेगा, हमारी प्रान्त निर्माण की समस्यायें हल होती जायेंगी। इसी आशा और दृष्टिकोण से हमें आगे बढ़ते जाना चाहिए। जो चीज आज बुद्धिगम्य प्रयत्न करने से नहीं हल होती वह कल व्यावहारिक अवश्य बन सकेगी।

प्रान्त-निर्माण के सिलसिले में अधिवेशन के सभापति श्री तिवारी जी मौजूदा स्थिति में भी प्रान्त-निर्माण की योजना और उद्घाटनकर्त्ता श्री सेठ गोविन्ददास जी का बुन्देलखंडी जिलों को मिलाकर तत्काल प्रान्त बना लेने का सुझाव मुझे मौलिक, व्यावहारिक और सामयिक जान पड़ा। भाव-प्रधान जनता की बहुलता और प्रान्त-निर्माण के सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहलुओं का कम प्रचार होने से उक्त सुझाओं का तत्काल सदुपयोग नहीं किया जा सका। अब मैं आशा करता हूँ कि बुन्देलखंडवासी उन पर आगे भी ठंढे दिमाग से विचार करते रहेंगे।

कुंडेश्वर (टीकमगढ़) —प्रेमनारायण खरे

* * *

प्रांतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

गत ता० ६ जनवरी '४६ के "देशदूत" में काशी के श्री श्रीनाथ पाण्डेय का "प्रान्तीय सम्मेलन कब हो?" नामक पत्र छपा है। श्री श्रीनाथ पाण्डेय ने कहा है कि युक्त-प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन मई मास में हो, मैं उनके मत का समर्थन करता हूँ। वास्तव में, अधिवेशन के अप्रैल मास में होने के कारण कितने ही हिन्दी-प्रेमियों को उसमें सम्मिलित होने के सुख से वंचित रहना पड़ता है। युक्त प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अधिकारियों को चाहिए कि अधिवेशन अप्रैल मास में न करके मई मास में करें। प्रान्तीय सम्मेलन के अधिवेशन पर प्रायः केवल "साहित्यि-परिषद्" की ही योजना बनाई जाती है। क्या ही अच्छा हो, यदि "बाल-साहित्य-परिषद्" अथवा "नवयुवक-साहित्य-परिषद्" का अधिवेशन करके हिन्दी-प्रेमी बालकों एवं नवयुवकों को उत्साहित किया जाय। परिषदों में केवल १२ अथवा १४ वर्ष से लेकर २५ वर्ष तक के बालक अथवा नवयुवक भाग लें, तथा साहित्यिक-विषयों पर निबंध-पाठ करें। "परिषद्" का सभापति भी बाल-साहित्य-प्रेमी ही हो। आशा है युक्त-प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अधिकारीगण इस पर भली भाँति विचार करेंगे।

काशी

१६ जनवरी ४६ —केशव, बी० ए०

* * *

फिल्मी गीत कैसे?

आधुनिक चलचित्रों में अभिनयकला के साथ ही श्रेष्ठ गीतों का अपमान हो रहा है। "महाकवि कालिदास" नामक चित्र इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। "महाकवि कालिदास" नामक चित्र के गीत में वह श्रेष्ठता नहीं, जो वस्तुतः होनी चाहिए। महाकवि कालिदास के मुख से एक कविता ऐसी कहलाई जाती है जिसे सुनकर हृदय को चोट लगती है। कविता इस प्रकार है—"कालिदास। खाते घास।"

गीतों का भी, किसी चित्र के उठाने अथवा गिराने में, बहुत हाथ रहता है। गीतों की दृष्टि से हम एक दो चित्रों को छोड़कर कोई भी सफल चित्र दिखाई नहीं पड़ता। यहाँ तक कि "हमराही" जैसा सफल चित्र भी गीतों की दृष्टि से उतना सफल नहीं हो सका है, जितना कि उसे होना चाहिए था। हाँ, कथानक, संवाद एवं अभिनय की दृष्टि से वह चित्र सफल है।

काशी

१७ जनवरी ४६ —श्रीनाथ पाण्डेय

* * *

गंगा जी में मिलनेवाली गंदी नालियाँ

श्रीमान् चेयरमैन, म्यूनिसिपल बोर्ड प्रयाग के नाम १५०० नागरिकों ने निम्न अपील भेजी है—

नाग वासुकी से लेकर मोरी तक दस-बारह गन्दे पानी की नालियाँ पतितपावनी श्री गंगा जी में मिलकर उसके जल को अपवित्र कर रही हैं। इससे हम लोगों के धार्मिक भावों को बहुत आघात पहुँच रहा है और इसका प्रभाव हम लोगों के स्वाथ्य पर भी बहुत बुरा पड़ा है। भारत के कोने-कोने से यात्री यहाँ आकर इलाहाबाद म्युनिसिपल बोर्ड की इस लापरवाही की निन्दा करते हैं। हम प्रयाग-निवासी आपसे नम्रतापूर्वक निवेदन करते हैं कि आप श्री गंगा जी में इन नालियों-द्वारा गंदा पानी न गिरने देने का शीघ्र प्रबन्ध कराकर प्रयाग के इस कलंक को दूर कीजिए।

आठ वर्ष पहले हम लोगों ने इस सम्बन्ध में आपका ध्यान आकर्षित किया था, परन्तु यह जानकर दुःख होता है कि बोर्ड ने इस सम्बन्ध में अभी तक कुछ भी नहीं किया और अब यह भी सुनने में आया है कि इलाहाबाद के लिए जो नई ड्रेनेज योजना बनाई गई है उसमें इस गंदे पानी को श्री गंगा जी में न गिरने देने का कोई प्रबन्ध नहीं है। हम लोग आपसे आग्रह-पूर्वक निवेदन करते हैं कि इलाहाबाद की नई ड्रेनेज योजना में श्री गंगा जी में गंदा पानी न गिरने देने को प्रथम स्थान देने की कृपा करें।

—आपके ही नगर-निवासी

(१५०० नगर-निवासियों के हस्ताक्षर)

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

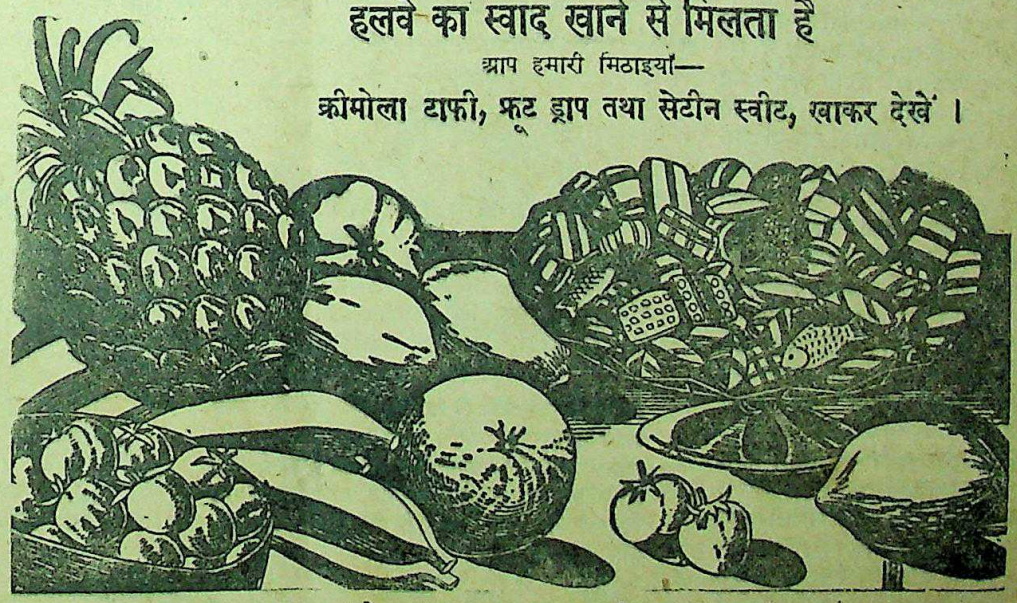

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

ईंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुप्रसिद्ध निर्माता और निर्देशक श्री विजय भट्ट

फिल्मी-जीवन, साहित्य और कला पर सुन्दर इंटरव्यू

लेखक, श्री उमेश जोशी

(२)

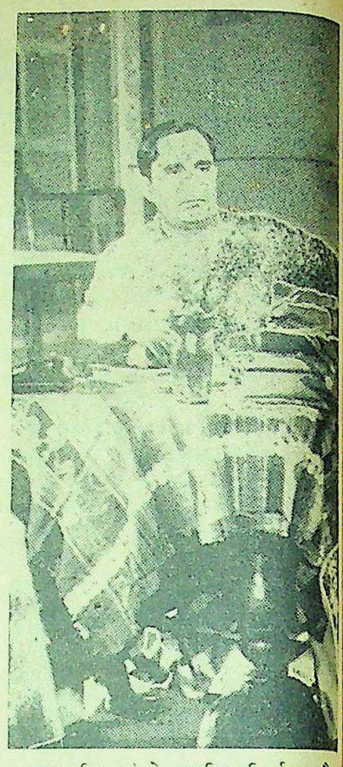

प्रकाश-पिक्चर्स के सुप्रसिद्ध निर्माता और दिग्दर्शक श्री विजय भट्ट।

प्रश्न—आप सिनेमा की दुनिया में किस प्रकार आये? और कितना अरसा हुआ?

उत्तर—मुझे सिनेमा की दुनिया में आये हुए पन्द्रह साल हो गये। मैं पहिले कहानी-लेखक की हैसियत से इस लाइन में आया। मुझे लिखने का कालेज जीवन से ही शौक रहा है। ड्रामा भी लिखा करता था। मेरे दो नाटक उस समय स्टेज पर हुये थे। उनके नाम हैं—"वीर धवल" "लाखो-कुणाली" इन नाटकों को जनता ने काफी पसन्द किया। मेरा साहस बढ़ गया। मैं उस वक्त लाहौर में "इलेक्ट्रिक-इंजीनियर" का कोर्स पढ़ रहा था। मुझे जब यह मालूम हुआ कि मेरे लिखे हुए नाटक-दर्शकों ने दिल खोलकर अपनाये हैं तो मुझे अपनी लेखनी पर कुछ-कुछ विश्वास होने लगा। मेरे भाई उस वक्त लाहौर के फिल्म डिस्ट्रीब्यूटर थे। उनके साथ मैं फिल्म-कम्पनियों में अक्सर जाया करता था। इसलिए मुझे कुछ फिल्म का अनुभव भी हो गया था। दूसरे मुझे मेरे भाई भी बहुत कुछ फिल्मी-साहित्य के सम्बन्ध में बतलाया करते थे। इन्हीं सब के कारण मेरे सिने-ज्ञान में वृद्धि हुई। "हीरा-राजा" के डायरेक्शन में मैंने भी सहयोग दिया। इसके बाद मेरे पढ़ने का कोर्स भी समाप्त हो गया था। मैं बिलकुल स्वतंत्र हो गया था। मेरे पास कुछ करने को न था। कभी मैं इंजीनियर बनने के ख्वाब देखता, तो कभी विज्ञान-विशेषज्ञ की हैसियत में अपना जीवन बिताना चाहता था, लेकिन मेरेभाई ने मुझे फिल्मी-दुनिया में आने की सलाह दी। मुझे भी उनकी बात समझ में आ गई। मैंने सोचा कि मेरी लिखने की इच्छा इस क्षेत्र में रहने से पूरी होगी। बस फिर हम दोनों भाइयों ने मिलकर एक फिल्म-कम्पनी शुरू कर दी। उसका नाम था—"राइल फिल्म-कम्पनी।" यह उस जमाने की बात है, जब कि मूक चित्रपटों का युग था। हाँ, तो पचासों चित्र बनाये, मूक युग खत्म हुआ, बोलता युग सामने आया। हमने भी साहस करके एक "अलिफ-लैला" फिल्म निकाला। इसके बाद हमारे जिन्दगी के जमाने ने फिर करवट बदली। अतः सन् १९३३ में हमने "प्रकाश पिक्चर्स" की बुनियाद डाली। प्रकाश पिक्चर्स का पहला चित्र ऐक्ट्रेस निकला। लोगों ने इसे काफी पसन्द किया। हमारा भी साहस बढ़ा। हम बराबर सामाजिक चित्र देश को अर्पण करते रहे। "प्रकाश" ने कभी गौरव को गिराया नहीं। जब देश स्टंट चित्र माँगता था, तब प्रकाश ने एक से एक अच्छे स्टंट-चित्र प्रदान किये। जब स्टंट-चित्रों का जमाना समाप्त हुआ तो "प्रकाश" भी सतर्क हुआ। वह दकियानूसी नीति से चिपका रहना नहीं जानता। उसका तो आदर्श ही युग के साथ चलता है। युग जब-जब करवट बदलेगा, तब-तब "प्रकाश" भी अपनी करवटें बदलता रहेगा। इसी में "प्रकाश" के चिर-अस्तित्व की आभा प्रच्छन्न है। वह इस आभा को लोप नहीं होने देगा। बस यही मेरे फिल्मी-जीवन की अब तक की कहानी है।

प्रश्न—आपके जीवन का मोटो क्या है?

उत्तर—मेरे जीवन का मोटो कला की दुनिया में साहित्य का प्रवेश कराना है। कला की नींव साहित्य की नींव पर रक्खी है। कला और साहित्य-जन दोनों आपस में गले मिलते हैं, तब एक संस्कृतिक-मनोरंजन का प्रादुर्भाव होता है। यही मनोरंजन मानव की वृत्तियों की गली से गन्दगी को दूर करता हुआ आत्मा के भव्य कक्ष में पहुँचकर अपना एक विशिष्ट स्थान बना लेता है। वास्तव में हम कला और साहित्य को एक दूसरे से अलग नहीं कर सकते। इनकी अलहदगी की बुनियाद पर ही वासना का महल निर्मित होता है। जिस प्रकार महफिल के पिछवाड़े मरघट में सेंध लगा रक्खी है, उसी प्रकार कला के गुलजार चमन की तह में उच्छृंखल रोमांस के अंकुर फूट रहे हैं। यदि इन अंकुरों की कब्र पर साहित्य की प्रदर्शनी की गई, तब तो ठीक है, नहीं तो उच्छृंखल रोमांस हमारे कला के भव्य-निकेतन को ध्वंस कर देगा। आज जो कला का स्वरूप हमारे सामने है, उसने आत्मा की अमर लौ का प्रतिबिम्ब जीवन के स्टेज पर नहीं खींचा। यह आज के कला की सबसे बड़ी कमी है। आज की कला और साहित्य से कल्पना की क्षति हुई। मगर रोमांस की समृद्धि-रहस्य की अवनति पर तफरीह की तरक्की-शुचिता, सरलता का मजार बन गया। टकसाली भद्रता विदा हो गई लेकिन जाहिरपरस्ती बढ़ गई। बाहरी चटक-मटक ही कला का जीवन समझा गया। मैंने अपना आदर्श बना लिया है वास्तविक कला की नींव, उच्छृंखल विचारों के घने कुहरे को हटाकर डालना। मैं यह भी जानता हूँ कि अभी लोकमत सच्ची कला ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं है। उसे तो "हलकी कला" चाहिए जो कि आसानी से उनके दिमाग में बैठ जाय। लोग कड़ुवी-कुनेन खाने में मुँह बिचकाते हैं, क्योंकि उसका जायका अच्छा नहीं। हमारे सामने यही सबसे बड़ी दिक्कत है किन्तु हम इस दिक्कत से परेशान होकर खामोश बैठनेवाले नहीं। कठिनाइयों से हारकर खामोश बैठ रहना कायरों का काम है। हमारा काम तो कठिनाइयों से सदा जूझते रहना है। हमने भी अपने मोटो को सफल बनाने की युक्ति निकाल ही ली, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि आजकल दार्शनिक महापुरुष अपनी दार्शनिकता "कहानी" की लपेट में देने लगे हैं, ताकि जनता धीरे-धीरे उनके शुष्क विचारों को हजम कर ले। हमने भी यही ठीक समझा। दर्शकों ने उसे खूब पसन्द किया। ठीक है हमें तो अपना काम निकालना है—ताकि हमारे जीवन-मोटो की रक्षा होती रहे।

प्रश्न—आप तक़दीर को बड़ी समझते हैं या तदबीर को?

उत्तर—यदि मैं सच कहूँ तो तक़दीर तो तदबीर की चेरी है। तक़दीर की दुनिया, तदबीर के धरातल पर बनती है। वास्तव में कायरों और बुजदिलों का सहारा तक़दीर है। दुर्बलता की ओट का नाम तक़दीर है। बहादुर कभी अपने जीवन के विशाल दायरे में तक़दीर की नुमाइश नहीं लगाता वह तो तदबीर के सहारे सफलता के आसमान पर पहुँच जाता है। मैं तो यह कहूँगा कि जिन्दगी की रुकावट का नाम ही तक़दीर है। तक़दीर की उलझन की लपेट में वही व्यक्ति पड़ते हैं, जो अपने आत्म-बल पर विश्वास नहीं रखते। अब तक़दीर का जमाना गया। आज का है, युग "कर्म-युग" है। बिना कर्म के इंसान का अस्तित्व ही क्या? आज तक़दीर-परस्त हिन्दुस्तान की क्या हालत है? यह आप देख ही रहे हैं कि चालीस करोड़ होते हुए भी हम गुलाम हैं, क्योंकि गुलामी हम अपना तक़दीरी अधिकार समझते हैं। और दूसरी तरफ जो जर्मन तदबीर का पुजारी है, सिर्फ चार करोड़ होते हुए भी उसने दुनिया के छक्के छुड़ा दिये थे, बाद में वह हार गया, यह बात दूसरी है। फिर भी वह भाग्यपरस्त नहीं बन सके। यह उनके अतुल साहस का नमूना है। दुनिया को अपने कदमों में झुकाकर अपना सिर गौरव के साथ ऊँचा उठाया—क्या यह कम गौरव की बात है? किन्तु वह विजयी क्यों नहीं हुआ—यह उसकी तदबीर की कमी और कुछ नहीं।

प्रश्न—आपका नवयुवकों के लिए क्या संदेश है?

उत्तर—मेरा नवयुवकों के लिए यही सन्देश है यदि वह सिनेमा की दुनिया में आना चाहें, तो शौक से आ सकते हैं, लेकिन उन्हें मेहनत करनी होगी। यदि वह मेहनत करने के लिए तैयार न हों तो उनका सिनेमा में आना बेकार है। आज का युग मेहनत करने का है। जो सच्चे कला के प्रेमी हों, जो ईमानदारी के साथ जीवन का चित्र विश्व के सामने रखना चाहते हों, वही सिनेमा में प्रवेश कर सकते हैं, उनका आना भी सार्थक होगा। जीवन का आनन्द लूटने के लिए वह सिनेमा की दुनिया में कदम न रक्खें, क्योंकि इससे सिवा निराशा के और उनके पल्ले कुछ न पड़ेगा। दुनिया बदल रही है। दुनिया के साथ नवयुवकों को अपने भावों को भी

शेष पृष्ठ १८ पर देखिये

विनोलिया एक बड़ा ही आरामदायक साबुन है। इससे स्नान करनेपर हर बार आश्चर्य्यजनक शीतलता और निहायत ताजगी आ जाती है। और इस साबुनकी सुगंध इतनी स्फूर्तिदायक और प्रफुल्लित करनेवाली है कि विश्रान्त मस्तिष्क और शरीरको एक नवजीवन-सा प्राप्त हो जाता है।

विनोलिया व्हाइट रोज साबुन

VWR. 16-931 HI

VINOLIA CO. LIMITED, LONDON, ENGLAND

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैदरी साहब की रेडियो-कमेटी

भविष्य में आखिर यह किस मर्ज की दवा करेगी?

लेखक, सूर्य्यप्रकाश, एम० ए०

रेडियो भाषा-सुधारक कमेटी के सदस्य डाक्टर जाकिर हुसेन।

(श्री सम्पादक 'देशदूत')

गत ३० दिसम्बर के 'देशदूत' में 'रेडियो की भाषा के ये सुधारक' शीर्षक सम्पादकीय नोट में आपने जो कुछ कहा है, वह ठीक है, लेकिन मैं समझता हूँ कि हमारा दृष्टिकोण ही दूसरा होना चाहिये। पहले इस नोट के शीर्षक को ही लीजिये। हम रेडियो की भाषा में क्या सुधार चाहते हैं? रेडियो की भाषा में सुधार की मांग करना ऐसा ही है जैसा उर्दू में सुधार की मांग करना। पहले उर्दू में सुधार हो तब हम रेडियो से कहें कि इस सुधरी हुई उर्दू का प्रयोग करें। जब तक उर्दू का सुधार नहीं होता तब तक रेडियो की भाषा में सुधार की मांग के दो ही अर्थ हो सकते हैं—(१) पहला यह कि उर्दू को रेडियो यहाँ तक सुधारें कि वह हिन्दी हो जाय, तब हमें वह भाषा मान्य होगी (२) दूसरा यह कि रेडियो उर्दू को यहाँ तक सुधारे कि वह वास्तविक हिन्दुस्तानी हो जाये, अर्थात् १०० में से ५० या किसी दूसरे अनुपात में शब्द हिन्दी के कर दिये जायें। क्या हम यही चाहते हैं? प्रथम पहले अर्थ को लीजिये। क्या हम समझते हैं कि जब उर्दू सुधार कर हिन्दी कर दी जायगी तब वह उर्दू वालों को भी मान्य हो जायेगी और झगड़ा शान्त हो जायगा? फिर भी यदि यही हम चाहते हैं तो 'सुधार' 'सुधार' रटने के बजाय यह साफ साफ क्यों नहीं कहते कि रेडियो अपनी 'हिन्दुस्तानी' के स्थान में केवल 'हिन्दी' का प्रयोग करे? यदि दूसरे अर्थ को लें, तो रेडियों को हिन्दुस्तानी गढ़ने का अधिकार ही क्या है? कौन से शब्द हिन्दी के हों और कौन से उर्दू के यह कौन निश्चित करे? 'हिन्दुस्तानी' का आदर्श क्या हो? कुछ व्यक्तियों को अथवा रेडियो कमेटी के चार सदस्यों को—वे चाहे कोई हों—हिन्दुस्तानी के मामले पर आपस में समझौता करके अपनी हिन्दुस्तानी को रेडियो द्वारा देश पर लादने का क्या अधिकार है? किसी प्रकार की हिन्दुस्तानी भी कहाँ प्रचलित है, उसमें कहाँ अखबार निकलते हैं? सर्वमान्य भाषा हिन्दी के स्थान पर किसी भी प्रकार की हिन्दुस्तानी चलाने का रेडियो को क्या अधिकार है? जब तक हिन्दी, उर्दू के स्थान में स्कूलों आदि में इस हिन्दुस्तानी में पढ़ाई नहीं होती, तब तक इस हिन्दुस्तानी के १०० में से ५० हिन्दी शब्दों को उर्दूवाले और ५० उर्दू शब्दों को हिन्दीवाले कैसे समझेंगे और इस हिन्दुस्तानी से कौन-सी समस्या हल होगी?

स्पष्ट है कि सुधारवादी दृष्टिकोण ही ग़लत है। रेडियो की भाषा में सुधार की आवश्यकता नहीं है, न उसमें सुधार हो सकता है और न रेडियो को उसमें सुधार करने का अधिकार है। वह उर्दू है और उर्दूवालों के लिए वह सब प्रकार से वांछित है। यदि उसमें सुधार करने के लिए कहते हैं तो रेडियोवालों को हिन्दी में भी सुधार और काट छाँट करने का अधिकार देना पड़ेगा अर्थात् रेडियो के वेतन भोगी कर्मचारियों को करोड़ों हिन्दी भाषी जनता द्वारा निर्दिष्ट हिन्दी के स्वरूप में मनमाना हस्तक्षेप करने की स्वतंत्रता देनी पड़ेगी। समझ में नहीं आता कि रेडियो के केवल उर्दू का नामकरण हिन्दुस्तानी करने के कारण हम इतने भ्रम में क्यों पड़ गये हैं और क्यों चारो तरफ चक्कर काटते हैं और वास्तविक बात तक नहीं पहुँचते। अगर आज रेडियो सब जगह 'हिन्दुस्तानी' के स्थान में 'उर्दू' शब्द का प्रयोग करता होता तब भी क्या हम उससे उसमें सुधार करने के लिए कहते? तब हम क्या यह न न कहते कि जिस प्रकार वह उर्दूवालों के लिए प्रोग्राम उर्दू में करता है, अन्य भाषा-भाषियों के लिए उनकी भाषाओं में प्रोग्राम करता है, उसी प्रकार हिन्दीवालों के लिए उनके अनुपातानुसार हिन्दी में प्रोग्राम करे। केवल उर्दू का नाम हिन्दुस्तानी रख देने से हमारी मति क्यों भ्रष्ट हो गई है? वास्तव में देखा जाय तो इस 'हिन्दुस्तानी' नाम के कारण ही अधिकांश हिन्दीवाले दलदल में फँस गये हैं और समस्या—जो वास्तव में कोई समस्या नहीं है—के सीधे हल तक नहीं पहुँच पाते। जिस उद्देश्य से रेडियो वालों ने उर्दू का नाम हिन्दुस्तानी रक्खा उसमें वे बहुत कुछ सफल हुए हैं—यह अधिकांश रेडियो विरोधियों की बातों से स्पष्ट है। हमें साफ-साफ कहना चाहिये कि जहाँ तक रेडियो का सम्बन्ध है वहाँ तक हिन्दी-उर्दू प्रश्न के नाम का कोई प्रश्न ही नहीं है जिसको सुलझाने के लिए किसी कमेटी की जरूरत पड़े। क्या 'हिन्दी-बंगला' या 'मराठी-गुजराती' नाम का भी कोई प्रश्न था अथवा क्या रेडियो ने बंगला, तामिल, मराठी, गुजराती आदि में प्रोग्राम देने के पहले किसी कमेटी से परामर्श लेने की आवश्यकता समझी थी? हिन्दी के साथ ही क्या बात है? हिन्दी एक स्वतंत्र भाषा है, उसका अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है और हिन्दवालों के लिए हिन्दी में सब प्रकार के प्रोग्राम होने चाहिये। हिन्दी को एक स्वतंत्र भाषा के रूप में स्थान मिलते ही प्रोग्राम स्टाफ और विविध प्रोग्रामों का का मामला इसी प्रकार साफ हो जाता है जिस प्रकार यह साफ है कि बंगला, तामिल आदि का प्रोग्राम स्टाफ कितना कहाँ और किस प्रकार भर्ती या चुना जाय और उसमें कितने और क्या क्या प्रोग्राम हों? सारा बखेड़ा तो इसी कारण है कि हिन्दी नाम की भाषा का कोई स्थान ही नहीं है अर्थात् उसके अस्तित्व से ही इन्कार किया जाता है और उसके स्थान में किसी हिन्दुस्तानी को, जो वास्तव में उर्दू है, बिठाया जाता है और हिन्दुस्तानी की आड़ में हिन्दी का गला काटा जाता है। हिन्दी के अलावा रेडियो 'हिन्दुस्तानी' 'उर्दू' ग्रीक, फारसी, अरबी चाहे जिसमें प्रोग्राम करें हमें उससे कोई मतलब नहीं। रेडियो की हिन्दुस्तानी हिन्दी नहीं है यह तो स्वयं रेडियोवालों के दिये नाम से प्रकट है। बस हमें हिन्दी में खबरें और सब प्रकार के प्रोग्राम जैसे औरतों और बच्चों के प्रोग्राम, ड्रामें, टाक इत्यादि चाहियें। इसके लिये किसी कमेटी को बैठने की या किसी भाषा सुधार की जरूरत नहीं। यदि रेडियो समझता है कि उसकी हिन्दुस्तानी को भी काफी लोग समझते हैं तो करे न उसमें भी प्रोग्राम! इस हिन्दुस्तानी को हिन्दी वाले भी समझते हैं या नहीं यह तो रेडियो के कर्मचारी नहीं वरन् हिन्दीवाले ही बतला सकते हैं और उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि वे इसे नहीं समझते। वे जिस भाषा को समझते हैं उसका नाम हिन्दी है।

हिन्दी क्या है यह डिपार्टमेन्ट आफ इन्फरमेशन और ब्राड कास्टिंग को, जो 'भारतीय समाचार' नामक हिन्दी पत्र निकालता है, बखूबी मालूम है और रेडियो वालों को भी जो 'सारंग' प्रकाशित करते हैं अच्छी तरह मालूम है। यदि हिन्दी को एक स्वतंत्र भाषा मान कर उसमें अलग से खबरे आदि देना और हिन्दी की चीजों को हिन्दी नाम से 'सारंग' लिसनर आदि में सम्बोधित करना रेडियो को मंजूर है तो वह ऐसा कल ही से करे और यदि बाद को अनुपात आदि के विषय में कोई शंका हो तो हमसे पूछ ले वरना हमारा आन्दोलन चलता रहेगा। इस सुधारउधार और कमेटी से क्या मतलब है? मेरी समझ में जब तक रेडियो इस सिद्धान्त को नहीं मान लेता तब तक सम्मेलन के प्रतिनिधियों को सर सुलतान अहमद की बुलाई कमेटी में शामिल ही नहीं होना चाहिये था और यदि शामिल हुए ही थे तो बिना किसी हिन्दुस्तानी या उर्दू के विवाद में पड़े उन्हें यह कहना चाहिए था कि यदि हिन्दी को स्वतंत्र स्थान देना मंजूर है तो आगे बात करो, वरना हम घर वापस जाते हैं। खैर, जब जो हुआ सो हुआ अब तो हमें साफ साफ कहना चाहिए कि हमें हिन्दुस्तानी, कामन भाषा, राष्ट्र-भाषा आदि के विवाद से अथवा किसी कमेटी या इनके सदस्यों से कोई सरोकार नहीं, जिस प्रकार बंगला, तामील, मराठी आदि में प्रोग्राम होते हैं वैसे ही हिन्दी में अलग से हिन्दी जाननेवालों के लिए हों। यदि इस कारण एक स्टेशन से हिन्दी के अतिरिक्त उर्दू में भी प्रोग्राम करने पड़ते हैं तो इसमें कठिनाई ही क्या है? क्या आज भी बम्बई से दो नहीं बल्कि तीन भाषाओं—मारठी, गुजराती और 'हिन्दुस्तानी'—में प्रोग्राम नहीं हो रहे हैं, या क्या ट्रिची से तामिल और तेलगू में प्रोग्राम नहीं हो रहे हैं अथवा सब स्टेशनों से प्रादेशिक भाषा या भाषाओं के अतिरिक्त अँगरेजी में प्रोग्राम नहीं हो रहे हैं? प्रत्येक स्टेशन में जहाँ एक कामन भाषा की आवश्यकता पड़े ही (जैसे स्टेशन के खुलने और बन्द होने के समय की घोषणायें) वहाँ उस स्टेशन के प्रदेश की प्रमुख साहित्यिक भाषा का प्रयोग हो। लखनऊ और दिल्ली की प्रमुख भाषा हिन्दी होगी, लाहौर और पेशावर की उर्दू हो सकती है। जब तक देश कामन भाषा या राष्ट्र-भाषा की समस्या नहीं सुलझा लेता और कामन भाषा का स्वरूप निश्चित नहीं कर लेता तब तक रेडियो किसी भी जगह किसी भी प्रकार की हिन्दुस्तानी का प्रयोग नहीं कर सकता और न किसी कमेटी को किसी हिन्दुस्तानी पर अपनी मुहर लगाकर रेडियो के सुपुर्द करने का अधिकार है। जैसा पं० मौलिचन्द्र शर्मा ने अभी हाल में एक वक्तव्य में कहा है, राष्ट्र-भाषा या कामन-भाषा का सम्बन्ध केवल हिन्दी उर्दू से नहीं वरन समूचे राष्ट्र और सब प्रान्तीय भाषाओं से है और सब मिलकर ही उसे बना सकते हैं। फिर, यदि कामन-भाषा ने बंगला, तामिल आदि का स्थान नहीं लिया तो वह हिन्दी (या उर्दू) का ही स्थान कैसे ले सकती है? कामन भाषा जब बन ही जायगी, देश उसे स्वीकार कर लेगा और वह यथेष्ट

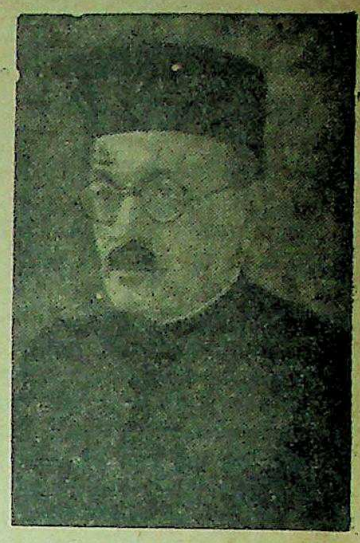

रेडियो भाषा-सुधारक कमेटी के सदस्य डाक्टर ताराचन्द।

प्रचलित हो जायेगी तब भी रेडियो उसे केवल अखिल भारतीय भूमिकाओं में अँगरेजी के स्थान में (अर्थात् हिन्दी, उर्दू और अन्य प्रान्तीय भाषाओं के अतिरिक्त अँगरेजी खबरों की बजाय सारे देश के लिए खबरें उस कामन भाषा में होगी) या जहाँ एक कामन भाषा के बिना काम नहीं चल सकता वहाँ प्रयोग कर सकेगा। यह तो गांधी जी ने भी कहा है कि हिन्दुस्तानी का अभिप्राय हिन्दी और उर्दू को नष्ट करना नहीं है। यह तो हिन्दुस्तानी वाले भी कहते हैं कि हिन्दी और उर्दू दोनों सीखो जिसका अर्थ यह हुआ कि रेडियो हिन्दी और उर्दू दोनों में ब्राडकास्ट करे। यदि हिन्दी और उर्दू किसी हिन्दुस्तानी की दो 'शैलियाँ' मात्र ही हैं तो स्वयं हिन्दुस्तानी वालों के मतानुसार एक 'शैली' दूसरी का स्थान नहीं ले सकती और न कोई तीसरी शैली उन दोनों 'शैलियों' का स्थान ले सकती है, क्योंकि यदि पहली बात होती तो वे हिन्दी उर्दू दोनों सीखने के लिए कहने की बजाय केवल हिन्दी 'शैली' या उर्दू 'शैली' और दोनों लिपियों को सीखने के लिए कहते (क्योंकि उससे वही बात पूरी हो जाती) और यदि दूसरी बात होती तो केवल उस तीसरी 'शैली' और दोनों लिपियों को सीखने के लिए कहते। यदि कोई रेडियो लिसनर हिन्दी और उर्दू दोनों समझ लेता है तो उसे हिन्दी और उर्दू दोनों की चीजें सुनने से रोकता कौन है? कोई तीसरी हिन्दुस्तानी है ही नहीं जो हिन्दी उर्दू का स्थान ले सके क्योंकि गांधी जी ने टंडन जी को एक पत्र में स्वयं कहा है कि हिन्दी और उर्दू दोनों सीखने से "समन्वय होने का है तो हो जायेगा" अर्थात् समन्वय अभी तक नहीं हुआ है, उसके लिए अब जमीन तैयार की जा रही है। गांधी जी ने यह भी कहा है कि समन्वय स्वाभाविक रूप से होना चाहिए, कृत्रिम रूप से अर्थात् किसी कमेटी या किसी सरकारी विभाग द्वारा एक मेज के चारों ओर बैठकर नहीं। यदि रेडियो ने समन्वय किया ही है—यद्यपि सच यह है कि उसने कोई समन्वय नहीं किया है, बस उर्दू का नाम बदलकर हिन्दुस्तानी कर दिया है और इसे हिन्दी को बहिष्कृत करने का बहाना बना दिया है—तो वह समन्वय स्वाभाविक रूप से विकास को प्राप्त नहीं हुआ है वरन् कृत्रिम है और उसके पीछे कोई मान्यता नहीं है। स्पष्ट है कि रेडियो वास्तविक हिन्दुस्तानीवाद की भी शरण नहीं ले सकता। वैसे भी यह बिलकुल साफ है कि मेरी मातृभाषा हिन्दी से बदलकर इसलिए कुछ और नहीं हो जाती कि हिन्दुस्तानी बना ली गई है और न मैं कल से ही ५० हिन्दी के और ५० उर्दू के शब्द इसलिए समझने लगूंगा कि कुछ विद्वानों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

रङ्गमहल (उपन्यास)—लेखक, श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'; प्रकाशक, हिन्दुस्तानी बुकडिपो, लखनऊ; पृष्ठ-संख्या ११६; मूल्य १।)

यों तो आजकल उपन्यासों का प्रकाशन धड़ल्ले से हो रहा है; लेकिन वास्तविक रूप में उपन्यास कही जानेवाली कृतियाँ इनमें से बहुत ही थोड़ी होती हैं। अधिकांश उपन्यास या तो अन्य भाषाओं के उपन्यासों की छाया होते हैं, अथवा मात्र घटनावलियों से ओत-प्रोत। ऐसे उपन्यासों में लेखक का—स्रष्टा का—अपना दृष्टिकोण पाठकों के समक्ष नहीं आने पाता और कला की दृष्टि से ऐसी कृतियाँ किसी भी साहित्य को सम्पन्न नहीं कर सकतीं। और, इस सबके लिए लेखकों का उत्तरदायित्व उतना नहीं, जितना प्रकाशकों का। प्रकाशक-गण जब तक लेखकों को दिये जानेवाले पारिश्रमिक का स्तर ऊँचा न उठायेंगे, तब तक लेखकों से ठोस कृतियों की आशा करना कठिन है।

प्रसन्नता की बात है कि मस्त जी का प्रस्तुत उपन्यास 'रङ्गमहल' न केवल मौलिक, प्रत्युत एक सफल उपन्यास है। जीवन, समाज और राजनीति के सम्बन्ध में लेखक ने अपना दृष्टिकोण उपन्यस्त किया है और इस प्रकार उपन्यास एक सफल कृति है। उपन्यास में एक ही लम्बी कहानी का रोचक विकास है, जिसमें स्वतन्त्रता-प्रिय नवयुवकों का अहिंसा के मार्ग से विचलित होकर क्रान्ति का पथ अपनाने की प्रवृत्ति और तज्जन्य अकल्याणकारी परिणाम का दिग्दर्शन कराया है।

उपन्यास की प्रधान पात्री लता है, जो एक मजिस्ट्रेट की पुत्री है; किन्तु कमलदास गुप्ता के साथ क्रान्तिकारी-दल की सदस्या भी है। लता का चरित्र-चित्रण अपने में पूर्ण सफल है। उसका अपना व्यक्तित्व है, अपने विचार हैं और अपना तर्क। वह भावुक नारी नहीं, बल्कि एक विचारक-वृत्ति उसमें विद्यमान है। उसके विचार अत्यन्त सुलझे हुए हैं—ऐसे जिन्हें व्यक्त करने में उसे कहीं किसी हिचकिचाहट का अनुभव नहीं होता। जो कुछ वह सोचती है, उसे कार्यरूप में भी कर दिखलाने की क्षमता उसमें है। उसे अपने निश्चय से डिगा सकना सम्भव नहीं।

जिस समय उसका दल स्वतन्त्रता के पावन और अहिंसक मार्ग से हटकर केवल अफ़सरों की हत्या करने लगता है, लता अपना विरोध उपस्थित कर उससे पृथक् हो जाती है। लेकिन व्यक्तिगत रूप से कमलदास को वह भुला नहीं पाती। इतने पर भी तर्क करने में उसने कभी कमलदास से हार नहीं मानी। लता की सबसे बड़ी विशेषता है—समर्पण नाम की वस्तु उसे कहीं छू भी नहीं गई। नवीन युग-धर्म की वह पोषक है; किन्तु भारतीय आदर्शों की हत्या करके नहीं। समाज से विद्रोह करने की भी वह पोषक है; लेकिन उच्छृंखल बनकर नहीं।

कमलदास गुप्ता अपने धुंधले उद्देश्य को लेकर भारत के हजारों बलिदानियों की तरह अपनी इहलीला समाप्त कर देता है और लता उसकी स्मृति को दबाये हुए ही अपने 'रङ्गमहल' का निर्माण करती है। कमलदास के दृष्टिकोण से मतभेद होने पर भी उसकी देश-भक्ति सन्देह से परे है। उपन्यास-जगत् में 'रङ्गमहल' निस्सन्देह रूप से समादरित होगा। प्रूफ़ की अशुद्धियाँ बहुत खटक रही हैं।

* * *

दीपदान (उपन्यास)—लेखक, श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'; प्रकाशक, चौधरी एण्ड सन्स, बनारस। पृष्ठ-संख्या २२८; मूल्य २॥)

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने एक साहित्य-स्रष्टा के जीवन की पथरीली पगडण्डी का मार्मिक चित्रण किया है। अनिल एक पत्रकार है और ग़रीबी के थपेड़ों से उसका जीवन रात-दिन क्लान्त रहता है। राष्ट्रीय भावनाओं का वह पुजारी है। मातृभूमि की आज़ादी के लिए वह अपना सर्वस्व होम कर देता है। रजनी एक धनिक की पुत्री है और अनिल की बाल-सहेली। दोनों में स्नेह का अंकुर पल्लवित-पुष्पित होता है। लेकिन यह स्नेह प्रणय में परिणत नहीं हो पाता। धनिक और ग़रीब के बीच चले आनेवाले वैषम्य में समता कहाँ? रजनी का विवाह एक आई० सी० एस० के साथ हो जाता है और अनिल का एक देहाती कन्या के साथ। दोनों के ही जीवन में एक अभाव रह जाता है; लेकिन सामाजिक विधानों की निरंकुशता का ध्यान रखते हुए दोनों अपने-अपने जीवन से सन्तुष्ट रहने का प्रयत्न करते हैं। फिर भी, दोनों का स्नेह अक्षुण्ण रहता है—पवित्रता के सूत्र से सम्बद्ध।

राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता होने के नाते अनिल को रजनी के पति की अदालत से कारावास का दण्ड दिया जाता है। कारावास में उसका स्वास्थ्य बिगड़ जाता है और हृदय-रोग का वह शिकार हो जाता है। जेल-मुक्त होने पर, रजनी उसके उपचार का पूर्ण प्रबन्ध करती है। यही नहीं, अनिल के परिवार को भी रजनी यथासम्भव अपनी सहायता प्रदान करती रहती है। लेकिन राष्ट्रीयता का पुजारी और स्वतंत्रता का दीवाना कब तक जेल के बाहर रहता। एक भाषण देने के अभियोग में उसे फिर जेल की सजा दी जाती है। ठीक उस दिन अनिल को गिरफ़्तार किया जाता है, जब रजनी रक्षाबन्धन का थाल सजाये अपने घर में उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। गिरफ़्तारी का समाचार पाकर रजनी विक्षुब्ध हो जाती है और वह अपने अनिल भैया के स्वास्थ्य की मंगल-कामना से प्रेरित होकर नर्मदा में नियमित रूप से 'दीपदान' दिया करती। इस दीपदान का कारण रजनी के ही शब्दों में पढ़िए—'जो अपनी प्रतिभा का दीपक जलाकर दुनिया की मंगल-कामना के लिए, ग़रीबी और परेशानियों की भयंकर लहरों पर उसे बहाकर सदा दीपदान दिया करता है, उसी अनिल की मंगल-कामना के लिए नर्मदा की पावन लहरों पर, मैं यह 'दीपदान' दे रही हूँ।'

भाई-बहन के पावन स्नेह का चित्रण कुशलतापूर्वक किया गया है। उपन्यास में चित्रित घटनायें समानान्तर चलकर गुम्फित होती हैं और इस प्रकार कला का उत्कर्ष इसमें प्रतिबिम्बित हो रहा है। प्रकृति का चित्रण सजीव है। कथोपकथन प्रभावोत्पादक, भाषा सरल और कथानक सुलझा हुआ है। पत्रकार जीवन की झाँकी इस उपन्यास की अपनी विशेषता है। उपन्यास-प्रेमियों का इस 'दीपदान' से न केवल मनोरंजन होगा, प्रत्युत एक नवीन जीवन का चित्रण भी उनके सामने पहुँचेगा।

—चक्रपाणि

ने आपस में यह तै कर लिया है कि वे हिन्दी के ५० शब्द कौन से हों और ५० उर्दू के कौन से हों। फिर, या तो हिन्दुस्तान के सब स्टेशनों से केवल राष्ट्र-भाषा, कामन-भाषा हिन्दुस्तानी में प्रोग्राम हों और यदि प्रान्तीय भाषाओं में भी होते हैं तो मेरी मातृभाषा हिन्दी में भी जो करोड़ों की मातृ-भाषा है सब प्रोग्राम अवश्य देना पड़ेंगे। हमें मामले को साफ़-साफ़ समझकर आगे बढ़ना चाहिए तभी हमारा आन्दोलन सफल होगा। केवल 'भाषा सुधार' की माँग भ्रामक है।

लखनऊ

४ बजते ही

दुनियाँ भर के करोड़ों घरों में एक जागृति आजाती है। राजा हो या रंक, अमीर हो या गरीब, सैकड़ों का कुनवा हो या इक्के दुक्के आदमी, कलाकार हो या मजदूर; कटकटाता शीत प्रदेश हो या चिलचिलाता ग्रीष्म प्रदेश, याने कहीं भी हो और कोई भी हो ४ बजते ही जादू की छड़ी की तरह सबके दिलोदिमाग एक हो जाते हैं; दुनियाँ भर के लोग चाय पीने लगते हैं।

चाय के जरा से पौधे से कितना सुख और शान्ति मिलती है। बढ़िया बनी चाय का एक प्याला संसार की दुर्लभ वस्तु है। फिर भी बहुतेरे आदमी अच्छी चाय बनाने के सरल नियमों की अवहेलना कर इस अलभ्य देन से वंचित रह जाते हैं।

अच्छी चाय बनाने का तरीका

१ केतली में चाय न सिझाइये। सिझाने का बर्तन अलग रखिये।

२ सूखी चाय डालते वक्त वह बर्तन सूखा व गर्म रहे: इससे चाय का रंग व स्वाद ठीक बनता है।

३ हर प्याले के लिये एक चम्मच, और बर्तन के लिये एक चम्मच ताजी, सूखी चाय की पत्ती उसमें डालिये।

४ उसी वक्त का उबला हुआ पानी डालिये—पहले का उबला, कम या ज्यादा उबला पानी मत डालिये। बुदबुदा उठने पर ही पानी उबलता है, उसके पहले नहीं।

५ चाय को पाँच मिनट से कम न सिझाइये।

६ प्यालों में चाय डालकर तब उसमें दूध व चीनी मिलाइये।

चाय

हर वक्त चाय का वक्त

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 249

भारतीय चायों में सर्वश्रेष्ठ

लिपटन की

व्हाइट लेबुल चाय

LTK 61

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

क्या जोधपुर-सरकार ध्यान देगी ?

लोकनायक पंडित जयनारायण व्यास का वक्तव्य

मारवाड़ लोक-परिषद् के सभापति पंडित जयनारायण व्यास ने मारवाड़ की वर्तमान स्थिति पर नीचे लिखा वक्तव्य दिया है :—

देशी राज्य लोक-परिषद् के अधिवेशन और कार्य के सिलसिले में अधिक व्यस्त होने से मैं इन दिनों मारवाड़ की स्थिति पर अपने विचार नहीं व्यक्त कर सका हूँ। इसका अर्थ यह नहीं लिया जाना चाहिए कि मारवाड़ में सभी तरह सन्तोषजनक स्थिति है। मारवाड़ लोक-परिषद् ने सरकार से कई विषयों पर लिखा-पढ़ी की है, पर हमें दुःख के साथ कहना पड़ता है कि सरकार हमारी माँगों की तरफ़ उपेक्षा ही नहीं कर रही है, बल्कि प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से इस तरह कोशिश की जा रही है कि मरवाड़ लोक-परिषद् का संगठन टूट न सके तो कमज़ोर अवश्य बना दिया जाय।

सरकार जानती है कि जोधपुर नगर में तो किसी के डराने-धमकाने की कार्यवाही का असर होना कठिन है, पर परगनों में जहाँ शिक्षा का अभाव-सा है तथा जागृति कम है पुलिस-विभाग की तरफ़ से लोक-परिषद्-संगठन को कमज़ोर करने का निरन्तर प्रयास किया जा रहा है। लोक-परिषद् की शाखाओं से ऐसे प्रश्न पूछे जा रहे हैं जैसे किसी जरायम पेशा संस्था से पूछे जाने चाहिए।

हाल ही में ब्लैक मारकेटिंग और रिश्वतखोरी रोकने के लिए जो कार्यवाहियाँ हुई थीं उन पर हम लोग जान-बूझकर चुप थे। हम चाहते थे कि ब्लैक-मारकेटिंग करनेवाले और रिश्वतखोरों को मुकम्मिल सजा मिले, पर जिस तरह की कार्यवाहियाँ हुई हैं उन्हें देखते हुए हमें तो ऐसा लगता है कि जोधपुर आज सत्रहवीं सदी से गुजर रहा है। अभी हाल में श्री उदयराज माथुर और मगनमल कुम्हार बरखास्त हुए हैं। इन अफ़सरों के खिलाफ़ जो भी दोष हों उनके लिए इन्हें बरखास्त करना अनुचित नहीं। हम चाहते हैं कि सरकार यह भी स्पष्ट करे कि इन लोगों ने रिश्वतें भी लीं या नहीं ? अगर ली हैं तो क्यों नहीं उन्हें उन सीखचों के पीछे भेज दिया जाये जिनके पीछे लोक-परिषद् में काम करनेवाले प्रतिष्ठित नागरिकों को रखने में सरकार को संकोच नहीं होता। अगर प्राइस कन्ट्रोल के इन अफ़सरों को बेपरवाही की वजह से निकाला गया है तो मेजर स्टील जिनकी आज्ञा से और देख-रेख में सारा मुहकमा चल रहा था अछूते क्यों हैं ? क्या यह सच नहीं है कि मेजर स्टील ने श्री उदयराज माथुर को उन्हीं दिनों में डाइरेक्टर आफ़ सप्लाइज बनाने की सिफ़ारिश की थी जिन दिनों उनके खिलाफ़ कार्यवाही शुरू की गई ?

मारवाड़ का काला बाजार आज भी वैसा ही है जैसा पहले था। कपड़े के अभाव से परेशान लोग अब दाने-दाने के लिए मुहताज हो रहे हैं। हम पूछना चाहते हैं कि सरकार ने किन काले बाजारवालों को क्या सजा दी ? हमारे पास ऐसे लोग आये हैं जिनकी शिकायत है कि उन्हें परेशान किया जा रहा है। अगर ये बातें सच हैं तो राज्य के लिए शर्म की बात है। इस विषय में सरकर को साफ़तौर पर वक्तव्य देना चाहिए।

हम देख रहे हैं कि जब जयपुर में संस्था रजिस्ट्रेशन के नियम ढीले हो रहे हैं वहाँ मारवाड़ में तरह-तरह के सवालात पूछकर लोक परिषद् को कमजोर करने का षड्यंत्र रचा जा रहा है। इतना ही नहीं कई अफ़सर तो खुलेतौर पर लोक-परिषद् के खिलाफ़ काम कर रहे हैं और एक जगह तो सरकारी नौकरों-द्वारा लोक-परिषद् की सभा को भी भंग किये जाने की धमकी की गई। अगर इसी तरह की कार्यवाहियाँ होती रहीं तो सहयोग का आश्वासन धोखे की टट्टी ही सिद्ध होगी।

मैं महाराजा साहब से प्रार्थना करूँगा कि वे स्वयं दिलचस्पी लेकर स्थिति का अध्ययन करें और उसे सुधारें।

—संवाददाता

* * *

उदयपुर हिन्दी-विद्यापीठ, के अन्तर्गत जनवरी १९४६ से लोक-शिक्षण का काम चालू करने के लिए "हिन्दी-विद्यापीठ जन-पद" की स्थापना की गई है। "हिन्दी-विद्यापीठ जन-पद" का कार्यक्षेत्र अभी उदयपुर तथा आस-पास के गाँवों में होगा। हिन्दी-विद्यापीठ के उद्देश्यों में एक यह भी है कि लोक-शिक्षण-द्वारा लोक-जीवन के लिए उत्तरदायी नागरिक तैयार करना। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए जन-पद स्थापित किया गया है।

हिन्दी विद्यापीठ के अन्तर्गत जनवरी १९४६ से "महात्मा गांधी आसन" की स्थापना की गई है। हिन्दी विद्यापीठ में स्थापित "महाकवि सूर्यमल आसन तथा डा० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा आसन" के समान इस आसन से भी भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति पर किसी भारत-ख्यात विद्वान् के तीन भाषण करवाये जायेंगे।

हिन्दी विद्यापीठ के लिए आर्थिक सहायता प्राप्तकरने के लिये हिन्दी विद्यापीठ के प्रधान-मंत्री श्री जनार्दनराय नागर कुलपति श्रीमान् श्रीगोपाल जी मोहता के साथ कलकत्ते के लिए शीघ्र ही रवाना हो रहे हैं। हिन्दी विद्यापीठ की सर्वांगीण उन्नति चाहनेवाले सज्जनों की इसमें पूर्ण सहायता चाहिये।

हिन्दी विद्यापीठ के समस्त कार्यकर्ता तथा प्रधान-मंत्री अक्टूबर के अन्त तक अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अधिवेशन के कार्य में व्यस्त रहे। इसलिए १९४५ में हिन्दी विद्यापीठ के लिए आर्थिक सहायता प्राप्त न की जा सकी और इसी कारण हिन्दी विद्यापीठ पर १९४५ में कर्ज भी हो गया। आशा है कलकत्ते के मरावाड़ी बन्धु तथा अन्य-हितैषी और प्रेमी हिन्दी विद्यापीठ के प्रधान-मंत्री श्री जनार्दनराय नागर की पूरी मदद देंगे।

—गिरधारी लाल शर्मा

* * *

सारंगढ़ (मध्य-प्रान्त) श्रीमान् राजा बहादुर जवाहिरसिंह सी० आई० का देहान्त गत ११ जनवरी १९४६ ई० की रात में हुआ। आप सिर्फ़ १५ रोज तक बीमार रहे। मध्य-प्रान्तीय राज्यों में आप-जैसा शानदार और योग्य शासक शायद इने-गिने हैं।

राजा बहादुर का जन्म ३ दिसम्बर १८८७ ई० में हुआ था, राजा साहब को सन् १९०९ ई० में राजगद्दी मिली। इसी अवसर पर आपको सन् १९१२ ई० में पुत्ररत्न हुआ जिनका शुभ नाम युवराज नरेशचन्द्रसिंह रखा गया जो कि हमारे वर्तमान राजा साहब हैं।

राजा बहादुर ने अपने जीवन-काल में एक महल बनवाया जो कि आपकी याद दिला रहा है। यह महल मध्य-प्रान्त में पहले नवम्बर का गिना जाता है। राजा साहब शिकार के भी बड़े शौकीन थे। ईश्वर आपकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—मंसूरअली सम्स

डोड़वाना में श्री बाँगड़ हाईस्कूल की हिन्दी-साहित्य-परिषद् के तत्त्वावधान में एक कवि-सम्मेलन का विशेष आयोजन किया गया। मारवाड़ के सम्मानित कवि श्री जुगलकिशोर जी जोशी बी० काम० के सभापतित्व में परिषद् का अधिवेशन सफलता के साथ हुआ। बाहर के अनेक विशिष्ट सज्जन पधारे थे। दैनिक 'नया हिन्दुस्तान', दिल्ली के संपादक श्री रामानुजदास एम० ए०, साहित्य-रत्न सेठ रघुनाथदास बाँगड़ एम० एल० ए० (मारवाड़) साहित्याचार्य श्री रामेश्वर शास्त्री, श्री शिवनारायण शास्त्री एवं श्री रामप्रसाद दाधीच के नाम उल्लेखनीय हैं। हिन्दी के उदीयमान कवि श्री सुरेशकुमार जी 'सुमन' का 'नव-सृजन-गान' श्री दासूजी की नवयुग की कल्पना, श्री रामप्रसाद जी का 'मातृ-वन्दना' तथा श्री कृष्णदत्त जी के गीतों को जनता ने बहुत पसन्द किया। स्थानीय जनता का सहयोग सराहनीय था।

—संवाददाता

* * *

बदायूँ पोस्ट सिरासौल, स्थान सतेती की ग्रामीण जनता की ओर से एक कांग्रेस-सभा ठाकुर गंगाराम सिंह के सभापतित्व में हुई। प्रातःकाल जलूस राष्ट्रीय-गान गाता हुआ निकाला गया। सभा की कार्रवाई बाजार चौक में हुई जिसमें प्रतापचन्द्र आजाद का भाषण हुआ। ठाकुर सुन्दरसिंह ने भी भाषण दिया। ठाकुर बाबूसिंह उत्सव के स्वागताध्यक्ष थे। ठाकुर गजराजसिंह चौहान, ठाकुर पानसिंह, ठाकुर डालसिंह कोषाध्यक्ष, ठाकुर लल्लसिंह, श्री रामस्वरूप, श्री तेजी हरिजन इत्यादि ने अच्छा योग दिया।

—संवाददाता

* * *

दारागंज बाल-पुस्तकालय के साधारण सदस्यों की एक बैठक पुस्तकालय-भवन में श्री रामसिंह के सभापतित्व में हुई। पुस्तकालय के पदाधिकारियों का चुनाव इस प्रकार हुआ—संरक्षक श्री महन्त शंकरपुरी महाराज; सभापति पं० भरत तिवारी; उपसभापति राय दुर्गाप्रसाद रस्तोगी 'आदर्श'; मंत्री श्री प्रयागराज दुबे; उपमंत्री श्री प्रेमशंकर मिश्र; पुस्तकाध्यक्ष श्री शेषनाथ और कोषाध्यक्ष श्री श्यामलाल बजाज।

—प्रयागराज दुबे

* * *

वृन्दावन धार्मिक केन्द्र से निकलनेवाले एकमात्र मासिकपत्र 'नाम माहात्म्य' का 'ब्रजलीलांक' पंडित दानविहारीलाल शर्मा के संपादकत्व में बड़ी सजधज के साथ निकल रहा है। इसका मूल्य केवल २) रुपया ३ आ० है, जिसमें साल भर तक और भी ११ अंक प्राप्त होंगे। इसमें ब्रज की लीला और साहित्य पर सुन्दर लेख, कवितायें और चित्र रहेंगे। 'ब्रजलीलांक' संग्रहणीय और पठनीय होगा। मैनेजर—'नाम माहात्म्य' को पत्र लिखकर विशेष जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।

—अद्वैतकुमार गोस्वामी

* * *

कलकत्ता में भारत में दशमलव मुद्रा प्रचलित करने के उद्देश्य से मुद्रांकन के लिए जो घोषणा की गई थी, उस सम्बन्ध में मुद्रांकन-समिति की एक बैठक हुई और विचार-विमर्श के बाद निम्न पुरस्कार दिये गये। मि० पी० डब्ल्यू विन्डले (बम्बई) का व्याघ्र डिजाइन, गोपाल स्वामी (कुम्भकोनम) का मयूर डिजाइन और मिस्टर दास (नासिक) का अन्न की बालि डिजाइन ने ५००) रुपये का प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। अन्य डिजाइनों के लिए भी सौ-सौ रुपये के पुरस्कार दिये गये।

—संवाददाता

हरिद्वार में मकर-संक्रान्ति को श्री श्रवणनाथ ज्ञान-मंदिर में पंचपुरी के समस्त संस्कृत के विद्वानों और छात्रों की एक सभा हुई, जिसमें अनेकों विद्वानों के भाषण हुए। श्री महन्त शान्तानन्दनाथ जी ने संस्कृत भाषा की उन्नति के सम्बन्ध में प्रकाश डाला।

यह भी निश्चय किया गया कि भविष्य में विद्वत्समिति की पाक्षिक सभा ज्ञान-मंदिर में हुआ करेगी, जिसमें परीक्षोपयोगी व्याख्यान भी हुआ करेंगे।

—संवाददाता

* * *

ज्वालापुर गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का ३८वाँ वार्षिक महोत्सव ईस्टर की छुट्टियों में १९ अप्रैल से २२ अप्रैल सन् १९४६ ई० तक समारोह से मनाया जायगा। इस अवसर पर अनेक महत्त्वपूर्ण सम्मेलनों का आयोजन किया गया है। ता० २१ अप्रैल को नये स्नातकों का दीक्षान्त संस्कार होगा। दीक्षान्त भाषण के लिए देश के सुप्रसिद्ध नेताओं को आमंत्रित किया गया है। इस वर्ष उत्सव को विशेष सफलतापूर्वक मनाने का निश्चय किया गया है।

—सत्यव्रत शास्त्री

* * *

मरुडावा (जयपुर) हिन्दी-साहित्य-समिति में वसन्तपंचमी ६ फ़रवरी के अवसर पर छात्र-साहित्य-संघ के तत्त्वावधान में छात्र-साहित्य-सम्मेलन का आयोजन किया गया है। सभापति-पद संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित आचार्य राधाकृष्ण जी ढंढ ने स्वीकार किया है। छात्र-साहित्य-परिषद् के सभापतित्व के लिए हिन्दी-साहित्य के माने हुए समालोचक प्रोफ़ेसर सत्येन्द्र जी की पूर्णआशा की जाती है। कवि-सम्मेलन के लिए हिन्दी के हास्यरस के लोकप्रिय कविवर श्रीयुत गोपालप्रसाद जी व्यास के सभापति का आसन ग्रहण करने की पूरी-पूरी संभावना है। राष्ट्रीय कवि श्री हरिजी ने भी कविता-पाठ का वचन दे दिया है। छात्र-सखा और नवयुवक के विशेषांक क्रमशः 'संघ' और श्रीकृष्ण नवयुवक-मंडल के साहित्य-विभागों से प्रकाशित होंगे। स्थानीय प्रतियोगिता में विशेष स्थान प्राप्त करनेवाले छात्र पुरस्कृत किये जायेंगे।

सम्पादकीय क्षेत्र में श्री रामनारायण-लाल बिमानी और बाबू गनपतलाल माथुर की सेवायें सराहनीय हैं।

—संवाददाता

* * *

कलकत्ता—बंगाल सरकार ने कलकत्ता कारपोरेशन के कर्मचारियों को मँहगाई भत्ता देने के निमित्त कारपोरेशन को १३,५१,२०० रुपये की सहायता प्रदान की है।

बंगाल युद्धोत्तर निर्माण-योजना के अन्तर्गत नौकरी से पृथक् किये गये व्यक्तियों को जीविका की व्यवस्था की गई है। ५ लाख ५० हजार रुपये की लागत से कलकत्ता, ढाका, चिटागांग, बर्दवान और रंगपुर में औद्योगिक शिक्षा के केन्द्र स्थापित किये जायेंगे। विभिन्न घरेलू व्यवसायों की शिक्षा देने के बाद उन्हें स्वयं अपना व्यवसाय संचालित करने के लिए आर्थिक सहायता दी जायेगी। कृषि-शिक्षा केन्द्रों को भी स्थापित करने की व्यवस्था की जा रही है। २ लाख एकड़ बेकार भूमि को सुधार कर उन्हें दी जायगी।

कृषि-विभाग के परिचालक ने बताया है कि बंगाल में इस वर्ष १,९६,०५,३९० एकड़ भूमि में शीतकालीन फ़सल मौजूद है जब कि गत वर्ष १,८५,३८,९०० एकड़ भूमि में थी। इस वर्ष की उपज का अनुमान ८१ प्रतिशत का है जब कि गत वर्ष ८० प्रतिशत था।

—संवाददाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहर शहर की

कुत्तों ने भी लड़ाई लड़ी थी

दूसरे महायुद्ध में उनकी सेवायें

दूसरा महायुद्ध आरम्भ होने पर कुत्तों को सैनिक ट्रेनिंग देने का कार्य किया गया और इस कार्य में कुत्तों के गैरसैनिक शौकीनों से सहायता प्राप्त हुई। सेना को यह कार्य लगभग प्रारंभ से करना पड़ा, यह देखते हुए कहा जा सकता है कि उसे इसमें पर्याप्त सफलता मिली है। केवल ब्रिटेन में ही नहीं वरन् ब्रिटिश सेना जहाँ भी गई, वहीं ट्रेनिंग-प्राप्त कुत्तों से उपयोगी कार्य कराया गया। कुत्तों ने रक्षात्मक तथा आक्रामक दोनों ही प्रकार की कार्रवाई में अच्छा भाग लिया।

* * *

युद्ध छिड़ने पर ट्रेंड किये कुत्तों की आवश्यकता एकाएक अनुभव हुई। देश भर में युद्ध-कारखाने तथा हवाई स्टेशन कायम हो रहे थे और स्थान-स्थान पर गुप्त गोदाम खोले जा रहे थे। इनकी रक्षा का प्रबंध होना आवश्यक था। हवाई तथा समुद्री आक्रमण की आशंका बढ़ चली थी।

इस कार्य के लिए कुत्तों की उपयोगिता अनुभव करते ही जनता से चतुर कुत्ते देने की अपील की गई। कुत्ते के शौकीनों ने कुछ तो देश-रक्षा के कार्य में हाथ बँटाने के लिए और कुछ राशन-सम्बन्धी कठिनाइयों के कारण अपने पालतू कुत्ते सरकार को देना प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया। यहाँ तक की उनमें से कुछ ने कुत्तों को शिक्षा देने के लिए भी अपनी सेवाएँ अर्पित कर दीं।

युद्धकाल में कुत्तों का उपयोग हवाई स्टेशनों, शिविरों, कारखानों तथा गुप्त गोदामों पर पहरा देने के लिए किया गया और उन्होंने इस क्षेत्र में बड़ा अच्छा काम किया। उन्हें अहाते में पहरा देने, संदिग्ध व्यक्ति का पीछा करने और आवश्यकता पड़ने पर उस पर आक्रमण करने की शिक्षा दी गई। रात्रि के अंधकार में अच्छे से अच्छा संतरी भी अपराधी का पीछा करने में असमर्थ रहता है, परन्तु ट्रेनिंग-प्राप्त कुत्ते से बचकर कोई भी अपराधी नहीं भाग सकता, क्योंकि रात्रि के अंधकार में भी कुत्ते की घ्राण तथा श्रवण शक्तियाँ अपराधी खोज निकालने में उसकी सहायता करती हैं। कुत्ता बंदी को पहुँचाने के लिए बड़ा अच्छा साधन है, क्योंकि बंदी के भागने पर वह जंगलों तथा घुमावदार गलियों में भी उसका पीछा कर सकता है। इसी प्रकार बंदरगाह तथा रेलवे यार्डों में कुत्ता बड़ा विश्वस्त पहरेदार प्रमाणित हुआ है। वह माल की गाँठों तथा कोने-कूचे में घुस-घुसकर संदिग्ध व्यक्ति का पता पा जाता है।

* * *

लन्दन में कुत्तों से बमवर्षा में गिरे मलबे के नीचे दबे व्यक्तियों को खोज निकालने का भी काम लिया गया है। कुत्तों ने कितने ही अर्द्धमृत व्यक्तियों का पता लगाकर उनके प्राण बचाये हैं। इस कार्य में कुत्ते अपनी घ्राण-शक्ति के कारण विशेष उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

अमरीका ने युद्ध में प्रवेश करने के उपरान्त कुत्तों का महत्त्व अनुभव करके ब्रिटिश सेना से ट्रेनिंग-प्राप्त कुत्ते उधार माँगे। मित्रराष्ट्रीय अभियान दल के साथ यूरोप में कितने ही कुत्ते भी गये थे और उन्होंने वहाँ बड़ा उपयोगी कार्य किया था। आशा की जाती है कि कुत्ते भविष्य में सेना के स्थायी अंग बन जायेंगे।

चीन का लाखों वर्ष पुराना व्यक्ति

'चीन का पुरुष' अब अपनी निवास-भूमि में वापस लाया जा रहा है। पीकिंग में उनके छिपे पड़े रहने के स्थान को ढूंढने में जापानियों को तीन वर्ष लगे परन्तु संयोगवश लगभग ५ लाख वर्ष पुराने उसके पवित्र अवशेषों को टोकियो से दूर ले जाने में वे समर्थ हो गये। सन् १९२९ में एक युवक चीनी भूगर्भशास्त्री डा० पेइ ने प्रख्यात कपाल को चाउकाउटीन की पहाड़ी गुफाओं में से निकाला था, जो उत्तरी चीन में है। लगभग १ वर्ष पूर्व केवल एक दाँत को ही देखकर डा० डेविडसन ब्लैक ने यह अनुमान लगाया था कि इन गुफाओं में एक बिलकुल ही नई किस्म का पुरातन पुरुष पड़ा हुआ है। इस खोज से उसकी पुष्टि हो गई है। आग से काम लेनेवाले नर-भक्षक 'पीकिंग पुरुष' के और भी बहुत से अवशेष मौजूद हैं, जो जावा के 'एप मैन' (वानर पुरुष) और पिल्टडाउन के 'डान मैन' (प्रारंभिक पुरुष) के अवशेषों से कहीं अधिक हैं।

विश्व में पुनः शान्ति की स्थापना हो गई है और अब इन तीनों के सम्बन्ध में फिर वाद-विवाद प्रारम्भ किया जा सकता है। क्या इन तीनों के पुरखा एक ही थे अथवा तीनों किस्म के पुरुषों के पुरखा अलग-अलग और समकालीन थे? अपने पूर्वजों के सम्बन्ध में और भी अधिक जानने की अभिलाषा मनुष्य के हृदय में बनी हुई है परन्तु यह कोई सरल काम नहीं है। जब ६,००० वर्ष की सभ्यता में ही बहुत सी बातें धूमिल हैं तो लाखों वर्ष पुराने अन्धकारपूर्ण काल के पुरातन असभ्य पुरुषों के सम्बन्ध में जानना कैसे सरल हो सकता है?

* * *

रूस के पास सोने का खजाना

हाल में 'न्यूयार्क टाइम्स' ने रूस के एक अत्यन्त गुप्त रहस्य का उद्घाटन किया है। पत्र ने लिखा है कि उसे "जानकार क्षेत्रों" से पता चला है कि रूस के पास २०,००,००,००,००० पौंड और ५०,-००,००,००० पौंड के बीच सोना है। उसने यह भी बताया है कि रूस प्रतिवर्ष १९ प्रमुख क्षेत्रों के ४,२१,९६,००० पौंड से लेकर ७,०३,२८,००० पौंड तक का सोना निकालता है। इन क्षेत्रों में ओखोटस्क समुद्र और कोलयामा नदी के ऊपरी भागों के बीच का क्षेत्र भी शामिल है, जहाँ बहुत अधिक मात्रा में सोना पाया जाता है। अमरीका के कूटनीतिज्ञ क्षेत्रों का ख्याल है कि रूस अपने सोने के भंडार और उसके उत्पादन को प्रकट नहीं करना चाहता। संभवतः यही एक मुख्य कारण है कि अब तक उसने ब्रिटेन वुड्स के समझौते को स्वीकार नहीं किया।

* * *

रेडियो द्वारा उँगली के चिह्न भेजे गये

ब्रिटेन का 'डेली हेरल्ड' पत्र लिखता है कि हाल में ही स्काटलैंड की पुलिस ने एक व्यक्ति की उँगली के निशान और उसकी हुलिया, रेडियो-द्वारा मेलबोर्न भेजी थी। उँगली का निशान, उसे पहचानने के संकेत तथा उसका चित्र—यह सब रेडियो द्वारा भेजने में केवल ७ मिनट लगे। मेलबोर्न से उसी समय समुद्री तार द्वारा संवाद आया कि उँगली का निशान आदि, ठीक रूप में प्राप्त हुए। इस प्रकार 'स्काटलैंड यार्ड' ने रेडियो-द्वारा एक दूरतम स्थान को चित्र भेजने का रिकार्ड स्थापित किया है। उंगली के निशान दूरस्थ स्थानों को भेजने की इस विधि को अभी केवल स्काटलैंड की पुलिस ही काम में ला रही है, किन्तु अन्य देशों को भी उसे बताने की व्यवस्था की जा रही है।

* *

राष्ट्र-संघ के निर्माण की योजना

(पेज ५ का शेष)

ईरान को अपील

अंज़रबेजान के संकट से जो नीति अमरीका और ब्रिटेन ने बर्ती है और जो विद्रोह उठ खड़ा हुआ है, उसका भी निर्णय इसी संयुक्त-राष्ट्र सम्मेलन-द्वारा होनेवाला है। इसके ऊपर लगाये गये आरोपों पर कोई विशेष प्रकाश ब्रिटिश और अमरीका की राज्य-शक्ति नहीं डाल सकी। तीन राष्ट्रों की नीति और हस्तक्षेप का वहाँ की शासन विरोधी-व्यवस्था ने स्वयं किया है ऐसी हालत में संयुक्त-राष्ट्रों के इस सम्मेलन का निर्णय क्या होगा यह भी साफ़ है। आईज़ेन होवर के प्रधान मंत्रित्व ग्रहण न करने से और सभापति का जो कुछ भी चुनाव हुआ है उससे तो यह पता चलता है कि समस्त व्यवस्था की वास्तविक चाभी ब्रिटेन और अमरीका के हाथ में ही रहेगी।

एशिया का प्रतिनिधित्व

यों कहने के लिए संयुक्त-राष्ट्र की यह संस्था संसार के ५१ राष्ट्रों की प्रतिनिधि-सभा है परन्तु जैसा कि चीन के प्रतिनिधि डाक्टर कू ने कहा है कि एशिया का पूर्ण रूप से प्रतिनिधित्व हो ही नहीं सका है। चीन को छोड़कर कोई भी राष्ट्र ठीक-ठीक अपना प्रतिनिधि उस संस्था में नहीं भेज सकी है। भारत के प्रतिनिधि सर रामास्वामी मुदालियर जो भारत-सरकार के प्रतिनिधि के रूप में वहाँ हैं वह भारतीय दृष्टिकोण का समर्थन कहाँ तक कर सकेंगे यह भी सोचने की बात है। कहने को एटली साहब ने बड़ी शान से यह कह दिया है कि हम केवल शासन-व्यवस्था-द्वारा प्रतिनिधि सभा नहीं चाहते वरन् हम उन जनता की प्रतिनिधि-सभा चाहते हैं जो जन-शासन के रूप में विश्व न्यायी मानववर्ग की समस्याओं को हल कर सके। परन्तु इसका प्रमाण स्वयं उन्होंने सर रामास्वामी मुदालियर को प्रतिनिध बनाकर दिया है।

भारतवर्ष और संयुक्त-राष्ट्र-सम्मेलन

सामाजिक और आर्थिक संघ में भारतवर्ष को प्रतिनिधि बनाया गया है परन्तु "सुरक्षा कौंसिल" में भारतवर्ष को पीछे फेंक दिया गया है। वस्तुतः सुरक्षा कौंसिल में वे ही लोग रह भी सकते हैं जो साम्राज्यवादी शक्तियों का प्रतिनिधित्व कर सकें अन्यथा लाभ भी क्या होगा। सर रामास्वामी मुदालियर भी चुपचाप खामोश रह गये। वस्तुतः यदि देखा जाये तो जिस प्रकार से इस विश्व-प्रतिनिधि-सम्मेलन का ढाँचा बना है वह उसी पुराने

१९४५ की योरपीय राजनीति

(पेज ६ का शेष)

कितने ही देशों ने तो अपने यहाँ के उद्योग-धंधों आदि का राष्ट्रीयकरण करने की घोषणा भी कर दी है जिससे साम्राज्यवादियों का बिलकुल ही कमर कट गया है। यूगोस्लाविया, मार्शल टिटो के नेतृत्व में असाधारण रूप से जनवाद की ओर बढ़ रहा है।

नये योरप में जनवादी ताकतें ज़ोरों के साथ सन् १९४५ में बढ़ी हैं—ब्रिटेन से डरनेवाला योरप में अब कोई नहीं रहा है।

साम्राज्यवादी झुक गये

योरप में जनशक्ति के विकास और साम्राज्यवादी चालों को कुंठित होने से—साम्राज्यवादियों की तमाम हेकड़ी भूल गई है। सन् १९४५ जब दम तोड़ रहा था उसी समय त्रिराष्ट्र-सचिव-सम्मेलन मास्को में दस दिन तक हुआ। यह सम्मेलन पिछले सम्मेलनों से भिन्न वातावरण में हुआ था और एक भिन्न नतीजे के साथ समाप्त हुआ।

इस सम्मेलन में राजनीतिक दृष्टि से थके ब्रिटेन, अमेरिका के परराष्ट्र मंत्री और रूस के परराष्ट्र मंत्री में विचार-विनिमय हुआ। बहुत-सी बातों में सभी महान् राष्ट्रों में मतैक्य हो गया है। एटम-बम को रक्षा-कौंसिल के मातहत सौंप देने का भी समझौता हो गया है। संसार में शान्ति व्यवस्था स्थापित करने के लिए विभिन्न सम्मेलनों, कौंसिलों, और कमीशनों का आयोजन तैयार हो गया है।

उपसंहार

इस तरह नया योरप का सन् १९४५ में, तमाम दुनिया की भाँति उथल-पुथल का साल रहा है। नर-संहार की प्रत्यक्ष लड़ाई साल के शुरू होते-होते योरप में प्रायः खतम हो गई थी। पर कूटनीतिक दाँवपेंचों ने पूरे साल भर तक योरप को राहत न लेने दिया। १९४५ योरप के लिए कदाचित् उसके इतिहास में सबसे उथल-पुथल का साल रहा है। देखें सन् १९४६ के शान्ति-सम्मेलन आदि योरप को क्या कुछ दे सकते हैं या नहीं? तराके पर हैं। उसमें समय के अनुकूल थोड़ा परिवर्तन हो पाया है।

दुःख केवल इस बात का है कि इतने संघर्ष और छः वर्ष युद्ध-पीड़ित वातावरण के पश्चात् भी संसार की समस्त शक्तियाँ अपनी गलतियों को सँभालने में असफल हैं। सम्मेलन केवल एक ढोंग है क्योंकि इसका मूल आधार मनुष्य-जाति के उद्धार के सिद्धान्तों पर हीं बनाया जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हलचल

भंग की तरंग

कानपुर खेतिहर कालेज में अज्ञात काल के लिए हड़ताल ही नहीं हो गई बल्कि कालेज बन्द भी कर दिया गया है। बेजा नहीं है, इस समय बोने-जोतने का समय भी नहीं है। खेतिहरों को अवकाश मिलना ही चाहिए।

* * *

कानपुर एग्रीकलचरल कालेज के अधिकारी वहाँ के विद्यार्थियों को यूनियन बनाने की आज्ञा नहीं देना चाहते हैं। देना भी नहीं चाहिए। यूनियन से भारत-वर्ष में ब्रिटिश सत्ता को बहुत हानि पहुँचने की संभावना है। बाक़ई कहीं 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव क्रियात्मक रूप ग्रहण न कर ले।

* * *

लाहौर के गाँववालों ने पार्लिमेंट से आये हुए प्रतिनिधियों से कहा कि हमें न पाकिस्तान चाहिए न सिक्खस्तान। यह भी कहना चाहिए था कि हमें इंग्लिस्तान भी नहीं चाहिए। हमें हमारा हिन्दुस्तान चाहिए।

* * *

मध्य-प्रान्त के हिन्दी-भाषी जिलों में एक रोग फैला है जो रोगी को आजन्म पंगु बना देता है। रोगको भी हिन्दी भाषियों पर ही प्रहार करना था। हिन्दी-भाषी तो बेचारे यों ही सब जगह धकियाये जा रहे हैं।

गया में खानबहादुर एस० एम० इसराइल ने भाषणदेते हुए कहा कि चुनाव में लीग का गधा भी जीत जायगा। खाँ बहादुर साहब को हम धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने बता दिया कि लीग में कौन शामिल हैं और यह तो अनुमान किया ही जा सकता है कि अगर गधे होंगे तो धोबी भी अवश्य ही होंगे।

* * *

महात्मा गांधी ने गोहाटी में कहा है कि खादी-प्रचार से देश को एक अरब रुपये की बचत हो सकती है। किन्तु क्या बायल और जारजेट खादी में बन सकते हैं? कुछ बड़ों की महिलाओं के लिए भी ध्यान रखना चाहिए जो देश-सेवा में सबसे आगे हैं।

* * *

चर्चिल साहब अमरीका में छुट्टी मनाने गये हैं। ट्रूमन साहब को अवकाश हो तो वह इंगलैंड चले जायँ इससे आपस की मैत्री में बड़ा लाभ होगा।

* * *

सौ के ऊपर के नोट अब चालू न हो सकेंगे। सरकार को और नहीं तो सरकारी कर्मचारियों का तो कुछ विचार करना ही चाहिए। क्या सारी कमाई रद्दी के टोकरे में फेंकी जायगी?

* * *

लोगों का कहना है कि कलकत्ता और बम्बई के बाजारों में बड़े मूल्य के नोट खूब भुन रहे हैं और हजार के नोट सात सौ आठ सौ में बिक रहे हैं। बिक जा रहे हैं यही क्या कम है? क्योंकि ऐसा न हो आगे तौल के भाव से बिकने लगें?

* * *

पार्लियामेंटरी प्रतिनिध-मंडल भारत में घूम रहा है। घूम जरूर लेना चाहिए। अभी सर्दी है फिर तो गर्मी में लू चलने लगेगी तो आम का पना पीना पड़ेगा।

—अगड़धत्त शर्मा

तुम गा दो मेरा गान अमर हो जाये

[बच्चन जी की एक कविता की पैरोडी]

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

तुम बैठो, यह दूकान अमर हो जाये!
तुम हो नीलम की अभिनव परी निराली,
तुम काली हो जैसी कलकत्तेवाली,
तुम दो क्षण रानीगंज चली यदि जाओ
तो कोयले की भी खान, अमर हो जाये।
तुम पहलवान जिसका बल है लासानी,
गामा भी जिसके आगे भर दे पानी,
साहस कर तुमसे आये यदि लड़ने को
सीमा का वह अफगान अमर हो जाये।
आटम बम ठंढा हो जाये दम भर में,
इंगलैंड, रूस, अमरीका भागें घर में,
तुम सम्मुख अगर खड़ी हो जाओ जाकर
तो मरता यह जापान अमर हो जाये।
जिह्वा की है बेकार लियाकत सारी,
कर सकी न जीवन दान मदद सरकारी,
तुम संपादक की नाक तनिक-सी छू दो
यह मुस्लिम लीगी 'डान' अमर हो जाये।

हमारे उत्तमोत्तम प्रकाशन

श्रीमद्भागवत

सचित्र (दो जिल्दों में) मूल्य १५।—)

यह आचार्य शुकदेवजी का प्रसिद्ध ग्रन्थ है जिसका हिन्दू समाज में बहुत आदर है। इसकी प्रशंसा करना सूर्य को दीपक से देखना है। इसकी बहुत माँग है।

कवि सोहनलाल द्विवेदी की अनुपम कृतियाँ

भैरवी २॥=) कुणाल १।)
पूजागीत २) विषपान १)
बाँसुरी ॥।) शिशु भारती ।॥।)
वासवदत्ता १॥)

ठाकुर गोपाल शरणसिंहजी की काव्यकृतियाँ

सुमना २) संचिता ३)
मानवी २।—) माधवी २)
ज्योतिष्मती २।) कादम्बिनी २)

प्रवीण कवि श्यामनारायण पाण्डेय का खण्डकाव्य

हल्दीघाटी २॥)

सुकवि हरदयालसिंह जी की प्रमुख रचना

दैत्यवंश महाकाव्य ३।—)

आदि कवि महर्षि वाल्मीकि प्रणीत

हिन्दी वाल्मीकि रामायण सचित्र दो खण्डों में मूल्य प्रत्येक खण्ड का ६॥)

द्विवेदी-काव्यमाला

मूल्य ४)

स्वर्गीय आचार्य द्विवेदी जी की कविताओं का अपूर्व संग्रह

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

छुटकारा

एक संयुक्त हिन्दू-परिवार का मर्म-स्पर्शी चित्रण इसमें अंकित किया गया है। सम्पत्ति के लिए भाई-भाई में होनेवाली सिरफुटौवल, एक भाई का अपने दूसरे भाई को सम्पत्ति-सम्बन्धी अधिकारों से वंचित करने का षड्यन्त्र रचना, आदि बातें इस उपन्यास में मनोरंजक ढंग से लिखी गई हैं। मूल्य १।—)

मैनेजर बुकडिपो,

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

असह्य सिर दर्द से वह एकदम बरी हो गई

क्योंकि वह क्रुशेन साल्ट सेवन करने लगी

इस स्त्री के सिर की पीड़ा यदा-कदा वाली नहीं थी। किसी गोली अथवा टिकिया से किसी भी प्रकार का फायदा नहीं होता था। उसका रोग प्रारम्भिक चिकित्सा के मान का नहीं था किन्तु जब क्रुशेन ने रोग की जड़ ही उखाड़ना आरम्भ किया तो उसका सारा दर्द सहज में ही जाता रहा।

वह स्त्री इस प्रकार लिखती है, "मुझे भयंकर सिरदर्द हुआ करता था। असह्य पीड़ा होती थी किसी भी प्रकार की गोली अथवा टिकिया से किसी भी प्रकार का लाभ नहीं हुआ। एक दिन सवेरे मैंने साधारण रूप से एक गिलास गर्म पानी के साथ क्रुशेन का सेवन किया। बाद में नियमित रूप से क्रुशेन सेवन करती रही और तब से मुझे यह भयंकर सिर दर्द नहीं हुआ। क्रुशेन अन्य दवाओं से मुझे उपयोगी प्रतीत हुआ। मैंने इसे बहुत ही लाभदायक पाया।

—श्रीमती एल० ए० डब्लू०

इस भयंकर सिर दर्द का कारण प्रायः शरीर का मल हुआ करता है जिससे रक्त में विष फैल जाता है। क्रुशेन साल्ट के ६ प्राकृतिक लवण से शरीर की सारी इंद्रियाँ अपना काम सुचारु रूप से करने लगती हैं और शरीर में जमे हुए विष को निकाल बाहर करती हैं। आपका भीतरी शरीर एकदम साफ तथा शान्त हो जाता है। इस प्रकार सिर दर्द, चेहरे का पीलापन, नेत्र का धुंधलापन आदि जाता रहेगा। आपका शरीर क्रुशेन की कभी अवहेलना नहीं कर सकता। मात्रा बढ़ाने की कोई आवश्यकता नहीं होगी। सिर दर्द दूर हो जाने के बाद क्रुशेन के सेवन से आपके शरीर का क्रम नियमित रहता है।

क्रुशेन साल्ट सभी अच्छे दवाखानों तथा दूकानों में मिलता है।

आपकी किस्मत में क्या लिखा है?

अगर आप एक साल के अन्दर पेश आनेवाले अच्छे-बुरे हालतों को समय से पहले जानना चाहते हैं तो आप आज ही हमको सिर्फ पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी फूल का नाम लिखकर भेज दीजिए। बस फिर हम ज्योतिष विद्या के हिसाब से आपके आनेवाले १२ मास का नफा, नुकसान, किस तिजारत में फायदा होगा, किस जरिये रुपया मिलेगा, रोजगार कब मिलेगा, मुलाजमत में तरक्की, तबादला, तनज्जुली, औरत और औलाद का सुख, तन्दुरुस्ती, बीमारी, दूर का सफर, मुकद्दमा और इम्तिहान में सफलता, सगाई शादी, जमीन व जायदाद का सुख, किसी से नया मेल या नफा, सट्टा, लाटरी या किसी अज्ञात कारण से धन का मिलना सारांश तारीख कार्ड से लेकर एक साल तक होनेवाली कुल बातों का खुलासा यानी माहवारी वर्षफल बनाकर सिर्फ एक रुपया चार आने में वी० पी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक खर्च अलग होगा। साथ में बदकिस्मती को खुश किस्मती में बदलने का उपाय भी लिखा जायगा ताकि आनेवाली मुश्किलों को दूर किया जाय। सिर्फ एक बार की परीक्षा आपको बतला देगी कि हम ज्योतिष विद्या के कितने जानकार हैं। गलत साबित होने पर कीमत वापिस।

श्री स्वामी सत्यनारायण ज्योतिष आश्रम, (D. D.) जालन्धर सिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुप्रसिद्ध निर्माता और निर्देशक श्री विजय भट्ट

(पेज १२ का शेष)

बदल डालना चाहिए, ताकि वह दुनिया की गति-विध के साथ चल सकें। यदि वह कामुकता के गढ़े में ही पड़े रहना चाहते हैं तो फिर उनकी जवानी पर लानत है। जो जवानी हमें उठने का पाठ नहीं पढ़ा सकती वह व्यर्थ है? जिन नवयुवकों ने अपनी जिन्दगी में आगे कदम बढ़ाना सीख लिया हो, वही सिनेमा की दुनिया में आने का विचार करें। ऐसे नवयुवकों का सिनेमा-संसार में हर वक्त स्वागत हो सकता है। उनके लिए किसी की सिफारिश की जरूरत नहीं।

प्रश्न--फिल्मी-दुनिया में आपकी सफलता का क्या रहस्य है?

उत्तर--मेरी सफलता का रहस्य कठिन परिश्रम के विशाल पृष्ठ-भूमि पर अंकित है। सफलता कोई ऐसी चीज नहीं, जिसके लिए मानव को निराश होना पड़े। आप धैर्य की दीवाल पर बैठे रहिए, मेहनत की रस्सी-द्वारा जिन्दगी के कूप से यदि आप सफलता को ऊपर खींचेंगे, तो उसे आप अवश्य प्राप्त कर लेंगे। सफलता का "प्रविष्ट-द्वार" ही श्रम की ईंटों से बना हुआ है। फिल्मी-दुनिया में मैं क्यों सफल हो गया, इसका एक और भी कारण है। वह यह कि जो व्यक्ति "मानस-विश्लेषण" का ठीक निरूपण कर लेगा तो मानो उसके हाथ सफलता की कुंजी आ गई। वृत्तियों के इतिहास का पढ़ना कोई आसान खेल नहीं है। पहले तो जिन्दगी का काफी अनुभव हो जाने पर ही आता है। वृत्तियों के आवर्त में कभी-कभी इंसान अपने को खो बैठता है। इसलिए सजग होकर वृत्तियों का "विश्लेषण चित्र" लेना चाहिए। यदि उसने इस कार्य में मेहनत और अनुभव का प्रदर्शन किया, तब तो उससे असफलता कोसों दूर भाग जायेगी। कला पर विजय प्राप्त करना कोई गुड़ियों का खेल नहीं। मैं तो कला के हृदय को जीतना ही मानव की एक अपार साधना समझता हूँ। मैं कड़ी मेहनत को ही जिंदगी की वास्तविकता समझता हूँ। फिर मुझसे सफलता क्यों रूठने लगी? जिस दिन मैं अपने आदर्श से गिर जाऊँगा उसी दिन मैं भी असफलता के गढ़े में जा गिरूँगा। हुस्न की परियों के साये में सफलता का चमन नहीं लगता। सफलता यदि आपको प्राप्त करनी है--तो वह आपको श्रम के द्वारा ही मिलेगी। जिसने सफलता के इस रहस्य को समझ लिया है उसने जिन्दगी पर विजय प्राप्त करना सीख लिया।

प्रश्न--दोषी कौन? फिल्म-निर्माता या दर्शक--फिल्म क्यों नहीं हमारे चरित्र-निर्माण में सहायक होती है?

उत्तर--यह प्रश्न मुझसे अकसर पूछा जाता है। मैं जवाब देता-देता थक गया हूँ। मैं फिर आपसे कहता हूँ कि आज की परिस्थिति में जैसे चित्र निकल रहे हैं, वह फिर भी अच्छे हैं। बशर्ते कि दर्शक उनसे कुछ हासिल कर सकें। एक ही फिल्म से हम कई प्रकार की भावना ले सकते हैं। यदि हमें लेने की चाह हो तब--दर्शकों को फिल्म "समालोचक" की दृष्टि से नहीं देखना चाहिए। उन्हें तो सिर्फ इसलिए देखना चाहिए कि उससे कुछ लेना है, तब तो वह फिल्मों से कुछ ग्रहण कर सकते हैं। यदि हमने इस नीयत से चित्र नहीं देखा--"कोरे उपदेशक" की हैसियत से चित्रों को देखते रहे, तो हमारे पल्ले सिवा चित्र की बुराइयों के और क्या पड़ेगा? बात तो दरअसल यह है कि आज दर्शक की मनोभावना फिल्मों से कुछ ग्रहण करने की नहीं है, फिर फिल्में उनके चरित्र-निर्माण में कैसे सहायक बन सकती हैं? मैं तो यह कहूँगा कि फिल्म-निर्माता से फिल्म-दर्शक ही अधिक दोषी हैं। फिल्म-निर्माता फिर भी गुलामी की जंजीरों से जकड़ा हुआ है। वह जितनी भी धूल "सेन्सर" के आँखों में झोंक सकता है उतनी झोंकता है, सिर्फ जनता के लाभ के लिए--और फिर भी जनता उन चित्रों से लाभ न उठाये, तो फिर इसका दोषी कौन? आज बहुत-सी फिल्में बड़ी श्रेष्ठ निकली हैं, जैसे अभी हाल में "हमराही" को ही ले लीजिए। क्या हम उससे शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकते? क्या वह हमारे चरित्र-निर्माण में सहायक नहीं हो सकती? यदि इतनी अच्छी फिल्म भी जनता को पसन्द न आये--और उससे वह कुछ प्राप्त न कर सके--तो फिर हम क्या करें? हमने तो अपना फर्ज अदा कर दिखाया, और दिखा रहे हैं, लेकिन जनता को अपनी फिल्म देखने की मनोवृत्ति बदलनी होगी, तभी काम चलेगा। आज "फिल्म-दर्शक" की मनोवृत्ति अत्यन्त निम्नकोटि की है। उनकी आँखें अभिनेत्रियों के गुलाबी गालों की सुषमा में ही अटक जाती हैं। वह आगे नहीं बढ़तीं। फिर वह उस चित्र से क्या प्राप्त कर सकते हैं? आज लोकमत इतना गन्दा है कि फिल्म-निर्माता मजबूर हो जाता है और उनको प्रसन्न करने के लिए कुछ निम्नकोटि के सीन चित्र में डाल ही देता है। यदि न डाले, तो उसके लाखों रुपयों पर पानी फिर जाने की शंका रहती है। लोकमत के आगे सम्राटों के मुकुट तक माता वसुन्धरा की गोदी में गिर जाते हैं। फिल्म-निर्माताओं की क्या बिसात? पहले हमें लोकमत को शुद्ध करना होगा। बिना लोकमत के शुद्ध किये हुए फिल्म-निर्माताओं को दोषी ठहराकर फिल्में हमारे चरित्र-निर्माण में सहायक नहीं हो सकतीं।

प्रश्न--आप राष्ट्रभाषा हिन्दी या हिन्दुस्तानी किसे मानते हैं?

उत्तर--मैं तो राष्ट्र की भाषा उसे मानता हूँ, जो कि सार्वजनिक लोगों की जबान पर हो। चाहे वह भाषा हिन्दी हो या हिन्दुस्तानी। यदि आम जनता की जबान का नाम हिन्दी पड़ेगा, तो मैं उसको प्यार करूँगा, यदि आप उसे हिन्दुस्तानी के नाम से पुकारेंगे, तो भी मुझे कोई आपत्ति नहीं। हिन्दी-हिन्दुस्तानी के फेर में मैं कभी नहीं पड़ता। यह तो राष्ट्र-नायकों का कार्य है। मैं तो अपने चित्रों के लिए ऐसी भाषा चुन लेता हूँ जो हिन्दुस्तान में चारों तरफ समझ ली जाती है इससे ज्यादा मैं भाषा की गहराई में कभी नहीं जाता, और न फिल्म-निर्माताओं को जाना ही चाहिए। उसका ध्येय तो जनता के हृदय में बैठकर जनता की जबान पकड़ना है। फिर चाहे भाषा कोई भी हो। राष्ट्र चाहे उस जबान को कुछ भी पुकारे हमें इससे क्या प्रयोजन? हमें तो राष्ट्र-अनुकूल भाषा देना है यदि हम अपने इस कर्त्तव्य से च्युत होते हैं, तो वास्तव में हम एक बहुत बड़ी गलती करते हैं--युग की भाषा के साथ-साथ चलना प्रत्येक निर्माता का कर्तव्य होना चाहिए।

प्रश्न--आज के सनेमा-पत्र क्या वास्तव में व्यवसाय की तरक्की में सहयोग दे रहे हैं या नहीं?

उत्तर--आज के "सिनेमा-पत्र" फिल्म-व्यवसाय में बिलकुल सहयोग नहीं दे रहे हैं। वह तो अपने कर्तव्य से च्युत हो रहे हैं। आज सिनेमा-पत्र जरूरत से ज्यादा निकल रहे हैं--किन्तु फिर भी उनसे सिनेमा को कुछ भी लाभ नहीं। हाँ, ईमानदारी के साथ सिने-व्यवसाय को पनपानेवाला एक ही सिनेमा-पत्र काफी है, लेकिन ऐसा कोई भी पत्र मुझे दिखाई नहीं पड़ता। अँगरेजी भाषा में "फिल्म-इंडिया" ने कुछ समय तक सिने-व्यवसाय की सेवा की थी, लेकिन आज वह भी सिनेमा-पत्रों के अन्य गुट्ट में मिल गया है। उसकी भी आवाज धीमी पड़ती जा रही है। न मालूम क्यों? जहाँ तक व्यक्तिगत लाभ का प्रश्न है वहाँ तक तो आज के सिनेमा-पत्र ठीक हैं, किन्तु सिने-व्यवसाय की तरक्की के दायरे में वह बहुत पीछे हैं। आज ऐसे सिनेमा-पत्र की बहुत आवश्यकता है, जो कि निष्पक्ष होकर सिने-व्यवसाय की सेवा करें। यह सुनना कि उनको प्रारम्भ में कुछ कठिनाइयों का समना करना पड़ेगा, लेकिन कठिनाइयों से डरकर अपने कर्तव्य से च्युत होना उचित नहीं है? पत्रकार को तो काँटों के सेज पर होकर चलना होता है, आज सिनेमा-क्षेत्र में ऐसे पत्रकार नहीं हैं जो कि जिन्दगी के "ऊबड़-खाबड़" मार्ग से चलकर के भी अपने कर्तव्य से न डिगें। मेरा तो निवेदन यही है कि सिने-पत्रकार अब सतर्कता से काम लें, जमाने के साथ चलना सीखें, तभी उनका अस्तित्व कायम रह सकता है। उनको अन्य साहित्यिक पत्रकार बुरी निगाह से देख रहे हैं।

प्रश्न--क्या आपने हिन्दी-साहित्य का भी पठन-पाठन किया है? हिन्दी की कविता क्या आपको पसन्द है?

उत्तर--हाँ मुझे हिन्दी का शौक है। मैं अकसर वक्त मिलने पर हिन्दी की पुस्तकें पढ़ा करता हूँ। हिन्दी का मैं क्यों आदर करता हूँ, इसका भी एक रहस्य है। वह यह कि मेरी श्रद्धा स्वर्गीय प्रेमचन्द के साहित्य पर है। मैं प्रेमचन्द के साहित्य को बहुत लगन से पढ़ता हूँ। वास्तव में वह एक सफल उपन्यासकार थे। हिन्दी में अभी उनका स्थान रिक्त है। वह हिन्दी-साहित्य के स्तम्भ थे। प्रेमचन्द जी के अलावा श्रीयुत माखनलाल चतुर्वेदी का भी मैंने साहित्य पढ़ा है। वह भी अच्छा लिखते हैं। मुझे उनकी कई एक चीजें पसन्द हैं। हिन्दी के सम्बन्ध में मेरी बात-चीत श्रद्धेय माननीय टंडन जी से भी हुई है। उनके व्यक्तित्व में भी मैं काफी प्रभावित हुआ हूँ। इसके अलावा मैंने और भी साहित्यकारों की कृतियाँ पढ़ी हैं, लेकिन मैं समझता हूँ कि अभी हिन्दी को यदि वह राष्ट्रभाषा होनी चाहती है, तो उसे काफी सुधारना होगा। हिन्दी को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश कराना होगा। हिन्दी की कविताओं के सम्बन्ध में मेरी राय ठीक नहीं हिन्दी की कवितायें अभी जिन्दगी के साथ नहीं चल रही हैं। कविता को बिलकुल "कल्पना-लोक" की चीज न बनाना चाहिए। इधर मैंने हिन्दी की कई कवितायें पढ़ी हैं, उनमें से जो मुझे पसन्द हैं, उसका एक नमूना आपको भी बताता हूँ--वह नमूना यह है:--

आह मैं बन्दी स्वयं हूँ!
प्राणधारी यदि मैं होता
यों विवशता पर न रोता
खोल देता द्वार अपने
फोड़ देता भित्तियाँ निज
....तोड़ देता सीखचों को
राष्ट्र के बन्दीजनो को,
बन्द कर मैं यूँ न रखता
किन्तु जड़ हूँ क्या करूँ,
आह मैं बन्दी स्वयं हूँ!
देशद्रोही पतित पत्थर,
मातृ-भू का भार हूँ
क्यों "दुर्ग" कहकर लोग मेरा,
व्यंगमय उपहास करते
हाय मैं तो विश्ववंदित--
बन्दियों का क्रूर निन्दित
कटु कलंकित एक कारागार हूँ,
जल रहा हूँ व्यथा से
पर क्या करूँ बन्दी स्वयं हूँ।

इस प्रकार की कविता ही मानव के चरित्र का निर्माण कर सकती है। वास्तव में यह कविता हमारे जीवन का चित्र पेश करती है। हमारी बेबसी का एक ज्वलन्त चित्र सामने रखती है। ऐसी कविताओं से हिन्दी अपना सिर गौरव के साथ ऊँचा उठा सकती है।

(लेखक-द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

सूरज छाप सर्वत्र मिलता है स्था. १९१६
स्वदेशी
आरोंदा १८६६
नीलगिरि तेल नमूना मुफ्त
युकॅलिप पेन बाम सदकामरहम
खाण्डालेकर बन्धु बम्बई ४

स्टैनक्जेमा
मलहम
दाद, दिनाय, फोड़ा फुन्सी, जले, कटे, मुहासे, सड़ा, गला घाव तथा एक्जिमा
आरोग्य करने में अद्वितीय है
थ्री डिब्रिया
स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट ऐण्ड कं० लि:
कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ कराची अमृतसर
SSK 121

पूर्वी देशों में अति प्राचीन तथा सर्वश्रेष्ठ.....
'मृत सञ्जीवनी सुरा' प्राचीन आयुर्वेदिक योग पर निर्मित एक पुष्टिकारक औषध है। इसका अमोघत्त्व सहस्र सहस्र उपभोक्ताओं द्वारा दीर्घकाल से सिद्ध किया जा चुका है। समय की कसौटी पर कसी जाने के पश्चात् हमारी 'मृत सञ्जीवनी सुरा' ने पूर्वी देशों में अति प्राचीन एवं सर्वश्रेष्ठ होने का अधिकार यथार्थ ही उपार्जन किया है
SAKTI'S MRITASANJIBANI SURA
प्रत्येक अवस्था के लिए अति प्राचीन, बलवर्द्धक औषध! अध्यक्ष माथुर बाबू का शक्ति-औषधालय ढाका
AD-3YU. D.S-123

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Estd. 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H I M.S. १०) H.M.B.S. १५) H.M.D.S. २५)। पुस्तक—अ० पारिवारिक १) बायोकेमिक १) १००० रेडलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्सनरियाँ १॥) आर्गेनन १), फार्मा-कोपिया १॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायँगी। डा० ख० साफ—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≡) ड्राम। आउन्स ॥) घरेलू बक्स ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.)

सभी दर्दके सामने
'वि'-विजय-क्षण

सारिडन

लेनेके १० मीनट बाद

मधुबाला—लेखक, राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०। इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु बरसाने की पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रस-सिक्त बनाइए। मूल्य ≡) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

अब शान्ति हुई!

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ग्राइपीज

बच्चों के पेट की गड़बड़ी के लिये

SSK HB

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट • कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर

बच्चे वुड वर्ड का ग्राइप वाटर पसंद करते हैं

यह सब दर्दों को दूर करता है और बच्चों को तंदुरुस्त व खुश रखता है।

WOODWARD'S GRIPE WATER

keeps baby well

"सप से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए इसको अवश्य देख लिया करें।

I-WW 118—117

W. WOODWARD LTD., LONDON, ENGLAND.

यूनाइटड

कमर्शियल बैंक लिमिटेड

२, रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता।

विक्रीत मूलधन.....४ करोड़ रुपया
चुकता किया मूलधन.....२ करोड़ रुपया
सुरक्षित मूलधन.....७½ लाख रुपया

डाइरेक्टरों का बोर्ड

श्री जी० डी० बिरला (चेयरमैन)

श्री एम० ए० इस्फहानी (वाइस-चेयरमैन) श्री रमनलाल जी साराइया (वाइस-चेयरमैन)

श्रीयुत अनन्तचूर्ण एा — श्रीयुत मोतीलाल लूपरिया
" महादेव एल दहानुकर — " बैजनाथ जलान
" नवीनचन्द्र मफ़तलाल — " ईश्वरीप्रसाद गोयनका
" मदनमोहन और रुइया — सर आदम जी हाजा दाऊद

हर प्रकार के बैंकिंग कारोबार के लिए प्रस्तुत

श्री बा० टी० ठाकुर (जेनरल मैनेजर)

शाखाएँ एवं एजेंसियाँ—समस्त भारत तथा विदेश में।

ब्रांच आफ़िस—अलबर्ट रोड, इलाहाबाद।
श्री के० एल० गुप्ता, मैनेजर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालसखा का नया वार्षिकांक

एक महीने में प्रकाशित होगा। पाठक धैर्य रक्खें।

ग्राहकों के अनुरोध से हमने इस वर्ष भी बालसखा का वार्षिकांक निकालने का निश्चय किया है। इसमें बहुत से चित्र, कविताएँ, कहानियाँ, बढ़िया लेख और उपयुक्त सामग्री रहेगी। पृष्ठ संख्या ३०० से ऊपर। यह अङ्क बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होगा। यह मासिक बालसखा के १२ अंकों से पृथक् है। मूल्य ३), मासिक बालसखा के ग्राहकों के लिए रियायती मूल्य २॥)

रियायती मूल्य के लिए अपना ग्राहक-नंबर अवश्य लिखिए।

मैनेजर, बालसखा, इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

उसका अभिमान

आशा फेस पाउडर

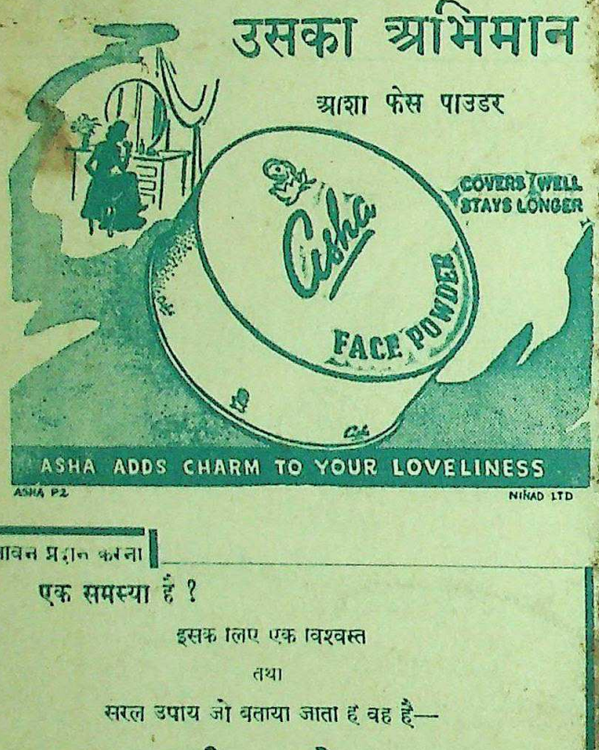

पुनर्जीवन प्रदान करना

एक समस्या है?

इसके लिए एक विश्वस्त

तथा

सरल उपाय जो बताया जाता है वह है—

बाई-एडोल

BI-ADOL

यह कोमल बालकों के शरीर की गठन में प्रकृति की सहायता करता है।

यह माता का स्वस्थ और स्फूर्तियुक्त रखता है।

सूखा रोग से बालकों को मुक्त करता है।

बाई-एडोल

यह एक वनस्पति रोगन और विटामिन ए और डी से तैयार किया हुआ है और शिशु-रोग, क्षयी-रोग तथा अन्य क्षयकारक रोगों में उतना लाभदायक है जितना श्वास-सम्बन्धी तथा अन्य संक्रामक रोगों में।

तमाम अच्छे औषधि विक्रेताओं से प्राप्य

बेंगल इम्युनिटि कम्पनी लि० :: कलकत्ता।

मझली दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पिता से भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

"बचत को स्वभाव डालिये"

सर आदमजी हाजी दाऊद

मैनेजिंग डायरेक्टर आदमजी दाऊद कम्पनी लिमिटेड, डायरेक्टर यूनाईटेड कमर्शियल लिमिटेड।

"उनके कल्याण की दृष्टि से जनता में नियमपूर्वक बचत करने के स्वभाव को प्रोत्साहन देना चाहिये। मुझे आशा है नेशनल सेविंग्ज़ मूवमैन्ट इस उद्देश्य की पूर्ति में कार्यसाधक सिद्ध होगी। इससे जनता में न केवल अपनी स्थिति के अनुसार नियमपूर्वक बचाने का सङ्कल्प दृढ़ होगा बल्कि रहन-सहन का ढंग भी उन्नत होगा और उनका रुपया भी सुरक्षित रहेगा। यही कारण है कि मैं पूर्ण रूप से नेशनल सेविंग्ज़ मूवमैन्ट के पक्ष में हूं।"

Adamjee Haji Dawood

संक्षिप्त विवरण

(१) आप ५), १०), ५०), १००), ५००), १०००) या ५०००) के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) एक व्यक्ति ५०००) से अधिक मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स नहीं ख़रीद सकता। ये इतने उपयोगी हैं कि इनका राशन करना ही उचित समझा गया है। हां दो व्यक्ति मिलकर १०,०००) के सर्टिफिकेट्स मोल ले सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है।

(४) इस प्रकार अवधि पूरी होने पर ४-१/६% वार्षिक ब्याज मिलता है।

(५) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(६) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते (५) का सर्टिफिकेट १-१/२ वर्ष पश्चात ही भुनाया जा सकता है) परन्तु वास्तविक लाभ इसी में है कि १२ वर्ष से पहिले इन्हें न भुनायें।

(७) जिनकी बचत थोड़ी है वह १), १॥) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं ५) के स्टैम्प्स जमा होने पर एक नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट मिल जाता है।

(८) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स डाकखाने सरकार द्वारा अधिकृत एजेंटों से सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

आप अपनी बचत से ५०% लाभ उठाइये

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिये।

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष ८, संख्या २३] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक रविवार, ३ फरवरी, १९४६

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

केन्द्रीय असेम्बली के प्रेसीडेंट-पद पर सुप्रसिद्ध कांग्रेसवादी नेता श्री मालबंकर का चुनाव हो गया। मुस्लिम लीग, योरोपियन और कुछ नामजद सदस्यों ने जोर तो बहुत मारा लेकिन श्री मालबंकर तीन वोट से विजयी हो ही गये। नवाबज़ादा लियाकतअली खाँ ने सर कावसजी जहाँगीर का नाम प्रेसीडेंट-शिप के लिए पेश किया किन्तु आख़िरकार जहाँगीर साहब पराजित हुए। नवाबज़ादा महोदय ने चुनाव के बाद जो व्याख्यान दिया वह भी रहा मार्के का। आपने कहा कि इस बार किसी अल्पमतवाले के प्रेसीडेंट बनाना चाहिए था। हिन्दू और मुसलमान अगर प्रेसीडेंट हो सकते हैं तो पारसी क्यों नहीं हो सकते? अपने राम को प्रसन्नता हुई कि भला पारसियों की वकालत करनेवाला तो कोई इस दुनिया में पैदा हुआ? क्यों नहीं, अल्पमतवालों का भला लीग के सिवा और कौन दल कर सकता है? लेकिन कहावत है कि अपने घर में चिराग जलाकर तब दूसरों के घर में रोशनी करनी चाहिए। मुस्लिम लीग अपनी तो रक्षा कर ले, तब पारसी, मद्रासी, पंजाबी, नेपाली और ईसाई के उद्धार का बीड़ा उठाये। असल बात यह है कि लीग ने अड़ंगा लगाना तो बहुत चाहा लेकिन असेम्बली में उसकी चल नहीं सकी। वहाँ भी अन्त में उसे पराजित होना पड़ा। अल्पमत के नाम पर उसने खेल तो खेला लेकिन अन्त में रंग उखड़ गया। मुस्लिम लीग का अभी तो यह पहला पैंतरा था। अभी तो असेम्बली की उम्रही बाकी है। जरा असेंबली को अपनी असली उम्र पर तो आने दीजिये फिर लीग का पैंतरा देखिये। अभी तो अल्पमत की आड़ में जाने क्या-क्या गुल खिलाये जायेंगे क्योंकि लीग ही अल्प-संख्यकों के नाम पर आँसू बहा सकती है, दूसरे दलों में इतनी सामर्थ कहाँ?

* * *

श्रीमती विजयालक्ष्मी पंडित अमरीका से भारत पुनः वापस आ गईं, यह बड़ी प्रसन्नता की बात है। श्रीमती पंडित अमरीका में रहकर ब्रिटेन की ऐसी लिहाड़ी लेती रहीं हैं कि वाकई चर्चिल-सरकार परेशान हो गई थी। उसने सोचा कि इस लड़ाई के ज़माने में श्रीमती पंडित को अमरीका जाने का पासपोर्ट क्यों दिया गया? किस घड़ी में भारत-सरकार ने उन्हें अमरीका जाने की इजाज़त दी? लेकिन भाग्य को कोई क्या करे? चर्चिल-सरकार की फजीहत चलते-चलते होने को थी ही, और वह भी अपने परम मित्र अमरीका के सामने। किन्तु कोई कुछ कर ही क्या सकता था? श्रीमती पंडित ने अमरीका में बैठे-बैठे ऐसी धूम मचाई कि चर्चिल-सरकार और ब्रिटिश हुकूमत दलदल उठी। इसके बाद तो मजदूर सरकार आ ही गई। अब श्रीमती पंडित भारत आ गई हैं। गनीमत हुई, वह भारत आ गईं और ब्रिटेन को कुछ तसल्ली हुई। अमरीका के आगे अब कुछ लीपापोती करने का अवसर मिलेगा। अपने राम श्रीमती पंडित को भारत में पुनः पदार्पण पर बधाई देते हैं। अपने राम को यह भी प्रसन्नता है कि वह कांग्रेस के चुनाव में भाग लेकर पुनः एम० एल० ए० बनने जा रही हैं। इसके बाद मिनिस्टरी में वह रहेंगी ही क्योंकि अब तो वह अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के ओहदे पर पहुँच गई हैं, केवल भारत की ही नहीं संसार के विख्यात लोगों में उनकी गिनती होने लगी है।

* * *

आगामी १२ फ़रवरी को केन्द्रीय असेम्बली में डाक्टर जी० बी० देशमुख (कांग्रेस) के तीन बिलों को विचार-विनिमय के लिए सबसे प्रथम स्थान मिला है। पहले बिल में हिन्दूमात्र के बीच होनेवाले विवाह-सम्बन्ध के बारे में हिन्दू-क़ानून के अन्तर्गत रुकावटें दूर करने, दूसरे बिल में विवाहित हिन्दू महिलाओं को कुछ विशेष परिस्थितियों में पृथक् रहने तथा भरण-पोषण का अधिकार दिये जाने और तीसरे बिल में सन् १८७२ के स्पेशल मैरेज ऐक्ट को संशोधित करने की बात प्रगट की गई है। अपने राम को सचमुच प्रसन्नता है कि डाक्टर देशमुख के बिलों को विचार-विनिमय के लिए प्रथम स्थान मिला है। मिलना भी चाहिए। विवाह का गंभीर प्रश्न है, ज़िन्दगी के सबसे नायाब काम की बारी है। डाक्टर देशमुख इस मामले को लेकर पिछली असेम्बली से जूझ रहे हैं, ऐसी दशा में अब तो विवाह का मामला पक्का हो ही जाना चाहिए। आख़िर देश को स्वाधीनता तो मिलेगी ही, अँगरेज़ हिन्दुस्तान छोड़कर जायेंगे ही, नई घर-गृहस्थी बसाने के शुभ दिन आयेंगे ही इसलिए पहले से ही रास्ता खुल जाना चाहिए। कम से कम ब्याह-शादी के मार्ग के रोड़े तो दूर कर दिये जायें! स्वाधीनता प्राप्ति के बाद सुख का साधन तो इकट्ठा कर लिया जाये! पता नहीं आगे क्या हो, किसी की ज़िन्दगी का क्या भरोसा! नहीं तो आनेवाली पीढ़ी क्या कहेगी? स्वाधीनता और ब्याह-शादी का अविच्छिन्न सम्बन्ध है। पूर्णस्वतंत्रता का भोग किया जायेगा तो ब्याह-शादी की पूर्ण स्वतंत्रता में किसी क़िस्म की बाधा क्यों रहने दी जाये?

* * *

भारत में कलकत्ता और बम्बई दोनों नगर अपनी-अपनी विशेषता रखते हैं। यही नहीं यहाँ की प्रान्तीय सरकारें भी भारतवर्ष में खलीफ़ा का काम करती हैं। खलीफ़ों ने अपना क़दम बढ़ाया और दूसरे प्रान्तों की सरकारों ने भी उनके पीछे क़दम उठाना शुरू किया। अपने राम को याद है कि कलकत्ता में विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय जुलूस उठाया था और वहाँ की सरकार ने डंडेबाजी भी की थी। सारे देश में कुहराम मचा, किन्तु कौन सुननेवाला है? फिर भला बम्बई कलकत्ता से पीछे कैसे रह सकता था? पिछले दिनों नेता जी श्री सुभाषबोस की ५०वीं वर्षगाँठ के अवसर पर बम्बई में भी एक लम्बा जुलूस निकला और आगे बढ़ा लेकिन बम्बई पुलीस ने जुलूस को आगे बढ़ने से इसलिए रोक दिया कि वह मुसलमानों के मुहल्लों से होकर न गुजरे। बस जुलूस और पुलीस के बीच

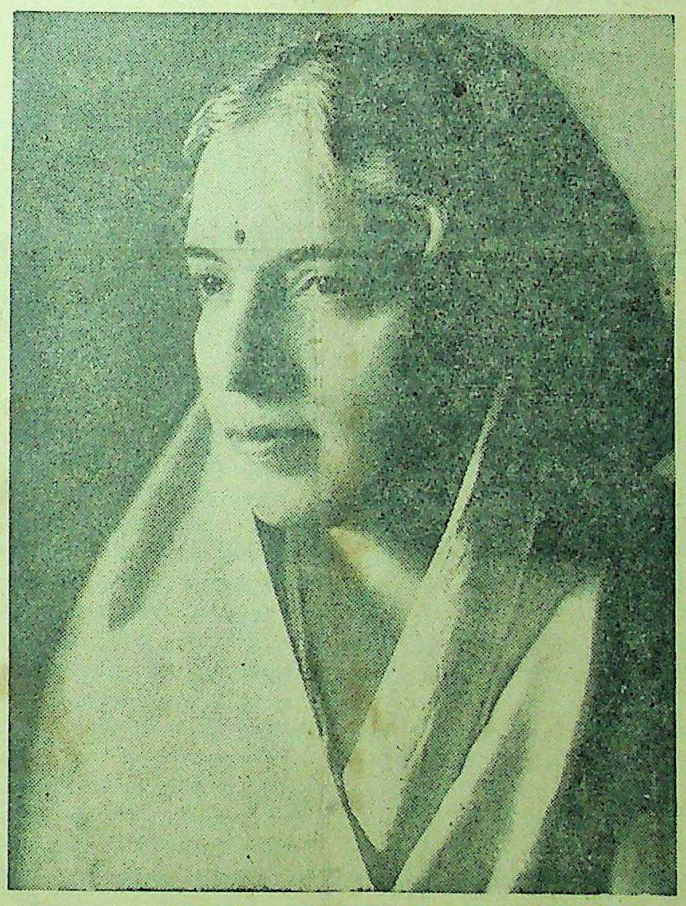

श्रीमती विजयालक्ष्मी पंडित १३ महीने बाद अमरीका की यात्रा करके प्रयाग पुनः वापस लौट आई हैं।

वाँइसराय लार्ड वेवेल ने केन्द्रीय असेम्बली में भाषण देते हुए भारतीय नेताओं को एकता स्थापित करने का सदुपदेश दिया है।

इसी बात पर ठन गई। जनता तो जनता, उसके प्रवाह को कौन रोके? बम्बई-पुलीस ने कहा कि लीजिए हज़रते जुलूस हम रोकते हैं। फिर क्या था गोलियाँ चलीं, लूटपाट हुई, तोड़-फोड़ और एक सप्ताह तक नंग-नृत्य का प्रदर्शन हुआ। बम्बई पुलीस सचमुच नागरिक अधिकारों की रक्षा में—ख़ासकर मुस्लिम मुहल्लों के लिए—बड़ी नेकनीयत जान पड़ती है। क्यों न हो, आजकल सरकार एकता की बड़ी हामी बन गई है न! हिन्दू-मुसलमानों को एक नज़र से देखती है। एक नज़र से देखने और शान्ति स्थापना की नेकनीयती से ही तो बम्बई को सरकारी निगाह का शिकार बनना पड़ा?

* * *

दिल्ली की सुप्रसिद्ध कांग्रेस कार्यकर्त्री श्रीमती अरुणा आसफ़अली सन् ४२ के आन्दोलन में सरकार की कृपा से अन्तर्ध्यान हो गई थीं किन्तु अब वह प्रगट हो गई हैं। दिल्ली के चीफ़ कमिश्नर ने उनकी गिरफ़्तारी की आज्ञा वापस ले ली। आख़िर यह तो होना ही था। केन्द्रीय असेम्बली का निर्माण हो चुका है, समय भी बदल गया है, कब तक सरकार अपने दकियानूसी कायदे-क़ानून को लिए घूम सकती थी? लेकिन अपने राम को हँसी आती है कि सरकारी खुफ़िया विभाग बड़ा ही एक्सपर्ट है। श्रीमती अरुणा आसफ़अली रहीं हिन्दुस्तान में ही, वह गुप्त रूप से अपना वक्तव्य भी देती रहीं, राष्ट्रपति के पास उनके पत्र भी आते रहे लेकिन खुफ़िया विभाग को उनकी कहीं गंध भी नहीं मिल पाई। वह श्रीमती अरुणा को ढूंढ़ती ही रह गई, गिरफ़्तारी के वारंट को दीमकों ने चाटना शुरू कर दिया, और सारी कारस्तानी बेकार हुई। आख़िर सरकार को झुकना पड़ा और अब अरुणा इस मैदाने जंग में पुनः प्रगट हुई है। ठीक भी है। किसी ने कहा है कि—

"काह न अबला करि सकै।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

वाइसराय का भाषण

भारत के वाइसराय लार्ड वेवेल ने नवनिर्मित केन्द्रीय असेम्बली के सदस्यों के बीच केवल सात मिनट का एक सूक्ष्म भाषण दिया है। जहाँ तक हमें स्मरण है, पिछले ऐसे अवसरों पर वाइसराय अपने भाषण में न तो इतना कम समय देते थे और न इतने सूक्ष्म विचार ही प्रकट करते थे। इस दृष्टि से इस बार का वाइसराय का भाषण नवीनता पूर्ण अवश्य रहा है। केन्द्रीय असेम्बली में नवनिर्वाचित प्रेसीडेंट श्री मालवंकर अपने निजी वेश में उपस्थित थे। मुस्लिम लीग के विधाता श्री मोहम्मद अली जिन्ना तथा उनके दल के सदस्य भी उपस्थित थे। कांग्रेस तथा अकाली दल के सदस्य और कुछ प्रमुख जमींदार सदस्य अनुपस्थित थे। भाषण के अवसर पर यह भी इस बार की एक विशेषता ही समझनी चाहिए। जो दल अनुपस्थित रहा, उसका कारण क्या है, इस पर हम कुछ भी नहीं कह सकते किन्तु इस बात का अनुभव तो हम कर ही सकते हैं कि वाइसराय लार्ड वेवेल को पूर्व से ही ऐसे अवसर का ज्ञान था और संभवतः इसीलिए उन्होंने कुछ ही मिनटों में अपना भाषण समाप्त करके दो-एक मोटी-मोटी बातें प्रकट कर दीं और एक प्रकार से परंपरा की रस्म अदायगी करके उन्हें संतोष ग्रहण करना पड़ा।

लार्ड वेवेल ने अपने भाषण में केवल दो प्रमुख समस्याओं की ओर सदस्यों का ध्यान आकर्षित किया। देश के नेताओं के सहयोग से भारत-सरकार की नई कार्यकारिणी का संगठन और भारत के भावी विधान के निर्माण के लिए एक विधान-निर्मात्री-समिति की स्थापना। साथ ही वाइसराय ने देश के नेताओं से अपील की कि वह आपस में सद्भावना-पूर्वक कार्य करें और पारस्परिक कटुता की भावना न बढ़ने दें। हमारी समझ में लार्ड वेवेल ने भाषण में कोई नई बात नहीं कही है। भारत-सचिव लार्ड पेथिक लारेंस ने पिछले दिनों भारत के सम्बन्ध में जो विचार व्यक्त किये थे, लार्ड वेवेल ने भी उन्हीं का पिष्टपेषण किया है। आखिर लार्ड वेवेल ने भाषण में कौन से नये विचार व्यक्त किये हैं? राजनीतिक अड़ंगे के हल के लिए कौन से सुझाव रखे हैं? यह तो सभी जानते हैं, कि जब नया चुनाव हुआ और नई असेम्बली बनी तो नई कार्यकारिणी का बनना भी अनिवार्य होगा ही। और यह भी सही है कि सभी दलों के सहयोग से लार्ड वेवेल नई कार्यकारिणी का निर्माण करेंगे। इसी प्रकार विधान-निर्मात्री-समिति का भी निर्माण होगा और भारतवर्ष को स्वाधीनता प्रदान करने का प्रजातंत्रात्मक मार्ग निकाला जायेगा। लार्ड वेवेल ने जो कुछ कहा है, इसमें सन्देह नहीं है कि वह कार्य-रूप में परिणत होगा क्योंकि युद्ध के बाद भारतीय स्वाधीनता देने के नाम पर यदि थोड़ा बहुत भी न किया गया तो सरकार किस मुँह से भारत को स्वतंत्रत प्रदान करने की उत्सुकता को जनता पर प्रकट करेगी?

सच तो यह है कि वाइसराय लार्ड वेवेल ने कोई नया विचार नहीं प्रकट किया। न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेंगी। यद्यपि असेम्बली में कांग्रेस का बहुमत है किन्तु मुस्लिम लीग, कुछ नामजद तथा अन्य दलों के ऐसे सदस्य हैं जो मनमानी करने से बाज नहीं आ सकते। सरकार के लिए इन दलों के द्वारा ऐसा अवसर अवश्य ही प्राप्त होगा जिससे उसकी आंतरिक अभिलाषा की पूर्ति हो। वाइसराय सभी दलों के सहयोग से कार्यकारिणी का निर्माण करेंगे, सिद्धान्त की दृष्टि से यह उचित भी है किन्तु शिमला-सम्मेलन फिर क्यों अन्त में असफल सिद्ध हुआ? वहाँ भी तो भारत के सभी प्रमुख दलों के सहयोग से कार्यकारिणी का संगठन होने जा रहा था? कांग्रेस तो ५० प्रतिशत पर अल्पसंख्यक दलों से समझौता करने पर राजी हो गई थी, फिर वह सम्मेलन क्यों असफल रहा और आज कौन-सी नई बात हो गई है कि जिससे पुनः वही परिस्थिति न उत्पन्न होगी? मुस्लिम लीग आज केन्द्रीय असेम्बली में शक्तिशाली है, फिर क्या राष्ट्रीय मुसलमानों को कार्यकारिणी में रखने के लिए वह राजी होगी? वाइसराय लार्ड वेवेल आखिर किस प्रकार से इस समस्या का हल निकालेंगे? हाँ यदि वाइसराय चाहेंगे तो सब कुछ हो जायेगा किन्तु उन्हें चाहने अथवा न चाहने की चिन्ता क्यों हो? आखिर अल्पसंख्यकों की माँग को ब्रिटिश सरकार कैसे ठुकरा सकती है? इसलिए सरकार के हाथ में जब तक अल्पसंख्यकों, साम्प्रदायवादियों तथा प्रतिक्रियावादियों की मजबूत ढाल है, तब तक वह चिन्ता रहित है। अगर भारतीय राजनैतिक दलों के नेता ही आपस में झगड़ते हैं, एक मत से वह किसी निर्णय पर नहीं पहुँचते हैं तो ब्रिटिश सरकार या लार्ड वेवेल क्या करेंगे? क्या कार्यकारिणी का निर्माण रुक जायेगा? आखिर सरकार की कार्य पद्धति किस प्रकार अग्रसर होगी? इसलिए अन्तिम निर्णय के लिए वह स्वयं बाध्य होगी।

रह गया भारत के नये विधान के निर्माण की समस्या, यह भी कम जटिल प्रश्न नहीं है। मुस्लिम लीग पाकिस्तान को कब नहीं स्वीकार करेगी? कांग्रेस समस्त राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है। इसके सिवा और भी न जाने कितने छोटे बड़े दलों के स्वार्थ हैं, उनका भी ध्यान रखना जरूरी है। यदि किसी तरह विधान निर्मात्री समिति बन भी गई तो उसकी सिफारिशों के, पार्लियामेंट तक पहुँचते, चीथड़े उड़ जाएँगे। उसकी किस प्रकार की दुर्गति की सम्भावना है इसका अनुमान भी भारत को पूर्ण रूप से है। इससे आगे के लिए अनुमान सरलता से लगाया जा सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि ब्रिटिश सरकार की कागजी घुड़दौड़ जारी रहेगी, उसका अन्तिम फल क्या निकलेगा, इसे कौन जान सकता है सिवा ब्रिटिश सरकार के? रह गई भारतीय नेताओं के पारस्परिक एकता की बात तो यह असंभव है क्योंकि जब तक ब्रिटिश सरकार की भारत पर कृपा है, और वह अपना प्रभुत्व स्थापित करने की इच्छुक है, तब तक साम्प्रदायिक दलों की एकता कुछ असंभव-सा जान पड़ता है। यदि सचमुच एकता हो ही जाये तो ब्रिटेन की आवश्यकता ही यहाँ क्यों रह जायेगी? केवल मत-विभाजन के कारण ही तो आज वह भारत पर प्रबल शासन कर रही है?

हमारी समझ में अब वह समय आ गया है जब कि ब्रिटिश सरकार को ईमानदारी और सच्चाई के साथ भारत के भाग्य का फैसला करना चाहिए। ब्रिटिश साम्राज्यवाद अब अधिक दिनों तक अपनी पुरानी लीक नहीं पीट सकेगा। भारतीय स्वाधीनता ब्रिटिश हित के लिए ही नहीं समस्त संसार और खासकर एशिया की स्वाधीनता के लिए हितकर सिद्ध होगी, यह निस्संदेह है।

राष्ट्रभाषा का महत्त्व

महात्मा गांधी की इस बार की बंगाल, आसाम और मद्रास की यात्रा में सबसे बड़ी विशेषता राष्ट्रभाषा के महत्त्वपूर्ण प्रचार की रही है। गांधी जी जहाँ जहाँ गये लाखों जनता के बीच राष्ट्रभाषा का महत्त्व प्रगट करते हुए उसी में भाषण भी दिया। अँगरेजी के बहिष्कार और राष्ट्रभाषा सीखने, पढ़ने तथा बोलने पर उन्होंने विशेष जोर दिया। आसाम के दौरे में तो गांधी जी के भाषणों का अनुवाद अँगरेजी तथा अन्य स्थानीय भाषाओं में दुभाषियों द्वारा प्रगट किया गया तब लोगों की समझ में आया किन्तु गांधी जी अपने भाषणों में केवल राष्ट्रभाषा का ही उपयोग करते रहे। पिछले दिनों दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार-सभा की रजत-जयंती गांधी जी की सदारत में बड़े समारोह से सम्पन्न हुई। मद्रास की लाखों जनता को गांधी जी ने राष्ट्रभाषा के व्यापक प्रचार के लिए प्रोत्साहन दिया। एकाध सभा में तो जब महात्मा गांधी राष्ट्रभाषा में भाषण दे रहे थे, तब लोगों ने स्थानीय भाषाओं में उसके अनुवाद की याचना की किन्तु उनकी कड़ी फटकार से उपस्थित लोगों को चुप रह जाना पड़ा। उन्होंने खुले शब्दों में यह कहा कि जो राष्ट्रभाषा नहीं जानता, बोलता या समझता नहीं है, वह राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं कर रहा है। गांधी जी ने साफ़-साफ़ कहा कि जो राष्ट्रभाषा नहीं जानता इसका अर्थ यह है कि वह स्वराज्य नहीं चाहता। महात्मा जी पिछले वर्षों तक हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा मानते रहे हैं किन्तु अब उन्होंने दृढ़तापूर्वक यह निश्चय कर लिया है कि राष्ट्रभाषा का पद हिन्दुस्तानी ही ग्रहण कर सकती है। इसी कारण दक्षिण भारत हिन्दी-प्रचार सभा का नाम बदल कर अब हिन्दुस्तानी प्रचार सभा कर दिया गया है। इसी आधार पर सभा द्वारा संचालित हिन्दी परीक्षाओं का नाम भी परिवर्तित करके अब 'नई हिन्दुस्तानी प्रचार-परीक्षा' कर दिया गया है।

हम इस समय हिन्दी-हिन्दुस्तानी अथवा फ़ारसी और नागरी लिपियों को अनिवार्य रूप से जानने के विवाद-ग्रस्त विषय पर कुछ नहीं कहना चाहते लेकिन यह निर्विवाद सत्य है कि जो भाषा और लिपि प्रकृत रूप से सरल, सुलभ, कम श्रम-साध्य, ग्राह्य और करोड़ों जनता के लिए आकर्षक होगी वही राष्ट्रभाषा का पद ग्रहण कर लेगी, चाहे उसका नाम कुछ भी हो हिन्दी हो अथवा हिन्दुस्तानी। किन्तु प्रत्येक राष्ट्रभाषा प्रेमी को इस बात से पूर्ण सन्तोष है कि महात्मा जी ने विदेशी भाषा के बहिष्कार की जो नई आवाज उठाई है वह वास्तव में राष्ट्रीयता तथा तथा राष्ट्रभाषा की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। आज हम यह देख रहे हैं कि राष्ट्रभाषा के जबर्दस्त प्रेमी, प्रचारक और जनता का नेतृत्व करनेवाले क्रियात्मक और व्यावहारिक दृष्टि से अँगरेजी के बिना एक क़दम नहीं चल सकते। वह ऊपर से राष्ट्रभाषा के महान् हिमायती बनने का दावा करते हैं किन्तु उनके दैनिक जीवन का कार्य बिना अँगरेजी के सहारे सुलभ नहीं हो पाता। जनता को वह राष्ट्रभाषा के प्रेम का उपदेश देते हैं, किन्तु वह स्वयं राष्ट्रभाषा के लिए अपने दैनिक जीवन में कितना त्याग करते हैं, यह कम कटु सत्य नहीं है। हम स्वराज्य चाहते हैं, विदेशी शासन का अन्त चाहते हैं, अँगरेजों को हिन्दुस्तान से हट जाने के लिए ललकारते हैं किन्तु उनकी संस्कृति, उनकी भावना, उनकी विचारधारा, उनकी भाषा और उनके रहन-सहन से चिमटते जाते हैं। हम विदेशी भाषा में सोचते हैं, समझते हैं, कार्यक्रम बनाते हैं, लिखते हैं और पढ़ते हैं। वह सुलभ और कम श्रमसाध्य है और राष्ट्रभाषा के व्यवहार में हम अपनी हेठी समझते हैं। कम से कम हम हिन्दीवाले जो राष्ट्रभाषा के लिए जान हथेली पर लिए घूम रहे हैं, आज इसके अपवाद बन बैठे हैं। उत्तर भारत में, जो हिन्दी का एक विशाल क्षेत्र है, जब हम राष्ट्रभाषा का अपमान होते देखते हैं तो अहिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तों के सम्बन्ध में क्या कहा जाय? हम लाखों की संख्या में पक्के आदर्शवादी अवश्य बने हुए हैं किन्तु क्रियात्मक दृष्टि से हमारी प्रगति कितनी दोषपूर्ण, अधकचरी और वाचालता से भरी है, यह कम विचारपूर्ण नहीं है। हम यह मानते हैं कि वर्षों से अँगरेजी साम्राज्य की जमाई हुई अँगरेजी की जड़ काफी दृढ़ हो चुकी है, हम उससे इतना घुल-मिल गये हैं कि उससे एकाएक छुटकारा पाना कम से कम पढ़ी-लिखी जनता के लिए फिलहाल असम्भव-सा है फिर भी राष्ट्रभाषा हिन्दी के उन धनी-धोरियों को जब हम पथ से विमुख होते देखते हैं तो हमें दुख तो होता ही है साथ ही उनके राष्ट्रभाषा प्रेम पर हँसी भी आती है। कम से कम हम दैनिक और व्यावहारिक जीवन में मातृभाषा या राष्ट्रभाषा का दृढ़तापूर्वक सम्मान तो कर ही सकते हैं।

इसलिए महात्मा गांधी की दक्षिण यात्रा के राष्ट्रभाषा प्रचार-कार्य से जो प्रबल प्रेरणा मिलती है, वह है विदेशी भाषा का बहिष्कार। हमें दृढ़तापूर्वक इस आदर्श की ओर ध्यान देना चाहिए जिससे अकारण हम विदेशी भाषा को और भी अधिक दृढ़ बनाने के शिकार न बन सकें। हमारा एक सुझाव है कि हिन्दी-साहित्य सम्मेलन ऐसी संस्था को इस दिशा में सक्रिय क़दम उठाना चाहिए। सम्मेलन राष्ट्रभाषा हिन्दी का झंडा ऊँचा किये हुए है, इसलिए उसे अपने ही घर से हिन्दी-रक्षा के इस महान् कार्य की ओर पहले क़दम उठाना चाहिए। हमारी राय में सम्मेलन को एक ऐसा प्रतिज्ञापत्र तैयार कराना चाहिए जिसमें यह उल्लेख हो कि सम्मेलन का वह सदस्य हो सकता है जो यह लिखित प्रतिज्ञा करे कि दैनिक और व्यावहारिक जीवन में वह कम से कम विदेशी भाषा का उपयोग न करेगा। प्रतिज्ञापत्र की यही कसौटी प्रमाणित कर देगी कि वास्तव में राष्ट्रभाषा हिन्दी के कितने सच्चे, त्यागी और अवसरवादी शुभचिंतक हैं। राष्ट्रभाषा के प्रचार की दृष्टि से कम से कम हिन्दी संसार तो महात्मा गांधी के विदेशी भाषा के बहिष्कार के आदर्श को अपना कर राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार के आदर्श की पूर्ति कर ही सकता है। मतभेद मतभेद के स्थान पर है किन्तु आदर्श की पूर्ति प्रत्येक राष्ट्रभाषा प्रेमी का कर्त्तव्य है।

आलोचनादर्श

इसके लेखक डा० रामशंकर शुक्ल 'रसाल' एम० ए० हैं। पुस्तक महत्त्व की है। इसमें समालोचना का अन्य शास्त्रों से सम्बन्ध, साहित्य-समालोचना, आलोचना सुरुचि और दृष्टिकोण, आलोचना का ऐतिहासिक विकास आदि पर भली-भाँति प्रकाश डाला गया है। अध्ययन, अध्यापन और रचनाकार्य करनेवालों के लिए यह पुस्तक बड़े काम की है। ३०० पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर बुकडिपो
ईंडियन प्रेस, (लिमिटेड), प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की सीमा पर सोवियट रूस

एशिया का संदेशवाहक स्वाधीन भारत ही होगा

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

इस समय अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की गतिविधि को देखते हुए यह स्पष्ट हो रहा है कि सोवियट रूस की शक्तियाँ योरोपीय ही नहीं एशियाई क्षेत्र में भी व्यापक होने जा रही हैं। योरोप की भाँति वह एशिया की ओर भी राजनैतिक दाँव खेल रहा है। इस लेख में राजनीति के सुप्रसिद्ध विद्वान् ने सोवियट रूस के वर्तमान दाँवपेचों और साम्राज्यवादी लिप्सा का वर्णन करते हुए यह बतलाया है कि भारत को भी इस खतरे का मुकाबला करना कभी पड़ सकता है। किन्तु स्वाधीन भारत किसी भी विदेशी के प्रभुत्व को स्वीकार नहीं कर सकता। लेख एक मुख राजनीतिक समस्या पर प्रकाश डालनेवाला, साथ ही जानकारी से पूर्ण और पठनीय है।

सोवियट रूस के वर्तमान वैदेशिक सचिव एम० मोलोटोव।

पाकिस्तान के समर्थन और अखंड भारत का विरोध करते हुए महापंडित आचार्य प्रवर राहुल सांस्कृत्यायन, प्रोफेसर लेनिनग्राड यूनिवर्सिटी ने एक बार कहा था कि फिर तो प्राचीन भारत की सीमा का उल्लेख करके अखंड भारत के समर्थक कन्धार और काबुल की भी माँग करेंगे। कल्पनाशील और प्रतिभाशाली महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन ने उस समय स्वप्न में भी शायद यह न सोचा था कि उनका आदर्श, उनकी प्रेरणा और स्फूर्तिदाता सोवियत रूस इसी नीति का अनुसरण करेगा और भारत पराधीन होने से अपनी प्राकृतिक सीमा हिन्दूकुश तक न पहुँचा सकेगा। 'देशदूत' के पाठकों की स्मृति यदि तेज और अच्छी होगी तो वे यह भूले न होंगे कि १९४० में फ्रांस के पतन के बाद हिटलर राइट जर्मनी के मित्र सोवियट रूस ने रूमानिया से बेसरबिया और बुकोविना विपुल सैन्य-शक्ति के जोर पर ले लिया और बाल्टिक देशों और फिनलैंड का सामुद्रिक तट का सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण भाग महान् सोवियत रूस से मिला लिया, तब इन पंक्तियों के लेखक ने लिखा था कि सोवियत रूस तुर्की, ईरान और अफ़गानिस्तान से भी उनके उत्तरीय प्रान्तों को माँगेगा और उनको सोवियत रूस में आर्मीनियन, जियार्जियन, अजरबेजान, उजबेक और तांत्रिक जनतन्त्रों में मिला लेगा, क्योंकि रूस कहेगा कि ये प्रदेश अनुवांशिक, जातीय, भाषा, रीतिरवाज और ऐतिहासिक परम्परा से ये देश उन के भाग हैं। तुर्की, ईरान और अफ़गानिस्तान के स्वाभाविक भाग नहीं हैं। तुर्की और ईरान में वास्तविक जनतन्त्र की स्थापना के नाम पर रूस की प्रेरणा से जो कार्रवाइयाँ हो रही हैं, उन्होंने उन पंक्तियों की सचाई को सिद्ध कर दिया है। आज छः साल बाद भी रूस की नीति में परिवर्तन नहीं आया है, बल्कि रूस उसका और अधिक प्रबलता के साथ अनुसरण कर रहा है।

दो साम्राज्यों का संघर्ष

कम्युनिस्ट भाई भले ही बुरा माने पर इस सच्चाई को छिपाया नहीं जा सकता कि स्टालिन का रूस एक साम्राज्यवादी और निरंकुश साम्यवादी देश है। सोवियट रूस की नीति आज राष्ट्रवादी है। वह क्रान्तिकारी और अन्तर्राष्ट्रीय नहीं है। आज उसकी नीति अन्तर्राष्ट्रीय नहीं है। उसका लक्ष्य कम्युनिज्म का प्रचार नहीं है बल्कि विभिन्न देशों के कम्युनिस्टों की सहायता से अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना है। एशिया की यह प्रबल साम्राज्यवादी शक्ति का आज पुनः पतनोन्मुख ब्रिटिश साम्राज्यवाद से टक्कर हो रही है। ज़ारशाही के पतन और रूस में क्रान्ति हो जाने के कारण १९१८ से १९३९ तक इन दोनों का संघर्ष शान्त रहा। पर अब इन दोनों में वह पुराना संघर्ष आरम्भ हो गया है। फरक इतना है कि उसका रूप बदल गया है। रूस ने अब तलवार पर मखमल की म्यान चढ़ा ली है। अब सिद्धान्तों और जनतंत्र की आड़ में स्टालिन उसी नीति का अनुसरण कर रहा है, जिसका ज़ारकालिक रूस करता था। दोनों की महत्त्वाकांक्षाओं और उद्देश्यों में कोई अंतर नहीं आया है।

पूर्ण मनोरथ

ज़ारकालिक रूस भी समुद्र-प्रवेश के लिए मार्ग चाहता था। हिममुक्त बन्दरगाह, साल के ३६५ दिनों काम आनेवाले नये जल में अड्डा चाहता था। स्टालिन का सोवियट रूस भी यही चाहता है। योरप में उसका उद्देश्य पूर्ण हो गया है और उसके मनोरथ सफल हो गये हैं। मुरमांस्क बन्दरगाह उसके अधिकार में आ गया है। उत्तरीय सागर से अटलांटिक महासागर में जाने के लिए अब उसके आने में कोई बाधा नहीं रही है। बाल्टिक-सागर आज रूसी झील बन गया है। पीटर-दी-ग्रेट का स्वप्न स्टालिन ने सत्य सिद्ध कर दिया है। बाल्टिक देश आज रूस के एक अंग हैं। पूर्वीय प्रशिया के महान् बन्दरगाह कोविग्सबर्ग पर आज हँसिया-हथौड़ा अंकित सोवियट झंडा फहरा रहा है। डैंजिग बन्दरगाह आज रूस के सामन्त राष्ट्र पोलैंड के अधीन है। बार्नहोम (डेनमार्क) द्वीप पर रूसी सेनाओं का अधिकार है और इस प्रकार उसने कैरेगट और स्कैमेरक समुद्रधुनियों पर नियंत्रण करके बाल्टिक सागर को रूसी झील में परिणत कर दिया है। स्टालिन का यह एक स्वप्न पूरा हो गया है।

भूमध्य सागर में

रूमानिया, बल्गेरिया रूस के सामन्ती राज्य हैं और उसके प्रभाव-क्षेत्र और उसकी छत्रछाया में हैं। काला सागर का पश्चिमीतट इस कारण उसके पूर्ण नियंत्रण में है। पर दक्षिणी तट के बारे में यह बात नहीं कही जा सकती। तुर्की एक छोटा राष्ट्र है। उसको अपने प्रभाव में लेकर कोई भी बड़ा राष्ट्र काला सागर स्थित रूसी बेड़े को नुक़सान पहुँचा सकता है। अतः रूस ने तुर्की से माँग की है वह कार्स और आर्डहन के प्रान्त माँग रहा है। बाकू के तेल-कूपों से चली आई तेल-पाइप-लाइन बाटुम बन्दरगाह आती है। सोवियट रूस के जीवन का यह तेल-पाइप-लाइन महत्त्वपूर्ण अंग है। अतः बाटुम की रक्षा के लिए वह कार्स और आर्डहन के प्रान्त की माँग रहा है। आरमीनियन सोवियट जनतंत्र के समान स्टालिन की जन्म-भूमि जियाजिया भी तुर्की से अपने देश के साथ सटा तुर्की का भाग माँग रहा है। वस्तुतः इन माँगों का उद्देश्य है, ट्राबजान (ट्रेबीजोन) और जेरीसन बन्दरगाहों और ताँबे की खानों के प्रदेश को सोवियट रूस के अधिकार में लेना। काला सागर इससे पूर्ण रूप से रूसी झील बन जायगा और ताँबा भी रूस का प्रचुर मात्रा में मिल जायगा और तुर्की मास्को के अँगूठे के नीचे रहेगा। अंकारा और बाटुम के बीच के आधे भाग को पाने की रूसी लालसा का उद्देश्य यही है। तुर्की से उसकी दूसरी माँग है कि डार्डेनल और बासफोरस समुद्र-धुनियों पर रूस का नियन्त्रण हो। फिनलैंड की खाड़ी जिस प्रकार आज सोवियट-नियन्त्रण में है, उसी प्रकार वह डार्डेनल और बासफोरस समुद्र-धुनियों और इनके मार्ग के दोनों ओर की क़िलेबन्दी पर अपना अधिकार चाहता है। पोर्टआर्थर और डेरिन बन्दरगाहों के समान इस्तम्बोल का बन्दरगाह वह भूमध्यसागर में प्रवेश पाने के लिए और इसकी रक्षा के लिए ईजीयन सागर में डाडेकनीज द्वीप-समूह को रूस सोवियट झंडे के नीचे चाहता है।

टैंजियर के अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण में भाग पाकर उसने भूमध्यसागर के पश्चिमी द्वार में चंचुप्रवेश किया है। स्पेन की फ्रांको गवर्नमेंट के निर्वासन और उसकी जगह मास्को के प्रभावशाली सरकार स्थापित करने में रूस इसीलिए यत्नशील है, जिससे भूमध्यसागर के पश्चिमी द्वार पर उसका नियन्त्रण कायम रहे और भूमध्यसागर को रूसी झील बनाने का—जिस प्रयत्न में मुसोलिनी के प्राण गये—प्रयत्न सफल हो। इसी की सफलता के लिए वह इटली के हारे उपनिवेश ट्रिपोलीटाना का ट्रस्टी होने की इच्छा रखता है। मध्य भूमध्यसागर पर नियन्त्रण करने के लिए यह अधिकार हाथ में रहना आवश्यक है। मध्य भूमध्यसागर के उत्तरीय तट पर नियन्त्रण रखने के लिए वह अपने हर एक युगोस्लेविया का एड्रिआटिक सागर के बन्दरगाह स्प्लीट पर अधिकार देखना चाहता है। अल्बानिया से जाने का पदच्युत होना भी इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। डालमैटियन तट ही नहीं अपितु डुराजो (अलबानिया) भी उसके प्रभाव में आ गया है और एड्रिआटिक सागर की राह मध्य भूमध्यसागर में पहुँचने का राह निष्कंटक हो गया है। इसको सर्वथा निष्कंटक बनाने के लिए यदि वह युगोस्लेविया को कार्फू लेने के लिए उकसाये तो कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

मध्य भूमध्यसागर में रूसी प्रभुत्व स्थापित करने में बाद पूर्वीय भूमध्यसागर में अपना एकछत्र स्थापित करने के लिए वह डार्डेनल समुद्र-धुनी को रूसी नियंत्रण में रखने की माँग करे और स्लाव लोगों का एक मंडल बनाकर अपने मंडलिक राष्ट्र यूगोस्लेविया के अन्तरगत मैसेडानिया जनतन्त्र बनाकर उसकी ओर से सैलोनिका बन्दरगाह की माँग करे और पूर्वीय भूमध्यसागर की अपनी क़िलेबन्दी को पूर्ण बनावे तब क्या आश्चर्य!

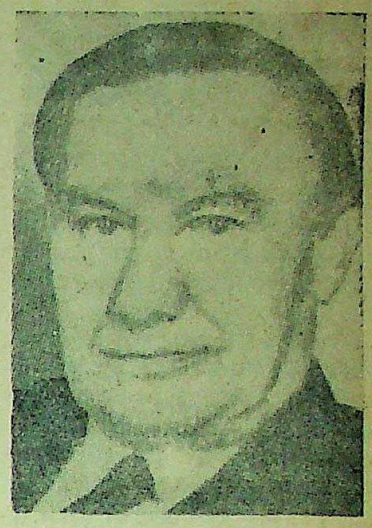

ब्रिटिश मजदूर मन्त्रिमण्डल के वैदेशिक सचिव श्री बेविन।

ब्रिटेन के गले पर छुरा

ब्रिटिश परराष्ट्र-मंत्री मि० बेविन ने रूस की इस चाल को ब्रिटेन के गले पर छुरा तानना बताया है। कारण स्पष्ट है। ब्रिटिश-साम्राज्यवाद के लिए भूमध्यसागर श्वास-नलिका है। यह उसको भारत और फिर वहाँ से सिंगापुर की राह आस्ट्रेलिया से मिलाता है। इस युद्ध ने ब्रिटिश-साम्राज्य के लिए भूमध्यसागर के महत्त्व को स्पष्ट कर दिया है। युद्धकाल में इटली के विरोधी हो जाने से ब्रिटेन के लिए भारत से सम्बन्ध बनाये रखने के लिए आशा अन्तरीय का लम्बा मार्ग ही शेष रह गया था। हजारों मील की इससे जहाँ दूरी बढ़ गई वहाँ जहाजों को भी बहुत नुक़सान पहुँचा। कल्पना कीजिये, जब ७ दिसम्बर १९४१ को जापान ने युद्ध-घोषणा की थी और उसके तीन दिन बाद प्रिंस आफ़ वेल्स और रिपल्स जहाज डूब गये थे, यदि उस समय भूमध्यसागर पर ब्रिटेन का अधिकार और नियंत्रण होता, तो क्या सिंगापुर और रंगून का पतन हो सकता था और मैडागास्कर पर अपना नियंत्रण स्थापित करने के लिए शक्ति खर्च करने की जरूरत हो सकती थी? सिंगापुर और रंगून की रक्षा के लिए झटपट मदद और कुमुक आ जाती और पेनोम ही खाली करने का मौक़ा न आता। इस एक काम से ही जाना जा सकता है कि ब्रिटिश-साम्राज्यवाद के जीवन के लिए भूमध्यसागर का क्या महत्त्व है और वह जिब्राल्टर, माल्टा और साइप्रस को अपने अधिकार में क्यों रक्खे हुए है। इसलिए रूस की महत्त्वाकांक्षा और उसकी चालों से ब्रिटेन का संशंक होना स्वाभाविक है।

लाल सागर और हिन्द महासागर में

सोवियट रूस की महत्त्वाकांक्षा भूमध्यसागर तक सीमित नहीं है। पोर्टआर्थर और डेरिन बन्दरगाहों और मंचूरियन रेलवे को पट्टे पर लेकर उसने प्रशान्त महासागर और चीनी समुद्र में प्रवेश पा लिया है। मुरमांस्क के द्वारा और ट्रेजियर-द्वारा अटलांटिक जाने का मार्ग पा लिया है। पर हिन्द-महासागर अभी शेष है। सोवियट रूस अमरीका और ब्रिटेन के समान ही अपना सामुद्रिक बेड़ा अजेय बनाना चाहता है। वह एक-मात्र स्थलीय शक्ति नहीं रहना चाहता। वह सब महासागरों में अपना अप्रतिहत प्रवेश चाहता

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

रीवाँ राज्य की नई जागृति

रीवाँ राज्य भारतीय रियासतों में एक प्रगतिशील रियासत है। ब्रिटिश सत्ता इसे कैसे सहन कर सकती है? उसने रीवाँ-नरेश महाराजा गुलाबसिंह को कई षड्यन्त्रों का शिकार बनाकर शक्तिहीन कर दिया। किसी प्रकार वह अपने राज्य के अन्दर वापस आये। इसी वर्ष उन्होंने विजयादशमी के अवसर पर अपने राज्य की प्रजा को स्वतन्त्रता देने की घोषणा की है। परन्तु ब्रिटिश सत्ता महाराजा की स्वतन्त्र भावना को कैसे बर्दाश्त कर सकती है?

रीवाँ की राज्य-घोषणा की ९वीं धारा से स्पष्ट विदित होता है कि वहाँ का शासन-प्रबन्ध अब राजसत्ता से हटकर प्रजा के हाथों में आ रहा है। प्रजा राजा को एक साधारण नागरिक की भाँति रख सकती है। राजा की न तो अपनी जमीन होगी और न धन-दौलत। वह संपूर्ण प्रजा का है। उसका प्रबन्ध प्रजा के चुने हुए प्रतिनिधियों के हाथ में होगा। प्रतिनिधि बालिग मताधिकार से चुने जायंगे। इस प्रकार रीवाँ राज्यांतर्गत सारी छोटी-बड़ी रियासतों को धक्का लगना अनिवार्य है। जो जागीरदार अथवा पवाईदार (जमींदार) आज तक मौज उड़ाते थे, अब उन्हें भी संकटों का सामना करना होगा। इस संकट से बचने के लिए हो सकता है कि छोटे-मोटे जागीरदार महाराज से रुष्ट हो गये हों। ब्रिटिश सरकार का पोलिटिकल एजेण्ट अथवा विभाग महाराज के नये सन्देश को लेकर राज्य में एक नवीन स्थिति उत्पन्न करने का इच्छुक है। स्वतन्त्रता की घोषणा के पश्चात् रीवाँ के राजकुमार को विदेश जाने का प्रश्न उठता है, जब कि वह भारत में ही पूर्ण शिक्षित किये जा सकते हैं। यह कार्य तो वैसा ही हो रहा है जैसा कि महाराजा रणजीतसिंह के समय में खालसा फ़ौजों के हारने के बाद राजकुमार दिलीपसिंह को इँगलैंड भेज देने में हुआ था। यदि राजकुमार अथवा दरबारी ब्रिटिश सरकार से यूरोप जाने के लिए प्रार्थना करते तो बात दूसरी थी, परन्तु यह तो कुछ अजीबोगरीब चाल-सी जान पड़ती है। जो भारत-सरकार इंडोनेशिया की पुकार, बर्मा और मलाया की करोड़ों जनता की प्रार्थना पर पंडित जवाहरलाल नेहरू को बारह घंटे के लिए एक वायुयान न दे सकी वह एक छोटे से राजकुमार के लिए इँगलैंड अथवा अमेरिका जाने के लिए स्पेशल वायुयान का प्रबन्ध करने जा रही है यह कैसी नीति है?

आजकल रीवाँ राज्य की वर्तमान राजनीति पर जिसका गहरा प्रभाव पड़ रहा है, वह है महाराज का सार्वजनिक जीवन में प्रवेश। महाराज आजकल राज-सिंहासन पर बैठने, अमीर और उमरावों से गप्पें लड़ाने, राजमहलों के आमोद-प्रमोद में रत रहने के बजाय जनता की सभाओं, उनकी परिषदों तथा अन्य राज्य-हित कार्यों में भाग ले रहे हैं। कितने ही नये स्कूलों को स्वावलम्बन पर चलाने के लिए ज़ोर दे रहे हैं। ग्रामसुधार कार्यों में इतने व्यस्त रहते हैं कि राजकार्य में उतनी दिलचस्पी नहीं लेते। महाराज की इन मनोवृत्तियों से राज्य में एक नवीन जीवन पैदा हो रहा है, राज्य जागरण की ओर अग्रसर हो रहा है, जनता को अब यह आभास होने लगा है कि वह भी संसार में मानव-समाज के एक नागरिक हैं।

हमारी राय में भारतवर्ष में जब तक रियासतों के अन्दर स्वयं वहाँ के महाराजा, नवाब अथवा शासकों की मनोवृत्ति न बदलेगी तब तक भारतीय स्वराज्य अधूरा रहेगा। नवाब भूपाल ने नरेन्द्रमंडल में बदलते हुए जमाने के अनुकूल वक्तव्य दिया है। इससे सिद्ध हो रहा है कि अब रियासतें भी ब्रिटिश सरकार की नीति से ऊब उठी हैं परन्तु नरेशों में पहले-पहल जिसमें ऐसी भावना का उदय हुआ है वह रीवाँ ही है। इस भावना के पीछे वहाँ के महाराज और जनता को जो कष्ट उठाने पड़ रहे हैं, क्या अन्य नरेश भी उसका सामना करने को तैयार होंगे? रीवाँ की यह वर्तमान राजनीति भारत के अन्य रियासतों को एक उदाहरण है कि जो भी देश या स्टेट स्वतंत्रता की ओर अग्रसर होते हैं उनके सामने कितनी कठिनाइयाँ होती हैं।

बारा (प्रयाग) —दीनबंधु पाठक
२५ जनवरी ४६

* * *

राजबन्दियों के परिवारों की सहायता

खीरी ज़िला में आज लगभग ४० राजनैतिक पीड़ित हैं, जिनमें से १२६ पाँच वर्ष से लेकर ३८ वर्ष तक के जेल की कठोर यातनायें भोग रहे हैं। इनमें २६ भाई ऐसे हैं जिनकी १५ वर्ष से ऊपर की सजायें हैं। इनमें से बहुतों के मकान खुद गये, सम्पत्ति लुट गई, खेती छिन गई, और वे जेलों में बन्द हैं। उनके स्त्री बच्चों के बैठने के लिए न स्थान है और न खाने को अन्न। लगभग दो सौ भाई जेलों से मुक्त होकर भी आ गये पर उनकी भी यही दशा है।

इन राजबन्दियों के घरों में ६ युवती कन्यायें बैठी हैं। जिनके ब्याह होने हैं। अमर शहीद श्री राजनारायन मिश्र के भाई पं० बाबूराम मिश्र चोटियावाले की जिनकी ३८ वर्ष की सजा है, पुत्री ब्याहने को है। सात विवाह कराये जा चुके हैं।

संयुक्तप्रान्त के बारह जेलों में बन्द इन देश भक्तों के लगभग ५० परिवारों के स्त्री बच्चों के लिए २४ घंटों में एक बार नमक रोटी का प्रबन्ध हो सके, इसके लिए तीन सौ रुपया मासिक की आवश्यकता है। इनकी कन्याओं के विवाह किये जा सकें, इनको रामायण गीता आदि पुस्तकें, स्लेट, चप्पल आदि पहुँचाई जा सके, वस्त्रों का प्रबन्ध किया जा सके, इसके लिए पाँच हजार रुपयों की दरकार है। इन राजबन्दियों के परिवारों के सहातार्थ एक कमेटी बनी है जिसके प्रधान राजा महेश्वरदयाल सेठ, उपप्रधान-सर्व श्री श्यामबिहारी सहगल, कुंवर खुशवक्तराय, सं० मन्त्री श्री गोदावरी देवी और सदस्य सर्वश्री रामनारायन गुप्त, चन्द्रभाल त्रिपाठी, कुंजबिहारी लाल राठी श्रीराम गुप्ता, लालता प्रसाद अग्निहोत्री, लक्ष्मीनारायन सराफ़, दरबारीलाल, होशियार सिंह, आनन्द किशोर नेवटिया, जयदयाल कपूर, शिवप्रसाद शर्मा और कामताप्रसाद जी हैं।

अप्रैल ४५ से १४ जनवरी ४६ तक के आय-व्यय का विवरण इस प्रकार है—सहायता विवाहों के लिए १५५), महोली मिल्स से ५००), बा० रामनारायन गुप्त से २००), ला० शिवलाल राठी धर्मादा कमेटी गोला ३००), गोला शुगर मिल्स से ४००), सेठ जगन्नाथप्रसाद अग्रवाल बिसवाँ १५०)। मासिक सहायता ७६०), महोली शुगर मिल्स से २५०), गोला शुगर मिल्स से १००), हरगाँव शुगर मिल्स से २००), श्री गुप्तदानी सीतापुर से १५०), पं० शिवप्रसाद शर्मा ६०)। फुटकर सहायता २१४२।।=), श्री साहू जगदीशप्रसाद जी पीलीभीत ५००), श्री फीरोज गांधी से ६००), गुप्तदानी ५००), मार्फत श्री राधेश्याम हलद्वानी १७५) मार्फत श्री राजाराम रामगनर १२१), गुप्तदान रामगनर ५११), श्री श्यामलाल ब्रदर्श मेरठ ५०), श्री होरीलाल राधेश्याम ५०), मार्फत सोमदत्त जी विद्यालंकार गांधी-आश्रम ३८।), पं० दीनदयाल मिश्र २०), अन्य दाता ३७), विशेष सहायता २१५, श्री गुप्तदानी वस्त्र ८०), गोला शुगर मिल्स से १००), अन्यदाता ३५), कुल जोड़ ४६६८।।=।।।

खर्च इस प्रकार है—परिवारों को मासिक सहायता १८८३।।।), शादी व गौना के लिए सहायता १३९८।।—), जेलों में पुस्तकें स्लेट आदि १२५।।—)।, वस्त्रों की सहायता १५३।=), मकान बनाने की सहायता ७७), शिक्षा की सहायता ६८।।=)।।।, औषधि के लिए सहायता २०), अदालती सहायता ३१। =), अन्य सहायता २९५।—)।।, पीड़ितों को सहायता २४५।।=)।।, पोस्टेज २७—), मार्ग व्यय ८८), स्टेशनरी ७=)।।, छपाई ५।।)।।।, मुतफ़र्रिक ४२।।=)।।।। कुल खर्च ४४७०=)।।

कमेटी सर्वश्री सेठ किशोरीलाल महोली, श्री आनन्दकिशोर नेवटिया, श्री श्रीगोपाल नेवटिया हरगाँव, श्री गुप्तदानी सीतापुर, श्री सेठ जगन्नाथप्रसाद अग्रवाल बिसवाँ, साहू जगदीशप्रसाद जी पीलीभीत, गुप्तदानी, श्री फीरोज गांधी जी, बा० रामनारायन गुप्त, धर्मादा कमेटी गोला, श्री राधेश्याम हलद्वानी, श्री राजाराम रामनगर, पं० शिवप्रसाद शर्मा आदि को धन्यवाद देती है और आशा करती है कि ये सज्जन इसी प्रकार उदारता पूर्वक सहायता करते रहेंगे। श्री गुप्तदानी सीतापुर ने १५ राजपीड़ितों को कम्बल दिये हैं। कमेटी गरीब अमीर सब भाइयों से मुक्तहस्त दान देने की प्रार्थना करती है। कमेटी को तीन सौ रुपये मासिक और पाँच हजार रुपयों की जरूरत है। हमें विश्वास है कि जेलों में बन्द देश-भक्तों के परिवारों के लिए सब भाई यथा शक्ति अवश्य दान देंगे।

खीरी (लखीमपुर)—बंशीधर मिश्र, एम० ए०, एल० एल० बी०
१५ जनवरी १९४६

* * *

मध्यप्रांत में १७ सीटों के लिए १५३ उम्मीदवार

कारवाँ में प्रान्त के सब
पेशवा होने को हैं।
रहनुमाई किसकी होगी,
हमको हैरत है यही।।

अँगरेज सरकार अपनी कूटनीति और काले कारनामों के लिए प्रसिद्ध है। भारत में उसकी हस्ती का मूल आधार है बंदर-बाँट की नीति। लड़ाई ख़तम होते ही चुनाव की घोषणा करने में सरकार के स्पष्ट उद्देश्य थे:—(१) सरकार-परस्तों को असेम्बलियों में घुसेड़कर, संसार के सामने कांग्रेस का यह दावा गलत साबित कर दिया जाये कि सारा देश कांग्रेस के पीछे है और अँगरेजों का शासन एक मिनट के लिए भारत को गवारा नहीं। (२) सरकार-परस्तों के असफल रहनेपर भी चुनाओं के नाम पर कांग्रेस-जनों को असली उद्देश्य से भटका दिया जाय, उनमें फूट डाल दी जाये और इस प्रकार कांग्रेस के अनुशासन पर 'एटम बम' फेंक दिया जाये।

भारत का यह सौभाग्य है कि उसके कर्णधार, चोटी के नेता सच्चे त्यागी, तपस्वी और भारत तो क्या सारे संसार का पथ-प्रदर्शन करने की बुद्धिमत्ता रखते हैं। सरकार के फेंके हुए दाँव के उत्तर में फौरन वर्किंग कमेटी ने तय किया—(१) कौन्सिलें बेकार होने पर भी इस अवसर पर वह जी-हुजूरों का जमघट लगने देना ठीक नहीं। अतः कांग्रेस सैनिकों को असेम्बलियों में भेजकर, सरकार की कूटनीति का भंडा फोड़ करनेवाला मोर्चा बनाया जाये। (२) सरकार की गहरी कूटनीतिक चाल से देश को आगाह करते हुए जनता से कड़े अनुशासन की माँग की है।

वास्तव में आजादी के संघर्ष में अनुशासन ही देश की संजीवनी शक्ति है। जहाँ तक सेन्ट्रल असेम्बली के चुनाव का सम्बन्ध थां, कांग्रेस अपने दोनों उद्देशों में सफल रही। परन्तु मालूम होता है प्रान्तीय चुनाओं में काफी कशमकश होगी, सरकार अपने दूसरे दाँव में सफल होगी।

मध्य-प्रान्तीय चुनाव ने आज सारे प्रान्त में एक विकट भयप्रद स्थिति पैदा कर दी है। आपसी तू-तू मैं-मैं और चख-चख का पारा ऊँचा चढ़ता जा रहा है। जाति विद्वेष सर उठा रहा है। कांग्रेस-जन भी आपस में तू-तू मैं-मैं कर रहे हैं। कांग्रेस की अनुशासन की माँग को प्रान्त में फैलानेवाले और जनता से अनुशासन की माँग करनेवाले, आज स्वयं ही अनुशासन भंग कर रहे हैं। असेम्बली कौन्सिल की एक-एक सीट पर अठारह-अठारह व्यक्ति टूट पड़े हैं। नौकरशाही यह देखकर घी के दीये जला रही है कि प्रान्त के कर्णधार सरकार के कबाड़खाने में अपनी सेवा और त्याग कौड़ियों के दाम बेचने में एक दूसरे को मात दे रहे हैं। ऐसी गफ़लत चोथ में क्यों चूकने लगे अवसरवादी? बहती गंगा में डुबकी लगाने के लिये किनारे खड़े हैं। इनके दलाल हजार-हजार रास्तों से बोर्ड के पास इनकी सिफारिशें पहुँच रहे हैं। सबसे आश्चर्य यह है कि प्रान्त में अनुशासन कायम रखने, न्याय प्रदान करने के लिए बनाये हुए बोर्ड में से सिर्फ ४ को छोड़ बाकी सब खुद ही उम्मीदवार हैं। बोर्ड और सारा चुनाव ही एक तमाशा बन रहा है। बेचारी जनता यह सब देखकर शर्म के मारे मरी जा रही है। ऐसी हालत में इतनी कठिनाइयों और उलझनों में से प्रान्त का गौरव और कांग्रेस के अनुशासन संभालने की जिम्मेदारी एक-मात्र प्रांतपति त्यागमूर्ति रांका जी पर है। हमारी उनसे प्रार्थना है कि वे सख्ती से काम लें और बोर्ड के सदस्यों तथा सारे प्रान्त को कांग्रेस के अनुशासन से गिरने से बचायें। संक्षिप्त में हमारी नम्र सूचनाएँ हैं:—

(१) बोर्ड के जो सदस्य उम्मीदवार हों उन्हें बोर्ड की सदस्यता से अलग हो जाना चाहिए। अथवा तब तक उनकी दरखास्त पर विचार न किया जाये जब तक कि सम्बन्धित क्षेत्र के प्रार्थियों में से बहुमत को अपने हक में वे वापस न करवा सकें।

(२) किसी भी निर्वाचन क्षेत्र में बाहर के व्यक्ति को न लादा जाय। बाहर का व्यक्ति लादने पर सम्बन्धित क्षेत्र की जनता में गहरा विक्षोभ फैलेगा।

(३) व्यक्तिगत सिफारिशें पहुँचानेवाले उम्मीदवारों के नाम अलग कर दिये जायें। व्यक्तिगत सिफारिशें पहुँचाने का काम अधिकतर अवसरवादी ही आकर करते हैं।

(४) सन् ४२ में बहुत लोगों को पुलिस ने धर दबाया है। अतः सन् ४२ में ही जेल जानेवालों की कांग्रेस सेवा का प्रामाणिक इतिहास माँगा जाये और उसके बाबत पूरी जाँच की जाये।

(५) सन् २० या ३० से लेकर ४२ तक जिसने एक बार भी आजादी के मोर्चे पर प्रत्यक्ष भाग न लिया हो अथवा भाग न लेने पर भी जिसके पीछे त्याग और

शेष पृष्ठ १९ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'गांधी-योजना' के विधायक
महात्मा गांधी।

अखिल भारतीय ग्रामोद्योग-संघ के
प्रधान मंत्री श्री कुमारप्पा।

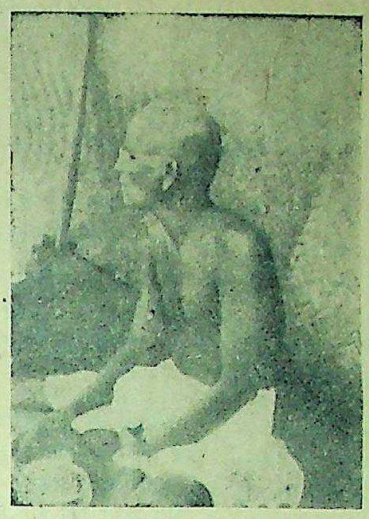

'आर्थिक बहिस्कार' के प्रबल प्रेरक संत
श्री विनोआ भावे।

'गांधी-योजना' के विद्वान् प्रिंसिपल
श्रीमन्नारायण अग्रवाल।

'आर्थिक बहिष्कार' का नारा क्यों?

ब्रिटेन भारत को स्वाधीनता देने के लिए स्वयं तैयार होगा

लेखक, प्रिंसिपल श्रीमन्नारायण अग्रवाल, एम० ए०

'आर्थिक बहिष्कार' के नये नारे की आज आवश्यकता क्यों है? ब्रिटिश-माल के बहिष्कार और स्वदेशी-माल उपयोग से भारत को स्वाधीनता माँगने की आवश्यकता न रहेगी, वरन् ब्रिटेन स्वयं स्वाधीनता देने के लिये तैयार होकर आगे बढ़ता हुआ दिखाई देगा। 'गांधी योजना' के प्रसिद्ध विचारक प्रिंसिपल अग्रवाल ने इस सामयिक और विचारपूर्ण लेख में इसी सम्बन्ध में अपने विचार प्रगट किये हैं, जो वास्तव में अनुभव करने और भारत के भावी-निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

जब महायुद्ध चल रहा था, तब ब्रिटिश सरकार ने युद्धोपरान्त के समय के लिए राजनीतिक स्वतन्त्रता और आर्थिक पुनर्निर्माण के सुनहरे वादे किये थे। अब जब कि युद्ध समाप्त हो गया, तब हमारे सामने पार्लियामेंट का प्रतिनिधि-मण्डल पेश किया गया है जिसका काम है देश की राजनीतिक परिस्थिति का अध्ययन करना। आर्थिक क्षेत्र में लड़ाई के बाद की सभी योजनाएँ हवा-सी हो गई जान पड़ती हैं। भारत के लिए उपभोग की वस्तुओं के निर्यात में पर्याप्त वृद्धि ही एक ऐसी योजना है जिसमें अँगरेजों को मूल रूप से दिलचस्पी है। एक स्पष्ट बहुमत के साथ मजदूर सरकार के आगमन को भारतीय राजनीति के लिए एक नये युग का प्रभात समझ कर कुछ नेताओं ने उसका स्वागत किया था परन्तु भारत-सम्बन्धी नीति के परिवर्तन की सारी आशायें बुरी तरह से टूटकर चूर-चूर हो गई हैं। मजदूर सरकार चर्चिल के शासन की तरह ही साम्राज्यवादी है—किसी हद तक शायद उससे भी ख़राब। एटली एण्ड को के तत्त्वाधान में वायसराय ने जो ड्रामा खेला है वह वास्तव में एक बहुत बड़ा और बेहूदा मजाक है। प्रतिनिधि-मंडल की यह छुट्टी की सैर जले पर नमक छिड़क रही है। ऐसा जान पड़ता है कि इन चुनावों के बाद भी ब्रिटिश सरकार काम की बात पर ध्यान देना नहीं चाहती। विधान बनानेवाली सभा शरारत से भरी हुई एक चाल मालूम होती है, जिससे हमारे बहुमूल्य काल के कई वर्ष यों ही बेकार बीत जायेंगे। ये अँगरेज आखिरी वक्त तक झंझट पैदा करनेवाली कूटनीति और विलम्ब करनेवाली विधान निर्माण की नीतिवाले खेल के पक्के उस्ताद हैं। उनका मतलब यह है कि चाहे जैसे भी हो उनकी बात रह जाये क्योंकि भारत उनके साम्राज्य की धुरी है।

रोम के पुराने सिद्धान्त, 'फूट डालो और राज्य करो', का प्रयोग हमारे देश में अनन्त धैर्य और सतर्कता के साथ हो रहा है। लार्ड मिण्टो के पृथक् निर्वाचन के प्रयोग ने पाकिस्तान के लिए रास्ता तैयार कर दिया है; और सौभाग्य से अँगरेजों को मिस्टर जिन्ना के रूप में एक सिद्धहस्त और आदर्श यंत्र मिल गया है। इस प्रकार आज स्वाभाविक रूप से हिन्दू-मुस्लिम एकता की सम्भावना सचमुच ही कल्पनातीत हो गई है। अगर साम्प्रदायिक समस्या सन्तोषजनक रूप से हल भी कर ली जाये तो ब्रिटिश सरकार फ़ौरन ही रियासतों और अछूतों की समस्यायें 'बड़ी' समस्याओं के रूप में सामने ला देगी।

तब इसकी दवा क्या है? सविनय अवज्ञा-भंग आन्दोलन के कथन-मात्र से ही कुछ न होगा। विदेशी सरकार उस परिस्थिति का सामना करने के लिए पूरी तरह से तैयार है। उसने शर्मो-हया से अपना रिश्ता पूरी तरह से तोड़ लिया है। उसे दुनिया के राय की बिलकुल फ़िक्र नहीं। भारतीय नीति के बारे में 'ह्वाइट हाल' से अभी हाल ही में जो वक्तव्य प्रकाशित हुआ था, वह भारत की राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) के लिए एक साफ़ धमकी थी। अपने रहन-सहन के दर्जे को क़ायम रखने के लिए—और शायद जिन्दा रहने तक के लिए भी—दीन ब्रिटेन को महान् भारत की राजनीतिक पराधीनता बनाये रखनी है। भारत उसे तमाम आवश्यक कच्चा माल देता है और उसके कच्चे माल के लिए सबसे अच्छा बाजार है। भारी क़र्ज़ से दबे हुए बेचारे ब्रिटेन को भारत के बाजारों में संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका से साझा करना ही है। ऊपर लदे हुए क़र्जों को चुकाने के लिए ब्रिटेन की सबसे बड़ी मिल्कियत भारत ही है। वह इतनी सरलतापूर्वक भारत को छोड़ नहीं सकता। इसी कारण जहाँ तक भारत का सम्बन्ध है, ब्रिटेन के सभी राजनीतिक दल प्रतिक्रियावादी हैं।

सच तो यह है कि ब्रिटेन भारत पर सिर्फ़ मनोरंजन ही के लिए शासन करने को लालायित नहीं है। वह सचमुच ही 'दूकानदारों का राष्ट्र' रहा है और हमारे देश में उसकी ख़ास दिलचस्पी व्यापार और विनिमय (कामर्स) में है। अतएव हमारी शक्ति और सफलता का रहस्य भी यहीं है; स्वराज्य की कुंजी ब्रिटिश-विनिमय (कामर्स) के आर्थिक बहिष्कार में है। यदि हमारे कारोबारी ब्रिटिश उत्पादकों के एजेण्ट बनने से इन्कार कर दें और हम ब्रिटिश माल का उपभोग न करना निश्चित कर लें तो इस संसार की कोई भी शक्ति विदेशी माल को गले बाँधने के लिए हमें बाध्य नहीं कर सकती। इस देश में अपूर्व 'आर्डिनेन्स राज' के बावजूद भी ब्रिटिश सरकार के लिए ऐसे क़ानून बना सकना असम्भव है जो हमें ब्रिटिश माल ख़रीदने के लिए विवश कर सकें। विदेशी शासन भारतीय उद्योगों को नष्ट करने का और अपने यहाँ की बनी हुई चीजें हमारे यहाँ के बाजारों में भर देने का भरसक प्रयत्न कर सकते हैं परन्तु अपने यहाँ के माल की बिक्री की गारन्टी के लिए उन्हें और कुछ भी कर सकने का साहस नहीं है।

इस प्रकार यह "आर्थिक बहिष्कार" हमारे हाथ का एक बहुत ही प्रभावपूर्ण अस्त्र है। यदि अँगरेजों को यह मालूम हो जाय कि हम वास्तव में उनके माल नहीं ख़रीदते तो रात भर में भारतीय राजनीति के ये सारे रंग-ढंग बदल जायें। धमकियों और राजनीति की शतरंजी चालों के स्थान पर कामकाजवाली बातचीत, समझौते और संधियाँ होने लगें। चुटकी बजाते ही राजनीतिक अड़ंगे दूर हो जायें। सच पूछिये तो तब भारतीय नेताओं की अपेक्षा ब्रिटिश सरकार स्वयं राजनीतिक अड़ंगे हटाने को अधिक उत्सुक रहेगी। गांधी जी की दिल्ली की यात्राओं के स्थान पर वाइसराय सेवाग्राम की ओर दौड़ने और 'नंगे फ़कीर' से विचार-विनिमय करने के लिए विवश होंगे। ब्रिटेन-निवासी मूल रूप से व्यापारी हैं और वे विनिमय (कामर्स) की भाषा के अलावा और कोई भाषा नहीं समझते। ब्रिटिश माल के बहिष्कार-द्वारा उनके विनिमय (कामर्स) पर आघात होते ही वह तत्क्षण चैतन्य होकर बातें करना शुरू कर देंगे। "स्वदेशी ख़रीदिये", "ब्रिटिश माल का बहिष्कार कीजिये" इन नारों की गूंज राष्ट्र के एक कोने से दूसरे कोने तक सुनाई पड़नी चाहिए। अँगरेज तब तक भारत न छोड़ेंगे जब तक हम ब्रिटिश माल का बहिष्कार नहीं करते।

परन्तु केवल स्वदेशी ही काफ़ी नहीं है। मिल की बनी हुई चीजों को अपनाकर भारत के पूंजीपतियों की पहले ही से गर्म जेबों को और भी गर्म करने में हमें कोई दिलचस्पी नहीं हो सकती। यदि स्वराज्य के लिए ख़ून-पसीना एक करनेवाली भारतीय जनता की आर्थिक उन्नति असफल रहे, तो वह निरर्थक और सार-हीन होगा। इसीलिए गांधी जी पिछले पचीस वर्षों से खादी और भारतीय उद्योगों को विशेष महत्त्व देते आये हैं। खादी और घरेलू उद्योगों की लोकप्रियता सिर्फ़ भारतीय गाँवों की आर्थिक दशा का सुधार ही नहीं करेगी बल्कि ब्रिटिश सरकार को राष्ट्रीय भारत के साथ उचित समझौता करने के लिए बाध्य भी करेगी। स्वदेशी और घरेलू उद्योगों-द्वारा उत्पादित वस्तुओं के ख़रीदने की अजेय इच्छाशक्ति और विदेशी—विशेष रूप से ब्रिटिश—माल का प्रत्येक परिस्थिति में बहिष्कार, इनके अतिरिक्त

गीत

लेखक, श्री श्रीपालसिंह 'क्षेम'

नयन-तारकों में बना ज्योति कोई हृदय में समाता चला जा रहा है।
विजन प्राण डूबे मधुर-मंजु स्वर में,
बँधी बेकली रागिनी की लहर में,
हृदय में सुधा के प्रणय-तार कोई युगों से बजाता चला जा रहा है।
उषा का सुनहला कलश रश्मि से भर,
उतरते तरल भाव के सिन्धु-तट पर—
अमर स्वप्न से चेतनालोक कोई युगों से सजाता चला जा रहा है।
विरल श्वाँस की शृंखला मौन साधे,
शिखा स्नेह की प्राण में मुग्ध बाँधे,
नयन में अचल साधना-दीप कोई युगों से जलाता चला जा रहा है।
मधुर चाँदनी-मेघ-सा मर्म में घिर,
सुधा की बरसता, रहा बूंद फिर-फिर,
विकल कण्ठ से गीत की धार कोई युगों से बहाता चला जा रहा है।
न चंचल हुई रूप-आराधना वह,
न तब से डिगी प्राण की साधना वह,
विरल लघु-पलों पर अमर छाप कोई युगों से बनाता चला जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधु महात्माओं के दर्शन और भेंट का एक अनुभव

उत्तर ऋषीकेश से दक्षिण रामेश्वरम् तक की लम्बी यात्रा

लेखक, श्री रामेश्वरनाथ मिश्र, एम० ए०, एल-एल० बी०

ऋषीकेश से रामेश्वरम् की यात्रा साधारण नहीं, श्रमसाध्य, साहसपूर्ण है। फिर आजकल के इस युग में जब कि रेल-यात्रा की भयंकर कठिनाइयाँ उपस्थित हैं। इस लेख में लेखक ने अपनी लम्बी यात्रा के साथ ही, जिन साधु-संतों से साक्षातकार हुआ, उनका तथा दर्शनीय स्थलों का भी सुन्दर वर्णन किया है। लेख जानकारी से पूर्ण है।

भाग्य की लहरों पर खेलता हुआ स्वर्गाश्रम ऋषीकेश में स्वामी शिवानन्द के निवास-स्थान पर जा निकला। जून ४५ का अन्तिम सप्ताह। उनके शिष्यों ने बताया स्वामी जी मध्याह्न में विश्राम करते हैं, प्रातःकाल और संध्या-समय उपासनादि में व्यस्त रहते हैं और दर्शनार्थी को केवल कुछ क्षण के लिए गोधूलि के समय दर्शन देते हैं। चार घंटे और बिताने थे हम लोग दो ही बजे वहाँ पहुँच गये थे। लक्ष्मणझूले की ओर आकृष्ट हुए।

यह स्थान समस्त युक्त-प्रान्त में सबसे अधिक मनोरम प्रतीत होता है। जलवायु कभी उष्ण नहीं हो पाता—तीन ओर से पर्वतमालाएँ पुण्य-सलिला भागीरथी को अपनी गोद में छिपाये रहती हैं और सरिता अपने पूर्ण यौवन में इठलाती हुई सहस्रों बादलों के अट्टहास की ध्वनि से वायुमंडल को भर देती-सी पूर्व की ओर गतिमान होती है। जिसने ऋषिकेश और हरद्वार की गंगा में स्नान किया है वही उसका आनन्द जानता है। यह स्थान कुछ निर्जन से हैं परन्तु विशेष अवसरों पर यहाँ जन-समूह युक्त-प्रान्त और पंजाब से आकर्षित होता है और स्थान बहुत कम जान पड़ता है। इस दृष्टिकोण से प्रयाग अधिक भाग्यवान् है। हरद्वार तक जाकर ऋषिकेश और वहाँ पर स्वामी शिवानन्द से मिलने का लोभ संवरण करना कठिन है। स्वामी शिवानन्द आजकल योग प्रतिपादन करनेवालों में, जिनकी संख्या अधिक नहीं है, एक अलग स्थान रखते हैं। इन्होंने अपनी धारणाओं को अपने जीवन में कार्यरूप में परिणत किया है, ज्ञान-भक्ति कर्म और राजयोग के विभागों को यह एकदम अलग नहीं मानते इनका कहना है कि एक ज्ञान योगी को कर्मयोगी होना आवश्यक है और भक्तियोगी को ज्ञान-योगी होना। राजयोग का साधन भी ज्ञान और भक्तियोग से अलग होना सम्भव नहीं। यह अवश्य है कि किसी एक मार्ग की ओर विशेष चेष्टा और प्रवृत्ति होना ही योगी को उस मार्ग का पथिक कहला देता है। शिक्षार्थी के लिए जो योगमार्ग में प्रवेश करने की इच्छा रखता हो कर्मयोग से आरम्भ करना ही इष्ट है और बिना कर्म-योग का साधन किये कुछ काल तक मनुष्य ज्ञान-योग और राजयोग का अधिकारी नहीं हो पाता। भक्तों की श्रेणी अलग समझी जाती है और ये जन्म से भक्ति-मार्ग का संस्कार लिए हुए होते हैं परन्तु इन्हें भी पूर्णता प्राप्त करने के लिए ज्ञान की उपेक्षा करना सम्भव नहीं।

स्वामी शिवानन्द के आश्रम में हम लोग संध्या के ६ बजे पहुँचे और कुछ ही देर बाद उनके दर्शन हुए उस समय उन्हें अधिक अवकाश न था। इसलिए उनके आदेश से उस रात वहीं रुकना निश्चय किया। स्वामी जी अपने अतिथियों के आराम की देखभाल स्वयं करते हैं। उन्हें समय से भोजन और चाय मिलती है या नहीं। वहाँ कोई शिष्टतापूर्वक जितने दिन चाहे ठहर सकता है। स्वामी जी ने प्रातः-काल हम लोगों को अपना काफ़ी समय दिया और वार्तालाप भी बड़ी आत्मीयता के साथ किया। वह किसी को इस ओर यदार्पण करने के लिए उत्साहित नहीं करते जब तक उसकी प्रेरणा कर्मयोग के विधिवत् पालन से सिंचित न हुई हो। कर्मयोग का अर्थ है निष्काम भाव से अभिमान-रहित होकर प्राणीमात्र में परमात्मा को व्याप्त समझकर उनकी सेवा में रत रहना। यह दशा एक दो दिन के प्रयत्न से प्राप्त होना सम्भव नहीं है और इसमें धैर्य की बड़ी आवश्यकता होती है। इस प्रकार कर्मयोग का भक्ति या ज्ञान-योग से मेल हो जाता है। भक्त कर्मयोगी इस भावना को प्राप्त होता है कि विश्व की समस्त गतियों का संचालन ईश्वर के इशारे से होता है, वही स्वयं उसकी इच्छाओं को पूरा करने के निमित्त-मात्र है। यह भावना उसको कर्म के बन्धनों में फँसने से बचा लेती है। ज्ञान-कर्म-योगी दृष्टा भाव को प्राप्त होता है जिसका निरूपण उपनिषद् करते हैं (संसार की नाटचशाला में मेरा अस्तित्व केवल दर्शक का है और किसी भी बात में मेरा भाग नहीं है) इस प्रकार बिना कर्मों में लिप्त हुए कर्म करना आध्यात्म मार्ग के अधिकारी बननेवालों के लिए पहला चरण है—ईशावास्य उपनिषद् में लिखा है :—

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः
एवं त्वयि नान्य चेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।

जो लोग नाम-स्मरण और संकीर्तन से भी विमुख रहते हैं। वह कर्मयोग में प्रवेश करते ही इनमें आसक्ति रखने लगते हैं क्योंकि कर्मयोग ज्ञान और भक्ति दोनों का सूत्रधार है।

स्वामी जी का आश्रम छोड़ने की इच्छा न होती थी, परन्तु विधान कुछ और ही था और दूसरे दिन हरद्वार में स्नान करते हुए प्रयाग की ओर चल पड़े।

प्रयाग में गंगा और यमुना के संगम के अतिरिक्त हंसकूप (झूंसी) भी एक दर्शनीय स्थान है जहाँ श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी का निवास है। हंसकूप कुण्डलिनी योग की उपमा पर निर्मित किया गया है जिसकी चहारदीवारी शतदल कमल की याद दिलाती है और जिसमें इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना इत्यादि ने भी स्थान पाया है। परन्तु प्रभुदत्त जी स्वयं कुण्डलिनी योग के पृष्ठपोषक नहीं हैं। वह श्रीकृष्ण चैतन्य से प्रभावित हैं और 'नाम संकीर्त्तन' को ही पर्याप्त समझते हैं। उनकी गणना भक्तों में है। भारद्वाज आश्रम वीरान है और इसकी महिमा अब केवल ऐतिहासिक रह गई है।

प्रयाग में चार-पाँच दिन बिताकर विन्ध्याचल के पार भरतखण्ड के दक्षिण भाग में जहाँ हिन्दू-संस्कृति अब भी सजीव और मुस्कराती दिखाई देती है, जाने का उपक्रम हुआ। जबलपुर और नर्मदा नदी, जो इलाहाबाद-बम्बई के मार्ग में पड़ती है, विशेष उल्लेखनीय है। फिर नासिक और गोदावरी भी राही को अपनी ओर आमंत्रित करती है। परन्तु मैं बँगलोर की ओर मुड़ गया, क्योंकि वहाँ कुछ काल ठहरना निर्दिष्ट था। बँगलोर सुन्दर-सा उपवनों से भरा हुआ समृद्ध नगर है और कुछ ही दूर पर मैसूर रियासत की राजधानी है जो ऐतिहासिक महत्त्व रखती है। बँगलोर आकर रह-रहकर अरुणाचल के महर्षि रमन की याद आती थी। महर्षि रमन का स्थान जीवित योगियों में पांडिचेरी के योगी अरविन्द के साथ है। एक दिन आक्टोबर के अन्तिम सप्ताह में बँगलोर से विदा लेने का समय आ ही गया और मैं मद्रास रवाना हुआ।

मद्रास विशाल और भव्य किन्तु झुलसा हुआ नगर है। इस पर प्रकृति का कोप है और वर्ष के तीन चतुर्थांश में तेज धूप और गर्मी पड़ती है। यहाँ का जलवायु आर्यावर्तवालों के अनुकूल नहीं पड़ता। भारत में यदि कोई आश्चर्यजनक दृश्य है तो वह यहाँ के निवासियों का धूप में सिमेंट और कोलतार की सड़कों पर नंगे पैर चलना है। यह बात मेरी बिलकुल समझ में नहीं आई। मद्रास से दो दिन में ही जी भर गया और त्रिचनापली की राह ली। त्रिचनापली गाड़ी मद्रास से शाम को चलती है और प्रातःकाल चार बजे पहुँच जाती है। त्रिचनापली या त्रिची एक बड़ा और साफसुथरा नगर है। यहाँ कावेरी नदी है जो दक्षिण के इस भाग में काफी महत्त्व रखती है। त्रिची में हम लोग रुके नहीं और रामेश्वरम् की ओर बढ़े। रामेश्वरम् की महिमा सर्वविदित है और कहने की आवश्यकता नहीं है। बड़ी उत्कण्ठा से त्रिची से रामेश्वरम् तक का मार्ग तय किया, जो आठ घंटे लेता है। बारह बजे दिन को गाड़ी पुदुकोट और चेटिनद की रियासतों से होती हुई मण्डपम स्टेशन पर पहुँचती है। यहाँ भारत की स्थलसीमा का अन्त सा हो जाता है और चारों ओर समुद्र दिखाई देता है। गाड़ी उस पुल पर से होकर जाती है जो समुद्र के ऊपर बना हुआ और जिसके नीचे वे शिलाखण्ड पड़े दिखाई देते हैं जो यहाँ की किंवदंती में नल-नील द्वारा स्थापित कहे जाते हैं और तैरते मालूम होते हैं परन्तु यथार्थ में ये किसने स्थापित किये यह नहीं कहा जा सकता। कम से कम यह श्रीराम-द्वारा निर्मित सेतु के भग्नावशेष नहीं हो सकते। यह पुल पम्बन ब्रिज कहलाता है। इसके पार करते ही एक छोटा-सा द्वीप आता है जहाँ पम्बन स्टेशनपर गाड़ी रामेश्वरम् के लिए बदलनी पड़ती है। दूसरा स्टेशन रामेश्वरम् है। यहाँ की धर्मशालायें बहुत ही साफ-सुथरी हैं और नवम्बर के महीने में जलवायु भी काफी प्रीतिकर जान पड़ता है।

रामायण में वर्णित फल यहाँ के शिव-लिंग के दर्शन और गंगाजल से उनका अभिषेक करने से प्राप्त होता है या नहीं इस विषय को शास्त्रार्थ की और तर्क की सीमा में नहीं लाया जा सकता। यह बात बोधगम्य न हो परन्तु ज्ञान अनुभव और प्रतीति के मार्ग अन्य भी हैं। तीर्थयात्रा के आध्यात्मिक महत्त्व पर प्रकाश डालना धर्मवेत्ताओं का काम है परन्तु इतना निर्विवाद है कि ऐसे स्थान की यात्रा जहाँ पहुँचकर हमारी सांस्कृतिक और धार्मिक स्मृतियाँ और भावनायें सजीव हो उठती हों, हमारे क्लेशों को हरने की और ऐसी अनुभूति देने की क्षमता रखती हैं, जैसे और किसी वस्तु की कामना न रह जाती हो।

रामेश्वरम् में तीन दिन निवास करने के उपरान्त अनिच्छा के साथ रेल पर सवार हुए और विलुपुरम् की राह ली, जहाँ से अरुणाचल की ओर मार्ग जाता है। पूरे चौबीस घंटे रेलयात्रा में। परन्तु इस ओर से भीड़ नहीं आती। बड़ी उत्सुकता से तिरुवण्णामलै अरुणाचल पहुँचने की प्रतीक्षा कर रहे थे। संध्या के छः बजे हम लोगों ने, अपने को अरुणाचल के नीचे पाया। स्टेशन से महर्षि रमन के आश्रम बैलगाड़ी में जाने से पौन घंटा व्यतीत हुआ। यह समय जो केवल दो मील पहुँचने में लगा बहुत अधीरता से कटा।

श्री रमनजी उस समय अपने बड़े कमरे में विराजमान थे। उन्हें वन्दना करके उस रात विश्राम किया। प्रातःकाल छः बजे वेदमंत्रों की ध्वनि से आँखें खुल गईं और उपासना में सम्मिलित हुए श्री रमन का कार्यक्रम सदा एक-सा रहता है। उसमें परिवर्तन नहीं होता और अनुयायियों को भोजन और शयन के अतिरिक्त हर समय उनका सामीप्य प्राप्त होता रहता है। तामिल भाषा न जाननेवालों को उनकी मौन भाषा से ही सन्तोष करना पड़ता है या किसी दुभाषिया की सहायता से वार्तालाप होता है परन्तु अधिकतर वह मौन ही रहते हैं। उनका व्यक्तित्व एक शान्त-निश्चल जीवन मुक्त आत्मज्ञानी का है जिनके समीप बैठते ही उनकी उपस्थिति से सारा वातावरण ओत-प्रोत मालूम होता है। उनके प्रभाव और तेज से सारे आश्रम का वायु-मण्डल भरा हुआ जान पड़ता है और वहाँ रहना ही मनुष्य का श्रम हर लेता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि मैंने स्वयं इसका अनुभव किया।

ऋषि श्री रमन का स्थान ज्ञानयोगियों में है उनके कथनानुसार आत्म-ज्ञान का सूत्र मनुष्य के अपने हाथ से है। जिज्ञासु को अपने से प्रश्न करना चाहिए, मैं कौन हूँ? इसका उत्तर आत्मा स्वयं देती है और उत्तर मिलते और कुछ पाना नहीं रह जाता। यद्यपि यह नहीं कहा जा सकता कि महर्षि के साथ विचरनेवाले अनुयायियों को भी इस मार्ग से आत्मज्ञान हुआ है या नहीं परन्तु महर्षि की अपनी सफलता में किसी को उनके दर्शनों के बाद सन्देह नहीं होता।

हृदय-दाह

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर की व्यापक ख्याति अम्लता, उदर-वायु, हृदय-दाह, पेट-दर्द, वमन, पित्त-प्रकोप तथा पाचन-सम्बन्धी शिकायतों से पैदा होने-वाले अन्य रोगों में प्रभावशाली होने की मान्य प्रमाण है।

उदर-विकारों से उत्पन्न सिरदर्द, उदासी, अनिद्रा और हृदय की तीव्र धड़कन में भी यह अमूल्य है।

यदि आप इनमें से किसी कष्टकारी रोग से पीड़ित हैं तो आज ही कुछ मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर लीजिए और इस प्रसिद्ध औषध की शीघ्र सांत्वना का स्वयमेव अनुभव कीजिए।

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर माँगते समय "एलेक्स सी० मेकलीन" के हस्ताक्षर पहचान लीजिए क्योंकि असली यही है।

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर
सेवन कीजिए

Copyright: JWT(E)LTD.

और किसी भी औजार एवं हथियार के बिना की गई यह रक्तपात-रहित एक अहिंसात्मक क्रान्ति होगी। खादी, अहिंसा और स्वराज्य में परस्पर यही सानुरूपता है। समय का कुछ भी अपव्यय किये बिना भारत को इस "आर्थिक बहिष्कार" की नीति को अपनाने तो दीजिये, स्वराज्य उसके पीछे उसी प्रकार आ जायेगा जैसे रात के पीछे दिन। दूसरा कोई भी रास्ता नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नैना निशीथ की प्रतीक्षा में कभी कभी इसी तरह बैठी ही रह जाती।

(१)

आकाश में कुछ-कुछ अँधेरा छा चुका था। दो-चार तारे भी इधर-उधर झिल-मिलाने लगे थे। निशीथ छत पर बैठा एक चित्र बना रहा था। चित्रकला से उसे विशेष प्रेम था। वह बी० ए० फाइनल का विद्यार्थी था। वह चित्र के बनाने में इतना निमग्न था कि उसे किसी के पास आने की आहट भी सुनाई न पड़ी। सहसा उसके पिता पास आकर खड़े हो गये और चित्र को देखने लगे।

'निशीथ'!—पिता जी ने पुकारा।

'पिता जी'!—निशीथ ने चौंककर कहा।

'बेटा इस वर्ष तुम्हारी फाइनल की परीक्षा है और तुम चित्र बना रहे हो। परीक्षा के दो महीने और शेष हैं। मुझे तुम्हारा चित्र-कला से प्रेम पसन्द नहीं' ऐसा कहते हुए पिता जी बाहर चले गये।

निशीथ के पिता प्राणनाथ, शहर के प्रसिद्ध और आदरणीय पुरुषों में से हैं। निशीथ ही उनकी एकमात्र सन्तान है। प्राणनाथ के विवाह को बीस वर्ष के लगभग होने आये हैं पर न जाने क्यों वह अपनी पत्नी को उतना प्यार नहीं कर पाते जितना करना चाहिए; और जब कभी उनकी पत्नी उनसे इस सम्बन्ध में कुछ कहतीं तो न जाने किसकी धूमिल याद उनके हृदय-पटल पर छा जाती, उनका मुख उदास हो जाता और कुछ उत्तर न दे पाते। उनकी पत्नी चुपचाप उठकर चली जातीं। उनका हृदय दिन-दिन इसी में घुलता जा रहा था।

* * *

उस दिन निशीथ की परीक्षा का जब फल आया और वह पास हो गया तो उसने पिता के सामने पहाड़ पर घूमने जाने के लिए प्रस्ताव रक्खा। पिता ने सहर्ष उसे जाने के लिए आज्ञा दे दी। निशीथ दूसरे दिन नैनीताल के लिए अकेले रवाना हो गया।

(२)

ऊँचा पहाड़ी टीला और आस-पास ऊँचे-ऊँचे छायादार वृक्षों की पत्तियाँ पवन के झोंके से लहरा रही थीं। नैना भेड़ें चरा रही थी। सूर्यास्त में अभी कुछ देर थी। पास ही झरझर करता हुआ निर्मल झरना मधुर स्वरों में गाता हुआ बह रहा था। झरने का बल खाकर इठलाते हुए बहना और मधुर संगीत उसके सोये हुए हृदय के तारों को बरबस छेड़ रहा था। नैना मारे खुशी के फूली नहीं समाती थी। सहसा उसकी निगाह उधर आते हुए एक सुन्दर युवक पर पड़ी। वह सहम गई। युवक उसके पास आकर खड़ा हो गया। नैना ने विस्मय-भरी दृष्टि से पूछा—'आप कौन?'

'मैं रास्ता भूल गया हूँ। दिन भर पहाड़ों पर घूमते-घूमते थक गया हूँ... पर आप कौन?' युवक ने कहा।

'मैं पर्वत की रानी'—नैना ने कहा।

युवक हँस पड़ा। नैना उसकी ओर आश्चर्य से देखने लगी।

'आपका नाम'? नैना ने पूछा।

'निशीथ'!

'और आप हँसे क्यों?'

कहानी

पर्वत की रानी

लेखक, श्री महेन्द्रनाथ 'मधुकर'

समाज में लड़कों और लड़कियों की विवाह-समस्या एक प्रधान-समस्या है। जीवन की उथल-पुथल तथा शांति और अशांति का यह भी एक प्रधान कारण है, किन्तु क्या इसका कोई वास्तविक हल निकलता दिखाई देता है? मनुष्य सोचता कुछ है और होता कुछ और! संघर्ष-पूर्ण जीवन के चित्रों की भरमार है। यह कहानी भी विवाह-समस्या और संघर्षपूर्ण जीवन से ओत-प्रोत है। निशीथ और नैना एक दूसरे से प्रेम करते थे, किन्तु परिणाम कुछ और ही हुआ। कहानी सुन्दर, आकर्षक, रोचक और पठनीय है।

'इसलिए कि पर्वत की रानी यहाँ भेड़ें चरा रही है। उसे तो राजसिंहासन पर बैठना चाहिए था।'

नैना खिसिया गई। यौवन में मदमाती नैना अपने इस भोले स्वभाव पर नाराज हो उठी। उसने एक बार निशीथ की ओर देखा और फिर खिसियाकर सिर झुका लिया। कुछ देर तक दोनों मौन रहे।

नैना ने बनावटी मुस्कराहट से कहा—'आप चाहते क्या हैं?'

'मैं रास्ता भूल गया हूँ मुझे, रास्ता बता दीजिए।'

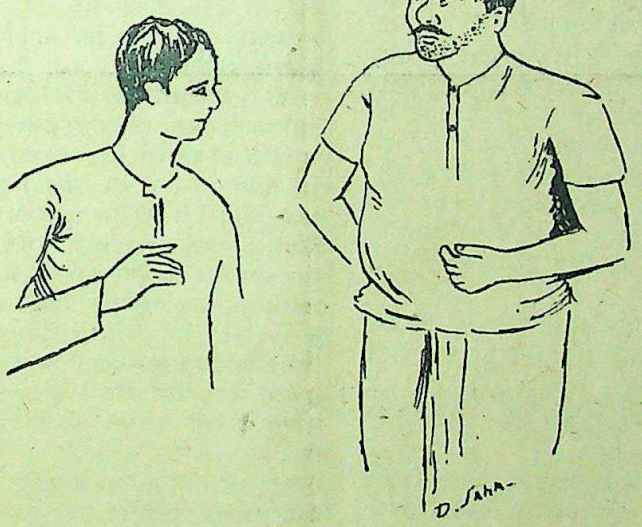

प्राणनाथ—तुम्हारी परीक्षा निकट है और तुम चित्र बनाने में समय व्यतीत कर रहे हो!

'माफ़ कीजिए, मुझे रास्ता नहीं मालूम' कहकर नैना भेड़ों को हँकाती हुई घर की ओर चल पड़ी जो पास के ही एक गाँव में था। निशीथ कुछ देर तक देखता रहा फिर उसने पुकारा—'सुनिये'।

नैना लौट पड़ी।

'आप क्या नाराज हो गईं?'

'नहीं', नैना फिर घर की ओर चल पड़ी। निशीथ कुछ देर तक तो उसकी ओर देखता रहा फिर वह भी लौट पड़ा, हृदय में एक दर्द लेकर, जिसका अनुभव आज पहली बार हुआ है।

नैना के घर पहुँचते-पहुँचते अँधेरा हो गया। नैना के पिता-थे, माता नहीं। पिता की एकलौती बेटी और एकमात्र सन्तान होने के कारण पिता ने अपना सारा स्नेह, सारा दुलार उसी पर बिखेर-सा दिया था। रात भर नैना को नींद नहीं आई। निशीथ का सुन्दर मुखड़ा, उसकी वह हँसी और वह वाक्य 'आप नाराज तो नहीं हो गईं' उसके हृदय में बार-बार रह-रहकर एक मीठा मीठा-सा दर्द पैदा कर रहा था। वह न जाने क्यों बरबस उसकी ओर खिंची-सी जा रही थी। वह हृदय को बार-बार समझाती पर वह न मानता।

निशीथ भी 'रायल होटल' में रात में खाना खाकर लेटा तो उसे भी नींद नहीं आई। नैना के वे शब्द 'पर्वत की रानी' उसे कभी गुदगुदा कर हँसा देते और कभी बेचैन कर देते। रात के टन से जब एक का घंटा बजा और उसने देखा कि नींद नहीं आ रही, तो वह उठकर बैठ गया और काग़ज पर नैना का चित्र बनाने लगा। उस चित्र के बनाने में उसे जितना आनन्द आज आ रहा था, उतना उसे पहले कभी भी किसी चित्र बनाने में नहीं आया था। रात भर में वह चित्र बन गया। दूसरे दिन फिर उसने उसी चित्र को बनाया और शाम तक जब वह चित्र भी बन गया तो वह उसमें से एक चित्र लेकर उसी स्थान की ओर घूमने चल पड़ा।

सूर्य की अन्तिम किरणें वृक्षों की पत्तियों से छन-छनकर पृथ्वी पर क्रीड़ा कर रही थीं। शीतल वायु झरने के मधुर शब्द के साथ अपनी तान मिला रही थी। निशीथ जब पहुँचा तो उसने देखा कि आज वहाँ कोई नहीं है। उसका हृदय न जाने क्यों रो उठा? आशा की किरण ने धीरे से उसके अँधेरे हृदय में प्रवेश किया। वह न जाने क्या सोचकर एक शिलाखण्ड पर बैठ गया। कभी वह झरने की ओर देखता और उसका मधुर गीत सुनता और कभी इधर-उधर अपनी दृष्टि घुमाकर चारों ओर देखने लगता। उसके हृदय में बार-बार यही उठता कि वह उससे नाराज हो गई है। जब उसकी आँखें नैना की राह देखते-देखते थक गईं और आकाश में अँधेरा छाने लगा तो वह उठकर ज्यों ही चलने को हुआ त्यों ही उसने देखा कि नैना एक ओर से भेड़ों को हँकाती हुई उसी की ओर चली आ रही है। उसका हृदय-कमल खिल उठा।

नैना ने पास आकर जब देखा कि निशीथ बैठा है तो वह रुक गई।

उसने कहा—'क्या आज आप फिर रास्ता भूल गये।'

'नहीं नैना, किसी की याद मुझे यहाँ खींच लाई है निशीथ ने शिलाखण्ड से उठते हुए कहा।

'अच्छा तो बैठिए इन्तजार कीजिए जिसकी याद आपको यहाँ खींच लाई हो।'

'जिसका इन्तजार कर रहा था वह तो मौजूद है, निशीथ ने मुस्कराते हुए कहा।'

नैना का मुख लज्जा से नत हो गया। कुछ देर तक वह सोचती रही फिर बोली—'अच्छा जा रही हूँ' देर हो जायेगी। अँधेरा हो जायेगा तो पिता जी नाराज होंगे। अभी दिन भर के थके हारे आये होंगे। अभी खाना बनाना है।'

'अच्छा सुनो, यह चित्र तुम्हें पसन्द है'! निशीथ ने नैना के हाथ में चित्र देते हुए कहा।

'बहुत सुन्दर है, यह तो मेरा चित्र है, आपने बनाया है?'

'हाँ।'

'तो मुझे दे दीजिए। मैं अपने पिता जी को दिखाऊँगी। वह बहुत खुश होंगे।'

'ले लो।'

'आप तो चित्रकार भी मालूम पड़ते हैं'—नैना ने चलते हुए कहा।

निशीथ मुस्कराता हुआ उसकी ओर देखता रहा।

(३)

निशीथ और नैना दोनों रोज उसी स्थान पर अब बैठकर बातें किया करते। नैना के पिता ने जब चित्र देखा तो वह बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने नैना से निशीथ को बुला लाने के लिए कहा। और जब निशीथ गया तो उन्होंने उसकी बड़ी खातिर की।

खाना खाकर जब निशीथ उठा तब नैना के पिता से बड़ी देर तक बातें करता रहा। बातचीत होते समय नैना के पिता ने कहा—'नैना की माँ की मृत्यु हो गई है। आज पाँच साल के लगभग होने चाहता है इस घटना को, मेरे पास उसका एक फोटो है। बड़ी कृपा होगी यदि आप उस फोटो से नैना की माँ का चित्र बना दें।"

निशीथ ने कहा—'हाँ हाँ, आप मुझे दे दीजिए मैं बना दूंगा।'

'वैसे तो मैं न बनवाता पर वह फोटो बहुत खराब हो चली है। यदि वह फोटो नष्ट हो गई तो फिर कोई निशानी न रह जायेगी।'

'नहीं-नहीं' मैं बना दूंगा और इसके सिवा यदि आपका कोई और काम हो तो मुझे इस पते से बराबर सूचना दीजिएगा। जो मुझसे सेवा हो सकेगी मैं बराबर करूंगा।' कहते उसने एक कार्ड दे दिया।

नैना के पिता यह सुनकर गद्गद हो गये। कुछ देर बाद उन्होंने नैना को पुकार-कर कहा—मेरे सन्दूक में जो तेरी माँ का फोटो रक्खा है उसे ले आ।'

नैना कुछ देर बाद लेकर आ गई। पिता ने निशीथ के हाथ में वह फोटो सौंप दी।

उस दिन फिर निशीथ रात भर नैना के ही यहाँ रहा। दूसरे दिन जब वह सुबह होटल आया तो उसने देखा कि एक तार का चपरासी उसके कमरे के पास खड़ा है। निशीथ ने तार के चपरासी के हाथ से तार ले लिया और उसे पढ़ने लगा। तार पढ़ते ही उसका मुख उदास हो गया। उसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखा था 'तुरन्त चले आओ, माँ बहुत बीमार हैं।' पिता ने तार भेजा था।

निशीथ ने कमरे का दरवाजा खोला। सब सामान बाँधा और टाइमटेबिल उठाकर जब रेल का समय देखा तो मालूम हुआ कि रेल रात को जाती है। वह बैठकर नैना की माँ का चित्र बनाने लगा। दोपहर में जब ब्वाय खाना लाया तो उसने खाना लौटा दिया। चित्र जब बन गया तो वह उसे लेकर नैना से मिलने चल पड़ा।

नैना उसी झरने के समीप भेड़ें चरा रही थी। निशीथ को जब उसने आज इस समय देखा तो वह आश्चर्य में पड़ गई।

निशीथ ने पास आकर नैना को चित्र देते हुए कहा—नैना, यह चित्र मैंने बना दिया है। अपने पिता जी को दे देना। मुझे दुःख है कि मैं उनसे मिल न सकूंगा।

'क्या कह रहे हैं निशीथ बाबू', नैना ने आश्चर्य में कहा।

'मैं जा रहा हूँ नैना। पिता जी का आज सुबह तार आया है। लिखा है माँ बहुत बीमार हैं।'

नैना ने काँपते हाथों से चित्र ले लिया। उसका हृदय रो उठा। आँखें गीली हो आईं। निशीथ ने जब उसकी आँखों की ओर देखा तो वह पागल-सा हो उठा। उसने नैना के हाथों को अपने हाथों में दबा लिया। नैना कुछ न बोली। जब वह चलने लगा तो नैना ने पूछा—'अब कब आइएगा।'

'नैना, वचन नहीं दे सकता पर 'यदि जीवित रहा तो अवश्य मिलूंगा।'

निशीथ वहाँ से चला आया।

नैना ने उस दिन जब पिता जी को माँ का चित्र लाकर दिया और बतलाया कि वह चले गये तो उन्हें दुःख हुआ। नैना के मुख की ओर जब उन्होंने देखा तो नैना की आँखों ने हृदय का सारा रहस्य खोल दिया। वह रोज भेड़ें चराने जाती, घर का सब काम करती लेकिन उसका हृदय कहीं और, और शरीर कहीं और रहता। निशीथ के जाने के बाद फिर पिता ने उसे मुस्कराते नहीं देखा। वह नित्य उसी स्थान पर बैठकर निशीथ की प्रतीक्षा करती।

निशीथ चला तो आया पर उसका चित्त अशान्त रहता। हर समय नैना की मदभरी चितवन उसके कलेजे में चुभा सी करती। पढ़ने बैठता तो पृष्ठ के प्रत्येक अक्षर में उसे नैना का रूप दिखाई देता। वह व्याकुल हो उठता और किताब बन्द कर रख देता और फिर अपने हाथ का बनाया हुआ उसका चित्र देखने लगता। आँखें गीली हो आतीं। हृदय की वेदना आँसू बनकर मोती के रूप में बिखर पड़ती।

पिता ने कई बार यह देखा कि निशीथ अब पहले-सा प्रसन्न नहीं रहता। इसका कारण एक ही समझ में आता और वह था उसका विवाह। कई बार उन्होंने और उनकी पत्नी ने उससे विवाह करने के लिए कहा पर वह मना कर देता। माता-पिता जब पूछते क्यों? तो वह चुप रह जाता।

संसार की घड़ी की सुई उलटी ही चलती है। मनुष्य प्रेम करता है संयोग के लिये वियोग के लिये नहीं; हँसने के लिए रोने के लिए नहीं, पर विधाता का नियम ही जब उलटा ठहरा तब कोई क्या करे?

उधर नैना की आँखें दिन-रात अपने परदेसी प्रियतम की प्रतीक्षा में लगी रहती। पिता ने कई बार कहा कि बेटी विवाह कर ले पर वह मना कर देती। कह देती 'पिता जी मैं यदि विवाह कर लूँगी तो फिर आपकी सेवा कौन करेगा। मैं विवाह नहीं करना चाहती।' पिता का हृदय प्रेम-भरे वाक्यों को सुनकर गद्गद हो जाता और वह चुपचाप रह जाते।

* * *

निशीथ बीमार था। ज्वर उसका पीछा नहीं छोड़ रहा था। डाक्टरों की दवा उसके ज्वर को हटा नहीं पाती थी। माता-पिता व्याकुल थे। उस दिन जब वह प्रातःकाल उठा और डाक्टर उसे देखकर और दवा देकर चले गये तो नौकर ने उसे एक चिट्ठी लाकर दी। चिट्ठी खोलकर वह पढ़ने लगा। वह पत्र नैना के पिता का था। लिखा था—"नैना बीमार है। मेरे पास दवा के लिए रुपये नहीं हैं, यदि १००) आप भेज सकें तो मैं आपका आजन्म ऋणी हूँगा। यह उसके जीवन और मरण का संग्राम है।" निशीथ एक ही साँस में सारा पत्र पढ़ गया। हृदय की धड़कन बढ़ गई। वह वाक्य 'जीवन और मरण का संग्राम है' उसके हृदय को पागल बनाये दे रहा था। वह सोच नहीं पा रहा था कि क्या करे? पिता से उसने रुपये माँगे तो उन्होंने मना कर दिया। मुसीबत अकेले नहीं, दल बाँधकर आती है। निशीथ उस दिन रात को इसी चिन्ता में सो न सका। उसका ज्वर और बढ़ गया।

दूसरे दिन सुबह जब वह उठा और नौकर अखबार देकर चला गया तो वह उसे जी बहलाने और हृदय को कुछ देर शान्त करने के लिए पढ़ने लगा। सहसा उसने देखा कि एक स्थान पर छपा है—"सबसे सुन्दर चित्र बनानेवाले को २००) का पुरस्कार दिया जायेगा।'

निशीथ ने उसे पढ़ा और कई बार। उसके बाद उसने अखबार बन्द करके रख दिया। डाक्टर साहब आये और आज जब बुखार देखा तो १०३ था। दवा देकर जब वह चलने लगे तो निशीथ से बोले—देखो अब तुम चुपचाप सो जाओ। कुछ पढ़ना-लिखना नहीं।'

निशीथ से न रहा गया। सारा शरीर ज्वर से काँप रहा था। वह उठा। उसने काग़ज़ पर पेन्सिल से रात्रि को एक सुन्दर स्त्री स्वरूप चित्रित और उसे अपने प्रियतम चन्द्रदेव के वियोग में आँसू बहाते हुए दिखाया। सारे दिन वह चित्र बनाता रहा। जब चित्र बन गया तो उसने उसे चित्र प्रतियोगिता में भेज दिया।

वह नित्य अखबार देखता कि उस चित्र प्रतियोगिता में किसे पुरस्कार मिला है। ज्यों-ज्यों दिन बीतते जाते उसे नैना की बीमारी की चिन्ता सुखाती चली जाती।

एक दिन प्रातःकाल होते ही किरण ने उसके टूटे दिल में ज्योति भर ही दी। पुरस्कार उसको ही मिला और दूसरे ही दिन रुपया भी आ गया। निशीथ ने तुरन्त १००) नैना के नाम मनीआर्डर-द्वारा रवाना कर दिया।

और कुछ दिनों बाद उसे फिर जब नैना के पिता का पत्र मिला कि "नैना अब अच्छी हो रही है। रुपये के लिए अनेक धन्यवाद!" तो उसका हृदय प्रसन्न हो उठा। धीरे-धीरे उसका ज्वर भी इस प्रसन्नता के कारण कम होने लगा और एक सप्ताह के अन्दर ही वह अच्छा भी हो गया।

(५)

उस दिन प्राणनाथ किसी काम से बाहर गये हुए थे। धोबी कपड़े लेकर आया तो माँ ने निशीथ से कहा—'बेटा कपड़े मिला ले।' निशीथ ने कपड़े मिलाये और जब वह कपड़े मिला चुका तो माँ ने कहा—बेटा इन्हें अपने पिता जी के सन्दूक में रख आ। मेरी तबीअत ठीक नहीं है।' निशीथ कपड़े लेकर पिता जी के कमरे में आया। सन्दूक खोला और उसमें से कपड़े निकालकर ठीक से उन्हें जब रखने लगा तो सहसा उसे किसी का फोटो उसमें दिखाई दिया। निशीथ ने उसे उठा लिया और ध्यान से देखने लगा। देखते-देखते वह सहसा चिल्ला पड़ा—'यह क्या? नैना की माँ का चित्र!!' उसका सिर घूमने लगा। चित्र के पीछे देखा तो उसमें लिखा था—

प्रिय प्राणनाथ!

'सपनों' में आना, भूल न जाना।'

तुम्हारी दासी—शैला

निशीथ ने चित्र उसी स्थान पर रख दिया। सारे कपड़े जल्दी-जल्दी रक्खे और अपने कमरे में पलँग पर आकर चोट खाये हुए पक्षी की भाँति गिर पड़ा। वह बकने लगा—'ओह फिर कैसे पिता जी माँ को प्यार कर सकते थे। सारा रहस्य आज मालूम हुआ।' वह सोचने लगा कि माँ से इसका बताना ठीक न होगा। वह विष की भाँति उस घूँट को पी गया। उसका हृदय कराह उठा। आँखें छलछला आईं। सहसा उसके मुँह से निकला—'तो नैना, पर्वत की रानी, अब मेरी नहीं हो सकती। उससे विवाह करना पाप होगा.... उसका अपमान करना होगा। माँ से इस रहस्य का बताना अर्थात् उन की प्राणहत्या करना होगा। पिता से कहना उनका अपमान होगा।'

निशीथ पागल हो उठा। वह क्या करे, उसकी समझ में कुछ भी न आ रहा था। कई दिन तक वह उस रहस्य को छिपाये रहा। पर उसकी आत्मा पागल हो चुकी थी। उसका मस्तिष्क जवाब दे रहा था।

उस दिन जब सारा संसार विश्राम कर रहा था निशीथ चुपचाप घर से निकल भागा। साथ में नैना का चित्र था और वही पुरस्कार के शेष सौ रुपये।

* * *

डाक्टरों ने जवाब दे दिया था। पिता की सारी सम्पत्ति खर्च हो चुकी थी पर नैना को अबकी बार ऐसा ज्वर चढ़ा कि वह उतर नहीं सका। उसके प्राण केवल एक-बार किसी को देखने के लिए व्याकुल थे। वह निशीथ के हाथों का बनाया हुआ अपना ही चित्र देख रही थी। दीपक का तेल समाप्त हो चुका था। बाती बुझने के निकट थी सहसा उसे ऐसा लगा कि किसी ने उसके गर्म माथे पर अपने शीतल हाथ रख दिये हों। नैना ने आँखें खोल दीं।

'कौन निशीथ बाबू'—नैना ने विस्मय से कहा 'हाँ, नैना, कैसी तबीअत है' निशीथ ने नैना के पास चारपाई पर बैठते हुए कहा।

पिता जी पास खड़े थे। वे बाहर चले गये। 'अब तो चलने का समय आ गया है। प्रतीक्षा करते-करते आँखें थक गईं पर हृदय नहीं। केवल तुम्हें एक बार देखने के लिए यह आँखें अभी तक बन्द नहीं हुईं। पर आज तुम्हारी नैना एक ऐसी जगह जा रही है जहाँ से फिर कभी कोई लौटकर नहीं आता।'

'ऐसा मत कहो नैना'—निशीथ ने व्याकुल होते हुए कहा।

'ठीक कह रही हूँ। तुम्हारी नैना तुम्हारे उन १००) का ऋण लिए हुए जा रही है केवल उसे इतना ही दुख है।' अच्छा एक बार अब अपने मुँह से तो कह दो—नैना।'

'नैना' निशीथ से कहा।

नैना की आँखें सदा के लिए मूँद गईं। बाती का तेल भी समाप्त हो गया।

* * *

आज निशीथ अपनी नैना, पर्वत की रानी, को उसी स्थान पर ढूँढ़ रहा है जहाँ उसने उसे पहली बार देखा था। पर वह उसे नहीं मिलती। वह पागल हो गया है। माता-पिता ने उसके लिए बहुत खोज की, पर उसका पता न लग सका। नैना के पिता अब उस गाँव को छोड़कर दूसरे स्थान पर चले गये हैं। रात को जब उस पर्वत पर नीरवता छा जाती है तो किसी के गाने का स्वर उसके हृदय को चीरता हुआ गाँववालों को सुनाई देता है।

स्टैनिस्ट्रीट

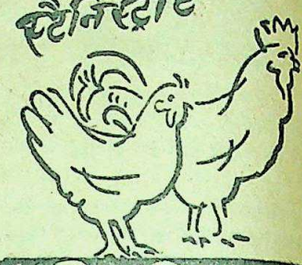

चिकेन
(कं सिं ट्रे टे ड)
एसेंस

विशुद्धता व उत्कृष्टता की गारंटी है—
विदेशी चिकेन एसेन्सों से किसी भी हालत में खराब नहीं, वरन् अच्छा ही है

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं, लिमिटेड
कलकत्ता बम्बई लखनऊ अमृतसर मद्रास कराची

SSK 12

पूर्वी देशों में अति प्राचीन तथा सर्वश्रेष्ठ.....

'मृत सञ्जीवनी सुरा' प्राचीन आयुर्वेदिक योग पर निर्मित एक पुष्टिकारक औषध है। इसका अमोघत्व सहस्र सहस्र उपभोक्ताओं द्वारा दीर्घकाल से सिद्ध किया जा चुका है। समय की कसौटी पर कसी जाने के पश्चात् हमारी 'मृत सञ्जीवनी सुरा' ने पूर्वी देशों में अति प्राचीन एवं सर्वश्रेष्ठ होने का अधिकार यथार्थ ही उपार्जन किया है

SAKTI'S
MRITASANJIBANI
SURA

प्रत्येक अवस्था के लिए अति प्राचीन, बलवर्द्धक औषध। अध्यक्ष माथुर बाबू का शक्ति-औषधालय ढाका

AD-SYN. D.S-1258

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातमंदिर

स्त्रियों में विनय और शिष्टाचार

श्रेष्ठ गृहिणी बनने के कुछ मौलिक गुण

लेखक, श्री कृष्णकुमार गुप्त, बी० काम

पति के प्रति पत्नी के कर्त्तव्य क्या हैं, अच्छी स्त्री के क्या गुण होने चाहिए अथवा दाम्पत्यजीवन क्योंकर सरस और मधुर हो सकता है आदि प्रश्न वास्तव में उतने सरल नहीं जितने देखने में प्रतीत होते हैं। सती साध्वी स्त्री इस युग में विरली ही होगी। पतिव्रत धर्म निस्संदेह अत्यन्त कठिन धर्मों में है और सम्भव है कि उसकी कठिनता ही उसके आलोप का कारण है। किन्तु फिर भी कुछ ऐसे साधारण गुण हैं जिनका स्त्री में समावेश होना अति आवश्यक है और जिनके होने से पति-पत्नी का जीवन किसी सीमा तक सुन्दर बन सकता है।

विनय और शिष्टाचार ऐसे गुण हैं जो यदि किसी स्त्री के पास होते हैं तो जो कोई उसके संसर्ग में आता है वही उसका बन जाता है। कहा भी गया है कि विनय स्वभाव का एक विचित्र भूषण है और स्त्री के पासस च्चरित्रता के साथ यदि विनय भी हो तो सारा संसार उसका है। निस्सन्देह एक कोमल प्रकृतिमयी, विनीत स्वभाववाली, मधुरभाषिणी ललना ही अपने स्वामी तथा परिवार को सुखी कर सकती है। जो स्त्रियाँ विनीत स्वभाव की नहीं होतीं, कटुभाषिणी होती हैं अथवा क्रोध प्रकृति की होती हैं वे अपने स्वामी तथा परिवार से यथायोग्य सम्मान नहीं पातीं और न कोई उससे प्रसन्न ही रहता है। नम्र स्वभाव की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है और स्त्री के लिए बड़े महत्त्व की वस्तु है। आजकल जो सर्वथा अप्रिय दृश्य अथवा विवाद-ग्रस्त पारिवारिक लड़ाइयाँ दिखलाई देती हैं वे प्रायः स्त्रियों में नम्रता के अभाव के कारण हैं।

बहुत-सी नववधुएँ अपनी माता के समान सास आदि से झगड़ती दिखलाई देती हैं। उन्हें अपने गुरुजनों को ही नीचा दिखाने में अच्छा लगता है। वे उस समय भूल जाती हैं कि वे अपने अहंकार के कारण जिस भक्ति और श्रद्धा को पाने की अधिकारिणी हैं उससे वंचित रह जाती हैं। कुछ स्त्रियाँ कभी-कभी अपने पति के व्यवसाय और सामर्थ का मूर्खतापूर्ण भरोसा करती हैं। यह भाव उन्हें कहीं से भी मिलता हो इससे सम्बन्ध नहीं; सम्बन्ध है इससे कि इस भाव के स्थान पर है आवश्यकता सरल, मृदु, नम्र तथा कोमल स्वभाव की। सास की अपेक्षाकृत यदि बहू चार अक्षर पढ़ी हो तो इसका यह अर्थ नहीं कि वह कठोर बन जाय और सब को घृणा की दृष्टि से देखने लगे।

शिष्टाचार एक मुख्य गुण है। यदि स्त्री किसी के साथ ठीक व्यवहार करना, किसके साथ कैसा व्यवहार होना चाहिए अथवा आदर सत्कार आदि के नियम नहीं जानती तो उसका जीना अभिशाप है और वह अपने पति की भी प्रेयसि नहीं हो सकती। विनय और शिष्टाचार साथ-साथ चलते हैं और प्रत्येक नर-नारी का जीवन इन दोनों अमूल्य गुणों से प्रभावित होता है।

युद्ध छिड़ने पर राजभक्तों की तरह चाय भी रणसज्जा से सुसज्जित हो गई।

सैनिक, नाविक व वैमानिक सबके साथ कंधे से कंधा भिड़ाकर चाय हर मोर्चे पर डटी रही। बीमारों व घायलों की देखभाल करती, भग्नहृदयों को उत्साह दिलाती, घर

से बिछुड़ों को धीरज बँधाती, जहाँ देखिये वहीं चाय दिखाई पड़ रही थी। घनघोर जंगलों और धधकते रेगिस्तानों में, कटकटाते शीत प्रदेश और चिलचिलाते ग्रीष्म प्रदेशों में, थके और निर्जीव-से हो रहे लोगों को चाय से ही जरा प्रसन्नता मिलती थी।

यूरोप के विजयोत्सव में भी चाय सबसे आगे थी। इस दुःखदायी, विनाशकारी, विश्वव्यापी महायुद्ध के अन्त का दूसरा विजयोत्सव भी शीघ्र मनाया गया और उसमें भी चाय, लोगों के आनन्द को दुगुना कर रही थी।

यद्यपि चाय ने अभी रण-सज्जा नहीं उतारी परन्तु भविष्य के

शान्तिमय व आराम के दिनों के लिये वह पूरी तैयारी कर रही है। वह दिन अब दूर नहीं जब चाय फिर अपना पुराना स्थान ग्रहण कर लेगी और रोजमर्रा की अनिवार्य वस्तु हो जायगी। आप भी, उस दिन की तैयारी कर लीजिये ताकि शान्ति से चाय का आनन्द उपभोग कर सकें।

युद्ध की तरह शान्ति में भी

चाय

का सहारा लीजिये

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK253

भारतीय चायों में सर्वश्रेष्ठ

लिपटन की

जाकूजा चाय

LTK 62 J

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुप्रसिद्ध फिल्म निर्माता और दिग्दर्शक श्री विजय भट्ट।

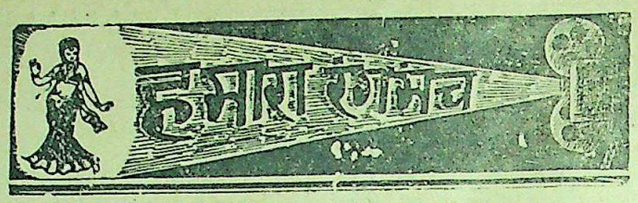

सुप्रसिद्ध निर्माता और निर्देशक श्री विजय भट्ट

फिल्मी-जीवन, साहित्य और कला पर एक सुन्दर इंटरव्यू

लेखक, श्री उमेश जोशी

(३)

प्रश्न—क्या फिल्म-डायरेक्टर की जिम्मेदारी युग के प्रति नहीं है? क्या वह युग-निर्माता नहीं होता?

उत्तर—फिल्म-डायरेक्टर की जिम्मेदारी युग के प्रति अवश्य है, लेकिन वह युगनिर्माता असल में नहीं हो सकता। युग-निर्माण करने का भार वास्तव में फ़िल्म-निर्माता के ऊपर होता है। डाइरेक्टर तो निर्माता के अन्तर्गत काम करता है। यों देखा जाय बिलकुल सही रूप में, तब तो हमें कहना पड़ेगा कि आज के युग-निर्माता पूज्य गांधी जी ही हैं। हम तो युग का केवल संशोधन करते हैं। युग के सड़े-गले हिस्से की काट-छाँट करना हमारा काम है। अभी वह युग नहीं है कि राष्ट्र के कर्णधार सिनेमा के पीछे-पीछे चलें। आज का युग तो राष्ट्र के नायकों के साथ चलने का है—हाँ एक बात है वह यह कि जनता की ग़लत रुचि के साथ हमें नहीं चलना चाहिए। जो फ़िल्म-निर्माता जनता की कुरुचिपूर्ण भावना के साथ चलते हैं व्यवसाय के नाम पर वह कभी सफल निर्माता नहीं बन सकते। "दर्शक की रुचि" को पलट देना ही फ़िल्म-निर्माता का प्रधान कर्तव्य होना चाहिए। जनता की रुचि आज बहुत बिगड़ी हुई है। उसका सुधार करना हमारा कर्त्तव्य है। तभी हम सफल युग-निर्माता हो सकते हैं। युग के अनुसार हमें विकास का भव्य चित्र खींचना होगा तभी तो हमारा चित्र सफल हो सकता है।

प्रश्न—क्या आज के फ़िल्मी-गीत जीवन के वास्तविक गीत हैं?

उत्तर—कम से कम में तो सन्तुष्ट नहीं। बात यह है कि उच्च धरातल के गीत में देना चाहता हूँ, उसके लिए जनता अभी तैयार नहीं है। उच्च धरातल से मेरा मतलब छन्दों की क्लिष्टता नहीं, बल्कि भावों की गम्भीरता है। आज हमें भावों को उच्चता की लड़ियों में गूंथना है, शब्दों को सरलता के ढाँचे में ढालना है। मैं धीरे-धीरे जनता की रुचि को अपने उच्च धरातल के गीतों के अनकूल कर रहा हूँ। जनता स्वयं एक दिन उच्च भावना से ओत-प्रोत साहित्यिक गीतों को हजम करने लगेगी। फ़िल्मों में अधिकतर अभिनय गीतों का होता है। और दर्शक पर गीतों का ही विशेष प्रभाव पड़ता है। इसलिए गीतों का धरातल हमें उच्च बनाना है। इनकी ग़ज़लों तथा दादरा का वक्त गया। आज के वक्त में साहित्यिक, राष्ट्रीय, एवं जीवन-युक्त गाने ही हमारी आत्मा की ख़ूराक की पूर्ति करते हैं।

प्रश्न—आप अपने जीवन की "न भूलनेवाली घटना" सुनाइये?

उत्तर—मेरे जीवन में कोई ऐसी घटना नहीं घटी, जो कि पाठकों के लिए अनुकरणीय हो।

मैंने कहा—शायद ऐसा हो नहीं सकता। विद्यार्थी-जीवन लाइफ़ की ही कोई घटना सुना दीजिये। सुनाना तो आपको पड़ेगा ही। चाहे वह घटना आपके जीवन में घटी हो, चाहे दूसरे के जीवन पर घटी हो। लेकिन ऐसी हो जिसका आपके ऊपर विशेष असर पड़ा हो।

विजय भट्ट—अच्छा तो मुझे याद आ रही है, एक ऐसी घटना, जिसका कि मेरे जीवन पर काफ़ी प्रभाव पड़ा है। उस घटनापूर्ण कहानी का शीर्षक है "मैं कैसे लँगड़ा बना?"

यह कहानी आज से कई साल पहले की है। मुझे ठीक समय याद नहीं। जब मैं कालेज से निकला ही था तो मैं एक दिन लाहौर के मालरोड पर चला जा रहा था। उस दिन सुबह से ही बदली हो रही थी। इसलिए दो बजे का वक्त भी ऐसा मालूम पड़ता था कि मानो शाम के सात बज गये हों। घर पर मेरी तबीअत ऊब रही थी। कोई साथी भी नहीं था, जिसके साथ कोई खेल ही शुरू किया जाता। लाचार होकर मैं घूमने निकल पड़ा। हाँ, तो मैं मालरोड पर जा रहा था। मालरोड की मोड़ पर मैंने देखा कि एक लँगड़ा फ़कीर बैठा हुआ है। जब कोई स्त्री उसके पास से होकर गुज़रती है, तो वह अपना मुंह ढँक लेता है। बड़ा विचित्र रहस्य था? मेरा मन उस लँगड़े पर अटक गया, घूमना भूल गया, ऐसी विचित्र बात मैंने पहले कभी अपने जीवन में न देखी थी। इसलिए मेरे लिए यह घटना और भी कौतूहलपूर्ण मालूम हुई। मैं उस लँगड़े से पांच-छः फुट दूरी पर एक पेड़ की ओट में खड़ा रहा, और उसकी प्रत्येक हरकत को देखता रहा। मैंने देखा कि कालेज की ओर से दो पंजाबी लड़कियाँ, जो कि देखने में निहायत ही ख़ूबसूरत थीं उसके पास से होकर गुजरीं। लड़कियों ने भी यह देख लिया कि लँगड़े ने हमें देखकर अपना मुख ढाँक लिया है। वह लँगड़े को "पागल" कहकर आगे बढ़ गईं। मैं भी यही सोचने लगा कि क्या यह लँगड़ा वास्तव में पागल है, जैसा कि इन लड़कियों ने कहा है, यदि नहीं है, तो कौन ऐसा प्राणी होगा जो सुन्दरियों को देखकर आँखें मीच ले? सौन्दर्य देखने की चीज है, फिर उसे क्यों न देखा जाय। मैं देख रहा था कि उन पंजाबी लड़कियों को सड़कों के लोग घूर-घूरकर देख रहे थे। यहाँ तक कि सड़क पर झाड़ू लगानेवाले भंगी ने भी अपनी झाड़ू बन्द करके एक ढंडी आह खींचकर कहा—"मार डाला मेरी जान" और उन्हीं सुन्दरियों की अनुपम सुषमा को देखकर इस लँगड़े ने क्यों आँखें बन्द कर लीं, यह जानने के लिए मेरा दिल परेशान होने लगा। मुझसे न रहा गया। मैंने पेड़ की ओट से निकलकर लँगड़े से कहा—"क्यों फ़कीर साहब मुझे एक बात बतलाओगे?" फ़कीर ने मुझे नीचे से ऊपर तक देखा और अपनी गूदड़ी को ओढ़ते हुए कहा—"आप क्या पूछना चाहते हैं बाबू जी?" मैंने उसके नज़दीक जाते हुए कहा—"क्या आप सचमुच पागल हैं, जैसा कि अभी हाल में इन कालेज की लड़कियों ने आपसे कहा?" फ़कीर ने लम्बी साँस लेते हुए कहा—"बाबू जी, आप जानकर क्या करेंगे हम फ़कीरों का जीवन, आप बड़े आदमी हैं। कहीं बड़े आदमी भी ग़रीबों की सुध लेते हैं?"

"आपको बताना ही होगा फ़कीर साहब" मैंने उत्सुकता-भरी निगाह से फ़कीर की तरफ़ देखते हुए कहा।

"अच्छा तो आप मुझे पागल समझिए।" फ़कीर ने बात को समाप्त करते हुए कहा "बातचीत से तो आप पागल नहीं मालूम पड़ते, फिर मैं आपको पागल कैसे समझ लूं?" मैंने बात के सिलसिले को बढ़ाते हुए कहा?

"जाने दीजिये बाबू जी, वह लड़कियाँ अपने रूप के मद में चाहे जिसको पागल कह दें—कौन उन्हें रोक सकता है?" फ़कीर ने बात को दौर में पैंतरा बदलते हुए कहा।

"तो फिर तुम सुन्दरियों को देखकर अपना मुंह क्यों ढँक लेते हो, इसका क्या रहस्य है?" मैंने फ़कीर के पास आराम से बैठते हुए कहा।

"इस रहस्य को जानकर बाबू जी आप क्या करेंगे? आपका वक्त क़ीमती है। क्यों अपना वक्त फ़कीरी दास्तान सुनने में बरबाद करते हो" फ़कीर ने अपनी दाढ़ी पर से तिनके को हटाते हुए कहा।

"जब तक आप अपना रहस्य न बतायेंगे, तब तक मैं यहाँ से टलने का नहीं। समझे फ़कीर साहब!" मैंने इतमीनान से कहा।

"अच्छा तो आप नहीं मानते हैं, तो देखिये" यह कहकर फ़कीर ने अपनी लँगड़ी टाँग गूदड़ से बाहर निकालते हुए कहा।

मैंने फिर कहा—"मैं तो कुछ नहीं समझा, बल्कि मेरा रहस्य और भी ज्यादा उलझ गया, बजाय सुलझने के।" अच्छा आप लँगड़े कैसे हो गये?

"मैं जो स्त्रियों को हिकारत की निगाह से देखता हूँ, इसका प्रमाण मेरी लँगड़ी टाँग है। बाबू जी, बस इतना ही आप समझिये। इससे ज्यादा आप जानकर क्या करेंगे?" फ़कीर ने जबान पर आई हुई बात को भी दाबते हुए कहा।

इसी बीच में एक सोलह साल की इकहरी बदन की लड़की पारसी साड़ी पहने उस फ़कीर के सामने आ निकली। उसने आते ही कहा—"पागल जी सलाम" फ़कीर ने अपना मुंह गूदड़ी से ढँक लिया। चूंकि फ़कीर लड़कियों और स्त्रियों को देखकर अपना मुंह छिपा लिया करता था—इसलिए वह और भी ज्यादा उसे चिढ़ाने के लिए उसे छेड़ा करती थीं। उसके मुंह ढँकने के कार्य से, तथा उसकी परेशानी से उन सुन्दरियों को

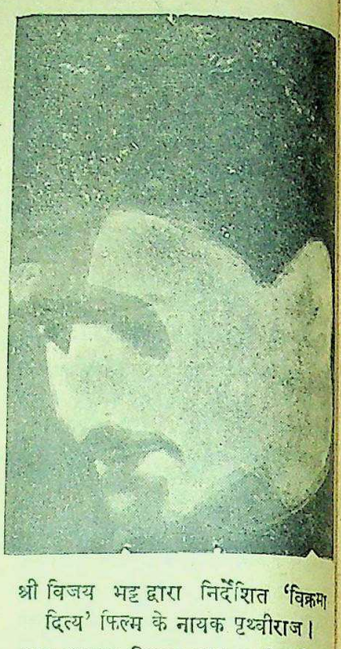

श्री विजय भट्ट द्वारा निर्देशित 'विक्रमादित्य' फिल्म के नायक पृथ्वीराज।

बड़ा आनन्द मिलता था। फ़कीर स्त्रियों की छेड़छाड़ पर कुछ नहीं कहता था, हाँ, अपने मुंह को ढँक लेता था।

मैंने फिर कहा—"हाँ तो अपनी कहानी सुनाइये, मैं सुनने के लिए व्याकुल हूँ।"

"अच्छा सुनियेगा, बाबू जी, मैं कैसे लँगड़ा बना? आज तक मैंने अपनी जीवन-कहानी किसी से नहीं कही। लेकिन आज आपका मन पाकर ही मैं आपके सामने अपने जीवन का रहस्य खोल रहा हूँ।"

मेरी कहानी आज से चालीस साल पूर्व की है। उस वक्त मेरी उम्र सिर्फ़ बीस साल की थी। "लखनऊ के एक कालेज में मैं पढ़ता था। थर्ड ईअर में। मेरे पिता रायबहादुर थे। साथ ही जागीरदार भी। मैं उनका इकलौता पुत्र था। बड़े लाड़-प्यार में मेरा लालन-पालन हुआ था। माता-पिता का स्नेह मुझ पर अतुल था। पिता जी ने मेरे लिए एक नौकर अलग रख छोड़ा था। कालेज "कार" में जाता था और घर वापस आता था। पिता जी का सम्मान नगर में काफ़ी था। कालेज के छात्रों पर मेरी धाक जमी हुई थी, ठीक उसी तरह जिस तरह आजकल ब्रिटेन की हिन्दुस्तान पर। कालेज के प्रत्येक कार्य में शामिल होता था। तन्दुरुस्ती भी मेरी उस वक्त, बाबू जी अच्छी थी। आज का जैसा दुबला-पतला न था। उस वक्त मैं "काश्मीरी सेब" हो रहा था। कालेजवाले मुझे इसी नाम से पुकारते थे। पढ़ने में भी मैं तेज था और खेलने-कूदने में भी किसी से पीछे नहीं था। कालेज की "डिबेटिंग-क्लब" का मैं प्रेसीडेंट था। मतलब यह है कि मेरे व्यक्तित्व का सिक्का कालेज में ख़ूब जमा हुआ था। कुछ छात्र ऐसे भी थे, जो मुझसे मन ही मन द्वेष करते थे। उनके जलने का मुख्य कारण "प्रमिला" नाम की सुन्दर लड़की थी। मेरे ही क्लास में पढ़ती थी। थी वह पंजाबिन, लेकिन अधिकतर साड़ी में ही रहा करती थी। उसे साड़ी पहिनना अधिक भाता था। वह चश्मा भी लगाती थी। उसका रुझान मेरी तरफ़ दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा था। प्रमिला बिजली की तरह चपल थी। बिजली की तरह प्रबल, अंगूरी के कटाक्ष-सी चुटीली, नूपुर की छन्द-लहरी-सी रसीली, पाजेब की झंकार-सी मस्त, मन के स्वभाव-सी चंचल, कामना की किलोल-सी विकल, सावन के समीर-सी आतुर, मानिनी के सुहाग-सी प्रखर, ऐसा था उसका व्यक्तित्व बाबू जी!

(मैंने बीच में रोककर कहा—तुम तो कवि मालूम पड़ते हो, कितना बढ़िया तुमने नारी-सौन्दर्य का चित्र खींचा है।) नहीं

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

स्वर्गीय पंडित विश्वम्भरनाथ शर्मा, कौशिक

एक महान् कलाकार का निधन

लेखक, श्री त्रिलोकीनारायण दीक्षित, बी० ए० (आनर्स) एम० ए०

प्रेमचन्द तथा 'प्रसाद' के महायात्रा के पश्चात् हिन्दी कथा-साहित्य का क्षेत्र शून्य-सा हो गया था। कथा-साहित्य की महान् विभूति पंडित विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' के निधन से हिन्दी आज अधिक दीन तथा अभावपूर्ण प्रतीत होती है।

कौशिक जी का जन्म अम्बाला छावनी में आश्विन कृष्ण १ संवत् १९४८ विक्रमीय को आदि गौड़-वंश के कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण-वंश में हुआ था। गंगोहा जिला सहारनपुर में ही आपके पूर्वजों का प्राचीन निवास-स्थान था। आपके पिता पंडित हरीश्चन्द्र कौशिक फ़ौज में स्टोरकीपर के पद पर नियुक्त होकर अम्बाला चले गये थे।

स्वर्गीय कौशिक जी

अम्बाला के उस नीरस तथा फ़ौजी वातावरण में ही हिन्दी की इस महान् रचनात्मक विभूति का जन्म हुआ था। आपके पिता के पितृव्य पंडित इन्द्रसेन कौशिक जीविकोपार्जन के लिए अम्बाला से कानपुर आ बसे। उन्होंने अपनी कर्मठता के बल पर व्यापार के साथ पठन-पाठन कार्य भी प्रारम्भ किया। फलतः अपने अथक् अध्यवसाय की सहायता से एक दिन वे वकालत पास हो गये और कानपुर में ही सदैव के लिए बस गये। पंडित इन्द्रसेन निःसन्तान थे। उन्होंने विश्म्भरनाथ जी को अपना दत्तकपुत्र बना लिया तब से कौशिक जी सदैव के लिए गंगोहा तथा अम्बाला त्याग कर कानपुर में रहने लगे। कौशिक जी की शिक्षा केवल मैट्रिक तक ही हो पाई थी। मैट्रिक के पश्चात् उनकी पढ़ाई स्वान्तःसुखाय अपने घर पर प्रारम्भ हुई। घर पर उन्होंने हिन्दी तथा संस्कृत का अध्ययन किया, यद्यपि पाठशाला में फ़ारसी तथा उर्दू उनके वैकल्पिक विषय थे। प्रेमचन्द की भाँति कौशिक जी भी उर्दू के क्षेत्र से हिन्दी की ओर आये थे। अपने साहित्यिक जीवन के शैशव में कौशिक जी 'राग़िब' उपनाम से उर्दू में कविता लिखते थे। सन् १९०९ ई० से आप हिन्दी के क्षेत्र की ओर अग्रसर हुए। सन् संवत् १९११ से आप नियमित रूप से हिन्दी की सेवा करने लगे। हिन्दी में कौशिक जी का साहित्यिक जीवन एक कथाकार के रूप में प्रारम्भ हुआ। आप सर्वप्रथम कानपुर के साप्ताहिक 'जीवन' में कहानी लिखा करते थे। उसी समय उन्होंने कुछ लेख 'सरस्वती' में भी लिखे थे। उन दिनों 'सरस्वती' आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के कुशल हाथों में थी। द्विवेदी जी की एक बार आपसे भेंट हो गई। उन्होंने कौशिक जी से उनकी रुचि के विषय में पूछताछ की। आपने प्रत्युत्तर में कहा कि साहित्य के सभी अंगों से उन्हें कथा-साहित्य अधिक प्रिय है। द्विवेदी जी ने आदेश दिया कि फिर उनके लिए इसी क्षेत्र में रचनात्मक कार्य करना उपादेय होगा। योग्य व्यक्ति का उपयोगी आदेश पाकर वे इसी ओर झुके और अपने क्षेत्र के इतिहास में अमर हो गये। 'कौशिक' जी की प्रथम मौलिक कहानी 'रक्षाबन्धन' सन् १९१२ ई० में सरस्वती में छपी थी। स्मरण रखना चाहिए कि इसके दो ही वर्षों बाद प्रेमचन्द जी ने भी हिन्दी में कहानी लिखना प्रारम्भ किया था। तब से बराबर आप हिन्दी की सेवा करते रहे हैं।

कौशिक जी बहुभाषज्ञ थे। वे फ़ारसी, संस्कृत, हिन्दी तथा उर्दू के गम्भीर विद्वान् थे। इसका ऊपर उल्लेख हो चुका है। पर बँगला भाषा तथा साहित्य का भी आपको अच्छा ज्ञान था। आपने 'षोडशी' नामक बँगला की अनेक कहानियों का अनुवाद भी किया था। 'गल्प-मन्दिर,' 'कल्लोल', 'चित्रशाला' दो भाग 'मणिमाला' इत्यादि आपकी मौलिक कहानियों के संग्रह हैं। 'माँ' तथा 'भिखारिणी' आपके दो सर्वप्रिय उपन्यास हैं। बँगला से अनुवादित ग्रन्थों में 'मिलन-मंदिर' तथा 'अत्याचार का परिणाम' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। 'जारीना', 'रूस का राहु' संसार की असभ्य जातियों की स्त्रियाँ, इत्यादि आपके कतिपय संकलन तथा सम्पादित ग्रन्थ भी हैं।

हास्यरस से ओत-प्रोत दुबे जी की चिट्ठियाँ भी आपकी ही रचना है। अपनी कहानियों की मौलिकता, रोचकता, तथा स्वाभाविकता के कारण कौशिक जी प्रेमचन्द के साथ कथा-साहित्य की बृहद्त्रयी में रखे जाते हैं आपकी कहानियों में आपके व्यक्तित्व की स्पष्ट छाया रहती है। कहानियों की भाषा संयत तथा परिष्कृत रहती है। उनकी शैली में प्रभावोत्पादक शक्ति है।

हिन्दी हास्यरस सृजन में कौशिक जी का बड़ा अपूर्व कलात्मक सहयोग रहा है। जिस समय हिन्दी हास्यरस का क्षेत्र अछूता पड़ा था, कौशिक जी ने उसकी ओर दृष्टिपात किया और अपनी रचनाओं-द्वारा उसे समृद्ध बनाया। कौशिक जी सुष्ट तथा संयत हास्यरस के सृजक थे। 'दुबे जी की चिट्ठियों' में हास्यरस की अविरल धारा प्रवाहित हुई है। कौशिक जी के व्यंगात्मक हास्य में समाज-सुधार—तथा अन्याय दोषों को निर्जीव कर देने की बड़ी प्रबल शक्ति है। समाज-सुधार की भावना से प्रेरित होकर कौशिक जी ने जो चिट्ठियाँ लिखी हैं वे किसी भी साहित्य का गौरवपूर्ण अंग बन सकती हैं। कौशिक जी का हास्य तथा तीव्र व्यंग केवल समाज के दोषों तक ही नहीं सीमित रहा। उनकी लौकिक दृष्टि धर्म, राजनीति तथा इसी प्रकार के अन्य क्षेत्रों पर भी पड़ी है।

इधर कुछ समय से कौशिक जी के हास्य में गम्भीरता अधिक दृष्टिगत होने लगी थी। उनके पूर्वरचित हास्य में हास्योत्पादन की अपूर्व शक्ति थी। परन्तु इन कतिपय गत वर्षों में उनके हास्य में हमें वही गम्भीरता दृष्टिगोचर होती है जो हिन्दी के कुशल लेखक प्रसाद जी में वर्तमान है।

कौशिक जी एक हास्यप्रिय मनुष्य थे। गत १९४३ के दिसम्बर में मुझे उनके दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उन दिनों मैंने अपनी एम० ए० परीक्षा के लिए 'हिन्दी-साहित्य में हास्यरस' पर एक थिसिस लिखा था। कौशिक जी से इस विषय पर पर्याप्त समय तक वार्तालाप हुआ। मैंने अपने द्वारा लिखे हुए विविध लेखकों की हास्य-शैली पर अपनी आलोचना सुनाई। इसके पश्चात् कौशिक जी ने कहा हमारे विषय में आपने क्या लिखा है? इस पर मैंने उन्हें अपने विचार सुनाये। सुनकर कौशिक जी ने हँस दिया था। वही हमारा प्रथम और अन्तिम साक्षात्कार था।

आज कौशिक जी इस संसार में नहीं हैं। पर उनका साहित्य उन्हें आज ही नहीं वरन् वर्षों तक अमरत्व प्रदान करता रहेगा। जो उत्पन्न हुआ है वह मरेगा अवश्य। मृत्यु जीवन का एक कठोर सत्य है। परन्तु कौशिक जी का जन्म हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान की सेवा करके सफल हुआ।

* * *

आदि और अन्त—लेखक, श्री विष्णु प्रभाकर बी० ए०, प्रकाशक प्रदीप कार्यालय, मुरादाबाद; मूल्य १॥) पृष्ठ-संख्या १५०।

आधुनिक हिन्दी के कथा-साहित्य में श्री विष्णु प्रभाकर की कहानियों का उच्च स्थान है। कई वर्षों से श्री विष्णु कहानियाँ लिख रहे हैं और इस क्षेत्र में उन्होंने अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया है। प्रेमचन्द-युग के बाद हिन्दी का जो कथा-साहित्य सृजन हुआ, उसमें भावना और विचारों की प्रौढ़ता तो है ही, साथ ही जीवन-सम्बन्धी वातावरण तथा मनोवैज्ञानिक चित्रण की भी विशेषता है। स्वर्गीय प्रसाद जी इस प्रकार की कथा-शैली के प्रवर्तक थे। श्री विष्णु-प्रभाकर की कहानियों की भी इसी कोटि की कहानियों में गणना की जा सकती है। इन कहानियों के घटनाक्रम में नवीनता, जीवन के सुख-दुख का आकर्षक चित्रण, वास्तविक वातावरण का निरूपण तथा हृदय और मस्तिष्क को प्रभावित करनेवाले भावों तथा विचारों का सुन्दर सामंजस्य है। कहानियों के समाप्त करने पर उनका हृदय पर प्रभाव तो पड़ता ही है, साथ ही पाठक को कुछ अपनेपन का भी अनुभव होता है। उसे कल्पना के चक्कर में वास्तविकता का अनुभव नहीं होता।

इस पुस्तक में लेखक की आठ कहानियाँ इरा-कमल, आबिद प्रेमी नहीं भाई बने, धूमिल की खोज, देवर का भ्रम, रूमाल मेरा था, निशिकांत और नहुष का पतन—संग्रहीत हैं। यह कहानियाँ यद्यपि पत्र में प्रकाशित हो चुकी हैं और पाठकों द्वारा प्रशंसित हैं, फिर इस संग्रह में भी उन्हें पुनः पढ़ने को जी चाहता है। कहानियों की कुछ घटनाएँ तो सामाजिक और एकाध पौराणिक वातावरण से ओत-प्रोत हैं। भाषा-शैली भी परिमार्जित और आकर्षक है।

छपाई-सफाई सुन्दर और स्वच्छ है। कवर भी नयनाभिराम है। यह कहानी-संग्रह आधुनिक हिन्दी कथा-साहित्य के स्तर को ऊँचा करेगा, इसमें संदेह नहीं। पाठकों को इस कहानी-संग्रह को एकबार अवश्य पढ़ना चाहिए। —चक्रपाणि

* * *

रँगे सियार (कहानी-संग्रह)—अनुवादकर्त्ता, पंडित रूपनारायण पांडेय; प्रकाशक, श्री विष्णुनारायण भार्गव, हिन्दुस्तानी बुक डिपो, लखनऊ; पृष्ठ-संख्या १२३; मूल्य १)।

बंगला की छः कहानियों का यह संग्रह बहुत ही रोचक और कलात्मक है। कहानियों के चयन में हिन्दी के सुप्रसिद्ध पत्रकार और "माधुरी"-सम्पादक पं० रूपनारायण जी पाण्डेय का स्वस्थ और कल्पनात्मक दृष्टिकोण स्पष्टतः झलक रहा है। भाषा में प्रवाह है और वह अत्यन्त सरल है। कहानी-प्रेमी साधारण हिन्दी पाठक भी इस संग्रह को पढ़कर उतना ही आनन्द ले सकता है, जितना साहित्य-कला का कोई विद्यार्थी।

इतने सुन्दर कहानी-संग्रह में भी हमें दो त्रुटियाँ बहुत खटक रही हैं:—एक तो बंग-भाषा के जिन कलाकारों की ये कहानियाँ अनूदित की गई हैं, उनका कहीं नामोल्लेख तक नहीं किया गया; दूसरे प्रूफ़-सम्बन्धी अशुद्धियों की भरमार है। आशा है, आगामी संस्करण में ये त्रुटियाँ दूर कर दी जायँगी।

* * *

हमारा साथी रूस—सम्पादक, श्री एल० एस० मिश्र, बी० ए०; प्रकाशक, हिन्दुस्तानी बुक डिपो, चारबाग; लखनऊ; पृष्ठ-संख्या १२०; मूल्य २)।

योरप के विगत द्वितीय महासमर में रूस के नर-नारियों का वीरतापूर्ण कार्य-कलाप संसार के इतिहास में चिरस्मरणीय अध्याय रहेगा। प्रस्तुत पुस्तक में रूस की शक्ति, उसका फौजी और मुल्की इन्तजाम आदि बातों के साथ-साथ रूसवासियों ने अपने शौर्य का कहाँ, कैसा परिचय दिया, यही सच्ची घटनाएँ कहानियों के ढँग पर रोचक शैली में अंकित की गई हैं। यत्र-तत्र कुछ चित्र भी दिये गये हैं।

बहादुर रूसियों की ये गाथाएँ किसी भी देश के भावी स्तम्भों के लिए न केवल पठनीय, अपितु अनुकरणीय भी हैं। पुस्तक की भाषा में यदि उर्दू शब्दों को असंयम रूप में व्यवहृत करने का लोभ—संवरण किया जाता, तो हिन्दी के साधारण पाठक भी इसे आसानी से समझ सकते। —देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

धातुपौष्टिक
कामजोत वटी
स्वप्नदोष, वीर्यविकार, शीघ्रपतन, सुस्ती व कमजोरी दूर करके बल व वीर्य बढ़ाकर जवाँमर्द बनाती है। डि० रु० २॥)
कामजोत तिला
इसके उपयोग से इन्द्री की नसें व अवयव मजबूत होकर उत्थानशक्ति और स्तम्भन-शक्ति बढ़ती है। फी शी० २॥)
मदनमंजरी फार्मेसी जामनगर
कलकत्ता ब्रांच—१७७, हरीसन रोड
इलाहाबाद—मदनस्टोर्स ४७ जोन्स्टनगंज
बनारस एजेन्ट—राधेलाल ऐण्ड सन्स, चौक

आपकी किस्मत में क्या लिखा है?
अगर आप एक साल के अन्दर प्रेश आनेवाले अच्छे-बुरे हालतों को समय से पहले जानना चाहते हैं तो आप आज ही हमको सिर्फ पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी फूल का नाम लिखकर भेज दीजिए। बस फिर हम ज्योतिष विद्या के हिसाब से आपके आनेवाले १२ मास का नफा, नुकसान, किस तिजारत में फायदा होगा, किस जरिये रुपया मिलेगा, रोजगार कब मिलेगा, मुलाजमत में तरक्की, तबादला, तनज्जुली, औरत और औलाद का सुख, तन्दुरुस्ती, बीमारी, दूर का सफर, मुकद्दमा और इम्तिहान में सफलता, सगाई शादी, जमीन व जायदाद का सुख, किसी से नया मेल या नफा, सट्टा, लाटरी वा किसी अज्ञात कारण से धन का मिलना सारांश तारीख कार्ड से लेकर एक साल तक होनेवाली कुल बातों का खुलासा यानी माहवारी वर्षफल बनाकर सिर्फ एक रुपया चार आने में वी० पी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक खर्च अलग होगा। साथ में बदकिस्मती को खुश किस्मती में बदलने का उपाय भी लिखा जायगा ताकि आनेवाली मुश्किलों को दूर किया जाय। सिर्फ एक बार की परीक्षा आपको बतला देगी कि हम ज्योतिष विद्या के कितने जानकार हैं। गलत साबित होने पर कीमत वापिस।
श्री स्वामी सत्यनारायण ज्योतिष आश्रम, (D. D.) जालन्धर सिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराष्ट्र की राष्ट्रभाषा-समस्या

हिन्दी-हिन्दुस्तानी-प्रचार के लिए दो संस्थायें क्यों ?

लेखक, श्री गंगाधर इंदूरकर, साहित्यरत्न

महाराष्ट्र में राष्ट्र-भाषा की समस्या इस समय विवादग्रस्त होती जा रही है। राष्ट्रभाषा प्रचार के निमित्त एक ही नाम से दो संस्थायें स्थापित हो गई हैं। एक का संचालन कांग्रेस कार्य-कर्ताओं की ओर से हिन्दुस्तानी प्रचार के लिए, और हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की ओर से हिन्दी प्रचार के लिए हो रहा है। इस लेख के लेखक पिछले दिनों पूना गये थे। लेखक ने इस लेख में इसी सम्बन्ध में कुछ अनुभव अपने व्यक्त किये हैं, जो विचारणीय है।

महाराष्ट्र के प्रसिद्ध कांग्रेस-नेता श्री शंकर राव देव।

इस समय देश में राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में दो विचार-धाराएँ प्रचलित हैं। एक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की और दूसरी देश के महापुरुष महात्मा गांधी की। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन अपनी राष्ट्रीय दृष्टि के अनुसार हिन्दी को राष्ट्रभाषा कहता है और महात्मा गांधी आज उसे हिन्दुस्तानी कह रहे हैं। स्वरूप की दृष्टि से विचार किया जाय तो महात्मा जी की हिन्दुस्तानी में और सम्मेलन की हिन्दी में विशेष अन्तर नहीं है। मेरी समझ में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का विचार यह है कि राष्ट्रभाषा में प्रचलित किन्ही भी शब्दों का बहिष्कार न करते हुए अधिकाधिक वह शब्द ग्रहीत हों जो देश की विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं को सुलभ हों। सम्मेलन की दृष्टि में हिन्दी राष्ट्र के उत्थान की और राष्ट्र के जागरण की भाषा है। महात्मा जी की हिन्दुस्तानी में प्रान्तीय भाषाओं का स्थान गौण है। वह हिन्दुस्तानी को राष्ट्रीय दृष्टि से हिन्दू-मुस्लिम एकता की भाषा मानते हैं। वह हिन्दी को हिन्दुओं की और उर्दू को मुसलमानों की भाषा मानते हैं। दोनों के समन्वय से तैयार हुई भाषा राष्ट्रीय एकता में पूरा योग देगी, ऐसा उनका विचार है। उदाहरण के लिए 'चिट्ठी', 'पत्र' और 'खत' इन शब्दों में सम्मेलन के लोग प्रान्तीय भाषाओं को अधिक निकटवर्ती होने के कारण 'चिट्ठी' और 'पत्र' को पहला स्थान देंगे और 'खत' को दूसरा। महात्मा जी संभवतः 'खत' को जनता का शब्द मानकर उसे पहला स्थान देंगे और 'चिट्ठी' तथा पत्र को दूसरा।

इस सम्बन्ध में दोनों में मौलिक मतभेद है। मराठी तथा गुजराती की तरह हिन्दी या उर्दू भाषा के शब्द यह बात तो समझ में आती है किन्तु हिन्दुओं की भाषा हिन्दी और मुसलमानों की भाषा उर्दू यह साम्प्रदायिक भेद समझ में नहीं आता। किन्तु यह ऐसा व्यावहारिक विरोध नहीं है जिस पर दोनों संस्थाओं के अलग होने का प्रश्न उठता है। इस समय महात्मा जी के सम्मेलन से अलग होने का कारण भाषा का प्रश्न नहीं है। वरन् मुख्य प्रश्न है लिपि का। सम्मेलन की दृष्टि में राष्ट्र लिपि देवनागरी है और कहीं-कहीं फ़ारसी लिपि में भी राष्ट्रभाषा लिखी हुई दिखाई देती है। महात्मा जी हिन्दू-मुस्लिम एकता की दृष्टि से फ़ारसी या उर्दू लिपि तथा राष्ट्रभाषा की दृष्टि से नागरी तथा उर्दू-लिपि सीखना आवश्यक समझते हैं। अपने सिद्धान्तों में परिवर्तन न करते हुए भी, देश के महापुरुष महात्मा-जी के साथ चलने के लिए सम्मेलन ने कहा किन्तु यह मान भी लिया जाय कि उर्दू भी हमारे राष्ट्र की एक लिपि है और उसके द्वारा जो राष्ट्रभाषा सीखना चाहे अवश्य सीखे किन्तु देश के प्रत्येक व्यक्ति पर दोनों लिपियाँ सीखने का बोझा क्यों डाला जाय? महात्मा जी को यह मत पसन्द नहीं है। दोनों ही लिपियाँ सीखने का उनका आग्रह कायम है। वह हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा द्वारा अपने काम को आगे बढ़ाना चाहते हैं। सम्मेलन की भी अपनी परंपरा है। उसने जनता के सामने अपनी समस्या पेश की है और उसे उससे पूरे न्याय की आशा भी है।

हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा के कार्यालय मंत्री श्री श्रीपाद जोशी का एक पत्र 'देशदूत' के पिछले एक अंक में प्रकाशित हुआ था। उसमें जोशी जी ने महाराष्ट्र में इस समय होनेवाली राष्ट्रभाषा-सम्बन्धी मतभेद की चर्चा करते हुए सम्मेलन को साम्प्रदायिकतापूर्ण कहने का प्रयत्न किया था। आपने जिस ढंग से सम्मेलन के सम्बंध में अपने विचार प्रकट किये थे उसके संबंध में मैं कुछ भी नहीं कहना चाहता। हाल ही में मैं अपने निजी काम से पूना गया था।

राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति वर्धा के प्रधान-मन्त्री श्री भदंत आनन्द कौसल्यायन

रास्ते में वर्धा में भी रुका था। जब वर्धा में जोशी जी से मेरी मुलाकात हुई तब आपने कहा था कि हम लोगों ने अब यह निश्चय कर लिया है कि 'सम्मेलन साम्प्रदायिक संस्था है' इस बात का प्रचार किया जाये। क्या हम पूछ सकते हैं कि आपका यह निश्चय हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के किसी जिम्मेदार अधिकारी की अनुमति से हुआ है, या स्वयं उनके दिमाग़ की उपज है? आपके इस निश्चय से आपके कथन को कितना महत्व दिया जाये यह समझने की बात है।

महाराष्ट्र में राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्धा की परीक्षाओं-द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी का काफी प्रचार हुआ है। प्रतिवर्ष केवल महाराष्ट्र से राष्ट्रभाषा की परीक्षाओं में लगभग १४-१५ हजार विद्यार्थी बैठते हैं। महाराष्ट्र के कार्यकर्ता हिन्दी का काम सम्मेलन के ही विचारों के अनुसार करते हैं। महात्मा जी के सम्मेलन से अलग होने के बाद भी महाराष्ट्र के लोग सम्मेलन के विचारों से सहमत रहे हैं। इस प्रकार महाराष्ट्र में सम्मेलन की अभी काफी शक्ति है। हिन्दुस्तानी का प्रचार करनेवाले कार्यकर्ताओं को स्पष्ट कहा जाये तो यह असह्य हो गया है और उन्होंने मतभेद के बीज बोने शुरू कर दिये हैं। दुर्भाग्य से वह महाराष्ट्र-सम्मेलन के कार्यकर्ताओं को फोड़ने में भी सफल हुए हैं। हमारी समझ में महाराष्ट्र की विचार-धारा हिन्दुस्तानी को स्वीकार नहीं कर सकती। महाराष्ट्र को राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति का वर्धा-समिति से अपने सम्बन्ध-विच्छेद करने का यही रहस्य है। सम्मेलन की शक्ति महाराष्ट्र में नष्ट करने के बाद हिन्दुस्तानी प्रचार का कार्य सरल हो जायेगा। हिन्दुस्तानी के पृष्ठपोषकों का और कार्यकर्ताओं का इसमें षड्यंत्र है। इसके मेरे पास अनेक प्रामाणिक सबूत हैं। केवल दुख इस बात का है कि महाराष्ट्र के अनेक प्रामाणिक कार्यकर्ता इस बात को नहीं समझ पा रहे हैं। सम्मेलन से अलग हुई महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति के अध्यक्ष श्री दत्तो वामन पोतदार अत्यन्त प्रामाणिक व्यक्ति हैं। उन्हें ऐसा लगता है कि राष्ट्रभाषा केवल बोलचाल की भाषा है। उन्हीं के शब्दों में तांगेवालों की भाषा समझने के लिए ही राष्ट्रभाषा की आवश्यकता है। यदि राष्ट्रभाषा का अधिक प्रचार होगा तो मराठी भाषा के अस्तित्व पर खतरा आयेगा। पोतदार जी मराठी के एक प्रमुख साहित्यिक होने के नाते मराठी की रक्षा के लिए जी-जान से प्रयत्न करना चाहते हैं। महाराष्ट्र में श्री पोतदार जी का एक विशेष स्थान है। श्री पोतदार नाम का उपयोग करके महाराष्ट्र के लोगों को बहकाने में परदे की आड़ से हिन्दुस्तानी के प्रचारक इस समय अवश्य सफल हो रहे हैं। जैसे परदे की जरूरत न समझी जायेगी और महाराष्ट्र से सम्मेलन की शक्ति यदि कम हो गई तो श्री पोतदार जी की क्या स्थिति होगी इसे विधाता ही जाने।

जिन्हें सिद्धान्त का विशेष आकर्षण नहीं है विशेष लोभ से सम्मेलन के संगठन से अलग करने का प्रयत्न हो रहा है। भारतवर्ष की वर्तमान गरीबी में पैसे का बड़ा महत्त्व है। किसी घर में अधिक पैसा देखकर बाप-बेटे या भाई-भाई को लड़ाने के लिए जो चालें चली जाती हैं उन्हीं सबकी पुनरावृत्ति महाराष्ट्र में की जा रही है। इस काम के लिए हिन्दुस्तानी के समर्थकों को हिन्दी का मोहरा मिल गया है। राष्ट्रभाषा प्रचार के कार्य में बनारस से गये हुए श्री गो० प० नेने विशेष क्रियाशील महाराष्ट्र के

हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा के प्रमुख स्तंभ काका साहब कालेलकर।

कांग्रेसी पत्रों ने पोतदार समिति को राष्ट्रीय और सम्मेलन के प्रयत्न को अराष्ट्रीय कहना शुरू कर दिया है। इतना ही नहीं, सम्मेलन को हिन्दू-सभावादी संस्था बनाई जा रही है। जिनको राष्ट्रभाषा के कार्य की जानकारी नहीं, जो राष्ट्रभाषा बोल नहीं सकते, जिन्हें वर्तमान मतभेदों से कुछ लेना-देना नहीं, ऐसे कांग्रेस नेताओं के हस्ताक्षर से एक विज्ञप्ति निकाली जाती है जिसमें राष्ट्रीयता की दुहाई देकर पोतदार समिति को सहायता देने की मांग की जाती है। इसका तात्पर्य महाराष्ट्र के राष्ट्रभाषा हिन्दी के कार्यकर्ताओं में बुद्धि-भेद पैदा करना नहीं तो और क्या है?

सम्मेलन की ओर से इस समय महाराष्ट्र में जो राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति काम कर रही है। उसके समाचार छापने कांग्रेसवादी पत्रों ने बन्द कर दिया है। ऐसी स्थिति में महाराष्ट्र के हिन्दू-सभावादी पत्र यदि उस समाचार को छापते हैं तो यह कहा जाता है कि सम्मेलन हिन्दू-सभावादी संस्था है, नहीं तो उसके समाचार हिन्दू-सभावादी-पत्र क्यों छापते?

उचित तो यह होगा कि यदि महाराष्ट्र में हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा का काम करना है तो उसकी स्थापना की जाये और काम किया जाये। किन्तु एक ही नाम से दो राष्ट्रभाषा प्रचार समितियाँ—एक हिन्दुस्तानी और दूसरी हिन्दी-प्रचार का काम करें, यह कुछ अच्छा नहीं लगता है। इससे न हिन्दी के प्रचार का ही कार्य हो सकेगा और न हिन्दुस्तानी का ही। वास्तव में महाराष्ट्र में राष्ट्रभाषा-प्रचार की समस्या विकट रूप धारण करती जा रही है, इस पर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन क्या कर रहा है, हमें पता नहीं? केवल कार्य-समिति अथवा राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति-द्वारा किसी प्रकार के प्रस्ताव पास कर देने से ही काम न चलेगा।

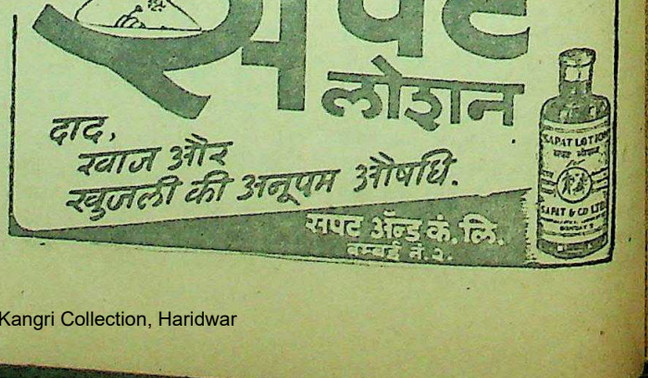

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिट्ठी-पत्री

अ० भा० हिन्दी-पत्रकार-सम्मेलन

मथुरा-अधिवेशन की स्वागतकारिणी के प्रचार-मंत्री का स्पष्टीकरण

अखिल भारतवर्षीय हिन्दी-पत्रकार-सम्मेलन का छठा अधिवेशन मथुरा में गत २५ दिसम्बर को समाप्त हो गया। मथुरा ऐतिहासिक नगर है। श्रीकृष्ण की जन्मभूमि होने के कारण उसकी अपनी विशेषता है। और 'मथुरा तीन लोक से न्यारी' की लोकोक्ति तो प्रसिद्ध है ही। यही लोकोक्ति यहाँ के पत्रकार-सम्मेलन में भी चरितार्थ हुई। कानपुर-सम्मेलन में जितनी उपस्थिति हुई थी, उससे अधिक की आशा मथुरा में थी, परन्तु अधिक क्या एक चौथाई भी सम्भवतः नहीं हो पाई, यह हम मथुरावासियों का दुर्भाग्य ही समझना चाहिए।

कई आगत पत्रकार बन्धुओं ने इस सम्मेलन पर अपने-अपने संस्मरण लिखे हैं, उन सबमें ही स्वागतकारिणी समिति पर उसके कुप्रबन्ध का दोषारोपण किया गया है। उसका कारण, मैं समझता हूँ यही है कि वे आतिथ्य की कमी और अव्यवस्था से ऊब कर ही ऐसा लिख बैठे हैं और उन्होंने वास्तविकता की तह में पहुँचने का प्रयत्न नहीं किया है।

जिन दो-एक व्यक्तियों के अधिक सम्पर्क में वे यहाँ रहे, उन्हीं की प्रशंसा भी उन्होंने अपने लेखों में की है, पर वास्तव में जिन्होंने तन, मन, धन से सेवा-सत्कार किया उनका नाम तक भी किसी ने नहीं लिया। मैं ऐसे दो-एक नाम गिना दूँ तो कुछ अत्युक्ति नहीं होगी।

वैद्य श्री माणिकराव शुक्ल इस सम्मेलन के आतिथ्य-मंत्री बनाये गये थे। आप हिन्दी-प्रेमी और सुलेखक भी हैं। आपने अपने आतिथ्य-मंत्री के पद को यहाँ तक निभाया कि अधिवेशन के एक समय का भोजन-व्यय भी अपनी ओर से दिया था। श्री श्यामलाल प्रबन्ध-मंत्री के प्रबन्ध को भी नहीं भुलाया जा सकता, जिन्होंने प्रबन्ध-कार्य में दिन-रात एक कर दिये थे और श्री जगदीशप्रसाद गुप्ता ने तो बिना किसी पद के ही तन, मन, धन से अथक परिश्रम किया था।

श्री प्रभातचन्द्र गौड़ और रामनारायण अग्रवाल ने प्रायः प्रत्येक ट्रेन पर उपस्थित रहने का प्रयत्न किया था। बल्कि यही कहना चाहिए कि गौड़ जी ने स्वयंसेवक के रूप में स्टेशन पर उपस्थित रहकर आगत पत्रकारों को समुचित सुविधा कर दी थी अन्यथा और भी कठिनाई होती।

निमंत्रण-पत्रों पर प्रधान-मंत्री ने केवल 'कृष्णपुरी' शब्द छपवाया था। एक पत्रकार महोदय को इसी कृष्णपुरी ने चक्कर में डाल दिया। वे बेचारे कृष्ण जन्मभूमि कटरा केशवदेव में पहुंच गये और फिर बड़ी कठिनाई से अधिवेशन-स्थान गांधी पार्क में पहुंच पाये। उन्हें स्टेशन पर कोई स्वयं-सेवक न मिलने से ही इतना कष्ट उठाना पड़ा था।

सम्मेलन के कार्य-क्रम का तो किसी को भी पता न था। मैंने भी कई बार पूछ-ताँछ की तब मुझे केवल दो प्रोग्रामों से सूचित किया गया। इसी कारण मथुरा में भी प्रचार-कार्य ढंग से नहीं हो सका फिर बाहर का तो कहना ही क्या है?

परन्तु स्वागतकारिणी-समिति में पार्टीबन्दी तो भ्रमवश ही बतलाई गई है। उसमें कोई पार्टीबन्दी नहीं थी। जिसकी बैठक ही केवल एक बार हुई हो, उसमें क्या पार्टीबन्दी हो सकती है? केवल १८ दिसम्बर की रात में उसकी प्रथम और अन्तिम बैठक हुई थी। उसी में स्वागत-कारिणी का चुनाव हुआ था, जब कि अधिवेशन २४ दिसम्बर को होनेवाला था। अतः ६ दिन के अल्प समय में जो व्यवस्था हो सकी, उसे बुरा नहीं कहा जा सकता। फिर भी पूरी स्वागतकारिणी के हिस्से का कार्य केवल दो व्यक्ति ही कर लेना चाहते थे, कार्य-क्रम बनाने के लिए न तो कोई बैठक ही स्वागत-समिति की हो सकी और न किसी को कुछ कार्य ही सौंपा गया। स्वागत-समिति तो नाममात्र को चुनी गई थी—वह करती भी क्या?

स्वागत-समिति में पत्रकारों की संख्या भी नगण्य थी। मथुरा में, इस समय पत्रकार हैं ही कितने और जो कुछ हैं भी वह अपने ही पत्रों तक सीमित हैं। बाहर के पत्रकार-बन्धु तो उनका नाम भी नहीं जानते। इसीलिए स्वागताध्यक्ष महोदय ही वहाँ के सर्वेसर्वा बने हुए थे और जो कुछ त्रुटि स्वागत में रही, उसका दोष स्वागतकारिणी के मत्थे नहीं मढ़ा जाना चाहिए।

मथुरा से प्रान्तीय और केन्द्रीय संघ की कार्य-समितियों के लिए, जो प्रतिनिधि लिए गये थे, उनमें भी मथुरा के पत्रकारों का सच्चा प्रतिनिधित्व नहीं हो सका। केन्द्रीय के लिए तो मथुरा के पत्रकारों ने स्पष्टतः सभापति जी से कहा था कि जो व्यक्ति प्रान्तीय कार्य-समिति के लिए चुने गये हैं, वे केन्द्रीय में नहीं लिए जाने चाहिए। उसके लिए मथुरा के एकमात्र दैनिक 'जनार्दन' के संचालक ज्यो० राधे-श्याम का नाम रक्खा गया था, परन्तु वहाँ तो सभी प्रभाव में बह रहे थे। स्वयं सभापति जी की अपनी लिस्ट में जो नाम था उसे वे बदलते कैसे? जनमत की उपेक्षा करने के कारण ही तो आज हम दूसरों के हाथों में खेल रहे हैं और यही हमारी शक्ति के विनाश का मुख्य कारण है।

मथुरा के साप्ताहिकों में दो ही पत्र इस समय रह गये हैं—'सावधान' और 'पोल'। परन्तु सरकार की कृपा और साधन के अभाव में दोनों ही समय-असमय पर निकल पाते हैं। इस युग में राष्ट्रीय पत्रों का गला घोंटने की जो नीति अपनाई गई है, वह बड़ी लज्जास्पद है। 'जनार्दन' और 'नया-संसार' के पुनः प्रकाशन की आज्ञा इसी नीति के कारण अभी तक नहीं दी गई है और 'पोल' भी प्रेस की असुविधा के कारण बन्द है। उसे अपना प्रेस चलाने के लिए अभी स्वीकृति नहीं मिल पाई है।

अब कवि-सम्मेलन के विषय में भी कुछ लिख देना आवश्यक-सा प्रतीत होता है। श्री प्रभुदयाल जी विद्यार्थी ने अपने संस्मरण में लिखा है कि एक कवि अश्लील कविता कहने के कारण पिटते-पिटते बचे, वहाँ वे कुछ अत्युक्ति कर गये हैं। कवि श्री समतोले जी, जिनके बारे में विद्यार्थी जी ने लिखा है—की कविता इतनी अश्लील नहीं थी कि उन्हें रोका जाता। परन्तु जनता ने सभापति जी से उन्हें रोकने के लिए कहकर एक कवि का अपमान अवश्य किया था और जिसके लिए स्वागत-समिति के सब उपस्थित सदस्यों को अत्यन्त खेद रहा। हाँ, उनकी कविता की अपेक्षा तो दिल्ली के एक कवि महोदय का मालकोष अत्यन्त अश्लील और उनकी भाव-भंगी इतनी घृणास्पद थी कि लज्जा को भी लज्जा आ जानी चाहिए थी। हम समझ नहीं सकते कि कोई सभ्य व्यक्ति इस प्रकार के भाव—और खासकर महिलाओं की उपस्थिति में—किस प्रकार दिखा सकता है? परन्तु जनता उस समय उनके 'मोशन' में ही बह गई और तीव्र अट्टहास की गूंज में उन्होंने स्टेज से बिदाई ली।

और अश्लीलता तो आजकल कुछ अपना घर-सा कर गई है। जो समाचार-पत्र यह दावा करते हैं कि हम अश्लील विज्ञापन नहीं छापते, उनमें ही रात-दिन, विज्ञापनों में अश्लील चित्र तक छपते हैं। नैतिकता दिखाने की दूसरी ओर करने की दूसरी, यह चाल जब तक बन्द नहीं होगी तब तक हिन्दी-पत्रों का उत्थान बहुत दूर है।

—दाऊदयाल गुप्त 'साहित्यरत्न'
प्रचार-मंत्री

• • •

राम चरित मानस-सम्मेलन

कानपुर में श्रीराम चरित मानस-सम्मेलन का तृतीय अधिवेशन, धूमधाम से समाप्त हो गया। २४ जनवरी को श्री रामायण का नगर-भ्रमण समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। संध्या को खुला अधिवेशन आरम्भ हुआ। ग्वालियर के श्री नारायण जी गुरु ने मङ्गल पाठ किया। श्री हरि-कीर्त्तन-मंडली-द्वारा कीर्त्तन हुआ। स्वागताध्यक्ष सर गोविन्द मिश्र के० टी० ने अपने मुद्रित भाषण को पढ़ा और अयोध्या के १०८ श्री रामपदारथ जी महाराज वेदान्तों के लिए सभापति का प्रस्ताव उपस्थिति किया। अनुमोदन गोस्वामी विन्दु जी, श्री नागेश्वर उपाध्याय काशी, श्री छबीलेलाल गोस्वामी वृन्दावन, श्री गौरीशंकर दीक्षित गुजरात, श्री मुन्नी-लाल जी काशी, श्री चन्द्रचूड़देव, श्री नारायण गुरु ग्वालियर, श्री राधेलाल गोस्वामी आदि ने किया। सभापति महोदय के अपने स्थान पर विराजने पर स्वागत मंत्री श्री रुद्रप्रसाद वाजपेयी ने अपना मुद्रित भाषण पढ़ा। इसके अनन्तर श्री छबीलेलाल गोस्वामी ने बाहर से आये हुए सन्देश सुनाये। इसमें महामना मालवीय जी, श्री पुरुषोत्तमदास जी टण्डन, श्री सम्पूर्णानन्द जी, श्री अमरनाथ झा, श्री मैथिलीशरण जी गुप्त, श्री श्रीप्रकाश जी, श्री बाबूराव विष्णु पराड़कर, श्री लक्ष्मण-नारायण जी गर्दे आदि के सन्देश मुख्य थे।

सभापति महोदय ने अपना मौखिक भाषण एक घंटे तक दिया, जो विद्वत्तापूर्ण था। इसमें आपने महामना मालवीय जी के सन्देश में जो संकेत रामायण के प्रचार तथा सम्मेलन के संगठन की ओर था, उस पर विशेष रूप से जोर दिया।

अन्त में वृन्दावन के सुविख्यात १०८ गोस्वामी श्री विन्दु जी महाराज का सम्मेलन के परिचय कार्य-प्रयोजन आदि के विषय में अत्यन्त प्रभावशाली भाषण हुआ। प्रायः दस हजार की विराट सभा आपके भाषण को मंत्रमुग्ध होकर सुनती रही। स्वागतकारिणी का प्रबन्ध सराह-नीय रहा।

सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष सर हर-गोविन्द मिश्र, के० टी० ओ० बी० ई० ने अपने अभिभाषण में कहा—'राम चरित मानस' हमारी इष्ट-साधना की पूर्ति भली भाँति से कर सकता है। भार-तीय साहित्य में भगवान् राम और कृष्ण के चारुचरित्रों से बढ़कर दूसरा और कौन-सा चरित्र अंकित किया गया है? भारत के क्रांतिदर्शी ऋषियों, मुनियों और कवियों ने इन्हीं परम-पावन चरित्रों को लिखकर अमरत्व लाभ किया है।

गुणों में एक अद्भुत आकर्षण होता है। गुण-गण-समअलंकृत जीवन बड़ा ही मोहक और आकर्षक होता है। राम का जीवन दिव्य भावों से ओत-प्रोत था और इसीलिए था वह इतना मनोमोहक और आकर्षक। भगवान् राम ने इस धराधाम पर अवतरित होकर जिस समय नर-लीला की थी, तब से अब तक युग के युग बीत चुके हैं पर उनके जीवन का वह आक-र्षण, देश-काल को चुनौती देता हुआ, आज भी आर्य-जाति के समग्र हृदय आन्दो-लित कर रहा है। आज भी आर्य-जाति उस मर्यादा पुरुषोत्तम के पुनीत पाद-पद्मों में श्रद्धा और भक्ति के साथ नत-मस्तक होती है। आज भी आर्य-जाति उस पुराण पुरुष के दिव्य गुणों को गा-गाकर अपने हृदय को महाभावों से अनु-प्राणित करती है। आर्य-जाति ने, जो कुछ भी उसमें सत्य का सार था, जो कुछ भी उसमें कल्याणकर और शान्तिप्रद था, एवं जो कुछ भी उसमें मोहक और सुन्दर था उसकी पूर्ण अभिव्यक्ति भगवान् राम के जीवन में पाई। ऐसा कोई दिव्य गुण न था जिसकी अभिव्यक्ति राम के जीवन में न हुई हो, ऐसा कोई आदर्श न था जो राम के जीवन का जबरदस्त आधार पाकर पूर्णत्व को न पहुँचा हो। राम के जीवन का आधार पाकर गुण साकार हो उठे, धन्य और कृतकार्य हो गये।

राम चरित मानस सम्मेलन के स्वागत-मंत्री पंडित रुद्रप्रसाद वाजपेयी का भाषण भी सारगर्भित था। —संवाददाता

माधवी-कङ्कण

यह सुप्रसिद्ध बाबू रमेशचन्द्र दत्त का लिखा ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें मुगलों के समय की दशा के चित्रण के साथ-साथ प्रेमी-प्रेमिका की बड़ी विचित्र कथा है। यह उपन्यास बहुत लोकप्रिय है। इसका नया संस्करण अभी तैयार हुआ है। मूल्य १।—) एक रुपया पाँच आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड. इलाहाबाद

नइ पुस्तक

कामायनी-अनुशीलन

महाकवि 'प्रसाद' का महाकाव्य 'कामायनी' बहुत प्रसिद्ध है। पर यह सबकी समझ में नहीं आता। इस पर अनेक समीक्षकों के विचार पत्रों में प्रकट हुए हैं। इसी ग्रन्थ का अनुशीलन इस पुस्तक में लेखक रामलालसिंह एम० ए०, बी० टी० साहित्यरत्न ने कामायनी का ऐतिहासिक तत्त्व, प्रकृति वर्णन, चरित्र-चित्रण, श्रद्धा, भाषा तथा भावाभिव्यक्ति, छंद विधान, रस संचार, कामायनी का मनस्तत्व, दार्श-निक तथ्य, युग की अभिव्यक्ति, प्रेम-निरूपण आदि शीर्षकों में बड़ी मार्मिकता से किया है। अच्छे काग़ज पर छपी कोई ढाई सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २)।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की सीमा पर लाल रूस

(पेज ५ का शेष)

है। काला सागर और कैस्पियन सागर में अपने को बन्दी बनाकर रखने को तैयार नहीं है। इसलिए जहाँ वह तुर्की में मास्को की मांडलिक सरकार बनाना चाहता है, उसी प्रकार वह ईरान में भी अपनी माण्डलिक सरकार की स्थापना करना चाहता है। नूतन स्थापित संयुक्तराष्ट्र-संघ की सुरक्षा कौंसिल में ईरान की अपील सुनी जाने का विरोध करते हुए सोवियट प्रतिनिधि श्री विशिंस्की ने स्पष्ट रूप से घोषित किया है कि मास्को, तेहरान में अपनी विरोधी सरकार को बर्दाश्त नहीं कर सकती। अजरबेजान में आज रिपब्लिक स्थापित हो गई है। उसकी अपनी अलग सेना है। पर रूस अजरबेजान को पाकर ही सन्तुष्ट नहीं है। वह कैस्पियन सागर को पूर्ण रूप से अपने प्रभाव में ही नहीं, अपने अधिकार में चाहता है। इसलिए उसने कैस्पियन सागर के दक्षिण-तट के ईरानी प्रान्तों जीलन और माजनडेरन प्रान्तों में तेहरान की विरोधी हलचल प्रारम्भ कर दिया है। निस्सन्देह तेहरान की सरकार बड़े जमीन्दारों के हाथ में है। ईरान के किसान गरीब हैं। पर इसी कारण क्या किसी बड़े राष्ट्र को दूसरे देश में विद्रोह कराने और हस्तक्षेप कराने का अधिकार प्राप्त हो जाता है? यह ईरान के लोगों को अपने आप सोचने का है कि वे कैसी सरकार चाहते हैं? यदि यह सिद्धान्त माना गया कि पड़ोसी राष्ट्रों की सरकार का बड़े राष्ट्रों के अनुकूल और माण्डलिक होना आवश्यक है, जैसा कि अभाव और व्यवहार में माना जा रहा है, तो छोटे देशों की स्वधीनता का अन्त हो जायगा। पर रूसी साम्राज्यवाद आज आत्म-रक्षा के नाम पर अपने संस्थापक पीटर के स्वप्नों को पूरा करने लिए इसी हथियार से काम ले रहा है।

जीलन और माजनडेरन प्रान्तों के पाने से कैस्पियन सागर एक-मात्र रूस का हो जायगा। पर रूस का वास्तविक मनोरथ इससे पूर्ण न होगा। वह लालसागर पर अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहता है और हिन्द-महासागर में अपने पैर पसारना चाहता है।

मास्को से तेब्रिज

आज सोवियट रूस का मास्को से तेब्रिज (ईरानी अजरबेजन की राजधानी) तक अप्रतिहत प्रवेश और अधिकार है। यहाँ तक की रेल रूस के नियन्त्रण में है। उत्तरीय ईरान में उसकी सेनायें डटी हुई हैं पर अजरबेजन प्रान्त में मास्को के मनोनुकूल गवर्नमेंट स्थापित हो जाने से रूसी सेनाओं के रहने की कोई विशेष आवश्यकता नहीं रही है। उत्तरीय ईरान का तेल रूस को चाहिए। इस तेल को समुद्र-मार्ग से बाटुम (भूमध्यसागर) तक पहुँचाने के लिए मार्ग भी चाहिए। इसलिए रूस बसरा, अबादान, बुशीर बन्दरगाहों तक पहुँचने का रेलमार्ग भी चाहता है और इन बन्दरगाहों के नियन्त्रण में अपना भाग भी चाहता है। जलमार्गों के राष्ट्रीय नियन्त्रण की बात इसीलिए कही जा रही है। रूस इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए स्वेज़नहर के नियन्त्रण में भाग लेना चाहता है। इस प्रकार वह लालसागर और हिन्द महासागर में प्रवेश करने का इच्छुक है। आरमेनिया, जियार्जिया और अजरबेजन में सोवियट जनतन्त्रों की माँग यदि पूरी हुई और उनकी इच्छानुसार कार्य हुआ, तो रूस की सीमा सीरिया को छूने लगेगी और इस मार्ग से वह पूर्वीय भूमध्य-सागर पहुँच सकेगा तथा साइप्रस को शह दे सकेगा।

पर्शियन खाड़ी में नियन्त्रण स्थापित हुए बग़ैर रूस अरबसागर और हिन्द-महासागर नहीं पहुँच सकता। इस उद्देश्य को सिद्ध करने के लिए आवश्यक है कि वह रूसी तुर्किस्तान के उजबेक और ताजिक जनतन्त्रों का भी विस्तार करे। ईरान से खुरासान, और अफ़ग़ानिस्तान से खुरासान और हिरात प्रान्तों को ले। बुखारा और समरकन्द का कभी इन प्रान्तों पर राज्य था और काराकुम मरुभूमि के दक्षिण के ये प्रान्त कभी खीवा से सम्बन्धित थ। भारत की सीमा हिन्दूकुश है। सम्राट् औरंगजेब का राज्य काबुल में था और काबुल और कन्धार भारतीय साम्राज्य के एक प्रान्त थे। खुरासान, हिरात में फिरन्दर लोग रहते थे और आज भी यह उजाड़ प्रदेश कोई बहुत नहीं बस गया है। काराकुम का रेगिस्तान इन पर भी छाया हुआ है। काबुल को भारत में मिलाये रखने के लिए ही महाराजा यशवन्त-सिंह, राजा वीरबल ने प्राण दिये। काबुल दिल्ली-सम्बन्धित था, इसके लिए महाभारत तक जाने की जरूरत नहीं है। पर जब रूस अफ़ग़ानिस्तान से हिरात, बदक्शा और खुरासान के प्रान्त माँगेगा उस समय शेष अफ़ग़ानिस्तान इतना नगण्य रह जायगा कि वह भारत और रूस के बीच एक बफर राज्य न रहकर एक चौकी हो जायगा। इस चौकी पर जिसका अधिकार होगा वह भारत की पश्चिमोत्तर सीमा को सदा खतरे में डाले रखेगा। आज अफरीका का पठार रूस और भारत की सीमा को मिलाये हुए है, और वह एक ऐसी बाधा है, जिससे रूस सहसा भारत आने का साहस नहीं कर सकता। यदि अफ़ग़ानिस्तान का पश्चिमोत्तर भाग रूसी साम्राज्य में मिल गया तो भारत की पश्चिमोत्तर सीमा असुरक्षित हो जायगी। तुर्की और ईरान से रूस-द्वारा की गई माँगों और आज रूस जिस प्रक्रिया का अनुसरण कर रहा है, उसकी पूर्ण परिणति और व्यापक विस्तार इस रूप में हो सकता है यह न भूलना चाहिए।

मेहमान है

ब्रिटिश साम्राज्यवाद भारत में अब कुछ दिनों का मेहमान है। वह आज नहीं तो कल अवश्य अपना बोरिया-बिस्तर बाँधेगा। भारत यदि पूर्ण स्वाधीन न भी हुआ तो उसको इस वर्ष के अन्त तक डोमीनियम स्टेट्स अवश्य मिल जायेगा; इसलिए भारत की रक्षा की जिम्मेदारी ब्रिटेन पर नहीं अपितु हम पर ही होगी और यही हमारा स्वाभिमान अपेक्षा भी करता है। अतः इस ओर से हम आँखें नहीं मूँदे रह सकते।

इस दृष्टि से भारत में कम्युनिस्ट पार्टी का बल बढ़ना अहितकर है। कम्युनिज्म भारत के लिए हितकर हो सकता है, पर कम्युनिस्ट पार्टी हितकर नहीं हो सकती। इसका कारण यह है कि इसकी निष्ठा भारत के प्रति गौण है। वह मास्को के प्रति निष्ठा रखती है और उसके संकेत पर चलती है। युद्धकाल में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी ने ही नहीं अपितु अन्य देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों ने भी मास्को की नीति-परिवर्तन के साथ अपनी नीति बदली है। चीनी कम्युनिस्टों ने रूस और जापान में सन्धि होने पर मंचूरिया पर जापान का प्रभुत्व स्वीकार कर लिया था, जब कि चुंगकिंग गवर्नमेंट नहीं मानती थी। फ्रांस के कम्युनिस्ट जर्मनी पर आक्रमण करने के विरुद्ध थे, क्योंकि रूस जर्मनी का १९३९ में मित्र था। भारतीय कम्युनिस्ट की भक्ति और श्रद्धा का प्रथम पात्र इसी प्रकार भारत नहीं सोवियट रूस है, यह युद्धकाल में उनकी बदली नीति ने स्पष्ट कर दिया है। जो पार्टी अपने देश के प्रति पूर्णभावेन निष्ठा न रखती हो और जिसकी निष्ठा सशस्त्र हो, वह भारतीय हितों की रक्षक नहीं हो सकती।

दूसरी बात यह है कि पाण्डुचेरी पर फ्रांस और गोआ पर पुर्तगीजों का अधिकार है। भारत से ब्रिटिश साम्राज्य से हटने से पहले इन राज्यों का भी अन्त होना चाहिए। हिन्द चीन से हम फ्रांस के राज्य का अन्त करने की माँग कर रहे हैं, पर हमारे देश के एक महत्त्वपूर्ण भाग पर फ्रांस का राज्य है और हम सुरक्षा कौंसिल के सामने मुंह भी नहीं खोलते? गोआ से भी पुर्तगीज शासन का भारतीय तट की रक्षा के विचार से अन्त होना आवश्यक है।

ब्रिटेन भारत को डोमीनियन स्टेट्स जो आज देने के लिए उद्यत दीखता है, वह अपनी गरज से ही ऐसा कर रहा है। संवर्धनशील रूसी साम्राज्य का ब्रिटेन मुक़ाबला नहीं कर सकता। इसलिए वह भारत को अपना इस कार्य में सहायक बनाना चाहता है। अमरीका की सहायता का मूल्य बहुत भारी है, उसका चुकाना उसकी सामर्थ्य से बाहर है। सन्तुष्ट भारत रक्तहीन ब्रिटेन को पुनः शक्ति प्रदान कर सकेगा। इसलिए आज ब्रिटेन भारत को डुमीनियन स्टेट्स देने तथा एँग्लो-भारत सम्बन्ध को मैत्रीपूर्ण बनाये रखने को उत्सुक प्रतीत होता है।

महान राष्ट्र

पर भारत एक महान् राष्ट्र है। रूस से टक्कर लेने की सामर्थ्य रखनेवाला राष्ट्र ब्रिटेन का माण्डलिक नहीं हो सकता। यह उसके लिए अपमानजनक है। भारत की भोगोलिक स्थिति, उसकी विशालता और साधन-सम्पन्नता उसको हिन्द-महासागर की एक महती और अजेय शक्ति बनने के लिए निमन्त्रण दे रही है और बृहत्तर भारत को पुनः पुनरुज्जीवित करने की प्रेरणा कर रहा है। आग्नेय एशिया का रक्षक और नेता भारत है। बर्मा, मलाया सिंगापुर, हिन्द चीन और इण्डोनेशिया से श्वेतांग शासन का अन्त स्वाधीन भारत ही कर सकता है। इन राष्ट्रों का एशियाई संघ भारत के स्वाधीन होने पर ही बन सकता है। ईरान और अफ़ग़ानिस्तान इसके सदस्य होंगे। संस्कृति, भाषा और ऐतिहासिक परम्परा से ये भारत के प्राचीन और महत्त्वपूर्ण अंग हैं। यदि भारत स्वाधीन होता तो रूस ईरान से तेल-क्षेत्र पाने के लिए उस पर दबाव न डालता। इसलिए भारतीय होने के कारण हमारी जिम्मेदारी बहुत है। स्वाधीनता प्राप्त कर हमें ब्रिटेन का बल न बढ़ाकर दक्षिण एशिया पर रूस के बढ़ते प्रभाव को भी रोकना है और महान् और शक्तिशाली भारतीय राष्ट्र का निर्माण करना है, जिसकी छाया में आग्नेय और पश्चिमी एशिया सुख से रह सके, यह हमें न भूलना चाहिए। प्रकृति ने हमें यह काम सौंपा है, क्या हम इससे विमुख होंगे?

जीवन-क्रांति

यह सामाजिक उपन्यास है। इसमें सेठ-साहूकारों तथा बड़े आदमी कहे जानेवाले व्यक्तियों की हृदयहीनता, पुलिस तथा अन्य अधिकारियों के हथकण्डों और मुट्ठी गरम करने के लिए निरपराधों को अपराधी ठहराकर कारागार के कष्ट भोगने के लिए विवश करने के मायाजाल का आकर्षक वर्णन है। अन्त में अत्याचारी के हृदय-परिवर्तन का अपूर्व चित्रण है। पृष्ठ-संख्या ४००। सजिल्द प्रति का मूल्य केवल २) दो रुपये।

साहित्यालोचन

इसका संशोधित संस्करण छपकर तैयार है। इसमें संस्कृत के प्राचीन आचार्यों के साहित्य-सम्बन्धी सिद्धान्तों के अतिरिक्त पाश्चात्य साहित्यकारों तथा साहित्य-मर्मज्ञों के मत का दिग्दर्शन बहुत ही मौलिक ढंग से कराया गया है। ४०० पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य ५।–) पाँच रुपये पाँच आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

हमारे उत्तमोत्तम प्रकाशन

श्रीमद्भागवत

सचित्र (दो जिल्दों में) मूल्य १५।–)

यह आचार्य शुकदेवजी का प्रसिद्ध ग्रन्थ है जिसका हिन्दू समाज में बहुत आदर है। इसकी प्रशंसा करना सूर्य को दीपक से दिखना है। इसकी बहुत माँग है।

१ कवि सोहनलाल द्विवेदी की अनुपम कृतियाँ

भैरवी २॥=) कुणाल १।)
पूजागीत २) विषपान १)
बाँसुरी ॥।) शिशु भारती ॥।)
वासवदत्ता १॥)

ठाकुर गोपाल शरणसिंहजी की काव्यकृतियाँ

सुमना २) सांचिता ३)
मानवी २।–) माधवी २)
ज्योतिष्मती २।) कादम्बिनी २)

प्रवीण कवि श्यामनारायण पाण्डेय का खण्डकाव्य

हल्दीघाटी २॥)

सुकवि हरदयालसिंह जी की प्रमुख रचना

दत्यदंश महाकाव्य ३।–)

आदि कवि महर्षि वाल्मीकि प्रणीत

हिन्दी वाल्मीकि रामायण सचित्र दो खण्डों में मूल्य प्रत्यक खण्ड का ६॥)

द्विवेदी-काव्यमाला

मूल्य ४)

स्वर्गीय आचार्य द्विवेदी जी की कविताओं का अपूर्व संग्रह

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

जोधपुर से अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् के प्रधान-मंत्री लोकनायक श्री जयनारायण व्यास ने नरेन्द्र-मंडल के चांसलर नवाब भोपाल की रियासती नागरिक अधिकार-सम्बन्धी घोषणा पर टिप्पणी करते हुए नवाब साहब को तार दिया है, जिसमें उन्होंने यह राय जाहिर की है कि अगर नरेन्द्र-मंडल की सदस्य रियासतें इस घोषणा को कार्य-रूप में परिणत नहीं करेंगी तो घोषणा पाखंड-मात्र हो जायगी। बीकानेर के निर्वासन, बल-प्रयोग तथा गैर-कानूनी दमन, जोधपुर के हाल ही में प्रकाशित मजदूर, सवारी और सरवरा-सम्बन्धी नियम भी 'बेकार को स्थायी स्वरूप देते हैं तथा वहाँ दोषी योरपियनों को कुछ न कहकर केवल देशियों को भी बिला मुकद्दमा चलाये सजा देना, जयपुर से श्री रघुबर-दयाल गोयल का निर्वासन, जैसलमेर में श्री सागरमल गोपा को लम्बे अर्से तक कारावास में रखना तथा उन पर बल-प्रयोग करना, इन्दौर में बालेश्वरदयाल का निर्वासन तथा अखबारी संवादों पर भी प्रतिबन्ध लगाना, पंजाब की फुदकियाँ स्टेट में बदनाम रियासत के द्वारा नागरिक अधिकारों का दमन और स्वयं भोपाल में भी बाहर से जानेवालों पर रोक-थाम आदि बातों की तरफ इशारा करके श्रीयुत व्यास ने अपने तार में कहा है कि देशी रियासतों में इस प्रकार नागरिक स्वतंत्रता का हनन हो रहा है और यह आशा प्रकट की है कि नरेन्द्र-मंडल रियासतों के अन्दर नागरिक स्वतंत्रता स्थापित कराकर अपनी सच्चाई का परिचय देगा। व्यास जी ने इस विषय पर पंडित जवाहरलाल जी आदि को भी तार दिये हैं।

मारवाड़ लोक-परिषद् की कार्यकारिणी जिसके व्यास जी सभापति हैं २७ जनवरी को मिल रही है उसने रजिस्ट्रेशन आफ सोसायटीज एक्ट को रद्द करने और श्री जोरावरमल को रिहा कराने के सम्बन्ध में खास तौर पर विचार होने की आशा है।

—संवाददाता

❀ ❀ ❀

सागर में मोटर स्टैंड पर श्री केशव रामचन्द्र जी खांडेकर की अध्यक्षता में नगर-कांग्रेस की ओर से श्री सुभाष-जयन्ती बड़े शानदार एवं अभूतपूर्व ढंग से मनाई गई। श्री मौलवी चिराग़ उद्दीन ने राष्ट्र के उत्थान में धार्मिक तथा जातीय एकता पर जोर दिया। आजाद हिन्द-फ़ौज के एक सैनिक श्री राजगोपाल मुलतान जेल से छूटकर सौभाग्य से सभा में उपस्थित हुए थे। उन्होंने कहा—"आजाद हिन्द-फ़ौज की रचना अक्टूबर ४३ में नेता जी के द्वारा हुई। सरकार ने हमें जापानियों के हवाले कर दिया। हमने केवल भारत की स्वाधीनता के लिए युद्ध किया। श्री पी० जी० सप्रू, श्री वासुदेवराव सूबेदार और जी० के० लोकरस जी ने अपने वक्तव्य में कहा—"हमें आजादी की मंजिल तक पहुँचने के लिए हिंसा या अहिंसा दोनों मार्ग खुले हैं। गुलाम राष्ट्र हिंसा के द्वारा ही आजाद हुए हैं। श्री भाई अब्बुलगनी, श्री जालिमसिंह, 'बेधड़क' जी तथा मा० बलदेवप्रसाद के भाषणों के पश्चात् सभापति जी का सारगर्भित भाषण हुआ। सभा में क़रीब १०,००० व्यक्ति उपस्थित थे। प्रातःकाल 'आजाद मैदान' में प्रभात फेरी और झंडावन्दन हुआ। शाम को सारे नगर में दीपावली मनाई गई। नगर में सहगल, शाहनेवाज आदि के करीब ११ द्वार बने। श्री रामनाथ पांडे ने ३५०), श्री बाबूलाल मलैया ने २००), श्री गुलाबचंद्र बैसाखिया ने २०१), श्री गुलाबचन्द्र ने १५१) व मुन्नालाल ने २०१) में नेता जी की फोटो लेकर फ़ौज की सहायता की।

—लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

❀ ❀ ❀

कानपुर स्थान राधन (बिल्हौर) शिवरात्रि के अवसर पर होनेवाले प्रथम तहसील वैद्य-सम्मेलन में पढ़ने के लिए खोज और अनुभवपूर्ण उत्तमोत्तम लेख भेजने के लिए विद्वानों से प्रार्थना है। सर्वश्रेष्ठ लेख पर सभापति के निर्णयानुसार उचित पुरस्कार भी दिया जायगा। लेख फरवरी सन् ४६ के अंत तक अवश्य पहुँच जाना चहिए। निबंध के विषय हैं—ग्रामीणों की वर्तमान रुग्ण-दशा, ग्रामीणों पेड़-पौधों से रोग-विचारण ग्रामीणोपयोगी सस्ती औषधियाँ, ग्रामीण क्षेत्रों में रोग-निवारक कैम्पों की आवश्यकता, ग्रामीण चिकित्सा के प्रति वैद्यों का कर्त्तव्य, ग्रामोपयोगी गो-वैद्यक, गाँवों में चिकित्सा-प्रचार के सफल उपाय, गाँववाले रोगों से कैसे बचें? गाँवों की रोगोत्पादक दशा, गाँववालों की चिकित्सा के प्रति उपेक्षा, हमारी तहसील के वैद्यों की दशा, आकस्मिक दुर्घटनायें और उनके निवारण के उपाय, गूलर, तुलसी, नीबू, पीपल-द्वारा रोग-निवारण व उनके अनुभूत प्रयोग।

निबन्ध—प्रधानमंत्री तहसील वैद्य-सम्मेलन श्री ब्रह्मदेवाश्रम औषधालय राधन पोस्ट उत्तरी पूरा (कानपुर) के पते पर आना चाहिए।

—संवाददाता

❀ ❀ ❀

बम्बई में इंडियन नेशनल पिक्चर्स लिमिटेड नाम की एक नई फिल्म-कम्पनी की स्थापना हुई है। इस कम्पनी के डाइरेक्टरों में नवाब सर लियाकत हयात खाँ, सरदार बहादुर सर शोभासिंह, नई दिल्ली; साहू सेठ श्रेयांशप्रसाद जैन, सेठ पूरनमल सूरजमल लाहोरी; सिकंदराबाद, श्री गोवर्द्धनदास एम० ए० आदि प्रमुख व्यवसायी सम्मिलित हुए हैं। कम्पनी ने सामाजिक तथा सांस्कृतिक फिल्मों के निर्माण का निश्चय किया है। स्टूडियो के लिए अँधेरी और चेम्बर में जमीन खरीद ली गई है।

—संवाददाता

* * *

रायपुर आजाद हिन्द-फ़ौज के झाँसी की रानी रेजिमेंट में काम करनेवाली जिस विद्रोहिनी भारतीय सैनिका की डायरी कुछ दिन पहले अँगरेजी में 'जय-हिंद' के नाम से प्रकाशित हुई थी उसका हिन्दी संस्करण भी तैयार हो गया है। मूल पुस्तक का अनुवाद और संपादन हिन्दी के प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि और पत्रकार श्री सुमनेश जोशी ने किया है। पुस्तक की कीमत तीन रुपया है और उसके विक्रय की सारी आमदनी अँगरेजी 'जय-हिन्द' की तरह आजाद हिन्द-फ़ौज के सिपाहियों के परिवारों के लिए शुरू किये गये सहायता-कोष ही में दी जावेगी। 'जय-हिन्द' का यह हिन्दी-संस्करण २६ जनवरी स्वाधीनता दिवस को प्रकाशित हो गया। हिन्दी-भाषी पाठक इसे जन्मभूमि प्रकाशन मंदिर १३८ मिडोज स्ट्रीट-फोर्ट, बंबई से प्राप्त कर सकते हैं।

—संवाददाता

❀ ❀ ❀

बम्बई से 'फिल्मी-दुनिया' का प्रकाशन होने जा रहा है। पत्र में सिनेमा, कला, साहित्य-प्रधान-प्रकाशन अनेकों सादे और रंगीन चित्र, कई कहानियाँ, फिल्म-जगत् की ढेरों ज्ञातव्य बातें, सुन्दर सुपाठ्य सामग्री से पूर्ण बड़े साइज के ५२ पृष्ठ। प्रत्येक परिवार में रखने योग्य। अपूर्व वस्तु एक प्रति का मूल्य १) पता :—'फिल्मी-दुनिया' कार्यालय, उद्धव-निवास, ७२० पार्सी कालनी, दादर बम्बई १४।

—संवाददाता

❀ ❀ ❀

रुड़की (उढेड़ा) हिन्दू-सुधार-मंडल की ओर से नेता जी श्री सुभाषचन्द्र बोस के जन्म-दिन के उत्सव में असाधारण सभा हुई। जिसमें सदस्यों के अतिरिक्त गाँव के बड़े-बूढ़ों और बालकों ने भी भाग लिया। गाँव में दीवाली मनाई गई। मंडल के सभापति श्री भगवतस्वरूप शर्मा 'मधुर' ने श्री बोस की जीवनी पर प्रकाश डाला।

अंत में "मधुर" जी ने 'लालसा' शीर्षक की कविता गाकर सुनाई। चौधरी मुखरामसिंह ने बालकों के बीच एक छोटा-सा व्याख्यान दिया।

—ब्रजराजसिंह

❀ ❀ ❀

ग्वालियर (लशकर) से 'जीता-संसार' हिन्दी साप्ताहिक राष्ट्रीय पत्र देशी राज्यों की समस्याओं को लेकर शीघ्र प्रकाशित हो रहा है। राजनैतिक संस्थाओं, सहयोगी पत्र और कवियों और लेखकों से निवेदन है कि वे श्री हरिसेवक द्विवेदी प्रकाशक व सम्पादक 'जीता-संसार' लशकर, ग्वालियर से पत्र-व्यवहार करें।

—संवाददाता

❀ ❀ ❀

हरिद्वार में युक्तप्रान्त के भूतपूर्व प्रधान मंत्री पं० गोविन्द वल्लभ पंत मेरठ से गुरुकुल कांगड़ी, कनखल होते हुए पधारे। वहाँ प्लेटफ़ार्म में कांग्रेस झंडे के नीचे विशाल जनसमूह पहले से एकत्रित था, आपने अपने सार्वजनिक भाषण में चुनाव और जनता का कर्त्तव्य पर बोलते हुए भावी संग्राम के लिए जनता से तैयार रहने की अपील की। नागरिकों की ओर से आपको थैली भेंट की गई। वहाँ से आप श्री श्रवणनाथ ज्ञानमन्दिर में पधारे। जहाँ महन्त शान्तनन्दनाथ जी ने आपका भव्य स्वागत किया और आपको जलपान कराया। आपके स्वास्थ्य और दीर्घायु की शुभकामना करते हुए महन्त जी ने मठ की ओर से ५०१) चुनाव-आन्दोलन के लिए भेंट किये।

—संवाददाता

❀ ❀ ❀

मेरठ (बुकलाना) गुरुकुल श्री दयानन्द वेद-विद्यालय का तृतीय वार्षिकोत्सव ८, ९, १० फ़रवरी सन् १९४६ को गुरुकुल भूमि में अत्यन्त धूमधाम से मनाया जायगा। जिसमें उच्च कोटि के धुरन्धर विद्वान् तथा आर्य संन्यासी आदि महोपदेशक पधार रहे हैं।

—बुद्धदेव उपाध्याय

* * *

गोरखपुर हाता बेतिया के 'तरुण हिन्दी परिषद्' ने देश के महान् क्रांतिकारी नेता श्री सुभाषचन्द्र जी बोस की स्मृति में 'सुभाष-अभिनन्दन ग्रंथ' प्रकाशित करने का आयोजन किया है। अतएव समस्त हिन्दी लेखकों, कवियों, चित्रकारों एवं अधिकारी विद्वानों से विनीत प्रार्थना है कि वे सुभाष-सम्बन्धी कृतियों-द्वारा हमारी सहायता करें। पता—तरुण हिन्दी परिषद्, श्री मोनीमन्दिर, बेतियाहाता, गोरखपुर।

—मंत्री

बालकोपयोगी आदर्श प्रकाशन

पौराणिक कथाएँ

बाल भारत (दो भाग)	इसमें महाभारत की कथा सरल और संक्षिप्त भाषा में लिखी गई है। प्रति भाग	।।।=)
बाल रामायण	रामायण के सातों कांडों की कथा सरल भाषा में	।।।=)
बाल भागवत (दो भाग)	भागवत की संक्षिप्त कथा	प्रति भाग १।।।=)

उपदेश

बालोपदेश	प्रत्येक बालक को स्मरण रखने लायक कतिपय उपदेशों का संग्रह	।।)
बाल गीता	गीता के उत्साह-वर्द्धक श्लोकों का हिन्दी सारांश	१)
बाल हितोपदेश	हितोपदेश का मनोरंजक और उपदेश-पूर्ण कथाओं का सारांश	१)
बाल पंचतन्त्र	उपदेश पूर्ण और मनोरंजक कथाएँ	।।=)
बाल कालिदास	कालिदास की बालकोपयोगी उपदेश-पूर्ण सूक्तियों का संग्रह	।।)

इनमें से अधिकांश पुस्तकें सचित्र हैं

मैनेजर, (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुप्रसिद्ध निर्माता और निर्देशक श्री विजय भट्ट

पेज १२ का शेष

बाबू जी में कवि नहीं हूँ। यह मेरे अनुभव के शब्द हैं। हाँ तो प्रमिला नये विचारों की लड़की थी। तितली बनकर सोसाइटी में फुदकना उसे विशेष पसन्द था। उस वक्त बाबू जी में भी नये रंग में रँगा हुआ था। मुझ पर भी फ़ैशन का भूत सवार था।

मेरी और प्रमिला की दोस्ती दिन-दिन मज़बूत होती गई। मैंने और उसने दोनों ने एम० ए० पास कर लिया। कालेज छोड़ने के वक्त उसकी उम्र बीस साल की थी, और मेरी पच्चीस साल की। प्रमिला कालेज मेरी कार में ही जाती थी और उसी में शाम को घर वापस लौटती थी। हर वक्त मैं और वह धूप और छाँह की तरह साथ रहा करते। मेरी उससे इसलिए अधिक पटती थी, कि मैं भी ठीक उसकी तरह नये फ़ैशन का, नये रंग का उपासक था। हर वक्त अप-टू-डेट रहना मुझे भी बहुत भाता था। मैं उसको हर वक्त अपने साथ लिए फिरता था। बाज़ार में जाता, "क्लब-घर" में जाता या किसी सिनेमाघर में जाता—प्रमिला मेरे साथ रहती थी, क्योंकि मैं समझता था कि बिना प्रमिला के मेरे जीवन की सजावट फीकी है। उसके साथ होने से मेरी कान्ति बढ़ जाती। मुझे अपने पर अभिमान होने लगता, क्योंकि मेरा ख्याल था कि मेरे पास दुनिया का वह क़ीमती हीरा है जिसके सहारे मैं अपनी जीवन-यात्रा आसानी से हँसी-खुशी के साथ पूरी कर लूंगा—लेकिन बाबू जी मुझे क्या मालूम था कि सोने के सुन्दर घड़े में भी विष रह सकता है? उस वक्त तो मेरा दिमाग़ सातवें आसमान पर झूल रहा था। क्योंकि मैं प्रमिला को दुनिया का "आठवाँ आश्चर्य" समझता था और जो "आठवें-आश्चर्य" का मालिक हो, उसे फिर अभिमान होना स्वाभाविक है। वह क्यों न गरूर के तख्ते पर चढ़े?

जब मेरे पिता जी को यह मालूम हुआ कि मैं प्रमिला के चक्कर में फँस गया हूँ, तो उन्होंने मेरी शादी एक धनवान् लड़की से करनी चाही। मेरे जीवन में यह पहला मौका था जब कि पिता जी मेरी मर्ज़ी के खिलाफ़ क़दम उठा रहे थे। उसका कारण वह यह बतलाते कि मैं मजबूर हूँ, वचन दे चुका हूँ। भले-मानसों का काम यह नहीं है कि वचन देकर फिर वापस ले लें। कंचन-लता बी० ए० कितनी लज्जाशील लड़की है। बड़ी भोली-भाली है (कंचनलता उस लड़की का नाम था, जिसको कि पिता जी ने मेरे लिए ढूंढा था) प्रमिला तो उसके पैर की जूती के बराबर भी नहीं है। फिर प्रमिला ग़रीब बाप की लड़की है और कंचनलता एक धनवान् की। पिता जी ने कहा कि मैं जान-बूझकर मक्खी कैसे निगलूं? मैं तुझको कभी छोटे घर नहीं ब्याह सकता, उन्होंने मेरा ब्याह पक्का कर लिया। एक दिन मुझे बता दिया कि तेरी शादी आज से पन्द्रहवें दिन होनेवाली है। मैं भौंचक्का रह गया। मेरे पैरों तले से ज़मीन खिसकने लगी। मैं सोचने लगा कि क्या अब तक का जीवन मेरा ख्वाब था? क्या मुझे प्रमिला नहीं मिल सकेगी? क्या वह मेरे जीवन का सहारा नहीं बन सकेगी? यही सब प्रश्न मेरे दिमाग़ में उमड़ने लगे। मैं सोचता था कि पिता जी मेरी शादी नहीं बल्कि मेरी बरबादी कर रहे हैं। "काश मैं उस वक्त बाबू जी, अपने पिता के अनुसार चलता, तो क्यों मेरी टाँग....." आगे वह न कह सका। उसकी आँखों से आँसू टपकने लगे। मैंने उसको धीरज दिलाया और कहा—"गुजरी हुई बात पर क्या रोना, तुम अब समझदार हो।" फ़क़ीर ने अपने आँसू पोंछते हुए फिर कहना शुरू किया:—

हाँ बाबू जी मैंने अपने पिता जी का निश्चय प्रमिला से कह सुनाया। प्रमिला भी बहुत दुखित हुई। मैंने उससे कहा कि अब क्या करना चाहिए। उसने कुछ सोचकर कहा "चलो कहीं भाग चलें, जहाँ हम दोनों मिलकर एक नया संसार बसायेंगे। उस संसार में प्रेम के गीत आनन्द-पूर्वक गायेंगे। समझे हरीश बाबू" (प्रमिला मुझे हरीश बाबू कहकर ही पुकारती थी) (मैंने बीच में पूछा—तो क्या अब आप हरीश बाबू नहीं हैं) जाने दीजिये बाबू जी आप तो मज़ाक करते हैं, अब तो मैं फ़क़ीर हूँ। हवा ठंडी चल निकली थी। इसलिए फ़क़ीर ने आराम से ओढ़कर फिर कहना प्रारम्भ किया। बाबू जी, अब मेरे सामने एक प्रश्न था। वह यह कि साँप भी मर जाये, और लाठी भी न टूटे। मैं भागने के लिए तैयार तो हो गया—लेकिन पिता जी की नाराज़ी को अपने साथ लिये चलना मुझे अच्छा न लगता था। मैं चाहता था कि मेरे नाम में बट्टा न लगे, क्योंकि अब तक घर के और बाहर के आदमियों में मैं सुशील लड़का था। मैं अपनी इस सुशीलता को गँवाना नहीं चाहता था। इसलिए मेरे दिमाग़ में एक उपाय सूझा—वह यह कि किसी तरह अपने को यहाँ यह मशहूर कर दिया जाय कि हरीश गोमती में डूब गया। नहाते वक्त पैर फ़िसल गया था, तब काम चल जायेगा। फिर वह मुझे तलाश भी न करेंगे अपनी दुनिया खूब आबाद होगी। मेरी सुशीलता के भाल पर कलंक का टीका भी न लगेगा। शादी से चार दिन पहले मैंने अपने एक नौकर को तैयार किया। उसकी जेब गरम की। फिर क्या था—आख़िर नौकर ही तो था वह मेरा काम करने को तैयार हो गया। मैंने उसे सब तरकीब समझा दी और यह भी ताकीद कर दी कि यदि मुझे बाद में कुछ भी मालूम हुआ तो तेरी गर्दन उड़ा दूंगा। उसने कहा—"नहीं सरकार ऐसा कभी नहीं हो सकता। मैं आपका नमक खाया है। उसे हलाल करके दिखाऊँगा! प्रमिला को भी सब समझा दिया।

(लेखक, द्वारा स्वाधिकार सुरक्षित)

इलाहाबाद के एजेन्ट—
बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी
एल० एस० धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

उत्तमोत्तम उपन्यास और कहानी-पुस्तकें

प्रतिशोध—लेखक, पंडित उमेशचन्द्र मिश्र। इस उपन्यास में प्रोफ़ेसर भारद्वाज नामक एक वैज्ञानिक षड्यंत्रकारी की रहस्यपूर्ण कार्यवाहियों का वर्णन बड़े रोचक ढंग से किया गया है। इसे पढ़ते-पढ़ते आप ऐसे तल्लीन हो जायेंगे कि बिना समाप्त किये पुस्तक हाथ से न छूटेगी। मूल्य १) एक रुपया।

द्वन्द्व—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह श्रीमती सरोजकुमारी देवी नामक बंगला की एक प्रसिद्ध उपन्यास-लेखिका का इसी नाम की रचना का हिन्दी-अनुवाद है। इसमें मानव हृदय के अन्तर्द्वन्द्व तथा उसके कारण उत्पन्न होनेवाली अशान्ति का बहुत ही उत्तमतापूर्वक विश्लेषण किया गया है। यह उपन्यास आदि से अन्त तक समस्यामय घटनाओं से परिपूर्ण है और इसका कोई भी ऐसा अंश नहीं है जिसमें सरसता का अभाव हो। मूल्य २॥=)

जीवन-क्रान्ति—लेखक, पंडित गौरीशंकर मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०। अनुभवी तथा विद्वान् लेखक ने इस उपन्यास में सेठ-साहूकारों तथा बड़े आदमी कहे जानेवाले व्यक्तियों की नर-पिशाचता, पुलिस तथा अन्य अधिकारियों के हथकण्डों और धन के लोभ से निरपराधों को अपराधी ठहराकर कारागार की नारकीय यातना भोगने के लिए विवश करने के माया-जाल का बहुत ही आकर्षक शैली में वर्णन किया है। उपन्यास का एक-एक पंक्ति ओजपूर्ण और हृदय में घर कर लेनेवाली है। मूल्य २॥=)।

स्काटलैंड-यार्ड की जासूस स्त्री—यह पुस्तक लेडी मॉली की ६ जासूसी कहानियों का संग्रह है। इस पुस्तक की एक-एक कहानी इतनी मनोरंजक और कौतूहलवर्द्धक है कि आप इस पुस्तक को पूरा पढ़े बिना चैन नहीं पा सकते। लेडी मॉली के जितने कहानी-संग्रह अब तक प्रकाशित हुए हैं, यह उन सबसे अच्छा है। मूल्य ॥।-)।

संसार की प्रसिद्ध कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत शमशेर बहादुरसिंह, बी० ए०। इस पुस्तक में योरप के संसार-प्रसिद्ध कलाकारों की चुनी हुई कुछ कहानियाँ संगृहीत की गई हैं। ये सभी कहानियाँ बहुत ही कलापूर्ण और मनोरंजक हैं। यदि आपको योरप के कथा-साहित्य की बानगी लेनी हो, तो इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य १)।

मापाँसा की चुनी हुई कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत गोपीनाथ जी कानूनगो। इस पुस्तक में मोपाँसा की चुनी हुई ग्यारह कहानियों का संग्रह किया गया है। मोपाँसा की रचनाओं की बानगी लेने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य १)।

ब्रजनाथ का विवाह—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। आश्चर्यमयी घटनाओं से परिपूर्ण यह सामाजिक उपन्यास पढ़ने में ऐसा रोचक है कि एक बार आरम्भ करने पर फिर बिना समाप्त किये चैन नहीं पड़ता। मूल्य १।-)।

आनन्दमठ—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। मुसलमानों और अंगरेज़ों का हिन्दुस्तान से बाहर करने के लिए, बंगाल में वैष्णवों ने जो विद्रोह किया था, उसी का इस उपन्यास में उपन्यास-सम्राट श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने बड़ी खूबी से वर्णन किया है। ऐसा सुन्दर चित्रण इस उपन्यास में है कि पढ़कर मातृ-भूमि के लिए दिल फड़क उठता है। मूल्य १।-)।

रजनी—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। यह उपन्यास-सम्राट श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का एक करुणापूर्ण आद्वितीय उपन्यास है। चमत्कार पूर्ण मनोवैज्ञानिक रहस्य इस उपन्यास की एक ऐसी खूबी है कि जिसके कारण पुस्तक पढ़ने का मोह संवरण नहीं किया जा सकता। मूल्य ॥=)।

श्रीकान्त—(प्रथम और द्वितीय भाग)—अनुवादक, श्री रूपनारायण पाण्डेय। 'श्रीकान्त' शरद् बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना गया है। इसमें शरद् बाबू का अमर लेखनी ने उनके कलाकार का मंजा और सधा हुआ रूप चित्रित किया है, जो अत्यन्त मनोरम है। प्रत्येक भाग का मूल्य २)।

ब्राह्मण की बेटी—मूल लेखक, श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक, पंडित रूपनारायण पाण्डेय। शरद् बाबू भारत के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक माने जाते हैं। उनका यह उपन्यास लोक-प्रियता और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मूल्य सजिल्द पुस्तक का १।-)।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान-वार्ता

रेडियम का इतिहास

रोगों को समूल नष्ट करने की सफलता

लेखक, श्री० एस० एस० श्रीवास्तव

जितने पदार्थ हैं सब परमाणुओं से बने हैं। इन परमाणुओं को अभी तक हम लोग अविभाज्य समझते थे, परन्तु अब पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि ये परमाणु उनकी अपेक्षा भी बहुत छोटे परमाणुओं के मेल से बने हैं। इन अत्यन्त छोटे परमाणुओं का नाम 'एलक्ट्रान' है। अध्यापक बेकेरल ने पहले-पहल इस बात का पता लगाया कि 'यूरेनियम' नामक धातु से प्रकाश बाहर निकलता है और वह प्रकाश इन 'एलेक्ट्रान' नामधारी परमाणुओं के प्रवाह से उत्पन्न होता है। यह परमाणु-प्रवाह यूरेनियम से सदैव निकला करता है। जब से यूरेनियम के इस अद्भुत गुण का पता लगा, तब से वैज्ञानिकों ने इस बात की खोज आरम्भ की कि क्या और भी इस प्रकार की कोई धातु है जिससे प्रकाश-प्रवाह बहा करता हो। इस खोज का फल बड़ा ही विस्मयोत्पादक हुआ। फ्रांसनिवासी विज्ञान के अध्यापक क्यूरी और उनकी मेम ने एक ऐसी धातु का पता लगाया जिससे प्रकाश की महा विलक्षण धारा सतत् निकला करती है। इस अद्भुत धातु का नाम रेडियम है। जब से इसका पता लगा तब से विज्ञान-विश्व में हलचल मच गई है। इसके अलौकिक गुणों ने बड़े-बड़े वैज्ञानिकों को अचम्भे में डाल दिया है। वे अनेक प्रकार से इसकी परीक्षा कर रहे हैं और इसके नये-नये चमत्कारिक गुणों का ज्ञान प्राप्त कर विस्मित हो रहे हैं।

रेडियम से चिकित्सा-शास्त्र की बहुत कुछ उन्नति होने की सम्भावना है। उससे रोगों का बीज नष्ट हो जाता है। 'धनुषाकार' के समान घातक रोग उससे आराम हो जाता है। जन्मान्धों तक को इस धातु से दिव्य दृष्टि मिलने की आशा है। इसकी परीक्षायें हो चुकी हैं और पूरी सफलता भी हुई है। कितने ही अन्धे लड़के इसकी सहायता से लिखना-पढ़ना सीखने लगे। इसमें एक यह भी विचित्रता है कि इसकी रोशनी से कीड़े-मकोड़े आदि छोटे-छोटे जीवों का आकार बढ़ाया जा सकता है। सम्भव है किसी दिन इस रेडियम-विज्ञान की बदौलत डाक्टर लोग दुबले-पतले बावन अंगुल के खर्वाकार मनुष्यों को भीमसेन के साँचे में ढाल दें।

रेडियम स्वतः प्रकाशमान पदार्थ है। उसका एक कण अँधेरे में रखने से इतना प्रकाश होता है कि छोटे से छोटे टाइप की किताब पढ़ी जा सकती है। यदि उसे एक काले काग़ज़ या कपड़े में लपेटकर किसी अन्धे के सामने कोई ले जाय तो उस अन्धे को भी उस प्रकाश का ज्ञान तत्क्षण हो जाता है।

अध्यापक सर विलियम क्रुक्स ने रेडियम की अनेक परीक्षायें की हैं। वह कहते हैं कि यदि तौल में आधा किलोग्राम रेडियम एक छोटी-सी शीशी के भीतर बन्द करके एक कमरे में मेज़ पर रख दी जाय तो उससे उस कमरे के भीतर जानेवाले की तत्क्षण मृत्यु हो जायेगी। यदि तत्क्षण न भी मृत्यु हो, तो उसकी दृष्टि अवश्य ही जाती रहेगी और शरीर का चमड़ा इतना जल जायेगा कि फिर मनुष्य जीवित न रह सकेगा। रेडियम का एक बाल बराबर कण हाथ पर रखने से इतना बड़ा छाला पड़ जायेगा जो महीनों तक न अच्छा होने पावेगा।

रेडियम का सबसे प्रधान गुण यह है कि उससे अविरत उष्णता बाहर निकला करती है। अभी तक लोग समझते थे कि बिना किसी रासायनिक क्रिया अथवा परस्पर संघर्षण के उष्णता नहीं उत्पन्न हो सकती, परन्तु रेडियम ने इस सिद्धान्त पर हरताल फेर दिया है। इसमें ऐसी विलक्षण उष्णता है कि वह कम होती ही नहीं। इसके आस-पास के पदार्थों का उष्णतामान जितना होता है उससे इसका मान सदैव अधिक रहता है और पदार्थों को जाने दीजिए, यदि इसे बर्फ़ में गाड़ दें तो भी इसकी उष्णता कम नहीं होती। हाँ बर्फ़ अवश्य इसकी उष्णता से गल जाती है। थोड़ी-सी उष्णता और प्रकाश के लिए हम लोगों को कितनी लकड़ी, कितनी बिजली, कितनी गैस, कितना कोयला और तेल व्यय करना पड़ता है। यदि रेडियम सुलभ हो जाय तो मानव-जाति को उससे अपार लाभ पहुँचे।

रेडियम अमूल्य, किंवा महामूल्य धातु है। वह 'पिचब्लेंड' नामक एक ही खनिज से प्राप्त होती है। उसे प्राप्त करने में बहुत कष्ट उठाना पड़ता है, और साथ ही अपार द्रव्य भी व्यय करना पड़ता है। इतना करके भी उसकी मात्रा कितनी मिलती है? बहुत थोड़ी—इतनी थोड़ी कि एक ग्रेन का दाम ५००) रुपया तक पड़ता है। यदि कोई एक रत्ती रेडियम ले तो उसे ५,०००) रुपये देने पड़ेंगे। इतने पर भी यह धातु शुद्ध रूप में मिलती ही नहीं।

संपादक के नाम चिट्ठियाँ

पेज ६ का शेष

सेवायें न हों, उसका प्रार्थना-पत्र स्वीकृत न किया जाय।

(६) कांग्रेस के नाम पर चुनाव लड़कर जिसने एक बार भी कांग्रेस के आदेशों को ठुकराया हो, उसके प्रार्थना-पत्र पर ध्यान न दिया जाय। अन्त में उम्मीदवारी के प्रार्थनापत्र दाखिल करनेवाले उम्मीदवारों से मेरी प्रार्थना है कि कांग्रेस का अनुशासन और प्रान्त का गौरव कायम रखने की दृष्टि से अपने से अधिक योग्य उम्मीदवार के हक में अपने प्रार्थनापत्र शीघ्र वापस लेने की समझदारी, समय-सूचकता और दिल का बड़प्पन प्रकट करें। इससे बोर्ड की झंझट भी कम हो जायेगी। आखिर १५३ में से १३६ दरख्वास्तें अस्वीकृत होंगी ही।

वर्धा (मध्यप्रान्त)—भगवानप्रसाद त्रिपाठी (पत्रकार)

* * *

ब्रज-साहित्य-मण्डल का वार्षिकोत्सव

ब्रज-साहित्य-मंडल का आगामी तृतीय वार्षिकोत्सव ता० २-३ मार्च सन् १९४६ को नागरी-प्रचारिणी-सभा के निमंत्रण पर आगरा में होना निश्चित हो चुका है। सुप्रसिद्ध विद्वान्, ब्रजभाषा के मर्मज्ञ एवं प्रयाग-विश्वविद्यालय के इतिहास-विभाग के अध्यक्ष डा० रामप्रसाद जी त्रिपाठी अधिवेशन का सभापतित्व करेंगे। यह अधिवेशन विशेष महत्त्वपूर्ण होगा। अधिवेशन के अवसर पर एक ब्रज-साहित्य-परिषद् भी होगी, जिसमें निबन्ध पढ़ने तथा भाषण देने के लिए देश के सर्वोच्च श्रेणी के विद्वानों को निमंत्रित किया जा रहा है। साथ ही कवि-सम्मेलन में भाग लेने के लिए हिन्दी तथा ब्रजभाषा के अनेक गण्यमान कविगण पधारेंगे। दिल्ली-अधिवेशन के अष्टछाप प्रदर्शन की भाँति इस वर्ष भी रास तथा ब्रज के अन्य सांस्कृतिक प्रदर्शनों का आयोजन किया जा रहा है।

अधिवेशन में उपस्थित करने के लिए जो सज्जन किसी प्रकार के कोई प्रस्ताव या सुझाव आदि भेजना चाहें, वह उसे ता० १५ फरवरी तक लिखकर मंडल कार्यालय में भेजने की कृपा करें। बाद में आये हुए प्रस्ताव अधिवेशन में उपस्थित नहीं किये जा सकेंगे।

—प्रभुदयाल मीतल, प्रधान-मंत्री

* * *

टिहरी-राज्य

देशी राज्यों में से एक राज्य टिहरी है जो कि पहाड़ी प्रदेश है। वहाँ की मूक जनता अपने अधिकारों को समझने लगी है। देश-भक्त श्री श्रीदेव सुमन का स्वर्गवास टिहरी जेल में ही हुआ। स्वर्गीय सुमन जी की मृत्यु के बाद यहाँ क्या हो रहा है। शहीद श्री श्रीदेव सुमन की मृत्यु से यहाँ बड़ी जागृति हो रही है। टिहरी की प्रजा से प्रार्थना है कि वह जो लोग बाहर हैं उनको अपना संगठन जल्दी से जल्दी करना चाहिए प्रत्येक १८ वर्ष से अधिक उम्रवालों को कांग्रेस का चार आना सदस्य बनना चाहिए। कांग्रेस ही एक ऐसी संस्था है जो कि राज्यों की खबर लेगी।

देहरादून —एम० एन० डंगवाल

अपने दाँत ठीक तरीके से साफ करना अवश्यक है!

खुरदरी चिज़ें दांतों को ख़रोंच देती हैं और ख़रोंचों से सड़ान पैदा होती है। बुरे स्वादवाली चीज़ों से आपकी सांस में बदबू आने लगेगी। जो चीज़ें गन्दी रहती हैं या जिन्हे सावधानी से पेक नहीं किया जाता है, वे ख़तरनाक होती हैं—क्योंकि बहुधा उनमें कीटाणु होते हैं जिससे बीमारी फैलती है। इसलिये, अपने दांत ऐसी चीज़ों से कभी मत साफ कीजिए।

हमेशा गिब्बस डेन्टिफ्रिस को इस्तेमाल कीजिए। यह किसी ख़रोंच के बिना आपके दांत बहुत नर्मी से साफ कर देता है। इसका स्वाद और सुगंध—दोनों बहुत अच्छे हैं। यह विशनाशक है। और ठीक तरह से पेक होने के कारण धूल से बचा रहता है। इसके अलावा एक डिबिये में इतना डेन्टिफ्रिस होता है जो १०० बार से जादा दांत साफ़ करने के लिये काफ़ी है।

हर एक व्यक्ति अपने दाँत ठीक तरीके से साफ कर सकता है!

गिब्स डेन्टिफ्रिस

Gibbs Dentifrice

GD. 18-33 HI D. & W. GIBBS LIMITED, LONDON, ENGLAND

मझली दीदी

एक अनाथ बालक की करुण कहानी इस उपन्यास में इतनी मार्मिकता के साथ चित्रण की गई है कि पढ़ते-पढ़ते हमारी आँखें अनायास ही गीली हो जाती हैं। एक सौतेली बहन अपने निराश्रित भाई के साथ जिस तिरस्कार और उपेक्षा का परिचय देती है, वह अत्यन्त हृदय-विदारक है। परन्तु उसकी देवरानी इस अनाथ भाई को अपने पुत्र की तरह स्नेह करती है। यही मझली दीदी है। उपन्यास बहुत ही सुन्दर है। मूल्य १)

परिणीता

उलझनों के कौतूहलप्रद वातावरण में ललिता और शेखर का प्रेम-सम्बन्ध इस उपन्यास में बड़ी ही कुशलता के साथ चित्रित किया गया है। उपन्यास में प्रेम की पावन गंगा का प्रवाह सर्वत्र व्याप्त है और उपन्यास सुखान्त है। इसके एक-एक शब्द में आपको रोचकता और कौतूहल का दर्शन होगा। मूल्य १।-)

पण्डित जी

एक मास्टर साहब का चित्रण इस उपन्यास में आद्योपान्त मनोरंजक ढंग से चित्रित किया गया है। कुलीनता, उच्च-शिक्षा, द्विज और द्विजेतर, नई शिक्षा और मिथ्या अभिमान आदि कितने ही समाज-गत विचारों पर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण इस उपन्यास में किया गया है। मूल्य २)

छुटकारा

एक संयक्त हिन्दू-परिवार का मर्मस्पर्शी चित्रण इसमें अंकित किया गया है। सम्पत्ति के लिए भाई-भाई में होनेवाली सिरफटौवल, एक भाई का अपने दूसरे भाई को सम्पत्ति-सम्बन्धी अधिकारों से वंचित करने का षडयन्त्र रचना, आदि बातें इस उपन्यास में मनोरंजक ढंग से लिखी गई हैं। मूल्य १।-)

डियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बटन ! बटन !! बटन !!!

कोटों और कमीजों के अच्छे बटनों की एजेंसी के लिए लिखें।

हंसराज इन्डस्ट्रीज़ लिमिटेड,

अमृतसर ।

पुनर्जीवन प्रदान करना

एक समस्या है ?

इसके लिए एक विश्वस्त

तथा

सरल उपाय जो बताया जाता है वह है—

बाई-एडोल

BI-ADOL

यह कोमल बालकों के शरीर की गठन में प्रकृति की सहायता करता है।

यह माता को स्वस्थ और स्फूर्तियुक्त रखता है।

सूखा रोग से बालकों को मुक्त करता है।

बाई-एडोल

यह एक वनस्पति रोगन और विटामिन ए और डी से तैयार किया हुआ है और शिशु-रोग, स्त्री-रोग तथा अन्य क्षयकारक रोगों में उतना लाभदायक है जितना श्वास-सम्बन्धी तथा अन्य संक्रामक रोगों में।

तमाम अच्छे ओषधि विक्रेताओं से प्राप्य

बेंगल इम्युनिटि कम्पनी लि० :: कलकत्ता।

सिर्फ उत्तम दवा ही आपके फेफड़ों के लिये गुणकारी है

सिरोलीन

'रुचि'

शरदी और खांसी के लिये

फिल्मस्टारों की तरह त्वचा की रक्षा कीजिये!

रमोला

रमोला कहती है कि उसकी त्वचा उसके लिये सबसे पहली बात है। उसको वह लक्स टॉयलेट साबुन के रोज़ाना इस्तेमाल से बहुत ही निर्मल और मुलायम रखती है। "मेरे सौंदर्य प्रसाधन की यह सरल रीति है"—यह उसका कहना है, और साथ ही दावा है कि इस शुद्ध और खुशबूदार साबुनके तेज फेनसे किसी भी स्त्री की त्वचा मुलायम, सुकोमल और निर्मल हो सकती है।

लक्स टॉयलेट साबुन

LUX TOILET SOAP

LTS. 130-111-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

टैनिस्ट्रीट की अचूक दवायें

खाँसी • सर्दी • इन्फ्लुएन्जा

हर तरह की तकलीफों को दूर करने के लिये ही कैगमैग खास तौर पर बनाई गई है। नष्ट स्फूर्ति पुनः प्राप्त कराती और रात को दौरा होने पर भी नींद लाती है। कैगमैग खाँसी की अचूक दवा है और गले व फेफड़ों की तमाम खराबियों को जल्द आराम करती है।

स्टैनिस्ट्रीट का बनाया हुआ 'सिरप आफ हाइपोफौस-फाइट आफ लाइम' फेफड़े के तन्तुओं को सुदृढ़ बनाता है और बड़े अच्छे टानिक का काम करता है। बड़े धीमे और आहिस्ता से यह अपना असर डालता है। स्वादिष्ट है, मधुर है और फौरन आराम पहुँचाता है।

एन्जौएड्स टिकियाँ एक भूतपूर्व जनस्वास्थ्य परिचालक के नुस्खे के अनुसार सावधानी से बनी हैं। इन पर चीनी चढ़ी होती है; एन्जौएड्स टिकियाँ इन्फ्लुएन्जा की महामारी में लाभदायक प्रतिषेधक साबित हुई हैं। साधारण सर्दी से भी ये रक्षा करती हैं।

कैगमैग • स्टैनिस्ट्रीट सिरप • एन्जौएड्स

सेमथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं० लि: कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर

SSK 119

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

वर्ष ८, संख्या २४] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक रविवार, १० फरवरी, १९४६

देश-विदेश में कहाँ क्या हो रहा है?

योरोप के बड़े राष्ट्रों की कूटनीतिक प्रतिद्वन्द्विता का फल यह हो रहा है कि उनमें भय तथा सन्देह की मात्रा बढ़ती जा रही है और एक दूसरे युद्ध के बीज बोये जा रहे हैं। अधिकारीगण इतने अवाक् हो गये हैं कि संयुक्तराष्ट्र संघ की 'सन्तोषप्रद प्रगति' की चर्चा के लिए उन्हें शब्द ढूंढ़े नहीं मिलते। दिल में सब जानते हैं कि निराशा के लक्षण बढ़ रहे हैं। फ़ौजी अफ़सर अधिकाधिक बड़ी स्थल और जल-सेना तथा अड्डों की माँग कर रहे हैं। पश्चिम की दुनिया और उसके नेताओं का खोखलापन प्रतिदिन स्पष्ट होता जा रहा है।

* * *

श्री योगेशचन्द्र चटर्जी का वजन २६ पौंड घट गया है। पता चला है कि आपके पेशाब में एसीटोन जा रहा है। यकृत में गति शून्यता आ गई है। अशक्त तो आप इतने ही गये हैं कि उठा-बैठा या हिला-डुला नहीं जाता। ढलती उम्र के कारण आपकी निर्बलता और चिन्तनीय है।

* * *

मिस्र के वफ़द दल के नेता श्री नहाश-पाशा ने एक घोषणा-पत्र निकाला है जिसमें कहा गया है कि उनका दल किसी भी ऐसे समझौते को स्वीकार नहीं कर सकता जिसे मिस्र की वर्तमान सरकार करे। ब्रिटिश सरकार ने मिस्र खाली करो माँग का जिस प्रकार का उत्तर दिया है वह मिस्र के लिए इतना विनाशकारी है जिसकी तुलना आधुनिक मिस्र के इतिहास की किसी घटना से नहीं की जा सकती। वफ़द समाचारपत्रों ने ब्रिटिश उत्तर के सम्बन्ध में लिखा है कि उससे प्रकट होता है कि ब्रिटेन का इरादा मिस्र में स्थायी रूप से अधिकार जमा रखने का है।

* * *

पेशावर में एक सार्वजनिक सभा में भाषण देते हुए मेजर जनरल शाहनेवाज खाँ ने कहा कि नेता जी सुभाषचन्द्र बोस का यही सन्देश था कि 'अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए जीवन उत्सर्ग कर दो।' आपने आगे चलकर कहा कि भारत की स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए एकता ही एकमात्र साधन है। आज़ाद हिन्द-फ़ौज धार्मिक विभेदों से परे थी और एक ठोस शक्ति थी। यह भारत के सामूहिक पुकार का परिणाम है कि हम तीनों छोड़ दिये गये।

* * *

केन्द्रीय असेम्बली में गत सप्ताह सरकार की करारी हार हुई, जब कि कांग्रेस पार्टी के मेम्बर सेठ गोविन्ददास द्वारा उपस्थित किया गया दक्षिण अफ़्रीका के भारतीयों के हितों की रक्षा करने में भारत-सरकार की असमर्थता पर उसकी निन्दा का प्रस्ताव बिना मत-विभाजन के पास हो गया। कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों पार्टियों के मेम्बरों ने निन्दा के इस प्रस्ताव का बड़े ज़ोरों से समर्थन किया।

* * *

कराची में श्री जी० एम० सैयद, खाँ बहादुर मौलाबख्श, मौलाना अबुल कलाम आजाद और सरदार पटेल तथा स्थानीय कार्यकर्ताओं में देर तक बातें होती रहीं। विदित हुआ है कि संयुक्त मंत्रिमंडल के लिए ज़ोरदार कार्यक्रम बना है जिसमें जनता की उन्नति तथा जान माल की रक्षा पर विशेष ज़ोर दिया गया है। श्री सैयद ने यूनाइटेड प्रेस के संवाददाता से कहा है कि यदि गवर्नर वैधानिक ढंग से चलें तो मेरा दल मंत्रिमंडल बनाने में समर्थ है। आपने अपने नेता चुने जाने का समाचार गवर्नर को दे दिया है।

* * *

पार्लामेंटरी प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने मद्रास में श्री सी० राजगोपालाचार्य से भी भेंट की थी। श्री राजा जी श्रीमती निकोल से बातें कर रहे हैं।

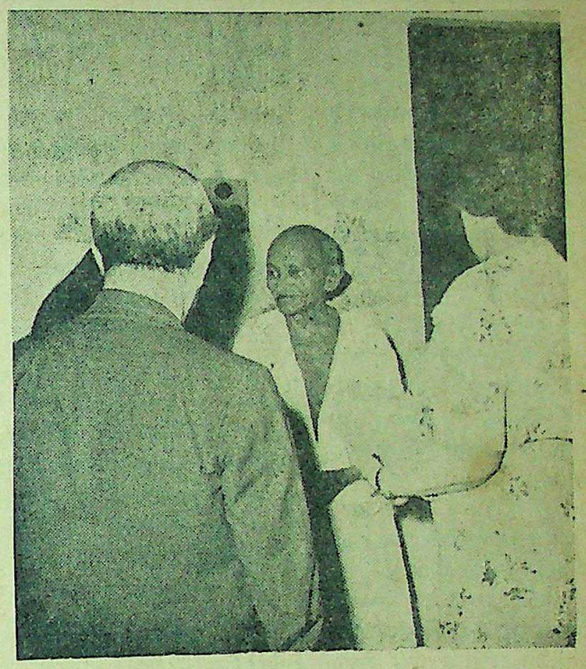

पार्लामेंटरी प्रतिनिधि मंडल के सदस्यों ने पिछले सप्ताह मद्रास में महात्मा गांधी से भेंट की थी। महात्मा जी प्रतिनिधि मंडल के नेता प्रोफ़ेसर रिचर्डस और श्रीमती निकोल से बातें कर रहे हैं।

प्रोफ़ेसर एन० जी० रंगा एम० एल० ए० ने कलकत्ता में बंगाल प्रान्तीय छात्र कांग्रेस के द्वितीय वार्षिक अधिवेशन का सभापतित्व करते हुए यह विश्वास प्रकट किया कि यदि हम सब लोग अपना सहयोग दें तो मेजर जनरल शाहनेवाज तथा उनके साथी शीघ्र ही देश को कम से कम २० लाख नर-नारियों की अहिंसक और अनुशासनपूर्ण सेना दे सकने में समर्थ होंगे।

* * *

भारत सरकार ने रीवाँ महाराज को राजच्युत करने के अलावा संयुक्तप्रान्त मध्यप्रान्त और राजपूताना एवं मध्यभारत की समस्त रियासतों से अनिश्चित अवधि के लिए निर्वासित कर दिया है। रीवाँ महाराज ने बताया है कि राजनीतिक विभाग ने उन्हें राजच्युत करने का जो पत्र भेजा है उसमें यह भी आदेश दिया गया है कि तीन दिन के भीतर आप राज्य की सीमा से बाहर निकल जायें और उपर्युक्त स्थानों में निवास न करें। ज्ञात हुआ है कि आप बम्बई में अपने निर्वासन के दिन काटेंगे।

* * *

आसाम की नई असेम्बली के कांग्रेस दल के नेता श्री गोपीनाथ बारदोलोई आसाम में एक सप्ताह के अन्दर मंत्रिमण्डल संगठित करने जा रहे हैं। आपने इस सम्बन्ध में वहाँ के गवर्नर सर एंड्रू क्लाड से मुलाकात की है। एक तार-द्वारा आपने इस बात की सूचना राष्ट्रपति अबुलकलाम आजाद को दी है।

* * *

ऐसा प्रतीत होता है कि ब्रिटिश पार्लियामेंट में भारतीय स्थिति के सम्बन्ध में एक दूसरा वक्तव्य निकट भविष्य में दिया जायेगा। ज्ञात हुआ है कि पार्लियामेंटरी प्रतिनिधि-मण्डल के सदस्यों के आने के पश्चात सम्भवतः यह वक्तव्य दिया जाय। किन्तु इस वक्तव्य में किसी खास बात की चर्चा नहीं रहेगी। यदि कोई उल्लेखनीय बात इस वक्तव्य में कही जायेगी तो वह यह कि वाइसराय की नई प्रान्तीय धारा-सभाओं के प्रतिनिधियों से विधान सम्मेलन के संगठन के विषय में वार्ता चलाने के लिए कहा जायेगा।

* * *

साम्राज्य सम्बन्ध-विभाग के सेक्रेटरी मि० बनर्जी ने असेम्बली में यह कहा कि कांग्रेस के डाक्टरी दल को मलाया जाने की इजाजत दे दी गई है। उन्होंने यह भी कहा कि सरकारी डाक्टरी दल मलाया जाने ही वाला है और उसके बाद कांग्रेसी दल भी शीघ्र ही जायगा।

* * *

आज़ाद हिन्द-फ़ौज का दूसरा मामला समाप्त हो गया। साथ ही यह घोषणा की गई कि कमांडर-इन-चीफ़ ने कैप्टेन अब्दुल रशीद की सजा जो उसे कोर्ट मार्शल ने दी है स्वीकार की किन्तु उन्होंने उसकी आजीवन कारावास की सजा को बदल कर सात साल की सख्त सजा कर दी। कमाण्डर-इन-चीफ़ ने उसके वेतन तथा एलाउन्स की जब्ती की सजा को भी स्वीकार कर लिया।

* * *

ग्रेट-ब्रिटेन की भारतीय संस्थाओं के संघ की ओर से संयुक्तराष्ट्र संगठन के प्रधान मंत्री को लिखा गया है कि संघ का एक डेपुटेशन उनसे मिलकर भारतीय जनता के वास्तविक विचार उन प्रश्नों के विषय में उनके सम्मुख रखना चाहता है जिन पर संयुक्तराष्ट्र संगठन के प्रतिनिधि इस समय विचार कर रहे हैं।

* * *

काठियावाड़ में खाद्य-पदार्थों का बहुत अधिक अभाव है। काठियावाड़ राजनैतिक सम्मेलन के अध्यक्ष और महाराष्ट्र सेवा-समाज के पदाधिकारी श्री गोपालदास देसाई पीड़ित जनता को सहायता पहुँचाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास परिहास

भङ्ग की तरङ्ग

पुलिस परड क अवसर पर हमारे प्रान्त के गवर्नर महोदय ने भाषण देते हुए कहा कि जो लोग रिशवत लेनेवाले हैं उन्हें कठोर दण्ड दिया जायेगा। यदि सचमुच ऐसी बात हुई तो आधे से अधिक सरकारी कर्मचारी जेल के भीतर ही दिखाई देंगे।

* * *

हमें इस बात की चिन्ता नहीं है कि बहुत से सरकारी कर्मचारी जेल में चले जायेंगे। हमें इस बात की चिन्ता है कि तब जेलों में जगह नहीं रह जायेगी और फिर कांग्रेसी कार्यकर्ताओं को सरकार कहाँ रखेगी?

* * *

सरकारी कर्मचारियों के लिए यह हिदायत की गई है कि वह चुनाव में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नकरें। इस सम्बन्ध में क्या सरकार हमारा एक निवेदन स्वीकार करेगी? मुस्लिम लीग के लिए इसका अपवाद रखा जाय।

* * *

सरकार का कहना है कि भारत में भयंकर अकाल की आशंका है। यह एकाएक इलहाम भारत सरकार को कैसे हो गया? ३१ जनवरी तक तो सरकार को इसका पता भी नहीं था। एकाएक क्या बात हो गई? स्वराज-प्राप्ति के पहले व्रत रखना आवश्यक है। किसी महान् यज्ञ के पहले उपवास करना ठीक समझा जाता है। जान पड़ता है स्वराज मिलने ही वाला है।

* * *

ऐसा अनुमान है कि दस करोड़ भारतीय प्राणी इससे प्रपीड़ित होंगे। शायद तीस करोड़ जो बाकी बचते हैं उन्हें सवेरे शाम मोहनभोग, दोपहर में खीर और रात में पेट भर कचौरियाँ काटने को मिलेंगी।

* * *

लोगों का कहना है कि हमारे खाद्य-सदस्य ने इस सम्बन्ध में पहले क्यों नहीं संकेत किया? लोगों को समझना चाहिए कि उस समय उन्हें अवकाश कहाँ मिला होगा? मिलों के वह मालिक हैं। उनका हिसाब-किताब देखने में व्यस्त रहे होंगे।

* * *

आसाम में कांग्रेसी मंत्रिमंडल बनने जा रहा है। सिन्ध में भी लीगी मन्त्रि-मंडल नहीं बन सका। अब कुछ लोग सोचते हैं कि पाकिस्तान कहाँ बनेगा? उन्हें सम्भवतः यह नहीं पता है कि मलाबार हिल पर तो बनेगा ही चाहे और कहीं बने या न बने।

* * *

भारतीय हवाई सेना में जो लोग नौकर हैं उनका कहना है कि ब्रिटिश और भारतीय हवाबाजों में भेदभाव न किया जाय। ऐसा कैसे हो सकता है? वह राजा हम दास। वह मालिक हम नौकर; वह दाता हम भिक्षुक। आप इसी तरह से माँगते रहिये एकाध टुकड़ा मिल ही जायगा।

* * *

केन्द्रीय असेम्बली में सरकार की इसलिए निन्दा की गई कि भारत में पुलिस और सिविल अफ़सरों की स्थायी नियुक्ति की गई ऐसे समय में जब सरकार का कहना है कि शासन का सूत्र भारतवासियों के हाथ में सौंप दिया जायगा। यदि कहने से ही सब बातें हो जातीं तो स्वराज सौ साल पहले ही मिल गया होता।

* * *

कांग्रेसी क्षेत्र में इस बात की काफ़ी हलचल है कि दूसरे जिले के लोग दूसरे जिले से असेम्बली के लिए उम्मीदवार खड़े किये जा रहे हैं। जब इंगलैंड के निवासी भारत का शासन कर सकते हैं तब यह भी सम्भव है कि एक जिले का निवासी दूसरे जिले से खड़ा हो जाय। कांग्रेस को शासन का उत्तराधिकार तो अँगरेजों से ही मिलेगा।

* * *

अंचल जी लिखते हैं 'जन्म ले संक्रांति युग में, या अधिक रोना न सम्भव'। संक्रांतिकाल में यदि आप त्रिवेणी में गोता लगा लेते तो इतना भी रोने का कष्ट आपको न होता।

—अगड़धत्त शर्मा

सीमा कैसी?

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

मैं तो असीम बन गया नहीं है सीमा।
गंगा की पावनता में नहीं उलझता,
ह्विस्की के प्याले में कब दोष समझता?
है मेरे लिए सुधा क्या और गरल क्या,
जैसा खोये का लड्डू वैसा कीमा?
तुलसी रवीन्द्र या कालिदास या हाली
हिन्दी, उर्दू, बंगाली, पश्तो, पाली,
इनमें न कभी मैं कुछ अन्तर हूँ पाता
गीता की जो वाणी है वही करीमा।
चन्दे का हो या हो वेतन का पैसा,
दोनों में कहिये भेद भला है कैसा,
धन नहीं रहे अपना ही उसको समझा
बीवी के पास जमा हो या हो बीमा।

सिन्धी भाषा और हिन्दी-संस्कृत

लेखक, श्री रघुनन्दन व्यास, करांची

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन का अगला वार्षिक अधिवेशन करांची (सिंध-प्रांत) में होना निश्चय हुआ है। इसलिये सिंध के हिन्दी-प्रेमियों का ध्यान अभी से सिंधी-भाषा तथा हिन्दी-संस्कृत के सम्बन्ध की ओर आकर्षित होना अनिवार्य है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने सिंधी-भाषा तथा लिपि का हिन्दी-संस्कृत से सम्बन्ध बतलाते हुए यह स्पष्ट किया है कि सिंधी-भाषा और लिपि की सुरक्षा के लिए राष्ट्र-भाषा प्रेमियों का सन्नद्ध होना चाहिए।

सिन्धी का उद्गम संस्कृत से हुआ है। सौभाग्य से यह आज भी विदेशी शब्द-जाल से सुरभित है। प्राकृत के मर्मज्ञ व्याकरण जाननेवाले आज भी अपभ्रंश के स्फुट एवं निखरे हुए स्वरूप का दर्शन वर्तमान सिन्धी बोली में बिना हिचकिचाहट के कर सकते हैं। भाषा-शास्त्र की दृष्टि से एवं भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन से सिन्धी की हिन्दी, मराठी और बंगाली से भी बढ़कर घनिष्ठता जान पड़ती है। ठेठ-प्राकृत धातुओं एवं शब्दों के विद्यमान प्रचुर प्रयोग इसकी अत्यन्त सन्निकटता व्यक्त करते हैं। सिन्धी अपनी संस्कृत परायणता के कारण अन्य भाषाओं की स्पर्धा की पात्र बनी हुई है। अन्य भारतीय भाषाओं की तरह अपनी परम्परागत शैली का समुचित सम्मान करके नवीन बनावट को न अपना कर अन्य भाषाओं से समुन्नत है।

प्राकृत के वैयाकरण क्रमादीश्वर ने जो नियम अपभ्रंश के सम्बन्ध में निर्धारित किये हैं उन सब नियमों का पालन सिन्धी भाषा में हो रहा है। जहाँ दूसरी भाषाओं में प्राकृत के नियमों का पालन नहीं हो रहा है। अतएव उद्गम एक होने पर भी सिन्धी एक स्वतन्त्र भाषा बन गई है जो स्वरूप में दूसरों से सर्वथा भिन्न है।

सिन्धी सिन्ध में बोली जाती है जो तीन भागों में विभाजित है। व्याकरण की दृष्टि से विशेष अन्तर न होते हुए भी तीनों का उच्चारण प्रायः जुदा-जुदा है। लारी पश्चिमी सिन्ध में, सिराइकी हैदराबाद के पश्चिमोत्तर प्रदेश में और थरेली थरपारकर में बोली जाती है।

अधिकांशतया गद्य में प्रयोग होने पर भी 'लारी' सर्वथा शुद्धभाषा नहीं है। जिसमें उसके स्वरों को खूब तोड़ा-मरोड़ा गया है तथा व्यञ्जनों को भी इसके अनुरूप बनाने के लिए कोमल बना दिया गया है। सिराकी बोली ने 'लारी' से अधिक शुद्ध होने के बावजूद अपने उच्चारण को बिलकुल बिगड़ने नहीं दिया है। 'सिराकी' की सरसता एवं शुद्धता के फलस्वरूप सिन्धी में एक कहावत प्रचलित है। "लार जो पड्यो सिरे जो डगो" जिसका तात्पर्य है कि लार का पंडित भी सिराकी का तो बैल ही है। 'थरेली' भाषा जोशीली और इन दोनों से निराली है। वह प्रायः मारवाड़ी में सम्मिलित हो गई है, जिसको शिकारी एवं जरायम पेशा लोग बोलते हैं। 'थरेली' का अपना विशिष्ट साहित्य नहीं है।

संस्कृत की प्राकृत अवस्था से ही अपभ्रंश का आविर्भाव हुआ है। अपभ्रंश दो भागों में विभक्त है। नागरी और ब्राचड़। यह ब्राचड़ अपभ्रंश ही घिसघिसाकर सिन्धी भाषा में परिणत हुई है। प्राकृत के मर्मज्ञ वैयाकरण मार्कण्डिव ने भी इसको स्पष्ट किया है कि जो अपभ्रंश सिन्ध देश में प्रचलित है उसे "ब्राचड़" कहते हैं। दुर्भाग्य से सिन्ध के बाहर (बहुत ही थोड़ा) शिक्षित समाज सिन्धी के इस इतिवृत्त को नहीं जानता है। अधिकतर लोग इसका प्रादुर्भाव अरबी तथा फ़ारसी से मानते हैं। इस भ्रान्त धारणा का मूलस्रोत इसकी अरबी-सिन्धी लिपि है। अतः यह बतलाना नितान्त आवश्यक है कि सिन्धी भाषा अरबी-लिपि में कैसे लिखी जाने लगी और इसी को प्रमाणित करने के लिए आपका ध्यान हम भारत के प्राचीन इतिहास की ओर आकृष्ट करते हैं।

सिन्ध में ७१२ ए० डी० तक आर्य-शासन था। बौद्ध धर्म के प्रभाव से भी यह अछूता नहीं रहा। बौद्धकाल के भग्नावशेष जो सिन्ध के कतिपय जिलों में पाये जाते हैं इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं। भारत का सीमा प्रदेश, यह बृहस्पति क्षेत्र सर्वप्रथम ७१२ ए० डी० में अरबों के सिकंजे में ग्रथित हो रौंदा जाने लगा। हिन्दू-मुसलमान बनाये जाने लगे। परिणामतः अल्पकाल में सिन्ध की अधिकांश जनता अरबी संस्कृत एवं सभ्यता का स्वागत करके मुसलमानी रीति-रवाजों को भी स्वीकृत करने लगी। लगभग ग्यारह सौ वर्ष तक सिन्ध की यही दशा रही बल्कि उत्तरोत्तर बिगड़ती ही गई। तथापि हिन्दू रूढ़िवादी एवं सनातनी होने के कारण बचे हुए अल्पसंख्यक भी अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखने में समर्थ हुए। सन् १८४३ में जब अँगरेजों ने सिन्ध को जीता तब हिन्दू संस्कृति अपने जीर्ण-शीर्ण स्वरूप में विद्यमान थी।

सिन्ध की लिपि उस समय वाणिकी देवनागरी थी जो बही-खातों आदि में लिखी जाती थी। संस्कृति भी पाठशालाओं में पढ़ाई जाती थी, जिनकी संख्या बहुत थोड़ी थी। मीरों के शासनकाल में शिक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं था। मुल्ले और मौलवी क़ुरान शरीफ़ रटाया करते थे। ऐसे मदरसों की संख्या अँगरेजी राज्य के प्रारम्भ में छः सौ थी। हिन्दू मुसलमानों की एक भाषा होने पर भी लिपि एक न थी क्योंकि राज्य-भाषा फ़ारसी थी। हिन्दू अपना हिसाब-किताब मंड़ी-वणिकी-देवनागरी में रखते थे जिसमें मात्राओं का आभाव होने से पढ़ने में कठिनता होती थी।

अँगरेजों ने सिन्धी को राज्यभाषा बनाना चाहा किन्तु स्वतंत्र सिन्धी-लिपि न थी। सिन्धी की ठीक और वास्तविक-लिपि देवनागरी ही थी किन्तु सर रिचार्ड-बर्टन ने अरबी लिपि को जो सिन्धी के विशिष्ट उच्चारण से समन्वय नहीं रखती थी। केप्टन स्टेक जो सिन्धी के सर्वश्रेष्ठ विद्वान् थे। जिन्होंने सिन्धी-अँगरेजी कोष, (१८५४) अँगरेजी-सिन्धी कोष, (१८४७) और सिन्धी व्याकरण (१८४९) नामक तीनों पुस्तकों को देवनागरी में ही लिख-कर प्रकाशित की थी। नागरी को ही सिन्धी की अधिकारिणी बतलाकर प्रान्त में चलती वणिकी को आवश्यक सुधार के साथ स्वीकृति करने की प्रार्थना की। उस समय के सिन्ध के कमिश्नर सर बार्टल-फ़्रेअर ने इस पर अपनी विवशता प्रकट की। उनका मत था कि न हिन्दू अरबी-लिपि को मानने को तैयार होंगे और न मुसलमान नागरी ही को स्वीकार करेंगे।

एक भाषा के बिना कारोबार चलना कठिन था। अतः सन् १८५३ में ईस्ट-इन्डिया कम्पनी के कोर्ट आफ़ डाइरेक्टर्स ने अरबी-लिपि को प्रयोग में लाने का निश्चय किया। इसलिए दस हजार रुपयों का प्रचार-व्यय भी स्वीकृति कर लिया।

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बर्मा को स्वाधीनता क्यों नहीं ?

राजनैतिक तथा आर्थिक स्वतंत्रता के लिए क्या हो रहा है ?

लेखक, श्री चन्द्रकुमार, बी० ए०

बर्मा स्वाधीनता के लिए युद्ध के पूर्व से प्रबल आन्दोलन कर रहा है किन्तु युद्ध के बीच उसे किन संघर्षपूर्ण परिस्थितियों से होकर निकलना पड़ा, यह राजनीति के पाठकों से छिपा नहीं है। जापानी चंगुल से बचकर अब बर्मा पुनः ब्रिटिश सत्ता के आधीन हो गया है किन्तु वहाँ की स्वतंत्रता-प्राप्ति का आन्दोलन जारी है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने बर्मा की स्वाधीनता-आन्दोलन पर प्रकाश डाला है और बतलाया है कि आज भी वह अपनी आजादी के लिए किस प्रकार इच्छुक है।

पिछले सप्ताह बर्मा के रंगून शहर में एक अखिल बर्मीय कांग्रेस की विराट् सभा हुई थी। उसमें एक हजार प्रतिनिधि और करीब पचास हजार दर्शकों ने भाग लिया था। अध्यक्ष-पद से भाषण देते हुए, बर्मा के प्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता श्री आँगसान ने कहा—"यदि नवीन विश्वराष्ट्र-संघ (यू० एन० ओ०) को दुनिया की शान्ति और सुरक्षा कायम रखनेवाली प्रभावशाली संस्था बनना है तो उसे छोटे राष्ट्रों और बड़े राष्ट्रों का द्वेषपूर्ण भेद-भाव मिटाने का प्रयत्न करना होगा।"

"द्वितीय महायुद्ध में दो शक्तियों के संहारी युद्ध के परिणामस्वरूप इतना तो निश्चय हो गया कि एशिया में साम्राज्यवाद के दिन गिने-गिनाये रह गये हैं। पुनर्यौवन प्राप्त एशिया विश्व राजनैतिक मंच की ओर प्रगतिशील वेग से अग्रसर हो रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय कौंसिलों में अब वह उपेक्षणीय नहीं समझा जा सकता। उसका स्वर उग्र से उग्रतर होता जा रहा है। उस स्वर को स्पष्ट रूप से आप इंडोनेशिया, इंडोचाइना, बर्मा, हिन्दुस्तान और दूसरी जगहों में सुन सकते हैं। एशिया के इस आगे बढ़ने को चीन में हम अशक्य रूप से देख सकते हैं।"

इस वक्तव्य को पढ़ने के बाद हमारी दृष्टि के सामने बर्मा की उस राष्ट्रीयता का चित्र आता है जो साम्राज्यवादी अनाचार और दमन को चुनौती देने के साथ-साथ जन-स्वाधीनता और जनवाद के उत्साहवर्धक भावों से ओत-प्रोत है। उस राष्ट्रीयता में अपनी आजादी प्राप्त करने की प्रबल उत्कण्ठा के साथ दूसरों की आजादी के प्रति सम्मान और सहानुभूति की भावना भी है। हमें देखना है कि राजनीतिक, आर्थिक दशा और शिक्षा-दीक्षा में इतना पिछड़ा बर्मा जो विदेशी और भारतीय व्यापारियों के समानरूप से शोषण का केन्द्र बना हुआ था—जहाँ गोरे प्रभुओं-द्वारा, जापानी आक्रमण के समय, अरक्षित और निराश्रित अवस्था में बर्बर जापानियों के मुँह का निवाला बनने को निहत्थे बर्मी छोड़ दिये गये थे—जहाँ जापानी आधिपत्य के अविस्मरणीय चार वर्षों में निरीह बर्मी जनता को दुनिया की सबसे अधिक हिंस्र राज्य-व्यवस्था में जिन्दगी बितानी पड़ी थी, वह बर्मा आज पुनः शक्ति प्राप्त कर रहा है। उसकी धड़कन में आज फिर आजादी के स्वर सुनाई पड़ रहे हैं। बर्मा की राजनैतिक जागृति की यह कहानी विश्व-इतिहास का एक रोमांचक प्रकरण है। यहाँ हम देखेंगे कि जापानी आक्रमण के पूर्व ब्रिटिश शासित बर्मा की क्या हालत थी जिसके कारण वह इतने शीघ्र ही जापानी आधिपत्य में आ गया।

जापानी आक्रमण के पूर्व का बर्मा

अपनी पेट्रोलियम और अन्य खनिज सम्पत्ति के कारण बर्मा ब्रिटिश साम्राज्य का एक महत्त्वपूर्ण अंग रहा है। सन् १८७८ में बर्मा को भारत-सरकार से पृथक् कर दिया गया था। उसके बाद से बर्मा का शासन सीधे इंगलैंड की सरकार-द्वारा एक गवर्नर के जरिये होता था। शासन-सुधार की दृष्टि से भी बर्मा हिन्दुस्तान से बहुत पिछड़ा हुआ था। शासन-व्यवस्था में अधिकांश प्रभाव विदेशी व्यापारियों का ही रहता था। बर्मा का सारा व्यापार और तिजारत अंगरेजी कम्पनियों या भारतीय व्यापारियों के हाथ में था। बर्मी या तो इन कारखानों में मजदूरी करते थे या खेतीबारी में लगे रहते थे। बर्मा साधन-सम्पन्न होने पर भी वहाँ के निवासी भारत से कहीं अधिक निर्धनता का जीवन बिताते थे। इसमें ब्रिटिश साम्राज्यवादी व्यवस्था का तो दोष है ही लेकिन बर्मावासियों की खुद की सुस्ती और उत्साहहीनता का भी बड़ा हाथ है। स्वयं बर्मी लोगों में तीव्र बुद्धि राजनीतिज्ञों, उदारचित्त सुधारकों और कर्मठ कार्यकर्त्ताओं की बहुत कमी थी। यही कारण था जब कि पड़ोसी हिन्दुस्तान में स्वाधीनता करवट ले रही थी तब भी बर्मा गुलामी की गाफ़िल नींद में सोया पड़ा था। स्वाधीनता-आन्दोलन और साम्राज्य-विरोधी प्रदर्शन के वर्णन हम समाचार पत्रों में नहीं पढ़ते। लेकिन १९३० के बाद के सालों में गाफ़िल बर्मा भी विदेशी जुये के पीड़ा देनेवाले बोझ के प्रति चैतन्य हो गया और वहाँ राजनैतिक क्रियाशीलता के चिह्न दिखाई पड़ने लगे। वहाँ की राष्ट्रीय महासभा 'डोबामा' बर्मावासियों में आजादी और जनवाद का मन्त्र फूंकने लगी। लेकिन बर्मा के स्वाधीनता-आन्दोलन को सबसे अधिक शक्ति मजदूर सभाओं और विद्यार्थी संगठनों से मिली। मजदूरों के शक्तिशाली संगठन बनने लगे और लोगों के सामने आजादी का एक दूसरा रूप जिसमें कमकरों और मेहनतकशों को राज्यव्यवस्था में पूरा हक़ होगा, निखरने लगा।

इसी बीच योरप में द्वितीय महायुद्ध छिड़ गया और ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने इधर बर्मा के मजदूर संगठनों पर हमला करना और उनके नेताओं को जेल में ठूंसना शुरू कर दिया। इधर पूर्व में जापान ने भी उचित अवसर देखकर प्रशान्त महासागर में एक के बाद एक मुहिम जीतनी शुरू की। जापान की इस अप्रत्याशित विजय और ब्रिटिश और अमरीकी साम्राज्यवादियों की आसानी की हार का परिणाम बर्मा पर भी पड़ा। बर्मा में जापान के गुप्तचर अन्दर ही अन्दर बर्मी जनता के मनोबल को कमजोर करते जाते थे। इधर साम्राज्यवादी ब्रिटिश सरकार का दमन-चक्र और तीव्र होता जाता था। आजादी प्राप्त करने को आतुर बर्मी राष्ट्रीय नेता हताश होते गये। जापान, सिंगापुर, मलाया फ़तह करता बर्मा के द्वार पर अपने खूनी पंजे से दस्तक देने लगा। पिछड़ी हुई, अरक्षित और निराश्रय बर्मी जनता के मनोबल का क़िला ढह गया।

बर्मा जापान के अधिकार में

बर्मा प्रवेश करने के बाद जापानियों ने बर्मियों की एक 'बर्मी राष्ट्रीय सेना' बनाई इसका प्रधान उन्होंने आज के बर्मी राष्ट्रीय नेता 'आँगसान' को बनाया। स्मरण रहे कि आँगसान भी पहले उन्हीं बर्मी राष्ट्रवादियों में से थे जो बर्मा की आजादी के लिए जापान की मदद के पक्ष में थे। इन्होंने युद्ध-काल में ही ब्रिटिश सरकार की निकम्मी पुलिस को चकमा देकर जापान प्रयाण किया था और वहाँ जापानी अफ़सरों की देख-रेख में फ़ौजी शिक्षा प्राप्त की। इस सेना को सारे हथियार और खर्च जापान-द्वारा दिये गये थे। नाम तो इसका 'आजाद बर्मी फ़ौज' था लेकिन असली ताक़त जापानी "सलाहकार" कर्नल 'मिनामी' के हाथ में थी। जापानियों ने डाक्टर बामाँ की अध्यक्षता में एक 'स्वतन्त्र' सरकार बना दी आँगसान इस सरकार के रक्षा-मन्त्री थे।

मगर थोड़े ही दिनों में जापानी पाखण्ड का भण्डाफोड़ हो गया। उसकी कुटिल फासिस्टशाही राज्य-व्यवस्था का नक़शा लोगों के सामने आ गया। अँगरेजों का स्थान जापानियों ने लिया था, और बर्मी जनता साम्राज्यवादी शासन के बदले पीले फासिस्टवादी क्रूर शासन के बोझ तले कराहने लगी।

सच्चे देशभक्त की तरह 'बर्मी राष्ट्रीय सेना' के कमाण्डर को जापान की सहायता से बर्मा को स्वतन्त्र करने के सपने को सच्चा न होते देख, अपनी ग़लती महसूस हुई। इसी समय आँगसान की भेंट अपने भतपूर्व सहयोगी और कम्युनिस्ट लीडर 'तखिन' से हुई जो जापानी दमन के कारण 'गुप्त' रहकर काम करते थे। उन्होंने आँगसान को भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के मंत्री पी० सी० जोशी का पत्र दिया जिसमें कहा गया था कि इस बदली हुई परिस्थिति में बर्मा की आजादी का रास्ता जापान का प्रतिरोध करने में है और विवेकशील आँगसान इस मत से सहमत हो गये।

जापानियों ने 'आजाद बर्मी फ़ौज' से काम निकाल चुकने के बाद उसे भंग कर दिया और 'बर्मा-रक्षा-सेना' के नाम से एक दूसरी फ़ौज खड़ी की। जापानी अभी तक आँगसान के बदले हुए मत को नहीं भाँप पाये थे इसलिए इस नई सेना का भी प्रधान आँगसान को ही बना दिया। अपने पद के कारण आँगसान को सेना में और बर्मी जनता में जापान-विरोधी भावना भरने में काफ़ी मदद मिली।

ब्रिटिश फ़ौज के साथ सम्पर्क स्थापित होने पर इस बर्मा-रक्षा-सेना ने जापानियों को भगाने में बड़ा काम किया। संघर्ष खुलकर होने के कारण स्वयं आँगसान को तो 'गुप्त' हो जाना पड़ा लेकिन उनकी बर्मा-रक्षा-सेना ने ब्रिटिश फ़ौजियों को मदद देने के अलावा टौंगू, पिनमाना और रंगून आदि स्थानों को ब्रिटिश फ़ौजों के पहुँचने के पहले ही जीत लिया था। इस नई लड़ाई में आँगसान के छापेमारों ने १०,००० से ज्यादा जापानियों को मारा और सरोसामान को बेहद नुक़सान पहुँचाया। लेकिन जापान को मार भगाने के बाद में ब्रिटिश सरकार इस बर्मा-रक्षा-सेना से प्रसन्न नहीं हुई। साम्राज्यवादी समाचार-समिति, 'रायटर'

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए।

सुभाष को आरती-दान

लेखक, श्री श्रीपालसिंह 'क्षेम'

भव्य भारत के तरुण स्वरकार !
मेरी आरती लो !
दासता की घन-कुहा में
ले प्रलय-पथ के तराने,
प्राण का दीपक जला तुम
चल पड़े नव ज्योति लाने,
मुक्ति-पुर के ओ नवल पथकार !
मेरी आरती लो !
तुम अमा की गोद से उठते
उषा के गान सुन्दर,
दासता के इस महा अभिशाप
के वरदान सुन्दर,
अश्रुओं में हास के शृंगार !
मेरी आरती लो !
मातृ-नयनों की निराशा को तुम्हीं साकार आशा,
आज चालिस कोटि के उर-प्राण की तुम मूर्त्तभाषा,
मूक युग के कंठ के उद्गार ! मेरी आरती लो !
तोड़कर तरुणी-दृगों के फूल के सुकुमार बन्धन,
तुम चले 'निर्वाण'-पथ पर बाँटने जन-मुक्ति कंचन,
ध्वंस में 'अमिताभ' के अवतार ! मेरी आरती लो।
जा छिपे हो किस महावन में 'अलख का गान गाकर',
स्वर तुम्हारे बरसते हैं आज तन-मन-प्राण छाकर,
सुप्ति में ओ चेतना-संचार ! मेरी आरती लो !
तिमिरमय जन-पलक में ओ हँस उठे नव ज्योति सपने,
काल-पट पर लिख दिये हो रक्त से इतिहास अपने,
ओ सनातन काव्य के आधार ! मेरी आरती लो !
मुक्त भारत के हृदय-सम्राट् तुम युग-देव मेरे,
लक्ष-लक्ष तरुण-हृदय के गान हैं 'दो शब्द' तेरे,
मुक्ति के ओ प्रथम क्रान्ति-कुमार ! मेरी आरती लो !
राष्ट्र के शत-शत 'नखत' पी हो रही थी मौन कारा,
घोर जन-जीवन-निशा में तुम हँसे बन प्रात-तारा,
तुम तिमिर-वन में किरण गुंजार ! मेरी आरती लो !
कोटि जन-मन-तार पर नवमुक्ति के ओ महागायक,
तुम प्रकृति से 'बंध' पर छोड़े गये चिर-ज्योति-शायक,
मृत्यु में अमरत्व की झंकार ! मेरी आरती लो !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वनस्थली विद्यापीठ में पंडित नेहरू!

राष्ट्रीय जागरण और शिक्षा के कुछ मनोरंजक संस्मरण

लेखक, श्री गंगाशंकर विद्याविनोद, एम० ए०

जयपुर राज्य में वनस्थली विद्यापीठ राष्ट्रीय दृष्टि से महिला-शिक्षण का प्रमुख केन्द्र है। अखिल भारतीय लेखक-सम्मेलन के अवसर पर पण्डित जवाहरलाल नेहरू जयपुर गये थे और उसी सिलसिले में नेहरू जी ने विद्यापीठ का भी निरीक्षण किया था। इस लेख में विद्यापीठ में पंडित नेहरू के आगमन के अवसर के संस्मरण अंकित किये गये हैं। लेख अत्यन्त सुन्दर और पठनीय है।

जयपुर की वनस्थली विद्यापीठ का नाम मैं कई दिनों से सुन रहा था—सुन रहा था कि राजपूताना के एक कोने में, वनस्थली में यह उपवन लहरा रहा है। सुना था कि प्रयाग, काशी और अलीगढ़ विश्वविद्यालयों के कुलपति उसे देख आये हैं। इस बार श्रीमती सरोजिनी नायडू और पंडित जवाहरलाल नेहरू वहाँ जानेवाले हैं। जयपुर में अ० भा० लेखक-सम्मेलन में भी देश और विदेश के साहित्यकारों का संगम होनेवाला है। यह अपूर्व संयोग मैं न छोड़ सका। उस दिन जयपुर से एक विशेष गाड़ी निवाई (वनस्थली के स्टेशन) के लिए जा रही थी। उससे उतरकर हमें वनस्थली के यात्रियों के लिए प्रस्तुत मोटरलारी मिल गई। वनस्थली की उस अभी अभी बनकर पूरी हुई सड़क पर जाते हुए अनेक विचार मन में उठ रहे थे। ऐसा विद्यापीठ ग्राम में रखने का भी एक विशेष उद्देश्य ही होगा। नगरों ने ग्रामों का सदैव शोषण किया है। शिक्षा के केन्द्र सब नगर में ही मिलेंगे। ग्राम जैसे इनके अधिकारी नहीं। पिलानी ने मेरी इस धारणा को मिटा दिया था परन्तु पिलानी बिड़लाओं की पिलानी ठहरी। वनस्थली के जड़ तो आकाश में हैं! और मैंने देखा कि एक पर्ण-निर्मित सिंहद्वार सामने चमक रहा है, वनस्थली विद्यापीठ का बोर्ड उस पर लगा हुआ है और साथ ही वनस्थली का प्रतीक है। इस प्रतीक से मैं वनस्थली के साहित्य-द्वारा परिचित था। ज्वाला की लपटों के बीच में एक बाला हाथ में ज्ञान का दीप लिये हुए है नीचे विद्यापीठ का मंत्र है—"सा विद्या या विमुक्तये" मैंने सोचा आज का जगत् ही ज्वालामय है। यह ज्वाला परतंत्रता की है, शोषण की है, मरण की है और उसमें से जगत् को मुक्ति देनेवाली विद्या वनस्थली का ध्येय है। उसका जन्म स्वयं चिता की ज्वाला में से हुआ है। सामने वनस्थली ग्राम का पेड़ों का झुरमुट था और मेरे मन में ये विचार की रेखायें। सुना था कि वनस्थली एक छोटा-सा ग्राम है परन्तु यहाँ देखी जनता की भीड़, मोटर गाड़ियों की भीड़ और जनरव। ग्राम का ध्यान थोड़ी देर के लिए जाता रहा।

विद्यापीठ के मुख्य तोरण-द्वार पर ध्वज-स्तम्भ खड़ा था, भीतर कच्ची मिट्टी की दीवारें, टीन और खपरैल से लदे हुए छप्पर, गोबर से लिपे हुए चबूतरे मुझे फिर ग्राम की ही याद दिलाने लगे। द्वार के दोनों ओर मंगल-कलशों ने मुझे शुद्ध भारतीय संस्कृति का ध्यान दिला दिया। भीतर किन्तु अतिथि-गृह, विद्यापीठ के विविध कार्यालय, सरस्वती-मन्दिर, जवाहर चौक और अनेक मार्ग (बुद्ध मार्ग, शंकर मार्ग, ईसा मार्ग) देखकर फिर मुझे लगा कि मैं किसी नगरी का प्रवासी हूँ। शान्ताकुंज में शान्ताबाई की स्फटिक मूर्ति थी और उसके सम्मुख था उस स्वर्गीय आत्मा का सजीव स्वप्न—सरस्वती-मन्दिर। सरस्वती-मन्दिर जहाँ ज्ञान की धारा बहती होगी उन दिनों विश्राम-शाला बना हुआ था। अमृत कूप के जल से स्नान करके उस सन्ध्या में जब मैं बाहर निकला तो देखा वहाँ जवाहरलाल के स्वागत का उत्साह वातावरण में व्याप्त है। पं० जवाहरलाल नेहरू और श्रीमती सरोजिनी देवी वनस्थली आनेवाली हैं।

इस अनुष्ठान के बाद पंडित जी को विद्यापीठ के शिक्षा-क्रम की प्रतीक रूपा प्रदर्शनी देखनी थी। वनस्थली के प्राण और आत्मा श्री शास्त्री बम्पति के साथ शारदा-मन्दिर में प्रदर्शनी के अंग-प्रत्यंग को वे अपनी सूक्ष्म अन्तर्भेदी दृष्टि से देख रहे थे। नैतिक शिक्षण, गृहस्थ शिक्षण, ललित कला-शिक्षण तथा ज्ञान-विज्ञान की विविध शाखाओं का परिचय मानचित्रों, आलेखों इत्यादि द्वारा दिया गया था। विद्यापीठ की छात्राओं ने कई उपयोगी मानचित्र भी बनाये थे। एक मानचित्र में आज के शोषक और शोषित राष्ट्र दिखलाये गये थे, दूसरे मानचित्र द्वारा कांग्रेस के अधिवेशनों को सभापतियों, स्थानों और तिथियों के पूर्ण परिचय के साथ दिखलाया गया था जिससे कांग्रेस की पूर्ण स्वतंत्रता की भिन्न भिन्न मंजिलों का ज्ञान होता था। एक मानचित्र तथा कथित पाकिस्तान का था, एक मानचित्र में ब्राह्मी से लेकर देवनागरी के विकास-क्रम को दिखाया गया था, एक मानचित्र विश्व सभ्यताओं का प्रसार बतलाता था, एक दूसरा मानचित्र पृथ्वी पर जीव के क्रमिक विकास का परिचय देता था, एक और मानचित्र आज से पचास हजार वर्ष पूर्व (प्रलय से पहले) के संसार का था जो एच० जी० वेल्स और सिहल के मत के आधार पर अंकित किया गया था। संसार के विभिन्न राष्ट्रीय झंडे, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की यात्रा, भारत में संगीत के प्रमुख केन्द्र, भिन्न भिन्न देशों की वेश-भूषा, भारत की प्रसिद्ध ऐतिहासिक इमारतें इत्यादि इत्यादि अनेक सचित्र मानचित्र वहाँ थे। चित्रवीथी में वनस्थली की छात्राओं की तूलिकाओं से अंकित अनेक चित्र थे। शारदा मन्दिर के बीचोंबीच बने हुए भारत-भूमि के उभरे हुए मानचित्र को देखकर उन्हें काशी के भारतमाता मन्दिर की स्मृति हो आई। पुस्तकालय-भवन में गान और वाद्य का आस्वादन करते हुए उन्होंने अपना खादी का ताज उतारकर रख दिया था। श्वेताभ्र केश-राशि चमकने लगी थी अहमदनगर के दीर्घ कारावास ने उन्हें यह उपहार दिया था।

* * *

विद्यालय द्वार के सामने लक्ष्मीबाई मैदान में वीर बालायें व्यायाम की अपनी विशेष वेश-भूषा में पहुँच चुकी थीं। छोटी लड़कियाँ कमीज और निकर पहने चोटी-वाले बालक जान पड़ती थीं और बड़ी लड़कियाँ सफ़ेद कुर्ता और हरी सलवार पहने चोटीवाले किशोर कुमार। लाठी, भाला, लेजिम, डम्बल्स इत्यादि व्यायाम के विविध प्रदर्शन चारों ओर इकट्ठे हुए जन-समूह ने देखे। कई आलोचकों की दृष्टि में लाठी, भाले और तलवार आदि की स्त्री-सुलभ कोमलता से कोई संगति कदाचित् न होगी किन्तु आज जब 'आज़ाद हिन्द-फ़ौजों की' झाँसी की रानी रेजीमेंट का इतिहास हमारे सामने है तो क्या अवसर नहीं आ गया है कि अब भारत के कोने कोने में ऐसी रेजीमेंट बनानेवाली वीर सैनिकायें तैयार होनी चाहिएँ जो लाठी, भाले ही नहीं राइफल लेकर रणभूमि में जा सकें? साइकिल सवारी ने मुझे छोटे-मोटे सरकस की याद दिलाई जिनमें एक व्यक्ति साइकिल और अपने शरीर पर एक दर्जन व्यक्तियों को बिठाकर साइकिल चलाता है। घुड़सवारी करते हुए बालिकाओं को देखकर मेरा हृदय घुड़दौड़ करने लगा।

* * *

विद्यापीठ के विद्यालय और छात्रावास दो प्रधान अंग हैं। छात्रावास छात्राओं के गृह-जीवन का शिक्षण-केन्द्र है। जब मैं इसके 'सीता चौक', 'कमला नेहरू वीथी', 'सावित्री चौक', 'शान्ताबाई वीथी', 'अन्नपूर्णा चौक', 'विदुला वीथी', 'गोविन्द चौक', 'गीता चौक', 'उपनिषद् चौक', 'रामायण चौक' आदि को पारकरता हुआ जा रहा था तो मैंने देखा कि छात्रावास कितना विशाल गृह है। उसमें अनेक आँगन और अनेक वीथियाँ हैं। एक विशाल चौक में पाक यज्ञ होता हुआ दिखाई दिया जो वनस्थली की गृहस्थ शिक्षा का प्रधान अंग है। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ जब मैंने देखा कि वहाँ एक चक्कीघर भी है। भारत की औसत कोटि की स्त्री को चक्की से भी पूर्ण परिचय होना ही चाहिए क्योंकि चक्की, चूल्हे की तरह अन्नपूर्णा है। मुझे और भी आश्चर्य हुआ जब मैंने यह जाना कि अर्थ-शास्त्र, राजनीति, भाषा-साहित्य का ज्ञानार्जन करनेवाली वनस्थली की एक लड़की चक्की भी पीस सकती है, वीणा पर उँगली भी चला सकती है और तूलिका से चित्र भी अंकित कर सकती है और दो घोड़ों पर सवार होकर दौड़ भी सकती है—"वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि"। क्या वनस्थली की यह सब बातें—शारीरिक शिक्षा, ललितकला शिक्षा, गृहस्थ शिक्षा, नैतिक शिक्षा और पुस्तकीय शिक्षा के साथ और कहीं भी मिलती हैं? और मिलती हैं तो देखना यह है कि वहाँ इनको नियम के लिए अपनाया गया है या शिक्षा का दृढ़ स्तम्भ ही माना गया है। आज की भारतीय नारी को सुयोग्य गृहलक्ष्मी बनना है, पाक यज्ञ और शिशु-पालन करना है, गृह-द्वार को कला से विभूषित करना है परन्तु कल रणभूमि में अश्वारोही सैनिक भी बनना है। कंधे पर राइफल भी लेनी है, देश-विदेश के ज्ञान-विज्ञान का अध्ययन करके पुरुषों के बराबर बैठकर धारा-सभा में व्यवस्था भी देनी है और समय आने पर मंत्रित्व भी ग्रहण करना है। न जाने कितनी कमला नेहरू, मैडम च्यांग, देवी जोन, कस्तूरबाएँ, झाँसी की रानियाँ और विजयलक्ष्मियाँ हमारे देश को अभी बनानी हैं।

कुएँ में लड़कियों का कूदना और तैरना देखने के पश्चात् पंडित जी सभा-मंडप में आये जहाँ दूर दूर से आई हुई उत्सुक जनता उनकी प्रतीक्षा में थी। सभा-मंडप किसी विशाल अधिवेशन के पंडाल की याद दिलाता था। राष्ट्रीय पताकाओं और ध्वनि-विस्तारक यंत्रों ने सभा के गौरव और गांभीर्य को और भी बढ़ा दिया था। उस दिन की सभा वनस्थली विद्यापीठ की राष्ट्र-सभा के अधिवेशन से प्रारम्भ हुई। छात्राओं को सक्रिय राजनीति और राजकार्य का पदार्थ पाठ देने के लिए विद्यापीठ ने अपने यहाँ इस राष्ट्र-सभा का संगठन किया है। राष्ट्र-सभा भारत को (पंडित जी के शब्दों में संभवतः तीन वर्षों बाद का) स्वाधीन भारत मान कर चली है। उसका मंत्रि-मंडल पहले गांधीवादी था, अब समाजवादी है। एक और साम्यवादी दल दूसरे बहुमत में है। मंत्रि-मंडल की ओर से प्रधान मंत्रिणी ने (क्योंकि वनस्थली का छात्रावर्ग ही राष्ट्र-सभा का सदस्य है) अपनी आर्थिक पुनर्निर्माण की योजना प्रस्तुत करते हुए वक्तृता दी। उस वक्तृता के अनेक महत्त्वपूर्ण अंशों ने राष्ट्रीय योजना-समिति के प्रमुख सदस्य श्री जवाहरलाल जी का ध्यान आकर्षित किया—क्योंकि जब वे बोलने खड़े हुए तब उन्होंने इस बात पर खेद प्रकट किया कि उनके पास समय न होने के कारण राष्ट्र-सभा का कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया और वे मंत्रिमंडल की योजना की विरोधी दल-द्वारा होनेवाली आलोचना न सुन सके क्योंकि उन्होंने कहा—मैं जानना चाहता था कि ऐसी योजना की आलोचना हो ही क्या सकती थी? पंडित जी का उस समय का भाषण वनस्थली की साधना की स्वीकृति थी—"काश! मैं भी एक छोटी लड़की होता और यहाँ शिक्षा पाता।" उन्होंने बतलाया कि आजकल की शिक्षा-प्रणाली सदोष है। परीक्षा पास करना ही शिक्षा प्राप्त करना नहीं है। वनस्थली की शिक्षा-

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

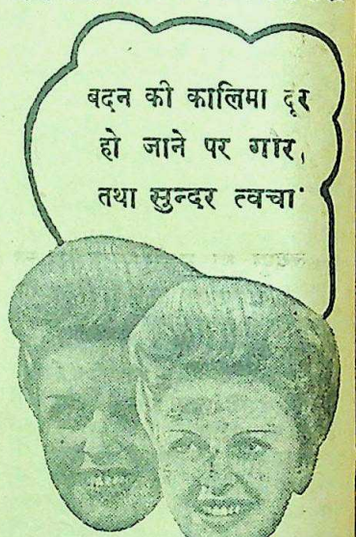

इस आश्चर्यजनक रहस्य को पढ़िए

जब चेहरे की कालिमा दूर हो जाती है तो नवीन गौर वर्ण की सुन्दरता निखर पड़ती है। वही कोमल एवम् मृदुल रूप जिसकी प्रत्येक स्त्री को चाह है और जिसकी प्रत्येक पुरुष प्रशंसा कर रहा है।

ह्वाइटेक्स आश्चर्यजनक तरल औषधि चेहरे की कालिमा को तुरन्त दूर करती है। इससे आपका रूप गौर तथा विशेष मृदु हो जाता है जिससे आपके सौन्दर्य, व्यक्तित्व, तथा आकर्षण में विशेष वृद्धि होती है।

ह्वाइटेक्स में चिपचिपाहट नहीं है, और न इससे किसी प्रकार के दूषित धब्बे ही रह जाते हैं। यह त्वचा में प्रवेश कर त्वचा को पोषता है। आज ही एक बोतल खरीदें।

वितरक: जी० अथरटन एन्ड कं० (ईस्टर्न) लि० २८, अपोलो स्ट्रीट, बम्बई, तथा ४ मिशन रो, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष रूप से 'देशदूत' के लिए

लुंगियों या-तहमतों के प्रदेश में

दक्षिण-भारत पहुँचने पर हमने इन आँखों से क्या देखा ?

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

'देशदूत' के पाठकों से चिर-परिचित श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी, पिछले दिनों, महात्मा गांधी के सभापतित्व में होनेवाले दक्षिण-भारत हिन्दी प्रचारसभा की रजत-जयन्ती समारोह के अवसर पर मद्रास गये थे। जयन्ती-सम्बन्धी संस्मरण आप आगे लिखेंगे। इस लेख में मद्रास की रहन-सहन तथा वहाँ की सामाजिक स्थिति का वर्णन बड़ी सुन्दरता से किया है। लेख पठनीय तथा ज्ञातव्य है।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार-सभा मद्रास की रजत-जयन्ती समारोह के अवसर के सभापति महात्मा गांधी।

महात्मा गांधी मद्रास आये हुए थे। उनके साथ उनकी मंडली थी। मैं भी बापू जी के साथ था। मैं मद्रास प्रथम बार गया था। मेरे लिए यह शहर बिलकुल नया था। यहाँ का माउंट रोड मेरे लिए नई सड़क थी। मद्रास शहर की यही मुख्य और मशहूर सड़क है। बहुत लम्बी सड़क है। मीलों दूर गई है। इसी सड़क पर बड़ी-बड़ी दूकानें बसी हैं। बहुत-सी ऊँची-ऊँची और विशाल इमारतें बनी हैं। सड़क बहुत साफ़-सुथरी और चौड़ी है। सीमेंट कंकरीट से सड़क बनाई गई है। कई सिनेमा की अच्छी फ़िल्में चलती-फिरती रहती हैं। मद्रास से निकलनेवाला प्रसिद्ध अँगरेजी पत्र 'हिन्दू' और 'इंडियन एक्सप्रेस' की बड़ी इमारत बनी है। हिन्दू 'आफ़िस' राजाओं की कोठियों की तरह शानदार और सुन्दर बना है। 'हिन्दू' पत्र का कार्यालय देखने लायक है। दिन-रात रोटरी मशीन खटखटाती रहती है। सैकड़ों कर्मचारी काम में लगे रहते हैं। प्रेस के हाते में ही प्रायः सभी कर्मचारियों आदि के रहने का अच्छा प्रबन्ध है। हिन्दुस्तान में ऐसे प्रेस बहुत कम हैं।

मद्रासी सड़कों पर जब हम घूमने निकले देखा कि सारा शहर लुंगीमय है। मैं बम्बई, दिल्ली आदि नगरों में भी हो आया हूँ। कई बार जाने का मौक़ा आया है। बम्बई, दिल्ली आदि नगरों में पश्चिमी रीति-रवाज देखने में आता है। पहनावा अधिकतर सूट-बूट-हैट है। बच्चा भी सूट-बूट-हैट में मिलेगा। अधिक से अधिक लोग टाई बाँधे निकलते हैं। नागपुर ऐसे शहर में भी अधिक लोग इसी पोशाक में मिलेंगे। लेकिन मद्रास शहर और प्रेसिडेन्सी में बड़े से बड़े विद्वान् राजा और रंक को आप एक लुंगी और एक कुर्ता में पायेंगे। गांधी जी से मिलने के लिए बड़े से बड़े प्रतिष्ठित लोग रोज आते थे। लेकिन सबको मामूली लुंगी और कुर्ते में देखता था।

नंगा सिर, सफ़ेद कपड़ा तहमत यानी लुंगी बाँधे लोग सड़कों पर घूम रहे हैं। एक मामूली धोबी भी लुंगी और कुर्ते से मिलता है। इधर के लोगों का यही प्रधान पहनावा है।

शहर का कुछ भाग बहुत ही सुन्दर है। देखने लायक है। यूनिवर्सिटी पुस्तकालय में लाखों पुस्तकों का संग्रह है। विविध विषयों का अध्ययन यहाँ किया जाता है। बड़े सुन्दर ढंग से सारी किताबें रखी गई हैं। विषयवार किताबों की अलग-अलग आलमारियाँ बनी हैं। आप हर एक विषयों की अच्छी से अच्छी किताबें लेकर पढ़ सकते हैं। यहाँ के विद्यार्थियों को बहुत लाभ होता है। पुस्तकालय की इमारत बड़ी विशालकाय है। तीन मंजिले की इमारत है। पास ही समुद्र का बहुत ही सुन्दर दृश्य दिखाई पड़ता है। उसके सामने ही सरकारी सेक्रेटेरियट की इमारत है। सरकारी कल-पुर्जे की सारी मशीन यहीं से चलती है। पास ही गवर्नमेंट हाउस का एक बहुत बड़ा हाता है।

शहर में जिधर निकलिए उसी तरफ नारियल के पेड़ बहुतायत में दिखाई पड़ते हैं। हर एक घरों के बगीचे और हाते में नारियल के पेड़ लगाये जाते हैं। नारियल के बहुत से गुच्छे लटके रहते हैं। आम के बगीचों की भी अधिकता है। कई हिस्सों में आम के पेड़ ही पेड़ दिखाई पड़ते हैं। जिस समय आम पककर तैयार होते होंगे उस समय मालूम होता है कि सारा शहर आम से पट जाता होगा। छोटे-बड़े सभी लोगों के लिए आम सस्ता होगा। एक तरह से यह आमों का प्रदेश भी कहा जा सकता है।

यहाँ अधिकतर लोग अँगरेजी बोलते सुनाई पड़ते हैं। एक दिन मैं एक धोबी के यहाँ कपड़ा देने गया। उसने फौरन अँगरेजी में बात करनी शुरू कर दी। नाई भी अँगरेजी में बोलता मिला। एक छोटा बच्चा भी अँगरेजी में बात-चीत कर सकता है। अँगरेजी भाषा की प्रधानता यहाँ खूब है लेकिन इसके मानी यह नहीं है कि यहाँ के लोग अपनी मातृभाषा भूल गये हैं। मद्रास शहर में तामिल भाषा की प्रधानता दिखाई पड़ती है। वैसे यहाँ चार प्रान्तों का संगम है। आन्ध्र, तामिल, केरल और मलयालम के लोग बसते हैं। हर एक को अपनी मातृभाषा पर गर्व है। अपना कारबार अपनी भाषा में चलाते हैं। आन्ध्रवासी तेलगू में बोलते और लिखते हैं और अपनी भाषा का प्रचार करते हैं। तामिल और तेलगू की बड़ी प्रतिस्पर्धा होती दिखाई पड़ी। एक प्रान्त दूसरे प्रान्त से खिंचे हुए मालूम होते हैं। ऐसा मालूम होता है तामिल भाषा के लोग आन्ध्रवालियों से अपने को चुस्त और चालाक मानते हैं। दोनों प्रान्तों का एक अजीब-सा झगड़ा सड़कों पर भी सुनते ही दिखाई दिया आन्ध्रप्रान्त के लोगों की बहुत बड़ी संख्या यहाँ बसी हुई है। एक से एक अच्छे कुशाग्र बुद्धि के विद्वान् यहाँ मिलते हैं। उनकी प्रान्तीय भाषा में एक बहुत बड़ा दैनिकपत्र 'आन्ध्र पत्रिका' निकलती है। उसके हजारों पाठक हैं।

शहर बहुत विस्तार में बसा है। मीलों लम्बा-चौड़ा शहर है। दूर-दूर घर बने हैं। सड़कें एक छोर से दूसरी छोर निकल गई हैं। आप पैदल शहर देखना चाहें तो कई दिन लग जायेंगे। गरीबी भी बहुत है। कितने ही लोग बिना घर-बार के पेड़ों के नीचे दिखाई पड़े। गरीबों का मुहल्ला एक तरह से अलग बसा है। सड़कें गन्दी हैं। दुर्गन्ध का पानी बदबू करता है। झोपड़ियाँ टूटी-फूटी हैं। कई हिस्से गिरे हुए हैं। स्त्रियों के बदन पर ठीक तरह से कपड़े नहीं। बच्चों के बदन से बदबू आती है। मैले-कुचैले दिखाई पड़ते हैं। मैं जान-बूझकर ऐसे मुहल्लों को देखने गया। शहर का जब अच्छा भाग देख लिया तब मेरे एक मित्र ने कहा कि असली बस्ती तो देखना बाकी है, उसे भी देख लो। मैं गया। ताड़ के और खजूर के पत्तों से अपनी छोटी-छोटी झोपड़ियाँ बना रक्खी हैं। जमीन गीली है। दुर्गन्ध आती है। खाने की हंडियाँ जूठी टँगी हैं। भरपेट भोजन नहीं मिलता। भूखे और मसीबतों के मारे हुए दिखाई पड़े। शिक्षा बिलकुल नहीं। मांग-जाँच करके पेट पालते हैं। कुछ लोग मजदूरी करने जाते हैं। आँख निकली है। बच्चे भूखे पड़े हैं। दूध-वही कहाँ? भरपेट अन्न नहीं पाते। यह एक-दो या सौ-पचास की संख्या नहीं है। हजारों की संख्या में बसे हुए हैं। भारतवर्ष का असली दर्शन ऐसे ही मुहल्लों में होता है। काम करना चाहते हैं। पढ़ना-लिखना उन्हें भी अच्छा मालूम होता है लेकिन क्या करें? सुविधा और साधन कहाँ? उनके मेहनत और शरीर का दुरुपयोग पूंजीवाद अपने मकान और खेतों में दिन रात लेता है। बड़े-बड़े दुमंजिले तिमंजिले चमंजिले पंचमंजिले मकान कौन बनाता है। सड़कों को कौन साफ़-सुथरा रखता है? आपके कपड़ों को कौन साफ़ करता है? खाने का पदार्थ कौन तैयार करता है? पहनने के कपड़े कौन बनाता है? क्या आप जानते हैं? कभी उनके ऊपर गौर किया है? आपके वे कौन हैं? उनके लिए आप कुछ कर सकते हैं या नहीं?

सड़कों पर नाम अँगरेजी में लिखा है। कहीं-कहीं तामिल भाषा में भी लिखा है। इधर के प्रमुख लोगों के नाम से सड़कों का नाम पड़ा है।

बाजार में अधिकतर इसी तरफ की चीजें बिकती हैं। खाने-पीने की वस्तुएँ अभी तक बहुत महँगी हैं। आप आसानी से अनुमान लगा सकते हैं। एक दिन फलवाले की दूकान पर मैं बेर खरीदने गया। एक बेर का दाम मुझसे एक आना लिया। नारियल इधर बहुत पैदा होता है लेकिन उसका मूल्य भी तीन-चार आने से कम नहीं। कोई भी चीज यहाँ सस्ती नहीं दिखाई दी। युद्ध के कारण यहाँ की आबादी बहुत बढ़ गई है। शहर में कई एक स्टेशन हैं। बड़ा सेंट्रल स्टेशन हबड़ा स्टेशन जैसा लगता है। शिक्षा का अच्छा प्रचार है। लोग सभ्य भाषी हैं। मकान नये ढंग के अब बन रहे हैं। शहर की आबादी कई लाख बढ़ गई है।

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

मद्रास के सुप्रसिद्ध विचारक और कांग्रेस-नेता चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचार्य।

मद्रास का प्रसिद्ध विक्टोरिया टेक्निकल इन्स्टीट्यूट का एक दृश्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

सेवा, त्याग, बलिदान और पेट की समस्या

आज हमारे देश में राष्ट्रीय संस्थाओं का अभाव नहीं है। जब तक देश पराधीन है तब तक तो इन संस्थाओं की संख्या दिन-दूनी रात चौगुनी बढ़ती जा रही है। स्वतंत्र होने पर इनकी संख्या इतनी ही रहेगी या इससे बढ़ जायगी, यह सवाल दूसरा है। यहां हम केवल यह बतलाना चाहते हैं कि इन संस्थाओं में जो लोग कार्य कर रहे हैं उनके वेतन की रूप-रेखा क्या है? क्या वास्तविक रूप में यह संस्थायें उनकी रोटी की समस्या का निराकरण करती हैं, यह प्रश्न विचारणीय है।

इन संस्थाओं में जो लोग काम करते हैं उनके हृदयान्तर्गत सेवा, त्याग एवं बलिदान की भावना तरंगित होती रहती है। इसी पवित्र भावना को लेकर वे इन संस्थाओं में काम करते हैं। इन 'तपस्वियों' का कार्यक्रम निश्चित रहता है। इनका एक मिनट भी व्यर्थ नहीं जाता। वे तन-मन से संस्था की सेवा करते हैं इसके परिणाम-स्वरूप संस्था की आर्थिक पृष्ठभूमि काफ़ी बुद्ध हो जाती है। कार्यकर्ता भी बड़ी लगन से कार्य करते हैं।

मेरी उत्तर भारतीय एक संस्था के कार्यकर्ता से पहली बार भेंट हुई। लम्बा शरीर, घुंघराले बाल, सांवला रंग, तन पर खादी के शुभ्र वस्त्र, नाक पर ऐनक, देखने में पूरे एम० एन० राय थे। मैं समझता था कि इनका वेतन कम से कम सौ रुपया होगा, तभी तो इस तरह ठाठ-बाट से रहते हैं। पर मेरा यह कोरा भ्रम निकला। एक मित्र के द्वारा मालूम हुआ कि उनका वेतन बहुत ही कम है। इसमें महंगाई भी सम्मिलित थी। मैं यह सुनकर दंग रह गया। खैर, उसी कार्यालय में एक और कार्यकर्ता को देखा। कद ठिगना, नाक चिपटी, आंखें धंसी, देखने में गोरखा करीले, चप्पल टूटी, कुर्ता फटा, पूरे कम्युनिस्टों की भांति। उनका वेतन था एक सैकड़ा। हमने कहा, आखिर इतनी असमता क्यों है? इस संस्था के पास काफ़ी सम्पत्ति है।

इस युद्ध-जनित अवसर पर भी छोटी श्रेणी के कार्यकर्ताओं का वेतन १५ के लगभग और मध्यम श्रेणी के लोगों का ३० के लगभग है। उच्च श्रेणी के लोगों का ५० से कुछ अधिक और आस-पास। विशेष श्रेणी को सौ के आस-पास। इससे आगे किसी का भी नहीं। यह क्रम प्रायः सभी राष्ट्रीय संस्थाओं में है। एक भाई ऐसे भी हैं जो कहने को तो ५० रु० ही वेतन लेते हैं, पर उनका भत्ता ही पांच सौ तक बन जाता है। जान पड़ता है यही सबसे बड़ा 'त्याग' है। इसमें इस प्रकार की उलझी हुई समस्याएं विचारणीय हैं?

इन संस्थाओं में दो प्रकार के व्यक्ति काम करते हैं। कुछ तो इतने अयोग्य हैं कि नौकरी छूट जाने पर कहीं दूसरी जगह उनकी पूछ भी नहीं हो सकती। दूसरे लोग वे हैं जो योग्य होते हुए भी दीर्घकाल तक की अपनी सेवाओं का सिंहावलोकन करते हुए उसी में लगे रहते हैं। सोचते हैं, अब तक निभ जाय, सेवा करते चलो। यही कारण है कि प्रत्येक संस्था का कार्यकर्ता संस्था को अपनी सम्पत्ति समझकर काम करता है। पर क्या संस्था कार्यकर्ता को अपना समझती है? दोनों की विचार-धाराओं में यही अन्तर हो जाता है।

यहां एक विलक्षण घटना का उल्लेख कर देना अप्रासंगिक न होगा। वर्धा की राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति के परीक्षा-मंत्री ने 'कोविद' की कुछ उत्तर पुस्तकें हमें निरीक्षणार्थ दीं। हमने रात-दिन एक करके यह 'सेवा'-कार्य किया। जब पारिश्रमिक का बिल बनाकर भेजा तो व्यवस्थापक तथा परीक्षा-मंत्री की परेशानी बढ़ गई। अरे, इनको क्यों पारिश्रमिक दिया जाय? ये तो हमारे वेतनभोगी हैं। मैंने कहा मैं कार्यकर्त्ता नहीं, मजदूर हूँ। जितने दिन काम करता हूँ, उतने दिन के पैसे लेता हूँ। उच्चाधिकारियों ने फरमाया कि आप लिखकर दे दें कि मैं मजदूर हूँ। मैंने लिखकर दे भी दिया, फिर भी कुछ पता नहीं चला। हमने भी सोचा कि महावीर जी को लड्डू चढ़ाने के बदले हम यह समझ लेंगे इन्हीं दो महावीरों को लड्डू चढ़ा दिया। यह कहानी इसलिए कहनी पड़ी कि ऐसे कार्य भी इन राष्ट्रीय संस्थाओं में होते हैं।

इन संस्थाओं में दो ही प्रकार के व्यक्ति रह सकते हैं। एक तो वह जिनके घर कोई न हो, जितना मिले, खाया, पिया, मस्त। दूसरे वे जिनके पास पूंजी की कमी नहीं। घर से भी उनको लेने के देने पड़ जाते हैं। इन दो प्रकार के व्यक्तियों के अतिरिक्त जिनके पास आर्थिक कठिनाइयों के हल करने का कोई साधन नहीं, उनके लिए यह सेवा, त्याग और बलिदान मृत्यु को आह्वान करने का साधन बन जाता है। इस समस्या को सुलझाने के लिए अगर कोई कार्यकर्त्ता दूसरी जगह से प्रयत्न करता है तो ऊपर के अधिकारी यह सोचने लगते हैं कि हमारे नीचे काम करनेवाला हमसे ज्यादा क्यों कमाय? तब यह हल्ला होने लगता है कि फलां कार्यकर्ता दो जगह काम करता है, इसलिए उसकी शक्ति क्षीण होती जाती है। आदि।

सच तो यह है कि राष्ट्रीय संस्थाओं में काम करना सौभाग्य की बात है, करना और खूब करना चाहिए, किन्तु "भूखे भजन न होइ गोपाला, ले लो अपनी कंठी-माला।"

हम इसके पक्षपाती हैं कि कार्यकर्त्ताओं से अच्छा काम लिया जाय और उन्हें अच्छा दाम भी दिया जाय। उनको अपनी आर्थिक कठिनाई के लिए दूसरों की शरण में न जाना पड़े। राष्ट्रीय संस्थाओं की आज की यह समस्या एक उलझी हुई पहेली है जिसे सुलझाने के लिए उच्चाधिकारियों को प्रयत्नशील होना चाहिए। इसी में कार्यकर्त्ताओं तथा संस्थाओं दोनों का हित है। त्याग, सेवा और बलिदान के लिए उनकी कम से कम पेट की समस्या अवश्य हल होनी चाहिए।

वर्धा ---भगवानप्रसाद त्रिपाठी
३ जनवरी, ४६ (पत्रकार)

* * *

संघर्ष के बाद

किसी-भी धर्म का प्रचार जीवन में बन्धुभाव लाने के लिए ही हुआ, किन्तु, जहाँ विभिन्न धर्मों में छोटी-छोटी बातों में मतभेद हुआ वहां विचारों की अव्यापकता के कारण युद्ध का ही प्रादुर्भाव हुआ। शास्त्रार्थ भी इस मतभेद का ही एक परिणाम था। इस भांति अपने-अपने धर्मों को व भावनाओं तथा रूढ़ियों को पकड़ रखने की प्रवृत्ति सदा सितम ही ढाती रही; और जिन राष्ट्रों ने इन मतभेदों व स्वार्थ के संघर्षों के परिणाम का अध्ययन किया, उन्होंने धर्म को व्यापक रूप दिया---लोगों में राष्ट्रीय-धर्म का प्रचार किया।

मानव-सभ्यता के विकास का इतिहास साक्षी है कि मानव-जीवन के मतभेदों और संघर्षों को कम करने के लिए व्यापकता के जितने भी प्रयत्न हुए, सब किसी भयंकर संघर्ष के बाद ही हुए। भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में संघर्ष होने के बाद कुटुम्ब बने, भिन्न-भिन्न कुटुम्बों में संघर्ष होने के पश्चात् समाज और जातियाँ बनीं---उसके बाद राज्य बने। भिन्न-भिन्न राज्यों में संघर्ष होने के बाद ही साम्राज्य बने और राष्ट्रीय-भावना का आगमन हुआ। यदि यह सत्य है तो प्रश्न उठता है कि भिन्न-भिन्न राष्ट्रों में विश्वव्यापी महायुद्ध के बाद क्या अब विश्ववादी भावना का आगमन होगा?

आज विश्व में चिरशान्ति स्थापित करने के प्रयत्न किये जा रहे हैं, क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र युद्ध के भयंकरतम रूप को देख चुका है और युद्ध को बुरी चीज मान रहा है। आज प्रत्येक मानव समझ चुका है कि यदि भविष्य में एक भी युद्ध हुआ तो सारी पृथ्वी मानव-रहित हो जायगी। इस 'समझ' के लिए हमें आटमबम और उसके आविष्कारकों के कृतज्ञ होना चाहिए। जिन सिद्धान्तों का प्रचार भारत अति प्राचीन काल से करता आया है, उन सिद्धान्तों की सच्चाई और व्यावहारिकता तथा वास्तविकता को बुरी तरह हानि उठाने के बाद आज सारा विश्व मान रहा है। वे सिद्धान्त हैं---अहिंसा और विश्व-बन्धुत्व की भावना। प्राचीन ऋषियों ने संदेश दिया कि सम्पूर्ण सृष्टि के मानवों को अपना बन्धु समझो और अहिंसा का आचरण आजीवन करते रहो। यही संदेश भगवान बुद्ध ने भी दिया और गुरुवर रवीन्द्रनाथ ने भी। किन्तु अब तक मानवता मानो सोई हुई थी---अहिंसा और मानववाद के सिद्धान्त अव्यावहारिक समझे जाते रहे। आज विश्व आँखें खोलकर देख ले कि विश्वगुरु भारत के संदेश में कितनी सत्यता थी और है।

आचार्य विनोबा कहते हैं---संदेह नहीं कि हिंसा के व्यापकतम और विकरालतम प्रयोग के बाद संसार अहिंसा की महत्ता को समझेगा---जिस प्रकार दुःख के बाद सुख और उष्णता के बाद शीतलता का महत्त्व मानव समझता है। आगे चलकर वे कहते हैं---"यदि संसार के हिंसा-प्रेमी राष्ट्र अभी-भी हिंसा से तृप्त नहीं हैं तो मेरी ओर से उन्हें अनुमति है कि वे अटम बम से भी अधिक भयंकर और विनाशकारी अस्त्रों-द्वारा युद्ध और हिंसा कर लेवें। उस विकरालतम युद्ध के बाद मानव नाम का कोई प्राणी संसार में बच रहेगा, इसमें मुझे संदेह है; किन्तु यदि दस-पाँच या हजार-पाँच सौ व्यक्ति बच भी पाये तो मुझे दृढ़ विश्वास है कि वे अवश्य ही विश्ववाद का महत्त्व समझेंगे और अहिंसा को व्यवहार में लावेंगे।

वर्धा
१ फरवरी ४६ ---रामकिशोर पशीने

धातुपौष्टिक
कामजोत वटी
स्वप्नदोष, वीर्यविकार, शीघ्रपतन, सुस्ती व कमजोरी दूर करके बल व वीर्य बढ़ाकर जवाँमर्द बनाती है। (डि० रु० २॥)
कामजोत तिला
इसके उपयोग से इन्द्रियों की नसें व अवयव मज़बूत होकर उत्थानशक्ति और स्तम्भन-शक्ति बढ़ती है। (फ़ी० २॥)
मदनमंजरी फार्मेसी जामनगर
कलकत्ता ब्रांच---१७७, हरीसन रोड
इलाहाबाद---मदनस्टोर्स ४७ जान्स्टनगंज
बनारस एजेन्ट---राधेलाल ऐण्ड सन्स, चौक

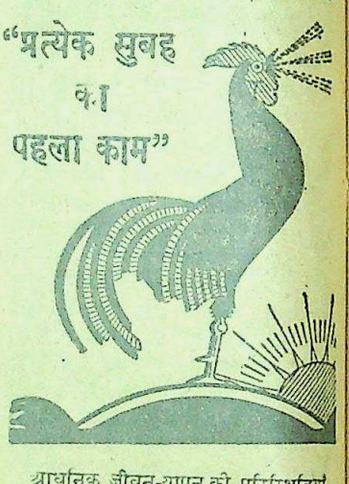

आधुनिक जीवन-यापन की परिस्थितियाँ पाकस्थली में अम्लता पैदा कर देती हैं, जिसके कारण पाचन-सम्बन्धी शिकायत उत्पन्न हो जाती है। ताज़गी देनेवाले इनोज़ 'फ्रूट साल्ट' का एक गिलास शारीरिक क्रियाओं को व्यवस्थित करता है, समस्त विषों का शमन करता है, लिवर को स्फूर्ति देता है और अम्लता को निराकरण करता है।
ईनोज़ "फ्रूट साल्ट"
इनो व "फ्रूट साल्ट" शब्द रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है।

बालसखा का नया वार्षिकांक
एक महीने में प्रकाशित होगा। पाठक धैर्य रक्खें।
ग्राहकों के अनुरोध से हमने इस वर्ष भी बालसखा का वार्षिकांक निकालने का निश्चय किया है। इसमें बहुत से चित्र, कविताएँ, कहानियाँ, बढ़िया लेख और उपयुक्त सामग्री रहेगी। पृष्ठ-संख्या ३०० से ऊपर। यह अङ्क बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होगा। यह मासिक बालसखा के १२ अंकों से पृथक् है। मूल्य ३)। मासिक बालसखा के ग्राहकों के लिए रियायती मूल्य २॥)
रियायती मूल्य के लिए अपना ग्राहक-नंबर अवश्य लिखिए।
मैनेजर, बालसखा, इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र के दो पहलू

लेखक, श्री शिवसेवक मिश्र, एम० ए०, एल० एल० बी०

आधुनिक युग में आकस्मिक प्रेम और आकर्षण का एक नया रोग प्लेग के कीटाणुओं की भाँति फैल रहा है। हमारा पठित समाज इस रोग का शिकार प्रायः बनता रहता है। इस छोटी कहानी में भी इसी प्रकार की एक रोमांचक घटना का चित्रण किया गया है, जिसमें चित्र के दोनों पहलुओं की ओर ध्यान आकर्षित होता है। कहानी रोचक और सुन्दर है।

जीवन में प्रथम बार ही मैंने किसी के प्रति सहानुभूति दिखलाई और प्रथम बार ही मैंने किसी के आत्म-समर्पण का अनुभव किया। जीवन में प्रेम-मार्ग पर मेरा वही पहला कदम था।

वह यद्यपि अद्वितीय सुन्दरियों में नहीं थी, फिर भी उसके भरे हुए गालों में आकर्षण था, चेहरे पर भोलापन था और आँखों में चपल चंचलता थी। अधरों की लाली में दूसरों को अपने रंग में रंगने की क्षमता थी। वह मेरी ओर कुछ क्षण एक टक देखकर, थोड़ा मुसकुरा पड़ी। मेरे लिए वही उसका पहिला मौन निमंत्रण था। फिर क्यों न वह मुसकान मुझे अपनी ओर आकर्षित कर लेती? क्यों न मैं उस निमंत्रण को स्वीकार करता? फिर भी मुझमें कुछ झिझक तो थी ही। क्योंकि जीवन में पहली बार मैंने कुछ सिहरन का अनुभव किया था। संयोग की बात है। अकस्मात् दो अपरिचित मिले और प्रथम दर्शन में ही चिर-परिचित से मालूम पड़े। फिर भी दोनों ओर कुछ संकोच तो रहा ही।

❀ ❀ ❀

प्रायः मिलते-जुलते हम लोग एक दूसरे के बिलकुल निकट पहुँच गये। बातों ही बातों में दो हृदयों पर पड़े हुए परदे स्वयं हट गये। हम आकर्षण के प्रवाह में बहते जा रहे थे। वह मुझे स्वर्ग का देवता समझने लगी, इसलिए मुझे भी उसे स्वर्ग की अप्सरा स्वीकार ही करना पड़ा। मेरे नजदीक बैठी हुई उसने बतलाया कि उसे ऐसा मालूम होता है कि उसने उस जन्म में बड़ी तपस्या की थी, तभी आज उसे यह सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। जन्म-जन्म तक अपने एकमात्र प्रेम को जीवित रखने का विश्वास दिलाते हुए उसने यह भी बतलाया कि स्त्रियाँ केवल एक ही बार प्रेम करती हैं। मैं बदल सकता था किन्तु वह भी बदल सकती है, इसकी मैंने कभी स्वप्न में कल्पना भी नहीं की थी। सचमुच हम दोनों दो शरीर एक प्राण बन गए थे। जीवन में प्रथम बार ही मुझे किसी के आत्म-समर्पण का वास्तविक अनुभव हुआ।

प्रेम की उस अपूर्व रूपराशि को अपनी ओर खींचते हुए मैंने उसके कानों में धीरे से कहा "क्या यह सत्य है?" और फिर आँखें बन्द हो गईं। जीवन में प्रेमपथ पर मेरा वही पहला क़दम था। किसी के आने की आहट हुई और हम दोनों सचेत हो गये।

● ● ●

वह थी विधवा सुहागिन। होश सँभलने भी न पाया था कि तभी वह विवाहसूत्र में बँध चुकी थी, पर उसके 'वह' थे जुआरी, लम्पट, गँवार, अशिक्षित, गाँव में किसी तरह जीवन काटनेवाले और इतने पर भी एक दूसरी स्त्री के पीछे दीवाने। यौवन के प्रथम आगमन पर जब उसे यह बतलाया गया कि वह विवाहित है और उसके जीवन-साथी इस प्रकार के हैं तो उसे बड़ा दुख हुआ। हृदय में वेदना तो हुई, फिर भी उस समय उसे अपना स्थान उनके चरण-कमलों में ही ढूँढ़ने की इच्छा हुई। वे कैसे भी हों, हैं तो उसके ही। परन्तु दूसरी कली पर झूमते हुए उस भौंरे को अपनी ओर खींचने की उसमें शक्ति नहीं थी। प्रयत्न बेकार हुए। उन्हें फुर्सत न थी कि वे उसकी ओर देखते।

पति-प्रेम से वंचित, उनके पाने के अवसर से भी वंचित और अब अपने में उनको प्राप्त करने की इच्छा से भी वंचित, वह सचमुच एक विधवा सुहागिन थी। शहर में रहकर, पढ़कर और पढ़ाकर वह जीवन काटना चाहती थी। यह सब कुछ जानकर ही जीवन में प्रथम बार मैंने भी किसी के प्रति सहानुभूति दिखलाई थी।

● ● ●

पग-पग पर प्रतिबन्ध थे। मिलने के अवसर के कुछ क्षण यदि मिल भी पाते तो कोई न कोई आकर वह अवसर भी अपने साथ ले जाता और छोड़ जाता, चार तृषित नेत्रों और दो रूपों में एक जला हुआ हृदय, जिसकी आह में उसको जलाकर भस्म कर

देने की प्रबल इच्छा होती। दिन किसी तरह बीत रहे थे पर मिलने के अवसर की प्रतीक्षा की घड़ियाँ, उसके देखने और मुसकुरा देने से ही कट रही थीं। वह उसकी आदत अजब और गजब की थी! मैं मंत्र-मुग्ध-सा हो जाता। कभी-कभी वह प्रेम की एक लाइन गुन-गुनाती हुई, मेरे समीप से, मेरे पैर की अँगुली दबाती हुई चली जाती। मैं चाहता कि उसे रोकूँ, पर मेरे हाथ मेरी भावना का साथ न देते। न वह उठते और न वह रुकती। चारों ओर बीसियों आँखें उसकी ओर लगी हुई थीं। चोर कहीं पकड़ न जाय, यही डर था। हाँ समाज की नजरों में मेरी यह चोरी थी, यद्यपि वह मेरी थी।

● ● ●

'जीवनधन, प्रणाम,

इतने दिन हो गये तुम न मिले। बहुधा तुम बाहर ही रहते हो। यदि तुम्हें ऐसा ही करना था तो मुझे प्रेम का पाठ पढ़ाया ही क्यों? तुम एक स्वप्न बनकर आये थे तो क्या स्वप्न बनकर ही रह जाओगे? मैंने न जाना था कि प्रेम में उत्पीड़न की इतनी शक्ति है? यह मेरा प्रथम और अंतिम प्रेम है। मनुष्य कुटिल हुआ ही करते हैं पर मैं तो तुम्हारी बन चुकी हूँ। तुम चले जाते हो तो सूना-सा मालूम होता है। क्या ही अच्छा होता कि तुम मुझे अपनी फोटो दे सकते, जिससे तुम्हारे अभाव की मैं थोड़ी बहुत पूर्ति कर सकती।

शेष अवश्य मिलने पर।

—वही

प्रथम पत्र मिला, और फिर मिलते ही गये। छोटे-मोटे अवसर मिले और मिलते ही गये। प्रेम बढ़ा और बढ़ता ही गया। दोनों का प्रथम प्रेम था, नई उमंगें थीं, अरमान बहुत थे पर प्रतिबन्धों की भी कमी नहीं थी। योंही जीवन चल रहा था।

* * *

मेरे मित्र कुछ चिन्तित से बैठे थे। एक काग़ज का टुकड़ा उनके हाथ में था। चेहरे पर कभी गंभीरता तो कभी क्रोध और कभी मुसकान। कभी वे उस काग़ज को पढ़ने लगते—कुछ चिन्तित, परेशान और कुछ खोये से। मेरे पहुँचने से भी उनका ध्यान न टूटा। चेहरा यद्यपि मस्तिष्क की भावनाओं का सूचक होता है, पर प्रयत्न करने पर भी मैं पहेली न बूझ सका।

"क्या बात है?" मैं पूछ ही तो बैठा।

वे चौंक से उठे, काग़ज छिपाना चाहा पर वह मेरे अधिकार में आ चुका था।

"क्यों आज अकेले रोते भी हो और हँसते भी?" मैंने उनकी वेदना को छेड़ दिया।

वे अपने को रोक न सके। बोले—"क्या बताऊँ जब से मैंने उसे उस आदमी के साथ धीरे-धीरे से बातें करते देखा है, मुझे चैन नहीं है, मुझे विश्वास नहीं होता, यद्यपि इन्हीं आँखों से देखा है। यह देखो उसका चौथा पत्र है। आज ही दोपहर को उसने किताब के भीतर रखकर भिजवाया था। वह मुझसे प्रेम करती है और मैं उससे। मिला हूँ पर अधिक नहीं। कुछ शक होता जरूर है पर चुप लगा जाता हूँ। शंका पर विश्वास करने से क्रोध आता है, परन्तु उसी क्षण, मैं सोचता हूँ कि शायद वह योंही कुछ और बात कर रही हो। मैं उस पर शक क्यों करूँ और मैं मुसकुराने लगता हूँ परन्तु....."इसके आगे वह कुछ न कह सके, उठे और चल दिये। मैं भी चल पड़ा, पत्र मेरी जेब में था, वह पहेली-पहेली ही बनी रही।

* * *

उस दिन क्षण भर के लिए वह मिली और जेब में एक पत्र डालकर भाग गई। उधर से कोई आ रहा था। मैं तड़प उठा। मैं बात भी न कर सका।

शीघ्र ही कमरे में पत्र पढ़ना चाहा। जेब से हाथ निकालते ही निकल पड़े दो पत्र। ऐं, यह दो पत्र कैसे और याद आया कि कल ही तो मैं मित्र के हाथ से एक पत्र ले आया था।

दोनों ही पत्र एक ही लेटर पेपर पर, एक ही स्याही में, एक ही राइटिंग के, हाँ दोनों ही पत्र उसी के थे। मुझे मित्र की सब बातें याद आ गईं। 'जीवनधन प्रणाम' से प्रारम्भ करके उसने मेरे मित्र को लिखा था "कल तुमने जो चमेली के फूल दिये थे, वे कितने सुन्दर थे, उनमें कितनी अच्छी महक थी। ये फूल मुरझा सकते हैं लेकिन इनके पीछे छिपा हुआ हमारा तुम्हारा वह पवित्र प्रेम भी क्या कभी मुरझा सकता है?"

मैं आगे पढ़ न सका। अपना पत्र तो खोला भी नहीं। उठा और उन सभी पत्रों को उठा लाया जिसे उसने समय समय पर मुझे लिखे थे और जो अब तक मेरी जीवननिधि थे। उनकी सम्मिलित राख की कालिमा में ही मैंने जीवन में प्रथम बार सत्य के दर्शन किये।

● ● ●

मैंने कई बार चाहा कि मित्र को बतला दूँ कि उनकी शंका केवल शंका ही नहीं थी। परन्तु न मालूम क्यों मैं ऐसा न कर सका। उससे भी कुछ न कह सका। मैं अब भी उसे देखकर मुसकुरा देता हूँ। अवसर मिलने पर अब भी मिल लेता हूँ। प्रेम की दो बातें भी कर लेता हूँ। दूसरे तीसरे मुसकुराते हुए खेला भी करता हूँ, उसके बिना पढ़े हुए पत्रों की राख से। वहीं, केवल वही, उसी अवसर पर वह मुझसे मिलती है, खुले हुए हृदय से और मैं अपने परिवर्तित और जीवन के सच्चे स्वरूप में।

भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड तथा पेटेन्ट
पता—भारत कं० रजिस्टर्ड शिकोहाबाद यू० पी०
•व्यापार में धोके और नकल से बचने के लिये देर मत करो, अपने लेबिल, डिजाइन, संस्कृत या पदवीओं आदि के नाम की रजिस्ट्री नये एक्ट में हमारे द्वारा ही रजिस्ट्री नियम मुफ्त मंगाइये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

व्याकरणाचार्य पंडित कामताप्रसाद गुरु

साहित्यिक जीवन की कुछ स्मृतियाँ

लेखक, पंडित लल्लीप्रसाद पांडेय

पंडित कामताप्रसाद गुरु उस सागर के रत्न हैं जो सी० पी० में है। इधर लगभग ४० वर्ष से आप जबलपुर में रहने लगे हैं। आपका समस्त जीवन शिक्षा-दान में व्यतीत हुआ है। नार्मल स्कूल और मॉडल स्कूल में अधिक समय तक शिक्षा-दान करके आपने अनेक वर्ष पूर्व अवकाश ग्रहण किया। स्कूल का कार्य करते समय ही आपने हिन्दी का कार्य सबसे अधिक किया। पेंशन लेने पर आप और भी अधिक हिन्दी की सेवा कर सकते; परन्तु आधि-व्याधियों ने अधिक कार्य नहीं करने दिया; फिर भी आपने जितना कार्य सम्पन्न कर दिया है वही आपको स्मरणीय रखने के लिए पर्याप्त है। हिन्दी की सेवा का आपको व्यसन रहा है। इसी कारण आपके हाथ से महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुए। सम्भवतः आधिक आकर्षण आपसे ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्य कराने में सफल न होता।

मध्यप्रदेश में उस समय हिन्दी की ध्वजा फहराने की जिनको प्रेरणा हुई थी उन गिने-चुने लोगों में गुरु जी हैं। आप स्वर्गीय पंडित माधवराव जी सप्रे के साथी और मित्र हैं। उस समय हिन्दी-सेवा का पुरस्कार क्या था जब आजकल भी इस दिशा में कुछ अधिक प्रगति नहीं हुई है। उस समय तो अपना कर्त्तव्य समझकर ही गुरु जी और उनके अन्य मित्र हिन्दी की सेवा में दत्तचित्त थे। आप लोगों की देखा-देखी और लोग भी इस ओर दीक्षित हुए और यह लिखते प्रसन्नता होती है कि आज मध्यप्रदेश में कवियों और लेखकों का बड़ा-सा बल बन गया है जो हिन्दी के मिशन को चलाने के लिए बद्धपरिकर है।

गुजराती के नामी कवि दयाराम ने लिखा है—'वस्तुने शुं जाने व्याकरणी'। वैयाकरण तो शब्द-शास्त्र का पंडित होता है, शुद्धाशुद्ध के फेर में रहा करता है, उसे सार वस्तु का क्या पता? जैसे 'बरणी' में घी भरा रहता है पर वह घी की सुगन्ध और स्वाद को नहीं जानती। परन्तु गुरु जी वैयाकरण पीछे हैं, सरस कवि पहले। उनके कवि हृदय में आज भी वैयाकरण से पहले की खासी सरसता है। अवसर पाकर वे उसको प्रकट करने से नहीं चूकते। उर्दू-फ़ारसी के वे खासे ज्ञाता हैं, इस कारण सन् १६ के लगभग पंडित लक्ष्मीधर जी वाजपेयी आदि, नागपुर में रहते समय, आपको मौलवी साहब कहने लगे थे। अभी सन् ४४ की बात है। आपने उर्दू शायरों की तबीअतदारी के सिलसिले में कहा कि मौत का वर्णन करने में भी उर्दू कवि व्यंग्य करने से नहीं चूकते। प्रमाण में ये शेर कहे—

आबले का बाँकपन न गया बादे मर्ग भी।
तलवे पै लिटाया तो वहाँ भी अकड़ गये॥
कल तो कहते थे कि मुझमें चलने की ताक़त नहीं।
आज दुनिया से चले जाने की ताक़त आ गई!

* * *

क़ाबानशीं सुने तो कहें उससे दर्दे-दिल।
क़ाबे में ईंट-चूने से पत्थर से क्या कहें।

शायर ने कैसी करामात दिखाई है और गुरुजी को ये शेर मुद्दत से याद हैं। वे कवि की सूझ की प्रशंसा करते हैं।

गुरुजी उर्दू-फ़ारसी के ज्ञाता होते हुए भी भाषा की शुद्धता के पक्के समर्थक हैं। उनकी संस्कृतनिष्ठ हिन्दी को देखने से पता नहीं चलता कि ये यावनी भाषा के मर्मज्ञ होंगे। सुना है कि हिन्दी में कविता लिखने से पहले आप उर्दू में शायरी करते थे। आजकल के हिन्दुस्तानी-परस्त गुरुजी को न जाने क्या समझेंगे।

प्रयाग के द्विवेदी-मेले की बात है। मैं काशी से आया तो मेले में पता चला कि गुरुजी भी आये हैं और मुझे ढूंढ़ रहे हैं। जहाँ पर हास्यरसावतार पं० जगन्नाथ-प्रसाद चतुर्वेदी ठहरे हुए थे, वहीं गुरुजी टिके थे। दोनों सज्जनों में मनोविनोद होने लगा। मैं तो सुनकर हँसते-हँसते लोट-पोट हो गया। गुरुजी ने मान लिया कि चतुर्वेदी जी परिहास में प्रथम कोटि में हैं। पास ही जी० पी० श्रीवास्तव भी ठहरे हुए थे। वे कुछ संजीदा-सा मालूम होते थे। मैंने चतुर्वेदीजी से कहा कि 'लम्बी दाढ़ी' के लेखक में खोज नहीं जान पड़ता तो उत्तर मिला कि लतखोरीलाल हैं। श्रीवास्तव जी भिड़े हुए थे अपना व्याख्यान लिखने में। वे किसी उत्सव के अध्यक्ष बनाये जाने को थे। या फिर हँसोड़ होने की कला उनमें अधिक न रही हो।

गुरुजी के कार्यों का यह संक्षेप में ब्योरा है।

(१) प्रकाशित रचनाएँ—सत्य-प्रेम (उपन्यास) और भीमासुरवध (काव्य)—अप्राप्य (१८९५)

(२) शुभचिन्तक, जबलपुर टाइम्स और छत्तीसगढ़मित्र में लेख और कविताएँ (१८९२-९८)

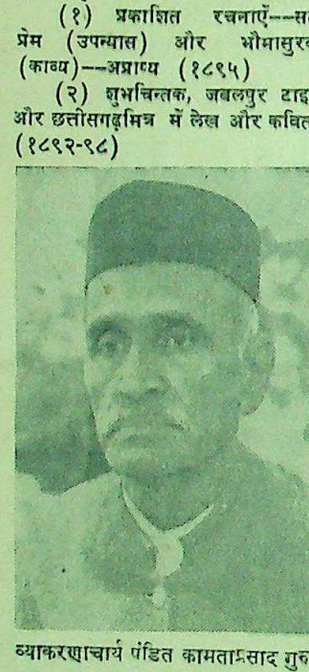

व्याकरणाचार्य पंडित कामताप्रसाद गुरु

(३) नागपुर की हिन्दी ग्रन्थमाला में लेख और कविताएँ।

जिस अमर कविता के बल पर गुरुजी कवि माने जा सकते हैं वह है "बेटी की बिदा" जो सन् १९०५ में सरस्वती में प्रकाशित हुई थी।

पद्य पुष्पावली (कुछ कविताओं का संग्रह) १९२४ ई०, अन्त्याक्षरी (अन्य कवियों की सूक्तियाँ) १९२५ ई०, पद्य-समुच्चय (प्रतिनिधि कवियों की कविताओं का संग्रह) १९२९ ई०, सुदर्शन (नाटक) १९३४ ई०, हिन्दुस्थानी शिष्टाचार (नीति-विषयक) १९३६ ई०, बाल-पद्यावली (बालकोपयोगी पद्य-संग्रह) १९३७ ई०, देशोद्धार (नीतिविषयक निबन्धों का संग्रह) १९४० ई० में प्रकाशित हुआ था।

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने बहुत पहले जो कविता-कलाप (कविता-संग्रह) संपादित किया था उसमें और हिन्दी-कोविद रत्नमाला में आपको स्थान मिला था। कविता कौमुदी आदि में तो आप हैं ही।

गुरुजी के जीवन में सबसे बड़ी साधना है उनका व्याकरण जिसका प्रकाशन काशी की नागरीप्रचारिणी सभा ने किया है। यह ग्रन्थ लिखने में गुरुजी ने १० वर्ष तक अथक परिश्रम किया था। यह ऐसा ग्रन्थ-रत्न है जिसके कारण सभा और गुरु दोनों ही धन्य हुए हैं। इस व्याकरण के आधार पर न जाने कितने लेखकों ने पुस्तकें लिखी हैं और आगे भी लिखेंगे। इस विषय में इधर लोगों को परिवर्तन और परिवर्धन की आवश्यकता प्रतीत हुई है, पर मुख्य आधार गुरुजी का परिश्रम ही है। उनके परिणत वय का यही लाभ हिन्दी भाषा को प्राप्त हुआ और इसी के फल-स्वरूप गुरुजी हिन्दीवालों के आदरणीय हैं।

गुरुजी को 'सभा और सम्मेलनवाले' अच्छी तरह जानते हैं; फिर भी उनके उपयुक्त सम्मान करने का प्रयत्न इन संस्थाओं ने नहीं किया। इधर कुछ वर्ष हुए कि सभाबालों ने आपको अपना मान्य सदस्य बना लिया है सही, किन्तु आदर देने के जो और पद हैं उन पर समासीन करने की कृपा उसने अभी तक नहीं की है। सम्मेलन के लिए क्या कहा जाय। वह तो साहित्य-सेवकों के प्रति एक प्रकार से उदासीन है। राजनीति के दाँव-पेंचों से यदि वह दूर रहता तो अवश्य साहित्यसेवियों को सम्मानित करने का स्मरण रखता। वह कभी अपने वार्षिक अधिवेशन की अध्यक्षता के लिए गुरुजी का विचार तो करने ही क्यों लगा, उसकी जिस साहित्य-समिति की अध्यक्षता जहाँ आधुनिक लेखकों ने एकाधिक बार कर ली है उस तक के लिए गुरुजी का नाम प्रस्तावित नहीं हुआ। खैर, इसके लिए जनमत की दुहाई दी जा सकती है; किन्तु साहित्य वाचस्पति की उपाधि देने में ही अब तक क्यों कृपणता की गई?

कुछ भी हो, गुरुजी को ऐसी प्रतिष्ठा की कामना नहीं है जो प्रचार की सहायता से प्राप्त हो। वे तो प्रचार से बहुत दूर हैं। उनकी साधना ने उनको वह स्थान दिया है जो सम्मेलन-सभापतियों के लिए भी दुर्लभ है। फिर अब तो वे ७० वर्ष के वृद्ध हैं। शरीर जीर्ण है। कहीं आने-जाने में उन्हें कठिनाइयाँ हैं। इसी कारण दिसम्बर सन् १९४५ में नागपुर में हुए मध्यप्रान्त वि० हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की अध्यक्षता उन्होंने सधन्यवाद अस्वीकृत कर दी। योग्य का आदर करने से आदर करनेवाले की प्रशंसा होती है और आदरणीय तो पहले से ही सम्मानित रहता है।

यहाँ गुरुजी के सम्बन्ध में 'कर्मवीर' और स्वराज्य का अभिमत दिया जाता है जिससे स्पष्ट होगा कि जनता में आपके प्रति कितनी श्रद्धा है—

वयोवृद्ध पंडित कामताप्रसाद जी गुरु राष्ट्र-भाषा हिन्दी के पाणिनि और मध्य-प्रदेश के सुप्रसिद्ध साहित्य-स्रष्टा हैं। हिन्दी की किसी भी अ० भारतीय साहित्य-संस्था में गुरुजी महाराज न केवल सम्मान की वरन् पूजा की वस्तु हैं। यदि प्रचार का, राष्ट्र-भाषा-प्रचार का हल्ला-सा देश में न मचा होता और हिन्दी-साहित्य-सेवी द्विवेदी-युग के मनीषियों के अनुभव से लाभ उठाने की दूरदृष्टि से काम लेते तो आज से बहुत पहले गुरुजी का सम्मानीय स्थान हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का सभापतित्व होता। नागरी-प्रचारिणी सभा, जिसके तत्त्वावधान में श्रद्धेय गुरुजी ने व्याकरण की रचना की, आज भी अपनी सीमा का गौरव-पूर्ण आदर देकर साहित्य के इतिहास को, वर्तमान के द्वारा तिरस्कृत होने से बचा सकती है। गुरुजी में अपने अच्छे विचारों के प्रकटीकरण में उज्ज्वल निर्भीकता रही है। उन्होंने भाषा के उस समस्त पर, जो गद्य और पद्य के लेख में पनपा है, अपनी सहमति या स्वीकृति की मुहर नहीं लगाई। क्योंकि विचारों के वाहन अथवा आवाहन के रूप में भाषा की विशुद्धता की गुरुजी अवहेलना नहीं देख सकते। गुरुजी महाराज ने पिछले तीन युगों को अपने सामने पनपता, फूलता और फलता देखा है।...हम, सूरज डूब जाने पर, दुर्गन्धित लालटेनें ढूंढ़नेवाले लोग, समय से पहले ही अपने पूजास्थान की पूजा की ओर अनुरक्त क्यों न हों?

—श्री माखनलाल चतुर्वेदी
२२-१२-४५

वयोवृद्ध पं० कामताप्रसाद जी गुरु 'सरस्वती' - काल के हिन्दी-सेवी हैं। एक जमाना था जब हिन्दी के प्रमुख कवियों में उनका नाम आदरपूर्वक लिया जाता था। काव्य का क्षेत्र छोड़ देने पर आप एक वैयाकरण के रूप में प्रसिद्ध हुए। आपकी यह प्रसिद्धि अभी तक अक्षुण्ण है। प्राचीन साहित्य-सेवियों को सम्मान देने की दृष्टि से गुरुजी को अखिल-भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति के आसन पर आसीन किया जाना चाहिए था; पर वह पद अब शुद्ध साहित्य-सेवा के लिए ही सुरक्षित नहीं रह गया है। उस पर सेठ-साहूकार, राजा-महाराजा और अन्य भाषा-भाषी आदि सभी विराज सकते हैं।

हिन्दी स्वराज्य
११-१२-१९४५

इधर गुरुजी सच्चे अर्थ में जरठ हो गये हैं। शरीर उनका रुग्ण रहता है मुद्दत से। अन्य झंझट भी हैं। इस कारण हिन्दी की प्रत्यक्ष सेवा वे नहीं कर पा रहे हैं। किन्तु उनके पुत्रों को उत्तराधिकार में हिन्दी-सेवा मिली है। वे लोग गद्य-पद्य द्वारा उस परम्परा की रक्षा कर रहे हैं जो उनके आदरणीय पिता ने स्थापित की है। आशा है, गुरु-पुत्र लोग आगे चलकर हिन्दी का ऐसा महत्त्व बढ़ावेंगे कि उनके घराने के अनुरूप कार्य होगा।

गठिया के कारण घुटने जकड़ गये थे

उसकी पीड़ा १० वर्ष तक कायम रही

उसके बाद क्रुशेन से छुटकारा हुआ

एक विवाहित स्त्री लिखती है कि १० वर्ष तक मैंने गठिया की असह्य यातना बरदाश्त की। औषधियों पर मैंने मनमाना रुपया बरबाद किया। मैं क्रुशेन की तारीफ अक्सर सुना करती थी आखिरकार १ दिन जी में आया कि मैं इसकी आजमाइश क्यों न करूँ लेकिन तब तक तो मेरे घुटने इतने जकड़ गये जैसे सीमेन्ट में।

फिर मैंने क्रुशेन की एक बोतल खरीदी और एक चम्मच प्रतिदिन सवेरे पीना आरम्भ कर दिया। बोतल समाप्त हो जाने पर मैंने समझा कि अन्य चीजों की भाँति यह भी एक चीज है और इससे कोई लाभ न होगा किन्तु मेरे पति ने कहा कि थोड़ा और मौका दो और एक दूसरी बोतल भी सेवन करो जिससे इसका असर आपके रक्त पर भी हो सके। फिर मैंने दूसरी बोतल भी खरीदी और इसके समाप्त होने के पूर्व ही मेरे घुटने खुल गये और एकदम खुल गये। मुझे स्वयम् आश्चर्य होता था कि मैं ऊपर चढ़ जाती थी और बिना किसी की मदद के नीचे उतर आने लगी। मैं इससे बहुत ही प्रभावित हुई और इसका सेवन जारी रक्खा। मैंने तीसरी बोतल भी खरीदी और अब मैं वह स्त्री नहीं रही जो पहले थी। अभी उस दिन मैं ४ मील चल चुकी हूँ और प्रसन्न रही।

—(श्रीमती) ई० ए०

अन्य रोगियों को विश्वास दिलाने के लिए और अधिक कहा ही क्या जा सकता है। कुछ भी हो उन्हें क्रुशेन की परीक्षा तो करनी ही चाहिए। गठिया रोग की मात्रा है चम्मच सवेरे १ गिलास गर्म पानी के साथ खाली पेट।

क्रुशेन साल्ट बाजार के सभी दवाखानों में मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर उधर की

टेलीविजन में नवीन उन्नति

द्वितीय विश्वयुद्ध ने टेलीविजन की दिशा में की जानेवाली उन्नति में महान् बाधा उपस्थित की, क्योंकि सभी इंजीनियर युद्ध-सम्बन्धी अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यों में संलग्न थे। युद्ध समाप्त होते ही वे फिर वैज्ञानिक अनुसंधानों में जुट गये और टेलीविजन की दिशा में नवीन उन्नति करने में उन्होंने पल भर भी व्यर्थ नहीं खोया। इस अथक् परिश्रम का परिणाम आज हमारे सामने है और एक प्रमुख रेडियो-यंत्र-निर्माता ने इसका प्रदर्शन भी किया है।

ध्वनि और चित्रों के प्रक्षेपण के लिए अब तक दो प्रक्षेपक यंत्रों तथा भिन्न-भिन्न रेडियो तरंगों का उपयोग करना पड़ता था। इस नवीन उन्नति ने इन कार्यों में बड़ी सरलता पैदा कर दी है, जिससे एक ही समय में, एक ही प्रक्षेपक यंत्र-द्वारा, एक ही विद्युत तरंग पर चित्र और ध्वनि का प्रक्षेपण किया जा सकता है। इस प्रकार प्रक्षेपण-सम्बन्धी साज-सामान की ही बचत नहीं की गई है बल्कि वायुमंडल में स्थान की भी बचत की गई है।

ध्वनि और चित्रों के पृथक्-पृथक् प्रक्षेपण में जो समय व्यर्थ जाता था, इस प्रकार उसकी बचत की गई है। विद्युत् अणुओं की किरण से चित्र का निर्माण होता है और इस किरण की गति में एक क्षण के करोड़वें भाग में परिवर्तन होता रहता है।

एक असाधारण विकिरण-द्वारा चित्र और ध्वनि को एक ही साथ भेजा जाता है। चित्र और ध्वनि एक ही साथ चित्रग्राहक यंत्र में प्रवेश करते हैं और बाद में उन्हें पृथक्-पृथक् कर लिया जाता है। इनको पृथक्-पृथक् करने के लिए विशेष यंत्रों की भी आवश्यकता नहीं पड़ती है। ध्वनि और चित्र की उत्तमता विकिरणों की संख्या पर आधारित है और इस प्रकार ध्वनि और चित्र की स्पष्टता एक दूसरे पर आश्रित है।

आर्थिक दृष्टि से इस नवीन उन्नति का बड़ा महत्त्व है। इस उन्नति से यह लाभ हुआ है कि ध्वनि प्रक्षेपक यंत्र और एरियल की बचत हो जाती है तथा ग्राहक-यंत्र की बहुत-सी पेचीदगियाँ कम हो गई हैं। दोहरी शब्दध्वनि के लिए दो मार्ग सरलता से ही बनाये जा सकते हैं और रंगीन चित्रों के प्रक्षेप किये जाने की भी सम्भावनायें हैं।

* * *

केन्द्रीय सरकार का आय-व्यय

भारतीय केन्द्रीय सरकार के नवम्बर १९४५ के हिसाब-किताब को देखने से पता चलता है कि सामयिक जमा-खर्चों और रेल और डाक तथा तार-विभागों के हिसाब को छोड़, १९४५-४६ के आर्थिक वर्ष के प्रथम ८ महीनों में व्यय, आय से १५११/२ करोड़ रुपये अधिक रहा, जब कि पिछले वर्ष की इसी अवधि की यह रक्म १४२३/४ करोड़ रुपये थी। गत वर्ष की इस अवधि की अपेक्षा, आलोच्य अवधि में आय २६१/२ रुपये अधिक हुई, किन्तु लगभग २५३/४ करोड़ रुपये की वृद्धि होने से रक्षा-व्यय २६१/२ करोड़ रुपये हो गया और नागरिक व्यय में ९१/४ करोड़ रुपये की वृद्धि हुई। इस अवधि में स्थायी ऋणों में लगभग २२५/४ करोड़ रुपये की वृद्धि हुई है।

* * *

फ्रेंच सरकार के नवीन अध्यक्ष कौन हैं ?

'डेली टेलीग्राफ़' पत्र में प्रकाशित हुआ है कि फ्रांस के नये प्रधान और जनरल डिगाल के उत्तराधिकारी फेलिक्स गुईं उनसे कई प्रकार से भिन्न हैं। डिगाल लम्बे हैं तो गुईं छोटे हैं, डिगाल गम्भीर तथा रूखे स्वभाव के हैं तो गुईं का रुख दोस्ताना और मजाकिया रहता है, और डिगाल जहाँ दल-गत राजनीति से घृणा रखते थे, गुईं को इससे प्रेम है। गुईं ने २३ वर्ष की अवस्था से राजनीति में रुचि लेना आरम्भ किया था और आज ६१ वर्ष की अवस्था में भी उनका वही उत्साह है। असेम्बली से पृथक् होकर वे प्रसन्न न रहेंगे। उनमें कौशल है, पारस्परिक परामर्श से उन्हें प्यार है और वे हर चाल से परिचित हैं। ब्लूम के 'लोकप्रिय मोरचे' के दिनों वे अपने पार्लमेंटरी दल के नेता, एक कुशल वकील तथा लोकप्रिय समाजवादी थे। सर्वप्रथम आप मार्सलीज जिले से व्यवस्थापक निर्वाचित हुए थे और आज भी उसका प्रतिनिधित्व करते हैं। मित्र के समान आचरणवाले गुईं सदैव प्रसन्न-मुख रहते हैं।

मनोरंजक चुटकुले

वैज्ञानिक की जानकारी

प्रोफ़ेसर ने नाश्ता करते हुए अपनी स्त्री से कहा, 'यह जानकर आश्चर्य होता है कि हम सब लोग कितने अँधेरे में रहते हैं। लगभग सभी केवल अपने अपने विषय की ही जानकारी रखते हैं, और परिणाम स्वरूप हम उस विषय की सीमा से बाहर नहीं जा पाते।

स्त्री ने उत्तर दिया, 'जी हाँ'।

'जैसे मैं, आधुनिक विज्ञान के सम्बन्ध में ही कुछ नहीं जानता। उदाहरण के लिए बिजली को ही लें तो कहना पड़ेगा कि मैं कुछ नहीं जानता।'

इस पर श्रीमती जी ने आँखें चार कीं और मुस्करा दीं। 'क्यों ? शर्म आती है, क्या बतलाऊँ ? तुम्हें और जानने की जरूरत ही क्या है ? तुम तो जरा-सा स्विच दबा देते हो और सब काम हो जाता है।'

प्रेम का सबूत

'प्रमिला ! तुम जानती हो कि प्रेम क्या है ?' युवक ने पूछा।

'हाँ,' प्रमिला ने उत्तर दिया।

'क्या तुम सचमुच जानती हो ?' युवक ने फिर पूछा, प्रेम सूर्य की भाँति अमर है, वायु की तरह व्यापक है, तारों की तरह सुन्दर है और उन्हीं की तरह चमकीला भी।

"प्रमिला ! क्या इसी तरह का प्रेम तुमने किसी से किया है या तुम्हें किसी ने किया है ?" कुछ देर तक युवक उत्तर की प्रतीक्षा में रहा।

'हाँ किया है, प्रमिला धीरे से बोली, 'यदि तुम विश्वास करने के लिए प्रमाण चाहते हो तो ऊपर चलो मैं तुम्हें प्रेमपत्रों का एक पूरा बक्स भरा हुआ और तीन फोटो के अल्बम दिखा सकती हूँ। इसके सिवा मेरे पास सात हीरे की जड़ी हुई अँगूठियाँ हैं जो मेरी बात के प्रमाण हैं।

राज ज्योतिषी

जगत्-प्रसिद्ध ज्योतिषी और तान्त्रिक,
पण्डित हरिश्चन्द्र शास्त्री, ज्योतिष-तीर्थ,
अध्यक्ष, अखिल बङ्गाल ज्योतिष-संघ,

ज्योतिष-गृह, १४१।१ सी, रशा रोड, कालीघाट, कलकत्ता।

हज़ारा पार्क के ठीक पूर्व में, फोन : साउथ ६७८।

यह महान् ज्योतिषी न केवल पूर्वीय और पाश्चात्य ज्योतिष के ही प्रकाण्ड पण्डित हैं, प्रत्युत हस्तरेखा-शास्त्र (सामुद्रिक विद्या) के भी पहुँचे हुए पारखी हैं। जो भी आपके निकट-सम्पर्क में आये हैं, वे आपकी अलौकिक आध्यात्मिक शक्ति के उन आश्चर्यजनक परिणामों से पूर्णतः सन्तुष्ट हैं, जो आपने महामाया श्री सिद्धेश्वरी की भक्ति कर और उन्हें प्रसन्न कर प्राप्त की है।

योग और तन्त्र-द्वारा आपने, ग्रहों के दुष्परिणामों को दूर कर देने तथा पेचीदे क़ानूनी मुक़दमों और असाध्य बीमारियों से रोगी को स्वस्थ कर देने में निश्चित सफलता प्राप्त करने की असाधारण शक्ति प्राप्त कर ली है।

भारत और अन्य देशों—इँगलैंड, फ्रांस, अमरीका, चीन आदि—के अनेक प्रख्यात व्यक्तियों ने पण्डित जी की असाधारण योग्यता के लिए उन्हें प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया है।

आपके आश्चर्यजनक कवचों-द्वारा निश्चित सफलता मिलती है

शान्ति कवच—मन की शान्ति, पारिवारिक प्रसन्नता, असाध्य रोगों पर विजय, दुर्घटनाओं से रक्षा, अकाल मृत्यु से बचाव, आग और चोरी का भय—उन्मूलन तथा परीक्षाओं में इससे सफलता मिलती है। इस कवच को पहननेवाला सभी परेशानियों से बच जाता है, क्योंकि इससे दुष्ट ग्रहों की शान्ति हो जाती है। साधारण का मूल्य ५) पाँच रुपया, विशेष (शीघ्र प्रभावकारी) २०) बीस रुपया।

वगला कवच—रोजगार-धन्धे में सफलता, अभिलाषा की पूर्त्ति, राज-सम्मान, नौकरी में तरक्की, व्यापार में उन्नति, धन में वृद्धि और सभी पर प्रभुत्व रखना—इस कवच से प्राप्त होता है। अनेक व्यक्तियों ने बहुत ही निराशाजनक और पेचीदे क़ानूनी मुक़दमों में इस कवच से सफलता प्राप्त की है। साधारण का मूल्य १२) बारह रुपये; विशेष (शीघ्र प्रभावकारी) ४५) पैंतालीस रुपये।

नृसिंह कवच—स्त्रियों की सभी प्रकार की बीमारियाँ इससे ठीक हो जाती हैं। मृत बच्चे को बलपूर्वक गर्भ से बाहर निकालने से जो दोष हो जाते हैं उन्हें दूर करना, बाँझ स्त्रियों के भी पुत्रोत्पन्न होना, मासिक धर्म सम्बन्धी दोषों को ठीक कर देना इस कवच के प्रभाव हैं। साधारण का मूल्य १०) दस रुपये; विशेष (शीघ्र प्रभावकारी) २९) उनतीस रुपये।

आकर्षिणी कवच—जिस व्यक्ति को पाने की इच्छा हो (स्त्री या पुरुष) पूर्णतः अधिकार में आ जाता है जिससे मनवांछित कार्य सिद्ध कराया जा सकता है। साधारण १२) बारह रुपये, विशेष (शीघ्र प्रभावकारी) ५०) पचास रुपये।

उन आदरणीय महानुभावों में से कुछ के नाम जिन्हें व्यक्तिगत रूप से आपको भविष्यवाणी, फलित ज्योतिष की ठीक-ठीक गणना तथा सामुद्रिक और तान्त्रिक शक्तियों का परिचय मिल चुका है।

हिज हाईनेस महाराजा धेनकानल, उड़ीसा; श्री फजलुलहक़, भूतपूर्व प्रधानमन्त्री, बंगाल; डाक्टर खरे, भूतपूर्व प्रधान-मंत्री, मध्यप्रान्त; सुप्रसिद्ध नर्तकी और अभिनेत्री श्रीमती साधना बोस; हिज हाईनेस राजा जगतनारायणसिंह, गया; श्री पी० के० सेन, जज, हाईकोर्ट, पटना; श्री एफ० जी० ह्वाइल, दक्षिण अफ्रीका; नेपाल के राणा, कर्नल गोविन्द शमशेर जंग बहादुर; श्री ए० चाण्डलर, इँगलैंड; श्री पी० आर० दास, बार-एट-ला०, पटना; रायबहादुर सुबोधचन्द्र, चीफ़ जज, कूचबिहार; जगत्प्रसिद्ध नर्तक श्री उदयशंकर; श्री ज्ञानांकुर डे, आई० सी० एस०, सी० आई० ई०; श्री शशिप्रसाद बरुआ, ज़मींदार, आसाम; महाराजाधिराज यू० सी० महताब, बर्दवान; श्री जे० सी० चक्रवर्ती, रजिस्ट्रार, कलकत्ता यूनिवर्सिटी; श्री शंकरलाल अग्रवाल, अध्यक्ष, कोयला-खान, झरिया; सैय्यद अब्दुल करीम खाँ, नवाब, रामनगर; श्री जे० डी० टाटा, बम्बई; श्री एस० नागराज, मद्रास; लेफ्टिनेण्ट एच० जे० टायलर, उमेर खुड़ी; शेख मोहम्मद जमाल आदि।

शास्त्र में जिनकी आस्था है, राज-ज्योतिषी जी की शक्तियों की परीक्षा कर सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाश पिक्चर्स बम्बई के सफल निर्माता श्री विजय भट्ट।

सुप्रसिद्ध निर्माता और निर्देशक श्री विजय भट्ट

फिल्मी-जीवन, साहित्य और कला पर सुन्दर इंटरव्यू

लेखक, श्री उमेश जोशी

[४]

बाबू जी एक बात मैं यहाँ साफ़ कह देना चाहता हूँ, वह यह कि मेरे पिता जी भी मेरी शादी "अँगरेजी रंग-ढंग से ही कर रहे थे। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना था कि मेरी पसन्द लड़की के साथ नहीं कर रहे थे। हाँ तो शादी के ठीक दो दिन पूर्व नौकर ने आकर पिता जी से कहा—"सरकार साहब, छोटे सरकार अभी काई पर पैर फिसल जाने के कारण गोमती में डूब गये, किनारे पर जो लोग नहा रहे थे, उन्होंने भी नदी को छान डाला, लेकिन लाश का कुछ पता नहीं, मैं भागा-भागा हुजूर को खबर देने आया हूँ।"

अब तक जिस घर में आनन्द की बधाइयाँ बज रही थीं, उसी घर में अब दुःख का पहाड़ टूट पड़ा। घर में कोहराम मच गया। पिता जी ने मेरे लिए नदी में जाल डलवाये, लेकिन सब व्यर्थ। नौकर भी रो रहा था। उसकी भी हिचकियाँ बँध गई थीं। वह भी अपनी वफ़ादारी का सबूत दे रहा था। पिता जी मेरे ग़म को न सह सके। उनका हार्ट-फेल हो गया। बस घर में मेरी माँ रह गई, और कोई न था। फ़क़ीर कहते-कहते रुक गया। उसकी भी हिचकियाँ बँध गईं। उसने रोते हुए कहा—"बाबू जी उस वक्त मुझ पर प्रमिला के प्यार का भूत सवार था—इसीलिए मुझे पिता जी के मरने पर दुख नहीं हुआ। मैं तो प्रमिला की जादू-भरी सुन्दरता की दुनिया में डोल रहा था। मुझे अपनी माता के प्रति भी तरस नहीं आया।

(२)

मैं प्रमिला को साथ लेकर लखनऊ से लाहौर आ गया था। वहाँ आकर हम "न्यू वेस्ट होटल" में ठहरे। होटल बड़े आदमियों के ठहरने का था। घर से जब मैं चला था, तब मैं एक लाख रुपयों के नोट लेता आया था। इसीलिए बड़े आनन्द से जिन्दगी कटने लगी। शराब की बोतलों पर बोतलें खाली होने लगीं। हम दोनों मिलकर टेनिस खेलते तो देखनेवालों के मुँह में पानी भर आता था। वास्तव में प्रमिला ऐसी ही थी। इस मर्म को आज मैं समझ रहा हूँ। हमारे "टेनिस क्लब" में एक मुसलमान जज का लड़का भी था, जिसका नाम रफ़ीक था। मिस्टर रफ़ीक भी बड़े अप-टू-डेट फैशन में रहा करता था। नित नये सूट बदलना तो मामूली बात समझता था बल्कि दिन में कई बार ड्रेस बदला करता था। गठा हुआ बदन था। मैं देखता कि प्रमिला दिन प्रतिदिन उसकी तरफ़ झुकी जा रही है। मिस्टर रफ़ीक भी उससे घंटों बातें करता। मैं इन बातों की ओर ध्यान नहीं देता था। क्योंकि बाबू जी मैं तो "इंगलिश एरीकेट" का गुलाम था। उस वक्त की अक्लमन्दी, आज मुझे अपनी बेवकूफी मालूम दे रही है। एक दिन होटल के मैनेजर ने मुझसे कहा—"आप बुरा न माने तो एक बात कहूँ।" मैंने कहा—"आप भी कैसी बातें करते हैं—बुरा मानने की कौन-सी बात है। "होटल में वर्षों रहने के कारण मैनेजर मेरा मित्र हो गया था। मेरा उस पर अधिक विश्वास था। उसने कहा—"देखिए जनाब आपकी प्रमिला तो दिल को चोंच में लिये फिरती है, यह ठीक नहीं" मैंने हँसते हुए कहा—"आप भी मैनेजर साहब किस दकियानूसी जमाने की बातें कर रहे हैं—आज के जमाने में दिल को चोंच में रखना भी एक फैशन है।" मैनेजर ने सिगरेट का कश लगाते हुए कहा—"मैंने कल प्रमिला को मिस्टर रफ़ीक के साथ हँसते-खेलते देखा था। प्रमिला होटल के नीचे के बगीचे में मिस्टर रफ़ीक के गले में हाथ डाल रही थी और मिस्टर रफ़ीक उसका चुम्बन ले रहे थे।"

मैंने कहा—"आज वही स्त्री जीवन की संगिनी हो सकती है—जो सोसाइटी में हँस-बोल सके। टेनिस में प्रवीणों को "चनसेट" दे सके "बालरूम" में बाल्ज और टेंगो के क़दमों पर थिरक सके—टेबिल पर कमाल की मीठी अफ़सरी कर सके—और सुबह से आधी रात तक शृंगार के बाँकपन से पति के प्राणों में स्पन्दन, दोस्तों की आँखों में सिहरन और हमजोलियों के कलेजे में जलन पैदा कर सके। वही नारी तो वास्तव में सच्ची जीवन-साथिन बन सकती है। यदि प्रमिला का मिस्टर रफ़ीक ने चुम्बन ले लिया तो कोई बेजा हरकत नहीं की। चुम्बन लेना भी एक कला है। इस कला को शायद प्रमिला मिस्टर रफ़ीक से सीख रही होगी। प्रमिला का मुझ पर प्रेम है। वह रफ़ीक को चकमा दे रही होगी। वह मुझे छोड़कर कहीं नहीं जा सकती। हाँ, चकमा देने में वह होशियार है। यह तो मैं फैशन की तमीज में शामिल समझता हूँ।" मैनेजर बेचारा चुप हो गया। और अपने काम में लग गया—

लाहौर में मैंने अपना नाम हरीश से विनोद रख लिया था। मुझे वहाँ सब विनोद के नाम से ही जानते हैं। हरीश नाम को तो मैं लखनऊ की सीमा में ही दफना चुका। रफ़ीक और प्रमिला का प्रेम दिन प्रतिदिन बढ़ता गया, मेरी लापरवाही की वजह से। एक दिन मैंने देखा कि मिस्टर रफ़ीक मेरे कमरे में प्रमिला से घुल-मिलकर बातें कर रहा है।" फ़क़ीर यह कहते-कहते रो पड़ा। मेरी भी सहानुभूति उसके लिए उमड़ पड़ी। मैंने उसको चुप किया। फ़क़ीर ने फिर उच्छ्वास लेते हुए अपना दास्तान कहना शुरू किया—

हाँ बाबू जी, मुझसे अधिक न देखा गया। मैंने कमरे में बिजली की तरह तड़प-कर प्रवेश किया। रफ़ीक समझ गया। मेरे तेवर को देखकर उसने भी अपना तेवर बदल लिया। दोनों में मारपीट होने लगी। मेरे कमरे में बगीचे की तरफ एक कमरा था। रफ़ीक मेरी छाती पर सवार था। प्रमिला भी रफ़ीक की ओर थी। मैं रफ़ीक के नीचे पड़ा हुआ था। इसे देखकर प्रमिला खुश हो रही थी। रफ़ीक ने मुझे ऐसा धक्का दिया कि मैं दरवाजे में से होकर होटल के नीचेवाले बगीचे में जा गिरा। मुझे होश न रहा। जब मुझे होश आया—तब मैंने अपने को अस्पताल में पाया। मेरी टाँग मारी गई। काफी इलाज किया गया—लेकिन मेरी टाँग ठीक ही नहीं हुई। चोट शरीर में और भी जगह आई थी, किन्तु और जगह की चोटें ठीक हो गईं। मैं लँगड़ा होकर अस्पताल से बाहर निकला। होटल आने पर मालूम हुआ कि प्रमिला रफ़ीक के साथ भाग गई। वह होटल के मैनेजर को एक चिट दे गई थी। चिट मैंने पढ़ी जो इस प्रकार थी—

मिस्टर हरीश,

आपके साथ चिपका रहना मेरा व्यर्थ है। जब तक आपके पास सब कुछ था, तब तक मैं आपके पास रही। आज मुझे सौभाग्य से रफ़ीक मिल गये हैं, फिर मैं क्यों न रफ़ीक को अपने जीवन का साथी बनाऊँ?

—प्रमिला

यह चिट अभी मेरे पास है। जिन्दगी का कड़ुआ अनुभव —हाँ तो बाबू जी प्रमिला के इस विचित्र व्यवहार से मुझे बहुत धक्का लगा। मेरे पास उस वक्त भी दस हजार रुपये रह गये थे। बाकी सब खर्च हो गये थे। करीब तीस हजार नक़द प्रमिला ले गई थी। हाँ, तो मैंने उसी दिन से फ़क़ीरी धारण कर ली। सिर्फ इसलिए कि यदि मैं अमीर रहूँगा, तो फिर शायद किसी स्त्री के चंगुल में फँस जाऊँ। दूसरे अपने पापों का प्रायश्चित भी मुझे करना था। जीवन का प्रायश्चित्त वैभव के बीच बैठकर कदापि नहीं हो सकता। मुझे अमीरी से घृणा हो गई जिसने मेरे जीवन को बरबाद कर दिया। "तालीम" से भी मुझे नफ़रत हो गई, जिसकी वजह से मेरी टाँग लँगड़ी हो गई और जिसकी वजह से मैं "नये फैशन" के गड्ढे में गिरा। इन सब पहलुओं पर सोचकर मैंने फकीरी धारण की। मैंने पूछा—तो फिर आप स्त्रियों को देखकर अपना मूँह क्यों ढक लेते हैं? 'वह इसलिए', फकीर ने कहना शुरू किया—'मेरे पास दस हजार की पूँजी है। सुन्दर स्त्री को देखकर फिर कहीं चंचल मन अपना रंग न दिखाये। दूसरे स्त्री जाति से मुझे नफ़रत-सी हो गई है, जिसकी वजह से मेरी "आजाद-दुनिया" में आग लगी।

फकीर ने मुझे अपनी फटी गुदड़ी में से दस हजार के नोटों की गड्डी निकालकर दी। मैंने लेने से इनकार कर दिया, यह कहते हुए—"इन रुपयों को तो तुम किसी संस्था को दे डालो, जिससे तुम्हारा नाम हो।" "फकीर ने तिलमिलाकर कहा—नाम कैसा? नाम तो मेरा मर चुका? मैं नाम नहीं चाहता। मैं तो बस यही चाहता हूँ कि कोई व्यक्ति इन फैशन की परियों के चक्कर में न पड़े। उनसे हमेशा सतर्क रहे। उनकी किसी बात का विश्वास न करे। न कभी बीवी को महफिल की जीनत बनाये। वह घर की जीनत है—हमें ऐसे समाज में नारी को कभी नहीं ले जाना चाहिए, जहाँ ईमान को आस्तीन के भीतर रखना जरूरी है। हमें तो नारी को उस जगह रखना है, जहाँ ईमान लाकट की तरह बाहर लटकता फिरता है। बस यही मैं चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरी जिन्दगी के यह अनुभव हिन्दुस्तान के प्रत्येक जवान के कानों तक पहुँच जायँ। ताकि वह अपने को गिरने से बचा ले।"

दो दिन बाद मैंने अखबारों में पढ़ा कि एक फकीर ने "संस्कृत-स्कूल" के लिए दस हजार रुपये का दान दिया है। उसने अपना परिचय बतलाने से इनकार कर दिया। दान देकर वह फकीर स्कूल से चार कदम ही आगे चला होगा कि लड़खड़ाकर वह गिर पड़ा और उसकी वहीं मृत्यु हो गई।

आज फकीर इस दुनिया में नहीं है, लेकिन उसकी कहानी आज भी जिन्दा है। इस कहानी से "मैं लँगड़ा कैसे बना?" शिक्षा लेनी चाहिए। इसलिए मैं इसे प्रकाशित करवा रहा हूँ। कम से कम फकीर की इस कहानी ने मेरे जीवन को गिरते से बचा लिया। मैं सँभल गया: जवानी के मोड़ पर सिर्फ फकीर की इसी कहानी की वजह से कि "मैं लँगड़ा कैसे बना?"

(सर्वाधिकार लेखक-द्वारा सुरक्षित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युक्त-प्रांत में साक्षरता सप्ताह ९ से १४ फरवरी तक मनाया जायगा

लखनऊ २९ जनवरी ९ फरवरी से १४ फरवरी १९४६ तक साक्षरता सप्ताह प्रान्त के सभी नगरों, क़स्बों तथा प्रमुख ग्रामों में विशेषकर जहाँ पुस्तकालय वाचनालय, साधारण दिवस पाठशाला या युवक पाठशाला स्थित हो, अथवा जहाँ ग्रामसुधार - योजना चालू हो उचित ढंग से मनाया जाना चाहिए। युवक शिक्षा-समितियों की अधीनता में होनेवाले इन साक्षरता समारोहों में सहयोग प्राप्त करने तथा साक्षरता आन्दोलन को सफल बनाने के आशय से समितियों को चाहिए कि वे इस अवसर पर जिला बोर्ड, शिक्षा समिति म्यूनिसिपल बोर्ड तथा ग्राम-सुधार संघ के प्रधानों को मकतब, पाठशाला, वर्नाक्यूलर स्कूल व ऐंग्लो वर्नाक्यूलर स्कूल तथा कालेजों के मुख्याध्यापकों को, सभी विचार-वाले प्रमुख जनसेवी व्यक्तियोंको तथा कौंसिल और एसेम्बली के सदस्यों को निमंत्रित करें। बड़े क़स्बों और म्यूनिसि-पैलिटियों में समारोह सुन्दरता पूर्वक मनाये जाने के लिए तथा साक्षरता सप्ताह के कार्यक्रम में सहायता देने के लिए शिक्षा-समितियाँ उप-समितियाँ नियुक्त कर सकती हैं।

कार्यक्रम

साक्षरता-सप्ताह समारोह के कार्य-क्रम की रूप-रेखा नीचे दी जाती है। स्थानीय परिस्थितियों की आवश्यकता-नुसार शिक्षा-समितियाँ इसमें परिवर्तन कर सकती हैं:—

शनिवार, ९ फरवरी—नगर-नगर के मोहल्लों और सभी ग्रामों में अध्यापकों, विद्यार्थियों तथा अन्य कार्यकर्त्ताओं के दल अपने निर्दिष्ट क्षेत्रों में प्रभातफेरी निकालें।

रविवार, १० फरवरी—छुट्टी।

सोमवार, ११ फरवरी—विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा स्थानीय कलाकारों-द्वारा साक्षरता पर बनाये हुए पोस्टरों की प्रदर्शिनी। सभी बड़े क़स्बों और उन सब ग्रामों में जिनमें युवक पाठशालाएँ हैं युवक पाठशाला दिवस मनाया जाना चाहिए। कवि-सम्मेलनों और मुशायरा का भी आयोजन करना चाहिए जिनमें सम्मिलित होकर कविगण विषयोचित रचनाएँ सुनायें। युवक पाठशालायें अपना-अपना वार्षिकोत्सव मनायें जिनमें वर्ष भर किये गये कार्य का विवरण पढ़ा जाय और साक्षरता आन्दोलन की उपयोगिता सिद्ध करने के निमित्त साक्षर युवक कविता पाठ करें अथवा छोटे नाटकों में अभिनय करें।

मंगलवार, १२ फरवरी—जिन स्थानों में पुस्तकालय हों उन सभी में पुस्तकालय दिवस मनाया जाय। सरकारी पुस्तकालयों के वार्षिकोत्सव हों जिनमें वार्षिक विवरण पढ़े जायें और पुस्तकालयों की उपयोगिता पर भाषण हों। पाठकों के पथ-प्रदर्शन के निमित्त सुन्दर पुस्तकों की आलोचनायें पढ़ी जायें।

बुधवार, १३ फरवरी—ग्राम निर्वाचन दिवस। उत्साही विद्यार्थियों तथा अध्या-पकों के दल ग्रामों में आयें और अपने प्रयत्नों से साक्षर बनाने के विशेष क्षेत्रों को चुनें।

बृहस्पतिवार, १४ फरवरी—बड़ी बड़ी सभायें की जायें जिनमें अच्छे वक्ता निमंत्रित हों जो श्रोताओं को साक्षरता आन्दोलन में उत्साह-युक्त सहायता देने के लिए प्रभावित करें। जिला केन्द्रों तथा अन्य प्रमुख केन्द्रों में प्रसिद्ध व्यक्तियों के सन्देश तथा साक्षरता योजना के कार्य-संबंधी विवरण पढ़े जायें।

विद्यार्थियों को "साक्षरता तथा निशानी अँगूठा का अन्त हो" आन्दोलन में कार्य करने की प्रतिज्ञा लेने के लिए विशेष रूप से आमंत्रित करना चाहिए। प्रान्त की स्त्रियों की निरक्षरता दूर करने की योजना में तीव्रता लाने के आशय से जन-सेवा की भावना से प्रेरित महिलाओं का सहयोग प्राप्त करने का प्रयत्न करना करना चाहिए।

पूर्वी देशों में अति प्राचीन तथा सर्वश्रेष्ठ.....

'मृत सञ्जीवनी सुरा' प्राचीन आयुर्वेदिक योग पर निर्मित एक पुष्टिकारक औषध है। इसका अमोघत्व सहस्र सहस्र उपभोक्ताओं द्वारा दीर्घकाल से सिद्ध किया जा चुका है। समय की कसौटी पर कसी जाने के पश्चात् हमारी 'मृत सञ्जीवनी सुरा' ने पूर्वी देशों में अति प्राचीन एवं सर्व-श्रेष्ठ होने का अधिकार यथार्थ ही उपार्जन किया है

SAKTI'S
MRITASANJIBANI
SURA

प्रत्येक अवस्था के लिए अति प्राचीन, बलवर्द्धक औषध। अध्यक्ष माथुर बाबू का शक्ति-औषधालय ढाका

GD-SIN. 03-1278

श्री रत्नगिरिजी का अद्भुत चमत्कार

जिसने समस्त संसार को चकित कर दिया

रक्त, बल, वीर्य्य, उत्साह तथा उमंग ही जीवन सफल बना सकती है

ध्यान देने योग्य अमूल्य उपहार

अपूर्व काया पलट (रजिस्टर्ड)

निस्वार्थ संसार सेवा भारतीय महात्माओं ने औषध विज्ञान को अपनी महान् खोजों और अमूल्य रत्नों से अलंकृत किया है आधुनिक चिकित्सक मर्ज और मरीज जब दोनों को लाइलाज घोषित करके शर्मिन्दा नहीं होते वहाँ इन्हीं महात्माओं की बिना दाम की जड़ी बूटियाँ मुर्दों को भी जिला सकने में समर्थ हुई हैं। ऐसी सच्ची घटनायें आये दिन एक न एक पढ़ने और सुनने में आया करती हैं।

बीस वर्ष पूर्व कल्लाती पहाड़ी पर विचरण करनेवाले स्वामी रत्नगिरिजी महाराज की सेवा एक बूढ़ा ग्वाला करने लगा। योगिराज को एक दिन उस वृद्ध की कमजोरी पर दया आ ही गई और उन्होंने निम्नलिखित योग की ६ मात्राएँ उस बूढ़े को दीं। नासमझी के कारण छहों मात्राएँ एक साथ खा जाने से उस वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आगई और रत्नगिरिजी के परिश्रम पूर्वक इलाज करने पर बुढ़ापे के बावजूद भी उसे तीन विवाह करने पड़े। इस पर राजा रईस, नवाब और रसिकजन महान योग को जानने के लिए आतुर हो उठे। नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयात मोहम्मद खाँ साहब ने बाबाजी की बहुत सेवा करके इसे प्राप्त कर लिया और लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्मा जी ने इसे प्रथम तथा दो अन्य लिखकर तीनों से उत्तम वाजीकरण बतलानेवाले को एक हजार रुपये का नक़द इनाम देने की घोषणा की। इसे आज बीस साल के लगभग हो गये किन्तु अभी तक कोई पुरस्कार विजय नहीं कर सका। मथुरा के ख्याति प्राप्त बा० हरिदास जी ने इसे चिकित्सा चन्द्रोदय में छपवाया और हमने भी स्वयं बना कर सैकड़ों दुर्बल, नपुंसक, वीर्य्य-विकारी रोगियों पर बरता। तत्काल लक्षण-चमत्कार देख जन-साधारण के लाभार्थ अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपवा दिया। आप भी बनाकर लाभ उठायें।

योग—शुद्ध बुरादा फौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत भल्ल १ तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा, एक घंटा घृत कुमारी में घोटकर मिट्टी के कुज्जे में मजबूत बंद कर पाँच सेर कंडों में फूंके। दुबारा एक तोला हरताल बकी शुद्ध, १॥ माशा कपूर शुद्ध में, तीसरी बार गन्धक आमलासार शुद्ध १ तोला, कपूर, १ माशों में, चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद १ तोला, कपूर १॥ माशा को ऊपर की भाँति १६ आँच दे। फिर उसको कढ़ाई में डालकर बराबर इन्द्रबधू डाल दे। और नीचे आग जलावे, जब इन्द्रबधू जलकर राख हो जावे तो हवा देकर उड़ा दे। बस अपूर्व काया पलट तैयार है। चार चार चावल सायं मक्खन मलाई के साथ खायें और मिश्री मिला दूध पीवें।

मथुरा के हरिदास जी लिखते हैं इस योग के सेवन से एक हफ़्ते में एक आदमी का वजन चार पौंड बढ़ गया, दूसरे का चेहरा लाल सुर्ख हो गया। भूपाल के वैद्य-राज पं० बालकृष्ण शर्मा ने ३५० रोगियों पर बरता और आशा से अधिक गुणकारी पाया। रत्नाकर सम्पादक जी श्री छोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य ने गृह-चिकित्सा पथ-प्रदर्शक में छापा कि इतना प्रचण्ड गुणकारी योग दूसरा नहीं देखा। श्री धर्मेन्द्र विद्या-बतंश सिद्धान्त शास्त्री अधिष्ठाता गुरुकुल बरेली जिला मुजफ़्फ़रनगर ने लिखा है—"अपूर्व काया पलट" नामक औषध सेवन कर रहा हूँ, जैसी प्रशंसा वैसा ही गुण है। बहुत लाभ हुआ। श्री चिरंजीलाल जैन आयुर्वेद शास्त्री मालिक कल्याण औषधालय, वाह (आगरा) का कहना है कि मैंने २२५ रोगी, अपूर्व कायापलट द्वारा जो कि धातु-विकार, नपुंसकता, बवासीर, रक्त-विकार आदि रोगों से ग्रसित थे पूर्ण स्वस्थ किये।

हमारा दावा है कि केवल सात दिन के सेवन से शरीर में रक्त दौड़ता नजर आयेगा। २१ दिन में चेहरा लाल काश्मीरी सेब की तरह चमकने लगेगा। ४० दिन में नपुं-सकता, मधुमेह, डायब्टीज निर्बलता दूर हो जाती है। स्त्रियों के प्रदर दूर हो गर्भ-धारण-शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति बढ़ाकर भूख दूनी करता है। कफ़ तिल्ली की खराबी, खांसी, नजला, जुकाम बदन दुखना, खून का पतलापन, आँखों का पीलापन, चिनगारी सा उड़ते दीखना, बार-बार थूक गिरना, दमा तथा हर तरह की कमजोरी तुरन्त दूर कर नवजीवन का संचार करता है। जाड़ा, गरमी, बरसात सभी मौसमों में एक-सा लाभ करता है। योग भली भाँति समझाकर लिखा है फिर भी यदि आप न बना सकें तो बनी बनाई १६ आंच दी हुई ४० दिन की ८० मात्रा ६॥।=) डाक खर्च मय पैकिंग अलग। कोई बात समझ में न आवे तो जवाबी कार्ड भेजकर उत्तर मँगा लें।

पता—रूपविलास कम्पनी (रसायनशाला) नम्बर ४८१ धनकुट्टी कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पार्लामेंटरी प्रतिनिधि-मंडल

क्या भारत को भविष्य में इससे किसी प्रकार की आशा है?

लेखक, श्री सुरेन्द्रनाथ शर्मा, बी० ए० 'साहित्यरत्न'

भारतवर्ष की केवल यही पुकार है कि वह आजादी चाहता है। वह अब और विदेशी जुए में जुतने को कदापि तत्पर नहीं है। जब देश का कोना-कोना व्याकुल है, दुखी है और चाहता है कि हमें हमारा जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त हो, तब हजारों कोस पर बैठे हुए अधिकारियों ने अपनी-अपनी शुभ-कामनाओं के साथ पालियामेंट के प्रतिदल को हमारे बीच भेजा है। कौन जाने कि इसमें भी सदा की भाँति पर्दे के पीछे से खेलनेवाली सरकार की कोई अनोखी चाल अन्तर्निहित हो?

सर स्ट्रैफ़ोर्ड क्रिप्स भी समझौते का एक बड़ा पुलन्दा लेकर भारत आये और पहले से भी जटिल और भयंकर जाल बिछाकर चले गये। ठीक इसी प्रकार इस प्रतिनिधि-मंडल का आना भी कहीं व्यर्थ ही सिद्ध न हो। वर्तमान परिस्थिति हमें ऐसा सोचने पर बाध्य करती है।

कहा जाता है कि यह डेलीगेशन यहां केवल इसलिए आया है कि वह भारतीय-समस्याओं का सिंहावलोकन करेगा और बाद को अपने देश लौटने के उपरान्त वहां पालियामेंट को सारी स्थिति का परिचय करा के भारतीय-हित के सुलझाने का प्रयत्न करेगा। प्रतिनिधि-मंडल की ओर से एक सभा में व्याख्यान देते हुए सोरेन्सन जी, जो प्रतिनिधि-मंडल के एक प्रमुख सदस्य हैं, कहा भी है—

"हम अपने देश और उसकी राजनैतिक समस्याओं को समझने के लिए आये हैं जिससे लौटकर हम पालियामेंट तथा ब्रिटिश जनता से आपके अधिकारों के सम्बन्ध में विशेष रूप से जोरदार आवाज उठा सकें।"

मिस्टर सोरेंसन के इस कथन पर भी हमें विश्वास नहीं कि प्रतिनिधि-मंडल ब्रिटिश स्वार्थों का गला घोंटकर, हमें स्वतंत्रता दिलाने के लिए किंचित भी प्रयत्न करेगा, क्योंकि वह दिन गये जब हमें ब्रिटेन पर विश्वास था। सन् १९१४-१८ के महायुद्ध के समय से आजादी का पाठ पढ़ाती ब्रिटेन सदा ही झूठे वादे करता आया है।

आज की ब्रिटिश सरकार अब यह समझ चुकी है कि भारत अन्य स्वतंत्र देशों की भाँति प्रगाढ़ आलस्य और निद्रा त्याग कर स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए सन्नद्ध हो गया है। उसे अब भारत से खतरा पैदा हो गया है। अतः वह अब यह जानने के लिए व्याकुल हो उठी है कि आज भारत कहाँ और किस जगह है? संभवतः इसी दृष्टिकोण से उसने पालियामेंट के चुने हुए व्यक्तियों का प्रतिनिधि-मंडल भारत भेजा है। जैसा कि निम्नलिखित रेजीनाल्ड सोरेंसन के शब्दों से स्पष्ट है—

किसी भी देश की आन्तरिक परिस्थिति जानने के लिए यह अत्यन्तावश्यक है कि उस देश की लोक-भाषा से वह परिचित हो ले जिससे जनता की भावनाओं के समझने में उसे सहायता प्राप्त हो। प्रतिनिधि-मंडल का कोई भी व्यक्ति भारतीय भाषा नहीं जानता, तब क्या वह इस बात का दावा कर सकता है कि वह इस देश की राजनैतिक, औद्योगिक, व्यवसायिक और व्यापारिक-समस्याओं को भली भाँति समझ सकेगा? प्रतिनिधि-मंडल इधर-उधर देहातों में भी गया था जहां तक आँखों का सम्बन्ध है। प्रतिनिधि-मंडल ने देहातियों की, ग्राम-निवासियों की जर्जर दशा, उनके फटे वस्त्र, उनकी काली काया को देखकर उनके भावों, विचारों और आदर्शों का अनुमान चाहे भले ही लगा लिया हो किन्तु उनकी आन्तरिक भावनाएँ क्या हैं और वह क्या चाहते हैं, इसका ठीक-ठीक अन्दाजा लगाना इस गूंगे इशारों से काम लेनेवाले प्रतिनिधि-मंडल के बाहर की पहुँच है।

पार्लामेंटरी प्रतिनिधि-मंडल का एकमात्र स्त्री सदस्या श्रीमती निकोल दिल्ली की एक प्रेस कान्फ्रेंस में भाषण दे रही हैं।

पार्लामेंटरी प्रतिनिधि-मंडल के सदस्य दिल्ली की एक हरिजन बस्ती में—मिस्टर सोरेंसन एक मेहतर के बालक से पूछ-ताछ कर रहे हैं।

यह प्रतिनिधि-मंडल जेलों में भी गया था? अगर यह भले मानुस कुछ दिन पहले आये होते जब कि हमारे देश के नेता जेलों की यातना भोग रहे थे, तो कदाचित् अधिक उपयोगी होता और भारतीय जेलों की अंतर्दशा का भी अनुमान लगाया जा सकता था।

हम पूछते हैं कि क्या सर स्ट्रैफ़ोर्ड क्रिप्स पहले देश के नेताओं से नहीं मिले थे, क्या उन्होंने देश की दशा की छान-बीन नहीं की थी, क्या वह भी राजनैतिक गुत्थियों को सुलझाने नहीं आये थे, क्या उन्होंने भी अपने आजाद विचार जनता के सम्मुख नहीं रक्खे थे? इन सब प्रश्नों का हाँ में उत्तर मिलते हुए भी क्या परिणाम निकला? इसी तरह इस प्रतिनिधि-मंडल से भी भविष्य में हमें विशेष आशा न करनी चाहिए।

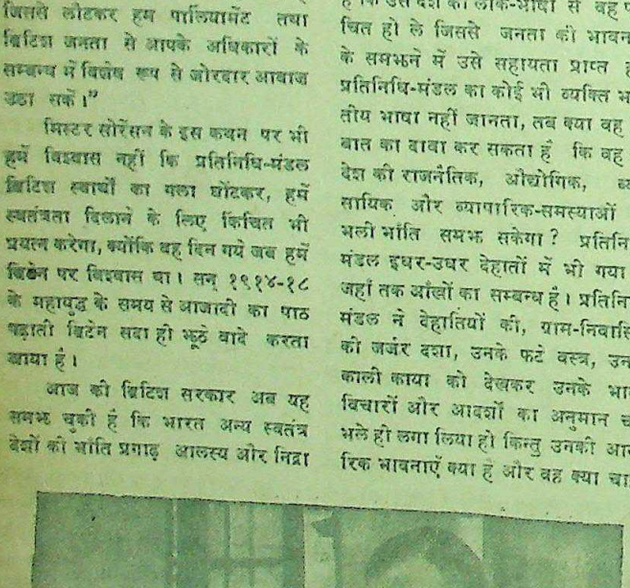

पार्लामेंटरी प्रतिनिधि-मंडल के एक प्रमुख सदस्य मिस्टर सोरेंसन दिल्ली के एक मुख पत्रकार से बातें कर रहे हैं।

इतनी जल्दी थक गये ???

थकन तथा हतोत्साह का अन्त कर आनन्दमय एवम् उत्साहपूर्ण जीवन प्राप्त करने के लिए

वीरोजेन

VIROGEN

शारीरिक तन्द्रा को दूर कर स्वास्थ्य तथा स्फूर्ति को बढ़ाता है

VIROGEN

शारीरिक तथा भीतरी कमजोरी अथवा इस प्रकार की अन्य बीमारियों के लिए बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुआ है।

यदि आपको बाजार में न मिले तो लिखें :—

बेंगाल इम्युनिटि कम्पनी, लि०, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

सरदारशहर (बीकानेर राज्य) पब्लिक लायब्रेरी ने अपना ३७वाँ वर्ष समाप्त करके ३८वें वर्ष में पदार्पण किया है। गत वर्ष ३७५५७ पाठकों ने वाचनालय से लाभ उठाया एवं १४३१८ पुस्तकें पुस्तकालय से बाहर पढ़ने के लिए गईं। इस वक्त पुस्तकालय में तीन दैनिक, १९ साप्ताहिक, २ साहित्यिक और ४१ मासिक-पत्र आते हैं। इस वर्ष आस-पास के ग्रामों में ग्राम-पुस्तकालय खोलने का निश्चय हुआ है।

—संवाददाता

* * *

काशी भारतीय बाल-मंडल के प्रतियोगिता-विभाग ने अखिल भारतीय बाल-कहानी प्रतियोगिता का आयोजन किया है। इसमें १६ वर्ष तक वय के प्रत्येक बालसाथी भाग ले सकते हैं। प्रत्येक प्रकार की बालोपयोगी, सुन्दर मनोरंजक कहानियों का स्वागत किया जायेगा जो प्रबंधक-द्वारा लिखित हों। विचार-विनिमय के पश्चात् उत्तम कहानियाँ पुरस्कृत की जायेंगी और उनका पुस्तक रूप में प्रकाशन भी होगा। प्रथम पुरस्कार १०), द्वितीय पुरस्कार ५), तृतीय पुरस्कार ३) और चतुर्थ तथा पंचम पुरस्कार २-२) रुपये का रहेगा। इसके अतिरिक्त और भी कुछ सुन्दर कहानियों पर उनके रचयिताओं को सुन्दर बालोपयोगी पुस्तकें पुरस्कार में दी जायेंगी। कहानियाँ भेजने की अंतिम तिथि १० मार्च १९४६ रहेगी। निर्णय २० अप्रैल को किया जायेगा और पुरस्कार कुछ समय बाद बाँटा जायेगा।

—विजयप्रसाद

* * *

जयपुर श्री भूरूनूं पुस्तकालय की साधारण सभा श्री ब्रजमोहन तुलस्यान के सभापतित्व में हुई। मंत्री श्री मदनलाल खंडेलिया ने पुस्तकालय की वर्तमान स्थिति का विवरण देते हुए बताया कि पुस्तकालय में इस समय करीब ३७०० पुस्तकें हैं और ५१ पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं। दो सौ से अधिक मासिक सहायता देनेवाले सदस्य हैं। प्रतिदिन दर्जनों व्यक्ति पुस्तकालय में आकर लाभ उठाते हैं एवं लगभग पाँच हजार पुस्तकें सदस्यों-द्वारा पिछले वर्ष पठनार्थ ले जाई गई हैं। गत वर्ष में आमदनी ११५६ रुपये की तथा खर्च ११६९ रुपये का हुआ। अभी तक पुस्तकालय का निजी भवन नहीं बन पाया है परन्तु श्री सेठ चिरंजीलाल टिबडेवाल ने अपनी ओर से पुस्तकालय को शीघ्र ही भवन बनवा देने का वचन दिया है। जनता से पुस्तकालय को सहायता पहुँचाने की अपील की गई। अगले वर्ष के लिए कार्यकारिणी का चुनाव हुआ।

सभापति श्री मदनलाल साह वकील; उपसभापति श्री नरोत्तमलाल जी वकील; मंत्री श्री मदनलाल खंडेलिया; सं० मंत्री श्री महावीरप्रसाद हलवाई, कोषाध्यक्ष श्री काशीप्रसाद जी जलेबीवाले, आय-व्यय निरीक्षक श्री ब्रजमोहन तुलस्यान, सदस्य श्री हेडमास्टर साहब गवर्नमेंट हाई स्कूल; श्री दुर्गादत्त कैया; श्री अर्जुनलाल मोदी, श्री कृष्ण शर्मा कृशांग, श्री हरि जी, श्री गोविन्दराम जी हलवाई, श्री महावीरप्रसाद, श्री श्रीमाल वकील, श्री माधोलाल सक्सेना तथा श्री कमलचन्द सिंघानिया।

—मदनलाल खंडेलिया

* * *

वनस्थली (जयपुर) विद्यापीठ ने देश-गौरव श्री सुभाषचन्द्र बोस का पचासवाँ जन्मदिन उत्साहपूर्वक मनाया। प्रातःकाल झंडावंदन के साथ समारोह का श्री गणेश हुआ। सन्ध्या को छात्राओं की ड्रिल हुई और रात्रि को सामूहिक सभा में सुभाषबाबू के जीवन तथा 'आजाद हिन्द-सेना' के इतिहास पर प्रकाश डाला गया। छात्राओं-द्वारा 'नेताजी' के प्रति श्रद्धांजलि भेंट की गई। आजाद हिन्द-सेना के सम्बन्धित प्रतिनिधि हिन्दी कविताओं का पाठ और गायन भी हुआ।

'स्वतंत्रता-दिवस' का समारोह प्रातःकाल प्रभात-फेरी से प्रारम्भ हुआ। इसके पश्चात् लक्ष्मीबाई मैदान में झंडा फहराया गया और स्वतंत्रता-दिवस की प्रतिज्ञा अवसर के अनुरूप गंभीरतापूर्वक ग्रहण की गई। दिन में विद्यापीठ की स्वच्छता, सामूहिक सूत्र-यज्ञ और प्रौढ़-शिक्षण के रचनात्मक कार्य किये गये। रात्रि को दो सभायें हुईं। एक ग्राम-जनता के लिए जिसमें राजस्थानी बोली में भाषण हुए और दूसरी छात्राओं के लिए जिसमें छात्राओं के लिए भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास और उसके विविध पक्षों पर प्रकाश डालनेवाले भाषण हुए। श्री सुधीन्द्र-द्वारा लिखित 'खून की होली'—एकांकी नाटक सफलतापूर्वक छात्राओं ने अभिनीत किया।

—संवाददाता

* * *

अजमेर में सरस्वती बालिका विद्यालय में स्त्री-पुरुषों की एक विराट सभा हुई, जिसमें आर्य्य जगत् के विद्वान् स्वामी योगानन्द जी महाराज, प्रोफेसर सुशीला शर्मा और कुंवर लालसिंह जी शक्तावत सेटिलमेंट आफ़िसर के भाषण और कुमारी उर्मिला सक्सेना के गायन हुए।

—पन्नालाल माहेश्वरी

* * *

टीकमगढ़ से श्री प्रेमनारायण खरे, श्री वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद् लिखते हैं—इस वर्ष के लिए 'देव-पुरस्कार' के निर्णायकों का चुनाव होना है। अतः सूची में से चार नाम और एक नाम अपनी इच्छानुसार अलग भी चुनकर भेजा जा सकता है। इस वर्ष का पुरस्कार खड़ी बोली की पद्य रचना पर दिया जायगा —१ श्री माखनलाल चतुर्वेदी, २ श्री लक्ष्मीधर वाजपेयी, ३ श्री रामनरेश त्रिपाठी, ४ श्री गोपालशरणसिंह, ५ श्री बल्देवप्रसाद मिश्र, ६ श्री महादेवी वर्मा, ७ श्री शिवपूजन सहाय, ८ श्री रायकृष्णदास, ९ श्री विनयमोहन शर्मा, १० श्री काशचन्द गुप्त, ११ श्री नन्ददुलारे वाजपेयी, १२ श्री रामकुमार वर्मा, १३ श्री रामविलास शर्मा, १४ श्री गोकुलचन्द्र शर्मा और १५ श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी।

* * *

पटना से प्रकाशित होनेवाले हिमालय मासिकपत्र में देशरत्न डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जी की आत्मकथा धारावाहिक-रूप में प्रकाशित होगी। देशरत्न की इस 'आत्मकथा' के अतिरिक्त पहली पुस्तक के लिए कविता, कहानी, स्केच, एकांकी नाटक, निबंध, आलोचना आदि का बहुत ही सुन्दर संकलन इस अंक में प्रकाशित होगा।

—संवाददाता

* * *

उदयपुर महिला मंडल के तत्त्वावधान में श्री विजया मा की अध्यक्षता में संचालित "श्री कस्तूर बा-ट्रेनिङ्ग-विद्यालय" ने अपने विद्यालय भवन के गांधी चौक में देश-गौरव नेता जी सुभाष बाबू का जन्मदिवस समारोह के साथ मनाया। श्री कमलकुमारी श्रोत्रिय ने 'आजाद हिन्द-फ़ौज' और महिलाओं के सम्बन्ध में प्रकाश डाला। विद्यालय की आचार्या श्री जी० एस० राम बी० ए०, बी-टी० ने सारगर्भित भाषण दिया। बीच-बीच में छात्राओं के मधुर गीतों के उपरान्त श्री अध्यक्षा ने नेता जी के गंभीर नेतृत्व की महनीय महत्ता बतलाई।

"स्वाधीनता-दिवस" विद्यालय के गांधी चौक में प्रो० बोरड्या आचार्या विद्याभवन की अध्यक्षता में मनाया गया। कविवर सुमित्रानंदन पंत और श्री सियारामशरण गुप्त के चर्खागीत व कुछ अन्य गीत श्रीयुत शलभ जी तथा अन्य छात्राओं-द्वारा गाये गये। श्री कमलाकुमारी श्रोत्रीय और श्री कमला देवी अग्रवाल के भाषण हुए। बाद में श्री सभापति-द्वारा प्रतिज्ञापत्र पढ़ा गया। श्री बोरिया जी ने शिक्षा, संस्कृति, राजनीति, अस्पृश्यता निवारण आदि प्रतिज्ञाओं पर विशद भाषण दिया।

—शंकर "भारतीय"

* * *

मण्डावा (जयपुर) प्रजामंडल की ओर से श्री सुभाष बोस-दिवस बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। आजाद हिन्द-फ़ौज का एक सैनिक भी उपस्थित था जिसने नेता जी की सैन्य-व्यवस्था एवं संचालन पर प्रकाश डाला। भाषण, राष्ट्रीय-गायन, कविता-पाठ हुए। जिस स्थान पर सभा हुई उसका नाम आजाद-चौक रखने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ। जन-जागृति का श्रेय पं० शुभकरण शर्मा बी० ए० को है। वक्ताओं एवं सक्रिय भाग लेनेवाले कार्यकर्ताओं के संभवतः नाम नोट किये गये जिनमें बाबू रामेश्वर रामगढ़िया 'चञ्चल' आदि मुख्य हैं।

—संवाददाता

उत्तम सुरीले मजबूत
बेंजो
हमारे यहां से थोक मिलते हैं
RAI INDUSTRIES
NUR MAHAL
(JULLUNDUR)
निरर्थ नामा मंगा कर आपनी निजामत को बदावें

अगर यह एल्गिन है तो यह श्रेष्ठ है

टार्किश व हुक्काबेक टावेल, डस्टर, ड्रिल, टिवल, धोतियाँ, साड़ियाँ, चादरें, जालीदार शर्टिंग, तकियेके कपड़े, स्नान की चटाइयाँ, रंगहीन फलालेनी सूती कपड़ा, जालियां, पट्टियां और बिस्तरे की चादरें सबके लिए एल्गिन।

सरकारी कपड़ा (गति) नियंत्रण आर्डर के कारण हम यू. पी., पंजाब, बिहार और बंगाल के मुकामों में सिर्फ गांठों की तादाद में ही थोक माल, या अधिकांश मालगाड़ी द्वारा ही भेज सकते हैं। भारतवर्ष के किसी भी हिस्से में पोस्ट पार्सल या छोटे पार्सलों के रूपमें पेसेन्जर द्वारा निर्यात पूर्णतया बंद है। अतः फुटकर ग्राहक (सिर्फ इन चार प्रांतों में ही) अपने नगरके व्यापारियों से ही हमारा माल लेने की चेष्टा करें।

EK 23

दी एल्गिन मिल्स कं. लिमिटेड कानपूर
प्रमुख विक्रेता (थोक)
मेसर्स रूपनारायण रामचंद्र, गोल्ड जनरलगंज, कानपूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वनस्थली में पंडित नेहरू !

(पेज ६ का शेष)

योजना से उन्हें पूर्ण संतोष था। घुड़-सवारी और तैराकी ने भी उन्हें प्रभावित किया था। उन्होंने कहा कि तैरना तो हर एक लड़के-लड़की को परीक्षा पास करने को अनिवार्य हो जाना चाहिए।

जब संस्था के संस्थापक श्री शास्त्री जी बोलने खड़े हुए तो उन्हें पंडित जी के प्रति आभार प्रदर्शन के अतिरिक्त जैसे और कुछ न कहना था।

* * *

दूसरे दिन प्रातःकाल वनस्थली विद्यापीठ का उत्सव श्रीमती सरोजिनी नायडू की अध्यक्षता में होनेवाला था परन्तु यह जानकर सबको खेद हुआ कि वे जयपुर में अस्वस्थ हो जाने के कारण वनस्थली न आ सकीं और शान्ति-निकेतन के आचार्य क्षितिमोहन सेन ने उनका कार्य वहन किया। विद्यापीठ की मंत्रिणी श्रीमती रतनशास्त्री के छोटे से भाषण में विद्यापीठ के विगत वर्ष की प्रगति का आभास-मात्र मिला और दर्शकगण कुछ अभाव-सा अनुभव करते हुए रह गये। विद्यापीठ ने अपने शिक्षा-क्रम को एक सीमा तक सर्वतंत्र स्वतंत्र बना लिया है जो आठ वर्षों में समाप्त हो जाता है। कम से कम इतनी शिक्षा विद्यापीठ की दृष्टि में भारत की प्रत्येक नागरिक स्त्री को पा लेनी चाहिए। परन्तु यदि वह उच्च शिक्षा भी ग्रहण करना चाहे तो उसका संबंध-सूत्र आगे एम० ए० तक जोड़ा जा सकता है। बाह्य परीक्षा-विभाग में भी शिक्षा के दूसरे अंग शारीरिक शिक्षा, गृहस्थ शिक्षा, ललित-कला, उद्योग आदि साथ चलते रहते हैं। इस प्रकार विद्यापीठ में वह शिक्षा भी है जो बाहर बड़े बड़े कालेजों और विश्वविद्यालयों में मिल रही है परन्तु वह सब मिट्टी की दीवारों में और खपरैलों के नीचे। मैंने सुना कि यहाँ भी शान्ति-निकेतन की भाँति कभी कभी खुले में और कभी कभी वृक्ष के नीचे पढ़ाई हो जाती है। युद्ध के दिनों में चीन में घास-फूस के छप्परों के नीचे बड़े बड़े विश्व-विद्यालय और प्रयोगशालाएँ चलती रही हैं। अनावश्यक आडम्बर और टीम-टाम शिक्षा के लिए नहीं चाहिए। हमारे विश्वविद्यालयों ने इस ग़रीब देश का न जाने कितना पैसा इसी टीम-टाम में लगा रक्खा है। विद्यापीठ भी अपनी परीक्षा 'संस्कृत' प्रमाण-पत्र प्रदान करने के उपरान्त आचार्य क्षिति बाबू ने अपने समावर्तन भाषण में एक मधुर समन्वय का संकेत किया—पूर्व के प्रज्ञान और पश्चिम के विज्ञान का। आचार्य गुरुदयाल मल्लिक ने जो क्षिति बाबू के साथ ही आये थे अपने ललित कंठ से एक भगवत् भजन श्रोताओं को सुना कर तृप्त किया।

* * *

रात को विद्यापीठ की छात्राओं ने हिन्दी के प्रसिद्ध नाटककार प्रसाद जी का 'चन्द्रगुप्त' नाटक अभिनीत किया और दूसरी रात को अँगरेजी के (गाल्सवर्दी) का। संस्कृत के 'सावित्री सत्यवान' के रूपक का भी अभिनय हुआ। यह प्रसन्नता की बात है कि शिक्षण के इस अनिवार्य और महत्त्वपूर्ण अंग नाटच-कला की ओर भी विद्यापीठ का ध्यान रहा है। वनस्थली की शिक्षा, भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता से पोषण पाती है। भारतीय संस्कृति का संस्कृत भाषा से अविच्छिन्न सम्बन्ध है। 'सावित्री सत्यवान' के रूप के अभिनय के पीछे सम्भवतः यही भावना रही होगी। प्रसाद जी के नाटकों में अभिनेयता का अभाव है, ऐसा आलोचक कहते हैं। परन्तु चन्द्रगुप्त के अभिनय को देखकर मुझे यह कहने का साहस होता है कि उनके और नाटक भी सफलतापूर्वक मंच पर दिखाये जा सकते हैं।

* * *

अपने इस लघु प्रवास में मैंने जो कुछ देखा, सुना-समझा उससे मेरी आँखों के आगे भारत राष्ट्र के जीवन के एक अभाव और उसकी पूर्ति के एक शुभ प्रयत्न की सफलता का चित्र खिंच आया है। भारत की राष्ट्रीयता सरकार का ध्यान इस प्रयोग की ओर जाये बिना न रहेगा और दूसरे प्रान्तों में भी वनस्थलियाँ निर्माण होंगी। देश के विचारवान् नेताओं ने भारतीय विश्वविद्यालयों में दी जा रही शिक्षा की बुराइयाँ देखी हैं। गुरुदेव का शान्ति-निकेतन, आर्यसमाज के गुरुकुल, काशी का विद्यापीठ, पूना का आचार्य करवे-द्वारा स्थापित महिला-विश्वविद्यालय ये सब पश्चिमी शिक्षा-पद्धति के विष से बचे रहने की साधना के प्रयत्न ही हैं। वनस्थली की साधना एक दिन अवश्य सिद्ध होगी—यदि राष्ट्र ने उसे बड़े पैमाने पर अपनाया और नारी-निर्माण का महत्त्व भारत ने समझा—क्योंकि नारी के जागरण और शिक्षण पर समस्त देश की भावी पीढ़ी का उत्थान-पतन निर्भर है। राष्ट्र-निर्माण की इस भित्ति में अभी कुछ ईंटें ही रक्खी गई हैं उसे अभी और मिट्टी और चूना चाहिए। वह मिट्टी और चूना मांस और रक्त का होगा। तभी यह राष्ट्र-भवन लोहे के समान पुष्ट बन सकेगा।

* * *

उस दिन प्रातःकाल जब मैं लौट रहा था तब मेरे मनः क्षितिज पर राष्ट्र का वह उज्ज्वल प्रभात प्रकाशमान हो रहा था। जब स्वतन्त्र भारत में भारत की नारियों का ऊँचा स्थान होगा। कुछ पंक्तियाँ भी मेरे स्मृतिपटल पर वर्गाङ्कित हो गई हैं और मैं बार-बार दोहराया करता हूँ—

"एक म्हाको फूल प्यारो,
अधखिल्यो कुम्हला गयो।
सोग बीत्यो हरस छायो,
फूल बाग लगा गयो॥"

शान्ताबाई की वह विभूति जो वनस्थली की मिट्टी में अन्तर्भूत हो गई वहाँ अब जीवनस्थली बनकर लहलहा उठी है। वनस्थली की उस सीपी में जिन मुक्ताओं का निर्माण हो रहा है उनसे भारतमाता का कंठहार निर्मित होगा। एवमस्तु।

गांधी-मीमांसा

इस पुस्तक में पं० रामदयाल तिवारी बी० ए० एल-एल० बी० ने गांधी जी के व्यक्तित्व और सिद्धान्तों की तर्कपूर्ण सुन्दर विवेचना की है। इसे आद्योपान्त पढ़ जाने पर गांधीवाद पूर्ण रूप से हृदयंगम हो जाता है। विद्वानों ने मुक्तकंठ से इसकी प्रशंसा की है। पृष्ठ-संख्या ८५०। सुन्दर सजिल्द प्रति का मूल्य ४) चार रुपये।

आलोचनादर्श

इसके लेखक डा० रामशंकर शुक्ल 'रसाल' एम० ए० हैं। पुस्तक महत्त्व की है। इसमें समालोचना का अन्य शास्त्रों से सम्बन्ध, साहित्य-समालोचना, आलोचना, सुरुचि और दृष्टिकोण, आलोचना का ऐतिहासिक विकास आदि पर भली-भाँति प्रकाश डाला गया है। अध्ययन, अध्यापन और रचनाकार्य करनेवालों के लिए यह पुस्तक बड़े काम की है। ३०० पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर बुकडिपो
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

दिन भर आफिस में काम करने के बाद शरीर और मन थक-सा जाता है। इच्छा होने लगती है, अब घर चलकर शान्ति से एक प्याला चाय पी जाय तो जी में जी आय। चाय पीने के घण्टे भर के भीतर ही दिलो दिमाग तरो ताजा हो जाता है और नई ताकत मालूम पड़ने लगती है। आप और कोई भी पेय पीते तो ऐसा असर न होता। इतना होने पर भी अमीर और गरीब दीनों ही इसे आसानी से खरीद सकते हैं और इसका पूरा आनन्द उठा सकते हैं बशर्ते चाय अच्छी तरह से बनाई जाय।

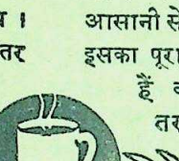

अच्छी चाय बनाने का तरीका

१ केतली में चाय न सिझाइये। सिझाने का बर्तन अलग रखिये।

२ सूखी चाय डालते वक्त वह बर्तन सूखा व गर्म रहे : इससे चाय का रंग व स्वाद ठीक बनता है।

३ हर प्याले के लिये एक चम्मच, और बर्तन के लिये एक चम्मच ताजी, सूखी चाय की पत्ती उसमें डालिये।

४ उसी वक्त का उबला हुआ पानी डालिये—पहले का उबला, कम या ज्यादा उबला पानी मत डालिये। बुदबुदा उठने पर ही पानी उबलता है, उसके पहले नहीं।

५ चाय को पाँच मिनट से कम न सिझाइये।

६ प्यालों में चाय डालकर तब उसमें दूध व चीनी मिलाइये।

चाय
हर वक्त चाय का वक्त

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 249

भारतीय चायों में सर्वश्रेष्ठ
लिपटन की
जाकूजा चाय

LTK 81

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तकें

प्रभाती (काव्य) लेखक, पंडित सोहनलालजी द्विवेदी एम० ए०, प्रकाशक साहित्य-भवन लिमिटेड, प्रयाग। मूल्य २॥)।

हिन्दी-संसार के आधुनिक राष्ट्र-कवि पंडित सोहनलाल द्विवेदी की 'प्रभाती' में युग के स्वर्णिम प्रभात के मधुर स्वागत-गीत हैं। छायावाद के 'जग बदलेगा, किन्तु न जीवन' आदर्श को तिलांजलि देकर आज का कवि यथार्थ की ओर उन्मुख हुआ है। वह राष्ट्रीय चेतना से अनुप्रणीत है। छवि के बन्धनों में न उलझकर वह संसार को आँखें खोलकर देखना चाहता है। काव्य के उपादान दिन-प्रतिदिन बदल रहे हैं। अँगरेजी-साहित्य में 'रोमान्टिक-युग' के बाद जिस प्रकार साहित्यिक प्रति-क्रिया हुई, हिन्दी-साहित्य में भी 'जनहि-ताय' साहित्य लिखने की प्रवृत्ति इधर कुछ दिनों से दृष्टिगोचर हो रही है।

'प्रभाती' की रचना जनता से साहित्यिक सम्पर्क करने का सुन्दर प्रयास है। 'प्रभाती' के कवि की साध कोटि-कोटि मूक पंगु मानवों को वाणी एवं गति प्रदान करना है। इस संग्रह में राष्ट्र के प्राण गांधी जी एवं उनसे सम्बन्धित अन्य विषयों पर मधुर गीत हैं, हमारी संस्कृति एवं साहित्य के मेरुदंड महान् पुरुषों एवं कवियों पर सुघर रचनाएँ हैं, और हैं नित्यप्रति के विषयों पर प्यारे-प्यारे गीत। कवि अपने 'भावों की रानी' का आवाहन करता हुआ कहता है :—

"तुम जगद्धात्रि! जग कल्याणी!
तुम महाशक्ति! सोचो क्या हो,
कविते! केवल तुम नहीं अश्रु
जीवन में जय की आत्मा हो!

* * *

"तुम कर्मगान गाओ जननी,
तुम धर्मगान गाओ धन्ये,
तुम राष्ट्र-धर्म की दीक्षा दो
तुम करो राष्ट्र-रक्षण पुण्ये!"

वर्तमान युग में गांधीवाद का प्रचुर प्रचार हुआ है फिर भी वह वर्त्तमान के सामाजिक एवं राजनीतिक संघर्षों और विद्रोहों से भरा हुआ है, 'प्रभाती' के कवि ने गांधीवाद के भावतत्त्व को वाणी देने में सफलता प्राप्त की है 'बापू के प्रति' शीर्षक कविता की ये पंक्तियाँ :—

जनता के हृदय प्राण!
तुमसे ही राष्ट्र की धमनियों में
जीवन है प्रवहमान!
चेतन है प्रवहमान!
यौवन है प्रवहमान!

* * *

तुम हो उपहासरतनिराहार
निखिल राष्ट्र निराहार!
तुम उदास
हम उदास

राष्ट्र के तीर्थराज 'सेवाग्राम' का वर्णन देखिए :—

फूस की कुटीर बनी,
रहते हैं कौन यहाँ?
अर्धनग्न,
त्यागी से—विरागी से, अनुरागी से—

* * *

होता जहाँ प्रभात
ये ऋषि मुनियों की जमात
जाती चली खेतों में
लग जाते, जोतने में, बोने में
जगता अभिमान उन्हें कृषक के होने में

देश के प्रति प्राण निछावर करनेवाले शहीदों के गौरव के सम्मुख कौन नतमस्तक न हो जायगा? कवि ने भी 'प्रथम प्रणाम' शीर्षक कविता-द्वारा अपने पावन कर्त्तव्य का पालन किया है :—

"जो फाँसी के तख्तों पर जाते हैं झूम
जो हँसते-हँसते शूली को लेते चूम
दीवारों में चुन जाते हैं जो मासूम
टेक न तजते पी जाते हैं विष का घूंट!

* * *

जंजीरों में कसे हुए सिकचों के पार
जन्मभूमि जननी की करते जय जयकार
सही कठिन हथकड़ियों की बेतों की मार
आजादी की कभी न छोड़ी टेक पुकार

व्यंजना करुण है, चित्रण यथार्थ है, भाषा में ओज है। वास्तव में ऐसी ही पंक्तियाँ कोटि-कोटि भारतीयों के हृदय में स्वतंत्रता के लिए मर मिटने की आग धधका सकती हैं।

'प्रभाती' शीर्षक कविता में कवि ने मीठी चुटकी ली है :—

'जग जाती तुम ही संयोगिते!
मत सोतीं यों बेसुध रानी!
तो क्यों होते हम पराधीन,
खोते अपने कुल का पानी।'

इसी प्रकार स्वर्गीय प्रेमचन्द्र तथा 'रत्नाकर' के दुःखद अवसान के अवसरों पर लिखी ये मार्मिक पंक्तियाँ देखिए :—

'प्रेमचन्द! तुमने अपने यौवन
में ही सन्यास लिया
वैभव सुख पर पद-प्रहार करके
कुटिया में वास लिया
गला गला हड्डियाँ बहाकर
रक्त विकसते यौवन का
सींची हिन्दी की फुलवारी
कुंज राष्ट्र के मधुवन का
रत्नाकर जी के बारे में :—
'एक स्वर्णकण खो जाने से,
हो उठता उर कातर
कैसे धैर्य्य धरे वह जिसका
लुट जाये 'रत्नाकर'

'प्रभाती' का अवलोकन करने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि पंडित सोहनलाल द्विवेदी के लिए गांधीवाद 'क्रीड' न होकर 'टेम्परामेंट' है। आपकी कविता सीधे हृदय से निकलती हुई हमारे मर्म को स्पर्श करती है। न कहीं बनावट न शब्दों की तोड़-मरोड़। हिन्दी-साहित्य को आज ऐसे ही 'जनहिताय' साहित्य की आवश्यकता है। हम राष्ट्रीय जागरण के उषा-काल में लिखी गई 'प्रभाती' की रचनाओं का स्वागत करते हैं।

—बरसानेलाल चतुर्वेदी

आरोग्य दिग्दर्शन—लेखक-महात्मा गांधी, प्रकाशक—साहित्य-भवन लिमिटेड, प्रयाग। मूल्य १॥), पृष्ठ-संख्या १२०

'आरोग्य दिग्दर्शन' का यह सातवाँ संस्करण है। इसमें महात्मा गांधी के स्वास्थ्य-सम्बन्धी अनुभवों का साकार रूप है। इसमें उन्होंने अपने जीवन के २० वर्षों का अनुभव दिया है। रोग के सम्बन्ध में उनका विश्वास है कि रोग दूर करने की अपेक्षा उसे मूल ही से न होने देना चाहिए। इस सम्बन्ध में उनके प्रयोग बड़े ही महत्त्वपूर्ण हैं। उन्होंने इस पुस्तक में स्वास्थ्य और उसकी रक्षा के उपाय, हमारे शरीर का भोजन, हमारे शरीर में वायु और पानी की उपयोगिता, व्यायाम, हमारे वस्त्र, स्त्री-पुरुष का सम्बंध, प्राकृतिक चिकित्सा आदि विषयों पर गंभीर दृष्टि से विचार किया है। उनका प्रत्येक विचार अनुभव-जन्य है। गांधी जी मानसिक जगत के गंभीर विचारक हैं। उनका विश्वास है कि बहुत-सी बीमारियाँ मानसिक-क्रियाओं—द्वारा रोकी जा सकती हैं। उनका यह भी विश्वास है कि प्राकृतिक चिकित्सा से बढ़कर दूसरी चिकित्सा नहीं हो सकती। पुस्तक पढ़ने योग्य और अनुकरणीय है। जनता को इससे लाभ उठाना चाहिए।

पेरिस की नर्तकी—लेखक, स्वर्गीय पंडित विश्वम्भरनाथ शर्मा, कौशिक, प्रकाशक—साहित्य-भवन लिमिटेड प्रयाग। मूल्य २) पृष्ठ-संख्या १८४।

'पेरिस की नर्तकी' में स्व० कौशिक जी की [illegible] कहानियों का संग्रह है जिनकी सूची-क्रम से गँवार, पेरिस की नर्तकी, यौवन की आँधी, मोह, पथ-भ्रष्ट, ढपोर-शंख, अभिन्न, प्रकृति, नक़ल, बड़ा दिन और प्रमाद है। प्रत्येक कहानी आदि से अन्त तक रोचक और ललित भाषा में लिखी गई है। कहानियाँ घटना प्रधान होने पर भी लेखक की भावुकता और कल्पना-शक्ति पर यथेष्ट प्रकाश डालती हैं। चरित्र-चित्रण में कौशिक जी अपना एक निजी ढंग रखते हैं। वह अपने पात्रों को जीवन क्षेत्र से चुनते हैं। और उन्हें कहानी-कला के अनुसार सुन्दर और सजीव बनाकर हमारे सामने भेजते हैं। उनके पात्र काल्पनिक नहीं होते। इसीलिए कौशिक जी समाज का चित्र खींचने में सफल होते हैं।

कौशिक जी की कहानियों में जो दूसरी विशेषता पाई जाती है वह उनकी राष्ट्रीयता और भारतीयता है। उनके पात्र भारत के होते हैं और राष्ट्रीय भावनाओं का समर्थन करते हैं। कौशिक जी राष्ट्र-वादी कहानीकार हैं। वह अपने समय से परिचित हैं। इसलिए उन्हें अपनी कहानी के पात्रों के चुनाव के लिए दूर नहीं जाना पड़ता। कौशिक जी का जीवन नगर का जीवन था। इसलिए उनकी कहानियों में नगर-जीवन के द्वन्द्वों की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। प्रेमचन्द ग्रामीण जीवन के समर्थक हैं। उनकी कहानियाँ ग्रामीण जीवन की समस्याएँ लेकर सामने आई थीं। कौशिक जी की कहानियों में यह बात नहीं है। कौशिक जी की कहानियाँ ग्रामीण जीवन की अपेक्षा नागरिक जीवन का अधिक प्रतिनिधित्व करती हैं।

—राजेन्द्रसिंह गौड़ एम० ए०

तुलसी-रत्नावली

संक०, श्री कदारनाथ गुप्त

गोस्वामी तुलसीदास की समस्त अमर रचनाओं का अनुशीलन करना साधारण मानव के लिए सम्भव नहीं है। ऐसी अवस्था में गोस्वामी जी के अमूल्य उपदेशों का लाभ सबको बराबर मिलना सम्भव नहीं था। अतः इस कमी को दूर करने के लिए तुलसीदास की रचनाओं का निचोड़-स्वरूप 'तुलसी-रत्नावली' का प्रकाशन किया गया है। इसमें तुलसीदास के चुने हुए पद्य संकलित हैं। इस एकमात्र पुस्तक में तुलसीदास का समस्त साहित्य समाविष्ट है। मूल्य १॥) डेढ़ रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

बटन! बटन!! बटन!!!

कोटों और कमीजों के अच्छे बटनों की एजेंसी के लिए लिखें।

हंसराज इन्डस्ट्रीज़ लिमिटेड, अमृतसर।

आपकी किस्मत में क्या लिखा है?

अगर आप एक साल के अन्दर पेश आनेवाले अच्छे-बुरे हालतों को समय से पहले जानना चाहते हैं तो आप आज ही हमको सिर्फ पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी फूल का नाम लिखकर भेज दीजिए। बस फिर हम ज्योतिष विद्या के हिसाब से आपके आनेवाले १२ मास का नफा, नुकसान, किस तिजारत में फायदा होगा, किस जरिये रुपया मिलेगा, रोजगार कब मिलेगा, मुलाजमत में तरक्की, तबादला, तनज्जुली, औरत और औलाद का सुख, तन्दुरुस्ती, बीमारी, दूर का सफर, मुकद्दमा और इम्तिहान में सफलता, सगाई शादी, जमीन व जायदाद का सुख, किसी से नया मेल या नफा, सट्टा, लाटरी वा किसी अज्ञात कारण से धन का मिलना सारांश तारीख कार्ड से लेकर एक साल तक होनेवाली कुल बातों का खुलासा यानी माहवारी वर्षफल बनाकर सिर्फ एक रुपया चार आने में वी० पी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक खर्च अलग होगा। साथ में बदकिस्मती को खुश किस्मती में बदलने का उपाय भी लिखा जायगा ताकि आनेवाली मुश्किलों को दूर किया जाय। सिर्फ एक बार की परीक्षा आपको बतला देगी कि हम ज्योतिष विद्या के कितने जानकार हैं। गलत साबित होने पर कीमत वापिस।

श्री स्वामी सत्यनारायण ज्योतिष आश्रम, (D. D.) जालन्धर सिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिन्धी भाषा और हिन्दी-संस्कृत

(पेज ४ का शेष)

उसी वर्ष मिस्टर ईलीयस के नेतृत्व में सिन्धी के कतिपय जी-हुज़ूर विद्वानों की समिति ने अरबी के उन्तीस अक्षरों को सिन्धी की विशिष्ट कंठ तालव्यादि ध्वनियों को प्रतिपादन करने में अयोग्य होने के कारण बावन वर्णों की एक अरबी-सिन्धी लिपि तैयार की। तत्पश्चात् उसी सिन्धी-भाषा में पारसी, उर्दू, मराठी और गुजराती प्रभृति भाषा की पुस्तकों के अनुवाद कराये गये। वही सिन्धी-अरबी लिपि सन् १८६६ में पुनः दुहराई गई। सुर-भारती से उद्भूत सिन्धी का राज्य कारणों से लिपि-परिवर्तन मोटी भूल ही नहीं सिन्धी का अधःपतन था। ठीक डाक्टर ई० ट्राप ने घोषणा की थी कि सिवा देव-नागरी के सिन्धी बोली को कोई भी लिपि अनुकूल नहीं हो सकती। आप सिन्धी व्याकरण के २६वें पृष्ठ पर फिर उसी बात को दुहराते हुए कहते हैं कि भारतीय भाषाओं को अरबी लिपि में लिखना उनकी हत्या करना है।"

सिन्धी के विदेशी भाषा में लिखी जाने का दुष्परिणाम यह हुआ है कि इतर प्रान्तीय इसका आविर्भाव अरबी तथा फ़ारसी से मानते हैं, यहाँ तक कि भाषा शास्त्रज्ञ भी सिन्धी की वंश परम्परा को नहीं जानते हैं। परिणाम स्वरूप सिन्धी हिन्दुओं का भारत के अन्य हिन्दुओं से सांस्कृतिक सम्बन्ध-विच्छेद हो गया है। हम धार्मिक ग्रन्थों के परिशीलन से सर्वथा वंचित रहते हैं, जो केवल हिन्दी और संस्कृति ही में पाये जाते हैं। यही तो कारण है कि सिन्ध हिन्दू नये-नये मतमतान्तरों को अपनाते हैं। पाश्चात्य सभ्यता के अनन्य उपासक बनकर आमोद-प्रमोद में अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

सिन्ध में हिन्दुओं की अल्पसंख्या होने के कारण साम्प्रदायिकता के नाम पर देवनागरी को ठुकराना यथेष्ट तो नहीं था जब कि संस्कृति से आविर्भूत समस्त भारतीय बोलियाँ देवनागरी में ही लिखी जाती हैं। वह तो केवल बहाना मात्र था। क्या बंगाल में बंगाली, महाराष्ट्र में मराठी, गुजरात में गुजराती को वहाँ के निवासी यहूदियों, ईसाइयों और मुसलमानों ने मातृभाषा के रूप में स्वीकार नहीं किया है? सिन्ध में भी सिन्ध के मुसलमान इसे प्रेम से अपनाते।

इस सम्बन्ध में हमें यह बतलाते हुए प्रसन्नता होती है कि सिन्धी की समस्त क्रियायें, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय, प्राकृतिक और भौगोलिक नाम, पशु और पक्षियों की बोलियों, उद्योग धन्धों के नाम, तथा अन्यान्य आवश्यक शब्द जो भाषा के मुख्य अंग हैं, संस्कृत के ही शब्द हैं। फ़ारसी और अरबी के केवल राजकीय, शिकार, युद्ध, सेना और औषधि सम्बन्धी नाम सिन्धी में स्थान प्राप्त कर सके हैं।

अतः यह निर्विवाद सत्य है कि प्रचलित अरबी-सिन्धी-लिपि अप्राकृतिक और अयोग्य है। किन्तु यह लगभग अस्सी वर्षों से प्रयोग में लाई जा रही है। प्रान्त की बहुसंख्यक मुसलिम जाति भी इसके ही पक्ष में है। इस समय लिपि परिवर्तन के प्रश्न को हल करना अतीव दुष्कर ही नहीं असाध्य भी है।

अतः भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए पाश्चात्य सभ्यता एवं धर्म को सर्वोत्कृष्ट माननेवाले, विनाशकारिणी तन्द्रा में झूमते हुए भारतीयों को बचाना हमारा पुनीत कर्त्तव्य है। इसके लिए राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा संस्कृति ही अमोघ औषधि हैं। इस ओर सिन्ध अग्रसर हो रहा है किन्तु वह नहीं के बराबर है। इन सब बातों को ध्यान में रखकर ही सिन्ध ने अपने प्रांगण में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का आह्वान किया है। अतएव भारती हिन्दी के कर्मनिष्ट पुजारियों का ध्यान हम इस ओर आकृष्ट करते हैं कि अधिवेशन के अवसर पर आप समस्त आपदाओं को झेलते हुए भी सिन्ध में पधारें। भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी को समुन्नत तथा संवर्धन करने के लिए कोई वास्तविक पथ निर्देश करें।

—शिवाजी नगर
कराँची।

लुंगियों या तहमतों के प्रदेशों में

(पेज ७ का शेष)

यातायात का साधन मोटर-बस और ट्राम हैं। मोटरबस हर मार्गों में दौड़ती रहती हैं।

समुद्र के किनारे कई अच्छे मकान बने हैं। प्रेसीडेन्सी कालेज बिलकुल समुद्र के तट पर है। समुद्र की भव्य जलराशि क्लासों से दिखाई पड़ती है। मीलों लम्बी रेतीली जमीन निकल गई है। सैकड़ों आदमी घूमते हुए दिखाई पड़ते ह। समुद्र का दृश्य यहाँ से देखने में बहुत शोभायमान मालूम होता है। मद्रास आनेवाले यात्री एक बार इसे जरूर देखते ह। प्रेसीडेन्सी कालेज की बड़ी इमारत समुद्र से बहुत अच्छी मालूम होती है। विद्यार्थियों की कल्पना-शक्ति समुद्र का दृश्य देखकर अवश्य बढ़ती होगी। लेडी विल्गडव स्त्री कालेज की इमारत भी यहीं बनी है। यूनिवर्सिटी परीक्षा-भवन की इमारत यहीं है! गवर्नमेंट की बहुत-सी इमारतें समुद्र के किनारे बनाई गई हैं।

जहाजों को सुरक्षित रखने के लिए समुद्र के किनारे सीमेंट आदि चीजों से बहुत पोख्ता दीवालें खड़ी की गई हैं। लाखों रुपया खर्च हुआ है। समुद्र का तूफान यहाँ ठहरनेवाले जहाजों को क्षति नहीं पहुँचा सकता। समुद्र के घेरे में बहुत-से जहाज ठहरे रहते हैं। दूर-दूर देशों के जहाज यहाँ रुकते हैं। खाने-पीने की चीजें लेते हैं। हिन्दुस्तान की चीजें लादकर विदेशों में ले जाते हैं। वहाँ की चीजें यहाँ पटकते हैं। बन्दरगाह का प्रबन्ध अँगरेजों के हाथ में है। युद्ध के समय इस शहर और बन्दरगाह पर जापानियों का सदैव खतरा बना हुआ था। लोग भयभीत रहते थे। फ़ौजों का एक विशाल अड्डा यहाँ बना हुआ था। कोलम्बो जाने का यहीं से मार्ग है। लंका यहीं से जाते हैं। दक्षिण-भारत का सबसे बड़ा प्रधान नगर मद्रास है। यहाँ केवल हिन्दी जाननेवाला अपना काम नहीं चला सकता। पानी मिलना भी कठिन है। यहाँ के लोग हिन्दी नहीं जानते। शहर में जब मैं घूमने गया तब कुछ लोगों से चीजों का नाम पूंछा—तो मालूम हुआ वे मेरी बातों का जरा-सा भी संकेत नहीं समझ सके।

हिन्दी को समझना उनके लिए कठिन मालूम हुआ। शहर में मारवाड़ी और गुजराती व्यापारी भी अच्छी संख्या में मौजूद हैं। यहाँ के व्यापार में इन लोगों का खासा अच्छा स्थान बना है। बाहरी व्यापारी यहाँ की प्रान्तीय भाषाओं को अच्छी तरह लिख-बोल सकते हैं। कई गुजराती और मारवाड़ी बहनों को तामिल और तेलगू धाराबाहिक बोलते हुए सुना। साहूकार सेठ में गुजराती और मारवाड़ी-व्यापारियों की बहुत बड़ी संख्या है। यहाँ की राजनीति में इन व्यापारियों की कोई हस्ती नहीं है। राजनीति और समाजनीति में कुछ उदासीन से मालूम होते हैं। महात्मा जी के प्रति अच्छी श्रद्धा रखते हैं। यहाँ का रामकृष्ण हाईस्कूल और मिशन भी देखने योग्य है। मद्रास शहर में कई संस्थाएँ चलती हैं। राजनीति की अच्छी प्रगति है। अँगरेजों के प्रति छोटे-बड़े सभी घृणा करते हैं। सबमें आजादी की तमन्ना है। अँगरेजों को लुटेरा और डाकू कहकर पुकारते हैं।

महिलाओं में पर्दा नहीं है। अच्छे-अच्छे घरों की स्त्रियाँ सड़कों पर घूमती हैं। सबसे बातें करती हैं। डर की भावना नहीं है। मर्दों के समान चलती-फिरती हैं। अँगरेजी जानती हैं। शिक्षा का अच्छा प्रचार उनमें है। सार्वजनिक कामों में हिस्सा बँटाती हैं। स्कूलों, कालेजों और यूनिवर्सिटियों में पढ़ने जाती हैं। पुरुषों के बराबर अपना हक़ चाहती हैं। उत्तर-भारत की स्त्रियों की तरह साड़ी पहनती हैं। बाल खुला रखती हैं। चेहरे पर भयभीत होने का नामो-निशान नहीं। आजादी से चलती हैं। रहन-सहन बहुत ऊँचा और अच्छा मालूम होता है।

हम लोग प्रेसीडेन्सी कालेज देखने गये। सैकड़ों विद्यार्थी लुंगी पहने हुए थे। बड़े-बड़े प्रोफ़ेसर लुंगी-कुर्ता के वेष में मिले। अपनी वेश-भूषा को नहीं छोड़ा है। अँगरेजी सभ्यता को नहीं अपनाया है। हालाँकि वे अँगरेजी धाराप्रवाह बोलते-लिखते हैं लेकिन अपने खान-पान, रहन-सहन को बहुत आदर करते हैं।

मद्रास
२८ जनवरी ४६

बर्मा को स्वाधीनता क्यों नहीं ?

(पेज ५ का शेष)

प्रचार करती रहती है कि ये छापेमार 'डाकू' और 'लुटेरे' हैं।

बर्मा पुनः साम्राज्यवादी चंगुल में

बर्मी छापेमारों की मदद से जापानियों को निकाल भगाने के बाद ब्रिटिश सरकार ने फिर अपनी साया बर्मा पर डालनी शुरू की। पहले वहाँ सामरिक सरकार क़ायम की गई। आवश्यकता तो यह थी कि बर्मा के क्षत-विक्षत आर्थिक और सामाजिक ढाँचे को सुधारा जाता और जापानी क्रूरता से त्रसित और पीड़ित बर्मी जनता को राहत पहुँचाने को युद्धोत्तर पुनर्निर्माण की शीघ्र से शीघ्र योजनायें बनाई जातीं लेकिन ब्रिटिश साम्राज्यवादियों को तो पहले अपने पैर मजबूत करने की पड़ी थी। कुछ अरसे बाद बर्मा के सामरिक शासन का अन्त करके पुनः युद्ध-पूर्व की राज्य-व्यवस्था क़ायम की गई लेकिन इससे बर्मी जनता को कुछ फ़ायदा नहीं हुआ। आँगसान के नेतृत्व में ब्रिटिश साम्राज्य से बर्मा प्राप्त करने के लिए 'फ़ासिस्ट विरोधी जन-स्वाधीनता लीग (ए० एफ० पी० एल०) नामक एक संयुक्तराष्ट्रीय संगठन का निर्माण हुआ इसमें बर्मी राष्ट्रीय सेना, कम्युनिस्ट पार्टी, क्रान्तिकारी पार्टी, फ़ेबियन पार्टी, पूर्वी एशिया युवक-संघ, अराकान कांग्रेस आदि सम्मिलित हैं।

अभी हाल में बर्मा सरकार ने शासन में सहयोग देने के लिये बर्मी पार्टियों से अपील की थी और गवर्नर ने अपनी कार्यकारिणी में इस लीग को मुख्य स्थान देने का आश्वासन दिया था लेकिन आँगसान ने उसे अस्वीकार कर दिया। ब्रिटिश साम्राज्यवादी बर्मा में वही पुरानी नीति अपनाये हुए हैं। बर्मा का ब्रिटिश सरकार पर ८७ लाख स्टर्लिंग क़र्ज़ है उसे बर्मा की आर्थिक अवस्था सुधारने में न लगाकर ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ें मजबूत करने में खर्च किया जा रहा है। बर्मा के आर्थिक पुनर्निर्माण की योजना बनी है और भारत की ही तरह बर्मा में भी वहाँ एकमात्र सत्ताधिकार पूंजीपतियों का ही है। एक 'नागरिक वितरण बोर्ड' का निर्माण हुआ है जिसमें किसी बर्मी को नहीं लिया गया उसके दो मेम्बर योरोपियन हैं और तीसरा सदस्य एक भारतीय व्यापारी है। बर्मा के भविष्य व्यापार के लिए सिर्फ़ अँगरेजी और भारतीय कम्पनियों को ही अधिकार दिये गये हैं।

ब्रिटिश सरकार की इस नीति के विरुद्ध आँगसान और 'लीग' ने एक बड़ा प्रदर्शन भी किया था उसके बाद से अब तक उसकी शक्ति प्रबलतर होती जा रही है। अभी हाल में यूगैंडा में अँगरेजी नजरबन्दी से छूटकर आये बर्मा के भूतपूर्व प्रधान मंत्री यू-सा जिन्हें जापान से मिले होने के सन्देह में गिरफ़्तार किया गया था, ने इस जन-स्वाधीनता लीग के कार्यक्रम में विश्वास प्रकट किया है और बर्मा के हित के लिए कम्युनिज्म और सोशलिज्म सिद्धान्तों को ही बताया है।

क्या आज आपने मेक-लिन से दाँत साफ़ किये हैं?

हाँ, मैं कभी भूलता नहीं

चमकते हुए सफ़ेद दाँतों, स्वस्थ मसूड़ों व ताजे शीतल मुख के लिए मेकलिन्स का व्यवहार कीजिये। यह शीघ्रता से धब्बों को मिटाता है 'एनामेल' को श्वेत व चमकीला बनाता है और प्रयोग में सस्ता पड़ता है।

सभी केमिस्टों के पास व स्टोरों में मिलता है

Copyright Smith (S) LTD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन-क्रान्ति

यह सामाजिक उपन्यास है। इसमें सेठ-साहूकारों तथा बड़े आदमी कहे जाने-वाले व्यक्तियों की हृदयहीनता, पुलिस तथा अन्य अधिकारियों के हथकंडों और मुट्ठी गरम करने के लिए निरपराधों को अपराधी ठहराकर कारागार के कष्ट भोगने के लिए विवश करने के मायाजाल का आकर्षक वर्णन है। अन्त में अत्याचारी के हृदय-परिवर्तन का अपूर्व चित्रण है। पृष्ठ-संख्या ४००। सजिल्द प्रति का मूल्य केवल २) दो रुपये।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

मधूलिका—कविवर अंचल की मधुर कविताओं का संकलन है। इसकी कोमल और विदग्ध कविताओं में एक मोहिनी ज्वाला है। विद्वानों ने एकस्वर से इसकी प्रशंसा की है और हिन्दी के आधुनिक काव्यों में मधूलिका का स्थान बहुत ऊँचा बताया है। कवि को अपनी इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक पर चक्रधर-पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। इसकी कवितायें भावुक काव्य-प्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। यौवन और सौन्दर्य के ये गीत आधुनिक हिन्दी-काव्य में अमर हैं। मूल्य २)

प्रकाशक—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

स्टेनेजमा
मलहम
दाद, दिनाय, फोड़ा फुन्सी, जले, कटे, मुहासे, सड़ा, गला घाव तथा एक्जिमा
आरोग्य करने में अद्वितीय है
इंडिया
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं० लिः
कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ कराची अमृतसर
SSK 123

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयां—
क्रीमोला टाफी, फ्रट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

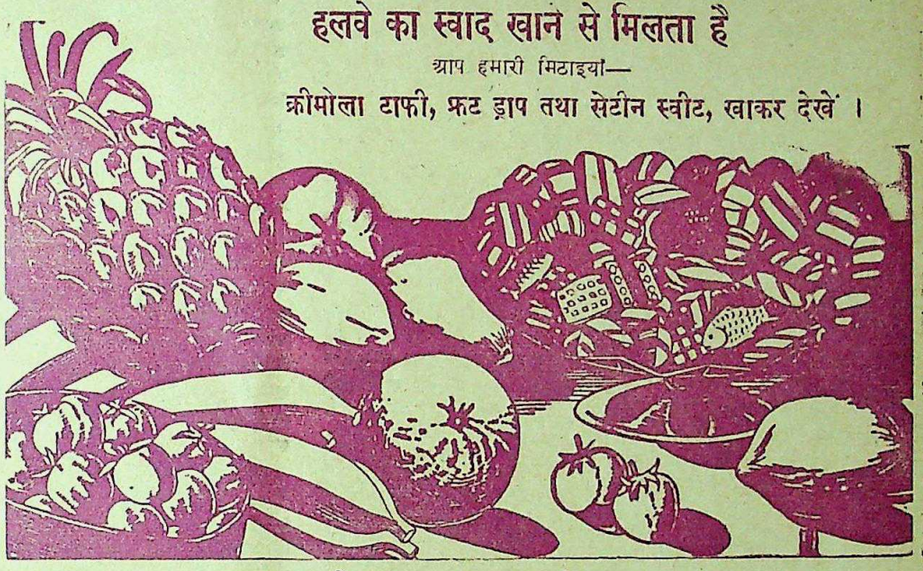

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

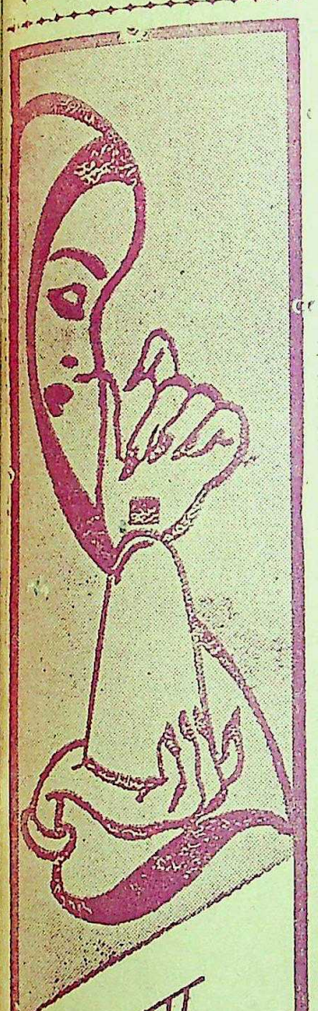

लावण्य का सार 2

टाटा का थ्री डी कोलोन

दी टाटा आयल मिल्स कं० लि०

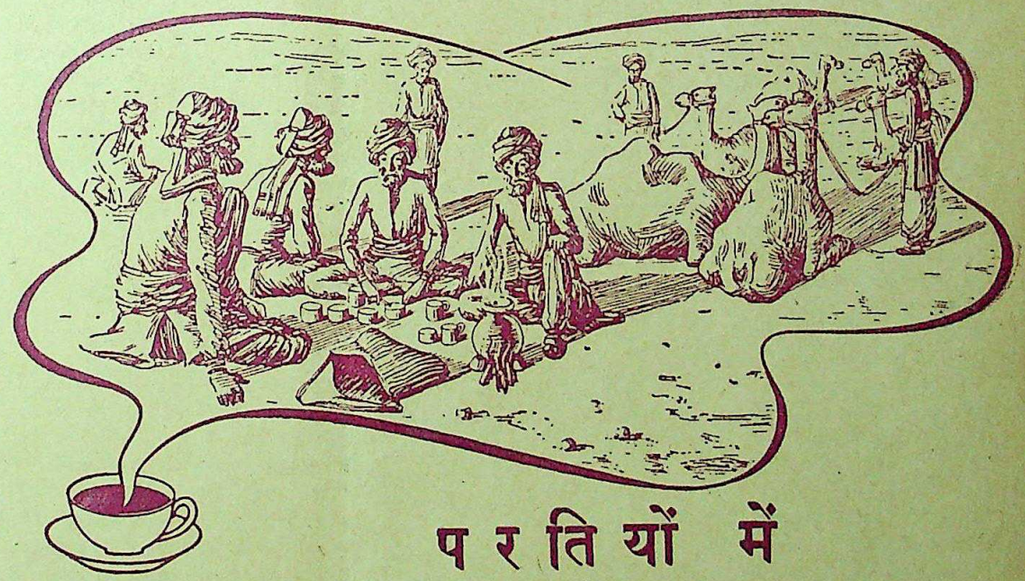

प र ति यों में

ऊँटों की पंक्ति हिलते-डोलते टन् टन् शब्द से निद्रा-समलय प्रवाहित करती हुई रेतीली पगडंडियों व उपत्यकाओं में चलती हुई, सैन्य-दलों से भी अधिक अपनी अग्रगति में रजकणों को वायुमण्डल में उड़ाती हैं। सवार, भूमि से इतने ऊँचे पर होते हुए भी अल्प समय में ही तृष्णाकुल हो पड़ता है—कण्ठ भी शुष्क हो जाता है।

अधिकतर जलहीन, सुदूरस्थ स्थानों से ऊँट की सवारियाँ चलती हैं। इन्हें झरना या बारिश के जल का तालाब जहाँ भी मिलता है वहीं ताजा ब्रुक बण्ड चाय का सरंजाम रहता है।

राजपूताना व बलूचिस्तान की मरुभूमियों में, उत्तर-पश्चिम की पथरीली घाटियों के पथों में भी ताजा ब्रुक बण्ड चाय सालों भर सप्लाई होता है।

व्यापक वितरण—
सबों के लिए ताजा चाय

ब्रुक बण्ड

दो प त्ति याँ औ र ए क क ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Estd. 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.I.M.S. १०) H.M.B.S. १५) H.M.D.S २५)। पुस्तक-अ० पारिवारिक १) बायोकेमिक १) १००० रेडलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्सनरियाँ १॥) आर्गेनन १), फार्माकोपिया १॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायँगी। डा० खं० माफ—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≈) ड्राम। आउन्स ॥) घरेलू बक्स ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha. M.D.S. (U.S.A.)

सिर्फ उत्तम दवा ही
आपके फेफड़ों के लिये गुणकारी है

सिरोलीन 'रुचि'

शरदी और खांसी के लिये

रोना

हँसना

ग्राइप वाटर
के उपयोग के बाद
पेट के दर्द व खट्टे डकार से
छुटकारा मिलता है।

WOODWARD'S
GRIPE WATER
— keeps baby well

"रुप से लड़ता हुआ बालक" ही असली बुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहचान है। "बालये माता जी" आप अपने बालक के हित के लिए इसको अवश्य देख लिया करें

1-WW 116—117 W. WOODWARD LTD., LONDON, ENGLAND.

मझली दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पिता से भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर सकती है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

"रुपया लगाने की पूर्णतया सुरक्षित मदों में नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स से उत्तम मद नहीं मिलेगी।"

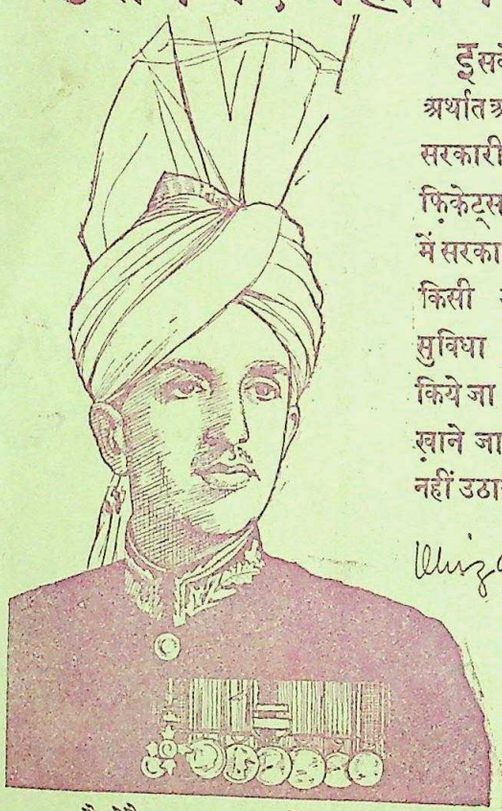

इसके लाभ स्पष्ट हैं, अर्थात अधिक ब्याज और सरकारी गारंटी, ये सर्टिफ़िकेट्स उपयुक्त क़ीमत में सरकार द्वारा अधिकृत किसी भी एजण्ट से सुविधा के साथ प्राप्त किये जा सकते हैं-डाकख़ाने जाने का भी कष्ट नहीं उठाना पड़ता।"

Muzaffar Hayat

लैफ़्टैनैन्ट करनल आनरेबल मलिक ख़िज़िर हयात खां टिवाना, ओ. बी. ई.
प्रधान मन्त्री पंजाब।

संक्षिप्त विवरण

(१) आप ५), १०), ५०), १००), ५००), १०००) या ५०००) के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) एक व्यक्ति ५०००) से अधिक मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स नहीं ख़रीद सकता। ये इतने उपयोगी हैं कि इनका राशन करना ही उचित समझा गया है। हां दो व्यक्ति मिलकर १०,०००) के सर्टिफिकेट्स मोल ले सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है।

(४) इस प्रकार अवधि पूरी होने पर ४-१/६% वार्षिक ब्याज मिलता है।

(५) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(६) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं (५) का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष पश्चात ही भुनाया जा सकता है) परन्तु वास्तविक लाभ इसी में हैं कि १२ वर्ष के पहिले इन्हें न भुनायें।

(७) जिनकी बचत थोड़ी है वह १), ॥) ॥) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्पस ख़रीद सकते हैं। ५) के स्टैम्पस जमा होने पर एक नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट मिल जायेगा।

(८) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्पस डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकृत एजण्टों अथवा सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

आप अपनी बचत से ५०% लाभ उठाइये

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिये।

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष कि० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित और प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

र, १७ फरवरी, १९४६ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 17th February, 194

लक्ष्मण-शक्ति—कविवर श्री राजाराम श्रीवास्तव बी० एस-सी० एल-एल० बी० की एक बहुत ही उत्तम कोटि की रचना है। इस खण्ड-काव्य की रचना रामायण के लंका काण्ड की उस सुप्रसिद्ध घटना के आधार पर की गई है, जब कि लक्ष्मण जी मेघनाद से युद्ध करते हुए उसके द्वारा चलाई गई शक्ति के हृदय में लग जाने पर मूर्च्छित होकर गिर पड़े थे और उनके जीवित रहने की आशा नहीं रह गई थी। कवि ने उस समय की मर्य्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी की शोभामय अवस्था का बहुत ही आकर्षक और हृदयग्राही वर्णन किया है। मूल्य ।।) आने।

ब्रिटिश माल का आयात आज क्यों ?
नोटों के आर्डिनेंस और चोर-बाजार

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

'ठक्कर बापा भवन' का शिलान्यास क्यों ?
कहानी, 'रंगमंच' और 'मातृ-मन्दिर' ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सपट लोशन

दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.

सपट ऑन्ड कं. लि.
बम्बई नं. २.

कमजोरी व बिमारी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो

डॉ. गौतमराय केराए दैनिक फॉस्फरस पिल्स

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी
एल० एस० धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

स्टैनड्रीट की ब्रिलियन्टाइन हेयर ऑयल परमानेंट वेविंग

ठोस तरल
सुगंधित
कैन्थराइडिन
कैस्टर
कोकोनट
गोल्डेन
सैचेट्स
फ्लुइड् लोशन
तरल शैम्पू
स्टैनक्रीम

स्मिथ स्टैनिड्रीट एण्ड कं० लिः कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ कराची अमृतसर
SSK 122

सिरोलीन 'रुचि'

शरदी और खांसी के लीये

निश्चय उसने लाइफबॉय की आदत सीखी है!

वह स्कूल जा रहा है। वहाँ से वह अपने साथ क्या लाएगा? नया ज्ञान, नये तरीके—और शायद किसी रोग के कीटाणु भी! माँ अपने छोटे बच्चे को सुरक्षित रहने की शिक्षा देकर बाहर भेजती है—सब से अच्छी शिक्षा लाइफ़ बॉय साबुन का दैनिक इस्तेमाल है—जो गंदगी के उस ख़तरे से रक्षा करता है जो स्वस्थ से स्वस्थ बच्चे को भी रोग लग सकता है।

लाइफबॉय का व्यवहार करना एक ज़रूरी आदत है

L 78-760 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष ८, संख्या २५] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक रविवार, १७ फरवरी, १९४६

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

भारत-कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू की हीरक जयंती समस्त भारत में गत १३ फरवरी को धूमधाम से मनाई गई।

सचमुच भारत-सरकार बड़ी ही चतुर है और फिर जिस सरकार में मिस्टर मुडी ऐसे गवर्नर हों, उसका क्या कहना है? सिंध में संयुक्त मंत्रिमंडल बनते-बनते रह गया। कांग्रेस तथा अन्य मुस्लिम दलों के सहयोग से वहाँ प्रजातंत्रात्मक मंत्रिमंडल बनने ही वाला था कि मिस्टर मुडी ने मुस्लिम लीग के नेता को बुलाकर मंत्रिमंडल बना दिया। क्यों न हो, आखिर सिंध के पुराने मंत्रिमंडल की परम्परा कैसे टूट सकती थी? अब तक सिंध में मुस्लिम लीग का मंत्रिमंडल था, इसलिए जिस तरह भी हो, लीगी मंत्रिमंडल वहाँ क़ायम रहना ही चाहिए। कांग्रेस तथा स्वतंत्र मुस्लिम लाख चेष्टा करें किन्तु कोई नई बात हो कैसे सकती है? और फिर ऐसी हालत में जब सरमुडी मैन साहब वहाँ के गवर्नर बने बैठे हों? बात यह है कि पाकिस्तान तो किसी न किसी दिन बनेगा ही और उसमें सिंध भी रहेगा ही, इसलिए यदि लीगी मिनिस्टरी रहती है तो पाकिस्तान बरक़रार नहीं तो वह हाथ से निकल गया तब क्या होगा? सचमुच सिंध की सरकार को हमारे मुसलमान लीगरों, विशेषकर मुस्लिम लीग को क़ायम रखने का दाँव-पेच जारी रखना चाहिए। क्योंकि भविष्य में ब्रिटेन जो कुछ भारत को देनेवाला है, उसकी शुरुआत तो इसी तरह से होगी।

* * *

आसाम में कांग्रेसी मंत्रिमंडल बन गया। श्री बारदोलोई ने कांग्रेसी मंत्रिमंडल बना लिया। चलिए, कांग्रेसी मंत्रिमंडलों का प्रारम्भ तो हुआ। होना ही चाहिए, सर सादुल्ला कहाँ तक अपनी पुरानी लीक पीटते? यद्यपि मिस्टर मोहम्मदअली जिन्ना के अनुसार आसाम पाकिस्तान की जायदाद है फिर वहाँ कांग्रेसी मंत्रिमंडल कैसे बन गया? कम से कम सरकार को तो इस बात का ध्यान रखना ही चाहिए। क्योंकि उसे तो बड़े क़ायदे से भारत को स्वाधीनता देनी है। हिन्दू और मुसलमान दोनों को उनकी माँगों के अनुसार सरकार स्वराज्य देगी ही। लेकिन जान यह पड़ता है कि सरकार पुरानी परम्परा को दुहरा रही है। आसाम में पहले भी कांग्रेसी मंत्रिमंडल था, इसलिए इस समय भी वहाँ कांग्रेसी ही मंत्रिमंडल बनना चाहिए। शुक्र है, सरकार की बुद्धि भ्रष्ट नहीं हुई। गनीमत यही है।

वाइसराय लार्ड वैवेल भी बड़े माकूल दिमाग़ के जान पड़ते हैं। भारत में भुखमरी शुरू हुई और महात्मा गांधी से मिलने की उनकी उत्सुकता बढ़ी। और वाइसराय साहब जब महात्मा गांधी से मिलने के इच्छुक हुए तो फिर वह मिस्टर जिन्ना से मिलने को उत्सुक क्यों न होते? हिन्दू-मुसलमान उनकी निगाह में एक हैं। महात्मा जी कहते हैं कि हम राष्ट्रीय हैं और कांग्रेस सारे देश के लिए है लेकिन सरकार कहती है कि आप लाख कांग्रेसी हों लेकिन हैं तो हिन्दू ही। हाँ, वाइसराय ने अन्न-समस्या को भारतीय राजनैतिक अड़ंगा समझ लिया, ऐसा कुछ समझ में आता है, तो फिर वह महात्मा गांधी या मिस्टर जिन्ना से ही क्यों मिल रहे हैं, क्यों नहीं शिमला-सम्मेलन की तरह भारत के सभी राजनैतिक दलों के नेताओं को इकट्ठा करते जिससे खूब खुलकर भोजन-समस्या सुलझाने के सम्बन्ध में, वार्तालाप और बहस-मुबाहसा हो जाये। क्योंकि अब पेट भरने की दवा सरकार के पास विचार-विमर्श और सलाह-मशविरा ही रह गया है। बिना पंचायत किये भला कहीं भोजन की समस्या हल हुई है? जब तक लम्बी

अखिल-भारतीय समाचार-पत्र संपादक सम्मेलन के नये सभापति सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री तुषारकांति घोष, संपादक 'अमृत बाजार पत्रिका।'

तकरीरें न होंगी, सभी बिरादरी के लोग इकट्ठे न कर लिए जायेंगे तब तक पुजारी लार्ड वैवेल भोजन-भोग के सम्बन्ध में कोई फैसला कैसे देंगे? वाकई हमारी सरकार है बड़ी चतुर और बुद्धिमान्! वह जो कुछ करती है अकेले नहीं पंचों की राय से। सचमुच बड़ा भारी न्याय है।

* * *

महात्मा गांधी ने वाइसराय के पत्र का उत्तर देते हुए कहा है कि वर्तमान गैर-जिम्मेदार कार्यकारिणी को समाप्त कर देना चाहिए। यही नहीं गांधी जी ने कहा है कि राष्ट्रीय सरकार की स्थापना जरूरी है। गांधी के परामर्श को कौन अस्वीकार कर सकता है? गांधी जी ने जो कुछ कहा है क्या वाइसराय महोदय उधर ध्यान देंगे? क्या वाइसराय की कार्यकारिणी को सचमुच तोड़ देंगे? सरकार उन हिमायतियों को क्या अपने से अलग कर देगी? अपने राम की राय में बस राम भजो! मिस्टर जिन्ना अड़ंगा डालेंगे तो! वह कब चाहेंगे कि कार्यकारिणी कौंसिल भंग कर दी जाये? इसलिए एक तरफ़ जनता भूखों मरे, राशनिंग अपने करिश्में दिखाये और दूसरी ओर सरकार पंचायत करे, बस भोजन की समस्या के हल होने में फिर कसर क्या रहेगी?

अखिल-भारतीय समाचार पत्र-संपादक सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्री एस० सुब्रह्मन्यन, संपादक 'लीडर'।

अखिल-भारतीय समाचार-पत्र-संपादक सम्मेलन के गत वर्ष के सभापति श्री एस० त्रैलंबी, संपादक 'यांत्रिकानिकल'।

जाग! *

लेखक, श्री 'बच्चन'

(मुहम्मद अली जिन्ना को)

जाग जननि तेरे बच्चे सब करते तेरा आवाहन,
करते हैं तेरे चरणों में तन-मन-जीवन सब अर्पण!
नव प्रभात के नवल स्वप्न में रात कालिमा निज धोती,
बँधी विषादों के बंधन में, मा, तू क्यों अब तक सोती?
जाग, काट उन संकट पाशों को जिनमें हम फँसकर दास,
जाग, हमारे भुजदंडों के अन्दर भर जय का विश्वास!
आत्म-शक्ति, आत्माभिमान का तेरा जो अक्षय भंडार
जब हम तेरे, बना हमारा उस पर है निश्चय अधिकार।
तेरी ढाल हमारी छाती, हृदय हमारा तेरा थान,
तुझे छोड़कर नहीं हटेंगे पीछे, एक हमारी आन।
मा, हम तेरी कथा गगन के तारों तक पहुँचायेंगे
मा, हम तुझको गिरि-गौरव की चोटी पर बिठलायेंगे।
हिन्दू—मा हिन्द, हमारी पूजा-माला से हो तेरा शिर शोभित!
पारसी—मा हिन्द, हमारी आशा-ज्वाला से हो तेरा पथ ज्योतित!
मुसलमान—मा हिन्द, हमारी हुब्बुल वतनी-तेगों से हो तू रक्षित!
ईसाई—मा हिन्द, हमारे श्रद्धा-गीतों से हो तू नित-नित वंदित!
सब धर्म—मा हिन्द, हमारी भक्ति अटल तेरे प्रति व्यर्थ न जायेगी,
उठना होगा ही तुझको जब यह सारी जाति जगायेगी।

* श्रीमती सरोजिनी नायडू की अँगरेजी कविता Awake! का हिन्दी रूपान्तर। यह कविता सन् १९१५ के कांग्रेस अधिवेशन में पढ़ी गई थी। आज (१३ फरवरी, १९४६) को जब समस्त देश में उनकी हीरक जयन्ती मनाई जा रही है, तब मैं भी उनकी इस महत्त्वपूर्ण कविता का हिन्दी रूपान्तर उपस्थित कर उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि चढ़ाता हूँ—बच्चन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

अन्न का नया संकट

भारत में विशेषकर संयुक्त-प्रान्त में अन्न का आज नया संकट सर पर मँडरा रहा है। जिस अन्न-संकट के कारण बंगाल को त्रस्त ही नहीं होना पड़ा बल्कि अपने लाखों प्राणियों से उसे हाथ धोना पड़ा और अकाल से त्राहि-त्राहि मच गई, आज उसी संकट की भावी आशंका समस्त भारत में दिखाई दे रही है। गत महासमर के कारण यों ही जनता परेशान थी तथा अन्न और वस्त्रों के अभाव ने उसे एकदम जर्जरित बना दिया था। वह आशा कर रही थी कि अब समय बदल रहा है और शीघ्र ही उसके अभावों की पूर्ति ही नहीं होगी वरन् संकटग्रस्त अवस्था से उसका पूर्ण छुटकारा हो जायेगा किन्तु आज आसार कुछ और दिखाई दे रहे हैं। सम्भव है उसे पहले से कहीं अधिक अन्न के भयंकर अभाव का मुक़ाबला करना पड़े। संयुक्त-प्रान्त का मुख्य खाद्य गेहूँ है। सरकार का कन्ट्रोल-व्यापार तो पहले ही से जारी है। सरकार नपी-तुली भोजन-सामाग्री पहले से ही देने के लिए बाध्य है और अब तो वह स्थिति आ गई है कि गेहूँ दिन प्रतिदिन गायब होता जा रहा है, क़ानून और व्यवस्था का इतना प्राबल्य बढ़ रहा है कि कुछ कहा नहीं जा सकता कि सरकार भविष्य में इस सम्बन्ध में क्या नीति ग्रहण करेगी? क्या जनता भूखों मरेगी? उसे पेट भर भोजन मिलना भी कठिन हो जायेगा? सरकार अपने खुदाई क़ानून से पेट पर प्रतिबन्ध लगाने में किस हद तक सफल होगी? क्या सचमुच सारे भारत को अन्न के अकाल का शिकार होना पड़ेगा? इसलिए कि जिस प्रान्त में गेहूँ की उपज होती है वहाँ से गेहूँ गायब और जिस प्रान्त में चावल की उपज होती है वहाँ से चावल गायब। जिस देश में इतना गल्ला पैदा होता है कि वहाँ के निवासी ही नहीं अन्य देशों के निवासी भी गुज़र कर सकते हैं, आश्चर्य है कि आज वहाँ के निवासियों को अपने देश की उपज भी पेट भरने तक के लिए काफ़ी सिद्ध नहीं हो रही है? यह देश का दुर्भाग्य नहीं तो और क्या है? युद्ध के बाद स्थिति में सुधार होनी चाहिए, जनता की आवश्यकताओं की पूर्ति होनी चाहिए, कम से कम पेट भरने की असुविधा तो रह ही नहीं जानी चाहिए किन्तु समझ में नहीं आता कि राशनिंग, कन्ट्रोल तथा हज़ारों की संख्या में सरकारी हितचिंतकों के रहते हुए भी, जो अपनी जान हथेली पर लेकर जनता की रक्षा तथा उसके पेट भरने के साधनों के जुटाने का ढिंढोरा पीटते फिर रहे हैं, आज क्यों समूचा राष्ट्र अकाल के भीषण आगमन की प्रतीक्षा कर रहा है? जनता में भय व्याप्त हो गया है कि आख़िर यह सब क्या हो रहा है और इस अन्न-संकट का क्या परिणाम होगा?

भारत के वाइसराय लार्ड वैवेल ने मद्रास में अपने दौरे के सिलसिले में, अकाल के भविष्य की कल्पना करते हुए कहा है कि सरकार ब्रिटेन और अमरीका से गेहूँ तथा अन्न बहुत शीघ्र मँगायेगी। वाइसराय महोदय अब विदेशों से गेहूँ मँगाकर भारत के अकाल का मुक़ाबला करेंगे यह भावना तो बुरी नहीं है किन्तु प्रश्न यह है कि भारत ऐसे खेतिहर देश का करोड़ों मन गल्ला किसके पेट में समाता चला जा रहा है जो आज विदेशों से मँगाने की आवश्यकता प्रतीत हो रही है? बंगाल के मामले में भी इसी तरह के आश्वासन देते-देते लाखों व्यक्ति स्वाहा हो गये और आज जो विदेशों से अन्न मँगाने का आश्वासन दिया जा रहा है, उसके आते-आते तो शायद यहाँ प्रलय मच जाने की कल्पना तो की ही जा सकती है। अब तक सरकार चोर बाज़ार और मुनाफ़ाख़ोरों से बचने के लिए ऐलान करती रही लेकिन अब लड़ाई के बाद समस्त भारत का अन्न, उसके कन्ट्रोल और राशनिंग के बावजूद भी, किस गर्त में समाता जा रहा है? कहने का यह तात्पर्य नहीं है कि गल्ले की कमी नहीं है, कमी हो सकती है और मान लीजिये है भी, किन्तु सरकार की दूरंदेशी आज कहाँ चली गई है? क्या वह जानती नहीं थी कि जिस करोड़ों जनता की पेट की जिम्मेदारी उसने अपने ऊपर ली है, वह कम से कम पेट के भयंकर संकट की शिकार न बनने पाये? भारत का समस्त यातायात-साधन सरकार के हाथ में है, किसानों के पैदावार का समस्त लेखा-जोखा उसके बहीखाते में दर्ज है, किसानों को इतनी भी स्वतन्त्रता नहीं है कि वह अपने पैदा किये हुए अन्न को, बिना सरकार की मर्ज़ी के, इधर-उधर कर सकें? इसके सिवा क़ानूनों, प्रतिबन्धों, तथा भोजन-विभाग के हज़ारों अफ़सरों और कार्यकर्ताओं के रहते हुए भी आज जनता को भूख का शिकार बनना पड़े यह कितने परिताप की बात है? आज अन्न का अभाव हो रहा है, संकट सर पर आ गया है, तब सरकार की आँखें खुली हैं। जब चारों ओर त्राहि-त्राहि मच रही है तब वह भी सचेत हुई है, आख़िर ऐसा क्यों?

भारत के वाइसराय लार्ड वैवेल अब महात्मा गांधी और मिस्टर जिन्ना से अन्न के भावी अकाल से बचने के लिए परामर्श कर रहे हैं। सहृदयता और सहानुभूति का यह उत्तम नमूना अवश्य है किन्तु अन्न की समस्या न तो राजनैतिक समस्या है और न तो विधानवादी। सरकार सदा अपनी इच्छानुसार कार्य करती आई है और आज भी वह करती जा रही है, फिर इस प्रकार के विचार-विमर्ष से लाभ क्या है? जब भावी अकाल के डाकू ने घर घेरना शुरू कर दिया तो पड़ोसियों से सहायता की गुहार मचाना यह बड़ी बेतुकी और विचित्र स्थिति है। अन्न-संकट की समस्या न तो लिखा-पढ़ी से हल की जा सकती है और न परामर्श देनेवाली समितियों की बैठकों से। इसका तो एकमात्र हल जनता को भर पेट भोजन देने से ही हो सकता है।

इसलिए हमें तो स्पष्ट रूप से यही कहना है कि यदि ब्रिटेन की सरकार भारत पर शासन करती है तो उसका यह कर्तव्य है कि वह अन्न-संकट से जनता की रक्षा करे। चाहे अन्न बाहर से मँगाया जाये या भारत से ही उसकी पूर्ति की जाये। स्पष्ट है कि जनता को खाने को मिलना चाहिए। यदि संकट उत्पन्न होता है तो उसकी समस्त जिम्मेदारी सरकार पर है न कि जनता के नेताओं अथवा भारत ऐसे खेतिहर देश की करोड़ों जनता पर!

आदरणीय वृद्धों से—

लेखक, प्राफेसर इन्दुशेखर एम० ए०

तुम कहते हो अब युवकों में रहा पुराना जोश नहीं।
आज हृदय में धक्-धक् करनेवाली जलती ज्वाल नहीं,
नहीं खौलता ख़ून किसी का आता आज उबाल नहीं,
वह प्रताप-सी लगन नहीं अब शेर शिवा-सी चाल नहीं,
घोंसे की वह गूंज नहीं अब मारू की वह ताल नहीं,
आज झलकता इन आँखों में सिंहों का वह रोष नहीं।
आंधी का-सा वेग नहीं वह विषधर-सी फुंकार नहीं,
बिजली की-सी तड़प नहीं वह सिंहों-सी हुंकार नहीं,
नस-नस को फड़कानेवाले छन्द नहीं झनकार नहीं,
अर्जुन के धन्वा की-सी वह गूंज नहीं टंकार नहीं,
ज्वाला का विस्फोट नहीं वह बादल सा निर्घोष नहीं।
किसने फिर सन् सत्तावन की हमको याद दिला दी आज?
झाँसी की रानी लक्ष्मी की झाँकी हमें दिखा दी आज?
आजादी की गहरी मदिरा किसने हमें पिला दी आज?
अत्याचारी के महलों को किसने नींव हिला दी आज?
जग को आज जगानेवाले हो सकते मदहोश नहीं।
प्राण हथेली पर रख अपने पहुँचा कौन रूस जापान?
दूर देश में गूंज उठा स्वर 'जय भारत जय हिन्दुस्तान'
किसके उर में कसक रहे हैं मरने-मिटने के अरमान?
झाँक रहे हैं किन आँखों में अनजाने कितने तूफ़ान।
फिर भी तुम सन्तुष्ट नहीं हो इसमें उनका दोष नहीं।
लाल क़िले की दीवारों ने किसको बन्दी आज किया?
कलकत्ता के फुटपाथों पर किसने अपना ख़ून दिया?
आज विन्ध्य से हिमअंचल तक किसने तुमको अमर किया?
दूर एशिया की छाती पर झंडा किसने खड़ा किया?
बन्दी बनकर पल भर भी जो कभी रहे खामोश नहीं।
तुम कहते हो अब युवकों में रहा पुराना जोश नहीं।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का वर्तमान विधान!

बिहार-प्रांतीय सम्मेलन के सभापति का सुझाव

बिहार-प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का उन्नीसवाँ अधिवेशन मन्दार (बाँसी) भागलपुर में बड़े समारोह से सम्पन्न हो गया। बिहार के पुराने साहित्य-सेवी श्री रामधारीप्रसादसिंह ने सभापति का आसन ग्रहण किया था। सभापति ने अपने भाषण में हिन्दी-प्रचार और साहित्यिक उन्नति पर व्यापक प्रकाश डाला है साथ ही राष्ट्र-भाषा की समस्या के हल की भी आशा प्रकट की है। प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनों तथा अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के वर्तमान संगठनों पर दृष्टिपात करते हुए, कुछ मार्के की बातें कही गई हैं, जो विचारणीय हैं। आपका कहना है—

बिहार-प्रान्तीय सम्मेलन को स्थापित हुए आज सत्ताईस वर्ष हो गये किन्तु इसके जीवन में आज तक वह सजीवता नहीं आ सकी जो एक प्रान्तीय संस्था में आनी चाहिए। वास्तव में एक प्रान्तीय संस्था को अपने प्रान्त का सच्चा प्रतिनिधित्व करना चाहिए। उसकी आवाज में यह बल होना चाहिए कि वह अपने प्रान्तीय कार्यालय से जो आदेश या निर्णय निकाले सारे प्रान्त से उसी की प्रतिध्वनि सुनाई पड़े। क्या अपने प्रादेशिक सम्मेलन में हम वैसा जीवन पाते हैं जिसके बल पर हम यह कह सकें कि यह अपने प्रान्त के हिन्दी-लेखकों, कवियों, हिन्दी-प्रेमियों तथा हिन्दी संस्थाओं का सच्चा प्रतिनिधित्व कर रहा है। यदि नहीं तो हमें गम्भीरतापूर्वक इसके कारणों को ढूंढ़ना चाहिए और उन्हें दूर करने का यत्न करना चाहिए। मुझे ऐसा लगता है कि इसके संगठन में ही कुछ ऐसे दोष हैं जिनके कारण हमारी प्यारी संस्था पनप नहीं रही है। वास्तव में हमारा सम्मेलन अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की नींव पर ही बना हुआ है किन्तु आपने कभी विचार किया है कि वह नींव ही गलत है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का नाम अखिल भारतीय सम्मेलन है किन्तु वास्तव में वह अखिल-भारतीय संस्था नहीं है। जिस संस्था के संगठन में प्रान्तीय सम्मेलनों का मुख्य हाथ न होकर सम्मेलन के रजिस्टर्ड उपाधिधारियों-प्रतिनिधियों, सम्मेलन-परीक्षाओं के परीक्षकों के प्रतिनिधियों, सम्मेलन परीक्षाओं के केन्द्र-व्यवस्थापकों के प्रतिनिधियों तथा सम्मेलन के दफ़्तर में रजिस्टर्ड हिन्दी अध्यापकों, हिन्दी-प्रकाशकों, हिन्दी पत्रकारों, लेखकों तथा कवियों के प्रतिनिधियों का मुख्य हाथ हो वह संस्था अपने को अखिल भारतीय संस्था बनने का कैसे दावा कर सकती है? जिस संस्था में प्रान्तीय

शेष पृष्ठ १५ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रिटिश माल के निर्यात की बाढ़ क्यों

भारतीय राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए एक खतरे की घंटी

लेखक, श्री युगलकिशोर गुप्त, एम० ए०, बी० एल०

युद्ध समाप्त हो जाने पर संसार के साम्राज्यवादी राष्ट्र अपने उद्योग-धंधों को विस्तृत करने और अपने बनाये माल को पराधीन राष्ट्रों में खपाने की एक नई स्थिति उत्पन्न कर रहे हैं। ब्रिटेन भी उन्हीं में से एक है। युद्ध के समय भारत में जिन नये व्यवसायों का प्रारम्भ हुआ था, उनके विस्तार की ओर ध्यान न देकर ब्रिटेन अपने यहाँ के बने मालों के निर्यात की ओर बड़ी शीघ्रता से बढ़ रहा है? ऐसा क्यों? इस लेख में विद्वान् लेखक ने इस ओर आकर्षित करते हुए यह बतलाया है कि ब्रिटेन को भारत को शोषण क्षेत्र न बनाकर यहाँ के ही उद्योग-व्यवसाय को पूरा सहयोग देना चाहिए। लेख अध्ययन तथा जानकारी से पूर्ण है।

युद्ध समाप्त होते ही भारत में ब्रिटिश माल का आयात क्रमशः परिवर्द्धित मात्रा में होना आरंभ हो गया है इससे भारतीय उद्योगपतियों का सशंक होना स्वाभाविक ही है। युद्धकाल में ब्रिटिश आयात की नितान्त कमी हो गई थी, उसकी कमी को पूरा करने के लिए भारत में ही उन वस्तुओं का उत्पादन आरम्भ हो गया था यद्यपि वह वस्तुएँ उत्कृष्टता में ब्रिटिश वस्तुओं का मुक़ाबला नहीं कर सकती थीं परन्तु उनसे कुछ काम तो अवश्य ही निकल जाता था। अब युद्ध समाप्त होते ही ब्रिटिश-माल की आयात से उन उद्योगों का भविष्य अंधकार में है। युद्धकाल में ही भारत सरकार ने उन उद्योगों के प्रति आश्वासन दिया था कि युद्धोपरान्त उन्हें पर्याप्त मात्रा में संरक्षण देकर नष्ट होने से बचाने का पूरा-पूरा प्रयत्न किया जायगा। ऐसे उद्योगों में लोहा और इस्पात, रसायन, मशीनरी इत्यादि प्रमुख हैं। जर्मनी की पराजय के पश्चात् अब ब्रिटेन ही हमारा सबसे महान् प्रतिद्वन्द्वी रह गया है और भारत की राजनैतिक विवशता का लाभ उठाकर ब्रिटेन सभी उपाय करेगा जिससे वह आगामी वर्षों में अधिक से अधिक मात्रा में अपना तैयार माल भारत और चीन को निर्यात कर सके। चीन को तो संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका अपना ही आर्थिक क्षेत्र समझता है और यह असंभव नहीं कि संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका ब्रिटन को अपना पैर चीन में जमाने में हर प्रकार की अड़चनें भी उपस्थित करे। रहा भारत, सो जब तक भारत स्वतंत्र नहीं हो जाता तब तक वह ब्रिटिश-साम्राज्य का एक प्रमुख शिकार बना रहेगा और ब्रिटेन अपने निवासियों को खाने-पीने और ऐशो-आराम की हर प्रकार की सुविधा जुटाने के लिए अपना तैयार माल भारत में खपाने की कोशिश करेगा जब तक हम ब्रिटेन के ग़ुलाम बने रहेंगे, हमारे उद्योगों को पनपने में बाधा ही उत्पन्न होगी। इसी में ब्रिटेन का तात्कालिक स्वार्थ है और ब्रिटिश जनता इतनी यथार्थवादी है कि भविष्य के भयावह प्रभाव से तनिक भी चिन्तित नहीं होती। ब्रिटेन के लिए यह समय अत्यन्त कष्टकर है। अपने निर्यात में वृद्धि करना राष्ट्र को जीवित रखने के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

गत महायुद्ध के पूर्व आर्थिक तथा साम्पत्तिक दृष्टि से ब्रिटेन की गणना एक श्रेष्ठ राष्ट्र में हुआ करती थी। परन्तु गत महायुद्ध ने ब्रिटेन की समृद्धि में घुन का काम किया है। अब तो ब्रिटेन में केवल हिम्मत है, कुछ प्राकृतिक सुविधाएँ हैं परन्तु धन नहीं है। जो ब्रिटेन पहले संसार का एक बहुत बड़ा महाजन था, जिसके निवासी संसार के अन्य राष्ट्रों की सरकारों को तथा उनकी म्युनिसिपैलिटियों को करोड़ों पौंड का क़र्ज़ दिया करते थे वह ब्रिटिश सरकार स्वयं भारत, मिस्र, अर्जेन्टाइन, कनाडा, आस्ट्रेलिया इत्यादि देशों की ऋणी है और ऋण की मात्रा भी कम नहीं, कम से कम ३ अरब पौंड या ४० अरब रुपये है। जब ब्रिटेन जीवन और मृत्यु के बीच झूल रहा था तो इसने उपरोक्त देशों से सामान—कच्चा और तैयार माल खरीदा था परन्तु उन वस्तुओं का मूल्य नक़द सोने में या अपनी निर्यात-द्वारा नहीं चुकाया था परन्तु उन देशों ने अपना जो खाता ब्रिटेन में खोल रखा था उनमें उस मूल्य के प्रामेसरी नोट जमा कर दिये। अब उस देन के भुगतान का अवसर है और अब देखना है कि ब्रिटेन अपनी जिम्मेदारी किस प्रकार निभाता है?

एक ज़माना था जब ब्रिटेन अन्य देशों से जो माल आयात करता था। उसे प्रायः अपने ही जहाज़ों में मँगाया करता था और निर्यात करता तो भी अपने ही जहाज़ों में। इस प्रकार अन्य देशों के आयात करनेवाले ब्रिटिश जहाज़ी कम्पनियों को उनका किराया अपने देश के सिक्कों में ही दिया करते थे। अन्य देशों में स्थापित ब्रिटिश बीमा-कम्पनियों और बैंकों को जो लाभ होता था वह भी तो उस देशों के सिक्कों में ही प्राप्त होता था।

ब्रिटेन का क्षेत्रफल पंजाब से कुछ ही कम है और उसकी आबादी पंजाब की जन-संख्या की डयोढ़ी से भी अधिक है। ब्रिटेन निवासियों के पास श्रम करने की क्षमता और धूर्त्तता बेशक ही हो परन्तु प्रकृति ने उन्हें वे साधन नहीं दिये हैं जो संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका या सोवियट रूस को प्राप्त है। मूल्य के लिहाज से गत महायुद्ध के पूर्व ब्रिटिश कृषक अपने देश के भोजन की आवश्यकताओं का केवल ४० प्रतिशत भाग उपजाया करते थे, बाक़ी भोजन-सामग्री आयात ही करनी पड़ती थी। ब्रिटेन में कपास बिलकुल नहीं होती परन्तु लंकाशायर सूती कपड़ा तैयार करता है। इमारती लकड़ी विदेश से ही खरीदनी पड़ती है। गत युद्धकाल में ब्रिटेन में पेट्रोल की स्थिति का पता लगा है परन्तु ब्रिटेन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए केवल नाम-मात्र है। इसी प्रकार कच्चा लोहा भी काफ़ी नहीं होता। यह तथा अन्य धातुएँ तथा रासायनों का आयात विदेश से करना ही पड़ता है। इस प्रकार अपने उद्योगों को सुचारु रूप से चलाने के लिए ब्रिटेन को भोजन सामग्री और कच्चा माल विदेश से मँगाना आवश्यक है। इसके साथ ही विभिन्न प्रकार के तैयार माल की खपत भी ब्रिटेन में होती है। इन तमाम आयात का वार्षिक मूल्य गत महायुद्ध के निकट पूर्व में ८६.६ करोड़ पौंड बैठता था। १ पौंड का मूल्य १३।-) ४ पाई पड़ता है। इस प्रकार आयात का मूल्य ११ अरब ५५ करोड़ रुपये होता था—यह ब्रिटेन से भारतीय पावने का तीन-चौथाई भाग है। अब हमें देखना है कि ब्रिटेन इन आयात का मूल्य किस प्रकार अदा करता था। ब्रिटेन के एक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री ने निम्नांकित प्रकार इसका ब्योरा दिया है—

ब्रिटिश वस्तुओं का निर्यात	४७·८ करोड़ पौंड
ब्रिटिश जहाज़ों की सेवाओं का मूल्य	१०·५ ,, ,,
बैंक तथा बीमा कम्पनियों की सेवाओं का मूल्य	४·० ,, ,,
विदेश में लगाई गई पूंजी से आय	२०·३ ,, ,,
	८२·६ ,, ,,

इस प्रकार उपरोक्त मदों के द्वारा भी ब्रिटेन अपनी आयात का मूल्य चुकाने में असमर्थ था और बाक़ी ४ करोड़ पौंड के लिए अपनी पूंजी की बिक्री (शेयर या जायदाद के रूप में) या क़र्ज़ लेकर ही संभव था। तदुपरान्त ४७·८ करोड़ पौंड का तैयार माल निर्यात करने के लिए उसे ८ करोड़ पौंड का कच्चा माल आयात करना पड़ता था। इसलिए युद्ध-निर्यात का मूल्य केवल ३९·८ करोड़ पौंड था।

गत महायुद्ध-काल में जब तक अमेरिका युद्ध में नहीं उतरा था, ब्रिटेन अपनी युद्ध की आवश्यकता में अमेरिका में खरीदने के लिए वहाँ अपनी जायदाद या शेयर बिक्री कर रहा था। अन्य देशों में भी उसे अपनी जायदाद बिक्री करने की आवश्यकता पड़ी थी परन्तु कम ही। इसलिए विदेशों में लगाई गई ब्रिटिश पूंजी की मात्रा आधी रह गई है जिसके फलस्वरूप उसकी आमदनी भी आधी रह गई।

युद्धकाल में ब्रिटेन ने जहाज कम नहीं तैयार किये परन्तु पनडुब्बियों के निरन्तर आक्रमण से सन् १९३८ में जितने टन के जहाज थे अब उसके केवल तीन-चौथाई टन के जहाज हैं इसलिए यदि जहाज के किराये की दर में कुछ अन्तर न भी पड़े, फिर भी ८ करोड़ पौंड से अधिक नहीं हो सकती। परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जहाँ ब्रिटेन के जहाजों की संख्या कम हो गई है वहाँ अमेरिका के जहाजों की संख्या दुगुनी हो गई है इसलिए उनका पूर्णरूपेण प्रयोग करने के लिए अमेरिकन जहाज प्रतिस्पर्धा में अपने रेट में कमी कर देंगे जिसके फलस्वरूप ब्रिटिश जहाजों की किराये की आमदनी ८ करोड़ पौंड से भी घटकर केवल ६ या ७ करोड़ पौंड रह जायेगी।

युद्धकाल में भारत-जैसे ही अन्य देशों को भी बैंक और बीमा-कम्पनियाँ खोलने का अवसर मिला है और वह समय दूर नहीं जब विदेश-स्थित ब्रिटिश बैंकों और

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

अखिल भारतीय प्लानिङ्ग कमेटी के सभापति पंडित जवाहरलाल नेहरू।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े नोटों का आर्डिनेंस किधर?

क्या चोर-बाजार भारत में नेस्तनाबूद हो जायेगा?

लेखक, श्री ब्रजेशकुमारसिंह

भारत-सरकार ने बड़े नोटों के सम्बन्ध में जो आर्डिनेंस निकाला है, कहा गया है कि इससे भारत का चोर-बाजार समाप्त हो जायेगा। इस लेख में आर्डिनेंस की अनुपयोगिता सिद्ध करते हुए यह बतलाया गया है कि सरकार की जो मंशा है वह इससे पूरी नहीं हो सकती। लेख सामयिक और जानकारी से पूर्ण है।

एक चालीस साल की पंजाबी महिला का हृदय की गति बन्द हो जाने के कारण कराँची में गत चौबह जनवरी को देहान्त हो गया था। कहा जाता है कि उसके पास एक-एक हजार रुपये के एक हजार नोट थे। बड़े नोटों के नये क़ानून के बारे में जब उसने सुना तो इतनी घबड़ाई कि बेहोश हो गई और जब तक डाक्टर बुलाये जायें तब तक उसके प्राण-पखेरू उड़ गये। दूसरी खबर के अनुसार नैनीताल जिले का एक व्यापारी, जिसके पास कहा जाता है कि एक-एक हजार रुपये की दस से अधिक नोटें थीं, बैंक गया। घोषणा-पत्र लेने के पहले ही वह इतना घबड़ा गया कि हृदय की गति रुक गई और बैंक के दरवाजे तक आते-आते गिर पड़ा, जहाँ से वह फिर उठ नहीं सका।

अधिक मूल्य की नोटों के प्रतिबन्ध-सम्बन्धी आर्डिनेंस का देश के आर्थिक और सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। जनता में घबराहट फैल गई। घबराहट फैलने का प्रधान कारण यह रहा कि, आर्डिनेंस क्या है और इसका प्रभाव किन-किन लोगों पर पड़ेगा, यह बात साधारण जनता की समझ में अच्छी तरह नहीं आई। नागपुर के एक समाचार से मालूम हुआ था कि वहाँ जब ताँगे और रिक्शेवालों को एक रुपये की नोटें दी जाती थीं तो वे उसे भी असन्तोष के साथ लेते थे, वह 'चाँदी का रुपया' ही लेने का भरसक प्रयत्न करते थे। यह छोटी घटना प्रश्न के इस अंश पर प्रकाश डालती है कि समाज के साधारण वर्ग का—जो हमारे देश में समाज का सबसे बड़ा अंग है—किस प्रकार इस आर्डिनेंस के कारण सरकार अश्रद्धा और अविश्वास का भाजन बन बैठी।

यह मानी हुई बात है कि साधारण वर्ग के लोगों पर इस आर्डिनेंस का बहुत कम प्रभाव पड़ा है। अगर प्रभाव पड़ा भी है तो केवल उन्हीं पर जिनके पास पाँच सौ, हजार या दस हजार की नोटें हैं। क्योंकि बड़ी नोटों का प्रचलन देहातों में बहुत ही कम है। एक तो वे बैंकों से बहुत दूर पड़ जाते हैं और दूसरे आमदनी भी इतनी कम होती है कि जीवन-निर्वाह के खर्च के बाद पाँच सौ रुपये तक के बचने की नौबत ही नहीं आती। सेठ-साहूकारों में जो इस आर्डिनेंस के कारण असन्तोष फैला है, वह तरह-तरह के अफ़वाहों के रूप में बाहर निकल रहा है। इन अफ़वाहों का प्रभाव साधारण जनता पर पड़ रहा है, जिससे जनता का सरकार में विश्वास कम हो गया है।

अमुद्रीकरण-आर्डिनेंस के जारी करने का प्रधान कारण, जैसा सरकारी विज्ञप्ति से प्रगट हुआ है, चोर-बाजार नष्ट करने का रहा है। ऐसा विश्वास है कि चोर-बाजार का चालू-धन ऊँची ऊँची क़ीमत की नोटों में निहित है। चोर-बाजार के नष्ट न होने से सरकार और जनता दोनों को हानि है। चोर-बाजार के मुनाफ़े पर सरकार आय-कर भी नहीं लगा सकती। आय-कर से समाज की जो कुछ भी भलाई की जा सकती थी, समाज उससे वंचित रह जाता है। साधारण नागरिक जो अपना जीविकोपार्जन ईमानदारी से करता है, उसके लिए यह आर्डिनेंस कोई विशेष असुविधा नहीं उत्पन्न कर सकता।

यह अनुमान किया जाता है कि चोर-बाजार में बड़ी-बड़ी क़ीमत की नोटों का ही उपयोग होता है क्योंकि अपने सुविधाजनक आकार के कारण इनका लेन-देन सरल और सुरक्षित है। बाजार से ऊँची क़ीमत के नोटों के चले जाने पर चोर-बाजार और घूसखोरी की यह सरलता और सुरक्षा जाती रहेगी। कर्मचारियों में कुछ ने जो मनमाना घूस लिया है, जब वह रुपया बैंक में छोटी क़ीमत की नोटों में बदलने के लिए ले जायेंगे, तो उनसे पूछा जा सकता है कि इतना रुपया उन्हें कहाँ से और कैसे मिला? इसी कारण घोषणा-पत्र पर ऐसे प्रश्न पूछे गये हैं, जिनका संतोषप्रद उत्तर न मिलने पर ऊँची क़ीमत की नोटों का कम क़ीमत की नोटों में भुगतान नहीं किया जाता। बड़ी-बड़ी फ़र्मों और सेठ साहूकारों के सम्बन्ध में भी, जिन्होंने चोर-बाजार से रुपया कमाया है और आय-कर नहीं दी है, यही बात लागू होती है कि इतना रुपया उनके पास कहाँ से आ गया? दिल्ली में कुछ दिन पहले एक ऐसी घटना हो भी चुकी है जब पुलिस ने एक साहूकार को साठ हजार रुपये की ऊँची-ऊँची क़ीमत की नोटों को अपने साथ लेकर बाहर जाते समय पकड़ा।

चोर-बाजार के व्यापारी और घूसखोर सरकार की इस चाल से परिचित हैं। नागपुर की ख़बर थी कि वहाँ के कुछ घूसखोर अपनी एक-एक हजार रुपये की नोटें अपने मित्र व्यापारियों को बेंच रहे थे। इस प्रकार स्पष्ट है कि मुक़दमे और दण्ड के भय से चोर-बाजार के व्यापारी ऊँची क़ीमत की नोटों को बाहर नहीं निकाल रहे हैं। इस प्रकार क़रीब ५० करोड़ रुपये की करेंसी नोटें, इस आर्डिनेंस के कारण, बेकार काग़ज के टुकड़ों के रूप में बदल जायेंगी ऐसा अनुमान है। सरकार को एक प्रकार से लाभ ही होगा क्योंकि चोर-बाजार के रुपये पर टैक्स वसूल करने पर भी इतना रुपया नहीं मिलता।

आर्डिनेंस का मुख्य उद्देश्य चोर-बाजार नष्ट करने का है, किन्तु अभी तक इसका प्रभाव इसके उद्देश्य के विपरीत हुआ है। स्वयं इस आर्डिनेंस के कारण ही चोर-बाजार और जोर पकड़ गया है। चोर-बाजार में एक-एक हजार रुपये की नोटें ८००), ७००) यहाँ तक कि ५००) तक में बिके हैं। सोने और चाँदी की क़ीमत बढ़ गई है। लोगों का नोटों में अविश्वास उत्पन्न हो जाने के कारण सोने, चाँदी और क़ीमती पत्थरों के रूप में धन संचय करना अधिक सुरक्षित समझा जाने लगा है। परिणाम यह हुआ है कि बाजार में सोने और चाँदी का अभाव-सा हो गया है और आपसी बिक्री में सोने-चाँदी की क़ीमत बहुत ही बढ़ गई है। बम्बई में हीरे और क़ीमती पत्थरों की इतनी माँग बढ़ गई है कि बाजार में प्रायः इनका लोप-सा हो गया है।

उन लोगों के सामने एक कठिन समस्या उत्पन्न हो गई है जिन्होंने अपने जीवन भर की कमाई एक ही दो ऊँची क़ीमत की नोटों में संचित की है। कई जगहों पर तो घोषणा-पत्र, जो बैंक से मुफ़्त मिलते हैं, अभाव के कारण २०) से १००) तक बिके हैं। साधारण ईमानदार जनता जिनके जीवन भर की कमाई एक या दो ही ऊँची क़ीमत की नोटों में निहित है, अगर समय के अभाव से, या घोषणा-पत्र न प्राप्त होने से या उचित सरकारी कर्मचारी से शिनाख्त न करवा सकने के कारण, अगर अपनी नोटें बदलने में समर्थ नहीं हो पाते, तो यह उनके साथ घोर अन्याय होगा। ऐसे लोगों को तथा मध्यम और निम्न-मध्यम वर्ग के लोगों को डा० राजेन्द्रप्रसाद ने आश्वासन दिया है कि कांग्रेस इनके प्रश्न पर विचार करेगी, क्योंकि प्रत्येक ईमानदार व्यक्ति को जिसने विश्वास के साथ इन ऊँची क़ीमत की नोटों में अपनी सम्पति रक्खी, इस प्रकार दंड देना कदापि न्यायोचित नहीं है।

श्री घनश्यामदास बिड़ला और सर बद्रीप्रसाद गोयनका आदि देश के कतिपय प्रमुख व्यापारियों को इस आर्डिनेंस से कुछ अधिक सन्तोषप्रद सुधार की उम्मीद नहीं। श्री बिड़ला का विचार था कि जिस कारण से सरकार ने यह आर्डिनेंस जारी किया है, उसमें उसे बहुत सफलता नहीं मिलेगी, भले ही कुछ उचित कठिनाइयाँ उपस्थित हो जायँ। समय भी थोड़ा दिया गया। इस सम्बन्ध में ग्रेट-ब्रिटेन का ही उदाहरण उपस्थित किया जाता है। जब वहाँ पर पहली मई सन् १९४५ से १०, और १,००० पौंड की नोटों का चक्कर बन्द कर दिया गया, तो इसकी घोषणा मार्च सन् १९४५ में ही कर दी गई थी। इस प्रकार ब्रिटेन की जनता को ऊँची क़ीमत की नोटों को बदलने के लिए दो महीने का समय मिल गया था। दूसरे, इस आर्डिनेंस के द्वारा प्रामाणिक बैंकों को आवश्यकता से अधिक अधिकार प्राप्त हो गये हैं, जो उचित नहीं। तीसरे, ब्रिटिश सरकार के विपरीत भारत-सरकार ने उलझे तौर से इस प्रश्न को हल करने का प्रयत्न किया है।

समाचार-पत्रों में इस संवाद का खण्डन किया गया है कि सर जान मेनार्ड कीन्स इस आर्डिनेंस के जन्मदायक हैं। शायद यह ख़बर इसलिए फैली कि भारतीय-सरकार के अर्थ-सचिव सर आरकीबाल्ड रौलैण्ड्स् ने विदेश यात्रा में लार्ड कीन्स से बातें की थीं। हो सकता है कि ब्रिटेन के बैंक आफ़ इँगलैंड के द्वारा किये गये सुधार को देखकर यह विचार सूझा हो। किन्तु बैंक आफ़ इँगलैंड के पहले भी आक्टोबर सन् १९४३ में कोसिका ने और आक्टोबर सन् १९४४ में बेलजियम ने भी अपने यहाँ ऐसे ही आर्डिनेंस जारी किये थे और उसमें उन्हें बहुत अंश तक सफलता भी मिली। लेकिन जहाँ तक अपने देश का प्रश्न है, यहाँ का चोर-बाजार अधिकतर १०० रुपये की नोटों पर आश्रित है और सरकार के वर्तमान अमुद्रीकरण-आर्डिनेंस से चोर-बाजार में अधिक सुधार की उम्मीद नहीं की जा सकती।

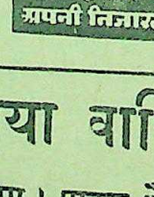

उत्तम सुरीले मजबूत
बैंजो
हमारे यहां से थोक मिलते हैं
RAI INDUSTRIES
NUR MAHAL
(JULLUNDUR)
निरर्थ नामा मंगा कर
अपनी तिजारत को बढ़ावें

बालसखा का नया वार्षिकांक

एक महीने में प्रकाशित होगा। पाठक धैर्य रक्खें।

ग्राहकों के अनुरोध से हमने इस वर्ष भी बालसखा का वार्षिकांक निकालने का निश्चय किया है। इसमें बहुत से चित्र, कविताएँ, कहानियाँ, बढ़िया लेख और उपयुक्त सामग्री रहेगी। पृष्ठ-संख्या ३०० से ऊपर। यह अङ्क बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होगा। यह मासिक बालसखा के १२ अंकों से पृथक् है। मूल्य ३), मासिक बालसखा के ग्राहकों के लिए रियायती मूल्य २॥)

रियायती मूल्य के लिए अपना ग्राहक-नंबर अवश्य लिखिए।

मैनेजर, बालसखा, इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष रूप से 'देशदूत' के लिए

ठक्कर बापा-भवन का शिलान्यास

त्यागराय नगर मद्रास में नई हरिजन बस्ती का उद्घाटन

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

हमारे देश में हरिजनों की समस्या एक विशेष महत्त्व रखती है। महात्मा गांधी ने हरिजनों की आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक स्थिति सुधारने में अपने जीवन का प्रमुख अंग बना लिया है। पिछले महीने में गांधी जी मद्रास गये थे। आपने वहाँ एक हरिजन बस्ती (ठक्कर बापा-भवन) का उद्घाटन किया था। विद्यार्थी जी स्वयं इस अवसर पर उपस्थित थे। इस लेख में उद्घाटन समारोह के अवसर का तथा हरिजनों की समस्या पर सुन्दर प्रकाश डाला गया है। लेख विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है।

महात्मा गांधी ने त्याग रायनगर (मद्रास) में ठक्कर बापा-भवन (हरिजन भवन) का उद्घाटन किया है।

हरिजनों की समस्या भी एक कठिन समस्या है। सारे देश के सामने उनकी भी समस्या पड़ी है। छोटा-मोटा सवाल नहीं है। काफ़ी महत्त्व का है। हरिजनों की जन-संख्या कम नहीं है। महात्मा जी के हरिजन-आन्दोलन से सारे देश की आँखें उनके प्रश्न की तरफ़ आकर्षित हुई हैं। हरिजनों की समस्याओं पर विचार करने के लिए लोग विवश हुए। हरिजन भी हिन्दुओं में से ही हैं लेकिन अपने बड़प्पन के कारण हम उन्हें तुच्छ मानते आ रहे हैं।

दक्षिण भारत में हरिजनों के साथ बहुत अन्याय होता है। उन्हें मंदिरों में प्रवेश नहीं करने दिया जाता। वह कुओं से पानी नहीं भर सकते। एक समय ऐसा भी था जब वे एक सड़क पर चल भी नहीं सकते थे। चलने पर कड़ी से कड़ी सजा दी जाती थी। वेदमंत्र सुन नहीं सकते थे। हिन्दुओं ने उन पर बहुत अन्याय किया है। अत्याचार किया है। भयानक से भयानक अन्यया करने में कुछ कसर नहीं रक्खा।

फिर भी हमारे हरिजन भाइयों ने हिन्दुओं का साथ नहीं छोड़ा। उनके साथ घुल-मिलकर काम करते आ रहे हैं। अत्याचारों को भूल गये। भूलते भी क्यों न, वह ईश्वर के भक्त हैं। महात्मा जी ने हरिजनों की शक्ति को पहचाना। हरिजनों की दशा सुधारने के लिए देश-व्यापी आन्दोलन खड़ा किया। सवर्ण लोगों से कहा अपना विनाश क्यों कर रहे हो—हरिजन भी तुम्हारे भाई हैं। हरिजनों को छोड़कर तुम जिन्दा नहीं रह सकते। गांधी जी ने कड़ी से कड़ी चेतावनी हिन्दुओं को दी। हरिजनों के प्रति अपने प्राणों की बाजी लगा दी।

हरिजन-आन्दोलन से देश में बहुत जागृति हुई है लेकिन उनकी स्थिति देखते हुए कहा जा सकता है कि समुद्र में बूंद के समान काम हुआ है। आज भी वे निरक्षर हैं। आर्थिक दशा बहुत ख़राब है। रहने के लिए अच्छा मकान नहीं। खाने के लिए भरपेट भोजन नहीं मिलता। पहनने को पर्याप्त कपड़ा नहीं। स्कूल में पढ़ने जाने के लिए काग़ज़ किताब का दाम नहीं। खेती करने के लिए ज़मीन नहीं। सब तरफ़ दबे हुए हैं। समाज में अपने को नीच मानने की भावना उनमें से नहीं निकली है। सफाई नहीं। उनके हक़ों को दूसरे हज़म करने की ताक में रहते हैं।

महात्मा जी ने उनमें ऐसी भावना भरी है कि वह किसी से अपने को नीच न माने। समाज में उनका दर्जा सबसे ऊँचा है।

गांधी जी के प्रयत्न से देश में आज उनके लिए कई शिक्षा-संस्थायें चल रही हैं। सवर्ण हिन्दुओं का ध्यान उनकी तरफ़ कुछ खिंचा है। आये दिन उनके स्कूल और विद्यालय बनते हैं। मद्रास शहर में भी एक हरिजन छात्र निवास है। उसका अपना विद्यालय है। सनातनधर्मियों के अड्डे में भी अब बहुत से मंदिर उनके लिए खुल गये हैं। मद्रास शहर के कुछ उत्साही कार्यकर्ता और धनिक लोगों ने निश्चय किया कि एक बहुत बड़ा विद्यालय त्याग रायनगर (मद्रास) में खोला जावे, जहाँ पर ३००, ४०० हरिजन विद्यार्थियों के पढ़ाने, रहने आदि का प्रबन्ध हो।

वह विद्यालय का शिलान्यास महात्मा जी से कराना चाहते थे। बहुत दिन से कोशिश कर रहे थे। महात्मा जी को शिलान्यास करने के लिए मद्रास आने का समय कहाँ? लेकिन वह हिन्दी-प्रचार सभा के काम से आ गये। ऐसे मौके को यहाँ के लोग कब चूकनेवाले थे? महात्मा जी से यहाँ के लोगों ने प्रार्थना की। महात्मा जी शिलान्यास करने के लिए तैयार हो गये।

पहली फ़रवरी को सवेरे शिलान्यास होने की तारीख रक्खी गई। दक्षिण हिन्दी प्रचार सभा के पीछे ही इसका शिलान्यास होनेवाला था। मद्रास के प्रसिद्ध विद्वानों और व्यापारियों से सभाभवन भर गया। बहुत काफ़ी ज़मीन है। पंडाल अच्छा बनाया गया था।

महात्मा जी ठीक सवा सात बजे सवेरे वहाँ गये। कुछ कार्यक्रम हो चुकने के बाद गांधी जी ने कहा—यह काम मुझे अच्छा लगता है। हरिजन भाई हमारे ही अंग हैं। आप उनके लिए यहाँ बड़ा विद्यालय बना रहे हैं, यह कोई उपकार आप उन पर नहीं कर रहे हैं। आपका धर्म है कि उनके लिए जितना भी कर सकें कीजिये। उन्हीं की मेहनत से आपके पास पैसा आया है। आपको यह स्वीकार करना चाहिए। यहाँ किसी को करोड़पति बनने का हक़ नहीं। आप लोगों ने उन पर बहुत ज्यादती की है। अपना पाप धोइये। अपकार करने की भावना छोड़ देनी चाहिए। ऊँच-नीच की भावना अपने दिलों में से निकाल दीजिये। अस्पृश्यता का सम्पूर्ण नाश होना चाहिए।

यहाँ से जो विद्यार्थी तैयार हों वे आदर्श विद्यार्थी निकलें। समाज की सेवा करें। यहाँ के व्यवस्थापकों के दिल में तिलमात्र भी अस्पृश्यता की भावना नहीं होनी चाहिए। आचरण शुद्ध तथा पवित्र हो। सेवा की भावना हो। यहाँ का सारा ख़र्च आप लोगों को देना चाहिए। डा० साहब ने कुछ रुपया दिया है वह मेरे लिए काफ़ी नहीं कहा जा सकता है। मैं डा० साहब से आशा करूँगा यहाँ का विद्यालय आदर्श बनाये रखने में कुछ उठा न रक्खेंगे। यहाँ के विद्यार्थियों को उद्योग के मारफ़त शिक्षा देंगे। उन्हें स्वावलम्बी बनायेंगे। मैं तो सारे देश से अपील करूँगा कि उद्योग के मारफ़त अपने बच्चों को शिक्षा दें। उद्योग के मारफ़त शिक्षा देने से कुछ खोनेवाले नहीं हैं। बुद्धि तेज होगी। स्वाश्रयी बनेंगे। देश की समवृद्धि होगी रोटी के लिए दूसरों के सामने हाथ नहीं पसारना होगा।

हमारा देश टापू नहीं है। बहुत बड़ा देश है। हर तरह की वस्तुयें यहाँ पैदा होती हैं। जिनका मुक़ाबला सिवा चीन के और कोई नहीं कर सकता। आपको अपने देश के प्रति अभिमान पैदा होना चाहिए। लेकिन आज गुलामी की भावना आ गई है। आप अपनी माता को भूल गये हैं। अपने देश को भूल गये हैं। अपनी मातृ-भाषा भूल गये हैं। यह सब देखकर मुझे बहुत दुःख होता है। आप अपनी माता को भूलकर ज़िन्दा नहीं रह सकते। आपने यहाँ अपनी मातृभाषा में कार्यवाही चलाई है यह मुझे अच्छा लगा है लेकिन आज का प्रोग्राम अँगरेज़ी में छपा है, यह क्या है? आप अगर राष्ट्र की लिपि में नहीं छाप सकते थे तो अपनी प्रान्तीय भाषा में छाप सकते थे। वह मुझे अच्छा लगता। मैं अँगरेज़ी को सहन नहीं कर सकता।

मैं आप लोगों से प्रार्थना करूँगा कि आपस का व्यवहार आप प्रान्त में अपनी भाषा में करें। दूसरे प्रान्त के साथ राष्ट्र-भाषा हिन्दुस्तानी में चलावे। हिन्दुस्तानी सीखकर आप अपने राष्ट्र की ताकत बढ़ानेवाले हैं। सब लोगों का फर्ज़ है कि हिन्दुस्तानी सीख लें। अपनी माता की बोली आनी ही चाहिए। आज हिन्दुस्तानी बोलनेवालों की संख्या २३ करोड़ है। अपनी माता को भूलकर ज़िन्दा नहीं रह सकते।

* * *

हरिजनों के उद्धार के लिये सतत युद्ध करनेवाले श्री ठक्कर बापा।

गांधी जी जब शिलान्यास करने के लिए खड़े हुए तब चारों तरफ़ से ख़ूब हर्ष-ध्वनि हुई। फोटोग्राफ़र उनका फोटो लेने के लिए टूट पड़े। गांधी जी के हाथ में गारा और करनी देखकर सब लोग ख़ूब हँसे। गांधी जी ने अपने हाथों से अच्छी तरह चूना-गारा रखकर ईंट जमाई। बीच-बीच में गांधी जी ने सबको ख़ूब हँसाया। तीन ईंटें अच्छी तरह से जमा दीं। फिर कुछ लोगों ने उस पर पुष्पहार चढ़ाया। गांधी जी को सूत की माला अर्पण की। करनी चाँदी से बनाई गई थी। चाँदी की चमक सभा-मंडप में दिखाई दे रही थी। बीच-बीच में एक सिनेमावाला सभा का और गांधी जी का चित्र भी खींच रहा था। शिलान्यास करने के बाद गांधी जी ने अपना भाषण दिया। जिसका कुछ अंश ऊपर हमने दिया है। सभा-भवन में ही बापा-भवन के लिए दस हज़ार रुपये मिल गये। डा० चेट्टिपर साहब ने बापा-भवन आदि बनवाने का प्रबन्ध अपने ज़िम्मे ले लिया है। आप एक बहुत उदार पूंजीवाले व्यापारी हैं। कई संस्थाओं को मदद करते हैं। शिक्षा-संस्थाओं से आपको प्रेम है। आपकी इच्छा है यह भवन दिल्ली हरिजन बस्ती की तरह बने। मद्रास प्रान्त में यह संस्था एक आदर्श संस्था के रूप में शीघ्र सबको देखने को मिलेगी। सारे प्रान्त के ग़रीब हरिजन छात्रों के पढ़ने का अच्छा प्रबन्ध यहाँ हो जावेगा। चार पाँच लाख से ऊपर की पूंजी यहाँ जमा होने की आशा की जाती है। इस बस्ती का नाम ठक्कर बापा-भवन रक्खा गया है।

मदरास

१—२—४६

[illegible] रखता [illegible] मेरी छाया पर चढ़ती आती। उन दिनों मुझे इसकी चिन्ता प्रायः जाती रही कि किशुन कैसे उसी घर में है? उसे कोई कष्ट तो नहीं होता? वह मुझे इस तूफ़ान से खेलते हुए देखकर क्या कह रहा होगा? अनेक बार वह कुछ कहता-सुनता भी मगर शायद मैंने एक भी न सुनी होगी। सुनता कैसे? तूफ़ान के सायें-सायें के सिवाय मेरे कानों में और कुछ नहीं आता। मुझे न जाने क्यों यह कभी न लगता कि मैं कोई ग़लती कर रहा हूँ। आज मैं यह अवश्य कहूँगा कि किशुन के प्रति मैं कुछ अन्याय कर रहा था और आज भी किसी दंड के लिए तैयार हूँ। मुझे याद है, एक रात मैंने तनिक खिंचकर कह दिया था कि ये व्यक्तिगत बातें हैं और इनमें घुस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोरिया का स्वाधीनता-आन्दोलन

साम्राज्यवादी बन्धन से अब वह अपनी मुक्ति चाहता है

लेखक, प्रोफेसर लक्ष्मीकान्त तिवारी, एम० ए०

संसार में इस वक्त छोटे-छोटे राष्ट्र, जो साम्राज्यवादियों के बन्धन में जकड़े हुए हैं, अपनी स्वतंत्रता के लिए आन्दोलन कर रहे हैं। एशिया के अन्य परतंत्र राष्ट्रों की भाँति कोरिया भी अपना कदम बढ़ा रहा है। इस लेख में कोरिया के स्वतंत्रता-आन्दोलन पर प्रकाश डाला गया है, जो जानकारी से पूर्ण और पठनीय है।

मानव-प्रकृति में स्वाधीनता का वही स्थान है जो अधिकार-प्राप्ति का। छोटे राष्ट्रों को भी अपनी स्वतंत्रता प्रिय है और उतनी ही प्रिय है जितनी साम्राज्यवादी राष्ट्रों को छोटे राष्ट्रों को अपने चंगुल में दबाये रखने की नीति। यदि ब्रिटेन 'सोने की चिड़िया' का साम्राज्यवाद के पिंजड़े में क़ैद रखना चाहता है, तो वह भी गान-द्वारा 'पावक-कण' बरसा कर उसके सीखचों को गला डालने में व्यस्त है। यदि साम्राज्यवादी जापान का फ़ौलादी पंजा कोरिया को जकड़े हुए है तो स्वतंत्रता-प्रिय कोरियनों की क्रान्ति-ज्वाला उसे पानी पानी कर देने के लिए सतत प्रयत्नशील रही है। भारत में आये हुए अँगरेज़ों की भाँति, जापानी भी कोरिया में व्यापार करने के लिए गये थे। कूटनीति के सहारे उन्होंने धीरे-धीरे वहाँ के राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। इस चाल से कोरिया-निवासी पूरी तरह वाकिफ़ थे। प्रारम्भ में ही उन्होंने इसका सक्रिय विरोध किया था। वह विरोध आज भी चल रहा है और तब तक चलता रहेगा जब तक उन्हें अपने उद्देश्य में पूरी सफलता न मिल जायगी।

चीनी-क्रान्ति में सक्रिय भाग लेना, संयुक्त राज्यों में राजनीतिक प्रचार का कार्य करना, कट्टरपंथी और प्रगतिशील दलों में कार्य और उद्देश्य से सम्बन्ध रखनेवाले भगड़ों का पैदा होना, और जापानी-दमन एवं कोरिया के मसलों से सम्बन्ध रखनेवाली विदेशी शक्तियों की उदासीनता के विरुद्ध लगातार लड़ते रहना आदि ऐसे कार्य हैं जो कोरिया के स्वाधीनता-आन्दोलन के इतिहास में उल्लेखनीय हैं। ध्यान देने की बात यह है कि कोरिया का स्वाधीनता-आन्दोलन अधिकतर कोरिया-देश के बाहर ही हुआ है। क्योंकि जापानियों ने प्रारम्भ से ही उसे बहुत बुरी तरह कुचला है। दो लाख मनुष्यों में सात हज़ार मार डाले गये और पचास हज़ार क़ैद कर लिए गये, तब आन्दोलन गुप्त रीति से प्रारम्भ हुआ। कोरिया के नेता भागकर दूसरे देश—विशेष कर चीन और मंचूरिया चले गये। उन्होंने वहीं से अपना आन्दोलन प्रारम्भ किया। १९१९-२० ई० के जाड़े में डा० सिगमान री के सभापतित्व में 'पहली कोरिया सरकार' की स्थापना हुई।

पूर्वी एशिया की राजनीतिक प्रगति का कोरिया के स्वाधीनता-आन्दोलन पर बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता आया है। चीनी-क्रान्ति जब पूरे जोरों पर थी तब यह भी [illegible] सरकार [illegible] चीन के हो गया है।

अमुद्रीकरण-आर्डिनेंस के जारी करने का प्रधान कारण, जैसा सरकारी विज्ञप्ति से प्रगट हुआ है, चोर-बाज़ार नष्ट करना रहा है। ऐसा विश्वास है कि चोर-बाज़ार का चालू-धन ऊँची ऊँची क़ीमत की नोटों में निहित है। चोर-बाज़ार के नष्ट न होने से सरकार और जनता दोनों को हानि है। चोर-बाज़ार के मुनाफ़े पर सरकार आय-कर भी नहीं लगा सकती। आय-कर से समाज की जो कुछ भी भलाई की जा सकती थी, समाज उससे वंचित रह जाता है। साधारण नागरिक जो अपना जीविकोपार्जन ईमानदारी से करता है, उसके लिए यह आर्डिनेंस कोई विशेष असुविधा नहीं उत्पन्न कर सकता।

अपना सम्बन्ध बढ़ाया। उन्होंने इसके साथ ही साथ कोरिया में भी गुप्त आन्दोलन चलाया। इस प्रकार विकास और ह्रास होता रहा। इन सबका पूरा और सच्चा इतिहास तब तक नहीं लिखा जा सकता जब तक कोरिया के क्रान्तिकारी नेताओं को अपनी कहानी कहने की पूरी-पूरी स्वतंत्रता न मिले।

१९४० ई० में स्थापित की गई 'अस्थायी कोरिया सरकार' का उल्लेख हो चुका है। इसके अध्यक्ष थे वृद्ध किमकू। इस सरकार के पास कई हज़ार दलों की एक सेना है। इसका नाम है 'कोरियन-स्वातंत्र्य-सेना'। इस सेना के अध्यक्ष थे ली चुंगचुन। यह 'चीनी राष्ट्रीय रक्षा-समिति' के निर्देशानुसार काम करती है। ७८ वर्ष के वृद्ध डा० सिगमान री 'अस्थायी सरकार' के वाशिंगटन-प्रतिनिधि हैं। हाँ, यह बात ज़रूर है कि अमेरिकन सरकार ने न तो उनको और न उनकी सरकार को ही सरकारी तौर से कभी स्वीकार किया है। आज डा० री की जितनी भी महत्ता है वह उनके संयुक्त राज्यों से घनिष्ट सम्बन्ध के कारण है, वर्ना इस समय उनका कोरिया के किसी दल से भी सम्बन्ध नहीं। स्वाधीन कोरिया में उनके नेतृत्व के लिए कोई भी स्थान नहीं।

प्रारम्भ में 'अस्थाई कोरिया सरकार' 'कोरिया-स्वातंत्र्य-दल' की मुट्ठी में पूर्ण रूप से थी। १९१९ ई० में कोरिया से भागे हुए कुछ क्रान्तिकारियों—जिनका सम्बन्ध कोरियनों से बिलकुल टूट गया था—द्वारा इस दल का निर्माण हुआ था। १९१३ ई० में इस दल ने अनुभव किया कि वह कोरिया के प्रतिनिधित्व का सही-सही दावा नहीं कर सकता। तब उसने दूसरे प्रतिनिधि दलों—जिनमें 'कोरिया राष्ट्रीय क्रान्तिकारी-दल' विशेष रूप से उल्लेखनीय है—के प्रतिनिधियों को भी अपने में सम्मिलित करने का निश्चय किया। इस दल के सदस्य क्रान्तिकारी भी हैं, कम्युनिस्ट भी और आतंकवादी भी। इसके प्रोग्राम में जापानियों के विरुद्ध अधिक शक्तिशाली और प्रभावपूर्ण मोर्चा तैयार करना था। अतएव कोरियन राष्ट्रीय कांग्रेस में सदस्यों की संख्या इस प्रकार थी :—'स्वातंत्र दल'—३३; राष्ट्रीय क्रान्तिकारी दल—१२; किसी भी दल से सम्बन्ध न रखनेवाले—५।

परन्तु यह स्थिति चुंगकिंग की राजनीतिक परिस्थिति के कारण शीघ्र ही बदल गई। अभी तक 'कोरिया स्वातंत्र्य-दल' को क्यूमिंटांग के एक प्रतिक्रियावादी दल "सी सी" से आर्थिक सहायता मिलती थी। 'राष्ट्रीय क्रान्तिकारी दल' के सदस्यों के प्रवेश से "व्हाम्पोआ कैडेट"—जिसमें जनरल हो यिंग-चिन का प्राधान्य है—ने इस नये दल की राजनीतिक और आर्थिक सहायता का प्रबन्ध अपनी मुट्ठी में कर लिया। परिणाम यह हुआ कि 'राष्ट्रीय क्रान्तिकारी दल' के प्रतिनिधि येरन भाग आये। यहाँ इन कोरियनों ने चीनी कम्यूनिस्ट दल और ओकानों सुसुमों की अध्यक्षता में 'जापान-जन-मुक्ति दल' द्वारा आयोजित राजनैतिक और सैनिक कार्यों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। १९४४ ई० में उन्होंने स्वयं 'कोरिया-जन-मुक्ति-दल' का संगठन किया। साथ ही किसानों और मज़दूरों का एक स्कूल भी खोला। वे उत्तरी चीन के कोरियनों के बीच प्रचार करते रहे और मंचूरिया तथा कोरिया के गुप्त दलों से अपना सम्बन्ध स्थापित किया। १९४५ ई० के वसंत में इस दल ने एक घोषणा-पत्र निकाला जिसका आधार था प्रजातंत्र-वाद के सिद्धान्तों और जापानियों के विरुद्ध सभी दलों के संयुक्त-मोर्चे को तैयार करने के उद्देश्य से स्थापित किसी एक संस्था में रहकर एकता-सूत्र में बँध जाने का आग्रह। घोषणा-पत्र में इसका भी उल्लेख किया गया था कि मित्रराष्ट्रों की सहायता के लिए दल तैयार किये जायँ। इस प्रकार स्वतंत्रता प्राप्त करने की योग्यता का सबूत दिया जाय। चुंगकिंग-पोषित 'अस्थायी कोरिया सरकार' से डरकर कुछ लोगों ने 'कोरियन प्रजातंत्र दल' का संगठन किया। इसमें कोरियन सिनेट के चेयरमैन हांग-चिन और ऐसे ही कई योग्य तथा सुप्रसिद्ध व्यक्ति थे। १ मार्च १९४५ ई० को प्रकाशित इनका घोषणा-पत्र डंके की चोट पर ऐलान करता है कि ये कोरिया की स्वाधीनता और प्रजातंत्र शासन के लिए अन्त तक लड़ते रहेंगे।

इस प्रकार यदि हम ध्यानपूर्वक देखें तो कोरिया के स्वाधीनता-आन्दोलन में हमें दो प्रमुख बातें दिखाई पड़ेंगी। एक तो यह कि कुछ दल जिनमें 'अस्थायी कोरिया सरकार' उल्लेखनीय है—ऐसे हैं जिनका कोरिया की जनता से सम्बन्ध बिलकुल टूट-सा गया है। ये अपनी सारी शक्ति कोरिया की स्वाधीनता के लिए विदेशी शक्तियों—विशेष कर चीन और संयुक्त राष्ट्रों—की सहायता प्राप्त करने में लगाते हैं। इनका दृष्टिकोण कट्टरपंथी है। इन्होंने किसी भी प्रकार की युद्धनीति अपनाने अथवा जन-सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न नहीं किया। ये स्वतन्त्र कोरिया का शासन-सम्बन्धी उत्तरदायित्व नहीं सँभाल सकते क्योंकि इन्हें राज्य-कार्य का अनुभव नहीं। हाँ, विदेशी नीति सँभालने में काफ़ी सहूलियत होगी। दूसरी बात यह है कि कुछ प्रवासी दल—इनमें 'कोरियन कम्यूनिस्ट दल' मुख्य है—ऐसे भी हैं जो कोरिया की स्वाधीनता के प्रश्न को सीधे-सादे सैनिक उपायों से हल करना चाहते हैं। इन्होंने चीन, मंचूरिया और स्वयं जापान में भी अपने केन्द्र स्थापित कर लिए हैं।

आज कोरिया को कार्यशीलता और कर्तव्य-तत्परता के पाठ को भली भाँति हृदयंगम करके संसार के सामने आना है। दुनिया की गति-विधि के साथ आगे बढ़ना है। नहीं तो उन्हीं के घोषणा-पत्र के अनुसार "कौन गारंटी दे सकता है कि आज लन्दन में प्रवासी पोलिश सरकार के साथ जो कुछ हुआ है, वही कल चुंगकिंग में 'अस्थायी कोरिया सरकार' के साथ न होगा?" कोरियन नेताओं का कर्तव्य है कि वे पार्टीबन्दियों को छोड़कर, मामूली छोटे और निजी मसलों को बलायेताक़ रखकर सीधे-सादे आज़ादी के अहम मसले को लेकर मैदान में आयें। हमारे हृदय उनके साथ हैं, हमारी दुआयें उनके साथ हैं और हमारा पूरा विश्वास है कि कुछ ही दिनों में उनकी प्यारी आज़ादी भी उनके साथ होगी।

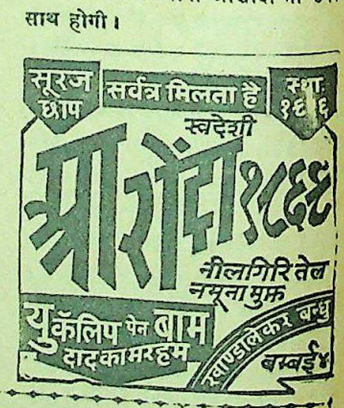

आपकी किस्मत में क्या लिखा है ?

अगर आप एक साल के अन्दर पेश आनेवाले अच्छे-बुरे हालतों को समय से पहले जानना चाहते हैं तो आप आज ही हमको सिर्फ़ पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी फूल का नाम लिखकर भेज दीजिए। बस फिर हम ज्योतिष विद्या के हिसाब से आपके आनेवाले १२ मास का नफा, नुकसान, किस तिजारत में फायदा होगा, किस जरिये रुपया मिलेगा, रोजगार कब मिलेगा, मुलाजमत में तरक्की, तबादला, तनज्जुली, औरत और औलाद का सुख, तन्दुरुस्ती, बीमारी, दूर का सफर, मुकद्दमा और इम्तिहान में सफलता, सगाई शादी, जमीन व जायदाद का सुख, किसी से नया मेल या नफा, सट्टा, लाटरी या किसी अज्ञात कारण से धन का मिलना सारांश तारीख कार्ड से लेकर एक साल तक होनेवाली कुल बातों का खुलासा यानी साहबारी वर्षफल बनाकर सिर्फ एक रुपया चार आने में वी० पी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक खर्च अलग होगा। साथ में बदकिस्मती को खुश किस्मती में बदलने का उपाय भी लिखा जायगा ताकि आनेवाली मुश्किलों को दूर किया जाय। सिर्फ एक बार की परीक्षा आपको बतला देगी कि हम ज्योतिष विद्या के कितने जानकार हैं। गलत साबित होने पर कीमत वापिस।

श्री स्वामी सत्यनारायण ज्योतिष आश्रम, (D. D.) जालन्धर सिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

एक्ट्रेस

लेखक, श्री 'रमण'

जीवन में ऐसे अवसर आ ही जाते हैं जब कि मनुष्य चाहता कुछ है किन्तु करना उसे कुछ और ही पड़ता है। शिलांग की तराई में उससे भी यों ही एकाएक भेंट हो गई, वह शरण चाहती थी, किन्तु समाज ही जब उसे दूर फेंक रहा था तो मनुष्य की क्या हस्ती है। किंतु एकाएक दिखाई पड़ी फिल्म के एक रुपहले पर्दे पर। विहार के तरुण कलाकार श्री रमण की यह कहानी सुंदर, जीवन के अन्तर्द्वन्द्वों से पूर्ण तथा मनोवैज्ञानिक है।

यही पहले आई रज्जा की भीख मांगने किंतु बाद को रुपहले पर्दे पर दिखाई पड़ी।

साफ़गोई अगर सुख की तलाश और उस तलाश की एक राह है तो साथ ही दुनिया की निगाह में एक जहर भी। ऐसा जहर जो पीने के समय अमृत-सा मीठा किन्तु क्षण भर बाद मृत्यु। आदमी जितना साफ़ अपनी हरक़तों में रहेगा, उतना ही उलझनों से बाहर रहेगा--यही होती है प्रेरणा। यह प्रेरणा किसी ग़लत बुनियाद पर की दीवार हो यह मैं कह नहीं सकता। मनुष्य स्वभाव से आराम-पसन्द ही होता है। वह कठिन से कठिन और कठोर से कठोर क्षणों को भी अपने पौरुष, शक्ति या कला-कौशल से ही आसान कर लेगा, इसमें विश्वास करना ही है। मैं अगर कभी इसे--या कि साफ़गोई को अपने जीवन में बहुत ऊंचा स्थान देकर उसी के अनुसार अपनी हरक़तों को संचालित करने लगा हूँ तो--यह अपराध कैसे बन गया, मैं यही आज भी सोचता हुआ थक जाता हूँ और अनेक बार आँखें गीली हो जाती हैं यह सोचते-सोचते कि काश् कोई मुझे ठीक-ठीक इतना ही क्षण भर के लिए समझ पाता। आप इस एक वाक्य में अहंकार की गंध पा गये होंगे। नहीं! नहीं!! आपने ग़लत समझा। ऐसा समझिए। कुछ लोगों ने मुझे मुझसे बहुत ऊँचा समझा है। मैं जो वाक़ई हूँ नहीं उससे कहीं ऊपर। ऐसा भी कह सकते हैं कि मैं जो हूँ उसके मुक़ाबिले वह देवता-समान है। उन्हें मैं मूर्ख कहूँ, तो पाप करूँगा। कुछ साधारण मनुष्य जिसके लिए दुनिया एक सृष्टि-मात्र ही न होकर विचित्र तमाशा भी है। कुछ बहुत ऊँचे, जो नीचे की ओर ताक नहीं पाते। उनकी आँखों में सभी महान् और सभी ऊँचे। कुछ लोगों ने मुझे, मुझसे बहुत नीचे। जो मैं हूँ, उससे बहुत उतरकर, गिरकर। इसे जानकर मैं बार-बार तिलमिला जाता हूँ। काँप जाता हूँ। मैं इसे नापसन्द ही भर नहीं करता, बहुत बार क्रोध में आ जाता हूँ। मेरी आँखें उस समय भी छलछला जाती हैं। यही सोचकर कि मैं इन्हें अपने आपको इन छब्बीस वर्षों में भी नहीं समझ सका हूँ, खोलकर न रख सका हूँ। इनमें से अधिक नीच और इर्षालु ही हैं। मैं कल तक इसकी चिन्ता नहीं कर रहा था, किन्तु आज इसी चिन्ता में घुल रहा हूँ जैसे यह जीवन में सबसे बदरंग धब्बा है और जिसे धोकर मिटाना ही इस सम्पूर्ण जीवन की सफलता है।

अनुभूति कहेगी कि यहाँ हर किरण के बीच एक पर्दा है और अंधकार के प्रत्येक शून्य-बिन्दु के इर्द-गिर्द एक टट्टी। जीवन का प्रत्येक क्षण अदृश्य से आकर अदृश्य में ही लीन हो जाता है। स्वयं वर्तमान भी जिस कुहरे में है, उसे हमारी बाहरी क्या भीतरी आँखें भी नहीं बेध पातीं। फिर साफ़गोई जहा न हो तो क्या हो? धुआँ-धार; मृगतृष्णा के रूप में अज्ञात मंजिल पर चलनेवाले पागलों को इसकी चिन्ता हो, यह व्यर्थ की बात है। मगर कभी-कभी बबूल या बेल के नीचे हवा की इन्तजार में बैठकर अगर सोचा गया तो यही लगा कि यह सब पर्दे इतने झिलमिल हैं कि राज कुछ रह नहीं पाता। पर्दे के भीतर तो राज भी नंगा हो जाता है। जो बाहर नहीं दीखता शायद, उससे अधिक दीखता है। यह परदा उठाकर ही राज क़ायम रखा जा सकता है। राज क्या जीवन के लिए या जीवन के बीच अनिवार्य्य है? अनिवार्य्य, मैं कहूँगा कुछ भी नहीं। सब कुछ टाला जा सकता है, टाल दिया जा सकता है। किन्तु जीवन में--वह भी जब तक जवानी अँगड़ाई लेती होती है--यदि कोई नारी अनिवार्य्य रूप से आ जाय तो--वह न तो टाली जा सकती है और न छोड़ी ही। उसे छोड़ या टालकर जीवन जीवन न रह सकेगा। उसकी प्रगति ही सर्वथा रुक-सी जायगी। जीवन की धारा रुक जाय यह बात नहीं। धारा की धारा रुक जायगी। हाँ! हाँ, मुझे याद है। मैं कहानी ही कहूँगा। वह ऐसा ही एक साल था जब मेरे जीवन में भी एक नारी अनिवार्य्य-रूप से प्रवेश कर आई थी। आज से प्रायः छः साल पहले की बात होगी। उन दिनों मैं सेहत के ख्याल से शिलांग रह रहा था। मैं कोई धनवान् व्यक्ति होऊँ यह बात नहीं, मगर सेहत के ख्याल से एक-आध बार यहाँ-वहाँ जा सकता हूँ। जगह निहायत अच्छी है। साथ मेरे, मेरा अंतरंग मित्र किशुन भी था। स्त्री नाम की कोई नारी यदि जीवन में मैं ख़रीद चुका होता तो भारतीय होने के नाते मेरा पिंड न छोड़कर वह भी शायद साथ जरूर होती। किन्तु परमात्मा की कृपा से ऐसा सौदा मैंने अभी तक किया ही नहीं है। इधर उस ओर झुकता रहा हूँ। मेरा एकाकी-पन मुझे खा जायगा, यह भावना मुझ पर चढ़कर बोल रही है। पहले जिस एकाकीपन में भी सुख पाता था, आज उसी में घबड़ा जाता हूँ। कई बार इसका कारण जानने को जी चाहता है। शायद अपने अगल-बग़ल आज कोई भी, मुझसे बहुत समीप मुझ-सा ही एकाकी नहीं रह-कर, जी भी रहा है। तब, जो एकाकीपन भाता था वह इसलिए कि मेरे और भी अपने-पराये जो मेरे नज़दीक थे, सभी अकेले ही, एकाकी ही खेल रहे थे, फूल-से हँस रहे थे। रफ़्ता-रफ़्ता हम सबके सब सयाने होते आये। कुछ माँ की आरजू और कुछ बाप की धमकी से--अपने को एक से दो कर गये। कुछ नारी से अलग जीवन की निरर्थकता की प्रतिक्रिया में उसे अपना चुके। किन्तु मेरे साथ अभी तक इन बातों में कोई लागू नहीं हो सकी है। मैंने माँ की आरजू पर अपनी आरजू लाद दी है। बाप ने कभी धमकी देने की गुंजाइश नहीं पाई। स्वयं नारी के लिए कोई निश्चित सम्मति नहीं कर पा रहा हूँ। इसीलिए तो कह रहा हूँ कि अनिवार्य्य रूप से प्रवेश कर जाने पर तिरस्कार नहीं करूँगा किन्तु खोज कर सौदा भी नहीं!--

तो उस मकान का, जहाँ हम लोग ठहरे थे, नाम था श्रीनिकेतन। नाम की मर्य्यादा ने और भी मुझे उस मकान में ही रुकने की ओर खींच लिया। कुछ दिनों तक तो यों ही, बे-तरतीब ज़िन्दगी चलती रही। मेरे और किशुन के बीच, बेचारा नौकर फाँसी पड़ता रहा। किशुन के सम्बन्ध में लिखूँ तो बहुत लिखना होगा। बहुत सबेरे वह उठकर लगता मुझे उठाने। पूछने पर बताता--सुबह का टहलना मेरे सेहत के लिए अच्छा होगा। मुझे मालूम है, डाक्टरों ने भी ऐसा ही कहा है। मगर आराम करने को भी कहा है। सबेरे उठकर चक्कर काटना मेरे लिए सबसे अधिक तकलीफदेह। दिन-रात तो चलही रहा हूँ। कभी आज तक एक क़दम पर नाम के लिए भी गिनकर तुमने दो साँसे भी लेने दी? किशुन से लड़-झगड़कर यह मनवा लिया कि वह अब इसके लिए नहीं इसरार करेगा। दोपहर में किताबें उलटतीं और शाम को 'वाक़' में जाते। अभी इस तरह पन्द्रह-बीस दिन ही हुए होंगे कि एक दिन संध्या समय-नौकर ने ऊपर आकर कहा--कुछ लोग बुला रहे हैं--यानी इन्तजार कर रहे हैं। टहलने के लिए हम किशुन बाहर निकलने-वाले थे। दोनों ही नीचे उतरे। देखा एक छोटा परिवार प्रतीक्षा में खड़ा है। कभी का परिचय तो था नहीं फिर भी शिष्टता के अनुसार भीतर कमरे में ले जाकर बैठाया। शायद मैं अकेले होता तो उनके प्रश्नों को वहीं जानकर, उत्तर दे बिदा कर देता किन्तु किशुन ने दुनिया देखी है। कमरे में बैठते ही किशुन ने चाय मँगाई। फिर बातें होने लगीं। बातों से पता चला कि उन्हें किसी से यह मालूम हुआ कि हम लोग उस मकान को छोड़ने-वाले हैं। उनकी प्रार्थना थी कि यदि वाक़ई छोड़ने जा रहे हों--तो इस मकान को मेरे हाथों में सौंप देंगे। मुझे यही नहीं अच्छा लगा कि इन लोगों ने मान कैसे लिया किन्तु मैं चुप रहा। कुछ बोल देता तो, पीछे किशुन सर खा जाता। वे तीन थे। एक वृद्ध दूसरी उसकी पुत्री, प्रायः १७-१८ साल की और एक लड़का कोई दस साल का। वे बंगाली थे, यह मैंने बातचीत से समझा। किशुन के पूछने पर उस वृद्ध ने बताया कि यह--कलकत्ते में ही 'इन्टर' पढ़ रही है। नाम भी बताया। मैं भी बता देता किन्तु अब नहीं बताऊँगा। क्यों, यह पूरी कहानी पढ़ चुकने पर आप समझेंगे और शायद कहेंगे कि पीछे बताना ठीक नहीं था। हो गया, उसके बाद वह चली गई, वे चले गये। हाँ, कुछ बातों के सिलसिले में ही उसने बताया कि उसे साहित्य से अभिरुचि है और किशुन ने मेरे विषय में बताया कि इन्हें साहित्य से प्रेम। बातें यहीं आज रह गईं। शिलांग उस दिन से कुछ अधिक सुन्दर लगने लगा। बसन्त आने के पहले सुबह हँसकर आता है, संध्या मस्ती देकर जाने लगती है। कभी-कभी सड़कों पर हम लोग मिल जाते तो कुछ बातें हो जातीं। धीरे-धीरे यह बात बढ़ती गई और एक दिन हम लोग बहुत समीप आ गये, एक-दूसरे के। बेकली पर पहले कोई जोर देता तो चिढ़ होती, किन्तु तब उसे स्वीकार कर बैठा। जीवन में कितने वातायन हैं और उन सबों से कोई न कोई झाँकता ही रहता है। हम उन वातायनों को बन्द भी कर सकते हैं। सन्तों का कहना है, बन्द कर ही शान्ति उपलब्ध होती है। मैं यहाँ जरा कतराकर रास्ता बनाता हूँ। सब खोकर ही शान्ति पाई तो शान्ति लेकर ही क्या? अरमानों की नींव पर ताज-महल ही बना तो क्या बना? अरमानों का ताजमहल बने तो कम से कम अरमानों से तो बने ही। यह बेकली इसी अरमान की फुलवारी की एक बल्लरी है जो फैलती तो है जमीन-असमान तक किन्तु जड़ जमीन पर नहीं लगाती। यह बेकली का आलम उस शराब की तरह जो पीते ही तो बुत मगर खुमार रहने पर दानिशमन्द बनाती हो। मैं अपने तह के तह को खोल-कर उसके आगे रखता और वह तेजी से मेरी छाया पर चढ़ती आती। उन दिनों मुझे इसकी चिन्ता प्रायः जाती रही कि किशुन कैसे उसी घर में है? उसे कोई कष्ट तो नहीं होता? वह मुझे इस तूफ़ान से खेलते हुए देखकर क्या कह रहा होगा? अनेक बार वह कुछ कहता-सुनता भी मगर शायद मैंने एक भी न सुनी होगी। सुनता कैसे? तूफ़ान के सायें-सायें के सिवाय मेरे कानों में और कुछ नहीं आता। मुझे न जाने क्यों यह कभी न लगता कि मैं कोई ग़लती कर रहा हूँ। आज मैं यह अवश्य कहूँगा कि किशुन के प्रति मैं कुछ अन्याय कर रहा था और आज भी किसी दंड के लिए तैयार हूँ। मुझे याद है, एक रात मैंने तनिक खिचकर कह दिया था कि ये व्यक्तिगत बातें हैं और इनमें घुस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना अच्छा नहीं लगता तो वह रात भर रोता रह गया। आज कहता हूँ, जीवन भर रोकर भी उसकी आँखों के रिक्त कोण को न भर सकूँगा। और तब यह बात एक दिन इतनी बढ़ गई कि एक संध्या, वह मेरे यहाँ फिर आई। जब रात के दस बज गये तो मैंने कहा---"अब तुम्हें जाना चाहिए, रात अधिक जा चुकी है।" वह न तो घबड़ाई और न हिली। उसने स्थिर रहकर कहा---

"यही सुनने को तो बैठी रही हूँ। सुनो, अब मैं लौटकर घर नहीं जाती। तुमसे मिल-जुलकर पिता का स्नेह और भाई की ममता में भूल चुकी हूँ। आज तुम्हारे पास इसलिए आई कि तुम्हें साथ ले लूँ। तुमने कई बार हिमाच्छादित हिमालय को देखते-देखते यह कहा है कि--- हम दोनों दुनिया के कोलाहल से दूर अपना एक संसार बसाते। आज मैं वही बसाने जाना चाहती हूँ और उस दुनिया की कल्पना तक तुम्हारे बिना असम्भव है।" वह जो कुछ भी कहती जा रही थी, अक्षरशः मैं सुनता जा रहा था। मैं चुप न जाने कितने भावों के ज्वार-भाटे में टक्करें ले रहा था। उसने फिर कहा---"न जा सको, तो बोलो। मुझे अब घर जाना नहीं है। सामने सड़कें हैं, ऊपर आकाश है। और सुनोगे---मैंने काफ़ी से ज्यादा रुपये भी ले लिए हैं। तुम आज न गये तो मुझे जीवन का सबसे अधिक दुःख होगा। मगर जानते हो मैं पुरुष पा जाऊँगी। मेरे पास रुपये जो हैं। मैंने उठकर दरवाज़े की सिटकिनी चढ़ा दी। धीरे से यह भी कहा---हाँ, आज ही कहते बात नहीं पा रहा हूँ। शायद कल तक कुछ कह सकूँ। वह सारी रात जागती रही, मैं सारी रात सोचता रहा। सबेरे ही किशुन को सारी बातें मैंने कह सुनाईं और वह सुनकर चुप 'बाक़' में चला गया। लौटने पर उसने बताया कि उसके पिता भी खोज-खबर नहीं कर रहे हैं। मुझे आश्चर्य होता किन्तु उसने बताया कि वह एक पत्र छोड़ आई है कि वह कलकत्ते जा रही है और वहाँ से आगे नहीं जानती। दूसरे दिन भी यह समस्या हम दोनों को घेर कर रही और कोई समाधान न हुआ। उस रात को किशुन मुझे समझाता रहा। तुम्हारी न जाने कितनी जिम्मेवारियाँ हैं। भैया जी की मृत्यु के बाद उनके बाल-बच्चों का भार तुम पर ही आता है। बूढ़े मा-बाप के प्रति भी तो तुम्हारा कोई कर्त्तव्य है। और भी कुछ कहता रहा। धीरे-धीरे मैं भी इसी नतीजे पर पहुँचा कि मैं शायद इसके साथ जा न सकूँगा और तीसरे दिन हृदय पर दुनिया का सबसे वजनी पत्थर रखकर यह कहने लगा कि---"मुझे क्षमा करना, मुझे घेरकर जिन जिम्मेवारियों ने बाँध लिया है, उन्हें मैं तोड़ नहीं पाता। यह जानते हुए भी कि परिवार में रहकर सम्भवतः एक दिन ज़हर खाकर मुझे आत्म-हत्या करनी पड़े और तुम्हारे साथ मुझे स्वर्ग का वरदान होगा फिर भी स्नेह कर्त्तव्य के आगे घुटने टेकता लग रहा है। मुझे छोड़ दो!" उसने एक शब्द भी नहीं कहा, मुझे यह अच्छी तरह याद है। उसकी आँखें भर आईं। उस समय से ही वह कुछ देखने में खिच-सी गई। बातें करना उसने प्रायः बन्द कर दीं। कुछ पूछने पर उत्तर भर दे देती और इस तरह आई रात। वह एकाएक समीप आकर कहने लगी---"क्षमा करना, मैंने जिस बूते पर घर छोड़ दिया, वह बालू की भीत की तरह गिर पड़ा। मगर मुझे तो जाना ही है। तुम साथ होते तो कुछ ठिकाना होता, तुम नहीं हो तो कुछ नहीं।" यह कहकर उसने अपने 'हैंड-बेग' से एक चूड़ी निकालकर दी और यह कहा कि---इसे देखकर मेरी याद करते रहोगे तो मुझे बल मिलता रहेगा। फिर वह फूट-फूटकर रोने लगी। मैं स्वयं आँसू में डूब गया। वह धीरे-धीरे बढ़ रही थी और मैं उसके साथ-साथ चल रहा था। रात के उसी अन्धकार में वह 'मोटर-स्टैन्ड' पर आई और मैं साथ आया। रात भर वह वहीं रही, मैं साथ रहा और सबेरे की पहली 'लारी' से वह चली गई, मैं न जा पाया। उसने चलते-चलते कहा---'यह तुमने क्या किया' 'लारी' की घरहिट में मेरा आँसू पिस गया। मैं वहीं बैठा रहा। किसी तरह उस लारी को पकड़ पाता। मुझे जाना ही चाहिए। मेरी मृत्यु भी तो हो सकती है। अगर यह आज ही हो जाय---तो माँ-बाप के प्रति कर्त्तव्य की भावना का क्या श्राद्ध न हो जायगा? मेरी जिम्मेवारी नंगी न हो जायगी? मुझे लगा मैंने पाप किया है।

शिलांग उस दिन से काटने लगा और चौथे दिन ही ऊब कर घर वापस आ गया। दिन पर दिन गुजरे हैं। साल पर साल भी गया है। तब की यह घटना कल ही की जान पड़ती है। उस दिन संध्या को जो किशुन के यहाँ पहुँचा तो देखा कि वह मोटर लगाये मेरा इन्तजार कर रहा है। पहुँचते ही उसने कहा---चलो, आज सिनेमा चलें। मुझे कुछ इनकार नहीं। खेल शुरू होने में देर थी। किशुन उस दिन कुछ अपने में अनुपस्थित लगा। खेल आरम्भ हुआ और किशुन ने छः साल पहलेवाली शिलांगी की जिन्दगी याद कराई। देखा तभी, एक ऐक्ट्रेस के रूप में वह---जिसे आज से छः साल पहले 'लारी-स्टैन्ड' पर पहुँचा आया जो, जीवन के तन्तु-तन्तु में प्रवेश कर भी प्राणों की तरह निकल आई, जो एक दिन अनिवार्य मेरी साँसें बन कहीं लुप्त हो गई, उस रुपहले पर्दे पर थिरक रही थी। मैं जल्द रोता नहीं। रोने को मैं कापुरुष होने का लक्षण मानता हूँ। आँखों से आँसू तब आते हैं जब मनुष्य अपनी सीमा पर आकर आगे नहीं बढ़ पाता। औरतें रोती हैं तो जायज है। वे सीमा के भी भीतर भी सीमित हैं। कमरा, कमरे के बाहर आँगन, आँगन से बाहर मकान, परिवार, समाज और क्या जाने क्या क्या? किन्तु पुरुषों के लिए आकाश-कुसुम भी असंभव नहीं फिर भी मेरी आँखें गीली हो गईं।

कब खेल समाप्त हुआ और कब मैं घर आया, यह कुछ-कुछ याद है। मगर इन सबों को देखकर वह मुझे बेध रही थी। आप यक़ीन कीजिए---जिसे उस दिन मैंने ठुकरा दिया था, वह आज सिनेमा-क्षेत्र की ख्याति-प्राप्त तारिका है। इसी लिए पहले मैंने नाम नहीं बताया। आज वह मुझे भूल गई होगी किन्तु वह सुख से है। मैं उसके साथ चला गया होता तो आज वह वहाँ न होती। शायद सिनेमा में जाने को वह बाध्य न होती और मैं भी सुख से होता। किन्तु जिस साफ़गोई को मश्क कर मुझे सन्तोष होता है, आज उसी को याद कर मैं घबड़ाता भी हूँ। हमारा क़दम-क़दम बेमिसाल रेगिस्तान की ओर बढ़ रहा है। जहाँ आँधी तो आती है मगर बालू की। जहाँ वर्षा तो होती है मगर अंगारों की। जीवन की पगडंडी तो बरसात में भी धूलिपूर्ण है। और मैंने कहा न कि नारी जो अनिवार्य रूप से प्रवेश कर आती है--- उसे आप टाल नहीं सकते, वह टाली नहीं जा सकती। जीवन की धारा तो नहीं रुकती किन्तु धारा की धारा रुक जाती है। साफ़गोई का दामन पकड़ मैंने, अनिवार्य्य रूप से आई उसको टालकर अलग हो गया जरूर, मेरा जीवन पल-पल पीकर जी रहा है जरूर मगर इस धारा की धारा रुक गई है। किशुन जब कभी वह रेकार्ड बजाने लगता है :---

'दुनिया नई बसाना साजन, दूर देश जा'---तो मुझे श्रीनिकेतन का वह कमरा स्मरण हो आता है जहाँ उसने अँधेरी रात में कहा था---'चलो, हम लोग कहीं दूर जाकर अपनी एक दुनिया बसा लें'--- और तब मेरे मुँह से बर्जस्ता एक शैर निकल आता है कि---

"मज़े पै क़िस्सा पहुँचा था---
कि नज़्रे-जिन्दगी बिगड़ी!
कहाँ पै ख़त्म कर दी,
बेवफ़ा ने---दास्ताँ मेरी !!

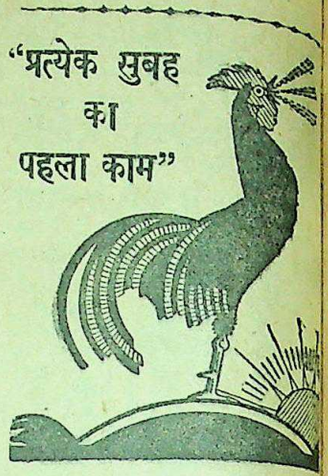

यदि आप किसी काम में शक्तिहीनता का अनुभव करते हैं तो दिन में एक गिलास निर्मल इनोज़ "फ्रूट साल्ट" को लीजिए। इनो रक्त को शीतल व निर्मल करता है, शरीर को स्फूर्ति देकर प्राकृतिक शक्ति व पोषण प्रदान करता है।

ईनोज़ "फ्रूट साल्ट"

इनो व "फ्रूट साल्ट" शब्द रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है।

आपके दांतों को बाहर, भीतर, और बीच से स्वच्छ करता है

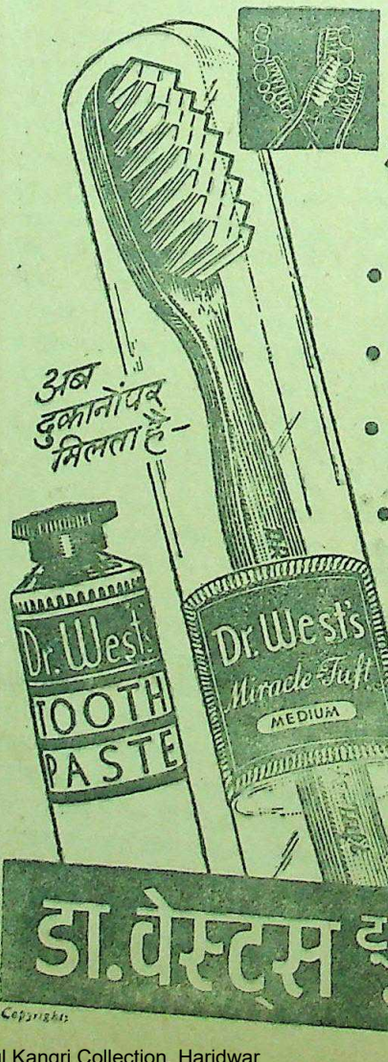

- यह जल-अभेद्य और नमी-विरोधक है।
- विकार-विरोधी शीशे में बंद।
- वर्ष भर की गारंटी.... ....अधिक टिकाऊ
- दांतों को स्वच्छ व चमकीला करने में ६० प्रतिशत अधिक प्रभावशाली।

पशुओं के बालों से रहित

वितरक: व्यापारी निर्यात-संबंधी पूछताछ के लिये पूछिए: एल. डी. सेमूर एंड कं. इन्कार्पोरेटेड, १२०, वाल स्ट्रीट, न्यूयार्क

डा. वेस्ट्स टूथ ब्रुश और टूथ पेस्ट

Copyright

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारी की पुरुष पर विजय कैसे हो ?

मिस विलियम्स का प्रयाग महिला-विद्यापीठ में भाषण

लेखिका, कुमारी शकुन्तला एल्हेन्स

प्रतिवर्ष बसंत-पंचमी के अवसर पर प्रयाग महिला-विद्यापीठ अपना उपाधि-वितरणोत्सव मनाया करता है। स्त्रियों की इस शिक्षा-सम्बन्धी प्रसिद्ध संस्था के उत्सव पर यह उचित ही है कि जो दीक्षान्त भाषण दिया जाय वह किसी माननीय व्यक्ति-द्वारा हो। इस वर्ष बसंत-पंचमी के अवसर पर मिस ई० सी० विलियम्स, एम० ए० को, जो कि संयुक्त-प्रान्त की स्त्री-शिक्षा-विभाग में उच्चतम पद पर हैं, आमंत्रित किया गया था। कन्वोकेशन में बहुधा किसी न किसी प्रकार का संदेश दिया जाता है; व्याख्याता श्रोताओं के सम्मुख कुछ जागरूक करने-

मिस ई० सी० विलियम्स।

वाले विचार उपस्थित करता है। एक स्त्री को, यदि वह अनुभवशील, विचारवान् तथा विस्तृत अध्ययनवाली है, स्त्रियों के सामने बोलने में स्वभावतः अधिक सुविधा होती है। मिस विलियम्स ने जो तथ्यपूर्ण बातें कही हैं उनका उल्लेख यहाँ असंगत न होगा।

सबसे पहले यह आवश्यक है कि हम उनके विद्या-सम्बन्धी दृष्टिकोण पर प्रकाश डालें। उनके अनुसार यदि शिक्षा केवल मातृभाषा के यथेष्ट ज्ञान तक ही सीमित है तो हमें ऐसी विद्या से पूरा-पूरा लाभ नहीं होता। मातृभाषा में ही विज्ञ होने से हम संसार का समुचित ज्ञान नहीं पा सकते। आजकल जो तीव्र गति से उन्नति हो रही है उसका तो हमें ऐसी अवस्था में अनुमान भी न हो सकेगा। शिक्षा का क्षेत्र संकुचित न होकर काफी विस्तृत होना चाहिए। हमको समय के अनुसार चलना है, अन्यथा हम पिछड़ जायेंगे। विज्ञान भी पठनीय है और स्त्रियों के लिए भी विज्ञान की शिक्षा अनिवार्य है। भारतीय नारियों के लिए हिन्दी के माध्यम से शिक्षा की व्यवस्था की जितनी प्रशंसा की जाय उतनी ही कम है। मिस विलियम्स रोमन उर्दू द्वारा शिक्षा देने के पक्ष में नहीं। इससे एक प्रान्त के मनुष्यों को दूसरे प्रान्त के मनुष्यों के साथ मिलने-जुलने, बोलने-चालने में सुगमता क्यों न होगी परन्तु पुरातन भारतीय उच्च दार्शनिक ज्ञान, विद्या तथा सभ्यता को धक्का पहुँचता है।

विद्या हम घर पर पढ़ सकते हैं; विद्या हमें स्कूल और कालेजों में भी पढ़ाई जाती है जहाँ हम बचपन की मित्रता के आनन्द का रस पाते हैं। समस्त विद्या का ध्येय जीवन से पदार्पण करना है और जीवन में सहस्रों प्रकार की समस्याएँ होती हैं। जीवन का महत्त्वपूर्ण अभिप्राय होता है। भारत की एक बड़ी भारी माँग है और वह देश के होनहार नवयुवक और नवयुवतियों द्वारा ही पूरी हो सकती है। किसी प्राणी के योग्यता का प्रमाण उसके जीवनदान करने की शक्ति में छिपा होता है। जो कुछ हमें आवश्यकता होती है हमारे पास स्वतः आता है। मिस विलियम्स कहती हैं कि उन्हें कोई सन्देश नहीं कि संसार भर की स्त्रियों में भारतीय स्त्रियाँ सबसे अधिक उदार एवं नम्र हैं। उनके सदियों से आते हुए बलिदान सबको विदित हैं। भारतीय नारियाँ स्वदेश-सेवा में भी भाग लेती रही हैं और वह समय दूर नहीं कि जब उनकी लग्न पूरी होगी।

स्पष्ट शब्दों में कहने के लिए मिस विलियम्स ने विद्यापीठ की विद्यार्थिनियों को अपने घर स्वच्छ रखने, हृदय पवित्र रखने, संग रहनेवालों के साथ सद्विचार तथा दयालुता का भाव रखने, नौकरों के ऊपर कृपा करने का आदेश दिया है। उन्होंने पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार करने और अभ्यागतों का सहर्ष प्रफुल्ल वदन से स्वागत करने की शिक्षा दी है। उनका विचार है कि ऐसा करने से वे पूर्ण और सुयोग्य स्त्रियाँ हो सकेंगी। मिस विलियम्स ने प्रायः वही बातें कही हैं जिन्हें प्रत्येक भारतीय अत्यावश्यक समझता है। स्त्रियों में स्त्रियोचित गुण होने उचित हैं नहीं तो वे अस्वाभाविक प्राणी हो जायेंगी। स्त्रियाँ गुणों की खान न हों परन्तु वे विनोदप्रिय, सरल, सुशील, नम्र तथा सद्व्यवहार करनेवाली अवश्य हों। अपना व अपने पति का जीवन सुखी बनाने में स्त्री का बड़ा भारी हाथ रहता है। और यही स्त्री को नहीं भूलना चाहिए। स्वर्ग और नरक दोनों की कुंजी स्त्री के हाथ है। लड़कियों का विवाह यदि सम्पन्न घरानों में हो जाय तो इसका निश्चयात्मक रूप से यह अर्थ नहीं कि वे सुखी हो गईं। धन से अधिक उपयोगी वस्तुएँ आत्मा और बुद्धि हैं। उनके विकास से भी जीवन सुखी और तृप्त होता है। मिस विलियम्स के शब्दों में हमारे जीवन में Romance और Adventure के लिए समुचित स्थान होना चाहिए।

यदि हमारे अन्दर कुछ खराबियाँ हैं तो कुछ अच्छाइयाँ भी हैं। मिस विलियम्स ने भारतीय मित्रता तथा अतिथि-सत्कार को बहुत सुन्दर बतलाया और ठीक ही कहा है कि ऐसी मेहमानदारी योरप में कहीं नहीं मिल सकती। अपनी कमजोरियों को जानकर और उन्हें दूर करने से ही हम आगे बढ़ सकते हैं। भारतीय नारियों ने अच्छे कार्यों के लिए अपने आभूषण त्याग दिये हैं तो फिर वे महान् से महान् कार्य के लिए पीछे हटनेवाली नहीं हैं।

"संसार भर", मिस विलियम्स कहती हैं, "सुन्दर और आकर्षक स्त्रियाँ चाहता है। भारतीय अपनी स्त्रियों में "गुण" चाहते हैं।" मैं यदि उक्त कथन को ठीक करने की धृष्टता करूँ तो कहूँगी कि यह बात नहीं कि भारतीय अपनी स्त्रियों में केवल गुण ही चाहते हैं, वे गुण प्रथमतः और सौंदर्य और आकर्षण द्वितीयतः चाहते हैं, और सौंदर्य और आकर्षण गुणों में ही आ जाते हैं। मिस विलियम्स ने दीक्षान्त भाषण के अन्तिम भाग में विद्यापीठ की विद्यार्थिनियों को अच्छी पुस्तकों के समान बनने का सदुपदेश देते हुए निर्जीव होने से सतर्क किया है क्योंकि ऐसा ही करने से वह पुरुषों पर विजय पा सकेंगी।

गीत

लेखक, श्री जगन्नाथ, एम० ए०

समझ रहे हो जिसे हँसी !
उसमें दफ़नाई हैं आहें
उसमें दफ़नाई हैं चाहें
यह आशाओं की समाधि पर—चढ़ी हुई पुष्पाञ्जलि सी !
सूख गया जब नयन सरोवर
हुई हृदय की धरती पत्थर
तब यह बस्ती नई बसी ! समझ रहे हो जिसे हँसी !
लाजहीन जब अधर हो गये
अमित दीन जब अधर हो गये
तब यह लतिका कहाँ चली, समझ रहे हो जिसे हँसी !

तुलसी-रत्नावली

संक०, श्री केदारनाथ गुप्त

गोस्वामी तुलसीदास की समस्त अमर रचनाओं का अनुशीलन करना साधारण मानव के लिए सम्भव नहीं है। ऐसी अवस्था में गोस्वामी जी के अमूल्य उपदेशों का लाभ सबको बराबर मिलना सम्भव नहीं था। अतः इस कमी को दूर करने के लिए तुलसीदास की रचनाओं का निचोड़-स्वरूप 'तुलसी-रत्नावली' का प्रकाशन किया गया है। इसमें तुलसीदास के चुने हुए पद्य संकलित हैं। इस एकमात्र पुस्तक में तुलसीदास का समस्त साहित्य समाविष्ट है। मूल्य १॥) डेढ़ रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

पुनर्जीवन प्रदान करना

एक समस्या है ?

इसके लिए एक विश्वस्त
तथा
सरल उपाय जो बताया जाता है वह है—

बाई-एडोल

BI-ADOL

यह कोमल बालकों के शरीर की गठन में प्रकृति की सहायता करता है।

यह माता को स्वस्थ और स्फूर्तियुक्त रखता है।

सूखा रोग से बालकों को मुक्त करता है।

बाई-एडोल

यह एक वनस्पति रोगन और विटामिन ए और डी से तैयार किया हुआ है और शिशु-रोग, क्षयी-रोग तथा अन्य क्षयकारक रोगों में उतना लाभ-दायक है जितना श्वास-सम्बन्धी तथा अन्य संक्रामक रोगों में।

तमाम अच्छे औषधि विक्रेताओं से प्राप्य

बेंगल इम्युनिटि कम्पनी लि० : : कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म-जगत् के सुप्रसिद्ध अभिनेता जीवन।

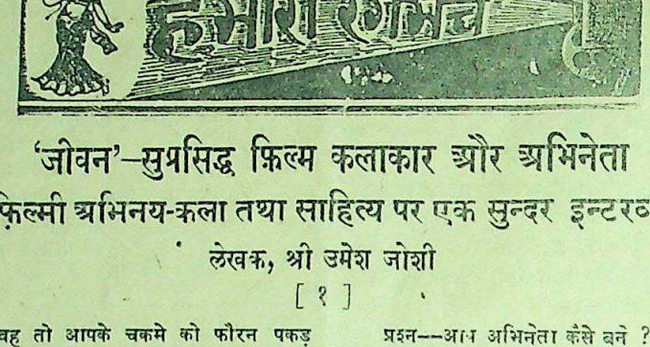

'जीवन'—सुप्रसिद्ध फ़िल्म कलाकार और अभिनेता

फ़िल्मी अभिनय-कला तथा साहित्य पर एक सुन्दर इन्टरव्यू

लेखक, श्री उमेश जोशी

[१]

"प्रकाश-पिक्चर्स" के दफ़्तर में मैं बैठा हुआ था। दोपहर का वक्त था प्रोडक्सन-सेक्रेटरी से मेरी बात-चीत "सिने व्यवसाय" के विभिन्न पहलुओं पर हो रही थी। बात-चीत काफ़ी दिलचस्प थी। इसी बीच में सुप्रसिद्ध डाइरेक्टर मिस्टर के० जे० पारमार ने अपने एक मित्र के साथ दफ़्तर में प्रवेश किया। आते ही वह बोले—"मिस्टर जोशी आप राणा-साहब से मिलना चाहते हैं या कपिञ्जलि से? जिससे भी आप मिलना चाहें, उसी को आपके सामने हाजिर करूँ?" मैंने हँसते हुए कहा—"हाजिर करने की क्या जरूरत है। मैं खुद उनके पास चला चलूँगा लेकिन राणासाहब किस रियासत के राणा हैं—और इस कलियुग में कपिञ्जलि कहाँ से टपक पड़े? यह फिल्म स्टूडियो है, न कि तपस्या करने की जगह है?" मेरी इस बात को सुनकर दफ़्तर के अन्दर हँसी का फौआरा फूट निकला। मिस्टर के० जे० पारमार अपनी हँसी देखते हुए बोले—"पहले आप" "एक रियासत है—नवाबी जमाने की, उसी के तो राणा साहब हैं और कादम्बरी युग के कपिञ्जलि, जो कि हिमालय पर्वत से यहाँ पधारे हुए हैं—अपनी योग-निद्रा को तिलांजिल देते हुए"

मैं समझ गया, जिसके सम्बन्ध में मिस्टर पारमार ने यह सब भूमिका बाँधी थी। मैंने बात को स्पष्ट करते हुए कहा—"तो आप स्पष्ट यों क्यों नहीं कहते कि "पहले आप" फिल्म के हीरो और कादम्बरी चित्र में कपिञ्जलि का सुन्दर अभिनय करनेवाले मिस्टर जीवन से मिलिये।" जो मित्र मिस्टर पारमार के साथ आये हुए थे, और जो अब तक चुपचाप बैठे हुए थे, बोल उठे—"मिस्टर पारमार पत्रकार के ऊपर आपका डाइरेक्शन नहीं चलेगा। वह तो आपके चकमे को फौरन पकड़ लेगा, समझे जनाब! आपका जादू तो सिने-कलाकारों के ऊपर ही बोल सकता है।" सभी की नज़र पारमार जी के पास बैठे हुए उन सज्जन की तरफ थी। मैंने उसके चेहरे को ग़ौर से देखा—और पहिचानते हुए बोल पड़ा—"नमस्ते मिस्टर जीवन?"

मिस्टर जीवन ने उठते हुए हाथ मिलाया, और हाथ जोड़कर नमस्ते किया। इस तरह से मेरे और जीवन के परिचय का "ड्राप-सीन" समाप्त हुआ।

मिस्टर जीवन बड़े ही हँसमुख व्यक्ति हैं। वह नंगे सिर थे। सफेद "बुशशर्ट" और पैन्ट पहिने हुए थे। आप बात करते बीच-बीच में चुटकुला भी छोड़ते रहते हैं। ताकि बातचीत में सुननेवालों को काफी दिलचस्पी बनी रहे। वह शुष्क-बातचीत से ऊबे नहीं। वार्ता में इस बात का ख्याल मिस्टर जीवन को रहता है। एक बार भी जिसने आपसे बातचीत की, वह मानो आपका हो गया। दूसरी विशेषता आपकी सज्जनता है। आपका कहना है—"कला के आलोक को सज्जनता उज्ज्वल करती है। कलाकार की सच्ची वफ़ादारी उसके सज्जन बनने में ही है। असज्जन कलाकार कभी अपने जीवन में कला को प्रसार करनेवाली "दिव्यशक्ति" को नहीं उपलब्ध कर सकता। "आप अपने इसी आदर्श द्वारा इस स्वल्पकाल में ही ख्याति की दुनिया में बहुत आगे बढ़ गये हैं। आपके बहुत से साथी, तो अभी आपसे बहुत दूर हैं। आपकी सफलता की कुंजी यही है।

हाँ तो मुझे मिस्टर जीवन एक दूसरे कमरे में ले गये, जहाँ शान्ति का वातावरण था। हम दोनों इतमीनान से बैठे। पहले मिस्टर जीवन ने खाने के लिए अनुरोध किया। मैंने इसके लिए उनसे माफ़ी माँग ली। फिर भी उन्होंने "चाय" तो मँगवा ही ली। हम दोनों ने बड़े आनन्द से चाय पिया। हम दोनों में किन विषयों पर वार्ता हुई, यह बतलाने से पहले, यह बतला देना चाहता हूँ कि, आपने अब तक कई एक ख्याति-प्राप्त चित्रों में कार्य किया है। जैसे "कादम्बरी" "पहले आप" "स्टेशन मास्टर" "पुलिस" "आम्रपाली" और आजकल आप "प्रकाश" के "नई माँ" में काम कर रहे हैं "नई माँ" फिल्म मिस्टर जे० के पारमार के डाइरेक्शन में बन रहा है। बड़ी कुशलता के साथ मिस्टर जीवन की "नई माँ" फिल्म में एक नई अनुभूति का प्रदर्शन होगा। प्रकाश के आगामी चित्र "घूँघट" के लिए भी आपका नाम चुन लिया गया है।

प्रश्न—आप अभिनेता कैसे बने?

उत्तर—मेरी अभिनेता बनने की ख्वाहिश नहीं थी। फोटोग्राफी से मुझे अधिक प्रेम था। मैं श्रीनगर से बम्बई चल पड़ा। चूँकि मुझे बताया गया था, कि बम्बई फोटोग्राफी में बहुत बढ़ा हुआ है? वहीं जाकर फोटोग्राफी की तरक्की हो सकती है। इस शौक के साथ पेट की भी

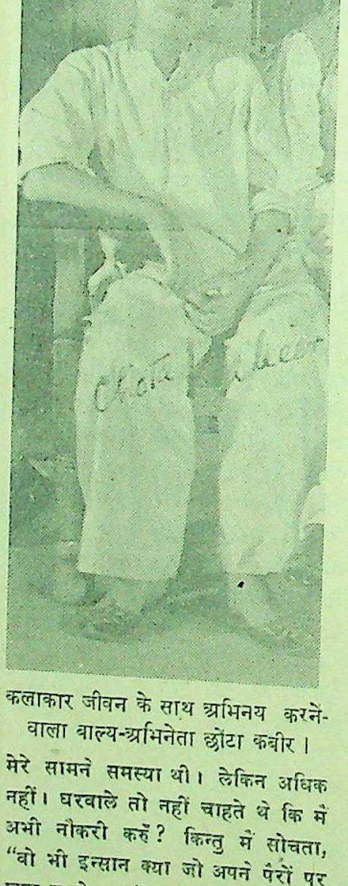

कलाकार जीवन के साथ अभिनय करनेवाला बाल्य-अभिनेता छोटा कबीर।

मेरे सामने समस्या थी। लेकिन अधिक नहीं। घरवाले तो नहीं चाहते थे कि मैं अभी नौकरी करूँ? किन्तु मैं सोचता, "वो भी इन्सान क्या जो अपने पैरों पर खड़ा न हो सका" इसी कमी को अनुभव करके मैंने बम्बई आकर अपने इष्ट-मित्रों से इस सम्बन्ध में सलाह-मशविरा किया। मेरे पिता जी और बड़े भाई के बम्बई में कई मित्र थे, जिनका कि मुझ पर अधिक स्नेह था। मित्रों ने कहा—"तुम काफी पढ़े-लिखे हो, क्यों न सरकारी नौकरी कर लो। तुमको तो काश्मीर में ही "दीवान" आदि की मिल सकती है—फिर तुम क्यों नहीं उस सुनहरे मौके से लाभ उठाते। जो सुनहरा मौका छोड़ देते हैं वह बेवकूफ हैं। और इस फोटोग्राफी में क्या रक्खा है? कोई रुतबे की नौकरी करो—जिससे तुम्हारे बाप का नाम अधिक रोशन हो।" मैं मित्रों को यही जवाब देता कि—मुझे अफ़सर नहीं बनना। मैं तो शान्तिपूर्वक अपना जीवन बिताना चाहता हूँ। लेकिन दूसरों पर भार बनकर नहीं। मुझे बेवकूफ़ ही आप समझिये। लेकिन क्या करूँ—पागल ही जो ठहरा—अपने निश्चय से गिर नहीं सकता। फिर जो कुछ हो। मैं नाम और ओहदे के चक्कर में अपने सिद्धान्त का बलिदान नहीं करना चाहता।"

मेरे बड़े भाई फिल्म-लाइन में हैं। उन्होंने जब देखा कि मैं अपने निश्चय पर अटल हूँ। तो उन्होंने मुझे मिस्टर मोहन सिंह के स्टूडियो में केमरामेन का काम सीखने के लिए रख दिया। मैं बराबर केमरामेन का कार्य सीखने लगा। यह घटना आज से नौ वर्ष पहले की है। उस वक्त मिस्टर मोहनसिंह "फैशनेबिल इंडिया" बना रहे थे। उनको एक अभिनेता की जरूरत थी। वह इधर-उधर भटकते फिर रहे थे—लेकिन जैसा वह चाहते थे, वैसा उन्हें अभिनेता मिल नहीं रहा था। वह परेशान हो गये थे। एक दिन वह अपने एक मित्र से बात कर रहे थे,—"भई मैं तो हैरान हो गया एक एक्टर चाहिए, लेकिन कोई मन का नज़र ही नहीं आ रहा है। क्या करूँ? तुम्हीं कोई बतलाओ—यदि तुम्हारी निगाह में हो" मित्र ने कहा—"मैं तलाश करूँगा" "मुझे तो अभी जल्दी चाहिए। आप न मालूम कब तक तलाश करेंगे," मिस्टर मोहनसिंह ने कहा। इसी बीच में मैं किसी कार्यवश उनके पास आ गया। उनकी निगाह ऊपर पड़ी—उन्होंने मुझमें कुछ पाया और मुझसे बोले—"तुम केसरामेन होकर क्या करोगे? अभिनेता न बन जाओ?" मैंने कहा—"मुझमें इतनी योग्यता कहाँ जो कि मैं अभिनेता बन सकूँ" मिस्टर मोहनसिंह ने कहा—"अच्छा कल तुम ट्रायल देना, तभी देखा जायेगा" दूसरे दिन मैंने अभिनेता बनने के लिए ट्रायल दिया। स्टूडियो में बड़ी भीड़भाड़ थी। सेट पर अभिनय करने का वह मेरा पहला चांस था। मेरे "एक्टिंग सीन" को देखकर कई एक अभिनेत्रियाँ आपस में काना-फूंसी करने लगीं—किन्तु जब मिस्टर मोहनसिंह ने मुझे "फैसनेबिल इंडिया" के लिए चुन लिया तो उन अभिनेत्रियों को आश्चर्य हुआ। मैंने "फैशनेबिल इंडिया" में कार्य किया। मेरा अभिनय सफल रहा, उसी से प्रभावित होकर मुझे मिस्टर कारदार ने अपने यहाँ बुला लिया और उनके यहाँ मैंने "स्वामी" में कार्य किया। "स्वामी" फिल्म मेरा बड़ा ही कामयाब रहा। यह जिक्र एक जनवरी सन् १९४२ का है। उसके बाद "प्रकाश" से मेरा दो साल के लिए "कन्ट्रक्ट" हो गया। "पनघट" गया। "पनघट" "कविता" "पुलिस" "स्टेशन मास्टर" आदि चित्रों में सफलता पूर्वक काम किया। "हमारा संसार" की मुख्य भूमिका में भी कार्य कर रहा हूँ। बस यहीं मेरे अभिनेता बनने की संक्षिप्त कहानी है। केसरामेन से अभिनेता बना—जिन्दगी में कभी मैंने इस बात की कल्पना भी न की थी। वास्तव में मेरी अभिनेता

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

मारवाड़ में बेगार प्रथा का कानून

नवाब भोपाल ने जो नागरिक अधिकार की गारंटी की घोषणा की थी उसमें ७वीं घोषणा यह थी, बेगार नहीं रहना चाहिए। महाराजा जोधपुर और जोधपुर सरकार नरेन्द्रमंडल के सदस्य हैं। क्या उनसे यह आशा नहीं की जाय कि वे इस घोषणा के अनुसार काम करें?

परन्तु दुख की बात है कि जिन दिनों में नई दिल्ली में बेगार विरोधी घोषणा हो रही है उस समय जोधपुर में एक क़ानून का मस्विदा शाया हुआ मौजूद रहता है जिसके अनुसार कई तरह की जातियों को जिन्हें मजदूर, कारीगर और कमीन कारू नामों से विभक्त किया गया है,

लोकनायक पंडित जयनारायण व्यास

आठ आना से सवा रुपया रोज तक देकर जबरदस्ती काम पर लगाने का हक़ सरकार ने अपने हाथों में लेने का प्रयत्न किया है। किसी कुली, नाई, कुम्हार, कहार या मेहरा, भिस्ती, मसालची व भंगी को आठ आना देकर इस क़ानून के माफिक दिन भर काम पर लगाया जा सकता है। दर्जी को मयमशीन के सवा रुपया और बिना मशीन के एक रुपया दिया जायगा, शिल्पकार को सवा रुपया, मोची को बारह आना। इस प्रकार कोई सत्ताईस तरह के आदमियों को बेगार देने के लिए क़ानूनन, मजबूर किया जा सकता है।

सवारी पर भी इसी तरह जबरदस्ती लादी गई है। गाड़ी, दो बैल और एक सांड़ी मील भर जाने पर तीन आना पावेंगे, एक बैलगाड़ी का थैला, बैल और सांड़ी एक आना मील और घोड़े का ताँगा चार आना मील। हाँ जहाँ म्युनिसिपल्टियाँ हैं वहाँ के लोगों को कुछ ज्यादा म्यूनिसिपल रेट से दिये जावेंगे। इसी तरह ऊँट, खच्चर, भैंसा, गधा और उसके साथ सवारी और भारवरदारी में शायद बेगारी से मतलब है—भी शरीक किया गया है। बेगारी १२ मील तक, बैलगाड़ी १६ मील तक, घोड़ा २० मील तक, ऊँट ३० मील तक ले जाया जा सकता है। हाँ, वहाँ इसकी सवारी पर भारवरदारी का साधन न मिले तो इन्हें आगे भी ले जाया जा सकता है। जिनका सरडा लागत माफ है, उन्हें बेगार के बदले कुछ भी नहीं दिया जावेगा। इस तरह की मुकर्रर शुदा रेट पर बेगार न देने से इनकार होनेवाले पर पचास रुपया तक जुर्माना हो सकता है।

इस क़ानून के बनने के पहिले १९१४ का एक बेगार क़ानून था जिसमें बेगार का मावजा बहुत कम दिया जाता था। वह अब भी मौजूद है चाहे कभी-कभी उन रेट से भी मजदूरी नहीं मिलती।

उक्त बेगार क़ानून पर जोधपुर सरकार गर्व करती है। उसने अपने १९४२-४३ के शासन विवरण में लिखा था कि:—

(बेगार मजदूरी की रक़म दिये मजदूरी लेना) सन् १९१४ से बन्द है, जब बेगार के नियम मंजूर हुए थे...एक ताजा हुक्म दो वर्ष पहिले निकला था जिसके माफिक खालसा इलाक़े में सख्ती के साथ (बेगार नियम) पालन करने की सभी महक़मों को हिदायत दे दी गई थी। जागिरी गाँवों में ली जानेवाली बेगार पर ग़ौर किया जा रहा है।

उक्त सूचना के ये अर्थ होते हैं:—१ जागीरी इलाकों से जो मारवाड़ में ८२ फी सदी के बेगार ली जाती है और बिना दाम चुकाये भी। २ खालसा इलाक़ों में जो १८ फी सदी है १९१४ की दर से बेगार ली जाती है जो आज की व्यापक मजदूरी से बीसवाँ हिस्सा या उससे भी कम होती है, सख्ती के साथ वही क़ीमत दी जाती है, सरकार कम से कम दाम देकर मजदूरी लेने या सवारी लेने को बेगार नहीं समझती।

अगर यही स्थिति है और पूरी मजदूरी न देकर कुछ पैसे ज्यादा देकर बेगार (जबरदस्ती मजदूरी लेना) जैसा कि राष्ट्रसंघ (लीग आफ नेशन्स) ने परिभाषा की थी, सरकार बेगार क़ायम रखना चाहती है तो (बेगार उठाने) की घोषणा की क्या क़ीमत होगी?

क्या जोधपुर महाराजा साहब और उनकी सरकार जमाने के रुख को देखकर बेगार को एकदम उठाने की घोषणा नहीं कर सकते?

जोधपुर —जयनारायण व्यास
८ फरवरी सभापति, मारवाड़ लोक
४६ परिषद्

* * *

मारवाड़ियों का संगठन

भारत का प्राचीन इतिहास इस बात का साक्षी है कि पूर्वकाल में राजस्थान भारत का एक विशेष अंग था। भक्ति, शौर्य, त्याग, साहित्य, समाजादि सर्वथा व्यवस्थित थे। भक्ति की विमल धाराओं के बहाने में सन्त मीराबाई ने कोई कमी नहीं रक्खी थी। राणा प्रताप के भूखे भालों से टपकती हुई लाल-लाल रक्त की धाराएँ शौर्य का साक्षात् दर्शन दिया करती थीं। वीर भूषण भामाशाह ने अपने आदर्श मेवाड़ की रक्षा के लिए कितने त्याग एवं बलिदान के साथ-साथ राणा प्रताप को अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। आदर्श साहित्य के रचयिता एवं संरक्षक श्रीरामसिंह जी, सरखान, रत्नाकर, मीरां आदि-आदि महान् साहित्यकार, साहित्य कवियों व साहित्य प्रेमियों ने इस भूमि के भूषण बनकर समस्त भारत की भावनाओं को साहित्यिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक आदि सम्बल दिया था। सामाजिक वातावरण भी ऋषि महर्षियों द्वारा निर्दिष्ट पथ का पथिक था। किन्तु आज भक्ति की जगह उसी के प्रतीक मन्दिरों में व्यभिचार हो रहे हैं। शौर्य का उदाहरण आज के युवक वीर चूहे की भी जरा-सी आवाज से डरकर देते हैं। त्याग में भी श्री बिड़ला परिवार एवं गोविन्दराम जी सेक्सरिया आदि के सिवाय कोई भी दिलचस्पी नहीं रखते, साहित्य से तो यहाँ के ८५ प्रतिशत व्यक्ति अपरिचित से हैं जितने थोड़े बहुत साहित्य प्रेमी हैं वे भी पूर्णतया इस पथ में अग्रसर नहीं हो रहे हैं न जाने इसका क्या कारण है। समाज की तो ऐसी विचित्र व्यवस्था हो रही है जिसको कि सुधारने में कई वर्ष लगेंगे। सबसे मोटी बात तो यह है कि यहाँ शिक्षा का तो अत्यन्त ही अभाव है जब कि भारत के अन्य प्रान्तों में शिक्षित समुदाय प्रायः बहुसंख्या में है उस स्थिति में यहाँ अँगुलियों पर गिनने योग्य ही शिक्षित मिलते हैं।

इसी दृष्टि से मारवाड़ महाप्रदेश को जागरूक बनाने के लिए श्री अद्भुत शास्त्री के प्रयत्न से जयपुर में अखिल भारतीय मारवाड़ी महासभा का जन्म हुआ है जिसके कि चुने गये कार्यकर्ता विख्यात मारवाड़ी हैं एवं जिनके कि हृदय में अपनी जन्मभूमि की सच्ची जागृति के लिए बड़ी बड़ी भावनाएँ हैं।

जयपुर —माधव "साहित्या-
७ फरवरी ४६ लंकार"

* * *

'भगवान महावीर'

श्री परमेष्ठीदास जी जैन के आग्रह पर मैंने 'वीर' के पुस्तकाकार प्रकाशित होनेवाले विशेषांक 'भगवान् महावीर' के संग्रह और सम्पादन का दायित्व अपने ऊपर ले लिया है। भगवान् महावीर के कतिपय सिद्धान्त जैसे अहिंसा, अपरिग्रह आध्यात्मिक स्वावलम्बन आदि बहुत वर्षों से मुझे प्रिय रहे हैं और मेरी आकांक्षा रही है कि इन सबका प्रचार इतनी सरल और सुबोध भाषा में किया जाय कि जैनेतर बंधु भी इन्हें आसानी से समझ सकें। यदि मेरी यह आकांक्षा उक्त ग्रन्थ में आंशिक रूप में भी पूर्ण हो जाय तो मुझे हार्दिक संतोष होगा।

ग्रन्थ में चार खंड होंगे। प्रथम खंड में भगवान् महावीर की ऐतिहासिक दृष्टि से संक्षिप्त जीवनी होगी। दूसरे खंड में भगवान् महावीर के सिद्धान्तों का प्रतिपादन होगा। तीसरे खंड में भगवान् महावीर के जीवन की कुछ शिक्षाप्रद घटनाएँ तथा उनके उपदेश रहेंगे। चतुर्थ खंड में ऐसी कविताएँ अथवा कहानियाँ होंगी जिनमें अप्रत्यक्ष रूप से भगवान् के मौलिक उपदेशों का समर्थन होगा।

विद्वानों से निवेदन है कि इस पुनीत कार्य में मुझे अपना सहयोग देने की कृपा करें। जिस विषय पर वे लिखना चाहें, उसकी सूचना निम्नलिखित पते पर दे दें।

टीकमगढ़
६ फरवरी ४६ —बनारसीदास चतुर्वेदी

चिकन
(कंसिटेटेड)
एसेंस

विशुद्धता व उत्कृष्टता की गारंटी है—विदेशी चिकेन एसेन्सों से किसी भी हालत में खराब नहीं, वरन् अच्छा ही है।

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट पेण्ड कं, लिमिटेड
कलकत्ता बम्बई लखनऊ अमृतसर मद्रास कराची
SSK 121

साइन्स का एक नवीन अद्भुत आविष्कार
जिसने संसार को आश्चर्य में डाल दिया

तैल मस्ताना (रजिस्टर्ड) कोई साधारण तैल नहीं है बल्कि एक साइण्टिफिक आश्चर्यजनक आविष्कार है जिसने भारतवर्ष ही नहीं वरन् दुनिया के तमाम धुरन्धर साइन्स-विशेषज्ञों को हैरत में डाल दिया है। इस तैल से गत २५ वर्षों से हजारों हताश असाध्य रोगी नवजीवन प्राप्त कर चुके हैं। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि ऐसा गुणकारी तैल आप दूसरी जगह न पायेंगे। इसके लगाने से बाल्यावस्था की कुटेव से रगों की कमजोरी, सुस्ती कुटेव से पैदा हुई खराबियाँ, नसों का गर्भाधान के योग्य न रहना, नपुंसकता, शीघ्रपतन आदि तमाम खराबियाँ एक हफ्ते के अन्दर दूर हो जाती हैं। कब व बल को बढ़ाकर रग व पट्ठों में बिजली की भाँति ताक़त भर जाती है। यह हर मौसिम में लाभ करता है। छाले आदि का भय नहीं। आप आज ही एक शीशी मँगाकर सुख लूटिये। क़ीमत फ़ी शीशी ३=) तीन रुपया दो आना, दो शीशी का ५॥=), डाक-खर्च माफ़। मनीआर्डर =) यदि आपको धातुक्षीणता, शीघ्र पतन, स्वप्नदोष, प्रमेह आदि की शिकायत है तो धनी माननीय सहस्रों महान् पुरुषों-द्वारा प्रशंसित जगत्-प्रसिद्ध २५ वर्ष का आजमूदा वीर्य-संजीवन सत इस्तेमाल कीजिए। मूल्य फी डिब्बा ३।-), डाक-खर्च माफ़, मनीआर्डर =)।

मँगाने का पता—रूपविलास कम्पनी, नं० ४८१, कानपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हिन्दुस्तानी का प्रचार क्यों ?"

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की रिपोर्ट पर एक दृष्टि

लेखक, श्री प्रभुदयाल मीतल, प्रधान-मन्त्री ब्रज-साहित्य-मण्डल

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के प्रधान मंत्री प्रिंसिपल श्री नारायण अग्रवाल।

हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा की ओर से पिछले वर्ष ता० २६ फरवरी १९४५ को वर्धा में 'अखिल भारत हिन्दुस्तानी-प्रचार सम्मेलन' हुआ था। महात्मा गांधी उसके सभापति थे। इस सम्मेलन की रिपोर्ट 'हिन्दुस्तानी-प्रचार क्यों?' नाम से अब पुस्तकाकार प्रकाशित हुई है। इस रिपोर्ट से हिन्दुस्तानी-प्रचार के सम्बन्ध में आवश्यक बातें ज्ञात हो सकती हैं।

इस सम्मेलन को करने का उद्देश्य बतलाते हुए मंत्री श्री श्रीमन्नारायण जी अग्रवाल ने कहा—

"हमने यह महसूस किया कि हिन्दुस्तानी भाषा का रूप तय करने और हिन्दुस्तानी में ज़रूरी साहित्य तैयार करने के लिए सभा के मेम्बरों के अलावा हिन्दी और उर्दू के दूसरे विद्वानों और माहिरों की मदद की ज़रूरत है। इस विचार को मैंने पूज्य गांधी जी के सामने रक्खा। उन्होंने भी उसे पसन्द किया। इसलिए यह कान्फरेंस बुलाने का फैसला किया।"

सम्मेलन के प्रथम दिन उसके सभापति महात्मा गांधी का मौन-विसर्ग था, अतः उनका निश्चित संदेश पढ़ने पर कार्रवाई आरम्भ हुई। अपने संदेश में महात्मा जी ने आगत सज्जनों की उपस्थिति पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए दो सज्जनों की अनुपस्थिति का विशेष रूप से उल्लेख किया। पहले सज्जन डाक्टर अब्दुल हक़ थे, जो दूसरे दिन सम्मेलन में उपस्थित हो गये थे। दूसरे सज्जन श्री पुरुषोत्तमदास टंडन थे, जो बीमार हो जाने के कारण उपस्थित नहीं हो सके।

सम्मेलन की कार्रवाई आरम्भ करते हुए डा० सैयद महमूद ने हिन्दुस्तानी के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किये। उसके नामकरण के सम्बन्ध में आपने कहा—

"मैं खुद तो क़ौमी जबान के लिए 'हिन्दी' नाम को ही पसन्द करूँगा, क्योंकि वह बड़ा आसान और खूबसूरत लफ़्ज है। मगर चूंकि यह नाम अब संस्कृत शब्दों से भरी हुई जबान के मानी रखता है, इसलिए उसको छोड़कर 'हिन्दुस्तानी' नाम को अपनाना पड़ रहा है।"

'उर्दू' शब्द की उत्पत्ति के विषय में आपने कहा—

"अंगरेजों ने हमको बताया है कि उर्दू लफ़्ज के मानी 'बाजार' या 'छावनी' के हैं और यह तुर्की लफ़्ज है। मगर मैंने एक जगह पढ़ा है कि उर्दू संस्कृत का एक लफ़्ज है, जिसके मानी मिले हुए या मिक्श्चर या कंपाउंड के हैं और यह यहीं का लफ़्ज है। शायद ज्यादा खोज-तलाश करने के बाद यह मालूम हो जाएगा कि यह लफ़्ज उर्दू इसी लफ़्ज 'उर्दू' से निकला है।"

इस सम्मेलन में जो भी भाषण हुए, उन सबमें हिन्दुस्तानी का समर्थन किया गया। भाषणकर्त्ता चाहे वे हिन्दू थे, चाहे मुसलमान; चाहे वे हिन्दी के विद्वान् थे और चाहे उर्दू के माहिर, उन सबने उर्दू शब्दों की भरमार की थी। सभी वक्ताओं ने हिन्दुस्तानी को फ़ारसी और नागरी दोनों लिपियों में लिखे जाने का समर्थन किया। केवल राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति वर्धा प्रधान-मंत्री श्री भदंत आनन्द कौसल्यायन और धारवाड़ के श्री सिद्धनाथ पंत ने दोनों लिपियों का विरोध करते हुए नागरी के समर्थन में अपने विचार प्रकट किये।

श्री आनन्द कौसल्यायन जी ने कहा—

"कल और आज मैंने जो भाषण सुने, उनसे मुझे आशा की बनिस्बत निराशा ही अधिक हुई।... 'हिन्दी' और 'उर्दू' शब्दों में तो मेरे दिमाग में कुछ अर्थ निकलता है, मगर 'हिन्दुस्तानी' क्या चीज है?... मुख्य प्रश्न लिपि का है।... मेरी समझ में नहीं आता कि एकता के नाम पर हम जो बात भाषा के बारे में कहते हैं, वही लिपियों के बारे में क्यों न कहें? एक भाषा की तरह एक लिपि का आग्रह हम क्यों न रखें?

श्री सिद्धनाथ जी पंत ने कहा—

"लिपि के बारे में यह तय किया जाय कि जिसे जो लिपि पसन्द हो जाय, उसे वह स्वीकार करे। दोनों लिपियाँ लाजिमी करने से फ़ायदा न होगा। 'राष्ट्रभाषा एक, राष्ट्रलिपि अनेक' वाला नया नारा देश में काफी गड़बड़ी करेगा।... दक्षिण-भारत में हमने पिछले २५-२६ वर्षों से देवनागरी के द्वारा प्रचार करते हुए बड़ी सफलता पाई है और हम देवनागरी के देशव्यापी प्रचार के क़ायल हो गये हैं। इसलिए हमें देवनागरी के द्वारा हिन्दुस्तानी का प्रचार करने की आजादी मिलनी चाहिए।"

इस सम्मेलन में मौलाना सैयद सुलेमान नदवी, डा० जाफर हसन, श्री सत्यनारायण, डा० अब्दुलहक़ और डा० ताराचन्द के बड़े लम्बे-चौड़े भाषण हुए, जिनमें उन्होंने हिन्दुस्तानी भाषा की ज़बरदस्त वकालत की।

इस सम्मेलन में दो 'ठहराव' पास हुए थे। पहला ठहराव पंडित सुन्दरलाल ने पेश किया—

"इस कान्फरेंस की राय में हिन्दुस्तानी जबान को फैलाने और तरक्की देने के लिए इस बात की ज़रूरत है कि हिन्दी जाननेवाले उर्दू लिखावट को और उर्दू जाननेवाले नागरी लिखावट को जल्दी से जल्दी सीख लें और जो लोग इन दोनों में से किसी को भी नहीं जानते, वह भी दोनों ही को सीखें, ताकि सब लोग हिन्दुस्तानी के रूपों—हिन्दी और उर्दू को—पढ़ और समझ सकें और इस तरीक़े से हिन्दुस्तानी का विकास और प्रचार हो सके।"

इस प्रस्ताव पर बोलते हुए पंडित सुन्दरलाल जी ने कहा—

"मैं देख रहा हूँ कि हमारे साथ पूरे दिल से अभी तक न 'अंजुमन-तरक्की-ए उर्दू' है, न 'हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन', पर इससे मुझे अचरज नहीं होता। अचरज तो इस बात का है कि इतने लोग भी हमारे साथ कैसे हैं।"

इस प्रस्ताव के समर्थन में कई भाषण हुए। श्री भदंत आनन्द कौसल्यायन ने फिर इसके विरोध में अपने विचार प्रकट किये। उन्होंने कहा—

"बोली जानेवाली जबान में तो लिपि का सवाल ही नहीं उठता, मैं यह पूछना चाहता हूँ कि राष्ट्रभाषा सीखने के लिए यह जरूरी है कि दो लिपियाँ सीखनी ही चाहिए?... मैं यह कहूँगा कि दोनों लिपियों को लाजिमी तौर पर सीखने की बात को हटा दिया जाय तो अच्छा होगा।"

श्री सियारामशरण जी गुप्त ने दबी जबान से पूछा—

"इस सभा के कार्य से हिन्दी या उर्दू का विरोध तो नहीं होगा?"

इसके उत्तर में महात्मा गांधी जी ने कहा—

"इसका जवाब बाद में दूंगा। श्री आनन्द जी ने जो कहा वह मैं समझ गया। उसको भी समझाने की कोशिश करूँगा"

अंत में राय लेने पर प्रस्ताव पास हो गया।

डा० ताराचंद जी ने दूसरा 'ठहराव' पेश किया—

"देश के सब लोग इस बात को मानते और समझते हैं कि हमारे क़ौमी जीवन को मजबूत करने और अलग-अलग सूबों के लोगों में मेल-जोल और व्यवहार की एक भाषा बनाने के लिए चाहिए कि हिन्दुस्तानी जबान को तरक्की दी जावे और उसकी रूप-रेखा ठीक की जावे, क्योंकि इस बात के लिए यही भाषा सबसे ज्यादा काम की है।

यह कान्फरेंस फैसला करती है कि पन्द्रह तक मेम्बरों की एक कमेटी बनाई जावे, जो हिन्दुस्तानी भाषा की डिक्शनरियाँ तैयार करे, भाषा के क़ायदे तय करे, उसके लफ़्ज़ों का भंडार बढ़ावे, उनके रूप बाँधे और उसमें अच्छी-अच्छी और काम की किताबें लिखवावे।"

यह प्रस्ताव भी पास हो गया।

अन्त में महात्मा जी ने अपना भाषण दिया—

"मैं नहीं चाहता कि हिन्दी मिट जाय या उर्दू नष्ट हो जाय। मैं सिर्फ इतना ही चाहता हूँ कि दोनों हमारे नाम की हो जाय।... आनन्द जी कहते हैं कि सबको दो लिपियाँ सीखने में बड़ी मुसीबत उठानी पड़ेगी। मैं कहता हूँ कि उसमें कुछ भी मुसीबत नहीं है। और अगर हो भी तो उसे पार करना ही होगा।... मैं हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए जीता हूँ। मैं जानता हूँ कि हिन्दुस्तानी के प्रचार से हिन्दू-मुस्लिम एकता होगी, मगर इस वक्त मैं आपको यह लालच नहीं दे रहा हूँ। मैं कहता हूँ कि हिन्दी और उर्दू दोनों का भला हो। इन दोनों से मुझे काम लेना है।... हिन्दी वाले चाहते हैं कि मैं हिन्दी की ही नौबत बजाता रहूँ, उर्दू का नाम न लूँ। मगर मैं तो अहिंसा का माननेवाला सत्याग्रही हूँ। मैं यह कैसे कर सकता हूँ।... मैं यह कहना चाहता हूँ कि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के खिलाफ़ कोई काम न होगा। पर दोनों लिपियाँ सीखने की तकलीफ़ तो गवारा करनी ही होगी। मैं तो आनन्द जी से भी काम लेना चाहता हूँ।"

राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी के कर्मठ प्रचारक आचार्य काका कालेलकर।

सबके अन्त में उर्दू-भाषा के प्रबल समर्थक पं० ब्रजमोहन दत्तात्रय 'कैफ़ी' ने अपनी नज़्म पढ़कर सुनाई। नज़्म का कुछ भाग इस प्रकार है:—

"जो उलटी समझ है, तो है काम उलटा,
कि वह सीधी बातों को उलझा रहे हैं।
नई उलझनें और पड़ती हैं आकर,
यह क्या गुत्थियाँ आप सुलझा रहे हैं।
किधर जा रहे हैं, नहीं इसकी सुध-बुध,
जो हैं अपनी धुन में चले जा रहे हैं।"

इस सम्मेलन के पश्चात् हिन्दुस्तानी प्रचार का जितना कार्य हुआ, यह तो हमको ज्ञात नहीं है, किन्तु इस सम्मेलन के बाद ही महात्मा जी ने हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से त्यागपत्र दिया और उनके अनुकरण पर अन्य कई सज्जनों ने भी त्याग-पत्र देकर हिन्दी-प्रचार के कार्य से वैराग्य ले लिया। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अंतर्गत राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति, जो अहिन्दी प्रान्तों में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही थी, अब इस हिन्दुस्तानी अन्दोलन के कारण अपना कार्य सफलतापूर्वक कर सकने की स्थिति में नहीं है। दक्षिण-भारत हिन्दी प्रचार सभा, जो पिछले २८ वर्ष से दक्षिण में हिन्दी-प्रचार का प्रशंसनीय कार्य कर रही थी, अब अपना नाम 'दक्षिण-भारत हिन्दुस्तानी प्रचार सभा' बदल कर दोनों लिपियोंवाली हिन्दुस्तानी के कार्य करने का संकल्प कर चुकी है। अब तक हिन्दी का कार्य एक राष्ट्रीय कार्य समझा जाता था, किन्तु अब उसे साम्प्रदायिक कह कर उसका महत्त्व कम किया जा रहा है। समस्त हिन्दी हितैषियों को हिन्दी पर आये हुए इस महान् संकट को दूर करने का उपाय सोचना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

काशी सनातनधर्म के धर्मोपदेशक और धर्मशिक्षक तैयार करने के विचार से महामण्डल उपदेशक महाविद्यालय में कुछ ऐसे योग्य विद्यार्थी लिए जाएँगे; जो संस्कृत में आचार्य या अँगरेजी में बी० ए० होंगे। योग्य साधु संन्यासी भी लिए जा सकेंगे, जिनका ध्येय इस योजना के अनुसार पाया जायेगा। सबको कम से कम दो वर्ष तक महाविद्यालय के पण्डित निवास में रहकर योग्यता सम्पादन करना आवश्यक होगा। ३०) मासिक तक प्रत्येक छात्र को छात्रवृत्ति दी जायेगी। पण्डितनिवास में श्री हनुमान् भगवान् का प्रसाद भण्डार उन्हीं के हाथ में रहेगा; जिसमें उनको दोनों समय प्रसाद भोजन के रूप में मिलेगा, और प्रत्येक छात्र को अपने मासिक प्रसाद का व्यय अपनी वृत्ति से उक्त भण्डार में जमा करना होगा। पण्डितनिवास में रहनेवाले इन छात्रों के अतिरिक्त सर्वसाधारण छात्रों को मास के दोनों पक्षों की प्रतिपद्, अष्टमी और चतुर्दशी इन ६ दिनों में व्याख्यान कला, शास्त्रीय शङ्कासमाधान तथा आवश्यकीय दर्शनशास्त्र और धर्मशास्त्र का ज्ञान प्राप्त करने के लिए सुअवसर दिया जाएगा। इन पिछले वर्ग के छात्रों में अच्छी निष्ठा पानेवाले छात्रों को चार आने से लेकर एक रुपया तक प्रति दिन अर्थात् १॥) मासिक से ६) मासिक तक छात्रवृत्ति दी जायेगी। जो लोग इस नई योजना से लाभ उठाना चाहें, वे अपनी योग्यता के उल्लेख के साथ निम्न लिखित पते पर प्रार्थना पत्र भेजें।—जनरल सेक्रेटरी श्रीभारतधर्ममहामण्डल, जगतगंज, बनारस

* * *

काशी के मुहल्ला काजीमंडी (हनुमान फाटक) स्थित श्री प्रेम पुस्तकालय में श्री कमलाप्रसाद अवस्थी "अशोक" बी० ए० बी० टी० के सभापतित्व में वसन्तोत्सव मनाया गया। सर्वश्री भागवतदत्त मिश्र, मोहनराम, शिवनाथप्रसाद एवं शिवनाथ एम० ए० के भाषण के अनन्तर एक सफल कवि-गोष्ठी हुई, जिसमें सर्वश्री मोहन, राजदेव दीक्षित, हरिदास "विमलेश", ठाकुरप्रसादसिंह, शिवमूर्ति मिश्र "शिव" एवं सभापति जी ने कविता-पाठ किया। अन्त में 'पुस्तकालय' के प्रधान मंत्री श्री भागवत जी द्वारा धन्यवाद दिये जाने के उपरान्त, उपस्थित व्यक्तियों को जलपान कराया गया।

—संवाददाता

* * *

काशी में आगामी तुलसी-जयन्ती के अवसर पर ऐसा विचार किया जा रहा है कि "युक्त-प्रान्तीय युवक हिन्दी-सम्मेलन" भी बुलाया जाये। इस सम्बन्ध में श्री भागवत जी कुछ लोगों से पत्र व्यवहार कर रहे हैं।

—संवाददाता

काशी में गत ३ फ़रवरी को काशीस्थ मुहल्ला हनुमान फाटक में श्री श्री भागवतदत्त मिश्र बी० ए० के सभापतित्व में एक साहित्य-गोष्ठी हुई, जिसमें कई व्यक्तियों ने कविता- पाठ किया। —संवाददाता

* * *

कलकत्ता में भारतीय व्यवसायिक कला-प्रतिष्ठान के वार्षिक अधिवेशन में सभानेत्री-पद से गवर्नर पत्नी श्रीमती केसी ने कहा कि किसी समय भारत के बने सामान संसार-प्रसिद्ध थे। आज भी बनारस के जरी का काम तथा अन्य वस्तकारी के काम अपना स्थान रखते हैं। व्यवसायिक कला को महत्त्व देकर भारत पुनः अपना स्थान प्राप्त कर सकता है। किसी राष्ट्र की ख्याति उसके सामानों से होती है। भाषण के सिलसिले में व्यवसायिक कला के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए आपने बताया कि इस कला-प्रतिष्ठान से विषय की कठिनाइयाँ दूर की जा सकती हैं और अपने प्राचीन गौरव को पुनः प्राप्त किया जा सकता है।

—संवाददाता

* * *

दिल्ली की अखिल भारतीय-आर्य्य (हिन्दू) धर्म सेवा-संघ के प्रधान मंत्री पंडित जनार्दन भट्ट की कृपा से पं० बालकृष्ण ढौंडियाल "प्रभाकर" हेडमास्टर थलीसैंण की अध्यक्षता में तथा केन्द्र व्यवस्थापक के रूप में ता० १० फरवरी को "धर्मरत्न परीक्षा" हुई। इस क्षेत्र में अविद्यान्धकार को दूर करने के लिए ठा० कुन्दनसिंह गोसाईं, चेयरमैन शि० बि० गढ़वाल और श्री बलदेवसिंह आर्य, मंत्री हरिजन सेवासंघ जहरीखाल ने सन् ४३ में "श्रीरामकृष्ण डालमिया हिन्दू विद्यालय" की स्थापना की है।

—संवाददाता

* * *

दिल्ली से प्रकाशित होनेवाला प्रसिद्ध उर्दू साप्ताहिक 'प्रकाश' का ४२वाँ वार्षिक विशेष 'शिवरात्रि अंक' २६ फ़रवरी को निकलेगा। मूल्य एक प्रति ।-)। वार्षिक मूल्य ५) रु०। मैनेजर 'प्रकाश' दिल्ली।

—संवाददाता

* * *

मण्डावा (जयपुर) आजाद चौक में स्वतन्त्रता-दिवस त्यागी कार्यकर्ता बाबू रामेश्वर जी के सभापतित्व में मनाया गया। पंडित शुभकरण शर्मा बी० ए० प्रधानाध्यापक जी ने प्रतिज्ञा-पत्र पढ़कर सुनाया। श्री नटवर जोशी और श्री लक्खीप्रसाद जोशी के राष्ट्रीय गान हुए। श्री खेमराज शर्मा, श्री शुभकरण शर्मा बी० ए० और सभापति जी के भाषण हुए। सफलता में साँवलराम जी टाँणीवाले का विशेष उद्योग रहा। स्वतन्त्रता दिवस प्रजा-मण्डल की ओर से मनाया गया था।

—संवाददाता

* * *

सरदार शहर (बीकानेर) साहित्य-समिति एवं श्री महावीर पुस्तकालय के वार्षिकोत्सव प्रान्त के अग्रगण्य विद्वान् पंडित अक्षयचन्द्र शर्मा और सेठ वृद्धिचन्द जी कवि के सभापतित्व में समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आचार्य गौरीशंकर जी, कविवर 'मुकुल' एवं प्रो० कन्हैयालाल गोस्वामी आदि विद्वान् पधारेंगे। —सुखचन्द्र सेठिया

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का वर्तमान विधान !

(पेज ४ का शेष)

सम्मेलन को तीन प्रतिनिधि तथा दूसरी स्थानीय संस्था को चाहे वह किसी गाँव की ही संस्था क्यों न हो यदि उसके रजिस्टर्ड में ५०० सदस्यों के नाम हों तो ५ प्रतिनिधि स्थायी समिति में भेजने का अधिकार प्राप्त हो, वह संस्था अपने को अखिल भारतीय संस्था कैसे कह सकती है और वह अपना काम सारे प्रान्तों में कैसे चला सकती है? जिस संस्था के मुख्य कार्यकर्ताओं की दृष्टि केवल सम्मेलन-परीक्षाओं के लिए परीक्षार्थियों की संख्या वृद्धि कर सम्मेलन की आय बढ़ाने तथा पुस्तक-प्रकाशकों की पुस्तकों की बिक्री राने पर रहती है वह एक विश्व-विद्यालय भले ही बन जाय, किन्तु वह अखिल भारतीय संस्था जैसा अपना कर्तव्य-पालन नहीं करती। जो संस्था प्रान्तीय सम्मेलनों के रहते भी उन प्रान्तों की स्थानीय संस्थाओं तक को अपने से सम्बद्ध करने का हास्यापद नियम रखती ही नहीं उसके अनुसार चलती और कभी-कभी स्थानीय संस्थाओं को तरजीह और आश्रय देकर प्रान्तीय सम्मेलनों की उपेक्षा करती है वह संस्था अखिल भारतीय संस्था बनने की कभी पात्रता नहीं रखती। जिस संस्था में प्रयाग तथा उसके आसपास के हिन्दी शिक्षकों, पुस्तक-प्रकाशकों, लेखकों, कवियों, सम्पादकों, परीक्षकों तथा केन्द्र-व्यवस्थापकों के प्रतिनिधियों ने अपना बहुमत बना लिया हो उस संस्था को अखिल भारतीय संस्था कहना क्या परिहास की बात नहीं है? ये ही सज्जन सम्मेलन के कर्ता, धर्ता और विधाता हैं, जिसे चाहते हैं सम्मेलन की गद्दी पर बैठाते हैं और जिस पर क्रुद्ध होते हैं उसे उस पवित्र गद्दी के पास भी फटकने नहीं देते हैं। इनकी इच्छा नहीं होने पर किसी परिषद के सभापतित्व के लिए बाजाब्ता चुना हुआ व्यक्ति भी सभापति नहीं बन सकता चाहे सम्मेलन का क़ायदा-क़ानून उस व्यक्ति के पक्ष में ही क्यों न हो। ऐसी धाँधली आज वर्षों से चल रही है और सारा हिन्दी-संसार क्षुब्ध होकर इसे देख रहा है किन्तु नियमों की ऐसी किलाबन्दी है कि कोई इसे रोक नहीं सकता। सम्मेलन की नियमावली में जब तक आमूल परिवर्तन नहीं हो जाता तब तक वह अखिल भारतीय रूप धारण नहीं कर सकता। हिन्दी भारत को प्रान्तों में विभाजित कर जन-संख्या के आधार पर प्रत्येक प्रान्त को प्रतिनिधित्व प्राप्त होना चाहिए। ये प्रतिनिधि प्रत्येक हिन्दी प्रान्त के प्रान्तीय सम्मेलन-द्वारा चुने जाने चाहिए। ऐसे प्रतिनिधि जब प्रत्येक प्रान्त से चुनकर आवें तो वे ही स्थायी समिति के सदस्य हों और वे ही सम्मेलन के आगामी अधिवेशन के लिए सभापति तथा आगामी वर्ष के लिए पदाधिकारियों एवं कार्य-समिति के सदस्यों का चुनाव करें। श्रद्धेय टंडन जी सम्मेलन के पोषक और उसके प्राण रहे हैं। आज उसकी दयनीय स्थिति देखकर उन्हें अवश्य ही दुःख होता होगा। मैं उनके चरणों में यह निवेदन करना चाहता हूँ कि वे हमारे सुझाव पर विचार करें और यदि उन्हें रुचे तो कड़ाई के साथ नियमों में परिवर्तन होने दें। सम्मेलन की पुरानी प्रतिष्ठा और मर्यादा आज अनेक अंशों में नष्ट हो गई है। एकमात्र वे ही उसको उस पद पर पुनः प्रतिष्ठित कर सकते हैं।

बालकोपयोगी आदर्श प्रकाशन

पौराणिक कथाएँ

बाल भारत (दो भाग)	इसमें महाभारत की कथा सरल और संक्षिप्त भाषा में लिखी गई है। प्रति भाग	॥।-)
बाल रामायण	रामायण के सातों कांडों की कथा सरल भाषा में	॥।-)
बाल भागवत (दो भाग)	भागवत की संक्षिप्त कथा	प्रति भाग १॥।-)

उपदेश

बालोपदेश	प्रत्येक बालक को स्मरण रखने लायक कतिपय उपदेशों का संग्रह	॥)
बाल गीता	गीता के उत्साह-वर्द्धक श्लोकों का हिन्दी सारांश	१)
बाल हितोपदेश	हितोपदेश की मनोरंजक और उपदेश-पूर्ण कथाओं का सारांश	१)
बाल पंचतन्त्र	उपदेश पूर्ण और मनोरंजक कथाएँ	॥।-)
बाल कालिदास	कालिदास की बालकोपयोगी उपदेश-पूर्ण सूक्तियों का संग्रह	॥)

इनमें से अधिकांश पुस्तकें सचित्र हैं

मैनेजर, (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर उधर की

आवाज़ की गति से चलनेवाला विमान

वैज्ञानिक उन्नति के वर्तमान जगत् के सम्मुख आज एक समस्या यह उपस्थित है कि मनुष्य की सवारी के काम आनेवाले यांत्रिक यानों—रेलों, मोटरों तथा विमानों—को अधिक तीव्र-गति-गामी किस प्रकार बनाया जा सकता है। युद्धोत्तरकाल में, आकाश मार्ग से यातायात में अत्यधिक वृद्धि होने की संभावना से, विमान के सम्बन्ध में यह समस्या विशेष महत्त्व के साथ उपस्थित है। प्रायः सभी बड़े देशों में, विमान विशेषज्ञ तथा इंजीनियर इस गुरुतर समस्या के अध्ययन एवं अनुसंधान में दत्तचित्त हैं।

भावी विमान निर्माताओं के सम्मुख एक बड़ा प्रश्न यह उपस्थित होगा कि शब्द की गति के समान तेज उड़ सकने के लिए, वर्तमान विमान के आकार-प्रकार में क्या परिवर्तन करने होंगे। उन्हें इस बात का भी स्मरण रखना होगा कि इन विमानों में मनुष्य बैठेंगे, अतएव उनके गति-विस्तार का क्रम ऐसा होना चाहिए, जिसे मनुष्य का शरीर सहन कर सके।

वास्तव में विमान की गति के अत्यधिक तेज होने से इतना खतरा नहीं है, जितना गति-विस्तार के क्रम अर्थात् 'एक्सलरेशन' के अधिक तेज हो जाने से है। बैठने वाला तो विमान की कोठरी में चारों ओर से बन्द रहता है, और उसे इस बात का कुछ भी पता नहीं रहता कि जिस विमान से वह यात्रा कर रहा है, वह मील अथवा ५,००० मील प्रति घंटे की रफ़्तार से उड़ा जा रहा है।

किन्तु गति-विस्तार-क्रम के सम्बन्ध में स्थिति ऐसी नहीं है। उसमें एक निश्चित सीमा से आगे वृद्धि होने पर, यात्री के धक्का लगेगा और वह पीछे की ओर दबेगा। इसी प्रकार यदि गति-विस्तार-क्रम बढ़ाने के बजाय अत्यधिक कम किया गाया, तो यात्री आगे की ओर दबेगा। वह उसी प्रकार के दबाव का अनुभव करेगा, जो किसी तेज मोटर-गाड़ी से यात्रा करनेवाले यात्री को, गाड़ी को एकाएक धीमी पड़ने से महसूस होता है।

इनके अतिरिक्त एक और समस्या, विमान के उड़ान भरने तथा भूमि पर उतरने के समय मशीन को नियंत्रण में रखने की है। प्रत्येक विमान का आकार इन दोनों बातों को समान रूप से ध्यान में रखकर निर्धारित किया जाता है कि निश्चत ऊँचाई पर पहुँच कर निश्चित अधिकतम गति से उड़ने में वह बाधक न हो।

* * *

२० लाख अलार्म घड़ियाँ

लन्दन, तार द्वारा। घड़ी बनानेवालों के औद्योगिक निर्यात वर्ग के सभापति श्री डब्ल्यू० डी० वैरेट ने ईवनिंग न्यूज के एक संवाददाता को बताया है कि पुनः संस्थापित ब्रिटिश घड़ी उद्योग द्वारा इस वर्ष २० लाख तथा आगामी वर्ष ४० और ५० लाख के बीच अलार्म-घड़ियाँ तैयार की जायेंगी। अन्य प्रकार की घड़ियों के सम्बन्ध में आपने कहा कि ब्रिटेन इस वर्ष बिजली से चलनेवाली २० लाख घड़ियाँ और २० लाख ऐसे क्लाक तैयार करेगा, जिनमें ८ दिन में केवल एक बार ही चाभी देनी होगी और जो बजा भी करेंगे।

ब्रिटेन के और घड़ी उद्योग द्वारा तैयार किये गये माल का एक-तिहाई भाग नियत किया जा रहा है और श्री वैरेन्ड के कथनानुसार केवल एक ही निर्माता के पास समुद्रपार के देशों से विभिन्न प्रकार के ७,५०,००० घड़ियों के आर्डर आये हैं।

* * *

एक वर्ष में एक लाख टेलिविजन ग्राहक यन्त्र

२ फरवरी को यह घोषणा कि गई है कि युद्ध समाप्त के बाद प्रथम वर्ष में ही एक लाख नये टेलिविजन रिसीवर बनाने की योजनायें बना ली गई हैं। सम्भवतः उन यंत्रों का मूल ४५ पौंड और उससे अधिक होगा, जिसमें क्रयकर सम्मिलित है। रेडियो उद्योग परिषद्, कार्यक्रम को पुनः जारी करने के निर्णय की प्रतीक्षा कर रही है। अलेक्जेंड्रा प्लेस से २ फरवरी को एक 'स्थिर' चित्र [illegible] प्रयोगात्मक प्रक्षेपण किये गये। यह [illegible] लगाने के लिए काफी पर्यवेक्षण [illegible] आवश्यक है कि क्या रेडार और [illegible] लघु-तरंग (शार्ट वेव) प्रक्षेपण चित्र और ध्वनि में बाधा उपस्थित करेंगे।

* * *

उत्तरी ध्रुव पर नवीन प्रकाश

लन्दन की शाही भौगोलिक समिति में हाल ही में एक लेख पढ़ा गया था। इस लेख में उस अभिमान के सम्बन्ध में कई रोचक तथ्यों पर प्रकाश डाला गया था, जो शाही वायुसेना-द्वारा उत्तरी ध्रुव की स्थिति के सम्बन्ध में अनुसन्धान करने के लिए भेजा गया था। यह लेख कि कमांडर डी० सी० मैकिन्ले ने पढ़ा था जिन्होंने वर्ष के प्रारम्भ में उत्तरी ध्रुव की जानेवाली उड़ानों की कमान की थी। आपने बताया कि उड़ानों के समय किये गये ३०,००० चुम्बकीय पर्यवेक्षणों की पूरी-पूरी समीक्षा अब की जा रही है। इन पर्यवेक्षणों से पता चलता है कि १५,००० फुट पर चुम्बकीय ध्रुव की स्थिति वृद्धि प्रायद्वीप में उसकी स्वीकृत स्थिति से लगभग ३०० मील उत्तर-पश्चिम में है। उड़ान के सम्बन्ध में आपने बताया है कि १०९ घंटे की उड़ान में २२,४०० मील तय किये गये, जिसमें से १०,००० मील आर्कटिक चक्र में थे। उड़ान के काल में रेडियो-द्वारा दोनों ओर सम्पर्क स्थापित रखा गया और किसी भी कर्मचारी को कभी भी किसी बड़ी तकलीफ का सामना न करना पड़ा।

उत्तमोत्तम उपन्यास और कहानी-पुस्तकें

प्रतिशोध—लेखक, पंडित उमेशचन्द्र मिश्र। इस उपन्यास में प्रोफ़ेसर भारद्वाज नामक एक वैज्ञानिक खद्योतकारों की रहस्यपूर्ण कार्यवाहियों का वर्णन बड़े रोचक ढंग से किया गया है। इसे पढ़ते-पढ़ते आप ऐसे तल्लीन हो जायेंगे कि बिना समाप्त किये पुस्तक हाथ से न छूटेगी। मूल्य १) एक रुपया।

द्वन्द्व—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह श्रीमती सरोजकुमारी देवी नामक बंगला की एक प्रसिद्ध उपन्यास-लेखिका की इसी नाम की रचना का हिन्दी-अनुवाद है। इसमें मानव हृदय के अन्तर्द्वन्द्व तथा उसके कारण उत्पन्न होनेवाली अशान्ति का बहुत ही उत्तमतापूर्वक विश्लेषण किया गया है। यह उपन्यास आदि से अन्त तक समस्यामय घटनाओं से परिपूर्ण है और इसका कोई भी ऐसा अंश नहीं है जिसमें सरसता का अभाव हो। मूल्य २॥=)

जीवन-क्रान्ति—लेखक, पंडित गौरीशंकर मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०। अनुभवी तथा विद्वान लेखक ने इस उपन्यास में सेठ-साहूकारों तथा बड़े आदमी कहे जानेवाले व्यक्तियों की नर-पिशाचिता, पुलिस तथा अन्य अधिकारियों के हथकण्डा और धन के लोभ से निरपराधों को अपराधी ठहराकर कारागार की नारकीय यातना भोगने के लिए विवश करने के माया-जाल का बहुत ही आकर्षक शैली में वर्णन किया है। उपन्यास की एक-एक पंक्ति ओजपूर्ण और हृदय में घर कर लेनेवाली है। मूल्य २॥=)।

स्काटलंड-यार्ड की जासूस स्त्री—यह पुस्तक लेडी मॉली का ९ जासूसी कहानियों का संग्रह है। इस पुस्तक की एक-एक कहानी इतना मनोरंजक और कौतूहलवर्द्धक है कि आप इस पुस्तक का पूरा पढ़े बिना चैन नहीं पा सकते। लेडी मॉली के जितने कहानी-संग्रह अब तक प्रकाशित हुए हैं, यह उन सबसे अच्छा है। मूल्य ॥।-)।

संसार की प्रसिद्ध कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत शमशेर बहादुरसिंह, बी० ए०। इस पुस्तक में योरप के संसार-प्रसिद्ध कलाकारों की चुनी हुई कुछ कहानियाँ संगृहीत की गई हैं। ये सभी कहानियाँ बहुत ही कलापूर्ण और मनोरंजक हैं। यदि आपको योरप के कथा-साहित्य की बानगी लेनी हो, तो इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य १)।

मोपाँसा की चुनी हुई कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत गोपीनाथ जी क़ानूनगो। इस पुस्तक में मोपाँसा की चुनी हुई ग्यारह कहानियों का संग्रह किया गया है। मोपाँसा की रचनाओं की बानगी लेने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य १)।

ब्रजनाथ का विवाह—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। आश्चर्यमयी घटनाओं से परिपूर्ण यह सामाजिक उपन्यास पढ़ने में ऐसा रोचक है कि एक बार आरम्भ करने पर फिर बिना समाप्त किये चैन नहीं पड़ता। मूल्य १।-)।

आनन्दमठ—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। मुसलमानों और अंगरेज़ों को हिन्दुस्तान से बाहर करने के लिए, बंगाल में वैष्णवों ने जो विद्रोह किया था, उसी का इस उपन्यास में उपन्यास-सम्राट् श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने बड़ी ख़ूबी से वर्णन किया है। ऐसा सुन्दर चित्रण इस उपन्यास में है कि पढ़कर मातृ-भूमि के लिए दिल फड़क उठता है। मूल्य १।-)।

रजनी—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। यह उपन्यास-सम्राट् श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का एक करुणापूर्ण अद्वितीय उपन्यास है। चमत्कारपूर्ण मनोवैज्ञानिक कहानी इस उपन्यास की एक ऐसी ख़ूबी है कि जिसके कारण पुस्तक पढ़ने का मोह संवरण नहीं किया जा सकता। मूल्य ॥=)।

श्रीकान्त—(प्रथम और द्वितीय भाग)—अनुवादक, श्री रूपनारायण पाण्डेय। 'श्रीकान्त' शरद् बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना गया है। इसमें शरद् बाबू की अमर लेखनी ने उनके कलाकार का मंजा और सधा हुआ रूप चित्रित किया है, जो अत्यन्त मनोरम है। प्रत्येक भाग का मूल्य २)।

ब्राह्मण की बेटी—मूल लेखक, श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक, पंडित रूपनारायण पाण्डेय। शरद् बाबू भारत के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक माने जाते हैं। उनका यह उपन्यास लोक-प्रियता और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मूल्य सजिल्द पुस्तक का १।-)।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रविवार, १७ फरवरी, १९४६

नागरी-प्रचारिणी-सभा आगरा

व्याख्यानमाला की योजना

आगरा की नागरी-प्रचारिणी-सभा जीती-जागती प्रगतिशील संस्थाओं में से है जो गत्यानुगति को मूढ़ रूढ़ि मार्ग का अनुसरण न कर अपने लिए नित्य नूतन मार्ग प्रशस्त किया करती है। कुछ दिन हुए सभा ने ज्ञानवृद्धि-व्याख्यानमाला का एक सप्ताह का प्रोग्राम बनाया था। इस आयोजन की उपयोगिता विश्वविद्यालय की कोटि की नहीं थी। प्रत्युत जन-साधारण की शिक्षा और संस्कृत लाभ की दृष्टि से इसका निर्माण हुआ था। प्रायः यह देखा जाता है कि इस प्रकार की संस्थाएँ अपनी कार्यशक्ति का केन्द्र जन-संपर्क से पृथक साहित्य अनुशीलन और साहित्य सृजन बना लेती हैं। किन्तु आगरा की नागरी-प्रचारिणी सभा की यह विशेषता है कि उसने जन-साधारण को कभी नहीं भुलाया है। उसने जब-जब अपने सामने कोई नया आयोजन रखा उसमें सर्व-साधारण की हितभावना अवश्य सन्निहित रही। इस दृष्टि से नागरी-प्रचारिणी-सभा की नागरिक सेवाएँ महान् हैं। इस सभा ने जहाँ अनेक हिन्दी-लेखकों को और उदीयमान कवियों को जन्म दिया है वहाँ सर्व-साधारण के ज्ञान का स्तर उठाकर भारी नागरिक सेवाएँ भी की हैं, और यह एक ऐसा कार्य है जो समस्त सार्वजनिक संस्थाओं के लिए स्पृहणीय और अनुकरणीय है।

यहाँ ज्ञानवृद्धि-व्याख्यानमाला पर विस्तृत टीका-टिप्पणी करना हमारा लक्ष्य नहीं है, बल्कि ऊपर हम जो कुछ कह आये हैं उसी के स्पष्टीकरण के लिए हम यहाँ व्याख्यानमाला के विषयों का उल्लेख कर देना आवश्यक समझते हैं। पहले दिन मुनिराज जैनमुनि श्री अमरचन्द जी का मानवता पर बड़ा उपदेशप्रद प्रवचन हुआ। महायुद्ध के भयंकर रक्तपात के बाद मानवता सन्देश कितना मधुर मालूम होता है। आज की मदान्ध सभ्यता को सबसे अधिक इसी सन्देश की आवश्यकता है। दूसरे व्याख्यान में डा० निहालकरण सेठी ने 'एटम बम या परमाणु बम' जैसे गंभीर विषय को अत्यन्त सरल-सुगम शैली में व्यक्त किया। अगले दिन श्री प्रो० विद्याप्रकाश ने 'एक्सरे' के सम्बन्ध में ज्ञातव्य बातें एक्सरे के यंत्र-द्वारा समझाईं। श्री पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी ने भारत के पाँच प्रमुख संपादकों में सर्वश्री सी० वाई० चिन्तामणि, पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी, रामानन्द चटर्जी और गणेशशंकर विद्यार्थी तथा उनके कार्य का परिचय कराया। तीसरे दिन दो दर्शन के पंडितों के व्याख्यान हुए। श्री पी० एम० मम्मानी ने दार्शनिक दृष्टिकोण से दंड-व्यवस्था पर अपने विचार प्रकट किये और बा० गुलाबराय ने मन की खोज विषय पर अपनी मनोरंजक शैली में मन के व्यापारों पर प्रकाश डाला। चौथे दिन जर्मन साधु श्री सत्यानन्द की उपस्थिति के कारण बड़ा आकर्षण रहा। श्री प्रो० बाबूलाल गुप्त ने मैजिक लैंटर्न की सहायता से संसार के कुछ विचित्र पौधों का परिचय कराया। पाँचवें दिन श्री लतीफ़उद्दीन अहमद साहब ने आगरे के उर्दू कवि नजीर का अच्छा परिचय दिया। श्री पं० हरिशंकर शर्मा ने हिन्दी छन्दों की व्यापकता विषय पर एक सर्वथा मौलिक विचार अपने व्याख्यान द्वारा रखा। उन्होंने उर्दू की सब बहरों के उदाहरण देकर यह बताया कि उनमें से कोई भी ऐसा बहर नहीं है जो हिन्दी छन्दशास्त्र की सीमा से बाहर हो। छठे दिन श्री प्रो० बी० एन० मेहता ने युद्ध का संसार के नक्शे पर प्रभाव-विषयक व्याख्यान-द्वारा उन सब राजनैतिक परिवर्तनों पर प्रकाश डाला जो महायुद्ध के कारण उत्पन्न हुए हैं। श्री प्रो० रामस्वरूपसिंह ने मैजिक लैन्टर्न की सहायता से आकाश के विभिन्न नक्षत्रों, राशियों आदि का परिचय कराया और नक्षत्रलोक में घटने-वाली घटनाओं, सूर्य, ग्रह, चन्द्रग्रहण आदि को समझाकर जनता के मिथ्या भ्रम-विश्वास को दूर किया। अन्तिम दिन संगीत तथा नृत्य के द्वारा जनता का मनो-रंजन किया गया। श्री विश्वम्भरनाथ भट्ट का भारतीय संगीत के विकास पर एक उत्तम व्याख्यान भी हुआ। इतनी सुन्दर और उपयोगी योजना प्रस्तुत करने के लिए सभा के प्रधान श्री पं० हरिशंकर शर्मा और मंत्री श्री महेन्द्र जी बधाई के पात्र हैं। साथ ही यह आशा करते हैं कि यदि आगरे की नागरी-प्रचारिणी सभा की इस प्रकार की योजनाओं का अन्य संस्थाएँ भी व्यवहारिक रूप में स्वागत करेंगी तो जन-शिक्षण का बड़ा भारी काम हो सकेगा।

—सैनिक

हिन्दी के लेखक-सम्राट्

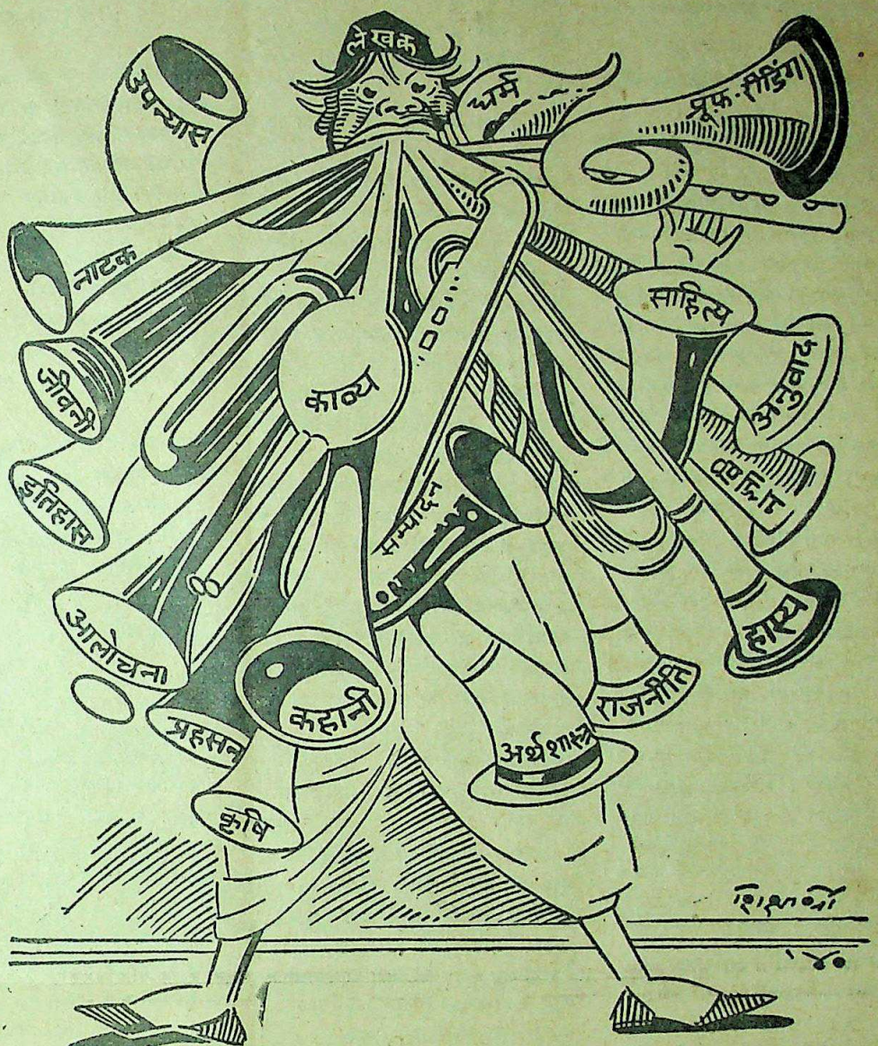

हमारे उत्तमोत्तम प्रकाशन

श्रीमद्भागवत

सचित्र (दो जिल्दों में) मूल्य १५।—)

यह आचार्य शुकदेवजी का प्रसिद्ध ग्रन्थ है जिसका हिन्दू समाज में बहुत आदर है। इसकी प्रशंसा करना सूर्य को दीपक से देखना है। इसकी बहुत मांग है।

कवि सोहनलाल द्विवेदी की अनुपम कृतियाँ

भैरवी २।=) कुणाल १।)
पूजागीत २) विषपान १)
बाँसुरी ।।।) शिशुभारती ।।।)
वासवदत्ता १।।)

ठाकुर गोपाल शरणसिंहजी की काव्यकृतियाँ

सुमना २) संचिता ३)
मानवी २।—) माधवी २)
ज्योतिष्मती २।) कादम्बिनी २)

प्रवीण कवि श्यामनारायण पाण्डेय का खण्डकाव्य

हल्दीघाटी २।।)

सुकवि हरदयालसिंह जी की प्रमुख रचना

हृत्यवंश महाकाव्य ३।—)

आदि कवि महर्षि वाल्मीकि प्रणीत

हिन्दी वाल्मीकि रामायण सचित्र दो खण्डों में मूल्य प्रत्येक खण्ड का ६।।)

द्विवेदी-काव्यमाला

मूल्य ४)

स्वर्गीय आचार्य द्विवेदी जी की कविताओं का अपूर्व संग्रह

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'जीवन'–सुप्रसिद्ध फिल्म कलाकार और अभिनेता

(पेज १२ का शेष)

बनने की कहानी के प्रधान मिस्टर मोहन-सिंह ही हैं।

प्रश्न––आप किस तरह का अभिनय पसन्द करते हैं?

उत्तर––मैं तो कोमोडियन बनना चाहता हूं। मुझे जिन्दगी के सभी तरह के रोल पसन्द हैं। मैं कर भी सकता हूं उनको। केरेक्टर रोल का कार्य आज से पन्द्रह साल बाद भी कर सकता हूं––मुझे अपने "आत्म-शक्ति" पर विश्वास है। जैसे बूढ़े का अभिनय आज भी इस छोटी उम्र में भी मैं बखूबी कर सकता हूं। मैं जिन्दगी के प्रत्येक कूचे में बढ़ना चाहता हूं। इसलिए प्रत्येक टाइप के रोल मुझे पसन्द हैं। मुझे वह अभिनय पसन्द है, जिसको कि जनता अपना ले, क्योंकि जिस अभिनय की तारीफ या प्रोत्साहन जनता नहीं देती, वह अभिनय श्रेष्ठ होने पर भी दो कौड़ी का है। मैं तो यही चाहता हूं कि किसी तरह से मेरा अभिनय जनता को पसन्द आ सके––तभी मेरा अभिनय सार्थक होगा। वैसे भी अभिनय की सार्थकता उसी में है जिसमें कि जनता की रुचि हो। दर्शक की प्रसन्नता की सुदृढ़ दीवाल पर ही हमारा अभिनय टिका हुआ है। मेरे अभिनय की पसन्दगी का क्रियात्मक मूल्य शून्य के बराबर है। दर्शक की पसन्दगी सब कुछ है। उसकी पसन्दगी के सामने कलाकार की पसन्दगी चलती नहीं।

प्रश्न––आपकी हाबी क्या है?

उत्तर––पुस्तक पढ़ना, तैरना। मैं सभी तरह की पुस्तकें पढ़ता हूं। अंगरेजी, परिशियन, हिन्दी, पंजाबी आदि भाषायें भी मैं जानता हूं। और किसी बात का मुझे शौक नहीं।

प्रश्न––आप अपना पारिवारिक परिचय दीजिए?

उत्तर––मेरे पिता जी का नाम पं० दुर्गाप्रसाद था, वह काश्मीर में फाइनेन्स मिनिस्टर थे। "गिरगिल" के गवर्नर भी रह चुके थे। बड़े भाई दोर काश्मीरी "नवयुग" और "शालीमार" में काम कर रहे हैं। मेरी शादी अभी हाल में ही हुई है। मैंने किसी अभिनेत्री से शादी नहीं की, क्योंकि मैं किसी भी अभिनेत्री को अपने योग्य नहीं समझता।

प्रश्न––क्या फिल्मी-दुनिया में खुशामद पसन्द आदमी हैं?

बिना इसके भी कार्य चल सकता है या नहीं?

उत्तर––मैं तो अपनी जानता हूं। मुझे खुशामद से चिढ़ है। चाहे मेरी तरक्की हो या न हो। लेकिन मुझसे किसी की खुशामद नहीं हो सकती। खुशामद करना तो मैं पाप समझता हूं। खुशामद भी एक तरह का गुनाह है, क्योंकि इसमें मानव की सभी वृतियाँ नष्ट हो जाती हैं। प्रतिभा का ह्रास हो जाता है। जब मैं डाइरेक्टर मोहनसिंह के ग्रुप में था, तब पाँच-छः व्यक्ति और थे मेरे साथ। वह सबके सब मिस्टर मोहनसिंह की खुशामद किया करते थे। किन्तु मिस्टर मोहनसिंह ने भी खुशामद का कुहरा फाड़ते हुए मुझे अपना लिया––इसलिए मैं तो यही कहूँगा कि फिल्मी-दुनिया में भी खुशामद से घृणा करनेवाले आदमी मौजूद हैं––और इसके बिना भी इंसान जल्दी तरक्की कर सकता है।

प्रश्न––सिनेमा की गन्दगी कैसे दूर हो?

उत्तर––सिनेमा की गन्दगी तभी दूर हो सकती है, जब कि इसमें शिक्षित व्यक्ति आयेंगे, और जिनको कि "सेल्फ-रेसपेक्ट" का अधिक ख्याल होगा। लेक्चर देकर गन्दगी नहीं हटाई जा सकती। "सेल्फ-रेसपेक्ट" ही गन्दगी की काई को फाड़ सकती है। बात यह है कि जिन कलाकारों को "स्वाभिमान" का ख्याल होगा––वह कभी दूसरे व्यक्ति के साथ नीचतापूर्ण व्यवहार नहीं कर सकते, क्योंकि वह समझते हैं। वह समझते हैं कि यदि हमें अपनी इज्जत सुरक्षित रखनी है, तो सबसे पहले दूसरों की इज्जत रखनी पड़ेगी। दूसरे की इज्जत सुरक्षित रहने पर ही हमारी इज्जत पर आँच नहीं आ सकती। वास्तव में "सेल्फ-रेसपेक्ट" की गहराई में सचरित्रता के बीज पनप रहे हैं। इसलिए आज फिल्मी-दुनिया के लिए ऐसे ही व्यक्तियों की आवश्यकता है जो कि अपने उच्च व्यक्तित्व से गन्दगी की कालिमा विनष्ट कर सकें।

प्रश्न––हिन्दुस्तानी औरतें क्या सिनेमा की दुनिया में आ सकती हैं या नहीं?

उत्तर––जरूर आ सकती हैं। लेकिन एक बात है। सिनेमा में प्रवेश ऐसा ही है, जैसा "काजल की कोठरी" में प्रवेश करना––बिना दाग लगे हुए, बचकर निकल आना ही सबसे बड़ी कामयाबी है। सिनेमा की गन्दगी से कहीं अपना व्यक्तित्व खराब न हो जाये। यही बात ख्याल रखनी है––लेकिन मेरी समझ में इस लाइन में वे वही औरतें आवें जो कि उच्च व्यक्तित्व रखती हों। हलके व्यक्तित्ववालियों का गुजारा नहीं क्योंकि वह तो फौरन ही "सिनेमा की चमक" पर "दौलत की दमक" पर अपने व्यक्तित्व का बलिदान कर बैठेंगी। अभी सिनेमा का वातावरण इतना निर्मल नहीं हो गया है कि सब तरह के मनुष्य उसमें खप सकें। उसके लिए अभी काफी देरी है––त्याग और तपस्या की भी आवश्यकता पड़ेगी, जिनका व्यक्तित्व अभी "घूँघट" के अन्दर ही पनप रहा है, और जिनका चरित्र बाहर की हवा लग जाने भर ही से खराब हो जाता है। उनको तो कभी सिनेमा का नाम भी न लेना चाहिए। ऐसी औरतें तो दुनिया में कुछ कर ही नहीं सकतीं। सिवाय इसके कि पति की गुलामी करना। जो औरतें पति की गुलामी करने में ही अपनी सचरित्रता समझती हैं वह भी सिनेमा की दुनिया की तरफ आँख उठाकर न देखें। घूँघट के ओट में वह किसी दूसरे व्यक्ति से आँख तो लड़ा सकती हैं, लेकिन दिल खोलकर जाहिर रूप में किसी से बात नहीं कर सकतीं––क्योंकि इसमें तो वह अपने "चरित्र का दिवाला" समझती हैं। ऐसी औरतों से तो हमारे यहाँ की अभिनेत्रियाँ लाख दर्जे अच्छी हैं––जो कि अपने अन्दर कम से कम आत्म-निर्भरता तो रखती हैं।

प्रश्न––अभिनय को किस प्रकार सफल बनाया जा सकता है?

उत्तर––कैमरे के सामने जो कलाकार अपने को भूल सकता है, वही सच्ची कला का प्रदर्शन कर सकता है, वही कला लोकप्रिय हो सकती है। अभिनय को सफल बनाने के लिए कलाकार को कई बातों का ख्याल रखना पड़ता है। उसे चाहिए कि वह उपन्यास और कहानियाँ अधिक पढ़े, जिससे उसे जीवन के विभिन्न पहलुओं की भूमिकाओं का अनुभव हो जाये। दूसरे कहानियों के पढ़ने से कलाकार भावनामय बन जायेगा। कलाकार का भावनामय होना नितान्त आवश्यक है। क्योंकि हृदय की उच्च कल्पना के धरातल पर ही अभिनय लोकप्रिय बनाया जा सकता है। कलाकार को स्वाध्यायी होना चाहिए। आप यह प्रश्न उठा सकते हैं कि अध्ययन और अभिनय में दो अलग मार्ग हैं। एक दूसरे का सम्बन्ध नहीं। किन्तु मेरा कहना यही है कि अपने अनुभव के आधार पर कि बाहर से ये दोनों भले ही अलग अलग दृष्टिगोचर हों, परन्तु दोनों भीतर से एक लड़ी में गुथे हुए हैं। इनका सम्बन्ध-विच्छेद नहीं हो सकता। जिस प्रकार बर्फ में उष्णता व्याप्त है––ठीक उसी प्रकार अध्ययन में अभिनय की सफलता।

(लेखक-द्वारा सर्वाधिकार रक्षित)

ब्रिटिश माल के निर्यात की बाढ़ क्यों?

(पेज ५ का शेष)

बीमा कम्पनियों की सेवाओं की आवश्यकता अत्यन्त नगण्य हो जायेगी। फिर भी निकट-भविष्य में इस जरिये से आमदनी का अनुमान दो करोड़ पौंड लगाया जा सकता है। इसलिए यदि ब्रिटेन सन् १९४६ में भी केवल ८६·६ करोड़ पौंड की वस्तुओं की आयात अपने देश की आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त समझे तो उसे प्रत्येक वर्ष ६७·५ करोड़ पौंड का माल निर्यात करना होगा जैसा कि निम्नांकित आँकड़ों से स्पष्ट होगा––

ब्रिटिश वस्तुओं का निर्यात	६७·५	करोड़ पौंड
ब्रिटिश जहाजों की सेवाओं का मूल्य	७·०	" "
बैंक तथा बीमा कम्पनियों की सेवाओं का मूल्य	२·०	" "
विदेश में लगाई गई पूंजी से आय	१०·१	" "
	८६·६	" "

अब युद्ध की धाँधली का समय गया और जीवन-मरण का प्रश्न भी नहीं है इसलिए ब्रिटेन विदेश में लगाई गई पूँजी को बेचने का प्रयत्न नहीं करेगा अपितु विदेश में ब्रिटिश माल को खपाने का प्रयत्न करेगा। इसलिए जहाँ १९३८ में ब्रिटेन ४७·८ करोड़ पौंड का माल निर्यात किया करता था वहाँ उसे सन् १९४६ में ६७·५ करोड़ पौंड का माल निर्यात करना होगा। यदि ब्रिटेन अपने खान-पान तथा ऐशो-आराम का स्टैंडर्ड और ऊपर उठाना चाहे तथा मुफ्त दवा, बेकारी में भत्ता, साधारण जनता के लिए घर इत्यादि का प्रबन्ध करना चाहे तो उसे निर्यात की मात्रा और भी बढ़ानी होगी। ऐसे अवसर पर भारत के ४० करोड़ निवासी ब्रिटिश माल के महत्त्वपूर्ण ग्राहक हो सकते हैं। युद्धोत्तर योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए हमें करोड़ों रुपये का लोहे, इस्पात, रसायन, बिजली के पंखे, हाउस तथा अन्य कल-कारखानों के लिए मशीनरी तथा अन्य उपयोगी वस्तुओं की आवश्यकता पड़ेगी और यदि ब्रिटेन ने भारत में कोई राजनैतिक समझौता न किया गया तो यह सभी वस्तुएँ ब्रिटेन से ही खरीदी जायेंगी। ब्रिटेन के ऊपर हमारा १६ अरब ७७ करोड़ रुपये का ऋण भी तो है जिसकी अदायगी के लिए ब्रिटेन सोना या कुछ नहीं दे सकता और न ही मशीनरी लेना चाहता है अपितु केवल उपयोगी वस्तुओं का निर्यात करना चाहता है, जो भारत सहर्ष खरीद सकता है परन्तु यदि ब्रिटेन भारत को पराधीनता की बेड़ियों में ही जकड़े रखना पसन्द करेगा तो ब्रिटिश माल का देशव्यापी बायकाट (जिसका अनुमोदन श्रीमती अरुणा आसफअली ने कलकत्ते में किया है) अवश्यम्भावी है और वह दिन दूर नहीं जब ब्रिटेन अपना समस्त उत्पादन संसार में बेच न सकने के कारण बेकारी के दलदल में फँस जायेगा और ब्रिटेन निवासियों को दाने-दाने का मुहताज होना पड़ेगा। इसलिए यदि ब्रिटेन जीवित रहना चाहता है तो शीघ्र ही भारत को स्वाधीन कर दे। केवल इसी प्रकार ब्रिटेन और भारत के व्यापारिक सम्बन्ध दोनों को सन्तोषप्रद हो सकते हैं।

मंदाग्नि?

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर में व्यापक ख्याति अम्लता, उदर-वात, हृदय-दाह, पेट-दर्द, वमन, पित्त-प्रकोप तथा पाचन-सम्बन्धी शिकायतों से पैदा होनेवाले अन्य रोगों में प्रभावशाली होने की मान्य प्रमाण है।

उदर-विकारों से उत्पन्न सिरदर्द, उदासी, अनिद्रा और हृदय की तीव्र धड़कन में भी यह अमूल्य है।

यदि आप इनमें से किसी कष्टकारी रोग से पीड़ित हैं तो आज ही कुछ मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर लीजिए और इस प्रसिद्ध औषध की शीघ्र सांत्वना का स्वयमेव अनुभव कीजिए।

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर मांगते समय "एलेक्स सी० मेकलीन" के हस्ताक्षर पहचान लीजिए क्योंकि असली यही है।

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर सेवन कीजिए

Copyright: JWT(E) Ltd.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी बात

मनुष्यों के चरित्र में जो दुर्बलताएँ हैं उन्हें दूर करके वह किस प्रकार को उन्नत बना सकता है, यही इस पुस्तक में ओजपूर्ण भाषा में, अनुभव के आधार पर, लेखक ने चाहिए। मूल्य ।।) बारह आने।

मैनजर बुकडिपो
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

कठिन परिश्रम के बाद;

प्रत्येक मनुष्य का शरीर और मन दोनों ही थक जाता है। उसे फिर काम के योग्य बनाने के लिये आराम करना अत्यन्त आवश्यक है। आराम करने से शरीर की थकावट अवश्य दूर हो जाती है किन्तु मन के लिये विशेष प्रकार के भोजन की आवश्यकता होती है। भोजन पचने में हलका स्वादिष्ट और सात्विक होना चाहिये।

ये पाँच कहानी-संग्रह कठिन परिश्रम के बाद आराम करते समय पढ़ने योग्य हैं। इनमें वे ही गुण हैं जो मन को प्रफुल्लित करने के, लिये आवश्यक हैं।

पुष्करिणी २)
अनुराग १)
कलंक १)
गल्पगुच्छ (चार भाग) ४।।।=)
टाल्सटाय की कहानियाँ २)

मैनेजर—बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

क्या आज आपने मेकलिन
से दाँत साफ किये हैं ?

हाँ जलसेना में हम लोग
स्वच्छ हैं !

जो लोग बाहर का सक्रिय जीवन बिताते हैं मेकलिन्स टूथ पेस्ट ही उनका चुनाव है। उसका उत्तम स्वाद जो मुख को सुगन्धित व ताजा बना देता है—सबको प्रिय है। इसका प्रयोग विशेष रूप से सस्ता है और यह अच्छे साइज की ट्यूब में मिलता है।

सभी कैमिस्टों के
पास व स्टोरों में मिलता है

Copyright
JWT(E)LTD.

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयां—
क्रीमाला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
ईंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

घोषणा

साफ़ किया हुआ और
शुद्ध मूँगफली का
तेल

दि लिली आइल इंडस्ट्रीज लि० बड़ौदा से अब मिल सकता है :
कृपया विशेष विवरण के लिए लिखिए :—

दि लिली आइल इंडस्ट्रीज लि०

(ऐलेम्बिक ग्रूप इंडस्ट्रीज)
पोस्ट ऐलेम्बिक, बड़ौदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मझली दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पिता से विहीन भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर सकती है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

एक सुव्यवस्थित योजना

सर पुरुषोत्तम दास ठाकुर दास कहते हैं।

सर पुरुषोत्तम दास ठाकुर दास
के. बी. ई., सी. आई. ई., एम.
बी. ई. डायरैक्टर रिज़र्व बैंक आफ इण्डिया।

"सरकार द्वारा प्रचलित जन साधारण के लिये थोड़ी बचत की व्यवस्था चित्ताकर्षक होनी चाहिये क्योंकि इस में लगाया गया रुपया पूर्णतया सुरक्षित ही नहीं बल्कि और मदों की अपेक्षा ब्याज भी अधिक मिलता है। इसके अतिरिक्त उन लोगों का रुपया जो थोड़ी बचत कर सकते हैं एक समय के लिये उनकी पहुंच से बाहर सुरक्षित मद में लगा रहता है। अवधि समाप्त होने से पहिले भी २ वर्ष पश्चात अचानक आवश्यकता पड़ने पर नियमानुसार सर्टिफ़िकेट भुना कर रुपया प्राप्त किया जा सकता है। इस व्यवस्था के सम्बन्ध में रुपया लगाने के बारे में ऐसे अनुरोध के प्रति जिसमें दबाव की झलक पाई जाती हो जनता के विरोध को मैं समझ सकता हूं परन्तु जनता को अपने हित के लिये इस सुव्यवस्थित योजना के लाभ समझ लेने चाहियें जिस में १२ वर्ष तक अधिक ब्याज मिलता है और कुछ विशेष लाभ और भी हैं, अर्थात इन्कम टैक्स की वापसी के लिये प्रार्थना पत्र देने का कोई कष्ट उठाना नहीं पड़ता जैसा कि अन्य हिस्सों और हुंडियों के बारे में होता है। मुझे विश्वास है कि जो इस मद में रुपया लगायेंगे वे भविष्य में अपने इस निश्चय पर अवश्य प्रसन्न होंगे। मैं प्रत्येक व्यक्ति को, चाहे वह अधिक पूंजी वाला हो, चाहे थोड़ी, परामर्श देता हूं कि वह इस योजना में अपना सहयोग दे।"

Purshotam Thakurdas

संक्षिप्त विवरण

(१) आप ५), १०), ५०), १००), ५००), १०००) या ५०००) के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) एक व्यक्ति ५०००) से अधिक मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स नहीं ख़रीद सकता। ये इतने उपयोगी हैं कि इनका राशन करना ही उचित समझा गया है। हां दो व्यक्ति मिलकर १०,०००) के सर्टिफिकेट्स मोल ले सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है।

(४) इस प्रकार अवधि पूरी होने पर ४-१/६% वार्षिक ब्याज मिलता है।

(५) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(६) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं। (५) का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष पश्चात ही भुनाया जा सकता है) परन्तु वास्तविक लाभ इसी में हैं कि १२ वर्ष से पहिले इन्हें न भुनायें।

(७) जिनकी बचत थोड़ी है वह १), ॥), ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्पस ख़रीद सकते हैं। ५) के स्टैम्पस जमा होने पर एक नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट मिल जायेगा।

(८) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्पस डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकृत एजण्टों अथवा सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

आप अपनी बचत से ५०% लाभ उठाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिये।

स्टैनिष्ट्रीट की अचूक दवायें

खाँसी • सर्दी • इन्फ्लुएञ्जा

हर तरह की तकलीफों को दूर करने के लिये ही कैगमैग खास तौर पर बनाई गई है। नष्ट स्फूर्ति पुनः प्राप्त कराती और रात को दौरा होने पर भी नींद लाती है। कैगमैग खाँसी की अचूक दवा है और गले व फेफड़ों की तमाम खराबियों को जल्द आराम करती है।

स्टैनिष्ट्रीट का बनाया हुआ 'सिरप आफ हाइपोफौस-फाइट आफ लाइम' फेफड़े के तन्तुओं को सुदृढ़ बनाता है और बड़े अच्छे टानिक का काम करता है। बड़े धीमे और आहिस्ता से यह अपना असर डालता है। स्वादिष्ट है, मधुर है और फौरन आराम पहुंचाता है।

एन्जौएड्स टि... एक भूतपूर्व ... परिचालक के ... अनुसार सावधानी ... हैं। इन पर चीनी ... हैं; एन्जौएड्स ... इन्फ्लुएञ्जा की ... में लाभदायक प्रति... साबित हुई हैं। ... सर्दी से भी ये रक्षा ...

कैगमैग • स्टैनिष्ट्रीट सिरप • एन्जौएड्स

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं० लिः कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ

सौंदर्य की परम्परा कायम रख रही है

जवान लड़कियों के सभी महत्वपूर्ण मामलों में केवल उनकी मां ही उन्हें बहुमुल्य सलाह दे सकती है। इस रूपवती मां ने अपनी सुन्द्र बेटी को अपना बढया गुर दिया है कि पियर्स साबुन और स्वच्छ पानी की सहायता से त्वचा के सौन्दर्य को कायम रखा जा सकता है। यह शिक्षा इस मां ने अपनी मां से ली थी और अपने बचपन से ही इस पर अमल करती आई है। इसी कारण उसकी त्वचा आज भी उतनी ही प्यारी और सुन्दर है। इसकी बेटी भी उसी तरह अपनी त्वचा की प्रवाह करती है। इसलिये उसकी मां की तरह उसकी त्वचा भी बेदाग और सुन्दर रहेगी।

चालीस साल से हिन्दुस्तान की सुन्द्रयों ने पियर्स साबुन को ही इस्तेमाल किया है। स्वाभाविक खुशबू और रेशमी झाग के कारण यह साबुन साधारण साबुनों से कहीं बढ़चढ़ कर है।

पिअर्स साबुन

सौन्दर्य का सेवक

TG. 39-172 HI

A. & F. PEARS, ISLEWORTH, ENGL...

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४-पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 24th February, 1946

रविवार, २४ फरवरी, १९४६

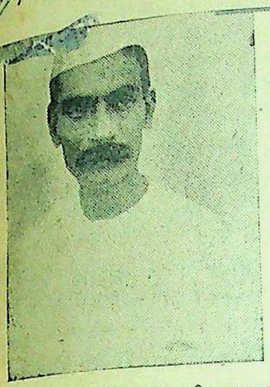

देशरत्न डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद की अध्यक्षता में वर्धा में अखिल भारतीय गो सेवा संघ का अधिवेशन हुआ है।

महात्मा गांधी ने वाइसराय लार्ड वेवेल के सामने दो प्रस्ताव पेश किये हैं। अर्थात् वाइसराय की कौंसिल जिम्मेदार नेताओं की बनाई जाये और भारत में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हो। ऐसा यदि होगा तो भारत में न तो अन्न का संकट आयेगा, न अकाल पड़ेगा और न जनता भूखों मरेगी। अपने राम की राय है कि गांधीजी की सम्मति बहुत ही सुन्दर है किन्तु आज जो मँहगी प्रारम्भ हो गई है उसका तत्काल निवारण कैसे हो? गेहूँ का भाव कैसे बढ़े और जनता को राशन पहले ही की तरह मिलने लगे? बात यह है कि हमारी सरकार बहादुर है बड़ी समझदार! वह पहले संकट बुलाती है और बाद में उसके निवारण का उपाय स्वयं खोज निकालती तथा जनता के नेताओं से खोजने का अनुरोध करती है। इसलिए कि ऐसा करने से थोड़ा-बहुत समय तो कट ही जायेगा। लिखा पढ़ी होते, आपस में मिलकर बातें करते और किसी अंतिम परिणाम पर पहुँचते-पहुँचते कुछ समय तो कट ही जायेगा, फिर राम मालिक हैं। किसी के भविष्य का क्या कोई ठेका लिए है? जैसा आएगा वैसा भुगता जाएगा।

* * *

बात यह है कि भारत में अब राष्ट्रीय सरकार स्थापित होनेवाली है और ब्रिटिश सरकार जल्दी से जल्दी भारत को स्वतंत्रता देनेवाली है। पिछले दिनों ब्रिटिश पार्लियामेंटरी प्रतिनिधि मंडल भी यहाँ आया था, और उसके नेताओं ने भी यही कहा कि भारत की ओर तत्काल ध्यान देना चाहिए। कहने का मतलब यह है कि जब आपत्ति आती है तो वह अपना नग्न रूप प्रदर्शन करने में कोई कसर नहीं उठा रखती है। भारत के लिए भी इस प्रकार की यह आपत्तियाँ अंतिम हैं। इसलिए इसके बाद जो समय आयेगा, वह निश्चय ही सबसे अच्छा होगा। ब्रिटिश सरकार सोचती होगी कि लीजिए, हम स्वराज्य देने की ओर ज्यों-ज्यों बढ़ते हैं, त्यों-त्यों दैवी प्रकोप बढ़ता जाता है। ठीक भी है, सरकार सदा से कहती आई है कि ब्रिटिश यदि भारत छोड़ देंगे तो भारत विद्रोही बन जाएगा। इसीलिए ब्रिटिश भारत नहीं छोड़ रहे हैं। छोड़ने के नाम पर तो अकाल बढ़ता आ रहा है और जब छोड़ देंगे तो प्रलय ही समझना चाहिए। देखिये भारत की माँगें पूरी होते-होते और क्या-क्या होता है?

* * *

प्रयाग में अखिल भारतीय समाचार पत्र संपादक सम्मेलन का अधिवेशन हो गया। समाचार-पत्रों के संपादकों ने एकत्रित होकर सरकार को खूब खरी-खोटी सुनाई। कई प्रस्ताव भी पास किये गए। 'लीडर' के संपादक श्री सुब्रह्मण्यन् और सभापति श्री तुषारकांति घोष के व्याख्यान गरमागरम रहे। सम्मेलन में सरकारी, गैर सरकारी, कांग्रेसी तथा अकांग्रेसी सभी तरह के संपादकों, संचालकों और प्रतिनिधियों का एक खासा और माकूल जमघट था। सम्मेलन में सबसे तगड़ा व्याख्यान पंडित जवाहरलाल नेहरू का था। आपने देशी भाषा-भाषी पत्रों की उन्नति में विशेष दिलचस्पी ली। उनका व्याख्यान राष्ट्रीय नेता की दृष्टि से सर्वोत्तम रहा। उन्होंने श्रमजीवी पत्रकारों के संगठन, और हिन्दी-उर्दू पत्रों के भविष्य पर सुन्दर प्रकाश डाला। पंडित नेहरू का भाषण काफी प्रभावशाली रहा जो अँगरेजी पत्रों के मालिकों तथा सरकारी पत्रकारों को अगर खला हो तो क्या बेजा? सरकार की निगाह में देशी भाषा के पत्र यों भी गैर जिम्मेदार समझे जाते हैं किन्तु जब भारत स्वतंत्र हो जाएगा, ब्रिटिश यहाँ से अपने वतन को रवाना हो जाएँगे, शिक्षा का माध्यम देशी भाषा हो जाएगा तो अँगरेजी को कौन पूछेगा? क्योंकि अगर गुलामी के युग में भारत में अँगरेजी पनपी है तो आजादी के युग में राष्ट्रभाषा ही पनपेगी, इस कटु सत्य से किसी को चींचपड़ करने की जरूरत ही क्या है?

* * *

हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक पंडित वेंकटेशनारायण तिवारी कानपुर देहाती निर्वाचन क्षेत्र से निर्विरोध युक्त प्रान्तीय एसेम्बली के सदस्य चुन लिए गये।

प्रयाग में भारत के संपादकों का सम्मेलन हो रहा था। सैकड़ों प्रतिनिधियों ने पहले दिन खूब डटकर कई कोर्स समाप्त किये किन्तु भला हो संयुक्त प्रान्तीय सरकार का कि दूसरे ही दिन उसने एक ऐसा आर्डिनेन्स निकाल दिया कि बेचारे संपादक गणों को भोजन के लाले पड़ गए। खूब खाने की पहले दिन की कसर दूसरे दिन निकल आई। प्रान्तीय सरकार के भोजन आर्डिनेंस में यह कहा गया था कि किसी भी दावत में २५ से ज्यादा आदमी शरीक नहीं हो सकेंगे। संयुक्त-प्रान्तीय सरकार सदा से वक्त जरूरत के काम करती आई है, और उसकी वाहवाही भी अखबार नबीसों की ओर से खूब हुई है, इस बार भी उसने ऐसा ही नायाब काम किया है, इसलिए अखबार नबीस अगर प्रसन्न हो उठे हों तो क्या बेजा? अरे भाई यह संयुक्त-प्रान्त है, बंबई या कलकत्ता थोड़े ही है?

* * *

बंबई में श्रीमती अरुणा आसफ़अली ने एक व्याख्यान में सुझाव पेश किया है कि कांग्रेस के तत्वावधान में आजाद हिन्द-फौज का संगठन करना चाहिए। सुझाव तो मार्के का है। क्या यह फौज अहिंसात्मक होगी? क्योंकि कांग्रेस ने आजादी की लड़ाई लड़ने के लिए अहिंसा का हथियार अपनाया है। भारत को हिंसा से स्वराज्य मिल नहीं सकता क्योंकि ब्रिटेन के पास एटम बम है। उसका मुकाबला कैसे किया जायेगा? इसलिए अहिंसक आजाद हिन्द-फौज का संगठन ठीक ही होगा। अपने राम की राय में जब तक महात्मा गांधी का नेतृत्व भारत में है तब तक तो अहिंसा का सिद्धांत त्यागा नहीं जा सकता बाद में अगर समाजवाद ने जोर पकड़ा तो खुदा जाने क्या हो? श्रीमती अरुणा की समाजवादी दृष्टि व्यापक अवश्य है किन्तु आज का गांधीवाद इसे छूमंतर समझता है।

* * *

कलकत्ता में पुनः गोलीकांड हुआ। सरकार की ओर से शान्ति स्थापना के लिए गोलियों का उपयोग किया गया। कांग्रेस प्रेसीडेंट मौलाना अबुल कलाम आजाद कहते हैं कि अशान्ति उत्पन्न होने की जिम्मेदारी सरकार पर है। लेकिन भला सरकार इस इल्जाम को कब स्वीकार करनेवाली है? उसका काम तो शान्ति स्थापित करना है, चाहे वह जिस तरह से भी हो। और इसे कौन नहीं जानता कि बिना हथियारों के बल से शान्ति स्थापित हो ही नहीं सकती है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण है संसार का पिछला महायुद्ध। संयुक्त-राष्ट्र यह घोषित करते रहे कि हम जो लड़ाई लड़ रहे हैं वह सिर्फ इसलिए कि संसार में शान्ति स्थापित हो और बर्बर राष्ट्र जो ऊधम मचा रहे हैं, उनकी समाप्ति हो। आखिरकार हिंसात्मक उपायों से वह परास्त कर दिये गये और आजकल संयुक्त-राष्ट्र स्थायी शान्ति की स्थापना के उपाय खोज निकालने में व्यस्त है। फिर भारत तो भारत ही है। यहाँ कहाँ की हिंसा हो रही है और किस बूते पर लोग हिंसा करेंगे? फिर भी सरकार का आदर्श तो वही है, तब शान्ति स्थापना में वह अपने आदर्श के अनुसार ही क्यों न चले? चलना ही चाहिए। अँगरेज भारत में शासन करने तथा शान्ति स्थापना के लिए आये हैं न कि डंडे खाने। डंडे का मुकाबला वह गोली से करते हैं। नहीं तो उनका बड़प्पन कैसे कायम रहे?

* * *

भारत के वर्तमान सचिव लार्ड पेथिक लारेंस आगामी अप्रैल में भारत आनेवाले हैं। शायद वह स्वराज्य का खरीता भी अपने साथ लायें? क्योंकि इस वक्त ब्रिटेन के बड़े-बड़े जिम्मेदार नेता यह घोषित कर रहे हैं कि भारत की माँगों को तत्काल स्वीकार करना चाहिए। हमारे देश के कई नेता भी कहते हैं कि बस अब कुछ ही महीने का मामला है। शायद इसीलिए लार्ड पेथिक लारेंस भारत की यात्रा करनेवाले हैं?

महात्मा गांधी मद्रास का दौरा समाप्त करके वर्धा पहुँचे और अब वहाँ से पूना पहुँच गये हैं।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ प्रोफेसर जयचन्द्र विद्यालंकार ४ वर्ष की नजरबन्दी के बाद जेल से छोड़ दिये गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय पृष्ठ

समाचारपत्रों की स्वाधीनता क्यों?

पंडित जवाहरलाल नेहरू और श्री तुषारकांति घोष के भाषण

समाचारपत्रों का भविष्य

अखिल भारतीय समाचारपत्र संपादक सम्मेलन के अवसर पर पंडित जवाहरलाल नेहरू का भाषण देशी भाषा-भाषी—विशेष रूप से—हिन्दी-उर्दू समाचारपत्रों के भविष्य पर सुन्दर प्रकाश डालनेवाला था। पंडित नेहरू ने कहा कि स्वतंत्र भारत में राष्ट्रभाषा के पत्रों की ही खपत होगी इसलिए हिन्दी-उर्दू पत्रों का भविष्य बहुत उज्ज्वल है। आपने कहा कि पत्रकारों को गाँवों के समाचारों के प्रकाशन की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि भारत की करोड़ों जनता गाँवों में निवास करती है, जिनके समाचारों को जानने और उनके प्रकाशन की ओर हमारा ध्यान नहीं है। इसमें सन्देह नहीं है कि आज के समाचार-पत्र शहरों के इर्द-गिर्द मँडराया करते हैं, और उनमें शहरों तथा नगरों की राजनीति को विशेष महत्त्व दिया जाता है। सभी समाचारपत्रों के पृष्ठ शहरी समाचारों, विचारों तथा भावनाओं से ओत-प्रोत रहते हैं और गाँवों के समाचारों की ओर प्रायः ध्यान नहीं दिया जाता। देखा तो यह जाता है कि समाचारपत्र शहरों के छोटे से छोटे समाचारों को महत्त्व देते हैं और गाँवों के महत्त्वपूर्ण समाचार या तो उन्हें प्राप्त नहीं होते और यदि प्राप्त होते भी हैं तो उन्हें सन्देहजनक समझकर यों ही टाल दिया जाता है। किन्तु स्वतंत्र भारतीय वातावरण में सम्भवतः न तो ऐसा हो सकेगा और न स्वतंत्र भारत अपने करोड़ों ग्रामीणों के सुख-दुख के समाचारों के प्रकाशन की उपेक्षा ही करेगा। पंडित नेहरू का सुझाव सचमुच दूरदर्शिता से पूर्ण है। समाचारपत्र ही लोकरुचि के बनाने तथा बिगाड़नेवाले हैं। यही कारण है कि आज गाँवों की करोड़ों जनता ऐसे महत्त्वपूर्ण समाचारों के जानने में असमर्थ रहती है। उसे अपने देश की दैनिक राजनीति का किसी प्रकार भी पूर्ण ज्ञान नहीं हो पाता। शिक्षा का अभाव भी इसका एक कारण है ही, किन्तु सबसे बड़ी बाधा है यातायात की असुविधा तथा सरकारी नीति तथा क़ानूनों की उलझनें। और यह कार्य उस वक्त तक नहीं हो सकता जब तक कि भारत स्वतंत्र न हो जाये या राष्ट्रीय सरकार की स्थापना न हो। फिर भी अँगरेजी के पत्रों की नहीं बल्कि हिन्दी तथा उर्दू पत्रों की यह जिम्मेदारी है कि वह अभी से भविष्य में आनेवाले उस वातावरण के बनाने में सहायक बने जिसका समस्त राष्ट्र तथा राष्ट्रीय दृष्टि से विशेष महत्त्व है। हिन्दी-उर्दू के पत्रों को अभी से अपने भविष्य की ओर अग्रसर होना चाहिए। जहाँ तक हो सके अधिक से अधिक गाँवों के समाचारों को विशेष स्थान दिया जाय तथा लाखों जनता का ध्यान शिक्षा तथा राजनैतिक ज्ञानवर्धन की ओर आकर्षित किया जाये।

पंडित नेहरू ने देशी भाषा की समाचार एजेंसियों की स्थापना की ओर भी ध्यान आकर्षित किया है साथ ही देशी भाषा-भाषी समाचारपत्रों से सम्बन्धित श्रमजीवी पत्रकारों के संगठन की ओर भी ध्यान दिलाया है। जहाँ तक समाचार एजेंसियों की स्थापना का प्रश्न है वहाँ तक यह कार्य संगठित रूप से होना अँगरेजी के इस युग में असम्भव है। इसका पूर्ण प्रयोग तो तभी सम्भव होगा जब शिक्षा का माध्यम देशी भाषायें ग्रहण करेंगी और अँगरेजी का स्थान भारतीय राष्ट्रभाषा लेगी। और ऐसा समय तभी उपस्थित होगा जब अपनी सरकार होगी, अपना शासन होगा, अपनी नीति और अपना राज्य होगा। हाँ जहाँ तक देशी भाषाओं के पत्रों में काम करनेवाले श्रमजीवी पत्रकारों की दशा सुधारने तथा उनकी स्थिति को शक्तिशाली बनाने का प्रश्न है वहाँ तक इस कार्य को समाचारपत्र संपादक सम्मेलन को अपने ज़िम्मे लेना चाहिए। किसी भी कार्य की उन्नति उसके कार्यकर्ताओं पर ही निर्भर है। कार्यकर्ताओं की स्थिति में जितना भी सुधार होगा, उनका स्तर जितना ही दृढ़ तथा मज़बूत होगा उतनी उस कार्य में विशेष प्रौढ़ता उत्पन्न होगी और राष्ट्र तथा समाज के लिए कल्याणकारी होगा। क्योंकि अँगरेजी समाचार पत्रों के मुक़ाबिले देशी भाषा के पत्रों का विशेष महत्त्व ही नहीं है बल्कि राष्ट्र के प्रति उनकी ज़िम्मेदारी भी बहुत बड़ी है। पंडित नेहरू ने इसलिए देशी भाषा-भाषी पत्रों तथा पत्रकारों के सम्बन्ध में जो विचार व्यक्त किये हैं, उनका कार्यरूप में परिणत होना ज़रूरी ही नहीं अनिवार्य भी है। क्या अखिल भारतीय समाचारपत्र सम्पादक सम्मेलन के कार्यकर्ता पंडित नेहरू के सुझाव की ओर ध्यान देंगे और देशी भाषा-भाषी पत्रों तथा पत्रकारों की उन्नति में सहायक होंगे? क्योंकि वह युग आनेवाला है, आज नहीं तो कल और कल नहीं तो परसों, जब कि देशी भाषा-भाषी तथा राष्ट्रभाषा के पत्रों का महत्त्वपूर्ण स्थान होगा। इसलिए उस युग के निर्माण की ओर उसे अभी से ध्यान देना चाहिए।

* * *

अन्न का भयंकर संकट

भारत के वाइसराय लार्ड वैवेल आजकल भारतीय नेताओं से इसलिए सम्पर्क स्थापित कर रहे हैं कि भारत में आनेवाले अन्न-संकट और दुर्भिक्ष का संगठित रूप से मुक़ाबला किया जाये। महात्मा गांधी ने इस सम्बन्ध में अपना जो वक्तव्य दिया है उससे यह प्रमाणित है कि वह राष्ट्रीय सरकार की स्थापना और वाइसराय की कौंसिल का पूर्ण भारतीयकरण चाहते हैं। इसमें सन्देह नहीं है कि जहाँ तक भारत की ग़रीबी तथा भोजन-सम्बन्धी कठिनाइयों के हल का प्रश्न है, वहाँ तक वर्तमान शासन सदा असफल रहा है, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हम बंगाल में देख चुके हैं। इसलिए राष्ट्रीय सरकार की स्थापना की आवश्यकता तो सर्वप्रथम है ही, इसके सिवा तत्काल आवश्यकता है वाइसराय की कार्यकारिणी के परिवर्तन की और उस ज़िम्मेदारी को ज़िम्मेदार नेताओं के हाथों में सौंपने की। किन्तु इस वक्त भारत-सरकार को यह निश्चय करना चाहिए कि वह शीघ्र ही उत्पन्न होनेवाली रबी के फ़सल के अन्न को ख़रीद कर संग्रह न करेगी। साथ ही उसे चोर बाज़ारों पर भी पूर्ण रूप से काबू पाना चाहिए जिससे मुनाफ़े के प्रलोभन में अन्न के व्यापारी न तो सौदा कर सकें और न गुप्त रूप से संग्रह कर सकें। जनता को अन्न मिलने में—जितना भी देना निश्चित किया जाय—किसी प्रकार की कठिनाई न उत्पन्न हो। यदि सरकार अभी से इस ओर ध्यान देगी तो सम्भव है भविष्य में आनेवाले संकट में कमी दिखाई दे। इस वक्त आदर्शवाद से ज़्यादा ज़रूरत है कि स्थिति को बेकाबू न होने दिया जाये और जनता को अन्न-प्राप्ति में कठिनाई न हो।

प्रयाग में अखिल भारतीय सम्पादक सम्मेलन के ५वें अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा—"पत्रकार कला की उन्नति के लिए ऐसी संवाद-समितियों का संगठन आवश्यक है जो हिन्दुस्तानी भाषा में समाचार भेजे। इस समय जितनी संवाद-समितियाँ हैं वे सब अँगरेजी में ख़बरें भेजती हैं। फलतः हमारे व्याख्यानों और वक्तव्यों की रिपोर्टें देशी भाषाओं के समाचारपत्रों में ठीक नहीं प्रकाशित हो पातीं क्योंकि हम हिन्दी-उर्दू में बोलते हैं। संवाद-समितियाँ अँगरेजी में उनका अनुवाद करके भेजती हैं और उस अनुवाद का फिर हिन्दी-उर्दू में अनुवाद किया जाता है। इस प्रणाली को खत्म करना आवश्यक है। देशी भाषाओं में प्रकाशित होनेवाले पत्रों का भविष्य बहुत ही आशाजनक और सुन्दर है।"

पंडित जी ने कहा कि "भारतीय समाचारपत्रों को गाँवों की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। ख़बरों को दबाना सर्वथा अनुचित है। विदेशों से समाचार प्राप्त करने के लिए अपनी संवाद-समितियाँ होनी चाहिए। मुख्य राजनीतिक केन्द्रों जैसे लन्दन, मास्को, वाशिंगटन और पेरिस से समाचार प्राप्त करने के लिए अपना स्वतंत्र प्रबन्ध करना चाहिए।

शेष पृष्ठ १७ पर देखिए

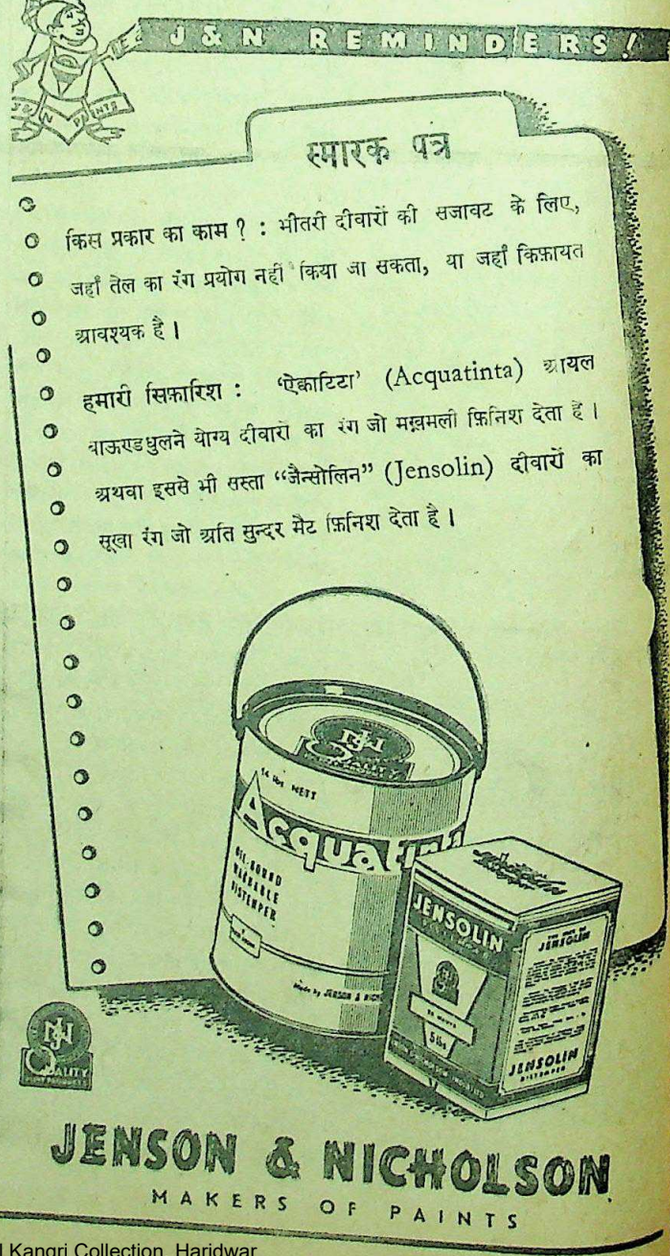

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंध का नया मंत्रिमंडल किधर ?

क्या सरकार की ओर से मुस्लिम लीग मंत्रिमंडल बनाने के लिए पक्षपात किया गया ?

लेखक, श्री आर० के० सिधवा, एम० एल० ए०

प्रान्तीय असेम्बली के चुनाव के बाद सिंध में जनता का मंत्रिमंडल बनने ही वाला था किंतु गवर्नर के नये दृष्टिकोण के अनुसार मुस्लिम लीग का मंत्रिमंडल बनाया गया है। सिंध के प्रसिद्ध राजनीतिक नेता श्री सिधवा ने इस लेख में लीगी मंत्रिमंडल के निर्माण और जनता के मंत्रिमंडल बनने की उपेक्षा करने की प्रवृत्ति का घोर विरोध प्रकट किया है और यह बतलाया है कि सिंध की स्थिति इस समय क्या है और वहाँ किस प्रकार के लोकप्रिय मंत्रिमंडल बनने की आवश्यकता थी ?

राजनीतिक दृष्टिकोण से सिन्ध की कुछ अपनी विशेषताएं हैं। किसी भी समय कोई भी ऐसी बात हो सकती है जिसकी उम्मीद तक नहीं। मेरा ख्याल है कि जब सभी सूबों में चुनाव खत्म हो जायगा तो सिन्ध ही वह पहला सूबा होगा जहाँ कांग्रेस को पूरी सौ की सौ फ़ी सदी कामयाबी मिली है। सभी साधारण सीटों को जिनकी संख्या २० है, कांग्रेस ने जीत लिया है। ज़मींदारों-वाली १ सीट भी कांग्रेस ने ही ले ली और मजदूरों की सीट भी कांग्रेसी भाई को ही मिली है। इस तरह ६० सीटों की सभा में २० कांग्रेस की पक्की हो गई हैं। मुसलमानों की ३५ सीटों में २७ मुस्लिम लीग को, ४ सैयद पार्टीवालों को और ४ नेशलिस्ट मुस्लिम को मिली हैं। चुनाव के बाद एक नेशलिस्ट मुस्लिम लीग की तरफ़ हो गये।

बम्बई सूबे से निकल जाने के बाद सिन्ध को आमद-रफ़्त के तरीक़ों और खेती-बारी के कामों में बड़ा फ़ायदा हुआ। मगर सूबे की जनता के जानोमाल की हिफ़ाजत और बेहबूदगी क़ायम रखने में आशा से भी अधिक नाकामयाबी हुई। बुराइयों की ज्यादती हो रही है, 'ला और आर्डर' कहीं भी नहीं। कभी-कभी डकैती और क़त्ल आमतौर से रोजाना की बात हो जाती है। ऐसी हालत थी जिसमें यहाँ के लोगों ने चुनाव लड़ा। कांग्रेस को यह अच्छी तरह मालूम था कि वह अकेले ही सरकार नहीं बना सकती और इसीलिए जैसे जैसे ही मौका मिला फौरन उसने संयद और नेशलिस्ट मुस्लिम दलों को मिलाया और इस तरह पूरी संख्या २९ हो गई जो असेम्बली में सबसे बड़ी मानी जाती है। दूसरी बड़ी पार्टी २८ की है जो मुस्लिम लीग की है। तीन योरोपियन मेम्बरों ने मिनिस्टरी बनाने में तटस्थ रहना पसन्द किया। इतना सब होते हुए भी हिन्ध के गवर्नर संयुक्त-मंत्रिमंडल के इतने ख़िलाफ़ मालूम होते हैं कि उन्होंने इसको मानने से इनकार कर दिया। साथ ही साथ सभी वैधानिक एवं पार्लियामेंटरी क़ानून-क़ायदों के ख़िलाफ़ सर गुलाम को मिनिस्टरी बनाने के लिए बुलाया। हर एक गवर्नर जो सिन्ध में आता है, सर गुलाम को किसी क़दर व्यक्तिगत रूप से चाहने लगता है। सब बातों की एक बात तो यह है कि हिन्दुस्तान में सिविल सर्विसवाले अँगरेज अफ़सर ज्यादातर शक्तिशाली, दृढ़ निष्पक्ष और सच्ची सरकार चाहते ही नहीं। वे पदों पर नरम आदमी चाहते हैं जिससे अँगरेजी नौकरशाही वैसे ही हुकूमत कर सके जैसे अब तक करती आई है। अँगरेज पदाधिकारी राष्ट्रीय सरकार की आलोचना और उसके शासन की ग़लतियों और बुराइयों की बाल की खाल निकालते ही आते हैं और इसीलिए सूबों में कभी-कभी अवैधानिक तरीक़ों से मिनिस्टरियाँ बनाने की हद तक चले जाते हैं जैसा अभी सिन्ध में हुआ है। इसमें शक नहीं कि सर गुलाम ने गवर्नर को सन्तुष्ट कर सकनेवाली सरकार बना ली है परन्तु उनके इस कार्य को न केवल अल्प-संख्यक दलों ने ही बल्कि बुद्धिमान मुस्लिम बिरादरान ने भी बड़े क्षोभ और असन्तोष की निगाह से देखा है। सूबे में हिफ़ाजत की भावना पैदा करने के उद्देश्य से, जो सरकार का मुख्य कर्त्तव्य होता है, कांग्रेस प्रेसीडेन्ट मौलाना अब्दुल-क़लाम आजाद ने, जब वे करांची में थे, सभी दलों की एक संयुक्त सरकार बनाने की राय दी थी। जो भी हो, अँगरेज गवर्नर ने इसे नहीं चाहा। बल्कि सुना तो यह भी जाता है कि उन्होंने साम्प्रदायिक असंतोष को उत्तेजना दी और इस प्रकार सूबे में अरक्षा के ही भाव को फैलने का ज्यादा मौका दिया। उन्होंने असेम्बली में संयुक्त-पार्टी के विचार का मज़ाक़ उड़ाया है। वह एक दल का शासन जारी रखना चाहते हैं और इस प्रकार यह बिलकुल ही भूल जाते हैं कि 'इन्स्ट्रूमेंट आफ इन्स्ट्रक्शन्स' के अनुसार उन्हें मंत्रियों की कौंसिल में प्रभावपूर्ण अल्पसंख्यक दलों के मेम्बरों को भी शामिल करने की आज्ञा है। इस बात को अच्छी तरह जानते हुए कि सर गुलाम की पार्टी में किसी भी प्रभावपूर्ण अल्प-संख्यक दल का एक भी मेम्बर नहीं है, उन्होंने पार्लियामेन्ट के 'इन्स्ट्रक्शन्स' के विरुद्ध काम किया है। इसके विपरीत संयुक्तपार्टी में सभी मतों और दलों के प्रतिनिधि हैं। अलावा इसके यह भी सुना जाता है कि गवर्नर ने सर गुलाम को उत्साहित किया है कि वे दोनों ग़ैर-मुस्लिम सीटों को भी मुसलमानों को ही दिला दें। इस तरह उन्होंने 'इन्स्ट्रूमेंट आफ़ इन्स्ट्रक्शन्स' की पूरी-पूरी उपेक्षा की अथवा यों समझिए कि उसे जला दिया या फाड़ डाला। 'इन्स्ट्रूमेंट आफ़ इन्स्ट्रक्शन्स' के नवें पैराग्राफ़ में साफ़-साफ़ लिखा है, "गवर्नर साधारणतः अल्पसंख्यकों के न्यायोचित हितों की रक्षा के लिए (जिन्हें उसके रक्षा की आवश्यकता हो) अपने विशेष अधिकारों का प्रयोग करेगा ताकि उन नस्लों और जातियों को जिनके विशेष प्रतिनिधित्व के लिए धारा-सभा में व्यवस्था की गई है, कोई हानि न पहुँचने पाये और उन्हें डरने, उपेक्षित होने या दबाये जाने की सकारण शिकायत न रह जाये।" 'इन्स्ट्रक्शन्स' में कही गई ग़लतियों के हितों का संतुलित ख्याल रखने के बजाय उनके लिए रिजर्व

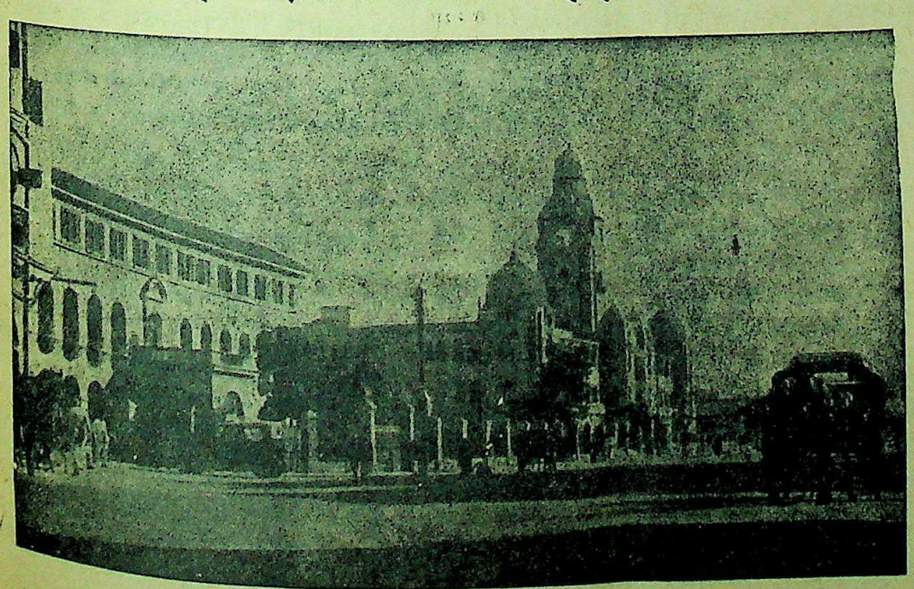

करांची के प्रसिद्ध टाउन हाल का विशाल भवन।

सिंध के राष्ट्रीय मुसलमानों के नेता खान-बहादुर स्वर्गीय मौलाबख्श, जिनके बलिदान के परिणामस्वरूप सिंध प्रतिदिन राष्ट्रवादी बनता जा रहा है।

मंत्रियों के दो पदों को मुसलमानों को दिलाने की कोशिश करके सिन्ध के गवर्नर ने उनके हितों को मानने से जो इनकार जाहिर किया है उससे वह निश्चय ही पथ-भ्रष्ट हो गये हैं। यह एक ऐसा वाक्य है जिसकी सफ़ाई में सिन्ध के गवर्नर से साफ़ और सही तहरीर तलब करने की जरूरत है। भारत-मंत्री को इस मामले में फ़ौरन दिलचस्पी लेनी चाहिए। नये गवर्नर ने, जिन्हें अपना शासन निष्पक्ष और उदार मस्तिष्क होकर 'इन्स्ट्रूमेंट आफ़ इन्स्ट्रक्शन्स, के आधार पर आवश्यतानुसार वैधानिक कार्यों-द्वारा प्रारम्भ करना चाहिए था, ग़ैर-क़ानूनी काम किया। इसलिए मेरे विचार में हिज मैजिस्ट्री सम्राट् के द्वारा उन्हें वापस बुला लेना चाहिए। सम्राट् ने उन्हें कुछ कर्त्तव्यों को सच्चाई के साथ पूरा करने का भार सौंपा है; और जब कोई गवर्नर उनके ख़िलाफ़ काम करता है तो वह एक क्षण के लिए भी अपने पद पर रहने का अधिकारी नहीं है। नया चुनाव हुआ था, नये गवर्नर की नियुक्ति हुई थी और आशा यह की जाती थी कि नये गवर्नर महोदय पक्षपात-रहित होकर सूबे की भलाई और फ़ायदा करनेवाले कार्यों के साथ अपना शासन शुरू करेंगे। उन्होंने ग़लत क़दम उठाया है और इस सूबे की लाखों जनता के दिल को चोट पहुँचाई है। किसी सूबे के अध्यक्ष से, जिसने पहला ही क़दम ग़ैर-क़ानूनी उठाया, यह आशा नहीं की जा सकती कि वह सूबे की भलाई के लिए भविष्य में कुछ कर सकेगा ? इसलिए वह, जितनी जल्दी वापस बुला लिये जायें, सूबे और सूबे की जनता के लिए उतना ही अच्छा है।

अपनी बात

मनुष्यों के चरित्र में जो दुर्बलताएँ होती हैं उन्हें दूर करके वह किस प्रकार जीवन को उन्नत बना सकता है, यही बात इस पुस्तक में ओजपूर्ण भाषा में, निजी अनुभव के आधार पर, लेखक ने लिखी है। यह पुस्तक प्रत्येक युवक को पढ़नी चाहिए। मूल्य ।।।) बारह आने।

मैनेजर बुकडिपो
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास-परिहास

भंग का तरंग

गेहूँ अब एक समय एक छटाँक खाने की आज्ञा सरकार बहादुर की ओर से हुई है। सरकार को इस पर पुनः विचार करना चाहिए। गेहूँ भोजन की वस्तु नहीं है। यह तो टानिक है। एक माशा सबेरे, एक माशा शाम को बस इतना ही बहुत होगा।

* * *

वेद में लिखा है कि गेहूँ केवल सफ़ेद चमड़ेवालों के खाने की चीज है। रंगीन चमड़ेवालों को इतना अधिकार दिया जाता है कि वह इसे बो सकें। इसलिए इसमें भी सन्देह है कि भारतवासियों को इसे खाने का अधिकार है कि नहीं? आर्य-समाज के धुरंधर विद्वान् इस पर प्रकाश डाल सकते हैं।

* * *

गेहूँ के संबंध में लोग जलूस निकाल रहे हैं और प्रस्ताव पास कर रहे हैं। सर जे० पी० श्रीवास्तव के चरणों पर सिर रखना चाहिए, बड़े लाट के चमचमाते बूट की नोक को चूमना चाहिए, तब कहीं गेहूँ मिलेगा।

* * *

सिंध के गवर्नर महोदय ने लीगी मंत्रि-मंडल ही बनाना उचित समझा। इससे नाराज होने की बात नहीं है। लीग उन्हें मानती है तो वह लीग को क्यों न मानें?

* * *

नवाबजादा लियाकत अली का कहना ठीक था कि हम मिनिस्टरी बनाना नहीं चाहते। मगर जब मूडी साहब इतना जोर दे रहे हैं तब बेचारे क्या करते? सती स्त्री भी हो किन्तु बार बार कोई रसिक उससे प्रेम-प्रस्ताव करे तो बेचारी क्या करेगी?

* * *

प्रयाग के गवर्नमेंट प्रेसवालों ने कानपुर से निब का पार्सल मँगवाया और बदले में ३६ बोतल हारलिक्स का दूध आ गया। इस भाग्य का कहीं ठिकाना है? शायद भेजनेवालों का यह मतलब रहा हो कि दिमाग में तुम्हारे कुछ है ही नहीं तो लिखोगे क्या? थोड़ा दूध पी लो?

* * *

ऐसी ही घटना एक बार और हुई थी। एक सज्जन अपनी ससुराल अपनी श्रीमती जी को विदा कराने गये। विदा कराके स्टेशन पर आये और रेल के डब्बे में जो घूंघट खुला तो पता चला कि श्रीमती नहीं हैं उनकी नवोढ़ा साली साहबा हैं।

* * *

मद्रास में अकाल की जो स्थिति है उसका अध्ययन बड़े लाट महोदय कर रहे हैं। अध्ययन में यदि कठिनाई हो तो किसी को प्राइवेट ट्यूटर रख लें। हमारे खाद्य-सदस्य कैसे मास्टर होंगे?

* * *

सोरेनसेन का कहना है धर्म बदलने से मुसलमान अभारतीय नहीं हो सकते। पता नहीं किन्तु एक घटना मुझे मालूम है। इसी लड़ाई में एक खच्चर बनारस से अरब गया वह अरबी घोड़ा हो गया।

* * *

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने ताकीद की है कि सरकारी कर्मचारी चुनाव में हस्तक्षेप न करें। सरकारी कर्मचारियों की वजह से यदि किसी उमीदवार को चार-पाँच वोट मिल जायें तो आपको क्यों नागवार मालूम पड़ता है?

* * *

खबर है कि एक रियासत में स्त्रियों को अनाज के बदले घूँसे मिल रहे हैं। राज्य पुराना वीर घराना है। वहाँ राज के कर्मचारी इस समय बताइए किस पर वीरता दिखायें जो सामने होगा उसी पर न?

* * *

भारत-सरकार ने निश्चय किया है कि चीनी पर खोज करने के लिए सवा करोड़ रुपये खर्च किया जायेगा। इससे अच्छा तो यही होता कि इतने की चीनी देश में बँटवा दी जाती।

——अगड़धत्त शर्मा

छोटी दुनिया में पेट करो अब छोटा

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

है नई रोशनी सभी चीज का कोटा!
बीता युग जब था पेट बना तहखाना,
आधी छटाँक से अधिक न तुम अब खाना,
घी को सपने में देख-देख सुख पाना,
गेहूँ की ओर न आँख कभी ले जाना,
अब नहीं मिलेगा शरबत दो-दो लोटा।

इस युग में फल चाकू में ही पाते हैं,
चावल रत्ती में ही जब दिखलाते हैं,
मक्खन ब्रजभाषा की कविता से आता,
गेहूँ खेती की पुस्तक में सरसाता,
छोटी दुनिया में पेट करो तुम छोटा।

उत्तमोत्तम उपन्यास और कहानी-पुस्तकें

प्रतिशोध—लेखक, पंडित उमेशचन्द्र मिश्र। इस उपन्यास में प्रोफ़ेसर भारद्वाज नामक एक वैज्ञानिक राष्ट्रयंत्रकारों की रहस्यपूर्ण कार्यवाहियों का वर्णन बड़े रोचक ढंग से किया गया है। इसे पढ़ते-पढ़ते आप ऐसे तल्लीन हो जायेंगे कि बिना समाप्त किये पुस्तक हाथ से न छूटेगी। मूल्य १) एक रुपया।

द्वन्द्व—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह श्रीमती सरोजकुमारी देवी नामक बंगला की एक प्रसिद्ध उपन्यास-लेखिका की इसी नाम की रचना का हिन्दी-अनुवाद है। इसमें मानव हृदय के अन्तर्द्वन्द्व तथा उसके कारण उत्पन्न होनेवाली अशान्ति का बहुत ही उत्तमतापूर्वक विश्लेषण किया गया है। यह उपन्यास आदि से अन्त तक समस्यामय घटनाओं से परिपूर्ण है और इसका कोई भी ऐसा अंश नहीं है जिसमें सरसता का अभाव हो। मूल्य २॥=)

जीवन-क्रान्ति—लेखक, पंडित गौरीशंकर मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी० अनुभवी तथा विद्वान लेखक ने इस उपन्यास में सेठ-साहूकारों तथा बड़े आदमी कहे जानेवाले व्यक्तियों की नर-पिशाचिता, पुलिस तथा अन्य अधिकारियों के धरकरडा और धन के लोभ से निरपराधों को अपराधी ठहराकर कारागार की नारकीय यातना भोगने के लिए विवश करने के माया-जाल का बहुत ही आकर्षक शैली में वर्णन किया है। उपन्यास का एक-एक पंक्ति ओजपूर्ण और हृदय में घर कर लेनेवाली है। मूल्य २॥=) ।

स्काटलैंड-यार्ड की जासूस स्त्री—यह पुस्तक लेडी मॉली की ६ जासूसी कहानियों का संग्रह है। इस पुस्तक की एक-एक कहानी इतना मनोरंजक और कौतूहलवर्द्धक है कि आप इस पुस्तक को पूरा पढ़े बिना चैन नहीं पा सकते। लेडी मॉली के जितने कहानी-संग्रह अब तक प्रकाशित हुए हैं, यह उन सबसे अच्छा है। मूल्य ॥।–)।

संसार की प्रसिद्ध कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत शमशेर बहादुरसिंह, बी० ए०। इस पुस्तक में योरप के संसार-प्रसिद्ध कलाकारों की चुनी हुई कुछ कहानियाँ संगृहीत की गई हैं। ये सभी कहानियाँ बहुत ही कलापूर्ण और मनोरंजक हैं। यदि आपको योरप के कथा-साहित्य की बानगी लेनी हो, तो इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य १) ।

मापाँसा की चुनी हुई कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत गोपीनाथ जी कानूनगो। इस पुस्तक में मापाँसा की चुनी हुई ग्यारह कहानियों का संग्रह किया गया है। मोपाँसा की रचनाओं की बानगी लेने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य १) ।

ब्रजनाथ का विवाह—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। आश्चर्यमयी घटनाओं से परिपूर्ण यह सामाजिक उपन्यास पढ़ने में ऐसा रोचक है कि एक बार आरम्भ करने पर फिर बिना समाप्त किये चैन नहीं पड़ता। मूल्य १।–)

आनन्दमठ—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। मुसलमानों और अंगरेज़ों को हिन्दुस्तान से बाहर करने के लिए, बंगाल में वैष्णवों ने जो विद्रोह किया था, उसी का इस उपन्यास में उपन्यास-सम्राट् श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने बड़ी खूबी से वर्णन किया है। ऐसा सुन्दर चित्रण इस उपन्यास में है कि पढ़कर मातृ-भूमि के लिए दिल फड़क उठता है। मूल्य १।–) ।

रजनी—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। यह उपन्यास-सम्राट श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का एक करुणापूर्ण अद्वितीय उपन्यास है। चमत्कारपूर्ण मनोवैज्ञानिक कहानी इस उपन्यास की एक ऐसी खूबी है कि जिसके कारण पुस्तक पढ़ने का मोह संवरण नहीं किया जा सकता। मूल्य ॥=)।

श्रीकान्त—(प्रथम और द्वितीय भाग)—अनुवादक, श्री रूपनारायण पाण्डेय। 'श्रीकान्त' शरद बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना गया है। इसमें शरद बाबू की अमर लेखनी ने उनके कलाकार का मजा और सधा हुआ रूप चित्रित किया है, जो अत्यन्त मनोरम है। प्रत्येक भाग का मूल्य २) ।

ब्राह्मण की बेटी—मूल लेखक, श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक, पंडित रूपनारायण पाण्डेय। शरद् बाबू भारत के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक माने जाते हैं। उनका यह उपन्यास लोक-प्रियता और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मूल्य सजिल्द पुस्तक का १।–) ।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीन की उलझी राजनीति

क्या एशियाई राष्ट्रों में स्थायी शांति स्थापित होगी ?

लेखक, श्री चन्द्रकुमार, बी० ए०

चीन की राजनीति का एक अजीब इतिहास रहा है। संघर्ष, पारस्परिक युद्ध और अशांति का वहाँ वर्षों से बोलबाला है। पहले वह जापान से लड़ता रहा किन्तु बाद में गृह-युद्ध ने उसे आ घेरा। अब इधर पता लगा है कि वहाँ शांति-स्थापना का प्रयत्न हो रहा है। इस लेख में चीन की आज की राजनीति पर सुन्दर प्रकाश डाला गया है, जो जानकारी से पूर्ण और ज्ञातव्य है।

स्वतंत्र चीन के लड़ाकू जनरल च्यांग काई शेक।

कुछ महीनों से क़रीब-क़रीब रोज ही हम अखबारों में चीन के गृहयुद्ध, भयंकर मारकाट और कोमिन्तांग और कम्युनिस्ट फ़ौजों के आपसी संघर्ष के समाचार पढ़ते रहे हैं। पिछले आठ सालों तक चीन जापान के खिलाफ़, घर में अशान्ति, फूट और सामरिक साधनों के अभाव के बावजूद भी अनवरत युद्ध करता रहा है। इस बीच में उसकी अनेक प्रकार से धन-जन की हानि हुई और बहुत-सी भूमि भी हाथ से निकल गई। कभी-कभी तो ऐसा भी लगता था कि गौरवपूर्ण अतीत, महान् सभ्यता और संस्कृति का झंडा ऊँचा रखने-वाला विशाल चीन, कुछ लुटेरों की नोच-खसोट से बिलकुल तहस-नहस ही हो जायेगा। अपने जनरलों की उदासीनता, रहनुमाओं की अल्पदृष्टि, स्वार्थ-परायणता और अनेक पूंजीपतियों की जापान की खुली मदद के रहने पर भी, जनवादी आदर्शों की पूंजी का चीनी जनता अपने राष्ट्र की, अपनी उच्च संस्कृति की, अपनी भूमि की रक्षा के लिए प्राणपण से जुटी ही रही। जनता में साम्राज्य-विरोधी और जापान-विरोधी भावना की उग्रता से पूंजीवादी स्वार्थियों के कुत्सित कारनामों का पर्दाफाश हो गया, रहनुमाओं और जनरलों को अपनी नीति बदलनी पड़ी और नौ साल के विध्वंसक युद्ध और रक्त-पात के बाद चीनी जनता ने जापानी दरिन्दों को मार भगाया। चीन भारत का न केवल पड़ोसी है वरन् भारत और चीन का पुराना सांस्कृतिक सम्बन्ध है। हमारा चीन के स्वाधीनता-आन्दोलन के प्रति उत्सुक और सहानुभूतिपूर्ण होना स्वाभाविक ही है—जब हम स्वयं एक दूसरे साम्राज्य-वादी के चंगुल से छुटकारा पाने की जी-तोड़ कोशिश कर रहे हैं, तो चीन में जनवादी परम्परा के जन्म, विकास और उसके स्थिर रखने के लिए किये जानेवाले संघर्ष के अध्ययन से, हमें विश्वास है, भारतीय स्वाधीनता संग्राम के लिए भी प्रेरणा मिलेगी।

लेकिन चीन की परिस्थिति की सही जानकारी हासिल करनेवाले जिज्ञासु के सामने अनेक कठिनाइयां आती हैं। किसी देश की अन्दरूनी हालत का पता लगाने के लिए दो ही उपयुक्त साधन होते हैं। या तो स्वयं उस देश की भाषा से अवगत होना या किसी निष्पक्ष लेखक की कृतियाँ प्राप्त करना जो उसने वहाँ की परिस्थिति का अध्ययन करने के बाद लिखी हों। चीन के विषय में दोनों चीजों का अभाव है। चीनी भाषा जरा कठिन है उसमें पारंगत होने में काफ़ी समय लगता है। दूसरे, चीन की परिस्थिति पर अँगरेजी या हिन्दी में अधिकारी विद्वानों-द्वारा बहुत कम पुस्तकें लिखी गई हैं। इसलिए रोज़-बरोज़ के अखबारी समाचारों और घटनाओं का आधार ढूँढने में हमें बड़ी कठिनाई पड़ती है—क्योंकि विदेशी ख़बरों के एक-मात्र प्रसारक, रायटर, ग्लोब और यूनाइटेड प्रेस अमेरिका के विवरणों में साम्राज्यवादी स्वार्थ का कहाँ तक पुट दिया गया है यह पता लगाना जरा मुश्किल होता है। सौभाग्य से हमारी राष्ट्रीय कांग्रेस ने समय-समय पर चीन की सहायता के लिए जो प्रयत्न किये हैं, उनसे पंडित जवाहरलाल नेहरू की चीन-यात्रा के विवरणों से हमें कुछ सचाई का पता मिल जाता है। कांग्रेस ने डाक्टर अटल के नेतृत्व में जापान से संघर्षरत चीन की मदद के लिए एक डाक्टरी दल भेजा था उसने दो-तीन साल तक रहकर वहाँ स्मरणीय सेवायें की थीं। उस दल के एक सदस्य डाक्टर बसु ने अपने कुछ संस्मरण लिखे हैं। इसके अतिरिक्त कुछ अँगरेज और अमरीकी लेखक हैं जैसे पर्लबक, एडगरस्नो, निमवेल्स, एगनेस स्मेडले, गन्थर इत्यादि जिनकी जनवादी आदर्शों के प्रति आस्था के सम्बन्ध में किसी को शिकायत नहीं हो सकती, जिनकी रचनाओं के पढ़ने के बाद हमारे दिमाग़ में चीन की सही तसवीर आ सकती है।

चीन में जनवादी आदर्शों का जन्म

१९वीं शताब्दी में योरपीय शक्तियाँ जब अफ़्रीका और पूर्व के दूसरे देशों में साम्राज्य बना रही थीं। उस समय अतीत के गौरवशील चीन का खण्डहर-मात्र शेष रह गया था। वहाँ एक अशक्त सम्राट् शासन करता था जो सामन्तों और सरदारों के हाथ की कठपुतली था। योरपीय साम्राज्यवाद की गृद्ध दृष्टि चीन पर भी पड़ी लेकिन उस समय चीन को समूचा हड़प करने के बजाय उसे अपने प्रभाव क्षेत्रों में बाँट लिया गया और चीन के आर्थिक एवं राजनैतिक ढाँचे को अपने क़ब्जे में करके चीनी सम्राट् को बने रहने दिया गया।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रधान जनरल माओ-ते-तुंग।

लेकिन चीन के इस सामन्तशाही अर्द्ध-उपनिवेशी निज़ाम के निकम्मे शासन के फलस्वरूप राष्ट्रीय भावनाओं का उदय होने लगा और १९११ में सम्राट् को गद्दी से उतार कर चीन को प्रजातन्त्र घोषित कर दिया गया। प्रथम महायुद्ध के समय यह प्रजातन्त्र अन्दरूनी कमजोरियों के कारण समाप्त हो गया लेकिन युद्धोत्तर काल में चीन के राष्ट्रीय आन्दोलन के पिता सनयात सेन ने चीन की अन्य राष्ट्रीय जमातों के साथ एकता की कोशिश की और उन्होंने हाल में बनी कम्युनिस्ट पार्टी के सहयोग से चीन को पुनः प्रजातन्त्र बनाने की ठानी। लेकिन विदेशी शक्तियाँ चीन को एक बलवान् राष्ट्र के रूप में नहीं देख सकती थीं इसलिए उन्होंने सनयात सेन के प्रयत्नों में अड़ंगे लगाने शुरू किये। विदेशी हुकूमतों में केवल सद्यप्रतिष्ठित, लेनिन की सोवियत सरकार ही थी जिसने सनयात सेन की मदद की। १९२५ में महान् सनयात सेन की मृत्यु हो जाने से उनकी पार्टी कोमिन्तांग का नेतृत्व च्यांगकाई शेक के हाथों में चला गया।

गृह-युद्ध-काल

१९२७ में च्यांग ने कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत रूस से नाता तोड़ लिया और देशी पूंजीपतियों और विदेशी साम्राज्य-वादियों के उकसाने पर च्यांग ने कम्युनिस्टों का कत्लेआम शुरू किया। इस समय हज़ारों कम्युनिस्ट मारे गये यहाँ तक कि सोवियत सरकार के प्रतिनिधि भी पुलिस द्वारा सताये गये। यह घरेलू लड़ाई दस वर्षों तक चली। जिन क्षेत्रों में कम्युनिस्ट काम करते थे और जहाँ उनका प्रभाव था, अपनी हिफ़ाजत के लिए उन हिस्सों में उन्होंने गढ़बन्दी की और इस तरह क्यांगसी-फ़्यूकिन सीमा का क्षेत्र उनके क़ब्जे में आ गया। लेकिन यह क्षेत्र उद्योग-धन्धों और प्रकृति सम्पत्ति की दृष्टि से बहुत अशक्त था और च्यांग की केन्द्रीय सरकार के पास अधिक शक्ति के साथ विदेशी सहायता भी थी इसलिए इस क्षेत्र को छोड़कर कम्युनिस्टों को उत्तर की ओर भागना पड़ा और उन्होंने शेन्सी-कान्सू-निंघसिया सीमा क्षेत्रों को बसाया। कम्युनिस्टों की यह यात्रा चीनी इतिहास में 'लांग मार्च' (दीर्घयात्रा) के नाम से मशहूर है। यहाँ भी च्यांग को केन्द्रीय सरकार की फ़ौजें हमेशा घेरे रहती थीं और संघर्ष होता रहता था। चीन की अन्दरूनी कमजोरी और कलह का पता पाकर जापान ने मंचूरिया पर हमला कर दिया। इसी समय कैण्टन के विद्यार्थियों ने गृहयुद्ध खत्म कर दुश्मन के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा बनाने के लिए इतिहास-प्रसिद्ध प्रदर्शन किया लेकिन इसका कुछ भी असर सरकार के ऊपर न पड़ा। उलटे उन्होंने विद्यार्थियों के जुलूस पर गोलियाँ चलाईं और उनके आन्दोलन को दबाने की कोशिश की। १९३२ में जापान ने शंघाई पर हमला किया। उस समय जेनरल चाय की १९वीं पलटन ने जापानियों को मार भगाया तो चाँय को हुक्म दिया गया कि उत्तरी सूबों में जाकर कम्युनिस्टों से लड़ो।

१९३६ में सियान की घटना घटी। च्यांग-काई-शेक की गृहकलह और जापान-पक्षीय नीति से तंग आ मार्शल यांग-सू-लियांग के सिपाहियों ने उन्हें बन्दी बना लिया। कम्युनिस्टों के बीच में पड़ने और जापान का मुक़ाबला करने के बाद वह छोड़े गये।

चीन-जापान-युद्ध

१९३७ में गृहयुद्ध के सब बन्दी छोड़ दिये गये और जापान के खिलाफ़ पूर्ण रूप से युद्ध की घोषणा कर दी गई और ऐसा लगा कि अब सब ठीक हो जायेगा। इसमें कोई शक़ नहीं कि मार्शल च्यांग-काई-शेक में जापान की फ़ौजी शाही के विरुद्ध तीव्र घृणा थी लेकिन उनकी कम्युनिस्ट-विरोधी भावना भी कम उग्र नहीं थी। इसलिए जापान के खिलाफ़ युद्ध-उद्योग में अपेक्षित तीव्रता कभी नहीं आ पाई। गृह-युद्ध के इस आठ साल में कोमिन्तांग और कम्युनिस्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों पार्टियों के सम्बन्ध अत्यन्त कटु हो गये थे। जापानी युद्ध के आरम्भिक वर्षों में जापान चीन में तेजी से घुसता चला आ रहा था। चीन में राष्ट्रीय एकता का अभाव था, चीनी फ़ौजों में सामरिक शिक्षा और साधनों की कमी थी और चीनी पूंजीपति खुलेआम जापानियों से लेन-देन का व्यापार करते थे। आश्चर्य तो यह था कि विदेशी सरकारों द्वारा भेजी गई सामरिक और खाद्य पदार्थों की सहायता इन पूंजीपतियों-द्वारा जापानियों के हाथ बेच दी जाती थी और केन्द्रीय सरकार इनका कुछ नहीं कर पाती थी। कहना तो यह चाहिए कि केन्द्रीय सरकार की नौकरशाही व्यवस्था में इन्हीं व्यापारियों का ज्यादा प्रभाव था। परिणाम-स्वरूप चीनी जनता और सिपाही शस्त्राभाव में न केवल जापानी गोलियों-द्वारा अधिकाधिक संख्या में भूने जाने लगे बल्कि खानें और जरूरी सामानों की कमी के कारण लाखों की तादाद में बिना मौत भूखों मरने लगे।

कम्युनिस्ट शासित प्रान्तों में सहयोग के आधार पर आर्थिक व्यवस्था का निर्माण होने के कारण जनता को उतना कष्ट नहीं था लेकिन कम्युनिस्ट सिपाहियों को दो-दो दुश्मनों का सामना करना पड़ता था। एक तो चीनी भूमि में घुसते आते जापानियों का सामना करना और दूसरे च्यांग-काई-शेक-द्वारा तैनात की गई केन्द्रीय सरकार की सेना से मुक़ाबला करना। च्यांग-काई-शेक ने, जापानी मोर्चे से हटाकर क़रीब पाँच लाख सेना कम्युनिस्ट प्रान्तों की सीमा पर जमा कर रखी थी कि वे केन्द्रीय सरकार पर हमला न कर सकें। कम्युनिस्टों को केन्द्रीय सरकार की तरह, न देश की राष्ट्रीय सम्पत्ति से, न विदेशी शक्तियों से ही, कुछ सहायता मिल पाती थी। सोवियत रूस से भी नहीं। अमेरिका, ब्रिटेन आदि द्वारा भेजी सारी सहायता केन्द्रीय सरकार, कम्युनिस्टों के खिलाफ़ लड़ने के काम में लाती थी। लेकिन कम्युनिस्टों ने विदेशी हस्तक्षेप की कभी भी ख्वाहिश नहीं की। कम्युनिस्ट सदा अपने देश की जनता की ताक़त पर निर्भर रहते हैं और चीन के कम्युनिस्टों को भी चीनी जनता की ताक़त पर भरोसा था।

आधुनिक समर-कला में विशेष रूप से दक्ष, विध्वंसकारी अनेक शस्त्रास्त्रों से सम्पन्न जापान ऐसे शत्रु के मुक़ाबले में चीन का इतने लम्बे अर्से तक टिका रहना आश्चर्य की भाँति है जब कि ब्रिटिश साम्राज्य-जैसी शक्तिशाली सरकार मलाया और बर्मा को जापानी हमलों की भीषणता के कारण छोड़ देना पड़ा था। जापान की इस असफलता के कई कारण थे। यह तो सच है कि जापान को चीनी भूमि में घुसने का निमंत्रण देने के लिए चीन की आन्तरिक फूट और अव्यवस्था और अनेक चीनी नेताओं और पूंजीपतियों की जापान के प्रति सहानुभूति भावना ही जिम्मेदार है क्योंकि जापान-नियंत्रित कठपुतली नान्किंग सरकार के पदाधिकारी कोमिन्तांग पार्टी ही के भागे हुए बहुत से नेता थे, लेकिन चीन देश का विस्तार चीनी जनता की उत्कट जापान-विरोधी भावना और कम्युनिस्ट पार्टी-डेमोक्रेटिक लीग और चीनी विद्यार्थियों के प्रयत्नों के कारण जापान की सामरिक विजय कुछ खास महत्त्व की नहीं होती थी।

पूर्व में जापान-द्वारा भूमि हस्तगत करने के बाद शहर के शहर उठकर पश्चिम की ओर चले जाते थे। चलते-फिरते विश्वविद्यालय क़ायम हो गये थे। प्रोफ़ेसर और विद्यार्थी, लोगों को शिक्षा देते जापानियों से लड़ने के लिए, लड़ाई के सामान तैयार करते, जनता में जापानी सेना का मुक़ाबला करने के लिए छापेमारी शिक्षा देते और उनका मनोबल बढ़ाते। इन्हीं दिनों हमारी राष्ट्रीय कांग्रेस ने जो डाक्टरी दल भेजा था वह चीन गया था। पहले तो वह मार्शल च्यांग की केन्द्रीय सरकार की फ़ौजों के साथ रहा लेकिन उसे वहाँ जीवन नहीं मालूम पड़ा इसलिए वह आठवीं सेना के नाम से विख्यात कम्युनिस्ट फ़ौज के साथ काम करने लगा और उसके एक डाक्टर कोटनीस चीनियों की सेवा करते हुए खेत हुए। बम्बई के श्री अब्बास ने अपनी पुस्तक 'एण्डवन डिडनाट कमबैक' में इस आठवीं सेना की चीन-रक्षा में मदद के ऊपर काफ़ी प्रकाश डाला है।

जापानी हार और सोवियत-चीन-संधि

पश्चिमी मोर्चे पर जर्मनी की करारी हार और जापानी-युद्ध में सोवियत रूस और एटमबम के प्रवेश से जापान ने हथियार डाल दिये। इसलिए चीन में भी जापानी आत्म-समर्पण करने लगे। अब झगड़ा यह उठा कि जापानियों से युद्धरत कम्युनिस्ट फ़ौजों को भी जापानियों का आत्म-समर्पण ग्रहण करने का अधिकार है कि नहीं। और इस तरह एक अघोषित गृह-युद्ध आरम्भ हो गया। इसी बीच चीन और सोवियत में एक सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर हुए जिसमें तय हुआ कि जापानी फ़ौजी शाही के खात्मे और एक दूसरे के दुश्मनों से दोनों मिलकर लड़ेंगे। दूसरे चीन की औद्योगिक उन्नति में ३० साल तक सोवियत रूस सहायता देगा। तीसरे चीन ने 'बाहरी मंगोलिया की स्वतन्त्रता स्वीकार की और सोवियत ने मंचूरिया पर चीनी सरकार के अधिकार को स्वीकार किया। इस सन्धि के प्रकाशन के बाद 'रायटर' ने और उसके भारतीय भाई-बन्दों ने कहना शुरू किया कि स्टालिन ने चीन के कम्युनिस्टों को मँझधार में छोड़ दिया, अब वे न घर के रहे न घाट के।' सच बात तो यह है, कि साम्राज्यवादी प्रचारक और कम्युनिस्ट-विरोधी जो यह कहते हैं कि कम्युनिस्ट रूस के दलाल हैं, यह सन्धि उनकी आँखें खोल देने के लिए काफ़ी है और उस सन्धि का परिणाम क्या निकला यह भी जान लेना चाहिए। च्यांग-काई-शेक को कम्युनिस्ट नेता माओ-त्से-तुंग को समझौते के लिए बुलाना पड़ा। अमेरिका के रुख के कारण चीनी नेताओं को फिर भी कम्युनिस्टों को खत्म करने का भरोसा रहा—इसलिए उसके बाद भी मार-काट के समाचार आते रहे। लेकिन जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है कि चीन के स्वाधीनता-संग्राम में चीनी विद्यार्थियों का बहुत हाथ है—चीन के नव-निर्माण में इस आपसी लड़ाई से बड़ी बाधा पड़ रही है यह देखकर उन्होंने देश में एकता की अपील के लिए फिर बड़ा भारी प्रदर्शन किया। च्यांग-काई-शेक की फ़ौज ने यह समझते हुए कि पहले की तरह इस बार भी च्यांग विद्यार्थी आन्दोलन को दबाना पसन्द करेंगे—उसने विद्यार्थियों पर गोली चलाई। लेकिन जनमत और विद्यार्थी आन्दोलन की प्रबलता का आभास मिल चुका था इसलिए उसने इस गोलीकाण्ड को अनुचित ठहराया और उस फ़ौज के कमाण्डर को दण्ड दिया, और मजबूर होकर एकता के प्रयत्न जारी रखने पड़े। इस तरह चीनी विद्यार्थियों न केवल चीनी जनता के सामने आदर्श रखा वरन् दुनिया के नवयुवकों को रास्ता बताया कि यदि देश के नेता आपस में मेल करने को तैयार नहीं हैं तो यह काम देश के तरुणों को करना चाहिए—विद्यार्थी, नेताओं के व्यक्तिगत विद्वेष और दलगत स्वार्थों को देश की उन्नति में बाधक होना नहीं देख सकते।

अब समाचार मिला है कि चीन के कोमिन्तांग पार्टी के और कम्युनिस्ट पार्टी के एकता का आधार मिल गया है और ऐसा यह निश्चित-सा मालूम होता है कि इस एकता से एक नये जनवादी चीन का उदय होगा और जो एशिया के अन्य गुलाम राष्ट्रों में फैली हुई फूट को खत्म करने का उदाहरण बनेगा। इस तरह चीन और अन्य एशियाई मुल्क कन्धे से कन्धा मिलाकर एशिया में स्थायी शान्ति क़ायम कर एक नए आज़ाद, सुखी एशिया का निर्माण करेंगे।

विवाह के अवसर पर

साधारण उबटन से अब काम नहीं चलता

गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड **रूप विलास** मंगाइए

शादी के पहले मित्रों को चाहिए कि वर-वधू की सुन्दरता बढ़ाने के लिए रूप विलास का डिब्बा मँगाकर आज ही भेंट करें ताकि उन्हें शादी पर उदास होना न पड़े। उनकी भद्दे पुराने चमड़े से छिपी हुई सौंदर्यता निखर कर असली सुन्दरता चमक आये। इसके लगाने से मुहासा, झाँई, चेचक, काले-काले दाग़, फुन्सी, खुश्की, बदरौनकी, झुर्रियाँ वग़ैरह जल्द आराम होती हैं। थोड़े दिनों के लगाने से मलिन मुख चमकदार होकर चेहरे पर गुलाबी छटा दमकने लगती है। यदि आप अपना चेहरा खूबसूरत बनाना चाहते हैं तो २५ वर्ष का प्रचलित जगत्-प्रसिद्ध रूप विलास कम्पनी का रूप विलास खरीदने में देरी न कीजिएगा। यह स्त्री-पुरुष दोनों का दिल खुश करनेवाला है। इसकी खुशबू भी इतनी प्यारी है कि तबियत को मस्त करती है। क़ीमत एक डिब्बा २) तीन डिब्बा का ५॥) डाक-खर्च माफ। पैकिट खर्च, मनीआर्डर फीस अलग।

रूप विलास कम्पनी नं० ४८१ धनकुट्टी कानपुर।

इतनी जल्दी थक गये ???

थकन तथा हतोत्साह का अन्त कर आनन्दमय एवम् उत्साहपूर्ण जीवन प्राप्त करने के लिए

वीरोजेन

VIROGEN

शारीरिक तन्द्रा को दूर कर स्वास्थ्य तथा स्फूर्ति को बढ़ाता है

वी रो जे न वी रो जे

VIROGEN

शारीरिक तथा मानसिक कमजोरी अथवा इस प्रकार की अन्य बीमारियों के लिए बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुआ है।

यदि आपको बाजार में न मिले तो लिखें :—

बेंगाल इम्युनिटि कम्पनी, लि०, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

कोइली

लेखक, श्री ओंकारनाथ शरद

युग ही ऐसा है, निश्छल ईमानदारी भी प्रायः खा जानेवाली होती है। आप लाख दूध के धोये हों किन्तु किसी की निगाह और जीभ पर किसी का अधिकार नहीं। श्रीनाथ का भी कुछ ऐसा ही दुर्भाग्य था। कोइली उसके यहाँ काम करती थी किन्तु वह और कोइली अपवाद के शिकार से न बच सके। युवक लेखक ने आज के मानव-जीवन का इस कहानी में बड़ा सुन्दर और मर्म स्पर्शी चित्र अंकित किया है, जिसका हृदय पर प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता!

वह गाँव की ओर चला जा रहा था।

आज पूरे दस महीने बाद श्रीनाथ अपनी चिर-परिचित सड़क पर चल रहा था। पूरे दस महीने बाद। दस महीने का कारावास श्रीनाथ ने एक-एक दिन गिनकर काटे थे।

यह कारावास! दस महीने!! यह गाँव, कोइली!! सब कुछ श्रीनाथ को याद आने लगे।

यह धान की क्यारियाँ। आगे वह इमली का विशाल वृक्ष! वृक्ष के नीचे स्थापित शिव जी का थाला। यह कच्ची सड़क, दोनों ओर छायादम् नीम और जामुन के वृक्ष। सड़क पर बनी यह बैल-गाड़ियों की लीकें। बैलों के खुरों के निशान। यह सब कुछ उसे याद आने लगे। थका हुआ श्रीनाथ आगे बढ़ रहा था। आगे वह नदी मिलेगी और उसके पार बस कोइली का गाँव।

श्रीनाथ को याद आया। पूरे साल भर हुए जब वह पहले-पहल इस गाँव में आया था, गाँव के पार जो जंगल है वहीं लकड़ी की ठीकेदारी करने। जंगल में जानवर रहते थे और वहाँ वह अकेले नहीं रह सकता था। इसलिए गाँव में उसने रहने का बन्दोबस्त किया था।

और फिर जब उसे रहते दो महीने हो गए थे तो एक दिन जब सुबह वह टहलने जा रहा था तो उस उत्तरवाले नाले के किनारे उसे खेलावन बुढ़ऊ मिल गये थे। उनकी उस समय की बातें श्रीनाथ कभी नहीं भूल सकता।

"तुम अपने हो भैया! सदा गाँववालों की तुमने भलाई की है, इसी से कहता हूँ। भैया बुरा न मानना।"

"कहो, कहो। बुढ़ऊ क्या बात है?" श्रीनाथ ने पूछा।

"कुछ नहीं भैया। आजकल कलियुग का राज है न! किसी का एहसान कोई नहीं मानता। देखो न गाँव पर तुम्हारा कितना एहसान है। भला कोई नाम लेता है? कीचड़ उछालनेवाले सभी हैं। चरचा है कि वह छोकड़ी—कोइली। जो तुम्हारे यहाँ चौका-बरतन करती है...। उसे निकाल दो भैया। आज की दुनिया में रूपवाली नौकरानी रखने से यही होता है।"

"क्या बुढ़ऊ, मैं नहीं समझा।" श्रीनाथ को सब अचम्भा लगा।

"बड़ी तुम्हारी शिकायत हो रही है उसी कोइली को लेकर।"

"तो तुम्हें विश्वास है?"

"राम-राम! कैसी बात कहते हो बाबू! क्या हम तुम्हें जानते नहीं। यह सब उसी मंगलसिंह ठीकेदार की बदमाशी है। उसी ने यह गंदी हवा उड़ाई है। पर तुम मेरे अपने हो। तुम्हारी शिकायत हमारी शिकायत है, इससे कहते हैं।"

"लेकिन साँच को आँच क्या बुढ़ऊ?"

श्रीनाथ के मस्तिष्क में सब बातें नाच गईं। यह सब क्यों होता है? पड़ोस के झोपड़े में कोइली रहती है। कोइली जवान है, रूप-रंग की सुन्दर है। गोरी-चिट्टी भी है। श्रीनाथ का चौका-बरतन करती है। घर के और भी काम करती है। श्रीनाथ को पूरा सहारा दिये रहती है। इसीलिए जब उसके परिवार पर मुसीबत टूटी तो श्रीनाथ ने पूरी सहायता की। यही है गाँववालों के खार का कारण।

कोइली के घर सब थे। कोइली का बूढ़ा बाप। बिलकुल निर्बल और बेकार। दमा का रोगी। बुढ़िया मा। आधी झुकी हुई। पोपले मुँहवाली। एक जवान भाई और उसकी सुन्दर पत्नी। गोद में साल भर का बच्चा। भरा-पूरा खानदान। पर अभाग्य इसी को कहते हैं। एक हफ़्ते के अन्दर ही दो मृत्यु हुईं। बुढ़िया मा मरी और भाभी विधवा हो गई। चेचक की बीमारी गाँव में फैली थी। भाई का पचीस रुपये का क़र्ज बाप के ऊपर आ पड़ा। इस मुसीबत के समय श्रीनाथ ने पूरे अस्सी रुपये ख़र्च किये। यही गाँववालों को खटका था।

खेलावन बुढ़ऊ से बातें करके जब वह अपने मकान आया तो देखा कि कोइली चाय बना रही थी। उसे श्रीनाथ की जाने कितनी फिकर रहती है? श्रीनाथ ने सोचा—फिर शिकायत भी क्यों न हो? आज की दुनिया में कोई पराया इतना नहीं करता। सो श्रीनाथ ने कोइली से पूछा—

"तेरे घर में काम नहीं है क्या?"

"है क्यों नहीं बाबू? देखो न बापू को भी कल से दमा उभरा हुआ है। हकीम के यहाँ जाना है। भाभी को भी जूड़ी आती है। उसका बच्चा और परेशान करता है।"

"फिर जाती क्यों नहीं?"

"बस तुम्हारी चाय बना दूं और जाऊँ।"

"तुम्हें मेरी चाय की क्यों फिकर है? अपने घर का काम पहले क्यों नहीं करती?"

"नहीं तो तुम भूखे ही जंगल जाओगे बाबू!" कोइली ने बड़ी सरलता से यह कहा।

"फिर जब रुपये देता हूँ तो क्यों नहीं लेती?"

"बापू कहते हैं कि तुम अपने आदमी हो। गाढ़े समय में काम आये हो। फिर अपने आदमी का काम करके रुपया लिया जाता है?"

श्रीनाथ इसका क्या उत्तर दे?

क्षण भर शान्ति रही फिर श्रीनाथ ने कहा—"और कोइली यह जो शिकायत हो रही है इसका कुछ भी तुझे ख्याल नहीं?"

चाय का पानी उतार कर दूध गरमाते हुए कोइली गंभीर होकर बोली—"किसी का मुंह तो नहीं पकड़ा जा सकता। गाँव भर की गुलाम बनी रहूँ तो कोई कुछ न कहे।"

श्रीनाथ इसका कुछ उत्तर न दे सका। वह मौन हो गया। इसके बाद कोइली ने चाय छानकर एक गिलास में लाकर श्रीनाथ के आगे रक्खा और—"अब जाती हूँ"—कहकर आँचल में हाथ पोंछती हुई वह घर की ओर चली गई।

* * *

एक हफ़्ते के बाद। श्रीनाथ घूमकर घर लौटा तो कोइली घर में चूल्हा जलाये पराठे सेंक रही थी। उसके उदास मुंह को देखकर श्रीनाथ को शक हुआ। पूछा—"तेरे घर में कुछ अनाज वगैरह है?"

"क्यों?" शंकित होकर वह बोली।

"यूं ही पूछता हूँ।"

"नहीं तो कल शाम से चूल्हा ही नहीं जला।" सरलतावश कोइली बोल उठी।

"अच्छा।" श्रीनाथ ने कहा।

और जब खाने की थाली लाकर कोइली ने सामने रक्खी तो झट जेब से दस रुपये का एक नोट निकालकर श्रीनाथ ने कोइली की ओर बढ़ा दिया।

कोइली एक पग पीछे हट गई।

"लो।" वह गर्जा।

सहम गई कोइली। रुआँसी होकर बोली—"हम ग़रीब हैं बाबू...।"

"चुप रह! ग़रीब है तो और ले।" कहकर श्रीनाथ ने मनीबेग से तीस रुपये

कोइली की भाभी ने कहा कि उसका तो पता ही नहीं लग रहा है।

के नोट और निकालकर उसकी ओर फेंक दिये।

"हम यह कभी न लौटा सकेंगे।" आँखों से आँसू बहाते हुए कोइली ने कहा।

"तो लौटायेगी क्यों? ये चालीस रुपये तेरे दो महीने की कमाई हुई। शहर में इतना काम पचीस रुपये में भी कोई न करेगा।"

"पर बाबू.....!"

"चुप रह कहता हूँ ले जा इसे। नहीं तो कल से मत आना मेरा काम करने।"

कोइली इस पर कुछ न बोली। चुपचाप नोटों को समेटकर उठाया और घर की ओर चली गई।

श्रीनाथ ने विजय पाई।

कोइली घर जा रही थी। रास्ते में विश्वनाथ तम्बोली की दूकान थी। वहाँ गाँव के सात-आठ छोकरे जमा थे। कोइली को आते देखा तो वह जरा जम के बैठ गये। और तेज राग से एक गाना गाने लगा।

"कहाँ चली गोरी.....!"

आधा ही गा पाया था कि एक छोकरे ने आह भरी—"क्या कहना है।"

"गहरा आसामी फाँसा है।" दूसरे ने कहा।

"अरे गाँव में एक रंडी भी हो गई। जरूरत थी न!" तीसरे ने कहा और सभी ठठाकर हँस पड़े।

उनकी हँसी से कोइली को लगा कि कहीं वह बेहोश न हो जाय। वह जल्दी-जल्दी पाँव बढ़ाकर मन ही मन उन छोकरों को कोसती घर की ओर भागी।

श्रीनाथ के चालीस रुपये के नोट अभी भी उसकी मुट्ठी में थे। उसे लगा—गाँववाले कितने नीच हैं कि उन्हें शर्म भी नहीं लगती।

शाम को जब वह श्रीनाथ के यहाँ गई तो वह चद्दर ताने पड़ा था। कोइली को आई देखकर उसने कहा—"खाना मत बना, आज जी भारी है।"

जंगल का काम अब खतम हो चला था वह पड़ा सोच रहा था कि अब उसे लौट जाना चाहिए। सो कोइली को बुलाकर उसने कहा—"कोइली अब मैं अगले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हफ़्ते में चला जाऊँगा। हमारा काम खतम हो गया है। तेरा बाप तेरे ब्याह करने की चिन्ता में है। मैं उसे तेरे ब्याह को रुपये दे जाऊँगा। ब्याह के बाद मुझे भूल मत जाना। पर हमारी चाय और खाना--तुम्हारी भाभी जो है वही बनाया करेगी।"

कोइली खड़ी पाँव के अँगूठे से धरती कुरेदती रही।

"शादी की बात में शर्माने की जरूरत नहीं। ज़िन्दगी को पूरा करने के लिए शादी आवश्यक है। मैं तुझे अपना ठिकाना लिखकर दे जाऊँगा। जब कभी रुपये की आवश्यकता पड़े लिखवा दिया करना। भेज दिया करूँगा।"

"यहाँ मनीआर्डर आएगा तो गाँववाले खा जायेंगे। रहना मुश्किल कर देंगे। तुम जाओ बाबू हमारा काम चल ही जायगा। ग़रीबों को भगवान् देखते हैं।" बहुत धीरे से वह बोली।

"पगली! ...ठीक कहती है!"

इसके बाद एक दिन श्रीनाथ की गाँव के जमींदार से कहा सुनी हो गई। जमींदार ने थाने में इत्तला दे दी कि "श्रीनाथ पक्का कांग्रेसी है। किसानों को भड़काता है।"

बस फिर क्या था। बिना जाँच-पड़ताल के ही पुलिस ने श्रीनाथ को धर दबाया।

* * *

आज पूरे दस महीने बाद। सजा पूरी करके श्रीनाथ फिर कोइली के गाँव जा रहा था।

नदी का टूटा पुल पार करते समय उसने सोचा---आगे वह गाँव दीखता है--इस दस महीने में जाने कोइली का क्या हाल हो।

सोचता-सोचता वह कोइली के घर के पास आ भी पहुँचा। घर के बाहर कोइली की भाभी बच्चे को गोद में लिये द्वार लीप रही थी कि श्रीनाथ को देखकर उसने घूँघट खींच लिया और एक खटोला ला कर बाहर डाल दिया।

हाँफता-सा श्रीनाथ उस पर बैठ गया। और पूछा--"क्या हाल है घर का?"

"क्या आपको नहीं मालूम?" आश्चर्य से कोइली की भाभी ने कहा।

"क्या?"

"यही तो हल्ला है कि आप जेल से छूटे तो आपकी चिट्ठी आई थी और कोइली आप ही के पास आपके देश भाग गई है।"

"हमारे देश? हमारे ही पास?"

"जी हाँ!"

"कोइली क्या जाने मेरा देश!" श्रीनाथ ने कहा।

"पर उसे तो गए आज छः महीने हो गये हैं।"

"और बापू?"

"वह तो आपके जाने के दो महीने बाद ही.....।"

वह रो पड़ी फिर क्षण भर बाद बोली--"उनके मरने पर कोइली ने चालीस रुपये जाने कहाँ से निकाले और काम-क्रिया किया। गाँव में किसी से उधार हमने नहीं माँगा। इस पर बिगड़कर महाजन ने कहा--इतनी अमीर हो गई हैं तो मेरे रुपये दे दो नगद न हों तो चौका बरतन करके ही वसूल करो दे। और फिर चार दिन बाद से वह कोइली को चौका-बरतन के वास्ते रोज पकड़ ले जाने लगा। कोइली जब वहाँ से लौटती थी तो रोज खूब रोती थी। जाने वहाँ उसे क्या तकलीफ़ थी।"

क्षण भर साँस लेकर भाभी कहती ही रही--"एक साँझ वह बहुत देर को लौटी। रोती हुई आई। जाने कैसी शकल बनाये हुए। बाल बिखरे हुए। मैंने कहा--सयानी है। इतनी अबेर को आती है सो ठीक नहीं। और रोती है क्यों बता न! इस पर वह और जोर-जोर से रोने लगी। बताया कुछ नहीं। फिर घंटे भर बाद तेल लेने बनिया के यहाँ अठन्नी देकर भेजा तो फिर वापस नहीं आई। जाने कहाँ गई? बिरादरी में भी नहीं मिली। कुछ लड़कों ने देखा था वह कहते थे नदी की तरफ गई थी।"

इतना सुनकर श्रीनाथ का जी जाने कैसा हो गया। साँस खींचकर उसने मन में कहा--"तुम्हारे लिए भी तो वह भार ही थी न!"

फिर झट से जेब में हाथ डालकर उसने एक-एक रुपये के छः नोट निकाले और बच्चे को पकड़ा दिया। और बोला--"अभी तीन बजे हैं। सात बजे एक गाड़ी जाती है उसी से घर जाना है। रास्ता भी पाँच मील का है। अब जायँ। सिर्फ तुम लोगों को देखने आया था।"

"और आपका काम! जंगल!"

"आग लगे जंगल में।"

कहकर श्रीनाथ जो मुड़ा कि फिर घूमकर उसने गाँव की ओर देखा भी नहीं। पीछे-पीछे उसका कुली बिस्तर लिये चल रहा था।

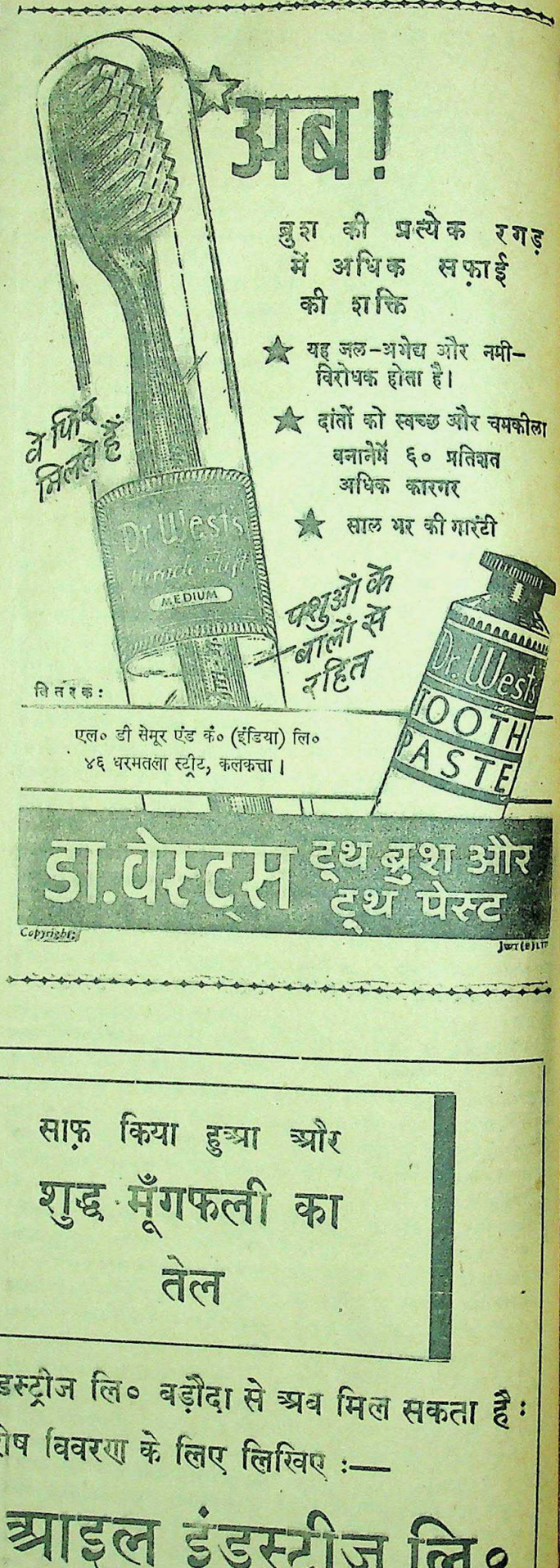

घोषणा

साफ़ किया हुआ और शुद्ध मूँगफली का तेल

दि लिली आइल इंडस्ट्रीज लि० बड़ौदा से अब मिल सकता है:
कृपया विशेष विवरण के लिए लिखिए :—

दि लिली आइल इंडस्ट्रीज लि०

(ऐलेम्बिक ग्रुप इंडस्ट्रीज)

पोस्ट ऐलेम्बिक, बड़ौदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृ-मन्दिर

एक युवती के रोज़नामचे के कुछ पन्ने

लेखिका, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू

निम्नलिखित उद्गार जो एक युवती के रोजनामचे की शक्ल में दिये गये हैं एक सच्ची घटना के आधार पर लिखे गये हैं। दक्खिन योरोप के प्रदेश की एक कुमारी किसी भारतीय युवक के प्रेम में फँसकर भारत आई। आते समय उसके हृदय पर क्या बीती वह नीचे की पंक्तियों में अंकित है। माता-पिता, अपने घर और देश को छोड़ना किसी भी स्त्री के लिए सुगम नहीं। जिस प्रेम के प्रवाह में ऐसा करने की शक्ति आवे वह अवश्य बहुत प्रबल और सशक्त होगा—रामेश्वरी नेहरू।

रोजनामचे के कुछ पन्ने इस प्रकार हैं—

हे भगवान्! मुझ अबला को बल दे!! निर्दिष्ट संकल्प को पूरा करने की शक्ति दे। आज ४ वर्ष हो गये जब से मेरा हृदय मेरे पहलू में तड़प-तड़प कर मुझे दुःखी कर रहा है। दिन-रात एक घड़ी चैन नहीं। जब से लन्दन में उस चितचोर से भेंट हुई तब ही से हृदय की यह आग सुलगी है जो हजार प्रयत्न करने पर भी किसी भाँति शान्त नहीं होती। कल मैं जा रही हूँ। अपने बालपन का घर छोड़ रही हूँ। इस घर से जहाँ २२ वर्ष हुए जन्म लिया था कल मैं शायद सदा के लिए विदा लूँगी। इसीलिए तो आज एक सप्ताह से रात को नींद भी नहीं आती। मेरे शहर की गलियाँ उसकी दूकानें, दूकानदार, बाग, वाटिकायें तब ही तो ऐसा जान पड़ता है, घूर-घूरकर मेरी ओर देखते हैं और मानो बिना कुछ

श्रीमती रामेश्वरी नेहरू। आप भारतीय महिला-आन्दोलन का प्रमुख रूप से नेतृत्व करती हैं।

कहे ही मुझसे प्रश्न करते हैं कि क्या तू सचमुच कल यहाँ से चली जायेगी। बाग के वह वृक्ष जिनके नीचे सखी सहेलियों के साथ खेल-खेलकर मैंने अपने बालपन के दिन बिताये हैं हिल-हिलकर मानो मुझे जाने से मना करते हैं। सदा की नाईं प्रातः-काल जब मैं डौन नदी के किनारे फिरने को गई तो उठते हुए रवि की निर्बल परन्तु तेजोमयी किरणें नदी की लहरों में एक अद्भुत तड़पन पैदा कर रही थीं। मुझे ऐसा लगा उनमें मेरे अशान्त हृदय की छाया दिखाई दे रही है। वे भी तो मानो मुझसे यही कह रही थीं—"हे बेवफ़ा युवती हमसे प्रेम का नाता तोड़कर तू कहाँ जा रही है?" मुझे ऐसा लगता है मेरे आस-पास की सब वस्तुओं, सब जीवों और सब मनुष्यों ने एका कर लिया है। वह एक स्वर से मिलकर कहते हैं बालपन के अपने इस गहवारे को छोड़कर मत जा हे कन्या!! मत जा। मेरे घर की दीवारें, उसका साज-सामान, उसकी छत और फ़र्श सब ही बड़े जोर से मुझे अपनी ओर खींचते हैं।

मेरा छोटा भाई जो मुझसे माता के समान स्नेह करता है अभी आकर पूछ रहा था "तो क्या दीदी—तुम कल सचमुच चली ही जाओगी? मेरी बहन, वह छोटी बहन जिसके साथ ही मैं पली हूँ, जिसके संग में मेरा सारा बालपन और विद्यार्थी-जीवन कटा है, जो मेरे सारे भेदों और भावनाओं को जानती है, जो मेरे विचारों और निष्ठा से सहानुभूति भी रखती है; मैं खूब जानती हूँ उसके हृदय पर इस समय क्या बीत रही है। वह बड़ी वीरता से मेरे सम्मुख आँख के अश्रु पोंछकर आती है, हँसने का प्रयत्न करती है परन्तु हँस नहीं पाती। मेरी दाई चुपचाप आकर पास खड़ी हो जाती है और मेरा सामान जोड़ने में योग देने का प्रयत्न करती है। परन्तु मुझे जोड़ना बटोरना ही क्या है? मैं कोई माल असबाब लेकर थोड़े ही जा रही हूँ।

जब से मैं अपने प्रीतम से मिली हूँ और प्रेम की बाजी हारकर मैंने अपने हृदय को उनकी भेंट किया है तब ही से मेरे घर में कलह की ज्वाला दहक रही है। मेरे प्रीतम न मेरी जाति के हैं, न मेरे देश के और न गोरे वर्ण के। वे दूर भारत देश के किसी उच्च ब्राह्मण कुल में जन्मे श्यामवर्ण के नवयुवक हैं। मैं तो जानती नहीं, परन्तु उन्होंने ही मुझे बताया है कि भारतवासियों में जाति-भेद है और उनकी ब्राह्मण जाति परम्परा से सर्वोच्च और सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। उनका कहना ठीक ही जान पड़ता है क्योंकि उनके समान श्रेष्ठ पुरुष की उत्पत्ति किसी श्रेष्ठ जाति से होना अनिवार्य है। मैं उनके कुल के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानती, न जानने की ही मुझे इच्छा है। वे केवल एक सामान्य विद्यार्थी हैं कहते हैं मेरे पास कोई धन-दौलत नहीं। अपने पेट-पालन के लिए मुझे परिश्रम करना होगा मेरा देश एक गुलाम देश है। वहाँ स्वतन्त्रता और आत्माभिमान रखते हुए कुछ दौलत भी नहीं कमाई जा सकती। देश की दीनता, उसकी निर्धनता उसके निवासियों की दीन दशा के करुणा भरे चित्र खींचकर मुझे दर्शाते हैं। कहते हैं उस देश में सुख नहीं, शान्ति नहीं, स्वतन्त्रता नहीं, स्वावलम्बन नहीं।

उसको दासता की शृंखलाओं से मुक्त करना उसमें सुख और समृद्धि की पुनरावृत्ति करना उसके नवयुवकों का काम है। उसके नवयुवकों के लिए आनेवाला समय वर्तमान काल से भी अधिक कठिन बीतनेवाला है। देश के पुनरुद्धार का भारी काम उनके सामने है। वह कहते हैं—"मेरा जीवन भी इन्हीं कामों में बीतनेवाला है इसलिए मुझसे ब्याह करनेवाली स्त्री को मेरे साथ कठिन देश-सेवा का जीवन व्यतीत करना होगा और सुख-चैन के स्वप्न त्याग कर तपस्विनी बनकर रहना होगा। सांसारिक सुख चाहनेवाली स्त्री मेरी संगिनी नहीं बन सकती।"

वे भी मुझसे प्रेम करते हैं यह मैं जानती हूँ। उनको भय है कि यदि मुझसे उनका विवाह हो गया तो शायद उन्हें देश-सेवा के अपने विचार त्यागने पड़ें। परन्तु वह मुझे जानते नहीं हैं। मेरे मन को समझे नहीं हैं। मैं विलासिता की भूखी नहीं हूँ। मैं धन-दौलत नहीं चाहती वह तो मुझे अपने देश में भी मिल सकता था। मैं तो केवल उन्हीं को चाहती हूँ। मेरे लिए संसार में केवल एक ही सुख है और वह उनका सम्पर्क। उनके चन्द्रमुख का दर्शन किये बिना मेरे नेत्र-चकोर तृप्त नहीं होते।

उनके साथ मैं संसार की कठिन से कठिन आपत्तियों को सहन कर सकती हूँ परन्तु उनके बिना भरा घर मेरे लिए जंगल है और सुख-चैन की सब सामग्री विलासिता का बढ़िया से बढ़िया सामान मेरी दृष्टि में मिट्टी है। चार वर्ष हो गये इसमें मैंने अपने मन को अच्छी तरह जाँच-परख लिया है। जैसा कि माता-पिता समझते हैं यह बालपन की तरंग नहीं है न हृदय की अँगेठी पर दूध का उबाल है कि घड़ी में उठा और घड़ी में बैठा यह तो मेरे रोम-रोम की एक माँग है हृदय-तन्त्री की एक शक्तिशाली उत्कंठा है। इस प्यास को सिवा उनके कौन बुझा सकता है। मेरा उनका सम्मेलन अनिवार्य है, कोई अनजान शक्ति मुझे उनकी ओर खींच लिए जाती है। इसीलिए तो मैंने सबका विरोध करते हुए घर छोड़कर भारत जाने का निश्चय किया है।

माता! मेरी स्नेहमयी प्रेममूर्ति माता! उनका दुःख मुझसे देखा नहीं जाता। सावन-भादों की झड़ी के समान उनकी आँख का आँसू थमने में ही नहीं आता। जब से उन्हें मेरे इस निश्चय का ज्ञान हुआ है, मानो उनके शरीर में जीवन नहीं रहा। वे मुझ पर कभी आवेश करती हैं, कभी मुझे प्रेम से समझाने का प्रयत्न करती हैं, रो-धोकर अपने हृदय की व्यथा दिखाकर मुझे प्रभावित करना चाहती हैं, मुझसे तर्क करती हैं और सबसे अधिक उलाहने देकर कहती हैं कि मैं उनके साथ विश्वास-घात कर रही हूँ। वृद्धावस्था में जब मुझे उनकी सेवा करनी चाहिए थी तब मैं उन्हें छोड़कर चली जा रही हूँ। वे कहती हैं मैं बड़ी कठोर हूँ पाषाण-हृदया हूँ न प्रेम करना जानती हूँ, न प्रेम की क़दर कर सकती हूँ। परन्तु वह नहीं जानती कि उनके आँसुओं की एक-एक बूँद और उनके वाक्यों का एक-एक शब्द मेरे हृदय पर कैसा भारी आघात करता है। मैं आसानी से उनको नहीं छोड़ रही। वे मेरे हृदय की व्यथा क्या जानें वे सब माता-पिता, भाई-बहिन, कुटुम्बी-सम्बन्धी तो एक ही साथ हैं केवल मैं अकेली ही बिलकुल अकेली सब कुछ छोड़-छाड़कर एक अन-जान देश को जा रही हूँ इसलिए उनको इतना तो समझना चाहिए कि यह सब त्याग मेरे लिए कोई बच्चों का खेल नहीं है प्रेम की मजबूत शृंखलाओं में बँधी हुई मैं विवश उस दिशा को जा रही हूँ जहाँ मेरे प्रीतम हैं। परन्तु जिनको छोड़कर जा रही हूँ उनकी याद तो सदा मन में रहनेवाली है और उनसे अलग होने के समय मुझ पर क्या बीत रही है सो मैं ही जानती हूँ। लोग कहते हैं मैं मूर्ख हूँ बालपन की हठ कर रही हूँ वे मुझसे यह कहते नहीं अघाते कि मुझे अमीर से अमीर पति अपने देश में मिल सकता था परन्तु उनको यह मालूम नहीं है कि मैं सौदा करने नहीं जा रही हूँ। मैं आत्म-समर्पण करने जा रही हूँ। इस दान के बदले में मैं कुछ लेना नहीं चाहती परन्तु देनेवाले को मिल भी जाता है। न भी मिले तो चिन्ता नहीं। मेरा सुख तो देने में है और प्रीतम मेरी भेंट स्वीकार करे तो और इससे अधिक मुझे क्या चाहिए।

* * *

ऊपर लिखे मनोद्गारों को अपने रोजनामचे के सुपुर्द कर मन के वेग को हलका कर मैं सो रही। दूसरा दिन भी आन पहुँचा। सदा की नाईं सूर्य भगवान् सावधानी से अपनी पूरी चमक-दमक के साथ फिर पूरब से पृथ्वी पर अपना तेज फैलाते हुए आकाश में विराजमान हुए। मैं भी लपककर बिस्तर से उठी। बस आज आख़िरी दिन था। ३, ४ घंटों में रेल आन पहुँचेगी और फिर कुँवारपने के इस प्रेम और सुख-निकेतन को विदा!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदा के लिए विदा! यह विचार मन में आते ही हृदय थरथर काँपने लगा। सावधान कायर हृदय! यह समय निर्बलता दिखाने का नहीं है। तेरा असली स्वरूप किसी को दृष्टिगोचर नहीं होना चाहिए। मेरे मुख पर शान्ति और नेत्रों में मुस्कान देखना चाहिए। ऐसा संकल्प करके अपनी यात्रा का सामान बाँध में जाने को तैयार हो गई। धीरे-धीरे रेल जाने का समय भी पास ही पहुँचा।

स्टेशन पर माता-पिता, भाई-बहन, सखी-सहेलियाँ, मित्र-रिश्तेदार सब ही आये। अश्रुपूर्ण नेत्रों से आलिंगन कर सबसे बिदा ली। सब ही इस प्रकार घर छोड़कर अनजाने देश अनजाने लोगों में मेरे जाने के इस निश्चय को मूर्खता की हठ मान रहे थे। मेरा भविष्य अनिश्चत है। परन्तु मुझे उसकी चिन्ता नहीं।

रेल शीघ्रता से दौड़ी जा रही है। शाम तक मैं जेनोवा के बन्दरगाह में पहुँच जाऊँगी और कल जहाज भारत की ओर रवाना हो जावेगा। मुझे अपनी तो तनिक भी चिन्ता नहीं परन्तु माता-पिता घर और मित्रों के चित्र नेत्रों के सामने हैं। भगवान् ने चाहा तो जिस घर को आज छोड़कर जा रही हूँ शायद यहाँ फिर आऊँ। परन्तु जिसको आज छोड़ा है वह फिर कभी नहीं पाऊँगी। माता-पिता भाई-बहिन से फिर मिली भी, इस घर और नगर में आई भी तो यह मैं जानती हूँ कि जो छोड़ा है फिर मिलनेवाला नहीं है। हो सकता है कि बाहर का आकार वही हो, परन्तु न उसमें वह जीवन होगा, न प्रेम होगा, न तो अपनापन होगा। वह वातावरण ही दूसरा होगा। वे धरती वे आकाश मुझे अजनबी के रूप में देखेंगे। इस जीवन के साथ इस प्रदेश और अपने मित्रजनों के साथ जो अब मेरा एका था वह फिर मिलनेवाला नहीं है। ऐसा होना स्वाभाविक है—अनिवार्य है। जिसे एक बार छोड़ दिया जिसके साथ अपना नाता तोड़ दिया। जिससे मुंह मोड़कर मैं अपनी नई दुनिया बसाने जा रही हूँ वह फिर मुझे कैसे मिल सकता है? मैं यह सब जानती हूँ। समझती हूँ। आँखें खोलकर ही मैंने सब कुछ किया है। यह किया है इसलिए कि और कुछ कर नहीं सकती थी। स्थिति ही ऐसी हो गई थी। परन्तु हे प्रियजनो! तुम्हें छोड़ने में जो मुझे सहन करना पड़ा है उसे तुम नहीं मैं जानती हूँ। हलके हृदय से मैंने यह नहीं किया है। तुम सब साथ हो, मैं अकेली जा रही हूँ। किसके पास, कहाँ, किन लोगों में कुछ भी नहीं जानती। प्रीतम को पाने की इच्छा हृदय का संकेत है जो मुझे ले जा रहा है। आगे क्या होनेवाला है, मैं नहीं विधाता जानता है। परन्तु एक बात मैं अवश्य जानती हूँ जो तुम नहीं जानते कि मेरा देश, मेरा घर, मेरे प्रियजनों की याद सदा ही मेरे हृदय में बनी रहेगी।

युग और साहित्य

युगद्वन्द्वों तथा उनसे प्रभावित भावी सम्भावनाओं को समन्वयपूर्ण साहित्य के माध्यम से उपस्थित करनेवाले निबन्धों का संकलन। मूल्य २॥)

सैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

शान्ति में भी

ओह! युद्ध के ये छः वर्ष! नाश और प्रलय के छः वर्ष! कितनी मेहनत, कितनी कोशिश, कितने उपाय करने पड़े, तब कहीं जाकर शान्ति की झलक दिखी। पुनर्निर्माण भी कम दुःसाध्य न होगा। फिर भी, हमारी मेहनत सफल हुई, हम कामयाब हुए, हमारा लड़ना हमारे काम आया।

युद्ध की तरह

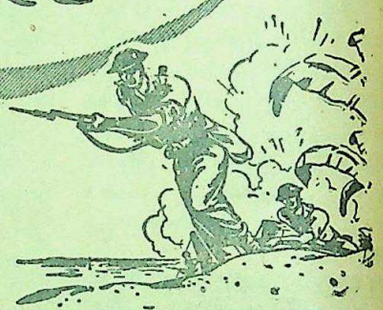

करोड़ों सिपाहियों को आज तक सर्वदा सहारा देने व आराम पहुँचाने वाली चाय, अब शान्ति के सुखमय दिनों में भी अपना फर्ज अदा करेगी। चाय का भरोसा कीजिये; इसके समान दोस्त नहीं; आप थके हों, उदास हों, अनमने हों, निर्जीव-से हो रहे हों, चाय आपको जो साहस देगी वह और कोई पेय नहीं दे सकता।

मानव जाति की प्रगति में चाय आपकी सहायता करेगी।

चाय का सहारा लीजिये

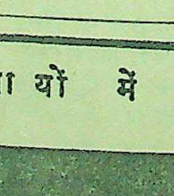

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 254

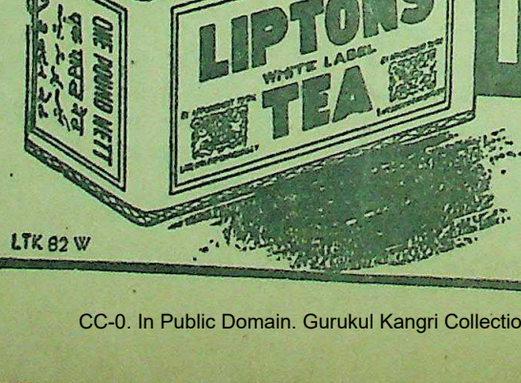

भारतीय चायों में सर्वश्रेष्ठ

लिपटन की

व्हाइट लेबुल चाय

LTK 82 W

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

राष्ट्रीय संस्थाओं में पेट का स्थान

(श्री सम्पादक 'देशदूत')

'देशदूत' के पिछले १० फरवरी के अंक में श्री भगवानप्रसाद त्रिपाठी की एक चिट्ठी छपी है। त्रिपाठी जी वर्धा में रहते हैं और भारत के समस्त राष्ट्रीय संस्थाओं के आदि पिता पूज्य महात्मा जी का प्रधान कार्यालय यहीं है। यहीं से सारे देश की संस्थाएँ और सारा देश अनुप्राणित होता है। अतः श्री त्रिपाठी जी ने राष्ट्रीय संस्थाओं के कार्य-कर्त्ताओं के वेतनों पर जो उँगली उठाई है उसका कुछ अंशों तक मैं विरोध करता हूँ। आशा है विचार-स्वातंत्र्य को तरजीह जरूर देंगे, जैसा सदा 'देशदूत' करता रहा है।

श्री त्रिपाठी जी ने, मेरा ख्याल है एक ही कलछी से सभी हांडी की खबर ली है। पर वास्तव में बात ऐसी नहीं है। वर्धा में एक दर्जन से भी अधिक संस्थाएँ हैं, किन्तु सब में एक समान वैषम्य नहीं है। खास-कर गांधी जी के तत्त्वावधान में चलनेवाली संस्थाओं में जहाँ एक ओर परस्पर कार्य-कर्त्ताओं में भाई-चारे का संबंध है वहीं दूसरी ओर उनके वेतन में भी काफी साम्यता रखने की कोशिश की जाती है। गांधी जी कार्यकर्त्ता की योग्यता और उसकी आव-श्यकता दोनों का काफी ध्यान रखते हैं। वेतन में थोड़ा अंतर होते हुए भी आप पारस्परिक संबंध में कोई फर्क नहीं पा सकते। तालिमी संघ का एक बीस रुपये पानेवाला और संघ का सर्वेसर्वा श्री आर० नायकम जी दोनों वक्त एक ही रसोई में भोजन करते हैं। इसी प्रकार ग्राम सेवा-संघ का ७५ रुपये पानेवाला और और बीस रुपये पानेवाला एक ही रसोई में खाता है। इतना ही नहीं, पचहत्तर पानेवाले को भी पाकेट खर्च के लिए सिर्फ १० रुपये और बीस रुपये पानेवाले को भी उतने ही मिलते हैं। बाकी रुपये अर्थात् ७५ पानेवाले का पैंसठ और बीस पाने-वाले के दस भोजनालय में चला जाता है। केवल यही नहीं, अगर बीस पानेवाले के परिवार में पाँच आदमी और ७५ रुपये पानेवाले के परिवार में एक ही आदमी रहता है तब भी एक को दस और दूसरे को ६५) ही देने पड़ेंगे। आप पूछ सकते हैं कि तब फिर वेतन न देकर भोजन और दस रुपये पाकेट खर्च क्यों नहीं दिया जाता? कारण यह है कि आचार्य विनोबा जी किसी को मजबूर नहीं करते हैं स्वेच्छा से ही लोग एक आदर्श के लिए त्याग करते हैं।

अब बात रही राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति की। सो मेरी प्रार्थना है कि यह समिति वर्धा की एक विधवा संस्था है और यह वह विधवा है जो बहुत दिन हुए अपना सतीत्व नष्ट कर चुकी है। इसके नीति-निर्धारक और संचालक रहते हैं प्रयाग में और प्रधान कार्यालय वर्धा में तथा शाखायें भारत के ९ प्रान्तों में। संचालकगण और कार्यकर्ताओं में कोई सम्बन्ध-सूत्र नहीं। इसलिए राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति में वेतन की विषमता चरम सीमा पर पहुँच गई है। आपको और सारे देश को यह सुनकर आश्चर्य होगा कि इस महँगी के जमाने में भी राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति पाँच रुपये मासिक वेतन पर कार्य-कर्ता नियुक्त करती है। समिति सबसे कम वेतन पाँच रुपये और सबसे अधिक वेतन सवा सौ रुपये मासिक देती है। अर्थात् एक कार्यकर्ता से दूसरे का अंतर पच्चीस गुना है। साथ ही जो कम वेतन पाते हैं उन्हें कोई भत्ता नहीं मिलता, पर सवा सौ पानेवाला प्रतिमास सौ के आस-पास भत्ता भी पा जाता है। कम वेतन पानेवाला दूसरा कोई पेशा नहीं कर सकता, किन्तु सवा सौ पानेवाला सहायक मंत्री अपना प्रकाशन चला सकता है। इस कठिन समय में समिति के कोटा से काग़ज ले सकता है और समिति की सारी मशीनरी को अपने किताब छापने, बेचने और प्रचार करने में लगा सकता है और साल में हजारों रुपये कमा सकता है।

एक बात और---समिति में कम वेतन पानेवाले को निवास-भत्ता नहीं दिया जाता पर ज्यादा तनख्वाह पानेवाले को मिलता है। सच पूछा जाय तो जब से पूज्य बापू तथा काका कलेलकर आदि व्यक्ति समिति से निकल गये तब से इस समिति का नैतिक स्तर बहुत नीचे गिर गया। पढ़े-लिखे और सुसभ्य व्यक्ति के लिए इस संस्था में कोई स्थान नहीं रह गया। इसके प्रधान मंत्री हैं भदन्त आनन्द कौसल्यायन जो साल में मुश्किल से १०-१५ दिनों के लिए वर्धा आते हैं।

वर्धा में पूज्य बापू-द्वारा संचालित किसी भी संस्था में आज तक हड़ताल न सुना गया होगा। पर राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति में आये दिन हड़ताल होती है। कार्य-कर्त्ताओं में अफवाह है कि समिति अपने यहाँ फैक्टरी ऐक्ट लगानेवाली है। यह भी अच्छा ही होगा। आखिर किसी फैक्टरी से समिति की आमदनी कम तो नहीं ही है। बिना चन्दा माँगे ही कम वेतन और ज्यादा काम लेकर समिति सालाना लगभग ७५ हजार रुपये नेट लाभ कर लेती है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन भी समिति को अपना एक कमाऊ पूत ही समझ रही है। पर सम्मेलन को या पूज्य टंडन जी को यह नहीं पता है कि समिति की नींव हिल चुकी है और यह दीवाल अब गिरने ही वाली है। इसका आन्तरिक संगठन दिन-प्रतिदिन खोखला होता जा रहा है। गुजरात, बम्बई, महाराष्ट्र और आसाम, बंगाल तथा उड़ीसा को संचालित करनेवाली संस्था पूर्व-भारत राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति अब स्वतंत्र हो चुके हैं। राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति की प्रतिगामिता के कारण ये संस्थाएँ उसका साथ देने में समर्थ नहीं हो रही हैं। गांधी जी और वर्धा के नाम का सिक्का अब समिति के बाजार में कोई मोल नहीं रखता।

कम्युनिस्ट विचार रखनेवाले श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन जी का नेतृत्व समिति को प्राप्त है। मैं समिति का एक पुराना हितैषी हूँ और मेरा विश्वास भी है कि सारी चीजें बनती-बिगड़ती हैं--- समिति में भी सुधार की पूरी गुंजाइश है। पर जरूरत है एक मजबूत हाथ की जो अपने कार्यों-द्वारा समिति की नैतिक दशा को सुधार सके। आनन्द जी त्याग कर सकते हैं, साल भर यात्रा कर सकते हैं, पैसे इकट्ठा कर सकते हैं पर किसी संगठन का संचालन संभवतः नहीं कर सकते हैं। संन्यासी सब गुण रखते हुए भी संन्यासी ही है। उससे ज्यादा दुनियादारी की आशा करना अपने को धोखे में रखना है।

अन्त में मैं श्री त्रिपाठी जी से प्रार्थना करता हूँ कि बिना अच्छी तरह जाने किसी संस्था की बुराई सब पर नहीं मढ़ना चाहिए। राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति के अलावा वर्धा में ऐसी कोई संस्था नहीं है जो मुनाफा पर चलती हो। गांधी जी हिसाब-किताब में बनिया जरूर हैं, पर किसी के श्रम के मूल्यांकन में कभी वे गलती नहीं करते। उनके साथी कार्यकर्ता के दिल में देश-सेवा के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने की सजीव भावना रहती है। राष्ट्र-भाषा प्रचार-समिति में भी जब तक गांधी जी, डा० राजेन्द्रप्रसाद आदि नेता रहे तब तक त्रिपाठी जी-जैसे लोगों को कोई शिकायत नहीं रही पर आज क्यों हो रही है?

आपका
---एक वर्धा-निवासी

* * *

महात्मा गांधी की मानवता

हाल में मुझे कुछ दिन के लिए सेवा-ग्राम (वर्धा) के श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी के साथ रहने का मौक़ा मिला। उन्हें बापू (गांधी जी) ने एक खास काम के सिल-सिले में दिल्ली भेजा था। विद्यार्थी जी से बात-चीत में सेवाग्राम तथा बापू के बारे में कुछ काम की बातें मालूम हुईं। विद्यार्थी जी ने बताया कि सेवाग्राम में 'बापू' के निकट विचारों की पूरी आजादी है। वहाँ पर उनसे मिलने के लिए सभी किस्म के लोग आते-जाते रहते हैं। वहाँ सबका स्वागत और सत्कार है। ईश्वर पर आशा न रखनेवाले मुझ जैसे लोगों से 'बापू' अपने प्रेममय शब्दों में कहते रहते हैं कि "कोशिश करो---ईश्वर पर आस्था होगी।"

विद्यार्थी जी ने कहा कि पहले उनका ईश्वर में बड़ा विश्वास था। और वे प्रार्थना तथा गीतापाठ में बड़ी रुचि रखते थे। किन्तु ब्रिटिश हुकूमत ने पिछले 'अगस्त-आन्दोलन' में अधिकांश देश-वासियों पर (जिनमें वे भी शामिल हैं) जबर्दस्त जुल्म तोड़ने के बावजूद अब भी बनी हुई है। इससे उनकी ईश्वर-श्रद्धा कम हो गई। कहने का मतलब यह है कि किस प्रकार गांधी जी शिव-परिवार की तरह विभिन्न विचार के आदमियों को स्थान दिये हुए हैं। प्रतिकूलता में अनुकूलता बिठा देना, यही तो उनकी विशेषता है।

उस महापुरुष की ही माया है कि वर्धा और सेवाग्राम-जैसे छोटे-मोटे गाँव आज भारतीय राजनीति के केन्द्र बन गये हैं। सन् ३० की दांडी-यात्रा से पहले साबरमती को यह विशेषता प्राप्त थी। इधर बापू के सखा-संगी पू० 'बा' (कस्तूर बा गांधी) श्री महादेव भाई और वर्धा के प्राण श्री जमनालाल जी जब से स्वर्गीय हो गये हैं, तब से बापू किसी दूसरे स्थान (संभवतः पूना) में रहने की सोच रहे हैं। इससे सेवाग्राम की सभी विभूतियाँ वहाँ अपने आप चली जायेंगी। जहाँ राम हों वहाँ अयोध्या होनी ही चाहिए। पूना तो क्या, बापू अगर किसी रेगिस्तान में भी बैठ जायँ तो वहाँ भी दुनिया खिंची चली जायगी। क्योंकि जिसने अपने को हिला लिया वह दुनिया को हिला देता है।

गांधी जी का हृदय करुणा से कितना सराबोर है, इसका जिक्र करते हुए विद्यार्थी जी ने बताया कि "कुष्ठरोगी (श्री परचुरे शास्त्री) की सेवा की बात तो सबको मालूम ही है। इसके अलावा एक बार की बात है कि गांधी जी घूमने निकले तो उन्हें राह में एक पागल आदमी पास से गुजरता दिखाई दिया। वह मैला-कुचैला और फटे-हाल था। उसके मुँह पर लार लिपट रही थी। उसे देख गांधी जी ने अपने साथियों से कहा कि, 'भाई, यह आदमी जो पास से गुजर रहा है, कभी अपने मा-बाप का प्यारा रहा होगा। आज पागल हो गया तो क्या हुआ, उसे यहाँ ले आओ।' इस पर साथी उसे गांधी जी के पास लाये। उन्होंने अपने हाथ से उसके मुँह पर से लार पोंछी और अपनी कुटिया में ले गये। वहाँ उसे नहलवाया। साफ़ कपड़े पहनने को दिये। बाद में खाना खिलवाकर उसके राह-खर्च को रुपये देकर गाड़ी पर बिठा उसे घर को रवाना करवा दिया।" संभ-वतः वह पागल आदमी दक्षिणी था। गांधी जी की यह करुणा की पराकाष्ठा लोकोत्तर में रोमांच पैदा करनेवाली है। यह अहिंसा की चरम सीमा है। सत्य की साधना तो उसमें है ही। आज से ढ़ाई हजार वर्ष पहले भगवान् बुद्ध ने दुनिया को जिस दया का पाठ पढ़ाया था, आज वही गांधी जी के रूप में मूर्तिमंत हो आई है।

दिल्ली ---टीकाराम बेलवाल
५ फरवरी ४६ "साहित्यरत्न"

जय हिन्द

इस पुस्तक में आजाद हिन्द फौज़ की पूरी कहानी और सुभाष बाबू के जोशीले भाषण छापे गये हैं। मूल्य एक रुपया।

पता---रंगभूमि मासिक, दिल्ली।

पण्डित जी

एक मास्टर साहब का चित्रण इस उपन्यास में आद्योपान्त मनोरंजक ढंग से चित्रित किया गया है। कुलीनता, उच्च-शिक्षा, द्विज और द्विजेतर, नई शिक्षा और मिथ्या अभिमान आदि कितने ही समाज-गत विचारों पर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण इस उपन्यास में किया गया है। मूल्य २)

छुटकारा

एक संयुक्त हिन्दू-परिवार का मर्म-स्पर्शी चित्रण इसमें आँकते किया गया है। सम्पत्ति के लिए भाई-भाई में होनेवाली सिरफुटौवल, एक भाई का अपने दूसरे भाई को सम्पत्ति-सम्बन्धी अधिकारों से वंचित करने का षड्यन्त्र रचना, आदि बातें इस उपन्यास में मनोरंजक ढंग से लिखी गई हैं। मूल्य १।-)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैदराबाद-राज्य का लेखा-जोखा

भारत की रियासतों में सबसे बड़ी और समृद्धिशाली

लेखक, श्री मधुसूदनदास चतुर्वेदी, एम० ए०

भारत के देशी राज्यों में हैदराबाद सबसे समृद्धिशाली और बड़ी रियासत है। यहाँ की भौगोलिक, सामाजिक और वर्तमान स्थिति कैसी है, इसका लेखा-जोखा इस लेख में दिया गया है। आँकड़ों से यह सिद्ध किया गया है कि रियासत किस दृष्टिकोणों से उन्नतिशील तथा पिछड़ी हुई है। लेख जानकारी से पूर्ण है।

हैदराबाद राज्य के निजाम साहब।

हैदराबाद भारत के सबसे अधिक समृद्धिशील देशी राज्यों में है। भारत के दक्षिणी भाग में पूर्वीघाट और पश्चिमी-घाट के मध्य में दक्षिण के पठार में यह स्थिति है। चारों ओर यह ब्रिटिश भारत से घिरा हुआ है। इसके पश्चिम में बम्बई प्रान्त, दक्षिण व पूर्व में मद्रास प्रान्त और उत्तर में बरार एवं मध्य-प्रान्त स्थिति हैं। बरार किसी समय हैदराबाद-राज्य का ही अंश था। रियासत हैदराबाद उसे पुनः प्रान्त करने के लिए सतत प्रयत्नशील है। निज़ाम के उत्तराधिकारी बरार के राजकुमार कहे जाते हैं।

हैदराबाद का क्षेत्रफल ८२६९८ वर्गमील है, जिसमें ८१०९ वर्गमील सर्फखास और २६२१० वर्गमील पाई गाह, समस्थान एवं जागीरें भी सम्मिलित हैं। राज्य का बहुत भाग पहाड़ी और जंगलों से ढका हुआ है। निज़ाम स्टेट रेलवे व उससे सम्बन्धित बस सर्विस-द्वारा आवा-गमन की सुविधा है। यहाँ की जनता का मुख्य भोजन चावल और ज्वार है।

सन् १९४१ की जन-संख्या के अनुसार राज्य की आबादी १,६३,३८,५३४ है जिसमें ८३,४६,७७५ पुरुष और ७९,९१,-७५९ स्त्रियाँ हैं। हैदराबाद नगर भारतवर्ष में आबादी के दृष्टिकोण से चतुर्थ है। इसकी आबादी ७,३९,१५९ है। राज्य में वरंगल, गुलबर्गा, औरंगाबाद, लातूर, रायचूर, नाँदेड़ एवं जालना अन्य बड़े नगर हैं, जिनकी आबादी २०,००० से अधिक है।

हैदराबाद का राज्य-धर्म इस्लाम है। विभिन्न धर्म के अनुयायियों की संख्या इस प्रकार है।—

हिन्दू	१,३३,०९,६४९
जैन	२४,८५३
सिक्ख	५,३३०
अति निवासी	६,७८,१४९
मुसलमान	२०,९७,४७५
ईसाई	२,२०,४६४
अन्य	६४०

हैदराबाद-राज्य का शासन-प्रबन्ध हिज़ एक्ज़ौल्टेड हाईनेस निज़ाम नवाब मीर उस्मान अली खाँ एक एक्ज़ीक्यूटिव कौंसिल की सहायता से करते हैं। १८९३ ई० तक सारा प्रबन्ध एक दीवान के द्वारा होता था। सन् १८९३ ई० में एक कैबीनेट कौंसिल बनाई गई, जिसमें परिवर्तन कर सन् १९१६ ई० में एक्ज़ीक्यूटिव कौंसिल क निर्माण हुआ। इस कौंसिल का एक प्रधान और सात सदस्य होते हैं। प्रत्येक सदस्य एक अथवा एक से अधिक विभागों का सदरुल मुहाम होता है। आजकल नवाब साहब छतारी इस कौंसिल के प्रधान हैं।

इसके अतिरिक्त राज्य में क़ानून बनाने के लिए एक व्यवस्थापिका सभा भी है। १८९३ ई० के पूर्व क़ानून बनाने का कार्य कैबीनेट कौंसिल का था। बाद में धारा-सभा के बन जाने पर उसे सौंप दिया गया। धारा-सभा क़ानून बनाती है फिर एक्ज़ीक्यूटिव कौंसिल उन क़ानूनों की जाँच करती है और उन्हें निज़ाम के पास स्वीकृति के लिए भेजती है। इस धारासभा के कुछ सदस्य नामज़द किये जाते हैं—कुछ का निर्वाचन किया जाता है। धारा-सभा के सभापति व उपसभापति के अतिरिक्त २० सदस्य और होते हैं, जिनमें ६ गैरसरकारी व २ विशेष होते हैं।

समस्त राज्य १६ ज़िलों में बँटा है, हैदराबाद-राज्य की न्याय-व्यवस्था का भार हाईकोर्ट पर है ज़िले में व तहसीलों में आधीन अदालतें हैं।

सन् १३४८ फ० में राज्य में १४,६८,६६,९७३ रु० का माल बाहर से आया और १३,५८,०६,८५३ रु० का माल राज्य के बाहर गया। इन आँकड़ों से राज्य की समृद्धि का पता चलता है। राज्य का निजी डाक-विभाग है। और चाँदी का रुपया व अन्य सिक्के तथा करेन्सी नोट भी अपने ही चलते हैं।

हैदराबाद की आजकल राज्य-भाषा उर्दू है। विभिन्न भाषा-भाषियों की संख्या सन् १९४१ ई० के आँकड़ों के अनुसार निम्न प्रकार है:—

तेलुगु	७५,२९,०२९
मराठी	३९,४७,२८९
कन्नड़	१७,२४,१८०
पश्चिमी हिन्दी (उर्दू)	२१,८७,००५
बंजारी	२,१४,३२३
हिन्दी	१,४०,३७८
गौंडी	७१,७९०
राजस्थानी	७३,५२१
गुजराती	३९,४८२
कैकड़ी	४३,९४१
तामिल	३८,३१९
अँगरेज़ी	१२,०४६
भीली	१७,६०२
पर्शी	६,१०९
पंजाबी	६,६५०
अरबी	७,३३७
अन्य	४,४९६

इसके अतिरिक्त पश्चिमी हिन्दी (उर्दू) के जाननेवाले २२,३८,२६४ और सन् १९४१ की रिपोर्ट में दिखलाये गये हैं। इन आँकड़ों के अनुसार राज्य के लगभग ५० लाख व्यक्ति हिन्दी-उर्दू बोल अथवा समझ सकते हैं।

आमदनी की दृष्टि से भी हैदराबाद सबसे बढ़कर है। इस वर्ष की आय ९ करोड़ से अधिक अनुमान की गई है। साधारण-तया आय लगभग ९ करोड़ रहती है, जिसमें लगभग ३ करोड़ मालगुजारी से प्राप्त होता है। इस आय में से शिक्षा पर लगभग १ करोड़ व्यय होता है। विभिन्न वर्षों में शिक्षा की मद में व्यय इस प्रकार है:—

१३४३	फ०	१,१६,४४,०००
१३४४	फ०	१,०७,११,०००
१३४५	फ०	१,०३,७३,०००
१३४६	फ०	१,०४,६१,००० रु०
१३४७	फ०	९३,००,००० रु०
१३४८	फ०	९२,९५,००० रु०
१३४९	फ०	१,०४,५०,५४२ रु०
१३५०	फ०	१,१५,८४,३६३ रु०
१३५१	फ०	१,२३,५२,७७७ रु०

हर प्रकार से विकासोन्मुख राज्य-शिक्षा में कुछ पिछड़ा हुआ दृष्टि आता है। सन् १९४२ ई० में शिक्षणालयों और विद्यार्थियों का विवरण इस प्रकार है:—

संस्था	संख्या	विद्यार्थी
कालिज	११	३,३७६
हाईस्कूल	६३	४५,६९४
मिडिल स्कूल	१४९	४५,४९६
प्रायमरी	५,२५२	२,२७,४६१
ट्रेनिंग कालेज	९	२८९
टैकनीकल	५	७७०
अन्य स्कूल	१,८६७	१,५४,०८३
कुल योग	७३५	४,६७,१६९

सन् १९१८ ई० से उस्मानियाँ विश्व-विद्यालय राज्य में स्थापित है। इसमें उर्दू के माध्यम-द्वारा उच्च शिक्षा की व्यवस्था है। यूरोपियन भाषाएँ जैसे फ्रेञ्च, जर्मन के पढ़ाने की भी व्यवस्था है। परन्तु सम्प्रति हिन्दी को स्वतंत्र विषय के रूप में विश्व-विद्यालय में स्थान नहीं मिला। परिणाम-स्वरूप हिन्दी विषय लेकर परीक्षा देने वाले विद्यार्थियों को राज्य के बाहर के विश्व-विद्यालयों का द्वार खटखटाना पड़ता है।

हैदराबाद राज्य के प्रधान-मंत्री नवाब छतारी

सन् १९४१ की गणना के अनुसार राज्य में शिक्षित पुरुष ११·८ प्रतिशत है और स्त्रियाँ ३·६ प्रतिशत जो किसी भी प्रगतिशील राज्य के लिए लज्जा का विषय है। इसका मुख्य कारण राज्य की ओर से प्रारम्भिक पाठशालाओं में मातृ-भाषाओं के प्रति उपेक्षणीय दृष्टिकोण ही समझा जा सकता है।

फिल्मी अप्सरायें

इस पुस्तक में फिल्म एक्ट्रेसों की तसवीरें और उनकी जिन्दगी के दिलचस्प हालात छापे गये हैं। मूल्य दो रुपया।

पता—रंगभूमि मासिक, दिल्ली।

सूरज छाप सर्वत्र मिलता है स्वदेशी आरोंदा १८६६ नीलगिरि तेल नमूना मुफ़्त युकॅलिप पेन बाम दादकामरहम रवाण्डलेकर बन्धु बम्बई

स्टैनिष्ट्रीट की प्रसाधन सामग्रियाँ

इस देश की जलवायु में जिस तरह की सामग्रियों की आवश्यकता होती है ठीक उसी तरह की पूर्ण विशुद्ध सामग्रियों की हम गारण्टी देते हैं—खुशबूदार व ताजगी लाने वाली। मूल्य भी समुचित है।

कोल्ड व वैनिशिंग क्रीम
टैलकम व फेस पाउडर
रूज लिपस्टिक
यू-डी कोलोन
लैवेण्डर वाटर
स्टैनेरोमा
हेयर शैम्पू
ब्रिलिएन्टाइन

स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट एण्ड कं० लि: कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ कराची अमृतसर SSK 12

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

भारतीय राष्ट्रभाषा किधर ?*

हिन्दी-हिन्दुस्तानी आन्दोलन की समस्या क्या है ?

लेखक, प्रोफ़ेसर मदनगोपाल मिश्र, एम० ए०

हिन्दी अथवा यों कहिए कि भारतीयता को नष्ट करने का प्रयत्न करनेवाले दल ने प्रारम्भ से ही 'आल इंडिया रेडियो' को अपने खूनी पंजों में दबोच लिया। हिन्दी की आत्मा को एक गहरी ठेस लगी; समाचारपत्रों द्वारा बार बार उसकी पीड़ा व्यक्त हुई, यहाँ तक कि श्री रविशंकर जी शुक्ल ने 'लैंग्वेज पालिसी आफ़ आल-इंडिया रेडियो' नामक पुस्तक अँगरेजी में लिखकर उस दल के षड्यंत्र का स्पष्टतः और पूर्णतः भंडाफोड़ कर डाला--लेकिन षड्यंत्रकारियों के कान पर जूं तक न रेंगी। सभाएँ हुईं, प्रस्ताव पास हुए, हिन्दी-लेखकों और कवियों ने 'आल इंडिया रेडियो' का बहिष्कार किया, काले झंडों का प्रदर्शन हुआ--लेकिन उन रक्त के पिपासुओं की नीति टस से मस न हुई।

इधर जहाँ यह सब चल ही रहा था और अब भी चल रहा है, भारतीयता के शत्रुओं ने भारतमाता पर ही अपनी तलवार रख दी और निस्संकोच नारे लगाना शुरू कर दिया--"हम उसे खंडित करके ही रहेंगे। और साथ ही साथ उन्होंने देखा कि उनसे एकता की भीख माँगनेवाले अपने को 'हिन्दू' कहने से लज्जित होने ही लगे हैं, तो जहाँ 'हिन्दुत्व' का यह हाल है वहाँ 'हिन्दित्व' पर भी क्यों न हाथ साफ़ किया जाय। एक हाथ से भारतमाता पर अपनी तलवार रक्खे हुए ही उन्होंने विदेशी शब्दों के भार से लदी हुई और एक अवैज्ञानिक और असंस्कृत लिपि में लिखी जानेवाली अपनी भाषा सर्वसाधारण की भाषा घोषित की और उसी के नाम पर हिन्दुओं की ओर अपना दूसरा हाथ एकता के लिए बढ़ाया। साहस इसीलिए हुआ कि वे समझते हैं कि हिन्दू और हिन्दीवाले बुद्धू तो हैं ही--ये क्या जाने भाषा का महत्त्व, ये क्या जाने कि भाषा और उसके साहित्य पर ही जीवन, संस्कृति, धर्म, राष्ट्रीयता, और बल अवलंबित हैं। उन्होंने स्वप्न देखा मानो उनके इस षड्यंत्र द्वारा भारतीय भाषा का लोप हो गया। भारतीय अपना सब कुछ खोकर निर्बल हो गये, फिर क्या--एक हाथ से भारत का खंडन और बनावटी एकता के दूसरे विष-भरे हाथ से हिन्दुओं की भारतीयता का नाश!--एवरेस्ट के शिखर पर उनका कैसा सुन्दर हरा झंडा फहराने लगा!! इस स्वप्न को देखकर वे फूले न समाये और उनका साहस और भी बढ़ गया।

हिन्दी की आत्मा को एक जोर का धक्का तब लगा जब उसी की गोद में पले हुए कुछ भारतीय नेता भी इस षड्यंत्र के चक्र में फँस गये--उन्हीं की आँखों तले, और तो और, राम और सीता भारतीय बच्चों के सम्मुख 'बादशाह' और 'बेगम' के रूप में लाये गये। षड्यंत्रकारियों की भाषा अपने अथवा हिन्दुस्तानी के नाम से वही भाषा रही, परन्तु हिन्दी के अस्तित्व तक पर कुठाराघात करने में उन्हें इन नेताओं का कुछ न कुछ सहयोग मिला, और उनकी सफलता पराकाष्ठा पर उस दिन पहुँची जब महात्मा गांधी ने हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से त्याग-पत्र दे दिया। सत्य के पुजारी, सत्यपथ के प्रदर्शक और भारतीय राष्ट्रीयता के प्राण गांधी! तुमने सत्य की ही ज्योति में देखा था कि हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है, और नागरी ही उस भाषा की लिपि। तुमने अन्य सभी प्रान्तों के निवासियों को हिन्दी सीख लेने का इसीलिए आदेश दिया था। तुम्हें हिन्दी की लोकप्रियता और देवनागरी के, हमारे देश की ही नहीं, संसार भर की सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि होने पर गर्व था। भारतीयता से मुँह मोड़नेवालों ने तुम्हारे आदेश का तिरस्कार किया--और तुम अपने पथ से डिग गये। जब तुम उन्हें भारतीयता और राष्ट्रीयता का पाठ न पढ़ा सके और न इस प्रकार पढ़ा सकोगे तो तुमने भारतीयों पर ही अभारतीयता लादने की ठानी--यह कैसा न्याय! तुमने किसी भाषा का विरोध तो नहीं किया था, तुमने यह तो नहीं कहा था कि राष्ट्रभाषा किसी अन्य प्रान्तीय भाषा का स्थान ले लेगी, फिर देवनागरी के प्रति उनकी यह घृणा कैसी?--तुमने इस पर अवश्य विचार किया होगा। सत्य के सिंहासन से इतनी सरलता से डिग उठने पर तुम उन्हें क्या सिखा सकोगे?

'हिन्दुस्तानी' के इसी आन्दोलन से अन्य असंख्यों के अतिरिक्त वह हृदय--रविशंकर शुक्ल--फिर तड़पा, और यह तड़पन हिन्दीवालों को सावधान करने के लिए पुस्तकाकार, 'राष्ट्रभाषा की समस्या और हिन्दुस्तानी आन्दोलन' के रूप में, हमारे सामने प्रस्तुत हुई है। तर्कों की अखंडता और सप्रमाणता, विचारों की स्पष्टता और कथनों की निर्भीकता ने इस पुस्तक को एक विशेष महत्त्व प्रदान कर दिया है। वास्तव में, हिन्दी-प्रेमियों, देश के नेताओं, कांग्रेस के वर्त्तमान और भावी अधिकारियों, शिक्षा-बोर्डों के सदस्यों, शिक्षकों और विद्यार्थियों का यह महान् कर्त्तव्य है कि वे इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें। कारण, बिना इसे पढ़े हुए यह संभव है कि वे अपने अन्य आगे के कर्त्तव्यों को स्पष्टतः न समझ सकें। मेरा तो विचार यह है कि इस अवसर पर चाहे रामायण और गीता का पाठ कुछ समय के लिए स्थगित भी कर दिया जाय, परन्तु इस पुस्तक का प्रचार घर-घर होना चाहिए। धनियों को चाहिए कि वे इसकी प्रतियाँ मुफ़्त बाँटें--इससे अधिक धर्म और पुण्य की बात और कोई न होगी। हमें जान लेना चाहिए और इस बात से सावधान हो जाना चाहिए कि किस छद्म रूप में हिन्दी को कलुषित करने और उसका गला घोंटने का प्रयत्न करनेवाली शक्तियां हमारे जीवनमूल पर कुठाराघात करने के लिए मँडरा रही हैं। हमें प्रतिज्ञा करनी चाहिए और शपथ लेना चाहिए कि हम हिन्दी के प्रति अपना कर्त्तव्य करेंगे--उसी प्रकार जैसे माता के प्रति पुत्र कर्त्तव्य करता है--क्या मजाल कि उस पर कोई उँगली भी उठा सके!

पं० रविशंकर शुक्ल से हमारी सानुरोध प्रार्थना है कि हिन्दी न जाननेवालों के लिए वे इसका अँगरेजी अनुवाद भी तैयार कर दें। और इस अनुवाद के प्रकाशन का कार्य किसी ऐसे प्रकाशक को ले लेना चाहिए जो इसका अधिक से अधिक विज्ञापन और प्रचार कर सके। इस संबंध में धनवान् हिन्दी-प्रेमियों की आर्थिक सहायता की अत्यन्त आवश्यकता है।

*लेखक--श्री रविशंकर शुक्ल; प्रकाशक--गंगा-ग्रंथागार, ३६ लाटूश रोड, लखनऊ; प्रथमावृत्ति; मूल्य--सजिल्द ३।), सादी २।); छपाई, सफ़ाई और कागज--साधारण; पृष्ठ-संख्या--कुल मिलाकर ३०२।

गीत

लेखक, श्री बलवीरसिंह 'रंग'

मैं सब कुछ भूला,
किन्तु किसी का ध्यान नहीं भूला,
युग को भूला पर
नव-युग का निर्माण नहीं भूला!
यौवन के काले पृष्ठों की अति उज्ज्वल भाषा को भूला,
अविराम प्रतीक्षा में बीती मनचीती आशा को भूला,
पर विश्वासों में उलझा-सा
अनुमान नहीं भूला!
मधुवन में मधुपावलियों की मादक गुंजारों को भूला,
मधुऋतु की रानी कोयल की चिर-करुण पुकारों को भूला,
कलियों को भूला,
कलियों की मुस्कान नहीं भूला!
सुनता आया हूँ विस्मृति की छाया में पलती याद सदा,
दुख की छाती पर ही होती सुख की दुनिया आबाद सदा,
सुख-दुख को भूला,
सुख-दुख की पहिचान नहीं भूला!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म जगत् के सुप्रसिद्ध अभिनेता जीवन।

'जीवन'—सुप्रसिद्ध फ़िल्म कलाकार और अभिनेता

फ़िल्मी अभिनय-कला तथा साहित्य पर एक सुन्दर इन्टरव्यू

लेखक, श्री उमेश जोशी

[२]

प्रश्न—क्या आजकल की फिल्में अच्छी बन रही हैं?

उत्तर—आजकल फिल्मों ने हमें अधिकतर मनोरंजन ही दिया। इससे आगे, वह और कुछ न दे सकीं। मनोरंजन कर देना गुनाह नहीं है, लेकिन अश्लीलता से युक्त मनोरंजन प्रस्तुत करना तो अवश्य गुनाह है। आजकल की भारतीय फिल्में अधिकतर ऐसी ही हैं। वह मनोरंजन के नाम पर अश्लीलता का ही नग्न प्रदर्शन किया करते हैं। जब हमारे मुल्क से जहालत दूर हो जायगी और लोकमत ऊँचा उठेगा तब निर्माता स्वयं अच्छी फिल्में बनायेंगे। हमें अच्छी फिल्मों की आवश्यकता बतानी चाहिए। "एज्यूकेशनल-फिल्मों" की जनता को माँग करनी चाहिए, क्योंकि एज्यूकेशनल फिल्में ही जनता के स्तर को उठा सकती हैं। कम से कम मैं तो आजकल की फिल्मों से सन्तुष्ट नहीं हूँ। मैं अभिनय जरूर करता हूँ उनमें, लेकिन मेरी उनमें दिली सहानुभूति नहीं? क्योंकि मैं जिस प्रकार की फिल्में चाहता हूँ, वह अभी नहीं बनाई जा रही हैं। उनका बनना बहुत कुछ जनता की रुचि के ऊपर है। इससे पहिले नहीं। चूंकि लाइफ़ का केन्द्र "युवक" है, इसलिए आजकल फिल्में "युवक" पर ही बनती हैं! बिना "युवक" के कोई फिल्म होती ही नहीं। यह भी भारतीय फिल्मों की एक कमी है—युवकों का संगठन अवश्य है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि अल्पमत (बुड्ढे-बच्चे) वालों को एकदम ठुकरा दिया जाये—हमें तो सभी के जीवन का चित्रण करना चाहिए। निर्माताओं का यह कहना कि हम फिल्में दस आनेवाले व चार आनेवालों के लिए बनाते हैं। जैसी वह माँगते हैं, वैसी ही हम देते हैं इसलिए हमें सबसे पहिले इन्हीं लोगों की रुचि का सुधार करना चाहिए!

प्रश्न—आपको किस प्रकार के कथानक पसन्द हैं?

उत्तर—जो कहानी जिन्दगी की वास्तविकता लिए हुए हो—वही कहानी मुझे अधिक पसन्द है। जिस कथानक में स्वाभाविकता नहीं, उस कथानक का जिन्दा रहना ठीक उसी मानव के समान है, जो कि बिना हवा के जिन्दा रहने का ख्वाब देखता हो। जो कहानी-कल्पना-लोक से ली जाती है, वह कहानी मुझे पसन्द नहीं। मैं कल्पना को पसन्द करता हूँ—लेकिन उसका विस्तार जीवन के साथ हुआ हो।

प्रश्न—आप किस प्रकार के डाइरेक्टरों के साथ काम करना पसन्द करते हैं?

उत्तर—मैं दो तरह के डाइरेक्टरों के साथ काम करना अधिक पसन्द करता हूँ। पहिला जो कि सब कुछ मेरे ऊपर छोड़ दे, दूसरा जो कि मुझे सब कुछ बनाने की भावना रखता हो। बनाने से मतलब यही है कि जिस डाइरेक्टर की प्रतिभा इतनी तेज है कि उसके साथ कार्य करने से मेरी प्रतिभा का विकास ही हो, तो ऐसे डाइरेक्टर के साथ मैं "नुक़ता-चीनी" बिलकुल नहीं करता। जो डाइरेक्टर मेरी प्रतिभा से भी नीचे हैं, उनके साथ उसी रूप में कार्य कर सकता हूँ, जब कि वह सब कुछ मेरे ऊपर ही छोड़ दें, जिससे मेरी प्रतिभा कुंठित न हो जाये! मैं अपनी प्रतिभा का का दिन ब दिन विकास करना चाहता हूँ।

प्रश्न—फिल्मी-जीवन क्या फूलों की शय्या है?

उत्तर—यह सोचना ही ग़लत है। सिनेमा के बाहर के रहनेवाले व्यक्ति यही प्रायः सोचा करते हैं। सिनेमा की चमक सिनेमा की आराम-तलबी की सुन्दर कहानियाँ बाहर के लोगों में बहुत कही जाती हैं। लेकिन इन कहानियों में सत्यता कुछ भी नहीं। वास्तव में हमारा जीवन कठिनाइयों की खाई में पड़ा है। दर्शक तो हमारे जीवन को चित्रित किया हुआ देखते हैं। इसलिए उन्हें वह आकर्षक मालूम पड़ता है। सिनेमा के कलाकारों को भी दूसरों की तरह जिन्दगी के बारे में सब कुछ सोचना पड़ता है। सिनेमा की लाइफ़ "फूलों की शय्या" नहीं है, बल्कि उनको भी जीवन के "उत्थान-पतन" देखने पड़ते हैं। हमारे आरामतलबी की दलील जनता यह दिया करती है कि हमें तनख्वाह बहुत अधिक मिलती है, इसलिए हम खूब मौज में रहते हैं। किन्तु जनता का यह सोचना ग़लत है। हम लोग बहुत सोच समझकर काम करते हैं। हमको भविष्य का भी ख्याल रखना पड़ता है, क्योंकि बाद में हम और किसी व्यापार के मतलब के नहीं रहते, और न हमें अनुभव ही होता है। जनता हमेशा हमारे जीवन का चित्र दूर ही से लिया करती है, और उसी के चित्र के आधार पर वह "ऊट-पटांग" कल्पना किया करती है। फिर इसका जिम्मेदार कौन? इस प्रकार की कल्पना ही उनको ग़लतफहमी की दुनिया में ले जाती है। कभी-कभी ऐसी कल्पना से लोगों का अहित हो जाता है। क्योंकि बहुत से अनधिकारी व्यक्ति भी सिनेमा की दुनिया में आने के लिए प्रयत्न कर बैठते हैं, काफी धन के ऊपर भी पानी फेरते हैं। बम्बई के बहुत से गुंडे ऐसे हैं कि वह ऐसे ही भोले-भाले व्यक्तियों को चकमा देकर उनको बेवकूफ़ बनाया करते हैं। बाद में ऐसे व्यक्तियों को पछताना पड़ता है। मेरा तो यही कहना है कि वह समझदारी से काम लें। सिनेमा में आने के लिए वह अपने को परेशान न करें।

प्रश्न—आपका नवयुवकों के लिए क्या शुभ सन्देश है?

उत्तर—मेरा नवयुवकों के लिए यही सन्देश है कि उनको अत्यधिक उन्नति करनी चाहिए। जीवन के अन्दर ग़लतियों को छिपाना नहीं चाहिए, बल्कि ग़लतियों को प्रगट कर देना चाहिए, जिनमें इतना साहस नहीं, वह कायर है। वह दुहरा पाप करते हैं। पहिला पाप यह कि उन्होंने ग़लती की। दूसरा उसको छिपाया—इसलिए युवकों को छिपाने की आदत से बचना चाहिए। यह उनके आत्मा की कमजोरी है। अपनी भूलों पर परदा डालना ही पतन के रास्ते पर जाना है। यदि आप किसी ग़लती को स्पष्ट सबके सामने कह देंगे, तो फिर आप भविष्य में कम ग़लतियाँ करेंगे। इस तरह से आप एक दिन ग़लतियों की दुनिया से बाहर हो जायेंगे। भूलों की संख्या कम करने का अच्छा तरीका यही है। इन्सान ज्यों-ज्यों जीवन में भूलें कम करता जाता है, त्यों-त्यों उसका आत्मिक विकास भी होता जाता है। यदि आज के युवक वास्तव में जिन्दगी का आनन्द देना चाहते हैं, तो उन्हें चरित्रवान बनना चाहिए। चरित्रवान बनने के लिए आत्मिक उन्नति जरूरी है। आत्मिक उन्नति के लिए "गुनाहों की बस्ती" से बचकर चलना होगा। तभी आप जीवन के आदर्श तक पहुँच सकते हैं। उससे पहिले नहीं। मान लीजिए कोई लड़का स्कूल देर से पहुँचता है, और वह झूठ बोलकर अपने को बचा लेता है। यह बच जाना ही उसके पतन का कारण होता है। ऐसा नहीं होना चाहिए। ग़लती का मान लेना ही चरित्र को उत्थान मार्ग पर ले जाना है। अक्सर ग़लतियों का प्रारम्भ स्कूल से ही होता है। मेरा सब कुछ कहना

फिल्मी कलाकारों से इंटरव्यू करनेवाले श्री उमेश जोशी।

विद्यार्थियों से ही है। वह ही आगे चलकर राष्ट्र के कर्णधार बनेंगे—इसलिए उनको अभी से उसके लिए तैयार होना है। अभी से उन्हें अपने को राष्ट्र के योग्य बनाना है।

प्रश्न—सिनेमा के भविष्य के सम्बन्ध में आपकी क्या राय है?

उत्तर—सिनेमा का भविष्य बहुत ही उज्ज्वल है। एक समय था जब कि सिनेमा की दुनिया में पैर रखना भी चरित्र का पतन समझा जाता था। बात यह थी कि उस वक्त सिनेमा का सम्बन्ध बुरे आदमियों के हाथ में था—इसलिए अच्छे व्यक्ति उसमें जाने से झिझकते थे। पहले स्टूडियो के अन्दर अच्छे व्यक्ति छिपकर ही जाते थे, ताकि समाजवाले उन्हें देख न लें। यदि किसी व्यक्ति को समाजवालों ने देख लिया कि यह स्टूडियो के अन्दर आता-जाता है, तो वह व्यक्ति पतित समझा जाता था। उसमें जाना मानव-आदर्श के खिलाफ़ समझा जाता था। लेकिन अब सिनेमा का वातावरण बहुत कुछ सुधर गया है, क्योंकि डाइरेक्टर और प्रोडयूसरों के शयनागार स्टूडियो से हटकर घर पर पहुँच गये हैं। शिक्षित व्यक्तियों के आ जाने से सिनेमा-संसार में क्रान्ति पैदा हो गई है। जब तक शिक्षित व्यक्ति सिनेमा से नाक-भौं सिकोड़ते रहे, तब तक का सिनेमा का युग बहुत ही गन्दा रहा। उस वक्त तो नाचना गाना वेश्याओं की सम्पत्ति ही समझी जाती थी। इसीलिए उस वक्त सिनेमा में विकास नहीं हुआ। अब यह भावना धीरे-धीरे कम होती जा रही है। इसी लिये सिनेमा का भविष्य आशाप्रद है। भविष्य में तो सिनेमा की दुनिया में बहुत से सुधार होने को हैं। बहुत-सी नवीन बातें होने को हैं। बहुत-सी टेकनिकल मशीनों में हेर-फेर होने को है। इसी तरह अनेक बातें सिनेमा के भविष्य में छिपी हुई हैं, जो कि एक-एक करके बाहर निकलेंगी। आनेवाला युग क्रियाशील है। उसमें कायरों की गुजर नहीं। आनेवाले युग में मानव-जीवन की प्रत्येक बातें सिनेमा के द्वारा प्रदर्शित हुआ करेंगी—फ़िल्म मानव-जीवन के ऊपर एक जबर्दस्त विजय पायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारवाड़ लोक-परिषद्

वार्षिक अधिवेशन मार्च में

(निज संवाददाता द्वारा)

मारवाड़ लोक-परिषद् का वार्षिक अधिवेशन २८ फ़रवरी, १ और २ मार्च सन् १९४६ को नाँवा कुचामन रोड में होने जा रहा है। अधिवेशन के लिए जोरदार तैयारियाँ हो रही हैं। मारवाड़ लोक-परिषद् के पुराने और प्रमुख कार्यकर्ता श्री छगनराज चौपासनीवाला नाँवा परगने का दौरा कर रहे हैं। इस अधिवेशन में श्रीयुत विजयसिंह जी बियाणी व राजपूताने के सभी प्रमुख राष्ट्रीय कार्यकर्ता एकत्रित होंगे।

जोधपुर में बेगार विरोधी रैली

जोधपुर लोक-परिषद् के तत्त्वावधान में एक विराट् जुलूस जिसमें सभी जातियों के लोग शामिल थे, लोक-परिषद् के कार्यालय से निकला और बड़ा बाज़ार से होता हुआ सरदार मार्केट गिरदीकोट पहुँचकर विराट् सभा में परिणत हो गया। अलग-अलग जातियों के नुमायन्दों ने बेगार प्रथा की तकलीफ़ें विशाल जनसमूह के सामने पेश कीं और बतलाया कि बेगार का नया क़ानून जो सरकार हम पर लादना चाहती है पुराने क़ानून से भी ख़तरनाक है। श्रीयुत बाबालाल सोलंकी एडवोकेट ने एक प्रस्ताव-द्वारा बेगार क़ानून का सख्त विरोध किया और सरकार से प्रार्थना की कि प्रजा के हित का ध्यान रखते हुए यह क़ानून रद्द कर देना ही सरकार की समझदारी होगी। श्री द्वारकादास जी ने धान की समस्या को हल करने के कुछ सुझाव पेश किये। इसके अलावा श्री छगनराज जी चौपासनीवाला, राधाकिशन जी बोहरा और दुर्गादेवी पुरोहित के भाषण हुए। बेगार क़ानून रद्द हो, बेगार-प्रथा का नाश हो और जय हिन्द के गगनभेदी नारों के साथ सभा बरख़ास्त हुई।

पाली मिल के मजदूरों में असन्तोष

विश्वस्त-सूत्रों से सूचना मिली है कि पाली मिल के मजदूरों में काफी असन्तोष पैदा हो रहा है क्योंकि उनका वाजिब बोनस कई महीने से नहीं मिल रहा है। इसके अलावा आज के अनाज के भयंकर संकट-काल में उनको महँगाई का भत्ता भी पूरा नहीं दिया जाता। इतनी महँगाई और तंगाई की अवस्था में भी उनको दिये जानेवाले कपड़े पर तथा छः फ़ीसदी मुनाफ़ा लगाकर कपड़ा दिया जाता है, जब कि कलकीं को एक्समिल रेट्स से कपड़ा दिया जाता है। काम भी उक्त मजदूरों से १० घंटे प्रतिदिन लिया जाता है जब कि दूसरे सरकारी कारख़ानों में भी ८ घंटे से अधिक काम नहीं लिया जाता। मजदूरों की वाजिब माँगों को पूरा न करने और उनको साधारण सुविधायें न देने से आम मजदूरों का असन्तोष बढ़ता ही जा रहा है। यदि मिल के अधिकारियों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया तो अवस्था खराब होने का अन्देशा है।

राणावास में अपूर्व उत्साह

बेगार-प्रथा, व जागीरदारों के जुल्मों के खिलाफ़ आवाज उठाने के लिए राणावास ठिकाना व आस-पास के गाँवों के बाशिन्दों की एक विराट् सभा श्रीयुत मीठालाल त्रिवेदी, सभापति सोजत लोक-परिषद्, के सभापतित्व में हुई। सभा में क़रीब ६, ७ हज़ार लोग उपस्थित थे। पास के गाँवों से सभी जातियों के लोग कोसों पैदल चलकर आये। मारवाड़ लोक-परिषद् के सभापति एवं अ० भा० देशी राज्य लोक-परिषद् के प्रधान मंत्री श्री जयनारायण जी व्यास भी मौजूद थे। भाषण के दौरान में श्री व्यास जी ने बताया कि किस-किस प्रकार से जागीरदार लोग प्रजा को कष्ट देते हैं और इस महँगाई के जमाने में बेगार और ग़ैर-क़ानूनी लोग-बाग वसूल करते हैं ये पिशाच की तरह ग़रीबों का ख़ून चूस रहे हैं श्री व्यासजी ने किसानों से बेगार क़ानून के खिलाफ़ आवाज उठाकर उसे सदा के लिए दफना देने पर जोर दिया। अन्त में श्री व्यास जी ने जागीरदारों को चेतावनी दी कि वे प्रजा के सेवक बनकर एक साधारण आदमी की तरह रह सकते हैं वरना इनके जाने के दिन अब दूर नहीं हैं।

समाचारपत्रों की स्वाधीनता क्यों ?

(पेज ४ का शेष)

एशियाई देशों से सम्पर्क कायम करके अपनी संवाद-समिति के द्वारा खबर प्राप्त करनी चाहिए ताकि अपने पड़ोसी देशों की सही खबर मिल सके। राजनीतिक खबरों के अतिरिक्त सामाजिक, आर्थिक, साहित्यिक और स्वास्थ्य-सम्बन्धी खबरों के प्रकाशन की ओर भी ध्यान देने की आवश्यकता है।"

पं० नेहरू ने कहा कि संपादकों को किसी भी पार्टी के समाचार को नहीं दबाना चाहिए। आपने आगे कहा कि समाचारों को दबाने का परिणाम यह होता है कि जब वह समाचार पुनः प्रकट होता है तब उसमें या तो अतिशयोक्ति की सम्भावना रहती है या वह वास्तविक घटना से बिलकुल विपरीत चित्र प्रस्तुत करता है। आपने भारत-सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि समाचारपत्रों को खबरें प्रकाशित करने के लिए पूर्ण सुविधा मिलनी चाहिए।

भारतीय समाचारपत्रों का भविष्य उज्ज्वल होने की आशा प्रकट करते हुए पं० नेहरू ने कहा कि टेली प्रिन्टर से भी हिन्दुस्तानी में खबरें भेजी जायें। आपने कहा कि हिन्दी-उर्दू के अखबारों को अँगरेजी में प्राप्त खबरों का अनुवाद करना पड़ता है। जो भाषण हिन्दुस्तानी में होते हैं उसके अँगरेजी अनुवाद का वे अनुवाद करते हैं। इससे देशी भाषा के पत्रों में गलत खबरें छप जाती हैं। इस प्रकार वक्ता के विचारों की हत्या की जाती है।

पं० नेहरू ने भारत की वर्तमान समाचार-समितियों के सम्बन्ध में कहा कि वे ठीक ढंग से संगठित नहीं हैं।

श्रमजीवी पत्रकारों के वेतन आदि की शिकायतों के सम्बन्ध में आपने कहा कि भारत के समाचारपत्रों को इस सम्बन्ध में कुछ अवश्य करना चाहिए।

भरपेट भोजन मिले बिना पत्रकार पत्रों का स्तर ऊँचा नहीं उठा सकते। वेतन, ग्रेड सुरक्षा आदि प्रश्नों को हल करना आवश्यक है।

आपने यह भी कहा कि समाचारपत्र समाजिक तथा आर्थिक पहलुओं पर जितना ध्यान देना चाहिए नहीं देते।

समाचारपत्रों में निकलनेवाले विज्ञापनों के सम्बन्ध में आपने कहा कि इनमें से कुछ को पढ़कर मुझे बहुत ही दुःख हुआ है। आपने संपादकों से अपील की कि वे विज्ञापनों की कड़ी जाँच करें और पैसे की दृष्टि से भी ऐसे विज्ञापन न छपने दें जो समाज के लिए घातक हों।

आपने अन्त में पुनः यह अपील की कि गाँवों और देहातों के जीवन के लिए अधिक जगह दी जाय।

सभापति का भाषण

अखिल भारतीय समाचारपत्र सम्पादक सम्मेलन के अध्यक्ष-पद से श्री तुषारकान्ति घोष ने भाषण देते हुए कहा कि हमारे देश में ११३ युद्धकालीन आर्डिनेंस सम्पूर्ण अथवा आंशिक रूप से रद्द कर दिये गये हैं। ऊपर देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि स्थिति सुधर गई है और समाचारपत्रों पर से युद्धकालीन नियंत्रण तथा प्रतिबन्ध हटा लिये गये हैं। किन्तु जिस आर्डिनेन्स द्वारा इन सब आर्डिनेन्सों को रद्द किया गया है उनकी धाराओं को अगर आप गौर से पढ़ें तो मालूम हो जायगा कि वास्तव में स्थिति जैसी ऊपर से दिखाई पड़ती है वैसी नहीं है। कुछ संशोधनों के साथ उन आर्डिनेन्सों का सार भाग अब भी कायम है। आर्डिनेन्सों के अन्दर किये गये सभी कार्यों को जायज करार दे दिया गया है। एक हाथ से जो किया गया है वह दूसरे हाथ से ले दिया गया है। यही इस देश में परम्परागत नीति बरती गई है।

जब तक सरकार तथा उसकी नीति में घोर परिवर्तन नहीं हो जाता तब तक समाचार-पत्रों की स्वाधीनता सुरक्षित नहीं रह सकती। यदि चुनाओं के फलस्वरूप राजनीतिक अड़ंगा हल हो गया और राष्ट्रीय सरकार स्थापित हो गई तो समाचार-पत्र स्वतंत्रता के वातावरण में साँस ले सकेंगे। किन्तु अगर दूसरा संघर्ष प्रारम्भ हुआ तो सबसे पहले समाचारपत्रों पर ही प्रहार होगा लेकिन उस अवस्था में भी सरकार का हित इसी बात में होगा कि अत्याचारों की अति न होने पावे। अगस्त १९४२ के उपद्रव के सम्बन्ध में अनेक स्थानों पर बड़े पैमाने पर अमानुषिक अत्याचार ढाये गये हैं। सरकार ने उनके समाचारों को भी नहीं प्रकाशित होने दिया इन अत्याचारों की कथायें अब प्रकाशित की जा रही हैं और वे बड़ी ही भीषण तथा लोमहर्षक कथायें हैं। सरकार की ओर से उनका कोई खंडन नहीं किया गया है। उन दिनों पुलिस और फौजियों की ओर से जो अत्याचार ढाये गये थे, उनको छापने की आज्ञा पत्रों को दे दी गई थी। आप लोगों का जो कि समाचारपत्रों से संबंधित हैं यह कर्तव्य है कि अपने वैध अधिकारों की रक्षा का उपाय करें यद्यपि बहुत सोचने पर यही समझ में आता है कि जब तक जनता की सरकार स्थापित नहीं हो जायगी तब तक समाचारपत्रों को स्वाधीनता नहीं मिल सकेगी।

हम भारतीय पत्रों के लिए कोई राजकीय अधिकार पत्र तो नहीं चाहते लेकिन यह अवश्य चाहते हैं कि उन्हें असाधारण रूप से दंड न दिया जाय। हमारी माँग है कि भारतीय समाचारपत्रों को उतनी ही स्वाधीनता दी जाय जितनी कि ब्रिटिश समाचारपत्रों को प्राप्त है। इस उद्देश्य से मैं आप लोगों की ओर से सरकार के विचारार्थ निम्नलिखित सुझाव उपस्थित करता हूँ :—

(१) समाचार पत्रों के संबंध में भारत-रक्षा संबंधी सब नियम हटा लिये जायें। (२) युद्धकालीन आर्डिनेन्स को जो बचे हुए हैं रद्द कराने के लिए शीघ्र से शीघ्र व्यवस्थापिका सभा-द्वारा कार्रवाई कीजाय। (३) व्यवस्थापिका सभा की सहायता से भारत-सरकार को प्रेस इमरजेन्सी पावर्स ऐक्ट, देशी नरेश रक्षा-क़ानून तथा ऐसे अन्य क़ानूनों को रद्द करा देना चाहिए। (४) राजद्रोह, अदालत की मानहानि तथा जाब्ता फ़ौजदारी सम्बन्धी क़ानूनों में उपयुक्त संशोधन-परिवर्तन किये जायें। (५) युद्धकालीन आर्डिनेन्सों के अन्दर पत्र-पत्रिकाओं से जो जमानतें ली गई हैं उन्हें फ़ौरन वापस कर दिया जाय और उन आर्डिनेन्सों को रद्द घोषित किया जाय। (६) समाचार-पत्रों, लेखों, पुस्तकों अथवा राजनीतिक लेखों के प्रकाशन पर सब तरह की रोक हटा ली जाय। (७) भारत-संबंधी उन सभी परचों और पुस्तिकाओं को फौरन वापस लिया जाय जो भारतीय व्यवस्थापिका सभा की जानकारी व सलाह के बिना ब्रिटेन तथा अमेरिका में प्रकाशित अथवा वितरित किये गये हैं। (८) जब तक युद्धकालीन आर्डिनेन्स बिलकुल रद्द न कर दिये जायें तब तक प्रेस ऐडविजरी कमेटी के सामने मामला पेश करने और सम्बन्धित पत्र को सफाई देने का मौका देने के पहले किसी के खिलाफ मामला न चलाया जाय। जमानत माँगने या उसे जब्त करने के पहले भी यह प्रणाली अख्तियार की जानी चाहिए।

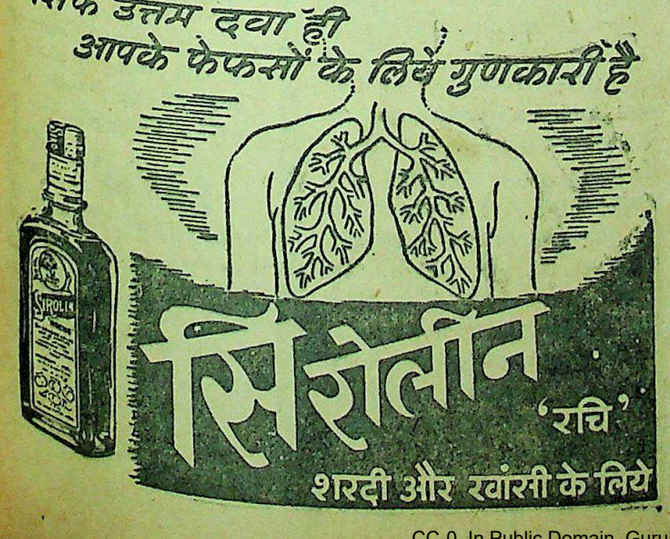

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

गोरखपुर में श्री विष्णुभगवान रामायण समिति-असुइन का चतुर्थ वार्षिकोत्सव ता० ९ फरवरी से ११ तक समारोह से हुआ। वृन्दावन के गोस्वामी श्री विन्दु जी महाराज के सभापतित्व में उक्त सभा का चतुर्थ वार्षिकोत्सव बड़े समारोह से सम्पन्न हो गया। गोस्वामी छबीलेलाल जी महाराज, श्री नाथूराम शर्मा नम्र, पंडित रामजी व्यास, श्रीमती रामदेवी जी, श्री तुरन्त नाथ जी, श्री गौरीशंकर जी आदि के प्रवचन तथा भाषण हुए। अन्तिम दिन दोपहर में महिलाओं की सभा हुई। समिति के सभापति श्री मङ्गलप्रसाद जी तथा मंत्री श्री जगदीशप्रसादसिंह जी का प्रबंध बहुत ही सराहनीय रहा।

सभापति जी ने अपने भाषण में यह सिद्ध किया कि श्री रामचरित-मानस धार्मिक, सामाजिक एवं नैतिक तीनों ही अंगों से परिपूर्ण है और जो लोग उपरोक्त अंगत्रयी से इस ग्रन्थ को एक ही किसी अंग में खींचकर रखना चाहते हैं, वह ग्रन्थ के सर्वांग सौन्दर्य भङ्ग दोष के भागी भी कहे जा सकते हैं। मानस तथा गीता किसी एक ही जाति वा धर्म की सम्पत्ति नहीं है, वरन् भूमंडल के सभी मनुष्यों की कल्याणकारी निधि है। इन दोनों ग्रन्थ-रत्नों के अनुसार संसार आचरण करे तो इहलोक तथा परलोक दोनों ही का कल्याण हो।

पंडित छबीलेलाल गोस्वामी अपने अभ्यास के अनुसार धार्मिक भाषण में राष्ट्रीय दृष्टि-विन्दु रखते हुए बोले। आपने यह सिद्ध किया कि मानस का अध्ययन नैतिक विचार-धारा से रहित होने पर निर्जीव हो जाता है। मानस की रचना राजनीति के आधार शिला पर ही हुई है। मानस तथा महाभारत केवल धार्मिक ग्रन्थ नहीं हैं दोनों की रचना का उद्देश्य तभी सफल होगा, जब उन्हें धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, व्यावहारिक, आर्थिक, कौटुम्बिक आदि सभी दृष्टियों से देखा जाय। धर्म-ग्रन्थों के केवल पढ़ने से कुछ लाभ नहीं, जब तक उनका मनन और उनके अनुसार आचरण भी न हो। धर्म, राष्ट्र, समाज आदि के बोझ को वही उठा सकता है, जो शरीर, चरित्र, आत्मा से सबल है। आपके भाषणों से जनता में धार्मिक भावना के प्रवाह में एक नई विचार-धारा की क्रान्ति-सी उत्पन्न हो जाती है।

कविवर पंडित नाथूराम जी शर्मा नम्र की विभीषण शरणागति को श्रोताओं ने बहुत ही पसन्द किया। श्री राम जी व्यास के मानस के उद्धरणों से जनता संतुष्ट रही। श्री रामदेवी के भाषण का अच्छा आनन्द रहा।

—संवाददाता

* * *

ज्वालापुर महाविद्यालय शिक्षा-भवन के कमरे जो तीन-चार बनने शेष थे, बनने आरम्भ हो गये हैं। उनमें प्रत्येक भवन में २५००) व्यय होगा जिसके लिए सर्वश्री रायबहादुर श्री लाला मथुरादास जी रईस व वैङ्कुर्स कोषाध्यक्ष सेठ केदारनाथ सेकसरिया आगरा, श्री सेठ गंगाशरण बुधिया राँची, सेठ लाला जगदीशप्रसाद रुड़की ने २५००) रुपया प्रदान किये हैं। सभा इन महानुभावों को धन्यवाद देती है साथ ही दिल्ली-निवासी बाबू जगन्नाथप्रसाद जी ने अपनी उदारता से एक प्रेम ट्यूबवेल भी बनवाना आरम्भ करा दिया है। जिसमें लगभग ८-१० हजार रुपया व्यय होगा। सीताराम स्कूल ज्वालापुर भी महाविद्यालय की विशेष प्रेरणा पर श्री सेठ बनवारीलाल रामदेव जी ठेकेदार नई दिल्ली-निवासी ने १५००) की लागत से दो दूकानें बनवा दी हैं। एक बड़े हाल का भी वचन दिल्ली-निवासी श्री लाला बाबूराम बालकृष्ण जी रईस तारगिट्टीवालों ने दे दिया है। उसका कार्य भी बहुत शीघ्र प्रारम्भ होनेवाला है। ब्रह्मचारियों का पठन-पाठन ठीक चल रहा है। दीक्षान्त भाषण के लिए भारतीय प्रसिद्ध नेता श्री आचार्य नरेन्द्रदेव जी की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

—सत्यव्रत शास्त्री, उपमंत्री

* * *

हरिद्वार में डाक व तार के कर्मचारियों की सभा हुई जिसमें हरिद्वार, कनखल, ज्वालापुर तथा गुरुकुल के कर्मचारी सम्मिलित थे। एक प्रस्ताव-द्वारा वेतन-वृद्धि न होने पर असन्तोष प्रकट किया और निश्चय किया कि १५ फरवरी से सभी डाकखाने का भूखा कर्मचारी-वाला बिल्ला लगा कर आयें और यदि केन्द्रीय यूनियन ने आज्ञा दी तो हड़ताल भी की जायेगी।

राशन कमी के विरुद्ध स्वरूप बाजारों से एक जलूस निकला जिसमें पूर्ण राशन करो, चोर बाजार बन्द करो के नारे लगाये गये। गंगा-तट पर श्री केशवराम के सभापतित्व में जलसा हुआ जिसमें प्रस्ताव पास हुआ कि राशन पूरा हो और चोर बाजार बन्द हो। जलसे में श्री कर्त्तारसिंह, चौधरी रामभज, किशोरसिंह, शिवकुमार गौड़ और श्री भवानीगिरि जी के भाषण हुए।

—संवाददाता

* * *

वर्धा के नव-दम्पति

हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा के कार्यालय-मंत्री श्री श्रीपाद जोशी तथा सुश्री माणिक सर देसाई। आप लोगों ने स्वतंत्रत रूप से निर्वाचित अन्तर्जातीय विवाह किया है। इस समय आप लोग काकाबाड़ी वर्धा में निवास करते हैं।

* * *

हरिद्वार के रामलीला कमेटी के पदाधिकारियों का निम्नलिखित चुनाव हुआ। प्रधान—श्री हरनामदत्त वैद्य। उप-प्रधान—सर्वश्री सरदार कृपाराम, महन्त घनश्यामगिरि और लाला कर्मचन्द्र। प्रधान-मंत्री—श्री लाला तुलाराम जी मित्तल, उप-मंत्री—सर्वश्री पं० शिवकुमार जी गौड़ एम० एस-सी० प्रोफेसर रामस्वरूप भारद्वाज।

श्रीयुत राधाकृष्ण अग्रवाल एम० ए० एल०-एल० बी०, सदस्य अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, हरदोई केन्द्र से संयुक्त-प्रान्तीय एसेम्बली के लिए निर्विरोध चुन लिये गये।

सहकारी मंत्री—सर्वश्री रघुनाथप्रसाद मिश्र, ठा० रामचन्द्र 'नाचीज़'। लीला-निर्देशक—श्री पं० गोविन्दराम 'प्रेमी'। आय-व्यय निरक्षक—श्री लाला रामचन्द्र जी गुप्त।

—शिवकुमार गौड़

* * *

टीकमगढ़ से श्री यशपाल जैन लिखते हैं—श्री नाथूराम जी प्रेमी की सेवा में भेंट किये जानेवाले अभिनंदन ग्रन्थ की छपाई इलाहाबाद ला जरनल प्रेस में प्रारम्भ हो गई है। प्रेस के पास कार्य अधिक होने के कारण ग्रन्थ मार्च के अन्त तक छपकर तैयार हो सकेगा। ग्रन्थ में हिन्दी, बँगला, मराठी, गुजराती तथा अँगरेज़ी के लगभग डेढ़ सौ उच्च कोटि के विद्वानों एवं साहित्यकारों की रचनाएँ संग्रहीत हैं। कलेवर, छपाई और चित्रों की दृष्टि से ग्रन्थ अपने ढंग का एक ही होगा। दो रुपये नीचे लिखे पते पर पेशगी भेजकर साहित्य-प्रेमी बन्धु रियायती मूल्य का लाभ २५ मार्च तक ले सकते हैं।

—संवाददाता

* * *

वनस्थली (जयपुर) में वसंत का समारोह वनस्थली विद्यापीठ ने सांस्कृतिक और कलात्मक रीति से मनाया। 'वसन्त' पर प्राचीन और नवीन कविताएँ हुईं। प्रोफ़ेसर चन्द्रशेखर भट्ट का शास्त्रीय गान हुआ, प्रो० सुधींद्र का 'रेवा का राजमुकुट' नाटक पढ़ा गया और उन्हीं का 'राम रहमान' नाटक अभिनीत किया गया। 'रेवा का राजमुकुट' में आधुनिक जन-जागरण के युग में राज का कुधर्म दिखाया गया है और 'रामरहमान' में हिन्दू-मुसलमान की एकता का सन्देश है। गरवा-नृत्य भी हुआ।

—संवाददाता

जयपुर पारीक पाठशाला वसन्तोत्सव पर विनोदकृपू ग्रूप कमेटी तत्त्वावधान में एक विराट् कवि-सम्मे हुआ। हिन्दी-साहित्य के विद्वान् प्रोफ़ेसर रामकृष्ण शुक्ल "शिलीमुख" सभापति कवि श्री अद्भुत शास्त्री की "रे! वसन्त" शीर्षक रचना से जनता पर सुभ ही प्रभाव पड़ा। श्री कमलाकर "कमल" कवि-शिरोमणि भट्ट श्री मथुरानाथ शास्त्री माधव साहित्यालंकार प्रोफ़ेसर सतनाम सिंह दुर्गालाल बाढधार आदि ने भी भा लिया।

—संवाददाता

साहित्यालोचन

इसका संशोधित संस्करण छपकर तैयार है। इसमें संस्कृत के प्राचीन आचार्यों के साहित्य-सम्बन्धी सिद्धान्तों के अतिरिक्त पाश्चात्य साहित्यकारों तथा साहित्य मर्मज्ञों के मत का दिग्दर्शन बहुत ही मौलिक ढंग से कराया गया है। ४०० पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य ५।- पाँच रुपये पाँच आने।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

पूर्वी देशों में अति प्राचीन तथा सर्वश्रेष्ठ.....

'मृत सञ्जीवनी सुरा' प्राचीन आयुर्वेदिक योग पर निर्मित एक पुष्टिकारक औषध है। इसका अमोघत्व सहस्र सहस्र उपभोक्ताओं द्वारा दीर्घकाल से सिद्ध किया जा चुका है। समय की कसौटी पर कसी जाने के पश्चात् हमारी 'मृत सञ्जीवनी सुरा' ने पूर्वी देशों में अति प्राचीन एवं सर्वश्रेष्ठ होने का अधिकार यथार्थ ही उपार्जन किया है

SAKTI'S
MRITASANJIBANI
SURA

प्रत्येक अवस्था के लिए अति प्राचीन, बलवर्द्धक औषध अध्यक्ष माथुर बाबू का शक्ति-औषधालय ढाका

40-SYN. D.S.-1275

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक्जिमा

दाद, दिनाय, फोड़ा फुन्सी, जले
घाव, सुहासे, सड़ा, गला घाव तथा
एक्जिमा
आरोग्य करने में अद्वितीय है
रा॰ लिबिया
सिंथ केमिस्ट्रीट ऐण्ड कं॰ लि:
बम्बई मद्रास लखनऊ कराची अमृतसर
SSE 123

धातुपोषक
कामजोत वटी
अपचन, अग्निमांद्य, शाद्यपतन,
कब्ज, कमजोरी दूर करके खून, बल
वीर्य बढ़ाती है। (डा० ८० २॥)
कामजोत तिला
के उपयोग से इन्द्रीं का नसें व अव-
यव मजबूत होकर उत्थानशक्ति और
मनःशक्ति बढ़ती है। फा शी० २॥)
दुनमजरी फार्मेसी—जामनगर
हाबाद—मदन स्टोर्स ४७ जोन्स्टनगंज

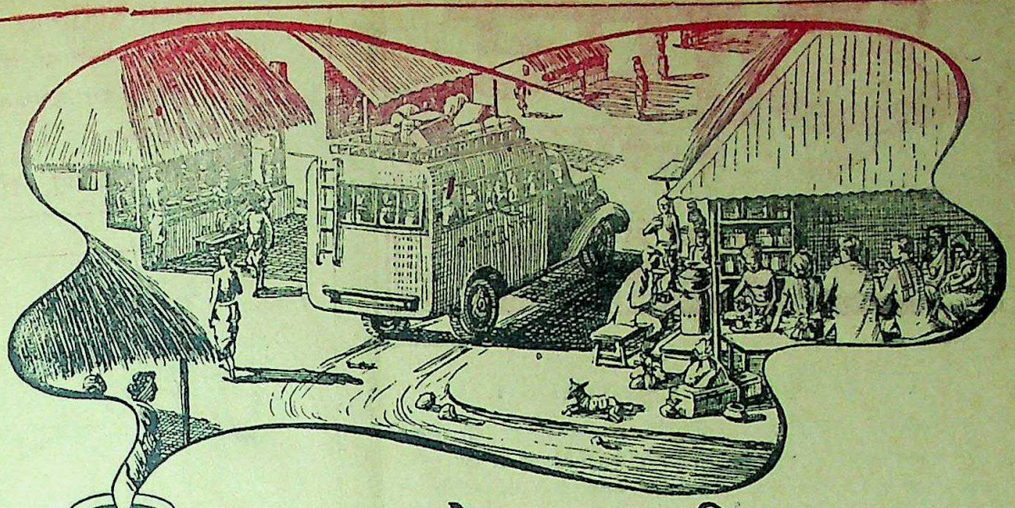

रास्ते पर विश्राम

बस में तेल-पानी देने में काफी समय लगता है और इससे भी कहीं अधिक—एक लाइन के बस से दूसरे लाइन के बस को पकड़ने में। भारतवर्ष के मुफस्सिल अंचलों के यात्रियों को ठसाठस में जकड़े हुए बैठे गाड़ी के झोंके खाते रहने के बाद छोटे-छोटे शहरों या चौराहों पर पहुँच हाथ-पैर फैलाने के लिए लगभग घण्टे तक या उससे अधिक समय मिल जाता है।

इससे भी बेहतर होता है जब कि शारीरिक या मानसिक थकावट एक प्याला ताजा ब्रुक बण्ड चाय से दूर की जाती है।

भारतवर्ष में सर्वत्र बस स्टैंडों पर या ग्रामों के चौराहों के कुछ ही फासले पर चाय की दूकानें हैं—हम लोगों के सेल्समैन इन सभी दूकानों में बगीचे की ताजगीपूर्ण चाय बराबर सप्लाई करते रहते हैं।

ताजा—कम से कम समय में बगीचे से प्याला

ब्रुक बण्ड

दो पत्तियाँ और एक कली।

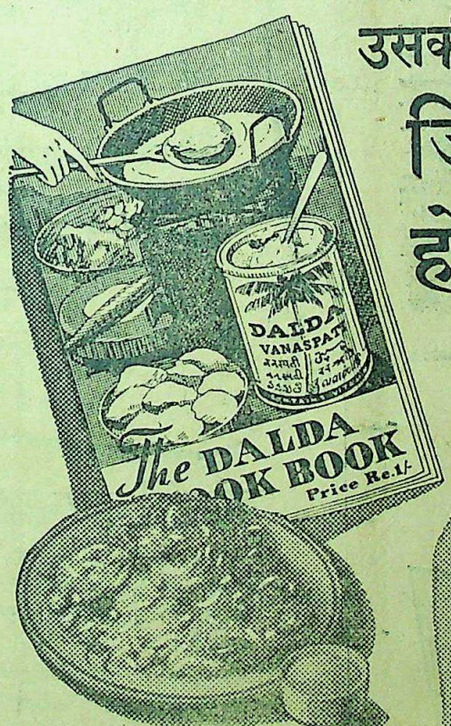

उसकी स्फूर्ति कायम रखनेकी जिम्मेवारी आपपर होती है!

सबसे बढ़िया शक्तिदायी चीजें कौनसी हैं इसकी जानकारी हरएक स्त्रीको होनीही चाहिये। डाल्डा कुक बुक (अंग्रेजी) में आहार के बारेमें उपयोगी बातें और १९० से अधिक आहारोंका बयान किया गया है। आपके पास इसकी एक कापी होनीही चाहिये। Dept. B113 P. O. Box No. 353, Bombay के पते पर चार आने के पोस्टेज स्टाम्प भेजियेगा।

भोजनको ज्यादा स्फूर्तिदायी बनानेमें डाल्डाकी मदद होती है—हमने यह दिखा दिया है।

माताओ, आप जब अपने परिवार का भोजन बनाती हैं तब आपके क्षेत्रमें कितनी भारी शक्ति होती है? क्या आपने कभी इसका ख्याल किया है? आपके बच्चोंको स्फूर्तिले, हट्टे कट्टे बनाना या उन्हें नि:शक्त, हताश और नाकामयाब करना आपके बनाये हुए भोजन पर और उसके बनानेमें जिन चीजोंका इस्तेमाल हुआ है उनपर अवलंबित है। हरएक चीजकी "स्फूर्तिदायी शक्ति" अपनी ही ढंगकी होती है। चंद बहुत स्फूर्तिदायी होती हैं और कई नमकीन, मीठी चीजें खानेमें अच्छी लगती हैं लेकिन उनसे शक्ति नहीं बढ़ती। इसीसे कई लोग, जो बहुत खाते हैं, हमेशा नि:शक्त और निकम्मे मालूम होते हैं। खानेकी सभी चीजें हम ज्यादा स्फूर्तिदायी बना सकते हैं। बस, उन्हें जीवनसत्व-परिपूर्ण डाल्डामें पकाइये। डाल्डामें प्रकृतिके बढ़िया "अन्नांश" मौजूद हैं।

पोषक-तत्व संपन्न **डालडा** स्फूर्ति के लिये

HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING CO., LTD

MVM 33-176-40 HI

---संवादक

चन

संस्करण छपक
त के प्राक
बन्धी सिद्धा
ाहित्यकारों तर
दिग्दर्शन बढ़
गया है। ४
का मूल्य ५।

प्रेस, लि०, प्रका

प्राचीन

प्राचीन
निर्मित
षध है।
ख सहस्र
दीर्घकाल
का है।
पर कसी
री 'भूत
वं देशों
एवं सर्व-
धिकार
या है

S
BANI
BA
ए आत
षौषध
बू क
ढाका
SYN. D.S. 1275

ों की जलन से उस स्त्री को
छुटकारा मिलता ही न था
दिन में चैन और न रात में नींद
लिस्कार कुरोन से ही फायदा हुआ

उन लोगों के हित के लिए जो लोग
की भाँति रोगग्रस्त हैं यह कृतज्ञ स्त्री
प्रकार लिखती है :—

"पिछले मई के महीने में मेरी नसों
ी जलन होने लगी जिसके कारण
में चैन तथा रात में नींद हराम थी—
का तो कहना ही क्या था।

अनेकों दवायें सेवन कीं किन्तु बहुत
फायदा हुआ। अन्त में एक स्त्री ने
कि मेरी ही भाँति पहले बीमार थी और
को कुरोन से लाभ हुआ था, मुझे
ुरोन सेवन करने की सलाह दी। पहली
रोन सेवन करने से मुझे फायदा मालूम
ी और अब मैं पीड़ा से एकदम मुक्त
नींद खूब आती है। मैं कुरोन की
क हूँ। श्री० यच० सी०

नसों की जलन भी गठिये की तरह
न में अम्ल की अधिकता से होती है।
रोन में सैमिश्रित ६ प्रकार के प्राकृतिक
ागों में से कुछ तो अम्ल को गलाते हैं
कुछ उसे शरीर से बाहर निकाल
हैं।

कुरोन शरीर की व्यवस्था इतनी सुचारु
लाता है, अनावश्यक मेल से इतना मुक्त
लाता है कि शरीर में अम्ल इत्यादि एकत्र
ही नहीं पाता। कुरोन साल्ट बाजार
सभी औषधि विक्रेताओं के यहाँ
लता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी किस्मत में क्या लिखा है ?

अगर आप एक साल के अन्दर पश आनेवाले अच्छ-बुरे हालतों को समय से पहले जानना चाहते हैं तो आप आज ही हमको सिर्फ पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी फूल का नाम लिखकर भेज दीजिए। बस फिर हम ज्योतिष विद्या के हिसाब से आपके आनेवाले १२ मास का नफा, नुकसान, किस तिजारत में फायदा होगा, किस जरिये रुपया मिलेगा, रोजगार कब मिलेगा, मुलाजमत में तरक्की, तबादला, तनज्जुली, औरत और औलाद का सुख, तन्दुरुस्ती, बीमारी, दूर का सफर, मुकद्दमा और इम्तिहान में सफलता, सगाई शादी, जमीन व जायदाद का सुख, किसी से नया मेल या नका, सट्टा, लाटरी या किसी अज्ञात कारण से धन का मिलना सारांश तारीख कार्ड से लेकर एक साल तक होनेवाली कुल बातों का खुलासा यानी माहवारी वर्षफल बनाकर सिर्फ एक रुपया चार आने में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक खर्च अलग होगा। साथ में बदकिस्मती को खुश किस्मती में बदलने का उपाय भी लिखा जायगा ताकि आनेवाली मुश्किलों को दूर किया जाय। सिर्फ एक बार की परीक्षा आपको बतला देगी कि हम ज्योतिष विद्या के कितने जानकार हैं। गलत साबित होने पर कीमत वापिस।

श्री स्वामी सत्यनारायण ज्योतिष आश्रम, (D. D) जालन्धर सिटी

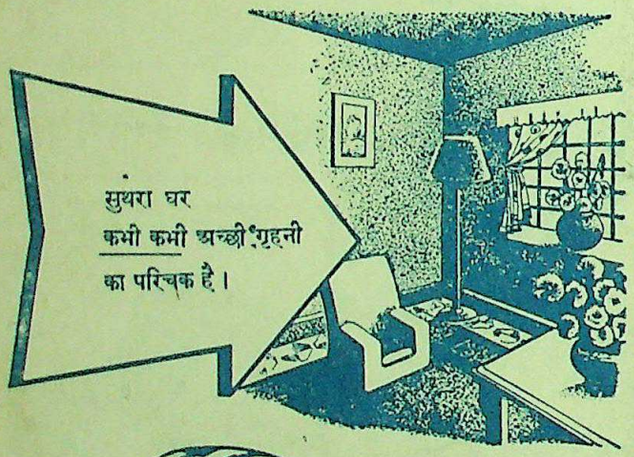

मझली दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पिता भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहा

श्री सी. आर. श्रीनिवासन

सम्पादक "स्वदेशमित्रण" मद्रास

लिखते हैं

"प्रत्येक व्यक्ति जो कुछ बचत करता है केवल अपनी ही भलाई नहीं करता बल्कि दूसरों का भी उपकार करता है यदि वह उस बचत को सुचारु रूप से उपयोगी मद में लगाये। नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स देश सेवा का एक उत्तम साधन हैं। मैंने स्वयं ये ख़रीदे हैं और दूसरों को भी निस्संकोच ख़रीदने का परामर्श देता हूं।"

C. R. Srinivasan

संक्षिप्त विवरण

(१) आप ५), १०), ५०), १००), ५००), १०००) या ५०००) के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) एक व्यक्ति ५०००) से अधिक मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स नहीं ख़रीद सकता। ये इतने उपयोगी हैं कि इनका राशन करना ही उचित समझा गया है। हां दो व्यक्ति मिलकर १०,०००) के सर्टिफिकेट्स मोल ले सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है।

(४) इस प्रकार अवधि पूरी होने पर ४-१/६% वार्षिक ब्याज मिल

(५) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं

(६) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा

(५) का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष

ही भुनाया जा सकता है) परन्तु

विक लाभ इसी में हैं कि १

पहिले इन्हें न भुनायें।

(७) जिनकी बचत थोड़ी है वह ५

।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्पस ख़रीद

५) के स्टैम्पस जमा होने पर

नल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट मिल

(८) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्पस डा

सरकार द्वारा अधिकृत एजण्टों

सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त हो सक

आप अपनी बचत से ५०% लाभ उठा

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट

ख़रीदिये।

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र नि
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

र, ३ मार्च, १९४६ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 3rd March, 1946

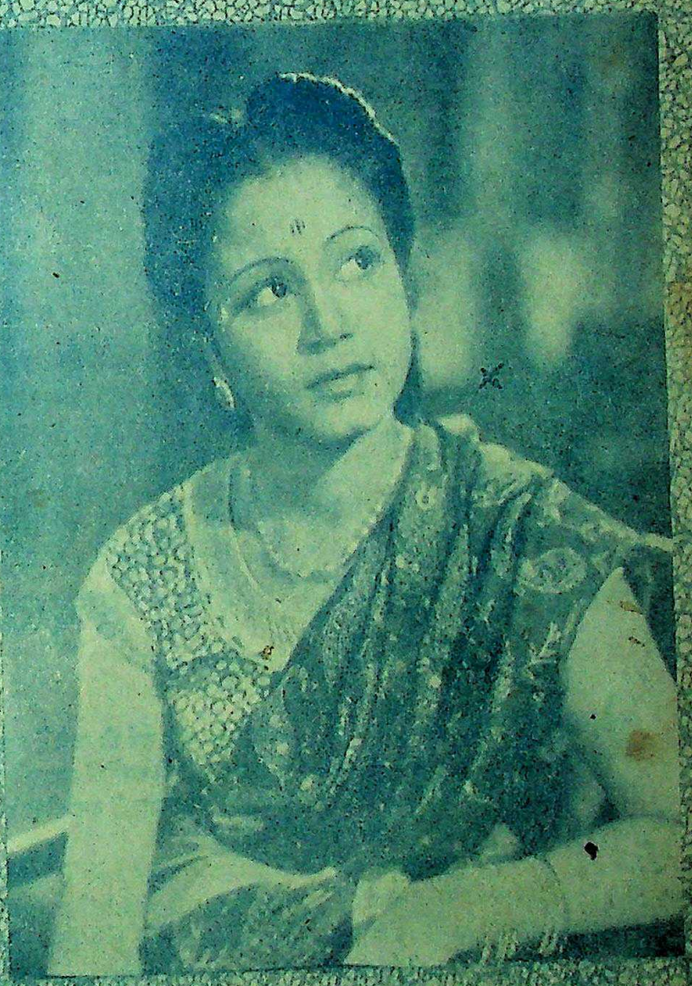

शक-
प्रेस, लि०
हाबाद

मधूलिका—कविवर अंचल की मधुर कविताओं का संकलन है। इसकी कोमल और विदग्ध कविताओं में एक मोहिनी ज्वाला है। विद्वानों ने एक स्वर से इसकी प्रशंसा की है और हिन्दी के आधुनिक काव्यों में मधूलिका का स्थान बहुत ऊँचा बताया है कवि को अपनी इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक पर चक्रधर-पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। इसकी कवितायें भावुक काव्य-प्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। यौवन और सौन्दर्य के ये गीत आधुनिक हिन्दी-काव्य में उच्च स्थान रखते हैं। मूल्य २)

या ईरान में ब्रिटिश-रूसी संघर्ष होगा ?
गस्त-आन्दोलन का तपस्वी पत्रकार !

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

अखिल भारतीय गो-सेवा सम्मेलन।
खाद्य पदार्थ तथा अनाज की महंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी किस्मत में क्या लिखा है ?

अगर आप एक साल के अन्दर पेश आनेवाले अच्छे-बुरे हालतों को समय से पहले जानना चाहते हैं तो आप आज ही हमको सिर्फ पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी फूल का नाम लिखकर भेज दीजिए। बस फिर हम ज्योतिष विद्या के हिसाब से आपके आनेवाले १२ मास का नफा, नुकसान, किस तिजारत में फायदा होगा, किस जरिये रुपया मिलेगा, रोजगार कब मिलेगा, मुलाजमत में तरक्की, तबादला, तनज्जुली, औरत और औलाद का सुख, तन्दुरुस्ती, बीमारी, दूर का सफर, मुकद्दमा और इम्तिहान में सफलता, सगाई शादी, जमीन व जायदाद का सुख, किसी से नया मेल या नफा, सट्टा, लाटरी वा किसी अज्ञात कारण से धन का मिलना सारांश तारीख कार्ड से लेकर एक साल तक होनेवाली कुल बातों का खुलासा यानी माहवारी वर्षफल बनाकर सिर्फ एक रुपया चार आने में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक खर्च अलग होगा। साथ में बदकिस्मती को खुश किस्मती में बदलने का उपाय भी लिखा जायगा ताकि आनेवाली मुश्किलों को दूर किया जाय। सिर्फ एक बार की परीक्षा आपको बतला देगी कि हम ज्योतिष विद्या के कितने जानकार हैं। गलत साबित होने पर कीमत वापिस।

श्री स्वामी सत्यनारायण ज्योतिष आश्रम, (D D) जालन्धर सिटी

केशोंकी शोभा बिना सारी सुन्दरता फीकी पड़ जाती है

इसीलिये केशोंको सजाने व संवारनेके नित्य नये तरीके निकलते आ रहे हैं और निकलते जायंगे। इस विशाल भारतवर्षमें विभिन्न रुचिके लोग हैं और आज ७० वर्षोंसे जवाकुसम, हर तरहके लोगोंको पसन्द आता रहा है। हमारे देशमें धूल-धक्कड़के मारे बालोंकी जड़में गर्दा बैठ जाता है। फिर गर्मी इतनी तेज पड़ती है कि मस्तिष्कके स्नायु बहुत जल्द गर्म हो जाते हैं। इन दोनों कारणोंसे ही बालोंकी स्वाभाविक कमनीयता और मजबूती नष्ट होती है।

आयुर्वेदोक्त जड़ी-बूटियों से बना जवाकुसम बड़ी आसानीसे मैलको निकाल देता है और बालोंकी जड़को मजबूत बनाता है। इसके स्निग्ध स्पर्शसे मस्तिष्क शीतल हो जाता है।

७० वर्षकी सुप्रसिद्धिका समृद्ध

जवाकुसुम

केशोंकी शोभा बढ़ाता....मस्तिष्क शीतल रखता है

सी० के० सेन एण्ड कं० लि० - जवाकुसुम हाउस - कलकत्ता

हमारे उत्तमोत्तम प्रकाशन

श्रीमद्भागवत

सचित्र (दो जिल्दों में) मूल्य १५।—)

यह आचार्य शुकदेवजी का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। जिसका हिन्दू-समाज में बहुत आदर है। इसकी प्रशंसा करना सूर्य को दीपक से देखना है। इसकी बहुत माँग है।

सुकवि सोहनलाल द्विवेदी का अनुपम कृतियाँ

भैरवी २॥=) कुणाल १।)
पूजागीत २) विषपान १,
बाँसुरी ॥।) शिशुभारती ।॥)
वासवदत्ता १॥)

ठाकुर गोपालशरणसिंहजी की काव्यकृतियाँ

सुमना २) रंचिता ३)
मानवी २।—) माधवा २,
ज्योतिष्मती २।) कादम्बिनी २)

प्रवीण कवि श्यामनारा पाण्डेय का खण्डकाव्य

हल्दीघाटी २॥)

सुकवि हरदयालुसिंह जी प्रमुख रचना

दधीचि महाकाव्य ३।—)

आदि कवि महर्षि वाल्मी प्रणीत

हिन्दी वाल्मीकि रामायण सु दो खण्डों में मूल्य प्रत्येक का ६॥)

द्विवेदी-काव्यमाला

मूल्य ४)

स्वर्गीय आचार्य द्विवेदी जी की कविताओं का अपूर्व संग्रह

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रय

किसी खुरदरी चीज से अपने दाँत साफ मत कीजिए। क्योंकि झरीटों पर सड़ान शुरु होती है। बेस्वाद चीज़ों से बचिए। क्योंकि ऐसी चीज़ों से आपके श्वास से बदबू आएगी। ऐसी चीजों का कभी उपयोग मत कीजिए जो सावधानी से पैक न की गई हो, क्योंकि इनमें कीटाणुओं का खतरा रहता है जो बीमारी फैलाता है।

इमेशा गिब्बस डेन्टिफ्रिस को इस्तेमाल कीजिए। यह आपके दाँतों को नरमी से साफ़ करता है और दाँतों में झरीटें नहीं डालता। इसका स्वाद और सुगंध-दोनों बहुत अच्छे हैं। यह विषनाशक है और ऐसा पैक किया गया है कि इसमें धूल नहीं जा सकती। इसके अलावा एक डिबिया में १०० से अधिक बार दाँत साफ़ करने के लिये डेन्टिफ्रिस है।

हर एक व्यक्ति अपने दाँत ठीक तरीके से साफ कर सकता है!

गिब्स डेन्टिफ्रिस

D. & W. GIBBS LIMITED, LONDON.

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तान

वर्ष ८, संख्या २७] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक रविवार, ३ मार्च, १९४६

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

सरदार वल्लभ भाई पटेल ने बम्बई की अशांति को दूर करने में सराहनीय उद्योग किया था।

भारत की राजनैतिक स्थिति में दिन प्रतिदिन उथल-पुथल दिखाई दे रही है। अहिंसा की प्रगति हिंसा की ओर अग्रसर हो रही है। देश-गौरव श्री सुभाषचन्द्र बोस की आज़ाद हिन्द-फ़ौज तथा उस पर चलाये जानेवाले मुक़दमों की अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति हो गई है। आज़ाद हिन्द-फ़ौज का उद्देश्य क्या था, भारत की आज़ादी, ब्रिटिश पराधीनता से मुक्ति और भारत पर भारतीयों का शासन। इसकी हवा अब तेज़ी के साथ बह रही है। इस वक्त हड़तालों और प्रदर्शनों का बोलबाला है। प्रत्येक अपने आप में स्वतन्त्र होना चाहता है, अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति चाहता है। हमें यह कहने में तनिक भी हिचक नहीं है कि स्वतन्त्रता की भावना सरकारी सैनिकों में भी प्रवेश कर रही है। अपने राम की राय में ब्रिटिश सरकार को भारत की इस बदली हुई हवा का पूरी तरह से अध्ययन करना चाहिए। हमारी समझ में यही बात आती है, ब्रिटिश कूटनीतिज्ञों की राय कुछ दूसरी हो, तो नहीं कहा जा सकता।

* * *

कलकत्ता और बम्बई के भाग्य में भगवान् जाने क्या बदा है? बंगाल तो पूरे अकाल का सामना कर चुका है किन्तु पिछले कुछ महीनों से बम्बई और कलकत्ता का भाग्य कुछ गड़बड़ नज़र आता है। लाठी, गोली, मारपीट, लूट-पाट और संघर्षों के लिए भारत के यह दोनों महान् नगर केन्द्र बनते जा रहे हैं। पिछले दिनों भारतीय नौसेना के सैनिकों का जो काण्ड हुआ उसमें सैकड़ों व्यक्ति मरे और घायल हुए हैं। नौसैनिकों की कुछ माँगें थीं, उसी की प्राप्ति के लिए वह सन्नद्ध हो गये और अन्त में ऐसी नौबत आई कि ब्रिटिश फ़ौजी दस्तों और हड़ताली नौसैनिकों में झड़प हुई। कराँची में भी इस संघर्ष की पुनरावृत्ति हुई। कलकत्ता, दिल्ली, मद्रास तथा अन्य नौसैनिक तथा हवाई सैनिकों पर इसका प्रभाव पड़ा। आख़िर यह सब क्यों और क्या हो रहा है? ब्रिटिश सरकार क्या इस बात को जानती नहीं है? भारत के इतिहास का पन्ना पलटता जा रहा है। स्वाधीनता प्राप्ति की, स्वाभिमान की तथा अपनी माँगों की पूर्ति के लिये क्या यह घटनायें प्रतिक्रिया तो नहीं है? जो कुछ भी हो, ब्रिटिश सरकार को अब ज़रा अपनी जगह से खिसकना चाहिए। वायदे उसके बहुत हो चुके। अब उसे भारत तथा भारतीयों की माँगों की पूर्ति करनी ही पड़ेगी। यदि नहीं तो अशान्ति की ज़िम्मेदारी भी सरकार ही पर लदेगी। क्या करेगी कांग्रेस, क्या करेगी मुस्लिम लीग और क्या करेगा कोई?

* * *

पूना में महात्मा गांधी से नवाब भूपाल और सर आगा ख़ाँ ने भेंट करके वर्तमान राजनैतिक अड़ंगा दूर करने के लिए परामर्श किया। नवाब भूपाल नरेन्द्र-मंडल के सभापति हैं और सर आगा ख़ाँ संसार-प्रसिद्ध पोलोबाज़ एक मुस्लिम सेंट। पता चला है कि सर आगा ख़ाँ ने गांधी जी से कहा कि मुस्लिम लीग और कांग्रेस का समझौता अवश्य ही हो जाना चाहिए। अपने राम की राय में सर आगा ख़ाँ की राय तो बेहतरीन है, लेकिन मिस्टर जिन्ना महाशय 'पाकिस्तान' की रट छोड़ें तब तो! इस समय दुनिया किधर जा रही है, इसे कौन नहीं जानता किन्तु मिस्टर जिन्ना तोते की तरह 'पाकिस्तान' की टें टें लगाये हुए हैं। महात्मा गांधी तो कई बार मिस्टर जिन्ना से समझौते के लिए बढ़े ही नहीं उनके घर तक गये, किन्तु क्या मिस्टर जिन्ना भी महात्मा जी से मिलने के लिए कभी बढ़े? उनके दिमाग़ में क्या कभी आया कि हिन्दू-मुस्लिम एकता की तुरन्त ही स्थापना होनी चाहिए? सर आगा ख़ाँ एकता चाहते हैं किन्तु एकता के मालिक तो मिस्टर जिन्ना हैं और उनकी मालिकन है हमारी ब्रिटिश सरकार! एकता कहाँ से होगी? महात्मा गांधी क्या करें? क्यों नहीं सर आगा ख़ाँ मिस्टर जिन्ना से पहले कुछ तै-तमाम करते?

* * *

मौलाना अबुलकलाम आज़ाद ने वाइसराय से वर्तमान अन्न-संकट के सम्बन्ध में वार्ता की। कहा जाता है कि वाइसराय ने कहा कि कांग्रेस, जितना राशन दिया जाय, उसका विरोध न करे तथा इस प्रश्न को राजनैतिक अथवा अखिल भारतीय रूप न दे। बात तो सही है, किन्तु अपने राम की राय में यदि सरकार सचाई से अन्न-सम्बन्धी कठिनाइयों के हल का उपाय करती है और जनता को अन्न मिलता जाता है तो इस मामले को राजनैतिक रंग देने की ज़रूरत ही क्या है? हम तो यह भी मानते हैं कि सरकार अपने पर फड़फड़ा कर अकाल का मुक़ाबला करने के लिए तैयार हो रही है और वह राष्ट्र के नेताओं से सलाह-मशविरा भी कर रही है कि अन्न-संकट कैसे दूर किया जाय? लेकिन सबका लब्बोलबाब यही है कि खाने का बन्दोबस्त होना चाहिए, पेट का सवाल हल होना चाहिए, लोगों का पेट चलना चाहिए, आम खाने से मतलब है गिनने से नहीं।

* * *

अखिल भारतीय समाचारपत्र सम्पादक सम्मेलन में पंजाब के श्री नरेन्द्र ने यह प्रस्ताव रखा कि सम्मेलन की कार्यवाही हिन्दुस्तानी में होनी चाहिए। किन्तु अपने राम ने देखा कि बड़े-बड़े दिग्गज सम्पादक और पत्रकार जो सरकार को कोसते हुए नहीं थकते हैं, जो बढ़िया और शुद्ध खादी धारण करते हैं, उन्होंने प्रस्ताव का विरोध किया। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने यद्यपि अँगरेज़ी में भाषण दिया किन्तु उन्होंने भी हिन्दी-उर्दू तथा हिन्दुस्तानी पत्रों तथा भाषाओं की उपयोगिता की स्वतन्त्र भारत के लिए अनिवार्य बतलाई। महात्मा गांधी अँगरेज़ी के बहिष्कार और हिन्दुस्तानी के प्रचार का आन्दोलन कर रहे हैं, इसे कौन नहीं जानता? लेकिन पत्रकार-सम्मेलन में हिन्दुस्तानी कहिए या हिन्दी-उर्दू की जो विरोधी भावना देखी गई वह आश्चर्यजनक थी। क्या अखिल भारतीय समाचारपत्र सम्पादक सम्मेलन के अँगरेज़ी के पत्रकारों को अँगरेज़ी की ही गुलामी में जीवनयापन करना सुलभ है? कहावत है कि हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और होते हैं। लेकिन स्वाधीन भारत में दिखानेवाले दाँतों का रंग उखड़ जायेगा। राष्ट्रभाषा में सम्मेलन की कार्यवाही, इस गुलामी के युग में न सही, स्वतन्त्र भारत में तो होगी ही।

* * *

भारत की प्रान्तीय असेम्बलियों का चुनाव हो रहा है और कुछ प्रान्तों में हो भी गया है। कांग्रेस उम्मीदवारों की विजय खूब हुई है। सीमाप्रान्त में कांग्रेस-मंत्रिमंडल क़ायम है। पंजाब में भी संयुक्त मंत्रिमण्डल क़ायम होनेवाला है। अपने राम की समझ में यही आता है कि सिन्ध में लीगी मंत्रिमंडल बनाकर गवर्नर साहब ने जो लीला रची है, शायद पंजाब में वैसा न हो। यद्यपि यूनियनिस्ट पार्टी का नये चुनाव में बहुमत नहीं है, फिर भी कांग्रेस तथा अन्य अल्पसंख्यक दलों से वह सहयोग तो कर ही सकती है। मौलाना अबुलकलाम आज़ाद लाहौर पहुँच गये हैं। देखना है क्या होता है। लेकिन जान यही पड़ता है कि मुस्लिम लीग के पीछे सीमाप्रान्त की छूत की जो बीमारी लगी है, वह उसका पीछा पंजाब में भी नहीं छोड़नेवाली है।

सर स्टेफोर्ड क्रिप्स पुनः भारत आ रहे हैं। देखना है इस बार आप अपनी कौन सी यादगार छोड़ जाते हैं?

गीत

लेखक, युगप्रवर्तक कवि 'निराला'

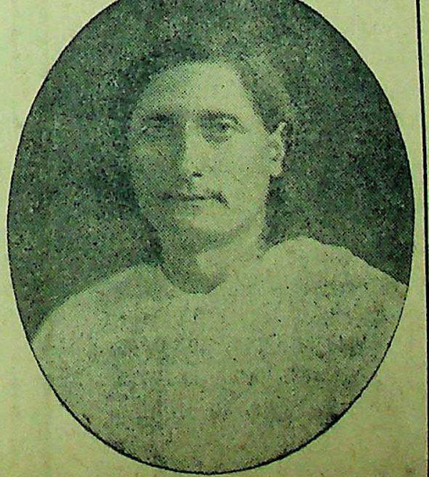

पग आँगन पर रखकर आई।
पल्लव-पल्लव पर हरियाली
फूटी, लहरी डाली-डाली,
बोली कोयल, कलि की प्याली,
मधु भरकर तरु पर उफनाई।
झोंके पुरवाई के लगते,
बादल के दल नभ पर भगते,
कितने मन सो-सोकर जगते,
नयनों में भावुकता छाई।
लहरें सरसी पर उठ-उठकर,
गिरती हैं सुन्दर से सुन्दर,
हिलते हैं सुख से इन्दीवर,
घाटों पर बढ़ आई काई।
घर के जन हुए प्रसन्न वदन,
अतिशय सुख से छलके लोचन,
प्रिय की वाणी का आमन्त्रण,
लेकर जैसे ध्वनि सरसाई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

तीन सयानों का आगमन

ब्रिटिश प्रधान मंत्री मिस्टर एटली ने घोषणा की है कि आगामी मार्च में ब्रिटिश मंत्रिमंडल के तीन सदस्यों का एक प्रतिनिधि मंडल भारत आयेगा। प्रधान मंत्री के कथनानुसार प्रतिनिधि मंडल के भारत आने का मुख्य उद्देश्य यह है कि शीघ्र से शीघ्र भारत को उत्तरदायित्वपूर्ण शासन प्रदान किया जाये। घोषणा में यह भी कहा गया है कि मंत्रिमंडल के तीनों मंत्रियों का पहला कार्य होगा भारत के चुने हुए प्रतिनिधियों एवं देशी राज्यों से भावी शासन-विधान के निर्माण में एकमत प्राप्त करने की वार्ता करना। दूसरा कार्य होगा विधान-निर्मात्री परिषद् का निर्माण तथा तीसरा कार्य भारत के सभी राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों के सहयोग से वाइसराय की नई कार्यकारिणी का संगठन। केन्द्रीय असेम्बली का नया चुनाव समाप्त हो चुका है, कई प्रान्तीय असेम्बलियों का भी चुनाव हो चुका है और वहां लोकप्रिय मंत्रिमंडलों की स्थापना हो रही है। इन सब परिस्थितियों को देखते हुए ब्रिटिश सरकार जल्दी से जल्दी चालीस करोड़ भारतीयों के भाग्य के सम्बन्ध में युगान्तरकारी निर्णय करने की इच्छुक है।

इसमें सन्देह नहीं है कि मजदूर मंत्रिमंडल ने जो क़दम उठाया है, वह स्तुत्य है। हम समझते हैं कि यदि ब्रिटेन ईमानदारी के साथ भारत के भाग्य का फ़ैसला करने का इच्छुक है और तीनों मंत्रियों के भारत आगमन का उद्देश्य यदि भारत को स्वाधीनता प्रदान करने के लिए वास्तविक मार्ग खोज निकालना है, तो प्रतिनिधि मंडल का स्वागत होना अनिवार्य है। किन्तु दूध का जला मट्ठे को भी फूंक-फूंकर पीता है। भारतवासियों को ब्रिटिश सरकार के ज़माने से किये जानेवाले वायदों का भी पूरा ज्ञान है। कितने ही प्रतिनिधि मंडल भारत को स्वतन्त्रता प्रदान करने के महान् उद्देश्यों को लेकर आये और वापस चले गये। सर स्टेफ़र्ड क्रिप्स स्वयं भारत को स्वतंत्रता प्रदान करने का खरीता लेकर आये किन्तु अन्त में वह भी अपना-सा मुंह लेकर वापस लौट गये किन्तु भारत को स्वतंत्रता का कितना अंश ब्रिटिश सरकार ने प्रदान किया, इसका अनुभव आज भारतवासी पूरी तरह कर रहे हैं। ग़ुलामी की जंजीर दिन प्रतिदिन जकड़ती जा रही है, दमन की प्रबलता में कमी नहीं दिखाई दे रही है, अकाल की आशंका से सारा भारत त्रस्त दिखाई दे रहा है और ग़रीबी मुंह बाये हाहाकार करती फैलती आ रही है। कितने ही राजनैतिक क़ैदी आज भी जेलों की चहारदीवारी में जीवन यापन कर रहे हैं। कहां तक गिनाया जाये, ब्रिटेन वर्षों से भारत को स्वतंत्रता प्रदान करने के लिए प्रयत्नशील है, किन्तु उसके प्रयत्न उसकी ज़बान, उसके काग़ज़-पत्र तथा जांच-पड़ताल के माया-जाल में ऐसे उलझ गये हैं कि आज तक उसके सुलझने की नौबत ही नहीं आ रही है। इसलिए भारतवासियों की दृष्टि में ब्रिटेन के प्रयत्नों के प्रति एक प्रकार से अविश्वास-सा हो गया है और यदि वह सचमुच अब उस अविश्वास को विश्वास के रूप में परिणत करने के लिए हृदय से तत्पर है तो यह भारत ही नहीं वरन् संसार के सभी परतंत्र राष्ट्रों के लिए भी सौभाग्य की बात है, जो साम्राज्यवादियों के आतंक और बन्धन से त्रस्त हैं और उनसे छुटकारा पाने के लिए सतत प्रयत्नशील हैं।

सच पूछा जाये तो ब्रिटिश सरकार ने भारत की राजनैतिक स्थिति को इतना पेचीदा, दांव-पेंच तथा राजनैतिक दलदल से पूर्ण बना दिया है कि वह स्वयं उस उलझन में उलझ गई है। अपने स्वार्थों या यों कहिए कि भेदभाव उत्पन्न करके शासन करने की लिप्सा अथवा आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए उसने कितने ही राजनैतिक दलों के अखाड़े क़ायम कर दिये हैं, जिसके बल पर वह आज शासन कर रही है। उन्हीं में से एक मुस्लिम लीग भी है। दलित जातियों का भी मायाजाल उसी के कर-कमलों का प्रसाद है। ब्रिटेन के राजनीतिज्ञ, अधिकारी और शासक सदा से यह कहते आये हैं कि सभी दलों की एकता ज़रूरी है। यदि सब दल एकमत हो जायें तो ब्रिटेन भारत को तुरन्त स्वतंत्रता प्रदान करने के लिए तैयार है। सैकड़ों प्रयत्न हुए किन्तु सरकार सदा राजनैतिक दलदल के बीच भारतीय आज़ादी का प्रश्न पाटती आई है। भारत में केवल कांग्रेस ही एक ऐसी संस्था है जो समस्त भारत की स्वतंत्रता चाहती है और उसने सदा ब्रिटेन की इस दोरंगी नीति का भंडाफोड़ किया है। कांग्रेस के नेताओं को ब्रिटिश सरकार के दमन का सदा शिकार होना पड़ा है, किन्तु कांग्रेस के त्याग और बलिदान के प्रभाव से लोकमत इतना प्रबल और जागृत हो गया है कि आज ब्रिटेन यह अनुभव करने लगा है कि अधिक दिनों तक वह दलबन्दी या फूट की आड़ में भारतीय ग़ुलामी की गाड़ी को खींचने में सफलता नहीं प्राप्त कर सकेगा। ब्रिटिश सरकार की ओर से जितने भी प्रयत्न हुए, उसके मार्ग में, वही दल बाधक होते रहे जिन्हें ब्रिटेन ने सदा प्रोत्साहन दिया है। उन्हीं की बदौलत सरकार सदा विजयी होती रही है। वाइसराय लार्ड वेवेल ने युद्ध-समाप्ति के बाद सिमला-सम्मेलन की जो योजना रची उसमें भी मुस्लिम लीग ही बाधक हुई, जो सरकार की सदा से दुलारी रही और जिसके नेताओं को भारतीय अड़ंगे के लिए प्रोत्साहन मिलता रहा। किन्तु कांग्रेस को कभी कोई आपत्ति नहीं हुई। उसका ध्येय सदा समस्त भारत की स्वतंत्रता का ही रहा। कांग्रेस नेताओं ने शिमला-सम्मेलन में जो रुख ग्रहण किया उसका यह प्रत्यक्ष प्रमाण है। यद्यपि कांग्रेस के इस प्रकार दबने की नीति से भारत के अनेक वर्गों में क्षोभ भी उत्पन्न हुआ किन्तु प्रसन्नता की बात है कि सम्मेलन भंग होने का सेहरा मुस्लिम लीग और लार्ड वेवेल के ही सर पर बांधा गया। भारतीय लोकमत के विजय का यह भी एक उदाहरण है।

इसलिए प्रश्न होता है कि क्या अब वास्तव में ब्रिटिश सरकार भारतीय राजनैतिक अड़ंगा हल करने के लिए कटिबद्ध हो गई है? यदि मुस्लिम लीग मार्ग में अड़ंगा उत्पन्न करेगी, जैसा कि अब तक होता आया है, तो क्या सरकार बहाना बनाकर शान्तिपूर्वक बैठ तो न जायेगी? देशीराज्यों का भी एक बहाना अभी सरकार के पास मौजूद है। यदि देशीराज्य किसी प्रकार का अड़ंगा उत्पन्न करेंगे तो क्या सरकार भारतीय राजनैतिक प्रश्न को बलपूर्वक हल करने पर अटल रहेगी? इसके सिवा अन्य अल्प-संख्यक दलों के भी प्रश्न हैं, जिन्हें सरकार ने अपनी जेब में रख छोड़ा है। क्या अंतिम निर्णय के समय उनके उपयोग में भी सरकार किसी प्रकार की कोर-कसर न उठा रखेगी? यही सब प्रश्न हैं जो आज तक भारतीय स्वाधीनता के मार्ग में बाधक होते आये हैं। सरकार इन्हीं के बल पर यह आश्वासन देती आई है कि यदि सभी दलों की एकता हो जाये तो उसके लिए भारत को स्वतन्त्र करने में कोई बाधा नहीं है। ब्रिटिश मंत्रिमंडल के जो मंत्री भारत आ रहे हैं, क्या उनके सामने भी इस प्रकार की अड़चनें बाधा तो उत्पन्न न करेंगी?

कहने का मतलब यह है कि सरकार को इस समय सबसे प्रथम कार्य यह करना चाहिए कि जितने भी राजनैतिक बन्दी इस समय जेलों में हैं, उन्हें मुक्त कर देना चाहिए। इसके सिवा मुस्लिम लीग को उसे अपने स्वार्थ के लिए उपयोग का कार्य बन्द कर देना चाहिए। भारत सामूहिक रूप से राष्ट्र का बँटवारा नहीं चाहता। अभी तक यह भी सिद्ध नहीं हो सका है कि मुस्लिम लीग ही समस्त भारत के मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करती है। यदि आज नौ करोड़ मुसलमानों के प्रतिनिधित्व का दावा करके मुस्लिम लीग 'पाकिस्तान' की माँग कर रही है और कल जब ११ करोड़ अछूत 'अछूतिस्तान' की माँग करेंगे तो सरकार क्या करेगी? क्या 'पाकिस्तान' की भाँति भारत में 'अछूतिस्तान' भी क़ायम होने का नाटक रचा जायेगा? इसलिए सरकार को अब सभी प्रकार से स्पष्ट होना चाहिए। किसी भी राष्ट्र के घरेलू झगड़ों को निबटाने के लिए विदेशी शासकों को कोई अधिकार नहीं है और न उनके लिए यह उचित ही है। भारत सचिव लार्ड पेथिक लारेंस, सर स्टेफ़र्ड क्रिप्स और मिस्टर अलेक्ज़ेंडर यदि ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि रूप में भारत आ रहे हैं, तो उन्हें केवल वार्ता, और विचार-विमर्श तक ही नहीं सीमित रहना चाहिए। बातचीत अब तक बहुत हो चुकी है और कितने ही प्रतिनिधि मंडलों की यात्रायें भी अब तक हो चुकी हैं किन्तु कोई परिणाम नहीं निकला। भारत अब बहुत आगे बढ़ चुका है। कांग्रेस आज समस्त राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है। इसका ज्वलन्त प्रमाण है, केन्द्रीय तथा प्रान्तीय असेम्बलियों का नया चुनाव। इसलिए ब्रिटिश सरकार यदि सचमुच भारत के प्रति सहानुभूति रखती है तो उसे भविष्य में सर्वप्रथम, 'पूर्ण स्वतंत्रता' की घोषणा करनी चाहिए। यदि ब्रिटिश सरकार की ओर से इस प्रकार का क़दम बढ़ाया जाता है तो अवश्य ही मंत्रिमंडल के सदस्यों का भारत में स्वागत होगा और पूरी सम्भावना है कि भारत और ब्रिटेन के बीच सद्भावनापूर्ण कोई ऐसा निर्णय होगा जो भारत ही नहीं समस्त एशिया तथा संसार के लिए शान्ति प्रदान करनेवाला सिद्ध होगा। किन्तु यह सब कुछ ब्रिटिश सरकार की सचाई, ईमानदारी और सदेच्छा पर ही निर्भर है।

* * *

रेलवे का नया बजट

केन्द्रीय असेम्बली में नये रेलवे-बजट पर आम बहस प्रारम्भ हो गई है। यातायात सदस्य सर एडवर्ड बेंथल ने सन् १९४६-४७ का रेलवे-बजट पेश करते हुए आय-व्यय के जो आँकड़े बताये हैं, वे विचारणीय हैं। युद्ध के पूर्व सन् ३८-३९ में रेलवे की आय ९९०६२ करोड़ रुपये थी जब कि सन् ४४-४५ में रेलवे की आय २१६ करोड़ और सन् ४५-४६ में २२५ करोड़ हो गई। नये बजट के अनुसार सन् ४६-४७ में सर एडवर्ड बेंथल ने १७७ करोड़ रुपये की आय का अनुमान लगाया है। इसका अर्थ यह है कि चालू वर्ष तथा अगले वर्ष में ४८ करोड़ रुपये की कम आमदनी होगी। यातायात सदस्य ने कहा है कि युद्ध समाप्त हो जाने से चूंकि सैनिकों तथा युद्ध के सामानों के आवागमन में कमी हो गई है, इसलिए आय में कमी होना अनिवार्य है। किन्तु इस कमी की पूर्ति अगले वर्ष नागरिक यातायात की आमदनी की वृद्धि-द्वारा की जा सकती है। ६ वर्ष के लम्बे युद्धकाल में नागरिक यातायात की कमी की नये वर्ष में वृद्धि की जा सकती है। आय में जहाँ ४८ करोड़ की कमी का अनुमान लगाया गया है वहाँ व्यय में २४·२८ करोड़ की कमी का अन्दाज़ लगाया गया है। मतलब यह है कि सन् ४४-४५ के व्यय से २ करोड़ अधिक व्यय का अनुमान किया गया है। यद्यपि सन् ४६-४७ में जितने आय की आशा है, सन् ४४-४५ में उससे ४० करोड़ अधिक आय थी। सार्वजनिक आय के मद में १ प्रतिशत उन्नति कोष में लगाया जायेगा। जो ३ करोड़ रुपये के लगभग होता है। इसके बाद जो छोटी रक़म बचेगी, वह रिज़र्व कोष में रखी जायेगी, इस पर भी कुछ रेलवे जो युद्ध-काल को छोड़कर सदा घाटे पर चलती रही पुनः घाटे पर ही चलने लगेगी।

सर एडवर्ड बेंथल ने रेलवे बजट से सम्बन्धित जो भाषण दिया है वह भी बड़ा ही विचित्र है। यद्यपि युद्ध समाप्त हो चुका है और पुनर्निर्माण का कार्य अग्रसर होनेवाला है किन्तु ऐसा नहीं जान पड़ता कि भारतीय रेलवे में किसी विशेष सुधार की आशा है सच तो यह है कि युद्ध के बाद तमाम भारत में रेलवे का जाल बिछ जाना चाहिए, यातायात तथा व्यापार में पूर्ण सुविधा प्राप्त होती किन्तु जान यह पड़ता है कि सरकार वक्त पड़ने पर वायदा करने में कोर-कसर तो नहीं करती किन्तु उसकी पूर्ति के समय उसका दिमाग़ गुम हो जाता है। सर एडवर्ड बेंथल नये वर्ष के व्यय में यह आश्वासन देते हैं कि इंटोढ़े दर्जे के डिब्बों में पूर्ण सुधार किया जायेगा, पंखों तथा सोने का प्रबन्ध भी होगा, रेलवे का विस्तार तीन हज़ार मील और अधिक व्यापक

शेष पृष्ठ १७ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईरान में एँग्लो-रूसी संघर्ष

तेल के लिए दो महान् राष्ट्रों को प्रतिद्वंद्विता क्यों ?

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

विश्व में आज अशांति का एक प्रभावशाली केन्द्र-स्थल ईरान भी बन गया है। ब्रिटेन अपनी दाँव में लगा है और सोवियट रूस अपनी। दोनों ही महान् राष्ट्रों में तैल प्राप्ति के पारस्परिक स्वार्थों का संघर्ष चल रहा है, यदि इस संघर्ष ने उग्र रूप ग्रहण किया तो फारस की स्वाधीनता यदि खतरे में पड़ जाये तो आश्चर्य नहीं। इस लेख में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के विद्वान् लेखक ने ईरान की वर्तमान राजनीति तथा वहाँ के भावी संघर्ष पर व्यापक प्रकाश डाला है। लेख अत्यन्त सुन्दर, विचारणीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

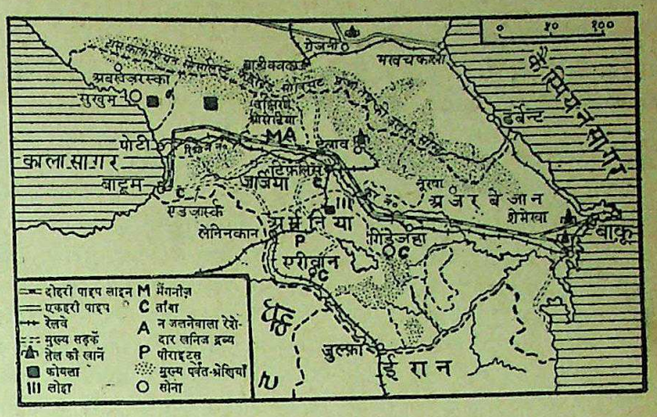

अशान्त विश्व के अन्दर ईरान अशान्ति का केन्द्र है। जिन सुप्त ज्वालामुखियों के हर समय फटने का भय बना रहता है, उनमें ईरान भी एक है। ईरानी जनता ही नहीं सारा संसार इन बातों की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा है कि रूस ने २ मार्च १९४६ को अपनी लाल सेना को उत्तरीय ईरान से वापस बुलाया है या नहीं? मास्को में सोवियट रूस और ईरान के बीच चल रही सन्धि-चर्चा की ओर दुनिया का ध्यान इतना नहीं है, जितना कि इस ओर है कि रूस और ब्रिटेन अपनी सेनायें ईरान से वापस बुलाते हैं या नहीं और ईरानियों को अपने भाग्य-निर्णय का खुला अवसर देकर उसकी स्वाधीनता और अखण्ड प्रभुत्व-शक्ति को स्वीकार करते हैं या नहीं?

भारत और ईरान की सीमा सैकड़ों मील तक घूमी चली गई है। आज से लगभग २५० साल पहले तक इस देश की अदालतों में अँगरेजी के प्रवेश से पहले फ़ारसी का राज्य था और इस देश के पढ़े-लिखे लोग जैसे आज अँगरेजी में पाण्डित्य और अधिकार प्राप्त करना गर्व की चीज समझते हैं, उसी प्रकार फ़ारसी का विद्वान् होना अपने जीवन का चरम लक्ष्य मानते थे। जिन्दावस्था का युवक जरथुस्का, शाहनामा का रचयिता फिरदौसी यहाँ उसी तरह पूजे जाते थे, जैसे आज ईसा और मिल्टन और शेक्सपियर पूजे जाते हैं। ईरान भारत का पड़ोसी राज्य है। नादिरशाह के हमले के कारण भले ही आज हमारे दिल में ईरान के प्रति नाराजगी हो, पर हम यह नहीं भूल सकते कि सभ्यता के प्रभातकाल में हम दोनों एक थे, और ईरान ने यद्यपि अपना पुराना धर्म छोड़ दिया है, पर दोनों की सभ्यता और संस्कृति एक ही वृक्ष की दो शाखायें हैं। इसलिए भारत ईरान में घटित होनेवाली घटनाओं की उपेक्षा नहीं कर सकता। आज भारत पराधीन होने से ईरान को विदेशियों के हस्तक्षेप से रक्षा करने में असमर्थ है। पर जब भारत स्वाधीन होगा और बृहत्तर भारत या महान् भारतीय-संघ का निर्माण होगा, तो ईरान उसका एक आदरणीय सदस्य होगा, यह भूलने की चीज नहीं है। इसलिए जब भारत स्वाधीनता की ओर तेजी से अग्रसर हो रहा है, तब वह अपने पड़ोस में विदेशी प्रबल शक्तियों के प्रभाव को कैसे बढ़ता हुआ देख सकता है? हिन्दमहासागर और पर्शियन खाड़ी पर ब्रिटिश बेड़े की जगह भारती बेड़े न लेकर यदि बेड़ा ले, यह भारत के लिए अकल्पनीय, अचिन्तनीय और असह्य है।

मोटर का मार्ग

रूस ईरान में ब्रिटिश प्रभाव को ही कम नहीं करना चाहता, बल्कि इससे भी उसका उद्देश्य महान् है। उत्तरीय ईरान के तैल-क्षेत्रों का वह केवल पट्टा चाहता है, यह मानने की बात नहीं है। यदि रूस केवल ईरान का तेल चाहता, तो उसे सोवियत को देने में आपत्ति न होगी। क्योंकि दक्षिण ईरान के तेल-क्षेत्र आज भी ब्रिटिश अधिकार में हैं। रूस उत्तरीय ईरान में अपनी सेना रखने के बल पर ईरान के अन्दर अपने लिए स्थलमार्ग, पर्शियन खाड़ी पर ईरानी बन्दरगाह और स्वेज का मार्ग चाहता है। चूँकि पर्शियन खाड़ी पर ब्रिटिश नौ-सेना का अधिकार और नियंत्रण है, इसलिए उसमें रूसी बेड़े को भी भाग मिलना चाहिए यह कोई समुचित कारण नहीं दीखता। चाहिए तो यह था कि सोवियत रूस उत्पीड़ित और सताये

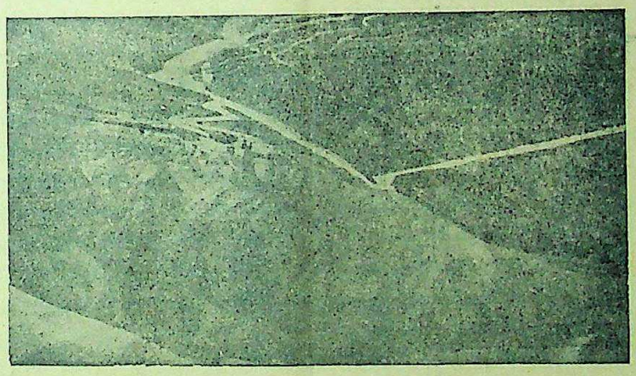

रूसी-ईरान सीमा का दर्रा जो यातायात का प्रधान साधन है।

ईरान का पक्ष लेकर ब्रिटेन को बाध्य करता कि अबादान से ब्रिटेन अपना बोरिया-बिस्तर उठाये। पर मार्शल स्टालिन के रूस ने लेनिन का मार्ग न पकड़कर पीटर के पथ का अनुसरण किया है और आज वह ब्रिटेन से प्राप्त माल में भाग पाने का दावा करके उसकी प्राप्ति को स्थायी बनाने की कोशिश कर रहा है। स्वाधीन भारत के लिए जिसकी नौसेना आगे शैशवावस्था में है और तीन ब्रिटिश कूजरों के मिल जाने से भी अपने तट की रक्षा के लायक़ भी न होगी—पतनोन्मुख ब्रिटिश साम्राज्यवाद और संवर्द्धनशील सोवियत साम्राज्यवाद का यह मेल एक भयानक खतरा होगा। इस लिए भारत को अपनी परराष्ट्र नीति का निश्चय किसी वाद के प्रभाव में न आकर भारतीय हितों को ही विशुद्धरूप से ध्यान में रखकर करना चाहिए। हमारी सहानुभूति का पात्र वही देश होना चाहिए जो भारतीय नौ और हवाई सेना का हिन्द-महासागर पर अखण्ड प्रभुत्व स्थापित करने में मदद दे। इस दृष्टि से पर्शियन खाड़ी, लालसागर और स्वेज मार्ग लड़-खड़ाते ब्रिटिश साम्राज्य के प्रभाव की जगह, जिसको नवोत्थित भारतीय शक्ति के लिए हटाना आसान है—शक्तिशाली और अजेय रूसी बेड़े का प्रभुत्व स्थापित होना भारत के लिए चिन्ताजनक है और भारत को अपने पड़ोसी ईरान की समस्या पर इसी दृष्टि से विचार करना चाहिए।

विषम देश

ईरान एक विस्तृत उजाड़, मरुस्थल और पिछड़ा हुआ देश है पर अनेक दृष्टियों से एक आकर्षक देश है। दक्षिण से, पर्शियन खाड़ी से—जहाँ का तापमान धूप में १७० डिग्री होता है; हिमाच्छादित १४,००० फ़ीट ऊँची पर्वतमाला—जो कि तेहरान से अलग करता है; जंगल है, पर विश्व के अन्दर सबसे अधिक समृद्ध भाग है। बीसवीं सदी के प्रारम्भ में इसी भाग में ब्रिटिश साहस की स्थापना हुई, जो कि आज एँग्लो-ईरानीयन आयल-कंपनी है, और मरुद्वीप अबादान पर विश्व की सबसे बड़ी रिफारमरी का निर्माण किया है।

लाखों ईरानियों की जीविका का आधार यही तेल-उद्योग है। ईरान सरकार की आमदनी का, एक बड़ा भाग तेल से मिलनेवाली रायल्टी है। पेट्रोल ईरान का अपने आप में मुख्य ईंधन है। युद्ध के कारण चीजों के दाम ८०० प्रतिशत ऊँचे चढ़ गये थे, तब लैम्प और स्टोवों में जलनेवाले ईरानी तेल का दाम केवल ३० प्रतिशत ही ऊँचा गया था।

प्रतियोगी साम्राज्यवाद

पर यह तेल ही ईरानी स्वाधीनता के लिए अभिशाप है। तोता जैसे अपनी वाणी के कारण बाँधा जाता है, उसी प्रकार ईरान को भी उसके तेल के कारण बेड़ियाँ पहननी पड़ी हैं। पी० टी० यून ने लिखा था—"ईरानी तेल-उद्योग के विकास का अर्थ सम्भव है ईरानी स्वाधीनता का अन्त हो, जब कि उसके भूमितल सम्पत्ति का स्वामित्व विदेशियों के हाथ में हो, विदेशी उसका निर्यात करें और ईरानी विदेशियों की मेज पर से फेंके गये टुकड़ों को पाकर सन्तुष्ट रहें।"

प्रथम विश्व-व्यापी महायुद्ध से पहले ईरान रूसी और ब्रिटिश साम्राज्यवाद की लड़ाई का अखाड़ा था। ब्रिटेन ने ईरान को अपने प्रभाव-क्षेत्र में बाँट लिया। उत्तरीय भाग रूस ने लिया और दक्षिणी भाग ब्रिटेन ने। मध्य का भाग दोनों के पास रहा। रूस में बोलशेविज्म के उदय से ब्रिटेन को अनुपम अवसर मिला और समस्त देश पर ब्रिटेन ने अपना प्रभाव स्थापित कर लिया। १९१९ में शाह अहमद ने ब्रिटिश संरक्षण स्वीकार कर लिया। पर ईरान के सौभाग्य से और रूसी प्रचार के कारण ब्रिटिश संरक्षण अल्पकाल ही रहा। साहसी और प्रतिभाशाली नेता रिजा खाँ का ईरान में उदय हुआ। १९२२ में रिजा खाँ प्रधानमंत्री बना। उसका पहला यह काम था कि उसने शाह को उस सन्धि का परित्याग करने के लिए कहा जिससे ब्रिटेन का संरक्षण ईरान पर स्थापित हुआ था। थोड़े दिनों बाद अहमदशाह की जगह रिजा खाँ ईरान का शासक हो गया। १९३२ एंग्लो-पर्शियन आयल-कम्पनी को दी गई रियायत उसने रद्द कर दी। मगर बाद में ईरान सरकार ने उसको वे रिआयतें नई शर्तों पर, जो ईरान के अधिक अनुकूल थीं—दे दीं और दोनों देशों के बीच एक सन्धि की गई।

युद्धकाल में

जून १९४१ में जर्मनी ने रूस के विरुद्ध युद्ध-घोषणा की और उसके साथ ईरान से नाजी एजेंटों को भगाने के नाम पर ब्रिटिश और लाल सेना ने ईरान पर अधिकार किया। तेहरान में ही चर्चिल-रूजवेल्ट-स्टालिन का प्रथम मिलन हुआ था और त्रिराष्ट्र कानफ्रेंस हुई थी। तेहरान हिमाच्छादित पर्वतमाला की गोद में बसा हुआ है। यह पर्वतमाला ही उसको कैस्पियन सागर के तट पर बसे विश्व के सुन्दरतम प्रदेश से अलग करती है।

उत्तर और वायव्य प्रान्त से, विशेषतः अजरबेजन से धान्य, चावल और फल आये हैं, जिन पर कि शेष सारा ईरान जीता है। यह प्रान्त रूस की सीमा पर है और १९४१ से रूसी सेना का इस पर दखल है। जिस दिन से ये प्रान्त रूसी प्रदेश के भाग बन गये हैं। उस दिन से ये वस्तुतः शेष संसार से कट गए

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगस्त-आन्दोलन का एक तपस्वी पत्रकार !

पंडित श्रीराम शर्मा की नजरबंदी-सम्बन्धी एक मुलाकात

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

यों तो पंडित श्रीराम शर्मा से मेरा बहुत दिनों से थोड़ा-बहुत परिचय रहा है; लेकिन ख़ास परिचय नहीं कहा जा सकता। आज भी शर्मा जी के साथ मेरा कुछ विशेष परिचय, उनके पिछले जीवन के साथ नहीं हो सका है। १९४१-४२ के दिनों में कई बार वे पूज्य गांधी जी से मिलने सेवाग्राम आये। उसी मौक़े पर उनसे मेरा परिचय हो सका। शर्मा जी के साहित्य से हिन्दी-जगत् के लोग परिचित ही हैं। सर्वप्रथम आपने ही हिन्दी में 'शिकार-साहित्य' का निर्माण किया और सुन्दर और रोचक साहित्य लिखकर दिया। 'शिकार और 'प्राणों का सौदा' हिन्दी-संसार को आपकी विशेष देन है। कई हिन्दी-पत्रों के सम्पादक भी रह चुके हैं; सफल शिक्षक भी रहे हैं। स्टेट के मैनेजर भी रह चुके हैं।

सन् १९४२ के पहले शर्मा जी बड़ी-बड़ी मूँछें रखते थे। मूँछों को देखने से एक अजीब भाव पैदा होता था। आपकी अपनी एक विशेषता थी। लेकिन १९४२ अगस्त-आन्दोलन के सिलसिले में आपने अपनी प्यारी मूँछों को समाप्त करा दिया। सरकार के नौकर आपको गिरफ़्तार करने में भी चकित हो गये। सरकार परेशान हो गई कि श्रीराम शर्मा कहाँ गुम हो गये! आपकी खोज सारे हिन्दुस्तान में होने लगी। देश का कोना-कोना छाना गया। फिर भी आपका पता नहीं चलता था। आप सरकार के सिर पर बैठे हुए काम कर रहे थे फिर भी किसी को कुछ मालूम न हो सका। आप उन दिनों ख़ास दिल्ली में रहकर अगस्त-आन्दोलन का संचालन कर रहे थे।

मैं पिछले दिनों आगरा गया था, आपसे भी मिला। मैंने शर्मा जी से पूछा—आप भूमिगत होकर काम कर रहे थे या खुले-आम?

शर्मा जी ने कहा—मैंने 'भूमिगत' होकर काम नहीं किया। सरकार कहती है और लोग कहते हैं कि मैंने छिपकर काम किया; लेकिन मैं कभी छिपा नहीं। यदि छिपकर अगस्त-आन्दोलन चलाता तो सरकार कभी गिरफ़्तार नहीं कर सकती थी। मैं साधारण मनुष्य की तरह चलता-फिरता था और काम करता था। एक विशेष दल के मनुष्य ने मुझे गिरफ़्तार करा दिया।

मैंने फिर पूछा—आपने साहित्य-सृजन का काम क्यों छोड़ दिया?

शर्मा जी ने कहा—"साहित्य से बढ़कर देश की आज़ादी है। एक ओर जब देश में आग लगी हो तब मुलायम गद्दियों पर बैठकर आज़ादी के सम्बन्ध में लेख लिखना मुझे ठीक नहीं लगा। लिखने के साथ-साथ जूझने की भी क़ूवत होनी चाहिए।"

"क्या आप इसके पहले भी कभी किसी आन्दोलन में गिरफ़्तार हुए हैं?" मैंने कहा।

शर्मा जी—"नहीं, लेकिन हर राष्ट्रीय आन्दोलनों में मेरी पूरी सहानुभूति रही है। मैंने उसका अध्ययन किया है। मेरी श्रद्धा दिन-प्रतिदिन देश की आज़ादी चाहने-वालों के साथ रही है। मैं ऐसे मौक़े की खोज में था, जब मैं भी अपने देश की आज़ादी की लड़ाई में सक्रिय भाग लेता।"

"क्या आप अपने लेखों-द्वारा देश-सेवा नहीं कर सकते थे?" मैंने कहा।

शर्मा जी—"नहीं, लेख लिखने ही से देश-सेवा नहीं होती। उसके साथ-साथ जीवन भी मातृभूमि के चरणों पर अर्पण करना चाहिए। साहित्यकारों के लिए सच्चा आदर्श रॉलफॉक्स हो सकता है। वह हमारा पथ-प्रदर्शक है। रॉल-फॉक्स की लेखनी में कुदरती ताक़त थी। धारा-प्रवाह लेखनी आपसे आप चलती थी। वह तेजस्वी लेखक था। मननशील व्यक्ति, दर्जनों पुस्तकों का लेखक और सच्ची आज़ादी का उपासक था। मानव-जगत् के पीड़ित, ग़रीब किसानों, मज़दूरों का सच्चा हिमायती। पराधीनता को सबसे बड़ा पाप समझता था। वह आज़ादी के लिए किसी भी मुल्क की सहायता करना अपना कर्तव्य मानता था। लेखक तो था ही लेकिन केवल लेखनी चलाकर ही वह आज़ादी के काम में हिस्सा बँटाना नहीं चाहता था बल्कि समरभूमि में जाकर मशीनगन चलाना अपना पहला फ़र्ज़ समझता था। वह स्पेन के युद्ध में गया। युद्धस्थल पर बैठे हुए उसकी क़लम और बन्दूक़ दोनों समयानुसार चलती थीं। आज़ादी के दुश्मनों पर धुआँधार गोलियाँ चलाता था। आज़ादी के लिए ही लड़ते-लड़ते फ़ैसिस्टों की गोलियों से वह मारा गया। सच्चे साहित्यकार की यही निशानी है।"

"क्या आप यह जानते थे कि अगस्त-आन्दोलन में फाँसी पर भी जाना होगा?"

शर्मा जी—"हाँ, अच्छी तरह मालूम था। सारी बातों को समझ लिया था। सरकार उस समय अपराध-निरपराध कुछ भी नहीं देखती थी। जिसको पाती धर-दबा देती थी। भयंकर से भयंकर दमन पर विश्वास करती थी।"

"क्या यह बात सच है कि आपको जान से मारने की कोशिश हो रही थी।"

शर्मा जी—"बिल्कुल सच है। आगरा षड्यन्त्रकेस इसी बुनियाद पर रचा गया था। मुझे प्रमुख बनाकर फाँसी पर लटकाने की कोशिश हो रही थी। लेकिन देश की परिस्थिति कुछ बदल गई और षड्यन्त्रकेस फेल हो गया। फाँसी पर मुझे न चढ़ाया जा सका।"

"मैंने सुना था कि आप एक सभा में भाग लेने के लिए विचित्र वेश बनाकर गये थे। क्या यह बात सच है?"

शर्मा जी—"हाँ, यह बात बिलकुल सच है। सरकार का कड़ा पहरा था। मुझे मीटिंग में भाग लेना था। साड़ियों का सहारा लेना पड़ा था। कई बार भूखों रहकर देहातों में जाना पड़ा। कड़ी से कड़ी मुसीबतों को उठाना पड़ा। एक लड़के को आगरे की तहसील में गोली लग गई थी। कोई उसकी चिकित्सा कराने के लिए तैयार नहीं। मैंने अपनी जान को ख़तरे में डाल दिया और गाँव में गया; उस नौजवान युवक का सारा प्रबन्ध कराया। बन्दूक के छर्रे निकलवाये। उसकी जान बची। आज भी वह ज़िन्दा है। अगस्त सितम्बर के बरसात के दिनों में ऊबड़-खाबड़ मार्ग से अँधेरी रातों में गाँवों में जाता था और देहातियों को धीरज बँधाता था। मेरा सम्बन्ध देहातियों से बराबर रहा।"

मैंने फिर पूछा—सुना है कि आपको गिरफ़्तार करके बहुत पीटा गया। क्या आप इस सम्बन्ध में कुछ कह सकते हैं?

शर्मा जी ने कहा—"अपने सम्बन्ध में मैं क्या कहूँ? मारा तो इतना गया कि कई दिन हल्दी पीना पड़ा है। लाठियों से पीटा और रूल से गया मारा। हाथ-पैर बाँधकर लात घूँसों से ख़ूब मरम्मत की गई। सारा शरीर सूज आया था। कई दिन चल फिर नहीं सकता था। बोल नहीं सकता था। नींद नहीं आती थी। सिर सूज आया था। कानों पर इतनी मार पड़ी जिससे आज एक कान बहरा हो गया है। सब हिन्दुस्तानी सिपाही थे। अन्धाधुन्ध पीट रहे थे। कहते थे कि ऐसा मारो जिससे फिर कभी काम करने लायक न रहे। आठ-आठ सिपाही ज़मीन पर लिटाकर दबाये रहते थे और लात-घूँसों से मारते थे। मैं तो मरने की अवस्था में पहुँच गया था। उनका क्रोध इसलिए था कि मैंने उन लोगों को बहुत परेशान किया और आन्दोलन को जारी रखाने में पूरी मदद दे रहा था। वह आन्दोलन-सम्बन्धी बहुत-सी बातों को जानना चाहते थे।"

खाना खाने का समय हो रहा था। मैंने अपनी बातचीत का सिलसिला एकदम रोक दिया। अब शर्मा जी के कुटुम्ब के सम्बन्ध में भी कुछ बातें जान लेनी आवश्यक हैं।

अगस्त-आन्दोलन में आपका सारा परिवार फँस गया। आपकी बड़ी लड़की कमला को गिरफ़्तार करके जेल भेजा गया और सजा दी गई। बड़े लड़के रमेश को गिरफ़्तार करके ख़ूब पीटा गया। हाथ-पाँव टूट गये। मार से कई बार बेहोश हो गया। रमेश से आगरा षड्यन्त्रकेस के सम्बन्ध में कुछ बातों की जानकारी लेना चाहते थे। हफ़्तों भूखों रक्खा गया। पुलिस ने रमेश पर इतना अत्याचार किया कि वह एक रिकार्ड बन गया है। महीनों के लिये जेल में बन्द कर दिया गया।

शर्मा जी की धर्मपत्नी, दो छोटे बच्चे और एक छोटी लड़की को छोड़कर कोई बाक़ी न रहा। घर की देखभाल करनेवाला कोई नहीं रहा। आर्थिक कठिनाइयाँ बेहद बढ़ गईं। बस इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि एक छोटे बच्चे को समय से दवा न मिलने के कारण संसार छोड़कर जाना पड़ा। दवाइयों के लिए पैसा पास नहीं। बच्चे की लाश दफनाने के लिए उन दिनों कोई आगरा में नहीं मिल सका। बड़ी मुश्किल से बच्चे की लाश दफ़नाई गई। घर का सारा ढाँचा ही बदल गया। कोई कमानेवाला बचा नहीं। परिवार में कोई पुरुष नहीं बचा। कठिनाइयों पर कठिनाइयाँ झेलनी पड़ीं। आपकी धर्मपत्नी ने किसी के आगे हाथ पसारकर सहायता माँगना ठीक नहीं समझा। शर्मा जी का घर एक तरह से बर्बाद हो गया। दो-दो बेटों का देहान्त हो गया। अगस्त-आन्दोलन की मार से सारा कुनबा तबाह हो गया। फिर भी आप लोगों का कहना है कि यदि फाँसी पर भी जाना पड़ता तो देश की आज़ादी के लिए ख़ुशी-ख़ुशी जा सकते थे।

इतना सब कष्ट झेलने के बाद भी आपमें देश के प्रति वही उत्साह बना है जैसा मैंने १९४२ में देखा था।

फ्रांस का इतिहास

में ईसा पूर्व २२५ से लेकर सन् १९२० ईसवी तक का इतिहास है। इसमें वहाँ की राज्यक्रान्ति के राजवंश, फ़्यूडल प्रणाली, स्वतंत्र, राजतंत्र, गृह-वर्षीय युद्ध, योरप में फ़्रांस के प्रसार, राजवंश के उद्धार, सन् १८४८ की क्रान्ति, राष्ट्रीय सभा और प्रजातंत्र आदि का वर्णन उत्तमता से किया गया है। पुस्तक में चित्र भी हैं। अच्छे कागज पर छपे साढ़े चार सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ४) चार रुपये।

कुछ

यह प्रसिद्ध साहित्य-सेवी श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी बी० ए० के बढ़िया निबन्धों का संग्रह है। इसमें २० निबन्ध हैं जो भाषा, भाव और विवेचन की दृष्टि से विलक्षण हैं। यह इस वर्ष की अनुपम रचना है। पृष्ठ-संख्या २०० से ऊपर। मूल्य केवल १।) एक रुपया आठ आने।

स्वदेश-विदेश-यात्रा

श्रीयुत सन्तराम जी, बी० ए० और श्रीमती रामेश्वरी नेहरू की प्रसिद्ध रचना है। देश-देशान्तर की यात्रा करने से अनेक लाभ होते हैं। व्यवहार-ज्ञान और सामान्य बुद्धि की वृद्धि होती है। परन्तु पर्यटन का सुयोग सबको सुलभ नहीं होता। इसकी रुचि भी थोड़े लोगों को होती है। ऐसे लोगों को यात्रा-विषयक पुस्तकें पढ़ने से बड़ा लाभ हो सकता है। इस पुस्तक में कश्मीर और कुल्लू की सैर तथा आस्ट्रेलिया की यात्रा का वर्णन है। पुस्तक सचित्र है। अच्छे कागज पर छपी पौने दो सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल १।) एक रुपया चार आने।

लेन-देन

उपन्यास-प्रेमियों के लिए शरद् के उपन्यास अपना एक विशेष आकर्षण रखते हैं। समाज का जैसा सजीव चित्रण शरद् के उपन्यासों में पाया जाता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। 'लेन-देन' में चण्डीगढ़ की भैरवी पोडशी और वहाँ के ज़मींदार का चित्रण अत्यन्त मनोरंजक और कुतूहलवर्द्धक शैली में चित्रित किया गया है। मूल्य ३।-)

माधवी-कङ्कण

यह सुप्रसिद्ध बाबू रमेशचन्द्र दत्त का लिखा ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें मुग़लों के समय की दशा के चित्रण के साथ-साथ प्रेमी-प्रेमिका की बड़ी विचित्र कथा है। यह उपन्यास बहुत लोकप्रिय है। इसका नया संस्करण अभी तैयार हुआ है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

परिणीता

उलझनों के कौतूहलप्रद वातावरण में ललिता और शेखर का प्रेम-सम्बन्ध इस उपन्यास में बड़ी ही कुशलता के साथ चित्रित किया गया है। उपन्यास में प्रेम की पावन गंगा का प्रवाह सर्वत्र व्याप्त है और उपन्यास सुखान्त है। इसके एक-एक शब्द में आपको रोचकता और कौतूहल का दर्शन होगा। मूल्य १।-)

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड
इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ० भारतीय गो-सेवा-सम्मेलन

राष्ट्र की गोचर सम्पत्ति की रक्षा अनिवार्य क्यों है?

लेखक, श्री भगवानप्रसाद त्रिपाठी (पत्रकार)

पिछले दिनों वर्धा में अखिल भारतीय गो-सेवा-संघ का वार्षिक अधिवेशन हुआ था। हिन्दी के युवक पत्रकार श्री त्रिपाठी जी ने इस लेख में सम्मेलन का आँखों देखा वर्णन किया है जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

गो-सम्मेलन के सभापति देशरत्न डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद।

पिछले ११-१२ फ़रवरी को गोपुरी वर्धा में अखिल भारतीय गो-सेवा सम्मेलन का द्वितीय अधिवेशन बड़ी धूमधाम से देशरत्न डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन पूज्य बापू के कर-कमलों द्वारा हुआ। कई दृष्टियों से यह सम्मेलन बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहा।

सम्मेलन का प्रथम दिन

सम्मेलन में लगभग सभी प्रान्तों से गो-सेवक उपस्थित थे। ठीक ढाई बजे सम्मेलन का उद्घाटन बापू ने किया, पर उस दिन सोमवार होने के कारण बापू मौन रहे। अतः जनता को केवल दर्शनमात्र देकर चले गये। तत्पश्चात् सभा का कार्यारम्भ हुआ। मंच पर आचार्य विनोवा भावे, श्रीमती माता जानकीदेवी बजाज (स्वर्गीय जमनालाल बजाज की धर्मपत्नी), डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद तथा अन्य नेता सुशोभित थे। उस दिन देशरत्न डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद का भाषण बहुत ही आकर्षक हुआ। उसी दिन स्वर्गीय जमनालाल बजाज की निधन-तिथि थी। इसलिए गो-सेवा से सम्बन्धित उनके जितने भी कार्य थे, उनकी प्रशंसा की गई। बाबू राजेन्द्रप्रसाद ने अपने भाषण में गौओं की महत्ता बताते हुए कहा कि यह वही देश है जहाँ गौओं की पूजा होती थी। बिना गौओं की पूजा कोई भी व्यक्ति भोजन करना अभिशाप समझता था, पर आज उसके विपरीत ही हम देख रहे हैं। अगर हम सचमुच अपने देश की आजादी चाहते हैं तो गोसेवा करनी ही पड़ेगी। गोसेवा स्वतन्त्रता का एक प्रधान अंग है। आज भी यह देखा गया है कि मरते दम भी गोदान करके अपने स्वर्ग पहुँचने का टिकट कटाते हैं, यह है गोसेवा का महत्त्व।"

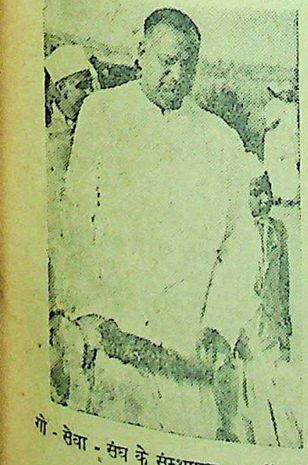

गो - सेवा - संघ के संस्थापक स्वर्गीय सेठ जमनालाल बजाज।

यहाँ यह भूलना न चाहिए कि उस दिन अपार भीड़ ने बड़ी ही शान्ति के साथ भाषण सुना। स्वयंसेविकायें महिलाश्रम की छात्रायें थीं। उनका प्रबन्ध देखकर हरिपुरा कांग्रेस का स्मरण हो आता था। लोगों ने खूब भरपेट पानी पिया। पानी पिलाने की व्यवस्था छात्राओं-द्वारा की गई थी। प्रायः प्रत्येक सभाओं में शोरगुल करने का श्रेय महिलाओं के जिम्मे होता है। ख़ास-तौर से बच्चोंवाली मातायें और भी इसकी भागी होती हैं। यही दशा यहाँ भी देखने में आती थी। महिलाश्रम की अध्यापिका श्री मालतीबाई का उन माताओं को बाहर निकालने की घोषणा अरुचिकर रही। कुछ लोगों के विरोध करते ही उन्हें अपनी घोषणा वापस लेनी पड़ी। इस दिन गो-सेवा की उन्नति के सम्बन्ध में कई महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुए।

दूसरे दिन का कार्यक्रम

दूसरे दिन प्रातःकाल ही आचार्य विनोवा भावे का 'गोसेवा' पर भाषण था। भाषण विद्वत्तापूर्ण और विचारणीय था। एक तरह से हम यह भी कह सकते हैं कि इस सम्मेलन में जितने भी भाषण हुए उन सबमें विनोवा जी का भाषण सर्वश्रेष्ठ था। श्री भावे जी का भाषण हो ही रहा था कि श्रीमती अरुणा आसफअली का पदार्पण हुआ। जनता उनके दर्शनों से कृतकृत्य हुई। जनता के विशेष आग्रह करने पर श्रीमती अरुणा ने एक छोटा-सा भाषण किया। अपने भाषण में उन्होंने बताया कि बंगाल में आज ४० लाख व्यक्ति जो जानवर के रूप में थे, मर गये। हमें इन गउओं की रक्षा करते हुए ४० करोड़ जानवररूपी इन्सानों की भी रक्षा करनी है। दोपहर को कुछ देर के लिए सभा समाप्त कर दी गई। तीन बजे फिर शुरू हुई और जनता ने करतलध्वनि के साथ बापू का स्वागत किया। बापू ने अपने भाषण में बताया कि "मैं आपसे कह रहा हूँ कि आप भूखों मरेंगे। अभी से अन्न का दुरुपयोग न कर उसे संग्रह करें। अगर आप ऐसा न करेंगे तो प्रत्येक प्रान्तों में बंगाल नजर आयेगा। रुपया-पैसा पास होते हुए भी लोग मौत की गोदी में सो जायँगे। कल वाइसराय के प्राइवेट सेक्रेटरी सेवाग्राम आये थे, उनसे हमने स्पष्ट कह दिया कि इस ग़ैर जिम्मेवार सरकार से प्राणों की रक्षा असम्भव है। अन्न-संकट को दूर करने के लिए तो अपनी सरकार बनानी ही पड़ेगी।" ये हैं वाक्य बापू के। यह शब्द सभी के कानों में आज भी गूँज रहे हैं।

आनेवाले अतिथि

इस सम्मेलन में अनेक प्रमुख जन सम्मिलित हुए थे। बाहर के तथा यहाँ के भी अनेक व्यक्ति सम्मेलन को सफल बनाने में संलग्न थे। इनमें सर्वश्री सत्यनारायण बजाज, विश्वम्भरप्रसाद शर्मा, लक्ष्मणसिंह यादव, श्रीराम तिवड़ीवाले, रामकृष्ण बजाज, पारनेकर जी, ऋषभदास जी राँका आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। महिलाओं में सुश्री जानकीदेवी बजाज, शान्ता बहिन रानीबाला, तथा महिलाश्रम की सभी छात्रायें। छात्राओं ने जिस संयम एवं संलग्नता के साथ सम्मेलन को सफल बनाया, उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है। इस सम्मेलन में गो-सम्मेलन होते हुए भी 'जूता'-सम्मेलन भी बढ़िया रहा। जूता और चप्पलों का आदान प्रदान जनता ने खूब किया और दिल-खोलकर किया। सम्मेलन के मुखद्वार पर राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति की एक दुकान भी पुस्तकों की लगी थी। दुकान-चालक श्री सुदाम हुम ने की। मनमोहन मंजुल छवि किसको अपनी ओर आकर्षित नहीं कर लेती थी? समिति-द्वारा प्रकाशित पुस्तकें खूब बिकीं। पास ही श्री शंकर अग्रवाल की एक पुस्तकों की दूकान थी जहाँ पर कम्युनिस्ट साहित्य मिलता था। श्री अग्रवाल डंडे और लाठी से सुसज्जित बैठे थे। उन्हें भय था कि कहीं से कोई अहिंसात्मक आक्रमण न कर बैठे? हैदराबाद से भी एक दल आया था जिसका प्रतिनिधित्व श्री मगनचन्द्र जी वेदी कर रहे थे। श्री वेदी जी 'पूरे' नेता जैसे लगते हैं।

जब वे टेढ़ी टोपी पहनकर निकलते तो जनता को सुभाष बाबू का भ्रम हो जाता था। श्री वेदी जी के साथ में उनकी पल्टन के सेनानी धर्मचन्द, प्रेमचन्द, आनन्दचन्द भी थे। यहाँ पर हम विश्वम्भरप्रसाद शर्मा सम्पादक 'आलोक' को याद किये बिना नहीं रह सकते। उन्होंने इस अवसर पर 'आलोक' का 'गोअंक' निकालकर अपनी उदारता का परिचय दिया।

गो-सम्पत्ति के संरक्षक महात्मा गांधी।

गोरक्षा का आदर्श

स्थानीय गोरक्षण को देखने के लिए हम लोग भी गये थे। जहाँ पर दो सौ गौवें पाली गई हैं। गोरक्षण की व्यवस्था देखकर सभी व्यक्तियों ने श्री श्रीराम तिवड़ीवाले को धन्यवाद दिया। श्री श्रीराम जी वर्धा के एक प्रमुख व्यापारी हैं। इन्हीं की बदौलत आज गोरक्षण की ऐसी दशा है। गोरक्षण-ऐसी संस्थायें हिन्दुस्तान में बहुत कम हैं। बिना चन्दे से ३५ हजार रुपया सालाना खर्च का कार्य चलाना आसान नहीं। सभी लोगों ने मुक्तकंठ से श्रीराम जी की प्रशंसा की।

एक अप्रिय घटना

यहाँ प्रायः सभी राष्ट्रीय संस्थाओं में इस दिन अवकाश था। पर राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति के कार्यकर्त्ताओं को इस अवसर पर हड़ताल करके जाना पड़ा। समिति के स्थानापन्न चालक श्री रामेश्वर दुबे ने न तो इस सम्मेलन में विशेष रूप से भाग लिया और न अपने कार्यकर्त्ताओं को ही लेने दिया। इतना होते हुए भी समिति के सभी अधिकांश कार्यकर्त्ताओं ने (श्री दुबे जी को छोड़कर) सम्मेलन में उत्साह के साथ भाग लिया।

यह सम्मेलन अपने ढंग का अनोखा था। इसके सफल होने में कोई शक नहीं। जिस सम्मेलन को आचार्य विनोवा भावे, बापू तथा राजेन्द्रप्रसाद जैसे कर्मठ नेताओं का सहयोग प्राप्त हो, वह सफल क्यों न हो?

गो-सेवा-सम्मेलन में आचार्य विनोवा भावे का भाषण बड़ा ही महत्त्वपूर्ण था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनाज की इतनी कमी क्यों है ?

भारत का भावी दुर्भिक्ष का निवारण कैसे हो ?

लेखक, श्री जगदम्बाप्रसाद त्यागी, बी० ए०

अनाज की कमी का आये दिन सबेः अनुभव हो रहा है। अकाल पड़ने के लक्षण दिखाई देने लगे हैं। ऐसा क्यों ? यदि सरकार पहले ही इस ओर ध्यान देती तो भावी अकाल के संकट की विभीषिका का अनुमान न होता। इस लेख में लेखक ने इसी समस्या पर प्रकाश डाला है कि भारत में अन्न का अभाव क्यों हो रहा है, और इसकी समस्त जिम्मेदारी सरकार पर ही आती है।

लन्दन में होनेवाली मित्र राष्ट्रीय जनरल असेम्बली में जब गत १४ फ़रवरी को विभिन्न राष्ट्रों द्वारा अपने-अपने देश की खाद्य-स्थिति पर प्रकाश डाला गया तो भारत की ओर से सर रामस्वामी मुदालियर को नीची दृष्टि किये हुए मार्मिक शब्दों में कहना पड़ा कि वह सभा में भारत से विभिन्न देशों को कुछ देने के लिए नहीं अपितु अपने देश की दर्दनाक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कुछ माँगने के लिए खड़े हुए हैं।

भारत के लोगों को सुसज्जित टीन के डिब्बों में मांस, डबलरोटी अथवा बिस्कुट की आवश्यकता नहीं वरन सीधे-साधे भारतवासियों को तो गेहूं, चना, ज्वार, बाजरा और चावल जैसी साधारण अन्न के लिए इंगलैंड, अमेरिका और आस्ट्रेलिया के जहाजों की ओर ललचाई हुई दृष्टि से ताकना पड़ रहा है।

आश्चर्य की बात है कि गत १९४२-४३ के कलकत्ता के भीषण अकाल के उपरान्त भी भारत सरकार ने खाद्यअन्न जैसे प्रधान प्रश्न पर विचार करने का कष्ट नहीं किया और बंगाल के ३० लाख भारतीयों की आहुति के उपरान्त भी ३० लाख टन अनाज की कमी की आपत्ति को पहले से समझने का प्रयास नहीं किया गया। युद्ध की विभीषिकाओं से व्यथित भारतवासी ६ वर्ष के युद्धकाल के उपरान्त एक ठंडी सांस भी नहीं ले पाये हैं कि भारत के कोने-कोने से अनाज का प्रश्न फिर उठ खड़ा हुआ और भारत-सरकार का "अधिक अन्न उपजाओ" वाला आन्दोलन एक नाटक ही सिद्ध होकर रह गया।

भारत जैसे कृषि-प्रधान देश में, जहां कि ८५ प्रतिशत जन-संख्या केवल कृषि में लगी हुई है, आज इतना अनाज उपलब्ध नहीं हो रहा है कि स्वयं निज की माँगों को ही पूरा किया जा सके। विश्व में आस्ट्रेलिया जैसे देश भी हैं जहाँ कि खाद्य-संकट का केवल इतना ही प्रभाव पड़ा है कि जानवरों को जो गेहूं खाने के लिए दिया जाता था, उसमें १७ प्रतिशत कमी कर देने से काम चल गया है और संसार के अन्य देशों को उनके द्वारा आश्वासन दिया जा रहा है कि युद्ध के पूर्वकाल से इतने अधिक परिमाण में वे गेहूं उत्पन्न करेंगे कि अन्य देशों की भी बहुत कुछ माँग पूरी कर सकें।

मित्रराष्ट्रीय जनरल असेम्बली की गत १३ तारीख की मीटिंग में डेनमार्क के प्रतिनिधि ने व्यक्त किया था कि इस वर्ष डेनमार्क को विदेशों से खाद्यान्न आदि मँगाने की आवश्यकता नहीं किन्तु ब्रिटिश वैदेशिक मन्त्री मिस्टर बेविन ने वाक्-जाल बिछाते हुए कहा कि आज से कुछ मास पूर्व जैसा कि संसार की खाद्य-स्थिति का अनुमान लगाया गया था, उससे आज की दुनिया बहुत बदल गई है। ऐसी संकटापन्न स्थिति में प्रत्येक देश को ऐसे क्रान्तकारी कदम उठाने चाहिए जिससे अधिक मात्रा में अन्न बचाया या उपजाया जा सके। विश्व की स्थिति में कुछ नमक-मिर्च मिलाकर नहीं कहा जा रहा है। विदेशों से गेहूं तथा आटा मँगानेवाले देशों को आगामी ६ माह में १ करोड़ ७० लाख टन आयात की आवश्यकता पड़ेगी जब कि केवल १ करोड़ २० लाख टन का आयात ही सुलभ है। यह संख्या कोई अन्तिम संख्या नहीं है। निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि आगामी कुछ सप्ताहों में खाद्य-स्थिति किस प्रकार बिगड़ जायेगी ? सम्भव है गेहूं तथा आटे की कमी ५० लाख टन से कहीं और अधिक हो। चावल की कमी भी इसी प्रकार विशेष ध्यान देने योग्य है। इस कमी के कारण १ अरब जनता को आगामी दो माह में अन्न-संकट का सामना करना पड़ेगा।

इधर भारतवर्ष में जब खाद्य-समस्या प्रत्येक वर्ग के नेताओं की चिन्ता का विषय बन गई है तब कहीं मद्रास-प्रान्त तथा मैसूर के क्षेत्रों का दौरा करने के उपरान्त भारत के वाइसराय लार्ड वैवेल ने महात्मा गांधी और जिन्ना से परामर्श करने की बात सोची। इसके पूर्व भारतीय कृषि कमीशन एवं डाक्टर राइट की रिपोर्ट पर कभी भी विचार नहीं किया गया अन्यथा कृषि के साधनों में उन्नति के साथ उत्पादन भी स्थायी रूप से बढ़ाया जा सकता था और आज की स्थिति में ऐसी समस्यायें कदापि उपस्थित नहीं होने पातीं। किन्तु न तो पशुओं की नस्ल सुधारी गई, न कृषि के साधनों में अन्य प्रकार की प्रगति ही की गई और न किसी प्रकार की सुविधायें दी गईं। चरागाहों की कमी और आबपाशी का बढ़ता हुआ कर, भारतीय पशु और कृषि की उन्नति में ज्यों का त्यों बाधक बना है। वरन् युद्ध के उपरान्त की पुनर्निर्माण के अंतर्गत गोचर-भूमि के कम हो जाने का ध्यान न रखते हुए विभिन्न जंगलों को सरकार द्वारा अधिकार में लिए जाने की बात सोची जाने लगी और बंजर—पड़ती ज़मीन के तोड़ कराने का निश्चय कर लिया गया। इस प्रकार आगामी वर्षों का बेकार कार्यक्रम तो बना लिया गया किन्तु हाल में उपस्थित होनेवाली खाद्य-समस्या पर सक्रिय रूप से विचार करने का ध्यान नहीं आया अन्यथा आज यह नौबत न आती। अब हमारे सम्मुख एक ओर आस्ट्रेलिया का उदाहरण है जहाँ पशुओं को भी गेहूं खाने को मिल रहा है और एक ओर भारत है जहाँ खाद्यान्न के अभाव में मनुष्यों को भूखों मरना साधारण-सी बात दिखाई देती है।

चार चरण

लेखक, प्रोफ़ेसर कमलाकांत पाठक, एम० ए०

प्रेम—

कदम बढ़ाओ, प्रिय को पाओ।
जीवन सुभको शाप बना।
वरदान रहा जो मधुर प्रेम, वह मेरा अनुताप बना!
अधरों में अटकी रही बात, खिड़की में अटका रहा चाँद;
मेघों में घुटती रही रात, प्राणों में उलझी रही याद।
इस तरह नीम का तरुवर भी मेरे दुख का माप बना!

व्यक्ति—

कदम बढ़ाओ, सुख-दुख गाओ,
चिन्ता का छाया अन्धकार, बनते अभाव भी महाकाश;
मरुथल की हूँ मैं क्षीण धार, जलनिधि की कैसे बंधे आश?
भावों का मेरा यहाँ भाष्य, अरे अहम् की छाप बना!

समाज—

कदम बढ़ाओ, जीवन पाओ।
करता आया मैं गीत सृष्टि—भरकर जनगण का तीव्र शोक,
है उदधि भयावह, उपल वृष्टि, कैसी समष्टि? यह रौद्रलोक!
भोजन जीवन के लिए रहा, पर वह ही सन्ताप बना!

क्रांति—

कदम बढ़ाओ, आग लगाओ,
शंख बजाओ, भैरव गाओ।
रही धरणि में विस्फोट-नेक, छिपे जलधि में बाड़व अनेक;
वह तथाकथित 'निचला' विवेक—जिसके है रक्तिम कान्ति लेख।
चीखता नहीं, ललकार रहा, श्रमकर या कि 'प्रताप' बना।
जीवन अपना श्राप बना! वरद आज अभिशाप बना!

दाँतों को ६० प्रति शत अधिक स्वच्छ करता है!

वितरक :
एल० डी सेमूर एंड कं० (इंडिया) लि०, ४६ धरमतला स्ट्रीट, कलकत्ता।

डा. वेस्टस ट्रूथ ब्रुश और ट्रूथ पेस्ट

Copyright: Jagrati

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह पागल

लेखिका, श्रीमती इंदिरा खन्ना

वह सचमुच पागल था या नहीं? उसे पागलपन को ही क्यों अपनाना पड़ा, इसमें कुछ रहस्य तो है ही। लोग पागल को तंग और परेशान करते किंतु वह उसे देखते ही उसके पागलपन पर हार्दिक वेदना का अनुभव करती। इस सुंदर कहानी में लेखिका ने बड़ी सुन्दरता के साथ उसके पागलपन का मार्मिक उद्घाटन किया है जिसका हृदय पर प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता।

वह पागल है, क्योंकि दुनिया उसे इसी नाम से पुकारती है। कहा करे दुनिया उसे पागल, पर मैं उसे पागल कैसे कहूँ? मैं तो आज से ही नहीं पूरे पच्चीस वर्षों से रोज उसे देखती आ रही हूँ। मैंने तो उसमें कभी कोई पागलपन नहीं ही देखा। मैं उसके रग-रग और रोम-रोम से परिचित हूँ। हँसने, रोने अथवा गाने और चिल्लाने में न उसे पहचानूँगी तो कौन है। भला मैं न उसे पहचानूँगी तो कौन पहचानेगा?

लेकिन मैं मूक हूँ। मैं उसके पागलपन को देखकर भी मूक रह जाती हूँ। कौन जानता है कि गली-गली की ठोकरें खाते-खाते जो मेरे दरवाजे से गुजर जाता है पच्चीस वर्षों से इसी तरह देखती आई हूँ। जब कभी भूले से मेरी और उसकी आँखें चार होती हैं, तो वह चलते-चलते एक जाता है। मानो क्षण भर को उसका पागलपन दूर हो गया हो। अतीत की मधुर स्मृतियाँ उसे मेरी आँखों में चलती-फिरती नजर आती हैं। श्रद्धा से उसका माथा पल भर को झुक जाता है। लेकिन मेरी आँखों से उसकी आँखें हटते ही वह फिर पागल का पागल हो जाता है। भूल जाता है अपने अतीत को जो उसे अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय है।

मैं उसकी वेदना खूब अच्छी तरह समझती हूँ। दुनिया उसे पागल कहकर उसका उपहास करती है, किंतु मैं अपने कलेजे को अपने ही हाथों मसल देती हूँ। जब बच्चे उस पर ढेला फेंककर उसे कंकड़ों पर लुढ़का देते हैं तो मैं अपनी आँखें मूँद लेती हूँ। वह कभी अपनी ही धुन में चलते-चलते ठोकर खाकर गिर पड़ता है। मैं दो आँसू बहा देती हूँ उधर पर दौड़कर उसे उठाती नहीं। उठाऊँ भी तो कैसे? मेरे चारों ओर समाज की खड़ी दीवालें मेरे रास्ते में बाधक हो रही हैं। उसे मैं कैसे लाँघकर जाऊँ? मेरे पैरों में कुटुम्ब की मर्यादा की बेड़ियाँ जकड़ी हैं, उसे कैसे तोड़कर आगे बढ़ूँ?

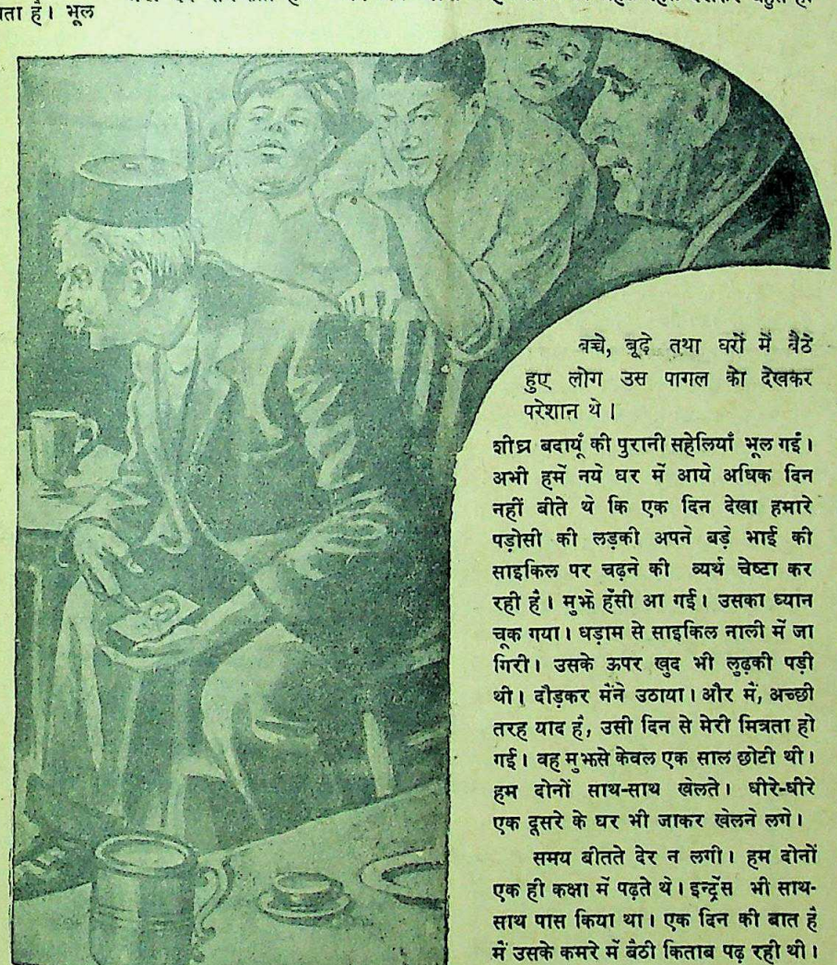

बच्चे, बूढ़े तथा घरों में बैठे हुए लोग उस पागल को देखकर परेशान थे।

आज मैंने फिर अपनी इन्हीं आँखों से अपने ही सामने उसे सड़क पर गिरते और मोटर से कुचलते देखा है। चारों ओर से मर्यादा की कंडीरों में जकड़ा हुआ मेरा हृदय हाहाकार कर उठा। आज मुझे मर्यादा की रक्षा भग्न होती दिखाई पड़ती है। यह दीवालें अब मेरा रास्ता रोक न सकेंगी। आज मैं उसके निकट जाऊँगी—उस पर जाने के पहले मैं दुनिया के कानों में कह देना चाहती हूँ कि वह पागल नहीं है। पागल तो तुम्हीं ने उसे बनाया है। वह तुम्हारे हाथ की चाभी से चलनेवाला खिलौना-मात्र है।

ठहरो जी मत, उसके निकट जाने के पहले तुम्हें यह बताकर जाऊँगी कि उसको कहाँ और कैसे जानती थी? उसका और मेरा क्या सम्बन्ध है? मेरे से अधिक उसको जानता ही कौन है? इतने बड़े विश्व में उसका अपना कहलानेवाला था ही कौन? केवल मैं ही तो बची थी, जिसे वह कह सकता था दावे के साथ कि "मैं इसे बचपन से देखता आया हूँ। यही तो मेरा दर्द समझती है!" पर मेरे चारों ओर फैले हुए जाल को काट देना उसके लिए असम्भव था।

हाँ, तो सुनो। मेरा और उसका क्या सम्बन्ध था? नहीं बताऊँगी तो दुनिया मुझ पर उँगली उठायेगी। इससे उसकी आत्मा को कष्ट पहुँचेगा। मैं इस अन्तिम वेला में उसकी आत्मा दुखित नहीं करना चाहती! मैं यह खूब विश्वास के साथ जानती हूँ कि जब तक मैं उसके निकट न पहुँचूँगी, उसकी आत्मा मेरे कारण तड़पेगी। यह वह खूब अच्छी तरह जानता है कि इतनी बड़ी दुनिया में केवल मैं ही तो उसके मरने के बाद उसकी याद में आँसू बहाऊँगी।

* * *

सुना पिता जी की बदली कानपुर को हो गई है। पहले तो बदायूँ छोड़ते हुए बड़ा दुख लगा, पर कानपुर से शहर की हर समय की चहल-पहल देखकर बहुत ही शीघ्र बदायूँ की पुरानी सहेलियाँ भूल गई। अभी हमें नये घर में आये अधिक दिन नहीं बीते थे कि एक दिन देखा हमारे पड़ोसी की लड़की अपने बड़े भाई की साइकिल पर चढ़ने की व्यर्थ चेष्टा कर रही है। मुझे हँसी आ गई। उसका ध्यान चूक गया। धड़ाम से साइकिल नाली में जा गिरी। उसके ऊपर खुद भी लुढ़की पड़ी थी। दौड़कर मैंने उठाया। और मैं, अच्छी तरह याद है, उसी दिन से मेरी मित्रता हो गई। वह मुझसे केवल एक साल छोटी थी। हम दोनों साथ-साथ खेलते। धीरे-धीरे एक दूसरे के घर भी जाकर खेलने लगे।

समय बीतते देर न लगी। हम दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते थे। इन्ट्रेंस भी साथ-साथ पास किया था। एक दिन की बात है मैं उसके कमरे में बैठी किताब पढ़ रही थी। उसका कमरा दूसरी मंजिल पर था। उसके कमरे की खिड़की सड़क की तरफ़ खुला करती थी। हाँ तो संध्या ने हँसकर कहा—"जीजी क्या तुमने कभी बन्दर भी देखा है?" वह मुझे जीजी कहकर ही बुलाया करती थी।

"हाँ क्यों नहीं। पर—"

"अरे वह बन्दर नहीं जो पेड़ों पर रहता है।"

"तो कौन-सा बन्दर?"

"जो मैंने पाला है।"

"तूने कब बन्दर पाला। मुझे तो कभी नहीं दिखाया, कहाँ है?" मैं एक साँस में कई सवाल कर गई। उधर संध्या का हँसते-हँसते बुरा हाल था। मैं हैरान होकर उसका मुंह ताक रही थी।

"तो देखोगी" हँसी को रोकती हुई मेरा आँचल पकड़कर मुझे वह खिड़की के निकट ले गई। खिड़की का एक पट जोरों से बन्द करके खोल दिया।

"अरे क्या करती है? क्या किवाड़ तोड़ना है पर दूसरे क्षण सामनेवाले मकान की खिड़की खुल गई और तभी सामने एक युवक हँसता-सा दिखाई पड़ा।"

"हैं यह क्या? मैं घबड़ाकर पीछे हट गई। मैंने देखा कि सन्ध्या ने हवा में कुछ लिखा, शायद उसको मेरा परिचय दिया जा रहा था। जब वह लौटकर आई तो हँसकर बोली देखा, मेरा बन्दर खूब नाच नाचना जानता है।"

"बड़ी बेशर्म हो गई है तू। तो यही तेरा याकूब है जिसकी तू हमेशा बातें किया करती है। यों तो मैंने कई बार आते-जाते देखा है।"

"हाँ जीजी!"

"तुझे मैंने पहले भी समझाया और आज भी समझाती हूँ कि तेरा और उसका साथ ठीक नहीं। आख़िर वह मुसलमान है और फिर कायस्थ और मुसलमान में शादी हो ही कैसे सकती है। उसे तू भूल जा। उसको भूलने ही में तेरा कल्याण है।"

'जीजी ऐसा न कहो।" वह मानो रो-सी पड़ेगी। "मैं उसके बिना जीवित न रह सकूँगी। वह भी मेरे बिना पागल हो उठेगा।" उसी समय सन्ध्या की मा ने आकर हम लोगों की बातों को वहीं समाप्त कर दिया।

संध्या मन की बड़ी भोली थी। वह एक पागलपन कर बैठी। वह था उसका प्रेम करना, एक विधर्मी के साथ! उसने मुझसे कुछ नहीं छिपाया था। सब कुछ उगल दिया था उसने मेरे सामने। मैं उसको समझाती, तर्क करती पर उस पर मेरी किसी बात का असर न होता। आख़िर उससे हारकर मैंने याकूब से परिचय बढ़ाया और समझाया। उन पर तो मानो भूत सवार था प्रेम का। अंधों की तरह अपने ही रास्ते पर बढ़ रहा था।

एक दिन वही हुआ, जिसकी मुझे आशंका थी। बड़े भाई ने संध्या को याकूब से बातें करते हुए देख लिया। वह गुस्से से भर उठा। दुनिया को देखे और समझे हुए था। मा पर खूब बिगड़ा। घर पर रहकर भी जवान बेटी की ठीक से देख-भाल नहीं कर सकतीं। पिता तो बचपन ही में अपनी पत्नी पर सब छोड़कर स्वर्ग-वासी हो गये थे। मा ने अनेक कष्ट उठाकर बच्चों को किसी योग्य बनाया। जब से बड़ा लड़का कमाने लगा, मा ने शान्ति की साँस ली। तभी से संध्या का बड़ा भाई, बड़ी लगन से, मा और भाई-बहनों की सेवा करता था।

किसी तरह बड़े भाई विजय ने दौड़-धूपकर संध्या के लाख इनकार करने पर भी, उसकी शादी करके ससुराल भेजकर अपने कर्त्तव्य का पालन किया। रोती-तड़पती संध्या ससुराल जाकर याकूब को भुलाने की व्यर्थ चेष्टा करने लगी। पर जो उसकी नस-नस में समा गया था उसे एकदम नहीं निकाल सकी!

एक दिन याकूब को अचानक समाचार मिला कि उसकी संध्या बालक के जन्म देते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के दूसरे ही दिन मर गई। अन्तिम शब्द उसके मुख से निकला वह याकूब था, जिसे कोई भी उसकी अन्तिम इच्छा को समझ न पाया। उसके प्राण बड़ी देर तक रुके रहे, मानो याकूब की राह देखते रहे हों। याकूब ने अपने बाल नोच डाले। जी भरकर समाज को कोसा और गालियाँ दीं। घर का सारा सामान उठाकर फेंक दिया और सारे दिन अपनी उसी खिड़की पर खड़ा रोता रहा।

अभागा तो वह जन्म का ही था। होश सँभालने पर जब उसे ज्ञात हुआ कि जिस मुसलमान घर में उसका लालन-पालन हुआ, वह घर उसका अपना नहीं है। मा-बाप भी उसके पता नहीं कौन हैं? एक दिन शहर में हिन्दू-मुस्लिम दंगा हो रहा था। चारों ओर घोर सन्नाटा छाया था। अधिक रात बीत चुकी थी। अचानक उस सन्नाटे को तोड़ते हुए एक नवजात शिशु का चीत्कार सुनाई दिया।

मोहल्ला मुसलमानों का ही था। उसके रोने की आवाज सुनकर चौकीदार ने बच्चे को गोद में उठा लिया। सबेरे सबने उठकर बच्चे को देखा। बहुतों ने कहा काफ़िर का बच्चा जान पड़ता है मार डालो पर जज साहब को बच्चे पर रहम आ गया। उनके कोई सन्तान नहीं थी। उन्होंने खुदा की देन समझकर बच्चे का पालन किया। बड़े लाड़-प्यार से पलकर वह बड़ा हुआ। पर जिस दिन याकूब ने असलियत जानी, वह क्रोधित होकर एक दिन चुपचाप घर छोड़कर चला आया। कानपुर में किराये के मकान में रहकर वहीं नौकरी कर ली।

संध्या की मृत्यु का समाचार पाकर मानो वह पागल हो उठा। मुझसे उसका रोना न देखा जाता था। मैं उसे बहुत समझाती पर वह मेरी बातों पर कुछ भी ध्यान न देता। हाँ, यह जरूर था कि वह कुछ देर के लिए शान्त अवश्य हो जाता था। मैंने उसे बहुत समझाया कि भाग्य में जो कुछ लिखा था वह तो होकर ही रहा। भला इस तरह कितने दिन काम चलेगा? व्यर्थ में अपनी जान परेशानी में डालने से क्या फायदा? वह कितने ही दिन तक खाना न खाता। अकसर काम पर न जाता— बस केवल खिड़की पर खड़ा रोता रहता।

* * *

एक दिन धूमधाम से मैं भी ससुराल विदा हो गई। मैंने डोले का एक कोने से पर्दा उठाकर देखा कि वह अपनी खिड़की पर कितना मायूस खड़ा था। वह एक-टक संध्या के कमरे की खिड़की को देख रहा था। शायद वह इस इन्तजार में था कि कब खिड़की खुले और सामने हँसती-सी संध्या इशारे करती नजर आये? बाजों के शोर से उसका ध्यान भंग हो गया। उसने मेरे डोले की ओर देखा। उसकी निगाहें मुझे खोजती-सी नजर आई। धीरे से मैंने, ताकि कोई देख न सके, ऊपर का पर्दा क्षण भर को हटा दिया। मैंने देखा कि दो मोती-से आँसू चमककर याकूब के गालों से लुढ़क पड़े।

* * *

ससुराल में आये कितने ही साल हो गये थे। इस बीच पिता जी की कानपुर से बदली भी हो गई। याकूब की कोई भी खबर न लग पाई थी। मैं अपने कमरे में बैठी तकिये का गिलाफ़ काढ़ रही थी। दूर से बच्चों का शोर होता हुआ सुनाई पड़ा। एकाएक सुई मेरे नाखून में चुभ गई। आँखों में दर्द के कारण आँसू भर आया। सुई वहीं रख खिड़की पर आ खड़ी हुई और नीचे झाँकने लगी। देखा बहुत से लड़के एक आदमी को जिसके कपड़े तार-तार हो चुके थे, बाल बढ़कर कन्धों तक झूलने लगे थे, दाढ़ी भी काफ़ी बढ़ी हुई थी, जो केवल हड्डियों का ढाँचा ही रह गया था, छिन में रोते और छिन में हँसते। बार-बार संध्या का नाम लेते सुना। वह बच्चों की किसी भी शैतानी का विरोध नहीं कर रहा था, पर उसका क्रम न टूटता था।

इतनी सूरत बदलने पर भी मुझे उसे पहचानने में देर न लगी। याकूब पर मेरी, भाई से भी अधिक ममता थी पर जब से संध्या मरी तब से उसके प्रति मेरी सहानुभूति बहुत बढ़ गई थी। उसके इस पतन को देखकर मेरा हृदय रो उठा। अधिक न देखा गया। खिड़की से हट आई और पलँग पर पड़ी बड़ी देर तक रोती और समाज के इस कठोर नियम पर विचार करती रही। अगर संध्या और याकूब की शादी हो जाती तो याकूब की यह दशा न होती। क्या समाज ही इसका दोषी है?

फिर तो मैं रोज ही याकूब को इस सड़क से गुजरते देखती। बच्चे उसको चारों ओर से घेरे रहते, ढेले मारते और तंग करते। कभी कोई दयावान बालक अपने घर से रोटी भी लाकर खिला देता।

मैं खिड़की पर खड़ी थी। याकूब की आँखें मेरी आँखों से जा टकराईं। उठते क़दम वहीं रुक गये। थोड़ी देर के लिए उसका सारा पागलपन जाता रहा। वह गुमसुम-सा मेरी ओर खड़ा देखता रहा। पर पलक झपकते ही वह फिर पागल हो उठा। उसका टूटा क्रम रोने और हँसने का—बार-बार संध्या पुकारने का—फिर चल पड़ा।

इसी तरह पच्चीस जाड़े, गर्मी और बरसात आकर उस पर से गुजर गये। मैंने उसमें और उसके पागलपन में कोई परिवर्तन नहीं देखा। मैं उसे दूर से आते देखती और जब तक कि मेरी आँखों से ओझल न हो जाता, बराबर देखती रहती। पर नीचे उतरकर दरवाजे पर खड़ी होकर कभी उसे न देखा और न कोई बात पूछी उसके दुख की—डर जो समाया था दिल में। अगर किसी ने देख लिया और टोक दिया कि इतने ऊँचे खानदान की वह एक मुसलमान पागल से बातें कर रही थी, तो खानदान की नाक न कट जायेगी? आखिर मूक बना ही रहना पड़ा।

धीरे-धीरे दुनिया की तरफ़ से मेरी उदासीनता बढ़ने लगी। उसके रहन-सहन, रंग-ढंग से घृणा-सी होने लगी पर मशीन की तरह निर्जीव-सी दिन रात काम में लगी हुई अपने को भुलावे में डालने की चेष्टा करती रहती।

अभी जब बच्चों के मुख से पागल-पागल की ध्वनि सुनी तो हाथ का काम वहीं छोड़कर सीधे अपने कमरे में पहुँचकर खिड़की पर जा खड़ी हुई। अभी तक उसका मुँह ठीक से देख भी न पाई थी कि सामने से आती मोटर के धक्के से याकूब को गिरते और कुचलते देखा। हे ईश्वर क्या यह दुखान्त नाटक दिखाने ही के लिए मुझे जीवित रखा था? हाय रे निष्ठुर पापी समाज तूने न जाने अब तक किसकी अभागे की जीवन-ज्योति अपनी झूठलाओं में फँसाकर नष्ट की होगी?

* * *

सुना, यह है इस अभागे पागल की कहानी। इसीलिए तो कहती हूँ कि मैं अब प्रायश्चित्त करूँगी—उसके निकट जाऊँगी और स्वतः अपने हाथों से उसकी क़ब्र पर फूलों की माला चढ़ाकर दीपक जलाऊँगी। आज मुझे डर नहीं है कि दुनिया क्या कहेगी? मेरे वंश की नाक कटती है कटा करे। मुझे जरा भी परवाह नहीं है।

आँख फाड़-फाड़कर देख लो। मैं याकूब के निकट खड़ी हूँ। मुँह पर आँचल डाले वाली का मुँह खुला हुआ है। वह अन्तिम हिचकी ले रहा है कुछ क्षण में सब कुछ समाप्त हो जायेगा। मेरे चारों ओर भीड़ उमड़ी चली आ रही है। नंद और जेठानी पड़ोसिनों के साथ मेरी ओर घृणा और क्रोध से देख रही हैं। मेरे पति हाथ में लकड़ी लिये तेजी से चले आ रहे हैं—पर मेरी आँखों में तो अंधकार-सा छाता जा रहा है। शायद जब वह मुझे घर ले जाने के लिए मेरा हाथ पकड़कर खींचेंगे—मुझे लगता है उससे पहले ही मैं मूर्छित होकर याकूब के क़ब्र लुढ़क जाऊँगी।

बालसखा का नया वार्षिकांक

एक महीने में प्रकाशित होगा। पाठक धैर्य रक्खें।

ग्राहकों के अनुरोध से हमने इस वर्ष भी बालसखा का वार्षिकांक निकालने का निश्चय किया है। इसमें बहुत से चित्र, कविताएँ, कहानियाँ, बढ़िया लेख और उपयुक्त सामग्री रहेगी। पृष्ठ-संख्या ३०० से ऊपर। यह अङ्क बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होगा। यह मासिक बालसखा के १२ अंकों से पृथक है। मूल्य ३), मासिक बालसखा के ग्राहकों के लिए रियायती मूल्य २॥)

रियायती मूल्य के लिए अपना ग्राहक-नंबर अवश्य लिखिए।

मैनेजर, बालसखा, इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

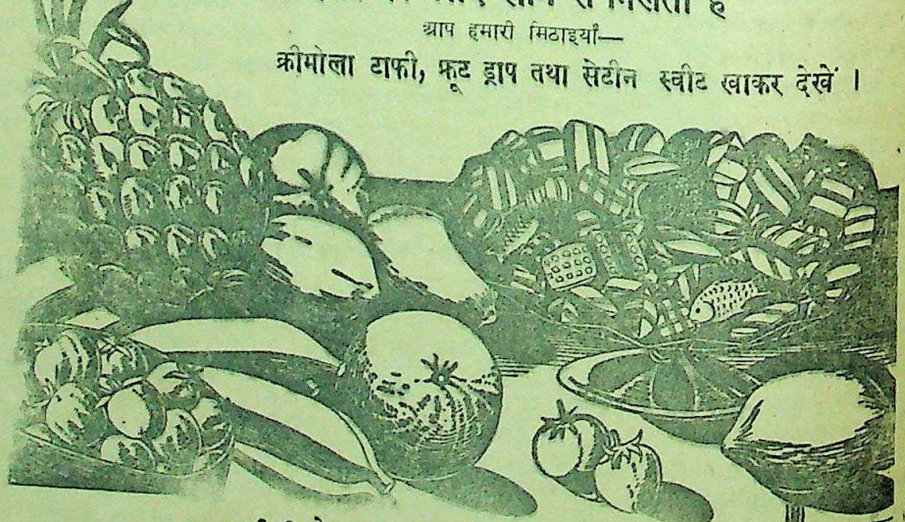

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

ईंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

अहिंसा में अविश्वास क्यों ?

हमारे राष्ट्र के कर्णधार कह रहे हैं कि आजादी क़रीब है। जबलपुर में सुभाष विवस के दिन प्रान्त के भूतपूर्व मंत्री पंडित द्वारकाप्रसाद मिश्र ने कहा था कि हिन्दुस्तान अपने को आजाद समझता है। सरदार वल्लभभाई पटेल ने कहा है कि मैं अपने जीवन में ही भारत को आजाद देखना चाहता हूँ। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा है कि यह एटमबम का जमाना है। बन्दूक-तलवार से विजय न होगी। पूज्य महात्मा गांधी कहते हैं कि अनुशासन न होने से आई हुई स्वतन्त्रता भी चली जायेगी।

मेरी समझ में तो कांग्रेस सन् ४६ में भी वहीं है जहां वह सन् ३६ में थी। केन्द्रीय असेम्बली में सन् २७-२८ में स्वर्गीय त्यागमूर्ति पंडित मोतीलाल नेहरू ने जो कार्य शुरू किया था वही सन् ४६ में भी किया जा रहा है। काम वही है, पात्र दूसरे हैं। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय, बंगाल के नरशार्दूल चितरंजनदास, युक्तप्रान्त के त्यागमूर्ति पंडित मोतीलाल नेहरू तथा महामना पूज्य पंडित मदनमोहन मालवीय यदि इन कौंसिलों तथा असेम्बलियों से आजादी न हासिल कर सके तो अब श्री शरत्चन्द्र बोस उसे हासिल कर लेंगे यह कैसे सम्भव हो सकता है ? जानते हैं उन्नत की हकीकत लेकिन, दिल के बहलाने को ग़ालिब ये ख्याल अच्छा है।

प्रान्तीय कौंसिलों तथा असेम्बलियों का चुनाव हो रहा है। बड़े-बड़े त्यागी उसमें पहुंचने के लिए प्रयत्नशील हैं मगर ऊपर से कहते हैं, मेरी इच्छा नहीं थी, लाचारी है, कांग्रेस की आज्ञा माननी ही पड़ेगी। कौंसिलों से स्वराज्य थोड़े ही मिलेगा। उसके लिए तो बलिदान करना पड़ेगा। सच पूछिए तो यही मनोवृत्ति आजादी को रोके हुए है। कांग्रेस अब फिर पद-ग्रहण करने की सलाह देगी और हमारे त्यागी उस मशीन को चलायेंगे जिसे वह पहले तोड़ने पर तुले हुए थे। अगर इन्हें यही करना था तो सन् ३९ में इस्तीफ़ा क्यों दिया ? इसे वही समझ सकता है जो त्यागी होगा ? जिन लोगों ने उस वक्त पद न छोड़ने की सलाह दी वह देशद्रोही होने के पुरस्कार से विभूषित किये गये। अब तो यह साफ़ दिखलाई देता है कि कांग्रेस प्रान्तों में पदग्रहण करने की सलाह देगी। यही अनुकूल मार्ग मालूम देता है क्योंकि रचनात्मक कार्य को उससे प्रोत्साहन मिलेगा। इसलिए अगर हम यह कहें कि कांग्रेस ने पदत्याग करके जो गलती की थी उसका वह मार्जन करने जा रही है। कांग्रेस के त्यागी पूर्ण आजादी के लिए पार्लियामेंटरी सिस्टम के क़ायल अवश्य हैं। इसके लिए बलिदान करना पड़ता है, कांग्रेस के त्यागी जेल के क़ाबिल हैं बलिदान के नहीं। हिंसा और अहिंसा में यही अन्तर है।

अहिंसा से स्वराज्य क़ायम करने के लिए आत्मत्याग की आवश्यकता है। जिस प्रकार से महात्मा जी ने अपने को बना लिया है उसी प्रकार से जनता के बनने से स्वराज्य आने में देर न होगी। अहिंसा, हिंसा से कठिन है उसका प्रयोग करनेवाला योगी भी समझा जा सकता है। अहिंसा का पालन हर एक कर सकता है, यह असम्भव मालूम देता है। अहिंसा का पालन वही कर सकता है जिसने सत्य को अपनाया है, अन्दर और बाहर जिसके एक भाव हैं। लोभ को दूर करके सादगी में ओतप्रोत हो गया है, जीवनोपयोगी वस्तुओं को अपने ही पुरुषार्थ से उपार्जन करता है, किसी प्राणी से उसे द्वेष नहीं है, ईश्वर के समान संसार के सभी जीवों को देखता है, 'मैं' का भाव जिसमें नहीं है, ईश्वर का पूर्ण विश्वासी हो, हिन्दू और मुसलमान, मन्दिर और मस्जिद का भेद जो नहीं मानता, उसको कौन गुलाम रख सकता है ? वह तो स्वराज्य क्या परमपद का अधिकारी हो चुका है। महात्मा जी को छोड़कर इस श्रेणी में किसका नाम लिया जाये यह समझ में नहीं आता है।

श्री सुभाषचन्द्र बोस ने जो मार्ग अपनाया उसे सभी उचित समझते हैं। यह उनके जन्म-दिन से साफ़ जाहिर होता है। महात्मा जी के उत्तराधिकारी पंडित जवाहरलाल जी भी कहते हैं कि मैं भी सुभाष की स्थिति में होता तो मुमकिन है वही करता जो उन्होंने किया है। इन बातों से साफ़ जाहिर होता है उस पर लोगों का पूर्ण विश्वास नहीं है। जब तक मनसा, वाचा और कर्मणा से उस पर विश्वास न होगा तब तक वह कैसे सफल होगा ? आत्मा की आवाज़ दूसरी है, कार्य दूसरा करना पड़ता है, इससे कामयाबी कैसे हासिल हो सकती है ?

अहिंसा तप है उसके पालन करने से लोक तथा परलोक दोनों का सुधार हो सकता है। कांग्रेस २५ वर्ष से अहिंसा का मार्ग अपनाये हुए है मगर उसे कामयाबी नहीं हासिल हो रही है इससे जाहिर होता है उसमें कुछ त्रुटियाँ हैं। मालूम देता है लोगों का पूर्ण विश्वास अहिंसा पर नहीं है। अहिंसा का पालन केवल हिंसा के साधन न होने से किया जाता है, इसी मनोवृत्ति से कामयाबी नहीं हो सकती। जो स्वराज्य क़रीब मालूम दे रहा है वह भी हिंसा होने से दूर हो जायेगा। कांग्रेस के पद लेने पर हिंसा को प्रोत्साहन मिलेगा और उसका प्रयोग करना पड़ेगा। कांग्रेस के पद लेने से हिन्दू तथा मुस्लिम द्वन्द्व भी निश्चिन्त हैं उसे रोकने के लिए अहिंसा नहीं हिंसा का प्रयोग करना पड़ेगा। ऐसी हालत में न हिंसा का पूर्ण प्रयोग होगा और न अहिंसा का ही पूर्ण पालन होगा। इस तरह की मनोवृत्ति असफल होती है।

एक बार एक हिन्दू और दूसरे मुसलमान में बहस हुई, हिन्दू कहता था राम और मुसलमान कहता था रहीम बड़े हैं। इसका निपटारा करने के लिए यह तय हुआ कि दोनों कुएँ में कूद पड़ें और जो जिन्दा निकले उसी का ईश्वर बड़ा है। मुसलमान जिसे ईश्वर पर पूर्ण विश्वास था उसने कहा कि रहीम रक्षा करेगा। वह कूदा और कुएँ में से सकुशल निकल आया। हिन्दू के मन में संशय था। वह राम और रहीम दोनों का स्मरण करके कूदा और उसी में रह गया। तात्पर्य यह है कि जिस कार्य को करे उस पर मनसा, वाचा तथा कर्मणा से विश्वास करने पर अवश्य कामयाबी होती है।

अहिंसा से विश्व का कल्याण होगा इस पर मेरा दृढ़ विश्वास है। अहिंसा के उपासकों को ईश्वर पर विश्वास करके सारे संशय को दूर कर देना चाहिए। ईश्वर पर विश्वास करनेवाला 'मैं हूँ' का भाव भूल जाता है और उसी से उसे कामयाबी हासिल होती है। 'मैं' का भाव मनुष्य को पतित कर देता है। जो 'मैं' को छोड़कर ईश्वर पर विश्वास करता है वह विजयी होता है। जो यह सोचकर कार्य करता है कि मैं करता हूँ उसे पतित होना पड़ता है। मामूली से मामूली कार्य से इसका निर्णय किया जा सकता है। अहिंसा ईश्वर का रूप है। उसका सच्चाई से पालन करनेवाला मामूली से मामूली व्यक्ति भी शान्ति प्राप्त कर सकता है। पूर्ण विश्वास न होने से बड़े से बड़ा नेता भी सदा अशान्ति में ही पड़ा रहेगा। सारी अशान्ति का मूल अविश्वास है। इससे जिन्हें अहिंसा पर विश्वास न हो उन्हें क्षणिक आडम्बर में न फँसना चाहिए। जो नेता अपना बहुत बड़ा मान देखकर उससे लिपटे हुए हैं और उनका विश्वास हिंसा में है उसी का यह फल है कि हाथ में आई हुई आजादी का वह उपभोग नहीं कर सकते हैं। ये नेता जब खुद अपनी आत्मा को ही शान्ति नहीं प्रदान कर सकते तो विश्व को कैसे शान्ति दिला सकते हैं ?

जबलपुर —रामभरोस मालवीय
१८ फरवरी ४६

* * *

दूध देनेवाले पशुओं की रक्षा

दूध के मवेशियों की तेज़ी के साथ होनेवाली घटोतरी ने आज लोगों के स्वास्थ्य को कमज़ोर एवं बीमारियों का घर बना दिया है। ८७ प्रतिशत खेती पर जीनेवाले देश के किसानों का भविष्य घोर अन्धकारमय बना दिया है। यदि हम समय रहते न चेते और दूधवाले पशुओं की रक्षा करने में न लगे तो निश्चय देश का भविष्य ख़तरे में है।

भारत-रक्षा-क़ानून की धारा ८१ के अधीन यू० पी० की सरकार ने जो आदेश जारी किया है, वह बेकार है। इसको जल्द से जल्द कड़ा आन्दोलन करके प्रान्तीय एवं केन्द्रीय सरकार से पशु-रक्षा-सम्बन्धी कड़े क़ानून बनवाने होंगे और उनके प्रत्येक अंग को पालन कराने के लिए हर समय सचेत रहना पड़ेगा। प्रत्येक शहरी एवं ग्राम-निवासी भाई को अपने-अपने दायरे में निम्नबातों का बराबर ध्यान रखना चाहिए :—

(१) आज दिन बूचड़खानों में खुल्लमखुल्ला इस आदेश के ख़िलाफ़ गाभन, जवान तथा दूध देनेवाली गाय, भैंस काटी जाती हैं, बछड़े, बछिया तक कटते देखे जाते हैं जो सरकारी आर्डर की दृष्टि में भारी जुर्म है। इनको रुकवाने के लिए अपने डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, म्युनिसिपल बोर्ड, कैन्टून्मेंट बोर्ड, टाउन एरिया तथा नोटी-फाइड एरिया के मेम्बरों को मजबूर करना चाहिए। जो वैटरनरी डाक्टर वहाँ तैनात हैं उनकी पूरी-पूरी निगरानी करनी करानी चाहिए। बूचड़खाने के दरवाजे पर या उसके निकट, जवान, गाभिन, दूध देनेवाले पशुओं को वध के निमित्त बेचने व ख़रीदनेवालों के ख़िलाफ़ क़ानूनी कार्यवाही करनी चाहिए। वधिकों के हाथ में जहाँ कहीं भी ऐसे पशु देखे जायें उनका पीछा करना चाहिए।

(२) किसी का भी पशु यदि गुम हो जाये या चोरी चला जाये तो तुरन्त बूचड़खानों पर निगरानी करनी चाहिए। चोरी के पशु अक्सर पेली फटने से पहले बूचड़खानों में सस्ते दामों बेच कर या रिश्वत देकर कटवा दिये जाते हैं। बूचड़खानों में पौ फटे से पहले पहुँचकर अपने पशु का पता लेना चाहिए।

(३) दस वर्ष से कम उम्र के भैंसे की बलि या गाय-भैंस की क़ुर्बानी करना भी आदेश के अनुसार जुर्म है। २॥ साल से कम उम्र की भेड़ी या २ साल से कम उम्र की बकरी की क़ुर्बानी भी जुर्म है। केवल एक वर्ष से ऊपर की उम्र तक के भेड़े या बकरे की बलि या क़ुर्बानी जायज है किन्तु बूचड़खाने में नहीं। क्योंकि बिक्री के लिए त्योहार पर भी सरकारी आदेश कोई रियायत नहीं देता। क़ुर्बानी के लिए लाये हुए भेड़, बकरियों के गिरोह में यदि ⅔ भाग से ज्यादा मादा हों तो वह झुण्ड या गिरोह भी गिरफ़्त में आते हैं।

गोपाल गोशाला —श्रीपति चतुर्वेदी शास्त्री
मेरठ

Estd. 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S. १०) H.M.B.S. १५) H.M.D.S. २५)। पुस्तक—अ० पारिवारिक १) बायोकेमिक १) १००० रेडलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्सनरियाँ १॥) आर्गेनन १), फार्माकोपिया १॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायेंगी। डा० ख० माफ—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≡) ड्राम। आउन्स ॥) घरेलू बक्स ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंगमंच

'जीवन'–सुप्रसिद्ध फ़िल्म कलाकार और अभिनेता

फ़िल्मी अभिनय-कला तथा साहित्य पर एक सुन्दर इन्टरव्यू

लेखक, श्री उमेश जोशी

[३]

प्रश्न—आप अपने जीवन की न भूलनेवाली घटना कहिए।

जीवन—घटना—मैं आपको ऐसी बताऊँगा, जिसने कि मेरे जीवन पर काफी असर डाला है। ऐसी घटनायें रंगून के प्रांगण में अनगिनती घटी हैं। उन्हीं में से एक जो कि मेरे सम्पर्क में आई है, उसका शीर्षक है—"अमर-बलिदान" इस कहानी के गर्भ में आग की चिनगारियाँ हैं, और उन चिनगारियों के साये में गोरे सैनिकों की नीचता का इतिहास छिपा हुआ है।

मेरी शादी हुई थी। मेरी पत्नी ने फ़रमाइश की कि एक नौकरानी लाओ, जो कि घर का काम-काज किया करे। पत्नी की इच्छा की पूर्ति न करना मानो आफ़त मोल लेना है। वह भी नई पत्नी की इच्छा और ऐसी वाइफ़ की जो कि पति की लाड़ली हो। पति की प्यारी हो। पति के मन पर शासन करनेवाली हो। अच्छी नौकरानी का मिलना बम्बई में बड़ा मुश्किल काम था। मैं इसी फ़िराक में था। मैंने अपने मित्रों से भी कह रक्खा था। लेकिन कोई भली स्त्री मिल नहीं रही थी। मुझे कुछ घर के लिए सामान लेना था। मैं "कार" से फोर्ट-बाज़ार गया। जब मैं रूमालों का बंडल लेकर दूकान से बाहर निकला तो मैंने देखा कि एक पच्चीस साल की औरत मेरे सामने हाथ पसार रही है। उसका आधा मुख घूँघट से ढँका था, लेकिन फिर भी वह बड़ी ख़ूबसूरत जान पड़ती थी। मैं उसकी सुन्दरता देखकर दातों तले उँगली दबाने लगा। मैंने उससे कहा—"क्यों री, भीख तू क्यों माँगती है? क्या तेरी तबियत काम-काज करने में नहीं लगती? यह उम्र तो काम करने की है, न कि भीख माँगने की। क्या तुम लोगों ने भीख माँगना अपना पेशा बना लिया है? मैं पेशेवरों को कुछ नहीं दिया करता।" उस औरत ने शर्माते हुए कहा—"बाबू जी आप चाहे जो समझें। आप बड़े आदमी हैं। हम जैसी औरतों को कौन नौकरी देता है? कौन पूछता है? मुझे यदि नौकरी मिल जाये, तो मैं क्यों यह ज़लील काम करूँ? जिसमें शर्म-हया को ताक में रख देना पड़ता है। मैं तो भीख माँगना महापाप समझती हूँ। लेकिन पेट के लिए यह पाप भी किया जाता है। जब कि मैं पेट की लड़ाई से हार गई, तभी मैं घर से बाहर निकली मुझे भीख माँगने का यह तीसरा दिन है। इससे पहले . . .।" आगे वह कुछ न कह सकी। उसकी सुरमई आँखों से टप-टप दो बूँद आँसू उसके गोरे गालों पर गिर पड़े। उन आँसू में कितनी व्यथा छिपी थी, कितनी बेबसी अथवा मायूसी थी, यह तो उस औरत का हृदय ही जान सकता है। मैंने मोटर में बैठते हुए कहा—"हमारे यहाँ तू नौकरी करेगी—बोल क्या लेगी?"

"जो कुछ बाबू जी आप दे दिया करेंगे, उसी को मैं हँसी-ख़ुशी से ले लिया करूँगी। आपसे क्या मोल करूँ? मैं तो तैयार हूँ नौकरी करने के लिए।" उस औरत ने बड़ी दीनता से कहा। मैंने उसको अपनी मोटर में बिठला लिया, और घर पर ले आया। उसे घर का सारा काम समझा दिया। मेरी पत्नी भी उसको देखकर ख़ुश हुई। कुछ दिनों के बाद मेरी बीबी ने मुझे बतलाया कि नौकरानी तो तुम बड़ी अच्छी लाये हो। वह तो रानी-सी मालूम पड़ती है। हर काम को बड़ी सफाई से करती है। ऐसी अच्छी औरत आपको कहाँ मिल गई? मैंने कहा—"इससे आपको क्या मतलब" मेरी पत्नी ने हँसते हुए कहा—"आपको बतलाना ही होगा?"

"अच्छा तो समझ लीजिये कि भगवान् ने आपके लिए भेजी है क्योंकि भगवान् को आपके ऊपर दया आ गई।"—"आपने तो मेरी बात हँसी में ले ली। आपकी मरज़ी बतलाने की नहीं है—तो रहने दीजिए—मेरा क्या आप पर ज़ोर है?" पत्नी ने रूठते हुए कहा।

पत्नी का रूठना मैं कदापि नहीं देख सकता—मैंने उसको मनाया—और उस नौकरानी की जो कुछ मुझे दास्तान मालूम थी—कह दी—उसको सुनकर मेरी बीबी चौंकी—और कहा—"न मालूम वह भिखारिन कौन होगी? आपने क्यों उसे अपने यहाँ स्थान दे दिया? मैंने कहा—"अब क्या हो गया। अब से पहले तो तुम उसकी तारीफ़ के पुल बाँध रही थी, और अब यह जानकर कि वह भिखारिन है, तो उससे घृणा करने लगी। बस यही है तुम्हारी सहानुभूति? क्या ग़रीबों की हमदर्दी करना इंसान का फ़र्ज नहीं? फिर चाहे जो कुछ भी हो, तुम्हारा काम तो वह ठीक करती है, और समय पर—फिर तुम्हें क्यों एतराज़ है?"

"एतराज़ तो कुछ नहीं—लेकिन जी चाहता नहीं कि एक भिखारिन, को जिसका कुछ ठिकाना न हो, उसको फले-फूले घर में रख लिया जावे? ग़रीबों से मुझे हमदर्दी ज़रूर है। किन्तु उनका पता-ठिकाना पूछना भी तो निहायत ज़रूरी है" मेरी पत्नी ने मेरे पास बैठते हुए कहा।

मैंने उनके गले में हाथ डालते हुए कहा—"यह तो तुम ठीक कह रही हो। पता-ठिकाना पूछना तो चाहिए ही। अच्छा कल उससे पूछा जायेगा। बस अब ख़ुश हो।"

"आपकी ख़ुशी में ही मेरी ख़ुशी है" पत्नी ने मुस्कराते हुए कहा।

* * *

दूसरे दिन नौकरानी काम से फारग होकर मेरे कमरे में चाय देने आई। उस वक्त कोई बारह बजे होंगे या बजनेवाले होंगे। पत्नी भी उसी वक्त मेरे कमरे में आ गई—मैंने अच्छा मौका देखकर नौकरानी को कमरे में बिठला लिया। उससे उसका नाम पूछा। उसने अपना नाम "किरन" बतलाया। मैंने फिर उससे कहा—"क्यों जी किरन उस दिन जब तुम मुझे फोर्ट बाज़ार में मिली थीं, तो तुम कहती-कहती अपनी कहानी रुक गई थीं। उस वक्त मैंने पूछना मुनासिब न समझा, क्योंकि तुम बहुत दुखित थीं। यदि तुम्हें अब बतलाने में कोई एतराज़ न हो, तो तुम अपनी जीवन-कहानी हमें बतलाओगी? "बाबू जी मेरी कहानी आपको भी दुःख पहुँचायेगी। आपके हृदय को ऐसी दुनिया में ले जायेगी। जहाँ पर कि नारी की अस्मत ज़र्दबस्ती ली जाती हो। जहाँ पर कि गोरे सैनिक अपनी वासना की लपेट में कितनी ही भोली-भाली कुमारियों की इज्ज़त लूट लिया करते हैं। जाने दीजिये बाबूजी, ऐसी दुनिया का दृश्य आप देखकर थर्रा जावेंगे।" मैंने कहा—"किरन मैं तो सुनूँगा ही—मैं भी कुछ अनुभव करना चाहता हूँ—ऐसी दुनिया का दृश्य देखकर—"

"तो सुनियेगा बाबू जी, लेकिन हाँ आपके काम में तो हर्ज नहीं होगा?"

"काम की तुम परवाह न करो। सब हो जायगा।" मैंने जल्दी से कहा।

मैं रंगून की रहनेवाली हूँ। जाति की ब्राह्मण हूँ (हम दोनों ने सन्तोष की साँस ली, क्योंकि मेरी पत्नी जाति-पाँति को अधिक मानती है) वैसे तो हम रावलपिण्डी के रहनेवाले हैं। अरसा हुआ मेरे ससुर रंगून चले गये थे, लेकिन मेरी शादी रावलपिण्डी में ही हुई। उस वक्त मेरी उम्र सोलह साल की थी। मेरे पति की कपड़े की दुकान थी। विदेशों से विलायती कपड़ा उनके पास बहुत आता था। उनकी दुकान रंगून में बहुत लोकप्रिय थी। फ़र्म का नाम था—"मोहन क्लॉथ मर्चेंट" यह नाम रंगून के बूढ़े-बच्चे सभी जानते थे। क्योंकि इस दूकान पर सभी तरह का कपड़ा मिलता था। हज़ारों की आमदमी महीने की थी—उस वक्त बाबू जी, जमीन पर पैर रखना हम लोग पाप समझते थे। आने-जाने के लिए "कार" से तो कम बात होती ही नहीं थी। घर में पाँच-छः नौकर हर वक्त बने रहते थे। खाना भी बावर्ची ही पकाया करता था। मेरे पति के दो भाई और थे। नहीं मैं भूल गई, अब भी हैं—लेकिन मेरे लिए तो वह मरे हुए के समान हैं। बाबू जी मुझे मेरे पति "बुलबुल" के नाम से पुकारते थे। मैं कुछ गाना भी जानती थी। (मैंने बीच में कहा—तो क्या अब नहीं जानतीं) हाँ बाबू जी, अब तो मुझे "नोन-मिर्च धनिया" ही याद रह गई है। जीवन की सम्पूर्ण रागिनी दुःख के अथाह सागर में डूब गई। हाँ तो बाबू जी मेरी आवाज़ उस वक्त सुरीली थी, ऐसा घरवाले, पास-पड़ोसी कहा करते थे। इसीलिये "वह" मुझे बुलबुल कहते थे। मेरे स्वामी भी काफ़ी सुन्दर थे। हम दोनों का जोड़ा ख़ूब फबता था। हमारे घर में पर्दा नहीं था। मैं स्वच्छन्द "उनके" साथ घूमने जाया करती थी। "वह" नये ख्यालात के व्यक्ति

सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेता श्री जीवन।

थे। उनका कहना था कि—"सौन्दर्य में नहीं ढँका जाता। भगवान् की सु कृति को जो परदे में ढँकते हैं, वह महा करते हैं।"

मैं अपने पति को "प्रेमीजी" कह थी। इसी नाम से मैं उनको बुलाया क थी। वास्तव में वह इस नाम के योग्य थे। हम दोनों में कभी लड़ाई-झगड़ा न होता था। पति-पत्नी में लड़ाई होती है, यह हम दोनों को मालूम ही न था। चाहने पर भी हम एक दूसरे से लड़ झगड़ा कर नहीं सकते थे, क्योंकि हम "झगड़े" का गुरु ही नहीं मालूम था। हम दोनों के बीच में "मुस्कराहट दुनिया" थी। उस वक्त, बाबू जी, ह क्या मालूम था कि हमारी मुस्कराहट दुनिया के नीचे भी एक दुनिया ऐसी है जिसमें नारीत्व को वासना की तेज पर रखकर जिबह किया जाता है, जि ख़ूबसूरत होना ही पाप का सार्टीफ़िकेट प्राप्त करने के समान है। ऐसा कहते-क किरन रो पड़ी, और सिसकती रही। मे पत्नी ने उसके आँसू पोंछे, उसको ढा दिलाया, तब कहीं वह शान्ति हुई। उ फिर कहना प्रारम्भ किया—"प्रेमी बी० ए० पास थे। बी० ए० उन्होंने रं ही से किया था। मैं अँगरेज़ी के नवें क्ला तक पढ़ी हूँ। हिन्दी की मैंने "विशार परीक्षा पास की है। (मैंने बीच में कहा— किरन तुम तो बहुत पढ़ी-लिखी हो औ दफ़्तर में क्लर्क का काम भी कर सक हो) बाबू जी मैं सब कुछ भूल गई गर्दिश के दिनों में। अब तो मैं बेवकूफ़ मुझे लिखने का भी शौक़ था। अधिक कहानियाँ ही मैं लिखा करती थी। उन्हों मेरे लिए इलाहाबाद से एक कहानी मँगवाया था। जब तक वह ज़िन्दा रहे तब तक वह मेरे लिए पत्र बराबर मँगवा रहे। मैंने अपने आबाद से बरबाद

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीय बाबू हरिमोहन राय कौन थे ?

प्रयाग के सुप्रसिद्ध वकील बाबू हरिमोहन राय सन् १८६२ में बंगाल के अन्तर्गत बारासात नामक गाँव में पैदा हुए थे। आपके पिता बाबू अभयचरण गाँव के जमींदार थे। मलेरिया के डर से वे गाँव छोड़कर कमिशेरियट में काम लेकर संयुक्त-प्रान्त में रहने लगे।

श्री हरिमोहन राय जी की प्राथमिक शिक्षा बारासात गाँव में आरम्भ होने पर भी मैट्रिक से क़ानून तक परीक्षायें उन्होंने यहीं से पास की थीं। उस प्रान्त में एक भी विश्वविद्यालय नहीं था। इस प्रदेश के स्कूल कालिज कलकत्ता विश्वविद्यालय के नीचे माने जाते थे। राय महाशय बाल्य-

स्वर्गीय बाबू हरिमोहन राय

काल से ही पढ़ाई में बड़े तेज़ थे और प्रत्येक परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करते थे। सात वर्ष की आयु में ही इन्हें २) माहवार वज़ीफ़ा मिला था। बी० ए० में इन्हें ४०) प्रतिमास वज़ीफ़ा मिला था। बी० ए० में आपने प्रथम स्थान प्राप्त किया था और सारे विश्वविद्यालय भर में संस्कृत में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करके इन्होंने स्वर्गीय ईश्वरचन्द्र विद्यासागर महाशय की प्रशंसा प्राप्त की थी। लखनऊ के कैनिंग कालिज में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करनेवाले छात्रों के नाम में इनका नाम शुरू में ही स्वर्णाक्षर में लिखा हुआ है।

जब आप प्रयाग के गवर्नमेंट कालेज में इंटरमीडियेट के छात्र थे तब मान्यवर पंडित मदनमोहन मालवीय जी के साथ इनका बन्धुत्व हुआ, और शेष समय तक बड़ा अटूट प्रेम और मित्रता रही।

सन् १८८६ में आपने वकालत पास करके जिला कचहरी में प्रैक्टिस शुरू की। कुछ ही दिनों में अपनी बुद्धि और प्रतिभा से आप उस समय के श्रेष्ठ फ़ौजदारी के वकील माने जाने लगे। उस समय योगेन्द्र-नाथ चौधरी, डाक्टर सतीश बनर्जी, सर सुन्दरलाल, पंडित मोतीलाल नेहरू, सर तेजबहादुर सप्रू प्रमुख वकीलों में गिने जाते थे। आपके ज़माने के वकीलों में से सिर्फ़ सरतेजबहादुर सप्रू रह गये हैं।

प्रतिभावान् वकील होने के अलावा श्री हरिमोहन राय उच्चकोटि के समाज-सेवक थे। इस शताब्दी के प्रथम भाग में वे श्री रामानन्द चटर्जी, राय बहादुर श्रीशबसु, मेजर वामनदास बसु, श्रीयुत चिन्तामणि घोष प्रभृति महानुभावों की सहायता से आप बंगाल पार्टिसन विरोधी आन्दोलन में अग्रणी थे। उसी ज़माने में 'बंगाली रि-यूनियन मेला' नाम से जो मेला आप किया करते थे वैसा बंगाल में भी कभी नहीं हुआ। इस मेले में राय महाशय प्रत्येक विषय की प्रदर्शनी किया करते थे। अपने लट्ठबाज़ मुवक्किलों का लाठी चलाने से शुरू करके साहित्यिकों का सम्मेलन तक इस मेले में होता था।

भारतीय बंग-साहित्य-सम्मेलन के संचालकों में आपका नाम शुरू में होना चाहिए। किन्तु आप बराबर पीछे रहकर काम करना पसन्द करते थे। नाम या यश के ललाच से कभी आत्म-विज्ञापन करना पसन्द नहीं करते थे।

प्रयाग का जगत्तारन गर्ल्स हाईस्कूल, एँग्लो बंगाली इंटरमिडियेट कालेज, इंडियन गर्ल्स स्कूल के प्रभृति के मैनेजिंग कमेटी के सभापति पद पर रह आपने वर्षों तक समाज का उपकार किया है। इंडियन गर्ल्स स्कूल के प्रतिष्ठाता रूप से आप समाज के श्रद्धा के पात्र हैं। प्रयाग कालीबाड़ी के मैनेजिंग कमेटी के भी आप सभापति थे। जार्ज-टाउन दुर्गापूजा, प्रभृति धार्मिक अनुष्ठानों का सभापतित्व भी आप ही किया करते थे।

आप सुदीर्घ तीस वर्ष तक डिस्ट्रिक्ट वार एसोसियेशन के सभापति थे १९३८ में एसोसियेशन ने आपकी स्वर्णजयन्ती मनाई थी। ६० वर्ष वकालत पूर्ण होने पर इसी साल आपकी हीरकजयन्ती मनाने का प्रबन्ध हो रहा था।

श्रीयुत् हरिमोहन राय एक कर्मठ और लगन के व्यक्ति थे। उनकी मृत्यु से इस प्रदेश की जो क्षति हुई है दीर्घ दिनों तक वह पूर्ण न होगी। उनके सात पुत्र, दो कन्या और सहधर्मिणी जीवित हैं।

इधर उधर की

रेलवे बोर्ड की गत वर्ष की रिपोर्ट

'रेलवे बोर्ड' द्वारा हाल में निकाली गई वार्षिक रिपोर्ट में बताया गया है कि मूल्य ह्रास तथा ब्याज की रक़म मिलाकर कुल खर्च निकाल कर, भारत-सरकार के अधीन रेलों को १९४४-४५ में ४९·८९ करोड़ रुपये की शुद्ध (नेट्) बचत हुई। इसमें से ३२ करोड़ रुपये की निश्चित रक़म साधारण राजस्व के खाते में दे दी गई और शेष १७.८९ करोड़ की रक़म 'रेलवे रक्षित कोष' में हस्तांतरित कर दी गई।

यातायात से होनेवाली कुल आमदनी ने पिछले सब रिकार्ड तोड़ दिये। १९४३-४४ की १,८५,४३,००,००० की जगह १९४४-४५ में यह रक़म बढ़कर २,१६,-३८,००,०००) रुपये हो गई। काम चलाने का साधारण खर्च भी १९४३-४४ में ९०,१०,००,०००) की जगह आलोच्य वर्ष में १,२३,३४,००,०००) रुपये हो गया।

१९४३-४४ की तुलना में, कुल भारतीय रेलों को यात्रियों से हुई आमदनी ९२८ करोड़ बढ़ गई। अर्थात् ६७,१७,००,०००) से बढ़कर ७६,४५,००,०००) रुपये हो गई। हिसाब लगाने से यह वृद्धि १३.८ प्रतिशत के लगभग बैठती है। इसी प्रकार रेलों से सफर करनेवाले यात्रियों की संख्या में प्रायः १३ करोड़ ७० लाख की अर्थात् १७·३ प्रतिशत वृद्धि हुई और सफरी मीलों की संख्या में ५ अरब ८ करोड़ ५० लाख की अर्थात् १५·६ प्रतिशत की वृद्धि हुई। प्रत्येक यात्री ने औसतन ४१ मील की जगह ४०·५ मील यात्रा की और ऊँचे (पहले, दूसरे तथा ड्योढ़े) दर्जों का यातायात ३३ प्रतिशत बढ़ गया।

१९४३-४४ की तुलना में, माली यातायात से सब भारतीय रेलों की कुल आमदनी में ११ करोड़ २३ लाख की अर्थात् १०·९ प्रतिशत वृद्धि हुई अर्थात् पिछले साल की यह रक़म १,०३,२३,००,०००) से बढ़कर १,१४,४६,००,०००) रुपये हो गई। ५० लाख टन माल इस वर्ष अधिक ढोया गया, अर्थात् माल की ढुलाई में ५·२१ प्रतिशत वृद्धि हुई। प्रत्येक टन माल गत वर्ष के २९४ मीलों की तुलना में इस वर्ष औसतन २७९ मील ढोया गया। फलतः शुद्ध टन-मीलों की संख्या में ३ करोड़ २० लाख अर्थात् ११ प्रतिशत की वृद्धि हुई। अर्थात् १९४३-४४ की यह संख्या २८,-३७,९०,००,०००) के स्थान में २८,४१,-००,००,०००) हो गई।

रेलवे की युद्धोत्तर उन्नति योजनाओं में जिन महत्त्वपूर्ण बातों का समावेश किया गया है, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं :—

युद्धोत्तर सवारी गाड़ियों में श्रेणियों की संख्या में कमी। यह निश्चय किया गया कि युद्धोत्तर काल में केवल तीन श्रेणियाँ रखने की ही योजना बनाई जाय, जो लगभग वर्तमान दूसरी, ड्योढ़ी और तीसरी श्रेणी के समान ही हों तथा इन तीन श्रेणियों के अतिरिक्त महत्त्वपूर्ण मेलगाड़ियों तथा प्रान्त के आर-पार जानेवाली गाड़ियों में शीतोष्ण व्यवस्थावाले डिब्बे भी रखे जायें।

यात्रियों के लिए सुविधायें—यह अनुभव किया गया कि युद्धोत्तरकालीन तीसरी श्रेणी में काफ़ी सुधरा हुआ स्थान प्रबन्ध होना चाहिए।

रेलवे कर्मचारियों के लिए क्वार्टर—यह स्वीकार किया गया कि युद्धोत्तरकाल में रेलवे कर्मचारियों के लिए भारी संख्या में क्वार्टर बनाने पड़ेंगे, विशेषतः ऐसे कर्मचारियों के लिए जिनका वेतन १०० रुपये से कम है।

नई लाइनों का निर्माण तथा युद्धकाल में हटाई गई लाइनों का दुबारा बिछाना।

J & N REMINDERS!

स्मारक पत्र

किस प्रकार का काम ? : भीतरी या बाहरी लोहे या लकड़ी के काम या छतों की सजावट के लिए अथवा उन्हें उत्तम अवस्था में रखने के लिए।

हमारी सिफ़ारिश :—"झिलमिल" (Jhilmil) लकड़ी के काम के लिए, "बैरीको" (Barico) लोहे के काम और "काप्टिक" (Coptic) छतों के लिए। अपने अपने अण्डरकोटों के साथ यह सभी ठेकेदारों के आश्रय योग्य हैं।

JENSON & NICHOLSON
MAKERS OF PAINTS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवविवाहित स्त्रियों के कर्तव्य क्या हैं ?

राग-द्वेष का त्याग और प्रेम-व्यवहार घर के लिए स्वर्ग है

लेखक, श्री रमाकान्त त्रिपाठी, बी० ए०, 'साहित्यरत्न'

स्त्री में ईर्ष्या स्वाभाविक है और जब तक उसका परिहार नहीं होता तब तक वह अपने और अपने साथ रहनेवाले परिवार को सुखी नहीं बना सकती। ईर्ष्या का बीज किसी दूसरे अच्छे गुण को पनपने नहीं देता। जब तक जीवन में उदारता, परोपकार ऐसे भाव रखकर काम नहीं किया जाता तब तक संसार में जीना और सन्तोष प्राप्त करना कठिन ही नहीं असम्भव-सा है।

स्त्री को पति के घर में क़दम रखते ही अपने चारों ओर की परिस्थिति का अच्छी तरह अध्ययन करना चाहिए क्योंकि विवाह के उपरान्त उसकी ज़िम्मेदारी बढ़ जाती है। पिता के घर-गृहस्थी का भार उसकी माता, बहनों और अन्य घर की स्त्रियों पर होता है। वहाँ वह सहायक बनकर कार्य करती है। उसकी देखभाल का भार भी उसके माता-पिता पर ही होता है। लेकिन विवाहोपरान्त वह एक प्रकार से घर की उस नींव के समान हो जाती है जिस पर नये घर का निर्माण होता है। ससुराल में क़दम रखते ही उसकी ज़िम्मेदारियाँ बढ़ जाती हैं। घर के प्रत्येक प्राणी के प्रति उसका एक कर्तव्य होता है जिसका कुशलता से निर्वाह करनेवाली स्त्री ही सबकी प्रिय और सुखी हो सकती है।

माता के बदले ससुराल में उसे सास मिलती है। माता का अपनी सन्तान के प्रति प्रेम तो विदित ही है। सास भी अधिकांश अपनी बहुओं को अपनी बेटी के समान ही प्यार करती है। मैंने तो यहाँ तक देखा है कि वे अपनी बहू को घर का साधारण काम-काज करते देखने पर भी कष्ट का अनुभव करती हैं। उनकी समझ में बहू प्यार की वस्तु होती है और वे उसे सुखी रखना ही अपना कर्त्तव्य समझती हैं। लेकिन जहाँ ऐसी सासें मिलती हैं वहाँ ऐसी भी सासें हैं जो प्राण देने पर भी प्रसन्न नहीं हो सकतीं। किन्तु उनके साथ निर्वाह करना ही है यह समझकर सहनशील और कार्यशील होना चाहिए। सास प्रायः दोषी भी ठहराई जाती है लेकिन उसके साथ जो स्त्री कुशलता से व्यवहार करती है वह उसकी भी प्रिय बनी रहती है। मधुर वचन बोलना तथा सेवापरायण होना सभी बुराइयों पर पर्दा डाल देता है।

सास के सिवा नॅनदें भी नई बहू को परेशान करने में अधिक प्रवीण होती हैं। वह भी अपने को बड़ा समझती हैं। मनुष्य में अहंकार की प्रवृत्ति होती है, जिसके जाते ही वह अपने आप नम्र हो जाती हैं। उनके साथ भी थोड़ा-सा प्रेम-भाव और अपनापन दिखाने से वह सहज ही वश में हो जाती हैं। फिर यदि कभी भूल भी हो जाये तो डर की बात नहीं रहती। वे थोड़े दिन की मेहमान हैं यह समझकर उनका सम्मान आदर और उनकी सेवा करनी चाहिए। सेवा करने का मतलब यह नहीं कि अपने को दासी समझकर काम किया जाये। यदि ऐसा होगा तो फिर कभी सफलता नहीं मिल सकती। शिष्टाचार और सभ्यता-पूर्वक यदि हम किसी को आदर-सम्मान और प्रेम भरे शब्दों से पुकारें तो इसमें अपना ही गौरव बढ़ता है। जिस तरह और मेहमानों के साथ हम व्यवहार करते हैं उसी प्रकार यदि उनके साथ भी करें तो हानि ही क्या है ?

घर में देवरानी और जेठानी भी हैं, जो मेहमान नहीं हैं। वह भी सदैव के लिए उसी घर में आई हैं जिसमें बहू आई है। उनके साथ भी समय और स्थिति को देखकर व्यवहार करना चाहिए। एक बार किसी को पूर्णतया अपना लेने पर फिर झगड़ा अधिक नहीं होता। व्यवहार एक ऐसा गुण है कि जिससे सभी प्रसन्न रहते हैं। इसलिए काम करने से जी कभी नहीं चुराना चाहिए। यदि बहू थक गई है तो क्या हुआ ? यह ध्यान रखना चाहिए कि यदि वह एक बार भी किसी का काम कर देगी तो समय पड़ने पर वह चार बार करने के लिए तैयार रहेगी। यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि दूसरी भी तो है मैं ही क्यों करूँ ? इस भावना के आते ही आपस में मनमुटाव की आशंका होती है। अगर एक दूसरे की सुविधाओं का ख्याल किया जायेगा तो शान्ति से जीवन बीतेगा। ईर्ष्या को स्थान बिलकुल ही नहीं देना चाहिए।

पुरुषों में ससुर का स्थान मुख्य है। उनकी सेवा करना भी बहू का धर्म होना चाहिए। उनके लिए बहू यह न सोचे कि वे जब मुफ़्त का खाते हैं तो काम क्यों न करें ? ध्यान रखना चाहिए कि उन्होंने बहू के पति को जन्म दिया है, पाल-पोस कर बड़ा किया है। पति से बहू को सब कुछ अपने लिए ही आशा न रखनी चाहिए। माता-पिता तथा घर के अन्य सदस्यों के प्रति भी उनका कर्त्तव्य है। पति के लिए माता-पिता का स्थान सर्वथा उच्च है। इसलिए यदि पति उनके लिए कुछ करते हैं तो द्वेष नहीं करना चाहिए। उन्हें अपना कर्तव्य करने देना चाहिए। उनके सुख से अपना सुख समझना चाहिए।

जेठ तथा देवर के साथ भी मर्यादा-पूर्वक अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करना चाहिए। देवर के साथ हँसना-बोलना वहीं तक जहाँ तक उचित हो। जेठ को ससुर के बराबर ही समझना चाहिए।

इसलिए एक नव-विवाहिता वधू के लिए सबसे पहला काम है ईर्ष्या का त्याग। मधुर वचन बोलना, कार्यशील होना, सबके साथ प्रेम, श्रद्धा, आदर और सम्मानपूर्वक शिष्टाचार का निर्वाह ही आपके गृह को सुख से भर सकता है।

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित आगामी चुनाव-आन्दोलन के संबंध में सारे देश का दौरा करनेवाली हैं।

बालकोपयोगी आदर्श प्रकाशन

पौराणिक कथाएँ

बाल भारत (दो भाग)	इसमें महाभारत की कथा सरल और संक्षिप्त भाषा में लिखी गई है। प्रति भाग	।।।)
बाल रामायण	रामायण के सातों कांडों की कथा सरल भाषा में	।।।)
बाल भागवत (दो भाग)	भागवत की संक्षिप्त कथा	प्रति भाग १।।।)

उपदेश

बालोपदेश	प्रत्येक बालक को स्मरण रखने लायक कतिपय उपदेशों का संग्रह	।।)
बाल गीता	गीता के उत्साह-वर्द्धक श्लोकों का हिन्दी साराश	१)
बाल हितोपदेश	हितोपदेश का मनोरंजक और उपदेश-पूर्ण कथाओं का साराश	१)
बाल पंचतन्त्र	उपदेश पूर्ण और मनोरंजक कथाएँ	।।।)
बाल कालिदास	कालिदास की बालकोपयोगी उपदेश-पूर्ण सूक्तियों का संग्रह	।।)

इनमें से अधिकांश पुस्तकें सचित्र हैं

मैनेजर, (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

प्रयाग में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का रेडियो-विरोधी आन्दोलन काफ़ी ज़ोरों पर है। रेडियो-अधिकारी भी भले-बुरे सभी प्रकार से हिन्दी-साहित्यिकों और पत्रकारों को प्रलोभन देकर उनको नैतिक तल से गिराने का प्रयत्न कर रहे हैं। कहीं-कहीं कुछ स्वार्थी लोग उनके पंजे में आ जाते हैं। ज्ञात हुआ है कि दिल्ली में रेडियो-प्रसार में भाग लेने के लिए कुछ हिन्दी के पत्रकार गये थे। इस सम्बन्ध में माननीय पुरुषोत्तमदास टंडन ने १४ फ़रवरी को दिल्ली में यह वक्तव्य दिया है।

यह मालूम हुआ है कि दिल्ली के कुछ गिने हुए हिन्दी-पत्रकारों ने रेडियो-विभाग से सहयोग कर प्रसार के काम में भाग लिया है। सम्मेलन की ओर से इस विषय में रेडियो बहिष्कार रहते हुए भी यह काम मुझे बहुत अनुचित लगता है। मैं ऐसे पत्रकारों से और सब हिन्दी-प्रेमियों से अनुरोध करता हूँ कि जब तक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन स्वयं अपने निश्चय में कोई परिवर्तन न करे तब तक उसके नियन्त्रण के विरुद्ध कोई कार्य न करे।

—संवाददाता

* * *

प्रयाग से माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन ने निम्नलिखित वक्तव्य दिया है :—

कलकत्ते से निकलनेवाले "विशाल भारत" के विशेषांक में दक्षिण-भारत में "हिन्दी-प्रचार" शीर्षक एक लेख मेरे नाम से निकला है। मैं यह स्पष्ट कह देना चाहता हूँ कि यह लेख मेरा लिखा हुआ नहीं है। कई मास हुए कलकत्ते के एक सज्जन ने मुझसे दक्षिण-भारत-सम्बन्धी हिन्दी के प्रारंभिक कार्य के बारे में कुछ पूछ-ताँछ की थी। मैंने लगभग आध घंटे में उनको उसके आरम्भ की कुछ बातें बताई थीं और मैंने उनसे कहा था कि सम्मेलन कार्यालय की फाइलों में उन्हें अधिक जानकारी मिल सकती है। उन्होंने वहाँ से भी कुछ जानने का यत्न किया था। सम्भव है, कुछ जानकारी वहाँ से भी उन्हें मिली हो। मुझसे सुनी हुई और कुछ दूसरे प्रकार से जानी हुई बातों को गूँथकर इस लेख की रचना, जान पड़ती है की गई है। यदि मैं स्वयं इस लेख को लिखता, तो उसकी सूरत दूसरी ही होती।

—संवाददाता

* * *

प्रयाग में आदि हिन्दू रविदास महासभा प्रयाग की ओर से भगवान् रविदास जी की जयन्ती का उत्सव बड़े समारोह के साथ श्री रविदास मंदिर सोवहतियाबाग़ में मनाई गई। लगभग तीन हज़ार स्त्री-पुरुषों की उपस्थिति थी जिसमें अछूत और सवर्ण हिन्दू जनता भी उपस्थित थी। श्री रविदास मंदिर पर ५८५ दीपक और आम्रपत्रों सुसज्जित थे और ५८५ पुटास के पेड़ पत्थर भी किये गये। क्योंकि यह रविदास भगवान् का ५८५वाँ वार्षिकोत्सव था। इसी सम्बन्ध में रविदास मंदिर में एक विशाल सभा बाबू हरीलाल जी जैसवार के सभापतित्व में हुई। सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पास किया गया कि प्रान्तीय सरकार, भारत सरकार तथा ज़िला अधिकारियों बिना किसी रोक-टोक के हर ज़िलों में भगवान् रविदास जयन्ती का जुलूस और मीटिंग तथा उचित कार्य करने का क़ानूनी अधिकार प्रदान करें।

भगवान् रविदास जी की जीवनी पर राय साहब चौधरी श्यामलाल, श्री मसुरियादीन जी, चौधरी हीरालालजी, महावीरप्रसाद, श्री राजाराम सिरकीवाल, श्री बलवन्तराय, बाबू विश्वनाथप्रसाद रविदास संस्थापक रविदास महासभा प्रयाग विद्यार्थी, भैरोंप्रसाद रविदास आदि महानुभावों ने ओजस्वी भाषण दिये।

—राजपति रविदास

* * *

प्रयाग बालपुस्तकालय, बस्की दारागंज की ओर से श्री भरत तिवारी के सभापतित्व में साक्षरता-दिवस बड़े समारोह के साथ मनाया गया। पुस्तकालय भवन को बन्दनवार से सजाकर उस पर साक्षरता-सम्बन्धी सूक्तियाँ मोटे अक्षरों में लिखी गई थीं। इस अवसर पर दारागंज के प्रायः सभी पुस्तकालयों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। मंगलाचरण के अनन्तर एक बालक-द्वारा सामयिक कविता का पाठ हुआ। इसके बाद छात्र-पुस्तकालय के प्रतिनिधि श्री मोहनलाल सक्सेना बी० ए० ने अपने भाषण में पुस्तकालय तथा वाचनालय की उपयोगिता का दिग्दर्शन निरक्षरता को दूर करने का उपाय बताया। तदनन्तर श्री ओंकारनाथ मिश्र ने मातृभाषा के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए उसी के माध्यम द्वारा शिक्षा देने के महत्त्व को समझाया। वाचनालय तथा पुस्तकालय द्वारा साक्षरता का प्रचार किस प्रकार हो सकता है इसकी ओर सुझाव किया। इसके लिए पुस्तकालयों में प्रौढ़-पाठशालाओं की योजना का महत्त्व समझाया। अन्त में सभापति के सारगर्भित भाषण के बाद सभा समाप्त हुई।

—प्रयागराज दुबे

* * *

प्रयाग महिला-विद्यापीठ की परीक्षायें गत १९ फरवरी से प्रारम्भ होनेवाली थीं। दूर-दूर से परीक्षा देनेवाली बालिकाएँ इन्दौर-केन्द्र में उपस्थित हुईं, परन्तु परीक्षा के समय प्रश्न-पत्रों का पता नहीं था; इस सम्बन्ध में विद्यापीठ के अधिकारियों को तार दिये गये। परन्तु कोई परिणाम नहीं हुआ। बालिकाओं को प्रतिदिन निराश होकर अपने-अपने स्थान पर वापस जाना पड़ा। जिस संस्था का नाम सुनकर सैकड़ों बालिकाएँ परीक्षा में बैठती हैं और जो सरकार द्वारा भी मान्य हैं उसकी यह दशा अत्यन्त खेद-जनक ही कही जा सकती है। पता नहीं विद्यापीठ के अधिकारी इतनी लापरवाही क्यों करते हैं? उन्हें इस ओर शीघ्र ध्यान देना चाहिए।

इन्दौर —के० पी० दीक्षित 'कुसुमाकर'

* * *

सिकन्दरपुर (फ़रुख़ाबाद) में गत ९ फरवरी को धूमधाम से शिक्षा-प्रेमी संस्थाओं की ओर से उपयोगी पोस्टरों और चौकियों के साथ गाँवों में प्रभात-फेरी और जुलूस निकाले गये। तथा साक्षरता-दिवस मनाया गया। ११ फरवरी को प्रौढ़ पाठशाला हयात नगर की ओर से गाँव में सुबह प्रभातफेरी निकली। प्रायमरी, मिडिल स्कूल सिकन्दरपुर के लड़कों ने दोपहर को जुलूस निकाला। रात में जन-सेवी व्यक्तियों के सहयोग से एक आम सभा की गई, जिसका सभापतित्व ठा० भगवानसिंह जी ने किया। भाषण देनेवालों में कैलाशबिहारी मिश्र मंत्रिमंडल कांग्रेस कमेटी, श्री रामसनेही लाल सदस्य मंडल कमेटी तथा विद्याशंकर प्रौढ़ अध्यापक ने कांग्रेस मंत्रिमंडल द्वारा चलाई हुई इस निरक्षरता-निवारक-योजना को सफल बनाने के लिए उपस्थित जन-समूह से ज़ोरदार अपील की।

१२ फरवरी को "पुस्तकालय-दिवस" के सिलसिले में सरस्वती-भवन और साहित्य-सदन पुस्तकालय में सभा की गई, जिसमें सभी संस्थाओं ने सहयोग प्रदान किया। १४ फरवरी को एक सम्मिलित सभा मिडिल स्कूल के हेडमास्टर साहब के सभापतित्व में हुई विद्यार्थियों ने शिक्षा-सम्बन्धी अनेकों कवितायें पढ़ीं बोलनेवालों में हेडमास्टर प्रायमरी स्कूल; लाला राजबहादुर सक्सेना मंत्री सरस्वती भवन पुस्तकालय, श्री कैलाशबिहारी मिश्र मंत्री साहित्यसदन पुस्तकालय तथा विद्याशंकर शुक्ल प्रौढ़ अध्यापक हयातनगर के नाम उल्लेखनीय हैं।

—संवाददाता

* * *

वृन्दावन के भारत प्रसिद्ध गोस्वामी श्री विन्दु जी महाराज के कर-कमलों द्वारा अहमदाबाद में तारीख १४ फरवरी को उक्त आश्रम शिलान्यास हो गया। इस आश्रम में निराश्रयों को आश्रम तथा ओषध-पथ्य आदि की व्यवस्था होगी। राष्ट्रीय-दृष्टिकोण से इसका संचालन होगा। इस सम्बन्ध में १४ फरवरी से १९ फरवरी तक विशाल-पण्डाल में प्रतिदिन भाषण उपदेश होते रहे। उक्त महाराज श्री ने अपने भाषण में जनता को यह उपदेश दिया कि उसे श्रीराम तथा श्रीकृष्ण के आदर्श पर चलना चाहिए। श्रीरामकृष्ण का चरित इसे सिद्ध करता है कि उनका धार्मिक आदर्श राजनीतिमय था। श्रीरामचरितमानस धर्म, राजनीति, समाजनीति आदि सभी का समन्वय चाहता है। केवल धार्मिक दृष्टि से विचार करने पर मानस के अङ्ग-भङ्ग का दोष होगा। आपने इस बात पर बहुत जोर दिया कि वर्तमान समय के सर्वश्रेष्ठ महापुरुष महात्मा गांधी के दया-लोकसेवा आदि का सभी सनातन धर्मियों को अनुकरण करना चाहिए।

श्री छबीलेलाल गोस्वामी के भी प्रतिदिन राष्ट्रीय भावनापूर्ण भाषण होते रहे। आपने सनातन धर्मावलम्बियों को कांग्रेस का साथ देने के लिए उत्साहित किया। आपने कहा कि सनातन धर्म के सभी आचार्यों आदि का पहला कर्तव्य है कि वे देश को स्वतंत्र करें।

—संवाददाता

* * *

कालसी (देहरादून) में चिर प्रतीक्षा के बाद अच्छी वर्षा हुई है। किसान बाँसों उछल रहा है। नदियों का पानी मैला हो गया है, खेती को इस वर्षा से लाभ होगा।

देहरादून ज़िले के देहाती क्षेत्र से कांग्रेस उम्मीदवार श्री महावीर त्यागी मुस्लिम निर्वाचन में व्यस्त रहने से ज़िले में नहीं हैं फिर भी आगामी ५ मार्च को जब वोट पड़ेंगे तब उन्हीं को लगभग सब वोट मिलेंगे। राइस्ट उम्मीदवार की ज़मानत भी ज़ब्त होगी ऐसा जनता का विश्वास है। देहरादून की जनता तो यह सोचती है कि श्री एम० एन० राय जब देहरादून में ही रहते हैं तो उनको स्वयं खड़े होकर देखना चाहिए था कि जनता शत-प्रतिशत कांग्रेस के साथ है। जौनसार बावर पिछड़ा हुआ प्रदेश है। अनेक लोभ के बावजूद भी जनता यहाँ की कांग्रेस को ही वोट देगी। एक भी वोट शायद राइस्ट को नहीं मिलेगा। पछवादून में लाला सेवाराम जी, श्री धर्मसिंह जी आदि तथा जौनसार बावर में ठाकुर सेवकसिंह ठा० केदारसिंह और वीर फुनकू ग्राम में प्रचार कर रहे हैं। नागथात में माता कस्तूर बा गांधी महिला औषधालय सदियों में भी चलता रहा है। अशोक आश्रम का मकान भी नागथात में बन गया है।

—संवाददाता

* * *

कलकत्ता में १९ फ़रवरी को सर फ़्रेडरिक वारोज़ ने गवर्नर की हैसियत से प्रान्त का कार्यभार ग्रहण किया। चीफ़ सेक्रेटरी ने शाही फ़र्मान को पढ़ा तथा चीफ़ जस्टिस से राजभक्ति की शपथ दिलाई। इस अवसर पर क़िले से नये गवर्नर को १७ तोपों की सलामी दी गई। सभी गण्यमान्य अधिकारी उपस्थित थे।

देहरादून प्रिंस आफ़ वेल्स सैनिक कालेज में प्रवेश पानेवाले दो बंगाली छात्रों को बंगाल सरकार ने एक-एक हज़ार रुपये वार्षिक की छात्रवृत्ति देना स्वीकार किया है।

—संवाददाता

५ घड़ियाँ सिर्फ़ सात रुपये में

३ डेमी रिस्टवाच २ म्यूट रिस्टवाच

फैन्सी नये सोने के सुन्दर आभूषणों को मशहूर करने के लिए कम्पनी ने ऊपर दिये हुए घड़ियों को अपने ग्राहकों को मुफ़्त बाँटने के लिए तय किया है। ४ जोड़े बैंगल (चूड़ी) डैमण्डकट, २ बम्बई फैशन की अँगूठी, १ जोड़ा टाप, १ ताले की जंजीर और २५ सुन्दर उपहार, ५ घड़ियों के साथ एक बक्स में सिर्फ सात रुपये में। पैकिङ्ग और डाक-खर्च एक रुपया पाँच आना अधिक।

गारण्टी :—अगर पसन्द न हो तो दाम वापस, जल्दी कीजिए, इस तरह के मौक़े कम आते हैं, अपना पता साफ़ साफ़ लिखिए।

फैन्सी न्यू गोल्ड अरनामेन्टस् हाउस, पो० बक्स नं० ९६
अमृतसर (D.D.L.) पंजाब
FANCY NEW GOLD ORNAMENTS HOUSE, P.B.
96, AMRITSAR (D.D.L.) (PUNJAB)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईरान में एँग्लो-रूसी संघर्ष

(पेज ५ का शेष

हैं। ईरान ही एक ऐसा प्रदेश था जहाँ रूस, ब्रिटेन और संयुक्तराष्ट्र अमरीका तीनों मित्रराष्ट्र सम्पर्क में थे। इराक़ के कुछ भाग के साथ रूस को मदद पहुँचाने का यह एक स्थल-मार्ग था। ४० लाख टन सप्लाई मित्रराष्ट्रों ने पुनर्निर्मित पर्वतीय मार्ग और स्व० शाह-द्वारा बनाये ट्रांस-पर्शियन रेल के द्वारा, जो कि पर्शियन खाड़ी से तेहरान तक लगभग सौ सुरंगों में से होकर गुजरती है; रूस को पहुँचाई।

लूडेह पार्टी

उत्तरीय ईरान में रूस ने लूडेह पार्टी का निर्माण किया है। लूडेह का अर्थ है ढेर, समुदाय, समाज का निम्नवर्ग, सर्वहारा। १९४१ में रिजाशाह ने जब सिंहासन का त्याग कर दिया तब राजबन्दी छोड़े गये। इनमें ५० ऐसे राजबन्दी थे जो रिजाशाह के शासन के विरोधी थे। उनमें से कुछ कम्युनिस्ट थे। पर अधिकांश उदार, नरम और लिबरल विचारों के थे। उन सब ने डिक्टेटरी के नीचे कष्ट सहन किये थे। उनको सुधारवादियों और प्रगतिशील विचार के ईरानी लोगों के सहयोग की आशा थी। इनकी सहायता से वे देश की कुछ सेवा करना चाहते थे। उन्होंने लूडेह पार्टी की स्थापना की। पर ईरानी लोगों से उसको प्रत्याशित सहयोग विशेषतः आर्थिक सहायता नहीं मिली। धनीवर्ग पार्टी को मदद देकर अपने गले पर छूरी फेरनेवालों का बल बढ़ाने को तैयार न था। ईरानी किसान सदियों की अर्द्धदासता की अवस्था में रहते और सामन्तशाही के प्रभाव से अभी बाहर न होने से इधर से उदासीन था। कारीगर और शिल्पियों की मामूली सहायता से लूडेह पार्टी कुछ प्रभाव उत्पन्न न कर सकी।

रूस की सहायता

भारतीय कम्युनिस्टों के समान लूडेह पार्टी ने मास्को की ओर आशा भरी नज़रों से देखा। लूडेह पार्टी की आशा पूरी हुई। रूस की आर्थिक सहायता से पार्टी ने जीवन और शक्ति पाई। पर इसके साथ पार्टी का ढाँचा और उसकी प्रकृति बदल गई। रूस के समर्थन से नौकरी पाने की आशा से बहुत से लोग इसमें भर्ती हो गये। इसमें साहसी और वीर काकेशियन, आरमीनियन, तुर्क और अन्य लोग शामिल हो गये। इनमें से कुछ ने रूस में शिक्षा पाई थी और सच्चे कम्युनिस्ट थे। अधिकांश मगर लूडेह पार्टी में जीवन से उत्तम अवसर पाने की आशा में सम्मिलित हो गये क्योंकि वह एक शक्तिशाली पार्टी थी। मगर ईरान का हित कुछ के ही दिल में था। अल्पकाल में ही नये आनेवालों ने पुराने सुधारवादियों को पार्टी से बाहर कर दिया।

रूसी सेना के दखल के प्रदेश में लूडेह पार्टी रूसियों की सहायता से अत्यधिक शक्तिशाली हो गई। उनके विरोधी निकाल दिये गये, बर्खास्त कर दिये गये। और बन्दी बना लिये गये। कुछ डिवीज़नों में लूडेह पार्टी के पास और परवाने के बिना कोई ईरानी सार्वजनिक स्नानगृहों में नहीं जा सकता था और न बस पर सवार हो सकता था। तेब्रिज के दक्षिण में स्थित एक शहर में लूडेह पार्टी ने माँग की कि स्थानीय सरकारी अफ़सर अपने सरकारी कर्मचारियों को लूडेह पार्टी के हाथ में सौंप दें। जब लूडेह पार्टी का एक नेता गिरफ़्तार किया गया, लूडेह पार्टी के सदस्यों का एक दल रूसी सैनिकों के साथ टामी बन्दूक़ों से लैस होकर उसको छुड़ा लिया और गिरफ़्तार करनेवाले पुलिसमैन को बन्दी बना लिया। उत्तरीय ईरान में लूडेह पार्टी के समर्थन के बिना किसी और ईरानी का रहना असम्भव बना दिया गया।

जिलन और माजनडेरन, उत्तरीय ईरान के ये दो प्रान्त ईरान के सर्वाधिक अन्न-धान्य उत्पादकों में हैं। दक्षिण ईरान को यहाँ से ही अन्न जाता है। इनका अन्न दक्षिण जाना रोक दिया गया। इसके बाद रूस ने ईरानी जनता के मन में यह बिठाने की कोशिश की कि उत्तरीय ईरान स्वाधीनता का घर है, समृद्धि का निवास-स्थान है और दक्षिण ईरान गुलामी भूख और ग़रीबी का घर है। प्रश्न यह है, रूस इस आन्दोलन-द्वारा क्या चाहता है? अजरबेजन को वह सोवियत अजरबेजन में मिलाना चाहता है, या ईरान में अव्यवस्था और अराजकता उत्पन्न करके ईरान में अपनी सेना बनाये रखने का कारण चाहता है, जैसे अँगरेज़ आज ग्रीस में अपनी फ़ौजें रखे हुए हैं। या वह ईरान खाली करने के बाद ईरान को अपने प्रभाव-क्षेत्र में बनाये रखना चाहता है?

उत्तरीय ईरान को छोड़कर, वे शेष ईरान में, तेहरान के अतिरिक्त लूडेह पार्टी का प्रभाव नाममात्र को है। इसफाहन के औद्योगिक केन्द्र में भी, जहाँ मज़दूरों का बुरी तरह शोषण हो रहा है, लूडेह पार्टी का ज़ोर नहीं है। अहवाज, शिराज, यज़्द, कर्मनशाह आदि स्थानों में भी लूडेह पार्टी का कुछ प्रभाव नहीं है। अजरबेजन में भी लूडेह पार्टी ने जो गवर्नमेंट बनाई है, वह डेमोक्रेटिक—लोकशाही पार्टी के नाम से बनाई है। रूस इसको स्वाधीनता का आन्दोलन घोषित करता है। अजरबेजन औद्योगिक और ऐतिहासिक दृष्टि से ईरान का भाग है। आबादी और आनुवंशिक दृष्टि से नहीं है। यह मानने पर भी प्रश्न उठता है कि बाल्टिक देशों में सैकड़ों वर्षों से बसे जर्मनों को रूस ने जर्मनी भेज दिया, चेकोस्लोवाकिया सुडेटन प्रान्त से जर्मनों को बाहर निकाल रहा है, तब रूस ने भी ईरानी अजरबेजन से कुछ लाख अजरबेजन लोगों को सोवियत अजरबेजन वापस भेजने के बजाय, तेहरान गवर्नमेंट से नाममात्र को सम्बन्धित अजरबेजन गवर्नमेंट क्यों स्थापित की?

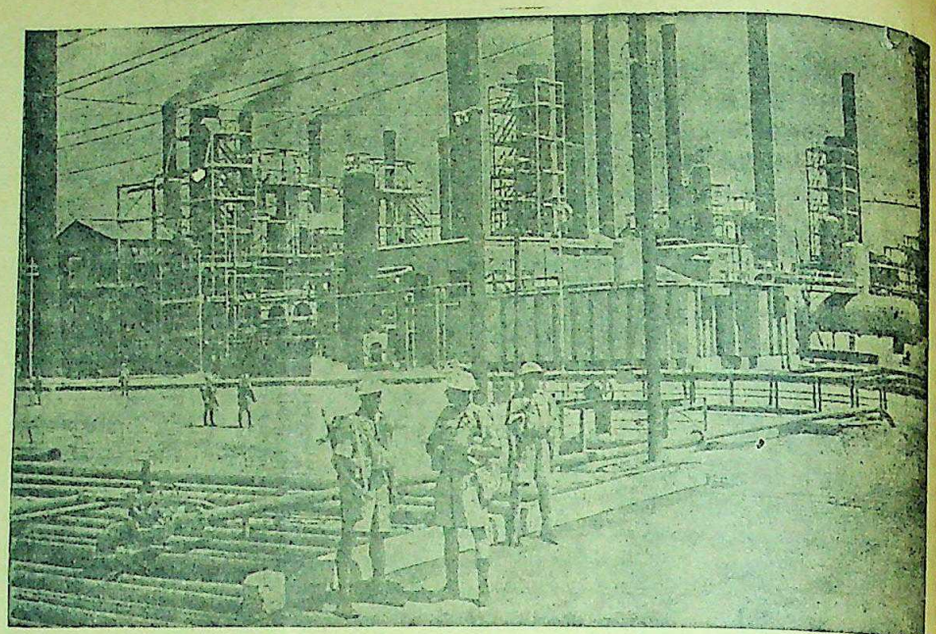

संसार के मिट्टी के तेल का बड़ा कारखाना जो अबादान द्वीप में ईरान की खाड़ी में है।

प्रेरक कारण

ईरान अभी सामन्तशाही युग में रह रहा है। जनतन्त्र और जनता की स्वाधीनता का वहाँ नाम नहीं है। यह होते हुए भी रूस जनतन्त्र की स्थापना के विशुद्ध हेतु से अजरबेजन को स्वाधीन नहीं बना रहा है। युद्धकाल में बन्दर शाहपुर और बन्दरशाह पर अपना अधिकार अकारण ही स्थापित नहीं किया। ६,२८,००० वर्गमील विस्तार के देश पर तीन का शासन इस समय है। वस्तुतः शासन दो का है, एक उन दोनों का नौकर है।

दक्षिण ईरान की सम्पत्ति एकमात्र तेल है। उत्तरीय ईरान की सम्पत्ति गेहूँ है। उत्तरीय ईरान दक्षिणी भाग को गेहूँ, दरी, मेवा आदि बेचता है। रूस ने गेहूँ दक्षिण को भेजना बन्द कर दिया और अँगरेज़ों ने तेल उत्तर ईरान जाना बन्द कर दिया। ईरानी अर्थतन्त्र अव्यवस्थित हो गया और भयंकर अकाल की सम्भावना उत्पन्न हो गई। इस संकट को दूर करने के लिए भारत से गेहूँ ईरान भेजा गया। युद्धकाल में रूस को पश्चिमी मित्रराष्ट्रों की सहानुभूति की आवश्यकता थी। इसलिए उसने स्वाधीनता के आन्दोलन को बढ़ने नहीं दिया। पर लड़ाई समाप्त होने ही स्वायत्त शासन को उसने उकसाया। रूस को वस्तुतः स्वाधीनता और मैत्री की चाह नहीं है। वह उत्तरीय ईरान का तेल चाहता है। १९४३ से ईरानी तेल के वास्ते ईरान पर दबाव डाल रहा है और ईरान देने से इन्कार कर रहा है। झगड़े का वास्तविक और मूल कारण यही है। यही कारण है कि रूस ने अपने पक्ष में प्रदर्शनकारियों को प्रदर्शन करने के लिए प्रतिदिन ३ शि० और रात का भोजन दिया है। जो लोग उनसे नारे लगवाते थे वे १५ शि० प्रतिदिन पाते थे। पिछले दो वर्षों में अजरबेजन से चुन-चुनकर देशभक्त ईरानियों को बाहर निकाल दिया गया। ईरानी सेना के सेनापति ने भी वहाँ रहकर अपने जीवन के लिए ख़तरनाक समझा और वह अजरबेजन छोड़ गया। लूडेह पार्टी का कहना न माननेवालों का घर जला दिया जाता था। रूस ने इन प्रयत्नों से अजरबेजन में जो डेमोक्रेटिक पार्टी की गवर्नमेंट स्थापित की है, वह निरुद्देश्य और अकारण नहीं है।

ब्रिटेन बनाम रूस

रूस जिस प्रकार अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए जनता की स्वतन्त्रता का पक्षपाती हो गया है, उसी प्रकार ब्रिटेन भी स्वाधीनता और जनतन्त्र का पक्षपाती हो गया है। ब्रिटेन जानता है कि यदि लूडेह पार्टी का आन्दोलन सफल हुआ और ईरान पर उसका प्रभाव स्थापित हो गया तो उसको ईरान, ईराक और कूबील के तेल से हाथ धोना पड़ेगा। यह अपूर्व तेल-सम्पत्ति अनुमानतः २७,००,००,००० पीपे हैं। यह अपने आय में एक विशाल भण्डार है। तेल की घुड़दौड़ में रूस उत्पादन और स्रोतों की दृष्टि से ब्रिटेन से कहीं आगे बढ़ा-चढ़ा है। अतः ब्रिटेन इन स्रोतों को छोड़ नहीं सकता और रूस के हाथ में जाने नहीं दे सकता। ब्रिटेन के सामने अपने जीवन को बनाये रखने के लिए एक और भारी समस्या उपस्थित है। 'निर्यात करो या नष्ट हो जाओ' यह उसका नारा है। इसको पूरा करने के लिए ब्रिटिश सेना को उसके समान रखना आवश्यक है।

सामरिक कारण

ब्रिटेन अपने साम्राज्य के केन्द्र में पहुँचने का मार्ग सुरक्षित रखना चाहता है। स्लाव भी अपनी स्थिति दृढ़ करना चाहते हैं। ईरान कैस्पियन सागर और ईराक की खाड़ी के बीच में स्थित है। यह वैसी ही स्थिति है जैसी कि डार्डेनल पर रूस की और भूमध्यसागर और लालसागर के बीच मिस्र की है। यह पूर्व और पश्चिम जाने के राजपथ पर भी है। ईरान पर यदि ब्रिटेन का प्रभाव रहे, तो ब्रिटेन ईराक की खाड़ी पर अपने हितों की रक्षा कर सकता है। भारत और ईराक के बीच जल-थल और हवाई मार्गों का नियन्त्रण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सकता है और यदि जरूरत हो तो वह अरब संसार का नियन्त्रण करने के साथ उसको अपने लिए हानिकर क्रान्तिकारी विचारों से दूर रख सकता है।

रूस भी चाहता है कि काकेशिया का पूर्वीय पिछला दरवाजा उसके मित्र चौकी-दार के हाथ में रहे। रूस ईरान का तेल जहाँ चाहता है, वहाँ वह ईरान की खाड़ी पर एक बन्दरगाह, अबादान के मुक़ाबले कर्मनशाह तथा बन्दरशाहपुर और वहाँ तक पहुँचने का ईरान के बीचोबीच स्थलमार्ग चाहता है। युद्ध-काल में इस मार्ग की उपयोगिता की भली प्रकार परीक्षा हो चुकी है। उत्तरीय ईरान में यदि रूस प्रभावशाली हुआ तो तुर्की इराक़ के लिए ख़तरा उत्पन्न हो जायगा—फारस की खाड़ी तो उसके प्रभाव में ही आ जायगी। यदि दोनों राष्ट्रों में बीच लड़ाई छिड़ी तो रूसी बमवर्षक इराकी (मांसल) और ईरानी तेल-क्षेत्रों को, जो कि ब्रिटेन का मुख्य तेल-स्रोत है, नष्ट कर सकते हैं और तुर्की, जिसके तीन ओर इस समय रूस छाया हुआ है और डार्डेनल का पहरेदार है, और डार्डेनल की राह पूर्वीय भूमध्यसागर की रखवाली करता है, पहले हमले में हथियार डाल देगा।

रूस पर्शियन खाड़ी तक पहुँचना चाहता है, या ईरान को अपना माण्डलिक राष्ट्र बनाना चाहता है या उत्तर में सुरक्षा प्रदेश स्थापित करना चाहता है। मतलब एक ही है कि १७वीं सदी से चली आ रही ऐंग्लो-सोवियट प्रतियोगिता पुनः आरम्भ हो गई है। अजरबेजन में अजरबेजन लोगों की आबादी १५ से १८ प्रतिशत से अधिक नहीं है, पर उनका संगठन, आर्थिक स्थिति और काम करने का ढंग ऐसा है, जिसने उनकी संख्या की कमी को पूरा कर दिया है। रूसी भूगर्भ-शास्त्रियों ने एक विचित्र सिद्धान्त ढूंढ़ निकाला है कि अजरबेजन का तेल ही काकेशिया की नाड़ियों में ऊँची सतह से नीची सतह में बह रहा है। अजरबेजन इसके अतिरिक्त मध्यपूर्व में महत्वपूर्ण सामरिक स्थिति रखता है। यातायात के जाल में यह केन्द्रीय विन्दु है और चार देशों की सीमा पर है। अजरबेजन जब चाहे तेहरान को भूखा मार सकता है। रूस ईरान में ऐसी गवर्नमेंट चाहता है, जो उसकी माँगों का विरोध न करे और वह जो रियायतें स्वेज नहर तक पहुँचने के लिए ईरान से चाहता है, वह प्रसन्नतापूर्वक दे दे। इसलिए ईरान में पिछले दो साल से रूस के आन्दोलनों के कारण मन्त्रिमण्डल बदल रहे हैं।

साम्राज्यवादी और समाजवाद

रूसी जनतन्त्र एक पार्टी का शासन है। रूसी जनतन्त्र ब्रिटिश और अमरीकी जनतन्त्र से भिन्न है। अजरबेजन में भी स्थापित जनतन्त्र रूसी टाइप और माडल का जनतन्त्र है। रूस कम्युनिस्ट देश है और लेनिन के मत से पूंजीवाद का चरमोत्कर्ष साम्राज्यवाद है और साम्राज्यवाद का मूल वर्गमय ढाँचे के पूंजीवादी देशों में है। रूस इसलिए श्रेणी या वर्गहीन राष्ट्र है। पर व्यवहार में क्या है? ईरान रूस की सीमा पर का देश है। अतः रूस का सीमा-वर्ती देशों से क्या व्यवहार है, यह देखना उचित होगा।

१९२० में स्टालिन ने कहा था कि रूस में अविचलित कोई सीमावर्त्ती देश सोवियट-संघ से अलग होना चाहेगा, तो रूस इसको मानने के लिए और उसको अलग करने के लिए बाध्य होगा। मगर यहाँ राष्ट्रों के अखण्डनीय अधिकार का प्रश्न नहीं है, बल्कि केन्द्र और सीमावर्त्ती देशों की जनता के हित का प्रश्न है। रूस के सीमावर्त्ती देश कच्चे माल, ईंधन और अन्न-सामग्री से पूर्ण हैं और ये चीजें केन्द्रीय रूस को चाहिए। दूसरी ओर केन्द्रीय रूस इनको—सीमावर्त्ती देशों को साम्राज्यवाद के पंजे से बचा सकता है। इसलिए किसी सीमावर्त्ती देश का केन्द्रीय संघ से अलग होना, दोनों पक्षों में से किसी के हित में नहीं है।

इस बात को और अधिक स्पष्ट करते हुए मार्शल स्टालिन ने एक और अवसर पर कहा था—

हम भारत, अरेबिया, मिस्र, मोरक्को और अन्य उपनिवेशों के अलग होने के पक्ष में हैं, क्योंकि साम्राज्यवाद से उनके अलग होने का अर्थ है कि दलित राष्ट्र साम्राज्यवाद से मुक्ति पा गये, और इस प्रकार साम्राज्यवाद कमज़ोर हो जाता है और क्रान्ति का बल बढ़ता है। मगर हम रूस के सीमावर्त्ती देशों के अलग होने के विरुद्ध हैं, क्योंकि वे साम्राज्यवाद के दास हो जावेंगे और रूस की क्रान्तिकारी शक्ति को कम कर देंगे और साम्राज्यवाद को मज़बूत बनावेंगे।

रूस आज इसी सिद्धान्त को ईरान के साथ लागू कर रहा है। ईरान के पास तेल है, और तेल आज महान् शक्ति है। रूस और ब्रिटेन दोनों तेल चाहते हैं, यह एक अखण्डनीय सत्य है। यदि रूस ईरान को छोड़ दे तो वह ब्रिटेन के हाथ में १९१९ के समान पड़ जायगा। १९१९ की सन्धि के अनुसार ब्रिटेन ने ईरान को सलाहकार, ईरानी सेना को ब्रिटिश अफ़सर, गोला-बारूद, ईरानी रेल को ब्रिटिश पूँजी, ब्रिटिश विशेषज्ञ और २०,००,००० पौंड क़र्ज़ देना स्वीकार किया था। यद्यपि सन्धि की भूमिका में ईरान की स्वाधीनता और अखण्ड सत्ता स्वीकार की गई थी, पर मिस्टर यून के शब्दों में उसको गम्भीरता से नहीं लेना चाहिए। ब्रिटेन की सोशलिस्ट गवर्नमेंट भी साम्राज्यवादी है। फलतः आज ईरान एँग्लो-सोवियट संघर्ष का क्षेत्र बना हुआ है। रूस का दक्षिण की ओर बढ़ना ब्रिटेन के पूर्वीय साम्राज्य के लिए ख़तरा है। रूस ईरान को ब्रिटिश साम्राज्यवाद से बचाना चाहता है और ब्रिटेन ईरान की सोवियट के कम्युनिज़्म से रक्षा करना चाहता है। पर वस्तुतः दोनों अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं। इसलिए इस परिस्थिति में प्रश्न उत्पन्न होता है क्या मित्र सेनायें मार्च में ईरान को ख़ाली कर देंगी?

भारत और इरान

रूस को ईरान से कोई ख़तरा नहीं है। न स्वाधीन भारत की सेना ईरान की सीमा को लाँघ करके रूस को ख़तरे में डाल देगी। पर यह भी सत्य है कि डेढ़ करोड़ की आबादी का देश ईरान अपनी स्वाधीनता की रक्षा नहीं कर सकता। सांस्कृतिक दृष्टि से ईरान और भारत का घनिष्ट सम्बन्ध है। पर भारत आज पराधीन होने से ईरान को सोवियट और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शिकंजे से नहीं बचा सकता। इस अवस्था में यदि एँग्लो-सोवियट पैक्ट, १९४२ में रूस ने ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत मामले में हस्तक्षेप न करने का वचन दिया हो तो क्या आश्चर्य? भारतीय स्वाधीनता दोनों साम्राज्यों के लिए ख़तरनाक है। इस अवस्था में सोवियत रूस से भारत का आशा करना क्या ठीक है?

गीत

लेखक, श्री श्रीपालसिंह 'क्षेम'

कौन तुम एका-परी-सी।
ढालती आती तिमिर में तुम रजत का प्राण उज्ज्वल,
चूमकर आलोक चरणों का दिशाएँ आज झलमल,
ज्योति के किस देश की तुम कौन ज्योत्स्ना-किन्नरी-सी।
बुन रही हो शून्य में तुम रश्मियों का जाल उर्मिल,
हँस रहे शत-शत कुमुद में सृष्टि के परमाणु खिल-खिल,
रूप-लतिके, चैत की तुम चाँदनी सुषमा-भरी-सी।
हास की आभा अधर से झर रही शत-शत किरण बन,
प्राण तन-मन नयन में उतरीं लिए फिजल्क के घन,
रूप के नन्दन-विपिन-मंदार की मृदु मंजरी-सी।
राग की लहरें लहराती भाव के छू कूल पावन,
चल पड़ी तुम किस सुधाचल से लिए सौन्दर्य-प्लावन,
प्राण-धारा में मिली तुम कौन मधु की निर्झरी-सी।
सुप्त पद-तल में उषा, सीमन्त में संध्या समाई,
नील-नव परिधान पर शत-तारिकाएँ हैं सजाई,
चेतना-जग पर खिलीं तुम कौन छवि की शर्वरी-सी।
बाँधकर आकाश-भू रिमझिम बरसता गीत-सावन,
डूबते जाते विसुधि में आज मेरे प्राण-तन-मन,
स्वप्न-लहरों पर बही तुम कौन मादकता-तरी-सी।

सम्पादकीय

(पेज ४ का शेष)

हो जायेगा साथ ही ऐसी रेलवे लाइनें जो बन्द कर दी गई थीं, वे पुनः चालू की जायेंगी। हमें स्मरण है कि सर एडवर्ड बेंथल ने गत वर्ष के बजट में भी किराया बढ़ाने की बात कही थी किन्तु भारी विरोध के कारण वह कार्यरूप में परिणत नहीं किया जा सका। इस वर्ष भी यातायात सदस्य ने किराया बढ़ाने की बात कही अवश्य है किन्तु रेलवे-सुधार तथा घाटे की पूर्ति के अनुमान के आधार पर। किन्तु भारत ऐसे देश में जहाँ की जनता ग़रीब हो, किराया बढ़ाना सरासर अन्याय है। किराया बढ़ाकर ही घाटे की पूर्ति नहीं की जा सकती? क्यों नहीं यातायात में वृद्धि की जाती? युद्ध समाप्त हो जाने पर जनता को यातायात की सुविधा देकर आमदनी में काफ़ी वृद्धि की जा सकती है। सर एडवर्ड बेंथल ने इस वर्ष के बजट में एक विशेष बात कही है। सरकार विदेशों से रेल के डिब्बों को मँगाने का आर्डर दे चुकी है। कनाडा से ८,००० और ब्रिटेन से १०,००० डिब्बों के मँगाने के जो आर्डर दिये जा चुके हैं, सम्भवतः नये वर्ष में, कनाडा से ६,००० और ब्रिटेन से ३,८०० डिब्बे यहाँ आ जायेंगे। इससे स्पष्ट है कि सरकार भारतीय पूंजी को विदेशी कम्पनियों की साँठ-गाँठ में ख़र्च करने के लिए प्रस्तुत है। हम पूछते हैं कि भारत में इंजिन बनाने के जो कारख़ाने खुले हुए हैं, यदि वहाँ से आवश्यकतानुसार पूर्ति नहीं होती है तो उसकी उन्नति में वृद्धि क्यों नहीं की जाती? अब तो युद्ध समाप्त हो चुका है, पुनर्निर्माण की योजना कार्यान्वित होनेवाली है, फिर सरकार भारतीय रेलवे की उन्नति के लिए भारत में ही रेलवे-कारख़ाने खोलकर भारतीय पूंजी का उपयोग क्यों नहीं करती? वह क्यों विदेशी व्यापारियों को राष्ट्र की सम्पत्ति समर्पित करना चाहती है?

तात्पर्य यह है कि नये वर्ष का रेलवे बजट भारतीय दृष्टि से आशाजनक नहीं है और न हम आगामी वर्ष में किसी विशेष प्रकार के सुधार की आशा ही रखते हैं। सरकार सदा अवसर पर भविष्य के सब्ज़-बाग़ दिखाती आई है, और रेलवे विभाग तो सदा ही इसका अपवाद बनता आया है, किन्तु आज तक रेलवे में क्या सुधार हुआ है, यह स्पष्ट ही है। तीसरे दर्जे के यात्रियों की सुविधा के लिए प्रतिवर्ष केन्द्रीय असेम्बली में बजट के अवसर पर सरकार आश्वासन देती आई है किन्तु आज तक कुछ देखने में नहीं आया। इसलिए सन् १९४६-४७ के रेलवे-बजट को हम भारतीय दृष्टिकोण से उत्तरदायित्वपूर्ण बजट नहीं कह सकते।

छुटकारा

एक संयुक्त हिन्दू-परिवार का मर्मस्पर्शी चित्रण इसमें अंकित किया गया है। सम्पत्ति के लिए भाई-भाई में होनेवाली सिरफुटौवल, एक भाई का अपने दूसरे भाई को सम्पत्ति-सम्बन्धी अधिकारों से वंचित करने का षड्यन्त्र रचना, आदि बातें इस उपन्यास में मनोरंजक ढंग से लिखी गई हैं। मल्य १।-)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

जय हिन्द

इस पुस्तक में आजाद हिन्द फौज़ की पूरी कहानी और सुभाष बाबू के जोशीले भाषण छापे गये हैं। मूल्य एक रुपया।

पता—रंगभूमि मासिक, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'जीवन'—सुप्रसिद्ध फ़िल्म कलाकार और अभिनेता

(पेज १२ का शेष)

के दिनों की एक कहानी भी लिखी है, जिसका शीर्षक है—"अमर बलिदान" लेकिन इसको अभी मैंने प्रकाशित नहीं कराया। उसी "अमर बलिदान" के पृष्ठों को मैं आपके सामने पलट रही हूँ। यह कहानी मेरे हृदय-पटल पर ज्यों की त्यों अंकित है।

* * *

प्रेमी जी के विचार देशभक्ती की ओर झुके हुए थे। वह रंगून में रहते ज़रूर थे, लेकिन उनका मन हिन्दुस्तान की आज़ादी में अँटका हुआ था। वह हिन्दुस्तान की गुलामी, हिन्दुस्तानियों की कमज़ोरी का कारण समझते थे। विद्यार्थी-जीवन में तो वह अँगरेज़ियत के कायल थे। इंगलैंड के गीत गाया करते थे। लेकिन जब युवकों के सम्राट् श्री सुभाषचन्द्र बोस का लेक्चर उन्होंने सुना, तो उनको अपने ऊपर घृणा होने लगी। अपने को वह घृणा की निगाह से देखने लगे। उन्हें सुभाष के वह शब्द चुभ गये—"गुलामी की ज़िन्दगी से तो मौत अच्छी। गुलाम चाहे कहीं जाये, आख़िर वह गुलाम ही रहेगा। आज़ाद देशवाले उसे हिकारत की निगाह से देखेंगे, जिसने अपनी जन्मभूमि के लिए कुछ नहीं किया, वह मनुष्य नहीं, बल्कि जानवर से भी बदतर है।" प्रेमी जी नेता-जी (सुभाषचन्द्र बोस) को बड़े आदर व श्रद्धा से देखते थे। उन्होंने उनकी तस्वीर अपने कमरे में लगा ली। कमरे के सब विलासप्रिय चित्र फेंक दिये। उनके स्थान पर राष्ट्रीय नेताओं की तस्वीरें लग गईं। विलायती सूटों के बदले खद्दर का कुरता और धोती पहनने लगे? उन्होंने अपनी दुकान का विलायती माल नेता जी की आज्ञानुसार जला डाला। सब लोग दंग रह गये। उसमें उन्हें क़रीब पचास हज़ार का टोटा हुआ। किन्तु इसकी उन्होंने परवाह नहीं की। उनके इस रंग को देखकर घरवाले भी चकित थे। घरवाले उनसे प्रसन्न नहीं थे। हाँ, मैं तो उनके प्रत्येक कार्य में सहयोग दिया करती थी। वह भी मुझसे राय ले लिया करते थे। यह घटना उस वक्त की है जब कि रंगून की हालत डाँवाडोल थी। रंगून पर सैनिक-शासन था। अँगरेज़ भाग रहे थे। गोरे सैनिकों का ही शहर पर प्रभुत्व था। दूकान हमारी लड़ाई की वजह से पट्ट हो गई थी। हमारे घर पर तिरंगा झण्डा लगा हुआ था। तिरंगे झंडे से ये सैनिक बड़े शंकित होते हैं। घृणा की दृष्टि से देखते हैं। एक दिन "प्रेमी जी" ने एक सभा में एक भाषण दिया।

भाषण का प्रभाव जनता पर काफ़ी पड़ा। रंगून में "कांग्रेस कमेटी" स्थापित की गई, जो कि नष्ट हो गई थी। प्रभात-फेरियाँ निकलने लगीं। रंगून की गलियों में हिन्दुस्तान के आज़ादी के गीत गाये जाने लगे। मेरे ऊपर स्त्रियों का भार डाला गया। मैंने घर-घर में घुसकर हिन्दुस्तान की आज़ादी की रूह फूँक दी। हम दोनों शासकों की आँखों में खटकने लगे। हमारी वजह से अब सुन्दर औरतें मिलने में रुकावट होने लगी। वह हम लोगों से चिढ़ गये। उन्होंने सोचा कि जब तक "कांग्रेस कमेटी" को नष्ट नहीं किया जाता, तब तक हमारी दाल गलने की नहीं। इसलिए एक दिन एक गोरे अफ़सर ने प्रेमी जी को बुलाया और उनसे कहा—"देखो जी हम तुम को एक लाख रुपया देगा, और जो तुम चाहोगे वह देगा—लेकिन तुमको एक काम हमारा करना होगा। वह यह कि नगर की ख़ूबसूरत स्त्रियों को हमारे पास भेजो। हम उनसे सिर्फ़ खेलेगा—खेल करके उनको छोड़ देगा, बोलो तुमको स्वीकार है।" प्रेमी जी ने कहा—"ऐसा कदापि नहीं हो सकता। मैं दौलत को मिट्टी के बराबर समझता हूँ। धन के बजाय मैं औरतों की इज्ज़त आपके हाथों नहीं गवाऊँगा। हम गुलाम हैं, इसका मतलब यह नहीं कि हम इज्ज़तदार नहीं हैं।"

"तो आप यह काम नहीं कर सकते" अफ़सर ने झल्लाकर कहा। "हर्गिज़ नहीं" प्रेमी जी ने गुस्से में कहा। "एक बार फिर सोच लीजिए।" अफ़सर ने आशा बटोर कर कहा। "सोच लिया, ऐसी निकम्मी बात पर क्या सोचना और सोचना ही पाप है।" प्रेमी जी ने तैश में आकर कहा।

"अच्छा देखा जायेगा" अफ़सर ने अपनी नाराज़ी प्रगट करते हुए कहा।

इस घटना के तीन-चार दिनों के बाद—एक सेठ की लड़की थी, जिसकी उम्र अठारह साल की थी, एफ० ए० में पढ़ती थी। "कांग्रेस कमेटी" में आ गई थी। बड़ी ख़ूबसूरत थी। माता-पिता भाग गये थे, न मालूम कहाँ? वही अकेली रह गई थी। उसी को लेने के लिए एक दिन सिपाही संगीनों को लिए हुए घर पर आ धमके। सुबह नौ बजे होंगे। जापानी शहर से केवल दस मील की दूरी पर थे। और गोरे सैनिकों को उस वक्त आरामतलबी सूझ रही थी। हाँ, तो सौभाग्य से हम दोनों उस लड़की के घर पर थे। क्योंकि २६ जनवरी का दिन था—"स्वाधीनता-दिवस" हम लोग मना रहे थे। कि इसी बीच में उस लड़की को लेने के लिए उन सैनिकों ने ऊधम मचाया। प्रेमी जी के हाथ में तिरंगा झंडा था। उससे वह सिपाही और चिढ़ गये। और कहने लगे—"तुम हिन्दुस्तानी हमारा गुलाम है। काला आदमी, हमारी बराबरी करता है।" प्रेमी जी उन सैनिकों के ये शब्द कड़वी दवाई की तरह पी गये—क्योंकि वह झगड़ा बढ़ाना नहीं चाहते थे। किन्तु आगे क्या हुआ इस पर वह रोने लगी।

मैं उठी—शहर की तरफ़ चली। आँखों में आँसू लिये हुए। पति मर ही चुके थे—उसी वक्त घर पहुँची, तो उन्होंने मुझे अन्दर जाने से रोक दिया, और कहा—तेरा सतीत्व नष्ट हो गया। तू इस पवित्र घर के रहने योग्य भी नहीं रही।" मैंने रोते-रोते कहा—"उन्होंने मेरे शरीर को बिगाड़ा है, न कि मेरे मन को। मन तो मेरा पवित्र है। क्या शरीर को बेचकर आत्मा की रक्षा करना पाप है? उसमें मेरा क्या क़सूर!" मेरी एक बात भी नहीं सुनी गई और न मुझे कुछ दिया गया। मेरे पति की सारी पूँजी जो कि लगभग एक लाख के होगी, उनके भाइयों ने हड़प कर ली। मैं खाली हाथों टूटे नसीब के दीपक की धुँधली रोशनी में इधर-उधर भटकने लगी। मैंने देखा कि रंगून खाली करके सब भागे जा रहे हैं—कोई किसी की सुनता ही नहीं था। शहर में आग लग रही थी। धुयें के बादल उठ रहे थे। चारों तरफ़ कोलाहल मच रहा था। बमों की आवाज़ से कान के परदे फटे जा रहे थे। सब लोग भागे जा रहे थे जंगल की ओर। हिन्दुस्तान की ओर लोग चल पड़े। भारत की ओर चल पड़ी। क्योंकि मेरे पास पैसा नहीं था। में दस-बारह व्यक्ति और हो गये थे, वह सबके सब मर गये। भूख की में तड़पती तीन महीने के बाद मैं आ पहुँची—लेकिन वहाँ भी मेरा नहीं लगा। मैं हिन्दुस्तान के घूमती हुई, बम्बई आ पहुँची। मदद नहीं की। दौलतमन्दों के पास गई। उन्होंने भी मेरी नहीं सुनी। कहा—"तुम मेरे पास रहा करो—मैं पाँच सौ रुपये माहवार दिया एक साठ साल का बुड्ढा भी मुझे दो सौ रुपये देने लगा। मैंने सोचा कि सामने हाथ पसारना ही अपनी बेचना है। मैंने संकल्प किया कि माँगना ठीक है। अपेक्षा इसके कि लिए आबरू बेची जाये।"

मैंने भीख माँगना प्रारम्भ लेकिन शहर के गुंडे मुझे देखकर कसने लगे। मैं हैरान हो गई। अपनी पर रोने लगी। जीवन का सब कुछ कर दिया, हिन्दुस्तान की आज़ादी मानवता की अमर साधना पर, फिर भी हमारा यह "अमर हिन्दुस्तानियों के दिलों में घर न कर उनकी सोती हुई वृत्तियों को जगा न उस दिन बाबू जी यदि आपसे भेंट न जाती तो मैं समुद्र में गिरकर अपना भी समाप्त कर लेती। क्योंकि आज भारत के वायुमंडल में सुन्दर स्त्री का के साथ ज़िन्दा रहना मुश्किल है, कि जवाहर जैसे सिंह मौजूद हों, गांधी जैसी पवित्र विभूति हो, और "नेता जी" की जन्मभूमि हो। उसी देश सन्तान का यह दयनीय हाल! मुझसे नहीं जाता। बाबू जी, क्योंकि मेरी में आज़ादी की लपट भरी हुई है। जी का दिव्य सन्देश भरा हुआ है पति की अमर साधना। बस यही है कहानी। मैं चाहती हूँ कि मेरी भारत के नेताओं तक पहुँचे और वह कि रंगून की सीमा के अन्दर भी "अमर बलिदानों" का प्रकाश हो रहा है।

मैंने कहा—"आपकी कहानी शिक्षाप्रद और मार्मिक है। आप तो हैं, पूजने के लायक हैं। मुझे क्षमा अब तुम इस घर में रानी की तरह रह हो। तुम्हारे "अमर बलिदान" ने आँखें खोल दी हैं। मुझे उम्मीद है यह कहानी भारत के युवकों की आँखें खोलने में सफल होगी।

(लेखक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

चाहिए !

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी० एल-एल० बी०

आज नौजवान की ज़बान चाहिए।
ख़ून को समुद्र की न थाह चाहिए।
ख़ून को नहीं नदी प्रवाह चाहिए।
ख़ून हेतु जोश का उफान चाहिए।
आज नौजवान की ज़बान चाहिए।

देह हेतु आसमान, वायु, जल, ज़मीं
देह को न अन्न, वस्त्र आदि की कमी।
देह के लिए स्वतन्त्र प्रान चाहिए।
आज नौजवान की ज़बान चाहिए।

हाथ हेतु एक कर्मयोग की छड़ी
लक्ष की लकीर पाँव के तले पड़ी
नेत्र हेतु मुक्ति का निशान चाहिए।
आज नौजवान की ज़बान चाहिए।

अर्चना ग़रीब की सदैव वे सुनी
वन्दना विनीत की न देव ने सुनी
टेर में दहाड़ की रुझान चाहिए।
आज नौजवान की ज़बान चाहिए।

फूल की हँसी सदा चुनी गई यहाँ
फूल-सी रुई सदा धुनी गई यहाँ
शूल-सी यहाँ सदैव शान चाहिए।
आज नौजवान की ज़बान चाहिए।

नई पुस्तक

कामायनी-अनुशीलन

महाकवि 'प्रसाद' का महाकाव्य 'कामायनी' बहुत प्रसिद्ध है, पर यह समझ में नहीं आता। इस पर अनेक समीक्षकों के विचार पत्रों में प्रकट हुए हैं। इसी ग्रन्थ का अनुशीलन इस पुस्तक में लेखक रामलालसिंह एम० ए०, बी० टी० साहित्यरत्न ने कामायनी का ऐतिहासिक तत्त्व, प्रकृति वर्णन, चरित्र-चित्रण, भाषा तथा भावाभिव्यक्ति, छंद विधान, रस संचार, कामायनी का मनस्तत्व, दार्शनिक तथ्य, युग की अभिव्यक्ति, प्रेम-निरूपण आदि शीर्षकों में बड़ी मार्मिकता से किया है। अच्छे काग़ज़ पर छपी कोई ढाई सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३)।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्मी अप्सरायें

इस पुस्तक में फिल्म एक्ट्रेसों की ... और उनकी जिन्दगी के दिल-... हालात छापे गये हैं। मूल्य दो ...

—रंगभूमि मासिक, दिल्ली।

धातुपौष्टिक

कामजोत वटी

...दोष, वीर्यविकार, शीघ्रपतन, ... कमजोरी दूर करके खून, बल ... बढ़ाती है। (डि० रु० २॥)

कामजोत तिला

...के उपयोग से इन्द्री का नसे व अव-... मजबूत होकर उत्थानशक्ति और ...शक्ति बढ़ता है। फा शी० २॥)

...मजरी फार्मेसी—जामनगर

...बाद—मदन स्टाम्प ४७ जान्स्टनगंज

जीवन-क्रान्ति

यह सामाजिक उपन्यास है। इसमें ...कारों तथा बड़े आदमी कहे जाने-... व्यक्तियों की हृदयहीनता, पुलिस ... अन्य अधिकारियों के हथकंडों और ... गरम करने के लिए निरपराधों ... अपराधी ठहराकर कारागार के कष्ट ... के लिए विवश करने के मायाजाल ... आकर्षक वर्णन है। अन्त में अत्याचारी ... हृदय-परिवर्तन का अपूर्व चित्रण है। ...संख्या ४००। सजिल्द प्रति का ... केवल २) दो रुपये।

डिवन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

अम्लता ?

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर की ... ख्याति अम्लता, उदर-वायु, हृदय-... पेट-दर्द, वमन, पित्त-प्रकोप तथा ...-सम्बन्धी शिकायतों से पैदा होने-... अन्य रोगों में प्रभावशाली होने की ... प्रमाण है।

उदर-विकारों से उत्पन्न सिरदर्द, ..., अनिद्रा और हृदय की तीव्र धड़-... में भी यह अमूल्य है।

यदि आप इनमें से किसी कष्टकारी ... से पीड़ित हैं तो आज ही कुछ मेकलीन ... स्टमक पाउडर लीजिए और इस ... औषधि की शीघ्र सांत्वना का स्वय-... अनुभव कीजिए।

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर माँगते ... "एलेक्स सी० मेकलीन" के हस्ताक्षर ... लीजिए क्योंकि असली यही है।

मेकलिन ब्रांड स्टमक पाउडर सेवन कीजिए

MACLEAN Brand Stomach Powder

Alex. C. Maclean

JWT(E) LTD.

सपट लोशन

दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.

सपट अॅन्ड कं. लि. बम्बई नं. २.

उत्तम सुरीले मजबूत

बेंजो

हमारे यहां से थोक मिलते हैं

RAI INDUSTRIES
NUR MAHAL
(JULLUNDUR N.)

निरर्थ नामा मंगा कर अपनी निजारत को बढ़ावें

घोषणा

साफ़ किया हुआ और शुद्ध मूँगफली का तेल

दि लिली आइल इंडस्ट्रीज लि० बड़ौदा से अब मिल सकता है :

कृपया विशेष विवरण के लिए लिखिए :—

दि लिली आइल इंडस्ट्रीज लि०

(ऐलेम्बिक ग्रूप इंडस्ट्रीज)

पोस्ट ऐलेम्बिक, बड़ौदा

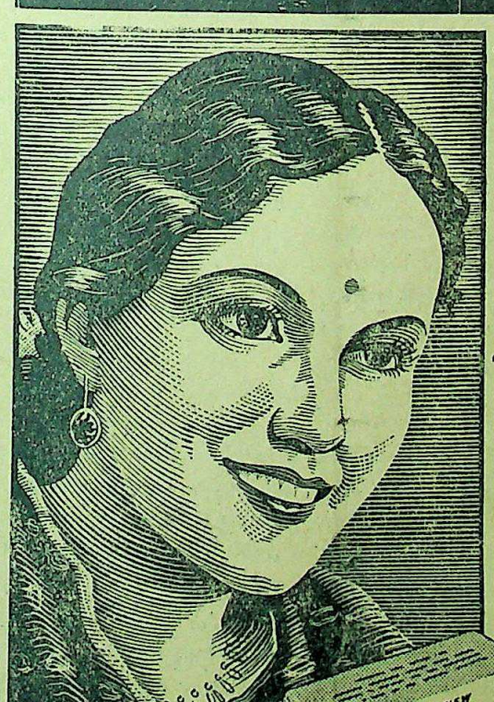

चर्म-स्वास्थ्य से ही चर्म-सौन्दर्य बढ़ता है!

रैक्सोना से

चर्म-स्वास्थ्य की रक्षा कीजिए

यह सुन्दर, हरा, जल्दी झाग देनेवाला स्नान का साबुन शांतिदायी, आरोग्यवर्धक, त्वचा-विकार-विरोधी कैडिल के रासायनिक सम्मिश्रण से बना हुआ है। 'रैक्सोना' द्वारा किया गया प्रत्येक बार का स्नान, शरीर-सौंदर्य की रक्षा करने के लिए चर्म-स्वास्थ्य का पोषण करता हुआ, आपकी त्वचा को धूल और पसीने के विकारों से मुक्त कर देता है।

★ 'त्वचा' को शांति देने और उसकी रक्षा करने में, वैज्ञानिक रूप से मान्य 'रैक्सोना' में मिश्रित 'कैडिल' विकार विरोधी और पोषक तैलों का एक विशिष्ट मिश्रण है।

बालकों के लिये रैक्सोना

रैक्सोना में मिश्रित 'कैडिल' बालकों के कोमल शरीर को, दागों और खराशों से सुरक्षित रखने में सहायक होगा।

त्वचा-सम्बधी सभी दागों के लिए रैक्सोना-मलहम प्रयोग में लाइये। यद्यपि इसका उत्पादन सीमित है। किन्तु अधिकांश विक्रेताओं के यहाँ कुछ प्रसिद्ध तिकोने डिब्बे प्राप्य हैं।

RP 27-392 HI

REXONA PROPRIETARY LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूरज छाप सर्वत्र मिलता है स्था. १९ ६
स्वदेशी
आरोंदा १८६६
नीलगिरि तेल नमूना मुफ्त
युकॅलिप पेन बाम दाद का मरहम
स्वाण्डाले कर बन्धु बम्बई

मेरी तरह तदरुस्ती हासिल करो
खराब खून को साफ करता है
डा. वामन गोपाल
आयोडाइज्ड सार्सापरिला
हर जगह मिलता है
इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एल० एस० धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

"प्रत्येक सुबह का पहला काम"
आधुनिक जीवन-यापन का पारास्थातया पाकस्थली में अम्लता पैदा कर देती हैं, जिसके कारण पाचन-सम्बन्धी शिकायत उत्पन्न हो जाती है। ताज़गी देनेवाले इनोज़ 'फ्रूट साल्ट' का एक गिलास शारीरिक क्रियाओं को व्यवस्थित करता है, समस्त विषों का शमन करता है, लिवर को स्फूर्ति देता है और अम्लता को निराकरण करता है।
ईनोज़ "फ्रूट साल्ट"
इनो व "फ्रूट साल्ट" शब्द रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है।

कठिन परिश्रम के बाद;
प्रत्येक मनुष्य का शरीर और मन दोनों ही थक जाता है। उसे फिर काम के योग्य बनाने के लिये आराम करना अत्यन्त आवश्यक है। आराम करने से शरीर की थकावट अवश्य दूर हो जाती है किन्तु मन के लिये विशेष प्रकार के भोजन की आवश्यकता होती है। भोजन पचने में हलका स्वादिष्ट और सात्विक होना चाहिये।
ये पाँच कहानी-संग्रह कठिन परिश्रम के बाद आराम करते समय पढ़ने योग्य हैं। इनमें वे ही गुण हैं जो मन को प्रफुल्लित करने के लिये आवश्यक हैं।
पुष्करिणी २)
अनुराग १)
कलंक १)
गल्पगुच्छ (चार भाग) ४॥।=)
टाल्सटाय की कहानियाँ २)
मैनेजर—बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

श्री रत्नगिरिजी का अद्भुत चमत्का

जिसने समस्त संसार को चकित कर दिया

रक्त, बल, वीर्य्य, उत्साह तथा उमंग ही जीवन सफल बना सकती है

ध्यान देने योग्य अमूल्य उपहार

अपूर्व काया पलट (रजिस्टर्ड)

निस्वार्थ संसार सेवा भारतीय महात्माओं ने औषध विज्ञान को अपनी महान् खोजों और अमूल्य रत्नों से अलंकृत किया है आधुनिक चिकित्सक मर्ज और मरोज जब दोनों को लाइलाज घोषित करके शर्मिन्दा नहीं होते वहां इन्हीं महात्माओं की बिना दाम की जड़ी बूटियाँ मुर्दों को भी जिला सकने में समर्थ हुई हैं। ऐसी सच्ची घटनायें आये दिन एक न एक पढ़ने और सुनने में आया करती हैं।

बीस वर्ष पूर्व कल्लाती पहाड़ी पर विचरण करनेवाले स्वामी रत्नगिरिजी महाराज की सेवा एक बूढ़ा ग्वाला करने लगा। योगिराज को एक दिन उस वृद्ध की कमजोरी पर दया आ ही गई और उन्होंने निम्नलिखित योग की ६ मात्राएँ उस बूढ़े को दीं। नासमझी के कारण छहों मात्राएँ एक साथ खा जाने से उस वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आगई और रत्नगिरिजी के परिश्रम पूर्वक इलाज करने पर बुढ़ापे के बावजूद भी उसे तीन विवाह करने पड़े। इस पर राजा रईस, नवाब और रसिकजन महान योग को जानने के लिए आतुर हो उठे। नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयात मोहम्मद खाँ साहब ने बाबाजी की बहुत सेवा करके इसे प्राप्त कर लिया और लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्मा जी ने इसे प्रथम तथा दो अन्य लिखकर तीनों से उत्तम वाजीकरण बतलानेवाले को एक हजार रुपये का नक़द इनाम देने की घोषणा की। इसे आज बीस साल के लगभग हो गये किन्तु अभी तक कोई पुरस्कार विजय नहीं कर सका। मथुरा के ख्याति प्राप्त बा० हरिदास जी ने इसे चिकित्सा चन्द्रोदय में छपवाया और हमने भी स्वयं बनाकर सैकड़ों दुर्बल, नपुंसक, वीर्य्य-विकारी रोगियों पर बरता। तत्काल लक्षण-चमत्कार देख जन-साधारण के लाभार्थ अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपवा दिया। आप भी बनाकर लाभ उठायें।

योग—शुद्ध बुरादा फौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत भल्ल १ तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा, एक घंटा घृत कुमारी में घोटकर मिट्टी के कुज्जे में मजबूत बंद कर पाँच सेर कंडों में फूंके। दुबारा एक तोला हरताल बकी शुद्ध, १॥ माशा कपूर शुद्ध में, तीसरी बार गन्धक आमलासार शुद्ध १ तोला, कपूर, १ माशों में, चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद १ तोला, कपूर १॥ माशा को ऊपर की भाँति १६ आँच दे। फिर उसको कढ़ाई में डालकर बराबर इन्द्रबधू डाल दे। और नीचे आग जलावे, जब इन्द्रबधू जलकर राख हो जावे तो हवा देकर उड़ा दे। बस अपूर्व काया पलट तैयार है। चार चार चावल सायं मक्खन मलाई के साथ खायें और मिश्री मिला दूध पीवें।

मथुरा के हरिदास जी लिखते हैं इस योग के सेवन से एक हफ़्ते में एक आदमी का वजन चार पौंड बढ़ गया, दूसरे का चेहरा लाल सुर्ख हो गया। भूपाल के वैद्यराज पं० बालकृष्ण शर्मा ने ३५० रोगियों पर बरता और आशा से अधिक गुणकारी पाया। रत्नाकर सम्पादक जी श्री छोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य ने गृह-चिकित्सा पथ-प्रदर्शक में छापा कि इतना प्रचण्ड गुणकारी योग दूसरा नहीं देखा। श्री धर्मेन्द्र विद्यावतंश सिद्धान्त शास्त्री अधिष्ठाता गु कुल बरेली जिला मजफ़्फ़रनगर ने है—"अपूर्व काया पलट" नामक सेवन कर रहा हूँ, जैसी प्रशंसा वैसा है। बहुत लाभ हुआ। श्री चि जैन आयुर्वेद शास्त्री मालिक औषधालय, वाह (आगरा) का कि मैंने २२५ रोगी, अपूर्व काया जो कि धातु-विकार, नपुंसकता, रक्त-विकार आदि रोगों से प्रसि स्वस्थ किये।

हमारा दावा है कि केवल सेवन से शरीर में रक्त दौड़ता नजर २१ दिन में चेहरा लाल काश्मीरी तरह चमकने लगेगा। ४० दिन सकता, मधुमेह, डायब्टीज निर्ब हो जाती है। स्त्रियों के प्रदर दूर धारण-शक्ति आती है। जिगर शक्ति बढ़ाकर भूख दूनी करता तिल्ली की खराबी, खांसी, नजला बदन दुखना, खून का पतलापन, पीलापन, चिनगारी सा उड़ते बार-बार थूक गिरना, दमा तथा की कमजोरी तुरन्त दूर कर का संचार करता है। जाड़ा, गरमी सभी मौसमों में एक-सा लाभ योग भली भाँति समझाकर लिख भी यदि आप न बना सकें तो १६ आंच दी हुई ४० दिन की ६॥।=) डाक खर्च मय पैकिंग कोई बात समझ में न आवे तो कार्ड भेजकर उत्तर मँगा लें।

पता—रूपबिलास कम्पनी (रसायनशाला) नम्बर ४८

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, ... प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

साप्ताहिक रविवार, १७ मार्च, १९४६

खरी-मज़ेदार

लंगोटी ही सही। अँगरेज़ विकट होते हैं, ले लो थोड़ा बहुत नहीं तो टापना ही पड़ेगा।

* * *

प्रांतीय हिन्दू सभा के एक महारथी राजा महेश्वरदयाल सेठ अब कांग्रेस में शरीक़ हो गये हैं। सचमुच यह निहायत मजे की खबर है। और होना भी चाहिए, क्योंकि अब हिन्दू सभा में रक्खा ही क्या है? वीर सावरकर, डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकुर्जी और डाक्टर मुंजे आदि जब इस वक्त मौन हो गये हैं तब राजा साहब की आवाज तो नक्कारखाने में तूती की आवाज ही साबित होती। अपने राम की राय में राजा साहब को बुद्धि तो आई जरूर लेकिन जरा लेट आई। अगर पहले से बुद्धि आ जाती तो मुकमिन है केन्द्रीय एसेम्बली या प्रान्तीय एसेम्बली में चले जाते क्योंकि पैसा उनके पास है ही, खद्दर वह पहनते ही होंगे, फिर टिकट मिलने में उतनी परेशानी न उठानी पड़ती। फिर भी कांग्रेसवादी ही बन जाना क्या बेजा है? मिनिस्टरी तो कांग्रेस की होगी ही। कहावत भी है कि जैसी बहे बयार पीठ तब तैसी कीजे। राजा साहब ने भी कांग्रेसी बयार की ओर अपनी पीठ घुमा दी है। हवा लगेगी ही इसलिए मन चंगा हो जायेगा। और कहा भी है कि मन चंगा तो कठौती में गंगा।

* * *

कलकत्ता विश्वविद्यालय में दीक्षांत भाषण देते हुए पंडित जवाहरलाल नेहरू ने बड़ा ही लाजवाब भाषण दिया। पंडित नेहरू ने कहा कि अँगरेज़ी राज्य समाप्त हो रहा है और भारत स्वतंत्रता के नज़दीक आता जा रहा है। है बात बिलकुल सही किन्तु पंडित नेहरू के दिन में सैकड़ों आर 'भारत छोड़ो' के मंत्र जपने से अँगरेज़ बेचारे परेशान हो गये हैं। अपने राम की राय में अँगरेज़ जाते-जाते जायें या एकबारगी किधर चले जायें और किस माँद में समा जायें? अँगरेज़ों की आफ़त है, तभी तो मध्यप्रान्त में एक अँगरेज़ महिला, रेल के डिब्बे में एक हिन्दुस्तानी स्त्री को चढ़ते देखकर बमक उठी थी कि मैं भारत से जाऊँगी तो ज़रूर लेकिन लड़कर जाऊँगी। अरे, अँगरेज़ सोच रहे हैं, सभझ रहे हैं, देख रहे हैं, ताक रहे हैं, मसविदा बना रहे हैं और फिक्र कर रहे हैं। जायेंगे ही लेकिन भारत में सभी राजनैतिक दलों का भला करके। नहीं तो उन्हें क्या लेना-लादना है? हिन्दुस्तान के लिए वह सदा मरे हैं और अंत में वह प्राण देने से भी बाज न आयेंगे। परोपकारी जीव हैं कि ठट्ठा!

* * *

मंचूरिया में अमरीका की तरह ब्रिटेन भी रूसी लीला का विरोध करने लगा है। बात यह है कि जापानियों ने मशीनों की जो धुआँ-धार मंचूरिया में मचाई थी, उसे रूसी हथियाते जा रहे हैं। अमरीका और ब्रिटेन कहते हैं कि जापानी मशीनों का बँटवारा अन्तर्राष्ट्रीय पंचायत द्वारा होना चाहिए लेकिन रूस अपनी अलग पकाता जा रहा है। जब तक रूस सब ले देकर बराबर करेगा तब तक अमरीका और ब्रिटेन विधान और नीति का हल्ला मचाते रहेंगे। कहावत है कि जिसकी लाठी उसकी भैंस। इस वक्त रूस लाठी लेकर अपने पड़ोसियों को हाँक रहा है। अमरीका-ब्रिटन और रूस की यह तिकड़म बड़ी विचित्र है। चीन की खुदा ही खैर करे।

* * *

भारत की सभी प्रान्तीय एसेम्बलियों का चुनाव समाप्त हो गया। कांग्रेस दल का बहुमत प्रायः सभी प्रान्तों में हो गया है। केवल बंगाल में और जबरदस्ती के कारण सिंध में मुसलिम लीग अपना नाटक कर रही है। बाकी प्रान्त या तो कांग्रेस के अधिकार में है या कांग्रेस तथा अन्य दलों के हाथ में है, लेकिन लीग की दाल नहीं गलने पाई। सिंध तो अपने दिन गिन रहा है। वह भी अब कांग्रेसी हुआ ही चाहता है। फिर बंगाल को मुसलिम लीग लेकर 'पाकिस्तानी' रोना कब तक रोती रहेगी? केवल एक प्रान्त के बल पर भारत में 'पाकिस्तान' कैसे बनेगा, इसे भगवान जाने, मुसलिम लीग जाने या हमारी ब्रिटिश सरकार जाने। लीग के इस पाकिस्तानी इलहाम का मतलब न तो कांग्रेस ही समझ सकती है और न भारत के निवासी भारतीय ही।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूरज छाप | सर्वत्र मिलता है | स्था. १९१६

स्वदेशी

आशीर्वाद

नीलगिरि तेल नमूना मुफ़्त

यूकॅलिप पेन बाम

दादका मरहम

लक्ष्मणदास लालजी लालकर बन्धु

बम्बई ६

कठिन परिश्रम

प्रत्येक मनुष्य का शरी
जाता है। उसे फिर का
आराम करना अत्यन्त
करने से शरीर की थक
है किन्तु मन के लिये
की आवश्यकता होत
इलका स्वादिष्ट और
ये पाँच कहान
बाद आराम करते स
वे ही गुण हैं जो मस्तिष्क
लिये आवश्यक हैं।

मैनेजर प्रसादअन्तूलाल जौहरी एल० एस०
ा एन्ड ब्रदर्स।

प्रिंस होमियोपैथिक

बनारस
गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड
बायकेमिक, इंजेक्शन का
(सर्टिफ़िकेट) आधी फ़ीस में
प्राप्त करें। नियमावली

धातु पौष्टि

कामजोत

स्वप्नदोष, वीर्यविकार,
सुस्ती व कमजोरी दूर करके
व वीर्य बढ़ाती है। हि०

कामजोत

इसके उपयोग से इन्द्री का
बेल मजबूत होकर उत्थान
स्तम्भन-शक्ति बढ़ती है।

मदनमंजरी फार्मसी—
इलाहाबाद—मदन स्टोर्स

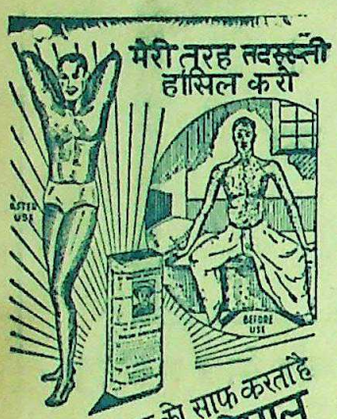

खराब खून को साफ करता है

डा. वामन गोपाल

आयोडाइड्ड सासापरिला

हर जगह मिलता है

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद
अन्तूलाल जौहरी एल० एस०
धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

श्री रत्नगि

सात रुपये में

२ म्यूट रिस्टवाच.

ाओं को मशहूर करने के लिए कम्पनी ने
कों को मुफ़्त बाँटने के लिए तय किया है।
२ बम्बई फैशन
की ज़ंजीर और
साथ एक बक्स
डाक-ख़र्च एक

ताम वापस, जल्दी कीजिए, इस तरह के
साफ़ साफ़ लिखिए।

श्री

न्टस् हाउस, पो० बक्स नं० ६६
D.D.L.) पंजाब
ORNAMENTS HOUSE, P.B.
(D.D.L.) (PUNJAB)

आधुनिक जीवन-यापन का पारास्थातया पाकस्थली में अम्लता पैदा कर देती है, जिसके कारण पाचन-सम्बन्धी शिकायत उत्पन्न हो जाती है। ताज़गी देनेवाले इनोज़ 'फ्रूट साल्ट' का एक गिलास शारीरिक क्रियाओं को व्यवस्थित करता है, समस्त विषों का शमन करता है, लिवर को स्फूर्ति देता है और अम्लता को निराकरण करता है।

ईनोज़ "फ्रूट साल्ट"

इनो व "फ्रूट साल्ट" शब्द रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है।

निस्वार्थ संतार सेवा भारतीय महात्माओं
ने औषध विज्ञान को अपनी महान
खोजों और अनूल्य रत्नों से अलंकृत किया है
आधुनिक चिकित्सक मर्ज और मरीज़
जब दोनों को लाइलाज घोषित करके
शर्मिन्दा नहीं होते वहाँ इन्हीं महात्माओं की
बिना दाम की जड़ी बूटियाँ मुर्दों को भी
जिला सकने में समर्थ हुई हैं। ऐसी सच्ची
घटनायें आये दिन एक न एक पढ़ने और
सुनने में आया करती हैं।

बीस वर्ष पूर्व कल्लाती पहाड़ी पर
विचरण करनेवाले स्वामी रत्नगिरिजी
महाराज की सेवा एक बूढ़ा ग्वाला कर
लगा। योगिराज को एक दिन उस बूढ़े की
कमजोरी पर दया आ ही गई और उन्होंने
निम्नलिखित योग की ६ मात्राएँ उस बूढ़े
को दीं। नासमझी के कारण छहों मात्रा
एक साथ खा जाने से उस बृद्ध ग्वाले में अपू
शक्ति आगई और रत्नगिरिजी के परिश्रम
पूर्वक इलाज करने पर बुढ़ापे के बावजूद भी
उसे तीन विवाह करने पड़े। इस पर राजा
रईस, नवाब और रसिकजन महान यो
जानने के लिए आतुर हो उठे। नवाब
बहावलपुर के ससुर हाजी हयात मोहम्मद
खाँ साहब ने बाबाजी की बहुत सेवा करके
इसे प्राप्त कर लिया और लाहौर के प
ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्मा जी
इसे प्रथम तथा दो अन्य लिखकर ती
से उत्तम बाजीकरण बतलानेवाले
एक हजार रुपये का नक़द इनाम देने
घोषणा की। इसे आज बीस साल के लगभ
हो गये किन्तु अभी तक कोई पुरस्कार
विजय नहीं कर सका। मथुरा के स्वामी
प्राप्त वा० हरिदास जी ने इसे चिकि

बच्चों की रक्षा कीजिये!

लक्स साबुन
LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० चाय [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लि

RAI INDUSTR
NUR MAHA
(JULLUNDUR

निरर्थ नामा मंगा कर
अपनी तिजारत को बढ़ावें

सूरज छाप | सर्वत्र मिलता है | स्वदेशी

आशीर्वाद

नीलगिरि तेल नमूना मुफ़्त

यूकॅलिप पेन बाम दादका मरहम

लक्ष्मणदास लालजी लालकर बन्धु बम्बई ६

फ्रांस का इतिहास

में ईसा पूर्व २२५ से
१९२० ईसवी तक का
इसमें वहाँ की राज्यक्रान्ति के
फ्यूडल प्रणाली, स्वतंत्र, राष्ट्र
वर्षीय युद्ध, योरप में फ्रांस के
राजवंश के उद्धार, सन् १८८९ की
राष्ट्रीय सभा और प्रजातंत्र
वर्णन उत्तमता से किया गया है
में चित्र भी हैं। अच्छे कागज पर
चार सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक
मूल्य केवल ४) चार रुपये।

कुछ

यह प्रसिद्ध साहित्य-सेवी श्री
पुन्नालाल बख्शी बी० ए० के
का संग्रह है। इसमें २० निबन्ध
भाषा, भाव और विवेचन की
विलक्षण है। यह इस वर्ष की अपूर्व
है। पृष्ठ-संख्या २०० से ऊपर।
१।।) एक रुपया आठ आने।
मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस,
इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक

वर्ष ८, संख्या २६] रविवार, १७ मार्च, १९४६

सीधी-टेढ़ी-खरी-मज़ेदार

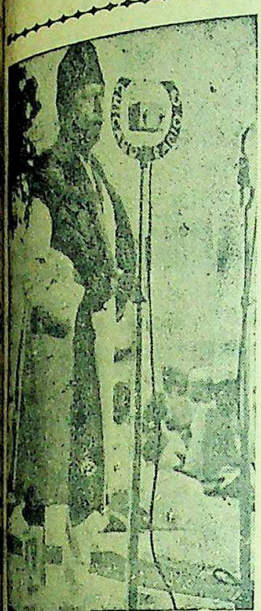

कांग्रेस प्रेसिडेंट मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने बम्बई में होनेवाली वर्किंग कमेटी का सभापतित्व ग्रहण किया था।

हिज हाइनेस सर आगा खाँ भी अब बहती गंगा में हाथ धोने के लिए आगे बढ़ रहे हैं। आप कहते हैं कि अँगरेज़ हिन्दुस्तान से चले जायेंगे तो सोवियट रूस बाल का बाल बांका नहीं कर सकता है। अगर रूस हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करेगा तो ब्रिटेन, रूस, टर्की और चीन एक साथ मिलकर रूस का कचूमर निकाल देंगे। आगा खाँ साहब ने कहा तो बड़े मार्के की बात लेकिन अँगरेज़ बहादुर हिन्दुस्तान छोड़ें तब तो? और पाकिस्तान का क्या होगा? मिस्टर जिन्ना तो 'पाकिस्तानी' रट लगाये हुए हैं। उसकी गति कैसे होगी? सर आगा खाँ ने क्या मिस्टर जिन्ना और उनके सिपहसालारों से कुछ सलाह-मशवरा कर लिया है, या वे ही अपने आप उड़ रहे हैं? हमारी ब्रिटिश सरकार ने पहले तो पाकिस्तान का अपना मिस्टर जिन्ना को उछाला कि वह बिरादर सूली पर किन्तु क्या अब वह मिस्टर जिन्ना का इतना सा भी ख्याल करेगी? अरे मिस्टर जिन्ना 'पाकिस्तान' चाहते हैं मुसलमानों के लिए, कुछ अपने लिए तो माँग नहीं रहे हैं? हाँ यह बात ज़ाहिर है कि लीडरी जिन्ना साहब के हाथ से निकली और सर आगा खाँ को लीगी कुर्सी भी नहीं?

* *

पंजाब में सभी राजनैतिक दलों का मिलिट्री मंत्रि-मंडल बन गया और मिस्टर जिन्ना की पार्टी टापती ही रह गई। यह बड़े अफ़सोस की बात है। मुस्लिम लीग के लिए अगर यह डूब मरने की बात न हुई, तो शर्मनाक ज़रूर है। किन्तु किया क्या जाये? कांग्रेस, सिक्ख और अब मुसलिम दल एक हो गये। मुस्लिम लीग यह सोचती रही कि सिंध की तरह मुमकिन है गवर्नर साहब लीगी मंत्रि-मंडल बनाने में सहयोग दें लेकिन किसी तरह भी पूछ नहीं हुई। राष्ट्रपति मौलाना आजाद ने पहुँचकर सब गुड़-गोबर कर दिया। हाँ, यदि मिस्टर जिन्ना पहुँच जाते तो मुमकिन है कुछ हो भी जाता लेकिन जिन्ना साहब हैं पाकिस्तान के उडबी प्रेसिडेंट। वह भला अपनी जगह से क्यों टस से मस होने लगे? नतीजा यह हुआ कि मंत्रि-मंडल बन गया। सीमा-प्रान्त में भी कांग्रेसी मंत्रि-मंडल बन गया है। इसलिए जान पड़ता है कि पड़ोसी की छूत ने सब गुड़-गोबर कर दिया।

* *

ब्रिटिश पार्लियामेंट के तीन मंत्री मार्च के अंतिम सप्ताह में हिन्दुस्तान तशरीफ़ ला रहे हैं। मंत्रियों ने चाहे जो कुछ निश्चय किया हो लेकिन यह तो निश्चय ही करके आ रहे हैं कि केन्द्रीय सरकार भारतीयों के हाथों में सौंप दी जायेगी। अगर शिमला-सम्मेलन की तरह मिस्टर जिन्ना इगिड़-तिगिड़ करेंगे, तो उनकी कुछ भी सुनवाई न होगी। अपने राम की राय में अच्छा ही हुआ, सरकार ने अपने विचार प्रगट कर दिये। अब मिस्टर जिन्ना थोड़ा बहुत नाटक तो ज़रूर करेंगे और लीग की मर्यादा की रक्षा करने की ओर बढ़ेंगे लेकिन आख़िर में कुछ न कुछ मान ही लेंगे। क्योंकि केन्द्रीय सरकार भारतीयों को सौंपी जायेगी ही, फिर उस मौक़े को आख़िर में हाथ से वह न जाने देंगे। क्योंकि मुसलिम लीग को पद और ओहदे तो चाहिए ही। लीगवाले सोचेंगे कि भागते-भूत की लंगोटी ही सही। अँगरेज़ विकट होते हैं, ले लो थोड़ा बहुत नहीं तो टापना ही पड़ेगा।

* *

प्रांतीय हिन्दू सभा के एक महारथी राजा महेश्वरदयाल सेठ अब कांग्रेस में शरीक़ हो गये हैं। सचमुच यह निहायत मज़े की खबर है। और होना भी चाहिए, क्योंकि अब हिन्दू सभा में रक्खा ही क्या है? वीर सावरकर, डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकुर्जी और डाक्टर मुंजे आदि जब इस वक्त मौन हो गये हैं तब राजा साहब की आवाज़ तो नक्कारखाने में तूती की आवाज़ ही साबित होती। अपने राम की राय में राजा साहब को बुद्धि तो आई ज़रूर लेकिन ज़रा लेट आई। अगर पहले से बुद्धि आ जाती तो मुकमिन हैं केन्द्रीय एसेम्बली या प्रान्तीय एसेम्बली में चले जाते क्योंकि पैसा उनके पास है ही, खद्दर वह पहनते ही होंगे, फिर टिकट मिलने में उतनी परेशानी न उठानी पड़ती। फिर भी कांग्रेसवादी ही बन जाना क्या बेजा है? मिनिस्टरी तो कांग्रेस की होगी ही। कहावत भी है कि जैसी बहे बयार पीठ तब तैसी कीजे। राजा साहब ने भी कांग्रेसी बयार की ओर अपनी पीठ घुमा दी है। हवा लगेगी ही इसलिए मन चंगा हो जायेगा। और कहा भी है कि मन चंगा तो कठौती में गंगा।

* *

कलकत्ता विश्वविद्यालय में दीक्षांत भाषण देते हुए पंडित जवाहरलाल नेहरू ने बड़ा ही लाजवाब भाषण दिया। पंडित नेहरू ने कहा कि अँगरेज़ी राज्य समाप्त हो रहा है और भारत स्वतंत्रता के नज़दीक आता जा रहा है। है बात बिलकुल सही किन्तु पंडित नेहरू के दिन में सैकड़ों आर 'भारत छोड़ो' के मंत्र जपने से अँगरेज़ बेचारे परेशान हो गये हैं। अपने राम की राय में अँगरेज़ जाते-जाते जायें या एक-बारगी किधर चले जायें और किस माँद में सभा जायें? अँगरेज़ों की आफ़त है, तभी तो मध्यप्रान्त में एक अँगरेज़ महिला, रेल के डिब्बे में एक हिन्दुस्तानी स्त्री को चढ़ते देखकर बमक उठी थी कि मैं भारत से जाऊँगी तो ज़रूर लेकिन लड़कर जाऊँगी। अरे, अँगरेज़ सोच रहे हैं, समझ रहे हैं, देख रहे हैं, ताक रहे हैं, मसविदा बना रहे हैं और फिक्र कर रहे हैं। जायेंगे ही लेकिन भारत में सभी राजनैतिक दलों का भला करके। नहीं तो उन्हें क्या लेना-लादना है? हिन्दुस्तान के लिए वह सदा मरे हैं और अंत में वह प्राण देने से भी बाज न आयेंगे। परोपकारी जीव हैं कि ठट्ठा!

* *

मंचूरिया में अमरीका की तरह ब्रिटेन भी रूसी लीला का विरोध करने लगा है। बात यह है कि जापानियों ने मशीनों की जो धुआँ-धार मंचूरिया में मचाई थी, उसे रूसी हथियाते जा रहे हैं। अमरीका और ब्रिटेन कहते हैं कि जापानी मशीनों का बँटवारा अन्तर्राष्ट्रीय पंचायत द्वारा होना चाहिए लेकिन रूस अपनी अलग पकाता जा रहा है। जब तक रूस सब ले देकर बराबर करेगा तब तक अमरीका और ब्रिटेन विधान और नीति का हल्ला मचाते रहेंगे। कहावत है कि जिसकी लाठी उसकी भैंस। इस वक्त रूस लाठी लेकर अपने पड़ोसियों को हाँक रहा है। अमरीका-ब्रिटन और रूस की यह तिकड़म बड़ी विचित्र है। चीन की खुदा ही खैर करे।

* *

भारत की सभी प्रान्तीय एसेम्बलियों का चुनाव समाप्त हो गया। कांग्रेस दल का बहुमत प्रायः सभी प्रान्तों में हो गया है। केवल बंगाल में और जबरदस्ती के कारण सिंध में मुसलिम लीग अपना नाटक कर रही है। बाकी प्रान्त या तो कांग्रेस के अधिकार में है या कांग्रेस तथा अन्य दलों के हाथ में है, लेकिन लीग की दाल नहीं गलने पाई। सिंध तो अपने दिन गिन रहा है। वह भी अब कांग्रेसी हुआ ही चाहता है। फिर बंगाल को मुसलिम लीग लेकर 'पाकिस्तानी' रोना कब तक रोती रहेगी? केवल एक प्रान्त के बल पर भारत में 'पाकिस्तान' कैसे बनेगा, इसे भगवान जाने, मुसलिम लीग जाने या हमारी ब्रिटिश सरकार जाने। लीग के इस पाकिस्तानी इलहाम का मतलब न तो कांग्रेस ही समझ सकती है और न भारत के निवासी भारतीय ही।

* *

गीत

लेखक, युगप्रवर्तक कवि 'निराला'

(हाली)

खुल गया दिन खुली रात,
विरह की बात गई अब।

रूप खिले मिले अधर कली के,
नयनों की बरसात गई अब।

सागर की उठती हैं हिलोरें
नयनों की बढ़ जाती हैं कोरें,

भवरों-भरी छुटती हैं मरोरें,
पहले की पीली गात गई अब।

उनके नयनों के जो लुटे हैं
आज उन्हीं के हाथ उठे हैं;

कैसे नये-नये तीर छुटे हैं,
मौत की गोठिल घात गई अब।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

ईरान की परिस्थिति

ईरान की परिस्थिति अंत-र्राष्ट्रीय दृष्टि से व्यापक रूप ग्रहण करती जा रही है। एक समय था जब जर्मनी की बर्बर नीति का सामना करने के लिए ब्रिटेन, अमरीका और रूस तीनों मिलकर जर्मनी को परास्त करने में लगे और अंत में जब उसका पराजय हो गया तो मित्र-राष्ट्र पारस्परिक स्वार्थों के लिए एक दूसरे के विरुद्ध आचरण कर रहे हैं। ईरान जिस प्रकार फासिस्ट-राष्ट्रों के लिए समझा जाता था उसी प्रकार आज मित्र-राष्ट्रों के लिए बनता जा रहा है। युद्ध के समय तक तो ईरान पर किसी भी राष्ट्र का उतना दबाव नहीं प्रगट होता था किन्तु जब से युद्ध समाप्त हुआ है तब से प्रत्येक उसे स्वार्थों का खिलौना बनाना चाहता है। प्रत्येक राष्ट्र ईरान का हितैषी बन बैठा है और प्रत्येक की यह इच्छा है कि वह उसका ही बनकर रहे। इसका मुख्य कारण यह है कि किसी भी मित्रराष्ट्र को ईरान तथा वहाँ के शासक से न तो किसी प्रकार का विशेष प्रेम है और न कोई यही चाहता है कि वहाँ उसका शासन स्थापित हो जाये। अमरीका, ब्रिटेन और रूस को मुख्यतः वहाँ के तैल-क्षेत्रों से विशेष प्रेम है। प्रत्येक राष्ट्र की यह इच्छा है कि ईरान के तैल-क्षेत्रों पर उसका ही प्रभाव रहे। ईरान में मिट्टी का तेल इतने व्यापक रूप में प्राप्त होता है कि जिसका लाभ समस्त संसार के राष्ट्र उठाते रहे हैं। विशेष कर जो बलवान राष्ट्र हैं, वह तो उसका लाभ पूरी तरह से उठाते आये हैं। इस समय भी यही स्थिति आ पड़ी है। अमरीका, ब्रिटेन और रूस तीनों ही उस पर हावी होना चाहते हैं। इन्हीं सब स्वार्थों के कारण मित्रराष्ट्रों में कुछ मन-मोटाव दिखाई देता है।

यह मानी हुई बात है कि रूस ईरान का पड़ोसी है। पड़ोसी होने के नाते रूस को इसीलिए अधिक सुविधायें प्राप्त हैं। रूस ने युद्ध के बाद से अपना प्रभाव क्षेत्र व्यापक बनाना प्रारम्भ भी कर दिया है, फिर वह ईरान को ही अपने प्रभाव-क्षेत्र से अलग रहते कैसे देख सकता है? अमरीका और ब्रिटेन का प्रभाव पहले से ही ईरान पर रहा है। ईरान में उत्पन्न होनेवाले तैल-क्षेत्र पर भी उनका व्यापक प्रभाव रहा है, वर्तमान परिस्थिति में सोवियट रूस इसे सहन करने को तैयार नहीं है। इसी की भूमिका-स्वरूप पिछले दिनों ईरान के प्रति उसने जो क़दम उठाया था, इसका प्रमाण है। इसमें संदेह नहीं है कि रूस की शासन प्रणाली बड़ी व्यापक और लोकप्रिय है। कहना यह चाहिए कि वह एक प्रकार की छूत की बीमारी की भाँति है अर्थात् रूसी प्रजातंत्रीय प्रणाली से जिस देश में भी शासन-कार्य प्रारंभ होता वहाँ कम से कम अमरीकी और ब्रिटिश प्रजातंत्र के मुकाबले में उसे अधिक समर्थन प्राप्त होने की उम्मीद की जा सकती है, इसके प्रमाण में हम फ़्रांस और यूगोस्लेविया के चुनावों के उदाहरणों से अन्दाजा लगा सकते हैं। इसी दृष्टि से रूस ने देखते-देखते ईरान के उत्तरी भाग (अजरबेजान) प्रान्त को कम्यूनिस्ट विचारधारा में परिवर्तन करने में सफलता प्राप्त की है। अजरबेजान प्रान्त आज ईरान से स्वतंत्र है और इसका श्रेय यदि सोवियट रूस को दिया जाये तो ठीक ही है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि रूस का प्रभाव ईरान पर बढ़ता जा रहा है और यदि ईरान की यह स्थिति रही तो कल टर्की तथा अन्यान्य पड़ोसी राष्ट्रों पर भी उसका प्रभाव पड़ सकता है और वह उन पर प्रजातंत्र के नाम पर अधिकार करने की ओर भी अग्रसर हो सकता है। इसलिए अमरीका और ब्रिटेन का चिन्तित होना अनिवार्य है क्योंकि यह आर्थिक, व्यापारिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय नीति का प्रश्न है। रूस का अकेले ही किसी भी राष्ट्र पर क्यों प्रभाव स्थापित हो जाये? अमरीका और ब्रिटेन उससे क्यों वंचित रहें? अमरीकी, ब्रिटिश और रूस मित्रराष्ट्र तो हैं ही किन्तु कोई भी एक दूसरे के स्वार्थों की पूर्ति के लिए बलि देने को कैसे तैयार हो सकता है?

अमरीका, ब्रिटेन और रूस सच पूछा जाये तो साम्राज्यवादी राष्ट्र हैं। यदि महायुद्ध के अंतिम निर्णय का इन राष्ट्रों को श्रेय है तो अन्तर्राष्ट्रीयता की नीति के निर्णय के भी यही अधिकारी हैं। यद्यपि ये तीनों राष्ट्र संसार में शान्ति स्थापना की डोंडी पीट रहे हैं किन्तु भीतर-भीतर प्रत्येक अपने को शक्तिशाली बनाने का उद्योग कर रहा है। अमरीका ने 'एटमबम' तैयार कर लिया है तो रूस भी अपनी रक्षा के लिए कुछ विस्फोटक अस्त्र-शस्त्र बनाने में संलग्न है। ब्रिटेन भी अपने मित्रों की हरकतें देखकर कान पर हाथ रखकर बैठा नहीं है। सब के सब अपनी धुन में मस्त हैं, सब के सब उपाय सोच रहे हैं, और तीनों एक दूसरे के प्रति सशंकित हैं। मित्रता होते हुए भी प्रत्येक एक दूसरे की होड़ में आगे बढ़ जाने की तैयारी तथा दाँव-पेंचों में व्यस्त हैं।

इन दाँव-पेंचों का केन्द्रस्थल इस समय ईरान ही बन रहा है या ईरान का पड़ोसी टर्की। इसलिए यदि इस संबंध में कोई अन्तर्राष्ट्रीय निर्णय न हुआ जो तीनों राष्ट्रों के लिए मान्य हो, तो ईरान यदि तीसरे महायुद्ध का केन्द्रस्थल बनने की ओर अग्रसर हो तो क्या आश्चर्य है? किन्तु पड़ोसी होने के नाते जितनी सुविधायें रूस को प्राप्त हैं, उतनी अमरीका अथवा ब्रिटेन को नहीं। किन्तु रूसी साम्राज्यवाद का विस्तार खतरनाक है। ईरान की स्वतंत्रता के लिये बाधक है। एक स्वतंत्र राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र के प्रभाव-क्षेत्र में आने का अर्थ है उसकी स्वतंत्रता का अपहरण! अमरीका और ब्रिटेन भी इस प्रकार की नीति से मुक्त नहीं हैं—वह भी शोषक साम्राज्यवादी राष्ट्र तो हैं ही। सोवियट रूस स्वतंत्र ईरान के साथ जो ज्यादती कर रहा है, वह अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से खतरनाक ही नहीं अशांति उत्पन्न करनेवाला भी है, किंतु क्या इसका कोई अंतिम निर्णय भी हो सकता है, और ईरान स्वतंत्रता की रक्षा हो सकती है? किंतु कौन अपने स्वार्थों के बलिदान के लिये प्रस्तुत है, अमरीका, ब्रिटेन अथवा सोवियट रूस?

क्या रेडियो ने हिन्दी की माँगें पूरी की हैं?

आत्मघात और विश्वासघात

लेखक, पंडित उदयशंकर भट्ट

पिछले एक दो सप्ताह से कान में यह भनक पड़ने लगी है कि दिल्ली के कुछ लेखक, पत्रकार रेडियो पर जाना चाहते हैं, उनमें दो एक ने इस समय तक जाना भी प्रारंभ कर दिया है। रेडियो पर जाना तो कुछ बुरी बात नहीं है पर प्रश्न यह कि है क्या हमारी माँगें रेडियोवालों ने पूरी कर दी हैं? यदि नहीं तो क्या हमारा रेडियो से सहयोग किसी प्रकार भी न्याय कहा जा सकता है? हम मानते हैं, हमारा आन्दोलन उतनी तीव्रगति से नहीं चला जितनी तीव्रता से चलना चाहिये था। उसमें किसी भी संस्था या व्यक्ति को दोष दिया जा सकता है किन्तु इतना निश्चित है कि रेडियो से हमारा सहयोग करना समय से पूर्व की बात दिखाई देती है। वैसा कर के हम न तो हिन्दी वालों के गौरव की रक्षा कर सकेंगे, न हम रेडियो विभाग से अपनी माँग ही मनवा सकेंगे अपितु अनादर की उपेक्षा से रेडियो वालों से सहयोग करके सदा के लिये हीन बन जायँगे। हिन्दी के इतिहास में यह एक कलंक की बात होगी जिसे शायद हमारे बहुत से प्रयत्न भी न धो पायेंगे। थोड़े से धन के पीछे अपनी मर्यादा को गौरव से मिटा देना कोई बुद्धिमानी नहीं है। जो लोग रेडियो पर जाना चाहते हैं उन्हें सोचना चाहिये कि रेडियो के द्वारा जितना कुछ धन कमा लेंगे वह उनका धन कहाँ जायगा। हम में से कुछ लोग अवसरवादी हो सकते हैं किन्तु उनके इस अवसरवाद से लेखक समाज का कितना अपमान होगा इसे भी उन्होंने कभी सोचा है? ऐसे लोगों का साहित्य पाठकों और समाज को कहाँ ले जायगा, जो स्वयं अपने गौरव को अपनी की हुई प्रतिज्ञा को नहीं पाल सकते।

क्या लेखकों-द्वारा सदा से अपनाई हुई तप, त्याग की भावना का यह बलिदान नहीं है? क्या ये साहित्यकार समझते हैं कि वे स्वयं लाभ उठाकर इतने सम्पन्न बन जायँगे कि उन्हें समाज की कोई पर्वाह न होगी? स्पष्ट ही यह ऐसे लोगों का विश्वासघात हिन्दी जगत के लिये एक कलंक की बात होगी। मैं मानता हूँ कि आजकल अर्थ संकट है और बड़े भीषण रूप में और लोगों के साथ हिन्दी समाज को भी घेरे हुए हैं किन्तु इस संकट से पूरी तरह उबरने का उपाय रेडियो से सहयोग नहीं है। धन से ऊँचा लेखक का कलाकार का आत्माभिमान है, जिसके लिये उसने सदा से धन तथा धनिकों का तिरस्कार किया है। कष्ट में जीवन बिता कर अपनी मर्यादा की रक्षा की है। अपने गौरव को बढ़ाया है। यदि इन बातों को वे लेखक [illegible] सोचना चाहते और परिस्थिति से [illegible] हैं फिर भी उनका यह कर्तव्य [illegible] कि वे मार्च में होनेवाली हिन्दी-साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति तक प्रतीक्षा करते और उसमें अपने निश्चय की सूचना समिति को देते। ऐसा न कर के उन्होंने आत्म-समर्पण का जो उदाहरण हिन्दी के सामने उपस्थित किया है उससे उन्होंने हम सब को और अपने उद्देश्य को दूषित किया है। विश्वास है हिन्दी लेखक [illegible] अपने कर्तव्य को समझेंगे और स्थायी समिति को अपना सुझाव देकर ठीक दिशा निर्देश करने में सहायक होंगे।

सम्मेलन के संबन्ध में मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि उसने लेखकों और कलाकारों के इस असहयोग के आन्दोलन को तीव्रतर बनाने में जो शिथिलता दिखाई है उससे वह कदापि मुक्त नहीं हो सकता। जिन लोगों के हाथों में उसने आन्दोलन की बागडोर सौंपी, वे सर्वथा निर्जीव सिद्ध हुए हैं।

अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है और हम करने की शक्ति रखते हैं तथा रेडियो विभाग को दिखा सकते हैं कि एक दो व्यक्तियों का सहयोग पाकर भी वह संपूर्ण साहित्यकों का सहयोग नहीं प्राप्त कर सकता।

अप्रैल में कुछ प्रमुख लोग रेडियो विरोधी लेखक संघ के अधिवेशन का आयोजन दिल्ली में कर रहे हैं उसमें हमें निश्चय करना है कि भविष्य में हमारी मार्ग-दिशा क्या हो? मेरा अनुरोध है कि लेखक गण अपने निश्चय के अनुसार काम करें। इसी बीच स्थायी समिति का रुख भी हम देख लेंगे कि उक्त संस्था क्या करती है?

लाहौर
५-३-४६

स्वदेश-विदेश-यात्रा

श्रीयुत सन्तराम जी, बी० ए० और श्रीमती रामेश्वरी नेहरू की प्रसिद्ध रचना है। देश-देशान्तर की यात्रा करने से अनेक लाभ होते हैं। व्यवहार-ज्ञान और सामान्य बुद्धि की वृद्धि होती है। परन्तु पर्यटन का सुबीता सबको सुलभ नहीं होता। इसकी रुचि भी थोड़े लोगों को होती है। ऐसे लोगों को यात्रा-विषयक पुस्तकें पढ़ने से बड़ा लाभ हो सकता है। इस पुस्तक में कश्मीर और कुल्लू की सैर तथा आस्ट्रेलिया की यात्रा का वर्णन है। पुस्तक सचित्र है। अच्छे कागज पर छपी पौने दो सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल १।) एक रुपया चार आने।

लेन-देन

उपन्यास-प्रेमियों के लिए शरद् के उपन्यास अपना एक विशेष आकर्षण रखते हैं। समाज का जैसा सजीव चित्रण शरद् के उपन्यासों में पाया जाता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। 'लेन-देन' में चण्डीगढ़ की भैरवी षोडशी और वहाँ के जमींदार का चित्रण अत्यन्त मनोरंजक और कुतूहलवर्द्धक शैली में चित्रित किया गया है। मूल्य ३।-)

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बम्बई के दंगे से क्या सीखना है?

भारतीय स्वाधीनता के लिये हमें क्या करना चाहिए?

लेखक, श्री भारतन कुमारप्पा

पिछले दिनों बम्बई में बड़ा भयंकर दंगा हो गया। नौसेना के सिपाहियों के विद्रोही बन जाने पर स्थिति ने व्यापक रूप ग्रहण कर लिया। धन जन की अपार क्षति हुई। सरकार की ओर से गोलियाँ भी चलीं। इस लेख में विद्वान लेखक ने बम्बई के दंगे पर प्रकाश डालते हुए यह बतलाया है, कि उससे हमें क्या शिक्षा मिलती है और किन प्रकार के उपायों द्वारा हम राष्ट्रीयता की रक्षा कर कर सकते हैं।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने बंबई के दंगे की जिम्मेदारी सरकार पर सौंपी है।

पिछले कुछ दिनों में जिन दंगों ने बम्बई को हिला दिया था, उन पर विचार करने के लिए हमें कुछ देर ठहरना होगा। 'रायल इण्डियन नेवी' के भारतीय कर्मचारियों के प्रति अँगरेज अधिकारियों द्वारा किये जानेवाले पक्षपात-पूर्ण व्यवहार और नफ़रत-भरे बर्ताव के विरुद्ध की गई हड़तालों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करना ही यद्यपि इनका तात्कालिक कारण था, परन्तु इनका वास्तविक कारण यह था कि नगर की जनता भारत में अँगरेजी राज्य पर होनेवाले किसी भी आघात के प्रयत्नों में सम्मिलित होने अथवा उत्साहित करने के लिए उत्सुक थी। वे अनुभव करते थे कि हथियारबन्द भारतीय शक्तियां जिस क्षण भी विद्रोह करना आरम्भ कर दें, उसी क्षण भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में हो जाय। इसलिए सिंगापुर की भारतीय सेना में होनेवाला आन्दोलन जब इतना बढ़ गया कि वह वायु शक्तियों और समुद्री शक्तियों तक फैल गया, तो उन्हें बड़ा ही हर्ष हुआ। वह हड़तालियों पर यह प्रकट कर देना चाहती थी कि अँगरेजों के विरुद्ध प्रारम्भ किये गये उनके संघर्ष में वह पूरी तरह से उनके साथ हैं। इसीलिए इन दंगों की शक्ल में यह भीषण हिंसात्मक विस्फोट सामने आया।

आखिर बलवाइयों ने किया क्या था? विश्लेषण करने से उनके सभी कार्य नीचे लिखे हुए मुख्य वर्गों में आ जाते हैं—

(१) वे कार्य जो आने जाने के साधनों म्युनिसिपैलिटी की सुविधाओं, पोस्ट और आदि मुख्य विभागों को काम न कर सकने के योग्य बना देने के उद्देश्य से किये गये थे।

(२) वे कार्य जो सरकार को लक्ष्य बनाकर किये गये थे, जैसे—मिलिट्री और पुलिस पर आक्रमण।

(३) वे कार्य जो नस्ल का विचार करके किये गये थे, जैसे—यूरोपियनों की कारों और दूकानों को तहस-नहस करना और हैटों व टाइयों को जलाना।

(४) वे कार्य जो इस अशान्ति से लाभ उठाकर व्यक्तिगत स्वार्थ की पूर्ति के लिए किए गये थे, जैसे—दूसरों का लूटना, लोगों को धमकाना और उनसे धन वसूल करना, प्रबन्ध के विरुद्ध व्यक्तिगत शत्रुता के कारण बड़ी-बड़ी दूकानों या मिलों पर आक्रमण करना।

ऊपर की विवेचना से यह स्पष्ट है कि इन दंगों को सिर्फ़ गुण्डों का उत्पात कहकर टाल देना एक बड़ी ग़लती होगी। केवल चौथे प्रकार के कार्यों को ही ऐसा कहा जा सकता है। जब सड़कों पर से पुलिस हटा ली गई और उन स्थानों पर केन्द्रित कर दी गई जहाँ दंगे होते थे, तो यह स्पष्ट है कि उन लोगों को अपना काम करने का पूरा-पूरा मौक़ा मिल गया था, जो दूकानों और अनाज के गोदामों पर आक्रमण करना और उन्हें लूटना चाहते थे। शहर की दूकानों की रक्षा के लिए पुलिस का किसी भी प्रकार का प्रबन्ध न था और आश्चर्य की बात यह नहीं है कि यहाँ वहाँ थोड़ा-सी लूटपाट हुई, बल्कि आश्चर्य की बात तो यह है कि वह इतनी कम हुई। यह निश्चय है कि पश्चिमी देशों में दूकानें इतनी आसानी से नहीं बच सकती थीं जितनी भारतवर्ष में, जहां अब भी अशिक्षित से अशिक्षित मनुष्य के हृदय में भी क़ानून और व्यक्तिगत सम्पत्ति के लिए पैदायशी तौर से इज्जत है।

शेष तीन प्रकार की अव्यवस्थाओं का जहाँ तक सम्बन्ध है, यह स्वीकार करना चाहिए कि वे सब इस दृष्टि से एक बिलकुल ही दूसरी योजना के अनुसार थीं कि वे व्यक्तिगत लाभ की इच्छा से प्रेरित होकर नहीं की गई थीं। वे सब जनता के कार्य के लिए की गई थीं अर्थात् हड़तालियों के साथ उद्देश्य-साम्य प्रदर्शित करने के लिए और विदेशी शासन के अत्याचारों के विरुद्ध अपनी भावना प्रदर्शित करने के लिए थीं। उनका ध्येय अँगरेजों को यह दिखा देना था कि अब वे (अँगरेज) हमें बेफ़िक्र होकर कभी 'किक्' नहीं कर सकते (लात नहीं मार सकते)। जब कभी वे ऐसा करने का प्रयत्न करेंगे, तो क्रोधित होकर हम विद्रोह करेंगे। इस प्रकार का हमारा प्रत्येक विद्रोह ब्रिटिश-साम्राज्य-प्राण के प्रत्येक कण का क्षय करता रहेगा। साम्राज्य का विनाश होता रहेगा।

बलवाइयों के लिए यह कहते समय हमें उनकी त्रुटियों की ओर से अपनी आँखें न मूंद लेनी चाहिए। दूसरी बार हमें इससे भी अच्छे पैमाने पर अपना काम करने का ज्ञान होना चाहिए।

(१) बम्बई में बलवाइयों ने सम्पत्ति की बहुत बड़ी हानि की थी। कभी भी न थकनेवाले शब्दों से इसकी आलोचना होनी चाहिए। कारण यह है कि एक सीधी सी बात है कि कोई भी सम्पत्ति, चाहे वह सरकार की हो चाहे म्युनिसिपैलिटी की, आखिरकार देश की सम्पत्ति है। अँगरेज आज यहीं हैं; कल यहां से चले जायेंगे। यदि हम आग लगाते हैं, तो उनकी कोई भी हानि नहीं। हमीं होंगे जिनको जली हुई चीज की मरम्मत करवाने अथवा उसको फिर से बनवाने का भार वहन करना पड़ेगा। इतना ही नहीं, बल्कि जनता की चीजों को नष्ट कर देने से उनको एक बहाना मिल जाता है, जिसको लेकर वे पुलिस और मिलिटरी का प्रयोग करने लगते हैं और हमें घास की तरह काटने लगते हैं। अवसर पाने पर अपने नजबूत दाँतों और तीखे चंगुल को दिखाकर वे हमें भयभीत करना और दबा देना चाहते हैं। हम जभी हिंसात्मक रूप से उभड़ पड़ते हैं तभी उनकी इस कूटनीति के शिकार हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त ख़ाली हाथों के या ईंटों के बल पर हिंसात्मक प्रयत्न करना हमारे लिए केवल मूर्खता ही है, और वह भी जब हम जानते हैं कि हमारा विरोधी गोलियों और मशीनगनों से सरलतापूर्वक हमें भून सकता है। अतः हिंसा और अहिंसा के नैतिक पक्ष के अलग रखकर भी यदि हम देखें तो हमारा लाभ इसी में मालूम होगा कि हिंसा के चिह्न मात्र को भी न अपनायें, और अहिंसात्मक ढंग पर अपने पूरे आक्रमण की योजना बनाएं।

सरदार वल्लभ भाई पटेल, जिन्होंने बम्बई के दंगे की स्थिति को संभाला था।

उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि यदि हमें अहिंसात्मक ढंग पर बम्बई के इसी आर० आई० एन० हड़ताल को चलाना होता, तो हम कैसे चलाते? जब हड़तालियों को यह मालूम हुआ था कि अधिकारी उनकी शिकायतों की उपेक्षा कर रहे हैं, तो उनके लिए सबसे अच्छा ढंग यह था कि वे अपनी बात किसी जन-संस्था के सम्मुख रखते, जो पूर्ण रूप से उसको उठा सकती थी, और वे स्वयं उसके निर्णय के अनुसार कार्य करते। शहर में और देश में सबसे बड़ी जन-संस्था निश्चय रूप से कांग्रेस ही है; और बलवाइयों ने अच्छा ही किया कि अन्त में वे इसके सम्पर्क में आ गये। उद्देश्य को अपने ऊपर लेने और उसके अनुसार ही कार्य करने की अपेक्षा नगर की जनता ने इसको अधूरा ही छोड़ दिया होता। कांग्रेस ने उनकी शिकायतों को लेकर अधिकारियों से बातचीत की होती (जैसा कि वह अब कर रही है) और शान्तिपूर्वक निर्णय करा दिया होता। यदि ऐसा सम्भव न होता तो यह उसका उत्तरदायित्व होता कि अब आगे कौन-सा क़दम उठाया जाय और हड़तालियों को क्या सलाह दी जाय। जहाँ तक इस प्रश्न के राजनीतिक पहलू का संबंध है, कांग्रेस उस पर पहले ही से विचार कर रही है और यह अच्छी तरह जानती है कि कहाँ और कब आघात करना चाहिए। जो कुछ भी हो, यह इतना बड़ा प्रश्न है कि सिर्फ़ यहाँ-वहाँ होनेवाले इक्के-दुक्के हिंसात्मक विद्रोहों द्वारा हल नहीं किया जा सकता। यह संपूर्ण संयुक्त राष्ट्र द्वारा ही हल किया जा सकता है और इस कारण इसे उन्हीं को सौंपना चाहिए जो अनुभव और ज्ञान के द्वारा इसे अखिल राष्ट्रीय पैमाने पर कर सकने की योग्यता से युक्त हों। किसी भी छोटे दल के लिए यह चीज बेसूद है कि जब कभी उसे अँगरेजी शासन के द्वारा चोट लगे, तो वह स्वयं इधर-उधर

—शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

कवि की होली

लेखक, श्री गंगाप्रसाद पांडेय, एम० ए०

स्वप्न में तुम सकुच आईं प्राण मिलने रात होली,
जग पड़ीं कलियां अचानक मलय मंद बतास डोली!

एक कर में कुसुम कुमकुम दूसरे में रंग-झोली,
मद भरे आकुल उनींदे नयन में मनुहार भोली!

तृप्ति की तृष्णा हृदय में अधर में आकुल पिपासा,
अंग-अंग अनंग पुलकित मुग्ध मन में मिलन आशा!

पैर के पायल झमकते नृत्यमय गति से निरन्तर,
रूप की साकार सुषमा शशि-किरण-सी स्निग्ध सुन्दर!

उर-उमंगों की तरंगों में घुली नभ की उजाली,
आज संसृति भी सिहरती देख पूरित प्रेम-प्याली!

मैं प्रतीक्षा का पुजारी एक क्षण को भी न खोया,
पा तुम्हें प्रिय पास अपने सत्य सपने को सँजोया!

आ गइ तुम कह पड़ा मैं, किन्तु तुम कुछ भी न बोली,
स्तब्ध-सा तब जग पड़ा मैं देखता बस रंग-रोली!

फिर वही शाश्वत प्रतीक्षा औ' तुम्हारी यह ठिठोली,
कह रहे सब धन्य है कवि, यह तुम्हारी स्वप्न होली!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष रूप से 'देशदूत' के लिए

आल इंडिया रेडियो की नई चाल

क्या हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन अब समझौता करने की ओर जा रहा है ?

लेखक, श्री रविशंकर शुक्ल, बी० ए०, एल-एल० बी०

आल इंडिया रेडियो की भाषा-संबंधी नीति में सुधार के लिये सरकार की ओर से पिछले दिनों एक परामर्शदात्री समिति के निर्माण की घोषणा की गई है। इस लेख में विद्वान लेखक ने भली-भाँति समझाने का प्रयत्न किया है, रेडियो अधिकारियों की नई चाल क्या है ? उससे हिन्दी-संसार की माँगों और भाषा-सुधार की माँगों की क्या वास्तविक पूर्ति होती है ? साथही लेखक ने यह भी बतलाया है कि हिन्दी-संसार तथा रेडियो विभाग में समझौता किस आधार पर किया जा सकता है। लेख अत्यंत सामयिक और विचारणीय है, विशेष कर ऐसे अवसर पर जब कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन की दिल्ली में होनेवाली स्थायी समिति में इस संबंध में विचार-विनिमय होनेवाला है।

आल इंडिया रेडियो की भाषा-संबंधी नई घोषणा के द्वारा रेडियो की हिन्दुस्तानी विषयक नीति में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं किया गया है। केवल 'हिन्दुस्तानी' की शब्दावली के विषय में आल इंडिया रेडियो के डाइरेक्टर जनरल को परामर्श देने के लिए एक, स्थायी परामर्श-समिति बनाने की घोषणा की गई है। इस समिति में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, अंजुमन उर्दू और हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा के प्रतिनिधि होंगे और कुछ सदस्य डाइरेक्टर जनरल नामजद करेंगे। ख़बरों के अतिरिक्त शेष प्रोग्राम हिन्दी और उर्दू में हो सकते हैं परन्तु ख़बरें केवल 'हिन्दुस्तानी' में होंगी।

गवर्नमेंट-द्वारा प्रस्तावित स्थायी परामर्श-समिति में सम्मेलन के प्रतिनिधियों का शामिल होना सम्मेलन के गत मार्चवाले प्रस्ताव के आशय के विरुद्ध तो होगा ही, गलती भी होगी। हिन्दुस्तानी गढ़ने के कितने ही प्रयत्न हो चुके हैं परन्तु सब विफल हुए। सरकार की चाल यह है कि इसमें सम्मेलन को उलझाकर मामला ख़त्म कर दिया जाय। ऐसी हिन्दुस्तानी जो सम्मेलन को मान्य हो, अंजुमन उर्दू को कदापि मान्य न होगी, झगड़ा ऐसा ही बना रहेगा और अन्त में सम्मेलन के प्रतिनिधियों को त्याग-पत्र देना पड़ेगा। परन्तु उस समय हमारे आन्दोलन और विरोध में उतना बल न होगा जितना आज है। हिन्दी-संसार और जनता का समर्थन भी हम बहुत हद तक खो बैठेंगे और स्थिति को पुनः अपनी पुरानी हालत पर आना कठिन हो जायगा। हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा के प्रतिनिधियों को भी वह हिन्दुस्तानी मान्य होगी—कम से कम वे ऐसी हिन्दुस्तानी के विरुद्ध कुछ कहने का साहस न करेंगे—जिसमें शब्द 'ऐलान', 'आखरी', 'बजाह', 'मुताबिक', 'मुकर्रर', 'खत', 'शहर', 'जगह' आदि आदि आयेंगे, 'घोषणा', 'अन्तिम', 'कारण', 'अनुसार', 'नियत', 'पत्र', 'नगर', 'स्थान' कभी नहीं। जनवरी, १९४६ की 'हिन्दी' में श्री भूदेव विद्यालंकार का 'वर्धा की हिन्दुस्तानी' शीर्षक लेख पढ़कर इसमें शक करने की कोई गुंजाइश नहीं रह जाती। केवल पारिभाषिक शब्दों का मामला नहीं है। समाचारों की*, दिल्ली से नित्य ६-२५ पर होनेवाले 'मक़ामी ऐलान' की, स्त्रियों और बच्चों के संचालकों की और बी० बी० सी० की 'हिन्दुस्तानी' सुनकर समझ में नहीं आता कि बिना आमूल परिवर्तन किये इस भाषा में सुधार होना किस प्रकार संभव है; परन्तु 'हिन्दुस्तानी' नाम रहते कोई विशेष परिवर्तन हो नहीं सकता। हिन्दी और उर्दू में केवल कुछ शब्दों का ही अन्तर नहीं है। दोनों की प्रकृति अलग है, शैली अलग है, बहुत हद तक मुहावरे अलग हैं, कितने ही शब्दों के उच्चारण अलग हैं, और संस्कृति तो अलग है ही।

'गाड' का अनुवाद ईश्वर होगा या 'ख़ुदा' 'फ़ाइडे', का अनुवाद 'शुक्र' होगा या 'जुमा' ? क्या इन बातों पर समझौता होना संभव है ? 'हिन्दुस्तान', 'हिन्दुस्तानी', 'बलगेरिया', 'बाल्कन', 'ग्रेलग्रेड', 'चौरासी', 'बउअन', 'चौवालिस', 'उनतिस', 'सत्तावन', इत्यादि बोले जायेंगे या 'हिन्दोस्तान', 'हिन्दोस्तानी', 'बलगारिया', 'बल्कान', 'बलग्राड', 'चवरासी', 'चव्वन', 'चवालिस', 'उनतिस', 'सतावन', ? 'ब्रिटेन' होगा कि 'बरतानिया' ? 'इलाहाबाद' होगा कि 'अलाहाबाद' ? 'बिदेशी', 'व्यापार', 'देश', 'समुद्र', 'सामाजिक' होगा कि बदेसी', 'बेपार', 'देस', 'समन्दर', 'समाजी' ?* 'हिन्दुस्तानी' की कोई साहित्यिक परंपरा तो है नहीं, फिर इन सब बातों का निर्णय कैसे होगा ? जिस किसी सिद्धान्त का प्रतिपादन परामर्श-समिति करेगी, उसके पालन की आशा वर्तमान उर्दूवाले समाचार-सम्पादकों और समाचार-घोषकों से किस प्रकार की जा सकती है और 'हिन्दुस्तानी' के रहते इन लोगों को बदलवाना किस प्रकार संभव है ? रोज़-रोज़ एक-एक शब्द के बारे में कौन झगड़ा करेगा और कौन सुनेगा ?

पारिभाषिक शब्दों के मामले में भी कुछ पारिभाषिक शब्दों के हिन्दी उर्दू से भिन्न पर्याय गढ़े जायेंगे और शेष में हिन्दी और उर्दू को किसी अनुपात में प्रतिनिधित्व मिलेगा। सारांश यह कि जैसी 'हिन्दुस्तानी' आज है वैसी ही बनी रहेगी। केवल दो-चार हिन्दी शब्द इधर-उधर और धर दिये जायेंगे। आजकल की परिस्थिति को देखते हुए इस हिन्दुस्तानी को हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा का समर्थन मज़े में मिल जायगा। वैसे भी परामर्श-समिति में श्री बोखारी-द्वारा नामजद सदस्य ऐसे और इतने होंगे कि सम्मेलन के प्रतिनिधि अकेले पड़ जायेंगे। यदि उस समय सम्मेलन के प्रतिनिधियों को अलग होना पड़ा तो सारे संसार के सामने घोषित किया जायगा कि हिन्दुस्तानी तो बन गई और उसे सबने मान भी लिया, बस केवल सम्मेलन नहीं मानता, और फिर वही हिन्दुस्तानी चलती रहेगी। इस मायाजाल में फँसने और समय नष्ट करने से यह कहीं अच्छा है कि अभी ही कहा जाय कि भारत के रेडियो से उस भाषा में ख़बरें तथा अन्य सरकारी प्रोग्राम देने ही पड़ेंगे जिसका नाम 'हिन्दी' है और उस भाषा का स्थान कोई दूसरी भाषा या 'शैली' नहीं ले सकती और न उसके शब्दों का स्थान कोई दूसरे शब्द ले सकते हैं। जब बँगला, मराठी आदि में ख़बरें हो सकती हैं तो हिन्दी—जैसी भी हिन्दी है—के साथ ही क्या बात है, उसी के साथ दुनिया भर के झगड़े क्यों लगाये जाते हैं ? जब अन्य प्रोग्राम हिन्दी में हो सकते हैं तो ख़बरें भी क्यों नहीं हो सकतीं ? इन तर्कों का उनके पास उत्तर नहीं है, परन्तु ये तर्क तभी काम दे सकते हैं जब हम उन्हें अभी ही काम में लायें। परामर्श-समिति में और हिन्दुस्तानी बनाने के काम में (और वह भी हिन्दी के स्थान में प्रयुक्त करने के लिए) एक बार शामिल होकर परन्तु बाद को असन्तुष्ट हो परामर्श-समिति से निकलने के बाद, इन तर्कों की जान निकल जायगी। फिर, कम से कम हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को इस बात का अधिकार ही नहीं है कि वह किसी स्थल पर हिन्दी के स्थान में परंपरागत हिन्दी—वह भाषा जिसका बोध 'हिन्दी' नाम से होता है—को छोड़कर किसी भी भिन्न खड़ी बोली के उपयोग के लिए स्वीकृति दे दे।

यह बात तो समझ में आती है कि चार में से दो समाचार बुलेटिन हिन्दी में लिखे जायें, देवनागरी में हिन्दी के सुयोग्य सम्पादक लिखें, 'हिन्दी' के नाम से पुकारे जायें, हिन्दी जाननेवाले घोषक उन्हें पढ़कर सुनायें; परन्तु उनमें अपेक्षाकृत कठिन पारिभाषिक शब्दों का अर्थ उन शब्दों के साथ स्पष्ट कर दिया जाय या उनके उर्दू पर्याय साथ-साथ दे दिये जायँ और शेष दो बुलेटिन इसी प्रकार उर्दू में उर्दूवालों-द्वारा लिखे जायें और कठिन उर्दू शब्दों के उनका अर्थ या उनके हिन्दी पर्याय दे दिये जायँ। परन्तु यह संदिग्ध है कि सम्मेलन को हिन्दी की साधारण शैली में इस उलट-फेर करने की अनुमति देने का अधिकार है या नहीं। वैसे भी हम इसके विरोधी हैं कि हिन्दी के समाचारों में इस प्रकार उर्दू पर्याय देकर हिन्दी जगत् में उर्दू शब्दों का प्रचार किया जाय और हिन्दी वालों को उर्दू सीखने के लिए मजबूर किया जाय।

यह माना जा सकता है कि परामर्श-समिति में सम्मेलन के प्रतिनिधियों के सम्मिलित होने से कुछ बातों में लाभ हो, परन्तु सिद्धान्त की दृष्टि से हिन्दी को बहुत गहरी हानि होगी। केवल हिन्दुस्तानी में समाचार ब्राडकास्ट होने के—इस बात के अतिरिक्त कि वह हिन्दुस्तानी प्रकारान्तर से उर्दू ही होगी या रहेगी—सिद्धान्त की दृष्टि से दो पहलू हैं। प्रथम तो यह कि 'हिन्दुस्तानी' के रहते आल इंडिया रेडियो प्रोग्राम स्टाफ में अथवा प्रोग्राम स्टाफ की भरती-संबंधी नीति में कोई परिवर्तन करने के लिए बाध्य न होगा। यह नियम कि उम्मीदवार हिन्दी या उर्दू पढ़ा हुआ हो, ऐसा ही बना रहेगा। उम्मीदवार चुननेवाले होंगे श्री बोखारी अर्थात् केवल उर्दू के पंडितों और श्री बोखारी के दोस्तों और संबंधियों के लिए द्वार इस प्रकार खुला रहेगा और हिन्दीवालों को इसी प्रकार दूर रक्खा जा सकेगा। वर्तमान प्रोग्राम स्टाफ का ज्ञान इतना विस्तृत है कि उन्हें हिन्दी के दो-चार महान् कवियों और उनके प्रसिद्ध ग्रन्थों के नाम भी नहीं मालूम हैं। इन्हीं लोगों की परिवरिश के लिए रेडियो 'हिन्दुस्तानी' की आड़ के लिए इतना परेशान रहता है। दूसरा पहलू एक बहुत घातक सिद्धान्त से संबंध रखता है। हिन्दी में समाचार ब्राडकास्ट न होने का अर्थ है कि हिन्दी का कोई आफिशियल अस्तित्व नहीं है और सरकार आफिशियल तौर पर हिन्दी को स्वीकृत नहीं करती—आफिशियल भाषा "हिन्दुस्तानी' है। नान-आफिशियल प्रोग्रामों को हिन्दी में होने की छूट इसलिए दे दी गई है कि बाहरी लेखकों को सरकारी भाषा 'हिन्दुस्तानी' में लिखने के लिए बाध्य करना संभव नहीं है। जब समाचार केवल 'हिन्दुस्तानी' में होंगे तो यह तो स्पष्ट ही है कि अन्य सरकारी प्रोग्राम भी अर्थात् वे प्रोग्राम जिनको रेडियो का वेतनभोगी स्टाफ लिखता है, केवल 'हिन्दुस्तानी' में होंगे। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि भारत की भावी सरकार अर्थात् कांग्रेस ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा पद से निकालने का दृढ़ निश्चय कर लिया है, परन्तु यह हिन्दी को प्रान्त या प्रादेशिक भाषा के पद से भी निकालने की ओर पहला क़दम है। आज कहा जा रहा है कि सरकारी प्रसार हिन्दी में नहीं होंगे, 'हिन्दुस्तानी' में होंगे। कल कहा जायगा कि युक्त-प्रान्त की राजभाषा अर्थात् सरकारी काम-काज की भाषा 'हिन्दुस्तानी' होगी, हाँ, जो नागरिक चाहे वह हिन्दी में बोल सकता है और हिन्दी में अर्जी दे सकता है। इसका क्या परिणाम होगा, यह सोचने की बात नहीं है। हिन्दुस्तानीवाद

शेष पृष्ठ १३ पर देखिए

* ५ फरवरी, १९४६ की रात को जो समाचार ब्राडकास्ट हुए उनमें घोषणा संबंधी ही दो वाक्य ये थे—"हिन्दुस्तानी ज़बान के लिए लफ़्ज़ों के इन्तख़ाब के मुताल्लिक आल इंडिया रेडियो के डाइरेक्टर जनरल को मशविरा देने के लिए गवर्नमेंट आल इंडिया ने एक मुशावरती कमेटी मुक़र्रर करने का फ़ैसला किया है। हिन्दुस्तानी ज़बान का जो लेक्सीकन आल-इंडिया रेडियो ने बनाया है, उसे भी मुल्क के माहिरों और क़ाबिल लोगों के पास राय के लिए भेजा जायेगा।"

पाठकों को ध्यान देना चाहिए कि इन दो वाक्यों में क्रियाओं और विभक्तियों को छोड़कर कितने शब्द वास्तव में हिन्दुस्तानी के अर्थात् ऐसे हैं जिनकी भारत ही जन्म-भूमि है ?

* रेडियो की हिन्दुस्तानी में रेखांकित शब्द चलते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष रूप से 'देशदूत' के लिए

दक्षिण-भारत हिन्दी-प्रचार सभा

रजतजयंती-समारोह के अवसर के मनोरंजक संस्मरण

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

पिछले महीने में दक्षिण-भारत हिन्दी-प्रचार सभा का रजतजयंती समारोह महात्मा गांधी की अध्यक्षता में धूमधाम से सम्पन्न हुआ था। प्रसिद्ध पत्रकार श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी भी वहाँ उपस्थित थे। इस लेख में विद्यार्थीजी ने समारोह के अवसर के आँखों देखे वर्णन किये हैं और कई संस्मरणों का उल्लेख किया है जो अत्यंत रोचक, जानकारी से परिपूर्ण और सुन्दर हैं।

पिछले महीने में दक्षिण भारत हिन्दी-प्रचार-सभा ने अपनी रजतजयन्ती मनाई थी। उसी मौके पर उसने एक हिन्दुस्तानी सम्मेलन का भी आयोजन किया था। अपनी सभा का नाम भी हिन्दुस्तानी नाम से चलाने की घोषणा की।

दक्षिण-भारत में हिन्दी-प्रचार सभा का नाम बहुत प्रसिद्ध हो गया है। सत्ताईस वर्षों से यह सभा वहाँ हिन्दी का प्रचार करती आ रही है। सभा के प्रमुख महात्माजी हैं। महात्मा जी के सतत प्रयत्नों से वहाँ काफी काम हुआ है। हिन्दी के बहुत से कार्यकर्त्ता पैदा हुए हैं। हिन्दी के प्रति लोगों में श्रद्धा बढ़ी है। सत्ताईस वर्षों के भीतर बहुत कुछ काम हुआ है। सभा का अपना इतिहास है। वहाँ के कार्यकर्ताओं का घोर परिश्रम है।

दाताओं ने भी हिन्दी-प्रचार के कार्य में अच्छा पैसा दिया है, लेकिन दक्षिण के चार प्रान्तों को देखते हुए यह दान बहुत अल्प मालूम होता है। यहाँ लाखों रुपयों की जरूरत है। यदि दक्षिण भारत हिन्दी जान गया, समझ गया, पढ़ सका तो समझ लेना चाहिए, सारा हिन्दुस्तान राष्ट्र-भाषा समझ गया। यहाँ के लोगों के लिए हिन्दी या हिन्दुस्तानी बहुत कठिन है। असल में यदि हिन्दुस्तानी ने मद्रास का गढ़ जीत लिया तो हिन्दुस्तान को वह आसानी से फतह कर सकता है।

स्वर्गीय जमनालालजी राष्ट्र-भाषा की शक्ति को पहचान गये थे। दक्षिण की शक्ति को जान गये थे। दक्षिण-भारत में राष्ट्र-भाषा प्रचार करने के लिए उन्होंने काफी समय और रुपया खर्च किया। मद्रास के लोग जमनालालजी के नाम से खूब परिचित थे।

उत्तर-भारत के पं० हृषीकेश शर्मा, अवधनन्दन शर्मा, व्रजनन्दन शर्मा, स्व० बापूनाप्रसाद श्रीवास्तव, श्री रामानन्दजी शर्मा और रघुवरदयालजी मिश्र आदि ने बहुत परिश्रम से दक्षिण-भारत के लोगों को राष्ट्र-भाषा से परिचत कराया। प्रारम्भ में इन लोगों ने कड़ी से कड़ी मुसीबत उठाकर वहाँ के लोगों को हिन्दी पढ़ायी। अनुमान लगा सकते हैं, जब दक्षिण-भारत में हिन्दी के जाननेवाले अँगुलियों पर गिने जा सकते थे, तब से इन लोगों ने वहाँ के लोगों को बिना किसी भेद-भाव के घोर परिश्रम से राष्ट्र-भाषा सिखलाई। इन लोगों ने वहाँ की भाषा सीखी। बोली सीखी। पहनावा पहना। वहाँ की रहन-सहन में अपने को खपा दिया। मिशनरी की तरह रहकर वहाँ राष्ट्र-भाषा का प्रचार किया। इन लोगों के परिश्रम को कभी भुलाया नहीं जा सकता है।

श्री रामानन्दजी शर्मा ने केवल हिन्दी ही नहीं सिखलाई, बल्कि वहाँ बहुत से हिन्दी-साहित्यिक भी पैदा किये हैं। इन लोगों के अकथनीय परिश्रम से बहुत से साहित्यिक वहाँ पैदा हो गये हैं। आन्ध्र, तामिल, केरल और कर्नाटक की कविताएँ हिन्दी में अच्छे लेख लिख लेती हैं। आन्ध्र के दो-तीन भाइयों से मिलने का मौका मिला। एक भाई तो हिन्दी में बहुत सुन्दर कविता करते हैं। आपकी कविता से कविवर पं० सुमित्रानन्दन पंत भी काफी प्रभावित हुए हैं। दक्षिण-भारत में हिन्दी जाननेवालों की काफी संख्या पैदा हो गई है। वहाँ के कार्यकर्ताओं में हिन्दी के प्रति बड़ी श्रद्धा है।

जन-साधारण लोग हिन्दी नहीं समझते। कांग्रेस के कार्यकर्ता भी राष्ट्र भाषा नहीं समझ सकते हैं, लेकिन राष्ट्र-भाषा सीखने के लिए काफी प्रयत्नशील हैं। कांग्रेस का काम हिन्दी में होने से इन लोगों की पूरी कोशिश है कि राष्ट्र-भाषा समझने और बोलने की शक्ति आ जावे।

हिन्दी-प्रचार-सभा के हाते में अँगरेजी साइनबोर्डों को देखकर बड़ी घृणा होती थी। अपनी प्रन्तीय भाषा में साइनबोर्ड लगा सकते थे। कई जगहों पर हिन्दी और प्रन्तीय भाषाओं में बोर्ड लगे थे लेकिन बाज जगहों पर अँगरेजी का भी प्रयोग हुआ था। इससे मालूम होता था कि अँगरेजी के प्रति हमारा मोह अभी नहीं गया।

सभा ने बड़ी तरक्की कर ली है। स्वयं का प्रेस है। स्वयं का मकान है। सभा आज अपने पैरों पर खड़ी है। सभा के पास सैकड़ों कार्यकर्ता हैं। हिन्दी-प्रचार के लिए सारे प्रान्त में बहुत से कार्यकर्ता फैले हुए हैं। कुछ सभा के अनुशासन में रहकर राष्ट्रभाषा का प्रचार करते हैं, कुछ स्वतंत्र रीति से अपने प्रान्तों में कार्य कर रहे हैं। हर तरह के कार्यकर्ता सम्मेलन में आये थे। लेकिन सारे प्रचारक हिन्दी-प्रचार-सभा के प्रमाण-पत्र से काम करते हैं। हिन्दी-प्रचार-सभा के प्रति उनकी निष्ठा है। सभा की आज्ञाओं को मानते हैं। हर तरह से सभा की आज्ञा पर चलने की कोशिश करते हैं।

इस लेख के लेखक श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी।

उत्तर-भारत के अपने माननीय गुरुजनों के प्रति उनमें बड़ी भक्ति है। पं० हृषीकेशजी शर्मा कई वर्षों के बाद सभा के उत्सव में सम्मिलित हुए थे। उनको देखते ही पुराने छात्र हाथ जोड़कर नमस्कार करते थे और कहते थे पंडितजी, आपकी मेहनत से अब हम लोगों को हिन्दी लिखना और बोलना आ गया है। इन शब्दों को सुनकर पंडितजी का हृदय भर आता था। अपने लगाये हुए पौदों को हरा-भरा देख, किसका हृदय नहीं भर आयेगा। बहुत सी बहनें भी अच्छी हिन्दी बोल लेती थीं। बहनों की हिन्दी बड़ी मीठी और सरल होती थी। वहाँ की महिलाओं में हिन्दी के प्रति अच्छा प्रेम है। सभा की कई मीटिंगों में आन्ध्र, तामिल, केरल और कर्नाटक की बहुत सी बहनों ने अच्छा भाग लिया। कुछ बहनों ने राष्ट्र-भाषा में भाषण भी दिया। राष्ट्र-भाषा की प्रगति दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

कर्नाटक के प्रसिद्ध प्रचारक सिद्धनाथ पंत बड़े उत्साही राष्ट्र-भाषा प्रेमी हैं। आप आदि-प्रचारकों में से हैं। कर्नाटक में राष्ट्र-भाषा के लिए आपने बहुत काम किया है। कर्नाटक प्रान्त में आपने सैकड़ों राष्ट्र-भाषा-प्रचारक पैदा किये हैं। आपके तैयार किये हुए कई प्रचारकों से मिलने का मौका वहाँ आया। बड़ी अच्छी हिन्दी बोलते-लिखते हैं। राष्ट्र-भाषा की लिपि से कर्नाटक को भली भाँति परिचित करा देने के लिए आप सब कटिबद्ध हैं। एक प्रचारक ने कहा, हम कर्नाटक के बच्चे-बच्चे को राष्ट्र-भाषा सिखा देंगे। राष्ट्र-भाषा की शक्ति को पहिचान गये हैं। नवयुवकों में राष्ट्र-भाषा के लिए बहुत प्रेम है। लेकिन राज-भाषा अँगरेजी होने से अँगरेजी का मोह जल्दी छूट नहीं रहा है।

सुप्रसिद्ध कलाकार श्री नन्दलाल बोस द्वारा अंकित, महात्मा गाँधी की यात्रा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे वहाँ कई कार्यकर्ता ऐसे भी मिले जो राष्ट्र-भाषा सीखकर आज अपने प्रान्त में वहीं काम कर रहे हैं। हिन्दी पढ़ाकर अपनी जीविका भी चला लेते हैं। मद्रास प्रेसीडेन्सी के नगरों में हिन्दी सीखने का उत्साह दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। आन्ध्र प्रान्त के लोगों में राष्ट्र-भाषा के लिए बड़ा मान है। राजमहेन्द्री ऐसे शहरों में कई प्रचारक हिन्दी सिखाकर अपनी जीविका अच्छी तरह चला रहे हैं। बड़े बड़े लोग हिन्दी को पढ़ना पसन्द करते हैं। घर की महिलायें भी हिन्दी सीखती हैं।

लेकिन अभी तो वहाँ बहुत हिन्दी या हिन्दुस्तानी का काम होने के लिए पड़ा है। हजारों में बस-पाँच हिन्दी जान या बोल लेते हैं। इससे हमारा काम नहीं होनेवाला है। समुद्र में बूँद के समान यह काम है। हमें तो पूरे प्रान्त को हिन्दुस्तानी सिखाना है। एक दूसरे प्रान्त का काम हिन्दुस्तानी या हिन्दी में आसानी से चल सके, ऐसा वातावरण पैदा करना है। वहाँ के लोगों को ऐसा तैयार होना चाहिए कि बाहर के लोगों के आने पर यह बिलकुल अनुभव न हो सके कि बिना अँगरेजी के यहाँ काम नहीं हो सकता। आज तो वहाँ बिना अँगरेजी जाने पानी भी मिलना हमारे ऐसे लोगों को कठिन है। पग पग पर अँगरेजी जानना या प्रान्तीय भाषा जानना आवश्यक है। राष्ट्र-भाषा के बल पर हम दक्षिण-भारत के प्रान्तों का भ्रमण आज बिलकुल नहीं कर सकते। एक सड़क का नाम भी आसानी से नहीं जान सकते। राष्ट्र-भाषा के लिए वहाँ बड़ी कठिनाई है। लेकिन आशा है वह दिन जल्दी आ रहा है, जब हम अपना भ्रमण राष्ट्र-भाषा जानकर भी वहाँ की यात्रा कर सकते हैं। वहाँ के युवकों का परिश्रम कभी बेकार नहीं जायेगा। उनकी लगन के सामने बड़ी से बड़ी कठिनाइयाँ हल हो जावेंगी।

अब वहाँ ठोस और गहराई से काम करने की जरूरत है जिससे जड़ों को पानी मिले और बहुत-सी नई शाखायें निकल कर फलें-फूलें।

गांधीजी की नई हिन्दुस्तानी के प्रति भी लोगों में काफी उत्साह है। वे नई हिन्दुस्तानी को सीखना चाहते हैं। इसकी खूबियाँ जानने के लिए उत्सुक हैं। लड़कियाँ भी नई हिन्दुस्तानी सीखना चाहती हैं। सम्मेलन के अवसर पर बहुत से लड़के और लड़कियों ने नई हिन्दुस्तानी का प्रमाण-पत्र गांधीजी से प्राप्त किया। गांधीजी को उन लोगों ने विश्वास दिलाया कि हम आपकी नई हिन्दुस्तानी को अच्छी तरह से सीखने की कोशिश करेंगे।

रजतजयंती-सभा में हजारों लोग उपस्थित हुए थे। महात्माजी के भाषण के लिए लालायित थे। उपस्थित होनेवाले सब हिन्दी नहीं समझ सकते थे, फिर भी शान्त बैठे हुए थे। हिन्दी न समझ सकने के कारण कितने ही अपने भाग्य को कोस भी रहे थे। अफसोस जाहिर कर रहे थे कि महात्माजी का मूल भाषण नहीं समझ सकते। महात्माजी के दर्शन से संतोष प्रकट कर रहे थे।

महात्माजी ने साफ़-साफ़ कह दिया कि मैं जानता हूँ कि आप सब लोग हिन्दी नहीं समझ सकते। लेकिन आप सबको मेरी भाषा समझने के लिए कोशिश करनी चाहिए। मैं तो अँगरेजी जानता हूँ, लेकिन यहाँ अँगरेजी का उपयोग करने नहीं आया हूँ। (सब लोग हँसने लगे) आप सबसे मैं यही कहूँगा कि दिल लगाकर आप मेरी भाषा सीख लें। हिन्दुस्तानी सीखने में आपको कठिनाई नहीं होनी चाहिए। आप अपनी माता को भूलकर जिन्दा नहीं रह सकते। आपको अन्तर्प्रान्तीय काम के लिए हिन्दुस्तानी का उपयोग करना चाहिए। आप अपनी प्रान्तीय भाषा न भूलें। मैं प्रान्तीय भाषा भूलने के लिए आपसे कहना भी नहीं चाहता हूँ। प्रान्तीय भाषाओं को खूब फूलना-फैलना है। लेकिन एक दूसरे प्रान्त का काम आप हिन्दुस्तानी में करें। ऐसा होने से आपसी संघर्ष मिट जावेगा। सबका सम्बन्ध मीठा हो जावेगा। अँगरेजी का मोह बिलकुल भूल जाना है। पराई भाषा को महत्त्व नहीं देना है। आप अपनी माता को पहचानें। राष्ट्र-भाषा हिन्दुस्तानी को सीखकर आप देश की बड़ी सेवा कर सकते हैं।

महात्माजी जहाँ कहीं भी भाषण करने जाते थे, सब जगहों पर उन्होंने हिन्दुस्तानी में भाषण किया। भले ही गांधी जी की भाषा कोई न समझे या समझे लेकिन उन्होंने कह दिया, मैं यहाँ अँगरेजी का बिलकुल उपयोग नहीं करूँगा। आपको मेरी भाषा समझनी चाहिए। लाखों की भीड़ में भी उन्होंने हिन्दुस्तानी में ही बोलना पसन्द किया। और कहा, जो भाई बहन मेरी भाषा न समझ सकें उनको चाहिए जो मेरी भाषा समझते हैं उनसे सब समझ लें।

गांधीजी के इस प्रण से वहाँ के लोगों में हिन्दुस्तानी सीखने के लिए बहुत उत्साह पैदा हो गया। लोगों ने महसूस किया, यदि राष्ट्र-भाषा नहीं समझेंगे तो अपने माननीय नेताओं के मूल भाषणों से अलग रहना होना। गांधीजी की चेतावनी को सबने समझा। आनेवाले समय को पहचाना। देश की कैसी कायापलट होगी, इसको समझा। राष्ट्र-भाषा की ताकत कितनी बढ़ेगी, इसको भी माना। दक्षिण-भारत के लोग यह भली प्रकार समझ गये, राष्ट्रीय सरकार में राष्ट्र-भाषा की शक्ति बहुत बढ़ेगी। राष्ट्र की जैसे-जैसे उन्नति होती जायगी वैसे-वैसे राष्ट्र-भाषा का महत्त्व भी बढ़ता जायगा। अँगरेजी भाषा यहाँ की राज्य भाषा कभी बन नहीं सकती। आज इस बात को सभी मान गये हैं कि यहाँ की राष्ट्र-भाषा हिन्दुस्तानी ही होगी। और वह हिन्दुस्तानी, अरबी, फ़ारसी या संस्कृत मिश्रित तो कभी हो ही नहीं सकती। हिन्दुस्तानी भाषा सरल से सरल और मुहावरेदार होगी। एक मामूली किसान भी वह भाषा समझ सके। दिल्ली रेडियो की भाषा हिन्दुस्तानी नहीं हो सकती। उस भाषा को तो कभी कभी अरबी-फ़ारसी जाननेवाले विद्वान् भी नहीं समझते।

गांधीजी ने ठीक ही कहा था कि हिन्दुस्तानी भाषा एक-दो लाख आदमी मिलकर नहीं बनायेंगे; उसे तो आम जनता बनायेगी। वह करोड़ों की भाषा होगी। प्रचलित शब्दों का बहिष्कार नहीं होगा। साइकिल की जगह 'पैर चक्की' चलना कठिन है। जनता साइकिल ही कहेगी। मोटरगाड़ी शब्द नहीं हटाया जा सकता है। रेलगाड़ी शब्द बहुत प्रचलित है, इसको क्यों हटाया जाय। एक किसान भी रेलगाड़ी शब्द समझता है।

महात्माजी के सामने एक बार अँगरेजी में लिखा प्रोग्राम आया। महात्मा जी ने तुरन्त कहा, मैं इसको सहन नहीं कर सकता हूँ। मैं यह जानता हूँ कि यहाँ जितने भाई-बहन आये हैं, सब हिन्दुस्तानी नहीं समझते हैं; लेकिन मैं तो कहूँगा आप यह प्रोग्राम अपनी प्रान्तीय भाषा में छापें। अँगरेजी का तो बिलकुल प्रयोग नहीं करना है। अब से अँगरेजी का मोह छोड़ देना है। महात्माजी की आज्ञा से तुरन्त ही प्रान्तीय भाषाओं में सभा का प्रोग्राम प्रकाशित हुआ।

हर एक सभा में महात्माजी ने सबको यही समझाया कि आप लोगों को पूरी मेहनत और लगन के साथ हिन्दुस्तानी सीखनी चाहिए। हिन्दुस्तानी सीखकर आप राष्ट्र की बड़ी सेवा कर सकते हैं। आप किसी भी प्रान्त में आसानी से घूम-फिर सकते हैं।

एक दिन एक संस्था का उद्घाटन करना था। महात्माजी वहाँ जा नहीं सकते थे। पत्थर का शिलान्यास महात्मा जी के निवास-स्थान पर लाकर, शिलान्यास का उद्घाटन समारम्भ कराना चाहा। महात्माजी ने कहा, यदि पत्थर पर अँगरेजी लिखी होगी तो मैं अपनी अँगुली भी नहीं लगाऊँगा। आपको यदि हिन्दुस्तानी नहीं आती है तो आप अपनी प्रान्तीय भाषा में लिखें।

मिलनेवालों से गांधीजी अधिकतर हिन्दुस्तानी में ही बोलते थे। आगन्तुक गांधीजी की बात न समझकर उनके मुख की तरफ देखने लगते थे। गांधीजी फिर कहते थे, आप जानते हैं मैं किस भाषा में बोलता हूँ। हिन्दुस्तानी में। आप लोगों को हिन्दुस्तानी समझना और बोलना चाहिए।

छोटे-छोटे बच्चों को महात्माजी ने यही समझाया, तुम लोगों को अभी से हिन्दुस्तानी समझना और बोलना चाहिए। पढ़ने की कोशिश करो। एक दिन बहुत-सी लड़कियाँ महात्माजी के यहाँ आईं। महात्माजी ने कहा कि तुम सब हिन्दुस्तानी समझती हो या नहीं? सबने कहा कि नहीं। महात्माजी ने कहा, तब मैं तुम लोगों से बातचीत कैसे कर सकता हूँ। मुझे अँगरेजी नहीं आती है। सब हँसने लगीं। अब जाओ। हिन्दुस्तानी सीख लो, तब मैं तुम लोगों से बातचीत करूँगा।

महात्माजी का 'आटोग्राफ' हस्ताक्षर लेने के लिए लोगों की बड़ी भीड़ होती है। महात्माजी अपने हस्ताक्षर के लिए लोगों से पाँच रुपया लेते हैं। फिर भी लोगों की भीड़ लगी रहती है। कई लोग महात्माजी का हस्ताक्षर अँगरेजी में लेने के लिए आये। महात्माजी ने कहा कि मैं तो हिन्दुस्तानी में अपना हस्ताक्षर दूंगा। यदि आप हिन्दुस्तानी में नहीं चाहते तो आपकी प्रान्तीय-भाषा में दे सकता हूँ। लेकिन अँगरेजी में 'आटोग्राफ' नहीं दूंगा। लोगों ने बहुत आग्रह किया। महात्मा जी ने कहा कि आपका यह पाँच रुपया है और यह कापी लेकर चले जाइए। मैं अँगरेजी भूल गया हूँ। लोग खुश होकर फिर हाथ जोड़कर लोगों ने कहा कि आप अब मुझे हिन्दुस्तानी में ही अपना हस्ताक्षर दीजिए।

एक दिन एक अन्धा बहुत ही मुश्किल से वह गांधीजी के पास आ पाया। अन्धे को गांधीजी ने देखकर हिन्दी में कहा, इतना कष्ट उठाकर मेरे दर्शन के लिए क्यों आये? रास्ते में तकलीफ़ हुई होगी, ऐसा नहीं करना चाहिए। फिर एक सज्जन से कहा कि इनको आराम से भेजने का प्रबन्ध करो।

छात्रों को पदवी दान देते हुए महात्माजी ने कहा—आप लोगों को सबसे ऊँचा अपना चरित्र बनाना चाहिए। अच्छा चरित्र रहने पर ही आप अपने देश की और अपने घर की सच्ची सेवा कर सकते हैं। जीवन में सबसे ऊँचा और पवित्र कार्य है सच्चरित्र रहना। सच्चरित्र के मुक़ाबले और चीजें गौण हैं। मैं आपसे यही कहूँगा, आप पहले अपने जीवन को पवित्र बनावें, फिर हिन्दुस्तानी का काम आप बड़ी आसानी से कर सकते हैं।

आपकी विद्वत्ता सच्चरित्र जीवन व्यतीत करने में ही है। आप महान् से महान् पंडित बन जावें, लेकिन यदि आपके जीवन में सच्चरित्रता नहीं आई तो आपकी विद्वत्ता किसी काम की नहीं। जीवन पवित्र और सच्चा होने पर ही आपके पास लोग हिन्दुस्तानी सीखने आयेंगे।

हिन्दी-प्रचारकों का भी एक सम्मेलन इसी अवसर पर हुआ था। पं० पुरुषोत्तमलालजी ने उसकी सदारत की। प्रचारक-सम्मेलन में काफी प्रचारकों ने भाग लिया। पूज्य काका साहब कालेलकर ने बहुत सारगर्भित भाषण किया और हिन्दुस्तानी की खूबियाँ उन्हें बताईं। काका साहब के भाषण का प्रभाव उन लोगों पर बहुत अधिक पड़ा। काका साहब का भाषण ऐतिहासिक ढंग पर हुआ था।

फिर पंडित सुन्दरलालजी ने बहुत बड़ी तकरीर की और कई पहलुओं से यह

—शेष पृष्ठ १६ पर देखिये

श्वेतकुष्ट वनौषधि

महात्माप्रदत्त श्वेतकुष्ट (सफेदी) की दवा से तीन दिन में पूरा फ़ायदा। यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, विज्ञापनदाताओं की दवा से निराश हो चुके हों तो इसे लगाकर आराम होवें। १५ दिन की दवा का मूल्य २॥)।

सफेद बाल काला

इस तेल से बालों का पकना रुककर और पका बाल काला पैदा होकर वर्ष ६० वर्ष तक काला न रहे तो दूना मूल्य वापसी की शर्त लिखा लें। यह तेल सिर के दर्द व सिर में चक्कर आना आदि को आराम कर आँख की रोशनी बढ़ाता है। एक-आध बाल पका हो तो २॥), आधा पका हो तो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मँगवा लें।

वैद्यराज अखिल किशोर राम
नं० ३७ पो० कतरीसराय (गया)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह गायक!

लेखक, प्रोफेसर राजनाथ पांडेय, एम० ए०

वह गायक भी बड़ा मस्तमौला था। गीत गाते गाते वह आत्मविभोर हो जाता था। सुननेवाले भी आत्मविभोर हो जाते थे। हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक प्रोफेसर राजनाथ पांडेय ने गायक के गीतों को लेकर इस कहानी में बड़ा सुन्दर और भावपूर्ण चित्रण किया है। वह गीत जन-जागरण के लिए जीवन, त्याग, उत्सर्ग और बलिदान के स्मृतिस्वरूप हैं।

(१)

होली जलने में अभी दो दिन की देर है। गाँव-गाँव के सीमान्त पर रंड़ के गाड़े हुए पेड़ के इर्द-गिर्द झाड़-झंखाड़ की पतली-पतली, सूखी-नम, काँटेदार और गैर काँटेदार टहनियाँ इकट्ठी करके जो होलिका तैयार की गई है वह जलने के लिए तैयार कर दी गई है। साँझ सबेरे की शीतल-शीतल बहती हुई पुरवा बयार, आम के बौर के धुए हुए रस की भीनी-भीनी महक और रह-रहकर दूर बाग में रसाल की डाली पर बैठी हुई मतवाली कोयल की 'कू-कू' की पुकार, सीवान से गाँव में और गाँव से घर-घर में दिलों में पैठकर न जाने कितनों को पागल बना रही है।

रेलवे स्टेशन पर शाम की गाड़ी आकर जा चुकी है। उतरे हुए मुसाफिरों में से एक लाइन पकड़कर जा रहा है। उसे दूर जाना है, तभी वह लम्बे-लम्बे डग भरता रेल की चमकती हुई पटरी पर आँख सीधाता चला जा रहा है। चारों ओर सन्नाटा ऐसा धीमा होकर फैला हुआ है मानो दिन भर जोर-जोर से साँस खींचकर शाम को वह हलके उच्छ्वास छोड़ रहा हो। लाइन के दोनों ओर के विस्तृत मैदान जो महीना भर पहले हरियाली से पटे हुए थे, और अभी दस दिन पहिले पीली-पीली बालियों और जौ-गेहूँ की डंठलों का सोना लिये हुए थे, आज एकदम वीरान पड़े हैं। फसलें कट गई हैं। कहीं कट भी रही हैं, और अब शाम को दूर, बहुत दूर, शायद मंझरी में पाये हुए अनाज के डंठलों का छोटा-सा बोझ सिर पर रखे दिन भर का थका कोई श्रमिक धीरे-धीरे सूरज डूबने की वेला में अपने गाँव को चला जा रहा है।

सहसा उसी किसी तरफ से एक टीप भरी आवाज आती है:—

कौन प्रीति की बेलि
लगाय गयो रे?
कौन अँसुअन के
फाग खेलाय गयो रे?

वह सोचने लगा, यह कौन दिलवाला है जो, जो होली जलने के दो दिन पहिले ही फाग खेल चुका है? और कैसा फाग? "अँसुवन के फाग!" यात्री रुककर सोचने लगा। आवाज आ रही थी:—

ना जानूँ कि जागूँ अब की
रहौं में सोई?
दुपरी में तो हैं मोरी रानी!
रोई-रोई।
सपरा में चढ़ौं कि पतार
चिरि डारौं?
का करौं, कहाँ जावें,
तो हैं कइसे बिसारौं?

दूर, काफी दूर, पीपल के पेड़ पर बैठी हुई चील उसी समय फड़फड़कर उड़ चली। क्षितिज में उभरी हुई आम की बगिया की तरफ। कहीं उस बगिया में से उसी समय कॉलेज के कलेजे के आर-पार से उसकी "कू-कू" मैदान के सन्नाटे को चीरने के लिए चल पड़ी!

सुननेवाला मन ही मन बोल पड़ा—ओफ्! जिस बेचारे के दिल पर इतनी चोटें पड़ी हों कि वह यह भी न समझ सके कि वह जाग रहा है कि सो रहा है? जिसके दिल में इतनी तड़पन मच गई हो कि वह सतरों में चढ़ना और पाताल को चीर डालना सोच रहा हो, फिर भी अपने प्राण-प्यारे को न पाता हो। तब वह घबरा-घबराकर जेठ में तड़पनेवाली लू की तरह कहता फिर रहा हो कि "हाय! प्राण-प्यारे! मैं क्या करूँ, कहाँ जाऊँ, तुम्हें कैसे बिसारूँ?" फिर वह भला अँसुओं का नहीं तो काहे का फाग खेलेगा?

मन में इसी प्रकार के भावों की क्रीड़ा करता हुआ यात्री चला जा रहा है। थोड़ी देर बाद दो और कड़ियाँ उसी करुण स्वर में चन्द्रमा की फैली हुई उजियाली को चीरती हुई और अधिक साफ होकर उसके कानों में आ पड़ती हैं:—

कौन बिरहा कै आगि
लगाय गयो रे?
मोरे जियरा में हूक
मँचाय गयो रे!

यदि कोई भी रेलवे-लाइन पकड़कर जानेवाला यात्री होता तो क्या उस समय वह भी इन सतरों को अपने मन में न गुनगुनाने लगता? सो वह भी गुनगुनाने लगा—"कौन बिरहा कै आगि लगाय गयो रे?" पर थोड़ी ही देर में उसकी कल्पना आग लगानेवाले की खोज करने की ओर से हटकर उस आग लगे हुए की ओर खिंच गई। वह सोचने लगा—आग लगानेवालों की क्या कमी है? दुनिया में हुस्न कहाँ कम हुआ है? हुस्न की दुनिया तो पग-पग पर आबाद है:—

इश्क कहता है कि दुनिया
से जुदा हो जाओ।
हुस्न कहता है जहाँ जाओ
नई दुनिया है!

हाँ कमी होती है तो ऐसी आग से दिल को सुलगवानेवालों की। अतः यह सोच-सोचकर वह तड़प उठा यह जानने के लिए कि आखिर इस "बिरहा" (गीत) का नायक कौन है, और कौन है उस नायक के अथाह जीवन के इस करुण गीत का गायक? पर हाय! वह यह जाने तो कैसे?

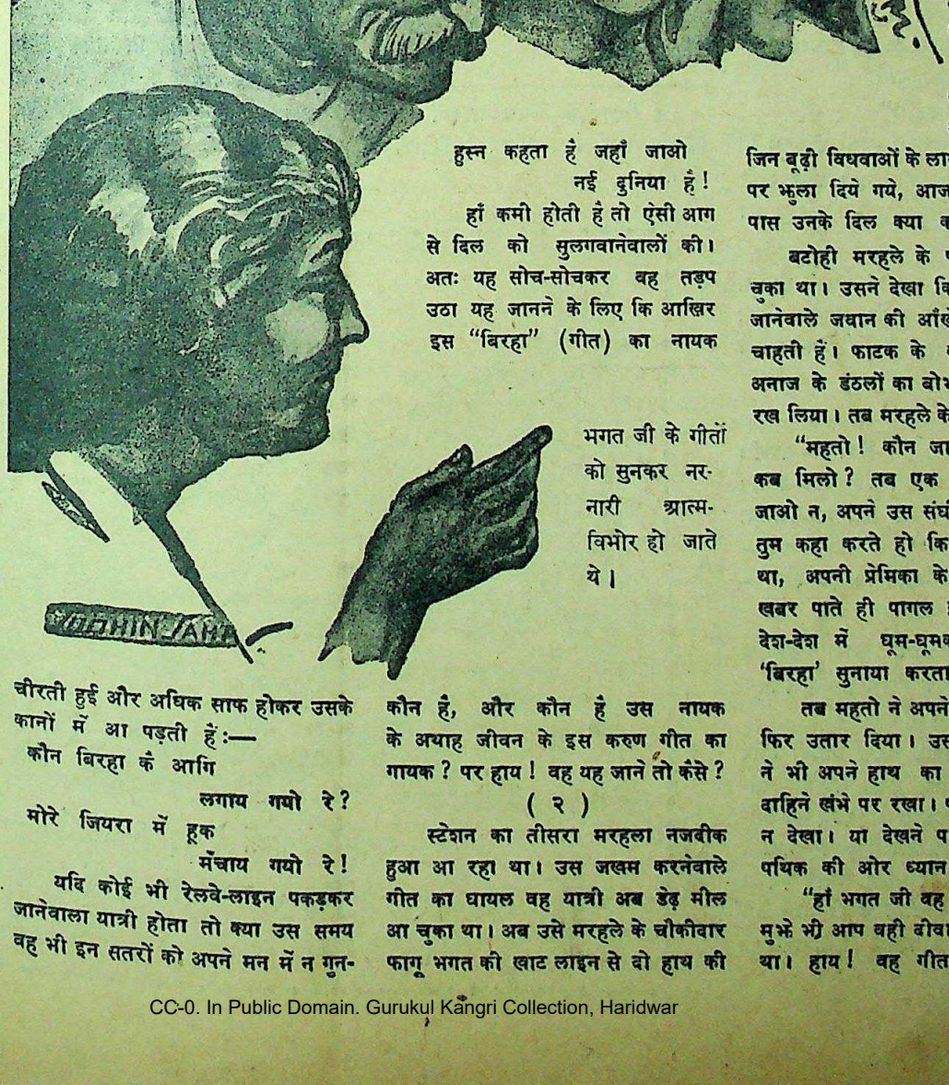

भगत जी के गीतों को सुनकर नर-नारी आत्म-विभोर हो जाते थे।

(२)

स्टेशन का तीसरा मरहला नजदीक हुआ आ रहा था। उस जखम करनेवाले गीत का घायल वह यात्री अब डेढ़ मील आ चुका था। अब उसे मरहले के चौकीदार फागू भगत की खाट लाइन से दो हाथ की दूरी पर दिखाई दे रही है। उस पर बैठे हुए दो आदमी भी तो हैं। यात्री के पास पहुँचने के समय तक उन दो में से एक उठकर खड़ा हो गया। फिर उसने अपने हाथ की चिलम बैठे हुए को दी और बोला—

"भगत जी, जै राम जी की!"

"जै राम जी की महतो! आज खेत निबुक गया न?"

"कल भर और भगत जी! परसों हमारी मियाद पूरी हो जायगी। परसों होली जल जायगी और तब परसों ही हम चले जायँगे।"

"और हमारी मियाद तो कल ही पूरी हो जायगी। तार-कटैया' की आँच हम पर भी लग गई न! वह पुरानी बात इस नये रीसन-मास्टर ने अब उभाड़कर साहब से आडर मँगाया है। आज कहता था कि कल आना जरूरी बात कहनी है। जो वह कल कहेगा वह हम आज ही से जानते हैं। वह कहेगा नौकरी से बरखास और हम आज ही से टट-घंट बाँध तयार हैं।"

"तुम तो फिर भी अच्छे रहे भगत जी!" उसने लम्बी साँस छोड़ते हुए कहा। "तुम बहुत सस्ते छूट गये। गुलामी की नौकरी ही गई न? अब मजे से बाल-बच्चों में रहोगे। अपना खेत देखोगे और अपनी मिहनत की कमाई देख-देखकर मस्त होकर मौज के गीत गाओगे! पर 'इस तार-कटैया' में जिनकी छाती गोलियों के छेद से चलनी हुई; जिनके घर जलाकर राख कर दिये गये; जिन जवानों की गोएँ इज्जत लूट ली जाने पर कुँओं में डूब मरीं और जिन बूढ़ी विधवाओं के लाल फाँसी के तख्ते पर झुला दिये गये, आज होली के आस-पास उनके दिल क्या कहते होंगे?"

बटोही मरहले के फाटक पर पहुँच चुका था। उसने देखा कि उस महतो कहे जानेवाले जवान की आँखें गीली हुआ ही चाहती हैं। फाटक के खंभे पर रखे हुए अनाज के डंठलों का बोझ उसने सिर पर रख लिया। तब मरहले के भगत ने कहा—

"महतो! कौन जाने अब तुम फिर कब मिलो? तब एक बार और सुनाते जाओ न, अपने उस संघी का 'बिरहा' जो तुम कहा करते हो कि बड़ा मस्त-मौला था, अपनी प्रेमिका के जल मरने की खबर पाते ही पागल हो गया था और देश-देश में घूम-घूमकर सबको अपना 'बिरहा' सुनाया करता था।"

तब महतो ने अपने शिर पर का बोझ फिर उतार दिया। उसी समय उस पंथी ने भी अपने हाथ का झोला फाटक के दाहिने खंभे पर रखा। पर महतो ने उसको न देखा। या देखने पर भी उसका उस पथिक की ओर ध्यान ही नहीं गया।

"हाँ भगत जी वह हमारा साथी था। मुझे भी आप वही दीवाना समझो जो वह था। हाय! वह गीत सुनते-सुनते तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब भी नहीं अघाए? लो आज आखिरी बार फिर सुन लो।" और वह गाने लगा :-

कौन बिरहा कै आगि लगाय गयो रे?
पहिले त[1] सोई हम सुधिया बिसारी,
ए मतबारे नयनवाँ वारी!
अब आपन अँखियाँ बिरानी[2] ई भइलीं!
का हम रहलीं जे का होइ गइलीं?
कोई सोए में जादू चलाय गयो रे!
मोरी छतिया में सेंध[3] लगाय गयो रे!
हाय राम! काहे जनम हम पउलीं[4]?
अँखियाँ उघारि के काहे चितवलीं?
तोहकें जे रानी नयन भरि निहारी,
आपन करेजवा उहें फारि डारी!
कौन रस देके माहुर[5] पियाय गयो रे?
मेरे करम कै रेख मेटाय गयो रे!
अब के हमार ई जरनिया[6] बुताई[7]?
मोर बिधा तोरे लगे[8] के पहुँचाई?
तोरी अँखियन में देखि गंगा लहराई!
के बा[9] हो जेकर[10] न गति बनि जाई?
कोई प्रेम कै बान चलाय गयो रे!
मोर हिया बुड़ टूक बिहराय गयो रे!!

इसके आगे वह न गा सका। उसका गला रुँध चुका था। उसने कहा—"जै राम जी की भगत जी! अब यहीं रहने दो।"

भगत जी कुछ न बोल सके। जैसे वह अपने होश में ही न थे। मन ही मन वह गुनगुना रहे थे—

हाय राम! काहे जनम हम पउलीं?
अँखियाँ उघारि के काहे चितवलीं?

फिर सँभल कर उठकर बोले—"ऐसे ही बिरहे लोग महेन्दर मिसिर* के मरने पर गाया करते थे।

"और यह बिरहा लोग महेन्दर चौधरी† के मरने पर गा-गाकर उसकी याद में रोया करेंगे।"

"कौन महेन्दर चौधरी महतो? वही न जिनको पकड़ने के लिए सरकार ने इनाम बाँध रखा था?"

"हाँ हाँ वही।"

"तो क्या वह भी तुम्हारे दोस्त थे?"

"नहीं भगत जी! हम उनके दोस्त क्या होंगे? कहाँ वह बाभन‡, कहाँ हम कुरमी!"

"लाख कहो महतो! कुरमी तो तुम भी नहीं लगते। तुम्हारा रंग-रूप किसी बाभन से कम थोड़े ही है।" भगत जी ने कहा।

बड़े जोर से ठहाका मारकर हँसते हुए उस अनोखे गायक ने कहा—"सच भगत जी? अच्छा तो हमको भी चौधरी ही समझो। अपने ठाकुर बड़े चौधरी* लोगों का पहुना।"

अब इस बार भगत जी ठहाका मारकर हँस पड़े। उसने भी उनका साथ दिया। फिर उसने अपना बोझ अपने शिर पर रखा। उस रेलवे-लाइनवाले मुसाफिर ने भी अपना झोला उठाया। अपना रास्ता उसने पकड़ा; अपना रास्ता इसने भी।

शहर से आया हुआ यात्री लाइन छोड़कर जा रहा था। अगले बाग के बाद कुत्ते की भूंक उसे अपने ही गाँव से आती हुई सुनाई देगी। अब वह निरापद हो उस मस्त "महतो" की सूरत को अपनाता हुआ उसी के स्वर में डूबा-डूबा चला जा रहा था। उसी समय उसे अकस्मात् कभी की सुनी हुई दो पंक्तियाँ याद आ गईं :—

फूलेउ बन घन टेसुआ बगियन बेलि।
चलेउ विदेश पियरवा फगुआ खेलि!

वह अपना समस्त प्राण लेकर इन सतरों को गाने लगा और सोचने लगा कि होली के दूसरे ही दिन उसे भी फिर घर से अपनी नौकरी पर शहर लौट जाना पड़ेगा। पर दो मिनट बाद ही उसका वह ध्यान टूट गया। उसका गाँव निकट था और चौताल की ढोल का स्वर अब उसे साफ-साफ सुनाई दे रहा था।

(३)

वह सन् '४५ की होली थी, आई और गई। और अब यह सन् '४६ की होली आ गई है। कौन जाने वह यात्री फिर पिछले साल की तरह उसी स्टेशन पर उतरकर उसी समय अपने गाँव जाये और उसे फिर कोयल 'कू-कू' सुनाई पड़े! फिर उस मरहिले को देखकर शायद उसे साल भर पहिले उस जगह गाए हुए गीत और उसके अज्ञात गायक की याद भी आए। शायद तब उसे यह भी याद आए कि वह गीत यद्यपि अब भी दुनिया में है पर इस साल का फगुआ खेलने के लिए उस गीत का नायक महेन्द्र चौधरी अब संसार में नहीं है!

शायद वह किसी दिन यह भी सोचे कि वह गायक कोई "महतो" न होकर कहीं स्वयं महेन्द्र चौधरी ही तो नहीं था?

---

१ त—तो। २ बिरानी—पराई। ३ सेंध—सन्धि, नकब। ४ पउलीं—पाया। ५ माहुर—विष। ६ जरनिया—जलन, ताप। ७ बुताई—शान्त करेगा। ८ लगे—समीप। ९ के बा—कौन है। १० जेकर—जिसकी।

* महेन्दर मिसिर छपरा जिले के एक साहसिक युवक थे जिन्हें सन् १९२५ के लगभग फाँसी हुई थी।

† अमर शहीद महेन्द्र चौधरी मुंगेर जिला के एक प्रसिद्ध युवक राष्ट्रीय कार्यकर्ता थे जिन्हें सरकार ने १९४२ का बलवाई घोषित करके देश के महान् नेताओं के प्रार्थना करने पर भी ९ जुलाई १९४५ ई० को मुंगेर में फाँसी दे दी थी।

‡ बाभनै बिहार में भूमिहारों को कहते हैं।

* बिहार में मैथिल ब्राह्मणों में भी चौधरी होते हैं और बाभनों (भूमिहारों) में भी।

इधर उधर की

टेलीविजन की पुनः व्यवस्था

'फाइनेन्शल टाइम्स' ने लिखा है कि बी० बी० सी० व्यवस्थाओं के चालू होते ही टेलीविजन ग्राहक-यंत्रों की जो माँग होगी उसे पूरा करने के लिए रेडियो-व्यापार में ज़ोरदान क़दम उठाये जा रहे हैं। यह माँग बड़ी भारी होगी और इसका पता इस बात से चलता है कि रेडियो-व्यापार ने १० लाख नये ग्राहक-यंत्र बनाने का निश्चय किया है। आशा की जाती है कि बी० बी० सी० द्वारा एक वर्ष तक कार्यक्रम प्रक्षेप किये जाने के बाद १,२०,००० व्यक्तियों के पास ये यंत्र हो जायँगे। जिनमें २०,००० ऐसे यंत्र भी सम्मिलित हैं, जो युद्ध से पहले के हैं और अभी मौजूद हैं।

युद्ध से पूर्व विश्व भर में ब्रिटेन में ही टेलीविजन व्यवस्था कार्य होता था। यद्यपि केवल दो वर्ष तक ही यह कार्य कर सकी थी फिर भी इस अल्प अवधि में यह बड़े ऊँचे पैमाने पर पहुँच गई थी। युद्ध छिड़ जाने के कारण इसमें उन्नति नहीं की जा सकी। पत्र ने लिखा है कि टेलीविजन का सामान बनानेवाले इस उद्योग के क्षेत्र में गहरी छानबीन कर रहे हैं। अभी टेलीविजन का सम्बन्ध मुख्यतः मनोरंजन प्रदान करने से है, परन्तु व्यापार के लिए समाचारों और चित्रों का प्रक्षेप करने में इसका उपयोग किये जाने की काफ़ी सम्भावनायें हैं।

उत्तरी अटलांटिक दो हजारवीं बार पार

स्टविक (स्काटलैंड) में एक वायुयान के उतरने से, उत्तरी अटलांटिक को दो हजारहवीं बार-पार करने का कार्य ब्रिटिश समुद्र पार हवाई मार्ग कारपोरेशन ने पूरा किया है। अटलाण्टिक को वायुयान से पार करने का काम, जो समुद्र पार करने का विश्व भर में सबसे कठिन मार्ग है, सितम्बर १९४० में जारी किया था। तब से यह कारपोरेशन के वायुयान-चालक नियमित रूप से दिन-रात, वर्षा पानी और तूफानों के बीच अटलाण्टिक पार करते रहे हैं और अब तक किसी यात्री की मृत्यु भी नहीं हुई है। अटलाण्टिक पार करनेवाली एकमात्र यही ऐसी व्यवस्था है, जो जाड़े में भी चलती रहती है।

ब्रिटेन आस्ट्रेलिया मार्ग पर १०० उड़ान लेकर १९४५ के अन्त में ब्रिटिश समुद्रपार हवाई मार्ग कारपोरेशन ने संसार में एक अन्य रेकार्ड भी स्थापित किया था। 'एयरोनोटिक्स पत्रिका' ने लिखा है कि ३१ मई १९४५ से, जब यह सर्विस जारी की गई थी, अब तक ब्रिटिश समुद्रपार हवाई मार्ग कारपोरेशन के लैंकास्ट्रियन वायुयान इस मार्ग पर १० लाख मील की उड़ान ले चुके हैं।

हवाई यात्रा में रंगीन कम्बल

हाल में लन्दन में एक प्रदर्शनी हुई थी जिसमें एक नये प्रकार से कम्बल का प्रदर्शन किया गया था, जिसका नाम प्रथम कोटि के विटनी कम्बल से आधा, परन्तु उससे दुगुना गर्म था। इनमें से एक कम्बल का वजन तो केवल ३३ औंस ही था।

यद्यपि यह कम्बल हवाई यात्रा की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाया गया है, फिर भी इससे और भी बहुत-सी घरेलू आवश्यकताएँ पूरी हो सकेंगी, विशेषकर बच्चों के लिए। इसका एक और बड़ा लाभ यह है कि इसमें हवा आसानी से आ जा सकती है। इन कम्बलों के बनाने में दस्तकारी का भी बहुत भाग है और वे अनेक रँगीले डिजाइनों में बनते हैं।

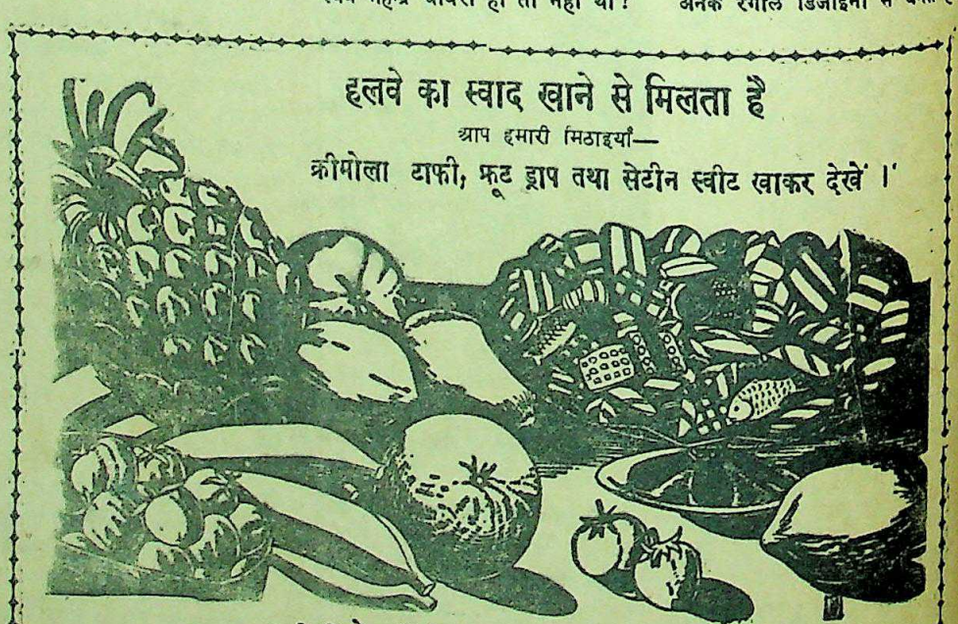

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

पूना में चिट्ठी-पत्री-मंडल

राष्ट्रभाषा-प्रचार का मुख्य उद्देश्य अन्तर्प्रान्तीय एकता को बढ़ाना है। 'समाना हृदयानी वः' ही उसका नारा है। एक भाषा से एक भाव होंगे, एक विचार होंगे; एक विचार से एक कोशिश होगी; और एक कोशिश ही से आजादी हासिल होगी। लेकिन राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति ने सिर्फ़ परीक्षाओं को, चलाकर प्रमाण-पत्र बाँटने ही का अब तक कार्य किया है। अतः उस अधूरे काम की पूर्ति के लिए यह आयोजन है।

राष्ट्रभाषा-प्रचार राष्ट्र को मिला हुआ गांधी जी का एक उपहार है। सबसे पहले आप ही ने यह बात महसूस की कि राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है। शिक्षित और अशिक्षित तथा शहरी और देहाती लोगों के बीच अँगरेजी भाषा ने एक दीवार खड़ी कर दी, जिससे दोनों अलग पड़ जायें। इस सत्य को देखकर पहले-पहल गांधी जी ने कांग्रेस में सन् १९२५ में अपनी कार्यवाही हिन्दुस्तानी में चलाने का प्रस्ताव रखा। दक्षिण में प्रचार के लिए अपने पत्र को भेजा। अन्य अहिंदी प्रान्तों में भी प्रचार होने लगा। प्रान्तीयता, जातीयता आदि के दरारें न बनाकर एक राष्ट्रीयता की गंगा बहाना राष्ट्रभाषा का मुख्य काम है। आज गुजरात, कन्नड़, महाराष्ट्र, मद्रास आदि नवयौवन प्रान्तों में भी प्रेम के बजाय घृणा, तिरस्कार तथा द्वेष ही नजर आता है। महाराष्ट्रवाले छोटे बच्चों को धमकाने उन भोले-भाले सरहद्दी 'पठान' को काम में लाते हैं, जिसके नेता सत्य और प्रेम ही को धर्म मानते हैं और उधर बंगाली बच्चों के लिए 'मराठा' हाऊ बना हुआ है जिसके नेता स्वर्गीय लोकमान्य ने बंगभंग के समय बंगाल की मदद की थी। वास्तव में हमारी सांस्कृतिक धारा एक ही है, जिससे हम अनजान हैं और न कभी जानने का प्रयत्न करते हैं। आज हम अपनी चहारदीवारी की हवा से आसक्त, अपने घर के द्वार खिड़कियाँ आदि बंद रख, बाहर की शुद्ध हवा के लाभ को खो रहे हैं। यह हालत राष्ट्र के हित में अनिष्टकारी है।

राष्ट्रभाषा-प्रचार का काम अभी इस तरह नहीं हुआ है कि हम कुछ अभिमान कर सकें। आज तक सिर्फ़ 'प्रमाण-पत्रों' का बँटवारा ही मुख्य काम बना रहा; जिससे हिन्दी-भाषी प्रान्त तो अलग ही रहे। अंतर्प्रान्तीय एकता के लिए यह जरूरी है कि राष्ट्रभाषा के जरिये दूसरे प्रान्तवालों से अपना सम्बन्ध बढ़ावें; उनके रहन-सहन, भाव-विचार तथा उनकी समस्याओं को समझें; और धीरे-धीरे हमारी भावनायें ऐसी हो जायें कि हम कोई प्रान्तीय न रहें, पर राष्ट्रीय बन जायें। सिर्फ़ अपनी परीक्षायें पास करके राष्ट्रभाषा से किनारेकशी कर लेना ठीक नहीं है।

पर इसका साधन क्या हो? सबसे अच्छा तरीका तो यही होगा कि दूसरे प्रान्तों में जाकर वहाँ के लोगों से हम मेल-जोल बढ़ायें। लेकिन यह असम्भव-सा है। सबसे व्यवहार्य उपाय यही है कि घर बैठे चिट्ठी-पत्रियों से हम यह सम्बन्ध स्थापित करें और बढ़ाते चलें। इसी दृष्टि से चिट्ठी-पत्री-मण्डल की योजना बनाई गई है।

उद्देश्य :—विद्यार्थी तथा राष्ट्रभाषा प्रेमियों का सम्बन्ध परीक्षाओं के बाद भी राष्ट्रभाषा से बनाये रखना; अलग-अलग प्रांतों को एक दूसरे की भाषा, साहित्य, रीति-रिवाज, प्रदेश एवं राजनैतिक तथा आर्थिक समस्या आदि की जानकारी करा देना; तथा एक राष्ट्रभाषा-शैली के विकास-द्वारा प्रान्तीयता नष्ट कर अन्तर्प्रान्तीय बन्धुता उत्पन्न करना।

नियम :—(१) यह मण्डल जाति, धर्म, वर्ग, पंथ, स्त्री-पुरुष आदि भेदों से मुक्त रहेगा। (२) इस योजना में सभी प्रान्तवाले शरीक हो सकेंगे। (३) इस मण्डल की कार्रवाई राष्ट्रभाषा में होगी। (४) यह मण्डल उन लोगों का एक-दूसरे से परिचय करायेगा, जिनका कारण इस योजना से लाभ उठाकर राष्ट्र-सेवा करना हो। (५) पत्र-व्यवहार करने के अभिलाषी सज्जन चार आने के डाक-टिकट के साथ निम्नलिखित जानकारी हमारे कार्यालय को भेजेंगे—

(अ) नाम और पूरा पता (आ) व्यवसाय (इ) शिक्षा (ई) उम्र (उ) रुचि के विषय (ऊ) ऐसे तीन प्रान्तों के नाम जिनसे पत्र-व्यवहार करने की इच्छा हो। (६) ऐसे सज्जनों की मण्डल एक सूची तैयार करेगा और समान रुचि रखनेवाले विभिन्न प्रान्तियों का नाम एक दूसरे की ओर भेज देगा ताकि वे आपस में पत्र-व्यवहार करते रहें।

राष्ट्रभाषा-प्रेमियों से हमारी प्रार्थना है कि इस योजना को अपने प्रान्तीय पत्र-पत्रिकाओं-द्वारा जनता में फैलायें; उसी तरह राष्ट्रभाषा-प्रचार के परीक्षा-संचालक प्रचारक एवं विद्यालय-महाविद्यालयों के प्रधानाध्यापक अपने विद्यार्थियों में इस योजना का प्रचार कर उन्हें हाथ बँटाने के लिए प्रोत्साहित करें।

संयोजक
पूना — चिट्ठी-पत्री-मंडल विभाग

* * *

स्वातन्त्र्य-संग्राम की सैनिक स्त्रियाँ

भारतीय स्वतंत्रता के लिए स्त्री-शक्ति ने जो प्रयत्न किए हैं, उस संबंध में बहुत कम लिखा गया है। जिसके फलस्वरूप हमारी उन बहनों के कार्यकलाप हमारे सामने नहीं के बराबर हैं। हमारी उन रण-देवियों की वीरगाथा अंधकार में पड़ी है। इसलिए भारत के स्वातंत्र्य-संग्राम की वीर-सैनिक स्त्रियों के विषय में मैंने लिखना प्रारम्भ किया है। पुस्तक प्रायः समाप्ति पर है और शीघ्र ही प्रेस में दी जानेवाली है। हम चाहती हैं कि इस पुस्तक में प्रायः सभी देश-सेविकाओं के पुनीत चरित्र अवश्य सम्मिलित हो जायँ। अस्तु, प्रत्येक देश-भक्त पढ़े लिखे भाई-बहन से सानुरोध विनीत प्रार्थना है कि वे अपने नगर-जिला, प्रान्त की प्रत्येक राष्ट्रीय कार्य-सेवी बहन का परिचय तथा चरित्र लिखकर हमारे पास शीघ्र भेजने की कृपा करें। विशेषतः जिन्होंने सन् १९२१-१९३१-१९४२ की आजादी की लड़ाई में भाग लिया था। विवरण में नाम, जन्म-तिथि व जन्म-स्थान, प्रारंभिक शिक्षा, बाल्यकाल, माता-पिता की आर्थिक सामाजिक दशा, भाई-बहन-संतान, पारिवारिक परिचय, कब-किससे विवाह हुआ, गार्हस्थ्य जीवन, कब-कब आन्दोलन में भाग लेकर क्या क्या किया, जेल-यात्रा, राजनीतिक जीवन, सामाजिक व साहित्यिक सेवायें, वर्तमान परिस्थिति, विचार, संदेश, संस्मरण आदि का विस्तार पूर्वक परिचय हो। आशा है हमारे भाई अथवा बहनें उपर्युक्त प्रकार का पूरा विवरण चित्र के साथ शीघ्राति-शीघ्र भेजने की कृपा करेंगे। यदि किसी पत्र-पत्रिका में इस प्रकार के विवरण या चरित्र निकल चुके हों तो उस पत्र-पत्रिका-पुस्तक आदि का हवाला, नाम-तारीख-पता सहित, हमारे पास भेज दें।

शक्ति सदन चौबेपुर —मंगलादेवी त्रिपाठी
कानपुर

* * *

श्री राधाचरण पुस्तकालय

मैं आप अपने प्रातस्मरणीय पूज्य-पाद पितामह श्री राधाचरण गोस्वामी विद्यावागीश जी महाराज की पुण्य स्मृति में 'श्री राधाचरण पुस्तकालय' की आयोजना कर रहा हूँ। श्री महाराज का प्रायः समस्त जीवन राष्ट्रभाषा हिन्दी के रिक्त भण्डार को भरने में ही व्यतीत हुआ। हिन्दी के जनक भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र जी के साथ कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी, आप अपने लक्ष पर अविचल रहे। उनकी महान्तम सेवाएं किसी से भी अज्ञात नहीं हैं। श्री महाराज का संकल्प श्री वृन्दावन में एक बृहद् पुस्तकालय आयोजन करने का था। उसके लिए अत्यन्त परिश्रम से सब साधन एवं उपकरण भी जुटा लिए थे, परन्तु हठात् नित्य निकुञ्ज से निमंत्रण प्राप्त होने पर आप हमारे ममता बन्धन में अधिक और न रह सके, अतः वह योजना भी पूर्ण न हो सकी। आज हम उसी सामग्री के आधार पर अपनी योजना प्रारम्भ करना चाहते हैं, जिसके लिए आप सबका सौहार्द-सहयोग अपेक्षित है। इस संबंध में प्रारम्भ करने के लिए जो हमारी योजना इस प्रकार है—

(१) श्री महाराज के स्मारक स्वरूप एक बृहद् पुस्तकालय की स्थापना। (२) पुस्तकालय में कई हजार की संख्या में प्राचीन साहित्य संकलित है, उसी से प्रारम्भ करके क्रम से संस्कृत हिन्दी एवं बंगला के आधुनिक साहित्य संग्रह करने का प्रयत्न करना। (३) वर्तमान में पुस्तकालय किसी उपयुक्त किराये के मकान में स्थापित कर यथा सुविधा उसका भवन बनाने का प्रयत्न। (४) पुस्तकालय के उद्घाटन के समय एक बृहद् उत्सव की योजना। उद्घाटन देश के किसी महान् व्यक्ति से कराना। (५) श्री महाराज लिखित समस्त साहित्य को एक ग्रन्थाकार 'विद्यावागीश ग्रन्थावली' के नाम से प्रकाशित करना। (६) पुस्तकालय के मासिक व्यय का स्थायी प्रबन्ध करना।

श्रीषडभुज महाप्रभु—अद्वैतचरण गोस्वामी
मंदिर (वृन्दावन)

हमारे उत्तमोत्तम प्रकाशन

श्रीमद्भागवत

सचित्र (दो जिल्दों में) मूल्य १५।—)

यह आचार्य शुकदेवजी का प्रसिद्ध ग्रन्थ है जिसका हिन्दू-समाज में बहुत आदर है। इसका प्रशंसा करना सूर्य का दीपक से देखना है। इसका बहुत माँग है।

सुकवि सोहनलाल द्विवेदी की अनुपम कृतियाँ

भैरवी २॥≡) कुणाल १।)
पूजागीत २) विषपाने १)
बाँसुरी ॥।) शिशुभारती ॥।
वासवदत्ता १॥)

ठाकुर गोपालशरणसिंहजी की काव्यकृतियाँ

सुमना २) संचिता ३)
मानवी २।—) माधवी २
ज्योतिष्मती २) कादम्बिनी २)

प्रवीण कवि श्यामनारायण पाण्डेय का खण्डकाव्य

हल्दीघाटी २॥)

सुकवि हरदयालुसिंह जी की प्रमुख रचना

दैत्यवंश महाकाव्य ३।—)

आदि कवि महर्षि वाल्मीकि प्रणीत

हिन्दी वाल्मीकि रामायण सचित्र दो खण्डों में मूल्य प्रत्येक खण्ड का ६॥)

द्विवेदी-काव्यमाला

मूल्य ४)

स्वर्गीय आचार्य द्विवेदी जी की कविताओं का अपूर्व संग्रह

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

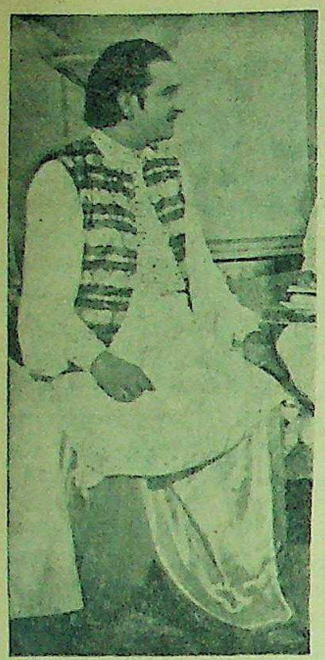

जयंत प्रोडक्शन्स के सुप्रसिद्ध अभिनेता ईश्वरलाल।

सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेता--ईश्वरलाल !

फिल्मी-जीवन, अभिनय तथा कला पर बातचीत

लेखक, श्री उमेश जोशी

(२)

प्रश्न--सिनेमा की गन्दगी का ज़िम्मेदार कौन ?

उत्तर--मैं पूछता हूँ कि समाज की गन्दगी का ज़िम्मेदार कौन ? आप क्या जवाब देंगे ? आज सिनेमा को ही क्यों गन्दगी का लक्ष्य बनाया जा रहा है। जब कि गन्दगी का प्रदर्शन चारों तरफ़ हो रहा है। समुद्र में जितनी भी गन्दगी हो, वह दिखाई नहीं देती लेकिन घड़े की छोटी-सी भी गन्दगी फौरन दिखाई पड़ जाती है, हाँ घड़ा भी तो समुद्र में ही से भरा जाता है। जब वही पानी घड़े में आ जाता है, तो उसमें गन्दगी दृष्टिगोचर होने लगती है, उससे पहले नहीं। समाज समुद्र का रूप है। उसकी गन्दगी भी अथाह है फिर घड़े की गन्दगी को देखकर समाज-वाले नाक-भौं क्यों सिकोड़ते हैं ? वह यह नहीं सोचते कि आखिर यह गन्दगी घड़े में आई कहाँ से ? बुनियाद की तरफ़ न देखकर मंजिल की तरफ़ देखने से क्या लाभ ? मान लीजिये आप मंजिल की गन्दगी साफ़ भी कर दें तो वह फिर उतनी ही हो जायेगी जब तक कि जड़ की गन्दगी का इलाज नहीं किया जायेगा, तब तक व्यर्थ के चिल्लाने से क्या बनेगा ? फिर जहाँ पुरुष-स्त्री का समागम हो, वहाँ थोड़ी-बहुत गन्दगी का आ जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं। समाज में तो आदर्श का परदा डालकर व्यभिचार होता है, लेकिन सिनेमा की दुनिया में ऐसा काम नहीं होता। प्रारम्भ में सिनेमा की बुनियाद जिस गन्दगी पर पड़ी, उसी को हम धीरे-धीरे हटा रहे हैं। बहुत कुछ हम कामयाब भी हुए हैं। सिनेमा का वातावरण बहुत कुछ ठीक है, और दिन-प्रतिदिन ठीक होता जा रहा है आज हम सजग हो गये हैं। समाज के कूड़े-करकट को सिनेमा की दुनिया में नहीं घुसने देते--इसीलिए सिनेमा की पवित्रता बढ़ती जा रही है।

प्रश्न--क्या सिने-पत्रकार अपनी ज़िम्मेदारी को निभा रहे हैं ?

उत्तर--बिलकुल नहीं। मेरे इस उत्तर को सुनकर चाहे सिने-पत्रकार नाराज़ ही क्यों न हो जायें, मुझे इसकी बिलकुल परवाह नहीं है। आज फ़िल्म-निर्माताओं से अधिक दोषी हमारे पत्रकार हैं, जिन्होंने "जनता की रुचि" को ख़राब कर दिया। आज के पत्रकार अपने सामने व्यवसायिक दृष्टिकोण पहले रखते हैं, और पीछे कर्तव्य। व्यवसाय की लपेट में वह पत्रकार के कर्तव्य भूल जाते हैं। यही वह महान् ग़लती करते हैं। वह अपनी ग़लती को महसूस नहीं कर रहे हैं। यही उनकी बड़ी कमजोरी है। और इसी कमजोरी के कारण वह न तो समाज का, और न सिनेमा-व्यवसाय का कुछ लाभ कर सकते हैं। उनको चाहिए कि वह इस कमजोरी को अपने में से जल्द निकाल दें। हम अपनी कमजोरी को भी निकालने के लिए तैयार रहते हैं। यदि हमें पत्रकार नेक सलाह दें, किन्तु वह हमको ठीक सलाह देना अपना कर्तव्य नहीं समझते। वह तो हमको गुमराह ही करते रहते हैं। पत्रकार का तो कर्तव्य यह होना चाहिए कि वह कलाकार के मार्ग को निर्देश करे, लेकिन ऐसा आज के पत्रकार नहीं करते ? क्योंकि इस बात को वह अपनी ज़िम्मेदारी के दायरे में नहीं समझते। जिन पत्रों का साहित्य "मजनू की चिट्ठियों" तक सीमित हो गया, उन पत्रों से राष्ट्र को क्या लाभ होगा ? हमारे गुजराती-साहित्य में ऐसे निम्नकोटि के लेख नहीं रहते। सिने-पत्रकारों को अपनी ज़िम्मेदारी को समझना चाहिए--इस बात की उन्हें आपस में होड़ न करनी चाहिए कि यदि एक पत्र ने "मजनू की चिट्ठी" निकाली तो दूसरा--"लैला की आँखें" निकालने लगा। तीसरे ने "मजनू की पसलियाँ" का स्तम्भ अपने पत्र में खोल दिया। इस तरह का साहित्य ही मानव को 'पतन के खंडहर' में गिराता है।

प्रश्न--आप देश की राष्ट्रभाषा क्या मानते हैं ?

उत्तर--मैं तो हिन्दी को प्रेम करता हूँ, इसलिए इसी को मैं राष्ट्रभाषा मानता हूँ। लेकिन एक बात है कि 'हिन्दी' को हमें राष्ट्र के अनुकूल बनाना चाहिए। राष्ट्रहित की प्रत्येक बात हिन्दी के साहित्य में होनी चाहिए। साहित्य राष्ट्र का आइना है। उसी तरह हिन्दी को बनना चाहिए कि हम हिन्दी के आइने में से राष्ट्र के स्वरूप को भली भाँति देख सकें। तभी हिन्दी का साहित्य सफल साहित्य कहलाने का अधिकारी हो सकता है।

प्रश्न--क्या कलाकारों का कर्तव्य सार्वजनिक कार्यों में दिलचस्पी लेना नहीं है ?

उत्तर--क्यों नहीं है ? कलाकार की कला में सार्वजनिक कार्यों में भाग लेने से चमक आती है। मैं तो जनता की सेवा के लिए हमेशा तैयार रहता हूँ। आर्थिक, शारीरिक, मानसिक सभी दृष्टिकोणों से मैं जनता की सेवा करता हूँ। मैं अपने सामने किसी भूखे को बिलखता हुआ नहीं देख सकता--ग़रीब की इमदाद करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। सामाजिक जलसों में भी मैं भाग लिया करता हूँ। कला की सच्ची कसौटी गुरबत की दुनिया है। जो कलाकार सार्वजनिक कार्यों से हिकारत करता है, वह कभी अपने जीवन में सच्चा सुख प्राप्त नहीं कर सकता।

प्रश्न--क्या सिनेमा में प्रवेश करना चरित्र का दिवाला निकालना है ?

उत्तर--मैं तो कम से कम नहीं मानता। सिनेमा में आने का मतलब चरित्र का बलिदान हर्गिज़ नहीं हो सकता। यदि हम लड़खड़ाती भावना से फ़िल्मी-दुनिया में प्रवेश करेंगे, तो निश्चय ही हम चरित्र का दिवाला निकाल बैठेंगे। भावना की पुख्तगी ही हमारे उत्कर्ष का सम्बल होता है। पुरुष-स्त्री दोनों के हृदय की अनुभूति के समन्वय के शिलाखण्ड पर ही चरित्र का साइनबोर्ड टँगा हुआ है। इस तथ्य को समझ लेना चाहिए। इसी तथ्य के ऊपर चरित्र की बुनियाद मैं समझता हूँ।

प्रश्न--क्या आप अभिनेत्रियों का आदर्श भारतीय आदर्श के अनुकूल समझते हैं ?

उत्तर--अभिनेत्रियों का आजकल कोई आदर्श ही नहीं समझ में आता। आज अभिनेत्रियाँ भारतीयता से कोसों दूर भागी चली जा रही हैं। चमन लगा रही हैं। वह इसमें अपना उत्थान समझती हैं। किन्तु यह उनकी भूल है। यह उत्थान ही उनके जीवन, का पतन है। उन्हें समझ से काम लेना चाहिए--पश्चिमी सभ्यता की चमक से उन्हें प्रभावित होना चाहिए। हमारे जीवन का विकास तो भारतीयता के वायुमंडल में रहकर ही हो सकता है। अभिनेत्रियों को चाहिए तो यह था कि वह समाजवालों के लिए "आदर्श" बनतीं--लेकिन ऐसा उन्होंने अपने को नहीं बनाया। फिर भी आज चन्द अभिनेत्रियाँ जो कि कुलीन खानदान से आई हैं, उन्होंने अपने व्यक्तित्व से सिनेमा का गौरव बना रक्खा है। उन्हीं की वजह से अभिनेत्री-वर्ग की शान रह गई है। उन्होंने अभिनेत्री-वर्ग की नाक कटने से बचा ली।

प्रश्न--आपकी हाबी क्या है ?

उत्तर--पुस्तकें पढ़ना, कविता, कहानी, लेख आदि गुजराती में लिखना। 'लेखन-कला' से मुझे अधिक प्रेम है। मेरी कई कहानियाँ और कवितायें बम्बई के सुप्रसिद्ध पत्रों में छप चुकी हैं। अब भी मैं बराबर लिखता ही रहता हूँ। कभी-कभी घूमना भी मुझे पसन्द है। लेकिन फिजूल उधर घूमना में बुरा समझता हूँ। से मैं सीधा घर आता हूँ, और इसके जरूरत पर कहीं जाता हूँ।

प्रश्न--आप किस डाइरेक्टर पसन्द करते हैं ?

उत्तर--इस प्रश्न का जवाब देने अन्य कलाकार शायद सकुचायें, लेकिन तो स्पष्ट कहता हूँ कि मैं मिस्टर देसाई से अधिक प्रभावित हुआ हूँ, उन्होंने मुझे उत्थान-व्योम पर उनकी कृपा की वजह से ही मैं तरक्की ओर बढ़ सका। उनका निर्देशन ही कमाल का होता है कि मूर्ख से मूर्ख कार के भी सुझाव के पर लग जाते जब से मैं जयंत-कम्पनी में आया हूँ, से मैं यह अनुभव करने लगा हूँ कि कला की उन्नति होने लगी है। वास्तव मिस्टर देसाई की प्रतिभा बड़ी विलक्षण है। जो व्यक्ति उनके संपर्क में आएगा वही उनकी तेज प्रतिभा की धारा में अपना मूढ़ता खो बैठेगा। मामूली से मामूली व्यक्ति भी उनकी प्रतिभा के सुनहरी पंख पर बैठकर ख्याति के आसमान पर उड़ने लगता है।

प्रश्न--आप अपना पारिवारिक परिचय दीजिए।

उत्तर--मेरी एक बहन है, जो राजकोट में पुलिस सुपरिंटेंडेंट थे। मेरी माता का भी स्वर्गवास हो गया--मेरी पत्नी दक्षिणी हैं, और मैं गुजराती हूँ। मेरे कोई बच्चा नहीं है। मेरा जन्म १९११ अक्टूबर की तारीख ९ को काठियावाड़ में हुआ था। मेरा असली नाम हरिप्रसाद जोशी है और अब जिसे आप जानते ही हैं, मैं ब्राह्मण हूँ।

प्रश्न--आप क्या शराब पीते हैं ?

उत्तर--बिलकुल नहीं। शराब से मैं घृणा करता हूँ।

प्रश्न--क्या आप वर्ण-व्यवस्था के कायल हैं ? आप आस्तिक हैं या नास्तिक ?

उत्तर--मैं वर्ण-व्यवस्था को मानता हूँ, लेकिन जन्म से नहीं, बल्कि कर्म से। समाज के सारे बन्धन हमारे ही बनाये हुए हैं। ईश्वर ने नहीं बनाये। विद्या किसी के बाप की नहीं। इसी से आप मेरे विचार समझ लीजिए। ज्यादा क्या कहूँ ? मैं को मानता हूँ--मानवता का पुजारी हूँ में आस्तिक हूँ।

प्रश्न--क्या आप मनुष्य के लिए विवाह करना जरूरी समझते हैं ?

उत्तर--कतई नहीं। विवाह तो एक सामाजिक बन्धन है। एक तरह का ठेका है। एक तरह का कन्ट्रक्ट है। जिस कार्य में ठेकेपन की भावना हो, वह कार्य कभी ठीक नहीं हो सकता। इंसान के लिए 'प्रेम' संजीवनी बूटी है। इसका प्राप्त करना बहुत ही आवश्यक है। विवाह होने पर भी दाम्पत्यजीवन दुःखमय हो जाता है, यदि उसमें प्रेम का विस्तार नहीं।

प्रश्न--आप अपनी कौन-कौन-सी फिल्म पसन्द करते हैं--

उत्तर--'शादी' 'होली' और 'इन्सान टूडे' इन तीनों फिल्मों को मैं अधिक पसन्द करता हूँ।

लेखक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आल इंडिया रेडियो की नई चाल

(पृष्ठ ६ का शेष)

हिन्दी को जो सबसे भयंकर खतरा है, वह यही है कि हिन्दी केवल घरेलू काम-काज और साहित्य की भाषा होकर रह जाय, उसे प्रान्त-भाषा के रूप में भी कहीं राज्याश्रय न मिले अर्थात् अन्य सब प्रान्तीय भाषायें तो राज्याश्रय पाकर अपने-अपने प्रान्तों में फलें-फूलें, सरकारी दफ्तरों, अदालतों और धारा-सभाओं की भाषायें बनें और केन्द्रीय व्यवहारों में भी उनको प्रान्त-भाषा के नाते अपना उचित स्थान मिले; परन्तु हिन्दी-प्रदेश में और केन्द्र में भी हिन्दी के स्थान में हो 'हिन्दुस्तानी'।* रेडियो की नीति इसी खतरे की सूचना देती है। सम्मेलन चाहे तो हिन्दी को इस खतरे से बचाये और चाहे तो राष्ट्रभाषा, आसनभाषा, हिन्दुस्तानी और समन्वय के चक्कर में पड़कर रहा-सहा भी गँवा दे और हिन्दी का अस्तित्व ही मिटाने में योग दे। हिन्दी उर्दू के पृथक्-पृथक् समाचारों तथा अन्य सरकारी प्रोग्रामों के स्थान में प्रयुक्त करने के लिए जो और जैसी हिन्दुस्तानी बनेगी, केवल उसी में इन्फर्मेशन फिल्म, न्यूज फिल्म और एजूकेशनल फिल्म भी बनेंगे, अर्थात् ये फिल्म बँगला, मराठी, गुजराती, तामिल आदि प्रान्तीय भाषाओं में बनेंगे और 'हिन्दुस्तानी' में बनेंगे। 'हिन्दी' में नहीं बनेंगे। ऐसा आज भी किया जा रहा है। बी० बी० सी० भी प्रान्त के लिए बँगला, मराठी, तामिल में प्रोग्राम ब्राडकास्ट करता है और 'हिन्दुस्तानी' में ब्राडकास्ट करता है। 'हिन्दी' में कोई प्रोग्राम ब्राडकास्ट करने की आवश्यकता नहीं समझता। आल इंडिया रेडियो का उदाहरण उसके सामने है। जब लिसनर में ही बँगला, मराठी, तामिल आदि प्रान्तीय भाषाओं के नाम देख पड़ते हैं और 'हिन्दुस्तानी' का देख पड़ता है, 'हिन्दी' नाम कहीं, नहीं है, तो बी० बी० सी० को हिन्दी की क्या परवाह पड़ी है। जब तक आल इंडिया रेडियो में समाचारों तथा अन्य सरकारी प्रोग्रामों के लिए हिन्दी को स्वतन्त्र स्थान नहीं मिलेगा तब तक बी० बी० सी० ऐसा ही करता रहेगा। यह दूसरी बात है कि सब जगह की—आल इंडिया रेडियो, इन्फर्मेशन और न्यूज फिल्मों, बी० बी० सी० आदि की—'हिन्दुस्तानी' शुद्ध उर्दू है। सब जगह यही समझा जाता है कि जब कामन-भाषा 'हिन्दुस्तानी' है ही तो 'हिन्दी' की क्या आवश्यकता है; हाँ, अन्य प्रान्तीय भाषाओं की है। इस 'हिन्दुस्तानी' नाम से यही काम लिया जाता है और इसी प्रकार हिन्दुस्तानीवाद हिन्दी को निगल जाना चाहता है। रेडियो की प्रस्तावित परामर्श-समिति में सम्मेलन के प्रतिनिधियों के शामिल होने का अर्थ यही होगा कि सम्मेलन इस सिद्धान्त से सहमत है कि प्रान्तीय भाषाओं की सूची में से हिन्दी का नाम काट दिया जाय और सरकार उसके स्थान में किसी 'हिन्दुस्तानी' का प्रयोग कर ले। यह बात और है कि परामर्श-समिति में सम्मेलन के प्रतिनिधियों के चिल्लाने पुकारने से वर्तमान 'हिन्दुस्तानी' में थोड़ा बहुत परिवर्तन हो जाय। परन्तु वह 'हिन्दुस्तानी' हिन्दी तो कभी हो नहीं सकती, विशेषकर वह हिन्दुस्तानी जो जनता में स्वाभाविक रूप से नहीं, वरन् ड्राइंगरूम में एक मेज के चारों ओर बैठकर राजनीति के दाँव-पेचों को ध्यान में रखते हुए उपस्थित सब सज्जनों को खुश करने के लिए वोट लेकर बनाई जाय। यह तो स्पष्ट ही है कि जो आलइंडिया रेडियो में होगा वही अन्यत्र अर्थात् इन्फर्मेशन, न्यूज और एजूकेशनल फिल्मों के मामले, बी० बी० सी० आदि में होगा। रेडियो की मिसाल ही आदर्श होगी और यहीं से सम्मेलन की स्वीकृति के साथ हिन्दी का प्रान्तीय पद से भी बहिष्कार का श्रीगणेश होगा। फिर जब स्वराज्य में भी हमारी हिन्दी किसी काम नहीं आई तो हिन्दी का उद्भव और विकास बेकार हुआ और बेकारहुई हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थापना। सम्मेलन सिद्धान्त की दृष्टि से आगा-पीछा खूब अच्छी तरह सोच ले। यह बात नहीं है कि कुल मिलाकर चालीस मिनट की खबरें हैं, चाहे जैसे और चाहे जिस भाषा में हो जायँ—इसकी परवाह नहीं यदि शेष ठीक है। वास्तव में सारा दारोमदार खबरों पर है। इसी बात के बनने से सब अपने आप बनता है और अगर यह न बनी तो सब बेकार है। वास्तव में हिन्दी में कितने भाषण और कितने नाटक ब्राडकास्ट होते हैं इसकी इतनी चिन्ता नहीं है।

ऊपर के विवेचन से सम्मेलन का कर्तव्य स्पष्ट है। उसे यह कहना चाहिए कि हिन्दी एक स्वतन्त्र भारतीय भाषा है, पहले अन्य भारतीय भाषाओं के समान उसको अपना प्राप्य स्थान दो, अन्य भारतीय भाषाओं की तरह उसमें भी खबरें तथा अन्य सरकारी प्रोग्राम ब्राडकास्ट करो, और फिर हमसे बात करो कि रेडियो की कामन भाषा क्या हो, कैसी हो और कहाँ प्रयुक्त की जाय और फिर उसे गढ़ने के लिए, यदि आवश्यकता हो, इसकी उसकी कमेटी बैठाओ। जब तक रेडियोवाले पहले हिन्दी को प्रान्त या प्रादेशिक भाषा के नाते उचित स्थान देने को तैयार नहीं, तब तक उनसे कोई भी बात करना समस्त हिन्दी-संसार की मान-हानि और अपमान है।

(२)

यदि वर्तमान स्थिति में सम्मेलन को परामर्श-समिति के साथ सहयोग करना ही अधिक हितकर मालूम पड़े तो उसे कम से कम अपने सिद्धान्त स्पष्ट करते हुए कुछ शर्तें अवश्य रख देनी चाहिएँ जिससे बाद को कोई ग़लतफहमी न हो। यदि शर्तें रखना भी संभव न हो तो परामर्श-समिति में सबसे पहले निम्नलिखित बातें साफ हो जानी चाहिए:—

(१) परामर्श-समिति के सदस्यों में किसी बात पर मतभेद होने पर विवाद-ग्रस्त मामले का निपटारा किस प्रकार होगा? नामजद सदस्यों की संख्या कितनी होगी? परामर्श-समिति के क्या अधिकार होंगे अर्थात् सरकार परामर्श-समिति के फैसलों के अनुसार चलने के लिए किस हद तक बाध्य होगी?

इस सम्बन्ध में श्री बोखारी को नहीं भूलना चाहिए। आल इंडिया रेडियो का नियम है कि कोई डाइरेक्टर जनरल तीन साल से अधिक अपने पद पर नहीं रह सकता। परन्तु पारसाल श्री बोखारी के कार्य-काल की अवधि समाप्त होने पर सर सुल्तान अहमद ने उन्हें एक साल का एक्सटेंशन यह कहकर दे दिया कि इस समय रेडियो में बड़े-बड़े परिवर्तन हो रहे हैं और इसलिए पुराने आदमी की जरूरत है। ये 'बड़े-बड़े परिवर्तन' क्या थे यह आज तक नहीं मालूम हुआ, अस्तु। एक्सटेंशन समाप्त होने पर सर सुल्तान अहमद ने इन्फर्मेशन विभाग से हटने के कुछ सप्ताह पूर्व ही श्री बोखारी को आगामी पाँच वर्ष के लिए डाइरेक्टर जनरल फिर नियुक्त कर दिया। जन-मत की उपेक्षा करने और अपनी हिन्दी-द्रोही नीति पर दृढ़ रहने के लिए उनको यह पुरस्कार दिया गया। यह बात मतलब से खाली नहीं है। सर सुल्तान अहमद ने पूर्व स्थिति बनाये रखने के लिए ही ऐसा किया। अपने जाने से पहले वे इसका इन्तजाम कर गये। डाइरेक्टर जनरल के हाथ में ही वास्तविक शक्ति होती है। किसी नीति का सफल अथवा असफल होना उसी पर निर्भर है। स्टाफ की भरती भी वही करता है। श्री बोखारी कैसे व्यक्ति हैं यह सबको मालूम है। यही मि० बोखारी परामर्श-समिति के लिए सदस्य नामजद करेंगे और इन्ही को 'परामर्श' देने का काम परामर्श-समिति को करना है?

(२) 'हिन्दुस्तानी' के प्रोग्राम स्टाफ और उसकी भरती के विषय में भी परामर्श देने का अधिकार परामर्श-समिति को होगा या नहीं? यदि नहीं, तो सरकार प्रोग्राम स्टाफ और उसकी भरती के विषय में अपनी नीति स्पष्ट करे और यह बतलाये कि वह वर्तमान प्रोग्राम स्टाफ में क्या परिवर्तन करने का इरादा रखती है।

बिना प्रोग्राम स्टाफ का सुधार हुए और सब सुधार केवल फाइलों की शोभा बढ़ायेंगे।

(३) 'हिन्दुस्तानी' के समाचार बुलेटिन लिखने के लिए नियुक्त सम्पादकों की क्या योग्यतायें होंगी? क्या वर्तमान सम्पादक ही और घोषक ही बनें रहेंगे?

(४) ऐसी बात नहीं है कि रेडियो के काम से लिपि का कोई संबंध ही न हो। 'हिन्दुस्तानी' के समाचार बुलेटिन किस

सर सुल्तान अहमद

लिपि में लिखें जायँगे? क्या वे उर्दू लिपि में लिखे जाते रहेंगे और केवल उर्दू जाननेवाले घोषकों-द्वारा पढ़े जाते रहेंगे जिससे साधारण से साधारण हिन्दी शब्दों और नामों की कपाल क्रिया होती रहे? (उदाहरण—'परचार', 'तोषार कांती घोष', 'आचारिया नरेन्दर देओ', 'सत्यारथ परकाश', 'सोराज', 'महाराश्टरा', इत्यादि इत्यादि)

(५) हिन्दी की चीजें (आइटेम) घोषणाओं, लिसनर, सारङ्ग, आदि में 'हिन्दुस्तानी में' के स्थान में 'हिन्दी' में कहकर वर्णित की जायँगी या नहीं? यदि नहीं, तो क्यों नहीं? जब एक चीज हिन्दी में है तो उसे 'हिन्दी में' उसी प्रकार क्यों न बतलाया जाय जिस प्रकार अन्य भाषाओं की चीजों को बतलाया जाता है। यदि हिन्दी और उर्दू किसी 'हिन्दुस्तानी' की दो शैलियाँ ही हैं तो यह बात तो वैसे भी प्रकट है और यथास्थान 'हिन्दी में' और 'उर्दू में' लिखने से भी प्रकट हो जायगी कि दोनों चीजें 'हिन्दुस्तानी' में हैं; फिर सुननेवाले को चीज की भाषा के विषय में पूरी जानकारी पहले से क्यों न दी जाय? यदि कोई दोनों प्रकार की हिन्दुस्तानी समझ लेता है तो उसे दोनों की चीजें सुनने से रोकता कौन है?

जब तक ऊपरवाली नीति नहीं बरती जायगी तब तक रेडियो की नीति पर नजर रखना संभव न होगा। जब यह तय हो चुका है कि खबरों के अतिरिक्त बाक़ी चीजें हिन्दी या उर्दू में हों तो ऐसा न किये जाने का कोई कारण नहीं। हम नहीं चाहते कि हिन्दीवाले चीज की भाषा के विषय में अनभिज्ञ रहें। फिर आजकल रेडियोवालों ने एक चाल और चली है। वे एक चीज रखते हैं 'डिसकशन इन हिन्दुस्तानी' ('हिन्दुस्तानी में बहस') और उसम एक हिन्दीवाले को एक उर्दूवाले के साथ ला बैठालते हैं। हिन्दीवाला बेचारा उर्दू में बोलने के लिए विवश हो जाता है या किया जाता है; क्योंकि उर्दूवाले को हिन्दी का ज्ञान ही नहीं होता। अकसर एक हिन्दू और एक मुसलमान छांटा जाता है और ढिंढोरा पीटा जाता है कि हिन्दू मुसलमानों में, हिन्दी और उर्दू में मेल पैदा किया जा रहा है। ऐसे 'डिसकशन' शत-प्रतिशत ठेठ उर्दू में होते हैं। एक हिन्दी में बोले और दूसरा उर्दू में बोले यह भी अच्छा नहीं लगता। जब 'हिन्दुस्तानी' शब्द की आड़

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

* ऐसी स्थिति में 'हिन्दी' घरेलू काम-काज और साहित्य की भाषा भी अधिक समय तक न रहेगी और वह समाज के जीवन में से भी उसी प्रकार धीरे-धीरे निकलती जायगी, जिस प्रकार आज राज्य में अँगरेजी का दौरदौरा होने के कारण सब जगह अँगरेजी घुसती जा रही है और उसके सामने हिन्दी को कोई नहीं पूछता। हिन्दी का स्वरूप भी उसी प्रकार कलुषित होता जायगा, जिस प्रकार पहले फारसी और उर्दू के राज्य में हिन्दी में सैकड़ों अरबी फारसी के शब्द आकर घुस गये (यहाँ तक कि विशिष्ट वर्गों में उर्दू ही बोलचाल की भाषा हो गई) और आज अँगरेजी के राज्य में 'बाबू हिन्दुस्तानी' या इँगलिस्तानी का बोलचाल में दौरदौरा है। अन्त में यह राज्याश्रयहीन हिन्दी, राज्याश्रय प्राप्त 'हिन्दुस्तानी' से कदापि भिन्न न रह सकेगी; क्योंकि दोनों ही खड़ी बोलियाँ होंगी अर्थात् 'हिन्दी' का नाम विलुप्त मिट जायगा (देखिए 'राष्ट्रभाषा की समस्या और हिन्दुस्तानी आन्दोलन', [illegible] प्रेस, लखनऊ)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

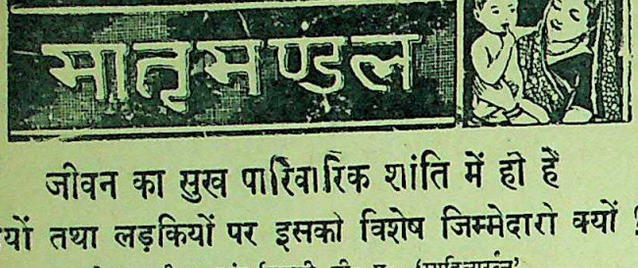
मातृमण्डल

जीवन का सुख पारिवारिक शांति में ही है

स्त्रियों तथा लड़कियों पर इसको विशेष जिम्मेदारी क्यों ?

लेखक, श्री रमाकांत त्रिपाठी, बी० ए०, 'साहित्यरत्न'

जीवन को सुखी बनाने के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता है पारिवारिक शान्ति की। जब तक परिवार का कलह नहीं मिटता तब तक एक प्राणी भी सुख से नहीं रह सकता। इसलिए स्त्री का कर्तव्य है कि वह इस बात के लिए प्रयत्नशील रहे। यों तो पुरुष और स्त्री दोनों ही जिम्मेदार हैं लेकिन स्त्री का स्थान बड़ा है, क्योंकि वह आदि शक्ति है जिससे मनुष्य का प्रादुर्भाव हुआ है। सम्मिलित परिवार में रहने के लिए पुरुष और स्त्री दोनों को नियंत्रण में रहना चाहिए। पुरुष तो परिवार का सदस्य पहले से ही रहता है। वह शीघ्र अलग नहीं हो सकता। लेकिन स्त्री जो गृह की नई सदस्य बनकर आती है, इसे कम पसन्द करती है। आजकल यह प्रथा विशेष रूप से चल पड़ी है कि वह पति को अलग रहने के लिए विवश करती है। इस प्रकार वह नवीन सुख की खोज में यदि आसानी से अलग हो सकी तब तो ठीक है, नहीं तो ईर्ष्या-द्वेष के द्वारा झगड़ा उत्पन्न करती है जिससे विवश होकर माता-पिता को पुत्र और वधू से अलग हो जाना पड़ता है। इसके उपरान्त परिवार के जब दो टुकड़े हो जाते हैं तब कोई भी टुकड़ा सुखी नहीं रहने पाता।

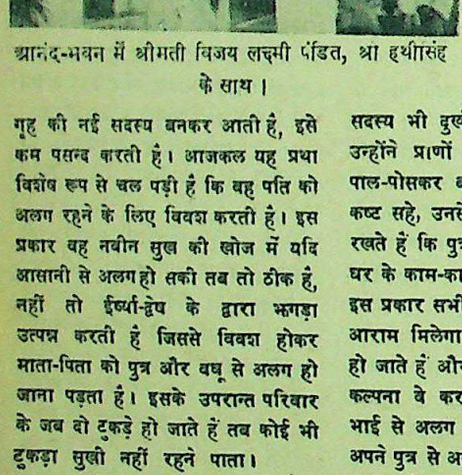
आनंद-भवन में श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित, श्री हथीसिंह के साथ।

स्त्री अपने पति को लेकर जिस उद्देश्य के लिए अलग होती है, उसमें भी सफल नहीं होती, कारण कि नये गृह में केवल दो ही प्राणी रह जाते हैं: समाज तथा दुनिया के अनुभवों से रहित और कठिनाइयों को सहने में असमर्थ। एक गुस्सा जाता है तो दूसरे में इतनी सहनशक्ति नहीं कि उसे बर्दास्त कर सके। कोई मध्यस्थ नहीं रहता। आपस में एक हो नहीं सकते और इस प्रकार खाई दिनोंदिन बढ़ती चली जाती है, जीवन विषाद से भरता जाता है। जो स्वतंत्रता स्त्री पाना चाहती है, वह नये घर में भी उसे नहीं मिलती। नव-दम्पति अपने पुराने घर में भला किस मुंह को लेकर जा सकता है? खर्चा पूरा हो या न हो, लेकिन स्त्री की फरमाइशें दिनों-दिन बढ़ती चली जाती हैं और एक दिन ऐसा विस्फोट होता है कि जिससे सर्वनाश का रास्ता साफ हो जाता है।

इस प्रकार एक ओर तो पुत्र और वधू दोनों दुखी रहते हैं, दूसरी ओर माता-पिता तथा भाई-बहन और घर के अन्य सदस्य भी दुखी ही रहते हैं। पुत्र जिसे उन्होंने प्राणों से भी अधिक समझकर पाल-पोसकर बड़ा किया, जिसके लिए कष्ट सहे, उनसे बिछुड़ जाते हैं। वे आशा रखते हैं कि पुत्र-वधू उनकी सेवा करेगी, घर के काम-काज में हिस्सा बँटायेगी और इस प्रकार सभी कीप रेशानियाँ कम होंगी; आराम मिलेगा। उस बात से वे निराश हो जाते हैं और फिर भला किस सुख की कल्पना वे कर सकते हैं? बहन अपने भाई से अलग हो जाती है। पिता-माता अपने पुत्र से अलग हो जाते हैं। इस प्रकार सारा परिवार छिन्न-भिन्न हो जाता है। संगठन में जो शक्ति होती है उससे बिखर कर किसी का लाभ नहीं होता। सब दुखी होते और कष्ट पाते हैं।

ऐसी स्थिति में हम उस नारी की न तो प्रशंसा ही कर सकते हैं और न उसे भारतीय समाज के लिए उपयुक्त ही ठहराते हैं जो काम से, कर्तव्य से जी चुराकर सुख की खोज में, नये विचारों के भ्रम में ग़लत मार्ग पर क़दम उठाती है। अन्त में उसे भी पछताना पड़ता है, क्योंकि किसी भी तरह वह सुखी नहीं बन सकती। न कर्तव्य का पालन करके और न पति का प्रेम पाकर। पति भी थोड़े दिनों में ही नित्यप्रति के झगड़ों से ऊब जाता है, शीघ्र ही उनसे मुक्ति पाना चाहता है। जहाँ तक हो सकता है घर से दूर ही रहने का प्रयत्न करता है।

इसलिए नवयुवकों का कर्तव्य विवाहोपरान्त बहुत ही कठोर और सहिष्णुता का हो जाता है। ऐसी स्थिति में उसे अपने कर्तव्य का पालन करना, जैसे भी वातावरण में रहना पड़े रहना, परिवार की सेवा करना, उसे अपने सद्गुणों द्वारा एक नया जीवन देना ही उचित है। काम से जी चुराकर वह बच नहीं सकती; क्योंकि काम उसे हर स्थान में जहाँ कहीं भी वह जायेगी, करना ही पड़ेगा। कठिनाई और कष्ट, या अपनेपन का भाव न होना ये सब बातें उसे थोड़े दिन तक ही अखर सकती हैं। यदि उसमें सहनशीलता होगी, मधुर वचन बोलना उसे आता होगा, काम करने में आनन्द का अनुभव कर सकेगी (दासीपन का भाव न आवे) तो वह शीघ्र ही परिस्थिति को काबू में कर लेगी और वहीं अपना साम्राज्य वह दृढ़ कर सकेगी क्योंकि सभी काम के गुलाम होते हैं।

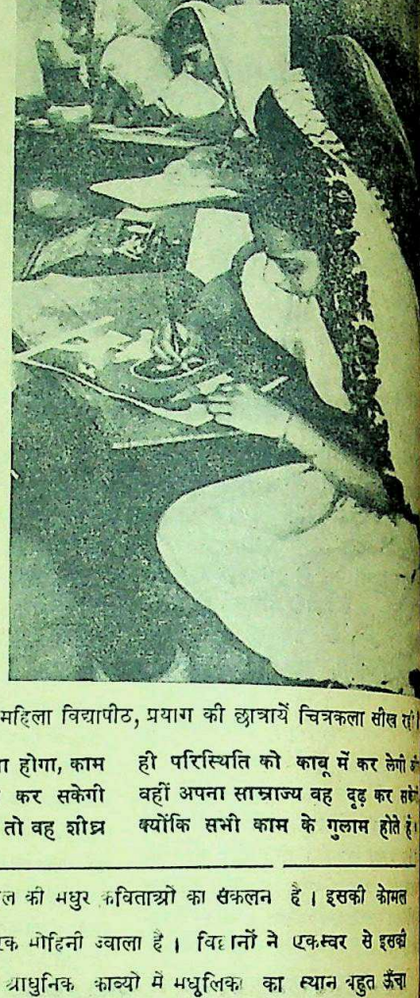
महिला विद्यापीठ, प्रयाग की छात्रायें चित्रकला सीख रही

मधूलिका—कविवर अंचल की मधुर कविताओं का संकलन है। इसकी कोमल और विदग्ध कविताओं में एक मोहिनी ज्वाला है। विद्वानों ने एकस्वर से इसकी प्रशंसा की है और हिन्दी के आधुनिक काव्यों में मधूलिका का स्थान बहुत ऊँचा बताया है। कवि को अपनी इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक पर चक्रधर-पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। इसकी कवितायें भावुक काव्य-प्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। यौवन और सौन्दर्य के ये गीत आधुनिक हिन्दी-काव्य में अमर हैं। मूल्य २)

मधुस्रवा में नवीन शैली की, जीवन में मधु बरसानेवाली सुन्दर रचनाएँ हैं। इसे पढ़कर प्रत्येक कविता-प्रेमी को अपना जीवनरस मधुर बनाना चाहिए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

प्रकाशक—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

जय हिन्द

इस पुस्तक में आजाद हिन्द फौज की पूरी कहानी और सुभाषचन्द्र बोस के जोशीले भाषण छापे गये हैं। मूल्य एक रुपया चार आना।

सिनेमा संगीत

इस पुस्तक में ५०० प्रसिद्ध सिनेमा के गीत छापे गये हैं। मूल्य एक रुपया छः आना।

फिल्मी अप्सरा

इस पुस्तक में प्रसिद्ध फिल्म-एक्ट्रेसों की जिन्दगी के हालात और चित्र छापे गये हैं। मूल्य दो रुपया।

पता—रंगभूमि मासिक, दिल्ली।

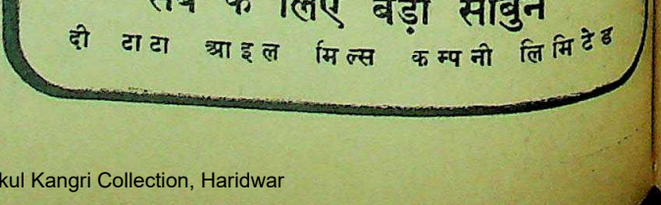
यह सदा आनन्ददायक है

हमाम से प्रतिदिन स्नान करने के बाद आप इसकी शीतलता और स्वास्थ्यदायक शक्ति के स्पर्शज्ञान का आस्वादन करेंगे।

अपने दुकानदार से हमाम माँगिये।

हमाम

सब के लिए बड़ा साबुन

दी टाटा आइल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

मण्डावा (जयपुर)—वसंत पंचमी के अवसर पर छात्र-साहित्य सम्मेलन के बड़े कार्य-क्रम के पश्चात बड़ी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। पंचमी के दिन सुबह नौ बजे से साहित्य-परिषद् प्रारम्भ हुई। माननीय सत्येन्द्रजी, [illegible]रामजी गौड़ 'विशद' एम० ए० के [illegible] पढ़कर सुनाये गये। सभापति थे हिन्दी-संस्कृत विशेषज्ञ आर्य महोपदेशक पं० शालग्रामजी शर्मा। सर्वप्रथम पं० शुभकरणजी शर्मा 'आयुर्वेदाचार्य' [illegible] का भाषण साहित्य की महत्ता पर हुआ। उनके पश्चात् प्रधानाध्यापक स्थानीय मिडिल स्कूल पं० शुभकरणजी शर्मा, बी० ए० ने अपना वक्तव्य शुरू किया। आपने नवोदित लेखकों को कुछ आवश्यक बातें बतलाईं। उनके बाद स्थानीय अध्यापक श्री गीण्डाराम वर्मा 'चञ्चल' 'एकाकी' बोले। स्थानीय साहित्यकारों का परिचय देते हुए अपने अधिकारों की रक्षार्थ छात्रों को प्रेरित किया। बाबू हनुमानप्रसादजी हरलालका का व्याख्यान सदा ही छोटा परन्तु सार-गर्भित रहता है।

श्री विश्वनाथ, कक्षा दसवीं ने साहित्य को ज्ञान-राशि बतलाते हुए मनुष्य जीवन के लिए उसकी आवश्यकता बतलाई। श्री विश्वम्भरलाल जोशी ने युवकों को चरित्र-निर्माण पर ध्यान देने को कहा।

खुला अधिवेशन युवक सभा के साथ [illegible] आचार्य राधाकृष्ण जी ढंढ के सभापतित्व में हुआ। 'दीन भी हूँ हीन भी हूँ' अपनी स्वागत कविता श्री 'चञ्चल' ने गाकर सुनाई। पं० शुभकरण शर्मा, बी० ए०, साँवलरामजी मिश्र, बाबू रामेश्वरजी रामगटिया, पं० मोतीलालजी ढंढ, बा० महावीरप्रसाद देवड़ा आदि प्रमुख व्यक्तियों के भाषण हुए। श्री विष्णुदत्त शर्मा कक्षा ८, श्री रामोतार खेमाणी कक्षा ६ ने भाषण दिया एवं कविता पाठ किया।

रात को कवि सम्मेलन प्रतियोगिता [illegible] श्री शुभकरणजी शर्मा, बी० ए० के सभापतित्व में हुई। सर्वश्री साँवलराम लड़िया, विश्वम्भर जोशी, नेमी चंद आर्य, रामनारायण खेमाणी, रामोतार आदि छात्रों ने कविता पाठ किया। स्वयं रचित अध्यापक श्री रतनलालजी मिश्र तथा श्री पुष्कर लाल कक्षा ६ की कविताएँ श्रोताओं को विशेष पसंद आईं। अंत में सभापतिजी ने 'पिंजरे में बंद पड़ा [illegible]' शीर्षक गीत वागेश्वरी और [illegible] के स्वरों में गाया जो श्रोताओं को रुचिकर रहा।

* * *

सागर—स्वामी कृष्णानन्द की अध्यक्षता में महाकोशल के नर-केशरी बाबू [illegible] का सुन्दर भाषण चक्राघाट [illegible] विराट् सभा में हुआ। उपस्थिति [illegible] पाँच हजार के थी। यहाँ कांग्रेस [illegible] पर केन्द्रीय बोर्ड ने सागर-खुरई [illegible] कृष्ण सेलट व श्री गयाप्रसाद (हरि-[illegible]), रहली-बंडा से श्री स्वामी कृष्णानंद तथा शहराती क्षेत्र से श्री भैयालाल को खड़ा किया है। इनके विरुद्ध श्री गोविन्दराय लोकरस ने एक स्वतंत्र पार्टी बनाकर स्वामीजी के खिलाफ श्री वासुदेवप्रसाद वकील तथा सागर खुरई हरिजन सीट से श्री जालिमसिंह तथा शहराती क्षेत्र से श्री गोपीलाल श्रीवास्तव को खड़ा किया है। सेलट के विरुद्ध श्री डा० बी० डी० सप्रे ने दरख्वास्त वापस ले ली। विरोधी-दल की ओर से श्री डा० सप्रे व भाई अब्दुलगनी ने सभा में कांग्रेस का काफी विरोध किया। भाई अब्दुलगनी व डा० सप्रे ने कहा—"हम पर १० साल से प्रान्तीय कमेटी जुल्म कर रही है।" श्री गनी सा० ने कहा—"कांग्रेस भी हिन्दू-सभाई हो रही है। उसमें एक भी मुसलमान नहीं। और प्रो० कांग्रेस कमेटी भी सरकार की बराबरी करके हमें रिकार्ड नहीं बताती।" बाबू साहब ने इन विरोधियों को मुँहतोड़ जवाब दिया—"कि कांग्रेस ही हमारी आजादी दिलानेवाली संस्था है। सरकार तो हमें गुलाम बनाती है। हम मानते हैं, कि कुछ गड़बड़ी या धाँधली प्रान्त में हुई है, पर इस गंदगी को दूर करने का समय यह नहीं। इस विरोध से गंदगी बढ़ेगी। आज तो हमारा कर्तव्य यही है कि कांग्रेस के अनुशासन का पालन करें और कांग्रेसी उम्मेदवारों को ही वोट दें।" सी० पी० के गांधी श्री खांडेकरजी ने भी बाबू गोविन्ददासजी के मत का समर्थन करते हुए कांग्रेस-उम्मेदवारों को वोट देने की अपील की।

यहाँ किरायेदारों को काफी परेशानी उठानी पड़ रही है। एक तो शहर में बढ़ती हुई आबादी के विचार से मकानों की कमी है। दूसरे, मकान-मालिक किरायेदारों को कष्ट दे रहे हैं। किराया न बढ़ाने का क़ानून होते हुए भी वे किरायेदारों को परेशान करते हैं। ये लोग बहुधा यह बहाना करते हैं कि हमें मकान की मरम्मत करानी है। इसी बहाने ये किराया बढ़ाने को कहते हैं। हम सरकार से अनुरोध करते हैं कि सरकार इस ओर ध्यान देकर शीघ्र ही ऐसा कोई प्रबन्ध करे, ताकि जो पुराने किरायेदार हैं, उनसे मकान खाली न कराये जावें, और न किराया ही बढ़ाया जावे।

—लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

* * *

हरिद्वार म्युनिसिपल हाल में श्री हीरावल्लभजी त्रिपाठी की प्रधानता में हरिद्वार यूनियन म्युनिसिपल कमेटी की पहली बैठक हुई। सिवाय श्रीमती कोल सरकारी नामजद सदस्य के सब सदस्य मौजूद थे। दोनों कांग्रेसी मेम्बर श्री अब्दुल अजीजजी सीनियर व महन्त घनश्यामगिरि जी जूनियर वाइस प्रेसीडेन्ट चुने गये। श्री चौधरी रामभजदत्तजी कांग्रेसी-द्वारा पेश होकर सर्वसम्मति से निम्न तजवीजें पास हुईं:—

श्री चेयरमैन-द्वारा यूनियन की इमारतों पर राष्ट्रीय झंडा फहराया जाये। मेरठ आदि नगरों में पुलिस द्वारा जनता के जलूसों पर गोली तथा लाठी वर्षा पर निन्दा की गई। सरकार से अब्दुल रशीद, आजाद हिन्द-फ़ौज के सारे बन्दी और राजनीतिक बन्दियों की रिहाई की माँग की गई। और एक तजवीज द्वारा हरिद्वार यूनियन में दुर्भिक्ष के कारण प्रान्तीय सरकार से इस संकट के रोकने को कहा गया।

हरिद्वार जैसे पतितपावन तीर्थ में कुछ स्वार्थी और लोलुप भ्रष्टाचारियों द्वारा क्या क्या हो रहा है, इसका समय-समय पर पंजाब महावीर दल के गुप्तचरों द्वारा भंडाफोड़ होता रहता है। बाहर से भगाई और बहकाकर लाई हुई महिलाओं की संख्या बढ़ती जाती है और ऐसी भी गर्भवती स्त्रियाँ यहाँ आती हैं जो अपने बच्चे यहाँ पैदा कराकर या तो फेंक जाती हैं या किसी को दे जाती हैं। ऐसी ही एक उच्च घराने की मारवाड़िन की कन्या का पालन-पोषण एक मेहतरानी की गोदी में हो रहा है जो कि उस बच्चा की टट्टी आदि साफ करती थी। इसी प्रकार से और भी कई बच्चों का इधर-उधर पालन हो रहा है। प्रसन्नता की बात है कि पंजाब महावीर दल के अधिकारियों का इधर ध्यान गया है। समय पर वहाँ खबर मिलने पर उचित रोकथाम हो सकती है।

—संवाददाता

* * *

वृन्दावन में हिन्दी साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान् व लेखक स्वर्गीय गोस्वामी श्री राधाचरणजी महाराज विद्यावागीश की पवित्र स्मृति में उनके पौत्र अद्वैतचरण जी गोस्वामी द्वारा—एक बृहत् पुस्तकालय की स्थापना की जा रही है। पुस्तकालय का उद्घाटन समारोह २७-२८-२९ मार्च को एक बड़ी आयोजना के साथ मनाया जानेवाला है। समारोह का सारा प्रबन्ध करने के लिए एक स्वागत समिति बन गई है। सभापति-पद के लिए माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन, पं० माखनलाल चतुर्वेदी तथा श्री वियोगी हरिजी से प्रार्थना की गई है। २८ मार्च को एक साहित्य परिषद् की आयोजना है, जिसमें भाग लेने के लिए देश के सभी प्रमुख साहित्यिकों को आमंत्रित किया गया है। पुस्तकालय में स्वर्गीय गोस्वामी द्वारा संग्रहीत कई हजार पुस्तकों का विशाल भण्डार रहेगा। सैकड़ों हस्तलिखित पुस्तकें हैं जो कि आज हिन्दी-साहित्य के लिए अप्राप्त और गौरव की वस्तु हैं। पूज्य गोस्वामीजी वृन्दावन हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष, देहरादून हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति और इस प्रान्त के सामाजिक-राजनैतिक और साहित्यिक जीवन के स्तंभ थे।

—अद्वैतकुमार गोस्वामी,
प्रचार-मंत्री

* * *

काशी नगरी प्रचारिणी सभा द्वारा निम्नलिखित विषयों की सर्वोत्तम रचना पर सम्मुखांकित पुरस्कार पदक दिये जानेवाले हैं। लेखकों से अनुरोध है कि विचारार्थ अपनी कृतियों की ७ प्रतियाँ ३० मार्च ४६ तक सभा में भेज दें:—

(१) १ माघ १९९८ से २९ पौष २००२ तक के भीतर प्रकाशित सर्वोत्तम मौलिक उपन्यास व नाटक पर २०० रु० का बटुकप्रसाद पुरस्कार और सुधाकर पदक दिया जायगा, (२) १ माघ १९९८ से २९ पौष २००२ तक के भीतर प्रकाशित ब्रजभाषा की सर्वोत्तम रचना पर २०० रु० का प्रथम रत्नाकर पुरस्कार और राधाकृष्णदास पदक किया जायगा। (३) संवत् २००२ में प्रकाशित हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पर द्विवेदी स्वर्ण-पदक दिया जायगा। इसके लिए विचारार्थ पुस्तकें भेजने की अंतिम तिथि १५ मई १९४६ है।

—रामनारायण मिश्र,
प्रधान मंत्री

* * *

दिल्ली—प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन के अवसर पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति का एक अधिवेशन तारीख २४ मार्च १९४६ को ३ बजे दिन से दीवान हाल, दिल्ली में होगा। निवेदन है कि आप समय पर पधारें। विचारणीय विषय होगा— रेडियो के विषय में केन्द्रीय सरकार द्वारा प्राप्त पत्र पर विचार।

—प्रबन्ध मन्त्री

अंतर-ध्वनि

लेखक, प्रोफेसर चन्द्रप्रकाश वर्मा एम० ए०

चाँद निज मुख में छिपाए सामने बैठी रहो तुम!

(१)

अब न यह साहस कि टक्कर लूँ तिमिर से,
भुज भिड़े सौ बार उस तम की लहर से;
वह लहर गर फिर मुझे आए बहाने,
शब्द निकलेंगे यही मेरे अधर से—
चाँद निज मुख में छिपाए सामने बैठी रहो तुम!

(२)

मर्त्य! तेरे गीत लगते हैं अमर से।
प्राप्त होती प्रेरणा तुझको किधर से?
मैं न उत्तर कुछ किसी को दे सकूंगा,
शब्द निकलेंगे यही मेरे अधर से—
चाँद निज मुख में छिपाए सामने बैठी रहो तुम!

(३)

काल आकर एक दिन निज कठिन कर से,
कर पकड़ मेरा कहेगा क्रुद्ध स्वर से—
प्राण दे, मैं प्राण दूंगा, किन्तु उस क्षण,
शब्द निकलेंगे यही मेरे अधर से—
चाँद निज मुख में छिपाए सामने बैठी रहो तुम!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बम्बई के दंगे से क्या सीखना है ?

(पृष्ठ ५ का शेष)

छोटे-मोटे दंगे करे और इस प्रकार जानो-माल की बरबादी कराये। अनियन्त्रित रूप से इधर-उधर होनेवाले झगड़ों में हम अपनी शक्ति बरबाद नहीं कर सकते। यदि कभी हमारे नेताओं द्वारा किसी बड़े संघर्ष के लिए आह्वान हो, तो तब के लिए हमें अपनी सारी शक्तियों को एकत्रित करने की आवश्यकता है। तब तक के लिए हमें धैर्यपूर्वक अपना समय बिताना चाहिए और इस समय में जहाँ तक संभव हो, वहाँतक रचनात्मक कार्यों द्वारा अपनी शक्ति बढ़ानी चाहिए।

(२) यह स्पष्ट है कि इस प्रकार नियन्त्रित रूप से कार्य करने के लिए अनुशासन की आवश्यकता है। कांग्रेस के नेताओं ने इस विषय पर बड़े सख्त शब्दों में जोर दिया है। परन्तु केवल उपदेश ही काफी नहीं है। कांग्रेस को बैठकर इस प्रश्न पर गंभीरतापूर्वक विचार करना है कि जनता को किस प्रकार अनुशासन की शिक्षा दी जाय; किस प्रकार उसे संयुक्त रूप से कार्य करने की शिक्षा दी जाय, न कि अपनी इच्छानुसार अलग-अलग काम करने की स्वाधीनता। आज देश के सामने यह प्रश्न सबसे अधिक कठिन है; और जितनी ही जल्दी हम इस ओर अग्रसर हो सकें, उतना ही अच्छा है। हमें संयुक्त रूप से एक संस्था के रूप में काम करने की शिक्षा लेनी है। यदि हम समूह को अपने पीछे न ले चल सकें, तो फिर अपने को उसमें मिला देने की और जिनको हमने नेता के स्थान पर प्रतिष्ठित किया है उनके निर्णयों के अनुसार काम करने की शिक्षा प्राप्त करनी है। यह एक ऐसी बात है जिसकी शिक्षा बचपन से ही स्कूलों में दी जानी चाहिए। परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि प्रौढ़ों को भी इसकी आवश्यकता और महत्ता का अनुभव कराया जाय। प्रत्येक गाँव के तरुण स्त्री और पुरुषों को छोटे-छोटे दलों में सम्मिलित करना और दल के रूप में साथ-साथ कार्य करने की शिक्षा देनी और अभ्यास कराना चाहिए।

(३) बम्बई के दंगों से अब इस बात का पता लगा है कि शहर में कुछ लोगों का एक वर्ग अब भी ऐसा है जो कांग्रेस के प्रभाव-क्षेत्र से पूरी तरह से बाहर है। यदि ऐसा न होता तो कांग्रेस के नेताओं की राय लिये बिना ही काम न करते। जहाँ तक ये हिंसात्मक कार्य अन्य शहरों में भी हुए हैं, यह स्पष्ट है कि किसी एक स्थान में नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र में कांग्रेस के नियंत्रण में एक बहुत बड़ी कमी है। अनुभव यह होता है कि कांग्रेस अभी तक मूलरूप से एक मध्यवर्गीय संस्था ही बनी हुई है और उसे अभी मजदूर वर्ग तक पहुँचना है। जब तक कांग्रेस इस वर्ग को अपने अन्दर नहीं कर लेती, तब तक देश को केवल कभी-कभी होनेवाले हिंसात्मक विद्रोहों के अतिरिक्त और किसी वस्तु की आशा नहीं हो सकती। दंगों के समय बम्बई की सड़कों पर चलनेवाला कोई भी व्यक्ति यह देख सकता था कि उनमें शिक्षित व्यक्तियों का बिलकुल हाथ न था। वे पूरी तरह से दूसरों के द्वारा चलाये गये थे। कांग्रेस को उनके बीच में काम करने के लिए अपना ध्यान गंभीरतापूर्वक बदलना था।

(४) इनके अतिरिक्त जहाँ तक इस बात का प्रश्न है कि हममें से सभी अहिंसात्मक कार्यों को अपनाने की बुद्धिमत्ता को स्वीकार नहीं करते, यह निश्चय है कि हमारा कोई न कोई दल ऐसा सदैव अवश्य ही रहेगा जो हिंसात्मक कार्य किया करेगा। कांग्रेस को उन्हें समझने और रोकने का प्रयत्न कहना ही होगा। पिछले दिनों जो दंगे हुए थे उनमें लूटपाट और अग्निकांड को रोकने के लिए कांग्रेस का कोई भी आदमी नहीं पहुँचा था। सदैव कुछ ही लोग हैं जो ऐसे अपराध करते हैं और यदि उन क्षेत्रों में, जहाँ उपद्रव होने की संभावना हो, तत्काल ही वालंटियरों की नियुक्ति कर दी जाय तो ये क़ाबू में लाये जा सकते हैं और इस प्रकार विध्वंस कार्य रोका जा सकता है। लेकिन फिर इसके लिए भी योजना और ट्रेनिंग की आवश्यकता है। जलाने और लूटने के लिए निकले हुए लोगों को रोकने की और दर्शकों की क्रियात्मक सहायता और सहानुभूति को अपनी ओर करने की व्यावहारिक शिक्षा वालंटियरों को मिलनी चाहिए।

(५) फिर युवकों और युवतियों को प्राथमिक सहायता और एंबुलेन्स की शिक्षा मिलनी आवश्यक है जिससे वे घायलों और मरनेवालों को सामयिक सहायता पहुँचा सकें। निहत्थी जनता पर मशीनगनों का प्रयोग करके मिलिटरी वाले अपनी लारियों में बैठकर वीरतापूर्वक वापस चले गये; अभागे घायलों को उनके भाग्य पर छोड़ दिया गया। उसी क्षण जनता उन घायलों के चारों ओर इकट्ठा हो गई, परन्तु शोक! वह इकट्ठा हुई थी केवल यह जानने के लिए कि क्या हुआ। लोग यह नहीं जानते कि सहायता किस प्रकार की जाय। सचमुच यह स्थिति बड़ी ही शोचनीय है। प्रत्येक स्थान में इसमें दिलचस्पी रखनेवाले लोगों और विशेष रूप से कांग्रेस के वालंटियरों के लिए प्राथमिक चिकित्सा की शिक्षा का प्रबन्ध करके जनता की इस कमी को तत्काल ही दूर करना चाहिए।

प्रत्येक विपत्ति जो हम पर पड़ती है, हमारे लिए छद्म वेषधारी वरदान हो सकती है, यदि हम केवल इतना कर सकें कि अपनी त्रुटियों को पहचान लें और उनको सुधार लें। यदि हम ऐसा नहीं करते तो बम्बई के दंगों की तरह समय-समय पर उसी प्रकार की अन्य घटनाएं हुआ करेंगी और हम अपने उद्देश्य के निकटतर कभी भी न हो पायेंगे। इसलिए आइए हम अपनी असफलताओं को सफलता की सीढ़ी बनाएँ और निश्चय ही विजय श्री हमारे हाथ होगी।

गीत

लेखिका, श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा 'सुधा'

मैं पूनो की मधुर चाँदनी में दो पग भी चल न सकी।
पावस की भावस राका थी,
दीपक भी मेरा उदास था;
सूनी डगर चरण कम्पित थे,
पर मेरा निज का प्रकाश था;
मैं पूनो की मधुर चाँदनी में दो पग भी चल न सकी।
उस दिन उजड़े उपवन में प्रिय,
क्या मुझसे पहिचान न थी;
तुम अनभिज्ञ रहो चाहे,
पर मैं तुमसे अनजान न थी;
आँसू बनकर आँखों की कोरों में कविता ढल न सकी।
तुम निर्मोही स्वाति बने औ,
मैं चातक की प्यास बनी;
तुम प्राणों में प्राण बसे पर,
मैं जग में उपहास बनी;
देव, तुम्हारी सुधि खोकर पल भर अपने में पल न सकी।
मैं पूनो की मधुर चाँदनी में दो पग भी चल न सकी॥

मझली दीदी

एक अनाथ बालक की करुण कहानी इस उपन्यास में इतनी मार्मिकता के साथ चित्रण की गई है कि पढ़ते-पढ़ते हमारी आँखें अनायास ही गीली हो जाती हैं। एक सौतेली बहन अपने निराश्रित भाई के साथ जिस तिरस्कार और उपेक्षा का परिचय देती है, वह अत्यन्त हृदय-विदारक है। परन्तु उसकी देवरानी इस अनाथ भाई को अपने पुत्र की तरह स्नेह करती है। यही मझली दीदी है। उपन्यास बहुत ही सुन्दर है। मूल्य १)

अपनी बात

मनुष्यों के चरित्र में जो दुर्बलताएँ होती हैं उन्हें दूर करके वह किस प्रकार जीवन को उन्नत बना सकता है, यही बात इस पुस्तक में ओजपूर्ण भाषा में, निजी अनुभव के आधार पर, लेखक ने लिखी है। यह पुस्तक प्रत्येक युवक को पढ़नी चाहिए। मूल्य ।।।) बारह आने।

मैनेजर बुकडिपो
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

दक्षिण-भारत हिन्दी-प्रचार

(पृष्ठ ८ का शेष)

समझाने की कोशिश की—हिन्दुस्तान प्रचार से क्या लाभ होगा। पंडितजी कहा कि इस युग के दौरान में हमारे कई ऐसे नये शब्द आ गये हैं जिन्हें छोड़ा जा सकता। उनका अपना महत्व बन है। यदि हमने उन शब्दों को निकालने की कोशिश की तो इससे हमारा ही नुकसान होनेवाला है। एटम बम की जगह पर आप कौन-सा शब्द ला सकते हैं। टैंकगाड़ी काफी चल पड़ा है, आप उस शब्द को समझते हैं। इसको क्यों निकाला जावे? आज ऐसे सैकड़ों विदेशी शब्द हमारे बीच में आकर घुल-मिल गये हैं। उनको निकालने का मतलब होगा, अपने शब्दकोश को कम करना। स्टेशन, टिकट, रेल, मोटर, साइकिल आदि शब्द हमारे बन गये हैं; इनको निकाला नहीं जा सकता है। ऐसे कई शब्द प्रान्तीय भाषाओं से भी हिन्दी में आते जा रहे हैं जिनको भी निकाला जा सकता है। हिन्दुस्तानी को प्रान्तीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों के लिए भी स्थान होगा। हिन्दुस्तानी का क्षेत्र दिन-प्रतिदिन बढ़ता जायगा। जो शब्द चल पड़ेंगे और जनता हजम कर लेगी उन्हें कभी निकाला नहीं जा सकता है।

रजतजयन्ती का समारोह बड़ी शान्ति से समाप्त हो गया। विविध सभाओं का आयोजन किया गया था। सभा की रजतजयन्ती से लोगों को बहुत लाभ हुआ है। श्री सत्यनारायणजी ने जयन्ती-समारोह को सफल बनाने में बड़ी मेहनत की है। आप सभा के प्रधान मंत्री हैं। अपने कार्य-कुशलता के लिए प्रसिद्ध हैं। अपनी कार्यपटुता के कारण ही मद्रास में हजारों लोगों को इकट्ठा करके सभा की जयन्ती को शानदार बनाया। हजारों लोगों के भोजन का प्रबन्ध बड़ी कुशलता से किया गया था। किसी को भी खाने-पीने के लिए शिकायत करने का मौक़ा नहीं मिला। हर तरह का प्रबन्ध था। वहाँ के कर्ताओं के सहयोग से बहुत बड़ा काम हो गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक दल के सेवकों ने बहुत बड़ी सेवा की। सभा का कार्यवाहियाँ शान्तिपूर्वक चल सकीं इसका श्रेय स्वयंसेवकों को देना चाहिए क्योंकि भीड़ को शान्त रखने में उनका पूरा-पूरा रहा है। बड़ी मुस्तैदी के साथ उन्होंने अपनी-अपनी जगहों पर रहकर सबको शान्त रक्खा। सबकी में हाजिर रहते थे। बीमारों के चिकित्सा का बहुत सुन्दर प्रबन्ध उनके लिए पंडाल से अलग प्रबन्ध गया था। स्वयंसेवक, डाक्टर बड़े भाव से रोगियों की सेवा करते के सब लोग बधाई के पात्र हैं।

राजा-रानी

नीति-कुशलता तथा प्रजा-के अभाव में विलासी राजा के जिस प्रकार की अव्यवस्था और फैल जाती है, इसका रोमांचकारी रवि बाबू ने इस उत्कृष्ट नाटक में किया है। प्रजा की पुकार पर का उत्सर्ग अत्यन्त प्रभावोत्पादक कर्त्तव्यनिष्ठा का ज्वलन्त मूल्य १।=)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य-चर्चा

अञ्जीर—एक पुष्टिदायक मेवा

स्वास्थ्य के लिए लाभदायक शरीर के लिए बलवर्द्धक

लेखक, श्री रामेश बेदी, आयुर्वेदालंकार

फलों में अञ्जीर का विशिष्ट स्थान है। मधुर, मृदु तथा गूदेदार यह मेवा बहुत स्वाद से खाया जाता है और आरोग्यता-जनक तथा सुपच आहार है। भोज्य के रूप में ताजे और सूखे दोनों तरह के अञ्जीर इस्तेमाल होते हैं।

महात्मा गांधी ने अनेक भोजन द्रव्यों को स्वयं सेवन करके तथा उनके शरीर पर होनेवाले सूक्ष्म प्रभावों को भी बहुत अधिक वैज्ञानिक बुद्धि से अध्ययन करके आहार पदार्थों के सम्बन्ध में पर्याप्त ज्ञान प्राप्त किया है। सूखे अञ्जीर देर तक उनके भोजन की सामग्री रहे हैं। एक दिन की बातचीत में उन्होंने मुझे बताया कि भिन्न-भिन्न तरीकों से अञ्जीरों का उन्होंने प्रचुर सेवन किया है। अफ़्रीका निवास में, कागजों में बन्द जो बढ़िया क़िस्म की स्वच्छ अञ्जीरें मिलती थीं उन्हें वे यों ही खा जाया करते थे। प्रतिदिन दो छटाँक के परिमाण में वे इन्हें लेते रहे हैं। बाद में, जब उन्होंने अमीराना शान-शौक़त का परित्याग किया तो अपेक्षाकृत घटिया क़िस्म की अञ्जीरें उनके आहार का द्रव्य बनीं और उन्हें भी वे काफ़ी समय तक खाते रहे। रस्सी में पिरोकर बड़े पैकिंगों में असावधानी से निर्यात की जाने से इस को पानी में धोना जरूरी होता है। अच्छी तरह साफ़ करके खाया जाता है। कई बार थोड़े से पानी में इन्हें रात भर भिगो छोड़ते हैं। पानी इतना ही डाला जाता है जिसे ये अपने अन्दर जज्ब कर लें और पात्र में अतिरिक्त पानी न बच रहे। पानी पीकर ये फूल जाती हैं और ताजी अञ्जीर के समान मृदु हो जाती हैं। बहुत अधिक मिठास होने से जो लोग सूखे अञ्जीर को खाना नहीं चाहते, वे इस तरह पानी मिलाकर नरम बनाये हुए अञ्जीरों को बहुत पसन्द करते हैं। कमजोर दाँतों-वालों को खाने में सूखे अञ्जीरों की तरह श्रम नहीं करना पड़ता। बापू कहते हैं कि अञ्जीर का हलुवा-सा (पुडिंग) बनाकर खाना बहुत स्वादिष्ट होता है। दाँतविहीन बूढ़ों तथा निर्बल दाँतोंवालों के लिए सूखे अञ्जीरों को चबाना सम्भव नहीं होता। ऐसे लोगों के लिए बापू सूखे अञ्जीरों को पीसकर आटा बनाकर खाना सुविधाजनक समझते हैं।

जेल में कुछ दिनों तक महात्मा गांधी सूखे अञ्जीरों को पानी में भिगोकर सारी रात छत पर ओस में पड़ा रहने देने के बाद खाते रहते हैं। जिन लोगों को गरमी अधिक सताती है, ऐसे पित्तप्रधान लोगों को ओस पिये हुए अञ्जीर बहुत लाभ करते हैं। ये रक्तवर्द्धक और शरीर पर तेज असर करनेवाले समझे जाते हैं। [illegible] ताजे पके अञ्जीरों को थोड़ी-सी [illegible] के साथ मिलाकर ओस में रखा [illegible] देकर सुबह खाया जाता है। इससे [illegible] की गरमी दूर होती है। जिन्हें मूत्र [illegible] और कष्ट से आता है वे सूखे अञ्जीर को गुनगुने पानी में रात को भिगो-कर सुबह हाथों से मसल लें और शहद मिलाकर बीस-तीस दिन तक निरन्तर खायें। इससे मूत्रमार्ग की जलन शान्त होती है। पके हुए ताजे या सूखे फलों का नियमित अन्तःप्रयोग गुरदे और मूत्राशय की पथरी, जिगर की रुकावट और बढ़ी हुई तिल्ली को ठीक करता है, गुरदों को शक्ति देता है, उनकी रुकावट को हटा-कर उनके कार्य को नियमित करता है जिससे मूत्रकृच्छता और बहुमूत्रता दोनों में अञ्जीर खाने से लाभ होता है।

ओठ, मुख आदि फट जाने की जिन्हें शिकायत रहती हो, ऐसे निर्बल मनुष्यों को ताजी अञ्जीरें अच्छे बलदायक पथ्य का काम करती हैं।

कोष्ठद्धबता के लिए ये प्रतिदिन दूध के साथ खाये जाते हैं। फलों में विद्य-मान बीज आँतों की सर्पसी गति (पैरि-स्टेल्टिक मूवमेंट) को बढ़ा देते हैं जिससे मल शीघ्रता से आगे खिसक जाता है। इस प्रकार इसका मलस्रंसक और अनु-लोमक प्रभाव होता है। चिरस्थायी मल-बन्ध की शिकायतवालों को अञ्जीर अपने भोजन का अंग बनाना लाभदायक होगा। इन लोगों को सुबह नाश्ते में आधी छटाँक तक अञ्जीर खूब चबाकर खाने चाहिए। ऊपर से गरम दूध पिया जाना चाहिए। रोगी की प्रकृति पैन्टिक है तो इन्हें रात को पानी में भिगोकर खाना अधिक प्रशस्त होता है। स्टीफन्सन और चर्चिल का ख्याल है कि मानवीय रिकार्ड में प्राचीनतम विरेचक द्रव्य यही था जिसे हिजीकिया इस्तेमाल करता था, यह हिप्पोक्रेट्स से दो सौ साठ साल पहले जिन्दा था।

बवासीर में इसका निम्न प्रकार से प्रयोग हितकर होता है। चार-पाँच सूखे अञ्जीरों को पानी में भिगोकर ढके हुए बरतन में रख दें। सुबह उसी पानी में इन्हें मसलकर पी जायें। इसी विधि से सुबह के भिगोये हुए अञ्जीरों का शर्बत शाम को लिया जा सकता है। मीठा करने के लिए इसमें जरूरत के अनुसार शहद मिलाया जा सकता है। उसके सेवन से आँतें साफ़ रहती हैं और मल साफ़ होता है। गुदा पर जोर न पड़ने से मस्से प्रकट नहीं होते।

थोड़ी मात्रा में खाये जाने पर अञ्जीर पाचक, हृदय के लिए हितकर और रुचि-कर होते हैं। बहुत अधिक खाए जायें तो अफ़ारा और कभी-कभी वेदनानुगामी अतिसार आदि लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं। प्रवाहिका (डिसेण्ट्री), अतिसार तथा आमाशय और आँतों की निर्बल अवस्थाओं में महात्मा गांधी अञ्जीर का काढ़ा बना-कर प्रयोग कराते हैं। उबालने से पहले कुछ घण्टे तक इन्हें पानी में भिगोकर नरम कर लिया जाना चाहिए। पूरा गुण प्राप्त करने के लिए तब तक आग पर पकाते रहना चाहिए जब तक कि वे पानी में घुल न जायें। कपड़े में छानकर इस कषाय को पिलाते हैं। पाचनसंस्थान की निर्बल अवस्थाओं में सूखे अञ्जीरों का सम्पूर्ण फल के रूप में प्रयोग अनुलोमन होने से कुछ क्षोभ पैदा करने का कारण बन सकता है, परन्तु बापू द्वारा अनुभव की हुई उपर्युक्त विधि से काढ़ा बनाकर देने में आँतों के क्षुब्ध होने की सम्भावनाएं बिलकुल नहीं रह जातीं और अञ्जीर के पूरे लाभ भी मिल जाते हैं।

सूखी अञ्जीरों में प्रायः पचास प्रति-शतक शर्करा और साढ़े तीन प्रतिशतक प्रोटीन होती है। एक छटाँक डबल रोटी की एक छटाँक सूखी अञ्जीरों से तुलना की जाय तो अञ्जीर अधिक पुष्टि प्रदान करनेवाली होती हैं। भोजन के स्थान पर दस छटाँक दूध और तीन छटाँक सूखी अञ्जीर ही खा ली जायें तो यह बहुत उत्तम भोजन होता है। डेढ़ पौंड अञ्जीरों में से चार सौ ग्राम (माशा) कर्बोदित (कार्बोहाइड्रेट्स) निकलता है। हमारे शरीर को प्रतिदिन जितने परिमाण में पोषक पदार्थ की आवश्यकता होती है उसका यह ⅘वां हिस्सा है। सूखी अञ्जीरों के प्रतिपौंड में ऊष्मा इकाइयाँ १४७५ होती हैं।

लम्बे प्रवास में जल्दी खराब हो जानेवाले पदार्थ देर तक साथ नहीं रखे जा सकते। अञ्जीर प्रायः पूर्ण भोजन होने से ऐसे समयों में बहुत उपयोगी और निर्भर करने योग्य आहार सिद्ध होता है। स्वयं अपने ऊपर प्रयोग करके तथा दूसरे लोगों को प्रयोग कराने के बाद महात्मा गांधी यह सम्मति बना पाये हैं कि मान-सिक तथा शारीरिक काम करनेवालों के लिए, रोगी तथा नीरोगी व्यक्तियों के लिए अञ्जीर समान रूप से उत्तम आहार द्रव्य हैं।

नीचे की तालिका में मानवीय दुग्ध, सम्पूर्ण गेहूँ और सफ़ेद आटे (मैदे) की तुलना में काले अञ्जीरों की पोषक उप-योगिता दिखाई गई है—

		स्त्री दुग्ध	काली ताजी	अञ्जीर सूखी	सम्पूर्ण गेहूँ की रोटी
पानी	प्रतिशतक	८७.७५	७९.००	२०.००	३८.४
प्रोटीन	,,	१.००	१.५०	५.५०	९.७०
वसा	,,	३.९५	०.२०	१.००	०.९०
निशास्ता	,,				५३.२०
शर्करा	,,	६.२५	१८.७०	६३.००	
काष्ठोज (सेलुलोज)	,,			७.३०	१.६०
ऐन्द्रिक लवण	,,	०.४५	०.६०	३.००	१.५०

जलरहित पदार्थ के हजार भागों में ऐन्द्रिक लवण कितने होते हैं यह नीचे की तालिका बताती है—

	स्त्री दुग्ध	काली अञ्जीर	सम्पूर्ण गेहूँ	मैदा
पोटाशियम	११.७३	१०.५०	७.२०	१.८८
सोडियम	३.१६	९.६०	०.५०	०.०८
कैल्शियम	५.८०	३.५०	०.७५	०.३४
मैग्नोशियम	०.७५	३.४०	२.८०	०.४४
लोह	०.०७	०.६०	०.३०	०.०३
प्रस्फुरक	७.८४	६.३०	१०.००	२.८०
गन्धक (silican)	०.३३	२.७०	०.०९	
वालुका (rilican)	०.०६	२.४०	०.४६	
हरिन (chlorine)	६.३८	१.००	०.०७	
योग	३६.१३	४०.००	२२.१७	५.६६

ये संख्यायें जननी के दूध और ताजी अञ्जीरों के रासायनिक संघटन में बहुत अधिक क्षमता दिखाती हैं, विशेषकर ऐन्द्रिक लवणों (Organic salts) के अनुपात के सम्बन्ध में। जहां माता के दूध में वसा की प्रतिशतकता उच्च है वहाँ अञ्जीर में फलों की शर्करा अधिक है। इस प्रकार प्रतिऔंस रूखा इकाइयों का परिमाण एक समान ही है। यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि महत्त्वपूर्ण पदार्थ सोडियम, लोह और गन्धक अञ्जीर में दूध और गेहूँ की अपेक्षा अधिक अनुपात में होते हैं।

बढ़ते हुए बच्चों में क्योंकि शारीरिक और मानसिक वृद्धि हो रही होती है इस-लिए उपचय (आक्सिडाइजेशन) और अपचय (एलिमिनेशन) की प्रक्रियाओं के लिए इनकी अधिक जरूरत पड़ती है। अन्य पदार्थों की अपेक्षा ये पदार्थ अधिक शीघ्रता से नये पहुँचा दिये जाने चाहिए और इनका हमारे भोजन में पर्याप्त परि-माण में होना बहुत महत्त्व की बात है। इसलिए शारीरिक और मानसिक सब प्रकार की थकान को दूर करके शरीर में पुनः जीवनीशक्ति पहुँचा देने के लिए अञ्जीर निर्विवाद रूप से उपादेय है।

परिणीता

उलझनों के कौतूहलप्रद वातावरण में ललिता और शेखर का प्रेम-सम्बन्ध इस उपन्यास में बड़ी ही कुशलता के साथ चित्रित किया गया है। उपन्यास में प्रेम की पावन गंगा का प्रवाह सर्वत्र व्याप्त है और उपन्यास सुखान्त है। इसके एक-एक शब्द में आपको रोचकता और कौतूहल का दर्शन होगा। मूल्य १।–)

मैनेजर—(बुकडिपो) इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ १३ का शेष)

नहीं रहेगी तो ऐसे 'डिसकशन' और मिले जुले प्रोग्राम अपने आप हिन्दी या उर्दू में होंगे और धोखे की गुंजाइश नहीं रहेगी।

यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि यह कैसे निश्चित हो कि कौन-सी चीज हिन्दी में है और कौन-सी उर्दू में। प्रथम तो लेख की भाषा देखकर यह मालूम करने में बिलकुल कठिनाई नहीं होनी चाहिए। यदि सन्देह हो तो जो चीज हिन्दी के अधिक निकट हो, उसे हिन्दी की कहा जाय और जो चीज उर्दू के अधिक निकट हो, उसे उर्दू की कहा जाय। फिर, यह बात तो भाषणकार या लेखक से ही मालूम हो जानी चाहिए कि वह हिन्दी में बोलेगा या लिखेगा अथवा उर्दू में। उसके पास यत्र भेजा जायगा कि वह हिन्दी में लिखे या पत्र भेजा जायगा कि उर्दू में लिखे (जिस प्रकार पत्र भेजा जाता है कि अँगरेजी में लिखे)। यदि किसी को यह मंजूर न होगा अथवा किसी को अपेक्षित भाषा न आती होगी तो वह वैसा ही उत्तर दे देगा। ९५ प्रतिशत चीजों के विषय में आये हुए लेख की लिपि से ही भाषा मालूम हो जायगी।

(६) स्त्रियों और बच्चों के प्रोग्राम, प्रवासी भारतीयों के प्रोग्राम आदि हिन्दी और उर्दू में अलग-अलग होंगे या नहीं? ये चीजें भी तो ख़बरों के अतिरिक्त हैं। यदि ऐसा न किया गया तो इन प्रोग्रामों के संचालकों की भाषा का क्या होगा?

इन प्रोग्रामों का हिन्दी उर्दू में अलग-अलग होना अत्यन्त आवश्यक है। बिना ऐसा हुए इन प्रोग्रामों में अनुकूल सांस्कृतिक वातावरण उत्पन्न नहीं हो सकता और न हिन्दी जाननेवाले संचालकों का रेडियो में प्रवेश हो सकता है। हम नहीं चाहते कि हिन्दी जाननेवाली स्त्रियाँ और बालक इन प्रोग्रामों को सुनते वक्त उर्दू की चीजें सुनने के लिए विवश हों और अपना आधा समय नष्ट करें। यदि रेडियो-वाले इन प्रोग्रामों में ५० प्रतिशत चीजें भी हिन्दी की रखने का इरादा रखते हैं तो उन्हें ये प्रोग्राम अलग-अलग करने में आपत्ति न होनी चाहिए। जो चाहें, वे दोनों के प्रोग्राम सुन सकते हैं। यदि रेडियो एक सप्ताह में दो बार स्त्रियों के या बालकों के प्रोग्राम नहीं करना चाहता। यद्यपि बम्बई से सप्ताह में चार बार स्त्रियों के या बालकों के प्रोग्राम होते हैं। तो वह प्रति सप्ताह बारी-बारी से हिन्दी और उर्दू में कर सकता है।

(७) प्रत्येक स्टेशन के खुलने और बन्द होने समय की घोषणायें किस भाषा में होंगी? सांस्कृतिक मामलों का फैसला किस प्रकार होगा? क्या इसी प्रकार 'आदाबअर्ज' और 'खुदा हाफिज है' का दौरदौरा चलता रहेगा?

(आजकल स्टेशन के खुलने के समय घोषणा होती है:—"आदाबअर्ज, यह लखनऊ है। शुभ के आठ बजे हैं और अब हमारी पहली मजलिस का प्रोग्राम शुरू होता है।" स्टेशन बन्द होने के समय घोषणा होती है:—"यह लखनऊ है। शुभ के बस बज रहे हैं, अब हमारी मजलिस खत्म होती है। दोपहर साढ़े बारह बजे हमारी दूसरी मजलिस शुरू होगी। उस वक्त हम आपकी खिदमत में फिर हाजिर होंगे। जब तक के लिए रुखसत होते हैं, इजाजत दीजिए, आदाबअर्ज।")

(८) ख़बरों को छोड़कर प्रत्येक स्टेशन से वे प्रोग्राम जिनके लिए एक भाषा का होना अनिवार्य है, (जैसे एक मैच की कमेंटरी या आँखों देखा वर्णन) किस भाषा में होंगे? यदि वाइसराय या गवर्नर के अँगरेजी भाषण का या इसी प्रकार के अँगरेजी की किसी दूसरी चीज का अनुवाद बाद को ब्राडकास्ट किया गया (जैसा अकसर किया जाता है) तो वह हिन्दी में अलग और उर्दू में अलग सुनाया जायगा या नहीं? दूसरे शब्दों में, प्रत्येक स्टेशन की प्रमुख भाषा क्या होगी?

(९) 'स्थानीय सूचनायें' भी ख़बरों के अतिरिक्त एक चीज है। प्रत्येक स्टेशन से ये भी हिन्दी उर्दू में अलग-अलग होंगी या नहीं?

(इस समय ये सूचनायें लखनऊ, दिल्ली, लाहौर, पेशावर और बम्बई से 'हिन्दुस्तानी' और अँगरेजी में होती हैं। बम्बई से मराठी और गुजराती में भी नहीं होतीं। इस मामले में और अन्य मामलों में भी बम्बई पर विशेष ध्यान देना पड़ेगा क्योंकि बम्बई से सभी प्रकार की घोषणाओं, सूचनाओं, पत्रों के उत्तर आदि के लिए 'हिन्दुस्तानी' का प्रयोग होता है अर्थात् बम्बई की प्रमुख भाषा 'हिन्दुस्तानी' मानी गई है। और सब प्रकार के प्रोग्राम जैसे स्त्रियों, बच्चों के और स्कूली प्रोग्राम भी बम्बई से मराठी, गुजराती और 'हिन्दुस्तानी' में अलग-अलग होते हैं और तीनों को बराबर बराबर समय दिया जाता है, अर्थात् हिन्दुस्तानी को मराठी और गुजराती के समकक्ष रख दिया है। बम्बई से हिन्दुस्तानी की जितनी चीजें होती सबकी सब ठेठ उर्दू में होती हैं। वहाँ हिन्दी का नाम-निशान ही नहीं है। दूसरे शब्दों में, बम्बई में मराठी, गुजराती और उर्दू को समान प्रधानता दी गई है और हिन्दी का पूर्ण बहिष्कार कर दिया गया है। बम्बई के 'हिन्दुस्तानी' घोषक (अनाउन्सर) की योग्यता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उसने स्वयं स्वीकार किया है कि घोषणा करते समय मुझसे मराठी और गुजराती गीतों के बोलों का ठीक-ठीक उच्चारण नहीं कर मिलता। फिर भी वह अपनी जगह पर बरक़रार है। बम्बई का पूरा 'हिन्दुस्तानी' स्टाफ और घोषक लाहौर, पेशावर और दिल्ली से भरती किये जाते हैं।)

(१०) माइक्रोफोन पर सुननेवालों के पत्रों का उत्तर 'जवाबी' महोदय किस भाषा में देंगे?

(११) ऐसी बात नहीं है कि संगीत का भाषा से कोई सम्बन्ध ही न हो। पक्के गाने को छोड़कर (जिसकी भाषा प्रधान नहीं होती) उर्दू ग़ज़लों और हिन्दी गीतों का प्रत्येक स्टेशन से क्या अनुपात होगा?

ग़ज़लों और गीतों का भाषा से सीधा संबंध है। ये चीजें ख़बरों के अतिरिक्त हैं और इसलिए इनका अनुपात भी परामर्श-समिति को निर्धारित करना चाहिए। आजकल रेडियोवाले प्रत्येक स्टेशन से ९० प्रतिशत ग़ज़लें—और वे भी उर्दू के प्रसिद्ध कवियों की साहित्यिक ग़ज़लें—और मुश्किल से १० प्रतिशत गीत ब्राडकास्ट कर रहे हैं। गीतों में भी अधिकांश के—९० प्रतिशत के रचयिता मुसलमान हैं जिनको हिन्दी का ज्ञान नहीं है और जिनकी भाषा उर्दू प्रधान है—केवल दो-चार हिन्दी शब्द तोड़-मरोड़कर इधर-उधर रख दिये जाते हैं। ये गीत भाव-शून्य होते हैं। हिन्दी के साहित्यिक गीतों का और आधुनिक हिन्दी कवियों के गीतों का पूर्ण बहिष्कार कर दिया गया है। स्टाफ में जो सज्जन ग़ज़ल और गीत छाँटने के लिए रक्खे गये हैं वे उर्दू के तो पंडित हैं परन्तु हिन्दी का क, ख, ग, भी नहीं जानते। जो गीत उर्दू लिपि में लिखकर मुसलमान कवि भेज देते हैं, उनमें से कुछ छाँटकर दो-दो चार-चार ग़ज़लों के बाद एक-एक गीत रख देते हैं। ग़ज़लों और गीतों का

रुपया एक ही आदमी की जेब में है। मार्च, १९४६ के ही 'लिसनर' देख लीजिए, वस्तु-स्थिति मालूम हो क्योंकि 'लिसनर' में अब ग़ज़लों और के कवियों के नाम दिये जाने लगे हैं।

साहित्यालोचन

इसका संशोधित संस्करण तैयार है। इसमें संस्कृत के आचार्यों के साहित्य-सम्बन्धी सिद्धा के अतिरिक्त पाश्चात्य साहित्यकारों साहित्य मर्मज्ञों के मत का दिग्दर्शन ही मौलिक ढंग से कराया गया है। पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य पाँच रुपये पाँच आने।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०,

इतनी अधिक जिन्दगी

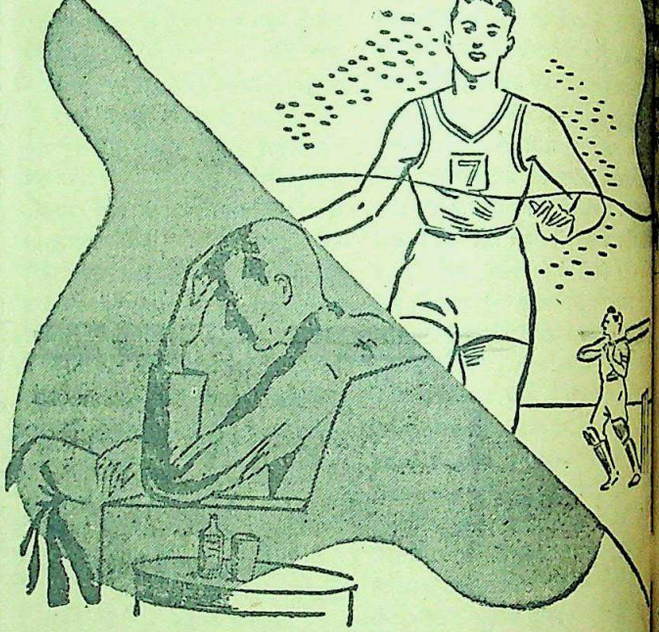

इतने कम में.....

निकल पड़े हैं, बलिष्ट और कान्तिवान होकर ये जीवन का आनन्द लूट रहे हैं।

यहाँ, पिसे, घिसे और आँसू टपकते आप अस्वस्थ जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अपने सारे संस्थान को पुष्ट और सुठीक करने के लिये आपको इसकी अत्यन्त आवश्यकता है।

वायनोमाल्ट

बेंगाल इम्युनिटि कम्पनी लि०, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

Estd. 1929

सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर ... दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S. १०) H.M.B.S. H.M.D.S २५)। पुस्तक—अ० पारिवारिक १) बायोकेमिक १) ... रेलाइन १) मैटिरिया १) मेडिकल डिक्सनरियाँ १॥) आर्गेनन १), फार्मा-...—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≡) ड्राम। आउन्स ॥) ... वस्त्र ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.)

बालसखा का नया वार्षिकांक

इस महीने में प्रकाशित होगा। पाठक धैर्य रक्खें।

ग्राहकों के अनुरोध से हमने इस वर्ष भी बालसखा का ...क निकालने का निश्चय किया है। इसमें बहुत से चित्र, ...विताएं, कहानियाँ, बढ़िया लेख और उपयुक्त सामग्री रहेगी। ...ला ३०० से ऊपर। यह अङ्क बड़ी सजधज के साथ ...लित होगा। यह मासिक बालसखा के १२ अंकों से ...क है। मूल्य ३), मासिक बालसखा के ग्राहकों के लिए ...का मूल्य २॥)

...यतो मूल्य के लिए अपना ग्राहक-नंबर अवश्य लिखिए।

मैनेजर, बालसखा, इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

साइन्स का एक नवीन अद्भुत आविष्कार
जिसने संसार को आश्चर्य में डाल दिया

तैल मस्ताना (रजिस्टर्ड) कोई साधारण तैल नहीं है बल्कि एक साइण्टिफिक आश्चर्यजनक आविष्कार है जिसने भारतवर्ष ही नहीं वरन् दुनिया के तमाम धुरन्धर साइन्स-विशेषज्ञों को हैरत में डाल दिया है। इस तैल से गत २५ वर्षों से हजारों हताश असाध्य रोगी नवजीवन प्राप्त कर चुके हैं। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि ऐसा गुणकारी तैल आप दूसरी जगह न पायेंगे। इसके लगाने से बाल्यावस्था की कुटेव से रगों की कमजोरी, सुस्ती कुटेव से पैदा हुई खराबियां, नसों का गर्भाधान के योग्य न रहना, नपुंसकता, शीघ्रपतन आदि तमाम खराबियां एक हफ़्ते के अन्दर दूर हो जाती हैं। कद व बल को बढ़ाकर रग व पुट्ठों में बिजली की भाँति ताक़त भर जाती है। यह हर मौसिम में लाभ करता है। छाले आदि का भय नहीं। आप आज ही एक शीशी मँगाकर सुख लूटिये। क़ीमत फ़ी शीशी ३=) तीन रुपया दो आना, दो शीशी का ५॥=), डाक-ख़र्च माफ़। मनीआर्डर =) यदि आपको धातुक्षीणता, शीघ्र पतन, स्वप्नदोष, प्रमेह आदि की शिकायत है तो धनी माननीय सहस्रों महान् पुरुषों-द्वारा प्रशंसित जगत्-प्रसिद्ध २५ वर्ष का आजमूदा वीर्य-संजीवन सत इस्तेमाल कीजिए। मूल्य फ़ी डिब्बा ३।=), डाक-ख़र्च माफ़, मनीआर्डर =)।

मँगाने का पता—रूपविलास कम्पनी, न० ४८१, कानपुर।

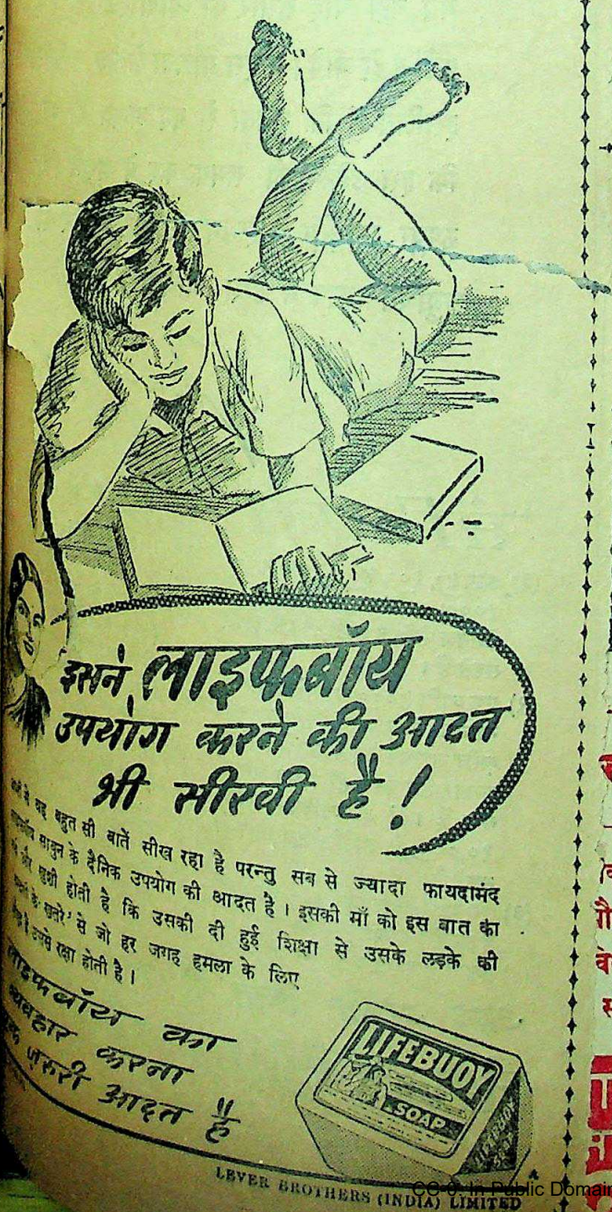

...ाहिक Sunday, 24th March, 1946

...किलन है। इसकी कोमल और विदग्ध कविताओं में एक मोहिनी ज्वाला ...और हिन्दी के आधुनिक काव्यों में मधूलिका का स्थान बहुत ऊँचा बताया है ...वेता-पुस्तक पर चक्रधर-पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। इसकी कवितायें भावुक ...सौन्दर्य के ये गीत आधुनिक हिन्दी-काव्य में उच्च स्थान रखते हैं। मूल्य २)

...षा भाषी
...नता का पत्र
२ आना

ब्रिटिश मंत्रिमंडल का आगमन क्यों ?
...पन की जीत (कहानी) और रंगमंच।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

J & N REMINDERS

स्मारक पत्र

किस प्रकार का काम ? : भीतरी या बाहरी दीवारों की उत्तम सजावट और सुरक्षा के लिए।

हमारी सिफ़ारिश : "पिण्टामूर" (Pintamur) सुईड फ़िनिश देनेवाला, ग़ैर-चमकीला तेल का रंग दीवारों की भीतरी सजावट के लिए। यह घुलने योग्य, पायदार और सुन्दर रंग है। "जैन्सोलाइट" (Jensolite) डेड मैट सीमेंट फ़िनिश देनेवाला मिश्रण दीवारों की बाहरी सजावट के लिए। सुरक्षा के लिए बहुत सफल यह भिन्न पेस्टल रंगों में मिलता है।

JENSON & NICHOLSON

MAKERS OF PAINTS

नई पुस्तक

कामायनी-अनुशीलन

महाकवि 'प्रसाद' का महाकाव्य 'कामायनी' बहुत प्रसिद्ध है। पर यह सबकी समझ में नहीं आता। इस पर अनेक समीक्षकों के विचार पत्रों में प्रकट [illegible] इसी ग्रन्थ का अनुशीलन इस पुस्तक में लेखक रामलालसिंह [illegible] सकता है कि [illegible] हृत्यरत्न ने कामायनी का ऐतिहासिक तत्त्व, प्रकृति-विकार किया है कि घोषणा या [illegible] तथा भावाभिव्यक्ति, छंद विधान करते समय मुझसे मराठी और गुजराती चाहत[illegible] तथ्य, युग की अभिव्यक्ति, [illegible] में गीतों के बोलों का ठीक-ठीक उच्चारण चाहे कागज़ पर [illegible] बालकों के नहीं कर मिलता। फिर भी वह अपनी प्रो[illegible] होते हैं। तो वह प्रति सप्ताह बारी-बारी से हिन्दी और उर्दू में कर सकता है।

(७) प्रत्येक स्टेशन के खुलने और बन्द होने समय की घोषणायें किस भाषा में होंगी? सांस्कृतिक मामलों का फैसला किस प्रकार होगा? क्या इसी प्रकार 'आदाबअर्ज़' और 'खुदा हाफिज़ है' का दौरदौरा चलता रहेगा?

(आजकल स्टेशन के खुलने के समय घोषणा होती है :—"आदाबअर्ज़, यह लखनऊ है। सुभ के आठ बजे हैं और अब हमारी पहली मजलिस का प्रोग्राम शुरू होता है।" स्टेशन बन्द होने के समय घोषणा होती है :—"यह लखनऊ है। सुभ के दस बज रहे हैं, अब हमारी मजलिस खत्म होती है। दोपहर साढ़े बारह बजे हमारी दूसरी मजलिस शुरू होगी। उस

(१०) माइक्रोफोन पर सुननेवालों के पत्रों का उत्तर 'जवाबी' महोदय किस भाषा में देंगे?

(११) ऐसी बात नहीं है कि संगीत का भाषा से कोई सम्बन्ध ही न हो। पक्के गाने को छोड़कर (जिसकी भाषा प्रधान नहीं होती) उर्दू ग़ज़लों और हिन्दी गीतों का प्रत्येक स्टेशन से क्या अनुपात होगा?

ग़ज़लों और गीतों का भाषा से सीधा संबंध है। ये चीज़ें खबरों के अतिरिक्त हैं और इसलिए इनका अनुपात भी परामर्श-समिति को निर्धारित करना चाहिए। आजकल रेडियोवाले प्रत्येक स्टेशन से ९० प्रतिशत ग़ज़लें—और वे भी उर्दू के प्रसिद्ध कवियों की साहित्यिक ग़ज़लें—

मझली दीदी—एक सौतेली बहन अपने [illegible]ता-पिता [illegible] भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार [illegible] है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया [illegible] मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

राईट आनरेबल

सर तेज बहादुर स[illegible] कहते हैं

"नवीन हिन्दुस्तान के निर्माण में मितव्ययिता पहिले से कहीं अधिक राष्ट्रीय सम्पत्ति सिद्ध होगी। प्रत्येक व्यक्ति की बचत इतनी नहीं होती कि वह मूल्यवान भूसम्पत्ति ख़रीदे या बड़ी २ सुरक्षित मदों में रुपया लगा सके। परन्तु थोड़ी आय वाला व्यक्ति भी नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स की मद में रुपया लगा सकता है और ऐसा करने में हानि का कुछ भी तो भय नहीं चाहे संसार की व्यापारिक दशा कुछ भी क्यों न हो जावे। मैं इस योजना के पक्ष में विशेषतया इसलिये हूं कि जनता से यह आशा की जाती है कि इस उद्देश्य को समझ कर वे अपनी इच्छा से रुपया लगायेंगे और उन पर किसी ओर से [illegible] अनुचित दबाव न डाला जायेगा।"

Tej Bahadur Sapru

संक्षिप्त विवरण

(१) आप ५), १०), ५०), १००), ५००), १०००) या ५०००) के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) एक व्यक्ति ५०००) से अधिक मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स नहीं ख़रीद सकता। ये इतने उपयोगी हैं कि इनका राशन करना ही उचित समझा गया है। हां दो व्यक्ति मिलकर १०,०००) के सर्टिफिकेट्स मोल ले सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है।

(४) इस प्रकार अवधि पूरी होने पर ४-१/६% वार्षिक ब्याज मिल[illegible]

(५) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं [illegible]

(६) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा [illegible] (५) का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष [illegible] ही भुनाया जा सकता है) परन्तु [illegible] विक लाभ इसी में हैं कि १२ [illegible] पहिले इन्हें न भुनायें।

(७) जिनकी बचत थोड़ी है वह १) [illegible] ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्पस ख़रीद [illegible] ५) के स्टैम्पस जमा होने पर [illegible] नल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट मिल [illegible]

(८) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्पस [illegible] सरकार द्वारा अधिकृत एजण्टों [illegible] सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त हो सकते [illegible]

आप अपनी बचत से ५०% लाभ उठा[illegible]

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिये।

[illegible]४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

...र, २४ मार्च, १९४६ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 24th March, 1946

मधूलिका—कविवर अंचल की मधुर कविताओं का संकलन है। इसकी कोमल और विदग्ध कविताओं में एक मोहिनी ज्वाला है। विद्वानों ने एक स्वर से इसकी प्रशंसा की है और हिन्दी के आधुनिक काव्यों में मधूलिका का स्थान बहुत ऊँचा बताया है कवि को अपनी इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक पर चक्रधर-पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। इसकी कवितायें भावुक काव्य-प्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। यौवन और सौन्दर्य के ये गीत आधुनिक हिन्दी-काव्य में उच्च स्थान रखते हैं। मूल्य २)

...के लिये रोटी और स्वाधीनता।
...मद्यपुष्ट और टर्की की नीति।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य ... आना

ब्रिटिश मंत्रिमंडल का आगमन क्यों?
मन की जीत (कहानी) और रंगमंच।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्यक उपाधियाँ

प्रिंस आयुर्वेदिक कालेज

बनारस ११२, गवर्नमेंट रजिस्टर्ड से घर बैठे प्राप्त करें। इंजक्शन (सुई) की शिक्षा लें। नियमावली मुफ़्त।

श्वेतकुष्ट वनौषधि

महात्माप्रदत्त श्वेतकुष्ट (सफेदी) की दवा से तीन दिन में पूरा फ़ायदा। यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, विज्ञापन-दाताओं की दवा से निराश हो चुके हों तो इसे लगाकर आराम होवें। १५ दिन की दवा का मूल्य २॥) ।

सफेद बाल काला

इस तेल से बालों का पकना रुककर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दूना मूल्य वापसी की शर्त लिखा लें। यह तेल सिर के दर्द व सिर में चक्कर आना आदि को आराम कर आँख की रोशनी बढ़ाता है। एक-आध बाल पका हो तो २॥), आधा पका हो तो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मंगवा लें।

वैद्यराज अखिल किशोर राम

नं० ३७ पो० कतरीसराय (गया)

कमर-दर्द से मरा जाता था

इससे तो वह चल ही न पाता था

कुशन ने इस भयंकर दर्द को दूर कर दिया

"जब आप कोई अच्छी चीज जानें, तो अपने मित्रों को उसके सम्बन्ध में अवश्य बतलायें।" इस आशय को लेकर एक सज्जन अपना अनुभव लिखते हैं ?

"मैं कमर-दर्द से इतना पीड़ित था कि खाट पर से उठना भी दूभर हो गया था। मैंने उसकी दवा की। इससे दर्द में कुछ भी अन्तर न हुआ। मेरे एक मित्र ने बतलाया, क्यों जी ! तुम कुशन साल्ट क्यों नहीं सेवन करते ? इसको प्रतिदिन प्रातः-काल सेवन करने से तुम्हारा कमर-दर्द जाता रहेगा। इस उपदेश से मैं प्रतिदिन इसका सेवन करने लगा। यह मेरा दूसरा बोतल है। अब मैं अपने कार्यों को पुनः अच्छी तरह से कर सकता हूँ। यह आराम मुझे कुशन से हुआ है। लोगों को मैं अच्छे ढंग से बतलाऊँगा।" सी० बी०

कमर-दर्द, बवासीर और गठिया, ये रोग कुशन साल्ट से क्यों दूर हो जाते हैं ? यह एक खुला हुआ रहस्य है। यह ६ प्रकार के नमकों से बनाया जाता है। इन नमकों के प्रत्येक अंग अपने ढंग से कार्य करते हैं। जिस जगह एक कार्य नहीं करता वहाँ दूसरा उसको पूर्ण करता है। ये ६ प्रकार के कुशन साल्ट से हमारे भीतरी इन्द्रियों के स्वास्थ्य की उत्तेजना में बल देते हैं। उनको कार्य में लगाते, तथा एसिड और जहरों को जो रक्त को दूषित करते हैं उनके प्रभाव को दूर करते हैं।

गठिया के दर्द से जल्द चंगा होने का यह रामबाण है। इससे स्वास्थ्य में शीघ्र ही उन्नति होती है।

यह कुशन साल्ट अच्छे रासायनिकों और व्यापारियों की सभी दूकानों पर मिलता है।

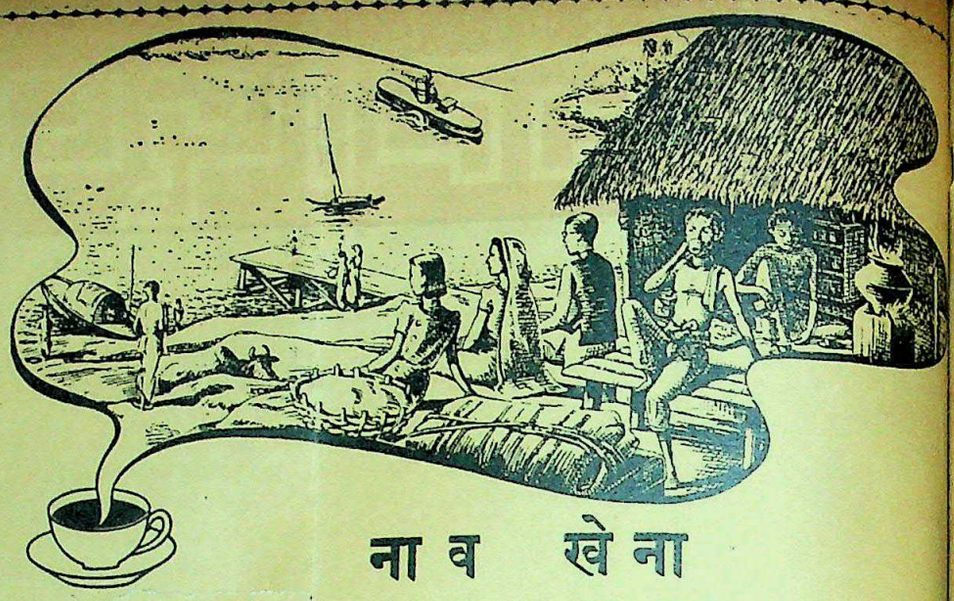

ना व खे ना

धनी या गरीब, व्यस्त या अवसर-भोगी, सबको नाव के लिए इन्तजार करना पड़ता है। मल्लाह या उसकी पत्नी बाजार की ओर बोझा लिये मीलों धूप में चलने के बाद अवश्य ही एक प्याला चाय पीने का अधिकार रखती हैं। मनोरंजनकारीगण भी अवसर के दिन में रास्ते के किनारे पर चाय पीना एक विशेष आनन्द समझते हैं।

पूर्वीय बंगाल, मालाबार, आन्ध्र-देश, काठियावाड़ तथा जहाँ भी समुद्र-तट समीप हैं, नाव खेना वहाँ अनिवार्य है। गंगा, सिंधु या कावेरी ऐसी बड़ी बड़ी नदियों में पुलों से कहीं अधिक यातायात नावों से होता है।

दोनों तटों पर यदि नहीं तो नदियों की एक तरह अवश्य ही आप सदा आरामदायक चाय की दूकान पायेंगे ताजी आराम-दायक ब्रुक बण्ड चाय पान के बाद नदी की हवा के कारण ठहरना भी भार नहीं मालूम पड़ता है।

बारम्बार वितरण यानी ताजगी निश्चित

ब्रुक बण्ड

दो पत्तियाँ और एक कली

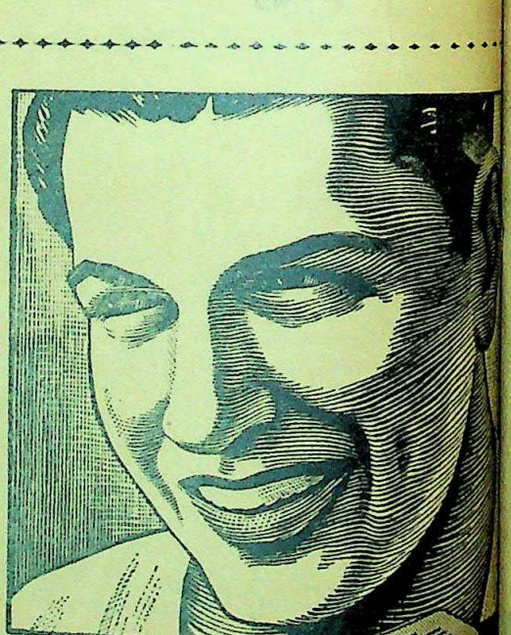

भाइयो !...
चर्म-स्वास्थ्य के लिये
रैक्सॉना
प्रयोग कीजिये

रैक्सोना महिलाओं के लिए नवीन रूप का ही साबुन नहीं है, अपितु जो कोई भी त्वचा के स्वास्थ्य को मान्यता देता है, उन सबके लिए यह आवश्यक शृंगार-साबुन है—यह वही स्फूर्तिप्रद साबुन है जो पुरुषों को भी प्रिय है।

यह उत्तम, शीघ्र झागप्रद साबुन शान्ति और उपचारदायी, त्वचा विकारविरोधी, कैडिल द्वारा औषध रूप से अनुप्राणित है। रैक्सोना का शीघ्र प्रारम्भ होनेवाला झाग इस स्वास्थ्य उत्पादक कैडिल को त्वचा के छिद्र-छिद्रों में गहरा ले जाता है—जहाँ से कि, अकसर चर्म-विकार उत्पन्न होते हैं। रैक्सोना का प्रयोग करने से त्वचा-आरोग्य वर्धित होता है और आप की त्वचा सुरक्षित रहती है। याद रखें कि, त्वचा-आरोग्य जितना स्त्रियों लिये उचित है, उतनाही पुरुषों के लिये भी आवश्यक है।

बालकों के लिए रैक्सोना:—"पिता का साबुन" बालकों के लिए भी आदर्श है। कैडिल को बालकों के हल्के शरीर-प्रदाहों को शान्त करने दीजिए और रगड़ एवं जलन से बचाने दीजिए।

★ रैक्सोना में विशेषित कैडिल विकारविरोधी पोषक तैलों का विशिष्ट रसायन द्वारा बनाया गया है, जिसका त्वचा के स्वास्थ्य पर शक्तिशाली प्रभाव पड़ता है।

रैक्सोना मरहम का प्रयोग कीजिये। कटने के और रगड़ के घावों, खुजली, मुँहासों, फफोलों, दाद, मसी, तथा अन्य सभी त्वचा की कुरूपताओं पर रैक्सोना मरहम का प्रयोग कीजिए।

REXONA PROPRIETARY LTD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष ८, संख्या ३०] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक रविवार, २४ मार्च, १९४६

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

पंडित जवाहरलाल नेहरू दक्षिण-पूर्वी एशिया की स्थिति का अध्ययन करने के लिए भलाया गये हैं।

सोवियट रूस के मार्शल स्टालिन आजकल बड़ी तेजी से बोल रहे हैं। गत सप्ताह मिस्टर चर्चिल ने अमरीका में जो भाषण दिया था, उसकी प्रतिक्रिया मार्शल स्टेलिन के दिमाग में हलचल पैदा कर दी है। मार्शल स्टेलिन ने ललकारा है कि बस तीसरे महायुद्ध का बीजारोपण हो रहा है। अपने राम की राय में मार्शल स्टेलिन ने कोई नई बात तो कही नहीं। ब्रिटेन ऐसा बेवकूफ़ नहीं है कि वह स्टालिन साहब के नये पैंतरों से वाकिफ न हो। यदि स्टालिन की फ़ौजें आज टर्की और ईरान को परेशानी में डालने के लिए तैयार हो रही हैं तो कल अफ़ग़ानिस्तान का नम्बर आ सकता है और फिर भारत तो उनका पड़ोसी है, इसलिए वही क्यों यों ही रहने दिया जायगा? इसलिए भाईजान! ब्रिटेन खूब समझ रहा है, उसे अनुमान ही रहा है कि आगे जो न हो जाय सो थोड़ा। अब ब्रिटेन लंबे डग रखने लगा है और कौन जाने वह दिन जल्दी आये जब ब्रिटेन अपने साम्राज्य के गुलाम देशों को इसी हल्ले में स्वतंत्रता दे डाले? स्टालिन साहब तो आने से रहे लेकिन उनके अवाजे-तवाजे से भारत स्वतंत्र हो जाय तो क्या बेजा?

* * *

सोवियट रूस की आज की नीति क्या विचित्र रूप धारण करती जा रही है। जान पड़ता है कि टर्की से मंचूरिया तक कहीं वह रहना चाहते हैं। अमरीकन और ब्रिटिश स्वार्थों से वह अपना स्वार्थ बड़ा मुफ़ीद समझता है। ठीक है, एक ओर सोवियट रूस अन्तर्राष्ट्रीय संघ में नाटक कर रहा है और दूसरी ओर अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित फ़ौजों की स्थापना भी करा रहा है। अपने राम को चक्कर में और तो ज्यादा नहीं आता लेकिन एक बात आती है कि अब रूस मित्रराष्ट्रीय युद्ध से निकल भागना चाहता है, उसे भी अब अपना साम्राज्य बढ़ाना है, साथ ही वह एशियाई राष्ट्रों को अपनी बपौती समझता है। योरप में उसका छू-मंतर चल ही रहा है। कभी फ़्रान्स में उसकी टाँग अड़ती है तो कभी यूगोस्लेवेकिया में। पोलैंड को वह लिये ही बैठा है। टर्की पर उसका दाँत गड़ ही चुका है, ईरान उसके मंतर से अधिया ही चुका है, अरब-संघ से उसने दोस्ती गाँठ ही रक्खी है। एशिया में वह मंचूरिया में उधेड़-बुन कर ही रहा है। स्वतंत्रता प्राप्त करनेवालों की वह पीठ ठोंक ही रहा है। बस उसे चाहिए क्या? खाओ नहीं तो ढरका ही दो। यही सब तमाशे हैं जिससे आजकल अमरीका, ब्रिटेन और रूस में खुट्टी हो रही है।

* * *

कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने राष्ट्रपति मौलाना आज़ाद को यह अधिकार दिया है कि वह ब्रिटेन के तीनों मंत्रियों से कांग्रेस की ओर वार्ता करें। बूढ़े पैथिक लारेंस ने बूढ़े गांधी बाबा को विशेष रूप में निमंत्रित किया है। अपने राम को आशा तो बहुत होती है कि कुछ न कुछ नतीजा निकलेगा ही किन्तु शिमला-सम्मेलन की दुर्घटना की जब याद आती है तो दिल दहल जाता है। मिस्टर जिन्ना बेचारे आखिर क्या करेंगे? उनको भी निमंत्रण मिला ही है, क्या बिना 'पाकिस्तान' के वह आगे नहीं बढ़ेंगे? अगर मेजर एटली के वक्तव्य में सार है तब तो ठीक ही है, नहीं तो नाटक तो होगा ही, जिन्ना साहब नाटक करने से बाज न आयेंगे। कांग्रेस की ओर से राष्ट्रपति हिन्दू-मुसलमान तथा समस्त राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करेंगे और मुसलिम लीग की ओर से बेचारे मिस्टर जिन्ना! भारत के भाग्य का फ़ैसला हिन्दुस्तान दो महान् मुसलमानों के हाथ में है, अपने राम को इसकी निहायत खुशी है।

* * *

मिस्टर जिन्ना कहते हैं कि कांग्रेस मुसलमानों में फूट डालकर मुसलिम लीग को नष्ट कर देना चाहती है। अपने राम की राय में 'जाको राखे साइयां मारि न सक्कै कोय।' कांग्रेस ने तो सदा लीग को जिंदा किया है, मिस्टर जिन्ना की यह उलटवांसी समझ में नहीं आती। अगर कांग्रेस नेता न चाहते तो मुसलिम लीग न तो मुसलिम लीग बन जाती और न मिस्टर जिन्ना क़ायदे आजम मिस्टर जिन्ना। फिर कांग्रेस क्या ब्रिटिश सरकार तो मिस्टर जिन्ना के साथ है ही। इधर का हाल अपने राम को पता नहीं, लेकिन पहले तो सरकार और मिस्टर जिन्ना दो शरीर एक जान बने रहे हैं। फिर कांग्रेस की क्या बिसात! कोई लड़ना ही न चाहेगा तो लड़ाई करानेवाले ही क्या करेंगे? ब्रिटिश सरकार तो जमाने से फूट की लड़ाई कराती आ रही है। मिस्टर जिन्ना सरकार पर यह तोहमत क्यों नहीं लादते? किन्तु सच यह है कि अभी उम्मीद तो है ही। अंत में सरकारं शरणं गच्छामि से ही उद्धार की उम्मीद की जा सकती है। लेकिन भाग्य की बात, हम नहीं जानते कि अब ब्रिटिश सरकार मुसलिम लीग के विपरीत हो जाये। कहा भी नहीं जा सकता क्योंकि 'आरत काह ना करत कुकरमू'! ब्रिटिश-लीला की माया ही विचित्र है।

* * *

प्रान्तीय धारा-सभाओं के चुनाव समाप्त हो चुके हैं। प्रान्तों में मंत्रिमंडलों के बनने के दिन नजदीक आ गये हैं। कांग्रेस का जिन प्रान्तों में बहुमत है, वहाँ कांग्रेसी-मंत्रिमंडल बनेंगे ही, इसमें संदेह नहीं। इसलिए सुना जा रहा है कि गवर्नरी-राज्यों के सलाहकार—अफ़सरान—खास कर अँगरेज आई० सी० एस० अब चलते-फिरते नजर आ रहे हैं। अपने राम के कहने का मतलब यह है कि या तो वह लंबी छुट्टियाँ ले रहे हैं या इधर-उधर तो दो ग्यारह हो रहे हैं। क्यों, आखिर ऐसा क्यों? क्या कांग्रेस-सरकार कोई हौआ है जो पहले से ही तैयारियाँ शुरू हो गई हैं या अंगरेज आई० सी० एस० के लिए अछूत। लेकिन सच तो यह है कि कांग्रेस-सरकार के आते ही उनकी मनमानी और घर जानी वाली नीति छू-मंतर तो हो जाएगी, इसलिए अब कोई रास्ता नहीं। भला हुआ हिन्दुस्तानी आई० सी० एस० अफ़सरों का। हिन्दुस्तानी होने का लाभ कांग्रेस-शासन में न उठायेंगे तब कब! अँगरेज आई० सी० एस० समझते हैं कि उनके भाग्यचन्द्र में ग्रहण लग रहा है और हिन्दुस्तानी आई० सी० एस० समझ रहे हैं कि ग्रहण के बाद उरगह होनेवाला है।

* * *

डिक्टेटरी की संसार में सदा निंदा की गई। हिटलर, मुसोलिनी गायब ही हो गये किन्तु मार्शल स्टेलिन की डिक्टेटरी अभी चालू है। भारत में तो डिक्टेटरी पनप नहीं सकती क्योंकि ब्रिटिश-प्रजातंत्र का यहाँ बोलबाला है। वाइसराय लार्ड वैवेल भारत के एक किस्म के डिक्टेटर कहे जा सकते हैं, किन्तु उनकी भी पूंछ दबी हुई है लेकिन यह जान पड़ता है कि अब लार्ड वैवेल की डिक्टेटरी का भाग्योदय होनेवाला है। जो शिष्ट-मंडल भारत आ रहा है, उनके आने पर लार्ड वैवेल डिक्टेटरी करेंगे। राष्ट्रीय सरकार की स्थापना में उन्हें डिक्टेटरी के पूर्ण अधिकार दिये गये हैं, अच्छा है अपने राम तो बेतरह प्रसन्न हैं क्योंकि लार्ड वैवेल असलियत में डिक्टेटर-पद पर प्रतिष्ठित हो जाएँगे। स्वराज्य तो मिलेगा ही। आज नहीं कल और कल नहीं परसों, डिक्टेटरी से ही सही। अपने राम को आम खाने से मतलब है न कि गिनने से।

सर स्टेफोर्ड क्रिप्स अन्य मंत्रियों के साथ भारत आ रहे हैं। देखना है इस बार भारतवर्ष को कौन-सी सौगात देकर जाते हैं।

गीत

(झपताल)

लेखक, युगप्रवर्तक कवि 'निराला'

रहे चुपचाप मन मारकर हाथ पर
हाथ रखकर, गई अपनी सही नाप।
विश्व की विफलता अनुपम शकुन्तला
रह गई, विरदेश-ऋषि का लगा शाप।
साहस गया, बदलते रहे दिवस-छन,
लग गया ग्रीष्म युग का बढ़ा ताप।
प्रशमन सदा अखिल चेतन सरसराशि
पहुँची अकाल तक मन की उड़ी भाप।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

मिस्टर एटली की नई घोषणा

ब्रिटेन के प्रधान-मंत्री मिस्टर एटली ने पार्लियामेंट में गत सप्ताह बड़ा महत्त्वपूर्ण और सुन्दर भाषण दिया है। मिस्टर एटली ने, भारत में आनेवाले ब्रिटिश मंत्रियों के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए भारतीय राजनीतिक समस्या पर भी अपने विचार व्यक्त किये हैं। मिस्टर एटली के कथनानुसार आज का भारत २०—३० वर्ष पूर्व का भारत नहीं है। अब उसमें आकांक्षायें और स्वतंत्र होने की प्रबल भावनायें उत्पन्न हो गई हैं। युद्धोत्तर काल में वह उत्तरोत्तर आगे बढ़ता जा रहा है। भारत में मतभेद अवश्य है किन्तु उसकी माँग एक ही है। भारत स्वयं अपनी समस्या हल करने का अधिकारी है। अल्प-संख्यकों की समस्यायें चिन्तनीय अवश्य हैं और उसकी उपेक्षा भी नहीं की जा सकती किन्तु बहुसंख्यकों के मार्ग में अल्प-संख्यक समुदाय को बाधक नहीं बनने दिया जायेगा। स्वतंत्र भारत एशिया का नेतृत्व करेगा। इसके सिवा मिस्टर एटली ने त्रिमंत्रियों के आगमन के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए कहा है कि ब्रिटिश प्रतिनिधि भारत के भावी शासन-विधान के निर्माण में सहायता और सहयोग प्रदान करेंगे। विधान बनने के पूर्व केन्द्रीय सरकार के भारतीयकरण में वाइसराय को पूर्ण स्वतंत्रता होगी। मिस्टर एटली ने यह भी घोषित किया है कि स्वतंत्र भारत चाहे तो ब्रिटिश साम्राज्य संघ के अन्तर्गत अपने को रख सकता है और चाहे तो स्वतंत्र भी हो सकता है।

इसमें संदेह नहीं है कि मिस्टर एटली की यह घोषणा भारतीय राजनीतिक क्षेत्र के लिए अपने ढंग की अकेली है। अब तक किसी भी ब्रिटिश नेता की ओर से भारत के संबंध में इतनी स्पष्टता नहीं दिखाई गई थी। चर्चिल सरकार तो सदा से भारत को स्वाधीनता के अनुपयुक्त ही समझती रही और दमन का दौरदौरा ऐसा हुआ कि आज उसी के परिणाम-स्वरूप भारत अपने ध्येय की प्राप्ति के नजदीक पहुँच गया है। शिष्ट-मंडल के भारत में आने की सूचना जिस समय प्रकाशित हुई थी उसी समय कांग्रेस नेताओं ने यह स्पष्ट रूप से कह दिया था कि यदि ब्रिटेन भारतीय भविष्य के संबंध में कुछ करना तथा भारतीयों का सहयोग चाहता है तो उसे सबसे पहले भारत की पूर्ण स्वतंत्रता के सिद्धान्त को स्वीकार करना चाहिए। मिस्टर एटली के भाषण से यह साफ़ प्रगट होता है कि वर्तमान ब्रिटिश सरकार भारतीय पूर्ण स्वतंत्रता के सिद्धान्त को स्वीकार करती है। यदि मिस्टर एटली के कथन में सचमुच तथ्य है तो यह आशा होती है कि भारतीय राजनैतिक हल का मार्ग निश्चित रूप से प्रशस्त होगा और उसकी माँगों की पूर्ति के लिए क्रियात्मक उपायों का अवलंबन किया जायेगा।

सच पूछा जाय तो ब्रिटिश सरकार की अब तक की नीति यही रही है कि भारतीय मतभेदों से लाभ उठाकर वह अपनी साम्राज्यवादी नीति मजबूत बनाती रहे। भारतीय अल्प-संख्यक उसके काम में सदा सहायक बनते रहे हैं। मिस्टर एटली का यह कहना कि भारतीय स्वयं अपनी समस्या हल करेंगे और बहुसंख्यकों के कार्य में अल्प-संख्यकों को बाधक न होने दिया जायेगा, अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और भावी शासन-नीति पर प्रकाश डालनेवाला है। क्या सचमुच ब्रिटिश सरकार मुस्लिम लीग ऐसी अल्प-संख्यक दल की माँगों की ओर ध्यान न देगी? क्या मिस्टर जिन्ना की पाकिस्तानी माँग की उपेक्षा की जायगी? क्या डाक्टर अंबेडकर जमात की भी भारत के भावी-विधान निर्माण में अड़ंगा उत्पन्न करने पर सरकार ध्यान न देगी? क्या देशी रियासतों के संबंध में भी इसी प्रकार की कोई नीति स्थिर की गई है? गत शिमला सम्मेलन के अवसर पर मिस्टर जिन्ना और उनकी जमात ने जो नाटक खेला था, यदि उसी प्रकार का नाटक पुनः खेला गया तो त्रिमंत्रियों की नीति क्या होगी? क्या भारतीय स्वतंत्रता थोड़े से राष्ट्र-विरोधी, पूँजीपतियों, जमींदारों अथवा ताल्लुक़दारों की बोर्जुआ नीति के सामने दफनाने का षड्यंत्र तो न रचा जाएगा? वाइसराय को अस्थायी सरकार के निर्माण में जो पूर्ण स्वतंत्रता दी गई है, उसके अंतर में कोई गुप्त-भावना तो काम नहीं कर रही है? क्या सचमुच लार्ड वेवेल मुस्लिम लीग ऐसी संस्था की माँगों की कुछ भी परवाह न करेंगे जिसे शक्तिशाली बनाने में ब्रिटिश-सरकार सदा से प्रयत्नशील रही है? मिस्टर एटली की नई घोषणा से जहाँ एक ओर प्रसन्नता होती है वहाँ वर्तमान राजनीतिक अड़ंगे के उपकरणों को ध्यान में रखकर तथा ब्रिटेन की पूर्व नीति का ख्याल करके कुछ संदेह भी होता है।

यह बात सही है कि २०-३० वर्ष पूर्व का भारत आज का भारत नहीं है। वह अपनी स्वाधीनता के लिए आज कटिबद्ध है। वह ब्रिटिश सरकार के हाथ से शासन-सूत्र अपने हाथ में लेने के लिए अग्रसर हो चुका है। यदि सचमुच ब्रिटिश सरकार कुछ नहीं करती तो वह दिन आ सकता है जब कि भारत उसके हाथ से बाहर हो सकता है। इसलिए ऐसी परिस्थिति में यदि ब्रिटिश-सरकार सजग हो उठी हो तो कोई आश्चर्य नहीं। इसके सिवा सबसे प्रमुख स्थिति अन्तर्राष्ट्रीयता की है। आज की अन्तर्राष्ट्रीय नीति बड़ी ही संघर्षपूर्ण है विशेषकर एशिया की। एशियाई राष्ट्रों में राष्ट्रीयता जागृति हो चुकी है। बड़ों राष्ट्रों में ही नहीं छोटे राष्ट्रों में भी विदेशियों के चंगुल से छुटकारा पाने की तीव्र अभिलाषा उत्पन्न हो गई है। वहाँ के स्वतंत्रता के आन्दोलन से यह प्रमाणित हो चुका है कि वह बिना पूर्ण स्वतंत्रता के किसी प्रकार भी आत्म-समर्पण करने को उद्यत नहीं है। सोवियट रूस की स्थिति भी ऐसी विचित्र रूप ग्रहण करती जा रही है जो ब्रिटिश और अमरीकन हित की दृष्टि से खतरनाक है। ब्रिटेन इस प्रकार के वातावरणों से अनभिज्ञ नहीं है। यही सब कारण है जिससे यदि ब्रिटिश सरकार अपनी नीति में किसी प्रकार के परिवर्तन करने के लिए अग्रसर हुई हो तो उचित ही है। ४० करोड़ के स्वतंत्र भारत की शक्ति अजेय होगी। यदि वह आज ब्रिटिश साम्राज्यवाद का विरोधी है तो अन्य साम्राज्यवादियों का भी वह खुलकर मुक़ाबला करेगा, जो भारत पर अपनी छत्रछाया स्थापित करना चाहेंगे। अब वह किसी प्रकार भी विदेशियों का गुलाम बनकर नहीं रह सकता। उसकी सत्ता पूर्ण स्वतंत्र होगी। देखना है मिस्टर एटली की घोषणा में कितना सार है और किस अंश तक भारतीय स्वतंत्रता में सहयोग देती है।

* * *

बापू के प्रति

लेखक, श्री श्रीपालसिंह 'क्षेम'

सत्य के तुम प्यार, बापू!
खो हृदय की शक्ति मानव, तर्क के तम में पड़ा था,
खोजता 'अमरत्व' मानव मृत्यु के पथ पर खड़ा था,
'स्थूलता' पर 'आत्मा' की, तुम, विजय के हार, बापू!
भूख की ज्वाला उदर में, ले नयन में तप्त पानी,
दीनता की चिर-अमा में भटकते शत-कोटि प्राणी,
आ गये तब मुक्ति का बन ज्योतिमय उपहार, बापू!
सूखता था बन्धनों में कंठ मा का प्यास से जब,
नापता था मूक मानव पंथ अपनी साँस से जब,
स्वर्ग से भू पर चले बन मुक्ति-गंगा-धार, बापू!
अश्रुओं में सिक्त मानवता कुटीरों में पड़ी थी,
रक्त पी उन्मत्त दानवता प्रलय-पथ पर खड़ी थी,
तुम रुदन में हास जाग्रति के नवल त्यौहार, बापू!
ओढ़कर आलोक-चादर दासता के रक्त घन में,
उग गये 'सावरमती' के श्रृंग से जग के गगन में,
विश्व-मानव-मुक्ति के तुम हो अमल भिनसार, बापू!
'वर्तमान' 'अतीति' को 'भावी'-किरण से बाँधते हो,
दृढ़ अहिंसा के व्रती, तुम विश्व-मंगल-साधते हो,
'नाश'-निशि में तुम 'अनश्वर' के किरण-संचार, बापू!
बोलते तुम आज युग का कंठ तुममें बोलता है,
छाँह में तेरी नया युग पंख अपने खोलता है,
मौन तुम, युग मौन, तुम 'युग-देव' के अवतार, बापू!

राजनीतिक और दार्शनिक

प्रोफेसर जोड किस प्रकार जीवन बिताते हैं?

लेखक, श्री विष्णुकान्त मालवीय, बी० ए०

"मैं इस बात का घोर समर्थक हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति को जनता के समक्ष अपने व्यक्तिगत विचारों को व्यक्त करने की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए।"

उपर्युक्त कथन इँगलैंड के सुप्रसिद्ध विद्वान्, दार्शनिक, एवं राजनीतिज्ञ श्री सी० ई० एम जोड का है। श्री जोड व्यक्तिगत स्वतंत्रता के पक्षपाती हैं। आप जो कुछ सोचते हैं उसे कहने में जरा भी संकोच नहीं करते और मनवांछित वस्तु को प्राप्त करने के लिए मर मिटने को सदैव तैयार रहते हैं।

उदाहरणार्थ, एक बार आप लंदन के रेडियो स्टेशन में प्रोग्राम में भाग लेने के लिए गये। वहाँ एक स्थान पर लिखा था—"स्टूडियो में सिगरेट पीना मना है।" श्री जोड की दृष्टि उस नोटिस पर पड़ गई। उनको चिढ़ाने के लिए वह काफी थी। आप सिगरेट पीना अपना जन्म सिद्ध अधिकार समझते हैं। आपने उस आज्ञा को उल्लंघन करना ही उचित समझा। जेब से सिगरेट-केस निकाल कर आपने तुरन्त पीना शुरू कर दिया। स्टूडियो कर्मचारी आश्चर्य-चकित होकर फुसफुसा रहे थे। पर प्रोफेसर जोड बड़े निश्चिन्त भाव से धूमपान करते रहे, और तब तक करते रहे जब तक कि आपकी सिगरेट खत्म न हो गई। और अब तो आप ब्रेखटके लंदन स्टूडियो द्वारा आयोजित "ब्रेन्स ट्रस्ट" के प्रोग्राम में दियासलाई की तीलियाँ चटकाते हुए सुनाई पड़ते हैं।

प्रोफेसर जोड का रेडियो पर भाषण सुनने लायक होता है। श्रोतागणों की टीका-टिप्पणी से आप घबड़ाते नहीं, बल्कि उसका स्वागत करते हैं। आप बिना किसी संकोच के अत्यंत सरल भाव से माइक्रोफोन से सब कुछ कह डालते हैं मानो माइक्रोफोन स्वयं एक जानदार, जीता-जागता सरल विचारवाला उनका एक शिष्य हो। श्रीयुत जोड के कई एक हितचिन्तकों ने उनको रेडियो पर भाषण देते समय, एक ही बात में सब कुछ कहने से कई दफ़ा रोकने की चेष्टा की, किन्तु उनके प्रयास सर्वथा निष्फल रहे। वह आँख मूँदकर निर्भय हो बोलते ही रहे। इतना सब होते हुए भी श्री जोड को अपने से किये गये प्रश्नों का छोटे से छोटा प्रत्युत्तर देने का श्रेय प्राप्त है। आपके उत्तर अत्यंत मार्मिक एवं चुटीले होते हैं। यद्यपि आपको कतिपय प्रश्नों का लम्बे ढंग से बढ़ाकर उत्तर देने में ही मजा मिलता है। आप उत्तर देते समय श्री हक्सले अथवा कैम्पबेल जैसे समकालीन कलाकारों की भाँति सकुचाते नहीं।

प्रोफेसर साहब को आरामतलबी और बैठकबाजी अत्यंत पसन्द है। उनके हैम्पस्टेड स्थिति निवासस्थान पर अकसर गोष्ठियाँ हुआ करती हैं। आप इन गोष्ठियों में खुलकर धूम्रपान और विचार-विनिमय करते हैं। वह अपनी इसी आरामतलबी की आदत से लाचार हैं, और यही कारण

शेष पृष्ठ १७ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के लिए रोटी और आजादी

साम्राज्यवादी नीति के विरुद्ध अन्तिम आन्दोलन

लेखक, श्री एस० लक्ष्मण शास्त्री

भारत की तात्कालिक आवश्यकता क्या है—रोटी और आजादी। इस लेख में वर्तमान राजनीति का एक अध्ययनपूर्ण लेखा-जोखा है, जिसमें भोजन-समस्या उसके हल और स्वतंत्रता-प्राप्ति की तत्काल आवश्यकता बतलाई गई है। लेख अत्यन्त सुन्दर और सामयिक है।

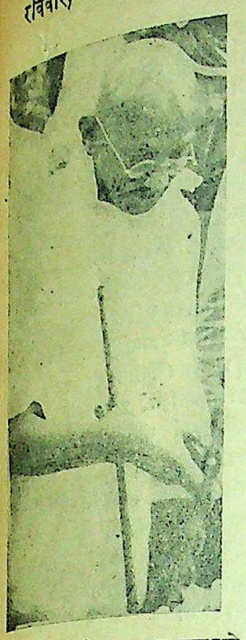

महात्मा गांधी ने भोजन-समस्या सुलझाने के उपाय बताये हैं।

जब से सरकार ने युक्तप्रान्त, मद्रास, बम्बई आदि प्रान्तों में जनता को मुश्किल से प्राप्त अपर्याप्त राशन में भी कटौती का हुक्म जारी किया और भारत के विभिन्न भागों में बंगाल से भी भयंकर अकाल के पड़ने की आशंका प्रकट की तब से सारे देश में एक विचित्र प्रकार की बेचैनी और असन्तोष फैल गया है। आजाद हिन्दुस्तान के अफ़सरों पर मुक़दमा चलाने और डच इण्डोनेशिया, फिलस्तीन, सीरिया, लेबनान, यूनान इन तमाम देशों के स्वातन्त्र्यान्दोलन को कुचलने और दुरंगी चाल के जरिये उक्त देशों की जनता को साम्राज्यवादी शिकंजे में फंसाये रखने के लिए ब्रिटिश, फ्रेंच और डच साम्राज्यवादियों द्वारा पिछले कुछ महीनों में किए अत्याचारों से इस देश के कोने कोने में साम्राज्यवाद के विरुद्ध तीव्र असंतोष की जो ज्वाला भभक रही थी वह उस तरफ राशन में, रोटीकर जनता के पेट पर छुरा चलाने और उसी समय कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली, पेशावर, कराची, लाहौर, मथुरा, मद्रास इन सभी जगहों में निशस्त्र और शान्त जनता पर पुलिस-द्वारा गोली चलाने और अन्यान्य प्रकार के दमनचक्र चलाने से पहले से कहीं भयंकर रूप धारण करने लगा है। ऐसा मालूम होता है कि संसार के इतर पराधीन देशों की जाग्रत जनता के समान भारत की जनता भी आज इस बात को खूब अच्छी तरह महसूस कर रही है कि पिछले लम्बे छः वर्ष के युद्ध के पहले साम्राज्यवादियों ने गुलाम देशों की जनता के साथ जो वादे किये थे, उन्हें जो प्रलोभन दिये गये थे, उन्हें पूरा करना तो दूर रहा उलटे आज वे पाशविक हिंसा-प्रयोग से इन तमाम देशों पर हुकूमत करने की खातिर देख रहे हैं। यद्यपि साम्राज्यवाद का खात्मा करने का ध्रुव संकल्प कर हर जगह 'सदियों' के शोषित किसान, मजदूर, विद्यार्थी एवं निम्न मध्यम श्रेणी के तमाम जनता एक होकर साम्राज्यवादियों के विरुद्ध रोटी और आजादी के लिए अन्तिम संग्राम के लिए प्रस्तुत हो आगे बढ़ रही है। राशन की कटौती को लक्ष लेकर फरवरी के प्रारंभ से लखनऊ, इलाहाबाद, कानपुर, बनारस, आगरा, अलीगढ़, देहरादून, फ़तहगढ़ आदि शहरों में, जैसी भारी हड़तालें, सभायें सभी तबक़ों की जनता की ओर से की गईं "जैसे साम्राज्यवाद-विरोधी प्रदर्शन और भाषण हुए उनसे यह बात स्पष्ट है कि इस देश से साम्राज्यवाद का जुआ उठाकर फेंक देने के लिए आज वह कितनी अधिक उतावली है। इससे यह बात सिद्ध होती है कि देश के विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं में आपस में जैसे भी मतभेद क्यों न हो, जिन्दा रहने के लिए सबसे ज़रूरी चीजें रोटी और कपड़े के प्रश्न ने मजदूर और किसान, हिन्दू और मुसलमान सभी को एक किया है। नौकरशाही और साम्राज्यवादियों से लड़ने के लिए सब में एका पैदा कर दिया है। इधर हाल में बम्बई और कलकत्ते के निशस्त्र प्रदर्शन कारियों पर जैसे दमनचक्र चलाया गया और भारतीय नवसैनिकों की न्यायोचित माँगों की पूर्ति करने के बजाय हवाई जहाज, तोपों, रैफलों से उन पर जो अग्निवर्षा की गई और जिसके फलस्वरूप अपनी न्यायोचित माँगों की पूर्ति कराने के लिए शस्त्रागार एवं बीस जहाज़ों पर क़ब्जा कर उन्होंने साम्राज्यवादियों से जैसा लोहा लिया वह हमारे स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में एक अपूर्व घटना है। और यह भी विशेष स्मरणीय है कि मद्रास, कलकत्ता, दिल्ली, कराची आदि कितने ही जगह नवसैनिकों ने नौसेना में काम करनेवाले अपने भाइयों पर साम्राज्यवादियों-द्वारा किये गये अत्याचारों के विरुद्ध भारी हड़तालें कीं और सरकार की नीति के विरुद्ध प्रदर्शन किये और यह भली-भाँति दिखला दिया है कि उनकी सहानुभूति पीड़ित नौसैना के भाइयों और इस देश की सदियों से शोषित जनता के साथ है। इसके अतिरिक्त अपनी न्यायोचित माँगों को सरकार द्वारा पूर्ति न किये जाने के कारण आज भारत के रेल, डाक और तारघरों में काम करनेवाले मजदूरों की सभाओं, आलइण्डिया रेलवे मेन्स फेडरेशन और आलइण्डिया पोस्ट ऐन्ड टेलीग्राफिक वर्क्स यूनियन ने सरकार को चुनौती दी है कि यदि सरकार अपनी नीति न बदले तो वे आम हड़ताल कर सारे देश के यातायात को अस्तव्यस्त कर अपनी माँगें मानने के लिए उसे मजबूर कर देंगे।

इस प्रकार जब हम देश के जनता की वर्तमान दशा पर विचार करते हैं तो यह बात विदित होती है कि आज हम कारखानों में काम करनेवाले मजदूरों को लें, या चौबीसों घंटे खेतों में काम करनेवाले किसानों को, या दफ़्तरों में काम करनेवाले बाबुओं को लें या फ़ौज में काम करनेवाले सिपाहियों को, इनमें से प्रत्येक आज अपनी-अपनी शिकायतों की, अपनी-अपनी उचित माँगों की पूर्ति के लिए ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़ने के लिए प्रस्तुत हो गये हैं। राशन के सवाल को लेकर जहाँ कहीं भी प्रदर्शन और जुलूस हुए हैं उन सब जगह क्रुद्ध और दुखी मजदूरों के मुंह से नारे निकलते रहे :—जालिम सरकार को हम खतम करेंगे, अपना राशन पूरा लेंगे, हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई सबका दुश्मन नौकरशाही। और प्रत्येक इस बात को खूब अच्छी तरह महसूस करने लगा है, जब तक ब्रिटिश हुकूमत के हाथ से शासनयन्त्र छीन कर देश की जनता के चुने हुए सच्चे प्रतिनिधियों की सरकार नहीं कायम की जायगी तब तक न वर्तमान गंभीर खाद्य समस्या का हल होगा या रात-दिन खून-पानी एक कर मेहनत करनेवाली इस देश की करोड़ों जनता को इनसान की तरह जिन्दगी बसर करने के लिए आवश्यक परिस्थिति ही उत्पन्न की जा सकेगी। दूसरे शब्दों में आज भारत में विदेशी शासन का अर्थ हो गया है देश की करोड़ों मेहनतकश लोगों के लिए ग़रीबी, अकाल, पाशविक दमन और मृत्यु।

आज की अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति और भारतीय संग्राम

देश की आजादी के लिए साम्राज्यवादियों के विरुद्ध सफल संग्राम छेड़ने के लिए यह आवश्यक है कि क्रान्तिकारी मजदूर किसान वर्ग इस बात को खूब अच्छी तरह समझता हो कि विदेशी हुकूमत को खतम करना, उनके लिए जीवन-मरण का प्रश्न हो गया है। उसको खतम किये बगैर उनके नित्यप्रति जीवन से सम्बन्ध रखनेवाले कोई सवाल हल हो नहीं सकता। देश की स्वाधीनता के लिए अन्तिम सफल संग्राम छेड़ने के लिए यह भी आवश्यक है कि फ़ौज और तमाम निम्न मध्यम श्रेणी की जनता की पूरी-पूरी सहानुभूति मजदूर, किसान तबक़े के साथ हो। आज हम यह देखते हैं कि पिछले २०० वर्ष की अन्धेर के कारण हमारा मुल्क इतना तबाह हो गया है कि शासकों की मेहरबानी पर जीनेवाले मुट्ठी भर लोगों को छोड़कर चालीस करोड़ भारतीयों में कोई भी यह नहीं चाहता कि अब पल भर के लिए भी ब्रिटिश साम्राज्यवादी भारत में रहें और देश को और बरबाद करें। इसलिए देश का बड़ा भारी जन-विभाग साम्राज्यवादियों को इस देश से दूर करने में अपना सब कुछ करने के लिए प्रस्तुत है।

परन्तु साम्राज्यवाद के विरुद्ध सफल संग्राम छेड़ने के लिए एक और बात का हमें ध्यान रखना है, और वह है अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति और हमारे दुश्मन की हालत। क्या आज अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति ऐसी है कि यदि भारत की जनता विदेशी हुकूमत के खिलाफ़ अन्तिम संग्राम छेड़ दे, संसार दूसरे देशों की स्वतन्त्रता और शान्तिप्रिय जनता हमारे आन्दोलन के प्रति हमारे अन्तिम स्वाधीनता संग्राम के प्रति सक्रिय सहानुभूति नहीं प्रकट करेगी? क्या आज पिछले दो महासमरों के बाद साम्राज्यवाद के विरुद्ध मोरोक्को से लेकर मंचूरिया तक के छोटे-बड़े तमाम देशों की शोषित जनता में साम्राज्यवाद की अन्त्य क्रिया करने के लिए आवश्यक नई जाग्रति और क्रान्तिकारी जनान्दोलन पैदा नहीं हुए हैं? क्या पिछले कितने वर्षों के निरन्तर संग्राम के बाद साम्राज्यवाद और उसकी छाया

लार्ड वैवेल भोजन समस्या को सुलझाने के लिये तावड़-तोड़ यत्न कर रहे हैं।

कुंकुम रोली

लेखक, श्री सोहनलाल द्विवेदी, एम० ए०

आई होली, ले करके कुंकुम रोली,
है लगी झूमने दीवानों की टोली,
मैं किसके ऊपर रङ्ग उड़ेलूँ जी भर,
खाली कर दूँ अपनी अबीर की झोली?
तुम बैठे बनकर दूर देश के वासी,
ऐसे अवसर पर छाये क्यों न उदासी?
जिसको जी से चाहा हो, प्यार किया हो,
सब मिले, मिले पर, तुम न आज विश्वासी!
आई होली तो क्या? जब तुम न यहाँ पर,
मैं किसके ऊपर रङ्ग उड़ेलूँ जी भर?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में जीने और पनपनेवाली तमाम प्रतिक्रियावादी शक्तियों को खतम कर एक नूतन समाज की सृष्टि करने के लिए संसार के सभी देशों के क्रान्तिकारी मजदूर आज जी-जान से यत्न नहीं कर रहे हैं? क्या पिछले महासमर के फलस्वरूप नाजीवाद और फासिस्टवाद के जड़ काटने के साथ ही विश्व साम्राज्यवाद के रीढ पर प्रहार कर उसे पहले से कहीं कमजोर नहीं किया गया है? और क्या इसके मुक़ाबले में विश्व में वास्तविक शांति चाहनेवाली प्रजातन्त्रवाद का विजय और साम्राज्यवाद का अन्त करने के लिए प्रयत्नशील संसार की जनता की ताक़त आज युद्ध के पहले से कहीं आगे नहीं बढ़ी है?

आज की अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति का साधारण से साधारण ज्ञान रखनेवाला व्यक्ति भी इस बात को खूब अच्छी तरह से अपने मन में अनुभव करता है कि सन् १९१४-१८ के महासमर के बाद संसार के सभी गुलाम देशों में साम्राज्यवाद के विरुद्ध जनान्दोलन की जो आग भभक उठी थी वह सन् १९३९-४५ के महासमर के समाप्त होने के साथ इस क़दर प्रज्वलित हो उठी है कि आज हम इस पृथ्वी के एक आंचल से दूसरे आंचल तक अपनी दृष्टि डालते हैं तो हम इस बात में कोई सन्देह ही नहीं रह जाता कि विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक फैले हुए पराधीन देशों की प्रचण्ड जनान्दोलन की अग्नि में जलकर विश्व साम्राज्यवाद खाक होना चाहता है। आज विश्व में ऐसा एक भी मुल्क नहीं है जहां की जाग्रत जनता पल भर के लिए भी साम्राज्यवादी शासन और साम्राज्यवादी शोषण को बर्दास्त करने के लिए तैयार हो। जब तक लड़ाई चलती रही तब तक योरप के कितने ही देशों में फासिस्टों का साथ देनेवाले प्रतिक्रियावादियों को बनाये रखकर वहाँ की जनता का रक्तशोषण करने के लिए साम्राज्यवादियों ने भरपूर यत्न किया, अपनी पूरी चातुरी दिखलाई। लेकिन हर जगह वे असफल रहे। लड़ाई खतम होने के बाद पराधीन देशों की जनता के साथ किये गये सभी वादों को भंग कर यूनान, मिस्र, शाम, लेबनान, सऊदी अरब, इराक़, ईरान, भारत और उधर बर्मा, श्याम इन्डोनेशिया हिन्दचीन, फिलपाइन इन तमाम देशों में साम्राज्यवाद के उखड़ते हुए पैरों को जमाये रखने के लिए आज ब्रिटिश, फ्रेंच, उच्च साम्राज्यवादी जनता पर अपनी पूरी शक्ति लगाकर दमनचक्र चला रहे हैं और अमेरिका और कुछ अन्य देशों के प्रतिक्रियावादी उसका समर्थन कर रहे हैं, तिस पर भी जनता की नहीं साम्राज्यवादियों की हार हो रही है। हर जगह मजदूर, किसान, फ़ौज के सिपाही और निम्न मध्यम श्रेणी की सारी जनता उठकर एक साथ पतनोन्मुख साम्राज्यवादियों से जबरदस्त टक्कर ले रही है, या किसी-किसी जगह लेने के लिए पूरी तरह से संगठित हो रही है।

पिछले कितने ही सदियों से संसार की सबसे बड़ी महाशक्ति ब्रिटेन समझा जाता रहा है। प्रथम महासमर के बाद यह स्थिति नहीं रह गई थी। परन्तु आज ब्रिटेन के राजनीतिज्ञों में ही यह एक विवादग्रस्त विषय हो गया है कि इस लड़ाई के बाद ब्रिटेन की शक्ति अत्यधिक कमजोर होने से वह एक दूसरे दर्जे का राष्ट्र हो गया है या तीसरे दर्जे का। ब्रिटिश द्वीपपुंज की कुल आबादी साढ़े चार करोड़ है, अर्थात् भारत के किसी-किसी प्रान्त की आबादी के बराबर है। परन्तु इस पिछले समर के बाद वह अन्दर से इतना खोखला हो गया है कि उसे अपनी हालत सँभालने के लिए अमेरिका से भीख माँगनी पड़ी है। युद्ध के ज़माने में मनमाफिक दाम पर अरबों का माल भारत से ले जाया गया। लेकिन उसका दाम चुकाने के लिए उसके पास एक कौड़ी नहीं है। और आज सेना से निकाले हुए ब्रिटिश अफ़सरों को नौकरी दिलाने और अपने यहाँ के लोहे के और अन्यान्य तरह के माल को हमारे देश में खपाने, अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए उसके नुमाइन्दे बढ़-बढ़कर भारत के औद्योगीकरण की ओर यहाँ की जनता की भलाई की बातें करने लगे हैं। बड़े-बड़े भारतीय पूंजीपतियों और ब्रिटिश पूंजीपतियों में गठबन्धन होने लगा है। कहने का तात्पर्य यह है कि इस महासमर के खतम होने के साथ ही साथ संसार में सब जगह साम्राज्यवादियों के पैर उखड़ते जा रहे हैं। हर जगह कमजोर से कमजोर देशों में भी संगठित जनता के प्रहारों से साम्राज्यवादियों की शक्ति दिन ब दिन बराबर क्षीण होती जा रही है। परन्तु उसी समय अपने साम्राज्य को पूर्णतया चूर-चूर होने से बचाने के लिए वे हर तरह की दमन की नीति अख्तियार कर रहे हैं। जनता के नागरिक अधिकारों पर हर जगह कुल्हाड़ी मार रहे हैं। निशस्त्र जनता पर तोपों और बन्दूकों से अग्नि-वर्षा कर रहे हैं। मजदूर किसान सभाओं में फूट डालकर उन्हें एक-एक करके कुचलने के लिए कोशिश की जा रही है। राजनीतिक दलों को आपस में खूब भिड़ाकर उनमें कभी एकता न पैदा होने के लिए प्रयत्न किया जा रहा है जिससे कि अमेरिका और दूसरे देशों में जाकर उन्हें यह कहने का मौक़ा मिले कि "देखो इन लोगों में आज भी एक दूसरे को गिराने की, एक दूसरे के गले पर छुरा चलाने की सूझ रही है; यदि हम हट जायँ तो इन देशों में गृहयुद्ध होगा।" अपनी नित्यप्रति गिरती हुई प्रतिष्ठा और शक्ति और हर जगह गुलाम देशों में उठते हुए महान् जनान्दोलन से भयभीत होकर साम्राज्यवादी उसका परिहार करने के लिए उन सभी साधनों और तरकीबों को आज इस्तेमाल कर रहे हैं, जो हिटलर, मुसोलिनी और तोजो ने इस्तेमाल किये थे; दूसरी तरह विभिन्न प्रकार की कूटनीतिक चालबाजियों से भारत और अन्य तमाम उपनिवेशों को वर्षों तक गुलाम बनाये रखकर जनता का रक्त शोषण करने के लिए कोशिशें हो रही हैं। क्रिप्स-योजना, वैवेलयोजना, भारत को हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, राजिस्तान इस प्रकार तीन टुकड़े करके तीनों को गुलाम बनाये रखने की योजनायें सब इस बात के लिए प्रमाण हैं। आज जब कभी साम्राज्यवादी भारत के विषय में बात करते हैं तो उस समय इस बात का विशेष जोर देकर कहते हैं कि देशी नरेशों के साथ हमने जो सन्धियाँ की हैं उसकी शर्तों की हम कदापि उपेक्षा नहीं कर सकते। साम्राज्यवादी इस बात को समझते हैं कि भारत का बच्चा बच्चा उनके खिलाफ है, उनसे घृणा करता है, उन्हें खतम हुए देखने के लिए इच्छुक है। परन्तु वस्तुस्थिति यह होते हुए भी येनकेन प्रकारेण उपनिवेशकों को अपने हाथ से जाने न देने के लिए वे तरह-तरह की कोशिशें कर रहे हैं, कभी पाशविक शक्ति से जनान्दोलन को कुचलने की और कभी-कभी मीठी-मीठी बातें कर जनता की आँखों में धूल झोंकने की। यह आज की स्थिति है।

आपस में न्याय और अन्तिम संग्राम

एक जमाना वह था जब योरप के इतिहासकार एक स्वर से इस बात को स्वीकार करते थे कि संसार में सबसे समृद्ध, सबसे धनी, सबसे विभव-सम्पन्न कोई देश है तो वह भारत है। अँगरेज इतिहासकारों ने बराबर इस बात को जोर देकर कहा है कि भारत जिसदिन हमारे हाथ से चला जायगा उसके बाद संसार में कोई हमें नहीं पूछेगा। अँगरेज साम्राज्यवादी भारत आये थे यहाँ की धन-दौलत के लिए, इस देश की जनता को एक दूसरे से लड़ाकर इस पर हुकूमत करने और यहाँ की जनता का रक्त शोषण कर मालामाल होने। पिछले दो सौ वर्ष तक उसने यह किया आज भी कर रही है जिसका फल यह है कि जहाँ संसार के कितने ही पिछड़े देशों में शासन की बागडोर अपने हाथ में करके जनता 'जीवन के हर क्षेत्र में प्रगति कर रही है, परन्तु हमारे देश में आज जनता की क्या हालत है—पिछले दो सौ वर्ष से विदेशी शासन ने देश को तबाह कर दिया है। साम्राज्यवादी शोषण और साम्राज्यवादियों के आसरे पर जीनेवाले प्रतिक्रियावादियों के राजे-महाराजे, जमींदार और सूदखोरों के शोषण से मेहनतकश जनता बुरी तरह परेशान है। देश में हर जगह बेरोजगारी, ग़रीबी तरह-तरह की बीमारियों का बोलबाला तो पहले से ही रहा है। लेकिन पिछले युद्ध के समय शासकों द्वारा बर्ती गई राष्ट्र-विरोधी और अहंकारितापूर्ण नीति, जनमत की उपेक्षा जनता पर हर तरह से किये गये जुल्मों से स्थिति इतनी खराब हो गई है कि उसका परिहार इस देश से साम्राज्यवादी शासन को और उसके पैदा की गई प्रतिक्रियावादी शक्तियों को पूर्णतया खतम किये बगैर होने की कोई गुंजाइश दिखलाई नहीं देती और आज जब कि पिछले युद्ध के बाद साम्राज्यवाद कमजोर पड़ गया है जब कि संसार के सभी पराधीन देशों की जनता अपने देश से साम्राज्यवादियों को निकाल बाहर कर सत्ता हाथ में करने के लिए जान हथेली पर लेकर लड़ रही है, भारत की सदियों की शोषित भारतीय जनता माँग कर रही है कि देश का तमाम

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

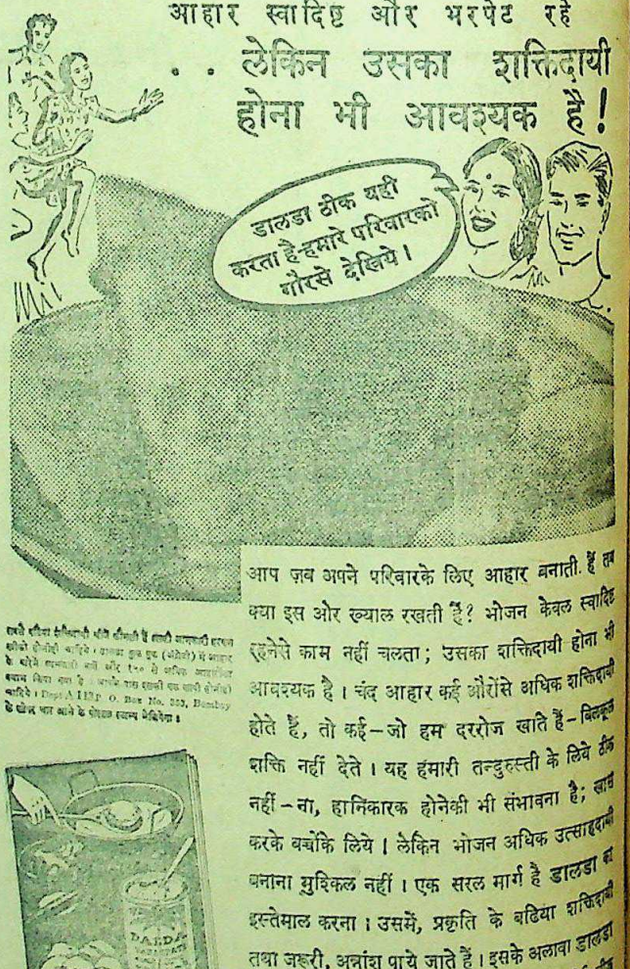

आप जब अपने परिवारके लिए आहार बनाती हैं तब क्या इस ओर ख्याल रखती हैं? भोजन केवल स्वादिष्ट रहनेसे काम नहीं चलता; उसका शक्तिदायी होना भी आवश्यक है। चंद आहार कई औरोंसे अधिक शक्तिदायी होते हैं, तो कई—जो हम दररोज खाते हैं—बिलकुल शक्ति नहीं देते। यह हमारी तन्दुरुस्ती के लिये ठीक नहीं—ना, हानिकारक होनेकी भी संभावना है; खास करके बच्चोंके लिये। लेकिन भोजन अधिक उत्साहवर्धक बनाना मुश्किल नहीं। एक सरल मार्ग है डालडा का इस्तेमाल करना। उसमें, प्रकृति के बढिया शक्तिदायी तथा जरूरी, अन्नांश पाये जाते हैं। इसके अलावा डालडा से आहार में जो स्वाद आती है वह दूसरी कोई चीज नहीं ला सकती। आप स्वयं अनुभव कीजिये।

पौष्टक-तत्व संपन्न डालडा स्वास्थ्य के लिये

HVM 32-50 40 HI THE HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING CO., LTD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योरोपीय महायुद्ध और टर्की

क्या टर्की प्रजातंत्र सचमुच अवसरवादी राष्ट्र है ?

लेखक, श्री नारायणदास खत्री

योरोप में टर्की एक प्रजातंत्र और शक्तिशाली राष्ट्र है। महासमर के समय वह तटस्थ रहा और आज भी अपनी पूर्वनीति पर दृढ है। इस लेख में लेखक ने यह बतलाया है कि टर्की सदा से अवसरवादी राष्ट्र रहा है इसलिये उसे एक प्रजातन्त्रवादी राष्ट्र की हैसियत से नई नीति अपनाना चाहिए। लेखक का इस संबंध में अपना एक मत है, उसी दृष्टि से यह लेख लिखा गया है।

प्रजातंत्र टर्की के डिक्टेटर प्रेसिडेंट हस्मत इनानू

द्वितीय महासमर में टर्की की नीति की हमेशा तीव्र आलोचना होती रही। प्रथम विश्वयुद्ध में उसने जर्मनी का खुलकर साथ दिया था; पर द्वितीय विश्वयुद्ध में उसने एक अस्पष्ट और सन्दिग्ध नीति का परिचय दिया। एक तरफ तो उसने ग्रेटब्रिटेन से मित्रतापूर्ण सम्बन्ध बनाये रखने का नाटक खेला और दूसरी तरफ नाजी जर्मनी के प्रति अपनी वफादारी और मित्रता को सिद्ध करने के लिए सब कुछ किया। स्वतन्त्र होते हुए भी उसने अन्य नाजी अधिकृत देशों की भांति नाजी जर्मनी की शक्ति तथा उसके विजय की सम्भावनाओं का हकीकत से ज्यादा वर्णन किया।

सन् ३९ के शरत्काल में टर्की ने जर्मनी को 'अनाक्रमणकारी राष्ट्र" कहते हुए अपनी तटस्थता की नीति को घोषित किया था जब कि संसार की जनता नाजीवाद से मोर्चा लेकर अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा कर रही थी। टर्की अपने को तटस्थ रखकर नाजियों को सहायता ही पहुंचा रहा था। यह जरूर है कि युद्ध के प्रारम्भ में इसकी तटस्थता-नीति से मित्रराष्ट्रों को भी थोड़ी-बहुत मदद मिली (जब कि हिटलर, पश्चिमी योरोप को पूर्णरूप से अधिकृत करके अफ्रीका में बढ़ रहा था, टर्की की तटस्थता-नीति ने ही उसे स्वेज नहर और नील नदी की ओर अग्रसर होने से रोका); पर सम्पूर्ण युद्ध की घटनाओं के निरावलोकन से यही निष्कर्ष निकलता है कि टर्की की तटस्थता-नीति से नाजी जर्मनी को बहुत ही ज्यादा मदद मिली—बल्कि यह कहना भी अत्युक्ति न होगा कि टर्की ने एक सीमा तक नाजीवाद का समर्थन भी किया।

सन् ४१ में नाजी जर्मनी ने सोवियट यूनियन पर बर्बरतापूर्ण हमला किया। ऐसे वक्त पर टर्की की 'तटस्थता-नीति' का रूप जर्मनी के लिए बहुत ही बढ़ गया। टर्की ने हिटलर को दक्षिणी-पूर्वी मोर्चे की तरफ से बिलकुल निश्चिन्त बना दिया—जिससे कि हिटलर, चारों तरफ से अपनी सैनिक शक्ति को बटोरकर, सोवियट यूनियन के खात्मे के लिए जुट पड़ा। बरेली की ही आवा-जाही की सुविधा उसने जर्मनी को नहीं दी, काले सागर का भी द्वार जर्मनी और उसके चेलों के लिए खोल दिया गया, जिससे कि फासिस्ट आक्रमणकारियों को सोवियट रूस के दक्षिणी हल्कों पर भी आक्रमण करने में पूरी मदद मिली।

युद्ध के अन्तिम वर्षों में जब कि हिटलर की सैनिक शक्ति क्षीण हो चली थी, तभी भी यह 'तटस्थता नीति' जर्मनी के लिए और भी लाभदायक सिद्ध हुई। इसी कारण से नाजियों की हार में इतना विलम्ब हुआ! अगर टर्की सन् ४३ में ही युद्ध में मित्रराष्ट्रों की तरफ से शामिल हो गया होता तो हिटलरी जर्मनी का खात्मा कब का हो गया होता।

इसी प्रकार और भी कितने ही साधनों से टर्की ने नाजियों की मदद की। जर्मनी के युद्ध-उद्योग में कच्चे माल से मदद देनेवाले राष्ट्रों (स्वीडेन, स्पेन, स्विटजरलैंड) में टर्की का स्थान प्रमुख था। टर्की के कुल निर्यात का ९०% हिस्सा जर्मनी को ही भेजा जाता था। नाजियों को क्रोमियम नामक महत्त्वपूर्ण धातु की प्राप्ति टर्की ही से होती थी। अगर यह धातु जर्मनों को टर्की से न मिला करती तो जर्मनी के तमाम बड़े-बड़े इस्पात के धंधे कब के ठप्प हो गये होते। युद्ध के अन्तिम दिनों तक टर्की के प्रमुख प्रतिक्रियावादी पत्रों ने जर्मनी के प्रति अपनी पूर्ण सहानुभूति प्रकट की साथ ही साथ इस बात का आश्वासन भी दिया कि वे आखिरी दम तक नाजियों के मित्र बने रहेंगे।

हिटलर की हार निश्चित हो जाने पर ही टर्की ने जर्मनी से सम्बन्ध-विच्छेद किया; इसके बाद भी जर्मनी के विरुद्ध सिर्फ एक सांकेतिक युद्ध घोषित करने में उसे छः मास लग गये। ऐसा उसने तब किया जब उसने देख लिया कि हिटलरी सेना उसकी सीमा से सैकड़ों किलोमीटर दूर भाग खड़ी हुई है। साथ ही उसको यह भय था कि अगर वह जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा नहीं करता है तो उसे नवीन 'संयुक्तराष्ट्र-संघ' (यू० एन० ओ०) में स्थान नहीं मिलेगा।

टर्की को इस बात की पूर्ण आशा थी कि वह, उस युद्ध में जर्मनी तथा उसके पिछलग्गू राष्ट्रों के साथ व्यापार करके, काफी लाभ उठा सकेगा। अन्तर्राष्ट्रीय दबाव में आकर आखिर उसे जर्मनी से सब प्रकार के सम्बन्धों को तोड़ना पड़ा। नाजी जर्मनी टर्की के कच्चे माल को बहुत ही ऊँचे दर (संसार के नियत दर से छः गुना ज्यादा भाव में) खरीद करता था; परन्तु सिर्फ धुरीराष्ट्रों को ही मदद करनेवाली उसकी एकांगी नीति से उसे बाद में अत्यन्त हानि उठानी पड़ी।

इस नाजी भक्तिवाली नीति से टर्की में कच्चे माल तथा खाद्य पदार्थ की कमी होने लगी। जर्मनी के साथ व्यापार करके टर्की के सिर्फ चन्द सट्टेबाज ही मालदार बन सके, जनता की हालत तो बिगड़ती ही गई। काश्तकारी का अलग सर्वनाश हुआ। इससे काश्तकारों की अवस्था शोचनीय हो गई। महाजन, बनिये व

टर्की के भूतपूर्व वैदेशिक सचिव सिराजोग्लू

जमींदार उन्हें अलग चूसा करते थे—सब तरफ से उन बेचारों की मौत थी! केवल नाजियों के साथ व्यापार करने की नीति ने टर्की के "आयात-निर्यात" पर भी काफी धक्का पहुंचाया। लड़ाई के दौरान में टर्की मुख्यतः उन्हीं वस्तुओं का उत्पादन किया करता था जिनकी जर्मनी को विशेष आवश्यकता रहा करती थी। इन वस्तुओं के उत्पादन में खर्च का कुछ ध्यान ही नहीं रखा जाता था। पर युद्ध के समाप्त हो जाने पर टर्की के आर्थिक ढाँचे को बहुत बड़ा धक्का पहुंचा। अब उसे जर्मनी या उसके अधिकृत देशों से माल नहीं मिलता है और न उसका वह माल ही बिकता है जो वह धुरीराष्ट्रों के लिए पैदा करता था। अन्य देशों से व्यापार करने के लिए वहाँ की करेन्सी' चाहिए जिसका कि उसके पास अभाव था।

योरोप के दूसरे मुल्कों की तरह टर्की में भी प्रतिक्रियावादियों और प्रगतिवादियों के बीच काफी विरोध है। वहां की तमाम प्रगतिशील ताक़तों ने जर्मनी को मदद करने का विरोध किया; पर चूंकि टर्की की सरकार टोड़ियों व प्रगतिविरोधी लोगों के हाथ में है—प्रगतिवादियों के विरोध की जरा भी नहीं सुनवाई हुई, बल्कि उनको हमेशा कुचलने की कोशिशें की गईं। कामगरों को उनके साधारण अधिकारों से भी च्युत कर दिया गया। युद्ध-लिप्त राष्ट्र न होते हुए भी उसने स्त्रियों व बच्चों से भी मजदूरी लेना शुरू कर दिया। मजदूरों के 'विश्राम-दिवस' को भी खत्म कर दिया। उनकी मजदूरी के घंटों को बढ़ाकर कभी-कभी तो १४ घंटों तक कर दिया गया। ट्रेडयूनियनों को दबा दिया गया; यहाँ तक कि शिल्पकारों के साधारण संगठनों को भी कुचला गया।

समाचारपत्रों को भी स्वतन्त्रता नहीं थी। जितने भी जनवादी पत्र थे उनको कुचला गया। लड़ाई के दिनों में वहाँ के सभी प्रतिक्रियावादी पत्रों ने खुलकर हिटलर और उसकी नाजी जर्मनी के गुणानुवाद में कालम के कालम रँगे। अपने ही देश के फासिस्टों को सब तरह से

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

गीत

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०

जग के पत्थर के टुकड़ों को, मैं अपना मोल बताऊँ क्या ?
पथ के कंटक कंकड़ को नूपुर की किल्लोल सुनाऊँ क्या ?
कोयल की कूक लगी, तरु की
सूखी डालें सज-सज आईं।
चातक केकी की टेर लगी
घन-मालाएँ बन बन छाईं।
पर माली की चुटकी को मैं, कलिका के बोल सुनाऊँ क्या ?
सह-सह मानव-आघातों को
मानवता मैंने उकसाई।
अपनी पीड़ा की बूंदों से
पत्थर की प्रतिमा पिघलाई।
वह द्रव पीड़ा, जग के उलटे प्याले में मैं छलकाऊँ क्या ?
कोमल लतिका की कोमल कलि
कोमल कलिका का कोमल मन।
कोमल अलियों का मधु-गुंजन
कोमल मधुऋतु का आकर्षण।
इस कोमल सामग्री की मैं, ऊष्मा को भेंट चढ़ाऊँ क्या ?
सागर ने सरि का मान किया
सरि ने अपनापन खो डाला।
भू ने तप कर घन को टेरा
घन ने निज जीवन रो डाला।
पर अन्धे क्रेता के सम्मुख, तारों की हाट सजाऊँ क्या ?
जग के पत्थर के टुकड़ों को मैं अपना मोल बताऊँ क्या ?

नोक-झोंक
हिन्दी में हास्य-रस का
मज़ेदार मासिक
वार्षिक मू० ३) रु०
एक प्रति ४ आ०
नमूने के लिये टिकट भेजें
एजेन्ट, काटूंनिस्ट चाहिये
—नोक-झोंक, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रिटिश मंत्रियों का आगमन

क्या यह दल भारतीय स्वतन्त्रता का हिमायती है?

लेखक, श्री कालिकाप्रसाद त्रिपाठी

इस मास के अन्त में ब्रिटिश मंत्रि-मंडल के तीन सदस्य भारत आ रहे हैं। यह मंत्रि-गण भारतीय समस्या का अध्ययन करेंगे और भारत में उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिये विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं से वार्ता करके मार्ग निकालेंगे। लेखक ने ब्रिटिश-नीति की आलोचना करते हुए यह स्पष्ट किया है कि क्या सचमुच ब्रिटेन भारत को स्वतंत्रता प्रदान करने के लिये इच्छुक है?

ब्रिटिश सरकार भारतवासियों को उसी प्रकार फुसलाने की कोशिश करती आ रही है जिस प्रकार खिलौने के लिए रोनेवाले बच्चों को निर्धन मौक़े-मौक़े पर ब्रिटिश सरकार नये विधान, शासन-सुधार, समझौते आदि की बातें करने में भारतीय जनमत का ध्यान बाँट देती है। इस काम के पीछे ब्रिटिश सरकार की कोई नेक-नीयती नहीं दिखाई देती। क्योंकि यदि उसके इस काम में कुछ भी ईमानदारी होती तो कोई मानी नहीं कि अब तक समझौता न हो जाता।

सन् १९३९ में लड़ाई प्रारम्भ हुई। भारत को बिना उसकी राय के ही लड़ाई में घसीट लिया गया। भारतीय जनता इस बात से क्षुब्ध हो उठी और बार-बार भारत-सरकार तथा ब्रिटिश सरकार से यह प्रश्न पूछे जाने लगे कि भारत किस हैसियत से लड़ाई में शरीक़ हो रहा है? तत्कालीन वाइसराय तथा भारत-मंत्री ने वक्तव्य दिये। लेकिन जनता को संतोष न हुआ। प्रान्तों की लोक प्रिय सरकारों ने इसी प्रश्न को लेकर स्तीफे दिये। कांग्रेस ने अपना कार्यक्रम बनाया। ठीक उसी समय जब जनता अपनी लड़ाई की तैयारी में लगी थी। ब्रिटिश कूटनीतिज्ञों ने सर स्ट्रेफर्डक्रिप्स को समझौते के लिए भेजा। दिल्ली में कई दिनों तक राजनैतिक दाँव-पेंच चले गये; किन्तु, नतीजा कुछ न निकला। कांग्रेस के लिए भी अपना रास्ता साफ़ हो गया। सरकार ने भी समझ लिया कि, भारत में कुछ होने ही वाला है। हुआ भी—१९४२ का अगस्त आया, कांग्रेस ने 'भारत छोड़ो' का नारा लगाया। सरकार ने दमननीति से काम लेना चाहा, जनता नेताहीन होने पर बागी हो गई। सरकार और जनता दोनों को अनेक कष्टों का सामना करना पड़ा। सरकार ने मनमाने अत्याचार किये। कांग्रेस को अवैध घोषित करके उसकी सारी संपत्ति, जब्त कर ली गई। गिरफ़्तार करके अनिश्चित समय तक के लिए बिना मुक़दमा चलाये ही बंद कर दिये गये। महात्मा गांधी का नज़रबंदी की दशा में २१ दिन का उपवास चला। जनता में और भी असंतोष बढ़ना स्वाभाविक ही था। सरकार ने पुनः दमन की तैयारियाँ शुरू कीं। गांधी जी का अनशन सकुशल समाप्त हो गया।

धीरे-धीरे सन् १९४५ का अंतिम चरण आया; पश्चिम में जर्मनी ने हार मान-ली। जापान के पैर भी उखड़ गये। उसी समय वाइसराय और ब्रिटिश सरकार ने यह दिखाने के लिए कि सरकार कांग्रेस-वालों को परेशान नहीं करना चाहती, कांग्रेस कार्यकारिणी के सदस्यों को छोड़ कर कांग्रेस को पुनः वैध घोषित कर दी। लेकिन ध्यान रहे राजपूताना और मध्य-भारत में आज भी कहीं-कहीं पर कांग्रेस अवैध है। उसी समय जंगी वाइसराय लार्ड वेकेल इँगलैंड से सलाह करके वापस आ गये थे और वे देश की राजनैतिक संस्थाओं को बुलाकर देश में उत्तरदायी सरकार की स्थापना करने की कोशिश करने का नाटक खेलने लग गये। देश के सभी नेता बुलाये गये। सभों ने अपनी-अपनी माँगे रखीं। अन्त में वाइसराय की चिर-परिचित घोषणा हुई, प्रयत्न असफल रहा, लेकिन हिम्मत न हारनी चाहिए।

उसके बाद देश के पूर्व तथा पश्चिम के प्रमुख नगरों कलकत्ता और बम्बई में क्रमशः भयंकर गोलीकांड हुए। इसी बीच इँगलैंड से पार्लियामेंटरी डेलीशन आया। उसने सारे देश का दौरा किया और भारत की दशा को भली भाँति समझा। यद्यपि उसके सभी सदस्य निष्पक्ष न हो सकते थे और न देखे ही गये। किन्तु फिर भी कुछ लोगों ने भारत की वास्तविक दशा को समझने की कोशिश की और वे उसमें बहुत अंशों में सफल भी हुए।

अभी यह शिष्टमंडल इँगलैंड की धरती पर ठीक से पैर भी न रख सका था कि एक और शिष्टमंडल के आने की बातें होने लगीं। इस शिष्टमंडल में हमारे चिर-परिचित राजनीतिज्ञ सर स्ट्रेफर्डक्रिप्स और भारतमंत्री लार्ड पेथिक लारेंस अपने एक और सहयोगी के साथ भारत आ रहे हैं।

इस त्रिमंत्रि-शिष्टमंडल पर वक्तव्य देते हुए मजदूर मंत्रिमंडल के प्रधान श्री एटली ने कहा—'अगर समस्या सुधरवानी है तो भारतमंत्री को निर्णय करने का अधिकार देना ही पड़ेगा लेकिन महत्त्वपूर्ण विषय पर पार्लियामेंट से सलाह लेनी ही होगी।' उसे पढ़कर किसी को भी विश्वास नहीं हो सकता कि यह शिष्टमंडल कुछ विशेष महत्त्व रखेगा। इधर हमारे बड़े-बड़े बेता हमसे धीरज धरने को कहते हैं। महात्मा गांधी ने तो यहाँ तक कह डाला है कि क्या इतने बड़े-बड़े मंत्री हमें धोखा देने आ रहे हैं? हमें शांति रखना चाहिए। हम भी नहीं चाहते कि इतने बड़े-बड़े मंत्री धोखेबाज साबित हों और उनके चले जाने के बाद हमें फिर से कुछ करने पर मजबूर होना पड़े। लेकिन १५० वर्ष के अँगरेजों के वायदों ने हमें मजबूर कर रखा है कि हम उनके प्रति विश्वास न करें।

प्रधान मंत्री श्री एटली के शब्दों में कितनी ईमानदारी है। हमारी माँग केवल एक है और वह है पूर्ण स्वतंत्रता। इससे कम कोई भी वस्तु हमें अपनी ओर झुका नहीं सकती। इस बात को श्री एटली अच्छी तरह से जानते हैं। यदि वे हमारी माँग को मानने को आज तैयार होते तो शायद इस बात को पार्लियामेंट में पहले ही रख देते और यह न कहते कि 'किसी गंभीर विषय पर पार्लियामेंट की सम्मति लेनी जरूरी होगी।' इन वाक्यों से तो साफ़-साफ़ मालूम होता है कि श्री एटली एक खेल करने और भारतवासियों को उस खेल से बहलाने के लिए ही यह शिष्ट-मंडल भेज रहे हैं। क्या भारत के इस प्रश्न का उत्तर उनके किसी भी वाक्य से मिल सकता है कि 'वे गंभीर मामले का क्या अर्थ लगाते हैं।' फिर भारत की तो एक ही सीधी माँग है उसमें गंभीर और अगंभीर का कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

अब रही गांधी जी तथा राष्ट्रपति मौलाना आजाद की बात, सो ठीक है। हम भारतवासी सच्चे और साफ़ हृदय होते हैं इसीलिए सभी पर आसानी से विश्वास कर लेते हैं और इसी का ब्रिटिश सरकार बेजह फायदा उठाती चली आ रही है और आज भी वह वही चाल चलने जा रही है। हम चाहते हैं कि यह ब्रिटिश मंत्रिमंडल का प्रतिनिधिमंडल सफल हो लेकिन हमको उसी पर विश्वास करके अपने कामों को रोक न देना चाहिए नहीं तो अन्त में हमें पछताना पड़ेगा जैसा कि शिमला कांफ्रेंस के असफल होने पर हमारे नेता कहने लगे थे कि 'हमसे ग़लती हुई जो वहाँ गये।' आज हमें अपने रास्ते पर यह विचार करने के लिए भी नहीं रुकना चाहिए कि इस मंडल का ध्येय क्या है? हमको किसी मंडल के द्वारा आजादी नहीं मिल सकती इसका पूर्ण विश्वास कर लेना चाहिए। यदि हम अपने मार्ग पर दृढ़तापूर्वक चलते रहें तो ब्रिटिश सरकार का यह नाटक हमें प्रभावित न कर सकेगा और तभी उसे मालूम होगा कि अब हम तमाशा नहीं देखना चाहते वरन् सच्ची चीज चाहते हैं।

संतुलित प्रतिनिधित्व का चुनाव

साम्प्रदायिक समस्या के हल की एक नवीन योजना

लेखक, श्री ढालगोपाल सिंह, एम० एस-सी०, एल-एल० बी०

साम्प्रदायिक और अल्प-संख्यकों की समस्या हल करने के लिये अनेकों उपाय किये गये, किन्तु अभी तक राजनैतिक नेताओं को कोई सफलता नहीं मिली। इस लेख के विद्वान् लेखक ने इसके हल का एक सुझाव रखा है—संतुलित प्रतिनिधित्वपूर्ण चुनाव। लेखक के कथनानुसार चुनाव की इस प्रणाली के उपयोग से साम्प्रदायिक समस्या के हल में सहायता मिल सकती है। लेख राजनैतिक दृष्टि से विचारणीय है।

संतुलित प्रतिनिधित्व चुनाव की ऐसी एक नवीन पद्धति है जिसके द्वारा किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में रहनेवाले भिन्न समुदाय संयुक्त निर्वाचन-प्रणाली द्वारा अपने समुदाय की जन-संख्या के अनुपात के अनुरूप चुनाव में निर्णयात्मक प्रभाव डालकर अपने समुदाय के मत का प्रभावपूर्ण प्रतिपादन कर सकते हैं। यह नवीन पद्धति संयुक्त निर्वाचन-प्रणाली और प्रथक निर्वाचन प्रणाली दोनों के बीच की एक ऐसी पद्धति है जिसमें दोनों के मुख्य अपराधों का समावेश है।

मान लीजिए कि एक भौगोलिक क्षेत्र की जन-संख्या १०० है और उसमें दो समुदाय हैं, एक हिन्दू जिसकी जन-संख्या ६० है और दूसरा मुसलिम जिसकी जन-संख्या ४० है, इस जन-संख्या में से दो प्रतिनिधियों का चुनाव करना है। एक हिन्दू समुदाय से और दूसरा मुसलिम जिसकी जन-संख्या ४० है इस जन-संख्या में से दो प्रतिनिधियों का चुनाव करना है। एक हिन्दू समुदाय से और दूसरा मुसलिम समुदाय से; प्रत्येक व्यक्ति दो मत दे सकता है परन्तु एक ही वर्ग के प्रतिनिधि के लिए नहीं; वरन् दोनों वर्गों के प्रतिनिधियों के लिए अलग-अलग। निर्वाचन संयुक्त-प्रणाली के आधार पर किया जाता है, साधारणतया संयुक्त निर्वाचन प्रणाली के आधार पर यह सम्भव है कि हिन्दू समुदाय जिसकी जन-संख्या ६० है अपने आधिक्य के आधार पर दोनों प्रतिनिधियों का ऐसा निर्णय कर दें जिसमें मुस्लिम समुदाय का कोई भी प्रभाव लक्षित न हो। और इस प्रकार मुस्लिम समुदाय अपने प्रभाव के उपयोग से वंचित हो जाय। परन्तु इस नवीन पद्धति-द्वारा उनके हित पूर्णरूपेण सुरक्षित किये जा सकते हैं। १०० की जन-संख्या में ६० हिन्दू और ४० मुस्लिम हैं अर्थात् हिन्दू और मुस्लिम वर्ग के प्रभाव का अनुपात ६ : ४ है, अथवा हिन्दू संख्या डयोढ़ी है। चुनाव के परिणाम पर मुस्लिम संख्या का आगे हिन्दू संख्या का $1\frac{1}{2}$ के अनुपात से प्रभाव पड़ता है। हिन्दू प्रतिनिधि चुनने में हिन्दू प्रभाव मुस्लिम प्रभाव से $1\frac{1}{2}$ गुना अधिक है। यदि कोई ऐसी विधि हो कि मुस्लिम चुनाव में मुस्लिम जन-संख्या हिन्दू जन-संख्या से डयोढ़ी हो जावे तो दोनों चुनाव समान आधार पर हो जायें। यदि हिन्दू ६० हैं तो मुस्लिम $६० \times \frac{३}{२} = ९०$ होने चाहिए, ४० की जन-संख्या क्षण भर में ९० में परिणत नहीं हो सकती, परन्तु उसके लिए एक अतीव सरल उपाय है। ९० की संख्या में से केवल ४० ही संख्या प्राप्त है अर्थात् ४० प्राप्त हैं और ९० आपेक्षित हैं—यदि ४० को ही ९० के समान मान लें तो वास्तविक की आपेक्षित संख्या में $\frac{९}{४} = २\frac{१}{४}$ का अनुपात हुआ।

इसको इस प्रकार समझना चाहिए—संयुक्त-प्रणाली पर चुनाव होता है परन्तु हिन्दू और मुस्लिम दोनों के मत इस प्रकार लिये जाते हैं कि दोनों अलग-अलग लिखे

शेष पृष्ठ १३ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

मन की बात

लेखिका, श्रीमती शान्ति धवन, बी०, ए०

दुनिया बड़ी विचित्र है, आज के युवक-समाज की मनःस्थिति भी कुछ विचित्र सी है। इस कहानी में एक ऐसे ही युवक का चित्रण किया गया है जो विवाहित होते हुए भी दूसरी युवती पर अपना सर्वस्व अर्पण करने के लिये तत्पर हो जाता है, किन्तु युवती इन सब बातों को खूब समझती है। लेखिका ने बड़ी सुन्दरता से दोनों की मनोदशा का भावपूर्ण चित्रण किया है।

मनोरमा ने कहा—भूमिका ही बाँधोगे या कुछ कहोगे भी?

एक अज्ञात आशंका से मनोरमा काँप उठी। अपनी एक ग़लती का प्रायश्चित्त क्या वह जीवन भर न कर सकेगी? वह जानती है, अपनी इस ग़लती के लिए अकेली वही ज़िम्मेदार नहीं। पर वह लाख कहे, दुनिया एक क्षण के लिए भी उसके निर्दोष होने में विश्वास नहीं कर सकती। दुनिया की बात तो दूर, स्वयं उसकी मा ही उसके निर्दोष होने में क्षण भर के लिए भी विश्वास नहीं कर सकती। मनोरमा की हालत उस पक्षी की तरह है जो दाने की खोज में उड़ा था, लेकिन उसका कोटर दूर छूट गया है। वह उड़ता चला जा रहा है, सम्भवतः उसी की खोज में। उसे विश्वास है कि अपनी मंजिल तय करके वह अपने कोटर तक वापस पहुँच सकेगा—मंजिल तक पहुँचने के लिए मन में ठानकर वह उड़ता चला जा रहा है। मंजिल कितनी दूर है वह नहीं जानता फिर भी उड़ता ही जा रहा है और उड़ना ही उचित समझ रहा है। वही एक रास्ता है जिसके द्वारा वह अपने मंजिल को प्राप्त कर सकता है। एक क्षण के लिए भी यह सोचना नहीं चाहता कि उसकी मंजिल और दूर होती जा रही है और वहाँ पुनः वापस लौटना अब संभव नहीं। उड़ते-उड़ते गिर जाना ही संभव है। यह भी संभव है, रास्ते में विश्राम करने योग्य स्थान देख वह क्षण भर के लिए वहाँ उतर कर विश्राम कर लेना चाहे। मनोरमा भी अपनी ज़िन्दगी की इस रफ़्तार से थक गई है—अब थक गई है। बीस वर्षों के इस लम्बे अरसे में सुख और शान्ति किसे कहते हैं, इसे उसने नहीं जाना। अपने अभिशापयुक्त जीवन के लिए उसे सहानुभूति की आवश्यकता पग-पग पर महसूस होती है किन्तु प्रयत्न करने पर, चाहने पर भी सहानुभूति उसे मिली नहीं। वह चाहती है कोई उसका हृदय चीर कर देखे, कि उसमें कितनी व्यथा भरी है। उसकी व्यथा को देखकर, समझकर यदि कोई क्षण भर के लिए भी कह सके,—मन्नी, तुम्हारा कोई दोष नहीं था, उस परिस्थिति में तुम और क्या करतीं?" तो मनोरमा इतने वर्षों की संचित पीड़ा को अमृत समझकर एकबारगी पी लेगी। लेकिन उसे समझना कोई नहीं चाहता, और कोई समझेगा भी नहीं।

आज जब लक्ष्मण ने कहा, मनोरमा मैं तुम्हें अपने प्राणों से अधिक प्यार करता हूँ, तुम्हारे बिना मेरी ज़िन्दगी अपूर्ण है, तो मनोरमा का हृदय काँप उठा एक अज्ञात आशंका से। इस 'प्रेम' शब्द से यह अब कोसों दूर रहना चाहती है। इसी 'प्रेम' शब्द ने उसके जीवन में कुछ भी नहीं छोड़ा है। आज तरह-तरह के बहाने बनाकर भी क्षण भर के लिए अपने आपको बोध नहीं करा सकती कि वह निर्दोष थी। ग़लती उसकी भी थी। अज्ञान अवस्था में ही सही, लेकिन वह कैसे भूले कि अपने शरीर की पवित्रता वह खो चुकी है? यौवन की देहरी पर पैर रखती हुई मनोरमा क्षण भर के लिए यह सोचने को भी नहीं रुकी थी कि आखिर वह कर क्या रही है? जिस रास्ते पर वह बढ़ रही है वह बड़ा ही पथरीला एवं दुरूह है। किसी भी क्षण ठोकर खाकर वह गिर सकती है, और एक बार ठोकर लगने पर जो चोट उसे लगेगी वह जीवन भर एक काँटे की तरह उसके रग-रग में चुभती रहेगी—चंचल बालिका, अल्हड़ युवती बनकर भी न रुकी, न थमी, बढ़ती ही गई और एक दिन सचमुच ही पैर फिसल गया। प्रेम के आवरण में वासना की जो प्रतिमूर्त्ति उसे मिली उसने मनोरमा के हृदय के साथ-साथ जीवन भी नष्ट कर डाला। साधारण घटनाओं की तरह, मनोरमा इसे न भूल सकी। पाँच वर्षों के इस लम्बे अरसे ने इस ग़लती का रंग और भी गहरा कर दिया और आज तो प्रत्येक क्षण मनोरमा महसूस करती है कि उसने जो ग़लती की है उसका प्रायश्चित्त असंभव है। उसकी ग़लती सीमा का अतिक्रमण करके समाज के लिए 'कलंक' और खुद मनोरमा के लिए जीवन को तिल-तिल भर जलानेवाले स्फुलिंगों के ढेर का रूप धारण कर चुकी है।

मनोरमा की आँखों के सामने दो वर्ष पहले का एक दिन घूम गया। परीक्षा को कुल एक हफ़्ता रह गया था। वह अपने कमरे में बैठी हिसाब के कुछ प्रश्न लगा रही थी। इसी समय दौड़ते हुए छोटे भाई ने आकर खबर दी—"तुम्हें, हमारे मास्टर साहब के छोटे भाई खोज रहे हैं?"

"मुझे अभी फुरसत नहीं है, देख नहीं रहे हो कि पढ़ रही हूँ! दिन भर तुम्हारी ही खिदमत करते-करते परेशान हो जाती हूँ।" बात यह थी कि उसके स्कूल के एक टीचर की बदली हो गई थी और उनके बिदाई के लिए कभी टी सेट और कभी टेबुलक्लाथ की माँगों ने परेशान कर दिया था। मैंने समझा फिर उसी सिलसिले में कुछ बात होगी। लेकिन देखा, कुछ रुआसा सा होकर वह बोला, "नहीं, मेरे स्कूल का काम नहीं है, वह तो तुम्हारे ही काम से आये हैं?"

मेरा काम? मैंने क्षण भर के लिए सोचा, लेकिन याद न पड़ा किसी को भी मैंने ऐसी कोई बात कही थी। टालने के ख्याल से कहा, 'अच्छा भई, तंग मत करो, बुला लाओ अपने मास्टर साहब के भाई को।"

पाँच मिनट के बाद मेरे कमरे में प्रवेश किया एक नवयुवक ने। लम्बा क़द, साँवला रंग और कुरता पैजामा पहने हुए। हाथ जोड़ते हुए मैंने कहा, "फरमाइये किस लिए कष्ट किया?" मेरी वाणी में अनिच्छा कूट-कूटकर भरी थी, यह मैंने खुद ही अनुभव किया। लेकिन उसने सहज स्वर में कहा, "मेरा नाम है लक्ष्मण, आपके साथ ही पढ़ता हूँ।"

ताज्जुब से मैंने कहा—"मेरे साथ—लेकिन मैं तो आपको पहचानती भी नहीं हूँ।"

"जी हाँ, मैं आपसे एक साल सीनियर हूँ। पारसाल बीमार होने की वजह से पास न कर सका, अब की फिर दे रहा हूँ।"

"ओह! तभी! बात न बनाइए आपको मुझसे काम क्या है?" मनोरमा ने पूछा। "मेरे पास कुछ 'इम्पारटेन्ट क्वेश्चन्स' पटने से आये हैं, सोचा, आपको भी बता दूँ"—अपनी जेब में से कुछ काग़ज़ निकालकर टेबुल पर रखते हुए उसने कहा।

एक अपरिचित व्यक्ति से मैं ऐसी उम्मीद नहीं करती थी। लेकिन घटना एकदम नई नहीं थी, कालेज के इन दो वर्षों का अनुभव था कि जान-पहचान करने के लिए बिना कारण ही लड़के कृपाभाव रक्खा करते हैं। लेकिन इस वक्त मुझे पढ़ना ज्यादा ज़रूरी लग रहा था, इसलिए मैं बोली—"धन्यवाद! ऐसी ही कृपा भविष्य में भी रखियेगा।"—यह कहते-कहते मैं हाथ जोड़ते हुए, कुर्सी से खड़ी हो गई। विवश होकर लक्ष्मण ने भी हाथ जोड़कर बिदा ली।

इसके बाद तो कई दफ़ा मिलने का

लक्ष्मण ने कहा—मनोरमा तुम से मैं बातें करना चाहता हूँ।

सौभाग्य प्राप्त हुआ। कभी हिसाब की कापी माँगने के लिए, कभी 'अलजबरा' के लिए और इसी तरह के और कामों के लिए। मैंने अनुभव किया कि लक्ष्मण मेरे नज़दीक आना चाहता है। लेकिन मैं अब और इस तरह का परिचय बढ़ाना नहीं चाहती थी। इसी से मैंने हमेशा प्रयत्न किया कि यह परिजय साधारण जान-पहचान तक ही सीमित रह जाये।

पर जब लक्ष्मण ने कहा उसकी बहन की शादी में मुझे चलना ही होगा तो मैं अस्वीकार न कर सकी। उसके इस अनुरोध को टालने की कोई खास ज़रूरत नहीं समझी। लेकिन वहाँ से लौटते वक्त स्पष्ट शब्दों में मैंने कह दिया कि कहीं आना-जाना मुझे अच्छा नहीं लगता। लेकिन कुछ महीनों के बाद अचानक एक दिन लक्ष्मण से भेंट हुई, उसकी पत्नी के साथ। एक-आध महीने पहले शादी हुई थी। उर्मिला ने जाने क्यों मुझे बहुत अधिक प्रिय लगी। साँवला रंग, बड़ी-बड़ी आँखें और सोलह सत्रह साल की युवती होने पर भी मुखड़े पर भोलेपन की बहुत ही गहरी छाप! और दिन-प्रतिदिन हम दोनों एक दूसरे के निकट होते गये। और अब मैं हफ़्ते में एक बार तो ज़रूर ही उर्मिला से मिलने जाने लगी।

एक दिन उर्मिला से मिलने गई तो देखा वह अचानक ही नैहर चली गई है। लक्ष्मण ने कहा—"मनोरमा तुमसे कुछ बातें करना चाहता हूँ।"

मैंने कहा अच्छा कल आना घर पर। आजकल तो मुझे कोई काम नहीं है जितनी देर चाहना बात करना।"

दूसरे दिन संध्या-समय लक्ष्मण आया। बातों के सिलसिले में मैंने अनुभव किया कि लक्ष्मण कुछ कहना चाहता है लेकिन चाहने पर भी उसकी जबान नहीं खुल रही है।

मैंने हँसते हुए कहा—"क्या बात है, कहो न इतना हिचक क्यों रहे हो?"

कुछ हिचकते हुए वह बोला, "कम से कम तीन वर्षों से तुम्हें बताना चाहता हूँ, लेकिन आज तक तुमने मौका नहीं दिया, लेकिन आज चुप नहीं रहूँगा, आज कहूँगा ही।"

चकित होते हुए मनोरमा बोली—"केवल भूमिका ही बाँधोगे या कुछ कहोगे भी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बात यह है कि अब मनोरमा तुमसे दूर रहना असंभव है। शुरू से ही इस इच्छा को सँजोया कि तुम्हें पाकर जीवन में सुखी हो सकूँगा, लेकिन तुमने कभी कहने का भी मौक़ा नहीं दिया। अब मैं इस बात को सह नहीं सकता, तुम मेरे घर में, उर्मिला से मिलकर मुझसे दो शब्द बोले बिना ही लौट आती हो। आखिर क्यों, तुम्हें क्या अधिकार है, मेरे जीवन को इस तरह नष्ट करने का?"

इस अभियोग को सुन क्षण भर के लिए तो मनोरमा स्तब्ध हो गई। अपनी इस ग़लती का क्या अंजाम होगा, इसे सोचकर वह चिन्तित हो उठी। बेचारी उर्मिला! उसे क्या पता, उसके भोलेपन का लाभ उठाकर—उसी का पति दूसरे के सामने प्रेम की याचना कर रहा है। एक नारी के पूर्ण समर्पण से भी जो सन्तुष्ट नहीं हुआ वह दूसरी नारी के सामने प्रेम के लिए गिड़गिड़ा रहा है। पुरुष-मात्र के इस स्वभाव पर हँसी आई मनोरमा को, पर वह हँसी बड़ी करुण थी।

लक्ष्मण ने पूछा, "तुम हँस क्यों रही हो। मैंने जो कहा है उसका जवाब दो।"

जरा गम्भीर होकर मनोरमा बोली—"क्या कहूँ, यही सोच रही हूँ। कुछ भी कहना व्यर्थ समझती हूँ लेकिन एक बात कहना ज़रूरी है। जिस रूप पर मेरे तुम मोहित हुए हो वह बहुत ही क्षणिक है। अपने जीवन के प्रारम्भ में मैं भी प्रेम कर चुकी हूँ। लक्ष्मण, मेरे इस शरीर की कोई हस्ती नहीं—यह बहुत पहले अपवित्र हो चुका है। लेकिन इस शरीर के लिए जिस 'नारी' के साथ तुम पवित्र बंधन में बँध चुके हो उसे क्यों भूल रहे हो? छिः! इसी प्रेम की कामना में मैं अपने जीवन को नष्ट-कर चुकी हूँ। तुम्हें यही राय देती हूँ कि भूलकर भी इस ओर न बढ़ो। अपने साथ औरों की ज़िन्दगी नष्ट न करो, लक्ष्मण!"

अधिक न भँभाल सकने के कारण मनोरमा की आँखों से आँसू गिरने लगे। लक्ष्मण चला गया किन्तु इस फटकार से उसने शायद कोई शिक्षा न ली और कल ही वह कहता फिर रहा था कि मनोरमा ने उसके पास आने की भरपूर चेष्टा की, वह उसकी ज़िन्दगी को रौंदना चाहती थी, किन्तु वह बच निकला, जैसे आग में तपाया सोना।

मनोरमा ने भी यहाँ-वहाँ यह बात सुनी, किन्तु बोली नहीं। काश उसके मन, की बात कोई जानता जिसमें गड़ी लक्ष्मण की क़ब्र आज भी रो रही है।

८,०५,००,००० प्याले चाय

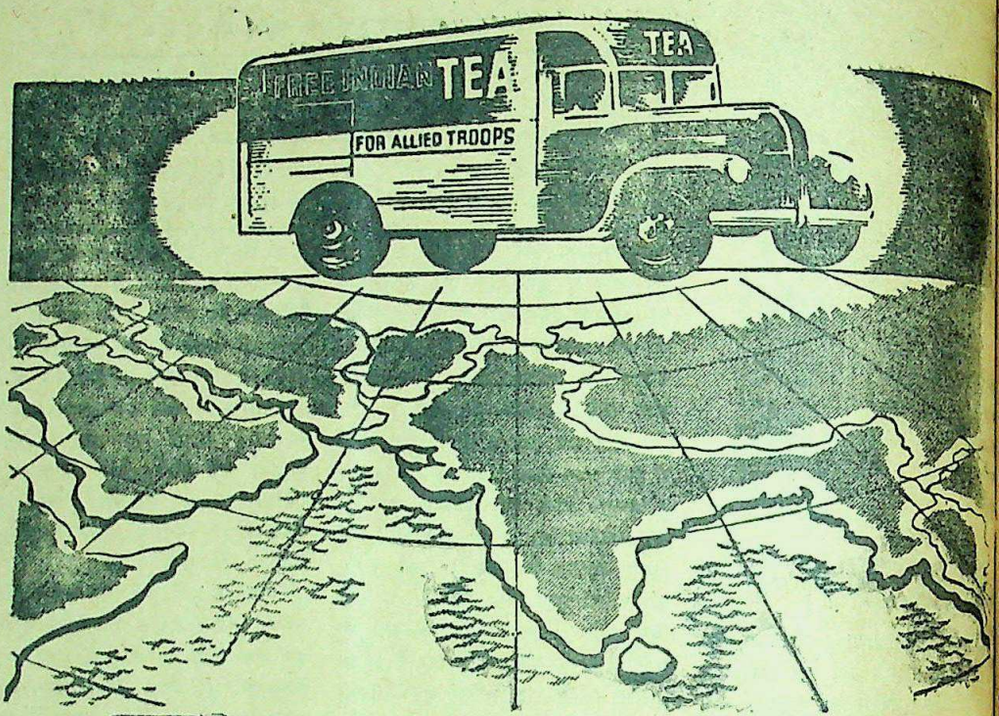

युद्ध जितना ही घमासान और जीवन जितना ही दुरुह हो रहा हो युद्धरत स्त्री पुरुषों को चाय की उतना ही चाह होती है।

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड का हमेशा ही यह ध्येय रहा है कि जहाँ तक हो सके चाय सभी को खूब मिलती रहे। यह कार्य बहुत से तरीकों से किया जाता रहा है। घूमती फिरती चाय गाड़ियों द्वारा चाय बाँटना सबसे महत्वपूर्ण और सफल तरीका साबित हुआ है।

पश्चिम में मिश्र से लगाकर पूरब में रंगून तक यानी मध्यपूर्व तथा भारत, आसाम और बर्मा, इन सब देशों में जहाँ भी चायगाड़ियों की ज्यादा जरूरत होती थी वहीं वे आराम व खुशी बाँटने पहुँच जाती थीं।

व्यस्त बन्दरगाहों से लगाकर दूर दूर की छावनियों तक; मोर्चे के हजारों मील पीछे से तोपों की गरज के अन्दर तक; जहाँ कहीं भी जरूरत हुई चलती फिरती चाय-गाड़ियाँ ताजी गर्मागर्म चाय का स्रोत बहा देती थीं। ३० सितम्बर १९४५ तक सिर्फ चायगाड़ियों के जरिये ही बोर्ड ने ८ करोड़ ५ लाख प्याले चाय बाँट दिये हैं।

जिनकी खिदमत हमने की उनकी दुआयें ही हमारा सबसे बड़ा ईनाम है।

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड की चाय गाड़ियों की कहानी बड़ी ही रोचक और मनहर है 'मोर्चे पर चाय' नामक एक छोटी सी पुस्तिका हमने अभी निकाली है जिसकी एक प्रति, कमिश्नर, इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड, १०१, क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता से बिनामूल्य मिल सकती है।

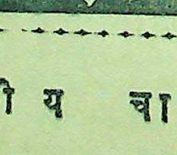

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

LK 251

जय हिन्द

इस पुस्तक में आजाद हिन्द फौज की पूरी कहानी और सुभाषचन्द्र बोस के जोशीले भाषण छापे गये हैं। मूल्य एक रुपया चार आना।

सिनेमा संगीत

इस पुस्तक में ५०० प्रसिद्ध सिनेमा के गीत छापे गये हैं। मूल्य एक रुपया छः आना।

फिल्मी अप्सरा

इस पुस्तक में प्रसिद्ध फिल्म-एक्ट्रेसों की ज़िन्दगी के हालात और चित्र छापे गये हैं। मूल्य दो रुपया।

पता—रंगभूमि साहित्य, दिल्ली।

भारतीय चायों में सर्वश्रेष्ठ

लिपटन की जाकूजा चाय

LTK 61

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास-परिहास

भंग की तरंग

पंडित दुलारेलाल भार्गव को डाल-मियां साहब ने इस होली में दिल्ली बुलाया था। लिखा था कि हिंदी साहित्य-संसार के दुलारे क्या हमारे दुलारे नहीं होंगे?

* *

साहित्यकार संसद की ओर से नृत्य की व्यवस्था की गई थी। सुना गया है कि बनारस से रायकृष्णदास और इंदौर से श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी दल-बल सहित पधारे थे।

* *

सुना जाता है कि कविवर मैथिली-शरण गुप्त ने पिछली होली के अवसर पर कविवर अंचल जी को एक शुभाशंसा का पत्र लिखा था कि आपका अंचल सदा सना रहे और अंचल का भीतर सदा फूला रहे।

* *

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन अब यह विचार करनेवाला है कि रेडियो के प्रचार से बहुत से साहित्यिकों की जो हानि हुई है और इसलिए यह में यह राष्ट्रीय प्रोग्राम काम में लाया गया। बधाई है।

* * *

श्रीयुत एम० एन० राय ने बड़े लाट साहब को एक पत्र लिखा है कि आप ने धन से हमारी सहायता की किंतु जन से नहीं, इसलिए इस चुनाव में हमें कहीं एक वोट मिला, कहीं दो। अब आप जाने-वाले हैं हमारे लिए कोई न कोई प्रबंध कर दीजिये। और कुछ न हो सके तो ताजहोटल में ही कोई जगह दिला दीजिये।

* * *

भारतीय कम्युनिस्टों ने जब से यह खबर सुनी है कि रूस भारत पर आक्रमण करनेवाला है तब से एक-एक अंडा अधिक खाने लगे हैं और इसमें कमी न हो इसलिये मुरगियाँ भी पालनी शुरू कर दी हैं।

* * *

सरदार पटेल साहब कहते हैं कि विदेशियों की बातें भारतवासी नहीं सुनेंगे। शादी विवाह की बात हो तो सुन भी सकते हैं खाने पीने की बातों में क्या रखा है?

* * *

खबर है कि हमारे प्रांत में होली के बाद मंत्रि-मंडल बनेगा। माननीय पंत जी उसी समय वाइली साहब के मुँह में अबीर पोतेंगे और उनकी श्रीमती जी पंत जी पर पिचकारी छोड़ेंगी।

* * *

कवि-सम्राट् हितैषी जी अब सब सम्मेलनों तथा समितियों से त्याग-पत्र दे रहे हैं। उनका कहना है कि हमारी अब कोई उतनी कद्र नहीं करता जितना पहले करते थे, इसलिये कहीं जाने से क्या लाभ? मैं उन्हें विश्वास दिलाता हूँ कि अब भी लोग उन्हें बुलाते हैं तो कुछ समझ के ही।

* * *

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की ओर से आदेश निकलनेवाला है कि कवि लोग यहाँ रजिष्टरी करा लें कि किसकी फीस कितनी है? गोपेश जी अभी संकोच कर रहे हैं कि अपनी फीस कितनी लिखाएँ।

—अगड़धत्त शर्मा

मेरा साथी!

लेखक श्री 'बेढब' बनारसी

चमकता है गरजता है हमारा मन हिला देता,
हृदय की नाव को क्षणमात्र में है तिलमिला देता;
सदा हलचल मचाता चैन है लेने नहीं देता,
बड़ी कठिनाइयों से जिन्दगी—की नाव में खेता;
अजब तूफान है साथी।

मेरा दिल ले गया मैंने बहुत रोका न रुक पाया,
नहीं मैंने निशाना आज तक ऐसा कभी खाया;
हुआ हमला अचानक मैं न रक्षा कर सका कुछ भी,
न था कुछ पास, थैली भी न उनकी भर सका कुछ भी;
निरा अफगान है साथी।

अनेकों चेष्टाओं पर नहीं मैं जीत पाता हूँ,
पराजय से सदा मैं शीश को सम्मुख झुकाता हूँ;
दलीलें, सब विनय, क़ानून सारे बैठ जाते हैं,
ज़रा-सी बात पर तनकर अगर वह ऐंठ जाते हैं;
मेरा लुकमान है साथी।

स्मारक पत्र

किस प्रकार का काम?: साधारण सुरक्षा और सजावटी फ़िनिश के लिए, जहाँ कार्यास्थान पर ही रंग को तेल आदि से मिला कर तैयार करना आवश्यक हो।

हमारी सिफ़ारिश: "जे एण्ड ऐन" जेनुइन ह्वाईट ज़िंक स्टिफ़ "J & N" Genuine White Zinc Stiff. शुद्ध और शिष्ट वस्तु।

JENSON & NICHOLSON
MAKERS OF PAINTS

नई पुस्तक

कामायनी-अनुशीलन

महाकवि 'प्रसाद' का महाकाव्य 'कामायनी' बहुत प्रसिद्ध है। पर यह सबकी समझ में नहीं आता। इस पर अनेक समीक्षकों के विचार पत्रों में प्रकट हुए हैं। इसी ग्रन्थ का अनुशीलन इस पुस्तक में लेखक रामलालसिंह एम० ए०, बी० टी० साहित्यरत्न ने कामायनी का ऐतिहासिक तत्त्व, प्रकृति वर्णन, चरित्र-चित्रण, श्रद्धा, भाषा तथा भावाभिव्यक्ति, छंद विधान, रस संचार, कामायनी का मनस्तत्त्व, दार्शनिक तथ्य, युग की अभिव्यक्ति, प्रेम-निरूपण आदि शीर्षकों में बड़ी मार्मिकता से किया है। अच्छे काग़ज पर छपी कोई ढाई सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २)।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

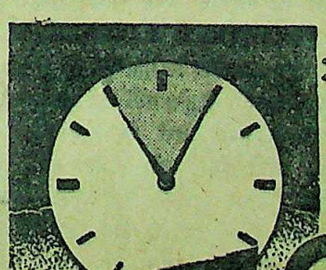

सभी दर्दके सामने
'वि'-विजय-क्षण

सारिडन

लेनेके १० मीनीट बाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न—मनोरंजन की रूप-रेखा क्या होनी चाहिए?

उत्तर—सिर्फ एक लाइन में मैं कहूँगा—"मन की एकाग्रता" ही मनोरंजन की रूप-रेखा है, इससे अधिक कुछ नहीं।

प्रश्न—हालीवुड की फिल्मों की तरह हमारे यहाँ की फिल्में क्यों नहीं उच्च कोटि की हो सकतीं?

उत्तर—पहला कारण, हालीवुड की फिल्मों का सांसारिक बाजार है और हमारे लिए भारत ही है। दूसरा कारण धन की कमी। इंडिया की हालत देखते हुए जैसे भी चित्र आजकल निकल रहे हैं, वह सब ठीक है।

प्रश्न—आप अपने जीवन की न भूलनेवाली घटना सुनाइए?

ईश्वरलाल—मेरे जीवन में कोई ऐसी घटना नहीं घटी, जो कहने लायक़ हो। बीच में कमला बोल उठी—"मेरे सामने शायद आपको शर्म मालूम पड़ती हो, तो मैं उठी जाती हूँ आप शौक से बतलाइए।"

ईश्वरलाल—मेरा जीवन आपसे क्या छिपा? आप बैठी रहिए, जो कुछ मुझे कहना है, उसे मैं आपके सामने ही कह सकता हूँ। तुम्हारे उठने की जरूरत नहीं। मैंने कहा—हाँ तो कहिए, बिना बतलाये हुए, आप छूट नहीं सकते। यही तो मेरे इन्टरव्यू में विशेषता है।

ईश्वरलाल—मेरी कहानी शीर्षक है—"काहे देखो मुझे नीची नजरिया से" इस कहानी में सिर्फ आप यह पायेंगे कि मैं किस प्रकार प्रणय की दुनिया में प्रविष्ट हुआ?

मेरे बड़े भाई की मृत्यु हो चुकी थी। उनका मरना मेरे लिए जहर हो गया। क्योंकि उनका स्नेह मुझ पर जरूरत से भी अधिक था। इसीलिए मैं उनकी याद में विक्षिप्त-सा हो गया था। घर में, बाहर, कहीं तबीअत नहीं लगती थी। किसी से बात करने में भी मुझे आनन्द नहीं मिलता था। मेरी बड़ी बहन मेरी इस हालत को देखकर बहुत दुखित होती थी। उसने मुझे समझाया कि तू ही घर का अब सरपरस्त ठहरा, और तेरा ही यह हाल! तुझको अब समझदारी से काम लेना चाहिए। जो पैदा हुआ है—वह तो एक न एक दिन मरता ही है। फिर उसी की याद लिये बैठे रहिए तो दुनिया का काम कैसे चले? तुम्हारा कर्तव्य है कि अपने भाई की तरह तुम भी घर का नाम रोशन करो। इसी में आपके भाई की आत्मा को शान्ति मिलेगी। बहन के इस महत्त्वपूर्ण शब्दों ने मेरे दिल की बस्ती में बहुत कुछ साहस बटोर कर भर दिया। विषाद का कुहरा भी कुछ हलका हुआ। मैं अपने गम की दुनिया को दफन करने के लिए बम्बई की ओर चल पड़ा। सोचा कि शायद बम्बई की रंगीनी में मेरा गम गलत हो सके।

मैं बम्बई आ गया। मेरी उम्र उस वक्त सिर्फ बीस साल की थी। जवानी का जोश दिल की दुनिया में उफन रहा था। मन चंचलता के रंगीन पंखों पर बैठकर इधर-उधर भटकने के लिए बेकरार होने लगा। मस्ती की मरोड़ में एक दिन मैं "हैंगिङ्ग गार्डन" में घूमने चल पड़ा। बड़ा सुहावना दिन था, शायद इसीलिए वह दिन मुझे, और दिनों से अधिक अच्छा प्रतीत

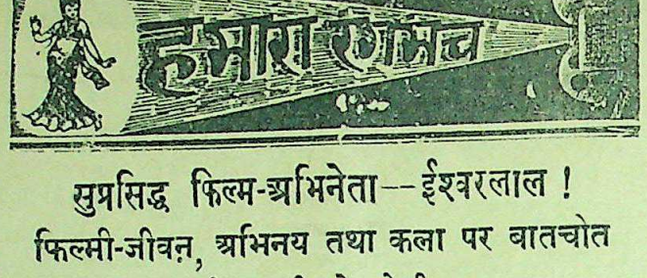

सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेता—ईश्वरलाल!

फिल्मी-जीवन, अभिनय तथा कला पर बातचीत

लेखक, श्री उमेश जोशी

(३)

हो रहा था। प्रकृति की हर चीज में मुझे आकर्षण मालूम दे रहा था। "गार्डन" में पहुँचकर मैं गुलाब के फूलों के रम्य कुंज में बैठ गया। इसी मखमली घास के कार-पेट पर प्रकृति के इस सुन्दर सीन को देख-कर मुझसे न रहा गया। मैंने झट अपनी जेब से काग़ज-पेंसल निकाली—कविता

सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेता श्री ईश्वरलाल

लिखने की सूझी। कविता का शीर्षक भी याद आ गया—"काहे देखो मुझे नीची नजरिया से" लेकिन आगे कविता की लड़ी नहीं बन रही थी। अंत में झख मार-कर कुंज से बाहर निकला। 'गार्डन' में इधर-उधर डोलने लगा। यह गुनगुनाते हुए—"काहे देखो मुझे नीची नजरिया से" कि एकाएक मुझे खिलखिलाहट की मीठी आवाज सुनाई पड़ी। मैं चौंका और पीछे मुड़कर देखा कि एक युवती मुझे देख-कर खूब जोर से हँस पड़ी रही है। मैं कुछ लजा-सा गया। मेरी बेबसी को देखकर वह युवती बोल उठी—"आप तो बहुत सुन्दर मालूम पड़ते हैं, कहीं आपको नजर न लग जाये। आपको कौन देख रहा है नीची नजरिया से। मैं तो आपको नहीं देख रही थी। फिर भी आप जोर-जोर से गुनगुना रहे हैं। 'काहे देखो मुझे नीची नजरिया से'—आपको खब्त तो नहीं हो रहा है?"

मैंने सहमते हुए कहा—"आप जो समझें ठीक है। मैं तो अपनी कविता लिख रहा था, उसी की यह पहिली कड़ी थी—"काहे देखो मुझे नीची नजरिया से"—अपने शायद अपने लिए समझ लिया, यह आपका भ्रम है!"

"अच्छा तो आप कवि हैं। कविता के सरूर में आप बहक रहे थे। लेकिन यह तो आप अपने बचने का रास्ता निकाल रहे हैं। कविता करना क्या आपको मुझे देख-कर ही सूझी थी? मैं खूब जानती हूँ, बम्बई के शोहदों को। क्या बहाना बनाया आपने" उस युवती ने मेरे पास आकर कहा। मैंने उस युवती को अपनी कविता का काग़ज दिखाया और कहा कि मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ। आपने अभी कवि के हृदय को नहीं समझा। मालूम होता है कि आपने अभी तक किसी कवि की कविता भी नहीं पढ़ी। तभी तो भाव-शून्य-सी मालूम पड़ती हो। आपके अन्दर सुन्दरता है, लेकिन उस सुन्दरता के साथ पवित्र भाव नहीं।

"माफ करना कवि जी महाराज, मुझसे गलती हो गई। मैं भ्रम में पड़ गई थी। क्योंकि मेरी मा की यह ताकीद थी कि बम्बई के गुंडे बड़े नामी होते हैं। वह सुन्दरियों के फँसाने के लिए कभी कवि बनते हैं, तो कभी कहानीकार और कभी अभिनेता। मतलब यह है कि किसी न किसी जाल में तो आखिर सुन्दरी फँसेगी ही। मेरा भी वही ख्याल था"—युवती ने मेरे पास बैठते हुए कहा।

"अच्छा तो आप सबको एक ही लकड़ी से हाँकती हैं"—मैंने हँसते हुए कहा।

"यही तो मेरी गलती है। लेकिन मैं भी क्या करूँ, अच्छे व्यक्ति के भाल पर कोई साइनबोर्ड तो होता नहीं, जिससे कि वह पहचाना जा सके" युवती ने गुलाब का एक फूल मुझे देते हुए कहा।

"क्या मैं आपका नाम पूछ सकता हूँ?"

"मेरा नाम कमला है। मैं रणजीत मूवीटोन में कार्य करती हूँ।"

"आप अपना परिचय दीजिए" युवती ने अपनी कमल-सी आँखों को नचाते हुए कहा।

"मेरा नाम ईश्वरलाल है। मैंने अभी हाल में "रणजीत मूवीटोन" ज्वाइन किया है।

कमला हँस पड़ी और बोली, "तब तो हम-तुम दोनों एक ही रास्ते के जा रहे हैं।"

मैंने कहा—"अभी नहीं। मैं तो कवि का गुंडा जो ठहरा। तुम शरीफ और बदमाश। दोनों का मिलन कैसे हो सकता है?"

"आप तो उसी बात को पकड़े हुए हैं। आप बदमाश थे, तब तक जब तक कि मैंने आपको पहचाना नहीं था।

"हो सकता है शायद आपको मेरा अब भी गलत हो" मैंने कमला के हृदय के भाव को कुरेदते हुए कहा।

"ऐसा कभी नहीं हो सकता—मेरी नजर आपके कलेजे तक की खबर ले आती समझे?"

"तब तो मुझे आपसे बचना ही चाहिए क्योंकि यदि आपने मेरा कलेजा छान डाला तब तो मैं अपने भाव ही कहीं छिपा सकूंगा?"

मेरी इस बात को सुनकर कमला हँस पड़ी।

(२)

मेरा और कमला का प्रेम दिन दिन बढ़ता गया। साथ-साथ स्टूडियो जाते, और साथ ही घर लौटते। एक दिन मैंने कमला को अपने घर पर दावत दी। वह अन्य औरतों के साथ बैठी हुई थी। मैं आँगन में इधर-उधर टहल रहा था। कमला भी मुझे कनखियों से देख लिया करती थी। मैंने भी उसकी यह चालाकी ताड़ ली। मैंने धीरे से गुनगुनाया—"काहे देखो मुझे नीची नजरिया से"—कमला मुस्करा पड़ी। उसकी वह लजीली मुस्कराहट मेरे जीवनाकाश में इन्द्रधनुष के रंग भर थी। उसका नीची नजरिया से देखना मुझे बड़ा ही सुन्दर मालूम पड़ा। हम दोनों साथ बैठकर एक टेबिल पर खाया। [illegible] के साथ खाने में उस वक्त मुझे ऐसा आ

शेष पृष्ठ १८ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संतुलित प्रतिनिधित्व का चुनाव

(पेज ८ का शेष)

यदि किसी भौगोलिक क्षेत्र में दो से अधिक समुदाय हैं तो ऊपर लिखी पद्धति में लिखित रीति बर्ती जाएगी। तीन समुदायों के उदाहरण को लीजिए। ऐसा प्रबन्ध किया जाएगा कि तीनों समुदाय के मतों की गणना भिन्न-भिन्न हो सके। तीन समुदाय मान लीजिए 'ह' (हिन्दू) 'म' (मुस्लिम) और 'स' (सिक्ख) हैं। 'ह' का प्रतिनिधि चुनने के लिए 'म' और 'स' की जन-संख्या को एक जगह जोड़ दिया जायेगा, और 'ह' की जन-संख्या (म × स) की जन-संख्या के अनुपात का प्रतिशत निर्णय कर लिया जायेगा। यदि 'ह' ५० प्रतिशत है अथवा उससे अधिक है तो उसके लिए किसी संतुलन की आवश्यकता नहीं है। यदि ५० प्रतिशत से कम है तो परिशिष्ट के आधार पर उसकी संतुलन-संख्या निश्चित की जायगी। चुनाव का परिणाम प्राप्त करने के लिए 'ह' समुदाय के मतों की संख्या को संतुलन-संख्या से गुणा किया जायेगा और गुणनफल में 'म' और 'स' के मतों की संख्या जोड़ दी जायेगी। इस प्रकार जो सबसे बड़ी संख्या प्राप्त होगी उसके आधार पर चुनाव के परिणाम का निर्णय किया जायगा। 'म' का प्रतिनिधि चुनने में 'म' और (ह + स) की संख्या के अनुपात पर संतुलन होगा। इसी प्रकार 'स' का प्रतिनिधि चुनने पर (ह + म) तथा 'स' के अनुपात पर संतुलन होगा। ५० अथवा प्रतिशत संख्या से अधिक पर कोई संतुलन की आवश्यकता नहीं होती; शेष व्यवस्था वही होगी जो 'ह' के सम्बन्ध में लिखी गई है।

तीन से अधिक समुदाय हों तो क्रमशः प्रत्येक समुदाय को एक ओर रखकर शेष समुदायों को कुल मिलाकर दूसरी ओर रक्खा जायगा, दोनों की संख्याओं के अनुपात के आधार पर संतुलन का निर्णय किया जायगा। शेष व्यवस्था ऊपर लिखे अनुसार रहेगी। इस प्रकार प्रत्येक समुदाय के प्रतिनिधि का निर्णय किया जायगा। नियम इतने व्यापक हैं कि समुदाय दो अथवा अधिक कितने ही हों उन पर समान रूप से लागू होंगे।

यदि किसी समुदाय की जन-संख्या उस क्षेत्र की समस्त जन-संख्या की अपेक्षा बहुत न्यून है अथवा १० प्रतिशत से कम है तो उसके लिए ऊपर लिखी पद्धति में कुछ साधारण-सा परिवर्तन करने की आवश्यकता होगी। ऐसे दो समुदायों के निर्वाचन में जिनकी जन-संख्या में १० और ९० प्रतिशत से भी अधिक अन्तर है अपेक्षतया एक वर्ग में शक्ति-व्यय और दूसरे में संतुलन-भार इतना अधिक हो जायगा जो सम्भवतः वांछनीय न हो, अथवा प्रत्येक दशा में उपयोगी न सिद्ध हो, अथवा उसमें कुछ व्यवहारिक कठिनाई हो। ऐसी दशा में उस समुदाय की जिसकी जन-संख्या ९० प्रतिशत अथवा उससे अधिक है पूरी संख्या न लेकर आंशिक संख्या ली जा सकती है, यह आंशिक संख्या एक विशेष चुनाव-संस्थान के रूप में होगी। इस चुनाव-संस्थान में उस समुदाय के वे सब प्रतिनिधि आ सकते हैं जो केन्द्रीय और प्रान्तीय धारा-सभा के अथवा स्थानीय स्वायत्त शासन (यथा—कार्पोरेशन, म्युनिसिपैलिटी, कण्टूनमेंट बोर्ड, नोटी फ़ाइड एरिया; टाउन एरिया वा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड) संस्थाओं के सदस्य हों अथवा किसी और सुविधाजनक आधार पर इस चुनाव-संस्थान को स्थापित किया जा सकता है।

जहाँ कहीं अब चुनाव के दो दर्जे हैं संतुलित प्रतिनिधित्व के द्वारा उसकी व्यवस्था केवल एक ही दर्जे द्वारा हो सकती है। दलित वर्ग के चुनाव में अब जो कहीं प्राथमिक चुनाव और अन्तिम चुनाव की व्यवस्था है संतुलित चुनाव के आधार पर केवल एक बार ही चुनाव करके आवश्यक हितों को सुरक्षित किया जा सकता है।

यद्यपि भिन्न-भिन्न समुदायों की चुनाव-सूचियाँ और चुनाव-पत्रक पृथक् पृथक् रहेंगे तथापि कोई भी व्यक्ति जिसका किसी चुनाव-सूची में नाम है वह किसी भी दूसरे समुदाय के प्रतिनिधित्व के लिए चुनाव में खड़ा हो सकता है; प्रत्येक समुदाय को इसकी स्वतंत्रता दी जा सकती है कि वह जिस व्यक्ति को अपना प्रतिनिधि चुने चाहे वह व्यक्ति उसी विशिष्ट समुदाय में से हो अथवा अन्य किसी भी समुदाय का हो; इस पद्धति में यह अनावश्यक हो जाता है कि जिस समुदाय के मत दाता हैं केवल उसी समुदाय का व्यक्ति उनका प्रतिनिधित्व करने के योग्य माना जाये। इस भाँति किसी भी समुदाय का व्यक्ति यदि वह दूसरे समुदाय का विश्वास-भाजन बन सकता है तो उस दूसरे समुदाय की ओर से प्रतिनिधि चुना जा सकता है इस भाँति किसी दल या समुदाय को सदा अल्प प्रतिनिधि प्राप्त करने की आशंका न रहेगी। हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे का प्रतिनिधित्व करने के योग्य रहेंगे। यदि वह एक दूसरे के विश्वास-भाजन बन जायेंगे तो अपना प्रतिनिधित्व उसी आधार पर बढ़ा सकेंगे। इस प्रकार परस्पर विश्वास उत्पन्न करने और सहयोग प्राप्त करने में इस पद्धति से प्रोत्साहन मिलेगा; जिसका अन्तिम परिणाम संयुक्त निर्वाचन हो सकता है।

प्रतिनिधियों की जन-संख्या का निर्णय सम्बन्धित जन-संख्या के वास्तविक अनुपात के आधार पर किया जायगा। किसी भौगोलिक क्षेत्र में पूरी जन-संख्या में किसी समुदाय की जन-संख्या का जो अनुपात है वही अनुपात उसे प्रतिनिधि-संख्या में भी प्राप्त रहेगा। एक क्षेत्र में जितने प्रतिनिधियों का चुनाव होगा प्रत्येक व्यक्ति को उतने मताधिकार प्राप्त होंगे।

प्रतिनिधि सभा और धारा-सभाओं के निर्णय पर भी इस नवीन पद्धति के नियम लागू किये जा सकते हैं। जब किसी प्रतिनिधि अथवा धारा-सभा में विभिन्न वर्गों अथवा समुदायों के प्रतिनिधि हों और निर्णय किसी ऐसे विषय से सम्बन्धित हो जो किसी एक वर्ग पर विशेष प्रभाव डालता है, ऐसी दशा में उस वर्ग को संतुलन देकर उस वर्ग के हितों की रक्षा की जा सकती है। उदाहरणरूपेण किसी धारा-सभा में मुस्लिम जातिगत सम्बन्ध में अथवा शरीयत के सम्बन्ध में निर्णय करना है ऐसी परिस्थिति में यह उचित है कि निर्णय मुस्लिम प्रतिनिधियों की भावना के अनुकूल हो इस निर्णय को केवल मुस्लिम प्रतिनिधियों के मत पर भी छोड़ा जा सकता है अथवा सभा के सारे प्रतिनिधियों को लेकर मुस्लिम प्रतिनिधियों को इतना अधिक संतुलन प्रदान किया जा सकता है कि निर्णय वास्तव में उनके हाथ में ही रहे। भिन्न-भिन्न विषयों में संतुलन-परिणाम भिन्न-भिन्न हो सकता है और इस भाँति प्रत्येक विषय की गुरुता और वर्गों के परस्पर सम्बन्धों को ध्यान में रखते हुए संतुलन का निर्णय किया जा सकता है। इस प्रकार किसी भी वर्गबल अथवा समुदाय के विशिष्ट हितों की रक्षा की जा सकती है—किन-किन विषयों में कितना संतुलन रहे यह विधान-द्वारा निश्चित किया जा सकता है। विभिन्न वर्गों, दलों अथवा समुदायों के विशिष्ट हितों की रक्षा का इससे सुगम और सुलभ अन्य उपाय नहीं हो सकता।

मंत्रिमण्डल अथवा और किसी भी व्यवस्थापक-समूह में इस पद्धति द्वारा इष्ट हितों का संरक्षण किया जा सकता है। संक्षेप में यह पद्धति व्यापक और सार्वभौतिक उपयोगिता की है; केवल संक्षिप्त नियमों-द्वारा इष्टफल प्राप्त किया जा सकता है। जिस जटिल समस्या के निर्णय का अभी तक कोई आधार नहीं मिलता था उसको भली-भाँति सुलझाया जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमती पूर्णिमा बनर्जी, संयुक्त प्रांतीय एसेम्बली की सदस्या चुन ली गई हैं।

स्त्री-आन्दोलन और संगठन किधर ?

भारतीय स्वतन्त्रता के युद्ध में नारियों का अगला कदम

लेखिका, श्रीमती क्रांतिदेवी दिनेश

आज का युग संघर्ष का युग है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक—चाहे जिस ओर हम दृष्टि डालें उसी ओर हमें संघर्ष ही संघर्ष दिखाई देता है और यह संघर्ष उस समय तक चलता रहेगा जब तक हमें आजादी प्राप्त नहीं हो जाती। इसलिए हमारा सबसे पहला कर्त्तव्य यह है कि हम विदेशियों की गुलामी को हिन्दुस्तान से समूल नष्ट कर दें।

पड़ोसी प्रान्तों में जनता महात्मा गांधी तथा कांग्रेस महा-समिति के अन्तर्गत पंडित जवाहरलाल तथा मौलाना आजाद आदि के नेतृत्व में स्वराज प्राप्त करने के लिए कटिबद्ध है। ग्वालियर राज्य में भी ग्वालियर राज्य सर्वजनिक सभा (स्टेट कांग्रेस) इस ओर प्रयत्नशील है। देश अनेक बार विदेशी साम्राज्यवाद से डटकर मोर्चा ले चुका है। हमें हर्ष है कि लाखों कीमती बलिदान देने के बाद हम स्वतंत्रता के किनारे पर पहुँच चुके हैं और देश प्रति क्षण स्वतंत्रता का अंतिम मोर्चा लेने तथा सर्वस्व निछावर करने के लिए तत्पर है, केवल अधिनायक के हुक्म देने भर की देर है। लेकिन इस संग्राम में एक कमी है, जिसे पूरा करना बहुत जरूरी है। प्रत्येक राष्ट्र के स्तम्भ उस देश के स्त्री-पुरुष ही होते हैं और दोनों के समान और संयुक्त प्रयत्न पर ही किसी योजना की सफलता निर्भर रहती है, इसलिए हमारे देश के स्वतंत्रता-आन्दोलन की सफलता के लिए स्त्रियों और पुरुषों का मिला-जुला प्रयत्न वांछनीय है। लेकिन, मुझे दुख के साथ स्वीकार करना पड़ता है कि हम स्त्रियों ने देश के स्वाधीनता-आन्दोलन में पुरुषों के समान सहयोग नहीं दिया, इसमें कुछ दोष अगर पुरुषों का है, तो कुछ स्त्रियों का भी है। लेकिन अब भी समय है और हमें इस कमी को आनेवाली लड़ाई में पूरा कर लेना चाहिए जिससे स्वतंत्र भारत के इतिहास में हमारे माथे पर कलंक का टीका न लगे और हमारी भावी संतान यह न कह सके कि हमने पुरुषों के समान बलिदान न करने पर भी समान अधिकार की माँग की। इसलिए, बहिनो! हमें अपने को अपने देश की आवश्यकताओं के योग्य बनाकर स्वतंत्रता के संग्राम में बलिदान करने के लिए तत्पर हो जाना चाहिए। इस सम्बन्ध में मेरे विनम्र सुझाव इस प्रकार हैं:—

सबसे पहले हमें आत्म-शक्ति प्राप्त करना चाहिए। एक ओर हमने अपने आप सेवा, त्याग और बलिदान के भाव से प्रेरित होकर अपने क्षेत्र को संकुचित कर लिया और दूसरी ओर पुरुषों ने अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए हमारी विशेषताओं को हमारी कमजोरी समझ कर हमारा सम्पर्क वाह्य जगत् से एक दम काट दिया और स्वयं सब कुछ करने के अधिकारी बन बैठे। लेकिन अब भी समय है और हमें खोई हुई शक्ति फिर प्राप्त कर लेनी चाहिए और पुरुषों के साथ कंधे से कंधा भिड़ाकर स्वतंत्रता के संग्राम में कूद पड़ना चाहिए। स्त्री-जाति का पुराना इतिहास प्रत्येक क्षेत्र में गौरवपूर्ण रहा है। आजादी के युद्ध में रानी लक्ष्मीबाई की वीरता और चित्तौड़ की पद्मिनी तथा उनकी साथी हजारों राजपूत रमणियों का जौहर भुलाया नहीं जा सकता। आज भी देश में स्त्री-रत्न मौजूद हैं जो स्त्रियों का मस्तक ऊँचा किए हुए हैं और पथ-प्रदर्शन कर रही हैं। आजाद हिन्द फ़ौज की डा० लक्ष्मी का नाम सदा अभिमान और आदर के साथ लिया जावेगा। डा० लक्ष्मी की ब्रिगेड ने यह प्रमाणित कर दिया है कि युद्ध क्षेत्रों में भी हिन्दुस्तानी स्त्रियाँ किसी प्रकार पीछे नहीं रह सकतीं। अतएव बहिनो, हमें डा० लक्ष्मी तथा उनके साथ काम करनेवाली अन्य महिलाओं से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए और भावी संग्राम के लिए तैयार रहना चाहिए।

दूसरा महत्त्वपूर्ण विषय शिक्षा-सम्बन्धी है। देश की उन्नति के लिए उसके देशवासियों का शिक्षित होना बहुत जरूरी है। भावी राष्ट्र-स्तम्भ बालक-बालिकाओं की सर्वप्रथम शिक्षक माता ही होती है, इसलिए स्त्री-शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण विषय है यह हमारे देश के लिए एक दुर्भाग्य की बात है कि शिक्षा में हम लोग अन्य देशों से बहुत पिछड़े हुए हैं और विशेषकर स्त्री-शिक्षा में। इस पर ग्वालियर राज्य का तो कहना ही क्या है।

आजकल की आवश्यकता को देखते हुए खादी पहनना हमारा एक मुख्य कर्तव्य हो जाता है। इसके राजनैतिक तथा आर्थिक दोनों ही महत्त्व हैं। इससे देश का पैसा देश में ही रहेगा निर्धन जनता के पास कुछ धन पहुँचेगा और असहायों की सहायता पहुँचाने का पुण्य भी प्राप्त होगा। खादी का पैसा उन ग़रीब अपाहिज स्त्रियों को ही कताई के रूप में अधिक मिलता है, जो घर से बाहर दूसरे प्रकार की मजदूरी करने अथवा और कोई धंधा करने में असमर्थ हैं और जिनका पालन-पोषण करनेवाला कोई दूसरा नहीं है। यह धन अधिकतर स्त्रियों को ही मिलता है, इसलिए पुरुषों से अधिक स्त्रियों का कर्तव्य है कि वे सदा केवल हाथ की कती-बुनी शुद्ध खादी ही पहनें। वर्तमान वस्त्र-संकट के जमाने में तो खादी पहनना तथा खादी प्राप्त करने के लिए सूत कातना प्रत्येक स्त्री-पुरुष को स्वावलंबी बनाने की दृष्टि से एक अद्भुत क्रांतिकारी क़दम है।

इसके उपरान्त मुझे पर्दे तथा गहनों के विषय में आपसे निवेदन करना है। वैसे तो परदा तथा गहनों की प्रथा आजकल कुछ कम होती जा रही है, लेकिन फिर भी ऐसी स्त्रियों की कमी नहीं जो अब तक इन गंदी रूढ़ियों की अन्ध-भक्त बनी हुई हैं। परदे में रहकर न तो हम आजादी के साथ घूम-फिर सकती हैं और न कुछ काम ही कर सकती हैं, क्योंकि परदे में रहनेवाली स्त्रियों का स्वास्थ्य ही पहिले खराब रहता है, दूसरे दुनिया का कोई अनुभव नहीं हो सकता और न वे निर्भयता, वीरता इत्यादि गुण ही प्राप्त कर सकती हैं। इसलिए परदे का शीघ्र से शीघ्र त्याग करना चाहिए। जो स्त्री इच्छापूर्वक परदा स्वीकार करती है, वह एक प्रकार से सारी दुनिया को प्रकट रूप में यह बताती है कि उसके अन्दर पुरुष की बनिस्बत कोई ऐसी खराबी है, कोई ऐसा लांछन या पाप है, जिसके कारण उसे दुनिया को अपना मुँह दिखाने में शर्म आती है।

गहनों की निरर्थकता के विषय में तो सभी एक मत हैं। स्त्रियों का असली आभूषण तो सद्गुण है। अतएव सोने चाँदी के गहनों को छोड़कर इन्हीं गुणों को अपनाना चाहिए। गहना पहनना उस गुलामी का लक्षण है, जिसमें स्त्रियों को पुरुष की भोग-सामग्री समझकर सजा कर रखा जाता था। गहना पहनना जंगलीपन का चिन्ह तो है ही, हिन्दुस्तान की उन करोड़ों स्त्रियों का मुँह चिढ़ाना भी है, जो अपनी ग़रीबी के कारण गहनों के दर्शन करने में भी असमर्थ हैं। स्त्रियों को वीरता

स्वर्गीय पूज्य कस्तूर बा का वार्षिक श्राद्ध दिवस गत सप्ताह सारे देश में मनाया गया और त्याग में पुरुषों की बराबरी करने के लिए सबसे पहिले सर से पैर तक गहनों से बिलकुल शून्य रहना पड़ेगा।

यदि हम पराधीनता की जिन्दगी का अंत करना चाहती हैं तो हमें आज ही प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि हम लोग गुलामी, दरिद्रता, अज्ञान, छुआछूत, परदा, रूढ़ि आदि कुरीतियों को अपने-अपने घरों में बिलकुल न रहने देंगी और आह्वान होने पर देश की आजादी की लड़ाई में देश के सेनापति के इशारे पर हँसते-हँसते अपने को बलिदान कर देंगी।

विवाह के अवसर पर

साधारण उबटन से अब काम नहीं चलता

गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड **रूप विलास** मँगाइए

शादी के पहले मित्रों को चाहिए कि वर-वधू की सुन्दरता बढ़ाने के लिए रूप विलास का डिब्बा मँगाकर आज ही भेंट करें ताकि उन्हें शादी पर उबटन होना न पड़े। उनकी भद्द पुराने चमड़े से छिपी हुई सौंदर्यता निखर कर असली सुन्दरता चमक आये। इसके लगाने से मुहासा, झाँई, चेचक, काले-काले दाग़, फुन्सी, खुश्की, बदरौनकी, झुर्रियाँ वग़ैरह जल्द आराम होती हैं। थोड़े दिन के लगाने से मलिन मुख चमकदार होकर चेहरे पर गुलाबी छटा दमकने लगती है। यदि आप अपना चेहरा ख़ूबसूरत बनाना चाहते हैं तो २५ वर्ष से प्रचलित जगत्-प्रसिद्ध रूप विलास कम्पनी का रूप विलास खरीदने में देरी न कीजिएगा। यह स्त्री-पुरुष दोनों का दिल खुश करनेवाला है। इसकी खुशबू भी इतनी प्यारी है कि तबियत को मस्त करती है। क़ीमत एक डिब्बा २॥) तीन डिब्बा का ५॥) डाक-खर्च माफ। पैकिट खर्च, मनीआर्डर फीस अलग।

रूप विलास कम्पनी नं० ४८१ धनकुट्टी कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

२५ हजार मछुओं की बेकारी

महोदय! गत वर्षों से प्रान्तीय सरकार ने यू० पी० गवर्नमेंट फिश स्कीम डिपार्टमेंट खोला है। इस विभाग ने डी० आई० आर० द्वारा इलाहाबाद, बनारस, मिर्जापुर, लखनऊ आदि; प्रान्त के अधिकांश जिलों में नदियों और तालाबों पर कंट्रोल करके मछली पकड़नेवालों को किसी भी तरह से मछली पकड़ने, बेचने और पालने की सख्त मनाही कर दी है। मछली-संबंधी यह सारा कार्य सरकार या तो अपने फिश मार्ट द्वारा या ठीकेदारों द्वारा करवाती है। ठीकेदार लोग थोड़े दाम पर अपने नौकर रखकर मछलियों को प्रान्त के बाहर शिमला, कलकत्ता, [illegible] आदि स्थानों में भेजकर अठ-गुना [illegible]-गुना मुनाफा उठाते हैं। चार आने सेर की मछली पांच रुपये सेर बाहर भेजते हैं जब कि इस प्रान्त के लोगों को मछलियों के दर्शन नहीं होते। एक ओर तो प्रान्त में व इसके बाहर मछलियां भेजने पर सरकार ने रोक लगा दी है। दूसरी ओर फिश डिपार्टमेंट के लोग ठीकेदारों द्वारा रोज सैकड़ों मन मछलियां बाहर भेजते हैं। ताज्जुब यह है कि ठीकेदारों से सरकार कुछ टैक्स नहीं लेती, किन्तु जिस पर फिश डिपार्टमेंट की कृपा होती है उसे ही ठीका मिल जाता है। इस विभाग ने गत वर्ष बनारस के मछुओं से तालाब छीनकर स्वयं मछली के बच्चों को उनमें छोड़ा लेकिन लाखों बच्चे मर गये जब कि इसके पूर्व वहां के मछुए इस कार्य को खूबी से करते थे। बच्चों को बड़ा करके बेचना उनका सैकड़ों वर्ष का पुश्तैनी पेशा है। मिर्जापुर इलाहाबाद में भी धड़ाधड़ तालाब छीने जा रहे हैं। सरकार की इस नीति से प्रान्त के २५ हजार मछुवे बेकार हैं और जनता को भी मछली नहीं मिलती जब कि घी, दूध का भी इस समय अत्यन्त अभाव है। अनाथ, विधवा, बूढ़ी स्त्रियां, ग़रीब आदमी मछली बेचकर जीते थे किन्तु उनमें तबाही फैल रही है और थोड़े से लोग खूब मनमाना मुनाफा उठा रहे हैं। अतीत काल से वे लोग यही पेशा करते आए हैं। इस कार्य के अतिरिक्त न तो वे कोई कारीगरी जानते हैं न उनके पास खेत या कोई दूसरी सम्पत्ति है जिससे अपनी जीविका चला सकें। फिश डिपार्टमेंट ने कंट्रोल और [illegible] रक्षा क़ानून की आड़ में उन पर [illegible] किया है। देहातों में तो इससे [illegible] दशा है। सरकार ने अनाज, दूध, [illegible] आदि खाद्य पदार्थों के उत्पादन पर [illegible] क्रय-विक्रय और उनके दामों [illegible] नियंत्रण किया है। किसानों को यह [illegible] नहीं दी गई कि तुम खेत छोड़कर [illegible] जाओ सरकार स्वयं जोत बोकर [illegible] बेचेगी किन्तु ग़रीब मछुओं का [illegible] खेत बेबुनियाद ही बेदखल [illegible] गया है। अगर सरकार की यही [illegible] रही तो या तो मछुओं को स्वयं [illegible] की भांति मरना पड़ेगा अथवा वे [illegible] की पूजा के लिए गुमराह होकर [illegible] करने पर बाध्य होंगे। सरकार न तो इस कार्य को स्वयं कर पाती है और न करने ही देती है। यदि मछलीवाले आजादी से अपने पेशे को करने पावें तो प्रान्त में मछलियों की भरमार हो जावे। फिश डिपार्टमेंट की इस नीति से और तो कुछ नहीं सिर्फ बेकारी, ग़रीबी, बेजा मुनाफा व घूसखोरी को अवश्य प्रोत्साहन मिल रहा है। जब कि खाद्य व पोषक पदार्थों का अभाव हमें मृत्यु के निकट लिए जा रहा है तो क्या सरकार अपनी यही घातक नीति पर अड़ी रहेगी। आशा है प्रान्तीय सरकार और जनता इस पर ध्यान देने की अवश्य कृपा करेगी।

इण्डियन फिशरमेन यूनियन यू० पी० —शीतलादीन जनरल सेक्रेटरी

* * *

लखनऊ से फिर कवि-सम्मेलन

लखनऊ रेडियो स्टेशन ने अपने स्टाफ के मित्रों में से छः जयचन्दों को छाँट लिया है और उनसे सारा काम निकाल लेता है। वे रूपक लिखते हैं, नाटक लिखते हैं और आवश्यकतानुसार स्वयंभू कवि बन जाते हैं। उनमें से कुछ नाम ये हैं—शान्तीप्रसाद चन्दोला, कैलाशचन्द्र देव 'वृहस्पति', केशवप्रसाद शुक्ल और कैलाशनारायण रोहतगी। इन कवियों का प्रथम परिचय संसार को तब मिला जब गत दिसम्बर में हुए लखनऊ से कवि-सम्मेलन में ये अपनी मीठी वाणी से उपस्थित चपरासियों को मुग्ध करते रहे और स्टेशन के बाहर एक हजार व्यक्ति, जिनमें कुछ प्रमुख हिन्दी के कवि भी थे प्रदर्शन करते रहे। परन्तु रेडियोवालों को भला इसकी परवाह क्यों होने लगी (यदि होती तो यह नौबत ही क्यों आती)। अस्तु, १६-३-४६ को लखनऊ से जो कवि-सम्मेलन हुआ उसमें भी भाग लेनेवाले यही छः महानुभाव थे। रेडियोवालों ने इन्हीं को पकड़कर फिर कवि-सम्मेलन करा दिया, लोग उनको कवि समझें या न समझें। पहले की भाँति लिसनर में फिर कवियों के नाम नहीं छापे गये और दाम देने के लिए उसी प्रकार फिर स्टूडियों में चपरासियों को इकट्ठा कर लिया गया। यह है रेडियो की बहादुरी और कारगुज़ारी। इस प्रकार वह संसार के सामने प्रमाणित करना चाहता है कि उसे सम्मेलन के बहिष्कार वाले प्रस्ताव के बावजूद हिन्दी-जगत् का सहयोग प्राप्त है। इन छः जयचन्दों का स्वागत किस प्रकार किया जाय यह हिन्दी संसार भली भाँति निश्चित कर लेगा। परन्तु रेडियो ने तो यही निश्चित कर रक्खा है "कुत्ते भूंकते रहते हैं, 'हाथी' अपनी राह चला जाता है।" इस हाथी को भी राह पर लाने के लिए अंकुश लगाने का कुछ उपाय हिन्दीवालों ने सोचा है? सम्मेलन की स्थायी समिति केवल बहिष्कार का प्रस्ताव पास करके बैठी रहेगी या कुछ और करने का इरादा रखती है?

१७-३-४६ —सूर्यप्रकाश, एम० ए०

* * *

जयपुर में गत ता० १२ मार्च को "माडर्न आर्ट प्रिंटर्स" में श्री रूपनारायण पाण्डेय सम्पादक "पारीक" के संयोजकत्व में एक विराट् कवि-सम्मेलन हुआ। अखिल भारतीय मारवाड़ी महासभा के प्रधान-मंत्री "मारवाड़ी गौरव" के सम्पादक, श्री अद्भुत शास्त्री जी सभापति थे। श्री योगेश्वर गुलेरी का 'आज का कवि सम्मेलन कैसा होना चाहिए' पर श्री नन्दकिशोर जी पारीक का "आज का साहित्य" पर भाषण हुआ। श्री हरि शर्मा, वंशीधर शर्मा, श्री गोकुल माधव साहित्यालंकार, नन्दकिशोर पारीक आदि की कविताएँ हुईं। सम्मेलन के सभापति श्री शास्त्री जी की कविताएँ बहुत ही सुन्दर रहीं।

—शिवेन्द्र

❀ ❀ ❀

वर्धा हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के प्रधान-मंत्री श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल ने सूचित किया है कि हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की परीक्षाएँ आगामी १५ सितम्बर से प्रारम्भ होंगी। फ़ीस भेजने की अंतिम तिथि ७ अगस्त रखी गई है। इसके बाद फ़ीस भेजनेवालों की फ़ीस स्वीकार न की जायगी। पूरी जानकारी वर्धा कार्यालय से मँगानी चाहिए।

राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति के सहायक-मंत्री कहा जाता है कि श्री रामेश्वर दयाल दुबे ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। समिति के प्रधान-मंत्री श्री आनन्द कौसल्यायन न कुछ मामलों की जाँच भी की है। श्री दुबे ने अपने त्याग-पत्र की एक कापी श्रद्धेय टंडन जी, दूसरी श्री आनन्द कौसल्यायन तथा तीसरी श्री मौलिचन्द्र शर्मा के पास भेज दी है।

—संवाददाता

* * *

वर्धा की राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति के एक कर्मठ कार्यकर्ता श्री शंकर खड़तरकर का अभी हाल में ही स्वर्गवास हो गया है। श्री शंकर को तपेदिक हो गया था।

—संवाददाता

* * *

ग्वालियर राज्य सार्वजनिक सभा (स्टेट कांग्रेस) का २६वाँ वार्षिक अधिवेशन शिवपुरी में हुआ। १० मार्च को इसके अंतर्गत राष्ट्रीय महिलाओं का भी अधिवेशन हुआ। अधिवेशन की अध्यक्षता श्रीमती क्रान्तिदेवी दिनेश ने कहा—आज हमारा देश पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा है और पूज्य बापू जी तथा पंडित नेहरू जी के नेतृत्व में हम प्रतिदिन अपने ध्येय की ओर दृढ़ता से आगे बढ़ रहे हैं। प्रत्येक स्त्री पुरुष का कर्त्तव्य ही नहीं वरन् धर्म है कि वह पराधीनता की जंजीरों को तोड़कर स्वतंत्रता प्राप्त करें।

—संवाददाता

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट खाकर देखें।

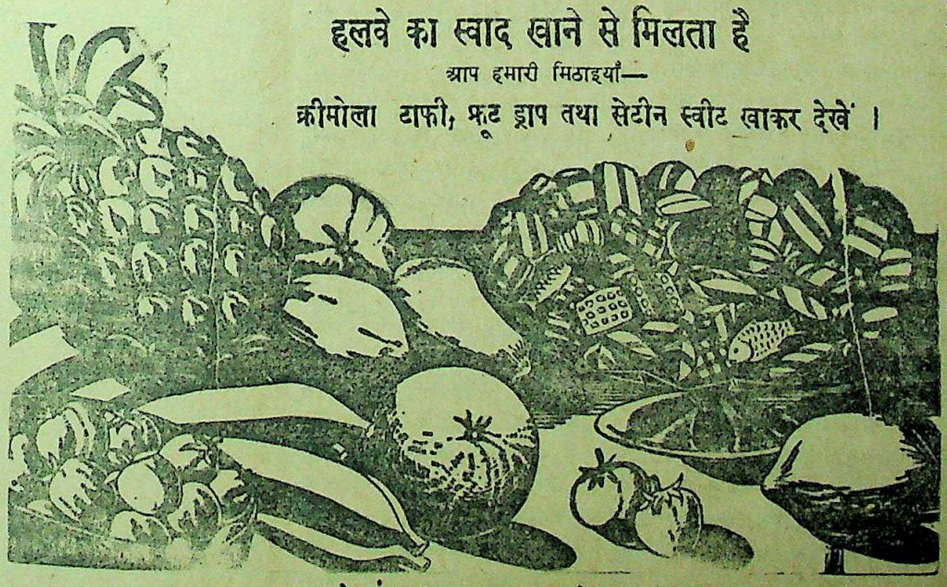

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के लिए रोटी और आजादी

(पेज ६ का शेष)

साम्राज्य-विरोधी दलों में एका पैदा कर सभी राजनीतिक दलों को मिलाकर एक जबरदस्त साम्राज्य-विरोधी मोर्चा पैदा कर इस देश से 'ब्रिटिश साम्राज्यवादियों' को निकाल बाहर कर दिया जाय और जनता के शोषण का अन्त किया जाय।

साम्राज्य विरोधी संयुक्त मोर्चा

अब हमारे सम्मुख कई एक प्रश्न खड़े होते हैं जैसे विदेशी हुकूमत से पिंड छुड़ाने के लिए पिछले साठ वर्ष से बराबर कोशिश करते रहे हैं तिस पर भी हम आज भी गुलाम क्यों हैं? साम्राज्यवाद के विरुद्ध किये गये हमारे पिछले संग्राम सफल क्यों नहीं हुए? विदेशी शासकों को इस देश से निकाल बाहर करने के लिए हमें आज जो अंतिम संग्राम छेड़ना है उसका रूप क्या होना चाहिए?

इन सभी प्रश्नों का विस्तृत और सदलिल उत्तर इस लेख में नहीं हो सकता। यहां सिर्फ कुछ खास-खास बुनियादी बातों की ओर संकेत-मात्र किया जा सकेगा। जब हम भारतीय स्वाधीनता संग्राम के पिछले पच्चीस वर्ष के इतिहास पर दृष्टि डालते हैं और साम्राज्यवाद के विरुद्ध छेड़े गये संग्रामों के असफल होने के कारणों पर विचार करते हैं तो यह बात विदित हो जाती है कि उनके असफल होने का कोई कारण है तो वह कारण हमारी कमजोरियों के अलावा और कुछ नहीं है। इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता कि आज भारतीय का दिल, वह चाहे हिन्दू हो या मुसलमान, पारसी हो या सिक्ख अपने देश को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के पंजे से मुक्त हुए देखने के लिए लालायित है। यदि यह बात सही है तो इस बात से कोई नहीं इनकार कर सकता कि पिछले वर्षों में जो आन्दोलन और संग्राम हुए उसमें सभी स्वतन्त्रता-प्रिय राजनैतिक दल और सभा तब्के के लोगों का सहयोग नहीं रहा और उन आन्दोलनों के असफलता का सफल न होने का वही मुख्य कारण रहा है। दूसरे भी कारण रहे हैं लेकिन उनमें मुख्य कारण यही था।

विदेशी शासकों की स्वार्थपूर्ण और अन्धी नीति के कारण आज कन्याकुमारी से लेकर काश्मीर तक भारतीय जनता किसान, मजदूर, सरकारी कर्मचारी, निम्न मध्यम श्रेणी की तमाम जनता के सामने दो ही मार्ग रह गये हैं। या तो सभी मिलकर विदेशी हुकूमत के विरुद्ध लड़कर देश की बागडोर अपने हाथ में लेकर सभी के लिए रोटी और नौकरी के लिए व्यवस्था करना या साम्राज्यवाद के लिए लड़नेवाली शक्तियों-द्वारा अपने संगठन को कुचलने देना, अपनी गुलामी की बेड़ियों को और कसने का मौक़ा दुश्मन को देना। इसके अलावा दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

भारत की सभी जातियां, पठान हों या केरलीय सिक्ख हों या हिन्दू, अब पल भर के लिए भी अपने देश में छः हजार मील दूर से आए हुए फिरंगियों का राज बरदास्त करने के लिए तैयार नहीं हैं। अँगरेज साम्राज्यवादियों से सभी घृणा करते हैं इसमें रत्ती भर भी सन्देह नहीं हो सकता! परन्तु भारतीय राजनीति और समाज-विज्ञान का कोई भी विद्यार्थी इस बात से अपनी आँखें नहीं मूंद सकता कि आज भारत की विभिन्न जातियों के लोगों की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक प्रगति में कोई बाधा डाल रहे हैं तो वह अँगरेज साम्राज्यवादी ही नहीं, बल्कि यहाँ की अन्य दूसरी जातियाँ भी हैं। आज मलयाली, तामिलियन, मराठी, बंगाली, बिहारी, हिन्दुस्तानी, सिन्धी, पंजाबी, मुसलमान, सिक्ख, आदि सारे भारत की प्रत्येक जाति के लोगों की अदम्य इच्छा है कि अँगरेज साम्राज्यवादियों के भारत से चले जाने के बाद कोई जाति हमारे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास में बाधा न डालने पावे। केरल का रहनेवाला यह चाहता है कि मलयाल भाषा बोलनेवाले सभी इलाकों को मिलाकर उक्त राज्य बना लिया जाय एकऐक्य केरल की स्थापना हो; केरल की अपनी विधान-निर्मात्री सभा हो और उसका सम्बन्ध केन्द्र से हो इसी प्रकार भारत में बसनेवाली अन्य मुख्य सोलह जातियों के राज्य स्थापित किये जाने का आश्वासन दिया जाय जिनमें से प्रत्येक को अपने यहाँ के मामलों में पूर्ण अधिकार होगा कि कोई एक दूसरे को नहीं दबायेगा जहाँ तक सारे देश की हिफाजत का सिक्ख का, यातायात का, विदेशी से वाणिज्य-व्यापारिक मामलों के लिए सम्बन्ध स्थापित करने का सवाल है, उसके लिए सभी राज्यों से जनता के चुनकर भेजे गये प्रतिनिधियों द्वारा बनाई गई केन्द्रीय परिषद् से किया जा सकता है।

इससे भारत के किसी भी जाति-विशेष के लोगों के दिल में यह डर या सन्देह नहीं रहेगा कि अँगरेज साम्राज्यवादियों के यहाँ से चले जाने के बाद कोई शक्ति उनके विकास में किसी भी प्रकार की बाधा डाल सकेगी। भारत की वैधानिक समस्या के सन्तोषजनक रूप से हल करने पर भारत के भावी संग्राम में संपूर्ण जनता का सहयोग प्राप्त हो सकता है और इस अन्तिम संग्राम को अन्तिम और सफल दोनों बनाने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि पूर्णतया प्रजातन्त्रवादी ढंग से, एक दूसरे के साथ पूरा-पूरा न्याय करने की दृष्टि से यही कि वैधानिक समस्या हल करना कोई चाहता है तो उसके लिए इसके अलावा कोई उपाय भी नहीं। यही एक उपाय है जिससे भारत की एकता क़ायम रखी जा सकती है, यही एक मार्ग है जिससे दक्षिण और उत्तर, हिन्दू और मुस्लिम संस्कृति की रक्षा की जा सकती है और विभिन्न जातियों के लोगों के आर्थिक जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया जा सकता है।

उपसंहार

हमने ऊपर भारत के विभिन्न तब्के के लोगों में राशन में की गई कटौती, छटनी, बेरोजगारी, नागरिक अधिकारों पर हस्तक्षेप, पाशविक दमन, देश को आगे भी गुलाम बनाये रखने के लिए किये जानेवाली चालबाजियों इन सबके कारण उठते हुए घोर असन्तोष पर विचार किया। हमने इस बात पर भी विचार किया कि पिछले दो महासमरों के बाद साम्राज्यवादी शक्तियां कितनी पंगु की गई हैं, लेकिन उसी समय पराधीन देशों की जनता साम्राज्यवाद का खातमा कर अपने देश की बागडोर अपने हाथ में लेने के लिए कितना तेजी से आगे बढ़ रही है और सफल संग्राम कर रही है। इसके बाद हम इस नतीजे पर आये कि सदियों की भाषित भारतीय जनता के सम्मुख आज दो ही रास्ते हैं अर्थात् आज की अनुकूल अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति से लाभ उठाकर सब मिलकर विदेशी हुकूमत को निकाल बाहर करने के लिए आखिरी लड़ाई छेड़ना या हमारे संगठन को कुचलने के लिए दुश्मन को मौक़ा देना। आनेवाले संग्राम को सफल बनाने के लिए सभी दलों का पूर्ण सहयोग आवश्यक है और यह वैधानिक समस्या को प्रजातन्त्रवादी तरीक़े से हल करने से ही हो सकेगा। इसके लिए आवश्यक है कि भारत के सत्रह जातियों का राज्य हो और उनकी अपनी विधान-निर्मात्री सभायें हों इन सत्रह राज्यों द्वारा चुने हर प्रतिनिधियों से बना हुआ केन्द्रीय परिषद् सभी राज्यों पर लागू होनेवाले आम मामलों का निपटारा करे।

अतः भारत के प्रत्येक विचारशील व्यक्ति का आज यह फर्ज है कि आज देश की तमाम जनता को परेशान करनेवाले प्रश्नों को हल करने के लिए, प्रजातन्त्रवादी ढंग से वैधानिक समस्या को हल कर सभी राजनीतिक दलों का एक साम्राज्य-विरोधी संयुक्त मोर्चा स्थापित कर साम्राज्यवादी हुकूमत के विरुद्ध आखिरी जंग छेड़ने के लिए आन्दोलन करें।

योरोपीय महायुद्ध और टर्की

(पेज ७ का शेष)

सहायता दी जाने लगी और दूसरी तरफ देश की तमाम जनवादी शक्तियों को हर तरह से कुचला गया।

सन् ३४ के 'बालकान पैक्ट' के अनुसार 'बालकान' की सुरक्षा की जिम्मेदारी तमाम बालकान राष्ट्रों (ग्रीस, टर्की, युगोस्लेविया, रूमानिया) पर है पर जब इन्हीं बालकान राष्ट्रों की स्वतन्त्रता खत्म होने लगी और वे एक एक करके हिटलर की सर्वग्रासी नीति के शिकार होने लगे—टर्की ने चूं तक नहीं किया। उसने इस बात को जरा भी महसूस नहीं किया कि वह भी बालकान राष्ट्रों में से एक है और उसके कंधों पर भी 'बालकान की सुरक्षा' का भार है। हिटलर की गुलामी से छुटकारा पाने के लिए, बालकान राष्ट्रों की जनता द्वारा छोड़े गये 'राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम' की संसार की तमाम प्रगतिशील शक्तियों ने प्रशंसा की—पर टर्की के प्रतिक्रियावादियों ने इस 'स्वातन्त्र्य युद्ध' को 'विद्रोह' या 'अराजकता' का नाम दिया। और जब लाल सेना तथा बालकान की जनता की संयुक्त शक्ति से पूरा पूर्वी योरप हिटलर की गुलामी से स्वतन्त्र हो गया तब टर्की के वे और अवसरवादी बालकान की 'एकता व दृढ़ता' का राग अलापने लगे। उनमें से कुछ तो यहाँ तक कहते थे कि अब टर्की को ही बलकान राष्ट्रों का नेतृत्व करना चाहिए।

टर्की की उस प्रगति-विरोधी नीति की यह स्वाभाविक प्रतिक्रिया है कि दूसरे बालकान राष्ट्र आज उसकी तरफ पूर्णतः सशंकित हैं। पर टर्की का भविष्य इस आत्मघातक प्रगति-विरोधी नीति में

उज्ज्वल नहीं है। उसे संसार की प्रगतिशील शक्तियों के साथ क़दम से क़दम मिलाकर चलना होगा अन्यथा उसके अन्दर की ऐसा भयंकर विस्फोट होगा जो कुछ तमाम प्रतिक्रियावादी शक्तियों को नष्ट करके वहाँ जनता जनार्दन का राज स्थापित कर देगा।

मझली दीदी

एक अनाथ बालक की करुण कहानी इस उपन्यास में इतनी मार्मिकता के साथ चित्रण की गई है कि पढ़ते-पढ़ते आँखें अनायास ही गीली हो जाती हैं। एक सौतेली बहन अपने निराश्रित भाई के साथ जिस तिरस्कार और उपेक्षा का परिचय देती है, वह अत्यन्त हृदय-विदारक है। परन्तु उसकी देवरानी इस अनाथ बालक को अपने पुत्र की तरह स्नेह करती है। यही मझली दीदी है। उपन्यास बहुत सुन्दर है। मूल्य १)

अपनी बात

मनुष्यों के चरित्र में जो दुर्बलताएं होती हैं उन्हें दूर करके वह किस प्रकार जीवन को उन्नत बना सकता है, यही बात इस पुस्तक में ओजपूर्ण भाषा में लेखक ने निजी अनुभव के आधार पर, लिखी है। यह पुस्तक प्रत्येक युवक को पढ़नी चाहिए। मूल्य ।।) बारह आने

राजा-रानी

नीति-कुशलता तथा प्रजा-भक्ति के अभाव में विलासी राजा के राज्य में जिस प्रकार की अव्यवस्था और अराजकता फैल जाती है, इसका रोमांचकारी चित्र रवि बाबू ने इस उत्कृष्ट नाटक में खींचा किया है। प्रजा की पुकार पर दयालु राजा का उत्सर्ग अत्यन्त प्रभावोत्पादक और कर्त्तव्यनिष्ठा का ज्वलन्त उदाहरण है। मूल्य १।।≡)

फ्रांस का इतिहास

में ईसा पूर्व २२५ से लेकर १९२० ईसवी तक का इतिहास इसमें वहाँ की राज्यक्रान्ति के राजवंश फ़्यूडल प्रणाली, स्वतंत्र, राजतंत्र, वर्षीय युद्ध, योरप में फ्रांस के राजवंश के उद्धार, सन् १८४८ की राष्ट्रीय सभा और प्रजातंत्र आदि वर्णन उत्तमता से किया गया है। में चित्र भी हैं। अच्छे कागज पर चार सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक मूल्य केवल ४) चार रुपये।

कुछ

यह प्रसिद्ध साहित्य-सेवी श्री पुन्नालाल बख्शी बी० ए० के बढ़िया का संग्रह है। इसमें २० निबन्ध भाषा, भाव और विवेचन की दृष्टि विलक्षण हैं। यह इस वर्ष की अनुपम है। पृष्ठ-संख्या २०० से ऊपर। मूल्य १।) एक रुपया आठ आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लि० इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीतिक और दर्शनिक

(पेज ४ का शेष)

...रेडियो स्टूडियो में भाषण देते समय ...आप बी० बी० सी० के नियमों को ...व्यक्तित्व से कोसों दूर रखते हैं। ...मौज को ज्यों की त्यों बनाये रखते ...हैं, राजनीति, धर्म अथवा सन्तान ...जैसे गूढ़ विषयों पर सम्भाषण ...समय आपकी पुतलियाँ अवश्य बल ...दृष्टिगोचर होती हैं।

...एकबार इंगलैंड के रेडियो स्टेशन ...श्री जोड की एक स्पीच की रेकार्डिंग ...समय, बड़ी मुसीबत में पड़े। श्री ...को प्रत्येक विषय का पूर्ण ज्ञान है; ...परिश्रम के साथ अध्ययन किया ...अस्तु, आप सभी विषयों पर अपनी ...जोर से और खुलकर व्यक्त ...हैं। आपने भाषण देते समय कान... नामक प्रसिद्ध ग्रीक विद्वान का ...वाक्य कह डाला। वाक्य था—...की बचत करने का यह ...तरीका है कि हम समय से पूर्व ...अपने बिस्तरों पर चले जायें चाहे ...बचत का परिणाम जुड़वाँ सन्तान ...क्यों न हों?"

...वाक्य अजीब था, आपत्तिजनक ...रेडियो स्टेशनवाले डरे कि कहीं ...न हो कि कोई सदस्य पार्लियामेंट ...में इसके संबंध में सवाल कर ...बेकार बवाल खड़ा हो जाय। उन्होंने ...वाक्य को उनके भाषण से ...कर दिया, श्री जोड को बिना जताय ...अन्यथा वह सिर पर पहाड़ उठा लेते।

श्री जोड सर्वसाधारण से कहीं अधिक अनुभवी व्यक्ति हैं। उनका अनुभव सर्वसाधारण के अनुभव से पुराना एवं बूढ़ा कहा जा सकता है। आपने अनुभव किया कि औरतें यह पसन्द करती हैं कि मर्द अधिक से अधिक उनके विषय में बातचीत करें, उनकी चर्चा चलावें, चाहे उनकी बातचीत का विषय उनकी सबसे बुरी कमजोरी ही क्यों न हो। नारी श्री जोड की सर्वप्रिय विषय है। नारी के व्यक्तित्व, काम आदि का विवेचनात्मक विश्लेषण करने में उन्होंने कुछ उठा नहीं रक्खा है, और यही कारण है कि अगणित महिलाएँ उनके द्वारा आयोजित "ब्रेन्स ट्रस्ट" की सभाओं में खुलकर भाग लेती हैं।

प्रोफेसर जोड का नारी-विषयक ज्ञान अनुपम है। और पुरुष पर उसकी प्रतिक्रिया का भी। आपका मत है कि यदि कोई पुरुष किसी स्त्री के प्रेम का हक़दार चेष्टा करने पर भी न बन सके और उसके अर्न्ततम में एक प्रकार की जलन पैदा हो जाय तो उस जलन की अक्सीर दवा एक दूसरी नारी ही है, जो उसकी पूर्व प्रेयसि की स्थान-पूर्ति कर सके। "कभी किसी औरत या मोटरबस के पीछे न दौड़ना चाहिए कारण कि दूसरे फेरे में चन्द मिनट बाद दूसरी दिखलाई ही पड़ जायगी"—ऐसी आपकी नवयुवकों को सलाह है। श्री जोड की अभिव्यञ्जना-प्रणाली अद्वितीय है। उसमें हिचक कर लेशमात्र पुट नहीं। एक बार किसी ने आपसे प्रश्न किया, "आपने अपनी आत्म-कथा क्यों लिखी?" आपका उत्तर था, "इसलिए लिखी जिससे अपनी वृद्धावस्था में मेरे पास कुछ अपने पढ़ने की सामग्री हो और मैं यह जान सकूं कि अपनी जवानी में मैं कैसा था।" कितना माकूल जवाब था। प्रश्नकर्त्ता मुग्ध हो रहा था।

प्रोफेसर जोड अत्यंत हँसमुख हैं। वर्नार्डशा की भाँति आप भी फुलझरियाँ छोड़ने में कम नहीं हैं। एक बार एक महिला ने उनके पास यह लिखने की धृष्टता की कि वह एक आदर्श एवं पूर्ण शिशु के पिता हो जायँ। प्रोफेसर जोड ने मुग्ध होकर उत्तर दिया, "ठीक है, लेकिन मान लो कहीं शिशु का दिमाग़ तुम्हारे जैसा हुआ और उसका सौंदर्य मेरे जैसा तब?" पता नहीं उस महिला के दिल पर क्या बीती?

महिलाएं श्री जोड को पत्र खूब लिखती हैं, और इसमें उन्हें मजा मिलता है। प्रोफेसर जोड की निजी डाक में महिलाओं के पत्र अधिक होते हैं। वह पत्र द्वारा उनसे सलाह माँगती हैं, उनसे भेंट करना चाहती हैं—उनसे बातचीत करने के लिए, एक अनुभवी दार्शनिक का दर्शन करने के लिए। उनके पत्रों में वासना की गन्ध तक नहीं होती।

प्रोफेसर जोड का व्यक्तित्व अनुपम है, उनकी दिनचर्य्या भी अजीबोगरीब है। उनकी पाँच हजार पौंड की सालाना आमदनी का अधिकांश भाग वह अपने ऊपर खर्च न कर अन्यत्र खर्च करते हैं। वह कलाकार हैं, संगीत-शिक्षा एवं पुस्तकों के उपासक वह जीवन के सुन्दर क्षण व्यतीत करना जानते हैं—अकेले नहीं बल्कि अपने अभिन्न हृदयों की संगत में। अस्तु, उनकी आय का अधिकांश भाग पुस्तकों को खरीदने में, मित्रों एवं स्नेहियों की आवभगत में, संगीत एवं साहित्य-गोष्ठियाँ आयोजित करने में ही व्यय होता है। हैम्पस्टेड में एक छोटा-सा घर है—शहर की हलचल से दूर, वेल्स प्रान्त के अन्तर्गत एक खेत में—जहाँ यह प्रसिद्ध दार्शनिक अपनी सुन्दर सन्तानों एवं मित्रों के मध्य अपनी विचार-धारा को प्रवाहित करता है—एक आजाद नागरिक की भाँति।

श्री जोड को आत्मविज्ञान से बड़ी चिढ़ है किन्तु फिर भी दर्शनार्थियों का झुंड उनके इस एकान्तवास में भी उनका पिंड नहीं छोड़ता। जन-समुदाय उनको एक महात्मा समझता है साथ ही एक सफल शिक्षक भी जिसने अपना जीवन सरस्वती की आराधना में लगा दिया है, जिसने करोड़ों अशिक्षितों के अन्धकारमय जीवन में शिक्षा की ज्योति जगा दी है; जिसने मानव को उसके अस्तित्व से वास्तविक रूप से—परिचित करा दिया है, केवल अपनी प्रतिभा-द्वारा।

श्री जोड की अभिलाषा पार्लियामेंट के सदस्य होने की बहुत दिनों से थी, वह अब पूर्ण हो गई है। वह शिक्षक से—एक राजनीतिज्ञ बनने जा रहे हैं; किन्तु उनके स्नेहियों को चिन्ता है कि कहीं राजनीति के चक्कर में पड़कर वह अपने परम प्रिय शिक्षक के पेशे को न भूल जायँ जिसके द्वारा मानव-जाति का उन्होंने अब तक बड़ा उपकार किया है।

उत्तमोत्तम उपन्यास और कहानी-पुस्तकें

प्रतिशोध—लेखक, पंडित उमेशचन्द्र मिश्र। इस उपन्यास में प्रोफ़ेसर भारद्वाज नामक एक वैज्ञानिक षड्यन्त्रकारी की रहस्यपूर्ण कार्यवाहियों का वर्णन बड़े रोचक ढंग से किया गया है। इसे पढ़ते-पढ़ते आप ऐसे तल्लीन हो जायगे कि बिना समाप्त किये पुस्तक हाथ से न छूटेगी। मूल्य १) एक रुपया।

द्वन्द्व—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह श्रीमती सरोजकुमारी देवी नामक बंगला की एक प्रसिद्ध उपन्यास-लेखिका की इसी नाम की रचना का हिन्दी-अनुवाद है। इसमें मानव हृदय के अन्तर्द्वन्द्व तथा उसके कारण उत्पन्न होनेवाली अशान्ति का बहुत ही उत्तमतापूर्वक विश्लेषण किया गया है। यह उपन्यास आदि से अन्त तक समस्यामय घटनाओं से परिपूर्ण है और इसका कोई भी ऐसा अंश नहीं है जिसमें सरसता का अभाव हो। मूल्य २॥≈)

जीवन-क्रान्ति—लेखक, पंडित गौरीशंकर मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०। अनुभवी तथा विद्वान लेखक ने इस उपन्यास में सेठ-साहूकारों तथा बड़े आदमी कहे जानेवाले व्यक्तियों की नर-पिशाचिता, पुलिस तथा अन्य अधिकारियों के हथकण्डों और धर्म के लाभ से निरपराधों को अपराधी ठहराकर कारागार की नारकीय यातना भोगने के लिए विवश करने के माया-जाल का बहुत ही आकर्षक शैली में वर्णन किया है। उपन्यास की एक-एक पंक्ति ओजपूर्ण और हृदय में घर कर लेनेवाली है। मूल्य २॥≈)।

स्काटलैंड-यार्ड की जासूस स्त्री—यह पुस्तक लेडी मॉली की ९ जासूसी कहानियों का संग्रह है। इस पुस्तक की एक-एक कहानी इतनी मनोरंजक और कौतूहलवर्द्धक है कि आप इस पुस्तक को पूरी पढ़े बिना चैन नहीं पा सकते। लेडी मॉली के जितने कहानी-संग्रह अब तक प्रकाशित हुए हैं, यह उन सबसे अच्छा है। मूल्य ॥।-)।

संसार की प्रसिद्ध कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत शमशेर बहादुरसिंह, बी० ए०। इस पुस्तक में योरप के संसार-प्रसिद्ध कलाकारों की चुनी हुई कुछ कहानियाँ संगृहीत की गई हैं। ये सभी कहानियाँ बहुत ही कलापूर्ण और मनोरंजक हैं। यदि आपको योरप के कथा-साहित्य की बानगी लेनी हो, तो इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य १)।

मोपाँसा की चुनी हुई कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत गोपीनाथ जी क़ानूनगो। इस पुस्तक में मोपाँसा की चुनी हुई ग्यारह कहानियों का संग्रह किया गया है। मोपाँसा की रचनाओं की बानगी लेने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य १)।

ब्रजनाथ का विवाह—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। आश्चर्यमयी घटनाओं से परिपूर्ण यह सामाजिक उपन्यास पढ़ने में ऐसा रोचक है कि एक बार आरम्भ करने पर फिर बिना समाप्त किये चैन नहीं पड़ता। मूल्य १।-)।

आनन्दमठ—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। मुसलमानों और अंगरेज़ों को हिन्दुस्तान से बाहर करने के लिए, बंगाल में वैष्णवों ने जो विद्रोह किया था, उसी का इस उपन्यास में उपन्यास-सम्राट श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने बड़ी खूबी से वर्णन किया है। ऐसा सुन्दर चित्रण इस उपन्यास में है कि पढ़कर मातृ-भूमि के लिए दिल फड़क उठता है। मूल्य १।-)।

रजनी—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। यह उपन्यास-सम्राट श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का एक करुणापूर्ण अद्वितीय उपन्यास है। चमत्कारपूर्ण मनोवैज्ञानिक कहानी इस उपन्यास की एक ऐसी खूबी है कि जिसके कारण पुस्तक पढ़ने का मोह संवरण नहीं किया जा सकता। मूल्य ॥≈)।

श्रीकान्त—(प्रथम और द्वितीय भाग)—अनुवादक, श्री रूपनारायण पाण्डेय। 'श्रीकान्त' शरद् बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना गया है। इसमें शरद् बाबू की अमर लेखनी ने उनके कलाकार का मजा और सधा हुआ रूप चित्रित किया है, जो अत्यन्त मनोरम है। प्रत्येक भाग का मूल्य २)।

ब्राह्मण की बेटी—मूल लेखक, श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक, पंडित रूपनारायण पाण्डेय। शरद् बाबू भारत के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक माने जाते हैं। उनका यह उपन्यास लोक-प्रियता और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मूल्य सजिल्द पुस्तक का १।-)।

मैनेजर (बुकडिपो) इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेता— ईश्वरलाल !

(पेज १२ का शेष)

आया जैसा कि तपस्वी विश्वामित्र को सुन्दरी मेनका की दीप्त तरुणाई को देखकर आया था। इसी तरह से हम दोनों के दिन बीतने लगे। दिन के साथ-साथ प्रेम के पुष्प हम दोनों के जिन्दगी के डालों पर प्रस्फुटित होने लगे। मतलब यह कि हम दोनों के जीवन में एक नई दुनियां, एक नये रंग का सहारा लेते हुए बसने लगी। कमला के स्नेह ने मेरे जीवन के गम के परदे को ढंक दिया। मैं पागल होने जा रहा था, किन्तु उसके प्रेम के जलजले ने मेरी सारी विक्षिप्तता को धो डाला। मेरी जिन्दगी की दुनिया में प्रणय का आसमान तन गया, और उस आसमान पर कमला 'चाँद' बनकर झाँकने लगी।

* * *

मैंने अपनी बहन श्रीमती लक्ष्मी-देवी के नाम एक पत्र लिखा, क्योंकि पिता जी के मर जाने के बाद उसी का संरक्षण मेरे ऊपर था। वह मेरे किसी कार्य में बाधा भी नहीं डालती थी। पत्र में मैंने सभी बातें लिख दीं और यह भी लिख दिया कि आपकी अनुमति लेना मैं जरूरी समझता हूँ। बिना आपकी नेक सलाह के मैं कोई जीवन-मार्ग में गलत कदम न उठाऊँगा, क्योंकि सरपरस्त का हुक्म मानना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। उस पत्र का जवाब मेरी बहन ने जो दिया वह इस प्रकार है—

मेरे प्रिय भाई,

तेरा पत्र मिला। समाचार ज्ञात हुआ। तू बम्बई सैर सपाटे के लिए गया था। तूने लिखा है कि मेरी नौकरी भी लग गई है, और वह भी फिल्म-कम्पनी में। नौकरी के साथ तुझे जीवन-संगिनी भी प्राप्त हो गई है। नौकरी के लिए मेरा कहना यही है कि सिनेमा की दुनिया बहुत ही खराब है। अपने चरित्र को दौलत के समान सँभालकर रखना। चरित्र को पानी की तरह खर्च न करना, क्योंकि मानव-जीवन में चरित्र ही सब कुछ है। इसके नष्ट हो जाने पर जीवन में और कुछ नहीं रहता। मैं तेरे उत्साह को कम नहीं करती। सच्ची लगन के साथ देख भैया काम करते जाना। यदि तूने मेरी बात पर ध्यान दिया, तो तेरा नाम अवश्य ही एक दिन चमकेगा। शादी के सम्बन्ध में मेरा कहना यही है कि यदि तूने समझदारी का चुनाव किया है, तब तो ठीक है—मुझे उसमें तनिक भी नहीं कहना। मुझे विश्वास है कि तूने जीवन-साथी के चुनाव में बड़ी सतर्कता से काम लिया होगा। मेरा शुभ आशीर्वाद तेरी प्रसन्नता के साथ है। समझा भैया। अधिक क्या लिखूं। तूने मुझे बम्बई आने के लिए लिखा, उसके लिए मैं अभी मजबूर हूँ। हाँ, तुम दोनों जरूर घर पर आना, तभी मैं अपनी बहू को देख सकूंगी लेकिन हाँ बहू के दामन को मजबूती से पकड़ना। कहीं आगे चलकर जीवन के तूफान की भयंकरता में छोड़ न देना, समझे हरी।"

आपकी प्यारी बहन
लक्ष्मी

मेरी बहन का यह पत्र आज भी मेरे पास सुरक्षित रक्खा हुआ है। इसने मेरे जीवन का काफी निर्देशन किया है। बहन की आज्ञा पाकर हम दोनों प्रणय के सूत्र में आबद्ध हो गये।

ठीक सुहाग-रात के दिन, रात के दस बजे मैंने कमला के कमरे में प्रवेश किया। दो प्राणों की भिन्नता मिटाने के लिए। दोनों के जिन्दगी की हरी डाली को झुकाकर मद-भरी चितवन की डोर से बाँधने के लिए। कमला के शरीर के प्रत्येक अवयव से मुस्कराहट की आभा निकल रही थी। उसकी नजर झुकी जा रही थी, शर्म और हया के बोझ से। मैंने उसके गुलाबी गालों पर प्रेम की कहानी अंकित करते हुए कहा। "काहे देखो मुझे नीची नजरिया से"

कमला हँस पड़ी। मैं भी हँस पड़ा। जीवन की कविता अपूर्ण से पूर्ण हो गई। आज भी जब कभी यह कड़ी "काहे देखो मुझे नीची नजरिया से" याद आ जाती है तो जीवन में वही सुहागरातवाली सरसती अँगड़ाई लेने लगती है।

(लेखक-द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

इधर उधर की

बीकानेर को एक ईंट

हाल में ही 'डेली टेलीग्राफ़' पत्र में एक ईंट का चित्र प्रकाशित हुआ है, जिसकी प्राप्ति का श्रेय बीकानेर के प्रधान मंत्री सरदार के० एम० पनिक्कर को है इस ईंट की विशेषता यह है कि वह बीकानेर के एक पुराने महल से प्राप्त की गई है और उस पर आक्सफ़ोर्ड के 'क्राइस्ट चर्च' का दृश्य बना हुआ है। महल की जिस खिड़की में यह ईंट लगाई गई थी, वह प्रायः १७वीं सदी की बनी बताई जाती है। इस ईंट के ही पास, खिड़की में अन्य ईंटें हैं, जिन पर उच्च तथा चीनी जीवन के दृश्य दिखाये गये हैं। सरदार पनिक्कर को जब इस ईंट का पता लगा, तो उसकी सूचना उन्होंने सर मारिस ग्वायर को दी। सर मारिस ने उसका चित्र आक्सफ़ोर्ड भेजा। सर मारिस के लेख के साथ, उसका चित्र इसी फ़रवरी के महीने में प्रकाशित हुआ है।

* * *

रेलवे ट्रेनें १०० मील प्रतिघंटा

रेलों से सम्बन्ध रखनेवाले साज-सामान के निर्यात से बढ़ाने के लिए ब्रिटेन की बहुत-सी प्रमुख इंजीनियरिंग की फर्मों ने निश्चय किया है कि अपने-अपने अनुसंधानों और टेकिनकल साधनों को एक ही स्थान पर एकत्र करके उनसे सामूहिक रूप से लाभ उठाया जाय।

इंजीनियरिंग की फ़र्मों का यह दल डीज़ल बिजली की ट्रेनों के काम आनेवाले विभिन्न भागों, १५०० अश्वशक्ति या इससे अधिक शक्तिवाले इंजनों और अन्य बहुत से यंत्रों का निर्माण करेगा।

भावी डीज़ल बिजली की ट्रेनें १०० प्रतिघंटा तक चल सकेंगी। साधारणतः कहा जा सकता है कि इस प्रकार की ट्रेनों में यात्री ले जानेवाले तीन या चार डिब्बे होंगे और इन डिब्बों के साथ संचालन-शक्ति प्रदान करनेवाला यंत्र भी लगा होगा।

अगर यह एलगिन है तो यह श्रेष्ठ है

टार्केश व हुक्काबेक टावेल, ड्रेस्टर, ड्रिल, टिवल, धोतियाँ, साड़ियाँ, कार्डेड जालीदार शर्टिंग, तकियेके कपड़े, स्लान की चटाइयाँ, रंगीन फलालैनी खद्दी कपड़ा, जालियां, पट्टियां और बिस्तरे की चादरें सबके लिए प्रसिद्ध।

"If it's ELGIN it's good"

दी एलगिन मिल्स कंपनी लिमिटेड, कानपुर।

सोल सेलिंग एजेण्टस्:—

मेसर्स रूपनारायण रामचंद्र, ओल्ड जनरलगंज, कानपुर।

केशोंकी शोभा बिना सारी सुन्दरता फीकी पड़ जाती है

इसीलिये केशोंको सजाने व संवारनेके नित्य नये तरीके निकलते आ रहे हैं और निकलते जायंगे। इस विशाल भारतवर्षमें विभिन्न रुचिके लोग हैं और आज ७० वर्षोंसे जवाकुसुम, हर तरहके लोगोंको पसन्द आता रहा है। हमारे देशमें धूल-धक्कड़के मारे बालोंकी जड़में गर्दा बैठ जाता है। फिर गर्मी इतनी तेज पड़ती है कि मस्तिष्कके स्नायु बहुत जल्द गर्म हो जाते हैं। दोनों कारणोंसे ही बालोंकी स्वाभाविक कमनीयता और मजबूती नष्ट होती है।

आयुर्वेदोक्त जड़ी-बूटियों से जवाकुसुम बड़ी आसानीसे केश निकाल देता है और बालोंकी जड़ मजबूत बनाता है। इसके स्निग्ध स्पर्श मस्तिष्क शीतल हो जाता है।

७० वर्षकी सुप्रसिद्धिका समृद्ध

जवाकुसुम

केशोंकी शोभा बढ़ाता....मस्तिष्क शीतल रखता

सी० के० सेन एण्ड कं० लि० - जवाकुसुम हाउस - कल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

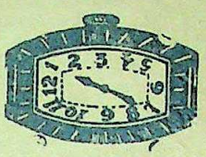

५ घड़ियाँ सिर्फ़ सात रुपये में

३ डमी रिस्टवाच — २ म्यूट रिस्टवाच

फैन्सी न्यू गोल्ड के सुन्दर आभूषणों को मशहूर करने के लिए कम्पनी ने ...री हुई घड़ियों को अपने ग्राहकों को मुफ़्त बाँटने के लिए तय किया है। ...ड़े बेंगल (चूड़ी) डैमण्डकट, २ बम्बई फैशन ...ंगूठी, १ जोड़ी टापस, १ ताले की जंजीर और ...सुन्दर उपहार, ५ घड़ियों के साथ एक बक्स ...सात रुपये में। पैकिङ्ग और डाक-ख़र्च एक ...पाँच आना अधिक।

...टी :—अगर पसन्द न हो तो दाम वापस, जल्दी कीजिए, इस तरह के ...ड़े कम आते हैं, अपना पता साफ़ साफ़ लिखिए।

फैन्सी न्यू गोल्ड अरनामेन्टस् हाउस, पो० बक्स नं० ९६
अमृतसर (D.D.A.) पंजाब
FANCY NEW GOLD ORNAMENTS HOUSE, P.B. 96, AMRITSAR (D.D.A.) (PUNJAB)

बालसखा का नया वार्षिकांक

छप रहा है। पाठक धैर्य रक्खें।

ग्राहकों के अनुरोध से हमने इस वर्ष भी बालसखा का वार्षिकांक निकालने का निश्चय किया है। इसमें बहुत से चित्र, कविताएँ, कहानियाँ, बढ़िया लेख और उपयुक्त सामग्री रहेगी। पृष्ठ-संख्या ३०० से ऊपर। यह अङ्क बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होगा। यह मासिक बालसखा के १२ अंकों से पृथक है। मूल्य ३), मासिक बालसखा के ग्राहकों के लिए रियायती मूल्य २॥)

रियायती मूल्य के लिए अपना ग्राहक-नंबर अवश्य लिखिए।

मैनेजर, बालसखा, इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

धातु पौष्टिक

...मजोत वटी

...वीर्यविकार, शीघ्रपतन, ...कमजोरी दूर करके खून, बल ...बढ़ाती है। डि० रु० २॥)

...मजोत तिला

...से इन्द्री को नसें व अव- ...होकर उत्थानशक्ति और ...बढ़ती है। फी शी० २॥)

...फार्मेसी—जामनगर
...मदन स्टोर्स ४७ जोन्स्टनगंज

...मेक- ...दाँत ...हैं?

...बेड़े में काम ...हम सबके दाँत

...सभी केमिस्टों के ...पास व स्टोरों में मिलता है

शक्ति के लिए रूप

भारतवर्ष की उन्नति निमित किसी भी श्रेष्ठ योजना के अंतर्गत एक शक्तिशाली मोटर-निर्माण उद्योग-धन्धे की स्थापना भी आवश्यक होगी। ऐसे उद्योगधन्धों के लिए महान् दबाव से इच्छानुसार रूप में परिणत नवशक्ति-प्राप्त अपने अपने कार्य-साधन के लिए चादरों और प्लेटों की प्रधान आवश्यकता है। आधुनिक मोटरगाड़ी का गठन बिना इस्पात के नहीं हो सकता।

TATA STEEL

टाटा इस्पात

टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी, लि०-द्वारा प्रचारित।

हेड सेल्स आफ़िस : १०२ ए, क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता।

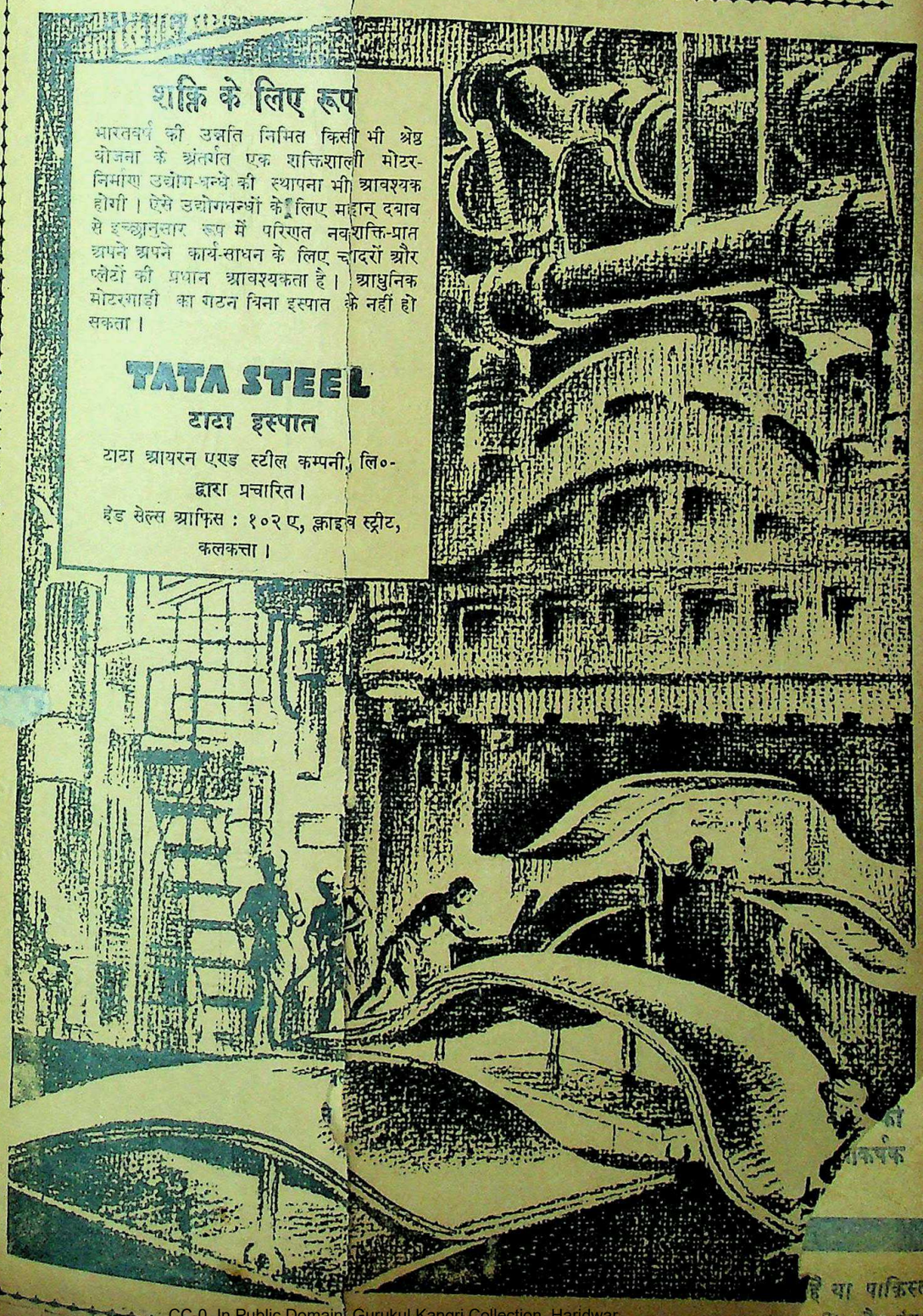

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Estd. 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S. १०) H.M.B.S १५) H.M.D.S. २५)। पुस्तक—अ० पारिवारिक १) बायोकेमिक १) १००० रेडलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्सनरियाँ १॥) आर्गेनन १), फार्माकोपिया १॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायँगी। डा० ख० माफ—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≡) ड्राम। आउन्स ॥) घरेलू बक्स ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.)

शारीरिक उष्णता के लिये...

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

आज से ही शुरू किजिए, सर्वत्र मिलता है।

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली तलुवों और आंखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग में आग सी जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, जड़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढ़ा बालक वृद्ध, पुरुष स्त्री सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक हानिरहित है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निस्संकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके शीतल, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

वी० पी० प्रतिनिधि डोसार एण्ड कम्पनी, बिरहना रोड, कानपुर।

सपट
लोशन
दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.
सपट ॲन्ड कं. लि.
बम्बई नं. २.

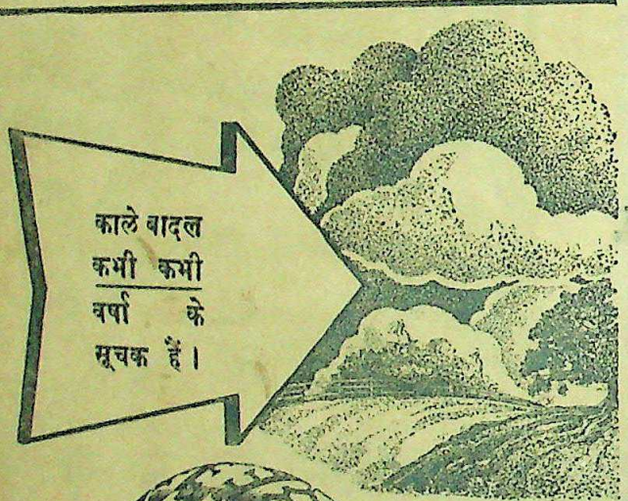
काले बादल कभी कभी वर्षा के सूचक हैं।

नाम "इण्डिया" हमेशा अच्छे टायरों का निशान है।

I

DIA TYRES

बच्चे वुड वर्ड का ग्राइप वाटर पसंद करते हैं

यह सब दर्दों को दूर करता है और बच्चों को तंदुरुस्त व खुश रखता है।

WOODWARD'S GRIPE WATER

keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए अवश्य देख लिया करें।

1-WW 118—117 W. WOODWARD LTD., LONDON

...क—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ ... मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

DESHDOOT ILLUSTRATED HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

मूल्य ७॥)
[illegible] ।)

३१ मार्च, १९४६ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 31st March, 1946

[illegible]-शक्ति—कविवर श्री राजाराम श्रीवास्तव बी० एस-सी० एल-एल० बी० की एक बहुत ही उत्तम कोटि की रचना है। इस [illegible]-काव्य की रचना रामायण के लंका काण्ड की उस सुप्रसिद्ध घटना के आधार पर की गई है, जब कि लक्ष्मण जी मेघनाद [illegible] करते हुए उसके द्वारा चलाई गई शक्ति के हृदय में लग जाने पर मूर्च्छित होकर गिर पड़े थे और उनके जीवित रहने की [illegible] नहीं रह गई थी। कवि ने उस समय की मर्य्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी की शोभामय अवस्था का बहुत ही आकर्षक और हृदयग्राही वर्णन किया है। मूल्य ॥) आने।

[illegible] में ब्रिटिश मंत्रियों का आगमन [illegible] परोंजये कौन हैं और क्या हैं?

हिन्दी भाषाभाषी भारतीय जनता का पत्र

मूल्य २ आना

लीडरी खतरे में है या पाकिस्तान? सेनिटोरियम (कहानी) और रंगमंच।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूरज छाप सर्वत्र मिलता है १६ ६

ब्रजेश

ब्रोंकाइटिस

नीलगिरि तेल नपूना बुक

यूकलिप्स के बाम

बादका मरहम

बाम्बे

विनोलिया एक बड़ा ही आरामदायक साबुन है। इससे स्नान करनेपर हर बार आश्चर्यजनक शीतलता और निहायत ताज़गी आ जाती है। और इस साबुनकी सुगंध इतनी स्फूर्तिदायक और प्रफुल्लित करनेवाली है कि बिलकुल मस्तिष्क और शरीरको एक नवजीवन-सा प्राप्त हो जाता है।

विनोलिया व्हाइट रोज साबुन

VWR. 16-561 HI

VINOLIA CO. LIMITED, LONDON

धातुपोषक

कामजोत वटी

स्वप्नदोष, वीर्यविकार, शीघ्रपतन, सुस्ती व कमजोरी दूर करके खून, बल व वीर्य बढ़ाती है। (ड० ड० २॥)

कामजोत तिला

इसके उपयोग से इन्द्री को नसें व अवयव मजबूत होकर उत्थानशक्ति और स्तम्भन-शक्ति बढ़ती है। फ़ी शी० २॥)

मदनमंजरी फार्मेसी—जामनगर

इलाहाबाद—मदन स्टोर्स ४७ जोन्सटनगंज

श्वेतकुष्ट वनौषधि

महात्माप्रवत्त श्वेतकुष्ट (सफेदी) की दवा से तीन दिन में पूरा फ़ायदा। यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, विज्ञापन-बातओं की दवा से निराश हो चुके हों तो इसे लगाकर आराम होवें। १५ दिन की दवा का मूल्य २॥)।

सफ़ेद बाल काला

इस तेल से बालों का पकना रुककर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दूना मूल्य वापसी की शर्त लिखा लें। यह तेल सिर के दर्द व सिर में चक्कर आना आदि को आराम कर आँख की रोशनी बढ़ाता है। एक-आध बाल पका हो तो २॥), आधा पका हो तो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मंगवा लें।

वैद्यराज अखिल किशोर राय

नं० ३७ पो० कतरीसराय (गया)

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयां—

कोमाला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें

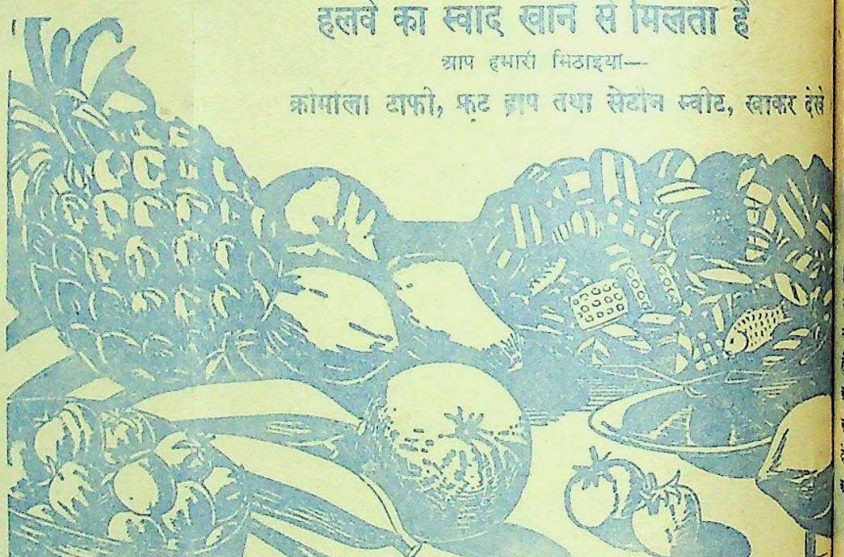

सभी विक्रताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

ईंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

नोक-झोंक

हिन्दी में हास्य-रस का

भज़ेदार मासिक

वार्षिक मू० ३) रु०

एक प्रति ४ आ०

नमूने के लिये टिकट भेजें

एजेन्ट, कार्ड निस्ट चाहिये

—नोक-झोंक, आगरा

५ घड़ियाँ सिर्फ़ सात रुपये में

३ ढकी रिस्टवाच २ स्यूट रिस्टवाच

फैन्सी नये ढंगके सुन्दर आभूषणों को मशहूर करने के लिए कम्पनी ने ऊपर दिये हुए घड़ियों को अपने ग्राहकों को मुफ़्त बाँटने के लिए तय किया है। ४ जोड़े बैंगल (चूड़ी) डेमण्डकट, २ बम्बई फैशन की अँगूठी, १ जोड़ा टाप, १ ताले की जंजीर और २५ सुन्दर उपहार, ५ घड़ियों के साथ एक बक्स में सिर्फ सात रुपये में। पैकिंग और डाक-खर्च एक रुपया पाँच आना अधिक।

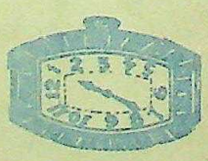

गारण्टी :—अगर पसन्द न हो तो दाम वापस, जल्दी कीजिए, इस तरह के मौक़े कम आते हैं, अपना पता साफ़ साफ़ लिखिए।

फैन्सी न्यू गोल्ड अरनामन्टस् हाउस, पो० बक्स नं० ९६

अमृतसर (D.D.L.) पंजाब

FANCY NEW GOLD ORNAMENTS HOUSE, P.B. 96, AMRITSAR (D.D.L.) (PUNJAB)

वैद्यक उपाधियाँ

मिंस आयुर्वेदिक कालेज

बनारस ११२, गवर्नमेंट रजिस्टर्ड से घर बैठे प्राप्त करें। इंजक्शन (सुई) की शिक्षा लें। नियमावली मुफ्त।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

वर्ष ८, संख्या ३१] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक रविवार, ३१ मार्च, १९४६

हास परिहास

भङ्ग की तरङ्ग

कैबिनेट मिशन भारत आ गया है। ऐसे समय क़ायदे आजम चुप रहें यह कैसे सम्भव हो सकता है? प्रसव-वेदना के समय कोई महिला चुप रहे यह बड़ी अस्वाभाविक बात है।

* * *

अभी थोड़े ही दिन हुए धमकी आपने दी थी कि पाकिस्तान की माँग नामंजूर होने से देश में अशान्ति होगी। अब आप ख़ुद के मत्थे वही मढ़ रहे हैं। कैबिनेट मिशन की आँखों में आप धूल झोंकना चाहते हैं। आपको चाहिए अरब से इसके लिए बालू मँगवा लें।

* * *

आपका यह भी कहना है कि लीगी मिनिस्ट्री बनाने में कांग्रेस बाधा डाल रही है। लीगियों की यदि काफ़ी संख्या नहीं चुनी गई तो सारा दोश कांग्रेस का है। चुनाव के पहले क़ायदे आजम साहब को चाहिए था कि कांग्रेस को ग़ैरक़ानूनी करार देते। नेताओं को जेल भिजवा देते। अपनी सरकार होने पर भी यह नहीं कर सके तो बड़े अफ़सोस की बात है।

* * *

मिस्टर जिन्ना ने अपने भाषण में एक नई खोज की बात बताई है। आप फ़रमाते हैं कि ऐरे गैरे मुसलमानों को राष्ट्रीय मुसलमान के नाम पर कांग्रेस ने खड़ा कर दिया है। हाँ यह एक ग़लती कांग्रेस से ज़रूर की। सच्चा राष्ट्रीय मुसलमान तो एक ही है, वह है जिन्ना साहब!

* * *

राष्ट्रीय कांग्रेस असम्बली दल के नेता श्री गोपीवल्लभ पंत कांग्रेस मंत्रिमंडल बनाने जा रहे हैं।

मिस्टर एलिक्जेंडर, भी प्रतिनिधि दल के तीसरे सदस्य हैं।

डाक्टर अंबेदकर फरमाते हैं कि यदि अछूतों की बातें न मानी गईं तो अछूत लोग अँगरेज़ों को छोड़कर दूसरों से सहायता लेंगे। हमने भी सुना था कि स्टालिन ने डाक्टर साहब से वादा किया है कि अछूतों की ओर से हम अँगरेज़ों से लड़ेंगे।

* * *

ख़बर है कि रूस अपनी सेना तेहरान से हटा रहा है। यह भी सुना है कि पर-शिया के सुलतान ने क़ायदे आजम के पास एक पत्र लिखा है कि सारे संसार के मुसल-मानों के संरक्षक आप ही हैं, हमारी रक्षा कीजिए।

* * *

राष्ट्रीय मुसलमान, अहरार, तथा मोमिन उम्मीदवारों पर जो हमले हो रहे हैं वह शायद लोगों को पता नहीं कि वह कांग्रेस की ओर से हो रहे हैं मुसलिम लीग की ओर से नहीं। यह

तीनों सयाने आ गये

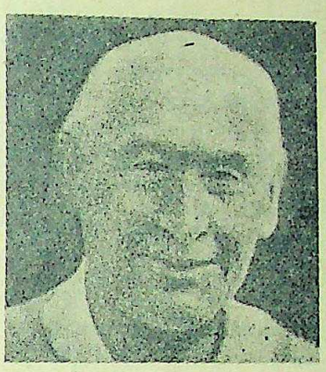

भारत-सचिव लार्ड पेथिक लारेंस इस समय दिल्ली में विराजमान हैं।

एक आवश्यक बात क़ायदे आजम अपने भाषण में बताना भूल गये। एक वक्तव्य देकर अब भी बता देना चाहिए।

* * *

उस दिन चुनार में बम बिस्फोट हो गया। लड़ाई के बाद इतने बम बच गये हैं कि इनका कहीं न कहीं प्रयोग होना ही चाहिए नहीं तो रखे-रखे खराब हो जाने की आशंका है। चुनार अच्छी जगह सोची गई है।

* * *

मौलाना आजाद का कहना है कि स्वतंत्रता आनेवाली है। आनेवाली तो है किन्तु, क़ायदे आजम का कहना है कि स्वतंत्रता का अर्थ हिन्दू राज्य होगा जिसमें मुसलमानों का विनाश हो जायगा। इस-लिए स्वतंत्रता नहीं मिलनी चाहिए। क़ायदे आजम के कहने के बावजूद भी यदि स्वतंत्रा मिल जाय तो गूलर में फूल लग जाय, और गौरीशंकर की चोटी पर कमल खिल जाय और भार-तीय नरेश एक ही विवाह से संतुष्ट रहें।

* * *

क़ायदे आजम ने सिखिस्तान बनाना स्वीकार कर लिया है। एक हिन्दुस्तान को छोड़कर और चाहे जितने स्तान क़ायदे आजम से बनवा लीजिए। आप बाँटने के लिए तैयार हैं।

* * *

तवारीश स्टालिन ने कहा है कि कोई भी देश या सेना लड़ना नहीं चाहती। ठीक हो सकता है किन्तु व्यक्तियों के संबंध में यह बात नहीं कही जा सकती। क़ायदे आजम ही को लीजिए।

—अगड़धत्त शर्मा

सर स्टेफोर्ड क्रिप्स भारत को पुनः स्वतन्त्रता देने के लिये भारत आ गये हैं।

महात्मा गांधी की मिट्टी की मूर्ति जिसे क्रीन नामक फ्रेंच महिला ने बनाया है, मूर्ति पूरी बनकर तैयार हो गई है। अब साँचा बनवाकर सोने या ताँबे की मूर्ति बनाने की कोशिश हो रही है। यह मूर्ति ग्रामोद्योग-भवन वर्धा में रखी हुई है।

क्या गायें बोलो!

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

बोलो गीत कौन सा गायें?
राशन का कुछ हाल कहें या दिल की जलन बताएँ।
दोनों समय मिलाकर गेहूँ आध पाव जब पाएँ,
पूरी, रोटी और पराठा, दोस्त कहो क्या खाएँ।
जब वह आकर कहते हैं—मुझको भी चाय पिलाएँ,
कभी देखता हूँ मैं दाएँ कभी देखता बाएँ।
जिनको हलवे का जलपान कराता, जब वे आएँ,
क्या कहकर उनका मन बोलो 'बेढब' अब बहलाएँ।
जो शरीर पाते थे पहले कोल्हू की उपमाएँ,
मानो वह हैं राजपुताने की सूखी लतिकाएँ।
प्रणय भीख में जो शरमाते थे जैसे ललनाएँ,
शर्म छोड़कर कर फैलाते हैं हम रोटी पाएँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्टरव्यू

हिन्दी की कल की प्रगति कैसी है?

प्रसिद्ध विद्वान् डाक्टर अमरनाथ झा से एक सुंदर इन्टरव्यू

लेखक, श्री बरसानेलाल चतुर्वेदी

पंडित अमरनाथ झा हिन्दी-जगत् के सुप्रतिष्ठित विद्वान् हैं। साहित्य और शिक्षा-सम्बन्धी विचारों का एक मूल्य है। इस लेख में हिन्दी की वर्तमान प्रगति-सम्बन्धी विभिन्न प्रश्नों के आपने जो उत्तर दिये हैं, वह विचारणीय हैं।

प्रयाग विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर पंडित अमरनाथ झा।

डाक्टर अमरनाथ झा प्रयाग विश्वविद्यालय के वाइसचान्सलर हैं। शिक्षा-सम्बन्धी आपका यश भारत में ही नहीं संसार में प्रसिद्ध है। झा साहब की गणना जहां अंगरेजी के प्रमुख विद्वानों में होती है, वहां राष्ट्रभाषा हिन्दी के भी वह एक माने हुए और अनुभवी विद्वान् समझे जाते हैं। आपका अधिकांश समय पठन-पाठन तथा शिक्षा की समस्या सुलझाने और उसे विस्तृत बनाने में व्यतीत होता है। अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के आप सभापति रह चुके हैं। आपके द्वारा हिन्दी तथा साहित्य-सेवियों की उन्नति में सदा सहायता तथा प्रोत्साहन मिलता आया है।

पिछले दिनों हमारा विचार हुआ कि मैं झा साहब से वर्तमान हिन्दी की गति-विधि पर एक इंटरव्यू लूं। हमने आपके पास कुछ प्रश्न भेज और उसका जो उत्तर आपने दिया है वह हिन्दी विद्वानों के लिए मनन करने योग्य है। प्रश्न और उत्तर इस प्रकार हैं—

प्रश्न—'प्रगतिवाद' पर आपके क्या विचार हैं? क्या साहित्य को किसी वाद विशेष के साथ सम्मिलित कर देना स्वस्थकर होगा?

उत्तर—जीवन में गति तो आवश्यक है ही। गति का रुक जाना जीवन का अन्त हो जाना है। जीवित साहित्य गतिशील होता है। मानसिक जीवन की जितनी समस्यायें हैं, मनुष्य के सामाजिक इतिहास में जो कुछ ज्ञान संचित है, मनुष्य के हृदय के उद्गार, उसके भाव उसकी कल्पनायें, उसके स्वप्न, उसकी आकांक्षा, प्रकृति का उस पर प्रभाव, समसामयिक प्रश्नों पर विचार—इत्यादि विषयों का समावेश साहित्य में उचित और स्वाभाविक है। साहित्यकार अपनी रचना में किस मनोभावना को प्रकट करेगा यह उसकी इच्छा, उसके अध्ययन, उसकी वैज्ञानिक अभिरुचि, उसके अवसर विशेष की उत्तेजना, उसकी आर्थिक स्थिति पर निर्भर है। साहित्य को किसी 'वाद' के अन्दर बन्द कर देना प्रगति और स्वातन्त्र्य के प्रतिकूल है।

प्रश्न—पंडित रामचंद्र शुक्ल जी मृत्यु के पश्चात क्या आलोचना-साहित्य रूपी सरिता की गति मन्द नहीं पड़ गई? नये आलोचना-साहित्य पर आपकी क्या राय है?

उत्तर—पंडित रामचन्द्र शुक्ल उच्च-कोटि के समीक्षक थे। उनके ग्रन्थों का आदृत होना उचित है। परन्तु आज भी कई अच्छे समालोचक हैं। पंडित हजारी-प्रसाद द्विवेदी के लेख बहुत अच्छे होते हैं। पंडित नन्ददुलारे वाजपेयी के लेख भी प्रशंसनीय होते हैं।

प्रश्न—कवि-सम्मेलनों पर अनावश्यक धन हर साल खर्च होता है जब कि सूर के सवाल लाख पदों के एक प्रामाणिक संस्करण तक की व्यवस्था के लिए धन का अभाव है। इस समस्या पर आपकी क्या धारणा है?

उत्तर—कवि-सम्मेलनों में जो रुपया खर्च होता है उसको हम अपव्यय नहीं कर सकते हैं। कवियों को इनके द्वारा कुछ आर्थिक भेंट मिलती है, जनता द्वारा उनका सम्मान होता है और जिस जन-समूह को पुस्तक पढ़ने का अवसर नहीं मिलता है उसको काव्य-रसास्वादन का सुख मिल जाता है। रही सूर पदावली के प्रकाशन की बात—इस कार्य को कई संस्थाओं ने भिन्न-भिन्न समय में प्रारम्भ किया है और आशा है कि कहीं न कहीं से यह शीघ्र सम्पन्न हो जायगा।

प्रश्न—कुछ दिनों से हिन्दी में 'आत्म-चरित' लिखने का श्रीगणेश हुआ है, आपकी दृष्टि में यह प्रयोग कैसा है?

उत्तर—आत्मचरित उन्हीं को लिखना चाहिए जिनके जीवन में स्मरणीय घटनाएं हुई हों, जिनको पढ़ने से जनता पर अच्छा प्रभाव पड़े।

प्रश्न—लोगों की यह धारणा है कि 'हिन्दी के पत्रों में कुछ नहीं होता' कहां तक सच है? पत्रों को किस प्रकार अपना स्तर ऊंचा करना चाहिए?

उत्तर—हिन्दी पत्रों में और अन्य भाषाओं के पत्रों में भी यत्न यह होना चाहिए कि बहुत से बहुत संख्या में पाठकों को पत्र रुचिकर हो। यदि किसी पढ़नेवाले को राजनीति में रुचि नहीं है अथवा सिनेमा में रुचि नहीं है तो वह ऐसा पत्र नहीं पढ़ेगा जिसमें इन दो विषयों पर ही लेख रहते हैं। प्रत्येक पत्रकार को चाहिए कि विशेषज्ञों की सहायता से वह अपने पत्र के क्षेत्र को विस्तृत करे। प्रत्येक हिन्दी पत्र में एक अंश ऐसा होना चाहिए जिसमें भारत की अन्य भाषाओं में प्रकाशित उत्तम लेखों और कविताओं का अनुवाद हो।

प्रश्न—'राष्ट्रभाषा' पर आपके क्या विचार हैं?

उत्तर—राष्ट्रभाषा वही हो सकती है जिसमें सभी प्रान्तीय भाषाओं का प्रतिबिम्ब है। अधिकांश भारतीय भाषायें संस्कृत शब्दों के परिपूर्ण हैं, इसलिए राष्ट्र भाषा का वही रूप ग्राह्य होगा जिसमें संस्कृत का बाहुल्य हो। उर्दू भी भारत-वर्ष की ही भाषा है और राष्ट्रभाषा में उर्दू शब्दों का भी स्थान है।

पूर्ण स्वतन्त्रता का सिद्धान्त

भारत-सचिव लार्ड पेथिक लारेंस को स्वीकार है

पत्र-प्रतिनिधियों की सभा में भाषण करते हुए भारत-मंत्री लार्ड पेथिक लारेंस ने घोषित किया कि जो वार्ताएँ आरम्भ होने जा रही हैं वे एक ऐसा ढाँचा तैयार करने के लिए प्रारम्भिक कार्रवाइयों के रूप में हैं, जिसके द्वारा इस तरह की रूप-रेखाएँ निर्धारित की जायेंगी जिनके अन्तर्गत भारत अपनी पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त कर सके। इन वार्ताओं का उद्देश्य शीघ्रतापूर्वक एक स्वीकार ढाँचा तैयार करना तथा तत्संबंधी आवश्यक अस्थायी प्रबन्ध करना है।

भारत की आजादी और आत्म-निर्णय का प्रश्न सिद्धान्ततः हल हो चुका है। अब हमें परस्पर सहयोगपूर्वक उन उपायों को ढूँढ़ निकालना है जिनके द्वारा भारतीय लोग कम से कम अशान्ति तथा अधिक से अधिक व्यवस्थाओं को शीघ्रतापूर्वक अपनी नई नीति का स्वरूप निर्धारित कर सकें। इस कार्य में देशी रियासतों को भी, जिनका भारत के भविष्य में बहुत बड़ा हाथ होगा, अनिवार्यतः इस काम में हाथ बँटाने के लिए स्पष्ट शब्दों में निमंत्रित करना होगा। हम यह जानकर उत्साहित हुए हैं कि अधिकांश देशी नरेशों की भी यही इच्छा है कि भारत को तत्काल पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त हो जाय।

इस बीच यह बहुत ही आवश्यक है कि केन्द्र में अपेक्षाकृत अधिक प्रतिनिधित्व-पूर्ण सरकार क़ायम हो जाय जिसे जनता का पूर्व समर्थन प्राप्त हो, जिससे कि वह देश को इस संक्रान्ति-काल के बीच से पार कर ले जाय।

लार्ड पेथिक लारेंस ने कहा, "यह बात सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है अधिकार-परिवर्तन का यह कार्य सहूलियत के साथ और योग्यतापूर्वक किया जाय। यह मुख्यतः भारतीयों, किन्तु अँगरेजों के भी हित का प्रश्न है, और यदि हम इतने महत्त्वपूर्ण अधिकार-परिवर्तन के कार्य को सहूलियत के साथ और शान्ति-पूर्वक पूरा कर लेने की अपनी क्षमता सागर के सामने प्रदर्शित कर सके तो यह भारत और ब्रिटेन के लिए गौरव की एक नई बात होगी। इसी उद्देश्य को लेकर हम अपना कर्त्तव्य पालन करने के लिए यहाँ पहुँचे हैं, जो कि हम आशा करते हैं कि भारतीयों के लिए उपादेय होगा।

भारत-मंत्री ने कहा, हमारी वार्ताएँ इस प्रश्न के सम्बन्ध में न होंगी कि आया भारत अपने भविष्य का निर्णय स्वयं करेगा—यह प्रश्न तो पहले से ही तय हो चुका है—बल्कि हमारी वार्ताएँ इस सम्बन्ध में होंगी कि अपने भविष्य का निर्णय भारत किस प्रकार से करेगा।'

लार्ड पेथिक लारेंस ने कहा—हम यहाँ एक निश्चित इरादे से पहुँचे हैं, और वह यह है कि भारतीयों को अपनी स्वाधीनता प्राप्त करने में सहायता पहुँचाने के लिए हम सम्राट् की सरकार के प्रतिनिधि की हैसियत से पूरी तौर से अपने कर्त्तव्य का पालन करें। इसके सिवाय हम अपने मस्तिष्क में और कोई बात रखकर नहीं आये हैं और हमने अपने को किन्हीं विशिष्ट विचारों से वाकिफ नहीं किया है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं; अपने मस्तिष्क में किसी प्रकार की द्विविधा या अनिश्चयता लेकर यहाँ पर पहुँचे हैं। हम यहां पर भारतीयों को सहायता पहुँचाने के उद्देश्य से आये हैं जिससे कि वे संसार के बड़े राष्ट्रों के बीच अपना स्थान ग्रहण करें तथा अपने कार्य-फर्ज को पूरी तौर से अदा करें। हम इस संकल्प के साथ यहाँ पहुँचे हैं कि हम इस महान् देश के समस्त निवासियों की सद्भावना के साथ निर्णयात्मक तथा मैत्रीपूर्ण ढंग से अपनी वार्ताएँ पूरी करेंगे।

पत्रकारों के प्रश्नों का उत्तर

भारत-सचिव लार्ड पेथिक लारेंस से पत्र-संवाददाताओं ने लगभग [illegible] घंटे तक प्रश्न पूछे किन्तु वे उसके में प्रधान मंत्री के १५ मार्चवाले भाषण से आगे नहीं बढ़े। एक संवाददाता ने पूछा कि हम अल्पसंख्यकों के अधिकारों से परिचित हैं और यह भी मानते हैं कि उन्हें निर्भीक होकर रहने देना चाहिए किन्तु हम यह नहीं चाहते कि अल्पसंख्यक बहुसंख्यकों की प्रगति को विशेषाधिकार द्वारा रद्द करें।

भारत-सचिव ने उत्तर दिया कि इसका अर्थ यह नहीं है कि अल्पसंख्यकों के अधिकारों की अवज्ञा हो। चुनावों के परिणाम से स्पष्ट हो गया है कि मतदाता दो प्रमुख दलों को अपना प्रतिनिधि मानते हैं, वे हैं कांग्रेस और मुस्लिम लीग। मुस्लिम लीग को केवल अल्पसंख्यक राजनीतिक दल मानना उचित न होगा। हमारा लक्ष्य है कि फिलहाल नये वैधानिक ढाँचे पर केन्द्र में अधिक प्रतिनिधि सरकार की स्थापना कर सकें।

प्रश्न—मजदूर सरकार मुसलमानों को एक राष्ट्र समझती है अथवा अल्पसंख्यक?

उत्तर—हम उन्हें भारत का एक बहुत बड़ा संप्रदाय मानते हैं।

प्रश्न—क्या शिष्ट-मंडल शक्ति को पूर्णतया हस्तान्तरित करने के लिए कोई कार्यक्रम बनायेगा?

उत्तर—हमारी समझ में अभी कोई कार्यक्रम नहीं निर्धारित हो सकता। हम चाहते हैं कि यथासंभव शीघ्र अधिकार दे दिये जायें। कार्यक्रम स्वयं भारतीयों के हाथ में है।

प्रश्न—विधान सारे भारत के लिए बनेगा अथवा केवल ब्रिटिश भारत के लिए?

उत्तर—हम भारतीयों को सारे भारत के लिए वैधानिक ढाँचा तैयार करने में सहायता देने के लिए आये हैं।

प्रश्न—रियासतों के प्रतिनिधि शासकों की ओर से आवेंगे अथवा प्रजा की ओर से?

उत्तर—इस सम्बन्ध में हम उस स्थिति को स्वीकार करेंगे जो पहले से तय आती हो।

प्रश्न—क्या रियासतों का सहयोग आवश्यक है?

उत्तर—हमारी योजना यह है कि हम रियासतों को भावी शासन-विधान के निर्माण में सहायक होने के लिए बुलायें।

अपनी बात

लेखक, श्रीयुत चन्द्रभूषण वैरव

मनुष्य के चरित्र में किस प्रकार की दुर्बलतायें होती हैं और उन्हें दूर करके वह किस प्रकार अपने जीवन को उन्नत कर सकता है, यह बात इस पुस्तक में [illegible] ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है। [illegible] लिखी गई है व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर। अपने चरित्र का निर्माण करने के लिए प्रत्येक युवक को यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ।।।) बारह आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में आनेवाली भुखमरी

बंगाल के अकाल से क्या अन्य प्रांत सबक लेंगे?

लेखक डाक्टर रणवीर एम० ए०, पी० एच० डी०

अन्न की मँहगई और अभाव समस्त भारत में व्याप्त हो गया है। सरकार नियंत्रण के बल पर भावी दुर्भिक्ष का मुकाबला करने के लिए गुहार लगा रही है। इस लेख में वस्तुतः बंगाल के अकाल तथा वहाँ की अन्न-समस्या को ध्यान में रखकर प्रकाश डाला गया है और कुछ क्रियात्मक उपाय प्रस्तुत किये गये हैं जिससे भावी भुखमरी की समस्या को हल किया जा सकता है। अन्य प्रान्तीय सरकारों को भी इस महत्त्वपूर्ण लेख के सुझावों से लाभ उठाना चाहिए।

महात्मा गांधी ने अन्न-समस्या के सुलझाने के लिये सक्रिय उपायों की सलाह दी है।

भारत-सरकार ने सरकारी तौर पर इस बात का उल्लेख कर दिया है कि हमारे देश में अनाज की महत्त्वपूर्ण कमी हो गई है। उसने हमारे नेताओं से भी प्रार्थना की है कि आनेवाले दुर्भिक्ष का सामना करने में वह उसका साथ दें। गांधी जी ने इस स्थिति का सामना करने के लिए देश में एक ऐसी संयुक्त सरकार बनाने की सलाह दी है जिसमें देश की सभी बड़ी-बड़ी पार्टियाँ हों। मि० जिन्ना ने भी अपना सहयोग अर्पित किया है। परन्तु फिर भी कोई विशेष सुधार नहीं हुआ। इस बीच में अनाज उन लोगों के हाथों में जा रहा है जो भविष्य में चोर बाजार के ठेकेदार बनेंगे।

अनाज की कमी के सम्बन्ध में सही-सही आँकड़े अभी अप्राप्य हैं। अनुमानित आँकड़ों के बावजूद भी खाद्य पदार्थों का जो स्थिति किया गया है उसके संबंध में सरकारी आँकड़ों को केवल वस्तु-तथ्य के ऊपर ही चुनौती दी गई है। बंगाल के भूतपूर्व गवर्नर श्री केसी द्वारा बंगाल की सरकार ने यह विश्वास दिलाया है कि जहाँ तक खाद्य पदार्थों के प्रबन्ध का संबंध है, बंगाल देश के दूसरे सूबों से कहीं बेहतर है, परन्तु मूल्य तेजी से बढ़ने लगे हैं। साथ ही साथ, मनुष्य ही नहीं बल्कि जानवरों के भी खाने के योग्य न रह जाने के कारण सरकार अथवा उसके एजेन्टों के गोदामों से आटे और चावल के फेंके जाने की सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। इनमें से कुछ बात वहाँ सन् १९४३ से था यद्यपि उस समय खाने की कमी के कारण बहुत बड़ी संख्या में लोग मर रहे थे।

जनता के सहयोग की आवश्यकता

दूसरा बहुत कुछ सन् १९४३ के प्रारंभ के समान है। अभाव है, परन्तु अधिकारी इसकी तरफ़ से बेफ़िक्र हैं। क्योंकि खाने की कमी के कारण न तो वे मरेंगे और न उनके परिवार। उपलब्ध सामग्री को पूरी तरह से कन्ट्रोल करने का कोई भी प्रयत्न नहीं किया जा रहा है और न गुदाम ही सुधारा जा रहा है। फिर भी ऐसी स्थिति में, जैसी कि आज-कल है, सुधार के सिर्फ़ यही तरीक़े हो सकते हैं कि (१) उपलब्ध सामग्री पर पूरा पूरा कन्ट्रोल हो जाय और (२) सामग्री एकत्रित हो जाय और (३) उसका न्यायोचित वितरण हो। सन् १९४३-४४ प्राप्त अनुभवों के आधार पर इन तीनों के आँकने में वस्तुस्थितिज्ञानी और अनुभवी व्यक्ति की असफलता द्वारा अफ़सरों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि इन योजनाओं को सफलता के साथ चला सकने के लिए आवश्यक योग्यता का उनमें नितान्त अभाव है। इसके विपरीत 'कपड़े की अस्थायी राशनिंग' की सफल व्यवस्था के द्वारा साधारण जनता ने यह सिद्ध कर दिया है कि चाहे अफ़सर और बड़े-बड़े व्यापारी उसके विरुद्ध ही रहें परन्तु उसके निरीक्षण में अयोग्यता और बेईमानी की कोई गुंजाइश नहीं, बल्कि इसके कारण कहीं अधिक अच्छा वितरण होता है। इसलिए कन्ट्रोल और वितरण की सफल मशीनरी की व्यवस्था देश भर की जनता के सहयोग से ही हो सकती है।

ग्रामीण आर्थिक ढाँचा

यदि हम गाँवों के आर्थिक ढाँचे की, जहाँ से अनाज मिलता है, कल्पना करें तो यह स्पष्ट हो जायगा कि जनता के सहयोग की किस हद तक आवश्यकता है? हाल ही में 'अमृत बाजार पत्रिका' ने अपने एक सम्पादकीय लेख में इस ओर संकेत किया था कि यद्यपि अफ़सरों ने यह कहा था कि बंगाल में गुदाम की दशा ख़राब नहीं है फिर भी मूल्य बड़ी तेजी से बढ़ने लगे हैं और देहात के बाजारों से अनाज ग़ायब होने लगा है। यदि हम यह विचार करें कि आख़िर वे लोग हैं कौन जो बंगाल के खेतों में पैदा होनेवाले धान पर अपना नियंत्रण रखते हैं; तो चोर बाजार की ओर अग्रसर इस गति का कारण तत्काल ही स्पष्ट हो जायगा।

कोई दस वर्ष बीते अर्थात् सन् १९३६ के लगभग एक सरकारी कमीशन (लैंड रेवेन्यू कमीशन) ने यह लिखा था कि यद्यपि औसत के विचारों से बंगाल में एक ग्रामीण परिवार के पास लगभग १४ बीघे जमीन मालूम होती है, परन्तु वास्तव में लगभग ६० प्रतिशत परिवारों के पास ९ बीघे या इससे कुछ कम ही जमीन है, और इसलिए वे लोग 'रोज कमाओ, रोज खाओ' वाली ज़िन्दगी बिता रहे हैं। मैंने और लोगों के साथ मिलकर इससे अधिक सही और वैज्ञानिक निरीक्षण के पश्चात यह पता लगाया है कि इस समय दशा कहीं अधिक ख़राब है। सारी आबादी का लगभग तीन चौथाई भाग खेती बारी पर निर्भर है परन्तु गाँवों की आबादी के एक तिहाई भाग से भी अधिक के पास धान पैदा करने के योग्य भूमि नहीं है। दो पाँचवें से अधिक के पास ६ बीघे भूमि से भी कम है। यह दशा सन् १९४३ की है। तब प्रत्येक बारह परिवारों में एक परिवार के पास वास्तविक रूप में ऐसी मिल्कियत थी जिससे उन्हें आवश्यकताओं से छुट्टी मिल सके। सन् १९४३-४४ में भूमि को अधिकतर बेचने और बंधक रखने के कारण गाँवों में जहाँ जनता का तीन पाँचवां भाग पहिले ही से इस स्थिति में था कि जब रोज कमाये तब खाये वहाँ आर्थिक दशा अब ऐसी हो गई कि उपज पैदा करने के योग्य बनाई गई भूमि का अधिकांश भाग जोतदारों, महाजनों और धनी किसानों के छोटे से दल की सम्पत्ति हो गई है। दूसरे किसान अपनी जीविका के लिए अधिकतर इन्हीं लोगों की भूमि के साझे की फ़सल पर निर्भर हैं। सन् १९३६ में कुछ चुने हुए

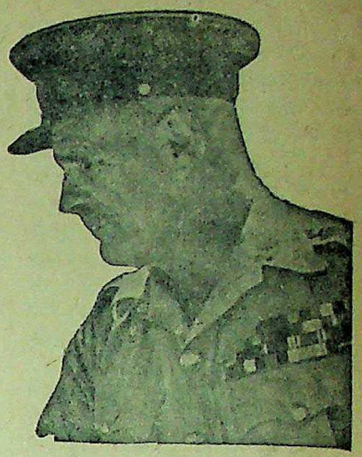

भारत के वाइसराय लार्ड वैवेल जो अन्न-समस्या के सुलझाने का इरादा रखते हैं।

गाँवों के लगभग १३-१४ बीघों के औसत के स्थान पर, हमें यह पता लगा है कि ४-५ बीघों का है। कई उप-विभागों में औसत के प्रतिकूल वास्तविक परिस्थिति बहुत अधिक ख़राब है। सन् १९४३ तक उप-विभागों, जैसे चटगाँव, कोंटाई, तामलूक, मुन्शी गंज, आरामबाग़ और अन्यान्य उप-विभागों, में ८० प्रतिशत परिवारों के पास ६ बीघे से भी कम भूमि थी। यह याद रखना चाहिए कि सन् १९४३ के दुर्भिक्ष से इन्हीं और ऐसी ही आर्थिक परिस्थितिवाले अन्य उप-विभागों की ही दशा बहुत ही ख़राब हुई थी। परिणामः निर्धन किसानों और भूमि-रहित परिवारों की संख्या बढ़ गई है। यदि हम धनी किसानों को और उन लोगों को जो अपनी खेती खुद अपने हाथों नहीं करते निकाल दें तो हमारे पास खेतिहरों की एक बड़ी संख्या ऐसी रह जाती है जो साल के कुछ महीनों को छोड़कर शेष में खाने भर के लिए अपने खेतों से पर्याप्त धान भी नहीं पाता। ऐसे लोगों में से अधिकतर आंशिक रूप से साझे की खेती करनेवाले होते हैं जो उपज का आधे से अधिक भाग उस महाजन या जोतदार को दे देते हैं जिसकी भूमि होती है। जुलाई आते-आते जब घर का सारा चावल समाप्त हो जाता है, असली किसान को अपने मालिक के गुदाम से, जिसके इकट्ठा कराने में उसी का हाथ था, अनाज उधार लेने को विवश होना पड़ता है। आमतौर से ब्याज की बहुत ही ऊँची दर से यह ऋण दिया जाता है और इसकी अदायगी दूसरी फ़सल से ही हो पाती है।

परिणाम यह होता है कि ग़रीब किसानों की लगभग तीन या चार महीने की आवश्यकताओं को छोड़कर उपज का बहुत बड़ा भाग कुछ थोड़े से धनी किसानों, ज़मींदारों और महाजनों के पास इकट्ठा हो जाता है। वे लोग केवल अपने ही लाभ की ओर देखते हैं, उन्हें इस बात की बिलकुल चिन्ता नहीं कि ग़रीब देहातियों पर क्या गुज़रती है? पिछले दुर्भिक्ष में उन्होंने निरुद्देश्य दूकानदारों और अफ़सरों के साथ मिलकर काम किया और परिणाम-स्वरूप अनाज की कमी को इतनी बुरी तरह से गंभीर कर दिया। यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि वे इस बार अपना रवैया बदल देंगे।

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

मंजिल

लेखक, प्रोफ़ेसर इन्दुशेखर, एम० ए०

चला जा रहा हूँ चला जा रहा हूँ न जाने किधर और क्यों जा रहा हूँ?
कभी दीखती है किनारे पै किश्ती
कभी डोलती डगमगाती है हस्ती
कभी आँख में मुसकराती है मस्ती, ये क्या है न कुछ भी समझ पा रहा हूँ?
किसे है समय जो सुनाऊँ कहानी
भले लाख आँखों से बहता हो पानी
मुसाफिर! यूँ ही बीतती है जवानी मैं साँसों पै बन बोझ छा क्यों रहा हूँ?
ज़रा तुम उन जलते सितारों से पूछो
मेरे दिल पै चलते इन आरों से पूछो
इन आँखों के गीले किनारों से पूछो मैं क्या पी रहा हूँ मैं क्या खा रहा हूँ?
जहाँ झुकने लगती है संध्या की बेला
जब सजता गगन में है तारों का मेला
मैं बैठा यही सोचता हूँ अकेला मैं क्यों जी रहा हूँ मैं क्यों गा रहा हूँ?
ओ उस पार की दुनियावालो! कहाँ हो?
हृदय की कथा कहनेवालो! कहाँ हो?
प्रणय-धार में बहनेवालो! कहाँ हो? तुम्हें खोजता कब से मैं आ रहा हूँ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुन्देलखण्डी फाग और ग्राम्य-गीत

ग्रामीण जनता के गीत तथा सामाजिक मनोरञ्जन

लेखक, श्री लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

भाषा और सांस्कृतिक आधार से यदि देखा जाय, तो बुन्देलखंड एक अलग प्रान्त के रूप में अपना विशिष्ट स्थान और अस्तित्व रखता है। यहां की सभ्यता, बोलचाल, रहन-सहन आदि सारे देश से भिन्न है। बुन्देलखंड हमारे ऐतिहासिक और साहित्यिक जन-नायकों की क्रीड़ा-स्थली एवं जन्म-स्थली कहलाने का उत्तरदायित्व लिए है। तुलसी, सूर, देव, बिहारी, पद्माकर, केशव, वीर हरदौल, छत्रसाल, दुर्गा, लक्ष्मी, आदि महान् विभूतियों की गाथाएं कभी-कभी बुन्देलखंडी लोक-गीतों में घर-घर निर्झर की भाँति निसृत होते दीख जाती हैं।

किसान लोग फसलें काट-काटकर खलिहानों में लाते हैं। होली के अवसर पर घर-घर आनन्द की लहर दौड़ जाती है। स्त्रियां भी आनन्द-विभोर होकर फाग गा उठती हैं। किसी स्त्री का पति विदेश गया है। वह कहती है—

* * *

हमें न सुहावे ऐसी होरी; पियारे बिन!
जबहिं के पिया परदेश गये हैं,
तबहिं के आ गई बैरन होरी!
ठाड़े ननदोई मोरे अरज करत हैं;
"खेलो दुलैया होरी, हमारे संगे।"
भर पिचकारी मोरे सम्मुख मारी;
सो भींज गई तन-सारी!
साड़ी के बदले साड़ी लै दैहों!
दस रुपैया—गुनागारी!
हमें न सुहावे—.....!

* * *

भुनसारे चिरैया काय बोली!
अरे काय बोली कैसी बोली?
भुनसारे.....!
ठंडे से पानी गरम धर लाए!
सपरन न पाए पिया फिर बोली!
तातो जलेबी दूधा के लड़ुआ;
जेवन न पाए पिया फिर बोली!
झनझन झारी गंगा जल पानी;
पीवन न पाए पिया फिर बोली!
पाना-पाचासी के बीड़ा लगाए;
चाबन न पाए पिया फिर बोली!
भुनसारे.....!

यह सारा प्रदेश ही बिलकुल अजीब प्रान्त है; जहां पूरा वर्ष उत्सवों के आनन्द में बीत जाता है, और हमें पता नहीं चलता कि वर्ष कब बीत गया? होली के पश्चात् लोग चैत्र की नवदुर्गा तथा दशहरे के अवसर पर माई की भगते गाया करते हैं। इन भगतों में हमें कहीं-कहीं देवी दुर्गा के भक्त 'हरदौल' की गाथा गुँथी हुई मिलती है।

"माई के पियारे हरदौल
बुँदेला लाड़ले हो माँ!
अरे कहँना सें जनमा लै माया;
कहँना धरे अवतार माँ!

देवी के आग बकरे के बलिदान की प्रथा अब भी कहीं-कहीं यहां ग्रामीणों में पाई जाती है। बकरे की बलि चढ़ाकर उसका प्रसाद मास-रूप में अब भी कई ग्रामों में निम्न वर्ग के व्यक्ति कोली, चमार इत्यादि खाया करते हैं। घर-घर लोग चैत्रमास में देवी की विधिवत पूजा करते हैं। जब किसी के सिर देवी आती हैं तब वे सबके भविष्य की बातें बताती हैं।

बुन्देलखंड के ग्रामों में 'बाल-विवाह' की प्रथा भी काफी जोरों के साथ अब भी प्रचलित है। अति प्राचीन काल में तो यहाँ लड़के-लड़की की शादी गर्भावस्था में ही तय हो जाती थी। इसी विचित्रता को एक गीत में दर्शाया गया है। एक स्त्री कहती है:—

'छोटे बलम बड़ी नार ना!
बर* जैयो हमारो जीवना!
पानी को जायँ, पिया संगे लगे जायें!
अरी हाथ में दे दें, रस्सा ना.....!
†गुबरा खों गए पिया संगे लगे जाएँ!
‡सारई में मचल गए, बालमा। बर...!
हमारे खेत में, बरिया का पेड़ो!
ओई से डार दौ पालना! बर.....!
मायँ से आ गए चार मुसाफिर,
"कै गोरी तुम्हारे भैया—भतीजे,
कै आयँ तुम्हरे लालना!" बर.....!
न आयँ भैया, मोरे भैया-भतीजे!
न आयँ भैया, मोरे लालना! बर...!
जे तो आयँ मोरे बालमा! बर....!

चारों मुसाफिर बड़े अचरज में डूब जाते हैं। तभी तो वे कहते हैं, कि "हे गोरी ये क्या तुम्हारे, भाई भतीजे या पुत्र हैं?" किन्तु बाल-विवाह से सताई गई नारी कहती है—"नहीं। ये तो मेरे बालम अर्थात् पति हैं। भले ही मैं इन्हें गोद खिलाती तथा बरगद के पेड़ से झूला झुलाती हूँ।" ९ साल के लड़के-लड़कियों की शादी अब भी कर दी जाती है। अबोध बच्चे यह भी नहीं जानते कि शादी किस चिड़िया का नाम है?

एक और अजब बात यह है, कि ग्रामों में बिलासिता खूब छाई हुई है। ग्रामीण लोग होली के पश्चात् अपने यहां 'राई' कराते हैं और 'बेड़नी' अर्थात् ग्रामीण वेश्या का नाच देखते हैं। शहरों में भी कहीं-कहीं 'बेड़नी का नाच' देखा जाता है। इस नृत्य के साथ ग्रामीण लोग 'सैरे' या 'ख्याल' नाम के गीत गाया करते हैं। एक गोल घेरे में लोग खड़े हो जाते हैं। बीच में ग्रामीण नर्तकी अपना लहँगा उठाकर नृत्य करती हुई लोगों से पैसे माँगती तथा 'ख्याल' गाती जाती है। कुछ लोग 'टिमकी' या नगड़िया बजाते हैं। कुछ लोग ढोलक और झाँझ भी बजाते हैं। कभी-कभी ढोलक बजानेवाला 'बेड़नी' के नजदीक दौड़कर नृत्य करता हुआ आता है और फिर पीछे चला जाता है। कभी-कभी एक आदमी उस ग्राम्यनर्तकी के साथ पाता हुआ थिरकता चलता है। चाँदनी रात में कभी कभी मशालों के प्रकाश में बेड़नी का मुखचन्द्र चमक उठता है और लोगों के पैर अनायास थिरक उठते हैं। यहाँ हम 'ख्याल' की एक पंक्ति तथा एक विवाह की गारी देते हैं।

अँधियारी है, रात—गोरी को बूँदा
चिलकना! (ख्याल)
फैशन में मत भूल जैयो, प्यारे ननदोइया!
प्यास लगी जब बाटल माँगी,
पत्थर लाई लुगइया!
पेंट पहिर के बेल्ट कस लौ,
बन गए पूरे इसइया!
रिष्टवाच हाथन में बाँधी,
चमके खूब कलइया!
नाक के ऊपर चश्मा लगाओ,
ताके जैसे बिलैया! (गारी)

सरहज का ननदोई के साथ कैसा शिष्ट विनोद है। बुँदेलखंड में विवाह की धूम तथा स्त्रियों के मंगल-गीत देखने सुनने समझने तथा मनन की वस्तुएं हैं। संस्कृति तो यहाँ की अजब तथा निराली है ही। भाषा ललित, मधुर तथा रीति-रिवाज भी अनोखे हैं।

* बड़। †गोबर। ‡सार गाय बैल ढोर बांधने का स्थान।

उत्तमोत्तम उपन्यास और कहानी-पुस्तकें

प्रतिशोध—लेखक, पंडित उमेशचन्द्र मिश्र। इस उपन्यास में प्रोफ़ेसर भारद्वाज नामक एक वैज्ञानिक षड्यन्त्रकारी की रहस्यपूर्ण कार्यवाहियों का वर्णन बड़े रोचक ढंग से किया गया है। इसे पढ़ते-पढ़ते आप ऐसे तल्लीन हो जायगे कि बिना समाप्त किये पुस्तक हाथ से न छूटेगी। मूल्य १) एक रुपया।

द्वन्द्व—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह श्रीमती सरोजकुमारी देवी नामक बंगला की एक प्रसिद्ध उपन्यास-लेखिका की इसी नाम की रचना का हिन्दी-अनुवाद है। इसमें मानव हृदय के अन्तर्द्वन्द्व तथा उसके कारण उत्पन्न होनेवाली अशान्ति का बहुत ही उत्तमतापूर्वक विश्लेषण किया गया है। यह उपन्यास आदि से अन्त तक समस्यामय घटनाओं से परिपूर्ण है और इसका कोई भी ऐसा अंश नहीं है जिसमें सरसता का अभाव हो। मूल्य २॥≈)

जीवन-क्रान्ति—लेखक, पंडित गौरीशंकर मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी० अनुभवी तथा विद्वान लेखक ने इस उपन्यास में सेठ-साहूकारी तथा बड़े आदमी कहे जानेवाले व्यक्तियों की नर-पिशाचिता, पुलिस तथा अन्य अधिकारियों के हथकण्डों और धन के लोभ से निरपराधी को अपराधी ठहराकर कारागार की नारकीय यातना भोगने के लिए विवश करने के माया-जाल का बहुत ही आकर्षक शैली में वर्णन किया है। उपन्यास की एक-एक पंक्ति ओजपूर्ण और हृदय में घर कर लेनेवाली है। मूल्य २॥≈)।

स्काटलैंड-यार्ड की जासूस स्त्री—यह पुस्तक लेडी मॉली की ६ जासूसी कहानियों का संग्रह है। इस पुस्तक की एक-एक कहानी इतनी मनोरंजक और कौतूहलवर्द्धक है कि आप इस पुस्तक को पूरी पढ़े बिना चैन नहीं पा सकते। लेडी मॉली के जितने कहानी-संग्रह अब तक प्रकाशित हुए हैं, यह उन सबसे अच्छा है। मूल्य ॥।-)।

संसार की प्रसिद्ध कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत शमशेर बहादुरसिंह, बी० ए०। इस पुस्तक में योरप के संसार-प्रसिद्ध कलाकारों की चुनी हुई कुछ कहानियाँ संगृहीत की गई हैं। ये सभी कहानियाँ बहुत ही कलापूर्ण और मनोरंजक हैं। यदि आपको योरप के कथा-साहित्य की बानगी लेनी हो, तो इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य १)।

मोपाँसा की चुनी हुई कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत गोपीनाथ जी कानूनगो। इस पुस्तक में मोपाँसा की चुनी हुई ग्यारह कहानियों का संग्रह किया गया है। मोपाँसा की रचनाओं की बानगी लेने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य १)।

व्रजनाथ का विवाह—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। आश्चर्यमयी घटनाओं से परिपूर्ण यह सामाजिक उपन्यास पढ़ने में ऐसा रोचक है कि एक बार आरम्भ करने पर फिर बिना समाप्त किये चैन नहीं पड़ता। मूल्य १।-)।

आनन्दमठ—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। मुसलमानों और अंगरेज़ों का हिन्दुस्तान से बाहर करने के लिए, बंगाल में वैष्णवों ने जो विद्रोह किया था, उसी का इस उपन्यास में उपन्यास-सम्राट श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने बड़ी खूबी से वर्णन किया है। ऐसा सुन्दर चित्रण इस उपन्यास में है कि पढ़कर मातृ-भूमि के लिए दिल फड़क उठता है। मूल्य १।-)।

रजनी—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। यह उपन्यास-सम्राट श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का एक करुणापूर्ण अद्वितीय उपन्यास है। चमत्कारपूर्ण मनोवैज्ञानिक कहानी इस उपन्यास की एक ऐसी खूबी है कि जिसके कारण पुस्तक पढ़ने का मोह संवरण नहीं किया जा सकता। मूल्य ॥≈)।

श्रीकान्त—(प्रथम और द्वितीय भाग)—अनुवादक, श्री रूपनारायण पाण्डेय। 'श्रीकान्त' शरद् बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना गया है। इसमें शरद् बाबू की अमर लेखनी ने उनके कलाकार का मजा और सधा हुआ रूप चित्रित किया है, जो अत्यन्त मनोरम है। प्रत्येक भाग का मूल्य २)।

ब्राह्मण की बेटी—मूल लेखक, श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक, पंडित रूपनारायण पाण्डेय। शरद् बाबू भारत के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक माने जाते हैं। उनका यह उपन्यास लोक-प्रियता और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मूल्य सजिल्द पुस्तक का १।-)।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लीडरी खतरे में या पाकिस्तान ?

लीगी नेताशाही की नौका अब डूबी या तब डूबी

लेखक, श्री भगवानप्रसाद त्रिपाठी (पत्रकार)

भारतीय स्वतंत्रता के मार्ग में मुस्लिम लीगी अड़ंगा वर्षों से खतरनाक सिद्ध हो रहा है। लीग—हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक दृष्टि से राष्ट्र का बटवारा चाहती है। हिन्दू प्रान्तीय चुनावों से यह सिद्ध हो गया है कि संपूर्ण मुस्लिम-समाज का प्रतिनिधित्व अकेले लीग ही नहीं करती। उसका यह दावा गलत है। इस लेख में लेखक ने बड़े मनोरंजक ढंग से लीग के साम्प्रदायिक रवैये का प्रतिवाद किया है।

यों तो जबसे मुस्लिम लीग की नींव पड़ी तभी से मुस्लिम लीगी नेताओं ने यह हल्ला मचाना शुरू कर दिया कि हिन्दुओं की शक्ति बरसाती बाढ़ की भाँति बढ़ती जा रही है। इससे "इस्लाम खतरे में है," एक तरह से यह भी कहा जा सकता है कि ऐसी ही चिल्ल-पों मचाकर मुस्लिम लीग की बुनियाद मजबूत की गई। सदा ही भोले-भाले देहाती मुसलमानों को यह कहकर बहकाया जाता रहा है कि भाई! ये हिन्दू बड़े काफ़िर हैं। ये तो हमारे इस्लाम को खतरे में डालकर उसे एटियामेट कर देना चाहते हैं। वे भोले-भाले देहाती मुसलमान यह नहीं सोचते कि आख़िर इस्लाम कोई मिट्टी का खिलौना थोड़े ही है जिसे हिन्दू तोड़-फोड़ डालेंगे ?

मुस्लिम लीग 'इस्लाम खतरे' के नाम पर अपना कुछ संगठन करके अब यह कहने लगी है कि "इस्लाम के साथ अब हमारा पाकिस्तान भी खतरे में पड़ गया है।" इस इस्लामियत की पृष्ठभूमि पर पाकिस्तानियत का भव्य प्रासाद निर्मित होने का स्वप्न देखा जा रहा है। जब इस्लाम सुरक्षित रहेगा तो पाकिस्तान का भी कोई बाल बाँका नहीं कर सकता। इस्लाम और पाकिस्तान का सम्बन्ध चोलीदामन का हो गया है। अगर इस्लाम रहेगा तो पाकिस्तान भी रहेगा। एक के बिना दूसरे का रहना या बनना मुश्किल है। यहाँ अब हमें यह सोचना है कि अब इस्लाम और उससे पैदा होनेवाला पाकिस्तान खतरे में है?

सरदार बलदेवसिंह पंजाब प्रान्तीय धारासभा के प्रभावशाली सिक्ख नेता हैं। आप पंजाब प्रान्तीय संयुक्त सरकार के मंत्री चुने गये हैं। सरदार बलदेवसिंह ने पंजाब में सिक्खों के अधिकारों की रक्षा के लिए बड़ा सफल किया है और आज मुस्लिम लीग के विरोधी नेताओं में आपका स्थान प्रमुख है।

यों तो मुस्लिम लीग का बहुमत भारत के कुछ प्रान्तों में है। इन प्रान्तों में सबसे पहले सिन्ध, बंगाल तथा सीमा-प्रान्त का नाम लिया जा सकता है। रियासतों में भी अगर पाकिस्तान बना तो हैदराबाद (दक्खिन) और काश्मीर को भी

मुस्लिम लीग के विधाता कायदे आजम श्री मुहम्मद अली जिन्ना पंजाब में संयुक्त मंत्रिमंडल बनने से बेहद नाराज हैं। लाहौर में आप भाषण देकर कह रहे हैं कि कांग्रेस मुसलमानों को लड़ाकर फूट पैदा कर रही है।

इसमें शामिल कर लिया जायेगा। इन प्रान्तों को देखकर हमें अब यह अनुमान होने लगा है कि पाकिस्तान तो इन प्रान्तों में बन चुका क्योंकि इन प्रान्तों का इस्लाम खतरे में नहीं है। इस्लाम खतरे में न होने का अर्थ यह है कि पाकिस्तानी बुलबुल मिस्टर जिन्ना ने इन प्रान्तों में मुस्लिम लीग की मिनिस्टरी कायम करने के लिए जोर-शोर से कोशिश की, पर बुलबुल चहकती रही, आशियाना उजड़ गया। किसी प्रकार सिन्ध में हिदायतुल्ला की मिनिस्टरी बनी भी तो वह खतरे में ही झूल रही है। सिन्ध की नैया आज डूबी या कल एकन एक दिन तो अवश्य ही डूब जायेगी। सिन्ध की एक बड़ी सभा में भाषण करते हुए लीगी नवाबजादा लियाक़तअली खाँ ने फरमाया था कि हम मंत्रिमंडल के लिए नहीं लड़ रहे हैं, पाकिस्तान के लिए लड़ रहे हैं। ख़ैर, इतना तो अभी पता चल ही रहा है कि आप लड़ रहे हैं, लड़ते जाइए, कुछ न कुछ हाथ ही लग जायेगा। न बुलबुल, बटेर ही सही। अभी हाल की खबरों से यह पता चला है कि मि० सैयद कई मंत्रियों के ऊपर अविश्वास का प्रस्ताव पेश कर रहे हैं। फिर जिस प्रान्त की असेम्बली में बराबर के योद्धा हों वहाँ कब तक समझौते से काम चल सकता है? बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी? सिन्ध में मुस्लिम लीग की मिनिस्टरी के इने-गिने दिन शेष हैं। यहाँ अभी पाकिस्तान बना लें, पर उस पाकिस्तान के क़ब्रिस्तान के लिए भी अभी से प्रबन्ध कर लेना चाहिए।

सिन्ध के बाद आसाम और बंगाल की बारी आती है। मि० जिन्ना बहुत दिनों तक कलकत्ते में तेल मालिश करते रहे, पर कुछ लाभ न हुआ। आसाम में उनके देखते-देखते कांग्रेस का मंत्रिमंडल बन गया, बंगाल में मि० हक पहले से ही अपनी धूनी रमाये बैठे हैं। फिर जिन्ना साहब का दाँव इन दोनों प्रान्तों में भी नहीं चल सका। कलकत्ते से लीगी बुलबुल उड़ी तो पंजाब पहुँची और उसके पहुँचने के पूर्व ही कांग्रेस ने वहां अपनी फतेहयाबी का रंग जमा लिया था। लीग यह सोचती थी कि हमारे घर में कौन आ सकता है? वहाँ पर अगर मिनिस्टरी बनेगी तो लीग की ही। पर लीगियों के छक्के पंजाब में भी छूट गये और उनके देखते वहां पर भी कांग्रेस ने अपनी मिनिस्टरी बना ही ली। मि० लियाक़तअली खाँ की लियाक़त यहाँ पर भी कारगर न हुई।

अब रही सीमाप्रान्त की समस्या, सो सीमाप्रान्त में तो डाक्टर खान तथा अब्दुल-गफ़्फार खाँ के करकमलों द्वारा वहां पाकिस्तान जन्म लेने से पहले ही दफना दिया गया है। इन प्रान्तों में मुस्लिम लीग को मुंह की खानी पड़ी। जब केन्द्रीय असेम्बली की सीटों के लिए चुनाव लड़ा गया था और उसमें मुस्लिम लीग को कुछ सफलता मिली थी तब लीगी नेताओं ने सोचा था कि पाकिस्तान आज बना या कल। पाकिस्तान तो बनकर ही रहेगा। पर जब प्रान्तीय असेम्बली के चुनाव का परिणाम देखा गया तब उनका इस्लाम और भी खतरे में पड़ गया। कई अन्य प्रान्तों का चुनाव-फल भी निकल रहा है। लीगी नेता आजकल खूब ही चिल्ला रहे हैं कि पाकिस्तान खतरे में है। पर जनता अब सचेत हो उठी है। वह तो कह रही है कि जनाब न पाकिस्तान खतरे में है और न इस्लाम। अब खतरे में केवल आपकी लीडरी है। अब लीडरी की चमक-दमक न रहेगी। राष्ट्रीय मुसलमान भी काफ़ी संख्या में चुनकर आ गये हैं। अब तो मुस्लिम लीग की रही-सही ताकत भी खत्म हो गई। राष्ट्रीय मुसलमान कांग्रेस के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर आजादी के लिए लड़ रहे हैं।

मतलब यह है कि अब लीग की लीडरशाही खत्म हो गई। लीगी नेता अब अधिक दिनों तक 'इस्लाम खतरे में है' की घंटी बजाकर जनता की आँखों में धूल नहीं झोंक सकते। अब तो पाकिस्तान के साथ-साथ उनकी लीडरी भी खतरे में पड़ गई है। जब लीडरी नहीं तो पाकिस्तान कैसे बन सकता है और जब पाकिस्तान नहीं बन सकता तो इस्लाम की रक्षा कैसे होगी? अब तो खुदा के नाम पर मुस्लिम लीग की नैया बह रही है। वह आज डूबती है या कल, खुदा ही हाफ़िज है।

लेफ्टिनेंट कनल मलिक खिज़िर हयात खाँ, पंजाब प्रान्तीय असेम्बली के नेता और पंजाब प्रान्तीय सरकार के प्रधान-मंत्री चुने गये हैं। आप यूनानिस्ट दल के नेता हैं। आपने अपने दल के साथ कांग्रेस और सिक्ख दल के मेल से संयुक्त दल मंत्रिमंडल बनाया है।

गीत

लेखक, श्री जगन्नाथ, एम० ए०

चलने जलने में अंतर है!
जलने में विराम घातक है
जो चलने में अवश्यक है
जलना चलने से दुस्तर है!

दीप शलभ को प्रगति सिखाता
रवि जग को गतिशील बनाता
जलने पर चलना निर्भर है!

रोगी मनुज नहीं चल सकता
पर जो चाहें वह जल सकता
जलने का सबको अवसर है!

पंजाब प्रान्तीय धारासभा के कांग्रेस-दल के नेता लाला भीमसेन सचर। आप पंजाब प्रान्तीय सरकार के नये मंत्री बनाये गये हैं। संयुक्त मंत्रिमंडल के बनाने में और कांग्रेस दल के शामिल होने में आपका विशेष हाथ है। आप पंजाब के प्रमुख कांग्रेस नेता हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेडियो-विभाग कब चेतेगा ?

आन्दोलन को प्रबल बनाने के लिए कुछ क्रियात्मक सुझाव

लेखक, श्री गोपाललाल खन्ना, एम० ए०

गत १२ मार्च के दैनिक संसार में एक समाचार निम्नलिखित आशय का प्रकाशित हुआ—

"हिन्दू विश्वविद्यालय की एडमिशन परीक्षा ११ मार्च के बजाय १३ मार्च से प्रारम्भ होने की सूचना लखनऊ रेडियो ने हिन्दुस्तानी में इस प्रकार ब्राडकास्ट की—"हिन्दू यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार ने एलान किया है कि वहाँ की बसवीं जमात का दाखिला अब १३ मार्च को शुरू होगी।"

इस समाचार एवं विज्ञप्ति को रेडियो-श्रोताओं ने अवश्य सुनी होगी और समाचारपत्र पाठकों ने पढ़ा होगा। इस विज्ञप्ति की भाषा रेडियो की समाचार-शैली का सच्चा नमूना है। हिन्दू-यूनिवर्सिटी और उसके रजिस्ट्रार के नाम पर जिस भाषा में विज्ञप्ति का 'एलान' किया गया है वह उनकी प्रतिष्ठा में ही केवल आघात नहीं करता, परन्तु हिन्दी के गढ़ काशी और हिन्दू-विश्वविद्यालय के हिन्दी-प्रेमियों के तथा साहित्यिकों की भी अच्छी मरम्मत करता है।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने रेडियो की समाचार-भाषा-शैली तथा उसकी हिन्दी-विरोधी नीति के सम्बन्ध में एक आन्दोलन का सूत्रपात किया। उससे रेडियो-विभाग में पर्याप्त हलचल मची। अधिकारीगण चौकन्ने हुए। कुछ समझौते और सुलझाव की बात भी चलीं।

कुछ हलचल और चहल-पहल रही परन्तु अन्य साहित्यिक आन्दोलनों की भाँति यह आन्दोलन भी शान्त होता जा रहा है। एक लक्ष रुपया के संग्रह का आयोजन हुआ, इस आन्दोलन को चलाने के लिए बड़े पैमाने पर। परन्तु सिद्धि दूर ही खड़ी रही।

सभा-सम्मेलन करके रेडियो-विरोधी प्रस्ताव पास करने से जनमत का संग्रह हो सकता है, उसका किंचित् प्रभाव रेडियो-विभाग पर पड़ सकता है और पड़ा भी है। सरकार के कान खड़े हुए परन्तु इससे कोई स्थायी प्रभाव नहीं पड़ा। इस आन्दोलन को दृढ़-संकल्प होकर रचनात्मक कार्य-क्रम के अनुसार चलाना ही प्रभावोत्पादक तथा फलदायक हो सकता है। प्रत्येक पक्ष के समाचार तथा फीचर-नाटक आदि विशेष प्रोग्रामों में हिन्दी की छीछालेदर की टिप्पणी तथा पूरा विवरण प्रकाशित होना चाहिए। प्रत्येक पक्ष के हिन्दी के प्रोग्रामों की सूची छपनी चाहिए कि रेडियो-श्रोतागण उनको विशेष रूप से ध्यानपूर्वक सुनें तथा उसका अध्ययन करें; समझें और अनुभव करें कि उनकी भाषा-मातृभाषा की प्रतिष्ठा का किस प्रकार हरण किया जा रहा है। ऐसी पाक्षिक अथवा साप्ताहिक पत्रिका का सुचारु रूप से संपादन एवं प्रकाशन होना चाहिए। इस प्रकार की पत्रिका ६,०००) के मूलधन से प्रकाशित की जा सकती तथा एक वर्ष कम से कम प्रचाराथ चलाई जा सकती है। इसके उपरान्त उसी की आमदनी से और वार्षिक चन्दे और अन्य दान आदि कुछ वर्षों तक इस प्रकार की पत्रिका का प्रोपोगेंडा का कार्य करके यह स्वावलम्बी हो सकती है। इसी उद्देश्य से 'आकाशवाणी' नामक पत्रिका कुछ महीने लखनऊ से प्रकाशित होती रही। उसने जो जनमत संग्रह किया था तथा उसका जो कुछ प्रभाव रेडियो पर पड़ा था और उसी की चेतना से हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अधिवेशनों से रेडियो-विरोधी प्रस्ताव पास हुए थे वे बातें अभी भूली न होंगी। यह मासिक-पत्रिका आर्थिक, व्यवसायिक आयोजन तथा सुव्यवस्था के अभाव के कारण कुछ मास के बाद १३-१४ अंकों के प्रकाशन के उपरान्त बन्द कर देनी पड़ी।

यह तो रही प्रचार और प्रोपोगेण्डा की बात। दूसरा आयोजन जो वास्तव में रेडियो-विभाग की नस-नस ढीली कर सकता है वह है रेडियो-श्रोताओं का तनिक मोह, (शोक) त्याग और एक लक्ष्य। यदि कहने से रेडियो-विभागवाले नहीं सुनते और चेतावनी देने पर भी अपने मन की ही करते जाते हैं तो रेडियो-श्रोताओं को रेडियो का लाइसेन्स लेना बन्द कर देना चाहिए। इसी से इतनी अधिक आय होती है कि यदि यह आय एक वर्ष भी बन्द हो जाय अथवा न्यूनति-न्यून हो जाय तो रेडियो-विभाग के छक्के छूट जायेंगे। हाँ, इसके लिए केवल घर बैठे पत्रों में लिखने से ही काम नहीं चलेगा। अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन अथवा प्रान्तीय साहित्य-सम्मेलन की प्रत्येक नगर में शाखा स्थापित हो है। उनके व्यवस्थापकों या मंत्रियों को आदेश दिया जाय कि वे स्थानीय हिन्दी-प्रेमी-रेडियो-श्रोताओं से संघर्ष स्थापित करें तथा उनसे अनुरोध करें कि रेडियो के विरोध में वे अपना अगला लाइसेन्स रिव्यू न करावें। इस पर प्रश्न यह उठेगा कि रेडियो-विभाग के नियमानुसार कोई भी व्यक्ति बिना लाइसेन्स के रेडियो सेट अपने घर में नहीं रख सकता। इसका उपाय सरल ही है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के स्थानीय दफ़्तर में उसको वे जमा कर सकते हैं और उसकी देख-रेख के लिए तथा सुरक्षा के लिए नाम-मात्र के लिए अर्थ-दान कर सकते हैं। एक व्यक्ति एक लाइसेन्स से कई रेडियो रख सकता है। अतः सम्मेलन के विभाग को केवल एक लाइसेन्स लेना पड़ेगा तथा कई रेडियो के संरक्षण का भार। रेडियो-सेट के स्वामी की परितुष्टि तथा धैर्य के लिए रेडियो-सेट पर सील-मुहर लगवा ली जा सकती है। हाँ, उसकी सुरक्षा का उत्तरदायित्व जानकार व्यक्ति को उठाना ही पड़ेगा।

एक प्रश्न यह भी उठ सकता है कि स्थानीय रेडियो-श्रोताओं से संबंध किस प्रकार स्थापित किया जायगा। इसके लिए भी परम सरल उपाय है। प्रत्येक पोस्ट-आफिस से रेडियो-श्रोताओं तथा लाइसेन्सदारों की सूची कुछ द्रव्य-दक्षिणा देने से प्राप्त हो सकती है। उसी के आधार पर पत्र-द्वारा या सभा-गोष्ठी बुलाकर उनसे प्रस्ताव किया जा सकता है तथा आन्दोलन सफल बनाने और रेडियो-विभाग की रीढ़ की हड्डी पर गहरी चोट की जा सकती है।

इस प्रकार के रचनात्मक कार्य-क्रम को, आवश्यकतानुसार परिवर्तन एवं परिवर्धन करके, रेडियो-विभाग की कृत्रिम पूर्ण दुविनय को सुधारा जा सकता है। हाँ, थोड़ा कमर कसिये और फिर क्या देखिए। वे आपके पैरों पर अपना सिर न पटक दें तो कहिएगा।

AC!

निर्धारित सीमा तक अधिक से अधिक ख़रीदिये

गवर्नर रिज़र्व बैंक कहते हैं!

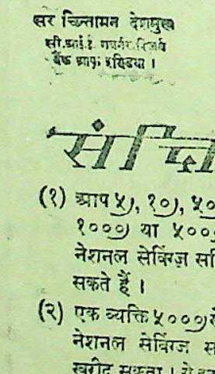

सर चिन्तामन देशमुख
की.सी.आई.ई. गवर्नर रिज़र्व बैंक आफ़ इण्डिया।

"थोड़ी आय वाला व्यक्ति जो भविष्य के लिये कुछ बचाना चाहता है उसके लिये गवर्नमेण्ट आफ़ इण्डिया के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स के अतिरिक्त और कोई उत्तम तथा सुरक्षित मद रुपया लगाने की नहीं है। वास्तव में ये सर्टिफ़िकेट्स इतने उपयोगी हैं कि एक व्यक्ति को ५,०००) से अधिक मूल्य के सर्टिफ़िकेट्स नहीं बेचे जाते। मेरी तो सम्मति यही है कि इस निर्धारित सीमा तक अधिक से अधिक मूल्य के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिये।"

C. D. Deshmukh

संक्षिप्त विवरण

(१) आप ५), १०), ५०), १००), ५००), १०००) या ५०००) के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) एक व्यक्ति ५०००) से अधिक मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स नहीं ख़रीद सकता। ये इतने उपयोगी हैं कि इनका राशन करना ही उचित समझा गया है। हां दो व्यक्ति मिलकर १०,०००) के सर्टिफ़िकेटस मोल ले सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है।

(४) इस प्रकार अवधि पूरी होने पर ४-१/६% वार्षिक ब्याज मिलता है।

(५) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(६) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं (५) का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष पश्चात ही भुनाया जा सकता है) परन्तु वास्तविक लाभ इसी में है कि १२ वर्ष से पहिले इन्हें न भुनायें।

(७) जिनकी बचत थोड़ी है वह १), ॥), ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्पस ख़रीद सकते हैं ५) के स्टैम्पस जमा होने पर एक नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट मिल जायेगा।

(८) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्पस डाकघानों, सरकार द्वारा अधिकृत एजण्टों अथवा सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

आप अपनी बचत से ५०% लाभ उठाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेनेटोरियम

लेखक, प्रोफेसर श्रीनारायण अग्रवाल, एम० ए० बी० काम;
श्री पुरुषोत्तम मुरारका 'साहित्यरत्न'

सेनेटोरियम की ओर जाते हुए भावुक हृदय।

सेनेटोरियम भी जीवन-संघर्ष का एक ऐसा विचित्र स्थान है, जहाँ का वातावरण मानव-हृदय पर व्यापक प्रभाव डालनेवाला होता है। मरीज तो मरीज, डाक्टर और नर्सों का भी हृदय जीवन की तूफानी हलचल से व्याप्त और दुख-दर्द से पूर्ण रहता है। इस कहानी में सेनेटोरियम के वातावरण और मानसिक द्वन्द्वों का सुन्दर चित्रण किया गया है। सेनेटोरियम—मानव-जीवन ही—एक सेनेटोरियम के तुल्य है, जहाँ जीवन की नाप-तोल होती रहती है।

(१)

वह अभी-अभी नीलम का टेंमप्रेचर लेकर आई थी। मरीज की हालत में कोई भी अंतर नहीं पड़ा था। वह वार्ड के साथवाले कमरे में जो पन्द्रह दिनों में कोई भी अंतर नहीं पड़ा था। वह वार्ड के साथवाले कमरे में जो ड्यूटी के लिए 'रिजर्व' था, अपने चेहरे को हथेलियों में सम्हाले और कुहनियों को मेज पर टेके बैठी थी। शायद उसका पूरा मुख भी सहायता चाहता था, केवल अपनी ही पीली-पीली हथेलियों की सहायता। वह इसी भाँति बैठे-बैठे अपनी जिन्दगी की बाबत सोचने लगी। पन्द्रह साल का दीर्घ समय उसने इसी सेनेटोरियम में गुजार दिया था। वह जीवन और मृत्यु के मध्य में रेंगते हुए बीसों इन्सानों को देख चुकी थी। उसकी जिन्दगी का प्रत्येक क्षण तपेदिक के रोगियों की उखड़ती हुई साँसों, क्षीण नब्जों और लरजती हुई कराहों के बीच में बीता था। उसके प्रत्येक क्षण पर मृत्यु का चुंबन अंकित था। उसके जीवन में प्रत्येक क्षण ने मृत्यु की भयानक राह पर फिसलते हुए थकित एवं पराजित राहगीरों के लिए मील के पत्थर का कार्य किया था। उसकी हर साँस में मरनेवालों की आहों की चीत्कार थी। उसकी बातें मधुर थीं। मृत्यु की मधुता! और तपेदिक के रोगियों को मृत्यु एक मीठे राग या सुन्दर स्वप्न के सिवा मालूम भी क्या होती? अब तो वह कभी-कभी खयाल करती थी कि सेनेटोरियम के इस अहर्निश लगाव से उसके शरीर, विचार तथा आकृति पर भी एक विशेष प्रकार की छाया सी मंडराती है। उसे अपनी जिन्दगी की प्रत्येक रात सेनेटोरियम के विभिन्न कमरों में चक्कर काटती हुई मालूम होती थी। उसकी साँसें शायद सिवा इसके और कुछ कह नहीं सकतीं। वह अक्सर सोचा करती कि यह आरोग्य-मंदिर एक भूल-भुलैया है जिसके भीतर आने का रास्ता तो लोग किसी न किसी प्रकार जान ही लेते हैं लेकिन बाहर जाने का रास्ता ढूंढ़ने में उन्हें मृत्यु के टिमटिमाते हुए दीपक की सहायता लेनी पड़ती है। बहुत ही कम ऐसे सौभाग्यशाली पुरुष हैं जो बिना किसी मदद के निकल जा सकते हैं। कई बार तो वह अद्भुत धी व्यथा का अनुभव करती और विचार करती कि शायद उसे भी इस भूल-भुलैया से निकलने के लिए किसी कंदील की जरूरत पड़े। इसी तरह बैठे-बैठे उसके दिमाग ने कतिपय भूली बिसरी कथायें छेड़नी शुरू कर दीं। जिन्दगी के कुछ दुखद नाटक जो अस्पताल के रंगमंच पर खेले गये थे लेकिन अफसोस कि उन नाटकों के लिए किसी ने 'क्लैप्स' का एक शब्द भी नहीं कहा था। सतीश और उसकी आँखों के सामने एक नवयुवक की तस्वीर खिंच गई, बिलकुल मासूम, एक भोले बालक की तरह वियोग की ज्वाला ने उसे इस तरह झुलसाया था। वह तपेदिक की बीमारी के पंजों में फँसा दिया गया था। उसके नाखून उसके नन्हें से शरीर को खाकर भीच से गये थे और वह उसे भींचे हुए पंजों से छुड़ाना चाहती थी। उसे उन नासूरों को अलग करना था। उसने पुचकार से उसका इलाज करना शुरू किया। वह सोचा करती कि क्या वियोग भी इस कदर जानलेवा हो सकती है? क्या मानव-जीवन इतना क्षुद्र है कि वह इस पराजय का सामना नहीं कर सकता और फिर वह सतीश के छरहरे शरीर को देखती, उसकी खाँसी के झटकों से उसे अपनी हृदय-वीणा के तार झनझनाते हुए मालूम होते। उसकी आँखों की स्याही में उसे मौत का लपटा हुआ कफन दिखाई देता जो धीरे-धीरे खुल रहा था। उस नवयुवक के माता-पिता अपने इकलौते बेटे को बचाने के लिए अपना सर्वस्व त्याग देने के लिए प्रस्तुत थे। अपनी दौलत और तन्दुरुस्ती भी जब कभी नर्स सतीश की

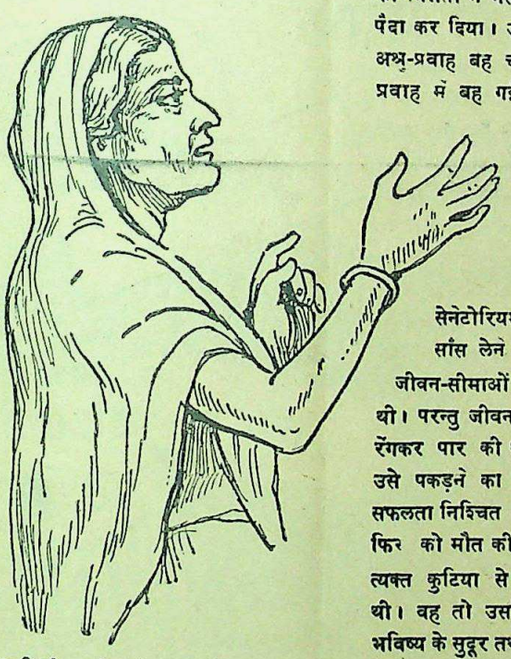

कामिनी अपने बच्चे का दर्दनाक समाचार सुनकर रोती हुई दौड़ पड़ी।

माता को रोते हुए देखती तो उसका दिल बैठ जाता। वह कई-कई रातें एक क्षण भी सोये बिना बिता देती। उसने और अधिक कुशलता से अपना काम शुरू कर दिया। वह सतीश को बचाना चाहती थी उसकी माँ के लिए जिसके आँसू आँखों की राह निकलते हुए अंगारे मालूम होते थे, उसे अंगारों से सदा डर लगता था। उसने सतीश को भी बहुधा रोते देखा था। वह छिप-छिपकर रोता। अपने नासूरों को छीलता और चीखता। वह भी शायद जिन्दा रहना चाहता था। अपने लिए नहीं, उन नासूरों के लिए जिन्हें मौत का मलहम भरने के प्रयत्न में था। लेकिन किसी की भी कोशिश काम न आ सकी। कोई भी दुआ अपना असर दिखाने में असमर्थ रही। और एक सुबह सफेद चादर में लिपटी हुई चन्द हड्डियाँ सेनेटोरियम के बाहर सुनसान राहों में फेंक दी गईं। नर्स का दिमाग उन भूली हुई कहानियों में ज्यादा दिलचस्पी महसूस करने लगा।

(२)

अब दूसरी कहानी शुरू हुई शीर्षक था—निर्मल! मई की एक सुबह को एक सुन्दर युवती चार मजदूरों से एक चारपाई उठवाये अस्पताल में दाखिल हुई। वह स्त्री माया थी जिसकी बार-बार की मिन्नतों ने नर्स के कोमल हृदय में दर्द पैदा कर दिया। उसकी अपनी आँखों में भी अश्रु-प्रवाह बह चला। वह भावनाओं के प्रवाह में बह गई और मरीज बिना देख ही उसने माया को बचन दिया कि वह उसके पति को बचाने की भरसक कोशिश करेगी और उसके बाद निर्मल भी सेनेटोरियम की उदासीनता में साँस लेने लगा। उसकी बीमारी जीवन-सीमाओं से दूर निकल चुकी थी। परन्तु जीवन की सीमायें उसने रेंगकर पार की थीं, भागकर नहीं। यदि उसे पकड़ने का प्रयत्न किया जाता तो सफलता निश्चित थी। लेकिन अब मुसाफिर को मौत की मंजिल जीवन की परित्यक्त कुटिया से सुहावनी दिखाई देती थी। वह तो उसके धुंधले से चित्र भी भविष्य के सुदूर तथा धूमिल वातावरण में देख सकता था। माया की लहराती जवानी तथा अनुभव-शून्यता निर्मल की जीवन-नौका को किनारे से दूर ही ढकेलती गई। नर्स ने अपनी जान खपाकर उस अभागे युवक की चिकित्सा की। वह उसे माया के लिए जीवित रखना चाहती थी। केवल माया के लिए जिसका विश्व में सिवा अपने पति के और कोई नहीं था। निर्मल की बीमारी ने जिसकी विशाल आशाओं के आलीशान महलों को हिलाना शुरू कर दिया था, आखिर वे महल टूट गये, गिर गये और खाक का ढेर बनकर रह गये। एक सर्द-सी सुबह को माया ने गोरी-गोरी कलाइयों में पड़ी काली-काली चूड़ियाँ पत्थर से फोड़ डालीं। अब उनकी खनक भी कोई न सुन सकेगा। वह असह्य दुख-भार से पागल होकर नर्स से चिपट गई और उसके बाद नर्स भी मरघट तक जाकर वापस चली आई। यह उसकी द्वितीय पराजय थी। उसका मस्तिष्क अतीत की कहानियों में अधिक दिलचस्पी दिखा रहा था। उसने एक और कहानी प्रारंभ कर दी।

(३)

कामिनी—एक विधवा—एक नवयुवती हिन्दू-स्त्री जिसका सुहाग मिट चुका था और उसके साथ ही साथ उसकी जवानी और स्वास्थ्य भी छिन गये थे। समाज के कड़े नियमों, घर की दुखद परिस्थितियों और संबंधियों के बुरे बर्तावों ने आखिर उसे विवश कर दिया। उसका एक मासूम बच्चा था। पहले-पहल जब नर्स ने उस बच्चे को अपनी सगी माता के साथ अस्पताल में देखा तो उसे खुदा के रहीम और करीम होने पर सन्देह होने लगा। कामिनी के मैके में केवल एक बहन थी जो अस्पताल में उसकी देखभाल करती थी। वह बेचारी दिन रात उसकी सेवा शुश्रूषा में लगी रहती। और वह बच्चा न जाने सदैव किस सोच में डूबा रहता? सेनेटोरियम का वातावरण उसके दिमाग पर न जाने जीवन-मृत्यु की कौन कौन-सी तस्वीरें बना रहा था। सेनेटोरियम—जहाँ मौत अजीब-अजीब से रूप धारकर फिरती रहती है, जहाँ एक मीठा और सुहावना संगीत भी मर्मस्पर्शी चीत्कार में परिणत हो जाता है, जहाँ प्रत्येक आधा मुरझाया हुआ फूल नजर आता है। वह अकसर प्यार से अपनी मा को चूमना चाहता लेकिन उसे ऐसा करने से रोक दिया जाता। वह रो पड़ता और नर्स के हृदय का शीशा धुंधला हो जाता। वह अपने आपको एक विशेष प्रकार के मानसिक संघर्ष में तल्लीन पाती, जब वह सोचती कि वह कामिनी को सिर्फ उस बच्चे के लिए बचाना चाहती थी जिसके गाल पतझड़ के पत्ते की तरह पीले पड़ते जा रहे थे। आखिर बच्चा भी माँ की साथवाली चारपाई पर लिटा दिया गया। बड़ी-सी लोहे की चारपाई पर सफेद चादर में लिपटा हुआ वह मासूम बच्चा एक मक़बरा मालूम होता था। संगमर्मर का मकबरा। उसके बाद दोनों दुनियावी बंधनों से स्वतन्त्र थे। एक दूसरे के लिए जीवित रहने का आकर्षण समाप्त हो चुका था—और एक गरम दोपहर को दो लावारिश लाशें अस्पताल से बाहर भेज दी गईं। नर्स का दिमाग इतनी हृदयस्पर्शी भूली हुई कहानियाँ पढ़ने के बाद बोझिल हो गया। अतीत के बीरान में अब उसके लिए अधिक देर तक चलते रहना असंभव था।

(४)

अब उसके सामने रोजमर्रा की जिन्दगी थी और उसे यों महसूस हो रहा था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेनेटोरियम एक समुद्र है और हर तपेदिक का रोगी एक नदी—न जाने कितनी छोटी-छोटी नदियाँ समुद्र में समा जाती हैं, अपनी हस्ती खो देती हैं और जब तक तूफान न आये कोई भी समुद्र की शक्ति और थाह का अन्दाज नहीं कर सकता। तूफान! और उसकी आँखें मेज पर पड़े हुए थर्मामीटर पर जम गईं। जिन्दगी के तूफान की कठोरता मापने का बढ़िया··· नीलम की अवस्था में कोई सुधार न था। उसकी अवस्था पहले से भी ज्यादा बिगड़ गई थी। वह प्रत्येक कष्ट बिना किसी शिकायत के सहता जा रहा था। वह खुद ही सेनेटोरियम में दाखिल होने आया था। उसका संसार में कोई नहीं था। सेनेटोरियम में वह आराम से मर सकेगा और किसी का एहसान उसकी मौत के कंधों पर बोझ डालकर उसकी चाल धीमी करने में सफल न होगा। शायद उसने यही सोचा था—"मगर मैं क्यों नीलम को बचाना चाहती हूं?" नर्स धीरे से बोल उठी। "उसका तो कोई भी अपना नहीं। माँ नहीं—पत्नी नहीं—प्रेयसी नहीं—बहन नहीं—मैं उसे क्यों जीवित रखना चाहती हूं? मृत्यु की गहरी खाई की तरफ लुढ़कती हुई जिन्दगी को किस आधार का सहारा मिल सकता है"—उसके दिल ने जवाब दिया—"अपने लिए और अपना सहारा"—उसने अपने शरीर में बिजली की हलकी-सी लहर दौड़ती हुई महसूस की और फिर बड़बड़ाने लगी, "मगर मेरी तो कोई भी उम्मीद सफल नहीं हुई कोई भी अरमान पूरे नहीं हुए; और यह नवयुवक—दार्शनिक पागल—जिन्दगी नहीं जिन्दगी की हलकी-सी परछाई, मौत की भयानक राहपर रेंगती हुई चींटी और फिर उस परछाई को पकड़ने की तमन्ना—इस नन्हीं-सी अधमरी चींटी को बचाने का प्रयास—" वह अचानक चुप हो गई और उसने जैसे पलक झपकते ही सैकड़ों चींटियों को कुचलते हुए देख लिया। उसे अपना अतीत फिर याद आ गया और उसे यों महसूस हुआ कि उसकी अपनी जिन्दगी भी एक सेनेटोरियम है और प्रत्येक अभिलाषा तपेदिक के रोगियों में—उसकी प्रत्येक अभिलाषा घुल-घुलकर खतम हो गई थी। वह अपनी एक भी इच्छा को पूर्ण न कर सकी थी। वह एक शोक-संतप्ता थी—अपने भूतकाल के जीवन की शोक-संतप्ता—और उसकी सुन्दर आकृति उसकी पीली-पीली हथेलियों के सहारे से भी वंचित हो गई। उसने थर्मामीटर 'केस' में डाल दिया। शायद उसे तूफान के भयानक आगमन का अन्दाज लग चुका था। वह धीरे-धीरे कुरसी से उठी और वार्ड की तरफ चल पड़ी—नीलम ने चुल्लू भर खून थूककर अपना सिर चारपाई पर टेक दिया था।

हास्य-कौतुक

हँसते-हँसते लोटपोट हो जाने की आकांक्षा करनेवालों के लिए इसमें मनोनुकूल सामग्री मिलेगी, साथ ही साथ मानव-चरित्र का भी सुन्दर चित्र आप इसमें पायेंगे। मूल्य ॥)

इंडियन प्रेस लिमिटेड इलाहाबाद।

खबर जहर की

जेबी रेडियो भी तैयार

लन्दन की एक फर्म इन दिनों एक ऐसा 'जेबी रेडियो' तैयार करने में व्यस्त है, जो ओवर-कोट की जेब में आ जाय। इसका वजन ४½ पौंड और अकार ८½ × ३½ × ३¼ इंच होगा। वह बैटरी से चलेगा और २½ इंच का एक लाउड-स्पीकर भी उसमें लगा होगा। उसे चलाने का तरीक़ा भी सीधा-सादा होगा, क्योंकि ढँकने के हटाते ही वह अपने आप चलने लगेगा। नई तरह के के इस रेडियो का नाम 'विडोर' है और अभी से वह लोकप्रिय बनने लगा है। संसार के प्रायः सभी देशों से, रेडियो के निर्माताओं के पास, उसके आर्डर पर आर्डर आ रहे हैं।

कागज ही इंधन का काम देगा

अनुसन्धान करनेवाली एक महिला वैज्ञानिका ने दीवार पर लगाये जानेवाला नई किस्म का एक ऐसा कागज तैयार किया है, जो साधारण समय से एक-तिहाई समय में ही कमरे को गरम कर देता है।

इस नई किस्म के कागज की यह विशेषता है कि यह बिजली की गरमी को वापस फेंकता है और उसे दीवार में नहीं समा जाने देता। इसका कारण यह है कि कागज के ऊपर धातु की परत लगी होती है जो दीवार के पलस्तरों में गरमी को नहीं घुसने देती। ब्रिटिश बिजली तथा तत्सम्बन्धी अन्य उद्योग-धंधों की अनुसंधान संस्था में काम करनेवाली कुमारी मेरियम ग्रिफिथ ने इसका आविष्कार किया है।

नये मंदिर की खोज

मित्र देश पिरामिडों के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। प्राचीन काल के एक से एक सुन्दर पिरामिड वहाँ निकाले गये हैं। अभी सन् ३६ में मेक्सिको में एक वैसा ही मन्दिर पाया गया है। चिचेन इत्जा (पृथ्वी टन) के माया के खण्डहरों में काम करते हुए मेक्सिको की सरकार को एक नई चीज का पता लगा। वहाँ पर कैस्टेलेस नाम का एक प्रसिद्ध पिरामिड है उसके अन्दर एक और पिरामिड का पता चला है जो सैकड़ों वर्ष से पृथ्वी के गर्भ में छिपा था। सफाई के बाद इसमें बहुत-सी ऐसी चीजों का पता चला है जो वैज्ञानिकों के बड़े काम की हैं। इससे माया जाति के इतिहास के विषय में बहुत सी बातों का पता चलेगा।

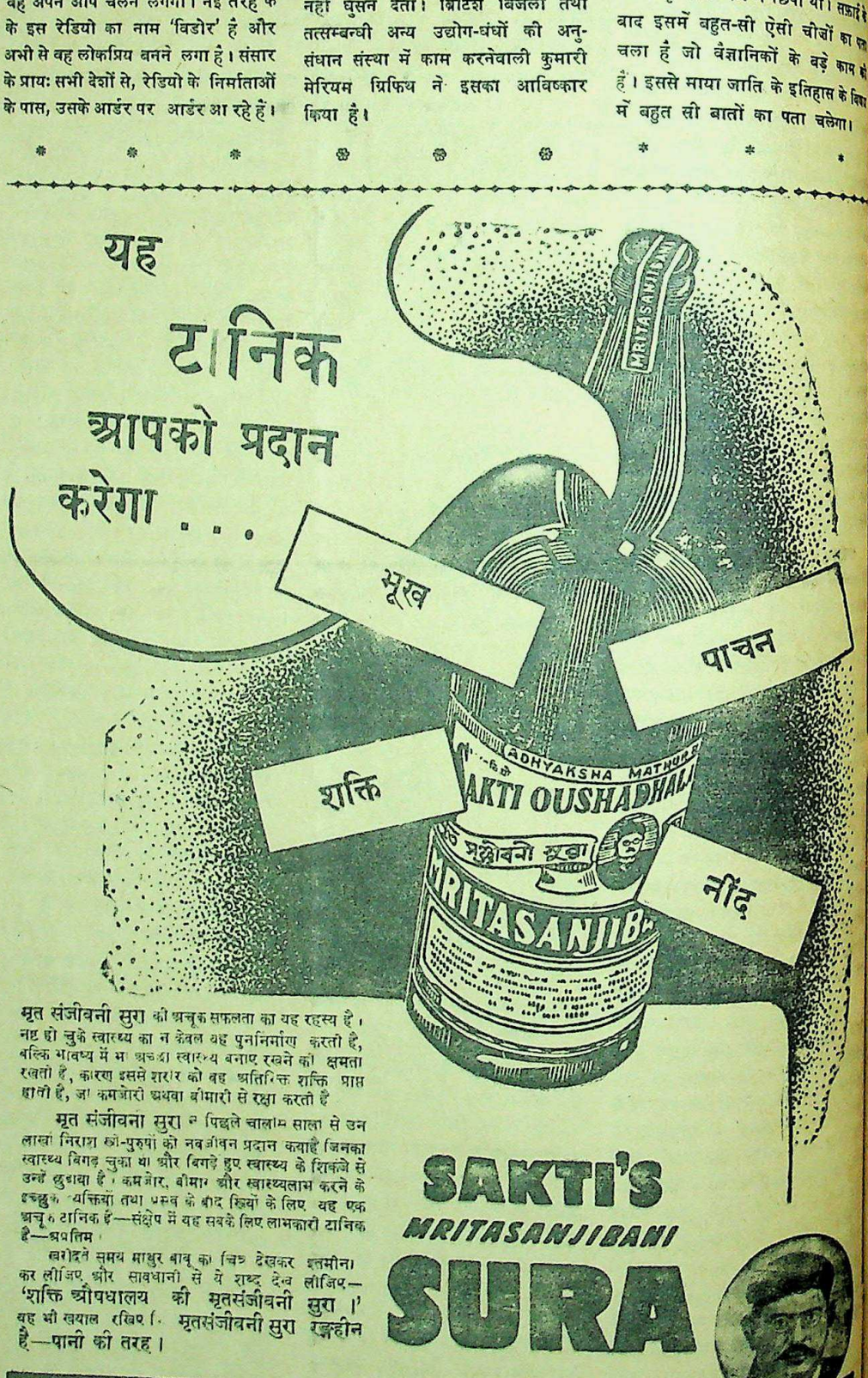

मृत संजीवनी सुरा की अचूक सफलता का यह रहस्य है। नष्ट हो चुकी स्वास्थ्य का न केवल यह पुनर्निर्माण करती है, बल्कि भविष्य में भी अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखने की क्षमता रखती है, कारण इससे शरीर को वह अतिरिक्त शक्ति प्राप्त होती है, जो कमजोरी अथवा बीमारी से रक्षा करती है

मृत संजीवनी सुरा ने पिछले चालीस साल से उन लाखों निराश स्त्री-पुरुषों को नवजीवन प्रदान कराई जिनका स्वास्थ्य बिगड़ चुका था और बिगड़े हुए स्वास्थ्य के शिकंजे से उन्हें छुड़ाया है। कमजोर, बीमार और स्वास्थ्यलाभ करने के इच्छुक व्यक्तियों तथा प्रसव के बाद स्त्रियों के लिए यह एक अचूक टानिक है—संक्षेप में यह सबके लिए लाभकारी टानिक है—अप्रतिम।

खरीदते समय माथुर बाबू का चित्र देखकर इतमीनान कर लीजिए और सावधानी से ये शब्द देख लीजिए—'शक्ति औषधालय की मृतसंजीवनी सुरा।' यह भी खयाल रखिए कि मृतसंजीवनी सुरा रङ्गहीन है—पानी की तरह।

SAKTI'S
MRITASANJIBANI
SURA

THE SYMBOL OF PURITY IN AYURVEDIC MEDICINES

अध्यक्ष माथुर बाबू का शक्ति औषधालय, ढाका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

साहित्य, संगीत और कला

संसार में जो उत्पन्न होता है वह एक न दिन मिटता भी है। लेकिन उस क के समय को किस प्रकार व्यतीत किया जाय यही जो समझ सका है वही जीवन के उच्चतो अर्थ को समझ सकता है। वैसे तो लोग भिन्न-भिन्न कार्यों में अपने को लगाये रखते हैं लेकिन वे कार्य क्या सचमुच उपयोगी हैं? क्या उनसे हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त हो सकती है, यही सोचने की बात है।

हम प्रत्येक कार्य को अपनी अपनी रुचि के अनुसार अच्छा या बुरा कहा करते हैं। कुछ कार्य ऐसे भी हैं जिन्हें हम बुरा कहते हुए भी करते हैं। सच बोलना अच्छा है लेकिन फिर भी क्या हम सच बोलते हैं? झूठ बोलना, चोरी करना बुरा है लेकिन क्या हम झूठ नहीं बोलते, और चोरी नहीं करते? तो फिर ऐसा हम क्यों होता है? क्यों नहीं हम उसी मार्ग पर सदैव चलते जिसे अच्छा कहा जाता है? इसका कारण शायद हमारी कार्य-प्रियता रुचि ही है। हम जिस काम के करने में यह समझते हैं कि इससे हमारा लाभ होगा, हम सुखी बन सकेंगे, उसी को करते हैं। यह भावना अत्यन्त निकट की बात देखती है। भविष्य में उसका क्या परिणाम होगा यह हम नहीं सोचते।

साहित्य, संगीत और कला ये तीन जीवन के उपयोगी अंग माने गये हैं। साहित्य की रचना करनेवाला, साहित्य का अध्ययन करनेवाला दोनों सुख का अनुभव करते हैं। यही बात संगीत और कला के साथ भी है। संगीतज्ञ या श्रवण करनेवाला और दृश्यकार दोनों उसी सुखद कल्पना-लोक में विचरण करने लगते हैं कि जब वे गीत सुनते और नृत्य देखते हैं। कलाकार जब अपनी इच्छा को पूर्ण कर लेता है तो उससे अधिक सुखी कौन हो सकता है? उस समय संसार-विजयी वीर भी उसकी समता कर सकता है या नहीं कौन कहे? उसकी चित्रकारी का प्रभाव सदियों तक हमारे मानस-पटल पर अपना प्रभाव डालता रहता है। उस पर हम आज भी मुग्ध होते हैं।

जीवन की अवधि में हम कार्य तो करते हैं लेकिन जब वह कार्य किसी पूर्व निर्धारित योजना पर नहीं होता तब हमें कठिनाई का सामना करना पड़ता है। विशेष अवसरों पर तो हमारी समझ में ही नहीं आता कि अब हमें कौन-सा मार्ग ग्रहण करना चाहिए? इससे बचने के लिए हमें एक लक्ष्य बना लेना चाहिए और उसी को ध्यान के साथ विघ्न और बाधाओं का सामना करते हुए आगे बढ़ना चाहिए। यदि इतिहास हमारा साथ देगा तो एक दिन अवश्य सफल होंगे। यदि डिग गये तो ईश्वर ही रक्षा कर सकता है। यही तो, इस जीवन के लक्ष्य को पूरा करना हमारा उद्देश्य हो लेकिन क्या इसी के द्वारा हम जीवित रह सकेंगे? नहीं, इसके साथ ही साथ दुनियादारी और सामाजिक कर्त्तव्यों को भी पूरा करना पड़ेगा, साथ ही हमारे मानसिक विकास के लिए अध्ययन, मनन और मनोरंजन की भी आवश्यकता पड़ती है।

अध्ययन के द्वारा हमारा लक्ष्य भी सिद्ध हो सकता है और मनोरंजन भी। मनन तो बहुत कम लोग ही किया करते हैं और यही कारण है कि आज हम अपनी त्रुटियों को न तो समझ ही पाते हैं और न उन्हें दूर करके अपने कल्याण में ही समर्थ होते हैं। मनोरंजन में प्रायः सभी कार्य और साधन आ सकते हैं। जो साहित्य हमारा मनोरंजन कर सकता है वही दूसरे के लिए दुखी भी बन सकता है। किसी को संगीत प्रिय है और किसी को कला।

हमारे समाज के नारीवर्ग में गृह-कार्य ही प्रधान है। उसमें चौका, चूल्हा, रोटी ही विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उससे और आगे बढ़े तो सीना-पिरोना, कढ़ाई-बुनाई भी होती है। कुछ को संगीत से भी प्रेम है। लेकिन ऐसी नारियाँ बहुत कम मिलेंगी जो साहित्य और कला से भी प्रेम रक्खें और अवकाश के समय उसमें अपने को लगायें। उससे दो काम सिद्ध हो सकेंगे। एक तो व्यर्थ के कामों से बच सकेंगी कि जिनसे कोई लाभ नहीं होता। प्रायः काम न मिलने पर ही तो किये जाते हैं क्योंकि खाली बैठा नहीं जाता। दूसरे एक गुण की प्रधानता जब उनमें आवेगी तो उन्हें स्वयं शान्ति मिलेगी साथ ही वे अन्य लोगों में भी आदर का स्थान प्राप्त कर सकेंगी। तीसरे जब वे स्वयं उन्नत और योग्य हो जायेंगी तो उनकी संतान भी उन्हीं का अनुकरण करेगी। इस प्रकार एक दिन आयेगा कि जब प्रत्येक नारी अपने जन्मसिद्ध अधिकार पाकर राष्ट्र-निर्माण की विधायिका बनकर पूजा की देवी बन सकेगी।

अतः उन्हें चाहिए कि वे प्रतिदिन की विनचर्या से निवृत्त होकर जब कभी अवसर पाएं तो साहित्य, संगीत और कला तीनों का अभ्यास करें। जब उनमें इस प्रकार की सच्ची रुचि उत्पन्न हो जायेगी तो साधन अपने आप इकट्ठे हो जाएँगे और वे उसमें पूर्ण योग्यता प्राप्त कर अपने को, अपनी संतान को, अपने गृह और समाज तथा देश सभी को धन्य बना सकेंगी।

प्रयाग —रमाकांत त्रिपाठी
१८ फरवरी, ४६ बी० ए० 'साहित्यरत्न'

* * *

रीवाँ राज्य और महाराजा गुलाबसिंह

सोलंकियों के वंशधर महाराज गुलाबसिंह के गद्दी से उतार दिये जाने के सम्बन्ध में पत्रों में अनेक चर्चाएँ हुई हैं और राज्य के इतिहास तथा उसके नायक के जीवन पर भी काफी प्रकाश डाला गया है।

रीवाँ राज्य का महत्त्व राजनीतिक दृष्टि से उसकी मूल प्राचीन राजधानी बाँधवगढ़ के कारण अधिक है। रीवाँ का अजेय बाँधव दुर्ग वास्तव में दुर्गम है। चारों तरफ मीलों दलदल और सघन वन तथा दुर्ग का एक ही मार्ग, जिस पर विशाल लोहे का बेलन जो ऊपर से लुढ़का देने पर शत्रु की समस्त पैदल सेनाओं को नष्ट कर देने में समर्थ है, सदैव शत्रुओं के दर्प को चूर्ण करता रहा है। ब्रिटिश वाहिनी भी इसके आगे अपना मस्तक झुका-झुकाकर वापस आई और सन् १८१३ में जो संधि हुई वह बाँधवेश और इँग्लैंड-नरेश के बीच हुई। रीवाँ नरेश इसी कारण बाँधवेश कहलाते हैं, जो अँगरेज जाति को सदा असह्य है।

राज्य की मुख्य आमदनी उसके जंगलों से है, जिसके ठेके ब्रिटिश कंपनियों को न देकर राज्य के व्यापारी तथा टाटा प्रभृति कंपनियों के पास हैं जिसकी मुख्य शर्त है कि कार्यकर्त्ता मैनेजर को छोड़कर बाकी राज्य के निवासी ही होंगे।

राज्य में ब्राह्मण जाति का निवास अत्यधिक है जिनका पेशा माँगने खाने के सिवा कुछ तथा उन्हें कर्मवीर बनाने में महाराज गुलाबसिंह का विशेष हाथ रहा है। सन १९३२ में अनिवार्य खेती की घोषणा करके तथा जो जातियाँ हल चलाना गर्हित कार्य समझती थीं उनके द्वारा विशेष कर ब्राह्मण और बघेल क्षत्रियों से सामूहिक रूप से हल चलवाकर साथ-साथ स्वयं भी खेत जोतकर कृषि की उन्नति की, और राज्य की गरीबी दूर की। पहले तो महाराज का बड़ा विरोध हुआ पर आज सारा रीवाँ-राज्य उनका ऋणी है।

रिश्वतखोरी दूर करने के लिए महाराज गुलाबसिंह अपने रिश्ते के भाइयों से भी न चूके और उन्हें भी अपराधी पाकर कठोर से कठोर दण्ड देकर रिश्वतखोरों को चेतावनी दी फलस्वरूप राज्य में रिश्वत का नाम भी न रहा, पर रीजेंसी काल में यह बुराई फिर प्रारम्भ हो गई है।

वाइसराय लार्ड वेवेल राजाओं से प्रजा के संपर्क में आने की अपील करते हैं पर उन्हीं के पोलिटिक्स डिपार्टमेंट द्वारा प्रजावत्सल सर गुलाबसिंह का गद्दी से उतारा जाना उसकी अपील पर पानी फेरता है।

मथुरा —दाऊदयाल शर्मा
१४ मार्च ४६ 'व्रजेश'

* * *

लखनऊ रेडियो पर कवि-सम्मेलन

गत १६ मार्च को लखनऊ रेडियो पर कवि-सम्मेलन के ब्राडकास्ट को मैंने भी सुना। कवि-सम्मेलन में भाग लेनेवाले कवि श्री शान्तीप्रसाद चंडोला, केशवप्रसाद शुक्ल, कैलाशचन्द्र बृहस्पति, कैलाशनारायण, महेशशरण जौहरी 'ललित' और चन्द्रभूषण त्रिवेदी थे।

यह दूसरा कवि-सम्मेलन लखनऊ रेडियो का था जिसमें सभापति का स्थान रिक्त रहा। शायद 'अनाउनसर' महोदय ने उसकी आवश्यकता ही न समझी और यदि समझी भी, तो स्वयं उन्होंने उसकी पूर्ति कर दी हो।

इस कवि-सम्मेलन की एक और विशेषता थी जो कि विशेषरूप से उल्लेखनीय है। 'वाह! वाह!' और 'फिर कहिए फिर कहिए' की ऐसी धूम थी कि कविता की पंक्ति ठीक से सुनाई ही नहीं पड़ती थी। सुना गया था कि कवियों की प्रशंसा और उनके यश का श्रोताओं में प्रचार करने के लिये लखनऊ के चुनिंदे भाँड़ों को निमन्त्रण दिया गया था। जोर-शोर की वाहवाही से इसका स्पष्ट आभास मिलता था।

मुझे अत्यन्त दुःख के साथ कहना पड़ता है कि रेडियो पर कविता पढ़नेवाले कवि-पुङ्गव अपने अन्य भाइयों का साथ जिन्होंने हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन-द्वारा चलाये गये बहिष्कार आन्दोलन में पूर्ण-रूप से सहयोग प्रदान किया है, नहीं दे रहे हैं। जो भले मानुष स्वाभिमान को चाँदी के कुछ टुकड़ों पर निछावर कर सकते हैं, क्या वह वास्तव में हिन्दी साहित्यिक कहलाने योग्य हैं? इनके कानों में मालूम पड़ता है इस आन्दोलन के पुकार की जूं तक नहीं रेंगी। रेंगती भी कैसे? चिकने घड़े पर कभी पानी नहीं रुकता है? सम्भवतः इनके विचार से जो लोग इस बहिष्कार-आन्दोलन में भाग ले रहे हैं वे मूर्ख हैं, पागल हैं और नासमझ हैं और वे स्वयं जो भाग नहीं ले रहे हैं बड़े बुद्धिमान्, विद्वान् और योग्य हैं। मुझे तो भय यह है कि कहीं इन विद्वानों की बुद्धि को चाँदी के टुकड़ों की गर्मी पागल न बना दे क्योंकि बिना इनके तो हिन्दी-साहित्य सूना ही रह जायेगा। यही तो अब उस नौका के कर्णधार हैं। क्या हम आशा करें कि रेडियो पर कविता पढ़ने की धुन में मस्त कवि-पुङ्गव भविष्य में सद्बुद्धि से काम लेंगे?

३३ स्टेनली रोड, —महेन्द्रनाथ 'मधुकर'
प्रयाग

* * *

स्वर्गीय पंडित कृष्णकान्त मालवीय की जीवनी और संस्मरण

मेरा विचार पूज्य पंडित जी की जीवनी छाप कर प्रकाशित करने का है। इसलिए पंडित जी के स्नेही मित्र उनसे सम्बन्धित संस्मरण भेजना चाहें अवश्य भेजें। मैं उनका हृदय से आभारी रहूँगा। पंडित जी किसी व्यक्ति-विशेष के नहीं, वरन् सबके थे। उन्होंने देश के प्रति जिस त्याग और तपस्या का परिचय दिया था, वह किसी से छिपा नहीं है। वे देश के लिए जिए और उसके लिए मरे। लेकिन ऐसी महान् आत्मा के जीवन-परिचय से हमारे देशवासी आज भी अनभिज्ञ हैं। यह दुखद विषय है। इस त्रुटि को पूर्ण करने का भार मैंने अपने ऊपर लिया है। इस पुनीत कार्य को सफल बनाना हिन्दी लेखकों एवं स्नेही बन्धुओं पर है। आशा है, पंडित जी के प्रति श्रद्धा रखनेवाले लेखक तथा हितैषी इस कार्य में मेरा हाथ बटाएँगे।

'अभ्युदय' प्रेस —रामभरोस
प्रयाग मालवीय

परिणीता

उलझनों के कौतूहलप्रद वातावरण में ललिता और शेखर का प्रेम-सम्बन्ध इस उपन्यास में बड़ी ही कुशलता के साथ चित्रित किया गया है। उपन्यास में प्रेम की पावन गंगा का प्रवाह सर्वत्र व्याप्त है और उपन्यास सुखान्त है। इसके एक-एक शब्द में आपको रोचकता और कौतूहल का दर्शन होगा। मूल्य १।–)

मैनेजर—(बुकडिपो) इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव-जीवन में स्त्री-पुरुष का सहयोग

क्या पश्चिमी शिक्षा दीक्षा समाज के लिए हितकर है ?

लेखक, श्री बेचनराम

आज स्त्रियों की समस्या को लेकर समाज में एक तहलका-सा मचा हुआ है। शायद ही कोई पत्रिका ऐसी हो जिसमें स्त्रियों के लिए स्तम्भ सुरक्षित न हों। अब तो साप्ताहिकों, दैनिकों में प्रथा चल निकली है। स्कूलों, कालेजों, सभा-सोसाइटियों में, सभी जगह विवाद हो रहे हैं, प्रस्ताव पास किये जा रहे हैं। सब कुछ हो रहा है, पर यह सारा आन्दोलन, यह सारा बवंडर जीवन की ऊपरी सुविधाओं तक ही परिमित है, और इसीलिए हम देखते हैं कि वास्तव में स्त्रियों के सच्चे सुख में कोई वृद्धि नहीं हो रही है और न स्त्रियाँ स्त्रीत्व में सच्चे आदर्श की ओर उठ रही हैं। अशांति, अनीति जोरों के साथ फैल रही है। संघर्ष बढ़ रहा है पर सुख के मीठे अमल जल का वह सोता इस मरुभूमि में नहीं दिखाई पड़ता, जिसकी खोज में सब पागल हो रहे हैं और जिसके पाथ बिना हृदय की प्यास बुझने का कोई चारा नहीं।

जीवन की रचना में स्त्री-पुरुष सहयोगी हैं, दोनों एक दूसरे के पूरक अंग हैं, दोनों का व्यक्तित्व न तो व्यक्तिगत जीवन के ऊँचे सुख की दृष्टि से अलग किया जा सकता है न समाज एवं मानव-जाति के उत्थान के विचार से। इसमें भी संदेह नहीं कि समाज के नैतिक विकास में पुरुष और स्त्री का दर्जा बराबर रक्खे बिना काम नहीं चल सकता। इसके बिना नीति और सदाचार की परिभाषा संकुचित रह जायेगी। यदि स्त्रियाँ सदाचारिणी रहें और पुरुष सदाचार से होली खेलते रहें तो भी मानव-विकास की गति रुक जायेगी।

स्त्री समाज की माता है। यह वह निर्झरिणी है जो दिन हो या रात, दुर्दिन हो या सुदिन कठिनाइयों की चट्टानों को तोड़ती-फोड़ती बहती ही रहती है और समाज की तलहटी को सदैव हरा-भरा रखती है परन्तु अब मैं अनुभव करता हूँ कि यह मानव समाज की माता होने का दावा छोड़ रही है। सभ्यता और संस्कृति के निर्माण में उनका जो स्थान है उससे पीछे हट रही है। वह पथ-भ्रष्ट होकर अपने युग-युग के गौरव का तिरस्कार कर रही है और प्रतिक्रिया तथा प्रतिहिंसा की धारा में बहती जा रही है।

पश्चिम ने हमारे जीवन में एक उद्वेग पैदा कर दिया है जिसकी झोंकों में हमारी दृष्टि और हमारा मन अस्थिर हो रहा है। ऊपर की बातों को भेद कर नीचे नहीं पहुँच पाते। हमारी दृष्टि सतह पर रह जाती है, अन्दर गहराई में बात क्या है, यह देखने तथा समझने में हम असमर्थ रह जाते हैं। इसी विस्मृत और मूर्छित नारी को लेकर सभ्यता का मेरुदंड टेढ़ा हो रहा है। समाज अशान्त और शाप-ग्रस्त होता जा रहा है, गृह-जीवन हाहाकार से भर गया है। जिस गृह की नींव पर सम्पूर्ण सभ्यता का ढाँचा बना है जब वही अंधकारमय हो रहा है तब समाज में प्रगति क्या होगी ? आधुनिक काल में प्रायः गृहस्थ-जीवन निरानंद, सूना एवं विषादपूर्ण दीख पड़ता है। प्रत्येक प्राणी अभिशाप, दुःखी हृदय पर परदा डाले हुए अन्दर-अन्दर कराहते ,पर दुःख की घूंट को अपने मान की खातिर पी जाते हैं, और यही वेदना, व्यथा और संचित हाहाकारमवाद की भाँति अन्दर जाकर समाज के शरीर को विषैला और निकम्मा बना रहा है।

यह वही भारतवर्ष है जहाँ की महिलायें विदुषी होती थीं, बड़े-बड़े शास्त्रज्ञों से शास्त्रार्थ करती थीं, जो अपना सबसे उत्तम आभूषण पति-भक्ति समझती थीं। वस्तुतः प्रतिव्रता स्त्री इस संसार में पति के लिए सर्वश्रेष्ठ ईश्वरीय वरदान है। पति का भला चाहना, सदा पति के अनुकूल आचरण करना, अपने पति को अपने से भिन्न न समझना, दुःख में पति की सेवा करना, साथ न छोड़ना, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मनुष्य की सहधर्मिणी और सहयोगिनी बनना, मधुर भाषण आदि से अपने पति का उत्साह बढ़ाना और कुमार्ग से बचाना आदि पति-भक्ति है। जो स्त्री इन सब गुणों से युक्त होती है, वह अपना, अपनी सन्तान का, अपने पति का, अपने पितृकुल का, श्वशुर कुल का तथा सबका मुख उज्ज्वल करती है और सबका कल्याण करनेवाली होती है।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित एम० एल० ए०।

पतिव्रताओं की गणना में सबसे प्रथम सीता का नाम लिया जाता है। उनके पश्चात् शैव्या, सावित्री, दमयन्ती आदि अन्य देवियों की गणना होती है। इन नारियों के जीवन से हमें जो शिक्षायें मिलती हैं उसमें एक है कष्ट के समय पति की सहायता करना। दूसरी है प्रलोभनों के आने पर भी सतीत्व की रक्षा करना। वस्तुतः एक पतिव्रता स्त्री में जो अनेक उत्तमोत्तम गुण होने आवश्यक हैं, उनकी परीक्षा इन्हीं दो अवसरों पर होती है। सुख में तो सैकड़ों साथी और सहायक होते हैं, परन्तु दुःख में साथ देना और सच्ची सहायता करना केवल पतिव्रता स्त्री का ही काम है। एक पतिव्रता स्त्री ही ऐसी होती है जो घोर संकट में भी साथ देती है। तुलसीदास जी ने लिखा है :—

"धीरज धर्म मित्र अरु नारी
आपत काल परखिए चारी।"

सच तो यह है कि राम, सत्यवान् आदि पुरुषों ने अपने जीवन में कुछ कर सके तो यह उनकी स्त्रियों का ही प्रभाव था। आपत्तियों से छुटकारा पाने का इनकी स्त्रियों के सतीत्व पर ही था। भी कितने ऐसे भाग्यशाली पुरुष कहे हैं जो अपनी नारी के सदुपदेशों, वर्षों उसकी सदिच्छाओं और प्रेम से संसार-संग्राम में विजयी होते आ हैं। इतिहास इसके लिए पूर्ण रूप से है कि स्त्रियों ने, अपने पति के जीवन कुछ का कुछ बना दिया। उसके में जो परिवर्तन माता, पिता, भाई, या यों कहिये जितने भी शुभचिन्तक नहीं ला सके वही परिवर्तन पतिव्रता स्त्री ने ला दिया। लोक-से तो इसका महत्त्व है ही, इसके अतिरि भी इसका गौरव प्रत्येक दृष्टि से भी है। शास्त्र इसका पूर्णरूपेण अनुमो करता है कि जो स्त्री पतिव्रता होती वह परलोक में भी उच्च स्थान प्राप्त की अधिकारिणी होती है और उसकी गति होती है।

पत्नी के प्रति पुरुषों को भी कुछ श्यक कर्त्तव्य हैं। उन्हें भी पत्नी धर्म ध्यान रखना चाहिए। उन्हें यह निर्दय विचार कभी भी नहीं लाना चाहिए स्त्रियाँ पैर की जूती हैं। उनका करना, तथा उनसे सदैव प्रेम रखना चाहि अत्याचार, मारपीट आदि कुकर्मों से बच चाहिए। यदि इस प्रकार पुरुष अपना करके जीवन-पथ में अग्रसर होते हैं वे स्त्री से पति-भक्ति, पति-धर्म पालन की आशा के अधिकारी बन जाते हैं।

एक गृहस्थ की बालिकायें आपस में मनोविनोद कर रही हैं।

महादेवी का
विवेचनात्मक गद्य
संग्रहकर्ता—श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय, एम० ए०
(श्री महादेवी वर्मा के १० निबन्धों का संग्रह।)
एक मत :—
.....ये लेख वैज्ञानिक या निरे बौद्धिक विश्लेषण-प्रधान न होकर एक प्रबुद्ध और सतत प्रज्वलनशील अनुभूति के परिणाम हैं। इनका दृष्टिकोण वैज्ञानिक अथवा दार्शनिक का तत्त्वान्वेषी न होकर कलाकार का सामान्य स्वरूपमय जीवन-दर्शन है। .....छायावाद और रहस्यवाद को लेकर अनेक भ्रान्त और निर्मूल धारणाएँ हमारे साहित्य में रूढ़ हो चली थीं उनके विषय में महादेवी जी के इन पारदर्शी निबन्धों से अवश्य ही हम प्रकृत तत्व का परिचय पा सकेंगे।—'वीणा'
द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो गया है।
मूल्य दो रुपये बारह आने।
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचना

चढ़तीधूप

(उपन्यास)

लेखक, श्री त्रिलोकीनारायण दीक्षिति, एम० ए० रिसर्च-स्कालर

'अंचल' हिन्दी के चिर-परिचित उदीयमान साहित्यिक हैं। कविता के क्षेत्र में उनकी विकसित प्रतिभा और भावुकता के दर्शन होते रहते हैं। इस थोड़े समय के अन्दर ही उन्होंने साहित्य में अपना एक स्थान बना लिया है। इस संघर्षवान् युग में, जब कि विश्वव्यापी सकटों से मानव पीड़ित और व्यथित है हिन्दी के केवल दो ही ऐसे कवि दृष्टिगोचर होते हैं जो अपनी मधुर वीणा के तारों से हिन्दी के साहित्यिकों को मानसिक भोजन प्रदान कर रहे हैं। उनमें से सर्वप्रथम उल्लेखनीय सर्वश्री 'निराला' हैं और शेष अंचल तथा चन्द्रमुखी ओझा 'सुधा' हैं। अंचल में कवित्व-प्रतिभा निर्विवाद रूप से असाधारण कही जा सकती है। लेकिन अंचल केवल कल्पना और भावुकता-द्वारा निर्मित संसार में भ्रमण करनेवाले जीव नहीं हैं। जीवन की कठिनाइयों तथा अनवरत संघर्षों को भी उन्होंने आँख खोलकर देखा है। मानव-जीवन की भीगी हुई कड़ुवाहट ने उन्हें यथार्थवादी बना दिया। उनकी 'ये बहुतेरे' में इस परिवर्तन का भलाभाँति आभास मिलता है। भयंकर संकट के बादलों से आच्छादित, भारतीय राजनीति के क्षितिज पर भी अंचल की दृष्टि पड़ी। फलतः समय और देश के साथ उन्हें कदम मिलाकर चलने के हेतु विवश होना पड़ा। 'चढ़तीधूप' में उनकी चढ़ती उपन्यास-कला स्वयं इन सब बातों को पुकार पुकारकर कहती है। 'चढ़तीधूप' लक्ष्मी के वरद पुत्र लक्षाधीशों तथा दरिद्रता में जलते और मरते, आधी धोती पहनकर तथा आधी रोटी खाकर कहने-मात्र के लिए जीवित मिल के मजदूरों के संघर्ष की एक लम्बी गाथा है। 'चढ़तीधूप' धन के साथ खेलनेवालों और धन के लिए अपने को मिटा देनेवालों के संघर्ष का एक महान् अलबम है जिसमें 'पराजित भारतीय राजनीति के प्रभावों में पलते' हुए एक विशेष युग के सामाजिक जीवन और विचार-धारा को अभिव्यक्त किया गया है। एक ही महान् कलाकार की दो कृतियाँ धनी और निर्धन में उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव का-सा अन्तर है। एक वर्ग पतन से उत्थान की ओर अग्रसर है, उसमें विद्रोह की भावना प्रस्तुत है उन्नति की आकांक्षा है, सुख की लालसा है, साम्यवाद का पोषक है; परन्तु धन की शक्ति से सम्पन्न वर्ग उन प्रगतिशीलों को अपनी सबसे बड़ी एड़ियों से कुचल देने का प्रयास करता है, जिसमें सहृदय देश के सपूतों का बलिदान चढ़ जाता है। 'चढ़तीधूप' में आगे बढ़नेवालों का दृढ़ स्वर सुनाई देता है लेकिन दमन की शक्ति उन पर वज्रपात करती है। फलतः वे मूक हो जाते हैं।

ममता के प्रतीक शहरों से दूर—बहुत दूर एक गाँव मोहन का जन्मस्थान है। मोहन एक कर्मठ तथा कर्तव्यशील आत्मक युवक है। वह स्वप्नशील तथा विशाल हृदयवान् विद्यार्थी है। ममता उसी गाँव में रहनेवाली एक युवती है। युवावस्था की अरुणिमा फूटने के पूर्व से ही मोहन और ममता एक दूसरे के साथ प्रेत और छाया की तरह हैं। मोहन के ज्ञान-आलोक से वह भी आलोकित होती है। मोहन उसे साथ ही साथ संसार की गति-विधि का भी परिचय दिया करता है। मोहन और ममता में कौटुम्बिक नैकट्य के कारण मिलने-जुलने में पर्याप्त स्वतंत्रता है। वे नदी की रेती में पड़े हुए साथ-साथ घंटों चन्द्र और चन्द्रिका के सौन्दर्य की ओर निहारा करते हैं। और विविध विषयों पर वार्तालाप किया करते हैं। मोहन इन्टर

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि प्रोफेसर 'अंचल' पास करने के पश्चात् बी० ए० की पढ़ाई के लिए कानपुर जाता है। उसके पिता इसका विरोध करते हैं। लेकिन विरोध दृढ़ निश्चय के आगे झुक जाता है। उसके पिता उसका विवाह एक सुसम्पन्न कन्या से करना चाहते हैं परन्तु मोहन के लिए यह प्रस्ताव अमान्य है। मोहन और ममता में इतनी निकटता देखकर ममता के पिता उसे मोहन के हाथों में देकर सुखी होना चाहते हैं पर मोहन के पिता के मस्तिष्क में धन और आँखों में चाँदी की चमक उन्हें यह सम्बन्ध न करने के लिए विवश करती है। इसी अवस्था में मोहन आजीवन अविवाहित रहकर देश-सेवा जन-सेवा का कठिन व्रत ले लेता है। विवाह से ऊपर बहुत उच्च इस सम्बन्ध को स्थापित करके वह सदैव अपने को ममता के साथ एक असाधारण बन्धन में बँधा हुआ पाता है। वह आत्मा का आत्मा से बन्धन अधिक दृढ़ समझता है।

मोहन कानपुर में आकर अपने मित्र श्री वर्मा के घर पर ठहरता है। वर्मा जी भी जनता के सेवकों की पहली कतार के आदमी हैं। वर्मा जी की बहन सीता भी उन्हीं की प्रतिरूप है। सहसा एक दिन ममता का पत्र पाकर मोहन गाँव गया तो उसे पता लगा कि ममता का विवाह कानपुर के किसी सम्पन्न व्यक्ति से हो रहा है। अनमने हृदय से ममता ने आज्ञा माँगी और प्रसन्न हृदय से मोहन ने आशीर्वाद दिया। मोहन का हृदय मोम के समान कोमल होते हुए भी ममता के आँसुओं की गर्मी से पिघल न सका। वह अविचल और अटल रहता है लेकिन उसके हृदय में ममता के प्रति ममत्व तो बना ही रहता है।

कानपुर में मोहन का ममता के यहाँ बहुत कम आना-जाना रहता है। एक दिन जब सीता ने मोहन को उसके यहाँ जाने के लिए बहुत विवश किया तो वह घर छोड़कर अन्यत्र रहने लगता है। मोहन का ममता के यहाँ आना उसके पति को बड़ा अप्रिय था। उपन्यास के उत्तरार्ध भाग में मजदूरों की हड़ताल और मिल-मालिकों के साथ संघर्ष का चित्रण है। हड़ताल जारी था। दिन भर काम करते करते मोहन थक गया। दूसरे दिन का कार्यक्रम निर्धारित करने के लिए रात में मोहन अपने साथियों के साथ सीता के घर जा पहुँचा। मीटिंग की समाप्ति पर सब लोग अपने-अपने घर गये और रह गये केवल मोहन और ममता। शीतल चन्द्रिका ने उनके यौवन को आवेग और शान्त अतृप्ति से भर दिया। और.....और वे मानव सुलभ दुर्बलता में अपनी तृप्ति का साधन ढूँढ़ने लगे। रात के बचे हुए कुछ घंटों बाद भोर हुआ। फिर वही हड़ताल, वही कर्तव्य-पथ। क्रान्ति की बलिवेदी पर मोहन ने अपना जीवन बलिदान कर दिया। और निराश, हताश तथा जीवन को जड़वत् अनुभव करती हुई ममता और सीता मोहन-द्वारा अधूरे छोड़े हुए कार्य को पूरा करने के लिए आगे बढ़ीं।

उपन्यास में ममता का चरित्र विशेष रूप से रोचकता पैदा कर देता है। ममता में सौन्दर्य, आत्मविश्वास तथा स्वाभिमान है; और सबसे ऊपर है उसका ममत्वपूर्ण हृदय। जब उसका पति मोहन के प्रति झूठे आक्षेप करता है तो ममता उनका निर्भीकता तथा तर्क के साथ उत्तर देती है। सत्यता के आधार पर टिके हुए उसके तर्क पति को पराजित कर देते हैं। उसकी वाणी में प्रदीप्त नारित्व प्रतिबिम्बित हो उठता है। ममता अमरलोक की देवी भी नहीं है। वह इसी संसार में हाड़-मांस की स्त्री है। उसके हृदय में भी दुर्बलता के चिह्न हैं; परन्तु उन दुर्बलताओं पर विजय प्राप्त करने के लिए मोहन उसे मदद किया करता है। जब कभी वह भावावेश में बहने लगती है मोहन उसे रोककर ठीक मार्ग पर ले आता है। उपन्यासकार की सबसे अधिक सफलता है ममता। ममता के संकल्प-विकल्प, आशाएं, आकांक्षाएँ, बाह्य और अन्तर्द्वन्द्व सभी इतने स्वाभाविक हैं कि वह हमें आद्योपान्त अपनी ओर आकर्षित किये रहते हैं। सीता के चरित्र-चित्रण में भी लेखक को काफी सफलता मिली है। और मोहन में कहीं-कहीं हमें अंचल जी ही की छाया दृष्टिगत होती है।

जनक्रान्ति तथा मार्क्सवादी विचारों से ओत-प्रोत इस प्रकार के उपन्यास ही जनता में जाग्रति उत्पन्न करने में सफल हो सकते हैं।

चढ़तीधूप (उपन्यास) लेखक, प्रोफेसर अंचल एम० ए०। प्रकाशक, हिन्दुस्तानी पब्लिकेशन्स, शाहगञ्ज, प्रयाग मूल्य ४)।

मझली दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पिता से विहीन भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर सकती है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

फिल्मस्टारों की तरह त्वचा की रक्षा कीजिये!

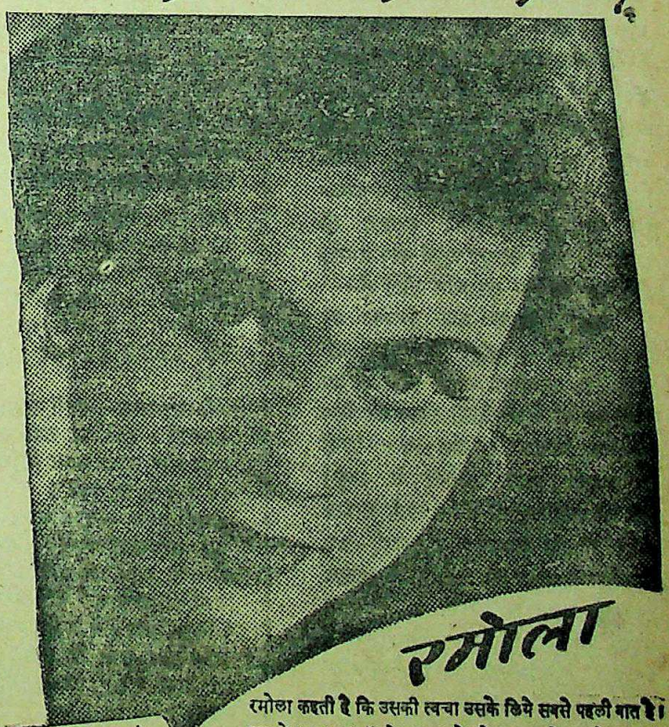

रमोला

रमोला कहती है कि उसकी त्वचा उसके लिये सबसे पहली बात है। उसको वह लक्स टॉयलेट साबुन के रोज़ाना इस्तेमाल से बहुत ही निर्मल और मुलायम रखती है। "मेरे सौंदर्य प्रसाधन की यह सरल रीति है"—यह उसका कहना है, और साथ ही दावा है कि इस शुद्ध और खुशबूदार साबुनके तेज फेनसे किसी भी स्त्री की त्वचा मुलायम, सुकोमल और निर्मल हो सकती है।

लक्स टॉयलेट साबुन

LTS. 180-111-40 HS — LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'एक दिन का सुलतान' फिल्म में प्रसिद्ध अभिनेत्री मेहताब।

'एक दिन का सुलतान' फिल्म कैसा है ?

मुगलकालीन एक ऐतिहासिक कथानक का रोचक चित्रण

लेखक, श्री हरस्वरूप माथुर

'एक दिन का सुलतान' फिल्म के निर्देशक श्री सोहराब मोदी।

मिनर्वा मूवीटोन के द्वारा निर्मित तथा निर्देशक सोहराब मोदी द्वारा निर्देशित 'एक दिन का सुलतान' चलचित्र मुगलकालीन एक ऐतिहासिक घटना को कल्पना के अतिरेक में रञ्जित करके प्रस्तुत किया गया है।

जहाँ तक ऐतिहासिक घटनाओं का सम्बन्ध है, वह सम्पूर्ण चलचित्र में न्यून मात्रा में है, कल्पना का योग अधिक है। शेरशाह और हुमायूं के युद्ध के पश्चात् नदी में डूबते हुए हुमायूं की सक्का द्वारा रक्षा और उसका एक दिन के लिए 'बादशाह' बनना इतनी तो इतिहासि-प्रसिद्ध प्राप्त घटनाएं हैं। शेष कल्पना-द्वारा कथाक्रम को विकसित किया गया है। शेरकोह की पुत्री पर निजाम सक्का का आसक्त होना, उसी की प्राप्ति के लिए संघर्षों का सामना करते हुए 'एक दिन का सुलतान' बनना और उससे विवाह करना। यह काल्पनिक प्रसंग ऐतिहासिक तथ्य में सम्मिलित किया गया है।

कहानी-लेखक की लेखनी शक्तिशाली नहीं प्रतीत होती। कारण यह है कि पहले से ही घटना-विकास-क्रम में बाधा-सी पड़ती है और कथा अस्पष्ट हो जाती है, कथा का एक चतुर्थ भाग समाप्त होने पर स्पष्टता का बोध होता है।

भाषा पूर्णतया शुद्ध क्लिष्ट उर्दू है और मुझे यह कहते भी संकोच नहीं होता कि साधारण उर्दू का परिचय रखते हुए भी किसी किसी स्थान पर मेरा मस्तिष्क 'जवाब' दे देता था। हिन्दी भाषा-भाषी जनता संवादों के सम्पूर्ण अर्थ को कदाचित् ही समझ पाये, भावार्थ समझ में आ सकता है। जहाँ तक संवादों की शक्ति का प्रश्न है, वे सशक्त हैं किन्तु भाषा की दृष्टि से उर्दूभाषी जनता को ही पूर्णतया बोधगम्य होंगे। कदाचित् मुसलमानी कथानक होने के कारण ही उर्दू का इतना अधिक प्रयोग किया गया है।

चलचित्र की दृश्यावली सुन्दर, उपयुक्त और वैभव की प्रतीक है किन्तु हुमायूं के नदी में डूबने का दृश्य शिथिलता से पूर्ण है। यद्यपि हुमायूं के स्कंधावार में अग्नि लगने के दृश्य को सजीव करने की चेष्टा की गई है फिर भी वह अधिक सफल नहीं है। ध्वनि-आलेखन तथा चित्रालेखन सुन्दर और सफल है।

संगीत और नृत्य आदि में कोई विशेषता नहीं है, साधारण है। रफीक गजनवी का संगीत-निर्देशन सफल नहीं रहा। बली साहब के गायन भी—एक को छोड़कर—विशेष सुन्दर नहीं हैं। चलचित्र में हास्य की योजना अधिक हो जाने के कारण उसका ऐतिहासिक गाम्भीर्य कम हो जाता है किसी-किसी स्थान पर हास्य की अधिकता के कारण अस्वाभाविकता आ गई है।

अभिनय की दृष्टि से सोहराब मोदी के अन्य ऐतिहासिक चलचित्रों की अपेक्षा यह कम सफल है। सर्वश्रेष्ठ अभिनय गुलाम मुहम्मद का है। केवल एक स्थान पर पलक गिरने के कारण जो शैथिल्य इनके अभिनय में आता है, दूसरे ही क्षण वह शैथिल्य को अपने सफल अभिनय में छिपा लेते हैं। शेरकोह का गुलाममुहम्मद ने अभिनय किया है। मेहताब, शेरकोह की पुत्री के रूप में सफल है। सादिकअली ने हुमायूं के रूप में अभिनय किया है जो चलचित्र के पूर्व भाग में इतना सुन्दर नहीं है जितना की पिछले भाग में। निजाम सक्का के रूप में वास्ती पहले सफल बाद को असफल। वास्ती का चुनाव हमें जँचा नहीं। इसके अतिरिक्त हास्य-अभिनेता घोरी का अभिनय भी सफल रहा। अभिनय की दृष्टि से यह द्वितीय कोटि का सुन्दर चलचित्र है।

निर्देशन के विषय में दो शब्द कहने हैं। सोहराब मोदी के जितने भी ऐतिहासिक चलचित्र बने, मेरी दृष्टि में, 'एक दिन का सुलतान' उन सब चलचित्रों से अभिनय और निर्देशन की दृष्टि में गिरा हुआ है। ऐतिहासिक चलचित्रों में कल्पना की अतिरञ्जना अधिक उचित नहीं, वह उसकी प्रगति में बाधक होती हैं निर्देशक मोदी यदि यह ध्यान में रखकर कि ऐतिहासिक चलचित्रों की मर्यादा के बाहर वे उन्हें निर्मित तथा निर्देशित न करें तब इस प्रकार के चलचित्र गिरती हुई कला को रोक लेंगे।

चलचित्र में हास्य की योजना आवश्यकता से अधिक हुई है। निर्देशक को, यह जो एक प्रकार की उच्छृङ्खलता है, इस पर नियन्त्रण करना उचित है क्यों चलचित्र की गम्भीरता नष्ट होने का रहता है। हास्य की अधिकतर कुरुचिपूर्ण निर्मित होने के कारण ही देसाई का 'चन्द्रगुप्त' श्रेष्ठ फिल्म बन सका था यद्यपि हमें यह विश्वास कि मोदी के चलचित्र नीचे नहीं फिर भी 'एक दिन का सुलतान' देख हमारी यह सम्मति है कि ऐतिहासिक चित्रों का गाम्भीर्य नष्ट न होने जाना चाहिए।

निर्देशक की चेष्टा से निर्देशन सफल है। अभिनेताओं का दोष भी कम फिर भी 'एक दिन का सुलतान' श्रेणी का सुन्दर चलचित्र है, इसमें करने की आवश्यकता नहीं है।

हमारी उत्तमोत्तम पुस्तकें

उत्कृष्ट श्रेणी की ये पुस्तकें अधिकारी विद्वानों के द्वारा लिखी गई हैं। इनकी लोकप्रियता का यही कारण है। प्रत्येक पढ़े-लिखे परिवार में इनकी एक-एक प्रति अवश्य होनी चाहिए।

धार्मिक पुस्तकें

सचित्र-हिन्दी-महाभारत — महाभारत का अक्षरशः अनुवाद। अगणित रंगीन और सादे चित्रों के कारण महाभारत का यह संस्करण जैसे बहुत ही नयनाभिराम है वैसे ही सीधी और सरल भाषा में लिखा हुआ होने के कारण स्त्री-बच्चों से लेकर बड़े-बूढ़ों तक के लिए उपयोगी है। मूल्य ७०) सत्तर रुपये।

हिन्दी-महाभारत—इसमें महाभारत के अठारहों पर्वों की कथा बहुत ही मधुर और सरल भाषा में लिखी गई है। मूल्य ६) छः रुपये।

श्रीमद्भागवत—सरल भाषा में किया गया अविकल अनुवाद। महाभारत की तरह इसमें भी सादे और रंगीन चित्रों की भरमार है और सरल भाषा में लिखा हुआ होने के कारण आबाल-वृद्ध-वनिता सभी के लिए उपयोगी है। मूल्य १५।) पन्द्रह रुपये पाँच आने।

ज्ञानेश्वरी-गीता—श्री स्वामी शंकराचार्य के मत के अनुसार गीता का मर्म समझाने के लिए महाराष्ट्र-प्रदेश के प्रसिद्ध संत श्री ज्ञानेश्वर जी महाराज के द्वारा की गई ज्ञानेश्वरी नामक टीका का हिन्दी-अनुवाद। मूल्य ५।-) पाँच रुपये पाँच आने।

सुखमार्ग—जीवन को सार्थक तथा सुखमय बनाने की उत्तम विधि। मूल्य ।।) आठ आने।

नीति-रत्नमाला—धर्मशास्त्र से छाँट-छाँटकर एकत्र किये गये ललित और उपदेशप्रद श्लोकों का संग्रह। प्रत्येक श्लोक का विस्तृत हिन्दी अनुवाद भी किया गया है। मूल्य ।।।-) तेरह आने।

चरित्रगठन—सदाचारी बनने के लिए जिन-जिन गुणों का होना आवश्यक है, उन सबकी इस पुस्तक में विशदरूप से विवेचना की गई है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

सदुपदेश-संग्रह—देश-विदेश के महात्माओं के उत्तमोत्तम उपदेशों का सुन्दर संग्रह। इस पर मनन करके हम अपने जीवन को सार्थक तथा सुखमय बना सकते हैं। मूल्य ।।) आठ आने।

दर्शन और जीवन—लेखक, श्री सम्पूर्णानन्द। इस पुस्तक में दर्शन के साथ जीवन का अनिवार्य सम्बन्ध दिखलाते हुए, प्रत्येक व्यक्ति को दर्शन क्यों पढ़ना चाहिए? इस प्रश्न पर विवेचनात्मक प्रकाश डाला गया है। दर्शनशास्त्र के प्रेमियों के निमित्त पुस्तक संग्रहणीय है। मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

प्राणायाम विज्ञान और कला—डाक्टर शोजा-बुरो ओटेव नामक सुप्रसिद्ध चिकित्सक के प्राणायाम-सम्बन्धी लगातार कई वर्ष के अनुभव का वर्णन। मूल्य १) एक रुपया।

आध्यात्मिकी—इस पुस्तक में हमारे ऋषि-मुनियों से लेकर नये से नये देशी और विदेशी आस्तिक और नास्तिक हर तरह के विद्वानों के मत का सार खींचकर रख दिया गया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मनुष्य-विचार—मन को वासनाओं से मुक्त करके विचारों को उन्नत बनाने की उत्तम विधि भली भाँति समझाई गई है। मूल्य ।-) पाँच आने।

कर्तव्य-शिक्षा—प्रत्येक मनुष्य किस प्रकार कर्तव्यशील, नीति-निपुण तथा सदा-चारपरायण बन सकता है यह बात इस पुस्तक में भली भाँति समझाई गई है। मूल्य १।=) एक रुपया ग्यारह आने।

उपदेश-कुसुम—फ़ारस के प्रसिद्ध नीतिकार शेखसादी के 'गुलिस्ताँ' नामक ग्रंथ के एक अध्याय का अनुवाद। मूल्य ।) चार आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र की राष्ट्र-भाषा-समस्या

गत ३ फ़रवरी के 'देशदूत' में श्री गोपाल इंदूरकर का 'महाराष्ट्र की राष्ट्र-भाषा-समस्या' शीर्षक लेख आँखें खोलने-वाला है। कुछ और कहने से पहले मैं यह बतलाना चाहता हूँ कि इंदूरकर जी ने सम्मेलन का मत भली भाँति व्यक्त नहीं किया। सम्मेलन हिन्दी को केवल प्रान्तीय भाषाओं के निकट होने के कारण ही राष्ट्रभाषा नहीं मानता। सम्मेलन हिन्दी को प्रथमतः राष्ट्रभाषा इसलिए मानता है कि वह प्राचीन राष्ट्रभाषा संस्कृत की उत्तराधिकारिणी है और मध्यदेश की अधिकांश जनता अर्थात् हिन्दुस्तानी या खड़ी बोली बोलनेवाली अधिकांश जनता की भाषा है। इंदूरकर जी लिखते हैं—"महात्मा जी सम्भवतः 'खत' को जनता का शब्द मानकर उसे पहला स्थान देंगे और 'चिट्ठी' तथा 'पत्र' को दूसरा।" क्या 'चिट्ठी' जनता का और 'खत'वाली जनता से अधिक जनता का शब्द नहीं है? क्या गाँवों में बसनेवाली जनता 'पाती' या 'पतियाँ', जो 'पत्र' के ही विकृत स्वरूप हैं, नहीं बोलती? आखिर कौन-सी 'जनता'? 'जनता' की कसौटी क्या है? मेरी समझ में गांधी जी तथा अन्य अहिन्दी लोग जो 'हिन्दुस्तानी' का समर्थन करते हैं सबसे बड़ी दलील यह करते हैं कि वे शहरों में रहनेवाले मुट्ठी भर लोगों की 'हिन्दुस्तानी' को जनता की हिन्दुस्तानी मान बैठते हैं। जनता की भाषा क्या है इसे वे जानते ही नहीं। गांधी जी तथा काका कालेलकर शायद 'मेहमान' को हिन्दुस्तानी मानेंगे। उन्होंने 'पाहुन', जो युक्त-प्रान्त के गाँवों में बोला जाता है, का नाम ही न सुना होगा। वे शायद 'मनुष्य' पर 'आदमी' को तरजीह देंगे क्योंकि वे क्या जाने कि युक्त-प्रान्त की अधिकांश 'जनता' 'आदमी' नहीं वरन् 'मनुष्य' जो 'मनुष्य' का अपभ्रंश है बोलती है। हमारे सौभाग्य से और हिन्दुस्तानी-वालों के दुर्भाग्य से उर्दू और 'हिन्दुस्तानी' (उर्दू का प्राचीन पर्याय) की माया शहरों के शिक्षित समुदाय तक ही सीमित रही। 'जनता' की हिन्दी हिन्दी ही बनी रही। शहरों का शिक्षित समुदाय तो अब 'खत' भी नहीं वरन् 'लेटर' बोलता है। अस्तु, सम्मेलन एक कृत्रिम हिन्दी को नहीं जिसके शब्दों की कसौटी प्रान्तीय-भाषाओं से निकटता हो, वरन वास्तविक 'जनता' की वास्तविक हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानता है। जनता की जबान पर इस हिन्दी की परिपाटी कबीर, तुलसी और सूर-द्वारा पीढ़ियों से होती आई है। यह हमारा सौभाग्य है अथवा यों कहिये कि यह भारत के इन हजारों वर्षों के भाषा-इतिहास का प्रत्यक्ष परिणाम है कि यह हिन्दी प्रान्तीय भाषाओं के भी सब प्रकार की हिन्दुस्तानियों की अपेक्षा अधिक निकट है। उन शब्दों के लिए जो जनता की बोलचाल में नहीं आते परन्तु जिनकी गम्भीर कामों के लिए आवश्यकता है सम्मेलन फ़ारस और अरब जाने से पहले भारत के खजाने को टटोलना चाहता है। यदि कुछ हिन्दी-भाषी सज्जनों को फ़ारस और अरब अधिक प्रिय हैं और इसलिए उर्दू की सृष्टि होती है तो यह हमारा दुर्भाग्य है, परन्तु उनके पीछे सम्मेलन अपना राष्ट्रीय मत और अपना राष्ट्रीय दृष्टिकोण कैसे बदल दे? जो विदेशी शब्द जनता की बोलचाल में घुल-मिल गये हैं उनके लिए हिन्दी का द्वार सदैव खुला रहा है और खुला रहेगा—इसका प्रमाण स्वयं आजकल की हिन्दी है। परन्तु इस कारण इस भाषा का नाम हिन्दी से बदलकर हिन्दुस्तानी नहीं हो जायगा। बँगला, मराठी, गुजराती इत्यादि में भी विदेशी शब्द वर्तमान हैं, परन्तु इस कारण किसी ने उनके प्राचीन नाम बदलने की चेष्टा नहीं की। वास्तव में हिन्दी और उर्दू के 'समन्वय से तैयार हुई भाषा' की ही कोई नींव जनता में नहीं है; हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा की फाइलों में भले ही हो। वह तो अब किसी राजनीतिक प्रयोजन को सिद्ध करने के लिए बनाई जा रही है। जो बात ऊपर सम्मेलन की राष्ट्र-भाषा के सम्बन्ध में कही गई है वही बात सम्मेलन की राष्ट्र-लिपि के बारे में लागू है। इंदूरकर जी लिखते हैं—"महात्मा जी हिन्दू-मुस्लिम एकता की दृष्टि से फ़ारसी या उर्दू लिपि तथा राष्ट्र-भाषा की दृष्टि से नागरी तथा उर्दू-लिपि सीखना आवश्यक समझते हैं।" क्या महात्मा जी की एकता एकतरफ़ा एकता है? वे हिन्दू-मुल्लिम एकता की दृष्टि से मुसलमानों-द्वारा देवनागरी लिपि सीखना भी आवश्यक क्यों नहीं समझते? ऐसी एकतरफ़ा एकता यदि हो भी गई तो टिकेगी कै दिन? महात्मा जी बंगाल, मद्रास और महाराष्ट्र के निवासियों को उर्दू लिपि सीखने का उपदेश देते हैं परन्तु सिन्ध, पंजाब और सीमा-प्रान्त के निवासियों को देवनागरी सीखने के लिये नहीं कहते। महाराष्ट्र और मद्रास में हिन्दी जाननेवालों को उर्दू सिखाने के लिए हिन्दुस्तानी प्रचार-सभाओं की स्थापना होती है परन्तु सिन्ध, पंजाब आदि में उर्दू जाननेवालों को हिन्दी सिखाने के लिए कुछ करना आवश्यक नहीं समझा जाता। हिन्दुस्तानीवाले चाहे यह चाहते हों या न चाहते हों, इसका फल केवल यही निकलेगा कि वास्तविक राष्ट्रभाषा होगी उर्दू और वास्तविक राष्ट्र-लिपि होगी फ़ारसी लिपि। उस समय पोतदार जी मराठी की रक्षा के लिए क्या करेंगे?

एक बात महाराष्ट्र की हिन्दुस्तानी-वाली राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति के अध्यक्ष श्री पोतदार से भी कहना चाहता हूँ। मराठी भाषा के अस्तित्व पर हिन्दी से नहीं वरन हिन्दुस्तानी से खतरा है। हिन्दी और मराठी तो सगी बहनें हैं। हिन्दी और मराठी की क्रियाओं और विभक्तियों का सम्मिश्रण तो हो ही नहीं सकता, अधिक से अधिक हिन्दी की शब्दावली का मराठी पर प्रभाव पड़ सकता है। परन्तु हिन्दी और मराठी की शब्दावली समान है और दोनों का एक ही स्रोत है। यदि मराठी के कुछ शब्दों में अदल-बदल हो ही जाय तो इससे मराठी के स्वरूप और संस्कृति में कोई अन्तर नहीं आयेगा। परन्तु आज जिस प्रकार अँगरेजी के प्रभाव के कारण भारतीय भाषाओं में अँगरेजी शब्द घुसते चले आ रहे हैं उस प्रकार जब हिन्दुस्तानी अर्थात् हिन्दी-उर्दू की खिचड़ी के प्रभाव के कारण मराठी में उर्दू शब्दों का प्रवेश होगा उस दिन पोतदार जी समझेंगे कि उन्होंने अपने हाथ से अपने पैर में कुल्हाड़ी मारी। जब महाराष्ट्र के लोग हिन्दुस्तानी के नाते देवनागरी और उर्दू लिपि दोनों सीख जायेंगे और महाराष्ट्र के मराठी-भाषी मुसलमान उर्दू-लिपि में मराठी लिखना आरम्भ करेंगे तब पोतदार जी के किये कुछ न होगा और उनकी सन्तान उन्हीं को कोसेगी कि उन्होंने अपने हाथों हिन्दी-उर्दू का-सा झगड़ा मराठी में उत्पन्न किया। पोतदार जी तथा मराठी के अन्य शुभचिन्तक भली भाँति सोच देखें जिससे उन्हें बाद में पछताना न पड़े। हम हिन्दी-वाले मराठी की परमोन्नति चाहते हैं और इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर महाराष्ट्र की हिन्दुस्तानीवाली राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति के कर्णधारों को चेतावनी देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। संस्कृत के द्वारा हमारे पुरखों ने जिस प्रकार राष्ट्र की भाषा तथा सांस्कृतिक एकता साधी थी उसी प्रकार आज सम्मेलन हिन्दी-द्वारा भाषा तथा संस्कृति की एकता साधना चाहता है। यदि उनका यही विश्वास है कि राष्ट्रभाषा के अत्यधिक प्रचार से मराठी को हानि पहुँचेगी तो इसके लिए हिन्दी का बाना उतारकर हिन्दुस्तानी का बाना धारण करने की जरूरत नहीं, और देवनागरी के साथ उर्दू-लिपि का प्रचार करने की जरूरत नहीं। वे सरल हिन्दी का प्रचार करें। वही ताँगेवालों की और मजदूर, किसानों की भाषा है। और देवनागरी तो वे मराठी लिपि होने के कारण जानते ही हैं। यदि उनको उर्दू-लिपि द्वारा विनाश का बीज बोना ही अभीष्ट है तो उनकी इच्छा। इस लिपि-विभाजन के फल को हम हिन्दी-वाले तो भोग ही रहे हैं, वे भी चख देखें।

महाराष्ट्र के कांग्रेसी पत्रों के विषय में क्या कहा जाय? प्रत्येक पत्र का यह प्रमुख कर्त्तव्य होता है कि वह प्रत्येक घटना की खबर जनता को निष्पक्ष होकर दे, उसके बाद उस पर चाहे जैसी टिप्पणी अपनी ओर से करे। परन्तु महाराष्ट्र के कांग्रेसी पत्रों ने सम्मेलन की राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति के समाचार छापना ही बन्द कर दिया है। यह खुलेआम फैसिज्म है जो अपने विरोधी का अस्तित्व तक सहन नहीं कर सकता। ये पत्र हिन्दू महासभा और मुस्लिम लीग के समाचार छापना निषिद्ध नहीं समझते, परन्तु राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति के समाचार नहीं छाप सकते। इसका कारण शायद यह है कि वे हिन्दू महासभा को कमजोर समझते हैं, उससे नहीं डरते परन्तु सम्मेलन की राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति से डरते हैं। परन्तु अपने बलवान् प्रतिद्वन्द्वी को धराशायी करने का यह तरीक़ा कांग्रेस और हिन्दुस्तानी वाद का नाम किसी प्रकार उज्ज्वल नहीं कर सकता। इन पत्रों की इस मनोवृत्ति के विरुद्ध और उनके षड्यन्त्र का भंडाफोड़ करने के लिए तथा हिन्दी की मान-रक्षा के लिए हिन्दीभाषियों, हिन्दी पत्रों तथा हिन्दी प्रान्तों के पत्रों का क्या कर्त्तव्य है—इसे वे ही सोच देखें।

७ फ़रवरी ४६ —सूर्यप्रकाश एम० ए०

वाल्मीकीय रामायण (सचित्र) दो भाग—महाभारत की तरह महर्षि वाल्मीकि का रामायण भी हिन्दू-संस्कृति का इतिहास है और यह महाभारत से भी प्राचीन है। संसार भर में कोई भी ऐसी सभ्य भाषा नहीं है जिसमें इस ग्रन्थ का अनुवाद प्रकाशित न हुआ हो। हिन्दी में इसका बढ़िया अनुवाद नहीं था, उसी कमी को पूरा करने के लिए हमने इसका अनुवाद सरल भाषा में प्रकाशित किया है। सारी पुस्तक उपन्यास की तरह पढ़ते जाइये, समझने में कहीं जरा भी कठिनाई नहीं पड़ेगी। मूल्य ६॥≈) छः रुपये ग्यारह आने प्रतिभाग।

आदर्श महापुरुषों और देवियों के पावन चरित

इस्लामी दुनिया का सिरताज—इस पुस्तक के बारे में हिन्दी के प्रसिद्ध पत्र भारत का मत है, "पुस्तक में तुर्की साम्राज्य के अभ्युदय और पतन का तथा नव टर्की राष्ट्र की स्थापना का कोरा इतिहास ही नहीं वर्णित किया गया है, बल्कि लेखक को राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत लेखनी ने उसमें एक नया जीवन डाल दिया है। मूल्य २) दो रुपये।

सम्राट् पंचम जार्ज—स्वर्गीय सम्राट् पंचम जार्ज का जीवन-चरित तथा उनके शासनकाल का संक्षिप्त इतिहास। मल्य ४) चार रुपये।

हिन्दी-भाषा और साहित्य—(संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण) 'हिन्दी-भाषा और साहित्य' का पहला संस्करण जब प्रकाशित हुआ था तभी हिन्दी-प्रेमी विद्वानों तथा साहित्य-मर्मज्ञों ने उत्साह-पूर्वक इसका स्वागत किया था। वर्तमान संस्करण में इसकी पहले की सब विशेषतायें तो हैं ही, साथ ही इसमें बहुत-कुछ ऐसा परिवर्तन कर दिया गया है कि पुस्तक की उपयोगिता बहुत बढ़ गई है। मूल्य केवल ५।-) पाँच रुपये पाँच आने।

पुरातत्त्व-निबन्धावली—लेखक, महापंडित श्री राहुल सांकृत्यायन। इस पुस्तक में श्री राहुल जी के पुरातत्त्व-सम्बन्धी तथा साहित्यिक और दार्शनिक निबन्धों का संग्रह किया गया है। इसमें कुल अठारह निबन्ध हैं और राहुल जी ने देश और विदेश के कितने ही दुष्प्राप्य ग्रन्थों के अध्ययन और दुर्गम स्थानों के भ्रमण से जो अगाध ज्ञान-राशि प्राप्त की है उसका इन निबन्धों के लिखने में उपयोग किया है। मल्य २॥≈) दो रुपये ग्यारह आने।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईरान, रूस और हिन्दुस्तान

मिट्टी के तेल पर संसार के साम्राज्यवादियों की आँखें आज भी लगी हैं

लेखक, प्राफसर नागार्जुन एम० ए०,

इस समय संसार में ईरान का राजनैतिक अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व बढ़ रहा है। सांस्कृतिक दृष्टि से यद्यपि ईरान अपना विशेष महत्त्व रखता है किन्तु व्यावसायिक दृष्टि से यहाँ के मिट्टी के तेल और पेट्रोल का बड़ा महत्त्व है। संसार के साम्राज्यवादी राष्ट्र ईरान पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने की फिक्र में हैं। अमरीका और ब्रिटेन की ईरान की पुरानी मित्रता है, साथ ही विजयी राष्ट्र होने के नाते भी यह ईरान के जबरदस्त मित्र और हितैषी बनने का दावा कर रहे हैं। रूस भी गत युद्ध में विजयी हुआ है, इसलिए वह भी ईरान पर अपने प्रभुत्व की फिक्र कर रहा है। ईरान रूस का पड़ोसी भी है, इसलिए उसका आकर्षण उसकी ओर ज्यादा है। इसके सिवा रूस की दृष्टि भी ईरान के तेल-कूपों की ओर लगी हुई है।

पिछले दिनों अमरीका, ब्रिटेन तथा रूस में ईरान के प्रश्न को लेकर कुछ वाद-विवाद छिड़ा था किन्तु अब जान पड़ता है संसार की सुरक्षा-कौंसिल द्वारा इस प्रश्न पर कोई निर्णय हो रहा है। तीसरे महायुद्ध की जो आशंका कुछ दिनों पूर्व की जा रही थी, वह निर्मूल सिद्ध हो रही है। क्योंकि संसार का प्रत्येक राष्ट्र गत युद्ध से इतना परस्त हो चुका है कि निकट भविष्य में तीसरे युद्ध की आशंका ग़लत सिद्ध हो रही है। फिर भी ईरान का जो ऐतिहासिक और व्यापारिक महत्त्व है, वह तो अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से रहेगा ही और उसकी ओर सभी पूंजीवादी राष्ट्रों की वक्रदृष्टि लगी ही रहेगी।

ईरान वास्तव में भारतवर्ष के लिए पश्चिमी प्रवेशद्वार है। पश्चिम से इस देश पर जितने आक्रमण हुए हैं वे ईरान से ही संभव हो सके थे। नादिरशाह और तैमूरलंग ईरान होकर ही भारत आये थे। हिटलर भी इन्हीं आक्रमणकारियों की भाँति भारत में आने का स्वप्न देखता रहा है। अगर इस विषय में सावधानी से काम न लिया गया होता तो बहुत संभव है कि हिटलर की चाल को कुछ सफलता मिल गई होती।

युद्ध आरंभ होने के समय से ही नाज़ियों ने ईरान में अपना प्रभाव-क्षेत्र बनाने की ओर ध्यान दिया था। जब लड़ाई छिड़ी तब ईरान ने तटस्थ रहने की घोषणा की किन्तु कुछ दिन बात पता चला कि जर्मन षड्यन्त्रकारी गुप्त रूप से इस देश में अपना काम कर रहे हैं। ईरान में नाज़ियों के जम जाने का परिणाम यह होता कि यूरोप और एशिया के पेट्रोल की उपज के लगभग चौथाई भाग पर उनका हाथ पड़ जाता। इराक़ और ईरान के तेल के कुएँ जिनकी वार्षिक उपज १ करोड़ ५० लाख टन है, तथा बाकू (१,५०,००,००० टन) और बहरीन द्वीप (१० लाख टन) के तेल के कुएँ या तो उनके हाथ आ जाते या उनके द्वारा बरबाद कर दिये जाते। इसका प्रभाव ब्रिटेन की समुद्री शक्ति पर बहुत अधिक पड़ता। इसी भावी संकट के विचार से इँगलैंड और रूस ने मिलकर अगस्त सन् १९४१ ई० में ईरान की सरकार को चेतावनी दी थी तथा २५ अगस्त को ईरान में सैनिक कार्रवाई की थी।

ईरान की जनता में शिक्षा का प्रचार दिन पर दिन बढ़ रहा है। देश में लगभग ५ हज़ार स्कूल हैं। नाना प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के लिए स्त्री-पुरुष भिन्न-भिन्न देशों में भेजे जाते हैं और विदेशी विद्वानों को अपने देश में बुलाकर उनसे लाभ उठाया जाता है। ईरान में मोटरों और लारियों की संख्या दिनों दिन बढ़ती जा रही है क्योंकि वहाँ पेट्रोल देश ही में पैदा होता है और सस्ता है। न्यायालयों और धार्मिक बातों के सम्बन्ध में अच्छा सुधार हुआ है। कवियों और लेखकों का रंग भी बहुत कुछ बदल गया है। डाक, तार और टेलीफ़ोन के विषय में भी काफ़ी उन्नति हुई है। रेडियो का चलन भी हो रहा है। परन्तु वहाँ की जनता ग़रीब है।

इस युग में पेट्रोल की उपज के कारण ईरान का महत्त्व बहुत बढ़ गया है। संसार के देशों में पेट्रोल की उत्पत्ति की दृष्टि से ईरान का नम्बर चौथा है। यहाँ १ करोड़ ५० लाख टन तेल पैदा होता है। ऐंग्लो ईरानियन आयल कम्पनी को यहाँ के तेल पर विशेष अधिकार प्राप्त है। सन् १९३२ ई० में शाह ने सब विशेषाधिकार बन्द कर दिये। १९३३ ई० में एक समझौता

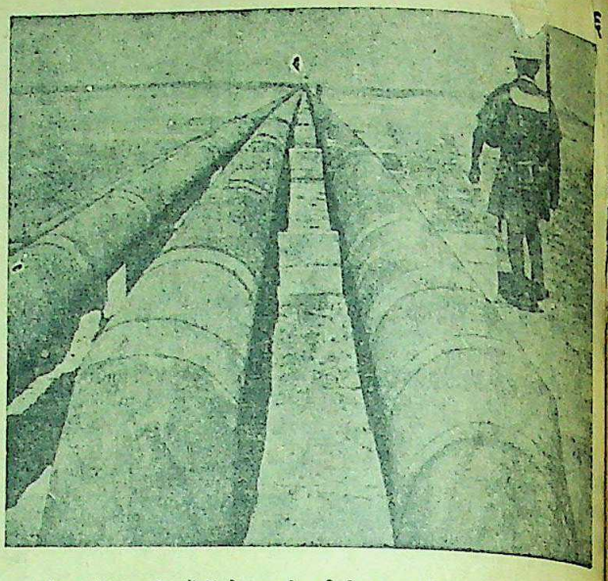

ईरान के तेल के कुँओं के नजदीक ब्रिटिश संतरी पहरा दे रहा है।

हो गया जिसके अनुसार विशेषाधिकार प्रदेश आधा कर दिया गया और यह शर्त रक्खी गई कि १९३८ में उसे १ लाख मील तक संकुचित कर दिया जायगा। कम्पनी से पाइप लाइन लगाने का एकाधिकार ले लिया गया और कुल लाभ पर एक निश्चित भाग के स्थान पर शाह का हिस्सा प्रतिटन तेल की निकासी पर निश्चित कर दिया गया। यह भी निश्चय किया गया कि शाह का कुल हिस्सा कभी ७,५०,००० पौंड से कम नहीं होगा। यह भी तय किया गया कि हिस्सेदारों में निश्चित प्रतिशत लाभ के बँटवारे के बाद बचे हुए धन का २० प्रतिशत शाह को मिलेगा। ६० वर्ष के बाद कम्पनी की सब सम्पत्ति ईरान को वापस मिल जायगी। इस नये समझौते से ईरान को बड़ा आर्थिक लाभ हुआ। ऐंग्लो ईरानियन आयल कम्पनी से ईरान को प्रतिवर्ष ४० लाख पौंड रायल्टी के रूप में मिलता रहा है। जान गन्थर का कहना है कि "ब्रिटेन की आयल कम्पनी से शाह का जो समझौता हुआ है, वह बेजोड़ है।"

टर्की के कमाल अतातुर्क की भाँति रज़ाशाह ने देश को प्राचीन संकुचित विचारों से हटाकर आधुनिकता के पथ पर खड़ा कर दिया। उसने अपने विदेशी पड़ोसियों से मैत्रीपूर्ण सन्धियाँ कीं, १९२६ ई० में टर्की से और १९२७ ई० में सोवियट रूस तथा अफ़ग़ानिस्तान से। सन् १९३४ ई० में इस्लामी देशों को एकता के सूत्र में बाँधनेवाला सादाबाद का पैक्ट ईरान में ही टर्की, ईरान, इराक़ अफ़ग़ानिस्तान के बीच हुआ। सन् १९ ई० में ईरान के युवराज मोहम्मद का विवाह मिस्र के बादशाह फ़ारूक़ बहन राजकुमारी रज़िया से हो इस विवाह का बहुत राजनीतिक महत्त्व था।

ईरान और रूस का बड़ा घनि सम्बन्ध है। रूस का पेट्रोल-क्षेत्र काकेशिया ईरान से मिला हुआ है। लिए दोनों देशों की भलाई और एक दूसरे के ऊपर निर्भर करती है। महायुद्ध में रूस को युद्ध-सामग्री की खाड़ी से ईरान-द्वारा ही पहुँचाई रही है।

खाड़ी के बन्दरगाह बसरा, शहर, अहवाज, बन्दर शाहपुर बूशायर से बहुत-सा हिन्दुस्तान, अमरीका तथा ब्रिटिश साम्राज्य का सामान को भेजा गया है। रूसी सरकार की से उत्तरी ईरान के तब्रेज, पहलवी, हर, बन्दरशाह और मशहद आदि में रसद के ले लेने का प्रबन्ध है। की खाड़ी पर स्थित बन्दर शाहपुर लेकर कैस्पियन सागर के तट पर बन्दर शाह तक ईरान के आरपार एक रेल की सड़क है। रसद का सामान रेल के द्वारा ही भेजा जाता है। सरकार भारतीय साधनों के द्वारा में यातायात के साधनों को बड़ी से निर्माण कर रही है।

ट्रान्स-ईरानी रेल के अतिरिक्त और सड़क के मार्ग हैं जो देश में एक से दूसरे सिरे तक बने हैं। पहला है बूशायर से इस्फ़हान होता हुआ दान तक जहाँ से पहलवी के लिए है। दूसरा मार्ग है क्वेटा से। ईरान की सीमा ज़ुजदाब तक रेल वहाँ से मशहद और तेहरान को की सड़कें हैं। इस अन्तिम मार्ग-द्वारा से बहुत-सा सामान भेजा गया है।

ईरान और भारत के बीच की बड़ी वृद्धि हो गई है। १९३९ में देश से ७६ लाख के मूल्य की ईरान गईं और वहाँ से ३ करोड़ का यहाँ आया। सन् १९४१ में सितम्बर तक अर्थात् ६ महीने में में भारतवर्ष से ३३ लाख का सामान और ईरान से दो करोड़ का माल में आया। यहाँ से विशेषकर सूती धातुएँ, मशीन और औज़ार, शक्कर, मोटरगाड़ियाँ, टायर आदि वस्तुएँ में जाती हैं। इन दोनों पड़ोसी देशों व्यापार अब दिन प्रतिदिन बढ़ता जायगा।

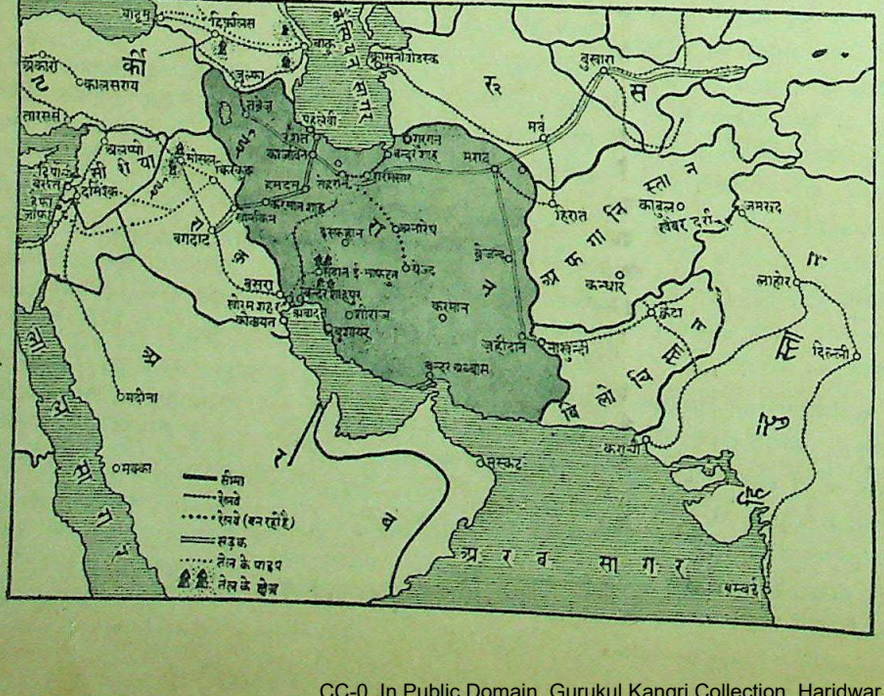

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रनेताओं के पत्र

श्री वृन्दावन में श्री राधाचरण पुस्तकालय की संस्थापना की जा रही है। पुस्तकालय का उद्घाटन, ब्रह्मोत्सव के स्वागत्य विशाल पण्डाल में ता० २७-२८ मार्च सन् १९४६ को, श्री पुरुषोत्तमदास टंडन जी द्वारा अत्यन्त समारोह से सम्पन्न हो रहा है।

—अद्वैतचरण गोस्वामी

* * *

सागर में तमाम कांग्रेस-विरोधी उम्मेदवारों ने एक समझौते के अनुसार अपनी-अपनी उम्मेदवारी वापस ले ली। पंडित कृष्णानन्द, महेशदत्त जी दुबे व पंडित शिवशंकर दुबे ने रहली और बंडा तहसील के अनेक ग्रामों का दौरा चुनाव-आन्दोलन के सिलसिले में किया। श्री, श्रीकृष्ण सेलट, श्री चौधरी नन्हेंलाल व श्री गयाप्रसाद कबीरपंथी कांग्रेस उम्मेदवार ने भी सागर व खुरई तहसील के अनेक ग्रामों का दौरा किया। अनेक सभाओं में जनता ने कांग्रेस की पीली व सफ़ेद पेटी में वोट डालने का आश्वासन दिया।

खाकसार पार्टी से यहाँ डा० औसाब-हुसैन को मुस्लिम लीग के विरुद्ध खड़ा किया गया है। खाकसारों के एक नेता श्री अब्दुल अजीज का मोटरस्टैंड पर ओजस्वी भाषण हुआ। उन्होंने जिन्ना साहब के पाकिस्तान का विरोध किया।

मुस्लिम लीग की एक सभा में लीगी उम्मेदवार श्री जमीरुद्दीन अहमद साहब ने खाकसारों की नीति का विरोध किया।

शराबबन्दी-दिवस

एक्साइज महक़मे की तरफ से डा० पी० जी० सप्रे की अध्यक्षता में मार्च को शराब-बन्दी-दिवस मनाया गया। श्री भाई अब्दुलग़नी, व कादरबख्श के सुन्दर भाषण हुए। अन्त में सभापति जी ने सरकार से यहाँ शराब-बन्दी के प्रचार के लिए दो-एक प्रचारक रखने की अपील की। बच्चों ने भी शहर में दारूबंदी का प्रचार किया।

—लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

* * *

संयुक्तप्रान्तीय ग्राम-सुधार वैद्य हकीम एसोसियेशन का तृतीय वार्षिक अधिवेशन लखनऊ अमीनाबाद पार्क में आगामी ६ अप्रैल ४६ को प्रातः ११ बजे से आरम्भ होगा।

—भगवतशरण रस्तोगी

परिणीता

उलझनों के कौतूहलप्रद वातावरण में ललिता और शेखर का प्रेम-सम्बन्ध इस उपन्यास में बड़ी ही कुशलता के साथ चित्रित किया गया है। उपन्यास में प्रेम की पावन गंगा का प्रवाह सर्वत्र व्याप्त है और उपन्यास सुखान्त है। इसके एक-एक शब्द में आपको रोचकता और कौतूहल का दर्शन होगा। मूल्य १।–)

मैनेजर—(बुकडिपो) इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

हमारी कुछ चुनी हुई पुस्तकें

भक्त जयदेव—पण्डित गौरीशंकर मिश्र बी० ए० एल-एल० बी० लिखित इस उपन्यास में 'हम भक्तन के भक्त हमारे' का सुन्दरता-पूर्वक प्रदर्शन हुआ है। मूल्य १॥)

शनि की दशा—अनुवादक पण्डित ठाकुरदत्त मिश्र। श्रीमती काञ्चनमाला देवी के 'शनिर दशा' नामक बँगला उपन्यास का यह अनुवाद है। लेखिका महोदया ने उपन्यास की नायिका के चरित्र में जिस मधुरता और महिमा का समावेश किया है, वह विश्व के महिला-समाज में हिन्दू-महिलाओं को गौरवपूर्ण पद दिलाने के लिए सर्वथा उपयुक्त है। मूल्य २)

धोखा-धड़ी—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह बँगला के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार बाबू चारुचन्द्र बन्द्योपाध्याय के धोखार टाटि नामक उपन्यास का अनुवाद है। सीधे-सादे और उदार-हृदय व्यक्ति कृत्रिम सौजन्य, सहानुभूति और विनय प्रदर्शित करने-वालों के मायाजाल के शिकार होकर किस प्रकार अकारण ही अगणित दुःख-क्लेश सहन करने के लिए बाध्य हो जाते हैं, यही इस उपन्यास का विषय है। मूल्य १॥=)

रिक्ता—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। श्री मौहारवाला देवी के इस उपन्यास में पति-प्रेम वंचिता नारी का ऐसा सजीव और भावपूर्ण चित्र अंकित हुआ है कि पढ़ते-पढ़ते हृदय द्रवित हो जाता है। ऐसे भाव-पूर्ण उपन्यास आप के पढ़ने में कम आये होंगे। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।–)।

पथ-भ्रान्त पथिक—अनुवादक, पण्डित सुन्दर-लाल त्रिपाठी और पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय-लिखित इस उपन्यास का उपन्यास-प्रेमियों में अच्छा सम्मान है। हिन्दी के उपन्यास-पाठकों की प्रेरणा से ही इसका हिन्दी अनुवाद हमने पहली बार प्रकाशित कराया है। उपन्यास की रोचकता और महत्ता के लिए चारुचन्द्र बाबू का नाम ही पर्याप्त है। मूल्य २॥=)।

कृष्णकान्त का विल—अनुवादक, श्री सूर्य-कान्त त्रिपाठी, निराला। यह बंकिम बाबू का एक अत्यन्त लोकप्रिय उपन्यास है। एक भारतीय पतिव्रता का जैसा सुन्दर चित्र इस उपन्यास में खींचा गया है वैसा अन्यत्र न मिलेगा। मूल्य १)।

युद्ध और शान्ति—अनुवादक, श्री रुद्रनारायण अग्रवाल। टॉल्सटॉय के 'वार एण्ड पीस' नामक प्रसिद्ध रूसी उपन्यास का यह हिन्दी-रूपान्तर है। इसमें लेखक ने मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तसवीर और राष्ट्रों की खींच-तान बड़ी खूबी से चित्रित किया है और जीवन तथा मृत्यु के रहस्य का उद्घाटन किया है। मूल्य ५।–)

कपाल-कुण्डला—अनुवादक, श्रीयुत पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी, 'निराला'। यह बंकिम बाबू की कपाल-कुण्डला का हिन्दी-रूपान्तर है। कथानक की रोचकता तथा वर्णन की अपूर्वता के कारण यह उपन्यास इतना लोकप्रिय हो चुका है कि इसका नये सिरे से परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। कपाल-कुण्डला के हिन्दी में आज तक जितने भी अनुवाद प्रकाशित हुए हैं, यह अनुवाद उन सबसे बहुत सुन्दर हुआ है। मूल्य १)।

देवी चौधरानी—अनुवादक, श्रीयुत पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी, 'निराला'। मूल-लेखक स्वर्गीय बंकिम बाबू ने इस उपन्यास में बंगाल की उस समय की अवस्था का चित्रण किया है, जब कि मुसलमानों की शक्ति का अवसान हो चुका था और अंगरेज़ों की प्रभुता का अभ्युदय हो रहा था। आदि से अन्त तक पुस्तक रोचक और शिक्षाप्रद है। मूल्य १।–)

वैकुण्ठ का विल—मूल लेखक, स्वर्गीय डा० शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय। यह उपन्यास है तो छोटा किन्तु बहुत ही भावपूर्ण है। मानव-हृदय की स्वाभाविकता इसके प्रत्येक पात्र से प्रकट हो रही है। शरद बाबू उपदेश देने की दृष्टि से रचना नहीं करते; किन्तु उपदेश अज्ञात रूप से अपना काम किये बिना कब रहता है। यह बात उनके इस उपन्यास में भी अपवाद नहीं हो सकी। मूल्य ॥=)।

अज्ञात दिशा की ओर—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह श्री सौरीन्द्रमोहन मुखोपाध्याय के 'निरुद्देशेर यात्री' नामक उपन्यास का अनुवाद है। इस उपन्यास में हिन्दू-समाज की वैवाहिक समस्या पर बहुत ही रोचक ढंग से प्रकाश डाला गया है। मूल्य १)।

स्वामी—अनुवादक, पंडित रूपनारायण जी पाण्डेय। यह डाक्टर शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय के इसी नाम के उपन्यास का हिन्दी-अनुवाद है। स्वामी अपने हृदय की उदारता और क्षमाशीलता के बल पर विपथगामिनी स्त्री को भी किस प्रकार ठीक रास्ते पर लाकर उसे अपनी अनुगामिनी बना सकता है, यही इस उपन्यास का विषय है। इस उपन्यास की एक एक पंक्ति भावपूर्ण है। मूल्य केवल ॥=)।

पुष्करिणी—लेखक, श्रीयुत भगवतीप्रसाद वाजपेयी। यह हिन्दी के प्रसिद्ध कहानी-लेखक श्री भगवती-प्रसाद जी वाजपेयी की चौदह कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह में सम्मिलित की गई सभी कहानियाँ एक से एक बढ़कर हैं और इनमें पीड़ित मानवता के चीत्कार और जागरण की कलापूर्ण कथायें लिपिबद्ध की गई हैं। मूल्य केवल २)।

सतमी के बच्चे—लेखक, महापंडित श्री राहुल सांकृत्यायन। यह पुस्तक महापंडित श्री राहुल जी की कुछ बहुत ही कलापूर्ण कहानियों का संग्रह है, जिनमें पीड़ित आत्माओं के अन्तस्तल का चित्रण बड़ी खूबी के साथ किया गया है। इसमें ऐसी करुण कहानियाँ हैं, जिन्हें पढ़कर अनायास रुलाई आती है और समाज का नवीन रूप से संगठन करने की अन्तःकरण में प्रेरणा उत्पन्न होती है। मूल्य ॥–)।

गुप्त-साम्राज्य का इतिहास—(प्रथम और द्वितीय भाग) लेखक, वासुदेव उपाध्याय, एम० ए०। इस पुस्तक के दोनों भागों में भारतीय गुप्त सम्राटों के शासन-काल का विस्तृत और प्रामाणिक इतिहास लिखा गया है। संस्कृत और अंगरेज़ी के कितने ही प्रामाणिक और सुप्रसिद्ध ग्रन्थों के अतिरिक्त इतिहास और पुरातत्त्व से सम्बन्ध रखनेवाली बहुत-सी सरकारी रिपोर्टों, शिलालेखों तथा ताम्रपत्रों आदि से सामग्रियाँ लेकर यह ग्रन्थ लिखा गया है। इसमें गुप्त राजाओं के समय की देश की सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक अवस्था आदि पर तो प्रकाश डाला ही गया है साथ ही उस युग की साहित्य तथा कला-सम्बन्धी उन्नति पर भी प्रकाश डाला गया है। मूल्य पहले भाग का ३) तीन रुपये और दूसरे का ५।–)।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में आनेवाली खमभरी

(पेज २ का शेष)

गाँव कमेटियों की आवश्यकता

इस प्रकार की आपदा को रोकने का एकमात्र उपाय माल को रोकने और बचे हुए अनाज को इकटठा करने के लिए हर एक गांव में कमेटियों की स्थापना करना है। हानिप्रद तत्त्वों से बचाने के लिए इन कमेटियों की स्थापना गांवों की जनता के सभी बालिग लोगों की राय पर होनी चाहिए। इन कमेटियों को चाहिए कि गाँवों के बाहर वही माल जाने दें जो गाँववालों की आवश्यकता की पूर्ति के पश्चात शेष रहे। फिर इस अनाज के बेचे जाने का स्थान स्थानीय कमेटियों को, जहां यह भेजा जा रहा हो, सूचित कर देना चाहिए। स्वाभाविक है कि प्रत्येक गाँव और उप-विभाग में एक केन्द्रीय गुदाम होना चाहिए। इसका भी निरीक्षण ऐसी ही कमेटियों द्वारा होना चाहिये। माल की तौल और उसके आने की तारीख बतलानेवाला एक ऐसा रजिस्टर होना चाहिए जनता जिसकी जांच किया करे और भूल के कारण बहुत अधिक दिनों तक माल जमा न रह जाय। गुदामों में सीमेन्ट का फ़र्श, ईंटों की दीवालें और पक्की छतें होनी चाहिए। चूंकि चीन की बड़ी सड़क में छः महीनों से भी कम में करोड़ों रुपयों का धन लगाया गया है और जानेवाली सेनाओं के क्वार्टर्स बिना किसी आपत्ति के बनाये गये हैं इसलिए इस दिशा में किसी भी प्रकार की आपत्ति न होनी चाहिए।

कस्बों के लिए अनाज की प्राप्ति बिक्री की देखभाल के लिए स्थानीय जन कमेटियां होनी चाहिए। जनप्रिय रोकथाम के बिना आजकल की राशन की दूकानों के तरीक़े में बेईमानी और चोर बाजारी के लिए काफ़ी मौक़ा है।

यहां यह बता देना अनुचित नहीं है कि सन् १९४३ के अप्रैल में, जब वस्तुओं के मूल्य बहुत अधिक बढ़ने लगे थे, मैंने एक गांव के क्षेत्र में केन्द्रीय धर्म-गोले की व्यवस्था की थी जिसमें उन्नतिशील किसानों और जोतदारों का बचा हुआ माल था। यह प्रयोग सफल रहा और एक गांव की भयानक आपत्ति का सफलता पूर्वक सामना किया गया जहां इसके बिना दूसरी परिस्थिति में जुलाई में दो तिहाई जनता भूख से मर गई होती। इसके भी पहले एक शहरी क्षेत्र में मैं बाजार की दर पर चावल खरीदने और उसे सहायता की दृष्टि से बहुत ही कम दर पर दीन परिवारों के हाथ बेंचने के लिए एक सर्वदल-कमेटी की स्थापना कर सका था। नगर के क्षेत्रों में रहनेवाले निर्धन परिवारों का पता लगाया गया और इसी आधार पर उनकी सहायता का प्रबंध किया गया था। दोनों ही प्रयोग निस्सन्देह सफल रहे। दुर्भाग्य से सन् १९४३ के जून में जब खाद्य परिस्थिति का अध्ययन करने के लिए कलकत्ता यूनिवर्सिटी इन्टीट्यूट में एक सम्मेलन की बैठक हुई और मैंने सब दलों के नेताओं के सम्मुख ये बातें रखीं, तो मेरे सुझावों को यह कहकर अलग रख दिया गया कि इनको कार्य रूप में परिवर्तन करना असम्भव है। जिन लोगों ने विरोध किया था, उन्होंने इन विचारों के अनुसार कार्य करने का प्रयत्न भी नहीं किया था जब कि मैंने वास्तव में वैसा किया था। फिर इसका कोई विचार नहीं किया गया।

उन सभी लोगों को जो सन् १९४३ की दुर्घटना की पुनरावृत्ति नहीं चाहते, यह स्पष्ट जान लेना चाहिए कि यदि हमें गाँवों के अनाज को चोर बाजार से बचाना है तो गाँवों में अनाज की प्राप्ति पर नियंत्रण और शहरों एवं आवश्यक क्षेत्रों में उसके वितरण के लिए आवश्यक कल-पुर्जों का निर्माण तत्काल ही हो जाना चाहिए। जो कल-पुर्ज़ सफलतापूर्वक काम कर सकते हैं उनका संक्षिप्त विवरण ऊपर दे दिया गया है।

यह कार्य करेगा कौन ?

यह स्पष्ट है कि इतनी अधिक कमेटियों की स्थापना के लिए बहुत बड़ी संख्या में ऐसे कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है जिनके हृदय में जनता के हित की भावना हो। बंगाल में कांग्रेस के पांचलाख मेम्बर हैं परन्तु पूरे समय अथवा कुछ समय तक वास्तव में काम करनेवालों की संख्या इस संख्या का दो या तीन प्रतिशत भाग ही है। शेष सहानुभूति प्रदर्शित करने के लिए हैं जिनके विचार वैसे ही हैं। मुस्लिम लीग के भी बहुत अधिक मेम्बर हैं परन्तु इसके पूरे समय या कुछ समय तक काम करनेवालों की संख्या लगभग एक हजार या इससे कुछ ही अधिक है। कम्युनिस्ट सभा और कृषक सभा आदि अन्य मुख्य राजनीतिकदल हैं। जिनके सभी प्रकार कार्यकर्त्ताओं की संख्या कई हजार के लगभग है। अन्य राजनीतिक दलों के कार्यकर्त्ता अपेक्षाकृत कम हैं। बंगाल में लगभग ९० लाख गाँव हैं। अतः यह स्पष्ट है कि इनमें से कोई भी दल पृथक् रूप से बंगाल के एक भाग से अधिक में कार्य नहीं कर सकता। फिर भी यदि वे मिलकर कार्य करें तो हमारे सूबे के अधिकांश भाग तक पहुँच सकते हैं। 'बंगाल मेडिकल रिलीफ़ कोआर्डिनेशन' के उदाहरण से यह भली भाँति स्पष्ट है कि व्यवस्थित रूप से कार्य करने से किस सीमा तक सफलता प्राप्त हो सकती है। यदि विभिन्न दल संयुक्त होने में किसी क़दर असफलत रहे तो अयोग्य और निकम्मे अफसर और लालची मुनाफ़ेखोरों की विजय होगी। इसके विपरीत यदि वे मिलकर कार्य करते हैं, तो उस कड़े निरीक्षण के द्वारा, जिसे वे करेंगे, वे अच्छे अफ़सरों और व्यापारियों को शक्तिसम्पन्न कर सकेंगे। साथ ही वे लाखों को रोग, मृत्यु और विषम परिस्थिति से बचा लेंगे।

मैं भली भाँति जानता हूँ कि राजनीतिक बैर ने किस प्रकार विचारों की कटुता बढ़ाई है। परन्तु यह राजनीतिक युद्ध किसके खिलाफ़ लड़ना है ? जीवितों के या धूप में चमकनेवाली मुर्दों की हड्डियों के ? क्योंकि यदि भाई-भाई से सहयोग नहीं करता है तो निश्चय ही वे मर जाएंगे।

संकट के बादल

लेखक, प्रोफ़सर कमलाकान्त पाठक, एम० ए०

संकट के बादल देखे हैं सिर टेक हथेली पर मैंने
तूफ़ान बरसते देखे हैं सिर टेक हथेली पर मैंने
रोने बैठा, रो न सका मैं
हँसने बैठा, हँस न सका मैं
अपने दुख सब टाल सका कब
गाने बैठा, गा न सका मैं
लाल-लाल अपनी आँखों से आँसू के बूंद उतार सका कब ?
अजब उदासी की रातें हैं, हलका कर मैं भार सका कब ?
आज हृदय भी टूट रहा है
धैर्य कहो क्यों छूट रहा है
जिनका युग भी दमन कर रहा
उनमें भाव अटूट रहा है
परेशानियाँ बढ़ी जा रहीं, सिर मेरा चक्कर खाता है
कातरता की नहीं जरूरत, यौवन तो टक्कर खाता है
कसक रहा अत्याचारों से
अपमान-विवशता के नारों से
उलटो दुनिया का तख्ता ही
होता है क्या उपचारों से
सुबह पूर्व की लाली में भी सन्ध्या की छाया दिखती है
गहन समस्या है तरुणाई, यदि परिणामों को लिखती है
भूख-प्यास में चिल्लाता हूँ
डूबता नहीं, उतराता हूँ
दुनिया के ये रङ्गमहल सब
अपनी ही छाती पर पाता हूँ
क्या करूँ ? बेबसी-सी कैसी ? तड़प-तड़प उठती तरुणाई
चैन नहीं है, जुल्मों के यों हैं इतिहास रहे बन भाई !
मेरा विवेक शाप बन रहा
आघातों का जाप बन रहा
महसूस हुआ जो घिसा-पिसा
वही शक्ति का साप बन रहा
उखड़ी जाती मर्म-वेदना, क्या है देखें, पाषाणों में
अणु-अणु के बल के संचय की है मूर्त्तकल्पना प्राणों में।

महिलाओं के उपयोग की पुस्त

सुशील कन्या—इसे पढ़कर बालिकाएं स्वास्थ्य, सदाचार तथा नीति आदि से सम्बन्ध रखनेवाली सभी बातों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगी। मूल्य ।।≡) ग्यारह आने।

आदर्श महिला—इस पुस्तक में सीता, सावित्री, दमयन्ती, शैव्या और विद्युत आदि पांच देवियों की जीवन-घटनाओं का सजीव वर्णन किया गया है। मूल्य २।≡) दो रुपये ग्यारह आने।

सीता-वनवास—श्री सीता जी के पावन चरित के सम्बन्ध में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने बँगला में एक बड़ी ही सुन्दर पुस्तक लिखी थी, उसी का यह अनुवाद है। इस पुस्तक की एक-एक पंक्ति करुण-रस से ओतप्रोत है। मूल्य ।।।-) तेरह आने।

शिशु-पालन—यह पुस्तक स्त्रियों के बड़े काम की है। इसमें प्रसूति-चर्या से लेकर बच्चों के पालन-पोषण के सम्बन्ध की सभी आवश्यक बातों पर प्रकाश डाला गया है। मूल्य २) दो रुपये।

नीरोग कन्या—यह पुस्तक स्वास्थ्य सुधार के सम्बन्ध में है। इसे पढ़कर कन्याओं को तो अपना स्वास्थ्य सुधारने में सहायता मिलती ही है, साथ ही बड़ी और परिपक्व अवस्था की स्त्रियों के लिए भी यह लाभदायक है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

सती—इसमें दक्षसुता सती पार्वती की कथा सरल, सुन्दर और मधुर भाषा में लिखी गई है। मूल्य ।-)॥ साढ़े तीन आने।

पंचसती—इसमें भारत की सीता, सावित्री, दमयन्ती, शैव्या और विद्युत इन पाँच सतियों का पवित्र चरित संगृहीत किया गया है। मूल्य ॥) आठ आने।

सीता—श्री सीता जी का संक्षिप्त जीवन-वृत्तान्त। मूल्य ।-) पांच आने।

भारतीय विदुषी—भारत की चार प्राचीन तथा अर्वाचीन विदुषी देवियों का संक्षिप्त जीवन-वृत्तान्त। मूल्य ।।≡) ग्यारह आने।

विद्यासागर—प्रातःस्मरणीय पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का विस्तृत जीवन-चरित। मूल्य ४) चार रुपये।

महाकवि अकबर—खान बहादुर मौलवी अकबर हुसेन 'अकबर' उर्दू के एक बड़े कवि थे। इस पुस्तक में उनके जीवन-चरित, उनके काव्य की आलोचना और उनकी चुनी हुई कवितायें दी गई हैं। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

भारतीय साधक—बँगला के प्रसिद्ध लेखक शरत्कुमार राय की पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है। इसमें बुद्ध, रामानुज, नानक, कबीर, रैदास और रामकृष्ण का चरित्र वर्णित है। सम्पूर्ण पुस्तक पढ़ने से बुद्ध काल से लेकर आज तक की समाज-व्यवस्था का चित्र नेत्रों के आ जाता है। मूल्य १) एक रुपया।

गोविन्द-कीर्तन—इस पुस्तक में भारत के १२ अर्वाचीन महापुरुषों और विदुषियों का चरित, उनकी कृतियों का परिचय तथा जीवन-सम्बन्धी अन्य बातों का परिचय तथा जीवन-सम्बन्धी ज्ञातव्य और आवश्यक बातें लिख गई हैं। भाषा और शैली रोचक है। इसके लेखक हैं आचार्य द्विवेदी जी। मूल्य १।-) रुपया पाँच आने।

मैनजर बुकडिपो
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० चोपड़ा [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमाम

हमाम की गाढ़ा और सुगंधित झाग ने उसे सारे भारत में एक सुप्रसिद्ध साबुन सिद्ध कर दिया है। हम इसकी बढ़ती हुई माँग को पूरा करते जा रहे हैं।

हर जगह इसका स्टाक उपस्थित है अपने दुकानदार से हमाम माँगिये।

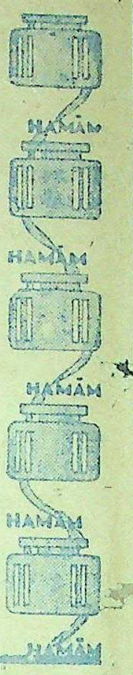

जवाहर लायर इलाहाबाद
दी टाटा आयल मिल्स कं० लि०,

Estd. 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S. १०) H.M.B.S. १५) H.M.D.S २५)। पुस्तक—अ० पारिवारिक १) बालोकेमिक १) १०० रेडलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्सनरियाँ १॥) आर्सेनल १), फार्मा-कोपिया १॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायँगी। डा० ख० दवा—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≡) ड्राम। आउन्स ॥) ग्लोबुल्स ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.)

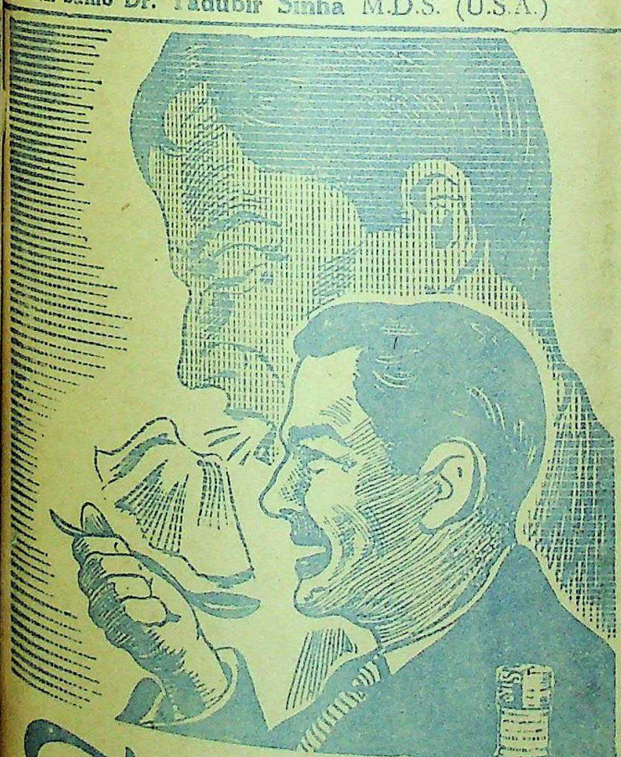

सिरोलीन

'रुचि'

शरदी और खाँसी के लीये

बालसखा का नया वार्षिकांक

एक महीने में प्रकाशित होगा। पाठक वर्ष रक्खें।

ग्राहकों के अनुरोध से हमने इस वर्ष भी बालसखा का वार्षिकांक निकालने का निश्चय किया है। इसमें बहुत से चित्र, कविताएँ, कहानियाँ, बढ़िया लेख और उपयुक्त सामग्री रहेगी। पृष्ठ-संख्या २०० से ऊपर। यह अङ्क बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होगा। यह मासिक बालसखा के १२ अंकों से पृथक है। मूल्य ३), मासिक बालसखा के ग्राहकों के लिए रियायती मूल्य २॥)

रियायती मूल्य के लिए अपना ग्राहक-नंबर अवश्य लिखिए।

मैनेजर, बालसखा, इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

केशोंकी शोभा बिना सारी सुन्दरता फीकी पड़ जाती है

इसीलिये केशोंको सजाने व संवारनेके नित्य नये तरीके निकलते आ रहे हैं और निकलते जायंगे। इस विशाल भारतवर्षमें विभिन्न रुचिके लोग हैं और आज ७० वर्षोंसे जवाकुसुम, हर तरहके लोगोंको पसन्द आता रहा है। हमारे देशमें धूल-धक्कड़के मारे बालोंकी जड़में गर्दा बैठ जाता है। फिर गर्मी इतनी तेज पड़ती है कि मस्तिष्कके स्नायु बहुत जल्द गर्म हो जाते हैं। इन दोनों कारणोंसे ही बालोंकी स्वाभाविक कमनीयता और मजबूती नष्ट होती है।

आयुर्वेदोक्त जड़ी-बूटियों से बना जवाकुसुम बड़ी आसानीसे मैलको निकाल देता है और बालोंकी जड़को मजबूत बनाता है। इसके स्निग्ध स्पर्शसे मस्तिष्क शीतल हो जाता है।

७० वर्षकी सुप्रसिद्धिका सम्बल

जवाकुसुम

केशोंकी शोभा बढ़ाना.....मस्तिष्क शीतल रखना है

सा० कं० सेन एण्ड कं० लि० • जवाकुसुम हाउस • कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No. A-295

सपट लोशन

दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.

सपट केमिकल कं. लि. बम्बई नं. २.

ईस्ट इन्डियन रेलवे

ईस्टर की छुट्टियाँ १९४६

ईस्ट इन्डियन रेलवे पर वापसी व रियायती टिक
ईस्टर की छुट्टियों में नहीं भास हो सकेगा।

इतनी अधिक जिन्दगी

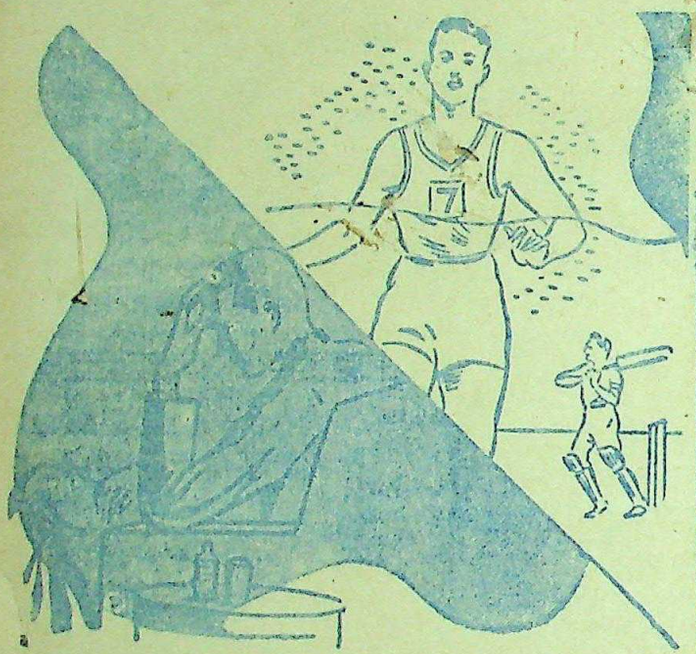

इतने कम में.....

निकल पड़े हैं, बलिष्ठ और कान्तिवान होकर ये जीवन का आनन्द लूट रहे हैं।

यहाँ, घिसे, घिसे और और टपकते आप अस्वस्थ जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अपने सारे संस्थान को पुष्ट और सुडौल करने के लिये आपको इसकी अत्यन्त आवश्यकता है।

वायनोमाल्ट

बेंगाल इम्युनिटि कम्पनी लि०, कलकत्ता।

जिस याद को सबों की यादगारी बना देने के लिये दिवाना शाहजहाँ पागल हो उठा था—वह ताज आगरे की पहली कारीगरी है आगरे की दूसरी कारीगरी है जी० जी० इण्डस्ट्रीज के ये विविध निर्माण

AGRA

- जाम १५ से अधिक
- औरेंज मारमलेड
- आमरूद जेली
- आम की चटनी
- फलपेस और
- टोमेटो (कैचप)
- चाकलेट
- टाफी और

जी० जी० फ्रूट प्रिजर्विंग फैक्टरी, आगरा।

जी० जी० इन्डस्ट्रीज

जी० जी० सेल्स डिपो:—

(१) किताब महल, हार्नबी रोड बंबई (२) चावड़ी बाजार
(३) मूल हाउस पी० ४० मिशनरी एक्सटेन्शन कलकत्ता (४) शंकर
जरकर (ग्वालियर) (५) मैसर्स गिरधरलाल वकील जनरलगंज
(६) मैसर्स गिरधरलाल वकील, दर्जी चौक बरेली।

उपदेश तथा सदाचार-संबंधी पुस्तकें

चरित्र-गठन—चरित्र-निर्माण के लिए जिन-जिन विषयों का ज्ञान अनिवार्य रूप से अपेक्षित है उन सभी पर इस पुस्तक में प्रकाश डाला गया है। मू० १।—) एक रुपया पाँच आने।

बाल-रवीन्द्रनाथ—कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ के जीवन की उन सभी घटनाओं का इसमें समावेश किया गया है, जिनकी जानकारी प्राप्त करना बालकों के लिए आवश्यक है। मू० ।—)॥ सवा दस आने

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्य ७॥)
आ =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

रविवार, ७ अप्रैल, १९४६ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 7 th April, 1946

मधूलिका—कविवर अंचल की मधुर कविताओं का संकलन है। इसकी कोमल और विदग्ध कविताओं में एक मोहिनी ज्वाला है। विद्वानों ने एक स्वर से इसकी प्रशंसा की है और हिन्दी के आधुनिक काव्यों में मधूलिका का स्थान बहुत ऊँचा बताया है कवि को अपनी इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक पर चक्रधर-पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। इसकी कवितायें भावुक काव्य-प्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। यौवन और सौन्दर्य के ये गीत आधुनिक हिन्दी-काव्य में उच्च स्थान रखते हैं। मूल्य २)

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

ब्रिटिश मजदूर मंत्रिमंडल के ८ मास।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालसखा का नया वार्षिकांक

छप रहा है। पाठक धैर्य रक्खें।

ग्राहकों के अनुरोध से हमने इस वर्ष भी बालसखा का वार्षिकांक निकालने का निश्चय किया है। इसमें बहुत से चित्र, कविताएँ, कहानियाँ, बढ़िया लेख और उपयुक्त सामग्री रहेगी। पृष्ठ-संख्या ३०० से ऊपर। यह अङ्क बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होगा। यह मासिक बालसखा के १२ अंकों से पृथक है। मूल्य ३), मासिक बालसखा के ग्राहकों के लिए रियायती मूल्य २॥)

रियायती मूल्य के लिए अपना ग्राहक-नंबर अवश्य लिखिए।

मैनेजर, बालसखा, इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

इतनी अधिक जिन्दगी

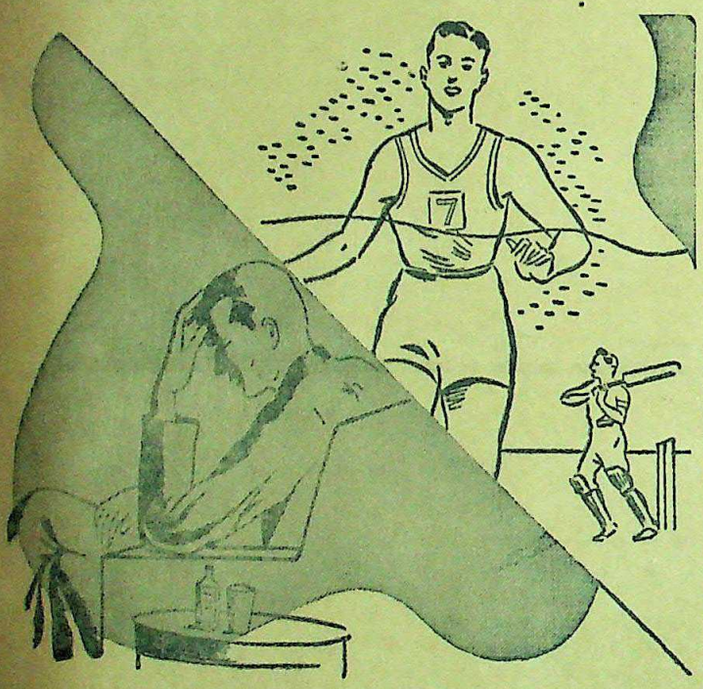

इतने कम में.....

निकल पड़े हैं, बलिष्ट और कान्तिवान होकर ये जीवन का आनन्द लूट रहे हैं।

यहाँ, पिसे, घिसे और आंसू टपकते आप अस्वस्थ जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अपने सारे संस्थान को पुष्ट और सुठीक करने के लिये आपको इसकी अत्यन्त आवश्यकता है।

वायनोमाल्ट

बेंगाल इम्युनिटि कम्पनी लि०, कलकत्ता।

जहाँ कहीं जल है या मिल सकता है, वहाँ के सब क्षेत्रों में खेती की जाय। फूल के बगीचों में भी अनाज पैदा किया जाय।

—महात्मा गांधी

रोना

हँसना

ग्राइप वाटर के उपयोग के बाद पेट के दर्द व खट्टे डकार से छुटकारा मिलता है।

WOODWARD'S
GRIPE WATER
— keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए इसे अवश्य देख लिया करें।

I-WW 116—117 W. WOODWARD LTD., LONDON, ENGLAND

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष ८, संख्या ३२] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक रविवार, ७ अप्रैल, १९४६

सोधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

१५ लाख टन अनाज भारत को देने का निश्चय किया है।' सर रामस्वामी ने २५ लाख टन अनाज की माँग की थी किन्तु ४० प्रतिशत की कमी करके १५ लाख टन देने की मंजूरी हुई है। चलिए अच्छा ही हुआ। भागते भूत की लँगोटी ही सही। विदेशियों से जो भी मिल जाये वही क्या थोड़ा है? सर रामस्वामी की माँग यदि बोर्ड मंजूर न करता तो वह कर ही क्या सकते थे? गांधीवादी तो थे नहीं कि सत्याग्रह या अनशन शुरू कर देते और न मुस्लिम लीगर ही थे कि गुर्राकर और अकड़कर खड़े हो जाते! वह तो सरासर सर थे इसलिए उन्होंने जितना भी सर किया वही क्या कम है? केन्द्रीय सरकार यों ही बदलने जा रही है। सर रामस्वामी मुदालियर कम से कम चार लोगों में अपना मुख उज्ज्वल तो कर रहे हैं?

* * *

कांग्रेस मंत्रि-मंडल पुनः प्रान्तों में आ गया, जहाँ कांग्रेस सदस्य बहुमत में हैं वहाँ तो मुस्लिम लीग के सहयोग की कोई बात ही नहीं लेकिन पंजाब जो पाकिस्तान का मुखारविंद है, वहाँ जब घोटाला हो गया तो क्या कहा जाय? अब तो सिंध को लेकर ही पाकिस्तानी रोदन को अधिक व्यापक बनाना है। हाँ, अगर योरोपियनों की कृपा-दृष्टि रही तो बंगाल भी मिल जायगा। संयुक्तप्रान्त में एक शिगूफा छूटा था कि मुस्लिम लीग कांग्रेस मंत्रिमंडल में शरीक होगी, चौधरी खलीकुज्जमा लपके तो क्योंकि मंत्री बनाने का नायाब अवसर था, कोई म्युनिसिपैलिटी की मेम्बरी तो थी नहीं, लेकिन मिस्टर जिन्ना ने सारा गुड़ गोबर कर दिया। अपने राम निराशावादी कभी भी नहीं रहे हैं, अभी तो केन्द्रीय सरकार का संगठन बाकी ही है, अगर तीनों सयानों की कृपा रही तो मुस्लिम लीग केन्द्रीय सरकार में आधे सीट की हक़दार करार दे दी जायगी। यदि ऐसा हुआ तो प्रान्तों में लीग की जो हुरमत हुई है उसका घाटा पूरा हो जायगा। घाटा पूरा ही होना चाहिए क्योंकि बक़ौल लार्ड पेथिक लारेंस के इतनी बड़ी राजनैतिक पार्टी कहीं रहने पाएगी या नहीं! आखिर इन्होंने क्या कुसूर किया है, सिर्फ पाकिस्तान ही चाहते हैं या और कुछ।

* * *

महात्मा गांधी कहते हैं कि आज जो महँगाई और अकाल की अगवानी दिखाई दे रही है इसकी जिम्मेवारी वर्तमान शासन पर है। शासक कहते हैं कि अनाज की कमी मुनाफाखोरों की मुनाफ़ाखोरी है। इँगलैंड के एक अँगरेज बहादुर फरमाते हैं कि इसकी जिम्मेदारी भारत की जनसंख्या पर है जो बढ़ती ही चली जा रही है। उसे रोकना चाहिए। अपने राम तो यह कहते हैं कि गांधी जी जो कुछ कहते हैं वह ज्यादा बजा है। बंगाल में अकाल पड़ा शासकों की बदौलत, अनाज की मँहगाई हुई शासकों की कृपा से। रह गई जनसंख्या की बात सो इस पहलवान देश में जनसंख्या की वृद्धि को रोकने के लिए चाहे जितना कृत्रिम उपाय किया जाये, वह सब नाकामयाब सिद्ध होगा। अभी से बच्चे पैदा करने की क्रिया बंद हो जायगी तो भविष्य में होनेवाला तीसरा महायुद्ध कौन लड़ेगा? भारतवर्ष जैसे राजनीति में संसार का नेतृत्व करने की क्षमता रखता है, वैसे ही बच्चे और अनाज पैदा करने में भी। इसलिए हिसाब बताने की उतनी जरूरत नहीं जितनी हिन्दुस्तान को खाली करके रफूचक्कर होने की। स्वराज्य मिला और बे मतलब की किस्से कहानियाँ बन्द हुईं।

* * *

कांग्रेस के ख़िलाफ़ अब तक तो मुस्लिम लीग ही ने आवाज बुलंद की है, और अँगरेज बीच बचाव में लगे हैं, किन्तु जान पड़ता है कि डाक्टर अम्बेडकर ग्रूप को भी चंग पर चढ़ाने के दिन नजदीक आ गये हैं। और कोई नहीं है तो अँगरेज अधिकारी तो उनकी मदद करेंगे ही क्योंकि उनसे बढ़कर अल्पसंख्यकों की मदद करनेवाले इस धरती में हैं कहाँ? अँगरेजों का शासन इस संसार में जहाँ भी है, वहाँ के अल्पसंख्यक समुदाय ही उनके भाई-बन्द हैं।

पंडित गोविन्दवल्लभ पंत, संयुक्तप्रांतीय सरकार के नये प्रधान मंत्री।

मुस्लिम लीग के विधाता मिस्टर मोहम्मद अली जिन्ना अपने को हिन्दुस्तानी नहीं समझते। क्यों आखिर ऐसी कौन-सी बात है जो उन्हें हिन्दुस्तानियों से हो गई है? अपने राम की समझ में एक बात आती है कि जब से उन्होंने पाकिस्तान की रट लगाना शुरू किया है तब से वह पाकिस्तानी बन गये हैं। बात सही भी है, जब उन्हें पाकिस्तान में ही अंत में रहना है तो अभी से इस तक अपने को पाकिस्तानी न कहते लगें तो ऐसा न हो कि वह पाकिस्तान में भी न पूछने पायें? मौरूसी हक़ क़ायम करने का यह अच्छा तरीक़ा है। ठीक भी है हिन्दुस्तानवाले अपने को हिन्दुस्तानी कहें लेकिन जिन्ना साहब को जब हिन्दुस्तान में नहीं रहना है तो वह अपने को क्यों हिन्दुस्तानी कहें? इसमें जबरदस्ती क्या है? पाकिस्तान के नाम पर अभी से कुरबानी करनेवाला कोई मिला भी तो! कुरबान तो रोने के लिए चाहिए ही। सभी रोने लगेंगे तो अच्छा खासा बढ़िया मजाक हो जायगा।

* * *

भारतीय खाद्य प्रतिनिधिमंडल के नेता सर रामस्वामी मुदालियर ने विलायत और अमरीका की जो दौड़धूप की उसमें वह थोड़े बहुत सफल हो गये, अपने राम को यह जानकर निहायत खुशी हुई। सर रामस्वामी भारत आते समय जब कराँची में उतरे तो बोले की 'संयुक्त खाद्य बोर्ड ने

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित संयुक्तप्रांतीय सरकार की स्वास्थ्य तथा स्वायत्त शासन की मन्त्रिणी बनाई गई हैं।

अपने राम ज्योतिषी भी हैं। हमारा ज्योतिष यह बोलता है कि अगर अँगरेज बहादुर भारत से कूच न कर गये और उनका पाक क़दम यहाँ जमा रहा तो पाँच साल के भीतर ही भीतर अम्बेडकर-दल भी भारत का एक राजनैतिक दल बन जायगा। अम्बेडकर साहब का वही ओहदा होगा जो आज क़ायदे आजम मिस्टर जिन्ना का है। क्यों नहीं अम्बेडकर साहब महात्मा गांधी और पंडित नेहरू आदि से दो चार बार मिलते-जुलते, झगड़ते और बाद में उन्हें आमंत्रित करके अकड़ते? मिस्टर जिन्ना का गुरु-मंत्र यही है।

* * *

दिल्ली की खबर है कांग्रेस नेताओं से मिस्टर जिन्ना फिर मिलनेवाले हैं। अपने राम की राय में जरूर मिलना चाहिए। अभी मिलन ही कितना हुआ है। जिन्ना साहब से तो जितना भी मिला जाय प्यास बढ़ती ही जाती है। हाँ, मिलन का अंत कभी न होना चाहिए नहीं तो मामला गड़बड़ाया—पंडित रामनरेश त्रिपाठी ने लिखा है—

मिलन अंत है मधुर प्रेम का
और विरह जीवन है।
विरह प्रेम की जागृत गति है,
और सुषुप्ति मिलन है।

* * *

संयुक्तप्रांतीय सरकार का नया कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल

श्री रफ़ी अहमद किदवई संयुक्तप्रांत के नये तथा यह मन्त्री बनाये गये हैं।

श्री संपूर्णानंद जी, संयुक्तप्रांतीय सरकार के नये शिक्षा तथा अर्थ-मन्त्री।

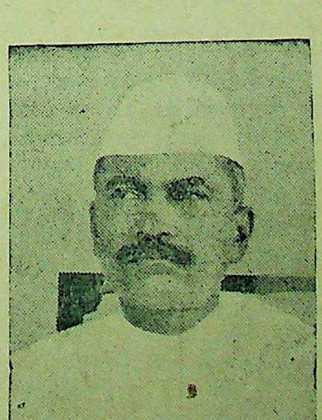

डाक्टर कैलाशनाथ काटजू, संयुक्तप्रांतीय सरकार के न्यायमन्त्री बनाये गये हैं।

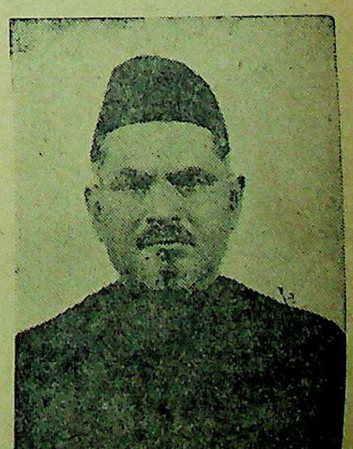

हाफिज मोहम्मद इब्राहीम जंगलात विभाग के नये मन्त्री बनाये गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्त्वपूर्ण सम्पादकीय लेख

कांग्रेस-मंत्रि-मंडल आ गया

यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि लगभग छः वर्ष के बाद संयुक्त प्रांतीय शासन की बागडोर पुनः कांग्रेसी मंत्रि-मंडल ने ग्रहण की है। सन् १९३९ में कांग्रेस ने मंत्रिपद ग्रहण किया था किन्तु दो वर्ष बीतने भी नहीं पाये थे कि मंत्रियों को त्याग पत्र देना पड़ा। तब से आज तक प्रांत का शासन गवर्नर तथा उनके सलाहकारों के हाथों द्वारा होता आया। छः वर्ष के अनवरत संघर्ष तथा कांग्रेस के त्याग और बलिदान के फल-स्वरूप आज पुनः अवसर आया है उसे शासन की बागडोर अपने हाथों म लेनी पड़ी है। प्रधान मंत्री पंडित गोविन्द-बल्लभ पंत तथा उनके सहयोगी अन्य मंत्रीगण—श्री रफी अहमद किदवई, डाक्टर कैलाशनाथ काटजू, श्रीमती विजय-लक्ष्मी पंडित, श्री संपूर्णानन्द तथा हाफिज मुहम्मद इब्राहीम ने शासन-ग्रहण करने की शपथ ली। इस प्रकार गवर्नरी शासन से प्रांत की बागडोर जनता की सरकार हाथ में आ गई। जिन मंत्रियों ने शासन-भार ग्रहण किया है उनकी योग्यता तथा लोकप्रिय शासन-संबंधी कार्य-पटुता से सभी पूर्णतया परिचित हैं। उनकी योग्यता में संदेह की गुंजाइश नहीं है क्योंकि मंत्रिमंडल ने छः वर्ष पूर्व भी शासन-भार ग्रहण किया था और प्रांत की जनता के हित की दृष्टि से वह एक लोकप्रिय सरकार सिद्ध हुई थी। इसलिए इस नये परिवर्तन से जनता-मात्र का प्रसन्न होना तथा उससे अपने हित की अधिक से अधिक आशा करना अनिवार्य है।

यद्यपि कांग्रेस ने प्रांत का शासन ऐसे समय में ग्रहण किया है जो संघर्षों से पूर्ण है। गत छः वर्ष के शासन-काल में युद्ध की छत्रछाया में जनता को कितना संकट झेलना पड़ा है और आज भी उसे किस कदर परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है यह किसी से छिपा नहीं है। प्रांत पर हुकूमत करनेवालों का कितना नैतिक पतन हो चुका है, उनमें मानवता किस अंश तक शेष रह गई है, इस पर कुछ कहने-सुनने की आवश्यकता नहीं है। जनता के प्रति अधिकारी कितने अनुदार रहे, जगह जगह कैसे कैसे अत्याचार किये गये, अनाज और कपड़ों के संकट से आज किस प्रकार त्राहि त्राहि मची हुई है, इन सभी परिस्थितियों का श्रेय महायुद्ध को तो दिया ही जा सकता है, किन्तु उन अधिकारियों का कम हाथ नहीं है जिनके हाथों में निरंकुश शासन की बागडोर रही है। घूसखोरी, अना-चार, अनैतिक आचरण और दमन का ऐसा बोलबाला रहा कि इतिहास के पन्नों में वह अमिट रहेगा। मजदूर, गरीब और किसान का कोई पुरसा हाल नहीं दिखाई पड़ता था। किसी की कहीं कोई सुनवाई नहीं होती थी। अधिकारियों का ध्यान अपने प्रभुओं को प्रसन्न करने में येनकेन प्रकारेण शासन-संचालन में हाथ बटाना था, वह भी डंडे और सख्ती के बल पर। उन्हें जनता के हित तथा लोकप्रियता की आवश्यकता ही नहीं प्रतीत होती थी। इस प्रकार प्रान्त की आर्थिक, सामाजिक, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा नैतिक दृष्टि से इतना पराभव हो चुका है कि उसका सँभा-लना और लोकप्रिय दृष्टि से सँभालना आसान कार्य नहीं है। अब कांग्रेस सरकार को इस प्रकार की विषम परिस्थिति का सामना करना है। हम यह भी जानते हैं कि कांग्रेस सरकार ही प्रान्त की वर्तमान विषम परिस्थिति को सँभाल सकती है क्योंकि उसे प्रान्त की करोड़ों जनता का विश्वास ही नहीं सहयोग भी प्राप्त है और अंत में वह सफल भी होगी इसमें भी तनिक संदेह नहीं। २७ महीने के शासन-काल में कांग्रेसी मंत्रि-मंडल ने जो सफलता प्राप्त की थी, उसे देखते हुए आज की विषम परिस्थितियों के निवारण की आशा करना उचित ही है।

कांग्रेस सरकार के सामने यद्यपि प्रान्त के शासन-प्रबंध की पूरी जिम्मेदारी आ गई है किन्तु तत्काल उसे कुछ ऐसी महत्त्वपूर्ण समस्याओं को सुलझाना है जिसने जनता का सीधा संबंध है और जिसकी शक्ति से उसे आज प्रान्तीय शासन की बागडोर प्राप्त हुई है। सबसे प्रमुख समस्या है अनाज की प्राप्ति की। पेट की चिन्ता आज की विषम समस्या है। कहावत है कि आगे से पीछा भारी होता है। आज तक तो युद्ध के कारण लोगों को आश्वासन दिया जाता रहा किन्तु अब जब युद्ध समाप्त हो चुका है, तब क्या कह-कर आश्वासन दिया जायेगा? संयुक्त-प्रान्त एक खेतिहर प्रान्त है। गेहूँ तथा जौ की फसल यहाँ अधिकता से होती है। यहाँ का खाद्य-अनाज अधिकांश रूप से गेहूँ है किन्तु राशनिंग-विभाग चावल खाने के लिए जोर लगाये हुए है। इसका प्रभाव सार्वजनिक स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। यही नहीं, सारे भारत में यही उलटबांसी अनाज के मामले में हो रही है और जिस मात्रा में राशन दिया जा रहा है, उसकी स्थिति तो और भी दयनीय है। कांग्रेस सरकार को प्रान्त की इस परिस्थिति को शीघ्र ही सँभालना चाहिए। यदि प्रान्त का अनाज बाहर न भेजा जाय तो स्थिति में बहुत कुछ सुधार हो सकता है। इसके बाद कपड़े की भी समस्या कम जटिल नहीं है। अब तो युद्ध खतम हो गया, मिलों पर अब सरकारी अधिकार भी समाप्त-प्राय सा है फिर सार्वजनिक उपयोग के लिए कपड़ों का अभाव क्यों है? प्रान्तीय सरकारों को केन्द्रीय सरकार के इस असामयिक प्रति-बंधों का प्रतिकार करना ही है क्योंकि युद्ध के बाद वस्तुओं के उत्पादन में संभवतः कमी नहीं हो रही है, अड़चन केवल यह हो रही है कि चीजें बाजारों में प्रतियोगिता के बल पर पहुँचने नहीं दी जा रही हैं। व्यापारियों को प्रतिद्वंद्विता करने का अवसर नहीं दिया जा रहा है, नहीं तो कम से कम कपड़े का अभाव आज न अखरता और सस्ते से सस्ते भाव में लोगों को प्राप्त होने लगता।

तीसरी बात यह है कि गुंडेबाजी इतनी अधिक बढ़ गई है कि सार्वजनिक जीवन खतरे में पड़ गया है। गुंडागिरी और घूसखोरी की इतिश्री करने के लिए कटिबद्ध होना, पिछले शासन की इन देनों के आमूल नष्ट करना ही उचित है। राजबंदियों के छुटकारे के लिए तो कांग्रेस सरकार स्वयं ही अपना पग उठा रही है, यह कार्य उसके अनुरूप ही है। वर्षों से कितने बंदी बंदीगृह में अपना समय काट रहे हैं। किन्तु अब समय आ गया है कि वह बाहर आएँगे और लोकप्रिय सरकार के कार्यों में सहयोग देंगे।

इनके सिवा अन्य परिस्थितियाँ भी हैं जिनका सामना कांग्रेसी मंत्रि-मंडल को करना है। किन्तु सबसे जरूरी है पेट की समस्या का हल। तत्काल राशनिंग-कार्य में सुधार, सहूलियत और अधिक से अधिक अनाज की प्राप्ति। हमें विश्वास है कि कांग्रेस मंत्रि-मंडल का यह कार्य कई दृष्टियों से सफल होगा। कांग्रेस तो जनता की संस्था है और उसका उद्देश्य ही जनता की हितचिंता के लिए मार्ग प्रशस्त करना रहा है और इसी से जनता ही नहीं सर-कारी तथा गैर-सरकारी बहुमत प्राप्त लोग कांग्रेस सरकार की ओर बड़ी आशा से देख रहे हैं।

हम कांग्रेस मंत्रि-मंडल का पुनः शासन-सूत्र स्वीकार करने पर स्वागत करते हैं और आशा करते हैं वह अपने लोकप्रिय शासन-काल में जनता की सेवा में पूर्ण सफलता प्राप्त करेगी।

एशियाई संस्कृति क्या है?

लेखक, श्री व्योहार राजेन्द्रसिंह, एम० एल० ए०

प्राचीन पुस्तकों में "कल्चर" के लिए "प्रबुद्धता" शब्द का प्रयोग किया गया है। भगवान् बुद्धदेव जो भारत, चीन, कोरिया आदि जापान में समान आदर भाव से पूजे जाते हैं इस प्रबुद्धता के आदर्श रूप थे। वह प्रबुद्धता केवल "जानकारी" नहीं है। मनुष्य में उच्च बुद्धि-युक्ति जीवन ही प्रबुद्धता है। आरंभ काल ही से भारतवर्ष इसका प्रचारक रहा है। भारतीय शास्त्रों में बारम्बार इस बात पर जोर दिया गया है कि बिना इस प्रबुद्धता या ज्ञान के भक्ति असंभव है। एक प्राचीन यहूदी लेखक ने कहा है कि ज्ञान से दुख और अधिक बढ़ जाता है किन्तु भारत की भावना बिलकुल दूसरी है। हमारे यहाँ ज्ञान दुःख नाशक माना गया है।

इस ज्ञान को हमारे यहाँ "दर्शन" भी कहा गया है किन्तु काहे का दर्शन? सब में एक अनन्त ब्रह्म का दर्शन "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" यही मेरी समझ में एशिया की संस्कृति का मूल रहस्य है। एशिया की एकता का यही कारण है कि उसने युग-युगान्तर में इसी आत्म-ज्ञान का प्रतिपादन किया है। इस संस्कृति की समस्या पर पूर्व में भिन्न-भिन्न दृष्टियों से विचार किया गया है। बौद्धिक, नैतिक और धार्मिक भारत, फारस, चीन, जापान, अरब और अफ-गानिस्तान के विचारकों, कवियों और पैगम्बरों का ध्यान इसी की ओर रहा है। भिन्न-भिन्न भाषाओं में भिन्न-भिन्न प्रकारों से इसका प्रतिपादन किया गया है किन्तु इस विभिन्नता में भी एक अन्तर-निहित एकता रही है क्योंकि समस्त एशिया का आत्मज्ञान एक ही है। उपनिषद् के एक ही वाक्य में इसका दर्शन कराया गया है:—"एकमेवाद्वितीयम्"।

इसी तत्व को एशिया की संस्कृति ने युग-युगान्तर में कला, काव्य, तत्वज्ञान और उपासना के द्वारा प्रतिपादन करने का सतत प्रयत्न किया है। यह बात बहुत महत्त्वपूर्ण है कि संसार के समस्त धर्मों ने एशिया में ही जन्म लिया है। हिन्दू, बौद्ध अग्निपूजक और इस्लाम एशिया ही में उत्पन्न हुए और ईसाई धर्म तो पूर्व का पश्चिम के लिए एक उपहार स्वरूप है। यूरोप की तरह एशिया ने धर्म और विज्ञान के बीच विरोध की बात नहीं की और न एशिया के ऋषियों ने कुछ पश्चिमी विचारकों की तरह संस्कृति और प्रकृति में विरोधाभास का विचार किया। भारत ने माना है कि प्रकृति ही के प्रभाव से संस्कृति या प्रबुद्धता की उत्पत्ति होती है। जिन महान् ग्रन्थों से आज विश्व का साहित्य सम्पन्न हो रहा है उनमें से अधि-कांश भारत के आश्रमों और वनस्थित विश्वविद्यालयों में रचे गये थे। एशियाई संस्कृति जर्मन संस्कृति के समान आक्रमण-कारी शक्ति नहीं है। प्राचीन भारतीय संस्कृति संकीर्ण राष्ट्रवाद के ऊपर विकसित नहीं हुई। मनुष्यता के प्रति बल्कि प्राणीमात्र के प्रति समान आदर भाव-द्वारा वह उद्बोधित है। विश्वात्मा के द्वारा सर्व-भूतों में आत्मैक्य भाव—यही हिन्दू और बौद्ध संस्कृति की सर्वोच्च भावना रही है।

कला, साहित्य, दर्शन, विज्ञान, सभ्यता और श्रद्धा ने किस प्रकार पूर्व से पश्चिम के राष्ट्रों को प्रभावित किया इसकी चर्चा करने में बहुत समय [illegible] जायेगा। "भारतीय संस्कृति परिषद्" नामक एक संस्था की स्थापना की आवश्यकता है जो कि पूर्व पश्चिम के विद्वानों को एकत्र कर विचार पूर्वक अध्ययन और अनुसन्धान के द्वारा भारतीय संस्कृति की महत्ता को प्रकाशित करे। हमारे देश के बौद्धिक विकास में किस प्रदेश ने भी कम भाग नहीं लिया। [illegible] बहुत थोड़े लोग जानते होंगे कि मुसलमानों के सभ्य के पूर्व सिंध में बौद्धों की प्रधानता थी। मुसलमानों के आगमन के साथ ही सिन्ध, बग़दाद के द्वारा पूर्व और पश्चिम के देशों से सम्बन्धित हो गया। बग़दाद उस समय इस्लामी संस्कृति का केन्द्र स्थान था। सिन्धी विद्वान्, वैज्ञानिक, दार्शनिक और कवि बग़दाद की राजधानी में गये। सिन्धी पंडितों ही ने संस्कृत साहित्य के अनेक ग्रन्थों का अनुवाद अरबी में किया था। इन्हीं अनुवादों को अरबी विद्वान् अपने साथ मध्यकालीन योरप के विश्वविद्यालयों में ले गये।

विद्वानों के लिए इस दिशा में अब भी सन्धान करने को बहुत विस्तृत क्षेत्र पड़ा हुआ है। ज्ञान ही से आत्माभिमान की बुद्धि होती है और जब सिन्ध के प्रदेश को अपने प्राचीन गौरव का ज्ञान होगा तब उनमें नवीन देशभक्ति का उदय होगा, उच्च आत्माभिमान का [illegible] होगा और तभी वे आर्य-आदर्श के उत्तराधिकारी होने की अपनी जिम्मेदारी समझ पायेंगे।

एशियाई संस्कृति बहुत ही मनो-मोहक विषय है। इस समय खासकर उसकी अत्यधिक आवश्यकता है, जब हम अपनी राष्ट्रीय-संस्कृति को पुनर्जीवित करना चाहते हैं जिससे कि भारत फिर से अपना शान्ति और सत्य का सन्देश पीड़ित राष्ट्रों को सुना सके। आत्म-दर्शन ही प्राचीनकाल में एशिया की महानता का कारण रहा है। दीवालिये योरप को अपनी सभ्यता को श्रीसम्पन्न करने के लिए इस आत्म-दर्शन की अनिवार्य आवश्यकता है। स्वर्गीय विज्ञानवेत्ता प्रोफेसर [illegible] के शब्दों में एक बार "पूर्व से ही पश्चिम में प्रकाश आया था और फिर से योरप में पूर्व ही से प्रकाश आयेगा।" मुझे एशिया के आत्मिक सन्देश में दृढ़ विश्वास है। संसार इस संदेश के लिए भारत की ओर देख रहा है और वह उस सन्देश को दे सकता है किन्तु शर्त यह है कि मनुष्य की सेवा की विनम्र भावना से हम पूर्ण करें। अभिमान, कामना, ईर्षा और [illegible] से कलुषित राष्ट्रीयता भारत को कभी उच्च नहीं बना सकती। एक चीनी सन्त ने कहा है, "नम्र बनो और तुम सशक्त हो जाओगे; सरल बनो और तुम महान् हो जाओगे।" यदि राष्ट्रों का आध्यात्मिक नेता बनने का सौभाग्य भारत को [illegible] में प्राप्त होने को है—और मेरा विश्वास है कि इतिहास की आत्मा उसे ऐसा बनाना चाहती है—तो भारत को विनम्र बनना होगा; मनुष्य जाति का सेवक होना होगा; ईश्वर का अनुगामी बनना होगा। काल पुरजों और जड़वाद से [illegible] हुए आधुनिक युग की रक्षा एशियाई संस्कृति से हो सकती है। पूर्व के [illegible] शास्त्र, साहित्यकला और आदर्श को [illegible] आत्मिक दर्शन ने प्रेरित किया है उनके द्वारा आज संसार की रक्षा हो सकती है।

*साधु वास्वानी के एक लेख का अनुवाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में आनेवाले तीन सयाने

मजदूर मंत्रि-मंडल के मंत्रियों को ज़रा पहचानिये तो !

लेखिका, कुमारी कमला शिवपुरी, एम० ए०

ब्रिटिश मज़दूर दल के तीन मंत्री इस समय भारतीय समस्या को सुलझाने के लिये भारत आये हैं। यह तीनों मंत्री कौन हैं? इनके जीवन कार्यों का लेखा-जोखा क्या है? राजनैतिक क्षेत्र में इनकी क्या स्थिति है, इन सब पर प्रकाश डालते हुए लेखिका ने बड़ी सुन्दरता से इन मंत्रियों को एक स्केच प्रस्तुत किया है। लेख सामयिक और जानकारी से पूर्ण है।

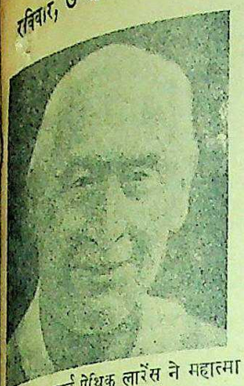

भारत सचिव लार्ड पेथिक लारेंस ने महात्मा गांधी से दिल्ली में भेंट की।

ब्रिटिश मजदूर मंत्रिमंडल की ओर से भारत आनेवाले चुने हुए तीन राजनीतिज्ञ भारत-सचिव लार्ड पेथिक लारेंस, सर स्टेफर्ड क्रिप्स और श्री ए० वी० एलेक्जेंडर यह प्रयत्न करेंगे कि ४० करोड़ भारतीय जनता को उसकी चिर अभीष्ट स्वतंत्रता समुचित रूप से किस प्रकार दी जाय। उनमें से एक तो दलित वर्ग के संरक्षक के रूप में ही अधिक विख्यात हैं, दूसरे की प्रसिद्धि, चातुरी और नेतृत्व के कारण हैं और तीसरे को सन् ४२ में भारतीय समस्या को हल करने के लिये किये गये असफल प्रयत्नों का प्रर्याप्त अनुभव है। सभी अनुभव-सिद्ध समाजवादी हैं और अपने देश की जनता के आदर के पात्र हैं। यदि ये लोग अपने प्रयत्नों में सफल हो गये तो यह सफलता इस शताब्दी में प्राप्त की गई सभी सफलताओं से अधिक महान् और गौरवपूर्ण होगी।

लार्ड पेथिक लारेन्स

लार्ड पेथिक लारेन्स—वृद्ध परन्तु कार्यतत्पर। लार्ड पेथिक लारेंस का जीवन सफलताओं का एक बहुत बड़ा और असमाप्त अध्याय है। उनकी आत्मकथा, "फ्रेट हैज़ बीन काइन्ड," जो पिछले वर्ष प्रकाशित हुई थी, इस युग के इतिहास की कहानी के लिये आवश्यक मानी जाती है। असफल प्रतीत होने वाले प्रयत्नों में उनको सदैव सफलता मिली है। अतएव जो उनके जीवन से परिचित हैं वे उन्हें आत्म-स्वार्थ के लिये कभी भी दोषी नहीं ठहरा सकते। दैवयोग से वे तीसरे भारत-मंत्री हैं जो अपने कार्य-काल में भारत आये हैं। सन् १९११ में लार्ड क्रीव ने पांचवें जार्ज के दरबार में बंग-भंग का गुप्त रहस्य खोला था। सन् १९१७ में एडविन मांटेग्यू ने तत्कालीन वायसराय लार्ड चेम्सफ़ोर्ड के साथ मिलकर बनाई गई योजना पेश की जो सन् १९१९ में ऐक्ट हो गया और जिसने सूबों में द्वैध-शासन की स्थापना की।

युवावस्था से ही भारतीय मामलों में इनको बड़ी दिलचस्पी है और 'मान-चेस्टर गार्जियन' के शब्दों में भारतीय स्वशासन से इनको आजीवन सहानुभूति रही है। एटन के पश्चात् आक्सफोर्ड में ये आदम-स्मिथ पुरस्कार के विजेता हैं। तीन महीने बीते जब इन्होंने अमेरिका का ऋण प्राप्त करने के लिये लार्ड कीन्स के द्वारा किये गये प्रयत्नों को अमूल्य सहायता दी थी। उन्होंने ए० टी० एस० की विदेश में की गई नियुक्तियों का इसलिये विरोध किया था कि उन कार्यों के अतिरिक्त और भी भय है। उन्होंने ग्रीस के मामले में मि० चर्चिल को चेतावनी दे दी थी। बेकारी के बारे में टोरी सरकार ने जो श्वेत-पत्र प्रकाशित किया था, उसका इन्होंने विरोध किया था और उसकी शर्तों को निर्दोष और अस्पष्ट बतलाया था। कर्मचारी की पराजय पर उन्होंने पहले ही से समझ लिया था कि उस देश में शान्ति की चार पहेलियाँ हैं। उन्होंने कहा था कि अत्याचारों के लिये उत्तरदायी मनुष्यों को ऐसा दण्ड देना चाहिए जिससे सतर्क और बुद्धिमान मनुष्य सन्तुष्ट रहें। सीमाओं का निर्माण ऐसा होना चाहिए जो योरप की शान्ति के लिये उपयोगी हो। सैनिक अधिकार पूरा होना चाहिए और वह तभी तक रहनी चाहिए जब तक उसकी आवश्यकता हो। जनता का शासन इस दृष्टि से होना चाहिए जिससे जर्मनी फिर आगामी २५ वर्ष के अन्दर ही बदला लेने की भावना से एक दूसरा युद्ध न छेड़ बैठे या योरप में बेकारी की समस्या अथवा आतंक कभी न फैलने पाये। अर्थशास्त्र और समाज-सुधार पर उन्होंने कई पुस्तकें लिखी हैं। उन्होंने नौकरियों और युद्धोपरांत नव-निर्माण की योजनाओं के लिये टोरी सरकार की खूब अलोचना की है।

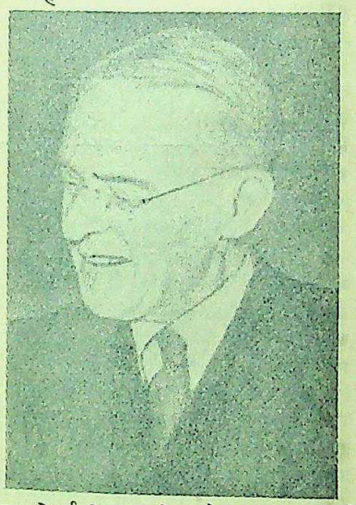

सर स्टेफर्ड क्रिप्स कांग्रेस और मुसलिम लीग के नेताओं के पास आवाजाही लगाये हुए हैं।

बंगाल के सन् १९४३ वाले दुर्भिक्ष के बारे में उन्होंने सर जार्ज शुस्टर के साथ, जो भारत के खाद्य-सदस्य थे, मि० एमरी की भी खूब आलोचना की थी। 'ईश्वरीय कोप', 'सम्राट के शत्रुओं के कार्य', 'दूसरों की हिफ़ाजत के लिये अपने बचे हुए माल को बेचने की कुछ सूबों की हिचकिचाहट', 'यातायात की कठिनाइयाँ', आदि सभी बहानों को गलत सिद्ध कर दिया था। उन्होंने चर्चिल को रूस के साथ कदम बढ़ाने की राय दी थी और युद्ध की एक संयुक्त नीति के लिये ही नहीं बल्कि युद्ध के बाद संसार के भविष्य के लिये भी १९४३ के अन्त के पहले चर्चिल-रुजवेल्ट-स्टेलिन कान्फ्रेंस पर जोर दिया था। सन् १९४३ में उन्होंने परराष्ट्र विभाग के मध्ययुगीय दृष्टिकोण की आलोचना की थी। उन्होंने स्त्रियों को वोट देने का हक दिलानेवाले आन्दोलन में बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य किया था। सन् १९१२ में स्त्रियों के एक हिंसात्मक प्रदर्शन के षड्यन्त्र के सिलसिले में ९ महीने की सज़ा भी काटी थी। जब इनके समाचार-पत्र 'दि ईको' का प्रकाशन बन्द हो गया तो उन्होंने कर्मचारियों और ऋण देने वालों को अपने पास से रुपये दिये। भारत के सम्बन्ध में उनके विचार प्रेस कान्फ्रेंसों द्वारा-भली भाँति स्पष्ट हैं जब कि एमरी के समय में भारत दफ़्तर के इन प्रेस कान्फ्रेंसों का कुछ पता भी न था। भारत में आज वातावरण परिवर्तित हो गया है। ७३ वर्षीय पेथिक लारेंस अँगरेज और भारतीय जनता में आधार रूप से एक नये प्रकार का संबंध चाहते हैं।

वे ठिगने कद के हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति हैं। कुछ झुके-झुके लगते हैं। चेहरे पर वृद्धावस्था के चिह्न हैं। जब वे कान्फ्रेंसों में भारत के विषय पर विचार करते हैं तो ऐसा प्रकट होता है कि यह नीली आँखों वाला एक अँगरेज है जो अहिंसा के अनाक्रमणकारी दर्शन में पूर्णतः डूबा हुआ है। वे अधिकतर लन्दन के बीच 'लिंकन इन' में अपने घर पर पाये जाते हैं। कभी-कभी वे देहात में भी जाते हैं जहाँ उनकी अपनी दूकानदारी है और जहाँ के गाँव वालों की कतार में खड़े होते हैं। वे एक अच्छे रसोइया हैं। अपनी युवावस्था में ये टेनिस खेलते थे और बिलियर्ड्स के अच्छे खिलाड़ी थे।

सर स्टेफर्ड क्रिप्स

सर स्टेफर्ड क्रिप्स के राजनीतिक जीवन में हमें प्रसिद्धि और अप्रसिद्धि के प्रमाण स्पष्ट रूप से मिलते हैं। ५७ वर्ष के इस वकील के वे कार्य जो इसने रूस में ब्रिटिश राजदूत की हैसियत से किये थे उतने ही प्रसिद्ध हुए हैं जितने 'बोर्ड आफ ट्रेड' के प्रधान की हैसियत से इसके कार्यों को आज सारा अँगरेज व्यापारी समुदाय अनिच्छा की दृष्टि से देख रहा है। 'इंडिया मिशन' में इसकी नियुक्ति पर 'डेली एक्सप्रेस' ने अभी-अभी इन शब्दों में प्रसन्नता प्रकट की थी, "क्रिप्स की उपस्थिति की अपेक्षा उनकी अनुपपस्थिति से ही उद्योगों की अधिक उन्नति होगी।" सन् १९४२ में अपने उद्देश्य की असफलता पर क्रिप्स ने दुनिया से कहा था, "हम जो कुछ भी दे सकते थे, हमने दिया। इससे अधिक हम कुछ नहीं दे सकते थे।" पंडित नेहरू ने इसका उत्तर इस प्रकार दिया था, "असफलता का कारण यह था कि कांग्रेस एक भारतीय नेता की अध्यक्षता में राष्ट्रीय सरकार की बात सोचती थी और ब्रिटिश सरकार अथवा क्रिप्स वायसराय और उसकी कार्यकारिणी की बावत सोचते थे।" अभी कुछ दिन हुए क्रिप्स ने "व्यापार-संधि के लिए व्यक्तिगत रूप से मास्को जाने की राय दी थी।" उद्योगों के लिये उनकी "वर्किंग पार्टीज़ (काम करनेवाले दल) की बड़ी कड़ी आलोचना हुई। कुछ दिन हुए उन्होंने कहा था कि जब तक सूत की मिलों को और अधिक कोयला नहीं मिलता है तब तक दूकानों में और अधिक माल की आशा बेकार है। इसलिए पत्रों ने उनका उपनाम 'आस्टेरिटी क्रिप्स' (कठोर क्रिप्स) रख दिया था। 'बोर्ड आफ़ ट्रेड' के प्रधान की हैसियत से वे विभिन्न प्रकार की जनता

महात्मा गांधी ने दिल्ली में तीनों ब्रिटिश मंत्रियों से वार्तालाप किया है।

के लिये विभिन्न विषयों पर बोलते आये हैं। विवाह-नेतृत्व-सभा के लिये उन्होंने कहा था, "यदि छत चुये न और कमरों में चूहे न दौड़ा करते हों, तो झोपड़ी में पला हुआ प्रेम सर्वश्रेष्ठ है। हाँ, मगर पारितोषिक प्रेम की तो बात ही दूसरी है।" तलाक़ के बारे में उन्होंने कहा था, "हमारे तलाक़ों की संख्या यह सूचित करती है कि एक जाति के रूप में हम अपने से छोटों को विवाह का वास्तविक आधार समझा सकते किन्तु हम उसका महत्व बतला सकने में कितने असफल हैं।" ये उसके उद्गार हैं जिसने ३५ वर्ष में विवाह किया था और जिसके एक पुत्र और तीन पुत्रियाँ हैं। छोटे दूकानदारों की राष्ट्रीय यूनियन के, यह विश्वास करते हुए कि बाहर भेजने के लिए अधिक और देश के लिए बहुत कम माल पैदा किया जा रहा है, क्रिप्स का, जब वे नाटिंघम गये थे, एक पोस्टर द्वारा इस प्रकार स्वागत किया था, "आओ, क्रिप्स का निर्यात कर दें।" फिर भी क्रिप्स अपनी उसी योजना पर डटे हैं और कहते हैं कि इस वर्ष अपने निर्यात को दूना करने की आशा करते हैं। वह १९३८ सन् के आँकड़ों से दूना होगा। उन्होंने दिसम्बर में कहा था, "ब्रिटेन का निर्यात ४३,५००,००० पौंड तक बढ़ गया है।" इन्होंने भी कई पुस्तकें लिखी हैं जिनमें से कुछ ये हैं, 'शान्ति के लिये संघर्ष', 'आज तक का प्रजातंत्र'।

वे लम्बे हैं और गम्भीर आकृति के हैं। इच्छा होने पर वे बहुत ही आकर्षक मुस्कान का अभिनय कर सकते हैं। भावुक चेहरे पर बिना उठा हुआ चश्मा उनकी आकृति को महत्त्वपूर्ण बना देता है और उन अवसरों को छोड़कर जब कि वे मंत्रि-मंडल के कामों में फँसे हों या पार्लियामेन्ट भवन में हों, उनके चेहरे से पूर्ण नम्रता और सहृदयता टपकती है। ऐसे अवसरों पर उनके बाल अपने स्थान से खिसकते हुए-से लगते हैं और उनके

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

श्री ए० बी० एलेक्जेंडर तीन मन्त्रियों में से एक आगत मन्त्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेडियो-कमेटी के नये कारनामे

रेडियो विभाग हिन्दी की उपेक्षा क्यों कर रहा है?

लेखक, श्री गोपाललाल खन्ना, एम० ए०

अखिल भारतीय रेडियो-विभाग हिन्दी तथा हिन्दी जनता की उपेक्षा सदा से करता आ रहा है। रेडियो-विभाग की हिन्दी विरोधी नीति के बहिष्कार के लिये हिन्दी-संसार ने जो प्रबल आवाज बुलन्द की है, उसी के परिणामस्वरूप अब रेडियो-विभाग ने नया पैंतरा बदलना शुरू किया है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने रेडियो अधिकारियों की नई पैंतरेबाजी की कड़ी आलोचना की है और हिन्दी-संसार को सावधान रहने के लिए आगाह किया है। इस लेख के लेखक हिन्दी-संसार के महारथी और रक्षक रायबहादुर स्वर्गीय बाबू श्यामसुन्दरदास के सुपुत्र हैं, जो अपने पिता की ही भाँति हिन्दी की स्वत्व-रक्षा के लिए कटिबद्ध हैं।

सर अकबर हैदरी द्वारा नियुक्त समिति जो आल इंडिया रेडियो को हिंदी-उर्दू के प्रश्न पर सलाह देती है उसने हिंदी-उर्दू के प्रश्न पर वही निर्णय किया है जिसकी संभावना थी अथवा जो आल इंडिया रेडियो चाहता था वही निर्णय समिति ने किया है। उसने निश्चय किया है कि रेडियो के समाचार जिस साधारण हिन्दुस्तानी में विस्तृत किये जाते हैं उसी भाषा में किये जायें और हिन्दी या उर्दू में अलग समाचारों का विस्तार न किया जाय। इसका तात्पर्य यह है कि रेडियो की भाषा-संबंधी नीति में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

इस निश्चय के समर्थन में जो कारण उस समिति ने दिये हैं, वे हिन्दी-जगत् के लिए विचारणीय हैं कि वह कितने ठोस अथवा पोले हैं। समिति का विचार है कि समाचारों को साधारण हिन्दुस्तानी भाषा में विस्तार करने के प्रयोग को रेडियोवालों को तब तक नहीं छोड़ना चाहिए जब तक वे सफल न हो जायें। अर्थात् उसका विश्वास है कि रेडियो विभाग एक भाषा-संबंधी प्रयोगशाला है और भाषा का निर्माण करनेवाली संस्था है। साथ ही आल इंडिया रेडियो की पिछले पन्द्रह वर्षों की अवधि की हिन्दुस्तानी भाषा-संबंधी खोज और प्रयोग से वह संतुष्ट नहीं है। इसके अतिरिक्त उसका विश्वास है कि वे थोड़े से व्यक्ति, जिनमें भाषा-संबंधी ज्ञान का सर्वथा अभाव है, जिस तरह की भी हिन्दुस्तानी भाषा चाहें उसे गढ़ें और उसी रूप में जनता पर लाद सकते हैं, चाहे वह जन-साधारण की बोलचाल की भाषा से सर्वथा भिन्न और विरूप ही क्यों न हो। हिन्दी अथवा उर्दू जिसका जनता पर सैकड़ों वर्षों से अधिकार है उसकी वह अवहेलना कर सकते हैं, क्या यह संभव है?

हमारी यह माँग कि कम से कम एक बार समाचार हिन्दी और उर्दू में विस्तृत किये जायें इसलिए ठुकरा दी गई कि ऐसा करने से समाचारों की भाषा 'साहित्यिक' हो जायगी अतएव जनसाधारण की समझ में नहीं आयेगी। हमारी समझ में नहीं आता कि यदि समाचारों की भाषा साहित्यिक हो जायगी तो क्या हानि होगी? हिन्दी और उर्दू दोनों साहित्यिक भाषाएँ हैं। इसी भाषा में राष्ट्र की सभी तरह की भावनाओं एवं विचारों का प्रकाशन होता है। क्या बँगला, तामिल, तेलगू, मराठी, गुजराती, अँगरेजी भाषाओं में विस्तृत समाचार साहित्यिक परम्परा से दूर अथवा भिन्न होता है? यह बहाना है और केवल हिन्दी-उर्दू को असाहित्यिक भाषा हिन्दुस्तानी से दबाने का प्रयत्न भर है। बी० बी० सी० सदा इस बात का ध्यान रखता है कि अँगरेजी भाषा की साहित्यिक परम्परा की सदा रक्षा हो और समाचारों की भाषा साहित्यिक जनसमूह की समझ के परे न हो। क्या वे लोग अपनी बोलचाल की साधारण असंस्कृत अँगरेजी भाषा का प्रयोग करने में असमर्थ होते हैं? परन्तु यहाँ भारतवर्ष में समाचार साहित्यिक भाषा में न होने चाहिए और उनकी भाषा तथा लिपि एक विशेष कोष का आधार होनी चाहिए जिसका निर्माण केवल रेडियो-विभाग के विद्वान् व्यक्ति ही कर सकते हैं। यह तो स्पष्ट लक्षित होता है कि यह केवल कुछ व्यक्तियों की मनमानी, अन्यायपूर्ण हिन्दी भाषा के साथ अत्याचार है। आल इंडिया रेडियो से विस्तृत समाचारों की भाषा ठेठ उर्दू भी नहीं है, हिन्दुस्तानी तो दूर की बात है। उसमें अँगरेजी के शब्दों का यथासम्भव समावेश रहता है और हिन्द के शब्दों पर पर्याप्त कुठाराघात होता है। 'नासमझी' की बात तो केवल बात है। रेडियो-श्रोता जो एक रेडियो खरीद सकता है और रख सकता है उसकी समाचार-पत्रों को समझने की योग्यता के सम्बन्ध में भी हमारे आल इंडिया रेडियोवालों को सन्देह है। हिन्दी और उर्दू के समाचार-पत्रों की भाषा भी उनकी कसौटी पर खरी नहीं उतरती। क्या प्रत्येक रेडियो-श्रोता अँगरेजी भाषा में विस्तृत सब समाचार समझने की योग्यता रखते हैं? क्या अँगरेजी समाचार सुननेवालों की संख्या हिन्दी-उर्दू समझनेवालों की संख्या से अधिक है। अँगरेजी भाषा में समाचार प्रायः सभी रेडियो-स्टेशनों से सुनाये जाते हैं और वे कथित हिन्दुस्तानी से कहीं अधिक समय तक सुनाये जाते हैं। इसका क्या कारण है? हिन्दी और उर्दू भाषा में प्रोग्रामों को अलग अलग छपवाने का क्या कारण है? क्या प्रोग्रामों को पढ़नेवाली जनता रेडियो सुननेवाली जनता से भिन्न है? रेडियो-प्रोग्रामों के ग्राहक उन प्रोग्रामों को क्या किसी अन्य आकर्षण से खरीदते हैं और वे रेडियो-श्रोता नहीं होते? यह भाषा-सम्बन्धी प्रपंच केवल समाचारों के लिए ही है। नहीं तो इस कमेटी को यह आदेश देने की क्या आवश्यकता पड़ती कि अन्य प्रोग्राम हिन्दी-उर्दू में पृथक् हो सकते हैं।

सीमाप्रान्त से लेकर पटना तक और दक्षिण में नागपुर तक हिन्दी और उर्दू को समझनेवाले अधिक हैं क्योंकि पठन-पाठन और व्यवहार की भाषा यही है, जिस प्रकार कि बंगाल में बँगला है। यद्यपि उक्त प्रदेश में अनेक बोलियाँ हैं और उनका हिन्दी-उर्दू से वही विभेद है जो बंगाल में बोली जानेवाली बोल-चाल की बँगला और साहित्यिक बँगला में है और जिसमें समाचारों का विस्तार होता है। इसी प्रकार मराठी, गुजराती, तामिल, तेलगू आदि भाषाएँ भी साहित्यिक ही हैं जिनमें समाचारों का विस्तार होता है। तब हिन्दी अथवा उर्दू के साथ ही यह अन्याय और उसके अधिकारों की अवहेलना क्यों की जाती है? क्या हिन्दी-उर्दू के स्थान पर एक गढ़ी हुई भाषा हिन्दुस्तानी को प्रतिष्ठित करने का सतत् उद्योग नहीं है? यह गढ़ी हुई हिन्दुस्तानी कदापि साहित्यिक भाषा नहीं हो सकती और न पूर्व-रचित साहित्यिक ग्रंथों का इस हिन्दुस्तानी में आमूल परिवर्तन हो सकता है।

आल इंडिया रेडियो की मनमानी करने का और हिन्दुस्तानी को हिन्दी-उर्दू के स्थान पर लादने का उद्देश्य इस बात से प्रमाणित होता है कि उनकी सलाहकार कमेटी में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो हिन्दी जानता हो—हिन्दी के विद्वान् की बात तो दूर की है। उसके सदस्य रेडियो-विभाग के उद्देश्य को ध्यान में रखकर चुने जाते हैं और डाइरेक्टर महोदय श्री बोखारी को यह अधिकार है कि वे अपनी रुचि के अनुसार उस समिति के सदस्यों को मनोनीत कर सकते हैं। श्री बोखारी हिन्दी के सर्वथा विरोधी हैं। इसी गुण से मोहित होकर सर सुलतान अहमद ने उनकी अवधि समाप्त होने पर पुनः उनकी अवधि पाँच-पाँच वर्ष तक बढ़ाई है। इस कार्य को सम्पन्न करने में उन्होंने तीन वर्ष की अवधिवाले नियम का उल्लंघन किया। यह केवल श्री बोखारी की हिन्दी-विरोधी प्रकृति का पुरस्कार है जिसके पीछे भीषण षड्यंत्र तथा रहस्य छिपा हुआ है।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का इस हिन्दी-विरोधी आल इंडिया रेडियो संस्था से मोर्चा लेना कठिन पड़ेगा। उनके भाषा-संबंधी दृष्टिकोण से उसका कभी भी सामंजस्य अथवा सहयोग नहीं हो सकता। रेडियो दृष्टिकोण निम्नलिखित उदाहरण से स्पष्ट हो जायगा जिसे हैदरी कमेटी ने हिन्दुस्तानी का पक्ष लेते हुए अपनी हिन्दुस्तानी की सिफारिश करते हुए लिखा है।

"हिन्दुस्तानी जबान के लिए लफ़्ज़ों के इन्तखाब के मुतल्लिक आल इंडिया रेडियो के डाइरेक्टर जनरल को मशविरा देने के लिए गवर्नमेंट आफ़ इंडिया ने एक मुशवती कमेटी मुक़र्रर करने का फैसला किया है। हिन्दुस्तानी का जो लेक्सिकन आल इंडिया रेडियो ने बनाया है उसे भी मुल्क के माहिरों और क़ाबिल लोगों के पास राय के लिए भेजा जायगा।"

यह रेडियो की हिन्दुस्तानी का उत्कृष्ट नमूना है। क्या हिन्दुस्तानी के हिमायती यह सिद्ध कर सकते हैं कि यह भाषा असाहित्यिक है और साधारण बोल-चाल की हिन्दुस्तानी भाषा है? इन दो वाक्यों में जन-साधारण की 'समझ में आ जानेवाले' शब्दों का ही प्रयोग हुआ है? क्रियापदों, सर्वनामों और अव्ययों को छोड़ कर शेष शब्दों में कितने शब्द ठेठ हिन्दुस्तानी के हैं?

लिपि-संबंधी विचार इन रेडियोवालों ने जान-बूझकर छोड़ दिया है। यह स्वयं सिद्ध है कि हिन्दुस्तानी समाचार की लिपि उर्दू ही रहेगी और हिन्दी के शब्दों की हत्या और हलाली होती ही रहेगी क्योंकि रेडियो-विभाग के कार्यकर्त्ताओं में बहुमत उर्दू के जानकारों का ही है। वे हिन्दी के साधारण से साधारण शब्दों का उच्चारण भी नहीं कर सकते हैं। हिन्दुस्तानी के पक्ष में दृढ़ संकल्प होकर श्री बोखारी का पड़े रहना निरुद्देश्य नहीं है। उर्दूवाले जो रेडियो-विभाग में खचाखच भरे हैं, उनकी रोजी-रोटी मारी जायगी। हिन्दी को स्थान देते ही उनको कार्यकर्त्ताओं में परिवर्तन करना पड़ेगा और उनके भाई बिरादरों का पालन-पोषण कठिन हो जायगा। इसी कारण वे रेडियो की भाषा-संबंधी नीति में कोई परिवर्तन करना नहीं चाहते। हिन्दी को रेडियो में स्थान देने के अन्य प्रान्तीय भाषाओं की भाँति मिलना असंभव है जब तक हिन्दी-प्रेमी रेडियो श्रोतागण एक मत होकर मेरे पिछले लेख के अनुसार उसका सर्वथा बहिष्कार नहीं करते। हिन्दी जबरदस्ती हटाई गई है उसे जबरदस्ती ही घुसना पड़ेगा। 'शठ शाठ्यं' के बिना काम चलता दिखलाई नहीं पड़ता।

हिन्दी का दुर्भाग्य है कि अभी तक यह राजभाषा नहीं हो पाई। राष्ट्रभाषा होने में भी अड़ंगों की कमी नहीं है। कांग्रेस हिन्दी के स्थान पर हिन्दुस्तानी को राष्ट्र भाषा बनाने पर तुली हुई है। प्रान्तीय भाषा हिन्दी है और उसको अधिकार से वंचित करने का बीड़ा रेडियो-विभाग ने उठाया है। हिन्दी के महारथी यदि अब भी सजग नहीं होते तो हिन्दी अपने घर का घर, गली-कूचे में से भी निकाल दी जाय तो कोई आश्चर्य नहीं। यह निद्रा अवस्था है, मोहनिद्रा है। केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हो जाने पर, प्रान्तों में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हो जाने पर क्या हिन्दीवाले कांग्रेस से यह आशा किये बैठे हैं कि वे लोग हिन्दुस्तानी के स्थान पर हिन्दी की श्रद्धा करेंगे और उसको उसका सर्वमान्य आदर और सत्कार समर्पित करेंगे?

हास्य-कौतुक

हँसते-हँसते लोटपोट हो जाने की आकांक्षा करनेवालों के लिए इसमें मनोनुकूल सामग्री मिलेगी, साथ ही साथ मानव-चरित्र का भी सुन्दर चित्र आप इसमें पायेंगे। मूल्य ।।)

परिणीता

उलझनों के कौतूहलप्रद वातावरण में ललिता और शेखर का प्रेम-सम्बन्ध इस उपन्यास में बड़ी ही कुशलता के साथ चित्रित किया गया है। उपन्यास में प्रेम की पावन गंगा का प्रवाह सर्वत्र व्याप्त है और उपन्यास सुखान्त है। इसके एक-एक शब्द में आपको रोचकता और कौतूहल का दर्शन होगा। मूल्य १।-)

मैनेजर—(बुकडिपो) इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग।

ईस्ट इन्डियन रेलवे

ईस्टर की छुट्टियाँ १९४६

ईस्ट इन्डियन रेलवे पर वापसी व रियायती टिकट ईस्टर की छुट्टियों में नहीं प्राप्त हो सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मज़दूर सरकार किधर जा रही है?

आठ मास के शासन का एक संक्षिप्त लेखा-जोखा

लेखक, प्रोफ़ेसर श्रीनारायण अग्रवाल, एम० ए०, बी० कॉम

ब्रिटिश शासन की बागडोर लिये मज़दूर मंत्रि-मंडल को आठ महीने हो रहे हैं, इस बीच में उसने उपनिवेशों के प्रति कहाँ तक अपनी उदारता प्रगट की है, और आर्थिक, व्यावसायिक और स्वतंत्र राष्ट्रों की दृष्टि से भारत ऐसे विशाल राष्ट्र के प्रति किस प्रकार की नीति ग्रहण की है, इन सभी विषयों पर इस लेख में विद्वान् लेखक ने सुन्दर आलोचना की है। लेख पठनीय तथा सामयिक है।

ब्रिटिश मज़दूर सरकार के प्रधान मंत्री मिस्टर एटली ने भारत को स्वतन्त्रता देने की घोषणा की है।

ब्रिटिश मजदूर दल को शासनारूढ़ हुए क़रीब आठ महीने पूर्ण होते आये हैं। इस थोड़े समय में ही राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में जितनी उथल-पुथल हुई है उतनी शायद पहले आठ वर्ष की अवधि में भी नहीं हुई। आर्थिक, राजनैतिक, व्यापारिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से प्रायः हर रोज़ नवयुग का निर्माण हो रहा है। पिछड़े राष्ट्र अपनी सदियों की निद्रा त्यागकर अंगड़ाई लेते हुए उठ बैठे हैं और अपने छीने हुए अधिकारों की पुनः प्राप्ति के लिए आस्तीन चढ़ाये कटिबद्ध हैं। भारत के कंधों पर इन पददलित देशों के नेतृत्व करने की जिम्मेदारी है और वह भरसक इस जिम्मेवारी को निबाहने की कोशिश कर रहा है। उसे शान्त एवं संतुष्ट करने को ब्रिटिश मंत्रिमंडल के तीन सदस्यों का शिष्टमंडल भारत आया हुआ है, ऐसी गंभीर परिस्थितियों में यह सामयिक एवं उचित होगा कि मजदूर दली सरकार के पिछले आठ मास के शासनकाल पर एक जरूरी निगाह डाली जाये।

ता० २६ जुलाई १९४५ का दिन संसार के राजनैतिक दलों के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा। ठीक आठ मास पूर्व इसी रोज रात को बी० बी० सी० ने आम चुनाव में मजदूर दल की आशातीत एवं शानदार विजय की घोषणा करके संसार को अचंभे में डाल दिया। कौन कह सकता था कि जिस अनुदार दल ने—चर्चिल और उनके साथियों ने—ब्रिटेन को मझधार में डूबती हुई नैया को पार लगाया—गिरे हुए, घबराते हुए, डंडकर को इसी तरह पिटे और पस्तहिम्मत राष्ट्र को ऊपर उठाया और विजय के राजमार्ग पर अग्रसर कर—"आँसू-पसीना और खून बहाकर"—फतह के सदर फाटक तक—पहुँचाया, वही दल अपने देशवासियों द्वारा ऐसी बेरहमी के साथ मुँह की खायेगा? यह इंगलैंड के इतिहास में अभूतपूर्व है? चुनाव का नतीजा मालूम होने के चार दिन के भीतर ही श्री चर्चिल को १० डाउनिंग स्ट्रीट का बँगला अपने विदेशी एवं नवनिर्वाचित प्रधान, मिस्टर एटली के लिए खाली करके मकानों के अभाव में अपने दामाद के गृह में आश्रय लेना पड़ा! ऊपर से देखने पर शायद मालूम हो कि यहाँ के लोग कृतघ्न हैं, नाशुक्र हैं, अपने लोकोत्तर नेता की इस तरह बेइज्जती कर देते हैं। परन्तु इस गहराई में पैठें तो इस निर्णय से जनता की समझदारी, साहस और खिलाड़ी भावना जाहिर होती है। समय की पुकार और जमाने की माँग को समझ कर ही उन्होंने यह क्रान्तिकारी क़दम उठाया और मजदूर दल ने ब्रिटिश-साम्राज्य-सूत्र अपने हाथों में लिया।

मजदूर दल ने शासन सूत्र संभालते ही अपनी संकल्पमूलक योजना देश के सामने रखी। अपनी घोषणा में उसने निम्न मुद्दों को प्रथम स्थान देकर सारी शक्ति से उन पर अमल करने का इरादा जाहिर किया :—

(१) जापान के विरुद्ध शीघ्रातिशीघ्र युद्ध जीतना।

(२) युद्ध में लगे सैनिकों को काम करना ताकि वे शहरियों के जरूरत की उपभोग्य चीजें पैदा कर सकें।

(३) गृहनिर्माण प्रोग्राम को—निवास-स्थान बनाने के काम को—द्रुतगति से आगे बढ़ाना।

(४) फैक्टरियों एवं मीलों का उत्पादन बढ़ाकर ब्रिटेन के विदेशी व्यापार की वृद्धि करना एवं औपनिवेशिक बाजारों पर फिर से अधिकार जमाना।

(५) बैंक आफ़ इंगलैंड, रेलगाड़ियाँ, कोयले की खानों आदि का राष्ट्रीयकरण करना।

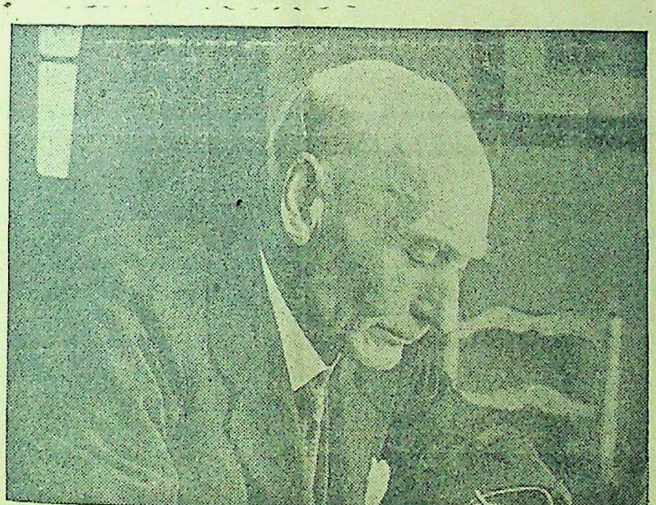

भारत-सचिव लार्ड पेथिकलारेंस जो आजकल भारत आये हुए हैं।

मजदूर दल की जीत से पिछड़े हुए, पददलित एवं शोषित राष्ट्रों के दिलों में खुशी और उम्मीदों की लहरें लहराने लगीं। भारत के नेताओं ने भी अपनी प्रसन्नता प्रगट की। नये प्रधान मंत्री को मुबारकबाद के तार भेजे गये। कुछ दिन ऐसा मालूम हुआ मानो जनसाधारण का—मजदूर और किसानों का—साम्राज्य सारे संसार पर छा जानेवाला है। दलित राष्ट्रों—मिश्र, फिलस्तीन, अरब, भारत और सुदूरपूर्व ने—यह तो सोचा ही कि मि० एटली और उनके सहायक—स्टैफोर्ड क्रीप्स, ह्यू डाल्टन, अरवेस्ट बेविन, प्रो० हैरोल्ड लास्की आदि—जिन्होंने कुछ ही दिन पहले अपने उदार और समाजवादी विचारों को ज़ोर-शोर के साथ दुहराया था, और संसार में स्वतंत्रता-स्थापन का बीड़ा उठाया था, उसके बिना मानो तिलमिला रहे थे, छटपटा रहे थे। संपूर्ण नहीं तो एक बड़ी हद तक गुलामी को उखाड़कर उसकी जगह आजादी के बीज बो देंगे। परन्तु मजदूर दल का घोषणा-पत्र पढ़कर आशावादी भी कुछ कुछ चकराये। उस पत्र में स्वतंत्रता का कहीं जिक्र ही न था; नामोनिशान भी नहीं था। उलटे उपनिवेशों का व्यापारिक शिकंजा अधिक कसने का इँगलैंड का इरादा अधिक साफ़ हो गया था। यह चाल इतनी स्पष्ट थी कि वह राजनीतिज्ञों की पैनी दृष्टि से छिपी न रह सकी। किन्तु उसकी कटु आलोचना और तीव्र विरोध इस ख्याल से स्थगित रहा कि उस समय ब्रिटेन जीवन-मरण के संग्राम में संलग्न था। जर्मनी की हार होने पर भी जापानी साम्राज्य की जड़ें काफी गहराई तक मालूम देती थीं। अतः ऐसी परिस्थितियों में यह समझा गया कि इँगलैंड अपने तईं सोचे; अपना घर व्यवस्थित करने की फिक्र और फिराक में रहे और परमार्थ, आदर्श और न्याय की बातों की तरफ़ नजर दौड़ाने की फुरसत उसे न मिले।

सौभाग्य से पाट्सडैम कान्फ्रेंस एवं मजदूर दल के पदारूढ़ होने के १५ दिन के अंदर ही—१५ अगस्त १९४५ को 'एटम-बम' के जौहर ने जापान को बिना शर्त आत्मसमर्पण करने को मजबूर कर दिया। मित्रों ने मदोन्मत्त होकर विजय मनाई विजेताओं ने अपने उन्माद और नासमझी में समझा कि हिटलर, मुसोलिनी और टोजो हमेशा के लिए कुचल दिये गये। परन्तु यह प्राथमिक सत्य भूल गये कि वे खुद जब तक अधिकार-लोलुपता और साम्राज्य-लिप्सा से मुक्त नहीं होते तब तक सवाई हिटलरों से, सवाई टोजो से दुनिया मुक्त नहीं हो सकती? वे खुद ही दुनिया के लिए हिटलर से भी अधिक भयंकर—अभिशाप साबित हो जाएँगे।

आज छः माह के बाद यह स्पष्ट हो गया है कि मजदूर दल से जो आशायें की गई थीं वे नितान्त थोथी और बेबुनियाद थीं। १९४५ की एटली की सरकार १९३९ की मैकडोनल्ड की मजदूर सरकार से अपने उद्देश्यों और उन्हें मूर्त्त स्वरूप देने के लिए आयोजित साधनों में विशेष विभिन्न नहीं है। दोनों को अपना एकाधिकार एवं साम्राज्य ज्यों का त्यों क़ायम रखना था। अन्यथा इँगलैंड दोयम दर्जे का राष्ट्र बनने

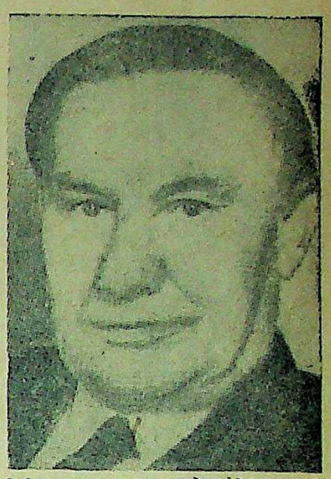

ब्रिटिश मजदूर सरकार के वैदेशिक मंत्री मिस्टर बेविन तृतीय महायुद्ध नहीं चाहते।

की जोखिम उठाता है। इस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए वह संसार की अन्य साम्राज्यवादी एवं प्रतिक्रियावादी शक्तियों को सहायता और सहयोग देने को प्रस्तुत है; उनके कंधे से कंधा मिलाकर चलने को उद्यत है। सुदूरपूर्व में—जावा, सुमात्रा, हिंदचीन आदि देशों में—डच एवं फ्रांसीसी वर्चस्व क़ायम रखने के लिए वे स्वतंत्रता-प्रिय राष्ट्रवादियों को कुचलने के लिए हथियारों से तैयार हैं। मतलब और स्वार्थ जाहिर हैं। इँगलैंड साम्राज्यवादी राष्ट्रों के गुट्ट का अगुआ है और उस जर्जर प्रथा को क़ायम रखना चाहता है। उसे यह समझते देर नहीं लगी कि यदि सुदूर-पूर्व में डच और फ्रांसीसी साम्राज्य उठ गया तो मलाया, बर्मा, सीलोन और भारत में भी ब्रिटिश साम्राज्य के पंजे अधिक दिन तक मजबूत नहीं रह सकते। यहाँ की जनता भी अपने पड़ोसियों के पद-चिन्हों पर चलकर गुलामी का जुआ हमेशा के लिए उतार फेंकेगी। इस संभावना को टालने के लिए ही गिरते, ढहते हुए साम्राज्य की इमारत को सहारा देने की असफल कोशिश में अँगरेजी जहाजी एवं हवाई बेड़ा बटाविया में तैनात कर दिया गया है। ऊपर से अँगरेज जनरल क्रिस्टीसन ने जावा के देश-भक्तों को चेतावनी या कहिए धमकी दी है कि यदि २४ घंटे में उन्होंने हथियार नहीं डाल दिये तो नाश के नवीनतम एवं भीषणतम शस्त्रास्त्रों का सारी शक्ति के साथ उपयोग कर उन्हें बेरहमी से कुचल दिया जायेगा। इस चेतावनी पर एक हद तक अमल भी किया जा चुका है। वह भी भारतीय सिपाहियों के जरिये! कांग्रेस ने यह अच्छा ही किया कि अपना रुख पहले ही स्पष्ट करके ग़लतफहमी और झूठे प्रचार से अपने को बचा लिया। प्रेसीडेंट आजाद ने अपने वक्तव्यों-द्वारा सुदूर-पूर्व के स्वातंत्र्य संग्राम के साथ भारत की हार्दिक सहानुभूति एवं सहायता व्यक्त की एवं साथ ही सरकार से अनुरोध किया कि वह भारतीय सिपाहियों का उपयोग अपने पड़ोसियों के उदात्त, न्याय एवं मानवोचित आकांक्षाओं की पूर्ति के प्रयत्नों को नाकामयाब करने में न करे। बहुत संभव है विजयोन्मत्त मजदूर सरकार इस अनुरोध को अनसुना कर दे। परन्तु इससे एक लाभ तो हुआ ही और वह यह कि इससे इंडोनेशियनों के दिलों में भारत के प्रति भाईचारा एवं प्रेम बढ़कर कटुता के लिए गुंजाइश नहीं रही। इस विप्लव का क्षणिक परिणाम चाहे जो कुछ हो; किन्तु यह निश्चय है कि निकट भविष्य ही में सारे एशिया की शोषित कौमें एक सूत्र में बँध जायेंगी। ऐसी हालत में गोरों को यहाँ से अपना बोरिया-बँधना उठाकर कूच करने के अलावा दूसरा चारा ही क्या हो सकता है? सरदार पटेल का "भारत छोड़ो" से एक क़दम आगे

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनिक

डाक्टर रघुनाथ पुरुषोत्तम परांजपे

राजनैतिक और विद्यार्थी-जीवन पर एक पत्र संवाददाता के प्रश्नोत्तर

लेखक, श्री शंकरदेव विद्यालंकार

डाक्टर परांजपे शिक्षा-जगत् में तथा राजनीति में नरम दल प्रसिद्धि-प्राप्त नेता हैं। इस वर्ष आपकी आयु ७३ वर्ष की है। एक संवाददाता ने विभिन्न विषयों पर आप से कुछ प्रश्न पूछे। उन प्रश्नों का जो उत्तर आप ने दिया वह राजनैतिक तथा विद्यार्थी-जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालनेवाला है। लेख अत्यन्त रोचक और जानकारी से पूर्ण है।

वीर सावरकर पर विद्यार्थी-जीवन में डाक्टर पराजपे ने अनुशासन की कार्यवाही की थी।

दण्डायमान देहयष्टि, भरावदार और पुष्ट अंग, प्रभावशाली व्यक्तित्व, विलियम कैसरनुमा ऐंठी हुई शानदार मूँछ और चमकीले लोचन! किसी भी सभा-सोसायटी में स्थित इन विशेषताओं-वाले व्यक्ति को खोज निकालना आपके लिए कठिन नहीं होगा। ये ही हैं—प्रख्यात गणिताचार्य, महाराष्ट्र के मेधावी सुधारक, शिक्षणशास्त्री, अध्यापक, उदारबल के एक स्तंभरूप और महामना गोखले द्वारा गढ़े हुए सुशिष्य डा० सर रघुनाथ पुरुषोत्तम परांजपे! जो कि पिछले दिनों भारत की ओर से आस्ट्रेलिया के लिए सर्व-प्रथम भारतीय राजदूत बनाये गये हैं।

अपनी पूर्वकथा कहते हुए एक पत्र-कार प्रतिनिधि से डा० परांजपे कहने लगे—"मेरे पिता जी तो मुझे पुरोहिताई की तालीम दिया चाहते थे। मेरे दो भाई पिता जी की इच्छानुसार वेदपाठी बनाय भी गये हैं। स्कूल की तालीम में भी मैं वर्नाक्यूलर फाइनल से आगे नहीं गया होता। अधिक से अधिक शायद मैं पटवारी बन गया होता। यह मेरे आदरणीय गुरु अण्णा साहब कर्वे—जो कि मेरे ममेरे भाई होते हैं—के प्रयत्नों का फल है कि मैंने ऊँची तालीम पाई। और राजनीति के विशाल क्षेत्र में खींच लाने का श्रेय है मेरे श्रद्धेय गुरु स्वर्गीय महामति गोखले को।

मेरे निर्माता

बम्बई विश्वविद्यालय की मैट्रिक परीक्षा में शानदार नंबरों में पास होकर मैं पूना के सुविदित फरग्यूसन कालेज में प्रविष्ट हुआ। उस समय गोखले जी उसके आचार्य थे। समय-समय पर वे मुझे बुलाकर सीख देते रहते थे और वास्तव में तो वे अपने पीछे उक्त कालेज के प्रधान कार्य-वाहक के रूप में किसी को नियुक्त कर स्वयं राष्ट्र-सेवा के विशाल क्षेत्र में प्रविष्ट होने की प्रतीक्षा में थे। स्नातक बन जाने पर गणितशास्त्र में विशेष योग्यता प्राप्त करने के कारण मुझे भारत-सरकार की शिष्य-वृत्ति (स्कालरशिप) प्राप्त हुई। इंग्लैंड जाने से पूर्व ही मुझे गोखले ने इस बात के लिए राजी कर लिया था कि वहां से लौटने पर मैं डैक्कन एज्युकेशन सोसायटी का आजीवन सभ्य बन जाऊं। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से मैंने "गणितकेसरी" (सीनीयर रैंगलर) का यशस्वी पद पाया। भारत लौटने पर मैंने अपने पूर्व वचन का पालन किया। मेरे सामने शानदार सरकारी नौकरी के आकर्षण विद्यमान थे। परन्तु कर्मवीर गोखले की महान् देशभक्ति और त्याग ने मुझे प्रभावित किया था। अतः मैंने कालेज की सेवा करने में अपने को धन्य माना! मैं आज जो कुछ भी बन पाया हूं उसमें गुरुवर गोखले और अण्णा साहब कर्वे की शिक्षा और प्रेरणा ही प्रधान है।

शिक्षा-गुरु

सचमुच ही कैम्ब्रिज की परीक्षा में अपनी प्रतिभा का यशस्वी परिणाम प्राप्त करके श्री० परांजपे यदि चाहते तो बड़ी भारी सरकारी नौकरी प्राप्त कर सकते थे। परन्तु उन्होंने ७५) रुपये मासिक दक्षिणा पर फरग्यूसन कालेज में गणित का प्रोफ़ेसर और आचार्य बनना स्वीकार किया। और यह कार्य उन्होंने पूरे बीस वर्ष तक कुशलता-पूर्वक निबाहा! उसके बाद की इनकी सार्वजनिक और सरकारी सेवायें पर्याप्त प्रसिद्ध हैं। बंबई सरकार के सदस्य बनने से लेकर लखनऊ विश्वविद्यालय के वाइसचान्सलर बनने तक अनेक उत्तर-दायी पदों पर आप काम करते रहे हैं।

आचार्य धोंडो केशव कर्वे द्वारा प्रतिष्ठापित भारतीय महिला विद्यापीठ, पूना के विकास में भी डा० परांजपे का बड़ा हिस्सा रहा है। कुछ वर्षों तक आप इस महिला शिक्षणालय के वाइसचान्सलर भी रहे हैं।

राजनीति से उपराम

लखनऊ यूनिवर्सिटी के वाइसचान्सलर पद से निवृत्त हो जाने पर पूना में उनके निवासस्थान पर जाकर एक पत्र-प्रतिनिधि ने पूछा था—"अब आपकी कार्य-योजना क्या है?"

डा० परांजपे ने कहा—"मैं अब ६३ वर्ष का हो गया हूं। अब तुम मुझसे किसी परिश्रमपूर्ण राजनीतिक कार्य की आशा नहीं रख सकते! इसके सिवाय बहुत से नवीन रुधिर के व्यक्ति हम जैसे लोगों की निवृत्ति भी चाहते हैं, अतः अब राजनीति का काम हम उनके लिए छोड़ देते हैं।"

पत्र-प्रतिनिधि—"तरुण लोग आप सदृश बुद्धिवादी को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। क्योंकि आप भले ही उदार मतवादी हों, पर आपका बुद्धि-वादी दृष्टिकोण भूत की अपेक्षा भविष्य पर अधिक जोर देता है।"

डा० परांजपे—"यह ठीक है, पर बुद्धिवादी लोग भी अपनी परिस्थितियों और सीमाओं को लाँघ नहीं सकते। प्रत्येक प्रजा में प्रगतिवादी मानस के लोग हुआ करते हैं। परन्तु उनके पंख भी अपने पीछे

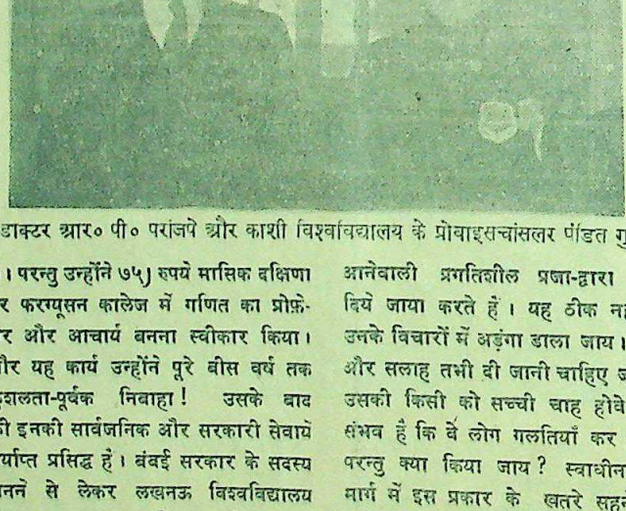

डाक्टर आर० पी० परांजपे और काशी विश्वविद्यालय के प्रोवाइसचांसलर पंडित गुट्टू।

आनेवाली प्रगतिशील प्रजा-द्वारा कतर दिये जाया करते हैं। यह ठीक नहीं कि उनके विचारों में अड़ंगा डाला जाय। सीख और सलाह तभी दी जानी चाहिए जब कि उसकी किसी को सच्ची चाह होवे। यह संभव है कि वे लोग गलतियाँ कर जायें। परन्तु क्या किया जाय? स्वाधीनता के मार्ग में इस प्रकार के खतरे सहने ही पड़ते हैं।

सावरकर को निकाल दिया

पत्र-प्रतिनिधि—"क्या आपने श्रीयुत सावरकर को कालेज से बहिष्कृत कर दिया था?"

श्री परांजपे—"हाँ, वह अपने कालेज-जीवन में एक चतुर आन्दोलनकर्त्ता था। वह बढ़िया मराठी और अँगरेज़ी बोल सकता था। जब वह बी० ए० में पढ़ता था तब मैंने उसे २५) का दण्ड दिया और कालेज से बाहर निकाल दिया था। पीछे से मुझे पता चला कि वह तिलक जी के पास गया था—उनकी मदद प्राप्त करने के लिए। परन्तु तिलक जी ने उसको धमकाया था कि तुमने कालेज का अनुशासन भंग किया है, यह ठीक नहीं।

पत्र-प्रतिनिधि—"क्या आपने लखनऊ विश्वविद्यालय में समाजवादियों के व्याख्यानों पर रोक लगाई थी?"

श्री परांजपे—"नहीं, सर्वथा नहीं। राजनीतिक विचारों पर मैं किसी प्रकार की रोक-थाम नहीं लगाता हूँ। मैं चाहता हूँ कि विद्यार्थी सभी प्रकार के राजनीतिक विचारों का अनुशीलन किया करें, परन्तु उन्हें अपनी छात्रदशा में कार्यरूप में लाने आन्दोलनों में भाग नहीं लेना चाहिए। इस विषय में महामना गोखले के इन विचारों का जो कि उन्होंने आज से ३० वर्ष पूर्व कहे थे मैं अधिकाधिक सम्मान करता हूँ। वैसे तो मैं छात्रों में पंडित जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचन्द्र बोस के व्याख्यानों के लिए भी अनुमति देता रहा हूँ।"

पूना और लखनऊ के छात्र

पत्र-प्रतिनिधि—आप बीस वर्ष तक फरग्यूसन कालेज में रहे और बाद में लखनऊ विश्वविद्यालय में भी आपका काफी काल रहा। दोनों प्रदेशों के विद्यार्थियों के विषय में आपके क्या विचार हैं?

श्री परांजपे—"दोनों स्थानों के छात्रों में बड़ा भेद है। पूना और बंबई की ओर के विद्यार्थी बड़े फुर्तीले, दुबले-पतले, कुशाग्र बुद्धिशाली और आत्मसम्मानशील होते हैं, और लखनऊ की ओर के छात्र आराम-पसन्द, सुखार्थी और अध्ययन में कम रुचि रखते हैं।

यदि पूना की ओर दो कालेजों के बीच क्रिकेट का मैच हो तो दोनों कालेजों के ९० प्रतिशत छात्र उसमें उपस्थित होते और बड़ा उत्साह और आनंद-उल्लास का वातावरण होना। पूना की ओर के विद्यार्थियों में राजनीति और सार्वजनिक कार्यों की ओर विशेष दिलचस्पी होती है। लखनऊ में ऐसा नहीं है। हाँ बनारस की दशा लखनऊ से अच्छी है। इलाहाबाद भी कुछ अंशों में लखनऊ से अच्छा कहा जा सकता है।

डा० परांजपे पक्के उदार दलवाले हैं। कहना चाहिए कि वे एड़ी से चोटी तक लिबरल हैं। वे भावावेश में कभी नहीं आते। वे माने हुए गणिताचार्य हैं, अतः प्रत्येक समस्या और विचार को खूब अच्छी तरह से तौलते हैं, परखते हैं। श्रीगोखले के सिद्धान्तों में उनकी अटूट श्रद्धा है। लिबरल फैडरेशन के आप दो बार सभापति बन चुके हैं।

"एक व्यक्ति के जीवन में योग्य अवसर कितना फरक पैदा कर देता है? क्या आपने कभी यह विचार किया है कि ऐसे प्रतिभावान् व्यक्ति इस प्रकार के अवसर किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं?"—पत्र-प्रतिनिधि ने अचानक प्रश्न किया।

"निःसन्देह ऐसे अवसर बहुत से मनुष्यों को प्राप्त होते हैं?"—डा० परांजपे ने शान्तिपूर्वक उत्तर देना प्रारंभ किया। "वर्तमान परिस्थिति में जब कि हमारे समाज में ग़रीबों की संख्या अधिक है, हम लिबरल लोग सब के लिए समान अवसर मिलने चाहिए इस विचार के पक्षपाती हैं। परन्तु हम यह भी अनुभव करते हैं कि आर्थिक असमानता के कारण हमारे अनेक कार्य रुके रहते हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमारे समाज की पुनः रचना करने के बाद के सिद्धान्तों के आधार पर होनी चाहिए। यह सब किस प्रकार हो सकता है, यह मैं अभी नहीं कह सकता।

बातों के सिलसिले में डाक्टर परांजपे

शेष पृष्ठ १८ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दार्शनिक !

लेखक, श्री महेन्द्रनाथ 'मधुकर'

दार्शनिक भी एक विचित्र प्राणी होता है। उसकी सूझ-बूझ, बुद्धि और तर्क भी प्रायः सीमा पार कर जाते हैं। वह विद्यार्थी-जीवन से ही दर्शन से प्रभावित था; किन्तु वह प्रभाव उसके लिए अन्त में घातक सिद्ध हुआ। वैवाहिक जीवन ही नहीं, जीवन भी समाप्त हो गया। कहानी-लेखक ने बड़ी सुन्दरता से मानव भावनाओं का चित्रण किया है।

निखिल—

न जाने क्यों प्रोफेसर मेहता की वह बात मेरे मन में इतनी जम गई है कि मैं उसे भूल ही नहीं पाता। चाहता हूँ कि उस बात को भूल जाऊँ पर किसी तरह मैं उस बात को भूल नहीं पाती। कभी-कभी मुझे अपने ऊपर इतनी झुंझलाहट मालूम होती है कि मैं कह नहीं सकता। सोचता हूँ व्यर्थ ही मैं फिलासफी था विषय बी० ए० में ले लिया।

हाँ, तो उस दिन जब प्रोफेसर मेहता क्लासकी पढ़ाने आये तब उन्होंने अपने लेक्चर के बीच में कहा—'मेरी एक बात याद रखियेगा कि सुन्दरी कभी भी अपने पुरुष से प्रेम नहीं कर सकती। प्रेम करना तो दूर रहा उसकी ओर वह देखना भी नहीं पसन्द करेगी। इस बात का तो आप स्वयं ही निरीक्षण कर सकते हैं। मैंने यह बात इसलिए कही है कि यह भी एक कटु सत्य बात है जिससे आजकल विवाहित जीवन बड़ा ही नीरस हो जाता है और समाज में अनेक प्रकार की कुरीतियों का जन्म होता है।'

लड़कों ने हँसते हुए उनकी बात का समर्थन कर दिया; किन्तु मैं कुछ भीन बोल सका। चुपचाप उनकी बातें सुनता रहा। प्रोफेसर मेहता ने एक बार मेरी ओर देखा मानो वह मेरे हृदय की बात समझ गये हों। तुरन्त ही वह बोल उठे—'मैंने इस कक्षा के किसी विद्यार्थी की ओर लक्ष्य करके यह बात नहीं कही है बल्कि चेतावनी के रूप में। शायद श्री निखिलकुमार मेरी बात का बुरा मान गये हैं।'

'जी, नहीं'—मैंने हँसते हुए उनके मन के सन्देह को दूर करने के लिए कहा।

लड़के मेरी ओर देखकर ठठ्ठा मार-कर हँस पड़े। प्रोफेसर मेहता भी अपनी हँसी न रोक सके। कुछ देर बाद उनका लेक्चर फिर शुरू हो गया पर मेरी तबिअत उस वक्त नहीं लग रही थी। उनकी वह बात हृदय में ऐसी बैठ गई कि न निकाले निकलती और न भुलाये भूलती थी।

उस दिन शाम को फिर मेरी इच्छा कहीं बाहर घूमने जाने की नहीं हुई। आय पीकर मैं चुपचाप अपने बिस्तरे पर लेट गया और सिगरेट जलाकर पीने लगा। प्रोफेसर मेहता की वह बात मस्तिष्क में बराबर घूमती रही। सहसा किसी ने मेरे कमरे का दरवाज़ा खोला। मैं सचेत हुआ। देखा शंकर सामने खड़ा मुस्करा रहा है। मैंने कहा—'आओ शंकर, बैठो।'

उसने बैठते हुए कहा—'कहीं घूमने नहीं चलोगे। चलो पिक्चर ही देख आयें। बहुत दिन से कोई पिक्चर नहीं देखी है।'

मैंने कहा—'मेरी तबिअत ठीक नहीं है। तुम देख आओ।'

उसने कहा—'यह तुम जानते हो कि मैं तुम्हारे बिना न तो घूमने जाता हूँ और न पिक्चर देखने। फिर ऐसी बात तुमने कैसे कही?'

मैं हँस पड़ा, पर उस हँसी में चिन्ता की रेखाएँ झलक रही थीं। शंकर को यह बात समझते देर न लगी।

शंकर ने कहा—'क्यों क्या प्रोफेसर मेहता की बात का तुम बुरा मान गये?'

मैंने कहा—'बिलकुल नहीं, पर अच्छा ही हुआ उन्होंने यह बात कह दी और कई मौके से।'

उसने पूछा—'क्यों?

मैंने कहा—'क्योंकि पिता जी शीघ्र ही मेरे विवाह की बात-चीत करेंगे। मैं काला हूँ। काले पुरुष को कभी नहीं प्यार कर सकती। इसलिए अब मैं विवाह नहीं करूँगा।'

शंकर हँस पड़ा।

मैंने कुछ गंभीर मुद्रा से कहा—'शंकर मैं बात हँसने की नहीं और न यह मेरा दृढ़ निश्चय ही है। यह कटुसत्य है। मैं इसका, कई दिनों से, यूनिवर्सिटी में ही अनुभव करता आ रहा हूँ। यों तो लड़कियाँ मेरी ओर कभी देखती ही नहीं और यदि देखती भी हैं तो ऐसा मालूम पड़ता है कि मानो उनकी दृष्टि से घृणा टपक रही है। इसका कारण मैं आज समझ पाया हूँ। पर यह बात तुम किसी से कहना मत। तुम मेरे घनिष्ठ मित्र हो। मैं तुमसे कभी भी कोई बात नहीं छिपाता।'

शंकर की सारी हँसी सागर में एक बूंद के समान विलीन हो गई।

कुछ देर बाद शंकर ने विनय करते हुए कहा—'आज मेरी पिक्चर देखने की बड़ी इच्छा है।'

मैंने कहा—'अच्छा, खैर आज चला चलता हूँ, चलो।'

आज मेरा विद्यार्थी-जीवन समाप्त

हो चुका है और मैं 'सहेली' के सम्पादन-विभाग में नौकर हो गया हूँ। शंकर अभी एम० ए० में पढ़ता है। उसने मुझसे कई बार जोर दिया कि मैं एम० ए० पढ़ूँ पर घर की आर्थिक दशा ऐसी नहीं थी कि मैं आगे पढ़ सकता। फिर अभी घर में दो बहनों का विवाह होना बाकी है।

विवाह के संबंध में दो साल से बराबर चर्चा चल रही थी पर मैं पढ़ाई में हानि होगी यह बहाना करके अपने को बचाता रहा। पर आज इस बन्धन से बचना कठिन मालूम पड़ता है। ऐसा प्रतीत होता है कि मानो माता-पिता के तर्क, वाद-विवाद धमकियों के सामने मेरी सारी फिलासफी, सारी बुद्धि खो सी गई है। आखिरकार माता-पिता के तर्क और वाद-विवाद के सामने तो नहीं पर धमकियों के सामने मेरी पराजय हो ही गई और उस बन्धन में बँधना ही पड़ा जिससे मैं बचना चाहता था।

सुहागरात की रात आ ही गई। किन्तु वही पुराना विचार और वही प्रश्न मस्तिष्क में घूम रहा था। चारों ओर सन्नाटा था। हम दोनों एक कमरे में उसी प्रकार बन्द थे जैसे बन्दीगृह में बन्दी।

मैंने सिगरेट सुलगाया और फिर एक कश खींचकर धुँआ निकालते हुए धीरे से कहा—'क्या अभी नींद नहीं आई?'

उसने भी धीरे से कहा—'जी, नहीं।'

'क्या तुम्हें मेरे रूप में आकर्षण मिलता है?'—उसने कहा—जी हाँ।

'पर तुम जमीन पर क्यों बैठी हो। मेरे नजदीक बैठो।'

'जी नहीं, यह अच्छा नहीं लगता।'

'क्या तुमको पति के पास बैठना अच्छा नहीं लगता?'

'जी नहीं, यह बात नहीं; पत्नी पति के चरणों की दासी होती है मेरे लिए आपके चरणों ही में सुख है।'

'एक बात पूछूँ बताओगी?

'पूछिये।'

'क्या तुम्हें मेरे रूप में आकर्षण मिलता है?'

'जी हाँ।'

'क्या मुझे अपने हृदय का सच्चा प्यार दे सकोगी?'

'इसमें आपको सन्देह क्यों है? पत्नी का प्यार पति के लिए ही होता है और उसके बाद माँ बनने पर वह सन्तान और पति में बँट जाता है।'

उस दिन इससे आगे बातें नहीं हुईं। मैं रात भर यही सोचता रहा कि क्या वह यह सब सच्चे हृदय से कह रही है या केवल दिखावा है? मुझे विश्वास नहीं होता था। पर एक सप्ताह तक, जबतक वह रही, मुझे ऐसा लगा कि उसका प्रेम सच्चा है। उसमें दिखावा नहीं है। पर जब यह सोचता कि 'नारी का हृदय पहिचानना सरल नहीं' तब विचारों में फिर संघर्ष छिड़ जाता।

एक सप्ताह बाद वह अपने मायके चली गई। मैंने उसे कई पत्र इसी विषय से सम्बन्ध रखते हुए लिखे। मुझे विश्वास नहीं होता था कि वह सुन्दरी मुझ जैसे काले पति को पाकर कभी भी खुश हो सकेगी। कभी भी मुझे सच्चे हृदय से प्यार कर सकेगी। मुझे उसकी बातें सब ढोंग जान पड़ती थीं और मेरे पत्रों का उत्तर जो आया वह भी ढोंग ही जान पड़ता है। प्रोफेसर मेहता ने जो कहा था वह अटल सत्य है। मैं उसका स्वयं अनुभव कर चुका हूँ। फिर यह सब ढोंग नहीं तो और क्या?

लगभग दो मास के बाद वह फिर आई। पर मुझे ऐसा लगता कि वह मुझे पाकर सुखी नहीं है। मैं हर समय व्याकुल रहता और उस प्रश्न की जटिलता बढ़ती ही जाती। मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं पागल हो रहा हूँ और सोचता था कि किसी दिन यह प्रश्न भयंकर रूप न धारण कर ले।

मालती—

मेरा विवाह हुए लगभग छः मास के ऊपर हो चुका है पर अभी तक मैं अपने पति को समझ ही नहीं पाई हूँ। किस प्रकार का उनका स्वभाव है? उनके हृदय में यह सन्देह क्यों है? यह सब मैं नहीं जान पाती हूँ। जानने की चेष्टा करती हूँ और उस सन्देह को मिटाना चाहती हूँ पर न जाने वह सन्देह क्यों नहीं दूर हो पाता? मैं उन्हें तन-मन से चाहती हूँ। मुझे उनसे कोई शिकायत नहीं।

उनके पत्रों को जब कभी पढ़ती हूँ तो हँसी आ जाती है। कैसी नादानी और नासमझी के विचार हैं। पहली बार जब मैंने उनके दर्शन किये तभी मुझे उनके इन विचारों का पता लग गया था पर अधिक समय न रह सकने के कारण उनके विचारों का अध्ययन न कर पाई।

अब की बार जब मैं आई तो मैंने देखा कि वह मुझसे कुछ अलग-अलग से रहते। कई दिन तक तो सहती रही और देखती रही पर जब न सहा गया तो मैंने पूछा—'क्यों आप मुझसे कुछ नाराज हैं?'

उन्होंने कहा—'बिलकुल नहीं।'

मैंने कहा—'मालूम होता है कि आपके सिर में दर्द है। लाइए सिर में बाम मल दूँ। अच्छा हो जायेगा।'

'नहीं रहने दो। अपने आप अच्छा हो जायेगा।'

'नहीं क्या' फिर मैं उनके सिर में बाम लगाने लगी।

उन्होंने मुझसे कुछ देर बाद पूछा—'अच्छा एक बात पूछूँ बताओगी?'

'हाँ हाँ पूछिए।'

'सचसच बताओगी?'

'प्रतिज्ञा करती हूँ, सौगन्ध खाती हूँ।'

'तुमने विवाह से पहले कभी किसी से प्रेम किया है?'

मेरा माथा ठनका, मैंने कहा—'जी नहीं, विश्वास कीजिये मेरी आत्मा और मेरा चरित्र सीता के समान पवित्र और उज्ज्वल है। आप जब चाहें उसकी परीक्षा भी कर सकते हैं।'

इसके बाद उन्होंने कोई प्रश्न नहीं किया और फिर वह सो गये। मैं भी अपनी चारपाई पर जाकर लेट रही। नींद नहीं आई। रात भर सोचती रही—उनके हृदय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में इतना सन्देह क्यों भरा है? पर कुछ भी समझ में न आया। रात भर का जागना व्यर्थ ही गया।

अब तो उनके विचारों को बिलकुल अच्छी तरह से समझ गई हूँ क्योंकि उन्हें अध्ययन करने का काफी समय मिला है। देखती हूँ ज्यों-ज्यों समय बीतता जाता है वे कुछ चिड़चिड़े से कुछ पागल से होते जाते हैं। कुछ खोये-खोये से रहते हैं जैसे उन्हें मुझसे सन्तोष नहीं है।

एक दिन कमीज में बटन लगाना भूल गई, बस नाराज हो गये। क्रोध से आँखें लाल हो गईं, बोले—'तुम सचमुच मुझे प्यार नहीं करतीं। यह सब तुम्हारा ढोंग है। मैं तो पहले ही से जानता था कि सुन्दर स्त्री के साथ मेरा विवाह हुआ तो सारा जीवन नीरस हो जाएगा।

मैं चुपचाप सुनती रही। आँखें आँसू से भर गईं।

उनके मित्र शंकर भइया बहुधा मेरे यहाँ आते थे और मैं उनसे मिलती-जुलती थी। बेचारे बहुत ही सीधे थे। मैं उन्हें भइया और वह मुझे भाभी कहते थे।

एक दिन आये तो मैंने कहा—'शंकर भइया आप उनको समझाते क्यों नहीं?'

उन्होंने कुछ उदास होते हुए कहा—'भाभी कितनी ही बार समझाया पर उनकी समझ में ही नहीं आता। क्या मालूम था कि यह फिलासफी लेकर ऐसे पागल हो जाएँगे? यदि मैं ऐसा जानता तो इन्हें कभी भी फिलासफी न लेने देता। मेरी बात भी अब यह बिलकुल ही नहीं मानते।'

मैं सुनती रही और इसी प्रकार उनके विचारों और उनके हृदय में सन्देह होने का कारण जानती रही। पर मेरे हृदय में उनके प्रति अब भी वही प्रेम है जो पहले था। रोज भगवान् की पूजा करती और उनसे यही कहती कि वह उनकी रक्षा करें और सदा सुखी रखें।

उस दिन दोपहर में, पड़ोस में मि० नरेन्द्र वर्मा रहते थे, उनकी पत्नी आ गईं। मैं उनसे बातचीत करने लगी। घर में उस समय कोई नहीं था। वह भी दफ्तर चले गये थे। उनकी धोती कोठे पर सूख रही थी। न जाने कब बन्दर आया और उसे फाड़ गया।

शाम को जब वह आये तो डाँटना तो दूर रहा, जिसकी मैं कभी भी एक पढ़े लिखे पति से आशा नहीं करती थी, उन्होंने ऐसा कार्य किया कि मैं आश्चर्य में पड़ गई। आँगन में एक लकड़ी पड़ी थी। वे मुझे उसी से पीटने लगे। पर मैं सब सहती रही। शंकर भइया को न जाने यह खबर कैसे मालूम हो गई। वह आये।

उन्होंने कहा—'भाभी मैंने सुना है कि कल भइया ने तुम्हें.....

मैंने आँसू भरी आँखों से कहा—'हाँ भइया। पर इतनी मेरी बात याद रखना कि तुम अपनी स्त्री को कभी मत मारना। स्त्री अपने मा बाप का घर छोड़ती है इसलिए नहीं, कि पति उसे छोटी-छोटी बातों पर मारे।'

शंकर की आँखों में आँसू भर आये। वह कुछ देर तक बैठा रहा।

मैंने कहा—'भइया कुछ नाश्ता तो कर लो।'

उन्होंने कहा—'मैं नाश्ता नहीं करूँगा भाभी। घर जा रहा हूँ। मुझसे यह सब अब देखा नहीं जाता।'

शंकर भइया चले गये। मैं रोती रही। पता नहीं कब तक।

शंकर—

मैं निखिल को आज से नहीं जानता। वह मेरा बचपन का साथी है। हम दोनों साथ-साथ खेले और पढ़े हैं। पर निखिल अब वह निखिल नहीं रहा जो पहले था। पहले वह मेरी किसी बात को मना नहीं करता था पर अब वह कोई बात सुनता ही नहीं। सुनना तो दूर रहा मेरी सूरत से उसे घृणा हो गई है।

जब से निखिल का विवाह हुआ है तब से वह बिलकुल बदल गया है। बिलकुल पागल सा हो गया है। भाभी को जब देखता हूँ तो मेरे आँसू निकल आते हैं। उनकी आत्मा सचमुच सीता के समान उज्ज्वल और पवित्र है।

इधर कई दिनों से मैं भाभी के यहाँ नहीं गया था। सोचा कि चलूँ देखूँ क्या हाल चाल है। जब घर गया तो मालूम हुआ कि दोनों कहीं घूमने गये हैं। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतने दिन हुए पर आज तक कभी वे घूमने नहीं गये। बराबर लड़ते रहे और आज न जाने कहाँ से निखिल के हृदय में इतना प्रेम उमड़ पड़ा कि वह भाभी को लेकर घूमने गये हैं। मुझे बड़ी खुशी हुई। मैं फिर इधर-उधर घूमने चला गया। कुछ देर बाद मैं एक पार्क में जाकर बैठ गया। बड़ी देर तक बैठा रहा और दोनों के विषय में सोचता रहा। कुछ पता नहीं चला और रात ग्यारह का घंटा बजने लगा। ग्यारह का घंटा सुनते ही मैं उठकर घर की ओर चल पड़ा।

सड़कों पर बत्तियाँ बुझ चुकी थीं। सड़क के दोनों ओर वृक्षों पर पक्षी सो रहे थे और कभी-कभी उस स्थान की नीरवता को भंग करती हुई उन वृक्षों पर से चिड़ियों की आवाज सुनाई पड़ जाती थी।

मैं चला जा रहा था। सहसा 'धाँय-धाँय' का शब्द सुनाई पड़ा। मेरा दिल काँपने लगा। मेरे पैर लड़खड़ाने लगे। पेड़ों पर से चिड़ियाँ चिल्ला-चिल्लाकर भागने लगीं। दो फायर हुए। पिस्तौल की गोली की आवाज जान पड़ी। साहस कर मैं आगे बढ़ने लगा। डर लग रहा था कि कहीं चोर न हों जो मेरे भी प्राण ले लें। कुछ दूर से दो प्राणियों के कराहने की आवाज आ रही थी। हाथ में टार्च थी उत्सुकता जाग पड़ी कि किसके कराहने का शब्द है। टार्च जलाकर देखा तो आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ कि निखिल और मालती धरती पर पड़े हैं। दोनों के प्राण-पखेरू उड़ चुके थे। मैं यह सोचते-सोचते कि न जाने प्रोफेसर मेहता की बात निखिल के हृदय के किस कोने में चिपकी रह गई, दोनों के मृत शरीर पर पागल सा गिर पड़ा। पता नहीं कब तक पड़ा रहा। पर जब होश आया तो देखा कि पुलिस के सिपाही मेरे इधर-उधर खड़े हुए हैं।

तुलसी-रत्नावली

संक०. श्री केदारनाथ गुप्त

गोस्वामी तुलसीदास की समस्त अमर रचनाओं का अनुशीलन करना साधारण मानव के लिए सम्भव नहीं है। ऐसी अवस्था में गोस्वामी जी के अमूल्य उपदेशों का लाभ सबको बराबर मिलना सम्भव नहीं था। अतः इस कमी को दूर करने के लिए तुलसीदास की रचनाओं का निचोड़-स्वरूप 'तुलसी-रत्नावली' का प्रकाशन किया गया है। इसमें तुलसीदास के चुने हुए पद्य संकलित हैं। इस एकमात्र पुस्तक में तुलसीदास का समस्त साहित्य समाविष्ट है। मूल्य १॥) डेढ़ रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

इष्ट मित्रों के स्वागत में
बढ़िया से बढ़िया चीज लगती है

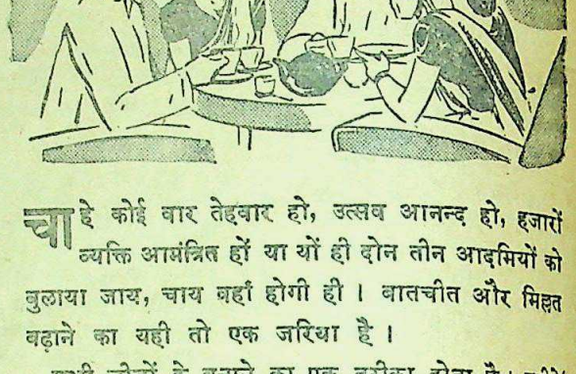

चाहे कोई वार तेहवार हो, उत्सव आनन्द हो, हजारों व्यक्ति आमंत्रित हों या यों ही दोन तीन आदमियों को बुलाया जाय, चाय वहाँ होगी ही। बातचीत और मिहनत बढ़ाने का यही तो एक जरिया है।

सभी चीजों के बनाने का एक तरीका होता है। तरीके से बनाने से ही वे अच्छी बनती हैं अन्यथा नहीं। नीचे लिखे तरीके से बनाकर देखिये, चाय कितनी अच्छी बनती है। आपके मेहमान बिना तारीफ किये न रह सकेंगे।

अच्छी चाय बनाने का तरीका

१ केतली में चाय न सिझाइये। सिझाने का बर्तन अलग रखिये। २ सूखी चाय डालते वक्त वह बर्तन सूखा व गर्म रहे: इससे चाय का रंग व स्वाद ठीक बनता है। ३ हर प्याले के लिये एक चम्मच, और बर्तन के लिये एक चम्मच ताजी, सूखी चाय की पत्ती उसमें डालिये। ४ उसी वक्त का उबला हुआ पानी डालिये—पहले का उबला, कम या ज्यादा उबला पानी मत डालिये। बुदबुदा उठने पर ही पानी उबलता है, उसके पहले नहीं। ५ चाय को पाँच मिनट से कम न सिझाइये। ६ प्यालों में चाय डालकर तब उसमें दूध व चीनी मिलाइये।

चाय
हर वक्त चाय का वक्त

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

भारतीय चायों में सर्वश्रेष्ठ
लिपटन की
जाकूजा चाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य-चर्चा

लहसुन—शक्तिशाली सस्ता रसायन

शरीर को स्वस्थ बनानेवाला, शक्तिवर्द्धक और समस्त रोगों का नाशक

लेखक, श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालंकार

हिमालय हर्बल इंस्टीट्यूट, बादामी बाग, लाहौर के प्रसिद्ध चिकित्सा-शास्त्र के विद्वान ने इस लेख में लहसुन के प्रयोग का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है, जो स्वास्थ्य-रक्षा की दृष्टि से बड़ा उपयोगी है।

भेष बदलकर देवदार के वनों में भीख मांगते हुए शिव ने ऋषि-पत्नियों को ग़ौर से देखा। उस समय तक उनके सन्तान न थी। रोग दूर करने में रुद्रदेव की ख्याति को सुनकर वह उसके पास सन्तान की इच्छा से पहुँचीं। पार्वती ने मुनि-पत्नियों की चिकित्सा अवश्य करने के लिए अपने पति-देव से अनुरोध किया। देव प्रसन्न हो गये और उन्होंने भद्रकाली उमा से कहा कि इन ऋषि-पत्नियों को बल, रूप और सन्तान देनेवाले, पागलपन, विष और शाप को नष्ट करनेवाले, वायु-विकारों के सम्मुख समूहों का विनाश करनेवाले 'महान् गन्ध' का उपचार सब रोगों के नाश के लिए बताओ। जिस तरह पत्थर की रेखा अमिट होती है, मेरा वचन भी वैसा ही समझो। इन्हें सन्तान अवश्य होगी। भगवान् का नाम लेनेवाली उन देवियों ने तब 'महान् गन्ध' का उपचार किया और उन्हें मन की मुरादें मिल गईं।

महर्षि मरीच कश्यप की इस कथा में बताया हुआ 'महान् गन्ध' उपचार लहसुन का कल्प है जिसका विस्तार से वर्णन कश्यप, शोडल, वाग्भट्ट, भावमिश्र आदि चिकित्सकों ने अपने ग्रन्थों में किया है। भारत के प्राचीन चिकित्सकों ने दवा के रूप में लहसुन को बहुत ऊँचा स्थान दिया है। किसी समय वैद्य-समाज में यह इतना सम्मानित था कि वैद्य लोग इसका ठीक उपयोग जान लेने पर चिकित्सा में सदा सफलता की आशा रखते थे। देव, वैद्य और ब्रह्मणों को इष्ट-सिद्धि के लिए इसके प्रयोग की सिफ़ारिश की जाती थी। ब्राह्मणों के लिए विधान था कि दूध, दही और घी में तीन रात रखने के बाद वे लहसुन का इस्तेमाल कर सकते हैं।

चिकित्सा की एलोपैथिक प्रणाली में यह पहले बहुत इस्तेमाल किया जाता था पर अब इसका व्यवहार उतना नहीं रहा। आयुर्वेदिक साहित्य में यह श्रेष्ठ रसायन माना गया है। सरदी, हवा, बारिस और पाले से मारे हुए शरीरवालों के लिए, टूटे हुए, टेढ़े-मेढ़े, निष्क्रिय तथा वेदना-युक्त हड्डियोंवालों के लिए और वायु से पीड़ित लोगों के लिए यहाँ हम कश्यप और शोडल आदि चिकित्सकों द्वारा प्रतिपादित लहसुन-कल्प का उल्लेख करते हैं। नाजुक शरीरवालों को कराया जानेवाला यह लहसुन-प्रयोग पहले वात-रोग से आक्रान्त उद्धव को नारद ने करवाया था। ऐसी जनश्रुति है।

शीत और वसन्त ऋतु में, अत्यन्त पाले बादलों से घिरी वर्षा ऋतु में और आवश्यकता होने पर ग्रीष्म ऋतु में या सदा ही वायु और कफ के रोगी सामर्थ्यानुसार लहसुन का सेवन करते रह सकते हैं। जिस व्यक्ति अपनी शक्ति से अधिक मात्रा में सेवन करेगा तो जलन, दस्त, खाने-पीने में इच्छा न होना, किसी काम में मन न लगना आदि लक्षण प्रकट हो जाते हैं। इसलिए इसके सेवन में जल्दी नहीं करनी चाहिए और मात्रा धीरे-धीरे बढ़ानी चाहिए। लहसुन-कल्प में जो लहसुन लिए जायँ वे पूरी आयु के, पके हुए, सुन्दर और बिना शुद्ध किये ही छिलके उतार कर लिये जाने चाहिए।

कल्प में लहसुन के रस और कल्क को एक महीना सेवन करना काफ़ी होता है। रोगी की अवस्था को देखकर चिकित्सक स्वयं प्रयोग की अवधि को निश्चित करता है। हितकर अन्न पर रहनेवाले के लिए छः महीने का प्रयोग प्रशस्त समझा जाता है और पन्द्रह दिन का प्रयोग हीन प्रयोग होता है।

दो हज़ार साल पहले ताज़े लहसुन की सबसे छोटी मात्रा बत्तीस तोला थी, मध्यम मात्रा अड़तालीस तोला और अधिकतम मात्रा चौंसठ तोला या अस्सी तोला। ताज़े लहसुन न मिलने पर सूखे कन्दों का प्रयोग कराना हो तो तुरियों को गिनती में सौ, साठ या पचास लिया जाता था। शरीर की अग्नि, समय और अनुकूलता को देखकर साधारणतया मात्रा का निश्चय किया जाता था। रोगी को खाने में उत्साह हो तो जब तक वह मूर्च्छित न हो जाय तब तक उसे खिलाते जाते थे।

तेज़ अग्निवाला, शान्त मनवाला, धैर्यवान्, सुखी पुरुष प्रचण्ड वायु से रहित कमरे में रहता हुआ पुण्य दिन में लहसुन-प्रयोग आरम्भ करे। सरदी से बचने के लिए उसके पास हिरण या बाघ की खालों के कम्बल, कपास की रजाई और रेशमी कपड़े आवश्यकतानुसार काफ़ी होने चाहिए। इन निर्मल वस्त्रों को अगर की धूनी दे देनी चाहिए। कमरे की हवा को स्वच्छ रखने के लिए धूप जलती हो। सुगन्धवाले द्रव्यों से बनाये डस्टिंग पाउडर को उसके शरीर पर मलना चाहिए। वह नंगे पैर न रहे।

लहसुन लाने का काम एक नौकर के ज़िम्मे हो और उन्हें खाने के लिए ठीक करने का दूसरे के ज़िम्मे। पत्तों को फेंक दें, तुरियाँ और नाल लें। कुण्डी सोटे में रगड़ कर और ख़ूब घी मिलाकर खिला दें। लहसुन सेवन कराने के बहुत से तरीकों का वर्णन मिलता है जिनमें से कुछ विधियाँ यहाँ हम संक्षेप में देते हैं—सिल-बट्टे पर रगड़े हुए लहसुन में समान भाग घी मिलाकर घी वाली हाँडी में ख़ूब मथ लें। दस दिन रखा रहने देने के बाद इसे अकेला या दूध के साथ खिलाएँ अथवा सिल-बट्टे पर पीस कर घी मिलाएँ। इसमें ख़ूब सारा लस्सन का रस मिलाकर पतला कर लें। इस अत्यन्त वीर्यवान् योग को कोसे पानी या मदिरा आदि के साथ खिलाएँ।

आठ सेर तुरियों को कुचल कर बत्तीस सेर पानी में भिगो दें और साठ दिन में पकनेवाले धानों के ढेर में दबा दें। कश्यप बताते हैं कि जितने साल तक मनुष्य इसका सेवन करता है उतने ही सौ साल तक वह रोग-रहित होकर अमर के समान जीवित रहता है। साँप जिस तरह केंचुली उतारता है, उसी तरह वह समय-समय पर अपनी पुरानी खाल उतारता रहता है जिससे उसकी खाल सदा नई बनी रहती है।

आध पाव छिले हुए लहसुन को रगड़ कर बारीक कर लें। इसमें पाव भर घी मिलाएँ। इसमें से थोड़ा सा लेकर शहद के साथ चाट जाया करें और ऊपर से दूध पी लिया करें। साल तक इसे खायें और दूध चावल के पथ्य पर रहें। यह प्रयोग भी सब रोगों को दूर करनेवाला है और सेवन करनेवाले को सौ साल तक जीवित रखता है। जो कच्चा लहसुन न खा सकें वे घी में भूनकर खा लें। पकौड़ों में इसे तल लें, मांसों में पका लें अथवा यवागू के साथ या दही में डाले पकौड़ियों में खायें।

चिन्ता, दिन में सोना और कठोर दातुन का परित्याग कर देनेवाला पुरुष भोजन पच जाने पर सुबह सुखपूर्वक उठे, कल्याणकारी मन्त्रों का पाठ करे और तब बैठ कर लहसुन खाये। सदा गरम पानी पिये।

धनियों के लिए 'महान् गन्ध' नाम की विधि से लहसुन के प्रयोग का उपदेश करते हुए कश्यप बताते हैं कि प्रयोग करनेवाला युक्तिपूर्वक लहसुन खाये। लहसुन का मुकुट बनाकर धारण करे। सिर, कान, गले, हाथ और पैरों में लहसुन की मालाएँ पहने। ऊपर ओढ़ने के कम्बल में लहसुन सीए हुए हों। नीचे बिस्तर की चादर में और बैठने के आसन में लहसुन रखे रहें। घर के दरवाज़ों पर और रात को जिस खुले मकान में बैठकर चाँदनी का आनन्द भोगा जाता है उस चन्द्रशाला के दरवाज़ों पर भी लहसुन की मालाएँ लटका दें। घर के फ़र्श पर जगह जगह लहसुन के कन्द बिखेर दें। उस घर के अन्दर जो रहते हैं, जैसे औरतें, भाई के बच्चे, नौकर, नौकरानियाँ, उन सबको भी अपनी ही तरह लहसुनवान् कर दें। खाने पीने की हर चीज़ में लहसुन पड़ा हो। मन बहलाव के लिए गवैयों और रोगियों से मन को प्रिय लगनेवाले साज़ों पर गीत सुनें। नटों, पहलवानों और नेज़ेमारों के करतब देखें। गन्धमाल्य और खान-पान जैसा दिल करे वैसा करें। इस 'महान् गन्ध' उपचार को देखकर वायु के रोग तो दरवाज़े से ही लौट जाते हैं।

अमृत से उत्पन्न लहसुनों की रसायन को सेवन करने से स्रोतों की शुद्धि होती है, मुख की निरसता हटकर मुख सुगन्धित होता है, शरीर कोमल बनता है, बाल बढ़ते हैं, आयु स्थिर होती है, दाँत, मसूढ़े, नाख़ून तथा बाल स्वस्थ रहते हैं और रंग निखरता है। लहसुन खानेवाला आयुष्मान् और बलवान् होता है। उसी की अग्नि दीप्त होती है। स्वर ठीक होकर वाणी मधुर होती है, है, बुद्धि बढ़ती है, शरीर में शक्ति आती है और शरीर सुन्दर हो जाता है। इस प्रकार रूप और गुण से युक्त स्त्री-पुरुषों के जननेन्द्रिय सम्बन्धी दोष दूर होते हैं और सन्तान-प्राप्ति की इच्छा होती है।

स्निग्ध पदार्थों के साथ लहसुन बहुत अच्छा पुंसत्व शक्तिवर्द्धक द्रव्य है। सम्भवतः वीर्य में शुक्राणुओं को पैदा करके यह शुक्रोत्पत्ति को बढ़ाता है और स्त्रियों में बिम्ब को पैदा करके गर्भस्थिति कराने में सहायक होता है। बाँझ स्त्रियों, नपुंसक मनुष्यों तथा बूढ़ों के लिए लहसुन का एक योग इन्द्राणी घृत का सेवन उत्तम कामोत्तेजक का काम करता है, इसके साथ पौष्टिक भोजन करना चाहिए। लहसुनसेवी मनुष्य दाम्पत्य कार्यों में थकता नहीं, वह सदा शुक्र-सम्पन्न रहता है, जिन किन्हीं भी स्त्रियों के साथ वह सम्भोग करता है उन सब को गर्भ ठहर जाता है। उसके कमल जैसे रंग के शरीर में से नीले कमल की सुगन्ध आती है। शरीर मृदु और गला मधुर होता है।

महात्मा गांधी ने और उनके अनेक आश्रमवासियों ने ब्रह्मचर्य की साधना करते हुए इस बात को बहुत ग़ौर से देखा है कि ब्रह्मचर्य धारण करने में कौन से भोजन द्रव्य सहायक हैं और कौन से बाधक। सेवाग्राम में अब भी बहुत से आश्रमवासी लहसुन का रोज़ सेवन कर रहे हैं। महात्मा गांधी भी स्वयं काफ़ी समय तक इसका सेवन करते रहे हैं। उनके इस सम्बन्ध में अनुभव मैंने जानने चाहे थे। बापू जी ने मुझे बताया कि मैंने तो उस अवस्था में लहसुन के प्रयोग आरम्भ किये थे जब मैं ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने में पूर्णतया सफल हो चुका था और साथ ही मेरी आयु भी बहुत अधिक हो चुकी थी जिससे लहसुन के कहे जानेवाले ब्रह्मचर्य विघातक गुण का मुझ पर कोई प्रभाव नहीं दिखाई दिया। तब, उन्होंने मुझे कुछ युवक और अधेड़ साधकों के नाम बताये जो इस विषय पर अपने अनुभवों के आधार पर अधिक प्रकाश डाल सकते थे। श्रीयुत बिनोवा भावे के भाई श्री बालकृष्ण जी ने क्षयग्रस्त होने पर अपने ऊपर लहसुन का प्रयोग करके रोग से छुटकारा पाया है। सालों लगातार पाँच तोले कच्चा लहसुन खाने के बावजूद भी उन्होंने अपने ऊपर इस का ब्रह्मचर्य विघातक प्रभाव नहीं देखा। वास्तव में बात यह है कि लहसुन अत्यंत शक्तिशाली रसायन है जो वीर्य की भी पुष्टि करता है। स्वस्थ वीर्य का पैदा होना बुरी बात नहीं परन्तु उसका दुरुपयोग करना अवश्य बुरी बात है। ब्रह्मचर्य की रक्षा करना चाहनेवाला साधक अधिक पैदा हुए वीर्य को अपनी सात्विक प्रवृत्तियों के द्वारा शरीर के उन हिस्सों में पहुँचाता है जहाँ वह ऐसी अन्तर्मुखि शक्ति के रूप में बदल कर ओज बन जाता है जो साधक को तो उजेला देता ही है समस्त संसार को भी आलोकित करता है।

सपट लोशन
दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.
सपट अँड के. लि.
बम्बई नं. २.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमंदिर

उदयपुर महिला-मण्डल

नारी जागरण की सङ्गठित और राष्ट्रीय संस्था

लेखक, श्री "शलभ"

भारत में राजपूताना की महिलाओं की आज स्थिति बहुत ही नाजुक है कितनी ही कुरीतियाँ फैली हुई हैं। मेवाड़ में तो पग-पग पर रूढ़ियों का जाल बिछा हुआ है। "महिला-मंडल" उदयपुर की, इसी पवित्र और पुण्यशील अनुष्ठान के लिए आज से छः वर्ष पहले श्रीमती विजया मा के सभानेतृत्व में स्थापना हुई। इसके पश्चात् डा० सोहनसिंह मेहता इसके सभापति हुए और उनका सुयोग्य सम्बल मण्डल को रहा है।

महिला-मण्डल ने सर्वप्रथम स्त्री-शिक्षा के लिए साक्षरता आन्दोलन का आरम्भ मेवाड़ में किया और तब से अपने सद्प्रयत्नों में यह निरन्तर प्रगतिशील और जागरूक है। शहर को बारह भागों में विभाजित कर बारह पाठशालाएँ स्थापित हुईं। प्रारंभ में प्रारंभिक पुस्तक, स्लेटें, इत्यादि मुफ्त दी जाती रहीं। प्रौढ़ा बहिनों में शिक्षा-प्रचार के लिए मेजिक लेन्टर्न के साथ प्रत्येक वर्ष दो-तीन महीनों तक निरन्तर भाषण करवाये जाते हैं। पुस्तकें, नक़शे, ब्लेकबोर्ड इत्यादि सभी चीजें प्रत्येक पाठशाला में रहती हैं। माह में दो बार अध्यापिकाएँ मिलकर अपनी पाठशालाओं की समस्या पर विचार करती हैं। प्रत्येक पाठशाला में तीसरी कक्षा तक योग्यता करा दी जाती है। छात्राएँ मण्डल के केन्द्रीय विद्यालय, जिसका पाठ्यक्रम हिन्दी मिडिल स्कूल तक का है, भर्ती की जाती हैं। रात्रि को एक और विद्यालय चलता है जिसमें प्रयाग-महिला विद्यापीठ की (प्रवेशिका, विद्याविनोदिनी, और विदुषी) परीक्षाओं का अध्ययन होता है। सभी पाठशालाओं और इन दोनों विद्यालयों के लिए निरीक्षिकायें भी रखी गई हैं। आवश्यक व्यावहारिक ज्ञान पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है।

छात्राओं और अध्यापिकाओं के पारस्परिक सहयोग, सुविधा और अनुभव के लिए कई अन्य केम्प तथा अध्यापिकाओं के लिए ट्रेनिंग केम्पस, मेवाड़ के विभिन्न महत्त्वपूर्ण स्थानों पर होते रहते हैं। शिक्षण-शिविर में श्रेणी प्रणाली से काम लिया जाता रहा है। साहित्य श्रेणी, इतिहास श्रेणी, भूगोल श्रेणी, कला श्रेणी इत्यादि पृथक्-पृथक् श्रेणियों द्वारा बहिनें लाभ उठाती हैं। शिक्षण-पद्धतियों के साथ-साथ देश की कई सामयिक समस्याओं पर भी विद्वानों द्वारा महत्त्वपूर्ण भाषण होते हैं। गत वर्ष इतिहास विश्रुत चित्तौड़ दुर्ग पर शिक्षण-शिविर हुआ था, जिसमें निरीक्षण दिवस पर संयुक्तप्रान्त के भूतपूर्व शिक्षा-सचिव श्री बाबू सम्पूर्णानन्द जी का सभापति पद से प्रवचन हुआ था।

मण्डल की कार्यकारिणी ने अपने इस अत्यन्त आवश्यक और उपयोगी कार्य-क्षेत्र को बढ़ाने के दृढ़ निश्चय के साथ ही "श्री कस्तूर बा ट्रेनिंग विद्यालय" स्थापना की उसने अपना क़दम देहातों और गाँवों की ओर बढ़ाया है। शहरों और गाँवों के बीच में जो सांस्कृतिक तथा आर्थिक दृष्टि से गहरी खाई खुदी हुई है उसे दूर करने के लिए इस प्रयत्न का समारंभ किया गया है। मौजूदा स्थिति में ग्रामीण बहिनों का अशिक्षित और अन्ध-विश्वासी रहना हमारे लिए कलंक है। जिस देश की महिलायें पिछड़ी हुई हैं वहाँ के पुरुष कितने ही उच्च-कोटि के विचारक, सजग और प्रगतिशील क्यों न हों उनका कार्य और विकास अधूरा ही रहता है। ग्रामीण बहिनों के लिए शिक्षिता स्त्रियाँ चाहिए परन्तु इनका एक-दम अभाव है। शहर में कुछ स्त्रियाँ मिल भी जायें परन्तु वे घर की परिस्थिति और अपने संकुचित विचारों के कारण गाँवों में जाकर स्थायी रूप से सेवा कार्य करने के लिए तैयार नहीं होतीं। श्री कस्तूर बा ट्रेनिंग विद्यालय का उद्घाटन श्रीमती हंसा मेहता ने किया था। अब तक इस विद्यालय में मेवाड़ के विभिन्न भागों से सात-सात बहिनें ट्रेनिंग पा रही हैं। इन्हें सभी सुविधायें निःशुल्क दी जाती हैं। इन्हें अपने शिक्षण के उपरान्त पांच वर्ष तक गाँवों में जाकर स्त्री-जाति में शिक्षा-प्रचार का काम करना पड़ेगा। इन बहिनों को पुस्तक ज्ञान के साथ ही साथ गृह उद्योग (कताई, बुनाई, सिलाई, कटाई, रंगाई इत्यादि) सिखाया जा रहा है। देश में होनेवाली साहित्यिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक प्रवृति से अवगत करने के लिए बहिनों को समय और सुविधा के साथ सहयोग दिया जा रहा है।

मण्डल के तत्त्वाधान में एक सम्पन्न पुस्तकालय और वाचनालय भी चल रहा है। दो गश्ती पुस्तकालय भी चलाये जा रहे हैं। महिलाओं में विविध विषयों की पुस्तकें पढ़ने की अभिरुचि जागृत हो रही है। दिन के समय में पुस्तकालय, वाचनालय (केन्द्रीय) से बहिनें लाभ उठाती हैं। और रात्रि के समय पुरुषों के लाभ के लिए खोला जाता है। पुस्तकालय में अनेक विषयों की पुस्तकें अवस्थित हैं। जनता में इनकी लोकप्रियता बहुत ही बढ़ रही है। विभिन्न विषयों के हिन्दी, अँगरेजी व गुजराती दैनिक साप्ताहिक व मासिक-पत्र-पत्रिकाएँ वाचनालय में प्रायः आती हैं।

मण्डल ने अब विधवा सहायता विभाग को महिला उद्योगशाला का रूप दे दिया है। आर्थिक कष्ट से पीड़ित विधवा और सधवा बहिनों को [illegible]-द्वारा सहायता देना इस विभाग का मुख्य ध्येय रहा है। पहिले काम करनेवाली बहिनों को चर्खा और सूत बाजार भाव से तिगुनी मजदूरी दी जाती थी। अब इस कार्य को और बढ़ा दिया गया है। रुई कातना, जर्सी, टोपी, गुलबन्द, अचार, मुरब्बा, चटनी, चटाइयाँ, टोकरियाँ, चिकें आदि अनेक वस्तुएँ प्राथमिक रूप से बनाई जाने लगी हैं। समिति इसके लिए सचेष्ट प्रयत्नशील है।

मण्डल की कुरीति-निवारक समिति का काम जागरूकता लिए है। कुरीतियाँ सुधारने तथा जिन्हें मिटाना हो उन्हें मिटाकर नवनिर्माण की ओर समाज को ले जाना इस विभाग का कार्यक्रम रहता है। हेल-मेल दिवस और सामाजिक पर्वों पर

महिला-मंडल उदयपुर की प्रधान मंत्री श्रीमती कमलाकुमारी श्रोत्रिय महिला के संगठन और उनमें शिक्षा प्रचार उत्तम कार्य कर रही हैं।

महिला-सम्मेलन किये जाते हैं। लेन्टर्न द्वारा समाज-सुधार और सुधार भाषण दिलवाये जाते हैं। विरोधी बहिनों का जूलूस भी निकाला जाता रहा है। पास के छः कस्बों में जाकर विविध विषय भाषण भी दिये जाते हैं।

स्वास्थ्य के लिए महिला-क्लब भी व्यवस्था है। महिला-क्लब में रेडियो भी है। बहिनें देश विदेश की जानने के लिए उसका उपयोग करती कुछ दैनिक व साप्ताहिक पत्र पढ़ और कुछ देशी खेल इत्यादि में लेती हैं। झूले, आदि अन्य खेलों की सम्यक व्यवस्था है।

मण्डल के इन सत्प्रयत्नों का राजगोपालाचार्य, श्री विजयालक्ष्मी श्री रामेश्वरी नेहरू, श्री कमलादेवी पाध्याय, श्री सुचिता कृपलानी और हंसा मेहता आदि विद्वानों, देशभक्तों विदुषियों ने उदार हृदय से किया है।

मिंस होमियोपैथिक कालेज

बनारस १०५

गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड होमियोपैथिक, वायकेमिक, इंजेक्शन का तीनों डिप्लोमा (सर्टिफ़िकेट) आधी फ़ीस में लें या शिक्षा प्राप्त करें। नियमावली मुफ्त मँगावें।

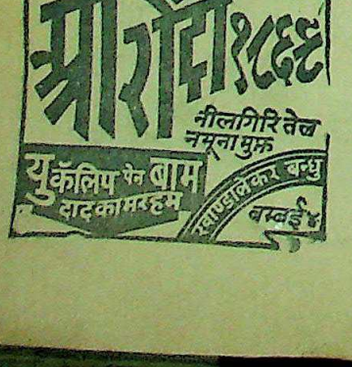

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट खाकर देखें।

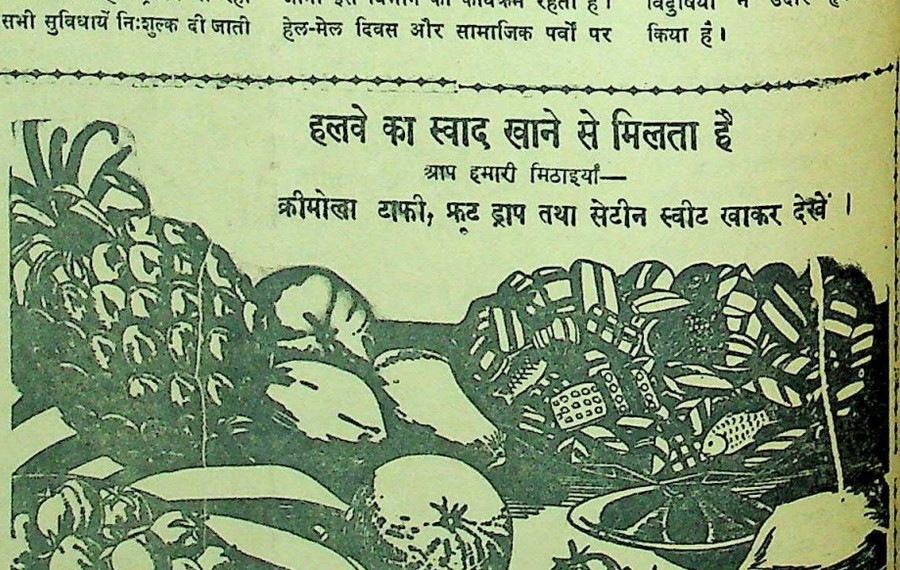

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

ईंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

'श्री आगरकर-स्मृति-ग्रन्थ'

यह तो आपको विदित ही है कि गत २१ अक्टूबर सन् १९४५ ई० को श्रद्धेय श्री सिद्धनाथ माधव आगरकर जी संपादक और संचालक "हिन्दी स्वराज्य" (इंदौर) के आकस्मिक, असामयिक [illegible] के कारण मध्यभारत और मध्य-[illegible] के पत्रकारित्व एवं राजनीतिक क्षेत्र [illegible] जो हानि हुई है वह सहज ही विस्मृत [illegible] की जा सकेगी। पिछले २५ वर्षों में [illegible] द्वारा कर्मवीर, मध्यभारत, प्रणवीर, [illegible] (दैनिक) तथा "हिन्दी स्वराज्य" (साप्ताहिक) द्वारा इन दोनों प्रान्तों की [illegible] और कार्य-साधना हुई है, वह [illegible] में अंकित की जायेगी। अपने [illegible]-जीवन में निर्भीक एवं निष्पक्ष [illegible] और स्पष्ट एवं प्रामाणिक आलोचना-[illegible] के कारण वे जो प्रसिद्धि प्राप्त कर [illegible] वह भी अन्य बन्धुओं के लिए आदर्श [illegible] मार्ग-दर्शक हो सकती है।

जिस प्रकार निरन्तर कर्त्तव्य-परायण [illegible] के कारण वे न तो अपने घरवालों [illegible] ही कोई स्थायी प्रबन्ध कर सके; और [illegible] "हिन्दी स्वराज्य" को ही अर्थाभाव [illegible] कारण पूर्ण समृद्ध बना सके। जिसका [illegible] कारण उनका त्याग और नीति-[illegible] रहते हुए 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' [illegible] का पालन करना ही था। अतएव [illegible] हम सब उनके प्रेमी, प्रशंसक, सहयोगी [illegible] अनुगृहीतों का कर्त्तव्य हो जाता है कि [illegible] सेवाओं को चिरस्मरणीय बनाने [illegible] लिए अपनी-अपनी ओर से यथायोग्य [illegible] अर्पण करते हुए हार्दिक सद्-[illegible] को व्यक्त करें। अतः जो सज्जन [illegible] साथ जिस-जिस रूप में निकट-[illegible] में आये हैं, वे अपने संस्मरण लिख [illegible] की कृपा करें; और जिन्होंने उनके [illegible] एवं शैली तथा आलोचना-पद्धति [illegible] अध्ययन किया है, वे उस पर अपने [illegible] लेख-रूप में लिपि-बद्ध करके [illegible] का अनुग्रह करें, तथा जिन राष्ट्र-[illegible] के साथ उन्होंने देश-कार्य एवं जेल-[illegible] के रूप में सहयोग-साधना की है, [illegible] अपने उद्गार व्यक्त कर सुहृद-[illegible] को स्मरणीय बनायें। समस्त प्राप्त [illegible] को "श्री आगरकर-स्मृति-ग्रन्थ" [illegible] संग्रह करके यथाशीघ्र प्रकाशित करने [illegible] आयोजना की जा चुकी है। अतएव [illegible] सेवा में सविनय निवेदन है कि [illegible] अपने संस्मरण या लेख अथवा [illegible] (उद्गार) रूप पत्र-पुष्प अप्रैल [illegible] (१९४६ ई०) के अंत तक लिख [illegible] की अवश्य कृपा करें, जिसमें कि [illegible] रूप से ग्रन्थ का संकलन-संपादन [illegible] जाकर स्वर्गीय आगरकर जी के [illegible]-श्राद्ध शरद्पूर्णिमा तक उसे [illegible] किया जा सके।

स्मृति-ग्रंथ के लिए सर्वश्री हरिभाउ [illegible] उपाध्याय (हाथीभाटा) अजमेर, [illegible] जी महोदय (रामबाग इन्दौर [illegible]), प्रो० विनयमोहन जी शर्मा [illegible] नगर नागपुर), सूर्यनारायण जी [illegible] (भारती भवन उज्जैन), तथा [illegible] जी 'इन्द्र' (आगर-मालवा) [illegible] संपादन-मंडल बनाया गया है। अतः [illegible] से अपने निकटवर्ती सज्जन के [illegible] सीधे मेरे पते पर अपनी रचना [illegible] भेजने की कृपा करें। जो [illegible] आर्थिक सहायता भेजना चाहें, [illegible] भेंट "श्री बाबू पूनमचन्द जी गर्ग [illegible] (मालवा), माधवनगर उज्जैन सी० [illegible]) के पते पर भेजने की कृपा करें। [illegible] स्मारक-निधि के लिए २५ हजार रुपये एकत्र करने के प्रयत्न में संलग्न हैं।

'हिन्दी स्वराज्य' —गोपीवल्लभ उपाध्याय, खण्डवा (संयोजक)

* * *

महावीर सुभाष

त्रेतायुग में भारत की लक्ष्मी, भगवती सीता को, छल-कपट से रावण ने उठाकर, लंका की जेल में बन्द कर दिया था। उसको स्वतंत्र करने के लिए, ब्रह्मचारी हनुमान् समुद्र के तट से ४०० कोस की उड़ान मारकर, सुरसरी नाम की गुप्तचरी की आँखों में धूल डालकर, लङ्का में जा उतरे। सीता-राम के नारों से आकाश गूँज उठा। लङ्का में चारों ओर आग लगा दी। इसी लिए भारतीयों ने, हनुमान् को महावीर की उपाधि दी, और उसके मुख से निकला हुआ सीता-राम का नारा एक पवित्र चार अक्षरों का नारा बन गया। प्रत्येक हिन्दू इस मंत्र का जाप और महावीर की प्रतिमा का पूजन करता है।

सुभाष का जीवन-चरित्र प्राचीन इतिहास की पुनरावृत्ति है। भारतमाता को, समुद्र पार रहनेवाले, योरप-निवासियों को जेल में क़ैद देखकर, अखण्ड ब्रह्मचारी, सुभाष ने, समुद्र के किनारे से उड़ान मारकर, क़ाबुल, क़ाबुल के गुप्तचरों के फन्दे से निकलकर, जर्मनी और जर्मनी से जापान पहुँचे। १४००० मील की छलाँग मारनेवाले सुभाष को, महावीर की उपाधि दी जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। इस महावीर ने सिंगापुर, मलाया, रंगून, बर्मा, जावा आदि नगरों में रहनेवाले, लाखों भारतवासियों के ऊपर क्रान्ति की ज्वाला जगाकर, भारतमाता की स्वतंत्रता के लिए, दीवाना बनाया। वतन से हजारों मीलों के फ़ासले पर "आजाद हिन्द लीग" की स्थापना करके, हजारों मुरब्बा मील प्रान्त के निवासियों के प्रबन्ध को देखकर, बड़े बड़े देशों के प्रबन्ध-कर्त्ताओं के सिर झुक जाते हैं।

सिंगापुर, मलाया आदि देशवासियों के धन और सम्पत्ति की रक्षा का श्रेय श्री सुभाष पर ही है। एक द्रौपदी नहीं, हजारों द्रौपदियों के सतीत्व की रक्षा की जिम्मेदारी, इसी बहादुर के सर पर है। और खूँखार जापानियों के बमबाड़ से, कलकत्ता, बम्बई, कराची, मद्रास, देहली और लाहौर आदि विशाल शहरों को खण्डहर बनने से यदि किसी ने बचाया है तो वह केवल सुभाष ही है। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि महावीर की तरह इस वीर की भी प्रतिमा स्थापित करके, श्रद्धा-भक्ति से पूजन करें। तथा उसके मुख से निकला हुआ, साढ़े चार अक्षरों का महामंत्र "जय हिन्द" प्रत्येक भारतीय की जुबान पर हो।

किसी कवि ने कहा है:—

दास न रहें आजाद हों,
करें स्वतंत्र व्यवहार।
जपते जो "जय हिन्द" के
अक्षर साढ़े चार॥

हरिद्वार —चिरंजी लाल शर्मा
१९ मार्च ४६ (कर्मवीर)

* * *

दशमलव सिक्के और बहीखातों में उनका अंकन

जन-साधारण को यह ज्ञात है कि भारत सरकार देश में प्रचलित सिक्कों के स्थान पर दशमलव पद्धति के सिक्के चलाना चाहती है। इस पद्धति के सिक्कों में रुपये में सौ १०० सेंट होंगे और ५०,-२५,१०,५,२ और १ सेंट के अलग-अलग सिक्के रहेंगे। जनमत सिक्कों की प्रचलित पद्धति में परिवर्तन करने के पक्ष में नहीं है। किन्तु इस पर भी यदि भारत-सरकार ने दशमलव सिक्कों का चलन आरंभ करना ही ठीक समझा तो उनके नामकरण में भारतीयता की रक्षा करने और उनके अंकन के लिए उपयुक्त चिह्न स्थिर करने का प्रयत्न अभी से करना अत्यन्त आवश्यक है। इन प्रश्नों पर भली भाँति विचार करके सम्मति देने के लिए काशी-नागरी-प्रचारिणी-सभा की प्रबंध-समिति ने निम्नलिखित विद्वानों की एक उपसमिति नियुक्त कर दी है—सर्वश्री राय कृष्ण दास, सभा के प्रधान मंत्री, रामचन्द्र वर्मा, अशोक जी, संपूर्णानंद संयोजक।

इस उपसमिति की आवश्यकतानुसार अन्य सदस्यों को कोआप्ट करने का भी अधिकार है। उपसमिति की बैठक करने के पहले यह आवश्यक है कि नवीन सिक्कों के उपयुक्त नामकरण और बही-खातों में उनका सुभीते से अंकन करने के लिए समुचित चिह्न के संबंध में देश के विद्वान् विचारकों और अनुभवी मुनीमों की सम्मतियां संकलित कर ली जायें और उपसमिति उन्हें दृष्टि में रखकर अपना मत निर्धारित करे। अतएव इस विषय में रुचि रखनेवाले सज्जनों से मेरा अनुरोध है कि अपना तत्संबंधी सुझाव काशी-नागरी-प्रचारिणी-सभा के मंत्री के पास १५ अप्रैल ४६ तक भेज देने की कृपा करें।

नागरी-प्रचारिणी-सभा काशी

—सपूर्णानंद,
संयोजक, मुद्रा उपसमिति,
नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी।

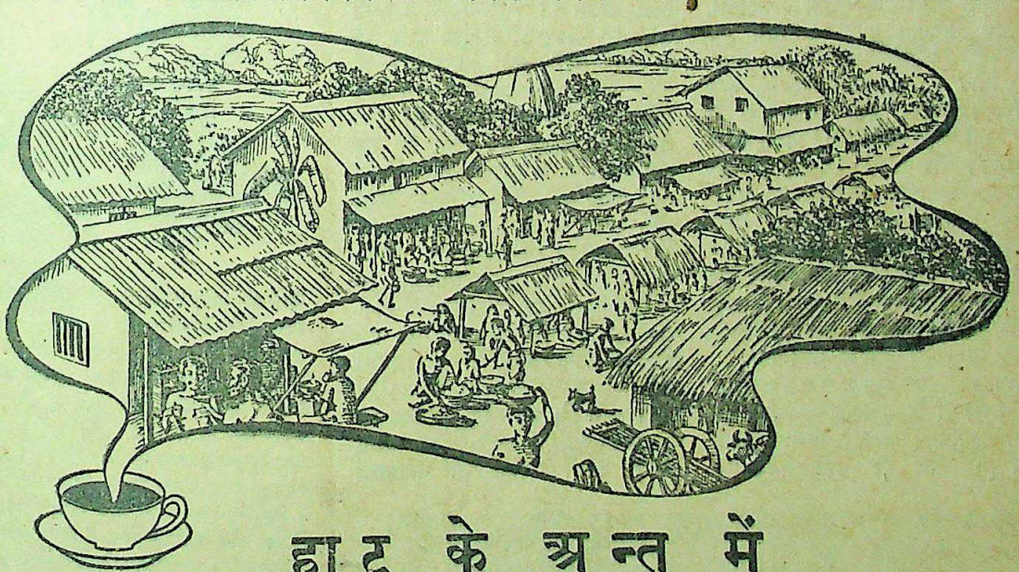

हाट के अन्त में

भारतवर्ष के बड़े ग्रामों एवं छोटे शहरों में, हाट के दिन, अभ्यागत महीनों के नहीं तो सप्ताहों के कठिन परिश्रम का फायदा उठाते हैं। फसल बेचने के लिए व्यापारी तो साल में दो बार ही आते होंगे परन्तु सब्जी व मसाले बेचने वाले तो कभी कभी हर सप्ताह को वहाँ एकत्रित होते हैं। इन क्रय-विक्रय करनेवालों का अधिकतर काम चौपाए ही करते हैं और वे ही वस्तुतः अत्यधिक धूल भी उड़ाते हैं।

किसान दियासलाई तथा भोजन पकाने के तेल ऐसी अत्यावश्यक चीजें खरीद सकता है या पारिवारिक अवसर हो तो साल भर के लिए कपड़े। परन्तु अत्यन्त सर्वव्यापी दिन का अन्तिम सौदा है—एक प्याला गर्मागर्म, मीठी चाय।

भारतवर्ष के प्रत्येक हाटों में ब्रुक बण्ड चाय ताजगी-पूर्ण पहुँचती है—पराजित सौदा करनेवाले को आराम देने व विजेता के विजयोत्सव मनाने।

व्यापक वितरण—
सबके लिए ताजा चाय

ब्रुक बण्ड

दो पत्तियाँ और एक कली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हालीवुड के सितारों का चुनाव कैसे होता है ?

उच्चकोटि के कलाकारों को ही स्थान मिल पाता है

लेखक, श्री उमेश जोशी

हालीवुड में अभिनेता और अभिनेत्रियों के चुनाव करने की एक अपनी निजी पद्धति है। वह उसी पद्धति को चुनाव के अवसर पर काम में लाते हैं। फ़िल्म-निर्माण के सबसे बड़े स्थान हालीवुड में हर साल पचास हज़ार अर्जियाँ आती हैं। इन अर्जियों पर सच्चे कलाकार का चुनना बड़ी टेढ़ी खीर है इन सब दिक़्क़तों से बचने के लिए हालीवुड ने अपना एक विभाग खोल दिया है। उस विभाग का नाम है "स्टार्स सेलेक्शन बोर्ड"। इस विभाग के प्रधान का नाम है मिस्टर लिवन्टन पार्ले। आपके नीचे सौ कर्मचारी काम करते हैं। मिस्टर लिवन्टन पार्ले की तनख्वाह इस वक्त पचहत्तर हज़ार रुपये माहवार है। आपके नीचे काम करनेवाले प्रत्येक कर्मचारी का वेतन बीस हज़ार प्रति माह है। इन सब कर्मचारियों का कार्य बड़े ज़िम्मेदारी का है क्योंकि इन्हीं की रिपोर्ट के आधार पर मिस्टर लिवन्टन पार्ले प्रार्थियों के प्रार्थना-पत्रों पर अपनी स्वीकृति देते हैं। इनकी स्वीकृति ही प्रार्थियों के भाग्य का निर्णय करती है।

फ़िल्मी-दुनिया में आने के लिए प्रत्येक व्यक्ति लालायित रहता है। लेकिन हर चेहरा फ़िल्मी-दृष्टिकोण से स्क्रीन के लिए योग्य नहीं होता। इसीलिए मिस्टर लिवन्टन पार्ले के नीचे एक लेबोरेटरी है जो कि "स्टार्स-सेलेक्शन बोर्ड" के अधीन है। इस लेबोरेटरी का नाम "बोब-मेक" है। इस "बोब-मेक" के द्वारा नये चेहरे को कैमरे के सामने लाया जाता है, और चेहरे के प्रत्येक कण की लुनाई तथा हार्दिक भावनाओं का चित्रण लिया जाता है। यह चित्रण "फेस एनलेसिस डिपार्टमेंट" में भेजा जाता है। वहां इसका विश्लेषण किया जाता है। विश्लेषण करते वक्त चेहरे का पूरी तरह निरीक्षण किया जाता है। इस "निरीक्षण-फल" को "गुड लाइफ़ एलीमेन्टस" विभाग में भेजा जाता है। वहां हृदय की भावनाओं के विश्लेषण चित्रों का फिल्म-टेकनिकल फेक्टस से मिलान किया जाता है। साथ ही साथ नंबर भी दिये जाते हैं। नंबर देनेवालों की तीन व्यक्तियों की एक कमेटी है। इन तीन व्यक्तियों के नाम ये हैं—मिस्टर डी० जी० किंस, मिस्टर डार्डली, तथा मिस विलो हर्नी इस फ़िल्म-परीक्षा फल में उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम चालीस फ़ी सदी नम्बर आने ही चाहिए। चालीस से नीचेवाले नम्बर पानेवालों को नहीं लिया जाता। अस्सी फ़ी सदी नम्बर लानेवालों को एक विशेष रियायत दी जाती है। उस रियायत का नाम है—"न्यू स्टार आफ़ लिफ़्ट"।

"न्यू स्टार आफ़ लिफ़्ट" में आनेवाले सभी कलाकारों को ट्रेनिंग पीरियड में पाँच हज़ार प्रतिमाह दिया जाता है। चार महीने के बाद ही उसको मुख्य रोल में काम मिलता है। फ़िल्म की प्रत्येक रियायत उनके साथ की जाती है। ये कलाकार "सिने पार्लियामेंटरी बोर्ड" में दर्शक की हैसियत से जा सकते हैं। एक साल के बाद ये नियमित रूप से विधान के अनुसार "सिने पार्लियामेंटरी" के सदस्य हो जाते हैं—फिर इनकी राय की बड़ी क़ीमत होती है।

भावनाओं का चित्रण कैसे किया जाता है? यह प्रश्न उठा सकते हैं। सर्वप्रथम प्रार्थी के कुल शरीर को ढक दिया जाता है। सिर्फ़ उसके मुख को छोड़ कर—फिर उसको एक काले पर्दे के सामने लाया जाता है। वहाँ उसको एक चारपाई पर लिटा दिया जाता है—फिर उसके मुख को "लीसन-लोशन" से पेन्ट किया जाता है। पेंटिंग के बाद बिजली की किरणें उसके चेहरे के अन्दर प्रवेश कराई जाती हैं किन्तु विद्युत् किरणें प्रवेश कराने से प्रथम उसे बेहोश बना दिया जाता है। इसके बाद उसे "फिल्म-ग्लासिंग रूम" में ले जाया जाता है। उस कमरे में चारों तरफ़ कई क़िस्म के आठ-आठ फ़ुट के पक्के शीशे लगे हुए हैं। शीशों की संख्या लगभग बीस है। प्रत्येक शीशे के सामने उसे पाँच मिनट तक रक्खा जाता है। इस तरह से क़रीब डेढ़ घंटे उसको शीशे के कमरे में लग जाता है। उन शीशों से भिन्न भिन्न भावनाओं का चित्रण हो जाता है। उन्हीं चित्रणों के आधार पर एक बड़ा नक़शा बनाया जाता है जो कि मिस्टर पार्ले की प्रधान कमेटी में भेजा जाता है। वहाँ से यह नक़्शा कई जगह होता हुआ मिस्टर लिवन्टन पार्ले के पास हस्ताक्षर के लिए जाता है। उनके हस्ताक्षर हो जाने के बाद ही प्रार्थी की बाक़ायदा सर्विस समझी जाती है।

हस्ताक्षर के साथ मिस्टर पार्ले एक नोट भी लिखते हैं। उस नोट में सिर्फ़ उसके पद का निर्देश रहता है। पद का निर्देश उसकी भावनाओं के नक़्शे से किया जाता है। जिस पद के लिए वह ठीक समझा जाता है, उसी पर वह नियुक्त किया जाता है। लेकिन जिस विभाग में उसकी नियुक्ति होती है, उस विभाग के डायरेक्टर को भी उसे परीक्षा देनी होती है। वह परीक्षा हार्दिक भावनाओं की नहीं होती, बल्कि शिक्षा-संबंधी प्रश्न किये जाते हैं। इन प्रश्नों में उत्तीर्ण होने के लिए सिर्फ़ बीस फ़ी सदी लाना लाजमी है।

बस इसी कार्य-प्रणाली के आज हालीवुड "सितारों का करता है। इस कार्य-प्रणाली से को एक लाभ यह हुआ है कि "सेलेक्शन सीट" में व्यर्थ के कलाकार जगह नहीं मिल पाती। जो वास्तव फ़िल्मी-दुनिया के लिए योग्य हैं वे स्क्रीन-संसार में आ सकते हैं। हालीवुड ने इस तरह कार्य-प्रणाली प्रयोग में लाया है, तब से पचास प्रार्थियों में से मुश्किल से सिर्फ़ प्रार्थियों को स्थान मिलता है। अच्छा होता कि इसी तरह की हमारे भारतीय फ़िल्मी-दुनिया में की जाती, जिससे उनको सच्चे मिल सकते।

(लेखक-द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

'संगम' फ़िल्म में डाइरेक्टर विनायक अभिनय करते समय एक दृश्य में।

सुकवि राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल बी० की अनमोल कृतियाँ

किंकिणी में कवि की बढ़िया कविताओं का संग्रह है। भाषा मधुर और इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षणों तक भावविभोर बना रहता है। ।।।) बारह आने।

वनवास में कवि ने रामचन्द्र जी के वनवास का अनोखा क्रयोन किया है। राजाराम चित्रकूट के पड़ोसी हैं और वहीं पर वनवास की अनेक मुख्य घटनाएं हुई थीं। इस कारण यह 'वनवास' अपने ढंग की एक ही पुस्तक है। ।।=) चौदह आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास्य-परिहास

भङ्ग की तरङ्ग

कायदे आज़म मिस्टर जिन्ना ने यह स्वीकार नहीं किया है कि लीगी सदस्य प्रान्तीय मंत्रिमंडल में शामिल हो सकते हैं। हमारी राय में प्रांत के सारे मंत्रिमंडल लीगी होते तो अच्छा था। इस प्रांत का शासन अंग्रेजों के आने के पहले लीगियों के पुरखा ही करते थे।

* *

लीगों का कहना है कि ईरान के मामले में रूस दब गया। हमारी समझ में ऐसा कभी नहीं हो सकता। भारत के कम्युनिस्ट तुरन्त सहायता को पहुँच जाते।

* *

मीर बुंदे अली फिर से लीग में शामिल हो गये। यदि पहले ही उन्हें मंत्रिमंडल में ले लिया गया होता तो कई बार कलैया खाने की आवश्यकता न पड़ती। फिर उन्होंने जो कुछ किया, ठीक किया। यदि मंत्रि पद के लिये ऐसा न करते तो तालपुर से पातालपुर चले गये होते तब!

* * *

दिल्ली में साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति ने तय किया है कि रेडियो प्रोग्राम पर फिर से विचार होगा। अवश्य होना चाहिये। कितने लोगों की आमदनी का घाटा हो रहा है। आंदोलन तो इसीलिये उठाया गया था कि कुछ अधिक लोग रेडियो में बुलाये जायें और कुछ अधिक फीस मिले।

* * *

चला जा रहा हूँ

लेखक, श्री 'बढब' बनारसी

यही जिन्दगी है चला जा रहा हूँ—चला जा रहा हूँ।
इधर एक महिला पहलवान जैसी
उधर ट्रंक मानो हिमालय खड़ा है,
बड़ा वीर है गाँव का एक पट्ठा
चरन पर हमारे धरन-सा पड़ा है,
सफ़र रेल का है दला जा रहा हूँ—दला जा रहा हूँ।
न घी दूध का है तनिक भी ठिकाना
चना भी घुना तक नहीं मिल रहा है,
उधर प्रेयसी की जुदाई अखरती
फटा दिल हमारा नहीं सिल रहा है,
न हो जाय टी० बी०, गला जा रहा हूँ—गला जा रहा हूँ।
किरोसिन नहीं आजकल मिल रहा है
खड़ें रात दिन बोतलें हैं हिलाते,
उन्हें क्या उन्हें तो इसी में खुशी है
मुझे रात-दिन वह रहेंगे जलाते,
बिना स्नेह के ही जला रहा हूँ—जला जा रहा हूँ।
कहीं खंड जो काग़ज़ों के पड़े हैं
उन्हीं पर हमें गर्व संपत्ति का है,
कभी जो उन्होंने लिखे चार पुरजे
वही प्रेम प्रासाद की भित्ति का है,
इन्हीं में पड़ा मैं छला जा रहा हूँ—छला जा रहा हूँ।
छलकता सदा प्रेम की वारुणी से
कहाँ आज अपना हृदय वह पुराना,
हँसी वह कहाँ, बलबले वह कहाँ हैं
कहाँ आज हर बात पर खिलखिलाना,
जवानी गई अब ढला जा रहा हूँ—ढला जा रहा हूँ।

लखनौआ 'अधिकार' के संपादक के पास रेडियो वालों का एक पत्र आया है कि आप बोलने आइये, आपको २५) मिलेंगे। एक संपादक को इतना अधिक पुरस्कार! मगर मैं भूल गया हिंदी पत्र के संपादक थे न! न कोई मियाँ साहब थे न कोई बाई साहब।

सुनते हैं कांग्रेसी सरकार ऐसी व्यवस्था करने जा रही है कि प्रांत में न कोई भूखा रह जायगा न नंगा। भूखों की बात मैं नहीं कह सकता किंतु नंगे कम हो जाय, यह कांग्रेसी सरकार की शक्ति के बाहर है। प्रांत में आजकल काफी नंगे हैं।

समाचार छपा है कि महात्मा गांधी अब हरिजन भंगी के यहाँ रहेंगे। नेताओं को भी अनुकरण करना उचित है। देखना है अब पंडित सुंदरलाल भंगी का घर चुनते हैं कि चमार का?

* * *

पंजाब में असेम्बली के लीगी नेता ने पूछा कि मुसलिम बाहुल्य इलाके में गैर मुसलिम मिलें क्यों हैं? यह प्रश्न उचित था। आगे जब मृत्यु हो तो प्रश्न पूछना चाहिए कि मुसलिम बहुमत प्रदेश में मुसलिम क्यों नहीं अधिक मरे? यमराज को लीग का ख्याल करना चाहिये।

* * *

एक वक्तव्य से पता चला है कि सर फ़ीरोज खाँ नून इसलिये यूनियनिस्ट दल से रुष्ट हो गये कि वह जमीन का पट्टा सरकार से लिखवाना चाहते थे और सर छोटूराम ने उसे नामंजूर कर दिया था। लीगी नेता भी जमीन चाहते हैं यह सुन कर आश्चर्य हुआ? मैं तो समझता था कि वह आसमान चाहते हैं।

* * *

प्रांतीय सरकार ने बंदियों के राशन में वृद्धि कर दी है। किंतु ऐसा न हो कि सब लोग जेल में ही रहने की ठान लें। आजकल जेल जाने की तरकीबें बड़ी सरल हैं।

—अगड़धत्त शर्मा

शारीरिक उष्णता के लिये...

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

आज से ही शुरू किजिए, सर्वत्र मिलता है।

जीवन्तर, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली तलुवों और आँखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग में आग सी जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, जड़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढा बालक वृद्ध, पुरुष स्त्री सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक निरापद है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निस्संकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके शीतल, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

यू० पी० प्रतिनिधि डोसार एण्ड कम्पनी, बिरहना रोड, कानपूर।

देहरादून एक्सप्रेस एक मालगाड़ी से टकरा गई

५० व्यक्ति मारे गये और ३०० घायल

रेल दुर्घटनायें दिन पर दिन बढ़ रही हैं इसी ४ मार्च १९४६ को लखनऊ के पास मगौली रेल के स्टेशन पर देहरादून एक्सप्रेस की एक मालगाड़ी से टक्कर हो गई।

रेल दुर्घटनाओं के अलावा **आम बलवे** भी अक्सर होते रहते हैं

इस प्रकार की रोजाना सैकड़ों आकस्मिक दुर्घटनायें हमें पढ़ने और देखने में मिलती हैं। किसी को जहरीले जानवर काटते हैं तो कोई विषैली चीजों से मरता है, आग लग जाने से या जल जाने से मृत्यु हो जाती है। बिजली तो पता नहीं कितनी भेंट रोज लेती है। रेल और मोटर दुर्घटनाओं तथा आम बलवों के कारण तो ऐसी मृत्यु संख्या बहुत बढ़ गई है। इस प्रकार अचानक मृत्यु हो जाने पर आश्रित कुटुम्बी जन भी दुखी होते हैं इसे कौन नहीं जानता।

इसी कारण स्वदेशी ने

घातक दुर्घटना पालिसी

(Fatal Accident Policy)

निकाल कर एक बार लगभग २५ रुपये प्रति हजार देकर बीमा कराने की प्रणाली निकाली है। यह योजना बड़ी लोकप्रिय सिद्ध हुई है। आप भी अपना बीमा कराने के लिए विशेष विवरण मँगा लें।

नोट :—इस योजना में कम्पनी एक व्यक्ति का १०,०००) से अधिक का बीमा नहीं करती।

श्रीचंद दौनेरिया, मैनेजिंग डायरेक्टर।

स्वदेशी बीमा कम्पनी लिमिटेड,

स्वदेशी बीमा नगर, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचना

अमृत और विष*

(समीक्षा)

लेखक, श्री 'नीरव' एम० ए०

'अमृत और विष' हिन्दी के सुप्रसिद्ध कलाकार और नाटककार पंडित उदयशंकर भट्ट की नवीनतम कविताओं का श्रेष्ठ संग्रह है। इसमें भट्ट जी की तेरह नवीनतम कवितायें संग्रहीत की गई हैं जिनमें लगभग सत्तरह सौ पंक्तियाँ हैं। अधिकांश कवितायें मुक्त छन्द में लिखी गई हैं और जहाँ आवश्यक समझा गया है कविता के आरम्भ में परिचयात्मक टिप्पणी लगा दी गई है जिससे भाव की अभिगति और परिस्थिति-चित्र हृदयङ्गम करने की समस्यायें सरल हो गई हैं।

संग्रह की समस्त रचनाओं में आधुनिक जीवन और सामाजिक संविधान के प्रति व्यापक असंतोष प्रकट किया गया है। कवि को समाज के असहाय, पीड़ित, दुर्बल और दलित पक्ष से गहरी सहानुभूति है। जीवन की आत्यन्तिक आवश्यकताओं के अभाव में अन्तिम साँस लेते हुए

सुप्रसिद्ध कलाकार और कवि पण्डित उदयशङ्कर भट्ट।

दीन कंकाल से लेकर गगनचुम्बी भव्य-भवनों में वास करती हुई माँसल विलासिता तक की विशद कल्पना में, श्रेणी-विभाजन, धर्म तथा रूढ़ि वाद से शासित जीवन के विभिन्न पक्षों पर दृष्टिपात करते हुए कवि ने इसी पृथ्वी पर बसे स्वर्ग एवं रौरव के बड़े ही मार्मिक चित्र अंकित किये हैं। वैसे तो जीवन का प्रत्यक्ष यथार्थ बड़ा ही बीभत्स एवं घृणित है जिसके नग्नचित्र सर्वदा श्रेयस्कर नहीं हो सकते किन्तु 'अमृत और विष' के कवि ने यत्र-तत्र समाज और जीवन के नग्न चित्रों में भी स्वाभाविकता के ऐसे रंग दिये हैं जिनके रूप में मानवता की मूक पीड़ाएँ कला की वाणी पाकर मुखर हो उठी हैं। कितने ही विषयों में कवि का अपना दृष्टिकोण है जिसको आज के युद्ध से उत्पन्न हुए वातावरण की क्षुब्धता ने प्रभावित किया है। युग की संघर्ष-धाराओं में राष्ट्रों के लय-प्रलय की रचनायें देखकर कवि पुकार उठता है—

उठो, उठो, शोणित की धारें रोक नहीं
पायेंगी पथ को
नभ-चुम्बी अंगार दहकते रोकेंगे क्या
मनु के रथ को
दो छोरों में रात छिपी है दो जीवन के
बीच मौत है
उसे पार करना ही होगा इति है दूर
न देखो अथ को।

कवि की इस वाणी का आधार आज के जीवन का एक महान् सत्य है। उसका विश्वास है कि जीवन के लिए युद्ध, जीवन के लिए संघर्ष ये प्रकृति में गतिमान युद्ध व्यापार के ही अंग हैं। यह युद्ध व्यापार ही जीवन है अतः जीवन की महत्वाकांक्षाओं के प्रयोग मोह से नहीं त्याग और बलिदान से सफल—सकते हैं।

विश्व युद्ध है, प्रकृति युद्ध है, प्राण युद्ध है
अरे प्रयोगी
सदा तुम्हें तो बढ़ते जाना लड़ते जाना
आत्म नियोगी

अपनी आँखों से अपने ही उपसंहार को देखती हुई मानव सभ्यता आज अपनी ही शक्ति से काँप उठी है, यह जान कर आसन्न अमंगल के भय से चौंक कर उठा हुआ कवि जब युग संघर्ष में व्यस्त जगत् पर दृष्टिपात करता है तो उसे भू, भूधर, सागर और आकाश सब संघर्ष में भाग लेने के लिए करवट बदलते प्रतीत होते हैं। कवि स्वयं इस संघर्ष से पलायन नहीं करता। वह अतीत का जर्जर आश्रय छोड़ कर नवनिर्माण का स्वागत करने के लिए वीरोचित अभिमान के साथ तैयार होता है :—

सुप्त सदियों के अज्ञाने ले रहे नग
आज करवट
और बढ़ने लगे सागर तोड़ अपने
पुराने तट

टूटते जाते निशा के स्वप्न से पिछले सहारे
टूटते जाते तटों के दूह से हट हट किनारे
झाँकती संहार में नव-सृष्टि की कोई कहानी
आज उठ अंगार से शृंगार कर मेरी जवानी।

कवि के इन कल्पना चित्रों के संकेत अत्यन्त प्रभावपूर्ण और सजीव हैं।

जीवन, स्वाभिमान, सहयोग और देश-प्रेम इस संग्रह की कविताओं के प्राण हैं। शत्रु के क्रूर शासन से देश की रक्षा के लिए प्राणाहत सैनिक की मृत्यु-शय्या पर जब आकाश सरितायें तरु-लता और कुसुम अश्रुपात करते हैं तो लोक का प्रतिनिधि बनकर कवि कहने लगता है :—

यह वीर तुम्हारे लिए हृदय के अरमानों
के दीप जला
माँ, स्वतंत्रता के हेतु खोल सब बंधन
हो उन्मुक्त चला।

वीरों के अभियान का कितना महान स्वागत होता है देखिये, जब वीर सैनिक प्रथम वार चला था तो :—

बिजली ने कड़क, गरज घन ने,
बादल ने बरस प्रणाम किया,
तरुओं ने हिल, कलियों ने खिल,
कुसुमों ने मिल सम्मान दिया।

कर्त्तव्य के जिस पथ की ओर चरण उठाने पर विश्व की शक्ति, करुणा और रूप इतना समादर बखेर देते हैं उसकी ओर अग्रसर होने में जीवन की हानि भी परम-लाभ है। कवि का यह संकेत निष्प्राण में भी प्राण भर देने की क्षमता रखता है। इस रचना में ऐसे स्थल अनेक हैं जो स्फूर्ति प्रेरणा और क्रान्ति सन्देश से ओत-प्रोत हैं। इस दृष्टि से इस संग्रह की उपयोगिता और सांकेतिक कलात्मकता का मूल्य और भी अधिक हो जाता है। कहीं पर भी कवि ने आदेश नहीं किया है उसने ऐसे रूप खड़े किये हैं जो अपनी व्यथा आप कहते हैं। कोई भी हृदय उनसे प्रेरणा लिए बिना नहीं रह सकता। इन कविताओं में कवि का सामाजिक दृष्टिकोण प्रगतिवादी है। जर्जर पौराणिकता और व्यर्थ आदर्शवाद से विद्रोह करते हुए कवि ने प्राचीन और नवीन का विभेद स्थापित किया है :—

....सड़ा है समाज का विधान
ढाँचा ठोंक ठोंक कर बना मत उसे नव
है पुराना पुराना और नया नया ही
नये औ' पुराने को मिलाकर घोल घोल
मत उसे भ्रष्ट करो, मत नव नष्ट करो।

'बंगाल', 'बन्द करो द्वार', 'रिपब्लिक' और 'नर्तकी' इस संग्रह की अतीव सुन्दर रचनायें हैं। 'नर्तकी' में कवि की कल्पना सर्वथा नवीन है। इस कविता से प्रकट होता है कि कवि ने परवश हृदय के सामान्य मनोवेगों का स्पर्श किया है जो उसके मौलिक चिन्तन से मिलकर और भी सजीव हो उठे हैं। मूक वेदना जिसके जीवन की चिर-संगिनी है उसके बाह्य-दर्शन से विमुग्ध जन उसके अंतस की पुकार नहीं सुन पाते उनके लिए रूप और यौवन विलास-वासना के उद्दीपन बने रहते हैं। कवि ने 'स्वर्ग का कौतूहल' उठानेवाली क्रीड़ा केलि की अंतर्व्यथा को पहचाना है और पाप के संकेत पर नाचती हुई स्वर्गछवि की अशान्ति को देखा है। यहाँ दुःख और करुणा कविता के प्राण में समा गये हैं। 'लुई सुई शेंकाई' शीर्षक कविता में दाम्पत्य प्रेम और देश प्रेम के अन्तर्द्वन्द का एक बड़ा ही भावुक चित्र है जिसमें देश-प्रेम की महत्ता प्रतिपादित की गई है। सभी कविताओं की भाषा को रस और वर्णन के अनुकूल बनाने का सफल प्रयत्न किया गया है।

'अमृत और विष' का कवि युग की विपरीत प्रगति से रुष्ट होकर आनेवाले युग की भूमिका लिख देने में ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री नहीं समझता वह तो युग के साथ युगपद होने की चेष्टा करता है। उसके विचार दम्भ और विनाश के विचार नहीं उनमें रचनात्मकता और सजग क्रियाशीलता की ओर प्रेरित करनेवाले संकेत हैं। उसने समय के चरण-चिन्ह देखे हैं और वह वर्तमान को महान् बनाना चाहता है। हमें विश्वास है 'अमृत और विष' के पीछे जीवन और मरण के द्वन्द्वात्मक बल की जिगीषा से अनुप्राणित निराश युग की गति को कवि साहस और सुमति का सम्बल भी देगा।

* अमृत और विष (काव्य-संग्रह), प्रकाशक, यूनिवर्सल पब्लिशिंग हाउस, प्रयाग। मूल्य २) सजिल्द।

भारत में आनेवाले तीन सयाने

(पेज ५ का शेष)

टाई की गाँठ परछाईं पर बढ़ती हुई-सी लगती है। विज्ञान के प्रति उनका प्रेम प्रसिद्ध है। वे माँस खाने से परहेज करते हैं। पंडित नेहरू के पुराने दोस्त हैं। यह दोस्ती सन् १९४२ में कुछ खतरे में दिखाई पड़ती थी। महात्मा गांधी ने उनका बड़ा विरोध किया था। जब सन् १९४२ में वे असफल हो गये तो भारत के राष्ट्रीय पत्रों ने उन पर कुछ भी दया न दिखलाई और यह कहा कि वे नं० १०, डाउनिंग स्ट्रीट, लन्दन, के केवल एजेंट की हैसियत से उन शर्तों को लाये थे। वे अपने उद्देश्य में असफल रहे यद्यपि कुछ लोगों ने असफलता के कुछ क्षण पूर्व तक भी सफलता की आशा की थी। कहा यह जाता है कि एक बहुत ही आवश्यक बात पर क्रिप्स अड़ गये और इसी कारण असफलता हाथ लगी। इस बार उन्होंने कहा है, "इस बार हम लोग आगे जाएँगे, पीछे नहीं।" देखना है कि यह बात कहाँ तक ठीक साबित होती है।

ए० वी० अलेक्जेन्डर

अलबर्ट विक्टर अलेक्जेन्डर जिनको श्रम और सहयोग आन्दोलन के शीघ्र विस्तार के कारण सामने आने का अवसर मिला, एक असाधारण नेता हैं। दफ़्तर के एक लड़के की जगह से उन्नति करके वे आज प्रजातन्त्र के एक राजनीतिज्ञ हो गये हैं। सन् १९२४ की मज़दूर सरकार में वे 'बोर्ड आफ़ ट्रेड' के पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी थे। दूसरी मज़दूर सरकार में वे 'फर्स्ट लार्ड आफ़ एडमिरालटी' चुने गये। वर्तमान सरकार में उनका यही ओहदा है। उन्होंने अपने अन्दर एक नेता की योग्यता सिद्ध की है। साथ ही जीवन के प्रत्येक स्थिति के मनुष्यों के साथ पत्र-व्यवहार करने में बड़ी ही नीतिज्ञता भी दिखाई है। सहयोग आन्दोलन के सफल वक्ता की हैसियत से उन्होंने उस [illegible] में विशेष भाग लिया था जो उस [illegible] पर नया कर लगाने के प्रस्ताव पर [illegible] था जिसके लिए रैमजे मैकडानल्ड [illegible] उनके मंत्री-मंडल को तब तक बचे [illegible] रही जब तक इस विषय पर निर्णय [illegible] हो गया था।

वे सन् १८७४ में वेस्टन-सुपर-[illegible] में पैदा हुए थे। जब वे अपनी माँ की [illegible] में ही थे तभी उनके पिता का देहान्त [illegible] गया था। अतएव १३ वर्ष की आयु [illegible] उन्होंने जीविकोपार्जन प्रारम्भ कर [illegible] था। उनकी माँ उनके लिए प्रोत्साहन [illegible] एक बड़ी प्रेरणा थीं। एक बार [illegible] कहा था, "किसी भी ऐसे युवक के [illegible] जो जीवन में कुछ करना चाहता है, [illegible] माँ उसकी सबसे मूल्यवान संपत्ति [illegible] है। ब्रिस्टल के टेकनिकल स्कूल में [illegible] अपनी प्राथमिक शिक्षा प्रारम्भ की [illegible] थोड़े ही समय में अपने [illegible] का पहला पग शिक्षा-सम्बन्धी एक [illegible] सर की हैसियत से आगे बढ़ाया। [illegible] सभा के सेक्रेटरी पद पर नियुक्ति के [illegible] अलेक्जेंडर सीधे-सीधे राजनीतिक [illegible] में आ गये और शीघ्र ही उनकी [illegible] प्रथमश्रेणी के विवेचकों में होने [illegible] रोफ़ील्ड के हिल्सबरो क्षेत्र में उनके [illegible] वित्तव का ऐसा महत्त्वपूर्ण प्रभाव [illegible] कि सन् १९२२ के चुनाव में [illegible] दल के ७००० वोटों का बहुमत [illegible] में परिवर्तित हो गया। उस सीट पर [illegible] ही चुने भी गये। जनता के हितों के [illegible] नायक की हैसियत में उन्होंने [illegible] का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर [illegible] और वेस्टमिनिस्टर में एक शक्ति [illegible] में निकले। सन् १९२९ में एडमिरा[illegible] के लिए जब उनकी नियुक्ति हुई तो [illegible] बड़ा आश्चर्य प्रकट किया गया था। [illegible] कहीं इस नियुक्ति की आलोचना भी [illegible] परन्तु वे भ्रम उस समय दूर हो गये [illegible] उन्होंने जल-विभाग को पूर्ण रूप से [illegible] लिया, दृढ़तापूर्वक अपने विभाग का [illegible] लन किया और शीघ्र ही चीफ [illegible] स्थायी अफ़सरों से बहुत अच्छा [illegible] स्थापित कर लिया। जब उन्होंने [illegible] (सेना) का पहला सरकारी निरी[illegible] किया तो मौसम बड़ा खराब था और [illegible] उन्हें बड़ा कष्ट सहना पड़ा। जो लोग [illegible] साथ थे वे एक अनुभवी मल्लाह की [illegible] यत से भूमि निवासी के ऊपर इसका [illegible] देखना चाहते थे। यद्यपि इनकी नाव [illegible] उधर उछल रही थी और थपेड़े खा [illegible] थी, फिर भी वे चिन्ता रहित होकर [illegible] मिरल से बातचीत करते रहे। उन [illegible] ने इसे बहुत पसन्द किया। सन् [illegible] में जब राजनीतिक और अर्थशास्त्र [illegible] मतभेद चल रहा था, एलेक्जेन्डर [illegible] मंत्रिमंडल में दृढ़तापूर्वक बहुमत के [illegible] रहे। उन्होंने अपने साथियों के साथ [illegible] त्याग कर दिया और रैमजे मेक्डानल्ड [illegible] उनके राष्ट्रीय सहयोगियों का घोर [illegible] करते रहे। दूसरे चुनाव में वे प्रधान-[illegible] के कट्टर आलोचकों में से थे। सहयोग [illegible] के सेक्रेटरी की हैसियत से वे फिर [illegible] पर आ गये। सन् १९३१ में अपने [illegible] प्रयत्नों से उन्होंने मेक्डानल्ड के [illegible] भंग कर दिया और जब उन्होंने [illegible] कहा था कि कर आन्दोलन को वे [illegible] सहमति फिर कभी न देंगे। विरोधियों [illegible] सभी प्रयत्न हवा हो गये।

वे शान्ति एवं परिवार-प्रिय [illegible] हैं और अपनी स्त्री व लड़की के साथ [illegible] तर रहा करते हैं। वे चेल्सिया फुटबाल क्लब के डायरेक्टर हैं और शनिवार के दूसरे पहर घरेलू टीमों का खेल [illegible] पसन्द करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

रियासतों की उपेक्षा से असफलता

अगर नई दिल्ली में बैठे हुए ब्रिटिश [illegible] ने उन ९ करोड़ से भी ज्यादा [illegible] की लापरवाही की जो [illegible] के २१५ हिस्से रियासतों में [illegible] हैं, और शासन-व्यवस्था स्थापित [illegible] जमात तथा अस्थायी सरकार [illegible] में उन्हें अलग रखा गया तो [illegible] बुरी तरह से नाकामयाब होंगे," [illegible] अखिल भारतीय देशी राज्य [illegible] के प्रधान मंत्री तथा मारवाड़ [illegible] के अध्यक्ष श्री जयनारायण [illegible] ने उस बृहद् सार्वजनिक सभा के [illegible] की हैसियत से कहे जो "उत्तरदायी [illegible] दिन" मनाने के लिए बुलाई गई [illegible] श्री व्यास जी ने आगे चलकर कहा [illegible] ने सन् १९३५ के सुधारों के [illegible], शासन-सम्बन्धी भाग तथा [illegible] क्रिप्स के प्रस्तावों को इसी [illegible] था कि उनमें राजाओं को [illegible] तरजीह दी गई थी और रिया- [illegible] की गई थी उपेक्षा। इस बार [illegible] रियासतों का प्रतिनिधित्व करने के [illegible] के अधिकारों की उपेक्षा की गई तो [illegible] को लाचार ऐसे प्रस्तावों को ठुक- [illegible] पड़ेगा। सच बात तो यह है कि, व्यास [illegible] ने कहा कि, रियासतों का शासन [illegible] के हाथ ही में नहीं है, वह तो [illegible] सरकार द्वारा राजाओं के नाम पर [illegible] किये हुए नौकरों के जरिये चलाया [illegible] जो न राजाओं के प्रति जिम्मेवार [illegible] के प्रति। अतः वह किसी का [illegible] करने के अधिकारी नहीं।

मारवाड़ की अन्न-स्थिति पर प्रकाश [illegible] हुए आपने बताया कि बावजूद [illegible] पाँच वर्ष तक अच्छी फसल होने [illegible] मारवाड़ के बाहर अन्न की निकासी [illegible] से मारवाड़ की नौकरशाही अन्न- [illegible] को हल करने में एकदम नाकाम- [illegible] हुई है। उसने अनाज चोरी से बाहर [illegible] दिया है एवं अनाज छिपाने की [illegible] देकर ऐसे लोगों का सहयोग लिया [illegible] स्वयं अनाज-चोर हैं। इस प्रकार [illegible] काफी अन्न था वहाँ दुष्काल की [illegible] पैदा कर दी है। व्यास जी ने [illegible] कि सरकार ने इस प्रकार की [illegible] द्वारा यह सिद्ध कर दिया [illegible] शासन करने लायक नहीं है और [illegible] राय दी कि उसके बदले में बिना [illegible] जनता की सरकार क़ायम की [illegible] चाहिए।

मारवाड़ के गोरे मंत्रियों की इस [illegible] की कि जनता को धैर्य रखना चाहिए [illegible] सारा मामला समय पाकर ठीक हो [illegible], व्यास जी ने मजाक उड़ाई। उन्होंने [illegible] कि ऐसी दलीलें सन् १९४६ में टिक [illegible] सकतीं, इनका जमाना तो सन् १८३२ [illegible] ठीक था जब मैकाले यह बात कह [illegible] थे कि हिन्दुस्तान में प्रतिनिधित्व- [illegible] शासन क़ायम होना असंभव है।

व्यास जी के अलावा जोधपुर नगर [illegible] के सभापति श्री मथुरा- [illegible] माथुर, श्री राधाकृष्ण बोहरा तथा [illegible] व्यास ने भी सभा में [illegible] किया।

[illegible] मार्च को उत्तरदायी शासन दिन [illegible] में सर्वत्र मनाया गया। सब जगह [illegible] हुकूमत की प्रतिज्ञा पढ़ी गई [illegible] शासन-व्यवस्था के बदले [illegible] की माँग की गई जो जनता [illegible] हो।

—संवाददाता

उदयपुर हिन्दी विद्यापीठ के प्रधान मंत्री श्रीयुत् जनर्दन राय नागर एम० ए० साहित्यरत्न तथा श्रीमान् सेठ श्री गोपाल जी मेहता, कुलपति, हिन्दी-विद्यापीठ, संस्था के लिए आर्थिक सहायता प्राप्त करने कलकत्ता गये थे। कलकत्ते से श्रीमान् भागीरथी कानोड़िया, श्री भँवरमल सिंधी, श्री वसन्तलाल मुरारका, श्री सीताराम जी सेकसरिया, श्री रामचन्द्र जी सिंधी, एवं श्री बजरंगलाल लाठ आदि की सहायता से २२ हज़ार की रक़म प्राप्त हुई है। इसके लिए हिन्दी-विद्यापीठ उक्त सज्जनों की आभारी है। साथ ही उन लोगों को भी धन्यवाद देती है जिन्होंने संस्था के काम को समझकर सहायता प्रदान की है। सहायता देनेवाले महानुभाव के नाम इस प्रकार हैं—

सर्वश्री सत्यरानायण जी नाचानी ५०००), लक्ष्मीनिवास जी बिड़ला २०००), दाऊदयाल जी कोठारी २०००), गोविंददास जी मूँदड़ा १०००), चाँदरतनजी डागा १०००), मँगतूराम जी जयपुरिया १०००), सूरजमल जी नागरमल जी १०००), मनसुखराय जी मोर १०००), छोटेलाल जी जैन ७५०), हरिदास जी मूँदड़ा ६००), जयलाल जी हरकूलाल जी ६००), रामकुमार जी अग्रवाल ६००), राजेन्द्रसिंह जी सिंधी ५०१), नथमल जी तोलाराम जी ५०१), छगनमल जी तोलाराम जी ५०१), हमीरमल जी चम्पालाल जी ५००), ओंकारमल जी सोंधलिया ५००), श्री बक्ष जी मोहता ५००), भागीरथ जी कानोड़िया ५००), राधाकृष्ण जी सोंथलिया ५००), दुर्गादत्त जी मून्दड़ा ५००), माणिकचन्द जी बागड़ी ५००), प्रयागदास जी गिरिधरदास जी बिआणी ५००), मँगतूराम जी तापड़िया २५१), मोतीलाल जी लाट २५१), बसन्तलाल जी मुरारका २५१), दीपचन्द जी पोद्दार २५१), राधाकृष्ण जी नेवाटिया २५१), ईश्वरीदास जी जालान २५१), रामेश्वर जी टाँटिया १५१), बाबूलाल जी चोखानी २५१)।

इन सहायकों ने हिन्दी-विद्यापीठ को सहायता दी उसके लिये संस्था उनकी आभारी है। —गिरधारीलाल शर्मा
प्रचार-मंत्री

* * *

आल इंडिया रेडियो का आमन्त्रण

स्वामी भवानीदयाल की अस्वीकृति

आल इंडिया रेडियो की ओर से स्वामी भवानीदयाल जी को आमंत्रित किया गया था कि वे फिजी और फिलीपाइन्स के भारतीयों की परिस्थिति पर १३ मई को अपना भाषण बाडकास्ट करें जिसके उपलक्ष्य में उनको ६०) रु० पुरस्कार मिलेगा। स्वामी जी ने उत्तर में अपनी स्थिति का स्पष्टीकरण करते हुए लिखा है कि मैं ही वह व्यक्ति था जिसने काशी नागरी प्रचारिणी सभा के अर्द्धशताब्दी-महोत्सव के सभापति की हैसियत से आल इंडिया रेडियो की हिन्दी विरोधी नीति का प्रतिवाद करते हुए, हिन्दी भाषी जनता को उसका पूर्ण बहिष्कार करने की सम्मति दी थी। कुछ दिन बाद अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने मेरी इस राय को स्वीकार किया और उसका क्रियात्मक प्रयोग करने का संकल्प कर लिया। ऐसी स्थिति में अपने सिद्धान्त की मैं हत्या नहीं कर सकता और न हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की उपेक्षा। आपका पिछला गुप्त सरक्यूलर, जिसमें प्रचलित हिन्दी शब्दों को प्रयोग में लाने की हिदायत है, हिन्दी भाषी जनता का एक असह्य अपमान है। इसलिए खेदपूर्वक आपका आमंत्रण अस्वीकार करना ही इस समय मेरा सर्वोपरि कर्त्तव्य है।

—संवाददाता

सागर में बीना में श्री मेहता के सभापतित्व में असेम्बली के चुनाव-आन्दोलन की एक सभा हुई। श्री मौलवी चिरागुद्दीन, चौ० नन्हेंलाल व रेवाराम जी गौतम ने कांग्रेस को वोट देने की जनता से अपील की।

मेहतरों का एक डेपुटेशन डिप्टी-कमिश्नर व कमिश्नर महोदय से मिला। मेहतरों ने अपनी माँग वेतन व महँगाई मिलाकर ३०) की बतलाई। कमिश्नर महोदय ने म्युनिसिपल कमेटी को लिखा है। यदि मेहतरों की माँग पूरी न हुई, तो वे संभवतः हड़ताल कर देंगे।

ता० २८-३-४६ को डा० बी० बी० राय की अध्यक्षता में हुई एक सभा में श्री वासुदेवराव सूबेदार व महेशदत्त दुबे ने कांग्रेस की सफ़ेद पेटी में वोट डालने की अपील की। —संवाददाता

* * *

बंगाल सरकार की एक विज्ञप्ति में बताया गया है कि १ली अप्रैल से कलकत्ते में गेहूँ ।-)॥ सेर, मैदा ।=) सेर और सूजी ॥) सेर के भाव से बिकेंगे।—संवाददाता

* * *

शिकोहाबाद टाउन स्कूल में एक विशेष सभा श्री जगदीशशरन माथुर के सभापतित्व में संयुक्त प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के छठवें अधिवेशन के सम्बन्ध में हुई। सभा में साहित्य-रत्न-भण्डार आगरा के संचालक श्रीयुत् मन्हेद्र जी, पंडित सियाराम चतुर्वेदी बी० ए० एल्-एल्० बी० वकील चेयरमैन डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड मैनपुरी, श्री श्रीशंकर याज्ञिक प्रिंसिपल नारायण इन्टर कालिज तथा अन्य साहित्य-प्रेमी उपस्थित थे। इस मीटिंग में प्रान्तीय सम्मेलन को सफल बनाने के लिए सुन्दर योजनायें तैयार की गईं। धन-संग्रह के लिए कस्बे के धनी मानी सज्जनों के पास जाया गया, परिणामस्वरूप शिकोहाबाद की जनता तन-मन धन से सम्मेलन को सफल बनाने को कटिबद्ध हो गई है।

संयुक्त प्रान्तीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन का छठवाँ अधिवेशन आगामी ईस्टर की छुट्टियों में कोहाबाद में होने जा रहा है जिसके सभापतित्व का आसन श्री अमरनाथ झा एम० ए०, डी-लिट्, वाइस-चान्सलर प्रयाग विश्वविद्यालय प्रयाग सुशोभित कर रहे हैं।

प्रत्येक हिन्दी भाषा-भाषी महानुभाव सानुरोध प्रार्थना है कि इस युग की वर्तन भारतीय नवराष्ट्र निर्माण के के अवसर पर हार्दिक सहयोग प्रदान कर राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करें। इस अवसर पर अखिल-भारतीय कवि-सम्मेलन प्रतियोगितायें, साहित्यिक प्रदर्शिनी, अखिल भारतीय बृज साहित्य-मंडल द्वारा अष्टछाप के कवियों का प्रदर्शन तथा काशी नागरी-प्रचारिणी द्वारा 'कालिदास' नाटक का अभिनय कला व साहित्य की दृष्टि से आयोजन किया गया है।

शिकोहाबाद हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग से संबन्धित विभिन्न ज़िला हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनों को अपने यहाँ के प्रतिनिधियों के नाम चुनकर स्वागतमंत्री के पास शीघ्र भेज देना चाहिए।

—संवाददाता

* * *

सागर प्रतिनिधियों और प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के चुनाव की ता० १२ अप्रैल से २० अप्रैल है। नामजदी व एतराज प्रकाशन १४ अप्रैल की शाम को एतराज व फ़ैसले १५ अप्रैल। पेटियों के रंग, के० आफ़िसर का पोलिंग स्टेशन की नियुक्ति १५ अप्रैल को। चुनाव २ से १२ सुबह २ से ६ शाम। मन गणना व घोषणा—२३ अप्रैल। प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के दफ़्तर में सूचना—२४ अप्रैल। नामजदी के साथ १५) दाखिल करना ज़रूरी है।

—लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

* * *

इलाहाबाद में कचरा ग्राम १० मील दक्षिण बारा परगने में स्थित है। पड़ोस के गाँव के ठाकुर लालसिंह के प्रयत्न से यह गाँव ग्राम-सुधार के अन्दर आ गया। गाँव के लड़के जो शहर में पढ़ते हैं अथवा कुछ कार्य करते हैं बड़े ही उत्साह के साथ ग्राम-सुधार के कार्य में लागे हैं। इस वर्ष यहाँ एक विचित्र ढंग से होली मनाई गई। प्रातःकाल लगभग २० वर्षों के पश्चात् सभी लोगों ने एक साथ मिलकर होली के गाने गाये। पं० शिवभरोस रामजी अत्यन्त ही उत्साही व्यक्ति हैं आपके स्थान पर सभी लोगों ने जल-पान किया। उत्साही सदस्यों में श्री रामसंजीवन दुबे, श्री शोभामन जी, श्री रामजियावन जी, श्री रामकिशोर जी, श्री जगन्नाथ प्रसाद जी मिश्र आदि मुख्य हैं। लगभग ४ बजे शाम को ठाकुर लालसिंह जी की अध्यक्षता में होलिकोत्सव मनाया गया। लड़कों ने कविताएँ पढ़ीं तथा भाषण भी दिये। लालसिंह जी ने ग्राम-सुधार के कार्यों को देखकर पंचायत को ५५) दान दिया। चरखा खरीद कर सूत कातने पर आपने विशेष जोर दिया।

—श्यामसुन्दर मिश्र

* * *

कलकत्ता से 'नवीन'—एक मासिक साहित्य—का प्रकाशन आगामी जुलाई से होगा। हिन्दी - साहित्यान्तर्गत कुछ पारंपरिक संकीर्णताओं के प्रति सतर्कता एवं प्रतिभाशील नवीन कलाकारों तथा विद्यार्थियों के साथ एक विशेष सहानुभूति संबंध स्थिर रखना 'नवीन' का प्रथम और मुख्य उद्देश्य है। वार्षिक चन्दा छः रुपये, और एक प्रति का मूल्य दस आने। कार्यालय ४२-१- की० हालदार पाड़ा। रोड, कालीघाट, कलकत्ता।

—संवाददाता

नई पुस्तक

कामायनी-अनुशीलन

महाकवि 'प्रसाद' का महाकाव्य 'कामायनी' बहुत प्रसिद्ध है। पर यह सबकी समझ में नहीं आता। इस पर अनेक समीक्षकों के विचार पत्रों में प्रकट हुए हैं। इसी ग्रन्थ का अनुशीलन इस पुस्तक में लेखक रामलालसिंह एम० ए०, बी० टी० साहित्यरत्न ने कामायनी का ऐतिहासिक तत्त्व, प्रकृति वर्णन, चरित्र-चित्रण, श्रद्धा, भाषा तथा भावाभिव्यक्ति, छंद विधान, रस संचार, कामायनी का मनस्तत्त्व, दार्शनिक तथ्य, युग की अभिव्यक्ति, प्रेम-निरूपण आदि शीर्षकों में बड़ी मार्मिकता से किया है। अच्छे काग़ज़ पर छपी कोई ढाई सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २)।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मज़दूर सरकार किधर जा रही है?

(पेज ७ का शेष)

"एशिया छोड़ो" का नारा वास्तविकता में परिणत होना ध्रुव सत्य है। हाँ, कितना समय लगेगा यह संगठन और क्रान्ति के मानस शास्त्रीय ढंग से संचालन पर निर्भर है।

आज की मजदूर दली सरकार को यह डर है कि साम्राज्य हाथ से निकलते ही इँगलैंड का रहन-सहन का दर्जा गिर जायेगा। उसके व्यापारिक बाजार लुप्त हो जायेंगे और वह अपना अतीत का वैभव खोकर दूसरों का मोहताज बन जायेगा। इस भय का कारण मुख्यतः अविश्वास ही है। यदि वे संसार के मजदूरों और किसानों के साथ सहयोग करके उन्हें उनका जन्मसिद्ध अधिकार प्रदान कर दें तो बाद में वे ही राष्ट्र स्वयं बराबरी के साझेदारों की तरह कामन वेल्थ में रहकर परस्पर सहायक हो सकते हैं। परन्तु इस दिशा में क़दम उठाने के लिए आवश्यकता है साहसपूर्ण और ईमानदार राजनीतिज्ञों की जो राजनीति को कूटनीतिपूर्ण कुचक्र न समझकर—दूसरों को उल्लू बनाने का हथकंडा न मान कर—सत्य एवं अहिंसापूर्ण साधनों द्वारा विश्व-बंधुत्व स्थापित करने का जरिया जाने। क्या आज के श्रमजीवी दल में ऐसे राज-नेता हैं? क्रिप्स और प्रो० लास्की से एक सीमा तक आशा थी परन्तु दुर्भाग्यवश वे भी आज बौने बने हुए हैं, जिस उँचाई तक उठने की जरूरत है उतने उठने में असमर्थ से प्रतीत होते हैं। शायद भविष्य में कोई 'चमत्कार' हो और वे अपने करिश्मे दिखाकर दुनिया को दलदल में से बाहर निकाल सकें।

मजदूर सरकार के उपरोक्त पाँच कार्यों में विदेशी व्यापार की वृद्धिवाला मुद्दा भारत के लिए विशेष महत्त्व का है। इस देश के व्यापारिक इतिहास में आदि काल से ही—एक-दो वर्षों को छोड़कर—आयात से निर्यात अधिक रहे हैं। इससे भारत का दर्जा साहूकार का था क्योंकि आयात-निर्यात में जो फर्क था वह उसे सोने-चाँदी या अन्य प्रकार की सेवाओं—बैंकिंग, बीमा, जहाजी आवागमन आदि द्वारा भुगतान किया जाता था। युद्ध-काल में तो निर्यात खूब ही बढ़े जिसकी वजह से इँगलैंड पर भारत का क़रीब १६०० करोड़ रुपयों का क़र्ज हो गया। इसे "स्टर्लिंग बैलेंसेस' या "पौंड पावना' कहा जाता है। किसी हद तक इन्हें चुकाने के लिए और विशेषतः अपना व्यापार बढ़ाने के लिए ब्रिटेन उपभोग्य चीजों से भारतीय बाजारों को बाँट देना चाहता है। युद्ध समाप्त होते ही इन आयातों की कीमतें दिन पर दिन बढ़ने लगीं। परिणामस्वरूप युद्ध-काल में जो उद्योग-धंधे पनपे हैं उनके काल-कवलित होने की तीव्र भीति है। व्यापारी लोग धड़ाधड़ विदेशों में चीजों का आर्डर दे रहे हैं। क्योंकि वे युद्ध-काल में उनसे वंचित रखे गये। यदि रोजमर्रा की उपभोग्य चीजों की जगह कैपिटल गुड्स—मशीनें विशेषज्ञ आदि—भारत में आयें तो हमें एतराज नहीं; अपितु हम उनका स्वागत करेंगे। इनकी सहायता से नवीन उद्योगों की जड़ें मजबूत कर भारत स्वावलंबी हो जायेगा और फ़ौज से बर्खास्त लाखों आदमियों को रोजी भी मिल जायेगी। परन्तु मशीनें आदि न भेजकर उपभोग्य चीजें भेजी जा रही हैं जो स्वदेशी चीजों से नाजायज प्रतिस्पर्धा कर उनका गला घोंट सकती हैं। अतः भारतीय व्यापारी-संघ को प्रभावोत्पादक ढंग से इस बाढ़ का प्रतिकार करना चाहिए।

इधर निर्यात-नियंत्रण (एक्सपोर्ट कंट्रोल) ज्यों के त्यों कड़े हैं। युद्ध समाप्त होते ही ये जल्द से जल्द रद्द या मन्सूख हो जाने चाहिए। युद्ध-काल में ये नियंत्रण कई कारणों से उचित थे। जैसे (१) देश में हर-एक चीज का आवश्यकता से अधिक रिजर्व में स्टाक रखना ताकि आवश्यकता होते ही वे उपलब्ध हो सकें, (२) विदेशों द्वारा दुश्मन के हाथों ये चीजें न पड़ने पावें, और (३) जहाजों की बचत की जावे। आज तो इनमें से एक भी कारण नहीं है। फिर हिन्दुस्तान को क्यों नहीं मुक्त व्यापार करने का मौक़ा दिया जाता? क्यों बर्मा, मलाया, अफ़ग़ानिस्तान आदि देशों को निर्यात करने में रुकावटें डाली जा रही हैं? क्या इसलिए कि मजदूर सरकार को डर है कि यदि भारतीय व्यापारियों ने ये बाजार हथिया लिये तो ब्रिटिश माल की खपत सदा के लिए निम्नस्तर पर आ जाएगी?

आज की ये ज्वलंत समस्यायें हैं। लेबर पार्टी संकीर्ण स्वार्थ के वशीभूत होकर अपने आदर्श से गिर रही है। उसकी प्रतिष्ठा का काफी ह्रास हो चुका है। संभव है इससे रूस और इँगलैंड के बीच तनातनी बढ़ेगी, आज इनके आपसी संबंध चिंताजनक हैं। और फिर क्या यह संभव नहीं कि अगली दशाब्दी में फिर रणचंडी प्रज्वलित होकर अपना खप्पर भरने को लपलपाती जिह्वा से प्रस्तुत हो जाये?

जनवरी १९४६ में मजदूर सरकार ने पार्लियामेंटरी प्रतिनिधि-मंडल भारत भ्रमण करने भेजा। उन्होंने प्रमुख नेताओं से लम्बी-चौड़ी मुलाक़ातें कीं; हमारी फैक्टरियाँ, कल-कारखाने एवं मजदूर बस्तियों का निरीक्षण किया; राजनीतिक बंदियों की दशा देखी और साम्प्रदायिक समस्या को समझने में भी सर लगाया। २३ जनवरी, ४६ को वे मद्रास में महात्मा जी से मिले और भेंट के बाद डेलीगेशन के नेता प्रोफेसर रिचर्डसन ने बापू की स्पष्टवादिता और बुद्धिमत्ता की खुले तौर पर प्रशंसा की। अन्य स्थानों में भी उनका रुख सहानुभूतिपूर्ण दिखाई दिया और जनता के हृदय में आशा का निर्माण किया। परन्तु इस सारी लंबी-चौड़ी यात्रा का उद्देश्य उसी हालत में सिद्ध होगा—जब ये भारतीय स्वातंत्र्य के पक्ष में इँगलैंड में अपनी आवाज़ बुलंद करें और ब्रिटिश जनता को इस सुधार का महत्त्व समझाकर पार्लियामेंट-द्वारा भारत को स्वराज्य प्रदान करायें। कमीशनों, कमेटियों और डेलीगेशनों से भारतीय जनता ऊब उठी है; उसे इनका कटु अनुभव है। क्या आशा की जाये कि यह डेलीगेशन भिन्न प्रकार का होगा और ईमानदारीपूर्वक अपने कर्त्तव्य को मूर्त्त-स्वरूप देने में जी-जान से कोशिश करेगा? सोरेनसन आदि की तरफ देखकर उम्मीद तो बँधती है—परन्तु आखिर वही सनातन सवाल है—क्या स्वार्थ पर विजय संभव है? देखें ऊँट किस करवट बैठता है।

मजदूरदली सरकार के आठ माह के शासन-काल में भारत के हित की दृष्टि से यदि कोई सबसे महत्त्वपूर्ण घटना है तो वह है ब्रिटिश मंत्रिमंडल के तीन सदस्यों के शिष्टमंडल का आगमन। वैसे तो अतीत में कमीशन, कमेटियाँ, शिष्टमंडल वग़ैरह कई आये और गये। यहाँ तक कि ब्रिटिश सरकार की इस चाल के कारण बदनामी हो गई थी कि जब भी जनता में जागृति के फलस्वरूप आन्दोलन हों, कोई—कमीशन या डेलीगेशन भेज दिया जाये ताकि उत्तेजित जनता में आशा बँधे और आन्दोलन कुछ समय के लिए ही सही स्थगित हो जाय—और बाद में किसी घरेलू समस्या को तूल देकर, दोष भारतीयों ही पर मढ़कर, और अधिक से अधिक एकआध विद्वत्तापूर्ण रिपोर्ट प्रकाशित कर अपने अधिकारों को ज्यों के त्यों क़ायम रखे। १९२८ के सायमन कमीशन के समय, १९३०-३२ में गोलमेज परिषदों में और १९४२ के क्रिप्स-मिशन के वक्त भी यही हुआ।

दो माह पूर्व जो पार्लमेंटरी डेलीगेशन आया था वह भारत के प्रति सहानुभूति से तो ओतप्रोत था किन्तु प्रत्यक्ष में उसके सुफल अभी तक नहीं दिखाई दिये। अतः यह स्वाभाविक था कि इस नवीनतम मिशन को भी—प्रवंचना समझकर उसके प्रति लोगों में अविश्वास हो; परन्तु महात्मा गांधी, मौलाना आजाद आदि चोटी के नेताओं ने अपने भाषणों एवं वक्तव्यों-द्वारा आदेश दिया है कि ब्रिटिश मंत्रि-मंडल के प्रतिनिधियों पर अविश्वास करना कायरता और बुद्धिहीनता का परिचय देना होगा। उनकी नेकनीयती और ईमानदारी में यकीन करना चाहिए; उसी प्रकार जब कि कोई कर्जदार अपना कर्ज चुकाने आता है चाहे वह देरी से ही क्यों न आया हो। प्रधान मंत्री एटली ने भी पार्लमेंट में घोषणा कर दी थी कि भारत को स्वायत्त शासन का पूर्ण अधिकार है और वह उसे शीघ्रातिशीघ्र कैसे प्रदान किया जाये, इस समस्या को सुलझाने के लिए उनकी सरकार हृदय से कोशिश करेगी। इस मिशन में और अन्य मिशनों में एक मौलिक भेद यह भी है कि इन्हें भारतीय राजनीतिक दलों से विचार-विमर्श के पश्चात् सर्वमान्य या अधिक से अधिक मान्य समझौते को स्वीकार करने का पूर्ण अधिकार है। संसार का अनुकूल राजनैतिक वातावरण;—एशिया की जागृति—रूस का कड़ा रुख, चुनावों में कांग्रेस की विजय आदि—भी इस मिशन को इस बात पर मजबूर करेगा कि भारतीयों को उनका जन्मसिद्ध अधिकार सौंप दिया जाय।

डाक्टर रघुनाथ पुरुषोत्तम परां[illegible]

(पेज ८ का शेष)

ने लोकमान्य तिलक जी के विषय [illegible] कुछ बातें कहीं—आपने बतलाया [illegible] 'हम लोग राजनीति के क्षेत्र में एक दू[illegible] प्रतिस्पर्धी थे।' तो भी हम मानते [illegible] लोकमात्र बड़े बुद्धिशाली नेता थे। [illegible] नीति में वे नैतिक नियमों का पालन [illegible] रता से नहीं करते थे।

व्यक्तित्व

डा० परांजपे को अनुशासन [illegible] प्रिय है। अनुशासन भंग को वे सहन [illegible] कर सकते। वे रोबदार आदमी हैं [illegible] मिथ्याभिमान उनमें नहीं है। वे बड़ी [illegible] सादी रहनी-करनी के व्यक्ति हैं। [illegible] आप पूना में उनके बँगले पर चले [illegible] तो आपको चपरासी या परिचय-[illegible] भेजने की जरूरत नहीं पड़ेगी। [illegible] अच्छे वक्ता हैं। प्रथम दर्शन में प्रत्येक [illegible] न्तुक उनके प्रभाव और रोब का [illegible] सा हो जाता है। परन्तु अगले ही [illegible] उनके सीधे-सादे, स्पष्ट और सरल [illegible] आगन्तुक को आत्मस्थिति में ले आते [illegible]

अपने जीवन की सत्तर शरद् [illegible] पार करने पर भी श्री परांजपे बड़े [illegible] मान् और शक्तिमान् दीख पड़ते हैं। [illegible] युवक-सा प्रतीत होनेवाला यह [illegible] व्यक्ति भारत का राजदूत बनकर [illegible] लिया जा रहा है। मानना चाहिए कि [illegible] दूतत्व में भारतीय अपना आत्म-[illegible] स्थिर रख सकेंगे।

1 कूटने से होनेवाले नुकसान को रोकिये... यह है कपडे धोने का सही तरीका
2
3
4
कपड़ों को साफ करने के लिए कूटने के पुराने तरीके से व्यर्थ ही छेद हो जाते हैं, और कपड़े फट जाते हैं। आमतौर पर बेकार के नुकसान से आप और आपके मित्र काफ़ी परेशान होते हैं।

इन अंकित चित्रों में दिये गये तरीकों को अपनाइये; निम्न लिखित हिदायतों का पालन किजिए; और आप यकिन राखिए की आपके कपड़े बिना नुकसान के वास्तव में साफ़ धुलेंगे। (१) जिस कपडे को धोनों हो उसे पहले खूब भिगो लीजिए। यह आप नल के नीचे, टब में, तालाब में या नदी में कर सकते हैं—इससे कोई फर्क नहीं पडता। (२) जब कपडे को खूब भिगो चुके हैं सारे कपड़े में सनलाइट साबुन मलें। जो भाग अधिक मैला हो वहाँ सनलाइट जरा ज्यादा मलें। (३) साबुन लगे हुए कपडे को हाथों से धीरे-धीरे गूँथिये। (इसे कूटिये नहीं) तबतक गूँथिए (ठीक उसी तरह जैसे रोटी का आटा गूँथा जाता है) जब तक साबुनकी झाक कपडे के हरेक तन्तु में प्रवेश पाजाए। कपडे को जोरसे रगड़ने की या बुरीतरह कूटनेकी अवश्यकता ही नहीं है सनलाइट का "स्वयंकाम करनेवाला" फेन सरलता से सारे मैल को बाहर निकल देगा—यदि आपको यह विश्वास हो जाये की गूँथने से यह फेन कपडे के मैल में घुस चुका है। इस शक्तिशाली फेन में जो साबुन है वह मैल को धूते ही तत्काल फुला देता है फेन उसे जज़ब कर लेता है। ऐसे जब आप कपडे को खूब धोएँगे तो फेन के साथ सब मैल निकल जायेगा। (४) फेन—जिसमें की अब सारा मैल आचुका है—छुटाने के लिए कपडे को खूब मलकर धो डालिए। ऐसे सनलाईट के तरीके से धोए कपडे बहुत समय तक चलते है।

सनलाइट साबुन कपडों की बचत करता है

S. 77-50-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

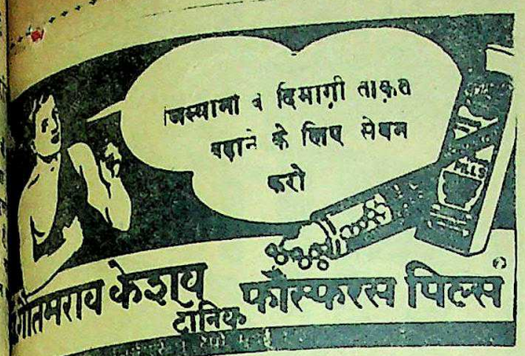

एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एल० एस०
धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

५ घड़ियाँ सिर्फ़ सात रुपये में

३ डमी रिस्टवाच **२ म्यूट रिस्टवाच**

फैन्सी न्यू गोल्ड के सुन्दर आभूषणों को मशहूर करने के लिए कम्पनी ने ऊपर दी हुई घड़ियों को अपने ग्राहकों को मुफ़्त बाँटने के लिए तय किया है। ४ जोड़े बेंगल (चूड़ी) डैमण्डकट, २ बम्बई फैशन की अंगूठी, १ जोड़ी टापस, १ ताले की जंजीर और २५ सुन्दर उपहार, ५ घड़ियों के साथ एक बक्स में सिर्फ सात रुपये में। पैकिङ्ग और डाक-ख़र्च एक रुपया पाँच आना अधिक।

गारण्टी :—अगर पसन्द न हो तो दाम वापस, जल्द कीजिए, इस तरह के मौक़े कम आते हैं, अपना पता साफ़ साफ़ लिखिए।

फैन्सी न्यू गोल्ड अरनामेन्टस् हाउस, पो० बक्स नं० ९६
अमृतसर (D.D.A.) पंजाब
FANCY NEW GOLD ORNAMENTS HOUSE, P.B.
96, AMRITSAR (D.D.A.) (PUNJAB)

श्री रत्नगिरिजी का अद्भुत चमत्कार

जिसने समस्त संसार को चकित कर दिया

रक्त, बल, वीर्य्य, उत्साह तथा उमंग ही जीवन सफल बना सकती है

ध्यान देने योग्य-अमूल्य उपहार

अपूर्व काया पलट (रजिस्टर्ड)

निस्वार्थ संसार सेवा भारतीय महात्माओं ने औषध विज्ञान को अपनी महान् खोजों और अमूल्य रत्नों से अलंकृत किया है आधुनिक चिकित्सक मर्ज और मरीज जब दोनों को लाइलाज घोषित करके शर्मिन्दा नहीं होते वहाँ इन्हीं महात्माओं की बिना दाम की जड़ी बूटियाँ मुर्दों को भी जिला सकने में समर्थ हुई हैं। ऐसी सच्ची घटनायें आये दिन एक न एक पढ़ने और सुनने में आया करती हैं।

बीस वर्ष पूर्व कल्लाती पहाड़ी पर विचरण करनेवाले स्वामी रत्नगिरिजी महाराज की सेवा एक बूढ़ा ग्वाला करने लगा। योगिराज को एक दिन उस वृद्ध की कमजोरी पर दया आ ही गई और उन्होंने निम्नलिखित योग की ६ मात्राएँ उस बूढ़े को दीं। नासमझी के कारण छहों मात्राएँ एक साथ खा जाने से उस वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आगई और रत्नगिरिजी के परिश्रम पूर्वक इलाज करने पर बुढ़ापे के बावजूद भी उसे तीन विवाह करने पड़े। इस पर राजा रईस, नवाब और रसिकजन महान योग को जानने के लिए आतुर हो उठे। नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयात मोहम्मद खाँ साहब ने बाबाजी की बहुत सेवा करके इसे प्राप्त कर लिया और लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्मा जी ने इसे प्रथम तथा दो अन्य लिखकर तीनों से उत्तम वाजीकरण बतलानेवाले को एक हजार रुपये का नक़द इनाम देने की घोषणा की। इसे आज बीस साल के लगभग हो गये किन्तु अभी तक कोई पुरस्कार विजय नहीं कर सका। मथुरा के ख्याति प्राप्त बा० हरिदास जी ने इसे चिकित्सा चन्द्रोदय में छपवाया और हमने भी स्वयं बनाकर सैकड़ों दुर्बल, नपुंसक, वीर्य्य-विकारी रोगियों पर बरता। तत्काल लक्षण-चमत्कार देख जन-साधारण के लाभार्थ अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपवा दिया। आप भी बनाकर लाभ उठायें।

योग—शुद्ध बुरादा फौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत भल्ल १ तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा, एक घंटा घृत कुमारी में घोटकर मिट्टी के कुज्जे में मजबूत बंद कर पाँच सेर कंडों में फूंके। दुबारा एक तोला हरताल बकी शुद्ध, १॥ माशा कपूर शुद्ध में, तीसरी बार गन्धक आमलासार शुद्ध १ तोला, कपूर, १ माशों में, चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद १ तोला, कपूर १॥ माशा को ऊपर की भाँति १६ आँच दे। फिर उसको कढ़ाई में डालकर बराबर इन्द्रबधू डाल दे। और नीचे आग जलावे, जब इन्द्रबधू जलकर राख हो जावे तो हवा देकर उड़ा दे। बस अपूर्व काया पलट तैयार है। चार चार चावल सायं मक्खन मलाई के साथ खायें और मिश्री मिला दूध पीवें।

मथुरा के हरिदास जी लिखते हैं इस योग के सेवन से एक हफ़्ते में एक आदमी का वजन चार पौंड बढ़ गया, दूसरे का चेहरा लाल सुर्ख हो गया। भूपाल के वैद्य-राज पं० बालकृष्ण शर्मा ने ३५० रोगियों पर बरता और आशा से अधिक गुणकारी पाया। रत्नाकर सम्पादक जी श्री छोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य ने गृह-चिकित्सा पथ-प्रदर्शक में छापा कि इतना प्रचण्ड गुणकारी योग दूसरा नहीं देखा। श्री धर्मेन्द्र विद्या-वतंश सिद्धान्त शास्त्री अधिष्ठाता गुरुकुल बरेली जिला मुजफ़्फरनगर ने लिखा है—"अपूर्व काया पलट" नामक औषध सेवन कर रहा हूँ, जैसी प्रशंसा वैसा ही गुण है। बहुत लाभ हुआ। श्री चिरंजीलाल जैन आयुर्वेद शास्त्री मालिक कल्याण औषधालय, बाह (आगरा) का कहना है कि मैंने २२५ रोगी, अपूर्व कायापलट द्वारा जो कि धातु-विकार, नपुंसकता, बवासीर, रक्त-विकार आदि रोगों से ग्रसित थे पूर्ण स्वस्थ किये।

हमारा दावा है कि केवल सात दिन के सेवन से शरीर में रक्त दौड़ता नजर आयेगा। २१ दिन में चेहरा लाल काश्मीरी सेब की तरह चमकने लगेगा। ४० दिन में नपुंसकता, मधुमेह, डायबटीज निर्बलता दूर हो जाती है। स्त्रियों के प्रदर दूर हो गर्भ-धारण-शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति बढ़ाकर भूख दूनी करता है। कफ़ तिल्ली की खराबी, खांसी, नजला, जुकाम बदन दुखना, खून का पतलापन, आँखों का पीलापन, चिनगारी सा उड़ते दीखना, बार-बार थूक गिरना, दमा तथा हर तरह की कमजोरी तुरन्त दूर कर नवजीवन का संचार करता है। जाड़ा, गरमी, बरसात सभी मौसमों में एक-सा लाभ करता है। योग भली भाँति समझाकर लिखा है फिर भी यदि आप न बना सकें तो बनी बनाई १६ आँच दी हुई ४० दिन की ८० मात्रा ६॥।=) डाक खर्च मय पैकिंग अलग। कोई बात समझ में न आवे तो जवाबी कार्ड भेजकर उत्तर मँगा लें।

पता—रूपबिलास कम्पनी
(रसायनशाला) नम्बर ४८१ धनकुट्टी
कानपुर

नोक-झोंक
हिन्दी में हास्य-रस का अख़बार मासिक
वार्षिक मू० ३) रु०
एक प्रति ४ आ०
नमूने के लिये टिकट भेजें
रिपोर्टर, कार्टूनिस्ट चाहियें
नोक-झोंक, आगरा

धातुपौष्टिक
रमजोत वटी
नपुंसकता, वीर्यविकार, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष कमजोरी दूर करके खून, बल बढ़ाती है। डि० रु० २॥)
रमजोत तिला
नसों में इन्द्री को नसें व अण्ड-कोष में शक्ति देकर उत्थानशक्ति और वीर्य्य गाढ़ा करती है। फी शी० २॥)
मेसर्स फार्मेसी—जामनगर
जनरल मर्चेन्ट-पत्तन स्टोर्स ४७ जोन्स्टनगंज

वनकुट्ट वनौषधि
शुद्ध श्वेतकुष्ट (सफेदी) को केवल तीन दिन में पूरा फ़ायदा। यदि डाक्टरों, वैद्यों, विज्ञापन-दाताओं की दवा से निराश हो चुके हों तो हमारी दवा से आराम होवें। १५ दिन का मूल्य २॥)
सफेद बाल काला
बालों को काला पकना रुककर काला होना पक्का होकर यदि काला न रहे तो हमारा मूल्य वापस। यह तेल सिर में लगाकर आना आदि को रोकता है। ऐसी जड़ मजबूत होती है। ऐसी जड़ मजबूत होती है। जिसमें की अच्छा

GC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Estd. 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S. १०) H.M.B.S. १५) H.M.D.S. २५)। पुस्तक—अ० पारिवारिक १) बायोकेमिक १) १००० रेडलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्सनरियाँ १॥) आर्गेनन १), फार्माकोपिया १॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायँगी। डा० ख० माफ—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≡) ड्राम। आउन्स ॥) घरेलू बक्स ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.)

सभी दर्द

सारिडन

दुखशामक टिकडियाँ

१० मिनटोमें दूर हो जाते

मझली दीदी

एक अनाथ बालक की करुण कहानी इस उपन्यास में इतनी मार्मिकता के साथ चित्रण की गई है कि पढ़ते-पढ़ते हमारी आँखें अनायास ही गीली हो जाती हैं। एक सौतेली बहन अपने निराश्रित भाई के साथ जिस तिरस्कार और उपेक्षा का परिचय देती है, वह अत्यन्त हृदय-विदारक है। परन्तु उसकी देवरानी इस अनाथ भाई को अपने पुत्र की तरह स्नेह करती है। यही मझली दीदी है। उपन्यास बहुत ही सुन्दर है। मूल्य १)

अपनी बात

मनुष्यों के चरित्र में जो दुर्बलताएँ होती हैं उन्हें दूर करके वह किस प्रकार जीवन को उन्नत बना सकता है, यही बात इस पुस्तक में ओजपूर्ण भाषा में, निजी अनुभव के आधार पर, लेखक ने लिखी है। यह पुस्तक प्रत्येक युवक को पढ़नी चाहिए। मूल्य ॥।) बारह आने।

राजा-रानी

नीति-कुशलता तथा प्रजा-वत्सलता के अभाव में विलासी राजा के राज्य में जिस प्रकार की अव्यवस्था और अशान्ति फैल जाती है, इसका रोमांचकारी परिचय रवि बाबू ने इस उत्कृष्ट नाटक में चित्रित किया है। प्रजा की पुकार पर दयालु रानी का उत्सर्ग अत्यन्त प्रभावोत्पादक और कर्त्तव्यनिष्ठा का ज्वलन्त उदाहरण है। मूल्य १॥≡)

फ्रांस का इतिहास

में ईसा पूर्व २२५ से लेकर सन् १९२० ईसवी तक का इतिहास है। इसमें वहाँ की राज्यक्रान्ति के राजवंश-फ्यूडल प्रणाली, स्वतंत्र, राजतंत्र, शत-वर्षीय युद्ध, योरप में फ्रांस के प्रसार, राजवंश के उद्धार, सन् १८४८ की क्रान्ति, राष्ट्रीय सभा और प्रजातंत्र आदि का वर्णन उत्तमता से किया गया है। पुस्तक में चित्र भी हैं। अच्छे कागज पर छपे साढ़े चार सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ४) चार रुपये।

कुछ

यह प्रसिद्ध साहित्य-सेवी श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी बी० ए० के बढ़िया निबन्धों का संग्रह है। इसमें २० निबन्ध हैं जो भाषा, भाव और विवेचन की दृष्टि से विलक्षण हैं। यह इस वर्ष की अनुपम रचना है। पृष्ठ-संख्या २०० से ऊपर। मूल्य केवल १॥) एक रुपया आठ आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड इलाहाबाद।

यह

टानिक

आपको प्रदान

करेगा . . .

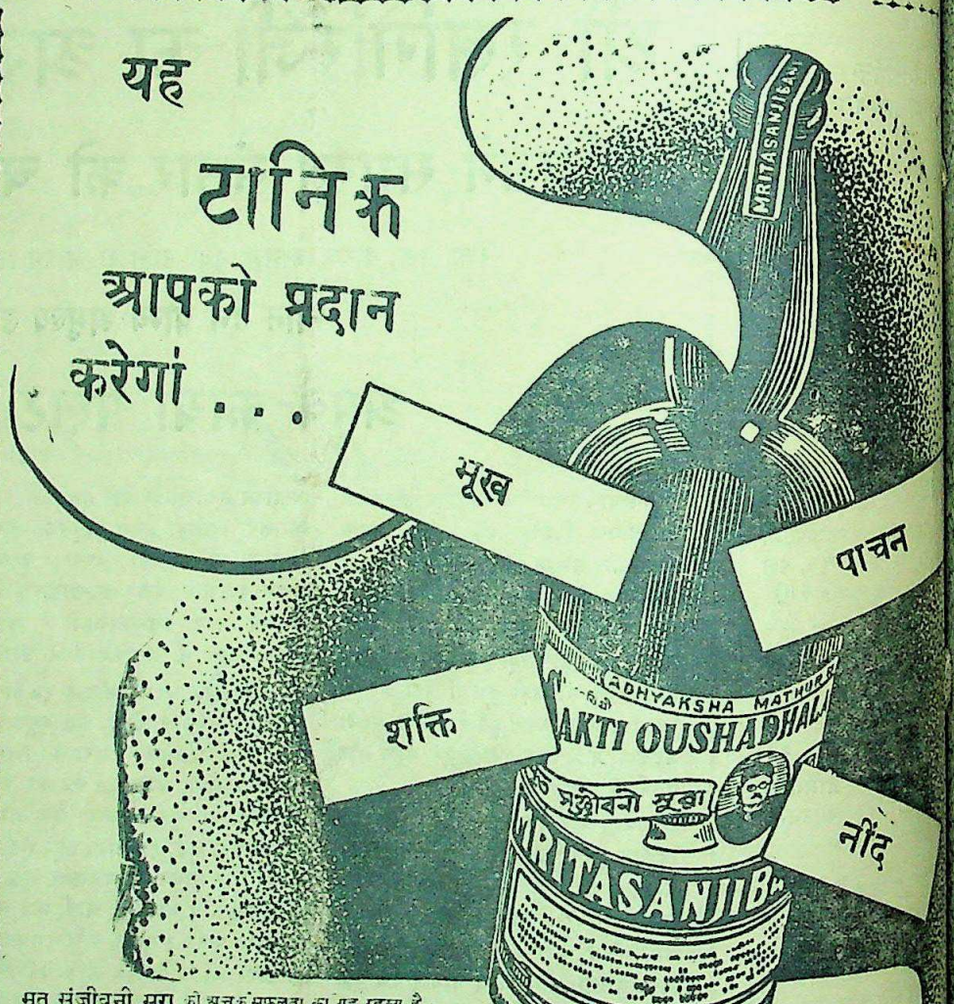

मृत संजीवनी सुरा की अचूक सफलता का यह रहस्य है। नष्ट हो चुके स्वास्थ्य का न केवल यह पुनर्निर्माण करती है, बल्कि भविष्य में भी अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखने की क्षमता रखती है, कारण इससे शरीर को वह अतिरिक्त शक्ति प्राप्त होती है, जो कमजोरी अथवा बीमारी से रक्षा करती है।

मृत संजीवनी सुरा ने पिछले चालीस साल से उन लाखों निराश स्त्री-पुरुषों को नवजीवन प्रदान किया है जिनका स्वास्थ्य बिगड़ चुका था और बिगड़े हुए स्वास्थ्य के शिकंजे से उन्हें छुड़ाया है। कमजोर, बीमार और स्वास्थ्यलाभ करने के इच्छुक व्यक्तियों तथा प्रसव के बाद स्त्रियों के लिए यह एक अचूक टानिक है—संक्षेप में यह सबके लिए लाभकारी टानिक है—अप्रतिम।

खरीदते समय माथुर बाबू का चित्र देखकर इतमीनान कर लीजिए और सावधानी से ये शब्द देख लीजिए—'शक्ति औषधालय की मृतसंजीवनी सुरा।' यह भी खयाल रखिए कि मृतसंजीवनी सुरा रङ्गहीन है—पानी की तरह।

SAKTI'S

MRITASANJIBANI

SURA

THE SYMBOL OF PURITY IN AYURVEDIC MEDICINES

अध्यक्ष माथुर बाबू का शक्ति औषधालय, ढाका

प्रबन्धक सम्पादक एच० पी० घोष [illegible] इण्डियन प्रेस, लि[illegible] १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

रविवार, १४ अप्रैल, १९४६ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 14th April, 1946

वनवास में कवि ने रामचन्द्र जी के वनवास का अनोखा वर्णन किया है। कवि राजाराम चित्रकूट के पड़ोसी हैं और वहीं पर वनवास की अनेक मुख्य घटनाएँ हुई थीं। इस कारण यह 'वनवास' अपने ढंग की एक ही पुस्तक है। इसमें श्री रामचन्द्र जी के वनवास से सम्बन्ध रखनेवाली, दशरथ के प्राण-त्याग, भरत के द्वारा कैकेयी की भर्त्सना, अयोध्या लौटने के लिए श्री रामचन्द्र जी से भरत का आग्रह करने तथा लक्ष्मण के द्वारा शूर्पणखा की नाक काटने आदि की घटनाओं का वर्णन है। मूल्य ।।।≈) चौदह आने।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

भारतीय रेडियो में सुधार कब होगा ?
बिहार कांग्रेस मंत्रिमण्डल के चार नेता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

....इस बात का हर संभव उपाय करना चाहिये कि भूखे रखने के कारण एक व्यक्ति की भी जान न जाने पाये।

—मिस्टर जिन्ना

शारीरिक उष्णता के लिये...

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

आज से ही शुरू किजिए, सर्वत्र मिलता है।

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली तलुवों और आंखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग में आग सी जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, जड़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढा बालक वृद्ध, पुरुष स्त्री सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक हानिरहित है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निस्संकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके शीतल, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

पर्ल कम्पनी
आर्योषधी का रखाना
बम्बई २७

एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

यू० पी० प्रतिनिधि डोसार एण्ड कम्पनी, बिरहना रोड, कानपूर।

मझली दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पिता भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहा

श्रीमान जी. डी. बिरला

मैनेजिंग डायरेक्टर, बिरला ब्रदर्ज़ लिमिटेड,
चेयरमैन युनाईटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड

का सन्देश

"राष्ट्रीय सरकार स्थापित होने पर, जिसकी स्थापना की मुझे आशा है, रुपया बचाकर राष्ट्र निर्माण सम्बन्धी योजनाओं के लिये सरकार ऋण देना आवश्यक होगा। इस प्रकार एक स्थाई संचित हो जायगा जिससे न ही केवल धन लगाने को बढ़ी हुई रक़म वापस मिलेगी बल्कि राष्ट्र सरकार को भी जनता की आर्थिक उन्नति योजनाओं के लिये पूंजी प्राप्त होती रहेगी। प्र व्यक्ति को चाहे वह थोड़ी आय वाला हो या अ स्वतन्त्र रूप से प्रयत्नशील होना चाहिये ताकि वह अवश्य बचावे और इस बचत को लाभदायक मद में ल

संक्षिप्त विवरण

(१) आप ५), १०), ५०), १००), ५००), १०००) या ५०००) के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स खरीद सकते हैं।

(२) एक व्यक्ति ५०००) से अधिक मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स नहीं खरीद सकता। ये इतने उपयोगी हैं कि इनका राशन करना ही उचित समझा गया है। हां दो व्यक्ति मिलकर १०,०००) के सर्टिफिकेट्स मोल ले सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है।

(४) इस प्रकार अवधि पूरी होने पर ४-१/६% वार्षिक ब्याज मि

(५) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं

(६) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा (५) का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष ही भुनाया जा सकता है) परन्तु विक लाभ इसी में है कि १२ पहिले इन्हें न भुनावें।

(७) जिनकी बचत थोड़ी है वह ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्पस खरीद ५) के स्टैम्पस जमा होने पर नल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट मिल

(८) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्पस सरकार द्वारा अधिकृत एजेन्टों सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त हो सकते

आप अपनी बचत से ५०% लाभ उठा

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स खरीदिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष ८, संख्या ३३] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक रविवार, १४ अप्रैल, १९४६

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

ब्रिटिश मजदूर दल के तीनों मंत्री इस समय दिल्ली में इंटरव्यू पर इंटरव्यू दे रहे हैं। जान ऐसा पड़ता है कि तीनों हज़रात हिन्दुस्तान को स्वराज्य देकर ही जायेंगे। अगर स्वराज्य वह दे दें तो क्या कहना है? लेकिन मिस्टर जिन्ना के लिए उन्होंने क्या सोचा है? मिस्टर जिन्ना को 'पाकिस्तान' की रट तोते की तरह लगाये हुए हैं। यही नहीं, कांग्रेस तो उनकी दुश्मन है ही लेकिन ब्रिटिश सरकार से भी दो-दो मोर्चा लेने को तैयार बैठे हैं? क्यों नहीं इधर मोर्चा लीजिए? हमें एक कहानी याद आती है कि एक ऋषि ने चूहे का एक बच्चा पाला। ऋषि चूहे को बड़ा प्यार करते थे। जब वह बड़ा हुआ तो एक दिन ऋषि को दया आई कि क्यों न इस चूहे को शेर बना दिया जाय। बस फिर क्या था उन्होंने अपनी शक्ति से उसे शेर बना दिया। कलयुग की बात देखिए, एहसान फरामोशी इसी को कहते हैं, एक दिन चूहे से बने हुए शेर को ऐसे अकड़े कि वह ऋषि जी को ही खाने के लिए दौड़ पड़े। ऋषि ने कहा, अरे, हमने बड़ी ग़लती की जो इस चूहे को शेर बना दिया, यह तो हमी को साफ़ कर देना चाहता है। इसलिए उन्होंने अपनी पुरानी सोचकर शेर से कहा—बेटा, पुनः मूषक भव। वह शेर चूहा बन गया। अब ब्रिटिश सरकार ने मिस्टर जिन्ना को क्या बनाया क्या वह उन्हें पुनः चूहा बनाकर कांग्रेस की नीति को स्वीकार कर लेगी? असम्भव नहीं। ऋषि से हमारी सरकार बहुत बड़ी है। न्याय की वह साक्षात् मूर्ति है। मिस्टर जिन्ना सरकार को चाहे जितनी धमकी दें किन्तु सरकार उन्हें शेर से शेर फिर बनाने का उपक्रम रचती जायगी? इसी में उसका लाभ है? यह न त्रेतायुग है और न द्वापर यह है कलियुग और घोर कलियुग।

* * *

भोपाल के नवाब साहब अर्थात् नरेंद्र-मंडल के चांसलर साहब पहले तो ताव में आ गये और बोल उठे कि हम लोग भी भारतीय स्वतंत्रता के साथ हैं किन्तु जब दिल्ली में अपने मालिकों के सामने पहुँचे तो अपने मन की बात कह दी। भोपाल, बीकानेर और नवानगर के नरेशों ने कहा है कि ब्रिटिश सरकार ब्रिटिश भारत के लिए चाहे जो निर्णय करे किन्तु देशी राजाओं तथा ब्रिटिश सरकार में होनेवाली संधियों में किसी प्रकार के परिवर्तन के लिए हम लोग तैयार नहीं हैं। अपने राम की राय में देशी नरेश मिस्टर जिन्ना से किसी क़दर कम थोड़े ही हैं। जिन्ना साहब पाकिस्तान चाहते हैं तो देशी नरेश 'रियासिस्तान' चाहते हैं। रियासती जनता चाहे मरे या जिये, उनसे क्या मतलब? उनकी बादशाहत क़ायम रहे, प्रजा के पैसे पर गुलछर्रे उड़ें और योरोप की सैर की जाये? प्रजातंत्र के नाम पर डिक्टेटरी जारी रहे। हवा का रुख देखकर स्वतंत्रता की हवाई बात कह देना और बात है लेकिन असलियत पर पहुँचने पर भला राजा अपनी बपौती कैसे छोड़ देंगे?

* * *

संयुक्तप्रांतीय कांग्रेसी सरकार के प्रधान मंत्री पण्डित गोविन्दवल्लभ पंत प्रांत में भोजन तथा अन्न-वितरण की एक नई योजना प्रस्तुत करनेवाले हैं।

तेहरान की खबर है कि ईरान सरकार और सोवियट रूस में वहाँ के तेल के संबंध में ५० वर्ष के लिए समझौता हो गया है। २५ वर्ष तक तेल पर ४९ और ५१ प्रतिशत रूस का अधिकार रहेगा किन्तु शेष २५ वर्ष तक दोनों के अधिकार बराबर होंगे। चलिए छुट्टी हुई। जिस बात की शंका थी वह होकर ही रही। अपने राम को यह पता नहीं कि अमरीकन और ब्रिटिश सरकार क्या अब तक सोती रही? सुरक्षा समिति ईरान बड़े जोरों से रूस को लेने देने के लिए लपका मगर अंत में सब टाँय-टाँय फिस! इसको कहते हैं राजनीति। सोवियट रूस ने ईरान से अपना काम बना लिया तो बोला, लीजिए हुजूर हम ईरान से अपनी फ़ौजें हटाये ले रहे हैं, सारी दुनिया में शान्ति स्थापित होना चाहिए, युद्ध नहीं। ५० वर्ष में कौन मरता है कौन जीता है! अमरीकन और ब्रिटिश बेचारे सुरक्षा-समिति में ईरान को लेकर नाचते रह गये और रूस बाजी मार ले गया।

* * *

माननीय श्री मालवंकर सुप्रसिद्ध कांग्रेसवादी हैं और केन्द्रीय असेम्बली के प्रेसिडेन्ट-पद पर प्रतिष्ठित हैं।

अलीगढ़ मुस्लिम लीग के वाइस चांसलर सर जियाउद्दीन ने कहा है कि अलीगढ़ में जो धनजन की हानि हुई है उसकी जिम्मेदारी विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों पर नहीं है। अपने राम की राय में ऐसे पाक साफ़ विश्वविद्यालय के विद्यार्थी कभी ऐसा काम कर सकते हैं? सर जियाउद्दीन से बढ़कर निकले श्री खलीकुज्जमा साहब! वह तो अलीगढ़ के क़रीब कांग्रेस को जाने ही नहीं देना चाहते। मानो अलीगढ़ में ब्रिटिश सरकार का राज्य ही नहीं है? क्या हर्ज है संयुक्त-प्रान्त में भी अलीगढ़ को 'पाकिस्तान' क़रार दे दिया जाय?

* * *

श्री घनश्याम शिवदासानी, आप सिंध असेम्बली में कांग्रेस दल के नेता हैं।

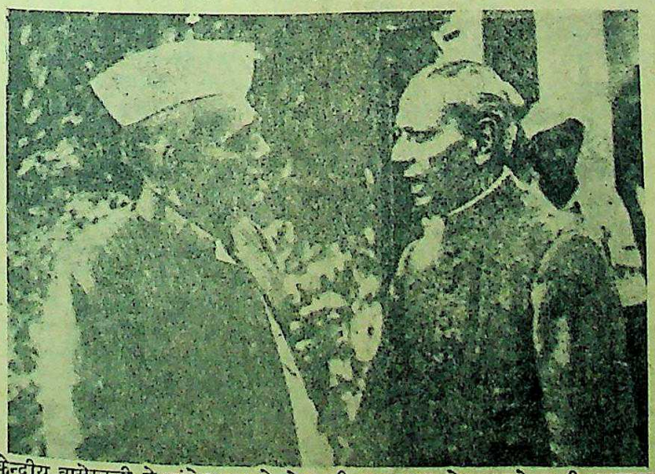

केन्द्रीय असेम्बली के कांग्रेस दल के नेता श्री शरच्चन्द्र बोस, उपनेता श्री आसफ़अली से, बजट स्वीकृत किया जाय या नहीं, परामर्श कर रहे हैं।

श्रीमती अरुणा आसफ़ अली सुप्रसिद्ध कांग्रेस समाजवादी महिला जो इस समय देश का दौरा कर रही हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

फिर वही नाटक प्रारंभ

ब्रिटिश मंत्रि-मंडल के तीनों सदस्य, भारत के विभिन्न प्रान्तों के प्रधान मंत्रियों, कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्यों, मुस्लिम लीग के नेताओं, नरेन्द्र-मंडल के अधिकारियों तथा अन्यान्य भारतीय राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों से भेंट कर चुके हैं और केन्द्रीय सरकार के पुनर्निर्माण और भारत के लिए भावी विधान समिति की स्थापना पर पारस्परिक विचार-विनिमय भी हुआ है। यद्यपि इस समय देश में कांग्रेस और मुस्लिम लीग ही ऐसी जमातें हैं जिनके प्रतिनिधियों से वार्ता करना ही अधिक श्रेयस्कर था किन्तु मंत्रिमंडल की निमंत्रित नेताओं की सूची काफी विस्तृत होती गई और तथाकथित नेताओं को भी उन्होंने वार्ता का अवसर दिया। इसे हम मंत्रियों की उदारता तथा सदाशयता समझें या अंगरेज राजनीतिज्ञों की कूटनीतिज्ञता? किन्तु जैसा कि महात्मा गांधी ने कहा है कि हमें मंत्रियों के कार्यों पर संदेह न प्रकट करना चाहिए और न उनकी नीयत पर आक्रमण। संभव है वह समस्त भारतीय स्वार्थों का अध्ययन कर लेना चाहते हों क्योंकि मिस्टर एटली के कथनानुसार इस बार सम्राट् की सरकार भारतीयों को स्वशासन के अधिकार प्रदान करने के लिए निश्चय कर चुकी है।

जहाँ तक कांग्रेस का प्रश्न है वहाँ तक वातावरण स्पष्ट हो चुका है। महात्मा गांधी, सरदार पटेल, पंडित जवाहरलाल नेहरू, राष्ट्रपति आजाद यह स्पष्ट कर चुके हैं, कि भारत की अखंडता में कोई व्यतिक्रम नहीं किया जा सकता। स्वशासन की जिम्मेदारी समस्त राष्ट्र पर होगी। फिरकापरस्ती तथा हिन्दू-मुस्लिम अथवा साम्प्रदायिक दृष्टि से निर्मित किसी प्रकार का शासन कांग्रेस द्वारा स्वीकार न होगा। कांग्रेस की इस नीति से स्पष्ट हो जाता है कि वह समस्त भारत की स्वतंत्रता की माँग कर रही है। स्वतंत्र भारत में जब कि तीसरी शक्ति का कोई भी हाथ न रह जायेगा, यहाँ की आन्तरिक समस्या का भारतीय स्वयं निबटारा कर लेंगे। ईमानदारी की बात तो यह है कि यदि कांग्रेस ऐसी ही दृढ़ माँग पहले से ही रखती आती तो आज स्थिति ही कुछ और होती। मुस्लिम लीग जो आज विदेशी शासन की नाक का बाल बनी हुई है, न इतनी शक्तिशाली बन पाती और न मिस्टर जिन्ना ही अपना पाकिस्तानी दावा इतनी दृढ़ता के साथ रख सकते, जिस प्रकार आज वह बड़े गर्व के साथ मुस्लिम-जमात के नेतृत्व का दावा ही नहीं कर रहे हैं बल्कि कांग्रेस तथा ब्रिटिश सरकार को धमकियाँ भी देने के लिए उद्धत बन बैठे हैं। फिर भी शिमला-सम्मेलन में कांग्रेस की ओर से जो सहूलियतें वाइसराय की कौंसिल के निर्माण के लिए मुस्लिम लीग को दी जानेवाली थीं, आज ठीक उसी की प्रतिक्रिया दिखाई दे रही है। हमारी समझ में कांग्रेस पूर्ण रूप से उचित मार्ग पर है। वह समस्त राष्ट्र की प्रतिनिधि संस्था है। यदि वह राष्ट्र के विभाजन का विरोध करती है तो राष्ट्रीय दृष्टि से उचित और न्यायसंगत है। इस स्पष्टता का फल यह होगा कि यदि कुछ गड़बड़ हुआ तो जिम्मेदार स्पष्ट रूप से ब्रिटिश सरकार होगी। कांग्रेस पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

रह गई बात मुस्लिम लीग की। मुस्लिम लीग एक साम्प्रदायिक संस्था है, इसमें किसी को भी संदेह नहीं। मुस्लिम लीग और उसके विधाता मिस्टर जिन्ना पाकिस्तान की जो योजना लिये अब तक घूम रहे थे उसका पर्दाफाश प्रान्तीय चुनाओं तथा मंत्रिमंडलों के निर्माण से हो गया। पंजाब में लीग की इतिश्री है। केवल सिंध और बंगाल के भरोसे पाकिस्तान स्थापित करने की घोषणा अब बेतुकी प्रमाणित हो चुकी है। सिंध की स्थिति तो साँप और छछूंदर की भाँति है और बंगाल भी योरोपियनों की इच्छा पर निर्भर है। फिर पाकिस्तानी योजना तो स्वयं खंडित हो गई, अब उसकी स्थापना कहाँ होगी? इसके सिवा सबसे बड़ी बात यह है कि मुस्लिम-समुदाय में अधिकांश जनता राष्ट्रवादी है। मोमिन, अहरार, जमायतुल उलेमा, खाकसार आदि ऐसे वर्ग हैं जिनमें कई करोड़ मुसलमानों का बहुमत है? फिर मुस्लिम लीग यह कैसे दावा कर सकती है कि वही भारतीय मुस्लिम बहुमत का प्रतिनिधित्व करती है? सच तो यह है कि पिछले चुनाव में यदि निष्पक्ष चुनाव होता और सरकारी अधिकारियों की ओर से मुस्लिम लीग को सहायता न प्राप्त होती तो आज बहुत कुछ उसके हाथ से निकलता हुआ दिखाई देता। नवाबों, तालुक़ेदारों ने रुपया पानी की तरह बहाया और येनकेनप्रकारेण चुनाव में विजय पाने के प्रयत्न हुए। यदि इसी आधार पर लीग विजयी हुई है तो वास्तव में उसे हम विजय नहीं मान सकते। फिर मुस्लिम लीग की सहायक सदा से ब्रिटिश सरकार रही है, क्योंकि उसके नेता आज भी उसके हाथ के खिलौने बने हुए हैं, फिर वह कांग्रेस तथा भारत अन्य मुस्लिम-जमातों की क्योंकर परवाह कर सकते हैं? वह जानते हैं कि ब्रिटिश सरकार का बिना हमारे काम नहीं चल सकता। इसी लिए जिन्ना ने सदा यही रुख रखा कि वही भारतीय मुस्लिम जमात के एक-मात्र प्रतिनिधि हैं। और चाहे किसी ने माना या नहीं किन्तु ब्रिटिश सरकार तो मिस्टर जिन्ना के इस दावे को स्वीकार करती ही आई है। शिमला-सम्मेलन तथा क्रिप्स-योजना के समय भी मिस्टर जिन्ना के इसी प्रकार के दावों ने राष्ट्रीय स्वाधीनता के मार्ग में अड़ंगा उत्पन्न किया और ब्रिटिश सरकार ने उससे लाभ उठाया।

आज ब्रिटिश मंत्रियों के सामने भी मिस्टर जिन्ना ने अपना नाटक पूर्ववत् करना प्रारम्भ कर दिया है। वह कांग्रेस की माँगों की नक़ल पाकिस्तानी माँगों के लिए कर रहे हैं। कांग्रेस यदि राष्ट्र की पूर्ण स्वाधीनता की स्वीकृति चाहती है तो मिस्टर जिन्ना पाकिस्तान की स्वीकृति चाहते हैं। उनका कहना है कि ब्रिटिश सरकार जब तक पाकिस्तान के सिद्धान्त को स्वीकार नहीं करती है तब तक वह और उनकी लीग न वाइसराय की कौंसिल के निर्माण में और न विधान निर्मात्री-समिति में ही भाग लेगी। उनके सामने किसी प्रकार के समझौते का प्रश्न ही नहीं है। कांग्रेस की माँग राष्ट्र की आजादी की है और मुस्लिम लीग की माँग पाकिस्तान के स्थापना की है। इसलिए निर्णय की पूरी जिम्मेदारी ब्रिटिश नेताओं पर आ पड़ती है। रह गई देशी नरेशों और रियासतों की समस्या, उनकी गणना बाद में होगी। सरकार के लिए कांग्रेस और मुस्लिम लीग के निर्णय की समस्या काफी है। देशी राज्य भी ब्रिटिश सरकार के पास अंतिम अवसर के लिए सुरक्षित रूप में रखे हुए हैं।

देखना है कि ब्रिटिश राजनीतिज्ञ अंत में क्या फैसला देते हैं? अब उनकी बुद्धि और राजनीति का पता चलेगा। वह एक सम्प्रदाय को प्रसन्न करने के लिए समस्त राष्ट्र की माँग को ठुकराते हैं या भारतीय स्वतंत्रता को साकार रूप में स्वीकृति करते हैं। हम अभी से कोई भविष्यवाणी नहीं करना चाहते किंतु यदि मुस्लिम लीग को ही मुसलमानों की सर्वोपरि जमात समझी गई तो ब्रिटेन अपने वायदे की पूर्ति कैसे करेगा? क्या शिमला-सम्मेलन की भाँति त्रिमंत्रियों का यह काण्ड भी समाप्त होगा या भारतीय समस्या हल करने के लिए वास्तविक रूप से कुछ किया जायगा?

विवाहित स्त्रियों को नये अधिकार

केन्द्रीय असेम्बली में स्वीकृत देशमुख-बिल का क्या मतलब है?

लेखक, पंडित मोहनलाल नेहरू

जब हम अपनी किसी ज्यादती को छोड़ते हैं तो केवल हमें ही सन्तोष नहीं होता बरन् उसको भी होता है जो उस ज्यादती का शिकार होता रहता है। वही हाल इस समय है जब कि केन्द्रीय असेम्बली ने देशमुख-बिल पास कर दिया। आखिर यह क़ानून है क्या और इससे स्त्री जाति को क्या लाभ हो सकता है? बिल में कहा गया है, यदि पति अपनी पत्नी पर अत्याचार करता हो या वह ऐसा रोगग्रस्त हो जिसके सम्पर्क में आने से पत्नी भी रोगी हो जाये या वह दूसरी पत्नी ब्याहता या रखेल घर में उसके साथ रखे या उसका त्याग कर दे तो उसे अधिकार होगा कि वह पति से अलग रहकर रोटी-कपड़ा वसूल कर सकती है। इसमें कौन-सी ऐसी बात है जिसके लिए पुकार और प्रदर्शन हुए? यहाँ तक कि महामना मालवीय जी तक से कहलाया गया कि हिन्दू सदस्य बिल का विरोध करें। हमारी तो राय यह है कि इस वक्त मालवीय जी की बीमारी में उन्हें यह न बताकर कि इस क़ानून का आशय क्या है ऐसा बयान उनसे दिलवाया गया। क्योंकि हम जानते हैं कि पूज्य मालवीय जी किसी के ऊपर अत्याचार होते देख सकेंगे। वह कभी उसके क़ायम रखने की माँग पेश नहीं कर सकते।

वह कौन-सा हिन्दू है जो अपनी प्यारी लड़की को किसी रोगी पति को देगा और अगर धोखा-धड़ी से दे भी दिया तो मालूम होने पर उसे उसके सम्पर्क में आने से रोकेगा या नहीं? या वह कौन-सा हिन्दू है जो रोज ही अपनी पुत्री की हड्डियाँ तोड़ी जाते देखकर भी उसी हालत में उसे रहने पर मजबूर करेगा? फिर यह पुकार कि इस क़ानून से धर्म ख़तरे में है, कैसी बनावटी और झूठी पुकार है? मगर आजकल 'धर्म ख़तरे में है' की पुकार चल खड़ी हुई जो बहुतेरे पापों को छुपाती है। हमारा देश सारे धर्म का ठेकेदार है न?

कहा जाता है कि हमारे शास्त्र परमात्मा ने ही रचे हैं, उनमें आदमी को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। पहले तो यही ग़लत है कि परमात्मा का हाथ हमारे शास्त्रों के बनाने में लगा है क्योंकि परमात्मा एकतरफ़ा क़ायदे नहीं बना सकता था और अगर उसका हाथ होता तो आदमी आज भी उसी जंगली हालत में होता जैसे आदि पुरुष थे न वेद होता न शास्त्र। दूसरे हमारे पास शहादत इस बात की है कि समय-समय पर यह शास्त्र स्त्री-पुरुष सम्बन्धी मामलों में तथा अन्य मामलों में बदलते रहे हैं। परमात्मा का हाथ तो सिर्फ़ यहाँ तक है कि उसने सृष्टि बढ़ाने के लिए स्त्री और पुरुष दोनों को जन्म दिया और कह दिया कि अब तुम मालिक हो। उनमें आपस का सम्बन्ध [illegible] हो वह उन्हीं पर छोड़ दिया। [illegible] लाखों बरस में यह सम्बन्ध बनते [illegible] बिगड़ते रहे। हमारे बुजुर्गों ने तरह-[illegible] के क़ायदे बनाये और बदले। किसी [illegible] तो स्त्री-स्वतन्त्र थी जिसके साथ [illegible] रह सकती थी—ऐसा राजा पाण्डु ने [illegible] से बताया था। वह कुमारी अवस्था में [illegible] बच्चे पैदा कर सकती थी और उसे [illegible] नहीं लगता था। यद्यपि हमारे ऋषि-[illegible] उसे यह कहकर टालते थे कि "[illegible] कन्या-भाव नष्ट नहीं होता था। [illegible] पाराशर ने कहकर सत्यवती को और [illegible] भगवान् ने कुन्ती को अपने आधीन [illegible] था और वह उनकी कुमारी अवस्था [illegible] इसके बाद धूमधाम से इनके राजाओं [illegible] ब्याह हुए। ब्याही दशा में भी [illegible] ख़ास मनाही परपुरुषों से सम्पर्क में [illegible] की या ख़ास रोक-थाम न थी। अगर [illegible] पैदा न हुए होते तो आज तक शायद [illegible] दस्तूर जारी रहता। उस वक्त भी [illegible] रोक-थाम का असर कम था क्योंकि [illegible] बड़ी रानियाँ तक पर पुरुषों से [illegible] कर सकती थीं। कुन्ती से जब पाण्डु [illegible] चौथा पुत्र पैदा करने को कहा तो वह [illegible] है "पुत्रहीन होने की आपत्ति के समय [illegible] धर्मज्ञ पंडितों ने इस तरह तीन ही [illegible] पुत्र उत्पन्न करने की व्यवस्था दी है। [illegible] चौबारा स्त्री ऐसा नहीं कर सकती। [illegible] बार पुत्र उत्पन्न करनेवाली कुलटा होती [illegible] है।" इस तरह महाभारत के समय [illegible] यहाँ तक परिवर्तन स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध [illegible] में हो चुका था कि कुछ न [illegible] रुकावटें उसके स्वतन्त्र रहने में [illegible] दी गई थीं। हमारे शास्त्रों में भी [illegible] तरह के पुत्र माने गये हैं जिनमें प्रथा [illegible] अर्थात् अपनी स्त्री से किसी उत्तम व्यक्ति [illegible] द्वारा उत्पन्न कराया हुआ हो। इतिहास [illegible] बताता है कि ऐसे उत्तम व्यक्ति [illegible] ब्राह्मण समझे जाते थे। बीर शारदंड [illegible] स्त्री ने अपने पति की आज्ञा पाकर एक [illegible] ब्राह्मण से पुत्र पाया था। अन्धे [illegible] दीर्घतमा को जब उनकी ब्याहता स्त्री [illegible] घर से निकाल दिया तो उनकी जीविका [illegible] ही यह थी कि राजा बलि की स्त्रियों [illegible] धार्मिक पुत्र उत्पन्न करें और यह [illegible] भी थोड़े या बहुत समय में लोप हो [illegible] हलके हलके वह ज़माना आया [illegible]

ढोल गँवार शूद्र पशु नारी,
सकल ताड़ना के अधिकारी;

यह सब ताड़न के अधिकारी; समझे जाने लगे: नारी के लिए यह [illegible] हो गई कि रोगी तथा अति दीन पति [illegible] भी वह अपमान नहीं कर सकती। इस [illegible] के क़ायम रखने को धर्म करके पुकारा [illegible] जाता है।

इसी प्रकार मनुस्मृति में नारी को [illegible] ऊँचा स्थान नहीं दिया गया है [illegible] यह कहा गया है कि जहाँ वह सन्तुष्ट [illegible] जाती है वहाँ देवता प्रसन्न रहते हैं। [illegible] यह रस्म बदल कर वह ताड़ना की [illegible] कारिणी बनाई गई तब तो किसी ने [illegible] पुकार नहीं मचाई? अब क्यों यह [illegible] कि हमारे शास्त्र में देवताओं का हाथ [illegible] इधर हम देवताओं का अनादर करते [illegible] और उधर उनकी दोहाई देते हैं।

इस क़ानून का फ़ायदा उठानेवाली स्त्रियाँ भी शायद गिनती की निकलें। अभी तक तो पति के त्याग के बाद भी [illegible]

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्रिदल का महान् उत्तरदायित्व

क्या वह अपने उद्देश्य में पूर्णरूप से सफलता प्राप्त कर सकेगा ?

लेखिका, श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय

ब्रिटिश मंत्रिमंडल के तीनों सदस्य इस समय राष्ट्र के विभिन्न दलों के नेताओं से वार्ता कर रहे हैं और केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार के पुनर्निर्माण और भावी विधान समिति की स्थापना के लिये वह मार्ग खोज रहे हैं। इस लेख में विद्वान् लेखिका ने भारत के संबंध में ब्रिटिश कूटनीति की कड़ी आलोचना की है और यह स्पष्ट किया है कि जिस प्रकार देश की रक्षा के लिये समझौता ज़रूरी है, उसी प्रकार आर्थिक समझौता भी कम महत्त्व का नहीं है। लेख अत्यन्त विचारपूर्ण, सामयिक और सुन्दर है।

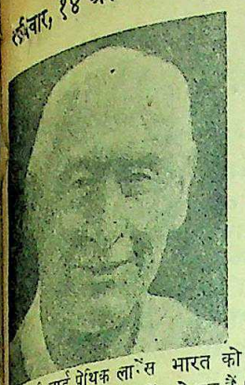

भारत मंत्री लार्ड पेथिक लारेंस भारत को स्वराज देने का मार्ग निकालने में लगे हुए हैं।

अंगरेजों का दूसरा राजनीतिक दल भी आज हमारे यहाँ आ गया है। इस देश के लिए ऐसे दल यद्यपि नये नहीं हैं परन्तु भारत-ब्रिटेन के संबंधों के इतिहास में पूर्ण रूप से मंत्रिमंडल के सदस्यों का ही दल अवश्यमेव अभूतपूर्व है। अभूतपूर्व समय ने उसे लगभग अनिवार्य कर दिया। आज भारतवर्ष उस असंतोष और अशांति की खौलती हुई पतीली हो रहा है जो ऐसे खुले विद्रोहों के रूप में अपनी सीमा का अतिक्रमण कर रहा है और जिसकी उग्रता, तीव्रता और भयंकरता के सामने सन् ४२ की क्रान्ति भी एक बार फीकी पड़ जाती है। यह युद्ध का वास्तविक शक्ल अख्तियार कर रहा है जो कभी-कभी साम्प्रदायिक संकीर्णता का अतिक्रमण कर जाता है और भली-भाँति नियन्त्रित युद्ध-शक्तियों का रूप धारण कर लेता है। फिर, यह बात तो और भी महत्त्वपूर्ण है कि यह दृश्य सम्पूर्ण एशिया महाद्वीप के महान् विद्रोह की पृष्ठभूमि पर है। आज प्रत्येक व्यक्ति गोरी चमड़ीवालों के विरुद्ध खड़ा होकर उन्हें संबोधित करके कह रहा है, "खुदा के लिए जाइए, जल्दी जाइए।"

यह दृष्टिकोण है जिससे आगत-मंडल अर्थपूर्ण प्रतीत होता है। परन्तु हमें भूलना न चाहिए कि किसी भी दशा में यह तसवीर पूरी नहीं है। क्योंकि भयातुर अंगरेजों और "भूलने और क्षमा करने की" बात का अनुमोदन करने के लिए उड़कर भारत में आये हुए आकुल मंत्रिमंडल-दल की तसवीर एक चाही हुई कल्पना है जिसे हमारे कुछ देशवासी अपने महत्त्व को बढ़ाने की इच्छा से कर रहे हैं। वास्तविक ब्रिटेन एक ऐसी दयनीय परिस्थिति में है जिसे "आर्थिक डंकर्क की दुर्घटना" कही जा सकती है। उसकी जहाजरानी ५० प्रतिशत कम हो गई है, उसके पुराने बाजार दूसरों के हाथ में चले गये हैं; उसके घरों और उद्योगों का पुनर्निर्माण करना है। उसके सामने असाधारण पुनर्निर्माण की योजना है और जहाँ यह उसे उठाने का काम दे सकती है वहाँ यह उसे व्यापार की सीमा भी निर्धारित करेगी। क्योंकि यह स्पष्ट है कि यदि इंगलैंड पहले ही की तरह अपना उत्कर्ष फिर चाहता है तो वह उपनिवेशों और उन्हीं की धन-सम्पत्ति के द्वारा ही हो सकता है। मजदूर सरकार की वैदेशिक नीति की साधारण विवेचना से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि अतीत से तिल भर भी हटने का उनका विचार नहीं है। वैदेशिक मंत्री ने स्पष्ट रूप से इसे स्वीकार कर लिया है। वे आगे भी बढ़े हैं और वास्तविक चर्चिलवाद की रूढ़ि के अनुसार यहाँ तक कहा है कि 'साम्राज्य के तन्तुओं का विनाश कल्पनातीत है क्योंकि उससे निश्चय ही विश्वव्यापी अशान्ति की संभावना है।' इसको पूर्णतः कार्यान्वित भी किया गया है। शीघ्रतापूर्वक विकृत होनेवाले साम्राज्य की पूर्व आकृति बनाये रखने की इसी मनोवृत्ति के कारण पूर्व, यूनान, मिस्र, पैलेस्टाइन आदि में भय और आशंका का राज्य स्थापित हो गया है और हिन्द-चीन, हिन्द-एशिया और स्वयं हिन्द में निरन्तर संघर्ष चल रहे हैं। इस तथाकथित समाजवादी सरकार ने उस प्रत्येक सिद्धान्त के साथ विश्वासघात किया है जिसके हित के लिए इसे उत्तरदायी समझा जाता है। यह 'हिन्दुस्तानी सोशलिस्ट पार्टी' पर अब भी प्रतिबन्ध लगाये है; संघर्षशील युवक योद्धाओं को नर्क की असह्य कोठरियों से छोड़ने के विषय में अपने को रूढ़िवादी दल की ही भाँति सतर्क सिद्ध कर रही है; क्रोध भरी चिल्लाहट का उत्तर बन्दूक़ के दगने की आवाज़ से देती है; ईंट का जवाब पत्थर और पत्थर का जवाब गोलियों से देती है। यह ऐसा शासन है जो २०,००० नाविक विद्रोहियों का गला केवल इसी लिए घोंटवा देने को तैयार था कि वे दाल के बजाय रेत-कण खाने को तैयार नहीं थे जब कि नीली आँखों और गोरी चमड़ीवाले उनके साथी न केवल मक्खन रोटी बल्कि 'जाम' और अंडे तक खान को पाते हैं। यह केवल इसलिए था कि इस समाजवादी शासन में नस्लों का भेद-भाव पूरे ज़ोर पर है। 'इंडियन इंफर्मेशन फिल्मों' में इस 'मा-बाप सरकार' को चमकाकर दिखाने के लिए तत्पर हमारे ये "राजभक्त सेवक" जो यदा-कदा पुचकारे जाते रहे हैं, क्लाइव के गौरवपूर्ण दिनों में भी अपने गोरे अफ़सरों के लिए 'वहशी' और 'कुली के बच्चे' ही थे। यदि ये इसका विरोध करते हैं, तो इनके लिए और भी बुरी बात है।

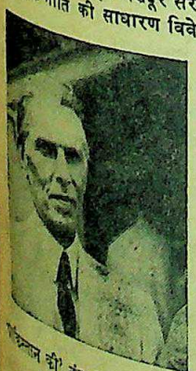

'पाकिस्तान की' दुंदुभी बजानेवाले मिस्टर मोहम्मद अली जिन्ना।

गीत

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव बी० एस-सी०, एल० एल० बी०

मन्दिर में शंखःध्वनि गूँजी तरुण तपस्वी अर्चन कर ले।
मा ने आज रची बलि-वेदी
आहुतियों की कमी न होवे।
आत्म-समर्पण की बेला में
इन आँखों में नमी न होवे।
सैनिक इस तप में तप कर तू भी काया को कंचन कर ले।
काल कह रहा है मा से, तू
आज जला पुत्रों की होली।
तभी वन्दिनी लग पावेगी
तेरे भाल मुक्ति की रोली।
मा कैसे माँगेगी तुझको, तू ही आत्म-समर्पण कर ले।
बहुत खिली तारों की कलियाँ
बिछी बहुत चाँदी की रातें।
बहुत चली मंजुल मधु-गलियाँ
हुई असंख्य प्रणय की बातें।
मा का दूध पिया उससे भी सैनिक आज उऋण तन कर ले।
चले आ रहे हैं सैनिक पर
सैनिक आज ब्रह्म बेला में।
उठ तू भी त्योहार मना ले
हो सम्मिलित मुक्ति-मेला में।
अन्तरदीप जला, भावों की कलियाँ चुनकर वन्दन कर ले।
मन्दिर में शंखःध्वनि गूँजी तरुण तपस्वी अर्चन कर ले।

महात्मा गांधी भारतीय विभाजन-नीति के कट्टर विरोधी हैं।

खून और गोलियों के इस उन्माद में—स्थल में मंत्रिमंडल के सदस्यों का यह 'अभूतपूर्व' दल आया है। इसके भारत-प्रस्थान के आरम्भ में अँगरेज प्रधान मंत्री ने एक महत्त्वपूर्ण वक्तव्य दे दिया है जिसे संसार ने आगे न होनेवाले परामर्शों का सारांश समझ लिया। इसमें तीन मुख्य बातें थीं; (अ) भारत को स्वतंत्रता का अधिकार देना, (ब) अस्थायी सरकार के निर्माण के लिए मंत्रि-दल को उत्तरदायी बनाना और (स) अल्पमत को बहुमत की स्वाभाविक उन्नति को रोकने का अधिकार पाने के लिए वैधानिक कठिनाइयाँ पैदा करने से रोकना। इस वक्तव्य ने स्थित स्पष्ट करने से अधिक और भी कुछ किया। तात्पर्य यह है कि इसने कोड़े खानेवाले प्राणों में स्फूर्त्ति का संचार किया। परन्तु जिन लोगों ने तत्काल ही यह आशा कर ली थी कि इस वक्तव्य से परिस्थिति में परिवर्तन हो जायगा वे अंशों का विचार किये बिना ही पूरे का हिसाब-किताब कर रहे थे। अब जिस समय मंत्रि-दल वही पुराने राग दुहरा रहा है, वातावरण एक बार फिर पूर्ववत् होने लगा है।

पहली बात तो यह है कि जहाँ हम मंत्रि-दल की कठिनाइयों और बारीकियों को समझते हैं और उसकी गुरुता का अनुभव करते हैं, वहाँ नीति की रूप रेखा को अस्पष्ट और अदृढ़ रखने पर भारत-मंत्री का असाधारण महत्त्व देना सारे कार्यों को मिथ्या का स्वरूप दे देना है। वास्तव में यह इस समय केवल कुहरा मालूम पड़ता है। कुछ कठिन समस्याओं की किसी क़दर उपेक्षा कर दी गई है। उनमें सबसे मुख्य है साम्प्रदायिक समस्या जिसके लिए आशा यह की गई थी कि उसे एटली के भाषण ने कमोवेश स्थायी रूप से हल कर दिया है। अब कान्फ्रेंस की मेज पर किंग चार्ल्स के सफ़ेद सम्मानित सर के फिर उठने का ख़तरा है। भारत-मंत्री ने मुसलमानों को अल्पमत-संप्रदाय कहने के लिए विचारणीय अनिच्छा प्रकट की है। उन्होंने समझाया, "जहाँ कांग्रेस संस्था अपेक्षाकृत अधिक संख्या की प्रतिनिधि है वहाँ मुसलिम लीग को केवल एक राजनीतिक अल्पमतों का दल समझना ठीक न होगा। वास्तव में वह महान् मुसस्लिम संप्रदाय की बहुमत प्रतिनिधि है। हमारा उद्देश्य एक नये वैधानिक खाके के लिए निर्णय का एक स्वीकृत तरीक़ा हासिल करना और केन्द्र में और अधिक सच्चे प्रतिनिधियोंवाली एक अस्थायी सरकार का निर्माण करना है।" मुसलमानों के लिए यह हवाला बिना भेद का भेद था। तिहाई के स्थान पर यदि मुस्लिम जनता सम्पूर्ण आबादी की ४५ प्रतिशत होती तो भी वह नियम के अनुसार एक अल्पमत ही होती। साथ ही लार्ड लारेंस की दी हुई सारी विशेषताएँ मुस्लिम लीग की माँग में मिलतीं भी नहीं। मुस्लिम लीग मुसलमानों की एक बहुत बड़ी पार्टी होने को तैयार भी नहीं है। वह तो अपने को इस संप्रदाय की एकमात्र प्रतिनिधि मानती है। ये दोनों बातें एक दूसरे की

शेष पृष्ठ १३ पर देखिए

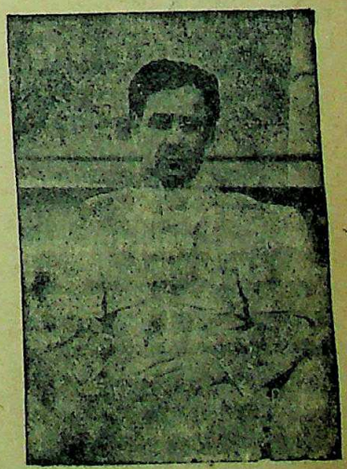

नरेन्द्र मंडल के चासलर नवाब भूपाल वर्तमान रियासती-शासन में कोई उलट फेर नहीं चाहते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेडियो में सुधार कब होगा ?

हिन्दी-संसार को और सक्रिय आन्दोलन करना होगा

लेखक, श्री गोपाललाल खन्ना, एम० ए०

अखिल भारतीय रेडियो साम्प्रदायिक भावनाओं तथा उर्दू-भाषा के प्रचार का साधन-मात्र रह गया है। हिन्दी-संसार ने पिछले वर्ष से रेडियो की हिन्दी-विरोधी नीति के विरुद्ध आन्दोलन प्रारम्भ किया। विद्वान् लेखक ने इस लेख में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन और रेडियो की भाषा-सम्बन्धी नीति की आलोचना करते हुए यह बतलाया है कि अभी और भी अधिक सक्रिय आन्दोलन की आवश्यकता है।

हिन्दी-संसार गत ५ वर्षों से रेडियो की हिन्दुस्तानी भाषा-सम्बन्धी नीति का विरोध कर रहा है। इसका आरम्भ लखनऊ से प्रकाशित होनेवाली 'आकाश-वाणी' नामक पत्रिका से हुआ था। यों तो साहित्य-सम्मेलन ने शिमला-अधिवेशन में रेडियो-विरोधी एक प्रस्ताव स्वीकार किया था परन्तु सन् १९४० से इस ओर विशेष रूप से ध्यान आकर्षित हुआ। 'आकाशवाणी' के अतिरिक्त अन्य पत्र-पत्रिकाओं ने भी सहयोग प्रदान किया तथा उसमें प्रकाशित आँकड़े अपने पत्रों में देकर रेडियो के रहस्य का उद्घाटन किया। साहित्य-सम्मेलन में रेडियो की हिन्दुस्तानी की आड़ में धोखा-धड़ी, हिन्दी भाषा तथा हिन्दी साहित्यिकों के अनादर और अन्याय का जब समाचार पहुँचा तब से वे लोग इसका विरोध करने लगे और एक आन्दोलन आरम्भ करने का विचार करने लगे। धीरे-धीरे समय व्यतीत होता रहा। सभा-सोसाइटियों में, सम्मेलनों में रेडियो-विरोधी प्रस्ताव स्वीकृत किये गये। गत वर्ष इस आन्दोलन में प्रगति आई, जिसका प्रभाव पड़ा और परिणाम दिखाई पड़ने लगा। प्रभाव और परिणाम पर विचार करने के पूर्व रेडियोवालों की नीति और कार्यकर्त्ताओं की योग्यता का थोड़ा परिचय देना आवश्यक है।

रेडियो की भाषासंबंधी नीति—

उत्तरी भारत में पश्चिमोत्तर प्रदेश से लेकर बिहार तक और दक्षिण में मध्य-प्रदेश तक हिन्दी या उर्दू भाषा का प्रचलन है। हिन्दी-भाषी जनता उर्दू-भाषी जनता से कई गुनी अधिक है। हिन्दी और उर्दू साहित्यिक भाषा है। इन्हीं में हिन्दी और उर्दू-साहित्य का निर्माण हुआ है। रेडियोवालों की धारणा है कि हिन्दी उर्दू साहित्यिक भाषा होने के कारण जन-साधारण के लिए सहज ही बोधगम्य नहीं है। अतः वे जन-साधारण की सरल बोधगम्य भाषा की खोज करने लगे। खोज करते-करते उन्हें हिन्दुस्तानी मिली। हिन्दुस्तानी का ठीक-ठीक परिचय तो नहीं मिला और न इसके उत्कृष्ट उदाहरण ही। जिस प्रान्त में गये वहाँ उन्हें भिन्न-भिन्न हिन्दुस्तानी मिली। हाँ इन्हें मिली दो बातें कि हिन्दुस्तानी में हिन्दी और अरबी-फ़ारसी के शब्दों का प्रयोग होता है। किन्तु उर्दू में भी तो हिन्दी और अरबी-फ़ारसी के शब्दों का प्रयोग होता है। अतः वे उर्दू को ही हिन्दुस्तानी समझने लगे। उधर महात्मा गांधी ने भी एक भाषा (राष्ट्रभाषा) का नाम हिन्दुस्तानी रखा। इस महान् राष्ट्रीय नेता का सहारा पाकर रेडियोवाले हिन्दुस्तानी के नाम पर अपनी मातृभाषा उर्दू का उपयोग निर्भय होकर करने लगे। केन्द्रीय सरकार ने भी इसी का पृष्ठपोषण किया। रेडियोवालों की निर्भयता ने उग्र रूप धारण किया और हिन्दी पर अत्याचार एवं आघात होने लगे।

हिन्दी-उर्दू के प्रश्न से रेडियोवाले दूर ही रहना चाहते थे। हिन्दुस्तानी ने उन्हें आत्मरक्षा का सुमार्ग दिखाया। हिन्दुस्तानी की आड़ में उर्दू का उपयोग करना ही उनकी जातीय भावना को भी फलवती बनाना था। उर्दू के पंडित प्रायः मुसलमान ही रेडियो-विभाग में कार्य कर रहे हैं। कहीं-कहीं पर हिन्दी के नाम को सुशोभित (कलंकित ?) करने के लिए कुछ हिन्दू भी कार्य कर रहे हैं। यदि हिन्दी का प्रवेश रेडियो में उर्दू के अनुपात से भी हो जाता है तो बेचारे उर्दूबालों की रोजी मारी जाती है और उनकी जातीय भावना पर प्रहार होता है। अतः उर्दू का ही उपयोग करना उनके उद्देश्य को सार्थक कर सकता है। सर अकबर हैदरी द्वारा नियुक्त कमेटी में सर सुलतान अहमद ने रेडियो की भाषा हिन्दुस्तानी (उर्दू) को ही स्वीकार किया और आदेश दिया है कि जब तक उनका भाषा-सम्बन्धी प्रयोग सफल न हो जाय हिन्दुस्तानी में ही समाचारों का विस्तार किया जाय। इस निर्णय से रेडियोवालों में पुनः जीवन-संचार हो गया और श्री बोखारी साहब फूले न समाये।

रेडियो-विभाग के पदाधिकारी और कार्यकर्त्तागण :—(१) सर अकबर हैदरी, (२) सर सुलतान अहमद, (३) मि० बोखारी—प्रभृति नाम ही से सूचित हो जाता है कि रेडियो-विभाग में नियुक्त व्यक्ति किस संस्कृति एवं भाषा के पृष्ठ-पोषक हैं। इसी प्रकार उत्तरी भारत के प्रायः सभी रेडियो स्टेशनों में उर्दू भाषा-भाषी सज्जन स्टेशन-डाइरेक्टर पद पर हैं। इन रेडियो-स्टेशनों के विभागों में सभी अध्यक्ष उर्दू भाषा-भाषी हैं। यहाँ तक कि चपरासी भी उर्दू-भाषी ही होता है। अतः ऐसे उर्दूमय दूषित वातावरणवाली संस्था में स्वच्छ हिन्दी का प्रवेश असंभव है। हिन्दी यदि वहाँ पहुँच भी जाती है तो अरबी-फारसी की कालिख से बची न रह पाती। जोर व जबरदस्ती से उसको रँगा जाता है। उच्चारण हिन्दी का भ्रष्ट कर दिया जाता है। अपने स्वभावानुकूल नादिरशाही या औरंगजेबी अत्याचार करके ही उन्हें तृप्ति होती है। इस प्रगतिशील आधुनिक काल में राष्ट्र की स्वामिनी पर ऐसा घृणित अत्याचार क्या अनदेखा और अनसुना किया जा सकता है ?

उपरोक्त विवरण से रेडियो-संचालकों की प्रवृत्ति और रेडियो-विभाग की भाषा-संबंधी तथा उनकी सच्ची सांप्रदायिकता का पूर्ण परिचय मिल जाता है। अब प्रश्न यह है कि किस प्रकार इसका विरोध एवं सुधार किया जा सकता है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग ने इसके विरुद्ध आन्दोलन छेड़ा और वह कितनी सफलता अब तक पा सका यह रेडियो की सलाहकार समिति के निर्णय से प्रकट है जो मेरे पिछले लेख 'रेडियो के कारनामों' (देशदूत ७ अप्रैल) में छप चुका है। अतः केवल अखबारों में लेख छापने से और सभा-समितियों में प्रस्ताव स्वीकार करने से वह दुर्विनीत साम्प्रदायिक संस्था झुकेगी नहीं। उसके विरुद्ध विकट क्रियात्मक आन्दोलन एवं कार्य की आवश्यकता जिसका किञ्चित् विवरण मैंने अपने पहले लेख (देशदूत ३१ मार्च) में दिया है।

मेरे विचार से क्रियात्मक आन्दोलन करने की अब आवश्यकता आ पड़ी है। उसे शीघ्रातिशीघ्र आरंभ कर देना चाहिए। क्योंकि विभिन्न सभाओं के मंत्रियों ने जो वक्तव्य निकाले हैं वे कुछ समझौता या सौदा करने की प्रवृत्ति का संकेत करते हैं अथवा वे एक दूसरे के विरोधी भाव रखते हैं। अब समय ऐसा जान पड़ता है कि इस रेडियो के भाषा-संबंधी प्रश्न पर भी शीघ्र ही विकट मतभेद हो जायगा और आपस में फूट पड़ जायगी। इसका श्रेय हमें हिन्दुस्तानी के हिमायतियों को देना पड़ेगा। दिल्ली की हिन्दी-साहित्य-सभा के कार्यालय के मंत्री महोदय ने अपनी माँगों को न्यूनतम कर दिया है। वे हिन्दी-वालों की रेडियो-विभाग में नियुक्ति के अधिक पक्षपाती प्रतीत होते हैं। नियुक्ति हो जाने पर भी—जैसा कि अभी कुछ हिन्दी के लेखक रेडियो-विभाग में काम कर रहे हैं—यदि रेडियो-विभाग की नीति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ तो नौकरी के इच्छुक सज्जनों को उस नीति को बरतना ही पड़ेगा। 'पुनर्मूषको भव' वाली कहावत चरितार्थ होगी।

एक कथन उनका यह है कि हम लोगों ने समाचारों की भाषा को ही अपना लक्ष्य बनाकर उसी को लेकर आन्दोलन आरंभ किया। समाचार ऐसी वस्तु है जिसको प्रत्येक पढ़ा-लिखा और अनपढ़ देहाती भी सुनना चाहेगा। क्या यह उन श्रोताओं की सुविधा के लिए आवश्यक नहीं है कि उन समाचारों की भाषा उनके लिए बोधगम्य हो। क्या रेडियोवाली हिन्दुस्तानी अथवा कांग्रेस की हिन्दुस्तानी प्रत्येक ग्रामीण और हिन्दी के साहित्यिकों के बोधगम्य और लज्जा की बात नहीं है जब कि राष्ट्रभाषा का पद मातृभाषा 'हिन्दी' को मिल चुका है। हाँ वे दिल्लीवाले दिल्ली-वाली (?) तो कहेंगे और समझेंगे।

दूसरा लेख हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग के मंत्री (श्री मौलिचंद्र शर्मा) का है। इसमें वे सर अकबर हैदरी की [illegible] की हुई कमेटी के निर्णय का घोर [illegible] करते हैं। ठीक है। परन्तु उक्त कमेटी [illegible] नियुक्ति के पूर्व ही उनके निश्चय का [illegible] मान किया जा सकता था। जहाँ बोखारी जैसे डाइरेक्टर जनरल हों और सर सुलतान अहमद जैसे उसके पोषक हों और उन्हीं के भाई-भतीजे कार्यकर्त्ता हों [illegible] और कौन-सी नीति बरती जा सकती [illegible] अथवा किस प्रकार का प्रतिकूल निश्चय किया जा सकता था। फिर भी सम्मेलन के प्रतिनिधि उस कमेटी में अपने विचार प्रकट करने गये। वे विचार उन्हीं के शास्त्रीय नियमों के रूप रखे जिसको लेकर वे भड़क उठे। अब शर्मा जी का कथन है कि एक कामन-भाषा उत्पन्न की जा सकती है। भाषा उत्पन्न करने की बात नहीं है। वह स्वप्रसूत है। कालानुसार से स्वयं उत्पन्न होती है और समय पाकर 'अमर' पद को प्राप्त होती है और उसके स्थान को कोई बोली या विभाषा ग्रहण कर लेती है। भाषा-परंपरा का यही नियम है। इसके विपरीत कार्य करना उल्टी गंगा बहाना होगा। इसका नाम लेना भी पाप होगा।

मेरे विचार से जब तक रेडियो-विभाग पर भयंकर आघात (आर्थिक) नहीं किया जायगा तब तक आन्दोलनों और सत्याग्रहों का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। रेडियो-विभाग के आमूल सुधार और परिवर्तन की आवश्यकता है। क्या कारण है कि सरकार ने रेडियो-विभाग की नियुक्ति में प्रतिशत सर्विस के अनुसार हिन्दू-मुसलमान-[illegible] आदि का अनुपात नहीं रखा और न उसके लिए जोर ही दिया। क्या इसमें सरकार की चाल नहीं है ? अभी चेते रहिए। भूकंप नहीं। केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हो जाने पर देख लीजिएगा कि क्या परिवर्तन सामने आते हैं। एक नई हिन्दुस्तानी के दर्शन कीजिएगा और शायद आप अपने को धन्य-धन्य कहिएगा और हिन्दीवालों को माथे पर हाथ रखकर रोयेंगे।

गीत

लेखिका, श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा 'सुधा'

आग मन्दिर में लगाकर आज मैं पूजन करूँगी।
मैं तपा दूँगी उसे जो जल रही है आग मन में,
अश्रु से दूँगी जुड़ा मैं देखकर अनुराग घन में,
कर न पायेगी उपेक्षित देवता की मूर्त्ति मेरी,
मौन हो करती चलेगी भावना की पूर्त्ति मेरी,
सुप्त सागर को लहरियों में नया जीवन भरूँगी।
कह सकूँगी बात मैं प्रत्येक बीती खोलकर जो,
कर रहा हलका पपीहा हृदय अपना बोलकर पी,
जानती हूँ यह नहीं स्वर पहुँच पायेगा वहाँ तक,
क्रम नियति का चल रहा है सांत्वना खोजूँ कहाँ तक,
मन्द वीणा को सजग कर रागिनी नूतन भरूँगी।
फूल हों या शूल उपवन की नहीं तितली बनूँगी,
मैं बरसते मेघ के मन की नहीं बिजली बनूँगी,
मैं नहीं भावुक हृदय की जड़ चरम सीमा बनूँगी,
मैं नहीं वरदान के मिस शापमय प्रतिमा बनूँगी,
आज युग युग की उपेक्षित कामना पूरण करूँगी।

सुकवि राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी० की अनमोल कृतियाँ

वनवास में कवि ने रामचन्द्र जी के वनवास का अनोखा वर्णन किया है। कवि राजाराम चित्रकूट के पड़ोसी हैं और वहीं पर वनवास की अनेक मुख्य घटनाएँ हुई थीं। इस कारण यह 'वनवास' अपने ढंग की एक ही पुस्तक है। मूल्य ।।।=) चौदह आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार का कांग्रेसी मंत्रिमंडल

राष्ट्र के लिए बलि होनेवाले चार देशभक्त

लेखक, श्री ओंकारनाथ शरद

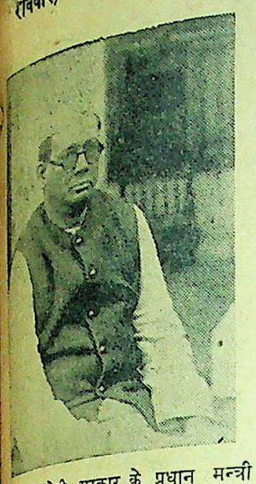

बिहार कांग्रेसी सरकार के प्रधान मन्त्री बाबू श्रीकृष्ण सिंह।

बाबू श्रीकृष्णसिंह

कांग्रेस के अध्यक्ष राष्ट्रपति अबुल कलाम आजाद बिहार के मन्त्रिमण्डल के बुलाव के लिए पटने आये कि असेम्बली के कांग्रेस नेता और भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री श्रीकृष्णसिंह बीमार पड़ गये। इसलिए राष्ट्रपति, देशरत्न राजेन्द्र बाबू, बाबू अनुग्रहनारायणसिंह को 'राष्ट्रवाणी' कार्यालय के ऊपर के कमरे में अस्वस्थ्य श्री श्रीबाबू से मन्त्रणा करने को आना पड़ा और बिहार के भाग्य का निर्णय भी वहीं हुआ!

बाबू श्रीकृष्णसिंह को लोग 'श्री बाबू' ही कहते हैं। 'राष्ट्रवाणी' तथा राजशक्ति और पटनेवालों के आप अधिनायक हैं। नाटा कद, दोहरा बदन, गोरा रंग, क्लीन सेवड्, चश्मे के पीछे से झांकती आँखें झाँकती-सी। यह है श्री बाबू का भव्य व्यक्तित्व! बड़े सरल मिलनसार और अध्ययनशील व्यक्ति हैं आप! इसका तो अनुभव तब हुआ जब सन ४२ में इन पंक्तियों के लेखक को आपके साथ हजारीबाग सेन्ट्रल जेल में रहने का मौका मिला। दिन भर श्रीबाबू अपनी 'सेल' में आरामकुर्सी पर बैठे कोई न कोई किताब पढ़ते रहते। बीच में जब गड़बड़ी होती और हम सभी लोग नारे लगा-लगाकर आकाश फाड़ देते तब कहीं मुश्किल से आप किताब बन्द करते।

प्रतिमास ही हम देखते कि श्री बाबू के पास बक्सों किताबें कलकत्ते और बम्बई से आतीं और साथ ही आप सभी को खत्म भी करते जाते। जब किताब आप पढ़ चुके तब अगर कोई उसे देखे तो पूरा पृष्ठ लाल, नीली और काली पेंसिल के निशानों से भरा होता है। यही कारण है कि आपको तरह-तरह की रंग-बिरंगी पेंसिलों का शौक है। आपकी मेज पर कभी भी दर्जनों पेंसिलें सजी रक्खी मिलेंगी। इस तरह किताबों पर ही आपका खर्च बहुत है।

इसका एक उदाहरण यह है कि पिछली अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की जो बैठक बम्बई में हुई उसमें मेरे एक मित्र आपके साथ ही बम्बई गये। एक दिन सुबह मित्र महाशय ने आज्ञा चाही—

"जरा कुछ चीजें खरीदना है सो घूम आवें।"

"हमें भी चलना है।" श्रीबाबू ने कहा और मित्र महाशय को रुकना पड़ा। आधे घंटे बाद मोटर आई और श्रीबाबू चले। मोटर जाकर बम्बई के बाजार में एक बड़ी सी किताब की दूकान पर रुकी। श्रीबाबू एक पेंसिल लेकर उस दूकान में चले गये। फिर एक ओर से उस दूकान के नए स्टाक का आप निरीक्षण करने लगे। आपको यह पता न लगा कि कितना समय बीता। मित्र महाशय मोटर में ही झपकी लेते रहे।

श्रीबाबू जब दूकान से निकले तो पीछे-पीछे दूकान के नौकर ने कई बण्डल किताबें लाकर मोटर में रख दीं।

मोटर में बैठकर आप ने पूछा—

"कहो तुम्हें क्या लेना है?"

"अब कल लूँगा मालिक! मीटिंग का समय नजदीक है।"

उस बेचारे की विवशता श्रीबाबू समझ गये। एक मधुर मुस्कराहट आपके चेहरे पर खेल गई।

बाबू अनुग्रहनारायणसिंह

बिहार प्रान्तीय लेजिस्लेटिव एसेम्बली में कांग्रेस दल के आप उपाध्यक्ष हैं। आप श्रीबाबू से अधिक "गांधी आइट" हैं। सिर पर गांधी टोपी, कुरता, ऊपर से जवाहर बन्डी और कन्धे पर एक चदरा, हाथ में छड़ी और आँखों पर भूरे रंग के फ्रेम का चश्मा। अनुग्रह बाबू की पहचान के लिए इतना काफी है। पहली बार आपके इस प्रभावशाली व्यक्तित्व को हमें हजारीबाग जेल में ही देखने का अवसर मिला। जेल के राजनीतिक बन्दियों के आप पंच थे। जब कभी जेल अधिकारियों से झगड़ा या इस प्रकार की कोई बात होती तो आप ही समझौता करते थे, हम क़ैदियों की ओर से। यहाँ जेल के बाहर भी आपका वही स्थान है। देशरत्न राजेन्द्र बाबू और बिहार केसरी श्रीकृष्णसिंह के बाद आपकी ही बिहार में चलती है। गांधी जी आपको बहुत मानते हैं। आपका व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली है। पिछली बार आरा स्टेशन पर आप से मुलाकात हुई। आपने पहले हमें नहीं पहचाना। कहा—"तुम्हें कहीं देखा है।"

"जी इलाहाबाद में!" जाने क्यों यह झूठे शब्द मेरे मुँह से निकल पड़े। पर शायद अनुग्रह बाबू को इस पर विश्वास न हुआ। माथे में सिकुड़न डालकर आप गौर से सोचने लगे और मुझे अपनी इस कृति पर लज्जा लगी, मैंने धीरे से कहा—

"हजारीबाग।"

'हाँ, हाँ! हजारी बाग जेल में। अब याद आ गया।" यह कहकर आप भी जोर से हँस पड़े।

श्री जगलाल चौधरी

श्री जगलाल चौधरी की सभी बातें निराली होती हैं। आप जेल में सजा भुगत रहे थे और बाहर लोगों ने आपको मन्त्री बना दिया। कितनी विचित्र बात है। मन्त्री और जेल में! क़ैदी और मन्त्री बने! अंत में नये मंत्रिमंडल ने आपको मुक्त किया और आप पुनः मंत्रिपद पर आरूढ़ हुए।

साँवले, लम्बे, खिचड़ी मूँछोंवाले, टोपी और कुरता पहने जगलाल जी ऐसे सीधे-सादे बने रहते हैं कि अनजान के लिए आपके मंत्री होने की बात जरा देर में समझ में आती है। सादगी की कहाँ तक पूछना? एक बार आपकी कोई चीज़ चोरी चली गई। आप थाने में रपट लिखाने गये। आज के संसार में रिश्वत का बाजार गर्म रहता ही है। छोटे थानेदार ने आपको भी यों ही चलते-फिरते लोगों की तरह

बिहार कांग्रेसी सरकार के अन्य प्रमुख मन्त्री बाबू अनुग्रहनारायण सिंह।

टालना चाहा। पर आपने तो रपट लिखाने का निश्चय कर ही लिया था। छोटे थानेदार ने रिवाज के मुताबिक आपसे भी पान-पत्ते को कुछ लेना चाहा तब तक थानेदार साहब भीतर से निकले और जगलाल चौधरी को टेबिल के पास खड़ा देख अचम्भे में आ गये। फिर सँभलकर बाक़ायदे 'सेल्यूट' किया। छोटे थानेदार साहब को काटो तो खून नहीं। आँखें फाड़-कर देखते रहे जैसे कुछ समझ में आया ही नहीं। चौधरी जी का लिबास ऐसा तो सादा है।

आप सच्चे अर्थ में देशभक्त और राष्ट्र के कार्यकर्त्ता हैं। रचनात्मक कार्य-क्रम पर आपको अधिक विश्वास है। पिछले सन् ४२ के आन्दोलन में आपके सुपुत्र देश के लिए शहीद हुए और आपको दस वर्ष की सजा मिली थी।

डाक्टर सैयद महमूद

बिहार प्रान्त के आप सर्वप्रिय मुस्लिम-नेता हैं। अखिल भारतीय कांग्रेस कार्य-कारिणी समिति के आप सदस्य भी थे। पर पिछले ४२ के आन्दोलन के सिलसिले में मतभेद के कारण आप उक्त कमेटी से अलग हो गये। गेहुँआ रंग, अच्छा डील-डौल, आँखों पर सुनहले फ्रेम का चश्मा। खादी की शेरवानी और टोपी पहने आपका व्यक्तित्व बहुत सुन्दर तथा प्रभावशाली है। बिहार के सुप्रसिद्ध नेता स्वर्गीय फकीर मौ० मजरुल हक़ के आप रिश्ते में दामाद होते हैं। पं० जवाहरलाल नेहरू की आपसे विशेष पटती है। बिहार के अन्य मन्त्रियों के अलावा आप अधिक शौक़ीन मिजाज के हैं। आपका रहन-सहन औरों के मुक़ाबले में अधिक शान और शौक़त का है। फ़ारसी के आप विद्वान् हैं। बिहार की नई शिक्षा-योजना के लिए आप मशहूर हैं।

हमाम

हमाम की गाढ़ी और सुगंधित झाग ने उसे सारे भारत में एक सुप्रसिद्ध साबुन सिद्ध कर दिया है। हम इसकी बढ़ती हुई माँग को पूरा करते जा रहे हैं।

हर जगह इसका स्टाक उपस्थित है
अपने दुकानदार स हमाम माँगिये।

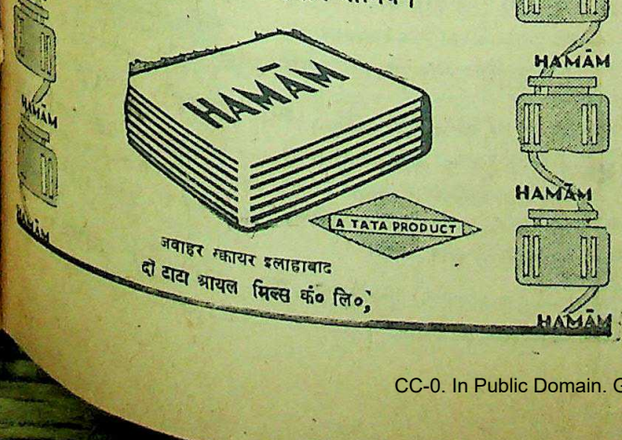

जवाहर स्क्वायर इलाहाबाद
दी टाटा आयल मिल्स कं० लि०,

बालसखा का नया वार्षिकांक

छप रहा है। पाठक धैर्य रक्खें।

ग्राहकों के अनुरोध से हमने इस वर्ष भी बालसखा का वार्षिकांक निकालने का निश्चय किया है। इसमें बहुत से चित्र, कविताएँ, कहानियाँ, बढ़िया लेख और उपयुक्त सामग्री रहेगी। पृष्ठ-संख्या ३०० से ऊपर। यह अङ्क बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होगा। यह मासिक बालसखा के १२ अंकों से पृथक है। मूल्य ३), मासिक बालसखा के ग्राहकों के लिए रियायती मूल्य २॥)

रियायती मूल्य के लिए अपना ग्राहक-नंबर अवश्य लिखिए।

मैनेजर, बालसखा, इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय सप्ताह का महत्त्व क्यों ?

राष्ट्र का अंतिम लक्ष्य—अखण्ड पूर्ण स्वाधीनता

लेखक, श्री शंकरराव देव

राष्ट्रीय सप्ताह का महत्त्व क्या है ? राष्ट्रीय कांग्रेस के आदेशानुसार भारतीय जनता प्रतिवर्ष राष्ट्रीय सप्ताह क्यों मनाती है ? इसको क्या राष्ट्रीय तथा ऐतिहासिक महत्त्व है ? कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य और विचारक श्री शंकरराव देव ने इस सुन्दर लेख में इसी सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये हैं। लेख अत्यन्त सामयिक, ज्ञान-वर्द्धक और महत्त्वपूर्ण है।

कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य श्री शंकरराव देव।

प्रथम राष्ट्रीय सप्ताह आज से २६ वर्ष पूर्व १९२० में ६ से १३ अप्रैल तक मनाया गया था। इस वर्ष हम फिर वह सप्ताह एक विशेष महत्त्व के साथ मना रहे हैं। १९१९ के उन चिरस्मरणीय दिनों ने जो ऐक्य-ज्ञान तथा शक्ति-चेतना का सृजन प्रथम बार भारतीयों में किया उसमें अब अत्यधिक वृद्धि हो गई है और उसके स्पष्ट फल भी दृष्टिगोचर होने लगे हैं। फिर भी राष्ट्रीय सप्ताह मनाने का महत्त्व आज भी वही है, अथवा उससे कुछ अधिक है जितना विगत कष्टमय दिनों में था। हम उन घटनापूर्ण दिनों का स्मरण किये बिना नहीं रह सकते जब आज के संगठित तथा बलवान् भारत की सुदृढ़ नींव डाली गई थी।

सन् १९१९ की राजनैतिक परिस्थिति आज अधिक भिन्न नहीं थी। प्रथम महायुद्ध जो "संसार के प्रजातंत्रवाद की रक्षा के लिए" लड़ा गया था, समाप्त हो चुका था। ब्रिटिश शासन ने वह प्रजातंत्र भारत को प्रसिद्ध रौलट ऐक्ट के रूप में दिया। राष्ट्र ने युद्ध में दिये गये वचनों की निर्लज्जतापूर्ण अवहेलना तथा नौकरशाही द्वारा जनता के ऊपर किये गये दुर्व्यवहार के प्रति रोष प्रकट किया। कांग्रेसी तथा अन्य नेताओं ने, शासन को जनता की इच्छा के विरुद्ध काम करने से रोकने के लिए सभी वैधानिक साधनों को अपना लिया था। परन्तु सारी खलबली निष्फल हुई और राष्ट्र ने अपने आपको उस विपत्ति में निस्सहाय पाया।

इस अवसर पर महात्मा गांधी मैदान में उतरे और रोष से भरे हुए राष्ट्र को उस निस्सहायावस्था में मार्ग-प्रदर्शन किया। उन्होंने १९१९ के मार्च में एक प्रतिज्ञा-पत्र प्रकाशित किया। उसमें उन्होंने बताया कि यदि शासन ने रौलट बिल को क़ानून बनाया तो मैं उसके विरुद्ध असहयोग आन्दोलन जारी करूँगा। १९५७ के पश्चात यह पहला अवसर था जब सम्पूर्ण राष्ट्र अपने धार्मिक तथा अन्य भेदों को भुलाकर एक हो पाया था। सत्याग्रह के इस नये विचार ने जनता को आकर्षित कर लिया। परिणामस्वरूप गांधी जी ने सम्पूर्ण देश तथा राष्ट्रीय कांग्रेस का नेतृत्व अपने हाथों में लिया। उन्होंने ३० मार्च, १९१९ राष्ट्रीय हड़ताल का दिन नियत कर दिया। यद्यपि यह तिथि बढ़ाकर ६ अप्रैल कर दी गई। देश में इतनी बेचैनी बढ़ गई थी कि दिल्ली रेलवे स्टेशन पर पुलिस और जनता में मुठभेड़ हो गई, फलतः पाँच व्यक्तियों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। देश-व्यापी प्रदर्शन हुए। चारों ओर जोश उमड़ आया था। हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच बन्धुत्व की भावना जितनी उस समय जागी, उससे पहले कभी नहीं जागी थी। पंजाब में, अमृतसर में स्थित जालियान-वाला बाग़ स्थान पर जनरल डायर ने ४०० निर्दोष व्यक्तियों को गोलियों का निशाना बनाया। हिन्दू और मुसलमान दोनों ने मिलकर वह अग्नि-परीक्षा पास की। उन सात दिनों ने राष्ट्रीय आन्दोलन का बिलकुल काया-पलट कर दिया। तब से इसका नेतृत्व भारतीय स्वतंत्रता के शिल्पकार, महात्मा गांधी के हाथ में चला गया।

सरदार पटेल।

गत २५ वर्षों से भारतवर्ष में अद्भुत परिवर्तन आ गया है। अनिश्चय तथा दुर्बलता का स्थान विश्वास और शक्ति-चैतन्य ने ले लिया है। निष्क्रियता तथा क्रूरता के सम्मुख आत्म-समर्पण का स्थान साहस और शासन की कुचल डालनेवाली शक्ति की परवाह न करते हुए अन्याय के विरुद्ध खुले ललकार ने ले लिया है। अब राष्ट्रीय कांग्रेस, गण्यमान्य नेताओं के डेपुटेशन हिज मैजेस्टीज अँगरेजी सरकार के पास नहीं भेजती है, प्रत्युत ब्रिटिश सरकार स्वयं संसार को ऐलान करती है कि वह मंत्रि-मिशन को भारत में वहाँ के नेताओं से संधि करने के लिए भेज चुकी है। १९१७ की २० अगस्त को तत्कालीन भारत मंत्री ने भारत के भावी शासन-विधान-सम्बन्धी घोषणा में अपने भद्दे शब्दों में कहा था कि—"सम्राट् की शासन नीति जो कि भारत सरकार को भी मंजूर है वह यह है कि भारतीयों को राज्य-प्रबन्ध के सभी विभागों तथा क्रमशः स्वावलम्बी संस्थाओं के विकास के समागम में वृद्धि की जायगी, जिसका उद्देश्य भारतवर्ष का ब्रिटिश साम्राज्य का एक आवश्यक अंग रहते हुए उत्तरदायित्वपूर्ण शासन की प्राप्ति होगी। प्रत्येक बार इसे आगे क़दम बढ़ाने में कितना समय लगेगा तथा वह कहाँ तक पहुँचेगा, इन बातों का निर्णय ब्रिटिश तथा भारत सरकार के हाथ में होगा। आज ग्रेटब्रिटेन के प्रधान-मंत्री श्री क्लिमेंट एटली कुछ और ही बोल रहे हैं। उन्होंने यह स्वीकार किया है कि भारतवर्ष में और वस्तुतः सम्पूर्ण एशिया में राष्ट्रीयता की लहर तीव्र गति से चल रही है। उन्होंने कहा है कि इस वर्तमान शासन के स्थान पर किस प्रकार का शासन आएगा इसका निर्णय स्वयं भारत को ही करना है। उसको यह अवश्य ही निश्चय कर लेना चाहिए कि भविष्य में संसार में उसकी क्या स्थिति रहेगी ? यदि वह स्वतंत्र होना चाहता है तो हमारा यह कर्त्तव्य होगा कि वह परिवर्तन जितनी सुगमतापूर्वक और आसानी से हो सकता है, लावें।"

इस तीस वर्ष के अल्प समय में भारतीय समस्या के प्रति ब्रिटिश शासन के रवैये में जो अद्भुत परिवर्तन हुआ है इसका कारण ढूंढ़ना कठिन नहीं है। १९१९ के असहयोग के समय और उसके पश्चात् राष्ट्र ने एक नये शक्तिवान् अस्त्र को अपनाना सीखा। कांग्रेस अब तक केवल आन्दोलन को अपनी माँगों की पूर्ति का साधन समझती थी। अब मालूम होने लगा, मानो अचानक कायाकल्प हो गई हो। उन माँगों के पीछे एक क्रान्तिकारी अनुमति दे दी। रचनात्मक कार्यक्रम ने, जिसका आदेश अहिंसात्मक असहयोग और आवश्यकता पड़ने पर अवज्ञा आन्दोलन या जनता को स्वराज्य प्राप्त करने के लिए किसी औरों के ऊपर निर्भर होने की अपेक्षा आत्म-निर्भर होना सिखाया। और आज ब्रिटिश शासन को यह मानना पड़ा है कि भारतीय राष्ट्रीयता की लहर जो उस समय चलाई गई थी आज वह अजेय हो गई है।

राष्ट्रीय सप्ताह तथा रचनात्मक, कार्यक्रम पर जोर देने का महत्त्व उसे अवश्य स्पष्ट हो जायगा जो राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास को उपरोक्त दृष्टि-कोण से देखेगा। कहना नहीं होगा कि अन्य शर्तें भी हैं जिन्होंने आज के भारत को बनाने में मदद की है। अस्तु, आज जब हम अपने मनवांछित फल को सामने देख रहे हैं, हमें इतना अधीर नहीं होना चाहिए जिससे हम गत २५ वर्षों की परम्परा से दूर हो जावें। केवल राजनैतिक स्वतंत्रता मिलने से देश में राम-राज्य नहीं आ सकेगा। हमें अपने ढंग का भारत बनाने का महान् कार्य, जिसमें ग़रीबी और विषमता का कोई स्थान नहीं होगा, अभी हमारे सामने है। वही हमारे ध्यान तथा शक्ति की पहले आवश्यकता है। हमें पाश्चात्य शासन-पद्धति के नक़ल करने तथा पाश्चात्य विचारों को यहाँ लाने के प्रलोभन को त्यागना है, परन्तु साथ ही हमें उनमें जो अच्छी बातें हैं उनका अपने राष्ट्रीय जीवन में सम्मिलित करते हुए अपने समाज को गढ़ना है जो हमारे देश की संस्कृति तथा प्रतिभा के अनुकूल होगा। इसके लिए आवश्यक है कि हमारे कार्य-कर्त्तागण रचनात्मक विचार तथा कार्य की ओर अपनी मानसिक गति को बढ़ाएँ। यह महान् कार्य, रचनात्मक कार्य को एक पौराणिक विधि समझकर नहीं सम्पन्न हो सकता है। हमें इस कार्यक्रम के प्रत्येक अंग के इनकलाबी महत्त्व को समझना है। इसे जनता के स्वराज्य के रूप में अपनाना है और इसके संदेश को भारत के गाँव-गाँव में ले जाना है। राष्ट्रीय सप्ताह प्रत्येक कार्यकर्त्ता को अपनी शक्ति उस महान् कार्य में लगाने का अवसर देता है।

महात्मा गांधी।

आगामी कुछ ही महीनों में राष्ट्रीय इतिहास में भाग्य-निर्णायक घटनाएँ घटेंगी। हमें किसी भी अन्तिक संघर्ष के लिए तैयार रहना है। अपनी माँगों तथा अहिंसा आन्दोलन—जो ही सम्भव आज्ञा मिल सकती है—के पीछे रचनात्मक कार्यों के द्वारा जनता में एकता और संगठन की भावना को दृढ़ करना चाहिए। यद्यपि हमें आशा है हमें अपनी वस्तु मिलने में अब देर न लगेगी, फिर भी कौन जानता है कि अन्तिम उद्देश्य तक पहुँचने के पहिले हमें एक बार और अपना अस्त्र न उठाना पड़ेगा ?

बन्देमातरम्

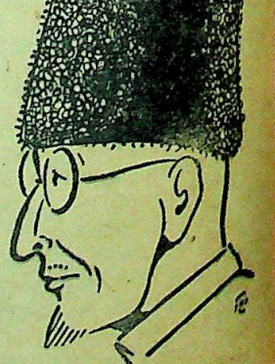

राष्ट्रपति आजाद।

गांधी-मीमांसा

इस पुस्तक में पं० रामदयाल तिवारी बी० ए० एल-एल० बी० ने गांधी जी के व्यक्तित्व और सिद्धान्तों की तर्कपूर्ण सुन्दर विवेचना की है। इसे आद्योपान्त पढ़ जाने पर गांधीवाद पूर्ण रूप से हृदयंगम हो जाता है। विद्वानों ने मुक्तकंठ से इसकी प्रशंसा की है। पृष्ठ-संख्या ८५०। सुन्दर सजिल्द प्रति का मूल्य ४) चार रुपये।

मैनेजर—(बुकडिपो) इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नन्दी दादी !

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

भारत में जनता के आन्दोलन कई बार हुए और अधिकारियों ने उस अवसर पर अपनी कारगुजारी दिखाई। इस कहानी में आन्दोलन का चित्र अंकित किया गया है। और नन्दी दादी के त्याग और बलिदान की भावनाओं का चित्रण किया गया है। कहानी सुन्दर और हृदय पर एक छाप छोड़ जानेवाली है।

नन्दी दादी अपने बच्चों की दुर्दशा देखकर व्याकुल हो उठी।

नन्दी ने अपनी कोख से एक भी बच्चा नहीं जन्मा। कितने प्रयत्न और उपचार एक बच्चा पाने के लिए बेचारी ने किये! पण्डितों के पत्रों को खोजा, ज्योतिषियों और दैवज्ञों के दरवाजों का मुँह देखा और अनेक आशा-प्रत्याशाओं के पल्ड़े में झूलकर भी उसके हाथ कुछ नहीं लगा। अन्त में कन्या का जो आरोप नियति ने एक बार उसके सिर थोपा, वह नहीं हटा,—नहीं!

दिन गये और आये।

नन्दी अब वृद्ध हो गई। उसकी चिर-संगिनी भी पुरानी और जड़ पड़ गई। जीवन के उल्लास, निस्तेज और जीवन के अन्तिम छोड़ पर आकर जो वह चकित-सी एक बार खड़ी हुई तो फिर बैठी ही रह गई। कहीं आकर बैठी तो फिर बैठी ही रह गई। प्रकृति ने अपनी जीवन-लीला, समाप्त कर दी, नन्दी अकेली और एकाकी रह गई।

उन्हीं दिनों जन-जागृति और जनता-अधिकारों की सेवा का व्रत लिए देश-सेविकाओं की टोली घर-घर अपनी आवाज सुनाती। वह आवाज नन्दी को भी सुनाई देती। जहाँ-तहाँ सभी की जबान पर यही बात होती। बाल, युवक और बूढ़ों की तो बात क्या, नारी-समाज भी अपने घरों की चार दीवारी फांदकर उसी अमर-मन्त्र की ध्वनि उच्चारित करने लगा था। लगता था कि कोई बात थी कि जिसकी प्रेरणा से प्रेरित होकर जन-समाज एक ही दिशा और एक ही लक्ष्य का पथिक बन गया था।

जन-आन्दोलन की उस नई और अनुपम जागृति को देखकर नन्दी भी अपने रक्त-हीन और पौरुषहीन हृदय में साहस और उत्साह का स्फुरण अनुभव करती। वह अपने द्वार के सामने से जाती हुई उन सेविकाओं की टोली को बड़े मननपूर्ण भाव से देखती और अपने-आप कहती—'ओ, ये हैं जनता के पूत...मेरे...'

कहीं से नन्दी को सुना दिया गया था कि वे जितने भी युवक और युवतियाँ टोली बाँधे कन्धे-से-कन्धा मिलाये उसके द्वार पर से निकलते हैं—वे सभी—मौत को निमन्त्रण देकर अपने सिरों पर कफन बाँधे हुए हैं। वे सभी आजादी के दीवाने हैं। मौत से निर्भीक दृढ़ और संयमी।

इतना देख-सुनकर नन्दी सोचती—क्या, ये हैं अपनी माँ के पूत ये.....

ऐसे समय नन्दी प्रसन्नता से गद्‌गद् हो जाती। वह थिरक जाती। गाती, नाचती और जो कोई भी उसके पास होता वह उसी को अपने पाश में आबद्ध कर जाने किस अपूर्व चेतना से विभोर हो जाती।

कदाचित् यही कारण था कि मुहल्ले की नारियाँ, माताएँ और बहुएँ, उनके पति और लड़के अपनी उस जन्म-जात नन्दी को कभी पगली कहते, कभी आत्म-चेतना से भरी हुई सन्तप्त और एकाकी महिला। वे सभी अपनी दादी के प्रति इसलिए भी संलग्न होते कि उनकी वह पगली सदा ही एकरस, एक मन और एकीभूत होकर उन सबकी जीवन-ममता अपने हृदय में सँजोये रहती। वह उसे चाहती है और जो भी कोई किसी पीड़ा से अभिभूत होता तो नन्दी दादी स्वयं बिना बुलाये उसके पास जाकर बैठती है।

नन्दी दादी का यह नपा-तुला जीवन-क्रम बन गया था कि सुबह घर से निकलती और लाठी के बल चल, कमर झुकाए हुए एक घर से दूसरे घर उसका जाना अवश्य होता हो। किसी का दुःख-दर्द हो, हर्ष-उल्लास हो, बस नन्दी के कानों में आ जाना था और फिर तो वह उसका है,—उसी का हो जाता है। दोपहर बाद वह सब घरों में होकर लौटती। कहीं हँसती, कहीं रोती। रमिया ब्राह्मणी जब अपनी कथा कहती तो नन्दी की दो रोटियाँ भी सेंक देती। नन्दी महीने में उसे पाँच रुपये दे देती।

परन्तु इधर कुछ दिन से नन्दी दादी परेशान है, चिन्तित है और अव्यवस्थित है। जिसने जीवन में स्वयं अपने-आप की चिन्ता नहीं की, वही नन्दी अब अनेक युवकों और युवतियों के जीवन की चिन्ता में लगी रहती है। उसका घर अब अकेला उसी का नहीं है। वह मुहल्ले भर के युवक और युवतियों की पञ्चायत शाला है कि जहाँ दुनिया भर की बातें होती हैं। कार्ल मार्क्स, लेनिन, टालसटाय, गान्धी, जवाहर और सुभाष—जाने किन-किन महा-पुरुषों के विषय में चर्चा चलती है। नन्दी-दादी उन बातों में से कितनी समझती, यह तो वही जाने; पर यह निश्चित था कि वह जितना समझती, उसी को अपने हृदय में सँजोकर रखने का भी पूरा प्रयत्न करती दीखती।

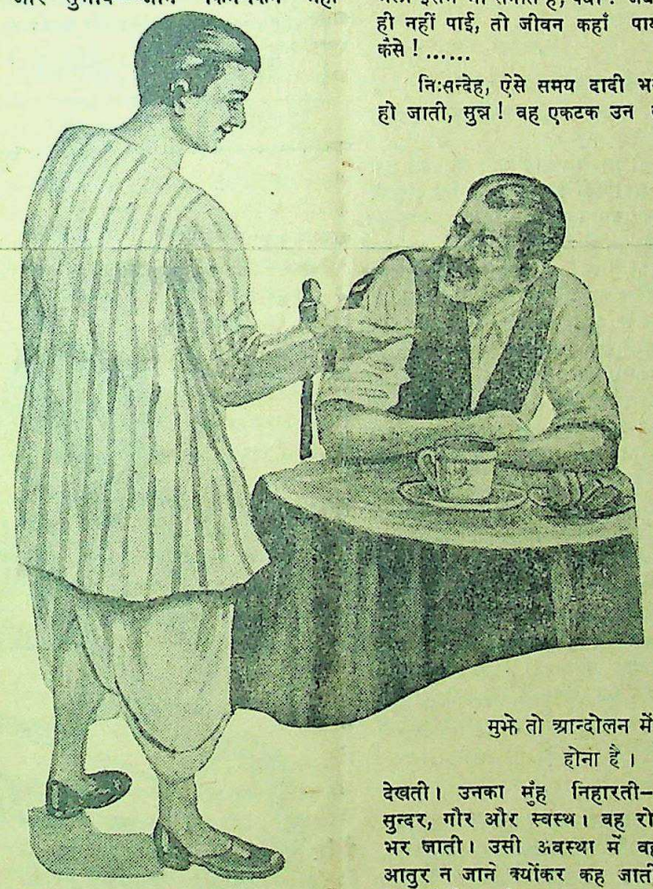

मुझे तो आन्दोलन में शरीक होना है।

जब उसके घर में पञ्चायत होती, कोई स्कीम बनाई जाती, तब नन्दी-दादी घोटों पर सिर रखे हुए अपने उन बच्चों के मुहों की ओर देखती हुई बैठी रहती, दिखता की वह एकाग्र होकर उनकी बातें सुनती और उन्हें अपने हृदय में पैठाने का भी प्रयत्न करती।

उसी अवस्था में बैठे देख, कोई लड़का या लड़की अपनी उस दादी को सम्बोधित कर कहते—'क्यों दादी, ठीक है न, हम कल जुलूस निकालेंगे...पाँच दस की टोली बनाकर...चौराहे पर पहुँचेंगे, तो वहां पुलिस होगी...उनकी बन्दूकें तनी होंगी...उन बन्दूकों की नालें अपने मुँह पर गोलियाँ रखे हुए हमारा निशाना साध रही होंगी...दादी!...'

दूसरा कहता—'यह तो होना ही है, दादी! भला इससे क्या—जीवन और मौत का प्रश्न क्या! यह भी तो एक सौदा ही है, दादी! जाने कितने कहते हैं कि मौत में घाटा है, जीवन पाने में नफा... भला इसमें भी संगति है, क्या! जब मौत ही नहीं पाई, तो जीवन कहाँ पाया... कैसे!.....

निःसन्देह, ऐसे समय दादी भयभीत हो जाती, सुन्न! वह एकटक उन सबको देखती। उनका मुँह निहारती—कितने सुन्दर, गौर और स्वस्थ। वह रोमांच से भर जाती। उसी अवस्था में वह जल्दी आतुर न जाने क्योंकर कह जाती—'हाँ, ठीक है बेटा, ठीक।'

'और दादी'—उससे फिर कहा जाता—जो मनुष्य या जाति मरना नहीं जानती, सच, वह जीना भी नहीं जानती। वह उसे नहीं पहचानती।'

दादी फिर सिर हिलाकर उसे स्वीकार कर लेती।

'दादी हम कल जाएँगे। हम उन बन्दूक की गोलियों को अपनी छाती पर लेंगे। हम पीछे आनेवालों के लिए रास्ता बनाएँगे और एक स्वस्थ तथा मुक्त-पथ का निर्माण कर सकेंगे...स्वतन्त्र...

उस समय दादी न जाने कितने हर्ष से भरकर उन सबको देखती और चाहती कि अपने हृदय में सबको छिपा ले। वह गद्‌गद होकर अपने पास बैठे किसी भी युवक या युवती के सिर को अपनी छाती से लगाकर कहती आह, मेरे बच्चो!... मेरे प्राण...

* * *

पुलिस को मालूम हुआ कि मुहल्ले में जो नन्दी दादी है, उसी के घर में देश-सेवकों की मण्डली इकट्ठी होती है। वहाँ पर सरदार जी, मौलाना, पण्डित और बाबू जी सभी एक ही सूत्र में निकले हुए जन-जागृति की बातें करते हैं और अपना आगे का पथ-निर्माण करने का आयोजन बनाते हैं। निदान, एक दिन प्रातः ही पुलिस की दौड़ हुई। दरोगा नन्दी को सम्बोधित करके बोला—'अरी, बुढ़िया—ओ, नन्दी! हम तेरे घर की तलाशी लेंगे। तू सरकार के विद्रोहियों को बैठाती है, बुलाती है और अपने घर में उन्हें आपस में सलाह करने का अवसर देती है—क्यों? यह ठीक है?'

नन्दी ने बिना किसी झिझक के कह दिया—'हाँ, ठीक है। वे आते हैं। वे मेरे बच्चे हैं। वे यहाँ पर बात भी करते हैं। पर यह क्या कहा तुमने कि वे विद्रोही हैं—न, न, ऐसा मत कहना। द्रोही तो तुम हो—जाति-द्रोही, देश-द्रोही...

उसी समय थानेदार ने पैर पटक कर कहा—'चुप, हरामजादी!'

नन्दी ने उसकी ओर देखा और जाने कितनी गहरी दृष्टि के साथ ऊपर अन्तरिक्ष की ओर अपनी आँखों को उठा दिया। उसी ओर देखते हुए उसने कहा—'तुमने यही कहना सीखा है, अच्छा! तुम कहो। वैसे बच्चे तुम भी हो, मेरे। तुम भी मेरे हृदय के एक कोने हो। पर... पर तुम मदहोश हो! तुम पैसों पर बिके हो। तुम अपनी आत्मा को भी बेच चुके हो...मेरे भोले बच्चे!...

नहीं कहा जा सकता कि थानेदार ने उसकी बात का कितना अंश सुना और समझा? किन्तु जब उसके साथियों को मकान में कुछ नहीं मिला तो, वहाँ से लौटते हुए थानेदार ने उसे कह सुनाया—'देख बुढ़िया, अब कोई यहाँ आएगा तो उसके साथ तुझे भी जेल में सड़ने के लिए भेज दिया जायगा, समझी!'

नन्दी ने झटके के साथ उसकी ओर देखकर कहा 'समझी! पर तुम यह भी समझ लो कि नन्दी माँ है, इसने अपने बच्चे को दूर करना अभी नहीं सीखा है।'

थानेदार ने यह सुना और अपनी छाती पर घूँसा-सा खाकर तड़प कर वहाँ से चला गया।

शहर में गोली चली। चौराहे पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

नई दिशा—रचयिता, श्री आरसी-प्रसादसिंह; प्रकाशक, तारा मण्डल, मुजफ़्फरपुर; पृष्ठ-संख्या १२४। मूल्य २॥) रुपये।

बिहार के सुपरिचित तरुण कवि श्री आरसीप्रसादसिंह के इस कविता-संग्रह में ५० कविताएँ संगृहीत हैं। संग्रह का जैसा नाम है, इन कविताओं में सचमुच कवि की असाधारण मानसिक स्थिति का प्रतिबिम्ब है। प्रेयसि की पुकार से जहाँ हिन्दी की अधिकांश कविताओं में मात्र पुनरावृत्ति और प्यार का सस्ता व्यापार दीखता है, वहाँ कवि आरसी की इन कविताओं में एक ऐसा मोड़ है, जो उनकी स्वयं लिखी हुई पहली कविताओं से आज एक दूसरी ही दिशा में—नई दिशा—में उन्हें अग्रसर कर रहा है। आज वह अपनी प्रेयसि से कहता है:—

"दिन का अच्छा होना वह दिन
जब तू मेरे पास न होती।
तुझसे भी लगता है ज्यादा
अच्छी तेरी यादें रखना।"

परन्तु जब उसकी प्रेयसि उसके समक्ष आ ही जाती है, तब कवि कहता है—

"आओ, मेरे आगे बैठो!
जैसे बैठी होती काली
काली नागिन, दो जिह्वावाली।
... ...
मेरी आँखों पर, गालों पर
अपनी जलती साँसें छोड़ो।
... ...
आओ बैठो मेरे आगे,
जैसे बैठी होती बाघिन,
बहुत दिनों की भूखी बाघिन।"

इतने पर भी कवि को इस दृश्य से रोमांच नहीं होता। वह कहता है:—

"मैं तुम्हें देखता रह जाता हूँ,
और जरा-सा हँस देता हूँ।"

कवि की इस अभिव्यक्ति में उसके स्वपीड़न का स्वर ओत-प्रोत है। यह अभिव्यक्ति और यह अनुभूति हिन्दी कविता में निस्सन्देह एक नवीन दिशा की द्योतक है। इस संग्रह की कितनी ही कविताओं में कवि का अखण्ड विश्वास हमारे सामने आता है, ऐसा विश्वास जिसमें भावातिरेक का नहीं, प्रत्युत वयस्कता की कठोरता का आभास होता है। कुछ ऐसी भी कविताएँ हैं जिनमें मनोदशा का द्वन्द्व भी चित्रित है। कविता-प्रेमियों के लिए 'नई दिशा' न केवल मनोरंजक अपितु उपादेय भी सिद्ध होगी।

* * *

पाञ्चजन्य—रचयिता और प्रकाशक वही; पृष्ठ-संख्या ९६ डिमाई अठपेजी; मूल्य २) दो रुपये।

'नई दिशा' में नवीन मार्ग के अनुसन्धान की एक छटपटाहट है; किन्तु 'पाञ्चजन्य' में ऐसा प्रतीत होता है, मानो कवि आत्मानुभव के शिखर पर जा पहुँचा है। जो लोग 'कला कला के लिए' का सिद्धान्त मानते हैं, उन्हें शायद 'पाञ्चजन्य' की कविताओं से कोई आनन्द प्राप्त न होगा; लेकिन कला को जो लोग मानव के लिए कल्याण का साधन समझते हैं, उन्हें 'पञ्चजन्य' में अभिव्यक्ति विचारधारा पर लिखा हुआ दिव्य सन्देश मिलेगा, आत्मसन्तोष होगा और कवि की इस बात का समर्थन भी करेगा कि—

मेघ का गर्जन, प्रपातों का अजस्र निनाद,
कोकिला की कूक, वीणा का मधुर सम्वाद।
एक ही वह शब्द अव्यय, एक ही उल्लास,
व्याप्त है जिससे जगत, पाताल से आकाश।

* * *

आँधी के पत्ते (कहानी-संग्रह)—लेखक, प्रकाशक वही; पृष्ठ-संख्या १००; मूल्य १।) रुपये।

कविताओं के साथ-साथ श्री आरसीप्रसादसिंह जी ने समय-समय पर कुछ कहानियाँ भी लिखी हैं। प्रस्तुत संग्रह में उनकी छः लम्बी-लम्बी कहानियाँ संगृहीत की गई हैं। इस संग्रह की पहली तीन कहानियों में जो चित्रण है, उसके संबंध में कहानीकार ने लिखा है कि "इनके अन्तर्विषय ने सर्वप्रथम मेरे कवि-हृदय में तारों को अंकित किया था।" इस दृष्टि से कवि के जीवन के अध्ययनशील पाठकों के लिए इन तीन कहानियों की महत्ता अपने-आप स्पष्ट है। यों सभी कहानियाँ दिलचस्प कही जा सकती हैं और पाठकों का बहुत-कुछ मनोरंजन भी इनसे होगा ही।

* * *

एक प्याला चाय (कहानी संग्रह)—लेखक, प्रकाशक वही; पृष्ठ-संख्या १८६; मूल्य २।) रुपये।

श्री आरसीप्रसादसिंह जी की एक दर्जन कहानियों का यह संग्रह, कई दृष्टियों से सुन्दर बन पड़ा है। सामाजिक जीवन का अध्ययन उन्होंने अपने दृष्टिकोण से किया है। इसकी अनेक कहानियों में उनके अपने दृष्टिकोण का जो परिचय हम मिलता है, वह यथेष्ट प्रभावोत्पादक कहा जा सकता है। सीधे-सादे कथानकों में स्वाभाविक कथोपकथन और यत्र-तत्र घटनाओं का भी सम्मिश्रण सभी तरह के कहानी-पाठकों को उलझा सकेगा और उनका मनोरंजन कर सकेगा। बीच-बीच में कहानीकार का कवि भी अपनी कवित्वपूर्ण शैली की छाप छोड़ देने का लोभ संवरण नहीं कर पाया है। लेकिन इससे कथानक की संजीदगी में कहीं कोई शिथिलता नहीं आने पाई है, बल्कि एक नई चमक ही आ गई है। हमें आशा है कि कथा-प्रेमियों की मेहमानदारी करने में कवि आरसी की यह 'एक प्याला चाय' बहुत-कुछ सफल सिद्ध होगी। भविष्य में हम कवितओं की भाँति ही उनसे अधिक सुन्दर और कलापूर्ण कहानियों की अपेक्षा करेंगे।

* * *

अधूरी साधना (कहानी संग्रह)—लेखक, श्री अविनाशकुमार श्रीवास्तव, एम० ए०; प्रकाशक—शिवाजी प्रकाशन लखनऊ; पृष्ठ-संख्या १३६; मूल्य १।) रुपया।

प्रस्तुत कहानी-संग्रह में बारह कहानियाँ संगृहीत की गई हैं। मानसिक द्वन्द्वों के चित्रण में लेखक को काफी सफलता मिली है। कहानियों के कथानक सुलझे हुए हैं और पात्र सजीव-से प्रतीत होते हैं। भाषा सरल है। कहीं-कहीं कवित्वपूर्ण भाषा का भी प्रश्रय लिया गया है। कहानी-कला की दृष्टि से प्रस्तुत कहानियाँ भले ही पूर्णतः सफल न कही जावें; लेकिन साधारण पाठक के लिए मनोरंजन की सामग्री से निश्चय ही परिपूर्ण हैं। कहानीकार ने स्वयं यह स्वीकार किया है कि 'कहानियाँ दूसरों के लिए नहीं लिखी जातीं।' इस दशा में यदि सभी वर्गों के पाठकों को इन कहानियों से सन्तोष प्राप्त न हो, तो लेखक का इसमें दोष नहीं। उसका दृष्टिकोण स्पष्ट है। फिर भी हम आशा करते हैं कि भविष्य में लेखक महोदय अधिकाधिक सुन्दर कहानियाँ लिख सकेंगे और दूसरों के लिए ही वे कहानियाँ होंगी—स्वयं लेखक के लिए नहीं।

—देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

खून और लाशें पड़ी हुई हैं। उन लाशों में युवक और दो युवतियों के साथ एक बुढ़िया भी पड़ी हुई थी। दर्शकों ने देखा कि वह युवक की ओर गोली आने के साथ ही उसके सामने आई थी और स्वयं वह गोली अपनी छाती पर खा गई थी।

बुढ़िया अचेत पड़ी थी—निर्जीव! परन्तु उसके मुँह पर सन्तोष और हर्ष की छाया ज्यों की त्यों बनी हुई थी। मानो वह मरी नहीं थी, उसकी आत्मा अपने-आप ही हर्षातिरेक होकर कहीं अन्यत्र चली गई थी,—अपने उन बच्चों के साथ।

वह नन्दी दादी थी।

वैद्यक उपाधियाँ

प्रिंस आयुर्वेदिक कालेज बनारस ११२, गवर्नमेंट रजिस्टर्ड घर बैठे प्राप्त करें। इंजक्शन (हुए) शिक्षा लें। नियमावली मुफ्त।

साइन्स का एक नवीन अद्भुत आविष्कार
जिसने संसार को आश्चर्य में डाल दिया

तैल मस्ताना (रजिस्टर्ड) कोई साधारण तैल नहीं है बल्कि एक साहित्यिक आश्चर्यजनक आविष्कार है जिसने भारतवर्ष ही नहीं वरन् दुनिया के तमाम धुरन्धर साइन्स-विशेषज्ञों को हैरत में डाल दिया है। इस तैल से गत २५ वर्षों से हजारों हताश असाध्य रोगी नवजीवन प्राप्त कर चुके हैं। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि ऐसा गुणकारी तैल आप दूसरी जगह न पायेंगे। इसके लगाने से बाल्यावस्था की कुटेव से रगों की कमजोरी, सुस्ती कुटेव से पैदा हुई खराबियाँ, नसों का गर्भाधान के योग्य न रहना, नपुंसकता, शीघ्रपतन आदि तमाम खराबियाँ एक हफ़्ते के अन्दर दूर हो जाती हैं। कद व बल को बढ़ाकर रग व पुट्ठों में बिजली की भाँति ताक़त भर जाती है। यह हर मौसिम में लाभ करता है। छाले आदि का भय नहीं। आप आज ही एक शीशी मँगाकर सुख लूटिये। क़ीमत फ़ी शीशी ३=) तीन रुपया दो आना, दो शीशी का ५॥=), डाक-खर्च माफ़। मनीआर्डर =) यदि आपको धातुक्षीणता, शीघ्र पतन, स्वप्नदोष, प्रमेह आदि की शिकायत है तो धनी माननीय सहस्रों महापुरुषों-द्वारा प्रशंसित जगत्-प्रसिद्ध २५ वर्ष का आजमूदा वीर्य-संजीवन सत इस्तेमाल कीजिए। मूल्य फी डिब्बा ३।—), डाक-खर्च माफ़, मनीआर्डर =)।

मँगाने का पता—रूपविलास कम्पनी, नं० ४८१, कानपुर।

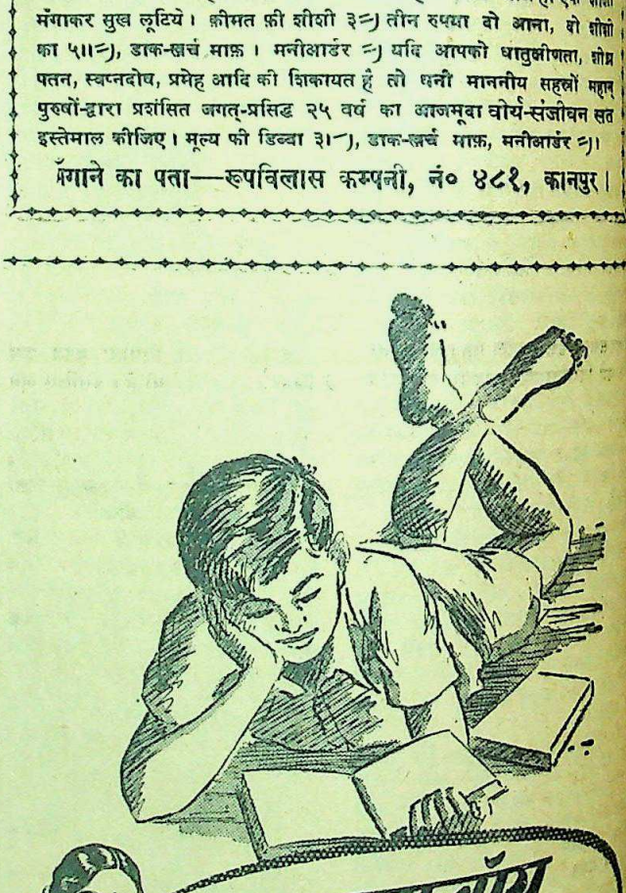

अभी से यह बहुत सी बातें सीख रहा है परन्तु सब से ज्यादा फायदामंद लाइफबॉय साबुन के दैनिक उपयोग की आदत है। इसकी माँ को इस बात का गर्व और खुशी होती है कि उसकी दी हुई शिक्षा से उसके लड़के 'गन्दगी के खतरे' से जो हर जगह हमला के लिए मौजूद है उससे रक्षा होती है।

लाइफबॉय का व्यवहार करना एक ज़रूरी आदत है

L. 77-50 H.P. LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

कच्ची फिल्मों की भीषण समस्या

आज फिल्मी-दुनिया में सिनेमा-कम्पनियाँ धड़ाधड़ खुलती चली जा रही हैं। बरसाती मेढकों की तरह एक उफान-सा सिनेमा-संसार में आ गया है। जिसे देखिए वही प्रोड्यूजर बना बैठा है। प्रश्न उठता है कि क्या सभी फिल्म-निर्माता सिनेमा-टैकनिक से अवगत हैं? मुझे यह कहने में कतई संकोच नहीं है कि आजकल के बने हुए निर्माता अपने अन्दर कतई योग्यता नहीं रखते। मैं ऐसे बहुत से निर्माताओं को जानता हूँ, जो कि फिल्मी-दुनिया में सिर्फ इसीलिए आये हैं कि वह अपनी विलासिता की दुनिया आराम से बसा सकें। शराब की खुमारी में डूब सकें, इस प्रकार के निर्माताओं ने आकर बाजार में कच्ची फिल्म का अभाव कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि जो वास्तव में फिल्म बनाने के हकदार हैं, उनको बाजार में फिल्म नहीं मिलते। फिर वह कैसे अपना काम चलावें? सरकार ने तो कच्ची फिल्म पर से रोक हटा ली है, इसलिए आजकल फिल्म का चोर-बाजार खूब चेत रहा है।

लेकिन निर्माताओं की सुविधा के लिए कोदक कम्पनी ने उन निर्माताओं को कच्ची फिल्म देना तय किया है, जो कि चित्र-निर्माण के लिए स्टूडियो प्राप्त कर लेंगे और जिनको स्टूडियो नहीं मिलेंगे वह कच्ची फिल्म भी प्राप्त नहीं कर सकेंगे। इससे पहले यह हुआ करता था कि नये निर्मातागण स्टूडियो न मिलने पर भी कच्ची फिल्म का स्टाक कर लिया करते थे—और जब मारकेट में फिल्म का अभाव होता था—तो वह अच्छा मौका देखकर चोर बाजार से खूब पैसा कमाते थे। इसी नाजायज कार्य को रोकने के लिए कोदक कम्पनी ने अपना यह नियम बना लिया है, हालाँकि इस नियम के पीछे कोई क़ानूनी ताक़त नहीं है फिर भी यह नियम फिल्म-संसार में चल सकेगा—ऐसा हमारा विश्वास है। इस नियम को ठीक-ठीक ईमानदारी के साथ पालन करना ही कोदक कम्पनी का फर्ज है। उसे अपने फर्ज की जिम्मेदारी को ठीक ढंग से समझ लेना चाहिए। यदि इस नियम को सभी निर्माताओं के साथ एक-सा लागू किया गया तब तो कोदक कम्पनी का यह कार्य अवश्य ही प्रशंसनीय होगा। "कोदक" ने अपने बयान में यह भी कहा है कि इस वक्त फिलहाल बाहर से "कच्ची-फिल्म" नहीं आ सकती। जो कुछ स्टाक में है उसी से काम चलाना है परन्तु कम्पनियों की संख्या देखते हुए स्टाक की फिल्म बहुत ही कम है।

अब प्रश्न उठता है कि फिर सिने-व्यवसाय का कार्य आसानी से कैसे चल सकेगा? और भविष्य में फिल्म आने की भी कोई उम्मेद नहीं। हमें स्टाक में जितनी फिल्म है, उसी से इस साल काम चलाना पड़ेगा।

इन प्रश्नों को देखते हुए निर्माताओं की जमात को एक प्रस्ताव यह पास करना चाहिए कि भविष्य में नई कम्पनियों को कच्ची फिल्म न मिल सकेगी ताकि जितनी फिल्म कम्पनियाँ हैं उनका तो किसी तरह काम चल सके।

आज बम्बई में कुछ फिल्म-कम्पनियाँ "बोगस" भी हैं जो कि लोगों को धोखा देने के लिए तथा चोर बाजार से पैसा लूटने के लिए खोली गई हैं। यह बोगस कम्पनियाँ इस फिराक में भी रहती हैं कि उन्हें कोई आँख का अन्धा गाँठ का पूरा फाइनेंसर हाथ लग जावे, तो वह फिल्म भी बना सकें। इस प्रकार के निर्माता तो यह चाहते हैं कि उनकी जेबें भर जायें, चाहे उनको नाजायज कार्य ही क्यों न करना पड़े? उनके सामने कुछ कोई आदर्श नहीं रहता और न इस प्रकार के निर्माताओं में लेशमात्र प्रतिभा ही होती है। ये निर्माता तो सिर्फ अपने मतलब की दुनिया बसाना जानते हैं।

यदि हमें कच्ची फिल्म की समस्या को ठीक तरह हल करना है तो यह हमारे लिए आवश्यक हो जाता है कि हम 'बोगस' निर्माताओं को सिने-व्यवसाय में न रहने दें। उनके विरुद्ध जोरदार आवाज बुलन्द करें। यदि इसी तरह से इस प्रकार के निर्माता सिने-व्यवसाय में बढ़ते गये तो वह दिन जल्द आ जायगा जब कि सिने-व्यवसाय को हिन्दुस्तान से गायब हो जाना पड़ेगा। क्योंकि आज के फिल्म-दर्शकों की रुचि बहुत प्रगतिवादी है। वह अब इस प्रकार के आदर्शहीन निर्माताओं के चक्कर में नहीं आ सकती। कोदक का यह निर्णय कि कच्ची फिल्म स्टूडियोवालों को ही मिल सकेगी। इससे एक लाभ यह भी हुआ कि नये निर्माता भी भविष्य में न पैदा हो सकेंगे। क्योंकि जब उनको कच्ची फिल्म ही न मिल सकेगी तो वह फिल्म-निर्माता का कार्य कैसे कर सकते हैं? चोर बाजार के उमड़ते हुए कार्य में भी कमी आवेगी।

बम्बई में ऐसे निर्माता बहुत कम हैं जिनके निजी स्टूडियो हैं। इसलिए अब कच्ची फिल्म की बिक्री सीमित दायरे में ही हो सकेगी। और बोगस कम्पनियों का कार्य भी पट्ट हो जायगा। उनको अब तक जो चोर बाजार में आमदनी होती थी वह भी गायब हो जायगी।

हम अन्त में निर्माताओं से यह विनम्र प्रार्थना करते हैं कि वह ईमानदारी के साथ "कोदक कम्पनी" के प्रशस्त-कार्य में सहयोग दें, साथ-साथ हम "कोदक कम्पनी" को भी धन्यवाद देते हैं कि उसने इस प्रकार का नियम बनाकर फिल्मी-दुनिया की एक बड़ी समस्या हल कर दी।

बम्बई —उमेश जोशी

५ अप्रैल, १९४६

* * *

दलित जातियों की माँग क्या है?

हमको समझ लेना चाहिए कि हमारा भला और देश का भला राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के साथ रहने में है पूज्य महात्मा गांधी जैसा एक महान् नेता हमको मिल गया है। एक हरिजन पुत्री को गोद लेनेवाले इस महात्मा ने १२ वर्ष की अवस्था से ही दलित जातियों के साथ होनेवाले सवर्ण हिन्दुओं के व्यवहार का तीव्र विरोध किया है। इसने अपनी मा से कह दिया कि दलितों के प्रति उनका रुख ग़लत और अन्यायपूर्ण है। वे स्वयं अपने हाथ से वे काम करने लगे जो भंगियों का काम कहा जाता है। अपने हाथ से टट्टी साफ करना, चप्पल सीना इत्यादि कार्य उन्होंने किया और उन्होंने एलान कर दिया कि अस्पृश्यता और अछूतपनवाला सिद्धान्त हिन्दू धर्म की शिक्षाओं के बिलकुल फ़िलाफ है। इस बात से उनके सम्बन्धी और मित्र-मंडली उनका मजाक भी उड़ाने लगी पर वे डटे रहे। उन्हीं के बताने से कांग्रेस ने अछूतपन के बेहूदे सिद्धान्त को जड़-मूल से नष्ट करना अपने प्रोग्राम का एक खास हिस्सा बना लिया। उन्होंने इस अछूतपन को हिन्दू धर्म का सबसे बड़ा कलंक घोषित किया और हिन्दुओं को आज्ञा दी कि वे इस कलंक को धोने के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने को तत्पर रहें। हरिजनों के ही वास्ते उन्होंने सन १९३२ में आमरण अनशन करना तय किया और उसी के कारण ब्रिटिश नौकरशाही को अपना फैसला बदलना पड़ा। इसके बाद सन् १९३७ में जब कांग्रेस मंत्रिमंडल बने तब नौकरियों में अछूतों को बहुत जगह दी गई, उनको स्कालरशिप दी जाने लगी। और हमारे दलित भाइयों ने युक्तप्रान्त, बिहार, बम्बई, मद्रास आदि प्रान्तों में ऊँचे से ऊँचे पद पर पहुँचकर शासन-कार्य में जो योग दिखलाया उससे सब चकित हो गये। आज दलित जातियों में जो देश-व्यापी जागृति और चेतना है वह महात्मा जी के ही कारण है ऐसी और महान् नेता और हितैषी को पाकर हम अपने को अहोभाग्य समझते हैं।

इस प्रकार अपने पिछले वर्षों पर एक सरसरी निगाह डालने से हम समझ जाते हैं कि सरकार के इशारों पर नाचनेवाले डाक्टर अम्बेदकर और उनके अनुयायी दलितों के हितैषी नहीं हैं इस अँगरेजी हुकूमत को भारत से निकालने के महान् कार्य में लगे हुए महात्मा जी और राष्ट्रीय कांग्रेस ही हमारी हितैषी है।

पर हमारा भी कुछ कर्त्तव्य हो जाता है। हमको भी अपने महान् भारत को उज्ज्वल भविष्य के योग्य बनाना है। इसके लिए जरूरी है कि हम अपनी बुरी आदतों को छोड़ें। हमारी सबसे खराब बात नशाखोरी है। हमको यह बन्द करना पड़ेगा। नशा हमारे मस्तिष्क को खराब करता है और हमारे धन को नष्ट करता है और हमारे नैतिक पतन का कारण बनता है। नशेखोरी छोड़ने के अलावा हमको अपने अन्दर सामाजिक सुधार भी करना है। पुरानी रूढ़ियों की परिपाटी पीटना इस नये युग में ठीक नहीं है।

हमारा यह भी सबसे बड़ा कर्त्तव्य है कि हम अपने बाल-बच्चों की शिक्षा की तरफ़ ध्यान दें। शिक्षा से ही उन्नति होती है और अशिक्षा से अवनति होती है। इस संबंध में एक बात की ओर हम आपका ध्यान दिलाना चाहते हैं। प्रान्तीय सरकार ने एक प्रान्तीय दलित जाति शिक्षा बोर्ड बनाया है और उसकी जिला शाखाएँ भी हैं। पिछले दिनों में जब दलित जाति के असली नेता ब्रिटिश नौकरशाही के विरुद्ध युद्ध करने के जुर्म में जेलों में बन्द थे उस समय अपने पिट्ठुओं को भर कर सरकार ने यह कमेटियाँ बनाई थी। इसमें अपना स्वार्थ सिद्ध करनेवाले अवसरवादी घुसे हुए हैं और उनको अपने दलित भाइयों की उन्नति करने की कोई चिन्ता नहीं है। हम चाहते हैं कि यह पुरानी कमेटियाँ तोड़ दी जायँ और उनमें दलितों के असली प्रतिनिध रक्खे जायँ ताकि अपने दलित बच्चों की शिक्षा का हम उचित प्रबन्ध कर सकें। साथ ही साथ लोकल बोर्डस् भी तोड़ दिये जायँ और उनका नया चुनाव हो। कांग्रेस मंत्रिमंडल से भी हम आशा करते हैं कि वे हमारी शिक्षा की ओर विशेष ध्यान देगा।

इसके अलावा जिस तरह गत मंत्रिमंडल काल में दलित जाति के लोग आनरेरी मजिस्ट्रेट बनाये गये थे वैसे ही फिर बनाये जायँ। नौकरियों में वे भिन्न बोर्डों और कमेटियों में दलित जाति के प्रतिनिधियों के लिए सीट आबादी के हिसाब से रिजब कर दी जाये, और जो कांग्रेस मंत्रिमंडल बनने जा रहा है उनमें भी दलित जाति के प्रतिनिध मंत्री बनें। यह बातें हमारी उन्नति के लिए, हमारा उत्साह बढ़ाने के लिए और अम्बेदकर पंथियों के झूठे प्रोपेगेंडा को ग़लत साबित करने के लिए आवश्यक हैं। इसी तरह यह ही नौकरशाही हम दलित जातियों की और सवर्ण हिन्दुओं में फूट डालने की नीति को खतम और बेकार कर सकते हैं।

हमारे देश में १६ करोड़ मन के लगभग अनाज की कमी है। यदि इतना अनाज एक-दो महीने के अन्दर हमारे देश में नहीं आ जाता तो लगभग एक करोड़ आदमियों के भूख से मर जाने का खतरा है। बाहर से कुछ अनाज आनेवाला है पर वह पर्याप्त नहीं है। ऐसे समय में हम सबको अपने अनाज के खर्च पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इस संबंध में मैं चाहूँगा कि गांधी जी ने जो आदेश दिया है उसे आप सब ध्यान से मानें और हम यह भी जानते हैं कि जो लाखों मन गल्ला फ़ौज के गोदामों में पड़ा सड़ रहा है, वह तुरन्त वहाँ से निकालकर जनता में बाँटा जाये। एक बात तय है—अब की यदि अकाल पड़ा तो हम बंगालवालों की तरह दाने-दाने चावल के लिए तड़प-तड़प कर नहीं मरेंगे बल्कि जैसा पंडित जवाहरलाल ने कहा है—हम बगावत का झंडा ऊँचा करेंगे।

—छोटेलाल सोनकर

दलित जाति-संघ प्रयाग सभापति

परिणीता

उलझनों के कौतूहलप्रद वातावरण में ललिता और शेखर का प्रेम-सम्बन्ध इस उपन्यास में बड़ी ही कुशलता के साथ चित्रित किया गया है। उपन्यास में प्रेम की पावन गंगा का प्रवाह सर्वत्र व्याप्त है शब्द में आपको रोचकता और कौतूहल का दर्शन होगा। मूल्य १।-)

मैनेजर बुकडिपो
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

खांसी और शरदी के लिये
वैज्ञानिक इलाज
सिरोलीन
'रोचे'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीरांबाई की मृत्यु कब हुई ?

इतिहास इस संबंध में अपना क्या निर्णय देता है ?

लेखक, कुँवर सुखवीरसिंह जी गहलोत, एम० ए०
(इतिहास-विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय)

मीरां के मृत्युकाल के संबंध में इतिहास अभी तक अटकल ही लगाये था। विद्वान् लेखक ने इस लेख में मीरां की मृत्युतिथि को निश्चित करने का प्रयत्न किया है। लेख ऐतिहासिक सत्यता लिये है। इस लेख में मीरां का मृत्युकाल काफी ठीक जँचता है। मीरां के जन्मकाल आदि के विषय में भी गहलोत साहब के अन्य ऐतिहासिक लेख "देशदूत" में छप चुके हैं। यह लेखमाला मीरां के जीवन पर नया व सत्य प्रकाश डालेगी।

साजन मुध ज्यूँ जाणों ज्यूँ लीजै हो ।

* * *

मीरां के प्रभु गिरधर नागर,
मिल बिछुड़न नहीं कीजै हो[1] ।

देवी मीरां के भक्तों का कहना है कि मीरांबाई यह पद गाते-गाते भगवान् रणछोड़ जी की मूर्ति में समा गई। अभी तक मूर्ति के मुंह से मीरां की चूनरी का एक हिस्सा बाहर निकला दिखाई देता है। इस प्रकार जीवात्मा का परमात्मा से एकाकार हो गया। लेकिन प्रश्न उठता है कि यह कब हुआ ? सभी इतिहासज्ञ इसके लिए अभी तक अन्धकार में हैं।

एक भाट के कथनानुसार मुँशी देवीप्रसाद मुंसिफ मीरां की मृत्यु का संवत् १६०३ (सन् १५४६ ई०) में होना मानते हैं[2]। दीवानबहादुर हरविलास सारड़ा, महामहोपाध्याय रायबहादुर डाक्टर गौरीशंकर हीराचंद ओझा और पुरोहित हरनारायण शर्मा आदि का भी यही मत है। श्री जगदीशसिंह गहलोत, राणी मंगा भाटों (ब्रह्मभट्टों) की हस्तलिखित बहियों में एक स्थान पर लिखे अनुसार मीरां की मृत्यु वि० सं० १६०५ चैत्र सुदी ३ (सन् १५४८ ई० ता० १२ मार्च सोमवार) मानते हैं। लेकिन भाटों का कहना या लिखना ईश्वर-वाक्य नहीं माना जा सकता है। जोधपुर राज्य तथा उदयपुर (मेवाड़) राज्य के इतिहास की घटनाएँ देखने पर यह समय मानने में नहीं आता है। स्पष्टता के लिए जोधपुर तथा उदयपुर के राजवंशों की वंशावली देखना चाहिए--

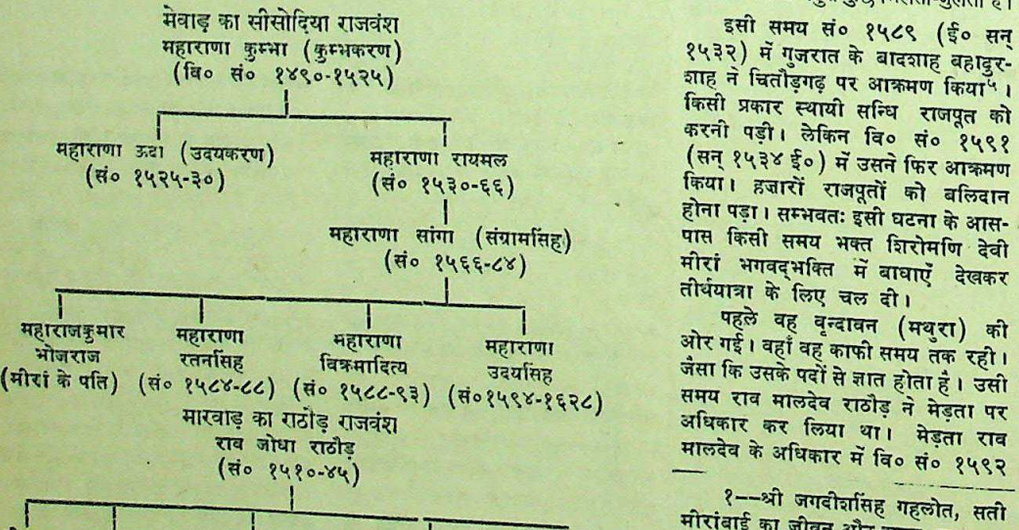

जहाँ तक अनुमान है मीरां के पति महाराजकुमार भोजराज सीसोदिया (गहलोत) का देहान्त वि० सं० १५८० (सन् १५२३ ई०) के लगभग हुआ। पति की मृत्यु के कुछ ही वर्ष बाद वि० सं० १५८४ (सन् १५२७ ई०) में उसके पिता रतनसिंह मेड़तिया (राठौड़) तथा श्वसुर महाराणा सांगा (संग्रामसिंह) भी युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए[3]। महाराणा सांगा के बाद महाराणा रतनसिंह चित्तौड़गढ़ की राजगद्दी पर बैठे जो वि० सं० १५८८ (सन् १५३१ ई०) में बूंदी नरेश राव सूरजमल हाड़ा द्वारा मारे गये[4]। वि० सं० १५८८ में राणा रतनसिंह के छोटे भाई महाराणा विक्रमादित्य राजसिंहासन पर बैठे। ये बहुत ही उद्दंड स्वभाव के थे। भक्त मीरां को भी इसने बहुत कष्ट दिया। देवी मीरां का भक्ति भाव तथा साधु-संतों में रहना इसे अच्छा न लगा। इसमें उसने राजकुल की बदनामी समझी। उसने कई प्रकार से मीरांबाई को समझाया। लेकिन वह न मानी। महाराणा के क्रोध का ठिकाना न रहा। अब उन्होंने मीरां को इस संसार से अलग कर देने की ठान लिया। सांप, बिच्छू तथा छलकता हुआ विष का प्याला तक मीरां के हाथों में दिया गया :—

विष रो प्यालो राणाजी भेज्यो,
दीज्यों मेड़तणी हाथ।
कर चरणामृत पी गई,
म्हारे सबल धरणी को साथ॥

लेकिन मीरां अपने धर्म्म से नहीं डिगी। वह जानती थी कि यह ईश्वर-प्रेम की परीक्षा है। सच्चे भक्त को दुखों में ही परमात्मा से मिलना होता है। मीरां की भक्ति सच्ची और स्वाभाविक थी। इससे वह परीक्षा में पूरी उतरी और इस आँच में वह सोने से कुन्दन बन गई। सत्य है मनुष्य का विकास ही ज्यादातर आपत्तियों से होता है। विपत्ति मनुष्य की कसौटी है।

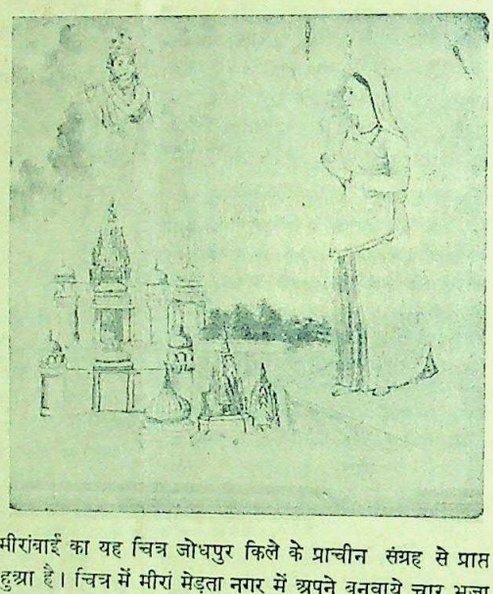

मीरांबाई का यह चित्र जोधपुर किले के प्राचीन संग्रह से प्राप्त हुआ है। चित्र में मीरां मेड़ता नगर में अपने बनवाये चार भुजा (श्रीकृष्ण) के मन्दिर के पास खड़ी है। मीरां का यह चित्र अधिक प्रामाणिक है। राजपूताने की विधवा महिलाओं का पहनावा इसी प्रकार का रहा है साथ ही उनका स्वास्थ्य और शरीर का माप भी। यद्यपि मीरां का यह चित्र भी समकालीन नहीं जँचता फिर भी मीरां के चित्र से बहुत कुछ मिलता-जुलता है।

इसी समय सं० १५८९ (ई० सन् १५३२) में गुजरात के बादशाह बहादुरशाह ने चितौड़गढ़ पर आक्रमण किया[5]। किसी प्रकार स्थायी सन्धि राजपूत को करनी पड़ी। लेकिन वि० सं० १५९१ (सन् १५३४ ई०) में उसने फिर आक्रमण किया। हजारों राजपूतों को बलिदान होना पड़ा। सम्भवतः इसी घटना के आस-पास किसी समय भक्त शिरोमणि देवी मीरां भगवद्भक्ति में बाधाएँ देखकर तीर्थयात्रा के लिए चल दी।

पहले वह वृन्दावन (मथुरा) की ओर गई। वहाँ वह काफी समय तक रही। जैसा कि उसके पदों से ज्ञात होता है। उसी समय राव मालदेव राठौड़ ने मेड़ता पर अधिकार कर लिया था। मेड़ता राव मालदेव के अधिकार में वि० सं० १५९२

इस लेख के लेखक कुँवर सुखवीरसिंह गहलोत।

से सं० १६०० (सन् १५३५-४३ ई०) तक रहा। अतः मीरां तीर्थ-स्थानों में घूमती रही। राव वीरमदेव को सं० १५ (ई० सन् १५४४) में मेड़ता वापस मि संभव है मीरा तभी मेड़ता पहुंची हो। अधिकांश विद्वानों (मुंशी देवीप्रसाद रायबहादुर डाक्टर ओझा) का म कि मीरां वि० सं० १६०२ में मेड़ता ही थी। वि० सं० १६०१ से सं० १ तक वीरमदेव शान्तिपूर्वक मेड़ता में करते रहे। सं० १६०४ में वीरमदे मृत्यु हो जाने के बाद उसका पुत्र वीर जयमल मेड़तिया राजगद्दी पर मीरां और जयमल दोनों भक्त थे। दोनों भक्तों में काफी मेल-मिलाप लेकिन वि० सं० १६१० (सन् १५५३ में फिर रणभेरी का वाद्य बजने राव मालदेव ने कुछ कारणों से राव मल पर आक्रमण किया। लेकिन ने बीकानेर की सहायता से राव को हरा दिया। सं० १६१३ में ने फिर महाराणा उदयसिंह को राव देव राठौड़ के विरुद्ध सहायता दी। युद्ध में जयमल की पराजय हुई और वि० सं० १६१३ की फाल्गुन बदी (सन् १५५७ ई० ता० २७ जनवरी को मेड़ता छोड़ना पड़ा। मालदेव ने पर अधिकार कर लिया। वहाँ के सब तुड़वा दिये गये। संभव है कि मीरां उस वक्त वहीं होने के कारण तथा और आदरणीय होने के कारण केवल के ही महल नहीं तुड़वाये गये।

मेड़ता में राव मालदेव का चलने लगा। एक राज्य के दूसरे राज्य अधिकार में चले जाने पर अशान्ति ऐसी अशान्ति शायद ही कभी और में रही हो। मेड़ता विभिन्न राजाओं युद्धक्षेत्र बन गया था[1]। इसी अशान्ति कारण मीरांबाई ने मेड़ता छोड़ दिया। यह भी हो सकता है कि जयमल के परित्याग के बाद उसने भजन-कीर्तन बाधा समझकर तीर्थयात्रा करना ही समझा हो। चाहे जो कारण हो मीरां सं० १६१३ (सन् १५५७ ई०) के ही मेड़ता छोड़ा। उस समय राजपूताने भी अशान्ति फैली हुई थी। उत्तरी उस वक्त युद्ध-स्थल बना हुआ था। कारण वह गुजरात की ओर गई। के लिए गुजरात ही उपयुक्त जगह आयु भी पचास के ऊपर हो गई यह मीरां की अंतिम तीर्थयात्रा मीरा तीर्थयात्रा के लिए द्वारका ओर चल पड़ी। उधर जयमल सं० (सन् १५६२ ई०) में महाराणा उ

१—श्री जगदीशसिंह गहलोत, सती मीरांबाई का जीवन और काव्य, पृष्ठ ७२ (श्रावण वि० सं० १९८६)।

२—मुंशी देवीप्रसाद; श्रीमती मीरांबाई का जीवन-चरित्र (सं० १९५५) पृष्ठ २८।

३—गहलोत, राजपूताने का इतिहास पृ० २२०।

४—वही, पृष्ठ २२४।

५—ठा० जगदीशसिंह गहलोत; राजपूताने का इतिहास पृष्ठ २२० (सन् १९३७ ई०)।

१ दीवान बहादुर हरविलास सारड़ा अजमेर, पृ० १५७

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...-दल का महान् उत्तरदायित्व

(पेज ५ का शेष)

...रूप से विरोधी हैं, और न तो ऐसा ...है कि 'महान्' के विशेषण से मुस्लिम ...को, श्री जिन्ना की माँग के अनु... 'राष्ट्र' माना जा सकेगा। इसलिए ...-दल जहाँ एक ओर प्रधानमंत्री की ...स्पष्ट बातों से दूर हट गया है, ...दूसरी ओर इसने लीग को सन्तुष्ट ...बिना ही परिस्थिति को और अधिक ...कर दिया है। केवल इतनी-सी ...बन सकी है कि लीग को उतनी ...से मार्ग से नहीं हटाया जा सकता ...की एटली के भाषण से आशा की ...। इस प्रकार ये मनोभाव जहाँ एक ...निराधार आशा की सृष्टि करते हैं ...दूसरी ओर सन्देह की जड़ मजबूत ...हैं, साम्प्रदायिक भेद को उकसा देते ...और देश को कहीं का नहीं रखते। सर ...क्रिप्स का एक से अधिक केन्द्रों की ...उठाना और कहना कि यह अब तक ...खुला हुआ प्रश्न है, एक अशुभ बात ...और भारत-मंत्री के उस वक्तव्य के ...जो इसके कुछ ही मिनट पहले दिया ...था, यह बात इसे स्पष्ट करती है कि ...स्पष्टतः उपरोक्त बात को फिर उठाने ...लिए ही है। इसकी व्याख्या में अधिक ...अधिक इतना ही कहा जा सकता है कि ...बीच के काल में एक केन्द्र होगा वहाँ ...वाले काल में 'अनेक' केन्द्रों की उत्पत्ति ...देगी। 'क्रिप्स-योजना' का प्रति... पुनः दृष्टिगोचर हो रहा है।

...के बाद तीसरी चीज आई—...भारतीय रियासतें या हिज मैजिस्टी ...शाब्दिक व्याख्या के अनुसार भारतीय ...। उसके देश के लिए विधान बनने ...इस नाजुक मौक़े पर रियासतों की ...को प्रतिनिधित्व का न्यायोचित ...अधिकार देने से इनकार ...वे अपने मुँह का स्वाद किसी क़दर ...न बिगाड़ेंगे और खासकर उस मौक़े ...जब "अँगरेजी अमलदारी" के उनके ...इस अधिकार का प्रयोग करते हैं। ...जिन्होंने इस रहस्यपूर्ण उत्तर का ...किया, "हम स्वयं नये खाके नहीं ...सकते। जिस तरह पायें, हमें उसी ...की स्थिति को सँभालना है।" विधान-...में रियासतों के भाग का उल्लेख ...समान रूप से अस्पष्ट और विरोधी ...। जब कि सारे भारत के लिए विधान ...है, भारतीय नरेशों को, जो निश्चय ...अपनी अमलदारी के पूर्ण प्रति... होंगे, ठीक वैसा ही अधिकार प्राप्त है जैसा निमंत्रित को निमंत्रण अस्वीकार करने का। वास्तव में यह बहुत बड़ी पेचीदा झंझट थी। परन्तु क्या यह उतना ही सरल है जितना और सब? निश्चय है कि संसार के लाभ के लिए मंत्रि-दल भारत में इधर-उधर मनोरंजक नाटक करवाने के लिए ही इतना लम्बा रास्ता नहीं तय कर सकता। इस पागलपन के पीछे निश्चय ही कोई रास्ता है।

किसी चीज के लिए कोई समय का बंधन नहीं। कोई निश्चित रेखा नहीं। यह समस्या के धरातल की कठोरता है। "शान्तिपूर्ण परिवर्तन" के लिए सरकार बनानी है और मध्यकाल के लिए केन्द्र में "अधिक प्रतिनिधि" शासन की स्थापना करनी है। शिमला-काण्ड की पुनरावृत्ति नहीं होनी है। जिन्ना उदार हो जायें या अँगरेज सरकार उन्हें पूरा-पूरा अधिकार दे दे ताकि शिमला-काण्ड फिर न दोहराया जाय। तब असली खेल शुरू होगा—अल्पमत या राष्ट्र? एक विधान-निर्मात्री समिति या दो? एक राष्ट्र या दो? बेशक ये सब अत्यंत आवश्यक प्रश्न हैं और इनके लिए जल्दी नहीं करनी है। इसलिए अधिक समय व्यतीत होगा। प्रत्येक मिला हुआ दिन लाभप्रद है। एक साल तो खत्म ही हो गया, एक निकम्मे विधान के अनुसार, जिसे निरर्थक समझकर वर्षों हुए कूड़े के ढेर पर फेंक दिया गया, बेकार के चुनावों में यह समय बरबाद कर दिया गया। अब फिर समय का घेरा होगा। हाथ में आया हुआ एक दिन सदा कैलेंडर के दो दिनों के समान होता है। इस बीच संकेत रूप से अधिकार दिये जायेंगे। कारण यह है कि वह तीन वर्षों के अन्दर आनेवाले दूसरे दुर्भिक्ष की—जिसका उदाहरण हमारे सम्मुख कोई दूसरा नहीं आता—सब जिम्मेदारी अपने कंधों पर लेगी। यह उन लोगों को पदों पर रखने का सीधा-सादा और तत्काल परिणाम है, जो दो साल बीते लगभग ३० लाख प्राणियों की सामूहिक हत्या के अपराधी थे। मानवता के खिलाफ़ नागरिक अपराधी सैनिक अपराधियों से कण-मात्र भी कम नहीं। फिर भी उन्हें बिना दण्ड दिये ही नहीं रहने दिया गया बल्कि उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर बरक़रार भी रखा गया। इस आपत्ति की गंभीरता के कारण भारत की जनता में जो निराशा छा गई है उसका सामना आतंकवाद से किया जा रहा है। जितनी शीघ्रता से अनाज काटा जाता है उससे अधिक शीघ्रता से साफ़ की जा रही है हमारी जनता। यदि उत्तरदायित्व भारतीय सरकार के कंधों पर रख दिया जाय तो निस्सन्देह विदेशियों का कार्य हलका हो जायगा।

इससे भारत की दो बातें निश्चय करने के लिए रह जाती हैं—(अ) आर्थिक और (ब) सैनिक। युद्ध के प्रारम्भ में भारत ने अपने आयात का ३०·२ प्रतिशत भाग संयुक्तप्रदेश से, और २६·१ प्रतिशत साम्राज्य से खरीदा था। भारत के निर्यात का ३३·५ प्रतिशत संयुक्त प्रदेश गया था जिसके कारण ब्रिटेन तीन बड़े प्रतिद्वन्द्वियों, जापान, जर्मनी और संयुक्तराष्ट्र की सम्मिलित बिक्री से भी बढ़ गया था। आज भारत अपने उद्योगों के निर्माण की आकांक्षा कर रहा है। उसने न केवल अपने स्टर्लिंग क़र्जों को चुका दिया है बल्कि इँगलैंड का ५५,००,००,००० का महाजन भी हो गया है जो निश्चय ही इँगलैंड की आँखों में गड़नेवाला काँटा है। इसलिए जिस प्रकार देश की रक्षा के लिए समझौते की आवश्यकता है उसी प्रकार परिस्थिति की पुकार है कि आर्थिक मोर्चे पर भी समझौता हो।

इसलिए अँगरेजों की कौड़ी पर सदा की भाँति साम्प्रदायिक समस्या, भारतीय नरेशों की समस्या इत्यादि का भारी भार है, ताकि भार उनके ही ऊपर ज्यादा रहे। इसके विपरीत जनता की कौड़ी पर उनके अपने जीवन का ही भार है जिसको लेकर राष्ट्रीय खेल खेलने के लिए वे सदैव तैयार हैं। हुज्जत का स्थान 'भारत छोड़ो' है, और हमें भूलना न चाहिए कि यही वह चीज है जिससे हमारे राष्ट्रीय नेताओं को आवश्यक अधिकार और बल मिलता है। कांग्रेस की कम से कम चीजें सरदार पटेल ने बता दी हैं यानी पूर्ण स्वराज्य और पाकिस्तान हर्गिज नहीं। इसलिए कांग्रेस के "भारत छोड़ो", बेबिन के साम्राज्यवादी अधिकारों को न छोड़ने के निश्चय और अँगरेजी निर्यात को युद्ध पूर्व सतह से भी अधिक अर्थात् ७५ प्रतिशत तक ले जाने के सर स्टेफर्ड के निश्चय के बीच कहीं एक केंद्र-बिन्दु का पता लगाना होगा। एक साधारण व्यक्ति जो क्षुधा और अपमान की अंधी गलियों में देर तक और दूर तक घूम चुका है, अब प्रतीक्षा करने को तैयार नहीं। उसके लिए तो यहाँ और इसी समय मिले हुए अधिकार में ही मतलब भरा है।

J & N REMINDERS!

स्मारक पत्र

किस प्रकार का काम? : सुन्दरता बढ़ाने और सुरक्षित बनाने के लिए लैक्कर और वारनिश का काम।

हमारी सिफ़ारिश : "जैन चाईनीज लैक्कर" (Jen Chinese Lacquer) रंग तथा चमक देता है। "सुपर जैनस्पार वारनिश" (Super Jenspar Varnish) के ऊपर पानी अल्कहल और अन्य तरल वस्तुओं का कोई असर नहीं होता। इन दोनों की सिफ़ारिश फ़र्नीचर और अन्य घरेलू सामान के वास्ते की जाती है।

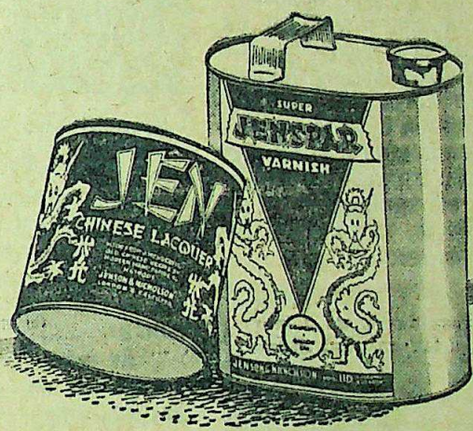

JENSON & NICHOLSON
MAKERS OF PAINTS

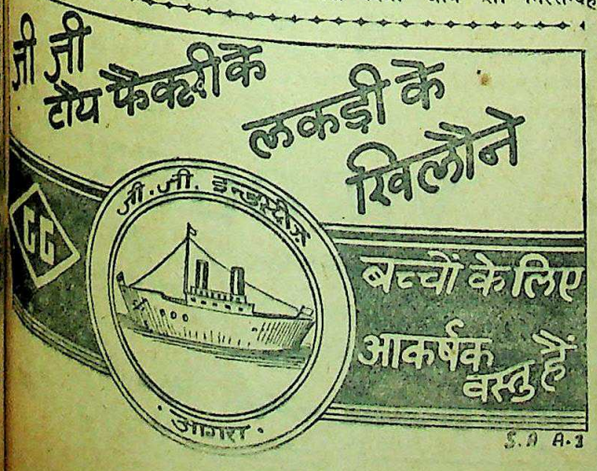
जी जी टॉय फैक्टरी के
लकड़ी के खिलौने

बच्चों के लिए आकर्षक वस्तु हैं
S.A A-3

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वीर कुणाल' बौद्धकालीन एक ऐतिहासिक फिल्म !

सुप्रसिद्ध निर्देशक और कलाकार किशोर साहू की अपूर्व देन

लेखक, श्री उमेश जोशी

फिल्मी दुनिया में आज की परिस्थितियों में "वीर कुणाल" जैसा संस्कृतिक और कलात्मक चित्र निर्मित कर देना यह श्री किशोर साहू जैसे महान् निर्देशक और उच्चतम निर्माता का ही प्रशस्त कार्य है। वास्तव में आज फिल्मी-संसार में साहू जैसा देदीप्यमान व्यक्तित्ववाले बिरले ही हैं। उनकी प्रतिभा किसी एक खास दायरे में ही बढ़कर नहीं रह गई, बल्कि वह जीवन के प्रत्येक क्रियात्मक क्षेत्र में अग्रसर होकर विकास के अन्तिम सोपान पर उपनीत हो गई है। यही आपकी सबसे बड़ी विशेषता है। 'वीर कुणाल' चित्र शुद्ध हिन्दी का प्रतीक है। साहित्य और कला के प्रदर्शन में साहू साहब सबों को पीछे छोड़कर दो क़दम आगे बढ़ गये हैं। यदि साहू जैसे उत्कृष्ट चरित्रवाले दो-चार व्यक्ति और सिने-संसार में हो जायें तो हमारा फिल्म व्यवसाय दुनिया के सामने अपना सिर गौरव के साथ ऊँचा उठा सकता है। लेकिन इस प्रकार के प्रतिभाशाली व्यक्ति बनाये नहीं जाते बल्कि वे मानव-समाज के लिए ईश्वरीय देन-स्वरूप होते हैं।

'वीर कुणाल' फिल्म में अभिनय के पूर्व श्री साहू और शोभना समर्थ।

"वीर कुणाल" की संक्षिप्त कहानी पढ़कर अन्दाजा लगाया जा सकता है कि साहू ने कितने बड़े कार्य को आसानी से हल कर लिया है, जब कि अन्य निर्माताओं की "वीर कुणाल" बनाने की हिम्मत भी नहीं हुई। उस वक्त साहू साहब आगे बढ़े। सिर्फ मानव-समाज को 'वीर कुणाल' जैसे महान् व्यक्ति का उत्कृष्ट और आदर्श पूर्ण जीवन चित्रित करने के लिए उन्होंने अपने को रिस्क में डाला। वह यह पहले से ही समझते थे कि मेरी उत्कृष्ट कला के लिए अभी जनता तैयार नहीं है, परन्तु इसकी उन्होंने परवाह नहीं की, क्योंकि किशोर साहू का आदर्श है कि जनता की रुचि के पीछे चलना निर्माता का कर्त्तव्य नहीं है। यदि जनता की रुचि निम्नकोटि की है, तो उसको प्रशस्त करना प्रत्येक निर्माता का फर्ज होना चाहिए।

वास्तव में "वीर कुणाल" उत्कृष्ट

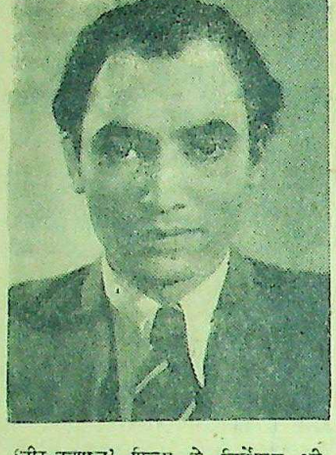

'वीर कुणाल' फिल्म के निर्देशक श्री किशोर साहू यही हैं।

मनोरंजन का परिचायक है। इस ऐतिहासिक चित्र में साहू साहब ने सजीव खोजपूर्ण कथानक युग के अनुकूल प्रस्तुत किया है। आधुनिक नवीन टैकनिक का दिग्दर्शन भी आपने बड़ी योग्यतापूर्ण कराया है।

'वीर कुणाल" सम्राट् अशोक का प्यारा पुत्र था। प्रजा का वह बड़ा ही दुलारा था। जीवन के अवसान काल में सम्राट् अशोक ने एक नवयौवना से अपना प्रणय-सम्बन्ध जोड़ा। वह उस वक्त यह न जान सके कि सुन्दर नारी जीवन के विशाल-क्षेत्र में तूफान खड़ा कर देगी। तिष्यरक्षिता की अद्वितीय सौन्दर्य की मादकता में अशोक ने अपने को डुबो दिया। इधर जब कुणाल और तिष्यरक्षिता की प्रथम भेंट हुई तो उस सुन्दरी ने अपने हृदय-कमल के ललाम पुष्प कुणाल के चरणों पर समर्पित कर दिये। परन्तु प्रगट रूप में कुणाल उसको माँ कहता और सुन्दरी उसको बेटा कहती लेकिन माँ-बेटा के दायरे में प्रेम की भव्य-दुनिया खिचती चली जा रही थी। तिष्यरक्षिता ने कुणाल को अपने वश में करने के लिए अनेक जाल रचे किन्तु कुणाल ने उसकी हमेशा उपेक्षा की इसका परिणाम यह हुआ कि स्त्री-स्वभाव के अनुकूल तिष्यरक्षिता ने कुणाल को नीचा दिखाने की प्रतिज्ञा कर ली।

जो तिष्यरक्षिता अब तक कुणाल के लिए कोमल पुष्प के समान थी, उसी तिष्यरक्षिता की मुलायम नजरों में कुणाल शूल बन गया। कुणाल की आँखों में अजब मस्ती का दरिया हिलोरें मार रहा था। उसकी आँखों की शोखी तिष्यरक्षिता के उठते हुए यौवन को कुरेदने लगी। पहले तो कुणाल के मन को जीतने का उसने बहुत प्रयत्न किया। परन्तु जब उसने देखा कि वह अब किसी तरह से भी मेरे क़ाबू में नहीं आ सकता तो उसने कुणाल की सुन्दर आँखों को फोड़ डालने का दृढ़ संकल्प किया। इस उन्मत्त युवती ने कुणाल को हत्या के अपराध में जेल के सीकचे में बन्द करवा दिया। और उस पर जुल्म करने लगी। अनेक कठोर यातनायें उसको देने लगी। जब इतनी भयंकर यातनाओं को भी कुणाल ने हँसते हुए सह लिया और वह अपने धर्म से नहीं डिगा तो युवती के क्रोध ने और भी भयंकर रूप धारण कर लिया और उसने कुणाल की सुन्दर आँखें निकलवा लीं।

अन्त में जब अशोक को यह सब कुछ मालूम हुआ वास्तविक रूप में—तब उन्होंने तिष्यरक्षिता को जिन्दा जला डालने का हुक्म दिया। उसकी भरी जवानी आग की लपटों को भेंट कर दी गई।

कहानी मनोरंजक और शिक्षाप्रद है। संवाद साहित्यक दृष्टि में लिखे गये हैं। कहानी के लिखने में भी काफी परिश्रम किया गया है। चित्र की सबसे बड़ी खूबी यह है कि गाने केवल चार हैं। चित्र-इतिहास में किशोर साहू ने यह विचित्रता का पन्ना जोड़ दिया। गीत भी सुन्दर हैं। चित्र-लेखन भी काफी शानदार है।

कलाकारों में शोभना समर्थ का कार्य सबसे श्रेष्ठ हुआ है। इसके बाद किशोर साहू का अभिनय भी प्रशंसा के योग्य है। बैद्य के रूप में सुशील साहू का अभिनय भी नहीं भुलाया जा सकता। किशोर साहू का अभिनय यथार्थवाद का परिचायक है, इसीलिए वह दर्शकों के हृदय को जीत लेते हैं। फिल्मी-संसार को आपसे अभी बहुत कुछ आशायें हैं।

(लेखक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

अपनी बात

लेखक, श्रीयुत चन्द्रभूषण वैश्य

मनुष्य के चरित्र में किस प्रकार की दुर्बलतायें होती हैं और उन्हें दूर करके वह किस प्रकार अपने जीवन को उन्नत बना सकता है, यह बात इस पुस्तक में बहुत ही ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है और लिखी गई है व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर। अपने चरित्र का निर्माण करने के लिए प्रत्येक युवक को यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ।।।) बारह आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

पहले के लँगड़े को देख उसके मित्र चकित हो

अब वह बाहरी खेलों में भाग लेता है

क्रुशेन से उसके पाँव का गठिया

यहाँ एक ऐसे आदमी की जो खेल-कूद में भाग लेने की आशा चुका था। उसने किस प्रकार एक अन्य दवाओं का सेवन किया उसको एक पूर्व रोगी ने चङ्गा रास्ता दिखलाया ? जिसको वह लाता है।

दो वर्ष पूर्व मेरे पाँव में हुआ जो धीरे-धीरे बढ़ कर बहुत हो गया। मैंने सारी दवाइयाँ उनका कुछ भी असर न हुआ। एक दिन मैं शाम को बैठा था रोगी ने मुझे क्रुशन साल्ट के राय दी। आज बारह मास हो हालाँकि कि जल्दी चङ्गा न हो सका। दर्द और सूजन धीरे-धीरे पाँव से भीतर दूर हो गये। मैं जब दूर तक के लिए जाने लगा तब मेरे मित्र देखकर दंग रह गए। इस वर्ष मैंने भी अच्छी तरह खेला है। वह फिक्र मैं सदैव परेशान रहता था मेरे बिलकुल गायब हो गई।" सी० इ

गठिये का दर्द इसलिए होने लगता कि गाँठों के जोड़ों में अम्ल अलग इकट्ठे हो जाते हैं, क्रुशन साल्ट ऐसे अथवा जर्रों से सम्बन्धित है जो इकट्ठे अम्ल को तितर-बितर कर देते साथ ही ऐसे जर्रों की सहायता करता जो गुर्दों को अच्छी तरह काम करने सहायता देते हैं।

क्रुशेन साल्ट सभी अच्छे दवाख और दूकानों पर मिलता है।

इतनी जल्दी थक गये ???

थकन तथा हतोत्साह का अन्त कर आनन्दमय

एवम्

उत्साहपूर्ण जीवन प्राप्त करने के लिए

वी वीरोजेन वी

VIROGEN

रो शारीरिक तन्द्रा को दूर कर रो

स्वास्थ्य तथा स्फूर्ति

जे को बढ़ाता है जे

न

VIROGEN

शारीरिक तथा भीतरी कमजोरी अथवा इस प्रकार की अन्य बीमारियों के लिए बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुआ है।

यदि आपको बाजार में न मिले तो लिखें :—

बेंगाल इम्युनिटि कम्पनी लि०, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

हरिद्वार के महन्त शान्तानन्दनाथ [illegible] सरकार द्वारा हरिद्वार में टोटल [illegible] और बद्रीनाथ केदारनाथ की [illegible] में रोक लगाने के सम्बन्ध में निम्न [illegible] दिया है—

हरिद्वार, बद्रीनाथ ये हिन्दू-धर्म के [illegible] तीर्थ हैं। धार्मिक मामलों में हस्त-[illegible] करने तथा तीर्थ-स्थानों की यात्रा में [illegible] लगाने से धार्मिक जगत को ठेस [illegible] है। सरकार को बिना किसी भेद-[illegible] के सभी धर्मों के संरक्षण तथा सुवि-[illegible] का ध्यान रखना चाहिए दूसरी ओर [illegible] देखते हैं कि मुसलमान भाइयों [illegible] यात्राओं तथा मजहबी मामलों में [illegible] उचित रूप से प्रबन्ध करती है [illegible] कहने का मेरा मतलब साम्प्रदायिक [illegible] फैलाना नहीं है।

[illegible], केदारनाथ की यात्रा से गढ़वाल [illegible] की कम से कम एक-चौथाई जनता [illegible] आजीविका का संबन्ध है। सरकार जब [illegible]-करोड़ों मन अनाज का प्रबन्ध कर [illegible] तो बद्री-केदार यात्रा में भी अन्न [illegible] की व्यवस्था चाहने पर कर सकती [illegible] अन्न के दुष्काल के कारण किसी [illegible] प्रबन्ध न कर सकती हो तो सरकार [illegible] जिम्मेवारी को अपने ऊपर न ले, परन्तु [illegible] पर भी यदि श्रद्धालु यात्री कष्टों का [illegible] करते हुए अपने प्रबन्ध का भार [illegible] उठाने को तैयार होते हैं तो उन्हें यात्रा [illegible] रोकना चाहिए हाँ जो जिम्मेवारी [illegible] ऊपर न ले सकते हों। सरकार को [illegible] कि जहाँ से यात्रा-लाइन शुरू होती [illegible] अपने कर्मचारी नियत कर दे जो [illegible] ऐसे यात्रियों को रोक सकें।

केवल हरिद्वार जानेवाले यात्री भी [illegible] विश्वास रेलवे अधिकारियों को किस [illegible] दिला सकते हैं कि वे बद्रीनाथ न [illegible] हरिद्वार ही जा रहे हैं, इसका माप-[illegible] क्या होगा।

हरिद्वार की प्रायः सभी जनता का [illegible] का संबंध यात्रियों पर ही [illegible] है। निरन्तर सात महीने तक हरि-[illegible] के टिकटों पर प्रतिबन्ध लगे रहने के [illegible] यहाँ का आर्थिक जीवन संकटमय [illegible] जायगा।

हरिद्वार में रोजाना हजारों यात्री [illegible] हैं, क्योंकि यह व्यापारिक नगर या [illegible] न होकर विशुद्ध तीर्थ-स्थान है। [illegible] टोटल राशन हो जाने से यात्रियों [illegible] बहुत दिक्कत हो जायगी। यात्रियों [illegible] अधिकतर ऐसे आते हैं जो कि अपने [illegible] की अस्थियों को लेकर दुखी [illegible] आते हैं हरिद्वार आ करके अपने [illegible] कृत्य को संपादन करें या अपना [illegible] कार्ड बनाने दफ्तरों की छानबीन [illegible], जब कि वे सवेरे की गाड़ी से आकर [illegible] को लौट जाते हैं।

[illegible] जिला नहर आदि के [illegible] काफी उपजाऊ है, इसलिए सुन्दर [illegible] होने पर ब्लेक मार्केट खतम कर [illegible] पदार्थों के लिए आत्म-निर्भर [illegible] सकता है। इसलिए पूर्ण राशनिंग की [illegible] कोई आवश्यकता नहीं है।

[illegible] में अब लोकप्रिय सरकार की [illegible] हो गई है। अतएव हम जनता [illegible] सरकार से यह आशा रखने का पूर्ण [illegible] रखते हैं कि धार्मिक जगत् तथा [illegible] और उत्तराखंड की जनता का [illegible] ध्यान में रखते हुए इन दोनों आज्ञाओं [illegible] लेकर जनता में आदर का [illegible] प्राप्त करेगी।

—संवाददाता

* *

प्रयाग हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के आगामी अधिवेशन के अवसर पर ५००) का "सेकसरिया महिला पारितोषिक" किसी महिला लेखिका को उनकी स्वरचित हिन्दी की किसी मौलिक रचना के सम्मानार्थ दिया जायगा।

सम्मेलन के आगामी अधिवेशन में २५०) का "श्री राधामोहन गोकुल जी पुरस्कार" समाज सुधार विषय पर हिन्दी की किसी मौलिक रचना के सम्मानार्थ दिया जायगा। साथ ही ५००) का जैन पारितोषिक २५०) का रत्नकुमारी पुरस्कार और १००) का नारंग पुरस्कार दिया जायगा।

पारितोषिकों के लिए विचारार्थ पुस्तकें स्वीकार किये जाने की अन्तिम तिथि ३१ वैशाख (सौर) संवत् २००३ है। समस्त लेखकों और लेखिकाओं से अनुरोध है कि वे अपनी प्रकाशित रचना की सात प्रतियाँ ३१ वैशाख (सौर) संवत् २००३ के भीतर उक्त पारितोषिक के लिए विचारार्थ सम्मेलन कार्यालय में भेजने की कृपा करें। नियत तिथि के पश्चात् प्राप्त हुई पुस्तकों पर विचार न किया जायगा। रत्नकुमारी पुरस्कार केवल मौलिक नाटकों तथा नारंग पुरस्कार केवल पंजाब के किसी कवि को दिया जायगा।

पारितोषिकों की पूरी नियमावली सम्मेलन कार्यालय से मँगाई जा सकती है।

—मौलिचन्द्र शर्मा,
प्रधान-मंत्री

* * *

शिकोहाबाद में संयुक्तप्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का छठवाँ अधिवेशन ता० १९, २०, २१ अप्रैल ४६ (ईस्टर) में श्रीयुत् डा० अमरनाथ झा एम० ए० डी० लिट्०, वाइस-चान्सलर प्रयाग विश्वविद्यालय (प्रयाग) के सभापतित्व में होने जा रहा है। अधिवेशन के अवसर पर वाद-विवाद प्रतियोगिता, 'अन्ताक्षरी' 'व्याख्यान' कवि-सम्मेलन तथा ब्रज-साहित्य-मंडल की ओर से, 'अष्टछाप' मैजिक लैन्टर्न पर 'सूरदास का जीवन-परिचय' एवं नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) द्वारा एक बहुत ही सुन्दर और कलापूर्ण नाटक 'कालिदास' का प्रदर्शन होगा।

हिन्दी-प्रेमियों से सानुरोध प्रार्थना है कि इस अवसर पर यहाँ पधारकर इस आयोजन को सफल बनावें तथा शिकोहाबाद जैसे छोटे से स्थान को अपना आतिथ्य-सत्कार एवं सेवा करने का अवसर देकर गौरव प्रदान करें। शिकोहाबाद ई० आई० आर० का (हावड़ा देहली लाइन पर) जंकशन स्टेशन है और आगरे से ४० मील दूर पर स्थित है।

सियाराम चतुर्वेदी —आनन्दीप्रसाद माथुर
वकील स्वागताध्यक्ष स्वागतमंत्री

शिकोहाबाद में छठे संयुक्तप्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन व तृतीय ब्रज-साहित्य मंडल के अधिवेशन का कार्यक्रम बहुत मनोरंजक बनाया गया है। उद्धव गोपी संवाद (भ्रमरगीत) का अभिनय, अष्टछाप प्रदर्शन तथा सूरदास की जीवनी पर मैजिक-लालटेन द्वारा प्रोफेसर सत्येन्द्र को भाषण देने के लिए निमंत्रित किया जा रहा है। सूरदास जी की जीवनी के चित्र अखिल भारतीय ब्रज-साहित्य-मंडल तैयार करा रहा है।

शिकोहाबाद में संयुक्त-प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के छठें अधिवेशन के साथ ब्रज-साहित्य-मंडल का तृतीय अधिवेशन भी होने जा रहा है। इन अधिवेशनों के अवसर पर एक ब्रज-साहित्य-परिषद् भी होगी, जिसके सभापतित्व के लिए पंडित हजारीप्रसाद जी द्विवेदी को निमंत्रण दिया गया है। ब्रज-भाषा के गण्यमान्य विद्वान् पधारेंगे। बाबू गुलाबराय जी एम० ए० परिषद् के संयोजक नियुक्त किये गये हैं।

शिकोहाबाद में छठाँ संयुक्त-प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन आगामी १९-२०-२१-२२ अप्रैल सन् ४६ को होने जा रहा है। इसी अवसर पर २१ अप्रैल दोपहर को अध्यापकों का एक विशेष अधिवेशन होगा। इस अवसर पर श्रीयुत सुनीतिकुमार चटर्जी कलकत्ता का मार्मिक भाषण होगा। शिक्षा-विभाग के समस्त अध्यापकों को इस स्वर्णावसर से लाभान्वित होना चाहिए। उन दिनों की छुट्टी जिला के शिक्षा-विभाग के चेयरमैन ने स्वीकार कर ली है। अन्य जिले के शिक्षा-विभागों को भी लिखा जा रहा है।

—प्रचार-मंत्री

* * *

लखनादोन का समाचार है कि केन्द्रीय सरकार के आदेशानुसार प्रान्तीय सरकारों ने उपयोगी पशुओं विशेष कर गोवध पर क़ानूनी रोक लगा दी है। जिसका सहारा लेकर गोवध बहुत बड़ी हद तक रोका जा सकता है। कहना नहीं होगा कि यह नियंत्रण विशेष महत्त्वपूर्ण है। गोरक्षा का काम करनेवालों के लिए अपूर्व अवसर है। गोरक्षा की प्रसिद्ध संस्था गोरक्षा-प्रचार-विभाग ने सर्व-साधारण की जानकारी के लिए इन्हें प्रचारार्थ प्रकाशित कर दिया है। जो गो-प्रेमी इनके पठन-पाठन से लाभ उठाना चाहते हैं, वे डाक-व्यय के लिए सिर्फ तीन पैसे का टिकट भेज कर निम्न पते से मँगा लेवें। मंत्री गोरक्षा-प्रचार-विभाग। पोस्ट लखनादोन, सी० पी०।

—संवाददाता

* * *

सागर में गत २५ से ३१ मार्च तक हैजा-सप्ताह म्युनिसिपल कमेटी की ओर से मनाया गया। प्रायः सभी शालाओं में कमेटी की ओर से हैजे के टीके बच्चों को लगवाए गये। मुलाजिमों की महँगाई वेतन-वृद्धि के लिए ४० हजार रु० सन् ४६-४७ के बजट में डाला है।

जनता को गुड़ की सख्त तकलीफ है। बाजार में दूकानदार केवल पुराना और रद्दी क्वालिटी का गुड़ बेच रहे हैं। हम सरकार से अनुरोध करते हैं कि शीघ्र ही वह दूकानदारों को नया गुड़ देकर जनता की तकलीफ दूर करे।

सागर शहर के गल्ला-व्यापारियों की एक सभा बाबू लक्ष्मीनारायण माहेश्वरी की दूकान पर हुई। निम्न-पदाधिकारी कार्यकारिणी में रखे गये—

सभापति—बाबू लक्ष्मीनारायण जी, उपसभापति—श्री बशीर अहमद, मंत्री—श्री वाई० एस० सप्रे, उपमंत्री—श्री रामभरोस पाठक, सदस्य—श्री मन्नूलाल जी, श्री बलदाऊ जी, श्री रामरतन जी, श्री भाई अब्दुल गनी ने प्रस्ताव रखा कि जो -) बोरा अंधे-लूलों की सहायतार्थ जमा होता था, वह अब भी श्री डिप्टी कमिश्नर साहब के पास जमा होता रहे। प्रस्ताव सर्वानुमति से स्वीकृत हुआ।

—संवाददाता

* * *

जयपुर से रामनवमी 'मानव' नामक मासिक पत्र प्रकाशित होने जा रहा है। इसके सम्पादक हैं महामहोपाध्याय समीक्षा चक्रवर्ती स्वर्गीय पं० मधुसूदन जी ओझा के परम शिष्य वेदवाचस्पति श्री पं० मोतीलाल जी शास्त्री जयपुर। 'मानव' आर्ष संस्कृति का समर्थक, सांप्रदायिकता, मतवाद से दूर; मानवता का पृष्ठपोषक तथा वैदिक विज्ञान-सम्बन्धी अपनी शैली का एकमात्र मासिक पत्र होगा। वार्षिक मूल्य ६) पत्र-व्यवहार का पता—विष्णुदत्त शर्मा "विकल" 'मानव', विज्ञान मन्दिर, जयपुर (राजपूताना)

—संवाददाता

कुछ

यह प्रसिद्ध साहित्य-सेवी श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी बी० ए० के बढ़िया निबन्धों का संग्रह है। इसमें २० निबन्ध हैं जो भाषा, भाव और विवेचन की दृष्टि से विलक्षण हैं। यह इस वर्ष की अनुपम रचना है। पृष्ठ-संख्या २०० से ऊपर। मूल्य केवल १॥) एक रुपया आठ आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड
इलाहाबाद।

धातुपौष्टिक
कामजोत वटी
स्वप्नदोष, वीर्यविकार, शीघ्रपतन, सुस्ती व कमजोरी दूर करके खून, बल व वीर्य बढ़ाती है। डि० रु० २॥)
कामजोत तिला
इसके उपयोग से इन्द्री की नसें व अवयव मजबूत होकर उत्थानशक्ति और स्तम्भन-शक्ति बढ़ती है। डि० शी० २॥)
मदनमंजरी फार्मसी—जामनगर
इलाहाबाद—मदन स्टोर ४७ जान्स्टनगंज

वमन ?

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर की व्यापक ख्याति अम्लता, उदर-वायु, हृदय-दाह, पेट-दर्द, वमन, पित्त-प्रकोप तथा पाचन-सम्बन्धी शिकायतों से पैदा होनेवाले अन्य रोगों में प्रभावशाली होने की मान्य प्रमाण है।

उदर-विकारों से उत्पन्न सिरदर्द, उदासी, अनिद्रा और हृदय की तीव्र धड़कन में भी यह अमूल्य है।

यदि आप इनमें से किसी कष्टकारी रोग से पीड़ित हैं तो आज ही कुछ मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर लीजिए और इस प्रसिद्ध औषधि की शीघ्र सांत्वना का स्वयमेव अनुभव कीजिए।

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर माँगते समय "एलेक्स सी० मेकलीन" के हस्ताक्षर पहचान लीजिए क्योंकि असली यही है।

मेकलिन ब्रांड स्टमक पाउडर
सेवन कीजिए

Copyright: [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलसीकृत रामायण

(खड़ीबोली में)

लेखक, श्री सूर्य्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

गोस्वामी तुलसीदास की अमर कृतियाँ—रामचरित-मानस, गीतावली आदि की भाषा अवधी तथा व्रजभाषा से पूर्ण प्रभावित है। गोस्वामी जी की रचनाओं का अन्तर्प्रान्तीय ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व भी है, इसलिए उनका प्रचार और प्रसार व्यापक रूप में आज भी विद्यमान है। कहा जाता है कि पाठकों को जो अवधी भाषा के शब्दों तथा क्रियापदों से परिचित नहीं हैं, उन्हें गोस्वामी जी की रचनाओं के बोधगम्य होने में कुछ कठिनाई होती है, इसी उद्देश्य को सामने रखकर हिन्दी के युगप्रवर्तक कवि 'निराला' ने गोस्वामी जी की रचनाओं को खड़ीबोली के अनुकूल परिवर्तित करने का कार्य प्रारंभ किया है, जिससे उसके बोधगम्य होने की कठिनाई पूर्णतया दूर हो जाये। 'राम-चरित-मानस' तथा 'गीतावली' के कुछ छंदों के परिवर्तित नमूने नीचे दिये जा रहे हैं। पाठकों को मूल पाठ से इसे मिलाना चाहिए। जहाँ तक हमारी सम्मति है, निराला जी की यह नई सूझ प्रशंसनीय है, किन्तु गोस्वामी तुलसीदास की अमर रचनाओं को खड़ीबोली के अनुरूप ढालना और उसे बोधगम्य बनाने का उपक्रम रचना कुछ जँचता नहीं है। गोस्वामी जी की मूल रचनाओं को पढ़कर जो लोकोत्तरआनन्द प्राप्त होता है, वह खड़ीबोली के स्वरूप में कहाँ? प्राकृतिक और अप्राकृतिक का भेद भी स्पष्ट हो जाता है।

मैंने गोस्वामी तुलसीदास जी के पूरे ग्रन्थों का खड़ी बोली हिन्दी में अनुवाद करने का निश्चय किया है। कुछ काम हुआ भी है। एक उदाहरण यहाँ देता हूँ। फिर, रामायण, गीतावली, कवितावली, विनयपत्रिका आदि से उद्धरण देता रहूँगा। काम बड़े उत्तरदायित्व का है। वैसे ही महत्त्व का भी। साहित्यमहारथ महाकवि तुलसीदास जी की कविता की प्राणधारा खड़ीबोली में तदनुरूप नहीं बह सकती, क्योंकि खड़ीबोली के अपने प्राण हैं जो अवधी और व्रजभाषा से भिन्न हैं। सत्य यह है कि हिन्दी भाषी देश अवधी और व्रजभाषा के प्रभाव से खड़ी बोली पर प्रतिष्ठित

कम हो पाता है, इससे राष्ट्र-भाषा को इच्छानुरूप शक्ति नहीं मिलती, जब भी वह प्रान्तीय भाषाओं से आगे है। ऐसे अनुवादों से काम हासिल हो सकता है। अनुवाद में मूल की प्राणशक्ति की यथासम्भव रक्षा की गई है। विज्ञ पाठक देखें। जो भिन्न विचार रखनेवाले हैं वे दारागंज, प्रयाग के पते पर पत्र देने की कृपा करें। अपनी नई सलाह से भी अनुगृहीत करें। यह मुझको ज्ञात है कि आज का जमाना राजा राम या सम्राट् राम के लिए क्या कहेगा; मगर अकबर के समय की ऐतिहासिकता के साथ प्रगति का परिचय कराने पर राष्ट्रीय दृष्टि से भी इस कृति में चार चाँद लग जायेंगे:—

रामायण

स्मरण किये, है सिद्धि;
गणनायक करि-वर-वदन;
जिनकी कृपा समृद्धि,
बुद्धि बढ़ी, गुण हैं सदन।
मूक हुए वाचाल,
पंगु चढ़े गिरिवर गहन।
जिनकी कृपा दयालु
द्रवें सकल-कलि-मल-दहन।
नील-सरोरुह-श्याम,
तरुण-अरुण-वारिज-नयन।
करें हृदय शुभ धाम,
सदा क्षीर-सागर-शयन,
कुन्द-इन्दु-सम-देह,
उमा-रमण करुणा-अयन!
दीन जनों पर स्नेह,
करें कृपा माया-मयन।
बन्दूँ गुरु-पद-कञ्ज,
कृपा-सिन्धु नर-रूप-हरि,
महामोह तम पुञ्ज,
जिनके वच रवि-कर-निकर।

गीतावली

आसावरी

आज सुदिन-शुभ समय सुहाये।
रूप-शील-गुण-धाम
राम प्रगट नृप-गृह सुख आये।
अति-पुनीत मधु मास लग्न,
ग्रह, वार, योग, कुल जाये।
हर्षित हुए चराचर
भूसुर के तन पुलक जनाये।
विबुधों ने दुन्दुभी बजाकर
विविध-फूल बरसाये,
कौशल्यादि-मातृ-मन-हर्षित,
वह सुख उर न समाये।
दशरथ ने सुत-जन्म सुना,
गुरुजन, द्विज सकल बुलाये।
विहित क्रिया की शुचिता के
आनन्द न अधिक अघाये।
सदन वेद-ध्वनि मुनिगण
करते हैं, बहु बजे बधाये,
पौर-जनों ने एक तानता
में ऐश्वर्य लुटाये।
मणि-पताक-तोरण
बहु केतन पौर रुचिरतर छाये;
मागध-सूत-बन्दियों ने
अतिशयता से गुण गाये।
—आदि आदि

कमला क्लब का वार्षिक उत्सव

कानपुर जे० के० इन्डस्ट्रीज द्वारा आयोजित कमला क्लब के खेलों का सालाना जलसा गत २४ मार्च १९४६ को ब्रिटिश इंडिया कारपोरेशन के प्रेसीडेन्ट सर रावर्ट मेजीज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। हमेशा की तरह इस वर्ष भी यह समारोह अत्यन्त सफल रहा। इस अवसर पर ग्रूप के लगभग २५००० कारीगर भाई तथा नगर के प्रसिद्ध व्यक्ति उपस्थित थे। कमला क्लब के खिलाड़ियों ने थोड़े ही अर्से में आगा खाँ की ट्राफी तथा उनके कप हस्तगत कर जिस साहस और अगम्य उत्साह का परिचय दिया है उससे इस क्लब का नाम भारत भर में प्रसिद्ध हो गया है और खेल-कूद के क्षेत्र में वह अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

खेल-कूद से इस वार्षिकोत्सव के अवसर पर क़रीब ६० प्रकार के खेलों में प्रतियोगिता हुई थी और ग्रूप के, हर एक मिल के खिलाड़ी कार्यकर्त्ताओं ने इसमें भाग लिया था। इस प्रतियोगिता के विजय प्राप्त खिलाड़ियों के बीच में ७५००० रु० के पुरस्कार श्रीमती मेजीज के द्वारा वितरित किये गये। इस मौक़े पर जे० के० इन्डस्ट्रीज के गवर्निंग डाइरेक्टर तथा कमला क्लब के संरक्षक सर पद्मपत सिंहानिया ने राष्ट्र तथा खास तौर पर व्यावसायिक मजदूर वर्ग के जीवन में खेल-कूद की आवश्यकता बताते हुए इसी अवसर पर भारत में आनेवाले ब्रिटिश मंत्रिमंडल सम्बन्धी राजनैतिक चर्चा का भी उल्लेख किया। इस मिशन की सफलता के लिए आशा प्रकट करते हुए आपने कहा कि सबकी आँखें दिल्ली की ओर लगी हुई हैं और समस्त भारतीय बिना किसी मतभेद के मंत्रिमंडल के सदस्यों की सफलता चाहते हैं, इस मिशन को ब्रिटेन के प्रधान मंत्री मि० एटली ने भी आशीर्वाद दिया है और यह ऐसे वक्त भारत में आया है जब हमारे बड़े-बड़े नेताओं तथा वाइसराय ने विश्वास और सहानुभूति का वायुमंडल यहाँ बना रखा है। सर पद्मपत ने क्रिप्स मिशन और शिमला कान्फ्रेंस की इस दिशा में असफलता पर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि ईश्वर करे कि इस बार का यह प्रयत्न सफल हो जिससे भारत को शीघ्र ही आजादी मिल सके। आपने कहा कि हमें भगवान् से प्रार्थना करनी चाहिए कि भारतीय वैज्ञानिक नाटक में जो पात्र भाग लेंगे वे सद्बुद्धि और सद्भावना से प्रभावित हो सब्र तथा बरदास्त से काम लें। हिन्दुस्तान की दासता का मसला शीघ्र होने पर जोर देते हुए आपने कहा कि हिन्दुस्तान अब ऐसे मंजिल पर पहुँच चुका है जहाँ वह मौजूदा हालत से किसी तरह भी संतुष्ट नहीं रह सकता। हम खाली राजनैतिक ताक़त के लिए ही अपनी सरकार नहीं चाहते हैं, हम अपने आये दिन अनाज, कपड़ा आदि मसलों को तै करने के लिए अपनी सरकार चाहते हैं। हमें स्टर्लिंग पावने का मसला भी तै करना है। बड़े-बड़े कल कारखाने खोलने हैं, वैज्ञानिक ढंग से खेती में सुधार करना है और आज जनता के रहन-सहन को भी ऊँचा उठाना है। आगे चलकर आपने अपने भाषण में सर पद्मपत ने कहा कि यह एक अत्यन्त भयानक घटना होगी यदि इस मौक़े पर कोई दल अथवा किसी दल का नेता अपनी अनुचित माँगों पर अड़कर प्रगति के पथ पर अनेक अड़चनें डालकर सम्मानपूर्ण समझौते में बाधक बनेगा जब कि राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियाँ भारत की आजादी की ओर अग्रसर हो रही हैं। आपने यह भी आशा प्रगट की कि देश की दो प्रमुख संस्थायें कांग्रेस और मुसलिम लीग ऐसा कोई कार्य न करेंगी जिससे यह सुनहला मौक़ा हाथ से निकल जावे।

खेल-कूद में आशातीत सफलता प्राप्त करने तथा मिल मालिकों एवं कर्म[illegible] में भाई-चारे का संबंध स्थापित [illegible] उपलक्ष्य में भला क्लब की सराहना [illegible] हुए सर रावर्ट मेजीज ने सर [illegible] कथन का समर्थन करते हुए कहा कि [illegible] समय दूर नहीं जब हम लोग देखें [illegible] भारत का वैधानिक मसला इस [illegible] हल हो जावेगा जो सभी दलों के लिए [illegible] संतोष का विषय होगा। हम सबको [illegible] के साथ इस राजनैतिक सुझाव को [illegible] करनी चाहिए। आपने अपने भाषण [illegible] कहा "रोम एक ही दिन में निर्माण [illegible] हुआ था और न एक ही दिन में [illegible] विधान बन सकता है। हम सबको [illegible] के साथ भविष्य की ओर देखना [illegible] और यदि सम्भव हो सके तो हमें [illegible] के विचारों पर भी गौर करना [illegible] हम उन विचारों से सहमत हों अथवा [illegible] यह दूसरी बात है। यदि भारत को [illegible] और मुसीबतों से बचाना है तो हमें [illegible] के साथ आगे बढ़कर आपस में [illegible] करके "दो और लो" के सिद्धान्त [illegible] अपनाना ही पड़ेगा। हमारी जाति [illegible] आजादी के लिए पूर्णरूप से सहनशील [illegible] हम एक ऐसा विधान चाहते हैं जो [illegible] हो और जिसके आधार पर हम अपने [illegible] उद्देश्य की प्राप्ति कर सकें। हम [illegible] भारतीय दोस्तों से इस संबंध में कोई [illegible] रियायत नहीं चाहते। हम तो केवल [illegible] संरक्षण चाहते हैं और वह भी अधिक [illegible] केवल उस सीमा तक जितना देश के [illegible] अल्प दलवालों को मिले अथवा [illegible] सुविधायें ब्रिटेन में भारतीयों को [illegible] रही हैं। हम तो भारत में रहकर [illegible] जीविका उपार्जन करने का हक़ [illegible] हैं और मुझे विश्वास है कि हमारे [illegible] को देने में शायद बहुत कम भारतीयों [illegible] संख्या इन्कार कर सकेगी। हमारे [illegible] निधियों ने गत वर्षों में भारत की [illegible] की है और अब भी केन्द्रीय तथा [illegible] शासन में भाग ले रहे हैं। यदि आप [illegible] की इच्छा होगी तो भविष्य में भी [illegible] लोग जिस तरह हमसे हो सकेगा [illegible] की सेवा करते रहेंगे। इसलिए हम [illegible] को मिलकर भारत के उत्थान की [illegible] प्रत्येक पहलू से आगे बढ़ना चाहिए।

मझली दीदी

एक अनाथ बालक की करुण [illegible]

इस उपन्यास में इतनी मार्मिकता के [illegible] चित्रण की गई है कि पढ़ते-पढ़ते [illegible] आँखें अनायास ही गीली हो जाती [illegible] एक सौतेली बहन अपने निराश्रित भाई के [illegible] साथ जिस तिरस्कार और उपेक्षा [illegible] परिचय देती है, वह अत्यन्त हृदय-विदारक [illegible] है। परन्तु उसकी देवरानी इस अनाथ [illegible] को अपने पुत्र की तरह स्नेह करती [illegible] यही मझली दीदी है। उपन्यास सुन्दर है। मूल्य १)

फ्रांस का इतिहास

में ईसा पूर्व २२५ से लेकर [illegible] १९२० ईसवी तक का इतिहास [illegible] इसमें वहाँ की राज्यक्रान्ति के राजवंश [illegible] पूयूडल प्रणाली, स्वतंत्र, राजतंत्र, [illegible] वर्षीय युद्ध, योरप में फ्रांस के [illegible] राजवंश के उद्धार, सन् १८४८ की [illegible] राष्ट्रीय सभा और प्रजातंत्र आदि [illegible] वर्णन उत्तमता से किया गया है। [illegible] में चित्र भी हैं। अच्छे कागज पर छपा [illegible] चार सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक [illegible] मूल्य केवल ४) चार रुपये।

मैनेजर—(बुकडिपो) इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य-चर्चा

सल्फ़ा औषधियों का उपयोग

रसायनिक चिकित्सा की एक महत्त्वपूर्ण खोज

लेखक, श्री नरेन्द्रसिंह, एम० एस-सी०

समरण बस वर्ष पूर्व मनुष्य को इन [illegible] औषधियों के बारे में बहुत कम [illegible] था जिनकी सहायता से अब उन रोगों [illegible] की विजय प्राप्त कर ली गई है जो [illegible] कुछ काल पूर्व तक असाध्य समझे जाते [illegible] यह रसायनिक चिकित्सा-शास्त्र की [illegible] चमत्कारी और महत्त्वपूर्ण खोज है [illegible] अब निरन्तर इनके बारे में अधिका- [illegible] ज्ञात होता जा रहा है। हमारे देश में [illegible] साधनों तथा ज्ञान के साधनों की हीनता [illegible] इनके बारे में बहुत कम लोग [illegible] पर विदेशों में इनका उपयोग [illegible] बहुत साधारण हो गया है।

हाल महासमर में हुई मृत्यु-संख्या [illegible] रोगों की कमी का कारण यही [illegible] है, क्योंकि युद्धजनित रोग तथा [illegible] अधिकतर घावों के संक्रमण तथा ऋतु [illegible] से होती हैं, और सल्फ़ा [illegible] इन कारणों को जीतने में खूब [illegible] है।

ये औषधियाँ निमोनिया से लेकर [illegible] जैसे भयंकर रोगों की चिकित्सा [illegible] रूप से सफल सिद्ध हुई हैं। इनके [illegible] के कारण इस महासमर की [illegible] से हुई मृत्यु-संख्या पिछले युद्ध [illegible] मृत्यु-संख्या का दशमांश भी नहीं है। [illegible] बातों के कारण अब शान्तिकाल [illegible] भी इनकी महत्ता अधिक ही है।

धनुस्तोड़ जैसा रोग, जो कि मृत्यु- [illegible] कहलाता था, अब काबू में कर लिया [illegible] है। इस रोग में मस्तिष्क तथा मेरु- [illegible] को घेरनेवाली झिल्ली में संक्रमण [illegible] होता है। यह भिन्न-भिन्न कीटाणुओं [illegible] संक्रमण के अनुसार तीन प्रकार का [illegible] है—स्ट्रेप्टोकोक्सल मेनिगाइटिस (Streptococcal Meningitis), [illegible] (Pneumococcal) तथा [illegible] मेनिन्गाइटिस (Menin- gococcal meningitis) अन्तवाला [illegible] मस्तिष्क-मेरु सम्बन्धी बुखार (Cerlito-spinal fever) कहलाता [illegible] पहले इस बुखार से हुई मृत्यु-संख्या [illegible] प्रतिशत थी, तथा स्ट्रेप्टोकोक्सल [illegible] मृत्यु-संख्या ९५ प्रतिशत थी। पर [illegible] इनका औषधियों के प्रयोग से इन [illegible] रोगों से हुई मृत्यु-संख्या घटकर [illegible] ६ अथवा १० प्रतिशत रह गई है। [illegible] घावों के संक्रमण से हुई अधिक [illegible] मृत्यु-संख्या का खास कारण हिमोलाइ- [illegible] स्ट्रेप्टोकोकाइ (Hemolytic Streptococci) नामक कीटाणु होता [illegible] है। यह रक्तधारा में पहुँचकर उसको [illegible] विषाक्त बना देता है जिसको डाक्टर लोग [illegible] स्ट्रेप्टोकोक्सल सेप्टीसिमिया (Strepto- coccal Septicemia) कहते हैं। सल्फ़ा [illegible] के प्रयोग से पूर्व यह रोग असाध्य तथा [illegible] मृत्यु अवश्यम्भावी समझी जाती थी। [illegible] फ़रवरी १९३५ में सबसे पहले सल्फ़ा [illegible] औषधियों की चिकित्सा-सम्बन्धी उप- [illegible] मुर्गी का स्ट्रेप्टोकोक्सल कीटाणु से संक्रमित [illegible] प्रोन्टोसील द्वारा उपचार के सफल [illegible] परिणाम की रिपोर्ट से ज्ञात हुई थी।

प्रोन्टोसोल नाम की पेटेन्ट दवा का मूल पदार्थ सल्फ़ानिलेमाइड है। इसी रिपोर्ट को आधार मानकर अमेरिका के वैज्ञानिकों ने १९३७ में यह सल्फ़ा औषधि बनाई तथा औरों का संश्लेषण (Synthesis) खोज निकाला।

आरम्भ में खोजी हुई सल्फ़ा औषधि का चिकित्सा-क्षेत्र सीमित था तथा सल्फ़ानिलैमाइड की मात्रा अधिक हो जाने पर प्रतिक्रिया उत्पन्न हो जाती और उल्टा इसी से रक्त में विष फैलना आरम्भ हो जाता। सुज़ाक के उपचार में मात्रा के अधिक होने पर रोगी को मिचली आती और हानि पहुँचनी आरम्भ हो जाती थी।

इसी कारण वैज्ञानिकों का यही प्रयत्न रहा कि सल्फ़ा कुटुम्ब की ऐसी औषधि बनाई जाय जो गुणवान् होने के साथ ही कीटाणुओं के विरुद्ध अधिक शक्तिशाली हो तथा रोगी को कम से कम हानिकारी हो।

इसी के फलस्वरूप सल्फ़ापायरिडीन के बन जाने पर यह निमोनिया तथा सुज़ाक की चिकित्सा में सल्फ़ानिलैमाइड से अधिक प्रभावशील साबित होने पर उपयोग में लाई जाने लगी। यद्यपि यह सल्फ़ानिलैमाइड के बराबर ही हानिकारक होती है पर न्यून मात्रा से ही लाभ हो जाने के कारण हानि की सम्भावना कम हो जाती है।

इसके बाद सल्फ़ाथायाज़ोल (Sulfatthiazol) का विश्लेषण का पता लगा। यह खून में जल्दी जज्ब हो जाती है, तथा प्रयोग होने पर यह रोगी को सल्फ़ापायरिडीन से कम हानि पहुँचानेवाली सिद्ध हुई है। सेफ़ाइलोकोक्सल (Saphylococcal) संक्रमण में सबसे अधिक लाभदायक पाई गई है।

१९४० के अन्त तक चौथी औषधि सल्फ़ाडायज़ीन भी निकल आई थी। यह रोगी को बहुत कम हानिकारी तथा गर्दन-तोड़, रक्त विषैला हो जाने पर व श्वास सम्बन्धी रोगों के उपचार में सबसे अधिक लाभदायक होती है। स्कारलेट बुखार (Scarlet fever) के आक्रमण में इसकी सहायता से ८० प्रतिशत कमी हो गई है।

सल्फ़गवानिडीन (Sulfaguanidine) इस श्रेणी की अन्तिम औषधि अभी हाल में ही प्रकाश में आई है। पहली चार औषधियाँ खून में जल्दी जज्ब हो जाने के कारण पाचन-नली के रोगों के लिए बिलकुल बेकार होती हैं क्योंकि वहाँ पर प्रभाव के लायक औषधि का गाढ़ापन नहीं हो पाता। सल्फ़गवानिडीन इस गुण की उपस्थिति के कारण कृमिल अतिसार (Bacillus Dysentry) जैसे पाचन-नली के रोगों के लिए खूब प्रभावशाली होती है। रोगी को बिलकुल हानि न पहुँचाने के साथ ही यह तीन चार दिन में ही ठीक कर देती है। यह सम्भावना है कि हैजे व मोतीझरे के उपचार में यह लाभदायक सिद्ध होगी।

दूसरे प्रयोग सल्फ़ा औषधि की अधिक उपयोगिता के लिए तथा हानिकारी गुण को घटाने के लिए इनकी सेवन विधि में किये गये। शुरू में इनकी गोलियों को रोग में मुंह से खाते तथा रोग की तेज़ी में मात्रा को बढ़ा देते थे। इस विधि से या तो रोगी को एकदम आश्चर्यजनक लाभ होता या मृत्यु अवश्यम्भावी हो जाती जिसका कारण मात्रा की अधिकता से हुए हानिकारी गुण थे।

सबसे प्रथम युद्धस्थल पर डाक्टरों ने इनका स्थानीय उपयोग आरम्भ किया। इससे अधिक लाभ होने से अब तो यह घावों के उपचार के लिए एक साधारण विधि हो गई है।

सल्फ़ा औषधियों के उपयोग के काल में रोगी को विटामिन-बी नहीं देना चाहिए क्योंकि इस विटामिन में उपस्थित पैरा-अमिनो बेंज़ोइक एसिड सल्फ़ा के कार्य में निरोध पैदा करता है। यही बात चेतना-हीन करनेवाली औषधियों की उपस्थिति में होती है।

राजा-रानी

नीति-कुशलता तथा प्रजा-वत्सलता के अभाव में विलासी राजा के राज्य में जिस प्रकार की अव्यवस्था और अशान्ति फैल जाती है, इसका रोमांचकारी परिचय रवि बाबू ने इस उत्कृष्ट नाटक में चित्रित किया है। प्रजा की पुकार पर बयालू रानी का उत्सर्ग अत्यन्त प्रभावोत्पादक और कर्तव्यनिष्ठा का ज्वलन्त उदाहरण है। मूल्य १॥)

मैनजर बुकडिपो
इंडियन प्रस, लिमिटड, प्रयाग

हमारी उत्तमोत्तम पुस्तकें

उत्कृष्ट श्रेणी की ये पुस्तकें अधिकारी विद्वानों के द्वारा लिखी गई हैं। इनकी लोकप्रियता का यही कारण है। प्रत्येक पढ़े-लिखे परिवार में इनकी एक-एक प्रति अवश्य होनी चाहिए।

धार्मिक पुस्तकें

सचित्र-हिन्दी-महाभारत — महाभारत का अक्षरशः अनुवाद। अगणित रंगीन और सादे चित्रों के कारण महाभारत का यह संस्करण जैसे बहुत ही नयनाभिराम है वैसे ही सीधी और सरल भाषा में लिखा हुआ होने के कारण स्त्री-बच्चों से लेकर बड़े-बूढ़ों तक के लिए उपयोगी है। मूल्य ७०) सत्तर रुपये।

हिन्दी-महाभारत—इसमें महाभारत के अठारहों पर्वों की कथा बहुत ही मधुर और सरल भाषा में लिखी गई है। मूल्य ६) छः रुपये।

श्रीमद्भागवत—सरल भाषा में किया गया अविकल अनुवाद। महाभारत की तरह इसमें भी सादे और रंगीन चित्रों की भरमार है और सरल भाषा में लिखा हुआ होने के कारण आबाल-वृद्ध-वनिता सभी के लिए उपयोगी है। मूल्य १५।) पन्द्रह रुपये पाँच आने।

ज्ञानेश्वरी-गीता—श्री स्वामी शंकराचार्य के मत के अनुसार गीता का मर्म समझाने के लिए महाराष्ट्र-प्रदेश के प्रसिद्ध संत श्री ज्ञानेश्वर जी महाराज के द्वारा की गई ज्ञानेश्वरी नामक टीका का हिन्दी-अनुवाद। मूल्य ५।) पाँच रुपये पाँच आने।

सुखमार्ग—जीवन को सार्थक तथा सुखमय बनाने की उत्तम विधि। मूल्य ।।) आठ आने।

नीति-रत्नमाला—धर्मशास्त्र से छाँट-छाँटकर एकत्र किये गये ललित और उपदेशप्रद श्लोकों का संग्रह। प्रत्येक श्लोक का विस्तृत हिन्दी अनुवाद भी किया गया है। मूल्य ।।।) तेरह आने।

चरित्रगठन—सदाचारी बनने के लिए जिन-जिन गुणों का होना आवश्यक है, उन सबकी इस पुस्तक में विशदरूप से विवेचना की गई है। मूल्य १।) एक रुपया पाँच आने।

सदुपदेश-संग्रह—देश-विदेश के महात्माओं के उत्तमोत्तम उपदेशों का सुन्दर संग्रह। इस पर मनन करके हम अपने जीवन को सार्थक तथा सुखमय बना सकते हैं। मूल्य ।।) आठ आने।

दर्शन और जीवन—लेखक, श्री सम्पूर्णानन्द। इस पुस्तक में दर्शन के साथ जीवन का अनिवार्य सम्बन्ध दिखलाते हुए, प्रत्येक व्यक्ति को दर्शन क्यों पढ़ना चाहिए? इस प्रश्न पर विवेचनात्मक प्रकाश डाला गया है। दर्शनशास्त्र के प्रेमियों के निमित्त पुस्तक संग्रहणीय है। मूल्य ३।) तीन रुपये पाँच आने।

प्राणायाम विज्ञान और कला—डाक्टर शोजा-बुरो ओटेव नामक सुप्रसिद्ध चिकित्सक के प्राणायाम-सम्बन्धी लगातार कई वर्ष के अनुभव का वर्णन। मूल्य १) एक रुपया।

आध्यात्मिकी—इस पुस्तक में हमारे ऋषि-मुनियों से लेकर नये से नये देशी और विदेशी आस्तिक और नास्तिक हर तरह के विद्वानों के मत का सार खींचकर रख दिया गया है। मूल्य १।) एक रुपया पाँच आने।

मनुष्य-विचार—मन को वासनाओं से मुक्त करके विचारों को उन्नत बनाने की उत्तम विधि भली भाँति समझाई गई है। मूल्य ।) पाँच आने।

कर्तव्य-शिक्षा—प्रत्येक मनुष्य किस प्रकार कर्तव्यशील, नीति-निपुण तथा सदा-चारपरायण बन सकता है यह बात इस पुस्तक में भली भाँति समझाई गई है। मूल्य १॥) एक रुपया ग्यारह आने।

उपदेश-कुसुम—फ़ारस के प्रसिद्ध नीतिकार शेखसादी के 'गुलिस्ताँ' नामक ग्रंथ के एक अध्याय का अनुवाद। मूल्य ।) चार आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाहित स्त्रियों को नये अधिकार

(पेज ४ का शेष)

करने को मुश्किल से तैयार होती हैं। यह बात मेरे अनुभव में आ चुकी है और यह मैं किसी जाहिल-गँवार की बात नहीं कह रहा हूँ बल्कि उसकी जिसे हर तरह की क़ानूनी सहायता मिल सकती थी। मगर हाँ एक अख्तियार मिल गया तभी तो काम में आ सकता है किसी न किसी के। यही काफ़ी सबूत है कि हमारे समाज में परिवर्तन होता रहा है। अब क्यों न हो?

मिसेज स्वामीनाथन् इसे तलाक़ के आने का हरावल समझती हैं इससे वह खुश हैं। मैं तलाक़ के अख्तियार के ख़िलाफ़ नहीं। यह एक प्रकार से प्राचीनकाल में प्रचलित भी था। दीर्घातमा की ही स्त्री ने यह कहकर कि "तुम जन्म से ही अन्धे हो मेरा भरण-पोषण पालन तो दूर रहा मैं ही तुम्हारा और तुम्हारे बेटों का पालन पोषण करती हूँ। मुझसे अब न होगा मैं दूसरा भर्ता करूँगी" उन्हें छोड़ दिया था। उस वक्त क्रोध में आकर दीर्घातमा ने यह आदेश दिया था कि एक स्त्री मरते दम तक एक ही पति के अधीन रहेगी; उसके पहले उसे पति-त्याग का अख्तियार था। कौन कह सकता है कि ऐसे अख्तियार परमात्मा के रचे शास्त्र में आदमी ने समय-समय पर नहीं बदले? जब पुरुष के मुवाफ़िक बदले गये अब स्त्री के मुवाफ़िक क्यों न बदले जा सकें?

दीर्घातमा ने तो स्त्री के लिए मरते दम तक एक ही पति के अधीन रहने का आदेश दिया था परन्तु आज तो मरते दम कौन कहे जन्म-जन्मान्तरों के लिए उसकी अधीन समझी जाती है। मनुस्मृति को भी तोड़-मरोड़ कर हमारे समाज ने उसे पुरुष समाज के अधीन कर रखा है। यह सब सच है परन्तु फिर भी तलाक़ के अख्तियार जारी होने में एक डर है। तलाक़ का अख्तियार आप एक फरीक़ को नहीं दे सकते। दोनों ही को देना होगा। मुझे डर है कि उसका भी फ़ायदा पुरुषगण ही उठावेंगे। स्त्री की हर बात पर सन्देह करनेवाले हमारे देश में भरे हैं। पढ़े-लिखे पंडितों से लेकर जाहिलजट्ट तक में ऐसे लोगों की कमी नहीं। उन लोगों में जिन्हें क्लबों मेलों आदि में स्त्रियों से मिलते रहने का अवसर है यही असहनशीलता पाई जाती है। मैं एक अँगरेज़ी लेख एक भारतीय का लिखा पढ़ रहा था उन्होंने आजकल की लड़कियों की आज़ादी देखकर यह नतीजा निकाला है कि "वे एक पुरुष की जायदाद बनकर नहीं रहना चाहतीं।" अपनी राय में उन्होंने हमदर्दी की है और मेरी राय में बेजा एतराज विवाह में जायदाद का सवाल ही कहा। हमारे शास्त्र भी दम्पति को पूरा समझते हैं और यह रस्म हमारे बुज़ुर्गों ने आवारागर्दी से जो रोग लग सकते हैं उनसे बचने को बनाई थी। विवाह करना जायदाद बनाना कैसे होता है, मैं नहीं समझ सकता? बहरहाल जब भी तलाक़ का क़ानून पेश हो तो उसमें रोक-थाम काफ़ी होनी चाहिए। वरना पुरुषों को ही एक और ज़रिया छुटकारा पाने का मिलेगा।

माधवी-कङ्कण

यह सुप्रसिद्ध बाबू रमेशचन्द्र दत्त का लिखा ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें मुगलों के समय की दशा के चित्रण के साथ-साथ प्रेमी-प्रेमिका की बड़ी विचित्र कथा है। यह उपन्यास बहुत लोकप्रिय है। इसका नया संस्करण अभी तैयार हुआ है। मूल्य १।-) एक रुपया पांच आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

मीरांबाई की मृत्यु कब हुई?

(पेज १२ का शेष)

के पास चित्तौड़गढ़ (मेवाड़) चला गया। और वहीं रहने लगा[1]। वीर जयमल ने महाराणा के पास आश्रय पाकर ही अपनी बहन मीरां को भी बुलाना सोचा होगा। बहुत से लेखकों का कहना है कि राणा ने भी उसकी बात मानकर बुलाने के लिए ब्राह्मण भेज दिये। इन ब्राह्मणों को मीरां के बुलाने के लिए वि० सं० १६२०-२४ के बीच भेजा होगा। क्योंकि इस समय के बीच ही दोनों को शान्ति मिली थी। इसके पहले तो दोनों युद्धों में लगे रहे। वि० सं० १६२४ (सन् १५६७ ई०) में सम्राट् अकबर ने चित्तौड़ पर हमला कर दिया। इसी चित्तौड़ के घेरे में वीर जयमल राठौड़ वीरगति को प्राप्त हुआ था और महाराणा उदयसिंह को अंत में सं० १६१६ (सन् १५५९ ई०) में उदयपुर बसाना पड़ा और वहीं रहने लगे। अतः मीरां को बुलाने का समय सं० १६२४ के पहले ही हो सकता है। चित्तौड़ के ब्राह्मणों ने द्वारका (काठियावाड़) में जाकर मीरां से चलने के लिए आग्रह किया। मीरां ने पिछले दिन याद कर वहाँ जाने को मना कर दिया। इस पर ब्राह्मणों ने धरना दे दिया। इस पर वह रणछोड़ जी से बिदा लेने के लिये मंदिर में गई। लेकिन वह फिर उस मंदिर से बाहर न निकली। कहते हैं कि वह जीवित ही सारूप्य मुक्ति को प्राप्त हुई। यह घटना वि० सं० १६२० (स० १५६३ ई०) तथा सं० १६२५ (सन् १५६८ ई०) के बीच की हो सकती है।

मीरां की मृत्यु को लेखक सं० १६०३ (सन् १५४६ ई०) के लगभग मानते हैं यह किसी प्रकार उचित नहीं। ऊपर की घटनाओं से यही ज्ञात होता है कि उसका देहान्त सं० १६२०-१६२५ के बीच ही हुआ। मीरां ने अपनी वृद्धावस्था के लिए कहा है:—

दरस दिवानी भई बावरी, डोली सबही देस।
मीरां दासी भई है पंडर, पलट्या काला केस॥

और—

अवधि बढ़ौती अजून न आये,
पंडर होइ गया केस।

यह हम कैसे मान सकते हैं कि उसके ४० वर्ष में ही काले केश सफ़ेद हो गये होंगे जब कि मीरां का जन्म वि० सं० १५६१ (सन् १५०४ ई०) में हुआ था। अतः मीरां अवश्य वृद्ध होने पर मरी होगी। जैसा कि उसके पदों से ज्ञात होता है।

यह भी प्रसिद्ध है कि मीरांबाई और गोस्वामी तुलसीदास में पत्र-व्यवहार हुआ था। मीरां से मिलने स्वयं बादशाह अकबर तथा संगीताचार्य तानसेन भी गये थे। हम इन बातों को स्वीकार नहीं करते। लेकिन इतना विश्वास अवश्य करते हैं कि इन पुरुषों की प्रसिद्धि का समय लगभग यही था। शायद कुछ मीरां के भक्तों ने इसी कारण यह बातें गढ़ ली हों। अकबर, तानसेन, तुलसीदास तथा मीरां वि० सं० १६२५ (सन् १५६८ ई०) के लगभग सर्वसाधारण की आँखों में आ ही गये थे। अतः बहुत संभव है कि यह असत्य बातें गढ़ी गई हों। यदि मीरां की मृत्यु वि० सं० १६०३ के लगभग मानते हैं तो ऐसी बातें गढ़ी जाना असम्भव है। उस वक्त तक अकबर ४ साल का बच्चा था तथा तुलसीदास एक सांसारिक जीव-मात्र थे। अतः मीरां की मृत्यु सं० १६२५ के लगभग ही हुई होगी।

मीरां के पदों की भाषा में गुजराती का बहुत कुछ मिश्रण है। यह मिश्रण उसका गुजरात में काफी समय तक रहना दर्शाता है। इसके बाद गुजरात में उसके नाम का घर-घर में प्रचार होना भी यही बताता है कि वह गुजरात में काफी वर्षों तक रही।

इन सब ऐतिहासिक घटनाओं की ओर दृष्टिपात करने पर हम इसी निश्चय पर पहुँचते हैं कि मीरां की मृत्यु वि० सं० १६२० और सं० १६२५ के बीच हुई होगी। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी उदयपुर दरबार की सम्मति से मीरांबाई का मृत्यु-काल सं० १६२० और सं० १६३० के बीच निश्चित किया है। मीरां की मृत्यु सं० १६३० (सन् १५७३ ई०) के लगभग इतिहास पर दृष्टिपात करने पर ठीक नहीं ज्ञात होती है। चित्तौड़ पर अकबर ने सं० १६२४ (सन् १५६८ ई०) में घेरा डाल दिया था। इसी घेरे में वीर जयमल चैत्र बदी १३ बुधवार (ता० २५ फरवरी) को वीरगति को प्राप्त हुआ तथा महाराणा उदयसिंह को चित्तौड़ छोड़कर भागना पड़ा। ऐतिहासिक क्षेत्र तब से चित्तौड़ के बदले उदयपुर हो गया। जहाँ के [illegible] में हम मीरां सम्बन्धी कोई समय [illegible] घटना नहीं पाते हैं। अतः मीरां [illegible] के जीते जी ही राणा उदयसिंह के [illegible] पर राज्य करते समय ही द्वारका से [illegible] गई। अतः हमारी समझ में उसका [illegible] काल वि० सं० १६२० से सं० १६२[illegible] मानना ज्यादा उचित है। राजपूताने [illegible] प्रसिद्ध इतिहासज्ञ ठाकुर अगरोज [illegible] गहलोत मीरां की मृत्यु वि० सं० १[illegible] चैत्र सुदी ३ मानते हैं। यह तिथि [illegible] किसी बही में देखने से ज्ञात हुई। [illegible] सम्भव है कि यह तिथि सं० १६[illegible] बदले सं० १६०५ लिखी गई हो। [illegible] यह लिपिकार की त्रुटि हो तो फिर यह [illegible] सन्देह नहीं रहता कि मीरां की मृत्यु [illegible] सं० १६२५ की चैत्र सुदी ३ (सन् १५६[illegible] ता० २ मार्च मंगलवार) को हुई। [illegible] प्रकार हम मीरां का मृत्यु समय सं० १[illegible] या सं० १६२५ के बीच मानना [illegible] समझते हैं।

[1]—ओझा; जोधपुर राज्य का इतिहास; पृष्ठ ३२५।

गीत

लेखक, श्री जगन्नाथ, एम० ए०

मैं तुम्हें भगवान् किस मुख से कहूँ?
मैं नहीं कहता कि तुम जीवन न देते
किन्तु देकर क्या उसे वापस न लेते?
मैं इसे वरदान किस मुख से कहूँ?
मैं नहीं कहता मरण जीवन नहीं है
किन्तु क्या जीवन मरण बन्धन नहीं है?
मैं इसे सम्मान किस मुख से कहूँ?
मैं नहीं कहता कि दुख न विकास देता
एक लेकिन दूसरे के प्राण लेता!
मैं इसे विज्ञान किस मुख से कहूँ?

हमारे उत्तमोत्तम प्रकाशन

श्रीमद्भागवत

सचित्र (दो जिल्दों में) मूल्य १५।-)

यह आचार्य शुकदेवजी का प्रसिद्ध ग्रन्थ है जिसका हिन्दू-समाज में बहुत आदर है। इसकी प्रशंसा करना सूर्य को दीपक से देखना है। इसकी बहुत माँग है।

सुकवि सोहनलाल द्विवेदी की अनुपम कृतियाँ

भैरवी २॥≡) कुणाल १।)
पूजागीत २) विषपान १)
बाँसुरी ॥।) शिशुभारती ॥।)
वासवदत्ता १॥)

ठाकुर गोपालशरणसिंहजी की काव्यकृतियाँ

सुमना २) संचिता ३)
मानवी २।-) माधवी २)
ज्योतिष्मती २।) कादम्बिनी २)

प्रवीण कवि श्यामनारायण पाण्डेय का खण्डकाव्य

हल्दीघाटी २॥।)

सुकवि हरदयालुसिंह जी की प्रमुख रचना

दैत्यवंश महाकाव्य ३।-)

आदि कवि महर्षि वाल्मीकि प्रणीत

हिन्दी वाल्मीकि रामायण सचित्र दो खण्डों में मूल्य प्रत्येक खण्ड का ६॥)

द्विवेदी-काव्यमाला

मूल्य ४)

स्वर्गीय आचार्य द्विवेदी जी की कविताओं का अपूर्व संग्रह

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तक

कामायनी-अनुशीलन

...प्रसाद' का महाकाव्य 'कामायनी' बहुत प्रसिद्ध है। पर यह सबकी ...में नहीं आता। इस पर अनेक समीक्षकों के विचार पत्रों में प्रकट हुए हैं। ...रूप का अनुशीलन इस पुस्तक में लेखक रामलालसिंह एम० ए०, बी० टी० ...लन में कामायनी का ऐतिहासिक तत्त्व, प्रकृति वर्णन, चरित्र-चित्रण, श्रद्धा, ...तथा भावाभिव्यक्ति, छंद विधान, रस संचार, कामायनी का मनस्तत्त्व, दार्श- ...पुष्ठ की अभिव्यक्ति, प्रेम-निरूपण आदि शीर्षकों में बड़ी मार्मिकता से किया है। ...कागज पर छपी कोई ढाई सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २)।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

आज आपने मेकलिन
दांत साफ़ किये हैं ?

...ही उचित तरीका है।

...ने मेकलिन पेराक्साइड टूथ पेस्ट ...किया नहीं हुआ है। यह प्रसिद्ध ...उन लोगों को अब भी प्राप्य ...स्वस्थ व स्वस्थ दाँतों का मूल्य ...प्रति रात्रि व सुबह प्रयोग ...मेकलिन आपके मुख व मसूड़ों को ...में रखती है।

सभी कैमिस्टों के पास व स्टोरों में मिलता है

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयां—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

रैक्सोना

चर्म-सौन्दर्य को पैदा करता है

... चर्म-स्वास्थ्य को सुरक्षित रखकर

क्योंकि रेक्सोना सक्रिय रूप से त्वचा के स्वास्थ्य को प्रोत्साहन देता है—उसके लावण्य का सच्चा आधार है—अतः त्वचा में सौन्दर्य उत्पन्न करने का उसका दावा वास्तविक है। विशिष्ट चर्म-विकार विरोधी **कैडिल** के साथ इसका रासायनिक संयोग है और रेक्सोना का शीघ्र उत्पन्न होनेवाला झाग, उक्त शुद्धिकारी **कैडिल** को रोम छिद्रों में पहुंचा देता है।

रेक्सोना एक पारिवारिक साबुन

परिवार रेक्सोना के विशिष्ट गुणों की प्रशंसा करेगा ..... महिलायें चर्म-सौन्दर्य में सक्रिय रूप से प्रभावशाली होने के कारण प्रशंसा करेंगी एवं पुरुष स्वस्थ त्वचा के पोषक महत्व के कारण। बालकों के लिये भी रेक्सोना से श्रेष्ठ साबुन और कोई नहीं है, रेक्सोना का रासायनिक झाग शरीर-दाह को शांति देता है तथा रगड़ और जलन से बचाता है। रेक्सोना पारिवारिक स्वास्थ्य का रक्षक है।

★ रेक्सोना में मिश्रित कैडिल विकार-विरोधी पोषक तैलों का विशिष्ट रसायन है, जिसका त्वचा के स्वास्थ्य पर शक्तिशाली प्रभाव पड़ता है।

रेक्सोना मरहम का प्रयोग कीजिए

जख्म के और रगड़ के घावों, खुजली, मुँहासों, फफोलों, दाद, मसों, तथा अन्य सभी त्वचा की कुरूपताओं पर रेक्सोना मरहम का प्रयोग कीजिए।

AP 29-302 HI

REXONA PROPRIETARY LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Estd. 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S. १०) H.M.B.S. १५) H.M.D.S. २५)। पुस्तक-अ० पारिवारिक १) बायोकेमिक १) १००० रेडलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्सनरियाँ १॥) आर्गेनन १), फार्माकोपिया १॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायँगी। डा० ख० माफ—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≡) ड्राम। आउन्स ॥) घरेलू बक्स ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.)

सभी दर्द

सारिडन

दुःखशामक टिकडियाँ

१० मिनटोमें दूर हो जाते हैं

नोक-झोंक

हिन्दी में हास्य-रस

का

मज़ेदार मासिक

वार्षिक मू० ३) रु०

एक प्रति ४ आ०

नमूने के लिये टिकट भेजें

एजेन्ट, कार्टूनिस्ट चाहिये

—नोक-झोंक, आगरा

जुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय

स्थापना १९२६

आरोंदा

१८६६

नीलगिरि तेल

हैजा, मलेरिया, फ्लुएंजा, टाइफाइड आदि बीमारियोंमें बचानेवाला

प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

श्वेतकुष्ट बनौषधि

महात्माप्रदत्त श्वेतकुष्ट (सफेदी) की दवा से तीन दिन में पूरा फ़ायदा। यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, विज्ञापनदाताओं की दवा से निराश हो चुके हों तो इसे लगाकर आराम होवें। १५ दिन की दवा का मूल्य २॥)।

सफेद बाल काला

इस तेल से बालों का पकना रुककर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दूना मूल्य वापसी की शर्त लिखा लें। यह तेल सिर के दर्द व सिर में चक्कर आना आदि को आराम कर आँख की रोशनी बढ़ाता है। एक-आध बाल पका हो तो २॥), आधा पका हो तो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मँगवा लें।

वैद्यराज अखिल किशोर राम

नं० ३७ पो० कतरीसराय (गया)

यह

टानिक

आपको प्रदान

करेगा . . .

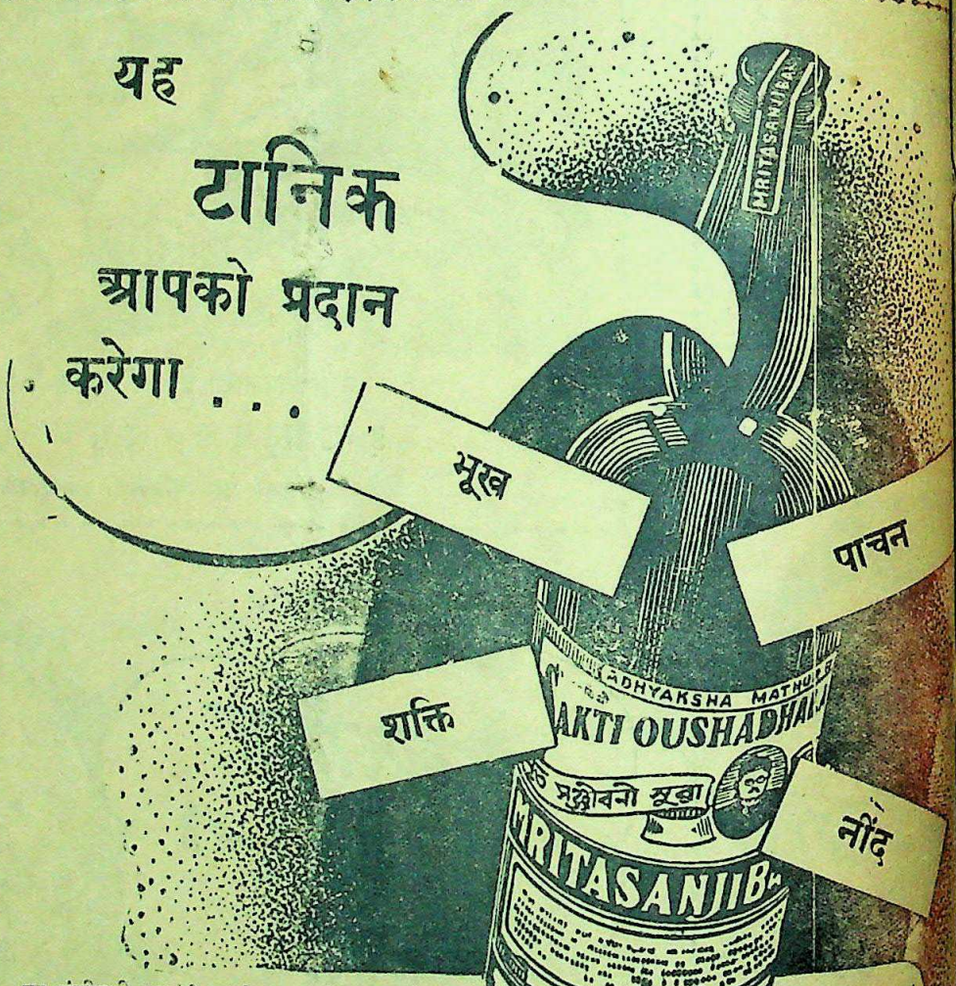

मृत संजीवनी सुरा की अचूक सफलता का यह रहस्य है। नष्ट हो चुके स्वास्थ्य का न केवल यह पुनर्निर्माण करती है, बल्कि भविष्य में भी अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखने की क्षमता रखती है, कारण इससे शरीर को वह अतिरिक्त शक्ति प्राप्त होती है, जो कमजोरी अथवा बीमारी से रक्षा करती है।

मृत संजीवनी सुरा ने पिछले चालीस साला से उन लाखों निराश स्त्री-पुरुषों को नवजीवन प्रदान किया है जिनका स्वास्थ्य बिगड़ चुका था और बिगड़े हुए स्वास्थ्य के शिकंजे से उन्हें छुड़ाया है। कमजोर, बीमार और स्वास्थ्यलाभ करने के इच्छुक व्यक्तियों तथा प्रसव के बाद स्त्रियों के लिए यह एक अचूक टानिक है—संक्षेप में यह सबके लिए लाभकारी टानिक है—अप्रतिम।

खरीदते समय माथुर बाबू का चित्र देखकर इतमीनान कर लीजिए और सावधानी से ये शब्द देख लीजिए—'शक्ति औषधालय की मृतसंजीवनी सुरा।' यह भी खयाल रखिए कि मृतसंजीवनी सुरा रङ्गहीन है—पानी की तरह।

SAKTI'S

MRITASANJIBANI

SURA

THE SYMBOL OF PURITY IN AYURVEDIC MEDICINES

अध्यक्ष माथुर बाबू का शक्ति औषधालय, ढाका

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा द्वारा प्रेस, लिमिटेड, १४ दलालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

वर्ष ८, संख्या ३४] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक रविवार, २१ अप्रैल, १९४६

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

मुस्लिम लीग के तीन सिपहसालार आजकल बड़े जोरों पर हैं। मिस्टर जिन्ना, सर फिरोज खाँ नून और बंगाल के सर सोहराबर्दी। इनके सिवा संयुक्त प्रान्त के मुस्लिम लीगर चौधरी खलीकुज्जमा साहब! मिस्टर जिन्ना तो सदा से अपनी लीला दिखाते आये हैं किन्तु मौक़े पर सर फिरोजखाँ नून और सोहराबर्दी ने भी अपनी कलाबाजी दिखाने में कोरकसर नहीं उठा रखी। अभी हाल में दिल्ली में मुस्लिम लीग कन्वेशन का एक नाटक हुआ था। इसी नाटक में सर फिरोज खाँ तथा सोहराबर्दी ने अपना अभिनय दिखाया था। सर फिरोज खाँ ने तो चंगेज खाँ को बुलाने की धौंस दे डाली है और श्री सोहराबर्दी ने रूस की मदद से पाकिस्तान बनाने का हौसला प्रगट किया है। अपने राम को यह जानकर निहायत खुशी हुई कि मुस्लिम लीग के नवाबों में न तो खुद का दम है और न वह जुर्रत है नहीं तो चंगेज खाँ को और रूस को बुलाने की कौन सी जरूरत थी? अब अँगरेज ही पाकिस्तान न कायम करा सकेंगे तो रूस यहाँ आकर क्या भुना लेगा? रूस तो यों ही समाजवादी है, इन नवाबों के बीच में आकर वह क्या करेगा? रह गये, चौधरी खलीकुज्जमा साहब। सो अपने राम तो सिर्फ यही कह सकते हैं कि बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ छोटे मियाँ सुभान-अल्लाह! पाकिस्तान बने भी तो किसी तरह। कोई आये भी तो पाकिस्तान बनाने। अपने राम रोज सवेरे उठकर इंतजार करते हैं, और खासकर उस वक्त से जब मुर्गा कुकुड़ूं कूँ की बांग देने लगता है।

[illegible] भारतीय महिला सम्मेलन की सभानेत्री [illegible] मेहता ब्रिटिश मंत्रिदल से बातें करके वापस लौटा रही हैं।

* * *

दक्षिणी अफ़्रीका के जनरल स्मट्स आजकल सठिया गये हैं। वह वहाँ के भारतीयों के विरुद्ध काला बिल पास कराने पर तुले बैठे हैं। क्यों न हो, फील्डमार्शल जो ठहरे और ब्रिटेन के काबिल एजेंट! दक्षिणी अफ़्रीका के गोरों का कहना है कि भारतीय यहाँ से चले जायें! जरूर चले जायेंगे, क्योंकि अब हलुआ खाने का वक्त आ गया है न? ऐसा न हो हलुआ में भारतीय साझीदार बन बैठें? अपने राम की राय में अफ़्रीका के गोरों की वहाँ कौन सी बपौती रखी है? वह अपने मुल्क क्यों नहीं लौट जाते? दक्षिणी अफ़्रीका ऐसे जंगल प्रधान देश में भारतीय मजदूरों ने सड़क बनाई, मकान बनाये, उसे हराभरा बनाया, मामला ठीक हो गया, तो मजा करें गोरे लोग और भारतीय वहाँ से चलते बने। क्या खूब! कहावत है कि मौज उड़ाये गाजी मियाँ और धक्का सहें मुजावर। अफ़्रीका के गोरे इस वक्त गाजी मियाँ का पार्ट अदा कर रहे हैं और भारतीयों को मुजावरी मिल जाना गुनाह समझ रहे हैं। लेकिन वह दिन आनेवाला है जब गोरे गाजीमियों को भी वहाँ से बोरिया-बिस्तर बाँधना पड़ेगा। आज पास कर लें बिल। लेकिन कल जब वहाँ के भारतीय उन्हें 'भारत छोड़ो' का बिल्ला देंगे तब वह किस की दुहाई देंगे?

* * *

ब्रिटेन के फ़्रेनरब्राकवे ने कहा है कि ब्रिटिश सरकार ने लार्ड पेथिक लारेंस, सर स्टेफर्ड क्रिप्स और एलिकजेंडर को यह हिदायत दी है कि वह इस बार भारतीयों से समझौता करके ही वापस लौटें। अपने राम की समझ में भी यह आता है कि ब्रिटिश सरकार इस बार जरूर समझौते के लिए मारी-मारी फिर रही है। पेंच यह है कि हिन्दुस्तान में फ़ौजी भी अब स्वराज्य माँगने लगे हैं, दूसरा पेंच है, ब्रिटेन से अमरीका और रूस हर मामलों में नम्बर मारे जा रहे हैं और तीसरा पेंच जो है वह तो सभी का नगड़दादा है। वह यह कि ब्रिटेन के लिए आखिर दुनिया में व्यापार के लिए कोई बाजार भी तो रहे! अमरीका और रूस तो सारी दुनिया दाब लेना चाहते हैं, इसलिए अगर हिन्दुस्तान को सुराज न मिला और कहीं हिन्दुस्तानियों ने 'बाईकाट' का भोंपू बजाया तब तो लेने के देने पड़ेंगे। इसलिए अपने राम जानते हैं कि अँगरेज समझौता करने पर जरूर उतारू हैं। उतारू होना ही चाहिए। वह राजनीतिज्ञ क्या जो बना बनाया खेल बिगाड़ लें? आखिर इंगलैंड भी तो कहीं रहे? अमरीका और रूस तो यों ही अपनी खिचड़ी पका रहे हैं इसलिये इंगलैंड क्या करे? लड़ाई के कारण ब्रिटेन उजड़ चुका है, सारा व्यापार मटियामेट हो चुका है, इसलिए ४० करोड़ जनता का देश इंगलैंड को न आबाद करेगा तो कौन करेगा? ऐसी सूरत में ब्रिटिश मंत्रिदल यदि समझौते के लिए व्याकुल हो तो क्या बेजा? बुद्धिमान वह जो आगाह सोचकर काम करता है, मूर्ख वह जो बने बनाये काम को चौपट कर देता है। फिर ब्रिटेन बुद्धि का अवतार तो है ही, इससे कौन इनकार कर सकता है?

कहा जाता है कि नेता जी देशगौरव श्री सुभाषचन्द्र बोस अभी जिन्दा हैं। कोई कहता है भारत में हैं और छः महीने में प्रगट होंगे, कोई कहता है कि रूस में हैं और वहाँ एक पल्टन तैयार कर रहे हैं। पहले तो बड़ी-बड़ी खबरें उड़ीं कि वह स्वर्गवासी हो गये, टोकियो-रेडियो ने तो पहले ही एलान कर दिया कि हवाई जहाज के टकरा जाने से वह स्वर्गवासी हो गये। किन्तु महात्मा गांधी ने जब से यह कहा कि वह अभी कहीं छिपे हुए हैं, स्वर्गीय नहीं हुए

सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री जयप्रकाश नारायण जेल से बाहर आ गये हैं। अब आप भारतीय समाजवादी दल का संगठन करने जा रहे हैं।

हैं, तब से हवा बदली है और अब सभी कह रहे हैं कि वह जीवित हैं। अपने राम का भी ब्रह्म बोलता है कि नेता जी अभी जिन्दा हैं, उनका मरना कोई हँसी खेल नहीं है। सचमुच यदि नेता जी आज भारत आ जाएँ तो एकबार हड़कम्प तो मच जाय। लेकिन एक ज्योतिषी ने एक दिन फरमाया कि केन्द्रीय सरकार जब भारतीयों के हाथों में आ जाएगी तो नेता जी प्रगट होंगे। आजाद हिन्द फ़ौजी तो अब छूटनेवाले हैं, रह गये नेता जी वह तो वक्त पर आयेंगे ही। नेता जी जीवित हैं इससे भारतीय राजनीति में एक हुकुर-दुकुर तो मच गई है, इसलिए आने पर क्या होगा इसे भगवान जानें।

* * *

प्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री जय प्रकाश नारायण, डाक्टर राममनोहर लोहिया और श्री अच्युत परवर्द्धन आदि जेल से छूटकर आ गये। कांग्रेस सरकारें तथा महात्मा गांधी इसके लिए बधाई के पात्र हैं। अच्युत पटवर्द्धन ने कहा है कि समाजवादी कांग्रेस में विरोधी पार्टी के रूप में रहेंगे, किन्तु रहेंगे वह कांग्रेसवादी।

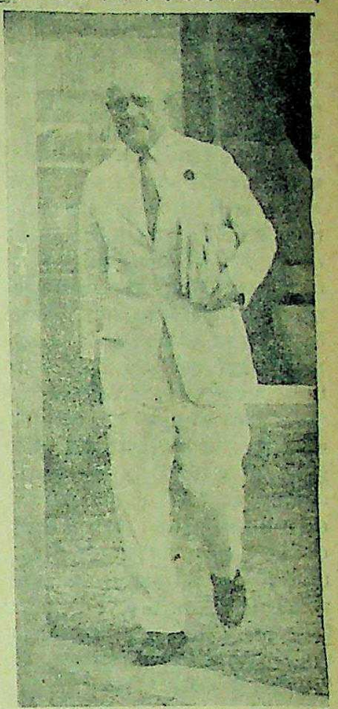

वाइसराय लार्ड वेवेल प्रतिदिन कागजातों को बगल में दबाये मंत्रिदल और देश के नेताओं के बीच होनेवाली वार्ताओं में सम्मिलित होते हैं।

अपने राम नहीं समझ पाये हैं कि समाजवादी पक्के कांग्रेसमैन और विरोधी भी बने रहेंगे यह कैसी बेतुकी है? क्या किया जाय भाई यह तो राजनीति है? इस क्षेत्र में सब कुछ हो सकता है और एक-एक वक्तव्य के सवा लाख अर्थ भी हो सकते हैं।

* * *

प्रेसिडेंट ट्रूमन ने कहा है कि हमें इतनी सेना रखनी चाहिए जिससे अमरीका संसार में शान्ति स्थापना के कार्य का नेतृत्व कर सके। बात तो सोलह आना ठीक है। संसार में शान्ति स्थापना शस्त्रों से नहीं होती है तो क्या अहिंसा से? ब्रिटेन और अमरीका ने जब अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग किया खासकर 'एटम बम' का तभी तो जापान पराजित हुआ और संसार में शान्ति की स्थापना हुई? साम्राज्यवादी तो जबानी जमा खर्च में खून खराबे के विरोधी हैं और शान्ति स्थापना में तो उनके मुकाबले में कोई है ही नहीं किन्तु जहाँ उनके स्वार्थों पर आंच आई कि वह अस्त्र-शस्त्रों से ही शान्ति स्थापित करते हैं। अमरीका, ब्रिटेन, रूस मित्रराष्ट्र हैं, शान्ति के पुजारी हैं किन्तु स्वार्थों के डूबने के मौक़े पर भला वह तलवार म्यान में कैसे रख सकेंगे? प्रेसिडेंट ट्रूमन जैसे हैं ठीक उनका भाषण भी वैसा ही चौकस है।

* * *

पेरिस में विभिन्न राष्ट्रों के वैदेशिक सचिव फिर इकट्ठे होकर दंगल करनेवाले हैं। एकबार इंगलैंड में भी वैदेशिक मंत्रियों के सम्मेलन का नाटक हुआ था। बेबिल और मोलोटोव ने अच्छा खासा अभिनय किया था। इस बार पेरिस में देखना है कि किन राष्ट्रों के वैदेशिक मंत्रियों का और कैसा अभिनय होता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

क्या समझौता होगा ?

ब्रिटिश मंत्रिमंडल इस समय भारतीय राजनैतिक दलों में समझौता कराने के लिए प्रयत्नशील है, कांग्रेस नेताओं तथा अन्य दलों के नेताओं से मंत्रिदल भेंट कर चुका है और भविष्य में भी वह पुन विचार-विनियम के लिए इरादा रखता है। अब तक होनेवाली वार्ताओं और नेताओं के वक्तव्यों से स्पष्ट है कि इस वक्त केवल मुस्लिम लीग ही एक ऐसी जमात है जिसके कारण बाधायें उपस्थित हो रही हैं और यदि समझौते का अंत हुआ तो जिम्मेदारी लीग और उसके विधाताओं के ही सिर मढ़ी जायेगी। अब तक यह आशा की जा रही थी कि नरेन्द्र-मंडल भी लीग की ही भाँति अड़ंगा उत्पन्न करेगा किन्तु अभी समझौते के मोर्चे पर केवल मुस्लिम लीग ही जूझने के लिए अग्रसर होकर खड़ी है। इस प्रकार जनता, सरकार तथा समझौते के लिए उत्सुक भारत का बहुमत यह भली-भाँति समझ गया है कि लीग ही एक ऐसी जमात है, जो सदा से राष्ट्रीय स्वाधीनता के मार्ग में बाधक बनती आई है और आज भी वही बाधक बन रही है। जहाँ तक कांग्रेस का प्रश्न है, वह पूर्णतया समझौते के लिए उत्सुक है और पूरी तरह से उद्योगशील भी है। वह मुस्लिम लीग को हर प्रकार से सन्तुष्ट करने की चेष्टा भी कर रही है। इसलिए समझौते की असफलता की जिम्मेदारी से कांग्रेस बरी है।

हां, अब यह स्पष्ट हो चुका है और कांग्रेस नेताओं ने स्पष्ट घोषित कर दिया है कि पाकिस्तान के नाम पर भारत का विभाजन नहीं हो सकता। इस सिद्धान्त को कांग्रेस ही नहीं, भारत का प्रत्येक राजनीतिक दल स्वीकार करता है। यदि इसके अंतिम निर्णय के लिए राष्ट्र का मत लिया जाय तो सचमुच बहुमत अखंड भारत के पक्ष में ही होगा। किन्तु हठवाद के सामने किसी का कोई वश नहीं। यह किसे नहीं मालूम है कि इस देश का शासक ब्रिटेन है? वह यदि भारत को आजादी देना चाहता है तो समझौते की सूरत भी वही निकाल सकता है। जो मुस्लिम लीग सदा से ब्रिटिश सरकार की हिमायत करती रही और उसके द्वारा प्रोत्साहित होती रही वही आज सरकार के विरुद्ध खड़गहस्त होकर युद्ध करने पर आमादा हो जाये, यह जरा कुछ बेतुकी सी बात जान पड़ती है। क्या नवाबों तथा जिमींदारों के इस दल ने आज तक राष्ट्र के लिए किसी प्रकार का त्याग किया है? जिस वक्त राष्ट्र के कर्णधार जेलों में विराजमान थे, उस वक्त लीग के नेता कहाँ थे? उस वक्त उन्होंने 'पाकिस्तान' का फैसला क्यों नहीं करवा लिया? किन्तु ब्रिटेन बेवकूफ़ नहीं है। भले ही वह मुस्लिम लीग को अपने हाथ का खिलौना बनाये रहे किन्तु वह उन्हें 'पाकिस्तान' दे देगा, ऐसा हम नहीं समझते। फिर यदि अँगरेज एक बार ऐसा चाहे भी तो राष्ट्रीय जनता का बहुमत कब इस निर्णय को मानने लगेगा? पाकिस्तान के विरोधी आज लाखों मुसलमान भी हैं। वह लाखों मुसलमान पाकिस्तान क़ायम होने पर क्या अछूत की भाँति समझे जायेंगे? इसके सिवा गत चुनाव ने तो यह साफ ही कर दिया है कि जब मुस्लिम लीग प्रत्येक प्रान्त में मुस्लिम सीटों पर अधिकार नहीं कर पाई है तब फिर वह अपने को समस्त भारत के मुसलमानों का प्रतिनिधि क्यों समझती है? यदि 'पाकिस्तान' की स्वीकृति होती है तो भारत के अन्य अल्पसंख्यक दलों की माँगों की अवहेलना कैसे की जा सकेगी? यदि पंजाब के सिक्ख 'सिक्खिस्तान' की माँग करें तो क्या बेजा है? तात्पर्य यह है कि देश के बँटवारे से राष्ट्रीय एकता के मार्ग में जो बाधा उत्पन्न होगी वह समस्त राष्ट्र के लिए अहितकर सिद्ध होगी, इसमें तनिक भी संदेह नहीं।

ऐसी परिस्थिति में ब्रिटिश मंत्रि-मंडल की जिम्मेदारी बहुत बढ़ जाती है। हम तो स्पष्ट रूप से कहते आये हैं और आज भी कहते हैं कि यदि ब्रिटेन सचमुच भारत को स्वतंत्रता प्रदान करने का इच्छुक है, वह केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना करने पर आमादा है और भावी विधान-समिति का निर्माण करने के लिए उद्योगशील है, तो उसके मार्ग में मुस्लिम लीग बाधक सिद्ध नहीं हो सकती। क्योंकि यदि वह बाधक बनी तो ब्रिटेन के विरोध में कितने दिन टिक सकेगी? नवाबों की यह टोली कहाँ जायगी? हां, यदि ब्रिटिश मंत्रिमंडल के अंतर में कुछ और है और बाहर कुछ और—यद्यपि हम अभी ऐसा नहीं समझते—तब बात दूसरी है। तब मिस्टर जिन्ना अपना नाटक पूर्ण रूप से करते ही जायेंगे। उन्हें भय किसका है? यदि मंत्रिदल वास्तव में कुछ करना चाहता है तो अंतिम निर्णय उसका ही होगा। क्योंकि लीग अँगरेज की इच्छापूर्ति करने में समर्थ है बनिस्बत भारतीय राष्ट्रवादियों तथा कांग्रेस की। इसी प्रकार देशी रियासतों के राजा-महाराजा भी अपने भाग्य का निर्णय ब्रिटेन को सौंपते हुए परेशान न होंगे। वह भी अंत में ब्रिटिश-निर्णय को स्वीकार करेंगे। मुस्लिम लीग के नवाबों की टोली और नरेन्द्रमंडल के राजा साहबान यह भली भाँति जानते हैं कि ब्रिटेन जो भी फैसला देगा वह उनके लिए हितकर ही होगा, हानिकारक सिद्ध न होगा।

अंत में जो कुछ भी निर्णय हो किन्तु यह ठीक है कि राष्ट्र का बँटवारा कदापि न होना चाहिए। सिंध, सीमाप्रान्त, पंजाब और बंगाल की जनता की आवाज गत चुनाव में स्पष्ट हो चुकी है। कांग्रेस प्रेसीडेंट मौलाना अबुल कलाम आजाद ने कांग्रेस वर्किंग कमेटी के जो चार मौलिक सिद्धान्त प्रस्तुत किये हैं वह वास्तव में विचारणीय हैं। (१) पूर्ण स्वाधीनता-(२) संयुक्त भारत, (३) एक संघ-... जिसमें प्रान्त पूर्णतया स्वाधीन रहें... संघ-शासन में बचे-बचाये अधिकार... और (४) केन्द्रीय मामलों के दो... जिसमें एक अनिवार्य और दूसरा... लिपक रहेगा। हम समझते हैं कि कांग्रेस... नीति राष्ट्रीय एकता के अनुकूल है... वह जिस मार्ग की ओर अग्रसर हो रही... वह भारतीय एकता को अक्षुण्ण... रखने में सफल है। क्या हम आशा करें... मंत्रिदल समस्त मतभेदों को दूर... राष्ट्रीय एकता की स्थापना में... होगा और राष्ट्रीय स्वाधीनता की... की पूर्ति में पूर्ण सहयोग देगा?

गीत

लेखक, श्री श्रीपालसिंह 'क्षेम'

रुदन क्या है, गान क्या है!
मृत्यु का यदि यान जीवन तो अमृत की तान क्या है?
पीतिमा के साथ मधुबन की जवानी ढल गई यदि,
शीत हिम पर सुरभि की कोमल कहानी जल गई यदि,
सृष्टि यदि पतझार, किशलय की मृदुल मुसकान क्या है?
यदि प्रतीची के क्षितिज पर बल उठा दिन का तराना,
यामिनी को चिर प्रतीक्षा में मिला दीपक जलाना,
है तिमिर की साँझ जीवन, किन्तु स्वर्ण-विहान क्या है?
यदि पपीहे की अतृप्त पुकार का इतिहास जीवन,
सलज कलियों के अधर पर सूखता-सा हास जीवन,
अचिर जीवन, किन्तु चिर-स्वर का अमर अभिमान क्या है?
दूर मेघों से लटकती यदि शिखी की आश जीवन,
चन्द्र-किरणों में बँधी यदि कोकिनी की प्यास जीवन,
प्यास का यदि शाप जीवन तृप्ति का वरदान क्या है?
प्रगति में यह गति न हो जाय कहीं पाषाण निश्चल,
बन न जाये आग अधरों पर मधुर मुसकान जल-जल,
श्वाँस की झंकार पर फिर एक रस का मान क्या है?

केवल ७) रु० में ५ घड़ियाँ

३ डमी रिस्टवाच और २ म्यूट रिस्टवाच

फ़ैन्सी न्यू गोल्ड के सुन्दर आभूषणों को सुप्रसिद्ध बनाने के लिए कम्पनी ने अपने ग्राहकों को उपरोक्त घड़ियाँ बिना मूल्य देने का निश्चय किया है। ४ जोड़े चूड़ियाँ डायमेंड कट, दो अँगूठियाँ बाम्बे फ़ैशन, एक जोड़ा टाप्स, एक लौकट चेन तथा २५ सुन्दर उपहार, ५ घड़ियाँ सहित डब्बे में बन्द, केवल ७) रु० में। पैकिंग व डाक व्यय आदि १।–) अलग।

गारंटी—पसन्द न आने पर मूल्य वापस। शीघ्रता कीजिये, ऐसे अवसर कभी कभी आते हैं। अपना पता सुवाच्य अक्षरों में लिखें।

फ़ैन्सी न्यू गोल्ड औरनामैंट्स हाउस
पोस्ट बाक्स ९६ (D.D.A.) अमृतसर (पंजाब)

आप के दांतों को बाहर, भीतर, और बीच से स्वच्छ करता है

अब दुकानों पर मिलता है—

- यह जल—अभेद्य और नमी—विरोधक है।
- विकार—विरोधी शीशे में बंद।
- वर्ष भर की गारंटी.... ....अधिक टिकाऊ
- दांतों को स्वच्छ व चमकीला करने में ६० प्रतिशत अधिक प्रभावशाली।

पशुओं के बालों से रहित

वितरक: एल० डी सेमूर एंड कं० (इंडिया) लि०, ४६ बरवा तला स्ट्रीट, कलकत्ता।

डा. वेस्ट्स टूथ ब्रुश और टूथ पेस्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा का पद प्राप्त हो चुका है

राष्ट्रभाषा का स्वरूप वही होगा जिसमें भारत के निवासी सुगमता से अपने विचारों को व्यक्त कर सकेंगे

संयुक्तप्रांतीय हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के सभापति डाक्टर अमरनाथ झा का भाषण

पहले प्रांतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति पंडित अमरनाथ झा।

प्रांतीय सरकार के शिक्षा-मन्त्री श्री संपूर्णानंद ने सम्मेलन का उद्घाटन किया है।

शिकोहाबाद (मैनपुरी) में संयुक्त-प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के छठवें अधिवेशन के सभापति प्रयाग विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर तथा सुप्रसिद्ध विद्वान् डाक्टर अमरनाथ झा का भाषण यहाँ दिया जाता है। भाषण में डाक्टर झा ने राष्ट्रभाषा हिन्दी की स्थिति को बड़ी निर्भीकता से स्पष्ट किया है साथ ही साहित्य-निर्माण तथा प्रचार-कार्य के लिए भी कुछ सुझाव प्रस्तुत किये हैं। भाषण अत्यन्त सामयिक, और साहित्य तथा राष्ट्रभाषा की दृष्टि से विचारणीय है।

सज्जनो!

सभापति का स्थान मुझे देकर सम्मेलन के अधिकारियों ने मेरा सम्मान किया है, मैं उनका आभारी हूँ। राष्ट्रभाषा की जो कुछ सेवा मैं कर सकूँगा उसमें आपके सहयोग की आवश्यकता है। आपके उद्यम, आपके उत्साह, आपकी कार्यपटुता पर राष्ट्रभाषा की उन्नति निर्भर है। इस प्रान्त में राष्ट्रभाषा का प्रश्न कठिन नहीं है, यहाँ की भाषा तो हिन्दी है ही। परन्तु यहाँ की मातृभाषा हिन्दी है इस कारण से राष्ट्रभाषा और अन्य प्रान्त की भाषाओं के प्रति आपका कर्त्तव्य उत्तरदायित्वपूर्ण है।

हिन्दी-जगत् में जनपदीय भाषाओं के सम्बन्ध में बहुधा चरचा हुआ करती है। भारतवर्ष एक बहुत बड़ा देश है और इसमें अनेक भाषायें सदा से प्रचलित हैं। इन भाषाओं का रहना और इन सबका हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानना महत्त्व की बात है। कई भाषाएँ तो संस्कृत से अपनी तुलना करती हैं। कई में उच्च कोटि का साहित्य है। सैकड़ों वर्ष से इनमें साहित्य की रचना होती आई है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की नीति प्रान्तीय भाषाओं के विरुद्ध नहीं है। परन्तु विवाद यों खड़ा हुआ है कि हिन्दी की कुछ सन्निकट भाषाएँ हैं जिनसे स्वतंत्र्य की आशङ्का होती है। पूछा जाता है कि क्या बुन्देलखंडी, अवधी, राजस्थानी, ब्रजभाषा हिन्दी से भिन्न हैं और क्या इनके प्रोत्साहन से हिन्दी की क्षति नहीं होगी? इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर यह है कि प्रत्येक व्यक्ति का यह जन्मसिद्ध अधिकार है कि वह अपनी मातृभाषा का अध्ययन करे और इसी में उसकी प्रारम्भिक शिक्षा हो। मातृभाषा प्रारम्भिक शिक्षा का माध्यम हो इस विचार से सभी शिक्षक सहमत होंगा। बालक की शिक्षा-प्रणाली में इस सुधार की सबसे बड़ी आवश्यकता है। प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने पर किस भाषा-द्वारा शिक्षण हो यह प्रश्न दूसरा है। मेरी सम्मति यह है कि हिन्दी प्रान्तों में हिन्दी--राष्ट्रभाषा के रूप में--शिक्षा का माध्यम हो। प्रारम्भिक शिक्षा मातृभाषा द्वारा पा लेने पर विद्यार्थी को राष्ट्रभाषा हिन्दी अथवा राष्ट्रभाषा द्वारा सीखने में कठिनता नहीं होगी। इस पद्धति से मातृभाषाओं की रक्षा साथ-साथ राष्ट्रभाषा का भी हित है। किसी प्रान्त के निवासी के मन में यह आशंका उत्पन्न न होगी कि उसकी मातृभाषा का लोप होनेवाला है। और इनमें से कई भाषाएँ तो ऐसी हैं जिनमें अच्छा अच्छा साहित्य भी है। हिन्दी का जो अब रूप प्रचलित है वह कुछ थोड़े भाग को छोड़कर कहीं के निवासियों की मातृभाषा नहीं है। परन्तु साहित्यिक और राजनीतिक क्षेत्र में यह इतना व्यवहार में है, सत्तर वर्ष से इसका इतना प्रचार हो गया है, इसकी भारतवर्ष की भाषाओं में इतनी प्रतिष्ठा हो गई है कि इसको सहज ही राष्ट्रभाषा का पद मिल गया है। राष्ट्रभाषा में ही दूसरी और उच्च श्रेणी की शिक्षा होनी चाहिए, परन्तु साथ ही अन्य भाषाओं में भी साहित्य-रचना होती रहे यह वांछनीय है। उदाहरण रूप में, ब्रज-साहित्य इतना सुन्दर है और ब्रजभाषा इतनी मधुर है कि इस साहित्य का भविष्य में अस्तित्व ही न रहे इसको कौन साहित्य-प्रेमी कहेगा? हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का कर्त्तव्य है कि इस साहित्य और इसी भाँति और साहित्य की भी उन्नति में सचेष्ट रहे।

अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन के सभापति डाक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी।

राष्ट्रभाषा हिन्दी का स्वरूप वही होगा जिसमें समस्त भारतवर्ष के निवासी सुगमता से अपने विचारों को व्यक्त कर सकेंगे। इस देश की मुख्य भाषाओं में संस्कृति शब्दों का बाहुल्य है और संस्कृत मयी हिन्दी को ही सब प्रान्त के रहनेवाले अपनायेंगे। रही समस्या उर्दू की, यह समस्या तो केवल संयुक्तप्रान्त और पंजाब की समस्या है और यहाँ भी शहरों तक ही सीमित है। देहातों में तो सबकी बोली एक ही है। यहाँ यह कहना अनुचित होगा कि जहाँ तक सम्भव हो प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति हिन्दी और उर्दू दोनों पढ़े। उर्दू का साहित्य अच्छा है, उर्दू भाषा अच्छी है। उर्दू का ज्ञान होना उपकारक सिद्ध होगा। उर्दू एक बहुसंख्यक समाज की भाषा है। हिन्दी और उर्दू के ज्ञान से दोनों भाषाओं की वृद्धि हो सकती है। परन्तु यद्यपि प्रारम्भिक काल में उर्दू इस देश की यथार्थ भाषा थी और उर्दू के आदि कवियों ने इस देश की संस्कृति सुरक्षित करने का प्रयास किया था, खेद के साथ कहना पड़ता है कि कालक्रम से उर्दू केवल फ़ारसी का एक अङ्ग हो गई और उर्दू साहित्य में भारतीय जीवन और भारतीय संस्कृति की कहीं झलक नहीं आती है। फिर भी उर्दू को भी उन्नति करने का अधिकार है और इसकी गति को रोकना अनुचित है। हम इसकी समृद्धि चाहते हैं, हम चाहते हैं कि यह भी फूले-फले। उर्दू से हमें द्वेष नहीं है। किसी साहित्य रसिक को किसी भाषा अथवा साहित्य से द्वेष नहीं रह सकता है।

रही बात "हिन्दुस्तानी" की। यह कौन भाषा है, कहाँ की है, किसकी है? इसका साहित्य कहाँ है? इस भाषा में कौन लिखता है? अर्थशास्त्र, राजनीति, विज्ञान, दर्शन, इत्यादि विषयों पर ग्रन्थ किस भाषा में लिखे जाते हैं। हिन्दुस्तानी के गढ़ने का प्रयोजन क्या है? प्रचलित भाषाओं को विकृत करना कौन-सी बुद्धिमत्ता है? क्या हिन्दुस्तानी में भावुकता आ सकती है? क्या इसमें गूढ़ विषयों को व्यक्त करने की क्षमता है? हिन्दुस्तानी के जो थोड़े से उदाहरण हम देख सके हैं उसको तो भद्दी उर्दू कहने में हमको संकोच नहीं है। उर्दू के वाक्य में हिन्दी के एक दो शब्द रख देना भाषाशैली के साथ परिहास करना है। हिन्दुस्तानी आन्दोलन से हिन्दी-संसार तो असन्तुष्ट है ही, उर्दू जगत् भी तो प्रसन्न नहीं है। उचित यही है कि हिन्दी और उर्दू दोनों की गति अविरुद्ध रहे।

हिन्दी सम्मेलन का कर्त्तव्य स्पष्ट है--हिन्दी-भाषा का प्रचार करना और साहित्य की अभिवृद्धि। अन्य भाषाओं के प्रति उसको स्नेह है, सम्मान है। किसी से उसका विरोध नहीं है, किसी के उन्नति के मार्ग में बाधा नहीं डालती है। हिन्दी का प्रचार अब तक अच्छा हुआ है, परन्तु और अधिक यत्न अपेक्षित है। समाचारपत्रों और मासिक-पत्रों को सहायता और मिलनी चाहिए। इनकी ग्राहक-संख्या पर्याप्त नहीं है; हिन्दी पढ़नेवालों को चाहिए कि हिन्दी पत्रों के ग्राहक बनें। साथ ही पत्रों के संचालकों का कर्त्तव्य है कि वे अपने पत्रों को इस योग्य बनावें कि किसी और भाषा के पत्रों के पढ़ने की आवश्यकता न रहे। हिन्दी के बहुत कम दैनिक पत्र ऐसे हैं जिनमें समस्त संसार के समाचार उसी दिन छपते हों जिस दिन अँगरेजी पत्रों में उनका प्रकाशन होता है। समाचारपत्रों की भाषा में भी संशोधन होना चाहिए। सरल से सरल भाषा का इनमें प्रयोग होना चाहिए, सर्वसाधारण जिसे समझ सके, जनता जिससे प्रभावित हो सके। अँगरेजी शब्दों और वाक्यों का अविकल अनुवाद बहुधा हास्यास्पद होता है। उदाहरणार्थ, इस वाक्य को लीजिए--"दिल्ली के ग्वालों ने असेम्बली भवन के सामने प्रदर्शन किया।" अथवा "कामायिनी--एक अध्ययन।" "उस दिन राष्ट्रपति ने बताया"--इन शब्दों से एक लेख आरम्भ किया गया है, किस दिन? इस प्रकार का अनुवाद अनावश्यक है। फिर, पत्रों में पढ़ने की सामग्री और होनी चाहिए। रुचि भिन्न है और अनेक रुचियों की तुष्टि पर ध्यान देना उचित है। सम्पादकों को यह भी चाहिए कि अश्लील विज्ञापनों को प्रकाशित न करें। और जहाँ तक सम्भव हो संवाददाता ऐसे नियुक्त करें जो विश्वसनीय हों और यथाशक्ति पक्षपात रहित हो। हिन्दी प्रचार का एक प्रधान अंग यह भी है कि प्रत्येक विषय पर प्रत्येक श्रेणी के विद्यार्थियों के उपयुक्त ग्रन्थ लिखे जायें। पुस्तकों के प्रणेताओं को उचित पारिश्रमिक मिलना चाहिए। अब समय आ गया है कि मौलिक पुस्तकों की रचना हो, अनुवादों से काम नहीं चल सकता है। ग्रन्थों के प्रकाशित हो जाने पर उच्च कोटि की शिक्षा भी हिन्दी द्वारा दी जा सकेगी। इसका ध्यान रहे कि उर्दू में भी इस प्रान्त में शिक्षा दी जाएगी और एक ही विषय का अध्यापन दो भाषाओं में, भिन्न-भिन्न कक्षाओं में, करना पड़ेगा। सम्भव है कुछ विद्यार्थियों के लिए कुछ दिनों तक अँगरेजी का भी सहारा लेना पड़े। इन सबसे व्यय बढ़ जाने की सम्भावना है, परन्तु देशीय भाषा में शिक्षा से लाभ इतना होगा कि यह व्यय खलना नहीं चाहिए। विश्वविद्यालयों और अन्य साहित्यिक संस्थाओं को आपस

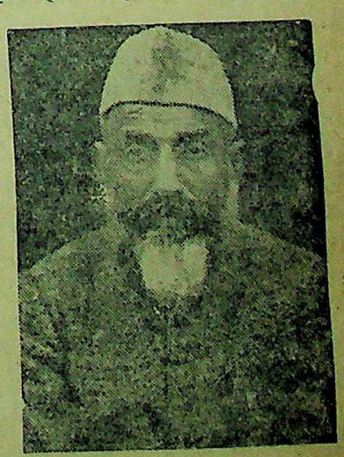

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के विधाता माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति पंडित माखनलाल चतुर्वेदी।

में मिलकर पारिभाषिक शब्दावली प्रकाशित करनी चाहिए और ऐसे विषयों पर ग्रन्थ लिखवाने चाहिए जिनका उपयोग शिक्षा-विभाग कर सके।

बहुधा देखा जाता है कि हम यदि अँगरेज से मिलते हैं तो अँगरेजी में उससे बात करते हैं, रावलपिंडी के निवासी से मिलते हैं तो उर्दू में बात करते हैं; परन्तु बंगाल, महाराष्ट्र अथवा गुजरात प्रान्त के रहनेवालों से बंगाली, मराठी अथवा गुजराती में बात नहीं करते हैं। अँगरेज हमें "गुड मॉर्निङ्ग" कहता है, उर्दूवाले 'सलाम बाले कुम' अथवा "आदाबअर्ज" कहते हैं, परन्तु हम इन्हें 'नमस्कार' वा 'नमस्ते' कहते हिचकते हैं। हम "पंडित साहब" कहे जाते हैं, पर हमें "मौलवी जी" कहते सकोच होता है। हम अपनी भाषा के शब्दों का प्रयोग करते हुए आनन्द और गर्व होना चाहिए। जहाँ तक सम्भव हो, आपस की बातचीत हमें शुद्ध हिन्दी में करनी चाहिए। जिस प्रकार की खिचड़ी बोली का हम अभ्यास पड़ गया है उसे छोड़ना चाहिए। अभी कुछ दिनों से फ्रान्स की एक महिला प्रयाग में हिन्दी के अध्ययन के लिए आई हुई है। वहाँ लड़कियों के छात्रावास में भारतीय लड़कियों के साथ रहती है। हमारी लड़कियाँ जब एक दूसरे से बात करती हैं तो बहुत से अनावश्यक अँगरेजी शब्द व्यवहार में लाती हैं। इससे इस फ्रेंच महिला को आश्चर्य होता है और उसका प्रभाव इतना अच्छा पड़ा है कि अब लड़कियाँ शुद्ध भाषा बोलने का यत्न करने लगी है।

साहित्य के विषय में मैं केवल इतना निवेदन करूँगा कि लेखक पर किसी प्रकार का कृत्रिम नियंत्रण अनुचित और हानिकारक है। उच्च कोटि की कला मानव के हृदय का बाह्यरूप है और किसी के हृदय पर किस का अधिकार है? कला मनुष्य की भावना से उत्पन्न होती है, भावना को वश में कौन ला सकता है? कविता में चित्त का उत्साह, उमंग, वेदना, आनन्द, विषाद सन्निहित रहता है, स्वप्नों की झलक मिलती है, भावों की विलक्षणता है, विचारों की विशालता है—इनको किसी बाड़े में जकड़ देना भयावह है। क्षुद्र नदी की धारा तो रोकी जा सकती है, सागर पर आधिपत्य कैसा?

कुछ वर्ष पहिले मैंने "मुहद मंच" के अधिवेशन में ग्राम्यगीतों के सम्बन्ध में यह कहा था—इन सरल पदों में देश की यथार्थ दशा वर्णित है, यहाँ की संस्कृति इनमें सुरक्षित है। सभ्यता तो बाह्य आडम्बर है, कल मुकों की थी, आज अँगरेजों की है। भारत-जीवन हमारे गाँव के रहनेवालों में है, जो शहरों के क्षणभंगुर आभूषणों में अपने स्वाभाविक रूप को छिपा नहीं सके हैं, जिनमें युगों से वेदना सहन करने की शक्ति है, जो सुख-दुख में हर्ष-विषाद में, जगत्-चिन्ता को भूले नहीं हैं, जो वर्षों के आगमन से प्रसन्न होते हैं, जो खेतों में, जाड़े-गर्मी में, प्रकृतिदेवी के सुन्दर, अपना समय बिताते हैं। इन गानों में हम मनुष्य के जीवन के स्वाभाविक दृश्य को देखते हैं, कन्या के ससुराल चले जाने पर माता-पिता के आनन्द की ध्वनि पाते हैं, खेतों के बह जाने पर हताश किसान के क्रन्दन, ब्याह के अवसर पर बधाई के गान, गृहिणी के विरह की व्यथा, सन्तान की असामयिक मृत्यु पर मूक वेदना—अर्थात् मानविक जीवन की नैसर्गिक कविता का रसास्वादन करते हैं। गजलों और सिनेमा के गानों का इतना प्रभाव बढ़ रहा है कि बहुत शीघ्र ग्राम्यगीतों के लोप हो जाने की आशंका है। इस साहित्यिक धन को नष्ट न होने देना चाहिए।" इन प्रान्तों में, ब्रज, अवध, बुन्देलखंड में, हमारे इस साहित्य का बहुत बड़ा भंडार अब भी है और आशा है कि इसका महत्त्व सम्मेलन स्वीकार करेगा।

इधर कुछ दिनों से हमें यह आदेश मिलने लगा है कि प्रत्येक विद्यार्थी को दो लिपियाँ सीखना आवश्यक होना चाहिए—हिन्दी लिपि और उर्दू लिपि। हिन्दी लिपि और उर्दू लिपि कोई लिपि नहीं है। नागरी लिपि और फ़ारसी लिपि है। देश की और प्रधान लिपियाँ ये हैं—बंगला, गुजराती, गुरुमुखी, तामिल, तेलगू, कन्नाडा, मलयलम। इनमें देवनागरी को ही प्रधानता है। फिर यदि नागरी के साथ कोई और लिपि भी सीख सकें तो अच्छा अवश्य है। परन्तु हमारी लिपि वैज्ञानिक दृष्टि से इतनी शुद्ध और व्यावहारिक दृष्टि से इतनी सरल है कि इसका त्याग हमारे लिए अनावश्यक, अहितकर और असम्भव है। प्रत्येक प्रान्त में नागरी और फ़ारसी दोनों लिपियों को अनिवार्य बनना बच्चों पर बहुत बड़ा बोझ डालना है। कुछ विद्वानों का मत है कि रोमन लिपि का ही प्रचार होना चाहिए। मैं इससे सहमत नहीं हूँ। रोमन में इतनी

अश्रु-हास

लेखक, श्री परमानन्द शुक्ल, बी० ए०

सुख के गीत सुना मेरे मन!
रूठा भाग्य—नियति यह रूठी
जीवन की आशायें रूठी
रुद्ध गये नयनों से सपने रो-रो कर न भिगा मेरे मन!
बन्धु व्यथा का कहना ही दुख
अधर सिए सब सहना ही दुख
पीड़ा में अब मादकता भर सुधियों को मदहोश बना मन!
शूल सुखी जब फूल बिहँसते
शूल दुखी जब फूल न हँसते
अरे बता किसके अधरों की हँसी बना यह किसका है मन!
सह न सके तो कह गीतों में
रह न सके तो बह गीतों में
तृप्ति बिछुर खारे आँसू ये छू न सकेंगे निर्मम का मन!

बुटियाँ हैं कि हम अपनी भाषा को इस लिपि में लिखकर अपने शब्दों का शुद्ध उच्चारण नहीं कर सकेंगे। देवनागरी की विशिष्टता यह है कि जैसी यह लिखी जाती है वैसा ही इसका उच्चारण होता है। यह विशेषता न रोमन में है और न फ़ारसी में।

उच्चकोटि के साहित्य की रचना कठिन और परिश्रमसाध्य है। हम यदि चाहते हैं कि हमारे साहित्य का स्थान विश्वसाहित्य में ऊँचा हो तो हमारा कर्त्तव्य है कि हम इसके लिए यथासाध्य परिश्रम करें। आचार्य क्षेमेन्द्र ने कवि के लिए इस प्रकार की शिक्षा-पद्धति बताई है—छन्दोबद्ध पदों की रचना का अभ्यास, काव्यग्रन्थों का अनुशीलन, समस्यापूर्ति, कवियों का सहवास, सज्जनमंत्री, नाटकों का अभिनय देखना, संगीत का ज्ञान, लोकाचार का ज्ञान, आख्यायिका और इतिहास का अनुशीलन, सुन्दर चित्रों का निरीक्षण, वीरों के युद्ध का निरीक्षण, जनता के वार्तालाप को ध्यान से सुनना, समुद्र और जंगलों में घूमना, तपस्वियों की सेवा, एकान्तवास, स्निग्ध भोजन, रात्रि में जागना, प्रतिभा और स्मरणशक्ति का उद्बोधन, जन्तुओं के स्वभाव का परिचय, पर्वत, समुद्र, नदी का ज्ञान, पराधीनता से बचना, विद्याभवनों में जाना, अपनी उन्नति की चिन्ता न करना, आत्म प्रशंसा न करना, किस समय और किस श्रोताओं के सामने कैसी कविता पढ़ी जाय इसका ज्ञान, नये भावों और विचारों के लिए प्रयत्न, ऐसी रचना करना जो सुगम हो। इस विशद पद्धति की आवश्यकता साहित्य के प्रत्येक अंग में है। इस प्रकार से शिक्षित ऐसे ध्येय को सामने रखने वाला साहित्यकार अपनी रचना को उच्च श्रेणी तक पहुँचा सकता है यदि उसमें प्रतिभा है। देवताओं की भाँति लेखक भी सदा युवा रहता है। उसमें तेज और उत्साह रहता है, आशा रहती है और तरङ्ग की गति रहती है। ऐसे साहित्यकार हुए हैं और रहेंगे—हिन्दी-साहित्य का भविष्य उज्ज्वल है:—

"रे मन साहसी साहस राख सुसाहस सौं सब जेर फिरैंगे।
त्यौं पद्माकर या सुख दुख में त्यौं दुख में सुख सेर फिरैंगे।

इम्पीरियल पार्लमेंटरी एसोसिएशन नई दिल्ली की ओर से ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल के स्वागत के अवसर पर लिया गया चित्र—बीच में लार्ड पैथिक लारेंस और उनके बगल में असेम्बली के प्रेसिडेंट माननीय जी० वी० मालवंकर बैठे हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूस को नेवता दीजिए तो सही !

मुस्लिम लीग को अब भी सावधान हो जाना चाहिए

लेखक, पंडित मोहनलाल नेहरू

भारतीय स्वतंत्रता के ब्रिटिश मंत्रियों तथा भारतीय नेताओं के बीच समझौता हो रहा है। कांग्रेस देश का विभाजन नहीं चाहती किंतु मुस्लिम लीग पाकिस्तान चाहती है। यही नहीं लीग के कई नेताओं ने उत्तेजनापूर्ण धमकियाँ भी दी हैं। इस लेख में पंडित मोहनलाल नेहरू ने लीग के नेताओं—विशेषकर मिस्टर जिन्ना और सर फिरोज खाँ नून—को चेतावनी दी है कि वह अब भी सावधान हो जायें। साथ ही नेहरू जी ने लीगी नेताओं द्वारा दिये जानेवाले उन वक्तव्यों की भर्त्सना की है जो साम्प्रदायिक उत्तेजना फैलाने तथा अशांति उत्पन्न करने वाले हैं। शांति और सुरक्षा की दृष्टि से भी सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित किया गया है।

मुस्लिम लीग के विधाता मिस्टर मोहम्मद-अली जिन्ना।

मुस्लिम लीग के नेताओं ने देहली की सभा में खाली जहर ही नहीं उगला और बगावत और मार-काट की धमकी ही नहीं दी बल्कि हिन्दुओं और उनके सहनशील धर्म पर तरह-तरह के आक्षेप भी किये। बड़ी-बड़ी धमकियों और बड़ी लम्बी-चौड़ी बातों के बावजूद नतीजा यह निकला कि उन्होंने अँगरेजी सरकार के आगे माथा टेक दिया कि "खुदा के वास्ते आप हम अनाथों को ग़ैर-मुस्लिम लीगियों के अधीन न छोड़ जायें।" उन्होंने तो यहाँ तक कहा कि आपको किसी भी लड़ाई में जो कांग्रेस छोड़े हम सहायता देंगे। वास्तव में यह कहने की जरूरत ही न थी क्योंकि १९४२ वाली लड़ाई में उन्होंने या उनके मित्र कम्यूनिस्टों ने कौन-सी बात उठा रखी थी जिसे देशद्रोही ही कर सकते थे। फिर भी सत्य की जीत हुई।

हमारे लीगी मित्रों को सिर पर चढ़ाने की जिम्मेदार, हमें खेद है, कांग्रेस ही एक तरह से है। मगर उसकी नीयत अच्छी थी और वह यह कि "गुड़ से जो मरे तो जहर क्यों दिया जाये।" मगर उस गुड़ को ही इन लोगो ने जहर कहा और सैकड़ों झूठे इलजाम उन लोगों पर लगाए जिन्होंने हिन्दुओं के हक़ों को इन्हें खुश करने की दवा दिया। उसका नतीजा आज भोगना पड़ रहा है।

चौधरी खलीकुज्ज्मा "गुंडों द्वारा" उपद्रव करने की धमकी देते हैं और जिन्ना साहब बड़ी साम्प्रदायिक झगड़ा कराने की। एक लीगी बहादुर तो अँगरेज सरकार से प्रार्थना करते हैं कि भारत छोड़ने के पहले वह मुसलमानों को काफी हथियारों से लैस कर दें ताकि वे हिन्दुओं से लड़ सकें। एक बात वह भूल गये। उन्हें यह भी कहना चाहिए था कि लीग को एक ऐसे अँगरेजी अफ़सर किये जायें जो हिन्दुओं को उनकी लूट-मार के वक्त उनके मुकाबले पर आने से रोके रहें। यानी वह हर जगह अलीगढ़ या सहारनपुर का मजा दिखा दें। अगर हिन्दुओं के पास भी शस्त्र होते तो यह शायद हवाई जहाज ही माँगते क्योंकि सामने आने में खतरा भी तो है।

हम इन दोस्तों को यह याद दिलाना चाहते हैं कि जो दूसरों की सहायता से खड़ा होता है वह उसके हटने पर उठ भी नहीं सकता। हिन्दू-कलह पसन्द नहीं, वह बहुत कुछ सह जाते हैं मगर उनकी भी सहनशीलता की हद है। हमें बिहार और कानपूर के बलवे याद हैं। जब उनकी सहन-शक्ति का अंत हो जाता है तो वह किसी बात में कम नहीं रहते। इस समय बहुत वर्षों से उनके लीडर उन्हें शान्त रहने का आदेश दे रहे हैं इससे वह चुप हैं, जिसकी वजह से न सिर्फ पुलिस ही, जिसमें मुस्लिम लीगी बहुत हैं, और गुंडे जिनके जरिये चौधरी साहब बलवा कराने की ताक़त दिखाते हैं, जोरों पर आ गये हैं। हमारी उनसे यही प्रार्थना है कि ऐसी बातें न करें जिनसे दूसरे पक्ष में भी क्रोध की अग्नि जल उठे। याद रखना चाहिए कि चींटी भी काटती है।

इन बातों को जो लीगी हाकिमों की बेपरवाई या सहायता से कर रहे हैं बच्चों पर बहुत ही बुरा असर पड़ रहा है। इलाहाबाद स्टेशन, अलीगढ़ इत्यादि का उपद्रव तो बड़े लड़कों या लीगियों की बात है छोटे बच्चों तक पर बुरा असर पड़ रहा है। चाहे उनके मा-बाप की नीयत ऐसी न हो। मैं इसकी एक मिसाल जो मेरी देखी हुई है देता हूँ। एक दिन क़रीब ११ बजे होंगे कि छोटे बच्चे स्कूलों से लौट रहे थे। उनमें एक बच्चा कोई ५ या ६ साल का अपने नौकर के साथ आ रहा था। रास्ते में ३ मुसलमान बच्चे खड़े थे जिनमें दो १० या ११ वर्ष के थे। उनमें से एक ने सड़क से छोटे रोड़े उठाकर दो-तीन उस बच्चे को मारे। पहले तो मैं समझा कि उसी के साथ वह भी बच्चे हैं मगर जब उस नौकर ने मारनेवाले को गाली दी तब मैंने पूछा कि क्यों भाई क्यों मारते हो? वह कहने लगा 'हम मारते कहाँ हैं' मैं उसी वक्त उसके घर गया कि तुम्हारे बाप से शिकायत करूँगा तो वह दूसरे मकान में छिप गया। आजकल हवा में गैसें भरी हैं सिर्फ चिनगारी दिखाने की देर है। क्या हिन्दू क्या मुस्लिम सभी को ख्याल रखना चाहिए कि जहाँ तक हो सके चिनगारी न लगने दें। हिन्दू तो सहनशील हैं, सुलह पसन्द करते हैं, कमजोरी या डर से नहीं मगर अपनी ताक़त जानते हुए। क्या हमारे लीगी दोस्त इस बात का ख्याल नहीं रख सकते? उन्हें यह जानना चाहिए कि किसी साम्प्रदायिक उपद्रव में सिर्फ एक ही तरफ ज्यादती नहीं होती। अलीगढ़ में भी अब शायद ऐसा न हो सकेगा। जिन कांग्रेसियों ने अँगरेजी सरकार की गोलियों और डंडों का वीरता से मुक़ाबला किया वे क्या पीठ पीछे चोरी छिपे छुरों का मुक़ाबला नहीं कर सकते? उनके पास हिम्मत की कमी नहीं मगर वह वैर भाव को दबाते रहते हैं।

मगर आश्चर्य तो इस बात का है कि हमारी सरकार हिन्दू-धर्म के आक्षेपों पर क़ानूनी कार्यवाही क्यों नहीं करती? क्या क़ानून की दफ़ाओं में जिसमें किसी धर्म पर आक्षेप मना है मुस्लिम लीग पर लागू नहीं? क्या मारकाट का प्रचार करना क़ानून में मना नहीं और है तो लीगी नेता क्यों उसमें पकड़े नहीं जाते? अगर कांग्रेस सरकार इस बार भी उतनी सहनशील रही जितनी पिछली बार तो हमें कहना पड़ेगा कि उसने पुराने अनुभव से फायदा नहीं उठाया। आप किसानों-मजदूरों की बेहतरी जरूर करें मगर शहरों में जो ग़रीब रहते और काम-काज करते हैं उनका भी तो ख्याल कीजिए।

हमारे लीगी दोस्त खाली मारकाट ही की धमकी नहीं देते, वह रूस को भी बुलाने की घोषणा करते हैं। रूस से सहानुभूति रखनेवाले कांग्रेसी भी हैं मगर वह अँगरेजों की गुलामी छोड़कर किसी दूसरे की नहीं कर सकते। फिर शायद सर फिरोज खाँ नून महोदय को रूस का पूरा ज्ञान भी नहीं। रूस में न तो परदे का रिवाज ही रहा है और न खाने-पीने में किसी तरह की रोक-थाम है। बहुत से मुसलमान देश उसमें सम्मिलित हैं। मगर वह जिन्ना या लीगियों की तरह मुसलमान मत के सिर्फ ठेकेदार नहीं। फिर रूसी लोग तो आजकल अँगरेजी सरकार को यही ताना दे रहे हैं कि हिन्दुस्तान आजाद नहीं रूसियों से मदद भी तो सीमाप्रांत ही होकर आयेगी और शायद इस वक्त रूस भी तीसरे महायुद्ध को तैयार न हो।

रूस के किसी सम्मिलित देश में स्त्रियाँ पर्दा नहीं करतीं। वह हर व्यवसाय में शरीक होती हैं बिला बुरका मुँह खोले फिरती हैं। यहाँ तो मुस्लिम लीग उन्हें हवा भी लगने देने को तैयार नहीं। इससे तो उनकी राय में, मुसलमान मर्द खतरे में आ जाता है।

गत चुनाव में जहाँ बुरकेवालियाँ लीगी एजेंट थीं वहाँ एक-दो ग़ैर लीगी भी पहुँच गई थीं। हमसे बताया गया है कि हर वोटर को लीगी 'अल्लाह का प्यारा' ही पुकार रही थीं और ग़ैर लीगी व्यक्ति को काफिर कहकर मुसलमान के लिए वोट देने को कह रही थीं। यह तो उनकी जानकारी का हाल है। क्या वह रूसी शासन में सिर्फ इतनी ही जानकार रह सकती हैं? अगर लीग के जरिये रूसी शासन आ भी गया तो मुसलमान मत वास्तव में लीगियों की ठेकेदारी से निकल जावेगा। वहाँ मुसलमान वह होगा जो वास्तव में मजहबी आदमी हो न कि वह जो क़ुरान शरीफ़ की एक आयत भी न जानता हो क़बरें और दरगाहों में रेवड़ी चढ़ाता और मन्नतें मानता हो, मसजिदों में कभी निमाज पढ़ने की नीयत से घुसता भी न हो सिर्फ "हिन्दू" बाजों की आवाज सुनने में तल्लीन हो, उस वक्त यह कहनेवाले न रह जायेंगे कि बाजों की आवाज से हम ध्यान नहीं लगा सकते। वास्तव में ध्यान जिसका परमात्मा में हो उसे दूसरी आवाज सुनाई ही नहीं दे सकती। इन बातों का ख्याल रखते हुए लीग को रूस के पास निमंत्रण भेजना चाहिए। हम उन्हें बातये देते हैं कि वे अपनी हस्ती और अपनी ताक़त खो बैठेंगे।

पंजाब के कट्टर मुस्लिम लीगी सर फिरोज ख़ाँ नून 'पाकिस्तान' की उपेक्षा होने से चंगेज ख़ाँ का उदाहरण पेश करेंगे।

कांग्रेस मंत्रिमंडल

आजादी की लड़ाई असेम्बली तक ही सीमित नहीं होगी

लेखक, श्री भगवानप्रसाद त्रिपाठी (पत्रकार)

भारत प्रत्येक प्रान्त का प्रान्तीय और केन्द्रीय असेम्बली के सदस्यों का निर्वाचन हो चुका है। प्रायः अधिकांश प्रान्तों में कांग्रेस मंत्रिमंडलों की स्थापना जोर-शोर के साथ हो रही और हो चुकी है। सीमाप्रान्त, पंजाब, युक्तप्रान्त, बिहार, आसाम, बम्बई आदि प्रान्तों में कांग्रेस आसनारूढ़ है। इन प्रान्तों के अतिरिक्त भी मध्य-प्रांत, उड़ीसा,

संयुक्तप्रांतीय कांग्रेस सरकार के प्रधान मंत्री पंडित गोविन्दवल्लभ पंत।

मद्रास आदि प्रान्तों में कांग्रेस मिनिस्ट्री बन ही जायेगी। सवाल यह उठता है कि पिछले मंत्रिमंडल काल से आज तक की दीर्घावधि में देश के अन्दर क्या प्रगति हुई है। लगभग ६-७ वर्षों में कांग्रेस ने देश को आजादी के मार्ग में किस हद तक आगे बढ़ाया है? यह कहते हुए सुना जाता है कि देश फिर भी उसी केन्द्र पर आ सका है, जहाँ से वह चला था। इसका स्पष्ट अभिप्राय यह है कि अगर देश के अन्दर भारत का काम केवल मंत्रिमंडलों से ही चल सकता है तो इतने लम्बे-चौड़े काल का व्यर्थ ही दुरुपयोग हुआ। सन् ४२ के आन्दोलन में देश की जो भी क्षति हुई वह व्यर्थ थी। सन् ४२ के शहीदों के खून की अर्चना सफलीभूत न हो पाई। इसका यही अर्थ लगाया जा सकता है।

मंत्रिमंडल या स्वराज्य ?

आज देश स्वराज्य चाहता है, मंत्रिमंडल नहीं। आज देश कुर्बानी चाहता है, असेम्बली की गद्दीदार कुर्सियाँ नहीं। आज देश ठोस कार्यक्रम चाहता है, असेम्बली के कोरे-थोथे प्रस्ताव नहीं। आज देश क्रान्ति की चिनगारियों से झुलस कर भी जीवित रहना चाहता है—सुख और ऐयाशी से मरना नहीं चाहता है। कहने का अभिप्राय यह है कि भारत अपनी स्वतंत्रता के सम्बन्ध में किसी दशा में 'सौदा' पटाना नहीं चाहता। देश अपनी मुकम्मल आजादी

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय स्वाधीनता क्यों चाहिए

सीमाप्रांत राष्ट्रीयता का विरोध कभी नहीं कर सकता

लेखक, खान अब्दुलगनी खाँ एम० एल० ए० (केन्द्रिय)

भारतीय काग्रेस पूर्ण स्वतंत्रता की माँग कर रही है, और मुस्लिम लीग पाकिस्तान की। सीमाप्रांतीय मुसलमान राष्ट्रीय स्वाधीनता की माँग के साथ है। इस लेख में सीमाप्रांतीय नेता ख़ान अब्दुलग़नी खाँ ने राष्ट्रीयता का महत्त्व बतलाते हुए मुसलमानों तथा सीमाप्रांत राष्ट्रीयता का महत्त्व बतलाया है। लेख अत्यन्त सुन्दर और सामयिक है।

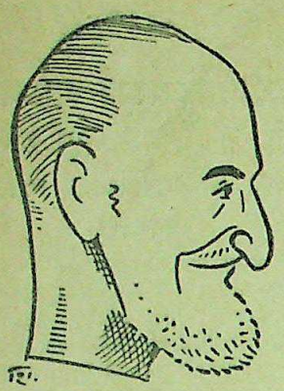

सीमाप्रांत के राष्ट्रवादी और त्यागी नेता खान अब्दुल गफ्फार खाँ।

यदि आपका घर डाकुओं के बीच हो तो आपके घर का सबसे आवश्यक स्थान बैठक नहीं है बल्कि घेरेवाली दीवार है। इसका ऊँचा और मजबूत होना आवश्यक है। आज हम एक ऐसी दुनिया के बीच रह रहे हैं जो लालसाओं से पूर्ण है, जो खून की प्यासी है, जिसका कोई सिद्धान्त नहीं है, जिसमें अधिकार प्राप्त करने की अमर पिपासा है। बस दानवता, भूख-प्यास की ही प्रधानता है। ऐसी दुनिया में किसी भी देश का प्रधान स्थान राजधानी नहीं, बल्कि उसकी सीमा है।

अब जरा हम अपने देश भारतवर्ष की चौहद्दी पर तो दृष्टि डालें? आपके उत्तर में चीन अपनी जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पड़ा हुआ है। उसका शरीर अब भी रक्त से लथपथ है। अन्य उसके दुःखों को देखकर दुःखी होते हैं। उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करते हैं। कारण आपको पता है कि उसमें इतनी शक्ति नहीं कि वह आपकी दीवार को तोड़कर आपके घर में घुस सके।

आपके दक्षिण में महासागर विराजमान है। उसमें कुछ नीजबान जहाजी दृष्टिगोचर होते हैं। उन्हें देखकर प्रायः आप चौंक पड़ते होंगे, पर तत्काल आपको उस ओर से खतरे का भय रहा है। अतः आपको घबराने की आवश्यकता नहीं है। एशिया और अफ्रीका के वे छोटे-छोटे रजवाड़े, उपनिवेश तथा संरक्षकवाले देश इतने छोटे-छोटे हैं और कमजोर हैं कि आपको उनकी कतई चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। पूरब में तो वही जावा, मलाया, इन्डोनेशिया, बर्मा, श्याम आदि की खिचड़ी है। उनसे क्या घबराना है?

रह गई पश्चिम की दीवार। क्या आप इसकी बाबत सोचकर घबराते नहीं? इस ओर पूरी दीवार के साथ कबीलों का घर है। इन्हें वश में लाना बिलकुल कठिन है। वे बड़े ही भयावह और तूफानी जीव हैं। यहाँ पर रहते हैं स्वतंत्र बल्लम-बरदार---भाग्यके सिपाही। कबीले आपसे किसी प्रकार भी बँधे हुए नहीं हैं। आर्थिक, सामाजिक या नैतिक दृष्टि से किसी प्रकार भी आप उनकी दोस्ती या शक्ति का अन्दाज नहीं कर सकते। आपने तो उन्हें जानने की भी कोशिश नहीं की है। कभी उनकी सहायता करने का विचार भी नहीं किया है। इन कबीलों से आगे, कमजोर अफ़ग़ानिस्तान का राज्य है। वह सदैव कराची बन्दरगाह पर अपनी आँखें गड़ाए रहता है।

अफ़ग़ानिस्तान सोचता है---कभी कराची बन्दरगाह अपनी सिंध नदी लेकर उससे मिल जाय तो चौहद्दी में आज की अपेक्षा कहीं अच्छी हो जाये। फिर भी हम एक वर्ष पहिले तो अफ़ग़ानिस्तान की उपेक्षा कर सकते थे पर आज नहीं। कारण उसके पीछे ही तो रूस है। हम उसकी उपेक्षा तो कदापि नहीं कर सकते। रूस आज मजबूत है, उद्दंड है। वह आज विजय के नशे में चूर है और जब तक बिलकुल थक न जाय, आगे बढ़ता ही जायगा। यह सब करने के लिए वह अपनी रक्षा का बहाना करे या जो भी। रूस के पास संसार के लिए एक संदेश है। और उसके अपने आपको सच्चा साबित करने के लिए उसके पास अस्त्र-शस्त्र की भी कमी नहीं है। रूस संसार को रोटी हासिल करने का संदेश देता है। वह भूखों को भर पेट भोजन देने का वचन देता है। रूस में ग़रीबी का नामोनिशान नहीं है और भारतवर्ष भूखा और नंगा है। रूस गत युद्ध में विजयी हुआ है और उसे आज अपने संदेश में पहले की अपेक्षा अधिक विश्वास है। उसे अपनी शक्ति पर भरोसा है। जो हठधर्मी होते हैं वे यह नहीं समझते हैं कि सीमा क्या होती है। परम्परा क्या होती है और इतिहास क्या होता है और रस्मों-रिवाज क्या होते हैं? और इसीलिए तो उन्हें हठधर्मी कहा जाता है। रूस आज लड़ने में अगुआ बना हुआ है। क्या आप चाहेंगे कि अँगरेज इधर से चले जाएँ और रूस उधर आ जाये?

रूस के संदेश से मुझे कोई अधिक विरोध नहीं है। यदि मैं उसका विरोध करता हूँ तो केवल इसलिए कि वह रूसी है, भारतीय नहीं। मार्क्स और लेनिन के लम्बे-चौड़े सिद्धान्त को भाई स्टेलिन पसन्द करते हैं और उनके ऊपर पल रहे हैं। इसका कदापि अर्थ नहीं कि हम भी जबरदस्ती उन्हें अपने गले में डाल लें। मैं चाहता हूँ कि भारतवर्ष अपने भाग्य का निर्णय आप ही करे। और यदि सोचकर साम्यवादी हल को ही वह अपनाना चाहता है, तो मैं सबसे आगे जाकर उसे अपनाऊँगा क्योंकि वह भारत का अपना हल होगा, मेरा अपना हल होगा। वह हल अपने इतिहास का हल होगा विचार तो दूर रहे मेरे विचार से विदेशी कोई भी चीज अच्छी नहीं होती।

मुझे भाई स्टेलिन के बचाव के ढंग से भी विरोध है। साम्राज्यवाद ग़रीब और अमीर दोनों के लिए ही घृणास्पद है। स्टेलिन और 'पीटर दी ग्रेट' में यदि कोई अन्तर है तो वह अन्तर केवल यह मूछों का है। आज स्टेलिन कहता है कि रूस की रक्षा के लिए अजरबेजान और डार्डीनल्स जरूरी है। कौन जानता है कि कल लाहौर और बंगाल के लिए भी वह ऐसा ही न कहेगा। यदि ऐसा हुआ तो फिर क्या बनेगा? पाकिस्तान को हमेशा के लिए विदाई और एकता का सदैव के लिए आगमन। यदि आप चाहते हैं कि ऐसा न हो, यदि आप चाहते हैं कि भारतवर्ष अपने ही ढंग से फले-फूले तो आपको समस्त भारत को इस प्रकार संगठित करना होगा कि कोई इसे तोड़ न सके। उसका कोई भी भाग कमजोर नहीं होना चाहिए। नहीं तो आप मुक़ाबला नहीं कर सकते। आपके पास तो संगठन चाहिए। सबों के सामने एक ही आशा, एक ही उमंग और एक ही विश्वास हो।

सीमान्त जो आपके लिए बहुत बड़ा महत्त्व रखता है, बिलकुल ढीला-ढाला एक ओर पड़ा है। उसका शेष भारत से न तो सामाजिक ऐक्य है, न ही सांस्कृतिक और न ही जाति सम्बन्धी यदि कि ऐक्य है तो वह है अँगरेज से।

अँगरेज आज आप पर और हम कसकर बैठा हुआ है। हम और आप ही पिंजड़े के परिन्दों की भाँति हैं और आप एक साथ मिलकर काम हैं---इसलिए कि हम दोनों ही से निकलना चाहते हैं। लेकिन पिंजरा टूटा कि आप अपने घर और अपने घर। फिर जब तक हमारे उद्देश्य, आशा-उम्मीद आपस मिले हम एक दूसरे को मित्रता की दृष्टि से देख सकते। एकता का यही आधार सकता है। हमारे शासकों को तो ठीक-ठीक नहीं मालूम कि पठानों की संख्या क्या है? अनुमान लगाया गया कि उनकी संख्या ६०,००,००० है। लाख पठान इनका शेष भारत आशाओं, उम्मीद और उद्देश्य के मेल-जोल हो---इसके लिए बड़े उत्सुक परन्तु प्रश्न है---क्या शेष भारत इसे कार करने को तैयार है? यदि हाँ तो सीमान्त के प्रति अपने अनुमानों को पूर्ण होगा। मेरा अभिप्राय आर्थिक अवस्था से नहीं, बल्कि नैतिक से। आपको यह आश्वासन देना होगा कि आप सबसे अधिक महत्त्व देते हैं। आपको आर्थिक, आध्यात्मिक और शिक्षा-सम्बन्धी स्तर को अपने बराबर करना होगा। अनपढ़ पठान और एक विद्वान् में अधिक देर तक नहीं निभ सकती है। कितनी भी कोशिश करें---अपने घोड़े से आपके वायुयान की बराबरी कर सकते।

हमारा प्रान्त बिलकुल अनपढ़ हमें स्कूल, कालेज, यूनिवर्सिटी, इस्कूल की शिक्षा, लेडी डाक्टरों, अध्यापकों अस्पतालों की आवश्यकता है।

हमारे यहाँ कोई व्यवसाय नहीं वैसे वहाँ सैकड़ों व्यवसायों की हो सकती है। हमारे पहाड़ों में खनिज भरे हुए हैं पर वे हाथों से तो नहीं सकते हैं। हम आपसे हर बात में पीछे हमारा भूत बहुत सुन्दर था और हमारी परम्परा बहुत अच्छी है पर अपने सुन्दर भूत और वर्तमान परम्परा को लेकर तो जी नहीं

संक्षेप में यूँ कहना होगा कि यदि इस ओर अपनी दीवार की रक्षा चाहते हैं जो आज खतरों से खाली हैं---आपको हमें वास्तव में भारत आवश्यक अंग बनाना होगा। इस मोटी मदद से काम नहीं चलेगा। तक पैसे का वितरण संख्या के होता आया है। आप एक मद्रासी और मद्रासी के दिमाग में दिमाग कितना अन्तर है। पठान का दिमाग भिज्ञता से भरा है। अविकसित और हुआ है। आप कैसे उसके साथ का बर्ताव करेंगे? आपको हमारे अपने को ध्यान में रखना होगा और वाले उन्नति की योजना में हमें सुविधा देनी होंगी। आप पैसों का वितरण की अपेक्षा आवश्यकता के अनुसार ताकि आगे चलकर हमारा भारत मताविहीन, स्वस्थ और विकसित हो

आप जो हमें वार्षिक सहायता हैं। उससे बेहतर तो मैं एक प्रस्ताव यदि आप एक करोड़ प्रतिवर्ष दे दें तो एक ही बार २० करोड़ दे देंगे। हम इसे २० वर्षों में चुका देंगे। इतने ही समय में हमारे उद्योग-धन्धे काफ़ी उन्नति हो जायगी और बाद में इस वार्षिक सहायता की आवश्यकता जायगी यदि आप इसे मान लें तो मैं प्रान्त को राजी करने की जिम्मेवारी सकता हूँ। भारतवर्ष के लिए २० कोई बड़ी रक़म नहीं है। जो बात

शेष पृष्ठ १३ पर

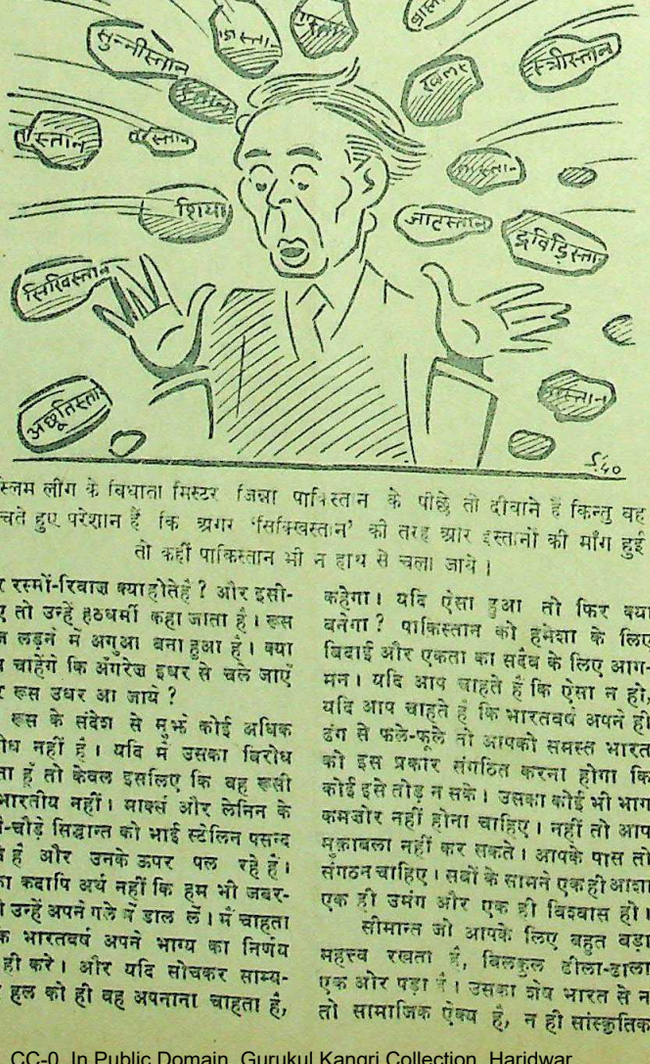

मुस्लिम लीग के विधाता मिस्टर जिन्ना पाकिस्तान के पीछे तो दीवाने हैं किन्तु वह सोचते हुए परेशान हैं कि अगर 'सिक्खिस्तान' की तरह और इस्तानों की माँग हुई तो कहीं पाकिस्तान भी न हाथ से चला जाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

बाबू जी एक पैसा

लेखक, श्री उमेश जोशी

मनुष्य सोचता बहुत कुछ है, कभी कभी वैभव के मद में वह अपनी वास्तविकता भी खो बैठता है, किन्तु भाग्य जब पलटा खाता है तो फिर जहाँ का तहाँ दिखाई देने लगता है। मानव-जीवन ही उत्थान-पतन का साकार स्वरूप है। इस सुन्दर और दिलचस्प कहानी में लेखक ने एक ऐसे व्यक्ति के जीवन का चित्रण किया है जो उत्थान और पतन से पूर्ण है। तदबीर तो मानव-जीवन के उत्थान का एक मार्ग है ही किन्तु तकदीर की प्रधानता कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। कहानी पठनीय तथा रोचक है।

प्रभा जिसे लेकर मैं काश्मीर गया था।

मैं बम्बई मेल से "पूना" जा रहा था। गाड़ी द्रुत गति से चली जा रही थी। कम्पार्टमेंट में मैं अकेला था। मेरी तबिअत भी नहीं लग रही थी। मैंने सोचा कि अगले स्टेशन पर दूसरे डिब्बे में बैठ जाऊँगा, मगर उतना वक्त कैसे कटता? प्रश्न तो यही था। मैंने सोने की भी चेष्टा की, पर नींद भी मुझसे अप्रसन्न हो गई थी। वह भी "ठनगन" करने लगी। आखिर मैंने एक पुस्तक का आश्रय लिया, लेकिन उसमें भी मेरी तबियत नहीं लगी। कारण यह था कि वह पुस्तक "विज्ञान" की थी। अगर कोई "नावेल" या "स्टोरी बुक" होती, तो मुमकिन था कि मेरी तबिअत उसमें उलझ जाती। मैं हैरान था कि आखिर दिल किस तरह बहलाया जाये। यही सब मैं अपना सिर खिड़की के बाहर किये हुए सोच ही रहा था कि इतने में मेरा ध्यान भंग करते हुए किसी ने कहा—"बाबू जी एक पैसा!"

मैंने मुड़कर देखा चीथड़ा पहिने हुए एक फकीर को। पैरों में फटे-पुराने जूते थे। हाथ कड़ी सर्दी के कारण ठिठुर गये थे। मुँह मुरझा सा गया था, किन्तु तब भी पेट की ज्वाला को शान्त करने के लिए आज वह इतनी ठंड में भी भीख माँगने के लिए हाथ फैला रहा था। शरीर अस्थि-पंजर था। ग़रीबी सबसे ज्यादा उसकी आँखों से टपक रही थी। उफ़! उसकी चितवन में कितनी आकांक्षायें क्रीड़ा कर रही थीं—क्षुधा, याचना, करुणा, आशा, और.....!

मैंने अपने को लिहाफ़ में लपेटते हुए कहा—"भई तुम अब तक कहाँ थे, मैंने तो तुम्हें अब तक डिब्बे में देखा नहीं।"

"बाबू जी, आप बड़े आदमी हैं, बड़े आदमियों की हम ग़रीबों पर क्यों नज़र पड़ने लगी? मैं तो इसी बेंच के दूसरी ओर पड़ा हुआ था, गठरी बना हुआ। जब मुझको मालूम हुआ कि इस डिब्बे में कोई साहब आ गये हैं, तब मैं उठा, पर आपका ध्यान उस वक्त खिड़की के बाहर था।"

मैंने उसकी ओर ग़ौर से देखा। यह मालूम हो रहा था कि मानो नसीब के जोर से नुक़ान से वह ऐश्वर्य के शिलाखंड से गिर पड़ा हो। उसका टिमटिमाता हुआ किस्मत का चिराग़ भी अब गुल हो रहा था। उसकी वाणी में विह्वलता नग्न नृत्य कर रही थी। उसकी बोलचाल के ढंग से यह मालूम हो रहा था कि वह पढ़ा लिखा भी है और तहज़ीब भी जानता है। समय के चक्कर में पड़कर बेचारे की यह हालत हुई है। इन्हीं विचारों के प्रवाह में मैं डुबकियाँ खा रहा था कि इतने में उसने विचारों की शृंखला को तोड़ते हुए कहा—"बाबू जी एक पैसा!"

मैंने बड़ी उत्सुकता से पूछा—"भई, तुम्हारा यह हाल कैसे हुआ? मालूम होता है कि तुम पढ़े-लिखे भी हो। घबड़ाओ नहीं, पैसा ज़रूर दूँगा।"

उसने कृतज्ञता प्रगट करते हुए मेरी ओर देखा, और कहा—"बाबूजी इस अभागे की करुण-कहानी सुनकर आप क्या करेंगे? आपका भी अमूल्य-वक्त खराब होगा। मैं तो बदनसीब हूँ ही। बस इतना ही आप जानें।"

"नहीं मेरा हृदय तुम्हारी जीवन-गाथा सुनने के लिए लालायित है। तुम्हारी जीवन-कहानी को सुनकर मेरे वक्त का भी सदुपयोग हो जायगा"। मैंने उसकी तरफ देखकर कहा।

"अच्छा बाबू जी, आप नहीं मानते, तो मैं सुनाये देता हूँ। मेरी कहानी सुनकर आपको मालूम होगा कि मानव को जीवन-संग्राम में अपनी इच्छाओं की कितनी कुरबानी करनी पड़ती है। यदि आप मेरे जीवन-पुस्तक के पन्ने पलटें तो आपको उसमें सिवा कुचले हुए अरमानों के और कुछ न मिलेगा। इंसान ज़िन्दगी की भयंकर आँधी से कितना लड़ता है, अपनी पूर्ण-शक्ति से मुक़ाबला करता है, पर तब भी वह कामयाबी के सुनहरे स्तर पर नहीं बैठ पाता, जीवन से जूझता है और डटकर सामना करता है पर सब बेकार! यह जो मैंने इतनी लम्बी अपनी जीवन-पुस्तक की भूमिका बाँधी है, वह इसीलिए कि आप मेरी जीवन-कहानी का प्लाट अच्छी तरह समझ सकें।

वह कहते-कहते कुछ रुक गया, मानो किसी उलझी हुई समस्या को सुलझा रहा हो। मैंने जिज्ञासा भरी वाणी से पूछा—"भई तुम कहते कहते रुक क्यों गये? किस गूढ़ प्रश्न के हल करने में लगे हो?"

"हाँ बाबूजी, मैं कहना भूल ही गया। कुछ विचार-प्रवाह में बहा चला गया। हाँ, मैं एक अमीर का लड़का था। खूब दौलत थी। पिता का मैं इकलौता पुत्र था। इस कारण घर का सारा प्रेम मुझी पर था। कोई फिक्र नहीं थी। सुनहरी दुनिया में मैं घूम रहा था। उस समय मैं यह नहीं जानता था कि ऐसी भी कोई दुनिया होगी जहाँ कि क़दम-क़दम पर दुःख के नुकीले काँटे इंसान के शरीर को छेदते होंगे। मुझे क्या मालूम था कि इस चमकते हुए आलम के परे भी कोई ऐसी दुनिया है, जहाँ पर पेट भरना भी मुहाल हो जायेगा।" यह कहते दो आँसू उसकी आँखों में डबडबा आये।

मेरा भी हृदय उसकी इस अवस्था पर व्याकुल होने लगा। सहानुभूति प्रकट करते हुए मैंने कहा—"भई, अब ज्यादा दुःख न करो—" पर उसकी तो हिचकियाँ बँध गई थीं। हृदय की पीड़ा उमड़-उमड़कर आँखों द्वारा आँसुओं के रूप में बह निकली। मैंने उसका यह हाल देखकर "हमारी बात" का एक गाना उसको सुनाया।

"इंसान क्या, जो ठोकरे,
नसीब की न सह सके
इंसान क्या, जो गर्दिशों के,
बीच में खुश न रह सके।
वह किस्ती क्या, जो आँधियों के साये
में न रह सके।
बच-बच के चलनेवाले, की भी ज़िन्दगी
क्या ज़िन्दगी।
दरियाये ज़िन्दगी में जो न मौज़ बनके
बह सके।"

मेरे इस गाने को सुनकर वह आँसू पोंछता हुआ बोला—"बाबूजी, आपके गाने ने मेरे जीवन में स्फूर्ति पैदा कर दी है। डूबते हुए को तिनके का सहारा मिल गया। बुझते हुए दीपक में तेल पड़ गया। हाँ, तो बाबूजी, उस वक्त सचमुच मैं दुनिया के तत्त्व को नहीं समझता था। आज मेरी समझ में आ रहा है कि दुनिया क्या है? एक तमाशा! मैंने दुनिया का तमाशा अपनी वैभव की समाधि बताकर देख लिया। दौलत के चिराग से दुनिया की गली-गली देखी, पर क्या मिला? हृदय को तड़पानेवाले अश्कों की लड़ी।

मेरे पिता ने मुझको तालीम के लिए बम्बई भेजा। वहीं से मैंने बी० ए० पास किया। हज़ारों रुपये पर पानी फेर दिया। इस उम्मीद पर कि भविष्य की फुलवाड़ी में "जीवन" को लुभानेवाले रंग-बिरंगे पुष्प प्रस्फुटित हों। मैं विद्यार्थी-जीवन में बड़ी बड़ी ऊँची कल्पनायें किया करता था। आशाओं के बड़े बड़े कुलाबे मिलाया करता था। जीवन की किश्ती को ऐश्वर्य की सरिता में डालने का स्वप्न देखता रहता। मुझे क्या मालूम था कि मेरी भव्य कल्पनाओं के सागर में ज्वार-भाटा आनेवाला है? ऐसा ज्वार-भाटा जो मेरे नसीब की गुलज़ार बस्ती को भी वीरान कर देगा। लेकिन आज मैं अपनी इस अनभिज्ञता पर रोता हूँ। हाँ, तो मैं बी० ए० पास करके काश्मीर घूमने गया। अकेला नहीं, बल्कि अपने कालेज की एक महिला मित्र "प्रभा" को भी अपने साथ लेता गया। उस वक्त मेरे सामने तरुणाई के नज्ज़ारे खिलवाड़ कर रहे थे। मैं उन्हीं नज्ज़ारों की बहार लूटने में मस्त हो रहा था। उस वक्त मेरा मन दौलत के पंख लगाकर उड़ रहा था। इस दुनिया से बहुत दूर, आसमान की छाया से भी दूर—सातवें आसमान पर प्रेम की रंगीन दुनिया बसा रहा था। मुझे क्या मालूम था कि मेरा प्रयास रत्नाकर के विशाल-

मैंने बंबई में बी० ए० पास किया और हजारों रुपये पानी की तरह बहाया।

वक्ष पर नया नगर आबाद करने के समान है। बाबूजी, दौलत पाकर इंसान के पंख निकल आते हैं, और उन्हीं पंखों द्वारा वह उड़ता है, खूब उड़ता है—ऐश परस्ती की दुनिया में—और इतना उड़ता है कि एक दिन वह स्वयं अपने अस्तित्व को उन्हीं पंखों की फड़-फड़ाहट में लोप कर देता है। फिर उसे अपनी स्थिति का ज्ञान होता है। लेकिन फिर क्या जब चिड़ियाँ चुग गई खेत। बाद में पश्चाताप के आँसू ही उसके दिल के गुबार को धोते हैं।

हाँ, जो कुछ मैंने कहा वह मेरे जीवन की हड्डी-हड्डी से निकले हुए अनुभव के मुरझाये हुए फूल हैं, जोकि बहार दिखला चुके, जब कि मेरी आँखों पर बिलासिता का मोटा परदा पड़ा हुआ था। अब उन्हीं सूखे हुए फूलों की क्षीण सुषमा बटोर कर बाबूजी मैंने आपके सामने रख दिया है। कितने मज़े की होती है अमीरों की दुनिया! उनके नाज़-नखरे—मुफलिसों की हड्डियों से निकले हुए पसीने की गाढ़ी कमाई को ये अमीर लोग अपनी रंग-रेलियों में पानी की तरह खर्च कर देते हैं। उन्हें क्या मालूम कि धन के उपार्जन में ग़रीबों ने कितना खून-पसीना एक किया है? और मालूम भी क्यों करने लगे, क्योंकि उन्हें तो अपनी ही खुशी का आलम बसाने से फुरसत नहीं मिलती। जन्नत की दुनिया का ख्वाब वह हर वक्त देखा करते हैं। बाबूजी माफ़ करना, मैं भावों के प्रवाह में बह गया। आप बुरा न मानें तो अपनी सुराही से दो घूंट पानी मेरे चुल्लू में डाल दीजिए। उसने मेरी सुराही की तरफ, जो कि पास ही रक्खी हुई थी, इशारा करते हुए कहा। मैंने फौरन ही उसको पानी पिलाया। मैंने कहा—"इतनी ठंड में आपको प्यास कैसी?" पानी पीकर फिर उस फकीर ने अपना दास्तान कहना शुरू किया—"बाबूजी मेरे हृदय-निकेतन में ज्वाला भभक रही है। यह अमर ज्वाला है, दौलत के राख के ढेर से ही यह ज्वाला उठ रही है। मेरी चिता की ज्वाला में ही इस ज्वाला का विश्राम होगा। समझे बाबू जी! हाँ मैं व्यर्थ में ही आपको फिर भावों के प्रवाह में लिए जा रहा हूँ। क्या करूँ लाचार हूँ, कुछ आदत-सी हो गई है।

उस वक्त मेरी नस-नस में प्रभा छाई हुई थी। उसकी खिलखिलाहट होती, प्यार के नगमें बहते, मुहब्बत के तराने गूँजते मधुरता की तरंगें उठतीं और दिल में हसरतें बसतीं। इन्हीं मस्ती और शेखी से भरपूर मेरी ज़िन्दगी में एक नया रंग छाया रहता। हम दोनों, भारत के स्वर्ग, सौन्दर्य के भंडार, अभिलाषाओं की जन्नत, तथा प्रेम के अमर राज्य काश्मीर में पहुँचे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन जब संध्या देवी अपनी आबदार चरणाई को रंग-बिरंगी साड़ी में लपेटे मीठी मुसकराहट की शुषमा काश्मीर के मनोहर आँचल पर छिटका रही थीं, पक्षी कलरव करते हुए अपने-अपने नीड़ों की ओर जा रहे थे, पूर्ण विश्राम के लिए—मैं और प्रभा दोनों "डलझील" की तरफ घूमने निकले। कितना मनोरम दिन था? उस समय कितनी मादकता थी? इसको तो वही आँक सकता है, जिसको किसी के दिल को गुदगुदाने का अवसर प्रकृति देवी की गोद में बैठकर मिला हो। प्रभा अल्हड़पन की साक्षात् मूर्त्ति थी। वह चंचल थी उसकी चमकदार जवानी में सौन्दर्य सोने में सुगन्ध का काम कर रहा था। वह सिर्फ सत्रह-अठारह साल की होगी। एड़ी को आलिंगन करनेवाले काले कुन्तलों की युगल बड़ियाँ उसके युगल उरोजकंज को चूम रही थीं। चौड़ी काली किनारी की साड़ी पहिने हुए वह ऐसी लग रही थी कि मानो बरसात की काली घटाओं में इन्द्र-धनुष निकल आया हो। दो काली वेणियों के मध्य में उसका सुन्दर आनन ऐसा चमक रहा था कि मानो स्वर्ग की खिड़की खोलकर उर्वशी अपने दिव्य मुख को दिखला रही हो।

हम दोनों "डलझील" पहुँचे। यह स्थान सुन्दरता में स्वर्ग का टुकड़ा है। प्रकृति ने अपना सम्पूर्ण सौन्दर्य मानो इसी भाग पर उड़ेल दिया हो। पास ही एक डोंगी पानी में पड़ी हुई थी। प्रभा ने डोंगी की तरफ इशारा करते हुए कहा—"चलो मेरे यौवन के शृंगार, इस डोंगी पर सैर-सपाटा करें।" मुझे क्या एतराज था। हम दोनों उस डोंगी पर बैठकर जल-विहार करने लगे। हमारी डोंगी जा रही थी, डलझील के विशाल वक्षस्थल पर—अपने पूर्ण वेग से—और हम प्रकृति की अनुपम कृति "सौन्दर्य" का अवलोकन कर रहे थे, बड़ी तन्मयता के साथ। सहसा प्रभा बोली—"मैं चाहती हूँ कि हम-तुम दोनों ही इसी प्रकार प्रेम के बन्धन में बँधे रहें। ज्यों-ज्यों समय का चक्र घूमता जाय, त्यों-त्यों यह बन्धन भी दृढ़ होता जाय। बोलो मेरे हृदयेश! तुम्हें स्वीकार है मेरी बात?"

"प्रभा मैं तुम्हें किस प्रकार बताऊँ कि तुम मेरे तन में, मन में, रोम-रोम में, समा गई हो। काश तुम मेरे हृदय में प्रवेश कर पाती तो तुम वहाँ भी अपनी ही भोली सूरत देखती।"

मेरे इस जवाब को सुनकर प्रभा उन्मत्त हो उठी। उसके अंग से प्रेम का नशा छलकने लगा। मैं भी उसी नशे में चूर हो गया। मैंने उसकी छिटकी हुई अलकों को सँभालते हुए उसके गुलाबी कपोलों पर अपने व्यक्तित्व की छाप लगा दी। दोनों के मध्य में प्रेम के चश्मे बहने लगे। सौन्दर्य की कन्दरा में प्रणय की धारा फूट निकली। प्रभा ने अपने पैर डोंगी से लटकाते हुए मेरे गले में अपनी सुन्दर मृणाल सी बाहें डालीं—और बड़ कुछ गुनगुनाने लगी। मैंने कहा—"जरा जोर से गाओ न ताकि मैं भी तुम्हारी खुशी में शामिल हो सकूँ।" प्रभा ने डलझील के पानी की छींटें मेरे ऊपर डालते हुए गाना गाया—

"मैं हूँ पिया की जोगनियाँ,
मेरा जोग निराला रे!
ना मैं बन-बन खोजूँ पिया को,
ना मैं अलख जगाऊँ,
बैठ प्रीति की गंगा तीरे,
धीरे-धीरे गाऊँ।
जपूँ प्रेम की माला रे!
ना मैं भभूत लगाऊँ तन पर,
ना मैं भेष बनाऊँ।
ध्यान लगाऊँ, पाऊँ सजन को,
निशदिन उन्हें भुलाऊँ।
नैनन भूला डाला रे!
कोई कहे मैं पी की दीवानी,
कोई कहे मतवारी
झूम रही मैं अपने मद में,
भूली दुनिया सारी,
पी के प्रेम का प्याला रे!"

गाना खतम होते ही मैंने पानी की छींटें प्रभा के सुन्दर मुख पर छिटक दिया। वे छींटें उसके गालों पर ऐसी दमक रही थीं मानो आसमान पर तारागण छिटक रहे हों। प्रभा ने अपना चाँद-सा मुख मेरी ओर करते हुए कहा। "प्राणनाथ! आप भी कुछ गाइये।" मैंने कहा—"मैं क्या गाऊँ? तुम्हारा गाना इतना रसीला, इतना मीठा है कि उसके सामने मेरे गाने सूरज को दीपक दिखाने के समान है।"

"आपको गाना ही होगा। इस तरह मेरे गाने की तारीफ करके आप बच नहीं सकते। यह गाना नहीं बल्कि मेरे हृदय की पुकार थी।"

"अच्छा तो सुनो। मुझे सुनाना ही होगा, लेकिन मेरा गाना इतना लोचदार नहीं है। इसके लिए....."

बात काटकर प्रभा बीच में ही बोल उठी—"इसके लिए आप परवाह न करें।" मैंने गाया—

"एक तू हो एक मैं हूँ
और नदी का किनारा हो
समा प्यारा प्यारा—हो...हो...
हो...हो
दिल की बात लबों पर आये,
लबों पर आये कहीं न जाये
आँखों का इशारा हो,
और कोई न चारा हो
पूरब से एक बादल आये
आके चंदा पर छा जाये
धीमा सा अँधियारा हो
हाथ में हाथ तुम्हारा हो।"

गाना समाप्त होते ही प्रभा ने कहा—"आपका गाना तो मेरे गाने से भी बाजी मार ले गया। आपके गाने में पूरी परिस्थिति का चित्रण है। नदी का किनारा भी है। समा धारा-धारा चल रहा है। मैं भी हूँ और तुम भी हो। दोनों के हाथ में हाथ भी मिले हुए हैं। वह भी देखो सामने से बादल उठ रहा है। मैंने जो सामने देखा कि सचमुच बादल चाँद को घेर रहा था। चाँद बादल के टुकड़े से भाग रहा था।

आसमान के राजप्रासाद के वातायन से चाँद हम दोनों की ओर झाँक रहा था। उसके उज्ज्वल मुख की कान्ति डलझील के रम्यगात पर पड़ रही थी। लेकिन उस वक्त मुझे चाँद की चाँदनी की आभा अपनी प्रिय प्रभा की दिव्य आभा से क्षीण मालूम हो रही थी। डलझील की वह सुन्दरता बाबूजी आज भी मेरे हृदय-पलट पर अंकित है। साथ-साथ प्रभा की लावण्यता की अनूठी आभा भी! हम दोनों सौन्दर्य के राजा चन्द्रदेव को साक्षी बनाकर प्रणय-सूत्र में आबद्ध हो गये। एक लड़ी में बँध गये। सदैव के लिए। आपस में बिलकुल एकाकार हो गये।

* * *

प्रभा मेरी ही जाति की एक ग़रीब की लड़की थी। उसके मा-बाप कोई नहीं थे। दूर के एक रिश्तेदार ने उसको अँग-रेज़ी मिडिल तक पढ़ाया, परन्तु उसने भी अपनी "घरवाली" के डर से उसको निकाल दिया, पर उसने उसका प्रबन्ध अलग किराये की कोठरी में कर दिया। इस काम के लिए वह उस रिश्तेदार को बड़ी एहसानमन्द है। पढ़ने में वह तेज थी। हमेशा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होती। स्कालरशिप मिलने लगा। फीस भी माफ़ हो गई। इस तरह उसने बी० ए० पास किया। इसी दरम्यान में जब वह बी० ए० फाइनल में थी, तब मेरा उससे परिचय हुआ। यही परिचय धीरे-धीरे प्रेम के रूप में बदलता गया। मैं भी उसको खर्च देता रहा, और यही प्रेम इतना बढ़ा कि उसने एक दिन प्रणय का रूप ले लिया। न मुझे उसके साथ, और न उसे मेरे साथ विवाह करने में रुकावट थी, क्योंकि मेरे माता-पिता "नई तहज़ीब" के थे। उन्होंने मुझसे कह रक्खा था कि "तुम अपना जीवन-साथी स्वयं सोच-समझकर बना लेना" और प्रभा के सामने तो कोई ऐसा प्रश्न ही न था। विवाह की सूचना मैंने तार द्वारा माता-पिता को भेज दी। उसकी खुशी में उन्होंने पचास हज़ार रुपया दान भी कर दिये थे। अपनी प्रतिष्ठा की चमक को बढ़ाने के लिए न कि ग़रीबों की हमदर्दी प्राप्त करने के लिए। उन्होंने जवाब में बड़ी खुशी प्रगट की और लिखा कि जल्द आने की कोशिश करना।

"विवाह" की मंजिल पर पैर रखते ही हम दोनों के सामने जीवन का ध्येय एक दूसरे के सौन्दर्य-ग्रन्थ का पठन-पाठन करना था। उस वक्त बाबू जी, मेरे सामने धनवालों के गुलज़ार विश्व का नक्शा था। उस नक्शे में अमीरों के चोचलों के चित्र थे, और कुछ नहीं। इसी तरह काश्मीर में मैंने दौलत की सरिता बहा दी। इसी सरिता के पानी से हम दोनों के प्रेम का पौदा पनप रहा था। इसी तरह अमीरों की अलकापुरी में हमारे दिन बड़े आनन्द से गुजर रहे थे, कि एकाएक घर से पिता जी का तार मिला। उसमें लिखा था—"शीघ्र आओ तुम्हारे माता-पिता दोनों बीमार हैं।"

सच कहता हूँ बाबू जी! यह पहली मंजिल थी दुख का अनुभव करने की। मैं तार पाकर फौरन ही [illegible] साथ लेकर काश्मीर से चल पड़ा। [illegible] भर में यही सोचता रहा कि क्या [illegible] को भी रोग होता है? क्या उनकी [illegible] के ऊपर विशाद के बादल मँडरा [illegible] हैं? यह मेरी समझ में नहीं आ [illegible] उस वक्त बाबू जी मुझे [illegible] के एक ही पहलू का अनुभव था। [illegible] मेरी समझ में सब कुछ आ [illegible] अपना सब कुछ बलिदान करके।

घर पहुँचने पर मैंने देखा कि [illegible] कमरे में दोनों पास-पास चारपाई पर [illegible] हुए हैं। खिदमतगार भी थे क्योंकि [illegible] पैसा होता है, वहाँ सुविधाओं की [illegible] कमी? दोनों ने मेरे हृदय-प्रसून [illegible] को देखा और जी भरकर देखा। [illegible] बहुत खुश हुए। प्रभा उनकी खिदमत [illegible] रात दिन लगी रहती थी। वह नौकर [illegible] चाकर से अपने सास-ससुर की सेवा [illegible] करवाना चाहती थी। जितनी चतुर [illegible] वह वास्तव में बाहर से थी, उससे [illegible] कहीं अधिक अन्दर से भी थी। बाहर [illegible] भीतर उसका एक-सा रूप था। यही उसकी एक खासियत थी। इसी खासियत के बल पर वह चमक रही थी—तपे हुए सोने की तरह।

इलाज करवाया गया, खूब [illegible] तरह से। पर दोनों का रोग दिन-[illegible] बढ़ता ही गया। तिल भर भी फर्क न हुआ। इलाज में खूब अच्छी तरह से [illegible] धुआँ किया गया। किन्तु सब बेकार। आखिर दोनों ही एक-एक दिन का अन्तर देकर पीछा करके इस दुनिया से..... कहते-कहते उसका गला भर आया। [illegible] फिर उसको ढ़ाढ़स दिया। पर [illegible] भी न रहा गया। मैं भी उसी के [illegible] साथ रोने लगा। मैंने उसकी तरफ [illegible] मुँह मोड़कर अपने आँसू पोंछ लिए और उससे भी रोना बन्द करने के लिए कहा। उसने पुनः दर्द भरी साँस लेते हुए कहना प्रारम्भ किया—"बाबू जी माँ-बाप भी जीवन के कितने आवश्यक अंग होते हैं, बिना मा-बाप के जीवन कैसा होता है। जीवन के सम्बल ही मा-बाप होते हैं। इसके बाद उनके दाह-संस्कार में खूब रुपया खर्च किया गया। [illegible] को हज़ारों रुपया दान किया गया, अपनी कुल-प्रतिष्ठा के अनुसार।

इस पहाड़ से दुख को एक साल [illegible] न हुआ था कि किस्मत ने फिर अपना [illegible] चलाया, और वह भी मेरी प्यारी [illegible]

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

श्री बद्रीनारायण की यात्रा

भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्त से प्रति-वर्ष श्री बद्रीनारायण जी की यात्रा के लिए अनुमानतः ५० हजार यात्री जाते हैं। जिसमें २५ हजार स्वयं खर्च करनेवाले और लगभग इतने ही साधु तथा भिक्षुक होते हैं। ५० हजार यात्रियों के लिए अनुमानतः २५ हजार मन आटा, २३४० मन दाल, ५८५ मन घी, १७७० मन दूध, ४० मन नमक आदि की आवश्यकता होगी। जिसका पहाड़ प्रान्त से मिलना अत्यन्त कठिन है। वर्तमान समय में पर्वतीय प्रान्त की परिस्थिति अत्यन्त शोचनीय है। इसलिए उपरोक्त खाद्यसामग्री का ऐसे अकाल पीड़ित प्रान्त से यात्रियों को चोर बाजार द्वारा लेना होगा। इस समय भी आटे का भाव वहाँ पचास व साठ रु० मन बतलाया जाता है। इतनी बड़ी संख्या में यात्रियों के वहाँ अन्न खरीदने पर यदि ४ रु० सेर आटा बिक जावे तो कोई आश्चर्य नहीं, रुपये के लोभ से सारा अन्न प्रान्त का समाप्त हो जायगा तो वहाँ के निवासियों का जीवन खतरे में पड़ जायगा। दूसरी ओर धार्मिक भावनाओं को कुचलकर यात्रा पर प्रतिबन्ध लगाना यू० पी० सरकार के लिए यह भी शोभा नहीं देता। यह कठिन समस्या सरकार तथा जनता के सामने है। जिस पर विचार करना है।

वर्तमान यात्रा को रोकने का ढंग अच्छा नहीं है। इससे धार्मिक जनता में अत्यन्त क्षोभ पैदा होने की संभावना है। इस समस्या को हल करने का सरल तरीक़ा यह हो सकता है कि हरिद्वार, ऋषिकेश आदि स्टेशनों पर जो यात्रियों के आने पर प्रतिबन्ध लगाया गया है। उसको हटाकर आगे श्री बद्रीनारायण के रास्ते पर रोक लगा दी जाये। वहाँ जानेवाले यात्री के लिए भोजन सामग्री अपने साथ ले जाना आवश्यक कर दी जाये। ऐसा करने से किसी प्रान्त को भी कष्ट न होगा। क्योंकि जो मनुष्य एक मास में जहाँ जितना अन्न खर्च करता है, वहीं उस अन्न को साथ ले जाकर इस्तेमाल करेगा। एक मास के भोजनादि ले जाने के लिए कम से कम १५० रु० कुली खर्च होगा। इस नियम से ५० हजार यात्रियों में से यदि १० हजार यात्री भी गये तो १५,००,००० रु० पहाड़ प्रान्त में चला जायगा। इसी प्रकार पंडे व पुजारियों को भी आय होगी।

मेरी राय में इस प्रकार से उक्त समस्या हल हो सकती है। और हिन्दू-जाति में यात्रा रोकने का जो असन्तोष पैदा हो गया है, वह भी शान्त हो जायगा। आशा है यू० पी० सरकार मेरे इन विचारों पर विचार करेगी।

हरिद्वार
१० अप्रैल, ४६

—चिरंजीवलाल शर्मा
(कर्मवीर)
मंत्री पंजाब महावीर दल

हरिजन-बस्ती में बापू

बापू महात्मा गांधी अरोदा के लिए बम्बई में हरिजनों की बस्ती में ठहरेंगे। यह बात हरिजनों के लिए कितनी अभिमान की है। आज तक जिन हरिजनों को हिन्दू समाज अछूत मानता था, जिनको छूने से भी उनका धर्म नष्ट होता था, वही आज समाज में ऊँचा स्थान प्राप्त कर रहा है। क्यों न वह अपने को स्पृश्य से भी उच्च समझें? परमात्मा के पैर ग़रीबों के दरवाजे पर लगने से वह संपत्तिवान् बन जाते हैं। रोगों से पार होते हैं। अपना दुःख भूल जाते हैं। यह बात जैसी सच है, वैसे ही कलियुग का परमात्मा बापू उन्हीं हरिजनों का उद्धार करने जा रहे हैं। आज तक हरिजन हिन्दू समाज को अपनी कठिनाइयाँ सुनाते थे। कुएँ पर पीने का पानी भरने के लिए जाते थे, मगर उन्हें वहाँ से हंकाल दिया जाता था। परमात्मा की—जो सबका निर्माण करता है, उनके भी दर्शन वे न कर सकते थे। यह है हिन्दू समाज! क्यों न भारत परतंत्रता में रहेगा। जब आपका भाई आपसे सहमत नहीं तो ऐसे समय में आप अपने शत्रु का कैसे मुक़ाबला कर सकते हैं।

इन सब बातों की ओर बापू का ध्यान गया और वह हरिजनों का उद्धार करने के काम में लगे। लेकिन अभी भी कुछ पुरातन मतवादी हिन्दू इस महत्त्व को नहीं समझते। वे इतना जरूर जानते हैं कि कांग्रेस द्वारा ही भारत को स्वराज्य प्राप्त हो सकता है। इसलिए वह कांग्रेस के पीछे जाते हैं। वे कांग्रेस से सहमत हैं। कांग्रेस से सहमत होने के कारण क्रमशः वे बापू के विचारों से भी सहमत हैं? यह बात बापू अच्छी तरह जानते हैं, और हरिजन आश्रम का महत्त्व अधिक होने के कारण भारतवासियों का ध्यान उस ओर आकर्षित करने के लिए बापू अपने व्यक्तित्व के आकर्षण से भारतवासियों को हरिजन समाज की ओर आकर्षित करना चाहते होंगे, यह मेरा ख्याल ग़लत न होगा ऐसा मैं सोचता हूँ।

हरिजनों का उद्धार का व्रत बापू ने तो कई दिनों से स्वीकार कर लिया। बापू ने हरिजनों के लिए भीख माँगने की भी कमी न की। अपना सर्वस्व वह हरिजन कार्य के लिए आजतक दे चुके हैं। इतना होते हुए भी सनातन हिन्दुओं का ध्यान इन ओर जाता नहीं। और इसी कारण से हरिजनों के लिए मंदिर कुएँ खुले नहीं। यह बात भारत के स्वतंत्रता की दृष्टि से कितनी हानिकारक है। यह बात हर-एक भारतवासियों को जानना चाहिए।

आज बापू पुरातन काल के धर्मात्मा बन चुके हैं। वह हरिजनों की बस्ती में ठहरेंगे। नन्हे-नन्हे हरिजन बालक बापू का अपने मकानों को और रास्तों को साफ रखकर खेलते-कूदते स्वागत करेंगे। हरिजन बस्ती के धूप से मुँडी मुँड़ाये हुए फूल अपना सर बापू को देखने के लिए ऊँचा करेंगे। हरिजनों की बस्ती बापू के पवित्र पद-स्पर्श से स्वर्ग देवताओं की भूमि बन जायगी। हरिजन और हिन्दू यह विचार भारतवासियों के दिमाग़ में अरोंदा के लिए स्थान न पा सकेगा। हिन्दू और हरिजन हाथों में हाथ मिलाके, आवाज़ में आवाज़ मिलाके 'भारत छोड़ो' का नारा लगावेंगे और चन्द्र मिनटों में अँगरेज़ों को भारत छोड़ना होगा।

वर्धा
२ अप्रैल, ४६

—एस० एस० मोहोड़

* * *

ब्रज-साहित्य-मण्डल और ब्रज के लोकगीत

शिकोहाबाद में ब्रज-साहित्यमण्डल का तृतीयवार्षिकोत्सव १९-२० मार्च को हो रहा है। डाक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी सभापति हैं। यही निश्चित है कि यह मण्डल अगर कुछ वर्ष इसी प्रगति से बढ़ा तो शीघ्र ही अनेक प्राचीन अज्ञात ग्रन्थों द्वारा भगवती भारती को अलंकृत कर सकेगा। किन्तु प्राचीन ग्रन्थों की शोध के साथ यह भी आवश्यक है कि जहाँ साहित्यिक कृतियों को खोजा जाये वहाँ लोक-साहित्यकारों की उपेक्षा न की जानी चाहिए। ब्रज के लोक-साहित्य के विपुल भण्डार की ओर सम्मेलन को अवश्य ही दृष्टिपात करना चाहिए। रसिया, जिकड़ी, भगत, ख्याल, डंडेसाई आदि का जितना सम्बन्ध लोक-साहित्य ब्रजभाषा का है सम्भवतः अन्य किसी भाषा का नहीं। ब्रज के इन अनेक साहित्यिक 'अखाड़ों' के बेपढ़े लिखे 'उस्तादों' ने जो सुन्दर प्रासादमयी, धारावाहिक काव्य-उपकरणों से परिपूर्ण रचना की है, वह प्रतिदिन नष्ट हो रही है। केवल यत्र-तत्र उनकी शिष्य परम्परा की स्मृतिपटी पर अंकित कुछ पंक्तियां यदा-कदा सुनने को मिल जाती है। इस सभी साहित्य को शीघ्रातिशीघ्र सुरक्षित किये जाने की आवश्यकता है। यदि इस ओर शीघ्र ध्यान नहीं दिया गया तो हम बहुत-सी अमर कृतियों को सदा के लिए खो तो देंगे ही साथ ही उन स्वर्गीय कलाकारों के प्रति कृतघ्नता के भागी भी बनेंगे। राष्ट्रभाषा हिन्दी को बलवती बनाने के लिए भी इस साहित्य का विशेष महत्त्व है। इन लोक-रचनाओं में ऐसे अगणित पारिभाषिक शब्द हैं जो भावों को अभिव्यक्त करने के लिए बड़े उपयोगी हैं, और उनको ग्रहण करके हम बहुत से अनावश्यक विदेशी शब्दों से अपनी भाषा की रक्षा कर सकते हैं।

हमें आशा है जहाँ ब्रज-साहित्य मंडल के अधिवेशन में अनेक महत्त्वपूर्ण समस्यायें विचाराधीन हैं, वहाँ लोक-साहित्य की उपयोगिता को भी भली प्रकार समझकर उसकी ओर भी कोई क्रियात्मक कदम उठाया जायेगा।

मथुरा

—रामनारायण
अग्रवाल

* * *

रेडियो और सम्मेलन

२४ मार्च १९४६ को स्थायी समिति की एक बैठक दिल्ली में रेडियो के विषय में केन्द्रीय सरकार के एक पत्र पर विचार करने के लिए हुई थी। उसने यह निश्चय किया कि ५ मई को दिल्ली में स्थायी समिति का एक अधिवेशन इसी विषय पर अधिक विचार करने के लिए किया जाय। विषय के महत्त्व को देखते हुए यह भी निर्णय किया गया कि जो सदस्य चाहेंगे उनको तीसरे दर्जे का रेल भाड़ा दिया जायगा।

यह भी निश्चय हुआ कि इस बीच रेडियो विभाग को पत्र लिखकर उनसे उनकी नीति तथा प्रस्तावित कमेटी के संगठन के विषय में स्पष्टीकरण कराया जाय।

उपर्युक्त निश्चय के अनुसार स्थायी समिति का एक अधिवेशन रविवार वैशाख सौर २२ संवत् २००३, तारीख ५ मई १९४६ को २ बजे दिन से १८ दीवान हाल, दिल्ली में होगा। निवेदन है कि आप समय पर पधारने की कृपा करें।

नोट—रेलभाड़ा देने के बारे में श्री कार्यवाहक उप-सभापति जी का २२ चैत्र का पत्र कार्यालय में आया है जिसमें उन्होंने यह लिखा है कि स्थायी समिति की बैठक में रेलभाड़ा देने का सुझाव जो उन्होंने उपस्थित किया और स्थायी समिति ने जो उसे स्वीकार किया उसमें वैधानिक त्रुटि थी। पुनः विचार कर उनका निर्णय है कि स्थायी समिति इस प्रकार अपने सदस्यों को किराया देने का निश्चय नहीं कर सकती। वार्षिक अनुमान पत्र में भी इसकी कोई चर्चा नहीं है। इसलिए सम्मेलन के हिसाब में से इस मद में से व्यय नहीं होगा।

रेलभाड़ा देने के लिए कार्यवाहक उपसभापति जी कुछ मित्रों की सहायता से अलग प्रबन्ध करेंगे।

—मौलिचन्द्र शर्मा,
प्रधान मन्त्री

प्रिंस होमियोपैथिक कालेज
बनारस १०५
गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड होमियोपैथिक, बायकेमिक, इंजेक्शन का तीनों डिप्लोमा (सर्टिफ़िकेट) आधी फ़ीस में लें या शिक्षा प्राप्त करें। नियमावली मुफ़्त मंगावें।

धातुपौष्टिक
कामजोत वटी
स्वप्नदोष, वीर्यविकार, शीघ्रपतन, सुस्ती व कमजोरी दूर करके खून, बल व वीर्य बढ़ाती है। डि० रु० २॥)
कामजोत तिला
इसके उपयोग से इन्द्रा का नसें व अवयव मजबूत होकर उत्थानशक्ति और स्तम्भन-शक्ति बढ़ती है। फ़ी शी० २॥)
मदनमंजरी फार्मेसी—जामनगर
इलाहाबाद—मदन स्टोर्स ४७ जान्स्टनगंज

श्वेतकुष्ट बनौषधि
महात्माप्रदत्त श्वेतकुष्ट (सफेदी) की दवा से तीन दिन में पूरा फ़ायदा। यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, विज्ञापन-दाताओं की दवा से निराश हो चुके हों तो इसे लगाकर आराम होवें। १५ दिन की दवा का मूल्य २॥)।
सफेद बाल काला
इस तेल से बालों का पकना रुककर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दूना मूल्य वापसी की शर्त लिखा लें। यह तेल सिर के दर्द व सिर में चक्कर आना आदि को आराम कर आँख की रोशनी बढ़ाता है। एक-आध बाल पका हो तो २॥), आधा पका हो तो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मँगवा लें।
वैद्यराज अखिल किशोर राम
नं० ३७ पो० कतरीसराय (गया)

मेरी तरह तदरुस्ती हासिल करो
खराब खून को साफ करता है
डा. वामन गोपाल
आयोडाइज्ड सार्सापरिला
हर जगह मिलता है
इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जाहरा एल० एस० धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

चीन और च्यांग

(प्रजातन्त्र चीन और जनरल च्यांगकाइ शेक की विस्तृत आलोचना और जीवनी)

'चीन और च्यांग' पंडित कमलापति जी त्रिपाठी शास्त्री एम० एल० ए० की सुन्दर रचना है। इससे पूर्व उनकी तुर्की के कमाल और उसके 'कमालों' पर लिखी पुस्तक 'इस्लामी दुनिया का सिरताज' हमें देखने को मिली। हिन्दी में लगभग आधे दर्जन से अधिक ही पुस्तकें तुर्की पर निकली हैं; परन्तु त्रिपाठी जी की उक्त पुस्तक अनायास ही उन सब में प्रथम स्थान प्राप्त कर लेती है। 'इस्लामी दुनिया का सिरताज' की सभी विशेषतायें अपने परिष्कृत तथा परिमार्जित रूप में प्रस्तुत ग्रन्थ 'चीन और च्यांग' में अवतीर्ण हुई हैं। पुस्तक हिन्दी में नई और अपने ढंग की एक मात्र है। तुर्की के बाद चीन की कथा लिखकर जहाँ लेखक ने अपने व्यक्तित्व का स्पष्टीकरण किया है, अपनी कला का परिचय दिया है, वहीं हमारे एक पुराने साथी से, जिसे अपनी स्थानीय दशा के कारण हम लगभग भुला चुके थे, नई पहचान प्रारम्भ करने का श्रेय भी उनको है।

पंडित कमलापति तिवारी शास्त्री
एम० एल० ए०।

चीन के गत ३० वर्षों के इतिहास की अपनी विशेषता रही है। वह निम्न प्रकार के निर्दलन तथा परले सिरे की दासता की कहानी है, महा-अन्धकार के मध्य में भी प्रकाश की किरणों को उद्भासित करने के प्रयत्न में रह कतिपय उद्दाम चरित्र-नायकों का परिचायक है, कर्त्तव्य-परायणता, दृढ़ता, साहस, निष्ठा तथा लगन से वह ओत-प्रोत है, निस्स्वार्थता तथा उत्सर्ग की गौरवमयी गाथा है, स्पर्धा तथा स्वार्थ-साधना की स्थली है, विश्वासघात तथा देश-द्रोह का काला पन्ना है, अनुशासन का ज्वलन्त उदाहरण है और उच्छृङ्खलता तथा विनयहीनता में भी अपना सानी नहीं रखता; उसका एक-एक शब्द रक्त की लालिमा से रंजित है और इस सबके बीच से होकर, सारे उतार-चढ़ावों से प्रभावित होता हुआ वह आज जन-जागृति, चेतना, राष्ट्रीयता और इन सबके ऊपर मानवता के आसन पर आसीन है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह सारा रक्तपात, सारी अव्यवस्था, हमारे लेखक के ही शब्दों में 'चीनी राष्ट्र के कालुष—उसके तम और मोह को भस्म करने के लिए थी। आज वह तपाये हुए सोने की तरह एक महान् राष्ट्र के रूप में इस जगत् के रंगमंच पर अवतीर्ण हो रहा है।'

इतिहासज्ञ के निष्पक्ष तथा दायित्व-पूर्ण भाग का अवलम्बन करके लेखक चीन की कथा लिखने चले हैं। परन्तु अपने देश की दयनीय दशा उन्हें आगे नहीं बढ़ने देती। लेखनी रुक जाती है, वे इतिहासज्ञ से देशभक्त हो जाते हैं। पग-पग पर चीन और भारत को एक तुला पर तोलते हैं, दोनों महादेशों की परिस्थितियों की समानता को व्यक्त करते तथा हमें चीन से शिक्षा ग्रहण करने को बाध्य कर देते हैं। चीन और भारत की परिस्थितियों में आश्चर्यजनक समानता है। यही कारण है कि एक की कथा लिखने में लेखक को दूसरे की वर्तमान दशा से मार्मिक वेदना होती है। पुस्तक का प्रत्येक पन्ना इस बात का प्रमाण है। संभव है यह साम्य ही प्रस्तुत ग्रन्थ-प्रणयन के लिए लेखक की प्रेरणा का मूल रहा हो। क्योंकि लेखक स्वयं भारत की वर्तमान महामारी के उपचार में सक्रिय भाग ले रहे हैं। उत्तर चीन के सैन्य-सत्तावादियों का अभिनय आज भारत के रंगमंच पर देशी राजे और विदेशी सत्ता के पक्षपाती ज़मींदार आदि कर रहे हैं। देशद्रोह का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है कि भारत-संतान ही भारत की राष्ट्रीयता के हनन का घृणित कार्य कर रही है। क्रान्ति के जनक तथा प्रगति के एकमात्र ठेकेदार कम्यूनिस्टों की कलाबाजियाँ आज अधिक स्पष्टता के साथ यहाँ देखने को मिल रही हैं। राय महाशय की 'राय' का भंडाभोड़ भी भारत में चीन से अधिक हुआ है। ऐसी दशा में यदि लेखक 'बहुत विचार करने के बाद भी उन लोगों की प्रशंसा करने में समर्थ नहीं हो पाते तो इस घृणित अभिनय के प्रमुख नेता और च्यांग के विरोधी रहे हैं' तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं।

इसका यह अर्थ नहीं कि अपने चरित्र-नायक के विरोधी तत्त्वों के गुणों की लेखक ने उपेक्षा की। चीन के भीषण रक्तपात तथा वर्षों तक राष्ट्रीय अनैक्य के लिए उत्तरदायी कम्यूनिस्टों की कुछ बातों में वे सराहना करते हैं—"कम्यूनिस्टों ने युद्ध-प्रणाली में गुरिला-रण-नीति को ग्रहण करके वास्तव में सैनिक-विज्ञान में नया अध्याय जोड़ा है। यह उन्हीं की देन है जिसे स्वयं सरकार ने ग्रहण किया और जिसका विकास आज चीन का सहायक हो रहा है।..... उनके (कम्यूनिस्टों के) साहस, धैर्य तथा उद्यम और अपनी अपरिमेय आदर्श-पूजा को देखकर आदर के साथ मस्तक झुकाने को अवश्य बाध्य होना पड़ता है। इतना कष्ट और इतना त्याग सिवा उसके और कौन कर सकता है जिसने अपना जीवन और अपना अस्तित्व तथा अपनी समस्त भावनाओं, उल्लास और आकांक्षा को इष्ट लक्ष्य के चरणों में अर्पित कर दिया हो।" इन उद्धरणों के बाद लेखक की दृष्टि को एकाङ्गी नहीं कहा जा सकता।

त्रिपाठी जी की बोली बड़ी प्रभावोत्पादक तथा ग्रहणशील है। घटना का वर्णन करते हुए वे उसके मर्म को खोलकर सम्मुख रख देते हैं। उनके चित्रण में एक विशेषता मुझे और लगी। किसी भी महत्त्व की घटना का वर्णन करने से पूर्व वे एक सिद्धान्त स्थिर कर लेते हैं, एक कसौटी बना लेते हैं। कतिपय चुने हुए शब्दों में अपने मान-दण्ड का परिचय देकर पाठक को अगली घटना से ठीक वही निष्कर्ष निकालने के लिए सहमत कर लेते हैं जो कि उससे उन्होंने स्वयं निकाला है। यह विशेता हिन्दी के कम लेखकों में है। इस शैली का एक लाभ यह है कि बहुत-सी काम की और पते की बातें बीच-बीच में ज्ञात होती रहती हैं। पुस्तक मनोरंजक हो जाती है। इतिहास सदृश शुष्क विषय भी साहित्यिक रस का सृजन करने लगता है।

पुस्तक की भाषा के सम्बन्ध में मैं क्या कहूँ। कुशल पत्रकार के रूप में गत १२ वर्षों से त्रिपाठी जी अपनी भाषा का संस्कार और परिष्कार करते चले आये हैं। प्रवाह उनकी भाषा की और कोमलता उनके शब्दों की विशेषता है। सुघड़ और शिष्ट शब्दों से युक्त भाषा पढ़ते ही बनती है। हाँ, कतिपय स्थानों पर 'गुंडा' शब्द का प्रयोग मुझे कुछ खटका। इसी भाव का द्योतक यदि कोई अन्य शब्द रहता तो अधिक शोभनीय होता। इसी प्रकार तीन-चार जगहों पर 'चुनांचे' शब्द भी प्रयुक्त हुआ है जो पुस्तक की परिष्कृत तथा शिष्ट हिन्दी के सागर में पथरीला टापू-सा लगता है। परन्तु प्रूफ-शोधन की सुविधा भी लेखक को नहीं रही इससे उनका दायित्व कम हो जाता है। त्रिपाठी जी शुद्ध हिन्दी के पक्षपाती हैं। उनकी रचनाओं में भाषा का उत्तम माधुर्य पान करने को मिलता है। शब्द तो उनके हाथ की कठपुतली हैं, जिस भाँति चाहते हैं वे मनमाना उन्हें नचाते हैं। पुस्तक की भाषा और शैली पर बाबू श्रीप्रकाश जी के इस कथन के बाद किसी के कहने को क्या शेष रह जाता है कि "पुस्तक इतिहास की है पर पढ़ने में साहित्य का रस मिलता है। वर्णन साधारण घटनाओं का है पर भावुकता के कारण स्थान-स्थान पर लेखक ने गद्य में पद्य लिख डाला है।"

अन्त में हम आशा करते हैं कि हिन्दी-संसार इस उपयोगी रचना का उपयुक्त स्वागत करेगा। राष्ट्रकर्मियों तथा सार्वजनिक जीवन में भाग लेनेवाले व्यक्तियों से तो हम और भी अनुरोध करेंगे कि वे अवश्य ही इस ग्रन्थ का अवलोकन करें। वे सीखें कि किस प्रकार निराशा और विफलता तथा अनैक्य में से चीन के कर्मियों ने आशा, सफलता तथा ऐक्य को जन्म दिया। अन्धकार के अतल में डूबा हुआ यह अपार जन-समूह किस भाँति आज नव-जीवन, नव-चेतना और नव-जागृति के आसन पर आसीन हो रहा है। ऐसी उपयोगी रचना के लिए हम लेखक के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं। उनका सफल श्रम स्तुत्य एवं सराहनीय है। उपयोगी चित्रों ने पुस्तक की उपादेयता को और भी बढ़ा दिया है।"

—पंडित

*चीन और च्यांग (चीन के कर्णधार च्यांगकाई शेक का विस्तृत जीवन-वृत्तान्त) लेखक, पंडित कमलापति त्रिपाठी, प्रकाशक, सरस्वती पब्लिशिंग हाउस, कटरा टाउन, प्रयाग, मूल्य २)।

जैहिन्द गीत

आज़ाद हिन्द फ़ौज के जोशीले गीतों का घर घर में प्रचार करने के लिए पुस्तकें मुफ्त बाँटी जा रही हैं। आज ही १ काडे डालकर मँगा लीजिये।

संगीत कार्यालय, हाथरस—यू० पी०

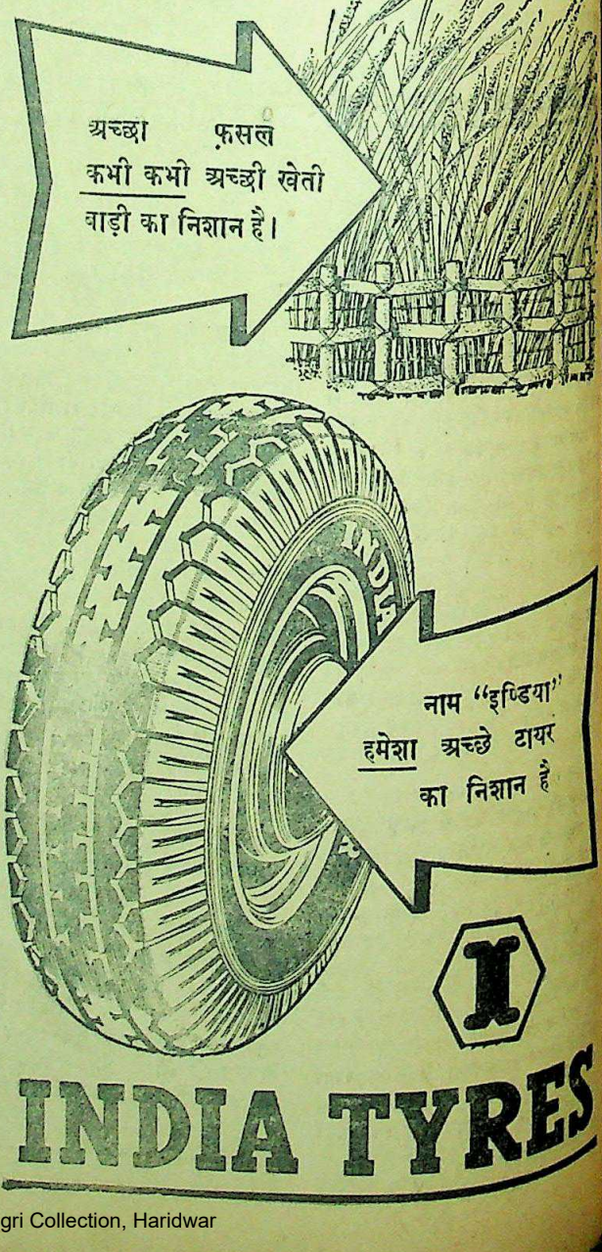

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय स्वाधीनता क्यों चाहिए

(पेज ८ का शेष)

...कर रही है, यदि कल के भारत में उन्हें ...ी करना चाहेंगे तो 'ग्रे २० करोड़ तो ...के लिए सब ही कोई बड़ी बात नहीं ...।

...आप हमारी मदद करें ताकि हम ...वंशों आपको बना सकें। आप हमें ऋण ...आप हमें उपार्जन करना सिखाएँ और ...ार हमें उपार्जन करना सिखाएं। पठान आपकी रक्षा ...की सर्वदा सिखाएं। सीमान्त को मदद करने ...ा प्रधान अंग है। सीमान्त को मदद करना। ...का अर्थ होगा भारतवर्ष को मदद करना। ...सीमान्त या कबीले इलाक़ों में एक अस्प- ...ताल और एक स्कूल बनाने का अर्थ होगा— ...भारतवर्ष की रक्षा के लिए एक युद्धपोत या ...तैयार बनाने की अपेक्षा अधिक उपयोगी ...सार करना। सरकार के पोलिटिकल- ...विभाग ने जो पठानों की बाबत आपके ...सामने पुरानी तस्वीर खींच दी है—उसे ...आप भूल जाएं। पोलिटिकल विभाग का ...काम भूल जाएं। पोलिटिकल विभाग का ...काम हमारे आपस में फूट डालना और ...दल का हमारे आपस में फूट डालना और ...दुर्बल कमजोर बनाना। किसी भी चतुर ...विदेशी शासक के लिए ऐसा करना तो ...स्वाभाविक और युक्तिसंगत ही है। वरना ...वह शासन कर ही कैसे सकता है?

...यह तो हमारा कर्त्तव्य है कि हम एक ...हों। मजबूत बनें और अपने देश की रक्षा ...करें। अतः हमें उन पुराने चित्रों को भूल ...जाना है। ब्रिटिश सरकार ने हमें केवल ...अपने फौजों की शिक्षा के लिए इस्तेमाल ...किया—इसे भी हम भूल जाएँगे। कमांडर- ...इन-चीफ, वाइसराय और चांसलर सबों ने ...हिन्दुस्तान में खून और हत्या का आस्वादन ...किया है, इन बातों को भी हम भूल जाएँगे। ...हमें कभी अवसर नहीं दिया गया था कि ...हम अपनी सहायता आप करें—या हम ...उनके साथ मित्रता कर सकें।

...अब परीक्षा का समय हमारे सामने ...है। आपने देश को बड़ी-बड़ी बातें कही हैं। ...आपने देश के सामने शक्तिवान् और उन्नति- ...शील स्वतंत्र भारत का चित्र रखा है— ...किसी ऑगरेज आपको कभी नहीं बनाने देते। ...वे आज यहां से भागने को तैयार हैं।

...नेताओं को अब अपने उद्देश्य की ...अन्तिम सीढ़ी पर अपने प्रयत्नों तथा बलि- ...दानों का परिचय देना है। आपको अपनी ...शक्ति का परिचय देना है। एक-एक रक्त ...के बूंद और विपत्ति की घड़ियों का उत्तर ...देना है। आपको अपने सिद्धान्तों को कसौटी ...पर उतारना है। नाममात्र की स्वतंत्रता ...से कुछ नहीं बनेगा। यह उसके लिए ठीक ...हो सकता है जिसके पास स्वतंत्रता को ...छोड़कर सब वस्तुएं हों। लेकिन इससे ...उन करोड़ों इन्सानों का कुछ नहीं बनने- ...वाला है, जिनके पास सिर्फ स्वतंत्रता हो ...और कुछ भी न हो। स्वतंत्रता भिन्न-भिन्न ...लोगों के लिए भिन्न-भिन्न अर्थ रखती है। ...भूखों के लिए भोजन, निर्धन के लिए ...धन और दुःखी के लिए आराम ही ...स्वतंत्रता है।

...जब आपने भूखों के सामने स्वतंत्रता ...की बात की, उन्होंने स्वाभाविक ही उसका ...अर्थ भोजन से लिया। जब ग़रीब के सामने ...आपने स्वतंत्रता की बात की, इसका भी ...अर्थ उन्होंने स्वाभाविक आराम से लिया। ...और अब आज वे सुनते हैं कि आपको वह ...पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हो गई है—जिसके ...लिए आपने उनकी जानें लीं, तो वे अवश्य ...ही अपना-अपना हिस्सा, अपनी रोटी और ...आराम मांगेंगे। आपको उन्हें न केवल ...रोटी और आराम देना है बल्कि विश्वास ...और आशा भी देनी है—यदि भारतवर्ष ...को जीवित रखना है।

युद्धकाल में जो विषम दुश्चिन्तायें नागरिकों को सता रही थीं, वे अब धीरे धीरे दूर होती जा रही हैं। चीजों की कमी और उन पर लगी पाबन्दियां, यद्यपि अभी भी हमें चिन्तित बना देती हैं परन्तु वह विषमता, अब उनमें नहीं है।

कड़ी से कड़ी विपत्ति में भी चाय थोड़े दिनों से निश्चित सान्त्वना देती रही है और अब तो इसका स्वाद, आनन्द व लाभ पूर्णतया उठाया जा सकता है। थके मांदों को यह अभी भी सान्त्वना देती है साथ ही अब सामाजिक अवसरों पर आनन्द का स्रोत बहाती और विचारों में प्रेरणा लाती है। अब शान्ति स्थापित करने में चाय अपना पार्ट अदा कर रही है।

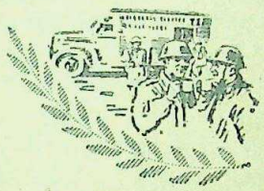

युद्ध की तरह शान्ति में भी

चाय का सहारा लीजिये

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 252

भारतीय चायों में सर्वश्रेष्ठ

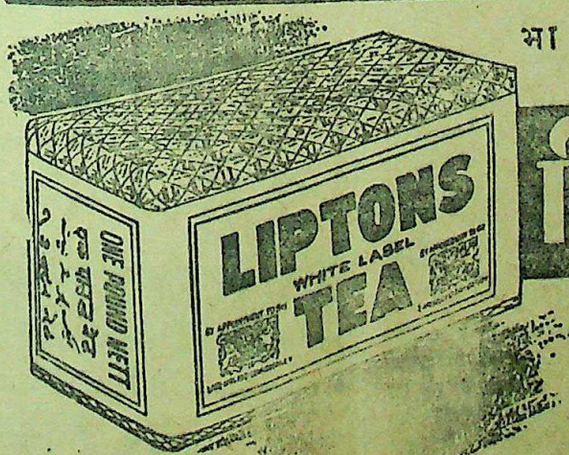

लिपटन की

व्हाइट लेबुल चाय

2TK 82 W

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म-जगत् के कुछ पुराने संचालक

सिनेमा-व्यवसाय में इनका विशेष भाग रहा है

लेखक, श्री 'भास्कर'

आजकल चलचित्रों का केन्द्र बम्बई है और जब से फिल्म-निर्माण प्रारम्भ हुआ है तब से बम्बई ही इस व्यवसाय का प्रधान केन्द्र बन गया है। वहाँ अब भी वह व्यवसायी अपना कार्य सुचारु रूप से चला रहे हैं जिन्होंने इसके प्रारम्भिक काल में इस व्यवसाय को अपने हाथ में लिया था। इनमें से श्री चमनलाल देसाई, श्री चंदूलाल शाह, स्वर्गीय श्री हिमांशुराय तथा श्री एम० भवनानी आदि इस क्षेत्र के पुराने खिलाड़ी हैं।

श्री चमनलाल देसाई, भूतपूर्व संचालक सागर मूवीटोन और नेशनलस्टूडियो वयोवृद्ध व्यवसायी हैं। आपका जन्म सन् १८८६ में भड़ौंच में हुआ था। बम्बई विश्वविद्यालय की प्रवेशिका परीक्षा पास करके आप बम्बई आये। यहाँ आपने केयले का व्यापार प्रारम्भ किया। इसके कुछ दिन बाद आपने मद्रास में कपड़े का व्यवसाय किया, जहाँ पर आपको काफी धन प्राप्त हुआ। इसी समय आपका ध्यान फिल्म-संसार की ओर आकृष्ट हुआ और आपने डाक्टर पटेल के सहयोग से "सेलेक्ट पिक्चर्स सर्किट" चित्र-वितरक संस्था स्थापित की। सन् १९३० में आपने तथा डा० पटेल ने मिलकर "सागर फिल्म कम्पनी" खरीद ली। सन् १९३६ तक

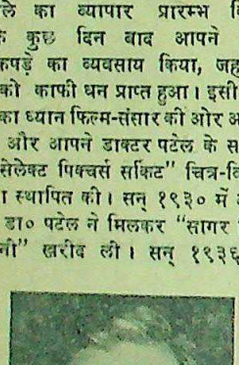

वयोवृद्ध फिल्म-जनक सेठ चमनलाल देसाई

दोनों ने मिलकर कार्य किया। किन्तु बाद में आप ही इस कम्पनी के सर्वेसर्वा हो गये। इसके बाद नेशनल स्टूडियो की स्थापना की। अब तक आपने लगभग कई दर्जन चित्र बना डाले होंगे। इनमें मूक और सवाक् दोनों सम्मिलित हैं। आपके तत्त्वावधान में पौराणिक, मनोरंजक तथा सामाजिक चित्र निर्मित किये गये।

आधुनिक-फिल्म जगत् की उन्नति का श्रेय बहुत कुछ चमनलाल देसाई को है। आपने भारतीय चित्र-संसार की अपूर्व सेवा की है। इसीलिए मद्रास में वे "मोशन-पिक्चर-कन्वोकेशन" के अध्यक्ष बनाये गये थे। अब आप वृद्ध हो गये हैं। आपके सुयोग्य पुत्र श्री सुरेन्द्र देसाई और श्री वीरेन्द्र देसाई आपके चलाये मार्ग की ओर अग्रसर होकर फिल्म-जगत् की अपूर्व सेवा कर रहे हैं।

सेठ चन्दूलाल शाह का जन्म सन् १९०० ई० में जामनगर में हुआ था। आपके पिता रियासत में खजानची थे। आपने अच्छी शिक्षा प्राप्त की है। आपको गुजराती में कहानियाँ लिखने का शौक़ था। आपने वह कहानियाँ कुछ फिल्म-संस्थाओं

'बाम्बे टाकीज़' के संस्थापक श्री हिमांशुराय

को दीं जिनके फिल्म बने। सन् १९२९ में आपने लाहौर की गौहर के सहयोग से "रणजीत" की स्थापना की। इस कम्पनी ने आपके सहयोग से बड़े मनोरंजक चित्र जनता को भेंट किये। आपने निर्देशन में काफी चातुर्य्य दिखाया। आपकी "तूफान-मेल", 'सितमगर', 'कालेजगर्ल', 'मतलबी दुनिया', 'ज्वालामुखी', 'गुणसुन्दरी' आदि श्रेष्ठ कृतियाँ हैं।

अरसा हुआ आपने चित्र-निर्माण स्थगित कर दिया था किन्तु पुनः क्षेत्र में आ डटे। "सन्त तुलसीदास" जैसा चित्र-पट आप ही के तत्त्वावधान में निर्मित हुआ है। आपकी कम्पनी में अब अच्छे-अच्छे कलाकारों का सहयोग है।

श्री आर्देशिर एम० ईरानी महोदय का जन्म ५ दिसम्बर १८८६ में हुआ। आपके पिता वाद्य-यंत्रों के बड़े भारी व्यापारी थे। ईरानी को शिक्षा छोड़कर अपने पिता के साथ हाथ बँटाना पड़ा। आपको सिनेमा से अधिक प्रेम था। आपने फिल्म-कम्पनी स्थापित करने की सोची और इसी बीच में लोगों के कहने से आपने फिल्म-वितरण का कार्य प्रारम्भ कर दिया। सन् १९१४ में आपने "एलेक्जेन्ड्रा सिनेमा" का उद्घाटन किया। कुछ दिन बाद साझे में "स्टार फिल्म कम्पनी" स्थापित की। फिर "जगदीश" और "मैजेस्टिक" की स्थापना की। तत्पश्चात् "रायल आर्ट स्टूडियो" का निर्माण किया जो बाद में इम्पीरियल कहलाई। "आलमआरा" जैसा प्रसिद्ध चित्र आपही की देख-रेख में तैयार हुआ था। आपने "माधुरी, सुलोचना, डाकू की लड़की, सौभाग्यसुन्दरी, अनारकली तथा इन्दिरा एम० ए०" विख्यात चित्रपट बनाये। आप एक कुशल संचालक तथा चित्र-संपादक हैं। आजकल आपने इस व्यवसाय की ओर से हाथ खींच लिया है किन्तु अब शीघ्र ही इस क्षेत्र में आने की तैयारी कर रहे हैं।

श्री हिमांशुराय—आपकी जन्म-भूमि बंगाल है। आपको प्रारम्भिक सफलताएँ लन्दन में मिली। सर्वप्रथम आपने ग्रेट ईस्टर्न फिल्म कार्पोरेशनकृत "लाइट आव एशिया" में बुद्ध की भूमिका अभिनीत की, फिर "दी गौडेस" नामक ड्रामे में प्रधान अभिनेता का कार्य किया। इसके बाद आपने "नागन की रागिनी" में कार्य किया और भारत आ गये। यहाँ आने पर आपका विवाह कवीन्द्र रवीन्द्र की भतीजी देविकारानी से हो गया, यहाँ आपने "हिमांशुराय इन्डोइन्टर नेशनल टाकीज़" की स्थापना की और फिल्म-निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया। "कर्म" आपका प्रथम चित्र था, जो इंगलैंड में काफी दिन चला। आप एक कुशल संचालक तथा विज्ञापनकार थे। प्रचार करने में आपने कमाल कर दिया। इसी की बदौलत "कर्म" विलायत में इतनी ख्याति पा गया, यद्यपि चित्र साधारण था। आप "बाम्बे टाकीज़" के प्रवर्त्तकों में से थे। आप ही की चतुरता से उक्त कम्पनी प्रगतिशील बनी है।

श्री एम० भवनानी—आप एक सिंधी सफल निर्माता तथा निर्देशक हैं। सर्वप्रथम आपने "कोहनूर" फिल्म-कम्पनी में कई चित्रों को बनाया। फिर इम्पीरियल फिल्म कम्पनी में कुछ दिन कार्य करने के बाद आपने मद्रास में स्वतंत्रतापूर्वक फिल्म निर्माण किया। यहीं पर आपने मिस (एनाक्षी राम राव) से शादी कर

आप सिनेमा-सम्बन्धी शिक्षा प्राप्त करने के हेतु जर्मनी भी गये। वहाँ से लौटने पर अपने कुछ चित्र बनाये। फिर "इण्डिया आर्ट प्रोडक्शन" में काम किया। इसके बाद "अजन्ता सिनेटोन" की आपने स्थापना की। अजन्ता सिनेटोन से कई प्रसिद्ध चित्र निकले। कुछ दिन बाद आपने इसे बन्द कर दिया और "भवनानी प्रोडक्शन" खोला। आपकी कुछ प्रसिद्ध कृतियाँ ये हैं, "मिल-मजदूर, नया जागरण, भारत की बेटी" आदि।

आपने भारत के कोने-कोने में घूम कर अभिनेता-अभिनेत्रियाँ चित्रपट को दिये। वर्तमान समय के प्रसिद्ध कलाकार आपके द्वारा ढूँढ़े गये हैं। सुन्दरियों के सर्वश्रेष्ठ पारखी हैं। आप एक समझदार निर्माता तथा निर्देशक हैं।

साइन्स का एक नवीन अद्भुत आविष्कार

जिसने संसार को आश्चर्य में डाल दिया

तैल मस्ताना (रजिस्टर्ड) कोई साधारण तैल नहीं है बल्कि एक साइन्टिफिक आश्चर्यजनक आविष्कार है जिसने भारतवर्ष ही नहीं वरन् दुनिया के तमाम धुरन्धर साइन्स-विशेषज्ञों को हैरत में डाल दिया है। इस तैल से गत २५ वर्षों से हज़ारों हताश असाध्य रोगी नवजीवन प्राप्त कर चुके हैं। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि ऐसा गुणकारी तैल आप दूसरी जगह न पायेंगे। इसके लगाने से बाल्यावस्था की कुटेव से रगों की कमज़ोरी, सुस्ती कुटेव से पैदा हुई खराबियाँ, नसों का गर्भाधान के योग्य न रहना, नपुंसकता, शीघ्रपतन आदि तमाम खराबियाँ एक हफ़्ते के अन्दर दूर हो जाती हैं। कद व बल को बढ़ाकर रग व पुट्ठों में बिजली की भाँति ताक़त भर जाती है। यह हर मौसिम में लाभ करता है। छाले आदि का भय नहीं। आप आज ही एक शीशी मँगाकर सुख लूटिये। क़ीमत फी शीशी ३=) तीन रुपया दो आना, दो शीशी का ५॥=), डाक-खर्च माफ़। मनीआर्डर =) यदि आपको धातुक्षीणता, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, प्रमेह आदि की शिकायत है तो धनी माननीय सहस्रों महापुरुषों-द्वारा प्रशंसित जगत्-प्रसिद्ध २५ वर्ष का आजमूदा वीर्य-संजीवन सत इस्तेमाल कीजिए। मूल्य फी डिब्बा ३।-), डाक-खर्च माफ़, मनीआर्डर =)।

मँगाने का पता—रूपविलास कम्पनी, नं० ४८१, कानपुर।

पहाड़ पर ठंडक होती है

परन्तु प्रत्येक व्यक्ति के लिये पहाड़ पर जाना सम्भव नहीं।

जी. जी. फल पेय और फल शर्बत स्फूर्ति एवं ठंडक प्रदान करता है।

फल पेय :—नीबू, माल्टा, आम, नीबू कोडियल, नीबू बार्ली।

फल शर्बत :—संतरा, केला, मिक्सडफ्रूट, नीबू, फालसा, स्ट्रोबेरी।

66

जी. जी. फ्रूट प्रिज़र्विङ्ग फैक्टरी आगरा

जी. जी. इन्डस्ट्रीज़

जी० जी० सेल्स डिपो :—

मेसर्स गिरधरलाल बकील जनरलगंज कानपुर

बम्बई : देहली : कलकत्ता : ग्वालियर : अजमेर : बरेली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

पटना पो० बिरजू मिल्की राजेन्द्र साहित्य महाविद्यालय सेवदह में २६ अप्रैल को अर्थमंत्री माननीय श्री [illegible]नारायणसिंह पधारे और राजेन्द्र साहित्य महाविद्यालय का निरीक्षण किया। आपने दो सौ रुपये तत्काल सहायता देते हुए निम्न सम्मति प्रदान की—"सेवदह विद्यालय में छात्रों के साथ कुछ समय बिताया इससे मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई तथा जितनी देर तक मैं वहाँ रहा अपने को एक नवीन दुनिया में पाया। आगे जो कार्य होनेवाला है उसमें यहाँ के विद्यार्थियों का बहुत बड़ा हिस्सा रहेगा। गांधी जी के विचारों के ही द्वारा हिन्दुस्तान का कल्याण होनेवाला है। उन विचारों का मनन-चिन्तन तथा अपने में कार्य्यान्वित करने की शक्ति प्राप्त करना वर्त्तमान शिक्षण-शिविर का मुख्य उद्देश्य है। समग्र ग्राम सेवा में लगा देने की प्रवृत्ति हासिल कर गाँव-गाँव में फैल जाना तथा उस कार्यक्रम को व्यवहारिक रूप देना यही ध्येय यहाँ के शिक्षार्थियों का होना उचित है। मुझे विश्वास है कि इसी उद्देश्य की पूर्त्ति के निमित्त वर्त्तमान शिविर चलाया जा रहा है। मैं विद्यालय की दिन-प्रतिदिन उन्नति चाहता हूँ।"

महाविद्यालय के साहित्य-परिषद और समग्र ग्राम सेवक शिक्षण-शिविर के छात्रों की संयुक्त बैठक श्री मथुराप्रसादसिंह, साहित्यरत्न के सभापतित्व में हुई। जिसमें राष्ट्रीय सप्ताह के प्रचलन महत्त्व और कार्यक्रम के सम्बन्ध में श्री लालसिंह जी 'त्यागी' व्यवस्थापक, श्री धनुषधारी चौधरी शिविर-अध्यापक तथा श्री ईश्वरीप्रसादसिंह 'अनीश' के भाषण हुए। विद्यालय के छात्रों में सुरेशसिंह, स्वयंवरसिंह, देवेन्द्रप्रसाद आदि के सुललित शब्दों में बलिदानवाला बाग, अगस्त क्रान्ति, अमर शहीद आदि की स्मृति में गीत गाया। [illegible] ग्राम-सेवकों के भी भाषण हुए।

* * *

देशरत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद जी ने दो सौ रुपये, सेवदह साहित्य महाविद्यालय को देकर जनता से सहायता की अपील की है। ८ अप्रैल की रात्रि में भयानक आँधी आई, जिससे विद्यालय के झोपड़ियों के महत्त्वपूर्ण भाग के छप्पर उड़कर दूर जा गिरे। पत्थर तथा पानी पड़ने के कारण विद्यालय के छोटे-छोटे बच्चों और छात्रों ने बड़ा कष्ट उठाया। विद्यालय-भवन पानी से भीग गया। अध्यापक-मंडल रात भर गहरी चिन्ता तथा प्रबन्ध के लिए व्यस्त रहे। विद्यालय के बैलों और गौओं के लिए तो बड़े आफत की रात थी। भवन के बिना विद्यालय की दशा दयनीय है। जनता को पूज्य राजेन्द्र बाबू की अपील पर ध्यान देना चाहिए।

—श्री ईश्वरीप्रसादसिंह 'अनीश'

* * *

सागर में ६ अप्रैल से १३ अप्रैल तक कांग्रेस की ओर से राष्ट्रीय सप्ताह मनाया गया है। ता० ७ को सुबह प्रभात-फेरी [illegible] ग्राम की कांग्रेस स्वयंसेवकों का एक विराट जुलूस साइकिलों पर निकला। [illegible] की ८ बजे चकराघाट पर मौलवी [illegible]दीन की अध्यक्षता में एक महत्त्वपूर्ण आम सभा हुई। उपस्थिति लगभग [illegible]००० थी। श्री गोपीलाल श्रीवास्तव [illegible] कांग्रेस को वोट देने की जनता से अपील [illegible]। स्वामी कृष्णानन्द जी का महत्त्वपूर्ण भाषण हुआ। स्वामी जी ने कहा—"आज से २५ वर्ष पहले जनरल डायर ने जलयानवाला बाग में भारतीयों के रुधिर से होली खेली थी। राष्ट्रीय-सप्ताह हमें उस समय की याद दिलाता है। आज हम मौजूदा सल्तनत के मुक़ाबले में कितना बढ़ गये हैं। चुनाव तो एक छोटी चीज है। हिन्दुस्तान के सामने आज बड़ी भारी जिम्मेदारी है। हिन्दुस्तान को राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्त करनी है। हमें ऐसे वीर पैदा करने हैं, जो शांति व स्वतंत्रता के लिए मर मिटें। अगर सरकार ने हमारी बात न सुनी तो हमारे हजारों नौजवान मर मिटेंगे।" श्री महेशदत्त ने कहा—कि "सिवनी, मंडला तथा कटनी में कांग्रेस को ९८ प्रतिशत वोट मिले हैं और विरोधियों की जमानतें जब्त होंगी। वहाँ के गोड़ों ने आंख मींचकर कांग्रेस को वोट दिये।" सभापति के भाषण के बाद सभा समाप्त हुई। पश्चात् इसी जगह हिन्दू-महासभा की सभा हुई। श्री भैयालाल सराफ़ के सभापतित्व में श्री रामकृष्ण पांडे ने अपने खड़े होने का कारण बताया। सभा में एक बार भगदड़ मच गई।

—लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

* * *

वृन्दावन से प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य सम्मेलन और व्रज-साहित्य-मंडल के शिकोहाबाद सम्मेलन के लिए व्रज साहित्य परिषद् की ओर से निम्नलिखित साहित्यिक प्रतिनिधि और दर्शक के रूप में सम्मिलित हुए हैं। व्रज-साहित्य-परिषद के सभापति वैद्य उमाशंकर जी द्विवेदी शास्त्री, प्रधानमंत्री सुभांग गोस्वामी वकील, और कृष्ण गोस्वामी शास्त्री, अतुलकृष्ण गोस्वामी, अद्वैतकुमार गोस्वामी, श्री लज्जाराम जी ललाम एम० ए०, माधवाचार्य गोस्वामी, रामकृष्णदेव गर्ग बी० ए०, अद्वैतचरण गोस्वामी, वृन्दावन के प्रतिनिधि आगामी साल के लिए व्रज-साहित्य-मंडल को वृन्दावन में आमंत्रित कर रहे हैं।

वृन्दावन में प्रगतिशील महिलाओं के एक समुदाय ने नारी-समाज की उन्नति के लिए एक व्रज नारी-मंडल की स्थापना की है, जिसका प्रधान उद्देश्य महिलाओं में शिक्षा का प्रचार, घरेलू कामों की शिक्षा, काढ़ना-बुनना और खादी का प्रचार आदि है। राधाचरण पुस्तकालय के उद्घाटन अवसर पर जिसका सभापतित्व श्री वियोगी हरि जी ने किया था व्रज नारी-मंडल की प्रधान-मंत्री श्रीमती विष्णुदेवी शर्मा ने अपनी सभा की ओर से एक अभिनन्दन-पत्र माइक्रोफोन पर पढ़ा था। हर पन्द्रहवें दिन मंडल का अधिवेशन होता है। मंडल की सभापति श्रीमती विन्दादेवी गोस्वामी औरतों में धार्मिक, सामाजिक और नैतिक शिक्षा के भाषण देती हैं। मंडल में कई अखबार भी आ रहे हैं। वृन्दावन में औरतों की यह एक ही संस्था है। आशा है भविष्य में यह संस्था नारी-समाज का मुख उज्जवल करने में सहायक होगी। वृन्दावन म्युनिसिपल बोर्ड की मीटिंग में सर्वसम्मति से गोस्वामी अद्वैतकुमार और सेठ नत्थोमल सराफ़ वाइस चेयरमैन चुने गये हैं।

प्रान्तीय कांग्रेस के प्रतिनिधि चुनाव में वृन्दावन से प्रोफ़ेसर कृष्णचन्द्र एम० एल० ए० और हरचरणलाल गुप्ता म्युनिसिपल कमिश्नर मंत्रिमंडल कांग्रेस कमेटी तथा और भी तीन सज्जन खड़े हुए हैं, जब कि सिर्फ एक प्रतिनिधि ही चुना जायगा। —संवाददाता

* * *

उदयपुर हिन्दी-विद्यापीठ भवन में संस्था के कुलपति श्रीमान् सेठ श्री गोपाल मोहता की अध्यक्षता में कार्यकारिणी एवं हिन्दी-विद्यापीठ परिषद् की सम्मिलित बैठक हुई। बैठक में उदयपुर के कुछ विशिष्ट सज्जन भी आमंत्रित किये गये, जिनमें मुख्यतः हिन्दी विद्यापीठ के भूतपूर्व कुलपति (वर्तमान संरक्षक) पंडित लक्ष्मीलाल जोशी, मेवाड़ के प्रसिद्ध वकील श्रीमान् जीवनसिंह चोरड़िया एवं "नवजीवन" के सम्पादक श्रीमान् कनक जी "मधुकर" थे।

श्री मोहता जी को उनके कार्य की लगन और हिन्दी विद्यापीठ में बढ़ती हुई रुचि के कारण परिषद् और कार्यकारिणी की ओर से अभिनन्दित किया गया। हिन्दी विद्यापीठ के प्रधान मंत्री श्रीयुत जनार्दनराय नागर एम० ए० 'साहित्यरत्न' का प्रवचन हुआ जो विद्यापीठ के जीवन में नई आशा, नई उमंग उत्पन्न करनेवाला था। अन्त में श्री प्रधान मंत्री ने हिन्दी विद्यापीठ के लिए 'दस लाख का तुलसी स्मारक कोष' की स्थापना और उसके लिए प्रारंभिक कार्य शुरू कर देने की घोषणा की।

हिन्दी विद्यापीठ में अप्रैल १९४६ से लोक-शिक्षण-विभाग की स्थापना की गई। उसका प्रारंभिक कार्य शुरू कर दिया गया है। अप्रैल से हिन्दी विद्यापीठ में प्रकाशन-विभाग की स्थापना भी की गई, जिसका ध्येय प्रगतिशील प्रकाशन करना, हिन्दी का बुकस्टाल स्थापित करना एवं साहित्यकारों का प्रकाशन और उत्साहित करना है। —गिरिधारीलाल शर्मा

* * *

शिकोहाबाद में संयुक्त प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के आगामी अधिवेशन के अवसर पर जो कि १९, २० तथा २१ अप्रैल को शिकोहाबाद में हो रहा है, विद्यार्थियों के लिए सुलेख, अन्ताक्षरी तथा वाद-विवाद-प्रतियोगितायें होंगी। वाद-विवाद का विषय "भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी ही हो सकती है।"

इस सम्बन्ध के नियम आदि विद्यालयों के अध्यक्षों के पास भेजे जा चुके हैं। इसमें विद्यार्थियों को अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर अपनी कर्त्तव्य-परायणता का परिचय देना चाहिए।

—प्रचार-मंत्री

* * *

शिकोहाबाद में माननीय शिक्षा-मंत्री श्री सम्पूर्णानन्द जी २० अप्रैल को शिकोहाबाद पधार कर प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन तथा व्रज-साहित्य-मंडल का उद्घाटन करेंगे।

* * *

१९, २०, २१ अप्रैल को शिकोहाबाद (मैनपुरी) में व्रज-साहित्य-मंडल तथा प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अधिवेशन होंगे। एक पंथ दो काज का सुन्दर अवसर है। पाँच दिन से मैं शिकोहाबाद में हूँ और मुझे यह देखकर परम संतोष है कि कार्य बहुत ही व्यवस्थित रूप से चल रहा है और जहाँ तक स्वागत समिति का सम्बन्ध है, सफलता निश्चित है।

इन दोनों सम्मेलनों की वास्तविक सफलता तो आगत प्रतिनिधियों पर ही निर्भर है। अब तक ढाई सौ से ऊपर प्रतिनिधिगण के आने की सूचना कार्यालय को मिल चुकी है।

शिक्षा की दृष्टि से शिकोहाबाद प्रान्त में विशेष स्थान रखता है और यह गौरव की बात है कि यहाँ के सभी शिक्षा-प्रेमी पारस्परिक सहयोग से कार्य का सचालन कर रहे हैं। सभी साहित्य-प्रेमियों को पधार कर सम्मेलनों को सफलता प्रदान करनी चाहिए।

—छबीलेलाल गोस्वामी

* * *

बरहज (गोरखपुर) में क़रीब दो हजार जनता की उपस्थिति में श्री ब्रह्मचारी सत्यव्रत जी, श्री परमहंस आश्रम बरहज की अध्यक्षता में धर्मार्थ औषधालय गड़ेर का प्रथम अधिवेशन मनाया गया। सभा में ठाकुर सिहासनसिंह वकील गोरखपुर एम० एल० ए०, बाबू विश्वनाथ राय जी खुखन्दू तथा पं० सच्चिदानन्द त्रिपाठी कार्यकर्ता मंडल कांग्रेस कमेटी देवरिया का भाषण हुआ। श्री पूज्य बाबा राघवदास जी के जेल से मुक्त होकर आने पर उनके द्वारा शिलान्यास का विचार प्रकट किया गया अब तक क़रीब ८००) तक वसूल हो चुका है इसके लिए कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया गया। बाबू त्रिवेणी आदि तथा बाबू वीरभद्र आदि ने औषधालय को क़रीब १० बिस्वा जमीन इमारत के लिए मुफ्त दी।

—संवाददाता

* * *

मथुरा के श्री देशबन्धु पुस्तकालय का तृतीय वार्षिकोत्सव आगामी जुलाई महीने में बड़ी धूम-धाम से मनाया जायगा। उत्सव की तैयारी अभी से बड़े जोरों से शुरू हो गई है। पुस्तकालय का निर्वाचन आगामी मई मास में होगा।

यहाँ संगीत-प्रचारक-मंडल मथुरा द्वारा एक 'प्रेम' संगीत-प्रतियोगिता का आयोजन हुआ है। जिसके पदाधिकारी निम्न चुने गये हैं—सभापति श्री जगदीशशरण अग्रवाल हेडमास्टर चम्पा कालेज, उपसभापति—प्रोफ़ेसर शमनलाल एम० ए०, मंत्री—श्री बैजनाथ दाणी, उपमंत्री—श्री पूरनचन्द अग्रवाल, कोषाध्यक्ष—श्री दीनानाथ दाणी, डा० श्री एन० एन० गोस्वामी, श्री रामचन्द्र जी मूँगा। —संवाददाता

* * *

जयपुर में ता० १६, १७ और १८ मई को बाल-संघ का वार्षिकोत्सव होना निश्चित हुआ है। ता० १८ मई को बालोपयोगी हिन्दी हस्तलिखित पत्रों की प्रदर्शनी तथा 'राष्ट्रभाषा हिन्दी है' विषय पर लेख (लगभग आठ पृष्ठ का हो) प्रतियोगिता—जिसमें आठ वर्ष से अठारह वर्ष के बालक ही भाग ले सकते हैं—का आयोजन किया गया है। लेख आदि भेजने का पता—बनवारी लाल सराफ 'सखा' मंत्री श्री बाल-संघ फतेहपुर, जयपुर। —संवाददाता

* * *

आगरा नागरी प्रचारिणी सभा कई वर्षों से जिले के विभिन्न गाँवों में गश्ती पुस्तकालय चला रही है। पिछले दो-तीन साल से इस काम में कुछ शिथिलता आ गई थी। अभी दो-तीन महीने से श्री महेन्द्र जी ने पुनः सभा कर कार्य सँभाला है। आप गश्ती पुस्तकालय का पुनः संगठन कर रहे हैं। जिले में आप ५० गश्ती पुस्तकालय बनाना चाहते हैं अभी २०-२५ गाँवों में ही यह प्रबन्ध है। —प्रकाश

* * *

हरिद्वार में पंजाब महावीर दल के मंत्री कर्मवीर पं० चिरंजीवलाल शर्मा ने प्रान्त के प्रधानमंत्री श्री गोविन्द वल्लभ पन्त जी की सेवा में तार-द्वारा प्रार्थना की है कि हरिद्वार में पूर्ण राशनिंग की जाये। क्योंकि इससे यहाँ के रहनेवालों के अतिरिक्त आनेवाले यात्रियों को महान कष्ट होगा। —संवाददाता

हास्य-कौतुक

हँसते-हँसते लोटपोट हो जाने की आकांक्षा करनेवालों के लिए इसमें मनोनुकूल सामग्री मिलेगी, साथ ही साथ मानव-चरित्र का भी सुन्दर चित्र आप इसमें पायेंगे। मूल्य ।।)

मैनेजर बुकडिपा
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस मंत्रिमण्डल

(पृष्ठ ७ का शेष)

चाहता है, इससे कम मूल्य पर वह कुछ भी लेने-देने को बाध्य नहीं।

मंत्रिमंडल और जनता

पिछली बार जब कांग्रेस मंत्रिमंडल आया था, तब देश में अनेक सुधार और परिवर्तन हुए। इतना काम होने पर भी मंत्रियों के ऊपर अनेक इल्ज़ाम लगाये गये। पर जनता उनके साथ थी। साथ रहने का प्रमाण यही है कि जब-जब कांग्रेस ने स्वतन्त्रता का बिगुल बजाया, जनता ने अपना खून का अर्घ्यदान किया। क्या जनता की यह कुर्बानी इतने सस्ते मामले पर भुलाई जा सकती है? उनकी कुर्बानी का फल उनको मिलना ही चाहिए।

आगा देख—पीछे नहीं

अब हमें मंत्रियों के भावी कार्यक्रम के ऊपर दृष्टिपात करना है। उनका पिछला इतिहास काला है या सफ़ेद, इस पर हमें ध्यान नहीं देना है। हमें उनकी अच्छाइयों का निरीक्षण करना है। देखना है कि मन्त्रिगण अपना अगला क़दम किधर रखते हैं? पिछली बार मन्त्रियों ने सामाजिक रूढ़िवादिता को नष्ट कर जनता में नवचेतना का संचार किया था, उनके कारण ही देश के अन्दर क्रान्ति की भावनायें पैदा हुईं। हम यह दावे के साथ कहने की धृष्टता करते हैं कि अगर देश के अन्दर कांग्रेस मंत्रिमंडलों का निर्माण न हुआ होता तो कभी भी जनता में क्रान्ति की भावनायें पैदा न होतीं।

अँगरेज़ सदा से यह कहते आये हैं कि भारतवासी अपने देश का शासन नहीं सँभाल सकते। उनकी निरर्थक एवं थोथी बातों का कांग्रेस ने पर्दाफाश कर दिया। उसने यह साबित कर दिया कि हममें शासन करने की प्रबल क्षमता है। हमारे शासन में किसी अन्य सत्ता को दस्तन्दाजी करने की कतई जरूरत नहीं। कांग्रेस मंत्रिमंडल से पूर्व भारतवर्ष के बहुत से व्यक्तियों को पता न था कि हम 'गुलाम' भी हैं। गुलामी का पता तथा उससे मुक्ति का मार्ग हमें कांग्रेस ने ही समझाया, यह निस्संकोच कहा जा सकता है।

कांग्रेस ने निम्न योजनाओं द्वारा देश का कार्य किया।

(१) साक्षरता प्रचार की योजना,
(२) ग्रामोद्योग की व्यावहारिक प्रणाली,
(३) अछूतोद्धार की विकट समस्यायें,
(४) बेकारी-समस्या का हल। इन चार सुधारों के ही आधार पर कांग्रेस ने शासन किया। आज भी कांग्रेस की योजना पूर्ववत् ही है।

जहाँ तक हम समझते हैं इस बार मंत्रियों को पहले से भी अधिक अधिकार सौंपे जा रहे हैं। अगर अधिक अधिकार न मिले तो भी मंत्रियों को किसानों और मजदूरों से अधिक सम्पर्क बढ़ाना चाहिए। इसके लिए निम्न बातें उल्लेखनीय हैं।

(१) ज़मींदारों के अत्याचार का प्रतीकार यानी (ज़मींदारी-प्रथा का खात्मा) इस प्रथा के मटियामेट कर देने से देश के किसान सुखी और सम्पन्न रह सकते हैं। शेर बकरी की रखवाली कैसे कर सकता है? ज़मींदारी, प्रथा के ख़त्म होते ही ज़मींदारों की अक्ल ठिकाने आ जायगी। ये ज़मींदार अपने को नौकरशाही के लाड़ले समझते हैं। इस मौके पर हमें गुरुवर आचार्य नरेन्द्रदेव जी की एक बात बहुत ही पसन्द आती है। "जब तक ये हैं तब तक वे हैं, जब तक वे हैं तब तक ये हैं" इस 'ये' और 'वे' से अभिप्राय ज़मींदार एवं अँगरेजों से है। "इस हमको इन दोनों का खात्मा कर देना है"

सचमुच ही ज़मींदारों की पृष्ठ-भूमि पर ही नौकरशाही का भव्य प्रासाद टिका हुआ है। ये ही स्तम्भ का कार्य कर रहे हैं। अतः ज़मींदारी-प्रथा को इस बार मेटियामेट कर देना होगा।

(२) मजदूरों का संगठन तथा उनकी आर्थिक समस्याओं का निराकरण है। मिल-मालिक या पूँजीवादियों का शोषण बन्द होना चाहिए। मजदूरों की संख्या असंख्य है। इनकी रक्षा का विशेष ध्यान होना चाहिए।

(३) शिक्षा-विभाग की आर्थिक व्यवस्था, इसमें काफी संशोधन की आवश्यकता होगी। अध्यापकों का वेतन इतना कम होता है कि उनको 'रोटी' की समस्या हल करने के लिए 'ट्यूशनों' का सहारा लेना पड़ता है। कम से कम प्राइमरी स्कूलों के अध्यापकों का वेतन ५०) होना चाहिए।

(४) राजनीतिक बंदियों की रिहाई का प्रश्न निर्विवाद है। अधिकांश बंदी जेलों से रिहा कर दिये गये और बराबर रिहा किये जा रहे हैं।

(५) युद्धजन्य अन्य आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों को सुलझाने के लिए तथा जन-हित की भावना को मद्देनजर रखते हुए विधानों का निर्माण आवश्यक होगा।

(६) ४२ के आन्दोलन की जाँच उन पर कार्यवाही होना आवश्यक

इस प्रकार बहुत सी बातें ऐसी हैं कि पिछली बार जहाँ हमारे कांग्रेस थे, अब भी वही हैं या आगे रखते हैं? इन मंत्रियों का कार्य इस बात का द्योतक होगा। मंत्रियों से आशा लगाये बैठी है जोर कितना बाजुए कातिल में जनता को अब भी खतरा है ऐसा न हो जाय कि "मेहनत अण्डा खाय फकीर" मेहनत करनेवाले अवश्य ही फल मिलना चाहिए।

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

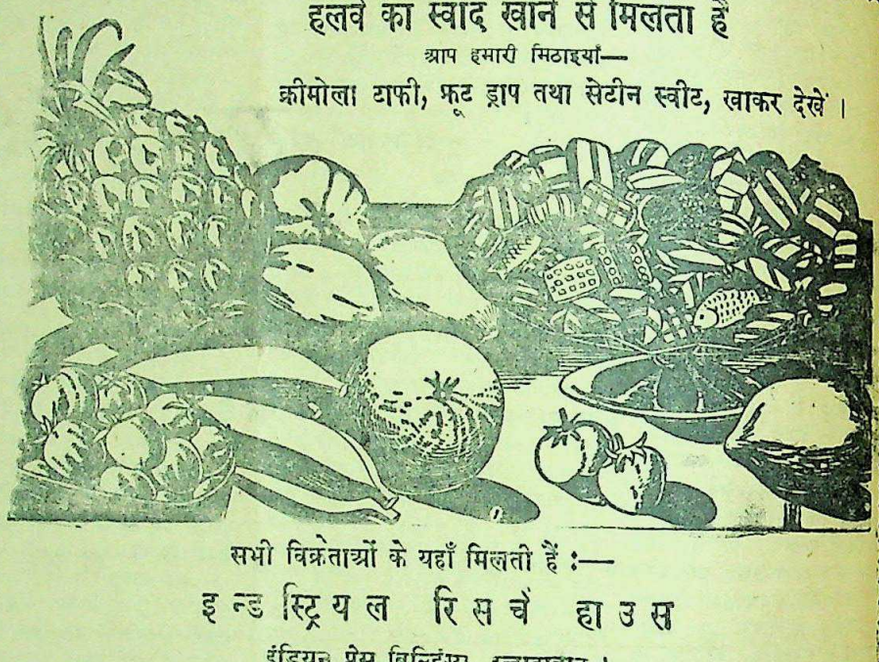

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

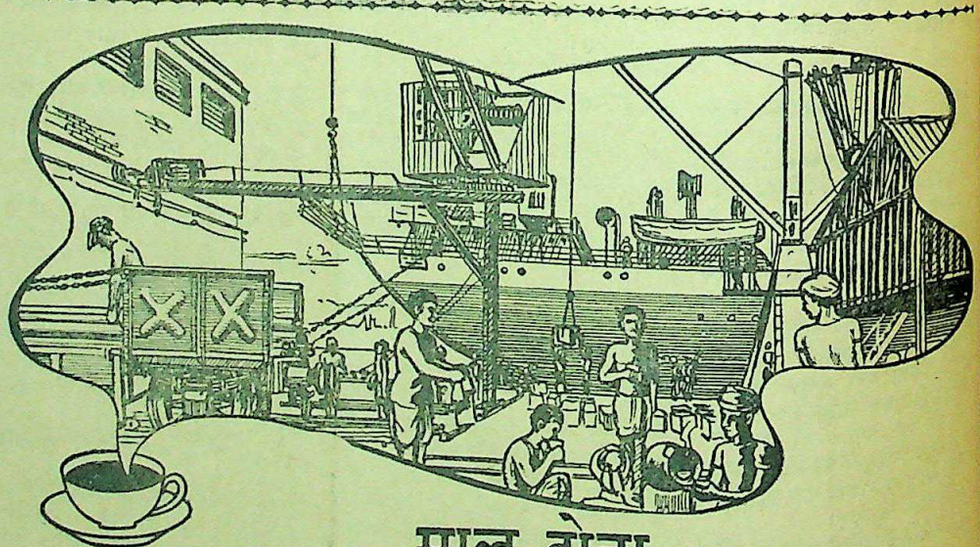

माल ढोना

जहाजों से माल उतारना व चढ़ाना बहुत तृष्णाप्रद काम है, विशेषतः हिन्दुस्तान की कड़ी धूप में। कमंदों-द्वारा सामान को तेजी से इधर-उधर लगाने के लिए बहुत फुर्ती चाहिए। भरे बोरों और बक्सों केको उठाकर टीस लगाने अथवा नावों से उतारने-चढ़ाने के लिए मेहनत अधिक चाहिए परन्तु चुस्ती कम।

आश्चर्य की बात नहीं कि काम से फुरसत पाते ही मजदूर चाय की दूकान पर पहुँचता है। वह चाय के गरम व ताजा प्याला का हकदार है।

इसीलिए तो बन्दर-अध्यक्ष पास में ही चाय की दूकान खुलवाते हैं। हिन्दुस्तान के समुद्र-तट पर बन्दरगाहों तथा घाटों पर चायखानों तथा और दूकानों को ब्रुक बण्ड चाय लगातार बगीचों से ताजी पहुँचाई जाती है।

लगातार वितरण से ताजगी निश्चित

ब्रुक बण्ड

दो पत्तियाँ और एक कली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रविवार, २१ अप्रैल, १९४६

मनोरंजक चुटकुले

ो मित्र बहुत दिनों बाद मिले थे।
पुराने बिल के बारे में सुना है?"
बिल ने पास ही खड़े हुए एक दूसरे
से पूछा।
"नहीं, उसे क्या हुआ है" उसने पूछा।
"घर के बाहर मार कर डाल
दिया गया।"
"आते समय या जाते समय?"
"भीतर जाते समय।"
"बड़े ही अभाग्य की बात है।"

* * *

एक व्यापारी धोखा देने के जुर्म में पकड़ा गया। पेशी होने पर जज ने गम्भीरतापूर्वक कहा, "तुम्हें सजा देने के लिए काफी सबूत नहीं मिले हैं, लेकिन अगर कोई तुम्हारे बारे में मेरी राय जानना चाहे तो मैं आशा करता हूं कि वह मेरा हवाला जरूर देगा।"

इसके बाद जब संस्था का विज्ञापन निकला तो उसमें इस बात का उल्लेख किया गया था—कि, ईमानदारी के संबंध में हाईकोर्ट के जज मिस्टर जस्टिस फ्लेक का हवाला उनकी आज्ञा से दिया जाता है।

* * *

एक छोटा लड़का एक गधे पर बोझा लादे जा रहा था। जब वह सैनिकों के कैम्प से होकर निकला तो कुछ सिपाहियों ने मजाक में उस बालक से लगाना चाहा। जब उसने कुछ भी ध्यान न दिया तब एक सैनिक लड़के ने कहा, "तुम अपने भाई पर इतना अधिक बोझ क्यों लादे हो?"

लड़के ने उत्तर दिया, 'इसलिए कि भाग कर कहीं वह सेना में भरती न हो जाय।"

* * *

AC 50.

क्या करना चाहिये?

-गांधीजी

"कारण चाहे जो भी हो, सत्य तो यह है कि यदि सरकार और जनता संकट का धैर्य और साहसपूर्वक सामना नहीं करेगी तो दुर्घटना निश्चित है। इस मोर्चे के अतिरिक्त हमें इस विदेशी सरकार का सभी अन्य मोर्चोंपर विरोध करना चाहिये, और यदि तर्क-संगत जनमत के प्रति वह यहां भी हृदयहीनता या घृणा प्रकट करे तो इस मोर्चे पर भी हम उससे लड़ेंगे"

—१६ फरवरी का वक्तव्य

हमारी प्रतिज्ञा और अपील

उन लोगों से जो कमीवाले क्षेत्रों में रहते हैं हम परिपूर्ण सहयोग की प्रतिज्ञा करते है। देश के समस्त साधनों का संगठन होगया है और उनके पास शीघ्रतासे सहायता भेजी जा रही है। उनके अभावको शेष देश के साथ, बराबर विभाजित किया जावेगा। राशनिंग का इस प्रकार विस्तार किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति अपना उचित भाग प्राप्त करले। मूल्य नियंत्रण की कठोर व्यवस्था की जावेगी। शान्तिसे विश्वास रखिये। अपनी आवश्यकता से अधिक मत खरीदिये। मुनाफाखोरों से कोई सम्बंध मत रखिये

अतिरिक्त क्षेत्रों में रहनेवालों से हम अधिकसे अधिक मदद की अपील करते हैं। यदि आपसे अतिरिक्त अनाज सुपुर्द करने को कहा जावे तो आपके पास आपकी आवश्यकता के अनुसार काफी बच जावेगा। यदि आपके नगर में राशनिंग योजना लागू की गयी है या राशन में कमी की गई है तो याद रखिये, वह आपके अन्य भाइयों की सहायता के लिये ही है। तब भी आपके पास काफी होगा। छोटे तरीके से भी अनुचित संग्रह मत कीजिये। अधिकारियों के साथ सहयोग कीजिये।

खाद्य संकट को पराजित कीजिए

एक साथ कार्य कीजिये – एक साथ हिस्सा बंटाइये

व्यापारियों एवं उत्पादकों को संदेश

अपनी सामर्थ्यानुसार सारा अनाज निकाल दीजिये अनुचित संग्रह का प्रत्येक मन अनाज एक भाई की मृत्यु का कारण हो सकता है नियंत्रित मूल्य पर ही बेचिये—आपके और खरीदनेवाले के दोनों के लिये यही उचित है। दूसरों को संकट दे कर कमाया हुआ धन पाप है।

अपनी समस्त शक्ति और साधनों से सरकार और जनता मुनाफाखोरों और चोर बाजारवालों का दमन करने के लिये कटिबद्ध हैं। चोर बाजार से बचिये यह अपराध है।

प्र प - वि भा ग, भा र त स र का र, न ई दि ल्ली द्वा रा प्र चा रि त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबू जी एक पैसा

(पेज १० का शेष)

पर। अब प्रभा बीमार पड़ गई। एक तो सास-ससुर का दुख, दूसरे बीमारियों में जो उसने उनकी खिदमत की, इससे वह कमजोर हो गई थी। क्योंकि समय पर खाना-पीना भी न होता था। इलाज शुरू हुआ। जो जिस डाक्टर की तारीफ करता, वही डाक्टर प्रभा के लिए बुलाया जाता। पर लाभ नाम को भी नहीं हो रहा था। वह चार महीने लगातार बीमार रही। उसकी सेवा में मैं रात-दिन रहने लगा। उसने एक दिन कहा था। "प्राणेश! मेरे प्रेम की छाप को स्थायी रखना" वह वाक्य बाबू जी अब तक याद है और यह याद मेरी चिता तक साथ जावेगी।

एक दिन बरसात हो रही थी। बादल गरज रहा था, बिजली कौंध रही थी, शोर शोर मचा रहे थे, धरती कांप रही थी, बादलों की गर्जना की भीषण आहट में मेरी दिल की रानी प्रभा ने अपने व्यक्तित्व को उसी में लोप कर दिया, सदा के लिए। चिर विदाई का उसका वह दृश्य मैं कभी नहीं भूल सकता। बाबू जी, मेरे जीवन के फफोलों को कुचल कर किसी ने मिर्चा का चूरमा उसमें मिला दिया, जिसकी जलन, जिसकी ज्वाला अब तक हृदय में उठ रही है—"कहते-कहते उसकी आंखों से पानी बह निकला। मैंने फिर उसको सन्तोष दिलाया। थोड़ी देर चुप रह जाने के बाद, उसने फिर कहना शुरू किया, छाती पर पत्थर रखकर—"वही मेरे जीवन का सहारा शेष थी। वह भी चलती बनी। मेरे गर्दिश के दिनों में विधाता ने मेरी कमर तोड़ दी। मैंने उसके इलाज में खूब रुपया बहाया—और इतना बहाया कि अब शेष कुछ न बचा। हालांकि उसने कहा भी था कि क्यों इतना खर्च करते हो? हाथ रोककर करो। नहीं तो तुम्हें जीवन में कठिनाइयां आयेंगी, लेकिन मैंने धन को उसके सामने कुछ न समझा, वैभव की रोशनी भी उसके साथ ही दफन हो गई। अब मेरे सामने अन्धकार था, पूर्ण अन्धकार!

मेरे पास कुछ न रह गया था, सिवा दो मकानों के। महीनों तो मैं पागलों की तरह घर में पड़ा रहा। मित्र मिलने आते, हिम्मत दिलाते, ऊंची-ऊंची भव्य कल्पनाओं के महल मेरे सामने बनाते। उनका कहना था—"दोनों मकान बेच दो। जो धन आवे उससे रोजगार करो। यदि तक़दीर ने जोर मारा तो पौबारह है। फिर क्या कहना? दौलत तो तुम्हारे क़दमों पर लोटेगी फिर तुम्हारा वही पुराना रुतबा हो जावेगा, वही वैभव की दुनिया फिर बस जावेगी। खोई हुई दुनिया को पुनः प्राप्त कर लोगे।"

मेरी समझ में मित्रों की बात आ गई। बाबू जी, वह कितनी अशुभ घड़ी होगी, जब कि मैंने दोस्तों की लच्छेदार बातों पर चलकर आगे की ओर क़दम बढ़ाया। दोनों मकान बेच दिये गये। कुल पचास हजार रुपयों में, क्योंकि कस्बे में मकानों का ज्यादा मोल नहीं होता, नगरों की तरह। रहने के लिए पन्द्रह रुपये माहवार पर एक मकान ले लिया गया। अब प्रश्न उठा कि रोजगार किस चीज का किया जाये, मेरे दोस्तों ने फौरन ही कहा—"चूड़ियों का काम आजकल खूब चेत रहा है, इसी में नजर दौलत है, धर्म के चौगुने हैं। पाँच हजार के बीस हजार छः माह के अन्दर ही अन्दर हो जावेंगे। चूड़ियों का केन्द्र फीरोजाबाद इसके लिए मशहूर है। वहीं से चूड़ियां सारे देश को सप्लाई होती हैं। इसलिए हमें फीरोजाबाद में एक चूड़ियों का फर्म खोल देना चाहिए। यदि हम फीरोजाबाद को "चूड़ियों का देश" कहें तो भी कोई अनुचित न होगा। मैं व्यापार कला से अनभिज्ञ था। ए० बी० सी० भी उसका नहीं जानता था। जैसा मित्रों ने कहा, उसी के अनुसार काम किया गया।

"दी न्यू इन्डियन ग्लास स्टोर" खोला गया। "चूड़ी बाजार" में दूकान न मिलने के कारण अस्थाई तौर पर कार्य एक गली में खोल दिया गया। परन्तु फिर भी बिक्री खूब होती रही। शाम के वक्त औरतों का मेला लग जाता था। मत पूछिये बाबू जी फीरोजाबाद में बिक्री का हाल। पर मेरे लिए, यह भी न था। दोस्तों ने दुकान चौपट कर दी। वह सब खा गये। मुझे कुछ भी न मिला। फीरोजाबाद में चूड़ियों के व्यवसाय के तरक्की के साथ-साथ वहाँ भलेमानसों की जेब काटने में भी खूब तरक्की हुई। मेरा तो यही अनुभव है। फीरोजाबाद के लोग दूसरे के वैभव की समाधि बनाकर उस पर अपनी तरक्की की दुनिया बसाना खूब जानते हैं। खैर जाने दीजिए बाबूजी, इन बातों में क्या रक्खा है?

अब मेरे ऊपर मकान का छः माह का किराया और चढ़ गया। मालिक मकान ने मेरे कान खाने शुरू कर दिये। पर मेरे पास था ही क्या? मित्रों से कुछ मदद करने के लिए कहा, परन्तु उन्होंने सूखा जवाब दे दिया। वह भी मेरे पास से किनारा कसने लगे। कन्नी काटने लगे। अब मुझको मालूम हुआ कि दुनिया में रुपये के सब मित्र हैं। जब तक रुपये रहते हैं, तब तक मित्रों की क्या कमी? जहाँ गुड़ होगा, वहाँ चींटे आ ही जाएँगे।

अब मुझको मकान भी खाली करना पड़ा। मेरे सामने चारों ओर घोर अन्धकार था। आशा की ज्योति कहीं भी ढूंढ़े नहीं मिलती थी। क़िस्मत ने आज मुझे यह दिन दिखलाये कि मैं बेघर हो गया। एक दिन वह था जब मेरे भाग्य का सितारा सबसे ऊँचा चमक रहा था। एक दिन यह है कि आज मेरे भाग्य का सितारा बिलकुल छिप गया है, दुर्भाग्य के बादलों में। मेरे सामने नौकरी के सिवा दूसरा जरिया नहीं था। इसके लिए प्रयत्न किया, एड़ी-चोटी का पसीना एक किया। दर-दर की खाक छानी, हजारों दरवाजे खटखटाये, पर डाट-फटकार के अतिरिक्त और कुछ न मिला। जहाँ जाता वहीं "नो वेकन्सी" लिखा हुआ मिलता। बड़ा परेशान हो गया था, अकेली जान रह गई थी, और उसके लिए भी सम्मान-पूर्वक पेट भरने के लिए कोई जरिया नहीं दीख रहा था, सब कुछ उत्सर्ग कर चुका था, नसीब के भयंकर भट्टी में—अब सिर्फ अस्मत ही बची थी, उसी को मैं छिपाये-छिपाये फिर रहा था, क्योंकि यही इंसान का आभूषण होता है। यही आत्मा की उज्ज्वल स्वर्णनिधि होती है।

जीवन भार-सा मालूम हो रहा था। दुनिया से मैं ऊब-सा गया था। ग़रीबी ने एकदम मेरा गला घोंट दिया, इससे मैं और भी ज्यादा विह्वल था। चारों ओर आँखें फाड़कर देखता, पर कोई भी अपना नजर नहीं आता था, नाते-रिश्ते सभी रुपये के साथ चले गये। मेरी इच्छायें असीरी थीं, किन्तु उनकी पूर्ति कैसे की जावे? इस ग़रीबी के आलम में। लाचार होकर मैंने एक-एक करके सब हसरतों का खून कर दिया। पर एक तमन्ना अब भी शेष रह गई। वह उदर-पूर्ति की थी। मैं जीवन से जूझा, डटकर मुक़ाबला किया, लेकिन अन्त में मुझे ही परास्त होना पड़ा। इसी तमन्ना को पूरी करने के लिए एक बार फिर कोशिश की। अबकी बार कुछ कामयाबी हुई, परन्तु इस कामयाबी के अंतर में आग के शोले छिपे हुए थे। मेरी नौकरी चूड़ी के एक कारखाने "वेस्टर्न ग्लास वर्क्स" में लग गई। तनख्वाह थी तीस रुपये माहवार। उस वक्त मुझे मालूम हुआ कि बाबू जी, बी० ए० की डिग्री का मूल्य बस इतना ही है। उसकी कीमत के दायरे का ज्ञान मुझे अब महसूस हो रहा है। मैंने इस नौकरी को बहुत अच्छे ढंग से किया, क्योंकि मुझे तो अपनी जिन्दगी की गाड़ी दुनिया के डगर में आगे की ओर ढकेलनी थी। मगर भाग्य अधिक समय तक साथ न दे सका, वह भी मेरी मुफ़लिसी पर अट्टहास करने लगा।

एक दिन कारखाने के मालिक सेठ जी के सौ रुपये खो गये। उसका इलजाम भी मुझी पर थोपा गया। उन्होंने मेरी तनख्वाह के रुपये न दिये, जो कि उन्हीं के पास जमा थे, और मुझे नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया। मैं फिर भूखों मरने लगा। मुझे "फ़ीरोजाबाद से बहुत ग्लानि हो गई। फिरोजाबाद में मैं दौलत लेकर रोजगार करने आया था और उसी "फ़िरोजाबाद" ने मुझे "पतझड़" की दुनिया में प्रवेश करा दिया। अन्त में मुझे एक ही रास्ता सूझा और वह यह कि जो मैं आपके सामने बैठा हुआ हूँ। धनवान् की तरह मैंने "फ़ीरोजाबाद" में प्रवेश किया और अन्त में भिखारी की तरह वहाँ से निकला। अब मेरा ध्येय भीख माँगना है। जो कुछ मिल जाता है, उसी में अपने पेट को भर लेता हूँ कुछ अभ्यास-हो गया हूँ। बाबू जी! बस यही मेरी राम कहानी है, आप तो बड़े स्वा हैं, जो कि इस बदनसीब की कहानी इतना वक्त खराब किया।"

उस फ़कीर की जीवन-गाथा सुनकर मेरे हृदय में उसके प्रति सहानुभूति का समुद्र उमड़ आया। मैंने झट अपने बटुवे से निकाल कर पाँच रुपये का नोट उसके हाथ पर रख दिया। मैं अभीष्ट स्थान "कल्याण" आ गया था यहीं से मेरी गाड़ी "पूना" के लिए जाती थी। गाड़ी खड़ी हो गई। मैं अपना सामान कुली पर रखवाकर चल दिया। चलते वक्त फ़कीर ने कहा, "बाबू जी आपका हृदय तो बड़ा दयालु है, विरला ही है, अब तक तो दुनिया में मुझे सैकड़ों हृदयवाले व्यक्ति ही मिले, दाता आपको खूब दे" इसके बाद वह फिर गाड़ी में अपने जानेवाले मुसाफ़िरों से माँगने लगा—"बाबू जी एक पैसा!"

मेरे कानों में अभी तक उस फ़कीर का प्रेम, करुणा, में सने हुए वह शब्द "बाबू जी एक पैसा" प्रतिध्वनित हो रहा है।

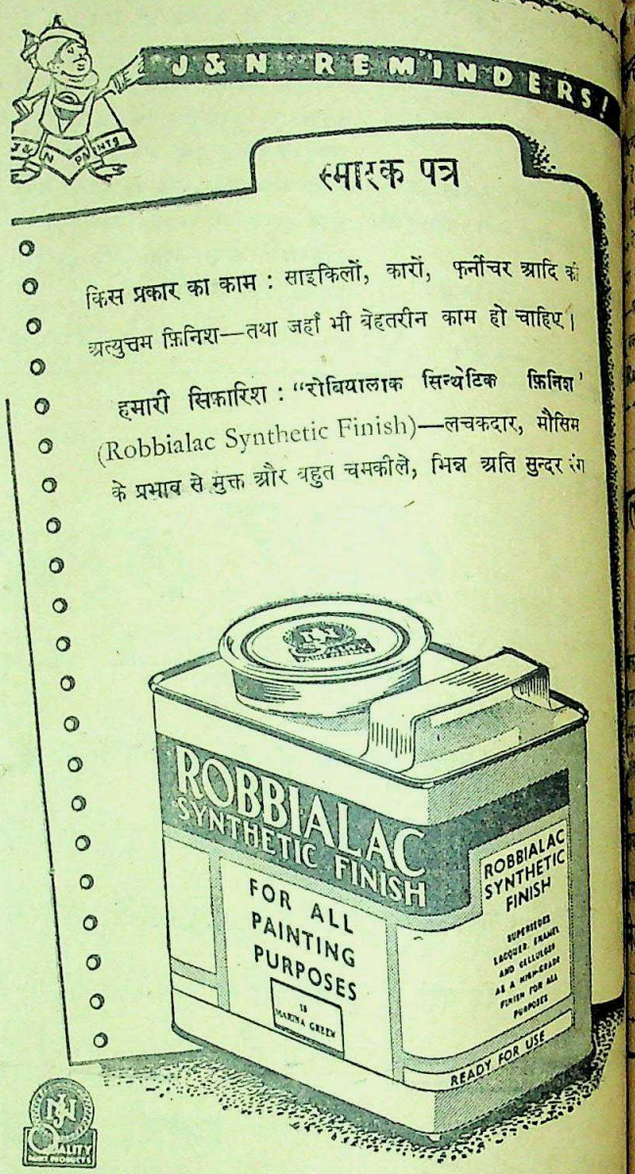

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

...हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

...उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर ...सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S. १०) H.M.B.S. ...H.M.D.S. २५)। पुस्तक—अ० पारिवारिक १) बायोकेमिक १) ...डिलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्सनरियाँ १॥) आर्गेनन १), फार्मा- ...१॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायँगी। डा० ख० ...आमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≡) ड्राम। आउन्स ॥) ...अक्स ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.)

...लसखा का नया वार्षिकांक

छप रहा है। पाठक धैर्य रक्खें।

...ग्राहकों के अनुरोध से हमने इस वर्ष भी बालसखा का ...निकालने का निश्चय किया है। इसमें बहुत से चित्र, ...कहानियाँ, बढ़िया लेख और उपयुक्त सामग्री रहेगी। ...३०० से ऊपर। यह अङ्क बड़ी सजधज के साथ ...होगा। यह मासिक बालसखा के १२ अंकों से ...। मूल्य ३), मासिक बालसखा के ग्राहकों के लिए ...मूल्य २॥)

...मूल्य के लिए अपना ग्राहक-नंबर अवश्य लिखिए।

...बालसखा, इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

भारत माता

अपने बच्चों से कहो! कि वुड वर्ड का ग्राइप वाटर बच्चों को तंदुरुस्त रखता है

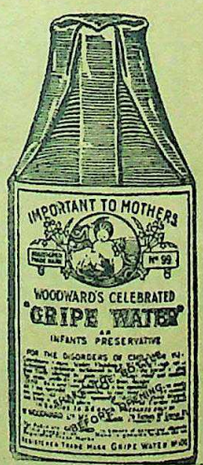

WOODWARD'S GRIPE WATER
keeps baby well

...लड़ता हुआ बालक" हो असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर का ...है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए इसको ...देख लिया करें।

W. WOODWARD LTD., LONDON, ENGLAND.

सपट लोशन

दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.

सपट अँड कं. लि.
बम्बई नं. २.

सभी दर्द सारिडन

दुःखशामक टिकडियांसे १० मिनटोमें दूर हो जाते है.

आहार स्वादिष्ट और भरपेट रहे

. . लेकिन उसका शक्तिदायी होना भी आवश्यक है!

डालडा ठीक यही करता है-हमारे परिवारको गौरसे देखिये।

सबसे बढ़िया शक्तिदायी चीजें कौनसी हैं इसकी जानकारी हरएक स्त्रीको होनीही चाहिये। डालडा कुक बुक (अंग्रेजी) में आहार के बारेमें लाभकारी बातें और १५० से अधिक आहारोंका बयान किया गया है। आपके पास इसकी एक कापी होनीही चाहिये। Dept A 113 P. O. Box No. 363, Bombay के पतेपर चार आने के पोस्टल स्टाम्प भेजिएगा।

आप जब अपने परिवारके लिए आहार बनाती हैं तब क्या इस ओर ख्याल रखती हैं? भोजन केवल स्वादिष्ट रहनेसे काम नहीं चलता; उसका शक्तिदायी होना भी आवश्यक है। चंद आहार कई औरोंसे अधिक शक्तिदायी होते हैं, तो कई—जो हम दररोज खाते हैं—बिलकूल शक्ति नहीं देते। यह हमारी तन्दुरुस्ती के लिये ठीक नहीं—ना, हानिकारक होनेकी भी संभावना है; खास करके बच्चोंके लिये। लेकिन भोजन अधिक उत्साहदायी बनाना मुश्किल नहीं। एक सरल मार्ग है डालडा का इस्तेमाल करना। उसमें, प्रकृति के बढिया शक्तिदायी तथा जरूरी, अन्नांश पाये जाते हैं। इसके अलावा डालडा से आहार में जो स्वाद आती है वह दूसरी कोई चीज नहीं ला सकती। आप स्वयं अनुभव कीजियेगा।

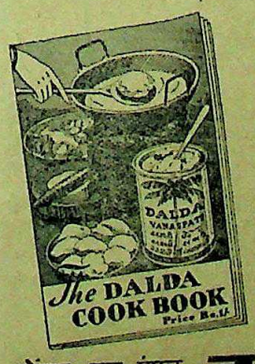

पोषक-तत्व संपन्न **डालडा** स्फूर्ति के लिये

HVM 32-50-40 HI THE HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING CO., LTD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय
स्थापना १९२६
आरोंदा
१८६६
नीलगिरि तेल
हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, टाइफाइड आदि बीमारियोंमें बचानेवाला
प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

लावण्य का सार
टाटा का
ओ डी कोलोन
दी टाटा आयल मिल्स कं० लि०

जिससे दूसरे भी जी सकें

"अब मैं यह बताऊंगा कि खाद्य संकट से पार पाने के लिये हम सब क्या कर सकते हैं। प्रबंध-सम्बंधी मुख्य आवश्यकतायें ये हैं: राशन-व्यवस्था का अधिक से अधिक क्षेत्र में विस्तार, समस्त भारत में सारे अतिरिक्त अनाज की प्राप्ति और इस अतिरिक्त अनाज का अभाव-ग्रस्त क्षेत्रों में समुचित वितरण। सबसे बड़े खतरे ये हैं: लोभी और स्वार्थी व्यक्ति, जो अनुचित संग्रह, चोर बाजार अथवा दुर्वृत्ति द्वारा अपने उचित अंश से अधिक प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे, दुर्बल-हृदय वाले व्यक्ति जो अफवाहें फैला कर भय या विश्वासहीनता पैदा कर सकते हैं, जिससे चोर बाजार वालों को मनमाना अवसर मिल सकता है, और ऐसे आलसी व्यक्ति, जिनके पास अपनी आवश्यकता के लिये बहुत कुछ है किन्तु जिनमें दूसरों की सहायता करने की प्रेरणा पैदा नहीं होती।

अब हममें से प्रत्येक व्यक्ति भारत के प्रति अपने कर्तव्य का किस प्रकार पालन कर सकता है?

"मैं आशा करता हूँ कि प्रत्येक जमींदार और कृषक अनाज की अपनी खपत कम कर देगा और अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं के बाद बचा हुआ प्रत्येक मन अनाज बाजार में भेज देगा या सरकार के सुपुर्द कर देगा।

"मैं आशा करता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति जिसमें ऐसा करने की सामर्थ्य है अधिकाधिक अतिरिक्त खाद्य जहां कहीं भी सम्भव हो उपजावेगा; तरकारियाँ, आलू, शकरकंद सभी बहुमूल्य सिद्ध होंगे।

"मैं प्रत्येक सम्पन्न व्यक्ति से असली त्याग करने, बेकार अतिथ्य-सत्कार को कम करने, और रोटी, आटे, केक, बिस्कुट या चावल की अपनी उपभोग्य मात्रा को न्यूनतम सीमा तक कम कर देने की जोरदार अपील करता हूँ। प्रत्येक छोटी चीज भी मदद देगी। अभाव के क्षेत्रों में प्रत्येक व्यक्ति को और नगरों में निर्धनों को साधारणतः अनाज के राशन पर ही निर्भर रहना पड़ता है किन्तु धनिकों के पास कितने ही विकल्प (एवज़) एवं अतिरिक्त खाद्य—मांस, मछली, सब्जियां और फल आदि हैं।

"हमें मिलकर इस संकटका सामना करना चाहिए और कष्टोंको यथासंभव बराबर—बराबर बांट लेना चाहिए। यदि हम ऐसा करें तो मुझे विश्वास है सन् १९४६ बिना दुर्घटना के बीत जायेगा।"

शनिवार, १६ फरवरी १९४६को नई दिल्ली से हिज़ एक्सेलेंसी वायसराय के एक ब्राडकास्ट भाषण का अंश

खाद्य संकट को पराजित कीजिए

एक साथ कार्य कीजिये — एक साथ हिस्सा बंटाइये

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

प्रबन्धक सम्पादक - एच० पी० घोष [के० [illegible] प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

वर्ष ८, संख्या ३६] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, ५ मई, १९४६

भङ्ग की तरङ्ग

प्रान्तीय असेम्बली की बैठक छः साल के बाद हुई है। इसीलिए संभवतः मंत्रियों ने यही तय किया है कि किसी निश्चय पर कम से कम छः महीने के पहिले नहीं आवें।

* * *

सुना जाता है कि गवर्नर लोग गुप्त रूप से जनता को दबाने की तैयारी कर रहे हैं। स्वराज्य पाने से जनता का मन फूल न जाये इसलिए दबाना आवश्यक है।

* * *

समाचार छपा है कि पंजाब के ऊँचे अधिकारी मंत्रियों से विशेषतः कांग्रेसी-मंत्रियों से भी सहयोग कर रहे हैं। इतनी कम है तो खैरियत है। संयुक्तप्रान्त के अधिकारी तो मंत्रियों को कुछ समझते ही नहीं।

* * *

हैलेट साहब ने भारत-मंत्री से प्रार्थना की थी कि इस प्रान्त में आई० सी० पुलिस अफसरों की संख्या बढ़ा दी जाये। हैलेट साहब और नहीं रहे नहीं तो यह भी प्रार्थना करते कि संयुक्तप्रान्त जेल बना दिया जाये और मैं इसका जेलर बना दिया जाऊँ।

* * *

रेलवालों की भी हड़ताल होनेवाली है। खाद्य सदस्य को प्रसन्न होना चाहिए कि अब कहीं गल्ला नहीं पहुँचेगा तो उनको दोष नहीं दिया जायगा।

* * *

झाँसी में पुलिस ने भीड़ पर लाठी चलाई और वहाँ के कोतवाल ने यह घोषणा की कि हमें हिन्दुओं को सबक़ सिखाना होगा। ऐसे शिक्षा-प्रेमी कोतवाल को अलीगढ़ विश्वविद्यालय में प्रिंसपल बनाकर भेज देना चाहिए।

* * *

श्रीयुत् हूवर ने कहा कि भारतवासी भाग्यवान हैं कि उन्हें छः छटाँक अन्न खाने को मिलता है। बहुत ठीक कहा, मनुष्य क्या खाने के लिए ही पैदा हुआ है? शरीर को जीवित रखने के लिए एक छटाँक भी काफ़ी है।

* * *

ऐसा कहा जाता है कि अलीगढ़ पर छः लाख रुपये सामूहिक जुरमाना किया जायेगा। जुरमाना हिन्दुओं पर होना चाहिए। उन्होंने क्यों इतने रुपयों की दूकानें खोलीं--जिससे लोगों को लूटने का लालच समा गया?

* * *

कहते हैं कि पंद्रह दिनों में मध्यकालीन सरकार की स्थापना हो जायेगी। मेरा तो ऐसा ख्याल था कि एक सप्ताह में स्वराज्य मिल जायेगा और अँगरेज भारत छोड़कर चले जायेंगे किन्तु--अभी मध्यकालीन सरकार की ही व्यवस्था होने में पंद्रह दिन लगेंगे।

* * *

असेम्बली में अधिकांश सदस्यों ने तथा मंत्रियों ने हिन्दी में शपथ ग्रहण किया। श्रीयुत् पंडित महाबीर त्यागी के अनुसार सब शपथें झूठी हैं, इसलिए झूठी बातों के लिए यदि अँगरेज़ी का ही उपयोग होता तो ठीक था।

* * *

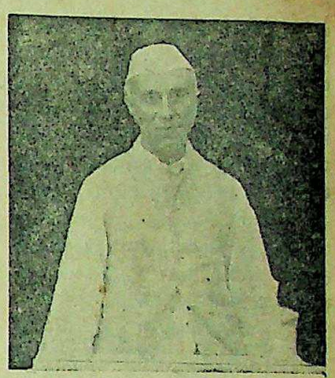

भावी राष्ट्रपति पंडित जवाहरलाल नेहरू।

विद्रोही नौ सैनिकों ने बयान में बताया है कि हम लोगों के साथ कुत्तों जैसा व्यवहार होता था। क्या मतलब? क्या विलायती महिलायें गोद में लेकर बैठती थीं?

--अगड़धत्त शर्मा

नया देशभक्त!

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

मैं देशभक्त सबसे बढ़कर!
कल तक मैं सूट पहनता था अँगरेजी थे मेरे दरजी;
युग बदल गया तब साथ-साथ बदली है मेरी भी मरजी;
कुछ दिन पहले नेताओं को दी थी मैंने अवश्य गाली;
मैंने सिलवाया है खद्दर!
आवश्यकता पड़ने पर बदल सदा जाती जल की नाली;
जब हिन्दू कहा कुछ लड़कों ने उन पर मैंने गोले दागे;
मैं भी बदला ज्यों कैलेंडर!
कर में स्वराज्य का झंडा ले अब दौड़ रहा सब के आगे;
धार्मिक की पूजा करता हूं जब जैसा भी शासक देखा;
अब भी हूं, तब भी रहा निडर!
ऐसा ही हाँ मैं मरता हूँ--ऐसा ही मेरा लेखा;
तब अफ़सर थे अब हैं लीडर!

'अनाज के प्रश्न को जो कि देश का तत्कालीन प्रमुख प्रश्न है, जनता और सरकार का पूर्ण सहयोग होना चाहिये।

'यदि अनाज का सवाल दलगत राजनीति से अलग रखा जाय तो परिस्थिति में सुधार के आशाजनक चिह्न हैं।....'

--राष्ट्रपति मौलाना अबुलकलाम आजाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचनादर्श

'वह जो मैंने देखा'

लेखक, श्री 'नीरव' एम० ए०

तर्क और प्रगति आज की कला का जीवन है। युग-संघर्ष ने युग-जीवन को प्रभावित किया है और जीवन को गंभीरता की दृष्टि से देखनेवाले कलाकार की चिन्तन प्रणाली को भी। जीवन और जीवन की प्रत्येक परिस्थिति की चिन्ता आज विचार प्रधान है। सदा से मानव मस्तिष्क की चिन्तन धाराओं की व्याख्या करनेवाले साहित्य में मनोवैज्ञानिकता की महत्ता आज अधिक बढ़ गई है। उपन्यास जीवन की कहानी है अतः वह जीवन के भावक और विचारक—हृदय एवं मस्तिष्क—की व्यापक गतिविधियों के प्रकाशन का अनुकूल और उपयुक्त क्षेत्र है। श्रीयुत उदयशंकर भट्ट के 'वह जो मैंने देखा' उपन्यास का आज के मनोविज्ञान प्रधान साहित्य में उल्लेखनीय स्थान है।

'वह जो मैंने देखा' एक सामाजिक उपन्यास है जिसका कथा वस्तुविन्यास तीन अध्यायों, चौबीस उप-अध्यायों और दो सौ अस्सी सघन-प्रिंट-पृष्ठों में प्राप्त हुआ है। उपन्यास की घटनायें अधिकांश समाज के निम्न स्तर और मध्यवृत्त जीवन से ली गई हैं जो अपनी परिमिति में ग्राम्य-जीवन और नागरिक वातावरण के मध्य अच्छा अन्तर उपस्थित करती हुई समाजवाद, मजदूर अछूत आन्दोलन असहयोग और शोषण की समस्याओं का स्पर्श करती चलती है। अन्त में यत्र तत्र कथानक में हड़ताल, सत्याग्रह, झंडा-प्रदर्शन आदि से वस्तु के वातावरण में ऐसी स्फूर्ति उत्पन्न हो गई है जिसमें हमारा वर्तमान सामाजिक जीवन भली भाँति प्रतिध्वनित हो उठा है। अध्यायों का प्रारम्भ प्रायः जीवन तत्त्व सम्बन्धी आत्मगत विवेचनों अथवा परिस्थितियों के मनोवैज्ञानिक कारण चिन्तनों से हुआ है। उपन्यास पूर्ण है और पूर्णता सापेक्ष भी। पुस्तक के प्रारम्भ में चार पृष्ठ की एक सुन्दर भूमिका है जिसमें, आदर्श, यथार्थ, प्रगति, रोमान्टिक और क्लासिकल के विषय में लेखक ने अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया है। आदर्श कल्पना है और यथार्थ जीवन की घोर वास्तविकताओं की समष्टि है जिसका मूलरूप समझने के लिए पूर्णताओं की अपेक्षा जीवन की दुर्बलताओं का अध्ययन अधिक सार्थक सिद्ध होता है। यही उपन्यास की मूल कल्पना है।

'अजय' उपन्यास का प्रधान पात्र है अतः वह कथा के सारे घटनासूत्रों का केन्द्र है। पिशी, सुधी, शोभा, ब्रजमोहन धन्नू आदि अजय के सम्पर्क में आनेवाले ऐसे व्यक्ति हैं जिनके कार्यकलापों की छाया से अजय का चरित्र-चित्र निखरा है। अजय ने अपनी जीवनगाथा आप कही है इस कारण उपन्यास में जीवन-चरित्र की-सी सत्यभावना है। उपन्यासकार ने कुछ काल्पनिक अंशों द्वारा कथावस्तु का परिमार्जन और परिवर्धन किया है इस कारण उपन्यास में भाव-प्रधानता और रुचि-ग्राह्यता भी है। 'अजय' प्रारम्भ में एक भावुक व्यक्ति है वह यत्र तत्र घटनाओं के कारणों पर विचार करता चलता है। सुअवसर उसके सम्मुख आते हैं किन्तु वह उनका उपयोग नहीं कर पाता, वह एक अल्हड़ चंचरीक की चंचल मनोवृत्ति के साथ अपनी स्वतन्त्र गति की परिधि में आ जानेवाली मधु अथवा कटु परिस्थितियों का अनायास ही आस्वाद करता बढ़ता जाता है। वह आगे चलकर प्रौढ़ विचारोंवाला गम्भीर व्यक्ति बन गया है। दुर्बल की सहायता करना उसके व्यक्तित्व का परम विकास है। 'सुधी' को उपन्यासकार ने स्थिति बन्धनों से ग्रसित एक यथार्थ नारी के रूप में अंकित किया है जो अपने हृदय का तरंगित ज्वार नारी-सुलभ शक्तियों के आवरण में छिपाये अवाञ्छनीय भाग्य की दुरभि सन्धियों से युद्ध करती हुई जीवन की दौड़ में थककर चलती है। उपन्यासकार ने इस चरित्र में यथार्थ की बड़ी सुन्दर एवं स्वाभाविक प्रतिष्ठा की है। 'शोभा' आधुनिक ढंग की एक शिक्षिता नारी है जिसका चरित्र एक सुलझी हुई उलझन है। इनके अतिरिक्त अन्य भी कई उल्लेखनीय चरित्र हैं जिनसे [illegible]नक की पृष्ठभूमि का वैलेन्स (संतुलन) प्रशंसनीय बन गया है।

उपन्यास घटना प्रधान नहीं चरित्र प्रधान है और चरित्र संकेत प्रधान है। उपन्यासकार व्यक्तियों के विचार और अंतस् तक प्रवेश करने में अति कुशल है। जीवन विकास के विभिन्न स्तरों पर बदलती हुई मनस्थिति के द्योतक कितने ही सुन्दर स्थल उपन्यास में आये हैं जिनमें, आशा, निराशा, प्रत्याशा, चिन्ता, व्यथा, सन्देह, पीड़ा और आत्मग्लानि आदि मानसिक अव्यवस्थाओं से प्रभावित चित्त, गतिरोध, एकान्त प्रलाप, काल और स्थिति ज्ञान शून्यता के चित्र बड़े ही मार्मिक और स्वाभाविक बने हैं। मानव मनोविकारों के सम्बन्ध में लेखक का ज्ञान अति व्यापक है। लेखक ने समाजवाद के सिद्धान्त को उपयोगी माना है और सम्पूर्ण उपन्यास में उस विश्वास की रक्षा भी की है। समाज के संगठन की कोई भी व्यवस्था उस समय तक पूर्ण सफल नहीं हो सकती जब तक उसका आधार आधिकारिक समीकरण की भूमि पर न खड़ा किया जाय साथ ही कोई भी सामाजिक प्रगति तब तक अमर नहीं हो सकती जब तक वह तिरस्कृत और दलित बहुमत का सत्कार नहीं करती। इस प्रकार के कितने ही व्यापक और ज्वलन्त विषय उपन्यास के नायक 'अजय' ने अपनी कहानी की गोद में बाँधे हैं। उपन्यास का वस्तुविन्यास मन्थर, चरित्र-चित्रण स्वाभाविक एवं मनोवैज्ञानिक और अधिकृत ध्येय अत्यन्त व्यापक है। भाषा परिमार्जित साहित्यिक हिन्दी है जिसमें बोलचाल का प्रवाह और नाटकीय वेग है।

दो शब्द और—उपन्यास में कथा की अपेक्षा व्याख्या ने अधिक परिव्याप्ति प्राप्त की है और कुछ स्थलों पर सेक्स के विवेचन बहुत समीचीन प्रतीत नहीं होते। कहीं कहीं पर —जैसे स्वामी जी से अजय का प्रवृत्ति निवृत्ति प्रधान आत्म-तत्त्व विवेचन का प्रसंग—अजय की विचार परम्परा उसके बौद्धिक प्रतिष्ठान से मेल नहीं खाती।

भट्ट जी को आज तक हिन्दी जगत् एक भावुक प्रगतिशील कवि और प्रख्यात नाटककार पहिचानता आया है आज वे हमारे समक्ष एक उपन्यासकार के रूप में आये हैं। 'वह जो मैंने देखा' उनका प्रथम उपन्यास है और अनेक दृष्टिकोणों से हिन्दी में उसका चोटी का स्थान है।

'वह जो मैंने देखा'—(उपन्यास) ले०—श्री उदयशंकर भट्ट। प्रकाशक—अवध पब्लिशिंग हाउस लखनऊ। मूल्य ३॥)।

गीत

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल एल० बी०

मधु-वितरण से मधु-राशि नहीं घटती है मधु पीने से मधु-प्यास और बढ़ती है।
काया में प्राणों का संजीवन पाया
प्राणों में काया का सम्मोहन छाया।
काया प्राणों का मेल अमर करने को जीने से जीवन-आश और बढ़ती है।
वह तृष्णा क्या जो भरे तृप्ति के घट में
विस्तार स्वयं बँधता अपने ही पट में।
रहकर अपूर्ण, आशा चाहे मिट जावे, पूरी होकर, अभिलाष और बढ़ती है।
मृदुता में आकर्षण की प्रीति समाई
आकर्षण ने मृदुता की दीप्ति बढ़ाई,
मधुपों के उन्मद कलिका-मुख-चुम्बन पर, अधरों की मधुर मिठास और बढ़ती है।
बूँदों ही से तो सागर भर जाता है,
सागर भी तो बूँदों में लहराता है,
मिलनाशा चाहे चिर वियोग में खोये मिलकर समीप की आश और बढ़ती है।

खाद्य बचाना खाद्य उगाने के बराबर है

इस खाद्य - संकट में प्रत्येक समर्थ व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह अधिक से अधिक खाद्य उत्पन्न करे। यदि आप खाद्य-उत्पादक नहीं हो सकते तो कमसे कम खाद्य रक्षक तो हो सकते हैं। स्मरण रखिये खाद्य बचाना खाद्य उगाने के बराबर है।

भारतीय इतिहास की इस गंभीर घड़ी में प्रत्येक नागरिक की मदद की जरूरत है। अपने घरों की सरल और दैनिक मितव्ययिता के द्वारा खाद्य-संकट के सुधार में हम सब ठोस मदद दे सकते हैं? यहां ये चार तरीके दिये जाते हैं जिनके द्वारा आप मदद कर सकते हैं:

१ आतिथ्य - सत्कार को कम कर दीजिये। यदि आपको अतिथि बुलाने ही हैं तो सादा भोजन बनवाइये। वे कारण को समझेंगे और उसको पसंद करेंगे।

२ थोड़ा खाना परोस कर अपने घर में ही बचत कीजिये। इस बात का स्मरण रक्खें कि रसोई घर में व्यर्थ क्षति न हो।

३ शादियों और धार्मिक एवं सामाजिक उत्सवों में कठोर मितव्ययिता का व्यवहार कीजिये।

४ अपने स्वाद पर निर्भर रहते हुए अधिक तरकारियाँ, फल, मछली, मांस, अंडे और दूध से बनी चीजें खाकर अपने भोजन को पौष्टिक बनाइये। अपनी चावल व गेहूं की खुराक कम कर दीजिये।

खाद्य बचाना प्राण बचाने के बराबर है।

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष रूप से 'देशदूत' के लिये

गांधी जी कलाकारों के बीच में

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के अवसर पर कलाकारों तथा साहित्यकारों का सम्मेलन

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

दक्षिण भारत हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा की रजत-जयंती के अवसर पर महात्मा गांधी मद्रास गये थे। जयंती के ही अवसर पर एक दिन वहाँ कलाकारों तथा साहित्यकारों का एक सम्मेलन हुआ। गांधी जी भी वहाँ उपस्थित थे। इस लेख श्री प्रभुदयाल जी ने—जो स्वयं वहाँ उपस्थित थे—उस अवसर का एक सुन्दर और जानकारी से पूर्ण संस्मरण लिखा है। लेख पठनीय, रोचक तथा कलाकारों के लिए ज्ञान-वर्धक है।

दक्षिण भारत के सैकड़ों साहित्यकार और कलाकार हिन्दुस्तानी-प्रचार सभा में आये थे। सुबह शाम उन लोगों में आपस में चर्चा हुई। ३० जनवरी ४६ को एक छोटा-सा सम्मेलन किया गया। मद्रास के कई साहित्यकारों ने अपने साहित्य पर अच्छा प्रकाश डाला। कलाकारों ने कला के सम्बन्ध में चर्चा की। सम्मेलन में इन पंक्तियों का लेखक भी गया था। लेकिन अधिक लाभ उठा नहीं सका क्योंकि वहाँ के सब साहित्यकार अपनी प्रान्तीय भाषाओं में भाषण दे रहे थे। कोई तेलगू में बोलता था तो कोई तामिल में। अँगरेज़ी का संपूर्ण बहिष्कार था। वे लोग हिन्दी नहीं जानते थे। एक मद्रासी साहित्यकार ने हिन्दी में भी भाषण किया। वह अपने भाव को अच्छी तरह व्यक्त नहीं कर पाते थे।

महात्मा गाँधी

उनकी बातचीत से मालूम हुआ कि दक्षिण भारत का भी साहित्य अच्छा है। पुरानी संस्कृति और ऐतिहासिक चीज़ों की रक्षा की गई है। इधर कला का भी अच्छा प्रचार है। लकड़ियों की चीज़ों पर अच्छा चित्रकला दिखाई देती है। चन्दन की लकड़ियों पर खुदाई का बहुत अच्छा काम आज भी होता है। कला और साहित्य का अच्छा प्रचार है। यहाँ के मंदिरों को देखने से मालूम होता है कि इनमें कला की रुचि बहुत पुरानी है। चित्रकारी भी अच्छी होती है। लोगों को संगीत से बहुत प्रेम है। स्कूलों में नृत्य का अच्छा प्रचार है। यहाँ की लड़कियों और लड़कों को संगीत सीखने का बड़ा शौक़ है।

यहाँ के साहित्यकारों और कलाकारों ने अपनी सभा में महात्मा गांधी को भी आमंत्रित किया। महात्मा जी ने पहिले तो वहाँ जाने में कुछ कठिनाइयाँ बताई लेकिन अधिक आग्रह पर कुछ मिनट उनके बीच जाने की स्वीकृति दे दी। चार बजने से कुछ पहिले गांधी जी सम्मेलन में पहुँचे। गांधी जी ने पहुँचते ही कहा—"भाइयो, आपने मुझे यहाँ बुला तो लिया है। आप ने मुझे क्यों बुलाया है? क्या आप सब हिन्दुस्तानी समझते हैं? क्या आप सब यहाँ साहित्यिक और कलाकार हैं? आप लोगों में से मेरी भाषा कितने लोग समझ सकते हैं, अपना हाथ ऊँचा कीजिये। अधिक से अधिक लोगों ने हाथ ऊँचा किया।" गांधी जी ने कहा—"यह मुझे अच्छा लगता है। एक काम हो गया। आप सब लोगों को राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी आनी ही चाहिए।"

"आप लोगों को मालूम है कि नहीं कि मैं साहित्यिक नहीं हूँ। अँगरेज़ी का नाम भी क्या लूं? आपकी भाषा तो भी नहीं जानता। हाँ गुजराती को नहीं कह सकता हूँ। गुजराती का कुछ साहित्य जानता हूँ। कला तो मैं जानता ही नहीं। कला की एक बात भी मालूम नहीं। कहीं इसकी शिक्षा नहीं ली है। इसी लिए मैं यहाँ आने में भी संकोच करता था। अच्छा आप में कितने कलाकार यहाँ हैं? अपना हाथ ऊँचा कीजिये। यदि यहाँ सब कलाकार हैं तो सब अपना हाथ ऊँचा कर सकते हैं। बहिनों में यदि कोई हों तो अपना हाथ ऊँचा कर सकती हैं।"

किसी का हाथ ऊँचा न देखकर गांधी जी ने कहा—"क्या यहाँ कोई कलाकार नहीं?" एक भाई ने कहा कि लोग शर्म करते हैं।

गांधी जी ने कहा—"इसमें शर्म क्यों आनी चाहिए? यदि मुझसे कोई कहे कि यहाँ कितने सत्याग्रही हैं तो मैं अपना दोनों हाथ ऊँचा करके बताऊँगा कि मैं सत्याग्रही हूँ। कलाकार और शिल्पी को संकोच क्यों?"

बहिनों में से एक का हाथ ऊँचा देखकर गांधी जी ने कहा—"बस एक बहिन?"

पुरुषों का अधिक हाथ ऊँचा देखकर गांधी जी ने कहा—"सब कलाकार हैं? मेरे दिल में अब कुछ शक पैदा हो गया है।" सब लोग हँसने लगे।

बापू ने फिर कहा—"हाँ, आपको मैंने बताया कि यहाँ आने में मैं संकोच कर रहा था लेकिन मेरे भीतर से एक आवाज़ आई कि संकोच क्यों? मैं एक कला जानता हूँ वह सत्य और अहिंसा है। सत्य-अहिंसा जानता ही नहीं हूँ उस पर अमल करता हूँ। जीवन में उसका पालन करता हूँ। यह कला बहुत बड़ी कला है। मैं आपको सत्य-अहिंसा की कला बतला सकता हूँ।"

"कला-विहीन आदमी को पशु तुल्य कहा गया है। लेकिन मैं पशु तुल्य नहीं हूँ। सत्य अहिंसा की कला को पालन करने की शक्ति चाहिए, उसे मैं अपने में पाता हूँ।"

"अब मैं आपसे एक प्रश्न करता हूँ। यदि आप साहित्यकार और कलाकार हैं तो गुलाम क्यों हैं? आप अपनी कला और साहित्य का उपयोग क्यों नहीं आजादी में लगाते हैं? आप हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता क्यों नहीं प्राप्त करते? यहाँ की स्वतंत्रता को कलायुक्त स्वतंत्रता बनाइये। साहित्यकार और कलाकार स्वतंत्रता में हिस्सा बँटा सकते हैं। कलाकारों और साहित्यकारों के सामने मेरी सत्य-अहिंसा की कला है। आप इसमें से बहुत कुछ सीखकर अपना तथा अपने देश का उद्धार कर सकते हैं। इसी लिए मैं आपके यहाँ आ गया।"

अन्त में एक कलाकार ने बापू जी को अपने हाथ से बनाया हुआ एक चित्र भेंट किया। गांधी जी ने खिलखिला कर कहा कि यह मेरा ही चित्र है? अपने हाथ में लेकर कहा मैं इसको यहीं बोली बोलकर बेंच डालना चाहता हूँ। इसका पैसा हिन्दुस्तानी प्रचार सभा में जायगा। गांधी जी ने सबको हँसाते हुए कहा कि जो भाई-बहिन इसे लेना चाहते हैं, दाम बोलिये। चित्र सुन्दर है सब लोग खूब हँसने लगे। फोटोग्राफर गांधी जी का चित्र खींचने के लिए एकदम पागल से हो गये। एक सज्जन ने ३५०) रुपये देकर चित्र खरीद लिया।

बाद को हाथ के चित्रों का एक एल्बम मिला। गांधी जी ने देखकर कहा—यह अच्छी चीज़ है। कोई लेना चाहे तो एक हज़ार रुपया चाहिए। हज़ार से कम में नहीं बेचूँगा।

गांधी जी के विनोदी स्वभाव से सभा मंडप के मनहूस आदमी को भी हँसी आ जाती थी। गांधी जी ने चित्र बेचते हुए लोगों को खूब हँसाया।

यूरोप का आजाद हिन्द संघ

नेता जी श्री सुभाषचन्द्र बोस ने किस प्रकार संगठन किया

लेखक, श्री सरदार रामसिंह रावल

नेताजी श्री सुभाषचंद्र भारत से लापता हुए तो यह यूरोप पहुँचे। वहाँ उन्होंने आजाद हिन्द संघ की स्थापना की। आजाद हिन्द संघ क्या था, इसका वर्णन इस लेख में किया गया है। लेखक स्वयं नेता के आजाद हिन्द संघ में सम्मिलित था। लेख सुन्दर और जानकारी से पूर्ण है।

पूर्वी एशिया के आजाद हिन्द-संघ के ऊपर पर्याप्त प्रकाश डाला जा चुका है। आजाद हिन्द-फ़ौज के मुकद्दमों ने तो भारतीय जनता को उस महान संस्था का विवरण जानने में बहुत ही सहायता की है। परन्तु पाश्चात्य देशों के आजाद हिन्द-संघ पर अब तक कोई विशेष प्रकाश नहीं डाला गया है। मैं इस लेख में उसी के विषय में संक्षेप से वर्णन करने का प्रयास करूँगा।

सुभाष बाबू के भारत से अन्तर्धान हो जाने का रहस्य यूरोप-स्थित भारतीयों को १९४१ में ज्ञात हो गया था। अक्तूबर का मास था। एक दिन सुबह के समय बर्लिन-निवासी प्रमुख भारतीयों को एक सज्जन सेनर ओ० मज़ोटा ने चाय पीने के लिए आमन्त्रित किया। यह आमन्त्रण नम्बर ६ सोफिन्स्ट्रेस, बर्लिन जिला से भेजा गया था। यहाँ युद्ध छिड़ने से पूर्व एक ब्रिटिश दूत रहा करता था। सबके सब उक्त स्थान पर पहुँचे। नाम से वे यही समझते थे कि उनका मेज़बान (Host) इटालियन होगा। पर उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि एक ऊँचे क़द का, हृष्ट-पुष्ट सुन्दर व्यक्ति उनका आतिथ्य सत्कार धाराप्रवाह हिन्दुस्तानी में कर रहा है। वह चश्मा पहने था और उसका व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली मालूम पड़ता था। उन्हें यह देखकर तो और भी आश्चर्य हुआ कि सभी आमन्त्रित व्यक्ति भारतीय थे। और जब उन्हें यह पता चला कि सेनर मेज़ोटा इटालियन नहीं, बल्कि भारतीय हैं, और वे भारतीय ही नहीं, बल्कि उनके खोये हुए नेता श्री सुभाषचन्द्र बोस हैं, तब तो उनके आश्चर्य की कोई सीमा ही न रही। वातावरण भावनाओं से ओत-प्रोत हो गया। चारों ओर शान्ति छा गई।

नेता जी बोल उठे—"मैं यहाँ भारत के स्वतंत्रता-संग्राम को बाहर से जारी करने के लिए आया हूँ।"

उन्हीं दिनों भारतीय सेनायें मिस्र और लीबिया के रण-क्षेत्रों में जर्मनों के सम्मुख बड़ी संख्या में हथियार डाल रही थीं। जब इन युद्ध-बन्दियों को पता चला कि सुभाष बाबू यूरोप में हैं और वे भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़नेवाली आन्तरिक सैन्यशक्ति की सहायता करने के लिए सशस्त्र सेना का निर्माण करना चाहते हैं तो उनका हृदय गद्गद हो गया और वे प्रस्तावित आजाद हिन्द-फ़ौज में भर्ती होने के लिए उत्सुक हो उठे।

आजाद हिन्द-फ़ौज बनाने से पूर्व नेता जी ने यूरोप में आजाद हिन्द-संघ की स्थापना की। इसका प्रधान कार्यालय बर्लिन में रक्खा गया। मि० आबिद हुसैन, जो बाद में नेता जी के साथ उनका प्राइवेट सेक्रेटरी बनकर पूर्वी एशिया में गये और आजाद हिन्द-फ़ौज के लेफ़्टिनेन्ट कर्नल हो गये, यूरोप में पहले भारतीय थे जो नेता जी के साथ हुए। आजाद हिन्द-संघ ने अपने कार्यक्रम का श्रीगणेश रेडियो प्रचार से किया। आजाद हिन्द-संघ के नाम से सबसे पहला रेडियो प्रोग्राम सन् १९४२ की जनवरी में प्रारम्भ हुआ था।

सुभाषचन्द्र बोस

आजाद हिन्द-फ़ौज की स्थापना २६ जनवरी, १९४२ को स्वतंत्रता दिवस पर हुई थी। इसका कैम्प हैम्बर्ग में रक्खा गया। इस फ़ौज को जर्मन में फ़्रीज़ इंडियन लीजान कहा जाता था। इस अवसर पर एक उत्सव भी मनाया गया। इसमें जर्मन और जापानी प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

नेता जी ने प्रारम्भ में कुल ४०० स्वयंसेवकों की माँग की थी। परन्तु सेना में प्रवेश होनेवालों की संख्या ४००० के क़रीब हो गई। इस लीजान की कई इकाइयाँ थीं। जैसे—पैदल, घुड़सवार, यन्त्र-सम्बन्धी दल आदि आदि। इनमें से कुछ को रिजेनबर्मलेगर शहर से ११ किलोमिटर की दूरी पर मेजर्ट कैम्प में शिक्षा दी जाती थी और शेष को प्रशा की राजधानी क्वीनिंग्सबर्ग में। उन्हें भारी और हल्के मशीनगन, ऐन्टीटैंकगन तथा अन्य प्राण-घातक अस्त्रों का प्रयोग करना, तैरना, पहाड़ों पर चढ़ना, सवारी करना, मार्ग-दर्शन करना तथा तोप चलाने की शिक्षा दी जाती थी। क्वीनिंग्सबर्ग में शिक्षा लेने से पूर्व सैनिकों को फ़्रैंकेन्सबर्ग में प्रारम्भिक शिक्षा लेनी पड़ती थी।

विस्तृत सैन्य-शिक्षा के अलावे फ़्रीज इन्डीएन लीजान के अफ़सरों को राजनैतिक शिक्षा भी दी जाती थी। इसमें निम्नलिखित विषय सम्मिलित थे—

(१) अपने देश तथा संसार का इतिहास। (२) १८५७ के पूर्व तथा पश्चात् भारत में स्वतंत्रता के लिए संग्राम। (३) भारत के राष्ट्रीय नेताओं का जीवन-

शेष पृष्ठ १७ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थियो, आगे बढ़ो

गर्मियों की छुट्टी की एक क्रान्तिकारी योजना

लेखक, श्री नारायणदत्त तिवारी
जनरल सेक्रेटरी, इलाहाबाद विद्यार्थी कांग्रेस

अब कालेजों, स्कूलों और विश्वविद्यालयों में छुट्टियाँ हो चुकी हैं। विद्यार्थियों को यह दो महीने किस प्रकार बिताना चाहिए, जिससे उनके समय का सदुपयोग राष्ट्र तथा समाज के प्रति हितकर सिद्ध हो। श्रीनारायणदत्त तिवारी ने इस लेख में बड़ी सतर्कता से विद्यार्थियों के लिए दो महीने का कार्यक्रम तैयार किया है। लेख पठनीय तथा विचारणीय है।

इस लेख के लेखक श्री नारायणदत्त तिवारी

आज भारत के इतिहास का सबसे महत्त्वपूर्ण क्षण सन्निकट है। भारत के भविष्य का निपटारा इन्हीं एक या दो सालों में हो जाना है। हमें आजादी तो मिलेगी ही, चाहे वह विधानवाद और असेम्बलियों के चुनावों की लड़ाई लड़कर मिले, या क्रान्ति द्वारा। पर इस चित्र का एक दूसरा भयानक पहलू भी है। वह है गृह-युद्ध का भय। मिस्टर मोहम्मदअली जिन्ना और उनकी मुस्लिम लीग ने देश में साम्प्रदायिक भेदभाव को जितना अधिक बढ़ा दिया है, पाकिस्तान के राजनीतिक नारे के पीछे 'धार्मिक जिहाद' की भावना की जो वृद्धि होने लगी है, उसकी पुष्टि भारत के मुस्लिम विद्यार्थियों के पिछले चुनाव के दौरान में बल-प्रयोग करने, और हाल ही में अलीगढ़ में हिन्दुओं की बाजारें नष्ट करने से हो जाती है। सर फ़िरोज़-खाँ नून और सुहरावर्दी सदृश मुस्लिम-लीगी नेता 'चंगेज़खाँ', 'रूस' व 'खूनी विद्रोह' का आह्वान खुलेआम करने लगे हैं। साथ ही साथ देश में अन्य कई ऐसे और भी दल हैं जिनका सारा कार्य अब केवल आज़ादी के मार्ग में रोड़े अटकाना ही रह गया है। एक ओर अकाली-दल 'आज़ाद सिखिस्तान' बनाने के लिए जोड़-तोड़ कर रहा है, दूसरी तरफ़ अम्बेदकर का शीडयूल्ड-कास्ट-फ़ेडरेशन 'अछूतिस्तान' के चक्कर में गांधी जी पर भी घिनौने आक्रमण करने से नहीं चूकता। अपने को असली साम्यवादी 'कम्यूनिस्ट' कहकर पुकारनेवाले 'स्टालिनिस्ट' भी इस बढ़ते हुए भेदभाव को और भी बढ़ाने में संलग्न हैं। राजा-महाराजे भी 'प्रिंसिस्तान' बनाने के चक्कर में हैं।

अँगरेजों द्वारा भेजा गया ब्रिटिश मंत्रियों का प्रतिनिधिमंडल उनकी साम्राज्य-वादी कूटनीति का एक और सुन्दर नमूना है। बाहर से मीठी लगनेवाली पर अन्दर से कड़वी और ज़हर से भरी गोली बीमार को खिलाने की तरह ब्रिटिश राजनीतिज्ञ भी कपलैंड-योजना' को जिसमें भारत ६ भागों में बाँट डाला गया है, हमारे गले के नीचे उतारना चाहते हैं। देश में दो प्रांतों में लीगी मंत्रिमंडल (सिंध और बंगाल में), पंजाब में अकाली-यूनियनिस्ट-कांग्रेस दलों का मिश्रित मंत्रिमंडल तथा अन्य प्रान्तों में कांग्रेसी सरकार स्थापित हो गई है या शीघ्र ही होनेवाली है। पहले दो प्रान्तों के सम्बन्ध में तो केवल यही कहा जा सकता है कि वहाँ साम्प्रदायिकता का नंगा नाच होगा। पर जिन प्रान्तों में कांग्रेस ने बागडोर सँभाली है, वहाँ अवश्य कई क्रान्तिकारी सुधार होंगे। पर इन सबमें काफी समय लगेगा और एक बड़े संगठन की आवश्यकता होगी जिसमें सरकारी कर्मचारियों और जनता का पूर्ण सहयोग आवश्यक होगा और यहीं हम विद्यार्थियों की अब सबसे अधिक आवश्यकता है।

* * *

हम लोग अभी अपने अपने इम्तिहान देकर घरों को वापस आये हैं। हमारे दिमाग़ थके तो होंगे ज़रूर, पर समय चुपचाप बैठने का नहीं है। अपनी यूनिवर्सिटी, कालेज या हाईस्कूल में भी हम शान्ति से बैठे नहीं रहे। हमने पढ़ना छोड़ दिया, इम्तहान की फ़िक्र नहीं की, चुनाव-कार्य में जुटे रहे, आज़ाद हिन्द-फ़ौज के योद्धाओं को रामेश्वर बैनर्जी जैसे वीर साथियों की जानें गँवाकर भी और लाठी, गोली खाकर भी छुड़ाया। हमने अपनी मीटिंगों में, काफ़्रेंसों में, जलूसों में, सभी जगह कांग्रेस के अगस्त सन् १९४२ के ऐतिहासिक प्रस्ताव का, 'भारत छोड़ो' का नारा बुलन्द किया। हमारे कई साथी गिरफ़्तार कर केवल 'अगस्त-प्रस्ताव' के हिमायती होने के जुर्म में, सालों जेल में बंद रखे गये। अब आज जब देश पर सबसे बड़ा राजनीतिक संकट आनेवाला है, हमारा यह काम नहीं कि कांग्रेस मंत्रिमंडल के शासनारूढ़ हो जाने के बावजूद भी चुपचाप ही बैठे रहें। स्वतंत्रता के लिए जन-संगठन अवश्यम्भावी है। इसी लिए आज हमें सन् १९४२ के अगस्त की सफल पुनरावृत्ति के लिए तैयार होना है। सन् १९४२ की क्रान्ति, रूस में हुई सन १९०५ की असफल राज्यक्रान्ति की तरह एक शिक्षक-भूमिका या 'रिहर्सल' थी। तूफ़ान के पूर्व, इस शान्तिकाल में हमें अवश्य अपने रचनात्मक और कार्यक्रमों को पूरा कर लेना चाहिए।

गर्मियों की छुट्टियों का हम कई प्रकार से राष्ट्रीय कार्यों में उपयोग कर सकते हैं। हमारी कार्यप्रणाली स्थान-विशेष के द्वारा, शहर या गाँव, जहाँ कहीं भी हम हों, स्थिर की जा सकती है।

अगर हम किसी शहर में हों, जहाँ हमारी विद्यार्थी कांग्रेस की कोई शाखा आदि हो, तो हम उसके द्वारा आयोजित किसी कार्यक्रम में शामिल हो सकते हैं। इस दिशा में पहला प्रयत्न काम करनेवालों के एक संगठित गिरोह का एकत्र होना है। अच्छा हो, यदि एक स्थायी स्वयंसेवक दल के रूप में संगठन किया जाय। अपने-अपने मुहल्लों के आँकड़ों की जानकारी रखना ज़रूरी है। शहर की खाद्य-स्थिति के बारे में, गेहूँ के स्टाक में शहर की आबादी के लायक कितने महीने का सामान है, अगर अधिक या कम है तो क्यों, आदि। इसी प्रकार के अनेक आर्थिक प्रश्नों के बारे में हमें पूरी जानकारी रखने का प्रयत्न करना चाहिए।

पर भावी कार्यक्रम को सार्वजनिक तौर पर सफल बनाने के लिए यह ज़रूरी है कि हम प्रो० हुमायूँ, कबीर के मतानुसार 'पढ़े और अनपढ़े' का भेदभाव मिटा दें क्योंकि तभी जन-युद्ध के समय विद्यार्थी-वर्ग के साथ मज़दूर और किसानवर्ग भी कंधे से कंधा भिड़ाकर संग्राम करेंगे। अगर हम अपनी फ़ैशन-परस्ती व कृत्रिम विलासिता के वातावरण में, अपने सिगारों के धुएँ और पैंट की क्रीज़ के ओट में, फटे-चीथड़े पहने किसान या मज़दूर को अपने समकक्ष मनुष्य की हैसियत से न देखें और व्यवहार न करें, तो यह ज़ाहिर है कि वह हमको अपने से बहुत अलग, एक विदेशी-सा ही समझेगा जो वस्तु स्वतंत्र-संग्राम के लिए घातक सिद्ध होगी। मैं तो समझता हूँ कि पिछले सन् ४२ के आन्दोलन के असफल होने के अनेक कारणों में से यह एक मुख्य कारण था। जहाँ कहीं भी विद्यार्थी-वर्ग इंकलाबी झंडा लिए आगे बढ़ा, वह अधिकतर अकेला ही रहा, किसान या मज़दूर-वर्ग द्वारा उसका पूरा साथ न दिया गया, अगर दिया भी गया तो हिचक-हिचककर, उसके लिए आज़ादी पढ़े-लिखों के उपभोग की ही वस्तु रही। इसलिए हमें शहर के मज़दूर और दूसरे-वर्ग के बीच जाकर राष्ट्रीय भावनाओं का प्रचार करना चाहिए ताकि समय आने पर हम और वह, सब मिलकर अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ सकें। मित्र में विद्यार्थियों ने यह कार्य 'मज़दूर-विद्यार्थी राष्ट्रीय-समिति' बनाकर किया था और आज भी कर रहे हैं। हमें भी ऐसी समितियाँ खोलनी चाहिए। पिछले फरवरी व मार्च में मित्र में जो क्रान्तिकारी दृश्य देखे गये वह मज़दूर और विद्यार्थियों के सम्मिलित प्रयत्न से ही हुए थे। इसलिए अपने-अपने शहरों के मज़दूरों में हमारा जाना, उनकी माँगों को पूरा करने में पूरी तरह से मदद करना, एक राष्ट्रीय कर्त्तव्य है और सफलता की कुंजी है। आसपास के गाँवों के अन्न और जन-संबंधी आँकड़े भी हम हफ़्तेवार टोलियों में देहात जाकर इकट्ठा कर सकते हैं और उन्हें सीधे कांग्रेसी मंत्रिमंडल के पास भेज सकते हैं। रात्रि के स्कूल खोलना, छुआ-छूत के भेदभाव को दूर करना तथा छोटे-छोटे शिक्षा-चक्र या 'स्टडीसर्किल' खोलना तो है हीं।

पर शहरों में साम्प्रदायिक मतभेद तो एक बहुत बड़ी समस्या है, खास कर जब कि एक वर्ग चंगेज खाँ के खूनी मंगोल सैनिक बनने को तैयार हो। इस विषय में बड़ी सतर्कता और सावधानी की आवश्यकता है। कहीं हमारी संकीर्ण मनोवृत्तियाँ हमें भी साम्प्रदायिकता के दलदल में न फँसा दें और हम भी धर्मान्ध होकर गृह-युद्ध के बीज बोने में सहायक हों। हिन्दू-मुस्लिम समस्या किस तरह हल हो, यह तो पेचीदा विषय है। आजकल तो यही प्रश्न है कि आज़ादी प्राप्त होने तक किस तरह धार्मिक मतभेद भुलाकर शान्ति कायम रखी जाय; क्योंकि आज़ादी मिलने के बाद ही पाकिस्तान या अखंड हिन्दुस्तान का सवाल हल हो सकता है। इसके लिए न कोई झगड़े की ज़रूरत है और न किसी विद्रोह की। मेरे ख्याल में यही एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसे हम अपने मुस्लिम लीगी नौजवानों के सामने तीव्रता के साथ उपस्थित कर सकते हैं। अभी बिहार के कांग्रेसी मंत्री श्री 'कय्यूम अंसारी' साहब ने बताया था कि 'अगर भारत का हर एक हिन्दू मुसलमान को अपना दोस्त बना ले तो यह समस्या हल हो जाय।' हमें चाहिए कि हम अंसारी साहब के मतानुसार काम करें और अपने शहर में 'हिन्दू-मुस्लिम मैत्री-केन्द्र' खोल दें जिसमें हम और हमारे मुस्लिम नौजवान राजनीतिक बातों की बहस या भेदभाव को भूलकर इकट्ठे हो सकें। पर झगड़े के उठ खड़े होने पर, ऐसे शान्ति-दलों की आवश्यकता है जैसा कि श्री शाहनवाज़ ने अपने एक वक्तव्य में कहा था, जिसके आधार पर वे आज़ाद हिन्द-फ़ौज का संगठन कर रहे हैं जो गृह-युद्ध रोकने में सहायक हो। हम ऐसे शान्ति-दल बनाने में सहायक हो सकते हैं, या स्वयं संगठित कर सकते हैं।

* * *

पर भारत की जनता तो अधिकतर ग्रामीण है। इसमें से अधिकतर विद्यार्थी भाई भी ग्रामीण है। आगामी भारतीय राज्यक्रान्ति तो एक दृष्टिकोण से खेतिहर क्रान्ति 'एग्रेरियन रिवोल्यूशन' के रूप में ही होगी। अन्न की उपज का केन्द्र तथा अकाल से पीड़ित हो सकनेवाला स्थल देहात ही है। इसलिए हमें यहाँ के सब आँकड़ों—यानी अपने देहात के आस पास के इलाक़े की प्रामाणिक जानकारी रखना आवश्यक है। अभी हाल में ही बिहार में डा० राजेन्द्रप्रसाद ने पटना के पाँच सौ विद्यार्थियों को देहात में, अन्न-संबंधी दशा व आँकड़े लेकर कांग्रेस मंत्रिमंडल के पास जाँच करने को भेजने के लिए, नियुक्त कर दिया है। क्या ही अच्छा हो, अगर हम लोग भी अपने अपने गाँवों की रिपोर्ट संक्षिप्त में मंत्रिमंडल के पास भेज दें। 'जमींदारी-प्रणाली' के खात्मे के बाद गाँवों के लिए नये ढंग के संगठन में भी हम काफी हाथ बँटा सकते हैं।

किसानों के बीच में साम्प्रदायिक कटुता आसानी से फैलने से रोकी जा सकती है। इसलिए हमें इस ओर विशेष रूप से सचेष्ट रहना चाहिए। उधर हम किसानों से भी पढ़-अनपढ़ का भेदभाव भुलाकर इस तरह घुलना-मिलना चाहिए कि उन्हें हमारी कार्य-प्रणाली अजनबी व रूखी (शुष्क) न लगे। मज़दूरों की ही तरह किसान भी क्रान्ति-काल में सफलता पाने के लिए आवश्यक हैं क्योंकि आखिर इन्हीं लोगों का राज तो होना है। हम भी तो इन्हीं में से आये हैं। इसलिए हमें अपने किसानों में से शिक्षित और अर्ध-शिक्षित वर्ग, और अनपढ़-किसान वर्ग के बीच में एक ऐसी लड़ी बनाई रखनी चाहिए जो अटूट हो और समय पर काम दे सके। गाँव के स्वास्थ्य, सफ़ाई तथा बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के बारे में भी जो कुछ भी हम कर सकें अच्छा ही है। पास के बाल-नालय से राष्ट्रीय अखबार या पुस्तकें लाकर चौपाल में एकत्र किसानों के बीच में बैठ कर उन्हें राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्थिति से अवगत कराना श्रेयस्कर है।

श्रीमती अरुणा आसफअली ने अज्ञातवास से निकलकर विदेशी चीनी या अँगरेजी वस्तुओं के बहिष्कार की एक सार्वजनिक योजना देश के सामने रखी थी। अच्छा हो यदि हम अपने गाँव में ऐसी बहुत कम विदेशी वस्तुएँ पाई जाती हैं, इन दो महीनों के अन्दर ऐसा कर ही डालें। इस आन्दोलन को हम पहले अपने घर के स्वदेशी प्रयोग से व विदेशी-बहिष्कार से, व फिर अपने घर से शुरू कर सकते हैं हाथ की बनी या घरेलू धंधों की बनी चीज़ों का उपयोग करने पर ज़ोर रहना चाहिए। पर हमारे प्रयत्नों का कार्य का वही आखिरी लक्ष्य होना चाहिए, सफल राजकीय क्रान्ति—कौमी इंकलाब चाहे वह खूनी हो या शान्त। हमें उसी के लिए अनवरत कोशिश करना है, इसी लिए हमारे ये दो महीने भी इसी प्रयत्न में क्यों न व्यतीत हों। फिर हम तो विद्यार्थी हैं, अपने स्वातन्त्र्यानुसार हम अपने को इस प्रकार ढाल सकते हैं कि हम अपने निकट के वातावरण को स्फूर्तिपूर्ण और उत्सुक बना दें, एकता और संगठन के

शेष पृष्ठ १७ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाकिस्तान का विरोध ज़रूरी क्यों

राष्ट्रीय एकता के लिए बँटवारा एक महान् खतरा

लेखक, श्री युगलकिशोर गुप्त, एम० ए०, बी० एल०

भारत का राजनैतिक अड़ंगा दूर करने का उद्योग हो रहा है। ब्रिटिश मंत्रि-मंडल और देश के नेताओं में वार्ता चल रही है। मुस्लिम लीग के विधाता मिस्टर जिन्ना अपने पाकिस्तान पर अड़े हुए हैं। इस लेख में विद्वान् लेखक ने यह बतलाया है कि पाकिस्तान से राष्ट्र का अहित तो होगा ही, साथ ही राष्ट्रीय एकता के मार्ग में सदा के लिए एक खतरा उत्पन्न हो जायेगा। लेख सुन्दर, विद्वत्तापूर्ण और पाकिस्तान के प्रश्न की व्यर्थता पर प्रकाश डालनेवाला है।

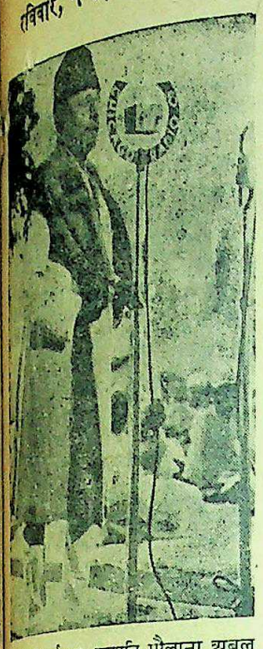

कांग्रेस के वर्तमान राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम आजाद।

सन् १९४० के अप्रैल मास में लाहौर में एक चमत्कार हुआ था। जो जाति गत ३४ वर्षों से अपने को अल्पसंख्यक जाति घोषित करके केन्द्रीय तथा प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभाओं में अपनी संख्या के अनुपात से कहीं अधिक सीटों पर क़ब्ज़ा किये हुए थी तथा सरकारी तथा अर्द्ध सरकारी नौकरियों में भी जिसके लिए जन-संख्या के अनुपात से अधिक स्थान सुरक्षित थे अपनी इस अवस्था से असन्तुष्ट होकर एक राष्ट्र बन बैठी और अपने लिए उन क्षेत्रों में स्वतंत्र पाकिस्तान की माँग पेश की जिनमें वह बहुसंख्यक थी, उस जाति ने बिना अपने सहधर्मियों से पूछे ही यह समझ लिया कि वह सभी पाकिस्तान के पक्ष में हैं। इतना ही नहीं उन क्षेत्रों में जो अन्य सम्प्रदायों के अनुयायी बसते हैं उनसे भी राय लेने की आवश्यकता नहीं समझी गई। इन साम्प्रदायिक लीडरों को यह भी नहीं सूझा कि ग़ैर-पाकिस्तानी क्षेत्रों में जो उनके सहधर्मी रह जायेंगे उनके संरक्षक का क्या प्रबंध होगा? उसका विचार था कि यदि ग़ैर-पाकिस्तानी क्षेत्रों में उनके मतानुयायियों पर कोई अत्याचार होगा तो उसका बदला पाकिस्तान में बसनेवाले अपनी जाति के अतिरिक्त प्रजा से लिया जायगा। इस पर मज़ा यह कि उस जाति के प्रायः छः करोड़ अनुयायियों के स्वार्थ के लिए ग़ैर-पाकिस्तानी क्षेत्र के ३ करोड़ १२ लाख उनके अनुयायियों ने कुछ काल तक बलिदान का बकरा बनना सहर्ष स्वीकार किया क्योंकि उन्हें आश्वासन दिया गया कि शीघ्र ही उस अल्पसंख्यक जाति का शासन समस्त भारत में होगा जिसका लाभ समय आने पर ग़ैर-पाकिस्तानी क्षेत्रों के अल्पसंख्यकों को भी प्राप्त होगा। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि वह अल्पसंख्यक जाति मुसलमान थी और अधिकांश मुस्लिम लीग का था।

सन् १९४१ में जो मर्दुमशुमारी हुई थी उसके पहले ही पाकिस्तान-योजना भारत के सामने मुस्लिम लीग ने रखी थी। ऐसी दशा में मर्दुमशुमारी का संतोषजनक प्रबंध न होने के कारण जिन क्षेत्रों में पाकिस्तान बनने की संभावना थी उनमें मुसलमानों ने अपना बहुमत प्रकट करने के लिए मनमानी खानापूरी की। उसके फलस्वरूप उस मर्दुमशुमारी में भारत की जन-संख्या ३८ करोड़ ९० लाख हो गई। इसमें हिन्दुओं की संख्या २५॥ करोड़ और मुसलमानों की ९ करोड़ २० लाख थी। सन् ५ वर्षों में मुसलमानों की संख्या में जो वृद्धि हुई होगी उसका अधिकांश बंगाल के १९४३ के दुर्भिक्ष के कारण सफ़ाया हो गया होगा। इसलिए इस समय भी मुसलमानों की संख्या ९ करोड़ २० लाख से अधिक न होगी। लीगी मुसलमानों का कथन है कि यदि वह भारत में रहेंगे तो उनका अल्पमत रहेगा और इस कारण अपनी भाषा, संस्कृति, धर्म इत्यादि की रक्षा करने में असमर्थ रहेंगे। इसके प्रमाण में उन्होंने पीरपूर की रिपोर्ट प्रकाशित की जिसमें कांग्रेसी मंत्रिमंडलों ने अपने प्रान्तों में मुसलमानों पर जो 'अत्याचार' किये थे उसके उदाहरण दिये गये थे। विभिन्न प्रान्तों के गवर्नरों का सन् १९३५ के विधान के अन्तर्गत यह प्रमुख कर्त्तव्य था कि अल्पसंख्यकों पर मंत्रिमंडल द्वारा अत्याचार होने से रोके। जहाँ जहाँ कांग्रेसी मंत्रिमंडल शासन कर रहे थे वहाँ के गवर्नरों ने उन मंत्रिमंडलों की मुक्तकंठ से प्रशंसा की कि उन्होंने अल्पसंख्यकों के प्रति जिसके प्रतिनिधि मंत्रिमंडल में बहुत कम थे, अपना कर्त्तव्य भलीभाँति निबाहा। इतना होने पर भी मुसलमान पीरपूर रिपोर्ट की प्रत्येक बात को सत्य मानते रहे। जब पं० जवाहर लाल नेहरू ने मि० जिन्ना के सम्मुख यह सुभाव रखा कि पीरपूर रिपोर्ट की जाँच फेडरल कोर्ट के चीफ़चस्टिस सर मारिस ग्वायर करें तो मि० जिन्ना ने इनकार कर दिया और जाँच के लिए एक रायल कमीशन की नियुक्ति चाही जिसके लिए ब्रिटिश सरकार तैयार न थी। बस न नौ मन तेल हुआ न राधा नाची। मि० जिन्ना उस झूठ के पुलिन्दे को लेकर भारत भर में प्रचार करते रहे और उसकी सत्यता के बारे में उसे क़ुरान के बराबर जगह दी जाने लगी। अस्तु!

मिस्टर जिन्ना का यह कथन है कि १० करोड़ मुसलमान अल्पसंख्यक नहीं हो सकते, वह तो एक राष्ट्र हैं। परन्तु उनको अल्पसंख्यक बनाया किसने है? साम्प्रदायिकता के आधार पर मुस्लिम लीग की स्थापना करके उन्होंने तो स्वयं अल्पसंख्यक बनना स्वीकार किया है। यदि मिस्टर जिन्ना मुस्लिम लीग की स्थापना न करके किसी असाम्प्रदायिक संस्था को जन्म देते तो कांग्रेस से मोर्चा लेकर वह स्वयं एक बहुसंख्यक दल के नेता होते। आर्थिक आधार पर बने राजनैतिक दलों के सदस्यों में काफ़ी हेर-फेर की गुंजाइश रहती है परन्तु मुसलमानों की संख्या तो तभी बढ़ सकती है जब विधर्मियों को जबरदस्ती या उनकी स्वीकृति से मुसलमान बनाया जाये। यह काम आजकल इतना सरल नहीं है। अब मिस्टर जिन्ना मुस्लिम राष्ट्र पर तो आत्म-निर्णय का सिद्धान्त लागू करते हैं परन्तु वही सिद्धान्त भारत राष्ट्र पर नहीं लागू होने देते और न पाकिस्तान में रह जानेवाले हिन्दुओं पर लागू होने देते हैं। पता नहीं उन्होंने किन कारणों से खास पाकिस्तान के भीतर सिक्खिस्तान बनने देने का वचन दिया है? सन् १९४० में पाकिस्तान के विषय में जो प्रस्ताव पास हुआ था उसके अनुसार दो पाकिस्तानी राष्ट्र होते परन्तु गत अप्रैल मास में लीगी व्यवस्थापकों की जो सभा हुई थी उसके प्रस्ताव के अनुसार केवल एक ही पाकिस्तानी राष्ट्र होगा। यह स्पष्ट रहे कि लीगी नेताओं के कथनानुसार पाकिस्तान उनकी अन्तिम माँग नहीं है अपितु उनकी सबसे ताज़ी माँग है। संभव है कि जो मुस्लिम लीग आज पाकिस्तान की स्थापना के लिए चिल्ला रही है वही कल समस्त भारत का राज्य ही हड़प जाने का दावा करे। इसलिए यह आवश्यक है कि हम भारतीय इन लीगियों को हमेशा के लिए बतला दें कि यदि वह भारत में रहना चाहते हों तो मुस्लिम लीग जैसे राजनैतिक दल का अन्त कर दें। यदि वह सचमुच पाकिस्तान बनाना चाहते हों तो उन्हें चाहिए कि वह भारत के बाहर चले जायें और वहीं पाकिस्तान-योजना को कार्यान्वित करें। राष्ट्रीयता का सम्बंध एक देश के समस्त निवासियों से है न कि धर्म से। किसी भी आधुनिक सभ्य राष्ट्र में धर्म-परिवर्तन के साथ राष्ट्रीयता में परिवर्तन नहीं होता। धर्म हमारे आध्यात्मिक विकास का साधन प्रस्तुत करता है और राष्ट्रीयता हमारे शारीरिक, मानसिक और आर्थिक विकास को बढ़ाता है।

जिन प्रान्तों में मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान बनाने की घोषणा की है, वहाँ कौन जातियाँ कितनी संख्या में बसती हैं, इसकी तालिका इस प्रकार है—

प्रान्त	कुल जन-संख्या	हिन्दू	मुसलमान	सिक्ख
बंगाल	६·०३ करोड़	२·५० करोड़	३·३० करोड़	...
आसाम	१·०२ करोड़	४२ लाख	३४ लाख	...
पंजाब	२·८४ करोड़	७५ लाख	१·६२ करोड़	३७ लाख
सीमाप्रान्त	३० लाख	२ लाख	२८ लाख	...
सिंध	४५ लाख	१२ लाख	३२ लाख	...
बलूचिस्तान	५ लाख	४४ हज़ार	४ लाख ३९ हज़ार	...
योग	१०·६९ करोड़	३·८१ करोड़	५·९० करोड़	३७ लाख

इस प्रकार स्पष्ट है कि पाकिस्तान की १० करोड़ ६९ लाख की आबादी में हिन्दुओं की संख्या ३ करोड़ ८१ लाख होगी या दूसरे शब्दों में ३६ प्रतिशत। यदि मुसलमान भारत में अल्पसंख्यक होने के नाते अपना अलग राष्ट्र बना सकते हैं तो पाकिस्तान के उपरोक्त हिन्दू भी पाकिस्तान में रहने से इनकार कर सकते हैं। यही बात सिक्खों के बारे में भी लागू होगी। परन्तु हमें मुसलमानों के तर्क पर हँसी आती है। एक ओर तो मुसलमान पाकिस्तान में उन्हीं प्रान्तों को शामिल करने को लालायित हैं जिनमें वह २० प्रतिशत या उससे अधिक हैं। पता नहीं आसाम जहाँ मुसलमान ३४ प्रतिशत से भी कम हैं, किस नीति से पाकिस्तान में शामिल किया जायगा? फिर वहाँ तो कांग्रेसी मंत्रिमंडल शासन भी कर रहा है जो पाकिस्तान का पूर्णतया विरोधी है। सीमाप्रान्त बेशक पाकिस्तान में आ सकता था परन्तु वहाँ भी पाकिस्तान-विरोधी कांग्रेसी मंत्रिमंडल शासनारूढ़ है। इसलिए पाकिस्तानी क्षेत्र से दो प्रान्त ग़ायब हो गये। सिन्ध में भी लीगी मंत्रिमंडल हमेशा खतरे में रहता है। वहाँ के ४० प्रतिशत मुसलमान निर्वाचकों ने पाकिस्तान का विरोध किया है। इसलिए जब मुसलमान स्वयं पाकिस्तान के विरोधी हैं तो भारत के अनन्तकाल से निवास करनेवाले हिन्दू क्यों न विरोध करें?

कांग्रेस के भावी राष्ट्रपति पण्डित जवाहरलाल नेहरू।

फिर जब मिस्टर जिन्ना अखंड भारत में अल्पसंख्यकों को जो संरक्षण प्राप्त होंगे उनका विरोध यह कहकर करते हैं कि इस बात की क्या गारंटी है कि वह संरक्षण रद्द या परिवर्तित न किये जायेंगे? हिन्दुओं ने अल्पसंख्यकों के साथ सदा न्यायपूर्ण व्यवहार किया है। हाँ, साम्प्रदायिकता की नींव पर पाकिस्तान स्थापित करके मुसलमानों का बहुमत निरंकुश रहेगा ऐसी अवस्था में कैसे आशा की जाये कि मुसलमान बहुमत उनके साथ न्यायपूर्वक व्यवहार करेगा और मिस्टर जिन्ना के संरक्षणों का कुछ मूल्य होगा? सिंध सरकार ने आर्यसमाज के धार्मिक अधिकारों पर जो कुठाराघात किया है वह सभी को पता है। मुस्लिम लीग ने क्या उसका विरोध किया है? जब हिन्दुओं की सिंध में यह दशा है तो स्वतंत्र पाकिस्तान में क्या होगी?

इतना ही नहीं मिस्टर जिन्ना ने स्वतंत्र पाकिस्तानी राष्ट्र के प्रलोभन में २८ करोड़ जन-संख्यक हिन्दुस्तान में रहनेवाले ३ करोड़ १२ लाख मुसलमानों के हितों की भी अवहेलना की है। उनको यही आश्वासन दिया गया है कि यदि उन पर कोई अत्याचार होगा तो पाकिस्तान में रहनेवाले हिन्दुओं पर अत्याचार करके इसका बदला लिया जायगा। शायद कुछ हालत में पाकिस्तानी सरकार हिन्दुस्तान की सरकार पर चढ़ाई करके इसका बदला लेने की चेष्टा करे? फिर सामरिक दृष्टि से भारत एक ही देश है और इसका एक देश रहना वांछनीय भी है। यदि भारत का विभाजन किया जायेगा तो दोनों सूबों—स्थानों का सैनिक व्यय बेतहाशा बढ़ जायेगा।

इसलिए हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भारत के हितों का अवलोकन करने से पाकिस्तान हमारे लिए अत्यंत हानिकारक प्रतीत होता है और हम कुछ करोड़ मुसलमानों को, जिन्होंने भारतीय स्वाधीनता के प्रयत्न में सदा बाधायें पहुँचाई हैं, खुश करने के लिए ३२ करोड़ अल्पसंख्यकों का बलिदान नहीं कर सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य-चर्चा

तुलसी—रोगों की सरल चिकित्सा

दैनिक रोगों पर विजय प्राप्त करनेवाली औषधि

लेखक, श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालङ्कार

चिकित्सा में उपयोग किये जानेवाले प्राचीनतम पौदों में तुलसी है। साहित्य में इसका सबसे प्रथम उल्लेख हमें चरक संहिता में मिलता है। लेकिन यह आश्चर्य की बात है कि चरक के समय में (लगभग दो हजार साल पहले) और उसके बाद भी काफी समय तक (८वीं ९वीं शताब्दी तक) इस पौदे को तुलसी नाम से कोई नहीं जानता था। उस समय इसे तुरस (सुगन्धित रस-वाला पौदा) और अगेतराक्षसी (रोग रूप राक्षसों को परे भगा देनेवाला) कहा जाता था। आठवीं-नवीं शताब्दी में पुराणकारों ने इसे तुलसी, वृन्दा आदि नाम दिये। इन नामों से आजकल आप अधिक परिचित हैं, और इसके पुराने नाम तो जैसे भुला से दिये गये हैं।

ईसवी सन् प्रारम्भ होने से पहले का या जो भारतीय साहित्य उपलब्ध होता है उसमें, और बाद में छठीं-सातवीं शताब्दी तक के साहित्य में इस पौदे की पूजा की पवित्रता का वर्णन नहीं मिलता। बाद में यह भारत में तथा अन्य देशों में पवित्र समझा जाने लगा था। ग्रीक गिरजों में तुलसी पवित्र है। मेडिटरेनियन के तटवर्ती प्रदेशों में सब जगह सामान्य रूप से यह एक स्वास्थ्यप्रद पौदा समझा जा रहा है।

तुलसी सेनेटोरियम

स्वास्थ्य-सुधार के लिए आजकल पुराने रोगियों को पहाड़ों पर भेजने के लिए चिकित्सक आदेश दिया करते हैं। वहां पर जो लम्बे-लम्बे चीड़ के वृक्ष उगे रहते हैं उनके बीच में से गुजरती हुई वायु उनके तैलीय रेज़िन (ales-resin) की स्वास्थ्यप्रद गन्ध को साथ ले लेती है। खोये हुए स्वास्थ्य को पुनः प्राप्त कराने में यह वायु रोगियों के लिए वरदान होती है। हमारे देश में एक समय रोगियों को तुलसी के जंगलों या बगीचों में रखने का रिवाज रहा है। तुलसी में से उड़ने-वाले सुगन्धित तेल आस-पास की वायु में भरे रहने से उस वायु को सुगन्धित और शुद्ध रखते हैं। यह वायु अन्तःश्वास में जब फेफड़ों के अन्दर पहुँचती है तो सामान्य रक्त-संचार में तुलसी के निःसंक्रमण करने के तथा दूसरे प्रभावों को पहुँचा देती है जिससे शरीर के प्रत्येक कोष पर इसका सूक्ष्म असर पड़ता है, फेफड़े नीरोग होते हैं, शरीर का हर एक अवयव, चाहे वह सूक्ष्म हो या स्थूल, नई स्फूर्ती और प्रेरणा पाता है। दुःसाध्य रोगी भी स्वस्थ हो जाता है।

तुलसी की सुगन्ध को लिए हुए वायु जहां-जहां जाती है उस स्थान की हवा, मिट्टी, पानी और चारों ओर के वायुमंडल को शुद्ध करती जाती है। इस प्रकार तुलसी-वन के पास के गाँवों में रहनेवाले सब प्राणी स्वास्थ्य-लाभ कर सकते हैं। इसी बात को सोचकर प्राचीन काल में तुलसीवनों में स्वास्थ्यगृह (सेनेटोरियम) बनाने की प्रथा रही है। तुलसी सेनेटोरियम के कमरों के फ़र्श और दीवारें उस मिट्टी से लीपी जाती थीं जो तुलसी के पौदों के नीचे से ली गई होती थी। यह इसलिए किया जाता था कि रोगों के कीटाणु उस फ़र्श पर न पनप सकें। जिन रोगियों को घर से दूर नर्मदा या गंगा के तट पर रहकर स्वास्थ्य सुधारने की सुविधाएँ प्राप्त नहीं हो सकती थीं वे तुलसीवनों में ही रहकर अपने स्वास्थ्य को बनाते थे और उन्हें वैसा ही लाभ होता था जैसा कि वे गंगा के तट पर रहकर प्राप्त करने की आशा रखते थे।

यह प्रथा एक समय इतना अधिक जोर पकड़ गई थी कि असाध्य रोगी भी तुलसी के जंगलों में रहते हुए अपने प्राण त्यागने में गौरव समझने लगे थे जैसे कि वे गंगा-तट पर या किसी तीर्थ-स्थान पर शरीर छोड़ रहे हों। लोगों में यह निश्चय घर कर गया था कि जो व्यक्ति, चाहे वह रोगी हो या स्वस्थ, तुलसी के जंगलों में रहता हुआ प्राण त्याग करता है और मृत्यु के समय जिसके मुख में तुलसीदल रख दिये जायं या मरते समय जिसे तुलसी की मञ्जरी दे दी जाय तो वह सद्गति को प्राप्त करता है। इस विश्वास के अनुसार, जिन लोगों के मुख में तुलसीदल डालना सम्भव न होता था उनके मुख में तुलसीजल की बूँदें टपका दी जाती थीं, अथवा तुलसी के पत्तों को पानी में भिगो कर उन्हीं पत्तों से उन्हें छींटे दे दिये जाते थे। रोगी के सिर पर और कानों पर भी तुलसीदल रख देने की प्रथा थी। मरते हुए के गले में तुलसी काष्ठ माला पड़ी हुई है तो वह सद्गति को प्राप्त होता था। घरों में तुलसी के नीचे की मिट्टी सँभाल कर रखी जाती थी और यदि मृत्यु के समय तुलसी प्राप्त न होती थी तो इस मिट्टी को चन्दन की तरह घिसकर माथे पर लेप कर देने से भी मरनेवाले की सदगति समझी जाती थी।

इन धार्मिक विश्वासों और रिवाजों का एक विज्ञान-सम्मत आधार है। रोगी के पास की बुरी तथा गन्दी गन्ध को तुलसी हटाती है और सड़ोद के कारण पैदा हुई दूषित अवस्थाओं को रोकती है। मलय पेनिन्सुला के निवासी कब्रों पर तुलसी के पत्ते चढ़ाते हैं। कहते हैं कि ईसा की क़ब्र पर भी तुलसी का पौदा उग आया था।

शोधक रसायन

मध्यकाल के एक लेखक के अनुसार तुलसी देखने, विचारने, सूँघने, बोलने, स्वाद लेने आदि सब शक्तियों को स्थिर रखनेवाली है। मुख, आँख, नाक, गला, कन्धे, हृदय, नाभि, कमर, जाँघ, पैर आदि सब अंगों को सुरक्षित रखनेवाली है। तुलसी का सेवन शरीर में से सञ्चित मलों को निकालता है जिससे प्रत्येक अवयव पवित्र हो जाता है। मन, वाणी और शरीर शुद्ध हो जाते हैं। तुलसी की मिट्टी को या तुलसी की लकड़ी को चन्दन की तरह घिसकर माथे पर सदा लेप करने से वंश-परम्परा में चलनेवाले रोगों को रोकने में सहायता मिलती है। तुलसी सब रोगों से बचाकर मन और शरीर को पवित्र करती है। दूषित जल को शुद्ध करने के लिए तुलसी के पत्ते पानी में डाल देते हैं।

व्रत कौमुदी में तुलसी के 'लक्षव्रत' का उपदेश है। एक-एक करके लाख पत्तों को शय्या पर चढ़ाया जाता है। जब तक पूरे लाख पत्ते न चढ़ा दिये जायें व्रत करने-वाला उपवास रखता है। आयुर्वेद शास्त्र में बहुत सी वनौषधियों को हजारों की संख्या में प्रयोग कराने के आदेश लिखे मिलते हैं। 'हजार हरड़ों' और 'हजार पिप्पलियों' के प्रयोग से प्रत्येक वैद्य परि-चित है। यहां भी तुलसी के हजार और लाख पत्तों के प्रयोग की ओर संकेत समझ-कर वैद्य महोदय रोगियों पर इनका प्रयोग करके बहुत लाभ पहुँचा सकते हैं। रोग की अवस्था, रोगी की प्रकृति और देश, काल आदि को विचार कर वैद्य को निश्चय करना चाहिए कि 'वर्धमान क्रम' से अथवा दूसरी किस विधि से हजार या लाख पत्तों का प्रयोग कराना है। बड़ी आयु के एक स्वस्थ ब्राह्मण को मैं जानता हूँ जो सालों से रोज तुलसी के पन्द्रह हरे पत्ते नियम से खा रहे हैं। अपने उत्तम स्वास्थ्य का रहस्य वे स्पष्टतया तुलसी का नियमित सेवन बताते हैं।

मस्तिष्क और हृदय

तुलसी के पाँच-सात पत्तों को तीन-चार काली मिरचों के साथ सरदाई की तरह रगड़ कर एक गिलास बना लें। सुबह खाली पेट इक्कीस दिन बराबर पिया जाय तो यह पेय दिमाग़ की गरमी को दूर करता है और दिमाग़ को ताक़त देता है। हृदय-उत्तेजक होने से यह हृदय को बलवान् करता है। अमीर लोग इस पेय में बादाम, चारो मगज, इलायची आदि भी रगड़ लेते हैं।

भरतपुर के एक वैद्य ने एक लेख में लिखा था कि उनके पास 'तुलसीकल्प' नामक एक हस्तलिखित प्राचीन पुस्तक है। उसमें लिखा है—'ब्राह्ममुहूर्त में उठकर स्नानादि से निवृत्त होने के बाद प्रतिदिन तुलसी के पाँच पत्ते एक घूँट जल से निगल जानेवाले का बल और तेज बढ़ता है, उसकी मेधा और स्मरणशक्ति तीव्र हो जाती है।

चरक और गोविन्ददास के महानील तेल में तुलसी के पत्ते डाले जाते हैं। पीने से, सिर पर मलने से और नाक में डालने से यह तेल मस्तिष्क तथा सिर के सब रोगों को दूर करता है, बालों को सफ़ेद होने देने से रोकता है, आँखों की ज्योति को बढ़ाता है और दीर्घ आयु प्रदान करता है।

तुलसी के हरे पत्तों को पीसकर मृगी के रोगी के शरीर पर रोज उबटन करना चाहिए। पत्तों के रस में थोड़ा नमक मिला-कर नाक में टपकाने से मूर्च्छा और बेहोशी तत्काल दूर हो जाती है।

वातनाड़ियों के रोग

वातनाड़ियों (Neres) के विकारों में जैसे गृध्रसी आदि नाड़ियों की शूल और शोथ (शियाटिका) में पत्तों को पानी में काढ़कर रोगग्रस्त वातनाड़ी को पसीना देते हैं। इस क्रिया को नाड़ीस्वेद कहते हैं। मारेशस द्वीप में इसके गरम काढ़े से आमवात (रहुमेटिज्म) और पक्षाघात (पैरेलिसिस) में आक्रान्त भागों को धोया जाता है और रस में से उठते हुए वाष्पों से भाफ दी जाती है। रोग के लकवे (उरु-स्तम्भ) में गरम काढ़े से टाँग को धोते हैं और तुलसी के बीजों को पीसकर उस पर लेप करते हैं। पत्तों को दही और सेन्धा-नमक के साथ रगड़कर लेप करने से टाँग का लकवा ठीक हो जाता है। वैद्य-जीवन में लोलिम्बराज बताते हैं कि पत्तों के रस को काली मिर्च के चूर्ण में और घी में मिलाकर प्रबल वातव्याधि में भी देने से रोग शान्त हो जाता है।

प्रजनन संस्थान के रोग

तुलसी पोषक और वाजीकरण गुण के लिए उपयोग की जाती है। यह वीर्य को गाढ़ा करती है और पुंसत्वशक्ति को बढ़ाती है। बीज लेसदार और लेपक होते हैं। जननेन्द्रिय और मूत्रसंस्थान के [illegible] में दिये जाते हैं। नपुंसकता में दी [illegible] वाली अनेक दवाओं में पीसे हुए बीज [illegible] लेते हैं। ये वीर्यवर्द्धक हैं और वीर्य की [illegible] लता को दूर करते हैं। तुलसी के [illegible] पाँच तोला, पोस्त के डोडे चार [illegible] गोखरू पाँच तोला, कौंच के बीज [illegible] तोला, मुसली चार तोला और मिश्री [illegible] तोला को कूटकर कपड़छान कर ले। [illegible] रत्ती की मात्रा में यह चूर्ण वीर्य की [illegible] लता में दिया जाता है। स्तम्भन के [illegible] लोग बीजों के चूर्ण को या जड़ के [illegible] पान में रखकर सेवन किया करते हैं। [illegible] बल की भी वृद्धि होती है। तुलसी के [illegible] को या जड़ को चूर्ण करके समान [illegible] पुराने गुड़ में मिलाकर डेढ़ से तीन [illegible] तक सुबह शाम गाय के दूध के साथ [illegible] जाय तो वीर्य के विकार दूर हो जाते [illegible] वीर्य को पुष्टि देकर पुंस्त्वशक्ति बढ़ाने [illegible] दवाओं को ढूँढ़नेवाले युवकों और [illegible] को इसके पाँच-छः सप्ताह के सेवन से [illegible] लाभ होता है। स्वप्नदोषों को रोकने [illegible] लिए जड़ को घोटकर पिलाया जाता [illegible] थोड़ी-सी इलायची और एक तोला [illegible] मिश्री के चूर्ण के साथ पत्तों का काढ़ा [illegible] दिन लिया जाय तो यह एक पोषक [illegible] पेय का काम करता है।

स्त्रियों के रोग

पिसे हुए बीज मासिक धर्म को [illegible] करने के नुस्खों में डाले जाते हैं। पत्तों [illegible] काढ़े की एक प्याली हर महीने रजोदर्शन के बाद तीन दिन तक पी ली जाय [illegible] तो गर्भ ठहरने की सम्भावनाएं बहुत [illegible] रह जाती हैं। देहातों में स्त्रियां गर्भनिरोध के लिए इसे इस्तेमाल करती हैं। तुलसी [illegible] बीज और नई आमाहल्दी को [illegible] में पीसकर योनि में छिड़कने से योनि [illegible] ठीक हो जाता है। गर्भावस्था में पेट [illegible] दीवार के खिंच जाने से त्वचा की [illegible] स्तर फट जाती है जिससे पेट पर [illegible] सी दिखाई देती हैं। ये दरारें उरःस्थल [illegible] नीचे भी पड़ जाती हैं। इन दरारों [illegible] किक्किस (stria gravidarum) [illegible] हैं। इनमें खुजली हुआ करती है। तुलसी के पत्तों को सिलबट्टे पर पीसकर इन [illegible] मलते हैं। इससे खुजली शान्त हो जाती है।

मनुष्यों के लिए अमृततुल्य यह [illegible] पुत्र चाहनेवालों की इच्छापूर्ण करती है। जिस स्त्री के बच्चे मर जाते हों, [illegible] सेवन कराने से यह उसके उत्पादक [illegible] को शुद्ध कर देती है और तब वह दीर्घ [illegible] नीरोग बच्चे पैदा करने लगती है। [illegible] औरत को एक साल तक खिलाई जाय [illegible] उसे सुन्दर गर्भ ठहर जाता है, लड़की [illegible] वालों के घर में लड़की पैदा हो सकती है। तुलसी के प्रयोग से स्त्री को वश में [illegible] लेना भी ब्रह्मांड पुराण में लिखा है। [illegible] से जो प्रिय गन्ध निकलती है उसे [illegible] बहुत पसन्द करती थीं। आज का [illegible] तो अपनी प्रेयसी को प्रसन्न करने के [illegible] तरह-तरह के सेंटों के उपहार देता [illegible] परन्तु एक समय वह था जब रूठी [illegible] सुन्दरियों को तुलसी सुँघाकर ही [illegible] लिया जाता था। तुलसीगण का [illegible] बर्बरी तो आज भी परफ्यूमरी में [illegible] पसन्द किया जा रहा है।

सपट लोशन
दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.
सपट अँड कं. लि.
बम्बई नं. २

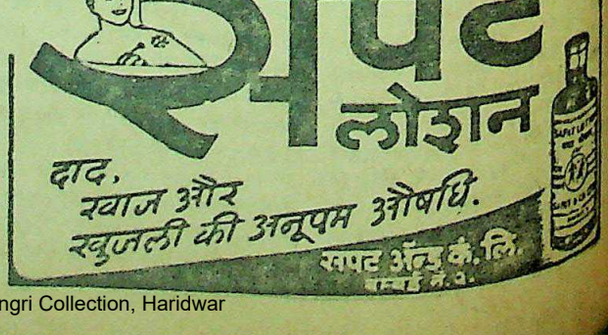

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

मामा-भानजा

लेखक, श्री ठाकुरदत्त मिश्र

जीवन में स्वार्थ का एक विशेष महत्त्व है। स्वार्थ मानव को दानव बना देता है। नंदलाल के मामा का भी यही हाल था। उन्होंने माता-पिता से हीन नंदलाल की सारी सम्पत्ति हड़प कर ली; जब नंदलाल बड़ा हुआ तो उसने अपनी पैतृक संपति और धन की माँग की। किंतु वह उसे नसीब नहीं हुआ। इसका अनुभव किया मामी आनंदी देवी ने। इस सुंदर और रोचक कहानी में नंदलाल तथा उसके मामा के चरित्र का सुंदर चित्रण किया गया है। कहानी पठनीय तथा सुंदर है।

(१)

नंदलाल ने अपने मामा के मुख पर ही कह डाला—अच्छी बात है, मैं यहाँ से कल ही चला जाऊँगा।

नंदलाल के मामा देवनाथ एक बहुत ही उग्र प्रकृति के व्यक्ति थे। साथ ही केवल परिवार में ही नहीं, बल्कि सारे गाँव में उनका बड़ा रोब-दाब था। वहाँ ऐसे बहुत ही कम लोग थे, जो उनके सामने मुँह खोलने का साहस कर सकते। ऐसी अवस्था में नंदलाल के मुख से इस तरह की दर्प से भरी बात सुनकर क्षण-भर तक वे क्रोध और विस्मय के मारे आवाक् होकर भानजे के मुँह की ओर ताकते रहे। बाद को बहुत ही कर्कश स्वर में उन्होंने कहा—नहीं, कल तक ठहरने की कोई आवश्यकता नहीं है। तू अभी मेरे घर से निकल जा।

मामा की यह बात सुनकर नंदलाल ने जरा भी व्याकुलता का भाव नहीं प्रकट किया। स्वाभाविक स्वर में ही वह बोला—अच्छी बात है, आपके पास मेरे जो कुछ रुपये जमा हैं, वे कृपा करके मुझे दे दीजिए। मैं अभी यहाँ से चला जाता हूँ।

देवनाथ मानो आकाश पर से गिर पड़े। वह दाँत पीसते हुए बोले—रुपये दे दूँ!

नंदलाल ने कहा—जी हाँ, रुपये! माँ के तीन हजार रुपयों के गहने आपके पास जमा हैं, साथ ही हम लोगों की सम्पत्ति का विक्रय करके भी आपने काफी रुपये प्राप्त किये हैं। यह सब मुझे अब मिल जाना चाहिए।

देवनाथ ने कहा—जी हाँ, जरूर मिल जाना चाहिए। तुम्हारे पिता बहुत बड़ी सम्पत्ति छोड़कर गये थे और उसे बेचकर मैंने अपनी तिजोरी भर ली है। इतने दिनों तक पाल-पोसकर तुम्हें बड़ा किया है, उसी का यह फल है। अब ऐसा भी न कहोगे?

मामा के मुख से इस प्रकार की निराशा भरी बात सुनकर नंदलाल बहुत ही दुखी हुआ। रुँधे स्वर में वह बोला—ऐसी बात है, तुम्हारे मन में इस तरह की दुर्बुद्धि समा गई है?

देवनाथ ने अपने एक नौकर की ओर ताकते हुए कहा—श्यामलाल!...

देवनाथ श्यामलाल को कुछ आदेश करने ही वाले थे कि वहाँ पर उनके चापलूसों का जो दल जमा था, उसमें से एक-एक व्यक्ति नंदलाल को उसके इस प्रकार के दुस्साहस के लिए धिक्कारने लगा। सभी के मुँह से केवल यही बात निकल रही थी कि तुम्हें इस तरह की बे-अदबी न करनी चाहिए। यह भगवान् की कृपा है जो तुम्हें इस प्रकार के दयावान् और प्रतापी पुरुष का भानजा होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उन्हीं की छत्रच्छाया में रहकर तुम इतने बड़े हुए हो और यदि तुम इन्हें प्रसन्न रक्खोगे तो जीवन में तुम्हें कभी किसी प्रकार का क्लेश न होगा। बाबू साहब साधारण पुरुष नहीं हैं, ये साक्षात् देवता हैं। इनके सामने इस तरह की ढिठाई मत करो भैया!

एक साथ कई व्यक्तियों के मुख से इस तरह की प्रशंसा की बातें सुनने के कारण देवनाथ का क्रोध कुछ शान्त हो गया। नर्चे में मुँह लगाकर उसे खींचते-खींचते कुछ मोटे गले से वे बोले—इसमें इनका कोई दोष नहीं है भाई, यह कलि का प्रभाव है। इस युग का धर्म ही यह है कि उपकार का बदला अपकार के रूप में मिले।

देवनाथ की ये बातें समाप्त होते ही एक साथ कई आदमियों के कंठ खुल गये। सभी के मुँह में केवल एक बात थी—ठीक कहते हैं बाबू साहब, बहुत ठीक कहते हैं। इस युग में उपकार माननेवाले विरले ही कोई व्यक्ति होते हैं।

चापलूसों का यह दल शांत भी न हो पाया था कि देवनाथ ने नंदलाल की ओर ताकते हुए रोषमय स्वर में कहा—जाओ, मेरे पास तुम्हारी एक पाई भी नहीं है। यदि तुम्हारा यह विश्वास है कि मेरे ऊपर तुम्हारा कुछ पावना है तो तुम जाकर मेरे खिलाफ अदालत में दावा दायर कर दो और वहाँ से डिग्री हासिल करके वसूल कर लो।

मामा की यह बात सुनकर देवनाथ ऊपर की ओर ताकने लगा और बोला—मेरा दावा केवल उन्हीं से है, वही मेरा और आपका फैसला करेंगे। अदालत जाने की शक्ति मुझमें नहीं है।

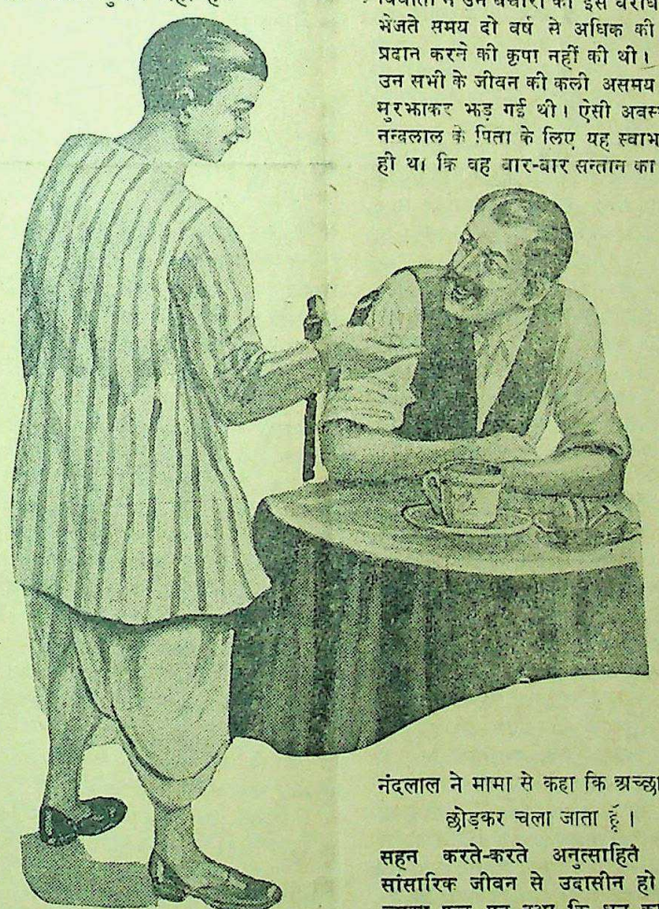

नंदलाल ने मामा से कहा कि अच्छा मैं घर छोड़कर चला जाता हूँ।

इतना कहकर नंदलाल तेजी से पैर बढ़ाता हुआ वहाँ से चला गया।

देवनाथ कुछ क्षण तक अवाक् भाव से ताकते रहे। बाद को अपने चापलूसों की मण्डली की ओर दृष्टि फेरकर बोले—समझ में नहीं आता कि इस लड़के को क्या हो गया है। इस तरह का दुस्साहस इसमें कहाँ से आ गया है?

एक व्यक्ति ने कहा—लड़का ही तो ठहरा! किसी ने इसे भड़का दिया होगा। जिससे कि आगा-पीछा न सोचकर यह इस तरह का मूर्खतापूर्ण कार्य करने पर उतारू हो गया है।

देवनाथ ने जरा-सा हँसकर कहा—मुझे भी ऐसा ही मालूम पड़ता है।

(२)

नन्दलाल जब नन्हा-सा बच्चा था तभी उसके पिता की मृत्यु हो गई थी। उसके पिता का अधिकांश जीवन बाहर ही नौकरी करते-करते व्यतीत हुआ था और अन्त में वह अपने निवासस्थान से काफ़ी दूर नगर के समीप ही एक मकान बनाकर और थोड़ी-सी जमीन खरीदकर स्थायी रूप से रहने लगे थे। नन्दलाल से पहले उनकी गोद में और भी कई पुत्रों और कन्याओं ने जन्म ग्रहण किया था। परन्तु विधाता ने उन बेचारों को इस धराधाम में भेजते समय दो वर्ष से अधिक की आयु प्रदान करने की कृपा नहीं की थी। इससे उन सभी के जीवन की कली असमय में ही मुरझाकर झड़ गई थी। ऐसी अवस्था में नन्दलाल के पिता के लिए यह स्वाभाविक ही था कि वह बार-बार सन्तान का शोक सहन करते-करते अनुत्साहित होकर सांसारिक जीवन से उदासीन हो जाते। इसका फल यह हुआ कि धन का संचय करने की प्रवृत्ति उनमें न रह गई। वे जो कुछ भी उपार्जन करते, उसका अधिकतर भाग लोकहित के कार्यों में ही व्यय कर दिया करते।

लगातार दस वर्ष तक निराशा का जीवन व्यतीत करने के बाद नन्दलाल के माता-पिता के हृदय में फिर आशा का संचार हुआ। विधाता ने उनकी जीवन-रूपी मरुभूमि में स्नेह की एक क्षीण धारा का फिर से आविर्भाव किया। एक पुत्र-रत्न द्वारा उन निराश पति-पत्नी की गोद भरकर उनके शोक-सन्तप्त हृदय में फिर आनन्दरूपी रस का संचार कर दिया।

लगातार शोकग्रस्त जीवन व्यतीत करते-करते नन्दलाल के पिता बाबू त्रिभुवननाथ का स्वास्थ्य बहुत ही बिगड़ गया था। साथ ही उनकी अवस्था भी काफ़ी अधिक हो गई थी। इससे सुदीर्घकाल के बाद एकाएक पुत्र का मुख देखने पर उनके हृदय में जो आह्लाद उत्पन्न हुआ था, उसके कारण उनका शरीर पनप नहीं सका। इससे अधिक समय तक पुत्र को गोद में रखकर अपने हृदय को शीतल करने का अवसर भगवान् ने उन्हें नहीं दिया। एक दिन पूर्णिमा की ज्योत्स्नामयी रात्रि में उनके नाम परवाना आया और उन्हें इस संसार से कूच कर जाना पड़ा।

त्रिभुवननाथ को इतना अवसर तो मिला नहीं था कि वे पुत्र के प्रति पिता का जो स्नेह होता है, उसे पूर्ण रूप से तृप्त कर लेते। इसलिए इस संसार से सदा के लिए विदा लेते समय उनके स्नेह का भाव बड़े जोरों से उमड़ आया। आँखों से आँसुओं की धारा बहाते हुए पत्नी के दोनों हाथ पकड़कर भर्राई हुई आवाज में वह बोले—तुलसी! अधिक दिनों तक पुत्र का मुँह देखना मेरे भाग्य में बदा नहीं था। परन्तु इसे मैं तुम्हारी गोद में छोड़कर जा रहा हूँ। इतने ही से मैं बहुत सुखी हूँ।

नन्दलाल उस समय पाँच वर्ष का था। उसके गाँव पर चाचा आदि कोई ऐसा आदमी नहीं था कि वह आकर नन्दलाल और उसकी माँ को सँभालता। पट्टीदारों में दो-एक ऐसे आदमी थे जिनका कि इन माता-पुत्र से कुछ समीप का सम्पर्क था। किन्तु उन्होंने इस प्रकार की सद्भावना का भाव नहीं प्रदर्शित किया कि वे इन माता-पुत्र की रक्षा कर सकेंगे। ऐसी अवस्था में तुलसी के लिए अपने सगे भाई देवनाथ की शरण लेने के अतिरिक्त दूसरा कोई उपाय नहीं रह गया। हजार हो, वे सगे भाई ही ठहरे। उनसे बढ़कर उसका सहायक भला और कौन हो सकता था?

देवनाथ बड़े हिसाबी आदमी थे। वे प्रयाग नगर के बिलकुल समीप के एक गाँव में बड़े ठाट-बाट से रहा करते थे। उत्तराधिकार-सूत्र से उन्हें थोड़ी-सी जमींदारी मिली हुई थी। परन्तु उससे उन्हें इतनी अधिक आय नहीं होती थी कि वे आसानी से अपना ठाट-बाट क़ायम रख सकते। इससे उन्हें धन का उपार्जन करने के लिए यदाकदा अवैध उपाय का भी अवलम्बन करना पड़ता था। इससे उनकी कुछ अकीर्ति भी थी, परन्तु उन्होंने एक ऐसा भी दल बना रक्खा था जो बहुत ही उदारतापूर्वक उनका स्तवगान किया करता।

तुलसी ने, पाँच वर्ष का पिता की गोद से बिछुड़ा हुआ बालक लेकर ऐसे ही गुणधर भाई के परिवार में आश्रय ग्रहण किया। तुलसी यहाँ इस मतलब से नहीं आई थी कि भाई की कमाई में हिस्सा बँटाये बिना स्वयं उसका और उसके बच्चे का पेट न भर सकेगा। क्योंकि उसके स्वामी ने यद्यपि अपने उपार्जन का बहुत-सा अंश लोकहित के कार्यों में व्यय कर दिया था तो भी वे तुलसी और उसके बच्चे के भरण-पोषण के लिए यथेष्ट सम्पत्ति छोड़ गये थे परन्तु किसी योग्य अभिभावक के बिना परदेश में जीवन-निर्वाह करना उसे शोभाजनक नहीं मालूम पड़ा। यही कारण था कि वह देवनाथ—जैसे स्वार्थी भाई का आश्रय ग्रहण करने के लिए बाध्य हुई थी। परन्तु तुलसी ने यहाँ आकर बहुत ही गम्भीर भाव से अपना समय व्यतीत करना प्रारम्भ किया। उसने किसी दिन भी मुँह से कोई भी ऐसी बात नहीं निकलने दी जिससे कि वास्तविक स्थिति का परिचय लोगों को प्राप्त होता। उसने इस बात का दृढ़ संकल्प कर लिया था कि मैं इस परिवार में एक आश्रित के ही समान रहकर सारा जीवन व्यतीत कर दूँगी। वे सोचती थीं कि विधाता ने मुझे वैधव्य का जो कठोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दण्ड दिया है उससे बढ़कर संसार की ऐसी कौन-सी यातना हो सकती है जिसे सहन करना मेरे लिए असम्भव हो जाय।

देवनाथ ने बहन को उचित आदर के साथ अपने घर में स्थान दिया। भानजे को भी सुखी रखने तथा उसके भविष्य को उज्ज्वल बनाने में अपनी शक्ति भर वह किसी प्रकार की त्रुटि नहीं होने देते थे। परदेश में बहन की जो कुछ सम्पत्ति थी, उसका प्रबन्ध भी वे बड़ी लगन के साथ किया करते थे और उससे जो कुछ आय होती थी, सब लाकर वह प्रायः बहन को ही सौंप दिया करते थे। उसका तनिक भी अंश वे अपने व्यक्तिगत कार्यों में नहीं लगाया करते थे।

तुलसी को भाई के परिवार में आकर स्थान ग्रहण किये धीरे-धीरे दस वर्ष बीत गये। एक दिन देवनाथ ने उनसे कहा—बहन, इतनी दूर से वहाँ का कारबार देखना बहुत ही कष्टकर है। इतने दिनों तक मैं सारी सम्पत्ति सँभालता आया हूँ परन्तु इसके सँभालने में मुझे कितने झंझट सहने पड़े हैं, यह मैं ही जानता हूँ। परन्तु मनुष्य के उत्साह और शक्ति में अवस्था के साथ-साथ क्रमशः कमी होती जाती है। इससे सम्भव है, कि आगे चलकर वहाँ का कारबार मैं इतनी अच्छाई के साथ न सँभाल सकूँ। कोई ऐसा विश्वासपात्र आदमी भी नहीं दिखाई पड़ता जिसकी सिपुर्दगी में वह सम्पत्ति छोड़कर मैं निश्चिन्त हो सकूँ। ऐसी अवस्था में वहाँ के कारबार की व्यवस्था किस प्रकार की जाय, यह मेरे लिए बहुत बड़ी चिन्ता का विषय है।

भाई की यह बात सुनकर तुलसी ने कहा—इस सम्बन्ध में भला मैं कौन-सा उपाय बतला सकती हूँ? उस सारी सम्पत्ति के मालिक तुम हो और तुम्हें छोड़कर उसकी व्यवस्था करनेवाला दूसरा कोई भी नहीं है। इसलिए तुम्हें जो कुछ उचित मालूम पड़े वही व्यवस्था करो।

देवनाथ गम्भीर होकर जरा देर तक सोचते रहे। बाद को वे बहुत ही मन्द स्वर में बोले—मैं तो जहाँ तक समझता हूँ वहाँ की सारी सम्पत्ति बेचकर रुपये वसूल कर लेने चाहिए। वे ही रुपये यदि यहाँ ब्याज पर उठा दिये जायँ तो काफ़ी लाभ होगा। साथ ही उतनी परेशानी भी न होगी।

भाई की यह बात तुलसी को कुछ हद तक पसन्द आ गई। वह बोली—तुम्हें जो कुछ हितकर मालूम पड़े, वही करो। मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है। इस सम्पत्ति से मेरा तो कोई विशेष सम्बन्ध है नहीं, केवल नन्दलाल के ख्याल से इसकी रक्षा करने की आवश्यकता का अनुभव मैं करती हूँ। परन्तु मुझे विश्वास है कि उसका भविष्य उज्ज्वल बनाने के लिए मेरी अपेक्षा तुम्हें अधिक चिन्ता है। ऐसी अवस्था में तुम चाहे उसकी सम्पत्ति की रक्षा करो या उसे बेचकर रुपये इकट्ठा कर लो। इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

बहन की यह बात सुनकर देवनाथ की आँखों की पलकें भीग गईं। वह रुँधे हुए स्वर में बोले—बहन, भला नन्दलाल के भविष्य को उज्ज्वल बनाने की चिन्ता यदि मुझे नहीं होगी तो संसार में दूसरा और कौन व्यक्ति है जो उसके हित की चिन्ता करेगा? यदि आज उसके पिता जीवित होते तो उसके लिए मेरे चिन्ता करने का कोई प्रश्न ही नहीं था। उन्होंने जब इसे छोड़कर असमय में ही इस संसार से अपना सम्बन्ध त्याग दिया है, साथ ही उनके भाई-भतीजे भी तुम्हारे और नन्दलाल के प्रति उपेक्षा का ही भाव प्रकट करते हैं तो मेरा यह कर्त्तव्य हो गया है कि मैं नन्दलाल का ख्याल अपने लड़के से बढ़कर करूँ। वास्तव में ऐसा करना ही मेरा धर्म भी है क्योंकि अपने लड़के और बहन के लड़के में कोई विशेष अन्तर नहीं होता। मैं तो जहाँ तक समझता हूँ कि जो लोग लड़के और भानजे में भेद-भाव रखते हैं, वे बड़े ही नासमझ हैं। नन्दलाल भी कोई ऐसा वैसा लड़का नहीं है जिसकी उपेक्षा की जा सके। सोने की प्रतिमा-जैसा दगदगाता हुआ चेहरा लेकर जिस समय यह सामने आ जाता है, उसे देखकर हृदय शीतल हो जाता है। मन में आता है कि रात-दिन इसे छाती से लगाये बैठा रहूँ।

इतना कहकर देवनाथ ने एक लम्बी साँस ली। उनके मुख से इस तरह की बातें सुनकर तुलसी ने भी बड़े ही सन्तोष का अनुभव किया।

(३)

नन्दलाल के पिता की सारी सम्पत्ति बिक गई। इतने दिनों तक बहनोई की इस सम्पत्ति का देवनाथ ने इतनी उत्तमता के साथ प्रबन्ध किया था कि दस वर्ष के बीच में उसकी देख-रेख के लिए वे कुल चार बार वहाँ गये थे और सबमें अधिक समय इस चौथी ही बार लगाया था, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि अब यहाँ आने की फिर कभी आवश्यकता न पड़ेगी। सम्पत्ति का जब उन्होंने इतनी अधिक रुचि के साथ प्रबन्ध किया था तो बिक्री के समय उसका कहाँ तक उचित मूल्य मिल सकता था, यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है। उसके विक्रय से जो कुछ रुपये मिले, वे सब बैंक में जमा हो गये और जमा हुए देवनाथ ही के नाम से। बहन के जितने बहुमूल्य अलंकार थे, उन सबको इससे बहुत पहले ही देवनाथ की तिजोरी में स्थान मिल चुका था। वहाँ वे सुरक्षित भाव से अड्डा जमाये हुए थे। रुपयों का ब्याज भी देवनाथ की ही तिजोरी में जाया करता था, परन्तु बहन को वे प्रायः कभी किसी प्रकार का क्लेश नहीं होने देते थे। जब कभी वह रुपये या कोई दूसरी वस्तु माँगती थी तब वे अपनी तिजोरी खोलने में जरा भी आना-कानी नहीं करते थे।

तुलसी को भाई की सद्भावना पर पूर्ण विश्वास था। इससे वह निश्चिन्त थी। रहा नन्दलाल, वह तो लड़का ही था। उसे केवल भोजन-वस्त्र से मतलब। वे दोनों ही वस्तुएँ जब उसे सुविधापूर्वक उपलब्ध हो जाती थीं तो कोई कारण नहीं था कि वह अपने हृदय में किसी प्रकार की दुर्भावना आने देता। इस प्रकार ये माता-पुत्र दोनों ही निश्चिन्त थे। इन रुपयों और गहनों के सम्बन्ध में माता-पुत्र में से किसी को लेश-मात्र भी चिन्ता नहीं थी। यदि कुछ चिन्ता थी तो वह देवनाथ को थी।

धीरे-धीरे पाँच वर्ष और बीत गये। इस इतने लम्बे समय के साथ ही साथ तुलसी के विधवा जीवन का भी अवसान हो गया। पुत्र को भाई के हाथों में सौंपकर उसने सन्तोष के ही साथ अपनी अन्तिम साँस ली।

तुलसी की मृत्यु के बाद देवनाथ की आँखें खुल गईं। उन्हें भानजे में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ दिखाई पड़ने लगीं। उनकी दृष्टि में अब उसमें दोष ही दोष दिखाई पड़ते, मानो माता की मृत्यु के साथ ही साथ नन्दलाल के सारे गुणों का भी अन्त हो गया और संसार के जितने भी अवगुण हैं, उन सबने आकर उसके इस छोटे से शरीर में अड्डा जमा लिया। अब वह असहिष्णु हो गया, मूर्ख हो गया, मिथ्यावादी हो गया, लोभी हो गया और दुराचारी हो गया। देवनाथ अपने अन्तःकरणरूपी आईने में नन्दलाल के भावी जीवन का विकृत रूप भी देखने लगे और उसे देख-देखकर वे व्यग्रता का अनुभव करने लगे। उनके पास चापलूसों का जो दल जमा रहता, उससे वे प्रायः कहा करते कि यह लड़का आगे चलकर बड़े ही उद्धत स्वभाव का होगा और इसके कारण मुझे बड़ी अकीर्ति सहनी पड़ेगी।

देवनाथ की सहधर्मिणी श्रीमती आनंदी देवी अपने स्वामी की सी ही सूक्ष्म-दृष्टि नहीं प्राप्त कर सकी थीं। वे आज भी नंदलाल को वैसे ही स्नेह की दृष्टि से देखती थीं, जिस प्रकार कि उसके माता के जीवन काल में उनके हृदय में इस पितृहीन बालक के प्रति करुणा और सहानुभूति का भाव था। वे कभी-कभी नंदलाल को डाँटती भी थीं। परन्तु जितना वे डाँटती थीं, उससे अधिक उससे प्रेम करती थीं।

आनंदी देवी की डाँट-फटकार के बारे में देवनाथ को कोई आपत्ति नहीं थी परन्तु वे नंदलाल से अत्यधिक स्नेह करके जो उसे सिर पर चढ़ाती जाती थीं, यह उन्हें किसी प्रकार सह्य नहीं था। वे किसी-किसी समय झुँझला उठते और कहा करते कि यह कहाँ का राजराजेश्वर होकर आया है जो दूध के बिना भोजन ही नहीं कर सकता! दाल के साथ तरकारी जरूर होनी चाहिए। दोनों समय जलपान के लिए भी कोई न कोई चीज होनी ही चाहिए। यह सारा आडंबर कहाँ से निभेगा। किस कमाई के बल पर वह अपनी माँग रोज-रोज बढ़ाता चला जा रहा है।

आनंदी देवी स्वामी की ये बातें सुनतीं और सुनकर चुप रह जातीं। किसी-किसी समय यदि उनसे कहा जाता तो आँखों में आँसू भरे हुए वह बोल उठतीं—भाई, बिना मा-बाप का लड़का है, हमारे यहाँ पड़ा हुआ है। इसे किसी प्रकार का क्लेश न होना चाहिए। सदा से जब यह अच्छा-अच्छा खाता आया है तो अब इसे सूखा-रूखा खिलाकर तो रक्खा नहीं जा सकता।

पत्नी की इस तरह की बातें देवनाथ को प्रायः असह्य हो जाती थीं। वे आवेश में आकर प्रायः बोल उठते, इस तरह की लाट साहबी तो हमारे यहाँ नहीं चल सकती। एक पराये लड़के के लिए इतना खर्च बर्दास्त करने को मैं तैयार नहीं हूँ।

आनंदी देवी ने जिस दिन पहले-पहल स्वामी के मुख से इस तरह की बात सुनी थी, उस दिन उनके आश्चर्य की सीमा नहीं रही। बहुत ही चकित भाव से वे बोलीं—राम! राम!! तुम यह क्या कह रहे हो। वह पराया लड़का कैसे है?

देवनाथ ने पत्नी की इस बात के उत्तर में बड़ी ही झुँझलाहट के साथ कहा—जो कुछ मैं कह रहा हूँ, ठीक कह रहा हूँ। जो पराया है, वह पराया ही होकर रहेगा। उसे अपना बनाने का शौक़ मुझे नहीं है। आजकल के जमाने में कौन किसका होता है?

स्वामी की इस बात से आनंदी देवी के हृदय में अपार वेदना हुई। अत्यंत ही खिन्न भाव से वे कहने लगीं—भाई, यदि ऐसी ही बात है तो तुम उसकी खुराकी लगा लो और उसके लिए जो कुछ खर्च करो, वह सब उसके नाम लिखते जाओ, वह कोई नितान्त ही निराधार तो है नहीं कि उसे एक-मात्र तुम्हारी कृपा पर अवलम्बित होकर जीवन व्यतीत करना है। उसके पिता के काफ़ी रुपये तुम्हारे पास जमा हैं, उन्हीं रुपयों में से तुम उसकी खुराकी के रुपये काट लेना।

आनंदी देवी के मुख से इस तरह की बातें सुनकर देवनाथ आग-बबूला हो उठे। गरजते हुए वे बोले—क्या कहा, वह नितान्त ही निराधार नहीं है। उसके बाप के रुपयों में से खुराकी के रुपये काट लूँगा। कौन दस-बीस हजार रुपया छोड़ गया है उसका बाप, जो अभी तक मेरे पास जमा है?

स्वामी की इस बात को सुनकर आनंदी देवी को बड़ा आश्चर्य हुआ। चकित भाव से देवनाथ के मुँह की ओर वे ताकती रह गईं। उनकी इन बातों का उत्तर देने के लिए मुँह खोलने का साहस वे नहीं कर सकीं।

नंदलाल के प्रति देवनाथ का विरक्ति-भाव क्रमशः बढ़ता गया। कुछ ही दिनों में वह उनकी आँख का काँटा बन बैठा। अवस्था अधिक न होने पर भी नंदलाल स्थिति का अनुभव किये बिना नहीं रह सका। मामा का अवज्ञा पूर्ण और अपमान-जनक व्यवहार क्रमशः असह्य होता जा रहा था। प्रारंभ से उसे पढ़ाने-लिखाने के लिए कोई उचित व्यवस्था नहीं की गई थी। इससे वह एक प्रकार से नितान्त ही अशिक्षित न होने पर भी इस योग्य नहीं हो पाया था कि किसी दफ़्तर में नौकरी करके सम्मानपूर्वक जीवन-निर्वाह कर सके परन्तु वह जब कुछ समर्थ हो गया तब देवनाथ ने उसे अपने लिए कोई नौकरी खोज लेने का ही आदेश किया। और कहा कि अब तुम मेरे भरोसे पर न रहकर अपने पैरों पर खड़े होने का प्रबंध करो। मैंने तुम्हें काफ़ी दिनों तक सँभाल दिया।

नंदलाल स्वयं भी अपने पैरों पर ही खड़े होने के लिए अधीर हो रहा था। मामा की शीतल छत्रच्छाया में रहते-रहते इतने दिनों तक वह जिस प्रकार का सुखमय जीवन व्यतीत करता आ रहा था, हृदय में जरा-सा आत्म-सम्मान का भाव जागृत होते ही वह उसे फीका मालूम पड़ने लगा और धीरे-धीरे नितान्त ही अरुचिकर हो उठा। ऐसी अवस्था में यदि उसके लिए यह सम्भव होता कि नौकरी करके रूखा-सूखा भी खा सके तो वह मामा के इस प्रस्ताव का सहर्ष स्वागत करता, परन्तु ऐसी भयंकर बेकारी के समय में जब कि बी० ए०, एम० ए० पास करने के बाद भी कितने ही युवक साधारण-सी साधारण नौकरी के लिए तरस रहे थे, तब भले घराने का एक ऐसा युवक कौन-सी नौकरी प्राप्त कर सकता था, जिसने एन्ट्रेन्स भी न पास किया हो? इससे नंदलाल को स्वभावतः विवश होकर अपने मामा से कहना पड़ा कि नौकरी का मिलना तो आजकल बड़ा कठिन है। आप ही बताइए कि मैं कहाँ और कौन-सी नौकरी करूँ।

देवनाथ ने रुखाई के साथ कहा—संसार में नौकरियों का अभाव नहीं है। कितने ही ऐसे लोग हैं जिन्होंने तुम्हारी अपेक्षा भी बहुत कम शिक्षा पाई है। किन्तु खूब धूम से नौकरी कर रहे हैं। तुम्हें भी नौकरी मिल सकती है, परन्तु यदि तुम खोजोगे नहीं तो कहाँ से मिलेगी। वास्तव में तुम्हें नौकरी इसीलिए नहीं मिलती कि तुम करना नहीं चाहते हो।

नंदलाल ने कहा—जी नहीं, नौकरी मैं करना अवश्य चाहता हूँ परन्तु मेरी समझ में यह नहीं आता कि मैं किस विभाग में नौकरी खोजने का उद्योग करूँ। लोगों का कहना है कि एन्ट्रेन्स पास किये बिना किसी भी दफ़्तर में कोई कार्य नहीं मिलता।

देवनाथ ने कहा—इस प्रयाग नगर में हजारों आदमी देहातों से जा-जाकर कार्य कर रहे हैं। क्या वे सब दफ़्तरों में ही कार्य करते हैं? यदि तुम चाहो तो किसी दूकानदार के यहाँ आसानी से कोई न कोई नौकरी प्राप्त कर सकते हो।

मारे अभिमान और अपमान के नंदलाल का मुँह लाल हो उठा। उसके होंठ फड़क उठे। किन्तु न जाने क्या सोचकर उसने अपने आपको बहुत कुछ सँभाल लिया। जरा देर तक शान्तभाव से मामा के मुँह की ओर ताकने के बाद उसने कहा—

शेष पृष्ठ १३ पर देखिए

धातुपोषित
कामजोत वटी
स्वप्नदोष, वीर्यविकार, शीघ्रपतन, मुस्ती व कमजोरी दूर करके खून, बल व वीर्य बढ़ाती है फी डि० रु० २॥)
कामजोत तिला
इसके उपयोग से इन्द्रों का नसें व अवयव मजबूत होकर उत्थानशक्ति और स्तम्भन-शक्ति बढ़ती है फी शी० २॥)
मदनमंजरी फार्मेसी—जामनगर
इलाहाबाद—मदन स्टोर्स ४७ जॉन्स्टनगंज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

व्रज-साहित्य-मंडल

शिकोहाबाद में तृतीय अधिवेशन

लेखक, श्री रामनारायण अग्रवाल, साहित्यरत्न

व्रज-साहित्य-मंडल का तृतीय वार्षिकोत्सव गत ता० १९-२० अप्रैल को शिकोहाबाद में सहस्रों नर-नारियों की उपस्थिति में बड़े समारोह से सम्पन्न हुआ। डा० रामप्रसाद जी त्रिपाठी जैसे सभापति को पाकर मंडल के कार्यकर्ताओं में उत्साह की एक लहर दौड़ गई और शिकोहाबाद अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिए मथुरा, वृन्दावन, कोसी, हाथरस, आगरा, अलीगढ़, एटा, इटावा, मैनपुरी, रायबरेली, लखनऊ, प्रयाग और काशी ही नहीं टीकमगढ़ और नवलगढ़ जैसे दूरस्थ स्थानों के प्रतिनिधिगण पधारे।

हिन्दी-साहित्य के विद्वान् और कर्मठ कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में अधिवेशन समारोहपूर्वक प्रारम्भ हुआ। माननीय पुरुषोत्तमदास जी टंडन, श्री माखनलाल जी चतुर्वेदी, भदन्त आनन्द कौशल्यायन, पं० श्रीनारायण जी चतुर्वेदी, पं० मौलिकन्द शर्मा, पं० सीताराम चतुर्वेदी, बा० गुलाबराय जी आदि अनेक साहित्य-महारथी विद्यमान थे।

सम्मेलन का कार्य श्री अमृतलाल जी चतुर्वेदी के मंगलाचरण से आरम्भ हुआ। अधिवेशन का उद्घाटन पं० माखनलाल जी चतुर्वेदी ने किया। आपने अपने भाषण में इस बात पर दुख प्रकट किया कि हिन्दी यद्यपि व्रजभाषा के आधार पर खड़ी है फिर भी उसकी प्रकृति जितनी व्रजभाषा की ओर होनी चाहिए नहीं है।

स्वागताध्यक्ष उमराव लायकसिंह चौधरी के स्वागत भाषण के उपरान्त डाक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी का नाम अध्यक्षपद के लिए प्रस्तावित किया गया। अनेकों व्रजक्षेत्र के विद्वानों के समर्थन के उपरान्त त्रिपाठी जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया और अपनी धारावाहिक भाषण-शक्ति से लोगों को विमोहित कर लिया। आपने मौलिक रूप से ही व्रजमंडल और व्रजसाहित्य की चिन्तनीय समस्याओं के प्रतिनिधियों को परिचित कराया। सभापति के भाषण के अनन्तर मंडल की कोसी शाखा को 'भारतेन्दु' कलश प्रदान किया गया जिसने मंडल के लिए इस वर्ष बहुत से उपयोगी हस्तलिखित ग्रंथ प्रदान किये हैं।

ता० २० अप्रैल का कार्यक्रम श्री सत्यनारायण जी पाण्डेय के मंगलाचरण से आरम्भ हुआ। देशबन्धु पुस्तकालय की ओर से सभापति महोदय को एक अभिनन्दन पत्र दिया गया। मंडल की ओर से कविरत्न गोविन्दजी चतुर्वेदी को श्रीनिवासदास पुरस्कार और सेठ कन्हैयालाल जी पोद्दार को एक ताम्रपत्र भेंट किया गया, शुभ कामनायें और वार्षिक विवरण की स्वीकृति के अनन्तर निम्नप्रस्तावों पर वाद-विवाद हुए और उन्हें स्वीकार किया गया। सर्वप्रथम शोक-प्रस्ताव सभापति महोदय ने उपस्थित किया।

स्वीकृत प्रस्ताव

(१) "व्रज-साहित्य-मंडल का यह अधिवेशन श्री जगन्नाथप्रसाद 'भानु', श्री हरिनारायण जी शर्मा, डा० [illegible] जी, पं० विश्वम्भर शर्मा [illegible], श्री रामनाथ शर्मा, श्री सिद्धनाथ [illegible] अगरकर साहित्य-सेवियों के देहावसान पर हार्दिक दुख तथा उनके कुटुम्बियों के साथ सहानुभूति और समवेदना प्रकट करता है।"

(२) "व्रज-साहित्य-मंडल का यह अधिवेशन मथुरा का नाम अँगरेजी में जिन अक्षरों में लिखा जाता है, तथा उसका जो उच्चारण होता है, उसे मथुरा के गौरव के विरुद्ध समझता है और सरकार से दृढ़ शब्दों में यह माँग करता है कि यह नाम 'Muttra' के स्थान पर 'Mathura' लिखा जाय। इसके लिए डाक, तार, रेलवे तथा अन्य राजकीय कार्यालयों को आदेश दिये जावें। साथ ही सर्व-साधारण का यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि वह अपने व्यवहार में 'Mathura' का ही शब्द-विन्यास करें।"

(३) "व्रज-साहित्य-मंडल का यह अधिवेशन आवश्यक समझता है कि अब शीघ्र ही व्रज विद्यापीठ की ओर कोई क्रियात्मक पग उठाया जावे। व्रज विद्यापीठ की स्थापना की सम्पूर्ण योजना और उसके आरम्भिक कार्यक्रम पर विचार करने के लिए यह अधिवेशन निम्न विद्वानों की एक समिति नियुक्त करता है।—

रायबहादुर पंडित श्रीनारायण जी चतुर्वेदी, बा० गुलाबराय जी, डा० वासुदेवशरण जी अग्रवाल, प्रो० सत्येन्द्र जी (संयोजक) और प्रो० हरिहरनाथ जी टंडन।"

(४) "व्रज-साहित्य-मंडल का यह अधिवेशन मथुरा में व्रज-साहित्य और संस्कृति का संग्रहालय स्थापित करने के लिए दिल्ली-अधिवेशन में स्वीकृत चतुर्थ प्रस्ताव को पुनः दोहराता है। इस अधिवेशन का विश्वास है कि यह कार्य तब तक पूर्ण नहीं हो सकेगा, जब तक मंडल का अपना निजी भवन न हो। अतः यह अधिवेशन निश्चय करता है कि मंडल का भवन शीघ्र ही तैयार कराया जावे। इस कार्य के लिए निम्न व्यक्तियों की एक समिति नियुक्त की गई —

श्री भारतभूषण अग्रवाल हाथरस, श्री रणछोड़दास अजमेरा कलकत्ता, श्री उमाशंकर जी द्विवेदी वृन्दावन, श्री महेन्द्र जी आगरा, सेठ गुलाबचन्द मथुरा।

(५) "व्रज-साहित्य-मंडल को यह जानकर अत्यन्त क्षोभ है कि व्रजभूमि को हरियाना प्रान्त में मिलाने की चर्चा आरंभ हुई है। इस मंडल का यह दृढ़ विश्वास है कि व्रजवासी प्राचीन मध्यप्रदेश अथवा संयुक्त-प्रान्त से अलग होना कदापि स्वीकार न करेंगे।"

इस प्रस्ताव के पक्ष-विपक्ष में काफी वादविवाद रहा, किन्तु श्रद्धेय टंडन जी की इस भाषा को सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया। इसके बाद मंडल के विधान में कुछ आवश्यक संशोधन किये गये।

अधिवेशन के अवसर पर एक विराट् व्रज-साहित्य-परिषद् की गई, जिसमें अनेक विद्वानों के लेख व भाषण हुए। बा० गुलाबराय जी इस परिषद् के संयोजक थे। पं० भागीरथप्रसाद दीक्षित प्रयाग, श्री शिवनाथ जी काशी, श्री सत्येन्द्र जी नवलगढ़, श्री ओमप्रकाश शर्मा आगरा, श्री नरेन्द्र जी दिल्ली व श्रीमती मुद्रा आगरा के निबन्ध अधिक पसन्द किये गये।

कवि-सम्मेलन में, सर्वश्री रामलला, सत्यनारायण जी पाण्डेय, व्रजनन्दन कविरत्न, अमृतलाल चतुर्वेदी की व्रजभाषा कवितायें खूब जमीं। डा० त्रिपाठी जी ने भी अनेक मनोहर कवित्त सुनाये।

निर्वाचन—

आगामी वर्ष कार्य-संचालन के निमित्त निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए—

सभापति—डा० रामप्रसाद जी त्रिपाठी एम० ए० डी० एस० सी०, प्रयाग, उपसभापति—बाबू गुलाबराय जी एम० ए० आगरा, कार्यवाहक उपसभापति—श्री लक्ष्मीरमण आचार्य मथुरा, प्रधान मंत्री—श्री भारतभूषण अग्रवाल, हाथरस, साहित्य-मंत्री—श्री गौरीशरण जी कौशिक एम० ए० मथुरा, प्रचार-मंत्री—श्री सिद्धेश्वरनाथ जी श्रीवास्तव एम० ए० एल० टी०, सम्पादक व्रजभारती प्रो० सत्येन्द्र जी, नवलगढ़।

* * *

प्रकाशकों का भ. संगठन हो

आज देश स्वतंत्र होने जा रहा है। युद्ध के पिछले पाँच वर्षों ने देश को स्वतंत्रता के इतना नजदीक ला दिया है कि अब इसको गुलाम कोई नहीं रख सकेगा। हमारे लोकप्रिय नेता डंके की चोट पर ऐलान कर रहे हैं कि यदि ब्रिटेन इस देश को अब स्वतंत्र नहीं करेगा तो हम उससे स्वतंत्रता छीनकर ही रहेंगे। वह दिन हम सबके लिए अवश्य ही बेहद खुशी का होगा। सदियों की पड़ी गुलामी की बेड़ियों को तोड़कर स्वतंत्र होते भला किसे खुशी न होगी? पर इस खुशी में हमें अपनी आनेवाली जिम्मेदारियों को भुलाने से काम नहीं चलेगा। स्वतंत्रता की सबसे बड़ी जिम्मेदारी होगी उसे पाकर टिकाये रखना, उसका समाज और राष्ट्र के हित के लिए पूर्ण सदुपयोग करना।

हमारे छोटे-बड़े सभी उद्योगपति जिन उद्योगों से देश का दारिद्र्य दूर होकर जनता के सुखी और समृद्ध होने का विश्वास करते हैं, उन्हें स्थापित करने के लिए पूर्ण प्रयत्नशील हैं। पर हम प्रकाशक जिन पर देश के लिए सब विषय का साहित्य तैयार करने और कराने की प्रधान जिम्मेदारी है, अब तक इस भारी जिम्मेदारी का सम्मिलित और संघटित रूप से विचार ही नहीं कर रहे हैं। यदि विचार करते होते तो अवश्य ही हमने भी देश के सामने इस जिम्मेदारी को सँभालने के लिए कोई योजना प्रस्तुत की होती। इस तरह की योजना जल्दी से जल्दी तैयार कर देश और जनता के सामने रखा जाना अत्यन्त आवश्यक है।

इस देश में हिन्दीभाषी जनता ही अधिक है। फिर भी हिन्दी की सबसे कम प्रतिशत पुस्तकें शायद प्रकाशित होती और बिकती हैं। यह क्यों? इस युद्ध ने हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशन और विक्रय को कोई खास प्रोत्साहन दिया हो ऐसा मालूम नहीं होता। अँगरेज पुस्तक प्रकाशकों की इस युद्ध में पहले सबसे प्रधान समस्या थी पुस्तकों की पर्याप्त बिक्री करना। आज यह समस्या लुप्त हो गई है। अब अँगरेज प्रकाशकों की पुस्तकें छपते ही इतनी बिक जाती हैं कि भविष्य में माँग बनी रहती है। अँगरेजी पुस्तकों की क़ीमतें भी हिन्दी पुस्तकों की अपेक्षा बहुत अधिक होती हैं। फिर भी अँगरेजी पुस्तकों की हमारे इस देश में भी धड़ाधड़ बिक्री होती है। किन्तु हिन्दी पुस्तकें आज भी रुक-रुककर बिकती हैं। पुस्तकों के विषय, उनकी बिक्री के साधन और आयोजन निकम्मे पड़ गये हैं। उनमें नया जीवन, नया दृष्टिकोण लाये बिना हमारी गाड़ी आगे नहीं चलेगी। यह अत्यंत आवश्यक ही नहीं, अपितु हमारे व्यवसाय के जीवन-मरण के प्रश्नों पर हमारा आपस में विचार-विनिमय जल्दी से जल्दी होना आवश्यक है। जो प्रकाशक मेरे विचारों से सहमत हों, उन्हें मैं इस संगठन के लिए निमंत्रण देता हूँ। वे सूचित करें कि उन्हें दिल्ली में इस संबंध में विचार करने के लिए कौन दिन उपयुक्त होगा?

अजमेर, २० अप्रैल, ४६ —कस्तूरमल बाँठिया राजपूताना बुक हाउस

पटवारियों की वेतन-वृद्धि

इधर संयुक्तप्रान्त के प्रायः प्रत्येक जिले में पटवारियों के हड़ताल करने के समाचार आये हैं। यों तो पटवारी किसानों में बहुत बदनाम हैं और रिश्वत लेने तथा झगड़ा कराने में वे अपना सानी नहीं रखते। पर यह बात भी सच है कि ब्रिटिश गवर्नमेंट के रेवेन्यू एडमिन्सिट्रेशन (माल शासन) के आधार मिला होने पर भी पटवारी वेतन बहुत कम पाते हैं, काम अधिक करते हैं और उनके साथ व्यवहार भी अच्छा नहीं होता है। काम की अधिकता के कारण पटवारियों का बहुत-सा काम फ़र्जी होता है। पटवारी पर हर मुहकमा के अफ़सर रोब व धौंस गाँठा करते हैं। तहसील में सरकारी काम से हफ़्तों रुकने पर भी उनके ठहरने आदि का कोई प्रबन्ध नहीं होता है। यहाँ तक कि बैठने के लिए किसी फ़र्श का भी प्रबन्ध नहीं किया जाता है भत्ता भी नहीं दिया जाता है। ऐसा मालूम होता है कि पटवारी सरकारी नौकर ही नहीं होते हैं।

खीरी जिला में पटवारियों ने हड़ताल की, समझाने-बुझाने पर और शक्कर, मिट्टी का तेल तथा कपड़ा के मिलने की उन्हें सुविधा देकर हड़ताल खत्म कराई गई। तभी मार्च के आखिरी सप्ताह में यह ऐलान भी किया गया कि दो तहसीलों में पटवारियों को चार आना रोज और सदर तहसील में ६ आना रोज भत्ता मिला करेगा। भत्ते की यह रक़म निहायत नामुनासिब है। आज कल के जमाने में चार या छ आना में कोई खा-पी नहीं सकता है। भत्ता कम से कम एक रुपया रोजाना मिलना चाहिए।

पटवारियों का वेतन १३) रु० से १७) रु० मासिक है। तमाम सरकारी मुलाजिमों को महँगाई भत्ता दिया गया पर पटवारियों को एक वर्ष बाद महँगाई भत्ता मिला। गवर्नमेंट का यह व्यवहार पटवारियों के साथ बेइन्साफ़ी का था।

महँगाई भत्ता ८) रु० मासिक दिया जाता है जो यों कम होने के साथ-साथ अन्य सरकारी मुलाजिमों के दिये गये भत्ते से बहुत कम है। पटवारियों का वेतन ३५) रु० से ५०) रु० मासिक कम से कम होना चाहिए। उन्हें पेंशन भी दी जानी चाहिए और उन्हें पूरा सरकारी मुलाजिम माना जाना चाहिए। उनकी नियुक्ति के लिए ज़मींदारों की रज़ामन्दी होने का क़ानून फ़ौरन हटा देना चाहिए।

पटवारियों में स्व-शासन का भाव उत्पन्न कर उनकी वेतन वृद्धि कर पेंशन पाने का हक़ देकर और उन्हें अन्य सुविधायें प्रदान कर उनसे रिश्वत छोड़ने को मजबूर किया जाय और रिश्वत लेने पर सख्ती से पेश आया जाय।

लखीमपुर, खीरी २६ अप्रैल, ४६ —वंशीधर मिश्र एम० एल० ए०

सच्चा सेवक

छोटा-सा नाटक है जिसमें सेवक के गुण सुन्दरता से दिखाये गये हैं। यह नाटक अभिनय करने के लिये लिखा गया है और खेला भी गया है। स्कूलों में उत्सव के समय छात्र इसका निर्दोष अभिनय करके प्रशंसा पाते हैं। मूल्य केवल ।-) पाँच आने।

मैनेजर
बुकडिपो इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधान क्या और कैसे बनता है ?

जनता के प्रतिनिधियों पर ही इसकी जिम्मेदारी क्यों ?

लेखक, श्री सूरजनारायण निगम
सहायक सम्पादक 'सैनिक'

विधान क्या है और कैसे बनता है, इस लेख में लेखक ने इसकी सुन्दर विवेचना की है। लेखक का कहना है कि कोई भी विधान तभी प्रचलित और सफल हो सकता है जो जनता के प्रतिनिधियों द्वारा स्वीकृत किया जाता है। पाठकों को विधान की बारीकी को समझना और ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

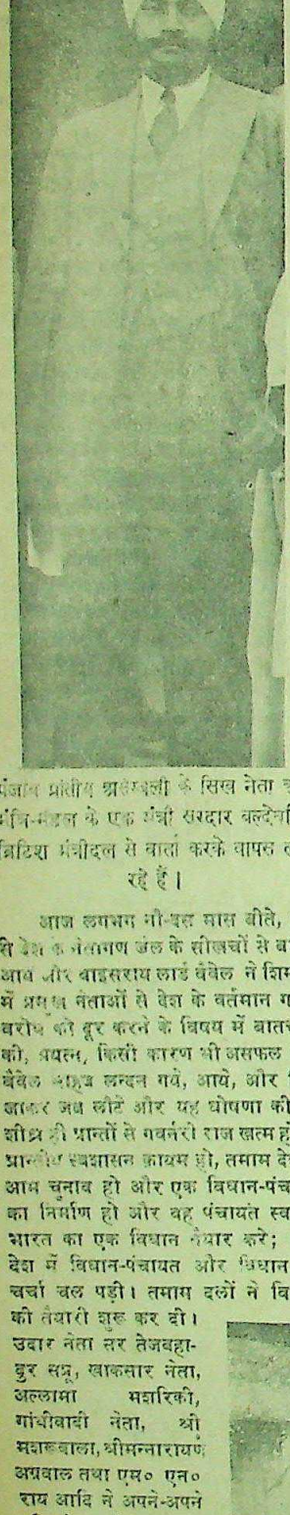

पंजाब प्रांतीय असेम्बली के सिख नेता और मंत्रि-मंडल के एक मंत्री सरदार बल्देवसिंह ब्रिटिश मंत्रीदल से वार्ता करके वापस लौट रहे हैं।

आज लगभग सौ-डेढ़ सौ साल बीते, जब से देश के नेतागण जेल के सींखचों से बाहर आये और वाइसराय लार्ड वेवेल ने शिमला में प्रमुख नेताओं से देश के वर्तमान गत्यवरोध को दूर करने के विषय में बातचीत की, प्रयत्न, किसी कारण भी असफल रहे, वैवेल साहब लन्दन गये, आये, और फिर जाकर जब लौटे और यह घोषणा की कि शीघ्र ही प्रान्तों से गवर्नरी राज खत्म होकर प्रान्तीय स्वशासन कायम हो, तमाम देश में आम चुनाव हो और एक विधान-पंचायत का निर्माण हो और वह पंचायत स्वतन्त्र भारत का एक विधान तैयार करे; सारे देश में विधान-पंचायत और विधान की चर्चा चल पड़ी। तमाम दलों ने विधान की तैयारी शुरू कर दी। उदार नेता सर तेजबहादुर सप्रू, खाकसार नेता, अल्लामा मशरिकी, गांधीवादी नेता, श्री मशरूवाला, श्रीमन्नारायण अग्रवाल तथा एम० एन० राय आदि ने अपने-अपने दृष्टिकोण के स्वतन्त्र भारत के विधान तैयार भी कर डाले।

विधान की चर्चा चल ही रही थी कि ब्रिटिश पार्लियामेंट के सदस्यों का एक प्रतिनिधि मण्डल भारत आया और विभिन्न दलों के नेताओं और देश के देहातों तथा गली-कूचों तक का निरीक्षण करके इँगलैंड वापस चला गया और वहाँ जाकर भारत की आजादी पर काफी जोर दिया। अब उसी मिशन की रिपोर्ट पर ब्रिटिश मंत्रिमंडल के तीन प्रमुख सदस्य लार्ड पेथिक लारेंस, सर स्टेफ़र्ड क्रिप्स और श्री ए० वी० अलेक्जेंडर यहां आये हैं और एक नया विधान तैयार कराकर भारत को आजाद करने की घोषणा करने की सोच रहे हैं। यह शिष्ट मण्डल अपने प्रयत्न में कहाँ तक सफल होता है, अपने वायदे कहाँ तक पुरे करता है, यह तो भविष्य की बात है, लेकिन यह निश्चित है कि इन प्रयत्नों का परिणाम कुछ भी हो, कोई न कोई नया विधान अवश्य तैयार होगा। वह विधान कांग्रेसी हो, लीगी हो, या ब्रिटिश सरकार स्वयं कोई तैयार करके सदा की भाँति भारत पर थोप दे, यह और बात है। आज जब कि विधान के सम्बन्ध में, सरकारी तथा ग़ैर-सरकारी क्षेत्रों में इतनी चर्चा चल रही है तो जन-साधारण के लिए यह आवश्यक है कि वह यह समझ लें कि आखिर विधान है क्या चीज़? जब हम यह जान जायेंगे, तभी हम यह भी जान सकते हैं कि विधान बनाया कैसे जाता है।

विधान कोई एक ऐसा क़ानूनी मसविदा नहीं है, जिसकी तैयारी और बनाने के लिए कुछ क़ानूनदाँ लोग एक जगह बैठकर, घंटों और दिनों तक बहस-मुबाहिसा करके एक मसविदा तैयार करें और सो विभिन्न पार्टियाँ उस पर अपने हस्ताक्षर कर दें और काम तमाम हो गया। विधान का तैयार किया जाना एक क्रान्तिकारी कार्य है। इसको तैयार करती है देश की अपार जनता, जिसको कि वर्तमान सरकार ने, राज्य ने, अपने जंजीरी और शोषणपूर्ण विधान के जरिये जकड़ रक्खा है। वह जनता स्थापित राज्य के खिलाफ़ विद्रोह करती है, वर्तमान विधान का नाश करती है, और एक नये राज्य की बुनियाद रखती है, शासन की बागडोर वही बाग़ी जनता अपने हाथ में लेती है और शासन का कार्य खुद अपने हितों के अनुसार चलाना शुरू करती है। शासन जिस ढंग से चलाया जाये, उसी को विधान कहते हैं। ऐसा करने में उसे शासक सत्ता का ही मुक़ाबिला नहीं करना होता, बल्कि उन लोगों का भी, जो यों तो इसी देश में पैदा हुए हैं, यहीं पले हैं, लेकिन जिनके स्वार्थ वर्तमान शासक-सत्ता, शोषण-प्रणाली के एक अंग हो गये हैं। इसलिए एक नये विधान का निर्माण, आज की पिसी हुई ग़रीब जनता ही कर सकती है।

विधान किसी देश या राज्य-विशेष की कोई मशीनरी नहीं होती। यह उन तमाम क़ानून-क़ायदों का एक संग्रह होता है जो समय-समय पर, आवश्यकतानुसार बनाये जाते हैं। उदाहरण के लिए आज के इंडिया ऐक्ट को ले लीजिए। यह कहलाता है, "इंडिया ऐक्ट आफ़ ब्रिटिश पार्लियामेंट।" अर्थात् यह ब्रिटिश पार्लियामेंट द्वारा तैयार किया गया था। ब्रिटिश पार्लियामेंट को ब्रिटिश जनता ने अपने राजा के ख़िलाफ़ विद्रोह करके उसके दैवी शासन के अधिकार को हटाकर अपने शासन अधिकार की लड़ाई लड़कर तैयार किया था। मैगनाचारी से लेकर आज तक कई बार ब्रिटिश जनता ने अपने देश की सरकार के खिलाफ़ विद्रोह किया और नये-नये क़ानून बनाये और वह सब क़ानून ऐक्ट आफ़ पार्लियामेंट कहलाते गये। उन तमाम क़ानूनों का आधार था, ब्रिटिश जनता की आवश्यकताएँ और इच्छाएँ।

विधान किसी राज्य-विशेष का हुआ करता है। यह, किसी नये राज्य के आधारभूत सिद्धान्तों का संग्रहीत रूप होता है। इसी लिए यह जरूरी होता है कि बाद में समय-समय पर बननेवाले तमाम क़ानून इन्हीं आधारभूत सिद्धान्तों के अनुसार बने हों। जब ऐसे क़ानून बनाने की जरूरत पड़ जाती है, जो कि राज्य के आधारभूत सिद्धान्तों के संग्रह अर्थात् विधान के आधार पर नहीं बनाये जा सकते, तभी स्थापित राज्य और उसके विधान को नष्ट करना पड़ता है और एक नया राज्य स्थापित करके एक नया विधान बनाया जाता है।

सुप्रसिद्ध लिबरल नेता एम० आर० जयकर ब्रिटिश मंत्रिदल से वार्ता करके वाइसराय भवन से वापस लौट रहे हैं।

अब जरा हमें अपने देश पर ग़ौर तौर से ग़ौर करना चाहिए। आज के स्थापित राज्य के विधान के आधारभूत सिद्धान्त के अनुसार सर्वोच्च सत्ता ब्रिटिश ताज के हाथ में है। इसलिए किसी भी विधान का आधारभूत सिद्धान्त यह होना चाहिए कि सर्वोच्च सत्ता ब्रिटिश ताज के हाथ में न रहकर यहाँ की जनता के हाथ में हो। यों कहने के लिए भारतवर्ष का शासन-विधान कई बार बदला गया है, लेकिन आधार-भूत सिद्धान्त में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। हाँ, केवल ताज की शक्ति में कुछ कमी कर दी गई; और वह भी उसी की कृपा से। इसका परिणाम यह हुआ कि ऐसा कोई विधान, जो "सर्वोच्च सत्ता ताज की है" के आधार पर बनेगा, ब्रिटिश पार्लियामेंट की देन होगी, जनता की देन नहीं हो सकती। इसलिए तक स्थापित उखाड़कर फेंक दिया जाता तब एक नया राज्य क़ायम हो सकता तभी तक एक विधान के निर्माण बात करना, कोई नहीं रखता।

हाँ, इसमें संशय की बात है कि वर्तमान को उखाड़ फेंकने पूर्व, हमें अपने राज्य के विधान आधारभूत को निश्चित कर

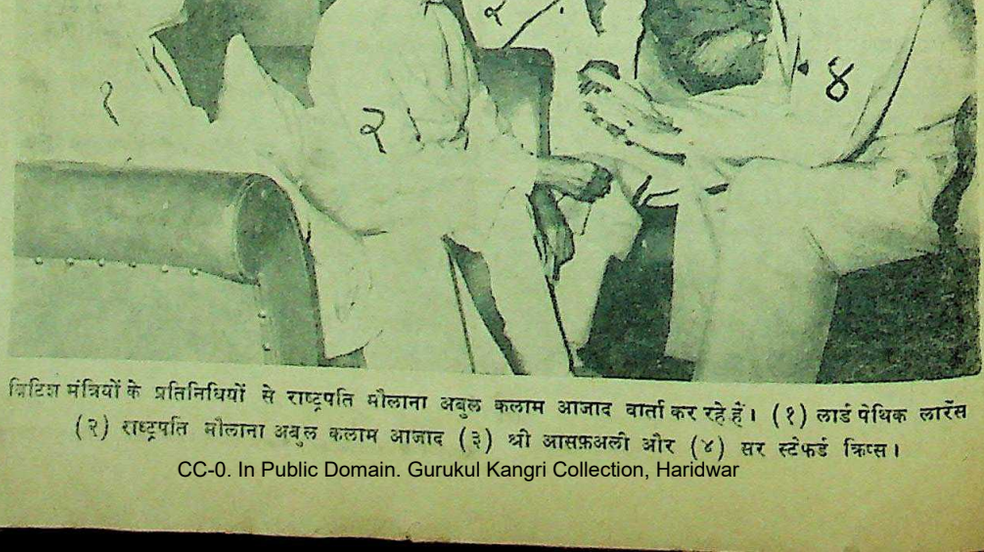

ब्रिटिश मंत्रियों के प्रतिनिधियों से राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम आजाद वार्ता कर रहे हैं। (१) लार्ड पेथिक लारेंस (२) राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम आजाद (३) श्री आसफ़अली और (४) सर स्टेफर्ड क्रिप्स।

शेष पृष्ठ १८ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माम-भानजा

(पेज १० का शेष)

इस तरह की नौकरी तो मैं न करूँगा चाहे पूर्वी ही क्यों न मरना पड़े।

देवनाथ को भी अब खरी बात कह देने का अवसर मिला गया। उन्होंने तपाक से उत्तर दिया, अच्छी बात है अब आप अपने रहने के लिए प्रबन्ध कर लीजिए। मैं तो इस तरह बैठे आपको नहीं खिला सकता।

नंदलाल भी क्रोध में ही बोल उठा—अच्छी बात है, मैं कल ही यहाँ से चला जाऊँगा।

(४)

आनंदी देवी के कानों तक सारी बातें गईं। दुखी भाव से उन्होंने नंदलाल से कहा कि तुम्हारा कहना बिलकुल ठीक है नंदलाल! इस तरह का तिरस्कार, इस तरह की अपमानजनक बातें सहन करते हुए यहाँ पड़ा रहना तुम्हारे लिए किसी प्रकार भी उचित नहीं है। परन्तु तुम्हारे जो रुपये हैं वे तो तुम्हें मिलने ही चाहिए। यदि वे न देंगे तो मैं दूँगी। यह जरूर है कि मेरे पास नकद रुपये नहीं हैं। केवल थोड़े से गहने हैं। इन गहनों को बेचने से तुम्हारे सारे रुपये न वसूल हो सकेंगे। परन्तु इतने रुपये तो मिल ही जायँगे कि उनसे कुछ दिनों तक तुम अपना काम चला सको।

मामी की यह बात सुनकर नंदलाल का हृदय धक्-धक् करने लगा। खिन्नभाव से वह बोला—आपके गहने.....

आनंदी देवी ने कहा—हाँ, इसमें तुम संकोच मत करो। मेरे गहने खुशी से ले जा सकते हो। इन सबके खरीदने में तो उन्हीं के पैसे लगे हैं। जब वे तुम्हारे रुपये नहीं देते तो इन्हें ले जाने में तुम्हें किसी प्रकार का भी असमंजस नहीं होना चाहिए।

नंदलाल के मन में यह बात आई कि मामी का कहना कोई विशेष अनुचित नहीं है। मामा से तो कुछ वसूल होने का ही नहीं, इससे इनसे जो कुछ मिल रहा है, वही क्यों छोड़ूँ। सहारे के लिए पास में कुछ न कुछ तो होना ही चाहिए।

गहनों का बक्स आनंदी देवी के ही पास रहा करता था। उनके पास जितने गहने थे, उन सबका मूल्य लगभग पाँच-छः हजार रुपये था। रात्रि में स्वामी के सो जाने पर आनंदी देवी ने वह बक्स चुपके से नंदलाल के हवाले कर दिया। उनके हाथ में केवल सोने की दो चूड़ियाँ रह गईं। यह देखकर नंदलाल का हृदय दुखी हो उठा। वह बोला—मामी जी, यह ठीक नहीं है। गहनों के बिना तुम जरा भी अच्छी नहीं लगती हो। मैं इन्हें न लूँगा और खाली ही हाथ यहाँ से चला जाऊँगा। मेरे भाग्य में जो कुछ होगा, वह होगा।

आनंदी देवी ने गम्भीर स्वर में कहा—नहीं, इन्हें तुम्हें लेना ही होगा। नहीं तो इन सोमों को बड़ा पाप लगेगा, हमारे पाप-बच्चों का अमंगल होगा। यह कहकर बक्स रखकर वे चली गईं। क्षण ही भर में आनंदी देवी नंदलाल के पास फिर लौट आईं। वे बोलीं—नंदलाल, मेरा तुमसे एक अनुरोध है। मैं विश्वास करती हूँ कि तुम उस अनुरोध की रक्षा अवश्य करोगे। कल तुम खूब तड़के घर से निकल जाओ। जिससे कि उनके उठते-उठते कम से कम गाँव की सीमा तो पार ही कर जाओ।

नंदलाल ने कठोर दृष्टि से मामी की ओर ताका, रूखे स्वर में वह बोला—चुपके चोर की तरह जाऊँ?

आनंदी देवी ने अनुभव किया कि इस बात ने नंदलाल को कितनी अधिक चोट पहुँचाई है। उन्होंने माता के समान स्नेह के साथ कहा—दुर पागल! तुम यह कौन कह रहा है कि तू चोर की तरह जा। मैंने तो केवल इसलिए यह बात कही है कि उन्हें जब तेरे जाने का हाल मालूम होगा तो संभव है, कि वे जाने न दें। परन्तु यहाँ पड़े-पड़े तुझे बार बार झिड़कियाँ खानी पड़ती हैं। जरा-जरा-सी बात के लिए अपमानित होना पड़ता है। यह ठीक नहीं है। इससे मेरी जरा भी इच्छा नहीं है कि तू यहाँ बराबर पड़ा रहे।

मामी की यह बात सुनकर नंदलाल गंभीर भाव से कुछ सोचने लगा। उसके मन में आया, कहना तो इनका कुछ हद तक ठीक ही है। मामा जी मेरा सर्वस्व अपहरण कर लेने पर उतारू हो गये हैं। मेरी माता जी के आभूषण तक उन्होंने अपने अधिकार में कर लिये हैं और उन्हें वे अपनी तिजोरी से निकलने नहीं देना चाहते। हाय! उनके इस दुष्कर्म से माता जी की स्वर्गीय आत्मा को कितना क्लेश होगा। भाई के द्वारा पुत्र को इस प्रकार प्रतारित किये जाते देखकर वे स्वर्ग में बैठे-बैठे भी किस प्रकार की अशान्ति का अनुभव करेंगी, यह बात कदाचित् अत्यधिक स्वार्थपरायणता के साथ मामा जी नहीं समझ पाते। ये उनके वेही विश्वासपात्र भाई हैं जिनके हाथों में मुझे सौंपकर उन्होंने बहुत ही निश्चिन्त भाव से अपनी अन्तिम साँस ली थी। परन्तु आज उस सारे विश्वास को मिट्टी में मिलाकर मामा जी इस तरह का दुष्कर्म करने पर उतारू हैं। ऐसी अवस्था में एक तस्कर के रूप में भी यदि उनसे कुछ छीना जा सके तो इसमें अपराध ही क्या है। क्या इस संबंध में किसी प्रकार की द्विविधा, किसी प्रकार की आना-कानी करने की आवश्यकता है?

नंदलाल इसी प्रकार की कितनी ही बातें काफी देर तक व्यग्र भाव से सोचता रहा। उस समय चिंता के मारे वह इतना अधिक व्याकुल था कि उसके मस्तक में पसीने की बूँदें तक झलकने लगीं। अंत में अधीर भाव से वह कमरे से निकल पड़ा। रास्ते में मिट्टी के तेल का एक टीन पड़ा हुआ था। नंदलाल के पैर की ठोकर लगने के कारण वह भड़भड़ाकर सीढ़ी पर गिरा और क्रमशः एक सीढ़ी से दूसरी सीढ़ी पर और दूसरी से तीसरी सीढ़ी पर गिरते-गिरते एकदम नीचे चला आया। उस टीन के गिरने से जो भड़-भड़ की आवाज हुई उसके कारण द्वार के पास बैठे हुए कुत्ते में सतर्कता का भाव चाहे भले ही न आया हो किन्तु भीरुता ने उसके ऊपर अवश्य अपना अधिकार जमा लिया और भौं-भौं करता हुआ उठकर वह भागा। नंदलाल ने किसी ओर देखा नहीं वह सीधे द्वार खोलकर रास्ते में आ गया। नीचे बरामदे में देवनाथ का नौकर बेनी सोया हुआ था। उसकी नींद पूरी हो चुकी थी। इससे वह चोर-चोर कहकर चिल्ला उठा। मालिक और मालकिन दोनों की ही निद्रा भंग हो गई। उन दोनों ही ने अपने कमरे से निकलकर देखा तो नंदलाल के कमरे का द्वार खुला हुआ था। भीतर दीपक जल रहा था। देवनाथ नंदलाल, नंदलाल करते हुए कमरे में चले गये परन्तु नंदलाल वहाँ तो था नहीं जो उनके पुकारने से बोलता। उसकी चारपाई खाली पड़ी थी। एकाएक उसके टेबिल के ऊपर उनकी दृष्टि पहुँच गई और वे चिल्ला उठे। हाय! सत्यानाश तो हो गया। लूट लिया उस पाजी ने। गहनों का बक्स यहाँ पड़ा हुआ है।

शायद इसमें जितने भी क़ीमती गहने थे वे सब लेकर वह चम्पत हो गया। इतना कहकर देवनाथ पीछे ही खड़ी हुई अपनी पत्नी की ओर व्यग्र भाव से ताकने लगे। उन्होंने पत्नी को जिस रूप में देखा उसके कारण वे अवाक् हो गये। उनकी समझ में न आया कि नंदलाल ने इन्हें इस तरह नंगी-बूची कैसे कर डाला। क्या ये इस तरह की गम्भीर निद्रा में मग्न थीं कि उसने इनके शरीर पर से सारे आभूषण उतार लिये। और इन्हें [illegible]

अत्यधिक विस्मय और उद्वेग का भाव प्रकट करती हुई आनंदी देवी द्वार के पास खड़ी रहीं। वे नितान्त ही निश्चल और अवाक् थीं। देवनाथ दौड़ते हुए टेबिल के पास गये। उन्होंने देखा तो बक्स गहनों से भरा हुआ था और उसमें एक छोटी-सी चिट्ठी रक्खी हुई थी। वह चिट्ठी नंदलाल की लिखी थी। उसमें उसने लिखा था—

"मामा जी! मैं आपके गहने नहीं ले सका। मेरा सर्वस्व तो जा ही चुका है, केवल एक चीज बची है। इन गहनों के लोभ से मैं आज उसे भी खोने जा रहा था। ये गहने आपके ज्यों के त्यों रक्खे हुए हैं। इन्हें सँभाल लीजियेगा। यह एक ऐसी चीज है जिसका नशा बड़े जोर का होता है और यह नशा एक बार जिसको चढ़ता है, उसके ऊपर से आसानी से उतरता नहीं। अच्छा तो अब मैं यहाँ से भाग रहा हूँ। कोई आश्चर्य नहीं कि आप लोगों से पृथक् होने के बाद ही पागल हो जाऊँ।

विनीत—

नंदलाल।"

देवनाथ ने यह पत्र ध्यान-पूर्वक पढ़ा। इसे पढ़ने के बाद आज जीवन में पहले-पहल उनकी आँखों के ऊपर से मोटा-सा पर्दा हटा। उन्होंने एकाएक यह अनुभव किया कि मैं कितना गिरा हुआ हूँ। कितना नीचे हूँ। इसके विपरीत नंदलाल मुझसे कितने ऊँचे हैं। यद्यपि वह आज नितान्त ही निस्व होकर एक अकिंचन की तरह मेरे घर से निकल गया है। मानो सचमुच उसके पास कभी कुछ नहीं था।

देवनाथ के हृदय में इस प्रकार का भाव आया जरूर और नंदलाल के प्रति उन्होंने जो दुर्व्यवहार किया था, उसके लिए उन्हें पश्चात्ताप भी हुआ। परन्तु यह सब क्षणिक था। इसमें स्थायित्व नहीं था। सबेरा होते ही नियमित रूप से उनका कारबार फिर चलने लगा। किसी ने नंदलाल की चर्चा तक न की। लोगों को यह आशंका थी कि उसके सम्बन्ध में किसी प्रकार की बातचीत करने पर कहीं देवनाथ बाबू क्रुद्ध न हो उठें।

वहाँ ऐसा ही एक व्यक्ति था जो बहुत ही व्यग्र भाव से नंदलाल के अभाव का बराबर अनुभव करता रहता था। वह थी उसकी स्नेहमयी मामी आनंदी देवी। उनका नारी-हृदय उस मातृहीन बालक को बार-बार स्मरण करके वेदना से पूर्ण हो उठा करता था।

AC 67

८ कारण-खाद्य राशन को क्यों विस्तृत करना चाहिये?

★ भारत के अनेक भागों में अकाल का आतंक है।

★ आवश्यकता-पूर्ति के निमित्त पर्याप्त खाद्य-उत्पादन नहीं है।

★ सारे संसार में अभाव के कारण कमी के लिये पूरा-पूरा आयात संभव नहीं है।

★ अनिवार्य खाद्यों को सटोरियों के लिये मुक्त नहीं किया जा सकता।

★ मूल्य-नियंत्रण कायम रखना चाहिये।

★ व्यर्थ व्यय समाप्त होना चाहिये।

★ अतिरिक्त अन्न वाले क्षेत्रों से राशन की कमी वाले क्षेत्रों को खाद्य उपलब्ध होता रहे।

★ कमीवाले क्षेत्रों में खाद्य का सब में बराबर वितरण होता रहे।

५५६ नगरों में विस्तृत ५ करोड ३० लाख से भी अधिक व्यक्तियों में अभीतक राशन की व्यवस्था है। इस सूची में और भी नगर एवं क्षेत्र जोडे जा रहे हैं। स्टाक की रक्षा एवं कमी वाले क्षेत्रों की सहायता के लिये अन्न-राशन की मात्रा कम कर दी गई है। खाद्य-राशन में सहयोग देना आपका कर्त्तव्य है। ईमानदारी से राशन के नियमों का पालन कीजिये—इस प्रकार अपना कर्त्तव्य पालन करते हुये औरों के प्राण बचाइये।

उचित मूल्य पर R सबके लिये भोजन

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमण्डल

सम्मिलित परिवार की समस्या

भारतीय घरेलू जीवन कैसे सुखमय हो सकता है?

लेखक, श्री ब्रजविहारीलाल काचरू (काश्मीर)

आधुनिक समय में हर ओर स्वतन्त्रता की लहर-सी दौड़ रही है। हर एक मनुष्य स्वतन्त्र जीवन बिताना चाहता है। जीवन के साधारण से साधारण अंग में भी मनुष्य स्वतन्त्रता चाहता है। विवाहित जीवन में मनुष्य स्वतन्त्रता के लिए कराह रहा है। यह जीवन का एक जरूरी और महत्त्वपूर्ण अंग है। इसे जीवन की प्रथम सीढ़ी समझना चाहिए।

मनुष्य के विचार और जीवन संघर्षमय और जटिल होते जा रहे हैं। इस जटिलता को दूर करने के लिए मनुष्य साधन ढूंढ़ता है, और ठीक भी है, यदि जीवन में शान्ति नहीं तो जीवन का क्या अर्थ? शान्तिमय होने पर मनुष्य कोई भी महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकता है नहीं तो संघर्ष और दुविधा में पड़कर रोने से ही उसे अवकाश न मिलेगा। परिस्थितियाँ मनोविज्ञान का आविष्कार करती हैं, दूसरे कई कारणों के अतिरिक्त मनोवैज्ञानिक आधार पर भी विवाह और परिवार-सम्बन्धी बातों में स्वतन्त्र होना आवश्यक हो गया है। इससे स्थित परिस्थितियों में आधुनिक सम्मिलित परिवार-प्रथा नव-दम्पति की स्वतन्त्रता में बाधक है। वह चाहते हैं कि उन्हें इस बंधन से छुटकारा मिले, यह छुटकारा इनके जीवन के लिए आवश्यक होगा। प्रथम सीढ़ी पर शान्ति से चढ़ना सारी मंजिल को शान्तिपूर्वक पार करने में सहायक होगा।

विवाह के बाद दम्पति एक नये, अनोखे, चंचलता से ओत-प्रोत संसार में प्रवेश करते हैं। उनके विचार अजीब और अनोखे होते हैं, शायद उनमें गम्भीरता से अधिक लड़कपन ही हो। वह अपनी भावी संतति को भी वैसा ही बनाना चाहते हैं। वह सामाजिक और धार्मिक बन्धनों को तोड़कर अपने लिए नवीन, मधुर और कल्पनामय मार्ग का निर्माण करना चाहते हैं। लेकिन उनकी सुने कौन? थके हुए बटोही की तरह उन्हें बोझ ढोना पड़ता है, और साथ-साथ बाप-दादा की रीति को भी निभाना ही पड़ता है। उनके वह मधुर कल्पनामय विचार भी धीरे-धीरे उसी में बह जाते हैं। इसका स्थायी प्रभाव मन पर बना रहता है अशान्ति! विद्रोह! और असन्तोष! मन का साधारण नियम है कि एक बार उसमें जो बात आये वह पूरी हुए बिना बाहर नहीं आती। फलतः हमारा समाज तथा जीवन बिगड़ता ही जाता है। यदि उन्हें अपने जीवन का निर्माण स्वयं करने दिया जाता तो सम्भव है वह अपने विचारों को कार्यरूप में परिणत भी कर सकते और उनका जीवन शान्तिमय होकर समाज और संसार के किसी काम आता।

अब प्रश्न हो सकता है कि क्या एक नव-विवाहित दम्पति को यह सब निभाने की क्षमता हो सकती है? उसके लिए प्रसिद्ध अमेरिकन लेखक उपटोन सिंक्लेयर अपनी पुस्तक "लव एण्ड सोसाइटी" में लिखते हैं—मैं लड़कों और युवकों के साथ अनेक विषयों पर वाद-विवाद करता हूँ और मैंने देखा है कि कोई भी पुष्ट बात ऐसी नहीं जिसको वह समझते और जिस पर वह विचार न करते हों। इस विषय की पहले-पहल उन्होंने कितनी ही हँसी क्यों न उड़ाई हो लेकिन प्रभावशाली सुधारक विद्वान् इन्हें पुष्ट युक्तियों के द्वारा प्रभावित कर सकते हैं जिससे वह भले-बुरे को आँक सकें और स्वतन्त्रता को उच्छृङ्खलता न बनायें।

आधुनिक परिवार-प्रथा में दम्पति स्वयं और अपनी इच्छानुसार कोई भी काम करने में समर्थ नहीं होता। क्या मजाल कि बाप-दादा की इच्छा के विरुद्ध वह कोई भी काम कर सके। वर्तमान समाज में नव-दम्पति को अपने परिवार में बिलकुल ही स्थान नहीं। यह बड़ी बुरी बात है और ऊपर कहे गये विद्रोह, असन्तोष आदि भावनाओं के कारण हैं। वह अपने विचार व्यक्त करने में शायद ही सफल हों। इसे सम्मिलित परिवार-प्रथा का दोष समझा जाता है लेकिन यह हमारे समाज की संकीर्णता का दोष है, और इसकी चालू रीतियों का जो कि यथार्थ की ओर बनी रहकर दुःख और अशान्ति का कारण बनती हैं।

इसका मनोवैज्ञानिक पहलू भी बड़ा ही विचित्र हो गया है। आज से २० वर्ष पहले और आज के मानव मनोविज्ञान में बहुत अन्तर आया है, नवयुवक भी जिन बातों को २० वर्ष पहले मान्य समझते थे उन्हीं को अब हेय समझते हैं। जिसके फलस्वरूप आजकल बहुत से रूढ़िवादी, नवयुवकों को निर्लज्ज और ढीठ कहते हैं, लेकिन यथार्थ यह है कि उनके हृदय में बहुत-सी बातें खटकती हैं और दुखती हैं। इससे छुटकारा पाने के लिए वह परिवार से छुटकारा पने का यत्न करते हैं जिससे—"अर्धनाशे समुत्पन्ने सर्वं त्यजति पण्डितः।" वाली बातें होती हैं। यह रूढ़िवादियों के कड़े नियन्त्रण का ही दोष है। उन्हें चाहिए कि वह अपनी सीमा से ऊपर उठकर नवयुवकों को मनोवैज्ञानिक सुभीता (कंसेशन) देकर, सुविधा देकर, उनके विचारों को समझने का यत्न करें और उन्हें ऐसी सुविधायें दें जिससे उनकी अशान्ति और असन्तोष कम हों और जीवन समतल पर चल सके। नहीं तो फ्राइड के सिद्धान्त से प्रभावित आज के संसार में भिन्न प्रकार मनोवैज्ञानिक फिट्स को तसल्ली देने के लिए एक नवयुवक विप्लव और क्रान्ति कर सकता है।

हमारे यहाँ वैदिक काल से ही एक आदर्श साम्य और समाजवाद का बोलबाला रहा है। उन सुनहरे दिनों में यदि गाँव का एक मनुष्य कमाता तो सारे गाँव को खिलाता। संयुक्त परिवार की इस प्रथा में संरक्षण और मानवता का भाव अधिक है, आर्थिक समस्या कम। परन्तु तब के और आज के इस संयुक्त परिवार में आकाश-पाताल का अन्तर है तब (और किसी सीमा में आज भी) एक व्यक्ति सारे घर के संरक्षण का भार अपने ऊपर लेकर सारी व्यवस्था स्वयं कर लेता। इसमें सन्देह नहीं है कि कमाऊ सदस्य अपना भाग अवश्य देता परन्तु उत्तरदायित्व घर के प्रबन्धकर्ता "बड़े काका" पर रहता है। इस प्रथा में घर के उस निठल्ले सदस्य का भी संरक्षण हो जाता जिसे शायद आजकल की प्रथा में कहीं स्थान ही नहीं, जिसे आज पेस्ट और पेरासाइट कहकर धुतकारा जाता है। इससे अधिक इसमें मानवता का पर्याप्त हाथ था। आजकल के इस ऊहापोह में मनुष्य जितना कर्मनिष्ठ बन गया है उतना ही विज्ञान और मेमन ने उसे अधिक स्वार्थी बनाया है। तभी आज वह पुरानी लीक का अनुयायी न बनकर नया विधान चाहता है, परन्तु उसके इस नवविधान में सहृदयता का अभाव है, मानवता का शोषण है, और है अर्थ-परायणता। धनदेव के सामने सभी नाते, सारी सहृदयता और सारी सहानुभूति फीकी पड़ जाती है। मानवता और नैतिकता विज्ञानवाद और भौतिक अभिसिद्धि की कालिमा में छिप जाती है। इस नवीन प्रथा में 'मानव मानव के लिए' उक्ति कहीं घट नहीं सकती। परन्तु तब मानव का जीवन तभी सफल था जब वह दूसरे की कुछ सहायता कर सके, उसके किसी काम आये उसके दर्ददिल की दवा कर सके। तब का सिद्धान्त था:—

"दर्ददिल के वास्ते
पैदा किया इनसान को,
वरना ताअत के लिए
कुछ कम न थे फर्रोबियाँ।"

सच्ची बात तो यही है कि मानव मानव के लिए बना, मानव मानव के काम की चीज न होता तो अन्य लेख के लिए फरिश्ते कुछ कम न थे। ऋग्वेद में तब के मानव की व्याख्या करता है:—

"मोघमन्त्रं विन्दते अप्रचेता,
सत्यं वग्रमि वध इत्स तस्य
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं,
केवलायो भवति केवादी।"
ऋग्वेद ९०।९९७।६

कितना पुष्ट प्रमाण है। स्वयं खाने वध्य समझा गया और केवल अपने आप खिलानेवाला अर्थात् अकेले खाने पाप का भागी बन जाता है। सारी में तब के समाज की सुन्दर व्याख्या है। था तब के संयुक्त परिवार-प्रथा का ज्वलन्त और मूलभूत सिद्धान्त। वैमनस्य और स्वार्थ परायणता का ही न था। भारत सतत् अपनी विभूति को दान में, दक्षिणा में, एवं आवेश आकर परायों को देता आया है। इसका साक्षी है। वे विभूतियाँ उन में पनप कर एक नये ही रूप में संसार सामने आईं। संसार को वे मौलिक लगीं और उनसे प्रभावित हुआ। ही बात इस प्रथा के साथ शायद ऊबकर भारत अब संयुक्त परिवार-प्रथा को जो कि एक प्रकार से समाजवाद का छोटा-सा रूप तिलांजलि देना चाहता है। योरप-निवासी जिस समाजवाद को अपनाने का अब कर रहे हैं हम उसे त्याज्य समझने हैं। शायद इसमें भलाई कम हो बुराई अधिक।

भारत को कब सिर उठाने का अवसर मिला है? लोदियों ने छोड़ा, तो मुगलों ने पकड़ा, मुग़ल चले तो अँगरेज आये। अँगरेजों ने इसकी रही-सही सम्पत्ति भी उड़ाकर अपने साथ-साथ निर्धनता का भी पूरा राज्य जमाया। इस यह दशा है कि भारत की जनता महत्त्वपूर्ण भाग को दो जून रोटी भी मिलती और यदि उन्हें सम्मिलित परिवार से अलग रखा जाये तो शायद वह जून रोटी भी न खा सकें। सम्मिलित परिवार-प्रथा में यदि एक भाई २५) रुपया और दूसरा १२५) रुपया कमा लेता है दोनों को प्रायः समान अधिकार होते हैं। दोनों परस्पर प्रेम से रहते हैं वैभिन्य और मनोमालिन्य को उनमें ही नहीं मिलता और वह अपना काम लेते हैं। यदि दोनों अलग-अलग रहें सम्भव है कि इनके आपस में द्वेष, मत्सर आदि दुर्भाव जागृत हों और वह दूसरे से घृणा करें।

इस प्रकार हम कह सकते हैं साधारण से संशोधनों के द्वारा नव-दम्पति जीवन-निर्माण कर सकते हैं। वह सम्मिलित परिवार में भी रहें और स्वतन्त्र जीवन भी बितायें। ऐसा करने से नवयुवक दम्पति को ही अधिक लाभ होगा। आजकल बहुत प्रकार की जटिल तबदीलियाँ में आई हैं। दम्पति एक दूसरे से प्रेम रखते हुए भी बहुत से बाह्य प्रभावों के कारण एक दूसरे से ऊब जाते हैं। इसलिए आवश्यक हो गया है कि दम्पति के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रभावशाली बातें हों। एक रसता के सम्बन्ध में भी आज बहुत बातें होती रहती हैं और हैं भी यह खटके की बात। इस से बचने के लिए नव-दम्पति को युक्तियाँ ढूंढने की आवश्यकता है। एक स्थान पर जोन ने 'मेरिज बिजेनेस' पुस्तक में लिखा है "स्त्री और पुरुष को चाहिए कि अपने प्रेम अमर बनाने के लिए समय-समय एक दूसरे से दूर रहा करें। इससे विवाहित जीवन में एक दूसरे के प्रति आकर्षण रहता है। नहीं तो रोज-रोज के से कुछ समय बाद स्त्री-पुरुष एक दूसरे से ऊब जाते हैं।" पृथक् परिवार में

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

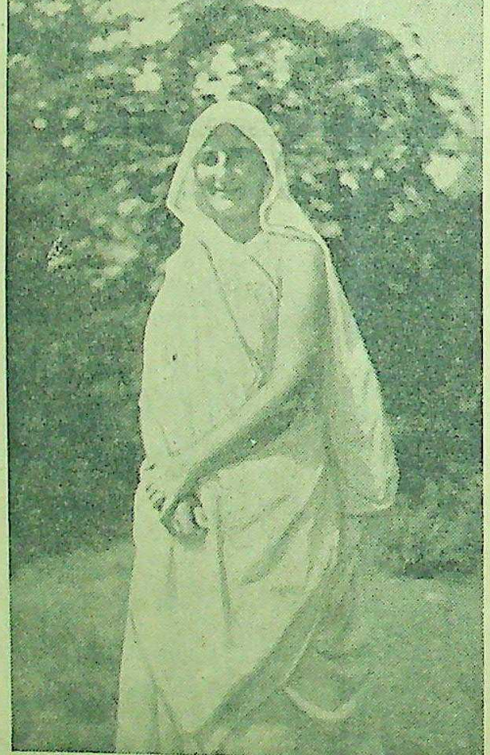

महात्मा गांधी की शिष्या मीराबेन जो संयुक्त प्रांतीय कांग्रेस सरकार के 'अधिक अन्न उपजाओ' आन्दोलन के कार्य में सलाहकार बनाई गई हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्तीय संवाददाताओं के पत्र

बिहार साहित्य-विद्यालय

...लिए राजेन्द्र बाबू का अपील

...देवदह साहित्य-महाविद्यालय में ...ग्राम-शिक्षा के अलावा समग्र ग्राम-...शिविर भी खुला है और प्रायः ...विद्यार्थियों की समग्र ग्रामसेवा शिक्षा ...हो रही है। साहित्य-महाविद्यालय में ...विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं। मकान ...भाव के कारण विद्यार्थियों की संख्या ...बढ़ाई नहीं जा सकती। विद्यालय ...लोग इस चिन्ता में हैं कि कुछ ...बनवाये जायें इसलिए ईंटों आदि ...आयोजन आरम्भ भी कर दिया गया ...यह स्पष्ट है कि यह काम बिना ...नहीं हो सकता। मुझे जब-जब ...मिला है, मैंने इस विद्यालय को ...इसके काम से सन्तोष है। मैं आशा ...कि दानी सज्जन इसकी सहायता ...इसकी उपयोगिता बढ़ायेंगे और यश ...होंगे। सहायता इस पते पर भेजें—

...सचिव, राजेन्द्र साहित्य-महाविद्या-...देवदह, पोस्ट बिरजूमिलकी (पटना)

—राजेन्द्रप्रसाद

* * *

बिहार-प्रान्तीय कांग्रेस वर्किंग कमेटी ...बाबू बैद्यनाथप्रसाद चौधरी ने ...लिखित वक्तव्य प्रकाशनार्थ भेजा ...—

आज दिन भर सेवदह (पटना) ...में समग्र ग्राम सेवा-शिक्षण शिविर ...विद्यार्थियों तथा कार्यकर्त्ताओं के साथ ...। शिक्षार्थियों ने यहां रहकर जो ...प्रान्त की है तथा आगे के उनके ...के बारे में जानकारी हासिल ...प्रसन्नता हुई। आशा है शिक्षार्थीगण ...विखरकर अपने कार्य-क्षेत्र में जाकर ...के कार्य में अपने को लगाकर यहां ...सिखाने में जो परिश्रम तथा खर्च ...किया है उसे सार्थक करेंगे। शिक्षण-...के अतिरिक्त यहाँ साहित्य की ...के लिए स्थायी रूप से विद्यालय भी ...प्रसन्नता के सञ्चालकों से जानकर प्रस-...है कि मकान का शीघ्र प्रबन्ध करके ...स्कूल प्रारम्भ करने तथा विविध ...को चलाने तथा उसकी शिक्षा का ...करने का उनका पक्का इरादा है। ...के गाँवों में वस्त्र स्वावलंबन के ...भी प्रारम्भ करने का आयोजन ...है। दानी सज्जन अपनी उदार ...से इस उपयोगी संस्था को मदद ...संस्था को देश तथा समाज की अधि-...के उपयुक्त बनने में सहायता ...

—संवाददाता

...देशमें गत ता० २३ अप्रैल को ...काली कमलीवाले क्षेत्र की कार्य-...की बैठक बाबा काली कमलीवाले ...हुई। श्री महन्त शान्तानन्दनाथ के सभा-...करानन्द भारती, भक्त-प्रवर ...गोयन्दका, सेठ नारायणदास ...श्री रतनमल नेपाली, श्री ...शीहार, श्री रामाप्रसाद मुकर्जी, ...विशेष रूप से उपस्थित थे। ...व्यय का ब्योरा पेश हुआ ...कार्यवाही स्वीकृत हुई।

...शान्तानन्दनाथ ने यह प्रस्ताव ...कि ऋषिकेश उत्तराखण्ड में एक ...है, जहाँ क्षेत्र की ओर ...पाठशाला आदि का ...है। वहाँ संस्कृत शिक्षा के ...शास्त्री के उच्चकोटि के विद्वान् ...द्वारा विशेष अध्ययन ...। साथ, महात्मा ...अपने इच्छित शास्त्रों को पढ़कर अपनी ज्ञान-पिपासा को पूर्ण करें। सर्वश्री बाजोरिया और मुकर्जी के समर्थन करने के बाद सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पास हुआ प्रारम्भ में इसके लिए दस हजार रुपया वार्षिक व्यय करने का निर्णय किया गया और उसकी व्यवस्था के लिए महन्त जी तथा गोयन्दका जी की एक कमेटी बना दी गई।

महन्तजी का दूसरा प्रस्ताव पेश हुआ कि साल में कम से कम एक बार कार्यकारिणी की बैठक ऋषिकेश में हुआ करे। यह भी सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ। भविष्य में क्षेत्र की ओर से एक पंचांग निकालने की भी योजना बनाई जा रही है। क्षेत्र के कर्मचारी संघ का प्रार्थनापत्र जिसमें प्राविडेंट फण्ड की तथा अन्य माँगें पेश की गई थीं, फिलहाल प्राविडेंट फण्ड की माँग स्वीकृत की गई।

११ आदमियों का एक एडवाइजरी बोर्ड स्थापित करने का निर्णय हुआ, जिसकी बैठक हर महीने या हर दूसरे महीने हुआ करेगी। यह बोर्ड क्षेत्र के प्रत्येक कार्यों की गतिविधि की देख-रेख करेगा, और कार्यकारिणी को क्षेत्र की उन्नति के सम्बन्ध में अपनी योजनायें पेश किया करेगा।

—संवाददाता

❀ ❀ ❀

वृन्दावन बलवा केस अगस्त सन् ४२ के दो राजबन्दी श्री प्यारेलाल तथा लालोजी मथुरा जेल से रिहा होकर आ गये। अभी वृन्दावन केस के ६ राजबन्दी और हैं।

वृन्दावन के महिला-समाज में राष्ट्रीय भावनाओं का जोर दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। ब्रजनारी मण्डल की सभा में श्रीमती प्रकाशकुमारी गोस्वामी ने बड़ा महत्त्वपूर्ण भाषण दिया। आपने खादी के प्रचार के लिए जोरदार अपील की। आप इस प्रान्त के कांग्रेसी नेता व भूतपूर्व शिक्षा मंत्री पंडित प्यारेलाल जी शर्मा की भतीजी हैं। मण्डल की महिला सदस्य चर्खा का भी प्रचार करनेवाली हैं। सभी महिला सदस्यायें तिरंगे राष्ट्रीय बैज लगाकर सभा में आती हैं ब्रजनारी मण्डल की महिला भाइ-बहनों से एक निवेदन है कि वह अपने यहाँ से पुरानी सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का साहसपूर्ण क़दम उठावें। परदा-प्रथा का निवारण, लड़कियों की शिक्षा और अपने अन्दर ऊँचे भावों का सृजन यही हमारी प्रार्थना है।

वृन्दावन म्यूनिसिपल बोर्ड यहाँ के बन्दरों को पकड़वाना चाहता है। बोर्ड में इसका निश्चय भी हो गया है। ठेके के लिए बाहर से टेण्डर माँगे गये हैं।

—संवाददाता

❀ ❀ ❀

देशनोक (बीकानेर) में नौरात्र पर विराट् मेला हुआ। मेले में आसपास के सहस्रों यात्री आये। बीकानेर से यहां के लिए स्पेशल ट्रेनों का इन्तजाम राज्य-द्वारा किया गया था। इस अवसर पर अमरावती के प्रसिद्ध पत्रकार बाबू आशाकान्त जी बी० आचार्य भी पधारे। तरुण-मंडली ने आपका अध्यापक श्री रामदत्त नांकृत्य की अध्यक्षता में स्वागत किया। करणीमाता के दर्शन के बाद दूसरे दिन आपको स्थानीय सार्वजनिक संस्थाओं का निरीक्षण कराया गया। करणी-मंडल-द्वारा संक्षिप्त पुस्तकालय, वाचनालय, व्यायामशाला आदि देखने के बाद प्रसिद्ध वैद्य मोहनलाल कोठारी आयुर्वेदालंकार द्वारा आमंत्रित किये जाने पर आपने करणी-आयुर्वेदिक फार्मेसी (तथा जैन-जवाहिर-मंडल) का भी निरीक्षण किया। श्री आशाकान्त जी ने करणी-मंडल द्वारा मेले पर की गई व्यवस्था की सराहना की। सांकृत्य जी की ओर से आपको स्नेहभोज दिया गया।

—संवाददाता

* * *

गड़ेर (गोरखपुर) में गत २१ अप्रैल को एक सार्वजनिक सभा प्रायः १०,००० जन-संख्या की उपस्थिति में प्रसिद्ध नेता परमहंस श्री बाबा राघवदास जी के अभिनंदनार्थ हुई। स्थानीय रईस और भूतपूर्व आनरेरी मजिस्ट्रेट (कांग्रेस) बा० रामगुलाम साहि ने अभिनंदनपत्र पढ़ा और जनता की ओर से २५९।)। की थैली बाबा जी को समर्पण की। बा० धर्मार्थ औषधालय नामक संस्था का बाबा जी द्वारा शिलान्यास भी हुआ। खाद्य सामग्री उत्पादनार्थ प्रोत्साहन देने को उन्होंने अपने हाथों शाक-तरकारी का बीजारोपण भी किया। बाबा जी और बाबू विश्वनाथ राय जी के भाषण भी हुए।

—साहब साहि

* * *

सागर में ता० २१ अप्रैल को सरस्वती वाचनालय में श्री वासुदेवराव जी सूबेदार की अध्यक्षता में आजाद हिन्द-सेवा-दल का निर्माण हुआ। इस दल के उद्देश्य होंगे—जिले की सब प्रकार की सेवा करना, सब प्रकार से साम्प्रदायिक भावनाओं से अलग रहना। जाति-भेद की भावनाओं से अलग रहना। विचार-स्वातंत्र्य को रखते हुए दल का प्रत्येक सदस्य, जब तक वह इसका सदस्य रहेगा, दल के नियमों या विधान का पालन करेगा। —लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

* * *

प्रयाग हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति तारीख ५ मई १९४६ को दिल्ली में होगी। बैठक में निम्नांकित प्रस्ताव भी विचारणीय विषयों के अन्तर्गत लिया जायगा :—

कुछ विद्वानों को साहित्य वाचस्पति उपाधि देने के सम्बन्ध में विश्वविद्यालय परिषद् के निश्चय पर विचार किया जायगा। स्थायी समिति की बैठक दीवान हाल में न होकर बिड़ला मन्दिर में होगी, वहीं समिति के सदस्यों के टिकने का प्रबन्ध भी किया गया है।

—प्रबन्ध-मंत्री

* * *

बीकानेर में राजस्थानी-साहित्य-पीठ की ओर से जसवंत कालेज (जोधपुर) के प्रोफेसर सोमनाथ गुप्ता के सम्मान में एक बृहद् साहित्यिक गो० और जलपान का आयोजन किया गया। उपस्थित लोगों में डा० के० एन० गुप्ता, कुमारी राम, निर्मला गुप्ता, नरोत्तमदास स्वामी, शंभूदयाल सक्सेना, विद्याधर शास्त्री के नाम उल्लेखनीय हैं। प्रोफेसर गुप्ता और आगत विद्वुषियों ने पीठ की ओर से किये जानेवाले राजस्थानी-साहित्य-सम्बन्धी कार्यों की सराहना की।

—आशाकान्त बी० आचार्य

* * *

नई दिल्ली डालमियां जैन-निवास से प्रतिवर्ष प्राप्त होनेवाले श्री हरजीमल डालमियां पुरस्कार की स्थायी समिति ने अपने हाल की मीटिंग में यह निश्चय किया है कि पुरस्कार के लिए पुस्तकें १८ जुलाई तक भेजी जा सकती हैं। अप्रकाशित ग्रन्थ यदि एक से अधिक संख्या में भेजे जावें तो वह भी स्वीकृत होंगे। पुरस्कार प्रतिवर्ष २१०० रु० का दिया जाता है। पुस्तकें सिक्रेटरी, ९ मानसिंह रोड, नई दिल्ली के पते पर भेजी जानी चाहिए।

—संवाददाता

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयां—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

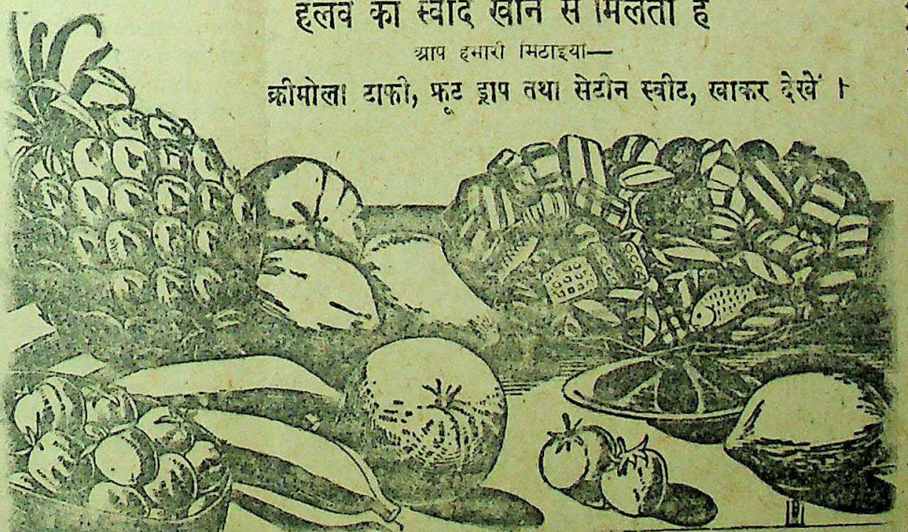

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'स्वामि-भक्त' फिल्म में क्या होगा ?
श्रीमती उषा मंत्री निर्मात्री के रूप में आ रही हैं !

लेखक, श्री उमेश जोशी

"उषा चित्र" प्रोडक्शन का सुन्दर फिल्म "स्वामि-भक्त" का इस वक्त शूटिंग चल रहा है, दादा मलिक के डायरेक्शन में। इस चित्र की कहानी सुप्रसिद्ध डायरेक्टर गुरुवर दादा गुरुजाल ने लिखी है। इसी से कहानी की लोकप्रियता का अन्दाज लगाया जा सकता है। दादा गुरुजाल की अब तक जितनी भी कृतियाँ निकली हैं, वह सब उच्च कोटि की हैं। उन कृतियों को जनता ने दिल खोलकर अपनाया है। इस फिल्म के पात्र हैं--उषा मंत्री, सुभाष (एक नया हीरो) गौहर कर्नाटकी, सत्या रानी तथा कौलाटकर, बलपति एवं बेबी कुमुद। चित्र की निर्मात्री ने बड़े साहस के साथ फिल्मी-दुनिया में उत्कृष्ट चित्र- निर्माण करने की ओर क़दम बढ़ाया है। श्रीमती उषा मंत्री स्वयं एक सफल अभिनेत्री हैं। उन्होंने अब तक कई चित्रों में कार्य किया है। अब वह जनता के सामने निर्मात्री की शक्ल में भी आ रही हैं। आपका यह सदा से सिद्धान्त रहा है कि देश को ऐसे चित्र

सुप्रसिद्ध अभिनेत्री श्रीमती उषा मंत्री और उनके पति श्री बलवन्त मंत्री।

प्रदान किये जाने चाहिए, जिससे हमारे युवक उन चित्रों को देखकर जीवन के प्रशस्त मार्ग की ओर बढ़ सकें। अब वह अपनी फिल्म-कम्पनी के द्वारा अपने इस उज्ज्वल आदर्श को पूरा करेंगी। आपके सामने धन का इतना बड़ा सवाल नहीं है जितना कि युवकों को जिन्दगी के ठीक मार्ग की ओर निर्देश करने का। आज फिल्मी-दुनिया में किसी भी अभिनेत्री का इतना साहस नहीं हुआ कि वह युग के अनुसार चित्र-निर्माण कर सके। पहले तो प्रोड्यूसर के रूप में महिलाएँ केवल दो ही एक हैं। जो हैं भी वह भी 'बाक्स आफिस' के लिहाज से चित्र का निर्माण करती हैं। श्रीमती उषा मंत्री का सिद्धान्त दोनों हैं। 'बाक्स आफिस' के लालच में आप चित्र की नैतिकता नहीं गिरने देंगी।

शूटिंग-कार्य द्रुतगति से लक्ष्मी प्रोडक्शन में चल रहा है। सेठ चिम्मनलाल त्रिवेदी ने दादा मलिक को हर किस्म की सुविधायें दी हैं। "स्वामि-भक्त" का प्लाट सुन्दर है चित्र प्रगतिवादी तथा जीवन-संघर्षों से युक्त है।

"स्वामि-भक्त" की कहानी एक गाँव से प्रारम्भ होती है। जन्माष्टमी का उत्सव मनाया जा रहा है। गाँव के सब लोग जीवन के सम्पूर्ण विषाद को दफनाते हुए उत्सव की रंगीनी में संलग्न हो रहे हैं। गाँव के निकट एक पानी का विशाल बाँध है, जिससे नगर को बिजली सप्लाई की जाती है। एकाएक बाँध टूट जाता है। गाँव में रंग में भंग हो जाता है। सारा गाँव बह जाता है। एक कुटुम्ब का बाप अलग हो जाता है। माँ-बेटी एक साथ अलग हो जाती हैं। दोनों समय के चक्कर में पड़कर नसीब के टूटे हुए चिराग़ की धुँधली रोशनी में एक गाँव में मिलते हैं, लेकिन दोनों एक दूसरी शकल में। बेटी बड़ी हो जाती है, और अध्यापिका का कार्य उसी गाँव में करने लगती है। बाप एक सेठ के यहाँ नौकर के रूप में रहता है, क्योंकि उस सेठ की जान उसने बचाई थी। इसी लिए सेठ उसको अपने यहाँ रख लेता है। नौकर की तरह नहीं, बल्कि परिवार के एक सदस्य की हैसियत से। कुछ दिनों बाद सेठ के लड़के और अध्यापिका में आपस में प्रेम हो जाता है। यह प्रेम इतना बढ़ता है कि प्रणय-रूप ग्रहण कर लेता है। सेठ का लड़का मास्टरानी से शादी करने के लिए तैयार होता है। शादी होती है। परन्तु भावेंर पड़ने से पूर्व सेठ का नौकर मंडप को तोड़ डालता है। इसलिए शादी नहीं होने पाती। नौकर कहता है—"मैंने इस घर का नमक खाया है, मैं अपने सामने सेठ के लड़के से एक ग़रीब मास्टरानी के साथ शादी नहीं होने दूँगा। ग़रीब और अमीर का, क्या सम्बन्ध? किसी बड़े आदमी के यहाँ सेठ के लड़के की शादी होगी।" जब यह खबर लड़की की माँ को मालूम होती है तो वह लड़की को साथ लेकर सेठ के नौकर के पास जाती है और कहती है—"तुमने प्रेम की दुनिया में भी ग़रीबी और अमीरी का बखेड़ा खड़ा कर दिया। जब दोनों राजी हैं, तब फिर तुम्हें क्यों एतराज होना चाहिए?"

सेठ का नौकर जवाब देने से पूर्व आई हुई औरत को देखकर कह उठता है—"अरे लक्ष्मी तुम कहाँ?" और दोनों पति-पत्नी मिल जाते हैं। नौकर कहता है—"तो क्या मैं अपनी बेटी के जीवन का रोड़ा बन गया?—लेकिन हाँ मैं अपने कर्तव्य-मार्ग से नहीं डिग सकता, क्योंकि मेरे सामने स्वामिभक्त का सवाल है। मरते दम तक मैं स्वामी की भक्ति करूँगा।"

लक्ष्मी ने कहा—"आपको भक्ति करने से कौन रोकता है? हम ग़रीब सही लेकिन दिल के तो धनी हैं। वास्तव में धनवान् वही व्यक्ति है जो दिल का बड़ा हो। जिसका दिल ही दरिद्र है वह कभी दौलतमन्द नहीं हो सकता। इसलिए आप "स्वामि-भक्ति" कीजिये, अपने कर्तव्य मार्ग से च्युत न होइए परन्तु मेरी बेटी की शादी हो जाने दीजिए।" अन्त में दोनों की शादी हो जाती है। इस तरह कहानी समाप्त होती है। एक नौकर का मालिक के प्रति क्या कर्त्तव्य है, इस विमल आदर्श को इस कहानी में चित्रित किया गया है। आज के युग में नौकर और मालिक की समस्या बड़ी जटिल होती जा रही है। इन दोनों के बीच में ज़मीन-आसमान का फर्क पड़ता चला जा रहा है, दोनों के बीच में कटुता बढ़ती जा रही है। ऐसे समय में "स्वामि-भक्ति" हमारे लिए सहायक होगा। इस चित्र की बड़ी आवश्यकता थी। नौकर और मालिक की समस्या को अब तक किसी ने हमारे सामने नहीं रक्खा। श्रीमती उषा मंत्री का सिनेमा-संसार में यह सराहनीय कार्य है।

हमराही—आधुनिक समस्याओं का सुंदर फिल्म

लेखक, श्री रामचंद्र अस्थाना

'हमराही' एक ऐसा फिल्म है जिसमें आजकल की देश की कठिनाइयों और परिस्थितियों को चित्रित किया गया है। अन्य फिल्मों की भाँति इसकी कथा नहीं है जिसमें देखते ही देखते प्रेम हो जाता है और बीच में थोड़ा-सा बिछुड़ करके अन्त में फिर मिलन हो जाता है। जितनी भी घटनायें चित्रित की गई हैं, सभी प्रतिदिन के जीवन में आती हैं। हम रोज़ देखते हैं कि राशनिंग की दूकानों पर दूर तक लम्बी लाइन लगी हुई है। वास्तव में जैसा कि चित्र में दिखाया गया है, ठीक है कि हम मोटरों और बसों में बैठे चले जाते हैं और उन ग़रीबों की तकलीफों और मुश्किलों की तरफ ध्यान भी नहीं देते।

यह बात नहीं है कि हमारे देश के धनी लोगों के हृदय में दया नहीं है, उन्हें अपने देश से प्रेम नहीं है या अपने ग़रीब भाइयों के प्रति ध्यान नहीं है पर वास्तव में उनके हृदयों पर कोई असर नहीं है। वह नहीं जानते कि बाहर ग़रीबों पर क्या बीत रही है? हालाँकि 'हमराही' फिल्म में इसी समस्या पर प्रकाश डाला गया है पर फिर भी उसे देखकर बहुत कम लोगों के हृदय पर असर देगा। उनका ग़रीबों की मजबूरियों और कठिनाइयों की ओर ध्यान ही नहीं जाता। जब मैं फिल्म देख रहा था तो मेरे पास बैठे एक व्यक्ति कह रहे थे कि इस खेल में तो पैसे खराब हो गये। ऐसे व्यक्तियों से क्या आशा की जा सकती है?

अभी हाल में कुछ चित्र जैसे रामराज्य, विक्रमादित्य, श्रीकृष्णार्जुन युद्ध इत्यादि अच्छे बने हैं पर वह कितने लाभदायक और देश की परिस्थितियों को सुलझानेवाले हैं। देश को किसी ऐसे महान् चित्र की आवश्यकता है जो हर धनी व्यक्ति पर असर कर सके। उन्हें अपने देश की सच्ची अवस्था का ज्ञान करा सके, और राष्ट्र को सहायता देने में योग दे सके।

हम महीने के अन्त में सौ या पचास रुपया पाकर खुश हो जाते हैं। पर यह नहीं जानते कि इन थोड़े से पैसों के लिए हमारे मालिक ने हमसे हजारों [illegible] काम लिया है। उसने हमारा [illegible] सुख और जीवन की सच्ची खुशियाँ [illegible] ली हैं। और तभी 'अनूप' ने जो फिल्म [illegible] नायक है कहा है कि आप लोग [illegible] थोड़े से पैसों के लालच से देश के [illegible] दिमाग़ खरीद रक्खे हैं। अगर वह [illegible] नहीं करते तो पेट पालने का प्रश्न [illegible] है। यही नहीं, बल्कि जिस आराम [illegible] शान से वह रहते हैं, वह नहीं [illegible] उससे कुछ भी कम आराम से रहें। [illegible] तर देखा गया है कि मजदूर [illegible] को तैयार हो जाते हैं जब भी [illegible] सख्ती की जाती है पर चित्र में [illegible] उन्हें बताया है कि उन्हें शान्ति [illegible] लेना चाहिए, सभा करनी चाहिए [illegible] अपनी माँगें पेश करनी चाहिए।

चित्र में विश्वकवि रवीन्द्रनाथ के दो बंगाली गीत हैं। दोनों गीत ही मधुर और सुन्दर हैं। एक गीत में नृत्य भी है। नृत्य में कला है। विशेष इस चित्र की यह है कि नायक तथा वैसे भी किसी भी अभिनेता तक नहीं दीखते जब कि 'मन की और बीसों ऐसे चित्र हैं जहाँ निर्देशक समझते हैं कि आँखों को खोलकर ही नृत्य-कला है। इसका कारण यह फिल्म-व्यवसाय का वातावरण ही गन्दा है कि उसके कलाकार थोड़े से के लिए किसी तरह का प्रदर्शन तैयार रहते हैं। एक मुख्य अभिनेत्री एक दफा मुझे पत्र के उत्तर में जिसका मतलब पर्दे के पीछे [illegible] बातें रोज होती हैं कि जिन पर [illegible] की किताबें लिखी जा सकती हैं।

मुझे यह देखकर बहुत प्रसन्नता कि 'हमराही' चित्र में क़रीब-क़रीब कलाकार नये और उच्च घरानों के विशेषकर श्री बी० एस० कपूर जो का पार्ट कर रहे हैं बी० एस-सी० हैं मेरे कालेज के सहपाठी हैं। विनीता और राधेमोहन चटर्जी भी अच्छे के ही मालूम होते हैं। विमलराय डेरेक्टर और न्यू थियेटर्स जैसी फिल्म-ने दिखा दिया है कि चित्र की के लिए यह आवश्यक नहीं कि उसमें रुपये मासिक पानेवाले पात्र हों। कहीं पर अभिनय बिगड़ गया है पर बुरा नहीं है कि दर्शकों को बुरा मालूम विनीता बोस का अभिनय बहुत ही हुआ है।

अनूप के संवाद बहुत ही अच्छे जैसे 'हँसी की बात न होती तो हँसी आती' 'खाना खाकर नहीं बल्कि खाये काम करते हैं, इत्यादि। अन्तिम बहुत ही सुन्दर है जब गोपा अनूप के पर आकर गिरती है और फिर 'हमराही' साथ-साथ आगे बढ़ते हैं। सुन्दर गान। 'बढ़ते चलो जवानों' फोटोग्राफी और ध्वनि भी अच्छी है। भारतीय को यह चित्र देखना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपराध स्त्री का है या पुरुष का ?

भारत के सर्वश्रेष्ठ एवं सुप्रसिद्ध बम्बई से एक चेतावनी प्रकाशित है जिसमें एक नवयुवती के पिता ने समाज के एक मनचले नवयुवक के कुछ जघन्य कार्यों का वर्णन किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि नवयुवती के पति ने अपनी कुछ काली करतूतों को न केवल अपने उच्च सरकारी पद से धोया है वरन् अपनी स्त्री तथा दो शिशुओं को भी त्याग दिया है और अब वे दूसरा विवाह सम्पन्न करने के लिये उद्यत हैं। विज्ञप्ति में कहा गया है कि आचरण निन्दीय है, उनके लालच की कोई सीमा नहीं, तथा वे द्वितीय स्थान पर भी इसी प्रकार व्यवहार करके अपना जाल रचेंगे। प्रकाशक का अभिप्राय है कि चेतावनी का इष्ट मित्रों और सम्बन्धियों, विशेष कर उन मनुष्यों के प्रति जिनके कि विवाह के योग्य पुत्रियाँ हैं प्रचार हो। ऐसा सामाजिक विषय अवश्य हमें अपनी ओर आकृष्ट करता है और इस कुरीति एवं अभिशाप पर विचार करते हुए हम अपना निर्णय देने के लिये बाध्य हैं।

स्पष्ट रूप से तीन प्रश्न हमारे सम्मुख आते हैं (१) परित्यक्ता पत्नी का क्या होगा, (२) नवयुवक महाशय अन्य स्थान पर विवाह करने में सफल होंगे अथवा नहीं और (३) दोष किसका है और क्या इस प्रकार विज्ञापन करने से मनोभिलाषाएँ पूर्ण हो सकती हैं। अन्तिम प्रश्न इतना सरल नहीं जितना कि प्रतीत हम भूल से समझ लें। वास्तव में परित्यक्ता पत्नी की समस्या को लेकर ही चेतावनी प्रारम्भ होती है और उसी की कठिनाई को हल करके चेतावनी का अन्त हो सकता है। हम हिन्दू समाज के लिए भी उच्च वर्ण—वैश्य जाति के—दान कह रहे हैं और वर्तमान स्थितियों को देखते हुए, चाहे हम कितने ही उन्नत तथा प्रगतिशील क्यों न हों, ऐसी परित्यक्ता पत्नी के पुनर्विवाह की आयोजना कर सकते हैं और न उस स्त्री के लिये अपने लम्बे जीवन के लिये का कोई अन्य सरल और सुगम मार्ग पा सकते हैं। यह हमारी जागृति का स्वरूप, शिक्षा का प्रमाण और समझ की पराकाष्ठा है कि हम अपने लिये एक सम्बन्ध-विच्छेद का अधिकार चाहते हैं और दूसरी ओर हमारे लिये यह असम्भव है कि हम अपने लिये योग्य स्त्री खोज सकें। यदि ऐसी अवस्था है तो फिर हमें उचित है कि हम पतियों को अधिक स्वाधीन समझ कर कुछ विशेषाधिकार देकर प्रसन्न करने का प्रयत्न करें। सारे जीवन का फल सुखी होने से मिलता है दाम्पत्य जीवन में सुख के अतिरिक्त और कुछ आवश्यकता ही नहीं है। सुखी दाम्पत्य जीवन जभी होगा जब कि आजकल की फैशनेबिल नवयुवतियाँ अपना फैशन कुछ कम करेंगी, पतियों तथा अन्य मनुष्यों के मुँह लगना छोड़ देंगी; अपने उत्तरोत्तर बिगड़ते हुए स्वभाव को नम्र, मृदु और विनोदप्रिय बनायेंगी। सच पूछा जाय तो एक प्रसन्नवदन नारी ही अपने कटुवादी एवं क्रोधशील पति पर विजय पा सकती है। समानाधिकारों के लिये जो बहिनें आजकल दौड़ लगा रही हैं उनको यह याद रखना चाहिये कि उनकी वही गति होनी है जो कि पश्चिम में स्त्रियों की हो रही है। प्रकृति ने ही स्त्री को पुरुष से निर्बल पति बनाकर असमान कर दिया है। जब पत्नी में मतभेद होता है तो बहुधा दोनों ही उसके लिये उत्तरदायी होते हैं। अतएव यह माना कठिन है कि बम्बई वाली घटना के कारण पति महाशय ही हैं। अनुमान किया जा सकता है कि उनकी पत्नी ने भी इनको क्षुब्ध किया होगा और प्रसन्न करने में असमर्थ हुई होंगी प्रथम प्रश्न का उत्तर यही है कि ऐसी परिस्थिति में पत्नी के लिये अच्छे भविष्य की कल्पना तक नहीं की जा सकती।

नवयुवक महोदय के विवाह के लिये अति सुन्दर विज्ञापन समाचारपत्रों में निकल रहे हैं। उन्होंने उच्चतम शिक्षा प्राप्त की है और पुनः १०००) मासिक आय पर नियुक्त हैं। इस होनहार के लिये अन्य जाति को छोड़िये, अपनी ही जाति के अनेक मनुष्य अपनी २ पुत्रियां देने को तैयार हो जायँगे। संसार में स्वार्थ का प्रमुख स्थान है। भावावेश में यह कौन सोचेगा कि नवयुवक को उसके उस छोटे अथवा बड़े अपराध के लिये दण्ड मिलना चाहिये। जहाँ तक नवविवाहिता लड़की के भविष्य का सम्बन्ध है उसके अभिभावक आशा पर जीवित रहेंगे और साधारणतया यही कहा जा सकता है कि यदि वह लड़की भली निकलेगी, अपना प्रत्येक प्रयत्न पति के लिये करेगी और अपने मष्तिष्क पर संयम रक्खेगी तो कोई कारण नहीं कि वे दोनों सफल न हो।

ऊपर कहा जा चुका है कि दोष दोनों का है। हम जानते हैं कि हमे सर्वत्र आदान प्रदान की आवश्यकता है और यदि किसी ओर से भी उसमें कमी हुई तो फल विविध प्रकार की दुर्घटनाओ के रूप में हुआ करता है। अब हमें यह देखना है कि इस प्रकार विज्ञापन करने से उद्देश्य में सफलता मिल सकती है अथवा नहीं। जब इस प्रकार नवयुवक महोदय की करतूतों का विज्ञापन किया जाता है तो अपना विज्ञापन स्वतः ही हो जाता है। अच्छा तो यही होता यदि इस डैडलौक के स्थान पर कुछ समझौता हो जाता और एक बार फिर आनन्द का स्रोत उमड़ आता। यदि किसी अन्य लेखक को कुछ और सूझ पड़े जिससे कि लेख की समस्या का हल हो सके तो उनका परिश्रम मनुष्य जाति की सेवा ही कहलायेगा।

—विजयलक्ष्मी अग्रवाल

यूरोप का आजाद हिन्द संघ

(पेज ५ का शेष)

चरित्र तथा (४) संसार के भिन्न देशों की क्रान्तियों का इतिहास।

यह हुआ सेना-सम्बन्धी वर्णन। दूसरी ओर आजाद सिन्द-संघ ने यूरोप-स्थित सभी भारतीयों को तिरंगे झंडे के नीचे लाकर संगठित किया। यूरोप के सभी प्रमुख नगरों में इसकी शाखायें थीं। वहाँ के भारतीयों में सबसे अधिक प्रमुख श्री ए० बी० एन० नम्बीआर थे। नेता जी ने इन्हें संघ का प्रधान बना दिया और जब वे पूर्वी एशिया के लिए बिदा हो गये तब श्री नम्बीआर को आजाद हिन्द सरकार का एक मिनिस्टर बनाया गया। संघ के अन्य प्रमुख व्यक्तियों में से बाहरी मामलों के इनचार्ज डा० सुलतान, पेरिस शाखा के प्रधान श्री एम० बी० राव तथा डा० मलिक, मि० गनपिले, श्री सुरगुप्त और श्री कर्त्ताराम के नाम उल्लेखनीय हैं।

यूरोप का आजाद हिन्द-संघ प्रचार-कार्य भी बहुत सुचारु रूप से कर रहा था। "आजाद हिन्द" नामक एक समाचार-पत्र भी निकलता था। इसके अलावे संघ के अधीन तीन रेडियो थे। इनके नाम क्रमशः आजाद हिन्द रेडियो, नेशनल कांग्रेस रेडियो, आजाद मुस्लिम रेडियो थे।

नेता जी यूरोप से पूर्वी एशिया के लिए १९४३ के फरवरी मास में बिदा हुए थे। यूरोप से बाहर जाने का उनका यह दूसरा प्रयास था। इससे पहले जनवरी में नेता जी बर्लिन से रोम गये थे। वहाँ से उन्हें बाहर जाना था। परन्तु रोम से बिदा होने के समय थोड़ी ही देर पहले उन्हें पता चल गया कि ब्रिटिश गुप्तचरों को उनके इस प्रोग्राम के बारे में मालूम है। इसलिए उस बार वे न जा सके। पर इस बार नेता जी के बिदा होने का समय, स्थान, साधन सभी बातें बिलकुल गुप्त रक्खी गईं। बहुत थोड़े इसकी बाबत जानते थे। और वह रहस्य अब भी रहस्य ही है।

विद्यार्थियो, आगे बढ़ो

(पेज ६ का शेष)

बीज बो दें, विद्युत् के तीव्र यंत्र हो जायें जिसके दबाते ही क्रान्ति की तेजोमयी आभा जगमगाने लगे। तो, फिर क्यों न आगे बढ़ें? सुस्ती क्यों हो अधिक तीव्रता के साथ—दृढ़ होकर—काम करें। सबसे बड़ा इम्तहान तो अब है—अस्तु—छुट्टियों के यह दो महीने हमारी अकर्मण्यता को छुट्टी दे दें। राष्ट्र-कर्मयोगियों को चाहता है तो आज हम कर्मयोगी बनें; क्योंकि आजादी बलिदान माँगती है और बलिदान तो हमें देना ही है..... 'क़दम-क़दम बढ़ाये जा'.....

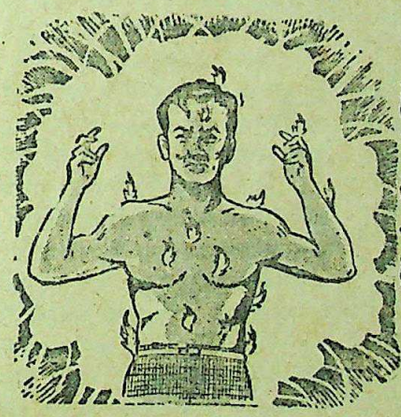

शारीरिक उष्णता के लिये...

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

आज से ही शुरू किजिए, सर्वत्र मिलता है।

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली तलुवों और आंखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग मे आग सी जलन, भोजन के बाद पेट मे जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, जड़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढा बालक वृद्ध, पुरुष स्त्री सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक हानिरहित है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निस्संकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके शीतल, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

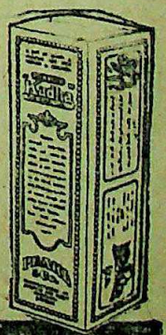

पर्ल कम्पनी आर्योषधी का रखाना बम्बई २७

एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

यू० पी० प्रतिनिधि दोसर एण्ड को०, बिरहना रोड, कानपुर।

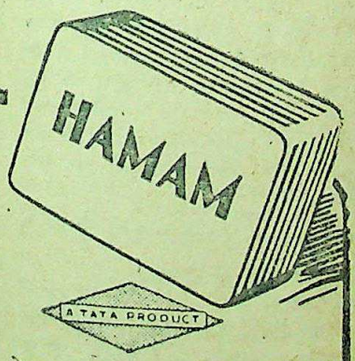

यह सदा आनन्ददायक है

हमाम से प्रतिदिन स्नान करने के बाद आप इसकी शीतलता और स्वास्थ्यदायक शक्ति के स्पर्शज्ञान का आस्वादन करेंगे।

अपने दुकानदार से हमाम माँगिये।

हमाम

सब के लिए बड़ा साबुन

टाटा आइल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मिलित परिवार की समस्या

(पेज १४ का शेष)

सम्भव ही न होगा कि स्त्री-पुरुष अलग-अलग रहें। दोनों पर जिम्मेवारियाँ होंगी, बच्चों के लालन-पालन, घर-गृहस्थी से उन्हें कब अवकाश मिलेगा और वह एक दूसरे से दूर रहें। सम्मिलित परिवार में एक आदमी का अभाव बिलकुल ही नहीं खटकेगा बल्कि समय समय पर बच्चों का लालन-पालन घर-गृहस्थी के अन्य सदस्यों पर आसानी से छोड़ा जा सकता है। इससे दम्पति अलग-अलग भी रह सकते हैं। दूसरे स्थान पर जोन केनेडे ने लिखा है :—"अगर विवाहित जीवन में कभी भी उतार-चढ़ाव साधारण से साधारण लड़ाई-झगड़े न हों तो वह जीवन एक-रस होकर धीरे-धीरे नीरस हो जाता है।"

अब सम्मिलित परिवार में होनेवाले अथवा दम्पति के बीच होनेवाले लड़ाई-झगड़ों को लीजिए, यदि यह दम्पति के लिए आवश्यक हैं तथापि इनका ज्यादा होना खतरनाक हो सकता है। हमारी संयुक्त परिवार-प्रथा में ऐसा होता है कि यदि दो सदस्य आपस में झगड़ें तो माता-बहन या दूसरे सदस्य इस झगड़े का निपटारा करते हैं। सम्भव है कि दम्पति के एकाकीपन में यही मामूली झगड़े महान और स्थायी झगड़ों के कारण बने, उनका निपटारा करने के लिए कोई मौजूद न होगा। प्रेम-सम्बन्धी मनोविज्ञान बड़ा सूक्ष्म होता है। साधारण-सी साधारण बातें महान् खतरे का कारण बनती हैं। क्या अच्छा हो यदि इस बीमारी से बचने के लिए उपचार मौजूद हों।

समाज में नैतिकता का होना आवश्यक है। प्राचीन भारत कितना सभ्य और उन्नत था, नीति उसमें कूट-कूटकर भरी थी, ऐसे हजारों प्रमाण हमारे सामने हैं। वर्तमान कितना कठिन और पेचीदा है। हमें इसे सरल और सीधा बनाना है। अपने जीवन को आदर्श जीवन बनाना है, आदर्श व्यक्ति से ही एक आदर्श समाज की नींव पड़ेगी। हमारा समाज तब कहीं ऊँचा उठ सकेगा जब हमारे जीवन के प्रत्येक अंग में नैतिकता होगी। वर्तमान समय में हम दो भाइयों को कहीं भी सम्मिलित परिवार में न पायेंगे, इसका कारण केवल हममें नैतिकता का अभाव होना है। हम नैतिकता को निभाना बिलकुल ही नहीं जानते हैं। २५) और १२५) वाले दो भाइयों को लीजिए, एक दाने-दाने के लिए तड़पता है और कहीं से आशा की क्षीण रेखा देखने के लिए लालायित है। दूसरा अपने ठाट-बाट में मस्त होकर भाई की इन दुःखपूर्ण घड़ियों को अपने लिए विनोद की घड़ियाँ समझता है। क्या यह जीवन है? या इसे संस्कृति और सभ्यता कहें?

नव-दम्पति भी यदि नैतिकता को निभाते हुए सम्मिलित परिवार में रहें और मा-बाप के प्रेम से वंचित न होकर अपने जीवन को स्वतंत्रतापूर्वक बितायें तो स्वतः समाज भी ऐसी ही लहर में बह जायेगा और धीरे-धीरे हमारे मार्ग के सभी रोड़े लुप्त हो जायेंगे। आज तक हमारा समाज पूर्वजों के इशारों पर नाचता आया है, हमें उसमें एक मीठी-सी क्रान्ति उत्पन्न करनी होगी। यह क्रान्ति अनिवार्य होगी, छिन्न-भिन्न रहने से यह कहीं व्यक्त होगा कि किन्हीं विषमताओं के झाड़-झंखाड़ को दूर करके संयुक्त प्रथा को ही मनोनकूल रूप से अपनायें। संयुक्त परिवार-प्रथा में दोष कुछ ऐसे नहीं जिनका सुधार असम्भव हो। हाँ, हमें तनिक उदार बनना होगा। सच्चे अर्थ में मानव बनना होगा, इतनी-सी बात अवश्य है।

वर्तमान जीवन कितना पेचीदा और संघर्षमय है। यदि हम उसे सरल, सीधा और सुखमयी न बनायें तो हमारा जीवन दिनोंदिन गिरता जायेगा और शीघ्र ही एक दिन हमारे समाज के अन्त का कारण बनेगा। आधुनिक अर्थ प्रदान युग में हमें चाहिए कि ऐसे स्वतन्त्र मार्ग का निर्माण करें जिससे हम बाप-दादा की वांछनीय रीतियों को निभाने के साथ-साथ अपने लिए एक स्वतन्त्र मार्ग भी बना सकें।

सम्मिलित परिवार में रहकर और उससे केवल खान-पान का सम्बन्ध रखकर हम अपने लिए स्वतन्त्र मार्ग बना सकेंगे। तीन भाइयों को लीजिए, तीनों कमाऊ हैं एक २०) कमाता, दूसरा पचास और तीसरा सौ। तीनों से अपनी-अपनी आय के अनुसार काट लिया जाये। शेष सभी बातों में यह स्वतन्त्र रहें। परिवार उसे अधिकार और जिम्मेवारियाँ निभाने का एक उत्साह बरता जायेगा जिससे उसका व्यक्तित्व भी उन्नति की ओर अग्रसर होता जायेगा। इनमें से कोई भी सदस्य हीनता अथवा निठल्लेपन का अनुभव न करेगा। तीनों स्वतन्त्र रहेंगे और अपना जीवन सुगमता से बिता सकेंगे। जब वर्तमान समाज इसे आवश्यक और अनिवार्य माने तो भावी दम्पति भी इस सुगमता का और पूर्वजों के मार्ग से काफ़ी सुविधा पायेंगे।

भावी दम्पति को यह काफ़ी सहायक होगा क्योंकि जब सबों के दृष्टिकोण स्वतन्त्र होंगे तो कोई कारण नहीं कि ऐसी हालत में उनका जीवन बहुत अंशों में आदर्श जीवन न बने। उस समय जीवन के हर एक अंग में स्वतन्त्रता होगी। एक दूसरे से सद्भावना होगी और प्रेम तथा उदारता रहेगी।

योरप कितना उन्नत और समृद्धिशाली है इसका कारण कुछ अंशों में यह है कि उन्हें मामूली-सी बातों के लिए रोना-धोना नहीं पड़ता। कम से कम पारिवारिक जीवन तो उनका शान्तिमय ही है, इसके लिए उनकी एक असाधारण-सी प्रथा है। वह पुत्र का विवाह करते ही उन्हें पृथक कर देते हैं और उसे जीवन-निर्माण के लिए अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार कुछ पूँजी देते हैं जिसे वह इच्छानुसार किसी व्यापार आदि में लगाकर अपना निर्वाह करते हैं। आगे चलकर इस प्रथा के कई भयंकर परिणाम निकलते जिनका चित्र हमें वहाँ के अर्थ-प्रधान विवाह तथा तलाकों से मिलता है। लेकिन भारतीय समाज में यदि दहेज, आतिशबाजी, आदि व्यर्थ के खर्चों के बदले वही पूँजी पुत्र और पुत्री दोनों के पिता इनके हवाले करें तो सम्भव है उनके पृथक् होने पर भी उन्हें कर्तव्य और मानवता का अधिक ध्यान रहे, केवल स्वार्थ-सिद्धि से वह काफ़ी दूर रहेंगे। उस हालत में पृथक रहनेवाला दम्पति जीवन का स्वतन्त्र तथा इच्छानुसार निर्माण करते हुए दूसरे सदस्यों यानी भाई बुद्ध, पिता, के भी दर्ददिल की दवा कर सकें। उसे जिम्मेवारी रहे कि विवाह के समय दी गई पूँजी केवल स्वार्थ-सिद्धि के लिए नहीं बल्कि आवश्यकता पड़ने पर दूसरे निकट-सम्बन्धियों की मदद के लिए भी व्यय करे। इससे उन सदस्यों का संरक्षण हो सकेगा जो निठल्ले और कामचोर ही न हों बल्कि किसी हालत में अपना जीवन निर्माण करन म असमर्थ हों फिर एक ओर वैयक्तिक जिम्मेवारी रहने के साथ सामाजिक सुविधायें भी रहेंगी और ऐसी हालत में मनोमालिन्य का कोई प्रश्न न रहेगा।

विधान क्या और कैसे बनता है?

(पेज १२ का शेष)

चाहिए। उसके आधार-भूत सिद्धान्त, यहाँ की विदेशी सरकार-द्वारा कुचली गई, पीसी गई शोषित जनता के हित और स्वार्थों के अतिरिक्त और हो ही क्या सकते हैं। अतः हमारे लिए यह जरूरी है कि जनता के प्रतिनिधियों-द्वारा बनी हुई विधान पंचायत द्वारा जनता के हितों और स्वार्थों से अपने भावी स्वतन्त्र विधान का आधार तैयार कर लें, और उनका जनता में भरसक प्रचार करें। उन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर वर्तमान राज्य को उखाड़ फेंकें, उस पर अधिकार करें और तब अपना विधान, अपने हितों व स्वार्थों के आधार पर तैयार करें। तभी हमारी विधान-पंचायत के पीछे आम जनता की शक्ति होगी और किसी भी नये क़ानून के पीछे इस शक्ति का होना अति-आवश्यक है।

आज के राज्य का एक प्रमुख सिद्धान्त है कि विदेशी पूँजी से यहाँ की पदार्थ शक्ति और जन-शक्ति का शोषण होता रहे; और इस प्रकार एक मुट्ठी भर आदमियों का समूह यहाँ की करोड़ों की संख्या की जनता पर हावी रहे। इस व्यवसाय में हमारे देश के पूँजीपति, जमींदार, ताल्लुक़ेदार और राजा और नवाब आदि भी शामिल हैं। इसलिए हमारे राज्य के विधान का आधार होना चाहिए कि यह अपार पदार्थ-शक्ति और जन-शक्ति यहीं की करोड़ों की संख्या की जनता के अँधिकार में रहे। इसी हालत में हमारा राज्य वास्तव में एक जनतावादी राज्य कहलाने का हक़दार होगा। एक वास्तविक स्वतन्त्र विधान में शासन की असली बागडोर जन-साधारण के हाथ में होनी चाहिए। केवल वोट देने का अधिकार ही काफ़ी नहीं है। बल्कि उसे यह अधिकार भी हो कि यदि उसके नुमाइन्दे, शासन की गद्दी पर बैठने के बाद अपने वादे पूरे न करें, अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति में लग जायें, तो वह उसे उस गद्दी से फिर हटा भी सके। दूसरे शब्दों में यह कहिए कि आम जनता का शासन पर पूर्ण रूप से अधिकार हो।

ऐसे सिद्धान्तों के आधार पर बने हुए विधान का निर्माण कुछ इने-गिने क़ानूनी विशेषज्ञ या वकील नहीं कर सकते, बल्कि यह कार्य तो जनता के क्रान्तिकारी, दृढ़-प्रतिज्ञ नुमाइन्दे ही कर सकते हैं। ऐसी विधान-पंचायत का निर्माण निमंत्रणों से नहीं होता है, बल्कि इसका निर्माण तो बढ़ती हुई विद्रोही, स्थापित राज्य के ढाँचे को तोड़ती और एक नये विधान के आधार-भूत सिद्धान्तों की घोषणा करती हुई, जनता करती है। जनता की यही फ़ौज स्थापित राज्य, उसके विधान और क़ानूनों को रद्दी की टोकरी में डालकर एक नये राज्य, नये विधान और नये क़ानूनों की स्थापना करती है।

गांधी-मीमांसा

इस पुस्तक में पं० रामदयाल तिवारी बी० ए० एल-एल० बी० ने गांधी जी के व्यक्तित्व और सिद्धान्तों की तर्कपूर्ण सुन्दर विवेचना की है। इसे आद्योपान्त पढ़ जाने पर गांधीवाद पूर्ण रूप से हृदयंगम हो जाता है। विद्वानों ने मुक्तकंठ से इसकी प्रशंसा की है। पृष्ठ-संख्या ८५०। सुन्दर सजिल्द प्रति का मूल्य ४) चार रुपये।

मैनेजर बुकडिपो
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

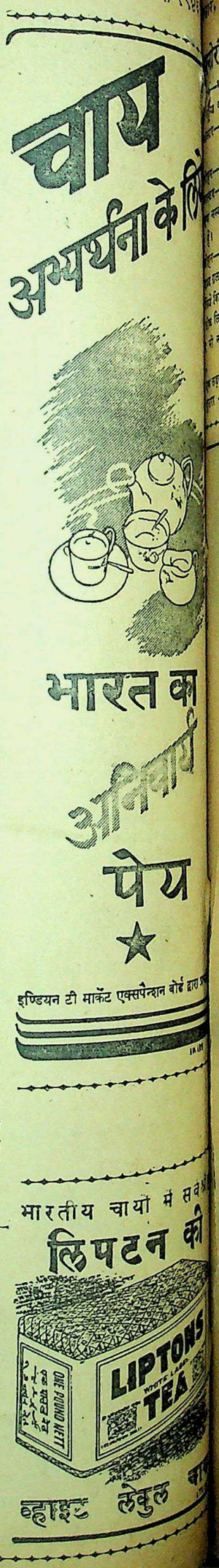

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...रंजक चुटकुले

...मास्टर साहब! मुझे डिक्टे-... कैसे मिला?

...—तुम्हारी कितनी ग़लती

...—केवल बीस ग़लती।

...—ठीक तो है, दो ग़लती के ... नम्बर काटा गया है। कुल दस ...

...—यह कैसे मास्टर साहब! ... होने पर आपने सब नम्बर ... किन्तु उसके अतिरिक्त जो बीस ... लिखे हैं उसके लिए आपने एक ... नहीं दिया?

*

...लड़का—कितने सवाल ठीक हैं?

...—सब सवाल ठीक हैं।

एक—लाओ तुम्हारा परीक्षाफल देखें?

दूसरा—लीजिए।

एक—क्यों हिसाब में तो तुमने दस गुल्ला पाया है, कहाँ कहते थे कि सब सवाल ठीक हैं?

दूसरा—जी पिता जी! सवाल सब ठीक हैं पर मैंने किये सब ग़लत हैं।

* * *

लालू—हीरा ज़रा ज़ोर से पढ़ो?

हीरा—नहीं! मन में ही पढ़ूंगा।

लालू—मन-सेर-छटांक में पढ़ने से पास हो चुके।

* * *

लड़का—मास्टर साहब! योरप में बहुत 'वार' हो रहा है। वहाँ के लोग किस प्रकार से रहते होंगे?

मास्टर—वहाँ कौन-सा बहुत 'वार' हो रहा है, हमारे यहाँ हिन्दुस्तान में तो प्रत्येक दिन और प्रत्येक क्षण 'वार' रहता है।

लड़का—यह कैसे मास्टर साहब?

मास्टर—अरे! सोम 'वार', मंगल 'वार', बुद्ध 'वार', गुरु 'वार', शुक्र 'वार'-शनि 'वार' और रवि 'वार'।

* * *

राम—मेरे कमरे के अन्दर पन्द्रह आदमी सो सकते हैं।

श्याम—कमरा कितने हाथ लम्बा-चौड़ा है?

राम—बीस हाथ लम्बा और पन्द्रह हाथ चौड़ा।

श्याम—तब तो वह कमरा नहीं बल्कि टाट है। कमरा तो सात-पांच से अधिक लम्बा-चौड़ा नहीं होता।

—वीरेन्द्रकुमार

परिणीता

उलझनों के कौतूहलप्रद वातावरण में ललिता और शेखर का प्रेम-सम्बन्ध इस उपन्यास में बड़ी ही कुशलता के साथ चित्रित किया गया है। उपन्यास में प्रेम की पावन गंगा का प्रवाह सर्वत्र व्याप्त है शब्द में आपको रोचकता और कौतूहल का दर्शन होगा। मूल्य १।-)

अपनी बात

मनुष्यों के चरित्र में जो दुर्बलताएं होती हैं उन्हें दूर करके वह किस प्रकार जीवन को उन्नत बना सकता है, यही बात इस पुस्तक में ओजपूर्ण भाषा में, निजी अनुभव के आधार पर, लेखक ने लिखी है। यह पुस्तक प्रत्येक युवक को पढ़नी चाहिए। मूल्य ।।।) बारह आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

AC 52

"पूरा पूरा सहयोग दीजिये"

श्री० नेहरू

"खाद्य-परिस्थिति में सबका पूरापूरा सहयोग आवश्यक है जिससे दुर्घटना का निराकरण हो सके और सब पर बराबर-बराबर बोझ बंट सके। खासकर जनता का सहयोग तो अनिवार्य है।"

—१७ फरवरी का वक्तव्य

हमारी प्रतिज्ञा और अपील

उन लोगों से जो कमीवाले क्षेत्रों में रहते हैं हम परिपूर्ण सहयोग की प्रतिज्ञा करते है। देश के समस्त साधनों का संगठन होगया है और उनके पास शीघ्रतासे सहायता भेजी जा रही है। उनके अभावको शेष देश के साथ, बराबर विभाजित किया जावेगा। राशनिंग का इस प्रकार विस्तार किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति अपना उचित भाग प्राप्त करले। मूल्य नियंत्रण की कठोर व्यवस्था की जावेगी। शान्तिसे विश्वास रखिये। अपनी आवश्यकता से अधिक मत खरीदिये। मुनाफाखोरों से कोई सम्बंध मत रखिये अतिरिक्त क्षेत्रों में रहनेवालों से हम अधिकसे अधिक मदद की अपील करते हैं। यदि आपसे अतिरिक्त अनाज सुपुर्द करने को कहा जावे तो आपके पास आपकी आवश्यकता के अनुसार काफी बच जावेगा। यदि आपके नगर में राशनिंग योजना लागू की गयी है या राशन में कमी की गई है तो याद रखिये, वह आपके अन्य भाइयों की सहायता के लिये ही है। तब भी आपके पास काफी होगा। छोटे तरीके से भी अनुचित संग्रह मत कीजिये। अधिकारियों के साथ सहयोग कीजिये।

खाद्य संकट को पराजित कीजिए

एक साथ कार्य कीजिये – एक साथ हिस्सा बंटाइये

व्यापारियों एवं उत्पादकों को संदेश

अपनी सामर्थ्यानुसार सारा अनाज निकाल दीजिये अनुचित संग्रह का प्रत्येक मन अनाज एक भाई की मृत्यु का कारण हो सकता है नियंत्रित मूल्य पर ही बेचिये—आपके और खरीदनेवाले के दोनों के लिये यही उचित है। दूसरों को संकट दे कर कमाया हुआ धन पाप है।

अपनी समस्त शक्ति और साधनों से सरकार और जनता मुनाफाखोरों और चोर बाजारवालों का दमन करने के लिये कटिबद्ध हैं। चोर बाजार से बचिये यह अपराध है।

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झरना—में पण्डित सोहनलालजी की बालकोपयोगी २३ कविताओं का संग्रह है। मातृभूमि, जय-जय स्वदेश, हवा का झोंका, तुम बढ़ो आगे ही अकेले, सुनहली धूप, लहर, सब पर जल बरसाता बादल, दूर्वा का गीत और नीम का पेड़ आदि सुन्दर कविताएँ हैं। अच्छे काग़ज़ पर अच्छी स्याही में छपी पुस्तक का मूल्य केवल ।।।) बारह आने।

वञ्चिता—रोमान्चकारी ऐतिहासिक उपन्यास है। अकबर के ज़माने की घटना के आधार पर इसकी रचना हुई है। इसमें बड़ी-बड़ी गुत्थियाँ हैं। दरबार के दाँव-पेंच, जासूसी चालें और प्रलोभन के बखेड़े हैं। विजय ने मित्र चम्पालाल के प्राण बचाने का पूरा उद्योग किया, किन्तु ज़रा-सी देर ने काम बिगाड़ दिया। इससे दोनों मित्र साथ ही 'जल-जङ्गल' हाथी के पैर से कुचले जाकर परलोक के यात्री बने। बेचारी नन्दा अपने प्रियतम विजय से वञ्चिता होकर उसकी याद में घुल-घुलकर जीवन बितान को रह गई। मूल्य केवल ३।।) तीन रुपये आठ आने।

रूस—इस पुस्तक में रूस देश का बहुत-सा हाल है। सम्राट् पीटर, रूसियों के स्वभाव, वहाँ के किसान, शासन-व्यवस्था मास्को के व्यापारी, मेला, लेनिन-ग्राड, मेला, ऋतुएँ, किसानों के केन्द्रीय शिक्षालय, बोल्शेनिज़्म के प्रभाव, धार्मिक-क्रान्ति और सुधार आदि का इसमें वर्णन है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य ।=) छः आने।

लामाओं के देश में—यह सचित्र पुस्तक बड़े आकार में मोटे टाइपों में छपी है। इसमें तिब्बत देश का और वहाँ के निवासियों का वर्णन सरल भाषा में है वहाँ किस रास्ते से यात्री गया था, उसका ब्योरेवार वर्णन है। इसके पढ़ने से वहाँ के नगर, ग्राम, व्यापार, नदी-नाले, डाकू और मौसिम आदि सभी का ज्ञान हो जाता है। मूल्य ।=) छः आने।

अमरीका का परिचय—इसमें अमरीका के निवासी, धर्म, जनसंख्या, जलवायु, खनिज, व्यवसाय, बच्चों के पुस्तकालय, समाचार-पत्र, ग्राम्यजीवन, अन्ध-विश्वास, चलते-फिरते मकान और किसान आदि का वर्णन है। पुस्तक में आधे दर्जन चित्र हैं। मूल्य ।=) छः आने।

राष्ट्रपति रूज़वेल्ट—इसमें अमरीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति रूज़वेल्ट का जीवन-चरित है। रूज़वेल्ट का बाल्य-काल और वंशपरिचय, विवाह, राज-नीति में प्रवेश, कष्ट की ज़िन्दगी, गवर्नरी, राष्ट्रपतिपद, विरोधों का सामना और व्यक्तिगत जीवन आदि का वर्णन इसमें है।

जोसेफ स्टेलिन—रूस के अधिनायक स्टेलिन की दूरन्देशी से ही वहाँवालों ने न केवल जर्मनों से अपने देश की रक्षा की, बल्कि सीधे धावा करके जर्मनी पर अधिकार कर लिया। उसी कूट-नीतिज्ञ स्टेलिन का यह संक्षिप्त जीवन-चरित है। ७ अध्यायों में पुस्तक समाप्त हुई है। खास कर बालकों के लिए यह बहुत लाभदायक है, मूल्य केवल ।-) पाँच आने।

मिस्टर चर्चिल—योरप का महासमर जीतने में जिस साहसी चर्चिल ने बेहद परिश्रम किया था उसी विख्यात योद्धा विन्स्टन चर्चिल का संक्षिप्त जीवन-चरित इस पुस्तक में है। चर्चिल को बचपन से ही युद्ध से प्रेम था। ऐसे साहसी की जीवन घटनाओं का परिचय इस पुस्तक के पढ़ने से मिलेगा। मूल्य केवल पाँच ।-) आने।

चीन देश का हाल—चीनी व्यापारी, पकिंग नगर, मछली के शिकार का ढंग, लड़कियों के पैर, चीनी बच्चे की जन्म की रीतियाँ, दरवाज़ों पर भयानक चित्र, खेल-कूद, सहभोज, नाटक, विवाह की प्रथाएँ, त्योहार, तोहफ़ा, ऋण, विचित्र मकान, वेश-भूषा, चीनी स्त्रियाँ, चोर को सज़ा, चीन की दीवाल, शिक्षा-प्रणाली, परीक्षा का ढंग और बाग़-बग़ीचे आदि सभी मुख्य विषयों का वर्णन इसमें है। आधे दर्जन से अधिक चित्र हैं। मूल्य केवल ।=) छः आने।

लन्दन की एक झलक—इसे लन्दन का संक्षिप्त इतिहास समझिए। इसमें, प्रश्नोत्तर के रूप में, वहाँ के मुख्य-मुख्य स्थानों, इमारतों, समाचार-पत्रों, सिक्के, खेल-कूद-कुत्तों के मरघट, वहाँ के रहन-सहन और अन्य अनेक घटनाओं का वर्णन है। आधे दर्जन से अधिक चित्र हैं। मूल्य ।=) छः आने।

जीवनकण—यह आशुकवि श्री जगन्नाथ अवस्थी की फुटकर कविताओं का संग्रह है। इसकी प्रत्येक कविता जीवन की किसी न किसी सच्ची अनुभूति का चित्रण है; तथा जीवन को ऊँचा उठानेवाला आदर्श निहित है। मूल्य ।।=) दस आने।

इंडियन प्रेस लिमिटेड प्रया।

स्वयं-सहायता चाहिये

खाद्य के विषय में आप क्या कर सकते हैं।

भारत ही अकेला ऐसा देश नहीं है जिसे दुर्भिक्ष का ख़तरा है। सामान्यतः समस्त विश्व में अन्नाभाव है। ब्रिटन में भी घटी हुई राशन है। एशिया और यूरोप के युद्ध-पीड़ित प्रदेशों में लाखों भूखे हैं और अन्नाभाव में मर रहे हैं। संयुक्त राष्ट्रों को उन सबको भोजन देना है। बाहरी सहायता हमको मिलेगी किन्तु अनिवार्यतः वह सीमित होगी। हमें यथासंभव अपनी सहायता आप करना है।

और यहीं आपको अपने कर्तव्य का पालन करना है

खाद्य की कमी को बराबर बांट लीजिये—अनेक प्राण इसी प्रकार बच सकते हैं।

खाद्य वितरण का एकमात्र समुचित तरीका राशनिंग है। राशनिंग के नियमों का पालन कीजिये। धोका देने का प्रयत्न मत कीजिये—यह किसी के प्राणोंका मूल्य हो सकता है।

राशन की कमियों को सहर्ष स्वीकार कीजिये—ये अनिवार्य हैं और जैसे ही परिस्थिति में सुधार होगा वे परिवर्तित की जायेंगी।

अनुचित संग्रह मत कीजिये। यह एक अपराध और समाज-विरोधी कृत्य है। इससे प्राणों के क्षय का खतरा है।

यदि आप अनाज-विक्रेता हैं तो मुनाफ़ाख़ोरी मत कीजिये—याद रखिये उसके दंड कठोर हैं और उनका कड़ा पालन किया जायगा।

व्यर्थ खर्च मत कीजिये, अधिक आतिथ्य सत्कार भी मत करिये—थोडी किस्मों का भोजन पकवाइये। खाद्य बचाना खाद्य उपजाने के बराबर है।

यदि आप समर्थ हैं तो अधिक तरकारी, फल, मांस, मछली अंडे व दूध से उत्पन्न चीजें खाइये। गेहूं और चावल उन गरीबों के लिये छोड़ दीजिये, जिन्हें उनकी अत्यधिक आवश्यकता है।

यदि आपके पास भूमि और पानी हो तो तरकारियां और अनाज उत्पन्न कीजिये—थोडासा प्रयत्न भी सहायता है।

भय से मुक्त रहिये—यदि आपने विश्वास खो दिया तो चोर बाजारवालों को मौका मिल जायेगा

खाद्य संकट को पराजित कीजिए

एक साथ कार्य कीजिये — एक साथ हिस्सा बंटाइये

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड १४ [illegible] रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

मूल्य ७॥)
संख्या ३)

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक

Sunday, 12th May, 1946

ता. १२ मई, १९४६

वनवास में कवि ने रामचन्द्र जी के वनवास का अनोखा वर्णन किया है। कवि राजाराम चित्रकूट के पड़ोसी हैं और वहीं पर वनवास की अनेक मुख्य घटनाएँ हुई थीं। इस कारण यह 'वनवास' अपने ढंग की एक ही पुस्तक है। इसमें श्री रामचन्द्र जी के वनवास से सम्बन्ध रखनेवाली, दशरथ के प्राण-त्याग, भरत के द्वारा कैकेयी की भर्त्सना, अयोध्या लौटने के लिए श्री रामचन्द्र जी से भरत के आग्रह करने तथा लक्ष्मण के द्वारा शूर्पणखा की नाक काटने आदि की घटनाओं का वर्णन है। मूल्य ॥।≥) चौदह आने।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य १ आना

जयप्रकाश पटवर्द्धन, और लोहिया
संयुक्तप्रांत की आजकल की समस्यायें

हिन्दू-राष्ट्रपति मौलाना आजाद
[illegible] में भाग ले रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

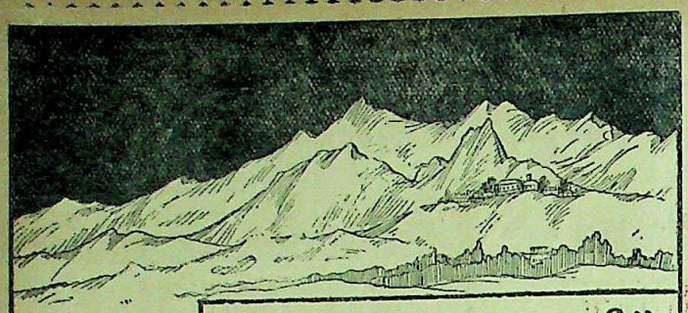

पहाड़ पर ठंडक होती है

परन्तु प्रत्येक व्यक्ति के लिये पहाड़ पर जाना सम्भव नहीं।

जी. जी. फल पेय-फल शर्बत स्फूर्ति एवं ठंडक प्रदान करता है।

फल पेय :—नीबू, माल्टा, आम, नीबू कोर्डियल, नीबू वार्ली।

फल शर्बत :—संतरा, केला, मिक्सडफ्रूट, नीबू, फालसा, स्ट्रोबेरी।

GG

जी. जी. फ्रूट प्रिज़र्विंग फैक्टरी आगरा

जी. जी. इन्डस्ट्रीज़

जी० जी० सेल्स डिपो :—

मेसर्स गिरधरलाल बकाल जनरलगंज कानपुर

बम्बई : देहली : कलकत्ता : ग्वालियर : अजमेर : बरेली।

इसने लाइफबॉय उपयोग करने की आदत भी सीखी है!

अभी से यह बहुत सी बातें सीख रहा है परन्तु सब से ज्यादा फायदामंद लाइफबॉय साबुन के दैनिक उपयोग की आदत है। इसकी माँ को इस बात का गर्व और खुशी होती है कि उसकी दी हुई शिक्षा से उसके लड़के की 'गन्दगी के खतरे' से जो हर जगह हमला के लिए मौजूद है उससे रक्षा होती है।

लाइफबॉय का व्यवहार करना एक ज़रूरी आदत है

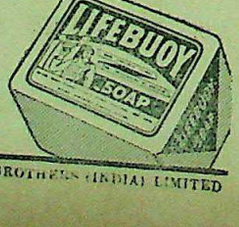

L. 77-59 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

मझली दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पि भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवह है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित कि मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहा

"बचत क स्वभा डालिये

सर आदमजी हाजी दा

मैनेजिंग डायरैक्टर अ दाऊद कम्पनी लिमिटे डायरैक्टर यूनाइटेड क लिमिटेड।

"उनके कल्याण की दृष्टि से जनता में नियमपूर्वक बचत करने के स्वभाव को प्रोत्साहन देना चाहिये। मुझे आशा है नेशनल सेविंग्ज़ मूवमैन्ट इस उद्देश्य की पूर्ति में कार्यसाधक सिद्ध होगी। इससे जनता में न केवल अपनी स्थिति के अनुसार नियमपूर्वक बचाने का सङ्कल्प दृढ़ होगा बल्कि रहन-सहन का ढंग भी उन्नत होगा और उनका रुपया भी सुरक्षित रहेगा। यही कारण है कि मैं पूर्ण रूप से नेशनल सेविंग्ज़ मूवमैन्ट के पक्ष में हूं।"

Adamjee Haji Dawood

संक्षिप्त विवरण

(१) आप ५), १०), ५०), १००), ५००), १०००) या ५०००) के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) एक व्यक्ति ५०००) से अधिक मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स नहीं ख़रीद सकता। ये इतने उपयोगी हैं कि इनका राशन करना ही उचित समझा गया है। हां दो व्यक्ति मिलकर १०,०००) के सर्टिफिकेट्स मोल ले सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है।

(४) इस प्रकार अवधि पूरी होने पर ४-१/६% वार्षिक ब्याज

(५) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स

(६) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये (५) का सर्टिफिकेट १-१/

ही भुनाया जा सकता है

विक लाभ इसी में है कि

पहिले इन्हें न भुनावें।

(७) जिनकी बचत थोड़ी है

।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्प

५) के स्टैम्प्स जमा होने

नल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट

(८) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प

सरकार द्वारा अधिकृत एजे

सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त हो

आप अपनी बचत से ५०% लाभ उ

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िके

ख़रीदिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक

वर्ष ८, संख्या ३७] [रविवार, १२ मई, १९४६

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

शिमला में ब्रिटिश मंत्रिदल तथा कांग्रेस और मुस्लिम लीग के नेताओं की बातें शुरू हो गई हैं। बार बार कहा जा रहा है कि मंत्रिदल बिना कुछ किये यहाँ से टलेगा नहीं। अपने राम की समझ में भी आ रहा है कि ब्रिटिश मंत्रीगण अवश्य ही कुछ न कुछ कर गुजरेंगे। लेकिन क्या कर गुजरेंगे, इसका कुछ पता नहीं लग रहा है। मंत्रिदल भारत के दो दलों को जूझा रहा है और अपनी नेकनीयती का ढिंढोरा पीट रहा है। ढिंढोरा तो पीटना ही चाहिए क्योंकि अगर अंत में टाँय-टाँय फिस हुआ तो मंत्रिगण इज्जत-आबरू से लंदन पहुँच-कर वाहवाही तो लूट सकेंगे? मजदूर मंत्रिमंडल का राज्य है। टोरी तो हैं नहीं कि जो मन में आये अनापशनाप बक जाये। लंदन पहुँचकर कह देंगे कि कोशिश तो बहुत की लेकिन कांग्रेस और लीग का गंठबंधन ही किसी तरह नहीं होता तो स्वराज्य किसको देकर जाएँ? लावारिस स्वराज्य से बेहतर है अंगरेज जमे रहें।

* * *

आजाद हिन्द फ़ौज के जितने भी कैदी थे वह सब जेलों से छोड़ दिये गये। यह बड़ा अच्छा हुआ। बेचारे पहले तो लड़ाई में पिसे फिर बाद को ब्रिटिश जेलों में। बस इतने दिन के बाद वह बाहर तो आये। कांग्रेस इसके लिए धन्यवाद की पात्र है किन्तु लार्ड वेवेल को भी धन्यवाद दे ही देना चाहिए। हाँ आजाद हिन्द फ़ौज के छूटे हुए सिपाही और अफसरों को सरकार ऐंचा-तानी दृष्टि से देख रही है क्योंकि वह जानती है कि अगर आगे गड़बड़ घुटाला हुआ तो वह अपनी करामात दिखाये बिना न मानेंगे। सरकार के यहाँ आवागमन तो लगा ही रहता है। इस वक्त सरकार एक घाट पर शेर और बकरी को पानी पिला रही है, लेकिन वह दिन भी आ सकता है जब अलग अलग घाट पर शेर और बकरी पानी पीते नजर आयें। कहावत है कि जल में गाड़ी नाव पर थल गाड़ी में नाव आज अगर गाड़ी जल में नाव पर है तो कल स्थल में गाड़ी पर नाव रहेगी ही। वक्त देखकर हवा का रुख बदलता है। आज हवा का रुख कुछ और है इसलिए अगर कल कुछ और हो जाये तो क्या आश्चर्य?

* * *

शिमला-सम्मेलन के निर्णय में विलम्ब हो रहा है, इसलिए राजा जी को संदेह हो रहा है। अपने राम की राय में अँगरेजी कौशल ही यही है कि जो काम न करना हो उसे विशङ्कु बना कर छोड़ दो। या किसी काम के निर्णय के पहले उसे कमेटियों के सुपुर्द कर दीजिए, या काग़जी घुड़दौड़ चलाइए। ब्रिटिश सरकार के यहाँ स्वराज्य की यही कला सदा से चली आई है। अँगरेजों का कौल रघुकुल का कौल है, उनके चले जायेंगे लेकिन वह अपने कौल से पीछे न हटेंगे। अँगरेज भारत को स्वराज्य देने को तैयार हैं, यही उनका कौल है लेकिन कोई लेनेवाला भी तो दिखाई पड़े?

रघुकुल रीति सदा चलि आई।
प्राण जाइ पै बचन न जाई॥

* * *

संयुक्तप्रान्तीय कांग्रेस के प्रधान मंत्री पंडित गोविन्दवल्लभ पंत ने अन्न-समस्या के हल की एक नई योजना तैयार की है। जिन जिलों में जो अन्न नहीं होता, वह दूसरे जिलों से, जहाँ वह होता है, वसूल करके उन जिलों में भेजा जायेगा। जिससे संयुक्त-प्रान्त में कहीं अन्न का संकट न उत्पन्न हो और कोई भूखों न मरने पाये। योजना तो वास्तव में बहुत ही लाजवाब है और अगर ठिकाने से काम हो तो कोई भी व्यक्ति भूखों न मरने पायेगा लेकिन जिलों के हुक्कामों, घूसखोरों की कृपा हुई तब! अगर इन महापुरुषों ने गड़बड़ घोटाला किया तो चख-चख बनी ही रहेगी। इसलिए अपने राम की राय है कि अगर कांग्रेसी सरकार अधिकारियों की नकेल ढीली न होने देगी तो योजना ज़रूर सफल होगी।

* * *

आगामी कांग्रेस के प्रेसिडेंट का चुनाव होनेवाला है। आचार्य कृपलानी ने अपना नाम वापस ले लिया है। इस वक्त मैदान में पंडित जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल मौजूद हैं। कांग्रेस के सभापति का चुनाव तो होगा ही, प्रेसिडेंट कोई न कोई बनेगा ही। अपने राम की राय तो इस मामले में साफ है कि अगर स्वदेशी स्वराज्य चाहिए तब तो सरदार वल्लभभाई पटेल प्रेसिडेंटशिप के लिए फिट हैं और अगर अन्तर्राष्ट्रीय प्लस हिन्दुस्तानी स्वराज्य लेना है तो पंडित जवाहरलाल नेहरू सबसे फिट प्रेसिडेंट साबित होंगे। जनता को तौल लेना चाहिए। जैसा स्वराज्य प्राप्त करना हो, प्रेसिडेंट उसी के अनुकुल चुनना चाहिए। देखना है आगामी १६ मई को राष्ट्र किस प्रकर का स्वराज्य चाहता है क्योंकि उसी दिन प्रेसिडेंट के चुनाव का अंतिम फैसला है।

* * *

पेरिस में होनेवाले वैदेशिक मंत्रियों के सम्मेलन का बढ़िया नाटक हो रहा है। रूस के वैदेशिक मंत्री एम० मोलोटोव अपना पैतरा दिखा रहे हैं। वह इटली से बिना हर्जाना लिये माननेवाले नहीं हैं। लेकिन अमरीका के वैदेशिक सचिव इटली की पीठ पर हाथ फेर रहे हैं और मोलोटोव साहब से फरमाते हैं कि जाने भी दीजिए, बेचारे इटली को, वह मर जायेगा। मिस्टर मोलोटोव कहते हैं कि हमें तो हर्जाना चाहिए, इटली मरे चाहे जिये। इटली के पास न हो तो अमरीका ही अपनी गाँठ से दे दे। आगे क्या फैसला होगा, इसे तो खुदा जाने लेकिन जान पड़ता है कि मामला संयुक्तराष्ट्र संघ के सामने जायेगा। क्योंकि योरोप के राष्ट्रों के लिए संयुक्तराष्ट्र संघ ही मुक्ति का घर है जिस प्रकार भारत में हिन्दुओं के लिए गंगा और मुसलमानों के लिए अरब का काबा।

* * *

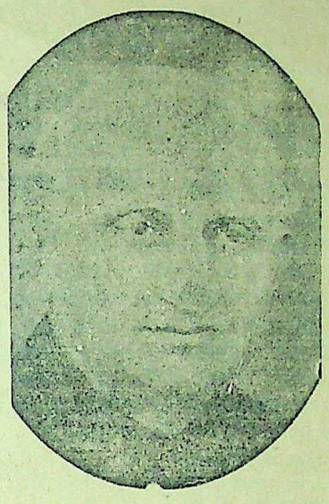

सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ और कानून-विशेषज्ञ स्वर्गीय श्री भूलाभाई देसाई।

फिलिस्तीन में आजकल खूब चहल-पहल है। यहूदियों को बसाने के लिए अमरीका और ब्रिटेन उधार खाये घूम रहे हैं। अमरीका और ब्रिटेन का कहना है कि फिलिस्तीन में यहूदी बसाये जायेंगे और अरब के लोग कहते हैं कि एक हजार वर्ष से यहाँ हमारा राज्य रहा है इसलिए यहूदी कौन होते हैं जो यहाँ लाकर बसाये जानेवाले हैं? क्यों नहीं अमरीका और ब्रिटेन दक्षिणी अमरीका या अफ़्रीका में ले जाकर उन्हें बसाते? उधर यहूदी कहते हैं कि फिलिस्तीन हमारे बाप-दादों की जिमींदारी है। हम तो यहीं बसेंगे, देखें अरब-वाले क्या करते हैं? भाग्य की बात है कि अमरीकन और अँगरेज बीच में पड़ गये हैं। अब न बजेगी अरबी बाँसुरी और न यहूदी झाँझ। फिलिस्तीन में अब सभी बाजे एक साथ बजेंगे। सुननेवाले झख-मारें सुनें, चाहे अरबी हों या यहूदी?

* * *

मध्यप्रान्त के कांग्रेसी मंत्रियों ने अपनी तनखाहें १०००) प्रति मास लेने का निश्चय किया है किन्तु संयुक्तप्रान्त के मंत्रियों ने १५००) प्रतिमास। ठीक भी है, उत्तर के लोगों का खर्च भी ज्यादा है। संयुक्त-प्रान्त के और उत्तर जाइए पंजाब साफा, सलवार और कुर्ते से शुरू होता है। धुर दक्खिन में जाइए, भात और मिरचे का आचार, और केवल लुंगी। फिर खर्च किस बात में हो? इसलिए अपने राम की राय में युक्त-प्रान्त के मंत्री अगर १५००) लेते हैं, तो मध्यप्रान्त के मंत्रियों को १०००) काफी है। मद्रास के लोगों का तो ५००) में ही काम चल जाना चाहिए। यही मामला है कि जहाँ जैसी गँवें हैं वहाँ वैसी तनखाहें लग रही हैं, इसमें किसी का क्या इजारा?

'वर्तमान खाद्य स्थिति के जो भी कारण हो, इस संकट को दूर करने के लिये हम सबको मिलकर काम करना चाहिये.....।

हिन्दुओं और मुसलमानों का कर्तव्य है कि दोनों मिल-कर ग़ल्ला के चोर बाज़ार और अनाज के बेजा ख़र्च को रोकें।'

—नवाब मुहम्मद इस्माईल खाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

प्रांतीय प्रेस कान्फ्रेंस

संयुक्त प्रान्तीय प्रेस कान्फ्रेंस का तीसरा अधिवेशन कानपुर में हो रहा है। कान्फ्रेंस का पहला अधिवेशन लखनऊ में और दूसरा अधिवेशन गतवर्ष प्रयाग में हुआ था। कानपुर अधिवेशन के सभापति सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री दुर्गादास चुने गये हैं। श्री दुर्गादास भारत ही नहीं विदेशों में भी अपनी पत्रकारिता तथा प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व के लिए प्रसिद्ध हैं। श्री दुर्गादास ने एक संवाददाता की हैसियत से पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया था और आज वह भारत के ही नहीं अन्तराष्ट्रीय ख्याति के पत्रकार और विलक्षण प्रतिभा के पत्रकार माने जाते हैं। आपकी सदारत में कान्फ्रेंस सफलता प्राप्त करेगा, इसमें तो संदेह है ही नहीं। यह और भी प्रसन्नता की बात है कि श्री दुर्गादास जी श्रमजीवी पत्रकार हैं और उन्होंने अपने श्रम, उद्योग और अध्यवसाय के बल पर ही पत्रकार-क्षेत्र में अपनी चरम उन्नति की है। श्रमजीवी पत्रकारों के लिए वास्तव में यह बड़े गौरव की बात है।

सच पूछा जाय तो यू० पी० प्रेस कान्फ्रेंस को स्थापित हुए अभी जुम्मा-जुम्मा कुछ ही वर्ष हुए हैं, इसलिए जैसा चाहिए, वैसा उसके द्वारा पत्रकार कला तथा श्रमजीवी पत्रकारों का अभी तक विशेष भला नहीं हो सका है। फिर भी पिछले एक वर्ष में उसने श्रमजीवी पत्रकारों की आर्थिक स्थिति सुधारने में जो आन्दोलन किया है, वह स्तुत्य है और किसी हद तक इस संबंध में उसे सफलता भी प्राप्त हुई है। किन्तु अब हमें उसका भविष्य अधिक आशातीत दिखाई देता है। यदि सभापति तथा प्रान्त के प्रमुख श्रमजीवी पत्रकारों का कान्फ्रेंस को सक्रिय सहयोग मिला तो यह भविष्य में अपने उद्देश्यों की पूर्ति में अधिक सफलता प्राप्त करेगी, इसमें संदेह नहीं। यदि कान्फ्रेंस को दलबंदी से दूर रखा गया और श्रमजीवी पत्रकारों ने संगठित एकता से सार्वजनिक और सामूहिक हित को सामने रखकर कान्फ्रेंस के कार्यक्रम को आगे बढ़ाया तो संयुक्तप्रान्त में श्रमजीवी पत्रकारों का यह एक प्रबल संगठन सिद्ध होगा और उसके द्वारा कुछ वास्तविक कार्य भी सम्पन्न होगा।

अब तक यू० पी० प्रेस कान्फ्रेंस का संगठन कुछ विचित्र ढंग का रहा है। इसमें सभी प्रकार के लोग सम्मिलित होते आये हैं, जिनका तनिक भी किसी भी पत्र से संबंध रहा है, चाहे वह पत्रों के मालिक हों या श्रमजीवी पत्रकार या अन्य प्रकार के कार्य-कर्त्ता हों। किन्तु इस बार कानपुर के अधिवेशन में इस प्रकार का प्रस्ताव आ रहा है कि यू० पी० प्रेस कान्फ्रेंस की नियमावली में ऐसा परिवर्तन किया जाये जिससे यह केवल श्रमजीवी पत्रकारों का प्रान्तीय संगठन सिद्ध हो सके। हम सदा से इसी पक्ष में रहे हैं कि विशुद्ध श्रमजीवी पत्रकारों के एक सुदृढ़ संगठन की विशेष आवश्यकता है। यह संगठन ट्रेड यूनियन के ढंग पर होना चाहिए। श्रमजीवी पत्रकारों की आर्थिक स्थिति का सुधार तभी संभव है जब वह व्यापक और सामूहिक रूप से संगठित होंगे। पत्रकारों के नाम पर खिचड़ी-संगठन सदा असफल और अवसरवादी सिद्ध होते रहेंगे। श्रमजीवी पत्रकारों की विषम समस्या आज की एक जागृत और व्यापक समस्या है। इसलिए ऐसे संगठन की आवश्यकता का अनुभव प्रत्येक वर्ग का श्रमजीवी पत्रकार कर रहा है। हमारी राय है कि यू० पी० प्रेस कान्फ्रेंस का नाम बदल कर संयुक्त प्रान्तीय श्रमजीवी पत्रकार सम्मेलन कर दिया जाये और सम्मेलन का पुर्नसंगठन श्रमजीवी और पत्र-पत्रिकाओं में क्रियात्मक कार्य करनेवालों के द्वारा दृढ़तापूर्वक किया जाये तो इस प्रान्त के श्रमजीवी पत्रकारों का यह एक सुदृढ़ संगठन सिद्ध होगा।

* * *

श्री भूलाभाई का स्वर्गवास

सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ, विधानवेत्ता और क़ानून के विद्वान् श्री भूलाभाई देसाई का लगभग ७० वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। श्री भूलाभाई का भारत के राजनीतिज्ञों में एक महत्त्वपूर्ण स्थान था। सार्वजनिक जीवन में आपने अपनी प्रगाढ़ देशभक्ति और राष्ट्रवादिता से एक प्रकार की धाक-सी जमा ली थी। पिछले सत्याग्रह आन्दोलन में आप १ वर्ष की सजा भी भुगत आये थे। कांग्रेस के आप प्रमुख स्तंभों में गिने जाते थे। कई वर्षों तक कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य भी रह चुके थे। केन्द्रीय एसेम्बली में आपने कांग्रेस दल का बड़ी निर्भीकतापूर्वक नेतृत्व किया था। कांग्रेस और मुस्लिम लीग के मतभेद को दूर करने के इरादे से 'देसाई–लियाकत अली पैक्ट' के अनुसार भूलाभाई ने राजनैतिक अड़ंगे के सुलझाने का भी एक बार प्रयत्न किया किन्तु सफलता नहीं मिली। भूलाभाई ने राष्ट्र के लिए जीवन में त्याग और बलिदान तो किया ही साथ ही वैधानिक दृष्टि से भी वह सदा उसकी राजनैतिक गुत्थी सुलझाने में लगे रहते थे। यही नहीं श्री भूलाभाई भारतवर्ष के उन इने-गिने क़ानून-विशेषज्ञों में से एक थे जिन पर कांग्रेस तथा कांग्रेस नेताओं को गर्व था। आजाद हिन्द फ़ौज के नेताओं पर पिछले दिनों लाल क़िले में कोर्ट मार्शल का जो मुक़दमा चला था, कांग्रेस की ओर से श्री देसाई ने ही उन अफ़सरों की पैरवी की थी। सर्वश्री शाहनेवाज, सहगल और ढिल्लन के छोड़े जाने का श्रेय श्री भूलाभाई को ही प्राप्त है। श्री भूलाभाई एक महान् राजनीतिज्ञ, तार्किक तथा कुशल प्रवक्ता थे। उनके तर्कों और दलीलों के सामने ब्रिटिश अधिकारियों की बुद्धि चकरा जाती थी। ऐसे विद्वान्, देशभक्त और त्यागी नेता के स्वर्गवास से राष्ट्र को क्यों न दुःख होगा? यद्यपि भूलाभाई आज स्वर्गवासी हो गये हैं किन्तु राष्ट्र के प्रति अपने महान् कर्त्तव्य को निभाने में वह जो स्मृतियाँ छोड़ गये हैं, राष्ट्रीय दृष्टि से वह अमर है। श्री भूलाभाई का निधन राष्ट्र की एक महान् विभूति का निधन है, इसलिये राष्ट्र के नेता तथा करोड़ों जनता क्यों न शोकाकुल हो उठे?

* * *

अलीगढ़-काण्ड की जाँच

गत मास अलीगढ़ में जो अग्निकाण्ड और लूटमार हुई थी उसकी जाँच करने के लिए जो कमेटी बनाई गई थी, उसने अपनी रिपोर्ट दे दी है। जाँच-समिति में आगरा डिवीज़न के कमिश्नर मिस्टर जांस्टन और डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल पुलिस मिस्टर स्विफ़्ट थे। इन दोनों सरकारी अफ़सरों ने अपनी रिपोर्ट में दो बातों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला है। रिपोर्ट में उन्होंने अग्निकाण्ड की ज़िम्मेदारी अलीगढ़ विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों तथा मुस्लिम जनता पर लादी है। इसके अतिरिक्त स्थानीय सरकारी अधिकारियों को दंगे की ज़िम्मेदारी से मुक्त घोषित किया है। जाँच करनेवाले दोनों सरकारी अफ़सर थे, ऐसी दशा में यदि उन्होंने अग्निकाण्ड और लूटपाट की ज़िम्मेदारी मुस्लिम विद्यार्थियों पर लादी है, तो इस सम्बन्ध में अधिक विवाद की आवश्यकता नहीं। किन्तु ऐसे भयंकर काण्ड की ज़िम्मेदारी से वहाँ के प्रमुख अधिकारी कैसे बरी किये जा सकते हैं, यह विचारणीय है। सरकारी अधिकारी, जिन पर ज़िले के शान्ति और व्यवस्था की ज़िम्मेदारी है, वह किस प्रकार से अलग किये जा सकते हैं? इसलिए हम अलीगढ़-जाँच कमेटी की रिपोर्ट को निर्दोष और पक्षपात रहित नहीं कह सकते हैं। जिस ज़िले में इतना भयंकर काण्ड हो जाये और लाखों की सम्पत्ति स्वाहा हो जाये वहाँ का अधिकारी वर्ग दूध का धोया समझा जाये यह आश्चर्य नहीं तो और क्या है? इस समय प्रान्त में जनता की सरकार का शासन है। कांग्रेस सरकार के सामने सार्वजनिक हित-अहित की पूरी ज़िम्मेदारी है। देखना है, इस रिपोर्ट पर सरकार क्या रुख ग्रहण करती है? हमें ज्ञात हुआ है कि प्रान्तीय सरकार ने अलीगढ़ म्यूनिसिपैलिटी एरिया में अतिरिक्त पुलीस की तैनात कर दी है। जो कुछ भी हो सरकार को जाँच-समिति की रिपोर्ट पर निष्पक्ष रूप से खोज-बीन करके दोषियों को दण्ड देना चाहिए साथ ही भविष्य के लिए शासन में इतनी दृढ़ता लानी चाहिए कि अलीगढ़ काण्ड की पुनरावृत्ति न होने पाये। इसी में प्रान्त की शान्ति सुरक्षित रह सकती है।

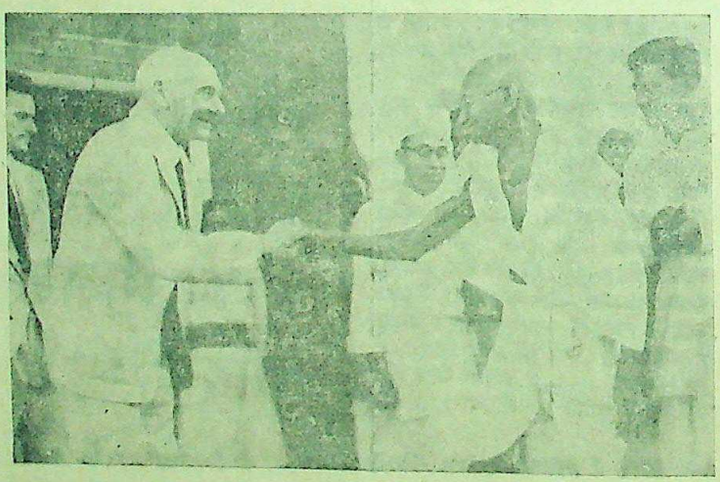

शिमला में महात्मा गांधी भारत सचिव लार्ड पेथिक लारेंस से भेंट करके हाथ मिला रहे हैं।

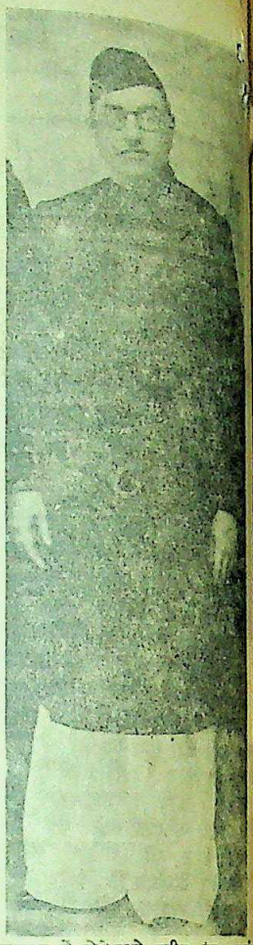

कानपुर में होनेवाले तृतीय संयुक्त प्रान्तीय प्रेस कान्फ्रेंस के सभापति सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री दुर्गादास।

मझली दीदी

एक अनाथ बालक की करुण कहानी इस उपन्यास में इतनी मार्मिकता के साथ चित्रण की गई है कि पढ़ते-पढ़ते हमारी आँखें अनायास ही गीली हो जाती हैं। एक सौतेली बहन अपने निराश्रित भाई के साथ जिस तिरस्कार और उपेक्षा का परिचय देती है, वह अत्यन्त हृदय-विदारक है। परन्तु उसकी देवरानी इस अनाथ भाई को अपने पुत्र की तरह स्नेह करती है। यही मझली दीदी है। उपन्यास बहुत ही सुन्दर है। मूल्य १)

फ्रांस का इतिहास

में ईसा पूर्व २२५ से लेकर सन् १९२० ईसवी तक का इतिहास है। इसमें वहाँ की राज्यक्रान्ति के राजवंश, फ्यूडल प्रणाली, स्वतंत्र, राजतंत्र, शतवर्षीय युद्ध, योरप में फ्रांस के प्रसार, राजवंश के उद्धार, सन् १८४८ की क्रान्ति, राष्ट्रीय सभा और प्रजातंत्र आदि का वर्णन उत्तमता से किया गया है। पुस्तक में चित्र भी हैं। अच्छे कागज पर छपे चार सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ४) चार रुपये।

आलोचनादर्श

इसके लेखक डा० रामशंकर शुक्ल 'रसाल' एम० ए० हैं। पुस्तक महत्त्व की है। इसमें समालोचना का अन्य शास्त्रों से सम्बन्ध, साहित्य-समालोचना, आलोचना, सुरुचि और दृष्टिकोण, आलोचना का ऐतिहासिक विकास आदि पर भली-भाँति प्रकाश डाला गया है। अध्ययन, अध्यापन और रचनाकार्य करनेवालों के लिए यह पुस्तक बड़े काम की है। ३०० पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर—(बुकडिपो) इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

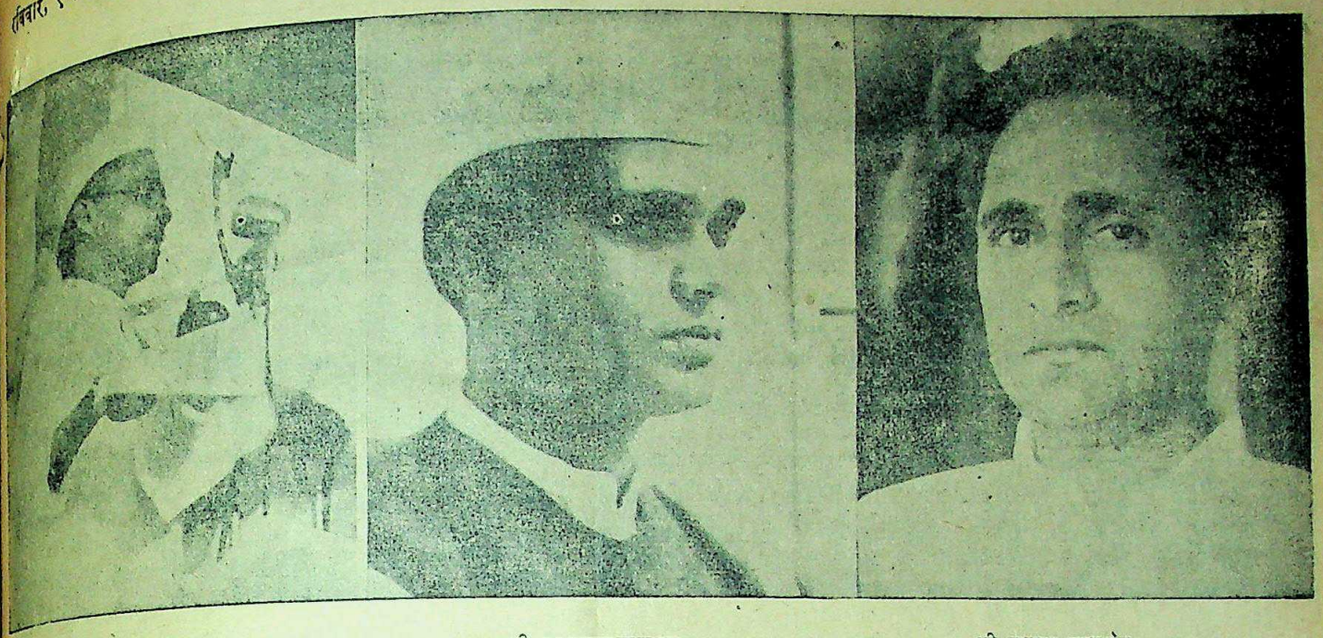

डाक्टर राममनोहर लोहिया

श्री जयप्रकाशनारायण

श्री अच्युत पटवर्द्धन

नये भारत के तीन तूफानी नेता

जयप्रकाश, अच्युत पटवर्द्धन और लोहिया

लेखक, श्र नारायणदत्त तिवारी

भारतीय समाजवादी दल के तीन तूफानी नेता श्री जयप्रकाशनारायण, श्री अच्युत पटवर्द्धन और डाक्टर लोहिया पिछले दिनों महात्मा गांधी के प्रयत्नों से जेल से छूटे हैं। इस लेख में लेखक ने इन्हीं तीनों नताओं की जीवन-रेखा चित्रित की है। इन समाजवादी नेताओं का नये भारत के निर्माण में विशेष हाथ है। लेख सुन्दर, जानकारी से पूर्ण और पठनीय है।

डाक्टर राममनोहर लोहिया

सन् ४२ के वह तूफानी दिवस! साम्राज्यवाद का भयंकर आतंक! शक्ति-विहीन जनता का, वह गौरवपूर्ण आत्म-त्याग! जेलों के सीखचों के अन्दर वह निरुपाय, अकर्मण्य, अहिंसावादी नायकीय नेता! परिणामस्वरूप, पाशविक बल की जन-युद्ध के विरुद्ध होनेवाली साम्राज्यवादी विजय! क्रान्तिकारी सैनिक संघर्ष के लिए चारों ओर निराशा ही निराशा का वातावरण!

श्री जयप्रकाशनारायण

नवम्बर सन् ४२ की दिवाली की रात। हजारीबाग जेल के अन्दर एक भीषण विद्रोह कर उठा था। उसके विद्रोहात्मक स्वभाव ने उसे सहसा निश्चय-पूर्वक बना दिया था। दो साल पहले 'नेता जी' ने नेपाल की जेल से बाहर निकलकर जो कुछ किया था, उसकी पुनरावृत्ति होने-वाली थी। रात के आठ बजे जेल की दीवालें कांपी गईं। जयप्रकाश बाहर आ गये। आन्दोलन एक बार और सक्रिय हो उठा।

बयालीस साल पहले बिहार के सारन जिले के सितावदिम्मारा नामक गांव में एक नवयुवती व्यक्ति का जन्म हुआ था। सन् २१ के आन्दोलन में विद्यार्थी जय-प्रकाश को भी अपेड़े लगे—पढ़ना छूट गया। पर निश्चय विजयी रहा—अगले साल ही वह अमेरिका चले गये, जहाँ कि उन्होंने आठ साल तक पाँच विभिन्न विश्व-विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त की। अंगूरों के बगीचों, नारंगियों के खेतों के बीच जय-प्रकाश ने रोजाना दस घंटे काम कर अपनी पढ़ाई जारी रखी। यहाँ तक कि इन्होंने अपने को चुना और गन्धक मिलाकर साफ करने की एक नई विधि भी निकाल ली। अमेरिका में मार्क्स की पहली शिक्षा भी जयप्रकाश को यहीं मिली और वे एक मार्क्सवादी बनकर भारत लौट आये।

सहित जवाहरलाल नेहरू ने शीघ्र ही इस असंतुलित व्यक्ति की प्रतिभा को पह-चान लिया, और कांग्रेस के मजदूर-सम्बन्धी कार्यों पर पुनर्विचार करनेवाली योज-ना के विभाग का भार इनके हाथ में दिया। कुछ ही महीनों बाद वे अखिल-भारतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यवाहक सभापति भी रहे।

सन् ३० का आन्दोलन आया। जय-प्रकाश भी जेल गये। वहीं, नासिक जेल के अन्दर समाजवाद की भारतीय रूप-रेखा तैयार किया। जयप्रकाश उसके प्रमुख सूत्रधार थे। कांग्रेस के वर्तमान वाम-पक्ष, कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का तभी जन्म हुआ। छूटने पर जयप्रकाश कांग्रेस कार्यसमिति के मेम्बर भी रहे। पर पटना में आचार्य नरेन्द्रदेव के सभा-पतित्व में समाजवादियों का जो सम्मेलन हुआ, उसमें वे पार्टी के प्रधान मंत्री चुने गये, इसलिए उसके संगठन-भार के जिम्मे-दार होने पर उन्होंने कांग्रेस कार्यसमिति से इस्तीफा दे दिया और तन-मन-धन से अपने संगठन-कार्य में लग गये जिसका नतीजा यह हुआ कि आज कांग्रेस सोश-लिस्ट पार्टी का जनता में अनन्य प्रभाव है।

समाजवादी जयप्रकाश के लिए तो अब जेल ही जीवन बना दिया गया। देवली कैम्प जेल में रहकर उन्होंने जो राजबन्दियों के अनशन का नेतृत्व किया, वह इतिहास की एक स्फूर्तिदायक वस्तु है। उन्होंने अपनी योग्य सहधर्मिणी श्रीमती प्रभावती देवी के हाथ जो पत्र बाहर भेजने की कोशिश की थी, वह संसार के मुख्य समाजवादी दस्तावेजों में अपना स्थान रखता है। गांधी जी भी इस क्रान्तिकारी व्यक्ति के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने समय-समय पर अपने इस मत को सार्वजनिक तौर पर व्यक्त भी किया है।

हजारीबाग जेल से भागने के बाद जयप्रकाश ने तमाम भारत में जन-शक्ति के बिखरे हुए तारों को क्रान्ति-सूत्र में एकत्र करने का प्रयत्न किया। उन्होंने 'स्वतंत्रता के सैनिकों के नाम' जो दो पर्चे निकाले, उनका महत्त्व भी अद्वितीय है। उनके पीछे सारे भारत की पुलिस लगी रही, नैपाल में एक बार वे बन्दी भी बना लिये गये, पर अपने साथियों के प्रयत्न से छुड़ा लिये गये। आसाम जाकर उन्होंने नेता जी से संबंध करने की कोशिश की थी जो असफल सिद्ध हुई। लाहौर जाते हुए रेल पर ही वे सहसा गिरफ्तार कर लिये गये। नाना प्रकार की पीड़ा पहुँचा-कर जयप्रकाश के प्रति जो कड़ा व्यवहार

श्री अच्युत पटवर्द्धन

किया गया, वह भूले नहीं भुलाया जा सकता। खैर, जयप्रकाश अपने अन्य हजारों बहादुर सैनिकों की तरह कष्ट सह रहे थे। लाहौर से उन्हें आगरा क़िले में अपने अनन्य साथी डा० लोहिया के साथ रखा गया, जहाँ से वे अभी हाल में ही पिछले महीने में छोड़ दिये गये। आज सारे देश की आँखें जयप्रकाश के ऊपर हैं कि वे किस प्रकार नये आन्दोलन के लिए कांग्रेस के झंडे के नीचे जनता का संगठन करते हैं।

श्री अच्युत पटवर्द्धन

बम्बई के नासिक रोड के सेन्ट्रल जेल में सन् १९३२ के आन्दोलन के अवसर पर एक दिन एक नवयुवक गिरफ्तार होकर आया। दो ही दिन के अन्दर अपनी सुरीली आवाज और जोशीले गानों से उसने सारे राजबन्दियों में नई स्फूर्ति भर दी। उसकी वाणी में क्रान्ति का उठता हुआ तराना था। वह तो जन्मजात जनगायक था। अच्युत पटवर्द्धन के बड़े भाई राव साहब पटवर्द्धन भी ऐसे ही विचारों के थे। कौन जानता था, यह जोशीले नौजवान कुछ ही सालों बाद सतारा में ब्रिटिश साम्राज्य-वाद के विरुद्ध एक नई सरकार 'नई सरकार' खड़ी कर शासन चलावेगा और पूरे चार साल तक ब्रिटिश सी० आई० डी० की आँखों का काँटा बना रहकर आन्दोलन का नेतृत्व करेगा?

सन् ४२ के आन्दोलन के दौरान में श्री अच्युत ने वायरलैस के द्वारा बाहर सच्ची आन्दोलन-सम्बन्धी खबरें डा० लोहिया के साथ भिजवाईं, देश को ब्राड-कास्ट करने के इन्तजाम किये। 'भारत छोड़ो' और 'नवीं अगस्त' जैसे क्रान्तिकारी व जोशीले अखबारों का सम्पादन कर अच्युत ने देश में एक क्रान्तिकारी धारा बहा दी। शिमला-कान्फरेंस के दिनों में फरार पटवर्द्धन ने सतारा में एक सार्वजनिक सभा में सी० आई० डी० की आँखों में धूल झोंककर भाषण दिया। नकली दाढ़ी पहन कर उन्होंने पिछले दिनों बम्बई में हुई अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधि-वेशन में भी भाग लिया। यहां पर यह बात ध्यान देने योग्य है कि भारत के फरार नेताओं में केवल श्रीमती अरुणा आसफ-अली व श्री अच्युत ही ऐसे थे जो पुलिस के हाथों न पकड़े जा सके।

अच्युत के ऊपर से वारंट के हट जाने के बाद बम्बई प्रान्त भर में जो उनका अभूत-पूर्व स्वागत हुआ, वह उनके क्रान्तिकारी कार्यों के प्रभाव का परिचायक है। यह बात

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

स्मृति

लेखक, श्री आरसीप्रसादसिंह

मैं तुझे भूला नहीं!

इतना अभी विश्वास कर,
याद आया तू बराबर,
हर क़दम, हर साँस पर!

था न ऐसा एक भी दिन, जब हृदय भूला नहीं!

चाँदनी में निकल पड़ता,
वकुल-वन में, नदी-तट पर,
स्वर्ग जब भू पर उतरता,
देखकर जीवन सुमाता है तुझे फूला नहीं!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष रूप से 'देशदूत' के लिये

हिन्दी और मराठी का संपर्क क्यों?

मामा वरेलकर और श्री गोरकर ने भाषण में क्या कहा?

प्रेषक, श्री शिवकुमार विद्यालंकार

हिन्दी साहित्य सभा, नई दिल्ली समय समय पर सभायें और गोष्ठियाँ करके अन्तर्प्रान्तीय भाषा-भाषियों तथा साहित्यकारों को पारस्परिक विचार-विनिमय करने का अवसर देती रहती है। पिछले दिनों महाराष्ट्र के प्रसिद्ध साहित्य-सेवी मामा वरेलकर और कवि गोरकर ने सभा की एक गोष्ठी में जो विचार व्यक्त किये, वह यहाँ दिये जाते हैं। इस प्रकार की योजनाओं से अन्तर्प्रान्तीय भाषा तथा संस्कृति की दृष्टि से सामंजस्य स्थापित होने में सहायता तो मिलती है साथ ही पारस्परिक वाङ्मय के एकीकरण का भी अवसर मिलता है।

हिन्दी का सुविख्यात पत्रकार पं० बनारसीदास चतुर्वेदी ने एक बार यह इच्छा प्रकट की थी कि हिन्दी-साहित्य-सेवियों को विभिन्न प्रान्तों के साहित्य-सेवियों के साथ निकट सम्पर्क बढ़ाना चाहिए। उनकी इस नेक सलाह को अमल में लाते हुए हिन्दी साहित्य सभा नई दिल्ली की ओर से २१ अप्रैल रविवार को श्रीमती सत्यवती मल्लिक की अध्यक्षता में एक साहित्य-गोष्ठी का आयोजन किया गया था। इस गोष्ठी में दिल्ली के हिन्दी-सेवियों को महाराष्ट्र के दो साहित्य-सेवियों सम्पर्क स्थापित करने, मराठी साहित्य के सम्बन्ध में और उसकी तुलना में हिन्दी-साहित्य के सम्बन्ध में कुछ जानने का भी अवसर प्राप्त हुआ।

महाराष्ट्र के इन दो महानुभावों से हिन्दी के कवियों, लेखकों और पत्रकारों को परिचय प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। उनमें से एक का नाम है श्री मामा वरेलकर और दूसरे का नाम है श्री बालकृष्ण भगवन्त गोरकर। मामा वरेलकर महाराष्ट्र साहित्य-परिषद् के प्रधान हैं। मराठी साहित्य के निर्माण में आप का विशिष्ट स्थान है। आप आजकल भारत के विभिन्न भाषा-भाषी कवियों, लेखकों और पत्रकारों का एक अन्तःप्रांतीय संगठन कायम करने के उद्देश्य से समूचे भारत का भ्रमण करने निकले हुए हैं। आप अपने साथ मराठी के वयस्क कवि श्री गोरकर को भी लिये हुए हैं। श्री गोरकर गोआ (पुर्तगाल) के रहनेवाले हैं। कोंकणी उनकी मातृभाषा है और इसी भाषा के वे सुविख्यात कवि हैं।

मामा साहब का भाषण

सबसे पूर्व मामा वरेलकर ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा—

"हिन्दी-साहित्य-सेवियों का यह दावा ठीक है, कि हिन्दी भारत की राष्ट्र-भाषा है, किन्तु मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है कि हिन्दी के लेखक विभिन्न प्रांतीय भाषाओं के विद्वानों को नहीं पहचानते। वे रूसी, जर्मन, अँगरेजी, फ्रेंच आदि विदेशी भाषाओं की रचनाएं अवश्य देखते हैं और उनका गम्भीर अध्ययन भी करते हैं। किन्तु यदि उनसे कोई पूछे कि बंगाली, तामिल, मराठी, गुजराती साहित्य-सेवियों की रचनाएं कितनों ने पढ़ी हैं तो उत्तर शोचनीय होगा। आज तो अँगरेजी भाषा ने हम सब पर बुरी तरह आक्रमण कर रखा है। अब तक हम लोगों की अन्तःप्रान्तीय भाषा एक तरह अँगरेजी हो चुकी है। किन्तु महामना मालवीयजी और महात्मा गांधी के सतत उद्योग से भारत के विभिन्न प्रान्तों के लोग हिन्दी सीखने लगे हैं। किन्तु हमें शिकायत यह है कि हिन्दीवाले मराठी भाषा नहीं सीखते।

बँगला का प्रभाव

आपने कहा—हमारे देश में अकेली बँगला भाषा ऐसी है, जिसका सब दिशाओं में खूब विकास हुआ है। फिर बंगाली लोग प्रचार-विद्या में अत्यन्त निपुण हैं। उन्होंने अपने साहित्य को अपनी भाषा तक ही सीमित नहीं रहने दिया। उन्होंने अपने साहित्यकारों की रचनाओं को अँगरेजी में उल्था कराया। परिणाम यह हुआ कि अँगरेजी के स्थान पर बँगला भाषा विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं पर हावी हो गई। सभी बँगला साहित्य से अनुवाद करने लगे और बँगला की शैली पर अपने साहित्य में मौलिक रचनाएँ करने लगे। मराठी साहित्य में भी ऐसा ही कुछ हुआ। शरद् बाबू मेरे अन्यतम मित्रों में से थे। मैंने स्वयं उनकी अनेक रचनाओं का उल्था किया। इस समय द्विजेन्द्र, शरद, गुरुदेव कवीन्द्र रवीन्द्र, और बंकिम आदि सभी बँगला विद्वानों की रचनाओं का मराठी में अनुवाद हो चुका है।

यथार्थवादी

मराठी साहित्य का परिचय देते हुए मामा वरेलकर ने कहा—"मराठी का आधुनिक साहित्य यथार्थवादी है। इसके विपरीत हिन्दी-साहित्य भावात्मक है। मराठी में प्रगतिशील साहित्य की भी भरमार है। किन्तु आप लोग जिस 'प्रोग्रेसिव' साहित्य को प्रगतिशील कहते हैं, हम उसे 'पुरोगामी' अथवा 'प्रागतिक' कहते हैं। प्रगतिशील का अभिप्राय यह है कि वह साहित्य जिसका झुकाव प्रगति की ओर हो। किन्तु 'प्रोग्रेसिव' का अर्थ यह नहीं है। जो प्रगति कर चुका हो वही 'प्रोग्रेसिव' है। हम इन शब्दों का जो प्रयोग करते हैं, उनसे यह भाव पूर्णतया प्रकट हो जाता है। पुरोगामी साहित्य का अभिप्राय यह है कि उसके द्वारा प्राचीन परम्पराओं को छोड़कर उनके स्थान पर नवीन परम्पराएँ स्थापित की जायें। हमारा प्रागतिक साहित्य अमर्यादित है।

मराठी नाटक

आपने कहा—"मैं अभी कह चुका हूँ कि मराठी का साहित्य यथार्थवादी है सिर्फ इसीलिए मराठी साहित्य में नाटक बहुत लिखे गये हैं। नाटक का स्थान हमारे साहित्य में ऊँचा है। श्रीहरिनारायण आप्टे का 'कादम्बरी' नाटक सुविख्यात है। इसी तरह प्रो० फड़के, माडखोलकर, खांडेकर और पुरुषोत्तम देवपांडे मराठी नाटक के समर्थ लेखक हैं।

सिनेमा और हिन्दी

"किन्तु हिन्दी में तो रंगभूमि का अस्तित्व ही नहीं है। आप कह सकते हैं कि इस कमी को हिन्दी के सिनेमा दूर कर देते हैं। किन्तु मैं ऐसा नहीं मानता। मैं तो सिनेमा को मछली बाजार से अधिक महत्त्व देने को तैयार नहीं। आप देखिए, मराठी साहित्य में उच्च कोटि के साहित्यकों का अपने देश के सिनेमा से कोई सम्बन्ध नहीं होता। आजकल के सिनेमा पूँजीपतियों के हाथ में हैं। उसमें शामिल होने की अपेक्षा एक सच्चे लेखक का मर जाना अच्छा है। सिनेमा को छोड़कर रंगभूमि में तो हम लेखक सम्राट् होते हैं। रंगभूमि सजीव होती है और उसमें सृजन-शक्ति रहती है। इसलिए उसका अपना ही असर होता है। सिनेमा न होता तो प्रेमचन्द जैसे साहित्य-मनीषी को रोना न पड़ता। वे मेरे सामने कई बार रोया करते थे कि हिन्दी के लेखक सिनेमा में क्यों चले गये? हिन्दी ने रंगभूमि का विकास क्यों न किया?

लघु कथा

आपने कहा—"लघु कथा की दृष्टि से मराठी साहित्य काफी सम्पन्न है। हम लोग कथा-साहित्य में काफी विश्वास रखते हैं। आप लोग भी कथा-साहित्य के प्रेमी हैं। आप लोग और हम भी रामायण और महाभारत अवश्य पढ़ते हैं। क्यों? सिर्फ इसलिए कि उन्हें कथा के रूप में लिखा गया है। योगवाशिष्ठ ऐसी चीजें कितने लोग पढ़ते हैं? आप भी नहीं पढ़ते और हम भी नहीं। हमें तो कथा-साहित्य से अत्यंत प्रेम है। हम लोग प्रेमचन्द की समस्त लघु कथाओं का मराठी में अनुवाद कर चुके हैं। किन्तु हमारे कथा-साहित्य और आपके कथा-साहित्य की कथा-वस्तु भिन्न भिन्न है। महाराष्ट्र की अपनी संस्कृति है। हमारी संस्कृति लड़ाकू है। एक मराठा दूसरे से लड़ने को न मिलेगा तो कोई दूसरा लड़ने को न मिलेगा तो आपस में ही लड़ना शुरू कर देगा।

"काव्य के क्षेत्र में महाराष्ट्र पीछे है। हिन्दी और बँगला इस क्षेत्र में बाजी मार चुके हैं। गुजराती में भी काव्य बहुत है। तामिल में भी लघु कथाएँ हैं और विविध काव्य भी।

इतिहास और राजनीति

आपने कहा—"मराठी साहित्य में इतिहास और राजनीति को आवश्यक नहीं समझा जाता। आप लोगों की तुलना में मराठी भाषा में इतिहास काफी लिखा गया है। किन्तु इस दिशा में हिन्दी ने जो प्रगति की है, उसे देखते हुए हम मराठी में लिखे इतिहासों से संतुष्ट नहीं होते। इस दिशा में बँगला और हिन्दी ने काफी प्रगति की है। गुजराती भी मराठी की तरह पीछे है। तामिल तो [illegible] पुराने वाङ्मय से भरी हुई है। उस भाषा में आपको २५०० वर्ष पुराना वाङ्मय मिल जायगा। तामिल साहित्य पुराना है। इसका कारण यह है कि उसका प्रचार गुजराती, बँगला और हिन्दी में [illegible] सरोकार नहीं। वह तो केवल द्रविड़ मलयालम भाषा-परिवार की भाषा है।

रेडियो की भाषा

आपने कहा—"हिन्दीवालों [illegible] रेडियो के खिलाफ जो आन्दोलन [illegible] रखा है, उसमें भली भाँति परिचित हैं। आपकी शायद ज्ञात ही होगा कि जब शुरू शुरू में बम्बई में रेडियो

शेष पृष्ठ १४ पर

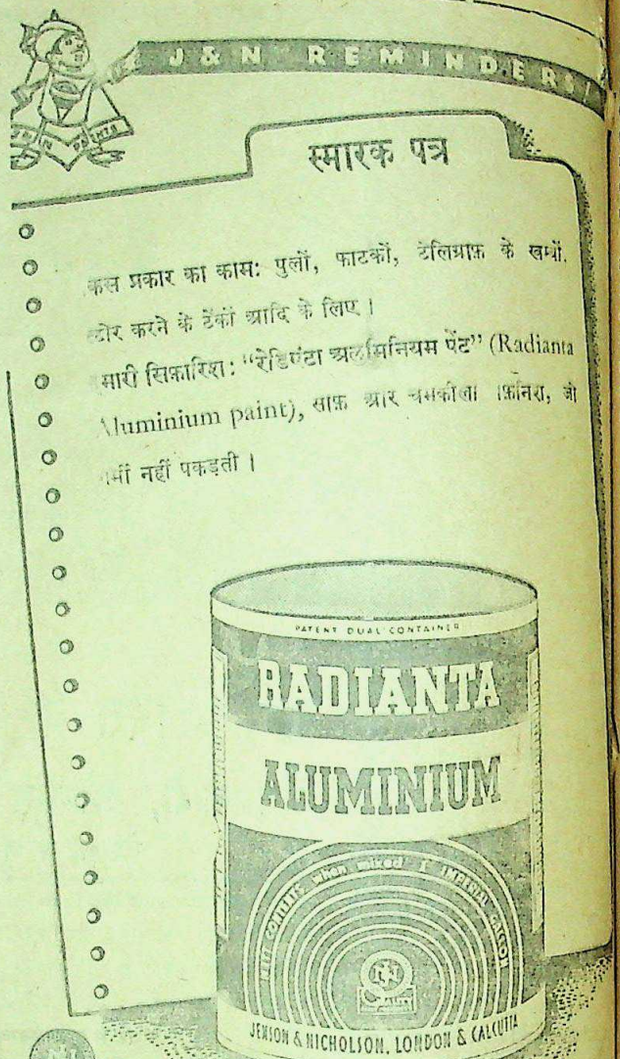

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

सपनों का प्रेमी

लेखक, श्री करुणा सामणेर

इस सुन्दर कहानी के लेखक श्री करुणा सामणेर बौद्ध हैं। उनकी जन्मभूमि स्याम है। तेरह वर्ष की उम्र में ही आप भारत की ओर चले आये और सारनाथ में रहने लगे। युद्ध-काल में स्याम से युद्ध घोषित हो जाने पर आप सेवाग्राम में बन्दी बना लिये गये और देवली कैम्प जेल में भेज दिये गये अभी तक आप वहीं हैं। सम्भावना है कि अब आप स्याम-सरकार की लिखा पढ़ी से अपने देश वापस भेज दिये जायें। भारत में रहकर आपने हिन्दी तो सीखी ही है, इसके सिवा मध्यमा तक संस्कृत का भी अध्ययन किया है। यह कहानी आपने हिन्दी में लिखी है। कहानी भाषा तथा भाव दोनों दृष्टियों से अत्यन्त रोचक और सुन्दर है।

कई वर्ष बीत चुके हैं उस घटना को। [illegible] न जाने मुझमें और संसार में कितने परिवर्तन हो गये। परन्तु मैं उस करुणा-[illegible] घटना को—उस हृदय-भेदक कथा को—कैसे भूलूं? अब तक मेरे हृदय-पटल पर वह घटना इस प्रकार अंकित है जो कभी भुलाई नहीं जा सकती।

थविल मेरी एक पड़ोसिन थी। उसका और मेरा घर बिलकुल पड़ोस में था। उसका भाई और मैं एक ही उम्र के थे। वह मेरा घनिष्ठ मित्र भी था। इस मित्रता के नाते मैं थविल के घर बराबर आता जाता रहता था। इसी मित्रता के ही नाते उसके घर में जो कुछ होता वह मुझे सब मालूम होता रहता।

थविल के परिवार में तीन प्राणी थे—वह, उसका एक भाई तथा एक बहन। थविल के माता-पिता को स्वर्गवासी हुए कई वर्ष हो चुके थे। अतः उसे, सबसे बड़ी बहन होने के कारण, परिवार का भार सँभालना पड़ा। उस समय वह लगभग २३ वर्ष की थी। कई बार उसके विवाह की बातचीत चली परन्तु उसने यह कहकर इन्कार कर दिया कि "इस समय मुझ पर बड़ा उत्तरदायित्व है। मुझे अपने भाई तथा बहन की देख-भाल करनी पड़ती है। जब तक ये दोनों स्वाधीनता से अपना जीवन-निर्वाह नहीं करने लगते तब तक मैं उनसे अलग नहीं हो सकती।"

थविल की शिक्षा अच्छी हुई थी। वह बेंकाक विश्वविद्यालय की ग्रेजुएट थी। अतः उसे नौकरी खोजने में ज्यादा कठिनाई नहीं पड़ी। वह बेंकाक के एक गर्ल्स हाईस्कूल की प्रधान अध्यापिका बनी। उसकी मासिक आय लगभग दो सौ रुपये थी। इतनी रकम कम न थी। वह चाहती तो बड़े सुख के साथ जीवन बिता सकती थी पर वह स्वार्थी तथा 'जिस की कच्ची' स्त्री नहीं थी। जितने रुपये उसे मिलते वह उन्हें अपने भाई तथा बहन की शिक्षा में खर्च कर डालती थी। वह चाहती थी कि उसके भाई और बहन अच्छी तरह लिख-पढ़कर सुखपूर्वक संसार में रहें। यही उसके जीवन की एक-मात्र अभिलाषा थी।

१९२८ की फाइनल परीक्षा में उसका भाई बहुत अच्छे नम्बरों से पास हुआ। उसे आगे पढ़ने के लिए सरकारी वजीफा मिला। तदनन्तर वह लॉ पढ़ने के लिए फ्रांस गया। वहाँ की शिक्षा समाप्त कर वह स्याम लौटा और एक सरकारी उच्च पद पर नियुक्त हो गया। अपने भाई की इस सफलता को देखकर थविल फूली न समाई। उसके सुख की सीमा न रही। इस असीम सुख के साथ-साथ उसने यह भी समझ लिया कि अब मेरे सिर से एक भार उतर गया।

अब रह गया दूसरा भार—उसकी छोटी बहन का। हाईस्कूल की परीक्षा पास होकर वह ट्रेनिंग कालेज में भर्ती हुई। इन दिनों थविल के जीवन में एक ऐसी घटना घटी जिसने उसका अंत करके ही छोड़ा। जिस समय उसकी बहन ट्रेनिंग कालेज में पढ़ रही थी, उसका परिचय एक युवक से हुआ जो लगभग उसी की आयु का था। युवक का ना[illegible] प्रचाप [illegible] प्रतिष्ठित घराने का था और [illegible] पढ़ रहा था। इन दोनों का संबंध [illegible] दिन घनिष्ठ होता गया। वह [illegible] उसकी बहन के साथ उसके घर पर आता जाता। पहले तो थविल इतना ही [illegible] थी कि यह मेरी बहन का एक [illegible] मित्र के सिवा और कुछ नहीं है। [illegible] उसके साथ छोटे भाई का-सा बर्ताव [illegible]। परन्तु धीरे-धीरे उसका यह [illegible] बदलने लगा। प्रचाप जैसे सुन्दर, [illegible] तथा सब बातों में कुशल युवक [illegible] उसके मन में एक नया तथा [illegible] अनुभव होने लगा। धीरे-धीरे उसका [illegible] कुछ का कुछ हो गया। प्रचाप के साथ उसका प्रेम हो गया! उसने अपने इस हठी प्रेम को रोकने की बड़ी कोशिश की परन्तु सफलता नहीं मिली। उसे स्वयं नहीं मालूम था कि क्यों वह प्रचाप के साथ प्रेम करने लगी। "मैंने ऐसा क्यों किया—ऐसा नीच कर्म क्यों किया?" यह विचार हमेशा उसके सिर में चक्कर काटता था। आखिर उसने, प्रयत्न करने पर भी, अपने को इस प्रेमरूपी बंधन से मुक्त करने में बिलकुल असमर्थ पाया। वह लाचार हो गई। केवल उस अवसर की प्रतीक्षा करने लगी, जब वह प्रचाप से अपना गहरा प्रेम प्रकट कर सके? यद्यपि उसकी प्रेमाग्नि हृदय में दिन पर दिन बढ़ती जाती थी तथापि उसने उसे कभी बाहर प्रकट नहीं होने दिया। अपनी छोटी बहिन के मित्र से हुआ प्रेम प्रकट करने में उसे लज्जा आती थी—हिचकिचाहट होती थी। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि उसे यह मालूम नहीं था कि जिस प्रकार वह प्रचाप से प्रेम करती है उसी प्रकार प्रचाप उसको प्रेम करता है या नहीं? वह भगवान् से रात-दिन यही प्रार्थना करती रहती कि प्रभो! मुझे शीघ्र ऐसा अवसर दीजिए जब मैं अपनी इस प्रेमाग्नि को शान्त कर सकूँ!

* * *

एक वर्ष बाद। थविल की बहिन की अंतिम परीक्षा समाप्त हुई। वह प्रथम श्रेणी में पास हुई। अब उसका भी जीवन उज्ज्वल होने लगा उसके लिए भी नौकरी की कमी नहीं रही। उसी दिन शाम को प्रचाप की माता थविल के घर आई। उन्होंने थविल से अपने पुत्र का विवाह उसकी बहिन के साथ करने की इच्छा प्रकट की। यह सुनते ही थविल इस प्रकार चौंक पड़ी मानो उस पर बिजली गिरी हो। पहले तो उसने अपने कानों पर विश्वास ही नहीं किया। उसने अपने को सँभालते हुए कहा—"अगर दोनों आपस में सच-मुच प्रेम करते हैं तो मुझे कोई आपत्ति नहीं। सबसे अच्छा हो यही है कि मैं पहले अपनी बहिन से पूछ लूँ। यदि वह राजी हो तो मैं भी प्रसन्नता-पूर्वक स्वीकार करती हूँ।" यह उत्तर पाकर प्रचाप की माता प्रसन्नता से अपने घर लौट गई।

एक दिन, शाम के वक्त, जब घर के सब काम-काज समाप्त हुए, तब दोनों बहनें एक साथ बैठकर इधर-उधर की बातें करने लगीं। इसी बीच में थविल ने, अवकाश पाकर, अपनी बहन को प्रचाप की माँ की घटना सुनाई और उसकी राय पूछी। उसकी बहन ने प्रचाप पर अपना गहरा प्रेम प्रकट किया और उससे शादी करने की इच्छा प्रकट की। यह सुनकर थविल का सिर चक्कर खाने लगा। उसकी सारी आशाएँ टूट गईं। उसका हवाई-महल पृथ्वी पर गिरकर टूट गया! उसने अपने भाग्य को कोसते हुए मन में कहा—"मुझे जैसी अभागिनी शायद संसार में और कहीं नहीं है। मुझसे ही ग़लती हुई थी। अगर पहले से मैंने प्रचाप पर अपना प्रेम प्रकट किया होता तो शायद आज मुझे इतना दुख न सहना पड़ता। परन्तु मुझे इस बात की प्रसन्नता और गर्व है कि मैंने अपने कर्त्तव्य का अच्छी तरह निर्वाह किया है। मैंने स्वर्गगत माता-पिता की इच्छा पूरी की है। अब मेरे दोनों भाई-बहन सुखी हैं। यही मेरे लिए सब कुछ है। अगर आज पूज्य माता-पिता जीवित होते तो कितने प्रसन्न होते! संसार में आकर जो काम मुझे करना था उसे मैं कर चुकी। अब मेरा जीवन किसी काम का नहीं। अब इस पृथ्वी पर मेरे रहने की आवश्यकता नहीं।" यह सोचते हुए उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली।

* * *

एक महीने के उपरान्त प्रचाप और थविल की बहन का विवाह नियमपूर्वक हो गया। दोनों ने सुहागरात भी समाप्त कर ली। अब थविल घर पर अकेली रहती। उसका भाई भी भूले-भटके ही उसके पास आता था। जिस दिन से उसे प्रचाप की आशा टूट गई उसी दिन से उसका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा और दिन-प्रतिदिन उत्तरोत्तर खराब होता गया। काफी दवाइयाँ कीं; परन्तु फल नहीं के बराबर रहा। मानसिक बीमारी थी; भौतिक औषधि उसका इलाज कैसे कर सकती थीं? संसार उसको सुनसान जान पड़ता था। न उसकी खाने में रुचि थी न अन्य किसी प्रकार की चीज में। अंत में डाक्टर ने उसे क्षयरोग बताया और स्थान बदलने की सलाह दी। थविल ने अपनी नौकरी छोड़ी इसलिए नहीं कि वह अपने स्वास्थ्य का सुधार करना चाहती थी बल्कि उस काम में उसका मन बिलकुल नहीं लगता था। उसके पास जो कुछ धन-दौलत था उसे बटोर कर वह लंपाक गई। उसे नागरिक जीवन से अत्यन्त घृणा हो गई थी। वह ऋषि-मुनियों की तरह एकान्त स्थान में रहना चाहती थी। लंपाक जैसे सूदूर तथा जनहीन प्रदेश में उसके व्यग्र मन को कुछ शान्ति अवश्य प्राप्त हुई परन्तु वह घटी हुई घटना को भूल सके इसके लिये वहाँ का वातावरण भी असफल सिद्ध हुआ। फलस्वरूप उसका स्वास्थ्य अच्छा होने के बदले दिन-दिन खराब होता गया। अंत में वह उस अवसर की प्रतीक्षा करने लगी कि यमराज कब मुझे अपने पास बुलायेगा।

अचानक प्रचाप के पास लंपाक से एक तार आया जिसमें यह खबर थी—"सख्त बीमार हूँ। तार पाते ही आइए—थविल।" उसी दिन, रात की गाड़ी से प्रचाप लंपाक के लिए रवाना हुआ। दूसरे दिन बारह बजे वह स्टेशन पर पहुँचा। स्टेशन से झट वह एक टैक्सी लेकर थविल के घर गया।

दरवाजे के भीतर घुसते ही चारपाई पर पड़ी हुई थविल नजर आई। वह इतनी दुबली हो गई थी कि उसे पहचानना कठिन था। प्रचाप को देखकर मुस्कराते हुए उसने हाथ के इशारे से उसे अपने पास बुलाया। प्रचाप पास जाकर उसकी बगल में बैठ गया। अपने स्वप्न के प्रेमी का हाथ पकड़कर वह धीमे और टूटे हुए स्वर में कहने लगी—"प्राण प्यारे! मैं आपकी प्रतीक्षा कर रही थी। आपके दर्शन की आशा नहीं थी। अब मेरी अभिलाषा पूरी हो गई। परलोक में फिर हम दोनों मिलेंगे।" इतना कहकर उसने प्रचाप का हाथ चूमा और उसे अपनी छाती पर रख लिया। फिर उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। सारे कमरे में सन्नाटा छा गया। प्रचाप की समझ में कुछ नहीं आया। वह मूर्तिवत् बैठा था। जब उसे सुध आई तब उसने रोगिणी की तरफ अपना मुख घुमाया। उस वक्त रोगिणी की आँखें बन्द हो चुकी थीं। उसका श्वास धीमा पड़ गया था। पाँच मिनट के बाद उसके गले से एक विचित्र आवाज सुनाई पड़ी। साँस रुक गई थी। वह उस दुनिया की सैर करने के लिए चली गई जिसकी सीमा से कोई यात्री वापस नहीं आता। हाय! अभागिनी थविल!

गीत

लेखिका, श्रीमती चंद्रमुखी ओझा 'सुधा'

दे मुझे दो बूँद आँसू क्या सदा मुस्कान लोगे?
आज बादल दल सँभल कर,
क्यों गगन में डोलता है?
मुस्करा कर राश्मियों से,
रवि कमल दल खोलता है,
एक तरु पर मुक्त पंछी,
चहकता औ' बोलता है,
एक बन्दी सीखचों में,
मुक्तिद्वार टटोलता है,
आज तुम वीरान बनकर क्या नई पहचान लोगे?
जान पाओगे न मेरी,
वेदना की मूक भाषा—
प्यास चातक की बढ़ी,
पावस बनी केवल दुराशा,
मैं निशा के आगमन में,
द्वीप शतशत बार दूँगी,
भोर में प्रतिदिन उषा को,
अश्रु का उपहार दूँगी,
भावना मेरी कुचलकर यक बना अरमान लोगे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'दीप'*

(आलोचना)

लेखक, प्रोफेसर लालजीराम शुक्ल, एम० ए०, बी० टी०

जब राष्ट्र के सामान्य नर-नारी उसके बालक-बालिकाएँ उच्चतम भावों की अनुभूति अपने हृदयों में करने लगते हैं तो राष्ट्र के दिन फिरने की घड़ी आ जाती है। जिस समय मैंने 'ओस की बूंद पर एक अप्रसिद्ध बंगाली नवयुवक की कविता पढ़ी उस समय मेरे हृदय में यह विचार आया कि वास्तव में हमारा भविष्य उज्ज्वल है। उस कविता में वैसे ही विचार थे जैसे कविवर टैगोर की गीताञ्जलि में। कह नहीं सकता कि उस कविता को कितने लोगों ने पढ़ा होगा। वह निकली भी थी बालकों की पत्रिका 'मोचक' में। श्रीमती शकुन्तला सिरौठिया का 'दीप' नामक कविता-संग्रह जब लेखक ने पढ़ा तो वैसे ही भाव मन में आये जैसे 'ओस की बूंद' कविता पढ़ने पर आये थे।

शकुन्तला सिरौठिया की प्रसिद्धि, अभी साहित्यिकों में उतनी नहीं है पर 'दीप' ने प्रकाशित उनके विचार वैसे ही ऊँचे हैं जैसे महादेवी जी के 'नीरजा' आदि में पाये जाते हैं।

कविता हमारे सुप्त मानसिक भावों के शोध का सबसे सुन्दर उपाय है। जो मनोभाव दबे रहने पर अनेक प्रकार की मानसिक बीमारियों के रूप में प्रकट होते हैं वे ही परिष्कृत होकर प्रकट होने से संसार का अत्यंत कल्याण करते हैं। यदि कवि अपनी वेदनाओं को प्रकट न करे तो अवश्य पागल हो जाय। कवि का जीवन भावपूर्ण होता है। ये भाव उसके मन को क्रान्त करते रहते हैं। जब कवि अपने मानसिक सुप्त भावों को समष्टि आत्मा, जो कि व्यक्ति की भी आत्मा है, समर्पित करता है अर्थात् उन्हें सच्चे मन से कविता में प्रकाशित करता है तो उसके मानसिक झंझट उत्पन्न करनेवाले भाव परिष्कृत हो जाते हैं; उसे शान्ति प्रदान करते हैं। इस प्रकार हमारा मानसिक दोष भी हमारा सौन्दर्य बढ़ाता है। इससे न सिर्फ व्यक्ति का लाभ होता है वरन् संसार का भी लाभ होता है।

'दीप' में दो प्रकार की कविताएँ हैं—छायावादी और राष्ट्रवादी। कुछ कविताएँ व्यक्तिक अनुभूति की सतह से ऊँची नहीं उठीं पर अधिकांश कविताओं में दिव्य दृष्टि की झलक पाई जाती है जो कवि को अमर बनाती है। 'निराशा' 'अनजान', 'नाविक', 'बन्दी' आदि ऐसी ही कविताएँ हैं। 'निराशा' की कुछ पंक्तियाँ देखिए—

'तुमने न मुझे अपनाया
पर तुम मेरे बन आये।
मेरे उर के स्पन्दन बन
प्राणों में मेरे छाये।
तुम बने न मेरे, मैंने
तुमको अपनाना चाहा।
प्रिय तुम्हें रिझाना चाहा॥

कवियित्री का अनुभव अकथनीय है। इस अकथनीय अनुभव की सत्यता का प्रमाण स्वयं अपना वैसा ही अनुभव हो सकता है। लेखिका 'अनजान' में इसी की झाँकी चित्रित करने की चेष्टा करती है—

"रवि सुन्दरि ऊषा का जब
करता आलिंगन हँसकर,
अनुराग गगन में छाता
गा देते विहग विहँसकर।
तब कौन हृदय में चुपके
चुटकी से ले जाता है,
रे कौन जगा देता है
पीड़ा-सी दे जाता है।"

कवियित्री की इस अनजान से मिलने की उत्कट इच्छा निम्नलिखित पंक्तियों में व्यक्त होती है:—

"शशि तो स्वार्थी कितना देखो
भोले चकोर से दूर बसा
रवि की भी निष्ठुरता देखो
झुलसाता प्रिय को लूह चला
पर मेरा तो प्रिय संग तेरे
जल जलकर जीवन बीत रहा।"

इन पंक्तियों में चित्रित भाव गहरी अनुभूति को दर्शाते हैं। सम्भव है, कोई मनोवैज्ञानिक कहे कि यह तो व्यक्तिक दुःख का वर्णन है जैसा मातृहीन में पाया जाता है। वह कह सकता है कि इसके पीछे वास्तविक हृदय की 'वीणी' छिपी हुई है। पर सत्य तो यह है कि बिना इस प्रकार की पीड़ा के सुन्दर कविता सम्भव नहीं। कविवर शेली का यह कथन कि 'हमारा सबसे सुरीला गान वही है जिसमें सबसे अधिक हृदय की कसक व्यक्त होती है। सर्वथा सत्य है। 'भ्रमर गीत' इतने मनमोहक क्यों है? क्योंकि उनमें विरह-पीड़ा व्यक्त की गई है।

पर यह ध्यान रहे कि जब किसी व्यक्ति की पीड़ा कविता के रूप में प्रकाशित होती है तो वह व्यक्तिक अनुभूति न रहकर जनसाधारण की अनुभूति हो जाती है। इसके इस प्रकार रूपान्तरित होने से उसका शोध हो जाता है। वह अब किसी व्यक्ति को नीचा गिराने के बदले ऊँचा उठाती है। उसे जो पढ़ता है उसके मनोभाव अज्ञात रूप से परिष्कृत हो जाते हैं। कविता व्यक्ति के भावों का परम पुरुष परमात्मा के प्रति अर्पण करने का एक प्रयत्न है। जब तक मनुष्य अपनी अनुभूति को छिपाता रहता है तब तक उसकी मानसिक झंझट सुलझ जाती है और उसका जीवन उच्च कोटि का हो जाता है। वास्तव में मनुष्य का कल्याण, अपने आपको सभी हृदयों का स्वामी और सदा वर्तमान रहनेवाले परम पुरुष के प्रति अर्पण करने में है। जिसने अपने प्रियतम के रिझाने के लिए अपने आपको खो दिया उसने उसे पा लिया; जिसने लोक-लाज की चिन्ता की उसने उसे कभी न पाया।

शकुन्तला जी की राष्ट्रीय कविताएँ भी वैसी ही उच्च कोटि की हैं जैसी छायावादी कविताएँ। 'भूखा बंगाल', 'मा की पुकार' दोनों कविताएँ हृदय में उथल-पुथल मचानेवाली हैं। ऐसी कविताएँ बिना सच्ची अनुभूति के नहीं लिखी जा सकतीं।

कविता की भाषा सरल सुबोध और संगीतमय है। यह उपर्युक्त उद्धरणों से स्पष्ट है। जो कविता की भाषा का आदर्श कविवर वर्ड्सवर्थ ने पाठकों के सम्मुख रखा है उसे चरितार्थ करने की चेष्टा इन छन्दों में पाई जाती है।

सच्ची कविता वह है जिसमें साधारण भाषा में असाधारण बातें कही जायँ। उच्च कविता के शब्दों, चित्रों, प्रतिमाओं का चुनाव मनुष्य की बुद्धि नहीं करती अपितु उसका अचेतन मन करता है। जो समाधिस्थ होकर किसी प्रकार की रचना करता है उसकी रचना में ही सचाई और सौन्दर्य होता है। ऐसी रचनाओं में न केवल भावों का सौन्दर्य पाया जाता है वरन् रूप अर्थात् कल्पना और भाषा का भी सौन्दर्य पाया जाता है। पंत, प्रसाद और महादेवी जी की कविताएँ ऐसी ही हैं। [illegible] आदर्शों का अनुकरण हमारे [illegible] और नवयुवतियाँ भी कर रही हैं। यह हमारे सौभाग्य की बात है। शकुन्तला जी की प्रतिभा सराहनीय है। [illegible] का विश्वास है कि ये भारत की होनहार कवियित्री हैं। वास्तव में हमारा भविष्य इन्हीं युवक-युवतियों पर निर्भर है। [illegible] इन्हीं के सुदिन देखने के लिए जीवित हैं।

कन्याशाला और कालेज के शिक्षक होने के नाते तथा अध्यापिकाओं का शिक्षक होने के नाते मैं शकुन्तला जी के 'दीप' का स्वागत करता हूँ। आशा है कि विद्वन्मंडली जो मातृभाषा को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए उत्सुक है, इस नये प्रयास को अपना कर प्रोत्साहन देगी।

* दीप (कविता-संग्रह) लेखिका, श्रीमती शकुन्तला सिरौठिया, प्रकाशक, शकुन्तला सिरौठिया, गोकुलदास गर्ल्स इंटरमीजिएट कालेज, मुरादाबाद। मूल्य ।।।)

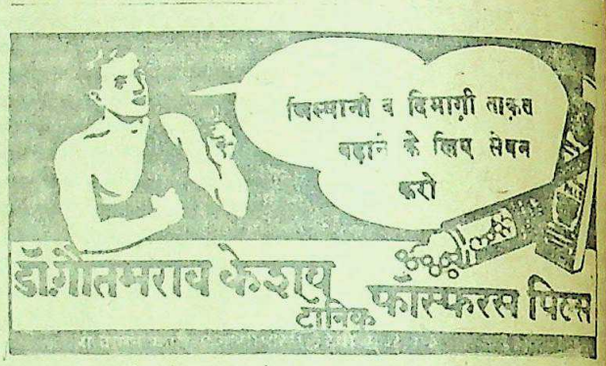
जिस्मानी व दिमाग़ी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
डॉ. गौतमराव केशव टॉनिक फॉस्फरस पिल्स

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जाहरी एल० एस० धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

Estd. 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S. १०) H.M.B.S. १५) H.M.D.S. २५)। पुस्तक—अ० पारिवारिक १) बायोकेमिक १) १००० रेडलाइन १) मेटरिया १) मेडिकल डिक्शनरियाँ १॥) आर्गेनन १), फार्माकोपिया १॥) कुल किताब ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायगी। डा० ख० माफ—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≡) ड्राम। आउन्स ॥) परेलू बक्स ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.)

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

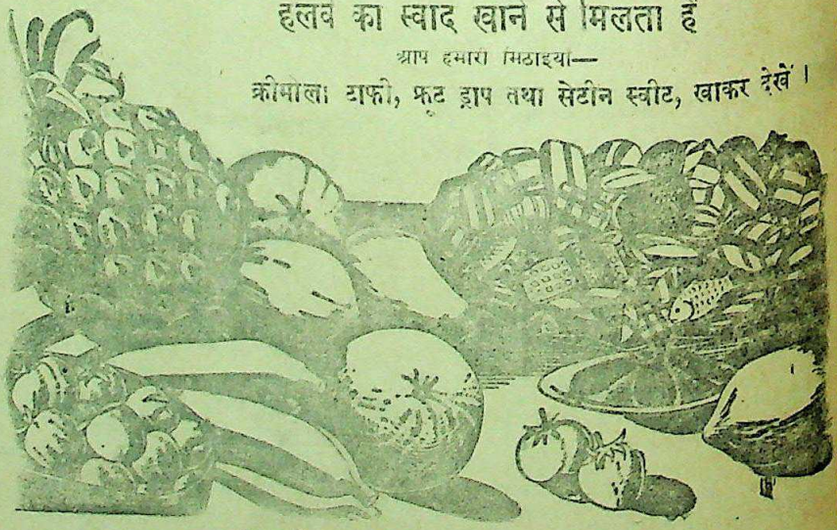

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

सूखे पशुओं की वापसी पर किराये की कमी

दिसम्बर १९४५ में महाराजा भरतपुर की अध्यक्षता में होनेवाले अखिल भारतवर्षीय पशु-रक्षा सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन में दूध से भागे हुए पशुओं को बचाने के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव पास हुआ था। प्रस्ताव में कहा गया था कि भारतवर्ष के बड़े शहरों, जैसे कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, दिल्ली, लाहौर आदि के दूध से सूखे हुए पशु चरागाहों और पशु-रक्षा फार्मों को वापस कर देने के लिए यह आवश्यक है कि सरकार रेलवे बोर्ड द्वारा किराये में कमी कर दे। इस सम्बन्ध में सम्मेलन के दफ्तर द्वारा रेलवे बोर्ड से लिखा-पढ़ी की गई थी। रेलवे बोर्ड ने हमें उत्तर दिया कि उसने तमाम रेलवे को उचित कार्यवाही करने के लिए गश्ती चिट्ठी भेजी है।

नार्थ वेस्टर्न रेलवे का उत्तर आ गया है। उसमें उक्त रेलवे से हावड़ा को पशु ले जाने की दर छः आना फ़ी मील है। हावड़ा से उस जानवर को जिस स्टेशन से वह पहले आया था उस स्टेशन तक ९ महीने के अन्दर वापस ले जाने में कोई किराया नहीं लिया जायेगा। लौटते समय किराये की पहली रसीद पेश करनी होगी।

हावड़ा से जो पशु उक्त रेलवे के किसी स्टेशन को दिल्ली, ग़ाज़ियाबाद, मेरठ शहर और सहारनपुर होकर भेजा जायेगा। उससे खास रियायती किराया दो आना फ़ी मील के हिसाब से लिया जायेगा।

करांची या करांची छावनी से उक्त रेलवे के किसी स्टेशन को सूखे हुए पशु भेजने के लिए पहले दो आना फ़ी मील का रियायती महसूल नियत किया गया था। लेकिन चूँकि कोई पशु नहीं ले जाया गया इसलिए वह रद्द कर दिया गया। यह रेलवे इस रियायती दर को फिर से जारी करने को तैयार है बशर्ते कि इससे ज़्यादा से ज़्यादा फायदा उठाया जाय। लाहौर, दिल्ली और बम्बई से इस रेलवे के किसी स्टेशन को सूखे पशुओं को रियायती महसूल पर भेजने के बारे में कोई आवेदन-पत्र न आने के कारण वह रियायती महसूल जारी नहीं किया जा सका। अगर उक्त स्टेशनों से रियायती महसूल जारी कराना हो तो जिस स्टेशन को सूखे पशु भेजने हैं उनके नाम तथा अन्दाजन कितने पशु हर स्टेशन को भेजने होंगे उनकी तादात जनरल मैनेजर नार्थ वेस्टर्न रेलवे लाहौर के पते पर सूचित करना चाहिए।

मैं आशा करता हूँ कि सूखे पशुओं की रक्षा के विषय में दिलचस्पी लेनेवाले सज्जन तथा सम्बन्धित गौशालायें, पिंजरा पोल, पशु-रक्षा समितियाँ जीव दया सभायें आदि नार्थ वेस्टर्न रेलवे लाहौर की सूचना के अनुसार उचित कार्यवाही करेंगे।

आगरा —सेठ अचलसिंह, एम० एल० ए०
२६ अप्रैल ४६ कार्यवाही सभापति

* * *

'नया हिन्द'

इलाहाबाद की हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी ने यह तय किया है कि पहली जुलाई सन् १९४६ से हिन्दुस्तानी बोली में "नया हिन्द" नाम का एक माहवारी निकाला जावे जो नागरी और फ़ारसी दोनों लिखावटों में छपा हो। एडीटरों का काम एक बोर्ड के सुपुर्द होगा—(१) डा० ताराचन्द, (२) महात्मा भगवानदीन, (३) सैय्यद मुज़फ़्फ़र हसन, (४) पंडित विश्वम्भरनाथ और (५) पंडित सुन्दरलाल।

यह माहवारी हिन्दुस्तान की पूरी आज़ादी का हामी होगा जिसे मुल्क की सभी पार्टियाँ हासिल करना चाहती हैं। साथ ही हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी के मक़सद को सामने रखते हुए यह पार्टियों के छोटे-छोटे और दो दिन के आपसी झगड़ों से अलग रहने की कोशिश करेगा। गुत्थियों को सुलझाना भी इसका काम होगा सिर्फ़ इसलिए कि कुछ बने और रूप ले। पर इसका असली काम यह बताना होगा कि हिन्दुस्तान में आदमी की बुनियादी उलझनें क्या हैं और समाज की बुनियादी ज़रूरतें क्या हैं। जो हमारे एक-से विचार हैं और एक-सी मंज़िलें हैं उन्हीं पर यह ज़ोर देने की कोशिश करेगा। जिन बातों में सब जमातों और फ़िर्क़ों के लोग एक राय हैं उन्हें चमकाने की कोशिश करेगा। और इस बात की भी कोशिश करेगा कि मुल्क के सब लोग बुनियादी तौर पर मुल्क के मसलों को एक तरह देखने लगें जिससे कि आज़ाद और ख़ुशहाल हिन्दुस्तान दुनिया के दूसरे देशों के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर आगे क़दम बढ़ा सके।

३३, बाई का बाग़ —सुन्दरलाल
इलाहाबाद सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

* * *

हिन्दी-साहित्य की वार्षिक रिपोर्ट

हिन्दी में अभी तक कहीं से भी ऐसी कोई रिपोर्ट नहीं निकलती जिससे हमें उसकी उत्तरोत्तर प्रगति का पता चल सके। हमारे इस प्रकाशन से संसार समझ सकेगा कि अब तक हिन्दी-साहित्य ने किस दिशा में कितनी प्रगति की है तथा आज उसकी स्थिति क्या है! इस वार्षिक रिपोर्ट में:—हिन्दी की सेवा के लिए अपना जीवन खपा देनेवाले महापुरुषों का संक्षिप्त विवरण, हिन्दी-साहित्य की सेवा करनेवाली संस्थाओं, सभा-सोसाइटियों, स्कूल-कालेजों, पाठशालाओं, विद्यापीठों, पुस्तकालयों तथा वाचनालयों का संक्षिप्त परिचय; लेखकों, कवियों, सम्पादकों, अनुवादकों तथा अन्य साहित्य-सेवी विद्वानों के साथ ही प्रकाशकों का परिचय; वर्ष भर की प्रकाशित उच्च कोटि की सभी विषयों की पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं का परिचय तथा आलोचना के लिए आनेवाली पुस्तकों की अधिकारी विद्वानों द्वारा की गई निष्पक्ष आलोचना; और हिन्दी के प्रचारार्थ दिये जानेवाले पुरस्कारों, पदकों तथा मुख्य-मुख्य छात्र-वृत्तियों की नियमावली तथा विवरण और अन्य बहुत-सा उपयोगी साहित्य रहेगा।

अतः, हिन्दी-साहित्य की प्रगति से सम्बन्ध रखनेवाली समस्त संस्थाओं और व्यक्तियों से हमारी प्रार्थना है कि हमारे इस सार्वजनिक कार्य में सहयोग देते हुए अपना-अपना प्रामाणिक विवरण तथा संक्षिप्त परिचय हमारे पास यथाशीघ्र लिख भेजने का कष्ट करें। मार्ग-प्रदर्शन के लिए फार्म का नमूना इसमें दिया जा रहा है। इसी फार्म पर अथवा जगह कम पड़ने पर या फार्म न रहने पर सादे काग़ज़ पर इसी के अनुसार खाने बनाकर साफ़ अक्षरों में सारा विवरण भेजने की प्रार्थना है।

बड़ागणेश, —मुकुन्ददास गुप्त 'प्रभाकर'
बनारस सिटी

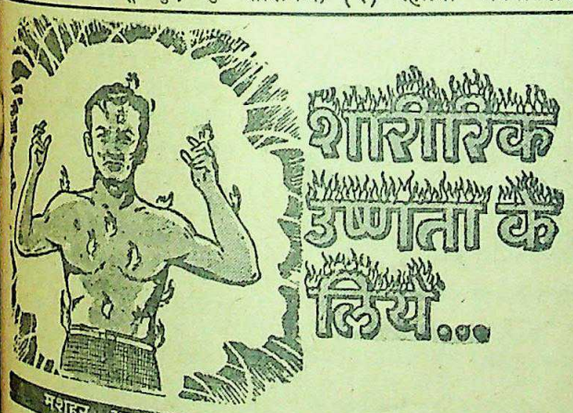
शारीरिक उष्णता के लिये...
मशहूर अनुभूत इलाज
शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक
पर्ल काढ़ा
आज से ही शुरू किजिए, सर्वत्र मिलता है।
जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली तलुवों और आँखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग में आग सी जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.
इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, जड़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढ़ा बालक वृद्ध, पुरुष स्त्री सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक निर्भयता है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निर्भयतापूर्वक सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके शीतल, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

पर्ल कम्पनी
आर्योषधी का रखाना
बम्बई २७
एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।
पो० प्रतिनिधि दोसर एण्ड को०, बिहरना रोड, कानपूर

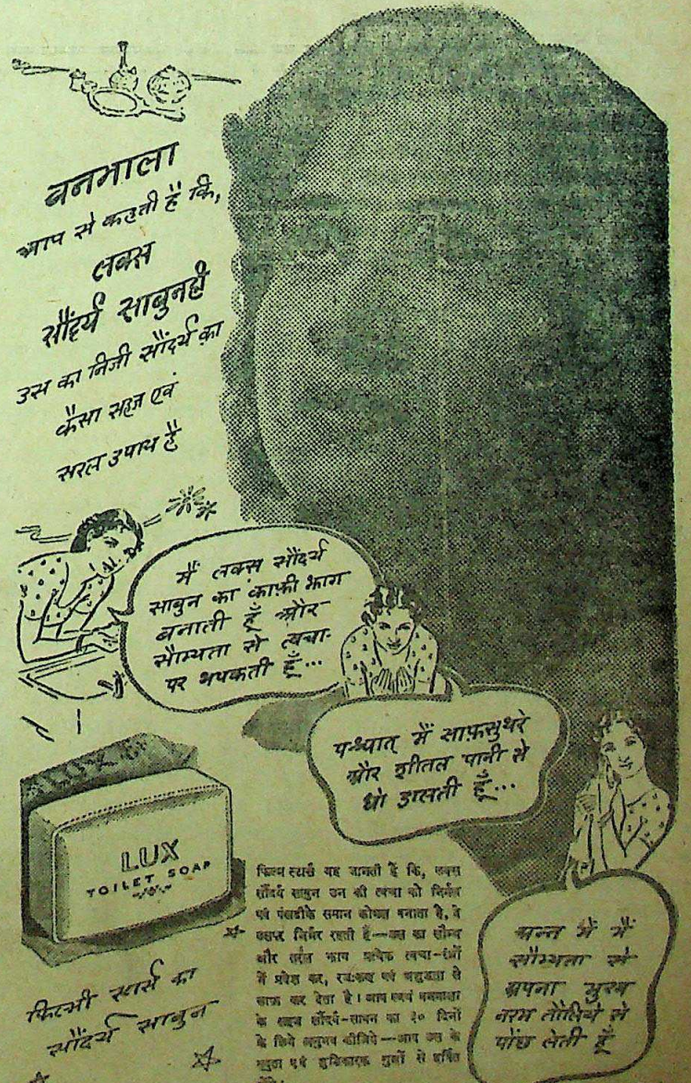
बनमाला
आप से कहती है कि,
लक्स
सौंदर्य साबुन ही
उस का निजी सौंदर्य का
कैसा सहज एवं
सरल उपाय है
मैं लक्स सौंदर्य साबुन का काफ़ी झाग बनाती हूँ और सौम्यता से त्वचा पर थपकती हूँ...
पश्चात् मैं साफ़सुथरे और शीतल पानी से धो डालती हूँ...
अन्त में मैं सौम्यता से अपना मुख नरम तौलिये से पोंछ लेती हूँ
LUX TOILET SOAP
फिल्मी स्टार्स का सौंदर्य साबुन
फिल्म स्टार्स यह जानती हैं कि, लक्स सौंदर्य साबुन उन की त्वचा को निर्मल एवं पंखड़ी के समान कोमल बनाता है, वे उसपर निर्भर रहती हैं—उस का सौम्य और तरल झाग प्रत्येक त्वचा-रंध्रों में प्रवेश कर, रजःकण एवं अशुद्धता से साफ़ कर देता है। आप स्वयं बनमाला के सहज सौंदर्य-साधन का २० दिनों के लिये अनुभव कीजिये—आप उस के मृदुता एवं शुभ्रिकारक गुणों से हर्षित होंगे।
LTS. 135-50-40 III
LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमण्डल

अगस्त-क्रान्ति की देवी अरुणा !

सन् ४२ के आन्दोलन का आँखों देखा एक संस्मरण

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

अरुणा आसफ़ अली विद्रोहिणी हैं। अगस्त-क्रान्ति में देश के लिए उन्होंने बहुत कष्ट सहे हैं।

सबसे पहले मैंने इनको बम्बई में देखा था। १९४२ का एक समय था। ठीक ८॥ बजे होंगे। राष्ट्र के कर्णधार गिरफ़्तार हो गये थे। सारे शहर में तूफान मचा था। कोने-कोने से लोग टोली बनाकर ग्वालिया टैंक पर आ रहे थे। झंडा फहराने का समय हो गया था। आज इस मैदान पर कौन राष्ट्रीय झंडा फहरायेगा यही प्रश्न चारों तरफ से हो रहा था। खबरें पर खबरें आ रही थीं। शहर के सभी प्रमुख नेता गिरफ़्तार हो गये हैं। सरकार झंडा नहीं फहराने देगी। कांग्रेस ग़ैर-क़ानूनी करार दे दी गई है।

एक ओर ग्वालिया टैंक मैदान में एक तरफ से हजारों स्वयंसेवक और स्वयंसेविकायें कतारबद्ध होकर राष्ट्रीय झंडा फहराने पर तुले थे। दूसरी तरफ हजारों सैनिक हथियारबन्द डटे थे। हजारों सिपाही 'टीयर गैस' का लिवास पहने सामने खड़े थे। कितने ही सिपाही बन्दूकों में गोली भरकर डबल मार्च कर रहे थे। सैनिकों की टोली पर टोली लारियों पर लदी मिनट-मिनट पर ग्वालिया टैंक मैदान में चली आ रही थीं। लड़कियों का भारी समूह सबसे पहले पुलिस का सामना करने के लिए उनके सामने कतारबद्ध होकर खड़ा हो गया। एक अपूर्व दृश्य था।

महिला कप्तान ने सरकारी सिपाहियों को सम्बोधित करके कहा—"ओ मेरे सैनिक मित्रों! तुमसे हमारी लड़ाई नहीं है। तुम हमारे भाई हो। मैं प्रार्थना करती हूँ, तुम हम लोगों को शान्तिपूर्वक झंडा-प्रार्थना कर लेने दो।"

सैनिक अफ़सर ने कहा—"[illegible]रगिज नहीं, झंडा-प्रार्थना नहीं कर सक[illegible] हो। यदि आप लोगों ने सरकारी आज्ञा का उल्लंघन किया तो बड़ी मुसीबत आ सकती है। हमको विवश होकर 'टीयर गैस' और गोलियों का उपयोग करना होगा। हम आप लोगों को बार-बार सूचित करते हैं कि यहाँ से हट जाइये। मैदान खाली कर दीजिये। आपको पाँच मिनट का वक्त दिया जाता है। आप सब तुरन्त यहाँ से चली जायें।"

महिलाओं ने कहा—"आप हम पर गोली खुशी से चला सकते हैं लेकिन हम यहाँ से झंडा फहरा कर ही कूच करेंगी।" दोनों तरफ से बातचीत चल ही रही थी कि इतने में श्रीमती अरुणा आ गईं। बोलीं—"सावधान! सब अपनी अपनी जगहों पर चुपचाप खड़ी हो जाओ। भाई लोग अपनी जगहों पर खड़े रहें। हम लोगों के घेरे के भीतर एक भी सैनिक का आना प्रकट करेगा कि वे हम पर जुल्म करने के लिए कटिबद्ध हैं। हम शान्तिपूर्वक यहाँ झंडा फहरायेंगे।"

स्वयंसेवकों की कतारबद्ध लाइन झंडे के चारों तरफ खड़ी हो गई। सैनिकों के हथियारों से किसी के भी चेहरे पर भीरुता नहीं झलकी। श्री अरुणा देवी ने राष्ट्रीय झंडा फहरा दिया और कहा ब्रिटिश सरकार की इच्छा थी यहाँ पर वह राष्ट्रीय झंडा नहीं फहराने देगी लेकिन मैं कहती हूँ जब तक हिन्दुस्तान का एक-एक बच्चा जीवित है तब तक वह अपने प्राणों की बाजी लगाकर राष्ट्रीय झंडे की शान कायम रक्खेगा। हिन्दुस्तान अपनी आजादी लेकर रहेगा। मैं इन सिपाहियों से कहती हूँ कि अपने देश को पहिचानो। अपनी मातृभूमि को प्यार करो। आजाद सैनिक बनो।"

भाषण के बीच में ही धुआँधार टीयर गैस छूटने लगी। गोलियाँ चलने लगीं। 'टीयर गैस' से सारे मैदान में अँधेरा छा गया। लोगों की भीड़ तब भी नहीं हटी। टीयर गैस के जहरीले आँसुओं से कितनी ही बहनें बेहोश हो गईं। झंडा-मैदान को चारों तरफ से सरकारी सिपाहियों ने घेर लिया था। वह श्रीमती अरुणा देवी को गिरफ़्तार करना चाहते थे लेकिन अरुणा देवी पंजे से निकल गईं। पुलिस देखती रह गई। उस समय इन पंक्तियों का लेखक घटना-स्थल पर मौजूद था। आँखों-देखी बात लिख रहा हूँ। श्रीमती अरुणा देवी चुटकी बजाते निकल गईं!

राष्ट्रीय झंडा फहरने लगा। झंडे की शान क़ायम हो गई। पुलिस की हिम्मत नहीं थी कि राष्ट्रीय झंडे पर हाथ लगाती।

'टीयर गैस' से सैकड़ों भाई-बहन बेहोश होकर मैदान में पड़े थे। पुलिस घुड़सवार आ गये थे। शान्त भीड़ पर अन्धा-धुन्ध लाठियों का प्रहार हो रहा था। घायल भाई-बहनों को राष्ट्रीय स्वयंसेवक मार खाते हुए भी उठा रहे थे। एक-एक बेहोश भाई-बहन को चार-चार पाँच-पाँच स्वयंसेवक उठाकर मैदान से हटा रहे थे। उनके पीछे सरकारी सिपाही दौड़ रहे थे। डंडों से उन्हें मार रहे थे। जहरीली गैस से लोगों का आना-जाना उस सड़क पर रुक गया था। चारों तरफ गैस से अँधेरा फैल गया। रास्ता चलना किसी को सूझ नहीं रहा था। सड़क पर सरपट सिपाहियों के घोड़े दौड़ने लगे। जहाँ जिसको पाते थे वहीं उसकी बुरी तरह से मरम्मत करते थे। कितने ही निरपराध व्यक्तियों के सिर उन्होंने फोड़ दिये। रास्ते में तीन-चार बहनें बुरी तरह से घायल पड़ी थीं। घोड़ों की टापों से वे बुरी तरह से घायल हो गई थीं। जहरीली टीयर गैस से आँखें सूज आई थीं। कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता था। फिर भी लोग ग्वालिया टैंक पर राष्ट्रीय झंडे को सलामी देने चले आ रहे थे। भीड़ पर भीड़ चली आ रही थी। पुलिस परेशान थी कि किसी तरह से यहाँ लोगों का आना बन्द हो। रास्ता रोक दिया गया था। श्रीमती अरुणा देवी ने बम्बई में क्रान्ति की आग सुलगा दी थी। वहाँ से वह तत्काल ही सारे हिन्दुस्तान में फैल गई। उस दिन से अरुणा अज्ञातवास की रोटी तोड़ने लगीं। शान्ति को सफल बनाने के लिए न रात देखती थीं न दिन। कभी रिक्शा में रात काटतीं, कभी मोटर में। सारे हिन्दुस्तान में घूमकर आन्दोलन की तैयारी में लग गईं।

स्त्री का जन्म लेकर भी आपने पुरुषों से बढ़कर काम किया। सरकार आपके कामों से भयभीत हो गई। गृहमंत्री को कहना पड़ा—"अरुणा को किसी भी तरह गिरफ़्तार करके हाजिर करो।" श्रीमती अरुणा देवी का अज्ञातवास सरकार को बुरी तरह अखरने लगा। उसने समझा कि हिन्दुस्तान की अबला कहलानेवाली स्त्री श्री अरुणा देवी अबला नहीं सबला है। शक्ति की देवी है।

श्रीमती अरुणा को गिरफ़्तार करने के लिए पाँच हजार रुपये का इनाम भी घोषित हुआ। श्री अरुणा देवी यह अच्छी तरह समझती थीं कि गिरफ़्तार होने पर क्या होगा? उन्होंने प्राणों का मोह छोड़ दिया था। उन्हें बस एक धुन थी कि अँगरेज हिन्दुस्तान खाली करें। इसी धुन में पागल बनी अरुणाभवानी [illegible] खाक छान रही थीं। मुसीबतजदा [illegible] को मदद पहुँचा रही थीं। पीड़ित [illegible] में जाती थीं। बंगाल-अकाल में [illegible] पहुँचा रही थीं। वहाँ के गाँवों में [illegible] पुलिस के अत्याचारों का भंडाफोड़ [illegible] पर्चों में करती थीं। सरकार को [illegible] परेशान और हैरान करने में [illegible] अनेक बार वे गिरफ़्तार होते-होते [illegible] वे खुले शहरों में घूमतीं, स्वतंत्रता-[illegible] की हर साल धूमधाम से कलकत्ता-[illegible] में तैयारी कराती थीं। स्त्रियों में [illegible] अपूर्व जागृति पैदा की। उन्होंने [illegible] सामने अपना उदाहरण पेश करके [illegible] दिया कि औरतें देश की आजादी [illegible] क्या नहीं कर सकतीं?

देश की स्वाधीनता के लिए [illegible] अज्ञातवास में रहकर काम करना [illegible] किया। अज्ञातवास में कितना कष्ट [illegible] है इसका अनुभव कोई भुक्तभोगी [illegible] समझ सकता है। कभी-कभी तो [illegible] मिलना दुष्कर हो जाता है। सोने की [illegible] नहीं मिलती। पहनने को पर्याप्त [illegible] नहीं होता। नहाने के लिए जगह [illegible] मिलती। इन सब का मुकाबिला एक [illegible] कैसे करती होगी इसका अनुमान तो [illegible] ही कर सकते हैं।

श्रीमती अरुणा देवी एक [illegible] भारतीय नारी हैं। बाल खुले हैं। [illegible] से चमक निकलती है। ललाट चमक[illegible] चेहरे पर तेजस्विता झलकती है। [illegible] रग में भारत की स्वाधीनता का प्रेम [illegible] है। उन्हें मानव-समाज में प्रेम है। वे [illegible] कंगालों के लिए मरने को तैयार [illegible] हैं। गरीबों की दरिद्रता जड़ मूल से [illegible] देना चाहती हैं। भारत में आज ऐसी [illegible] कितनी हैं?

श्रीमती अरुणा देवी की बड़ी [illegible] षता यह है कि वह साधारण [illegible] नारी की तरह रहना पसन्द करती [illegible] विदेशी टीम-टाम से वे दूर रहती हैं। [illegible] की सच्ची स्वाधीनता की उपासिका [illegible]

अँगरेजों का राज्य उखाड़ [illegible] देना चाहती हैं। विदेशी शासन को [illegible] बड़ा पाप समझती हैं। अँगरेजों की [illegible] छाया में रहना सबसे बड़ा पाप समझ[illegible] हैं। एक मिनट के लिए भी अँगरेजी [illegible] को घृणा से देखती हैं। अँगरेज [illegible] जल्दी यहाँ से जा सकें, उतना ही [illegible] भारत के लिए अच्छा समझती हैं। [illegible] की आजादी के लिए वह फाँसी के [illegible] पर झूलने के लिए तैयार हैं।

विद्रोहिणी श्रीमती अरुणा आसफ़अली गांधी जी को पत्र लिख रही हैं।

खांसी और शरदी के लिये
वैज्ञानिक इलाज
सिरोलीन
'रोचे'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...प्रांत की आज की समस्यायें

(पेज ७ का शेष)

...सकें। बन्दोबस्त के अफसरों को ...काम करने का अधिकार दिया गया। ...यह भी उद्देश्य था कि लगान बढ़ाया ...लगान न देने पर जमीन जब्त न ...और बकाया की वसूली के लिए किसानों ...परेशान न किया जाय।

यू० पी० टेनेन्सी ऐक्ट

प्रथम पन्त-मंत्रिमंडल का मुख्य काम ...यू० पी० टेनेन्सी ऐक्ट। काश्तकारी बिल ...अप्रैल १९३८ को असेम्बली में पेश किया ...जमींदारों का सहयोग हर स्थिति में ...करने की कोशिश करने पर भी ...दल इसकी ओर से २००० संशो... ...किये गये और बिल पर पाँच मास ...बहस होती रही। कौंसिल में एक दूसरी ...कमेटी बिठाई गई। पर वहाँ भी ...बिल किसी तरह पास हो गया। मगर ...बिल के पास होने से जमींदारों के ...में विशेष कमी नहीं आई। ...उनके कुछ विशेषाधिकार ...गये, मगर उनकी स्थिति पहले ...समान बनी रही।

...स्थिति

आज स्थिति सर्वथा बदली हुई है। ...पार्टी का इतना भारी बहुमत है कि ...जो चाहे क़ानून बना सकती है। ...ऐक्ट १९३९ से किसानों के अधि... ...से अधिक बढ़ गये हैं और उसका ...छः साल उपयोग किया है। किसान ...सजग और मालदार हो गया ...जमींदार की दया पर आश्रित नहीं है। ...यू० पी० कांग्रेस कमेटी ने जमीं... ...का अन्त करने के लिए एक ...बनाने के वास्ते एक कमेटी बनाई ...मंत्री डाक्टर काटजू की योजना ...ग्राम पंचायतें लगान वसूल करें और ...प्रकार जमींदारों का अन्त कर दिया ...जमींदारों का पाँच श्रेणियों में वर्गी... ...किया गया है। २५० रुपये से ५००० ...या इससे अधिक मालगुजारी देनेवाले।

...समस्या

जमींदारी-प्रथा का अन्त करने का ...पेचीदा है। क़ानूनी आपत्ति भी ...जाने की सम्भावना है। आर्थिक ...से भी यह विकट समस्या है। जमीं... ...वार्षिक ८० लाख रुपया कमानेवाले ...१५० रुपया वार्षिक कमानेवाले ...और उनकी स्थिति पंजाब के किसान ...अच्छी नहीं है। इसलिए जमींदारी... ...का अन्त करने के मार्ग में छोटे और ...जमींदारों का सवाल भी एक ...है। जमीन के प्रति स्वामित्व ...भी एक मुख्य प्रश्न है। इस ...की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

...का विरोध

...पार्टी जमींदारी प्रथा का अन्त ...विरोधी है, यद्यपि बंगाल में सुहरा... ...मंडल ने इस्तमरारी बन्दोबस्त ...करने की घोषणा की है और ...अपने कार्यक्रम में स्थान दिया ...इसलिए यू० पी० लीग पार्टी का ...बहुत महत्त्व नहीं रखता। राजा महमूदाबाद और सर नवाब यूसुफ का अपनी जमींदारी की रक्षा के लिए मान करना स्वाभाविक है। अतः वे कहते हैं कि मुस्लिम जमींदारियाँ मुस्लिम जनता की शिक्षा देने और मुस्लिम समाज के मंगल-कार्य के काम आती है। यदि ये जमींदारियाँ नष्ट हो गईं तो मुस्लिम धर्म, शिक्षा, संस्कृति आदि को भारी धक्का पहुँचेगा। लीग का कहना है कि मुसलमानों की एकमात्र सम्पत्ति जमीन है। वे व्यापार उद्योग आदि में कसरत से नहीं हैं। इसलिए वे जमींदारी के बदले भारी मुआवजा चाहते हैं। श्री जवाहरलाल नेहरू ने मुआवजा देने की बात मान ली है, मगर कांग्रेस में उस वर्ग की कमी नहीं जो मुआवजा देने का विरोधी है और इसको किसानों पर भार समझता है। इसलिए मंत्रिमंडल क़लम की एक नोक से जमींदारी प्रथा का अन्त नहीं कर सकता। उसको इस काम के करने में कुछ समय लगेगा और उस समय की धैर्य से किसानों को प्रतीक्षा करनी चाहिए। किसान यदि संगठित हों और वे आन्दोलन करें कि जमींदारों को जमींदारियों के बदले मुआवजा न दिया जाय, तो वे एक भारी भार से बच सकते हैं। क्या किसान सभाएं इसके लिए उद्योग करेंगी?

सरकार खाद्य के विषय में क्या कर रही है?

१. देश का समस्त उपलब्ध अनाज अखिल भारत वर्षीय आधार पर बांट दिया जायेगा। फालतू और कमी वाले क्षेत्रों में बराबर विभाजन होगा।

२. एकाधिकार द्वारा प्राप्ति के प्रारम्भ व विस्तार की व्यवस्था से देश के आंतरिक साधनों का परिपूर्ण संगठन किया गया है। इसमें सरकार उत्पादकों को उनके न्यायोचित राशन से वंचित किये बिना ही अधिकाधिक अनाज प्राप्त करने में समर्थ हो सकेगी।

३. मूल्य-नियंत्रण की कडी व्यवस्था जिसमें उत्पादकों और उपयोगकर्ताओं दोनों को उचित मूल्य प्राप्त हो सके।

४. राशन के विस्तार द्वारा और यदि अनिवार्य हुआ तो राशन में कमी के द्वारा अभाव को यथा संभव बांट लिया जायेगा।

अभी तक १५५६ नगरों के १० करोड़ व्यक्तियों के लिये राशन की व्यवस्था है। १ पौंड प्रति व्यक्ति का आधारभूत राशन १२ औंस कर दिया गया है— अधिक शारीरिक परिश्रम करनेवाले मजदूरोंको ४ औंस अधिक दिया जाता है।

५. अनाजों का सभी निर्यात बंद कर दिया गया है।

६. बाहरी आयात का प्रत्येक प्रयत्न किया जा रहा है।

७. "अधिक अन्न उपजाओ" आन्दोलन और तीव्र कर दिया गया है। नई भूमि में कृषि की जा रही है। सरकारी जमीन के लॉन व बगीचों में अनाज उत्पन्न होगा।

८. अनुचित संग्रह, मुनाफ़ाखोरी व दुर्वृत्ति को रोकने के लिये खाद्य-विभाग के प्रबंध में सुधार किया जा रहा है। ये उन तरीकों में से कुछ हैं जो खाद्य समस्या को हल करने के लिये काम में लाये गये हैं। आपसे हमारी सब से बडी मांग जो है वह है आपके विश्वास और सहयोग की। हमें उससे वंचित मत कीजिये।

खाद्य संकट को पराजित कीजिए

एक साथ कार्य कीजिये — एक साथ हिस्सा बटाइये

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी और मराठी का संपर्क क्यों?

(पृष्ठ ६ का शेष)

आधार-शिला रखी गई थी, तब मैं एक गैर-सरकारी डायरेक्टर था। मैं हिन्दी समझ सकता हूँ। मगर मैं और मेरे साथ महाराष्ट्र के दूसरे भाई यह नहीं समझ सकते कि जुम्मा क्या है और जुम्मे की रात क्या है? मैं तो यह मानता हूँ कि हिन्दी और उर्दू में अलग अलग ब्राडकास्ट किये जायें। अब भी यदि रेडियो २४ भाषाओं में ब्राडकास्ट करने का प्रबन्ध कर सकता है तो हिन्दी के क्या कसूर किया है कि उसमें ब्राडकास्ट न हो सके। लखनऊ, दिल्ली और लाहौर से हिन्दी भाषा में ब्राडकास्ट किये जा सकते हैं। मैं हिन्दी और उर्दू को गर्क करने के पक्ष में नहीं। मैंने भी बुखारी से कहा है कि महाराष्ट्र के हम सब लोग संस्कृतनिष्ठ हिन्दी बखूबी समझ सकते हैं। इसलिए हिन्दी में भी ब्राडकास्ट अवश्य होना चाहिए।

मराठी-हिन्दी मेल

आपने कहा—"मैं हिन्दी आन्दोलन में कितनी दिलचस्पी रखता हूं, आपने देख लिया। महाराष्ट्र ने माधव सप्रे और पराड़कर जैसे व्यक्ति हिन्दी की सेवा करने को दिये हैं। उन्हीं के प्रयास से हम लोग हिन्दी-सेवियों के निकट-सम्पर्क में आये। किन्तु खेद है कि हिन्दी-लेखकों में कोई लेखक ऐसा नहीं जो हिन्दी भाषा-भाषियों को मराठी साहित्य से परिचित कराये। आवश्यकता इस बात की है कि इस समय महाराष्ट्र में हिन्दी का एक केन्द्र स्थापित किया जाय। किन्तु आपको यह समझ लेना चाहिए कि पूना को महाराष्ट्र का केन्द्र समझना भारी भूल होगी। पूनावालों ने मराठी साहित्य की भारी हानि की है। पूना कलह, द्वेष और मत्सर का गढ़ है। पूना में सिर्फ दो लाख मराठे हैं। वे अपने में ही मस्त रहते हैं। वे दूसरों से सम्पर्क नहीं बढ़ाना चाहते। महाराष्ट्र का गढ़ तो बम्बई है। वहां १८ लाख मराठे बसे हुए हैं। इसलिए महाराष्ट्रवासियों को यदि आप हिन्दी साहित्य की कोई अनुपम भेंट देना चाहते हैं तो बम्बई को हिन्दी प्रचार का केन्द्र बनाइए।

अन्तःप्रान्तीय समिति

अन्त में आपने कहा—"मैं यहाँ सिर्फ हिन्दी और मराठी भाषा-भाषियों में ही सम्पर्क बढ़ाने की अपील करने को नहीं आया। निस्सन्देह हिन्दी भाषा के साहित्य-सेवी मराठी साहित्य की रंगभूमि का अब अनुकरण कर सकते हैं। हम यह गर्व नहीं करते कि हमने भास की नाटक शैली को मात कर दिया है। भास का नाटक तो आज भी वैसा ही नवीन है, जैसा कि पहले था। किन्तु यदि हिन्दीवाले चाहें तो वे मराठी के एकांकी या एकांक प्रदेशी नाटकों का उल्था कर सकते हैं। इस तरह यदि मराठी और हिन्दी में सम्पर्क स्थापित हो जाय तो भारत के अन्य प्रान्तों की भाषाओं के विद्वान् भी आपस में मिल सकते हैं। मुझे यह कहने में गौरव अनुभव होता है कि हिन्दी ही एक ऐसा माध्यम है जिससे अन्य प्रान्तीय भाषाओं के विद्वान् एक सूत्र में पिरोये जा सकते हैं। इस कार्य के लिए हमें एक अन्तःप्रान्तीय समिति बनानी होगी। यह समिति प्रान्तीय भाषाओं में लिखे उपन्यासों, लघु कथाओं, वैज्ञानिक तथा इतिहास की पुस्तकों का अनुभव करायेगी। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर मैंने स्वर्गीय श्री प्रेमचन्द और काका कालेलकर से मिलकर 'भारतीय साहित्य परिषद्' नाम की एक संस्था स्थापित की थी। किन्तु हमारे दुर्भाग्य से 'हंस' सरकार की वक्र दृष्टि का शिकार हुआ और इधर श्री प्रेमचन्द जी का स्वर्गवास हो गया। इसलिए हमारा स्वप्न पूरा नहीं हो सका।

'लेकिन मैंने अभी तक अपने मिशन को छोड़ा नहीं। मैं तो एक 'अन्तःप्रान्तीय समिति' बनाकर ही रहूँगा। यदि पी० ई० एन० संस्था में १६ भाषाओं के प्रतिनिधि सम्मिलित हो सकते हैं, तो निस्सन्देह हमारी समिति में भी सब प्रान्तों के भाषा-भाषी विद्वान् बड़े आराम से सम्मिलित हो जायेंगे। मैं युवक लेखकों का आह्वान करूँगा कि वे इधर आयें। दिल्ली के हिन्दी पत्रकार और नई दिल्ली की हिन्दी-साहित्य सभा के सदस्य इस दिशा में यदि कुछ करना चाहेंगे तो मैं भी अपनी सेवाएं संहर्ष अर्पित कर सकूंगा। मैं यह मानता हूँ कि वाङ्मय एक हुए बिना भारत एक नहीं हो सकता।

श्री गोरकर का भाषण

महाराष्ट्र के दूसरे साहित्य-सेवी श्री बालकृष्ण भगवन्त गोरकर ने अँगरेजी में बोलते हुए कहा—"मैं गोआ का निवासी हूँ। गोआ बड़ा सुन्दर प्रदेश है। उसे 'महाराष्ट्र का काश्मीर' कहा जाता है। गोआ ४०० वर्ष तक पुर्तगाल के आधीन रहा। आजकल वहां पर डिक्टेटरशाही क़ायम है। हम लोगों की भाषा की क्या कमी है? उस पर हिन्दी, बंगाली और मराठी की स्पष्ट छाप है। गुलाम रहने के बाद भी हमारी भाषा पर पुर्तगाली का उतना प्रभाव नहीं, जितना कि आप कल्पना करते होंगे। हमारी लिपि नागरी है। किन्तु हमारे यहाँ के ईसाइयों की लिपि रोमन है। गोआ में संयुक्तप्रान्त, पंजाब, बंगाल और महाराष्ट्र के लोग जाकर बस गये हैं।

राष्ट्रीय एकता

"पहले यातायात की कठिनाइयों के कारण हम विभिन्न प्रान्तों के वासी आपस में विचार-विनिमय नहीं कर सकते थे। किन्तु अब तो यह कठिनता नहीं रही। १५० वर्ष के ब्रिटिश शासन ने हमें एक दूसरे के सन्निकट ला दिया है। अब हमें प्रान्तीयता से ऊपर उठकर राष्ट्रीयता की ओर अग्रसर होना चाहिए। मामा जी ने जिस अन्तःप्रान्तीय समिति स्थापित करने की अपील की है, वह कभी कार्यान्वित न हो सकेगी, यदि पहले विभिन्न प्रान्तों के कवियों और लेखकों में सम्पर्क स्थापित न हो। मैं हिन्दी नहीं जानता। किन्तु मुझे विश्वास है कि यदि मैं आप लोगों में रहने लग जाऊं, आप लोगों से मिलना-जुलना शुरू कर दूं तो मुझे हिन्दी सीखने में जरा भी देर न लगेगी। यह है पारस्परिक मेल-जोल का फल।

मराठा कविता और महाना प्रेम

"मामा साहब ने अभी कहा कि मराठा काव्य हिन्दी से पिछड़ा हुआ है। मैं इससे सहमत नहीं। मैं मानता हूँ कि मराठी कवि की एक रचना का दूसरा संस्करण नहीं छप पाया। किन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं कि मराठी में कवि होते ही नहीं। मराठी में बड़े उच्च कोटि के कवि होते हैं। किन्तु उनकी कविता की शैली अपनी होती है। हमारी कविता भावना-प्रधान नहीं, अपितु क्रिया-प्रधान होती है। हम क्रिया-प्रधान हैं, इसलिए हमने रंगभूमि में भी उन्नति की है। हमारी कविता यथार्थवादी होती है, भावना-प्रधान नहीं।

"हिन्दी कवि कविता-प्रधान होता है। वह आँखों के सुरमे, होठों की लाली और पता नहीं किस-किस चीज को लेकर ऊँची उड़ान लेता है। इसी कारण हिन्दी कविता बहुत ऊँची उठ गई। किन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं कि मराठी कविता भाषा की कद्र कम है। (मामा वरेलकर ने बीच में टोकते हुए कहा—मुझे तो अभी तक यकीन नहीं हो सका) मराठी कविता का प्रेम मर्दाना होगा, जनाना नहीं। मराठा प्रेमी अपनी प्रेयसी की कलाई पकड़कर वह सब आनन्द ले लेता है, जो हिन्दी कवि के बस की चीज नहीं। वह कल्पनालोक में विचरेगा और आनन्द लेगा। हमारी कविता की विशेषता अपनी है। अँगरेजी की भी यही विशेषता है। वह भी क्रिया-प्रधान है, भावना-प्रधान नहीं। लेकिन इसका अभिप्राय यह नहीं है कि अँगरेजी के उच्च कोटि के कवि हैं ही नहीं। जैसे अँगरेजी के कवि हैं वैसे ही मराठी के भी।

"हिन्दी कविता फ्रेंच कविता के समान भावना-प्रधान है। फ्रेंच भाषा में क्रिया-वाचक शब्दों की अपेक्षा विशेषता वाचक-शब्द ज्यादा है। अँगरेजी में क्रियावाचक शब्द ज्यादा है। फ्रेंच भाषा का कवि भावुक होता है। यदि एक अँगरेजी जाननेवाला साहित्यिक सामने के इस पेड़ को देखेगा तो इसका रंग सिर्फ हरा ही बतायेगा। किन्तु एक फ्रेंच को बुलाइए। वह इस एक हरे रंग में आपको न जाने और कितने सूक्ष्म रंग बता देगा। बस आप हिन्दीवाले भी फ्रेंच लोगों की तरह भावना-प्रधान हैं। इसीलिए आपकी कविता इतनी उठ गई है। हमारी क्रिया-प्रधान है भी उसका अपना स्थान है।"

सच्चा सेवक

छोटा-सा नाटक है जिसके के गुण सुन्दरता से दिखाये गये नाटक अभिनय करने के लिए लिखा है और खेला भी गया है। स्कूलों में समय छात्र इसका निर्दोष अभिनय प्रशंसा पात है। मूल्य केवल ।-) आन।

मैनेजर
बुकडिपो इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

भारतीय महिलाओ

अब आपका सर्वोपरि महत्वपूर्ण कर्त्तव्य है

भारत की आवश्यकता है कि प्रत्येक गृहिणी अपनी भोजन व्यवस्था की स्वाभाविक योग्यता का पूरापूरा प्रयोग करे। वह समस्त खाद्य जो फालतू है और बचता है आपके उन देशवासियों के लिये बहुत आवश्यक है जो आज भीषण खाद्याभाव का सामना कर रहे हैं। अधिकारी-वर्ग यह विश्वास दिलाने का यथाशक्ति प्रयत्न कर रहा है कि जब तक संकट समाप्त न हो तबतक देशके प्रत्येक पुरुष, स्त्री, और बालक के पास जीवन बनाये रखने के लिये पर्याप्त खाद्य हो। किन्तु इस मानवता के कार्य में आप भी सहायता दे सकती हैं।

आतिथ्य-सत्कार को कम कर दीजिये, यदि संभव हो तो उसे बंद ही कर दीजिये। किन्तु यदि आपको आतिथ्य-सत्कार करना ही है तो कृपया इस बात का ध्यान रखें कि वास्तविक आवश्यकता से अधिक भोजन मत बनवाइये। अपने भोजन के अनुकूल यदि आप अन्य खाद्यों जैसे तरकारियां, दूध से बनी चीजें, अंडे, मांस या मछली को प्रयोग में लावें तो आप अपनी चावल और गेहूं की खुराक भी कम कर सकती हैं, जो गरीबों के मुख्य खाद्य हैं। सरल और स्वस्थ जीवन का दूसरों के सामने उदाहरण रखिये और अपने सहयोगी पुरुषों का आशीर्वाद प्राप्त कीजिये। कम से कम इतना तो आप कर सकती हैं।

खाद्य बचाना प्राण बचाने के बराबर है।

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रपति के पत्र

जोधपुर से अखिल भारतीय देशी नरेश-परिषद् के प्रधान मंत्री श्री सरदार व्यास ने श्री सागरमल गोपा के बलिदान पर दुखभरे हृदयों तथा उनकी विधवा पत्नी के सम्बन्ध में निम्न लिखित वक्तव्य दिया है।

"श्री सागरमल गोपा की जैसलमेर हिरासत में हुई रहस्यमय मृत्यु के विषय में हमारे संगठन के अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू का वक्तव्य निकालने के बाद मेरे लिए कहने को कुछ भी बाकी नहीं रह जाता है, परन्तु स्वर्गीय गोपा जी की मृत्यु के समय का जो बयान मुझे अब मिला है उसने मुझे अपना मुँह खोलने को बाध्य किया है।

श्री गोपा जी ने जैसलमेर के फ़र्स्ट मजिस्ट्रेट के सामने (जो जेल मजिस्ट्रेट भी हैं) इस प्रकार बयान दिया बताया गया है:—

"जाने मुझे गुमानसिंह रावलोत (जेल अफ़सर) ने बहुत दफ़ा मारपीट की और मेरी गुदा में मिरचें चढ़ाईं। मैंने श्रीमान् दरबार साहब को संकेत द्वारा में समय-समय पर रोशन किया। हत्या मार से बचने के लिए मैंने जौहर के द्वारिये अपना खात्मा करना उचित समझा। इस वही कारण मुर्दे की बात का है। मैंने सुपरिंटेंडेंट साहब को एक स्लिप में शिकायत लिखी थी और मेरा यह बयान आपके सामने है।"

इस पर उनसे यह पूछा गया बताया जाता है, "तुमने अपने जिस्म में आग किस चीज़ लगाई?"

उत्तर में कहा गया बताया जाता है, "कैदी जेल का पड़ा हुआ था और लाल रंग में माचिस भी थी। मैंने तेल अपने ऊपर डाल करके तिली (माचिस) लगा ली। गबकोत गमानसिंह जी की मार के डर से यह काम किया है।"

श्री सागरमल को यह नोटिस दिया गया था कि "आज तुमको पुलिस में ले जाकर पीटा जावेगा.... बहुत दिन से तुमको प्रसादी नहीं मिली है, आज गुमान-सिंह तुमको पूरा-पूरा प्रसाद चखावेगा।"

अगर इसी बात को सही मान लिया जाय तो भी जैसलमेर में किस प्रकार की स्थिति आज विद्यमान है, उस पर काफ़ी रोशनी पड़ सकती है। परन्तु जिस तरह का बयान रेकार्ड किया गया है उसके मुकम्मिल होने में मैं विश्वास नहीं करता। मैं मजिस्ट्रेट महोदय से यह दरियाफ़्त करना चाहता हूँ कि जब जेल में बिजली की रोशनी है तो केरोसिन तेल और साथ ही लैण्टर्न और दियासलाई के बाक्स के रखने की आवश्यकता क्यों हुई? मान लो इन चीजों की किसी और वजह से ज़रूरत थी, फिर भी इन वस्तुओं को साथ-साथ क्यों रहने दिया गया और वह भी दोपहर के १२ बजे? और इन वस्तुओं को श्री सागरमल की पहुँच में क्यों रखा गया?

ये मजिस्ट्रेट साहब शासन-व्यवस्था से स्वतन्त्र हस्ती नहीं रखते जिसकी सर्वोपरि सत्ता पर स्वयं महारावल जी विद्यमान हैं। उन्होंने प्रश्न करके यह साफ़ कराने की कोशिश नहीं की कि तेल और दियासलाई श्री गोपा की पहुँच में क्यों रखी गई। जिस तरह के बयान लिखे गये हैं उनकी वास्तविकता पर अविश्वास करने का एक और मजबूत कारण है। वह यह कि अन्तिम बयान लेते समय मजिस्ट्रेट साहब ने श्री गोपा के भाई को उनके पास नहीं रहने दिया। बेशक, उस बयान पर श्री गोपा जी के श्वशुर के भी हस्ताक्षर लिये गये हैं। इस सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि उनको यह कहकर दस्तखत लिये गये कि उन्होंने गोपा जी की अन्तिम समय में मुलाकात की है, अतः उनसे दस्तखत कराये जाते हैं।

मैंने पोलिटिकल एजेंट से इस सम्बन्ध में मुलाकात देने के लिए लिखा है। अगर पोलिटिकल डिपार्टमेंट स्वतन्त्र और निष्पक्ष जाँच के लिए तैयार हो गया तो मुझे विश्वास है कि श्री गोपा जी की मृत्यु के सही कारण पर ठीक रोशनी पड़ सकेगी।

—संवाददाता

* * *

कलकत्ता का समाचार है कि बंगाल सरकार ने प्रान्त में अवशिष्ट ६३ सुरक्षा बन्दी जो तृतीय आर्डिनेंस १९४४ के अन्तर्गत प्रान्त के जेलों में नजरबन्द हैं के मामलों पर विचार किया और उन्हें मुक्त करने का निश्चय किया है।

बंगाल गवर्नर सर फ़ेडरिक बारोज ने बंगाल यक्ष्मा एसोसिएशन के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर भाषण देते हुए कहा है कि प्रान्त से यक्ष्मा के प्रकोप को दूर करने के निमित्त सरकार सतत् सचेष्ट है। बर्दवान राजशाही तथा मिदनापुर में यक्ष्मा चिकित्सा-गृह स्थापित हुए हैं, अमूलिया नामक स्थान में भूतपूर्व गवर्नर ने एक चिकित्सा-गृह की नींव डाली है। आपने बताया कि यक्ष्मा की चिकित्सा करने के बनिस्बत रोग को उत्पन्न न होने देना अच्छा है। पौष्टिक द्रव्य उपलब्ध कराने तथा साधारण स्वास्थ्य ठीक रखने की व्यवस्था कर इस रोग की वृद्धि को रोकने का एक-मात्र साधन है।

बंगाल सरकार ने मद्रास को ४ हजार टन पुराना चावल दिया है। इसके बदले में केन्द्रीय सरकार ने कचबिहार से ४ हजार टन चावल खरीदने का कोटा दे दिया है।

—संवाददाता

* *

अजमेर के इतिहास में पहली बात है कि चेयरमैन के पद पर सर्वसम्मति से प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता श्री जीतमल जी लूणिया चुने गये हैं। श्री जीतमल जी लूणिया आज पन्द्रह वर्ष से राष्ट्रीय महासभा की सेवा कर रहे हैं। राष्ट्रीय संग्राम में आप कई बार जेल हो आये हैं और एक बार तो आपने सकुटुम्ब जेल-यात्रा की है। आशा है कि आपके द्वारा अजमेर नगर की अच्छी सेवा हो सकेगी।

—संवाददाता

गंगानगर (बीकानेर) गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी नवयुवक सार्वजनिक पुस्तकालय श्री बीकानेर राज्य स्थापन दिवस के शुभ अवसर पर ३ मई से ९ मई तक शिक्षा-सप्ताह मनाने का आयोजन किया गया है। इसके साथ ही प्रदर्शनी का भी आयोजन हुआ है। ठाकुर श्री चगलसिंह जी बार-एट-ला डाइरेक्टर शिक्षा-विभाग बीकानेर, श्री विद्याधर जी एम० ए०, श्री शम्भूदयाल जी सक्सेना 'साहित्यरत्न' तथा श्री अक्षयचन्द्र जी 'साहित्यरत्न' विशेष रूप से निमंत्रित किये गये हैं।

—मंत्री पुस्तकालय

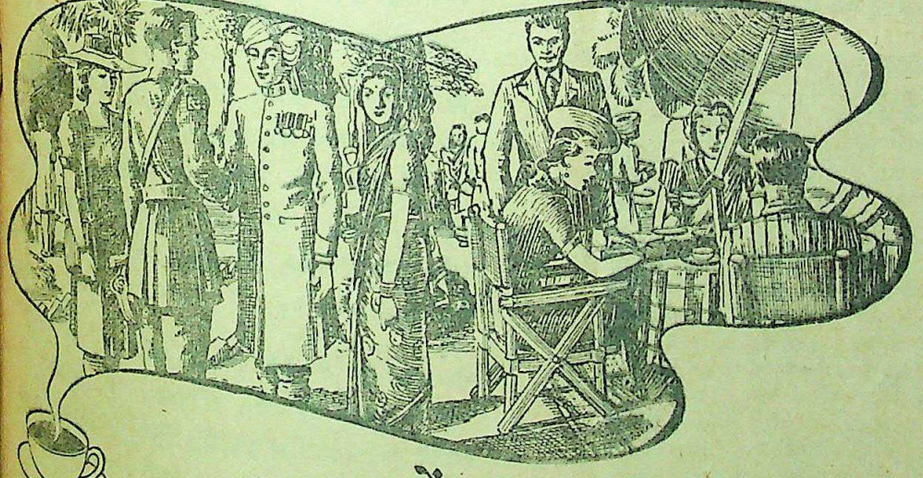

उद्यान में जलपान

जो दावत किसी समय नियमनिष्ठा से भाराक्रान्त हुआ करती थी, आजकल व्यस्त लोगों के लिए, जिनका कार्य केवल सहयोग द्वारा सम्भव है, आपस में भेंट का एक मूल्यवान साधन है। महाविद्यालय तथा अन्य संस्थाएँ उद्योगपतियों एवं अन्य विशेषज्ञों को उद्यान में जलपान के लिये बुलाते हैं।

चाय के होने के कारण सभी राष्ट्र, सम्प्रदाय और जाति के लोग बिना संकोच मिलते-जुलते हैं और स्वच्छ वातावरण में बातचीत द्वारा अनुभव प्राप्त करते हैं। किसी राजकीय दावत में ऐसा होना असम्भव है।

इन जलपानों में हिन्दुस्तान के सभी प्रान्तों के लोग सम्मिलित होते हैं। प्रत्येक अतिथि ताजा ब्रुक बाण्ड चाय को पहचान लेता है, क्योंकि इसका स्वाद यहाँ भी वैसा ही होता है जैसा उसके अपने प्रदेश में।

ताजा! बगीचा से प्याली तक शीघ्रता से

ब्रुक बण्ड

दो पत्तियाँ और एक कली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय फिल्मी संसार किस ओर ?

निर्माताओं तथा निर्देशकों का सम्मिलित सहयोग जरूरी

लेखक, श्रीशिवप्रसादसिंह

यह तो प्रत्येक व्यक्ति ही स्वीकार करेगा कि मूक युग के बाद सवाक चित्रों में विशेष परिवर्तन हुआ है। निर्माताओं और निर्देशकों ने समय की मांग पर बहुत कुछ करवट बदल डाली है, और आजकल के चित्रों के देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि निर्देशक अच्छे चित्रों को निर्मित करने में प्रयत्नशील हैं। इसके लिए हम उनके कृतघ्न हैं। यह कहावत ठीक है कि "पाँचो उंगली बराबर नहीं होती हैं" क्योंकि यदि फ़िल्म संसार में कुछ निर्देशकों ने अच्छे चित्रों को निर्मित किया है तो सभी अच्छे चित्र नहीं बनाने लगेंगे। फ़िल्म संसार के महान् ख्याति-प्राप्त निर्देशक वी० शान्ताराम जी ने "आदमी", अमृत-मंथन, वह कौन, पड़ोसी ऐसे महान् चित्रों को निर्मित कर अपनी प्रखर बुद्धि का परिचय दिया है। इनके अतिरिक्त देवकी बोस, कारदार, साहू किशोर और सोहराब मोदी ऐसे कुशल एवं चतुर चितेरे निर्देशकों ने भी बहुत अच्छे चित्र बनाये हैं। आदमी, अपना घर, जीवन, वीर कुणाल, पृथ्वीवल्लभ और सिकन्दर ऐसे समाज के ऊपर एक अच्छा प्रभाव डालते हैं। ऐसे चित्र मनुष्य को कुछ न कुछ सोचने के लिए बाध्य करते हैं, समाज के ऊपर पड़े हुए पर्दों को हटाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। समाज के घोर अत्याचार को रोकने के लिए उनको पथ-प्रदर्शक बनाते हैं। नवयुवक और नवयुवतियों में जिनकी ऐश्वर्यपूर्ण नशें ढीली पड़ गई हैं उनमें वीरत्व भर करके फिर से नवस्फूर्ति संचार करते हैं। ऐसे चित्रों से देशवासियों का बहुत कुछ मंगल हो सकता है।

इन कुशल निर्देशकों को देखकर अन्य निर्देशक भी संभल गये हैं। आजकल जहां तक हो सकता है निःशंक अच्छे चित्रों को बना रहे हैं। फिर भी हमको आजकल के चित्रों को देखकर यह कहना पड़ता है कि इसमें केवल अभी पच्चीस फ़ीसदी उन्नति हो सकी है। निर्देशक के चित्रों में आजकल कला का कुछ अंश पाया जाता है। बहुत से चित्रों में कला का स्थान बहुत कुछ भी पाया जाता है। तात्पय यह है कि अभी भी चित्रों में एक नहीं बहुत ही चित्रों में नग्न-प्रदर्शन, रोमांस और अश्लील शब्दों की प्रचुरता पाई जाती है। सिनेमा संसार ही एक ऐसी कला है कि जिसमें नवयुवक और नवयुवती पर बहुत ही जल्दी प्रभाव पड़ता है। यदि चित्र में रोमांस है तो वह युवकों और युवतियों का पतन का कारण भी बन सकता है। यदि नग्न-प्रदर्शन और अश्लील शब्दों एव गीतों की प्रचुरता है तो उसको देखने में भी शर्म और ग्लानि मालम पड़ेगी।

सिनेमा ही एक ऐसी प्रखर कला है जो मस्तिष्क पर बहुत जल्दी छाप डाल देता है। प्रत्येक चित्र चाहे जैसा भी क्यों न हो उसमें कुछ दोष और अच्छाई होती है, परन्तु यदि दोष गुणों से अधिक हुए तो अच्छाइयां दोषों के आवरण से ढँक जाती हैं और बुराइयों की तरफ़ खिचाव होता पाया जाता है। इसलिए प्रत्येक निर्माता और निर्देशक को अश्लील शब्दों और गीतों का क्षेत्र संकीर्ण और संकुचित करने की तरफ़ अवश्य ही ध्यान आकृष्ट करना चाहिए।

सिनेमा का क्षेत्र पहले से कहीं ज्यादा प्रगतिशील और प्रयत्नशील हो गया है। अच्छे-अच्छे विद्वान् निर्देशकों और निर्माताओं एवं कलाकारों ने प्रवेश कर फ़िल्म-संसार की कायापलट दी है। संगीत को नया रूप और आकर्षक बनाने में एक होड़ सी लगी है। यह सुन्दर है और आगे और उन्नति का मार्ग दिखाई पड़ता है।

आजकल के चित्रों में कला का स्थान कुछ न कुछ तो पाया ही जाता है परन्तु सुन्दर भावों और अच्छे विचारों की अभी कमी दिखाई पड़ती है। पहले ऊपर कहे निर्देशकों के चित्रों में कला, सुन्दर भाव, भावमय संगीत और आकर्षक अभिनय बहुत कुछ अंशों में पाया जाता है परन्तु अन्य चित्रों में इसका प्रायः अभाव ही पाया जाता है।

चित्रों की कहानी प्रायः एक ही साँचे में ढली हुई कुछ नवीनता और कुछ ही विभिन्नता लिए होती है। देखकर न तो विशेष मनोरंजन ही होता है और न कोई उस पर विचार ही करता है। वस्तु का प्रत्येक व्यक्ति जानने में आनन्द लेता और कुछ उसके गुण दोषों से प्रभावित होता है।

यदि निर्माता और निर्देशक भारत ऐसी भूमि पर उन्हें कुशल से उपन्यासकार, कहानीकार, गीतकार कुछ थोड़ा-सा प्रयत्न करने और दृष्टि देने से प्राप्त हो सकते हैं। जिससे अच्छे चित्र तैयार हो सकते हैं।

आजकल का फ़िल्म-संसार ही सभ्यता और कला का लेकर उन्नति की ओर अग्रसर हो परन्तु यदि थोड़ा-सा ही घुमाव कुछ और भी प्रयत्न किया जाय और समाज का कल्याण हो सकता पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति को भी यदि भारतीय संस्कृति की अंशतः हुए चित्र निर्मित हों तो इससे कहीं भारतीयों का मंगल हो सकता है। में विश्व-कल्याण और मानव की भावनाओं का समावेश अच्छा प्रभाव सकेगा।

'झुमरू' फिल्म में मुमताज अभिनेत्री अख्तर ने सुंदर अभिनय किया है।

★ प्रत्येक की पूरी आवश्यकताओं के लिये देश में पर्याप्त खाद्य नहीं है। जो कुछ उपलब्ध है उसे सबमें बराबर बांटना चाहिये।

★ राशनिंग ही एकमात्र तरीका है जो कमीवाले क्षेत्रों में रहने वाले आपके भाइयों की अभाव एवं दुर्भिक्ष से रक्षा कर सकता है। इसमें धनिक या गरीब के प्रति कोई पक्षपात नहीं है, बल्कि प्रत्येक के लिये उचित मूल्य पर पर्याप्त खाद्य निश्चित है—आप अपने हिस्से के लिये विश्वास कर सकते हैं।

१५५६ नगरों में फैले हुये १० करोड से भी अधिक व्यक्तियों में अभी तक राशन की व्यवस्था है। खाद्य कम है इसलिये दूसरे नगरों और क्षेत्रों में भी तेजी से राशन-व्यवस्था को विस्तृत किया जा रहा है।

★ आपके बचाव के लिये बनाये गये राशन के नियमों का यदि आप ईमानदारी से पालन करें और योग्य नागरिक की भांति अपना कर्तव्य करें तो अकाल के संकट से लड़ने में आप सरकार की सहायता करेंगे।

उचित मूल्य पर R सबके लिये भोजन

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवी की माँग

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव बी० ए०, एल-एल० बी०

आज भक्त का प्राण माँगती स्वतंत्रता की देवी।
आज रक्त का स्नान माँगती स्वतंत्रता की देवी।

सिंहवाहिनी पशु-शोणित से
अपनी प्यास बुझाती,
काली अपनी प्यासी जिह्वा
भैंसों पर चमकाती।

किन्तु मनुज-बलिदान माँगती स्वतंत्रता की देवी।

एक टेर गज की काफ़ी थी
हरि का आसन डोला।
एक द्रौपदी-स्वर पर हरि ने
विस्तृत अम्बर खोला।

कोटि कंठ-आह्वान माँगती स्वतंत्रता की देवी।

आहों के मेघों ने काली
ही की जग की कारा।
आँसू की नदियों में कब बह
सकी मुक्ति की धारा।

आज प्रलय-तूफ़ान माँगती स्वतंत्रता की देवी।

पच्छिम का शासन फैला है
प्राची के रवि-पथ पर।
इति का है साम्राज्य छा रहा
संजीवन प्रद अथ पर।

अथ का नव निर्माण माँगती स्वतंत्रता की देवी।
आज भक्त का प्राण माँगती स्वतंत्रता की देवी।

में जो हिन्दी के लेखक आये वह प्रदीप की तरह सफल न हो सके।

आज सिनेमा-संसार में हिन्दी के दो प्रकार के लेखक हैं। पहले वह जो कि उच्चकोटि के कलाकार हैं, जिनका मान-सम्मान हिन्दी-संसार में खूब हो रहा है—जैसे श्री भगवतीचरण वर्मा, श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी, श्री गोपालसिंह नैपाली, श्री उपेन्द्रनाथ अश्क, श्री सुदर्शन, श्री किशोर साहू, श्री नरेन्द्र। दूसरी श्रेणी में श्रमजीवी लेखक आते हैं जिन्होंने हिन्दी में एक दो पुस्तकें लिख दीं और वे अपने को धुरन्धर विद्वान् समझने लगे। फिर उनके सामने वर्मा जी की प्रतिभा भी दो कौड़ी की है। वह अपने को सर्वश्रेष्ठ लेखक समझने लगते हैं। इसी प्रकार के लेखक प्रलोभन की चमक के सामने अपने भाई का गला भी घोंट डालते हैं। ये हमेशा अपने बड़प्पन की शान में रहते हैं। इसी प्रकार के लेखकों ने हिन्दी के सुप्रसिद्ध कलाकार श्री नैपाली के खिलाफ सिने-संसार में काफी आन्दोलन किया। लेकिन क्या हुआ? क्या नैपाली मायूस होकर कर्त्तव्य की दुनिया से भाग निकले, कदापि नहीं—बल्कि उन्होंने और भी वेग के साथ फिल्मी-संसार में कार्य किया। आज उनके सभी प्रतिद्वन्द्वी उनकी सफलता देखकर दाँतों तले उँगली दबाने लगे।

हमारा निवेदन हिन्दी के साहित्यकारों से यही है कि वह समय के तकाजे को सुनें, आपस की फूट के धरातल से अपने को ऊपर उठायें। यदि कोई हिन्दी का लेखक तरक्की की दुनिया में बढ़ता है तो इसमें हम हिन्दीवालों के लिए बड़े सम्मान की बात है। हमें उसकी तरक्की को अपनी स्पर्धा का विषय न बनाना चाहिए। यदि किसी हिन्दी के लेखक की धाक सिनेमा की दुनिया पर बैठ जाती है तो हिन्दी-संसार के लिए यह बड़े सौभाग्य की बात होनी चाहिए। हमें अपनी शक्ति आपसी "तोड़-फोड़" में न लगानी चाहिए। हमारी आपस की फूट का फायदा सिने-निर्माता उठाया करते हैं। वह हम लोगों को एक दूसरे के प्रति भड़काकर हमको बेवकूफ बनाया करते हैं। हमारी बेवकूफी का लाभ ये निर्माता उठाया करते हैं। हम हिन्दीवालों को समझदारी से काम लेना चाहिए। कभी-कभी इस अनैतिक कार्य में हमारे उच्चकोटि के कलाकार भी पड़ जाते हैं।

मेरा हिन्दी के साहित्यकारों से यही विनम्र निवेदन है कि वह कठोर परिश्रम से सिनेमा-संसार में हिन्दी का नाम उज्ज्वल करें और हिन्दी-संसार को अपनी अभूतपूर्व कृतियाँ भेंट करें जिनको कि अपनाकर हिन्दी-संसार धन्य हो जाय।

बंबई —उमेश जोशी
२५ अप्रैल, ४६

हमारी उत्तमोत्तम पुस्तकें

उत्कृष्ट श्रेणी की ये पुस्तकें अधिकारी विद्वानों के द्वारा लिखी गई हैं। इनकी लोकप्रियता का यही कारण है। प्रत्येक पढ़े-लिखे परिवार में इनकी एक-एक प्रति अवश्य होनी चाहिए।

धार्मिक पुस्तकें

सचित्र-हिन्दी-महाभारत — महाभारत का अक्षरशः अनुवाद। अगणित रंगीन और सादे चित्रों के कारण महाभारत का यह संस्करण जैसे बहुत ही नयनाभिराम है वैसे ही सीधी और सरल भाषा में लिखा हुआ होने के कारण स्त्री-बच्चों से लेकर बड़े-बूढ़ों तक के लिए उपयोगी है। मूल्य ७०) सत्तर रुपये।

हिन्दी-महाभारत—इसमें महाभारत के अठारहों पर्वों की कथा बहुत ही मधुर और सरल भाषा में लिखी गई है। मूल्य ६) छः रुपये।

श्रीमद्भागवत—सरल भाषा में किया गया अविकल अनुवाद। महाभारत की तरह इसमें भी सादे और रंगीन चित्रों की भरमार है और सरल भाषा में लिखा हुआ होने के कारण आबाल-वृद्ध-वनिता सभी के लिए उपयोगी है। मूल्य १५।-) पन्द्रह रुपये पाँच आने।

ज्ञानेश्वरी-गीता—श्री स्वामी शंकराचार्य के मत के अनुसार गीता का मर्म समझाने के लिए महाराष्ट्र-प्रदेश के प्रसिद्ध संत श्री ज्ञानेश्वर जी महाराज के द्वारा की गई ज्ञानेश्वरी नामक टीका का हिन्दी-अनुवाद। मूल्य ५।-) पाँच रुपये पाँच आने।

सुखमार्ग—जीवन को सार्थक तथा सुखमय बनाने की उत्तम विधि। मूल्य ॥) आठ आने।

नीति-रत्नमाला—धर्मशास्त्र से छाँट-छाँटकर एकत्र किये गये ललित और उपदेशप्रद श्लोकों का संग्रह। प्रत्येक श्लोक का विस्तृत हिन्दी अनुवाद भी किया गया है। मूल्य ॥।-) तेरह आने।

चरित्रगठन—सदाचारी बनने के लिए जिन-जिन गुणों का होना आवश्यक है, उन सबकी इस पुस्तक में विशदरूप से विवेचना की गई है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

सदुपदेश-संग्रह—देश-विदेश के महात्माओं के उत्तमोत्तम उपदेशों का सुन्दर संग्रह। इस पर मनन करके हम अपने जीवन को सार्थक तथा सुखमय बना सकते हैं। मूल्य ॥) आठ आने।

दर्शन और जीवन—लेखक, श्री सम्पूर्णानन्द। इस पुस्तक में दर्शन के साथ जीवन का अनिवार्य सम्बन्ध दिखलाते हुए, प्रत्येक व्यक्ति को दर्शन क्यों पढ़ना चाहिए? इस प्रश्न पर विवेचनात्मक प्रकाश डाला गया है। दर्शनशास्त्र के प्रेमियों के निमित्त पुस्तक संग्रहणीय है। मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

प्राणायाम विज्ञान और कला—डाक्टर शोजा-वुरो ओटेव नामक सुप्रसिद्ध चिकित्सक के प्राणायाम-सम्बन्धी लगातार कई वर्ष के अनुभव का वर्णन। मूल्य १) एक रुपया।

आध्यात्मिकी—इस पुस्तक में हमारे ऋषि-मुनियों से लेकर नये से नये देशी और विदेशी आस्तिक और नास्तिक हर तरह के विद्वानों के मत का सार खींचकर रख दिया गया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मनुष्य-विचार—मन को वासनाओं से मुक्त करके विचारों को उन्नत बनाने की उत्तम विधि भली भाँति समझाई गई है। मूल्य ।-) पाँच आने।

कर्तव्य-शिक्षा—प्रत्येक मनुष्य किस प्रकार कर्तव्यशील, नीति-निपुण तथा सदा-चारपरायण बन सकता है यह बात इस पुस्तक में भली भाँति समझाई गई है। मूल्य १॥≈) एक रुपया ग्यारह आने।

उपदेश-कुसुम—फ़ारस के प्रसिद्ध नीतिकार शेखसादी के 'गुलिस्ताँ' नामक ग्रंथ के एक अध्याय का अनुवाद। मूल्य ।) चार आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये भारत के तीन तूफानी नेता

(पेज ५ का शेष)

प्रकट है कि आनेवाली जन-क्रान्ति में समाजवादी अच्युत अपने अनुभव के बल पर देश को वह नेतृत्व दे सकेंगे जिसका अभाव अगस्त-क्रान्ति के प्रथम दिनों में घातक सिद्ध आ।

डाक्टर राममनोहर—लोहिया

सन ४२ के पहले राष्ट्रीयतावादी अखबारों को पढ़नेवालों में से कौन श्री राममनोहर लोहिया को नहीं जानता होगा। उनके विचारपूर्ण सुलझे हुए लेख देश की समाजवादी विचार-धारा के ही परिचायक नहीं थे, वरन् वह राष्ट्रीय मंजिलों का सुव्यवस्थित निरूपण भी करते थे। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के परराष्ट्र मंत्री रहकर डा० लोहिया ने अपनी अन्तर्राष्ट्रीय विद्वत्ता का भी अभूतपूर्व परिचय दिया।

डा० लोहिया की प्रारम्भिक शिक्षा बम्बई में हुई थी। तत्पश्चात् वे कलकत्ता अपने पिता पं० हीरालाल लोहिया के पास चले गये, जहाँ से उन्होंने बी० ए० पास किया। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वह जर्मनी चले गये, जहाँ वह काफी अरसे तक रहे। वापस आकर नौकरी के बड़े-बड़े वादों को उन्होंने लात मार दी और जी-जान से राष्ट्रीय कार्यों में जट गये। कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी में शामिल होकर उन्होंने 'कांग्रेस सोशलिस्ट' अखबार का भी शुरू-शुरू में सम्पादन किया। 'सर स्टैफर्ड क्रिप्स' का रहस्य नामक पुस्तक लिखकर उन्होंने क्रिप्स-मिशन का खुला रूप जनता के सामने रखा।

अगस्त-क्रान्ति के समय फरार रहकर डा० लोहिया ने अनगिनत पर्चे व पुस्तिकाये लिखकर आन्दोलन को आदर्शयुक्त लिखित भूमिका भी प्रदान की। लार्ड लिनलिथगो और सर मारिस हैलेट के नाम खुले पत्र लिखकर उन्होंने इनके जालिमाना हुकूमत का भी पर्दा फाश किया। १८ महीने सफलतापूर्वक फरार रहकर डा० लोहिया मई, १९४४ में बम्बई में पकड़ लिये गये। लाहौर के क़िले में उन्हें तीन महीने तक हाथ-पैर बेड़ियों से बाँधकर तनहाई में रखा गया। उनके ऊपर हुए अत्याचारों से वे बीमार पड़ गये, और उनका स्वास्थ्य बहुत ही खराब हो गया। इसी समय उनके पिता की भी मृत्यु हो गई। पर क्रान्ति के दीवाने को दुख की वेदना कहाँ—निर्ममता की कितनी कठोर अभिव्यक्ति है। आगरे के क़िले में जयप्रकाश के साथ रहकर लोहिया भी पिछले महीने छोड़ दिये गये।

आज देश हमारे इन तीन नेताओं की ओर बड़ी आशा भरी दृष्टि से देखता है कि वे जन-आन्दोलन को अपने साथियों के साथ किस दिशा की ओर ले जायेंगे? समाजवादी भारतीय आन्दोलन के अन्य जननायकों जैसे आचार्य नरेन्द्रदेव, अरुणा आसफअली, युसुफ मेहरअली, अशोक मेहता आदि का वर्णन अन्य किसी लेख में करूँगा।

सागर कटरा में श्री अब्दुल अजीज और अब्दुल गफूर फ़ूट-वियर के यहाँ मीलादशरीफ़ के पश्चात् सर्वश्री मौलवी चिरागुद्दीन, श्री जमीरुद्दीन वकील, डा० पी० जी० सप्रे ने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर सुन्दर भाषण दिये। तथा नगर में फैली हुई अफ़वाहों का निराकरण किया। हिन्दू-मुसलमानों ने आपसी भेद-भाव को छोड़कर काफ़ी संख्या में मीलाद में भाग लिया। ता० २९ की रात को श्री फकीर मुहम्मद के बाड़े में आल इंडिया मुशायरा हुआ।

प्रान्तीय कांग्रेस के प्रतिनिधियों का चुनाव ता० ६ मई को हो गया है।

ता० ३० अप्रैल से प्रातःकाल म्युनिसिपैलिटी हाईस्कूल में से 'आज़ाद हिन्द सेवा-दल' की ट्रेनिंग शुरू हो गई है। अखिल भारतीय आज़ाद हिन्द-फ़ौज के एक लेफ़्टिनेंट ने बताया कि यह ट्रेनिंग भारतीय कार्यक्रम के अनुसार माह की हो रही है। इसमें अनुशासन की प्रमुखता रहेगी।

—लक्ष्मीकान्त

* * *

इंदौर के सेठ गोविन्दराम चेरीटी ट्रस्ट ने हिन्दी ग्रन्थों पर के पुरस्कार देने की घोषणा की है। ट्रस्ट १५००) का पुरस्कार खनिज-विज्ञान-सम्बन्धी पर तथा ५००) का पुरस्कार पर देगा जिससे ग्रामवासियों रहन-सहन, सफाई तथा आचार का ज्ञान हो।

एक रुपये का सवा रुपया

टायर खरीदते वक्त आप 'फायरस्टोन' का खरीदिए और एक रुपये का सवा रुपया बनाइए। यह अतिरिक्त लाभ आपको अपेक्षाकृत अधिक मील तक दौड़ने की उस शक्ति के रूप में प्राप्त होगा जो 'फायरस्टोन टायर' में सरेस का सुप्रसिद्ध पुट देकर उत्पन्न की जाती है। सरेस का पुट देने से रबर के फूलने का भय नहीं रह जाता और अधिक मीलों की दौड़ लगाने की शक्ति बढ़ जाती है।

सरेस द्वारा निर्मित एकमात्र टायर

Firestone

फायरस्टोन

फायरस्टोन टायर एण्ड रबर कम्पनी ऑफ इण्डिया, लिमिटेड

बम्बई * मद्रास * कलकत्ता * बङ्गलोर * नागपुर
लाहौर * दिल्ली * कराची * कोलम्बो

---

१ यह जल—अभेद्य और नमी विरोधक है।
२ विकार विरोधी शीशे में बन्द
३ दांतों को चमकीला और स्वच्छ करने में ६० प्रतिशत अधिक प्रभावशाली।
४ साल भर की गारंटी

पशुओं के बालों से रहित!

व्यापारिक पूछ-ताछ :— एल० डी सेमर एंड कं० (इंडिया) लि०, बम्बई, कलकत्ता, कराची मदरास।

डा. वेस्ट्स टूथ ब्रुश और टूथ पेस्ट

Copyright: Jwalaji Ltd.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी दर्द
सारिडन
दुःखशामक टिकडियोंसे
१० मिनटोमें दूर हो जाते हैं

बालसखा का नया वार्षिकांक

छप रहा है। पाठक धैर्य रक्खें।

ग्राहकों के अनुरोध से हमने इस वर्ष भी बालसखा का वार्षिकांक निकालने का निश्चय किया है। इसमें बहुत से चित्र, कविताएँ, कहानियाँ, बढ़िया लेख और उपयुक्त सामग्री रहेगी। पृष्ठ-संख्या ३०० से ऊपर। यह अङ्क बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होगा। यह मासिक बालसखा के १२ अंकों से पृथक है। मूल्य ३), मासिक बालसखा के ग्राहकों के लिए रियायती मूल्य २॥)

रियायती मूल्य के लिए अपना ग्राहक-नंबर अवश्य लिखिए।

मैनेजर, बालसखा, इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

...वैद्यक उपाधियाँ
...प्रेस आयुर्वेदिक कालेज
...नम्बर ११२, गवर्नमेंट रजिस्टर्ड से
...प्राप्त करें। इंजक्शन (सुइ) की
...हैं। नियमावली मुफ्त।

...सप्ताह में उस स्त्री के कूल्हे
का दर्द भाग गया
...की पहली मात्रा से ही आराम
होने लगा
...वह क्रुशेन की छोटी मात्रा
प्रतिदिन पीती है

...वर्ष पहले जब स्त्री को कूल्हे का
...तब वह कठिनाई से चल-फिर
...। अनेकों उपचार किये किन्तु
...नहीं हुआ। उसने क्रुशेन का
...और तत्क्षण लाभ भी हुआ।
...सप्ताह में उसके कूल्हे का दर्द
...।

...कहती हैं, "६ वर्ष हुए मैं कूल्हे के
...थी। मैं मुश्किल से चल
...। हमने अनेकों उपचार किये
...। तब मैंने क्रुशेन साल्ट सेवन
...किया। पहली ही मात्रा से
...हुआ। एक सप्ताह में मैं एकदम
...। अब मैं प्रतिदिन एक चम्मच
...एक प्याले गर्म जल में पीकर
...करती हूँ। अब मैं पिछले
...से विधवा हूँ और मेरे एक पुत्र
...श्रम करती हूँ। मुझे अपनी
...के लिए ६ बजे सबेरे से
...तक काम करना पड़ता है।
...की है किन्तु सबकी निगाह
...की मालूम पड़ती हूँ।
—(श्रीमती) एफ० ई० आर०
...कूल्हे का दर्द है तो क्रुशेन
...उठाइए। क्रुशेन अनेक
...का अनुपातिक सम्मिश्रण है
...मूत्रवर्द्धक है। इस दोहरी
...सारे शरीर को स्वच्छ कर
...की नियमित मात्रा से
...इन्द्रियाँ मुस्तैद बनी रहती हैं
...सुचारु रूप से करती
...सभी अच्छी दूकानों
...में मिलता है।

श्री रत्नगिरिजी का अद्भुत चमत्कार

जिसने समस्त संसार को चकित कर दिया

रक्त, बल, वीर्य्य, उत्साह तथा उमंग ही जीवन सफल बना सकती है

ध्यान देने योग्य अमूल्य उपहार

अपूर्व काया पलट (रजिस्टर्ड)

निस्वार्थ संसार सेवा भारतीय महात्माओं ने औषध विज्ञान को अपनी महान् खोजों और अमूल्य रत्नों से अलंकृत किया है आधुनिक चिकित्सक मर्ज और मरीज जब दोनों को लाइलाज घोषित करके शर्मिन्दा नहीं होते वहाँ इन्हीं महात्माओं की बिना दाम की जड़ी बूटियाँ मुर्दों को भी जिला सकने में समथ हुई हैं। ऐसी सच्ची घटनायें आये दिन एक न एक पढ़ने और सुनने में आया करती हैं।

बीस वर्ष पूर्व कल्लाती पहाड़ी पर विचरण करनेवाले स्वामी रत्नगिरिजी महाराज की सेवा एक बूढ़ा ग्वाला करने लगा। योगिराज को एक दिन उस वृद्ध की कमजोरी पर दया आ ही गई और उन्होंने निम्नलिखित योग की ६ मात्राएँ उस बूढ़े को दीं। नासमझी के कारण छहों मात्राएँ एक साथ खा जाने से उस वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आगई और रत्नगिरिजी के परिश्रम पूर्वक इलाज करने पर बुढ़ापे के बावजूद भी उसे तीन विवाह करने पड़े। इस पर राजा रईस, नवाब और रसिकजन महान् योग को जानने के लिए आतुर हो उठे। नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयात मोहम्मद खाँ साहब ने बाबाजी की बहुत सेवा करके इसे प्राप्त कर लिया और लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्मा जी ने इसे प्रथम तथा दो अन्य लिखकर तीनों से उत्तम वाजीकरण बतलानेवाले को एक हजार रुपये का नक़द इनाम देने की घोषणा की। इसे आज बीस साल के लगभग हो गये किन्तु अभी तक कोई पुरस्कार विजय नहीं कर सका। मथुरा के ख्याति प्राप्त बा० हरिदास जी ने इसे चिकित्सा चन्द्रोदय में छपवाया और हमने भी स्वयं बनाकर सैकड़ों दुर्बल, नपुंसक, वीर्य्य-विकारी रोगियों पर बरता। तत्काल लक्षण-चमत्कार देख जन-साधारण के लाभार्थ अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपवा दिया। आप भी बनाकर लाभ उठायें।

योग—शुद्ध बुरादा फौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत भल्ल १ तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा, एक घंटा घृत कुमारी में घोटकर मिट्टी के कुज्जे में मजबूत बंद कर पाँच सेर कंडों में फूंके। दुबारा एक तोला हरताल बकी शुद्ध, १॥ माशा कपूर शुद्ध में, तीसरी बार गन्धक आमलासार शुद्ध १ तोला, कपूर, १ माशों में, चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद १ तोला, कपूर १॥ माशा को ऊपर की भाँति १६ आँच दे। फिर उसको कढ़ाई में डालकर बराबर इन्द्रबधू डाल दे। और नीचे आग जलावे, जब इन्द्रबधू जलकर राख हो जावे तो हवा देकर उड़ा दे। बस अपूर्व काया पलट तैयार है। चार चार चावल सायं मक्खन मलाई के साथ खायें और मिश्री मिला दूध पीवें।

मथुरा के हरिदास जी लिखते हैं इस योग के सेवन से एक हफ़्ते में एक आदमी का वजन चार पौंड बढ़ गया, दूसरे का चेहरा लाल सुर्ख हो गया। भूपाल के वैद्य-राज पं० बालकृष्ण शर्मा ने ३५० रोगियों पर बरता और आशा से अधिक गुणकारी पाया। रत्नाकर सम्पादक जी श्री छोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य ने गृह-चिकित्सा पथ-प्रदर्शक में छापा कि इतना प्रचण्ड गुणकारी योग दूसरा नहीं देखा। श्री धर्मेन्द्र विद्या-बतंश सिद्धान्त शास्त्री अधिष्ठाता गुरुकुल बरेली जिला मुजफ़्फरनगर ने लिखा है—"अपूर्व काया पलट" नामक औषध सेवन कर रहा हूँ, जैसी प्रशंसा वैसा ही गुण है। बहुत लाभ हुआ। श्री चिरंजीलाल जैन आयुर्वेद शास्त्री मालिक कल्याण औषधालय, वाह (आगरा) का कहना है कि मैंने २२५ रोगी, अपूर्व कायापलट द्वारा जो कि धातु-विकार, नपुंसकता, बवासीर, रक्त-विकार आदि रोगों से ग्रसित थे पूर्ण स्वस्थ किये।

हमारा दावा है कि केवल सात दिन के सेवन से शरीर में रक्त दौड़ता नजर आयेगा। २१ दिन में चेहरा लाल काश्मीरी सेव की तरह चमकने लगेगा। ४० दिन में नपुंसकता, मधुमेह, डायब्टीज निर्बलता दूर हो जाती है। स्त्रियों के प्रदर दूर हो गर्भ-धारण-शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति बढ़ाकर भूख दूनी करता है। कफ़ तिल्ली की खराबी, खांसी, नजला, जुकाम बदन दुखना, खून का पतलापन, आँखों का पीलापन, चिनगारी सा उड़ते दीखना, बार-बार थूक गिरना, दमा तथा हर तरह की कमजोरी तुरन्त दूर कर नवजीवन का संचार करता है। जाड़ा, गरमी, बरसात सभी मौसमों में एक-सा लाभ करता है। योग भली भाँति समझाकर लिखा है फिर भी यदि आप न बना सकें तो बनी बनाई १६ आँच दी हुई ४० दिन की ८० मात्रा ६॥।=) डाक खर्च मय पैकिंग अलग। कोई बात समझ में न आवे तो जवाबी कार्ड भेजकर उत्तर मँगा लें।

पता—रूपबिलास कम्पनी
(रसायनशाला) नम्बर ४८१ धनकुट्टी
कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय
स्थापना १९२६
आरोंदा
सूरज १८६६ छाप
नीलगिरि तेल
हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, टाइफाइड आदि बीमारियोंमें बचानेवाला
प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

सपट
लोशन
दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.
सपट अॅन्ड कं. लि.
बम्बई नं. २.

गांधी-मीमांसा
इस पुस्तक में पं० राम... बी० ए० एल-एल० बी० ने ... व्यक्तित्व और सिद्धान्तों की ... विवेचना की है। इसे आद्योपा... पर गांधीवाद पूर्ण रूप से हृदयं... है। विद्वानों ने मुक्तकंठ से ... की है। पृष्ठ-संख्या ८५०। ... प्रति का मूल्य ४) चार रुपये।
मैनेजर बुकडिपो
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, ...

AC 53

"अकाल से बचने के लिये सबको प्रयत्न करना चाहिये"

—श्रीमती नायडू

१३ फरवरी को हैदराबाद (दक्षिण) में भाषण करते समय श्रीमती नायडू ने कहा: "क्या इस अवसर पर आप संतप्तों की सेवा करने के लिये कटिबद्ध होंगे या नहीं? चाहे वे सत्ताधारी महाराजा हों जो बड़ी रियासतों और राज्यों पर शासन करते हों या झोंपड़ियों मे रहनेवाले भूखे किसान हों जो अपने बच्चों और औरतों को भूखों मरते देख रहे हों, भारत का भाग्य एक और अविभाज्य है और उस संकट की घड़ी में कोई पीछे कदम नहीं हटा सकता। जब भूखों के मुँह आपसे सहायता मांगते हैं तो कोई भी वस्तु बड़ी नहीं है।"

हमारी प्रतिज्ञा और अपील

उन लोगों से जो कमीवाले क्षेत्रों में रहते हैं हम परिपूर्ण सहयोग की प्रतिज्ञा करते है। देश के समस्त साधनों का संगठन होगया है और उनके पास शीघ्रतासे सहायता भेजी जा रही है। उनके अभावको शेष देश के साथ, बराबर विभाजित किया जावेगा। राशनिंग का इस प्रकार विस्तार किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति अपना उचित भाग प्राप्त करले। मूल्य नियंत्रण की कठोर व्यवस्था की जावेगी। शान्तिसे विश्वास रखिये। अपनी आवश्यकता से अधिक मत खरीदिये। मुनाफाखोरों से कोई सम्बंध मत रखिये अतिरिक्त क्षेत्रों में रहनेवालों से हम अधिकसे अधिक मदद की अपील करते हैं। यदि आपसे अतिरिक्त अनाज सुपुर्द करने को कहा जावे तो आपके पास आपकी आवश्यकता के अनुसार काफी बच जावेगा। यदि आपके नगर में राशनिंग योजना लागू की गयी है या राशन में कमी की गई है तो याद रखिये, वह आपके अन्य भाइयों की सहायता के लिये ही है। तब भी आपके पास काफी होगा। छोटे तरीके से भी अनुचित संग्रह मत कीजिये। अधिकारियों के साथ सहयोग कीजिये।

GURUKULA KANGRI DELY. 14 AUG 10 M.M. SAHARANPUR

खाद्य संकट को पराजित कीजिए

एक साथ कार्य कीजिये — एक साथ हिस्सा बंटाइये

व्यापारियों एवं उत्पादकों को संदेश

अपनी सामर्थ्यानुसार सारा अनाज निकाल दीजिये अनुचित संग्रह का प्रत्येक मन अनाज एक भाई की मृत्यु का कारण हो सकता है नियंत्रित मूल्य पर ही बेचिये—आपके और खरीदनेवाले के दोनों के लिये यही उचित है। दूसरों को संकट दे कर कमाया हुआ धन पाप है।

अपनी समस्त शक्ति और साधनों से सरकार और जनता मुनाफाखोरों और चोर बाजारवालों का दमन करने के लिये कटिबद्ध हैं। चोर बाजार से बचिये यह अपराध है।

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

प्रबन्धक सम्पादक — एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक

Sunday, 19th May, 1946

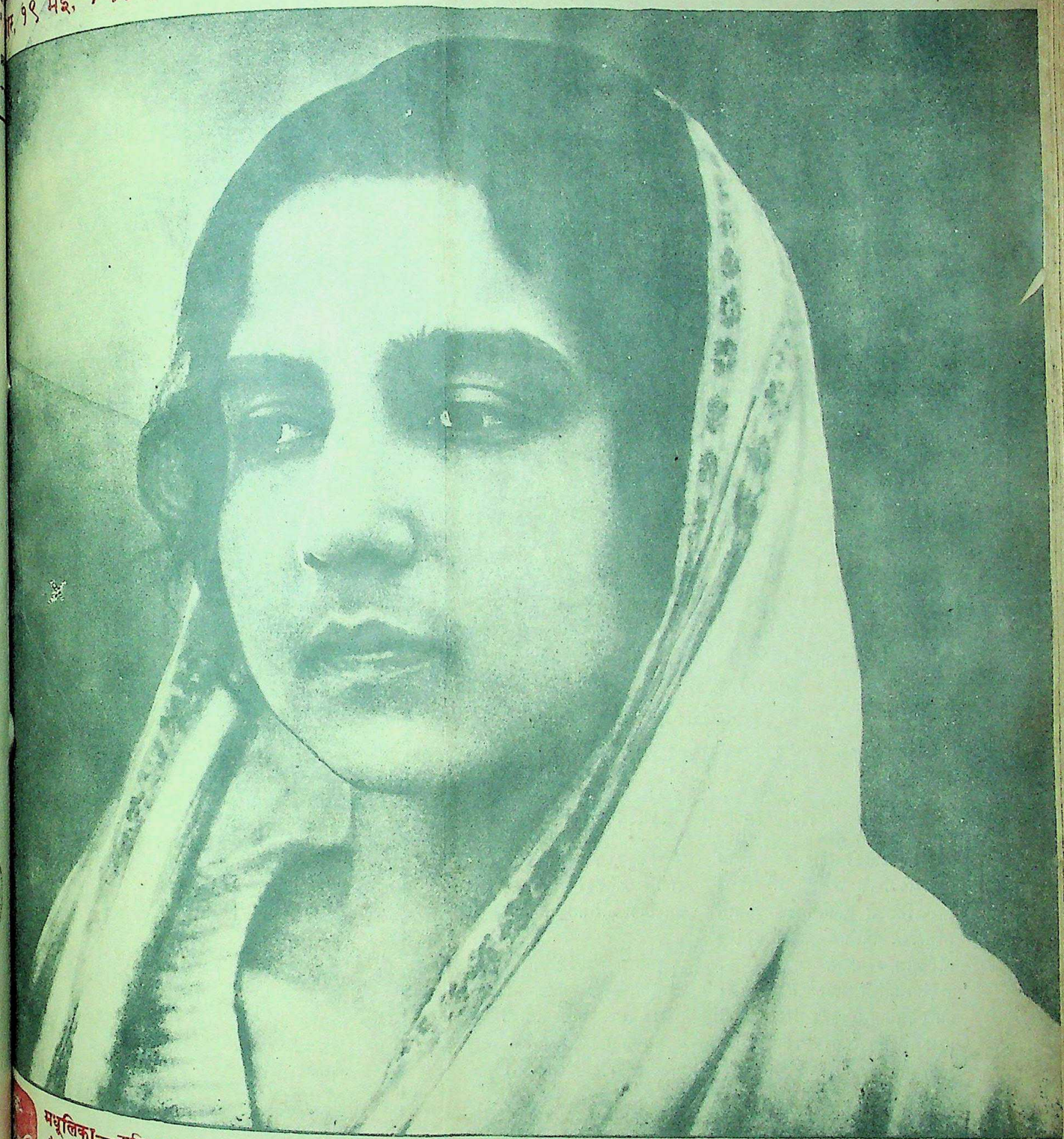

मधूलिका—कविवर अंचल की मधुर कविताओं का संकलन है। इसकी कोमल और विदग्ध कविताओं में एक मोहिनी ज्वाला है। विद्वानों ने एक स्वर से इसकी प्रशंसा की है और हिन्दी के आधुनिक काव्यों में मधूलिका का स्थान बहुत ऊँचा बताया है कवि को अपनी इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक पर चक्रधर-पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। इसकी कवितायें भावुक काव्य-प्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। यौवन और सौन्दर्य के ये गीत आधुनिक हिन्दी-काव्य में उच्च स्थान रखते हैं। मूल्य २)

हिन्दी भाषाभाषी भारतीय जनता का पत्र

मूल्य २ आना

ब्रिटेन भारतवर्ष को क्यों नहीं छोड़ेगा ? सन ४२ के आन्दोलन के नेता जयप्रकाश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी दर्द

सारिडन

दुःखशामक टिकडियांसे
१० मिनटोमें दूर हो जाते है.

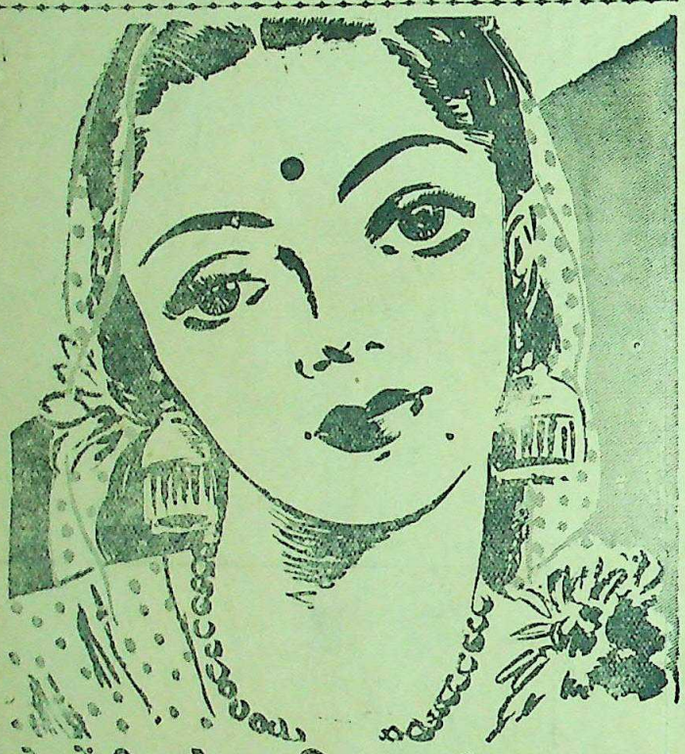

केशोंकी शोभा बिना सारी सुन्दरता फीकी पड़ जाती है

इसीलिये केशोंको सजाने व संवारनेके नित्य नये तरीके निकलते आ रहे हैं और निकलते जांयगे। इस विशाल भारतवर्षमें विभिन्न रुचिके लोग हैं और आज ७० वर्षोंसे जवाकुसुम, हर तरहके लोगोंको पसन्द आता रहा है। हमारे देशमें धूल-धक्कड़के मारे बालोंकी जड़में गर्दा बैठ जाता है। फिर गर्मी इतनी तेज पड़ती है कि मस्तिष्कके स्नायु बहुत जल्द गर्म हो जाते हैं। इन दोनों कारणोंसे ही बालोंकी स्वाभाविक कमनीयता और मजबूती नष्ट होती है।

आयुर्वेदोक्त जड़ी-बूटियों से बना जवाकुसुम बड़ी आसानीसे मैलको निकाल देता है और बालोंकी जड़को मजबूत बनाता है। इसके स्निग्ध स्पर्शसे मस्तिष्क शीतल हो जाता है।

७० वर्षकी सुप्रसिद्धिका समृद्ध

जवाकुसुम

केशोंकी शोभा बढ़ाता.....मस्तिष्क शीतल रखता है

सी० के० सेन एण्ड कं० लि० · जवाकुसुम हाउस · कलकत्ता

मझली दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पि[illegible] भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित [illegible] मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इला[illegible]

"रुपया लगाने की पूर्ण[illegible] सुरक्षित मदों में नेश[illegible] सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स उत्तम मद नहीं मिलेगी

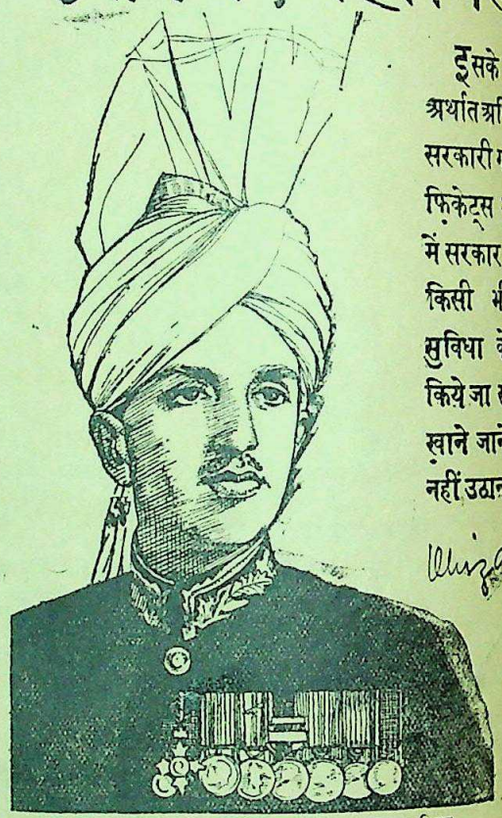

इसके लाभ [illegible] अर्थात अधिक [illegible] सरकारी गारंटी, [illegible] फ़िकेट्स उपयुक्त [illegible] में सरकार द्वारा [illegible] किसी भी [illegible] सुविधा के साथ [illegible] किये जा सकते हैं [illegible] खाने जाने का [illegible] नहीं उठाना पड़ता

आनरबुल लाफ़्टनन्ट करनल नवाब मलिक ख़िज़िर हयात खाँ टिवाना, के. सी. एस. आई. ओ. बी. ई. प्रधान-मंत्री, पंजाब।

संक्षिप्त विवरण

(१) आप ५), १०), ५०), १००), ५००), १०००) या ५०००) के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) एक व्यक्ति ५०००) से अधिक मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स नहीं ख़रीद सकता। ये इतने उपयोगी हैं कि इनका राशन करना ही उचित समझा गया है। हां दो व्यक्ति मिलकर १०,०००) के सर्टिफिकेट्स मोल ले सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है।

(४) इस प्रकार अवधि पूरी होने पर ४-१/६% वार्षिक [illegible]

(५) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स [illegible]

(६) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये [illegible] (५) का सर्टिफ़िकेट [illegible] ही भुनाया जा सकता है [illegible] विक लाभ इसी में है कि [illegible] पहिले इन्हें न भुनावें।

(७) जिनकी बचत थोड़ी है [illegible] ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्प [illegible] ५) के स्टैम्पस जमा [illegible] नल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट [illegible]

(८) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प [illegible] सरकार द्वारा अधिकृत [illegible] सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त [illegible]

आप अपनी बचत से ५०% लाभ [illegible]

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष ८, संख्या ३८] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, १९ मई, १९४६

संसार का महायुद्ध समाप्त हो जाने पर साम्राज्यवादी राष्ट्रों ने नये-नये स्वाँग रचने शुरू कर दिये हैं। इस वक्त दुनिया में सम्मेलनों, कान्फ्रेंसों और फ़ेडरेशनों का बोलबोला है। अमरीका और ब्रिटेन सारी दुनिया पर अपना असर जमा लेना चाहते हैं। संयुक्तराष्ट्र संघ की स्थापना तो हो ही गई है। वहाँ समय-समय स्वाँग और नाटक चलता ही रहता है। कोई मामला अटका और अमरीका, ब्रिटेन, संयुक्तराष्ट्र संघ की खिदमत में हाज़िर हुए। प्रजातन्त्र के नाम पर ऐसे-ऐसे स्वाँग रचे जाते हैं कि हैरानी होती है। अमरीका और ब्रिटेन अपने प्रजातन्त्र का स्वाँग लेकर आगे चलते हैं और सोवियट रूस अपना। ईरान और इटली के मामले में अमरीका, ब्रिटेन और रूस का स्वाँग रचा जा चुका है। मिस्र के मामले में ब्रिटेन अपना स्वाँग रचा ही रहा है। फ़िलस्तीन के मामले में अमरीका और ब्रिटेन ने जो फ़ैसला दिया है, बरबादों पर उसका क्या असर पड़ा है, यह भी छिपी हुई बात नहीं है। अपने राम की समझ में नहीं आता कि साम्राज्यवादी राष्ट्र आखिर कब तक इस तरह का स्वाँग रचते रहेंगे? संसार को मूर्ख बनाकर कब तक वह अपने स्वार्थों की सिद्धि करते रहेंगे? आखिर इस दुनिया में प्रजातन्त्र की दुर्गति कब तक होती रहेगी? शान्ति और सुरक्षा की आड़ में कब तक शोषण का नृत्य होता रहेगा। लेकिन किया क्या जाय—जिसकी लाठी उसकी भैंस। इस वक्त अमरीका और ब्रिटेन के हाथ में लाठी है तब संसार का प्रजातन्त्र अपनी अकड़ पर कब तक कामयाब रह सकता है?

* * *

लन्दन में ब्रिटिश प्रधान मंत्री मिस्टर एटली की शरारत में ब्रिटिश राष्ट्र समूह सम्मेलन का स्वाँग हो रहा है। बड़ी तेज़ी के साथ ब्रिटेन यह निर्णय कर डालना चाहता है कि ऐसा कौन-सा नुस्खा तैयार किया जाय जिससे जर्मनी और जापान अपना सर न उठा सकें। जो योजनायें बन रही हैं, उस पर आपस में जूता पैजार शुरू हो गया है। उपनिवेशों के प्रधान मंत्री नहीं चाहते कि मिस्र से ब्रिटिश फ़ौजें हटाई जायँ, किन्तु कई उपनिवेश चाहते हैं कि ब्रिटेन अपने रवैये में परिवर्तन करे। प्रधान मंत्री मिस्टर एटली ने सम्मेलन में यह साफ़ साफ़ कह दिया है कि मिस्र से फ़ौजें हटाने और इस सम्मेलन से कोई वास्ता नहीं है। अपने राम की राय में बात सही भी है। मीठा-मीठा गप और कड़ुआ-कड़ुआ थू। ब्रिटेन के स्वार्थों का जहाँ तक सवाल है, उस पर कोई हाथ नहीं लगा सकता और बाकी से ब्रिटेन से कोई वास्ता नहीं। यह भी एक स्वाँग ही है। फिर ब्रिटेन तो स्वाँग की कला में बड़ा निपुण है।

* * *

ब्रिटिश मंत्रियों का प्रतिनिधिमंडल अब क्या करेगा, खुदा जाने या वह खुद। शिमला-सम्मेलन तो टाँय-टाँय फिस हो गया और कोई नया मरहला लेकर चलने की तैयारी हो रही है। भारत को स्वतन्त्र करने का अच्छा स्वाँग रचा जा रहा है। भगवान् जाने कब स्वराज्य मिलेगा? न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेंगी। न मुस्लिम लीग राजी होगी और न केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार बनेगी और न विधान बनानेवाली कमेटी। इसका मतलब यह है कि स्वराज्य ही ग़ायब होता नज़र आ रहा है। अपने राम की समझ में नहीं आता कि आखिर ब्रिटिश शासक कब तक खरगोश की चाल चलते रहेंगे? जब केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार बनने और विधान बनानेवाली कमेटी बनने में इतनी अड़चनें पड़ रही हैं तो 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव को ब्रिटेन के स्वीकार करने में तो अभी जमाना बाकी पड़ा है। सच पूछा जाये तो भारत का भाग्य ऐसा ही है। साम्राज्यवादी योरप को तो स्वराज्य दे ही रहे हैं, वह आँखों के सामने है, इसलिए एशिया और भारत को जैसा स्वराज्य देंगे, वह भी सामने नज़र आयेगा और आ भी रहा है। देखते चलिये आगे-आगे क्या होता है, अभी तो शुरुआत है।

राष्ट्रपति पंडित जवाहरलाल नेहरू।

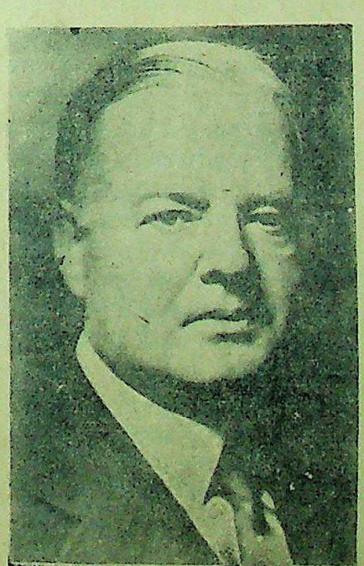

अमरीका के प्रेसिडेंट हूवर, भारत के भावी दुर्भिक्ष से उतना चिंतित नहीं हैं जितना योरोप में उत्पन्न होनेवाली भावी भुखमरी से।

गजल

लेखक, युगप्रवर्त्तक कवि 'निराला'

राह पर बैठे उन्हें आबाद तू जब तक न कर
चैन मत ले ग़ैर को बरबाद तू जब तक न कर।
पैर उखाड़े रह क़ज़ा के हाथ जब तक चलता है,
बैठने मत दे किसी को याद तू जब तक न कर।
अडिग डग से भूमि-जल-नभ पर फिरे, जीवन नहीं,
दुर्दशा को सिंहिनी की माद तू जब तक न कर।
रोक रहजन को प्रगति का फेर से बाधक जो है,
दरबदर भटका उसे मर्याद तू जब तक न कर।
बदल शिक्षाक्रम, बना इतिहास सच्चा, दम न ले,
सज्जनों को प्रगति-पद प्रहलाद तू जब तक न कर।
सेठ होने को किसी की गठरियाँ लेकर न चल,
मान है अपमान को मनुजाद तू जब तक न कर।
स्वर विवादी ही लगा गाना सुनाना हो जहाँ,
साथ से हर वाद का उन्माद तू जब तक न कर।
सूत सुलझा मत विदेशी देश के खातिर जमा
हाथ धो ले, वयन को अपवाद तू जब तक न कर।
उलट तख्ता उपज की ताक़त बढ़ाने के लिए,
डाल मत खेतों में अपनी खाद तू जब तक न कर।
बे बुलाये आ बिराजे आज तक सबने कहा,
बीन मत छू ज्ञान की उस्ताद तू जब तक न कर।
घर बसाने को, समझ तू, अपनों ने चरखे दिये,
तम बना रह, रहन की बुनियाद तू जब तक न कर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

नाटक की इतिश्री

हमारा जो विश्वास पहले था, वही आज भी है। इन्हीं स्तम्भों में हमने बराबर संकेत किया है कि ब्रिटिश शासक नाटक रचने में बड़े निपुण हैं। ब्रिटिश मंत्रिमंडल के तीनों मंत्री भारत को स्वाधीनता प्रदान करने आये हैं, इसमें विशेष तत्त्व नहीं है। शिमला सम्मेलन समाप्त हो गया। मंत्रियों ने जी जान से प्रयत्न किये किन्तु कांग्रेस-मुस्लिम लीग समझौता नहीं हो सका। इसलिए केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना कैसे हो सकती है और जब केन्द्र में सफलता नहीं मिलती तो भावी भारत के लिए विधान-निर्मात्री समिति की स्थापना की संभावना कैसे हो सकती है! यह बात बिलकुल दुरुस्त और सही है। तीनों मंत्रियों ने भारतीय राजनीति की आन्तरिक गतिविधि को समझने तथा विचार-विनियम के लिए कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग के नेताओं को नहीं वरन् प्रान्तों के विरोधी दलों के नेताओं तथा देशीराज्यों के प्रतिनिधियों के सिवा प्रतिक्रियावादी दलों के नेताओं को आमंत्रित करके बड़ी लंबी-लंबी वार्तायें कीं। दिल्ली और शिमला में लगभग डेढ़ महीने के अच्छा खासा आवागमन रहा। अंततोगत्वा शिमला-सम्मेलन समाप्त हो गया। सरकार तथा नेताओं की ओर से वक्तव्य भी प्रकाशित हो गये। साथ ही कांग्रेस तथा लीगी नेताओं की ओर से जनता को सावधान किया गया है कि समझौता यद्यपि नहीं हुआ फिर भी अभी निराश होने की आवश्यकता नहीं है। प्रामाणिक रूप से जब तक समझौते के संबंध में जानकारी प्राप्त न हो तब तक व्यर्थ में अटकल लगाने की आवश्यकता नहीं है। वाइसराय लार्ड वैवेल, शिमला-वार्ता भंग होने पर भी केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार तथा विधान-निर्मात्री परिषद् के निर्माण की ओर अधिक सतर्क जान पड़ते हैं। वह आश्वासन देते हैं कि हमारा ध्येय तो इन दोनों कामों को पूरा करना है ही। महात्मा गांधी ने भी शिमला-वार्ता भंग होने के बाद जो वक्तव्य दिया है उसमें भी उन्होंने धैर्य से प्रतीक्षा करने की सलाह दी है। ईश्वर पर भरोसा रखने तथा साहसी बनने की प्रेरणा दी है। इन सभी बातों का तात्पर्य यह है यदि मंत्रियों की वार्ता समाप्त भी हो गई है तो भी वह जिस उद्देश्य को लेकर भारत आये हैं, उसकी पूर्ति करने का पूर्ण उद्योग करेंगे। अब संभवतः वह स्वयं कोई ऐसा मसविदा उपस्थित करेंगे जिससे केन्द्र में जिम्मेदार सरकार की स्थापना हो सके और विधान-निर्मात्री समिति का भी निर्माण हो सके।

यह सिद्धान्त ठीक है कि कभी निराश नहीं होना चाहिए। साहस और धैर्य का सहारा अत्यन्त उचित है और कम से कम अभी जब कि लार्ड वैवेल, मंत्रिदल और देश के नेता यह कहते हैं कि आगत मंत्री अपने उद्देश्य की पूर्ति करके यहाँ से टलेंगे तो कोई कारण नहीं है, अविश्वास किया जाये या यह अनुमान लगाया जाये कि असफलता तो प्राप्त होगी ही। क्योंकि राष्ट्र के भाग्य का फैसला अगर जनता ने अपने नेताओं पर छोड़ दिया है तो उनके आदेशों का भी मूल्य तो है ही। फिर भी आश्चर्य तो इस बात का है कि पिछले डेढ़ वर्ष में कांग्रेस और लीग किसी भी अंतिम निर्णय पर नहीं पहुँच सकीं जिससे स्वतः मंत्रियों को अपने उद्देश्य की पूर्ति में सहामास मिलती। इसलिए मंत्रिदल को अपने उद्देश्यों को कार्यान्वित करने के लिए स्वयं किसी न किसी उपाय की रचना करनी होगी। यदि उन्हें ही अंतिम निर्णय करना था तो डेढ़ महीने के व्यर्थ के नाटक से क्या लाभ हुआ? क्या ब्रिटेन को यह नहीं मालूम कि मुस्लिम लीग पाकिस्तान के सिवा और कुछ नहीं माँगती? क्या ब्रिटिश सरकार को यह नहीं मालूम है कि भारतीय स्वाधीनता को सामूहिक रूप से प्राप्त करने के लिए आन्दोलन कर रहे हैं। वह साम्प्रदायिकता तथा जातीयता के आधार पर भारत का बँटवारा नहीं चाहते हैं और राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से इसे वह गुनाह समझते हैं। पिछले पचीस वर्ष में शासकों की ओर से कितने ही प्रतिनिधिमंडल भेजे गये, कितनी ही जाँच-पड़तालें हुईं, कितने ही वायदे किये गये, लेकिन आज तक भारतीय स्वाधीनता का कितना अंश ब्रिटेन ने दिय यह भी एक विचारणीय समस्या है। हाँ प्रतिनिधि मंडल तो कई आये किन्तु इस दल के साथ भारत मंत्री आये हैं, यही एक विशेषता है। इस प्रकार के नाटकों के अभिनय में ब्रिटिश बड़े निपुण होते हैं। पिछले नाटकों का महत्त्व कम था किन्तु इस बार उसका महत्त्व अधिक है। लेकिन हैं दोनों नाटक। और इसमें संदेह नहीं है कि समय को परिवर्तनशील देखते हुए इस बार का अभिनय अधिक महत्त्वपूर्ण है।

ऐसी स्थिति में क्या केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार स्थापित होगी? यदि स्थापित हुई तो मंत्रियों के अंतिम आदेशों का निर्णय कांग्रेस या मुस्लिम लीग स्वीकार कर लेंगी? क्या मुस्लिम लीग मुसलमानों के प्रतिनिधित्व का दावा नहीं करेगी! फिर राष्ट्रीय मुसलमानों का, वह केन्द्र में प्रतिनिधित्व स्वीकार कर लेगी? भारतीय असेम्बलियों के प्रतिनिधित्व द्वारा यदि केन्द्रीय सरकार का निर्माण होगा तब मुस्लिम लीग क्या केवल दो प्रतिनिधि को ही प्राप्त कर संतुष्ट हो जावेगी! अछूतों का क्या निर्णय होगा? हम कह नहीं सकते कि मंत्रिदल क्या रुख ग्रहण करेगा, और कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों दल उसके अंतिम निर्णय को स्वीकार कर लेंगे, फिर भी इतना तो हम जानते हैं कि यदि ब्रिटिश सरकार चाहे तो आज अंतिम निर्णय हो सकता है। कांग्रेस तो सदा ही समझौते के लिए उत्सुक रहती है लेकिन मुस्लिम लीग भी उसके निर्णय के लिए बाध्य हो जायेगी जब कि वह अपने अस्तित्व को खतरे से खाली न समझ लेगी इसलिए हमारी स्पष्ट राय है कि ब्रिटेन के लिए यह अच्छा अवसर है कि वह भारत के साथ न्याय करके उसे स्वाधीनता प्रदान करे। अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए क्रियात्मक क़दम उठावे। यदि इस बार भी पुराने इतिहास की पुनरावृत्ति हुई तो परिणाम भयंकर हो सकता है। भारत की आज की स्थिति स्वयं इतनी भयावह है कि जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। उसे इस वातावरण से उबारने की एक मात्र औषधि है राष्ट्रीय सरकार। शिमला-सम्मेलन समाप्त हो गया और एक प्रकार से असफल भी हो गया किन्तु अब भी अवसर है जब कि ब्रिटिश मंत्रिदल यहाँ रहकर अपना अंतिम निर्णय इस प्रकार का दें कि जिससे केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना तथा विधान-निर्मात्री समिति के संगठन में पूर्ण सहयोग और सफलता प्राप्त हो।

क्या नेताजी अभी जीवित हैं?

बैंकाक में अँगरेज़ों के पहुँचने के पहले वह गायब हुए थे

लेखक, सरदार रामसिंह रावल

आज भी लोगों सामने एक समस्या है कि नेता जी सुभाषचन्द्र बोस जीवित हैं या नहीं? नेता जी के साथ रहने वाले की रावल ने इस लेख में यह बतलाया है कि वह बैंकाक से कब लापता हुए? इसी से अनुमान करना चाहिए कि वह जीवित हैं या नहीं? लेख बड़ा सुन्दर और नेता जी के सम्बन्ध में जानकारी देने वाला है।

गत अगस्त में जब परमाणु-बम-द्वारा जापान के दो मुख्य नगरों—हिरोशिमा और नागासाकी पर बमबारी की गई थी और अन्य युद्ध-क्षेत्रों में भी उसकी दशा बिलकुल विपरीत हो गई थी तो इसमें कोई सन्देह नहीं रह गया था कि जापान का पराजय समीप है। हुआ भी ऐसा ही। ११ अगस्त को जापानियों ने हथियार डाल दिये। आज़ाद हिन्द सरकार तथा उसकी अन्य सहायक संस्थाओं का कार्य फिर भी चलता ही रहा। उस समय आज़ाद हिन्द सरकार, आज़ाद हिन्द फ़ौज तथा आज़ाद हिन्द लीग इन तीनों का प्रधान कार्यालय थाईलैंड की राजधानी बैंकाक में था। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, कहा जाता है, सिंगापुर में थे। पूर्वी एशिया की आज़ाद हिन्द लीग के उप-सभापति तथा आज़ाद हिन्द सरकार के सप्लाई-विभाग के मंत्री श्री परमानन्द सरकार तथा लीग दोनों के प्रधान अफ़सर थे। श्री परमानन्द के अलावे थाईलैंड की आज़ाद हिन्द लीग के चेयरमैन सरदार ईशवरसिंह तथा कुछ और अफ़सर भी बैंकाक में ही थे।

जापान ने तो हथियार डाल दिये पर इसका भारतीयों की पालिसी पर कोई असर नहीं पड़ा। अपने आचरण में भी वे दृढ़ थे। आज़ाद हिन्द संघ के प्रत्येक विभाग से यही सुनाई पड़ता था कि—"जापान ने हथियार डाला है, आज़ाद हिन्द ने नहीं।"

१७ अगस्त को बैंकांक-स्थित भारतीयों को यह ज्ञात हुआ कि गत शाम को नेताजी बैंकांक में ही थे और उस दिन सुबह को वे किसी अनिश्चित स्थान के लिए बिदा हुए थे। उसी दिन थाईलैंड की आज़ाद हिन्द लीग के प्रचार-विभाग ने एक विशेष आज्ञा-पत्र प्रकाशित किया जिस पर नेता जी का हस्ताक्षर था। उसमें नेताजी ने बताया था कि "भारतवर्ष का आन्दोलन न तो जापान के पूर्वी एशिया के युद्ध के साथ प्रारम्भ हुआ था और न वह जापान के पराजय के साथ अन्त होगा। अभी शत्रु के शक्ति-बाहुल्य के कारण हमारे आन्दोलन की केवल एक गति का अन्त हुआ है। भारतीयों को अभी अपना आन्दोलन जारी रखना है।"

नेताजी के बिदा हो जाने पर भी आज़ाद हिन्द लीग का काम जारी रहा। वैसे वातावरण गम्भीर था। थाई लोग जरा घबरा से गये थे। वे देख रहे थे कि अँगरेज़ी फ़ौजें अब आईं और तब आईं। जापानियों को निःशस्त्र किया जा रहा था। कुछ जापानी जनरलों के 'हराकिरी' करने का समाचार भी मिल चुका था...। इस गड़बड़ी और गम्भीर वातावरण के बीच 'आज़ाद मासिक हिन्द दिवस' मनाया गया। वह २१ अगस्त का दिन था। सभी जाति और धर्म के भारतीय एक बड़ी संख्या में उसमें उपस्थित हुए थे। वक्ताओं ने भारतीयों के उस आन्दोलन के महत्त्व पर प्रकाश डाला जिसे उन्होंने पूर्वी एशिया में महान् कठिनाइयों के सम्मुख चलाया था। उन्होंने यह भी बताया कि चाहे कुछ भी क्यों न हो हम अपनी आज़ादी की लड़ाई जारी रक्खेंगे।

इसके पश्चात् वह २४ अगस्त का [illegible] आया। डौमी न्यूज़ एजेंसी ने बताया [illegible] जो वायुयान नेताजी को ले जा रहा [illegible] वह फारमूसा में ताईहोकू स्थान के [illegible] गिर पड़ा। इसमें नेताजी तथा कुछ [illegible] अफ़सरों की मृत्यु हो गई और कर्नल [illegible] रहमान ज़ख्मी हुए। इस पर किसी [illegible] विश्वास नहीं होता था। इतने में [illegible] समाचार टोकियो रेडियो तथा [illegible] लन्दन और सानफ़्रांसिस्को के रेडियो [illegible] भी ब्राडकास्ट किया। अब भारतीयों [illegible] लिए इस अशुभ समाचार में विश्वास [illegible] के सिवा और कोई चारा न रहा। [illegible] यह समाचार वैसा ही लगा जैसा [illegible] अपने आत्मीय के मृत्यु का हो। [illegible] शोकाकुल थे। भारतवर्ष के उस [illegible] शाली नेता के निधन का समाचार [illegible] न केवल भारतीय प्रत्युत स्यामी, [illegible] जापानी तथा वहाँ के अन्य देशवासी [illegible] दुःखी थे। इस अशुभ समाचार को [illegible] भारतीय स्त्री, पुरुष, बच्चे सभी [illegible] करते दिखाई दे रहे थे।

२४ अगस्त को थाईलैंड-स्थित [illegible] तीयों की एक सभा आज़ाद हिन्द लीग [illegible] प्रधान कार्यालय में हुई। रविवार का [illegible] था और आकाश मेघाच्छन्न था। [illegible] पुष्पमाल से सज्जित नेताजी की एक [illegible] तसवीर दिखाई दे रही थी। प्रत्येक [illegible] स्त्री, पुरुष और बच्चे का मुंह शोक [illegible] गम्भीर मालूम पड़ता था। वे सब [illegible] पर अपने पूज्य नेताजी की मूर्ति को [illegible] अर्पण करने आये थे। बैंकाक की [illegible] हिन्द फ़ौज की सभी इकाइयाँ भी [illegible] अपने अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित [illegible] थीं। स्थायी सरकार के प्रतिनिधियों [illegible] जापानी जनरलों के अलावा बैंकाक-[illegible] जापान, जर्मनी और दूसरे मित्रराष्ट्रों [illegible] राजदूत भी आज़ाद हिन्दुस्तान के नेता [illegible] अपना आदर-सत्कार अर्पण करने के [illegible] वहाँ उपस्थित हुए थे। इतने में मूसलाधार वर्षा शुरू हो गई। आज़ाद हिन्द फ़ौज [illegible] इकाइयाँ वर्षा की परवा न करते [illegible] अपनी-अपनी पंक्तियों में डटी रहीं। [illegible] का बाजा बजाया गया और सबों ने [illegible] आज़ाद हिन्द स्टेट के सर्वेसर्वा तथा [illegible] हिन्द फ़ौज के सुप्रीम कमाण्डर की [illegible] सहित 'सैलूट' दी। इसके पश्चात् [illegible] आत्मा के प्रति सबों ने दो मिनट मौन [illegible] किया। फिर थाईलैंड की आज़ाद [illegible] लीग के चेयरमैन ने एक मर्मस्पर्शी [illegible] दिया। सबों की आँखों में आँसू आ [illegible]

वह अगस्त की २४ तारीख [illegible] ब्रिटिश फ़ौजें अपना क़ब्ज़ा जमाने के [illegible] वहाँ आने ही वाली थी। अगले [illegible] दिनों में नेताजी के देहावसान का और [illegible] समाचार प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् [illegible] जन-प्रवाद शुरू हुआ कि नेताजी की [illegible] का समाचार ग़लत है। वह तो केवल [illegible] को धोखा देने के लिए किया गया [illegible] वह लोकचर्चा लोगों के हृदयों में बैठ [illegible] और वह समय भी आ गया जब कोई [illegible] तीय विश्वास नहीं करता कि नेताजी [illegible] मृत्यु हो चुकी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रिटेन भारत को क्यों नहीं छोड़ेगा?

उपनिवेशों की व्यवसायिक और आर्थिक नीति किधर?

लेखिका, श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय

संसार के साम्राज्यवादी राष्ट्र उपनिवेशों से अधिक से अधिक व्यवसायिक और आर्थिक लाभ उठाते आये हैं। युद्ध समाप्त हो जाने पर अब वह अपनी आर्थिक स्थिति को दृढ़ बनाने की ओर विशेष रूप से संलग्न हो रहे हैं। ब्रिटेन भी उन्हीं में से एक है। ब्रिटेन अपने उपनिवेशों से अधिक से अधिक आर्थिक स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है।

इस लेख की लेखिका श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय।

जापान ने हथियार तो डाल दिया पर सुदूर पूर्वी देशों में योरोपियनों के औपनिवेशिक साम्राज्य में एक नया जीवन ला दिया। क्योंकि इसके पश्चात् ही इनमें से कुछ उपनिवेश तो नेशनल रिपब्लिक्स (राष्ट्रीय प्रजातंत्र राज्य) के रूप में निकल पड़े और देखा गया कि कुछ उतनिवेश इस ओर इदम बढ़ाने के प्रयत्न में संलग्न हैं। जापान के गिरने के २४ घंटे के भीतर ही इण्डोचीन और इन्डोनेशिया ने अपनी-अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। इसका यदि करो की सरकारी विज्ञप्ति ने कोरियावासियों को यह कहकर कि उन्हें स्वतंत्रता दी जायगी, अँधेरे में डाला होता तो वे भी अवश्य ही स्वतंत्र मार्ग का ही अनुसरण करते। मध्यपूर्वी देश विशेषकर ईरान, फ़िलिस्टाइन तथा सीरिया में तो ऐसी क्रांति की लहर दौड़ गई कि अब तक वह शान्त नहीं हुई है।

फिर भी इन स्वतंत्रता-संग्रामों की गति न तो स्थिर रूप धारण कर सकी है और—न अपने विचारों को ही दृढ़ बना सकी है। वास्तव में कई स्थानों पर—विशेषकर दक्षिण-पूर्व एशिया में आन्दोलन धीमा पड़ गया है। अपनी जिम्मेदारी ब्रिटिश फ़ौज के ऊपर है। क्योंकि, इन्होंने ही परास्त जापान की निःशस्त्र तथा शान्ति स्थापना करने के बहाने, इन उपनिवेशों के पूर्व-मालिकों के अपनी सेना लेकर पहुँचने तक इन सरकारों को जैसे भी बन पड़ा नष्ट करने की कोशिश की। इंडोचीन में स्वतंत्रता महान् संघर्षों के पश्चात् फिर फ्रांस के हाथ में चला गया है तथा डच सेना और उसके बाहरी मामले भी उन्हीं के हाथों चले गये हैं। इसी प्रकार फ़िलिपाइन अब इन्डोनेशियन रिपब्लिक को अपने से इनकार करता है और अब इसे स्वतन्त्र किया जाने लगा है कि इस देश में ब्रिटिश का स्वांग केवल समय पर ही रचा गया था। इससे एक बार फिर यह साबित हो रहा है कि इन उपनिवेशों में सच्ची स्वतंत्रता की प्राप्ति करना उतना सहज नहीं है जितना हमारे देश के बहुतेरे राजनीतिज्ञ लोगों का विश्वास है।

इसका कारण ढूंढ निकालना कठिन नहीं है। इन शासन करनेवाले देशों के पूंजीपतियों ने अपना आर्थिक भार इन देशों पर डाल दिया है। जब तक इनका सामाजिक ढाँचा नहीं बदलते तब तक उनका अधिकार इन उपनिवेशों पर बना ही रहेगा। इण्डोचीन का फ्रांस के लिए जो महत्व है, यह दूसरे महायुद्ध के पूर्व इण्डोचीन के मंत्री श्रीयुत अलबर्ट सर्राट ने स्पष्ट प्रकट किया है। उन्होंने कहा कि "हमारे उपनिवेशों में से इण्डोचीन ही सबसे अधिक महत्वशाली और धनधान्य से पूर्ण है। इण्डोचीन के बाहरी व्यवसाय-क्षेत्र में १७ प्रतिशत पर फ्रांस का अधिकार था और कर पर तो उसका प्रायः सम्पूर्ण अधिकार था। यही बात इंडोनेशिया और नीदरलैंड्स की बाबत भी है। नीदरलैंड्स को इन द्वीपों से प्रतिवर्ष ६,४०,००,००० पौंड का लाभ होता है जिससे नीदरलैंड्स के ८०,००० से भी अधिक लोगों को काम मिलता है। इतने लोगों की खरीदने की शक्ति भी बढ़ती है। इसलिए कोई भी भली भाँति समझ सकता है कि क्यों यह शासक देश इन उपनिवेशों पर दृढ़ता और तीव्रता के साथ अपना अधिकार जमाये रखने की चेष्टा कर रहे हैं। यद्यपि उनके अपने देशों में नये-नये वामपक्षी मन्त्रिमंडल भी हैं और उनके साथ शोरगुल मचानेवाले कम्यूनिस्ट भी भाग ले रहे हैं।

इन्हीं आँकड़ों को अपने सम्मुख रखते हुए हमें ब्रिटिश सरकार की घोषणाओं, उसके इन्डो-ब्रिटिश आर्थिक सम्बन्ध तथा भारतवर्ष की स्वतंत्रता के सम्बन्ध में भी विचार करना चाहिए। वर्त्तमान जीवन और मृत्यु के संघर्ष जिसमें इँगलैंड आज फँसा हुआ है, को ध्यान में रखकर प्रश्न और भी गम्भीर बन जाता है। भारतवर्ष जैसे आधारभूत उपनिवेश के पूर्णरूपेण खो जाने से इँगलैंड की नाज़ुक बाहरी स्थिति ही नहीं तहस-नहस हो जायगी बल्कि उसकी परम्परा से चली आई प्रवृत्ति में उलट-पलट आ जायगा। इस बात को हमें सदा ध्यान में रखना चाहिए।

ब्रिटेन के क़र्ज के सम्बन्ध में संयुक्त-राष्ट्रीय कांग्रेस की टालमटोल ने तो स्थिति को और भी उग्र बना दिया है। इस देश में बहुतों को यह नहीं मालूम कि १६२४,००,-००० पौंड का 'पाइप-लाइन' सुधार जो अमेरिका के क़र्ज की प्रायः पहली किश्त थी और जिसका उद्देश्य युद्ध के अन्त तक तक 'लेन्डलीज पाइप लाइन' में ब्रिटेन के लिए माल असबाब के मूल्य की पूर्त्ति करना था, इसी आशा में इस रक़म के अन्त तक खतम हो जायगा, अब तक इँगलैंड संयुक्तराष्ट्र के आयात से लगा रहा था। वह आशा अब तक पूरी नहीं हुई और ब्रिटेन पुनः सोना और डालर बैलेंस में डूब रहा है और यदि यह जारी रहा तो जो कुछ अभी बचत है इस वर्ष के अन्त तक वह भी नहीं चल सकता।

हमारी अवस्था को असुरक्षित करने के लिए हमें विश्वास दिलाया जाता है कि इससे भारतवर्ष की क्षति नहीं होगी और ब्रिटिश पूँजी की बाबत कुछ नहीं किया जा रहा है। अफसोस तो यह है कि अँगरेजों के अलावा किसी को नहीं मालूम कि ब्रिटिश पूँजी हिन्दुस्तान में क्या है? लंदन में 'स्टालिंग बैलेंस' होने के कारण लोगों के मन में बड़ी गड़बड़ी फैली हुई है। इस बात को ध्यान में रखने से यह आवश्यक मालूम पड़ता है कि इसका ठीक आँकड़ा मालूम हो। विशेष कर मूल्य की बढ़ती में भत्ता न मिलने के कारण तो यह और भी आवश्यक जान पड़ता है। कोई भी यह विश्वास किये बिना नहीं रह सकता कि इस देश में अँगरेजों की लागत कहीं अधिक है और वह भी लंदन और वाशिंगटन के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में। इससे आसानी से पता चल सकता है कि अँगरेज़ कहाँ तक भारतवर्ष को छोड़ने जा रहे हैं? यही कारण है कि अर्थ सदस्य ने सेंट्रल असेम्बली को आश्वासन दिलाया है कि ब्रिटिश लागतों के वापस इँगलैंड को जाने का प्रश्न स्टर्लिंग बैलेंस की बातचीत में शामिल रहेगा। इस सम्बन्ध में यह नोट करनेवाली बात है कि जिस तेज़ी के साथ ब्रिटिश स्टर्लिंग कम्पनियाँ काम कर रही हैं, उसका अर्थ है रुपये की कम्पनियों का रूप धारण करना।

बहुतों ने इस सिद्धान्त पर अपना मत प्रकट किया है कि उपनिवेशों ने जो एकबार दिया था उससे अधिक नहीं दे रहे हैं। वास्तव में वे केवल दायित्व दे रहे हैं। साधारण गणित की दृष्टि से प्रश्न तो यह है—'क्या शासक साम्राज्यवादी देश के उपनिवेशों को जीतने, उस पर अपना अधिकार जमाये रखने तथा उसके विकास करने से कोई ठोस लाभ पहुँचता है? और यदि उसे हानि होती है तो क्या उसके अपने देश पर उसका कोई प्रभाव पड़ता है? अर्थशास्त्र के पंडित कभी-कभी यह स्वीकार कर लेते हैं कि लाभ या हानि का बैलेंस सीट ठीक खींचना असम्भव है। बहुत-सी गूढ़ बातों पर न विचार करने पर भी प्रयोगात्मक ज्ञान से निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है। भारतवर्ष के मामले में तो इनमें से कई बिल्कुल स्वयं ही स्पष्ट है।

इस विषय पर एक पत्र में लारेंस के० एंजिगर ने अमेरिका विदेशी नीति की रिपोर्ट में लिखा है—"भारतवर्ष किसी और उपनिवेश की भाँति नहीं है। उपनिवेशों के संसार में इसका बहुत बड़ा महत्त्व है। कारण, यह सबसे बड़ा है, इसकी आबादी भी सबसे अधिक है और साम्राज्य भर में सबसे अधिक लाभ देनेवाला है। यहाँ के लोग साम्राज्य के तीन-चौथाई के बराबर और सम्पूर्ण उपनिवेशों की दुनिया के बराबर हैं।" बाम्बे चेम्बर आफ कामर्स के भूतपूर्व मंत्री मि० सी० बी० सेयर ने दूसरे महायुद्ध से पूर्व 'फिनान्सियल टाइम्स' में लिखा था—"भारतवर्ष में हमारे आर्थिक सिद्धान्त को पूरा-पूरा किया गया है पर थोड़े ही विद्वानों के द्वारा। बहुतों को न तो इसकी महत्ता का परिचय है और न इसकी विभिन्नताओं का।" उन्होंने बताया कि भारतवर्ष में अँगरेज़ी लगत ६,००,००० पौंड की है। उन्होंने यह भी कहा कि 'यह कोई बड़ी रक़म नहीं है।' मैनचेस्टर गार्जियन ने तो इससे भी अधिक कहा—"ग्रेट-ब्रिटेन के लिए भारतवर्ष सबसे अच्छी मंडियों में से है और इसकी वहाँ पर १०,००,००,००० पौंड की पूँजी है।" ब्रिटिश एसो शिएटेट चेम्बर आफ कामर्स इसकी पुष्टि भी की थी। इसमें खास बात तो यह है कि यह रक़म सम्पूर्ण विदेशी पूँजी का ९० प्रतिशत है। तथा ब्रिटेन की विदेशी लागत एक चौथाई है। आज उसकी लागत कुल २४ करोड़ पौंड रह गई है। यह पहले की पूँजी से कम मालूम पड़ती है पर याद रखने योग्य बात है कि यह रक़म कुल इँगलैंड और एशिया की लागत से अधिक है। यह बात भारतवर्ष और इँगलैंड के आर्थिक सम्बन्धों को और भी दृढ़ करती है। जब कि भारतवर्ष को स्वयं ने इस रक़म से

राष्ट्रपति पंडित जवाहर लाल नेहरू विदेशी शोषण के विरुद्ध हैं।

व्यवसाय चलाने के लिए भारी-भारी मशीनें क्रय करने की आवश्यकता है इँगलैंड चाहेगा कि उसके सामान ही यहाँ इकट्ठे हों, वह भले ही कुछ उदारता दिखा दे तो दिखा दे। इससे यह स्पष्ट है कि ब्रिटेन भारतवर्ष के स्टर्लिंग बैलेंस पर क़ब्ज़ा करेगा। पर जब भारतवर्ष आजाद हो जायेगा तो यह सब बातें नहीं चल सकेंगी। क्योंकि इस परिवर्त्तित स्थिति से किसी प्रकार भी इस देश से औपनिवेशक शासन का अन्त नहीं हो सकता। परिस्थिति ऐसी हो गई है कि क़र्ज देनेवाला ही क़र्ज लेनेवाले के आधीन है। सम्भवतः इस क़र्ज का कुछ या सारा भाग "होम चार्जेज" चुकाने में लगा दिया जाय, अर्थात भारत सरकार तो लंदन में सार्वजनिक क़र्ज का ब्याज छुट्टी का भत्ता, भारत आफ़िस का खर्च आदि-आदि बातों के ऊपर स्टर्लिंग के रूप में देना होगा। द्वितीय महायुद्ध से पूर्व इस रक़म की औसत प्रतिवर्ष ३,९०,००,-००० पौंड हो गई थी। अब भारतवर्ष का जो क़र्ज लंदन के ऊपर है उसकी शेष खपत द्वारा पूरा किया जा सकता है। इस प्रकार से अँगरेजों माल के लिए बाज़ार भी साफ रहेगा और वहाँ से माल असबाब आते रहेंगे। इन सब दिक्क़तों के होने पर भी भारतवर्ष लंदन के लिए लाभ प्राप्त करने के लिए बहुमूल्य साधन है। शेष स्टर्लिंग जो भारतवर्ष इँगलैंड को देगा वह औसत से ५५,००० पौंड प्रतिवर्ष होगा। व्यवसाय तथा वाणिज्य से उसे १,६५,००,००० पौंड मिलेगा और पेंशन से ५९,००,००० पौंड। इन सब का टोटल २,२९,५०,००० पौंड होता है। यह कहना कि इँगलैंड ने अपनी भारतीय मंडी खो दी है ग़लत होगा। अभी हाल में ही बताया गया है कि भारतवर्ष में आयात का ३०% इँगलैंड से २६ साम्राज्य के अन्य भागों से आया। इसका अर्थ यह हुआ कि भारतवर्ष ने अपनी आवश्यकताओं का ५६ प्रतिशत ब्रिटिश साम्राज्य से लिया।

गत दो युद्धों में जितना भारतवर्ष को देना पड़ा है उतना पहले कभी नहीं देना पड़ा था। धन जन और सभी सम्भव तरीक़ों से इसने ब्रिटेन की सहायता की है। उपनिवेशों साम्राज्य की बातें सोचते समय हमें इस बात पर ध्यान रखना चाहिए कि यह एक सम्पूर्ण वस्तु है। सभी आर्थिक और सामाजिक बातें इसमें सम्मिलित हैं। प्रत्येक छोटे से छोटे देश का महत्त्व है, इसलिए हाँगकाँग का पीछे हटना कोई पूर्वस्तर नहीं है। इसका अर्थ होगा कि एक महत्त्वपूर्ण ईंट को निकालकर सम्पूर्ण दीवार को कमजोर करना और उसको ध्वंस करना। किसी भी एक भाग के धक्का लगने से सम्पूर्ण वस्तु पर उसका प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार से ब्रिटिश साम्राज्य को देखना चाहिए। वस्तुतः ब्रिटिश पूंजी के उपयोग से जो लाभ हुआ वह मलाया तक चला गया और जब वर्मा के विकास के लिए मलाया को आधार बनाया तो वह थाइलैंड तक पहुँच गया। भारत-

शेष पृष्ठ १७ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मौलाना गांधी'

लेखक, प्रिंसिपल श्रीमन्नारायण अग्रवाल, एम०ए०

उस दिन एक हिन्दी-प्रेमी महाशय मजाक में कहने लगे—"महात्मा गांधी आजकल न जाने उर्दू सीखने पर इतना जोर क्यों देते हैं! वे हर मौके पर उर्दू लिपि जानने का महत्त्व समझाने की कोशिश करते हैं। 'महात्मा गांधी' के बजाय उन्हें 'मौलाना गांधी' क्यों न पुकारा जाय?"

बात तो मजाक में ही कही गई थी; लेकिन उसके पीछे जो वृत्ति छिपी थी, वह इन दिनों हिन्दी-पत्र-पत्रिकाओं में दिल खोलकर जाहिर की जा रही है। गांधी जी के हिन्दुस्तानी आन्दोलन का मखौल यह कहकर उड़ाया जाता है कि वे तो सिर्फ मुसलमानों को और खास तौर से जनाब जिन्ना साहब को खुश करने का यत्न करते रहते हैं। चूंकि गांधी जी ने हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से इस्तीफा दे दिया है, इसलिए अब वे हिन्दी के शत्रु और उर्दू के हिमायती बन गये हैं। लेकिन हिन्दी-आलोचकों को शायद यह पता नहीं कि उर्दू-अखबार और रिसाले भी गांधी जी को यह कहकर दोष देते रहते हैं कि वे हिन्दुस्तानी की ओट में उर्दू का नाश कर हिन्दी का ही प्रचार करना चाहते हैं।

हमें समझ लेना चाहिए कि महात्मा गांधी भाषा-भक्त नहीं, राष्ट्र-भक्त हैं। वे अभी तक हिन्दी का राष्ट्रभाषा के तौर पर इसलिए प्रचार नहीं करते रहे कि उन्हें हिन्दी-भाषा से विशेष प्रेम है, बल्कि इसलिए कि उन्हें समूचे राष्ट्र को प्रेम के एक सूत्र में संगठित करना है। वे हिन्दी और हिन्दुस्तानी में कोई अन्तर नहीं मानते थे। हिन्दी के अन्दर वे उर्दू-शैली और लिपि का भी समावेश करते रहे। यह सोचना गलत है कि हिन्दी और उर्दू दोनों शैलियों और लिपियों की बात गांधी जी ने कुछ वर्षों से ही उठाई है। सन् १९१८ से ही वे उस राष्ट्रभाषा का प्रचार चाहते थे, जो नागरी और उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जाती है। अभी तक वे क़ौमी ज़बान को 'हिन्दी' नाम से पुकारते रहे। लेकिन जब उन्होंने देखा कि 'हिन्दी' और 'उर्दू' धीरे-धीरे दो अलग-अलग धाराएँ बन गई हैं, तो उन्हें मिलाने के लिए 'हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा' की नींव डाली गई। कांग्रेस ने १९२५ में ही राष्ट्रभाषा को 'हिन्दुस्तानी' नाम से पुकारा था। हिन्दुस्तानी-सम्बन्धी प्रस्ताव के जनक श्रद्धेय टंडन जी थे। जब गांधी ने श्री टंडन जी से 'हिन्दुस्तानी' का ठीक अर्थ पूछा, तो उन्होंने जवाब दिया—"जब मैंने कांग्रेस के मंच से 'हिन्दुस्तानी' शब्द इस्तेमाल किया था, तब मेरे मन में उसका अर्थ हिन्दी+उर्दू था।" गांधी जी के लिए यह उत्तर गम्भीर चिन्तन का विषय बन गया। अबोहर-अधिवेशन तक तो गांधी जी सम्मेलन से केवल इतना ही चाहते थे कि 'हिन्दी' और 'हिन्दुस्तानी' को पर्यायवाची शब्द मान लिया जाय। लेकिन श्री टंडन जी ने इस माँग को अस्वीकार करते हुए "हिन्दुस्तानी=हिन्दी+उर्दू" का गणित पेश किया। गांधी जी ने टंडन जी से पूछा—"तब तो मुझे और आपको कांग्रेसजन के नाते हिन्दुस्तानी का काम पूरा करने के लिए हिन्दी और उर्दू दोनों का प्रचार करना चाहिए न?" टंडन जी ने उत्तर दिया—"आपकी दलील सही है, बापू जी, लेकिन सम्मेलन की तो एक वैधानिक मर्यादा है। वह तो हिन्दी-भाषा और नागरी-लिपि का ही प्रचार कर सकता है।"

गांधी जी ने तुरन्त कहा—"तब तो फिर मुझे असली 'हिन्दुस्तानी'-प्रचार के लिए एक नई संस्था बनानी होगी।" और इस तरह 'हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा' का जन्म १९४२ में हुआ। सभा का उद्देश्य हिन्दी और उर्दू शैलियों तथा नागरी और उर्दू लिपियों का साथ-साथ प्रचार करना है। इस कठिन कार्य को करने की प्रेरणा गांधी जी को टंडन जी से ही मिली, यह महत्त्व की बात है।

गांधी जी का हिन्दुस्तानी-आन्दोलन हिन्दी और उर्दू भाषा व साहित्य के खिलाफ नहीं है। "हिन्दी और उर्दू गंगा और जमुना-जैसी दो धाराएँ हैं। उन्हें सुखाकर मैं हिन्दुस्तानी-रूपी सरस्वती कैसे बहा सकता हूँ?—"गांधी जी कहते हैं। दूसरी प्रान्तीय भाषाओं की तरह हिन्दी और उर्दू को भी अपने-अपने क्षेत्र में फलने-फूलने का पूरा हक़ है। उनके विकास में गांधी जी कोई दखल नहीं देना चाहते; लेकिन वे यह अवश्य चाहते हैं कि हिन्दी और उर्दू के बीच दिन-दिन बढ़ती खाई दूर हो जाय और दोनों के बीच हिन्दुस्तानी नाम की एक आसान शैली का प्रचार हो। हिन्दी और उर्दू का इस तरह का आसान और मिला-जुला रूप कोई संस्था या व्यक्ति-विशेष नहीं गढ़ सकता। हिन्दुस्तानी-प्रचार के लिए यह जरूरी है कि देश के ज्यादा से ज्यादा लोग हिन्दी और उर्दू दोनों शैलियों को सीख लें। जब देश की जनता काफी संख्या में दोनों रूपों को जान लेगी, तो हिन्दुस्तानी-शैली का स्वाभाविक ढंग से विकास हो जायगा। मिली-जुली आसान हिन्दुस्तानी शैली आज हमें देखने को नहीं मिलती, सो बात नहीं है। यह शैली हिन्दी और उर्दू दोनों में पाई जाती है; लेकिन इस तरह का हिन्दुस्तानी-साहित्य बहुत कम है। उसका विकास और प्रचार करने की बहुत जरूरत है।

अगर हिन्दुस्तानी-शैली ठेठ हिन्दी और ठेठ उर्दू से कुछ भिन्न और मिली-जुली दीखे, तो हिन्दी और उर्दू-प्रेमियों और लेखकों को नाराज होने का कोई कारण नहीं है। वे यह नहीं कह सकते कि उनकी भाषा बिगाड़ी जा रही है। अपनी-अपनी भाषा को वे जितना कठिन बनाकर सुरक्षित रखना चाहें, रख सकते हैं; लेकिन 'हिन्दुस्तानी'-रूपी एक आसान और मिश्रित शैली के विकास में उन्हें हस्तक्षेप करने की आवश्यकता नहीं है। राष्ट्र शैली के निर्माण का काम उन्हें राष्ट्रीय नेताओं के हाथ में सौंप देना चाहिए। राष्ट्रभाषा का रूप-रंग कैसा हो, यह सिर्फ हिन्दी-भाषी या उर्दू-भाषी जनता तय नहीं कर सकती। हाँ, वह अपनी राय अवश्य दे सकती है। हिन्दुस्तान के दूसरे सूबों को भी अपनी सुविधा-असुविधा की बात राष्ट्र-नायकों के सामने पेश करने का पूरा अधिकार है।

कहा जाता है कि 'हिन्दुस्तानी' के नाम पर गांधी जी उर्दू का ही प्रचार करना चाहते हैं। वे अब भी टंडन जी का साथ छोड़कर डा० अब्दुलहक़ की मदद से हिन्दुस्तानी का काम चलाना चाहते हैं। दूसरी ओर उर्दू के हिमायती गांधी जी को धोखेबाज समझते हैं। उनका ख्याल है कि हिन्दुस्तानी के नाम पर केवल हिन्दी का ही प्रचार किया जायगा। लेकिन गांधी जी को इस तरह के आरोपों की फिक्र नहीं है। उनका दिल साफ है। वे हिन्दुस्तान की क़ौमी ज़बान का निर्माण और विकास करना चाहते हैं। उनकी तीव्र कामना है कि हमारा देश अँगरेजी भाषा की गुलामी को तुरन्त दूर करे और स्वदेशी भाषाओं का व्यवहार शुरू करने में पूरी ताक़त लगावे। आजकल गांधी जी अँगरेजी में लिखे गये सभी खतों का उत्तर हिन्दुस्तानी में देते हैं, अँगरेजी में नहीं। अगर कोई उनसे बातें करने जाय और हिन्दुस्तानी बोलते-बोलते कुछ अँगरेजी-शब्दों का इस्तेमाल करे,

इस लेख के लेखक प्रिंसिपल श्रीमन्नारायण अग्रवाल।

तो वे मुस्कराकर उसका मजाक उड़ाते हैं। 'हरिजन' के लिए, जहाँ तक सम्भव है, वे मूल लेख हिन्दुस्तानी में ही लिखते हैं। फिर उसका अँगरेजी में तर्जुमा किया जाता है। इस तरह गांधी जी हिन्दुस्तानी-प्रचार पर आजकल बहुत जोर देते हैं। हमारे राष्ट्रीय जीवन में अँगरेजी का प्रभाव उनके लिए असह्य-सा हो गया है। वे हिन्दुस्तानी की एक आसान शैली का प्रचार करना चाहते हैं, जो न संस्कृत के शब्दों से भरी हो और न अरबी-फारसी लफ्जों से लदी हो। आल-इंडिया रेडियो की भाषा को हम हिन्दुस्तानी नहीं कह सकते हैं; वह तो उर्दू ही है। हमारी जो भाषा आजकल हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में इस्तेमाल की जाती है, वह भी हिन्दुस्तानी नहीं मानी जा सकती। इस लिए

शेष पृष्ठ १८ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचारों की चित्रावली

राष्ट्रपति मौलाना अबुलकलाम आजाद, शिमला में ब्रिटिश मंत्रिदल से भेंट करके बाहर निकल रहे हैं।

मद्रास कांग्रेस सरकार के नये प्रधान मंत्री श्री टी० प्रकाशम् बनाये गये हैं।

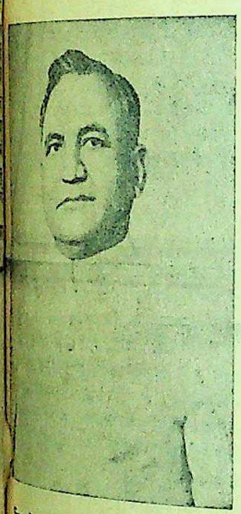

सिंध के भूतपूर्व मंत्री और वर्तमान असेम्बली के प्रभावशाली कांग्रेस सदस्य श्री निहलदास सी० वजीरानी।

कुमारी जेठी सिपाहीमिलानी, सिंध प्रान्तीय असेम्बली की डिप्टी प्रेसीडेंट चुनी गई हैं।

मुस्लिम लीग के सर्वेसर्वा मिस्टर मुहम्मदअली जिन्ना भारतीय बटवारे के लिये ब्रिटिश मंत्रिदल से मिलने जा रहे हैं।

सिंध प्रांतीय असेम्बली के प्रभावशाली कांग्रेसी सदस्य श्री आर० के० सिद्धवा।

सिंध असेम्बली के मुस्लिम लीगी सदस्य शेख बुन्देअली खाँ, घूमघाम कर फिर लीग मंत्रिमंडल में शामिल हो गये हैं।

अमरीका के भूतपूर्व प्रेसीडेंट हूवर, जो पिछले दिनों भारत की खाद्य-स्थिति के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए दिल्ली आये थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् ४२ की क्रांति के प्रतीक

बलिदानी वीर जयप्रकाशनारायण कौन हैं ?

लेखक, श्री अशोक मेहता

प्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री जयप्रकाशनारायण जेल से छूटकर पुनः समाजवादी दल के संगठन में जुट गये हैं। जयप्रकाश नवीन भारत के नेता ही नहीं, भावी कर्णधार हैं। इस सुन्दर लेख में प्रसिद्ध समाजवादी श्री अशोक मेहता ने श्री जयप्रकाश के जीवन पर एक सरसरी दृष्टि डाली और यह बतलाया है कि भावी भारत उनके नेतृत्व के प्रति किस प्रकार प्रतीक्षा कर रहा है। लेख सामयिक, विचारपूर्ण और सुन्दर है।

समय-समय पर नियति चुने-चुने व्यक्तियों को इतिहास का काम पूरा करने के लिए भेजता है। संसार उनके प्रयत्नों को सराहता है और उनका अनुसरण करता है। जयप्रकाशनारायण उन्हीं महापुरुषों में से एक हैं। लाखों व्यक्ति के लिए वे अनुभूति के स्रोत हैं और करोड़ों के लिए भविष्य-निर्माता।

जेल से निकलने के बाद जयप्रकाश के सम्मुख बड़े-बड़े उत्तरदायित्व और बड़े-बड़े अवसर आनेवाले हैं। उनकी मुक्ति से कितनों की निराशा दूर भागेगी। जयप्रकाश १९४२ की क्रान्ति के प्रतीक हैं और जाग्रत युग की आशा हैं।

जयप्रकाश बिहार-प्रान्त के निवासी हैं। सिस्टर निवेदिता ने बिहार के सम्बन्ध में एक बार कहा था—"बिहार सदा से जातीय पक्ष से रहित रहा है। बिहार की सीमा के भीतर भिन्न तत्त्वों का गाढ़ा सामीप्य रहा है। यह बड़े-बड़े प्रतिभाशाली व्यक्तियों का जन्मस्थान रहा है। सम्राट् चन्द्रगुप्त, अशोक, सम्पूर्ण गुप्तवंश, शेरशाह, गोविन्दसिंह आदि व्यक्तियों का एक ही प्रान्त में आविर्भाव होना—यह गौरव भारतवर्ष के इतिहास में इसी बिहार को प्राप्त है।" बिहार का प्रत्येक महापुरुष संगठन करनेवाला रहा है। किसी ने किसी का आँख मूँदकर अनुसरण नहीं किया है और न किसी के हाथ का खिलौना बना है। प्रत्येक ने तत्कालीन स्थिति का सही-सही अध्ययन किया है और दृढ़तापूर्वक आगे क़दम बढ़ाया है। डा० राजेन्द्रप्रसाद जैसे पूर्ण विकसित गांधीवादी राजनीतिज्ञ तथा जयप्रकाश जैसे महान् समाजवादी नेता का इस एक ही प्रान्त में आविर्भाव अचानक ही नहीं हो गया है।

श्री जयप्रकाश १८ वर्ष की उम्र तक विशेषकर ग्रामों में ही रहे। शहर में बसनेवाले पढ़े-लिखे लोग प्रायः ग्रामीण जीवन का अध्ययन नहीं करते। यही कारण है कि ग्रामीण जीवन उनके लिए एक बाह्य वस्तु-सी लगती है। परन्तु जयप्रकाश के लिए ग्राम अपने अस्तित्व का एक मुख्य अंग है। जयप्रकाश १८ वर्ष की अवस्था में कलकत्ता गये और पहली बार उन्होंने ट्राम देखी। परन्तु उनके जीवन में ट्रामकार से भी बड़ी-बड़ी वस्तुएँ आईं। उन्हीं दिनों गांधी जी का असहयोग-आन्दोलन पूरे वेग से सम्पूर्ण देश में छिड़ गया। जयप्रकाश के ऊपर उसका बड़ा प्रभाव पड़ा। ये कालेज छोड़कर राजनैतिक कार्यों में भाग लेने लगे। लेकिन उनको साइंस का अधूरा अध्ययन खलने लगा। आन्दोलन की लहर कम होते ही उन्होंने 'प्राणिशास्त्र' का अध्ययन प्रारम्भ कर दिया।

विज्ञान के समुचित अध्ययन के लिए विदेश जाना आवश्यक है, पर इंगलैंड नहीं। वहाँ जाकर अध्ययन पूरा करने में जितना व्यय होता है, उतना तो अध्ययन समाप्त करने पर उपार्जन की आशा भी नहीं की जा सकती। जयप्रकाश ने अमरीका के बारे में सुना था। वे यूनिवर्सिटी की शिक्षा प्राप्त करना चाहते थे। इसलिए जयप्रकाश अमरीका पहुँचे। रास्ते में चीन और जापान भी गये।

अमरीका जाने से पूर्व ही जयप्रकाश का विवाह बिहार के एक प्रतिष्ठित कांग्रेस कर्मठ की कन्या श्रीमती प्रभावती से हो चुका था। जयप्रकाश जब विदा हो गये तब प्रभावती ने गांधी जी के साबरमती आश्रम में रहने का निश्चय किया। यह भी नियति का ही खेल था। गांधी जी ने जयप्रकाश और प्रभावती के बन्धन को और भी दृढ़ कर दिया।

जयप्रकाश कैलिफ़ोर्नियाँ में उतरे। वहाँ यह अध्ययन के साथ-साथ खेतों और फ़ैक्ट्रियों में तथा वेटर और सेल्समैन का काम भी करते थे। यहाँ से कई विश्वविद्यालयों से होते हुए वह पश्चिम की ओर बढ़े। ओहियो और विसकौसिन से डिग्रियाँ प्राप्त कीं। जैसे-जैसे ये दूरी तय करते गये, ज्ञान-विज्ञान में काफ़ी आगे बढ़ते गये। वायोलोजी पढ़कर ऐन्थोपोलोजी (मनुष्य-शरीर-रचना शास्त्र) का अध्ययन

समाजवाद के विद्वान् और नई पीढ़ीके नेता श्री जयप्रकाशनारायण।

प्रारम्भ किया। अन्त में सोशियोलोजी (समाज-शास्त्र) में एम० ए० की डिग्री प्राप्त की। जब जयप्रकाश अमेरिका में थे, तब देश अपनी नाजुक घड़ियों से गुजर रहा था। इन्होंने उस गुलामी के जीवन को भी देखा जब अमेरिकावाले मालामाल हो रहे थे। यह सब देखकर जयप्रकाश बड़े हतोत्साहित हुए। इन्हीं दिनों मार्क्सवाद की ओर इनका झुकाव हुआ। लूईस कारी का "अमरीकी पूँजीवाद की अवनति" निकलने से बहुत पूर्व ही इन्होंने उसका हल निकाल लिया था।

श्री जयप्रकाश ने मार्क्सवाद का बहुत गहरा अध्ययन किया। अपने अध्ययन का कार्यक्रम इन्होंने ज्योतिष और भूगर्भ-शास्त्र से प्रारम्भ किया और साम्यवाद से अन्त किया। एक बार उन्होंने मुझे बताया था—"यदि मैं राजनीति में न पड़ता तो मैं एक ऐन्थोपोलोजिस्ट होता।" १९३३ में मुझे श्री जयप्रकाश के साथ जेल में रहने का अवसर मिला। वे कट्टर मार्क्सवादी थे और मैं पहले की भाँति नास्तिक। उन्होंने मेरे ऊपर किसी उच्चकोटि के मार्क्सवाद की बौछार नहीं की, परन्तु वाट्सन की पुस्तक 'आचरण' और टेलर की 'प्राचीन समाज' के अध्ययन द्वारा मुझे अपने विचारों का अवश्य बना लिया।

श्री जयप्रकाश १९३० में भारतवर्ष लौटे। आते ही आन्दोलन में जुट गये। १९३१ के युद्ध-विश्राम के दिनों में इन्होंने बिहार समाजवादी दल का संगठन किया।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने आपको अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के श्रम-अनुसन्धान-विभाग को सँभालने के लिए बुलाया। इसके पश्चात् ही १९३२-३४ में सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। उस समय श्री जयप्रकाश अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी आफ़िस के इंचार्ज थे। अभी आफ़िस में रहे कुल ८ महीने हुए थे कि जयप्रकाश गिरफ़्तार हो गये। इसी बीच इन्हें एम० आर० मसानी, अच्युत पटवर्धन और दूसरे नौजवान कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओं के सम्पर्क में आने का अवसर मिला। नासिक जेल में इनके साथ ही रहने के कारण सम्पर्क और भी बढ़ गया।

जयप्रकाश अपने आपको साम्यवादी कहते थे। कुछ दिनों तक ये संयुक्तराज्य अमेरिका के साम्यवादी दल के सदस्य भी रह चुके थे। पर इन्होंने यहाँ के साम्यवादी दल का रवैया कुछ और ही देखा। यहाँ का साम्यवादी दल कांग्रेस के आन्दोलनों का विरोध करता था। परन्तु जयप्रकाश ने उन आन्दोलनों को अपनाया। दलबन्दी के कारण ट्रेड यूनियन आन्दोलन के टुकड़े-टुकड़े हो गये थे। अतएव श्री जयप्रकाश ने मजदूरों में एकता लाने की चेष्टा की। इन्होंने कम्युनिस्टों से अलग ही स्वतन्त्र रूप से मजदूरों का संगठन किया। इन्हें आशा थी कि कम्युनिस्ट अपना रास्ता सुधार लेंगे।

१९३३-३४ में श्री जयप्रकाश ने सम्पूर्ण देश का भ्रमण किया। भिन्न-भिन्न प्रान्तों में समाजवादी दल का संगठन किया। यह नाम बहुत सोच-विचार कर रक्खा गया। यह नाम राष्ट्रीय और समाजवादी आन्दोलनों के क्रमिक सम्बन्ध को स्पष्ट करता है। समाजवादी दल के सदस्य केवल कांग्रेसी ही हो सकते थे। इसका मतलब अभी तक कोई जनता की संस्था बनाने का नहीं था। इसका उद्देश्य तो उन चुने-चुने व्यक्तियों का संगठन बनाने का था जो समाजवाद में पूरा-पूरा विश्वास रखते हों।

इसके पश्चात् श्री जयप्रकाश ने ट्रेड यूनियन आन्दोलन की ओर ध्यान दिया। इससे पहले इसके कई टुकड़े हो चुके थे। पर श्री जयप्रकाश के प्रवेश से वहाँ फिर एकता आ गई। जयप्रकाश ने इस सम्बन्ध में जो मुख्य काम किया वह है—किसानों का संगठन जिसकी ओर कम्युनिस्टों ने अब तक बिलकुल ध्यान नहीं दिया था। जयप्रकाश उनमें से एक हैं जिन्होंने किसान-सभाओं का निर्माण किया।

उनकी आशा के अनुसार कम्युनिस्टों ने अपनी कार्यप्रणाली पर पुनः विचार किया। उन्होंने १९३५ में समाजवादी दल की नीति को स्वीकार कर लिया। बाहर से दिखाने के लिए तो कम से कम अवश्य स्वीकार कर लिया। समाजवादी एकता प्राप्त करने के लिए श्री जयप्रकाश ने अपने दल का द्वार कम्युनिस्टों के लिए

प्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री जयप्रकाशनारायण।

खोल दिया। किस प्रकार से जयप्रकाश ने उनका साथ निभाने की चेष्टा की और किस प्रकार कम्युनिस्टों ने उनके विश्वास का दुरुपयोग किया, इसका वर्णन १९४२ की प्रकाशित पुस्तक 'समाजवादी एकता' में किया गया है।

जयप्रकाश तथा इनके साथियों ने कांग्रेस की नीति में परिवर्तन लाने में जवाहरलाल की काफ़ी मदद की। शीघ्र ही ये किसान-मजदूर संगठन के एक महान् स्तम्भ बन गये। इनके कई कामों के सम्बन्ध में भ्रम भी पैदा हो गया और वह भी खासकर पद-ग्रहण के समय। परन्तु धैर्य से इन्होंने कांग्रेस के जन-आधार को दृढ़ बनाना जारी रक्खा। अपने प्रान्तों में किसानों में इतनी जागृति पैदा कर दी, मालूम पड़ने लगा कि मिनिस्टर व्याकुल हो रहे हैं। परन्तु इस जागृति का ही फल था कि १९४२ की क्रान्ति में बिहार सबसे आगे रहा।

१९३४ से १९३९ तक जयप्रकाश ने विशेषकर कम्युनिस्टों, रायिस्टों, फ़ारवर्ड ब्लाकियों और समाजवादियों को एकत्रित करने का काम किया, पर इसका परिणाम सन्तोषजनक न निकला। रायिस्ट समाजवादी दल से निकल गये। वे आगे चलकर कांग्रेस के बिलकुल विरुद्ध हो गये। तत्पश्चात् कम्युनिस्टों ने राय का अनुसरण किया। १९४० तक श्री जयप्रकाश के साथ एक विचारवाले केवल समाजवादी ही रह गये।

संगठन के सम्बन्ध में जयप्रकाश ने अपनी योजना पर पुनः विचार किया। साथ ही उनमें विचार-परिवर्तन भी हुआ। अपने प्रारम्भिक लेख जैसे—'समाजवाद ही क्यों ?' तथा 'ग्रामोद्योग बनाम समाजवाद' में इन्होंने राष्ट्रीयकरण तथा सोवियट यूनियन में प्रयोग किये गए नये उपादानों पर जोर दिया। १९४० में अपने अनुभवों के आधार पर इन्हें अपने विचार में परिवर्तन लाना पड़ा। इन्होंने अपने रामगढ़ कांग्रेस के प्रस्ताव में समाजवाद पर पुनर्विचार किया था, यद्यपि वह मीनू मसानी के पुनर्विचार से भिन्न था। साहस के साथ निर्णय करना, गलती करने पर उसे मान लेना, और फिर निर्भय होकर आगे क़दम बढ़ाना—यह श्री जयप्रकाशनारायण की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

यूरोप में युद्ध छिड़ते ही जयप्रकाश ने अपनी सारी शक्ति उसके विरोध तथा अपने देश की स्वतन्त्रता प्राप्त के प्रयत्नों में लगा दी। जब जयप्रकाश का संघर्ष में उलझे हुए थे, तब भी उन्होंने सम्पूर्ण देश का ध्यान मुख्य प्रश्न—'विविध बनाम भारत' पर लगाया। १९४० में युद्ध-विरोधी स्वतन्त्रता संग्राम में डूब गये।

जयप्रकाश १९४० की मई में जेल से बन्द कर दिये गये। कुछ ही महीनों के बाद ये देउली नजरबन्द कैम्प में ले जाये गये। यहीं से इन्होंने स्वतन्त्रता प्राप्त करने

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

बन्धन या मरण

लेखका श्रीमती शान्ति रमण, बी० ए०

प्रभा भी जीवन में शान्ति और व्यवस्था चाहती थी, उसने दीपक से ईमानदारी से प्रेम किया किन्तु दीपक तो पुरुष था न, फिर उसे प्रेम के सिवा और चाहिए क्या था? प्रभा के बच्चा हुआ, किन्तु समाज ने उसे नाज़ायज़ करार दे दिया। प्रभा समाज की दृष्टि में भी पतित समझी गई। बिहार की प्रसिद्ध कहानी लेखिका श्रीमती रमण ने नारी-जीवन और हृदय की इस कहानी में सुन्दर चित्रण किया है, जिसका हृदय पर प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता।

परिवार, और उसकी प्रतिक्रिया को [illegible] सकना बराबर असम्भव ही रहा है। [illegible] हवा में बदबू आ गई वहाँ सिरदर्द [illegible] सिवा प्रफुल्लता कभी नहीं आ सकती। [illegible] समाज, आज का समाज जिसके भीतर [illegible] राज बाहर से ज्यादा नंगा है वह अपनी [illegible] की सफलता हनन और नैतिकता [illegible] अधःपतन ही मानता है। जब कभी [illegible] परिस्थिति में कोई सँभलकर डग [illegible] की बात सोचता है और उस विषाक्त [illegible] वातावरण से बाहर आकर जीने की [illegible] करता है उस समय जिसके सहारे [illegible] उस सीमा को लाँघ रहा है वह सहारा [illegible] अनेक बार उसके जीवन का सबसे [illegible] दुश्मन सिद्ध हुआ है। यह भी सच है [illegible] उस सीमा से बाहर आने की बात [illegible] देने में वह स्वयं हज़ारों गलतियाँ [illegible]—करता भी है, किन्तु समाज को [illegible] क्या, जानकर करे या अनजाने, [illegible] हाथ अंगार से दागे गये हैं [illegible] दागे जायेंगे। साथ ही यह भी [illegible] है कि एक दिन समाज को दुनिया [illegible] कोई शक्ति पनाह न देगी और रूढ़ि-[illegible] का वह क़िला समाज के कंकाल को [illegible] हुए सिसकता मिट जायेगा।

परिवार में रहकर भी, प्रभा हमेशा [illegible] भावना को मन में पालती आई कि [illegible] इन लोगों से दूर-दूर है। चाहकर भी, [illegible] अपनत्व का सम्बन्ध स्थापित न कर [illegible]! माता, पिता, भाइयों से भरे हुए [illegible] परिवार में प्रभा अपने आपको अकेला [illegible] थी। प्रभा बार-बार महसूस करती [illegible] कि माता-पुत्री का सम्बन्ध भी झूठ है। [illegible] भी माता-पिता के प्रति वह स्नेह-[illegible] नहीं हो पाती। सुबह उठते ही जब [illegible] कहता, "चलो, मुँह-हाथ धोकर [illegible] कर लो।" तो प्रभा का हृदय [illegible] उठता! कितना अच्छा होता अगर वह [illegible] श्रमिक ग़रीब घर की कन्या होती जहाँ [illegible] श्रम करके रोटी मिलती। ग़रीब [illegible] में एक प्रकार की आत्मीयता होती है, [illegible] से ही प्रभा इसका अनुभव करती! [illegible] वह धनी भरे-पूरे परिवार में न जाने [illegible] अभाव से इतनी दुखी रहती [illegible] इस अभाव की प्रतिक्रिया के फल-[illegible] ही प्रभा दिन-ब-दिन अपने घर के [illegible] से खिंचती गई, खिंचती गई! प्रभा [illegible] महसूस करती कि उस के घर का [illegible] वातावरण बड़ा ही विषाक्त है। वहाँ [illegible] लेने से उसका दम घुट रहा है। उसकी [illegible] इसी विष से भरी जा रही है। [illegible] में, प्रारम्भ से ही उसने देखा है कि [illegible] माता-पिता साधारण माता-पिता [illegible] है। वह समझ नहीं पाती, क्यों ऐसी [illegible] उन लोगों को पसन्द आ रही है? [illegible] कभी तो प्रभा की इच्छा होती कि वह [illegible] से दूर एक अलग अपना [illegible] बसाये जहाँ, कोई उसे पहचानता [illegible] हो। कोई यह कहनेवाला न हो, "प्रभा, [illegible] तो बड़ी होकर अपनी मा की तरह [illegible] अपने शरीर का सौदा करेगी?" शरीर [illegible] सौदा! प्रभा का सर्वांग सिहर उठता। [illegible] लेकिन अपने परिवार के सदस्यों से [illegible] प्रभा की इच्छा होती थी कि वह अपनी [illegible] किसी को बता सके। बताये किसे? [illegible] दुनिया तो एक उपेक्षा की दृष्टि से [illegible] है। मानो अपनी मा के किये हुए [illegible] के लिए वही ज़िम्मेदार है। काश! [illegible] भी कोई 'अपना' होता! उसके दुख [illegible] बँटा सकता। उसके मन की पीड़ा को [illegible] सकता। ज़िन्दगी की मंज़िल—दिन-[illegible] लम्बी होती जा रही है। अपनी [illegible] के इन्हीं सोलह-सत्रह वर्षों में वह [illegible] से ऊबती जा रही है। अपनी [illegible] वर्षों की लम्बी-सी ज़िन्दगी में [illegible] अन्तर्द्वन्द्वों से थक चुकी है। अब तो [illegible] चाहती है अपनी पीड़ाओं को बँटाना—[illegible] करना।

और ज़िन्दगी के इसी चौराहे पर प्रभा की भेंट हुई दीपक से। पड़ोस के मुंसिफ़ का लड़का! पारसाल ही, पिता की मृत्यु हो गई है। लेकिन ब्राह्मण होने के कारण, दस-पाँच घर की यजमानी और दस-पाँच बीघे ज़मीन, रोटी का मसला हल करने को काफ़ी थीं। प्रथम वर्ष का छात्र, गेहुँआ रंग और आकर्षक व्यक्तित्व! पड़ोसी होने के कारण एक दूसरे के घर में आना-जाना लगा रहता था। पिता की मृत्यु के बाद, दीपक प्रभा के कुछ निकट आ गया। प्रभा से सान्त्वना के शब्द पाकर उसे अपनी पीड़ा कम करने का मौका मिलता था।

और प्रभा, अबोध प्रभा, यह भूल गई कि ऐसा न हो उसकी साधारण सान्त्वना और सहानुभूति आगे चलकर उसी के लिए काल बन जाये! दीपक को देखनेवाली प्रभा—दीपक में अन्तर्हित "पुरुष" को न देख पाई। थोड़ा देखकर भी समझने में असमर्थ रही। सहानुभूति का रूप आगे बढ़ा कि वह प्रभा के जीवन का इतना बड़ा अभिशाप बन गया कि प्रभा जीवित ही दफ़ना दी गई समाज के भीतर!

दीपक का पुरुष-हृदय, समझने लगा—प्रभा को पीड़ा है किसी अभाव के कारण! प्रभा सम्भवतः किसी आधार और उसकी सहानुभूति की तलाश में अपने जीवन का अर्घ्य देने में नहीं हिचकेगी। दीपक ने, इस स्थिति का बेजा फ़ायदा उठाया! प्रभा की तरफ़ वह और अपनी सहानुभूति दिखाने लगा। प्रभा का भी मनचाहा हुआ। जिस सहानुभूति और अपनत्व की खोज थी वह अनायास ही दीपक के द्वारा मिल गई दिन-ब-दिन वह निकट आती गई दीपक के।

कल्पना के लोक में पहुँच, प्रभा स्वप्न देखती कि दूर बहुत दूर दीपक के साथ अपना परिवार बसाकर वह इतने दिनों की संचित कामना की पूर्ति कर पायेगी। जिस परिवार के बसाने की इच्छा से वह बार-बार उद्वेलित हो जाया करती थी आज उसकी पूर्ति का अवसर आया देख, प्रभा कुछ निश्चिन्त रहने लगी थी। अब उसका हृदय—विषाक्त वातावरण से घबड़ाता नहीं था। वह समझ रही थी कि दीपक को पाकर, अब उसे जीवन में चैन और खोई प्रतिष्ठा प्राप्त हो जायेगी।

किन्तु प्रभा की तरह दीपक एक परिवार बसाने की बात स्वप्न में भी नहीं सोच रहा था। उसके लिए प्रभा सिर्फ़ दिलबस्तगी का एक सामान-मात्र थी। प्रभा के साथ वह ज़िन्दगी का सौदा नहीं कर रहा था, वरन क्षण भर के लिए एक खेल खेल रहा था। उसने प्रभा को सहानुभूति दी थी, उसका मन आकर्षित किया था, स्नेह जताया था केवल उस पर विजय पाने के लिए।

और कल्पना का सुन्दर महल—बालू की दीवार की भाँति ढह गया जब प्रभा ने देखा कि दीपक ज़िम्मेदारी निभाने के लिए उसके पास नहीं आया है। वह सिर्फ़ "प्यार करता हूँ" कहने के लिए आया है। प्यार के पीछे जो वासना का रूप था उसे प्रभा देख न सकी थी, समझ न सकी थी। जब प्रभा अचानक ही बोली "दीप! मैं तो सोचती हूँ कि अब हमें ज़रा साहस से काम लेना होगा। मैं समझती हूँ, अगर अब हम विवाह के पवित्र बन्धन में बँध जायें तो बहुत अच्छा हो।" प्रभा ने समझा था कि उसकी इस बात को सुनकर दीपक प्रफुल्लित हो उठेगा, सदा की भाँति अपनी भुजाओं में बाँध लेगा किन्तु दीपक को लगा जैसे किसी ने तपा अंगार उसके बदन को छुला दिया हो! हँसने का प्रयत्न करते हुए बोला वह, "क्यों आज यह नई बात कैसे उठाई? डर लग रहा है? दीपक तुम्हें धोखा देगा? पगली दीपक तो तेरा है ही! इस विवाह के बन्धन की क्या आवश्यकता है?" प्रभा हलकी-सी होती हुई बोली, "विश्वास है तभी तो कह रही हूँ। अब हमें शादी कर ही लेनी चाहिए। अब अधिक दिन इस बात को छिपा न सकूँगी!"

"क्या बात है—तुम किस बात को छिपाने की कह रही हो?" दीपक ने पूछा।

प्रभा धीरे से बोली, "यही कि बहुत जल्द मैं 'मा' बननेवाली हूँ। पाँच-छः महीने बीत चुके हैं।

"ओफ़! इस बात को तुमने इतने दिन छिपाया क्यों? अब क्या होगा?" कहता हुआ दीपक तीर की तरह कमरे से बाहर निकल गया।

चिन्तित हो, प्रभा बिछावन पर लेट गई। वह समझ नहीं पाई कि दीपक इतना घबड़ा क्यों गया! यह तो ख़ुश होने की बात है। इसी समय कमरे में प्रवेश किया प्रभा की मा ने। इन दिनों वह प्रभा में एक अजीब-सा परिवर्तन देख रही थी। पूछा, "क्या बात है प्रभा, आजकल तुम हमेशा उदास-सी रहती हो।"

"कुछ नहीं मा, यों ही तबीअत इधर ठीक नहीं रहती!"—कहते-कहते प्रभा की आँखों में आँसू छलछला आये।

किन्तु प्रभा की अनुभवी मा को वास्तविक बातों का पता लगाते देर नहीं हुई। प्रभा अब अधिक इस बात को छिपा न सकी। सच्ची बातें बता कर फूट-फूटकर रोने लगी। क्षण भर के लिए प्रभा की मा स्तम्भित हो गई। कुछ देर तक सोचने के

दीपक प्रभा के साथ करांची यात्रा के लिये गया। वह गाड़ी से उतर रहा है।

जैहिन्द गीत मुफ़्त!

आज़ाद हिन्द फ़ौज के जोशीले गीतों का घर घर में प्रचार करने के लिए यह पुस्तकें मुफ़्त बाँटी जा रही हैं। आज ही १ कार्ड डालकर मँगा लीजिये।

संगीत कार्यालय, हाथरस—यू० पी०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद बोली, "प्रभा अब तो दो ही रास्ता है। या तो तुम्हें हम लोगों को छोड़ना होगा या जैसा मैं कहूँ वैसा करना होगा।" किन्तु मा के उपाय को सुन प्रभा रो पड़ी—"नहीं मा, ऐसा न कहो। तुम भी तो मा हो, ऐसी बात की कल्पना करना भी पाप है।"

"बड़ी पाप-पुण्यवाली बनी है! तू समझती है—"दीपक तुझे अपने घर की रानी बनायेगा?" जरा व्यंगपूर्ण हँसी के साथ प्रभा की मा बोली।

"जरूर बनायेगा मा, मुझे विश्वास है दीपक में!" प्रभा बोली।

"अच्छी बात है पूछ ले दीपक से"—कहती हुई प्रभा की मा कमरे से बाहर चली गई।

पर प्रभा की आशा दुराशा-मात्र रही। दीपक बोला, "प्रभा तुम्हारी मा ठीक कहती है। मैं इस योग्य नहीं हूँ कि तुम्हें अपनाने का स्वप्न देखूँ। तुम्हारे लिए यही उचित है कि अपनी मा की आज्ञानुसार कार्य करो। मैं अपनी गलती के लिए शर्मिन्दा हूँ—पर माफ़ करना।"

माफ़!! (प्रभा की हँसी वेदना से भी अधिक करुणापूर्ण थी) जरा हँसती हुई बोली प्रभा, "अरे तुमने ठीक ही किया! मैं इसी योग्य थी ही। तुम पर विश्वास करने का फल मुझे प्राप्त हो गया।"

"नासमझ न बनो प्रभा, तुम्हारे लिए मा की आज्ञा मानना ही धर्म एवं उचित है।" दीपक ने फिर कहा।

"धर्म! आज्ञा!! अब मुझे अधिक समझाने की आवश्यकता नहीं है। मैं अब अपना रास्ता चुन लूँगी। तुमसे एक प्रार्थना है, अब अधिक मेरे लिए फ़िक्र न करो। जाओ तुम!"—व्यंगपूर्वक प्रभा बोली।

बिना कुछ कहे दीपक कमरे के बाहर हो गया।

* * *

चाह कर भी प्रभा 'मातृत्व' के हृदय की रक्षा न कर सकी। काश उसे वास्तव में सहारा प्राप्त हुआ होता! न चाहने पर भी 'मा' के निर्देशित पथ पर ही चलना होगा उसे! इच्छा न रहते हुए भी समाज का भय उसे झुकने को बाध्य कर रहा है। नारी, कितनी असहाय है—यह प्रभा ने आज अनुभव किया। जीने की इच्छा और कुछ दिन इसी नारकीय जीवन की कामना—आज प्रभा के हृदय में इतनी बलवती हो गई कि जिस विषाक्त वातावरण से प्रभा भागना चाहती थी उसी विषाक्त वायु-द्वारा और अधिक घेर ली गई। अपनी इस गलती की सारी जिम्मेदारी अपने ही ऊपर मानकर भी प्रभा को शान्ति न मिलती। वह चाहती है कि उसमें इतनी शक्ति हो जाये कि वह—अकेली विद्रोह करे। किन्तु मनुष्य की इच्छा ही सब कुछ नहीं। चाहकर भी प्रभा विद्रोह न कर पाई—नहीं कर पाई!! वह अन्त में मा के निर्देशित पथ पर आँख मूंद चल पड़ी।

मा ने पानी की तरह रुपया बहाया प्रभा पर! चार महीने बाद जब एक छोटे शहर के अस्पताल की नर्स ने प्रभा की मा से—हँसते हुए आकर कहा—"इनाम दीजिए—लड़का हुआ है!"—तो प्रभा की मा उसे इनाम देने का वादा करके दौड़ पड़ी प्रभा के कमरे की ओर—"बेटी!" "मा"..... और दोनों की आँखों से आँसू गिरने लगे। आज प्रभा ने देखा कि जिस मा से वह इतनी दूर-दूर रही है वह और जो भी हो—एक नारी और मा का हृदय रखती है। पहली दफ़ा श्रद्धा के भावों से उसका हृदय भर उठा। इसी समय नजर पड़ी प्रभा की मा की प्रभा के बगल में लपेटे हुए प्रभा के बच्चे पर! निर्निमेष कुछ देर तक उसे देखती रहीं और कहा, "उफ़! प्रभा क्या किया तूने?" प्रभा में तो इतना साहस भी नहीं था कि अपने हृदय के टुकड़े की ओर एक दफ़ा भी देखे! आँखों को हाथ से ढाँककर दूसरी तरफ़ घूमकर रोने लगी। काश उसके हृदय की व्यथा को उसकी मा भी समझ पातीं। आज वह अपने आपसे घृणा कर रही है—लेकिन उपाय क्या है? कुछ ही दिनों बाद—उसे अपने—बच्चे से, अलग कर दिया जायेगा। उसे इस बात का हक कहाँ कि वह अपने इस हृदय के टुकड़े को अपना कह सके? प्रभा अपराधिनी है—अपने और अपने से भी अधिक इस नन्हें बच्चे के प्रति। जिन्दगी की एक छोटी-सी गलती इतनी घातक है—यह अब प्रभा महसूस कर रही थी। पर विवशता, कमजोरी, लाचारियाँ आज उसके सिर चढ़कर बोल रही थीं।

दुनिया के, शाम-सुबह उसी तरह आते और जाते हैं। प्रभा की घटना केवल प्रभा की घटना न रहकर अब सम्पूर्ण समाज की घटना बन चुकी है। आज भी उसके इर्द-गिर्द दीपक-से परवाने मँडरा रहे हैं और वह अपनी पूरी कसक, टीस, वेदना के सहारे जिन्दगी के मरुस्थल, पर अत्यन्त पिपासित डग डालती चल रही है। वह स्पष्ट देखती है कि आसमान में काली घटाएँ घिर आई हैं, हवा में ठंढक आ गई है किन्तु कौन जाने यह घटा बरसेगी भी या तेज हवा के पंखों पर चढ़कर दूर भागकर आसमान को और जलाती हुई छोड़ जायेगी। आसमान की लाली उसके हृदय के रक्तपिंड सदृश चारों ओर अन्तरिक्ष तक फैलकर किसी आनेवाले तूफ़ान की आशंका पैदा कर रही है जिसमें हस्तियों के उड़ जाने का भय है, किन्तु कौन कहे प्रभा के आस-पास का समाज कभी डोलेगा भी।

डालडा में तली हुई पूरीयाँ आप के मुँह में आसानी से घुल जाती हैं—और स्फूर्ति भी देती हैं!

डालडा आपका भोजन स्वादिष्ट करता है और इस के अतिरिक्त वह आप का स्फूर्ति-दायक अन्न है! आप के दैनिक आहार को अधिक पौष्टिक गुणवाले इस त्वरित् पाचनयोग्य, विटामिन-युक्त रसोई-साधन-द्वारा सुधारिये। डालडा प्रत्येक गृहिणी के लिये एक देन है—वह उसके साधी रसोई को भी अपनी स्वादिष्ट मधुरता से परीपूर्ण करके, उसके परिवार को अधिक शक्ति प्रदान करता है।

★ डालडा-पाकशास्त्र पुस्तक (केवल अंग्रेजी) की सहायता से अपने भोजन का प्रबन्ध कीजिये। इस में १५० से अधिक स्वादिष्ट भारतीय आहार के प्रकार तथा पौष्टिक गुणों के कारण चुने हुए समाविष्ट हैं। आप के कॉपी के लिये Dept. A411 P.O. Box No. 353, Bombay, के पते पर ४ आने के पो० स्टाम्प्स् भेजिये।

HVM. 48-50 HI THE HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING CO., LTD.

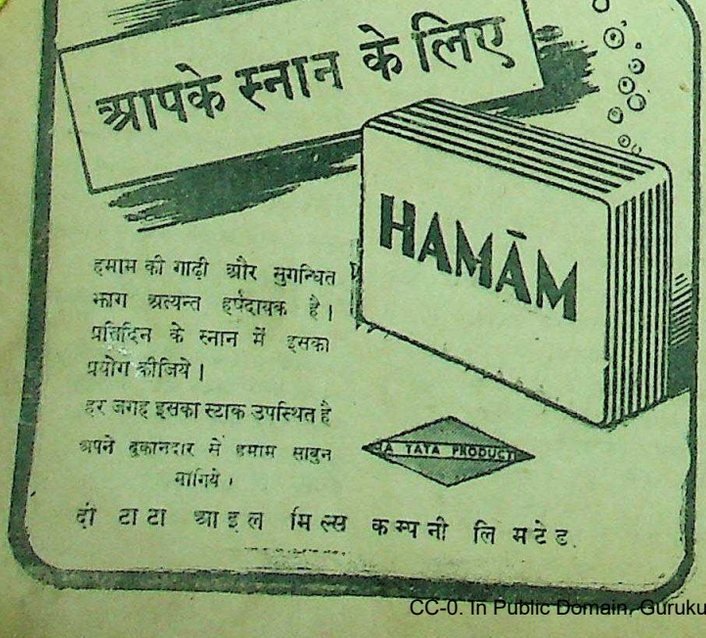

हमाम की गाढ़ी और सुगन्धित झाग अत्यन्त हर्षदायक है। प्रतिदिन के स्नान में इसका प्रयोग कीजिये।

हर जगह इसका स्टाक उपस्थित है अपने दुकानदार से हमाम साबुन मांगिये।

दी टाटा आइल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

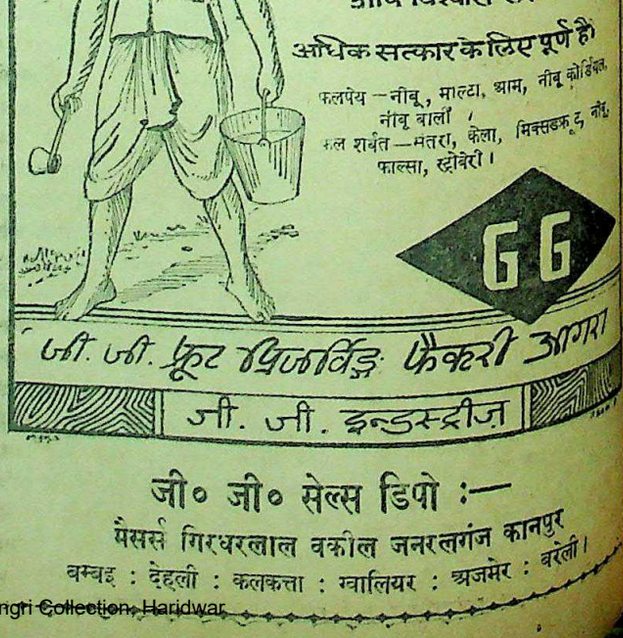

जी० जी० सेल्स डिपो :—
मैसर्स गिरधरलाल वकील जनरलगंज कानपुर
बम्बई : देहली : कलकत्ता : ग्वालियर : अजमेर : बरेली।

CC-0. In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

बिहार प्रांतीय सम्मेलन

डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद की एक लाख के लिए अपील

बिहार प्रादेशिक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन-भवन के निर्माण के लिए एक लाख रुपये एकत्र करने के सम्बन्ध में देशरत्न डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने निम्नलिखित वक्तव्य दिया है—

बिहार प्रादेशिक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन पिछले कोई २५ वर्षों से हिन्दी भाषा और साहित्य की सेवा करता आ रहा है। देश के इस भू-भाग में आज साहित्य और भाषा-संबंधी जो जागृति दिखाई पड़ती है, उसका अधिकांश श्रेय इस संस्था को ही है। हिन्दी-भाषी जनता, विशेषतः बिहार के साहित्य एवं भाषा प्रेमियों का इससे निकट-संबंध है तथा अपनी दीर्घकालीन सेवाओं के कारण यह संस्था काफी प्रतिष्ठित समझी जाती है। हिन्दी के सुयोग्य विद्वान् और साहित्य-सेवी इसके सभापति होते आये हैं तथा हिन्दी-भाषा और नागरी लिपि की रक्षा और प्रचार की दिशा में इस संस्था ने प्रशंसनीय उद्योग किया है।

हिन्दी-भाषा तथा नागरी-लिपि का व्यापक प्रचार, हिन्दी-साहित्य को सभी प्रकार से समृद्ध बनाना तथा उसके प्रति लोगों में अनुराग उत्पन्न करना, संक्षेप में सम्मेलन के ये ही मुख्य उद्देश्य हैं। स्पष्ट है कि इन उद्देश्यों की समुचित पूर्ति के लिए काफी धन तथा लगन से काम करनेवाले अनेक कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है। केवल आर्थिक दृष्टि से यह सम्मेलन सदैव खाली रहा है। इसके पास न तो कोई स्थायी कोष है और न आमदनी का कोई जरिया ही। निदान इसका खर्च फुटकर दान से चलता रहा है जो प्रायः हमेशा ही अपर्याप्त रहता है। अभी हाल तक सम्मेलन का कोई अपना भवन भी नहीं था जहाँ से इसका कार्य सुव्यवस्थित रूप से चलाया जा सकता अथवा जहाँ एक पूर्ण समृद्ध पुस्तकालय और संग्रहालय का संगठन करके साहित्य की अभिवृद्धि में अपेक्षित योग दिया जा सकता।

प्रसन्नता की बात है कि अब सम्मेलन को पटने में अपना भवन भी हो गया है जिसमें उसका प्रधान कार्यालय स्थापित है। इस भवन का निर्माण आज से कोई आठ-नौ वर्ष पहले आरंभ हुआ था, किन्तु लड़ाई छिड़ जाने के कारण यह काम अधूरा ही रह गया और सामानों के मूल्य में अत्यधिक वृद्धि हो जाने के कारण अब भवन-कोष में जो रुपये बच रहे हैं वे उसको पूरा करने के लिए एकदम अपर्याप्त हैं।

कहने की आवश्यकता नहीं कि जब तक सम्मेलन का भवन बनकर तैयार नहीं हो जाता, तब तक न तो संग्रहालय का ही विकास होगा और न साहित्य-प्रचार के दूसरे विभाग ही आवश्यकतानुसार चलाए जा सकेंगे। इस भवन को पूरा करना अत्यन्त आवश्यक हो गया है।

इस साल बाँसी (भागलपुर) वाले अधिवेशन में सम्मेलन ने यह निश्चय किया है कि अगले साल कुछ खास कामों पर ही जोर दिया जाये। इनमें से सबसे प्रमुख काम छोटानागपुर के आदि-वासियों एवं अन्य अहिन्दी-भाषी लोगों में हिन्दी-भाषा और देवनागरी लिपि का प्रचार है। यह एक ऐसा काम है, जिस पर बिहार प्रान्त ही नहीं; बल्कि पूरे देश का ध्यान जाना चाहिए। सम्मेलन इस दिशा में भी बराबर प्रयत्न करता रहा है; किन्तु धनों के अभाव में न तो यह काम बराबर चलता रहा और न जैसी चाहिए, वैसी सफलता ही मिल सकी है। इसलिए यह और भी जरूरी हो गया है कि इस काम को आगे बढ़ाने के लिए भरपूर कोशिशि की जाय।

इसी प्रकार सम्मेलन ने यह भी निश्चय किया है कि इस वर्ष पुस्तकालय, संग्रहालय और वाचनालय का अधिक से अधिक समृद्ध बनाने का काम विशेष रूप से किया जाय, जिससे कि जल्द से जल्द विद्या का एक ऐसा संपन्न मंडप कायम हो जाय, जहाँ विशुद्ध साहित्य के पठन-पाठन के सिवा साहित्यिक एवं ऐतिहासिक शोध तथा अनुसंधान-कार्य भी सुगमता से चलाये जा सकें।

सम्मेलन की यह भी योजना है कि वह अपनी आगामी रजत-जयंती के अवसर पर साहित्य का एक प्रामाणिक इतिहास तथा लोक गीतों एवं किंवदंतियों का सुन्दर संग्रह भी प्रकाशित करे।

उपर्युक्त तथा अन्य कार्यों के लिए सम्मेलन ने एक लाख रुपये संग्रह करने का निश्चय किया है। सम्मेलन के सामने जितने काम हैं, उन्हें देखते हुए यह रकम बहुत थोड़ी मालूम होती है। आदिवासियों के बीच अगर हिन्दी-प्रचार का काम ही ठिकाने से किया जाय तो उसके लिए कई लाख रुपयों की जरूरत हो सकती है। फिर सम्मेलन-भवन को भी पूरा करने का सवाल है, जो किसी प्रकार भी थोड़े खर्च से हल नहीं हो सकता।

सम्मेलन के कार्यकर्त्ता जिस उत्साह से आगे बढ़ रहे हैं, उसे देखकर मुझे प्रसन्नता होती है तथा मैं समस्त हिन्दी-भाषी जनता, विशेषतः बिहार-निवासियों से अनुरोध करता हूँ कि वे अपनी हैसियत के अनुसार उचित दान देकर सम्मेलन की इस छोटी माँग को जल्द से जल्द पूरा कर दें तथा हिन्दी-भाषा और देवनागरी लिपि के प्रचार एवं साहित्य की श्री-वृद्धि करने में सम्मेलन की सहायता करें।

* * *

व्रज-भूमि की रक्षा का सवाल

इधर कुछ दिनों से समाचारपत्रों में यह आन्दोलन बहुत जोर पकड़ता जा रहा है कि दिल्ली-प्रान्त की समृद्धि के लिए और कुछ जिलों के साथ आगरा कमिश्नरी भी हरियाना प्रान्त में मिला दी जाये। यह योजना चाहे जिस किसी की भी क्यों न हो पर इस योजना का पूरी तरह से घोर विरोध होना चाहिए। हम नहीं चाहते कि हमारा जिला संयुक्त-प्रान्त से पृथक करके और किसी प्रान्त में मिला दिया जाये। हम इस योजना को कदापि सफलीभूत न होने देंगे। यह बात तो निर्विवाद सिद्ध है कि व्रजभूमि की जो शोभा और गौरव इस प्रान्त के साथ रहने में है वह और किसी प्रान्त के साथ मिलने में कदापि नहीं हो सकता। क्योंकि अधिकांश धार्मिक क्षेत्र हमारे इसी प्रान्त में हैं। उन धार्मिक केन्द्रों से मथुरा यदि पृथक् कर दिया जाये तो उन लोगों की भी महत्ता कुछ कम हो जाने की संभावना है। सबसे पहला प्रश्न तो हमारे सामने यह है कि आगरा कमिश्नरी को इस प्रान्त से अलहदा कर देने का सवाल ही क्यों उठा और किसने उठाया? प्रान्त के निवासियों की बिना राय लिये ही हमें क्यों अंग-भंग किया जा रहा है? इस सब षडयंत्र के पर्दे में हमें और किसी ही दल-विशेष का हाथ जान पड़ता है और वह दल-विशेष है भारत-सरकार। हमारा संयुक्त-प्रान्त राजनैतिक वातावरण से कितना जागृत है इसे भारत सरकार अच्छी तरह से जानती है। ब्रिटिश सरकार से जब भी मोर्चा लिया गया है तभी हमारा प्रान्त सबसे आगे रहा है। सरकार अब हमारे प्रान्त की इस चेतना को सहन नहीं कर सकती और उसने यह षड्यंत्र रचा है कि प्रान्त को चारों ओर से काटकर इसकी शक्ति को क्षीण कर दिया जाये। इसीलिए यह योजना अब हमारे सामने आई है। पूर्व में गोरखपुर तथा बलिया के कुछ विशेष भागों को निकालकर वह बिहार प्रान्त में मिलाने जा रही है। भारत-सरकार के इशारे पर एक बार नैपाल राज्य ने भी यह आवाज उठाई थी कि नैपाल राज्य के समीपवर्ती जिलों को उसमें मिला दिया जाये। अब यह आगरा कमिश्नरी और रुहेलखंड कमिश्नरी को हरियाना प्रान्त में मिलाने को सोचा जा रहा है। जिस पोलैंड के जरा से हिस्से ने योरप में खून की नदियाँ बहा दी थीं तब भी उसको पृथक् नहीं किया जा सका फिर हमारी समझ में नहीं आता कि भारत-सरकार यहाँ पर प्रान्तों का विभाजन इस प्रकार क्यों कर रही है? हम मथुरा जिले के प्रत्येक व्यक्ति से यह अपील करेंगे कि वह व्रजभूमि और उसकी मर्यादा की रक्षा के लिए तत्पर रहें। व्रजमंडल ने सदा से ही पराधीनता का विरोध किया है। व्रज की संस्कृति, व्रज की सभ्यता और व्रज का साहित्य सदा से स्वाधीन और वीरोपासक रहा है। हमारा साहित्य और हमारी व्रजभाषा आज भी दुनिया के किसी भी साहित्य से मोर्चा लेने की क्षमता रखती है। व्रजमंडल सदा से दासत्व भावनाओं का विरोधी रहा है और रहेगा। हमारे उपास्य-देवता और व्रज के सर्वस्व भगवान श्रीकृष्ण ने भी अत्याचार और पराधीनता के विरोध में स्वाधीनता का शंख फूँका था। यदि अब भी हम उनके अनुयायी बनने का दम भरते हैं तो हमारा यह कर्त्तव्य हो जाता है कि हम मथुरा जिले के साथ ही समस्त व्रजमंडल की रक्षा करें। उसे यवन भाषा-भाषी प्रान्त में न मिलने दें। किसी जाति का स्वाभिमान और उसकी ताकत उसके बलिदान से देखी जाती है—व्रजमंडल-निवासियों के लिए समय आ रहा है कि वह इस संकट के समय में अपने इतिहास की किस प्रकार रक्षा करेंगे?

वृन्दावन (मथुरा) —अद्वैतकुमार गोस्वामी
८ मई, ४६

J & N REMINDERS!

स्मारक पत्र

किस प्रकार का काम : पालिश का हुइ चीजों की चमक कायम रखने तथा बढ़ाने के लिए।

हमारी सिफ़ारिश : जेन्सन्स वेक्स पालिश (Jenson's wax Polish) को स्थायी आइने जैसा चमकीला बनाता है। तथा मोटर गाड़ियों की चमक-दमक बढ़ाता है।

JENSON & NICHOLSON
MAKERS OF PAINTS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडित द्वारकाप्रसाद मिश्र

महाकोशल का एक प्रतिभापूर्ण बहुमुखी व्यक्तित्व

लेखक, प्रोफ़ेसर रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' एम० ए०

[१]

मध्यप्रान्त महाकोशल में पुनः कांग्रेस मंत्रिमंडल स्थापित हो गया है। सुप्रसिद्ध राष्ट्रवादी, साहित्यिक और राजनीतिज्ञ पंडित द्वारकाप्रसाद मिश्र पुनः मंत्रि-पद पर आरूढ़ हुए हैं। इस लेख में सुप्रसिद्ध कवि 'अंचल' ने मिश्र जी का एक रेखा-चित्र अंकित किया है। मिश्र जी ऐसे एक बहुमुखी व्यक्तित्व तथा प्रतिभा-सम्पन्न जीवन की गतिविधि के साथ-साथ प्रान्त की राजनीति पर भी सुन्दर प्रकाश डाला गया है। लेख सुन्दर तथा विचारपूर्ण है। शेष अंश अगले अंक में देखिये।

चश्मे के भीतर बुद्धि और चिन्तन की दोहरी दीप्ति से चमकती तीक्ष्ण, भेदक आँखें, हार्दिकता और गहरे आत्मविश्वास की आभा से प्रसन्न निर्दोष मुख, जो बात-बात में जीवनव्यापी संस्कारशीलता और व्यक्ति-वैशिष्ठ्य का प्रेरक प्रबोध प्रदान करता है, आगन्तुक के हृदय में कर्मठता, त्याग, वीरता और देश-पूजा का उत्कट उल्लास जागृत करनेवाली, संघर्षों में तप-तपकर अधिकाधिक जीवन-मुक्त होनेवाली विद्रोह-शिखा सी 'डायनमिक मुस्कान'. मिश्र जी के व्यक्तित्व की ये तीन ऐसी आकर्षक विशेषताएँ हैं जो स्थूल दर्शन में ही बड़े से बड़े विरोधी और संशयवादी को एकबार उनके अत्यन्त निकट लाकर उसे विमुख नहीं होने देतीं। पर उनके सूक्ष्म जीवन-दर्शन के लिए उनके महान् व्यक्तित्व के भीतर कुछ अधिक जागरूकता से प्रवेश करना होगा---उस अविजित और अपराजेय व्यक्तित्व के भीतर जो आज एक चौथाई शताब्दी से ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ अविराम गति से युद्ध करता आ रहा है, जिसे विदेशी नौकरशाही की बड़ी से बड़ी शक्ति, धूर्त्त से धूर्त्त चाल भी अपने मार्ग से तिल भर विचलित नहीं कर सकी।

मिश्र जी के प्रभावशाली व्यक्तित्व के कई रूप हैं---कवि, राजनीतिज्ञ, पत्रकार, वक्ता, विद्रोही 'एजीटेटर', चोटी पर के 'पार्लामेन्टरियन' और अवसर आने पर, अँगरेजी सैनिकवाद के साथ खुला संग्राम छिड़ने पर उतने ही बड़े संगठन-कर्त्ता। सन् १९२० में महात्मा गांधी के सत्याग्रह-आन्दोलन की पुकार पर आपने विश्वविद्यालय छोड़ दिया। 'मैं इतिहास का निर्माण करने जा रहा हूँ' कहते हुए देश की स्वतंत्रता के संघर्ष में कूद पड़े। इसमें संदेह नहीं यदि मिश्र जी अपने वकालत के पेशे में लगे रहते तो आज देश के प्रमुख वकीलों में उनकी गणना होती और प्रधान न्यायाधीश या न्यायाधीश का पद उनके लिए साधारण-सी बात होती। पर जिसके भीतर सजीव इतिहास-निर्माण का अहं था वह कैसे एक सीमित व्यक्तित्व की परिधि में बँधता ? अपनी तीव्र बुद्धि और प्रखर प्रतिभा के कारण सन् १९२६ में जब मिश्र जी एम० ए० फाइनल और ला फाइनल के विद्यार्थी थे, सेन्ट्रल एसेम्बली के लिए मध्य-प्रान्त की ओर से चुने गये। उनके पराजित विरोधी सर हरीसिंह गौड़ उस समय दिल्ली यूनिवर्सिटी के वाइसचान्सलर थे और मिश्र जी प्रयाग विश्वविद्यालय के मेधावी छात्र। असेम्बली में आप सब से छोटे एम० एल० ए० थे और आपकी अवस्था केवल २५ वर्ष की थी। यही नहीं, आप एसेम्बली की कांग्रेस पार्टी के 'ह्विप' भी थे और पार्टी के नेता स्वर्गीय राजर्षि मोतीलाल नेहरू का आप पर विशेष विश्वास था। वैसी सक्षम और प्रभावशालिनी केन्द्रीय एसेम्बली फिर नहीं बनी। पं० मोतीलाल नेहरू के चार मुख्य

महाकोशल के प्रमुख राष्ट्रीय नेता सेठ गोविन्ददास एम० एल० ए० (केन्द्रीय)

लेफ्टिनेन्ट माने जाते हैं, जिन्हें उस महान् राजनीतिज्ञ ने विशेष रूप से 'ट्रेन' किया था। श्री रफी अहमद किदवई, (अब 'सर') श्री शंमुखम् चेट्टी, दीवान चमनलाल और पं० द्वारकाप्रसाद मिश्र। उस महान् नेता के चारों सहकारियों का आज अपने-अपने प्रान्त के सार्वजनिक जीवन में प्रमुख स्थान है। यह एसेम्बली अधिक नहीं चली। तीन वर्ष के बाद १९२९ की लाहौर कांग्रेस के प्रस्ताव के अनुसार कांग्रेसी सदस्यों ने इस्तीफ़े दिये। मिश्र जी की गणना तब तक अखिल भारतीय ख्याति के नेताओं में होने लगी थी। लाला लाजपतराय की मृत्यु पर मिश्र जी ने सरकार की निन्दा का प्रस्ताव पेश किया जो पास हुआ था। उस समय मिश्र जी ने जो वक्तृता

मध्य प्रान्तीय कांग्रेसी सरकार के प्रधान मंत्री माननीय पंडित रविशंकर शुक्ल।

दी उसे सुनकर सारी एसेम्बली चकित हो गई। स्वर्गीय नेहरू जी ने कहा---'देश का सर्वोत्कृष्ट फौजदारी वकील भी अपना पक्ष इतनी अच्छी तरह नहीं रख सकता।' इलाहाबाद ला कालेज के प्रिन्सिपल और मिश्र जी के गुरु ने उनकी उस स्पीच को पढ़कर उनके पास बधाई का तार भेजा। स्मरण नहीं आता देश के किसी नेता को विद्यार्थी अवस्था और इतनी कम उम्र में ऐसा असाधारण गौरव प्राप्त हुआ हो। वहीं पर मिश्र जी की घनिष्ट मैत्री देश के अनेक नेताओं से हुई जो आज तक चली जा रही है।

सन् १९३० के आन्दोलन में मिश्र जी की विद्रोही आत्मा को फिर अँगरेजी सल्तनतशाही से संघर्ष करने का अवसर मिला। मध्यप्रान्त में आपने जंगल सत्याग्रह का प्रचलन किया। इसके पहले उस क़ानून भंग के आग्नेय युग में आपने तीन बार क़ानून तोड़े। नमक क़ानून, जब्त साहित्य क़ानून और कैन्टोनमेंट क़ानून। आपके अधिनायकत्व में सत्तर नवयुवकों ने रानी दुर्गावती के मरण-स्थल पर स्वाधीनता की शपथ ली। जेल में रहते हुए मिश्र जी जबलपुर म्युनिसिपल कमेटी के प्रेसीडेंट चुने गये। जेल से छूटकर चार्ज लेते ही फिर सरकार के साथ संघर्ष आरम्भ हुआ। आपके विद्रोही व्यक्तित्व से भयभीत होकर सरकार ने अपने विशेषाधिकार द्वारा आपको उस पद से हटा दिया। देश की म्युनिसिपलटीज के इतिहास में उस समय तक कभी ऐसा न हुआ था। सारे देश के पत्रों ने एक स्वर से आपके साथ किये गये इस अन्याय का विरोध किया। जबलपुर की जनता ने सरकारी अनाचार का समुचित उत्तर दिया। दूसरा चुनाव होते ही आप फिर प्रेसीडेंट चुने गये। सरकार आपकी तेजस्विता और ज्वलन्त विप्लव-वृत्ति से भय खाने लगी थी। १९३४ के केन्द्रीय एसेम्बली के चुनाव में आपको खड़े होने की आज्ञा नहीं मिली। बिलकुल आप जैसा केस सेठ गोविन्ददास जी का भी था पर उन्हें यह आज्ञा मिल गई। इसका यह मतलब नहीं कि सेठ गोविन्ददास जी और मिश्र जी में कोई प्रतिद्वन्दी विरोध था। वस्तुतः दोनों के सम्बन्ध इतने आत्मीयतापूर्ण और अन्योन्याश्रित हैं कि एक का परिचय दूसरे के समुचित उल्लेख के बिना अपूर्ण माना जाता है। प्रान्त की राजनीति और साहित्य की प्रगति पर इन दोनों मित्रों के बंधुत्वपूर्ण सहयोग का ऋण है। सेठ गोविन्ददास जी की देश-सेवा, त्याग, कष्टसहन और उज्ज्वल राष्ट्रभक्ति आज भारत विख्यात है। उनकी साहित्य-सेवा भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। हिन्दी के प्रमुख नाटककारों में उनकी गणना होती है। अपने इसी प्रभावशाली व्यक्तित्व और क़ुर्बानी के कारण वे इस बार फिर मध्यप्रान्त की ओर से निर्विरोध केन्द्रीय एसेम्बली के लिए निर्वाचित हुए हैं। मिश्र जी और सेठ जी की यह जीवनव्यापी मैत्री प्रान्त की सामूहिक प्रगति के लिए श्रेयस्कर सिद्ध हुई है। दोनों नेताओं को एक दूसरे की इस अभिन्नता का अभिमान रहता है। डा० बाबूराम सक्सेना के शब्दों में यह मित्र-जोड़ी भारत-विख्यात है। आत्मत्याग और देश के स्वातंत्र्य-आन्दोलनों के प्रत्येक आह्वान में दोनों मित्र साथ रहे हैं। पर सरकार ने यहाँ भी विभेद की नीति से काम लिया। देश भर में मिश्र जी के प्रति सरकारी रुख का प्रबल विरोध हुआ। कांग्रेस के सामने यहाँ तक नौबत आ गई कि एसेम्बली में प्रवेश हो या नहीं ? लेकिन सरकार ने मिश्र जी को दुबारा केन्द्रीय एसेम्बली में जाने देने का खतरा नहीं लिया। मिश्र जी के अविचल राजद्रोह का यह पुरस्कार था !

१९३६ में प्रान्तीय धारा-सभाओं का चुनाव हुआ। मध्यप्रान्त में सर्वप्रथम लोकप्रिय मंत्रिमंडल की स्थापना हुई। मिश्र जी स्वायत्त शासन-विभाग के मंत्री बने। स्वायत्त शासन के अन्तर्गत स्थानिक संस्थाओं में आमूल सुधार को लेकर आपने एक विशद् और प्रतिभापूर्ण योजना बनाई जिसकी वैधानिकता को प्रो० कीथ जैसे विधानवादी ने स्वीकार किया। इसके बाद ही देश-विख्यात खरे-काण्ड हुआ और तत्कालीन प्रधान मंत्री डा० खरे की अवसरवादिता को मिश्र जी ने देश के सामने उघेड़कर रख दिया। मिश्र जी को जाननेवाले अच्छी तरह जानते हैं उनके भीतर राष्ट्रीयता की भावना कितनी उग्र है। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, महाराष्ट्र, अमहाराष्ट्र किसी प्रकार की जातीयता के लिए उनके राष्ट्रीयता से प्रोज्ज्वल हृदय में स्थान नहीं। लेकिन खरे-प्रकरण को लेकर देश के मराठी प्रेस ने मिश्र जी के प्रति

मध्य प्रान्तीय कांग्रेस सरकार के [illegible] शाली मंत्री पंडित द्वारकाप्रसाद मिश्र

अत्यन्त विकृत और कुरूप घृणा का [illegible] किया जो आज तक चला जा रहा है। [illegible] मिश्र जी की विजय हुई। डा० खरे [illegible] से निकाले गये। बाद में तो उनकी राज[illegible] और पदलोलुपता ने यह सिद्ध कर दि[illegible] कि क्रान्ति और अनुशासन की आँख-मि[illegible] हुई कांग्रेस में ऐसे अवसरवादियों के लि[illegible] स्थान नहीं। मिश्र जी के निकट विद्रो[illegible] के विरोध को छोड़कर व्यक्ति-विरोध [illegible] मूल्य नहीं रखता। स्वर्गीय श्री राजे[illegible] राव के साथ उनका आजीवन राजनै[illegible] विरोध रहा लेकिन सदैव वैयक्तिक [illegible] पर मिश्र जी ने उनका आदर किया। [illegible] साहब की मृत्यु के बाद मिश्र जी ने [illegible] पत्र 'सारथी' में जो संपादकीय लिखा [illegible] वह उनके हृदय की विशालता और निष्प[illegible] सौजन्य का परिचायक है। यही [illegible] स्वर्गीय राव साहब ने अपना अन्तिम [illegible] मिश्र जी को ही लिखा था।

हिन्दी मध्य-प्रान्त का महाको[illegible] नामकरण कराने और उसे प्रचारित [illegible] में मिश्र जी का प्रमुख हाथ रहा है। [illegible] पुर के महाराष्ट्र प्रेस ने उस समय [illegible] कड़ा विरोध किया पर स्वर्गीय राव[illegible] बुर डा० हीरालाल और पं० लोचनप्र[illegible] पाण्डेय जैसे विद्वानों ने ऐतिहासिक [illegible] से महाकोशल नाम का समर्थन किया। [illegible] शारदा, लोकमत और सारथी के [illegible] द्वारा मिश्र जी ने मध्यप्रान्त की पत्रकार[illegible] को प्रगति दी है। मिश्र जी द्वारा सं[illegible] पत्रों के जो लोग नियमित पाठक रहे [illegible] उनकी लेखनी के चमत्कार, मंथन [illegible] और उनकी पैनी अन्तर्दृष्टि से भली [illegible] परिचित हैं। सन् १९३१ के मध्य-[illegible] साहित्य-सम्मेलन के सभापति भी [illegible] जी चुने गये। विद्यार्थी-जीवन [illegible] आपकी लेखनकला का परिचय [illegible] लगा था। जब आप एफ० ए० के [illegible] थे तभी आपने 'हिन्दू-जाति का [illegible] प्रेम' नामक पुस्तक देशव्रत के [illegible]

शेष पृष्ठ १८ पर

मध्यप्रान्त के प्रसिद्ध राजनैतिक श्री राघवेन्द्रराव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमण्डल

...स्त्रियों के लिये पहले का सा समय आयेगा ?
वर्तमान और अतीत के घरेलू जीवन में क्या अंतर है ?

लेखिका, श्रीमती शकुन्तला गुप्त

भारत में किसी समय स्त्रियों को भी पुरुषों की भाँति चलने-फिरने उठने-बैठने की स्वतंत्रता प्राप्त थी। वर्तमान युग की भाँति वे परतन्त्र नहीं थीं। उनमें कलह-विवाद का अभाव था तथा सन्तोष की मात्रा अधिक थी। पुरुषों से कहीं अधिक सम्मान प्राप्त था। उस समय कुमार तथा कुमारियों को अपना जीवन-साथी चुनने का अधिकार प्राप्त था। माता-पिता अपने पुत्र तथा कन्याओं के विवाह में अपनी टाँग नहीं अड़ाते थे। सास-ससुर अपनी पुत्र-वधुओं को अपनी दासी बनाने की चेष्टा नहीं करते थे। और न वे उनके [illegible] घूमने-फिरने पर किसी प्रकार का नियन्त्रण रखते थे। पुत्र अलग रहे या माता-पिता के साथ, उसे सब प्रकार की स्वतंत्रता थी। अपनी स्त्रियों के साथ प्रेम-पूर्ण व्यवहार करने पर उन्हें माता-पिता के कोप का भाजन नहीं होना पड़ता था। इसी कारण उस समय के पुत्र पितृ-मातृ-भक्त होते थे और वधुएँ भी सास को अपनी माता के समान समझती थीं और अपने पति के पूज्य माता-पिता समझकर उनका आदर-सत्कार करती थीं। सच पूछा जाय तो आरम्भ से ही अलग रहने की प्रथा है। उस समय भी सबके अलग-अलग महल होते थे। वधुओं को चौबीसों घंटे के अन्दर नहीं घुटना पड़ता था।

विवाह के पहले ही कुमार तथा कुमारी आपस में प्रेमाभिनय कर लेते थे। [illegible] तक लिखते थे। नल-दमयन्ती [illegible] इस बात की पुष्टि होती है। [illegible] ने स्वयम्बर से पहले नल [illegible] लिखकर बुलाया था। शकुन्तला [illegible] अपने पिता कण्व की तथा दुष्यन्त [illegible] अपनी माता की आज्ञा के आपस [illegible] विवाह कर लिया था। किसी [illegible] बुरा नहीं कहा। किन्तु यदि आज-[illegible] ऐसा करे तो वह समाज में मुँह [illegible] योग्य नहीं समझा जाता और [illegible] अदालत तक पहुँच जाता है। [illegible] के वास्ते कन्या को उसके माता-पिता [illegible] देते हैं और उधर वर के माता-पिता [illegible] अपनी पुत्रवधू नहीं बनाना चाहते। [illegible] वर-वधू को कोटिशः प्रयत्न कर अलग [illegible] अपने पुत्र का तो दूसरा विवाह [illegible] किन्तु बेचारी कन्या का जीवन [illegible] हो जाता है। फिर यदि वह घृणित [illegible] न व्यतीत करना चाहे तो आत्महत्या [illegible] अतिरिक्त दूसरा मार्ग नहीं है।

आजकल माता-पिता अपने गौरव [illegible] गये हैं। वे माता-पिता न बनकर [illegible] के सुख का काँटा बने हुए हैं। वे [illegible] को बिना पैसे का दास बनाना [illegible] हैं। सदा उसकी उन्नति में बाधा [illegible] हैं। पुत्र वधुओं को तो फूटी आँख [illegible] देख सकते हैं। वे पुत्र तथा पुत्र-वधुओं [illegible] साथ रहने देने के पक्षपाती नहीं हैं। [illegible] को उसके पति पर आश्रित न समझ [illegible] अपनी ही दासी समझते हैं। यही कारण [illegible] आजकल प्रत्येक घर में कलह का ही [illegible] है। शान्ति का निवास नहीं के ही [illegible] है।

पहले पति-पत्नी एक दूसरे से प्रेम [illegible] थे। पति के साथ स्त्री छाया की भाँति [illegible] थी। घर में तो पति-पत्नी साथ, वन में तो साथ। पति-पत्नी साथ यात्रा करते थे। यह नहीं होता था कि पति तो विदेश में अलग रहे और पत्नी सास-ससुर की सेवा करने के लिए उनके पास रहे। पत्नी अपने मन से ही स्वयं को पति की दासी समझती थी इसके विपरीत पति तथा अन्य लोग उसे दासी न समझ देवी ही कहकर उसका सम्मान करते थे। जब पत्नी साथ रहती थी तब पति के सुख-दुख में उसकी सहायता तथा सेवा भी करती थी। आजकल यदि विदेश में पति बीमार पड़ जाय तो पत्नी को पत्र-द्वारा सूचना मिलती है फिर पत्नी रोने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकती। बहुत से घरों में तो रोने की भी स्वतन्त्रता नहीं है। सास स्वयं तो पुत्र की सेवा करेगी परन्तु वधू को केवल रात्रि में ही उसके पति का मुख देखने देगी। यही कारण है कि इस बीसवीं शताब्दी में वधुएँ सास-ससुर से शत्रुता करने लगी हैं और सास को अपनी माता मानने से ईकार करती हैं। अवसर पाते ही सास-ससुर का अपमान करने से नहीं चूकतीं। अत्यधिक अत्याचार करने और पति से अलग रखने के ही कारण पातिव्रत धर्म का नाश हुआ है क्योंकि प्रत्येक बात की सीमा होती है और सभी में एक-सी सहन-शक्ति नहीं होती। आजकल भी संसार से सतियों का एकदम ही लोप नहीं हो गया है किन्तु हाँ सौ में निन्यानबे सती न होकर सौ में कुछ ही सती स्त्री देखने को मिलेंगी। बाल-विवाह भी स्त्रियों के पातिव्रत के मार्ग में कंटक है। आजकल इस संसार में एक वर्ष तक की विधवा कन्याएँ मौजूद हैं। सोचने की बात है कि इतनी छोटी बच्चियाँ क्या पातिव्रत धर्म का पालन कर सकती हैं? बहुत-सी कन्याओं को यह भी नहीं मालूम हो पाता कि पति क्या बला है और विवाह किस चिड़िया का नाम है किन्तु संसार ने उनको विधवाओं की भाँति आचरण करने को विवश कर दिया है। पहिले इस प्रकार बाल-विवाह नहीं होते थे। माता-पिता का कर्त्तव्य केवल पुत्र अथवा पुत्री को सब प्रकार से योग्य बना देना था उनके पथ में काँटे बोना नहीं था। उस समय दिन में पति का मुख देखने में पाप नहीं समझा जाता था। स्त्री-जाति सुखी थी। उसे नित्य-प्रति यमराज के घर जाने को ईश्वर से प्रार्थना नहीं करनी पड़ती थी।

जब इसी भारत-भूमि पर स्त्रियाँ इतनी सुखी थीं तो वह कौन-सा सुवर्ण काल था? वह था वैदिक काल। वैदिक-काल में बड़ी-बड़ी पंडिता स्त्रियाँ हो चुकी हैं जिनकी बुद्धि का लोहा पुरुषों ने भी माना है। वैदिककाल में स्त्रियों को अध्यापिका अथवा कवियित्री आदि के भी पद दिये जाते थे। वे चित्रकला तथा अस्त्र-शस्त्र चलाने में भी प्रवीण होती थीं; वे घोड़े पर सवारी भी कर सकती थीं। वे निर्भय होकर विचरती थीं। कोई पुरुष उनको पाप की दृष्टि से नहीं देखता था। रुपये पैसे की भाँति वे घरेलू सन्दूक में बन्द करके नहीं रखी जाती थीं। इस कारण पतिव्रताओं के स्थान पर कुलटा स्त्रियाँ नहीं के बराबर ही थीं। यदि उन पर कुछ अत्याचार होता था तो केवल पति की ओर से ही जिसको वे सहन करने में समर्थ होती थीं।

सबेरे उठते ही...

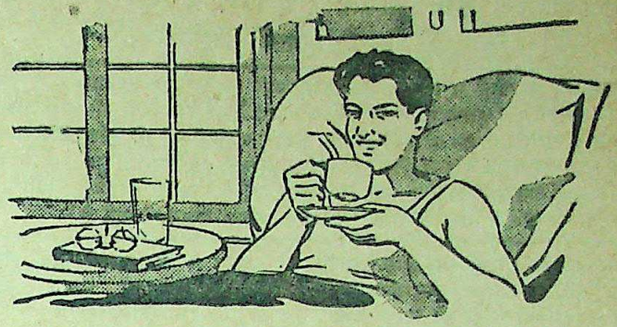

एक प्याला चाय पीजिये। यों तो घंटों तक खुमारी आपका पीछा नहीं छोड़ती पर इसे पीते ही खुमारी का नामो निशान मिट जाता है। आप प्रसन्न-बदन व प्रसन्न-मन दीखने लगते हैं। दिन का काम सहज मालूम पड़ने लगता है। सिर्फ इतना ही नहीं, गर्म चाय हलके विरेचक का भी काम करती है और आपका शरीर व मन स्फूर्तियुक्त हो उठता है। चाय पीकर आप खुद इसका अनुभव कर सकते हैं। दुनियाँ भर में करोड़ों आदमी सबेरे की चाय का आनन्द लेते हैं। परन्तु अच्छी चाय बनाने का सही व सरल तरीका न मालूम होने से बहुतों को इसका पूरा आनन्द नहीं मिलता। नीचे लिखे सरल तरीके से चाय बनाकर आप उसका पूरा आनन्द उठाइये।

अच्छी चाय बनाने का तरीका

१ केतली में चाय न सिझाइये। सिझाने का बर्तन अलग रखिये।

२ सूखी चाय डालते वक्त वह बर्तन सूखा व गर्म रहे : इससे चाय का रंग व स्वाद ठीक बनता है।

३ हर प्याले के लिये एक चम्मच, और बर्तन के लिये एक चम्मच ताजी, सूखी चाय की पत्ती उसमें डालिये।

४ उसी वक्त का उबला हुआ पानी डालिये—पहले का उबला, कम या ज्यादा उबला पानी मत डालिये। बुदबुदा उठने पर ही पानी उबलता है, उसके पहले नहीं।

५ चाय को पाँच मिनट से कम न सिझाइये।

६ प्यालों में चाय डालकर तब उसमें दूध व चीनी मिलाइये।

चाय

हर वक्त चाय का वक्त

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 246

भारतीय चायों में सर्वश्रेष्ठ

लिपटन की

जाकूजा चाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाँवों का एक दौरा

युक्त प्रांत के पूर्वी जिलों में किसानों में बेचैनी
बस्ती जिले में घूम घूमकर १५ दिन में मैंने क्या देखा ?

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी, सेवाग्राम (वर्धा)

संयुक्त-प्रान्त के गाँवों में किसानों की दशा बड़ी दमनीय और दुर्दशाग्रस्त है। अन्न के साथ ही कपड़े के अभाव से तो वह बेतरह त्रस्त है। पिछले दिनों श्री प्रभुदयाल जी ने प्रान्त के पूर्वी जिलों का दौरा किया था, उन्होंने ग्रामीणों की जो दुर्दशा देखी उसका आँखों देखा वर्णन इस लेख में किया है। कांग्रेस सरकार की स्थापना हुए एक महीना से अधिक हो गया है। इसलिए क्या हम आशा करें कि प्रान्तीय सरकार किसानों के जीवन को संकट से उबारने के लिए तत्काल तैयार हो रही है ?

जेल से मुक्त होने के बाद मैं मध्यप्रान्त, बम्बई, पूना, दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास आदि नगरों में गया, और वहाँ की स्थिति देखने को मिली। इसी बीच एक ऐसा कार्य भी आ गया कि मुझे संयुक्त-प्रान्त के पूर्वी जिलों में घूमने का मौक़ा मिला। सबसे पहले मैं बस्ती जिले में गया। लोग कहते हैं संयुक्त-प्रान्त के पूर्वी जिले हर मामलों में पिछड़े हुए हैं। शिक्षा नहीं, रोजगार नहीं, संगठन नहीं और रहने की तमीज नहीं। वह आज की राजनीति में किसी प्रकार की दिलचस्पी नहीं रखते। पुरानी लकीरों पर चलते हैं। बाढ़ और महामारी के रोग से हरसाल तबाह रहते हैं। बात कुछ अंशों में ठीक भी है। अभी इनमें जागृति नहीं आई है। पुलिस और जमींदारों के अत्याचारों से यहाँ की जनता पीस डाली गई है। जमींदारों का डंडा हर वक्त किसानों के सिर पर तना रहता है। यहाँ की पूरी आबादी किसानों की है। किसान काफी ग़रीब हैं। पैदावार का अधिक भाग जमींदार और पुलिस नाजायज तरीकों से वसूल करती रहती है। यहाँ के किसानों को कभी चैन से बैठकर खेती नहीं करने दिया जाता। अभी इन लोगों के बीच में ऐसा कोई शक्तिशाली नेता भी पैदा नहीं हुआ है कि जो इन्हें संगठित करे और अपने हकों पर, मर मिटने के लिए तैयार करे।

मैंने अपना मुख्य स्थान उदयपुर योगिया गाँव को बनाया। यह स्थान नौगढ़ स्टेशन से ६ मील की दूरी पर है। यहाँ किसी प्रकार का ऐसा संगठन नहीं है जहाँ से किसानों को कुछ सीखने को मिले। इसी गाँव से मैंने लगभग ५० गाँवों का दौरा किया। यहाँ के जीवन से वाकिफ होना चाहता था। बस्ती जिले का यह उत्तरी भाग है। बाँसी तहसील है। मैं और तफसील की बातों में नहीं जाना चाहता हूँ। केवल कुछ समस्याओं की चर्चा करूँगा। मैंने किसानों से सीधे बातें की उनकी तकलीफों की करुण कहानी सुनी। उनकी दीनहीन दशा देखकर आँखों में पानी भर आया।

उदयपुर गाँव के पास ही गोहा, महुआ, लखनापार, बड़हरा, कुअरापार, भिटिया, योगिया, ककरही, टिकरिया और देवरा आदि गाँवों में गया। हजारों किसानों से मिला। सैकड़ों माओं से बातें की। जमींदारों का जुल्म तो है ही। एक दिन मैं बाँसी से आ रहा था। उदयपुर गाँव के एक जमींदार अपने आदमी को इसलिए मार पीट रहा था कि वह उनकी बेगार करने नहीं गया था। मैंने उस भाई से कहा कि थाने पर जाकर रिपोर्ट कर आ। उसने सिसकते हुए कहा—मेरे घर में खाने को नहीं है मैं थाने में कहाँ से दावा करने जाऊँ ? रिपोर्ट लिखाने में भी मुंशी जी को रुपया देना पड़ेगा। खेत कच्चा है। पटवारी खेत पर नाम नहीं लिखता। दावा करते ही जमींदार खेत भी ले लेगा। ऐसी घटनायें केवल एक दो नहीं सैकड़ों हैं। जमींदार बेगार बुरी तरह से लेते हैं। बेगार न करने पर गाँव का रास्ता बन्द कर देते हैं। कुएं का पानी नहीं भरने देते। गाँव में मिट्टी लेकर दीवाल नहीं उठाने देते। तरह-तरह की यातनायें आज भी दी जाती हैं।

बहुत से किसानों ने हाथ जोड़कर कहा—क्या बाबू जी कांग्रेस सरकार जमींदारों की ज़मीनें छीनकर किसानों में बाँटेगी ? जमींदारी प्रथा का कब नाश होगा ? जिस दिन जमींदारी प्रथा नाश होगी; उस दिन हम लोगों का नया जन्म होगा। तब हम समझेंगे कि कांग्रेस सरकार जरूर कुछ करना चाहती है। कांग्रेस सरकार को इसीलिए हम लोगों ने वोट दिया है।

उदयपुर, महुआ, लखनापार आदि गाँवों में मैंने अपनी आँखों देखा यहाँ की बहिनें नंगी हैं। पहिनने को कपड़ा नहीं मिलता। पर्याप्त मिट्टी का तेल नहीं। हजारों आदमी बिना कपड़े के गुजारा कर रहे हैं। जिस गाँव में जाता था यही दृश्य देखने को मिला। बहनें हाथ जोड़कर कहती थीं—आप जाकर कांग्रेस सरकार से कहें कि हमारे लिए सबसे पहले कपड़े का प्रबन्ध करें। बच्चे नंगे घूम रहे हैं।

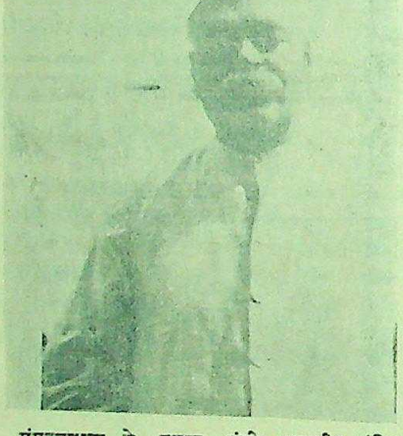

संयुक्तप्रान्त के प्रधान मंत्री माननीय पंडित गोविन्द वल्लभ पन्त।

किसी के बदन पर साबित वस्त्र नहीं है। कपड़े बिना बड़ी मुसीबत से काट रहे हैं। मैंने सैकड़ों गाँवों का भ्रमण किया, सब जगह यही मुसीबत है। जहाँ जाइये वहीं यही चर्चा सुनने को मिलेगी। मैंने पूछा—क्या आप सबके यहाँ कोटा नहीं है ? उन लोगों ने कहा कि कोटा है। यदि कोटे का सब कपड़ा हम लोगों को मिल जाये तो काफी हो जायेगा। लेकिन व्यापारी पंचों से मिलकर सब कपड़ा नैपाल राज में जाकर बेच डालते हैं। सरकारी अधिकारियों से शिकायत करने पर कुछ नतीजा नहीं निकलता। उल्टे सरकारी अधिकारी हमी लोगों को फटकारने लगते हैं।

मैंने कहा—आप सब इस बारे में प्रान्त के प्रधान मंत्री पंडित गोविन्द वल्लभ पंत को लिखें। वे ध्यान से आप लोगों की बातें सुनेंगे। कुछ गाँवों के लोगों ने पंत जी को लिखा भी है। जिले के प्रधान अफ़सर को भी लिखा है।

लेकिन मैं माननीय पंत जी का ध्यान इस ओर खास करके आकर्षित करना चाहता हूँ। बाँसी तहसील की हजारों जनता बुरी तरह से तबाह है। वह माननीय पंत जी से यह नहीं चाहती कि अधिक कपड़ा या तेल लाकर दें। जितनी चीजें वहाँ आती हैं उसका समुचित बटवारे का प्रबन्ध किया जावे।

बस्ती जिले के अधिकारियों की लीला अपरम्पार है। बाँसी तहसील के अधिकारियों की जरा एक सूझ देखिये। बाँसी की जनता और बाँसी क़स्बे के आसपास की जनता, बाँसी में कपड़ा रहते हुए २० मील पैदल चलकर शोहरतगढ़ कपड़े के कोटे पर कपड़ा लेने जाती हैं। जाने आने में तीन-तीन दिन बर्बाद हो जाते हैं। कई नदी-नाले पार करने पड़ते हैं। किसान भूखों शोहरतगढ़ जाता है; कई दिन ठहरता है। फिर भी कपड़ा नहीं पाता। व्यापारी तरह-तरह के बहाने बताने लगते हैं। बाँसी में कपड़े की दूकान रहते हुए शोहरतगढ़ में कपड़े का कोटा क्यों रक्खा गया है ? सरकारी विभाग का कुछ पता नहीं लगता है।

बाँसी तहसील की लाखों जनता कांग्रेस सरकार से सर्वप्रथम यह चाहती है कि कपड़े आदि की दुकानें करीब के बाज़ार में रक्खी जावें। दो मील की दूरी से अधिक कोटे की दूकानें न हों। आस-पास के बाज़ार में दूकानें खोली जायें। हजारों गाँवों का कोटा शोहरतगढ़ होने से जनता बड़ी तकलीफ उठा रही है। इस प्रथा का जितनी जल्दी अंत हो सके, उतना ही अच्छा है।

शोहरतगढ़ नैपाल राज्य की सीमा पर होने से तौलिहवा बाजार में बहुत से कपड़े की गाँठें बेच दी जाती हैं। वहाँ के बड़े-बड़े व्यापारी और राजे-महाराजों ने सरकारी अफ़सरों से मिलकर ऐसा प्रबन्ध कर लिया है; जिससे सारे तहसील का कोटा वहीं चला गया है। तीस-तीस मील के गाँवों का कोटा शोहरतगढ़ रक्खा गया है। यह जान-बूझकर प्रजा को तकलीफ देने के लिए किया गया है। इसका मुख्य कारण क्या है; माननीय पंत जी को जाँच करनी चाहिए। और सरकारी अफ़सरों को फौरन सूचित करना चाहिए कि गाँवों का कोटा जितने नजदीक के बाज़ार में सम्भव हो सके करना चाहिए। शोहरतगढ़ के इस खुले अनाचार को शीघ्र से शीघ्र बन्द करा देना चाहिए।

बस्ती जिले के अधिकारियों को इस पर ध्यान देना चाहिए। कांग्रेसजनों का मुख्य कर्त्तव्य है कि वह इसका घोर विरोध करे। इस भ्रष्ट-अनाचार को जितनी जल्दी बन्द कराया जा सके करा देना चाहिए। पाँच-पाँच या दस-दस गाँवों के भीतर कपड़े की दूकानें खोलने की इजाजत सरकार से होनी चाहिए। यहाँ की जनता अपने लिए राशन कार्ड चाहती है जिससे पंच, पटवारी और सरकारी अमला बेजा फायदा न उठा सकें। कांग्रेस सरकार गाँवों में आसानी से राशन कार्ड बटा सकती है। राशन कार्ड से किसानों को बहुत-सी सुविधायें मिल सकती हैं। ठीक तरह से कपड़ा

इस लेख के लेखक श्री प्रभुदयाल

न मिलने में हजारों लोग यहाँ मर रहे हैं।

मुर्दों को कफन का कपड़ा नहीं मिल सरकारी सोसाइटीवाले भी सीधे ही जनता को मिट्टी का तेल और अनाज देते। हर जगह घूसखोरी का बाजार है। जब तक सरकार कड़े अनुशासन काम नहीं लेगी तब तक कुछ भी आशा नहीं की जा सकती।

कांग्रेस राज्य आ जाने से काफी उत्साह पैदा हो गया है। को कांग्रेस राज्य से बड़ी बड़ी आशायें हो गई हैं। किसान जमींदारी का अन्त चाहते ही हैं लेकिन सबसे पहले कपड़ा, मिट्टी का तेल और अन्य खाद्य चाहते हैं। मैं जिस गाँव में ठहरा था गाँव में चीनी बेचने का राशन है। तीन साल से वहाँ चीनी और नमक का सरकारी लैसंस दिया गया है। यह आश्चर्य है कि जिसके नाम लैसंस वह एक दिन भी गाँव में नमक और बेचने नहीं आया। न ये चीजें कभी बिकीं। सब चीजें चोर बाजार में जाती हैं। बस्ती जिले के अधिकारियों ने कभी जाँच नहीं की। यहाँ की चीजें कहाँ बेची जाती हैं ? गाँववालों को में भी कभी चीनी का दर्शन नहीं बस्ती जिले में घूमने पर एक से एक चीजें सुनने को मिलीं। मिट्टी का तेल भी ।।) बोतल और ।।।) बोतल बेचा जाता है। जनता बेबस होकर दे देती है।

कांग्रेस राज्य आने से कहीं-कहीं चैतन्यता आ रही है। बस्ती जिले अधिकारियों का परम कर्त्तव्य है कि की मुसीबत जुदा जनता को अपना सहयोग देकर उनके कष्ट को दूर करें।

सेवाग्राम (वर्धा)
५ मई, १९४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाधीनता-संग्राम के पन्ने

बीकानेर राज्य-साहित्य-सम्मेलन ने [illegible] दतिया पुरस्कार १०१) का पुरस्कार हिन्दी-साहित्य के किसी भी काल [illegible] पर ऐतिहासिक पद्धति से [illegible] की समालोचना की पुस्तक पर दिया [illegible] श्री जगन्नाथ पुरस्कार १०१) [illegible] काव्यों की पुस्तक पर दिया [illegible] कविताएँ आधुनिक विषयों पर [illegible] कविताओं की शैली भी आधुनिक हिन्दी-[illegible] तथा उनकी शैली भी आधुनिक हिन्दी-[illegible] की रची हो। कम से कम २० कविताएं [illegible] होनी चाहिए। लेखक कम से कम [illegible] वर्ष से बीकानेरी हो।

श्री नाहटा पुरस्कार १०१) का राजस्थान में प्रचलित उन कहानियों के संग्रह [illegible] दिया जायेगा जिन्हें बुड्ढी स्त्रियां [illegible] छोटे बच्चों को सुनाया करती [illegible] या जो "गद्य-पद्य का अकसर मिश्रण [illegible] सोमलबाई की कहानी ऐसी [illegible] हो। कम से कम २५ [illegible] का नमूना हो। कम से कम २५ [illegible] हों तथा लेखक राजपूताना में [illegible] हो।

पुरस्कार प्रतियोगिता के लिए पुस्तकें [illegible] तक प्रधान मन्त्री के पास पहुँच [illegible] और उनकी तीन-तीन प्रतियाँ हों। [illegible] भी हो सकती हैं।

—आचार्य ओङ्कारनाथ मन्त्री

* * *

[illegible] में गत ६ मई को राष्ट्र-नेता [illegible] भाई देसाई की मृत्यु के कारण [illegible] पूर्ण हड़ताल रही। शाम को [illegible] डाक्टर बी० बी० राय [illegible] की अध्यक्षता में एक शोक-सभा हुई। [illegible] विद्यार्थी महेशदत्त, श्री नत्थालाल [illegible] रामनरोस पाठक, श्री रामसिंह [illegible] बशीर ने अपनी श्रद्धाञ्जलियाँ [illegible] आत्मा को अर्पित कीं।

[illegible] कांग्रेस के प्रतिनिधियों का [illegible] ता० १२ को हो गया है। ता० १ [illegible] मई दिवस डा० पी० जी० की [illegible] मनाया गया। सर्वश्री जमीरुद्दीन [illegible] डाक्टर हेमचन्द्र पांडे, मीर कुदरत-[illegible] गंगूलाल बैद्य वासुदेवराव सूबेदार [illegible] भाई ने मजदूरों के संगठन पर [illegible] दिया।

[illegible] में ता० १९ मई से १० दिन के [illegible] अनुष्ठान हो रहा है। इसमें [illegible] ४०० रोगियों के नेत्रों का मुफ्त [illegible] होगा। नेत्रसुधार-संघ के मंत्री श्री [illegible] से मिलने पर ज्ञात हुआ कि [illegible] के लिए क़रीब १,०००) की सहा-[illegible] सरकार से भी प्राप्त हुई है। इस यज्ञ [illegible] होगा। माता से नष्ट हुई आँख का [illegible] न होगा। आँखे अच्छी होने पर [illegible] रोगी को एक-एक चश्मा भी मुफ्त [illegible] जायेगा। यज्ञ की अर्थ-समिति नगर से [illegible] और इस कार्य के लिए एकत्र कर [illegible] भोजन-समिति तथा प्रचार-समिति [illegible] हुई है।

—लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

* * *

[illegible] मध्यभारत प्रादेशिक देशी राज्य [illegible] के सभापति श्री गोपीकृष्ण [illegible] इन दिनों बुन्देलखण्ड की [illegible] का दौरा कर रहे हैं। इस [illegible] में उन्होंने अनेक आम [illegible] दिये, प्रजामंडलों का [illegible] किया और कार्यकर्त्ताओं [illegible] में वर्तमान राजनैतिक [illegible] को समझाते हुए उनका मार्ग-[illegible] किया। श्री विजयवर्गीय जी [illegible] राज्य और छतरपुर रियासत के [illegible] कौंसों से मुलाकात की। मंत्रियों [illegible] को नागरिक अधिकार देने का [illegible] दिया है।

भारतवर्ष में बड़े-बड़े परिवर्तन हो रहे हैं और होनेवाले हैं, उन परिवर्तनों को महेनजर रखते हुए दतिया में भी सुधार होंगे ये शब्द हैं दतिया राज्य के प्रधान मंत्री मि० ऐनुद्दीन के जो कि उन्होंने श्री विजयवर्गीय की मुलाकात में कहे।

—संवाददाता

* * *

देहरादून में २ अप्रैल को मदननेगी का मेला था। शाम को श्री परिपूर्णानन्द पैन्यूली के प्रयत्न से लगभग १०० व्यक्तियों ने झण्डागान किया। पैन्यूली जी ने लोगों को मेले का अर्थ बताया तथा २५ जुलाई को सुमन दिवस पर टिहरी में होनेवाले मेले में अधिक से अधिक संख्या में लोगों को निमन्त्रित किया। "मदननेगी" में झण्डागान के समय लगभग ३,००० व्यक्तियों की भीड़ थी।

टिहरी राज्य के इतिहास में राष्ट्रीय कार्य के रूप में यह पहली सार्वजनिक सभा थी। टिहरी भारत की सबसे अधिक प्रतिक्रियावादी रियासतों में है, जिसके विरुद्ध गढ़वाल के सैनिकनी स्वर्गीय श्री देवसुमन ने लड़ते-लड़ते ८५ दिन के आमरण अनशन के पश्चात् २५जुलाई ४४ को प्राण त्यागे थे।

—संवाददाता

* * *

रीवाँ राज्य (उमौरा) श्री हनुमान पुस्तकालय की ओर से हिन्दी मिडिल स्कूल में श्री दुलारेलाल भार्गव के सभापतित्व में राज्याभिषेकोत्सव मनाने तथा बांधवेश और बान्धव गद्दी के प्रति शुभकामना और सद्भावना प्रकट करने के लिए एक सभा हुई। श्रीमती सावित्री दुलारेलाल भार्गव तथा श्री जगदीशप्रसाद करवरिया जनता और विद्यार्थियों ने अपूर्व उत्साह के साथ भाग लिया। श्री कृष्णकुमार द्विवेदी और लाललखनप्रतापसिंह "उरगेश" की कविता पाठ के साथ सभा का कार्य्यारम्भ हुआ। श्री शिवलोचनप्रसाद तथा द्वारकाप्रसाद ने बान्धवेश तथा बान्धव गद्दी के प्रति शुभ कामनायें प्रकट कीं। श्रीमती सावित्री दुलारेलाल भार्गव का भाषण हुआ।

सभा विसर्जन के बाद श्री भार्गव जी तथा श्री सावित्री जी ने श्री हनुमान पुस्तकालय का अवलोकन किया और सद्भावना प्रकट की।

—संवाददाता

* * *

गंगानगर (बीकानेर राज्य) नवयुवक सार्वजनिक पुस्तकालय द्वारा आयोजित शिक्षा-सप्ताह के अन्तर्गत ४ मई की रात्रि को 'शिक्षा-सम्मेलन' बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। बीकानेर राज्य शिक्षा-विभाग के डाइरेक्टर श्री जुगलसिंह जी खीची सभापति थे। ग्राम-शिक्षा, स्त्री-शिक्षा और प्रौढ़-शिक्षा की समस्याओं पर विचार किया गया।

—संवाददाता

* * *

सेवदह (पटना) श्रीयुत भूलाभाई देसाई की मृत्यु का समाचार पाकर साजेन्द्र-साहित्यमहाविद्यालय शोक निमग्न होगया। एक सभा महाविद्यालय के अध्यापकों कर्मचारियों; शिक्षार्थियों और छात्रों की सम्मिलित सभा बाबू धनुषधारी चौधरी जी के सभापतित्व में हुई। जिसमें देसाई की मृत्यु पर शोक प्रगट किया गया। श्री देसाई के जीवन पर बाबू गिरवरधारी-सिंह और श्री 'अनीश' जी ने प्रकाश डाला। श्री 'अनीश' ने अपने भाषण के सिलसिले में कहा कि भूलाभाई हमें सदा के लिए भूल गये किन्तु हम क्यों भूलें? उनकी कृतियाँ हमें नहीं भुला सकतीं।

—सिद्धेश्वर चौधरी विद्यार्थी

यदि मेष के सूर्य और मेष के चंद्र में २ पत्ती नीम (कौंपल) और एक खड़ी मसूर के दाने को एक टुकड़ा पान के साथ बिना दाँत से चबाये पानी के घूंट से निगल लिया जाये तो साँप उससे सदैव दूर रहता है। —ओंकारनाथ निगम

Estd. 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S. १०) H.M.B.S. १५) H.M.D.S. २५)। पुस्तक—अ० पारिवारिक १) बायोकेमिक १) १००० रेडलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्सनरियाँ १॥) आर्गेनन १), फार्माकोपिया १॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायगी। डा० ख० माफ—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≈) ड्राम। आउन्स ॥) चरेलु बक्स ३६ का ७) सुगर ऑफ मीली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.)

खाद्य का राशन

और वह आपकी कैसे मदद करता है।

★ प्रत्येक व्यक्तिगत नागरिक के लिये विश्वस्त और बराबर खाद्य—राशनिंग का यही तो लक्ष्य है।

★ वितरण का केवल राशनिंग ही उचित तरीका है—जितना गरीब को मिलता है उतना धनिक को भी—जितना कमीवाले क्षेत्रों में उतना फालतूवाले क्षेत्रों में भी। राशनिंग के द्वारा ही मूल्यों में स्थिरता आती है और अनुचित संचय एवं अनुचित लाभ का निराकरण हो सकता है।

५५६ नगरों में फैले हुये ५ करोड़ ३० लाख से भी अधिक व्यक्तियों में अभी तक राशन की व्यवस्था है। खाद्य कम है इसलिये दूसरे नगरों और क्षेत्रों में भी तेजी से राशन-व्यवस्था को विस्तृत किया जा रहा है। अन्न के राशन की मात्रा कम कर दी गई है।

★ याद रखिये खाद्य की रक्षा करना देश-भाइयों के प्राण बचाने के लिये आवश्यक है।

★ खाद्य के राशन में सहयोग देना आपका कर्त्तव्य है ईमानदारी से राशन के नियमों का पालन कीजिये—इसप्रकार अपना कर्त्तव्य पालन कीजिये और प्राण बचाइये।

उचित मूल्य पर (R) सबके लिये भोजन

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

AC 68

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व का सर्वश्रेष्ठ अभिनेता रावर्ट डोनाट

जीवन की विभिन्न मनोरंजक घटनाओं का लेखा-जोखा

लेखक, श्री उमेश जोशी

मिस्टर रावर्ट डोनाट विश्व के विख्यात कलाकार हैं। आजकल आप हालीवुड में अपनी "कला" का प्रदर्शन कर रहे हैं। आपका वेतन इस वक्त बीस हजार प्रति हफ्ता है। सादगी से रहना आपको अधिक प्रिय है। गम्भीर तबियत और उदार-प्रकृति के हैं। फिल्म-लाइन में मिस्टर डोनाट ने किस तरह प्रवेश किया, इसकी स्वयं उन्होंने एक दिलचस्प कहानी लिखी है। इस कहानी की मुख्य नायिका के साथ आपने प्रणय-सम्बन्ध भी स्थापित कर लिया। किस तरह प्रणय-सम्बन्ध हुआ? इन्हीं सब बातों पर कहानी में प्रकाश डाला गया है। कहानी का शीर्षक है "माई लव ओफ स्टोरी" कहानी इस प्रकार है—

मुझे कहानी-लिखने का शौक प्रारम्भ हुआ। कब से हुआ। इसकी ठीक-सी तारीख नहीं बतला सकता। मैं कहानी लिखता और पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ भेजा करता। लेकिन कहानियां वापस आ जाया करतीं। उनमें से एक भी नहीं छपतीं। मैं बड़ा हैरान था। क्या किया जाय, यही समस्या मेरे सामने थी। समस्या का सुलझाना टेढ़ी खीर हो रहा था। तब भी मैं निराश नहीं हुआ। बराबर प्रयत्न करता ही गया। क्योंकि मुझे "कहानी-लेखक" बनना था। बहुत सोच-विचार करने के बाद मेरे दिमाग में एक बात आई। यदि किसी प्रसिद्ध कहानीकार की कोई रचना चुरा ली जाय, और तरकीब से चुराई जाय कि किसी को मालूम भी न हो, और अपना काम भी बन जाये, तब तो पौबारह है। इससे अच्छा और सस्ता सौदा क्या हो सकता है? प्रश्न उठा कि किस कहानीकार की रचना उड़ाई जाये, जिससे कि वह फौरन ही छप जाये। सम्पादक का दिल कहानी को पढ़कर फड़क उठे और मुझे सफलता प्राप्त हो।

इंगलैंड के सुप्रसिद्ध कहानीकार और उपन्यासकार मिस्टर एच० जी० वेल्स की कहानी के ऊपर "नई पौलिश" करना तय रहा। क्योंकि उन्होंने कई कहानियां अजकल-दाम्पत्य जीवन की बड़े मार्के की लिखी हैं। उन्हीं में से एक मैंने भी हथिया ली और उसके ऊपर "नया रंग" चढ़ाकर मैंने "टाइम्स आफ लन्दन" के साप्ताहिक संस्करण में छपने के लिए भेजी। कहानी लिखकर मुझे इतनी खुशी हो रही थी कि मानो मुझे विश्व की अपार दौलत का "मालिक" बना दिया गया हो। मैंने अपने दोस्तों में यह उड़ा दिया था कि अब की बार "टाइम्स आफ लन्दन" के साप्ताहिक में मेरी कहानी देखना। सम्पादक ने मेरी कहानी को अपने पत्र में प्रमुख-स्थान देने का वचन दिया है। मेरे पास उनका "स्वीकृत-पत्र" आ गया है।

एक सप्ताह का काटना मेरे लिए मुश्किल हो रहा था—एक-एक दिन पहाड़-सा हो रहा था। आखिर सातवां रोज आया, जिस दिन कि वह पत्र आनेवाला था। मैंने अपने दो-चार जिगरी-दोस्तों को साथ ले जाकर पोस्ट-आफिस पर सुबह छः बजे से ही धरना दे दिया। उस वक्त पोस्ट-आफिस का "डाक डिस्ट्रीब्यूशन सेक्शन" बन्द था। डाक के बंटने का समय दस बजे था। मैं चार घंटे पेश्तर ही पहुँच गया था। इससे ज्यादा बे सब्री की और क्या मिसाल हो सकती है? ये चार घंटे भी मैंने बड़ी व्याकुलता के साथ काटे।

आखिर पोस्टमैन बाहर निकला। डाक का एक बड़ा पुलिन्दा लिए हुए। मैंने बड़ी उत्सुकता के साथ कहा—"लाइये मेरा अखबार"

"कैसा अखबार बाबू जी?"

"रावर्ट डोनाट के नाम का।"

"मेरे पास आपके नाम का कोई अखबार नहीं है, हाँ आपकी एक चिट्ठी जरूर है, यह लीजिये।"

चिट्ठी चुपचाप लेकर मैं वहाँ से उलटे पैर लौट पड़ा, अपना-सा मुँह लिए हुए। रास्ते में दोस्तों ने पूछा "कहिये क्या हुआ? आपका अखबार तो आया नहीं? आप तो बड़ी प्रतीक्षा कर रहे थे। आपके पास सम्पादक का "स्वीकृति पत्र" भी तो आ गया था न! फिर क्या कारण हुआ?" मैं इन प्रश्नों का क्या जवाब देता? मैंने प्रश्नों से बचने के लिए कहा—"डिसपैचिंग-क्लर्क अखबार भेजने में गलती कर गया

हालीउड का एक अभिनेता और अभिनेत्री हो, शायद कल आ जायगा।" दोस्तों ने फिर कहना शुरू किया—"आखिर इस पत्र को तो खोलिये, इसमें क्या लिखा है?" मैं पत्र को उनके सामने खोलने के लिए इसलिए राजी हो गया, कि मुझे भी नहीं मालूम था कि यह पत्र "टाइम्स आफ लन्दन" से आया हुआ है? नहीं तो मैं उनके सामने कोई बहाना बना देता। पत्र को अपने दोस्तों में से एक को देता हुआ लापरवाही से बोला—"आप ही पढ़कर सुना दीजिये।" वह पढ़ने पर राजी हो गया—उसने सुनाया—

प्रिय डोनाट,

आपकी कहानी प्राप्त हुई। कहानी को पढ़कर आपकी अनूठी प्रतिभा पर तरस आया। क्या इसी प्रतिभा के बल पर आप यह उम्मेद करते हैं कि आपकी कहानी "टाइम्स आफ लन्दन" जैसे अखबार में छप जाये? क्या आप इसी प्रतिभा के बल पर इँगलैंड का मशहूर "कहानी-लेखक" बनना चाहते हैं? क्या आपने यह भी सुना है कि चुराये हुए धन से कोई "बड़ा-आदमी" हुआ है? तो फिर आपने चोरी किये हुए प्लाट के बल पर ख्याति की दुनिया में बढ़ने की क्योंकर कोशिश की? क्या आपके सामने और कोई रास्ता नहीं था? यदि आपको "कहानी-लेखक" ही बनना है, तो फिर क्यों नहीं लन्दन की सड़कों पर घूमते, जहाँ पर आपको अनेक कहानियाँ चलती-फिरती नजर आयेंगी। उन्हीं चलती-फिरती कहानियों में से एक आप भी "मन पसन्द" चुन लीजियेगा। चुनने में कहीं गलती न कर जाना, क्योंकि ऐसी भी कहानियाँ आपको मिलेंगी, जो कि बाहर से बहुत चमकदार, दिल लुभानेवाली, जादू-सा असर डालनेवाली, किन्तु आप इनके फेर में न पड़ जाना, बाहरी चटक-मटक आँखों पर जादू डाल सकती है, लेकिन वह जीवन की "अमूल्य-निधि" नहीं हो सकती। समझे मिस्टर डोनाट! लेकिन हाँ, दूसरे की चुनी हुई कहानी पर अपनी पालिश न चढ़ाया कीजिये। इससे आत्म-गौरव में ठेस लगने की सम्भावना है। कोई भी मनुष्य इस दुनिया में दूसरे की जूंठन खाकर अपने को विकास-मार्ग पर नहीं प्रयाण कर सका है।

—हेलिअन

फार टाइम्स आफ लन्दन

खत को सुनकर मेरे ऊपर गाज गिर गई। रही-सही प्रतिष्ठा भी दोस्तों के सामने गिर गई। मुझे आशा न थी कि मेरी चोरी पकड़ ली जायेगी। मैं समझता था कि सम्पादक की आँखों में दिन दहाड़े धूल झोंकने में मैं सफल हूँगा, लेकिन ऐसा न हुआ। इस पत्र ने मेरे आत्म-गौरव के

इस लेख के लेखक श्री उमेश जोशी

शीशाल की एक-एक ईंट गिरा दी। सुनहरे स्वप्न के रंग-महल से मैं निराश जरूर गया किन्तु मन में यह धारणा पैदा हुई कि मुझे भी अब "कहानी-लेखक" बनकर ही दिखाना है। मेरी इस "प्रतिज्ञा" को सुनकर मेरे दोस्तों को करने की एक अच्छी सामग्री लेकिन उन्हें क्या पता था कि मेरे कितने जोर का तूफान उठ रहा है।

* * *

(सर्वाधिकार लेखक-द्वारा सुरक्षित)

अपनी बात

मनुष्यों के चरित्र में जो दुर्बलताएँ होती हैं उन्हें दूर करके वह किस प्रकार जीवन को उन्नत बना सकता है, यही बात इस पुस्तक में ओजपूर्ण भाषा में निजी अनुभव के आधार पर, लेखक ने लिखी है। यह पुस्तक प्रत्येक युवक को पढ़नी चाहिए। मूल्य ।।) डाक ।)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयां—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

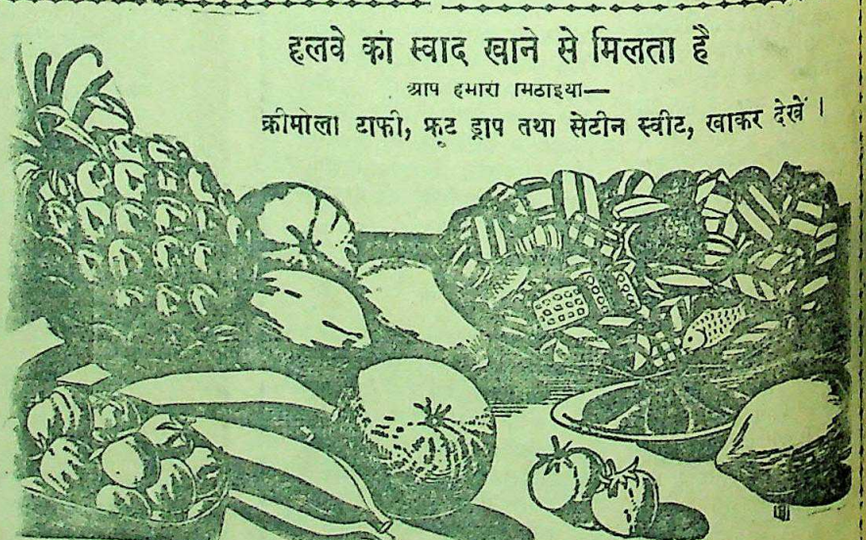

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

ईंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...सखा' का हस्तलिखित अंक

...आज जगह-जगह ऐसे कई उगते हुए ...लेखिका और सम्पादक हैं जो अपनी ...खास हस्तलिखित पत्रिकाएँ निकाल-... प्रकाशित करते हैं। ऐसी पत्रिकाओं ...चित्र भी होते हैं। इन उगते हुए ...-सेवकों को उत्तेजन देना बहुत ...है। महाराष्ट्र और गुजरात में ...लिए खास कुमार-साहित्य-मंडल ...हुए हैं। हिन्दी में भी इसका आरंभ ...और उगते लेखक भाई-बहनों का ...करने के लिए अ० भा० कुमार-हिन्दी ...-मण्डल की नींव डाली गई है। इस ...के प्रबन्ध-मन्त्री श्री प्रवीरेन्द्रकुमार ...जुलाई मास के 'बाल-सखा' को 'खास ...पत्रिकाओं का अङ्क' बनाकर ...करेंगे। इसमें जगह-जगह की ...पत्रिकाओं का परिचय और ...से चुनी हुई उत्तमोत्तम कृतियाँ ...। साथ में ऐसी पत्रिकाओं के चुने हुए ...चित्र आदि भी रहेंगे। इस अङ्क के उप-...के लिए हर एक हस्तलिखित-सम्पादक ...अङ्क रजिस्ट्री से, नीचे के पत्ते पर, ...१९४६ तक भेजने की कृपा करें। ...हो जाने पर 'बाल-सखा' अपने डाक-...से रजिस्ट्री से अङ्क वापस भेजेगा। ...में से जो कृतियाँ पसन्द होंगी उनकी ...सम्पादकों को और उनके जरिये ...को पहले दी जायेगी। सर्वश्रेष्ठ कृतियाँ पुरस्कृत होंगी। आशा है, इस नये कार्य कास्वागत होगा।

—सम्पादक, 'बाल-सखा'

सामग्री भेजने का पता—वीरेन्द्रकुमार, सं० 'खास अङ्क' डाहनू (डिस्ट्रिक्ट थाना), बम्बई प्रान्त

* * *

अजमेर बार एसोसियेशन की एक सभा ६ मई को कुँवर चाँदकरण शारदा के सभापतित्व में हुई और श्री भूलाभाई देसाई के स्वर्गवास पर वेदना प्रकट की गई। एक प्रस्ताव पास करके स्वर्गीय आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई और कुटुम्बियों के साथ सहानुभूति। बार एसोसियेशन तथा राजपूताना प्रान्तीय हिन्दू सभा के दफ्तर श्री भूलाभाई देसाई के स्वर्गवास का दुख प्रकट करने के लिए बन्द रहे। शहर में भी हड़ताल रही।

राजपूताना मध्यभारत भारतीय देशी राज्य प्रजा सम्मेलन की एक बैठक गत १९ अप्रैल को शारदा-भवन में कुँवर चाँदकरण शारदा के सभापतित्व में हुई। सभा में निम्न प्रस्ताव पास हुए।

यह सभा जैसलमेर के अधिकारियों की नीति की निन्दा करती है कि श्री सागरमल गोपा ऐसे राजनैतिक बन्दी वर्षों जेल में बिना मुक़दमा चलाये हुए बन्द रखे गये। सभा की राय में श्री सागरमल गोपा की मृत्यु के जिम्मेदारी जैसलमेर के अधिकारियों पर है, इसलिए इस सम्बन्ध में निष्पक्ष जाँच की जानी चाहिए। सभा श्री सागरमल गोपा के कुटुम्बियों के साथ सहानुभूति प्रकट करती है। सभा महाराजा जैसलमेर से अपील करती है कि वह इस सम्बन्ध में जाँच-पड़ताल करके दोषियों को दण्ड दें।

—संवाददाता

* * *

प्रयाग हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अधिवेशन के अवसर पर ५००) का 'श्री नेमीचन्द पुरस्कार' वीररसपूर्ण बाल साहित्य विषय पर हिन्दी की किसी मौलिक रचना के सम्मानार्थ दिया जायगा। पुरस्कार के लिए केवल जीवित लेखकों और लेखिकाओं की रचनाओं पर विचार किया जायगा। प्रत्येक रचना पुरस्कार के लिए केवल एक बार भेजी जा सकेगी। पुरस्कार के लिए विचारार्थ पुस्तकें स्वीकार जिये जाने की अन्तिम तिथि ३१ वैशाख (सौर) संवत् २००३ है। केवल उन्हीं रचनाओं पर विचार किया जायगा जो उक्त तिथि से पन्द्रह महीने से अधिक पहले की प्रकाशित न होंगी। अतएव समस्त लेखकों और लेखिकाओं से निवेदन है कि वे अपनी प्रकाशित रचना की सात प्रतियाँ ३१ वैशाख (सौर) संवत् २००३ के भीतर उक्त पुरस्कार के लिए विचारार्थ सम्मेलन कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

इसी अधिवेशन के अवसर पर ५००) का 'गोपाल पुरस्कार' हिन्दी की किसी खोजपूर्ण मौलिक अद्वैत सिद्धान्त के आधार पर लिखी हुई आचार शास्त्र-रचना के सम्मानार्थ दिया जायगा। पुस्तक की सात प्रतियाँ ३१ वैशाख (सौर) संवत् २००३ तक आनी चाहिए।

—प्रधान मंत्री

ब्रिटेन भारत को क्यों नहीं छोड़ेगा ?

वर्ष की बात ही निराली है। क्योंकि सम्पूर्ण पूर्व में ब्रिटिश साम्राज्य की वह कुंजी है। यदि वह राजनीतिक रूप से चला गया तो इससे सम्पूर्ण साम्राज्य का नुक़सान होगा। जिस प्रकार आज संयुक्तराज्य हो गया है उसी प्रकार स्वतंत्र रहकर भारतवर्ष बहुत बड़ी शक्ति बन जायगा।

अगर ब्रिटेन जैसा शासक देश सचमुच मतलब का काम करना चाहता है तो उसको आर्थिक और व्यवसाय सम्बन्धी ऐसे परिवर्तन लाने होंगे जो आज की नई आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। करोड़ों अँगरेज़ों को जो साम्राज्य हर प्रकार से आर्थिक और मानसिक स्थिरता दे रही है इसके फलस्वरूप उपनिवेशों की हानि हो रही है जिसका शिकार भारतवर्ष को भी होना पड़ेगा। इससे बड़ी समस्यायें उपस्थित होनेवाली हैं। इसके लिए सम्पूर्ण ब्रिटिश राष्ट्रीय आर्थिक ढाँचे को बदलने की आवश्यकता पड़ेगी।

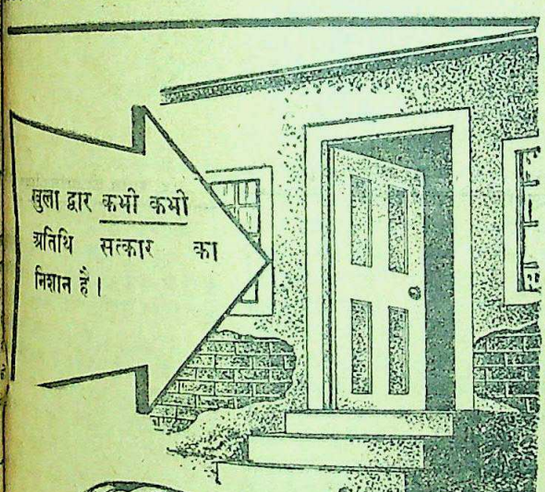
खुला द्वार कभी कभी अतिथि सत्कार का निशान है।

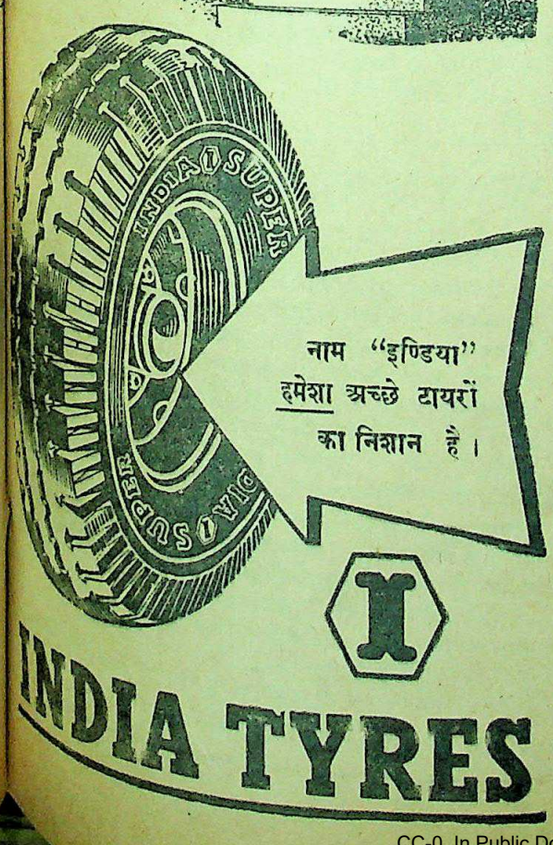

नाम "इण्डिया" हमेशा अच्छे टायरों का निशान है।

INDIA TYRES

अध्यक्ष मथुरामोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती,
शक्ति औषधालय, ढाका के स्वनामधन्य संस्थापक

देशबन्धु सी० आर० दास की सम्मति—यह कारबार सुव्यवस्थित ढंग से चलाया जा रहा है। संचालकगण किसी प्रकार की भी त्रुटि नहीं होने देते।

सर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी की सम्मति—सोना, चाँदी, लोहा तथा अबरक आदि मूल्यवान् धातुओं के रस बहुत ही अनुभवी अधिकारियों की देख-रेख में तैयार किये जाते हैं।

सन् १९०१ ई० से जिन-जिन महान् व्यक्तियों ने अध्यक्ष मथुरा बाबू के शक्ति औषधालय को देखा है इसकी अद्भुत उपकारिता तथा सुव्यवस्था की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। संचालकों के साधुतापूर्ण व्यवहार तथा शास्त्रविधि का अनुशरण करने के कारण यह संस्था अपने क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट हो गई है और भारत, बर्मा तथा लङ्का के एक एक घर में शक्ति का नाम फैल गया है।

अध्यक्ष मथुरा बाबू का शक्ति औषधालय, ढाका

स्वत्वाधिकारी—अध्यक्ष मथुरा मोहन, लालमोहन, श्री फ़णीन्द्रमोहन मुखोपाध्याय, चक्रवर्ती।

शाखायें—समस्त भारत, ब्रह्मा और लङ्का में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मौलाना गांधी'

(पेज ६ का शेष)

जान-बूझकर हिन्दी-भाषा में से उर्दू के आमफ़हम शब्द निकाल डालने की वृत्ति साफ नज़र आती है।

हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा की ओर से एक साहित्य-समिति क़ायम की गई है। वह हिन्दुस्तानी का कुछ साहित्य तैयार कर रही है। उसके छपने पर जनता जान सकेगी कि गांधी जी किस तरह की हिन्दुस्तानी का प्रचार करना चाहते हैं। जब तक हमारी सभा का हिन्दुस्तानी-अदब (साहित्य) प्रकाशित न हो जाय, तब तक हिन्दी या उर्दू के हिमायती हमारे काम के बारे में ग़ैरज़िम्मेवारी से टीका-टिप्पणी न करें, तो बड़ी कृपा हो।

अब रहा दो लिपियों का सवाल। गांधी जी चाहते हैं कि हिन्दुस्तानी-भाषा के प्रचार में नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों की साथ-साथ परीक्षा ली जाय। इसी प्रश्न को लेकर सबसे ज़्यादा विरोध किया जा रहा है। दोनों लिपियाँ सीखने की बात अव्यावहारिक और अनुचित कही जाती है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन मानता है कि नागरी-लिपि ही राष्ट्र-लिपि हो सकती है। उर्दू के हिमायती उर्दू या फारसी लिखावट पर ज़ोर देते हैं। गांधी जी दोनों लिखावटों का प्रचार चाहते हैं। इसके कारण नीचे लिखे हैं:—

(१) हिन्दुस्तानी का अर्थ फ़िलहाल हिन्दी + उर्दू समझना चाहिए। अगर देश के ज़्यादा से ज़्यादा लोग हिन्दी और उर्दू दोनों सीख लें, तो हिन्दी और उर्दू के बीच की खाई काफ़ी हद तक भर जायगी और आसान मिली-जुली हिन्दुस्तानी-शैली का विकास हो सकेगा। वर्त्तमान दशा में हिन्दी और उर्दू सीखने के लिए नागरी और उर्दू लिपियाँ एक साथ सीखना ज़रूरी है। बिना लिपि जाने किसी भाषा या शैली का अच्छा ज्ञान होना नामुमकिन है।

(२) राष्ट्रभाषा के लिए सिर्फ़ नागरी या सिर्फ़ उर्दू-लिपि को स्वीकार करना आज की हालत में असम्भव है। नागरी सिर्फ़ हिन्दुओं की लिपि नहीं है और न उर्दू-लिपि मुसलमानों की ही। इसलिए अन्तर्प्रान्तीय पत्र-व्यवहार के लिए हमें या तो रोमन-लिपि अपनानी होगी या नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों को सीखना होगा। अगर मुझे अपने सभी मित्रों से हिन्दुस्तानी में ही ख़ती-किताबत करनी है और अँगरेज़ी का प्रयोग बिलकुल बन्द करना है, तो मेरे लिए नागरी और उर्दू दोनों लिपियाँ सीख लेना आवश्यक है। अगर मैं एक ही लिपि जानता हूँ, तो मेरा राष्ट्रभाषा का ज्ञान अधूरा समझा जायगा और कहीं न कहीं अँगरेज़ी की शरण लेनी ही पड़ेगी।

(३) नागरी और उर्दू लिपियों के पीछे, हमारे दुर्भाग्य से, कुछ साम्प्रदायिक भावना पैदा हो गई है। हम रोमन-लिपि के सीखने के लिए फ़ौरन तैयार हो जाते हैं। लेकिन एक हिन्दू समझने लगा है कि उर्दू सीखने से वह मुसलमानी तहज़ीब को स्वीकार करता है। मुसलमान ख़याल करने लगे हैं कि नागरी-लिपि हिन्दू-संस्कृति का एक मुख्य अंग है। इस तरह की भावना बिलकुल ग़ैरमुनासिब है। दोनों लिपियाँ सीखने से यह भावना काफ़ी मात्रा में नष्ट हो सकेगी।

(४) दोनों लिपियाँ सीखना बहुत कठिन नहीं है। आज हमारे बच्चे रोमन-लिपि सीखते हैं, जिसकी चार शक्लें हैं—दो छोटी और दो बड़ी (capital)। अगर रोमन-लिपि का बोझ आगे न रहे, तो राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी को दोनों लिखावटों में सीखना मुश्किल नहीं होगा। जब तक अँगरेज़ी हमारे सिर से नहीं हटती, तब तक हिन्दुस्तानी की लिपियों के लिए थोड़ा बोझ राष्ट्र के हित की दृष्टि से सहन करना हमारा फ़र्ज़ हो जाता है। अगर दोनों लिपियाँ नहीं अपनाई जायँगी, तो अँगरेज़ी और रोमन-लिपि इस देश से कभी न हट सकेंगी।

(५) दोनों लिपियाँ सीखना अव्यावहारिक नहीं है। स्वीज़रलैण्ड जैसे छोटे-से देश में तीन भाषाएँ आमतौर पर प्रचलित हैं। कनाडा में अँगरेज़ी और फ़्रेंच दो राष्ट्र भाषाएँ हैं। दक्षिण अफ़्रीका में अँगरेज़ी और डच क़ौमी ज़बानें हैं। फिर हिन्दुस्तान में तो भाषा एक रहेगी; सिर्फ़ दो लिपियों का ही प्रश्न है।

लोग पूछते हैं कि गांधी जी देश के ऊपर दो लिपियों का बोझ ज़बर्दस्ती क्यों लादना चाहते हैं? नागरी और उर्दू-लिपियों का ज्ञान 'अनिवार्य' क्यों माना जाय? इस तरह के प्रश्न सुनकर आश्चर्य और दुःख होता है। गांधी जी जब अँगरेज़ी साम्राज्य से भी अहिंसक ढंग से लड़ते हैं, तो वे अपने ही देशवासियों पर राष्ट्रभाषा प्रचार के लिए क्यों ज़ोर-ज़बर्दस्ती करेंगे? गांधी जी तो एक निर्भीक सुधारक हैं, राष्ट्र-निर्माता हैं। वे जिस बात को हितकर समझते हैं, उसका प्रचार करते हैं, उस पर अपनी शक्ति लगाकर ज़ोर देते हैं। उनके खादी, ग्रामोद्योग, हरिजन, नई तालीम और हिन्दुस्तानी के आन्दोलन इसी तरह के कार्य हैं। गांधी जी क़रीब २५ वर्षों से इन रचनात्मक कामों को व्यापक बनाने का उपदेश दे रहे हैं; लेकिन न सब लोग आज खादी पहनते हैं, और न हरिजन-स्पर्श ही करते हैं। क्या गांधी जी ने कभी किसी पर ज़बर्दस्ती की? उनका आग्रह केवल प्रेम का तकाज़ा है। आज वे चाहते हैं कि लोग नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों से वाक़िफ़ हों। जो लोग सीखना चाहें, उनके लिए हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा, वर्धा आवश्यक प्रबन्ध करती है। जो न सीखना चाहें, उन्हें कौन मजबूर कर सकता है? यह तो जनता की ख़ुशी के ऊपर निर्भर है। गांधी जी का हिन्दुस्तानी-आन्दोलन सरकारी फ़र्मान नहीं है। वे तो केवल जनता से आग्रह और अपील करते हैं। गांधी जी अकसर कहते हैं—"अगर मेरी हिन्दुस्तानी परीक्षाओं में एक व्यक्ति ही ख़ुशी से बैठे, तो मुझे सन्तोष होगा। अगर एक भी न बैठे, तो भी मैं अपनी बात तो दुहराता ही जाऊँगा।"

हाँ, अगर कल कांग्रेस सरकारें अपने-अपने प्रान्त में दोनों लिपियों का ज्ञान अनिवार्य कर दें, तो जनता हिन्दुस्तानी को लाज़मी करने के ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ उठा सकती है। गांधी जी तो हमें दो लिपियों को जानने की आवश्यकता बतलाते हैं। अगर आप लोग उनकी बात को स्वीकार कर लें, तो फिर सरकार भी उस ओर क़दम बढ़ा सकती है। अगर जनता गांधीजी की बात न माने, तो सरकार भी ज़ोर-ज़बर्दस्ती नहीं कर सकती है।

इसलिए 'मौलाना' गांधी के हिन्दुस्तानी-आन्दोलन से किसी को घबराने की ज़रूरत नहीं है। दोनों लिपियाँ सीखना या न सीखना हरएक की इच्छा और ख़ुशी पर निर्भर है। जो एक ही लिपि जानता है, वह अराष्ट्रीय है या अर्ध-राष्ट्रीय, यह हम नहीं कहना चाहते। हम तो इतना ही कह सकते हैं कि गांधी जी के आदर्श के अनुसार एक लिपि का ही ज्ञान राष्ट्रभाषा की आधी जानकारी समझी जायगी। जो राष्ट्र की पूरी सेवा करना चाहता है और अँगरेज़ी का बिलकुल सहारा नहीं लेना चाहता, उसके लिए नागरी और उर्दू लिपियों की जानकारी आवश्यक है। हम यह न समझें कि गांधी जी सिर्फ़ हिन्दी जाननेवालों को उर्दू सिखा देना चाहते हैं। वे यह भी चाहते हैं कि उर्दू जाननेवाले नागरी सीख लें। उर्दूवाले हिन्दी कम सीखें या न सीखें, यह दूसरी बात है। लेकिन गांधी जी का ज़ोर हिन्दी और उर्दू दोनों पर है, एक पर नहीं।

पंडित द्वारकाप्रसाद मिश्र

(पेज १२ का शेष)

लिखी थी जो तत्काल कई विश्वविद्यालयों की एफ० ए० परीक्षा में पढ़ाई जाने लगी थी। आज भी हिन्दी-हिन्दुस्तानी के प्रश्न को मिश्र जी भाषा का प्रश्न नहीं लिपि का प्रश्न मानते हैं। जो हिन्दी राष्ट्र-भाषा होगी वह केवल हिन्दी और उर्दू के शब्दों के मिश्रण से बनेगी, ऐसी उनकी मान्यता नहीं। उसमें मराठी, बँगला, तैलगू प्रभृति अन्य भाषाओं के शब्द भी आवेंगे। जैसी हिन्दी आज लिखी जा रही है वैसी ही राष्ट्रभाषा होगी यह मिश्र जी नहीं मानते। पर सांस्कृतिक दृष्टि से यदि राष्ट्रभाषा को किसी पुरानी भाषा की ओर झुकना होगा तो आपके अनुसार वह संस्कृत ही होगी—फारसी या अरबी नहीं।

व्यक्तित्व की अतिमानवी परिव्याप्ति का परिचय देते-देते मैं मिश्र जी के जीवन के व्यवस्थित अनुक्रम को खो बैठा। १९३९ में विश्वयुद्ध छिड़ने के बाद भारत की स्वाधीनता के प्रश्न को लेकर प्रत्येक प्रान्त के कांग्रेसी मंत्रिमंडल ने इस्तीफा दिया। १९४० के व्यक्तिगत सत्याग्रह-आन्दोलन में भाग लेने पर मिश्रजी को जेल जाना पड़ा। अगस्त १९४२ का आन्दोलन आरम्भ होते ही आप मध्य-प्रान्त के प्रधान मंत्री स्वनामधन्य पं० रविशंकर शुक्ल के साथ पकड़ लिये गये। सरकार ने मिश्रजी को खतरनाक समझकर मद्रास भेज दिया। सन् १९२६ से ही आप निरन्तर महाकोशल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी रहते आये हैं और तभी से लगातार अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य भी। मिश्र जी चोटी पर के बोलनेवाले हैं। उनके व्याख्यान में निराकार आक्रोश नहीं होता—भावना की रहस्यममता और अव्यवस्था, अयथार्थता नहीं होती। उसमें होता है एक जलता हुआ—आग देकर उठता हुआ अखंड राष्ट्रीय विश्वास। विषय प्रतिपादन, बलिदान की अक्षयता और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के प्रति असंदिग्ध जीवित विद्रोह आपके भाषण की प्रमुख विशेषताएँ हैं जो बड़ी से बड़ी संख्या में श्रोताओं को आपके नाम की ओर खींचती हैं। मध्यप्रान्त में ऐसी मौलिक सूझ और अगाध गहन अध्ययन का व्याख्याता दूसरा नहीं यह निर्विवाद कहा जा सकता है। बड़ा से बड़ा विरोधी वहाँ नत हो जाता है।

(शेष अगले अंक में)

सन् ४२ की क्रांति के प्रति

(पेज ८ का शेष)

के लिए अपने साथियों के नाम ... के सम्बन्ध में आदेश भेजे थे। ... के सैनिकों के लिए ये आदेश-... "स्वतन्त्रता के सैनिकों के नाम ... तरह से बाइबिल की भाँति है। ... को मजबूर करने के लिए कि वह ... उनके साथियों को अपने-अपने ... जेलों में वापस भेज दे, श्री ... ३३ दिनों तक भूख-हड़ताल की। ... हड़ताल के फलस्वरूप वे अपने-अपने ... में जा सके जहाँ से वे फरार हुए थे।

इन्होंने बाहर आते ही ... चिनगारी को और भी सुलगा दिया। ... संगठन की शक्ति, अदम्य साहस ... आकर्षण-शक्ति से इन्होंने आन्दोलन ... बड़ी बहादुरी से नेतृत्व किया।

इनकी मुक्ति के दस मास तथा ... वास के ३० मास उच्च कोटि की ... के कार्यों से भरे पड़े हैं। इन गुणों ... प्रकाश को, स्वतन्त्रता के लिए ... भारत की विद्रोही शक्ति का अवतार ... दिया है।

जेल से निकलते ही सारे देश ... जयप्रकाश का स्वागत किया। ... मानसिक शक्ति महान् है, संगठन ... की प्रतिभा किसी से कम नहीं है ... उनका व्यक्तित्व ऐसा है कि ... उनकी भक्ति करने के लिए ... सकता है। भारतीय जनता आप ... नेतृत्व की झाँकी देख रही है ... युग से राममोहनराय से लेकर ... लाल नेहरू तक पहुँचा है। राष्ट्र ... शहीदों के मन्दिर में एक ऊँचा ... आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।

धातुपौष्टिक
कामजोत वटी
स्वप्नदोष, वीर्यविकार, शीघ्र... सुस्ती व कमजोरी दूर करके ... व वीर्य बढ़ाती है। डि० रु० ...
कामजोत तिला
इसके उपयोग से इन्द्री की नसें ... यव मजबूत होकर उत्थानशक्ति ... स्तम्भन-शक्ति बढ़ती है। फी शी० ...
मदनमंजरी फार्मेसी - जामनगर
इलाहाबाद—मदन स्टोर्स ४७ जान्सेन...

साइन्स का एक नवीन अद्भुत आविष्कार
जिसने संसार को आश्चर्य में डाल दिया

तैल मस्ताना (रजिस्टर्ड) कोई साधारण तैल नहीं है बल्कि एक साइन्टिफिक आश्चर्यजनक आविष्कार है जिसने भारतवर्ष ही नहीं वरन् दुनिया के तमाम धुरन्धर साइन्स-विशेषज्ञों को हैरत में डाल दिया है। इस तैल से गत २५ वर्षों से हजारों हताश असाध्य रोगी नवजीवन प्राप्त कर चुके हैं। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि ऐसा गुणकारी तैल आप दूसरी जगह न पायेंगे। इसके लगाने से बाल्यावस्था की कुटेव से रगों की कमजोरी, सुस्ती कुटेव से पैदा हुई खराबियाँ, नसों का गर्भाधान के योग्य न रहना, नपुंसकता, शीघ्रपतन आदि तमाम खराबियाँ एक हफ़्ते के अन्दर दूर हो जाती हैं। कद व बल को बढ़ाकर रग व पुट्ठों में बिजली की भाँति ताक़त भर जाती है। यह हर मौसिम में लाभ करता है। छाले आदि का भय नहीं। आप आज ही एक शीशी मँगाकर सुख लूटिये। क़ीमत फ़ी शीशी ३=) तीन रुपया दो आना, दो शीशी का ५॥=), डाक-खर्च माफ़। मनीआर्डर =) यदि आपको धातुक्षीणता, शीघ्र पतन, स्वप्नदोष, प्रमेह आदि की शिकायत है तो धनी माननीय सहस्रों महान पुरुषों-द्वारा प्रशंसित जगत्-प्रसिद्ध २५ वर्ष का आजमूदा वीर्य-संजीवन स्तम्भ इस्तेमाल कीजिए। मूल्य फी डिब्बा ३।-), डाक-खर्च माफ़, मनीआर्डर =)।

मँगाने का पता—रूपविलास कम्पनी, नं० ४८१, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मशहूर आयुर्वेदिक डाक्टरों द्वारा

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

आज से ही शुरू कीजिए, सर्वत्र मिलता है।

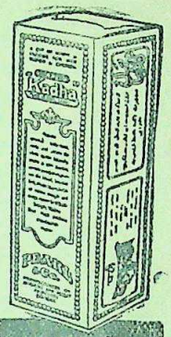

जीभिन्द्रिय, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली वतुओं और आंखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग में आग सी जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, जड़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढा बालक वृद्ध, सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक निर्दोष है कि क्षेमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निर्भयतापूर्वक सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके गुण, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

पर्ल कम्पनी
आ. यो. ष धी
का. २, इला. बा
बरब ई २७

वी॰ पी॰ प्रतिनिधि-दोसर एण्ड का०, बिरहना रोड, कानपूर।

रक्षे
बड़ बड़ का ग्राइप वाटर
पसंद करते हैं
यह सब दर्दों को दूर करता है और
बच्चों को तंदुरुस्त व खुश रखता है।

WOODWARD'S
GRIPE WATER
keeps baby well

"मुस्कराता हुआ बालक" ही असली बुड बड़ ग्राइप वाटर की पहचान है, इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए इसको ही लिया करें।

W. WOODWARD LTD., LONDON.

बालसखा का नया वार्षिकांक

छप रहा है। पाठक धैर्य रक्खें।

ग्राहकों के अनुरोध से हमने इस वर्ष भी बालसखा का वार्षिकांक निकालने का निश्चय किया है। इसमें बहुत से चित्र, कविताएँ, कहानियाँ, बढ़िया लेख और उपयुक्त सामग्री रहेगी। पृष्ठ-संख्या ३०० से ऊपर। यह अङ्क बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होगा। यह मासिक बालसखा के १२ अंकों से पृथक है। मूल्य ३), मासिक बालसखा के ग्राहकों के लिए रियायती मूल्य २॥)

रियायती मूल्य के लिए अपना ग्राहक-नंबर अवश्य लिखिए।

मैनेजर, बालसखा, इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

☆

हजारों ही भूखे नहीं-

किन्तु लाखों भूखे हैं

भयंकर खाद्याभाव देश के सामने है जिससे कमी वाले क्षेत्रों में लाखों के प्राण संकट में पड़ रहे हैं। इन अभागे मनुष्यों के खाने की व्यवस्था वास्तव में एक महान् कार्य है। इस विशाल संकट में हममें से प्रत्येक का निश्चित दायित्व है। इन चार तरीकों द्वारा बहुत थोड़े प्रयत्न से ही आप इसकी पूर्ति कर सकते हैं:—

१. आतिथ्य सत्कार को कम कर दीजिये। यदि आपको अतिथि बुलाने ही हैं तो सादा भोजन बनवाइये। वे कारण को समझेंगे और उसको पसंद करेंगे।

२. थोड़ा खाना परोस कर अपने घर में ही बचत कीजिये। इस बात का स्मरण रखें कि रसोईघर में व्यर्थ क्षति न हो।

३. शादियों और धार्मिक एवं सामाजिक उत्सवों में कठोर मितव्ययिता का व्यवहार कीजिये।

४. अपने स्वाद पर निर्भर रहते हुये अधिक तरकारियाँ, फल, मछली, मांस, अंडे और दूध से बनी चीजें खाकर अपने भोजन को पौष्टिक बनाइये। अपनी चावल व गेहूँ की खुराक कम कर दीजिये।

इन तरीकों से हम उन पीड़ितों की कठिनाई और भूख में रक्षा कर सकते हैं जो सिर्फ इस प्रकार की व्यावहारिक मदद और आश्रय के लिये इस आपत्ति-काल में हमारी ओर देखते हैं।

खाद्य बचाना प्राण बचाने के बराबर है।

खाद्य - विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

AC 58

☆

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय
आरोग्य
१८६६
नीलगिरि तैल
प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

विचित्र जीव-जन्तु—सचित्र पुस्तक है। इसमें दुनिया के एक से एक अजीब जीव-धारियों का सरल भाषा में वर्णन है। पढ़ने से जानकारी बढ़ती और मनोरञ्जन होता है। बालकों के लिए यह बहुत ही उपयोगी है। मूल्य केवल ।=) छः आने।

वनवास—इस पुस्तक के लेखक श्री राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी० हैं। इसमें श्री रामचन्द्र के वन-गमन और भारतवर्ष के पावन स्थल चित्रकूट पर्वत की निसर्ग-शोभा का बड़ा ही मनोरम वर्णन है। मूल्य ।।।=) चौदह आने।

राजदुलारी—इस सामाजिक उपन्यास में कलकत्ते के व्यापारिक क्षेत्र से सम्बन्ध रखनेवाले उत्तर भारतीय हिन्दुओं की सामाजिक अवस्था पर प्रकाश डाला गया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

नि की दशा—इस उपन्यास की नायिका के चरित्र में जिस माधुर्य्य और गाम्भीर्य का समावेश किया गया है ... के महिला-समाज में हि... को गौरवपूर्ण पद दिलाने के ... उपयुक्त है। मूल्य २) दो ...

लीलादेवी—शिक्षापूर्ण तथा ... घटनाओं से भरा हुआ ... हासिक उपन्यास। मूल्य ... रुपये ग्यारह आने।

मैनजर बुकडिपो
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, ...

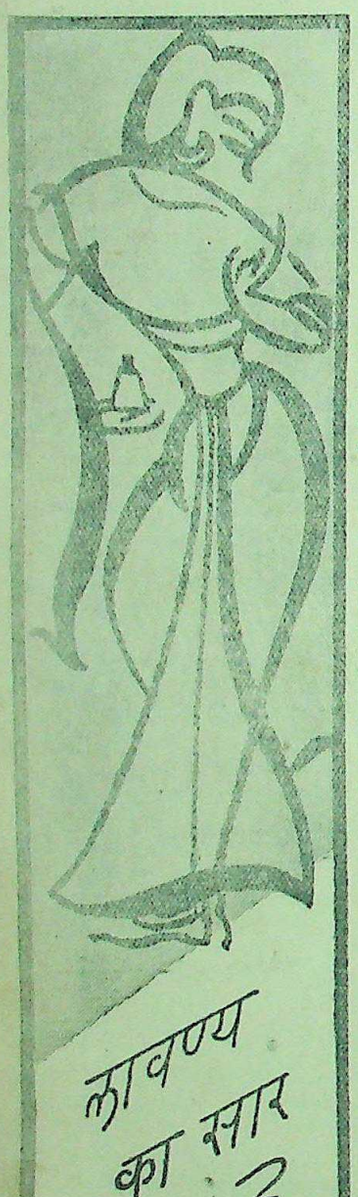
लावण्य का सार
टाटा का
ओडी कोलोन
दी टाटा आयल मिल्स कं० लि०

स्वयं-सहायता चाहिये

खाद्य के विषय में आप क्या कर सकते हैं।

भारत ही अकेला ऐसा देश नहीं है जिसे दुर्भिक्ष का ख़तरा है। सामान्यत: समस्त विश्व ... अन्नाभाव हैं। ब्रिटन में भी घटी हुई राशन है। एशिया और यूरोप के युद्ध-पीड़ित प्रदेशों में लाखों भूखे हैं और अन्नाभाव में मर रहे हैं। संयुक्त राष्ट्रों को उन सबको भोजन देना है। बाहरी सहायता हमको मिलेगी किन्तु अनिवार्यत: वह सीमित होगी। ... यथासंभव अपनी सहायता आप करना है।

और यहीं आपको अपने कर्तव्य का पालन करना है

खाद्य की कमी को बराबर बांट लीजिये—अनेक प्राण इसी प्रकार बच सकते हैं।

खाद्य वितरण का एकमात्र समुचित तरीका राशनिंग है। राशनिंग के नियमों का पालन कीजिये। धोका देने का प्रयत्न मत कीजिये—यह किसी के प्राणोंका मूल्य हो सकता है।

राशन की कमियों को सहर्ष स्वीकार कीजिये—ये अनिवार्य हैं और जैसे ही परिस्थिति में सुधार होगा वे परिवर्तित की जायेंगी।

अनुचित संग्रह मत कीजिये। यह एक अपराध और समाज-विरोधी कृत्य है। इससे प्राणों के क्षय का खतरा है।

यदि आप अनाज-विक्रेता हैं तो मुनाफ़ाखोरी मत कीजिये—याद रखिये उसके दंड कठोर हैं और उनका कड़ा ... किया जायगा।

व्यर्थ खर्च मत कीजिये, अधिक आतिथ्य सत्कार भी ... करिये—थोडी किस्मों का भोजन पकवाइये। खाद्य ... खाद्य उपजाने के बराबर है।

यदि आप समर्थ हैं तो अधिक तरकारी, फल, मांस, ... अंडे व दूध से उत्पन्न चीजें खाइये। गेहूं और चावल ... गरीबों के लिये छोड़ दीजिये, जिन्हें उनकी ... आवश्यकता है।

यदि आपके पास भूमि और पानी हो तो तरकारियां ... अनाज उत्पन्न कीजिये—थोडासा प्रयत्न भी सहायता है।

भय से मुक्त रहिये—यदि आपने विश्वास खो दिया ... चोर बाजारवालों को मौका मिल जायेगा

खाद्य संकट को पराजित कीजिए

एक साथ कार्य कीजिये — एक साथ हिस्सा बंटाइये

खाद्य-वि... ग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारि...

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा द्वारा ... लिमिटेड ... मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद ...
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

मूल्य ७॥)
विशेषांक =)

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक — Sunday, 26th May, 1946

रविवार २६ मई, १९४६

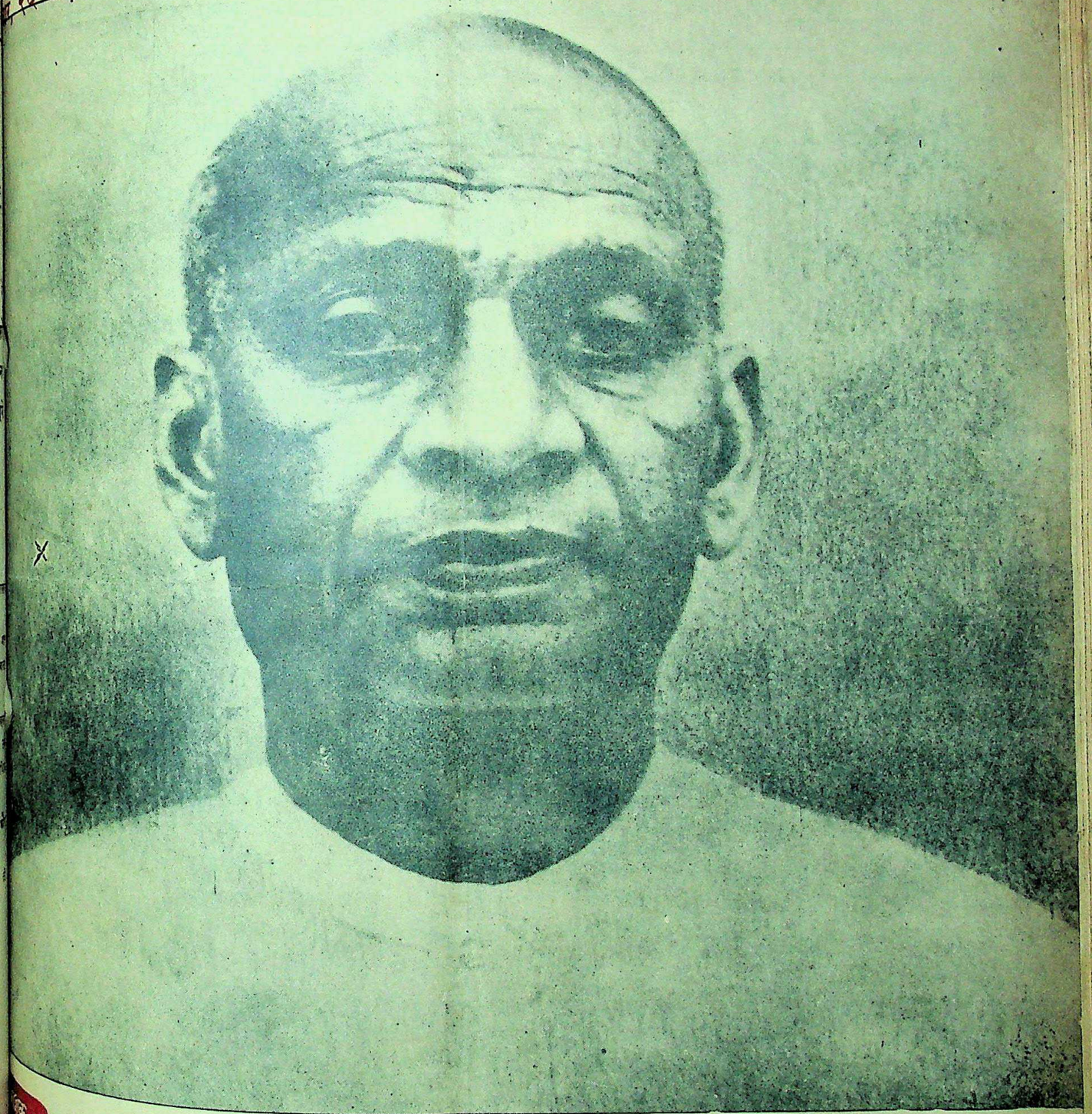

लक्ष्मण-शक्ति— कविवर श्री राजाराम श्रीवास्तव बी० एस-सी० एल-एल० बी० की एक बहुत ही उत्तम कोटि की रचना है। इ खण्ड-काव्य की रचना रामायण के लंका काण्ड की उस सुप्रसिद्ध घटना के आधार पर की गई है, जब कि लक्ष्मण जी मेघना से युद्ध करते हुए उसके द्वारा चलाई गई शक्ति के हृदय में लग जाने पर मूर्च्छित होकर गिर पड़े थे और उनके जीवित रहने व आशा नहीं रह गई थी। कवि ने उस समय की मर्य्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी की शोकामय अवस्था का बहुत ही आकर्ष और हृदयग्राही वर्णन किया है। मूल्य ॥) आने।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

ब्रिटिश मंत्रिदल भारत के लिये अपनी नवीन योजना पेश कर दी है।

कांग्रेस नेता और दृढ़ निश्चयी सरदार वल्लभ भाई पटेल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय
स्थापना १९२६
आरोग्य
सुरज १८६६ छाप
नीलगिरि तेल
हैजा, मलेरिया इन्फ्लुएंजा, टाइफाइड आदि बीमारियोंमेंबचानेवाला
प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

सपट लोशन
दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.
सपट ॲन्ड कं. लि.
बम्बई नं. २.

साहित्यालोच

इसका संशोधित संस्क
तैयार है। इसमें संस्कृत
आचार्यों के साहित्य-सम्बन्ध
के अतिरिक्त पाश्चात्य साहि
साहित्य मर्मज्ञों के मत का
ही मौलिक ढंग से कराया
पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक
पाँच रुपये पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो
इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

क्या आज आपने मेकलिन से दाँत साफ़ किये हैं ?

सौभाग्य से मेकलिन पेराक्साइड टूथ पेस्ट का राशनिंग नहीं हुआ है। यह प्रसिद्ध दन्त-शोधक उन लोगों को अब भी प्राप्य है जो स्वच्छ व स्वस्थ दाँतों का मूल्य जानते हैं। प्रति रात्रि व सुबह प्रयोग करने से मेकलिन आपके मुख व मसूड़ों को ठीक दशा में रखती है।

सभी केमिस्टों के पास व स्टोरों में मिलता है

Copyright: JWT(P)LTD.

सरकार खाद्य के विषय में क्या कर रही है ?

१. देश का समस्त उपलब्ध अनाज अखिल भारत वर्षीय आधार पर बांट दिया जायेगा। फालतू और कमी वाले क्षेत्रों में बराबर विभाजन होगा।

२. एकाधिकार द्वारा प्राप्ति के प्रारम्भ व विस्तार की व्यवस्था से देश के आंतरिक साधनों का परिपूर्ण संगठन किया गया है। इसमें सरकार उत्पादकों को उनके न्यायोचित राशन से वंचित किये बिना ही अधिकाधिक अनाज प्राप्त करने में समर्थ हो सकेगी।

३. मूल्य-नियंत्रण की कड़ी व्यवस्था जिसमे उत्पादकों और उपयोगकर्ताओं दोनों को उचित मूल्य प्राप्त हो सके।

४. राशन के विस्तार द्वारा अभाव को यथा सम्भव बांट लिया जावेगा।

नागरिक एवं ग्राम्य क्षेत्रों में अब लगभग १३ करोड़ व्यक्तियों के राशन की व्यवस्था है।

५. अनाजों का सभी निर्यात बंद कर दिया गया है

६. बाहरी आयात का प्रत्येक प्रयत्न किया जा रहा है।

७. "अधिक अन्न उपजाओ" आन्दोलन और तीव्र कर दिया गया है। नई भूमि में कृषि की जा रही है। सरकारी जमीन के लॉन व बगीचों में अनाज उत्पन्न होगा।

८. अनुचित संग्रह, मुनाफ़ाखोरी व दुर्वृत्ति को रोकने के लिये खाद्य-विभाग के प्रबंध में सुधार किया जा रहा है। ये उन तरीकों में से कुछ हैं जो खाद्य समस्या को हल करने के लिये काम में लाये गये हैं। आपसे हमारी सब से बड़ी मांग जो है वह है आपके विश्वास और सहयोग की। हमें उससे वंचित मत कीजिये।

खाद्य संकट को पराजित कीजिए

एक साथ कार्य कीजिये — एक साथ हिस्सा बटाइये

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष ८, संख्या ३६] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, २६ मई, १९४६

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

ब्रिटिश मंत्रिमंडल ने अपनी योजना पेश कर दी है। मिशन का कहना है कि अगर योजना भारतीय राष्ट्रनैतिक दलों द्वारा स्वीकार कर ली गई तो शीघ्र ही भारत स्वतंत्र हो जायगा और अंगरेज भारत छोड़कर चले जायेंगे। अपने राम ब्रिटिश मंत्रिमंडल के एक काम से तो निहायत खुश हैं कि उन्होंने न करने से कुछ पेश तो की। यही क्या कम है? ब्रिटिश मंत्रिमंडल मीठा फल आसमान से टपका तो नहीं लेकिन अभी वह खजूर में अटक गया है। कांग्रेस उसे स्वीकार ही कर रही है और गांधी बाबा ने उस पर अपनी मुहर लगा दी है। फिर कांग्रेस स्वीकार नहीं करेगी? अस्वीकार करके वह अपना मुंह पिटवाये या जहां जहां कांग्रेसी सरकारें कायम हुई हैं, वहां-वहां कांग्रेसजनों की लीला शुरू करावे? इसलिए कांग्रेस को मिशन की महानता स्वीकार ही करनी है। रह गई मुस्लिम लीग और उसके विधाता मिस्टर जिन्ना। अगर मुस्लिम निकल गया तो जिन्ना साहब की लीगी भी छूमंतर समझिये। क्योंकि पाकिस्तान तो यों ही निकम्मा करार दे दिया गया। इसलिए लीडरी की लुटिया तो डूबी ही डूबी लेकिन अगर नई संघ शासन को भी अस्वीकार किया गया तो लीग और उसके विधाता का खुदा ही हाफिज है।? जून तक केन्द्र में नई सरकार बनने जा रही है, उसमें लीग की पैंतरेबाजी की जरूर-जरूर कोई शक्ल सामने आयेगी।

* * *

ब्रिटिश मंत्रिमंडल की नई संघ योजना के केंद्र के मजदूर दलवाले जहां निहायत खुश हुए हैं वहां मिस्टर चर्चिल और मिस्टर अमरी नाखुश हुए हैं। अपने राम की समझ में ठीक ही है। चर्चिल-अमरी एण्ड कंपनी को नाखुश होनी ही। क्योंकि लड़ाई के दौरान तक वह भारत पर ऐसी दुरुत्ती झाड़ते रहे हैं कि मानो दुनिया में उन्हीं की सरकारी थी, बाकी सब यों ही। लेकिन अब लड़ाई खत्म हुई और मजदूर दल आया। चर्चिल-अमरी एण्ड कंपनी हवा में उड़ गई और अब भारत को कुछ मिलने की बारी आई तो दोनों साहबान ऐसे बिचक रहे हैं जैसे खाने की थाली ही किसी ने छीन ली हो। भारत तो सदा से भूखा रहा है, इसलिए अगर अब चर्चिल-अमरी एण्ड कंपनी भूखे भारत को कुछ न दे तो दया ही क्या है? अगर चाहे तो दया करे या हुजा-करे।

* * *

भारतीय प्रांतों में जितनी नई सरकारें कायम हुई हैं उनमें सिंध-सरकार सबसे ज्यादा खराब कर रही है। मुस्लिम लीग के शासन का असर ही कुछ ऐसा है कि किसी ऐरे-गैरे नत्थू खैरे का? सभी प्रान्तीय सरकारें अपने यहां के राजनैतिक क़ैदियों को जेलों से छोड़ रही हैं लेकिन सिंध सरकार चुपचाप कान में तेल डाले आराम से दिन गुजार रही है। सन् ४२ के आन्दोलन के क़ैदी बेचारे जेलों में सड़ रहे हैं लेकिन सिंध के गृह-सदस्य के कानों पर जूं तक नहीं रेंगती। कहावत है कि एक तो तितलीकी दूसरे नीम चढ़ी। एक तो मुस्लिम लीग ऐसी अंगरेज परस्त शासन का वहां यों ही बोलबाला है दूसरे वहां के गवर्नर हैं सर फ्रांसिस मुडी। जोड़ी ठीक मिल गई है, फिर राजनैतिक क़ैदियों का उद्धार कैसे हो? पाकिस्तानी शासन का सिंध बड़िया नमूना बन रहा है। गनीमत हुई कैबिनेट मिशन फिरंट हो गया, नहीं तो मस्लिम लीगी धरती पर न रहकर आसमान से बातें करते हुए दिखाई देते।

* * *

सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ श्री राजगोपालाचारी मंत्रिदल की घोषणा तथा नई योजना से बेहद खुश हुए हैं। आपने कहा है कि 'बस हमें स्वराज्य मिल गया?' अपने राम की समझ में भी आता है कि जरूर स्वराज्य मिल गया। श्री राजाजी को जब स्वराज्य मिल गया तो मानो सारे संसार को मिल गया, भारत को तो मिल ही गया, इसमें कुतर्क की कोई बात ही नहीं। बेचारे क्या करें राजा जी, हैं वह विद्वान और राजनीतिज्ञ, उन्हें सभी मौकों पर अच्छा ही अच्छा नजर आता है। कुछ दिन पाकिस्तानी चक्कर में जिन्ना साहब

ब्रिटेन में कम्यूनिस्ट दल के नेता श्री रजनी पामदत्त जो आजकल भारत आये हुए हैं!

सन ४२ के आन्दोलन में स्वतन्त्र भारत रेडियो पर गुप्त रूप से ब्राडकास्ट के नेवाली समाजवादी महिला कुमारी उषा मेहता।

के पीछे मतवाले रहे लेकिन अंत में राजा जी को असलियत का पता चला। मंत्रिदल ने भी आखिरकार कुछ दे ही डाला, किन्तु राजाजी को उसमें भी स्वराज्य दिखाई देने लगा। आशावादी ऐसे ही होते हैं। थोड़े में संतोष की सांस लेना यह ब्राह्मण के लक्षण हैं। राजाजी भी दक्षिण के त्यागी ब्राह्मण तो हैं ही।

* * *

प्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री जयप्रकाश नारायण कहते हैं कि हमें निकट भविष्य में स्वतंत्रता संग्राम के लिए तैयार रहना चाहिए। अपने राम को भी इस राय से पूरा इत्तिफाक है। लेकिन फिलहाल कैबिनेट मिशन ने एक तोहफा दिया है, पहले उसका तो थोड़ा बहुत उपभोग कर लिया जाय, तब फिर स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी जाये। केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार आ जाये! प्रान्तों में तो सरकारें बन ही गई हैं, सेनापति भी किसी भारतीय सदस्य के मातहत हो जायें, इस बक्त खाने-पीने और पहनने ओढ़ने की भी तकलीफ है, इसलिए जरा कुछ दिन खा पी लें—पहन-ओढ़ लें, जरा दिल-दिमाग ठीक हो, तब फिर स्वतंत्रता के संग्राम के लिए लड़ा लीजिए और चाहे रूस के साथ संसार की तीसरी लड़ाई। भारतीय तो गरियार बैल है, जिधर जोत दीजिए, उधर ही रुही। अभी तो गांधी बाबा जो कहें वही होगा, आगे का हवाल तो आप के हाथ है ही।

* * *

ब्रिटिश मंत्रिदल ने जो योजना पेश की है उस पर मिस्टर जिन्ना साहब ने अपने मुखारबिन्द से कुछ भी नहीं फरमाया। अफसोस की बात तो जरूर है क्योंकि पाकिस्तानी गुलिस्तां में वह सालों से रहम रहे हैं लेकिन कैबिनेट मिशन उसे सच्चा ही निगल जाना चाहता है, वह पाकिस्तानी डकार भी नहीं लेना चाहता, तब जिन्ना साहब क्या बोलें? बराबर बोलते रहने का फल तो कैबिनेट मिशन ने दे दिया और अगर अब फिर कुछ बोलते हैं तो क्या मिलेगा लड्डू?

* * *

संसार में हर जगह का मामला सुलझता जा रहा है लेकिन ईरान-अजरबेजान का मामला अभी तक खटाई में पड़ा है। बात सही भी है, न सोवियट रूस उसके क़रीब होता और न सुरक्षा समिति के सामने उससे बार बार सिजदा कराया जाता। जब तक रूस ईरान का पीछा न छोड़ेगा तब तक ब्रिटिश अमरीका ईरान का पल्ला पकड़े रहेंगे। कहावत है कि दो पाटों के बीच में साबित बचा न कोय। देखना है ईरान के प्राण बचते हैं या वह यों ही हलाल होता रहता है।

गांधी-मन्दिर

(मंजु भगत के प्रति)

लेखक, श्री सोहनलाल द्विवेदी, एम० ए०

तुम ग्रामभक्ति के सरल रूप, तुम आगत की श्रद्धा अनूप,
तुम तर्कवाद के परे एक गांधी भक्तों के बने भूप;
आराध्य देवता को देकर भौतिक मंदिर की मंजु मूर्ति,
अर्चना, आरती, पूजन से निज इच्छा की कर रहे पूर्ति,
बैठे ही जैसे रामकृष्ण की पूजा करते हम अपार,
पापों तापों अभिशापों से चाहते सभी हैं मुक्ति द्वार,
तुम भले मान जाओ, तज दो, भौतिक पूजन का यह स्वरूप,
जनगण मन में जो समा गया, बनकर श्रद्धा का अडिग रूप,
उसको न सकेगी शक्ति छीन, उसको न सकेगा समय छीन,
आगत में नये तथागत की, यों बजा करेगी भक्ति-बीन,
केवल पूजन से अर्चन से, नर पा न सकेगा मोक्ष द्वार,
वे समझाते आये युग से, पर, भक्ति कह रही है पुकार—
यह ज्ञान तर्क है कठिन पंथ, है भक्ति स्वयं ही एक शक्ति,
है भक्ति मुक्ति का सरल द्वार, पातक है पूजा में विरक्ति!
हम देख रहे तुममें भविष्य का वह उज्ज्वल इतिहास आज,
गांधी मंदिर होंगे गह-गह, होगा स्वदेश में जब स्वराज!!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

मंत्रिदल की नई योजना

ब्रिटिश मंत्रिदल तीनों प्रतिनिधियों तथा भारत के विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं के बीच राजनैतिक अड़ंगे के सुलझाने के संबंध में पिछले दो महीने से जो वार्ता दिल्ली और शिमला में चल रही थी, अंततोगत्वा उसका अंतिम परिणाम प्रकट हो गया है। यद्यपि ब्रिटिश मंत्रिदल ने सदैव इस बात पर जोर दिया था कि कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग पारस्परिक समझौता करके कुछ ऐसा मार्ग प्रशस्त करें जिससे राजनैतिक अड़ंगे का कोई हल निकल आये किन्तु लीग की 'पाकिस्तानी' माँग के कारण कोई समझौता नहीं हो सका, इसलिए ब्रिटिश मंत्रियों को अपनी ओर से संपूर्ण भारत के लिए एक योजना प्रस्तुत करनी पड़ी। इस समय नई योजना देश के सामने है। यद्यपि योजना के संबंध में कांग्रेस की ओर से आशावादी भावनायें प्रकट की जा रही हैं किन्तु वामपक्षियों की ओर से योजना को एक प्रकार का जाल सिद्ध किया जा रहा है। महात्मा गांधी ने योजना के संबंध में अपनी जो सम्मति दी है, वह पूर्ण आशाजनक है, इसी से प्रकट होता है कि कांग्रेस भी इसे अंत में स्वीकार ही कर लेगी। मुस्लिम लीग तथा अन्य अल्पसंख्यक जमाते योजना के अनेक अंशों से सहमत नहीं हैं। किन्तु समझ में आता है कि ब्रिटिश मंत्रियों की इस नवीन योजना को कार्यरूप में परिणत होने में भारत के सभी दलों का सहयोग अनिवार्य होगा। मुस्लिम लीग के नेता भी हमारी समझ में अंत में सहयोग करेंगे। संभव है मिस्टर जिन्ना अपने नेतृत्व की रक्षा के लिए स्वयं सहयोग से वंचित रह जायें तो आश्चर्य नहीं। सच तो यह है कि जब कांग्रेस ऐसी विद्रोहिणी संस्था के महान नेताओं को ब्रिटिश मंत्रिदल की योजना से सहानुभूति है तो अन्य प्रतिक्रियावादी संस्थाओं के नेताओं की ब्रिटिश नेता क्यों परवाह करने लगे?

समझने की बात यह भी है कि ब्रिटिश मंत्रिदल ने जो नई योजना प्रस्तुत की है, उसमें उसने भारत को कौन से नये उपहार दिये हैं? योजना के अनुसार संयुक्त भारत एक संघ के आधीन होगा। रक्षा परराष्ट्र और यातायात-विभाग केन्द्रीय सरकार के आधीन होंगे। प्रान्तों को केन्द्रीय विभागों के अतिरिक्त सभी अधिकार प्राप्त होंगे। विधान-समिति का निर्माण और उसके अंतिम निर्णय तक एक अन्तरकालीन सरकार की स्थापना की जायेगी। विधान-परिषद के निर्माण का कार्य तुरंत आरंभ किया जायगा जिसमें सभी प्रान्तीय असेम्बलियों के सदस्य जन-संख्या के आधार पर चुनकर सदस्य भेजेंगे। हिन्दू, मुसलमान और सिक्खों को उनकी जन-संख्या के अनुपात में ही प्रतिनिधित्व प्रदान किया जायगा। अन्तरकालीन सरकार के सदस्य ऐसे नेता होंगे जिनको जनता का विश्वास प्राप्त होगा। प्रान्तों को यह स्वतंत्रता होगी कि वह अपने समूह बना सकें जिसमें कार्यकारिणी और व्यवस्थापिका सभायें रहेंगी और प्रान्तों के ऐसे समूह यह निर्णय कर सकेंगे कि किन प्रान्तीय विभागों का प्रबंध वह एक साथ करें। संयुक्त-भारत और प्रान्तों के समूहों के विधानों में यह धारा रहेगी कि जिसके अनुसार कोई भी प्रान्त विधान बन जाने के १० वर्ष बाद या फिर हर १० वर्ष पर अपनी व्यवस्थापिका सभा के बहुमत से विधान पर पुनर्विचार न कर सके। देशी रियासतों के संबंध में कहा गया है कि उसके प्रतिनिधि किस प्रकार लिये जायें इसका निर्णय बाद में होगा, किन्तु फिलहाल एक समझौता समिति देशी राज्यों का प्रतिनिधित्व करेगी।

संक्षेप में योजना की रूप-रेखा इसी आधार पर तैयार की गई है। हमारी समझ में मंत्रिदल ने जो कुछ भी भारत को दिया है, इससे अधिक की आशा भी उससे नहीं की जानी चाहिए। हमें तो आश्चर्य है कि भारत के संबंध ब्रिटिश-नीति में थोड़ा-बहुत परिवर्तन तो प्रारंभ हुआ? यद्यपि हमें तो इसकी भी आशा नहीं थी। इसलिए ब्रिटिश-इतिहास में मंत्रिदल का यह क़दम एक नया क़दम है। कांग्रेस का वर्तमान हाई कमांड इसे भली भाँति अनुभव करता है। महात्मा गांधी देश की वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए यह अनुभव कर रहे हैं कि जो कुछ भी ब्रिटिश मंत्री दे रहे हैं, उसे तत्काल स्वीकार कर लेना चाहिए, नहीं तो परिणाम जनता तथा सरकार दोनों की दृष्टि से भयंकर होगा। राष्ट्र के सामने अन्न और कपड़े की ऐसी समस्या है जिसे हल करना ही उचित है। यदि मंत्रिदल की योजना स्वीकृत कर ली जाती है तो केन्द्रीय सरकार अपनी होगी और प्रान्तीय सरकारें भी निर्भीक रूप से शासन-संचालन कर सकेंगी। इस प्रकार राष्ट्र की अन्न और वस्त्र की समस्या के हल करने में पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त होगी। इसलिए हमारी समझ में जो भी योजना प्रस्तुत है, उसे स्वीकार कर लेना ही श्रेयस्कर है। जनता तथा राष्ट्र की वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए योजना को ठुकराना उचित न होगा।

यद्यपि हम जानते हैं कि मंत्रिदल ने संयुक्त-संघ तथा विधान-समिति के निर्माण की जो योजना प्रस्तुत की है उसे हम निर्दोष नहीं कह सकते। अंगरेजी कूटनीति से वह व्याप्त है। पाकिस्तान को यद्यपि ठुकरा दिया गया है किन्तु प्रान्तों के एकीकरण का जो प्रस्ताव किया गया है वह प्रान्तीय स्वाधीनता में बाधक है। प्रान्तीय शासन की स्वाधीनता का महत्त्व सामूहिक रूप देने से लुप्त हो गया है। अखिल भारतीय पैमाने पर मुसलमानों को स्वभाग्य-निर्णय का जो अधिकार दिया गया है, वह मुस्लिम बहुमत प्रान्त के निवासी अल्पसंख्यक जातियों को क्यों नहीं दिया गया जब कि मुसलमान जाति स्वयं एक अल्पसंख्यक जमात है? सबसे बड़ी बात तो यह है कि मंत्रिदल की घोषणा में भारतीय स्वाधीनता की घोषणा नहीं है और न यही बतलाया गया है कि सत्ता हस्तान्तरित करने तथा ब्रिटिश फ़ौजों के हटाये जाने की अवधि क्या है? इसी प्रकार की अन्य खामियाँ भी नई योजना में निहित हैं जिस पर विचार करने से यह साफ़ हो जाता है कि यदि हमारा नेतृत्व तनिक भी कमजोर हुआ, केन्द्रीय सरकार का नेतृत्व दृढ़ हाथों में न सौंपा गया तो इस योजना किसी न किसी समय विफल भी हो सकती है। इसलिए तत्काल की आवश्यकता है कि केन्द्र में जो सरकार बने उसके सदस्यों में सभी दलों का प्रतिनिधित्व हो, और ऐसे नेताओं का प्रतिनिधित्व हो जो ईमानदारी के साथ संगठित रूप में राष्ट्रीय एकता तथा स्वाधीनता के कट्टर समर्थक हों। जो ब्रिटिश कूटनीति का अवसर पड़ने पर भंडाफोड़कर सकने में समर्थ हों। हमें विश्वास है कि यदि कांग्रेस तथा महात्मा गांधी को योजना स्वीकृत है तो उन्हें केन्द्रीय सरकार को सुदृढ़ हाथों में सौंपने तथा विधान-निर्मात्री समिति संगठन में भी पूरी तरह योग-दान देना चाहिए, तभी राष्ट्र का कल्याण है।

किन्तु यह रुपये तो सेना के संगठन के लिए हो गये। अब फील्ड मार्शल क़ायदे आजम, जेनरल लियाकतअली खाँ, कमांडर इस्माइल खाँ इत्यादि के लिए भी तो कुछ चाहिए। आशा है कि नवाब साहब हैदराबाद इधर ध्यान देंगे।

* * *

लार्ड विटरटन को भारत के मुसलमानों की बड़ी चिन्ता है। सुना है शीघ्र ही दिल्ली की जुमा मसजिद में वह नमाज पढ़ने के लिए आनेवाले हैं।

* * *

जनरल फ़्रेंको का कहना है कि ब्रिटेन को हमने बचाया है। तो ब्रिटेन भी तो आपकी पीठ ठोंक रहा है फिर आप घबड़ा क्यों रहे हैं?

* * *

बंगाल तथा और स्थानों में बहुत-सी युद्ध सामग्री नष्ट की जा रही है। नष्ट तो कर ही देनी चाहिए। नहीं तो उन्हें देख-देखकर युद्ध की स्मृति जागृति होगी। अब युद्ध को भूल जाना ही उचित है।

* * *

मंत्रि-दल का कहना है कि [illegible] जल्दी विधान बन जायगा हम चले [illegible] इसमें क्या कठिनाई है? धान बनने [illegible] महीने लगते हैं विधान तो छः घंटे [illegible] सकता है।

* * *

केन्द्र में जो अल्पकालीन सरकार [illegible] उसमें कांग्रेसी तथा लीगी सदस्यों की [illegible] बराबर होगी। मेरी राय में लीग के [illegible] कांग्रेस सदस्यों से तिगुनी होनी [illegible] क्योंकि एक क़ायदे आजम ने तीन [illegible] को परास्त कर दिया।

* * *

कैबिनेट मिशन के प्रस्ताव [illegible] एक नवीन वस्तु मिलेगी। पाकिस्तान [illegible] भी, नहीं भी; स्वतंत्रता है भी, नहीं [illegible] भारत की एकता है भी नहीं भी। यह [illegible] मात अँगरेज़ों के सिवाय और कौन [illegible] सकता था? साथ ही यह भी देखने [illegible] है कि कांग्रेस को स्वीकार है भी नहीं [illegible]

* * *

बीकानेर में एक जलूस पर राज्य [illegible] सिपाहियों ने लाठी से प्रहार किया। [illegible] पड़ता है कि अभी यह राज्य अधिक [illegible] अवस्था में नहीं है नहीं तो गोली [illegible] गई होती।

एक तूहे का असामयिक मृत्यु पर

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

गिरा यह किसका तुम पर कोप, मृत्यु ने रक्खा तुमको छोप,
पड़े हो तुम धरती पर हाय, टूटकर जैसे जर्मन तोप!
मलाई कभी-कभी पकवान, तुम्हीं ने खाया घर में आन,
कभी चाटा घी पीया तेल, कुतुर डाले कितने ही थान;
तुम्हारे दाँत न थे, थे तेग, पेट था [illegible] का वेग,
बहुत से जिये डाक्टर लोग, तुम्हीं ने फैलाया जब प्लेग;
तुम्हारे कारण जाता जाग, मनुसपलटी का स्वास्थ्य विभाग,
चला करते जब दल के साथ, बाँध कर सिर पर यम का पाग;
तुम्हीं गणपति के वाहन श्रेष्ठ, तुम्हीं फैलाते प्लेग यथेष्ट,
शुभाशुभ के सुन्दर संयोग, तुम्हीं से मानव हुआ सचेष्ट;
प्रेम करते हैं चीनी लोग, उन्हें तुम जैसे मोहन भोग—
बना करके स्वादिष्ट अचार, तुम्हें खाकर रहते नीरोग;
बिलाई रानी के जलपान, चाट जाते हो तुम खलिहान,
खा गये लाखों टन तुम अन्न, धन्य हजरत मूसा बलवान;
बनाने जग को सदा उलूक, नई जब बनती दवा अचूक,
तुम्हीं पर होता अधिक प्रयोग, और तुम सहते बनकर मूक;
किसी निर्मम ने किया प्रहार, तुम्हारा कर डाला संहार,
मृत्यु के आगे पड़ा समुद्र, उछलकर जा न सके तुम पार;
मिलेगा तुमको स्वर्ग महान, कहीं यदि वहाँ मिलें भगवान,
सिफारिश कवि की देना बोल, किया उसने इतना गुण-गान;

एक सज्जन ने कुछ सैनिक [illegible] को नोटिस दिया है कि आप लोगों [illegible] मथुरा ऐसे स्थान में क्यों शिकार [illegible] जहाँ पशुओं का बध मना है? बात [illegible] कि जहाँ नहीं मना है वहाँ तो मनुष्यों [illegible] बध होता है।

* * *

कहा जाता है कि मथुरा के एक [illegible] में लगभग पचास मुसलमान गुंडे एक [illegible] एक घर में घुस पड़े और एक नाबालिग लड़की को उठा ले गये। यदि यह [illegible] है तो सरकार क्या करे? बहुत बड़ी-बड़ी स्कीमों पर उसे विचार करना है। इस [illegible] का कहाँ तक ख्याल किया जा सकता है।

* * *

जब थानेदार के यहाँ लड़की की [illegible] रिपोर्ट लिखाने गई तो थानेदार ने [illegible] नहीं। जान पड़ता है कि थानेदार को [illegible] समय किसी जुये के फड़ में जाना [illegible] होगा।

—अगड़धत्त [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिलिस्तीन और साम्राज्यवादी

१० लाख अरब निवासियों के विरुद्ध एँग्लो-अमरीका षड्यंत्र क्यों ?

[१]

लेखक, श्री एस० लक्ष्मण शास्त्री

यारप में इस समय फ़िलिस्तीन की समस्या व्यापक रूप ग्रहण करती जा रही है। एँग्लो-अमरीकन जाँच समिति ने जो रिपोर्ट प्रस्तुत की है, उससे अरब राष्ट्र तो क्षुब्ध है ही, यहूदी जनता भी सतुष्ट नहीं है। इस लेख में राजनीति के विद्वान् लेखक ने फिलिस्तीन की आज राजनीति, अरब-यहूदी संघर्ष और साम्राज्यवादी राष्ट्रों के कुचक्रों का विस्तार से वर्णन किया है। लेख को पूरी तरह से पढ़ लेने के बाद फिलिस्तीन और अरब-यहूदी समस्या भली भाँति समझ में आ जाती है।

इन तीनों सम्प्रदाय के लोगों के हितों की रक्षा की जायगी, तीनों का समान अधिकार मान लिया जायगा।

(३) फ़िलिस्तीन में जाति-धर्म, भेद-भाव के बिना ज़मीन की खरीदी-बिक्री का नियम अमल में लाया जायगा।

(४) फ़िलिस्तीन में रहनेवाले इतर सम्प्रदायवालों के हितों की रक्षा का आश्वासन देते हुए (ज़मीन के मुक्त व्यापार के नियम के सामने ऐसे आश्वासन केवल काग़ज़ी आश्वासन ही होंगे) फिलिस्तीन के शासनकर्ता बाहर के यहूदियों को फिलिस्तीन में आकर बसने के लिए सुविधायें देंगे।

प्रकाशित होते ही साम्राज्यवादी महाशक्तियों के विरुद्ध दाँत पीसकर, और झुँझलाकर उठ खड़ा हो जाता।

अरबों की आशाओं पर पानी

फ़िलिस्तीन के अरबों को और उनसे सहानुभूति रखनेवाले इतर समुदायों को इस रिपोर्ट से एतराज़ केवल इसलिए नहीं है कि वह उनके उचित अधिकारों को अस्वीकार करते हैं, बल्कि इसलिए भी है कि उसमें जो बातें कही गई हैं उनमें अधिकांश पिछले ३० बरस तक ब्रिटेन द्वारा उन्हें दिये गये आश्वासनों, वादों और प्रलोभनों के विपरीत है।

अरब—निवासी एक अँग्रेज फौजी से फिलिस्तीन-समस्या पर वार्ता कर रहा है !

(५) इस रिपोर्ट को कार्यान्वित किये जाने के बाद यदि यहूदी या अरब किसी भी प्रकार का उपद्रव करें तो उसे निर्दयतापूर्वक कुचल दिया जायेगा।

(६) फ़िलिस्तीन 'यहूदी-समाज' (जिसके नियन्त्रण में ४० हज़ार सशस्त्र यहूदियों का गुप्त संगठन है) को तत्काल शासनाधिष्ठ (ब्रिटेन) से सक्रिय सहयोग कर आतङ्कवादी दलों को दलन करने में हाथ बँटाना होगा।

यह गुलामी का नया पट्टा है

यही वह मोटी-मोटी सिफारिशें हैं जिन्हें साम्राज्यवादियों ने राजनीतिक शब्दावली का चोगा पहना कर ३० हज़ार शब्दों के पोथे के रूप में पेश किया है। उक्त छः 'पाइंट्स' को पढ़ने पर यह विदित है कि यह फ़िलिस्तीनवासियों की आशाओं की पूर्ति करनेवाली, स्वतन्त्र और स्वस्थ फ़िलिस्तीन का निर्माण करने में सहायक योजना नहीं बल्कि उनके भावी जीवन को अन्धकारमय बनानेवाली, अपने देश को सदा के लिए ब्रिटिश-अमेरिकन साम्राज्यवाद के चंगुल में फँसाये रखने की योजना है। यह अरबों के घाव में नमक छिड़कने का कुप्रयास है और गुलामी का नया पट्टा है। यदि यह बात न होती तो शायद ही सारा मध्यपूर्व इस रिपोर्ट के

इस सिलसिले में सबसे मुख्य बात हमें ध्यान में यह रखनी है कि सन् १९१४-१८ की लड़ाई में अरबों ने ब्रिटेन का साथ इस आश्वासन पर दिया था कि युद्ध समाप्त होने पर उन्हें पूर्ण स्वतन्त्रता दी जायगी और टर्की के पंजे से वह मुक्त किया जायगा।

दूसरी बात अरबों से बिना सलाह-मशविरा किये ही मध्यपूर्व के फ़िलिस्तीन, ट्रांस जोर्डन्, श्याम, लेनान जैसे अरब प्रदेशों को 'न्याय के अवतार' ब्रिटेन और फ़्रांस ने आपस में बाँट लिया था और उन पर 'शासनाधीश' प्रदेश की मुहर लगा दी थी।

शासनाधीश प्रदेश-विषयक सिद्धान्त विल्सन के उन १४ सिद्धान्तों में कही गई बातों के विपरीत था, जो युद्ध-समाप्ति में सहायक हुए थे। विल्सन के सिद्धान्तों में यह कहा गया था कि पराधीन राष्ट्रों के विषय में जो कुछ भी निर्णय किये जायँगे उस राष्ट्र की जनता के हित की दृष्टि में रखकर किये जायेंगे। अरब प्रदेशों के विषय में उसमें कहा गया था—"जो जातियाँ तुर्कों के आधीन अब तक रही हैं (अरब, खुर्द आदि) उन्हें पूर्णतयः निश्चिन्तता के साथ रहने का आश्वासन और बिना किसी रोक-टोक स्वायत्त शासन की ओर प्रगति करने का आश्वासन दिया जाना चाहिए।"

परन्तु युद्ध के अनन्तर अरब-प्रदेशों को छोटे छोटे टुकड़ों में बाँटकर उन पर अपना पैर अड़ा रखने में ही साम्राज्यवादियों का हित था। यह तो हुआ, परन्तु जिस 'माण्डेटरी सिस्टम' के अनुसार उन पर ब्रिटिश-फ्रेंच शासन थोपा गया उसमें क्या कहा गया था ?

'माण्डेटरी सिस्टम' के दफा २२ में अरब राष्ट्रों के विषय में कहा गया है—"तुर्क साम्राज्यधीन रहते आये कुछ समुदायों ने काफी प्रगति की है, अतः उन्हें अस्थायी रूप से स्वतंत्र राष्ट्रों के तौर पर मान किया जा सकता है कि बशर्ते कि शासनाधिष्ठ राष्ट्र उन्हें तब तक मदद देते रहे, जब तक कि वे अपने पैरों पर अकेले खड़े होने लायक़ न हो जाते। शासनाधिष्ठ के चुने जाने के समय इन समुदायों की इच्छाओं और पसन्दगी को विशेष रूप से ध्यान में रखना होगा।

इस समय ब्रिटिश-अमेरिकन-जाँच समिति ने जो रिपोर्ट पेश की है उसमें यह बात कही गई थी कि फिलिस्तीन के रहनेवाले स्वतंत्र होने के क़ाबिल नहीं हैं, यदि फिलिस्तीन को स्वतंत्रता दी जाय तो वह गृह-युद्ध की भट्ठी में भस्म हो जायगा।

रिपोर्ट में कहा गया है—"हम (जाँच-समिति) इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि अरबों और यहूदियों में कटुता इतनी बढ़ गई है कि इस समय और कुछ समय तक स्वतंत्र फिलिस्तीन या स्वतंत्र फिलिस्तीन राष्ट्रों की स्थापना की जाय उससे वहाँ ऐसा उपद्रव मच जायगा कि वह विश्व-शान्ति को भंग करेगा। इसलिए हम यह सिफारिश करते हैं कि जब तक यह शत्रुता दूर नहीं हो जाती और राष्ट्र-संघ के अधीन उसे सुरक्षित राज्य नहीं बनाया जाता तब तक उसे वर्तमान शासनाधिष्ठ के अधीन (ब्रिटेन के पंजे में) ही रहने दिया जाय।"

ऊपर के अवतरण से यह बात स्पष्ट है कि साम्राज्यवादी अपना उल्लू सीधा करने, पराधीन देशों को अपने पंजों में जकड़ रखने के लिए किस प्रकार अपनी बातें बदल सकते हैं और पराधीन देशों की प्रगति के रास्ते में अड़ंगा डाल सकते हैं।

अरबों के खलाफ षड्यन्त्र

आज से प्रायः ३० वर्ष पहले जिस समय अरब प्रदेशों का बँटवारा करके उन पर शासनाधीश की मुहर लगाई जा रही थी उस समय उन्होंने इतनी प्रगति की थी कि थोड़ी-सी मदद से वह स्वाधीन होने लायक़ हो सकते थे।

आज तीस वर्ष बाद उनमें ऐसे झगड़े-फसाद और कलह उत्पन्न हुए हैं कि उन्हें स्वतंत्र किया जाय तो विश्व-शान्ति के भंग होने का खतरा है!!

इस ३० वर्ष में फिलिस्तीन के लोगों को शिक्षा-दीक्षा देने का, शासन-व्यवस्था, उसके घरेलू और वैदेशिक नीति निर्धारित करने का पूरा अधिकार ब्रिटिश शासकों के ज़िम्मे था। यदि फिलिस्तीन के विषय में हमें जो बातें बताई गई हैं उन्हें मान भी लिया जाय तो यह नतीजा हमें उन्हीं की बातों से निकालना पड़ता है कि जब फिलिस्तीन की जनता के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक जीवन का सूत्र ब्रिटेन के हाथ में था तो ऐसी हालत में वहाँ की जनता का नैतिक पतन हो गया हो, उनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई हो, उसकी ज़िम्मेदारी किस पर है, सिवाय ब्रिटेन के ? यदि यह बात सही है तो ब्रिटेन न अच्छा शासक ही है और न शिक्षक ही, अतः उसे यथाशीघ्र फिलिस्तीन खाली कर अपना रास्ता नापना चाहिए।

शेष पृष्ठ १७ पर देखो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीय श्री भूलाभाई देसाई

राष्ट्र के एक साधक नेता और कानून के विशेषज्ञ

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

राष्ट्र के महान् और त्यागी नेता श्री भूलाभाई देसाई के निधन से देश को बड़ी हानि हुई है। वह एक तपे हुए नेता ही नहीं क़ानून के महान् पंडित थे। कांग्रेस वर्किंग कमेटी के कई वर्ष सदस्य भी रहे। इस लेख में योग्य लेखक ने बड़ी सुन्दरता से श्री भूलाभाई के चरित्र पर प्रकाश डाला है, जो पठनीय तथा ज्ञातव्य है।

स्वर्गीय श्री भूलाभाई देसाई एक पत्रकार से बातें कर रहे हैं।

तेज का एक दीपस्तंभ बुझ गया। हमारे बीच से कानून का एक धुरंधर पंडित उठ गया। मानवता का पुजारी चला गया। भूलाभाई की मृत्यु से भारतवर्ष की एक जबरदस्त हस्ती कूच कर गई। भूलाभाई का जीवन आराम का जीवन था लेकिन भारत की गुलामी देखकर आपका जीवन पलट गया और जेल के सीकचों में जीवन को बिताया। जेल के सीकचों में बन्द होकर अपना स्वास्थ्य खोया और खोई आपनी जवानी। देश की आजादी के लिए आपने बड़ी कुर्बानी की है। हिन्दुस्तान की गरीब जनता के जीवन से आपका जीवन घुल मिल गया था। और कांग्रेस की बड़ी सेवा की।

भूलाभाई देसाई हिन्दुस्तान के एक तेजस्वी नेता थे। इनके प्रभावशाली जीवन में से सदैव बुद्धि का तेज प्रकाशमान होता था। आपकी तेज बुद्धि देखकर अँगरेजों का दिमाग़ चकरा जाता था। जिन लोगों को दिल्ली असेम्बली के अधिवेशनों के अवसरों पर भूलाभाई की तर्कपूर्ण बहसें सुनने को मिली हैं वे ही जानते हैं वे कितने बड़े क़ानून के पंडित थे। विरोधियों तक को अपने भाषण से कायल कर देते थे। आप में भाषण-कला बेजोड़ थी। बड़ी बक्तृता हृदय पर असर करनेवाली होती थी। दुनिया आपके ज्ञान को मान गई थी। अपने क़ानूनी ज्ञान से हिन्दुस्तान का मस्तक सदैव ऊँचा रक्खा। हिन्दुस्तान की प्रजा में अपना प्रभाव आपने पैदा ही किया था। लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में भी आपका प्रभाव कम नहीं था।

* * *

भूलाभाई का जन्म एक साधारण किसान कुटुम्ब में हुआ था लेकिन अपनी बुद्धि कुशलता से आपने बहुत बड़ा स्थान प्राप्त कर लिया था। देश की सबसे बड़ी संस्था कांग्रेस में आपका प्रमुख स्थान था। कांग्रेस वर्किंग कमेटी के कई वर्ष आप मेम्बर रहे।

सरकार आपको सबसे प्रमुख स्थान देना चाहती थी लेकिन आपने हमेशा उसके पदों पर लात मार दी। बम्बई हाईकोर्ट का प्रधान जज बनने के लिए कई बार आपसे कहा गया लेकिन आपने हरबार इन्कार कर दिया। सरकारी पदों के आप भूखे नहीं थे। आप सार्वजनिक सम्मान को सब से अधिक महत्त्व देते थे। देश की अनेक संस्थाओं से आपका सम्बन्ध बँध गया था उनकी सेवा आप कई प्रकार से करते थे। किसी को धन से मदद देते थे किसी को अपने क़ानून से मदद करते थे और किसी संस्था में स्वयं रहकर उसकी सेवा तन-मन धन से करते।

भूलाभाई का जन्म १३ अक्टूबर सन् १८७७ ई० में बलसाड़ में हुआ था। आप जाति के ब्राह्मण थे। आपके माता-पिता उच्च श्रेणी के किसान थे। भूलाभाई के जीवन पर इनके माता जी का बहुत प्रभाव पड़ा था।

प्रारम्भ की शिक्षा आपकी बलसाड़ में ही हुई थी। इसके बाद आपने बम्बई के न्यू हाई स्कूल से मैट्रिक पास की। फिर ऐल्फीन्स्टन कालेज में शिक्षा प्राप्त की।

भूलाभाई का विद्यार्थी जीवन बड़ा तेजस्वी था। पढ़ाई के समय आपको कई छात्रवृत्तियाँ मिली थीं। एम० ए० होने के बाद आप अहमदाबाद के गुजरात कालेज में इतिहास और अर्थशास्त्र के प्रधानपद पर नियुक्त किये गये थे। इसके बाद आपने बी० ए० एल० एल० बी० का अभ्यास किया और वकालत पास करके बम्बई चले गये। वहीं से आपने वकीली जीवन प्रारम्भ किया। धीरे-धीरे क़ानून शास्त्र में आपकी बुद्धि बहुत बढ़ी और बम्बई के प्रमुख वकीलों में आपकी गणना की जाने लगी। थोड़े ही समय में आप बम्बई हाई-कोर्ट के एडोकेट जनरल बना दिये गये।

वकालती जीवन से ही आपका खिंचाव देश की राजनैतिक संस्थाओं से भी होने लगा। 'होमरूल' आन्दोलन में आपने खूब रस लिया।

आप केवल क़ानून शास्त्रीय ही नहीं थे बल्कि गुजराती और अँगरेजी साहित्य में भी रस लेते थे। आपकी गुजराती भाषा तो मातृभाषा ही थी पर आप उसके विशेष ज्ञाता भी थे। गुजराती साहित्य के आप एकबार सभापति भी मनोनीत हुए थे।

१९२५ ई० के बुमफील्ड कमीशन के सामने आपने बारडोली के किसानों के तरफ से बड़ी जोरदार बहस की थी। बारडोली किसान आन्दोलन में आपका भी हाथ था। बारडोली के किसानों की मदद आप हर तरह से कर रहे थे। अपनी वकालत की फीस आप बिलकुल नहीं लेते थे। उस समय आप सरदार पटेल की मदद हर तरीके से कर रहे थे। उसी समय से आपकी बुद्धि और सच्चाई की छाप सरदार के जीवन पर भी अंकित हो गई। सरदार साहब को आपसे काफी मदद मिली। तभी से भूलाभाई का खिंचाव कांग्रेस की राजनीति से भी हो गई। कांग्रेस को जहाँ क़ानूनी मदद की जरूरत पड़ती थी वहीं आप तन-मन-धन से उसकी मदद करते थे। कांग्रेस ने क़र्ज़ की जाँच के सम्बन्ध में एक कमेटी बैठाई थी उसके भी आप प्रमुख बनाये गये थे।

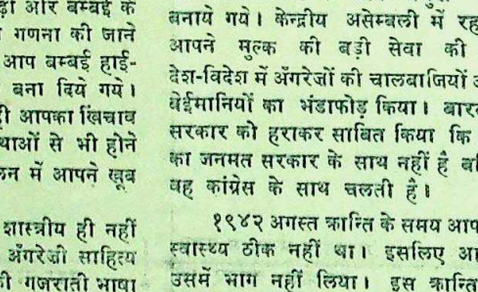

सेवाग्राम में स्वर्गीय देसाई पंडित जवाहरलाल नेहरू और चीन के शिक्षा मंत्री के साथ खड़े हैं।

भूलाभाई क़ानून शास्त्री तो थे ही। लेकिन आप लड़नेवाले योद्धा भी थे। सत्याग्रह के समय आप बम्बई प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रमुख पद होकर सत्याग्रह संग्राम की बड़ी मदद की। बम्बई शहर को आपसे हर तरह की मदद समय-समय पर मिलती थी। कांग्रेस आन्दोलनों में आप बड़ी सहायता पहुँचाते थे।

१९३०-३२ की लड़ाई में आपने सक्रिय भाग लिया। और जेल गये। आप को सरकार ने कड़ी से कड़ी सजा दी और जुर्माना भी किया। जेल में आपका स्वास्थ्य काफी खराब हो गया। जेल से मुक्त होने के बाद आप योरप गये। वहाँ भी आपने राष्ट्र की गुलामी के प्रति जेहाद छेड़ दिया। कई सभाओं में भाषण देकर वहाँ के लोगों को समझाया हिन्दुस्तान क्यों सत्याग्रह कर रहा है?

योरप से लौटने के बाद देश में केन्द्रीय असेम्बली का चुनाव हुआ। कांग्रेस टिकट पर आप चुनकर केन्द्रीय असेम्बली में भेजे गये। कांग्रेसपार्टी के आप प्रमुख नेता बनाये गये। केन्द्रीय असेम्बली में रहकर आपने मुल्क की बड़ी सेवा की है। देश-विदेश में अँगरेजों की चालबाजियों और बेईमानियों का भंडाफोड़ किया। बारबार सरकार को हराकर साबित किया कि देश का जनमत सरकार के साथ नहीं है बल्कि वह कांग्रेस के साथ चलती है।

१९४२ अगस्त क्रान्ति के समय आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं था। इसलिए आपने उसमें भाग नहीं लिया। इस क्रान्ति में भाग न ले सकने का दुःख आपको मरते वक्त तक बना रहा। लेकिन क्रान्ति में भाग न ले सकने के बावजूद भी आपने देश की सेवा बाहर रहकर भी किया। देश में जब शिथिलता आ गई थी तब आप केन्द्रीय सरकार को धारासभा में बुरी तरह से परास्त कर मुल्क की हिम्मत को आगे बढ़ाया।

अपनी बुद्धि चातुरता से ही आपने उस समय मुस्लिम लीग से समझौता करके देश में एक नई जागृति पैदा कर दी थी। भूलाभाई और लियाक़त अली योजना से एक समझौता भी हो गया था। इस समझौते की बड़ी चर्चा देश में हुई थी। अँगरेजों को यह बुरा लगा और इधर-उधर की फोड़ लगा कर इस योजना को आगे नहीं बढ़ने दिया। इसी बीच में कांग्रेस कार्य-समिति के मेम्बरों की रिहाई हुई। आपने उन लोगों के सामने देश की सारी परिस्थिति साफ़-साफ़ रख दी। कार्य समिति के मेम्बरों को आपकी सेवा से सन्तोष हुआ और आपको बधाई दी। स्वास्थ्य खराब होने के कारण नैतिक कामों से अपने को दूर रखने लगे लेकिन कांग्रेस और देश से आपका सम्बन्ध बहुत गहरा ही बीमार होते हुए भी आप अपने को नहीं रख पाते थे। देश की चर्चाएँ लिया करते थे।

इसी बीच में लाल क़िले में एक ऐतिहासिक मुक़द्दमे का काम आजाद हिन्द-फ़ौज के अफ़सरों को मार्शल करके सरकार फाँसी के तख्ते चढ़ाना चाहती थी। देश में सनसनी गया। खलबली मच गई। आन्दोलन लगा। आजाद हिन्द-फ़ौज के को बचाना चाहिए। कांग्रेस ने निर्णय बचाव पक्ष के तरफ से श्री भूलाभाई बहस करेंगे।

आजाद हिन्द-फ़ौज के सैनिकों को बचाने के लिए; भूलाभाई ने प्रधान की हैसियत से लाल क़िले में जैसी की है वह अन्तर्राष्ट्रीय जगत् का एक बन गया है। भूलाभाई ने दुनिया के साबित कर दिया है। हथियार लेकर के लिए लड़ना देशद्रोह नहीं बल्कि है। इस तरह की कई मिसालें पेश फाँसी पर जाते-जाते आजाद हिन्द को बचा लिया। देश भूलाभाई की बुद्धि को फिर एक बार मान गई। एकस्वर से भूलाभाई को बधाई दिया।

भूलाभाई ने दुनिया के सामने अच्छी तरह साबित कर दिया कि मुल्क में भी क़ानून शास्त्री होते हैं। का मस्तक ऊँचा कर दिया। भारत का सिर दुनिया में ऊँचा हो गया। हिन्दुस्तान के इतिहास में आजाद हिन्द का मुकद्दमा बड़े महत्त्व का था। ढंग का यह अनोखा मुक़द्दमा था। भूलाभाई ने इस मुक़द्दमें में बड़ा ही परिश्रम किया। इन्हीं कारणों से उनका स्वास्थ्य और गिरा। देश की सेवा करते-करते स्वर्गलोक चले। ऐसी आत्मा के लिए कौन नहीं अश्रु बहायेगा?

—सेवाग्राम ७-५-४५

एक खुराक पेटदर्द को ना करता है।

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर व्यापक ख्याति अम्लता, उदर-वायु, दाह, पेट-दर्द, वमन, पित्त प्रकोप पाचन-सम्बन्धी शिकायतों से पंवा वाले अन्य रोगों में प्रभावशाली होने मान्य प्रमाण है।

उदर-विकारों से उत्पन्न सिरदर्द उदासी, अनिद्रा और हृदय की तीव्र कन में भी यह अमूल्य है।

यदि आप इनमें से किसी कष्टकारी रोग से पीड़ित हैं तो आज ही कुछ मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर लीजिए और इस प्रसिद्ध औषधि की शीघ्र सांत्वना स्वयमेव अनुभव कीजिए।

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर समय "एलेक्स सी० मेकलीन" के हस्ताक्षर पहचान लीजिए क्योंकि असली यही है।

मेकलिन ब्रांड स्टमक पाउडर सेवन कीजिए

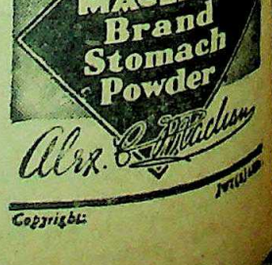

Copyright

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडित द्वारकाप्रसाद मिश्र

महाकोशल का एक प्रतिभापूर्ण बहुमुखी व्यक्तित्व

लेखक, प्रोफेसर रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' एम० ए०

(२)

मध्यप्रान्त महाकोशल मे पुनः कांग्रेस मंत्रि-मंडल स्थापित हो गया है। सुप्रसिद्ध राष्ट्रवादी, साहित्यिक और राजनीतिज्ञ पंडित द्वारकाप्रसाद मिश्र पुनः मंत्रि-पद पर आरूढ हुए हैं। इस लेख में सुप्रसिद्ध कवि 'अंचल' ने मिश्र जी का एक रेखा-चित्र अंकित किया है। मिश्र जी ऐसे एक बहुमुखी व्यक्तित्व तथा प्रतिभा-सम्पन्न जीवन की गतविधि के साथ-साथ प्रान्त की राजनीति पर भी सुन्दर प्रकाश डाला गया है। लेख सुन्दर तथा विचारपूर्ण है। इस लेख का पहला अंश गताक में प्रकाशित हो चुका है। शेषांश यहाँ दिया जा रहा है।

माननीय पंडित द्वारकाप्रसाद मिश्र, एम० एल० ए०

इस अविस्मरणशील कर्मवादी के व्यक्तित्व के जीवन की एक मोटी रूपरेखा सामने आते ही सोचता हूँ—कहाँ है इस अजस्र जीवनशक्ति का स्रोत जो बर्बरतापूर्ण अत्याचारों और प्रतिहिंसक पशुबल के सामने कभी दबी नहीं, झुकी नहीं—हारी नहीं—जो कष्टसहन में बेजोड़ और कारावास में बेमिसाल है। जो राष्ट्रीय संघर्षों में बराबर बढ़ती गई और अमर इतिहास का निर्माण करती हुई अधिकाधिक दमक कर कढ़ी। जो अपनी धुन से हटी नहीं—जीवन-दानी मस्ती से कभी घटी नहीं। जो रण के अंगारों और मिनिस्ट्री की कुर्सी पर एक-सी भावनात्मक निस्संगता लेकर बैठती है। इस महाशक्ति का मूल खोजते-खोजते सबसे पहले मेरा ध्यान मिश्र जी के अन्तिम भाव की ओर जाता है। मिश्र जी की यही निःस्वार्थ अनात्मता उन्हें सब से बड़े विरोध और जन-प्रवाद का सामना करने की ओर अन्त में उन्हें धूल में मिला देने की बिजयिनी निष्ठा प्रदान करती है। तरह-तरह की कठिनाइयों का सामना करनेवाला और ब्रिटिश सत्ता से टक्कर लेनेवाला हमारा यह जननायक प्रान्त की कोटियों से चुनी जनता का हृदय-सम्राट् है। उसके व्यक्तित्व की अमिट छाप प्रान्त के एक-एक राष्ट्रकर्मी के हृदय पर अंकित है। पार्थिवता और देशव्यापी औपनिवेशिक शोषण की असीम वेदना उन्हें उठते ही क्रियाशील करती है। देश की स्वाधीनता के अतिरिक्त उन्हें जैसे कोई दूसरी कामना नहीं है। अपने इसी लक्ष्य के लिए मिश्र जी वास्तववादी और व्यवहारकुशल राजनीतिज्ञ बन गये हैं। मुझे याद है आज से कई वर्ष पहले प्रसिद्ध समाजसेवी श्री यूसुफ मेहरअली ने 'कांग्रेस कैबिनेट' में सरदार बल्लभभाई पटेल का चित्र-चित्रित किया था। उसमें उन्होंने मिश्र जी को स्वयं एक जागृत व्यवस्थापक के लिए कठोर आज्ञाधीनता की आवश्यकता बताया था। वही ज्वलन्त अग्नि, दृढ़ आत्म-श्रद्धा मिश्र जी के कूट-कूट कर भरी है जो एक गहरे आत्मविश्वास की आभा से जगमगाया करती है। अपनी मानसिक स्थिरता और व्यक्तित्व संयम के लिए मिश्र जी मध्यप्रान्त के घर-घर में किसी वीरगाथा के नायक की तरह प्रख्यात हैं। अपने अभावों और कमजोरियों को कम देखने में आती है। राजनीति और कविता दोनों अधिकतर साथी जाती हैं पर साहित्य के विद्यार्थी जानते हैं कि राजनीतिज्ञ उच्च कोटि के साहित्यिक और काव्य-रसिक होते हैं। इसी तरह कवि होता हुआ राजनीतिज्ञ भी कवि होता है। मिश्र जी की अतिरिक्त महाकवि

यह हिन्दी-भाषी जनता मिश्र जी के महाकाव्य 'कृष्णायन' के प्रकाशित होने पर जान सकेगी। मिश्र जी मूलतः कवि हैं—साधारण या असाधारण प्रेमगीतों के कवि नहीं वरन एक विराट् सृष्टि करनेवाले महाकाव्य-प्रणेता। अभी मैंने देखा है लोगों को जैसे विश्वास नहीं होता मिश्र जी ने महाकाव्य लिखा होगा। पर मैंने कृष्णायन को थोड़ा बहुत पढ़ा और समझा है उसके बल पर कह सकता हूँ पद्मावत और रामायण के बाद वह हिन्दी का तीसरा अमर महाकाव्य होगा। कृष्ण की काव्य-कथा में सारी आर्य प्रजा के रक्षणशील आदर्शों, भावनाओं, मर्यादा के उच्चतम स्वरूप को लेकर चलनेवाली मानवता के संघर्ष, वेदना और सहानुभूति को महाकवि ने ऐसी अद्भुत रससिद्धि के साथ चित्रित किया है कि देखकर हैरत होती है। मुझे विश्वास है कृष्णायन के प्रकाशन के बाद मिश्र जी की गणना अन्तर्प्रान्तीय ख्याति के कवियों में होगी। चरित्र-पुष्टि, रस-उत्कर्ष, निर्दोष वर्णन, भावना का व्यक्तित्व, विश्व जनीन सौन्दर्य, आत्मानुभूति और परोक्षानुभूति, धर्मस्पर्शिनी अभिव्यंजना, कलात्मक समष्टि, सूक्ष्म कल्पना, नवीन अलंकार-नियोजना आदि काव्य के विभिन्न गुणों से ओत-प्रोत मिश्र जी का महाकाव्य उनका नाम युग-युग के लिए साहित्य में अमिट कर देगा। बुद्धि और भावना की सामंजस्यपूर्ण एकता, सृजनशील मानसिक वृत्तियों की रागात्मक प्रेरणा और युग-युगान्तर के लिए संवेदनीय व्यापक जीवन-सत्यों की गहराई 'कृष्णायन' को धारणाओं की रूढ़िमात्र न बनाकर उसमें एक अतिचेतन प्राण की प्रतिष्ठा करती है। ज्ञानपक्ष और भावपक्ष दोनों दृष्टियों से यह अनुपम कृति होगी।

'कृष्णायन' मिश्र जी के पिछले तीन वर्षीय कारावास में लिखा गया है। जेल के भीतर मिश्र जी को साहित्य-सेवा के लिए भले अवकाश मिल जाय, जेल के बाहर उन्हें क्षण भर का अवकाश नहीं। अपनी व्यापक कार्यक्षमता और प्रवर्तक व्यक्तित्व, लक्ष्यपूर्ति की साधक निष्ठा और अविराम ज्वाला के कारण उन्हें अनिवार्य विश्राम भी नहीं मिलता। अंगरेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध उनके भीतर जो तीव्र मारात्मक घृणा है वह उन्हें क्षण भर चैन नहीं लेने देती। जिस समय कांग्रेस का जो कार्यक्रम होता है उसमें वे तन-मन-धन से लग जाते हैं। उनकी अविराम गति और दृढ़ निश्चयशक्ति देखकर उनके सहयोगी कार्यकर्ता और अनुयायी आश्चर्यचकित रह जाते हैं। पर मिश्र जी के संकल्पों की दृढ़ता सर्वज्ञात है। किसी बात का वे निश्चय कर लें तो वह होगा ही। उसे होना पड़ेगा और मिश्र जी को उस समय जैसे और किसी बात से मतलब नहीं रह जाता। देश की स्वाधीनता के लिए निरन्तर काम करना उनके जीवन का मूल-मंत्र है। महात्मा गांधी और कांग्रेस के नाम पर अपना सब कुछ उत्सर्ग कर देनेवाले इस सर्वस्व समर्पक देश-सेवा-व्रती के सामने केवल एक धुन रहती है—स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाना। इस सारे अनवरत संघर्ष के पीछे—अपने को तिल-तिलकर होम देनेवाली इस प्राणदानिनी एकाग्रता और साधना के पीछे वह निवृत्ति-मूलक अनात्म भाव रहता है जो उनके सारे विरोधियों और उनके विरुद्ध घृणित से घृणित षड्यन्त्र रचनेवालों को परास्त कर देता है। मिश्र जी की यही सेवा-भावना, आत्मदान की बलिदानी लगन और इसके पीछे बिजली की बैटरी की तरह शक्ति विकीरक उनकी आत्म-अलिप्सा उन्हें निकट से देखनेवाले के हृदय में एक भव्य विराटता—एक प्रोज्ज्वल भव्यता का बोध देती है.....लगता है.....कुछ कुछ वैसा ही लगता है जैसा 'इब्सन' की निम्नलिखित पंक्तियों में—

Upwords
Towords the peaks
Towords the stars
Towords the vastress

जैसे इन्हे केवल देखा जा सकता है—इनकी महानता का अनुभव किया जा सकता है लेकिन ये इतने ऊँचे हैं जहाँ प्रणाम भी न पहुँचेगा। मिश्र जी के व्यक्तित्व में महानता का वह 'डायनामाइट' है जो प्रतिक्षण कुर्बानी की आग से खेला करता है..जो देखनेवाले को अभिभूत तो कर देता है पर अपनी असाधारणता के कारण अधिक निकट नहीं आने देता—जिसकी अनुभूति से बिद्ध श्रद्धा दूर विह्वल बनी खड़ी रह जाती है। इतनी कठोर है मिश्र जी की अवैयक्तिकता।

उनकी अध्ययनशीलता और ज्ञान देखकर आश्चर्य होता है। कितना साहित्य और विज्ञान इन मुद्रित लेकिन क्रान्ति की अन्तर्शिखा से परिचालित पुतलियों के नीचे उतर चुका है समझ में नहीं आता। उनके 'कृष्णायन' में देश और युग के लिए जो सन्देश है वह उनके स्वार्जित जीवन-दर्शन और विश्वविवेक के सामंजस्य का प्रतीक है। आज भी वे राजनीति के चक्रव्यूह में फँसे-फँसे लिखने के लिए न सही पढ़ने के लिए समय निकाल लेते हैं। सोलह-सोलह घंटे की घनघोर कांग्रेस की बैठकों के बाद भी रात को जब वे थका शरीर और थका मन लेकर लेटते हैं तब बिना घंटे दो घंटे पढ़े उन्हें नींद नहीं आती। और चिन्तन तो उनका स्वभाव बन गया है। जिज्ञासा की ऐसी अनासक्त निर्ममता उनमें है—ज्ञान की ऐसी गहरी और आत्मिक भूख है जो उनके सम्पूर्ण जीवन को एक निर्विकार अर्थ और तर्कों को एक वैज्ञानिक संगति देती है। कदाचित् कोई लेखक या विचारक ऐसा हो जिसकी चिन्ताधारा से वे पूर्ण रूप से परिचित न हों—जिसके सम्बन्ध में उनकी स्वतन्त्र धारणा न हो।

मिश्र जी के विरोधियों की संख्या कम नहीं है। हर क्षेत्र में उनका व्यक्तित्व अपना गौरवपूर्ण प्रभाव रखता है और हर क्षेत्र में उनके विरोधी हैं। तरह-तरह के परिवाद उन्हें लेकर चले हैं और चलते रहते हैं। कभी-कभी ये परिवाद उनके मार्ग में अवरोध बनाये जाते हैं पर अधिकांश में उनके पीछे व्यक्तिगत या दलगत स्वार्थ पर धक्का लगने से नग्न हो जानेवाली क्षुद्र मलिनता ही दिखाई देती है। मिश्र जी के पास इन दीनताओं के लिए स्थान नहीं। एक अति भव्य और मोहक, प्रेरक और बलदायक आदर्शवाद को लेकर चलनेवाला उनका जीवन अवरोधों से लड़ता—ठुकराता आगे बढ़ता जाता है। कहीं किसी भी क्षेत्र में जब मध्यप्रान्त के नेतृत्व का प्रश्न आता है तब उनके बिना जैसे काम नहीं चलता। चाहे पार्लियामेंटरी कार्यक्रम हो—चाहे अहिंसात्मक सत्याग्रह-आन्दोलन—चाहे खुला विद्रोह—सबमें उनका अविभाज्य व्यक्तित्व आगे रहता है और संघर्षों का अधिनायकत्व करता है। उनके पास कहीं भी अस्वीकार का विकल्प नहीं अंगीकरण का उद्बोधक वरदान है। अपने सम्बन्ध में फैले प्रवाद का उत्तर जैसे उनका समस्त जीवन जो कष्ट सहन और बलिदान की एक लम्बी कीर्तिवाहिनी गाथा है, पुकार-पुकार कर 'कृष्णायन' की निम्नलिखित पंक्तियों में दे रहा है—

'करत न जेंह रवि-रश्मि प्रवेशा,
लहत न जहाँ वायु विनिवेशा।
अमर राज दरबार जहँ निष्फल,
कुण्ठित अन्तक प्रघातिहु जेहि थल।
प्रविशत संशय तहहुँ कठोरा,
असि ते तीक्ष्ण विषहु ते घोरा।

आत्म-विश्वास और आत्मज्ञान की—आत्म-गौरव और आत्म-परिपूर्ति की इसी अन्तर्ज्योति से मिश्र जी का कठोर विवेक आलोकित है। उनके उद्देश्य की उच्चता और प्रधानता कभी उन्हें इस प्रकार के द्वेषयुक्त अपवादों से विचलित नहीं होने देती। जिसकी आख के सामने प्रतिक्षण चालीस करोड़ मानवों की राजनैतिक और सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक

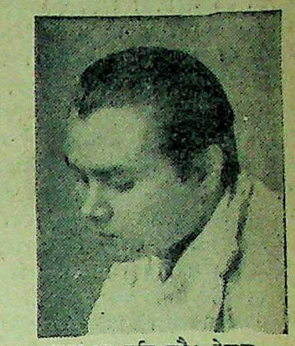

सुप्रसिद्ध कवि और लेखक प्रोफेसर 'अंचल'।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्ति का महाप्रश्न अपने कठिनतम रूप में खड़ा रहता हो वह इन छोटी-छोटी बातों को सोच नहीं सकता। लेकिन ऐसे जननायक को अपने और अपने लक्ष्य के प्रति ईमानदार—घोर ईमानदार होना पड़ेगा। लक्ष्य की पूर्ति के मार्ग में बाधक बननेवाले को वह बिना निर्ममतापूर्वक अपने रास्ते से दूर फेंके कैसे रह सकेगा? उसका यह कर्त्तव्य उसकी राष्ट्र-आराधना का ही अंग है। उसका रास्ता सम्पूर्ण राष्ट्र का रास्ता है। यही कारण है बड़ा से बड़ा विरोध और प्रवाद मिश्र जी की शक्ति के अखंड प्रवाह को नियंत्रित नहीं कर पाता। नर्मदा के तीर प्लावनकारी प्रचण्ड प्रवाह की तरह वह भी अपराजेय है।

ऐसा है यह मध्यप्रान्त का सर्वतोमुखी—प्रतिभाशाली नेता जिसे कृतज्ञ प्रान्त बड़ा से बड़ा आदर देने को तैयार रहता है। वे एक भावुक ईश्वरवादी हैं पर उनका ईश्वरवाद नियतिवाद या भाग्यवाद की तरह अक्षम और अपदार्थ बना देनेवाली किसी अगोचर शक्ति के प्रति परमुखापेक्षिता नहीं—एक ज्वलन्त वैज्ञानिक कर्मवाद है। यही कारण है ज्यों-ज्यों हृदय पर चोट पड़ती है, त्यों-त्यों उनका जीवन अधिकाधिक दीप्त और ज्वालावाही होता जाता है। वह पथ-निर्देश का प्रकाश और पथ पर अडिग अकंपित गति से बढ़ते जाने का इस्पाती मनोबल दोनों देता है। प्रान्त के युवकों की विशेष रूप से उनमें आस्था है क्योंकि वे उनमें अपनी आकांक्षाओं का जीवित प्रतीक देखते हैं। वे जानते हैं कल की सेनानी का बिगुल बजते ही मिश्र जी आँधी-पानी-भूचाल की विदारक अँगड़ाइयों के बीच आ खड़े होंगे और अंगरेजी साम्राज्यवाद और सैनिकवाद से दोहरा द्वन्द्व संचालित करेंगे। उनके हृदय में जो आज़ादी की सूनी जल रही है वह अपनी जैसी असंख्य ज्वालाओं को एकाकार कर देश के बन्धनों को जलाकर क्षार कर देगी। गुरुदेव रवीन्द्र के शब्दों में जैसे प्रान्त का वर्तमान और भावी तारुण्य आज कोटि-कोटि मूक और मुखर स्वरों में उनसे कह रहा है—

"कौन आलोते प्राणेर प्रदीप
ज्वालिये तुमि धराय आओ।
पागल ओगो—प्रेमिक ओगो—
साधक ओगो धराय आओ।"

(कौन हो तुम! धरा की आशा! जो प्राण का प्रदीप जलाकर प्रकाश कर रहे हो। धरा की आशा! तुम कौन हो—पागल हो—प्रेमी हो या साधक—धरा की आशा! तुम कौन हो!)

साहित्य-चर्चा

✓ प्राकृतिक चिकित्सा—लेखक, पंडित रामनारायण दुबे; प्रकाशक, प्राकृतिक आरोग्याश्रम, काशी। पुस्तक मिलने का पता, पुस्तकभवन, काशी। मूल्य ७॥) पृष्ठ लगभग ६०० के ऊपर।

आधुनिक चिकित्सा-पद्धति में प्राकृतिक चिकित्सा का प्राचीन महत्त्व है। शरीर व्याधियों का घर है। इन व्याधियों के निवारण के लिए हमारे देश में विदेशी चिकित्सा-पद्धति का बोलबाला है। पिछले डेढ़ सौ वर्ष के विदेशी शासन के परिणामस्वरूप हम अपने आचार-विचार, शिक्षा तथा चिकित्सा में भी गुलामी का एकछत्र साम्राज्य स्थापित कर चुके हैं। भारतीय प्राचीन पद्धतियों का उन्मूलन होता जा रहा है। आयुर्वेद हमारा प्राचीन चिकित्सा-ग्रन्थ है किन्तु विदेशी विचार-धारा के प्रवाह के सामने उसे भी महत्त्वहीन बनाया जा रहा है। किन्तु सच पूछा जाय तो आयुर्वेद की ही चिकित्सा-पद्धति भारतीय संस्कृति के लिए अधिक उपयुक्त है। प्रकृति-चिकित्सा ने अनेक असाध्य रोगों पर सफल विजय प्राप्त की है।

पंडित रामनारायण दुबे एक उत्तम-कोटि के प्रकृति-चिकित्सक हैं। आपने समय-समय पर कितने ही असाध्य रोगियों को प्रकृति-चिकित्सा से आरोग्य किया है। आपने यह पुस्तक अपने वर्षों के अनुभवों के आधार पर लिखी है। आजकल प्रकृति-चिकित्सक प्रायः आयुर्वेद को उतना महत्त्व नहीं देते हैं किन्तु दुबे जी ने इसे स्वीकार करने में तनिक भी आनाकानी नहीं की है कि आयुर्वेदिक चिकित्सापद्धति प्राचीन और राष्ट्रीय चिकित्सापद्धति है जो भारत ऐसे किसान प्रधान देश के लिए अधिक व्यापक और लाभदायक है।

प्रस्तुत पुस्तक तेरह अध्यायों में विभाजित की गई है। पहले अध्याय में जीवन-विज्ञान की विवेचना की गई है। दूसरे अध्याय में शरीर के चौबीस तत्त्वों तथा उसके विभिन्न उपकरणों का विस्तृत वर्णन किया गया है। तीसरे अध्याय में रोगों के निवारणार्थ प्रचलित उपचारों, एलोपैथी, आयुर्वेद, यूनानी, होमियोपैथी तथा बायोकेमिक चिकित्सा-पद्धति पर प्रकाश डाला गया है। चौथे अध्याय में यह सिद्ध किया गया है कि प्रकृति-चिकित्सा ही क्यों श्रेष्ठ है? साथ ही अनेक रोगों के उपचार की उपयोगिता का भी वर्णन किया गया है। पाँचवें अध्याय में उपवास की उपयोगिता का वर्णन है। छठे अध्याय में सूर्य-रश्मि-विज्ञान तथा अनेकानेक रंगों तथा उसके प्रभावों का वर्णन किया गया है। सातवें अध्याय में आध्यात्मिक चिकित्सा तथा प्राणायाम आदि का वर्णन है। आठवें अध्याय में भोजन-विज्ञान का विशद् वर्णन है। नवें अध्याय में मालिश, दसवें में एनिमा, ग्यारहवें और बारहवें अध्याय में रोगों का निदान तथा उसकी चिकित्सा पर सुन्दर अनुभव व्यक्त किये गये हैं। तेरहवें अध्याय में वनस्पति-विज्ञान, लेप-चिकित्सा और सूर्य-चिकित्सा का सर्वांग सुन्दर वर्णन है।

इस प्रकार यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी तथा प्रकृति-चिकित्सा-सम्बन्धी सर्वोत्तम है। इसकी भूमिका उज्जैन के प्रसिद्ध प्राकृतिक-चिकित्सक डा० दुर्गाशंकर नागर ने लिखी है। पुस्तक में यथावसर चित्र भी दिये गये हैं, जिससे चिकित्सा-पद्धति समझने में अच्छी सहायता प्राप्त होती है। पुस्तक अत्यन्त उपादेय, लोकोपयोगी और प्रत्येक घर-गृहस्थ के उपयोग के उपयोगिता देखते हुए पुस्तक का मूल्य अधिक नहीं है।

कुछ

यह प्रसिद्ध साहित्य-सेवी श्री पुन्नालाल बख्शी बी० ए० के बढ़िया निबन्धों का संग्रह है। इसमें २० निबन्ध हैं। भाषा, भाव और विवेचन की दृष्टि से विलक्षण हैं। यह इस वर्ष की अनुपम पुस्तक है। पृष्ठ-संख्या २०० से ऊपर। मूल्य केवल १॥) एक रुपया आठ आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड
इलाहाबाद।

जैहिन्द गीत

आज़ाद हिन्द फ़ौज के जोशीले गीतों का घर घर में प्रचार करने के लिए पुस्तक मुफ़्त बाँटी जा रही हैं। आज ही १ कार्ड डालकर मँगा लीजिए।

संगीत कार्यालय, हाथरस—यू० पी०

चर्म-सौन्दर्य बढ़ाने
की आश्चर्यजनक विधि

कुरूप काली त्वचा से अपने सौन्दर्य को नष्ट न करें क्योंकि त्वचा की कालिमा तत्क्षण दूर करने की यह आश्चर्यजनक तरल औषधि है। इससे नवीन सौन्दर्य प्राप्त हो जाता है—वही कोमल तथा गौर वर्ण जिसे प्रत्येक स्त्री चाहती है।

ह्वाइटेक्स की आज ही परीक्षा करें और देखें कि आपकी त्वचा कितनी जल्द सोने-सी हो जाती है। आपके वर्ण···आपके हाथ··· आपकी भुजाओं के लिए गौर मृदु सौन्दर्य ह्वाइटेक्स में चिपचिपाहट नहीं होती। यह त्वचा में सीधे प्रवेश कर जाती है और त्वचा को पोषती है।

ह्वाइटेक्स की एक बोतल का प्रयोग करके देखें। इसके परिणाम पर आपको आश्चर्य होगा।

वितरक: जी० अथरटन एण्ड कं० (इंडिया) लि० २८, अपोलो स्ट्रीट, बम्बई ४ मिशन रो, कलकत्ता।

Whitex
WHITENS THE SKIN

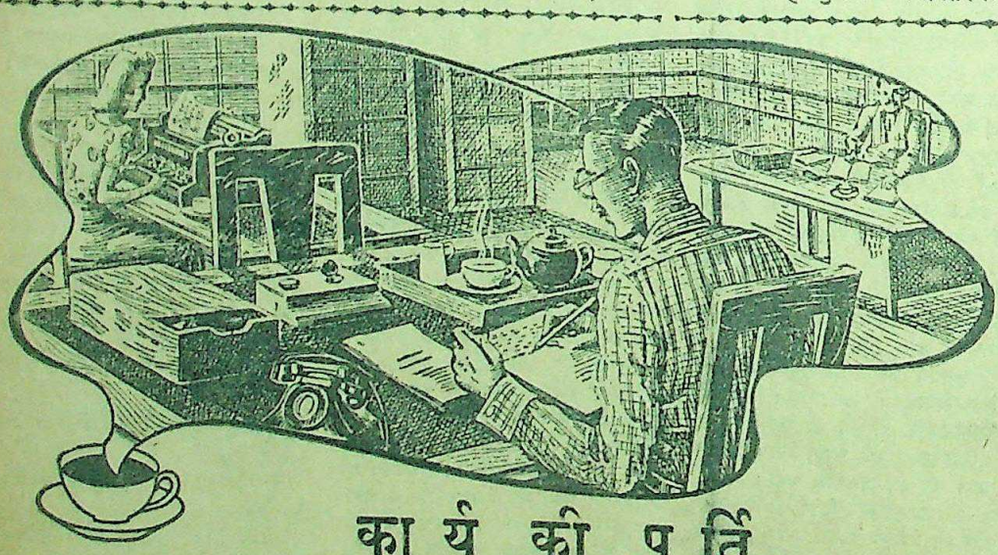

कार्य की पूर्ति

परामर्श-विवाद, टेलीफोन पर बातचीत और अगणित बाधायें भी दफ़्तर के कार्य का उतना ही भाग हैं जितना कि लिखना-पढ़ना।

कभी-कभी तो आवश्यक काम पर भी ध्यान लगाना कठिन हो जाता है। इसी कारण आप व्यस्त लोगों की मेजों पर बहुधा बुक बण्ड चाय का ताज़ा प्याला देखते हैं। इसके स्फूर्तिदायक गुण अध्यक्षों को योजनायें तैयार करने और उनके निम्न कर्मचारियों द्वारा इन्हें कार्यान्वित करने में सहायक होते हैं।

हिन्दुस्तान के सभी बड़े नगरों में हमारे गोदामों को ताज़ी चाय से बारम्बार भरा जाता है। कारणस्वरूप हमारे विक्रेताओं द्वारा बुक बण्ड चाय लगातार बाँटी जाती है और आपको ताज़गी की चोटी पर मिलती है।

आपको ताज़गी के शिखर पर मिलती है।

बुक बण्ड

दो पत्तियाँ और एक कली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवाहरात

लेखक, प्रोफेसर श्रीनारायण अग्रवाल एम० ए०, बी० कॉम

स्त्रियों को प्रायः उपहार मिलते हैं, फिर ऐसी स्त्री जो अत्यन्त रूपवती हो, भारत में कम किन्तु योरोप में अधिक। न्यूटन की बीवी भी ऐसी ही थी। बीवी अत्यन्त रूपवती थी, इसलिए अमीरों ने उसे लाखों के जवाहरात उपहार में दिये। यह बात न्यूटन को तब ज्ञात हुई जब उसकी बीवी का देहान्त हो गया। भाग्य से न्यूटन भी धनी हो गया। कहानी बड़ी ही सुन्दर और मनोवैज्ञानिक है, जिसका हृदय पर प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता।

न्यूटन ने एक नौजवान लड़की को अपने दफ्तर के असिस्टेंट के घर दावत में देखा। न जाने उसकी आँखों में क्या आकर्षण था कि वह देखते ही उसके प्रेमपाश में बँध गया। वह एक टैक्स कलेक्टर की बेटी थी जो कुछ समय पूर्व मर चुका था। वह अपनी माँ के साथ पेरिस में रहती थी। उसकी माँ चाहती थी कि किसी अच्छी नौजवान युवक के साथ अपनी बेटी का विवाह कर दे।

नौजवान लड़की शारीरिक सौन्दर्य का उत्कृष्टतम नमूना थी—सुन्दर मुखड़ा, सुशील स्वभाव; सादगीपूर्ण और शालीनता से भरपूर। वह ऐसी लड़की थी जो हर लड़की से शादी करने के स्वप्न हर नौजवान देखता है। उसका प्राकृतिक सौन्दर्य, उसके स्वभाव की सादगी और होंठों पर खेलती हुई एक हल्की-सी मुस्कान जो हर समय उसके चेहरे की पंखुड़ियों से होठों पर खेलती रहती थी ये सारे उसकी आत्मा के प्रतिबिंब थे। हर शख्स उसकी तारीफ़ के पुल बाँधता था—"खुशक़िस्मत है वह शख्स जो इससे शादी करेगा।"

न्यूटन उस वक्त शिक्षण-विभाग के दफ्तर में क्लर्क था और सामान्यतः पन्द्रह सौ फ्रेंक सालाना कमाता था। उसने लड़की से विवाह की प्रार्थना की और लड़की ने उसकी प्रार्थना को क़बूल कर ली गई। न्यूटन अपनी बीवी के साथ निहायत हँसी-खुशी के साथ अपने और वह घर को ऐसे सलीक़े से चलाती कि उसकी ज़िन्दगी चैन से कटती। वह अपने पति से खूब प्रेम के साथ पेश आती। उसका मुख सौन्दर्य और स्वभाव ऐसे बड़े-बड़े थे कि शादी के छः साल बाद भी न्यूटन ने यह अनुभव किया कि वह अपनी बीवी से पहले से कहीं अधिक मुहब्बत करता है; वह अपने दिल में अक्सर सोचा करता कि कितने बेवकूफ़ हैं वे लोग जिनका ख्याल है कि बीवी से मुहब्बत ज़्यादा देर तक नहीं की जा सकती।

वह अपनी बीवी की दो बातों पर अक्सर हँसा करता—उसके थियेटर जाने की आदत और झूठे जवाहरात पहनने का शौक़। उसकी सहेलियाँ (चंद अफ़सरों की बीवियाँ) अक्सर उसके लिये टिकट भेजती रहती थीं और वह अपने साथ अपने पति को भी घसीटने की कोशिश करती किन्तु उसे थियेटर से कोई दिलचस्पी न थी, इसलिये अक्सर वह उसे अकेली ही भेज देता।

थियेटर जाने की वजह से उसमें भी अपने सौन्दर्य को चमकाने की उत्कट इच्छा पैदा हुई; परन्तु उसका परिधान सादा ही रहा और यह उसकी और उसके परिधान की सादगी ही थी जो आकर्षण का कारण थी। फिर वहाँ अपने आप को जेवर और झूठे जवाहरात से सजाना शुरू कर दिया जो बिल्कुल सच्चे मोतियों की तरह चमकते।

उसका पति जो उसकी इस दिखावे की आदत से कुछ नाराज़-सा था, उससे अक्सर कहता—"प्यारी! अगर तुम्हें अपने मोती और जवाहरात ख़रीदने की इजाज़त नहीं तो तुम्हारा सादा सौन्दर्य ही तुम्हारे लिये ज़ेवर होना चाहिए।" इस पर वह मुस्कुराकर कहती—"मैं मजबूर हूँ, मुझे झूठे जवाहरात से प्यार है; मैं यह मानती हूँ कि यह मेरी कमज़ोरी है, लेकिन आप जानते हैं कि मनुष्य अपने स्वभाव को नहीं बदल सकता।"

फिर वह आगे झूठे ज़ेवरों से खेलना शुरू कर देती और न्यूटन से कहती—"कहिये जनाब! क्या यह ख़ूबसूरत नहीं?" वह हँसकर कहता, "तुम्हारा शौक़ तो उन ख़ानाबदोशों का-सा है।" जो रात के वक्त आग के पास बैठे हुए अक्सर अपने ज़ेवर की संदूकची खोल देती जिसे न्यूटन हँसी में 'कूड़ा-करकट' कहा करता था। वह झूठे जवाहरात को बड़े गौर और शौक़ से देखती। अक्सर ज़िद करके अपने पति के गले में नेकलेस डाल देती और फिर खूब हँसकर कहती, "प्यारे तुम कितने भले मालूम होते हो!"

यह कहती हुई वह अपना सुन्दर मुखड़ा न्यूटन के वक्षस्थल में छिपा देती और अपनी लचकीली बाहें उसके गले में डाल देती।

एक रात जब वह थियेटर से वापस आई तो उसे सर्दी लग चुकी थी। सुबह उसे निमोनिया हो गया और आठ दिन के बाद वह न्यूटन को हमेशा के लिए अकेला करके चल बसी।

न्यूटन की रंगत, बातचीत, दुख और रहन-सहन से यह मालूम होता था कि वह भी अब चंद दिनों का मेहमान है। वह सुबह से शाम तक रोता। उसका हृदय असहनीय शोक के तीरों से छलनी हो चुका था। कहते हैं समय सब प्रकार के शोक का इलाज है लेकिन न्यूटन पर इसका कुछ असर न हुआ। वह अक्सर दफ्तर में बैठा-बैठा रो पड़ता।

ज़िन्दगी एक वीरान रेगिस्तान हो चुकी थी। उसकी आमदनी जो उसकी बीवी के हाथों में तमाम आवश्यक सामान ख़रीद सकती थी अब उसके गुज़ारे के लिए अति अपूर्ण थी।

एक सुबह उसकी जेब में एक फूटी कौड़ी भी न थी, उसने इरादा किया कि कुछ सामान बेच दे। अचानक उसे जवाहरात का ख़याल आया जो पहले भी उसकी आँखों में काँटों की तरह खटकते थे। सबसे पहले उसे वह नेकलेस बेचने का ख्याल आया जो कभी-कभी वह उसे पहना देती थी। उसने ख़याल किया, अधिक नहीं तो छः सात फ्रेंक तो मिल ही जायेंगे।

दफ्तर आते हुए वह रास्ते में एक जौहरी की दूकान में दाख़िल हुआ, "जनाब, मैं यह नेकलेस बेचना चाहता हूँ।"

सौदागर ने नेकलेस अपने हाथ में ले ली; कभी वह उसे इधर से देखता कभी उधर से; कभी दूर रखकर देखता और कभी तौलता। न्यूटन ने यह समझा कि सौदागर शायद उसे बना रहा है और वह कहने ही वाला था, "मैं जानता हूँ इसकी क़ीमत, दो-चार फ्रेंक से अधिक नहीं हो सकती।" कि सौदागर ने कहा—"जनाब! इस नेकलेस की क़ीमत बारह और पन्द्रह हज़ार फ्रेंक के दरम्यान है; लेकिन आप जब तक यह न बतायें कि आपने यह कहाँ से लिया है, मैं इसे ख़रीदने के लिए तैयार नहीं।"

न्यूटन विस्मय के कारण कुछ न कह सका किन्तु थोड़ी देर के बाद बोला, "क्या आप सही कह रहे हैं?"

जौहरी ने समझा शायद यह इस क़ीमत पर रज़ामन्द नहीं। इसलिये कहा, "आपको अगर विश्वास न हो तो कहीं और जा सकते हैं। मैं अधिक से अधिक पन्द्रह हज़ार फ्रेंक दे सकता हूँ।"

न्यूटन ने आश्चर्य से काँपते हुए नेकलेस उठा लिया और कुछ सोचने के लिए बाहर चला आया। थोड़ी देर बाद वह एक और दूकान में दाख़िल हुआ। जौहरी ने नेकलेस देखते ही कहा, "ओह! मैं जानता हूँ। यह नेकलेस यहीं से इसी दूकान से ख़रीदा गया था।"

न्यूटन ने पूछा, "इसकी क़ीमत क्या होगी?"

जौहरी ने कहा "मैंने यह नेकलेस पचीस हज़ार फ्रेंक को बेचा था; अब हम इसके लिये अट्ठारह हज़ार फ्रेंक देने को तैयार हैं। अगर आप हमारे फ़ायदे के मुताबिक, हमें यह बता दें कि आपके क़ब्ज़े में यह किस तरह आया?

इस बार न्यूटन विस्मय जगत् में खोया हुआ था। वह उठ गया और बोला "परन्तु ज़रा गौर से देखिये। मेरा ख्याल था कि यह छः, सात फ्रेंक से अधिक क़ीमत का न होगा।"

जौहरी ने पूछा—"जनाब आपका नाम?"

न्यूटन ने कहा कि मैं शिक्षण-विभाग के दफ्तर में एक क्लर्क हूँ और मेरा एड्रेस 'नम्बर १६, ईस्ट एण्ड'। सौदागर ने बहियाँ खोलीं और कुछ देर बाद कहा—"यह नेकलेस मिसेज न्यूटन को २० जुलाई १८७६ को नम्बर १६ ईस्ट एण्ड के पते पर भेजा गया।"

दोनों ने एक दूसरे की तरफ देखा। सौदागर यह मालूम करना चाहता था कि कहीं यह कोई चोर तो नहीं। न्यूटन हैरानी के कारण ख़ामोशी के आलम में खोया हुआ था।

आख़िर जौहरी ने कहा, "आप २४ घंटे के लिये नेकलेस हमारे पास छोड़ जाइये। हम अपनी तसल्ली कर लें और आप अपनी रसीद लेते जाइये।"

न्यूटन ने जवाब दिया, "बहुत अच्छा" वह रसीद जेब में डाल कर बाहर चला गया। वह विचारों की धारा में बहा जा रहा था। दो तीन दफा रास्ता भूल गया। वह सोच रहा था कि उसकी बीवी अपनी जेब से तो इतने क़ीमती जवाहरात ख़रीद नहीं सकती थी, आख़िर उसने ये कैसे हासिल किये?

ज़रूरी है कि यह तोहफ़े हैं—तोहफ़े! भेंट! उपहार!!

लेकिन उसे ये उपहार किसने दिये? और क्यों?

चलते चलते वह चौक में एक तरफ खड़ा हो गया। उसके दिल में सन्देह ने घर जमा लिया था।

मेरी बीवी—उफ! मेरी बीवी!

दुनिया उसे घूमती हुई मालूम हो रही थी और ज़मीन उसके पाँव तले खिसक रही थी। उसे ऐसा अनुभव हो रहा था मानो ईर्द-गिर्द की तमाम इमारतें गिर रही हैं। वह वहीं बेहोश होकर गिर पड़ा और जब उसे होश आया तो उसने अपने आपको एक अस्पताल में पाया।

घर वापस आकर उसने तमाम दरवाज़े बंद कर दिये और देर तक रोता रहा। बारबार अपने रूमाल को कोसता था।

[शेष पृष्ठ १३ पर

मिसेज न्यूटन जब आये थे तो उन्हें अजनबियों से लाखों के उपहार मिले थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपूर्ण भारत के लिये एक नवीन संघ-योजना

अगली १ जून को केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार की शीघ्र ही स्थापना होगी

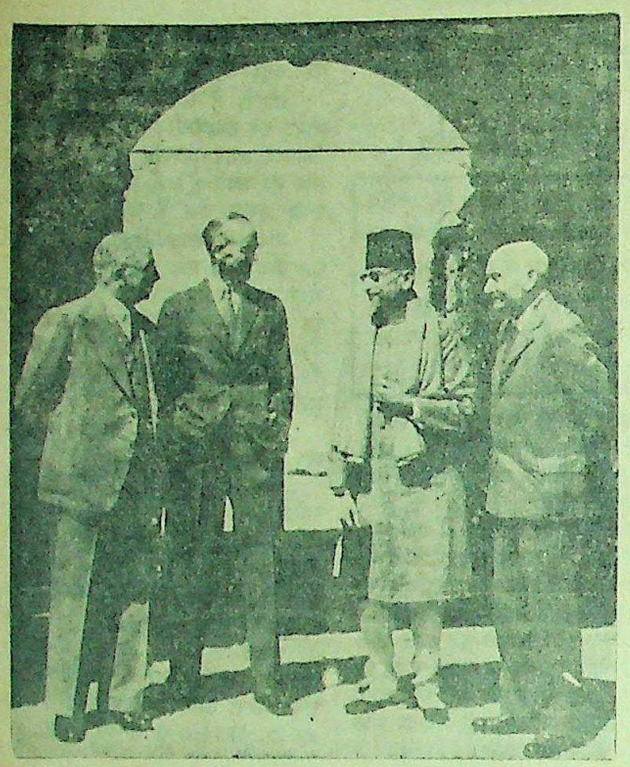

शिमला सम्मेलन में राष्ट्रपति मौलाना आजाद ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल (लार्ड पेथिक लारेंस, सर स्टेफर्ड क्रिप्स और श्री एस० एलिक्जेंडर) से मिलकर समझौते की वार्ता में शरीक होने जा रहे हैं।

राष्ट्रपति पण्डित जवाहरलाल नेहरू और मुस्लिम लीग के नेता मिस्टर मुहम्मद अली जिन्ना राजनैतिक गतिअवरोध को दूर करने की वार्ता करते हुए चले जा रहे हैं।

संयुक्त भारत, केन्द्र में रक्षा, परराष्ट्र और यातायात विभाग, प्रान्तों को केन्द्रीय विभागों के अतिरिक्त सभी अधिकार, विधान परिषद् का तुरत निर्माण और एक अन्तरकालीन सरकार का बनाया जाना, ब्रिटिश मंत्रिदल की ऐतिहासिक घोषणा की महत्त्वपूर्ण बातें हैं।

विधान परिषद् के निर्माण का कार्य तुरत आरम्भ हो जायेगा जिसमें सभी प्रान्तीय असेम्बलियों के सदस्य जनसंख्या के आधार पर सदस्य भेजेंगे। हिन्दू मुसलमान और सिक्खों को उनकी जनसंख्या के अनुपात में ही प्रतिनिधित्व दिया जायगा। अन्तरकालीन सरकार के हाथ में सभी विभाग जिसमें रक्षा विभाग भी होगा सौंप दिये जावेंगे। अन्तरकालीन सरकार के सदस्य ऐसे नेता होंगे जिन्हें जनता का विश्वास प्राप्त रहेगा।

घोषणा में स्वतंत्र पाकिस्तान की मांग को अव्यवहारिक और घातक बताते हुए विभिन्न दलों से अनुरोध किया गया है कि वे मंत्रिदल के प्रस्तावों को सफल बनाने में पूरा योग दें। मंत्रिदल के प्रस्ताव इस प्रकार हैं:—

हम इस बात की सिफारिश करते हैं कि भारत का नया विधान इस रूप में हो—

(१) एक संयुक्त भारत बने जिसमें ब्रिटिश भारत और देशी राज्य दोनों सम्मिलित हों और जो वैदेशिक रक्षा और यातायात विभागों की व्यवस्था करे और इन विभागों के व्यय की पूर्ति के लिए कर लगा सके।

(२) संयुक्त भारत की एक कार्यकारिणी और व्यवस्थापक सभा हो जिसमें ब्रिटिश भारत और देशी राज्य दोनों के प्रतिनिधि रहें प्रमुख साम्प्रदायिक प्रश्न पर संयुक्त भारत की व्यवस्थापक सभा में दोनों सम्प्रदायों के उपस्थित सदस्यों के बहुमत के आधार पर ही कोई निर्णय किया जा सकेगा।

(३) संयुक्त भारत के विभागों को छोड़कर अन्य सभी विभागों और नये बननेवाले विभागों का प्रबन्ध प्रान्त करेंगे।

(४) सिवा उन अधिकारों के जो संयुक्त भारत को दिये जायें शेष अधिकारों का प्रयोग देशी राज्य करें।

(५) प्रान्तों को यह स्वतंत्रता रहेगी कि वे अपने समूह बना सकें जिनमें कार्यकारिणी और व्यवस्थापिका सभा रहेगी और प्रान्तों के ऐसे समूह यह निर्णय कर सकेंगे कि किन प्रान्तीय विभागों का प्रबन्ध वे एक साथ करें। संयुक्त भारत और प्रान्तों के समूहों के विधान में यह धारा रहे कि जिसके अनुसार कोई भी प्रान्त विधान बन जाने के १० साल बाद या फिर हर १० साल पर अपनी व्यवस्थापिका सभा के बहुमत से विधान पर पुनर्विचार कर न सके।

हमारा यह उद्देश्य नहीं है कि हम उपरोक्त आधार पर विधान का विवरण दें हम उस व्यवस्था को चालू कर देना चाहते हैं जिसके द्वारा भारतीय भारतीयों के लिए विधान तैयार कर सकें।

हमने ये सिफारिशें करना इसलिए आवश्यक समझा क्योंकि विभिन्न दलों से बातचीत के दौरान हमें यह मालूम हो गया था कि बिल इसके दोनों दलों को विधान बचानेवाली व्यवस्था एक साथ नहीं लाया जा सकता।

विधान परिषद् का रूप

अब हम विधान परिषद् का रूप बताना चाहते हैं जिसके द्वारा हम चाहते हैं कि नया विधान बनाया जाय।

इसके लिए आवश्यक है कि जनता का अधिक से अधिक और ठीक प्रतिनिधित्व प्राप्त किया जाय। सबसे संतोषजनक प्रतिनिधित्व तो सार्वभौमाधिकार द्वारा हो सकता था लेकिन ऐसा करने के माने इतना देरी होना जिसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। इसलिए यही व्यवहारिक है कि नई चुनी हुई प्रान्तीय असेम्बलियों को ही इस्तेमाल किया जाय लेकिन इसमें एक दोष यह है कि विभिन्न प्रान्तीय असेम्बलियों के सदस्यों की संख्या प्रान्तों की जनसंख्या के अनुपात में नहीं है। आसाम के १ करोड़ जनसंख्या पर वहाँ की असेम्बली में १०८ सदस्य हैं जब कि बंगाल की ६ करोड़ जनसंख्या पर केवल २५० ही हैं। दूसरा दोष यह है कि प्रान्तों में अल्पमतों को उनकी जनसंख्या से अधिक प्रतिनिधित्व दिया गया है। काफी विचार करने के बाद इन दोषों को दूर करने के सम्बन्ध में हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं।

(क) प्रत्येक प्रान्त को उसकी जनसंख्या के अनुसार विधान परिषद् में १० लाख जनसंख्या पर एक सदस्य चुनने दिया जाय।

(ख) प्रान्तों द्वारा चुने जानेवाले कुल सदस्यों की संख्या को प्रान्त के प्रमुख सम्प्रदायों की जनसंख्या के आधार पर बाँट दिया जाय।

(ग) प्रत्येक सम्प्रदाय के लिए निर्दिष्ट सदस्य उसी सम्प्रदाय के सदस्यों द्वारा चुने जायँ।

इन बातों के लिए भारत में ३ मुख्य सम्प्रदाय ही स्वीकार किये जायँ—अर्थात् मुस्लिम और सिख आम में वे सब लोग आ जायँगे जो मुसलमान या सिख नहीं हैं।

इसलिए हम यह प्रस्ताव करते हैं कि प्रत्येक प्रान्तीय असेम्बली सानुपातिक प्रतिनिधित्व के आधार पर केवल एक परिवर्तनीय वोट द्वारा अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करे:—

(क) विभाग

प्रान्त	आम	मुस्लिम	सिख	कुल
मद्रास	४५	४		४९
बंबई	१९	२		२१
युक्तप्रान्त	४७	८		५५
बिहार	३१	५		३६
मध्यप्रान्त	१६	१		१७
उड़ीसा	९	०		९
कुल	१६७	२०		१८७

(ख) विभाग

प्रान्त	आम	मुस्लिम	सिख	कुल
पंजाब	८	१६	४	२८
सीमाप्रान्त	०	३	०	३
सिंध	१	३	०	४
कुल	९	२२	४	३५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाकिस्तान राष्ट्रीय एकता के लिये घातक है

भारतीय स्वतन्त्र भारत के लिये स्वयं अपना विधान बनायेंगे

विभाग	आम	मुस्लिम	कुल
	३३		६०
	२७	३	१०
	७		२९२
			९३
			४२५

के प्रबन्ध के सम्बन्ध अपने सुझाव उपस्थित करे।

वाइसराय विभिन्न प्रान्तों की असेम्बलियों से शीघ्र ही कहेंगे कि वे उपरोक्त आधार पर अपने प्रतिनिधियों को चुनें और देशी राज्यों से कहेंगे कि वे समझौता समिति बनायें।

यह आशा की जाती है कि विधान परिषद अपना काम अत्यंत तेजी से करेगी जिसमें बीच की अवधि कम से कम हो।

यह आवश्यक होगा कि संयुक्त भारत की विधान परिषद् ब्रिटेन से सन्धि करे जिसमें वे बातें रहेंगी जो शक्ति हस्तान्तरित करने से पैदा होंगी।

जब तक कि विधान बनाने का काम पूरा न हो जायगा भारत का प्रबन्ध भी करना पड़ेगा। इसलिए ऐसी अन्तरकालीन सरकार की स्थापना को हम सबसे अधिक महत्त्व देते हैं जिसे प्रमुख राजनीतिक दलों का समर्थन प्राप्त हो। इस बीच अनेक महत्त्व के कठिन प्रश्न भारत के सामने हैं। युद्धोत्तर निर्माण होना है और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में अपने प्रतिनिधि भेजना है। इन बातों के लिए लोकप्रिय सरकार का होना आवश्यक है इस सम्बन्ध में वाइसराय विभिन्न दलों में से पहले से बातें कर रहे हैं। और उन्हें आशा है कि शीघ्र ही एक अन्तरकालीन सरकार बन जायगी जिसके हाथ में सभी विभाग जिसमें रक्षा विभाग भी शामिल होगा, ऐसे सदस्यों के हाथ में सौंप दिया जायगा जिन्हें जनता का पूरा समर्थन प्राप्त होगा। ब्रिटिश सरकार को पूरा सहयोग और सहायता देगी।

भारतीय नेताओं से जिनके सामने अब पूर्ण स्वतंत्रता का अवसर है हम कहेंगे कि हमने हमारी सरकार और हमारे देशवासियों ने यह आशा की थी कि भारत के विधान के सम्बन्ध में प्रमुख दल एक मत हो सकेंगे। ऐसा न होने पर हमने ये प्रस्ताव रखे हैं। हो सकता है कि इन प्रस्तावों से सभी दलों को पूरा सन्तोष न हो लेकिन इस अवसर पर एक दूसरे का ध्यान रखना आवश्यक है।

हम आपसे कहते हैं कि इन प्रस्तावों के अतिरिक्त अन्य प्रस्तावों पर भी आप विचार करें। इतना प्रयत्न करने के बाद हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि दोनों दल केवल आपस में ही समझौता नहीं कर सकते ऐसा न होने पर गृहयुद्ध और अराजकता अनिवार्य थी जिसमें भयंकर विनाश होता।

इसीलिए पूरी आशा के साथ हम इन प्रस्तावों को आपके सामने रखते हैं कि आप इन्हें स्वीकार करेंगे। हम यह भी आशा करते हैं कि स्वतंत्र भारत ब्रिटिश साम्राज्य का सदस्य बना रहेगा। लेकिन यह आपकी स्वतंत्र इच्छा पर है।

भारत मंत्री का भाषण

रेडियो से बोलते हुए भारत मंत्री लार्ड पेथिक लारेंस ने [illegible] का संक्षिप्त रूप बताते हुए कहा कि भारत के सभी दल पूर्ण स्वतंत्रता चाहते हैं ब्रिटिश सरकार इससे पूर्ण सहमत है। दो महीने तक भारत में रहने और विभिन्न दलों के नेताओं से गम्भीर वार्ता करने के बाद हम इस निर्णय पर पहुँचे हैं।

लीग और कांग्रेस अपनी माँगों से पीछे हटना नहीं चाहते थे। इसलिए हमें मजबूर होकर एक हल निकालना पड़ा है। हमें मुसलमानों की माँगों का ख्याल है लेकिन भारत के विभाजन से भारत की रक्षा खतरे में पड़ जायगी। इसलिए हमने अपने प्रस्तावों में संयुक्त भारत प्रान्तों के समूह और प्रान्त में ये ३ सीढ़ियाँ रखी हैं। इसमें मुसलमानों को पाकिस्तान से होनेवाले लाभ मिल जाते हैं लेकिन भारत के विभाजन से होनेवाली हानि होती।

भारत के स्वतंत्र होने पर ऐसा नहीं हो सकता कि देशी राज्यों की अवस्था वही बनी रहे। यह अनुमान है कि वे संयुक्त भारत में सम्मिलित होंगे।

मध्यकालीन सरकार का ब्रिटिश सरकार अपना पूरा सहयोग देगी।

ब्रिटिश मंत्रिमंडल की नई योजना के प्रस्तुत करने के बाद महात्मा गांधी भारतसचिव लार्ड पेथिक लारेंस से केन्द्रीय सरकार के राष्ट्रीयकरण करने के सम्बन्ध में मिले थे। गांधी जी लार्ड पेथिक लारेंस से मिलकर विदा हो रहे हैं।

ब्रिटिश प्रतिनिधि मंडल की नई योजना के घोषित हो जाने पर सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रपति मौलाना अबुलकलाम आजाद से परामर्श करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमण्डल

गृहस्थ-जीवन में मितव्ययी बनना ज़रूरी क्यों है?

ख़र्च में कमी और कुछ न कुछ संग्रह करना चाहिए

लेखक, कुमारी विजयलक्ष्मी अग्रवाल

एक कुटुम्ब के धन-धान्य की वृद्धि के लिए समीचीन प्रबन्ध की महती आवश्यकता किसी राज्य की समृद्धि के लिए उत्तम प्रबन्ध की आवश्यकता की ही भाँति होती है। गृह का समस्त कार्य नियमानुसार हो, प्रत्येक वस्तु अपने नियत स्थान पर हो, गृहिणी चतुर प्रबन्धिका हो और अपने काम को विधि और व्यवस्थापूर्वक करे न कि निराधार और अन्धाधुन्ध। कौन कार्य कितनी देर में, कब, पहले कौन और किस समय का विचार हो, इत्यादि सारयुक्त बातें हैं। व्यय भी रीति से होना चाहिए क्योंकि ऐसा होने से आय दूनी हो जाती है और इस दृष्टिकोण से मितव्ययिता का असली अर्थ गृह-प्रबन्ध है।

मितव्ययी बनने के लिए हमें चींटी के पास जाना चाहिए और उससे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। उसकी कौन देखभाल करता है। वह स्वयं दूरदर्शी है। अपने लिए गर्मी में सामान इकट्ठा करके जाड़े में आराम से खाती है। मितव्ययी पुरुष नीच कुल में भी उत्पन्न होकर अपने कर्मों द्वारा उच्च कहला सकता है। हमारे सम्मुख अनेक उदाहरण हैं कि मनुष्यों ने छोटी स्थितियों से अपने को कर्त्तव्य करके कैसे ऊपर उठाया और उन्नति के शिखर पर पहुँच गये। जार्ज स्टीफ़ेंसन प्रारम्भ में एक कुली थे, बाद में उन्होंने रेलगाड़ी का आविष्कार किया; जेम्स बाट ने एन्जिन बनाया; विकिलमेन एक चमार का लड़का था और एक प्रसिद्ध लेखक हो गया। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, राममोहन राय, गोपालकृष्ण गोखले, बालगंगाधर तिलक, महादेव गोविन्द रानड, स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा स्वामी रामतीर्थ इत्यादि प्रातःस्मरणीय भारतीय विभूतियाँ हैं।

मितव्ययिता की सम्पूर्ण महिमा गाना कठिन है। सार स्वरूप इतने की पुनरावृत्ति की जा सकती है कि मितव्ययिता उन अमूल्य गुणों में से है जिस पर अन्य उत्तम गुण आश्रित हैं और जिन पर मनुष्यों का, उनकी जाति अथवा देश का कल्याण निर्भर रहता है।

मितव्ययिता स्वाभाविक गुण नहीं है। भविष्य का विचार एवं दूरदर्शिता, कठिनाई के समय के लिए तैयारी, अपनी मृत्यु के पश्चात् स्त्री तथा बच्चों की चिन्ता इत्यादि के कारण, इच्छाओं के निरोध, विषयवासना के दमन, आलस्य, अविचार, अहंकार, अविवेक और असंयम के त्याग द्वारा मितव्ययिता प्राप्त होती है। अच्छे घर, अच्छी स्त्रियां और अच्छी मातायें हमें अज्ञानता से दूर ले जा सकती हैं। वे ही आत्म-निर्भर बना सकती हैं। हमारी शिक्षा भी धर्म और नैतिक सिद्धान्तों पर स्थिर होनी चाहिए। अपने आपको वश में करना बड़ा कठिन है किन्तु बुद्धि और दृढ़ संकल्प से सब सम्भव है। यह सच है कि "बहुत से वर्तमान के लिए परिश्रम करते हैं और थोड़े से भविष्य के लिए। किन्तु बुद्धिमान जन वर्तमान और भावी दोनों के लिए करते हैं अर्थात् आजकल के लिए और कल आज के लिए।

मितव्ययिता का अभ्यास मनुष्य का परम कर्त्तव्य है। समय को सावधानी से काम में लाना यदि इसलिए आवश्यक है कि बीता हुआ समय फिर हाथ नहीं आता

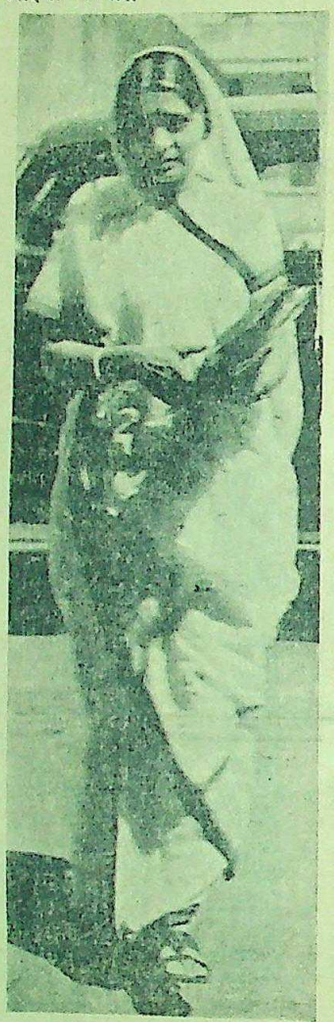

श्री ती हंसा मेहता—सभानेत्री अखिल भारतीय महिला सम्मेलन, आजकल अमरीका गई हैं।

तो धन को इसलिए कि वह गुण, यश, गौरव और चरित्र है और स्वतन्त्रता का कारण भी है। मनुष्य-जाति और देश की उन्नति धन को सावधानी से ही ख़र्च करने में है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि अपनी उन्नति से ही जाति की तथा देश की उन्नति होती है और वही जातियाँ तथा देश आगे हैं जिनके मनुष्य आगे हैं। केवल अनावश्यक तथा बहुत-सी सस्ती मिलने के कारण ख़रीद ली जानेवाली वस्तुएँ न ख़रीद कर न जाने हम कितनी बचत कर सकते हैं। कम आय होने और बचत की असम्भवता की बात हमारी समझ में नहीं आती। जब मृत्यु के समय के समान कोई अनिश्चित वस्तु नहीं और मृत्यु के समान कोई निश्चित वस्तु नहीं तो फिर मनुष्य अमितव्ययिता, व्यर्थ व्यय तथा अपव्यय कैसे कर सकता है।

क़र्ज़ लेना एक बड़े पाप से कम नहीं। किसी विद्वान का कथन है कि ऋण, झूठ, नीचता, कुटिलता और मायाचार की जननी है। सामाजिक रूढ़ियों के अधीन जो भारतवासी अब भी जन्म, विवाह एवं मृत्यु आदि के अवसरों पर ऋण लेकर व्यय करके नामवरी लूटने का प्रयत्न करते हैं वे ऐसा करने से अपना झूठा गौरव बढ़ाते और सदैव के लिए अपना अहित कर बैठते हैं। ऋण लेकर बनवाये हुए आभूषण भी अनुचित हैं। बेकर, पिट, शैरडिन, कूपर, गोल्डस्मिथ और वाल्टर स्काट भी, आश्चर्य है, ऋणी थे। इतिहास साक्षी है कि ऋणी मनुष्यों की मृत्यु बड़ी बुरी हुई है। "श्रम से धन उत्पन्न होता है, मितव्ययिता से बढ़ता है और सावधानी से सुरक्षित रहता है। जो मनुष्य अपने कार्य को श्रम से करता है किन्तु सावधानी से नहीं करता वह एक हाथ से कमाता है और दूसरे हाथ से फेंक देता है।" कहने का तात्पर्य यह है कि हमें अपनी छोटी-छोटी वस्तुओं को भी सावधानी से रखना चाहिए वरना उनके लिए बड़ी क़ीमत देनी पड़ती है। बचाने के साधारण नियमों में, आमदनी से कम ख़र्च करना, नगद व्यवहार, भाव लाभ की आशा न रखना, आय-व्यय का हिसाब रखना और वस्तु व्यर्थ न जाय, आते हैं।

मितव्ययिता को प्रोत्साहित करने के समुचित साधन, पोस्ट आफ़िस सेविंग बैंक, सहायक सभा संस्थायें तथा बीमा कम्पनियाँ हैं। इन सबका प्रचार आजकल प्रायः सभी देशों में हो गया है। बीमा कराने के प्रति उदासीनता होना भूल है और सेविंग के विषय में तो एक विद्वान् ने ठीक है "मेरी उत्कट इच्छा है कि मैं संसार में सेविंग बैंक शब्द को सुनहरी में लिख दूँ।"

मितव्ययिता स्वावलम्बन और की जड़ कही गई है। सत्यपरायणता, दयालुता, उदारता, आत्मनिर्भरता, दर्शिता और मितव्ययिता आदि उत्तम गुण हैं वे सब रुपये के सदुपयोग से सम्बन्ध रखते हैं और इसके विपरीत कृपणता, निर्दयता, अदूरदर्शिता, लोभ, मोह, अपव्ययता आदि जितने हैं वे सब रुपये के दुरुपयोग से सम्बन्ध रखते हैं। मितव्ययी पुरुष जन-साधारण हितैषी और उपकारी, और अपव्ययी तथा शत्रु होता है।

प्रिंस होमियोपैथिक कालेज
बनारस १०५
गवर्नमेंट से राजस्टर्ड होमियोपैथिक, इंजेक्शन का तीनों पार्ट (सार्टिफ़िकेट) आधी फ़ीस में लें या प्राप्त करें। नियमावली मुफ़्त

८ कारण-खाद्य राशन को क्यों विस्तृत करना चाहिये?

☆ भारत के अनेक भागों में अकाल का आतंक है।

☆ आवश्यकता-पूर्ति के निमित्त पर्याप्त खाद्य-उत्पादन नहीं है।

☆ सारे संसार में अभाव के कारण कमी के लिये पूरा पूरा आयात संभव नहीं है।

☆ अनिवार्य खाद्यों को सटोरियों के लिये मुक्त नहीं किया जा सकता।

☆ मूल्य-नियंत्रण कायम रखना चाहिये।

☆ व्यर्थ व्यय समाप्त होना चाहिये।

☆ अतिरिक्त अन्न वाले क्षेत्रों से राशन की कमी वाले क्षेत्रों को खाद्य उपलब्ध होता रहे।

☆ कमीवाले क्षेत्रों में खाद्य का सब में बराबर वितरण होता रहे।

५५६ नगरों में विस्तृत ५ करोड़ ३० लाख से भी अधिक व्यक्तियों में अभीतक राशन की व्यवस्था है। इस सूची में और भी नगर एवं क्षेत्र जोड़े जा रहे हैं। स्टाक की रक्षा एवं कमी वाले क्षेत्रों की सहायता के लिये अन्न-राशन की मात्रा कम कर दी गई है। खाद्य-राशन में सहयोग देना आपका कर्त्तव्य है। ईमानदारी से राशन के नियमों का पालन कीजिये—इस प्रकार अपना कर्त्तव्य पालन करते हुये औरों के प्राण बचाइये।

उचित मूल्य पर R सबके लिये भोजन

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...रविवार, २६ मई, १९४६

...रेज से पस्त और थकान से चूर गहरी ...में सो गया। सुबह वह काफी देर से ...गया।

...इतने जबरदस्त सदमे के बाद दफ़्तर ...बहुत मुश्किल था; इसलिए दफ़्तर ...छुट्टी की अर्जी भेज दी। फिर उसे ...आया कि उसे जौहरी के पास जाना ...शीघ्रातिशीघ्र कपड़े बदले और जौहरी ...दुकान पर चल दिया। यह एक सुन्दर ...था। नीले आसमान पर बादल का ...नामोनिशान तक नहीं था। न्यूटन ...अमीरों को मज़े से इधर-उधर टहलते ...। दिल ही दिल में सोचा कि दौलत-...कितने खुशनसीब हैं; वाक़ई दौलत से ...गम भुलाया जा सकता है। इन्सान ...से सफ़र करके दुखों से छुटकारा प्राप्त ...सकता है।

...उसे भूख लग रही थी; लेकिन जेब ...थी। उसे फिर नेकलेस का ख्याल ...आया।

...अठारह हज़ार फ़्रेंक—अठारह हज़ार ...—कितनी बड़ी रक़म!

...थोड़ी देर में वह जौहरी की दूकान ...पहुंच गया। उसे देखते ही प्रोप्राइटर ...पेश की और मुस्कराकर कहा, ...अपनी तसल्ली कर ली है और अगर ...नेकलेस बेचना चाहें तो मैं आपको ...हज़ार, फ़्रेंच दे सकता हूँ।"

...न्यूटन ने रसीद पर दस्तखत करते ...और कांपते हुए अठारह हज़ार फ़्रेंक ...खाली जेब में डालते हुए कहा, ...पास कुछ और भी जवाहरात हैं। ...आप खरीदेंगे?"

...प्रोप्राइटर ने मुस्कराते हुए कहा, ...नहीं।"

...का एक क्लर्क हँसी न जब्त कर ...इसलिए फौरन दूसरे कमरे में चला ...। दूसरे ने हँसी रोकने के लिए अपनी ...दबा ली। अब न्यूटन ने गम्भीरता ...कहा—"तो मैं बाकी जवाहरात भी ...आऊंगा।"

...उसी समय न्यूटन ने एक फिटन-...किराये पर ली और जवाहरात लाने के ...वापिस घर गया। एक घंटे बाद ...पर वह वापिस आया। उसने अभी ...भी नहीं किया था। जवाहरात ...परीक्षा की गई; प्रायः सबके ...उसी दूकान से खरीदे गये थे, अब ...न्यूटन की ज़बान कैंची की तरह चलने ...। बार-बार कहता, "आप ज़रा ...बही में देखिये कि आपने यह किस ...पर बेचा था?"

...ज्यों-ज्यों रक़म बढ़ती जाती—उसके ...और भावभंगी में भी फर्क पड़ता ...। तमाम जवाहरात की क़ीमत एक ...छियानवे हज़ार फ़्रेंक हुई।

...जौहरी ने हँसते हुए कहा, "आपको ...जवाहरात ऐसी हस्ती से मिले हैं जिसने ...तमाम पूंजी जवाहरात खरीदने ...कर दी।"

न्यूटन ने अति गम्भीर मुद्रा से उत्तर दिया, "हाँ, यह रुपयों का सर्वश्रेष्ठ उपयोग है।"

वापस आकर उसने 'शयल होटल' में लंच खाया और २५ फ़्रेंक की शराब की एक बोतल चढ़ाई। फिर एक फिटन किराये पर ली और शिक्षण-विभाग के दफ़्तर में गया। बार-बार वह चाहता कि सड़क पर चलते हुए लोगों से वह कहे कि मैं भी अमीर हूँ; मैं भी दौलतमंद हूँ।

* * *

न्यूटन अपने अफ़सर के कमरे में दाखिल हुआ और कहा, "जनाब, मैं इस्तीफा पेश करने के लिए आया हूँ क्योंकि आज ही मुझे अपनी जायदाद से तीन लाख फ़्रेंक मिले हैं।" फिर वह अपने दफ़्तर के क्लर्कों से मिला और हँस-हँसकर अपनी सम्पत्ति की बाबत बातचीत की।

थोड़ी देर बाद वह 'माउंट होटल' में खाना खाने चला गया।

इतने में एक और धनी व्यक्ति उसके पास आ बैठा। न्यूटन ने मुस्कराते हुए कहा, "महाशय, आज ही मुझे अपनी जायदाद से पाँच लाख फ़्रेंक मिले हैं।"

उस शाम वह पहली दफा अपनी मर्ज़ी से थियेटर गया और खूब मज़े से समय गुज़ारा। रात्रि का शेष समय एक वेश्या के पहलू में बसर किया।

लेकिन बारबार उसे अपनी बीवी के शब्द स्मरण हो आते—"प्यारे, मैं क्या करूँ। मुझे शौक है, इसलिए मैं इन झूठे जवाहरात से खेलती हूँ।"—और वह खिलखिलाकर हँस पड़ा।*

* मोपासां की एक मनोवैज्ञानिक कहानी।

धातुपौष्टिक
कामजोत वटी
...वीर्यविकार, शीघ्रपतन, ...कमजोरी दूर करके खून, बल ...बढ़ाती है। डि० रु० २॥)
कामजोत तिला
...उपयोग से इन्द्री की नसें व अव-...मजबूत होकर उत्थानशक्ति और ...बढ़ती है। फी शी० २॥)
...फार्मसी जामनगर
...मदन स्टोर्स ४७ जान्स्टनगंज

आधुनिक निर्माण कार्य

उद्योग
खेती
यातायात
शिक्षा
स्वास्थ्य
गृह निर्माण

व्यवहारिकरूपसे भारतवर्ष की प्रगती के कार्यक्रम के प्रत्येक भाग को सीमेंट कॉंक्रीट की आवश्यकता है

गवर्नमेंट का नियन्त्रण:—यद्यपि सीमेंट वितरण पर फिलहाज गवर्नमेंट का नियन्त्रण बना ही रहेगा फिर भी बिना किसी कठिनाई के हर तरहके निर्माण कार्य, मरम्मत तथा नवीन कार्यों के लिये सीमेंट मुहय्या करने का अधिकार प्राप्त करना अब सम्भव हो गया है।

दि सीमेंट मार्केटिंग कं. आफ इन्डिया लि.

सी.एम.आय. डिस्ट्रीब्यूटर्स
सी.ए. आई.की मुफ्त सेवा

CM. 100.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व का सर्वश्रेष्ठ अभिनेता राबर्ट डोनाट

जीवन की विभिन्न मनोरंजक घटनाओं का लेखा-जोखा

लेखक, श्री उमेश जाशी

इस लेख के लेखक श्री उमेश जोशी आपका सबसे अच्छा गण यह था कि "ओजी डिन्ट" थे। अपने सहपाठियों एवं शिक्षकों के प्रति। कभी आप बड़े से गुस्ताखी से पेश नहीं आते। तक कि आप छोटों से भी हमेशा से वार्तालाप करते हैं।

साहित्य-निर्माण के सम्बन्ध में कथन है—"जनसाधारण की के परे जो चीज लिखी जावेगी, अस्तित्व शून्य के तुल्य है। जिन्हा वही है—जो कि मानव-संघर्षों का विक प्रतीक हो। फिल्मी-साहित्य रूप ऐसा ही होना चाहिए। प्रसिद्ध कलाकारों की रचनाओं को बनानी चाहिए। ताकि वह दुनिया मंच पर अपना रंगरूप दिखा सके। हाँ साहित्यकारों का यह परम वह मानव-कल्पना के परे कोई भाविक चीज साहित्य में सृजन विवेक की शुचि अनुभूति की रम्य ही उच्चकोटि का साहित्य है। साहित्य पर कोई देश गर्व कर सकता और ऐसी ही साहित्य की फिल्म चाहिए।"

आप चित्रकारी से भी प्रेम करते प्रेम ही नहीं करते, बल्कि आप इस

शेष पृष्ठ १८ पर देखो

"आप तो मजाक करते हैं—भला मैं ऐसी क्या सुन्दर हूँ, जो मुझ पर कोई रीझेगा?"

"अजी जनाब, आप ग़लत समझीं—मैं स्टोरी को अवश्य प्रेम करता हूँ, लेकिन मिस स्टोरी से नहीं—अखबारोंवाली स्टोरी से मेरा मतलब है—समझीं।"

"मेरी समझ में कुछ नहीं आया? आप हमेशा पेचदार बात किया करते हैं—मुझ सीधी-साधी छोकड़ी से—तुम्हें तो कोई चन्ट मिलती, तब तो तुम्हें दाल आटे का भाव मालम होता।"

"बात दरअसल में यह है कि मैं तुमसे बहुत प्रेम करता हूँ। तुम्हारा सुन्दर मुख ही वास्तव में एक अनुपम काव्य है। तुम्हारे सौन्दर्य के प्रत्येक अंग से नवीन कहानियों का विकास हो रहा है, तुम्हारी मुस्कराहट में तो जीवन की अमूल्य कहानी छिपी हुई है। तुम्हारे मद भरे चक्षुओं में वह रंग है, जो किसी भी कहानी के स्वरूप को आकर्षक बना दे, ऐसा आकर्षक कि जिसके अपनाने से जीवन में एक "बसन्त-बहार" आ जावे। तुम स्वयं एक अनुपम बड़ी कहानी हो, जिस पर कि दुनिया मस्त है। तुम वास्तव में मेरे जीवन की मनोरम कृति हो, और ऐसी कृति जिस पर कि स्वत्व रखने से कोई भी व्यक्ति अभिमान कर सकता है।"

"सब माईडियर डोनाट?"

"इसमें भी कोई शक है?"

"तब फिर हम दोनों को प्रणय की ललाम-दुनिया में क्यों न प्रविष्ट होना चाहिए, जहाँ पर जाकर मानव-जीवन की हम कलित रचना सृजन करें।"

"अवश्य, इससे अच्छी और क्या बात हो सकती है। यह तो मेरे जीवन का मुख्य ध्येय है, इसी ध्येय की तुम साधना हो, तपस्या हो, अमूल्य-निधि हो, जीवन की अमर कहानी हो" मैंने उसके यौवन-प्रसून का मस्त सौरभ लेते हुए कहा।

* * *

आज मेरी वाइफ मिस स्टोरी है। जीवन के साथ कन्धा से कन्धा भिड़ानेवाली। मैंने एक "कहानी" "टाइमस आफ लन्दन" के लिए लिखी, आज चार साल के बाद मेरा यह प्रयास था। लेकिन इस प्रयास में मेरे "जीवन-पुष्प" की अपूर्व सुषमा की रम्य आभा बिखरी पड़ रही थी, और बिखरी पड़ रही थी मानवता की नग्न पीड़ा।

एक हफ्ते के बाद मुझे अखबार मिला उसमें मेरी कहानी प्रथम पेज पर छापी गई थी। उसकी उजरत मुझे तीन हजार के लगभग दी गई। साथ में एक प्रशंसा से भरा हुआ पत्र भी था। इस कहानी के द्वारा मेरी ख्याति चारों ओर फैलने लगी। कहानी में मैंने अपना कहानी का प्रेम प्रारम्भ से लेकर अब तक अंकित किया था। उसका नाम था "माईलब आफ स्टोरी" यह "कहानी" हालीवुडवालों को बहुत पसन्द आई। मुझे एक तार मिला। जिसमें लिखा था—"शीघ्र आओ, तुम्हारी यहाँ बहुत जरूरत है" मैं तार को पाकर फौरन ही हालीवुड गया, और तब से मैं वहीं पर हूँ। हालीवुडवालों ने मेरी इस कहानी का फिल्म भी बना डाला। उसका नाम भी वही रखा जो कि मैंने लिखा था यानी "माईलब आफ स्टोरी" यही मेरे प्रणय की उज्ज्वल कहानी है, और यही मेरे फिल्मी-दुनिया में पदार्पण की। अच्छा तो पाठक गण गुडबाई।

आपकी उम्र इस वक्त चालीस साल की है। आप बड़े जिन्दादिल आदमी हैं। थोड़े ही समय में आपने अपनी अनूठी कला के द्वारा विश्व का जाज्वल्यमान कलाकार अपने को प्रसिद्ध कर लिया। आपकी प्रतिभा बड़ी विलक्षण है। आप प्रत्येक चीज को बहुत जल्दी "ग्रास्प" करते हैं। आपकी "ग्रास्पइंग-पावर" इतनी तेज है कि आज हालीवुडवाले आपको "बेस्ट ओब्जर्वर" के नाम से पुकारते हैं। आपने अब तक हालीवुड के करीब अस्सी चित्रों में काम किया है। और उनमें से कई एक चित्र अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति उपलब्ध किये हुए हैं।

आप पढ़ने में हमेशा से तेज रहे। कभी आप द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण नहीं हुए—हमेशा अव्वल आप आया करते थे। स्पोर्ट में भी आप दिलचस्पी लिया करते थे। आऊट-डोर-गेम एवं इन-डोर-गेम दोनों तरह के खेलों में आप दक्ष हैं। इन-डोर-गेम में आपको "रनिङ्ग स्नेक ओन दी फ्लोर" अधिक प्रिय है। तथा आऊट-डोर-गेम में आपको टेनिस विशेष अच्छी लगती है। टेनिस में तो आप अपनी क्लब के केप्टन भी थे। विद्यार्थी-जीवन का

भारतीय गुलाब के उद्यान की समस्त ताजगी की नवीनता विनोलिया व्हाइट रोज़ साबुन में आप ला सकते हैं। उस का मृदु, भरपूर झाग मल त्वचा को सौम्यता से साफ़ करता है—और उस के सुगंध से आप के अंतराल एक मीठी लहराती है। आप के सौन्दर्य-वर्धन का उत्तम वा अत्युत्कृष्ट साबुन आप नहीं पा सकेंगे विनोलिया व्हाइट रोज़ को अपना प्रिय साबुन बना लीजिये

विनोलिया व्हाइट रोज साबुन

VINOLIA CO. LIMITED, LONDON, ENGLAND

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन और रेडियो

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति में भारत-सरकार के, पत्र पढ़े गये और उन पर विचार हुआ। निश्चय हुआ कि गवर्नमेंट ने अपनी नीति में जो परिवर्तन किया है उसको देखते हुए सम्मेलन गवर्नमेंट के निमंत्रण को स्वीकार करता है। किन्तु सम्मेलन अपनी यह नीति स्पष्ट कर देना चाहता है कि यदि एक ही भाषा-शैली में संवादों का प्रसार होना है तो वह भाषा ऐसी हिन्दी होगी जो न केवल संयुक्तप्रान्त, बिहार, मध्यप्रान्त, राजपूताना, मध्यभारत, दिल्ली और पंजाब में समझी जा सके किन्तु जो महाराष्ट्र, गुजरात, बंगाल, उड़ीसा और दूसरे प्रान्तों में भी समझी जा सके। इस भाषा में फारसी, अरबी और दूसरे विदेशी जन-साधारण में चले हुए शब्दों का बहिष्कार न होगा परन्तु भाषा का आधार देशी शब्द ही होंगे चाहे तत्सम रूप में चाहे तद्भव रूप में। नये शब्दों के बनाने में संस्कृत और प्राकृत का ही सहारा लिया जायगा, क्योंकि देश की अधिकतर प्रान्तीय भाषाओं का उनसे संबंध है। अरबी और फारसी आदि विदेशी शब्द जो चलन में हैं वे भी हिन्दी व्याकरण के अनुसार व्यवहार में आयेंगे।

यदि इस प्रकार की एक भाषा चलाने में रेडियो-विभाग असमर्थ हो तो यही उचित होगा कि वह हिन्दी और उर्दू में पूरी तरह से पृथक् प्रसार करे।

सम्मेलन का प्रतिनिधि रेडियो-विषयक उस कमेटी के निर्णयों से बँधा नहीं होगा जिसकी सिफारिश के अनुसार यह सलाहकार-समिति बनाई गई है।

सम्मेलन के प्रतिनिधि भेजने में केवल इतना ही तात्पर्य समझना चाहिए कि भाषा-विषय के हल करने में सम्मेलन गवर्नमेंट के साथ सहयोग करने को तैयार है।

सम्मेलन के प्रतिनिधि को विशेष ध्यान इस विषय की ओर भी देना है कि संवादों को छोड़कर दूसरे विषयों में हिन्दी का सब प्रसार-केन्द्रों में हिन्दी बोलनेवालों की संख्या के अनुकूल अनुपात हो।

सम्मेलन के प्रतिनिधि को इस बात पर भी ध्यान दिलाना होगा कि रेडियो-विभाग में हिन्दी के विद्वान् अधिकार के स्थानों पर नियत किये जायँ; क्योंकि बिना इसके रेडियो में उपयुक्त भाषा का चलन सम्भव न होगा।

सम्मेलन अपने प्रतिनिधि को इसी आशा से गवर्नमेंट के साथ सहयोग करने के लिए भेज रहा है कि वह गवर्नमेंट को इस बात में सहायता दे कि भाषा के सम्बन्ध में उसकी नीति जनता की आवश्यकता के अनुकूल बने। सम्मेलन को भरोसा है कि उसके इस सहयोग से गवर्नमेंट का प्रसार-विभाग दिन पर दिन जनप्रिय होगा। किन्तु यदि सम्मेलन के इस सहयोग से गवर्नमेंट ने अपनी नीति को सुधारने में कोई लाभ न उठाया तो सम्मेलन अपनी सहयोग की नीति पर फिर से विचार करेगा और हिन्दी-जनता को आवश्यक आदेश देगा।

गवर्नमेंट ने जो कमेटी बनाई और उसकी सलाह पर एक स्थायी सलाहकार-समिति का आयोजन किया जिसमें हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा और अंजुमने तरक्की उर्दू के प्रतिनिधि होंगे—यह जनता के आन्दोलन और बहिष्कार का परिणाम है। सम्मेलन की यह समिति उन सब लेखकों, कवियों, वक्ताओं और पत्रकारों को बधाई देती है जिनके आन्दोलन और त्याग का यह परिणाम निकला है। यह समिति अब उस रेडियो बहिष्कार को भी उठाना उचित समझती है जो जयपुर-सम्मेलन के समय से हिन्दी जनता ने अपनाया था और सब हिन्दी-साहित्यिकों को स्वतंत्रता देती है कि वे रेडियो-विभाग के काम में इस दृष्टि से सहयोग दें कि हिन्दी की शक्ति दिन पर दिन बढ़े और जनता के सामने ऊँचे स्तर के प्रसार उपस्थित हों। साथ ही यह समिति उनको यह भी चेतावनी देती है कि हमारे आन्दोलन का जो छोटा-सा फल निकला है उसको पाकर हिन्दी-साहित्यिक रेडियो-विषयक चेतना को दुर्बल न पड़ने दें और हिन्दी के अधिकारों की रक्षा में निरन्तर सजग रहें।

यह समिति श्री मौलिचन्द्र शर्मा को प्रस्तावित स्थायी सलाहकार समिति में उपर्युक्त नीति के अनुसार काम करने के लिए अपना प्रतिनिधि नियुक्त करती है।

—रामलखन शुक्ल,
प्रबंध मंत्री

वैदेशिक मंत्रियों का सम्मेलन

पेरिस में वैदेशिक मंत्रियों की सभा में गत सितम्बर की लन्दनवाली बैठक में अड़ंगा उत्पन्न हुआ था और वह सभा इस बार भी इटली और बलगारिया के संबंध में समझौते की शर्तों पर एका न होने के कारण स्थगित हो गई। इस बार किसी विशेष प्रश्न पर सभा की कार्यवाही भंग नहीं हुई है बल्कि मंत्रियों में इटली, ट्रीस्ट तथा उपनिवेशों के संबंध में तथा मुआवजा देने के संबंध में समझौता नहीं हो सका। पेरिस में इस बात पर मतैक्य है कि ट्रीस्ट की समस्या से ऐसा झगड़ा उत्पन्न हुआ जिस पर 'चार बड़े' सहमत न हो सके। एक ओर रूस तथा दूसरी ओर इँगलैंड और अमेरिका एक दूसरे से इतना हट गये कि उनमें समझौता होना बहुत कठिन हो गया।

अपनी बात

लेखक, श्रीयुत चन्द्रभूषण वैश्य

मनुष्य के चरित्र में किस प्रकार की दुर्बलतायें होती हैं और उन्हें दूर करके वह किस प्रकार अपने जीवन को उन्नत बना सकता है, यह बात इस पुस्तक में बहुत ही ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है और लिखी गई है व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर। अपने चरित्र का निर्माण करने के लिए प्रत्येक युवक को यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ।।।) बारह आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

स्त्रियों का भयानक शत्रु

प्रदर रोग जिसको लोग लिकोरिया भी कहते हैं यह स्त्रियों की सुन्दरता और जवानी को नष्ट करनेवाला भयानक शत्रु है। लज्जावश बेचारी रोग को छिपाये रहती हैं और दिन-रात घुला करती हैं। यह उनकी भूल है। भयानक रोग का इलाज कराने में लापरवाही नहीं करनी चाहिए। इस बीमारी से स्त्रियों के गुप्त शरीर से लाल, काला, धुमैला या श्वेत रंग का बदबूदार पानी या लेस-सा निकलता रहता है, महीना ठीक समय पर नहीं होता है, जिसके कारण कमर, रीढ़, सिर में दर्द, शरीर में जलन, मन मलीन, उठने-बैठने में थकावट, भूख का कम लगना, बदन दुबला और कमजोर हो जाना, मूर्छा, बेहोशी आदि रोग हो जाते हैं। और सन्तान नहीं होती, और यदि होती भी है तो दुबली और कमजोर होती है। ऐसी अवस्था में भारत-विख्यात वैद्यरत्न सत्यदेव ने अपूर्व शक्ति प्रदान करनेवाली २५ वर्ष की आजमूदा नारी संजीवन नामक दवा का आविष्कार किया है। जिसके द्वारा आज तक सहस्रों स्त्रियों को इस भयानक रोग के पंजे से छुड़ाया है। इस नारी संजीवन के सेवन से तमाम बीमारियाँ दूर होकर स्त्रियाँ सुन्दर और तन्दुरुस्त हो जाती हैं और सन्तानें सुन्दर बलवान् दीर्घायु पैदा होती हैं। यदि आवश्यकता हो तो आज ही पत्र डालकर एक डिब्बा नारी संजीवन को मँगाकर इसके अपूर्व गुणों का चमत्कार देखें। क़ीमत एक डिब्बा ३=) डाक खर्च माफ़, पेकिंग खर्च अलग।

मँगाने का पता—

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

सभी दर्द
सारिडन
दुःखशामक टिकड़ियांसे
१० मिनटोमें दूर हो जाते है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

सेवदह (पटना) राजेन्द्र साहित्य महाविद्यालय में बिहार सरकार के अर्थ और खाद्य-मंत्री माननीय अनुग्रहनारायणसिंह जी, श्री गंगाशरणसिंह, श्री सत्येन्द्रनारायणसिंह एडवोकेट के साथ विद्यालय पधारे। कुछ ही देर बाद दूसरी मोटर से श्री जगतनारायण लाल एम० एल० ए०, श्री ब्रजनन्दनप्रसाद एम० एल० सी० और बाबू कीर्तिनारायण शर्मा भी आये। श्री श्यामनारायणसिंह एम० एल० ए० पहले से ही स्वागतार्थ उपस्थित थे। आप लोगों का छात्रों ने पुष्पमालाओं से स्वागत किया।

ग्राम सेवा शिक्षण-शिविर के शिक्षार्थियों और विद्यालय के विद्यार्थियों की संयुक्त बैठक में अनुग्रह बाबू ने कुछ प्रश्न किया। श्री सुशील और श्री रवीन्द्र जी ने अपने तर्कपूर्ण उत्तरों से मा० मंत्री जी को प्रसन्न किया प्रश्नों में प्रमुख विषय खाद्य और वस्त्र-समस्या सम्बन्धी था।

श्री मथुराप्रसाद सिंह प्रधानाध्यापक ने आगन्तुक सज्जनों को विद्यालय के प्रत्येक विभागों को दिखलाया। वाचनालय, छात्रावास, मधुमक्खी-पालन पुस्तकालय और प्रकाशन-विभाग (हस्तलिखित 'युगवाणी') के कार्यों को देखकर बड़े ही प्रभावित हुए। टूटी-फूटी झोपड़ियों को देखकर सभी लोगों का हृदय द्रवीभूत हो गया। शिवेन्द्र, अभय आदि कुछ छोटे बच्चों ने मा० अर्थ मंत्री से मकान बनवा देने की प्रार्थना की। उस समय की बातचीत विनोदपूर्ण रही। श्री लालसिंह जी 'त्यागी' ने ग्राम सेवा शिक्षण-शिविर के हर विभागों को दिखलाया। बुनाई और तांत विभाग के कार्य्य को देखकर बड़े प्रसन्न हुए। श्री सिद्धेश्वर चौधरी नामक विद्यार्थी द्वारा निर्मित चर्खे को देखकर जगत बाबू सत्येन्द्र बाबू और ब्रजनन्दन बाबू बड़े अचम्भित हुए क्योंकि इसमें सूत आपसे आप सिमिट जाते हैं।

जलपान के अभ्यन्तर जब मा० मंत्री महोदय जाने लगे तब दो समूहों ने आकर मंत्री महोदय के सामने प्रस्ताव रखा। जिसमें हरिजन स्त्रियों ने अपनी बस्ती में कुएं बनवाने का और डिहरी मुहाल के किसानों ने सिंचाई के लिए बांध और चेरों में पुल बनवाने का अनुरोध किया मा० मंत्री महोदय ने ध्यान से उनकी बात सुनी और उचित कार्यवाही करने का आश्वासन दिया। एक अन्धे हरिजन को मा० मंत्री महोदय ने पांच गज खादी अपनी ओर से देने के लिए प्रधान जी से कहा।

साढ़े छः बजे सभी लोग विदा हो गये। इसके पश्चात् विद्यालय के मंत्री के सुपुत्र चिरंजीव कृष्णेश्वरसिंह के विवाह में सम्मिलित होने के लिए प्रधान जी, त्यागी जी, अनीश जी और कामता जी भेरगामा (फतुहा) चले गये।

—श्री 'अनीश'

* * *

आगरा में न्याय व उन्नति-विभाग के सचिव श्री डा० कैलाशनाथ काटजू की पंचवर्षीय योजना को कार्यरूप में परिणत करने के लिए अखिल भारतीय पशु-रक्षा-सम्मेलन तथा बलवन्त राजपूत कालेज आगरा ने ऐसे नवयुवकों को शिक्षा देने का प्रबन्ध किया है जो गांवों में अपनी खेती व पशुपालन की उन्नति कर सकें अथवा ग्रामसुधार की पंचायतों में कार्य कर सकें, इसके लिए युक्तप्रान्त की सरकार से १०,००० रु० मंजूर हुआ है।

इस शिक्षा के लिए वे ही नवयुवक भरती किये जायेंगे जो कि हाथ-पैर से काम करने में मुस्तैद हों, दो-चार कोस बोझ लेकर चल सकते हों, खेती व पशुपालन के काम से न हिचकते हों, हिन्दी या उर्दू में मिडिल अथवा अंगरेजी में आठवां दर्जा पास हों, छुआछूत का विचार न करते हों, देश-सेवा जिनका ध्येय हो, भोजन इत्यादि बनाना जानते हों, बदन फुर्तीला हो और स्काउटिंग जानते हों। तालीम अधिकतर अमली होगी

प्रधान मन्त्री, अखिल भारतीय पशु-रक्षा-सम्मेलन महावीर भवन रोशन मुहल्ला, आगरा के पते पर ४ आने के टिकट भेजकर पाठ्य-विधि व प्रवेश पत्र दोनों मंगाये जा सकते हैं जो केवल प्रवेश-पत्र मंगाना चाहें वह केवल ६ पैसे के टिकट ही उक्त पते पर भेजें। प्रधान मन्त्री दफ्तर में जाकर पाठ्य-विधि ३ आने में और प्रवेश-पत्र मुफ्त लिया जा सकता है।

साल भर में होनेवाले खेती के काम और फसलों के विषय में जानकारी, पशु-पालन व पशुओं की नस्ल सुधारना, व उनकी वृद्धि करना, उनकी बीमारियां व उनका इलाज, पंचायतों का बनाना व चलाना, बागवानी व पौध लगाना। कताई बुनाई व अन्य ग्राम-उद्योग तथा ग्रामसुधार के विषय में शिक्षा।

विशेष जानकारी के लिए अ० भा० पशु-रक्षा-सम्मेलन आगरा से मिलना अथवा पत्र-व्यवहार करना चाहिए।

—संवाददाता

* * *

ग्वालियर स्टेट कांग्रेस के अध्यक्ष श्री गोखले जी ने स्वच्छ भेलसा के प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री चौधरी मंजूरअली खां साहब को स्टेट कांग्रेस की वर्किंग कमेटी का नया मेम्बर घोषित किया है।

ग्वालियर स्टेट कांग्रेस का काम दिन-ब-दिन देहात में बढ़ाये जाने के प्रयत्न हो रहे हैं हाल ही में खैरिया कोहार और बधौरी में नई मुकामी कमेटियों की स्थापना हुई है।

आगामी ता० २८ मई से लाहौर में हो रहे राजनैतिक सम्मेलन की तैयारियां जोरों से चल रही हैं। श्री दीपचन्द पालीवाल, अमरसिंह जी, हरिसेवक जी आदि प्रचार कर रहे हैं।

—संवाददाता

* * *

उदयपुर में प्रकृति ने स्त्री को जन्म से ही अध्यापिका तथा राष्ट्र-सेवा के रूप में दी है। उक्त शब्द श्रीमती रंगास्वामी एम० ए० ने महिला-मण्डल द्वारा संचालित कस्तूरबा ट्रेनिंग विद्यालय के प्रथम वर्ष समाप्ति-समारोह पर अध्यक्ष पद से कहते हुए पारितोषिक वितरण किया। समारोह का प्रारम्भ राष्ट्रीयगान एवं दीप-दान से हुआ। विद्यालय का प्रस्तुत "संवाद" समयानुकूल एवं मनोरंजक रहा। नगर में संचालित १० केन्द्रों कस्तूरबा ट्रेनिंग मिडिल स्कूल और रात्रि पाठशाला के कार्य विवरण प्रधान मंत्राणी जी एवं आचार्या जी द्वारा सुनाये गये।

साथ ही ब्रिजोल्या किसान सत्याग्रह के उदयपुर में २४ वर्षों से निर्वासित श्री हरिभाई किंकर ने महिलोपयोगी गीत सुनाये। अन्त में मण्डल अध्यक्ष रायसाहब श्री लक्ष्मीलाल जी जोशी ने जनता से मण्डल के प्रति परिचय और सम्पर्क बढ़ाने के लिए कहते हुए आभार प्रदर्शन किया।

जनता ने गीतों और आयोजन में यथेष्ट उत्साह प्रदर्शित किया।

—कमला कुमारी श्रोत्रिय

उदयपुर हिन्दी विद्यापीठ के अन्तर्गत विकसित होनेवाली आठ शाखा संस्थाओं में से प्राचीन साहित्य शोध संस्थान भी एक है। इसकी स्थापना सन् १९४० में राजस्थान हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन के अवसर पर हुई थी। तब से इसका विकास निरन्तर होता चला आ रहा है। भारतवर्ष के श्रेष्ठ विद्वानों का सहयोग इसमें प्राप्त होता जा रहा है। प्राचीन साहित्य शोध संस्थान में, लोकगीतमाला, चारण गीतमाला, कवि कोविदमाला, कहावतमाला, राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथों की शोध खोज, सम्पादन का काम, महाकवि सूर्यमल आसन, डा० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा आसन आदि कई प्रवृत्तियां जमती जा रही हैं।

सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ डा० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने अपने समस्त प्रकाशित और अप्रकाशित लेख (राजपूताने के इतिहास को छोड़कर) हि० वि० पी० प्राचीन साहित्य शोध संस्थान को प्रदान कर दिये हैं। इन निबन्धों का सम्पादन 'बिहार दर्शन' के प्रसिद्ध लेखक श्रीयुत पृथ्वीसिंह जी मेहता एम० ए० विद्यालंकार द्वारा किया जा रहा है। ये निबन्ध लगभग तीन भागों में प्रकाशित किये जायेंगे जो कुल १,५०० पृष्ठ होंगे।

उदयपुर के प्रसिद्ध राजस्थानी भाषा और साहित्य के विद्वान् कवि राव मोहनसिंह जी कई वर्षों से "पृथ्वीराज रासो" का काम कर रहे हैं। इसकी बड़ी खुशी है कि अब यह काम विद्यापीठ प्राचीन साहित्य शोध संस्थान के अन्तर्गत आ गया है। और राव मोहनसिंह जी इस काम को करते रहेंगे! पृथ्वीराज रासो के सम्बन्ध में अभी तक बहुत कम खोज का काम हुआ है। राव साहब का यह काम नई दिशा और नया मार्ग बताने में सहायक होगा। यह काम अत्यन्त उपयोगी और अखिल भारतीय महत्त्व का है। अन्य विद्वानों के सहयोग की अपेक्षा करता है।

हिन्दी विद्यापीठ —गिरिधारीलाल शर्मा
उदयपुर प्रचार मंत्री

* * *

मथुरा में अखिल भारतीय ब्रज-साहित्य-मंडल का स्थायी समिति १२ मई का समारोह-पूर्वक सम्पन्न हुई। श्री प्रभुदयाल मीतल उपसभापति निर्वाचित हुए। उपसमितियों और प्रबन्ध-समिति का चुनाव हुआ। प्रो० सत्येन्द्र नवलगढ़ की पंचवर्षीय योजना के अनुसार इस वर्ष ग्राम-साहित्य संकलन कर्ताओं के लिए एक शिक्षण-शिविर खोलने, ब्रजभाषा का व्याकरण लिखाने, इतिहास लिखाने तथा ब्रज-साहित्य की परीक्षाएं आरम्भ करने का निश्चय हुआ। मथुरा की स्पेलिंग ठीक कराने के लिए अनेक उपाय सोचे गये और मथुरा नगर के साइनबोर्डों को मंडल-द्वारा ठीक कराकर उन पर 'Mathura' लिखाना निश्चित हुआ। इस वर्ष के व्यय के लिए ६,०००) रु० स्वीकृत हुए।

—रामनारायण अग्रवाल

मथुरा के श्री देशबन्धु पुस्तकालय का वार्षिक निर्वाचन इस प्रकार हुआ है—

सभापति—श्री श्यामबिहारीलाल अग्रवाल एम० ए०, उपसभापति—श्री दाऊदयाल गुप्ता 'साहित्यरत्न', मंत्री—श्री बैजनाथ दानी, उपमंत्री—श्री सत्यनारायण गोयल, कोषाध्यक्ष—रामनारायण और इन्द्रभान जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री दीनानाथ और श्रीनिवास जी, निरीक्षक—श्रीरामनरायण अग्रवाल 'साहित्यरत्न', सदस्य—श्री बाबूलाल वर्मा, गो० कृष्णचन्द्र, बिहारीलाल, श्री पूरनचन्द, श्री देवेन्द्रकुमार, श्री सूरजभान।

—संवाददाता

* * *

सागर में प्रान्तीय कांग्रेस के प्रतिनिधियों का चुनाव ता० १२ मई को हो गया। फल इस प्रकार है—सागर शहर—श्री केशव रामचन्द्र खांडेकर, सागर पूर्वी—श्री रेवाराम गौतम, सागर पश्चिम—श्री श्रीकृष्ण सेलट, खुरई तहसील—श्री वंशधर व्याकरणाचार्य, तहसील—श्री स्वामी कृष्णानन्द।

श्री बहादुरसिंह कन्ट्रोल इन्स्पेक्टर अचानक गवर्नमेंट हाईस्कूल में पड़ताल की। लड़कों को दिये जाने मिट्टी के तेल के हिसाब में कुछ मालूम हुई। जांच-पड़ताल चल रही।

—लक्ष्मीप्रसाद

* *

पश्चिमी राजपूताना स्टेट रेजीडेंट कर्नल जी० पी० विलियम अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद के प्रधान मन्त्री श्री जयनारायण व्यास स्वर्गीय सागरमल गोपा के जैसलमेर में हुए देहान्त के सम्बन्ध में मुलाकात की, इस सम्बन्ध में पूछे जाने पर व्यास ने कहा कि यह मुलाकात काफी जनक रही तथा मैं इस मामले के हालात रेजीडेंट महोदय को प्राप्त कराऊंगा और श्री गोपा जी की डायरी के आधार पर बता चुका हूं। मुझे आशा है इस में पूरा न्याय होगा और गोपा जी के लिए जिम्मेदार लोगों को चाहे वे ही बड़े आदमी क्यों न हों मुकम्मिल सजा मिलेगी।

यह पूछे जाने पर कि आप शास्त्री जी जैसलमेर जावेंगे या नहीं व्यास जी ने कहा कि हमारा जैसलमेर जाना लाजिमी है, मौके पर हम और जानकारी हासिल कर सकते हैं। सूत्र से मालूम हुआ है कि व्यास जी रेजीडेंट आदि से और भी गम्भीर पत्र-व्यवहार में लगे हुए हैं।

—संवाददाता

सत्तर वर्ष की उम्र में [illegible]

इसके पहले वह गठिया के कारण पंगुल हो गया था

क्रुशेन साल्ट से वह नया आदमी बन गया

उसकी लड़की लिखती है कि [illegible] व्यक्ति गठिया के कारण एक समय [illegible] कुल पंगुल हो गया था। जब से [illegible] क्रुशेन का सेवन आरम्भ किया [illegible] जिन्दगी नई हो गई यद्यपि उसकी [illegible] ७० वर्ष की है। अब तो उसका [illegible] परिवार गठिये से बरी है:—

"मेरे पति तथा मैं कुछ एक [illegible] क्रुशेन का सेवन इस घृणित [illegible] उपचार के लिए कर रही हूं। [illegible] पिता ने इसका सेवन कई वर्ष तक [illegible] और यहां तक कि वे इसे अपने जीवन [illegible] आवश्यक अंग समझने लगे थे। [illegible] सेवन से पहले वे गठिया के कारण [illegible] पंगुल हो गये थे। उन्होंने प्रायः [illegible] प्रकार के इलाज किये किन्तु कोई लाभ [illegible] हुआ। मैं अब विश्वासपूर्वक कह [illegible] हूँ कि क्रुशेन से वह एकदम नये [illegible] बन गये। इस समय उनकी उम्र ७० [illegible] की है और वे बिलकुल मुस्तैद हैं—

श्रीमती (एफ० [illegible])

शरीर में अम्ल की अधिकता के [illegible] गठिया हो जाता है। क्रुशेन साल्ट [illegible] पदार्थ अम्ल नष्ट कर देने के लिए [illegible] हैं। इसके अन्य पदार्थ इन्द्रियों द्वारा [illegible] विष को बाहर निकाल देते हैं इस [illegible] आपका कष्ट दूर हो जाता है और शरीर [illegible] नये जीवन का संचार हो जाता है।

क्रुशेन बाजार के सभी औषधि [illegible] ताओं तथा दवाखानों में मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेष पृष्ठ ५ का शेष

फिलिस्तीन और साम्राज्यवादी

लेकिन फिलिस्तीन के विषय में जो [illegible] प्राप्त हैं उनसे यह सूरज की [illegible] के समान स्पष्ट है कि ब्रिटेन अपने [illegible] वादों को ताक में रखकर पशु-[illegible] फिलिस्तीन पर राज करना चाहता [illegible] नहीं कि फिलिस्तीन के रहने-[illegible] में मेल नहीं हो सकता है, बल्कि इस-[illegible] आज भौगोलिक, आर्थिक, राज-[illegible] दृष्टि से फिलिस्तीन को ब्रिटिश [illegible] की एक आवश्यक कुंजी बने रहना [illegible] आवश्यक है।

[illegible] इस बात को ध्यान में रखकर [illegible] साम्राज्यवादी पीछे ३० वर्ष से [illegible] प्रयत्न करते रहे हैं। फिलिस्तीन में [illegible] और यहूदियों का प्रश्न ब्रिटिश-[illegible] वादियों ने जान-बूझकर पैदा किया [illegible] दुनिया कि आँखों में धूल झोंकने के [illegible]

[illegible] प्रश्न कृत्रिम

[illegible] के कितने आँचल ऐसे हैं जहाँ [illegible] का प्रश्न आज विशेष रूप से [illegible] हुआ है, और यह स्वाभाविक है, [illegible] सामाजिक विकास की अवस्था में। [illegible] देशों के बहुमत और अल्पमत [illegible] फिलिस्तीन के बहुमत और अल्पमत [illegible] अन्तर यह है कि जहाँ इतर देशों में [illegible] का आज की परिस्थिति में उठना [illegible] है वहाँ फिलिस्तीन में यह प्रश्न [illegible] वादियों ने जान-बूझकर पैदा [illegible] और अपने स्वार्थ को छिपाने [illegible] फिलिस्तीनवासियों की 'नालायकी' [illegible] के सामने पेश करने के लिये। यह [illegible] फिलिस्तीन में पिछले ३० वर्षों में [illegible] अनुपात में यहूदियों की संख्या बढ़ती [illegible] बात से विदित है—

[illegible]	कुल आबादी में अरबों का प्रतिशत	कुल आबादी में यहूदियों का प्रतिशत
[illegible]	७९	११
[illegible]	६३	२८
[illegible]	"	३३

[illegible] फिलिस्तीन हजारों वर्षों से अरबों की [illegible] है, वह उन्हें प्रिय है। सन् १९२२ [illegible] यहूदियों की संख्या कुल आबादी [illegible] ११ प्रतिशत थी। परन्तु ब्रिटिश [illegible] का एक मर्मस्थान फिलिस्तीन को [illegible] हाथ से न जाने देने के लिए ब्रिटिश [illegible] वादियों के लिए बाहरी देशों के [illegible] को फिलिस्तीन में बसाकर उन्हें [illegible] से भिड़ाकर वहाँ अरब-यहूदी प्रश्न [illegible] करना एक मौलिक आवश्यकता [illegible] फल यह है कि पिछले २५ वर्ष [illegible] की संख्या ११ प्रतिशत से बढ़कर [illegible] हो गई। सन् १९२९ के बाद [illegible] तक फिलिस्तीन में जो यहूदी [illegible] कर दिये गये उनकी संख्या इस [illegible] है:—

सन्	१९२९	५२४९
"	१९३१	४०७५
"	१९३३	९५५३
"	१९३४	४२३५९
"	१९३५	६१८५४

[illegible] का विरोध और १९३९ की घोषणा

[illegible] एक पिछड़ी हुई जाति है, लेकिन [illegible] वादियों की चालों को वह भली [illegible] जानता है, फिलिस्तीन को शासना-[illegible] घोषित करने के बाद सन् १९२१ [illegible] उसके बाद सन् १९२९ में उन्होंने [illegible] के द्वारा अपना असन्तोष [illegible] किया जिसे उन्नत शस्त्रों के प्रयोग [illegible] साम्राज्यवादियों ने कुचला, परन्तु वे [illegible] नहीं सके। अरबों की स्वातंत्र्य तृष्णा [illegible] नहीं सके। लाख मुसीबतें [illegible] अपने देश को साम्राज्यवाद के [illegible]

से मुक्त करने की उनकी अदम्य भावनाओं को वे कुचल नहीं सके। वे गिरे, फिर उठे फिर संघर्ष किया, फिर गिरे फिर उठे, फिर पूर्ववत् जोर लगाकर संघर्ष किया, यह प्रतिक्रिया जारी ही रही।

अरबों के इन आन्दोलनों और प्रहारों से साम्राज्यवादियों के कान खड़े हो गये। उनके होश ठिकाने आने लगे, उनके दिमाग में अब आने लगा कि अब कुछ करना चाहिए नहीं तो मामला गड़बड़ है। सन् १९३७ के फिलिस्तीन के मामले पर विचार करने के लिए एकपील कमीशन की नियुक्ति हुई। उसने सलाह दी कि फिलिस्तीन को कई टुकड़ों में बाँटा जाय। अरब और यहूदी दोनों ने इसका विरोध किया।

तब सन् १९३९ के जनवरी महीने में फिलिस्तीन के मसले पर विचार करने के लिए लन्दन में एक सम्मेलन बुलाया गया उसके विषयों को भी स्वीकार करने से फिलिस्तीनवालों ने इनकार कर दिया। उसके बाद ही फिलस्तीन के मामले पर १७ मई सन् १९३९ को श्वेतपत्र निकाला गया था।

इस श्वेतपत्र में यह वादा किया गया था कि फिलिस्तीन को १० वर्ष में स्वतंत्रता दी जायगी और उसे अपना विधान बनाने का अधिकार होगा। तब तक फिलिस्तीन के आन्तरिक शासन-व्यवस्था का भार धीरे-धीरे फिलिस्तीनवासियों के सुपुर्द कर दिया जावेगा। सन् १९३९ से अगले पाँच वर्ष तक ज्यादा से ज्यादा ७५००० यहूदियों को फिलिस्तीन में आकर बसने दिया जायगा जिससे तब तक उनकी संख्या कुल आबादी में एक-तिहाई हो जायगी। यदि इस अवधि के बाद यहूदियों को आकर बसने दिया जायगा तो उसके लिए अरबों की अनुमति ले ली जायगी। श्वेतपत्र में भूमि के क्रय-विक्रय नियंत्रण आदि के विषय में उचित कार्रवाई करने का भार फिलिस्तीन-स्थित सबसे बड़े अफ़सर हाई कमिश्नर पर छोड़ दिया गया था।

परन्तु, इन अधिकारों के अनुसार आगे चलकर फरवरी सन् १९४० में भूमि-सम्बन्धी क्रय-विक्रय के लिए फिलिस्तीन को तीन हिस्सों में विभक्त किया गया। उनमें एक हिस्से में बिना विरोध के कोई भी भूमि खरीद या बेच सकता था; दूसरे हिस्से में इस प्रकार के 'मुक्त' व्यापार पर गवाही ली गई और तीसरे में भूमि की बिक्री पर नियंत्रण था। परन्तु इसे यहूदियों ने स्वीकार करने से इनकार कर दिया।

सन् १९३९ से सन् १९४६ तक

मई सन् १९३९ की घोषणा के ५ महीने के बाद द्वितीय महासमर का बिगुल योरप में बज चुका था। युद्ध के उग्ररूप धारण करते ही बिना फिलिस्तीनवासियों से सलाह किये ही ब्रिटेन ने, अन्यान्य उपनिवेशों की तरह उसे युद्ध में घसीटा, फिलिस्तीन में जो थोड़ी कुछ विचार-स्वतंत्रता, पत्र-स्वतंत्रता थी, यह भी उनसे छीन ली गई। वहाँ एक तरह से सैनिक डिक्टेटरशिप थोप दिया गया। फिलिस्तीन पूर्वी मध्यसागर में ब्रिटिश साम्राज्य की हिफाजत को बनाये रखनेवाला सबसे बड़े अड्डों में से है। यहाँ ब्रिटेन का हवाई तथा जहाजी अड्डा और बहुत बड़ी छावनी है। इसके अलावा इराक से तेल-पाइप मध्यसागर में जाकर मिलता है। उसकी एक शाखा फिलिस्तीन से होते हुए जाकर हैफा बन्दरगाह में पहुँचती है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि मनुष्य के शरीर में रक्त का जो स्थान है वही स्थान युद्ध के लिए तेल का है। अतः येनकेन प्रकारेण फिलिस्तीन को हाथ से न जाने देने के लिए साम्राज्यवादियों ने हर प्रकार की चालबाजियाँ कीं और बराबर करते रहे हैं।

यह बात राजनीति को थोड़ा बहुत जाननेवाला प्रत्येक व्यक्ति समझता है कि यद्यपि हिटलर ने विश्व का पुनः बँटवारा करने के लिए, विश्व पर प्रभुता प्राप्त करने के लिए युद्ध छेड़ा था, परन्तु जनता का समर्थन प्राप्त करने, अपने असली उद्देश्य को छिपाकर उन्होंने कृत्रिम 'जातिवाद' का नारा (जर्मन जाति सर्वश्रेष्ठ है, यहूदी सबके दुश्मन हैं आदि) लगाया। युद्ध के कारण योरप के कितने ही राष्ट्रों की बीसों जातियों के लोगों की दुर्दशा हुई और संभवतः यहूदियों की ज्यादा हुई। कहा जाता है सारे योरप में इस समय दस लाख यहूदी बुरी हालत में हैं जिनमें १ लाख ५२ हजार एकदम निराधार हैं। नाजीवाद के शिकार इन लोगों के प्रति सहानुभूति हर किसी को होना स्वाभाविक है। उनकी सहायता की जानी चाहिए।

यहूदी-आवास पर अरबों को आपत्ति क्या?

परन्तु यदि ब्रिटेन और अमेरिका के उन साम्राज्यवादियों के दिल में, जिन्होंने प्रथम महासमर के बाद संसार के प्रजातंत्रवादी और शान्तिप्रिय शक्तियों के विरुद्ध सदैव संग्राम करने में अपनी शक्ति लगाई, जिन्होंने फासिस्टवादियों और नाजीवादियों की हर तरह से मदद की, ऐसे लोगों के दिल में यदि यहूदियों के प्रति करुणा और सहानुभूति है तो क्या आस्ट्रेलिया, कनाडा, दक्षिणी अफ्रीका, अमेरिका आदि जहाँ अब भी करोड़ों लोगों को रहने और आराम के साथ जिन्दगी बसर करने के लिए आवश्यकता से अधिक साधन है, इन यहूदियों को नहीं भेजा जा सकता? अभी हाल में दक्षिण अफ्रिका के किसी एक सरकारी अफ़सर ने बतलाया था कि दक्षिण अफ्रिका में २० लाख योरपीय लोगों को आराम के साथ रहने के लिए गुंजाइश है। दक्षिणी अमेरिका के अर्जन्टाइना जैसे राष्ट्रों ने विदेशियों को वहाँ आकर बसने के लिए आमन्त्रित किया है। क्या कारण है कि यदि यहूदियों को योरप छोड़कर चले जाने की इच्छा हो तो उन्हें उक्त राष्ट्रों में भेज दिया जाता? क्या कारण है कि ब्रिटिश-अमेरिकन साम्राज्यवादी उन्हें फिलिस्तीन ही भेजने पर तुले हुए हैं? योरप के शरणार्थी यहूदी फिलिस्तीन के अलावा अन्य किसी राष्ट्र को पसन्द नहीं करते, साम्राज्यवादियों का यह कथन सर्वथा गलत, भ्रमोत्पादक और धूर्त्तनापूर्ण है। यह बात वे असली बात पर परदा डालकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए कह रहे हैं। इस कथन में, इसलिए, हम रत्ती भर भी विश्वास नहीं कर सकते। बात दर-असल यह है कि ब्रिटिश-अमेरिकन साम्राज्यवादी पूर्वी योरप और मध्य एशिया में बढ़ती हुई प्रजातंत्रवादी शक्तियों से घबड़ा उठे हैं। अतः अपने साम्राज्य की रक्षा के लिए वे फिलिस्तीन का अपने हाथ में रहना आवश्यक समझते हैं। परन्तु यह बात वे खुलेआम कह कैसे सकते हैं? इसीलिए वे दुनिया को यह दिखलाना चाहते हैं कि विश्व-शान्ति कायम रखने के लिए हमारे फिलिस्तीन में टैंक, विमान, तोप लिये बैठे रहना आवश्यक हो गया है, क्योंकि यदि हम वहाँ से हट जाय तो रक्त की नदियाँ बहेंगी, विश्व-शान्ति चौपट हो जायगी।

इसी उद्देश्य को सामने रखकर पिछले पच्चीस वर्ष में उन्होंने फिलिस्तीन में बाहरी देशों से यहूदियों को लाकर ठूस-ठूसकर उनकी संख्या कुल आबादी में ११ प्रतिशत से ३३ प्रतिशत कर दी है। आज अरबों के साथ अब तक किये गये तमाम वादों के विरुद्ध प्रतिवर्ष १ लाख यहूदियों को फिलिस्तीन में लाकर बसाने की बात वे कर रहे हैं।

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

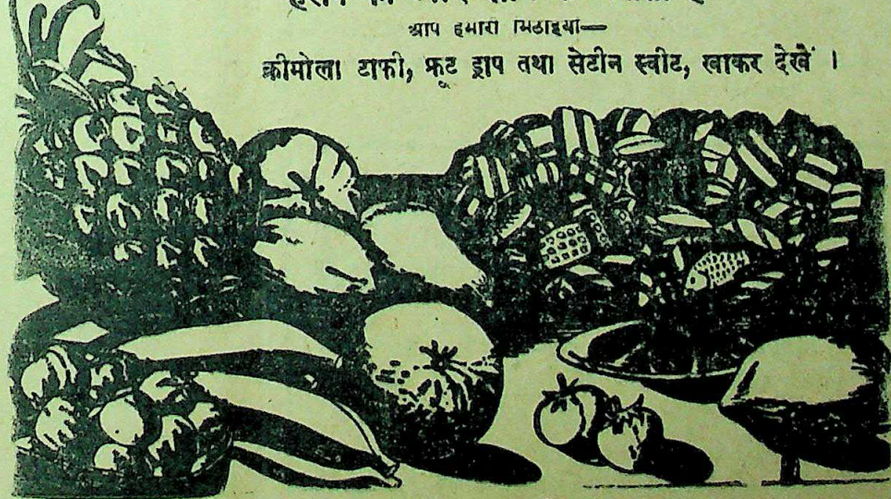

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेज १५ का शेष

विश्व का सर्वश्रेष्ठ अभिनेता रार्बट डोनाट

एक्सपर्ट हैं। आपकी चित्रकारी के नमूने फिल्मों में तो देखने को मिलते ही हैं किन्तु इनके अलावा अमेरिका के पत्रों में भी देखने को मिलते हैं। आपकी चित्रकारी में नैसर्गिक दृश्य अधिक रहते हैं। आपकी चित्रकारी का संग्रह भी निकल चुका है। "दी ब्यूटी ओफ दी रोज" के नाम से। इस संग्रह में गुलाब के फूल के सम्बन्ध में अनेक तरह के भाव चित्रित किये गये हैं जो कि वास्तव में दर्शनीय हैं।

आपके अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के चित्रों में तीन चित्र इन पंक्तियों के लेखक को भी देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उनके नाम ये हैं—"काउन्ट ओफ माटी क्रिस्टो," "नाइट विद आउट आर्मर" और "साइनिंग आई" ये तीनो चित्र इतने उम्दा हैं कि दर्शक बारबार इनको देखने के लिए लालायित रहता है। वास्तव में यह चित्र मानव-हृदय की विमल भावनाओं के परिचायक हैं। "साइनिंग आई" फिल्म में तो प्रेम की इतनी अच्छी तरह से व्याख्या की है कि वह साहित्य की अमरकृति बन जाती है। उन प्यार की भावनाओं में कहीं भी वासना का जलता हुआ चिराग प्रतिबिम्बित नहीं होता। बल्कि विवेक के भव्य प्रकोष्ठ से निकली हुई शुचि-रश्मि ही वास्तव में प्रेम का सच्चा रूप है। इस स्वरूप की इस फिल्म में ललाम-छाया दिखाई गई है। मिस्टर डोनाट का अभिनय भी इन चित्रों में इतना सजीव बन गया है, कि वह दर्शक के हृदय पर अपना मंजुल अस्तित्व अंकित कर देता है। दर्शक कुछ देर के लिए मिस्टर डोनाट के प्रभावशाली अभिनय में अपने जीवन-संग्राम की उलझनों को इतना भूल जाता है कि वह मस्त होकर झूमने लग जाता है। "सिने वर्ल्ड कमेटी" की ओर से आपको आज का "सर्वश्रेष्ठ कलाकार" की पदवी से विभूषित किया गया। "सिने इन्डस्ट्रीय" के ऊपर आपने अनेक ग्रन्थ लिखे हैं, जो कि फिल्म-विकास के इतिहास पर काफी प्रकाश डालते हैं।

आप दिन भर में करीब सौ प्याले चाय के पीते हैं। आपका कथन है—"चाय शरीर में स्फूर्ति पैदा करने के लिए एक अनुपम उपहार है। इसको पीकर शरीर की सारी थकावट दूर हो जाती है। शरीर फूल-सा हलका हो जाता है। चाय मानव-प्रकृति के लिए इतनी अनुकूल है कि इससे मामूली कई एक बीमारियां भी दूर हो जाती हैं। "अगर आप बदन में फुर्ती चाहते हैं, और दिन भर में ज्यादा मेहनत भी करना चाहते हैं, तो आप अवश्य चाय का प्रयोग कीजिये" चाय के सम्बन्ध में आपकी एक मनोरंजक घटना है—वह इस प्रकार है—

रात के ग्यारह बजे होंगे। आप अपने "स्लीपिंग रूम" में बैठे हुए थे। पास ही आपकी पत्नी भी बैठी हुई थी। खिड़कियों में से ठंडी-ठंडी हवा के झोंके आ रहे थे—पत्नी के चांद से मुखड़े को देखकर आपको प्रेम की दुनिया बसाने की सूझी—फिर क्या? आप बोल ही तो उठे—"हल्लो स्टोरी गिव मी वन किस" "चुम्बन की क्या जरूरत पड़ गई—आपके प्रेम का बुखार चाय के एक प्याले से उत्तर जायगा—प्रेम के ज्वर को उतारने की दवा चाय का एक प्याला क्यों मिस्टर डोनाट ठीक है न" स्टोरी ने अपने पति को चिढ़ाते हुए कहा—"वेल माई डीयरेस्ट, चाय के प्याले में यदि तुम अपनी मधुर मुस्कराहट की रम्य आभा को मिला दोगी तो वास्तव में मेरे प्रेम का नशा उतर जायगा। समझी मेरी दिलरुबा।"

इस तरह दोनों विनोद करते हुए चाय पीते। हँसी-खुशी से आप अपना जीवन काटते हुए चले जा रहे हैं। आपके दाम्पत्य-जीवन में कहीं भी कटुता की धूल दृष्टिगोचर नहीं होती, बल्कि मोद एवं हर्ष का सागर ही उभड़ता रहता है।

आप छोटे से भी छोटे आदमी से मिलने में कभी पीछे नहीं हटते—सबसे मिष्ट बोलना आपका सिद्धान्त है। आपकी डाक के देखने के लिए दो क्लर्क आजकल काम करते हैं—इतनी चिट्ठियां आपके नाम आती हैं—इसी से आपकी लोकप्रियता का अन्दाज लगाया जा सकता है। आप भी आज ठीक वक्त पर देते हैं। नीचे सिगनेचर स्वयं ही करते हैं। आप कितने ही बिजी हों। अभी सिनेमा-संसार को बहुत आशायें हैं आपसे।

—सर्वाधिकार लेखक द्वारा सुरक्षित

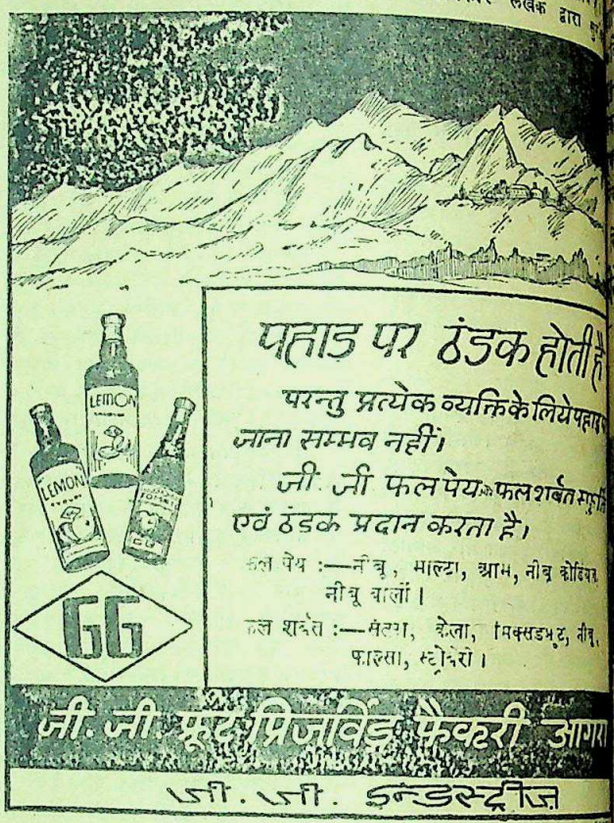

जो० जो० सेल्स डिपो :—
मैसर्स गिरधरलाल बकुल जनरलगंज कानपुर
बम्बई : दहली : कलकत्ता : ग्वालियर : अजमेर : बरेली।

Estd. 1929 हिन्दुस्तान की सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

सिन्हा होमियोपैथिक कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे नौ शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर प्रवेश ले सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S १०) H.M.B.S २५) H.M.D.S २५)। पुस्तक—अ० आर्गेनन १) थायोफीमक १) १००० रेडलाइन १) मेटारया १) मेडिकल डिक्शनरी १॥) आर्गेनन १), फार्माकोपया १॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायगा। डा० ख० मेडिसन—अमेरिकन दवाइयां—३ ड्राम से २०० ड्राम तक ≈) ड्राम। आउन्स ॥) बरेलू बक्स ३६ का ७) सुधार और गाली—२॥) माउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S (U.S.A.)

केवल ७) रु० में ५ घड़ियाँ

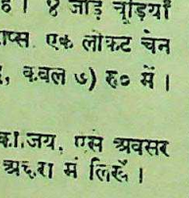

३ डमी रिस्टवाच और २ ग्यूट रिस्टवाच

वेन्सा न्यू गोल्ड के सुन्दर आभूषणों को सुप्रसिद्ध बनाने के लिए कम्पनी ने अपने ग्राहकों को उपरोक्त घड़ियां बिना मूल्य देने का निश्चय किया है। ४ जोड़े चूड़ियाँ डायमंड कट, दो अंगूठियाँ बाम्बे प्रेशन, एक जोड़ा टाप्स एक लॉकेट चेन तथा २५ सुन्दर उपहार, ५ घड़ियां सहित डब्बे में बन्द, केवल ७) रु० में। पार्सल व डाक व्यय आदि १।—) अलग।

गारंटी—पसन्द न आने पर मूल्य वापस। शीघ्रता कीजिये, ऐसे अवसर कभी कभी आते हैं। अपना पता सुवाच्य अक्षरों में लिखें।

वेन्सी न्यू गोल्ड ऑरनामेंट्स हाउस
पोस्ट बाक्स ९६ (D.D.A.) अमृतसर (पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालसखा का नया वार्षिकांक

छप रहा है। पाठक धैर्य रक्खें।

ग्राहकों के अनुरोध से हमने इस वर्ष भी बालसखा का वार्षिकांक निकालने का निश्चय किया है। इसमें बहुत से चित्र, कविताएँ, कहानियाँ, बढ़िया लेख और उपयुक्त सामग्री रहेगी। संख्या ३०० से ऊपर। यह अङ्क बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होगा। यह मासिक बालसखा के १२ अंकों से मूल्य ३), मासिक बालसखा के ग्राहकों के लिए रियायती मूल्य २॥)

रियायती मूल्य के लिए अपना ग्राहक-नंबर अवश्य लिखिए।

मैनेजर, बालसखा, इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

एकमात्र गम-डिप्ड टायर

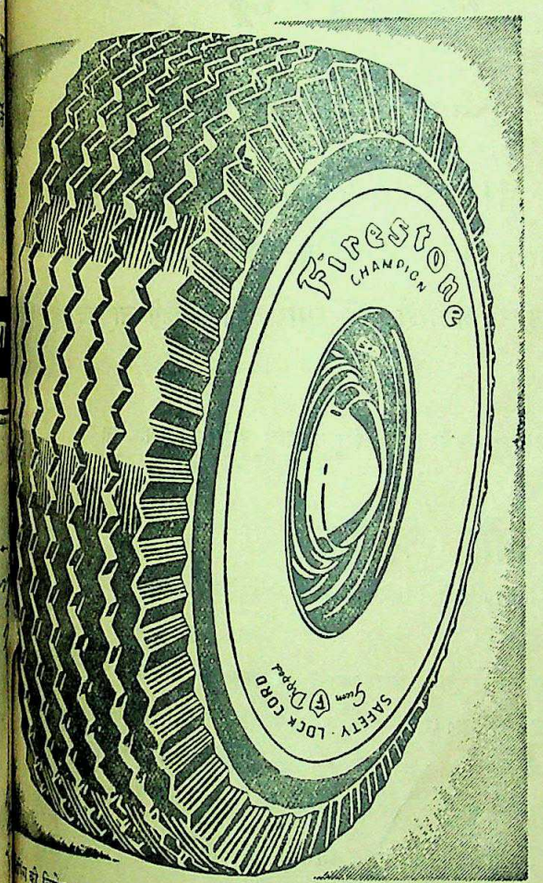

...की विशेष प्रकार की पेटेन्ट प्रणाली से बने हुये फायरस्टोन टायर ...अधिक मील की यात्रा, रबर के फटने की और भी अधिक ...रुपये की अतिरिक्त कीमत देंगे।

Firestone

फायरस्टोन

...टायर एण्ड रबर कम्पनी, ऑफ इण्डिया, लिमिटेड।

* मद्रास * कलकत्ता * बङ्गलोर * नागपुर
* देहली * कराची * कोलम्बो * लखनऊ

खांसी और शरदी के लिये
वैज्ञानिक इलाज

सिरोलीन

'रोचे'

AC 60

शीराज़ का भोज

प्रसिद्ध ईरानी कवि, शीराज़ का शेख सादी एक बार दूसरे नगर में एक धनी व्यापारी के यहां गया, जहां उसका बहुत काफ़ी आतिथ्य-सत्कार किया गया। भोजनोपरान्त उसने शीघ्र एक आह भरी और कहा, "आह, दावत-ए-शिराज़" (आह, शीराज़ का भोज)। व्यापारी नें असंतोष का अनुभव करते हुये अपने प्रख्यात अतिथि के अनुकूल भोजन-व्यवस्था करने के दूने प्रयत्न किये। किन्तु प्रत्येक भोजन के उपरान्त वही "आह, दावत-ए-शीराज़" के उद्गार निकलते। तीन दिनों के बाद कवि चला गया। कुछ समय बाद वह व्यापारी शीराज़ गया और उसने कवि के घर जाकर यह पता लगाने का संकल्प किया कि उसके भोजन से शीराज़ का भोजन किस प्रकार श्रेष्ठ है। वहां वह साधारण भोजन पाकर चकित हुआ और क्रुद्ध भी। कवि ने कहा, "यह सरल और इतना सस्ता भोजन है कि यदि आप चाहें तो साल भर तक ठहर सकते हैं।" उसने समझाया कि यही सच्चा आतिथ्य-सत्कार है जिसमें गृहस्थ और अतिथि दोनों को असुविधा नहीं हो सकती। हम भी अपने अतिथियों को सादा भोजन प्रस्तुत करते हुये सद्गृहस्थ साबित हो सकते हैं। हम प्रत्येक भोजन को "शीराज़ का भोज" बना सकते हैं। खाद्य-सामग्री बहुत कम है और सबसे अधिक कष्ट गरीब उठाते हैं। सदैव की अपेक्षा यह समय ईरान के विद्वान कवि के उपदेश को अनुकरण करने का है।

खाद्य बचाना प्राण बचाने के बराबर है।

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered NO. A—295 दूतदूत इलाहाबाद—रविवार, २६ मई,

ज्ञान-विज्ञान-सम्बन्धी पुस्तकें

प्रकृति—इसमें सौर जगत् की उत्पत्ति, आकाशतरंग, पृथ्वी की आयु, मृत्यु, आर्यजाति, परमाणु और प्रलय आदि १४ वैज्ञानिक विषयों के अच्छे-अच्छे निबन्ध संगृहीत किये गये हैं। मूल्य १॥=) एक रुपया ग्यारह आने।

गृह-नक्षत्र—गृह-नक्षत्र आदि से सम्बन्ध रखनेवाली प्रायः सभी आवश्यक बातों का सचित्र वर्णन इस पुस्तक में किया गया है। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

प्राकृतिकी—बँगला में सुप्रसिद्ध लेखक रायसाहब श्री जगदानन्द राय के विज्ञान-विषयक उत्तमोत्तम निबन्धों के संग्रह का हिन्दी अनुवाद। मूल्य ३।=) तीन रुपये पाँच आने।

प्रकृति की नीति—इस पुस्तक में सिद्धान्त की व्याख्या, धर्म और उपदेश तथा जीवन और मृत्यु आदि के सम्बन्ध की कितनी ही ज्ञातव्य बातों पर प्रकाश डाला गया है। मूल्य १) एक रुपया।

वैज्ञानिकी—विज्ञान-सम्बन्धी सरल और मनोरंजक विषयों पर लिखे गये निबन्धों का संग्रह। मूल्य २) दो रुपये।

कृषिचंद्रिका—(तीन भागों में) यह पुस्तक भी खेती करने या करानेवालों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इसमें खेती की उन्नति का ढंग बताने के साथ पशुओं का इलाज करना, खेती के सब तरह के हिसाब-किताब रखना और पैमाइश करना भी बताया गया है। भाँति भाँति की तरकारियाँ इत्यादि पैदा करने का तरीक़ा भी अत्यन्त सरल भाषा में लिखा गया है। मूल्य प्रथम भाग ।=)।।। दौने आठ आने, द्वितीय और तृतीय भाग का प्रतिभाग ।।=)।। साढ़े दस आने।

स्वास्थ्य सम्बन्धी

मक्खियों की करतूत—मक्ख द्वारा पहुँचनेवाली हानियों तथा उनसे बचने के उपाय आठ आने।

जलचिकित्सा—जर्मनी के चिकित्सक 'लुई कुने' के अनुसार जल से ही सब प्रकार की चिकित्सा करने की विधि ।=) सात आने।

मैनेजर—(बुकडिपो) इंडि लिमिटेड, प्रयाग।

क्या करना चाहिये ?

–मिस्टर हूवर की राय

"शीघ्र आनेवाले सप्ताहों की अत्यधिक आवश्यकता के समय भारत के कमीवाले क्षेत्रों को प्रत्येक संभाव्य अतिरिक्त स्रोत से सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिये—केवल आस्ट्रेलिया व स्याम से ही नहीं वरन् भारत के अतिरिक्त अनाजवाले क्षेत्रों से भी उधार लेना चाहिये जो बाद में चुका दिया जावेगा।"

–२६ अप्रल को बंगलौर में मि० हूवर (भूतपूर्व सभापति, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका) का वक्तव्य

हमारी प्रतिज्ञा और अपील

उन लोगों से जो कमीवाले क्षेत्रों में रहते हैं हम परिपूर्ण सहयोग की प्रतिज्ञा करते हैं। देश के समस्त साधनों का संगठन होगया है और उनके पास शीघ्रतासे सहायता भेजी जा रही है। उनके अभावको शेष देश के साथ, बराबर विभाजित किया जावेगा। राशनिंग का इस प्रकार विस्तार किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति अपना उचित भाग प्राप्त करले। मूल्य नियंत्रण की कठोर व्यवस्था की जावेगी। शान्तिसे विश्वास रखिये। अपनी आवश्यकता से अधिक मत खरीदिये। मुनाफाखोरों से कोई सम्बंध मत रखिये अतिरिक्त क्षेत्रों में रहनेवालों से हम अधिकसे अधिक मदद की अपील करते हैं। यदि आपसे अतिरिक्त अनाज सुपुर्द करने को कहा जावे तो आपके पास आपकी आवश्यकता के अनुसार काफी बच जावेगा। यदि आपके नगर में राशानिंग योजना लागू की गयी है तो याद रखिये, वह आपके अन्य भाइयों की सहायता के लिये ही है। तब भी आपके पास काफी होगा। छोटे तरीके से भी अनुचित संग्रह मत कीजिये। अधिकारियों के साथ सहयोग कीजिये।

खाद्य संकट को पराजित कीजिए

एक साथ कार्य कीजिये – एक साथ हिस्सा बंटाइये

व्यापारियों एवं उत्पादकों को संदेश

अपनी सामर्थ्यानुसार सारा अनाज निकाल दीजिये अनुचित संग्रह का प्रत्येक मन अनाज एक भाई की मृत्यु का कारण हो सकता है नियंत्रित मूल्य पर ही बेचिये—आपके और खरीदनेवाले के दोनों के लिये यही उचित है। दूसरों को संकट दे कर कमाया हुआ धन पाप है।

अपनी समस्त शक्ति और साधनों से सरकार और जनता मुनाफाखोरों और चोर बाजारवालों का दमन करने के लिये कटिबद्ध हैं। चोर बाजार से बचिये यह अपराध है।

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १२ एलगिन रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिर्मय

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

साप्ताहिक

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY

रविवार, २ जून, १९४६ Sunday, 2nd June, 1946

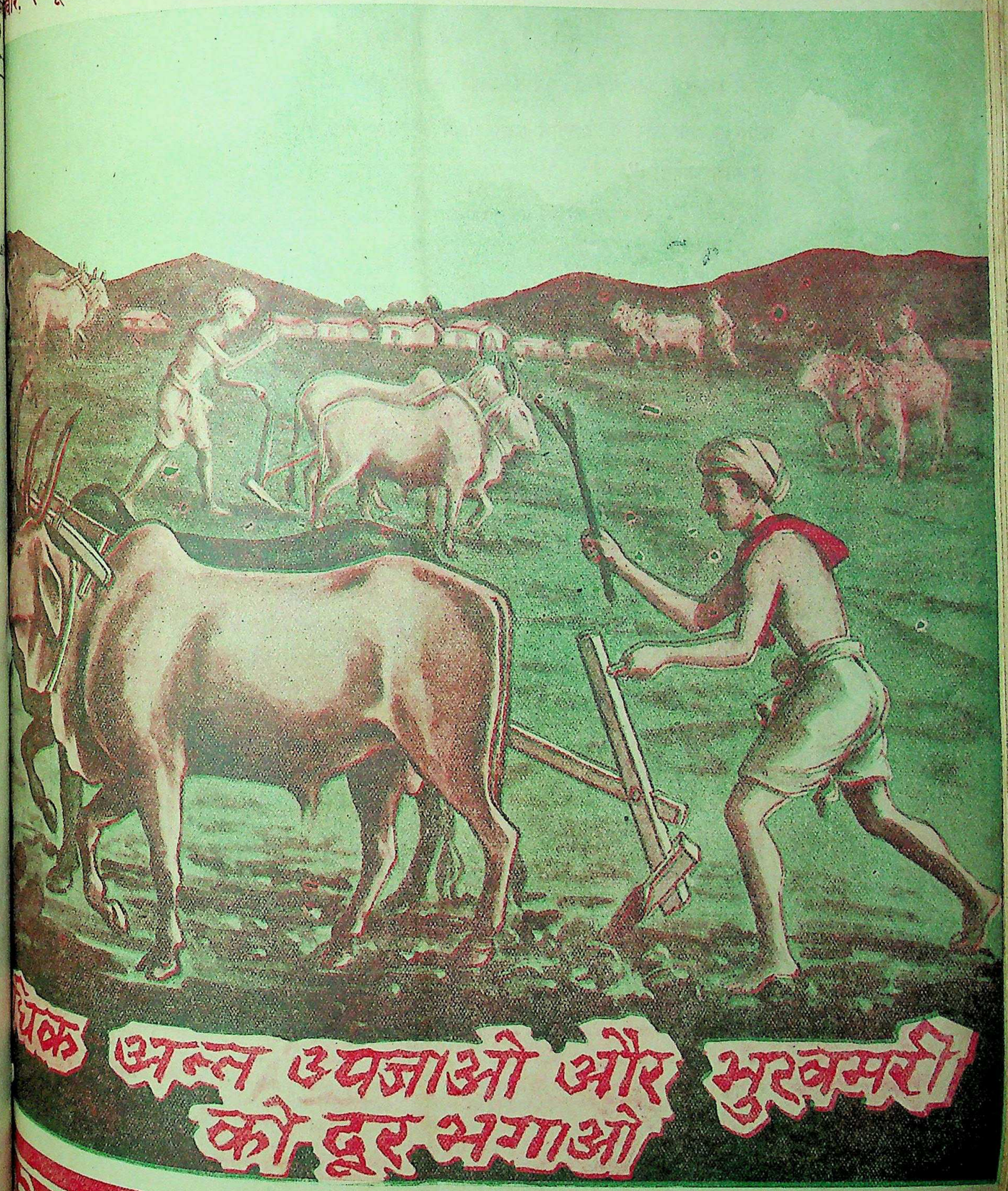

भोजन-अंक मूल्य आ ४ FOOD NUMBER

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"गेहूँ के स्टाक अभी बेच दीजिए"

—मिस्टर हूवर

उत्तरी गोलार्द्ध की शीतकालीन गेहूँ की फसल जो प्रमुख गेहूँ की फसल है अच्छे भविष्य की ओर निर्देश करती है और गेहूँ के समस्त तलपट को परिवर्तित कर देने की आशा दिलाती है। यदि मैं सटोरिया होता और गेहूँ के स्टाक रखता तो मैं उन्हें इसी वक्त बेच देता, क्योंकि सितम्बर के बाद खूब माल आवेगा।"

—२६ अप्रैल को बंगलौर में मि० हूवर (भूतपूर्व सभापति, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका) का वक्तव्य

हमारी प्रतिज्ञा और अपील

उन लोगों से जो कमीवाले क्षेत्रों में रहते हैं हम परिपूर्ण सहयोग की प्रतिज्ञा करते हैं। देश के समस्त साधनों का संगठन होगया है और उनके पास शीघ्रतासे सहायता भेजी जा रही है। उनके अभावको शेष देश के साथ, बराबर विभाजित किया जावेगा। राशानिंग का इस प्रकार विस्तार किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति अपना उचित भाग प्राप्त करले। मूल्य नियंत्रण की कठोर व्यवस्था की जावेगी। शान्तिसे विश्वास रखिये। अपनी आवश्यकता से अधिक मत खरीदिये। मुनाफाखोरों से कोई सम्बंध मत रखिये

अतिरिक्त क्षेत्रों में रहनेवालों से हम अधिकसे अधिक मदद की अपील करते हैं। यदि आपसे अतिरिक्त अनाज सुपुर्द करने को कहा जावे तो आपके पास आपकी आवश्यकता के अनुसार काफी बच जावेगा। यदि आपके नगर में राशानिंग योजना लागू की गयी है तो याद रखिये, वह आपके अन्य भाइयों की सहायता के लिये ही है। तब भी आपके पास काफी होगा। छोटे तरीके से भी अनुचित संग्रह मत कीजिये। अधिकारियों के साथ सहयोग कीजिये।

खाद्य संकट को पराजित कीजिए

एक साथ कार्य कीजिये – एक साथ हिस्सा बंटाइये

व्यापारियों एवं उत्पादकों को संदेश

अपनी सामर्थ्यानुसार सारा अनाज निकाल दीजिये अनुचित संग्रह का प्रत्येक मन अनाज एक भाई की मृत्यु का कारण हो सकता है नियंत्रित मूल्य पर ही बेचिये—आपके और खरीदनेवाले के दोनों के लिये यही उचित है। दूसरों को संकट दे कर कमाया हुआ धन पाप है।

अपनी समस्त शक्ति और साधनों से सरकार और जनता मुनाफाखोरों और चोर बाजारवालों का दमन करने के लिये कटिबद्ध है। चोर बाजार से बचिये यह अपराध है।

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

ज्ञान-विज्ञान-सम्बन्धी पुस्तकें

प्रकृति—इसमें सौर जगत् की उत्पत्ति, आकाशतरंग, पृथ्वी की आयु, मृत्यु, आर्यजाति, परमाणु और प्रलय आदि १४ वैज्ञानिक विषयों के अच्छे-अच्छे निबन्ध संगृहीत किये गये हैं। मूल्य १॥=) एक रुपया ग्यारह आने।

ग्रह-नक्षत्र—ग्रह-नक्षत्र आदि से सम्बन्ध रखनेवाली प्रायः सभी आवश्यक बातों का सचित्र वर्णन इस पुस्तक में किया गया है। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

प्राकृतिकी—बंगला में सुप्रसिद्ध लेखक रायसाहब श्री जगदानन्द राय के विज्ञान-विषयक उत्तमोत्तम निबन्धों के संग्रह का हिन्दी अनुवाद। मूल्य ३।-) तीन रुपये पांच आने।

प्रकृति की नीति—इस पुस्तक में सिद्धान्त की व्याख्या, धर्म और उपदेश तथा जीवन और मृत्यु आदि के सम्बन्ध की कितनी ही ज्ञातव्य बातों पर प्रकाश डाला गया है। मूल्य १) एक रुपया।

वैज्ञानिकी—विज्ञान-सम्बन्धी सरल और मनोरंजक विषयों पर लिखे गये निबन्धों का संग्रह। मूल्य २) दो रुपये।

कृषिचंद्रिका—(तीन भागों में) यह पुस्तक भी खेती करने या करानेवालों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इसमें खेती की उन्नति का ढंग बताने के साथ पशुओं का इलाज करना, खेती के सब तरह के हिसाब-किताब रखना और पैमाइश करना भी बताया गया है। भाँति भाँति की तरकारियाँ इत्यादि पैदा करने का तरीक़ा भी अत्यन्त सरल भाषा में लिखा गया है। मूल्य प्रथम भाग ।=)॥। चौने आठ आने, द्वितीय और तृतीय भाग का प्रतिभाग ॥=)॥

स्वास्थ्य-सम्बन्धी पुस्तकें

मक्खियों की करतूत—मक्खियों द्वारा पहुंचनेवाली हानियों का तथा उनसे बचने के उपाय। मूल्य आठ आने।

जलचिकित्सा—जर्मनी के विख्यात चिकित्सक 'लुई कुने' के सिद्धान्त अनुसार जल से ही सब प्रकार के रोगों की चिकित्सा करने की विधि। मूल्य ।=) सात आने।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजन

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक

वर्ष ८, संख्या ४०] [रविवार, २ जून, १९४६

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

लद रहा है। अपने राम जानते हैं कि जब अनाज लद रहा है तो कभी न कभी आयेगा ही, हाँ भाग्य की बात दूसरी है कि बीच में अटक जाये। प्रश्न तो यह है कि भारत-सरकार केवल चिट्ठी-पत्री, लिखा-पढ़ी और वक्तव्यों के सहारे ही कनात करना चाहती है या कोई ऐसा उपाय कर रही है जिससे भावी अकाल का खतरा नेस्तनाबूद हो जाये? यह घोषणा कर देना तो बड़ा आसान है कि जब अनाज बाहर से न आयेगा तो राशनिंग ठप्प कर दी जायेगी। म्याऊँ का ठौर पकड़ने की हिम्मत भारत-सरकार क्यों नहीं करती?

* * *

खुदा का शुक्र है कि प्रान्तों में जिम्मेदार सरकारें क़ायम हो गई हैं। उन पर भी प्रान्तों के खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने और रहने-सहने की जिम्मेदारी आ पड़ी है, इससे भारत-सरकार का आधा काम तो आसान हो ही गया। अगर गवर्नरी शासन क़ायम रहता तो आज की भारत-सरकार के वह ब्रांच आफ़िस ही साबित होते इसमें शक-सुबह की गुंजाइश न दिखाई पड़ती लेकिन जान पड़ता है कि भारत अकाल की मार से बचनेवाला है, तभी तो तक़दीर से प्रान्तों में कांग्रेस तथा जिम्मेदार हुकूमतें क़ायम हो गई हैं? प्रान्तीय सरकारें अपने अपने प्रान्तों को अकाल से बचाने के लिए जोरों से काम कर रही हैं। करना भी चाहिए, क्योंकि अपनी हुकूमत है तो अपनों की भूख से रक्षा तो उन्हें करनी ही है। किया क्या जाये?

* * *

लोग कहते हैं आज की अन्न की परिस्थिति बिगड़ने में भारत-सरकार के सप्लाई-विभाग की गड़बड़ाध्यायी नीति ने काफी जोर मारा है। उसी के फलस्वरूप प्रान्तीय सरकारों को आज की हालत सँभालनी पड़ रही है। कहावत है कि मौज मारें गाजीमियाँ और धक्का सहें मुजावर। भारत-सरकार के खाद्य तथा सप्लाई-विभाग ने गाजीमियाँ का पार्ट अब तक अदा किया है इस प्रान्तीय सरकारों को मुजावरी खाना लाजिमी हो गया है। गाजीमियाँ तो अब भी आनन्द की बंसी बजा रहे हैं और ऐलान किया जा रहा है कि अगर बाहर से अनाज न आया तो राशनिंग की लीला खतम कर दी जा सकती है, लेकिन मुजावर लोग अब सतर्क हो गये हैं। वह अपने-अपने प्रान्तों की बागडोर पकड़े हुए हैं। गाजीमियाँ बोलते रहें मुजावर अपना काम करते जायेंगे, क्योंकि जनता के प्रति उनकी जिम्मेदारी है। ऊँचाई पर बसनेवाले गाजीमियाँ सिर्फ़ बाँग देते रहें।

* * *

संयुक्त-प्रान्तीय कांग्रेस सरकार ने प्रान्त में किसी को भूखों न मरन देने की जिम्मेदारी अपन ऊपर ली ह। माननीय पंत जी ने एक योजना बनाई है, जिसके अनुसार अन्न-संकट के निवारण के लिए कार्यवाही होने लगी है। अपने राम जानते हैं कि पंत-योजना यदि सफलतापूर्वक कार्यान्वित हुई तो एक भी व्यक्ति अन्न के अभाव से भूखों न मरने पायेगा। किसानों को भी उपयोगी वस्तुओं की कमी न रहेगी लेकिन शासन-मशीन के कल-पुर्जे अगर ठीक-ठिकाने से चलते रहे और चलाये जाते रहे तब! क्योंकि शासन की ड्राइवरी तो नई है लेकिन इंजन और उसके कल-पुर्जे वही पुराने हैं। अगर पुराने कल-पुर्जों और इंजन ने गड़बड़ी की तो ड्राइवर बेचारा क्या करेगा? लेकिन आशा यही है कि इंजन और कल-पुर्जे बदस्तूर और ठीक काम करेंगे, क्योंकि ड्राइवर भी पुराना खुर्राट है। इंजन ने गड़बड़ी की और नया इंजन गाड़ी में जोता गया। इसलिए पंत-योजना सफल होगी और प्रान्त को अकाल का भय न रहेगा। अकालरूपी दैत्य को मार भगाने के लिए कांग्रेसी देव का आगमन हुआ है।

* * *

अगर ब्रिटिश मंत्रिदल की नई योजना के अनुसार केन्द्रीय सरकार में परिवर्तन हुआ और राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हो गई तो फिर क्या पूछना है? सप्लाई और खाद्य-विभाग की गड़बड़ाध्यायी नीति की इतिश्री तो हो ही जायेगी साथ-साथ देश की नकेल जिम्मेदार सरकार के हाथ में आयेगी। अपना ही देश अनाज की पैदावार के लिए क्या कम है। भारत तो विदेशियों को लाखों टन गेहूँ खिला चुका है, फिर क्या वह अपने ही देशवासियों को भूखों मरने देगा? कभी नहीं किन्तु राष्ट्रीय सरकार केन्द्र में बन जाये तब तो! नहीं तो अभी क्या-क्या भोगना पड़े, इसे कौन जाने?

अन्न-संकट से महात्मा गांधी की परेशानी।

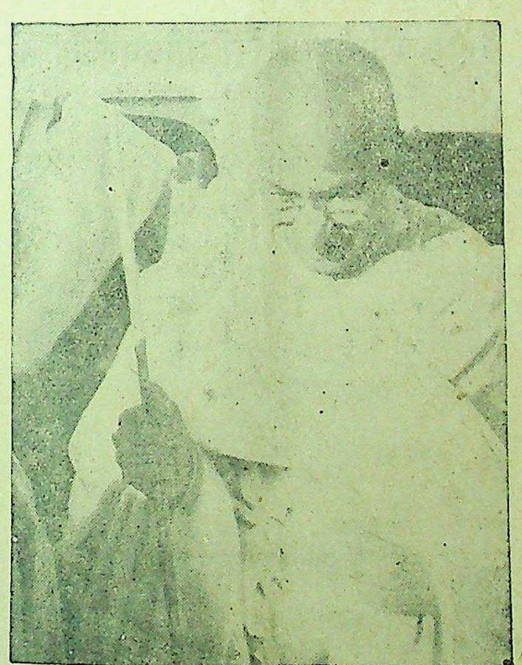

महात्मा गांधी ने अन्न-संकट से राष्ट्र की रक्षा करने की अपील की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

आज का अन्न-संकट

आज का अन्न-संकट प्रत्येक के सर पर मँडरा रहा है। अमीर, ग़रीब, हिन्दू-मुसलमान अर्थात् प्रत्येक वर्ग अन्न के अभाव से परेशान नज़र आता है। प्रत्येक के सामने अन्न के अभाव और भावी अकाल की आशंका की एक जटिल समस्या है। प्रत्येक यह अनुभव कर रहा है कि आज के अन्न के अभाव की परिस्थिति में कब सुधार होगा, वह दिन कब लौटेगा जब युद्ध के पूर्व की भाँति अन्न की प्राप्ति में कठिनाइयों का सामना न करना पड़ेगा और लोग वर्तमान परिस्थिति को प्रायः भूल से जायेंगे। सच तो यह है कि वर्तमान संकट-काल युद्ध के बाद की परिस्थिति की प्रतिक्रिया है। समय परिवर्तनशील है, इसलिए समय पर ही परिवर्तन अनिवार्य है किन्तु कितने समय तक आज का संकट बना रहेगा, इस सम्बन्ध में निश्चयपूर्वक अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। क्योंकि यह संकट केवल एक या दो प्रान्तों की समस्या के हल करने का नहीं है, वरन् सम्पूर्ण भारतवर्ष का है। अन्न-संकट सार्वजनिक और सार्वदेशिक है। इसलिए इसका हल भी सार्वदेशिक सहयोग, सहानुभूति, सहायता तथा पारस्परिक संगठन और प्रत्येक दल, वर्ग और जातियों की सामूहिक एकता पर निर्भर है।

आज जिस संकट से होकर हम गुज़र रहे हैं, वह हमारी देन नहीं है, इसकी ज़िम्मेदारी उस सरकार पर है, जिसके हाथों में शासन का सूत्र है। फिर भी जो स्थिति उत्पन्न हो गई है, उसका निराकरण तो प्रत्येक दशा में करना ही है, चाहे किसी की भी ग़लती क्यों न हो। ऐसी विषम परिस्थिति में यह प्रसन्नता की बात है कि प्रान्तों में ज़िम्मेदार और जनता की सरकारें कायम हो गई हैं और अब उन पर अपने अपने प्रान्तों की अन्न-संकट की ज़िम्मेदारी आ पड़ी है। जहाँ तक संयुक्त प्रान्त का प्रश्न है, यह एक खेतिहर प्रान्त है। यहाँ की भूमि उर्वर है। यहाँ के किसान परिश्रमी और कम से कम अपने प्रान्त के उपयोग के लिए अन्न-उत्पन्न करने में सदा सफल रहे हैं, फिर भी इस प्रान्त को भी अन्न-संकट का सामना करना पड़ रहा है। इसका एक कारण और भी है। चूँकि अन्न-की समस्या सार्वदेशिक है, इसलिए आत्म-निर्भर रहनेवाले प्रान्त भी अन्न-संकट से अपने को मुक्त नहीं कर सके हैं। यही कारण है कि संयुक्तप्रान्त को भी खाद्य-सामग्री के अभाव का शिकार बनना पड़ रहा है। इसलिए इस संकट से प्रान्त को सुरक्षित रखना तो है ही।

संयुक्तप्रान्त में आज कांग्रेस-सरकार का शासन है। कांग्रेस सरकार ने जिस दिन से शासन की बागडोर सँभाली है, उसी दिन से वह प्रान्त को अन्न-संकट से उबारने में प्रयत्नशील है। कांग्रेस सरकार के प्रधान मंत्री पंडित गोविन्दवल्लभ पंत ने असेम्बली के प्रथम दिन के तथा रेडियो पर दिये जानेवाले भाषण में यह स्पष्ट कर दिया है कि वह प्रान्त में किसी को भी अन्न-संकट का शिकार न होने देंगे। माननीय पंत जी ने इस सम्बन्ध में एक नई योजना भी प्रस्तुत की है और उस योजना के अनुसार कार्य-वाही भी प्रारम्भ हो गई है। जिन ज़िलों में जिस अन्न का अभाव है, वह दूसरे ज़िलों से लेकर, जहाँ उसकी पैदावार अधिक होती है, पूर्ति की जा रही है। इसके परिणाम स्वरूप प्रत्येक ज़िले में समता के आधार पर अन्न-वितरण की योजना कार्यान्वित की जा रही है। इसमें सन्देह नहीं है कि सरकार की यह नीति सार्वजनिक सेवा तथा समस्या के हल के लिए उचित और उपयुक्त है। कांग्रेस-सरकार ने इसी प्रकार देहातों में अन्न-वसूली की जो नीति प्रचलित की है, वह भी समस्या के हल का एक उपयुक्त उपाय है। देहातों में अन्न के अभाव की सम्भावना उतनी नहीं जितनी शहरों में है। हाँ, अन्न के स्थान में देहातों में कपड़ा तथा अन्य दैनिक जीवन की सामग्री का अभाव है, जो शहरों में गाँवों से अधिक सुलभ है। कांग्रेस सरकार ने देहातों में किसानों से उपयुक्त मात्रा में अन्न वसूली तथा उसके एवज़ में उनको नक़द मूल्य या ऐसी आवश्यक वस्तुयें, जिनके मिलने में उन्हें अभी तक कठिनाई का अनुभव होता रहा है, देने की जो व्यवस्था की है वह भी उचित है। इस प्रकार सार्वजनिक रूप से शान्ति स्थापना तथा वस्तुओं के अभाव की पूर्ति के लिए जो मार्ग प्रशस्त किया गया है यह पंत-योजना की एक अच्छी सूझ है। इस योजना से जहाँ शहरों और देहातों में अन्न तथा अन्य ज़रूरी वस्तुओं के अभाव की पूर्ति होगी वहाँ पारस्परिक सद्भावना की वृद्धि भी होगी और वर्तमान संकट काल से मुक्ति प्राप्त करने में सहायता प्राप्त होगी। इसलिए ऐसी योजना को सफलीभूत बनाने में प्रान्त तथा ज़िलों की शासन-मशीनरी को ईमानदारी, सचाई और उत्तरदायित्वपूर्ण ढंग से सहयोग देना ज़रूरी है। हमारा विश्वास है कि कांग्रेस-

स्वायत्त शासन विभाग की मंत्री
विजयलक्ष्मी पंडित।

सरकार के रहते प्रान्त का कोई भूखों नहीं मरने पायेगा। है सार्वजनिक एकता तथा कोई भी सार्वजनिक या हो, सबको रोटियों की सभी के पेट की समस्या है, संकट की समस्या के हल को सभी पर आती है। मतभेद के भेद होता है किन्तु अन्न-संकट राष्ट्र के बचाने में किसी की गुँजाइश ही नहीं है। सरकार तथा प्रान्त के प्रधान गोविन्दवल्लभ पंत अन्न-समस्या के लिए जिस प्रकार से प्रयत्नशील सरकारी, ग़ैरसरकारी, हिन्दू अछूत, सभी वर्ग और जातियों हृदय से होना चाहिए। से करोड़ों जनता की रक्षा करना मानवता की रक्षा करना है और परलोक दोनों को बनाने सिद्ध होगा, इसमें संदेह नहीं है।

संयुक्त प्रान्तीय कांग्रेस मन्त्रिमण्डल

गृह-मंत्री श्री रफ़ीअहमद किदवई

माल-मंत्री श्री हाफ़िज़ मुहम्मद इब्राहीम

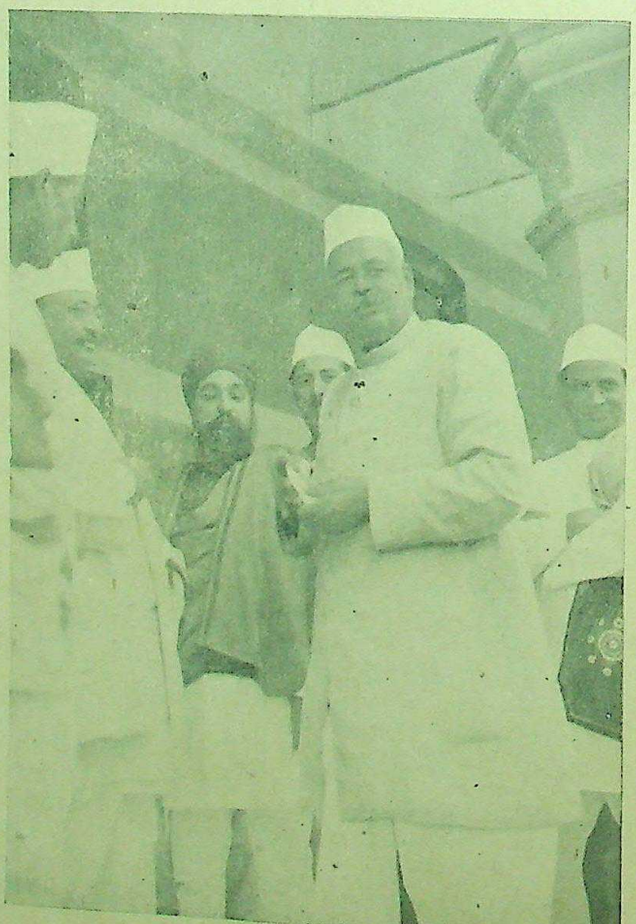

प्रधान मंत्री माननीय पंडित गोविन्दवल्लभ पंत।

न्याय-मंत्री डाक्टर कैलाशनाथ

शिक्षा तथा अर्थ-मंत्री श्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में पड़नेवाले अकालों की मनोरंजक कहानी

अकाल को मार भगाने में सरकार और जनता का सहयोग ज़रूरी

लेखक, श्री का० न० रामन्ना, शास्त्री

अन्न और खाद्य-सामग्री के अभाव से भारत में एक भावी अकाल की आशंका होने लगी है। किन्तु सरकार यदि पहले से और आज भी दृढ़ता से सतर्क हो जाये तो अकाल के भावी संकट का सामना भारत को न करना पड़ेगा। इस लेख में विद्वान् लेखक ने अतीतकाल में भारत में पड़नेवाले अकालों का मनोरंजक वर्णन किया है जो जानकारी से पूर्ण और पठनीय है।

भारत सरकार के भोजन-सदस्य सर जे० वी० श्रीवास्तव।

...वाइसराय लार्ड वैवेल।

...में जब-जब अकाल पड़े हैं, तब-...की जड़ में तत्कालीन शासकों ...ही कारण हुई हैं। सन् ...समय महारानी एलिज़ाबेथ ...व्यापारियों को भारत से ...का अधिकार-पत्र मिला, उस ...की जनसंख्या कुल १० ...थी। लगभग ८० प्रतिशत ...करते थे और अपनी ...थे। वाणिज्य, कारीगरी, ...सेना तथा अन्य व्यवसायों में ...प्रतिशत लोग लगे हुए थे। ...के पहले, भारत की जन-...थी, यह ठीक-ठीक नहीं ...सकता। लेकिन, जो शासक ...की ओर विशेष ध्यान ...जन-साधारण की सुभीते के ...चीज़ों के दाम निर्धारित ...करते थे। भाव-नियंत्रण प्राचीन-...की मिलता है। मुसलमानों के ...में अलाउद्दीन खिलजी (१२-...) ने अपने शासन क्षेत्र में ...जो दाम निश्चित किये थे, वे ...थे:—

प्रतिमन	७½	जीतल
"	५	"
"	५	"
"	५	"
"	५	"
"	५	"
प्रतिसेर	१½	"
"	१⅓	"
२½ सेर	१	"
३ सेर	१	"
२½ सेर	५	"

...देनेवाली गाय का मूल्य २-३ ...निश्चित किया गया था। उस समय ...का मन होता था। एक जीतल ...पैसे से कुछ अधिक और एक ...रुपये से कुछ अधिक था। ...अलाउद्दीन खिलजी ने भाव-नियंत्रण ...लिखित रूप देकर ही नहीं छोड़ ...भाव-नियंत्रण का उल्लंघन ...के लिए उसने कड़े दंड का विधान ...था। भाव में फेर-फार करनेवाले ...को आम सड़क पर कोड़े लगाये ...में कम बेचनेवाले के शरीर ...ही मांस काट लिया जाता था ...कम तौला है। यद्यपि वर्तमान ...में ये दंड बहुत ही कठोर प्रतीत ...इससे जन-साधारण, व्या-...से प्रायः मुक्त रहते थे। ...की दंड-व्यवस्था सन् १९४३ ...और अफ़ग़ानिस्तान में की गई ...पानी के व्यवस्थापक ने लोगों से पानी के लिए कुछ अधिक दाम लिए। उसे ईरान के क़ानून के अनुसार आम चौराहे पर कोड़े लगाये गये। अफ़ग़ानिस्तान में उसी समय तौल में कम बेचनेवाले के कान गधे के कान से सीकर आम सड़कों पर घुमाया गया था।

अलाउद्दीन-द्वारा भाव-नियंत्रण से प्रतीत होगा कि उस समय भारत में खाने-पीने की चीज़ों की कितनी प्रचुरता थी।

इतना होने पर भी मुहम्मद तुग़लक के शासनकाल में (१३२५-५१) दो महा भयंकर अकाल पड़े। इस अकाल का कारण मुहम्मद की सनक थी। उसने सनक में आकर कुछ ऐसे क़ानून बना दिये थे जिससे प्रजा को भारी कष्ट उठाना पड़ा था। दोआब में भयंकर अकाल पड़ा। दिल्ली में एक सेर अनाज के लिए १६-१७ जीतल देने पड़ते थे अर्थात् वर्तमान रुपये के हिसाब से एक रुपये में दो ढाई सेर अनाज मिलता था। दिल्ली के लोग मनुष्य का मांस और चमड़ा उबाल-उबालकर खाने लगे थे। उस समय भारत की आबादी लगभग सात-साढ़े सात करोड़ रही होगी।

सन् १६३१-३२ में शाहजहाँ के शासनकाल में गुजरात और खानदेश में भयंकर अकाल पड़ा। इन प्रान्तों का प्रबन्ध बादशाह ने शाहजादा औरंगज़ेब के सुपुर्द किया था। औरंगज़ेब ने बादशाह को बहुतेरा लिखा कि दुर्भिक्ष निवारण के लिए रुपया और अनाज भेजा जाय लेकिन बादशाह की वही सनक! बादशाह ने कोई ध्यान नहीं दिया। हज़ारों, लाखों आदमी भूख से मरने लगे। पिपरमण्डी का कहना है कि औरतें सेर दो सेर अनाज के लिए अपने बच्चे बेंच दिया करती थीं। आदमी रात के समय घर से निकलते नहीं थे। उन्हें डर रहता था कि कहीं दूसरे लोग उन्हें पकड़कर खा न जायँ। शाहजहाँ के समय की जनवृद्धि अधिक नहीं थी। वह अनुमानतः साढ़े दस-ग्यारह करोड़ के लगभग रही होगी।

भारत में अकालों का ताँता तब से शुरू होता है जब से अँगरेज़ों के पैर यहाँ जमने लगते हैं। सन् १७६९-७० में बंगाल और बिहार के अन्दर भीषण अकाल पड़ा। इस अकाल के परणिाम-स्वरूप जन और धन की कितनी हानि हुई इसका कोई लिखित प्रमाण नहीं मिलता। विशेषज्ञों का अनुमान है कि इस अकाल में लाखों आदमी मर गये होंगे। इस बात के लिखित प्रमाण मिलते हैं कि बहुत से लोग मुर्दों का मांस खा-खाकर जीवित रहने की कोशिश करते थे।

यहाँ यह ध्यान में रखना चाहिए कि इस समय बंगाल में दुहरे शासन की व्यवस्था थी। एक तरफ नवाब का शासन था और दूसरी तरफ अँगरेज़ कम्पनी (ईस्ट इंडिया कम्पनी)। मालगुजारी की आय प्राप्त करने के लिए ज़मींदारियाँ नीलाम पर उठती थीं। ऊँची से ऊँची बोली बोलनेवालों को ज़मींदारियाँ दे दी जाती थीं। ज़मींदार मनमाने तौर पर किसानों से रुपया वसूल करते थे। इस ज़ुल्म-ज़्यादती के शासनकाल में ग़रीब किसानों की क्या दुर्दशा हुई होगी यह केवल अनुमान से ही जाना जा सकता है वारेन हेस्टिंग्ज़ ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है "ज़ुल्म और ज़्यादतियों के विश्वसनीय प्रमाण मिलते हैं। लेकिन, बहुत से मामलों में क़ानूनी प्रमाण प्राप्त करना बड़ी टेढ़ी खीर है।" अकाल के कारणों पर प्रकाश डालते हुए कार्ल मार्क्स ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'केपिटल' में लिखा है "सन् १७६९-७० के मध्य में अँगरेज़ों ने सब का सब चावल खरीद कर रख लिया था और उस चावल को तब तक बेचने के लिए नहीं निकाला। जब तक दाम ऊँचे से ऊँचे नहीं चढ़े।"

सन् १७६९-७० के पूर्व, लगभग ७० साल के दौरान में खाद्य-सामग्री भारत में कितनी प्रचुर मात्रा में थी, यह उस समय के दामों से जाना जा सकता है। सन् १७०० में भारत की जन-संख्या साढ़े बारह करोड़ थी। वही आगे चलकर सन् १७५० में १५ करोड़ हो गई। इस ५० साल में जन-वृद्धि के बावजूद खाद्य-सामग्री की प्रचुरता के कारण दामों में विशेष फेरफार नहीं हुआ था।

सन्	चावल बढ़िया	चावल घटिया	दाल	चना	गेहूँ	बाजरा	ज्वार	गुड़	घी	तेल	सेर फी रुपया
१७००	४०	७०	६०	७०	३०	..	..	४०	४	१०	
१७२६	४०	४५	३०	५०	२२	..	..	४०	४½	६	
१७५०	४०	५०	४५	६५	२८	..	..	..	२⅔	९	
१७७५	२३	२७	३६	५७	३६	..	..	..	२⅛	७½	

उक्त आँकड़ों से प्रतीत होगा कि सन् १७६९-७० के अकाल के बाद दाम कितने चढ़ गये। चावल की पैदावार आज के समान ही बंगाल, बिहार और मद्रास प्रान्त में विशेष रूप से होती थी। बंगाल और बिहार के इस अकाल के समय अँगरेज़ों के पैर उक्त प्रान्तों में लगभग जम चुके थे। इस समय जोतने-बोने के लिए भी भूमि की कमी नहीं थी। डाक्टर एच० मान के अनुसार उस समय प्रतिजन भूमि ४० एकड़ थी।

इस अकाल के बाद भारत में अकालों का ताँता बँध गया। सन् १७७० से १९०० तक भारत में छोटे-मोटे अकालों को मिलाकर लगभग ७५ अकाल पड़े, जिनमें प्रमुख अकालों का विवरण इस प्रकार है:—

सन् १७८३ में अवध, पश्चिमोत्तर प्रान्त और पंजाब।

सन् १७९१ में गुजरात, हैदराबाद (दक्खिन) और बम्बई।

सन् १८०१ में गुजरात, हैदराबाद (दक्खिन) और बम्बई।

सन् १८०३ में पश्चिमोत्तर प्रान्त और हैदराबाद (दक्खिन)।

सन् १८१२ में पश्चिमोत्तर प्रान्त राजपूताना और बम्बई।

सन् १८२३ में हैदराबाद (दक्खिन)।

सन् १८३२ में मद्रास और हैदराबाद (दक्खिन)।

मद्रास प्रान्त में इस अकाल से भयंकर जन और धन की हानि हुई। गुन्तूर ज़िले की पाँच लाख की जन-संख्या के अन्दर से दो लाख आदमी भूख की ज्वाला से तड़प-तड़प कर मर गये। मद्रास की गलियों और नेल्लोर की सड़कों पर लाशें छितरी पड़ी रहती थीं। इस अकाल ने बम्बई और बरार को भी छोड़ा नहीं था।

सन् १८३७ के अकाल का प्रकोप आगरा, कानपुर और फ़तेहपुर में विशेष

जैसा मेरा देश है 'अफ़्सर' वैसा कोई देश नहीं

लेखक, श्रीयुत हामिदुल्लाह 'अफ़्सर' मेरठी

फूलों का हर सिम्त महकना, कलियों का हर रोज़ चटकना।
बाग़ों में बुलबुल का चहकना, मेवों का शाख़ों से लटकना।
जैसा मेरा देश है 'अफ़्सर' वैसा कोई देश नहीं।
कैसे अच्छे अच्छे दरिया, वह इनका इठलाकर चलना।
दो बहिनें हैं गङ्गा यमुना, दुनिया में सानी नहीं इनका।
जैसा मेरा देश है 'अफ़्सर' वैसा कोई देश नहीं।
देखो यह सावन की बहारें, पड़ती हैं हर सिम्त फुवारें।
हरे-भरे पौधों की क़तारें, बादल जिन पर मोती वारें।
जैसा मेरा देश है 'अफ़्सर' वैसा कोई देश नहीं।
शबनम ने फूलों को निखारा, सूरज ने कुछ और सँवारा।
कैसा समाँ है प्यारा-प्यारा, एक गुलशन है भारत सारा।
जैसा मेरा देश है 'अफ़्सर' वैसा कोई देश नहीं।
मिट्टी है अक्सीर यहाँ की, ऐसी ज़मीं है और कहाँ की।
झोली भर दी सारे जहाँ की, क्योंकर हो तारीफ़ किसाँ की।
जैसा मेरा देश है 'अफ़्सर' वैसा कोई देश नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उग्र था। इन शहरों में लाशें फेंकवाने के लिए ख़ास प्रबन्ध करना पड़ा था। कहीं-कहीं तो कुत्ते और गिद्धों की छीना-झपटी से लाशों के टुकड़े इधर-उधर बिखर जाते थे। यह तो अवस्था शहरों की थी। गाँवों में क्या हुआ होगा, यह केवल अनुमान से जाना जा सकता है।

सन् १८५५ का अकाल भी बड़ा ही भयानक रूप का था। इस अकाल में जन और धन की कितनी हानि हुई इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। इस समय भारत के लोगों का ख़र्च भी अधिक नहीं था। टामस मनरो ने हिसाब लगाकर बताया है कि इस समय खेत में काम करनेवाले मज़दूर को प्रतिमास ४ और ६ शिलिंग के बीच में मज़दूरी मिलती थी और उसका वार्षिक ख़र्च १८ से १९ शिलिंग था। अर्थात् उस समय आमदनी भी अच्छी थी।

सन् १८६४-६५ का अकाल सन् १८६० के अकाल से अधिक भयानक था। इस अकाल के घेरे में बंगाल, बिहार, उड़ीसा और हैदराबाद (दक्खिन) आये। इस अकाल के परिणामस्वरूप अकेले उड़ीसा में ४ लाख आदमी मर गये। इस अकाल के बाद ही सन् १६६८-६९ में और भी भीषण अकाल पड़ा। इस अकाल के घेरे में पश्चिमोत्तर प्रान्त, मध्यप्रान्त, मध्यभारत आदि क्षेत्र आये। अकेले उत्तर हिन्दुस्तान में इस अकाल से १२ लाख आदमी मर गये। इस अकाल के तीन-चार साल बाद ही सन् १८७३-७४ में अनावृष्टि के कारण बंगाल, बिहार, पश्चिमोत्तर प्रान्त और अवध में अकाल पड़ा। अकाल-कष्टनिवारण के लिए सरकार की ओर से ६५ लाख रुपया ख़र्च किया गया।

सन्	चावल बढ़िया	चावल घटिया	दाल चना	गेहूँ	बाजरा	ज्वार	जौ	घी	सेर प्रति रुपया
१८२५	३५	४०	५५ ७०	३६	..	..	..	२½	
१८७५	१५	१८	३५ ४०	२१	७५	८१	३०	"	
१९००	१०	१३	१८ २०	१२	१८	१४	१८	"	

सन् १८७७ का अकाल पिछले सभी अकालों से अति उग्र रूप का था। यों तो इसकी लपेट में पश्चिमोत्तर प्रान्त, अवध, बम्बई, मैसूर और मद्रास आये थे। इस अकाल के परिणामस्वरूप अकेले मद्रास प्रान्त में ५० लाख आदमी मर चुके थे। अकाल के समय विशेष बात यह थी कि एक तरफ लोग अकाल की चपेटों से तिल-मिला रहे थे दूसरी तरफ भारत के भाग्य-विधाता लार्ड लिटन साहब शाही दरबार कर रहे थे। यह अकाल समाप्त भी नहीं हो पाया था कि सन् १८७८ में उत्तर हिन्दुस्तान में अति भीषण अकाल आया। देखते-देखते साढ़े बारह लाख आदमी स्वाहा हो गये।

अब तक जितने अकाल पड़े वे क़रीब-क़रीब छुटपुट से थे। उनकी व्यापकता प्रान्तविशेष तक ही सीमित थी। लेकिन सन् १८९७ के अकाल ने समस्त भारत को घेर लिया था। उसी तरह सन् १९०० का अकाल भी काफी व्यापक था। यहाँ यह ध्यान में रखने योग्य बात है कि इस समय रेलों का विस्तार काफ़ी हद तक बढ़ चुका था। फिर भी एक स्थान से दूसरे स्थान तक खाद्य-सामग्री पहुँचाने का पर्याप्त प्रबन्ध नहीं किया गया था। बाहर से भी अन्न मँगाने का कोई विशेष प्रयत्न नहीं हुआ था।

सन् १८०० से १९०० तक अकालों से कितनी जन-हानि हुई यह निम्नलिखित अंकों से मालूम होगा।

सन् १८०० से १८२५ तक दस लाख आदमी मरे।

सन् १८२५ से १८५० तक चार लाख आदमी मरे।

सन् १८२५ से १८७५ तक पचास लाख आदमी मरे।

सन् १८७५ से १९०० तक दो करोड़ साठ लाख आदमी मरे।

एक सौ साल में--कुल तीन करोड़ चौबीस लाख आदमी अकाल से मरे।

उक्त आँकड़े ४०-४१ साल पहले विलियम डिगबी के तैयार किये हुए हैं। अकालों के कारणों पर प्रकाश डालते हुए वे कहते हैं कि भारतीय किसान लगान, क़र्ज और अन्य तरह के शोषण से दिन पर दिन बर्बाद होता जा रहा है। ज़मींदार और महाजन जिसके हाथ में किसान की ज़मीन चली जाती है, भूमि-सुधार की कोई फ़िक्र नहीं करता। सिंचाई की विशेष व्यवस्था नहीं है। किसान को प्राकृतिक शक्तियों पर निर्भर रहना होता है। इन सब कारणों में विशेष और प्रमुख कारण बताते हैं सरकार की लापरवाही।

इन अकालों के परिणामस्वरूप यहाँ की खाद्य-सामग्री के भावों पर कैसा कैसा असर पड़ा यह निम्नलिखित आँकड़ों से जाना जा सकता है।

इस शताब्दियों में भी कितने ही अकाल आये बम्बई प्रान्त के बीजापुर, अहमदनगर आदि ज़िले तो लगभग सदा ही अकाल की अवस्था में रहते हैं। उसी तरह आन्ध्र प्रान्त में रायस सीमा 'लकड़प्पा, कर्नूल, बिल्लरी और अनन्तपुर (ज़िले) भी लगभग सदा अकाल की अवस्था में रहते हैं। सन् १९४३-४४ में बंगाल, मलाबार रायल सीमा तथा बम्बई प्रान्त के कुछ हिस्सों में अकाल ने तहलका मचा दिया था। अकेले बंगाल में इस अकाल के परिणामस्वरूप ३५ लाख आदमी मर चुके हैं। अकाल के बाद महामारियों ने १२ लाख आदमियों का सफाया कर डाला। दुर्भिक्षलिप्त जन-संख्या का १० हिस्सा बिलकुल बेघरबार हो गया।

सन् १९४३-४४ के बंगाल के अकाल पर विशेष लिखने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उसकी याददाश्त अभी लोगों के दिलों में ताजी है।

बाल-साहित्य के अद्वितीय कवि
पण्डित सोहनलाल जी द्विवेदी
की
तीन पुस्तकें
झरना—शिशु-भारती
बाँसुरी
पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू का कथन है कि उन्हें ये रचनायें बहुत पसंद आई हैं।
माननीय सम्पूर्णानन्द जी का कथन है कि द्विवेदी जी यों तो सभी प्रकार की ऊँचे दर्जे की कवितायें लिखते हैं, जिनसे उनके भावों की गम्भीरता और भाषा का प्रभुत्व प्रकट होता है, लेकिन, बालसाहित्य तो उनका ख़ास क्षेत्र है। जो यह मानते हैं कि बालकों में सद्विचारों को बचपन में ही बोना चाहिए, उन्हें द्विवेदी जी की इन कृतियों को अपनाना चाहिए और उनका कृतज्ञ होना चाहिए।
बहुत ही अच्छी छपी
प्रत्येक पुस्तक का मूल्य
।।।) बारह आने
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

इंडोनेशिया से ५ लाख टन च

पं० जवाहरलाल नेहरू को डा० शहरयार

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने एक वक्तव्य में यह संकेत किया है कि इन्डोनेशिया ने भारत को जो ५ लाख टन चावल सूती माल के बदले देने का वादा किया है उसके शीघ्र ही पूरे होने की सम्भावना है। पंडित जवाहरलाल जी कहते हैं--मैंने जान-बूझकर इन्डोनेशिया की सहायता के सम्बन्ध में अभी तक कुछ नहीं कहा है क्योंकि मैं झूठी आशा नहीं दिलाना चाहता था। अब समय आ गया है जब कि हम कुछ विश्वास के साथ कह सकते हैं कि यह सहायता मिल जायगी।

इन्डोनेशियन प्रजातन्त्र के प्रधान मंत्री डा० शहरयार ने मुझे निम्नलिखित समुद्री तार भेजा है :--

"प्रिय मि० जवाहरलाल नेहरू, आपने इन्डोनेशिया द्वारा भारतीयों को चावल दिये जाने का जो समाचार समाचार पत्रों में पढ़ा है उसे कृपा करके पक्का समझिये। यदि आप स्वयं आकर इन्डोनेशियन जनता को सम्मान प्रदान नहीं कर सकते तो कृपा कर माल के परिवर्तन के सम्बन्ध में बातचीत करने के लिए जितनी जल्दी हो सके अधिकारपूर्ण प्रतिनिधियों को इन्डोनेशिया भेजें। इन्डोनेशियावाले ५ लाख टन चावल जहाज पर लदा हुआ तैयार रखेंगे। इन्डोनेशियनों का प्रत्येक वर्ग इस योजना का समर्थन करता है। जावा के बंदरगाहों में जहाजों के आने की गारंटी है। एक दूसरे देश को परस्पर सहायता पहुँचाने के उद्देश्य से हम लोग परिवर्धन में उस माल को चाहते हैं जिसकी कि जनता को बहुत अधिक आवश्यकता है जैसे सूती माल और कृषि के औजार इत्यादि। यदि आप उक्त माल

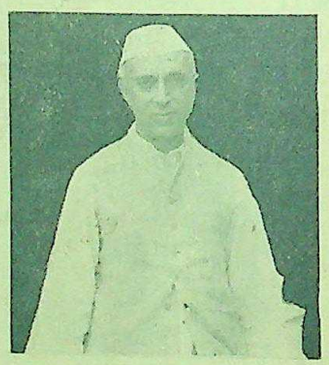

पंडित जवाहरलाल नेहरू

इसलिए न दे सकें कि उसकी स्वयं भारतीयों को आवश्यकता होगी तो आप कृपा करके बदले में कोई और दे दीजियेगा और हम इसे अपना सौभाग्य समझेंगे। इसके अलावा जिस माल के लिए मैंने पहले लिखा है वह सबसे आवश्यक है किन्तु उसके पहले हम लोग और माल भी ले सकते हैं जिसे आप आसानी से दे सकें। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि हमारी जनता ने इस योजना का बड़े उत्साह के साथ समर्थन किया है क्योंकि हम लोग आपके देशवासियों के साथ अपनी सहानुभूति, आपकी सहायता करके ताकि आपके देश में अकाल न पड़े, प्रकट करना चाहते हैं।

आपका, शहरयार"

डाक्टर शहरयार की सहायता का पूरा लाभ उठाने के लिए उन्हें सूती माल के बदले कृषि के औजार तथा अन्य सामान भेजा जायगा। अब यह असंदिग्ध है कि भारत को चावल मिलेगा। अब काम केवल यही है कि चावल को शीघ्र से शीघ्र भारत लाया जाय और उचित रीति से उसका वितरण किया जाय। साथ ही उन लोगों को परिवर्तन में वह माल भी भेजा जाय जिसकी कि उन्हें बड़ी आवश्यकता है।

इंडोनेशिया के राष्ट्रीय नेता

मुझे विश्वास है कि भारत
डा० शहरयार की इस सहायता
उन्होंने अपने देशवासियों की
उनका कृतज्ञ होगा। उन्होंने
बिना माँगे दी है और विशेषकर
जब कि उन्हें हर प्रकार से
किया गया। सहायता की
भाषा का प्रयोग डा० शहरयार
वह भारतीय जनता के हृदयों
करेगी। ऐसे ही कामों से देश
दूसरे से बँध जाते हैं। भारत
कृतज्ञ ही न रहेंगे बल्कि भविष्य
याद रखेंगे। मेरा विश्वास है कि
देशों में अधिकाधिक मित्रता
साथ ही दोनों का लाभ भी
आशा है कि इन्डोनेशिया अपनी
को सफलतापूर्वक पार करके
निकलेगा।

मैं कुछ समय तक अभी इन्डोनेशि
जा सकता किन्तु ज्यों ही सुविधा
परिस्थितियों ने आज्ञा दी वैसे ही
जाऊँगा ताकि मैं स्वयं भारतीय
शुभकामना और कृतज्ञता प्रकट
में समझता हूँ कि इस संबंध
बातचीत करने के लिए भारत
के आरम्भ में प्रतिनिधियों
मुझे आशा है कि यह प्रतिनिधि
सरकार के भोजन सचिव श्री
नेतृत्व में जायगा।

एक अन्य वक्तव्य में पंडित
नेहरू कहते हैं कि मुझे रंगून से
आंगसान का एक तार मिला है
उन्होंने कहा है कि वहाँ फसलों
कमी के कारण अस्पतालों और
बड़ी मुसीबत का सामना करना
उनका प्रस्ताव है कि भारत से
दिये जायँ—यदि युद्ध के पूर्व के
नहीं तो कुछ तो भेजे ही जायँ।
है कि भारत सरकार इस प्रस्ताव
भूमि पूर्वक विचार करेगी और
बर्मा भिजवायेगी। यह कार्य
दृष्टि से ही उचित नहीं है
दोनों देशों के लोगों में
की वृद्धि होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्तप्रांत में

खेती की सिंचाई नदियों और नहरों से भी होती है।

इलाहाबाद में जमुना नदी और उस पर बने हुए पुल का एक दृश्य।

(१) संयुक्तप्रांत में खेती की सिंचाई प्रमुख नदियों तथा नहरों के पानी से भी होती है। इस प्रांत में सबसे बड़ी नदियाँ गंगा और जमुना हैं। इनमें बारहों मास पानी रहता है। इन नदियों से नहरें भी निकाली गई हैं, जो खेतों की सिंचाई की उपयोगिता के लिए प्रसिद्ध हैं। गंगा के कछारों में भी विभिन्न प्रकार के अनाज अधिक मात्रा में उत्पन्न होते हैं। संयुक्तप्रान्त के अतिरिक्त भाग्यशाली हैं कि जिन्हें गंगा और जमुना ऐसी प्रमुख नदियों के जल की सुविधा प्राप्त है, जो भारतवर्ष ही नहीं संसार में अपनी पवित्रता तथा प्राचीनता के लिए प्रसिद्ध हैं।

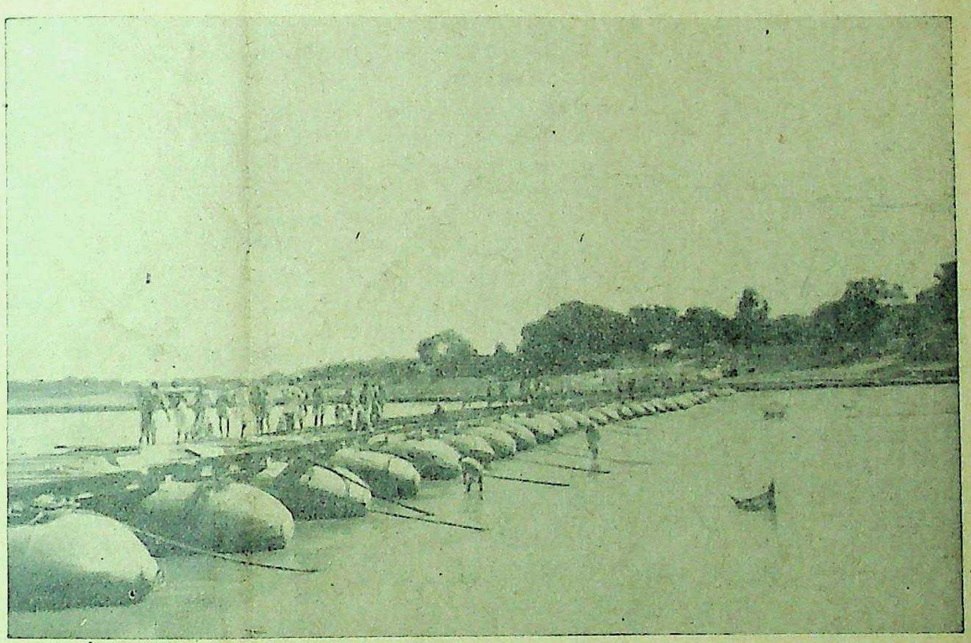

इलाहाबाद में आवागमन के लिये गंगा नदी पर गर्मी में पीपे का पुल बना दिया जाता है।

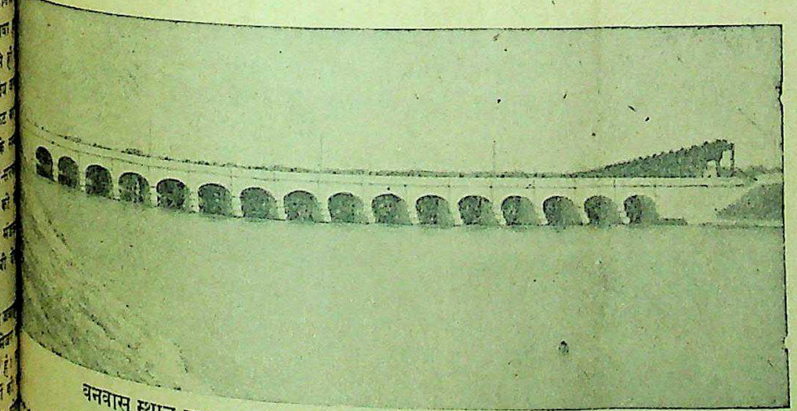

बनवास स्थान पर शारदा नहर बने हुए बाँध का एक दृश्य।

(२) शारदा नहर शारदा नदी से बनवास नामक स्थान से निकली है। यह स्थान नेपाल राज्य और नैनीताल की सीमा पर स्थित है। इस नदी से बरेली, पीलीभीत, शाहजहाँपुर, खीरी, हरदोई, सीतापुर, बाराबंकी, लखनऊ, उन्नाव, रायबरेली, सुलतानपुर, प्रतापगढ़ और इलाहाबाद के जिलों में सिंचाई होती है। इस नहर के बनाने में १० करोड़ रुपये खर्च हुए हैं। इस समय इस नहर से १०,१४,००० एकड़ भूमि की सिंचाई होती है। नगर की मुख्य शाखाओं तथा उपशाखाओं सहित लगभग ४३५० मील है।

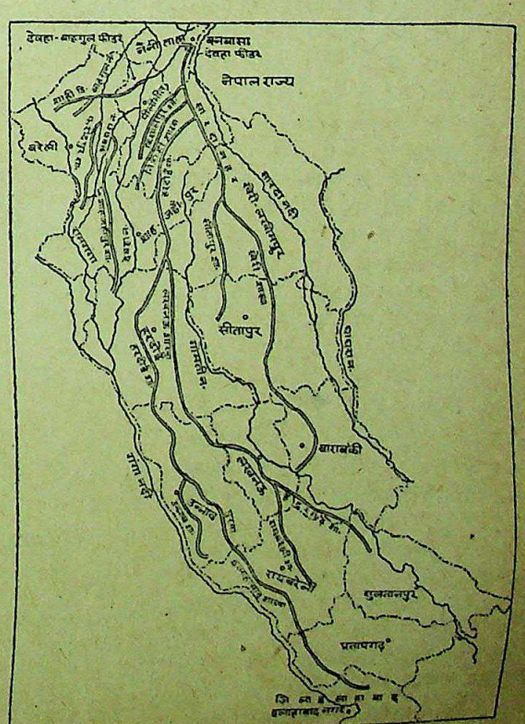

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में अनाज की कमी क्यों?

कांग्रेस, मुस्लिम लीग और सरकारी नेताओं में वाद-विवाद

भारत में अनाज की मौजूदा कमी के बारे में आल इंडिया रेडियो दिल्ली से २२ फ़रवरी को एक बहस ब्राडकास्ट हुई। उसमें भारत-सरकार के खाद्य-सेक्रेटरी श्री बी० आर० सेन, श्री० आर० मसानी एम० एल० ए० (कांग्रेस) और मिस्टर ए० जाफर एम० एल० ए० (मुस्लिम लीग) ने हिस्सा लिया। उस बहस के अंश नीचे दिये जाते हैं:—

सेन—डाक्टर एक्राइड की राय में मामूली बालिग के लिए एक दिन में २,६०० कैलोरी (उष्णतत्त्व की इकाई) चाहिए।

मसानी—भारत-सरकार के राशन एडवाइज़र मिस्टर करबी का कहना है कि एक पाउंड अनाज से सिर्फ़ १,६०० कैलोरी मिलती हैं। इसलिए अनाज का राशन उसके लिए ऐसा होना चाहिए जिसके द्वारा उसे २,६०० कैलोरी प्राप्त हों।

जाफ़र—इसका मतलब यह है कि डेढ़ पौंड से अधिक राशन प्रतिदिन के हिसाब से दिया जाय।

मसानी—राशन को घटाकर १२ औंस करने का असर जनता के स्वास्थ्य पर बहुत बुरा पड़ेगा। १ पौंड राशन ही बुरी बात थी।

सेन—राशन की कमी पर इस प्रकार की आलोचना हो सकती है। लेकिन इस सवाल के दो पहलू हैं। इस साल बहुत कमी है। क्या इस कमी का भार अभावग्रस्त क्षेत्रों, जैसे बम्बई, मदरास, मैसूर पर ही डाला जाना चाहिए। अथवा हम ऐसी कोशिश करें कि सम्पूर्ण भारत उसे सँभाले ताकि सब लोगों का भार कम हो जाय।

जाफ़र—दूसरे शब्दों में इसका अर्थ यह है कि हम भारत के सभी निवासियों से बराबर-बराबर त्याग करने के लिए क्यों न कहें, चाहे वे अधिक अन्न उपजाने-वाले क्षेत्र हों अथवा कमीवाले। वास्तव में यही बात उचित होगी।

सेन—दूसरा पहलू यह है कि क्या राशन की इस कमी के कारण भुखमरी की आशंका होगी।

मसानी—मेरे विचार में राशन की कमी भुखमरी का कारण बनेगी। चाहे जनता जीवित रह जाय, किन्तु उसे भरपेट भोजन न मिलेगा।

सेन—सरकार समस्त भारत के राशन में दिये जानेवाले अन्न की खपत को ध्यान से देख रही है। हमने देखा है कि सम्पूर्ण विगत वर्ष में औसत खपत ६० प्रतिशत थी, जिसका अर्थ यह है कि १६ औंस राशन का लगभग ११ औंस से लेकर १२ औंस तक लोगों ने लिया।

राशन में कमी मौजूदा खपत को स्थिर कर देगी। यदि हमने ऐसा न किया होता तो इस कमी की बातचीत होते ही ९० या १०० फ़ीसदी तक अनाज की खपत हो जाती। चन्द महीनों बाद भुखमरी का सामना करने की अपेक्षा, जो हम इस समय राशन कम कर रहे हैं और अपने साधनों का विस्तार पूरे साल भर के लिए कर रहे हैं, क्या बुद्धिमानी नहीं है? राशन की खपत सम्बन्धी अपने विगत वर्ष के अनुभव के आधार पर मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ कि कम किया हुआ राशन भुखमरी का कारण बनेगा और कृपा करके यह बात न भूल जाइये कि कठिन शारीरिक परिश्रम करनेवालों को दो औंस अधिक प्रतिदिन का राशन दिया जाता है तथा एक अधिक ख़ूराक, जो राशन में शामिल नहीं है, उन पक्वान्न की कैन्टीनों से उन्हें मिलेगी जो फ़ैक्टरियों के मालिक अथवा अन्य उद्योगपति स्थापित कर रहे हैं।

हम उन क्षेत्रों में राशन व्यवस्था चालू कर रहे हैं जिनमें अभी तक राशन-व्यवस्था नहीं है। यद्यपि इससे उपलब्ध अन्न की मात्रा में वृद्धि नहीं होगी तथापि उपलब्ध सप्लाई का अधिक बराबरी से वितरण अवश्य हो जायगा।

मसानी—आबादी की कौन-सी निस्बत आप इस दायरे में लाने की आशा करते हैं?

सेन—सम्भवतः निकट भविष्य में ५० लाख तथा आगे चलकर और अधिक।

जाफ़र—क्या यह इससे भी अधिक आवश्यक नहीं है कि ग़ल्ला हासिल करने की एक-सी प्रणाली बनाई जाय? यह उचित नहीं है कि ऐसी अनहोनी स्थिति में वे प्रान्त जिन पर कमी का विशेष प्रभाव नहीं है शेष भारत से असहयोग करें।

सेन—मैं विश्वास नहीं करता हूँ कि इस खाद्य के मामले में कोई भी प्रान्त असहयोग करना चाहता है।

हमने उन क्षेत्रों की सरकारों से अपनी वर्तमान प्रणालियों को ठीक करने के लिए ग़ल्ले के रूप में कर लेने तथा दाम देकर ग़ल्ला की वसूलयाबी का एकाधिकार अपने हाथ में रखने के लिए कहा है। हमें आशा है कि इसके द्वारा हम देश के भीतर के साधनों में कमीवालों क्षेत्रों के लिए कुछ और अनाज इकट्ठा कर लेंगे।

मसानी—लेकिन इस रीति से अनाज का प्रत्येक दाना होशियारी के साथ हासिल करने के बाद भी हरएक के लिए पूरा नहीं पड़ेगा। इस कठोर सत्य को हम जितनी जल्दी समझ लें उतना ही अच्छा है। अकाल को रोकने के लिए एकमात्र सन्तोषप्रद हल यही है कि अनाज देश में अविलम्ब बाहर से लाया जाय।

सेन—सरकार भारत में बाहर से खाद्य लाने के मामले पर ज़ोर देने के लिए हर सम्भव उपाय कर चुकी है और कर रही है। उपजाऊ देशों में से कुछ की आर्थिक दुर्व्यवस्था है और दूसरों में मौसम की ख़राबी के कारण संसार भर में इस वर्ष अनाज की कमी है। इसलिए हम यह आशा नहीं कर सकते कि वाशिंगटन की संयुक्त खाद्य समिति हमारी कमी को पूरा करेगी।

चावल और ज्वार-बाजरा की फ़सलों की हानि तथा गत वर्ष रबी के अनाज के संग्रह में असफलता के कारण लगभग ३० लाख टन की कमी रही। इस कमी में वह कमी शामिल नहीं है जो उत्तरी भारत में शीतकालीन वर्षा के अभाव के कारण होगी जिसका अभी से अनुमान लगाना सम्भव नहीं। फिर भी जो विवरण प्राप्त हुए हैं उनसे ऐसा प्रतीत होता है कि १५ प्रतिशत अथवा ४० लाख टन की कमी होगी। सन् १९४६ में कुल कमी लगभग ६० लाख टन की होगी, इसमें एक लाख टन की वह कमी शामिल नहीं है, जिसका भार आगामी वर्ष की प्रथम तिमाही को वहन करना पड़ेगा।

मसानी—दुग्ध, मक्खन और सुखाये हुए अंडों जैसे अन्य प्रकार के खाद्य-पदार्थों के लिए क्यों न माँग की जाय।

सेन—वास्तविकता यह है कि इस प्रकार के शक्ति-रक्षक खाद्य-पदार्थों में बड़ी मात्रा को मँगाने के लिए हम हर प्रकार के उद्योग कर रहे हैं। खाद्य-प्रतिनिधि दल से विशेष रूप से कहा गया है कि शक्ति-रक्षक खाद्य-पदार्थ जिनमें मुख्यतः दुग्ध-चूर्ण एवं दूध से बनी अन्य वस्तुयें शामिल हैं, ज़ोर देकर माँगी जायँ। हम इस बात पर भी विचार कर रहे हैं कि भारत में अमरीका सेना के पास इस प्रकार के खाद्य-पदार्थों का जितना अधिक स्टाक है वह ले लिया जाय।

जाफ़र—मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि अब हमें इसी अनुमान पर कार्यारम्भ करना चाहिए कि हमें कुछ भी अनाज नहीं मिलेगा। यदि आगे चलकर हम विदेश से कुछ पाते हैं, तो अच्छा ही है, लेकिन हमें विकटतम स्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

सेन—सरकार का विचार हर ऐसा सम्भव उपाय करने का है जिसके द्वारा स्वदेश और विदेश दोनों से अधिक से अधिक मात्रा में अनाज प्राप्त हो और राशनिंग का विस्तार करके सप्लाई की यथासम्भव उचित ढंग से बराबर बाँटने की व्यवस्था की जाय। इसी साल में हम सम्पूर्ण देश में राशन-व्यवस्था चालू नहीं कर पायेंगे। अतः जन-साधारण को चाहिए कि अन्न के उपभोग में स्वतः कमी करके हमसे पूर्ण सहयोग करें।

जाफ़र—निर्धन जनता को तो पहले ही से जीवन-निर्वाह के लिए न्यूनतम भोजन मिलता है। उनसे और अधिक त्याग की आशा करना असम्भव है।

मसानी—लेकिन मध्य वर्ग और उच्च वर्ग के लोग बहुत सहायता कर सकते हैं। प्रथम तो वे अपनी ख़राब[illegible] मुनाफाखोरी बंद करने में सहायता कर सकते हैं।

जाफ़र—फिर आप [illegible] क्यों नहीं समझाते कि [illegible] अनाज जमा करना और [illegible] जिसे असंख्य आदमी करते हैं, [illegible] णाम ग़रीबों के लिये भूखों [illegible]

सेन—यदि सन् १९[illegible] लाख टन की कमी है तो इसके [illegible] कि भारत में अन्न की पूरी उप[illegible] ६०० लाख टन होती है यह [illegible] है। यदि प्रतिदिन प्रत्येक [illegible] साधारण ख़ुराक का १[illegible] इस वर्ष अकाल का प्रश्न उठ[illegible] हाँ, यह आवश्यक है कि निर्धन [illegible] विशेष ध्यान देना पड़ेगा। [illegible] कि जब खाद्य की कमी के [illegible] की भावना फैलती है तो प्रत्ये[illegible] की वृत्ति यथाशक्ति अनाज [illegible] की हो जाती है।

जाफ़र—यदि भारतवर्ष [illegible] आधी संख्या एक औंस प्रतिदिन [illegible] से बचा कर रखती है तो इस [illegible] यह होता है कि साधारण [illegible] १७,००० टन प्रतिदिन अथवा [illegible] टन प्रतिवर्ष निकल आयगा। [illegible] णाम होगा मूल्यों का बढ़ना, [illegible] विस्तार और निर्धन समुदाय [illegible]

सेन—सन् १९४३ में बंग[illegible] ऐसा ही हुआ था। वहाँ बाहर [illegible] थी। वहाँ अकाल जाँच-कमीशन [illegible] हफ़्ते के लिये सप्लाई की कमी [illegible] लगाया था किन्तु लोगों के [illegible] कार्यों के कारण निर्धन समुदाय [illegible] यह कमी १० गुनी हो गई। [illegible] आवश्यकता से कहीं अधिक [illegible] ख़रीदकर रख लिया अथवा [illegible] ने बढ़ी हुई क़ीमतों पर बेंचकर [illegible] के लिए उसे जमा कर लिया। [illegible] होगा कि अकाल-जाँच कमीशन [illegible] हिसाब लगाया था कि उस हर [illegible] जो भूख अथवा अपर्याप्त पोषण [illegible] रोग का शिकार होकर मरा, [illegible] १,००० रुपया अधिक कमाया।

मसानी—जैसा महात्मा गांधी [illegible] दिन हुए कहा था कि यदि हमारे [illegible] और सरकारी अधिकारी भारतीय [illegible] के साथ सच्चा व्यवहार करें तो [illegible] बहुत बड़ी संख्या मृत्यु से बच [illegible]

मैं अनुभव करता हूँ [illegible] के सामने जो संकट है उसमें [illegible] पुरुष और बच्चे को सक्रिय रूप [illegible]

शेष पृष्ठ २० पर

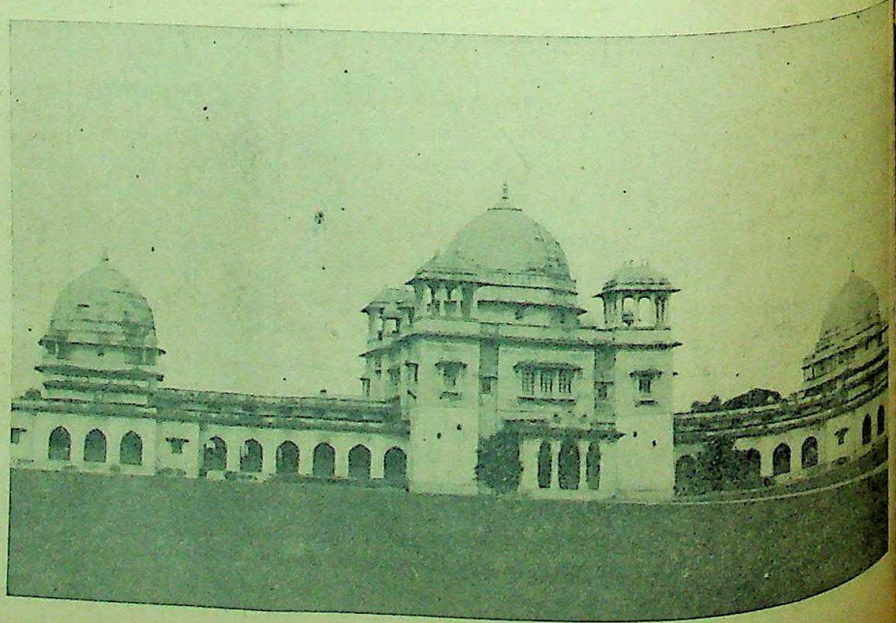

एग्रिकल्चर कालेज कानपुर का एक दृश्य जहाँ कृषि-शिक्षा की व्यवस्था है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...रतीय अन्न-संकट पर राष्ट्र के नेता क्या कहते हैं?

६० लाख टन अनाज की कमी

अन्न-संकट को दूर करना प्रत्येक राष्ट्रप्रेमी का कर्तव्य है

संकलनकर्त्ता—श्री दामोदरदास एम० ए०

आज के भारतीय अन्न-संकट पर राष्ट्र के नेताओं तथा कर्णधारों को कितनी चिन्ता है? वह सामूहिक तथा संगठित प्रयत्न से भावी अन्न-संकट से जनता की मुक्ति चाहते हैं। इस संग्रह में नेताओं के उन वक्तव्यों का सारांश दिया जा रहा है, जिन्हें उन्होंने समय समय पर दिये थे। अन्न-संकट की समस्या का हल प्रत्येक के सहयोग और उदारता पर ही निर्भर है।

...डित जवाहरलाल नेहरू

...यद्यपि कृषिप्रधान देश है ...हमारे देश में अनाज की कमी कई ...अनुभव की जा रही थी। इस वर्ष ...वर्षा के न होने अथवा अतिवृष्टि ...तूफ़ान के कारण ...नाज की ...कमी हो गई। इस ...संकट का ...सर्वसाधारण को पह... पहल उस ...से मिला जिसमें ब... गया कि ...महोदय ने गांधी जी ...और मिस्टर ...अनाज की समस्या ...पर परामर्श ...के लिए निमंत्रित कि... है। गांधी ...दिल्ली न जा सके ...वाइसराय ...अपने सेक्रेटरी को ...परामर्श ...लिए भेजा। उनसे ...ीत करने ...गांधी जी ने एक वक्त... प्रकाशित ...जिसने जनसाधा... का ध्यान ...की ओर आकर्षि... या। उसके ...वाइसराय महोदय ...१ फ़रवरी ...पर ब्राडकास्ट ...रते ...ए अनाज

...श्रीमती सरोजिनी नायडू

...परिस्थिति बताई और राशन ...में दो छटांक प्रतिदिन की कटौती ...की। २ मार्च को भारत-सरकार ...विभाग के सेक्रेटरी श्री० बी० ...ने एक प्रेस कान्फ्रेंस में बताया ...में ६० लाख टन अनाज की ...

...से बढ़कर कोई समस्या नहीं है। ...सभी दलों के नेताओं ने अन्नसंकट ...के लिए सारे देश से सहयोग के ...की। सरकार तथा जनता के ...ने जोरदार शब्दों में अनाज की ...करने, अनाज की बरबादी बन्द ...ज्यादा से ज्यादा खाद्य-सामग्री ...करने की अपील की। भारत-...ने संयुक्त मित्रदलों से भारत के ...प्राप्त करने के लिए सर ...मुदालियर के नेतृत्व में एक ...भेजा। संयुक्त खाद्यसंघ से अपील ...पर रामास्वामी ने भारत की

खाद्य-स्थिति का बड़े मार्मिक शब्दों में वर्णन किया। आपने भारतीय जनता की उदारता का वर्णन करते हुए कहा कि जब बंगाल में घोर अकाल भूखे भारतीयों को ग्रस रहा था उस समय भारत ने एक भी विदेशी को भूख से तड़पने न दिया। यह डेलीगेशन भारत लौट आया है। समाचार है कि सन् १९४६ के पूर्वार्ध में संयुक्त खाद्य-संघ भारत को १,४५,००० टन चावल और १४ लाख टन गेहूँ और मक्का देगा। १५ मार्च को कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने अनाज के प्रश्न पर एक महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पास कर देश का पथप्रदर्शन किया।

गत पहली अप्रैल से प्रान्त में पंत जी के नेतृत्व में जनता की सरकार स्थापित हो गई है। स्वयं प्रधान मंत्री भोजन-वस्त्र की समस्या सुलझाने में व्यस्त हैं।

यदि हम साहस और आत्म-विश्वास के साथ अपना कर्त्तव्य पालन करें तो कांग्रेस वर्किंग कमेटी के शब्दों में भारत सभी कठिनाइयों को पार करने में अवश्य ही समर्थ हो सकेगा।

महात्मा गांधी का आदेश

महात्मा गांधी ने अन्न-संकट का सामना करने के उपाय सुझाते हुए अनेक अवसरों पर आदेश दिये हैं। १२ फ़रवरी को गांधी जी ने एक वक्तव्य में कहा '..... यदि व्यापारी-वर्ग और सरकारी अफ़सर ईमानदारी से कार्य करें तो हमारा देश इतना विशाल है कि बाहर से सहायता न भी मिले तो भी हम अपनी कठिनाइयों को दूर करने में समर्थ हो सकते हैं।

'अनाज और वस्त्र के व्यापारी ये वस्तुएँ कदापि जमा न करें और न इनका सट्टा खेलें। खेती योग्य सारी भूमि में जहाँ पानी हो या पानी का प्रबन्ध हो सके अनाज उपजाना चाहिए। फुलवाड़ियों को अनाज उपजाने के काम में लाना चाहिए। ऐसा युद्धकाल में किया गया है। वर्तमान समय युद्धकाल से भी किसी भाँति अधिक संकट-मय है। जितना अनाज हमारे पास स्टाक में है उसे खा जाने के पहले हमें कंजूस की तरह किफायतशारी करना चाहिए। सभी तरह के उत्सव आदि बन्द हो जाना चाहिए। महिलाओं को अपने घरों में किफ़ायत करते हुए अन्न-संकट दूर करने में अधिक हाथ बँटाना चाहिए...।

गांधी जी ने चेतावनी देते हुए कहा 'घबराहट कदापि न होने पावे।'

१७ फ़रवरी को गांधी जी ने, एक वक्तव्य प्रकाशित किया जिसमें आपने बताया कि वर्तमान अन्न-संकट को हम किस प्रकार पार करें।

आपने कहा 'प्रत्येक पुरुष व स्त्री को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए अनाज की खपत न्यूनतम कर देनी चाहिए और नगरों में जहाँ दूध, तरकारियाँ, तेल, फल आदि मिल सकें, अनाज और दालों की खपत कम कर दी जाय क्योंकि यह कमी आसानी से की जा सकती है। शरीर के लिए अन्न से जो स्टार्च प्राप्त होता है उसे हम गाजर, केला, आलू, चुकन्दर आदि तरकारियों से प्राप्त करें। तात्पर्य यह है कि वर्तमान भोजन से अनाज हटाया जाय ताकि अनाज और दालें बचाकर जमा की जा सकें। हमें मजे के लिए तरकारियाँ खाने में अति नहीं करनी चाहिए जब कि हमारे करोड़ों भाइयों को तरकारी चखने तक को नहीं मिलती और विशेषकर जब कि अन्न और दालों की इतनी कमी है।'

सबसे आवश्यक बात यह है कि चोरबाजारी और बेईमानी बिलकुल समाप्त हो जाय और जहाँ तक अनाज की विकट समस्या का प्रश्न है सब दलों में हृदय से परस्पर सहयोग अवश्य हो।....."

विश्ववंद्य महात्मा गांधी

२४ फ़रवरी के 'हरिजन' में गांधी जी ने राशन की कटौती के प्रश्न पर उत्तर देते हुए लिखा, '...यदि हम सरकार के आँकड़ों को सही मानें जैसा कि मैं उन्हें सही मानता हूँ तो दूरदर्शिता यही कहती है कि इस समय हमारा कर्त्तव्य इस कड़वी गोली को निगल जाना है और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए कहना है। अर्थात् हम सबको कम खाना चाहिए ताकि हम नई फ़सल के आने तक अपने को सँभाले रहें। ...यदि हम सरकार के आँकड़ों को ग़लत माने और राशन बढ़ाने के लिए आन्दोलन करें और यदि सरकार हमारी माँग स्वीकार भी कर ले तो नई फ़सल आने के पहले एक ऐसा समय आयेगा जब कि हमारे पास खाने को बिलकुल नहीं रह जायेगा और ग़रीब अकाल मौत मर जायेंगे। हमें प्रयत्न करना चाहिए कि ऐसी दुर्घटना कदापि न हो। इसलिए राशन में कमी को बर्दाश्त करना ही हमारे लिए बुद्धिमानी है।"

राष्ट्रपति मौलाना आजाद

राष्ट्रपति मौलाना अबुलकलाम आजाद

२ मार्च को राष्ट्रपति मौलाना अबुल-कलाम आजाद ने एक वक्तव्य में खाद्य-समस्या के विषय में जनता को आदेश देते हुए कहा :—

'घबराहट पैदा करनेवाली अफ़वाहों को रोकना चाहिए। देहातों में अनाज पैदा करनेवालों और खपत करनेवालों की कमेटियाँ बनें जो जनता की हों। शहरों में अनाज के व्यापारियों और खपत करनेवालों की इसी तरह कमेटियाँ बनें जो उन लोगों पर निगरानी रखें जो लालचवश समाज का अहित करते हैं।.....'राशन में कमी' को लाखों मनुष्यों की जान बचाने का एक दूरदर्शी उपाय समझना चाहिए। यदि अनाज का सवाल दलगत राजनीति से अलग रखा जाय तो परिस्थिति में सुधार के आशाजनक चिह्न हैं।..."

राष्ट्रपति ने कहा, 'अनाज के प्रश्न पर

माननीय पंडित गोविन्दवल्लभ पंत क्या कहते हैं?

"हम तत्काल ही भोजन, वस्त्र, सप्लाई और कन्ट्रोल की आवश्यक समस्या हल करना चाहते हैं और चोर बाजारी घूसखोरी आदि नष्ट करना चाहते हैं...।

"हम प्रान्त के सभी साधनों की वृद्धि करना चाहते हैं ताकि प्रान्तवासियों के रहन-सहन में उन्नति हो सके और प्रत्येक प्रान्तवासी का जीवन अधिक सम्पन्न, मधुर और सुखपूर्ण हो...।

"अनाज की प्राप्ति के लिए जिले में कमेटियाँ बनाई जायँगी और इनमें व्यवस्थापिका के सदस्य और स्थानीय संस्थाओं के चेयरमैन भी मेम्बर होंगे...।

"हम प्रान्त के सभी निवासियों के लिए उनकी सभी आवश्यक वस्तुओं का प्रबन्ध करना चाहते हैं। हम किसी को भूखा न मरने देंगे।

"स्टाक होल्डरों को सही हिसाब भरना चाहिए। ग़लत हिसाब दाखिल करने के अपराध में कड़ी कार्रवाई की जायगी...।"

(पत्रकारों के समक्ष माननीय पंत जी के भाषण से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टर पट्टाभिसीतारमैया

जो कि देश का तत्कालीन प्रमुख प्रश्न है, जनता और सरकार का राजी से पूर्ण सहयोग होना चाहिए।'

श्रीमती अम्मू स्वामिनाथम् एम० एल० ए०

२ मार्च को कलकत्ते में भाषण देते हुए कैप्टेन लक्ष्मी की माता श्रीमती अम्मू स्वामिनाथम् एम० एल० ए० (केन्द्रीय) ने कहा, '.....हम लोगों को ऐसा करना चाहिए कि देश में हर आदमी को कम से कम एक शाम भर पेट भोजन जरूर मिल जाय और मुनाफ़ाख़ोरी तथा अन्न का छुपाया जाना बिलकुल बन्द हो जाय' .....।

मिस्टर मुहम्मदअली जिन्ना

मुस्लिम लीग के अध्यक्ष मिस्टर जिन्ना ने एक बयान में कहा :—

'मुस्लिम लीग हर तरह से तैयार है कि भूख से एक भी व्यक्ति मौत का शिकार न होने पावे। अनाज की समस्या विभिन्न दलों के भेद-भावों से दूर होनी चाहिए।'

२१ मार्च को पत्रकारों से बातचीत करते हुए आपने कहा, '.. हमारे समाने सिर्फ़ एक सवाल यह है कि कातर मानवता के नाम पर हम किस तरह अन्न की कमी के सबब से उत्पन्न, भूख और मौत के उस जबर्दस्त ख़तरे को दूर करें जो हमें घूर रहा है। जिस तरह भी हो सकेगा अपने लोगों की जानें बचाने के लिए हम कोई कसर बाक़ी न रक्खेंगे। सरकार ने अनाज के ख़तरे का सामना करने की कई तरकीबें जाहिर की हैं। जहाँ तक हो सकेगा उन्हें मदद देंगे।

'मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूँ कि अनाज का बेजा तौर पर जमा करके रखने और अनाज की चोरबाजारी के जुर्म पर कड़ी सजा देनी चाहिए और 'ज्यादा अनाज पैदा करो' आन्दोलन खूब जोर से चलना चाहिए। राशन में कमी को हमें जरूर मानना चाहिए। हर व्यक्ति को कोशिश करनी चाहिए कि जहाँ तक हो सके जान बचाई जाय और जिन्हें भोजन की जरूरत हो उनकी मदद की जाय। हर गाँव में, हर जिले में स्वयंसेवकों की छोटी कमेटियाँ तैनात की जायँ जो उनकी देख-भाल करें जिन्हें अनाज की जरूरत है। हर गाँव, हर जिले और हर शहर में प्रत्येक अफ़सर की पूरी तरह से मदद करनी चाहिए।"

मिस्टर मुहम्मदअली जिन्ना

सरदार वल्लभभाई पटेल

बारडोली तालुका में ९ मार्च को एक बहुत बड़ी सभा में भाषण देते हुए सरदार वल्लभभाई पटेल ने कहा:—

'मैं नहीं चाहता कि एक भी हिन्दुस्तानी भूखा मरे। मैं सरकार की इस बात का समर्थन करता हूँ कि लोगों को अनाज की खपत में कमी करनी चाहिये ताकि जो अनाज न मिलने के सबब से भूखे रह रहे हैं उन्हें भी कुछ खाने को मिल सके।'

सरदार पटेल ने अधिक अनाज उपजाने और उसे ठीक तरह से वितरण करने के बारे में भी अपने भाषण में सुझाव किये। आपने सलाह देते हुए कहा—'हर एक किसान को चाहिए कि बरसात शुरू होने के पहले वह ज़ायद फ़सल पैदा करे। बजरी, मकई, तरकारियाँ जो कुछ भी पैदा की जा सके पैदा करना चाहिए। पानी की एक बूंद भी बरबाद न की जाय। जिनके पास परती या बेकार जमीन पड़ी हो उन्हें चाहिए कि वे ऐसी जमीन की काश्त फ़ौरन शुरू कर दें।' आपने जोर देकर कहा 'यदि अनाज का एक भी दाना बरबाद हुआ तो पाप होगा। लोगों को चाहिए कि सामाजिक उत्सवों पर ज्योनार या दावतें बन्द कर दें।'

चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचार्य

१६ मार्च को मदुरा में एक भाषण के सिलसिले में श्री० चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने अन्न-संकट का उल्लेख करते हुए कहा, 'भूखों को भोजन देना इस प्राचीन देश का सनातन धर्म है। राजनीतिक धर्म आत्मिक धर्म से किसी भी तरह अलग नहीं है। लोगों को भोजन और वस्त्र देकर राजनीतिज्ञों को अवश्य अपना धर्म पालन करना चाहिए।'

आपने जनता को सलाह देते हुए कहा, 'लोगों को कदापि घबराना नहीं चाहिए बल्कि अन्न-संकट दूर करने के लिए उचित उपाय करने चाहिए।'

दीवान चमनलाल एम० एल० ए०

२४ मार्च को अनाज के प्रश्न पर रेडियो पर ब्राडकास्ट करते हुए दीवान चमनलाल एम० एल० ए० (केन्द्रीय) ने सुझाव किया कि अनाज प्राप्त करने और उसका वितरण करने के लिए हर जगह, हर क्षेत्र में और हर प्रान्तीय केन्द्र में जनता की अन्न-कमेटियाँ बनें।

आपने कहा, 'सबसे छोटी कमेटी का भी केन्द्रीय कमेटी से बराबर सहयोग हो और अनाज के बाँटने की व्यवस्था की कार्रवाइयों से उसका सदा सम्पर्क रहे। पूरे प्रान्त में अन्न की वसूली किसानों की कमेटियों के जरिये हो।'

आपने अपने भाषण में कहा, 'दूसरे देश हमारी अनाज की जरूरत का कुछ भाग दे सकते हैं और देंगे। लेकिन हम सबको फिर से अपने जीवन का प्रबन्ध करना है और प्रधानतः अपने ही साधनों के बल पर उस शत्रु से लड़ने के लिए राष्ट्रीय संगठन करना है, जो हमारे राष्ट्र के एक बड़े भाग को समाप्त करने को तैयार खड़ा है।.....'

सर अकबर हैदरी

इलाहाबाद में पत्रकारों की कान्फ्रेंस को सम्बोधन करते हुए सर अकबर हैदरी ने कहा, '.....हर व्यक्ति का देश के प्रति यह कर्तव्य है कि वह ऐसे उपाय करे जिससे अनाज की कमीवाले क्षेत्रों के लिए ज्यादा से ज्यादा अनाज बचाया जा सके। जहाँ तक सम्भव हो सके पार्टियाँ और भोज बंद कर दिये जायँ। अनाज का सवाल राजनीतिक तनातनी के दायरे से दूर रखा जाय...।'

कांग्रेस वर्किंग कमेटी का प्रस्ताव

१५ मार्च को कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने अन्नसंकट की गंभीर समस्या पर एक महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पास किया था जिसमें निम्नलिखित सुझाव दिये: —

लोग निराश न हों। प्रत्येक को अपना कर्त्तव्य अनुभव करना चाहिये और उसे भरसक पूरा करना चाहिए। प्रत्येक ग्रामवासी तथा नगरवासी को अपने पड़ोसी तथा अपने लिए शक्ति भर प्रयत्न करना चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति को जिसके पास ज़मीन है, जल्दी से जल्दी कोई अनाज पैदा करने का यत्न करना चाहिए। जिस ज़मीन पर फ़सल बोई जा सकती हो और बेकार पड़ी हो, उस पर फ़ौरन खेती शुरू कर देनी चाहिए।

अपनी न्यूनतम आवश्यकताएँ पूरी करनें के बाद शेष अन्न उन लोगों के लिए, जिन्हें उसकी वास्तविक आवश्यकता हो, सुलभ कर देना चाहिए। जहाँ तक हो सके ऐसी फ़सलों की जगह जो रुपया पैदा करने के लिए बोई जाती हैं, अनाज की फ़सल बोनी चाहिए।

जहाँ पानी की कमी हो वहाँ कुएँ और तालाब बनवा लेना चाहिए। राज्य तथा स्थानीय संस्थाओं को इस कार्य में पूरी मदद देनी चाहिए।

अमीरों का कर्त्तव्य है कि वे सादा जीवन यापन करें और अपनी शक्ति तथा संपत्ति पीड़ितों की सहायता के लिए रचनात्मक कार्यों में व्यय करें।

कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने क़ौम से आशा की है कि वह देश का संकट दूर करने में खुशी से कुरबानियाँ करेगी और राशनिंग तथा गल्ला प्राप्त करने की योजनाओं को सफल बनाने में तथा बेजा अन्न-संचय, चोरबाजारी और घूसखोरी रोकने की कार्रवाइयों में पूरा सहयोग देगी।

डाक्टर पट्टाभिसीतारमैय्या

कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य डाक्टर पट्टाभिसीतारमैय्या ने १५ फ़रवरी को एक वक्तव्य में कहा :—

'अनाज की गम्भीर समस्या की दवा भगवान् से प्रार्थना करना अथवा सरकार को दरख्वास्त देना नहीं है। राजनीतिक चरचेबाजी इस संकट को दूर नहीं कर सकती और न यह समय राजनीतिक कलाबाजी का है। रोग गम्भीर है और यह दवा भी गम्भीर चाहता ह। इसकी जिम्मेदारी सारे देश को सँभालना चाहिए।

'पीड़ितों की सहायता का काम उसी जोश, दरियादिली और तेजी से होना चाहिए जिससे कि युद्धकाल में पुल तथा हवाई अड्डों के बनाने में होता था।...

'सरकार को यह अवश्य समझ लेना चाहिए कि अकाल की स्थिति युद्धकाल से भी अधिक भयानक है जिसकी ओर ध्यान देना अत्यन्त ही आवश्यक है और यदि भारत नियमावली को जारी रखना कभी भी उचित समझा गया हो तो उसका औचित्य, पीड़ितों की सहायता करने में इन नियमों को लागू करके अवश्य सिद्ध करना चाहिए।...'

सरदार वल्लभभाई पटेल

पंडित जवाहरलाल

१७ फ़रवरी को अन्न-संकट में वक्तव्य देते हुए पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा, "... जाहिर है कि की परिस्थिति सभी लोगों का ध्यान चाहती है और साथ ही यह भी है कि अन्न-संकट का बोझ सब पर फैलाया जाय ताकि भयंकर दुर्भिक्ष न पावे। अनाज के सवाल पर दलबन्दी विचार करना चाहिए।

डाक्टर खान साहब

सीमाप्रान्त के प्रधान मंत्री खाँ साहब ने १९ फ़रवरी १९४ अनाज की समस्या पर कहा :—

"अकाल चुनकर किसी पर नहीं करता वह हर व्यक्ति को अपना बनाता है। इसी लिए हम सबको संगठित शक्ति से, साहस, दृढ़ विश्वास के साथ इस मुसीबत का करना चाहिए।"

श्रीमती सरोजिनी नायडू

कांग्रेस वर्किंग कमेटी की सदस्या श्रीमती सरोजिनी नायडू की में हीरक-जयंती मनाई गई। उन पर मानपत्र का उत्तर देते हुए संकट का उल्लेख करते हुए अकाल अवश्य ही रोकना चाहि

आप दुखी मानवता की मदद करेंगी? आज प्रत्येक का समय है। जिन्हें अच्छा भोजन वस्त्र प्राप्त हैं और जो उच्च वे भी अपने भाग्य को भूली भाग्य से अलग नहीं समझ वे बड़े राज्य पर शासन करते टूटी झोपड़ी में भूख से तड़पते और स्त्री को निहारते हुए हों, भारत का भाग्य एक ही है नहीं किया जा सकता। भूखे पुकार के सामने कोई भी समस्या है। विभिन्न जाति, धर्म, रिवाज के रहते हुए भी हम सब हैं और एक हैं।

चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

त्यागी शंकर

लेखक, क-ख-ग

धनी पिता का पुत्र था किन्तु उसमें एक ऐसा हृदय था जो गरीबी की तकलीफों को देखकर व्याकुल हो उठता था। शंकर ने बंगाल का दुःख अपनी आँखों से देखा था, इसलिये जब उसे यह मालूम हुआ कि सारा देश अन्न के अभाव से व्याकुल है, तो उसका हृदय हाहाकार कर उठा। उसने अन्न-समस्या को हल करने में समर्पण कर दिया। कहानी अत्यन्त सुन्दर और दुखभरी की दयनीय स्थिति को उपस्थित करनेवाली है।

शंकर भूखों की त्राहि-पुकार को सुनकर व्याकुलता से उन्हें देखने लगता।

के विवाह के लिए बड़े-बड़े आने लगे किन्तु उसने अपने ने स्पष्ट कह दिया कि जब तक में विवाह नहीं कर सकता। विचार रूढ़िवादी सेठों की भाँति न महात्मा गांधी की जीवनी का अध्ययन करके उनकी विचार-धारा को मनन किया था। शंकर के आमोद-प्रमोद की वस्तुएँ पर भी वह खादी का कुर्ता और कर सादा जीवन व्यतीत न वह दंभी था और न अशिष्ट। के सम्पर्क में आता उसकी विनय से प्रभावित होता। सेठ अमीर-वर व्यक्ति थे और अहंकार नहीं गया था। समाज में उन्हें सम्मान प्राप्त था। दान में उनकी रहती थी। फिर भी वह वाणिज्य की ओर खींचना उनकी अभिलाषा थी कि भारत व्यापारियों में उसकी गणना

ने भी पिता की अभिलाषा को दिया था। किन्तु उसका दृष्टिकोण भारत में आधुनिक कृषि की और नये-नये उद्योगों की स्थापना ने अंक लिया था और इसी अपनी शिक्षा और धन का वह करना चाहता था। भावी योज-उसके मन में बन चुकी उसने अपने विचार पिता के प्रकट नहीं किये। वह पिता रहकर ही सब कार्य करना और उसके लिए उचित अवसर कर रहा था।

के काम के सिलसिले में एक अमीरचन्द कलकत्ते जाने की कर रहे थे। शंकर भी आ गया। उसने पूछा, शंकर कलकत्ता आप कहें।"

कहीं से जावल का टेंडर लाना जरूर ही मिलेगी।" 'अच्छी कहकर शंकर ने पूछा, तो ने उत्तर दिया 'अवश्य लेकिन अम्मा जी से भी पूँछ लेना।' माता के पास गया और कहा जी के साथ कलकत्ते जा

पूछा कितने दिन के लिए,

जाने।'

दिन लगें तो

रहना।"

बात।"

के लिए रोहें

हजार टन

अकाल

गया।

कलकत्ते का

अधिकांश श्रेय शंकर को ही था। अपने पुत्र की क्षमता पर सेठ जी मुग्ध थे, उन्हें उसकी कार्य-कुशलता पर विश्वास हो गया। वाणिज्य-सम्बन्धी कामों के लिए सेठ जी शंकर के साथ एक-दो बार और कलकत्ते गये फिर उसको नौकरों के साथ अकेला ही भेजने लगे, यद्यपि शंकर की मा को यह अच्छा न लगता था।

* * *

बंगाल उन दिनों दुर्दिन से पीड़ित था। हर दिशा में दुर्भिक्ष का प्रकोप था। क्षुधार्त्त जनता बिलख रही थी। असंख्य नर-नारी, आबाल-वृद्ध, तड़प-तड़प कर प्राण छोड़ रहे थे। सर्वत्र त्राहि-त्राहि मची थी। ऐसे करुणापूर्ण दृश्यों को देखकर कौन सहृदय द्रवित न होगा?

धन-संचय में संलग्न अधिकांश पूँजीपतियों का ध्यान जनहित की ओर नहीं जाता। महलों में रहनेवाले और गद्दियों पर बैठे-बैठे लाखों का सौदा करनेवाले सेठों को ग़रीबों के कष्टों से क्या प्रयोजन? किन्तु शंकर एक पूँजीपति का लड़का होते हुए भी मनुष्य था, उसके संस्कार दिव्य थे। सेवा और विनय उसके सहज गुण थे।

जब उसकी कार कलकत्ते के भयानक वातावरण में एक सड़क से होकर गुज़र रही थी उसे एक भीड़-सी दिखाई दी। ड्राइवर-द्वारा बार-बार हार्न बजाने पर भी रास्ता न मिला। मोटर रुकते ही, एक दैनिक-पत्र में बंगाल के अकाल की ख़बर पढ़ने में तल्लीन, शंकर चौंक पड़ा और फ़ौरन उतर कर बाहर आया। उसने एक चीख़ सुनी और भीड़ को चीर कर आगे पहुँचा, देखा कि एक बुढ़िया फुटपाथ पर अस्थिपंजर-मात्र एक युवक को लिए बैठी है। वह भीड़ को आँखें फाड़कर देख रही थी, सफ़ेद बालों की छोटी-छोटी लटें उसके चेहरे पर बिखरी थीं। मुँह सूख रहा था, बोलने की उसमें सामर्थ्य न थी। जिस मरणासन्न नर-कंकाल को लिये वह बैठी थी वह उसका इकलौता पुत्र था, निर्धन का धन था, अभागिनी की आशाओं का केन्द्र था। कभी-कभी युवक का शिर बुढ़िया की सूखी जंघा पर बेचैनी में घूम जाता, मुँह खुलता और उसमें बुढ़िया दो-चार बूँद पानी छोड़ देती।

शंकर का हृदय यह दृश्य देखकर दयार्द्र हो गया। अपने भावोद्वेग को वह न रोक पाया, कण्ठ भर आया और आँखों से आँसू छलछलाने लगे जो बुढ़िया के पास पहुँचते-पहुँचते सहसा ढुलक पड़े। उसने बुढ़िया के कंधे पर हलका हाथ रखकर धीरे से कहा चलो, मोटर खड़ी ह, हम तुम्हारे लड़के की जान बचाने की कोशिश करेंगे। यह सुनते ही बुढ़िया ने शंकर की ओर ललचाई दृष्टि से देखा मानो निराशा के घोर अन्धकार में आशा की प्रकाश किरण झलकी हो। बुढ़िया ने संकेत द्वारा बतलाया यह इतना क्षीण हो गया है कि उसका सँभालना कठिन होगा। शंकर ने कहा भगवान् की बड़ी-बड़ी बाँहें हैं, उनकी कृपा में विश्वास करके हमें आज्ञा दो, हम उसे सावधानी से ले चलेंगे। देर करना ठीक नहीं, मा-मा सम्बोधन सुनते ही बुढ़िया राजी हो गई और शंकर ने दो-चार आदमियों का सहारा लेकर बड़ी सावधानी से युवक को उठाकर मोटर में लिटा दिया। उसकी गर्दन शंकर ने अपनी जंघा पर रखी और बुढ़िया को साथ लेकर वह फ़ौरन उसे सेठ करोड़ीमल के यहाँ ले गया, जहाँ वह ठहरा था। उसने तुरन्त डाक्टर बुलवाया, उपचार किया और फलों आदि का रस देकर चार-छः दिन में नवजीवन संचारित करके युवक को चलने-फिरने योग्य बना दिया। बुढ़िया ने अपने पुत्र को पुनः पुष्ट पाकर शंकर से कहा—"बेटा भगवान् तुम्हारा भला करें। अब हम दोनों तुम्हारी ही सेवा में रहना चाहते हैं, हम तुम्हारे गुलाम होकर रहेंगे। तुमने हमारे लड़के की जान बचाई है।"

'गुलामी पाप है' शंकर ने कहा—"जिस परमात्मा ने तुमको बनाया उसी ने हमें बनाया है। यदि तुम चाहती हो कि तुम्हारा लड़का सेवा करे तो उसे मेरे साथ छोड़ दो। हम दोनों बंगाल के अकाल-पीड़ितों की सेवा करेंगे। आज से इसका नाम जीवन होगा।"

जीवन को साथ लेकर शंकर ने यथा-शक्ति अकाल-पीड़ित क्षेत्रों का दौरा किया। उसने कलकत्ते में भरे हुए अपने ग़ल्ले को देहात ले जाने का प्रबंध किया क्योंकि शहर में दुर्भिक्ष-पीड़ित-सहायकदल बन चुके थे और वहाँ इतनी आवश्यकता न थी जितनी ग्रामों में। शंकर और जीवन दोनों मानव-रक्षा के कार्य में संलग्न थे, उन्हें तन-मन की भी सुधि न थी।

इधर शंकर का कई दिन से कोई समाचार न पाकर उसके पिता को चिंता हुई और उन्होंने सेठ करोड़ीमल से फोन मिलाकर शंकर की कुशल-मंगल का समाचार पूछा। करोड़ीमल उन मालदारों में थे, जो ग़रीबों का ख़ून चूसकार मालदार बनते हैं। उनमें दया-धर्म का भाव कहाँ। अतएव उन्होंने शंकर के विरुद्ध सेठ

बंगाल के अकाल के भीषण समय में कलकत्ते की फुटपाथ पर पड़ा हुआ एक मज़दूर भूख से व्याकुल हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमीरचन्द से शिकायत की कि मेरे मना करने पर भी वह यहाँ के देहात में घुस गया है और तीन दिन से नहीं आया। सेठ अमीरचन्द की चिन्ता बढ़ी, उन्होंने मन ही मन भगवान् से उसकी रक्षा के लिए प्रार्थना की और अपनी पत्नी के पास आकर कहा—"मैं कलकत्ते जा रहा हूँ।"

'क्यों ? क्या शंकर की कोई ख़बर नहीं मिली ?"

'मिली क्यों नहीं। मुझे जाना है। तुम चिंता न करना।"

'मुझे साफ-साफ बतलाओ, क्या बात है?"

'बात सब ठीक है?'

'लेकिन सुस्त क्यों हो?'

"नहीं तो," मुस्कराकर अमीरचन्द ने कहा। किन्तु शंकर की माता को विश्वास न हुआ। उसका जी घबरा उठा। वह सोचने लगी न मालूम उस पर क्या संकट आ गया है। कहीं बीमार तो नहीं पड़ गया। मुझसे कह गया था, अगर देर हुई तो चिट्ठी डालूँगा। पर अब तक उसका कोई समाचार नहीं। कोई खास बात जरूर है। इतना सोचने के बाद शंकर की माता ने कहा—"मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी।"

"जिद्द न करो। मैं शंकर को लेकर दो-तीन दिन में आ जाऊँगा।" पति का रुख न पाकर वह चुप रही। सेठ जी कलकत्ते के लिए रवाना हो गये।

इधर शंकर ने अथक् परिश्रम करके सैकड़ों अकाल-पीड़ितों की जानें बचा लीं। कई प्रबन्ध-कमेटियाँ क़ायम कीं। अपने पास का सब रुपया ख़र्च कर डाला और अनाज के सभी सौदे कैंसिल कर दिये। रात दिन घूमते-फिरते उसे बुखार आ गया। वह एक ग्रामीण झोपड़ी में लेट गया। जीवन उसकी सेवा में था।

शंकर ने कहा—'जीवन मुझे अपनी मा की याद आ रही है। यहाँ से किसी प्रकार कलकत्ते चलने का प्रबन्ध करो। वहाँ जाकर सेठ करोड़ीमल से कुछ रुपया लेंगे और अपने माता-पिता को कुशल समाचार भेजेंगे। वे अवश्य ही चिंतित हो रहे होंगे।'

'लेकिन आपको तो काफ़ी बुख़ार है। आज विश्राम कर लीजिए। कल चलेंगे।'

'नहीं, जीवन, मुझे अपनी मा की बड़ी याद आ रही है वह अधीर होंगी।'

जीवन ने ज़मींदार की बैलगाड़ी माँगी और उसमें लिटाकर वह शंकर को कलकत्ते लाया।

बैलगाड़ी जब करोड़ीमल सेठ के महल के फाटक में घुसी, दरबान ने रोका लेकिन जब शंकर ने झाँका तो उसने आगे बढ़ने दिया। जीवन के कंधे पर हाथ रखकर शंकर उस कमरे में पहुँचा जहाँ वह ठहरा था। गाड़ीवाले को कुछ देने के लिए उसने अपनी अटैची खुलवाई। उसमें पाँच रुपये बचे थे जिनमें से दो रुपये उसने गाड़ीवाले को दे दिये। गाड़ीवाला प्रणाम करके चला गया। इतने में सेठ करोड़ीमल की मोटर आई, उन्होंने जब बैलगाड़ी कोठी से निकलते देखी तो दरबान से डाँटकर पूछा—यह यहाँ क्यों आई थी?

उसने जवाब दिया, 'इसमें बैठकर शंकर भैया आये थे।'

करोड़ीमल ने घृणाभरी हुंकार की और मोटर से उतरकर शंकर के कमरे में गये।

'कहिए कहाँ थे चार दिन से?'

'पास के देहात में चला गया था।'

'अपने बाप की कमाई में बत्ती लगाने।'

शंकर करोड़ीमल के व्यंग को न सह सका और पूछा—'क्या कहा आपने, बत्ती लगाने। जनाब, न यह तो धन-धान्य था जो मैंने अपने देशवासियों की रक्षा में लगाया है, यदि मेरी जान भी इस पुण्य-कार्य में लग जाय तो मैं जीवन को धन्य मानूँगा।'

'जब ऐसा था तो सेठ अमीरचन्द के यहाँ क्यों जन्म लिया, किसी परमार्थी महात्मा के यहाँ अवतार लेकर जीवन सार्थक किया होता। उन बेचारों की आशाओं पर क्यों तुषारपात कर रहे हो?'

"क्या आप पाषाण के बने हैं। आप में मनुष्य का हृदय नहीं जो सहस्रों मनुष्यों को तड़प-तड़पकर प्राण देते देखकर भी नहीं पिघलता। धन के मद में अन्धे होकर अपने ग़रीब भाइयों की दुर्गति की ओर क्या आपका ध्यान नहीं जाता।"

"शंकर तुम अपना कर्त्तव्य भूल गये। यहाँ रुपया कमाने आये हो या सेठ अमीरचन्द की हैसियत बिगाड़ने। वैश्य का धर्म समझो।"

'क्या वैश्य का धर्म लक्ष्मी संचय करना ही है। भूखों को दान देना नहीं?'

'सब अपना-अपना भोग, भोग रहे हैं। जैसे लाखों आदमी लड़ाई में मर जाते हैं वैसे ही अकाल में भी मरते हैं। यह भगवत्-इच्छा है।'

"स्वार्थ के लिए भगवान् का स्मरण करनेवाला मनुष्य, मनुष्य नहीं, पशु है। आपके घर से फेंके हुए उच्छिष्ट अन्न के सीत कौआ और चीलों की भाँति बीन-बीनकर खानेवाले ये प्राणी क्या उसी भगवान् के बनाये नहीं हैं।"

"रहने दो अपना धर्मशास्त्र, शंकर! तुम मेरे मेहमान हो, साझीदार के लड़के हो, नहीं तो..."

नहीं तो क्या आप कान पकड़कर मुझे निकाल देते। मैं अब आपके ऐसे नर-पशु के यहाँ पानी पीना भी स्वीकार नहीं कर सकता।

"ज्यादा मत बढ़ो शंकर।"

करोड़ीमल की बातें सुनकर स्वार्थी सेठों के प्रति शंकर की घृणा भड़कने लगी। क्रोध और बुख़ार का एक साथ जोर होने के कारण, उसका चेहरा तमतमा उठा, अंग काँपने लगे। इतने ही में हार्न बजाती हुई एक टैक्सी फाटक में आई। करोड़ीमल बाहर गये और उन्होंने देखा सेठ अमीरचन्द आ गये हैं।

अमीरचन्द जब शंकर के पास पहुँचे, वह आँखें बन्द किये लेटा था। मस्तक पर हाथ रखकर सेठ जी ने देखा कि उसे जोर का बुख़ार है। शंकर ने नेत्र खोलकर कहा, "पिता जी आप आ गये। मैं तो आपको फोन करनेवाला था।"

'कोई हर्ज नहीं कहकर सेठ जी ने डाक्टर बुलाने के लिए करोड़ीमल से कहा।'

शंकर ने कहा, "पिता जी आप मुझे यहाँ से ले चलिए।"

'चलेंगे, बेटा जल्दी क्या है। बुख़ार उतर जाने दो।'

"नहीं, मैं यहाँ एक मिनट भी नहीं रहना चाहता।"

बात काटकर करोड़ीमल ने शंकर के बीमार पड़ने का कारण बताया और कहा, 'यह आपका कमाया हुआ सब धन फूँकना चाहते हैं—मैं इनको समझा रहा था लेकिन यह मुझसे नाराज़ हो गये।'

सेठ अमीरचन्द ने कहा, "शंकर, मैं तुम्हारे सेवा-भाव से बड़ा प्रसन्न हूँ। मैं भी अकाल-पीड़ितों की सहायता के लिए एक लाख रुपया का दान देकर आया हूँ। यदि सेठ करोड़ीमल हमारे सौदों में साझी नहीं रहना चाहते, तो हिसाब हो जायगा। यह तुम्हारे बड़े हैं इसलिए इनकी बात का बुरा नहीं मानना चाहिए।"

शंकर को संतोष हुआ। दो-तीन दिन में उसका बुख़ार उतर गया और शंकर ने माता जी के पास शीघ्र चलने की इच्छा प्रकट की। सेठ अमीरचन्द ने सवारी मँगाई। जीवन ने शंकर को छोड़ना स्वीकार न किया और वे तीनों स्टेशन के लिए रवाना हो गये।

दिल्ली पहुँचने के बाद उसने अपने मोटर-ट्रक-ड्राइवरों को बुलाकर कहा, "गोदामों से गल्ला भरकर कलकत्ता ले

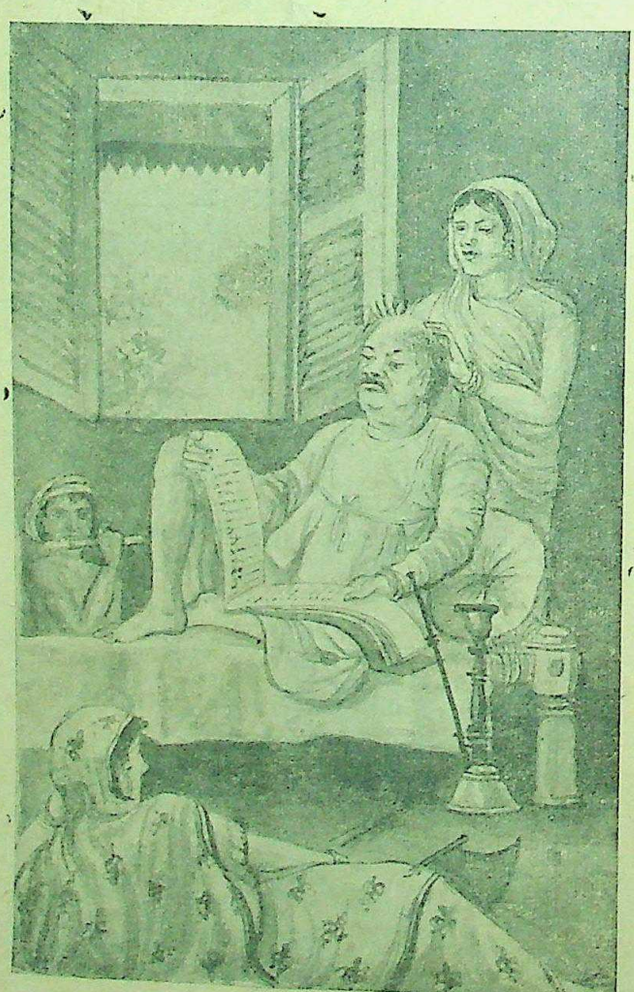

चोर बाजार की कृपा से मालामाल सेठ जी के सर में नौकरानी तैल-मर्दन कर रही है।

शंकर की माता ईश्वर से ...
वह भूखे शंकर की रक्षा ...

जाओ। मैं तुम्हारे साथ ...
हूँ जिसके आदेशानुसार तुम ...
बाँटना।"

पिता जी ने कहा, "...
लिए रखा गया अनाज तुम ...
की आज्ञाओं ही बाँट दोगे ...
तो नहीं है ?"

'पिता जी मैं कलकत्ते के ...
अफ़सर से मिल चुका हूँ। ...
हैं। उन्होंने सप्लाई की ...
महीने के लिए बढ़ा दी हैं।'

'तो फिर ठीक है। ...
ने मेरे कलकत्ता जाने के पहले ...
सहायक-समिति बना ली है। ...
सभापति चुना गया हूँ।'

शंकर को यह जानकर ...
हुई। पिता और पुत्र दोनों ने ...
प्राण-रक्षा में अनुपम सहायता ...

* *

शंकर ने कृषि की उन्नति ...
का अध्ययन किया। उन्होंने ...
नाओं को लिपि-बद्ध कर लिया ...
उस तिथि की प्रतीक्षा में हैं ...
से आधुनिक ढंग के औजार ...

लड़ाई बन्द हो जाने पर ...
बढ़ने लगी लेकिन इसके पूर्व कि ...
योजनाओं को कार्यान्वित करे, ...
में बंगाल जैसे दुर्भिक्ष-वज्रपात ...
पर सरकारी और ग़ैरसरकारी ...
वक्तव्य प्रकाशित होने लगे।

आज फिर शंकर के ...
वे ही भयावह चित्र खिंच रहे ...
बंगाल में देखे थे। वह सोचने ...
घर के सामने के लान में उद्विग्न ...
जाता है, फिर उठकर घूमने ...
ऐसे वज्रपात के निराकरण के ...
मनन करता, महात्मा जी के ...
काफ़ी सहारा मिला उसने ...
वह उनके उपदेशों का प्रचार ...
सरकार और जनता दोनों के ...
की सहायता से समुचित प्रबंध ...
जैसी परिस्थिति कदापि न पैदा ...

खाद्य की समस्या को हल ...
लिए विभिन्न राजनैतिक दलों ...
तथा विदेशों से अन्न मँगाने के ...
कारी कार्य को देखकर उसे ...
उसने महात्मा जी के आदेशानुसार ...
घर के लान को जीवन से ...
और अपने हाथ से उसमें गेहूँ ...
अपने वर्ग के लोगों को भी ...
लिए उसने प्रोत्साहित किया। ...
की विशेष मात्रा रखकर वह ...
भोजन करता तथा रात को ...

शेष पृष्ठ २२ पर देखो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा दैनिक भोजन कैसा होना चाहिए और क्यों ?

मौसमी फल और हरी तरकारियाँ खाने से क्या लाभ है ?

लेखक, श्री विश्वमोहन एम० ए०

हमारा दैनिक भोजन कैसा होना चाहिए, इस अन्नसंकट के समय इसकी जानकारी बहुत जरूरी है। अन्न की कमी के कारण मौसमी फल और हरी तरकारियों का प्रयोग शरीर की पुष्टि और स्वास्थ्य के लिए अधिक लाभदायक है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने भोजन की उपयोगिता की बारीकियों को बड़ी ख़ूबी के साथ बतलाया है और फल तथा तरकारियों के उपयोग की सलाह दी है। अन्न के थोड़े बहुत अभाव की पूर्ति फल और हरी तरकारियों से पूरी होती है। लेख देहात तथा शहर के प्रत्येक नागरिक के अध्ययन और अमल करने के लिए विशेष रूप से पठनीय है।

हमारा शरीर थोड़े से तत्त्वों का [illegible] है। शरीर में आधे से अधिक पानी [illegible] इन सब तत्त्वों को हम भोजन, विशेष-[illegible] साग-भाजियों-द्वारा प्राप्त करते हैं। भोजन इसलिए जरूरी है कि (१) शरीर बढ़ सके, (२) शरीर में बल आवे और उसमें गर्मी रहे और (३) घिसे हुए [illegible] की कमी पूरी हो।

शरीर को बनाये रखने, उसके बिग-[illegible], उसमें विकार पैदा करने और विकारों [illegible] निकालने में भोजन का बहुत बड़ा हाथ [illegible] इसलिए खाने के मामले में हमें बड़ी [illegible] बरतनी चाहिए। ज्यादा खाने [illegible] शरीर पर अपनी शक्ति से अधिक जोर [illegible] है और वह थोड़े ही दिनों में जवाब [illegible] देता है।

अधिक भोजन रोग पैदा करनेवाला [illegible] कम करनेवाला होता है। भोजन [illegible] के लिए नहीं बल्कि शरीर की आव-[illegible] पूरी करने के लिए है।

उपवास से लाभ :—(१) पाचन [illegible] को आराम मिलता है जिससे वे [illegible] काम अच्छी तरह कर सकें। (२) [illegible] के भीतर की सफ़ाई हो जाती है। [illegible] स्वास्थ्य सुधरता है। अतएव हर [illegible] में कम से कम चार मरतबा तो जरूर [illegible] करना चाहिए। इसके लिए कोई [illegible] दिन निश्चित कर लिया जाय।

भोजन के अंश

(१) प्रोटीन, (२) कार्बोहाइड्रेट, (३) चिकनई, (४) लवण, (५) पानी [illegible] (६) पोषक-तत्त्व (विटामिन)। [illegible] हर चीज आवश्यक है और उसे ठीक [illegible] में भी होना चाहिए।

(१) प्रोटीन—यह शरीर बढ़ानेवाली [illegible] है।

प्रोटीनवाले पदार्थों में दूध, दही, [illegible], पनीर, मांस, मछली, अण्डा, सलाद, [illegible] और अन्य हरी पत्तेवाली तरकारियाँ, [illegible], बादाम, मूँगफली, गिरियाँ, सोया-[illegible] (मटर्वांस), (दाल, चना) हैं।

(२) कार्बोहाइड्रेट—यह शरीर का [illegible] है। इससे शरीर में शक्ति और गरमी [illegible] होती है। जरूरत से ज्यादा कार्बो-[illegible] खाने से मोटापा, बदहजमी और [illegible] हो जाती है।

कार्बोहाइड्रेटवाले पदार्थों में अनाज, [illegible], सूखा मेवा, जड़वाली तरकारियाँ, [illegible] इत्यादि हैं।

[illegible], मैदा, सूजी, चावल, साबू-[illegible], मक्का, गेहूँ, जौ, जई, चीनी, गुड़, [illegible], सेम, मटर, आलू, चुकन्दर, [illegible], बैंगन, करमकल्ला, गोभी, गाँठ [illegible], पार्सनिप (इस्तफीन, जुजुर), [illegible], कद्दू, लौकी, मूली, अरवी, [illegible], खजूर, अंजीर, आम, केला, अम-[illegible], लीची, पपीता, नाशपाती, खरबूजा, [illegible], सिंघाड़ा।

(३) चिकनई—यह शरीर का [illegible] ईंधन है। इसमें कार्बोहाइड्रेट [illegible] से दुगुनी ताक़त पैदा करने की [illegible] है। यह आड़े समय के लिए [illegible] की हुई खुराक है। यह रगों और [illegible] बनाती है। अधिक चिकनई [illegible] और मोटापा हो जाता है।

उदाहरण :—मक्खन, घी, तेल [illegible], जैतून, सरसों, तिल्ली, अलसी, [illegible] इत्यादि के), चरबी, दूध, मलाई, [illegible] की जरदी, नारियल, बादाम, [illegible], अखरोट, काजू, पिस्ता, चिल-[illegible], अन्य गिरियाँ, सोयाबीन।

(४) लवण—ये शरीर को मजबूत [illegible] इनसे भोजन स्वादिष्ट बनता है [illegible] साफ़ होता है। अन्न और दालों [illegible], फल, दूध, पालक, सलाद, कुल्फ़ा और दूसरे साग तथा तरकारियों के पत्तों में लवण की काफ़ी मात्रा होती है।

(५) पानी—पानी भोजन पचाने और उसे शरीर के भिन्न-भिन्न अङ्गों तक ले जाने का काम करता है। यह शरीर की जहरीली वस्तुओं को मल-मूत्र और पसीने के द्वारा बाहर निकालता है; इससे ख़ून का गाढ़ापन भी ठीक रहता है।

(६) विटामिन—ये भोजन के पोषक-तत्त्व हैं जो दूध, फलों और तरकारियों में ख़ूब मिलते हैं। ये बहुत आवश्यक अंश हैं क्योंकि इनके अभाव से खाने के दूसरे अंशों का पाचन ठीक नहीं होता और कई भयङ्कर बीमारियाँ हो जाती हैं। ज्यादा पकाने पर ये नष्ट हो जाते हैं।

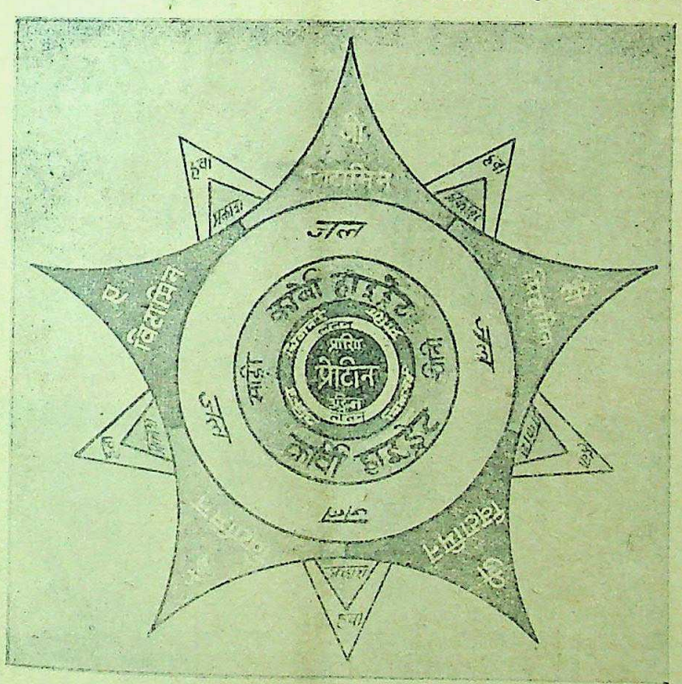

भोजन के अंश—तरकारियों से प्राप्त होते हैं।

पाँच मुख्य विटामिन

विटामिन ए—इसका सम्बन्ध आँख, फेफड़ों, पेट और आँतों से है। यह शरीर बढ़ाता है और उसे छूत की बीमारी से बचने की शक्ति देता है। इसके अभाव से रतौंधी और आँख की बीमारियाँ हो जाती हैं। यह निम्नलिखित चीज़ों में पाया जाता है :—

चर्बी, दूध, दही, पनीर, मक्खन, घी, मलाई, अंडा, गुर्दा, कलेजी, काड लीवर आयल, पीली जड़वाली और हरी तरकारियाँ—(टमाटर, गाजर, शलजम, पातगोभी, सलाद, पालक, अजमोद, हरी मटर, शकरकन्द, लौकी) केला, नारंगी, अनन्नास।

विटामिन बी—इसका सम्बन्ध दिमाग़, दिल, जिगर, हाजमे, खाल, रगों और पुट्ठों से है। यह शरीर बढ़ाता है, उसकी छीजन दूर करता है और पाचन और मल-त्याग में सहायता देता है। इसके अभाव से बेरी-बेरी हो जाती है। इस रोग में हाथ-पैर फूल जाते हैं, दिल कमज़ोर हो जाता है और प्रायः मृत्यु भी हो जाती है।

यह निम्नलिखित चीज़ों में पाया जाता है :—अनाज के छिल्के, (समूचे अनाज), मटर, सेम, दूध, मट्ठा, अंडे, कलेजी, गुर्दे, खमीर, मूँगफली, गिरियाँ, खजूर, हरी और जड़वाली तरकारियाँ (गाजर, पातगोभी, पालक, टमाटर, सलाद, प्याज, शलजम, सतावर, बैंगन, गोभी, अजमोद पार्सनिप, आलू)।

विटामिन सी—इसका सम्बन्ध ख़ून से है। यह ख़ून को शुद्ध और आँतों को स्वस्थ रखता है। इसके अभाव से स्कर्वी हो जाती है जिसमें बल और भार कम हो जाते हैं, चेहरा पीला पड़ जाता है, मसूड़े, नाक, मूत्र और हड्डी से ख़ून निकलता है और हड्डी में छूने से दर्द होता है।

यह निम्नांकित चीज़ों में पाया जाता है :—अंकुरित अनाज, दूध, नीबू, नारंगी, सन्तरा, पपीता, लीची, आम, सेब, केला, ककड़ी, ताजी हरी तरकारियाँ (टमाटर, गाजर, करमकल्ला, पालक, सलाद, आलू, चुकन्दर, प्याज, लहसुन, शलजम, ककड़ी, अंकुरित मटर, हरी सेम, शकरकन्द)।

विटामिन डी—इसका सम्बन्ध दाँतों और हड्डियों से है। इसके अभाव से बच्चों को रिकेट और सूखा हो जाता है। हड्डियाँ टेढ़ी-मेढ़ी व कमज़ोर हो जाती हैं, बच्चा कुरूप हो जाता है और भूख जवाब दे जाती है।

यह दूध, मक्खन, घी, काड लीवर आयल, अंडे, ताज़े फल और हरी तरकारियाँ, पालक, टमाटर, पातगोभी, सलाद और गाजर में ख़ूब होता है। धूप में नंगे बदन बैठने और उसमें बदन पर तेल मलने से भी इसकी कमी पूरी की जाती है।

विटामिन ई—यह बाँझपन को दूर करता है और दूध बढ़ाता है। यह मक्खन, अंडे की जर्दी, अनाज के निशास्ते, हरी कोंपलों, शहद, केले और हरी तरकारियों—पातगोभी, सलाद, प्याज, गाजर, लहसुन, भिण्डी—में पाया जाता है।

हम क्या खायें ?—भोजन में ऊपर बताई हुई छहों चीज़ें उचित मात्रा में होनी चाहिए। विटामिन का विशेष ध्यान रखा जाय। हमें भोजन से क़रीब २५००-३००० शरीर-विज्ञान विषयक या बड़ी कैलोरी गरमी प्रतिदिन मिलनी चाहिए। (१ शरीर-विज्ञान विषयक या बड़ी कैलोरी जो भौतिक विज्ञानवाली १००० कैलोरी के तुल्य होती है वह गरमी जो १ किलोग्राम या २·२ पौंड पानी को १° सेण्टीग्रेड गरम कर दे)

एक ग्राम (१५·४ ग्रेन या लगभग १ माशा) चिकनई से ९, एक ग्राम कार्बोहाइड्रेट से ४ और एक ग्राम प्रोटीन से भी ४ कैलोरी गरमी मिल सकती है।

हमें खाना चाहिए

(१) अनाज (बिना छिलका उतरा) और दालें.....कम

(२) दूध, दही, मट्ठा, मक्खन, घी .....कुछ अधिक।

(३) अण्डे, मांस और मछली यदि खाते हों.....कम।

(४) हरे पत्तेवाली तथा अन्य ताजी तरकारियाँ....काफ़ी ($\frac{2}{3}$ भाग)।

(५) फल (मौसमी)..... काफ़ी (औकात के अनुकूल)।

मौसमी फल और ताजी हरी तरकारियाँ खाने से लाभ:—

(१) इनमें सब आवश्यक तत्त्व और विटामिन सुलभ होते हैं जो हमें तन्दुरुस्त रखने के लिए बहुत जरूरी हैं।

(२) ये क्षारीय पदार्थ हैं और इन्हें काफ़ी मात्रा में खाना बहुत आवश्यक है।

(३) ये जल्दी पच जाते हैं और पेट और आँतों को साफ़ करते हैं। दिमाग़ ताज़ा रहता है और शरीर बहुत से रोगों से बच जाता है।

(४) तरकारियाँ सस्ती पड़ती हैं तथा प्रचुर मात्रा में सुलभ हैं।

(५) इन्हें हम थोड़ी-सी भी जगह में और थोड़े समय में पैदा कर सकते हैं। शहर के पक्के मकानों में भी टमाटर, साग, धनिया, पुदीना, लौकी, तरोई, कद्दू इत्यादि पैदा करने का प्रबन्ध किया जा सकता है। इस तरह अपने बाग में अधिक सब्ज़ी पैदा करने और खाने से हम इस महँगाई में अपनी काफ़ी बचत भी कर सकते हैं। यों पैसा बचेगा, अन्न की कमी दूर होगी, रोग भाग जायेंगे और स्वास्थ्य-लाभ होगा।

इसलिए हम सबको चाहिए कि अधिक सब्जी पैदा करने और खाने का संकल्प करें और इसे अपना परम ध्येय बनाकर इसका घर-घर प्रचार करें।

परती रहे न भूमि पड़ी।
हरी फ़सल हो जाय खड़ी॥

घर-घर ख़ूब तरकारी पैदा करना चाहिए, क्योंकि—(क) हरी तरकारियों में सब विटामिन पाये जाते हैं। (ख) प्रतिदिन ताजी तरकारी खाने को मिलेगी। बासी तरकारी के पोषक-तत्त्व नष्ट हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फल, हरी शाक-भाजी के लिए अच्छी भूमि चाहि

जाते हैं। (ग) बाजार में तरकारियाँ बहुत महँगी हो रही हैं। (घ) अनाज की बचत होगी और अन्न-संकट दूर होगा। (ङ) बागवानी करना अधिक मनोरंजक और लाभप्रद धन्धा है।

भूमि का बनाना

शाक-भाजी बोने के लिए भूमि को अच्छी तरह तैयार करना चाहिए। अच्छा होगा यदि जमीन को चौरस करके वर्गाकार या आयताकार बना दिया जाय और उसे कई छोटे-छोटे आयताकार टुकड़ों में बाँट कर चौड़ी मेड़ों-द्वारा अलग अलग कर दिया जाय। मेड़ों के किनारे-किनारे पानी देने के लिए नालियाँ बनाई जायँ।

चौड़ी-चौड़ी मेड़ों पर जड़वाली तरकारियाँ, जैसे मूली और शलजम, बोई जा सकती हैं। अच्छी जुताई करने और खाद डालने के बाद बीज बोना चाहिए। बीज जमने के बाद भी गुड़ाई और निराई करते रहना चाहिए।

तरकारियों के लिए खूब सड़ी हुई खाद अच्छी होती है। यह भूरे रंग की होती है। हर क्यारी में डेढ़ टोकरी तक खाद डाली जाय तो अच्छा हो।

जब तक अँखुए न निकल आवें, तब तक जमीन को तर रखने का विशेष ध्यान रखना चाहिए। कीड़े-मकोड़ों को नष्ट करने का सरल उपाय यह है कि आध सेर तम्बाकू के पत्तों की कूट लेकर आठ सेर पानी में घोल दीजिए और इसे २४ घंटे तक पड़ा रहने दीजिए। इसके बाद आठ सेर पानी और मिलाकर उसे पौधों पर छिड़क दीजिए।

बीज बोना :—(१) कड़े बीज पानी में भिगोकर बोये जायँ। (२) मटर और सेम को ३ इंच की गहराई पर बोना चाहिए किन्तु सलाद और गोभी के बीज केवल चौथाई इंच की गहराई पर। (३) छोटी-छोटी पत्तियाँ निकल आने पर उन पर हलकी-सी राख डाल देनी चाहिए। इससे उनमें कीड़े नहीं लगते। (४) जब पौधों में ४ से ६ तक पत्तियाँ निकल आवें तब उन्हें उखाड़कर खेत में लगाना चाहिए।

पानी की एक बूँद भी बेकार मत जाने दो

पियाऊ, स्नान, बोर्डिंग, रसोई इत्यादि से जो पानी मिले उसे व्यर्थ मत जाने दीजिए। उन स्थानों से नाली-द्वारा तरकारी के खेत में पानी लाकर उससे सिंचाई करिए।

खाद—तरकारी बोने के लिए नीचे लिखी खादें लाभदायक होती हैं :—

सड़कों का कूड़ा-करकट, गोबर, घोड़े की लीद, भेड़ और बकरी की लेंड़ी, मुर्गी और कबूतर की बीट, पत्ती की खाद, नील, सनई के सड़े-गले डंठल, हड्डी का चूरा, सींग, खुर तथा लकड़ी और कंडे की राख।

खाद बनाने की कई रीतियाँ हैं जैसे 'हिल रीति', 'पिट रीति', 'बॉक्स रीति' और 'कम्पोस्ट'। कम्पोस्ट की खाद सर्वोत्तम होती है। इसके लिए ३०′ × १४′ × १′ के गढ़े खोद लो। मिट्टी की मेड़ बनाकर गहराई २′ कर ली जाय। गढ़े में कूड़ा-करकट, राख, गोबर, पशुओं का मल-मूत्र मिली मिट्टी, इत्यादि डालकर पानी और हवा की सहायता से सड़ाया जाय। थोड़े थोड़े दिनों में इस ढेर को पलटना चाहिए और पानी से तर भी करना चाहिए। ध्यान रहे कि गढ़े में साधारण नमी स्थिर रहनी चाहिए।

बीजों की रक्षा—(१) बीजों को हवा और सील से बचाकर रखो। (२) उन्हें छोटे-छोटे बन्द डिब्बों या कागदार बोतलों में ऐसी जगह रखो जहाँ गरमी या नमी न हो। (३) बीज बिलकुल साफ और धूप में सुखाकर रखे जावें।

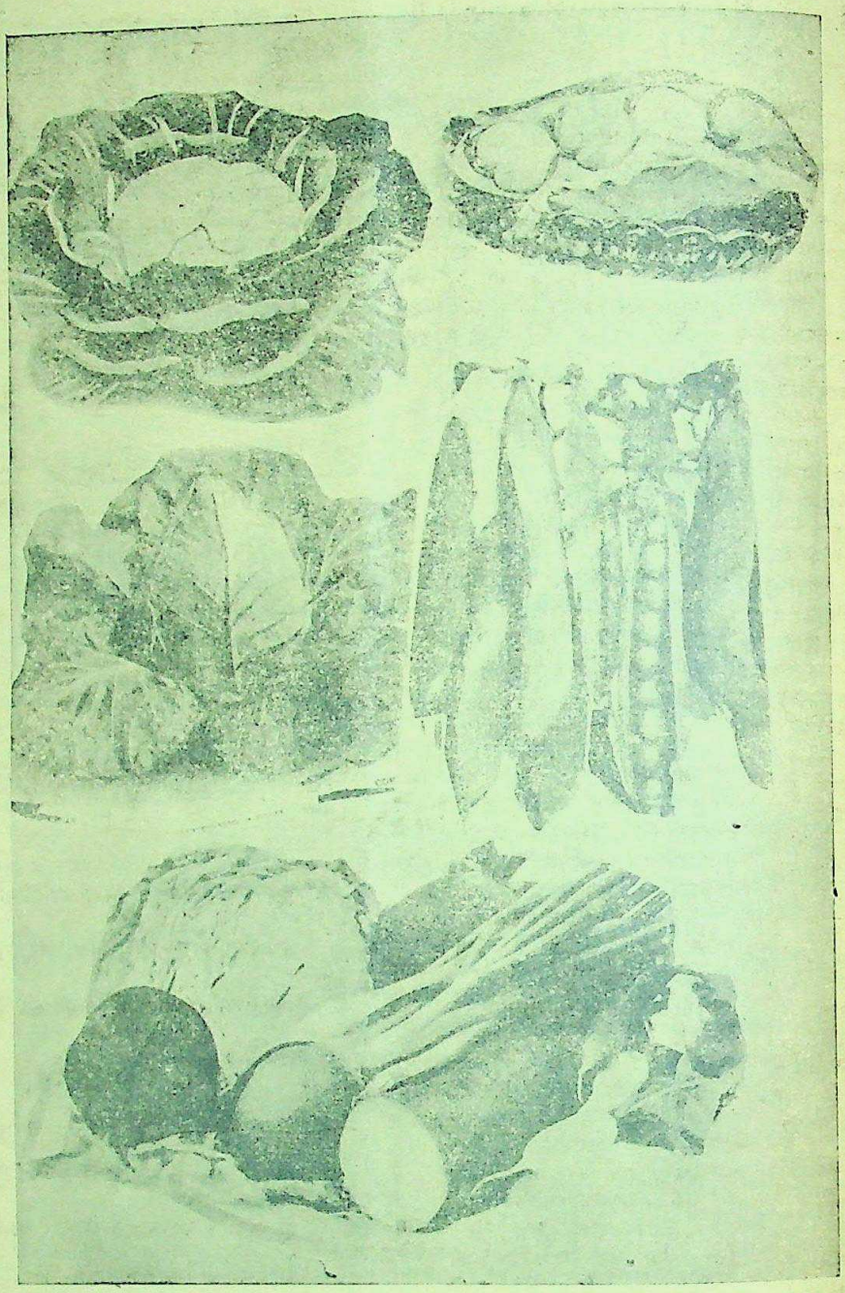

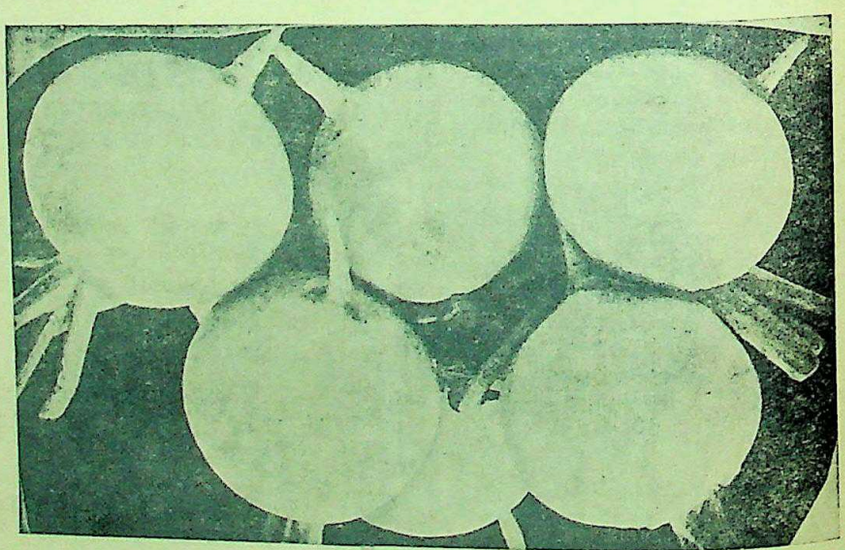

अन्न-संकट के समय में फल शाक तरकारी शरीर को शक्तिशाली और बलदायक बनाती हैं और अन्न के अभाव को दूर करती हैं

अन्न-संकट में स्वास्थ्यवर्द्धक आहार

दिन भर में—

	नाम		भार	कैलोरी
(१)	गेहूँ	२	छटाँक	४०८
(२)	चावल	३	"	५९४
(३)	दाल	१	"	८०
(४)	तरकारी	६	"	२२८
(५)	घी	१	"	४१६
(६)	दूध	८	"	४९०
(७)	शहद या देशी खाँड	२	"	
(८)	फल और गिरियाँ	८	"	

छीजन के लिए १०% कमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रविवार, २ जून, १९४६

अन्न-दाताओं की कुछ कहावतें

प्रकृति के रहस्यों की उनकी अपनी जानकारी है

लेखक, श्री शिवसेवक

हमारा देश कृषि-प्रधान है। किन्तु आज हम अन्न-संकट से परेशान हैं। इस पर ही इस देश की सबसे बड़ी जनता का जीवन-निर्वाह होता है। खेती पर ही हमारी सबसे बड़ी पूंजी लगी है और उसमें कठिनाई भी है। बाढ़, पाला, सूखा और बूड़ा से प्रायः प्रति वर्ष, ढाढ़ा, सूखा और बूड़ा से देश के किसी न किसी भाग में देश के किसी न किसी भाग में हानि पहुँचती रहती है। दूसरे की हानि पहुँचती रहती है। दूसरे वैज्ञानिक तरीक़ों से इन आपदाओं का मुक़ाबला करके खेती की रक्षा की जाती है। परन्तु देश के किसानों को अभी उस तरह की सुविधायें प्राप्त नहीं हैं किन्तु देश के कार्यों का बारीकी से खोजबीन करने के कार्यों का बारीकी से खोजबीन कर उन्होंने किसानों ने कुछ ऐसी बातों का पता लगा लिया है जिनके सहारे वे अपनी शक्ति भर वे उनसे अपना आने वाली सूचना पहले ही से पा लेते हैं और अपनी शक्ति भर वे उनसे अपना बचाव कर लेते हैं। ये अनुभव की बातें कहावत के रूप में प्रचलित हैं। इनमें प्रकृति की जानकारी प्रकृति के रहस्यों की कितनी गहरी है। जिन किसानों को इन बातों की जानकारी नहीं है वे इन्हें जानकर कितनी कठिनाइयों से बच सकते हैं।

(१)

जो दिन जेठ बहे पुरवाई।
सो दिन सावन धूरि उड़ाई॥

(जितने दिन जेठ के महीने में पुरवाई बहती है उतने दिन सावन में तेज धूप होती है।)

(२)

रात में बोलें कौआ,
और दिन में बोलें सियार।
तो होई भरवादरी,
तो होई देस उजार।

(यदि रात में कौवे बोलें और दिन में सियार दिखायें तो या तो कई दिन तक वर्षा की झड़ी लगेगी या देश में दैवी विपत्ति आयेगी।)

(३)

जो बाढ़ बहे पुरवाई।
तो जानो बरसारितु आई॥

(जब तक ज़ोर की पुरवैया बहे समझना चाहिए कि बरसात आ गई।)

(४)

जब ह कुहुक, जेठ मा जाड़।
तो नार जड भरई असाढ़॥
जब कहई भड़इरि की जोइ।
तब हुआं नहावन होइ॥

(भड़इरि या भड़इरी की पत्नी कहती है कि यदि माघ में गर्मी पड़ने लगे और जेठ में भी जाड़ा मालूम हो तो समझना से असाढ़ ही में ताल-तलैया और नालों में बाढ़ आ जाय तो आश्चर्य नहीं।)

(५)

जेठ गेहूँ अद्रा धान।
तीनि गेहूँ न एके धाम॥

(यदि जेठ नक्षत्र में गेहूँ और आर्द्रा में धान बोया जाय तो गेहूँ को गेहुई और धान को घुन से हानि पहुँचती है।)

(६)

जेठ तेलि निकवा जाय।
तौ कुत्ता कुकुरउ न खाय॥

(यदि जेठ में पानी बरस कर खेतों में पानी पड़ा पड़ जाय तो इतना अन्न होता है कि कुत्ते भी खाते-खाते ऊब जायें।)

(७)

सबेरे सबेरे चभोरा[२]
सांझ इन्द्रधनुष[१] दिखाई
तो जानो पानी[२] गिरे।)

(यदि रात में आसमान साफ़ रहे किन्तु दिन में घटायें घिरती रहें तो पानी नहीं बरस सकता।)

इसी भाव का एक कथन और भी किसानों में प्रचलित है।

राति तरइयाँ दिन परछाहीं।
घाघ कहें तब बरषा नाहीं॥

खेती के सम्बन्ध में इसी प्रकार का एक बहुत बड़ा अनुभवपूर्ण साहित्य देहातों में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चला आ रहा है। इस प्रकार का साहित्य ग्रामीण जनता की सूझ और प्रतिभा का साखी है।

(८)

नियरे मंडल लंबा पानी।
लंबा मंडल नियरे पानी॥

(बरसात के दिनों में कभी-कभी सूर्य और चन्द्रमा के चारों ओर धुंधले प्रकाश का एक घेरा दिखाई पड़ता है, उसे मंडल कहते हैं। यदि मंडल छोटा हो, तो पानी कुछ दिनों बाद बरसेगा किन्तु यदि मंडल बड़ा हो तो दो एक दिन में ही बरसात होगी।)

(९)

साँझे दइउ सकारे राजा।
ये ओनवइँ तउ करइँ अकाजा॥

(सायंकाल में वर्षा शुरू हो और सवेरे राजा साहब आ जायँ तो बड़ी कठिनाई होती ह। अर्थात् शाम को पानी गिरना शुरू होता है तो जल्दी बन्द नहीं होता और सवेरे राजा के आने पर काम पर जाने में अड़चन पड़ती ह। राजा के आदर-सत्कार और बेगारी देने के कारण लोगों का हर्ज होता है।)

(१०)

क बूँद जउ परइ सेवाती[१]।
कुनबिनि पहिरइँ सोने क पाती॥

(यदि स्वाती नक्षत्र में पानी पड़ जाय तो कुरमी लोगों की स्त्रियाँ सोने के गहनों से ढँक जायँ अर्थात् फ़सल अच्छी हो।)

इस प्रकार का कथन युक्तप्रान्त के उन भागों के लिए है जहाँ कपास की खेती नहीं होती है। इस प्रान्त के पच्छिमी भाग में, जहाँ कपास की खेती अधिकता से होती है, स्वाती नक्षत्र में जल-वृष्टि होने से किसानों की हानि होती है। इसीलिए उधर के किसानों में इस प्रकार का कथन प्रचलित है--

(११)

एक बूँद जो परै स्वाति।
न चलै चरखा न बाजै ताँति॥

(स्वाती नक्षत्र में वर्षा होने से चर्खा और धुनकी चलना बन्द हो जाता है क्योंकि उससे कपास की फ़सल मारी जाती है।)

(१२)

साँवा, साठी साठि दिना।
जो मेंह बरीसे राति दिना॥

(यदि अच्छी वर्षा हो तो साँवा और साठी के फ़सल केवल साठ दिन में तैयार हो जाते हैं।)

(१३)

सिंघा गाजे, हथिया भागे।

(यदि सिंघा में बादल गरजे तो हथिया नक्षत्र में वर्षा नहीं होगी।)

(१४)

जइ दिन मघा फूही लावइ।
माघे पाला खेत नसावइ॥

(मघा नक्षत्र में जितने दिन फूही पड़ती है उतने दिन माघ में पाला पड़ता है।)

(१५)

भई सुकरवारी बादरी,
रही सनीचर छाइ।
बात न झूठी परि सकइ,
बिनु बरसे न जाइ॥

(शुक्र के दिन आसमान में बादल दिखलाई पड़ें और वही फैलते-फैलते शनिवार को आसमान को ढक लें तो निश्चय ही वे बादल बिना बरसे नहीं जाते।)

(१६)

राति निचंदर दिन घटा।
कहइ घाघ मोंहि बरषा जटा॥

धातुपौष्टिक
कामजोत वटी
स्वप्नदोष, वीर्यविकार, शीघ्रपतन, सुस्ती व कमजोरी दूर करके खून, बल व वीर्य बढ़ाती है। डि० रु० २॥)
कामजोत तिला
इसके उपयोग से इन्द्री की नसें व अवयव मजबूत होकर उत्थानशक्ति और स्तम्भन-शक्ति बढ़ती है। फी शी० २॥)
मदनमंजरी फार्मेसी—जामनगर
इलाहाबाद—मदन स्टोर्स ४७ जान्स्टनगंज

AC 61

खाद्य बचाना खाद्य उगाने के बराबर है

इस खाद्य - संकट में प्रत्येक समर्थ व्यक्ति का यह कर्त्तव्य है कि वह अधिक से अधिक खाद्य उत्पन्न करे। यदि आप खाद्य-उत्पादक नहीं हो सकते तो कमसे कम खाद्य रक्षक तो हो सकते हैं। स्मरण रखिये खाद्य बचाना खाद्य उगाने के बराबर है।

भारतीय इतिहास की इस गंभीर घड़ी में प्रत्येक नागरिक की मदद की जरूरत है। अपने घरों की सरल और दैनिक मितव्ययिता के द्वारा खाद्य-संकट के सुधार में हम सब ठोस मदद दे सकते हैं? यहां ये चार तरीके दिये जाते हैं जिनके द्वारा आप मदद कर सकते हैं:

१ आतिथ्य - सत्कार को कम कर दीजिये। यदि आपको अतिथि बुलाने ही हैं तो सादा भोजन बनवाइये। वे कारण को समझेंगे और उसको पसंद करेंगे।

२ थोड़ा खाना परोस कर अपने घर में ही बचत कीजिये। इस बात का स्मरण रक्खें कि रसोई घर में व्यर्थ क्षति न हो।

३ शादियों और धार्मिक एवं सामाजिक उत्सवों में कठोर मितव्ययिता का व्यवहार कीजिये।

४ अपने स्वाद पर निर्भर रहते हुए अधिक तरकारियाँ, फल, मछली, मांस, अंडे और दूध से बनी चीजें खाकर अपने भोजन को पौष्टिक बनाइये। अपनी चावल व गेहूं की खुराक कम कर दीजिये।

खाद्य बचाना प्राण बचाने के बराबर है।

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसानों के नाम एक पत्र

किसानों को गल्ला क्यों देना चाहिये

कांग्रेस सरकार किसी को भी भूखों नहीं मरने देगी

प्यारे भाइयो !

भारत के बहुत से सूबों में भयंकर तूफानों और भारी वर्षा के कारण इस साल अनाज की फसलें खराब हो गई हैं। हमारे सूबे में भी वर्षा-ऋतु में पानी की कमी और जाड़े के मौसम में देर से वर्षा होने के कारण मामूली तौर पर जिस तरह की फसलें होती थीं उससे भी खराब हुई हैं। खराब फसलों के मानी होते हैं ग़ल्ले की पैदावार में कमी। इस वजह से शहरों में अनाज बेहद कम है। शहर में रहनेवाले लोग ग़ल्ले के लिए खेती करनेवालों के मुहताज रहते हैं। अगर कभी आपका कोई ऐसा पड़ोसी बीमार पड़ जाय जिसके पास न गाय है और न भैंस और उसे एक गिलास दूध की हर रोज जरूरत हो तो क्या आप उसे बिना दूध के मर जाने देंगे ? क्या आप उसकी जान बचाने के लिए अपने दूध में से एक गिलास उसके लिए नहीं भेजेंगे ? सच तो यह है कि उसे आप दूध भी देंगे और उसके एवज में कुछ न चाहेंगे।

आप लोगों में जिनकी उम्र ज्यादा हो चुकी है, उनमें से बहुतों को संवत् १९५६ के छपनिया-काल की याद होगी। उस काल ने पूर्वी पंजाब को बर्बाद कर दिया था। उस बुरे वक्त में बागड़ (पूर्वी पंजाब) के लोगों की एक बड़ी तादाद खाने की तलाश में हमारे सूबे के पश्चिमी हिस्सों में आई थी। आपके बड़े-बूढ़ों ने उन्हें कई महीने तक खाने के लिए ग़ल्ला और रहने के लिए घर दिये थे। मौजूदा संकट-काल छपनिया-काल जैसी चीज नहीं है। अगर हम सब मिल-जुलकर काम करें तो यह अकाल का रूप कदापि धारण नहीं कर सकता।

आपकी बहुत-सी जरूरतें शहरवाले पूरी करते हैं, इसलिए आप यह नहीं चाहेंगे कि उनके लिए भोजन की कमी रहे। फिर हम लोग जितना ग़ल्ला मौजूद है उसी को हिस्सा बाँट करके बराबर-बराबर क्यों न खायें। यही देशभक्ति गौर मनुष्यता का काम है।

शहरवालों को खाना देने के लिए कांग्रेस सरकार ग़ल्ला खरीद रही है। सरकार चाहती है कि आप भी अपने ग़ल्ले का एक छोटा-सा हिस्सा उनकी रक्षा के लिए दें। आपके अनाज का जो हिस्सा सरकार खरीदना चाहती है उसकी सूचना तहसील के मुलाजिमों ने आपके पास लिखित नोटिस के रूप में भेज दिया है। इस नोटिस में लिखा होगा कि आपको कितना ग़ल्ला सरकार के हाथ बेंचना है। नोटिस में जो तौल लिखी होगी उसको बढ़ाने का अधिकार किसी अहलकार को नहीं दिया गया है। कोई अहलकार आपसे इस वजन से ज्यादा अनाज नहीं माँग सकता। यह हिस्सा अच्छी तरह हिसाब लगाकर और बहुत सोच-समझकर तय किया गया है। आपके खाने के लिए आपके बीज के लिए और अपनी दूसरी जरूरतों को पूरा करने के लिए काफ़ी अनाज छोड़कर, अन्दाज की हुई पैदावार का एक छोटा-सा भाग लिया जा रहा है। आपको अपने लिए और अपने घरवालों के लिए धोती-कपड़ा और जूता, दूध देनेवाले जानवरों के लिए खली, रोशनी के लिए मिट्टी या या सरसों का तेल आदि चीजों को खरीदने के वास्ते रुपये-पैसे की जरूरत रहती है। इसी तरह कभी आपके घर में ब्याह होता है और कभी लड़की की बिदा, कभी कोई त्योहार आ जाता है और कभी किसी खुशी में जलसा करना पड़ता है, इन सब कामों में खर्च करने के लिए भी आपको पैसा चाहिए। ऐसे सब कामों को पूरा करने के लिए आपको अपनी पैदावार का कुछ हिस्सा बेंचना ही पड़ेगा और वह भी शायद उस बनिये के हाथ जो मुनाफ़ा खाने के लिए आपका अनाज जमा करके रख लेगा। आपको मालूम होना चाहिए कि उसके इस तरह से अनाज जमा करने का नतीजा क्या होगा ? आपके बहुत से शहरवाले भाई भूखों मरने लगेंगे।

ऐसे संकट के समय सरकार आपसे यही चाहती है कि आप मुक़र्रर किये गये अपने अनाज के कोटे को—यानी उतना अनाज जितना नोटिस में दर्ज है—खरीद करनेवाले अहलकारों के हाथ अपने गाँव या नजदीक के किसी गाँव में जहाँ उसकी बिक्री का हुक्म हो बेंच दें। याद रखिये, जो भी ग़ल्ला आप उनके हाथ बेचेंगे उसकी पूरी क़ीमत वहीं पर आपको फौरन अदा कर दी जायगी। इस तरह बिक्री करने में आपको घर बैठे यह खास फ़ायदा होगा कि आढ़त, तुलाई और इसी तरह के बहुत से खर्चे, जो बनिये के हाथ माल बेंचने पर आपको परेशान होकर करने पड़ते हैं, उनसे आप बच जायँगे। आप इस तरह थोड़ा अन्न देकर अपने उन देशवासियों का बहुत बड़ा उपकार करेंगे जिनके पास खेती करने के लिए जमीन नहीं है। आपकी दया से उन्हें भोजन मिल जायगा।

यह भी याद रखिये कि अनाज का यह संकट हमेशा नहीं रहेगा। कुछ ही महीनों के बाद धान, बाजरा, ज्वार, सावाँ और मक्का की फसलें तैयार हो जायँगी। इस बीच में दूसरे देशों से भी ग़ल्ला आने की आशा है। इसलिए किसी को यह कहने का मौक़ा न दीजिये कि सब लोगों में से आपही एक ऐसे थे, जो ऐसे संकट के समय भी अपने भाइयों के काम न आये। परम पूज्य गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी रामायण में कहा है :—

'परहित सरिस धरम नहिं भाई।
पर-पीड़ा सम नहिं अधमाई॥'

रामायण की इस चौपाई को ध्यान में रखते हुए देशवासियों की रक्षा के लिए आप अपने अन्न का एक छोटा-सा हिस्सा देकर सहायता कीजिये और अपने भाइयों को भूखा मरने से बचाइये।

—देशवासी

गांधी-वाणी

अन्न-संकट कैसे दूर हो सकता

महात्मा गांधी ने जनता को क्या आदेश

देश के सामने आज सबसे विकट समस्या अनाज की कमी है। आज हमारा देश अभूतपूर्व अकाल के संकट से ग्रस्त है। श्रीमती सरोजिनी नायडू के शब्दों में 'आज मानवता की परीक्षा का समय है। आज राजा से लेकर रंक तक हम सबका भाग्य एक साथ बँधा हुआ है और यह समय सब की परीक्षा का है। भूख के आगे कोई भी समस्या बड़ी नहीं है। विभिन्न जाति, धर्म, भाषा और रीति रिवाज के रहते हुए भी हम सब भारतीय हैं और एक हैं।'

महात्मा गांधी ने अन्न-संकट का सामना करने के उपाय सुझाते हुए अनेक अवसरों पर आदेश दिये हैं। वाइसराय महोदय के प्राइवेट सेक्रेटरी से बातें करने के बाद १२ फरवरी को गांधी जी ने एक वक्तव्य में कहा '.....यदि व्यापारीवर्ग और सरकारी अफ़सर ईमानदारी से कार्य करें तो हमारा देश इतना विशाल है कि अगर बाहर से सहायता न भी मिले तो भी हम अपनी कठिनाइयों को दूर करने में समर्थ हो सकते हैं।

'अनाज और वस्त्र के व्यापारी ये वस्तुएँ कदापि जमा न करें और न इनका सट्टा खेलें। खेती योग्य सारी भूमि में जहाँ पानी हो या पानी का प्रबन्ध हो सके अनाज उपजाना चाहिए। फुलवाड़ियों को अनाज उपजाने के काम में लाना चाहिए। ऐसा युद्ध काल में किया गया है। वर्तमान समय युद्धकाल से भी किसी भाँति अधिक संकट-मय है। जितना अनाज हमारे पास स्टाक में है उसे खा जाने के पहले हमें कंजूस की तरह किफायतशारी करनी चाहिए। सभी तरह के उत्सव आदि बन्द हो जाना चाहिए। महिलाओं को अपने घरों में किफायत करते हुए वर्तमान अन्नसंकट दूर करने में अधिक हाथ बटाना चाहिए...।'

गांधी जी ने चेतावनी देते हुए कहा 'घबराहट कदापि न होने पावे। हम अकाल मृत्यु के कदापि न शिकार बनें। हमें यह समझ लेने की कदापि चेष्टा न करनी चाहिए कि यदि हम आनन्द से अपना निर्वाह कर रहे हैं तो हमारा पड़ोसी भी उसी प्रकार आराम से जीवन व्यतीत कर सकेगा।'

देश में अनाज की कमी की समस्या गांधी जी को चिन्तित किये है। १७ फरवरी सन् १९४६ को गांधी जी ने एक वक्तव्य प्रकाशित किया जिसमें आपने यह बताया है कि वर्तमान अन्न-संकट को हम किस प्रकार पार करें।

आपने ग़म्भीर चेतावनी देते हुए कहा 'अन्न की कमी हो जाने के चाहे जो भी कारण हों यह सत्य है कि यदि सरकार और जनता ने इस संकट का सामना धैर्य के साथ वीरतापूर्वक न किया तो भयंकर दुर्घटना अनिवार्य हो जायगी।'

अनाज की समस्या को सुलझाने के उपाय बताते हुए आपने कहा 'प्रत्येक पुरुष व स्त्री को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए अनाज की खपत न्यूनतम कर देनी

विश्ववंद्य महात्मा गां...

चाहिए और नगरों में जहाँ दूध, ... तेल फल आदि मिल सकें अनाज ... की खपत कम कर दी जाय क्यों ... आसानी से की जा सकती है। ... लिए अन्न से जो स्टार्च प्राप्त ... हम गाजर, केला, आलू, ... तरकारियों से प्राप्त करें तात्पर्य ... वर्तमान भोजन से अनाज हटा... अनाज और दालें बचाकर ... सकें...' आपने चेतावनी देते ... 'हमें भजे के लिए तरकारियाँ ... अति नहीं करनी चाहिए जब कि ... भाइयों को तरकारी चखने ... मिलती और विशेष कर इस ... जब कि अन्न और दालों की इतनी ...

गांधी जी ने छोटे बड़े सभी ... देते हुए कहा कि 'जिस व्यक्ति के ... हो या पानी का प्रबन्ध कर सकता ... निज के अथवा सर्वसाधारण के ... न कुछ खाद्य पदार्थ अवश्य उत्पन्न ... चाहिए।' महात्मा जी ने क्रियात्मक ... करते हुए बताया है कि गमलों ... भर कर उसमें थोड़े ही समय में ... कुछ तरह की तरकारियाँ आसानी ... की जा सकती हैं। गांधी जी ने ... है कि फूल के बगीचे खाद्य पदार्थ ... में परिणित कर दिये जायँ।

नागरिकों के लिए राशन ... में कमी पर सहमत प्रकट करते हुए ... सैनिकों के राशन की मात्रा में ... होनी चाहिए। जहाँ सम्भव हो ... श्यकता हो सिंचाई के लिए ... गहरे कुएँ खुदवाने चाहिए।

गांधी जी ने अपील करते हुए ... 'सबसे आवश्यक बात यह है कि ... और बेईमानी बिलकुल समाप्त ... और जहाँ तक आनज की ... का प्रश्न है सब दलों में हृदय ... सहयोग अवश्य हो।'

अन्त में गांधी जी ने ... विश्वास प्रगट करते हुए कहा ... यदि सरकारी कार्यकर्त्ता और ... जनता परस्पर सहयोग से काम ... इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं ... वर्तमान कठोर संकट को पार कर ...

तक्षशिला काव्य—सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान तक्षशिला के अतीत गौरव का वर्णन। इसमें ओज, प्रसाद तथा माधुर्य्य आदि काव्योचित गुणों का समुचित रूप से समावेश किया गया है। मूल्य ३) तीन रुपये।

नीरजा—सुप्रसिद्ध कवियित्री श्रीमती महादेवी वर्मा की चुनी हुई कविताओं का संग्रह। इस पुस्तक के लिए लेखिका को हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से ५००) का सेक्सरिया पुरस्कार मिला है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

द्विवेदी काव्यमाला—आचार्य पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी की अमर कविताओं का पूर्ण संग्रह। मूल्य ४) चार रुपये।

शनि भगवान् की कथा—इसमें ललित छन्दों में शनि भगवान् की महिमा का वर्णन किया गया है। मूल्य ॥) आठ आने।

कविता-कलाप—हिन्दी के ख्यातनामा कवि स्वर्गीय पण्डित नाथूराम शर्मा, पण्डित कामताप्रसाद गुरु, मैथिलीशरण गुप्त तथा स्वर्गीय ... पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी की ... हुई सरस कविताओं का सचित्र ... मूल्य ४) चार रुपये।

मधूलिका—प्रगतिवादी कवि श्री ... शुक्ल 'अंचल' की मनोरम कविताओं का संग्रह। मूल्य २) दो रुपये।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...द्य पदार्थों को बरबाद होने से हम कैसे बचा सकते हैं ?

लेखक, श्री अनन्तप्रसाद विद्यार्थी, बी० ए०

...जकल खाने के लिए अन्न का बहुत ...। कितने ही लोगों को पेट भरने के ...भोजन नहीं मिलता परन्तु क्या आपने ...सोचा है कि इतनी कठिनाई होते हुए ...अपने खाद्य पदार्थों का बहुत बड़ा ...नष्ट हो जाने देते हैं। कभी-कभी ...खाद्य पदार्थों का नाश जानते ...कभी-कभी अनजान में होता है। ...जान में जो हानि होती है उससे ...सभी परिचित हैं किन्तु अज्ञान के ...भी हम बहुत अधिक हानि उठाते ...का परिणाम यह होता है कि अपने ...पदार्थों से जो लाभ हमें उठाना चाहिए ...नहीं उठा पाते।

...हमारे खाद्य पदार्थों में अनाज की मात्रा ...अधिक होती है। गेहूँ, जौ, चना इत्यादि ...को हम चक्की में पीसकर खाते ...उनके छिलके का उपयोग नहीं कर ...हम अनाज के छिलके को, जिसे ...कहते हैं, या तो फेंक देते हैं या ...को दे देते हैं। इन अनाजों के ...हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत ...है। इनमें एक प्रकार का विटा-...होता है जिसमें बेरी-बेरी बीमारी ...की शक्ति होती है। चावल भी ...खाद्य पदार्थों में प्रमुख स्थान रखता ...छिलका हम निकालकर खाते हैं ...उपयोगिता बहुत कम हो जाती है। ...का प्रयोग हम आटे के रूप में ...जाँते या तेल से चलनेवाली चक्की ...आटे में गेहूँ के छिलके के गुण ...नष्ट हो पाते हैं परन्तु मिलों के ...आटे या मैदे में वे गुण बिलकुल नहीं ...। आम तौर पर देहातों में लोग ...या तेल से चलनेवाली चक्की का ...खाते हैं। उस आटे को चालकर ...चोकर निकाल दिया जाता है। ...बहुत ही बुरा है। गेहूँ के ...उठाने के लिए यह जरूरी ...उस आटे को बिना चाले ही ...करें। यदि हम ऐसा न कर सके ...चोकर का इस्तेमाल दूसरे रूप में ...चाहिए। गेहूँ के चोकर से भी कई ...अच्छे खाने के व्यंजन बनाये जा ...जिससे स्वास्थ्य को भी लाभ पहुँच ...और चोकर भी व्यर्थ नहीं जाता। ...अधिक गेहूँ हमारी भूल के कारण ...जाता है। प्रायः देखा गया है कि ...गेहूँ को जिस प्रकार से रखते ...घुन और कीड़े लग जाते हैं। ...बहुत-सा गेहूँ घुन और कीड़े नष्ट ...। यदि गेहूँ को अधिक समय ...हो तो उसे जिस कोठी या कोठिले ...उसे अन्दर से गन्धक से पोत ...। इससे घुन या कीड़े लगने ...नहीं रह जाता। चूहे भी बहुत-...खा जाते हैं। उनसे बचाने के ...या कोठिले के मुँह को हमेशा ...कर रखना चाहिए। गाड़ या ...अनाज रखने के लिए तहखाने ...तैयार की गई अच्छी मिट्टी ...चाहिए। जहाँ बनाया जाय वह ...ऊँचा होना चाहिए। वर्षा से ...उस पर छप्पर या खपड़ैल ...। व्यापारियों को गोदाम ...बनाना चाहिए। यह गोदाम ...ऊँचा और पक्का बनाना चाहिए। ...उसमें सीमेंट का प्लास्टर होना ...भीतर पानी पहुँचने का रास्ता ...

...हमारे खाद्य पदार्थों में प्रमुख स्थान रखता है। देहात में हर घर में स्त्रियाँ धान को साफ़ कर चावल निकालती हैं। इस चावल में मिलों द्वारा साफ़ किये गये चावल की अपेक्षा शक्तिदायक अंश अधिक विद्यमान रहता है। पकाने के पहले बहुत से लोग चावल को कई बार धोते हैं। यह बहुत ग़लत तरीक़ा है, क्योंकि इससे चावल का शक्तिदायक अंश नष्ट हो जाता है। इसके अतिरिक्त चावल का माँड़ भी निकाल देने की प्रथा है। चावल यों ही बहुत कम शक्तिदायक भोजन है परन्तु इस प्रकार पकाये जाने के कारण वह और भी बेकार हो जाता है। चावल पकाने का सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि उसमें केवल उतना ही पानी डाला जाय जितने की आवश्यकता हो।

हमारे यहाँ कई प्रकार की दालें खाई जाती हैं। मूँग, उर्द, अरहर, चना, मटर, मसूर की दालें अधिक खाई जाती हैं। दालों में प्रोटीन नामक शरीर के लिए शक्तिदायक पदार्थ की मात्रा अधिक होती है। इनके छिलके में विटामिन बी अधिक मात्रा में होता है परन्तु खेद की बात है कि हम दाल के छिलके का प्रयोग नहीं करते। प्रायः उसको जानवरों को दिया जाता है। इस प्रकार दाल का जीवनदायक अंश व्यर्थ ही नष्ट कर दिया जाता है। बहुत-से घरों में रोटी के साथ दाल रोज़ का भोजन होता है। यदि दाल छिलके-सहित खाई जाय तो वह अधिक उपयोगी हो सकती है।

भोजन के साथ हम तरकारी का इस्तेमाल रोज करते हैं। हरी तरकारी में नमक और विटामनों की मात्रा प्रचुर मात्रा में होती है। परन्तु गाँवों में उनको काफ़ी मात्रा में पैदा किया जाता है और न साधारण ग्रामीण रोज़ तरकारी खाता ही है। जो लोग तरकारी खाते भी हैं वे उसका अधिकांश भाग गँवा देते हैं जिससे वे उससे पूरा-पूरा लाभ नहीं उठा पाते। पातगोभी के ऊपर की कई पत्तियाँ लोग निकालकर फेंक देते हैं। इसी प्रकार आलू के ऊपर का छिलका भी नहीं खाया जाता, परन्तु यह भूल है। आलू के छिलके में बलदायक अंश की मात्रा अधिक होती है। इसलिए पकाने के पहले आलू को अच्छी तरह धोकर छिलके सहित ही काटकर पकाना चाहिए।

कभी-कभी जिस पानी में तरकारी पकाई जाती है उसे फेंक दिया जाता है। इस पानी में तरकारी के नमक और विटामिन विद्यमान रहते हैं। जहाँ तक हो तरकारी को उन्हीं के पानी में पकाना चाहिए। उदाहरण के लिए सरसों का साग, भिण्डी, तुरई, नेनुआ आदि में काफ़ी पानी रहता है। उनके पानी को फेंकने से उनका लाभ कम हो जाता है। आलू पकाने के लिए भी यदि बाहर का पानी काम में न लाकर उसे भाप में पकाया जाय तो अच्छा हो। इससे आलू का बलदायक अंश नहीं नष्ट होता। कभी-कभी स्त्रियाँ तरकारी को चूल्हे पर चढ़ाकर दूसरे कामों में लग जाती हैं और वह मनमाना पकती रहती है। इस तरह ज़रूरत से ज़्यादा पककर वह अपना बलदायक अंश नष्ट कर देती है। कुछ लोग तरकारी में खानेवाला सोडा डाल देते हैं। इससे लाभ तो कुछ नहीं होता, हाँ, तरकारी के कुछ गुण अवश्य जाते रहते हैं।

हम लोगों में हर तरकारी को पकाकर खाने का चलन है। इससे बहुत-सी हरी तरकारियों के गुण नष्ट हो जाते हैं। टमाटर, मूली, प्याज़ इत्यादि पकाने से अपना गुण गँवा देते हैं। इसलिए उनको कच्ची ही खाना चाहिए।

कुछ मौसिम में कुछ तरकारियाँ बहुत अधिक मात्रा में होती हैं। साग, बनसेम इत्यादि बहुत अधिक मात्रा में होती है। परन्तु बहुधा उनको जानवरों को खाने के लिए दिया जाता है। चना, बथुआ, पालक, चौलाई इत्यादि के शाक स्वास्थ्य के लिए बहुत उपयोगी होते हैं। गोभी का डण्ठल, अरुई के पत्ते इत्यादि की तरकारी भी अच्छी बनती है। जिन मौसिमों में हरी तरकारियाँ अधिक मात्रा में मिलें उन्हें सुखाकर रखा जा सकता है और जब तरकारी कम मात्रा में मिले तो उस सूखी तरकारी का इस्तेमाल किया जा सकता है। इस प्रकार की सूखी तरकारी में हरी तरकारी के गुण मौजूद रहते हैं।

फलों का उपयोग हम अपने भोजन में बहुत कम करते हैं। आम, महुआ, अमरूद इत्यादि फलों का प्रयोग भोजन के लिए किया जा सकता है। बहुत-से फल, जो यहाँ देहातों में पैदा किये जाते हैं, उनका उद्देश्य बेचना होता है। जो फल बिक्री के लिए नहीं पैदा किये जाते उनकी ओर गाँववाले कम ध्यान देते हैं परन्तु यदि वे अपने बाग़ों में फल उपजाने का प्रयत्न करें तो वे उससे बहुत अधिक लाभ उठा सकते हैं। फलों का उपयोग भी हम इस प्रकार नहीं करते कि उससे पूरा-पूरा लाभ उठा सकें। मौसम में फलों को सुरक्षित रखने के तरीक़ों से हमारे ग्रामीण भाई अपरिचित हैं इसलिए मौसिम में वे फलों को या तो सस्ते दामों पर बेच डालते हैं या जानवरों को खिला देते हैं। गाँवों में फलों को सुरक्षित रखने के तरीक़ों का प्रचार किया जाना ज़रूरी है।

बहुत-से फल अपने छिलके के साथ खाये जाने चाहिए, जैसे नाशपाती; परन्तु बहुधा लोग उसके छिलके को निकाल देते हैं। ऐसे फलों के छिलके में क़ब्ज़ियत रोकने के गुण मौजूद होते हैं। इसलिए इनका प्रयोग इसी रूप में किया जाना चाहिए। यदि ऐसे फलों को छिलके-सहित और चाक़ू से न काटकर दाँत से काटकर खाया जाय तो इससे पेट और दाँतों की सफ़ाई में सहायता मिलती है।

देहात में जानवर पालने की अधिक सुविधा होती है। इसलिए प्रायः हर घर में एक-आध दूध देनेवाला जानवर होता है परन्तु दूध का पूर्ण उपयोग नहीं करते। देहात के लोग या तो दूध का इस्तेमाल करते हैं या उससे मट्ठा तैयार करके घी निकालते हैं। ज़्यादातर लोग यह समझते हैं कि दूध का सबसे प्रमुख अंश घी ही होता है परन्तु यह उनकी भूल है। मट्ठा स्वास्थ्य के लिए बहुत ही उपयोगी होता है। देहातों में मट्ठे को लोग बड़ी लापरवाही से इस्तेमाल करते हैं। ऐसा न करना चाहिए, क्योंकि इसमें दूध के बहुत-से गुण मौजूद रहते हैं।

दूध को भावी प्रयोग के लिए सुरक्षित रखने के तरीकों से देहातवाले बहुत कम परिचित होते हैं। खोया-द्वारा बहुत तरह की मिठाइयाँ बनती हैं परन्तु खटाई-द्वारा दही बनाने के कारण दूध का प्रयोग नहीं किया जा सकता। यदि दही ज़रूरत से ज़्यादा हुआ तो उसका इस्तेमाल ठीक से नहीं किया जाता। यदि मक्खन निकालने के नये तरीक़ों का इस्तेमाल किया जाय तो इससे दूध भी बच जायगा और घी भी निकल आयेगा। बचे हुए दूध को दूसरे तरीक़ों से काम में लाया जा सकता है।

संयुक्तप्रान्त में गन्ना काफ़ी मात्रा में पैदा किया जाता है। इसके रस से देहातवाले या तो गुड़ बनाते हैं या चीनी बनाने के लिए मिलों के हाथ बेच देते हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से चीनी की अपेक्षा गुड़ में अधिक बलदायक गुण मौजूद रहते हैं, क्योंकि गुण से चीनी बनाने के लिए उसे जब साफ़ किया जाता है तो वह अपना गुण खो बैठता है। गुड़ और देशी शक्कर चीनी की अपेक्षा अधिक लाभकारी है। इसलिए उसका इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

लाख प्रयत्न करने पर भी हमारे घरों में बहुत अधिक भोजन व्यर्थ ही जाता है। अनाज का बिनावन, रोटी के टुकड़े, चावल के धोवन इत्यादि को हम फेंक देते हैं परन्तु इनसे मुर्ग़ी पालने का व्यवसाय किया जा सकता है। घर के उपेक्षित अंश से मुर्ग़ी को भोजन मिल सकता है। मुर्ग़ी से अंडा और मांस प्राप्त हो सकता है। जो लोग मांसाहारी नहीं हैं वे भी अंडों को अच्छे दामों में बेचकर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं।

और भी बहुत-से तरीक़े हैं जिनके द्वारा हम व्यर्थ जानेवाले भोजन को बचा सकते हैं। उदाहरण के लिए रोटी के टुकड़ों को इकट्ठा करके सुखा लिया जा सकता है। उसके बाद उन्हें पीसकर गुड़ मिलाकर मीठी रोटी बनाई जा सकती है। दाल या तरकारी के एक समय बच रहने पर दूसरे समय उनका प्रयोग किया जा सकता है। यदि आवश्यकता हो तो ऐसी बासी तरकारी को फिर से गरम कर लिया जा सकता है। परन्तु यदि घर की स्त्री चतुर हुई तो वह इस व्यर्थ जानेवाली खाद्य-सामग्री की मात्रा को कम कर सकती है। आजकल जब कि खाद्य सामग्री का इतना अभाव है, प्रत्येक स्त्री का यह कर्त्तव्य है कि वह खाद्य-सामग्री का इस प्रकार प्रयोग करे कि वह कम से कम मात्रा में व्यर्थ जाय।

संचिता—इस संग्रह में ठा० गोपालशरणसिंह ने सन् १९१४ से लेकर सन् १९३९ तक की सब प्रकार की रचनाओं का समावेश किया है। इस एक ही पुस्तक के द्वारा ठाकुर साहब के कवि-जीवन के क्रम-विकास का उत्तमतापूर्वक अध्ययन किया जा सकता है। संग्रह में कुल ७१ कवितायें हैं। मूल्य ३) तीन रुपये।

सुमना—'सुमना' ठाकुर साहब का सबसे नवीन संग्रह है जिसमें ५३ गीत हैं। जिनमें प्रकृति के प्रति उनका असीम अनुराग शब्द-शब्द द्वारा व्यंजित होता है। इस प्रकार के सरस भावपूर्ण गीत हिन्दी-साहित्य में अन्यत्र न मिलेंगे। मूल्य २) दो रुपये।

पद्यमाला—इस पुस्तक में अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के बारहवें अधिवेशन के सभापति हास्यरसावतार स्वर्गीय पंडित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, साहित्यभूषण की फुटकर कविताओं का संग्रह किया गया है। मल्य १) एक रुपया।

मधुस्रवा—लेखक, राजाराम श्रीवास्तव बी० एस-सी०, एल-एल० बी०। इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु बरसाने की पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रस-सिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

एकादशी—लेखक, श्रीयुत नत्थाप्रसाद दीक्षित 'मिलिन्द'। इस पुस्तक में मिलिन्द जी की १२ कमनीय कविताओं का संग्रह किया गया है। ये सभी कवितायें पौराणिक आख्यायिकाओं के आधार पर नये ढंग से लिखी गई हैं। मूल्य केवल १।-) एक रुपया पाँच आने।

वेणुकी—लेखिका, श्रीमती तारा पाण्डेय। इस पुस्तक में श्रीमती तारा पाण्डेय की ६२ कविताओं का संग्रह किया गया है। इसमें संग्रहीत कविताओं में भावुकता है और है सहृदयता का वेदनामय झंकार। मल्य १) एक रुपया।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊसर जमीन में अनाज पैदा कीजिए

लेखक, श्री शिवमंगलसिंह

ऊसर उस जमीन को कहते हैं जिस-पर पौधे न उग सकें और अगर उगें भी तो थोड़े अरसे के बाद जल जावें। यह बात दो हालतों में हो सकती है। एक तो यह कि पौधे के खुराक के हिस्से में कोई हिस्सा ज्यादा कम हो, दूसरे यह कि कोई हिस्सा इतना ज्यादा हो कि उसकी ज्यादती पौधे पर जहर का असर करे। यानी बीज जमे और सूख जावे। ऐसी जमीनों को ठीक करने के लिए नीचे लिखे हुए ढंग प्रयोग किये जा सकते हैं।

१—नुक़सान पहुँचानेवाले नमक सोडियम कार्बोनेट और सोडियम कार्बोनेट हैं जिनकी वजह से मिट्टी इतनी चिकनी हो जाती है कि उसके द्वारा पानी अन्दर नहीं लग सकता। ऐसे नमकों की अधिकता को कम करने के लिए जमीन को धो डालने की जरूरत है। इसके वास्ते बरसात में खेत के एक तरफ के मेड़ को ३ इंच नीचा कर दें। जब पानी बरसेगा तो तमाम खेत की मिट्टी का पानी गुजरकर नमक एक तरफ को जावेगा और नमक इस तरीक़े से बहता रहेगा, लेकिन चूंकि दूसरे नमक भी घुल-कर पानी के साथ बह जायेंगे इस वास्ते हमको खाद भी डालनी चाहिए और ऐसी फसलें बोनी चाहिए जो उस नमक को ज्यादा खाती हैं जिसकी कि अधिकता है जैसे गंधक की ज्यादतीवाले खेत के वास्ते लहसुन और प्याज मुनासिब फसलें हैं।

२—मूसला जड़वाले पौधों की काश्त करना और दालदार फ़सलों का बोना जो जमीन में नाइट्रोजन पैदा करें और जिसकी पत्ती गिरकर सड़ने से जमीन नष्ट हो, जैसे नील, सनई, अरहर वगैरह।

३—बरसात में ऊँचा मेड़ बाँधकर खेतों में पानी भरना जिससे हानिकारक नमक पानी में घुलकर पानी के साथ जमीन के नीचे चला जावेगा और खेत सूख जाने पर उसको खूब जोत देना ताकि नीचे गया हुआ नमक ऊपर की मिट्टी में दोबारा वापस न आ सके, उसके बाद खूब खाद डालकर धान की फ़सल पैदा करना।

४—जमीन में ठीकरों को मिलाना ताकि काफ़ी हवा जमीन में गुजर सके।

५—जमीन में रेत या चूना मिलाने से भी ऊसर जमीन सुधर जाती है।

६—ऊसर जमीन में बबूल के दरख्त लगाना जिससे पेड़ की जड़ों के गोंद से मिट्टी का सुधार हो जाता है। बबूल के पेड़ तैयार होने पर लकड़ी को बेचकर खेत को खाली करके जमीन की काश्त सफलता-पूर्वक हो सकती है इस काम के लिए नीम, महुआ, या ढाक के पेड़ भी काश्त के लायक़ हो सकते हैं।

७—जमीन को धोने का एक तरीक़ा यह भी हो सकता है कि थोड़ी देर तक उसमें पानी भरा जावे और जब पानी में नुक़सान-वाला नमक घुल जावे तब उस पानी को किसी नाले या नदी में निकाल दिया जावे और अगर पानी काफ़ी तादाद में मिल सकता हो तो ऐसा बार-बार किया जावे।

८—अच्छी फ़सल के हेर-फेर का प्रयोग।

९—जिप्सम साल्ट का प्रयोग। जो डेढ़ से दो टन तक फ़ी एकड़ डाला जा सकता है, उसकी क़ीमत मामूली जमीन में क़रीब १२) फ़ी टन के होती है।

१०—दो फ़ीट चौड़ी उथली नालियाँ बनाकर जिसके ऊपरी सतह का सारा पानी बरसात के दिनों में बहा दिया जावे और जमीन में हवा का गुज़र हो सके।

११—तमाम खेत या एक खास रक़बे के चारों तरफ गहरी नालियाँ बनाना जो एक से दो फ़ीट तक गहरी हों और उन नालियों के द्वारा किसी नदी या नाले में उस रक़बे का तमाम पानी बरसात में निकाल देना।

१२—शीरे की खाद के प्रयोग से जो फ़ी एकड़ १२ टन तक डाली जा सकती है।

१३—जुलाई से नवम्बर तक उस खास रक़बे पर जानवरों का चराना और वहीं पर रखना और उसी तरह एक के बाद दूसरे रक़बे पर यही तरीक़ा प्रयोग में लाना।

१४—ऊसर के रक़बे में गढ़े खोदकर उनके अन्दर अच्छी मिट्टी और खाद डाल-कर पेड़ लगाना। ऐसी जमीनों में अमरूद या बेर के दरख्त कामयाबी के साथ लगाये जा सकते हैं।

१५—उस खास रक़बे को एक के बाद दूसरे गाँव के रहनेवालों के वास्ते पैखाना के तौर पर प्रयोग में लाना।

१६—जहाँ कहीं थोड़े-थोड़े हिस्से में ऊसर हों वहाँ से एक से दो फ़ीट तक की मिट्टी निकाल देना और उसकी जगह पर तालाब की मिट्टी या कोई दूसरी अच्छी मिट्टी भर देना।

जैहिन्द गीत

आज़ाद हिन्द फ़ौज के ... का घर घर में प्रचार करने के ... पुस्तकें मुफ़्त बाँटी जा रही हैं। १ कार्ड डालकर मँगा लीजिये। संगीत कार्यालय, हाथरस—

स्वयं-सहायता चाहिये

खाद्य के विषय में आप क्या कर सकते हैं।

भारत ही अकेला ऐसा देश नहीं है जिसे दुर्भिक्ष का ख़तरा है। सामान्यतः समस्त विश्व में अन्नाभाव हैं। ब्रिटेन में भी घटी हुई राशन है। एशिया और यूरोप के युद्ध-पीड़ित प्रदेशों में लाखों भूखे हैं और अन्नाभाव में मर रहे हैं। संयुक्त राष्ट्रों को उन सबको भोजन देना है। बाहरी सहायता हमको मिलेगी किन्तु अनिवार्यतः वह सीमित होगी। हमें यथासंभव अपनी सहायता आप करना है।

और यहीं आपको अपने कर्तव्य का पालन करना है

खाद्य की कमी को बराबर बांट लीजिये—अनेक प्राण इसी प्रकार बच सकते हैं।

खाद्य वितरण का एकमात्र समुचित तरीका राशनिंग है। राशनिंग के नियमों का पालन कीजिये। **धोका देने का प्रयत्न मत कीजिये**—यह किसी के प्राणोंका मूल्य हो सकता है।

अनुचित संग्रह मत कीजिये। यह एक अपराध और समाज-विरोधी कृत्य है। इससे प्राणों के क्षय का खतरा है।

यदि आप अनाज-विक्रेता हैं तो मुनाफ़ाखोरी मत कीजिये—याद रखिये उसके दंड कठोर हैं और उनका कड़ा पालन किया जायगा।

व्यर्थ खर्च मत कीजिये, अधिक आतिथ्य सत्कार भी मत करिये—थोड़ी किस्मों का भोजन पकवाइये। खाद्य-बचत खाद्य उपजाने के बराबर है।

यदि आप समर्थ हैं तो अधिक तरकारी, फल, मांस, मछली अंडे व दूध से उत्पन्न चीजें खाइये। गेहूं और चावल उन गरीबों के लिये छोड़ दीजिये, जिन्हें उनकी अत्यधिक आवश्यकता है।

यदि आपके पास भूमि और पानी हो तो तरकारियां और अनाज उत्पन्न कीजिये—थोड़ासा प्रयत्न भी सहायता है।

भय से मुक्त रहिये—यदि आपने विश्वास खो दिया तो चोर बाजारवालों को मौका मिल जायेगा।

खाद्य संकट को पराजित कीजिए

एक साथ कार्य कीजिये — एक साथ हिस्सा बंटाइये

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युक्तप्रांत के प्रधान मंत्री माननीय पंत की अपील का देहातों में स्वागत

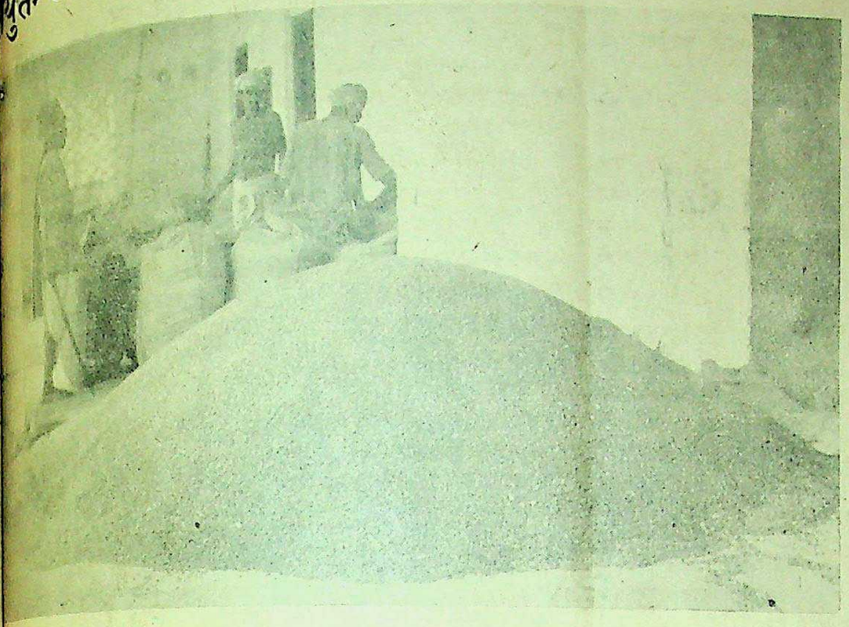

युक्तप्रान्त के प्रधान मंत्री माननीय पंडित गोविन्दवल्लभ पंत की अपील अन्न के ढेर के रूप में दिखाई दे रही है।

संयुक्तप्रान्त के प्रधान मंत्री माननीय पंडित गोविन्दवल्लभ पंत।

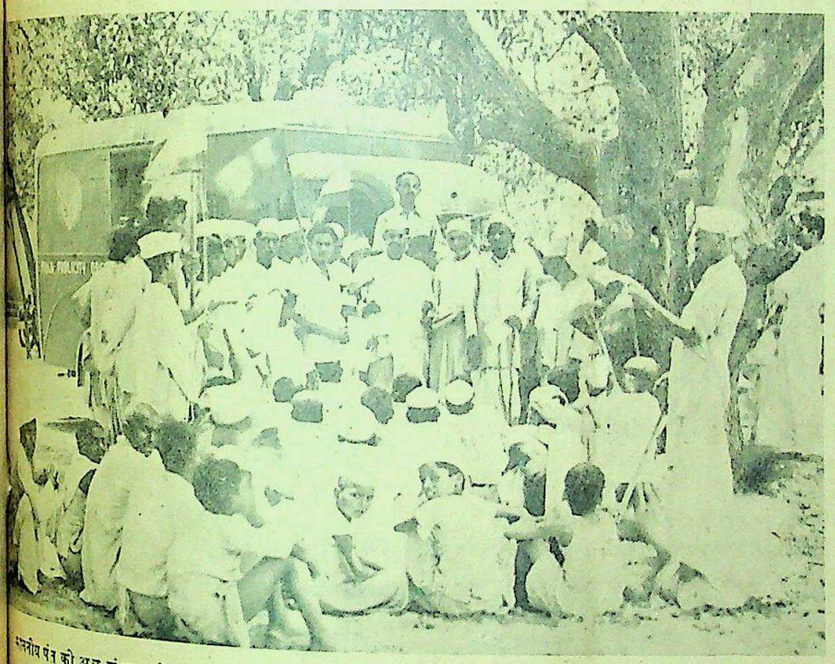

माननीय पंत की अन्न-संकट को दूर करने की योजना देहातों में पढ़कर सुनाई और समझाई जा रही है।

संयुक्तप्रान्त में कांग्रेस-सरकार ने शासन की बागडोर ग्रहण करते ही प्रधान मंत्री माननीय पंडित गोविन्दवल्लभ पंत ने यह घोषणा की है कि प्रान्त का एक व्यक्ति भी भूखों नहीं मरने पायेगा। समस्या के हल के लिए एक नई योजना भी प्रस्तुत की है। प्रधान मंत्री ने प्रान्त के किसानों के नाम जोरदार अपील की है कि वह कांग्रेस-सरकार को अन्न-संकट को दूर करने तथा योजना को सफल बनाने में सहयोग दे। माननीय पंत जी की अपील पर देहातों में क्या प्रभाव पड़ा तथा क्या प्रतिक्रिया हुई, कुछ अवसरों के चित्र यहाँ दिये जा रहे हैं। माननीय पंत जी की अपील का देहातों में भली भाँति स्वागत हुआ है।

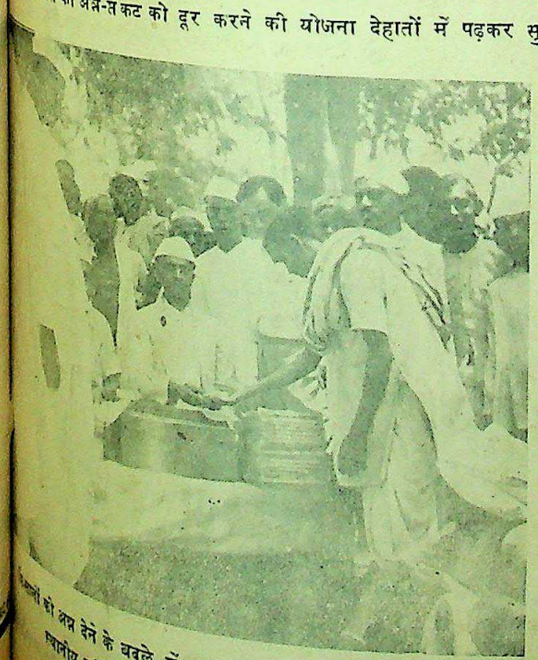

किसानों को अन्न देने के बदले में तुरन्त उसका दाम दिया जा रहा है। स्थानीय कांग्रेस कार्यकर्त्ता इस अवसर पर उपस्थित हैं।

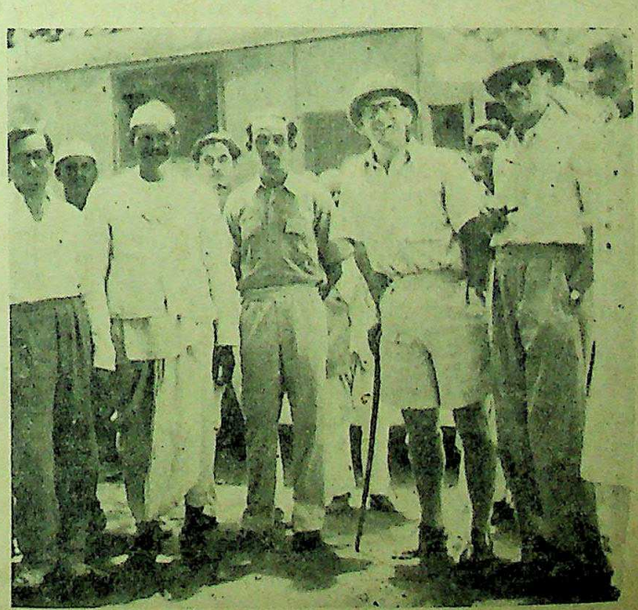

अन्न खरीदने के केन्द्र स्थान में कांग्रेस और मुस्लिम लीग के कार्यकर्ताओं के साथ जिले के सरकारी अधिकारी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राशन-संबंधी वार्तालाप

प्रश्न—अगर दावत करना हो या किसी दावत के मौक़े पर कुटुम्बवालों और दोस्तों को खाना खिलाना हो तो कितने आदमियों को दावत दी जा सकती है ?

उत्तर—सिर्फ पच्चीस आदमियों को। इससे ज्यादा आदमियों को बुलाना राशन आर्डर के अनुसार जुर्म है।

प्रश्न—और उन पच्चीस में घरवाले भी शामिल हैं ?

उत्तर—पहले शामिल थे मगर कुछ घरों में घरवालों की ही इतनी ज्यादा तादाद पाई गई कि वह इस नियम के अनुसार बहुत कम आदमी बुला सकते थे। इसलिए सरकार ने यह सुधार कर दिया है कि घरवालों के अलावा पच्चीस आदमी मेहमान बनाये जा सकते हैं।

प्रश्न—अगर किसी दूसरे शहर जाना हो तो हम अपने साथ कितना ग़ल्ला ले जा सकते हैं ?

उत्तर—राशनवाले अनाज को दस सेर से ज्यादा मात्रा में किसी दूसरी जगह नहीं ले जा सकते। इससे ज्यादा ले जाना जुर्म है।

प्रश्न—अगर हम किसी दूसरे शहर जायें तो वहाँ खाने के लिए राशन का क्या प्रबन्ध होगा ?

उत्तर—अगर आपको वहाँ तीन दिन से ज्यादा रुकना है तो आपको एक अस्थायी राशन कार्ड मिलेगा। इस कार्ड से आप जितने दिन वहाँ रहेंगे, राशन ले सकते हैं। लेकिन अगर आप किसी होटल या रेस्टोरेंट में ठहरते हैं और वहाँ खाना खाते हैं तो आपके लिए किसी राशन कार्ड की जरूरत न होगी क्योंकि होटलों और रेस्टोरेंटों के राशन कार्डों में ऐसे लोगों के खाने का प्रबन्ध मौजूद रहता है। अगर आप अपना खाना अलग पकवाना चाहते हैं तो पहले तीन दिन का राशन न मिलेगा। इसके बाद का अस्थायी राशन कार्ड ले सकते हैं।

प्रश्न—अगर किसी होटल या रेस्टोरेंट में न ठहरें बल्कि अपने किसी सम्बन्धी या दोस्त के यहाँ ठहरें तो राशन का कैसे इन्तजाम होगा ?

उत्तर—अगर आप तीन दिन या इससे कम ठहरते हैं तो आपके दोस्त या रिश्तेदार खुद अपने राशन से आपको खाना खिला सकते हैं लेकिन अगर आपको ज्यादा ठहरना है तो आपके दोस्त जिनके यहाँ आप ठहरेंगे, आपके लिए अस्थायी राशन कार्ड बनवा सकते हैं। इस अस्थायी राशन कार्ड पर पहले तीन दिन के अलावा आपके लिए उतने दिनों का राशन मिल जायगा जितने दिन आप वहाँ ठहरेंगे।

प्रश्न—अस्थायी राशन कार्ड कैसे मिलता है, और कहाँ मिलता है ?

उत्तर—जिस शहर में आप ठहरेंगे वहाँ के सब एरिया राशनिंग दफ़्तर में दरख्वास्त देने से अस्थायी राशन कार्ड फौरन मिल जायगा।

प्रश्न—क्या राशन कार्ड से डबल रोटी भी मिल सकती है ?

उत्तर—जी नहीं, लेकिन आपको इस कार्ड पर डबल रोटी खरीदने के लिए टिकट मिल सकते हैं। राशन कार्ड अपने दूकानदारों के पास ले जाइए वह आपको तीन छटांक गेहूँ के बदले डबलरोटी के १० यूनिट देगा। आप डबल रोटी के जितने यूनिट चाहेंगे, ले सकते हैं। मगर आपको यह यूनिट दस-दस की संख्या ही में मिलेंगे और यह भी शर्त है कि आप अपने राशन-कार्ड से ज्यादा न खरीदें।

भारत में अनाज की कमी क्यों ?

(पेज ८ का शेष)

देनी चाहिए, न कि केवल कम राशन को स्वीकार करके वे चुप हो जायें।

जाफ़र—हममें से जो अन्य खाद्यों का प्रबन्ध कर सकते हैं, वे उदाहरणार्थ; चावल खाना क्यों न बन्द कर दें ? दूध, तरकारी, मीठा, फल मूँगफली आदि अन्य प्रकार का भोजन जो हम करते हैं, हमारे स्वास्थ्य के लिए पर्याप्त है। इस प्रकार यदि हम चावल खाना छोड़ देते हैं तो हम उसे उन लोगों के लिए बचा लेते हैं जो अन्य खाद्य का उपभोग नहीं कर सकते।

हम इस से और आगे क्यों न बढ़ें ? जितनी रोटी, चपाती आजकल हम खाते हैं उससे आधी क्यों न खायें ? यह एक कष्टकर स्थिति हो सकती है लेकिन हम भूखों नहीं मरेंगे। पर ये लोग भूखों मर जायेंगे जो सिर्फ़ चपाती या चावल खाते हैं।

मसानी—जिन होटलों, रेस्टोरेन्टों और क्लबों में अन्य खाद्य पदार्थों का प्रबन्ध है उनमें चावल देना बन्द कर दिया जाय। जो लोग मालदार हैं और बिना राशन के खाद्य, जैसे गोश्त, मछली, दूध, तरकारियों और फलों का प्रबन्ध कर सकते हैं उनका राशन भी आधा पौंड क्यों न कर दिया जाय ?

सेन—सरकार ने सभी शासनाधिकारियों को आदेश किया है कि यथासम्भव उपायों से खाद्य-नियंत्रण को ये सुदृढ़ बनायें।

मसानी—धार्मिक उत्सवों में सप्लाई कम करने के गांधी जी के विचार के बारे में आपकी क्या राय है ?

सेन—इस सम्बन्ध में हम प्रान्तीय सरकारों को बता चुके हैं। खाने का प्रबन्ध करनेवाले व्यवसाइयों को जो सप्लाई मिलती है उसमें भी अधिक कमी की जा रही है, वही बात राशन-खाद्य के लिए है, जिसमें क्लबों में दिये जानेवाला हल्का नाश्ता भी शामिल है। खरीदारों को जो डबल रोटी बेची जाती है उसकी मात्रा सीमित करने के लिए आदेश जारी किये जा रहे हैं।

मैदा के प्रयोग को सीमित करने का हम प्रयत्न कर रहे हैं और उसकी गेहूँ से निकालने की ८५ फ़ी सदी से लेकर ९० फ़ी सदी तक मात्रा बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। अनिवार्य रूप से जिन वर्गों के लिए दूध आवश्यक है उनके लिए दुग्ध की सप्लाई सुरक्षित करने की आवश्यकता के बारे में प्रान्तीय सरकारों को जोर दिया गया है। उनसे कहा जा रहा है कि बम्बई के नमूने पर विशेष दुग्ध-योजनायें चालू करें। जैसा आपको मालूम है बम्बई योजना का आधार होटल रेस्टोरेंटों आदि को दूध कम मात्रा में देना और उसके बजाय ऐसे दूध का चूर्ण बाँटना है जिससे मक्खन निकाल लिया गया हो।

मसानी—यह बच्चों का खेल नहीं है कि एक लालची बनकर दूसरे को हानि पहुँचाये। मुझे विश्वास है कि अधिक अन्न पैदा करनेवाले प्रान्तों में कोई भी इस प्रकार की स्वार्थपरता का समर्थन नहीं करेगा।

जाफ़र—अच्छा तो, आप ही बतलाइये कि थोड़ा अनाज खाने के अलावा और हम क्या कर सकते हैं ?

मसानी—फूलों के बजाय तरकारियाँ उगाइये। अधिक तरकारियों की पैदावार के मानी होंगे उनके भावों में कमी। अतएव ग़रीब लोग तरकारियों को कम किये हुए ग़ल्ले के राशन में शामिल कर पेट भर लेंगे।

सेन—सरकार इस विषय कार्रवाई कर रही है। प्रान्तीय को लिखा गया है। जहाँ तक सम्बन्ध है वहाँ की सारी फूलों में तरकारियाँ बोई जायेंगी।

मसानी—यदि सरकार कानून में कुटने को रोककर हाथ से धान जारी कराये तो हमको नौ फ़ीसदी चावल फ़ी मात्रा में प्राप्त होगा।

सेन—यह भी हमारे ध्यान में तीन साल हुए हमने धान को इस विषय में आर्डर निकाले थे। हम ध्यान पुनः इस बात की ओर फिर भी यह मुनासिब नहीं कि हम चावल की मिल में कुटाई बन्द कर दें। यदि हम हाथ में से व्यक्तिगत रूप में चावल है तो हम अपनी बुनियादी योजना भारी मात्रा में चावल एक स्थान को नहीं भेज सकते।

हिन्दी साहित्य

बाबू श्यामसुन्दरदास प्रणीत

मूल्य चार रुपये

हिन्दी में ऐसे ही इतिहास-ग्रन्थों की कमी है। जो इनी-गिनी पुस्तकें लिखी गई हैं उनमें से बहुत-सी अप्राप्य और अधूरी हैं और बाकी अप्राप्य हैं। खासकर हिन्दी का इतिहास पढ़नेवालों को कोई भी प्रामाणिक इतिहास उपलब्ध न होने के कारण बड़ी ही कठिनाई थी। इसी को दूर करने के लिए हिन्दी के माने हुए विद्वान् तथा बाबू श्यामसुन्दरदास ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'हिन्दी साहित्य' का परिमार्जित और संशोधित संस्करण 'हिन्दी साहित्य' नाम से उपस्थित किया है।

पुस्तक में केवल विभिन्न कालों का ऐतिहासिक वर्णन ही नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को विभिन्न कवियों की कविताओं से परिचित कराने के लिए उदाहरण-स्वरूप कविताएँ भी दी गई हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास के सम्बन्ध में जितने भी नये अनुसन्धान हुए हैं, उन सबका इसमें समावेश किया गया है। इस प्रकार हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियों के लिए यह एकमात्र पुस्तक है जिससे साहित्य की समस्त प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

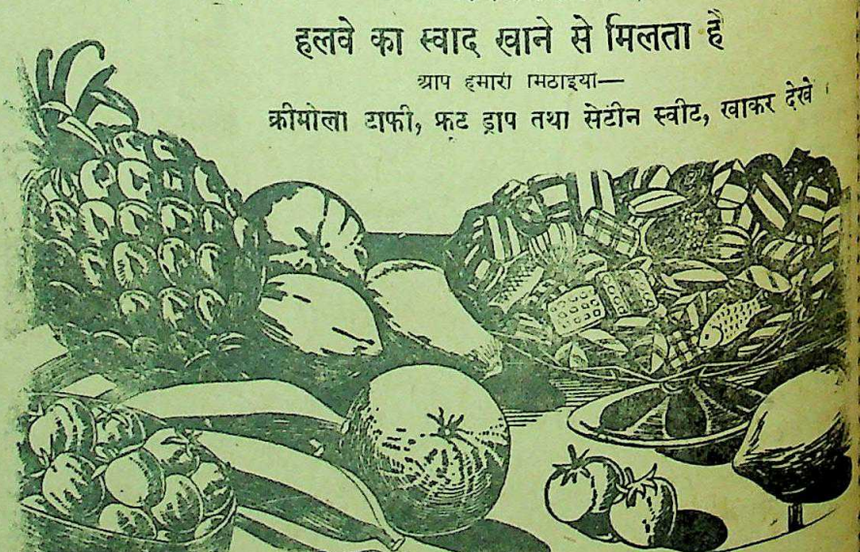

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

ईंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरंजक चुटकुले

(१)

...देहाती एक मोटर लारी में बैठा ...रहा था। वह एक पेड़ से टकरा-...गई। इस पर वह देहाती कहने ...जहाँ कहीं पेड़ न होते होंगे वहाँ ...कली होगी?

(२)

...—बेटा उठो, देखो आँधी आ ...

...—आँधी से कह दो अभी न आवे, ...नहीं है।

(३)

...मनुष्य एक साथ चोरी करने को ...एक ने एक आदमी की गाय ...और दूसरे ने घड़ी। गायवाले ने ...से पूछा क्या समय है? घड़ी-...कहा, गाय दुहने का समय है।

(४)

...भाई यह सड़क कहाँ जाती है?' ...सड़क कहीं नहीं जाती, यहीं ...है।

—वल्लभदास बिन्नानी

(५)

...—क्या कल की छुट्टी है?

...—इसमें क्या शक है।

...—पर कल है भी क्या, जो छुट्टी ...

...—कुछ हो या न हो, हेड-...हम लोगों को रात भर मद-...ही बिठलानेवाले हैं। शाम को ...ही देंगे।

—तुलसीराम हूँका

(६)

एक अफ़ीमची मियाँ को उनकी बीबी ने बाज़ार दूध लेने भेजा। मियाँ ने सफ़ेद दुपलिया टोपी सिर पर रक्खी, पाँव में जूता डाला और बाज़ार चल दिये। रास्ते में सोचा कि चलो कुछ पैसों की अफ़ीम भी खाते चलें। अफ़ीम की दूकान पर कुछ और अफ़ीमची मिल गये। गप्पें होने लगीं। घंटे-दो घंटे बाद मियाँ को सुध आई कि उन्हें दूध लेने भेजा गया था। डर के मारे बेतहाशा भागे। जूता वहीं भूल गये।

दूध एक पतीली में लिये घर जा रहे थे कि हवा का एक तेज़ झोंका आया और उनकी महीन टोपी दूध में जा गिरी। लेकिन मियाँ को इसकी कुछ खबर न लगी। घर के पास, गली में कीचड़ में फच से पैर पड़े। होश आया कि पैर में जूता नहीं है। इतना तो याद आया कि जूता घर से पहनकर चले थे। मगर नशा तेज़ हो रहा था। यह ख्याल न रहा कि जूता कहाँ छोड़ आये। यही सोचते-सोचते घर में घुसे कि बीबी की फटकार पड़ी। बीबी ने दूध की पतीली ली तो देखा कि दूध में कुछ भीगी हुई चीज़ तैर रही है। मियाँ को दिखाया कि यह क्या है? बोले—"कुछ नहीं जी, आज दूधवाले ने मलाई दी है। रोज़ पानी मिलाता था। इसी से तो मुझे देर हुई।" बीबी ने टोपी निकालकर कहा—"यह तो तुम्हारी टोपी है!" मियाँ हड़बड़ाकर बोले—"हैं टोपी, तो देख-देख उसी में जूता भी होगा।"

—जसवन्तसिंह, आगरा

त्यागी शंकर

पेज १२ का शेष

गिलास दूध पीकर सो जाना उसका नियम है। लोक-कल्याण के भाव से प्रेरित वह अपने साथियों को लेकर ग्रामों में जाता और वहाँ के लोगों से अनाज मंडियों में भेजने का आग्रह करता। देहाती जनता उसके त्यागपूर्ण व्यक्तित्व से विशेष प्रभावित होती है और किसान आवश्यकता पूर्ति के लिए अनाज रखकर बाक़ी जनहित के लिए दे देने के प्रतिज्ञापत्रों पर हस्ताक्षर कर देते। ग़ल्ले के अनेक व्यापारियों से भी उसी प्रकार उसने चोर-बाज़ार से अनुचित लाभ न उठाकर मानव-रक्षा के पुण्य कार्य में सहयोग करने के लिए प्रतिज्ञापत्र भरवाये। दावतों में अन्न के अपव्यय के लिए उसका आन्दोलन तथा जीवन-रक्षा के निमित्त न्यूनतम खाद्य का उपभोग करने की उसकी अपीलें सार्थक सिद्ध हुईं।

शंकर की मा वात्सल्य से प्रेरित होकर कहती "बेटा, इस प्रकार भूखे रहकर तुम्हारा शरीर दुर्बल हो जायगा।"

इस पर शंकर उत्तर देता 'मा, यदि मेरी भाँति सब आचरण करने लगें तो चाहे शरीर का वज़न घट जाय, दुर्भिक्ष का विकराल संकट टल जायगा। भूख के कारण किसी की भी मृत्यु न होगी और देश का जन-बल अक्षुण्ण रहेगा। इसी में हमारा, तुम्हारा और भारतमाता का कल्याण है।'

शंकर की मा अब उससे कुछ न कहकर नित्य सवेरे उठती और सूर्य भगवान् को अर्घ्य देकर प्रार्थना करती है—'प्रभो! हमारे शंकर की पुकार सुनो और देश को दुर्भिक्ष से बचाओ।'

परिणीता

उलझनों के कौतूहलप्रद वातावरण में ललिता और शेखर का प्रेम-सम्बन्ध इस उपन्यास में बड़ी ही कुशलता के साथ चित्रित किया गया है। उपन्यास में प्रेम की पावन गंगा का प्रवाह सर्वत्र व्याप्त है शब्द में आपको रोचकता और कौतूहल का दर्शन होगा। मूल्य १।—)

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

सपट लोशन
दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.
सपट अँड कं. लि.
बम्बई नं. २.

जनता को चेतावनी इनोज़ "फ़्रूट साल्ट"

...यह ज्ञात हुआ है कि इनोज़ "फ़्रूट-साल्ट" की जाली व भ्रामक नक़लें ...जनता को दी जा रही हैं। अतः हम सभी प्रयोगकर्त्ताओं व खरीदारों ...करते हैं कि वे भविष्य में सावधानी से ...करके माल खरीदें। असली इनोज़ "फ़्रूट-...की बढ़िया, मुक्त प्रवाहित, एवं रवेदार ...के बजाय यदि किसी बोतल के पदार्थ का ...और ढेले—जैसा रूप हो तो वह एकदम ...है। कोई भी विक्रेता यदि असली इनोज़ ...के स्थान पर नक़ली माल देने ...करें तो कृपया विस्तार सहित ग्रूप लेबोरेटरीज़ (इंडिया) लिमि-...आ० बाक्स २५८, ११ क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता को लिखें जो ...व्यय वापस देंगे।

...व विक्रेताओं को भी सचेत किया जाता है कि वे अपने क्षेत्र के ...एजेन्टों या बड़े थोक विक्रेताओं के अतिरिक्त और कहीं से इनोज़ ...नहीं खरीदें।

...हितों की रक्षा और अपने पेटेन्टों एवं ट्रेडमार्क की वास्तविकता ...के लिए यदि इस प्रकार का कोई सबूत हमें दिया जावेगा तो हम ...बनानेवाले के विरुद्ध यथा-सम्भव कठोर क़ानूनी कार्यवाही करेंगे। ...समस्त पत्र-व्यवहार उपर्युक्त पते पर ग्रूप लेबोरेटरीज़ (इंडिया) ...के पास करना चाहिए।

जे० सी० इनो लिमिटेड, लन्दन।

शारीरिक उष्णता के लिये...

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

आज से ही शुरू किजिए, सर्वत्र मिलता है।

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली तलुवों और आंखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग मे आग सी जलन, भोजन के बाद पेट मे जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, जड़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढा बालक वृद्ध, पुरुष स्त्री सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक हानिरहित है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निस्संकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके शीतल, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

यू० पी० प्रतिनिधि दोसर एण्ड को०, बिरहना रोड, कानपूर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

मारवाड़ लोक-परिषद्

राजनैतिक प्रगति का लेखा-जोखा

(विशेष संवाददाता-द्वारा)

जोधपुर का राजनैतिक वातावरण इस समय इतना उलझा हुआ है जितना इन वर्षों में शायद ही नजर आया हो। साफ़ जाहिर है कि शासक-वर्ग सत्ता को हथियाने में एक-दूसरे के साथ होड़ लगा रहे हैं। जिसका पाँसा पड़ गया उसी का पौ बारह है। जब एक मिनिस्टर के हाथ में काम रहता है एक नीति रहती है। ज्यों ही मिनिस्टर बदले नीति और आदमी दोनों बदल जाते हैं।

शिक्षा-मंत्री रावराजा नरपतसिंह के ज़माने में जशवन्त कालेज के प्रिंसिपल मि० सहानी को रिटायर होने के आर्डर निकल गये। दिल्ली के एक श्री शुक्ला साहब को प्रिंसिपल की जगह मुक़र्रर कर दिया गया। इसके कुछ दिनों बाद पोर्टफोलियो बदल गये। शिक्षा-विभाग महाराजकुमार के जिम्मे हो गया। सहानी साहब ने तक़दीर की आज़माइश शुरू की। उनको रिटायर करने का हुक्म मंसूख कर दिया गया। उधर नये प्रिंसिपल साहब ने अपनी पुरानी नौकरी से इस्तीफ़ा दे दिया था। उन्हें भी आखिर कोई जगह मिलनी तो चाहिए। वे युद्ध के बाद की शिक्षा-योजना के इन्चार्ज मुकर्रर हो गये। एक की जगह दो बड़े अफ़सरों का भार स्टेट पर पड़ गया। उद्योग-विभाग के एडवाइजर रायसाहब किशनपुरी के विलायत जाने की तैयारियाँ चल रही थीं। पोर्टफोलियो बदलने के कारण उनके मंसूबे भी फीके पड़ गये। ख़ैर, कुछ नए सूट तो बन ही गये होंगे।

राजनैतिक प्रगति

जब दूसरी रियासतों में राजनैतिक सुधार और प्रजापक्ष के मंत्री चुने जाते हैं या धर-पकड़ हो रही है वहाँ जोधपुर में आँख मूँदकर चुप रहो की नीति का अनुसरण किया जा रहा है। सरकार ने शासन-सुधारों के सम्बन्ध में बनी सुधालकर रिपोर्ट को प्रकाशित करने का कई महीनों पहले वादा किया था, पर वह वादा अभी पूरा नहीं हुआ। उस रिपोर्ट का अमली जामा पहनाने के लिए गत दिसम्बर मास में जो "लेजिस्लेचर फ़ारमेशन कमेटी" बनाई गई थी उसने अपनी रिपोर्ट अब पेश कर दी है। उस रिपोर्ट में लोकल बोडीस के डाइरेक्टर श्री इन्द्रनाथ मोदी की दो महत्त्वपूर्ण सिफ़ारिशें मंजूर हुई हैं। एक के अनुसार २ वर्ष या उससे अधिक अर्से के लिए राजनैतिक या दूसरे मामलों में सजा पाये हुए लोग धारा-सभा के लिए मत भी नहीं दे सकेंगे। पहली योजना में तो ऐसे लोगों को उम्मीदवार होने से ही महरूम रखा गया था, अब मतदाता सूची से भी इनके नाम खारिज कर दिये गये। इस सिफ़ारिश का असर मारवाड़ लोक-परिषद् व जोधपुर शहर लोक-परिषद् के प्रेसीडेंट श्री जयनारायण व्यास, मथुरादास माथुर आदि पर पड़ेगा। दूसरी सिफ़ारिश के ज़रिये मजदूर, व्यापार, उद्योग, जागीरदार आदि निर्वाचन क्षेत्रों में सीधे चुनाव न कराकर इन वर्गों की संस्थाओं द्वारा मुखिया चुनकर उनके ज़रिये चुनाव करने की तजवीज़ है।

मारवाड़ लोक-परिषद् वैसे सुधालकर रिपोर्ट से भी असन्तुष्ट थी। इस तरह की प्रतिक्रियावादी सिफ़ारिशों का भी उसे पता चल गया था। उसने प्रतिनिधि सभा की गत मीटिंग में धारा-सभा का बहिष्कार करने ही का निश्चय किया है। पता नहीं सरकार अपनी प्रतिगामी योजना को बदलेगी या नहीं?

राज्यमहल का अमला

राज्यमहल के अमले में एकदम रद्दोबदल हुए हैं। हाउस होल्ड के मिनिस्टर इंचार्ज महाराजकुमार बन गये हैं, मिनिस्टर इन वेटिंग रावराजा नरपतसिंह महल के काम-काज से अलग हो गये हैं। महाराजा साहब के ए० डी० सी० श्री केसरीसिंह, सत्तासर, बीकानेर, पर्सनल प्राइवेट सेक्रेटरी बनाये गये हैं। इनकी तरफ़ से चीफ़ मिनिस्टर के लिए खोज चालू होने के समाचार भी शहर में ज़ोरों से सुने जा रहे हैं। बीकानेर के भूतपूर्व दीवान मि० कृपलानी से इस सम्बन्ध में बात हुई बताई जाती है, पर वे राजी नहीं मालूम होते दिखाई देते। इधर सर डोनेल्ड भी आबू पहाड़ की ठंडी हवा को छोड़कर जोधपुर की जेठ की गर्मी का स्वाद चखने जोधपुर आ गये हैं। स्टेट कौंसिल के दो दल की रस्सा-खिंचाई साफ़-साफ नज़र आने लग गई है।

नागरिक स्वाधीनता

नरेन्द्र-मंडल की घोषणा के बाद तुरन्त मारवाड़ लोक-परिषद् ने कुछ क़ायदे क़ानूनों को जो नागरिक स्वाधीनता में बाधक हैं, हटाने के लिए महाराजा साहब जोधपुर को प्रार्थना की थी। महाराजा साहब ने उक्त प्रश्न पर सहानुभूति के साथ विचार करने का वादा किया था और उन्होंने काग़ज़ात सर डोनेल्ड के पास भेज दिये। सर डोनेल्ड ने उन पर कोई क़दम नहीं उठाया है। शायद इंस्पेक्टर जनरल पुलिस ने, जिनका सर डोनेल्ड पर काफ़ी दबदबा है, इस मामले को खटाई में पड़े रखने की सिफ़ारिश की है। सर डोनेल्ड ने बम केस के कैदी श्री० जोरावरमल को छोड़ने के बारे में बाबू श्री प्रकाशजी को वादा किया था, पर बाद में इन्स्पेक्टर जनरल के कारण उन्हें नहीं छोड़ पाये। यद्यपि उसी केस के दूसरे सभी कैदी छोड़ दिये गये हैं। और हिन्दुस्तान में तो एकदम नया-सा वातावरण बनने जा रहा है। इन्हीं इन्स्पेक्टर जनरल की राय से "दान" के नाम पर पाली मिल्स और कपड़े के व्यापारियों से बीस लाख रुपये की रिश्वत स्टेट द्वारा ली गई है। इस आरोप को सरकार ने मंजूर भी किया है, पर वह इस लेन-देन के सम्बन्ध में अभी कोई बयान नहीं निकाल रही है।

खाद्य-व्यवस्था

खाद्य-व्यवस्था के मामले में महाराज जोधपुर की इच्छा के बावजूद भी लोक-परिषद् का सहयोग नहीं लिया गया है। लोक-परिषद् ने अपनी योजना सरकार को दी है। पता नहीं इस खाद्य-नियन्त्रण-योजना का क्या होता है।

* * *

लखनादौन से गोरक्षा प्रचार-विभाग के मंत्री लिखते हैं—

२५ साल से गोरक्षा के क्षेत्र में प्रचार एवं गो-साहित्य प्रकाशन का कार्य करते हुए संस्था इस नतीजे पर पहुँची है। गो-वध के राष्ट्रीय पाप को देश में बनाये रखने में जहाँ विधर्मियों और विदेशियों का हाथ है, वहाँ हिन्दू-जाति भी इस पाप के लिए कम ज़िम्मेवार नहीं। दीर्घ-कालीन अनुभव बताता है। सौ में नब्बे शिखा-सूत्रधारी हिन्दू कसाई गौयें बेचते हैं। उनकी दलाली करते हैं। लम्बे सूद पर उन्हें बड़ी-बड़ी रक़में देते हैं नकली घी के कारखाने खोलकर असली घी को खतम कर रहे हैं। जिस रोज हिन्दू-जाति इस घृणित धंधे से अपना हाथ खींच लेगी उस रोज कसाई और कसाईखाने अपने आप समाप्त हो जायेंगे गो-वध बन्द कराने की सफल योजना है। वधिकों से सम्पर्क न रखने के लिए हिन्दुओं को प्रतिज्ञाबद्ध करना। इसी योजना को देशव्यापी बनाने और इसका ग्राम-ग्राम में प्रचार करने के लिए संस्था ने गो-रक्षा के महत्त्वपूर्ण प्रतिज्ञा-पत्र बड़ी संख्या में छपाये हैं। और उन्हें सर्वसाधारण तक अपने व्यय से पहुँचाना निश्चित किया है। जो गो-प्रेमी क्रियात्मक सहयोग देना चाहते हैं, वे अपनी योजना के अनुसार शीघ्र मँगा लेवें।

—संवाददाता

* * *

सागर में मध्यप्रान्त के प्रधान मंत्री श्री रविशंकर शुक्ल ता० १८ को महाकोशल विश्वविद्यालय की कार्यवाही पूर्ण कराने के लिए सागर पधारे। ता० १९ को प्रातःकाल सरस्वती वाचनालय के सामने झंडा वंदन हुआ तथा वहीं आपने कांग्रेस जनों से भेंट की। रात्रि को ८ बजे मोटर स्टैंड पर जिला कांग्रेस की ओर से एक आमसभा हुई। व्यापारी मंडल, म्युनिसिपल कमेटी तथा कोरी-समाज की ओर से आपको एक मानपत्र दिया गया। आपने विश्वविद्यालय के लिए नगर की जनता से ६५ लाख की अपील की। आपके भाषण का मुख्य अंश यह था—

"४२ के भारत छोड़ो" प्रस्ताव से सरकार ने कांग्रेस की शक्ति को कुचलना चाहा। पर आज सर्वत्र कांग्रेस की विजय होने के कारण सरकार समझौते पर उतर आई है। आज देश का शासन कांग्रेस के हाथ है। पर हम दुश्मन के क़िले में बंद हैं। पर हम चाहते हैं कि जनता में सहयोग, संगठन व अनुशासन क़ायम रहे। तभी कुछ कर सकेंगे। अन्न, वस्त्र, शक्कर, तेल आदि का कष्ट दूर करने के लिए व्यापारियों और अधिकारियों को कालाबाज़ार मिटाना होगा अन्यथा वे दंडित होंगे।"

चक्षुदानयज्ञ में ३५७ रोगियों का मोतियाबिन्दु, फूला आदि का आपरेशन हुआ। डा० जमनादास 'कपिल' व शान्तिस्वरूप का कार्य सराहनीय रहा।

—लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

* * *

अंजलि-शहीद-विशेषांक

"प्रगतिशील राष्ट्रीय एवं युगान्तरकारी हस्तलिखित पत्रिका 'अंजलि' का "शहीद-विशेषांक" १३ जून ४६ को प्रकाशित होने जा रहा है। इस अंक में राष्ट्रीय रचनाएँ (सन् ५७ एवं अगस्त-क्रान्ति-विषयक मौलिक और यथार्थ साहित्य) कहानियों एवं लेखों के रूप में रहेगी। क्रान्तिकारी कविताओं को भी स्थान दिया जायगा। राजनीति एवं क्रान्ति पर विशेष परिश्रम से लिखे हुए लेख ही लिए जायेंगे। प्रत्येक स्वीकृत रचना पर उचित पुरस्कार दिया जायगा। हमें विश्वास है कि जिस भाँति "अंजलि" के (१) बापू अंक (२) कस्तूर-बा अंक और (३) रवीन्द्र-अंक के लिए लेखक भाई-बहनों ने सहयोग देकर आज उसे राष्ट्रीय चेतना का उज्ज्वल प्रतीक बनाया है, उसी भाँति इस समय भी अपनी अमूल्य क्रान्तिकारी कलाकृतियों द्वारा उसकी शृङ्गार-असाधना में पूर्ण योगदान देंगे।

—कुमार साहू "सिद्धान्तभास्कर"
सम्पादक-'अंजलि'
"शान्तिनिकेतन साहित्य-मन्दिर" धरमपेठ, नागपुर, सी० पी०

कलाकार चाहिए

प्रसिद्ध संस्कारी नाटक कम्पनी के लिए कुशल, स्त्री, पुरुष गायक और वाजंत्रकार चाहिए। वेतन योग्यतानुसार

श्री प्रभात कला मण्डल

भावनगर (काठियावाड़)

टिहरी (रियासत) के ... र्थियों में असंतो...

क्या कालिज पुलिस-...

गढ़वाल विद्यार्थी संघ की ... बहुत सोच-विचार और स्थिति ... करके निम्न वक्तव्य प्रकाशित ... कर्त्तव्य समझती है; और ... कान्फरेंस के सभापति पंडित ... संयुक्त-प्रान्त के शिक्षा-मंत्री ... नन्द जी से अनुरोध करती है ... न कर रियासत टिहरी के ... की अत्यन्त खेदजनक ... सँभालें और बेचारे असहाय ... की सहायता करें—टिहरी ... हाईस्कूल से इन्टरमीडिएट ... स्थापना सन् १९४०-४१ में ... परन्तु उसकी सफलता व ... सांस्कृतिक, भौतिक, नैतिक और ... उन्नति का कुछ भी विचार न ... की बात है कि टिहरी, सरकार ... रियासत में प्रथम इन्टर ... लिए कोई योग्य प्रिन्सिपल न ...

स्कूल के कालेज होते ही ... नाम जड़ से मिट गया। सभा ... बिलकुल समाप्त हो गई, ... नहीं सकते, देख नहीं सकते ... ही सकते हैं। यहाँ तक कि ... के अतिरिक्त विद्यार्थी और ... पत्र कालेज में न मँगवा सकते ... पढ़ ही सकते हैं। अपने ... बाहरी प्रान्तों के कालेजों व ... में पढ़नेवाले विद्यार्थियों के ... करते, मिलते-जुलते देखकर ... पुलिस परेशान हो जाती ... न्दियों पर पाबन्दियाँ लग जाती ... में आये विद्यार्थियों के पीछे ... सख्त निगरानी हो जाती है।

इस समय हम अधिक ... जाकर संक्षेप में कालेज का ... रियासत की जनता, सरकार और ... आँखों के सामने रखते हैं। हम ... हैं कि टिहरी नरेश अपने ... इंटरमीजिएट कालेज और ... की ओर व्यक्तिगत ध्यान देने ... करेंगे और संस्था को गढ़े में ... बचायेंगे।

साथ ही निवेदन है कि प्रिन्सिपल ... शीघ्र टिहरी स्कूल कालेज के ... लागू "काले-क़ानून" को खतम ... जाता है कि एक असभ्य शिक्षक ... से तंग आकर विद्यार्थियों ने आवाज़ ... जिसके फलस्वरूप टिहरी के ... आजकल इन गर्मियों के दिनों में ... बाद सायंकाल घर से निकलने ... नहीं। प्रिन्सिपल महोदय को ... बदलनी आवश्यक है और पुलिस ... टिहरी सरकार के शिक्षा-विभाग ... उचित ध्यान देना नितान्त ...

सच्चा सेवक

छोटा-सा नाटक है ... के गण सुन्दरता से दिखाये ... नाटक अभिनय करने के लिये ... है और खेला भी गया है। स्कूलों ... समय छात्र इसका निर्दोष ... प्रशंसा पाते हैं। मूल्य केवल ... आने।

मैनेजर
बुकडिपो इंडियन प्रेस, लिमिटेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूधवाला सदा ही देर से आता है।
और गृहस्वामिनी के लिए एक समस्या उपस्थित
हो जाती है। परन्तु एक चतुर गृहस्वामिनी प्रयत्न
करती है कि उसके घर में कुछ ऐसा हो जाकि
महमानों और घरवालों को दिया जासके। यह
जी. जी. फलपेय या फलशर्बत पेश करती है
आप विश्वास रखिए कि यह
अधिक सत्कार के लिए पूर्ण है।
फलपेय – नाबू, माल्टा, आम, नाबू कांडियल,
नींबू वाली।
फल शर्बत—मतरा, केला, मिक्सडफ्रूट, नीबू,
फालसा, स्ट्रोबेरी।

GG

जी. जी. फूट प्रिजर्विंङ फैक्टरी आगरा

जी. जी. इन्डस्ट्रीज़

जो० जो० सेल्स डिपो :—
मैसर्स गिरधरलाल बकील जनरलगंज कानपुर
शाखा : देहली : कलकत्ता : ग्वालियर : अजमेर : बरेली।

रोना

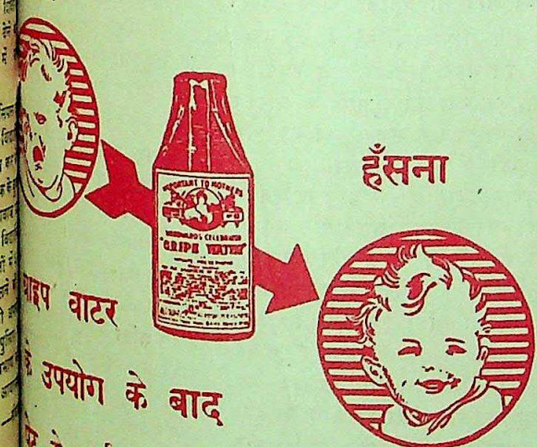

हँसना

वुडवर्ड्स ग्राइप वाटर
के उपयोग के बाद
पेट के दर्द व खट्टे डकार से
छुटकारा मिलता है।

WOODWARD'S
GRIPE WATER
– keeps baby well

"रोता हुआ बालक" ही असली बुड वर्ड ग्राइप वाटर की
आवश्यकता है, इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए इसको
अवश्य क्रय करें।

W. WOODWARD LTD., LONDON, ENGLAND.

बालसखा का नया वार्षिकांक

छप रहा है। पाठक धैर्य रक्खें।

ग्राहकों के अनुरोध से हमने इस वर्ष भी बालसखा का वार्षिकांक निकालने का निश्चय किया है। इसमें बहुत से चित्र, कविताएँ, कहानियाँ, बढ़िया लेख और उपयुक्त सामग्री रहेगी। पृष्ठ-संख्या ३०० से ऊपर। यह अङ्क बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होगा। यह मासिक बालसखा के १२ अंकों से पृथक् है। मूल्य ३), मासिक बालसखा के ग्राहकों के लिए रियायती मूल्य २॥)

रियायती मूल्य के लिए अपना ग्राहक-नंबर अवश्य लिखिए।

मैनेजर, बालसखा, इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

AC 68

खाद्य का राशन प्रत्येक के लिये बराबर विभाजन

★ प्रत्येक की पूरी आवश्यकताओं के लिये देश में पर्याप्त खाद्य नहीं है। जो कुछ उपलब्ध है उसे सबमें बराबर बांटना चाहिये।

★ राशनिंग ही एकमात्र तरीका है जो कमीवाले क्षेत्रों में रहने वाले आपके भाइयों की अभाव एवं दुर्भिक्ष से रक्षा कर सकता है। इसमें धनिक या गरीब के प्रति कोई पक्षपात नहीं है, बल्कि प्रत्येक के लिये उचित मूल्य पर पर्याप्त खाद्य निश्चित है—आप अपने हिस्से के लिये विश्वास कर सकते हैं।

नागरिक एवं ग्राम्य क्षेत्रों में अब लगभग १२ करोड़ व्यक्तियों के राशन की व्यवस्था है। खाद्य कम है इसलिये दूसरे नगरों एवं क्षेत्रों में भी तेजी से राशन-व्यवस्था को विस्तृत किया जा रहा है।

★ आपके बचाव के लिये बनाये गये राशन के नियमों का यदि आप ईमानदारी से पालन करें और योग्य नागरिक की भांति अपना कर्तव्य करें तो अकाल के संकट से लड़ने में आप सरकार की सहायता करेंगे।

उचित मूल्य पर (R) सबके लिये भोजन

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौमुदी—श्रीयुत बालकृष्णराव आई० सी० एस० की कमनीय कविताओं का संग्रह। मूल्य ॥≡) ग्यारह आने।

मेघदूत—राजा लक्ष्मणसिंह द्वारा अनुवादित तथा बाबू श्यामसुन्दरदास द्वारा संपादित मेघदूत का सर्वोत्तम संस्करण। मूल्य ॥।-) तेरह आने।

किंकिणी—इस पुस्तक के लेखक श्री राजाराम श्रीवास्तव की उत्तमोत्तम फुटकर कविताओं का संग्रह किया गया है। कविताओं की भाषा इतनी मधुर और कल्पना की उड़ान इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षण के लिए उसमें अपनी सुध-बुध भूले बिना नहीं रहता। मूल्य १।-) १ रुपया पाँच आने।

लक्ष्मणशक्ति—इसी लेखक द्वारा रचित एक खण्ड-काव्य। इसकी कथा का आधार रामायण का युद्ध काल है जिसमें लक्ष्मण मूर्छित हो गये थे। भाषा सुलझी हुई और मुहाविरेदार है। मूल्य ॥।) बारह आने।

हल्दीघाटी—(इस महाकाव्य पर दो हजार रुपये का देव-पुरस्कार मिला है।) लेखक, श्रीयुत श्यामनारायण पाण्डेय। इस पुस्तक में हल्दीघाटी के प्रसिद्ध युद्ध की पवित्र कहानी का वर्णन बड़े ही अनूठेपन से फड़कती हुई कविता में किया गया है। पुस्तक पढ़ते समय हल्दीघाटी के युद्ध की सभी बातें आँखों के सामने सिनेमा-फ़िल्म की तरह खिंच जायँगी। मूल्य २॥।) दो रुपये बारह आने।

नव-सतसई-सार—गोस्वामी तुलसीदास से लेकर श्री वियोगी हरि तक की नव सतसइयों का सारांश इस पुस्तक में दिया गया है। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

सरस सुमन—इस पुस्तक में पवन, भानु, चपला, जुगनू और वसन्त पर पाँच सुन्दर कवितायें संगृहीत की गई हैं। कवि प्रकृति-निरीक्षण में कितना कुशल है, इस बात का परिचय प्रत्येक कविता के द्वारा प्राप्त होता है। मूल्य ॥≡) ग्यारह आने।

गंगावतरण—हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कवि श्रीयुत जगन्नाथदास रत्नाकर का लिखा हुआ यह एक खण्ड-काव्य है। संयुक्तप्रान्त की हिन्दुस्तानी एकाडमी ने इसकी उत्तमता पर मुग्ध होकर रत्नाकर जी को ५००) का पुरस्कार दिया है। मूल्य १।) एक रुपया चार आने।

उद्धवशतक—श्रीकृष्ण के वृन्दावन से मथुरा चले जाने पर गोपिकाओं ने अपनी वियोग-व्यथा का जो संवाद उद्धव के द्वारा उनके पास भेजा था, उसी का वर्णन स्वर्गीय रत्नाकर जी ने अपनी अनूठी कविताओं के द्वारा मौलिक ढंग से किया है। मूल्य २) दो रुपये।

माधुरी—श्रीयुत नत्थाप्रसाद जी 'मिलिन्द' की कमनीय कविताओं का संग्रह। मूल्य ॥≡) ग्यारह आने।

सुबहवतन—स्वर्गीय पंडित व्रजनारायण 'चकबस्त' लखनवी की देव-नागरी अक्षरों में लिखी गई उर्दू कविताओं का संग्रह। उर्दू न जाननेवाले पाठकों की सुविधा के लिए कविताओं में आनेवाले कठिन शब्दों का अर्थ भी दिया गया है। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

मैनेजर—(बुकडिपो) इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

Estd. 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S. १०) H.M.B.S. १५) H.M.D.S. २५)। पुस्तक—अ० पारिवारिक १) बायोकेमिक १) १००० रेडलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्सनारियाँ १॥) आर्गनन १), फार्माकोपिया १॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायगी। डा० ख० माफ—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≡) ड्राम। आउन्स ॥) घरेलू बक्स ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.)

श्री रत्नगिरिजी का अद्भुत चमत्क

जिसने समस्त संसार को चकित कर दिया

रक्त, बल, वीर्य्य, उत्साह तथा उमंग ही जीवन सफल बना सकती है

ध्यान देने योग्य अमूल्य उपहार

अपूर्व काया पलट (रजिस्टर्ड)

निस्वार्थ संसार सेवा भारतीय महात्माओं ने औषध विज्ञान को अपनी महान् खोजों और अमूल्य रत्नों से अलंकृत किया है आधुनिक चिकित्सक मर्ज और मरीज जब दोनों को लाइलाज घोषित करके शर्मिन्दा नहीं होते वहाँ इन्हीं महात्माओं की बिना दाम की जड़ी बूटियाँ मुर्दों को भी जिला सकने में समर्थ हुई हैं। ऐसी सच्ची घटनायें आये दिन एक न एक पढ़ने और सुनने में आया करती हैं।

बीस वर्ष पूर्व कल्लाती पहाड़ी पर विचरण करनेवाले स्वामी रत्नगिरिजी महाराज की सेवा एक बूढ़ा ग्वाला करने लगा। योगिराज को एक दिन उस वृद्ध की कमजोरी पर दया आ ही गई और उन्होंने निम्नलिखित योग की ६ मात्राएँ उस बूढ़े को दीं। नासमझी के कारण छहों मात्राएँ एक साथ खा जाने से उस वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आगई और रत्नगिरिजी के परिश्रमपूर्वक इलाज करने पर बुढ़ापे के बावजूद भी उसे तीन विवाह करने पड़े। इस पर राजा रईस, नवाब और रसिकजन महान् योग को जानने के लिए आतुर हो उठे। नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयात मोहम्मद खाँ साहब ने बाबाजी की बहुत सेवा करके इसे प्राप्त कर लिया और लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्मा जी ने इसे प्रथम तथा दो अन्य लिखकर तीनों से उत्तम वाजीकरण बतलानेवाले को एक हजार रुपये का नक़द इनाम देने की घोषणा की। इसे आज बीस साल के लगभग हो गये किन्तु अभी तक कोई पुरस्कार विजय नहीं कर सका। मथुरा के ख्यातिप्राप्त बा० हरिदास जी ने इसे चिकित्सा चन्द्रोदय में छपवाया और हमने भी स्वयं बनाकर सैकड़ों दुर्बल, नपुंसक, वीर्य्यविकारी रोगियों पर बरता। तत्काल लक्षण-चमत्कार देख जन-साधारण के लाभार्थ अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपवा दिया। आप भी बनाकर लाभ उठायें।

योग—शुद्ध बुरादा फौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत भल्ल १ तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा, एक घंटा घृत कुमारी में घोटकर मिट्टी के कुज्जे में मजबूत बंद कर पाँच सेर कंडों में फूंके। दुबारा एक तोला हरताल बकी शुद्ध, १॥ माशा कपूर शुद्ध में, तीसरी बार गन्धक आमलासार शुद्ध १ तोला, कपूर, १ माशों में, चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद १ तोला, कपूर १॥ माशा को ऊपर की भाँति १६ आँच दे। फिर उसको कढ़ाई में डालकर बराबर इन्द्रबधू डाल दे। और नीचे आग जलावे, जब इन्द्रबधू जलकर राख हो जावे तो हवा देकर उड़ा दें। बस अपूर्व काया पलट तैयार है। चार चार चावल सायं मक्खन मलाई के साथ खायें और मिश्री मिला दूध पीवें।

मथुरा के हरिदास जी लिखते हैं इस योग के सेवन से एक हफ़्ते में एक आदमी का वजन चार पौंड बढ़ गया, दूसरे का चेहरा लाल सुर्ख हो गया। भूपाल के वैद्यराज पं० बालकृष्ण शर्मा ने ३५० रोगियों पर बरता और आशा से अधिक गुणकारी पाया। रत्नाकर सम्पादक जी श्री छोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य ने गृह-चिकित्सा पथप्रदर्शक में छापा कि इतना प्रचण्ड गुणकारी योग दूसरा नहीं देखा। श्री धर्मेन्द्र विद्यावतंश सिद्धान्त शास्त्री अधिष्ठाता गुरुकुल बरेली जिला मुजफ्फरनगर [illegible] हैं—"अपूर्व काया पलट" [illegible] सेवन कर रहा हूँ, जैसी प्रशंसा [illegible] है। बहुत लाभ हुआ। श्री [illegible] जैन आयुर्वेद शास्त्री मालिक [illegible] औषधालय, वाह (आगरा) [illegible] कि मैंने २२५ रोगी, अपूर्व काया [illegible] जो कि धातु-विकार, नपुंसकता [illegible] रक्त-विकार आदि रोगों से [illegible] स्वस्थ किये।

हमारा दावा है कि केवल [illegible] सेवन से शरीर में रक्त दौड़ता [illegible] २१ दिन में चेहरा लाल [illegible] तरह चमकने लगेगा। ४० दिन [illegible] सकता, मधुमेह, डायब्टीज [illegible] हो जाती है। स्त्रियों के प्रदर [illegible] धारण-शक्ति आती है। जिगर [illegible] शक्ति बढ़ाकर भूख दूनी करता [illegible] तिल्ली की खराबी, खांसी, [illegible] बदन दुखना, खून का पतलापन, [illegible] पीलापन, चिनगारी सा उड़ने [illegible] बार-बार थूक गिरना, दमा [illegible] की कमजोरी तुरन्त दूर कर [illegible] का संचार करता है। जाड़ा, [illegible] सभी मौसमों में एक-सा लाभ [illegible] योग भली भाँति समझाकर [illegible] भी यदि आप न बना सकें तो [illegible] १६ आँच दी हुई ४० दिन की [illegible] ६॥।≡) डाक खर्च मय [illegible] कोई बात समझ में न आवे तो [illegible] कार्ड भेजकर उत्तर मंगा लें।

पता—रूपबिलास कम्पनी [illegible] (रसायनशाला) नम्बर ४८१ [illegible]

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दशदूत

रविवार, ९ जून, १९४६

रविवार, ९ जून, १९४६ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 9th June, 1946

वनवास में कवि ने रामचन्द्र जी के वनवास का अनोखा वर्णन किया है। कवि राजाराम चित्रकूट के पड़ोसी हैं और वहीं पर वनवा की अनेक मुख्य घटनाएँ हुई थीं। इस कारण यह 'वनवास' अपने ढंग की एक ही पुस्तक है। इसमें श्री रामचन्द्र जी के वनवास सम्बन्ध रखनेवाली, दशरथ के प्राण-त्याग, भरत के द्वारा कैकेयी की भर्त्सना, अयोध्या लौटने के लिए श्री रामचन्द्र जी से भरत आग्रह करने तथा लक्ष्मण के द्वारा शूर्पणखा की नाक काटने आदि की घटनाओं का वर्णन है। मूल्य ॥।≈) चौदह आने।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र

मूल्य २ आना

ब्रिटिश साम्राज्य पराजय की ओर साम्यवादी नेता आचार्य नरेन्द्रदेव

कांग्रेस सरकार की महिला- विजयलक्ष्मी पंडित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौमुदी—श्रीयुत बालकृष्णराव आई० सी० एस० की कमनीय कविताओं का संग्रह। मूल्य ॥≡) ग्यारह आने।

मेघदूत—राजा लक्ष्मणसिंह द्वारा अनुवादित तथा बाबू श्यामसुन्दरदास द्वारा संपादित मेघदूत का सर्वोत्तम संस्करण। मूल्य ॥।-) तेरह आने।

किंकिणी—इस पुस्तक के लेखक श्री राजाराम श्रीवास्तव की उत्तमोत्तम फुटकर कविताओं का संग्रह किया गया है। कविताओं की भाषा इतनी मधुर और कल्पना की उड़ान इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षण के लिए अपनी सुध...

Estd. 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S. १०) H.M.B.S. १५) H.M.D.S. २५)। पुस्तक—अ० पारिवारिक १) बायोकेमिक १) १००० रेडलाइन १) ... ॥) आर्गेनन १), फामा-

...पने माता-पिता ... हीन व्यवहार ... चित्र अंकित किया ... मिटेड, इलाहाबाद

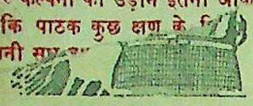

...लिये...

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

आज से ही शुरू किजिए, सर्वत्र मिलता है।

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली तलुवों और आंखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग में आग सी जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, जड़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढ़ा बालक वृद्ध, पुरुष स्त्री सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक हानिरहित है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निस्संकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके शीतल, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

पर्ल कम्पनी
आर्योषधी
का रखाना
बम्बई २७

यू० पी० प्रतिनिधि दोसर एण्ड को०, बिरहना रोड, कानपूर।

खरीदने से पहले इस ट्रेड मार्क को देखो

वुडवर्ड के ग्राइप वाटर के बोतल सदैव साथ रक्खें। यह बच्चों को तन्दुरुस्त रखता है!

WOODWARD'S GRIPE WATER
keeps baby well

"सब से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर का पहिचान है, इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 105—117 W. WOODWARD LTD. LONDON, ENGLAND.

श्री सी. आर. श्रीनिवासन

सम्पादक "स्वदेशमित्रण" मद्रास

लिखते हैं

"प्रत्येक व्यक्ति जो कुछ बचत करता है केवल अपनी ही भलाई नहीं करता बल्कि दूसरों का भी उपकार करता है यदि वह उस बचत को सुचारु रूप से उपयोगी मद में लगाये। नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स देश सेवा का एक उत्तम साधन हैं। मैंने स्वयं ये ख़रीदे हैं और दूसरों को भी निस्संकोच ख़रीदने का परामर्श देता हूं।"

C. R. Srinivasan

संक्षिप्त विवरण

(१) आप ५), १०), ५०), १००), ५००), १०००) या ५०००) के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) एक व्यक्ति ५०००) से अधिक मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स नहीं ख़रीद सकता। ये इतने उपयोगी हैं कि इनका राशन करना ही उचित समझा गया है। हां दो व्यक्ति मिलकर १०,०००) के सर्टिफिकेट्स मोल ले सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है।

(४) इस प्रकार अवधि पूरी होने पर ४-१/६% वार्षिक ब्याज मिलता है।

(५) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं ...

(६) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं। (५) का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष ... ही भुनाया जा सकता है। परन्तु ... विक लाभ इसी में है कि १२ ... पहिले इन्हें न भुनायें।

(७) जिनकी बचत थोड़ी है वह ... ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्पस ख़रीद ... ५) के स्टैम्पस जमा होने पर ... नल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट मिल जाते हैं।

(८) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्पस ... सरकार द्वारा अधिकृत एजेन्ट ... सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

आप अपनी बचत से ५०% लाभ उठाइये

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष ८, संख्या ४१] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, ९ जून, १९४६

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

...गठबंधन हो तो ऐसा हो। इंगलैंड ...टोरी पार्टी किसी न किसी से ...करती ही रहती है। ठीक ...अगर वह गठबंधन न करे ...कैसे रहे?— मिस्टर चर्चिल ...तक मुस्लिम लीग से गठ-...कर लिया था, किन्तु उसे खसकते ...अब चर्चिल दलने भारत में अम्बेडकर ...नया गठबंधन किया है। पता ...टोरी-पार्टी ने मुस्लिम लीग को ...दिया था नहीं, इसलिए समझ में ...आता कि एक से बिना गठबंधन तोड़े ...गठबंधन कैसे किया जा सकता ...लेकिन टोरी-पार्टी तो सब कुछ कर ...है। वह एक क्या वक्त पड़ने पर ...मेंडे या उपेक्षित दल हैं, उन सभी ...गठबंधन कर सकती है। अब ...अम्बेडकर को क्या भय है? मुस्लिम ...गठबंधन से आज फ़ायदा उठाने जा ...इसलिए अगले धावे में अम्बेडकर-...फ़ायदा उठाने को तैयार रहना ...अभी मजदूर मंत्रिमंडल है, जरा ...मंत्रिमंडल तो आने दीजिए, फिर ...अम्बेडकर-दल का पैंतरा!

* *

...प्रान्तों में जब से कांग्रेस मंत्रिमंडल ...हुए हैं, और ब्रिटिश मंत्रिदल जब ...आया और वार्तालाप के पश्चात् ...उसने अपनी योजना उपस्थित की ...भारत के विभिन्न प्रान्तों में— ...ऐसे प्रान्तों में जहाँ कांग्रेस ...स्थापित हैं, साम्प्रदायिक दंगे ...हैं। आखिर यह क्यों? क्या ...साम्प्रदायिक दंगे ऐसे ही वक्त ...में बैठे थे? इसके साथ हड़-...की तो मानो आँधी आ गई है। जान ...कि कांग्रेस मंत्रिमंडलों की इन्तजार ...साहबान भी बहुत दिनों से कमर ...बैठे थे। क्या सचमुच आज ...और साम्प्रदायिक दंगे इसलिए ...हैं कि कांग्रेस शासन अच्छा नहीं ...राम जानते हैं कि इन हड़तालों ...के पीछे भी एक राज तो है ही। ...की हमारे कम्यूनिस्ट भाई और ...दंगों के हाली-मवाली अच्छी ...हैं। सिवा उनके जान ही ...है?

* *

...में सवर्ण हिन्दुओं और हरि-...दंगा हो गया। ठीक भी है, ...नहीं तो ब्रिटिश मंत्रिदल ...कैसे होगा कि अम्बेडकर ...भारत के अछूत नेता हैं और ...केन्द्रीय सरकार में जगह ...चाहिए। इसीलिए तो ...ऐन मौके पर अम्बेडकर-...देने को तैयार हो गये हैं! ...मंत्रिदल मुस्लिम लीग की ...कर रहा है कि वह नई बननेवाली केन्द्रीय सरकार में शामिल हो जाये तो अम्बेडकर-दल ने कौन-सा कुसूर किया है कि उसकी पूछ तक नहीं हो रही है! इसी सबके लिए तो बंबई में चिल्ल-पों मचाई गई है। डाक्टर अम्बेडकर-दल ने अब तक हमारी सरकार बहादुर का बड़ी बहादुरी के साथ, साथ दिया लेकिन हलुआ खाने के वक्त वह दाखिलदफ़्तर किये जा रहे हैं, सचमुच यह बड़े अफ़सोस की बात है, और क्या कहा जाये?

* * *

काश्मीर में भी आजकल काफ़ी हल्ला-गुल्ला मचा हुआ है। 'शेरे काश्मीर' शेख अब्दुल्ला पर मुकदमा होने जा रहा है। अखिल भारतीय देशी राज्य-प्रजा-परिषद् तथा पंडित जवाहरलाल नेहरू की यह नीति है कि देशी राज्य जनतंत्र के अनुकूल आचरण करें लेकिन काश्मीर में तो 'तख्ता उलटने' की ही पूरी कोशिश हो रही है। 'काश्मीर छोड़ो' नारे का मतलब यह है कि काश्मीर नरेश राज्य छोड़कर चले जायें! अपने राम की राय में 'भारत छोड़ो' नारे का यह बढ़िया मतलब लगाया गया है। महात्मा गांधी ने 'भारत छोड़ो' का नारा लगाया अँगरेजों के खिलाफ़ और शेख अब्दुल्ला काश्मीर में नारा लगा रहे हैं, काश्मीर नरेश के विरुद्ध। क्या खूब? क्या अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद का आदर्श यही है? अगर 'काश्मीर छोड़ो' के नारे के वजन पर और राज्यों में इसी तरह के नारे लगने शुरू हुए तब फिर रियासतों में प्रजातंत्र की अथवा जनतंत्र-वादी सरकार की क्या जरूरत? बाँट लें सब मिलकर चप्पा-चप्पा जमीन!

* * *

ब्रिटिश मंत्रिदल भारत को स्वराज्य देने आया तो है ही, इसमें जब महात्मा गांधी तक को कोई शक नहीं है तब भला अपने राम को कैसे हो सकता है? मंत्रिदल ने और चाहे कुछ किया हो या नहीं लेकिन प्रान्तों की गुटबाजी का उसने जो नाटक रचा है, वह है बेजोड़! इससे जान पड़ता है कि मजदूर मंत्रिमंडल ने किसी ऐसे-वैसे घाट का पानी नहीं पिया है। पंजाब और बंगाल के साथ उनके पड़ोसी प्रान्तों का गठबंधन कर दिया है। आसाम बंगाल से और सीमाप्रान्त पंजाब से गठबंधन करने से दूर भाग रहे हैं, लेकिन मंत्रिदल ने जो लिख दिया सो लिख दिया। ब्रह्मा की वाणी में परिवर्तन नहीं हो सकता। भारत में प्रान्तों के तीन गुट आपस में हाथा-पाई मचाते रहें और जानबुल साहब दूर से तमाशा देखते रहें। जानबुल जायेंगे कभी न कभी जरूर भारत से, लेकिन अपनी निशानी छोड़कर जायेंगे। देखना है आखिर दिन तक स्वराज्य देते-देते ब्रिटिश सरकार क्या क्या गुल खिलाती रहती है?

* * *

अखिल भारतीय रेलवे कर्मचारी-संघ ने रेलवे अधिकारियों को नोटिस दिया है कि अगर उनकी माँगें पूरी न की गईं तो वह हड़ताल कर देंगे। रेलवे-विभाग के सबसे बड़े औलिया सर बेंथल ने कहा है कि इस तरह की हड़ताल ग़ैर-क़ानूनी होगी। अपने राम की समझ में नहीं आ रहा है कि अगर हड़ताल हो गई तब क्या होगा? हड़ताल क़ानूनी होगी या ग़ैर-क़ानूनी इसका निबटारा तो बाद में भी होता रहेगा लेकिन हड़ताल ही क्यों होने पाये, इसका निबटारा तुरन्त क्यों नहीं किया जाता? इसकी सिर्फ़ एक दवा है, और वह है केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना। सर एडवर्ड बेंथल, दिल्ली में विराजमान मंत्रिदल तथा वाइसराय से क्यों नहीं कहते कि केन्द्रीय सरकार भारतीय नेताओं के हवाले कर दिया जायें, और वही हड़ताल का बवाल सँभालें? देखना है ऐन मौके तक सरकार की बुद्धि ठीक होती है या हड़ताल के हल्ले में रेलवे के ठप्प होने की नौबत आती है।

* * *

कहा जाता है कि अमरीका, ब्रिटिश और रूस में भीतर ही भीतर तनातनी हो रही है। खैर यह कोई नई बात नहीं है। तनातनी तो होती ही रहती है। अगर तनातनी ज्यादा बढ़ी तो संयुक्तराष्ट्र संघ का दरवाजा तो खुला ही है। वहाँ पहुँचकर सब अपने-अपने भाग्य का फ़ैसला कर लेंगे।

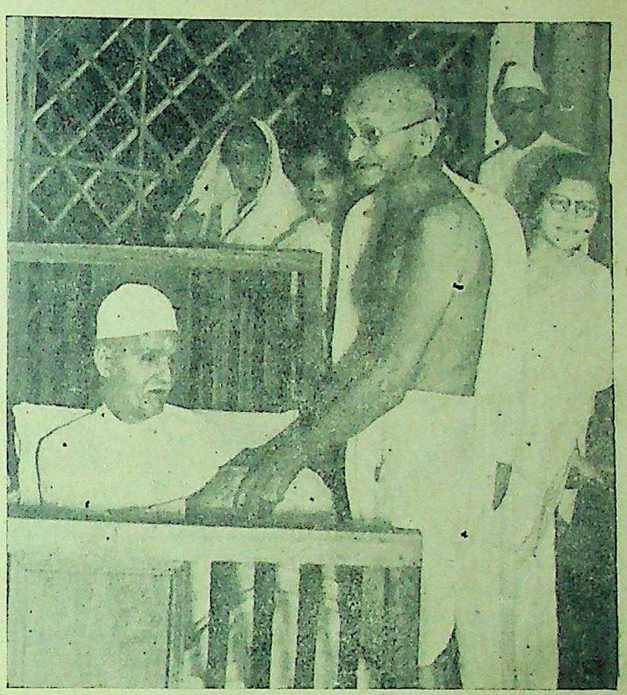

दिल्ली में महात्मा गांधी और पूज्य पंडित मदनमोहन मालवीय का मिलन।

भावी राष्ट्रपति पंडित नेहरू।

राष्ट्रपति जवाहरलाल!

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी० एल० एल० बी०

गीता-मूर्ति वृद्ध बापू के
नये महाभारत के अर्जुन।
आज तुम्हारी ध्वनि-टंकारों
के भीषण गर्जन तर्जन सुन।
जगीं देश के शान्त ध्वस्त कण-
कण में फिर से ज्वालामुखियाँ।
विकल हो रही जो बनने को
रण में प्रलयंकर आहुतियाँ।
तुम्हीं लगा दो वन्दिनि माँ के
हेमक्रीट में रोरी चन्दन।
आज, राष्ट्र सम्राट्! कर रहा
देश तुम्हारा नव अभिनन्दन!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

राष्ट्रीय सरकार कब तक ?

राष्ट्र की आन्तरिक संकट बढ़ता जा रहा है। अन्न और वस्त्र-संकट की समस्या के हल का कोई मार्ग प्रशस्त नहीं हो रहा है। आज की भारत-सरकार भावी अकाल तथा अनाज की कमी की पूर्ति के लिए ब्रिटेन की सहायता से विदेशों से अन्न की भिक्षा माँगती जा रही है। वायदे भी हो रहे हैं लेकिन अन्न जब भारत पहुँच जाये और जल्दी पहुँच जाये तभी सन्तोष की साँस ली जा सकती है, अन्यथा केवल आशावाद का ही अब एकमात्र सहारा रह गया है। ब्रिटिश मजदूर-दल की ओर से जो मंत्रिदल भारत आया है, उसके वक्तव्यों से अब तक यही अनुमान होता था कि केन्द्रीय सरकार में शीघ्र ही परिवर्तन होगा और बागडोर जनता के प्रतिनिधियों के हाथों में सौंपदी जायेगी। किन्तु अब जान पड़ता है कि ब्रिटिश मंत्रिदल बिना दलदलवाली राजनैतिक गुत्थी सुलझाये आगे क़दम बढ़ाने के लिए तैयार नहीं है। इससे जनता में मंत्रिदल की योजना के सम्बन्ध में कुछ पेचीदे अनुमान लगाये जा रहे हैं। उचित तो यह था कि जब मंत्रिदल केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना करने के उद्देश्य से यहाँ आया है तो उसे अविलंब इस कार्य को कार्यरूप में परिणत कर देना चाहिए था, जिससे भारतीयों को यह स्पष्ट रूप से ज्ञात हो जाता कि ब्रिटिश प्रतिनिधि दल वास्तव में भारत के संबंध एक निश्चित निर्णय करके लंदन वापस जायेगा किन्तु अब यह जान पड़ता है कि जब तक मंत्रिदल की योजना के मूल सिद्धान्तों को कुछ परिवर्तन परिवर्द्धन के साथ भारत के प्रमुख राजनैतिक दल तथा स्वयं ब्रिटिश मंत्रिदल साथ ही ब्रिटेन का वर्तमान मंत्रिमंडल स्वीकृत नहीं कर लेते तब तक भारतीय शासन में तत्काल कोई परिवर्तन होता हुआ नहीं दिखाई पड़ता। यद्यपि कांग्रेस वर्किंग कमेटी और मुस्लिम लीग वर्किंग कमेटी अभी अंतिम रूप से किसी निर्णय पर नहीं पहुँची है किन्तु लक्षण यही है कि अन्तरकालीन सरकार की स्थापना में दोनों जमातें सहयोग करेंगी।

सच तो यह है कि मंत्रिमंडल की योजना का कोई भी क्रियात्मक स्वरूप अभी नहीं प्रकट हुआ है। जब से योजना प्रकाशित हुई है, तब से उस पर विभिन्न दलों की सम्मतियों तथा देशी तथा विदेशी राजनैतिक जगत की प्रतिक्रिया का निरीक्षण किया जा रहा है। और जब तक योजना तथा विधान-निर्मात्री समिति के सुझाओं को राजनैतिक दल स्वीकार नहीं कर लेते तब तक किसी परिणाम के लक्षण नहीं दिखाई दे रहे हैं। यदि राष्ट्रीय सरकार की स्थापना केन्द्र में अब तक कर दी जाती तो बहुत कुछ आगे की उलझनों को सुलझाने में सहायता मिलती किन्तु समस्त योजना इस समय खटाई में पड़ी है। पिछले सप्ताह महात्मा गांधी ने 'हरिजन' में एक लेख लिखकर केन्द्रीय सरकार की तत्काल स्थापना के महत्त्व को प्रकट किया है। गांधी जी ने ब्रिटिश प्रस्तावों के कुछ दोषों की ओर इंगित करते हुए यह बतलाया है कि मंत्रिदल का यह पहला कर्त्तव्य था कि वह केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना करके आगे का कार्यक्रम अग्रसर करता। किन्तु प्रतिनिधिदल इस कार्य में जितनी देरी कर रहा है उतनी ही जनता की शंका भी बढ़ती जा रही है। यह ठीक है कि कांग्रेस योजना के कुछ अंशों के स्पष्टीकरण के बिना आगे क़दम न बढ़ायेगी, किन्तु केन्द्री सरकार के राष्ट्रीयकरण में वह सबसे आगे है। कांग्रेस की यह माँग नई नहीं है। महात्मा गांधी ने भी इसीलिए राष्ट्रीयकरण के महत्त्व को स्वीकार करते हुए प्रतिनिधि दल का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित किया है। इसलिए हमारी तो स्पष्ट सम्मति है कि केन्द्रीय सरकार का राष्ट्रीयकरण शुभस्य-शीघ्रं हो जाना चाहिए। ब्रिटिश मंत्रिदल की नीति की सचाई का यही सबसे बड़ा सुबूत होगा, क्योंकि केन्द्रीय सरकार के राष्ट्रीयकरण पर ही भारत का भावी भाग्य निर्भर है। इस कार्य में जितना भी विलंब होगा उतना ही प्रान्तीय शासन की गुत्थियाँ उलझती जायेंगी। केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारों का सार्वदेशिक शासन संबंधी जो एकीकरण है उसके लिए यह आवश्यक है कि केन्द्रीय सरकार जनता के प्रतिनिधियों के हाथों में सौंप दी जाये। मंत्रिदल ने जो योजना प्रस्तुत की है, उसके संबंध में विचारों के आदान-प्रदान तथा अंतिम निर्णय के लिए समय की कमी नहीं है। ब्रिटिश मंत्रिदल के इरादों की सचाई की यही सबसे बड़ी कसौटी है कि वह केन्द्र की अन्तकालीन सरकार की स्थापना में कितनी शीघ्रता करती है ? भारत का भावी भाग्य केन्द्रीय सरकार के राष्ट्रीयकरण पर ही अवलंबित है।

नेताजी श्री सुभाषचन्द्र बोस

क्या वह २९ अक्टूबर से ८ दिसम्बर के प्रकट होंगे ?

लेखक, श्री नारायणदत्त तिवारी बी० ए०

कुछ हफ्ते हुए, मैंने नेता जी श्री सुभाषचन्द्र बोस के जीवित होने के सम्बन्ध में एक लेख लिखा था। तब से अब तक न मालूम कितनी और कहानियाँ इस सम्बन्ध में प्रकाशित हो चुकी हैं। कर्नल हबीबुररहमान भी, जो नेता जी के साथ दुर्घटना में नष्ट हो जानेवाले हवाई जहाज में थे, जेल से रिहा हो चुके हैं, पर उन्होंने इस बहस में पड़ने से ही इनकार कर दिया है। इससे यह स्पष्ट जाहिर है कि नेता जी जीवित हैं क्योंकि अगर यह धारणा ग़लत होती तो एक सच्चे सैनिक के नाते हबीबुररहमान सत्य को प्रकट करने से न हिचकते।

इधर कुछ दिन हुए भारतवर्ष के दो प्रमुख अख़बारों में नेता जी के जीवित होने के सम्बन्ध में दो भविष्यवाणियाँ निकली हैं जो कि तुलनात्मक दृष्टि से काफ़ी परिपक्व और सत्य जान पड़ती हैं। पहली भविष्यवाणी कलकत्ता के प्रसिद्ध पत्र 'नेशनलिस्ट' में छपी है। इसमें नेता जी के विशेष परिचित, प्रसिद्ध भविष्यवक्ता श्री ए० एच० टर्नर की यह भविष्यवाणी है कि २९ अक्टूबर से ८ दिसम्बर के बीच नेता जी के प्रकट होने की बहुत अधिक सम्भावना है। यद्यपि इस प्रकार की अख़बारी भविष्यवाणियाँ बहुत कम सत्य निकली हैं फिर भी श्री टर्नर उन गिने-चुने पाश्चात्य भविष्यवक्ताओं में से हैं जिनकी भविष्यवाणी सत्य निकलती है।

पर इससे अधिक महत्त्वपूर्ण समाचार तो बम्बई के मशहूर अँगरेजी साप्ताहिक अख़बार 'क्रिटिज़्म' में मिलता है। 'बोस रूसी पनडुब्बी में इंडोनेशिया घूमे' के शीर्षक से, इस अख़बार ने अपने पत्र-प्रतिनिधि की जो रिपोर्ट छापी है, वह बड़ी सनसनीखेज है। इस समाचार से यह मालूम पड़ता है कि सुभाष बाबू अवश्य जीवित हैं। पाठकों की रुचि के लिए 'क्रिटिज़्म' में छपी खबर इस प्रकार है—

नेताजी का भारतवर्ष को सन्देश—

सुदिनों की आशा करो....पर दुर्दिनों के लिए भी तैयार रहो।

सिंगापुर—अब अनेक प्रमाणों के द्वारा यह सिद्ध हो गया है कि नेता जी सुभाषचन्द्र बोस जीवित हैं और उन्होंने भ्रमण करना शुरू कर दिया है।

यहाँ, भारत में उनके पहुँचने की अफ़वाह की पुष्टि नहीं हो रही है, पर जिम्मेदार आदमियों ने उन्हें कम्यूनिस्ट चीन, फ्रेंच-इंडो-चीन और मलाया में देखा है। यह भी खबर है कि वे एक बार एक रूसी पनडुब्बी में इंडोनेशिया गये थे और वहाँ के इंडोनेशियन विद्रोही सरदारों से महत्त्वपूर्ण वार्त्ता की।

एक भारतीय संवाददाता को, जो कि लिखता है कि [illegible] मलाया में मिले और [illegible] 'क्रिटिज़्म' के लिए एक [illegible] माँगा, नेता जी ने वर्मा [illegible] कुछ आखिरी ब्राडकास्टों [illegible] की नक़ल दी, जिसके अति[illegible] के कुछ भाग पर उन्होंने [illegible] से घेरा बना दिया और [illegible] अपने दस्तख़त 'जय हिन्द, सुभाषचन्द्र बोस' कर दि[illegible] लाल निशान किये हुए [illegible] भाग का हिन्दी अर्थ इस प्रकार है—

'साथियो, क्रान्तिकारी [illegible] कि किसी आदर्श के सत्य [illegible] विश्वास रखता है और सत्य [illegible] यह भी मानता है कि अन्त [illegible] आदर्श की ही विजय होती [illegible] ताओं से जो मनुष्य धीरज [illegible] है, या घबड़ा जाता है, [illegible] नहीं कहा जा सकता। एक [illegible] कारी का यही आदर्श है। [illegible] की आशा करो, पर विपत्ति [illegible] लिए सदा तैयार रहो।'

'मुझे इस बात का विश्वास [illegible] अगर हम अपनी लड़ाई जारी [illegible] अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपनी [illegible] जारी रखें, हम अपनी आजादी [illegible] कर लेंगे। लेकिन इसका यह [illegible] है कि अगर हम ऐसा न कर [illegible] हिम्मत हार बैठें या मुक्त [illegible] इसलिए अगर दुर्भाग्य साथ देता [illegible] हिन्दुस्तान आजाद मुल्क होकर [illegible] लता, तो हमारी दूसरी योजना [illegible] अन्दर एक युद्ध-जनीय क्रान्ति [illegible] वार) का संगठन करना होगा। [illegible] उसमें भी असफल होंगे तो, एक [illegible] संसारव्यापी महायुद्ध होगा जिस [illegible] अपनी आजादी के लिए लड़ने [illegible] समय मिलेगा।

मुझे इस बात में ज़रा भी [illegible] कि तीसरा संसारव्यापी महायुद्ध [illegible] के भीतर ही, छिड़ जायेगा। [illegible] आजादी एक तयशुदा बात है। [illegible] समय ही अनिश्चित है कि वह [illegible] दिवस कब आयेगा? सबसे बड़ी [illegible] भी भारत को आजाद होने में [illegible] और लगेंगे। तब हम क्यों नाउम्मीद [illegible] और समझौते के लिए दौड़ [illegible] क्यों जायें? क्रान्तिकारी की हैसियत [illegible] तुम्हारा काम स्वतन्त्रता के संघर्ष [illegible] रहना है, उस समय तक, जब [illegible] वह झंडा शान से नई देहली के [illegible] भवन पर नहीं फहराता।

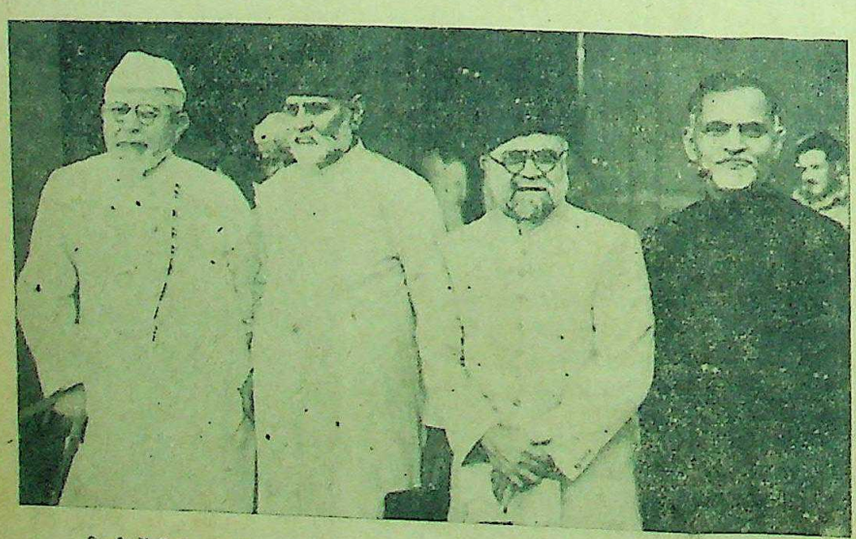

दिल्ली में ब्रिटिश मंत्रिदल से भेंट करनेवाले भारत के प्रमुख राष्ट्रीय मुसलमान नेता—बायें से—हाफिज मोहम्मद इब्राहीम, शेख हिशमुद्दीन, शेख ज़हीरुद्दीन और ख़्वाजा अब्दुल माजिद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रिटिश साम्राज्य क्षय की ओर

संसार के प्रत्येक मोर्चे पर नैया क्यों डगमगा रही है ?

लेखक, का० न० रामन्ना, शास्त्री

ब्रिटेन अब संसार की महाशक्तियों में तीसरे दर्जे की शक्ति रह गई है। द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के बाद से उसके साम्राज्यवाद की नैया संसार के प्रत्येक मोर्चे से डगमगा रही है। विद्वान् लेखक ने इस लेख में योरप की आंतरिक राजनैतिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुए यह सिद्ध किया है कि ब्रिटिश साम्राज्य दिन प्रतिदिन पराभव की ओर चला जा रहा है। लेख अत्यन्त सुंदर, पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद के रक्षक और पृष्ठ-पोषक मिस्टर चर्चिल।

को चक्कर देकर। ऐसी नाजुक अवस्था में वह सहारे के लिए छटपटा रहा था। डूबते-डूबते उसने सहारा लेने की कोशिश की—और उसके हाथ लगा साँप—सोवियट रूस; जिसको तहस-नहस करने के लिए उसके प्रारम्भिक काल से ही उसने अविराम कोशिश की थी।

कर्ज से लद गया

लगभग लगातार छः साल चलकर द्वितीय महायुद्ध समाप्त हुआ। इँगलैंड ने अन्य विजयी राष्ट्रों के साथ विजय की खुशियाँ मनाईं। लेकिन यह उसके लिए वास्तविक खुशियाँ न थीं। क्योंकि, जिन आशाओं को लेकर वह युद्ध में कूदा था, उसकी वह आशायें सफल न हो सकीं। वह अधिक बलशाली होने के स्थान पर कमजोर होकर निकला।

युद्ध के पहले वह अमेरिका और रूस को छोड़कर प्रायः सभी देशों का महाजन था। अब वह असहनीय क़र्ज़ के बोझ से लद गया है। वह क़र्ज़दार हो गया। भारत को उसे २० अरब रुपया देना है। मित्र को उसे ५-६ अरब रुपया देना है। इसी तरह कितने ही देश हैं, जो इँगलैंड से क़र्ज़ की अदायगी कराने की कोशिश कर रहे हैं। ये देश अपना पावना पाने के लिए उसका दरवाजा घेरे बैठे हैं।

योरप से कन्ना कट रहा है

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र के अन्दर वर्तमान परिवर्तित युग में भी वह अपनी पुरानी कूटनीति का सहारा लेना चाहता है। फिर से वह प्रतिक्रियावादी शक्तियों को अपने इर्द-गिर्द बटोरने की कोशिश कर रहा है। लेकिन, हर बार उसकी हार पर हार हो रही है। युद्धकाल में तेहरान और माल्टा (क्रीमिया) सम्मेलनों में उसकी हार हुई। युद्ध समाप्ति के बाद वाशिंगटन, लन्दन और मास्को-सम्मेलनों में फिर हार हुई और अब पेरिस-सम्मेलन में अपनी झेंप मिटाने की कोशिश कर रहा है। यहाँ भी उसकी चल नहीं पा रही है। इन सम्मेलनों की हार से योरप के पूर्वीय क्षेत्रों से अर्थात् बलगेरिया, रूमानिया, पोलैंड, फ़िनलैंड आदि देशों से उसके प्रभाव का उच्चाटन हो गया। मध्य योरप में जेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया, अलबानिया आदि असन्तुष्ट हो गये, यद्यपि संयुक्त-राष्ट्रसंघ में इनकी कोई आवाज नहीं है। जर्मनी के अधिकृत क्षेत्रों में जनता का असन्तोष इँगलैंड के प्रति दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है। क्योंकि यह जर्मनी की जनता के एक होने में बाधक हो रहा है—समाजवादी और साम्यवादियों के मेल को रोक रहा है।

द्वितीय महायुद्ध के पहले रूमानिया के अन्दर प्लोएस्टी के प्रसिद्ध तेल के कुओं में ब्रिटेन की पूँजी अटकी हुई थी। रूमानिया के आत्मसमर्पण के बाद से वहाँ अँग्रेजों को फटकने तक नहीं दिया गया। भविष्य में संभवतः इन कुओं का राष्ट्रीयकरण हो जाने से, इन कुओं में लगी पूँजी से अँग्रेज पूँजीपतियों को सदा के लिये हाथ धोना पड़ेगा।

योरोप के अन्दर आस्ट्रिया, हंगरी, रूमानिया, बलगेरिया, पोलैण्ड, अल्बानिया आदि खेती प्रधान देश हैं। यहाँ कपड़ा, जूता, साइकिल, मोटर आदि कारखानों का तैयार माल विशेष रूप से दो ही देशों से आता था—जर्मनी और इंगलैण्ड। युद्ध समाप्त होने के बाद से इन देशों में अमेरिका और रूस का माल जा रहा है। इसके अलावा ये देश सोवियट रूस के नेतृत्व में उद्योग-धन्धे बढ़ाकर स्वावलम्बी बनने की कोशिश कर रहे हैं। अतः इन देशों में अब ब्रिटेन की दाल नहीं गलेगी।

भूमध्यसागर खतरे में

यूनान में लगभग १३-१४ महीनों से इँगलैंड ने अड़ंगा लगा रक्खा है। वह प्रतिक्रियावादियों की पीठ ठोकता जा रहा है। यह सब वह इसलिये कर रहा है कि भूमध्यसागर की उसकी प्राण-धारा अक्षुण बनी रहे। लेकिन वहाँ प्रगतिशील शक्तियाँ दिन पर दिन बढ़ रही हैं। हाल के चुनाव में वहाँ प्रगतिशील शक्तियों ने कोई हिस्सा नहीं लिया। इससे स्पष्ट है कि वहाँ की प्रगतिशील शक्तियाँ ब्रिटिश हस्तक्षेप को बिलकुल बर्दास्त नहीं कर रही हैं। लम्बे काल तक हस्तक्षेप के लिए बहाने बनाये नहीं जा सकते। इन्हें वहाँ से हटना होगा और वह स्थान प्रगतिशील शक्तियाँ ही लेंगी, जो ब्रिटेन के लिए बिलकुल अनुकूल नहीं होंगी। क्योंकि यूनान के पड़ोसी देश—यूगोस्लाविया, अल्बानिया और बलगेरिया प्रगतिशील शक्तियों के असर में हैं जो सोवियट रूस से प्रेरणा पा रहे हैं।

यूनान के पूर्व में डाडाकेनिस द्वीप-पुञ्ज पर सोवियट रूस अपना भी प्रभाव चाहता है। यह मामला अभी संयुक्त-राष्ट्र-संघ के विचाराधीन है। इस मामले में अमेरिका और इँगलैंड मिलकर सोवियट रूस को पराजित करने में कहाँ तक सफल होंगे, यह तो समय ही बतायेगा। इतनी बात निश्चित है कि, इस द्वीपपुञ्ज की जनता फिर से इटली के आधीन नहीं जाना चाहती। वहाँ पर भी प्रगतिशील शक्तियाँ तेजी से उभर रही हैं।

यूगोस्लाविया और इटली के बीच का बन्दरगाह—ट्रीस्ट—का मामला अभी तक सुलझा नहीं है। अमेरिका और इँगलैंड इस बन्दरगाह को इटली के सुपुर्द करना चाहते हैं। रूस चाहता है कि इसे यूगोस्लाविया के सुपुर्द किया जाये। अगर यूगोस्लाविया की इच्छा के विरुद्ध इसे इटली के हवाले किया गया तो वहाँ वह एक नया 'डेंजिक' बनाना चाहता है। ट्रीस्ट के मामले में फ्रान्स और रूस की राय मिलती जुलती है।

फ्रांस को इँगलैंड और अमेरिका ने महीनों तक महान् राष्ट्रों में शुमार ही नहीं किया था। रूस के ही प्रयत्नों से उसे संयुक्तराष्ट्र-संघ में स्थाई स्थान मिला है। इसके अलावा फ्रांस ने इँगलैंड की इच्छा के विरुद्ध रूस से पारस्परिक सहायता की संधि कर डाली। रूस ही उसे आज अन्न सामग्री देकर उसकी सहायता कर रहा है। वर्तमान युद्धोत्तर काल में इँगलैंड और फ्रांस का इतना घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं है जितना युद्ध के पूर्व था। फ्रांस फ्रांको की प्रतिक्रियावादी स्पेन की सरकार से घृणा करता है। इसमें रूस, यूगोस्लाविया, पोलैंड, जेकोस्लोवाकिया आदि उसका समर्थन कर रहे हैं। इँगलैंड फ्रांको से मैत्री भाव रखना चाहता है। फ्रांको के हाथ से स्पेन का निकल जाना इँगलैंड के लिए जबरदस्त खतरे की बात है। क्योंकि उससे भूमध्य सागर का द्वार जिब्राल्टर स्वयं खतरे में पड़ जायगा। यह भी निश्चित है कि, फ्रांको स्पेन में अधिक काल तक नहीं टिक सकता।

उत्तर आफ्रिका का देश

उत्तर आफ्रिका के देश—ट्रिपोलिटानिया और सायरेनिका युद्ध के पहले इटली के अधिकार क्षेत्र में थे। सोवियट रूस चाहता है कि इन पर संयुक्तराष्ट्र संघ का अभिभावकत्व रहे, जिसमें सोवियट रूस का प्रतिनिधि शासन की देख रेख में रहे। यहाँ इँगलैंड ने अपनी पुरानी कूटनीति का सहारा लिया। इँगलैंड के पर-राष्ट्र मंत्री—बेविन ने घोषणा की कि ट्रिपोलिटानिया और सायरेनिका को लीबिया के नाम से संयुक्त कर दिया जाय और लीबिया को स्वतंत्र घोषित कर दिया जाय। बात बड़ी अच्छी थी। लेकिन यह स्वतंत्रता की घोषणा बँधी मुट्ठी निकली। जब खुली तो उसमें सिवाय राख के कुछ नहीं मिला। ब्रिटिश नीति का पर्दा फाश हुआ। वह लीबिया पर अपना प्रभुत्व रखना चाहता है। इसके विरोध में फ्रांस और रूस मिले हुए हैं। इस मामले में भी ब्रिटेन की कूटनीति का दीवालियापन शीघ्र ही दृष्टिगोचर होगा। उत्तर आफ्रिका में अगर रूस का भी असर आया तो भूमध्यसागर का इँगलैंड के लिए कोई महत्व नहीं रहेगा।

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

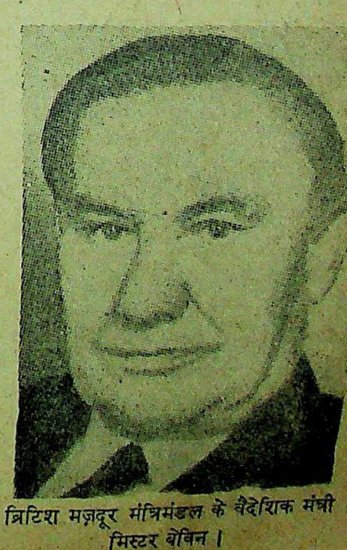

ब्रिटिश मज़दूर मंत्रिमंडल के वैदेशिक मंत्री मिस्टर बेविन।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरब राष्ट्र विद्रोही क्यों बना ?

फिलिस्तीन-संबंधी एंग्लो-अमरीकन रिपोर्ट की प्रतिक्रिया

लेखक, श्री एस० लक्ष्मण शास्त्री

(२)

'देशदूत' के गत २६ मई के अंक में इस लेख का प्रथम अंश प्रकाशित हो चुका है। उसी लेख का यह दूसरा अंश है। इस लेख में यह बतलाया गया है कि अरब राष्ट्रों ने एंग्लो-अमरीकन रिपोर्ट का, जिसमें यहूदियों को बसाने की योजना बनाई गई है, क्यों किया है? अरब यह समझते हैं कि यदि यहूदी फिलिस्तीन में बसाये गये तो उनकी आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक स्थिति की बड़ी हानि होगी। लेख सामयिक, सुन्दर और जानकारी से पूर्ण है।

अरबों ने ब्रिटिश-अमेरिकन जांच-समिति के रिपोर्ट का विरोध केवल इसी-लिए नहीं किया है कि उसमें गोलमोल भाषा में पहले किये गये वादों के विरुद्ध बातें हैं बल्कि इसलिए भी कि यदि इस रिपोर्ट को स्वीकार किया गया तो आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक रूप से उनकी हालत पहले से कहीं अधिक खराब होनी निश्चित है। उसका निम्नलिखित कारण है—

(१) यदि प्रति एक लाख यहूदियों को फिलिस्तीन आने दिया जाय तो थोड़े ही वर्षों में उसकी संख्या कुल आबादी में ३३ प्रतिशत से बढ़कर अरबों से कहीं अधिक हो जायगी। फिलिस्तीन में उनका बहुमत हो जायगा, ऐसी हालत में शासन-यंत्र उनके हाथ में चले जाने का डर है। बाद को ब्रिटेन फिलिस्तीन से निकल भी जाय तो वह बहुमतवाले यहूदियों द्वारा नियंत्रित सरकार से कोई ऐसा समझौता कर सकता है जो अरबों के हितों के सर्वथा प्रतिकूल हो।

(२) आर्थिक, सामाजिक दृष्टि से यहूदियों का स्तर अरबों से कहीं ऊँचा है, अतः प्रस्तुत रिपोर्ट में कही गई बातों के अनुसार बिना रोक-टोक के भूमि के क्रय-विक्रय की बात मान ली जाय तो थोड़े ही सालों में सारे फिलिस्तीन के मालिक यहूदी हो जायँगे, अरबों के हाथ में एक चप्पा जमीन भी नहीं रह पायेगी।

(३) बाहर से बराबर यहूदियों को लाकर फिलिस्तीन में भर देने का एक आवश्यक परिणाम यह होगा कि फिलि-स्तीन में सर्वत्र यहूदियों की सांस्कृतिक संस्थाएँ खड़ी की जायेंगी जहां यहूदी भाषा संस्कृति को ही प्रमुखता दी जायगी। आर्थिक-सामाजिक जीवन यहूदियों और अरबों में ऊँचे-नीचे का, असमानता का जो भाव होगा वह इन सांस्कृतिक संस्थाओं में भी प्रतिफलित होगा ही।

इसलिए इन सब बातों से रिपार्ट को मान लेने का अर्थ होगा जीवन के आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में प्रगति करने की जो स्वाभाविक इच्छा अरबों में है उसे तिलांजलि देकर ब्रिटेन की गुलामी के साथ ही यहूदियों की दासता स्वीकार करना। यह रास्ता अरबों को आगे ले जाने का नहीं खन्दक में डालने का है। यह रास्ता उनके अभ्युदय का नहीं अधःपतन का है। अतः यह रिपोर्ट अरबों को पीछे की ओर ले जाने की है। यही कारण है जिसने इसको पूरी शक्ति लगा-कर विरोध करने के लिए उन्हें बाध्य किया।

अरबों की महान् विद्रोह की तैयारी

फिलिस्तीन के अरब अहिंसावादी नहीं हैं, वे साम्राज्यवादियों के हृदय-परि-वर्तन में भी विश्वास नहीं करते। इनके पास टैंक, विमान, तोप आदि नहीं हैं। लेकिन इन तमाम चीजों के अभाव के बावजूद पिछले २५ वर्ष तक उन्होंने न जाने कितनी ही बार साम्राज्यवादियों से लोहे के चने चबवाये, कितनी ही बार भयं-कर विद्रोह से उन्होंने सारे विश्व को हिलाया। समाचारपत्रों में न जाने पिछले २५ वर्षों में कितने ही पृष्ठ फिलिस्तीन के विद्रोहों की वार्ताओं से भरते रहते रहे हैं। परन्तु इस रिपोर्ट के प्रकाशित होते ही जैसा असन्तोष, जैसी विद्रोह की भावनाओं से सारा अरब जगत् आगबबूला हो गया है वैसी परिस्थिति पहले कभी शायद ही उपस्थित हुई होगी। रिपोर्ट ३० अप्रैल को प्रकाशित हुई थी। और १ मई को रायटर के संवाददाता का यह तार था कि रिपोर्ट ने सारे अरब जगत् में असन्तोष की आग भड़का दी है। फिलिस्तीन के सर्वोच्च अरब समिति के अध्यक्ष जमाल हुसैनी ने उसी दिन एक वक्तव्य में रिपोर्ट की कड़ी आलो-चना करते हुए लिखा यह रिपोर्ट फिलिस्तीन को रक्तपात की भूमि बना देनेवाली है। फिलिस्तीन और पड़ोस के अरब मिलकर अपनी पूरी शक्ति लगाकर इसके विरुद्ध लड़ेंगे। इसके अतिरिक्त इराक, ट्रान्स-जोर्डन, मिस्र आदि अरब राष्ट्रों के सरकारी कर्मचारियों और अरब नेताओं ने आश्वा-सन दिया है कि रिपोर्ट कार्यान्वित करने का प्रयत्न किया जाय तो सभी अरब मिल-कर उसका विरोध करेंगे।

फिलिस्तीन की अरब-समिति ने एक उपसमिति बनाई है जो ब्रिटेन के विरुद्ध संग्राम छेड़ देने के लिए तैयारियाँ कर रही है। फिलिस्तीन में रिपोर्ट का विरोध करने के लिए आम हड़ताल प्रदर्शन आदि हो रहे हैं। परदों को दूर फेंककर अरब महिलाएँ बाहर आम सड़क पर आकर ब्रिटिश शासकों को चुनौती देकर कह रही हैं वे फिलिस्तीन से निकल जायँ। इसके अतिरिक्त अरब-समिति ने एक प्रतिनिधि-मंडल मास्को भेजा है जो सोवियट रूस अधिकारियों के सामने सारी वस्तुस्थिति को रखेगा और राष्ट्र-संघ की बैठक में फिलिस्तीन के प्रश्न को उठाने के लिए उनसे अनुरोध करेगा। ऐसा मालूम पड़ता है कि यदि रिपोर्ट को कार्यान्वित किया गया तो फिलिस्तीन में ऐसी आग भड़केगी जिसमें ब्रिटिश साम्राज्य ही भस्म हो जायगा।

अरबों का संग्राम और भारतीय जनता

सदियों के गुलाम, शोषित अरब आज, जब कि संसार के छोटे से छोटे राष्ट्र भी साम्राज्यवाद के चंगुल से मुक्त हो रहे हैं, ऐसी परिस्थिति में अपने पैरों की गुलामी की बेड़ियों को उखाड़कर फेंकने के लिए संग्राम कर रहे हैं। चालीस करोड़ भारतीय और फिलिस्तीन के दस लाख अरब दोनों ब्रिटिश साम्राज्यवाद के चंगुल से मुक्त होने के लिए आज भगीरथ प्रयत्न कर रहे हैं। फिलिस्तीन ब्रिटिश साम्राज्य का मर्मस्थान है क्योंकि यह योरप, एशिया और अफ्रीका तीन के मिलने के स्थान पर पड़ता है। यही एशिया और योरोप में आने-जाने का एक मुख्य स्थलमार्ग है। अतः इस दृष्टि से अरबों के संग्राम की सफलता और सफलता का प्रत्यक्ष सम्बन्ध हमारे संग्राम हैं। यदि फिलिस्तीन के अरब अपने यहां से साम्राज्यवादियों को निकाल बाहर करते हैं (जैसे अभी शाम लेबनान ने किया, मिस्र कर रहा है) तो भारत

वादियों की ताक़त अपेक्षाकृत कमज़ोर पड़ सकती है, वह निस्सन्देह हमारे लिए अनुकूल बात होगी ही। इसके अतिरिक्त अरबों और भारतीयों का सम्बन्ध हजारों वर्ष से चला आ रहा है। पिछले २५-३० वर्ष में ही हमें उनके संग्राम से जोश और स्फूर्ति मिली है उन्हें हमारे स्वाधीनता संग्राम से। अभी पिछले वर्ष लन्दनस्थित अरब समाज के प्रधान मंत्री ने कहा था भारतीय नेताओं के विचारों और भारतीय आन्दोलनों से अरब काफी प्रभावित होते रहे हैं।

इसीलिए इस समय फिलिस्तीन के अरबों के विरुद्ध ब्रिटिश-अमेरिकन साम्राज्य-वादियों ने जो षड्यंत्र रचा है, अरबों को हमेशा गुलामी की बेड़ियों में जकड़ रखने के लिए उन्होंने जो योजना बनाई है उससे अन्य पराधीन राष्ट्रों की जनता के समान भारत की जनता भी असन्तुष्ट है। राष्ट्र-वादी, लीगी सभी पत्रों ने रिपोर्ट की निन्दा की है।

अरबों की मदद कैसे करें ?

अरबों का सामना करने की क्षमता ब्रिटेन में नहीं है। अतः उसने अमेरिका से पूछा है कि वह कितनी सेना फिलिस्तीन में इस गुलामी के पट्टे को बनाये रखने के लिए भेज सकता है। सोवियट रूस पूर्व की जनता की बढ़ती हुई को रोकना ब्रिटिश और अमेरिकन लेकिन कई स्पष्ट कारणों से यह अधिक आवश्यक है क्योंकि दर्जे के राष्ट्र से गिरकर तृतीय राष्ट्र हो गया है। परन्तु सोवियट रूस के भय से साम्राज्यवादियों का, जो सर्वत्र बदनाम है, पुछल्ला बनकर रहेगा? बढ़ती हुई प्रजातंत्रवाद की गंगा की बाढ़ को ये कब तक रोक सकते हैं?

फिलिस्तीन के अरबों के दिल में जो सहानुभूति है उसे के लिए एक ही मार्ग है। भारत वाद के विरुद्ध मजबूत संयुक्त कर मुल्क को आजाद करना। स्वतंत्र हो जायगा तो भारत के शान्तिप्रिय देशों का ऐसा बनेगा जिसके सामने टिकने संसार के साम्राज्यवादियों में तभी मध्यपूर्व के ये छोटे राष्ट्रों भी सुरक्षित रहेगी।

खाद्य का राशन

और वह आपकी कैसे मदद करता

★ प्रत्येक व्यक्तिगत नागरिक के लिये विश्वस्त और बराबर खाद्य—राशनिंग का यही तो लक्ष्य है।

★ वितरण का केवल राशनिंग ही उचित तरीका है—जितना गरीब को मिलता है उतना धनिक को भी—जितना कमखिले क्षेत्रों में उतना फालतूवाले क्षेत्रों में भी। राशनिंग के द्वारा ही मूल्यों में स्थिरता आती है और अनुचित संचय एवं अनुचित लाभ का निराकरण हो सकता है।

नागरिक एवं ग्राम्य क्षेत्रों में अब लगभग १३ करोड़ व्यक्तियों के राशन की व्यवस्था है। खाद्य कम है इसलिये दूसरे नगरों एवं क्षेत्रों में भी तेजी से राशन-व्यवस्था को विस्तृत किया जा रहा है।

★ याद रखिये खाद्य की रक्षा करना देश-भाइयों के प्राण बचाने के लिये आवश्यक है।

★ खाद्य के राशन में सहयोग देना आपका कर्त्तव्य है ईमानदारी से राशन के नियमों का पालन कीजिये—इसप्रकार अपना कर्त्तव्य पालन कीजिये और प्राण बचाइये।

उचित मूल्य पर R सबके लिये भोजन

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...विवार, ९ जून, १९४६

...से 'देशदूत' के लिये

...चार्य नरेन्द्रदेव—तपस्वी नेता !

...रतीय समाजवाद से ही राष्ट्र का उद्धार होगा

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

...समाजवादी नेताओं में आचार्य नरेन्द्रदेव जी का उच्चतम स्थान है। आप ...विद्वान् और वक्ता होने के साथ साथ एक तपस्वी और त्यागी राष्ट्रसेवी हैं। ...में श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी ने आचार्य जी के संपर्क में आकर उनके व्यक्तित्व ...विचारधारा के सम्बन्ध में कई उल्लेखनीय बातें प्रगट की हैं। लेख विचारपूर्ण, सुन्दर और पठनीय है।

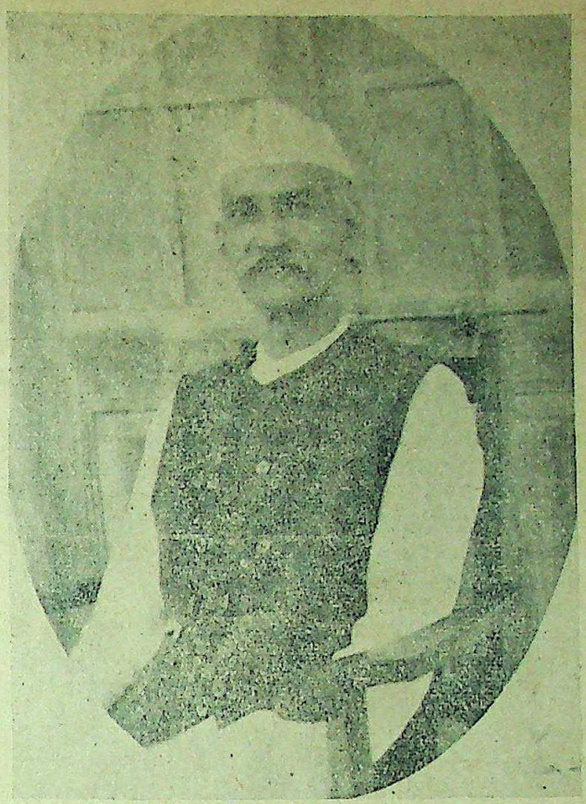

भारत के सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता आचार्य नरेन्द्रदेव।

...चार्य नरेन्द्रदेव जी अखिल भारत-...समाजवादी नेता हैं। वह अपना ...समय देश-सेवा में खर्च करते हैं। ...विद्यापीठ के आप आचार्य हैं। आप ...विद्वानों में गिने जाते हैं। ...संस्कृत, अंगरेजी, हिन्दी और ...भाषाओं पर आपका पूर्ण अधिकार है। ...पर पूर्ण अधिकार रखते हैं। राज-...चर्चाओं में अटूक सूझ देते हैं। ...सलाह बड़े महत्त्व की मानी जाती ...जवाहरलाल नेहरू आपकी बड़ी ...करते हैं। बहुत-सी बातों में आपकी ...लेते हैं। संयुक्त-प्रान्त के छोटे-बड़े ...आपका सम्मान करते हैं। प्रान्त की ...में आपका स्थान बहुत ऊँचा है। ...में आप कुछ महीने के लिए ...आये हुए थे। आपकी तबीअत ...थी। महात्मा गांधी स्वयं आपकी ...कर रहे थे। उसी समय हम लोग ...निकट सम्पर्क में आये। आपकी ...और विद्वत्ता देखकर मैं आश्चर्य-...हो गया।

...जी की विद्वता और लोक-...सुनकर मेरी भावना कुछ ऐसी ...कि आप एकान्तप्रिय, तेज मिजाज ...रोबदाब जनानेवाले होंगे। लेकिन ...प्रथम में आपके निकट गया ...और बातें हुईं तब आपकी ...और आत्मीयता की वाणी ...मुग्ध हो गया।

...बड़े नम्र शब्दों में मुस्करा-...—बैठिए।

...प्रश्न किया—आपकी तबीअत ...?

...जी ने कहा—"मेरी तबीअत ...है। गांधी जी की आज्ञा से यहाँ ...मन कुछ यहाँ लग रहा है। यहाँ ...एकान्तप्रियता अच्छी लगती है। ...अपने प्रान्त के लोगों से बहुत दूर ...है। आचार्य जी ने फिर कहा—... ...रहो।" मैं ऐसे सुअवसर को ...नहीं चाहता था। अकसर आचार्य ...रोज जाया करता था। ...माता-पिता दोनों का गुण पाया। ...छोटी बातों को भी वे पूछते थे। ...बातें करते थे। मुझे कभी यह ...नहीं हुआ कि आचार्य जी छोटों ...में कुछ आना-कानी करते हैं। ...एक मामूली से मामूली कार्य-...हिलमिलकर बातें करते दिखाई ...रोज ग्राम-सेवक विद्यालय का ...आया और आचार्य जी से ...आचार्य जी की तबीअत उस दिन ...थी। दमा का दौरा बहुत जोरों ...भी बीच-बीच में रुककर वह ...समाधानों को मिटाने की ...थे। मैंने आचार्य जी से कहा ...आपकी तबीअत ज्यादा खराब ...किसी दिन इनको समझाइएगा। ...जी ने कहा, मेरी तबियत तो रोज ...रहती है। आज भी बातें होती ...दमा का दौरा रुकते ही वह ...समस्याओं पर अपनी राय प्रकट ...। बातचीत के दौरान में वह हँस-कर बोले—"आप सब आज जो सेवा का काम कर रहे हैं वह अच्छा है लेकिन आपको मालूम है, हमारे देश की माली हालत कितनी खराब है। हमारे रहन-सहन की स्थिति कितनी नीचे गिर गई है? स्वतंत्र मुल्क नीची निगाह से हम लोगों को देखते हैं। गुलामी का अभिशाप सब पापों से बढ़कर है। सबसे पहला काम है कि हम गुलामी के जुये से अलग हों। सबको समान अधिकार मिलना चाहिए। समाज में ऊँच-नीच की भावना बिलकुल बन्द होनी चाहिए। समाजवादी सरकार में पंक्ति-भेद का नामोनिशान न होगा। हमारा पहला क़दम ग्रामीणों और मजदूरों की शिक्षा और आर्थिक स्थिति को सुधारने का होगा। ग्रामीणों की जमीन उनकी होगी। जमींदारी-प्रथा का नाश होना सबसे पहला काम है। समाजवादी व्यवस्था में हर एक को तरक्की करने का पूर्ण अधिकार और सुविधा होगी। ग्रामों की रचना नई पद्धति से की जायेगी। गाँवों में पार्क होगा। सुन्दर वाचनालय होंगे। अच्छे साफ़-सुथरे नये ढंग के मकान होंगे। अच्छी सड़कें बनाई जावेंगी। रेडियो से तरह-तरह की शिक्षा दी जावेगी। एक तरह से वहाँ आमूल परिवर्तन किया जावेगा। आज के भारतीय गाँवों से समाजवादी भारतीय गाँवों में जमीन-आसमान का फर्क मालूम होगा। सबका स्वाथ्य अच्छा होगा। हर एक के लिए दवा-दारू का समुचित प्रबन्ध होगा। सबको निःशुल्क शिक्षा दी जायेगी। समाजवादी सरकार सारे मुल्क के प्रति वफादार होगी। आज के किसानों-मजदूरों की हड्डियाँ दूर से दिखाई पड़ती हैं। समाजवादी सरकार में उनके मुख दूर से चमकेंगे। शरीर में ताक़त होगी। खून होगा। लोग बुद्धिमान् होंगे और अपना अधिकार समझेंगे। हर एक स्त्री-पुरुष को समान वोट देने का अधिकार होगा। बड़े-बड़े कल-कारखानों पर राष्ट्र का आधिपत्य होगा।"

एक प्रश्न के उत्तर में आपने कहा—"रूस का अन्धा अनुकरण नहीं किया जावेगा। भारतीय सांस्कृति का लिहाज रक्खा जावेगा।" ग्राम-सेवक विद्यार्थी ने फिर प्रश्न किया—क्या आप हृदय-परिवर्तन में विश्वास करते हैं?

आचार्य जी ने कहा—"नहीं, मेरा विश्वास हृदय-परिवर्तन में नहीं है। महात्मा जी ऐसा मानते हैं कि यहाँ के पूँजीपतियों का हृदय-परविर्तन हो जावेगा लेकिन इस बात की सम्भावना किंचित मात्र है। महात्मा जी के व्यक्तित्व से एक-आध पूँजीपति कुछ अर्से के लिए ट्रस्टी शिप का सिद्धान्त पसन्द कर सकते हैं पर अमल में लाना कितना कठिन है यह पूँजीपति ही समझते हैं। हम लोग इसके समझने में अभी तक असमर्थ हैं। राजी-खुशी सारी सम्पत्ति राष्ट्र के लिए न्योछावर करना दुष्कर काम है। एक व्यक्ति भले ही अपनी सारी सम्पत्ति त्याग सकता है लेकिन वह सामाजिक परिवर्तन नहीं है।"

"शिक्षा के सम्बन्ध में आपकी क्या राय है?" विद्यार्थी ने पूछा।

आचार्य जी ने कहा—"आज की शिक्षा बेकार है। करोड़ो जनता को अपना नाम तक लिखना नहीं आता। उनकी मेहनत का नाजायज फायदा शहरों में खर्च हो रहा है। कुछ चन्द आदमी उच्च शिक्षा प्राप्त करके गुलामी की मशीनरी में लग जाते हैं। यह राष्ट्र की असली शिक्षा नहीं कही जा सकती। गुलाम बनाने की शिक्षा दी जाती है। शिक्षा का पूर्ण अधिकार जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों के हाथ में सौंप देना चाहिए।" "क्या आप महात्मा

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है.

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

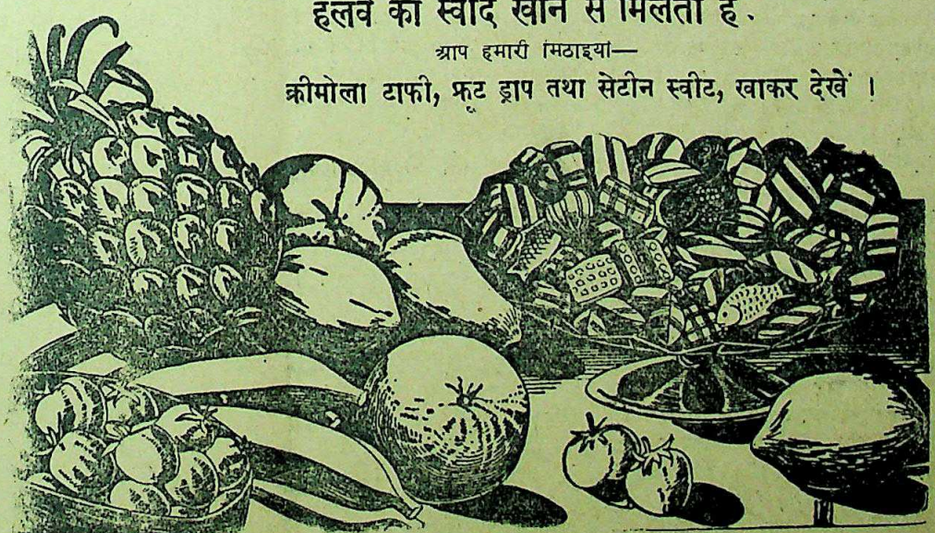

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्वतीय यात्रा के कुछ अनुभव

मानवता का वह उपेक्षित भूभाग कहाँ है ?

लेखक, श्री अखिल विनय, सह-सम्पादक, 'कर्मयोग'

मानवता का वह उपेक्षित भाग जो आज भी 'बहिष्कृत प्रदेश' समझा जाता है, कहाँ है ? यहाँ के लोगों का रहन-सहन तथा सामाजिक रीति-नीति क्या है ? इस लेख में इसी पर्वतीय प्रदेश का रोचक वर्णन किया गया है, जो पठनीय, मनोरंजक और ज्ञातव्य है।

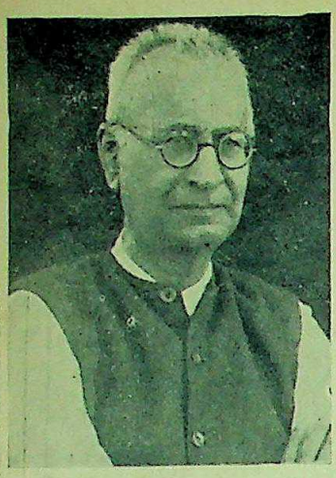

अखिल भारतीय कस्तूर बा ट्रस्ट के प्रधान मन्त्री ठक्कर बापा।

इस बार विचार तो था बदरीनाथ की यात्रा करने का लेकिन कुछ तो सरकारी नियंत्रण दूसरे मेरे कलाकार साथी 'युक्तप्रान्त के बहिष्कृत प्रदेश' को देखने की ओर झुके हुए थे। स्वामी शिवानन्दाश्रम में दिव्य जीवन-संघ का साधना-सप्ताह समाप्त होते ही हमने एक-एक करके मुनि की रेती, लक्ष्मणझूला, स्वर्गाश्रम आदि सब दर्शनीय स्थान देख डाले और ऋषिकेश से देहरादून जानेवाली 'बस' में सवार हुए। दोपहर का वक्त था, आँधी चल पड़ी, बादल उमड़े और तड़ातड़ पानी पड़ने लगा। गंगा का पानी तो पिछले रोज़ से ही गँदला आ रहा था। लगभग आध घंटे तक खासी वर्षा हुई; इससे यह फायदा हुआ कि मोटर के उस कच्चे रास्ते में धूल से छुट्टी मिल सकी और गर्मी, जो बस में बैठने से पहले हम महसूस कर रहे थे, सर्दी में परिणत होकर सुहावनी प्रतीत होने लगी। रास्ते के दोनों ओर हरी-भरी वनस्पतियाँ पहाड़ों को आच्छादित कर रही थीं, मौसम भी मनोहर हो गया था। डेढ़ साल पहले मंसूरी से दून की घाटी का दृश्य देखा था। शाम होते-होते हम देहरादून पहुँच गये। हमें कालसी जाना था लेकिन वहाँ की बस निकल चुकी थी अतः स्वतः ही हमें देहरादून नगरी की छटा निरीक्षण करने का सुअवसर मिल गया। हम प्रातः ही मोटर में बैठ कालसी के लिए चल दिये।

मानवता का वह उपेक्षित भू-भाग (जहाँ आज भी एक स्त्री को पाँच-पाँच व्यक्तियों को पतिरूप में स्वीकार करना पड़ता है) का प्रारम्भ कालसी से ही होता है। यहीं यमुना के किनारे सम्राट् अशोक का प्रसिद्ध ऐतिहासिक शिलालेख देखने को मिला। इस पर ब्राह्मी-लिपि और पाली भाषा में अशोक की आज्ञायें खुदी हुई हैं। शिला क्या है, चट्टान है। इस पर 'सूँड़ ऊपर उठाये हुए एक हाथी' की सुन्दर मूर्ति बड़ी स्पष्ट खुदी है। २,२०० वर्ष पूर्व की यह शिला आज भी विद्यमान है। कुछ समय के लिए हम उन सुख-स्वप्नों में लीन हो गये, जब भारत में उत्तर से लेकर दक्षिण तक महाराज अशोक का एकछत्र साशन था, प्रजा सुखी थी, राज्य में अमन-चैन था। सम्राट् अशोक का (जिन्होंने बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को भारत से बाहर भेजकर सांस्कृतिक-पताका फहराई थी) कीर्ति-स्मारक शिलालेख आज भी उनका यशोगान कर रहा है। किन्तु आज उसके इर्द-गिर्द रहनेवाले लोग अपढ़ और अशिक्षित हैं। उन्हें हर दस साल बाद भारत की जन-गणना में बहिष्कृत या जंगली लिखा जाता है। बहुत कम लोगों को यह मालूम है कि संयुक्त-प्रान्त में भी एक जंगली कहा जानेवाला इलाक़ा है। यहाँ भारत-सरकार का १९३५ का एक्ट लागू नहीं होता। यह सीधे प्रान्तीय गवर्नर के शासनाधिकार में है। यह प्रदेश "जौनसार बाबर" कहलाता है।

कालसी इस प्रदेश का प्रवेशद्वार है। पहाड़ की घाटी में स्थित, कालसी, आज एक उजड़ी हुई बस्ती है। प्राचीनकाल में यह एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्रस्थान था। दूर-दूर से, यहाँ तक कि तिब्बत तक के व्यापारी यहाँ माल लाते और ले जाते थे। धर्मशाला के अब यहाँ खण्डहर ही अवशेष हैं अतः हम आर्यसमाज मंदिर में ही ठहरे। समाज के भवन की विशालता कालसी के विगतवैभव का स्मरण कराती है। कहते हैं—इसकी नींव स्वामी श्रद्धानन्द के हाथों पड़ी थी। कालसी फिर भी गौरवास्पद है क्योंकि जौनसार-बाबर प्रदेश के ६०-७० हज़ार व्यक्तियों के मध्य उच्च शिक्षा का केन्द्र "हिन्दी मिडिल स्कूल" यहीं अवस्थित है। इस प्रदेश के लोगों का उसूल है कि कालसी से नीचे यमुना के इस पार जाना त्याज्य है क्योंकि वहाँ से मैदानी इलाक़ा शुरू हो जाता है। इस प्रदेश के निवासी यदि कभी देहरादून चले जायें तो अहोभाग्य ही समझिए। इन लोगों का शेष भारत से बहुत कम संबंध रहा है। इसलिए जहाँ शिक्षा के अभाव ने इनमें कुछ त्रुटियाँ उपस्थित कर दी हैं वहाँ शेष भारत इनसे बहुत कुछ सीख सकता है। पहली बात तो यह है कि यहाँ के लोग स्वावलम्बी हैं? अपनी निजी आवश्यकताओं के लिए ये किसी पर निर्भर नहीं। इनका पहनावा अति साधारण है। जाड़ों के लिए घुटनों तक का कोट, अपनी ही भेड़ों के ऊन से स्वयं ही कात-बुनकर तैयार कर लेते हैं। इन्हें मिलों के कपड़े और लङ्काशायर की शर्टिंग की जरूरत नहीं पड़ती। भोजन-सामग्री भी यथा मक्का, गेहूँ, चावल, मण्डुआ (ग़रीबों का भोज्य) व शाकों में आलू, अर्बी (घुइयाँ), अदरक, टमाटर, कई प्रकार की दालें यहीं पैदा कर लेते हैं। प्रदेश के पहाड़ी होने के कारण समभूमि का प्रायः अभाव ही है फिर भी पहाड़ों को काट-काटकर बड़े श्रम से भूमि को सम किया जाता है और एक के ऊपर एक चक्करदार क्यारियाँ कहिए खेत बनाये गये हैं। दूसरे यहाँ मानव मानव का भेद नहीं है। यहाँ जातीय बंधन शेष भारत की भाँति संकीर्ण नहीं। ब्राह्मण और राजपूतों में केवल खान-पान ही नहीं किन्तु परस्पर वैवाहिक सम्बन्ध भी बिना किसी प्रतिबन्ध के हो जाता है। हरिजनों (जिन्हें ये 'कोल्टा' कहते हैं) के साथ भी उच्च वर्णों का सलूक अच्छा है।

कालसी से कुछ चना-चबेना व दियासलाई लेकर इस प्रदेश के सबसे प्रमुख व्यक्ति (जिसे यहाँ चौंतरू कहा जाता है) रायसाहब ठाकुर श्री शेरसिंह जी से मुलाकात या दर्शन करने चल दिये। उन दिनों वे बौसाण (अपनी जमींदारी के स्थान) ही ठहरे हुए थे। यह स्थान कालसी से ४, ५ मील दूर है। रायसाहब जी बड़े मिलनसार व्यक्ति हैं। आयु में वृद्ध हैं लेकिन शरीर से जवान। वे देहरादून डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के सदस्य भी हैं। इस प्रदेश के संबंध में उनसे काफ़ी बातें हुईं। उन्होंने बतलाया कि तालीम के प्रसार और औषधालय खोलने से ही यहाँ की वर्तमान अवस्था में सुधार किया जा सकता है।

हमें यहाँ से 'बागी' नामक गाँव में जाना था। वहाँ अशोक आश्रम विद्यामंदिर चलता है। देहरादून जिला कांग्रेस कमेटी के भूतपूर्व प्रधान, हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यिक व दर्शनों के प्रकाण्ड पंडित श्री धर्मदेव शास्त्री राजनीति से संन्यास लेकर बापू की आज्ञानुसार पिछले चार वर्षों से इस प्रदेश में सेवा-कार्य कर रहे हैं। वे ही 'अशोक आश्रम' नामक संस्था के संचालक भी हैं।

बौसाण से यमुना किनारे-किनारे सँकरी पगडंडी मिलती है। आजू-बाजू में मनोहर दृश्यावलियाँ बीच में मन्थर गति से कल-कल करती यमुना। थोड़ी देर बाद एक गाँव दिखाई पड़ा, जिसे हमने 'बागी' ही समझा। लेकिन वह 'व्यास' गाँव था और बागी से पहले 'गास्की' नाम का एक गाँव और पड़ता है। वहाँ से एक-डेढ़ मील दूर आगे आकर देखा, इन लोगों की चातुरी का एक नमूना—यमुना के सँकरे पाट पर विचित्रतापूर्वक लकड़ी से बनाया गया पुल। खासा लक्ष्मण झूला ही लगता था। फ़र्क यही कि वह लोहे का है और गंगा पर तथा है विशाल। यह छोटा है, भारतीय कारीगरी का नमूना है। पास-पड़ोस के वनों की लकड़ी से ही बनाया गया है। कई स्थानों पर पानी-द्वारा आटा पीसने की चक्कियाँ भी देखीं जिन्हें ये लोग "घराट" कहते हैं। चलते-चलते बड़ी देर हो गई लेकिन अभी तो गास्की ही न पहुँच सके थे, पैर भी जवाब दे रहे थे, उधर दिन भी धीरे-धीरे ढल रहा था, निशा अपना राज्य जमाने के लिए व्यग्र हो उठी थी। किसी तरह एक जगह रुककर रात बिताई। बड़ी मुश्किल से गास्की पहुँचे और वहाँ से बागी जानेवालों के साथ-साथ बागी पहुँच गये। भोजनोपरान्त वहाँ के लोगों से बातें कीं। थोड़ा विश्राम कर 'नागथात' के लिए चल पड़े।

नागथात जौनसार प्रदेश का केन्द्रस्थान है। यहाँ की जलवायु बड़ी स्वास्थ्यप्रद है। २९ अक्टूबर १९४४ को हरिजन सेवक-संघ के प्रधान मंत्री, श्री ए० वी० ठक्कर बापा इस प्रदेश की दुरवस्था को देखने के लिए यहाँ पधारे थे। यहाँ बहुपति प्रथा के कारण स्त्री-रोगों का बाहुल्य है, उनमें वन्ध्यात्व एवं ऐन्द्रिक रोगों की अधिकता है। पुरुषों में भी गर्मी, सूजाक, उपदंश आदि रोग फैले हुए हैं लेकिन स्त्रियों की दशा तो दयनीय है। असमय में ही वृद्धावस्था को प्राप्त हो जाती हैं। बापा जी के प्रयास से कस्तूर बा राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट फंड की ओर से यहाँ एक महिला-अस्पताल चल रहा है। लेडी डाक्टर श्रीमती रामी देवी जुव्वल बड़ी लगन से सेवा-कार्य में लगी हैं। स्वयं नेपाली होने के कारण पहाड़ों पर सुविधापूर्वक आ-जा सकती हैं। अब जच्चाएँ और बच्चे दोनों खतरे से बाहर हैं। आस-पास १२ से १४ मील के दायरे के लोग उससे लाभ उठाते हैं। आवश्यकता है कि अस्पताल में—'अन्तर रोगी निवास-गृह अवश्य और शीघ्र बने। पास ही के गाँव बिसोई के स्याना (गाँव का प्रमुख व्यक्ति) श्री सूरतसिंह जी व बिसोई खत (खत=९ वा कम, ज्यादा गाँवों का समूह) के सदर स्याना श्री गुलाबसिंह जी ने ही १० बीघा भूमि नागथात में आश्रम को दान दी है। उसी भूमि

कमरों में माता कस्तूर

अवस्थित है। यहाँ का

खट्टा-मीठा स्वाद होता है

कहलाता है, बिसोई में

मिला। इधर अखरोट भी

होते हैं। निकट के एक

हम पंडित सियाराम जी से

अनुभवी व्यक्ति हैं और इस

रकों में हैं। इस प्रदेश के

तो कांग्रेस-आन्दोलनों में

हो आये हैं।

नागथात से तीसरे

आगे चले। यहाँ के लोग

दूध को जमाकर बनाई हुई

सेवन करते हैं। सैंया तक

में पड़े। इन लोगों के मकान

लकड़ी के बने थे जिनमें

थीं, सबसे नीचेवाली मंजिल

ही होती है जिसमें पशुओं के

व अन्य वस्तुओं का स्टाक

जमीन की सतहवाली मंजि

ढोर आदि जाड़ों में बाँधते

वाली में स्वयं रहते हैं, छत

हैं, तथा स्लेटी पत्थर से

मकान तो ३००-३५० वर्ष

लेकिन झाड़-बुहार व लीप-पोत

सुथरा रखते हैं। सैंया से

आनेवाली 'बस' में सवार हुए

शताब्दी में पहाड़ के अंचल

तारकोल से बनी यह सड़क

लम्बी है। यह देहरादून से

बनी हुई है। कालपी में

शास्त्री जी से मिलने का अवसर

कई बातों के अनन्तर जब मैंने

कि लोग आश्रम की बुराई

तो उन्होंने स्वाभाविक

साथ उत्तर दिया 'यह हमारे

दुर्भाग्य है और क्या कहें?'

कि एक बार निराश होकर

को यह सब लिख दिया था

गांधी जी का अपने हाथ से

प्रत्युत्तर उन्होंने मुझे दिखलाया

लिखा था—"धर्मदेव, अच्छे

शुरुआत दुःखदायी ही होता है,

विरोध करते ही हैं। हमें सदा

बनना चाहिए। मेरा भी विरोध

में कोई देवता नहीं तुम्हारी

हूँ। अगर मैं भी तुम्हारा

तुम्हें वह उपयोगी कार्य छोड़ना

हम सड़क के किनारे खड़े

थे कि रचनात्मक कार्य

कठिन है। और इसके बिना

मंजिल भी तय नहीं की जा

"ऊपर का गेट" आ गया और

को चकरौता से बस आ

के लिए सवार हो गये।

ज्ञान-विज्ञान-सम्बन्धी पु

प्राकृतिकी—बंगला में सुप्रसिद्ध रायसाहब श्री जगदानन्द राय विषयक उत्तमोत्तम निबन्धों का हिन्दी अनुवाद। मूल्य तीन रुपये पाँच आने।

गृह-नक्षत्र—गृह-नक्षत्र आदि रखनेवाली प्रायः सभी का सचित्र वर्णन इस पुस्तक गया है। मूल्य २॥) आने।

प्रकृति की नीति—इस पुस्तक की व्याख्या, धर्म और जीवन और मृत्यु आदि के कितनी ही ज्ञातव्य बातों डाला गया है। मूल्य १) एक

वैज्ञानिकी—विज्ञान-सम्बन्धी मनोरंजक विषयों पर लिखे का संग्रह। मूल्य २) दो रुपये

मैनेजर, (बुकडिपो), लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by ARYA Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगीना

लेखिका, श्रीमती चन्द्रप्रभा द्विवेदी

मानव-जीवन बड़ा अस्त-व्यस्त है, कहा नहीं जा सकता कि आज जो कुछ है उसमें कल क्या होगा? नगीना भी अपने पहले पति को छोड़ आई थी, एक लड़की के साथ। किन्तु उसी लड़की की ममता के कारण उसे अपने दूसरे पति से भी तलाक की यातना सहनी पड़ी। लेखिका ने बड़ी सुंदरता से आये दिन के साधारण जीवन की घटनाओं का चित्रण किया है। कहानी पठनीय तथा रोचक है।

"मसजिद में, लखनऊ से उनका शौहर आया है न? अपनी लड़की लेकर?"

"अच्छा?"

करीम को लगा कि जैसे भीषण भूडोल आ गया है, उसके चारों ओर मकान आदि चक्र की भाँति घूमने लगे, फिर भी उसने धैर्य के साथ पूछा—"सच, मुझे तो नहीं विश्वास होता।"

"तुम्हें न हो न सही, यह लो अपनी चाभी, उनकी लड़की के लिए एक आध रुपये का फल-वल ले जाकर दे आओ। मुझसे कह गई है।"

"हुँः?"

करीम अपना सिर पकड़कर ज़मीन पर बैठ गया; पास ही जमीला भी बैठ गई। उसने चिराग़ की धुँधली रोशनी में देखा कि जैसे वह आत्मिक उत्तेजना से जला जा रहा हो। जमीला ने मुस्करा दिया करीम ने कहा—"तुम मुस्कराती हो जमीं?"

जमीला गंभीर हो गई और बोली "तो अब पकाओगे न रोटियाँ?"

"क्यों जमीं? जले पर नमक छिड़कती हो?" करीम ने कहा।

"मैं छिड़कती हूँ? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो यह अपराध लगाते हो? चलो, मैंने बड़ी मीठी चपातियाँ बनाई हैं, अब्दुल के अब्बा अब न आयेंगे। अकेली मुझसे खाई भी नहीं गईं, तुम्हारी भी अकेली सूरत मेरे सामने आ गई, मैंने सोचा क्यों न मैं तुमको भी परख लूँ, आख़िर तुम हो तो मेरे वही न! हाँ, मैं तुम्हारे लिए अब कुछ और हो गई हूँ।'

करीम ने आँखें उठाईं वह बोला—"मैं क्या सुन रहा हूँ जमीं! तुम ऐसी ही होतीं तब न!"

"मैं वैसी ही हूँ, कुछ दूसरी नहीं, हाँ तुम हो गये हो कुछ और; तुमको तो उस समय घूँघट में छिपे चाँद के टुकड़े की भूख थी और मैं—मैं तो वही जमीला थी—जो सदा सर आँखों पर बिना ओट-संकोच के रखती थी। गर्मी की झुलसती लपटों में भी अम्मीं से चुराकर चपातियाँ तुम्हारे तरबूज के खेत में, उस रेगिस्तान जैसी गंगा की तपी रेत को पार कर पहुँचती थी।" वह कहती हुई जमीला अब एकदम करीम के निकट आ गई और बुदबुदा कर फिर पूछा—"भूल गये हो वे दिन?"

करीम के उतरे मन में फिर गुदगुदी की लहरें उठने लगीं। उसने बड़े स्नेहिल स्वर से पूछा—"ऐसा क्यों करती थीं, जमीं?"

"इस जमीं की रूह के पाक-परवर ने उस झोपड़े को काबा न बना रखा था?

"सचमुच? ऐसी ही बात थी, मेरी अच्छी जमीं?"

"अब भी झूठ समझते हो?"

"नहीं, जमीं? कभी नहीं, तब तो तुमको खोकर मैंने अपनी बहुत बड़ी नियामत खो दी। अब क्या करूँ? मुझे पहले स्वप्न में भी इसका अनुमान नहीं था। बताओ, अब क्या करूँ?"

जमीला ने कहा—"चलकर अब चपातियाँ सेंको, बेगम साहब अब शौहर के पास से आती ही होंगी।"

"आने दो, मुझे उसकी याद मत दिलाओ। जमीला, मैं बड़ी अच्छी चीज लाया हूँ।"

"क्या है वह?" जमीला ने उत्सुकता से पूछा।

"चाँदनी?"

नगीना को वहाँ न पाकर करीम क्रोधित हो उठा।

"तब तो वह बेगम के लिए है।"

"हाँ, मेरी बेगम जमीला के लिए है।

"चलो हटो, अगर मैं न आई होती तो! यह एक चरके की बात है।"

"चरके की बात कतई नहीं है, मैं इसे तुम्हारे घर पहुँचाता?"

"कैसे?"

करीम उसके घर के भीतर प्रवेश कर गया।

(२)

निशा का गम्भीर सन्नाटा चीरती हुई हल्की-हल्की पगध्वनि उस सँकरी गली में सुनाई दी, किन्तु प्रत्येक पदगति के साथ जिसकी प्रतीक्षा करती-सी वह ध्वनि आ रही थी, उसका वहाँ कोई चिह्न न था। द्वार ज्यों के त्यों बन्द थे, कुलाबे में टीन का ताला वैसा ही झूल रहा था। नगीना ने काँपते हाथों से टटोला और उसी में सिर टिकाकर खड़ी हो गई, न जाने कब तक वह यों ही खड़ी रहती, यदि उसका साथी न पूछ बैठता—"क्या अभी तक भाई जान नहीं आये?"

"भाई जान?" नगीना का स्वर भीगा था। उसने अपराधी की भाँति अहमद की ओर देखा। मानो वह आँखों द्वारा कह रही थी कि तुमने मुझको अपनाकर भी क्यों नहीं अपनाया! मैं सदा तुम्हारी और तुम्हारी बेटी की ही रही आती, क्यों आज पराये के द्वार पर आकर तिरस्कार की ठोकर खाती, वह भी अपनी बीमार बेटी की रुग्णता में पहुँचने पर, जो मेरी भी उतनी ही है जितनी कि इस समय केवल तुम्हारी है, बल्कि उससे भी अधिक, क्योंकि मैं उसकी अपनी माँ हूँ, वह मेरी अपनी आत्मा और शरीर है। जिसका रग-रग मेरे रक्त और दूध से सिंचित है! वही आज मेरी पराई है, उसको अपनाना या प्यार करना, उसके सम्मुख भीषण अपराध है जिसकी मैं आज पत्नी हूँ।

"कहाँ गये वह—" साथी ने जिज्ञासा से फिर पूछा।

उसने गले को साफ किया और कहा—"मैंने कहा नहीं कि वह पूरे फरिश्ते हैं, अब्दुल के घर चले गये होंगे, क्या करते अकेले! वह बड़े भले पड़ोसी हैं, जमीला उनकी बेगम का नाम है।"

"तो पुकारूँ?"

'नहीं, मैं ख़ुद जा रही हूँ, तुम यहीं रुके रहना। दरवाज़ा तो खुला मालूम पड़ता है।"

"तो मैं चला ही क्यों न जाऊँ? बेटी की कहीं आँख खुल गई होगी तो!"

"हाँ.....।"

अहमद लौट पड़ा; नगीना खड़ी देखती रही, जब वह गली को पार कर गया, तब द्वार को धड़ाके से खोलकर वह अन्दर चली गई।

उस कच्ची अँगनाई में तीन मूर्तियाँ प्रगाढ़ निद्रा में सो रही थीं। नगीना के पैरों के नीचे से जैसे धरती सरकती जा रही थी। अब्दुल के अब्बा तो कहीं न दिखाई देते थे, हाँ उनके स्थान पर करीम अवश्य सो रहा था। उसकी साँस घुटने-सी लगी; किरासिन का गुल भरा दीपक मोटे धुएँ का बादल निकाल रहा था; जिसके नीचे अधजली ज्योति उस दृश्य को अधिक न छिपा सकी। दिन भर की भूखी-प्यासी व्यथिता नगीना को सारी परिस्थिति समझते देर न लगी। उसकी आँखों से चिनगारियाँ छूटने लगीं, वह झुँझला कर बोली—"अब्दुल? मेरी चाभी दो?"

हड़बड़ा कर जमीला उठ बैठी—"तुम्हारी राह तब से देखते-देखते अभी ज़रा अलसा गई।"

"क्या, वह नहीं आये?"

जमीला तिलमिला उठी, उसने झटका देकर करीम को जगाते हुए कहा—"जाओ, वह देखो नगीना खड़ी है। निकालो मेरे घर से।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करीम आँखें मलता उठ बैठा और निकट ही दो क्रुद्धा मूर्तियों को देखकर कुछ स्थिर न कर सका। सहसा नगीना की आँखों से दृष्टि मिलते ही उसका रोम-रोम जल उठा और इसके मस्तिष्क में कुत्सित एवं विद्रूप चित्रों के घने काले बादल उठने लगे। वह उसी आवेश के साथ बोला—"कहाँ चली गई थी, बिना कुछ कहे सुने?"

"जहन्नुम में?" नगीना कड़क उठी।

"तो लौट क्यों आई?"

नगीना जैसे अथाह में गिर पड़ी हो। चारों ओर देखा, कहीं कोई सहारा नहीं। न कहीं ठिकाना कि वह अपने को बचा पाती। वह डूबी पलकों से उसकी ओर देखकर बोली—"तुम जानते नहीं हो? मेरी बेटी बहुत बीमार है?"

"कौन बेटी? तीन साल के दिन बीत गये, कब तेरे बेटे-बेटी पैदा हुए, स्वप्न तो नहीं देखती?"

"मैं स्वप्न नहीं देखती, क्या मेरी गोदी की उस बेटी की याद तुम्हें नहीं है जिसके बाप ने मुझसे आकर छीन लिया था?"

"तो फिर क्यों ले गया, क्या रख नहीं सकता था?"

"ले गया था, उसकी लड़की थी, पर वह मुझे कैसे भूलती? उसकी दूसरी माँ को उसके बाप ने इसी से तलाक दे दिया कि वह उसे ठीक से रखती नहीं थी। हाय, मेरे रहते ही मेरी बेटी मेरे लिए रो-रोकर सूखकर काँटा हो गई; ओह! उसकी धँसी आँखें, पीला मुँह, कंकाल शरीर कैसे भुलाया जा सकता है? उसकी इस भयानक दशा पर वह मेरी ममता की भीख माँगने के लिए लखनऊ से यहाँ आये हैं। जब से उन्होंने बताया कि तुझे अम्मीं के पास ले चलूँगा, तब से वह कैसी अधीर हो उठी, पानी तक नहीं पिया। आज मेरी वह बेटी इतनी बीमार, इतनी व्याकुल न हुई होती तो क्या वह उसे यहाँ लाते? बच्चों के कलपने से जब माँ की रूह क़ब्र फोड़कर आ पहुँचती है तब भला मैं कैसे न जाती जिसका जर्रा-जर्रा मेरे अपने खून, कलेजे के खून से सिंचा है।"

"तो उससे मुझसे क्या मतलब?"

"तुमसे कब मतलब कहती हूँ, गई तो मैं थी न?"

"तो फिर क्यों वापस चली आई या पहले ही क्यों भागी थी? क्यों न अहमद की ही बनी रही? पर नहीं, जब तो मैं बड़ा अच्छा और बड़ा नेक था क्योंकि उससे अधिक कमाता और तुम्हारी ख्वाहिशों को पूरी कर सकता था और अब जब वह लखनऊ से रोकड़ लेकर आया है, तब उसकी बेटी का बहाना न लेकर न जाओगी तो जा कैसे सकोगी? बड़ा अच्छा किया था जो चली गईं, क्या-क्या लाई हो वहाँ से! रह क्यों नहीं गई?"

"जले पर नमक मत छिड़को, लाओ चाभी मैं घर जाऊँगी, जहाँ अभी तक चिराग़ भी नहीं जला है।"

"रहने दो, अब उसकी जरूरत नहीं है, मैं खुद जला लूँगा।"

"अभी तक क्यों नहीं याद आई थी चिराग़ और मशाल की?"

"तुमसे मतलब? तुम तो नहीं जलाने आई थी?"

करीम झटके के साथ उठा और घर का ताला खोलकर दीपक जलाने लगा। नगीना चूल्हे के पास जाकर लकड़ियाँ ठीक करने लगी। करीम ने रक्तिम आँखों से उसकी ओर देखा फिर गुर्रा कर बोला—"रहने दो, मैं खाना नहीं खाऊँगा।"

"मैं जानती हूँ कि तुमको जमीला की मीठी चपातियाँ मिली हैं, पर मुझे अपने लिए तो बनाना है?"

"ओह? अब समझा कि खाने के लिए मेरा घर और खेलने को मसजिद है। नगीना, याद करो उस दिन की जब बैठकर आठ आँसू रोती और चूनी की रोटियाँ ईद तक के दिन खाती थीं। ऊपर से अहमद और उसकी भाभी की जूतियाँ मिलती थीं। तब मैं ही तुम्हारा सब कुछ था। वह छिप छिपकर तुम्हारी इबादत और तोहफ़े, मेरे कलेजे के, मेरे ईमान के खून से ही नहीं तैयार होते थे बल्कि उसमें एक और मासूम दिल की किसी की आह भरी रहती थी। पर जाने दो, उस बकवास को, उससे तुमसे क्या? लेकिन नहीं, मेरा मतलब यह है कि मैं यह सब इसलिए नहीं करता था कि मुझे कहीं बीबी नहीं मिलती थी। तुम नहीं जानती हो कि मैंने तुम्हें सुखी करने के लिए अपनी कितनी क़ीमती दुनिया की कुर्बानी कर डाली थी कि तू दुःखी है, दीन है, तेरे लिए मैं ही सबसे अच्छा हूँ और उसके लिए जो अभी कुमारी है, जिसके माँ-बाप रुपया खर्चने वाले हैं उसे मुझे कहीं अच्छा घर दिला देंगे। अब मैं देखता हूँ कि तू नागिन निकली। जो भूख और पीड़ा से आकुल थी उसे दूध और दया से जब बली बनाया तब आस्तीन के भीतर फुफकारती हुई पाया। इससे बढ़कर अब क्या होगा, तू खुशी से वहाँ चली जा, वह तेरी बेटी है, वह तेरा शौहर है, तेरे महर के रुपये भी मैं चुकता किये देता हूँ, और यह ले।"

करीम ने पाँच-पाँच रुपये के पाँच नोट उसके सामने निकालकर फेंक दिये और मुर्दा-सा खाट पर पड़ रहा। नगीना ने उन नोटों को देखा, केवल पचीस रुपये! उसके तन-मन का मूल्य सामने रक्खा है। एक दिन इसी मन नहीं तो तन के लिए जिसने इतने रुपये की न जाने कितनी बार बलि दी थी वही आज मेरी ममता-माया के सामने इतना भी नहीं सह सकता कि मैं उसे आँखें भर कर देख तो लेती! अल्लाह! मेरी मासूम बेटी! मुझको यह दिल ही क्यों दिया था जब तलाक के नाम पर रौंदना था। माँ बनना भी कितना बड़ा पाप है! एक को इसी अपमान से तलाक देकर जहाँ दूसरे के द्वार पर आई और अपने उजड़े दिल को फिर बसाने लगी तब मेरी तृष्णा फिर बढ़ने लगी। आज मेरी अपनी बेटी मसजिद में पड़ी है। मेरे पास आकर भी वह दूर ही है, मैं उसे अब पा नहीं सकती, अपना नहीं सकती, क्योंकि अब तो मैं उसके बाप की नहीं हूँ। अल्लाह! क्या माँ कोई चीज नहीं है? वह माशूका ही होने के लिए है? अगर हाँ, तो उसकी अभागी गोद में माया-ममता के यह बंधन बच्चे क्यों आते हैं? क्यों इनकी ख्वाहिश नारी अपने जन्म के ही साथ लाती है? बचपन से ही गुड़ियों और पालतू पशुओं के बच्चों की वह माँ बनने में क्यों आनंदित होती है? वही जब अपने बूंद-बूंद रक्त से सींच-सींचकर न जाने कितनी कामनाओं और कष्टों की उलझन में तड़पती अपनी गोद में एक नन्हीं-मुन्नी पुतली पाकर सारी व्यथा भूल जाती है तब भी उन सुकुमार फूलों पर न उसका कोई अधिकार रह पाता है और न प्यार, क्योंकि वह तो स्वयं एक खिलौना है—अपने उस पुरुष की जिसकी वह एक खुमार है, एक नशा है। यदि यह बच्चे न होते तो उसकी रंगीन दुनिया आग सी जलने लगती, सूनी रहती है, एक अपने से भी बड़े साथी के पार्श्व में अपने को अकेली पाती।"

वह धीरे से उठी और करीम की खाट पर बैठती हुई उसका हाथ पकड़ कर बोली—"क्या मेरी अस्मत का, मेरे दिल के दुःख-सुख का नाता अपने कलेजे के टुकड़े को मुड़कर देखने में ही खतम हो जाता है?

"मैं बोलना नहीं चाहता। मैं दो नाव पर चढ़नेवाले को नहीं देखता। जब तुम गईं तब गईं—अब तुम खुशी से अपने कलेजे के टुकड़े को कलेजे से लगा सकती हो।"

"मैं दो नावों की चढ़नेवाली नहीं हूँ, बेटी को मैं वैसे ही देखने गई थी जैसे कोई एक दुःखी बच्चे को देखने जाता है मैं तुम्हारी हूँ, तुम्हारी ही रहूँगी। यह बात सही है कि एक म्यान में दो तलवारें नहीं रहतीं, क्या तुम्हारे और जमीला के पुराने नाते को मैं जानती नहीं हूँ? क्या मेरा कलेजा कबाब नहीं हुआ करता था?"

"तो बदला तो तुमने चुका [illegible] अब अपना रास्ता लो।"

नगीना बाहर निकल [illegible] ओर भयानक अंधकार था [illegible] हाथ में वह सम्पत्ति भी थी जो [illegible] मन जीवन के बदले में मिली [illegible] उसके तलाक की निशानी [illegible]

विवाह के अवसर पर

साधारण उबटन से अब काम नहीं चलता

गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

रूप विलास

मँगाइए

शादी के पहले मित्रों को चाहिए कि वर-वधू की सुन्दरता बढ़ाने के लिए रूप विलास का डिब्बा मँगाकर आज ही भेंट करें ताकि उन्हें शादी पर [illegible] होना न पड़े। उनकी भद्द पुराने चमड़े से छिपी हुई सौंदर्यता निखर [illegible] असली सुन्दरता चमक आये। इसके लगाने से मुहासा, झाँईं, चेचक, काले-[illegible] दाग़, फुन्सी, खुश्की, बदरौनकी, झुर्रियाँ वग़ैरह जल्द आराम होती हैं। थोड़े [illegible] के लगाने से मलिन मुख चमकदार होकर चेहरे पर गुलाबी छटा दमकने [illegible] हैं। यदि आप अपना चेहरा खूबसूरत बनाना चाहते हैं तो २५ वर्ष [illegible] प्रचलित जगत्-प्रसिद्ध रूप विलास कम्पनी का रूप विलास खरीदने में देरी [illegible] कीजिएगा। यह स्त्री-पुरुष दोनों का दिल खुश करनेवाला है। इसकी [illegible] भी इतनी प्यारी है कि तबियत को मस्त करती है। क़ीमत एक डिब्बा [illegible] तीन डिब्बा का ५॥) डाक-खर्च माफ। पेकिंग खर्च, मनीआर्डर फीस [illegible]

रूप विलास कम्पनी नं० ४८१ धनकुट्टी कानपुर

अपने दाँत ठीक तरीके से साफ करना अवश्यक है!

खुरदरी चिज़ें दांतों को ख़रोंच देती हैं और ख़रोंचों से [illegible] पैदा होती है। बुरे स्वादवाली चीज़ों से आपको [illegible] बदबू आने लगेगी। जो चीज़ें गन्दी रहती हैं [illegible] सावधानी से पेक नहीं किया जाता है, वे [illegible] होती हैं—क्योंकि बहुधा उनमें कीटाणु [illegible] जिससे बीमारी फैलती है। इसलिये, [illegible] ऐसी चीज़ों से कभी मत साफ कीजिए।

हमेशा गिब्बस डेन्टिफ्रिस को इस्तेमाल [illegible] यह किसी ख़रोंच के बिना आपके दांत बहुत [illegible] साफ कर देता है। इसका स्वाद और [illegible] बहुत अच्छे हैं। यह विशनाशक है। और [illegible] पेक होने के कारण धूल से बचा रहता है। [illegible] अलावा एक डिबिये में इतना डेन्टिफ्रिस [illegible] १०० बार से जादा दांत साफ़ करने के लिये [illegible]

हर एक व्यक्ति अपने दाँत ठीक तरीके से साफ कर सकता है!

गिब्स डेन्टिफ्रिस

GD. 13-33 HI

D. & W. GIBBS LIMITED, LONDON, [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंगमंच

पुराने फिल्म-स्टारों की उलझन

...समय उनकी आर्थिक समस्या कैसे सुलझेगी ?

लेखक, श्री उमेश जोशी

...ने लड़ाई समाप्त हुई है, तभी से फिल्म-स्टारों के सामने एक संकट-...या आ खड़ी हुई है। यह समस्या ...ही रही है। और हल भी कैसे ...ई के दौरान में फिल्म-स्टारों ने ...को बहुत तंग किया। एक ...काम करने के लिए वह लाखों ...गये, फिर भी समय पर शूटिंग ...न होना, और चार-पाँच चित्रों ...काम करना, इससे निर्माताओं ...नुक़सान हुआ। नुक़सान इसलिए ...प्रोड्यूजरों को चित्र का शूटिंग ...करना पड़ता था, यदि कोई स्टार ...होता, उस रोज की शूटिंग ...में मुंहमांगा दाम देने पर भी ...को फिल्म-स्टारों की खुशा-...पड़ती थी, अपना काम निका-...लिए उस वक्त का वातावरण ऐसा ...कि किसी नये चेहरे को स्क्रीन ...जाता। इसलिए निर्मातागण ...थे—और उनकी मजदूरी का ...काम फिल्मी-स्टारों ने उठाया। ...आज फिल्मी-दुनिया का रंग ...हुआ है। अब फिल्म-निर्माताओं ...है। जब से निर्माताओं ने नये ...पर उतारने का क्रियात्मक ...कर दिया है, तब से फिल्म-...के दिमाग़ सातवें आसमान से एक-...उतर आये हैं। जो कलाकार ...एक चित्र में कार्य करने के लिए ...थे, अब वही कलाकार हज़ारों ...हैं। फिर भी इनको चित्र में नहीं रक्खा जा रहा है। आज प्रत्येक निर्माता नये चेहरे की खोज में लगा हुआ है। जब तक उनको चित्र के लिए कोई नया चेहरा मिलता है, तब तक वह पुराने स्टारों से बात भी नहीं करते।

पुराने कलाकारों को अब वही लोग अवसर दे रहे हैं जिनको कि अपनी शक्ति पर विश्वास नहीं है, या जिनके कि दिमाग़ अब भी पुरानी दुनिया में घूम रहे हैं। आज जनता भी स्क्रीन पर नये-नये चेहरों को देखना चाहती है। वह अब पुराने चेहरों को प्रत्येक खेल में देखते-देखते थक गई है। आज समय की यह ज़बरदस्त पुकार है कि पुराने चेहरों को स्क्रीन की दुनिया से हटाओ, जिनमें अब नवीन मौलिकता नहीं रही है। आजकल फिल्मी-बाज़ार में मुमताज़ शान्ति, सोभना समर्थ, लीला चिटनिस, प्रतिमादास गुप्ता के नामों की विशेष पूछ नहीं रह गई है। एक समय था कि इनके नामों पर जनता उमड़ पड़ती थी। लेकिन अब वह बात नहीं रही। इसी प्रकार पुरुष-स्टारों में पहाड़ी-संन्याल, सहगल, चार्ली, मोतीलाल आदि भी ख्याति की मंजिल से फिसल पड़े हैं।

अब स्वर्णलता, वीणा, सुलोचना, चटर्जी, गीता निज़ामी, बेगम पारा, वीरा, नासरीन आदि अभिनेत्रियाँ ख्याति की दुनिया में आगे बढ़ रही हैं।

अब प्रत्येक निर्माता यह अनुभव करने लगा है कि फिल्म ढाई-तीन लाख में बन जाना चाहिए। ज्यादा खर्च होना ठीक नहीं। क्योंकि उसके दाम नहीं उठते। आज के वितरक भी बहुत सचेत हो गये हैं, जब से उनको कुछ फिल्म-निर्माताओं द्वारा धोखा खाना पड़ा। आजकल अस्सी फीसदी चित्र समाजिक बन रहे हैं क्योंकि सामाजिक चित्रों में कम खर्च होता है। समय की पुकार भी कम खर्च करना ही है। ढाई-तीन लाख में चित्र तभी बन सकता है, जब कि चित्र में नये चेहरे उतारे जायें। क्योंकि पुराने कलाकार अब भी चालीस-पचास हज़ार से कम लेते ही नहीं। यदि दो कलाकार भी रखे जायें तो एक लाख रुपया उन्हीं दो के लिए हो गया। फिर कैसे काम चलेगा? इसलिए निर्माताओं को मजबूरन नये नये कलाकारों को फिल्म में काम देना पड़ रहा है।

निर्माताओं का यह रवैया देखकर पुराने स्टारों के पेट में चूहे लोटने लगे हैं। वह सोचने लगे हैं कि कहीं ऐसा न हो, कि नये कलाकार फिल्म-बाज़ार पर क़ब्ज़ा कर लें? इसलिए वह अब बड़े सोच में पड़ गये हैं, कि क्या करना चाहिए? इधर तीन-चार नये कलाकारों को फिल्मी-दुनिया में आशा से अधिक सफलता मिली है। यही सफलता पुराने कलाकारों के लिए स्पर्धा का विषय बन गया है। उनकी समझ में नहीं आ रहा है कि उन्हें क्या करना चाहिए? पुराने कलाकारों में एक ग्रूप ऐसा भी है जो यह चाहता है कि हमको अपनी माँग रुपयों के सम्बन्ध में कम कर देनी चाहिए। इतनी कम कर देनी चाहिए, कि वह निर्माताओं के चित्र-निर्माण के खर्च के एस्टीमेट से मेल खा जाये। तभी हम आगे बढ़ सकते हैं।

हमारा कहना यही है कि समय को देखते हुए उनको (पुराने कलाकारों को) अब दौलत की ऊँची सतह पर नहीं चढ़ना चाहिए। एक समय था जब आँधी में आम लूट लिये गये—लेकिन अब जमाना दूसरा है। आज आँधी के आम नहीं हैं—इसलिए अब कुछ समझ से काम लेना चाहिए। नये कलाकारों के साथ भी उनको सहयोग करना चाहिए अपना भाई समझ कर!

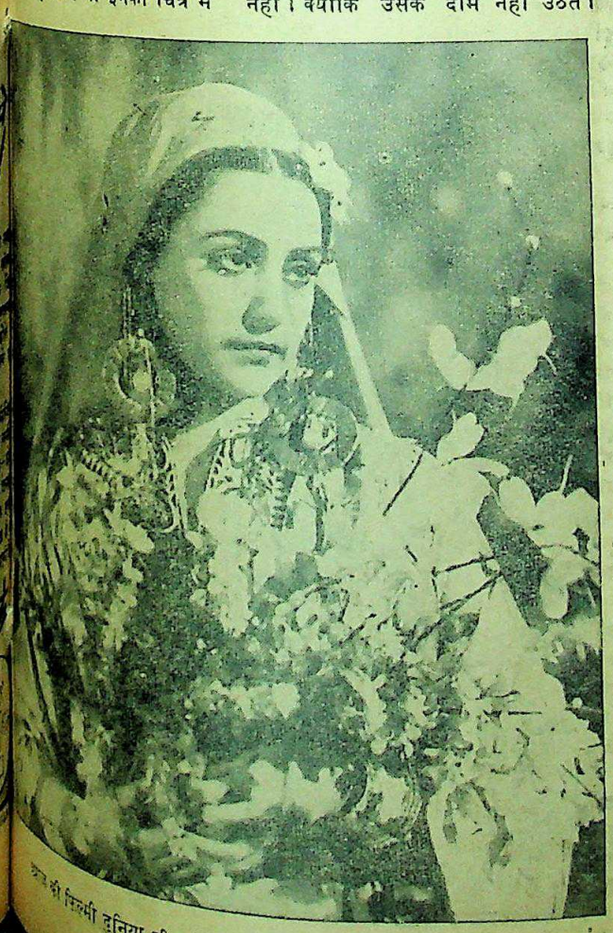

...की फिल्मी दुनिया की प्रसिद्ध अभिनेत्री और गायिका सुंदरी नसीम।

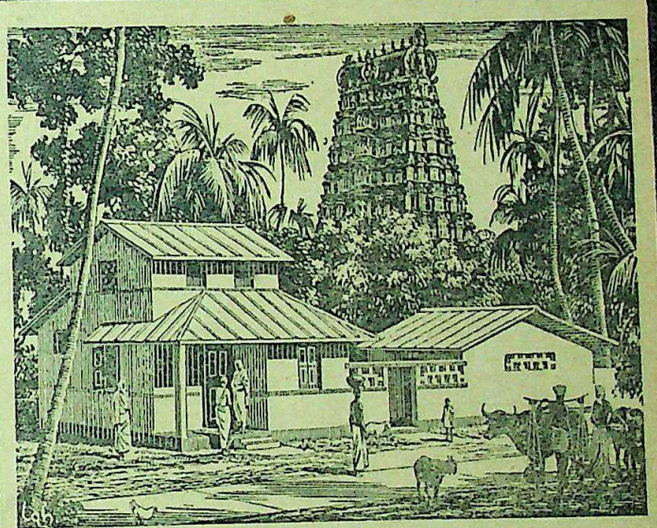

आज का गृह निर्माण।

गृह

भोजन और वस्त्र के पश्चात् घर ही मानवीय आवश्यकताओं में सबसे अधिक महत्वपूर्ण वस्तु है। इस तथ्य को मानने से कोई इन्कार नहीं करेगा कि आज राष्ट्र के सम्मुख गृह निर्माण ही एक प्रमुख समस्या है; जिसके निराकरण के लिए तुरन्त कोई आवश्यक कदम उठाना नितान्त आवश्यक है

कॉक्रीट एकमात्र धनी पुरुषों के लिए ही नहीं है, वरन् यह स्थायीत्व, मितव्ययता, उपयुक्तता, अग्निरक्षिता और स्वच्छता आदि अपने स्वाभाविक गुणोंके कारण प्रत्येक व्यक्ति के लिए सस्ती से सस्ती भवन निर्माण सामग्री है।

निर्माण सम्बन्धी प्रगति के लिए, कॉंक्रीट द्वारा अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए कॉंक्रीट एसोशिएशन ऑफ इंडिया (७०, क्वीन्सवे, न्यू देहली) के टेक्निकल स्टाफ की सहायता मिल सकती है।

गवर्नमेंट का नियन्त्रण:—यद्यपि सीमेंट वितरण पर फिलहाज गवर्नमेंट का नियन्त्रण बना ही रहेगा फिर भी बिना किसी कठिनाई के हर तरहके निर्माण कार्य, मरम्मत तथा नवीन कार्यों के लिये सीमेंट मुहय्या करने का अधिकार प्राप्त करना अब सम्भव होगया है।

दि सीमेंट मार्केटिंग कं. आफ इन्डिया लि.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिट्ठी-पत्री

उन्नाव में 'निराला-गृह' का निर्माण

'देशदूत' के गत आठ अक्तूबर के अंक में 'निराला' गृह-निर्माण की आयोजना प्रकाशित हुई थी। उस आयोजना में हिन्दी साहित्यानुरागियों से प्रार्थना की गई थी कि प्रस्तुत आयोजना में तन, मन, धन से सहायता करके हिन्दी के गौरव कवि 'निराला' जी के प्रति प्रेम तथा श्रद्धा प्रकट करें। प्रसन्नता की बात है कि उक्त अपील के फलस्वरूप अनेक साहित्य प्रेमियों ने सहायता करने का वचन दिया है। इस आयोजना का कार्य प्रारम्भ हो चुका है और उन्नाव ही नहीं वरन् अन्य प्रान्तों के धनी पुरुषों ने इसको सफल बनाने का भार उठाया है। महाकवि 'निराला' के व्यक्तित्व तथा लेखनी के प्रति व्यवसायी नगर कानपुर से अभी तक सबसे अधिक सहायता प्राप्त हुई है।

लक्ष्मीरतन काटन मिल्स के कर्मचारियों की ओर से पंडित रमानाथ मिश्र एम० ए० ने ५००) तथा कानपुर रोलिंग मिल्स के डाइरेक्टर पंडित रामकुमार वाजपेई ने ५००) का दान देने का वचन दिया है, जो शीघ्र ही पूरा हो जायगा। इसके अतिरिक्त कानपुर, उन्नाव तथा लखनऊ से अन्य सज्जनों ने सहायता का वचन दिया है।

'निराला' गृह-निर्माण के हेतु पंडित राजाराम दीक्षित एम० ए० एल० एल० बी०, मौरावाँ (उन्नाव) ने बिना किसी प्रकार का मूल्य लिए, उन्नाव में दो बड़े-बड़े प्लाट देने का वचन दिया है।

'निराला' गृह के साथ एक वृहद् पुस्तकालय तथा वाचनालय-निर्माण की भी आयोजना है, जहाँ पर कि लिखित ग्रन्थों को एकत्रित तथा प्रकाशित कराने की व्यवस्था की जायगी।

आशा है कि हिन्दी के अन्य साहित्य-प्रेमी अपनी उदारता प्रकट करके प्रस्तुत कार्य को सफल बनायेंगे।

मौरावाँ, —त्रिलोकीनारायण दीक्षित
उन्नाव एम० ए०

* * *

बालकों के प्रतिनिधि कवियों के नाम

आपको यह पढ़कर प्रसन्नता होगी कि हमने 'शिशु-भारती' के नाम से बालकों के प्रतिनिधि कवियों का काव्य-संग्रह प्रकाशित करने का निश्चय किया है। आप भी अनुभव करते होंगे कि ऐसे ग्रन्थ के प्रकाशन की बड़ी आवश्यकता है। आज से बहुत पहले ऐसे ग्रन्थ का प्रकाशन हो जाना चाहिए था। बाल-साहित्य की ओर समृद्ध साहित्यकारों की उपेक्षा देखकर यह कार्य हमने आपके सहयोग के विश्वास पर ही अपने ऊपर लिया है। अब इसे सफल बनाना आपका कार्य है। शिशु-भारती को हम बहुत ही सुन्दर आकार प्रकार में और सचित्र छापेंगे और चाहेंगे कि बालकों की लिखी हुई उसमें सभी अच्छी रचनायें आ जायें।

बाल-साहित्य के अधिकांश प्रतिनिधि कवियों ने सहर्ष इसमें सहयोग देने का वचन दिया है। आपकी रचनायें भी हमने एकत्रित की हैं किन्तु हम चाहते हैं कि आप स्वयं अपनी १५-२० बालकों के लिए लिखी हुई रचनायें भेजने की कृपा करें जिससे हम निश्चिन्त हो सकें कि आपकी अच्छी रचनायें ही इसमें जा रही हैं। आपके सहयोग के बिना हमें भय है कि कहीं आपकी साधारण रचना इसमें न चली जाय।

आशा है शीघ्र ही आप हमारी प्रार्थना पर ध्यान देंगे तथा ग्रन्थ के लिए अपनी शुभ कामनायें तथा रचनायें भेजेंगे।

फ़तहपुर —सोहनलाल द्विवेदी
एम० ए०

शक्ति का

दशनसंस्कार चूर्ण

सुगंधित और औषधियुक्त दंत मंजन

अध्यक्ष माथुर बाबू का
शक्ति औषधालय, ढाका
सन् १९०१ से आयुर्वेद का मार्ग-प्रदर्शक

एकादशी—लेखक, श्रायुत [illegible] दीक्षित 'मिलिन्द'। इस [illegible] मिलिन्द जी की १२ कमनीय [illegible] का संग्रह किया गया है। [illegible] कवितायें पौराणिक आख्यान [illegible] के आधार पर नये ढंग से लिखी [illegible] मूल्य केवल १।–) एक रुपया पाँच [illegible]

वेणुकी—लेखिका, श्रीमती तारा [illegible] इस पुस्तक में श्रीमती तारा [illegible] ६२ कविताओं का संग्रह किया [illegible] है। इसमें संग्रहीत कविताओं में [illegible] कता है और है सहृदयता का [illegible] झंकार। मूल्य १) एक रुपया।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहा

सरकार खाद्य के विषय में क्या कर रही है?

१. देश का समस्त उपलब्ध अनाज अखिल भारत वर्षीय आधार पर बांट दिया जायेगा। फालतू और कमी वाले क्षेत्रों में बराबर विभाजन होगा।

२. एकाधिकार द्वारा प्राप्ति के प्रारम्भ व विस्तार की व्यवस्था से देश के आंतरिक साधनों का परिपूर्ण संगठन किया गया है। इसमें सरकार उत्पादकों को उनके न्यायोचित राशन से वंचित किये बिना ही अधिकाधिक अनाज प्राप्त करने में समर्थ हो सकेगी।

३. मूल्य-नियंत्रण की कड़ी व्यवस्था जिसमे उत्पादकों और उपयोगकर्ताओं दोनों को उचित मूल्य प्राप्त हो सके।

४. राशन के विस्तार द्वारा अभाव को यथा सम्भव बांट लिया जावेगा।

नागरिक एवं ग्राम्य क्षेत्रों में अब लगभग १३ करोड़ व्यक्तियों के राशन की व्यवस्था है।

५. अनाजों का सभी निर्यात बंद कर दिया गया है।

६. बाहरी आयात का प्रत्येक प्रयत्न किया जा रहा है।

७. "अधिक अन्न उपजाओ" आन्दोलन और तीव्र कर दिया गया है। नई भूमि में कृषि की जा रही है। सरकारी जमीन के लॉन व बगीचों में अनाज उत्पन्न होगा।

८. अनुचित संग्रह, मुनाफ़ाखोरी व दुर्वृत्ति को रोकने के लिये खाद्य-विभाग के प्रबंध में सुधार किया जा रहा है। ये उन तरीकों में से कुछ हैं जो खाद्य समस्या को हल करने के लिये काम में लाये गये हैं। आपसे हमारी सब से बड़ी मांग जो है वह है आपके विश्वास और सहयोग की। हमें उससे वंचित मत कीजिये।

खाद्य संकट को पराजित कीजिए

एक साथ कार्य कीजिये — एक साथ हिस्सा बटाइये

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...प्रहास

भंग की तरंग

...गांधी ने कैबिनेट मिशन के ...पर अपना आशीर्वाद दे दिया। ...आज़म का फतवा कब ...?

* *

...आरम्भ हो गया। पाकिस्तान ...तो क्या उत्पात करने का भी ...गया? दंगा करना धर्म ...इसमें छेड़-छाड़ करने की क्या ...?

* *

...है कि आज कल चर्चिल साहब ...आज़म खत-किताबत करने में ...लेंडवालों को सावधान रहना ...चर्चिल साहब कहीं वहाँ भी ...न शुरू करा दें?

* *

...राज्य में एक क़िले में विस्फोट ...फलस्वरूप दतिया के क़िले ...गया। कैसे बेवक्त विस्फोट ...समय प्रजा से लड़ने के लिए ...क़िलों की कितनी महान् आव- ...। क्या कांग्रेस की भाँति विधाता ...का विरोधी होता जा रहा है?

* *

...के एक अख़बार ने लिखा ...के सबसे बड़े शत्रु चर्चिल हैं। ...पर क़ायदे आज़म नाराज़ ...जायेंगे? उनका नाम चर्चिल ...नीचे आ जायेगा।

* *

...मुहम्मद अब्दुल्ला का कहना है ...की गद्दी छोड़नी पड़ेगी। अवश्य ...रामपुर, हैदराबाद और भूपाल ...होंगे।

* *

...जाता है कि १९४२ के अत्या- ...जाँच होगी। हाँ, होना ही ...एक कमीशन तुरन्त कायम हो ...ली जायें, रिपोर्ट प्रकाशित ...काम बीस सालों में समाप्त ...चाहिए।

* *

...प्रान्तीय मुस्लिम लीग के ...अब्दुल हमीद ख़ाँ ने कांग्रेसी-नीति के विरुद्ध अनशन करना आरम्भ किया था। किन्तु भूख के सम्मुख हड़ताल टिक न सकी। अन्त में उन्होंने कलिया और पुलाव द्वारा अपना अनशन भंग कर दिया। सच तो यह है कि इसी को बहादुराना तरीक़ा कहते हैं।

* * *

भरतपुर में आर्यकुमार सभा का अधिवेशन सनातन धर्म सभा के हाते में हुआ। चलिये भरतपुर में तो सनातन-धर्म और आर्यसमाज मिल ही गये, और जगह फिर देखा जायेगा।

* * *

मद्रास असेम्बली के अध्यक्ष एक हरिजन महोदय हुए हैं। अम्बेदकर साहब को एक पुस्तक और लिखनी चाहिए कि इस चुनाव में भी महात्मा गांधी की कोई चाल छिपी होगी।

* * *

लार्ड सभा में मज़दूर सभा हार गई। ठीक ही था। लार्डों में मज़दूरों की विजय कैसे हो सकती थी?

* * *

कानपुर के किसी धनीधोरी के विरुद्ध मुक़दमा चल रहा है कि उसने झाँसी में एक सैनिक अफ़सर को अपने डिब्बे में घुसने नहीं दिया। भला धनीधोरी अपने साथ किसी साधारण व्यक्ति को कैसे चलने दे सकता है। लखपती लोग तो अपनी बीबी को भी धन पत्नी ही बनाकर साथ रख सकते हैं।

* * *

शारदे

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

...गुरुता की बेढब, अनुभूति नहीं कुछ होती;
जिस समय जीभ पर बैठी, मुक्ता का माल पिरोती।
...रंगत है उजली, पर जो अँगरेज़ नहीं है;
जिसका निवास भारत में, अब केवल कहीं-कहीं है,
...गुण गानेवाला, होता है सदा भिखारी;
दफ़्तर में पीस रहा था, संपादक है सहकारी।
...बहुत उठा ऊँचा तो, अध्यापन का पन पकड़ा;
गढ़ लगा बनाने मानव, सम्मुख जो आया लकड़ा।
...है गर्व इसी का, है रमा हमारी चेरी;
जिसके सम्मुख तो सुन्नी, है लाखों रानी मेरी।
...वाहन को इस युग में हुई बड़ी आसानी;
कर देता तुरत अलग, है पथ में पानी ही पानी।
...अपनी कोमल वीणा, पटको मेरे मस्तक पर;
सावन घन से बरसेंगे, मुक्ता मेरी पुस्तक पर।

विलायत की सरकार के सम्मुख यह विचार था कि शराब बनाने के लिए जौ कम कर दिया जाय कि रोटी का राशन कर दिया जाय? यही तय पाया गया कि रोटी का राशन किया जाय। शराब में कमी करना भी राष्ट्रीय जीवन की हत्या थी।

—अगड़धत्त शर्मा

सच्चा सेवक

छोटा-सा नाटक है जिसमें सेवक के गण सुन्दरता से दिखाये गये हैं। यह नाटक अभिनय करने के लिये लिखा गया है और खेला भी गया है। स्कूलों में उत्सव के समय छात्र इसका निर्दोष अभिनय करके प्रशंसा पाते हैं। मूल्य केवल ।-) पांच आने।

मैनेजर
बुकडिपो इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

बालसखा का नया वार्षिकांक

छप रहा है। पाठक धैर्य रक्खें।

ग्राहकों के अनुरोध से हमने इस वर्ष भी बालसखा का वार्षिकांक निकालने का निश्चय किया है। इसमें बहुत से चित्र, कविताएँ, कहानियाँ, बढ़िया लेख और उपयुक्त सामग्री रहेगी। पृष्ठ-संख्या ३०० से ऊपर। यह अङ्क बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होगा। यह मासिक बालसखा के १२ अंकों से पृथक् है। मूल्य ३), मासिक बालसखा के ग्राहकों के लिए रियायती मूल्य २॥)

रियायती मूल्य के लिए अपना ग्राहक-नंबर अवश्य लिखिए।

मैनेजर, बालसखा, इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

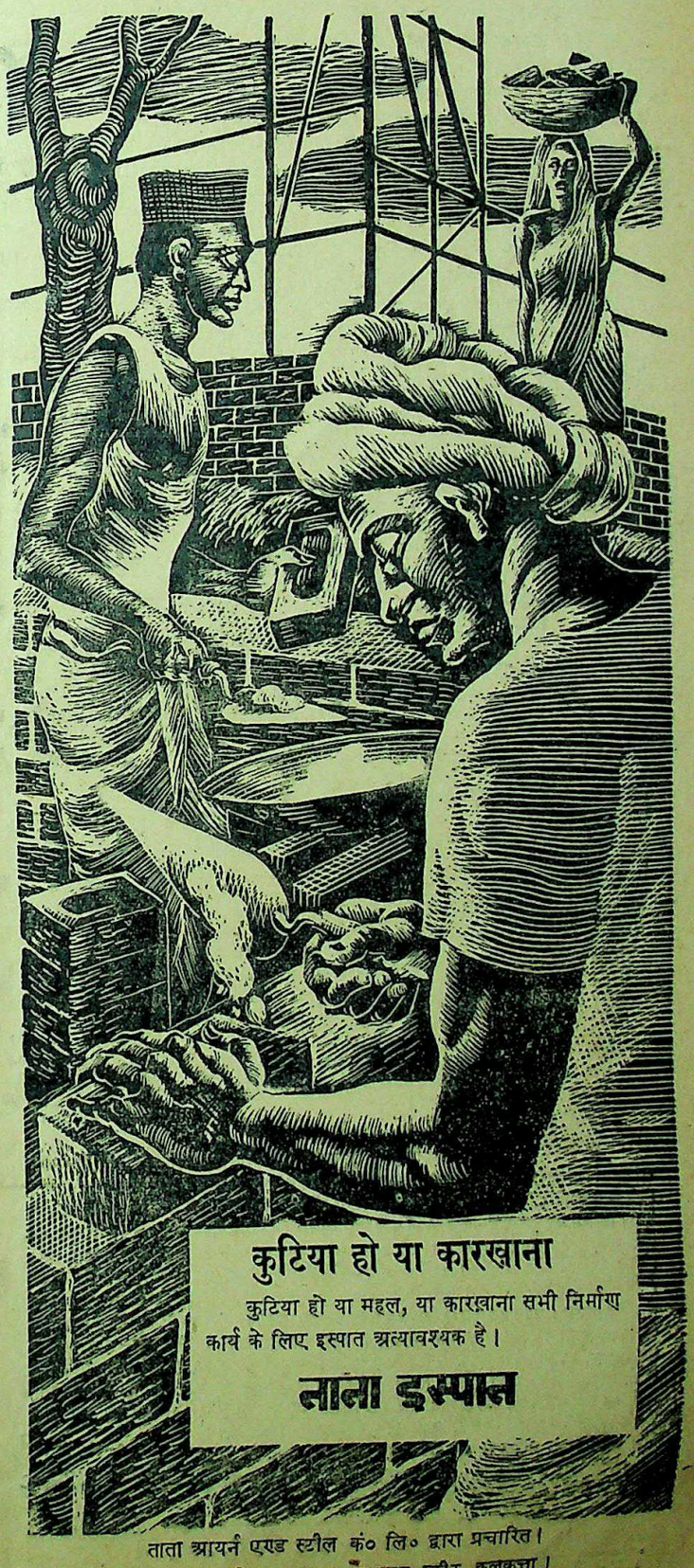
कुटिया हो या कारखाना
कुटिया हो या महल, या कारख़ाना सभी निर्माण कार्य के लिए इस्पात अत्यावश्यक है।
नाना इस्पात

ताता आयर्न एण्ड स्टील कं० लि० द्वारा प्रचारित।
हेड सेल्स आफ़िस १०२ ए, क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य नरेन्द्रदेव—तपस्वी नेता

(पेज ७ का शेष)

जी के नई तालीमी संघ को पसन्द करते हैं?" विद्यार्थी ने पूछा।

आचार्य जी—"महात्मा जी की नई तालीम संघ की योजना अच्छी मालूम होती है लेकिन सारा खर्च विद्यार्थियों से ही निकाला जावे यह प्रश्न कुछ गूढ़-सा है। महात्मा जी अपने ढंग से काम करते हैं। उनको सफलता भी मिलती है। हिन्दुस्तान की वे बड़ी सेवा कर रहे हैं, इसमें किसी को सन्देह नहीं है। महात्मा जी राष्ट्र की सबसे बड़ी विभूति हैं। शिक्षा-पद्धति में उन्होंने नया क़दम उठाया है देखिए कहाँ तक सफलता मिलती है।"

आगे चलकर आपने फिर कहा—"यह बात बड़ी अच्छी है कि हर एक को आत्म-निर्भर रहना चाहिए। स्वदेशी वस्तुओं का इस्तेमाल करना चाहिए। ग्रामीण उद्योग-धन्धों को खूब प्रोत्साहन देना होगा। समाजवादी सरकार में भी हाथ की कारीगरी का महत्त्व नष्ट नहीं किया जावेगा। गाँवों का अपना विशेष महत्त्व होगा। देश में कल-कारख़ानों की बढ़ती होगी। इसके मानी यह नहीं कि हम ग्रामीण-कला को चौपट कर देंगे। ग्रामीण-कला को सुन्दर ढंग से विकसित करना होगा। देश के कल-कारख़ाने राष्ट्रीय संपत्ति होने के कारण किसानों मजदूरों से होड़ नहीं करेंगे। समाजवादी सरकार के बनते ही नव-निर्माण का काम शुरू हो जायेगा। थोड़े ही समय में राष्ट्र का कायाकल्प हो जायेगा।"

आचार्य जी का पूर्ण विश्वास समाजवादी रचना में है। राष्ट्र की उन्नति आप समाजवादी पद्धतियों से ही करने का एक-मात्र उपाय मानते हैं। समाजवाद ही एक ऐसा मूल मंत्र है जिससे तमाम दुनिया में शान्ति स्थापित की जा सकती है। साम्राज्यवादी तरीक़ों से दुनिया में कभी शान्ति नहीं आ सकती। आप इस बात को मानते हैं जब तक सबको समान अधिकार नहीं दिया जाता है। तब तक अशान्ति बनी रहेगी।

काशी विद्यापीठ के द्वारा आपने एक से एक होनहार युवकों को देशभक्त बनाया है। युक्त-प्रान्त के ज़िलों में काशी विद्यापीठ के बहुत से छात्र राष्ट्रीय कार्य में लगे हुए हैं। कई विद्यार्थी राष्ट्रीय पत्रकार भी हैं। विद्यापीठ के द्वारा आपने देश की बड़ी सेवा की है। वहाँ का वातावरण पूर्ण राष्ट्रीय है। काशी विद्यापीठ से युक्त-प्रान्त की पुरानी सरकार थरथर काँपती थी। किसी भी राष्ट्रीय आन्दोलन का श्रीगणेश होते ही सरकार सबसे पहले काशी विद्यापीठ पर धावा बोलती थी। आचार्य जी स्वाधीनता संग्राम में बराबर आगे रहते हैं। कई बार लम्बे समय के लिए जेल की कोठरियों में बन्द किये गये। आपके जेल में रहते समय काशी विद्यापीठ का काम रुक-सा जाता है। काशी विद्यापीठ युक्त-प्रान्त के लिए गर्व की संस्था है। आचार्य जी का सारा समय राष्ट्रीय कामों में खर्च होता है। आप देश की आजादी के लिए सब कुछ न्योछावर करने के लिए तैयार हैं।

आपकी सरलता देखकर कोई यह अनुमान नहीं लगा सकता। आप बहुत बड़े धुरन्धर विद्वान् नेता हैं। मामूली खादी का कुर्ता, पायजामा और गांधी टोपी पहने रहते हैं। पैर में मामूली चप्पल। देहाती से मालूम होते हैं। आपकी मूँछें चमकती हैं। आँखों से विद्वत्ता टपकती है। चेहरे से मृदुलता की झलक आती है। आपके निकट थोड़े समय बैठने से यह साफ़ प्रकट हो जाता है कि आप देश की एक महान् विभूतियों में से हैं। अपनी विशेषता की छाप अपने निकट के लोगों पर अवश्य डाल देते हैं।

आप में जो सबसे बड़ी विशेषता है वह यह कि आप कभी अपने साथियों या अपने निकट के लोगों को भूलते नहीं। हमेशा उनके सुख-दुःख में साथी और माता-पिता की तरह व्यवहार करते हैं। अपने लोगों की तरक्की देखना आप पसन्द करते हैं। हर एक को उसकी योग्यता देखकर आगे बढ़ाने की कोशिश करते हैं। मदद पहुँचाते हैं। नौजवानों के उत्साह को मन्द नहीं करते। हर उ... उत्साह को क़ायम रखने का ... हैं। आप जब चाहें आचार्य ... सकते हैं। उनकी सलाह से लाभ ... हैं। मैंने वर्धा में देखा कि ... बिना रोक-टोक के मिल सकता ...

एक बार आचार्य जी ... बापू के बहुत निकट के कमरे ... में लोगों से खुलकर मिल ... क्योंकि बापू के काम में कुछ ... डर रहता है। आचार्य जी में ... भी घमंड नहीं है। बालकों के ... बनकर, नेताओं के साथ नेता, ... के साथ कार्यकर्त्ता, विद्वानों के ... किसानों के साथ किसान, मजदूर ... मजदूर जैसी बोली में बातें करते ...

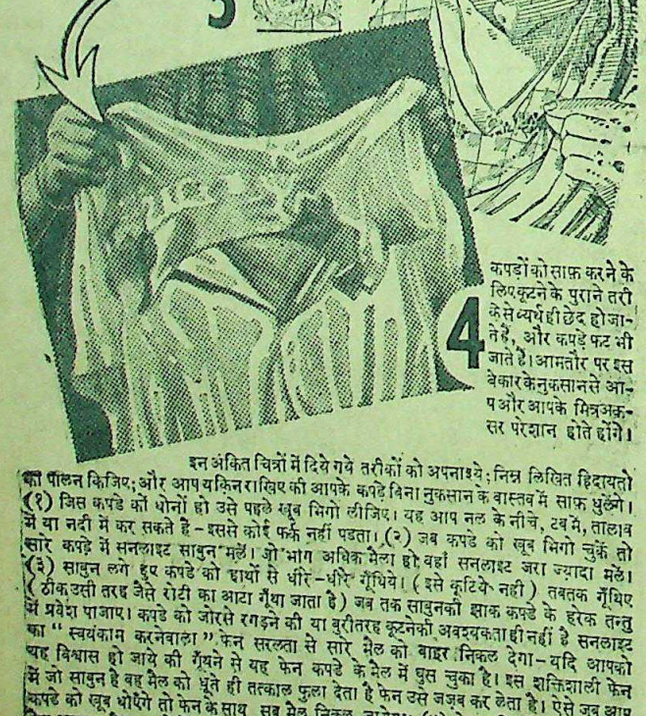

इन अंकित चित्रों में दिये गये तरीकों को अपनाइये; निम्न लिखित हिदायतों का पालन किजिए; और आप यक़ीन रखिए की आपके कपड़े बिना नुकसान के वास्तव में साफ़ धुलेंगे। (१) जिस कपड़े को धोनों हो उसे पहले खूब भिगो लीजिए। यह आप नल के नीचे, टब में, तालाब में या नदी में कर सकते है – इससे कोई फ़र्क नहीं पडता। (२) जब कपडे को खूब भिगो चुकें तो सारे कपड़े में सनलाइट साबुन मलें। जो भाग अधिक मैला हो वहां सनलाइट जरा ज्यादा मलें। (३) साबुन लगे हुए कपडे को हाथों से धीरे-धीरे गूँधिये। (इसे कूटिये नही) तबतक गूँधिए (ठीक उसी तरह जैसे रोटी का आटा गूँधा जाता है) जब तक साबुनकी झाक कपडे के हरेक तन्तु में प्रवेश पाजाए। कपडे को जोरसे रगड़ने की या बुरीतरह कूटनेकी अवश्यकता ही नहीं है सनलाइट का "स्वयंकाम करनेवाला" फेन सरलता से सारे मैल को बाहर निकल देगा – यदि आपको यह विश्वास हो जाये की गूँधने से यह फेन कपडे के मैल में घुस चुका है। इस शक्तिशाली फेन में जो साबुन है वह मैल को घूँते ही तत्काल फुला देता है फेन उसे जज़्ब कर लेता है। ऐसे जब आप कपडे को खूब धोएँगे तो फेन के साथ सब मैल निकल जावेगा। (४) फेन-जिसमें की अब सारा मैल आचुका है – छुटाने के लिए कपडे को खूब मलकर धो डालिए। ऐसे सनलाईट के तरीके से धोए कपडे बहुत समय तक चलते है।

सनलाइट साबुन कपड़ों की बचत करता है

S. 77-50-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

भारतीय महिलाओ

अब आपका सर्वोपरि महत्वपूर्ण कर्त्तव्य है

भारत की आवश्यकता है कि प्रत्येक गृहिणी अपनी भोजन व्यवस्था की स्वाभाविक योग्यता का पूरापूरा प्रयोग करे। वह समस्त खाद्य जो फालतू है और बचता है आपके उन देशवासियों के लिये बहुत आवश्यक है जो आज भीषण खाद्याभाव का सामना कर रहे हैं। अधिकारी - वर्ग यह विश्वास दिलाने का यथाशक्ति प्रयत्न कर रहा है कि जब तक संकट समाप्त न हो तबतक देशके प्रत्येक पुरुष, स्त्री, और बालक के पास जीवन बनाये रखने के लिये पर्याप्त खाद्य हो। किन्तु इस मानवता के कार्य में आप भी सहायता दे सकती हैं।

आतिथ्य - सत्कार को कम कर दीजिये, यदि संभव हो तो उसे बंद ही कर दीजिये। किन्तु यदि आपको आतिथ्य-सत्कार करना ही है तो कृपया इस बात का ध्यान रखें कि वास्तविक आवश्यकता से अधिक भोजन मत बनवाइये। अपने भोजन के अनुकूल यदि आप अन्य खाद्यों जैसे तरकारियां, दूध से बनी चीजें, अंडे, मांस या मछली को प्रयोग में लावें तो आप अपनी चावल और गेहूं की खुराक भी कम कर सकती हैं, जो गरीबों के मुख्य खाद्य हैं। सरल और स्वस्थ जीवन का दूसरों के सामने उदाहरण रखिये और अपने सहयोगी पुरुषों का आशीर्वाद प्राप्त कीजिये। कम से कम इतना तो आप कर सकती हैं।

खाद्य बचाना प्राण बचाने के बराबर है।

स्वास्थ्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...न—अनेक रोगों की चिकित्सा

लेखक, श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालंकार

...ट, बहमी बाग, लाहौर के सुप्रसिद्ध चिकित्सक श्री बेदी आयुर्वेद विज्ञान ... और पंडित हैं। 'देशदूत' के पाठक आपके लेखों से पूर्ण रूप से परिचित ... में अनेक रोगों के उपचार के लिये लहसुन की उपयोगिता बतलाई ... है। इस लेख का प्रथम अंश 'देशदूत' में प्रकाशित हो चुका है।

...अप्रैल १९४६ के 'देशदूत' में ...इस में लहसुन की उपयोगिता ...में एक छोटा-सा लेख लिखा ...रों में प्रायः यह सदा उपेक्षित ...परन्तु इसके उपयोगी गुणों ...कटुर हिन्दुओं का ध्यान ...लगा है। मेरे देशदूतवाले ...अनेक विध रोगों में इसे ...के व्यापक तरीकों को ...चाहते हैं। यह लेख ...लाभदायक होगा, ऐसी

...स्पदय के रोग

...होने पर श्वास के कष्टों में यह ...कारी समझा जाता है। हिचकी, ...ले में इसके रस की दो-तीन ...डालते हैं। इसकी गन्ध प्रति-...बार घंटे अन्तःश्वास में लेने ...खांसी के कष्टदायक लक्षण ...दूर हो जाते हैं। काली खाँसी ...खाँसी की माला बच्चों के गले ...डालने की ग्राम्य-प्रथा सम्भवतः ...भर में प्रचलित है। छोटे बच्चों ...रोकनेवाली खांसी की प्रारम्भिक ...अवस्था में तीस बूंद तक लहसुन ...का निकाला रस शर्बत में हर ...घंटे देने से जल्दी आराम आ ...विशेषतया में मूँग या अरहर के ...लहसुन का रस डालकर दिया जाय ...लाभ होता है। इसके गरम कल्क ...में पीसे हुए लहसुन) की पुल्टिस ...बाँधी जाती है। बलग्राम के रोगों ...और काली मिरच की नुस्वार ...लाभकारी है। कौसमैन (१९१८ ...ने पर्याप्त मात्राओं में दिया ...हुए निमोनिया की चिकित्सा ...देखा है। उसने इसे लोअर ...की चिकित्सा में दो वर्ष तक ...है। उसकी प्रकाशित रिपोर्ट ...लाभप्रद होता है कि तापमान, ...श्वास प्रश्वास की गति को ...नीचे लाने में यह किसी भी ...से निष्फल नहीं हुआ। किसी भी ...सातवें दिन के बाद खतरा ...नहीं देखा गया। उसने लहसुन ...कल्क पाँच में एक को शक्ति ...प्रयोजक करता था। आधा ...(टिंक्चर गार्लिक) जल ...चार घंटे बाद दिया जाता ...वालों के दूसरे रोगों जैसे ...दिगड़ी खाँसी और ...परिणाम कम आशाप्रद ...प्रणाली के रोगों में यह ...बाहर निकालने वाला ...का काम करता है।

...क्षय रोग में लहसुन और ...कहते प्रयोग होता है। ...इस प्रकार के कई योग ...जिनमें इसका रस ...क्रियाशील तत्त्व होते हैं। ...अवस्था में जमे हुए ...लहसुन का रस प्रायः ...बढ़ जाती है और ...का पसीना पूर्णतया बन्द होता देखा गया है। रोगी अपने को अधिक स्वस्थ अनुभव करता है, नींद बढ़ जाती है, पाचनक्रिया में उन्नति दिखाई देती है और भार में वृद्धि हो जाती है। यक्ष्मा में लहसुन का सेवन करते हुए घी और दूध का खूब प्रयोग किया जाना चाहिए। लहसुन को घी और दूध में पका कर भी लिया जा सकता है। राजयक्ष्मा को शरीर के अन्दर अधिक गहरा घर करने से लहसुन अवश्य रोकता है। शरीर सूख रहा हो तो इसके योगों का नियमित सेवन कराना चाहिए। कृशता में यह असगन्ध के चूर्ण के साथ खिलाया जाता है। कश्यप का इन्द्राणी घृत क्षयी के भोजनों में सम्मिलित करना चाहिए। कुण्डी सोटे में कलियों को कूट कर और गौ के घी में मिलाकर बन्द हाण्डी में एक साल तक धान के ढेर के अन्दर दबा देते हैं। फिर इसे क्षय के रोगी को बार, छः या आठ महीने तक, रोग की जड़ निकल जाने तक, निरन्तर सेवन कराते हैं। क्षय के सब लक्षणों को दूर करके यह रोगी को सर्वथा नीरोग कर देता है। मिनचिन (१९१६) ने क्षय की अवस्थाओं में लहसुन के योगों के प्रयोग के लिए बहुत बल दिया है। उसके अनुसार लहसुन सब प्रकार के क्षयी व्रणों में, बढ़ी हुई अवस्था में या जिनके बढ़ जाने की सम्भावना हो, प्रयुक्त किया जा सकता है। स्वरयंत्र क्षय के कुछ रोगियों को उसने इसकी आधे से एक ड्राम की मात्रा दिन में दो या तीन बार देकर चिकित्सा की है और सदा बहुत अच्छे परिणाम प्राप्त किये हैं। आवाज़ बैठ जाने में मुलेठी के साथ लहसुन को चबाते हुए रस अन्दर निगलते जाना चाहिए। सिरके के साथ मिलाकर गले के व्रण और वातिक तंत्रियों (Vocal Cords) के ढीले हो जाने में ग्राही तथा संकोचक रूप में प्रयोग किया जाता है। वाग बढ़ गया हो तो लहसुन के ताजे रस का प्रयोग रजततंत्रित (कॉस्टिक लोशन) के समान असर करता है।

श्री बालकृष्ण जी का अनुभव

क्षय-ग्रस्त होने पर अपने ऊपर लहसुन का प्रयोग करके इन्होंने रोग से छुटकारा पाया है। सात अप्रैल के लेख में मैंने इनका उल्लेख किया था। जवान आदमी छिली हुई छः-सात तुरियों से प्रयोग आरम्भ करके दिन में पाँच तोले तक अपनी मात्रा पहुँचा लेता है। दूध, दही, शहद, मक्खन या सब्जी के साथ वे इसको प्रयोग करते हैं। पकाने से गुणों में कुछ कमी आ जाने की आशंका से वे इसे कच्चा खाना पसन्द करते हैं। एक या आधी तुरी को मुँह में रख कर उस के साथ ही जरा से दूध का घूंट मुँह में लेकर वे उसे चबाते हैं और तुरी घुल जाने पर निगल जाते हैं। तेजी के कारण इसे खाली मुँह नहीं चबाना चाहिए। इससे मुख पक सकता है। सिलबट्टे पर चटनी की तरह पीसकर बनाये कल्क को खाना अधिक सुगम होता है। कल्क को दूध, दही, शहद, मक्खन या सब्जी में मिलाकर खा लेते हैं। यह इतना तेज नहीं अनुभव होता। लहसुन की मात्रा और शरीर की पाचनशक्ति के अनुसार लहसुन प्रयोग में घी तथा दूध दही का प्रचुर परिमाण में सेवन नितान्त आवश्यक है। बालकृष्ण जी जब दिन में तीन बार करके पाँच तोला लहसुन लेते थे उन दिनों उनकी रोज की औसत पुष्टिप्रद खुराक थी—चार पाव दूध, चार तोला मक्खन, ढाई तोला शहद और दो पाव दही। इस प्रकार की स्निग्धता-जनक खुराक न लेने से यह हानि करता है जिससे शरीर में गर्मी का अधिक अनुभव होना, मुख पकना आदि लक्षण प्रकट हो सकते हैं। उपर्युक्त खुराक के साथ बाल-कृष्ण जी सेवाग्राम की प्रचंड गरमियों में भी प्रतिदिन पाँच तोला कलियाँ लेते रहे हैं और उन्हें गरमी नहीं सताती थी। जल्दी ही उनका बलग्राम कम हुआ और वे अपने को अधिक चुस्त अनुभव करने लगे थे।

रक्त-भार की उच्चता

महात्मा गांधी ने तथा उनके सेवाग्राम आश्रम के कुछ सदस्यों ने लहसुन को दीर्घकाल तक और प्रचुर परिमाण में सेवन करके अनेक रोगों में लाभ उठाया है। रक्त-भार की उच्चता (High blood Pressure) के लिए महात्मा गांधी स्वयं इसे देर तक खाते रहे हैं। उनके रक्त-भार को नीचे लाने में इसने कितना लाभ किया है, यह वे निश्चित रूप से नहीं कह सकते। यह सत्य है कि रक्त-भार को कम करने के लिए अब वे लहसुन पर आश्रित नहीं हैं।

मलेरिया ज्वर में

मलेरिया के दिनों में लहसुन खाना चाहिए। लहसुन खानेवाले के शरीर में से जो तेज गन्ध निकला करती है वह मलेरिया के मच्छरों को दूर रखती है। इस तरह यह मच्छरों के आक्रमण से शरीर को बचा कर अपरोक्ष में भी मलेरिया से बचने में सहायता करता है। विषमज्वरों (मलेरिया बुखारों) में लहसुन के साथ पकाये दूध को चरक पिलाया करते थे। शोदल का अनुभव था कि मलेरिया में भोजन से पहले तिल तेल के साथ लहसुन का प्रतिदिन सेवन लाभ करता है। सरदी लगकर बहुत कँपकँपी से चढ़नेवाले बुखार की कँपकँपी को लहसुन रोकता है, इसलिए सुबह ही घी के साथ खिला देने से बुखार रुक जाता है। पथ्य में चरक बृद्धि बढ़ानेवाले ऊष्ण वीर्य मांसों को खाने का आदेश देते हैं। लहसुन की चटनी को तिल तेल के साथ अथवा तिल तेल और नमक के साथ मिलाकर मलेरिया में खिलाते हैं। कल्क में बराबर बकरी का घी मिलाकर छः महीने तक जमीन में गाड़कर रखने के बाद निकाले घी की विषमज्वर और छाती के रोगों में मालिश की जाती है, अन्तः प्रयोग में यह रोगी को खिलाया जाता है, आँखों में आँजा जाता है और इसकी नुस्वार दी जाती है। सतत ज्वरों (इन्टरमिटेन्ट फ़ीवर्स) में ज्वरहर रूप में यह उपयोगी समझा जाता है। पुराना बुखार, तीसरे और चौथे दिन आनेवाले बुखार में भी लहसुन दिया जाता है।

इस लेख के लेखक सुप्रसिद्ध चिकित्सक श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालंकार।

डिस्थीरिया तथा दूसरे रोग में

मिनचिन (१९१६) के अनुसार लहसुन बहुत से रोगों की औषध है। वह इसे टाइफ़स, टाइफ़ायड और कीथीरिया की शोधक चिकित्सा के लिए अच्छा समझता है। वह सलाह देता है कि पहली दो बीमारियों में एक ड्राम लहसुन रस प्रत्येक चार या छः घंटे पीछे शर्बत या मांस के शोर्वे के साथ दिया जाना चाहिए। बारह वर्ष से छोटे बच्चे के लिए शर्बत में आधा ड्राम डालकर देना पर्याप्त होता है। अन्त्र-ज्वर (टाइफ़ाइड) की प्रारम्भिक अवस्था में देने से यह रोग को प्रायः निकाल देता है, और आंतों में इसका कृमिहर प्रभाव होने से यह रोग की किसी भी अवस्था में लाभकारी हो सकता है। डिस्थीरिया में लहसुन के कतरों को लगातार चबाते रहें तो इसके गले पर लगते रहने से डिस्थीरिया की तिल्ली लुप्त हो जाती है, तापमान कम हो जाता है और रोगी अच्छा हो जाता है। इस विध से तीन चार घंटे में एक-दो औंस लहसुन ले लेना चाहिए। तिल्ली लुप्त हो जाने के एक सप्ताह बाद तक एक या दो औंस गांठ प्रतिदिन चबा लेनी चाहिए डिस्थीरिया के रोगी को किसी प्रकार का स्वाद या गन्ध नहीं आती और वह लहसुन को केवल गरम ही अनुभव करता है।

कई प्रकार के निर्बलताजन्य अजीर्ण में लहसुन एक उत्तम दवा है। अफीर और उदरशूल के रोगियों को दस से तीस बूंद की मात्रा में लहसुन रस दिया गया है और अच्छे परिणाम देखे गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रिटिश साम्राज्य क्षय की ओर

(पेज ५ का शेष)

मध्य पूर्व में घोर अशान्ति

योरप के बाद इंगलैंड का आर्थिक और राजकीय प्रभाव क्षेत्र मध्यपूर्व में था। यहाँ सन् १९१८ के बाद बालफोर घोषणा के फलस्वरूप फिलिस्तीन में यहूदियों को लाकर बसाना शुरू किया गया। अरबी जनता ने इसका घोर विरोध किया। अब इस विरोध ने अशान्ति का रूप धारण कर लिया है। सात करोड़ अरब जनता स्वाधीनता की भावनाओं से जाग उठी है। उन्होंने अपना संयुक्त मोर्चा बना लिया है। मध्यपूर्व की अरब जनता अपनी भूमि पर अँगरेजों का अस्तित्व नहीं चाहती। वहाँ पर कोने कोने से आवाज उठ रही है—"अँगरेज निकल जाओ"। अरब जनता की आँखें अब सोवियट रूस की ओर लगी हुई हैं। बावजूद दुनिया के पूँजीपतियों द्वारा रूस के विरुद्ध घृणित प्रचार से, समस्त संसार की पीड़ित जनता सोवियट रूस को अपने त्राता के रूप में देख रही है। अतः उसने रूस से हस्तक्षेप करने का अनुरोध किया है।

इसके जवाब में ब्रिटिश साम्राज्यशाही ने एक नया ढंग अख्तियार किया है। उसने ट्रान्स जोर्डेनियाँ को स्वतंत्र घोषित कर दिया। मिस्र से फौजें हटाने की घोषणा कर दी। लेकिन ये घोषणायें केवल नुमाईशी हैं। इनमें कोई तथ्य नहीं है। मैसूर रियासत के बराबर के ट्रेन्सजोर्डेनिया को स्वतंत्रता घोषित करने के बाद उससे ब्रिटेन संधि कर रहा है और उसकी रक्षा के लिये १ लाख २०हजार अंग्रेज सेना रख रहा है। मिस्र से भी वह वही सेना हटा रहा है जो युद्ध काल में वहाँ डेरा डाले हुई थी। असली सेना तो बिलकुल नहीं हटा रहा है। सारे मध्य योरप में वह २०-२५ लाख सेना रखने की योजना बना रहा है।

ईरान भी सुरक्षित नहीं

ईरान के दक्षिणी हिस्से के तेल के कुँओं पर अंग्रेज पूंजीपतियों का अधिकार है। वर्तमान शाह के पिता रजाशाह पहेलवी ने इनके अधिकार कुछ कम कर दिये थे। उनके विरुद्ध अंग्रेजों नें षड्यंत्र किया उन्हें राज्यगद्दी छोड़नी पड़ी। रजाशाह के गद्दी त्यागने से किसी को शोक नहीं हुआ। इधर जनता की शक्ति बढ़ रही है साथ साथ रूस का भी प्रभाव बढ़ रहा है। जनता रूस की प्रेरणा से स्वाधीनता के लिए अपूर्व बलिदान की तैयारी कर रही है। स्वाधीनता की आकांक्षाओं को कुचलने के लिए अंग्रेज पूँजीपति शासकों से मिलकर षड्यंत्र कर रहे हैं। जनता और शासनकर्ताओं के बीच की खाई दिन पर दिन फैलती जा रही है। जनता अपने भाग्य का निर्णय करके किसी भी समय अंग्रेजों को वहाँ से हट जाने का आदेश दे सकती है।

अंतिम प्रहार

इस तरह ब्रिटिश साम्राज्य का योरप के अन्दर से कब्रा कट जाना, चारों तरफ़ से क़र्ज़ के बोझ से लद जाना, मध्यपूर्व में अरबी जनता का उसके अस्तित्व के प्रति असन्तोष बढ़ना तथा रूस की बढ़ती हुई शक्ति के सामने बार-बार घुटने टेकते जाना—ये सब ऐसे संकेत हैं, जो यह प्रकट करते हैं कि ब्रिटिश साम्राज्य में अब वह शक्ति नहीं रही जो द्वितीय महायुद्ध के पूर्व थी। ऐसी स्थिति में भारतवर्ष अपनी आकांक्षायें और मनोकामनायें आसानी से प्राप्त कर सकता है। केवल भारत का एक जोरदार धक्का पर्याप्त है। इस धक्के से न केवल हम अपने मनोवांछित ध्येय की प्राप्ति कर सकते हैं, बल्कि हम मिस्र, फ़िलिस्तीन, इण्डोनेसिया आदि देशों को सक्रिय और प्रत्यक्ष सहायता पहुँचा सकते हैं।

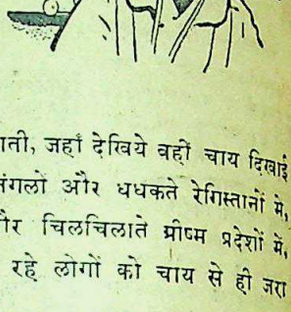

युद्ध छिड़ने पर राजभक्तों की तरह चाय भी रणसज्जा से सुसज्जित हो गई।

सैनिक, नाविक व वैमानिक सबके साथ कंधे से कंधा भिड़ाकर चाय हर मोर्चे पर डटी रही। बीमारों व घायलों की देखभाल करती, भग्नहृदयों को उत्साह दिलाती, घर से बिछुड़ों को धीरज बँधाती, जहाँ देखिये वहीं चाय दिखाई पड़ रही थी। घनघोर जंगलों और धधकते रेगिस्तानों में, कटकटाते शीत प्रदेश और चिलचिलाते ग्रीष्म प्रदेशों में, थके और निर्जीव-से हो रहे लोगों को चाय से ही जरा प्रसन्नता मिलती थी।

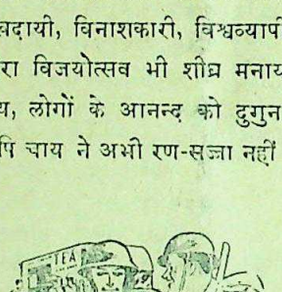

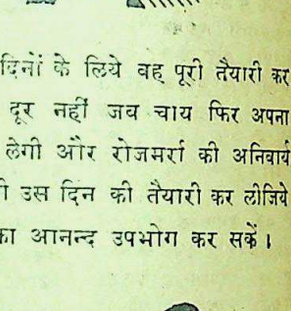

यूरोप के विजयोत्सव में भी चाय सबसे आगे थी। इस दुःखदायी, विनाशकारी, विश्वव्यापी महायुद्ध के अन्त का दूसरा विजयोत्सव भी शीघ्र मनाया गया और उसमें भी चाय, लोगों के आनन्द को दुगुना कर रही थी।

यद्यपि चाय ने अभी रण-सज्जा नहीं उतारी परन्तु भविष्य के शान्तिमय व आराम के दिनों के लिये वह पूरी तैयारी कर रही है। वह दिन अब दूर नहीं जब चाय फिर अपना पुराना स्थान ग्रहण कर लेगी और रोजमर्रा की अनिवार्य वस्तु हो जायगी। आप भी उस दिन की तैयारी कर लीजिये ताकि शान्ति से चाय का आनन्द उपभोग कर सकें।

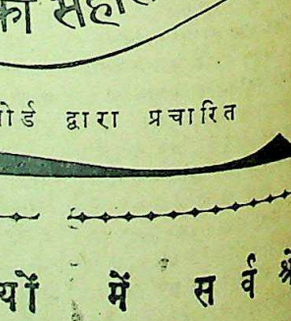

युद्ध की तरह शान्ति में भी

चाय का सहारा लीजिये

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK253

भारतीय चायों में सर्वश्रेष्ठ

लिपटन की

जाकूजा चाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमण्डल

प्राचीन लेखक और भारतीय स्त्रियाँ मानव सदैव से स्त्रियों को दबाता आ रहा है ?

लेखक, श्री त्रिलोकीनारायण दीक्षित, एम० ए०

हिन्दी की कवियत्री श्रीमती रामकुमारी चौहान।

...की उपयोगिता समाज, देश ...हेतु क्या है यह बार-बार दुह-...ता नहीं है। उपर्युक्त इन क्षेत्रों ...का वही महत्त्व है जो पुरुषों का ...है। एक के अभाव में दूसरे के ...कल्पना आधार विहीन होगी। ...में स्त्रियों को पुरुषों के समान ...तो सही, पर व्यवहार-रूप में ...उनके अधिकारों को स्वीकार ...न किया। पुरुषों ने उन्हें ...नहीं प्रदान की। इसका ...है उनकी निर्बलता। पुरुष ...सामना करते-करते बलवान ...स्त्रियाँ शारीरिक परिश्रम ...अबला बनती गईं। पुरुष-...सिद्धि के हेतु उन्हें अपने वश ...नारियों को अपने अने-...गुणों से हाथ धोना पड़ा। ...उनमें स्वामी तथा पराधीनता ...हो गया। और आज विशेष ...में स्त्री और पुरुषों में विजित ...का-सा व्यवहार दृष्टिगत ...पुरुषों की इस मनोवृत्ति का ...नहीं है। कलियुग ही नहीं ...द्वापर और त्रेता इत्यादि युगों ...की यही मनोवृत्ति रही है। ...कलंक को दूर करने के लिए ...का निर्वासन, पाण्डवों ...को जूये में हार जाना, कौरवों ...करके अपमानित करने का ...का सुभद्रा को हर ले जाना ...अनेक उदाहरण हैं, जो इस ...है कि स्त्रियों के प्रति मनुष्यों ...से विपरीत रहे हैं। इति-...है कि पूर्वकाल में स्त्रियाँ बाजार ...जाती थीं।

...ने स्मृतियों की रचना ...धार्मिक, तथा राजनैतिक ...सुचारु रूप से संचालित करने ...स्मृतियों में लिखित ...के प्रायः सभी क्षेत्रों पर ...है स्मृतियाँ अपने ...दशा का सबसे महत्त्व-...है। कहने की आवश्यकता ...सभी स्मृतिकार मनुष्य थे। ...के साथ न्याय कर सके ...की बात है। यह भले ही ...है। मनु आदि ऋषियों ...आज के सामाजिकों से ...तथा उदार रहा होगा पर ...नहीं कि वे नारीवर्ग के साथ ...भी नहीं बन सके होंगे। ...स्मृतिकारों के युगों में "यत्र ...रमन्ते तत्र देवताः" प्रच-...उनके मस्तिष्क में याज्ञवल्क्य ...

...पुत्रश्च शूद्रवशुरदेवरैः।
...पुत्रा भूषणाच्छादनाशनैः॥
...पति, भाई, पिता, सास, ...आदि को उचित है कि ...भोजन-वस्त्र, आभूषण आदि ...उनके मस्तिष्क में वर्त-...याज्ञवल्क्य फिर उल्लेख करते

...पिता पतिः पुत्राश्च वार्द्धके।
...स्वातंत्र्यं क्वचित्स्त्रियाः॥"

अर्थात् कन्यावस्था में पिता, विवाह के उपरान्त पति, वृद्धावस्था में पुत्र और उनके अभाव में अन्य सम्बन्धी स्त्रियों की रक्षा करें। उन्हें स्वातंत्र्य किसी भी दशा में न उपलब्ध हो सके। इससे स्पष्ट होता है कि याज्ञवल्क्य स्त्रियों को कितना हीन तथा स्वतंत्रता के अनुपयुक्त समझते थे। वे स्मृतिकार की दृष्टि में पशुओं से अधिक समझदार नहीं थीं।

हमारे ऋषि लोग समदर्शी थे फिर भी उन्होंने स्त्रियों के साथ इतना अन्याय क्यों किया, यह विचारणीय प्रश्न है। उनका भेदपूर्ण दृष्टिकोण निम्नलिखित दो श्लोकों से अधिक स्पष्ट हो जायगा। याज्ञवल्क्य का कथन है कि—

"दाहयित्वाग्निहोत्रेण स्त्रियं वृत्तवतीं पतिः।
आहरेद्विधिवद्दारानग्नींश्चैवाविलम्बयन्॥

अर्थात् पतिव्रता स्त्री का श्रौताग्नि से दाह-कर्म करके पुरुष को उचित है कि वह बिना किसी विलम्ब के विधिपूर्वक दूसरी स्त्री ओ घर ले आये।"

पर जिस स्त्री का पति विदेश चला गया हो उसके लिए ऋषि का कथन है कि :—

क्रीडां शरीरसंस्कारं समाजोत्सवदर्शनम्।
हास्यं परगृहे यानं त्यजेत्प्रोषितभर्तृका॥

अर्थात् जिस स्त्री का पति विदेश गया हो, उसे क्रीड़ा न करनी चाहिए न अपने शरीर को सुशोभित ही करना चाहिए। अधिक मनुष्यों का देखना और उत्सवादिक में भाग लेना भी उसके हेतु वर्जित है। उसे दूसरे के घर न जाना चाहिए न हँसना व बोलना ही चाहिए।

विधवाओं के कर्त्तव्य का लेखा भी पठनीय है :—

यावच्चाग्नौ मृते पत्यौ स्त्री नात्मानं प्रदाहयेत्।
तावन्न मुच्यते साहि स्त्रीशरीरात्कथंचन॥
(आंगिरस)

अर्थात्—पति की मृत्यु के पश्चात् जब तक स्त्री अपने को अग्नि में भस्म नहीं कर देती तब तक स्त्री शरीर से उसे छुटकारा नहीं मिलता।

और भी :—

आर्त्तार्ते मुदिते हृष्टा प्रोषिते मलिना कृशा।
मृते म्रियेत् या पत्यौ सा स्त्री ज्ञेया पतिव्रता॥

अर्थात् वही स्त्री पतिव्रता है जो अपने पति के सुख में सुखी, दुख में दुखी, उसके विदेश गमन पर मलिन तथा दुर्बल रहे और पति की मृत्यु के पश्चात् मर जाय॥

मनु का कथन है कि यदि कोई स्त्री पुत्र के लोभ से दूसरी शादी कर ले तो वह संसार में निन्दित तथा परलोक से पतित होती है :—

अपत्यलोभाद्या तु स्त्री भर्तारमतिवर्तते।
सेह निन्दामवाप्नोति परलोकाच्च हीयते॥

ठीक इसके विपरीत पुरुषों को बहुविवाह करने का अधिकार प्रदान किया गया है। पति यदि नपुंसक हो, अंगहीन हो और सभी दुर्गुणों को खान भी हो तो वही स्त्री के लिए सब कुछ है। पर दोषों से युक्त स्त्री के प्रति पुरुष का कर्त्तव्य अन्यथा है :—

सुरापी व्याधिता धूर्ता वन्ध्यार्थघ्न्य प्रियंवदा।
स्त्री प्रसूश्चाधिवेत्तव्या पुरुषद्वेषिणी तथा॥

अर्थात् पुरुष के लिए उचित है कि सुरापान करनेवाली व्याधियुक्ता, वन्ध्या, धूर्ता, धन का विनाश करनेवाली, कटुवचन वक्ता, केवल पुत्रियों को जन्म देनेवाली तथा पति से द्वेष रखनेवाली स्त्री को छोड़कर दूसरा विवाह कर ले।"

साथ ही स्त्री के लिए आदेश है कि :—

अपुत्रा योषितश्चैषां भर्तव्याः साधुवृत्तयः।
निर्वास्या व्यभिचारिण्यः प्रतिकूलास्तथैव च॥

अर्थात् यदि नपुंसकों की स्त्रियाँ भले आचरणवाली हों तो उनका भरण-पोषण होना चाहिए। यदि वह व्यभिचारिणी वा पति की आज्ञा के विरुद्ध चलनेवाली हों तो उसे निकाल देना चाहिए।

यही है हमारे समदृष्टि स्मृतिकार ऋषियों का न्याय। मानववर्ग स्वस्वार्थ के हेतु स्त्रियों को सदैव से दबाता चला आ रहा है। आज हमारे समाज में स्त्रियों की दशा और भी बिगड़ती जा रही है। स्त्रियों की जैसी विकृति दशा ब्राह्मणों में दिखाई पड़ती है वैसी किसी भी वर्ग में नहीं। वर्तमान ब्राह्मण-समाज में स्त्रियों की कितनी गर्हित दशा है यह किसी से भी छिपा नहीं है।

प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन

श्री सम्पूर्णानन्द जी के उद्घाटन-भाषण का कुछ अंश

शिकोहाबाद में संयुक्त प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन पंडित अमरनाथ झा के सभापतित्व में हुआ था। सम्मेलन का उद्घाटन प्रान्त के शिक्षा मंत्री श्री संपूर्णानंद जी ने किया था। श्री सपूर्णानंद जी के भाषण का कुछ अंश इस प्रकार है—

"....उसके (हिन्दी के) साहित्य-गगन के नक्षत्र विश्वसाहित्य के ज्योतिः पुंजों में परिगणित होते हैं। संस्कृत को छोड़कर आज भी किसी भी भारतीय भाषा का वाङ्मय विस्तार या मौलिकता में हिन्दी के आगे नहीं जाता। इसका एकमात्र कारण यह है कि शासक चाहे जो हो और उसकी नीति चाहे जैसी हो, हिन्दी भारतीय जनता के एक बहुत बड़े भाग की अपनी भाषा है। हिन्दी लेखकों की प्रतिभा को भारतीय संस्कृति की आत्मा निरन्तर स्फूर्ति देती रही है, उनकी कृतियों में करोड़ों भारतीयों की आशाओं, आकांक्षाओं, इच्छाविधानों की अभिव्यक्ति मिलती है।..... मैं इस बात को नहीं समझ पाता कि कोई भी व्यक्ति जिसको भारतीय संस्कृति से प्रेम होगा इस भाषा को कैसे अंगीकार न करेगा। बँगला, गुजराती, पश्तो या तामिल भी अंशतः भारतीयता को अभिव्यंजित करती हैं, परन्तु ऐतिहासिक कारणों ने हिन्दी को ही भारत की सार्वदेशिक भाषा होने का गौरव प्रदान किया है। पटना से लेकर दिल्ली तक, हरिद्वार से उज्जैयिनी तक के प्रदेश में रामायण-काल से लेकर मुग़ल-साम्राज्य के सूर्यास्त तक भारतीय संस्कृति का विकास हुआ। यहीं बड़े-बड़े चक्रवर्ती राज्यों और साम्राज्यों का उदय हुआ। देश के कोने-कोने से खींचकर प्रतिभाशाली व्यक्ति यहाँ आये, यहाँ से विद्वान् और शासक सारे देश में फैले इसीलिए यहाँ की भाषा स्वतः राष्ट्रभाषा बन गई।

* * *

.....प्रश्न भाषा के स्वरूप का है। नाम तो गौण है। जो लोग हिन्दुस्तानी नाम को चलाना चाहते हैं उनमें कुछ ने आज तक अपनी नीति स्पष्ट नहीं की। उनका कहना है कि हमको सरल सुबोध भाषा का प्रयोग करना चाहिए। यह बात बिलकुल ठीक है। जहाँ "खाना खाया" से काम चलता हो वहाँ "भोजन ग्रहण किया" या "तनावल मा हज़र फ़र्माया" कहना मूर्खता का प्रमाण देना है। परन्तु हमें ऐसे अर्थों के लिए भी शब्द चाहिए जिनका साधारण जनता के जीवन या बोलचाल में स्थान नहीं है।" "इंटर नेशनल", फाइनेन्शल, "कल्चर" "स्ट्रैटेजी" के लिए क्या बोलें? जब तक इस सम्बन्ध में कोई सिद्धान्त न निश्चित हो जाय तब तक हिन्दुस्तानी का कोष किस आधार पर बने?

* * *

स्वतन्त्र भारत में हिन्दू और मुसलमान दोनों को रहना है। भले ही उपासना करते समय एक का मुख पूर्व और दूसरे का मुख पश्चिम की तरफ़ हो। एक वेदमंत्र पढ़े और दूसरा कुरान की आयत। परन्तु दैनिक जीवन में एक का दूसरे से बराबर काम पड़ता है। संगीत, नृत्यकला, चित्रकला, स्थापत्य के क्षेत्र में दोनों एक जगह मिलते हैं, एक ही प्राकृतिक वातावरण में पलते हैं। ऐसी दशा में वह किस प्रकार की भाषा होगी जो सबके दुख-सुख, सबकी लालसाओं और अरमानों को व्यक्त कर सके, जिसके द्वारा शासक, शिक्षक, लेखक, प्रचारक और पत्रकार सबके पास पहुँच सके यह सबके सोचने की बात है। आग्रह से समस्यायें सुलझा नहीं करतीं।

* * *

मैं आशा करता हूँ कि प्रान्तीय साहित्य-सम्मेलन इस दिशा में, हमारे मार्ग में जो कठिनाइयाँ हैं, उन्हें दूर करने में समर्थ होगा, यों तो यह प्रश्न अखिलभारतीय है और किसी न किसी रूप से इसका सम्बन्ध राजनीति से है और इसके सुलझाने में राजनीतिक नेताओं को हाथ बँटाना ही होगा। हिन्दी उर्दू के वाद-विवाद का प्रधान केन्द्र हमारा ही प्रान्त है। यदि हम लोग किसी प्रकार अपने प्रान्त में सुलझाव कर सकें, किसी प्रकार मुसलमानों को यह समझा सकें कि भाषा का प्रश्न साम्प्रदायिक नहीं है, किसी प्रकार उर्दू के प्रेमियों को यह विश्वास दिला सकें कि हमको उर्दू से शत्रुता नहीं है, प्रत्युत हम यह चाहते हैं कि ग्रन्थकार जो पुस्तक लिखें उनसे अधिक से अधिक पढ़नेवाले लाभ उठा सकें, हमारे प्रान्त की प्रतिभा देश के कोने-कोने को प्रभावित कर सके तो मैं समझता हूँ कि बहुत बड़ा काम होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रजामंडल का राष्ट्रभाषा के विषय में निर्णय

इन्दौर राज्य प्रजामंडल की नव-निर्वाचित प्रतिनिधि-सभा पहिली बार इन्दौर शहर में हुई। प्रतिनिधि सभा की तीन बैठकें हुईं जिसका सभापतित्व इस वर्ष के प्रजामंडल के सभापति श्री रामेश्वरदयाल तोतला ने किया। स्वर्गीय भूलाभाई देसाई के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करनेवाले प्रस्ताव के अलावा दो महत्व-पूर्ण प्रस्ताव पास किये गये।

पहले प्रस्ताव को पेश करते हुए श्री भिश्रीलाल जी गंगवाल ने जनता को आनेवाली लड़ाई के लिए आगाह किया। प्रस्ताव में कहा गया कि दुनिया और हिन्दुस्तान की स्थिति बड़ी तेजी से बदल रही है। हिन्दुस्तान आज स्वतंत्रता के दरवाजे पर खड़ा है। देशी राज्यों में इसका अर्थ पूर्ण उत्तरदायी शासन है। स्वयं श्रीमंत महाराजा यशवंतराव होलकर जनतंत्रात्मक शासन स्थापित करने की इच्छा अनेक बार प्रकट कर चुके हैं। परन्तु खेद है कि इतना लम्बा अरसा गुजर जाने पर भी तथा देश और दुनिया में क्रान्तिकारी राजनैतिक परिवर्तन हो जाने पर भी हमारे राज्य के शासन में इस दिशा में कोई प्रगति नहीं हुई है, जब कि जनता की आकांक्षाएँ बहुत आगे बढ़ चुकी हैं। अब उसे अपने इस लक्ष से दूर रखा जाना उचित नहीं है। अतः राज्य प्रजा-मंडल की प्रतिनिधि सभा फिर एक बार श्रीमंत से निवेदन करती है कि वह समय की पहचान कर राज्य में तुरन्त पूर्ण उत्तरदायी शासन की घोषणा कर दें।

प्रस्ताव के अन्तिम भाग में कहा गया है कि यह सभा निश्चय करती है कि अगर इस प्रस्ताव की पूर्ति नहीं की गई तो प्रजा-मंडल अपने पुरुषार्थ और बलिदान के बल पर उत्तरदायी शासन प्राप्त करने के लिए जनता को निमंत्रित करेगा। यह सभा जनता से अपील करती है कि वह भी शक्ति को प्राप्त करने के लिए तैयार हो जावे। संगठन, अनुशासन, स्वावलंबन तथा एकता संबंधी जो भी कमियाँ उसके अन्दर हों, उन्हें दूर करके अपने आप को पूरी तरह समर्थ बनाने के काम में लग जावे।

अन्तिम प्रस्ताव में प्रजामंडल के कार्यक्रम पर प्रकाश डाला गया। प्रस्ताव में जो कार्यक्रम की रूप-रेखा बताई गई है उसमें दो लाख रुपया इकट्ठा करना, एक लाख प्रजामंडल के सदस्य बनाना ग्राम पंचायतों का संगठन, जनता के संपर्क, पत्र और पत्र-संपादकों से संपर्क और जनता में राजनैतिक जागृति पैदा करने संबंधी बातों पर विशेष रूप से जोर डाला गया।

प्रतिनिधि सभा की बैठक में उपस्थित महानुभावों में विशेष उल्लेखनीय नाम श्री गोपीकृष्ण विजयवर्गीय, सभापति मध्यभारत प्रादेशिक देशी राज्य लोक-परिषद्, श्री विमलचंद्र झांझरी प्रमुख अगस्तवादी; श्री कन्हैयालाल खादी-वाला प्रेसीडेंट अजमेर मेरवाड़ा कांग्रेस कमेटी और श्री निह द्रविड़ उपसभापति इन्दौर राज्य धारासभा थे।

—संवाददाता

* * *

उदयपुर हिन्दी-विद्यापीठ के अन्तर्गत १९४४ में उत्तरदायी नागरिक शिक्षण की दृष्टि से सरस्वती मन्दिर की स्थापना की गई थी। अब यह विभाग काफी जम गया है और प्रतिसप्ताह लोक-शिक्षण की दृष्टि से उदयपुर तथा बाहर के प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा प्रवचन कराया जाता है। ये प्रवचन महत्त्वपूर्ण विषयों पर होते हैं एवं जनता इसमें अच्छी रुचि लेती है। २२ मई को सरस्वती मन्दिर में बेसिक हिन्दुस्तानी के सवाल पर हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान प्रो० मोहन वल्लभ पन्त की अध्यक्षता में चर्चा की गई। इस चर्चा का आयोजन श्री कृष्णलाल वर्मा प्रबन्धक म्युनिसिपल स्कूल बम्बई की प्रेरणा से कियागया था। चर्चा का प्रारंभ भी आप ही ही ने किया। आपने बताया कि हमारे देश में साक्षरता-प्रचार के लिए एक सामान्य भाषा की आवश्यकता है। इस भाषा में भारतवर्ष के समस्तप्रान्तों में बोले जाने-वाले वे शब्द जो सर्वत्र प्रचलित हैं और जिनको सभी प्रान्तों के निरक्षर समझ सकते है लिया जायेगा। श्री वर्मा जी ने बेसिक हिन्दुस्तानी बनाने पर काफी जोर दिया। इसके पश्चात् उदयपुर के विद्वान् सर्वश्री उदयसिंह भटनागर एम० ए०, पृथ्वीसिंह मेहता एम० ए० विद्यालंकार, नारायणलाल वर्मा, पुरुषोत्तम मेनारिया, अर्जुनलाल मेहता आदि सज्जनों ने इस विषय पर अपना मत दिया। हिन्दी विद्यापीठ के प्रधान मंत्री और राजस्थान के ख्याति-प्राप्त विद्वान् श्री जनार्दनराय नागर एम० ए० साहित्यरत्न विद्यालंकार ने इस विषय पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इसके पहले कि हम ऐसी सामान्य भाषा का निर्माण करें, राष्ट्रभाषा के स्वरूप का निर्धारण कर लेना पड़ेगा और भाषा बनाते समय प्रान्तीय भाषा के शब्दों के चयन का भी ख्याल रखना पड़ेगा; राष्ट्रभाषा का लक्ष्य देशज या तद्भव शब्दों के लेने का नाप भी स्पष्ट करना आवश्यक होगा। एवं राष्ट्र-भाषा के विकास में पारिभाषिक शब्दा-वलि के लिए भी हमें एक आधार निश्चित करना होगा और कुछ बेसिक शब्द जो नागरिक जीवन के निर्माण एवं विकास के लिए अनिवार्य हों उन्हें ले लेने में भी कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। आगे चलकर आपने बताया कि हमें उन्हीं शब्दों का बाहुल्य रखना पड़ेगा जो अधिक से अधिक अराष्ट्रीय मनोभाव व्यक्त करते हों और जो समस्त देश में प्रचलित हो गये हों। एवं यह भी ध्यान रखना होगा कि जो राष्ट्रभाषा के सर्वांगीण विकास के लिए बीजवत काम आ सकें तथा विभिन्न-प्रान्तों को सारे देश के साथ अधिक से अधिक सम्बन्धित कर सकें। इसके लिए एक नीति हमें बनानी होगी।

* * *

उदयपुर हिन्दी विद्यापीठ के अन्तर्गत चलनेवाले प्रौढ़-शिक्षण के तत्त्वावधान में "प्रौढ़-शिक्षक-शिक्षण" अभ्यास क्रम का उद्घाटन हिन्दी विद्यापीठ के भूतपूर्व कुलपति एवं मेवाड़ शिक्षा-विभाग के अध्यक्ष श्रीमान् पं० लक्ष्मीलाल जोशी द्वारा किया गया। उदयपुर शहर के आस-पास गाँवों में हिन्दी विद्यापीठ की ओर से १९४४ में प्रौढ़-शिक्षण केन्द्र स्थापित किये गये थे। वे अब काफी जम गये हैं और अब इस बात की बड़ी आवश्यकता प्रतीत हुई है कि शिक्षकों को ट्रेनिंग दी जाय। इसीलिए इस समय यह अभ्यास क्रम चालू किया गया है।

हिन्दी विद्यापीठ के स्थविर श्रीमान् पं० जनार्दनराय नागर एम० ए० साहित्यालंकार द्वारा प्रारंभिक भाषण प्रौढ़-शिक्षण की आवश्यकता पर हुआ। और उद्घाटनकर्ता श्रीमान् पं० लक्ष्मी-लाल जी जोशी ने "अभ्यास क्रम" की महत्त्वता पर प्रकाश डाला, तथा शुभ-कामना प्रकट करते हुए कहा—

"प्रौढ़ शिक्षण हमारे देश की प्रथम कोटि की आवश्यकताओं में से एक है। हमारा देश कृषि-प्रधान है। भारतीय किसान अज्ञान के अंधकार में फँसे हैं और वे शिक्षा के महत्त्व को भी भूल गये हैं। साक्षरता भी शिक्षा का साधन है और साध्य शिक्षा है जो साक्षरता द्वारा प्राप्त हो सकती है। प्रौढ़ शिक्षकों को चाहिए कि वे साक्षरता द्वारा शिक्षा दें। आपने आगे चलकर बताया कि भारतीय ग्रामीण ग़रीब होते हुए भी चरित्रवान् धार्मिक तथा समझदार होते हैं। वे आज के सामा-जिक वातावरण से दूर हो गये हैं। अतः उनकी धार्मिक भावना से लाभ उठाते हुए, "राम नाम के सहारे ही से साक्षर व शिक्षित करने का प्रयत्न करना चाहिए।" प्रौढ़ शिक्षकों को बड़ी सावधानी, समझ-दारी तथा बड़े धैर्य से काम लेना चाहिए। पढ़ाने में आवश्यकतानुसार और अपनी सुविधानुसार आवश्यक परिवर्तन कर आगे बढ़ते रहना चाहिए। हमारे पढ़ाने में प्रौढ़ों की आवश्यकताओं तथा दैनिक जीवन से सम्बन्धित विषयों को भी लेना चाहिए।"

—गिरिधारीलाल शर्मा
प्रचार-मंत्री

* * *

जयपुर (मंडावा) में प्रथम परीक्षा के केन्द्र स्थापन की आज्ञा हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से मिल चुकी है। परीक्षा के लिए पढ़ाई की तैयारी छात्र-साहित्य-संघ की ओर से निःशुल्क करवाई जाती है पं० शुभकरन शर्मा आयुर्वेदाचार्य शास्त्री अध्यापक नियुक्त किये गये हैं। पुस्तकों का भी प्रबंध संघ ही कर रहा है।

कविवर 'ओहरिजी' का कविता-पाठ श्रीकृष्ण-नवयुवक मंडल भवन में हुआ। उपस्थिति अच्छी थी। स्थानीय कवियों में सर्वश्री 'पुष्कर' महावीर हेतमसरिया विष्णुदत्त शर्मा का नाम उल्लेखनीय है। श्री दामोदर शर्मा के राष्ट्रीय गायन हुए। संघ का काम श्री शंकरलाल सर्राफ और श्री विश्वम्भर-दयाल जोशी बड़ी लगन से कर रहे हैं। हस्तलिखित पत्रिका 'छात्र-सखा' और साहित्य-समाचार नियमित रूप से प्रका-शित हो रहे हैं।

—संवाददाता

* * *

रायबरेली श्री द्विवेदी साहित्य-संघ की ओर से आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी का जन्मोत्सव द्विवेदी संग्रहालय, रंवाबा पब्लिक लाइब्रेरी में गत ५ मई को मनाया गया था। कार्य आरम्भ होने के पूर्व डाक्टर शंकरदत्त शर्मा जो द्विवेदी जी के सम्बन्धी हैं और जिनके स्थान पर द्विवेदी जी का स्वर्गवास हुआ था, सभापति निर्वाचित हुए थे। मंगलाचरण के उपरान्त पंडित सिद्धि-नाथ शुक्ल वकील ने पंडित यज्ञदत्त शुक्ला की अनुपस्थिति में उनका "द्विवेदी संस्मरण" नामक लेख पढ़ा। श्रीयुत शिवशरण शुक्ल ने द्विवेदी जी की पत्रकार-कला का विवेचन किया और यह बतलाया कि पत्रकारों में द्विवेदी जी एक निर्भीक और प्रभावशाली सम्पादक थे। तदुपरान्त श्री दिवाकर शास्त्री ने द्विवेदी जी के सम्बन्ध में एक सुन्दर भाषण दिया। संघ के उपमंत्री पंडित चन्द्रभाल मिश्र वकील ने द्विवेदी जी के विभिन्न साहित्यिक कार्यों पर प्रकाश डाला और यह दिखलाया कि हिन्दी का प्रांजल रूप जो आजकल दिखाई पड़ रहा है वह द्विवेदी जी की ही लेखनी का फल है। अन्त में सभापति का भाषण हुआ। पंडित द्वारकाप्रसाद शुक्ल "शंकर" कार्य-संचालक सभापति द्विवेदी साहित्य-संघ ने आगत सज्जनों को हार्दिक धन्यवाद दिया। उत्सव में रायबरेली शहर के सभी गण्यमान शिक्षित व्यक्तियों ने भाग लिया था। जिनमें श्रीयुत डाक्टर गर्ग सिविल सर्जन, श्री विष्णुसरनलाल हेडमास्टर हिन्दू हाई-स्कूल, श्री सुखव्रतसिंह सम्पादक "पथिक" पंडित रामसोहन त्रिपाठी वकील, श्री उमेशदत्त शुक्ल, श्री रामेश्वरसिंह का नाम उल्लेखनीय था।

—चन्द्रभाल मिश्र

* * *

पटना सेवदह राजेन्द्र साहित्य महा-विद्यालय में स्वास्थ्य-मंत्री माननीय श्री जगलाल चौधरी अपने प्राइवेट-सेक्रेटरी के साथ पधारे। विद्यालय के अध्यापकों तथा छात्रों ने आपका ... आपने विद्यालय के वस्तु ... का निरीक्षण किया। चुनाई ... ताँत विभाग, मधु-मक्खी-... विभाग, पशुपालन, ... वाचनालय, पाकशाला और ... का निरीक्षण कर आप प्रसन्न ... ट्रेंच लेट्रीवन के निर्माण पर ... और इस सम्बन्ध में ... ग्रामीण परिवार के हर ... साथ एक खरपी रखे और ... मल को मिट्टी से छिपा दे। ... अपने मल का खाद के उपयो... विद्यालय शिक्षण-शिविर के ... करते हुए आपने कहा कि ... मंडल का सर्वप्रथम कार्य ... की रिहाई है। जब तक राजनै... पर से रोक उठ नहीं जाती ... संतोष की साँस नहीं ले सकता ... क्रान्ति के जुल्मों की जाँच कर... मंत्रिमंडल प्रयत्नशील है। ... वापसी, बिजली-द्वारा सिंचाई, ... की समस्या आदि का समाधान ... मंत्रियों के कर्तव्य-सा हो गया ... दुनिया को जीतना नहीं चाहते ... व्यवहार से अपने में आत्म... चाहते हैं।

* *

हरद्वार में स्थापित श्री ... ज्ञानमंदिर का छठा वार्षिक वि... ४५ से मई ४६ ई० तक का ... प्रकाशित हुआ है। श्री ... ज्ञानमंदिर की स्थापना छः वर्ष ... महन्त शान्तानन्दनाथ जी ... अपने श्री श्रवणनाथ मठ की ... थी। इस अल्पकाल में ही ... पुस्तकालय, सभाभवन, प्रकाशन ... आयुर्वेदिक पाठशाला, आयुर्वेद ... धालय और पार्क आदि विभिन्न ... द्वारा सार्वजनिक सेवा हो रही ...

इस वर्ष इस संस्था का ... करनेवाले महानुभावों में पंडित ... लाल नेहरू, पं० गोविन्दवल्लभ ... प्रधान मंत्री प्रान्तीय सरकार, ... सी० चटर्जी उपाध्यक्ष हिन्दू ... श्री सेठ जुगलकिशोर बिड़ला, ... नैपालचन्द्र सिंह, शिक्षाविभाग ... प्रान्त, श्री साहे महोदय भूतपूर्व ... प्रान्तीय गवर्नर, श्री महन्त ... एम० एल० ए०।

इस वर्ष होनेवाले श्री महन्त ... प्रमुख कार्यों में संस्कृत विद्या... निर्माण है। इसकी बिल्डिंग ... क़रीब-क़रीब तैयार हो चुकी है ... भाषा के अध्ययन के साथ-साथ ... शिक्षा का इसमें विशेष ... जायगा। यह संस्कृत शिक्षा का ... केन्द्र बन सके, इसके लिए श्री ... विशेष प्रयत्नशील हैं।

—रघुनाथ ...

* *

अमृतसर के प्रमुख साहित्यिक ... परीक्षाओं के प्रचारक और अनेक ... के संस्थापक वयोवृद्ध लब्धप्रतिष्ठ ... नामा श्रीमान् पं० जगन्नाथ जी ... साहित्य-भूषण की चिरकालिक ... (ठोस) साहित्य सेवाओं के उप... श्री पुच्छरत जी के सम्मानार्थ ... विद्यालय की "हिन्दी-रत्न" ... इस वर्ष अर्थात् १९४६ में ... उत्तीर्ण (फर्स्ट) रहनेवाले छात्र ... को "गोल्डन-मेडल" (सुवर्ण... अर्थात् "स्वर्णलिप्त" (पुर... दिया जायगा। व्यवस्थापक ... सदन, चावल मंडी अमृतसर, ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

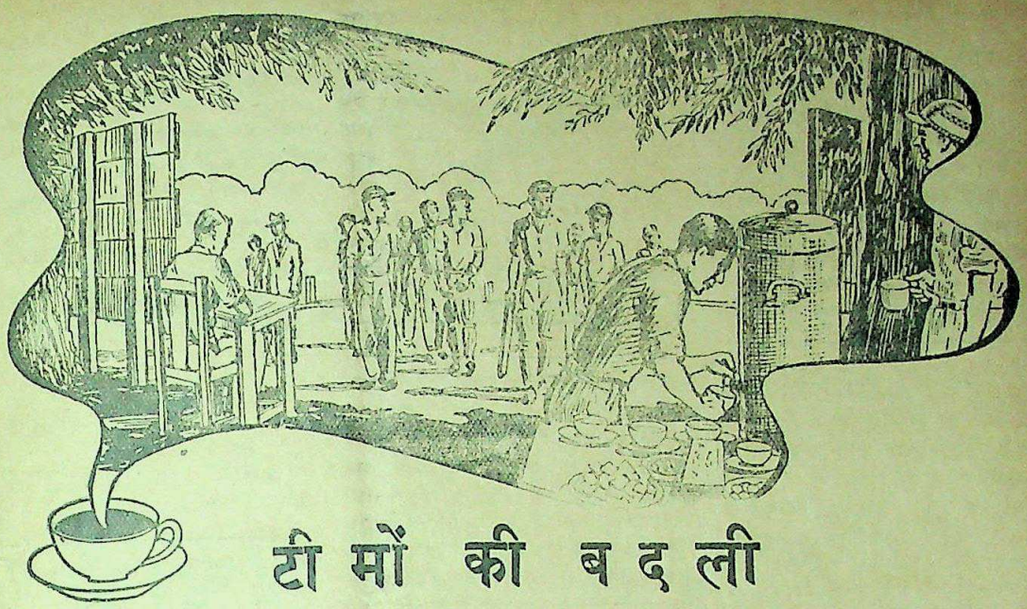

टी मों की ब द ली

क्रिकेट का मनोरंजक खेल विशाल मैदान में ग्यारह ग्यारह खेलाड़ियों की दो टीमों के बीच खेला जाता है। एक टीम के खेलाड़ी दो दो की बारी में खेलते हैं और दूसरा पक्ष उन्हें खेलाता है। जैसे धूप ढलने लगती है खेलाड़ियों की गति मंथर होती जाती है। अन्त में आखिरी खेलाड़ियों की बारी आती है। लो! उनमें से एक पिछड़ गया—उसकी और साथ ही उसके पक्ष की बारी भी खत्म हो गई।

टीमों की बलदी के समय तम्बू में ताजी चाय तैयार है। साथे से पसीना पोंछते हुए खेलाड़ी चाय से अपनी प्यास बुझाते हैं। चाय का तीसरा प्याला पीने पर थकावट दूर हो जाती है, और पुनः ताजा होकर खेलाड़ी मैदान में आते हैं।

हिन्दुस्तान भर के क्रिकेट के मैदानों में चाय—विशेषतः ब्रुक बण्ड चाय जो बग़ीचों से ताजी आती है, आवश्यकताओं में सम्मिलित है।

बारम्बार वितरण-द्वारा ताजगी निश्चित

ब्रुक बण्ड

दो पत्तियाँ और एक कली

क्योंकि रेक्सोना सक्रिय रूप से त्वचा के स्वास्थ्य को प्रोत्साहन देता है—उसके लावण्य का सच्चा आधार है—अतः त्वचा में सौन्दर्य उत्पन्न करने का उसका दावा वास्तविक है। विशिष्ट चर्म-विकार विरोधी कैडिल के साथ इसका रासायनिक संयोग है और रेक्सोना का शीघ्र उत्पन्न होनेवाला झाग, उक्त शुद्धिकारी कैडिल को रोम छिद्रों में पहुंचा देता है।

रेक्सोना एक पारिवारिक साबुन

परिवार रेक्सोना के विशिष्ट गुणों की प्रशंसा करेगा ..... महिलायें चर्म-सौन्दर्य में सक्रिय रूप से प्रभावशाली होने के कारण प्रशंसा करेंगी एवं पुरुष स्वस्थ त्वचा के पोषक महत्व के कारण। बालकों के लिये भी रेक्सोना से श्रेष्ठ साबुन और कोई नहीं है, रेक्सोना का रासायनिक झाग शरीर-दाह को शांति देता है तथा रगड़ और जलन से बचाता है। रेक्सोना पारिवारिक स्वास्थ्य का रक्षक है।

★ रेक्सोना में मिश्रित कैडिल विकार-विरोधी पोषक तैलों का विशिष्ट रसायन है, जिसका त्वचा के स्वास्थ्य पर शक्तिशाली प्रभाव पड़ता है।

रेक्सोना मरहम का प्रयोग कीजिए

जख्म के और रगड़ के घावों, खुजली, मुंहासों, फफोलों, दाद, मर्सा, तथा अन्य सभी त्वचा की कुरूपताओं पर रेक्सोना मरहम का प्रयोग कीजिए।

REXONA PROPRIETARY LIMITED

RP 29-302 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered NO. A—295 देशदूत इलाहाबाद—रविवार, ९ जून,

"हम यथा शक्ति प्रयत्न करेंगे"

मि. जिन्ना

"मैं वायसराय के वक्तव्य को दोहराता हूँ कि इस सामान्य संकट के समय कोई भी व्यक्ति किसी प्रकारका राजनैतिक सौदा नहीं करे। खाद्य का विषय दलगत संघर्षों से परे होना चाहिये। सहायता हमें अवश्य करनी है। इस अत्यंत गंभीर परिस्थिति का सामना करने के लिये हम यथाशक्ति सहयोग देंगे।"

—१७ फरवरी का वक्तव्य

हमारी प्रतिज्ञा और अपील

[illegible] क्षेत्रों से जो कमीवाले क्षेत्रों में रहते हैं हम परिपूर्ण सहयोग की प्रतिज्ञा करते हैं। देश के समस्त साधनों का संगठन होगया है और उनके पास शीघ्रतासे सहायता भेजी जा रही है। उनके अभावको शीघ्र देश के साथ, बराबर विभाजित किया जावेगा। राशनिंग का इस प्रकार विस्तार किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति अपना उचित भाग प्राप्त करले। मूल्य नियंत्रण की कठोर व्यवस्था की जावेगी। शान्तिसे विश्वास रखिये। अपनी आवश्यकता से अधिक मत खरीदिये। मुनाफ़ाखोरों से कोई सम्बंध मत रखिये

अतिरिक्त क्षेत्रों में रहनेवालों से हम अधिकसे अधिक मदद की अपील करते हैं। यदि आपसे अतिरिक्त अनाज सुपुर्द करने को कहा जावे तो आपके पास आपकी आवश्यकता के अनुसार काफी बच जावेगा। यदि आपके नगर में राशनिंग योजना लागू की गयी है तो याद रखिये, वह आपके अन्य भाइयों की सहायता के लिये ही है। तब भी आपके पास काफी होगा। छोटे तरीके से भी अनुचित संग्रह मत कीजिये। अधिकारियों के साथ सहयोग कीजिये।

खाद्य संकट को पराजित कीजिए

एक साथ कार्य कीजिये – एक साथ हिस्सा बंटाइये

व्यापारियों एवं उत्पादकों को संदेश

अपनी सामर्थ्यानुसार सारा अनाज निकाल दीजिये अनुचित संग्रह का प्रत्येक मन अनाज एक भाई की मृत्यु का कारण हो सकता है नियंत्रित मूल्य पर ही बेचिये—आपके और खरीदनेवाले के दोनों के लिये यही उचित है। दूसरों को संकट दे कर कमाया हुआ धन पाप है।

अपनी समस्त शक्ति और साधनों से सरकार और जनता मुनाफाखोरों और चोर बाजारवालों का दमन करने के लिये कटिबद्ध है। चोर बाजार से बचिये यह अपराध है।

[illegible] वि भा ग, भा र त स र का र, न ई दि ल्ली द्वा रा प्र चा रि त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्य ७॥)
संख्या ३)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक

१६ जून, १९४६

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

मुस्लिम लीग मंत्रिदल का बड़ा मुस्लिम लीग मंत्रिदल बनाने में मानमनौवल स्वीकार करने में मानमनौवल कमी भी स्वीकार करने में मानमनौवल कमी भी स्वीकार करने में मानमनौवल कमी भी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मझली दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पिता भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

सपट अन्ड क. लि. बम्बई नं. २.

भावनगर (काठियावाड़)

"हम यथा शक्ति प्रयत्न करेंगे"

मि. जिन्ना

"मैं वायसराय के वक्तव्य को दोहराता हूँ कि इस सामान्य संकट के समय कोई भी व्यक्ति किसी प्रकारका राजनैतिक सौदा नहीं करे। खाद्य का विषय दलगत संघर्षों से परे होना चाहिये। सहायता हमें अवश्य करनी है। इस अत्यंत गंभीर परिस्थिति का सामना करने के लिये हम भरसक सहयोग देंगे।"

—१७ फरवरी का वक्तव्य

हमारी प्रतिज्ञा और अपील

हम लोगों से जो कमीवाले क्षेत्रों में रहते हैं हम परिपूर्ण सहयोग की प्रतिज्ञा करते हैं। देश के समस्त साधनों का संगठन होगया है और उनके पास शीघ्रतासे सहायता भेजी जा रही है। उनके अभावको शेष देश के साथ, बराबर विभाजित किया जावेगा। राशनिंग का इस प्रकार विस्तार किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति अपना उचित भाग प्राप्त करले। मूल्य नियंत्रण की कठोर व्यवस्था की जावेगी। शान्तिसे विश्वास रखिये। अपनी आवश्यकता से अधिक मत खरीदिये। मुनाफ़ाखोरों से कोई सम्बंध मत रखिये अतिरिक्त क्षेत्रों में रहनेवालों से हम अधिकसे अधिक मदद की अपील करते हैं। यदि आपसे अतिरिक्त अनाज सुपुर्द करने को कहा जावे तो आपके पास आपकी आवश्यकता के अनुसार काफी बच जावेगा। यदि आपके नगर में राशनिंग योजना लागू की गयी है तो याद रखिये, वह आपके अन्य भाइयों की सहायता के लिये ही है। तब भी आपके पास काफी होगा। छोटे तरीके से भी अनुचित संग्रह मत कीजिये। अधिकारियों के साथ सहयोग कीजिये।

खाद्य संकट को पराजित कीजिए

एक साथ कार्य... शिक्षा से उसके लड़के की ... लिए

व्यापारियों एवं उत्पादकों को संदेश

अपनी सामर्थ्यानुसार सारा अनाज निकाल दीजिये अनुचित संग्रह का प्रत्येक मन अनाज एक भाई की मृत्यु का कारण हो सकता है नियंत्रित मूल्य पर ही बेचिये—आपके और खरीदनेवाले के दोनों के लिये यही उचित है। दूसरों को संकट दे कर कमाया हुआ धन पाप है।

अपनी समस्त ... मुनाफ़ा ... में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है। (४) इस प्रकार अवधि पूरी होने पर

(८) नल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट ... सर्टिफिकेट्स और स्टाम्पस ... सरकार द्वारा अधिकृत एजेंटों ... सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

आप अपनी बचत से ५०% लाभ उठा...

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट खरीदिये।

LIFEBUOY SOAP

प्रबन्धक सम्पादक — ... (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, १६ जून, १९४६

वर्ष ८, संख्या ४२]

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

तो कम्यूनिस्टों का क्या रुख होना चाहिए? सरकुलर में कहा गया है कि ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर कवि-सम्मेलन और मुशायरे कराये जायँ और जनता को आकर्षित किया जाये। अपने राम की राय में अगर कवि-सम्मेलनों और मुशायरों के साथ साथ नाच का भी प्रबन्ध किया जा सके तो जलसा बड़ी कामयाबी हासिल करेगा। जनता भी आकर्षित होगी और फिर मुशायरे के गाने के साथ नाच का संयोग भी अच्छा बैठेगा।

* * *

अग्रगामी दल के कार्यकर्ताओं ने यह निश्चय किया है कि भारत-सरकार ने दल पर अभी तक जो प्रतिबन्ध लगा रखा है, उसके विरोध में आन्दोलन किया जाये और कानून भी तोड़ा जाये। संयुक्तप्रान्त के गृह-मन्त्री श्री रफीअहमद किदवई ने प्रान्त के अधिकारियों के पास यह सूचना भेजी है कि यदि अग्रगामी दल का कोई कार्यकर्ता भारत-सरकार का लगाया हुआ प्रतिबन्ध तोड़े तो उसे गिरफ़्तार न किया जाये। यह खूब रहा, अगर गिरफ़्तारी न होगी तो आन्दोलन में नया जोश कैसे आयेगा? अग्रगामी दल के कार्यकर्ताओं ने सोचा तो मार्के की बात लेकिन तकदीर अभी दुरुस्त नहीं जान पड़ती! क्योंकि बिना गिरफ़्तारी के मामला ही सब ठंडा पड़ जायेगा।

* * *

काश्मीर के नये आन्दोलन में कहा गया है कि कम्यूनिस्टों तथा रूसियों का भी हाथ है। ईरान के अजरबेजान प्रांत की तरह काश्मीर को भी वह स्वतन्त्र करना चाहते हैं। हो सकता है। रूसी माया कोई जान नहीं सकता। रूसी माया सारी दुनिया में अपनी उधेड़-बुन मचा रही है। इसलिए हिन्दुस्तान में भी अगर वह बीमारी शुरू हो जाये तो कोई नई बात नहीं है। अपने राम जानते हैं कि जब तक अँगरेज हिन्दुस्तान में हैं, वह काश्मीर को कभी अजरबेजान न बनने देंगे, एक क्या सात रूस और सात लाख कम्यूनिस्ट आ जायें!

* * *

मन्त्रिदल की योजना तथा कांग्रेस और लीग के नेताओं की वर्तमान वार्ता को देखकर लोग कहते हैं कि 'स्वराज्य आ गया'। अपने राम भी यही समझते हैं स्वराज्य आ नहीं गया तो बस उसे आया ही हुआ समझिए। इस वक्त आसमान से गिरकर मुस्लिम लीगी खजूर में अटक रहा है। खजूर से जब नीचे आये तो समझना चाहिए वाकई स्वराज्य आ गया। मन्त्रिदल के सदस्य लार्ड पेथिक लारेंस, सर स्टेफोर्ड क्रिप्स, श्री एलिक्जेंडर तथा भारत के वाइसराय लार्ड वैवेल अब लग्गे से खोदने ही वाले हैं। क्योंकि खजूर में वह बुरी तरह अटक गया है। कांग्रेस तो सिर्फ कह रही है कि खजूर में अटका है लेकिन जमीन पर लाने का काम तो मन्त्रिदल और वाइसराय ही कर सकते हैं क्योंकि इस नाटक के वही महापात्र हैं।

* * *

बंगाल में फिर अन्न-संकट और अकाल की आमद हो रही है। चावल का दाम बड़ी तेजी के साथ बढ़ रहा है। भगवान् जाने क्या होनेवाला है? पता नहीं स्वराज्य मिलते मिलते अभी कौन कौन से दिन देखने को मिलते हैं? भारत-सरकार के वर्तमान अधिकारी जाते जाते पापड़ बेलकर जायेंगे। अँगरेज आई० सी० एस० तो चले ही जा रहे हैं लेकिन भोजन-विभाग भी दिवालिया बनता जा रहा है। अपने राम नहीं समझते कि सर जे० पी० श्रीवास्तव क्या कर रहे हैं? स्वराज्य मिलते मिलते उन्हें भी बहती गंगा में हाथ धो लेना चाहिए।

* * *

पेरिस में होनेवाले परराष्ट्रों के मंत्रियों का सम्मेलन अब नया गुल खिला रहा है। ब्रिटिश मज़दूर मंत्रिमण्डल रूस से मिलकर चलना चाहता है लेकिन चर्चिल मंडली अपना अलग ही तराना छेड़ रही है। वह रूस के नाम से ऐसा भड़कती है जैसे रेलगाड़ी को देखकर भैंस। लेकिन रूस—वह तो तिकड़मबाज़ी में प्रसिद्ध है। आग लगा के जमालो दूर खड़ीं। योरोप में कम्यूनिजम की आग सुलग रही है, पूँजीपति राष्ट्र आपस में वाक्-युद्ध कर रहे हैं और रूस टुकुर टुकुर देख रहा है।

* * *

रेलवे हड़ताल अगर हो गई, तो काम कैसे चलेगा? सिंध सरकार ऊँट और बैलगाड़ियों पर अन्न पहुँचाने का बन्दोबस्त कर रही है। बड़ी सुन्दर सूझ है। सिंध पर उसके पड़ोसी देशों का असर पड़ना ही चाहिए। अँगरेजी राज्य आने के पहले भी तो ऊँटों और बैलों का यातायात साधनों में उपयोग होता था। फिर अँगरेजी राज्य जानेवाला भी तो है इसलिये कहना पड़ता है कि दुनिया गोल है।

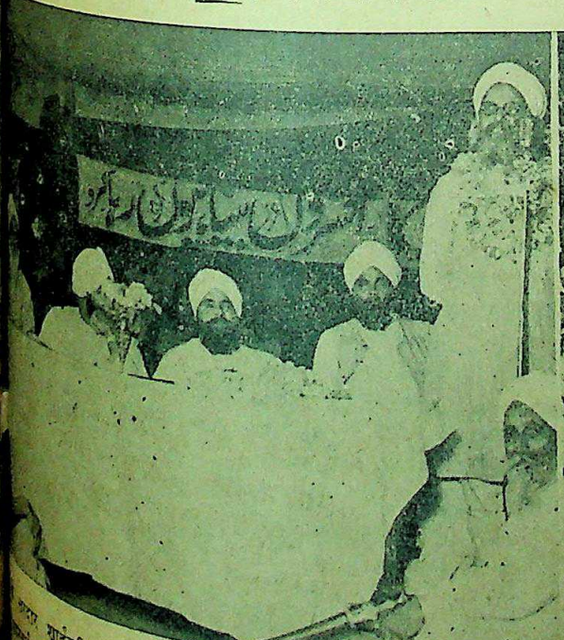

अकाल पीड़ितों की सहायता के लिए धन एकत्र करने के लिए रावलपिंडी में होनेवाले सर्वदल सिख-सम्मेलन में सरदार मंगलसिंह कवीश्वर (बीच में बैठे हुए) भूतपूर्व सभापति अखिल भारतीय अकाली दल, सरदार अमरसिंह भाषण दे रहे हैं।

शिमला में बच्चों के बीच में मिस्टर मोहम्मद अली जिन्ना। गत सप्ताह भाल में इन बच्चों ने पाकिस्तानी नारे लगाते हुए जुलूस निकाला और मिस्टर जिन्ना का स्वागत किया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

समानता का बँटवारा क्यों ?

ब्रिटिश मंत्रिदल की योजना प्रायः कार्यरूप में परिणत होनेवाली है, यह भारतीय राजनैतिक दृष्टि से ही नहीं वरन् ब्रिटेन की वर्तमान राजनैतिक स्थिति देखते हुए, भी प्रसन्नता की बात अवश्य है। युद्ध के बाद ब्रिटिश साम्राज्य की जिस प्रकार अधोगति संसार के राजनैतिक मोर्चों पर हो रही है, उसे देखते हुए यह आवश्यक है कि भारत ऐसे उपनिवेश को जो ब्रिटिश उपनिवेशों में सबसे अधिक शक्तिशाली और धन-जन से युक्त है, स्वतंत्रता प्रदान की जाये। यद्यपि आज ब्रिटेन जो कुछ भी भारत को प्रदान करने जा रहा है, उसका अधिकांश श्रेय, भारतीय कांग्रेस, उसके नेताओं तथा करोड़ों राष्ट्रवादी जनता को प्राप्त है, किन्तु ऐसे अवसरों पर अन्य दल भी, जो अँगरेजी साम्राज्य के स्थिरता में सदा सहायक होते आये हैं, यदि लाभ उठा लें तो आश्चर्य की बात नहीं है। ब्रिटेन का वर्तमान मजदूर मंत्रिदल भी यह समझ गया है कि यदि भारत को इस समय कुछ राजनैतिक अधिकार न प्रदान किये गये तो केवल भारतीय अल्पसंख्यकों के बल पर वह अपने व्यावसायिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा सैनिक सत्वों को सुरक्षित नहीं रख सकती। यद्यपि ब्रिटिश मंत्रिमंडल की ओर से ब्रिटिश प्रतिनिधि-दल महीनों से नई दिल्ली में पड़ा है, किन्तु अब ऐसा जान पड़ता है कि केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना शीघ्र ही होने जा रही है और विधान-निर्मात्री समिति के निर्माण का भी कार्य शीघ्रही प्रारंभ किया जा सकेगा। मुस्लिम लीग तथा देशी राज्यों की ओर से मंत्रिदल की योजना से सहयोग करने की जो प्रतीक्षा की जा रही थी, उसका भी निर्णय हो गया।

नरेन्द्र मंडल तथा मुस्लिम लीग ने अब यह निश्चय कर लिया है कि केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना में वह सहयोग करेंगे। कांग्रेस तो पहले से ही, योजना में कुछ स्पष्टीकरण किये जाने के बाद, यह निश्चय कर चुकी थी कि मंत्रिदल की योजना स्वीकृत कर ली जाये और विधान-निर्मात्री समिति के निर्माण में सहयोग किया जाये। मंत्रिदल, कांग्रेस, मुस्लिम लीग, तथा नरेन्द्र मंडल के सहयोग की समस्या प्रायः हल हो चुकी है। केवल एक समस्या शेष रह गई है, जो वास्तव में विचारणीय है।

मुस्लिम लीग ने यह निश्चय किया है कि केन्द्र में जो नई सरकार बने उसमें आधा लीग के सदस्यों का प्रतिनिधित्व हो। किन्तु कांग्रेस इस प्रकार के वर्गवादी तथा हिन्दू-मुसलमानों के अर्द्ध प्रतिनिधित्व के विरुद्ध है। हमारी राय में कांग्रेस नेताओं का यह निर्णय औचित्यपूर्ण है। गत शिमला-सम्मेलन भी प्रायः इसी आधार पर भंग हुआ था। देसाई-लियाकत अली पैक्ट के अनुसार शिमला-सम्मेलन में भी इसी आधार पर वार्ता हुई थी। उस समय संभवतः कांग्रेस नेताओं ने केन्द्रीय सरकार के निर्माण में हिन्दू-मुसलमानों के बराबरी के प्रतिनिधित्व को स्वीकार किया था। कांग्रेस ने उस समय क्या स्वीकार किया था और क्या नहीं किया था किन्तु इस अर्द्ध प्रतिनिधित्व की नीति का जनता द्वारा खुलकर विरोध किया गया था। आज कांग्रेस स्वयं इस सिद्धान्त का विरोध कर रही है, जो उचित भी है। कांग्रेस देश की राष्ट्रीय संस्था है, उस पर सभी वर्गों के हित तथा प्रतिनिधित्व की जिम्मेदारी है। उसके लिए मुसलमान, ईसाई, सिक्ख और अछूत सभी बराबर हैं। वह किसी को भी छोड़ नहीं सकती। मुस्लिम लीग एक साम्प्रदायिक संस्था है। उसके लिए मुसलमान वही है जो मुस्लिम लीगी हो। कांग्रेस जातीयता से कतई दूर है। मुस्लिम लीग एक जातीय संस्था है। राष्ट्रीय और जातीय संस्था का मेल भी बेतुका है। यदि मुस्लिम लीग आधे प्रतिनिधित्व का दावा कर सकती है तो अन्य अल्पसंख्यक दल अगर अपने दावे को पेश करते हैं तो उचित ही है। क्यों न सिक्खों तथा अछूतों को अधिक से अधिक स्थान केन्द्रीय सरकार में मिले? हम समझते हैं कि मुस्लिम लीग की यह माँग भी एक प्रकार का अड़ंगा ही है किन्तु अड़ंगा दूर कैसे किया जा सकता है?

कांग्रेस तो सदा से ही समझौते के पक्ष में रही है और मुस्लिम लीग को सदा ही उसके द्वारा महत्त्व दिया जाता रहा है, उसी का यह फल आज मिल रहा है कि लीग अपना पैंतरा दिखा रही है। सच तो यह है जिस मदारी की बँदरिया होती है, उसी से वह मानती भी है। मुस्लिम लीग और मिस्टर जिन्ना ने जब यह देख लिया कि ब्रिटिश मंत्रिदल बिना कुछ किये हिन्दुस्तान नहीं छोड़ेगा, और यदि योजना को अस्वीकार कर दिया जाता है तो कांग्रेस के हाथ में केन्द्रीय सरकार चली जायेगी, तब लीग और उसके विधाता तैयार हो गये। इसलिए मुस्लिम लीग की केन्द्रीय सरकार के निर्माण में आधे प्रतिनिधित्व की माँग की समस्या का हल मंत्रिदल तथा वाइसराय लार्ड वैवेल ही कर सकते हैं। यदि जिन्ना साहब अपने आधे प्रतिनिधित्व की माँग पर अड़े रहते हैं तो यह समझा जा सकता है कि ऊपर से कुछ इशारेबाजी जरूर हो रही है, यदि ऐसा नहीं तो यह निश्चय है कि वह मंत्रिदल या लार्ड वैवेल के निर्णय को अंतिम समय में अस्वीकार नहीं कर सकते। केन्द्रीय सरकार के निर्माण में मुस्लिम लीग के निधित्व की माँग बेतुकी है तथा बहुमत की दृष्टि से १० करोड़ मुसलमानों के दावा करनेवाली लीग को निधित्व कैसे दिया जा सकता सही रास्ते पर है, यदि आगे पर कोई निर्णय होता है तो को एक दल विशेष के हाथों है। इसलिए हमारा अनुरोध दल तथा लार्ड वैवेल न्यायोचि केन्द्रीय सरकार का इस प्रका करें जिससे राष्ट्रीय दृष्टि से राजनैतिक दल का असहयोग हो। तभी केन्द्रीय सरकार राष्ट्रीय सरकार प्रमाणित

संकल्प

लेखक, राजाराम श्रीवास्तव बी० एस० सी० एल० एल० बी०

दाने चुननेवाली चिड़ियाँ, अब अंगार चुनेंगी।
नीड़ बनानेवाली चिड़ियाँ, नव संसार बुनेंगी।
बहुत रहीं तारों के भीतर रटी बहुत जू-पति की बोली,
चली बहुत सिखलाई चालें अपनी चाल चली तो, गोली।
अब शासक बन, जूपति तेरे अत्याचार सुनेंगी।
चिड़ियों के घर वन उपवन थे मधुऋतु थी सावन के घन थे,
आज जहाँ पतझर का शासन कुंजें थीं, कलि अलिगुंजन थे।
पतझर से सूखी डालों की करुण पुकार सुनेंगी।
नहीं माँगतीं गैरों का घर चाहा नहीं पराया आँगन,
अपना ही अधिकार माँगती। स्नेह, प्रेम पोषित निज कंचन।
उस पर आनाकानी तो, भूनेंगी और भुनेंगी।
यह चाहें, हम भी हँस खेलें दुनिया के सुख-दुख में हो लें,
दुनिया के गुंजन गर्जन में हम भी अपनी वाणी खोलें।
इसी धैर्य से प्रलय वेग से, निज अधिकार चुनेंगी।
दाने चुननेवाली चिड़ियाँ, अब संसार चुनेंगी॥

हजारों ही भूखे नहीं-
किन्तु लाखों भूखे हैं

भयंकर खाद्याभाव देश के सामने है जिससे कमी वाले क्षेत्रों में लाखों के प्राण संकट में पड़ रहे हैं। इन अभागे मनुष्यों के खाने की व्यवस्था वास्तव में एक महान् कार्य है। इस विशाल संकट में हममें से प्रत्येक का निश्चित दायित्व है। इन चार तरीकों द्वारा बहुत थोड़े प्रयत्न से ही आप इसकी पूर्ति कर सकते हैं:—

१. आतिथ्य सत्कार को कम कर दीजिये। यदि आपको अतिथि बुलाने ही हैं तो सादा भोजन बनवाइये। वे कारण को समझेंगे और उसको पसंद करेंगे।

२. थोड़ा खाना परोस कर अपने घर में ही बचत कीजिये। इस बात का स्मरण रखें कि रसोईघर में व्यर्थ क्षति न हो।

३. शादियों और धार्मिक एवं सामाजिक उत्सवों में कठोर मितव्ययिता का व्यवहार कीजिये।

४. अपने स्वाद पर निर्भर रहते हुये अधिक तरकारियाँ, फल, मछली, मांस, अंडे और दूध से बनी चीजें खाकर अपने भोजन को पौष्टिक बनाइये। अपनी चावल व गेहूँ की खुराक कम कर दीजिये।

इन तरीकों से हम उन पीड़ितों की कठिनाई और भूख में रक्षा कर सकते हैं जो सिर्फ इस प्रकार की व्यावहारिक मदद और आश्रय के लिये इस आपत्ति-काल में हमारी ओर देखते हैं।

खाद्य बचाना प्राण बचाने के बराबर है।

खाद्य - विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्रिदल की वैधानिक योजना

ब्रिटिश सेना का प्रश्न, अल्पसंख्यकों की हित-रक्षा और सन्धि-चर्चा की समस्या

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

ब्रिटिश मंत्रिदल ने भारत को स्वतंत्र करने की जो योजना प्रस्तुत की है, वह क्या है? राजनैतिक दृष्टि से योजना कहाँ तक भारतीय स्वाधीनता के लिए हितकर है, अल्पसंख्यकों तथा ब्रिटिश सेना के सम्बन्ध में योजना क्या कहती है, इन सब का पूर्ण विवेचन इस लेख में किया गया है। लेख अत्यन्त सामयिक तथा मंत्रिदल की योजना पर सुन्दर प्रकाश डालनेवाला है, जो पठनीय तथा विचारणीय है।

है। विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्तियों को यथा-सम्भव अधिक से अधिक उत्तेजना दी गई है। एक भारतीय राज्य की जगह, प्रतिहारी गवर्नमेण्ट की जगह अनेक प्रति-योगी प्रांतिक राज्यों और प्रतिस्पर्द्धी प्रान्तिक सरकारों को जन्म दिया गया है। भारतीय नागरिकता की जगह प्रान्तिक नागरिकता को उत्पन्न करने की चेष्टा की गई है और व्यापार तथा व्यवसाय-सम्बन्धी अवरोधों के खड़े होने की आशंका उत्पन्न हो गई है। यही नहीं धन-जन और श्रम के यातायात पर भी प्रतिबन्ध लगने की सम्भावना उत्पन्न हो गई है। बर्मा और सीलोन के अन्दर हाल में जो कुछ हुआ है, उसकी पुनरावृत्ति भावी भारत में होना सम्भव कर दिया गया है। फेडरल गवर्नमेंट स्वत: ही कमजोर होती है। प्रसिद्ध विद्वान् पण्डित स्वर्गीय प्रो० कीथ का कहना है—'गवर्नमेण्ट का फेडरल रूप जनता की राष्ट्रीय योजना के अन्दर विभाजन, विभेद और निर्बलता के तत्त्वों का प्रवेश करना है।" पर मन्त्री-मिशन की योजना में इस बात का ध्यान रक्खा गया है कि फेडरल यूनियन किसी भी तरह से सशक्त और बलवान् और सक्षम न हो सके और वह सदा रक्त-क्षीणता और अस्थिदुर्बलता का शिकार रहे।

तीन मंजिला

मन्त्री-मिशन ने भारतीय विधान की तीन मंजिला रूप-रेखा तैयार की है। विधान कहता है—(१) ब्रिटिश भारत के प्रान्तों और रियासतों का एक यूनियन हो। (२) प्रान्तों के तीन ग्रुप हों, और इन ग्रुपों की अलग धारा-सभा और अलग गवर्नमेंट हो। (३) प्रत्येक प्रान्त की अलग-अलग धारा-सभा और सरकार हो। विधान-यूनियन केन्द्र की व्यवस्था करता है, पर इसका क्षेत्र और कार्य इतना अधिक सीमित कर दिया गया है कि विश्व-युद्ध सदृश संकट उत्पन्न होने पर यह आवश्यक क्षेत्रों और शक्तियों पर न कमान कर सकेगा और न उनको संगठित कर सकेगा। सिद्धान्ततः यह एकता पर अल्पसंख्यकों के वीटो अधिकार को रद्द करता है। मगर व्यवहार में विधान बनाने का जो तरीका अपनाया गया है, उसमें मुस्लिम प्रतिनिधि यूनियन केन्द्र को विधान बनाने में हरएक बात पर हमेशा एक प्रकार का वीटो अधिकार व्यवहार में ला सकेंगे। पाकिस्तान को पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं किया गया है, मगर खण्ड पाकिस्तान को स्वीकार कर लिया गया है। प्रान्तों और रियासतों का मिलकर यूनियन केन्द्र बनेगा। मगर विधान की शृंखला में यह सबसे अधिक कमजोर कड़ी होगी। इसकी रचना इस ढंग की है कि सब फेडरेशन या ग्रुप इसको अपने ऊपर जबर्दस्ती लादा हुआ समझेंगे। इसकी शक्ति और इसके अधिकार को न्यूनतम करने की कोशिश की जायगी। इसको जो तीन कार्य प्रबन्ध करने के लिए दिये गये हैं उनका भी प्रस्तावित यूनियन केन्द्र भली प्रकार प्रबन्ध न कर सकेगा। मिशन ने यह लूला-लँगड़ा यूनियन केन्द्र क्यों बनाया है, यह समझना कठिन है। विधान द्वारा डाले गये अखिल भारतीय उत्तरदायित्व को वह पूरा करने में असमर्थ होगा और उसके भार से ही दबकर इसका हाथ टूट जायगा। वह देशभक्ति पूर्ण निष्ठा, उद्देश्यपूर्ण सहयोग और स्वयं स्फूर्त और स्वेच्छापूर्ण आज्ञा-पालन ग्रुपों या फेडरेशनों से प्राप्त न कर सकेगा। विधान के इतिहास में यह सबसे कमजोर यूनियन होगा।

केवल तीन विषय

भारतीय यूनियन को केवल सेना, पर-राष्ट्र और यातायात ये तीन विषय दिये गये हैं। संयुक्तराष्ट्र अमरीका की गवर्नमेन्ट के पास इन विषयों के अतिरिक्त व्यवसाय, मुद्रा, टकसाल, राष्ट्रीय पूँजी आदि विषय भी हैं। कनाडा उपनिवेश के पास ३८ विषय और अवशेष अधिकार भी हैं। आस्ट्रेलियन कामनवेल्थ के पास ३६ फेडरल विषय हैं। इंडिया एक्ट १९३५ में प्रस्तावित फेडरेशन को ५६ फेडरल विषय दिये गये थे। अब प्रस्तावित यूनियन को मुद्रा, टकसाल, जकात और तट-कर तक नहीं दिया गया है। यूनियन अखिल भारतीय महत्त्व के; यथा अन्न-संकट कार्यों में भी एक सूत्रता उत्पन्न न कर सकेगा। प्रान्तों के पास अवशिष्ट अधिकार रहने से यूनियन और प्रान्तों के बीच अन्तर तो रहेगा ही किंतु प्रान्तों के बीच में भी बहुत अन्तर उत्पन्न हो जायगा।

समानता नहीं रही

मन्त्री-मिशन के प्रस्तावों में यूनियन की धारा-सभा और उसके संगठन के बारे में कोई बात नहीं कही गई है। मगर शिमला में हुई कि त्रिपक्ष परिषद् के सामने यह प्रस्ताव रखा गया था कि हिन्दू बहुमत प्रान्तों और मुस्लिम बहुमत प्रान्तों के समान अनुपात से यूनियन की धारा-सभा और शासन-समिति का निर्माण किया जायगा चाहे वे रियासतों के साथ ग्रुप बनावें या न बनावें। इस प्रकार हिन्दू-मुस्लिम समानता की बात का त्याग कर दिया गया है। समानता रहने से सदा ही गति-अवरोध होता और प्रगति रुक जाती। मगर मुसलमानों के भय को शान्त करने

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

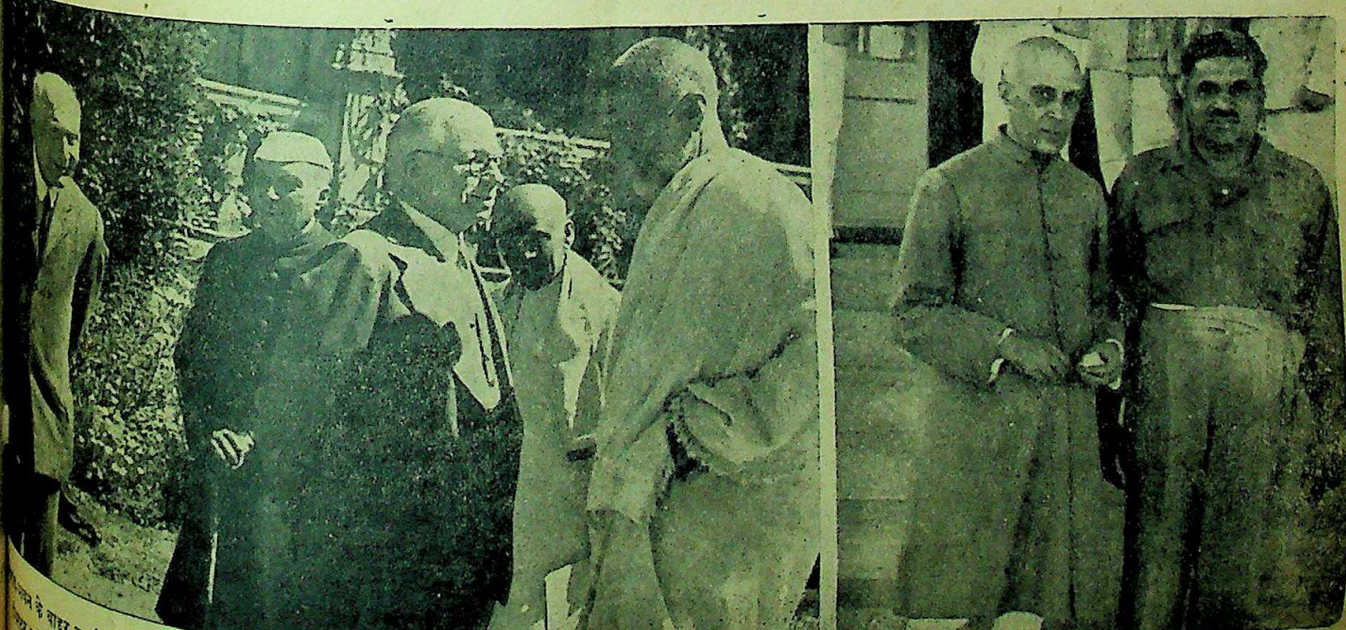

शिमला के बाहर वार्ता के पूर्व लान में—बाईं ओर से—लार्डपेथिक लारेंस, पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल और खान अब्दुलगफ्फार खाँ बातचीत कर रहे हैं।

शिमला में महात्मा गांधी के निवास-स्थान पर पंडित जवाहरलाल नेहरू के साथ आजाद हिन्द-फौज के कर्नल जगन्नाथ राव भोंसले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टर राममनोहर लोहिया।

श्री जयप्रकाशनारायण।

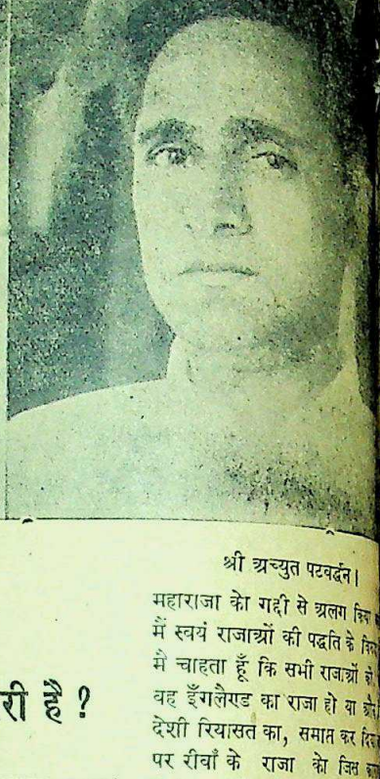

श्री अच्युत पटवर्द्धन।

वामपक्ष और समझौता

वामपक्ष के पास आगे के लिए अभी क्या तैयारी है ?

लेखक, श्री मन्मथनाथ गुप्त

भारतीय राजनीतिज्ञ क्षेत्र में दक्षिण और वामपक्ष के विचारों में संघर्ष होता ही रहता है। आज का कांग्रेस हाई कमांड दक्षिण पक्ष के हाथों में है और वह सरकार से समझौता करने का सदा से पक्षपाती रहा है, किन्तु वामपक्ष समझौते का विरोधी रहा है। वामपक्ष के प्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता श्री गुप्त ने इस लेख में दक्षिण और वामपक्ष के समय-समय पर होनेवाले विचार संघर्ष पर प्रकाश डालते हुए यह बतलाया है कि समझौता भी राजनीतिक युद्ध का एक मोहरा है। प्रत्येक दशा में समझौते का विरोध वामपक्ष के लिये उचित नहीं है। लेख सामयिक, सुंदर और विचार पूर्ण है।

जिस समय १९४२ की क्रान्ति चल रही थी, उस समय कुछ दिनों के लिये मालूम हुआ था, और ऐसा अच्छे अच्छे निरीक्षकों को मालूम हुआ था कि शायद वामपक्ष और दक्षिणपक्ष का मतभेद दूर हो गया। उस समय कथित दक्षिणपक्ष या उससे सम्बद्ध समझे जानेवाले लोगों ने साहस, क्रान्तिकारी बुद्धि तथा पारस्परिक सहयोग के जो नमूने दिखलाये, उससे प्रभावित होकर बहुत से अच्छे तथा ईमानदार वामपक्षियों ने भी यह कहना शुरू कर दिया था कि कांग्रेस के तबेले के अन्दर लतिहाव की क्या जरूरत है; पर आन्दोलन अभी खतम भी नहीं हुआ था, उसकी आग जहाँ तहाँ सुलग ही रही थी कि वस्तुस्थिति दूसरे रूप में सामने आ गई।

सन् १९४३ के प्रारंभ में महात्मा गांधी ने अनशन का ऐलान करते हुए जो पत्र सरकारी अफसरों को लिखे थे, वह जब प्रकाशित हुए तो ज्ञात हुआ कि यदि पिछले मतभेदों को भुला भी दिया जाये तो भी वामपक्ष और दक्षिणपक्ष के मतभेद की गुंजाइश नहीं रह गई है। सच तो यह है कि सन् १९४२ ने वामपक्ष और दक्षिणपक्ष के अन्दर एक नई खाई खड़ी कर दी, ऐसी खाई जो पाटी नहीं जा सकती थी।

यह भयानक खाई किस बात पर उत्पन्न हुई ? इस बात पर कि सन् १९४२ के सम्बन्ध में क्या समझा जाये ? सन् १९४२ में बहुत सी बातें ऐसी घटित हुई थीं, उन्हें चाहे जितना घसीटा जाये किन्तु वह सत्य और अहिंसा के दायरे में नहीं लाये जा सकते थे। अतएव सन् १९४२ के प्रशंसकों में (इसके तो प्रशंसक सभी थे) ऐसे बहुत से लोग निकल आये, जिन्होंने प्रकारान्तर से सन् १९४२ की जो विशेषतायें थीं उनको या तो अस्वीकार कर दिया, या उनकी दूसरी व्याख्या कर दी। स्पष्ट है कि यह धारा सच्चे वामपक्षियों को कबूल नहीं हो सकती थी क्योंकि वे तो साधन तथा तरीकों में क्रान्ति चाहते थे, और सन् १९४२ की क्रान्ति यदि कुछ थी तो इसी तथा इन्हीं क्षेत्रों में क्रान्ति की सूचना देती थी।

इस प्रकार जो वामपक्ष तथा दक्षिणपक्ष अन्य मतभेदों के कारण एक-दूसरे से अलग था, उनमें लड़ाई तथा मतभेद का एक नया कारण उत्पन्न हो गया। असल में देखा जाये तो सन् १९४२ के आन्दोलन के सम्बन्ध में जो मतभेद दिखाई पड़ा वह कोई आकस्मिक मतभेद नहीं था, बल्कि वामपक्ष और दक्षिणपक्ष की बनावट में यह मतभेद अन्तर्निहित था। सन् १९४२ के सम्बन्ध में दक्षिणपक्ष ने जो कुछ कहा, वह उसके लिए उचित था, उसी प्रकार १९४२ के संबंध में वामपक्ष ने जो कुछ कहा, वह भी उसके लिए उपयुक्त था। वामपक्ष के कहने में बल्कि कुछ जोर आ गया, वह इस प्रकार कि अब वह यह कह सकता था कि उसके साथ इतिहास है। वह यह कह सकता था कि १९४२ के इतिहास उसके साथ हैं।

फिर शिमला कान्फ्रेंस आई। तब से कान्फ्रेंस, कमीशन या मिशन जारी हैं। वामपक्ष और दक्षिणपक्ष के मतभेद इनको लेकर भी बढ़ते ही गये हैं।

एक साधारण व्यक्ति के लिए इन मतमतान्तरों को समझ पाना कठिन हो रहा है। सबसे अजीब बात तो यह है कि साधारण व्यक्ति की यह समझ में नहीं आ रहा है कि जब बार बार बातचीत असफल हो रही है तो भी नेतागण बातचीत क्यों और क्या समझकर कर रहे हैं ? मैंने साधारण व्यक्ति इसलिए कहा है कि वामपक्षी तो खैर इसकी नुकताचीनी करते ही हैं, पर इन वार्ताओं के ढंग को देखकर साधारण लोग भी सन्देह में पड़ जाते हैं कि आखिर मामला क्या है ? शिमला में जो बातचीत हुई उसमें कांग्रेस के नेताओं को मुँह की खानी पड़ी। फिर पार्लियामेन्टरी कमीशन आया, फिर आया ब्रिटिश मन्त्रिमडल मिशन।

भीतर भीतर क्या बात होती थी इसे ईश्वर जाने, या शैतान जाने, पर अखबारों में इनके सम्बन्ध में जितनी रिपोर्ट निकलती थी, उनसे साधारण व्यक्ति को भी यही ज्ञात होता था कि समय नष्ट किया जा रहा है। फिर साधारण व्यक्ति केवल लम्बी-चौड़ी प्रतिज्ञाओं से अपने मत का निर्माण नहीं करता। वह नित्य प्रति पुलिस, राशनिंग अफसर तथा अन्य सरकारी नौकरों के संपर्क में आता था; वह देखता था कि इनके रुख में कोई भी स्पष्ट या अस्पष्ट परिवर्तन नहीं हो रहा है, वह देखता था कि यह लोग पहले जैसे जनता के दुश्मन थे वैसे ही अब भी हैं, सिविल सर्विस जहाँ की तहाँ है और रहेगी, फिर यह कैसी बातचीत हो रही थी ? साधारण व्यक्ति नेताओं में श्रद्धालु थे, वामपक्षियों की तरह वह नेताओं की नुकताचीनी करने पर तुला नहीं था, न वह ऊँचे ऊँचे सिद्धान्तों को ही समझता था, और न वह शायद उनकी परवाह ही करता था, फिर भी साधारण व्यक्ति अपनी साधारण बुद्धि से इन वार्ताओं को थोथी पाता था। अब तक जो परिस्थिति है, उससे यही ज्ञात होता है कि साधारण बुद्धि के साधारण लोगों ने ही परिस्थिति को ठीक तरह से कूता था, बाकी असाधारण बुद्धिवाले नेताओं ने ठीक नहीं समझा था।

शिमला-सम्मेलन से लेकर अब तक जो घटनायें देश में घटित हुई हैं, उनसे तो साधारण बुद्धिवाले साधारण लोगों की ही बातें सही प्रमाणित हो रही हैं। कुछ थोड़ी सी घटनाओं को लिया जाये, यों ही बिना किसी सिलसिले के। इस बीच में रीवाँ के महाराजा को गद्दी से अलग किया ... मैं स्वयं राजाओं की पद्धति के ... मैं चाहता हूँ कि सभी राजाओं को ... वह इँगलैण्ड का राजा हो या और ... देशी रियासत का, समाप्त कर दिया ... पर रीवाँ के राजा को जिस ... ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने बात की ... दूध की मक्खी की तरह निकाल ... दिया, उसका समर्थन नहीं किया ... सकता। रीवाँ के महाराजा घुड़दौड़ में ... रुपये फूँकने के लिए या किसी ... के कारण से निकाले जाते और ... राजाओं को निकालना पड़ता तो ... होता, पर रीवाँ के राजा तो इस ... निकाले गये कि उन्होंने अपनी ... शासन-सुधार दिये थे। क्या यह ... बात का सूचक था कि साम्राज्यवाद ... मुच शक्ति हस्तान्तरित करने को ...

जिस समय शिमला कान्फ्रेंस हो ... थी, उसी समय देश के जेलों में ... कैदियों के साथ ज्यादतियाँ हो ... मैं स्वयं उस समय जेल में था, और ... हूँ कि 'सी' श्रेणी के राजबन्दियों के ... किस प्रकार का दुर्व्यवहार हो ... खैर, आपबीती जाने दी जाये, ... बङ्गाल में राजबन्दी पड़े हुए हैं। ... प्रान्तों में राजबन्दी छूट गये, ... लिए कांग्रेस को, बल्कि वोटरों को ... प्राप्त होना चाहिए न कि और ... नौ-सेना-विद्रोह के कुछ लोगों को ... अभी तीन-चार महीने हुए फाँसी दे ... यह भी इस सम्बन्ध में याद रहे। ... बातें सरकार की सुमति की परिचायक ...

अवश्य इस बीच में कांग्रेस ... कायम होने के कारण तमाम ... ज्यादतियाँ, घूसखोरियाँ आदि ... जिक रूप से ही सही रोकथाम हुई ... इसके लिए सरकार को कैसे धन्यवाद ... जाय ? उसने तो चुनाव में खुल्लम ... कांग्रेस-विरोधी शक्तियों की मदद ... उसने कांग्रेस को शक्ति आरूढ़ होने के ... में हर तरीके से अड़ंगा लगाया था ... भी कांग्रेस आ गई, यह जनता की ... न कि सरकार की बदौलत ? यदि ... कान्फ्रेंस के समय में भी सरकार ... मंत्रिमंडलों को शक्ति-आरूढ़ होने ... अर्थात् केन्द्र में न सही तो प्रान्तों में ही ...

शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...से 'देशदूत' के लिए

...नों के बालक कैसे शिक्षित हों?

...प्रसार के लिए ग्रामसेवकों की ज़िम्मेवारी

लेखक, आचार्य श्री नरहरि भाई पारीख

...गांधी के रचनात्मक कार्यों में एक यह भी है कि किसानों के बालकों को ...किया जाये कि वह राष्ट्रीयता के आदर्शों के अनुकूल और उच्चकोटि के ...बन सकें? मौजूदा ग्राम-सेवकों का गाँवों में निवास करनेवाले किसानों के ...क्या कर्तव्य है? इस लेख में आचार्य श्री नरहरि भाई पारीख ने गांधीजी ...के अनुसार ग्रामीण बालकों की शिक्षा की ओर ग्राम-सेवकों का ध्यान ...आकर्षित किया है। लेख अत्यन्त सुन्दर और विचारपूर्ण है।

...और कस्बों से दूर-दूर के गाँवों ...बन जाते हैं, तब उन्हें अनेक ...अड़चनें आती हैं जैसे डाक का ...न मिलना, समाचारपत्र ...न मिलना, देश में चलनेवाली ...आदि। लेकिन, इन सब ...बढ़कर अपने बच्चों की शिक्षा ...ग्राम-सेवकों को विशेष ...है। ऐसे गाँवों में स्कूल ...और अगर हो भी तो वह रद्दी ...पर बालकों को क्या शिक्षा ...गन्दी आदतोंवाले गाँव ...के सहवास से अपने बच्चे भी ...डर उन्हें रहता है और मन ...है कि हम तो ऐसे पिछड़े ...में आ पड़े हैं लेकिन ...तो नहीं बिगड़ना चाहिए। ...को छात्र-निवासवाली ...दाखिल करने का विचार ...लेकिन, वहाँ पर भी ११, १२ ...उम्र के बालकों को प्रवेश नहीं ...दूसरे, वहाँ पर रखने का ...ग्राम-सेवकों को नहीं पोसाता। ...तो ग्राम-सेवकों को स्वावलंबी ...कहा जाता है। गाँव के लोग ...मान लीजिए कि, ग्राम-सेवक ...भार उठा लेंगे लेकिन, ग्राम- ...या अधिक बालकों को किसी ...के छात्र-निवास में रखने के ...तो वे उठा न सकेंगे। राष्ट्रीय ...संस्थाएँ राष्ट्रीय सेवकों के ...अपनी संस्था में निःशुल्क रखने ...कभी-कभी कर देती है ...सहूलियत चार-पाँच या कुछ ...दी जा सकती है। क्योंकि ...को भी अपनी संस्था चलाने के लिए जनता से चंदा एकत्र करना पड़ता है। इन चंदों की संख्या जैसे बढ़ती जाती है वैसे संस्थाओं की चंदा प्राप्त करने की कठिनाई भी बढ़ती जाती है।

ग्राम-सेवा के बारे में गांधी जी ने जो विचार हमारे सामने पेश किये हैं, उनको अगर हम ठीक तरह समझ लें तो यह सवाल हमारे सामने खड़ा ही न होना चाहिए। कारण यह कि ग्रामसेवक केवल चरखा सिखानेवाला या कातनेवालों से सूत इकट्ठा करके उसको बुनवा देने का प्रबंध करनेवाला या गाँव में रोज सफाई का काम करनेवाला ही न होगा। यह सब तो वह करेगा ही लेकिन इसके उपरान्त वह तो सारे गाँव का शिक्षक होगा। ऊपर बताये गये सारे काम भी गाँववालों के साथ रहकर उन लोगों से ही वह करायेगा। इन कामों के पीछे जिस-जिस शास्त्र की जरूरत होगी उसका ज्ञान भी वह रखता होगा। उस शास्त्र को उन लोगों को भी वह समझाता होगा। इस तरह गाँव में वह नये विचारों और नई संस्कृति का वातावरण खड़ा करेगा। जिसने यह देखा कि गाँव के बच्चों की आदतें गंदी या खराब हैं वह बच्चों को इकट्ठा करके उनकी आदतों को सुधारने का प्रयत्न शुरू कर देगा। अच्छी, व्यवस्थित और साफ आदतें डालना यही शिक्षा का मूल उद्देश्य है।

उसी के साथ वह बच्चों की भाषा साफ़ और शुद्ध करने की कोशिश करेगा। साथ-साथ बच्चों के हाथ में तकली और चरखा रख देगा। या उसके पहले कपास साफ करने से लेकर ओटाई, तुनाई वग़ैरह क्रियाएँ उनसे करायेगा। अगर उसके अपना बच्चा हो तो, स्वाभाविक रूप से उसे भी वह इसमें दाखिल करेगा। इस तरह अपने और गाँव के बच्चों की शिक्षा को वह अपने हाथ में लेगा। इस काम में ग्राम-सेवक की पत्नी भी मदद करेगी और बच्चों की संख्या अगर बढ़ गई तो बड़ी उम्र के बच्चों की तो गाँव के दूसरे भाई बहनों की मदद लेने की कला ग्राम-सेवक को प्राप्त करनी होगी। शाला का नाम भी न आते हुए ग्राम-सेवक अपने घर में एक उत्तम शाला शुरू कर देगा। इस शाला में शिक्षा का माध्यम उद्योग और स्वच्छता होगा। उद्योग में ओटाई, तुनाई, धुनाई के अलावा मिट्टी और बाग़वानी भी आयेगी। और स्वच्छता में शरीर और आसपास की जगह की सफ़ाई के अलावा स्वच्छ भाषा का प्रयोग भी आयेगा। इसके अतिरिक्त संगीत, खेल-कूद और पर्यटन आदि तो होगा ही और सामाजिक तथा राष्ट्रीय उत्सवों के द्वारा तरह-तरह के मनोरंजन और सामूहिक कार्यक्रम भी किये जा सकेंगे। संभव यह है कि ग्राम-सेवक गाँव के बालकों के जरिये ही ग्रामीणों के दिल में प्रवेश करके ग्राम-सेवा का कार्य प्रारंभ करेगा। ग्राम की सफ़ाई के कार्यक्रम में, ग्राम के मनोरंजन के कार्यक्रम में, ग्राम-सेवक गाँव के छोटे-बड़े बच्चों की मदद से अपना काम आगे बढ़ायेगा और इन बच्चों के जरिये ही गाँव के प्रौढ़ लोगों की शिक्षा हाथ में लेगा। ग्राम-सेवा और ग्राम-शिक्षा यह दो पर्यायवाची शब्द हैं, ऐसा ही समझना चाहिए। जो ग्राम-सेवक ग्राम-सेवा का काम इस तरह उठायेगा और ज्यादा तर ग्राम-सेवकों को इस तरह ही करना होगा, तो उनको अपने बच्चों की शिक्षा के सवाल से चिंता पैदा न होगी।

लेकिन, इस तरह की शिक्षा १०-१२ साल का बालक हो तब तक ही चल सकेगी। बाद में क्या होगा? इसका जवाब इतना ही है कि यहाँ तक ग्राम-सेवक को थोड़ा ही रुकना है। उद्योग और सफाई के शास्त्रों में अपना ज्ञान भी उसे उत्तरोत्तर बढ़ाना है और अपने सामान्य ज्ञान की वृद्धि भी उसे करनी है। ग्राम-सेवक को हमेशा स्वाध्यायपरायण तो होना ही चाहिए। हर रोज कम से कम एक घंटा अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए उसे देना चाहिए। बाद में जैसे-जैसे ग्राम-सेवा का या कहिये कि ग्राम-शिक्षा का काम आगे बढ़ेगा वैसे-वैसे उसके सामने नये-नये प्रश्न खड़े होंगे। खादी के बाद गाँव के अन्य उद्योगों का प्रश्न उसके सामने आयेगा। खेती में सुधार करने का और गोपालन का प्रश्न आवेगा। इस हर एक उद्योग के विज्ञान में और अर्थशास्त्र में उसे उतरना पड़ेगा। मार्ग-दर्शन के लिए बाहर के विद्वानों को भी बुलाना पड़ेगा। इसी तरह ग्राम-रचना के और गाँव के मकान के बनाने के प्रश्न उसके आगे आवेंगे। पीने के पानी की स्वच्छता का और नहाने-धोने के पानी के निकास का भी प्रश्न आयेगा। सांसारिक रीति-रिवाजों का, लोगों की क़र्जदारी का, अन्दरूनी झगड़ों का, सरकारी अमलों की दखल अंदाजी का, ऐसे अनेक प्रश्न उसके सामने आयेंगे। गाँव का एक स्वयं संपूर्णसमाज यानी एक छोटी दुनिया है ही। सारी दुनिया के प्रश्न वहाँ खड़े होनेवाले हैं। यह सारे प्रश्न समझने के लिए और उनके हल का रास्ता खोज निकालने के लिए ग्राम-सेवकों को प्रतिक्षण अपना ज्ञान और शक्ति बढ़ाते रहनी होगी और गाँव के लोगों को शिक्षा देने के लिए इस तरह का अध्ययन और अध्यापन का काम भी हमेशा चालू रखना होगा। जिन बच्चों को लेकर ग्राम-सेवक ने अपनी ग्राम-सेवा या ग्राम-शिक्षा का प्रारंभ किया होगा वे बच्चे अब बड़ी उम्र के हो गये होंगे। उन बच्चों को अपनी अध्ययन अध्यापन की प्रवृत्ति में ग्राम-सेवक अपने साथ रखेगा तो बारह वर्ष से ज़्यादा उम्रवाले बालकों को मौजूदा हाई-स्कूलों में जो शिक्षा मिलती है उससे बहुत ऊँची शिक्षा वह उन्हें दे सकेगा।

लेकिन इस पर यह एक शंका उठाई जाती है कि आपने तो यह सब कल्पना का खेल किया या हवाई बातें कीं। ज़्यादा-तर ग्राम-सेवकों में इस तरह की शिक्षा की दृष्टि कहाँ होती है? हर एक में इस तरह अपनी शिक्षा को बढ़ाते जाने की और बालकों को सिखाने की शक्ति कहाँ होती है? इसके अलावा तुम्हारी इस शिक्षा की समाज में प्रतिष्ठा और कीमत कहाँ है? समाज की बात जाने दो, तुम्हारी संस्थाओं में ही यूनिवर्सिटी की डिग्रीवालों और अँगरेजी अच्छी तरह लिखने तथा बोलने-वालों की जितनी प्रतिष्ठा है इतनी साधारण ग्राम-सेवकों की कहाँ है और जब तक बड़े-बड़े राष्ट्रीय नेताओं और राष्ट्रीय कार्यकर्त्ताओं के बालक यूनिवर्सिटी की शिक्षा के पीछे ही दौड़ते हैं तब तक ग्राम-सेवकों के बच्चों को वैसी शिक्षा का मोह न रखने के लिए कैसे कह सकते हैं? खुद सत्याग्रहाश्रम में बापू जी के साथ रहने-वाले बच्चे भी इसी शिक्षा के पीछे गये हैं न?

वास्तविक हालत यही है इसको अस्वीकार नहीं किया जा सकता, लेकिन यही आदर्श और वांछनीय बात है और इसी के अनुसार हमें चलना चाहिए ऐसा नहीं। ऊपर के सवालों में जिन त्रुटियों का जिक्र किया गया है उनके कारण ही स्वराज्य की तरफ हम पूरे वेग से अग्रसर नहीं हो सकते हैं। हाँ, एक बात यह जरूर है कि ग्राम-सेवक को सच्चा ग्राम-शिक्षक बनने के लिए केन्द्रीय संस्था का उसे समय-समय पर मार्ग-दर्शन करना पड़ेगा और मदद भी करनी पड़ेगी। ग्रामसेवक गाँव में बस जाता है इसलिए अकेले उसको ही सब कुछ करना चाहिए और दूसरा कोई उसे मदद न दे ऐसा न होना चाहिए।

...के वाइसराय भवन के सामने के मैदान में राष्ट्रपति मौलाना अबुलकलाम आजाद, भारत मंत्री ...लारेंस, सरस्टेफर्डक्रिप्स और मिस्टर एलिक्जेंडर से बातें कर रहे हैं।

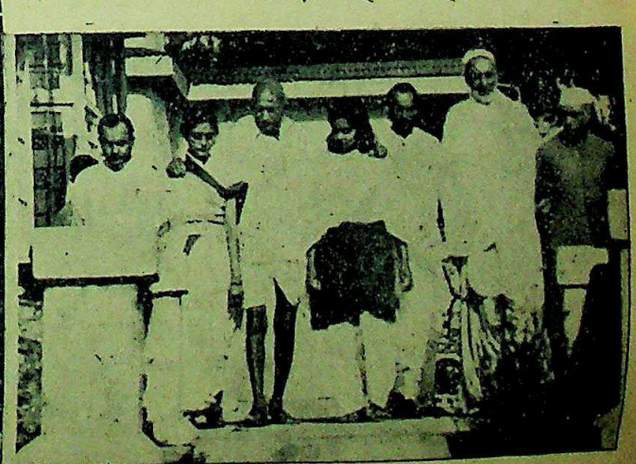

शिमला में महात्मा गांधी (बीच में) अपनी पार्टी के साथ। दाहिनी ओर से— पंडित जवाहरलाल नेहरू, खान अब्दुलगफ्फार खाँ और आचार्य कृपलानी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष रूप से 'देशदूत' के लिए

विद्रोही मगनलाल बागड़ी कौन हैं?

मध्यप्रांतीय अगस्त-क्रांति का एक युवक नेता

लेखक. श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

भारतीय स्वाधीनता के आन्दोलन में अगस्त-क्रांति का इतिहास, ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। अगस्त-क्रांति में देश की जनता तथा युवकों ने जो बलिदान किया था, इतिहास के पन्नों में उनकी वीरगाथायें अमर हैं। इस लेखमाला में ऐसे ही नेताओं तथा युवकों का एक स्केच या चरित्र-चित्रण किया जा रहा है। श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी स्वयं अगस्त-क्रांति में प्रमुख भाग लेनेवालों में से थे। इस लेखमाला के दो लेख—एक अरुणा आसफअली और दूसरा पण्डित श्रीराम शर्मा पर—'देशदूत' में प्रकाशित हो चुके हैं। लेखमाला का यह तीसरा लेख है।

इस लेख के लेखक श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

आजादी या मौत!

आजादी प्राप्त करना हँसी-खेल या तमाशा नहीं है। गुलाम भारत में आजादी से लिखना या बोलना भी अपराध अथवा राजद्रोह माना गया है। सरकार के खिलाफ खुलकर हम लिख नहीं सकते। ऐसे लोगों को सरकार फूटी आँखों देखना भी पसन्द नहीं करती।

श्रीमगनलाल बागड़ी जन्मजात विद्रोही हैं। गुलामी में रहना आपको कतई पसन्द नहीं। भारत को गुलामी से मुक्ति पाने के लिए आपने खुलकर लड़ाई लड़ी है। बागड़ी जी को हिन्दुस्तान के बहुत कम लोग जानते हैं। आप एक क्रांतिकारी नेता हैं। देश की आजादी के लिए आप कई बार जेल जा चुके हैं।

आपका जन्म एक धनी परिवार में हुआ था लेकिन आपने लाखों की सम्पत्ति पर लात मार दी। अपना सारा धन राष्ट्र को अर्पण कर चुके हैं। केवल धन देकर ही आप सन्तोष नहीं करते, बल्कि उसमें सक्रिय भाग लेकर आप मुल्क की सेवा में तन, मन और धन से लगे हुए हैं। मध्यप्रांतीय सरकार ने कई बार आपको राजद्रोह के अपराध में कड़ी से कड़ी सजा दी लेकिन कभी भी आप अपने सिद्धान्त से विचलित नहीं हुए।

आपकी देशभक्ति दिन प्रतिदिन बढ़ती गई। आपने नागपुर में 'लाल सेना' नाम की एक संस्था स्थापित की। हजारों बहादुर नवयुवकों को उसमें भर्ती किया। सैनिक कवायद सिखलाया। राष्ट्र की आजादी के लिए कैसे मरना चाहिए, इसे उन्हें सिखाया। कौमी जिन्दगी की शिक्षा दी। कूट-कूटकर राष्ट्रीय भावना पैदा की। डरपोक नवयुवकों को विद्रोही बनाया। मौत के साथ कैसे खेला जाता है यह भी उन्हें बताया। सरकार आपके सङ्गठन को देखकर घबराने लगी।

नागपुर के तमाम कुली-कबाड़ी और ताँगेवालों का भी संगठन किया। उनमें भी राष्ट्रीय जागरण पैदा किया। गली गली और कोने कोने में 'लाल सेना' का नाम गुँजा दिया। रात्रि-पाठशालाएँ खोलकर उन्हें शिक्षित करने का प्रयत्न किया। हर एक को पढ़ने की शिक्षा दी। आप दिन-रात किसानों, मजदूरों और कुलियों के संगठन में लगे रहे। सन् १९४२ के क्रान्ति में सरकार ने आपको विद्रोही करार दिया और फाँसी की सजा दी। लेकिन किसी सूरत से फाँसी की सजा बदलकर आजन्म कारावास की सजा हुई। कुल ८५ वर्ष की सजा!

अगस्त सन् ४२ में आपने विद्रोह कर दिया। आपके साथियों को गिरफ्तार करने के लिए हजारों रुपये का इनाम घोषित हुआ। 'लाल सेना' गैर-कानूनी करार दे दी गई। तमाम चीजें जब्त कर ली गईं। आपके एक सैनिक शंकर को फाँसी दी गई। आप इसी से कल्पना कर सकते हैं कि बागड़ी जी किस धातु के बने हैं। सरकार ने कहा कि बागड़ी ने ही नागपुर में विद्रोह का झण्डा खड़ा किया है। तीन दिन तक नागपुर स्वतन्त्र बना रहा। पुलिस का चलना-फिरना बन्द हो गया। यही मगनलाल बागड़ी हैं। बागड़ी के नाम से पुलिस घबड़ाती थी। सुरक्षित सैनिक नागपुर के लिए बुलाये गये। सरकार कहती थी कि 'लाल सैनिकों' ने यहाँ विप्लव कर दिया। बागड़ी का नाम सुनते ही पुलिस थर्रा उठती थी। उन्हें गिरफ़्तार करने की हिम्मत नहीं होती थी।

विद्रोह की ताकत कम होने पर मगनलाल जी अज्ञातवास में चले गये। सरकार ने आपको गिरफ्तार करने के लिए हर तरह की कोशिशें कीं। स्पेशल पुलिस आपके पीछे लगा दी गई। खुफिया पुलिस के स्पेशल और विशेषज्ञ अफसर तैनात किये गये, फिर भी आप गिरफ्तार नहीं किये जा सके। हजारों रुपयों का इनाम घोषित हुआ। चित्र की लाखों प्रतियाँ खींचकर सरकार ने सरकारी पुलिस में बँटवाईं। मगनलाल कहीं भी मिले उसे गिरफ्तार करो। जब तक मगनलाल बागड़ी गिरफ्तार नहीं होता तब तक सरकार चैन से नहीं बैठ सकती। अचानक विद्रोह फैला देगा। सरकारी गद्दी उलट देगा। यह शब्द प्रान्तीय सरकार के उच्च अधिकारियों के हैं।

मगनलाल जी की गिरफ़्तारी के लिए सरकार ने पानी की तरह रुपया बहाया। एक स्पेशल पुलिस-विभाग बम्बई में मुकर्रर कर दिया गया क्योंकि शायद मगनलाल बम्बई में हों। लेकिन उस वक्त मगनलाल देहातों में किसानों को संगठित कर रहे थे। पहाड़ों में निवास करते थे। भूखे-प्यासे इधर-उधर किसानों में किसान बने घूम रहे थे। पानी बरस रहा है फिर भी वह अपने काम के लिए चले जा रहे हैं। बिजली चमक रही है, जोरों की हवा चल रही है, फिर भी एक कम्बल के सहारे पेड़ों के नीचे वह अपना जीवन गुजार रहे हैं। ऐसे विद्रोही को कौन अपने घर में स्थान देगा? कोई माई का लाल देगा भी लेकिन सरकारी पुलिस मगनलाल जी के पीछे पड़ी है, भला वे गाँवों में कैसे ठहर सकते हैं? वनों की खाक छानी। खाइयों में पड़े रहे। जहाँ कुत्ता रहना पसन्द नहीं करेगा वहाँ रात बिताई। क्रान्ति को जीवित रखने के लिये कई दिन भूखे पड़े रहे। न खाने का ठिकाना न सोने का। रात दिन सावधानी से काम करना पड़ता था कि कहीं पुलिस को खबर न लग जाये। पूरी तरह सावधान रहना पड़ता था। चारों तरफ़ आतंक फैला हुआ था; फिर भी आप हिम्मत नहीं हारे थे। आपका उत्साह पहले ही जैसा बढ़ता जा रहा था। आप जानते थे कि यदि गिरफ्तार हुआ तो सरकार तुरन्त गोली से उड़ा देगी। जिन्दा बचना कठिन है।

मगनलाल जी की सारी सम्पत्ति सरकार ने जब्त कर ली थी। आपकी पत्नी को तरह तरह से धमकाया गया। काफी परेशान किया गया। आपके भाई को पकड़ कर जेल भेज दिया गया। उन्हें यातनायें इसलिए दी गईं कि आपका पता सही सही बताया जाये। भाई बेचारे को क्या मालूम कि विद्रोही मगनलाल कहाँ भटक रहा है? निरपराध बेचारे को परेशान किया गया। यदि कहीं जरा भी पता चलता था कि मगनलाल अमुक जगह है, सरकारी सिपाही फौरन दौड़ जाते थे। तलाशी लेते थे। लोगों को परेशान करते थे। जरा जरा से सम्बन्ध पर लोगों को उस समय परेशान किया गया। दिन में कई बार पुलिस आपके घर पर जाती और आपकी वीर पत्नी से प्रश्न करती कि बागड़ी कहा हैं? वीर पत्नी उत्तर देती थी "जहाँ हों वहाँ खोजो।" पुलिस खिसियानी बिल्ली की तरह वापस लौट आती थी। वीर पुरुष की पत्नी भी वीर ही होती है, इसमें सन्देह नहीं।

क्रान्ति के दिनों में आप अपने सगे सम्बन्धियों तक से अलग हो गये थे।

नागपुर के विद्रोही युवक नेता श्री लाल बागड़ी।

किसी से भी कुछ सम्बन्ध नहीं आपके नाम को सुनकर लोग थे। उन महापुरुषों को धन्य है आप ऐसे वीर क्रान्तिकारी को अपने घरों में स्थान दिया। देश के लोगों की कितनी बड़ी ममता सारे जीवन को मातृभूमि की के लिए देना हँसी-खेल नहीं को अपने घरों में ठहराना। उन्हें खतरनाक ही नहीं समझती खतरनाकों का सरदार मानती थी भी खतरनाकों का अगुआ मानती

अँगरेजी साम्राज्यवाद से ही नहीं करते बल्कि आप उसे फेंकना चाहते हैं। अपना सारा सारा धन साम्राज्यवाद के नाश में आ रहे हैं। मुसीबतों को पार कर मोह-माया के बन्धन को तोड़ बढ़ गये हैं। जब आप जंगलों में रोटी बनाकर खाते थे तब भी अपने धन की थाती पर मोह उत्पन्न हुआ। धन को आप मामूली समझते हैं। यदि आज आप व्यापारी होते तो करोड़ों रुपया कमा लिये लेकिन आपने समझ लिया है कि बढ़ाकर देश की आजादी प्राप्त नहीं सकती। दोनों काम एक साथ नहीं सकते। आजादी के लिए भिखारी ही बनना होगा।

अज्ञातवास के दिनों में इतना अधिक कष्ट हुआ कि तन्दुरुस्ती एकदम बिगड़ गई। हफ्तों में भूखों गुजर करना पड़ा। वस्त्र नहीं। चलना-फिरना मुश्किल था फिर भी आप साहस से काम थे। आपको अपने जीवन की

शेष पृष्ठ १२ पर

शक्ति का
महाभृंगराज तैल
केश और मस्तिष्क के लिये सर्वोत्तम तैल
प्रथम्त मथुर बाबुका
शक्ति औषधालय · ढाका
भारत का सर्वश्रेष्ठ और प्राचीनतम आयुर्वेदीय प्रतिष्ठान · स्थापित १८८०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाटक

नौन-तेल-लकड़ी !

लेखक, श्री 'फ़कीर', अकबराबादी

यह युग खाद्य-संकट का है। भारत में अन्न के अभाव से नगरों में कोलाहल मचा हुआ है। और तो और नगरों की कृपा पर जीनेवाले साधू-फकीरों पर तो आफत-सी आ गई है। इस वार्ता में कुछ संतों ने जो आपबीती सुनाई है वह उनकी दयनीय स्थिति को प्रकट करनेवाली है, इसीलिए संतों ने निश्चय किया कि अब शहरों को छोड़कर गाँवों की ओर धावा बोलना चाहिए, तभी इस पेट का उद्धार होगा। हास्यरस का यह प्रहसन अत्यन्त सुंदर, मनोरंजक और रोचक है।

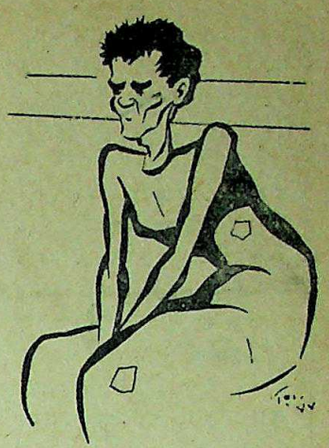

अन्न के अभाव से तो अब तक मर ही रहा था, किन्तु कपड़ा न मिलने पर कहीं नङ्गा न रहना पड़े ?

...आने पर मुसीबत आ गई। ...निङ्ग से काम कैसे चलेगा ?

पात्र—
अक्लानन्द
पीताम्बर खाँ
किफायतानन्द
विजयानन्द
नूरुद्दीन

...और वातावरण

...नगर की पश्चिमी सीमा पर ...के उन्मत्त जल का बनैला ...दिवाकर की दमक जल में गोता ...है। तारामण्डल की विशाल ...में अर्धचन्द्र की अर्धाङ्गिनी मृदु-...चाँदनी का नग्न-नृत्य। ठण्डी ...के झोंके उचक्कों की भाँति बेल, ...पुष्प-पत्तियों से अटक रहे हैं। ...एक जटाधारी वृक्ष स्नेह-स्पन्दन ...करता हुआ खाँस-खाँस कर झूम ...। इसी वट बाबा की घनी दाढ़ी ...में पाँच लंगोटबन्द वैरागी ...की गरम चिलम से उच्चतम ...निर्माण करने की प्रतियोगिता ...है। फ़कीर-मण्डल के मध्य खाद्य ...लेते हुए तीन कमण्डलु विराज-...। एक-दो चौड़े कदली-दलों पर ...का भार हलका करते हुए बाबा ...ने कपासी भौंहें मस्तक पर ...कहा—'बन्द करो बाबा चिन-...। क्षुधा-संहारक यन्त्र को ...दो।' कुछ क्षण मौन मन से ...के मिश्रित माल-टाल को ...करते हुए फ़कीर अक्लानन्द जी ...करने लगे।]

...अक्लानन्द—नये वर्ष का प्रथम ...'अनन्त' भोजन संसार के ...से प्राप्त हुआ है, मानो सदियों तक समाप्त न होगा। तीस मूँग-फलियाँ, एक दर्जन चिलगोजे, सात कच्चे बेर, झुलसी चुहियों से दो सकरकन्द, पाँच बालू के भुने बासे सिंघाड़े, लगभग ढ़ाई पाव बाजरे का बजरीला आटा और तोते के पेट लायक चने की घुनी दाल ! देखा साधुओ, शीश की केशराशि के परित्याग के साथ ही माया का जटिल बाँध फलाँगा। काया को केवल प्रकृताम्बर पहनाकर मन की मुरादों को मसोस मुर्दा किया। वन में निवास करते हैं। संसार का भला चाहते हैं, पथ भ्रष्ट को मार्ग सुझाते हैं। वाहरे संसार ! तेरे कल्याण और उत्थान के निमित्त फ़कीर हुए, वैरागी हुए। आज जब कि तेरी छाती पर बहने वाला मानव-रुधिर रक्त पिपासुओं की ठण्डी नाड़ियों का स्पर्श पाकर धीरे धीरे जमना आरम्भ हुआ है, तब तुझ में इतना बल नहीं कि रक्त-चिह्न को अपनी सन्तान के सम्मुख रखकर खूँखारों से घर की लूट और खून का प्रतिशोध लेने को ललकारे ! छिः संसार। धिक् मायालोक !! हम फ़कीरों के पेट-पालन को तेरे पास ढ़ाई पाव बाजरे का मटियाला चून !

[फकीर बन्धुओं ने निराशा और विवशता से सिर झुका लिये। दार्शनिक की भाँति बाबा अक्लानन्द ने क्षितिज के अंधकार में टकटकी लगाई। विजयानन्द ने गेरुआ साफी में बँधे हुए कण्डे मुक्त कर दिये। अधियाना बनाया और आग चेता दी। फकीर पीताम्बर खाँ चिलगोजे पेश करते हुए शुष्क मन्द हास पूर्वक बोले—]

फकीर पीताम्बर खाँ—बड़े बाबा, दुरुस्त फरमा दिया आपने। चन्द साल पहले इस पीतल की बालटी में अखरोट और छुहारों की तह लगी रहती थी। गाय-भैंस का दूध फालतू होकर मुँह हाथ धोने के काम का ही रहता था। इसी फक्कड़ नगर के पास धनीपुरा एक खुशहाल और सरसब्ज़ बस्ती थी। वह उजड़ गई। एक ईंट नहीं बची। एक इन्सान नहीं रहा और दरख्तों को तो न जाने कौन सा तूफान उड़ा ले गया। आज फक्कड़ नगर के एक मालदार शेख़ का दरवाज़ा खट-खटाया। किसी ने अपने दरवाजे की खट-खट नहीं सुनी। दुआ की—'दे शाहजादी। दे री बेगम ! फ़कीर तेरे दर पर भूखा पेट लेकर आया है। कयामत क़हर ढा गई। फलक से अंगारे टूट कर इन्साँ को फना कर गये। आज नया साल, नया दिन, नया आसमाँ, नई आवाज़। दे मेरे राजा की लड़ैती, दे मेरे परवर्दिगार के नाम पर। भूखा फ़कीर फरियाद कर रहा है।'

सच पूँछिये मियाँ विजयानन्द जी, अन्दर से निहायत मौजू जवाब आया। बेगम ने शाहजादी से चीखकर कहा—'दूर भगा दे मनहूस को। गल्ला, पानी अपने ही लिये नाकाफ़ी है। मुट्ठी भर दाना मयस्सर होता है। खानदान को खिलाऊँ या कलमुँहे फकीरों का पेट पालूँ। कहदे, यहाँ गम खा खा कर जिन्दगी बसर करते हैं, बाबा दूसरा फाटक देखो।' कब्ल इसके कि बेचारी शाहजादी पैग़ाम लेकर आये हम बाजार में विचरने लगे। दर-ब-दर डोले। किसी फैयाज़ ने फरियाद कबूल नहीं की। वाह रे सितम-गर ! फ़कीर की ऐसी फजीहत !

[फ़कीर नूरुद्दीन ने आटे की बाटियाँ गढ़-गढ़ कर अधियाने में दबोचना आरम्भ कर दिया था। फ़कीर किफायतानन्द ने सिंघाड़े और शकरकन्द की पिट्ठी में मूँगफली की आत्मा कुचल कर मथ दी। डेढ़-डेढ़ तोले की लजीज़ गोलियाँ वितरित कर दी गईं। किफायतानन्द ने जल के दो घूँट उदर में डाले और मठार कर निवेदन किया]

फ़कीर किफायतानन्द—सच बात पूँछते हो तो भाई सन्तों की आबरू का ठिकाना नहीं रहा। सचाई और सफाई का मार्ग ग्रहण किया और जमाना कहता है भूखे मर जाओ। आत्मा को पैना-पैना कर कृपाण की धार बनाया। देह को तपा-तपा कर मार्तण्ड बनाया। हम संयम के स्वामी, दुर्भिक्ष प्रचारकों के कुत्सित अत्याचारों पर क्या रंच मात्र भी विजय नहीं पा सकते ? लुटेरों का दल इस कोने से उस कोने तक गश्त लगा रहा है। इन्सान चुपचाप अँधेरी कोठरी में छिपा झरोखों से झाँक रहा है। हँस नहीं सकता, खाँस नहीं सकता। दाँतों का तोरण खोल कर, जीभ-वीरांगना को मुक्त किया और खोपड़ी में भिनभिनाता भाला छिदा। वाह रे मानव ! खेद है तेरी ज़नानी अदाओं पर। मियाँ नूरुद्दीन, आप सुनेंगे तो चकित रह जायँगे। लुटेरों से मोर्चा लेनेवाले भी तो घरों से फूलों के छर्रे ले-लेकर दुश्मनों का पीछा करने लगे हैं। इनमें जो मरमिटने को ख़ूनी पगड़ी बाँध कर निकले हैं उनकी बात छोड़ो। कनेर और हिना के वृक्षों की ओट में छिप कर ढकी बदबूदार मोरियों में घुस कर प्राण बचाने वालों की बात कहता हूँ। क्या प्रशंसा कराते हो बाबा इन नुमायशी लठैतों की ! आज दोपहर को एक अन्नदाता के द्वार पर पुकार की। दरवाजा स्वर्ग के द्वार की भाँति खुल गया। सामने तख्ते ताऊस के अतिरिक्त वैभव के सब रंग-बिरंगे ठाठ आँखों में समा गये। किलकती, मचलती एक बिटिया मेरे कमण्डलु को कस कर बैठ गई। चहक कर बोली, फ़कीर दादा एक कहानी सुनाओ वरना जाने नहीं दूँगी। बिटिया के बाबू तमाशा देख कर मुस्काये और धूप में बैठ कर अखबार पढ़ने लगे। मैंने कहानी सुनाई—

'सुनो बेटी ! एक बूढ़ा आदमी था। जहाँ वह रहता था वहाँ बुढ़ापे के बाद मौत तभी आती थी जब कोई बूढ़ा उसे खुशी से बुलाता था। तो वह बूढ़ा दिन भर, परिश्रम करता था। स्वस्थ रहता। खाता-खिलाता और सबको प्रसन्न रखता। उसका कच्चा मकान था। उस मकान में करोड़ों दालान थे जिनमें अरबों आदमी और औरतें बसते थे। हर एक दालान के सामने खुले मैदान थे। चमन थे। एक बड़ी मीठे पानी की नदी के तीर यह सब कुटुम्ब रहता था। बूढ़े बाबा ने गायें पाल-पालकर सब कुटुम्बवालों को बाँट दी थीं। सब लोग अपने लिये अनाज पैदा करते थे। फल-फूल उगाते और हाथ से कात-बुन कर सुन्दर-सादे वस्त्रों से तन ढक लेते। स्नेह से खाते, बातें करते, मधुर गान अलापते और चैन से सो जाते। एक दिन कुछ युवकों ने मदिरा नामक तामसिक द्रव्य का आविष्कार किया। पीकर मतवाले हो गये। बूढ़े बाबा देखकर नाराज हुए और उन्हें घर से निकाल कर नदी पार भेज दिया। वर्षों बीत गये, इसी बीच में उन मुट्ठी भर नव-युवकों ने आकाश से बातें करतीं हुईं पक्की जगमगाती इमारतें बना डालीं। इन रंग-बिरंगी इमारतों से झाँकता हुआ नये प्रकार का तीव्र प्रकाश पानी में परछाईं बनकर

चोरबाजार के दो धनकमाऊ पूत कुछ गुप्त मंत्रणा करते हुए।

...के सेठजी राशनिङ्ग इंस्पेक्टर से ...पूछ-ताछ कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात में बड़ा मनोहर लगता था। बूढ़े बाबा इस मायाजाल को देखकर मन ही मन दुखी रहने लगे। सैकड़ों स्त्री-पुरुष उनकी आँखों के सामने नदी के उस पार जाकर बसने लगे। वहाँ इतनी आबादी हो गई कि कदम रखने को जगह नहीं रही। एक दिन नदी पार के उस मद्यप-नगर से एक मद्यप बूढ़े बाबा की बैठक में आया। बोला—'बाबा, हमारे नगरवासी यहाँ आकर बसना चाहते हैं। वहाँ जगह नहीं है। आप स्थान देंगे?' बाबा ने गम्भीरता के साथ उत्तर दिया—'स्थान आप अवश्य पा सकते हैं, किन्तु वचन दीजिये कि तामसिक जीवन की इति होगी।'

"आपका प्रयोजन?" मद्यप बोला।

"मतवाले होकर अपना दायित्व अन्य व्यक्तियों के कन्धों पर फेंकने का नियम मेरे सदन में नहीं है।"

"नहीं हम लोग सुख से रहेंगे।"

"क्या आपके सुख की परिभाषा जान सकता हूँ?"

"शरीर के सुखार्थ नये आविष्कारों का प्रयोग और इधर से उधर दाने-पानी का आयात-निर्यात। सुविधामय जीवन-हित दास-दासियों का निर्माण।"

"मेरे साथ भीतर आइये।"

बूढ़े बाबा मद्यप को एक गोल दालान में ले गये। इस दालान की दीवारें ठोस चाँदी की बनी थीं। एक विशाल घृत-प्रदीप प्रकाश-दान करता था। बूढ़े बाबा ने दीपक हाथ में लेकर ऊँचा उठा दिया और पूर्वीय प्राचीर पर रत्नजड़ित स्वर्णाक्षर झिलमिला उठे। मद्यप ने ऐनक लगाकर धीरे से पढ़ा—

पावन गिरि के हम पुण्य-शिखर।
मानव-हित भू पर गये बिखर॥

बूढ़े बाबा ने दीपक यथास्थान रख दिया। दोनों व्यक्ति बाहर आ गये। मद्यप लज्जित होकर अपने देश चला गया—सुन रही हो बिटिया—फिर कुछ दिनों बाद ही बूढ़े बाबा की बैठक, गोल कमरा और उस विशाल सदन पर सामने से आग का अंधड़ आया। फूस और ईंधन की तरह जल जलकर मकान के बाशिन्दे खाक हो गये। रजत-भवन का वैभव लुट गया। अनाज की गाँठें बाँधकर तालों में कैद कर दी गईं। भोली गौओं की बोटी-बोटी चबा डाली गईं। नदी के दोनों किनारे सदियों तक मद्यपों ने खूँद-खूँद कर खाये। बूढ़े बाबा फिर भी जीवित रहे। उन्होंने अपना नया घर बनाया। इस बार उन्होंने दालानों में लड़ाके रक्खे। उनको ऐसी विद्या सिखाई कि वाणी मृदुल प्रहार से शत्रु का जरा-जरा बिखर जाय। इसके बाद···।"

मैं अपनी कहानी लगभग समाप्त कर चुका था। बिटिया के बाबू तुरन्त खतरे की घंटी-सी आवाज करते हुए मेरे निकट आये। दोनों हाथ जोड़ते हुए बोले—"फ़कीर साहब दया करिये। इस नगर के सर्वोच्च सरकारी हाकिम की चौखट पर बैठे हैं आप। बगावत करने के लिए और भी नगर हैं। आज सूर्यास्त से पहले ही शहर छोड़कर चले जाइये। यही आपके हित में ठीक है। आदाबर्ज़ है। बेवी इन्हें कुछ देकर फाटक बन्द करो।" क्या सुनाऊँ बाबा अक्लानन्द जी, बिटिया को परमात्मा सदियों जिन्दा रखे। ढेर सारे पेड़ों की पोटली मेरे हाथों में देती हुई खिन्न मन से बोली—"कब आओगे फकीर दादा?" "परमेश्वर जाने बिटिया" कहकर मैं उस महल से चला आया। लेकिन बाबा लोगो, भोजन की समस्या नगरों में हल नहीं होगी, यह अटल सत्य है। गाँवों की ओर चलो, वहीं कल्याण होगा। वहीं उदर-पूजन को नौन-तेल-लकड़ी मिल सकती है।

[फ़कीर विजयानन्द ने किफायतानन्द के पीठ पीछे रखी पेड़ों की पोटली खींचना चाहा। किफायतानन्द ने तुरन्त चोर के हाथ बन्दी कर लिये और मुक्त हास कर बोले—"यह भिक्षा किफायतानन्द की है। भोजन का अकाल है। किफायत के साथ पेड़ों का केवल प्रातःकालीन कलेवा ही हो सकता है। क्यों ठीक है न सन्तो?" उसी क्षण अधियाने की बाटियों पर दृष्टियाँ जम गईं। फकीर नूरुद्दीन ने क्षुधा-संहारक-यन्त्र की चमत्कार-मंजरी हवेलियों की चक्की में रगड़नी आरम्भ कर दी।]

कलाकार चाहि
प्रसिद्ध संस्कारी नाटक कम्पनी के
कुशल, स्त्री, पुरुष गायक और
कार चाहिए। वेतन योग्यता
श्री प्रभात कला भवन
भावनगर (काठियावाड़)

स्वयं-सहायता चाहिये

खाद्य के विषय में आप क्या कर सकते हैं।

भारत ही अकेला ऐसा देश नहीं है जिसे दुर्भिक्ष का ख़तरा है। सामान्यतः समस्त विश्व में अन्नाभाव हैं। ब्रिटेन में भी घटी हुई राशन है। एशिया और यूरोप के युद्ध-पीड़ित प्रदेशों में लाखों भूखे हैं और अन्नाभाव में मर रहे हैं। संयुक्त राष्ट्रों को उन सबको भोजन देना है। बाहरी सहायता हमको मिलेगी किन्तु अनिवार्यतः वह सीमित होगी। हमें यथासंभव अपनी सहायता आप करना है।

खाद्य की कमी को बराबर बांट लीजिये—अनेक प्राण इसी प्रकार बच सकते हैं।

खाद्य वितरण का एकमात्र समुचित तरीका राशनिंग है। राशनिंग के नियमों का पालन कीजिये। **धोका देने का प्रयत्न मत कीजिये**—यह किसी के प्राणोंका मूल्य हो सकता है।

अनुचित संग्रह मत कीजिये। यह एक अपराध और समाज-विरोधी कृत्य है। इससे प्राणों के क्षय का खतरा है।

यदि आप अनाज-विक्रेता हैं तो मुनाफाखोरी मत कीजिये—याद रखिये उसके दंड कठोर हैं और उनका कड़ा पालन किया जायगा।

व्यर्थ खर्च मत कीजिये, अधिक आतिथ्य सत्कार भी मत करिये—थोड़ी किस्मों का भोजन पकवाइये। खाद्य बचाना खाद्य उपजाने के बराबर है।

यदि आप समर्थ हैं तो अधिक तरकारी, फल, मांस, मछली अंडे व दूध से उत्पन्न चीजें खाइये। गेहूं और चावल उन गरीबों के लिये छोड़ दीजिये, जिन्हें उनकी अत्यधिक आवश्यकता है।

यदि आपके पास भूमि और पानी हो तो तरकारियां और अनाज उत्पन्न कीजिये—थोड़ासा प्रयत्न भी सहायता है।

भय से मुक्त रहिये—यदि आपने विश्वास खो दिया तो चोर बाजारवालों को मौका मिल जायेगा।

खाद्य संकट को पराजित कीजिए

एक साथ कार्य कीजिये—एक साथ हिस्सा बंटाइये

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय स्त्रियों के प्रति प्राचीन साहित्यकार की एक सीमित और हेय मनोवृत्ति ही क्यों थी ?

लेखक, श्री त्रिलोकीनारायण दीक्षित, एम० ए०

हिन्दी की कवियित्री श्रीमती सुन्दर कुमारी देवी।

...मात्र के दृष्टि-
...पुरुष और स्त्री
...के सामंजस्यक
...पुरुषवर्ग स्त्री-
...दृष्टि से उसी
...ता रहा है।
...रूपि तथा
...दृष्टि में भी
...तथा नीच थी।
...की दृष्टि में
...स्थान था,
...दिहास के अपने
...दर्शित किया है।
...की भाँति ही
...का भी दृष्टि-
...नीचित था।
...ने सभी अंग
...तथा काव्य-
...लेखकों ने
...ही हेय तथा
...चित्र अंकित
...उनकी दृष्टि में
...पुरुषों ने क्या
...हीन और बुद्धिहीना हैं। ...ब्रह्म में कोई भी सम्मानपूर्ण ...के वे भागी हैं और न अधिका- ...बलवान पुरुषवर्ग की कृपा की ...मात्र हैं। पुरुष चाहें तो ...कृपा प्रसारित करें और न ...उनको वंचित रक्खें।

...नीति का मार्ग प्रदर्शित ...स्मृतिकारों ने स्त्रियों में कोई ...देखा। इसी कारण उन्हें ...कड़ियों में जकड़े रखने की ...थी। स्मृतिकारों ने स्त्रियों का ...उत्पत्तिमात्र निर्धारित ...स्मृतिकारों की दृष्टि में वे केवल ...बुद्धिहीन प्राणी हैं। यही ...वे न तो समाज में और न तो ...सम्मानित स्थान की भागी ...कार का कथन है कि—

...न विनीतत्वं
...न दाक्षिण्यं न भीरुता।
...एवैकं
...कारणं स्त्रियाः॥

...स्त्रियों के सतीत्व का कारण ...दासता तथा भीरुता आदि ...कारण नहीं मिलता।

...नीतिकार का कथन है

...कामेषु नास्ति,
...भोगेषु भार्यायिता नरः।
...भोग्यानाम्,
...कामेषुपजायते॥

...भारद्, स्त्रियों को उप- ...समय तथा प्रार्थना ...करनेवाले मनुष्य नहीं मिलते, इसी कारण उनका सतीत्व बना रहता है।

संस्कृत के एक नीतिकार का मत और भी अधिक विचारणीय है। पता नहीं कि प्रस्तुत नीतिकार को किस अनुभव ने इस प्रकार की रचना करने के लिए प्रेरित किया :—

न तादृशीं प्रीतिमुपैति नारी,
विचित्रशय्यां शयिताऽपि कामम्।
यथा हि दूर्वादिविकीर्णभूमौ,
प्रयाति सौख्यं परकान्तसंगात्॥

अर्थात्—सुन्दर शय्या पर भी स्त्रियों को सोना उतना अच्छा नहीं लगता है जितना कि परपुरुष के साथ में घास पर सोना।

इसी प्रकार ध्यान देने योग्य एक और नीतिकार का कथन है :—

गुणाश्रयं कीर्तियुतं च कान्तं,
पतिं रतिज्ञं सधनं युवानम्।
विहाय शीघ्रं वनिता प्रयाति,
नरान्तरं शीलगुणादिहीनम्॥

अर्थात्—गुणवान्, कीर्तिमान, सुन्दर, कामकला में निपुण और युवा पति को भी शीघ्र ही त्याग कर स्त्री गुण और शील से हीन दूसरे पुरुष के पास जाती है।

इसी प्रकार के अन्य उदाहरण संस्कृत के नीतिकारों की रचनाओं में भरे पड़े हैं। जिनसे उनकी मनोवृत्ति का पर्याप्त परिचय उपलब्ध होता है।

नीतिकारों ने स्त्रियों के मनोविज्ञान का बड़ा ही दूषित चित्र चित्रित किया है। पंचतंत्र, हितोपदेश, नीतिशतक आदि पुस्तकों में इसके अनेक उदाहरण प्राप्त होते हैं।

वैराग्य साहित्य के लेखकों ने स्त्रियों को माया, पतन का साधन, साधना से पतित कर देने का उपाय मात्र माना है। उनके विचार से न तो स्त्रियाँ मोक्ष की अधिकारिणी हैं और न स्त्रियों में संलग्न रहनेवाले ही। अतः मोक्ष-कामना करनेवालों के लिए स्त्रीरूपी बाधाओं का परित्याग करना नितान्त आवश्यक तथा अभीप्सित है। विश्वामित्र-मेनका-रम्भा-शुक-संवाद आदि अनेकानेक उपाख्यानों की रचना मनुष्यों ने इन्हीं कथानकों को प्रमाणित सिद्ध करने के लिए किया था। वैराग्य साहित्य के सृजनकर्ताओं ने स्त्रियों को 'अशुचिपुत्रिका', 'उन्मादवर्द्धिनी' 'भुजंगिनी' इत्यादि शब्दों से सम्बोधित किया है। इन्होंने स्त्रियों का मोक्ष पति-सेवा में ही निर्धारित किया है।

प्रकृत अर्थ में साहित्यकार कहे जाने वालों ने नारी को कला-सृजन का एक साधन माना है। उन्होंने नारी में अपार सौन्दर्य और कला की प्रेरणा पाई है। नारी के अंग प्रति-अंग के वर्णन में उनकी लेखनी ऐसी कुछ उलझी कि वे उन गुत्थियों से आजीवन निस्तार न पा सके। इन साहित्यकारों के लिए नारी का लोक-कल्याणकारी स्वरूप अथवा समाज के लिए उपयोगी व्यक्तित्व सर्वथा नगण्य ही रहा। संक्षेप में, उनकी दृष्टि में स्त्री केवल विलास का साधन-मात्र है। इस क्षेत्र के बाहर उसका न कोई मान है और न महत्त्व। इन्हीं साहित्यकारों ने नायिकाओं में भेद और वर्ग खोज निकाला है। शृङ्गार, सुरतिवर्णन, नखशिख-चित्रण इत्यादि साहित्यिककला की कसौटी और अनिवार्य अंग समझा जाने लगा। महाकवि कालिदास, माघ, भारवि, श्रीहर्ष, जयदेव जैसे कवियों ने भी अपनी प्रतिभा का बहुत सा अंश नायिकाओं के अध्ययन तथा वर्णन में खपा दिया था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्मृति, नीति तथा साहित्यकारों का स्त्रियों के प्रति बहुत सीमित और हेय दृष्टिकोण था। उनकी दृष्टि में स्त्रियों की उपयोगिता प्रायः नहीं के बराबर ही रही है।

AC 67

८ कारण-खाद्य राशन को क्यों विस्तृत करना चाहिये ?

☆ भारत के अनेक भागों में अकाल का आतंक है।

☆ आवश्यकता-पूर्ति के निमित्त पर्याप्त खाद्य-उत्पादन नहीं है।

☆ सारे संसार में अभाव के कारण कमी के लिये पूरा-पूरा आयात संभव नहीं है।

☆ अनिवार्य खाद्यों को सटोरियों के लिये मुक्त नहीं किया जा सकता।

☆ मूल्य-नियंत्रण कायम रखना चाहिये।

☆ व्यर्थ व्यय समाप्त होना चाहिये।

☆ अतिरिक्त अन्न वाले क्षेत्रों से राशन की कमी वाले क्षेत्रों को खाद्य उपलब्ध होता रहे।

☆ कमीवाले क्षेत्रों में खाद्य का सब में बराबर वितरण होता रहे।

नागरिक एवं ग्राम्य क्षेत्रों में अब लगभग १३ करोड़ व्यक्तियों के राशन की व्यवस्था हैं। इस सूची में और भी नगर एवं क्षेत्र जोड़े जा रहे हैं। खाद्य-राशन में सहयोग देना आपका कर्त्तव्य है। ईमानदारी से राशन के नियमों का पालन कीजिये—इस प्रकार अपना कर्त्तव्य पालन करते हुये औरों के प्राण बचाइये।

उचित मूल्य पर (R) सबके लिये भोजन

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्रोही मगनलाल बागड़ी

(पेज ८ का शेष)

बिलकुल नहीं थी। अपने साथियों की जिन्दगी के लिए आप हर वक्त चिन्तित रहते थे। कई साथी बीमार पड़ गये थे उनकी दवा-दारू के लिए आपको ही धन-संग्रह करना पड़ता था। उनको सुरक्षित स्थान में रखने का प्रबन्ध आपको ही करना पड़ा। अपने तमाम साथियों की फिक्र आप बराबर रखते थे। किसको किस चीज़ की आवश्यकता है उसका प्रबन्ध आप अज्ञातवास में भी करते थे। तभी तो आपके सैनिक भी फाँसी के तख्ते पर झूलने के लिए तैयार रहते हैं। भाई मगनलाल जी के जरा से संकेत पर मरने के लिए तैयार रहते हैं।

जब देश में शिथिलता छा गई थी। लोग पस्त हिम्मत बन गये थे तब भी आप नये ढंग से आन्दोलन शुरू करने की तैयारी कर रहे थे। दूर दूर शहरों से सम्बन्ध कायम कर लिया था। दाढ़ी बढ़ाई। मुसलमान हुए। वेश बदलकर एक शहर से दूसरे शहर की खाक छानी। ज़रा हिम्मत देखिए। एक दिन रात में एक घर से आप कहीं बाहर जा रहे थे। इतने में आपको एक पुलिसवाले ने पहचान लिया और गिरफ्तार करना चाहा। आपने कहा भाई मैं एक फकीर हूँ। देखते नहीं लम्बी दाढ़ी है। लम्बा कुर्ता है। तहमत में हूँ। क्यों परेशान कर रहे हो? मगनलाल बागड़ी यहाँ भला क्यों मरने आयेगा? क्या उसे यह मालूम नहीं कि उसके पीछे सैकड़ों सिपाही तैनात किये गये हैं? बात-चीत करते हुये कुछ आगे बढ़े—अन्धेरा आते ही सिपाही का हाथ पकड़ कर मगनलाल जी ने कहा—भाई मैं ही मगनलाल हूँ। तुमको शर्म नहीं आती। अपने भाई को गिरफ्तार करना चाहते हो—थोड़े से चाँदी के टुकड़े के लिए देश के साथ विश्वासघात करने जा रहे हो? जानते हो मुझे गिरफ्तार कराकर क्या पाओगे? मैं फाँसी पर जाऊँगा लेकिन तुम्हारे बच्चे गुलामी की रोटी तोड़ेंगे। मैंने तुम्हारे बच्चों की आजादी के लिए इतना बड़ा खतरा मोल लिया है। मौत से खेल रहा हूँ। भाग जाओ। यदि फिर ऐसी मूर्खता करोगे तो जानते हो इसका बदला क्या पाओगे? तुम हिन्दुस्तानी हो, मेरे भाई हो, जाओ। उनसे मुक्ति पाने पर सिपाही ने अपने जीवन को धन्य समझा।

मगनलाल जी को गिरफ्तार करने के लिए पुलिस जिस तत्परता से काम कर रही थी उसे नागपुर की जनता अच्छी तरह जानती है। लेकिन जनता यह नहीं जानती कि मगनलाल जी नागपुर से एक दिन के लिए भी कहीं बाहर नहीं गये। नागपुर के आस-पास रहकर जनता को धीरज बँधा रहे थे। सरकारी सिपाहियों की आँखों में धूल झोंक कर पुलिस चौकी के पास अपनी पार्टी की मीटिंग करते थे। एक बार नहीं कई बार मीटिंग की। पुलिस मगनलाल जी को बम्बई कलकत्ते में खोज रही थी लेकिन बबर सेनानी नागपुर की छाती पर पैठा हुआ अपने धुन में लगा हुआ था। मगनलाल जी बुजदिलों की तरह भाग कर अपनी जान नहीं बचाना चाहते थे, वे कहते सुने गये—आजादी या मौत, यही मेरे जीवन का सिद्धान्त है।

आन्दोलन के एक साल बाद आप बम्बई में पकड़े गये। वह भी अपने एक साथी की असावधानी के कारण। मगनलाल और उनके साथी श्यामलाल श्रीवास की गिरिफ्तारी पर प्रांतीय सरकार फूली नहीं समाती थी। प्रांतीय सरकार ठान बैठी थी कि मगनलाल और श्यामलाल को जिन्दा नहीं रखना है। महीनों मुकदमा चला। सैकड़ों सरकारी गवाह गुजरे। अन्त में सरकार ने आपको विद्रोही करार देकर आजन्म कारावास की सजा दे दी।

अज्ञात अवस्था में आपको अपने मुसलमान साथियों से बड़ी मदद मिली। एक मुसलमान महिला आपकी पूरी देख-भाल कर रही थी। इसी एक बात से पता चलता है कि मगनलाल जी को मुसलमान भाई भी कितना चाहते हैं। मगनलाल जी ने कहा कि मेरी जीवन-रक्षा एक मुसलमान बहन ने की है। मैं किस शब्दों में उसकी कृतज्ञता प्रकट करूँ?

बम्बई से नागपुर जेल तक पहुँचाने के लिए विशेष पुलिस का दल आपके साथ मुकर्रर किया गया था। सारे पुलिस दल हथियारों से लैस थे। सरकार को दो-चार पुलिसवालों पर भरोसा नहीं था। सैकड़ों सिपाहियों के घेरे के बीच में आपको पुलिस लारी में बैठाकर जेल की तनहाई कोठरी में भेजा गया। जेल में पहुँचते ही आप हवालात में बन्द कर दिये गये। बदन के सारे कपड़े उतरवा कर छोटे कपड़े पहनने को दिये गये। दिन रात कमरे में बन्द रहते थे। शाम के वक्त चार पाँच मिनट के लिए बाहर आसमान देखने के लिए निकाले जाते थे। जेल भर में आतंक छा गया। जेल अधिकारियों की हिम्मत नहीं होती थी कि आपसे जाकर कुछ पूँछें। हर समय विशेष पुलिस आपकी रखवाली के लिए तैनात किये गये थे कहीं वह कोठरी के बड़े ताले तोड़ कर जेल से भाग न निकले। बाहर भीतर कई बड़े बड़े ताले डाल दिये गये थे।

केवल एक दो महीने आप हवालात में बन्द नहीं थे बल्कि पूरे एक साल। चौबिसों घंटे एक छोटी-सी कोठरी में बन्द रहने से आपकी सेहत एकदम खराब हो गई। आपको 'टी० बी०' यानी राजयक्ष्मा रोग हो गया तब आपको फाँसी घर से निकाला गया और एक दूसरी तनहाई कोठरी में बन्द किया गया। राजयक्ष्मा हो जाने पर भी सरकार ने आपको कोई विशेष सुविधा नहीं दी। सवेरे शाम कुछ समय के लिए आपको घूमने की सुविधा दी गई। मौत के साथ आपकी लड़ाई शुरू हो गई। राजनीतिक बन्दियों में चिन्ता फैल गई। सबने प्रार्थना की कि हमारे सेनानी का स्वास्थ्य शीघ्र अच्छा हो।

उधर खबरें आ रही थीं मुकदमे में फाँसी की सजा होगी फिर भी मगनलाल जी के चेहरे पर कभी सिकन नहीं आई। भाई मगनलाल कहते थे जो होगा अच्छा ही होगा। जेल के छोटे बड़े सभी आपको बड़ी इज्जत की नजर से देखते थे लेकिन वह भी सरकारी कानूनों से बँधे थे। जेल के सारे कैदियों के प्रति आप पूरी सहानुभूति रखते थे। हरएक की पूरी मदद करने का प्रयत्न करते थे। आपके रहते जेल वार्ड में अन्याय करने की किसी सिपाही या अधिकारी की हिम्मत नहीं होती थी। जेल में आपको किसी कैदी से बातचीत करने की सुविधा नहीं थी। जेल अधिकारी समझते थे कि यदि बागड़ी को साधारण कैदियों से मिलने-जुलने की सुविधा दी गई तो यहाँ भी विप्लव खड़ा हो जावेगा। जेल का काला शासन चलना मुश्किल हो जावेगा। सब कैदियों से अलग आपको बन्द किया जाता था। कोई कैदी आपके कमरे के सामने जरा सा ठहर भी नहीं सकता था। फिर भी आप सारे कैदियों की पूरी खबर अपने पास रखते थे। किसको क्या तकलीफ है यह भी पता लगा लेते थे और अपनी बुद्धि-कुशलता से उस कैदी को सुविधा पहुँचाने की चेष्टा करते थे।

प्रान्तों में लोकप्रिय कांग्रेस सरकार बनने पर आपकी रिहाई हाल में हुई है। नागपुर की जनता अपने प्रिय सेनानी को पाकर उस दिन फूली नहीं समाती थी। ५० हजार की जनता ने आपका शानदार स्वागत किया। नागपुर शहर की मुख्य-मुख्य सड़कें खूब सजाई गई थी। जेल से पुनः वापस आने पर शहर में घी के चिराग जलाये गये। आपकी लोकप्रियता एक किसान से लेकर बड़े-बड़े अधिकारियों के दिलों तक में है। लोकप्रियता क्यों न हो क्योंकि आप सच्चे सेनानी हैं। त्यागी हैं। देश की आज़ादी के लिए मौत से खेलने वाले हैं। गरीबों मजदूरों की सच्ची स्वतंत्रता के हामी हैं। सर्वहारा क्रान्ति में विश्वास करने वाले हैं। समाजवादी [illegible] कायम करने के लिए आपने [illegible] आप खर्च कर रहे हैं। सुभाषचन्द्र [illegible] से आपको सन्तोष नहीं। आप [illegible] प्रतीक्षा कर रहे हैं जब शक्ति [illegible] असली मजदूर किसान बनेंगे। [illegible] मजदूरों का कष्ट आपसे देखा नहीं [illegible] आपको विश्वास है कि एक न [illegible] यही समाजवादी व्यवस्था ही [illegible] वाली है। नागपुर का बच्चा बच्चा [illegible] उज्ज्वल देश भक्ति से परिचित [illegible] है। हर एक यही चाहता है कि [illegible] मगनलाल बागड़ी चिरायु हों। [illegible] के छोटे बच्चों में भी आपने [illegible] दी है, इसे सब महसूस करते हैं।

जुकाम सर्दीपर अकसीर
स्थापना
अशोक
सुरज १८६६
नीलगिरि
हेड्स, मोरिया, म्युल्जिया, टाचाचर बाम
प्रो. खांडालेकर बंधु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंगमंच

फिल्म-निर्माताओं की यह भीषण बाढ़ क्यों ?

क्या फिल्मों का निर्माण रुपया कमाने के लिये ही होता है ?

लेखक, श्री उमेश जोशी

...र्ट प्रोडक्शन के संचालक श्रीयुत आचार्य।

...जकल रजतपट की दुनिया में ...निर्माताओं की बहुत जोर से बाढ़ ...हुई है, जिसे देखिये वही बम्बई में ...निर्माता बना बैठा है। यहाँ तक कि ...किसी फिल्म-एक्सट्रा से भी पूछा ...वह भी अपने को फिल्म-निर्माता ...बतायेगा। वह भी यही कहेगा— ...मैंने फिल्म-कम्पनी खोल ली है। ...महीने से शूटिंग शुरू करना है। ...मैं कार्य में अधिक व्यस्त रहता ...आपकी निगाह में कोई अच्छा- ...फाइनेंसर हो तो बतलाओ। मैं इतना ...चित्र निर्माण करूँगा कि सब पुराने ...देखते ही रह जायेंगे। यदि सच- ...कहा जाय तो ईमानदारी की बात ...है कि आजकल जितने भी सिने- ...हैं, वह सब बेवकूफ हैं। इसीलिये ...रूप से चित्र निर्माण करना ...सिद्धान्त बना लिया है।"

...प्रकार के विचार हैं ऐसे लोगों के ...चित्र-निर्माण करने की कला ...अनुभव नहीं है, और जिसके ...निर्माण करने के कोई भी साधन ...नहीं हैं फिर भी दिमाग आकाश ...रहा है। निर्माता बनने का फितूर ...बम्बई के लोगों में काफी फैल ...जिसके पास पैसा है यदि वह एक ...निर्माता बनने का ख्वाब देखे। तब ...ख्वाब जायज हो सकता है, ...तो यह है कि गाँठ में एक ...नहीं, और सिने-निर्माता बनने के ...देखे जा रहे हैं। कैसी विचित्र ...इस प्रकार के लोगों को किसी ...रखना चाहिये, ताकि लोग ऐसे ...दिमागवालों का रोज दर्शन किया ...

...बम्बई की गली-गली में फिल्म- ...के चमकते हुये साइनबोर्ड टँगे ...इन चमकते हुये बोर्डों के पीछे ...तकता है, इसको वह भोलेभाले ...जाने जो कि रोजाना इस जाल ...रहते हैं। आज बहुत से लड़के- ...जो कि घर से भाग कर फिल्मी- ...काम करने के लिये आते हैं, इसी ...फिल्म-प्रोडक्शनों में प्रायः फँस ...हैं। क्योंकि इन प्रोडक्शनों ...प्रोजेन्ट शहर में घूमा करते हैं, ...के शौकीन लड़कियों को ...ढूँढ़ लाया करते हैं। अन्त ...लड़कियों की आबरू लूटकर ...दूध की मक्खी की तरह फिर ...में छोड़ दिया जाता है। ...में बहुत सी लड़कियाँ ऐसे ...के चक्कर में पड़कर अपना ...बैठी हैं। मेरे पास इन लड़- ...भरी ढेरों कहानियाँ पड़ी हुई हैं। लेकिन उसके सुनाने से क्या लाभ ? वह तो अपना सर्वस्व खो चुकी हैं।

कुछ निर्माता ऐसे भी हैं जिनके पास बीस-पच्चीस हजार रुपया है और उन्होंने अपने शौक को पूरा करने के लिये चित्र-निर्माण की संस्था खोल रक्खी है। मैं ऐसी दर्जनों कम्पनियों के नाम जानता हूँ। जिनका कि काम टट्टी की ओट शिकार खेलना है, और कुछ नहीं। म्यूजिक-रिहर्सल के बहाने रोजाना नई नई लड़कियों को इस प्रकार के निर्माता लोग घर पर बुलाया करते हैं। दो तीन घंटे गाने-बजाने का आनन्द लिया और बाद में कह दिया कि गाना जँचा नहीं। वह अपना सा मुँह लेकर चली जाती है। इससे सस्ता मनोरंजन और क्या हो सकता है? इस प्रकार के मनोरंजन की गाड़ी महीनों चलती है क्योंकि बम्बई में बेवकूफों की कमी नहीं है। यदि इस तरह के मनोरंजन के दौरान में कोई सोने की चिड़िया फँस गई तब तो फिर उस निर्माता के पौ बारह नहीं तो मनोरंजन तो चल ही रहा है। प्रोडक्सन के मालिक भी बने बैठे हैं मुफ्त में। बाजार में यदि किसी वेश्या के पास जाते तो सौ-दो सौ रुपया रोजाना खर्च होते, परन्तु यहाँ तो फिल्मी-दुनिया में मुफ्त का ही मनोरंजन मिलता है। और ऊपर से निर्माता का टाइटिल घेलवे के रूप में।

आजकल बम्बई में बहुत से चित्र करीब तीस-बत्तीस रुपया न होने की वजह से अधूरे पड़े हुए हैं। कभी-कभी इन चित्रों के विज्ञापन भी अखबारों में दे दिये जाते हैं, फाइनेंसर को फँसाने के लिए। फिल्मी-दुनिया के बाजार को इस प्रकार के निर्माताओं ने बड़ा ही अव्यवस्थित कर दिया है। जब तक इस प्रकार के निर्माताओं का सिने-व्यवसाय से बायकाट न होगा। तब तक सिने-व्यवसाय कदापि तरक्की नहीं कर सकता। निर्माताओं की बाढ़ आना कोई बुरी बात नहीं है, लेकिन आज सेनेमा-संसार के लिए ऐसे निर्माताओं की आवश्यकता है जो कि अनुभवी हों, तथा ईमानदारी के साथ फिल्मी दुनिया की सेवा करना चाहते हों। सिने-व्यवसाय को आज दौलतमन्दों की जरूरत है, जो कि अपना पैसा सिने-व्यवसाय में खर्च कर सकें। ऐसे दौलतमन्द जो राष्ट्र को उत्थान पथ पर ले चलने की भावना रखते हों। ऐसे दौलतमन्द नहीं चाहिए जो कि सिनेमा-संसार में विलासिता के वातावरण को और भी अधिक गहरा कर दें। हमें ऐसे व्यक्ति चाहिये जो कि सच्ची लगन के साथ साहित्य एवं कला की सेवा कर सकें, जो कि खुले दिन से बुराई के प्रति अपनी आवाज बुलन्द कर सकें। लेकिन आज इस प्रकार के निर्माताओं की बहुत कमी है।

हमारा कहना तो यही है कि निर्माता-गण रुपये को देखकर चलें, युग की पुकार की अवहेलना करना अपना कर्त्तव्य न बनायें—यदि उन्होंने आज के मानव-समाज की आवाज नहीं सुनी तो वह अपने को विकास की दुनिया में नहीं बढ़ा सकते ? आज फिल्मी दुनिया को सच्चे कला के उपासकों की जरूरत है। निर्माताओं की इस अपार भीड़ में चन्द निर्माता ही सिनेमा संसार की सेवा कर रहे हैं बाकी तो सिर्फ अपनी दुनिया आबाद करनेवालों में से हैं।

मिनर्वा मूवीटोन कम्पनी के संचालक श्री सोराब मोदी।

अन्त में हमारा निवेदन यही है कि कुछ ऐसे व्यक्ति आगे बढ़ें जो कि वास्तव में चित्रों द्वारा राष्ट्र और समाज की सेवा करना चाहते हों। ऐसे व्यक्तियों का सिनेमा-संसार में हमेशा स्वागत होगा। निर्माताओं की भीड़-भाड़ में भी ऐसे व्यक्तियों का सम्मान होगा।

सपट लोशन
दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.
सपट अँन्ड कं. लि.
बम्बई नं. २.

दाँतों को ६० प्रति शत अधिक स्वच्छ करता है!

यह जल-अभेद्य और नमी-विरोधक होता है।
साल भर की गारंटी
विकार-विरोधी शीशे में बंद
अब मांगिए—
पशुओं के बालों से रहित!
Dr. West's Miracle-Tuft MEDIUM
Dr. West's TOOTH PASTE

वितरक : व्यापारी निर्यात-संबंधी पूछताछ के लिए पूछिए : एल. डी. सेमूर एंड कं० (इंडिया) लि. बम्बई, कलकत्ता, कराँची, मद्रास।

डा. वेस्ट्स टूथ ब्रुश और टूथ पेस्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वामपक्ष और समझौता

(पेज ६ का शेष)

कांग्रेसी मंत्रिमंडलों को शक्ति दे देती, तो कुछ हद तक कहा जा सकता था कि उसकी नीयत साफ है, पर जो हुआ, वह इसके सम्पूर्ण विपरीत था। चुनाव भी कराया गया तो देर में, फिर कांग्रेस को हर तरीके से कुचलने की कोशिश की गई। ऐसी हालत में वामपक्षियों के लिए ही नहीं साधारण व्यक्तियों के लिए भी सरकार की नीयत पर सन्देह करना अनिवार्य था।

फिर भी बात चीत चलती रही। नेताओं तथा महात्मा गांधी जी की तरफ से शुभेच्छा तथा आशावाद का इजहार किया जाता रहा। वामपक्षियों ने इस पर कटाक्ष किया, ठीक ही किया।

फारवर्डब्लाक ने तो नारा दिया कि किसी भी हालत में समझौता न हो। अन्य पार्टियों से फारवर्डब्लाक का यह नारा स्पष्टतर था। पर यह पूछा जा सकता है कि क्या हर हालत में समझौता गलत ही होता है? सब युगों के सबसे बड़े व्यावहारिक क्रान्तिकारी लेनिन की ऐसी राय तो नहीं है। उन्होंने ऐसे लोगों को जो हर हालत में समझौता को बुरा करार देते हैं वामपक्षी साम्यवादी कहकर मखौल किया है। लेनिन ऐसे समझौते को बुरा नहीं समझते में जो ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर दे जिससे क्रान्ति का पथ प्रशस्त हो जाये तथा उसकी तैयारी करने में सहायक हो।

मैं समझता हूँ इस दृष्टि से देखने पर हर हालत में समझौता-विरोध का नारा गलत है। लड़ाइयों में भी कूटनीति से पीछे हटना होता है। फिर यह नारा कैसा? हाँ, इसका एक दूसरा पहलू है। वह यह कि कांग्रेस के उच्च नेतृत्व में क्रान्ति की कोई मनोवृत्ति नहीं है और जैसा कि श्री सम्पूर्णानंद ने कहा है कि यदि कुछ थी भी तो सन् १९४२ के खतरे को देखकर वह खतम हो गई। यह सब बातें हैं जिन पर सोचकर ही हम किसी राय पर पहुँच सकते हैं।

जो वार्तायें चल रही थीं, उनके फल-स्वरूप हो या और किसी दबाव से हो कुछ शासनसुधार प्राप्त हो रहे हैं। पर यह निश्चित है कि जिस प्रकार के शासन-सुधार दिये जाने की योजना हो रही है, उससे इतना तो स्पष्ट है कि आम जनता को कोई ताकत नहीं मिलेगी। यहाँ तक कि कांग्रेस को भी केन्द्र में कोई विशेष ताकत प्राप्त होगी इसमें भी हमें सन्देह है। ऐसी हालत में वामपक्ष का कर्त्तव्य स्पष्ट है। पर केवल चिल्लाने से क्या होता है? इसके लिए उनके पास क्या तैयारी है? हमें तो कुछ नहीं दिखाई देता। इस विषय पर कभी फिर।

नवयुवकों के लिए हवाई शिक्षा

लेखक पं० श्रीराम वाजपेयी

(नेशनल आर्गेनाइजिंग कमिश्नर हिन्दुस्तान स्काउट एसोसिएशन) पुस्तक का विषय नाम से स्पष्ट है। अब हवाई जहाजों का जमाना है, इस कारण इस विषय की थोड़ी बहुत जानकारी हरएक भारतीय को होनी चाहिए। आशा है, अपने विषय की इस अनोखी पुस्तक से पाठक लाभ उठायेंगे। पुस्तक सचित्र है। अन्त में शब्द-कोष रहने से पाठकों को पुस्तक समझने में बड़ी सहायता मिलेगी। आवरण पृष्ठ रंगीन। मूल्य केवल एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयां—

क्रीमला टाफा, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

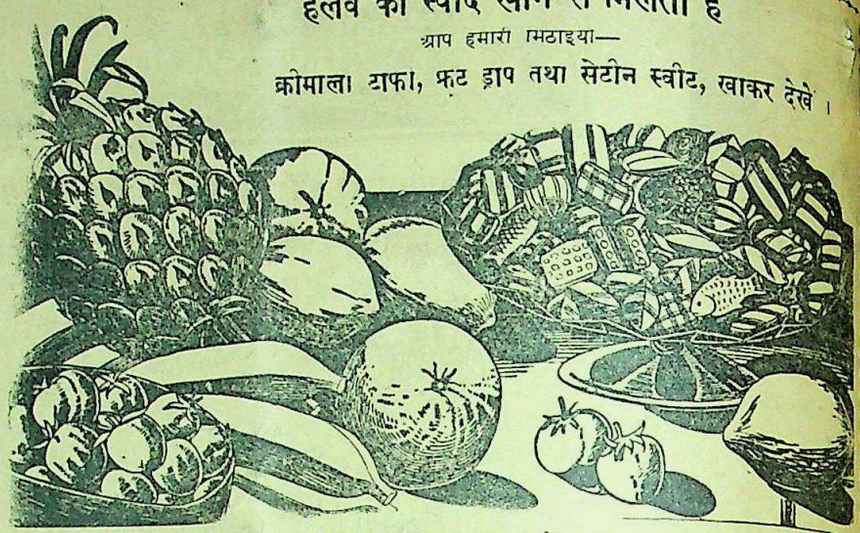

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

खुश खबरी!

'ऐस्प्रो' का माल आ गया है

'ऐस्प्रो' का नियंत्रित मूल्य ३ टिकियों की पैकेट का दाम १ आना ३० टिकियों के डिब्बे का दाम १० आना

किसी भी नकली माल को मत लीजिये। हर टिकिया पर 'ASPRO' खुदा हुआ देख लीजिये।

'ऐस्प्रो' दस मिनट में बुखार और दर्द रोकती है। यह हृदय या पेट को नुकसान नहीं पहुँचाती

वितरक :

जे. एल. मौरिसन, सन एण्ड जोन्स (इण्डिया) लि:

पोष्ट बक्स ३८७ कलकत्ता : टेलीफोन - कलकत्ता ७९६

'ऐस्प्रो' हर जगह मिलती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार की राशनिङ्ग-योजन

कैदियों की सुधार-योजना।

(विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

...के सम्बन्ध में युक्तप्रांतीय ...अपना जो वक्तव्य प्रकाशित ...उसका प्रांत में सर्वत्र स्वागत ...रहा है, राशिनिंग के विस्तार के ...मंत्रिमंडल ने जो योजना बनाई ...लोकतन्त्रवाद के आधारभूत ...के ही अनुकूल है, जो क्षेत्र ...न चाहें, वहाँ जनता की इच्छा के ...मंत्रिमंडल राशनिंग न करेगा, ...की इच्छा के प्रकाशन का भी ...ने अत्यन्त उचित तरीका ...है, अर्थात् वह ग़रीबों को, जो ...राशनिंग का स्वागत करेंगे, ...दे देगा और उन्हें नियंत्रित दर ...दूकानों से ग़ल्ला मिलने ...अन्य लोगों को भी माँगने पर ...जायेंगे, यदि किसी नगर की ...जनसंख्या कार्ड ले लेगी, तो ...कि अधिकांश लोग राशनिंग ...हैं और पूर्ण राशनिंग कर दी ...

* *

...वक्तव्य में मंत्रिमंडल ने छोटे ...और ग्रामों के निवासियों की रोटी ...प्रश्न हल कर दिया है। मंत्रिमंडल ...ही नारा है, कोई भी व्यक्ति, चाहे ...हो अथवा ग्रामीण, भूखा न ...। इसी उद्देश्य से सरकार कस्बों ...जनगणना करा रखेगी ताकि ...पड़ने पर वहाँ भी राशनिंग ...का समवितरण किया जा सके। ...में भी अन्न की दूकानें खोली ...ताकि जिस ग्रामीण को अपने ...बाजार से अन्न न मिल सके, वे ...आवश्यकता की पूर्ति सरकारी ...से कर सकें।

* *

...में पोषक तत्त्व बढ़ाने के लिए ...ने एक पोषक तत्त्व नुइट्रिशन ...की नियुक्ति की है, जिसके अध्यक्ष ...मंत्री के पार्लामेन्टरी सेक्रेटरी ...गुप्त हैं, यह कमेटी इस बात की ...कि लोगों के खाद्य में पोषक ...प्रकार बढ़ाया जाय, फिलहाल ...में गोपालन और अधिक ...का प्रचार करना चाहती है ...इसीलिए उसने सहयोग-विभाग के ...के सभी बड़े बड़े नगरों में दुग्ध ...बनाने का निश्चय किया है, ...प्रयाग और बनारस में ऐसी ...और अब कानपुर में एक ऐसी ...स्थापित की जा रही है और ...बड़े नगरों में ये यूनियनें ...हो जायेंगी, इन यूनियनों का ...के आस-पास के देहातों में ...बनाकर ग्रामीणों के पशुओं को ...दुहाना और उनके दूध को ...से विशुद्ध रखकर नगर में पहुँचाकर वितरित करना है। इसके अतिरिक्त बालछात्रों को दूध पिलाने की भी सरकार ने अपूर्व व्यवस्था की है, इसके अन्तर्गत १२ वर्ष तक के स्कूली छात्रों को एक पाव दूध देकर उनसे उसका मूल्य केवल दो पैसा लिया जाता है और शेष दाम सरकार अपने पास से देती है।

* * *

जुवाड़खानों के विरुद्ध भी मंत्रिमंडल ने अपना आन्दोलन जारी कर दिया है, जिला मजिस्ट्रेटों को एक सर्कुलर भेजकर गृहविभाग ने कहा है कि जुवाड़खानों के पकड़ने और अपराधियों को दंडित किये जाने के लिए वे विशेष प्रयत्न करें, इसके अतिरिक्त कार्नीवालों पर विशेष ध्यान रखने को कहा गया है, मन्त्रिमंडल का कहना है कि जिन खेलों को कार्नीवालवाले बुद्धि का चमत्कार बतलाते हैं, वे निरे जुवा के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं। इसीलिए कार्नीवालवाले प्रत्येक स्थान पर अपना प्रदर्शन प्रारम्भ करने से पूर्व जिला अधिकारियों की अनुमति लेते हैं, ताकि बाद में उनका बचाव हो सके। सरकार ने जिला मजिस्ट्रेटों को निर्देश किया है कि किसी कार्नीवाल को वे प्रदर्शन की 'अनुमति' न दें, क्योंकि स्वच्छ मनोरंजन अथवा आमोद-प्रमोद के लिए किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है और जाब्ते की अनुमति देकर कार्नीवालों को जुवा खिलाने का अप्रत्यक्ष 'लाइसेन्स' देने की सरकार आवश्यकता नहीं समझती है।

* * *

जेलों का सुधार करने की मन्त्रिमंडल की योजना भी अति श्लाघनीय है। गृहमन्त्री रफ़ीअहमद जेलों को यातनागृह के स्थान पर अपराधियों की मनोवृत्ति में ही सुधार करनेवाली संस्था बनाना चाहते हैं। उन्होंने वर्तमान बंदियों में मानुषिकता का, जिससे वे चिरकाल से वंचित रखे गये हैं, स्पर्श देने के लिए उनको पुस्तकें, समाचारपत्र, साबुन, बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू तथा वस्त्र दिये जाने की योजना बनाई है, किन्तु ये वस्तुएँ उन्हें केवल अपने मित्रों के धन से ही मिल सकेंगी। इसके अतिरिक्त सरकारी व्यय से उन्हें जूते भी मिलेंगे, यह सुविधा अभी तक केवल यूरोपियन बन्दियों को ही मिलती थी। बन्दियों को सहयोग-प्रणाली पर विविध दस्तकारियों और कारीगरियों की शिक्षा दी जायगी। इसके लाभ से बंदियों को मजदूरी भी मिलेगी, जो उनके खाते में जमा होती जायगी और रिहा होने पर उन्हें मिल जायगी, ताकि वे सुनागरिक बनने के लिए कोई भी सम्मानित पेशा अख्तियार कर सकें, इस प्रकार जेल बंदियों के उपनिवेश से हो जायेंगे, जहाँ उनको वास्तव में सुनागरिक बनने का अभ्यास कराया जायगा।

J & N REMINDERS!

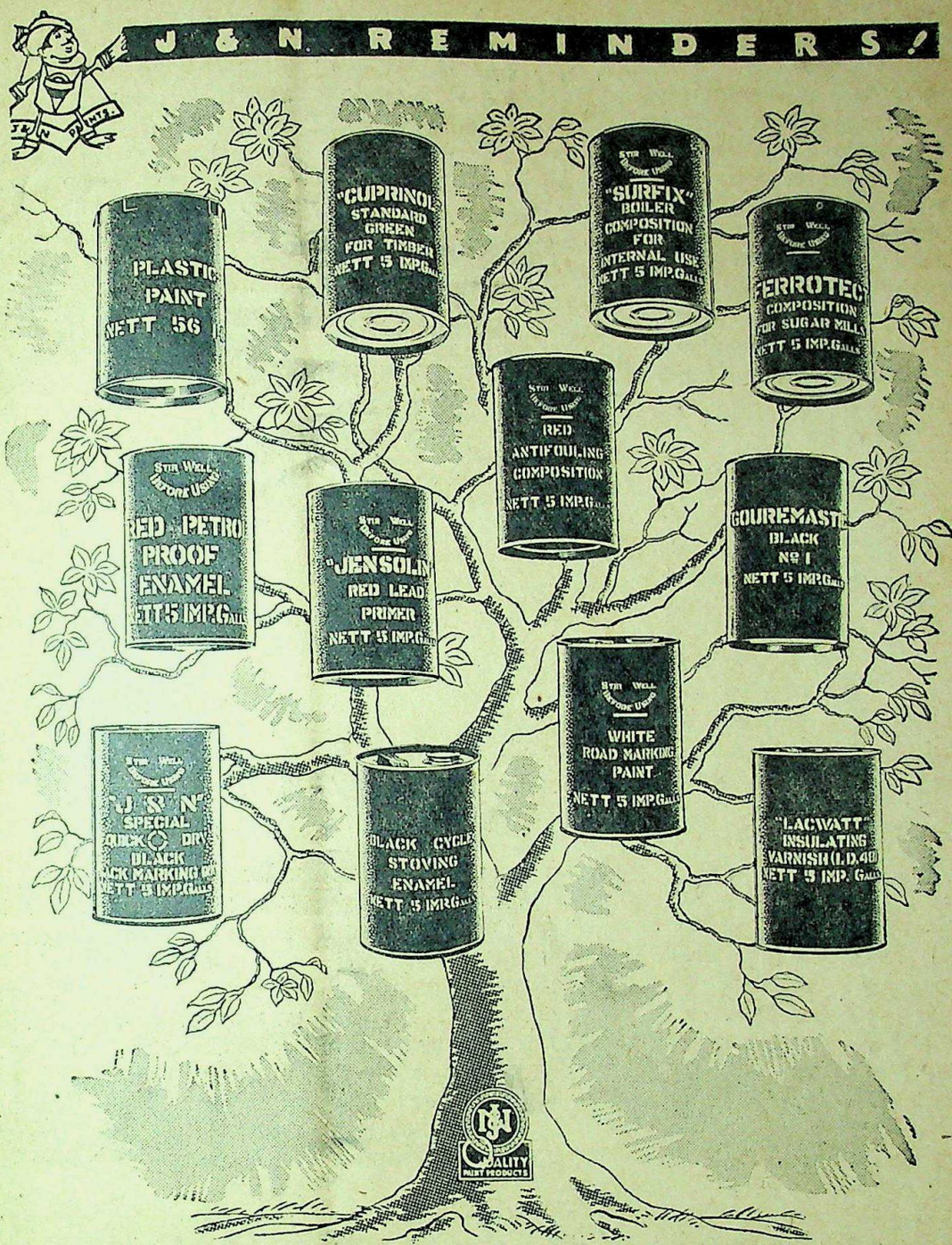

हिन्दुस्तान के उद्योग-धन्धों की अनेक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जिन उपादानो को बनाया गया है, उनमें से कुछ ये हैं।

JENSON & NICHOLSON

MAKERS OF PAINTS

हिन्द गीत मुफ्त!

...हिन्द फ़ौज के जोशीले गीतों ...में प्रचार करने के लिए ये ...बाँटी जा रही हैं। आज ही ...लीजिए।

...कार्यालय, हाथरस—यू० पी०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्रि-दल की वैधानिक योजना

(पेज ५ का शेष)

के लिए यह व्यवस्था की गई है कि मुख्य साम्प्रदायिक प्रश्न का निर्णय, वहाँ उपस्थित उस सम्प्रदाय के लोगों के बहुमत और दोनों मुख्य सम्प्रदायों के अलग-अलग मतदान-द्वारा और फिर समस्त धारा-सभा के बहुमत से निश्चय होगा। यह कार्य-विधि पेचीदी है, मगर समानता के फारमूला से कुछ आगे बढ़ा हुआ है कौन सा मुख्य रूप से और महत्त्वपूर्ण साम्प्रदायिक प्रश्न है, इसका प्रेजीडेण्ट निर्णय करेगा और यदि सदस्यों को उससे मतभेद होगा तो वे फेडरल कोर्ट में अपील कर सकते हैं।

प्रान्तों का वर्गीकरण

प्रत्येक प्रान्त की अलग-अलग धारा-सभा होगी और अलग-अलग गवर्नमेंट होगी। इससे प्रकट है कि प्रान्तों को ग्रूपों या वर्गों में पूर्ण रूप से विलीन हो जाना अभीष्ट नहीं है। मगर प्रान्तों का ग्रूप बनाना और उनका साम्प्रदायिक आधार पर वर्गीकरण करना तथा धार्मिक आधार पर उपसंघ या सबफेडरेशन बनाना पाकिस्तान की माँग की आंशिक पूर्ति है। यदि इसके साथ ही प्रान्तों की सीमा का पुनः निश्चय किया जाता और सीमा-कमीशन बिठाया जाता, तो इसका जहर बहुत कुछ दूर हो जाता। सीमा का निश्चय यदि नहीं होता और आज के समान ही प्रान्तों का रूप बना रहता है, तो वायव्य प्रदेश में ३८ प्रतिशत अमुस्लिम बहुसंख्यक और ईशान प्रदेश में ४८ प्रतिशत अमुस्लिम बहुसंख्यक मुस्लिम बहुमत को मानने के लिए बाध्य होंगे। पंजाब, सिन्ध और आसाम के हिन्दुओं के प्रति जहाँ यह अन्याय है, वहाँ पंजाब के सिखों का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है; क्योंकि वे एक-मात्र पंजाब में ही सीमित हैं। उनको अपना भविष्य-निर्माण करने के लिए भी प्रभावशाली वाणी विधान-सभा में नहीं प्रदान की गई है। प्रान्तों को वर्गीकरण की योजना मन्त्री-मिशन के निर्णय का सबसे बुरा भाग है। यह झगड़ों, विवादों, असन्तोष, नाराजगी और अन्ततोगत्वा विकलता के बीज बोवेगा।

इस योजना का मूल सर सिकन्दर हयात खाँ के प्रादेशिक पद्धति में ढूँढ़ा जा सकता है; जिसमें कि प्रादेशिक धारा-सभाओं की कल्पना की गई थी। यह कूपलैण्ड-योजना से मिलती-जुलती है, जिसने कि हिन्दू और मुस्लिम प्रधान प्रान्तों का ग्रूप बनाने का विचार किया था। मन्त्री-मिशन की योजना में एक अन्तर है। कूपलैंड-योजना तथाकथित आर्थिक हितों की समानता के आधार पर चार प्रदेशों में देश को बाँट देती थी। प्रस्तावित योजना ऐसा नहीं करती। प्रान्तों का वर्गीकरण मुसलमानों के इस भय को दूर करने के लिए है कि हिन्दू प्रभुत्व से युक्त भारत में कहीं उनका अस्तित्व ही विलीन न हो जाये। प्रान्तों का ग्रूप बनाने का जहर दूर हो सकता है, यदि निर्वाचन प्रणाली साम्प्रदायिक और पृथक् न रहे। पर इस निर्वाचन प्रणाली के दूर होने की कोई सम्भावना नहीं होती। अतः साम्प्रदायिक राज्य का भय नितान्त कल्पना-मात्र नहीं कहा जा सकता। विधान बनने के बाद, विधान बनाने से पहले नहीं—प्रान्त यदि चाहे तो ग्रूप से अलग हो सकते हैं। पर यदि विधान ही ऐसा बनाया गया जिससे यह दरवाजा ही बन्द हो गया, तब क्या होगा? आसाम और सीमाप्रान्त अनिच्छा से ग्रूप में रहने को बाध्य होंगे और इसका जो परिणाम होगा उसकी कल्पना भी की जा सकती है।

दस साल बाद

लार्ड पेथिक लारेन्स ने यद्यपि अपने भाषण में कहा था कि यूनियन के अन्दर एक बार प्रान्तों के सम्मिलित हो जाने पर उनको उससे बाहर जाने का हक नहीं होगा। पर प्रस्ताविक योजना में प्रति दस वर्ष बाद विधान में संशोधन और परिवर्तन करने की माँग करने का अधिकार प्रान्तों को दिया गया है। उस समय यदि कोई प्रान्त चाहेगा तो वह यूनियन से अलग भी हो सकेगा। मि० जिन्ना और लीगी नेताओं ने स्पष्ट रूप से कहा है कि उन्होंने यूनियन की योजना को दस साल के वास्ते परीक्षण के रूप में स्वीकार किया है। इसलिए यह कहना कि पाकिस्तान के विचार मात्र का अन्त हो गया, सर्वथा गलत है। दस साल बाद ही नहीं हर दस साल बाद भारत के विभाजन का प्रश्न उपस्थित होगा और साम्प्रदायिक कटुता को बढ़ायेगा। पाकिस्तान का प्रश्न जब तक उत्पन्न होता रहेगा, तब तक ब्रिटिश सत्ता भी यहाँ किसी न किसी रूप में बनी रहेगी, यह स्मरण रखना चाहिए। इसलिए यूनियन केन्द्र बनने के प्रस्ताव से हमें आत्म-विभोर न हो जाना चाहिए कि पाकिस्तान और भारत के विभाजन का सदा के लिए अन्त हो गया।

विधान-सभा

विधान-सभा की रचना साम्प्रदायिक आधार पर की गई है। यथा—(१) प्रत्येक प्रान्त अपनी आबादी के अनुसार दस लाख पर एक प्रतिनिधि चुनेगा। (२) इन प्रतिनिधियों का निर्वाचन प्रान्तिक असेम्बलियाँ साम्प्रदायिक निर्वाचन-प्रणाली से समानुपातिक प्रतिनिधित्व के आधार पर चुने जायँगे। (३) रियासतों के ९३ प्रतिनिधि लिये जायँगे। (४) ब्रिटिश भारत और रियासतों के प्रतिनिधियों की सम्मिलित प्रारम्भिक बैठक होने के बाद विधान-सभा तीन भागों में बँट जावेगी। एक के बाद ८५ प्रदेश के मुस्लिम प्रधान प्रान्त होंगे, दूसरे में ईरान प्रदेश के मुस्लिम प्रधान प्रान्त होंगे। तीसरे में शेष हिन्दू प्रधान प्रान्त होंगे। (५) ये प्रान्त यदि चाहेंगे तो उपसंघ या सबफेडरेशन का विधान बनावेंगे। (६) फिर ये तीनों रियासती प्रतिनिधियों से मिलकर यूनियन का विधान बनावेंगे। (७) कोई साम्प्रदायिक समस्या उस समय तक विचारार्थ उपस्थित न होगी जब तक दोनों मुख्य समाजों के उपस्थित प्रतिनिधि पहले अलग अलग और बाद में सब सम्मिलित रूप से बहुमत से उस पर विचार करने के लिए राय न देंगे।

रियासतें

प्रस्तावित योजना के अनुसार रियासतों की स्थिति इस प्रकार होगी :—

(१) अखिल भारतीय यूनियन में रियासतें सम्मिलित होंगी। (२) यूनियन को दिये गये विषयों को छोड़कर शेष सब विषय वे अपने पास रखेंगे। (३) भारत के स्वाधीन होने पर सार्वभौम सत्ता का अन्त हो जायगा और राजाओं तथा ब्रिटिश ताज के बीच का सम्बन्ध भी इस कारण समाप्त हो जायगा। सार्वभौम सत्ता मगर नई गवर्नमेण्ट को प्राप्त न होगी न उसको हस्तान्तरित की जायगी। इसके लिए रियासतों की सम्मति वाञ्छनीय होगी। वे इस प्रकार सर्वथा स्वतन्त्र हो जायेंगे। रियासतें यूनियन के अन्दर किस शर्त पर सम्मिलित हों, यह ब्रिटिश भारत और रियासतों के बीच सन्धिचर्चा द्वारा तय होगा। नवीन भारत के विकास में रियासतें योग देंगी, पर वे किन शर्तों पर योग देंगी, इसका निश्चय सन्धि-द्वारा होगा, जो सबके लिए एक समान न होगा। (४) यूनियन के विधान में रियासतों के ९३ प्रतिनिधि होंगे, जब कि उसके सदस्यों की कुल संख्या ३८५ होगी। (५) ब्रिटिश भारत के दलों और रियासतों के बीच समझौता कराने के लिए एक समझौता-कमेटी बनाई जावेगी। (६) अन्तरकालीन समय में सार्वभौम सत्ता कायम रहेगी।

रियासती प्रतिनिधियों में रियासती जनता का कितना भाग होगा, यह राजाओं पर छोड़ दिया गया है। विधान-सभा में ये ९३ वोट तो निश्चित रूप से ब्रिटिश सत्ता के पोषक होंगे। इसलिए इस विधान-सभा द्वारा निर्मित विधान द्वारा यह आशा नहीं की जा सकती कि ब्रिटिश सत्ता का भारत से सर्वथा अन्त हो जायेगा।

अन्तिम शब्द पार्लमेण्ट का

एक बात और ध्यान देने की है। विधान सभा का मत अन्तिम और निर्णायक न होगा। आखिरी शब्द ब्रिटिश पार्लामेंट का होगा। यह मन्त्री-मिशन के वक्तव्य और लार्ड सभा में हुए प्रश्नोत्तरों से भी स्पष्ट है। लार्ड सभा में लार्ड टैंकीलर के उत्तर देते हुए लार्ड लिस्टोवल ने बताया कि विधान-सभा द्वारा भारत का विधान बना लेने के बाद पार्लामेंट द्वारा कोई कार्रवाई करनी आवश्यक होगा। पर वह कार्य किस रूप का होगा, इसका निर्णय विधान-सभा की समाप्ति तक सफल नहीं है। इससे स्पष्ट है कि भारतीय विधान सभा से ऊपर विधान स्वीकार करनेवाली संस्था के रूप में ब्रिटिश पार्लामेण्ट होगी। मन्त्री-मिशन और वायसराय के वक्तव्य में भी इस बात को दोहराया गया है कि विधान निर्यात सभा-द्वारा निर्मित विधान में संशोधन, उसको स्वीकार करने या अस्वीकार करने का अधिकार, ब्रिटिश पार्लामेंट में निहित है। इसलिए लारेन्स मिशन का यह आश्वासन कि विधान निर्यात सभा के विचार में ब्रिटिश गवर्नमेंट का हस्तक्षेप करने का कोई विचार नहीं है, शाब्दिक मात्र है। वस्तुतः विधान सभा की प्रभुत्व शक्ति नाम-मात्र की है।

बात करने पर सीमा नहीं

स्थिति यह है कि जितना चाहें आप बात करिये, बहस करिये इस पर कोई सीमा और प्रतिबन्ध नहीं है। जितनी धारायें आप चाहें बनाइए और इस बारे में कोई रुकावट न होगी। वादविवाद करने और मसविदा बनाने में कोई हानि नहीं। मगर स्वाधीन भारत का विधान किस सीमा तक स्वतन्त्र हो, इसके निर्णय करने का अधिकार पार्लामेंट का है। यह स्मरण रखना चाहिए।

भारतीय विधान-सभा द्वारा बनाये गये विधान पर ब्रिटिश पार्लामेंट धारा प्रति धारा बहस करेगी, या सारे विधान पर एक साथ बहस करेगी, यह भी विचारणीय है। यदि पार्लामेंट को विधान की कोई धारा अस्वीकृत हुई तो क्या [illegible] पुनः गति-अवरोध उत्पन्न होगा।

इसलिए जब तक ब्रिटिश [illegible] में मौजूद है, और अल्पसंख्यकों के [illegible] रक्षा और सन्धि चर्चा की दुहाई [illegible] गवर्नमेंट दे रही है, तब तक यह [illegible] चाहिए विधान निर्मात्री सभा [illegible] भावी विधान बनाने में पूर्ण रूप से [illegible] न होगी और न उसको विधान [illegible] पूर्ण रूप से अधिकार ही होगा। [illegible] सभा का अधिकार-क्षेत्र सीमित [illegible] दित है। ब्रिटिश सत्ता उसके [illegible] सर्वोपरि होगी।

क्या आज आपने मेक[illegible] से दांत साफ किये [illegible]

हृदय-दा[illegible]

हाँ, मैं कभी भूलता [illegible]

चमकते हुए सफेद दाँतों, स्वस्थ [illegible] ताजे शीतल मुख के लिए मैकलीन [illegible] व्यवहार कीजिये। यह शीघ्रता से [illegible] को मिटाता है 'एनामेल' को [illegible] चमकीला बनाता है और प्रयोग [illegible] पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छिलकर लहू-लुहान हो गई! उस दीन किसान का सिर्फ़ यही कुसूर था, कि वह बेचारा पलटनवालों के बुलाने पर शीघ्र न आ सका। और, जब 'कैला' के बेटे ने अपने बूढ़े बाप की ऐसी दुर्दशा करने पर आपत्ति की, तो उसे तथा उसके वृद्ध पिता दोनों को तत्क्षण गोली से 'ठायँ-ठायँ' करके उड़ा दिया गया। ऐसी बर्बरता, पशुता तथा निरंकुशता के काले कारनामे मिलिटरी शासन ने महाकोशल-प्रान्त में दिखाये हैं। विश्व के किसी भी इतिहास में ऐसी नृशंसता के उदाहरण ढूँढ़े से भी न मिलेंगे।

होशंगाबाद के 'चीचली' नामक ग्राम में लोगों पर सरकार ने यह दोषारोपण किया, कि यहाँ के लोगों ने पुलिस को पत्थरों से पीटा। मिलिटरीवालों पर पत्थर बरसाये! लेकिन जाँच करने से पता लगा, कि स्थान इतना संकीर्ण था, जहाँ से पत्थर फेंके ही नहीं जा सकते। और, केवल थोथे दोषों तथा झूठी दलीलों के आधार पर ही बेचारे सैकड़ों किसान गोली के शिकार बना डाले गये। ये हैं, हमारे काले शासन की काली करतूतें।

सागर ज़िले में भी पुलिस का दमन-चक्र चला। ज़िले के 'गढ़ाकोटा' नामक ग्राम में लोगों पर पुलिस ने गोली चलाई। बेचारे सैकड़ों की तादाद में किसान-मज़दूर आहत हुए। और, 'गढ़ाकोटा-गोली-काण्ड' में महाकोशल की एक तरुणआत्मा वीर शहीद 'साबूलाल जैन' की बलि पोलिसराज्य के चरणों में चढ़ गई। यहाँ पर ज़रा-ज़रा सी बात पर जनता पर जुर्माने हुए—यहाँ तक कि पेशाब-पाखाने आदि सड़क पर फिरने पर, लोगों से अधिक से अधिक जुर्माना वसूल किया गया। किसानों की ज़मीने नीलाम व बेदखल हुईं। किसान "आह आह" और त्राहि-त्राहि कर उठे उस सन् ४२ के अन्दोलन में।"

"भारत-छोड़ो" प्रस्ताव के बाद देश के हज़ारों नेता जेलों में ठूंस दिये गये। देश में एक "हलचल" या हड़कम्प की लहर-सी दौड़ गई सन् ४२ में! कहीं देश के नौनिहालों ने तार काटे। रेल की पटरियाँ उखाड़ फेंकीं। पोस्टआफिसों के तमाम रिकार्डस् जला दिए गये। देश में ऐसा अशान्ति का वातावरण कभी भी उत्पन्न नहीं हुआ, जैसा कि सन् ४२ में हुआ था। ऐसा लगता था, कि प्रलय-काल में पुष्कर और आवर्तक नामक मेघ मानो आकाश में छा गये। सन् १७६१ के भयंकर, पानीपत के युद्ध के पश्चात्, सन् १८५७ में देश में एक प्रबल राज्य-क्रान्ति छा गई थी और उसी राज्य-क्रान्ति की तृतीया वृत्ति हुई थी सन् ४२ के 'राष्ट्रीय-आन्दोलन' के रूप में। इतिहास में प्रत्येक दशाब्दि या शताब्दि के पश्चात् घटनाओं की आवृत्ति होती है। फिर भला सन् ४२ अपने गर्भ में स्वतंत्रता की उस प्रखर ज्योति को, राज्यक्रान्ति के उस प्रबल विस्फोट को कैसे दबाये रह सकता था?

और, उसके बाद देश में अनाचारों और अत्याचारों की जैसे एक बाढ़-सी आ गई। अन्धकार के इन चार वर्षों में मनमानी लूट-खसोट-ब्लैक-मार्केटिंग खूब होती रही। खाद्य-सामग्रियों के कंट्रोल व राशन-व्यवस्था ने जहाँ एक ओर देश के अनेक भिखारियों को सात पुश्तों के लिए पूँजीपति बना दिया; वहाँ बंगाल के अकाल में ५० लाख भेड़-बकरी की तरह मानव-आत्मायें बंगाल-दुर्भिक्ष में काली माता की बलि में चढ़ गईं। देश के दो-दो साल के शिशु, एक रोटी की ख़ातिर तड़प-तड़पकर मर गये; परन्तु बंगाल के अनाज के गोदाम उनके लिए न खुले! बंगाल और मद्रास में ६०-७० हज़ार बोरे अन्न सड़ जाने के कारण समुद्र में फेंका जा सका; किन्तु उन निरीह पशुओं की रक्षा न की जा सकी। और, आज फिर वही अकाल की समस्या हमारे समक्ष है! उस समय केवल वंग ही दुर्भिक्ष पीड़ित था; किन्तु आज सारा भारत खाद्य-पदार्थों के अभाव में एक भयंकर दुर्भिक्ष के ज्वालामुखी में भस्मसात् होने जा रहा है। फसलों के समाचार देश में चार आने रुपये में होने के आ रहे हैं। सन् ४२ के बाद भगवान् ही रक्षक है, अब सन् ४६ में इस परतन्त्र राष्ट्र का!

—लक्ष्मीप्रसाद मिश्र
(कविहृदय)

❀ ❀ ❀

कुछ नुस्खे

आजकल साधारण लोगों में कुछ छूत की बीमारियाँ चल पड़ी हैं। इन रोगों का कारण कुछ सूक्ष्म कीटाणु हैं, जो शरीर के कोमल भागों पर आक्रमण करते हैं। इन बीमारियों से गर्मी में बड़ी तकलीफ़ होती है। इन रोगों में एक खुजली भी है।

खुजली—कड़ुआ तेल एक तोला, मुर्दासंख का चूर्ण एक तोला मिलाकर आग पर पका ले और खुजली पर लगावे तो आराम मिलता है।

कपूर दो रत्ती, लहसुन १ रत्ती, लाल-मिर्च दो, कड़ू तेल २ छटाँक, को आग में पका लिया जाय और ठंडा होने पर काँच या पत्थर के बर्तन में रखकर स्नान के पूर्व लागकर कुछ देर बाद स्नान करे तो खुजली २-४ दिन में जाती रहती है।

खसरा—गंधक का चूर्ण और मक्खन बराबर बराबर मिलाकर काँच के बर्तन में रख ले। प्रतिदिन तीन बार नीम की पत्ती डालकर गरम पानी से धोकर लगाया जाये तो लाभ होता है।

—ओंकारनाथ निगम

नीम का तेल
चर्म स्वास्थ्य और सौन्दर्य के लिये

बीस वर्षोंसे देश वासियों को स्वच्छ एवं नीरोग रखने में गोदरेज की सेवायें स्मरणीय हैं। केवल शुद्ध वनस्पतियों से साबुन निर्माण का आरम्भ इस देश में गोदरेज ने ही किया। लोगों की भिन्न भिन्न रुचियों कों सन्तुष्ट करने वाले तरह तरह के उत्तम साबुनों के द्वारा गोदरेज का नाम सारे हिन्दुस्तान में विख्यात हो गया है। संस्कृति आरम्भ कालसे प्रशंसा प्राप्त प्रकृति की अद्भुत देन नीम के आरोग्यवर्धक गुणोंको जो जानते हैं उन्हे गोदरेज 'लिमडा' साबुन भेट करते हैं। नीमके ठण्डक पहुंचाने वाले, शान्तिदायक, जन्तुनाशक एवं चर्मरोग नाशक गुण इस नीमके तेलसे बने 'लिमडा' साबुन में पुर्ण रुपसे विद्यमान हैं। गोदरेज अन्य दूसरे नहानेके साबुन को विख्यात वैज्ञानिकों और चर्मरोग विशेषज्ञोंने जिस लिये मुक्त कण्ठसे सराहना की है इस 'लिमडा' को भी उन गुणोंसे आप पुर्ण पायेंगे। 'लिमडा' साबुन के घने एवं कोमल फेनसे अपने शरीर को स्वच्छ रखिये और भारतीय चर्म की पुस्तैनी आरोग्यता और सुन्दरता को कायम रखिये।

Godrej Linda NEEM

गोदरेज चावी छाप नीम लिमडा टायलेट साबुन

गोदरेज
टायलेट साबुन
नं० १ नं० २
'वतनी' सन्दल
लिमडा (नीम) फैमिली
टर्किश बाथ
शेविंग स्टिक
शेविंग 'राउन्ड'
१०० प्रतिशत शुद्ध और पशु चर्बी रहित होने की गॉरन्टी।

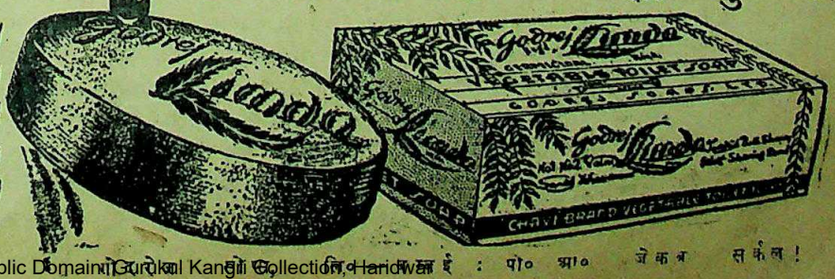

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

इंदौर से मध्यभारत प्रादेशिक देशी राज्य लोकपरिषद् के सभापति श्री गोपीकृष्णजी विजयवर्गीय ने निम्नलिखित वक्तव्य दिया है—

मध्यभारत के प्रजा संगठनों का कर्त्तव्य है कि मीटिंग-प्रस्ताव, धन-संग्रह, स्वयं-सेवक भर्ती आदि के रूप में पूरी तरह से काश्मीर की मदद पहुँचावे। काश्मीर के दमन को हटाने तथा सब रियासतों में पूर्ण उत्तरदायी शासन स्थापित करने की माँग की जानी चाहिये। भाषणादि जिम्मेदारी और संयमपूर्ण भाषा में ही होना चाहिए। मध्यभारत के जिन प्रजा संगठनता ने अभी तक दिवस मनाने तथा अन्य कार्यक्रम को नहीं किया है उन्हें इसे अपनी सुविधानुसार अवश्य करना चाहिए।

मध्यभारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् के एक प्रधान मन्त्री सैयद हमीदअली जी ग्वालियर पहुँच गये हैं, वहाँ उन्होंने स्थानीय नेताओं से रियासतों की मौजूदा समस्याओं पर बातचीत की। दौराने सफर में बमुकाम ब्यावरा, राजगढ़ राज्य प्रजा-मंडल के कार्यकर्ताओं को स्थानीय समस्याओं पर राय दी।

यहाँ मध्यभारत प्रादेशिक देशी-राज्य लोकपरिषद् के कार्यालय में मध्यभारतीय रियासतों के समूह बनाने के विषय में विचार करनेवाली सब कमेटी की बैठक हुई। बैठक में सर्वश्री गोपीकृष्ण जी विजयवर्गीय न० ग० कोठारी इन्दौर, सुल्तान मोहम्मद खाँ भोपाल, सीताराम जाजू नीमच, चतुर्भुज जी पाठक बुन्देलखंड सम्मिलित हुए। विशेष निमन्त्रण से रामेश्वरदयाल जी तोतला और कृष्णकान्त जी व्यास भी मौजूद थे।

इन्दौर राज्य प्रजामंडल की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति ने एक प्रस्ताव-द्वारा धारासभा तथा म्युनिसिपल सदस्यों को आदेश दिया है कि वे अपने मतदाताओं तथा निर्वाचन क्षेत्रों की जनता को प्रजा-मंडल पक्ष के कार्यों से वाकिफ रक्खे और उससे सम्पर्क बढ़ावे। धारासभा के सदस्य अपने निर्वाचन क्षेत्र के कस्बों और पंचायतों का दौरा करें तथा नगर म्युनिसिपल पक्ष के सदस्य अपने वार्ड का इसी हेतु से निरीक्षण करें। यह समिति अपेक्षा करती है कि परगना और इन्दौर नगर के विभागीय कार्यकर्ता इस कार्य में पक्ष के सदस्यों को सहयोग देंगे। —संवाददाता

* * *

उदयपुर में जून को हिन्दी-विद्यापीठ सरस्वती मन्दिर की ओर से स्काउट आश्रम (सूरजपोल) में 'प्रताप-जयन्ती' मेवाड़ प्रजा-मंडल के अध्यक्ष श्री भूरालाल जी बया की अध्यक्षता में मनाई गई। मेवाड़ में १५ वर्षों से प्रताप-जयन्ती उत्सव सार्वजनिक रूप से न मनाया जाकर राज्य की ओर से ही मनाया जाता था। हिन्दी-विद्यापीठ सरस्वती मन्दिर ने इस ओर पहला कदम उठाकर महाराणा प्रताप के स्वातन्त्र्य सन्देश को उदयपुर की जनता के सम्मुख रखा। सर्वप्रथम महाराणा प्रताप के चित्र को सभापति द्वारा माला पहिनाई गई और हिन्दी विद्यापीठ महाविद्यालय के छात्रों द्वारा "वन्दना के इन स्वरों में" श्री सोहनलाल द्विवेदी की प्रसिद्ध राष्ट्रीय प्रार्थना की गई। श्री सयोजक ने प्रताप-जयन्ती के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

इसके पश्चात् भाषण प्रारंभ हुए। पहला ओजस्वी और बलदायक भाषण राजस्थान के प्रसिद्ध विद्वान् वक्ता श्रीमान् जनार्दनराय नागर का हुआ।

जनार्दनराय जी के जोशीले भाषण के पश्चात् प्रोफेसर मोहनवल्लभ पंत, कृष्णलाल जी वर्मा एवं श्री गैरीलाल जी नन्दवाण के सारगर्भित भाषण हुए।

इसके बाद प्रताप के ऊपर महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने सुन्दर अभिनय उपस्थित किया एवं सभापति श्री भूरालाल जी बया का सुन्दर सामयिक भाषण हुआ। भाषणों के पश्चात् श्री अक्षयकीर्ति व्यास की अध्यक्षता में कवि-सम्मेलन होनेवाला था पर व्यास जी के न आने के कारण श्री बया जी की अध्यक्षता में ही कवि-सम्मेलन हुआ।

—गिरिधारीलाल शर्मा

* * *

जयपुर के प्रतिष्ठित समाजसेवी, धनी मानी सेठ शिवप्रसाद खेतान का स्वर्गवास हो गया है। आप अखिल भारतीय मारवाड़ी महासभा के सभापति श्री गुलाबराय जी खेतान के पिता थे। प्राचीन रूढ़ियों के कट्टर पक्षपाती होने के साथ आप नये प्रयत्नों का भी बहुत आदर करते थे। जयपुर की प्रत्येक सार्वजनिक संस्था में आपका महत्त्वपूर्ण हाथ रहता था। आपके देहावसान पर "मारवाड़ी मंदिर" में एक शोक-सभा हुई। मारवाड़ी नेता श्री अद्भुत शास्त्री ने सेठ जी का परिचय देते हुए उनके स्वर्गवास पर दुःख प्रकट किया।

—संवाददाता

* * *

नागपुर से "हस्त-लिखित मासिक पत्रिका" "ललकार" १ जुलाई ४६ को प्रकाशित होने जा रही है। अतएव अधिकारी लेखक—लेखिकाओं से सानुरोध नम्र निवेदन है कि, वे तारीख २५ जून तक अपनी नव-रचित रचनाएँ भेज दें। अंक में राष्ट्रीय, साहित्य का अनूठा संकलन होगा। "ललकार" का प्रथम अंक "लाल-सेना-अंक" होगा। लेख, कविता एवं कहानियाँ इस पते पर, आनी चाहिए—गिरिजा प्रसाद पांडे "कमल" साहू ब्रदर्स, खरे टाऊन, नागपुर (मध्यप्रांत)

संवाददाता

* * *

सागर में विश्वस्त-सूत्र से पता चला है, कि गल्ले की खरीद जिले भर में १०) और १०॥) मन के हिसाब से हो रही है जो चीजों के बढ़ते हुए भावों को देखते हुए कम है। आशा है, अधिकारीगण अनाज की कमी को देखते हुए गल्ले का रेट और बढ़ावेंगे।

जैसीनगर के पास उमरिया नामक ग्राम से कुछ झगड़े का समाचार प्राप्त हुआ है। वहाँ के टाँगी लोग चमारों से आधा चमड़ा (मरे ढोर का) लेने के लिए झगड़ा करने पर तुले हैं। गाँव में बेगार-प्रथा बंद है। फिर भी दाँनी लोग चमारों से बेगार में एक जोड़ी जूता चाहते हैं। कतिपय चमारों ने इस बात की शिकायत जनाब डि० कमिश्नर साहब, कप्तान साहब व जिला कांग्रेस दफ्तर में की है। वस्तु-स्थिति की जाँच हो रही है।

शहर के प्रायमरी-अध्यापकों की दशा शोचनीय है। देश के इतिहास में प्रायमरी—अध्यापकों के लिए इससे भयंकर अर्थसंकट का कभी सामना नहीं करना पड़ा। यदि कमेटी और सरकार उनकी दशा न सुधारेगी, तो वे भूखे मरकर कैसे काम करेंगे!

* * *

मथुरा—अखिल भारतीय व्रज साहित्य मंडल की सहायतार्थ म्युनिसिपल बोर्ड ने अपने विगत बजट अधिवेशन में ५००) स्वीकृत किए हैं। मथुरा बोर्ड गत वर्ष से मंडल की उपयोगिता को भली प्रकार समझता है और उसने पिछले वर्ष मंडल को ५००) रु० प्रदान किये थे।

व्रज साहित्य मंडल इस वर्ष तीन पुस्तिकाएँ प्रेस में दे चुका है जिनमें से पहली गत वर्ष मंडल की अवधानता में संकलित ग्राम साहित्य का विवरण है, दूसरी पुस्तिका में ग्रामीण साहित्य को संकलित करने का ढंग बतलाया गया है और तीसरी में हस्तलिखित ग्रन्थों की शोध की विधि बतलाई गई है। यह तीनों पुस्तिकाएँ सुप्रसिद्ध विद्वान् प्रोफेसर सत्येन्द्र की लिखी हैं और उनके प्रकाशन का सम्पूर्ण व्यय श्री रामकृष्ण अग्रवाल मालिक आर० के० अग्रवाल मथुरा ने प्रदान किया है।

* * *

लखनऊ से 'उपानाद' नाम मासिक पुस्तक हिन्दी के प्रसिद्ध सर्व श्री जगन्नाथ एम० ए० एल के संयुक्त सम्पादन में शीघ्र ही यह मासिक पुस्तक कांग्रेस विचारधारा का प्रतिपादन करेगी। उपानाद का वार्षिक एक प्रति का १) होगा और का पता श्री रामकृष्ण, कार्यालय, २५ रामतीर्थ नगर,

* * *

फतेहपुर—खजुहा तहसील कान्फ्रेंस आगामी ता० १७-१८ १९४६ को कांग्रेस बाजार बकेवर समारोह के साथ होगी। प्रान्तपति सेठ दामोदर स्वरूप पालिवाल, योगेशचन्द्र चटर्जी, पाण्डेय (शेर) बलिया तथा के प्रमुख बारह नेताओं की चुकी है।

* *

५,००० किसानों को

पीलीभीत जिले के जमुनियाँ खासपुर के ५ हजार मिट्टी के तेल और कपड़े का कष्ट है। उन्हें इन दोनों १० मील की दूसरी पर पड़ता है। बेचारे किसान कठिन तपस्या के बाद होकर वापस लौट जाते को दूर करने के लिए प्रान्तीय किसान सभा के प्रधान मंत्री महोदय के पास भेजे गये हैं।

—संवाद

साइन्स का एक नवान अद्भुत आविष्कार
जिसने संसार को आश्चर्य में डाल दिया

तेल मस्ताना (रजिस्टर्ड) कोई साधारण तेल नहीं है बल्कि एक साइण्टिफिक आश्चर्यजनक आविष्कार है जिसने भारतवर्ष ही नहीं वरन् दुनिया के तमाम धुरन्धर साइन्स-विशेषज्ञों को हैरत में डाल दिया है। इस तेल से गत २५ वर्षों से हजारों हताश असाध्य रोगी नवजीवन प्राप्त कर चुके हैं। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि ऐसा गुणकारी तेल आप दूसरी जगह न पायेंगे। इसके लगाने से बाल्यावस्था की कुटेव से रगों की कमजोरी, सुस्ती कुटेव से पैदा हुई खराबियाँ, नसों का गर्भाधान के योग्य न रहना, नपुंसकता, शीघ्रपतन आदि तमाम खराबियां एक हफ्ते के अन्दर दूर हो जाती हैं। कद व बल को बढ़ाकर रग व पुट्ठों में बिजली की भाँति ताक़त भर जाती है। यह हर मौसिम में लाभ करता है। छाले आदि का भय नहीं। आप आज ही एक शीशी मँगाकर सुख लूटिये। क़ीमत फ़ी शीशी ३=) तीन रुपया दो आना, दो शीशी का ५॥=), डाक-खर्च माफ़। मनीआर्डर =) यदि आपको धातुक्षीणता, शीघ्र पतन, स्वप्नदोष, प्रमेह आदि की शिकायत है तो धनी माननीय सहस्रों महान् पुरुषों-द्वारा प्रशंसित जगत्-प्रसिद्ध २५ वर्ष का आजमूदा वीर्य-संजीवन सत इस्तेमाल कीजिए। मूल्य फी डिब्बा ३।=), डाक-खर्च माफ़, मनीआर्डर =)।

मँगाने का पता—रूपविलास कम्पनी, न० ४८१, कानपुर।

"प्रत्येक सुबह का पहला काम"

उत्तम स्वास्थ्य का रहस्य शरीर के शुद्ध नियमन में है। सुबह एक चमकता हुआ इनो साल्ट' का एक गिलास शरीर करता है, रक्त-स्रोत को निर्मल और अंगों के उत्तम संचालन में देता है।

इनो "फ्रूट साल्ट"

इनो व "फ्रूट साल्ट" शब्द ट्रेड मार्क हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

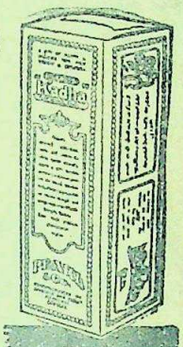

तत्काल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

आज ही शुरू कीजिए, सर्वत्र मिलता है।

शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली तलुवों और पावों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग में आग सी जलन, पेट में अल्सर, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, कब्ज, शरीर की शुष्कता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक क्रियाओं में अस्वाभाविक एवं शिथिलता.

इन विकारों पर यह बहुत काल से परीक्षित, जड़ी बूटियों के रस से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढ़ा बालक वृद्ध, स्त्री पुरुष के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक विश्वास है कि गर्भवती स्त्रियों को गर्भावस्था के समय बेखटके सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके तत्काल एवं शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

आज ही चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

पर्ल कम्पनी
आ० बी० ध० धी
का २ सं० ना
बम्बई २७

पत्र व्यवहार: प्रतिनिधि दोसर एण्ड को०, बिरहना रोड, कानपूर।

सारिडन

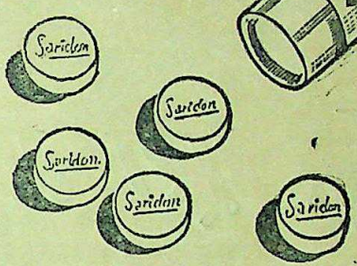

सभी दर्दको १० मिनटोंमें नाबुद करता है.

भारत माता

अपने बच्चों से कहो ! कि
बूढ़े बड़े का ग्राइप वाटर
बच्चों को तंदुरुस्त रखता है

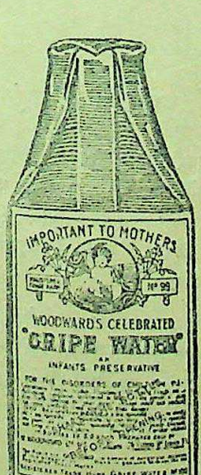

WOODWARD'S
GRIPE WATER
keeps baby well

"रोता हुआ बालक" ही असली बुड वर्ड ग्राइप वाटर की आवश्यकता है, इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए इसको

W. WOODWARD LTD., LONDON, ENGLAND.

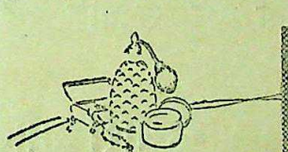

माया बॅनर्जी
कहती है-
"लक्स टॉयलेट साबुन
मेरा सरल
सौंदर्य-उपाय है"

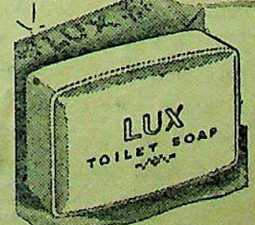

फिल्मी स्टार का सौंदर्य साबुन

फिल्मी स्टार अपने परमोत्कृष्ट त्वचा को केवल इसलिये सुरक्षित नहीं रखती कि, यह उसका मनमोहक सौन्दर्य है, बल्कि यह उसके व्यावहारिक जीवन की एक अमूल्य पूँजी भी है। इसीलिये भारत की प्रमुख फिल्मी स्टार्स लक्स टॉयलेट साबुन से अपने मूल्यवान् सौन्दर्य की सुरक्षा करती हैं। आप स्वयं अपने पर में इस सरल उपाय का प्रयोग कर देख सकते हैं — १० दिन के लिये अनुभव कीजिये— आप उसकी साफ़ करनेवाली ५० अपीफन शक्ति को देखकर आश्चर्यचकित होंगे।

LTS. 137-50-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Estd. 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S. १०) H.M.B.S. १५) H.M.D.S. २५)। पुस्तक—अ० पारिवारिक १) धात्रोकोमिक १) १००० रेडलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्शनरियाँ १॥) आर्गनन १), फार्मा-कोपिया १॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायगी। डा० ख० साफ—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≫) ड्राम। आउन्स ॥) परेलु बक्स ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.)

खांसी और सरदी के लिये वैज्ञानिक इलाज

सिरोलीन 'रोचे'

"पूरा पूरा सहयोग दीजिये"

श्री० नेहरू

"खाद्य-परिस्थिति में सबका पूरापूरा सहयोग आवश्यक है जिससे दुर्घटना का निराकरण हो सके और सब पर बराबर-बराबर बोझ बंट सके। खासकर जनता का सहयोग तो अनिवार्य है।"

—१७ फरवरी का वक्तव्य

हमारी प्रतिज्ञा और अपील

जन लोगों से जो कमीवाले क्षेत्रों में रहते हैं हम परिपूर्ण सहयोग की प्रतिज्ञा करते हैं। देश के समस्त साधनों का संगठन होगया है और उनके पास शीघ्रतासे सहायता भेजी जा रही है। उनके अभावको शेष देश के साथ, बराबर विभाजित किया जावेगा। राशनिंग का इस प्रकार विस्तार किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति अपना उचित भाग प्राप्त करले। मूल्य नियंत्रण की कठोर व्यवस्था की जावेगी। शान्तिसे विश्वास रखिये। अपनी आवश्यकता से अधिक मत खरीदिये। मुनाफाखोरों से कोई सम्बंध मत रखिये अतिरिक्त क्षेत्रों में रहनेवालों से हम अधिकसे अधिक मदद की अपील करते हैं। यदि आपसे अतिरिक्त अनाज सुपुर्द करने को कहा जावे तो आपके पास आपकी आवश्यकता के अनुसार काफी बच जावेगा। यदि आपके नगर में राशनिंग योजना लागू की गयी है तो याद रखिये, वह आपके अन्य भाइयों की सहायता के लिये ही है। तब भी आपके पास काफी होगा। छोटे तरीके से भी अनुचित संग्रह मत कीजिये। अधिकारियों के साथ सहयोग कीजिये।

खाद्य संकट को परास्त कीजिए

एक साथ कार्य कीजिये – एक साथ हिस्सा बंटाइये

व्यापारियों एवं उत्पादकों को संदेश

अपनी सामर्थ्यानुसार सारा अनाज निकाल दीजिये अनुचित संग्रह का प्रत्येक मन अनाज एक भाई की मृत्यु का कारण हो सकता है नियंत्रित मूल्य पर ही बेचिये—आपके और खरीदनेवाले के दोनों के लिये यही उचित है। दूसरों को संकट दे कर कमाया हुआ धन पाप है।

अपनी समस्त शक्ति और साधनों से सरकार और जनता मुनाफाखोरों और चोर बाजारवालों का दमन करने के लिये कटिबद्ध है। चोर बाजार न बनिये यह अपराध है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

२३ जून, १९४६ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 23rd June, 1946

मधूलिका—कविवर अंचल की मधुर कविताओं का संकलन है। इसकी कोमल और विदग्ध कविताओं में एक मोहिनी ज्वाला है। विद्वानों ने एक स्वर से इसकी प्रशंसा की है और हिन्दी के आधुनिक काव्यों में मधूलिका का स्थान बहुत ऊँचा बताया है कवि को अपनी इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक पर चक्रधर-पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। इसकी कवितायें भावुक काव्य-प्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। यौवन और सौन्दर्य के ये गीत आधुनिक हिन्दी-काव्य में उच्च स्थान रखते हैं। मूल्य २)

...र्ष पूर्व महात्मा गांधी का ...महादेव देसाई से परामर्श।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

ब्रिटेन को भारत से क्या लाभ होता है?
कलाकार की दृष्टि में महात्मा गांधी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तक

कामायनी-अनुशीलन

महाकवि 'प्रसाद' का महाकाव्य 'कामायनी' बहुत प्रसिद्ध है। पर कुछ समझ में नहीं आता। इस पर अनेक समीक्षकों के विचार पत्रों में प्रकट इसी ग्रन्थ का अनुशीलन इस पुस्तक में लेखक रामलालसिंह एम० ए०, साहित्यरत्न ने कामायनी का ऐतिहासिक तत्त्व, प्रकृति वर्णन, चरित्र-चित्र भाषा तथा भावाभिव्यक्ति, छंद विधान, रस सचार, कामायनी का मनोवैनिक तथ्य, युग की अभिव्यक्ति, प्रेम-निरूपण आदि शीर्षकों में बड़ी मार्मिकता से अच्छे काग़ज पर छपी कोई ढाई सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य रु।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

AC 53

"अकाल से बचने के लिये सबको प्रयत्न करना चाहिये"

—श्रीमती नायडू

१३ फरवरी को हैदराबाद (दक्षिण) में भाषण करते समय श्रीमती नायडू ने कहा: "क्या इस अवसर पर आप संतप्तों की सेवा करने के लिये कटिबद्ध होंगे या नहीं? चाहे वे सत्ताधारी महाराजा हों जो बड़ी रियासतों और राज्यों पर शासन करते हों या झोंपड़ियों में रहनेवाले भूखे किसान हों जो अपने बच्चों और औरतों को भूखों मरते देख रहे हों, भारत का भाग्य एक और अविभाज्य है और उस संकट की घड़ी में कोई पीछे कदम नहीं हटा सकता। जब भूखों के मुँह आपसे सहायता मांगते हैं तो कोई भी वस्तु बड़ी नहीं है।"

हमारी प्रतिज्ञा और अपील

उन लोगों से जो कमीवाले क्षेत्रों में रहते हैं हम परिपूर्ण सहयोग की प्रतिज्ञा करते हैं। देश के समस्त साधनों का संगठन होगया है और उनके पास शीघ्रतासे सहायता भेजी जा रही है। उनके अभावको शेष देश के साथ, बराबर विभाजित किया जावेगा। राशनिंग का इस प्रकार विस्तार किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति अपना उचित भाग प्राप्त करले। मूल्य नियंत्रण की कठोर व्यवस्था की जावेगी। शान्तिसे विश्वास रखिये। अपनी आवश्यकता से अधिक मत खरीदिये। मुनाफ़ाखोरों से कोई सम्बंध मत रखिये अतिरिक्त क्षेत्रों में रहनेवालों से हम अधिकसे अधिक मदद की अपील करते हैं। यदि आपसे अतिरिक्त अनाज सुपुर्द करने को कहा जावे तो आपके पास आपकी आवश्यकता के अनुसार काफी बच जावेगा। यदि आपके नगर में राशनिंग योजना लागू की गयी है तो याद रखिये, वह आपके अन्य भाइयों की सहायता के लिये ही है। तब भी आपके पास काफी होगा। छोटे तरीके से भी अनुचित संग्रह मत कीजिये। अधिकारियों के साथ सहयोग कीजिये।

खाद्य संकट को पराजित कीजिए

एक साथ कार्य कीजिये – एक साथ हिस्सा बंटाइये

व्यापारियों एवं उत्पादकों को संदेश

अपनी सामर्थ्यानुसार सारा अनाज निकाल दीजिये अनुचित संग्रह का प्रत्येक मन अनाज एक भाई की मृत्यु का कारण हो सकता है नियंत्रित मूल्य पर ही बेचिये—आपके और खरीदनेवाले के दोनों के लिये यही उचित है। दूसरों को संकट दे कर कमाया हुआ धन पाप है।

अपनी समस्त शक्ति और साधनों से सरकार और जनता मुनाफाखोरों और चोर बाजारवालों का दमन करने के लिये कटिबद्ध है। चोर बाजार से बचिये यह अपराध है।

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तान

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, २३ जून, १९४६

संख्या ४३]

सौधो-टेढ़ो-खरो-मजेदार

काबिले तारीफ़ है। आजाद हिन्द फौज के मुकदमें में वह सरकारी वकील थे, इसलिए इस बार सम्राट् के जन्म-दिवस पर यदि उन्हें कोई खिताब नहीं मिला तो कम से कम वाइसराय की कौंसिल की मेम्बरी ही मिल जाय तो क्या बेजा है? रह गये सरदार रब निश्तर साहब! बेचारे सीमा-प्रांतीय चुनाव में जब से हारे हैं तब से पूँछ की तरह जिन्ना साहब के पीछे पीछे फिर रहे हैं। इसलिए निश्तर साहब का नाम वाइसराय ने अपनी कौंसिल के लिए पेश करके सीमा-प्रांत की रग में एक नश्तर तो लगा ही दी। बस यही है जवाब! इसलिए लार्ड वैवेल को अगर कोई भकुआ कहे तो उसकी बुद्धि पर तरस आती है।

* * *

जम्बू और काश्मीर स्टेट असेम्बली के सदस्य लाला शिवनाथ नंदा कहते हैं कि क्या शेख अब्दुल्ला ने 'काश्मीर छोड़ो' का जो नारा लगाया उसका मतलब यह है कि काश्मीर राज्य उन्हें सौंप दिया जाये? अपने राम की साफ राय है कि नारा इसी लिए लगाया ही गया है कि काश्मीर के महाराजा स्टेट को शेख अब्दुल्ला के हवाले करके जोगिया वस्त्र धारण कर लें और हिमालय की सबसे ऊँची चोटी किनचिनजंगा की ओर चले जायें। बैठे-बिठाये एक हिन्दू रियासत तो हत्थे लगेगी। फिर मान लीजिए शेख साहब लीडरी छोड़ने को राजी न हों तो कम्यूनिस्ट भाई तो काश्मीर में हैं ही वहीं स्टेट के मालिक-जालिक बन जायें, तब तो रूस से कुछ साठ-गाँठ करने में मदद मिलेगी, यही क्या कम है। राजनीति और राष्ट्रीयता के नाम पर इस देश में जिस तरह के अन्धेर होते रहते हैं 'काश्मीर छोड़ो' का आन्दोलन भी उस महा अन्धेर नगरी के कारनामों की तरह कम महत्त्व नहीं रखता।

* * *

ब्रिटिश सरकार एक ओर स्वराज्य देने की जोरों की तैयारी करती जा रही है, दूसरी ओर सरकारी नौकरियों में अंबेडकरी अछूतों और लीगी मुसलमानों के लिए नौकरियाँ देने को दरवाजा खोलती जा रही है। अपने राम की समझ में बड़ा अच्छा काम हो रहा है। सच पूछा जाये तो आजकल के युग में सवर्ण होना ही एक अभिशाप है। या तो बनजाइए अछूत या फिर मुसलमान! फिर देखिए चाँदी ही चाँदी है। इसका यह मतलब नहीं है कि अछूतों और मुसलमानों को बढ़िया नौकरियाँ न दी जायें लेकिन सच यही है कि फायदा आजकल अल्पसंख्यक बनने में ही है। अब लियाकत की क्या जरूरत है? आपके लाख लियाकत है, उसे शहद लगाकर चाटिए और डिगरियों को ओढ़िये और बिछाइये!

* * *

भूतपूर्व भारत-सचिव मिस्टर अमरी ने वाइसराय लार्ड वैवेल द्वारा प्रस्तावित योजना तथा वाइसराय की कौंसिल के लिये प्रस्तावित नामावली की भूरि भूरि प्रशंसा की है। अपने राम की राय में लार्ड वैवेल के लिए इससे बढ़िया सार्टीफिकेट और कहीं नहीं मिल सकता। मिस्टर अमरी ने अपनी राय दे ही दी केवल चर्चिल साहब बाकी हैं। वह भी अपना सार्टिफिकेट देदें बस सारी कोरकसर दूर हो जाये। मजदूर मंत्रिमंडल और चर्चिल-दल में फिर मुठभेड़ की जरूरत ही क्या रह जायेगी? सच तो यह है कि ब्रिटिश सरकार हिन्दुस्तान पर इतनी उदारता दिखा रही है कि एटली-चर्चिल एक घाट पर पानी पीते नजर आ रहे हैं।

* * *

सर तेजबहादुर सप्रू कहते हैं कि वाइसराय लार्ड वेवेल ने केन्द्रीय सरकार के निर्माण के लिए जो घोषणा की है, उसे स्वीकार कर लेना चाहिए। अपने राम की राय भी है कि जरूर स्वीकार कर लेना चाहिए। क्योंकि कैबिनेट मिशन अब भारत से छू-मंतर होने ही वाला है। कम से कम और कुछ न सही तो भागते भूत की लँगोटी ही सही। कुछ मिले भी तो। नहीं तो ऐसा न हो कि कुछ मिलते-मिलते हाथ से चला जाये। मंजूर कर लेने से सप्रू कमेटी की रिपोर्ट की इज्जत भी रह जायेगी और स्वराज्य का सिलसिला भी शुरू हो जायेगा।

* * *

मजदूर मंत्रिमंडल की ओर से एक प्रतिनिधिमंडल मास्को जानेवाला है जिससे ब्रिटेन और रूस की उलझी गाँठें सुलझ जायें। जरूर और जल्दी से जल्दी गाँठें सुलझानी चाहिएँ। उधर योरोप तो दो हिस्सों में बँट ही रहा है, इधर एशिया में भी हुल्लड़ मचा हुआ है। दो दिलों के एक हो जाने से कुछ दिन चैन से तो गुजरेंगे।

गांधी-तीर्थ या भंगी बस्ती

लेखक, श्री सोहनलाल द्विवेदी एम० ए०

कल तक तो था निर्जीव पड़ा,
वन दिल्ली का प्रान्तर अछूत।
है आज वहीं जीवन प्रवाह,
चेतन प्रवाह, वह बना पूत!
है तरल तिरंगा लहराता,
चर्खे का उठने लगा राग।
उठ रही रामधुन की हिलोर,
फिर, लगी सुलगने मुक्ति-आग।
नर आते, आते हैं नरेन्द्र,
जनगण की भीड़ चली अपार।
उस ओर—जहाँ गांधी जी हैं
पावन दर्शन का खुला द्वार।
कितना तप, तेज, पुण्य पदरज में
छिपा हुआ बापू मेरे!
तुम जहाँ बसे, बस गया वहीं पर
तीर्थ खड़ी जनता घेरे।

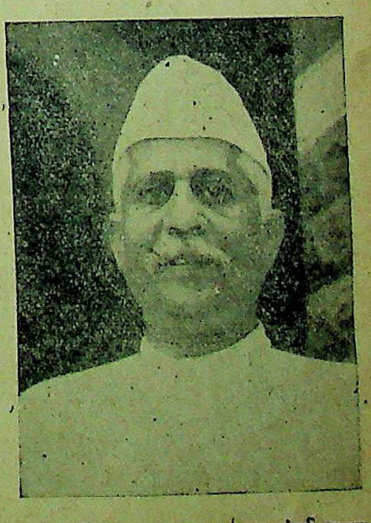

वामन सीताराम मुकदम। 'आप बंबई धारा सभा में कांग्रेस दल के ह्विप चुने गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

मन्त्रिदल का तोहफ़ा!

ब्रिटिश मंत्रिदल और वाइसराय लार्ड वैवेल ने केन्द्र की अस्थायी सरकार के निर्माण के लिए १४ सदस्यों की नामावली घोषित कर दी है। कुछ हिदायतें देते हुए यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि आगामी २६ जून से केन्द्रीय सरकार का संगठन अंतिम रूप से हो जायेगा। १४ नामों में ५ कांग्रेस, ५ मुस्लिम लीग, १ हरिजन, १ सिक्ख, १ ईसाई और १ पारसी के नामों की घोषणा की गई है। जहाँ तक कांग्रेसजनों के नामों का संबंध है वहाँ तक तो हमें कुछ नहीं कहना है, उसमें कुछ परिवर्तन होना अनिवार्य है किन्तु अन्य ९ नामों में बिहार की कांग्रेसी सरकार के एक पार्लिमेंटरी सेक्रेटरी श्री जगजीवनराम जो कांग्रेस जन हैं, को छोड़कर बाकी या तो मुस्लिम लीग के नुमाइन्दे हैं या वाइसराय लार्ड वैवेल के। १४ नामों को देखकर यह स्पष्ट विदित हो जाता है कि लार्ड वैवेल तथा मंत्रिदल ने बड़ी चतुराई और दुरंदेशी से नामों का चुनाव किया है। मुस्लिम लीग तो राष्ट्र विरोधी संस्था है ही, वह या तो पाकिस्तान का समय समय पर नारा लगाती रहेगी, या साम्प्रदायिक अड़ंगा उपस्थित करती रहेगी किन्तु सिक्खों के प्रतिनिधि सरदार बल्देवसिंह, सर एन० पी० इंजीनियर, डाक्टर जान मथाई, हो सकता है कि लीग का साथ न दें और कांग्रेसी सदस्यों से भी वह कन्ना काटते रहें लेकिन जरूरत पर सरकार के विरुद्ध वह कैसे जा सकते हैं, यह समझने की बात है। मंत्रिदल और लार्ड वैवेल ने केन्द्रीय सरकार के निर्माण में जहाँ कांग्रेस और मुस्लिम लीग के प्रतिनिधित्व का ख्याल रखा है वहाँ अल्पसंख्यकों के प्रतिनिधित्व की आड़ में सरकारी नीति के समर्थन करते रहने का सुन्दर मार्ग प्रशस्त किया है। इसलिए हमारी समझ में लार्ड वैवेल ने जिन नामों की घोषणा की है, वह कांग्रेस, मुस्लिम लीग और सरकारी पक्ष का समर्थन करनेवाला एक गिरोह है जिनके हाथों में केन्द्रीय सरकार की बागडोर सौंपने की योजना बनाई गई है।

हम पूछते हैं कि सीमाप्रांत में मुस्लिम लीग का जब तनिक भी प्रभुत्व नहीं है तो वहाँ से किसी भी मुस्लिम लीगी को कार्यकारिणी की सदस्यता के लिए निमंत्रित करना कहाँ का न्याय है? पंजाब में भी मुस्लिम लीगी सरकार नहीं है फिर भी वहाँ का प्रतिनिधित्व भी मुस्लिम लीगी सदस्य करें यह किस प्रकार न्यायसंगत कहा जा सकता है? इसलिये कहना यही पड़ता कि यह कार्य सरकार और मुस्लिम लीग का एक प्रकार का सरासर षड्यंत्र है। क्या हम पूछ सकते हैं कि पारसियों में सर एन० पी० इंजीनियर से उत्तम व्यक्ति नहीं मिल सकते थे? और जब कि वह सरकारी पद पर भी नियुक्त हैं। सर एन० पी० मोदी का नाम क्यों नहीं प्रस्तावित हुआ? या मिस्टर इंजीनियर को प्रथम आजाद हिन्द-फ़ौज की सरकारी वकालत करने के लिए यह तोहफ़ा दिया गया है? डाक्टर जान मथाई शुद्ध पूंजीपति हैं, क्यों नहीं सर महाराज सिंह ऐसे व्यक्ति को यह जगह दी गई जिनका जनता में एक स्थान है और जो लोकप्रिय भी हैं? इस प्रकार कहने का मतलब यह है कि मंत्रिदल ने कांग्रेस वर्किंग कमेटी की माँगों को स्वीकार तो किसी न किसी प्रकार कर लिया है, और अल्पसंख्यकों का प्रतिनिधित्व भी नये केन्द्रीय सरकार के निर्माण में स्वीकार किया है लेकिन अधिकांश अल्पसंख्यक जनप्रिय कम और सरकारी अधिक हैं। सरदार बल्देव सिंह और श्री जगजीवनराम ही ऐसे हैं जो समय पर जनहित की ओर अग्रसर हो सकते हैं। एक बात और—१४ सदस्यों में जहाँ तक भावना का प्रश्न है उसमें दो दल स्पष्ट हैं। एक कांग्रेसी और हिन्दूदल और दूसरा मुस्लिम लीगी और सरकारी दल। तराजू के पलड़े बराबर हैं। हमारी धारणा है कि पाँच कांग्रेस जन तथा श्री जगजीवनराम और सरदार बल्देवसिंह यदि तराजू के एक पलड़े पर रखे जायँ और पाँच मुस्लिम लीगी तथा सर एन० पी० इंजीनियर और डाक्टर जान मथाई दूसरे पलड़े पर तो अनुपात बराबर का रहेगा। तत्व की बात इतनी ही है कि लार्ड वैवेल ने बड़ी बुद्धिमानी, चतुराई, दूरंदेशी और अपने पाये को मजबूत बनाये रखने के उद्देश्य से जिन १४ नामों की घोषणा की है, वह वास्तव में ब्रिटिश राजनीति का एक जीता जागता नमूना है। इस प्रकार की घोषणा के लिए सर स्टेफर्ड क्रिप्स विशेष रूप से बधाई के पात्र हैं क्योंकि मंत्रिदल के नाटक के वही प्रधान अभिनेता हैं। इसके बाद लार्ड वैवेल, लार्ड पेथिक लारेंस और मिस्टर एलिक्जेंडर भी बधाई के पात्र हैं, क्योंकि नाटक में उनका भी अभिनय कम महत्त्व नहीं रखता।

जो कुछ भी हो प्रस्तावित नाम जनता के सामने हैं और यह भी निश्चय है कि सरकार साधारण परिवर्तन और परिवर्द्धन के साथ शीघ्र ही अंतिम निर्णय भी करने जा रही है। इसलिए हमारी फिलहाल सम्मति यही है कि कांग्रेस को थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ वाइसराय के घोषित नामों को स्वीकृत कर लेना चाहिए। मुस्लिम लीग की तो पाँचो घी में हैं। फिर भी कांग्रेस ने जहाँ ५० पिछले वर्ष से राज्य के लिए त्याग किया है, वहाँ ऐसी नाजुक परिस्थिति में भी उसे अँगरेजों के दिये जानेवाले इस तोहफे को भी स्वीकार कर लेना चाहिए। कम से कम इस समय क्योंकि कल्याण इसी मार्ग के ग्रहण करने में है। विधान सम्मेलन के निर्माण में भी उसे पूरी तरह डटकर भाग लेना चाहिए। इस समय केन्द्रीय सरकार के भारतीयकरण से ही समस्त राष्ट्र का कल्याण है नहीं तो परिस्थिति क्या होगी, इसका कौन अनुमान कर सकता है? फिर भी हम यह जरूर चाहते हैं कि केन्द्रीय मंत्रिमंडल में किसी राष्ट्रीय मुसलमान का न रखा जाना बहुत बड़ा अन्याय और पक्षपातपूर्ण कार्य है। सीमाप्रांत और पंजाब के प्रतिनिधि स्वरूप एक भी राष्ट्रीय मुसलमान का न रखा जाना सरकार की साम्प्रदायिक नीति का पूरा पोषक है। यद्यपि हम राजनैतिक दृष्टि से लार्ड वैवेल द्वारा प्रस्तावित नामों को दोषपूर्ण समझते हैं किन्तु कुछ न होने से कुछ होना अच्छा ही है। कटनीति का आज नहीं तो कल जनता की दृष्टि से भंडाफोड़ होगा ही। कांग्रेस पर इस वक्त समस्त राष्ट्र की जिम्मेदारी है। उस जिम्मेदारी को देखते हुए हम यह मानते हैं कि अँगरेजों के इस तोहफे को स्वीकार करना कांग्रेस के लिए शिव के विषपान की ही भाँति है फिर भी महात्मा गांधी के कथनानुसार इसका परिणाम भी शुभ ही होगा।

आलोचना

प्रभाती*

(काव्य-संग्रह)

लेखक, ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल

हिन्दी के प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि पंडित सोहनलाल द्विवेदी ने सबसे पहले 'भैरवी' लेकर हिन्दी क्षेत्र में प्रवेश किया। 'भैरवी' का हिन्दी में अच्छा स्वागत हुआ। श्री मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत भारती' के बाद, संभवतः 'भैरवी' ही राष्ट्रीय रचनाओं का ऐसा संग्रह प्रकाशित हुआ, जिसने जनता का ध्यान अपनी ओर अधिक आकृष्ट किया। 'भारत-भारती' में देश को निद्रा से उठाने का स्वर था, 'भैरवी' में निश्चित दिशा की ओर चलने का संकेत! 'भैरवी' से द्विवेदीजी को अच्छी ख्याति प्राप्त हुई और हिन्दी के कवियों में उन्हें ऊँचा स्थान दिया गया। 'भैरवी' के बाद 'वासवदत्ता' 'कुणाल' 'युगाधार' 'पूज गीत' आदि कई काव्य-संग्रह द्विवेदी जी के छपे। इन काव्यों-ग्रन्थों के प्रकाशन से द्विवेदीजी को प्रचुर लोकप्रियता तथा सम्मान प्राप्त हुआ।

हमें स्मरण है कि द्विवेदीजी तब से लिख रहे हैं जब से 'त्याग-भूमि' प्रकाशित हुई थी। उनकी रचनायें बराबर निकलतीं और जनता को रसमग्न करती आ रही हैं। 'भैरवी' देखने से ज्ञात होता है कि न केवल साहित्यकारों ने ही द्विवेदीजी की रचनायें पसन्द कीं, बल्कि देश के नेताओं ने भी। इस सम्बन्ध में स्वर्गीय महादेव देसाई का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

'प्रभाती' कवि की राष्ट्रीय रचनाओं का नया संग्रह है। यह बताना कठिन है कि क्रमानुसार इसे कहाँ स्थान दिया जायेगा? 'प्रभाती' 'भैरवी' से बढ़कर तो है नहीं, किन्तु जिन्हें द्विवेदीजी की रचनाओं में रस मिला है, वे इसे अवश्य पढ़ना पसन्द करेंगे। उन्हें आनन्द भी प्राप्त होगा, क्योंकि यह 'भैरवी' का पूरक काव्य है। कुछ रचनायें तो इसमें 'भैरवी' से भी अच्छी हैं। संभवतः वे 'भैरवी' के बाद की लिखी हुई हैं। जो 'भैरवी' के पहले की लिखी रचनायें हैं, उनमें भी एक नया आकर्षण है, वह यह कि कवि किस प्रकार की रचनायें 'भैरवी' से पहले लिख रहा था। इस दृष्टि से 'प्रभाती' का प्रकाशन महत्त्वपूर्ण है। इससे हम कवि की कविता के क्रम-विकास का भली भाँति अध्ययन कर सकते हैं।

द्विवेदी जी ओजस्वी कविताओं के लिखने में यशस्वी हुए हैं। उनका प्रभाव शिव होता है। अतः निःस्संकोच भाव से उनकी काव्य-कृतियों को हम अपने पारिवारिक पुस्तकालय में सादर स्थान दे सकते हैं। भले ही, उनकी रचनाओं में वह संवेदनशीलता न हो, जो महादेवी या बच्चन की रचनाओं में है, किन्तु वह हमारी वासना को स्पर्श भी नहीं करतीं।

'प्रभाती' से हम कुछ छंद उद्धृत करते हैं, जिससे पाठकों को द्विवेदी जी की नई काव्य-धारा का रस प्राप्त हो सकता है—

हे आर्यों की गौरव विभूति
तुम जीवन में मत अमा बनो!
कल्याण अमृत की वर्षा हो
तुम आशा की पूर्णिमा बनो!!

अपनी कविता के प्रति ... दृष्टिकोण है।

छा जीवन में बन एक आग
अनुराग रहे, या हो विराग,
दोनों में चमके आत्म-त्याग
जल जल चमकूँ मैं
यों उठ मेरे मन की

प्रण में मरने की जगा साख,
रण में मरकर मैं बनूँ राख,
उठ पड़ें राख से लाख लाख!
शर से भरकर ...
यों उठ मेरे मन की

द्विवेदी जी की यह आशा ... लोक-मंगल की भावना ... पड़ती है, जो उनकी रचनाओं ... धार जान पड़ती है।

'प्रभाती' की समस्त रचना ... 'प्रथम प्रणाम' शीर्षक रचना ... अधिक शक्तिपूर्ण है। ... प्रतिभापूर्ण रूप से विकसित ... दिखाई पड़ी है। कुछ छंद देखिए ... कोटि कोटि नंगो भिखमंगों के ... खड़े हुए हैं कंधा जोड़े, ... शोषित जन के, पीड़ित जन के ... बढ़े जा रहे, उधर जिधर है मुक्ति ...

ज्ञात नहीं हैं जिनके नाम
उन्हें प्रणाम, कोटि प्रणाम

यौवन ही में लिया जिन्होंने ...
मातृभूमि का जगा जिन्हें पावन ...
नगर नगर की, ग्राम ग्राम की ...
समझे जिससे सोई जनता ...
सही कठिन हथकड़ियों की बेड़ी ...
कभी न छोड़ी आजादी की ...
जो फाँसी के तख्तों पर ...
जो हँसते हँसते लेते शूली ...
उन्हीं कर्मठों ध्रुवधीरों को है ...
कोटि प्रणाम, ...

पुस्तक के उत्तरार्द्ध में राष्ट्रीय ... तथा साहित्यकारों के प्रति श्रद्धा ... स्वर्गीय 'रत्नाकर' जी के सम्बन्ध में ...

एक स्वर्ण कण खो जाने ...
हो उठता उर ...
कैसे धैर्य धरे ...
जिसका खो जाये रत्नाकर ...

आदि रचनायें एक बार पढ़ लेने ... पर अमिट प्रभाव पड़ता है।

बहुत दिनों से द्विवेदी जी ... कविताओं के प्रेमी पाठक ... लगाये बैठे हैं कि वह कोई ... काव्य जनता को प्रदान ... सुना है उनकी राष्ट्रीय रचना ... एक वृहद् संग्रह 'सेवाग्राम' ... सजधज से शीघ्र ही प्रकाशित ... है। हमारा दृढ़ विश्वास है कि ... की रचनाओं के इस नवीन संकलन ... को पूर्ण संतोष प्राप्त होगा ... काव्य की वह एक मूल्यवान ...

* प्रभाती (काव्य-संग्रह) लेखक ... सोहनलाल द्विवेदी। प्रकाशक ... भवन लिमिटेड, प्रयाग। मूल्य ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत से ब्रिटेन को क्या लाभ है ?

आर्थिक शोषण तथा व्यापार का एक सबसे बड़ा साधन

लेखक, श्री युगलकिशोर गुप्त, एम० ए०, बी० एल०

कहा जाता है कि ब्रिटेन की कृपा से भारत को सभ्यता प्राप्त हुई है किन्तु प्रश्न यह है कि ब्रिटेन ऐसे सभ्य देश को भारत से क्या लाभ है ? ब्रिटेन क्यों भारत को परतन्त्र बनाये रखना चाहता है ? इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि ब्रिटेन को भारत ऐसे महान् राष्ट्र से जितना आर्थिक और व्यापारिक लाभ है उतना किसी अन्य ब्रिटिश उपनिवेश से विद्वान् लेखक ने इस लेख में आँकड़ों-द्वारा यह सिद्ध किया है कि ब्रिटेन भारत से किस तरह लाभ उठाता आया है और आज उठा रहा है। लेख अत्यन्त सुन्दर, विचारणीय और पठनीय है।

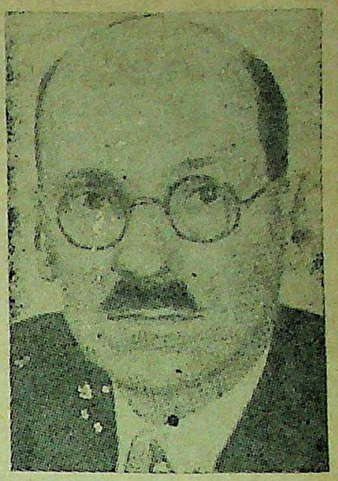

ब्रिटेन के प्रधान मंत्री मिस्टर एटली भारत को स्वराज्य दे रहे हैं।

को अपनी स्वाधीनता की यह कीमत देनी पड़ेगी। यदि भारत तटस्थ रहता या धुरी-राष्ट्रों के अन्तर्गत रहता तो ब्रिटेन का क्या हाल होता इसकी केवल कल्पना की जा सकती है। जब ब्रिटेन या अमेरिका से पनडुब्बियों के उत्पात के कारण इराक, मिस्र या ईरान में युद्ध-सामग्री की आयात असम्भव थी तो भारत ने ही इन युद्ध-क्षेत्रों में अपनी नागरिक जनता की आवश्यकताओं की अवहेलना करके युद्ध-सामग्री भेजी थी। भारत की रेल की लाइनें, डब्बे तथा इंजन उपरोक्त देशों को रवाना किये गये। सन् १९४२ में भारत ने सेना के तीन डिवीजन विदेश रवाना किये। ताता कम्पनी ने २० लाख टन कच्चा लोहा और १० लाख टन इस्पात लागत मात्र और सब देशों से सस्ते मूल्य पर दिया। सेनाओं के लिए भारत ने ५ करोड़ जोड़े जूते बनाये और उष्णक्षेत्र के अनुकूल वर्दियाँ और भ्रमात्मक जाल और कम्बल दिये। इतना ही नहीं १३० अस्पताल, ३६० हवाई जहाज के अड्डे और १३ लाख २० हजार आदमियों के लिए निवासस्थान तैयार किये। इन सबका मूल्य प्रत्येक ब्रिटिश-निवासी की आजादी के लिए ३२०) कुछ भी नहीं है।

इस समय भारत में १२,००० ब्रिटिश सरकारी कर्मचारी हैं। उन्हें कितनी मोटी मोटी तनख्वाहें मिलती हैं यह बतलाने की आवश्यकता नहीं। उनकी तनख्वाहों में ही कम से कम भारत २५ करोड़ रुपया खर्च करता है। यदि भारत स्वाधीन हो तो यह कर्मचारी पदच्युत कर दिये जायँगे और वह इँगलैंड की समस्या होंगे। साथ ही १२,००० भारतीयों के लिए उच्च पद खाली हो जायेंगे। तनख्वाहों में भी १२ या १३ करोड़ रुपये की बचत होगी क्योंकि भारतीयों को इतनी अधिक तनख्वाह गरीब भारत न दे सकेगा।

इनके अतिरिक्त इस समय भारत में ४०,००० योरोपियन (जिनमें अधिकांश ब्रिटिश हैं) व्यापार के सिलसिले में भारत में हैं और बड़ी बड़ी कम्पनियों के मैनेजर या डाइरेक्टर की हैसियत से भारत का शोषण करके अपनी जेबें भरते हैं।

सन् १९३७ में (जो एक समृद्धिशाली वर्ष कहा जायेगा) ब्रिटेन ने कुल ८०० करोड़ रुपये का माल निर्यात किया उसमें ६० करोड़ का माल भारत और बर्मा में आया। अच्छा यह ६० करोड़ रुपये के क्या क्या माल आये ? ८ करोड़ रुपये का तो केवल सूती माल लंकाशायर से आया। बर्मिङ्घम और शेफील्ड इत्यादि नगरों से ९। करोड़ रुपये का इस्पात आया। २ करोड़ ६६ लाख रुपये की मोटरें आईं। और बाकी रुपयों के इंजन, तम्बाकू, सिगरेट, ओषधियाँ, औजार, साबुन, कागज, रसायन इत्यादि आये। ब्रिटेन में शायद ही कोई बड़ी कम्पनी होगी जिसका सम्बन्ध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय व्यापार से न हो। इस प्रकार प्रत्येक भारतवासी ने ब्रिटेन से सन् १९३७ में डेढ़ रुपये का माल खरीदा।

ब्रिटेन में डंडी का जूट उद्योग भारतीय जूट पर ही निर्भर करता है। भारत में भी जूट की जो मिलें हैं अधिकांशतः ब्रिटेन-निवासियों की सम्पत्ति थीं। अब आहिस्ते आहिस्ते बंगालियों और मारवाड़ियों के अधिकार में आई हैं।

भारत में जितनी प्रमुख रेलें हैं वह सभी ब्रिटिश पूँजी से ही स्थापित हुई थीं। सैकड़ों वर्षों तक ब्रिटेन-निवासियों ने इसका लाभ उठाया था। अब वह भारतीय सम्पत्ति हो गई हैं।

मद्रास-प्रान्त के कई जिलों में जो तम्बाकू की खेती होती है उसे भी ब्रिटिश लोगों ने ही स्थापित किया था। इन खेतों से सन् १९४१ में १० करोड़ पौंड तम्बाकू तैयार हुआ था।

पंजाब में जो सिंचाई की नहरें निकाली गई हैं और जिससे इँगलैंड के क्षेत्रफल के बराबर जमीन सिंचाई के जरिये हरी-भरी हो गई है उनके लिए भी पूँजी ब्रिटेन से ही आई थी।

इसी प्रकार चायबागान अभी तक अधिकतर अँगरेजों के हाथ में हैं। इस प्रकार ब्रिटेन ने प्रायः ६ अरब रुपये की सम्पत्ति भारत में रक्खी है।

इतना ही नहीं सन् १९३७ में ब्रिटेन ने प्रायः ८७ करोड़ रुपये का माल भारत से खरीदा। ब्रिटेन में चाय की जितनी खपत है, प्रायः सबकी सब भारत से ही गई थी। और इँगलैंड में जितना चमड़ा, रुई, जूट, चावल, खाल, बकरी की खाल, कच्चे खनिज पदार्थ, रबर, खली, टीन, शेलाक इत्यादि की खपत हुई उसका अधिकांश भाग भारत से ही गया था। ब्रिटेन के कोने कोने में जो कल-कारखाने थे सभी भारतीय वस्तुओं का उपयोग कर देश या विदेश में बिक्री योग्य उपभोग्य वस्तुएँ बना रहे थे।

गत महायुद्ध के पश्चात् तो ब्रिटेन भारत को सन् १९४४ की अपेक्षा (जब केवल ३३ करोड़ रुपये की वस्तुएँ ब्रिटेन ने भारत को निर्यात की थीं) पाँच गुना निर्यात कर सकता है। भारत जर्मनी से जो १३·३ करोड़ का माल मँगाया करता था, ब्रिटेन उसके हथियाने का प्रयत्न करेगा। १०·६६ करोड़ रुपये का जापानी सूती वस्त्र और शीशे का व्यापार भी ब्रिटेन अपने अधिकार में कर सकता है और उनके अतिरिक्त २ करोड़ ६६ लाख रुपये का इटली का निर्यात भी ब्रिटेन चाहे तो उपभोग कर सकता है।

इस समय भारत को बिजली का सामान और औजार, बैटरी, एक्यूमूलेटर, मशीनरी और मिलों का सामान, इमारती सामान, धातु, सूती वस्त्र, इंजन, रंग, रसायन इत्यादि अनगिनत वस्तुओं की आवश्यकता है। यदि इस समय भारत में जो ब्रिटिश कैबिनेट मिशन आया है वह भारत की राजनैतिक गुत्थियों को भली भाँति सुलझा सकता है तो भारत निकट भविष्य में ब्रिटेन से अरबों रुपयों की चीजें खरीद सकेगा। यदि ब्रिटेन अपनी तलवार के जोर से भारत में ब्रिटिश वस्तुओं की बिक्री का प्रयत्न करेगा तो उसे मुँहकी खानी पड़ेगी। ब्रिटेन को अपने लाभ के लिए भारत से सद्भाव रखना आवश्यक है। इससे यह समझने की बात है कि भारत पर ब्रिटिश शासन से भारत को लाभ है या ब्रिटेन को।

कमेटी की मीटिंग के बाद राष्ट्रपति मौलाना अबुलकलाम आजाद और खान अब्दुल गफ्फार खाँ से समाचारपत्रों के प्रतिनिधि कमेटी के निर्णय की पूछ-ताछ कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हसपरहस

भंग की तरंग

कांग्रेस ने केबिनेट मिशन के प्रस्ताओं को पहले अस्वीकार कर दिया था। जिस दिन यह समाचार छपा सरकारी अफसरों और सिविलियनों ने इतनी शराब पी कि होटलों में शराब मिली ही नहीं। होटल-वालों को इस मुनाफे में से कुछ आदि हरिजन फंड में देना चाहिए।

* * *

लाट साहब ने कहा था कि लीग और कांग्रेस सदस्यों की संख्या बराबर रहे। इसका मतलब यही रहा कि लाट साहब चाहते थे कि हमारा शासन बना रहे।

* * *

कायदे आजम ने पंडित जवाहरलाल से मिलने से इनकार कर दिया था। पंडितजी को चाहिये था कि मिस्टर जिन्ना के दरवाजे पर हाथ जोड़कर खड़े हो जाते और कहते कि 'बैठे हैं तेरे दर पे तो कुछ करके उठेंगे।'

प्रांतीय मंत्रिमण्डल शिक्षा-संस्थाओं में सुधार करनेवाला है। पहला सुधार तो यह होना चाहिये कि शिक्षकों का वेतन कम करना चाहिए। इन लोगों को जब कुछ काम-धाम नहीं है तब इतना वेतन क्यों पाते हैं?

* * *

खबर है कि बम्बई मेल किसी सैनिक स्पेशल गाड़ी से लड़ गई। सैनिक गाड़ी लड़ी तो एक बात भी थी क्योंकि उसमें सेना थी। बम्बई मेल को क्या हो गया था?

* * *

लखनऊ के किसी जलपान-गृह में जुआ पकड़ा गया है। उसमें कई सरकारी अफसर भी पकड़े गये हैं। अफसरों को साधारण जनता की अपेक्षा कुछ तो अधिक अधिकार मिलने चाहिये, नहीं तो अफसरी ही क्या?

* * *

कहा जाता है कि मिट्टी के तेल पर से कन्ट्रोल उठेगा। आजकल इस तेल की आवश्यकता भी बढ़ गई है। भूख पीड़ितों को आत्म-हत्या करने के लिये इससे सरल साधन भी कोई नहीं है।

* * *

बराबरी का जोड़ा

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

आओ रहें बराबर साथी।
काम भले हों भिन्न हमारे,
इससे क्या कुछ है होता रे,
तुम्हीं सेठ हम 'राबर' साथी।
बड़े रहो तुम या छोटे हो,
सच्चे हो तुम या खोटे हो,
तुम सांगा हम बाबर साथी।
मिले न तब भी रहें एक में,
जग सरिताएं बहें एक में,
जैसे पानी डाबर साथी।

रेल की हड़ताल के समय सेना से सहायता ली जायेगी। बात तो ठीक भी है। जो सेना गोली चला सकती है क्या वह रेल नहीं चला सकती?

* * *

बङ्गाल असेम्बली के योरोपियनों ने घोषणा की है कि हम लोग दिल्ली सम्मेलन के लिए अपने प्रतिनिधि नहीं चुनेंगे। यह तो सरासर लीग को धोखा देना है। उन्हें कामदे आजम का कुछ तो खयाल करना चाहिये।

* * *

जब लाट साहब इतना खयाल कर रहे हैं तब योरोपियनों को मुस्लिम लीग की नाव मँझधार में नहीं छोड़नी चाहिए। दोनों का गठबन्धन रहना ही चाहिये।

मुसलमान रेलवे कर्मचारियों से कहा गया है कि वह हड़ताल में सहयोग न करें। ठीक है। उन्हें अपनी रेलगाड़ी भी अलग से चलानी चाहिये।

* * *

हम आशा करते हैं कि बहुत शीघ्र भारत में हर जगह मुसलिम रेल और मुसलिम स्टेशन अलग अलग बन जायेंगे। जैसे मुसलिम पानी और मुसलिम चाय अलग मिलते हैं।

* * *

नागपुर में शराब की दूकानों पर धरना दिया जायगा। यह दूकानें विदेशी शराब बेचती हैं। स्वदेशी शासन में स्वदेशी शराब तो बिक ही सकती है क्योंकि अपना उद्योग धंधा है न!

—अगड़धत्त शर्मा

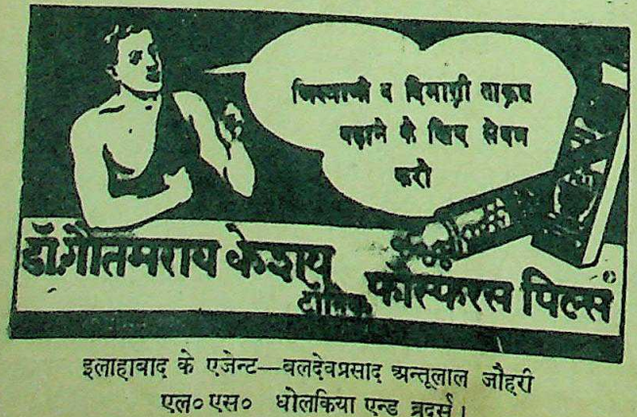

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी
एल० एस० धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

स्त्रियों का भयानक शत्रु

प्रदर रोग जिसको लोग लिकोरिया भी कहते हैं यह स्त्रियों की सुन्दरता और जवानी को नष्ट करनेवाला भयानक शत्रु है। लज्जावश बेचारी रोग को छिपाये रहती हैं और दिन-रात घुला करती हैं। यह उनकी भूल है। यह रोग का इलाज कराने में लापरवाही नहीं करनी चाहिए। इस बीमारी में स्त्रियों के गुप्त शरीर से लाल, काला, धुमैला या श्वेत रंग का बदबूदार पानी या लेस-सा निकलता रहता है, महीना ठीक समय पर नहीं होता है, किसी कारण कमर, रीढ़, सिर में दर्द, शरीर में जलन, मन मलीन, उठने-बैठने में थकावट, भूख का कम लगना, बदन दुबला और कमजोर हो जाना, मूर्छा, बेहोशी आदि रोग हो जाते हैं। और सन्तान नहीं होती, और यदि होती भी है तो दुबली और कमजोर होती है। ऐसी अवस्था में भारत-विख्यात वैद्यरत्न सत्यदेव ने अपूर्व शक्ति प्रदान करनेवाली २५ वर्ष की आजमूदा **नारी संजीवन** नामक दवा का आविष्कार किया है। जिसके द्वारा आज तक सहस्रों स्त्रियों को इस भयानक रोग के पंजे से छुड़ाया है। इस नारी संजीवन के सेवन से तमाम बीमारियां दूर होकर स्त्रियाँ सुन्दर और तन्दुरुस्त हो जाती हैं और सन्तानें सुन्दर बलवान् दीर्घायु पैदा होती हैं। यदि आवश्यकता हो तो आज ही पत्र डालकर एक डिब्बा **नारी संजीवन** को मँगाकर इसके अपूर्व गुणों का चमत्कार देखें। क़ीमत एक डिब्बा ३=) डाक खर्च माफ़, पैकिंग खर्च अलग।

मँगाने का पता—

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

खाद्य का राशन प्रत्येक के लिये बराबर विभाजन

★ प्रत्येक की पूरी आवश्यकताओं के लिये देश में पर्याप्त खाद्य नहीं है। जो कुछ उपलब्ध है उसे सबमें बराबर बाँटना चाहिये।

★ राशनिंग ही एकमात्र तरीका है जो कमीवाले क्षेत्रों में रहने वाले आपके भाइयों की अभाव एवं दुर्भिक्ष से रक्षा कर सकता है। इसमें धनिक या गरीब के प्रति कोई पक्षपात नहीं है, बल्कि प्रत्येक के लिये उचित मूल्य पर पर्याप्त खाद्य निश्चित है—आप अपने हिस्से के लिये विश्वास कर सकते हैं।

नागरिक एवं ग्राम्य क्षेत्रों में अब लगभग १३ करोड़ व्यक्तियों के राशन की व्यवस्था है। खाद्य कम है इसलिये दूसरे नगरों एवं क्षेत्रों में भी तेजी से राशन-व्यवस्था को विस्तृत किया जा रहा है।

★ आपके बचाव के लिये बनाये गये राशन के नियमों का यदि आप ईमानदारी से पालन करें और योग्य नागरिक की भाँति अपना कर्तव्य करें तो अकाल के संकट से छुड़ने में आप सरकार की सहायता करेंगे।

उचित मूल्य पर (R) सबके लिये भोजन

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा गांधी को मैंने कैसा देखा!

उनकी आँखों में एक दिव्य आभा चमकती है

लेखिका, श्रीमती क्लेरा क्वीन

श्रीमती क्लेरा क्वीन फ्रेंच कलाकार हैं। आप सेवाग्राम में महात्मा गांधी के दैनिक जीवन का अध्ययन करके उनकी मिट्टी की मूर्त्ति बनाने आई थी। आपने मूर्त्ति बनाई किन्तु केवल धड़ तक। इस लेख में श्रीमती क्लेरा क्वीन ने सेवाग्राम में रहते हुए, अपने अनुभव अंकित किये हैं। लेख अत्यन्त सुन्दर और महात्मा गांधी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालनेवाला है।

श्रीमती क्लेरा क्वीन इस लेख की लेखिका। इसी फ्रेंच महिला ने गांधी जी की मिट्टी की मूर्ति बनाई है। मूर्ति के पास श्रीमती क्लेरा क्वीन खड़ी हैं।

उसी प्रकार करते हैं जिस प्रकार दूसरे किसी फूल या वृक्ष की करते हैं। मैंने तो एकाकी वनों में केवल एक बेदिंग सूट (स्नान-वस्त्र) पहन कर भ्रमण किया है.....।"

गांधी जी ने फिर कहा—"तुम्हें लज्जा अवश्य अनुभव हुई होगी।"

मैंने कहा—"इसमें दूसरों को एतराज होता है वरना, मैं नहीं समझती कि नंगा घूमना कोई बुरी बात है।"

गांधी जी ने कहा—"बिलकुल ठीक, अच्छा अब छोड़ो इन बेकार की बातों को। तुम्हें इजाजत है, जब भी चाहो, यहाँ आ जाओ और जो कुछ करना चाहो, करो।" इस पर मैंने उन्हें धन्यवाद दिया।

उन्होंने फिर कहा—"मैं तुमसे अधिक बातें नहीं कर सकूँगा, कारण, मैं अन्य कार्यों में अत्यधिक व्यस्त हूँ। पोज़ भी न कर सकूँगा। मैं किसी के लिए पोज़ नहीं करता; फोटोग्राफरों के लिए भी नहीं। अब तुम्हारी इच्छा, यहाँ ठहरो या जाओ।"

मैंने पुनः उन्हें धन्यवाद दिया। वह मेरी ओर से मुड़कर एक फाइल से चिट्ठियाँ निकाल कर पढ़ने में लग गये। मैं वहीं रुक गई और कुछ क्षण के लिए ध्यान-मग्न हो गई। क्योंकि, यह स्पष्ट हो गया था कि पूरी मूर्ति तैयार न हो सकेगी। मैं उन्हें 'नमस्ते' करके वहाँ से विदा हुई। मैंने यह तय कर लिया था कि धड़ के ऊपरी भाग को काटकर सर्वप्रथम उसका एक सुन्दर चित्र तैयार किया जाये। इसके पश्चात् समय बचने पर मैं मूर्त्ति पर हाथ लगाऊँगी।

दूसरे दिन मैं दिन भर प्रतीक्षा करती रही पर मूर्त्ति नहीं पहुँची। दोपहर को मैं कताई के कमरे में गांधी जी को देखने गई। मुझे देखते ही गांधी जी मुस्करा उठे। शाम को फोन पर मुझे बतलाया गया कि "मूर्ति बैलगाड़ी पर इसलिए नहीं पहुँचाई गई कि वह बहुत भारी है। इसे लारी पर लाने के लिए हमें अधिकारियों से इसकी इजाजत लेनी पड़ी है। शाम तक पहुँच जायगी।" मूर्ति शाम को सेवाग्राम पहुँची।

अगले दिन सुबह जब गांधी जी स्नान करके बाहर आये तो मैं उनके कमरे के बाहर खड़ी थी। मैंने उसी समय अपना काम प्रारम्भ कर दिया। दोपहर को जब गांधी जी चर्खा कातने लगे, मैं भी अपने काम में लग गई। मूर्ति में कुछ समानता दृष्टिगोचर होने लगी।

उनके वहाँ से जाने के पूर्व मैंने पूछा—"क्या आपको यह पसन्द है?"

उन्होंने उत्तर दिया—"हाँ, तुमने कुछ कुछ तो बना लिया है।"

उसी शाम को मैं भी प्रार्थना में गई। क्योंकि गत शाम को दूर से मधुर संगीत सुनकर बहुत प्रभावित हुई थी। प्रार्थना-मण्डली एक चतुर्भुजाकार में चटाइयों पर बैठ गई, गांधी जी के बायें, स्त्रियाँ, दाहिने पुरुष और सामने गवैये। आवाज गुन-गुनाती प्रारम्भ हुई और धीरे-धीरे ऊँची होती गई। बीच में मैंने देखा कि कुछ देर तक सबों ने जोर जोर से ईश्वर का भजन किया। वे लय के अनुसार तालियाँ भी बजा रहे थे। मैं किसी विशेष धर्म या मजहब को नहीं मानती हूँ, अतएव मैंने अवसर पाकर कई धर्मों की प्रार्थनाओं को देखा है, पर इतनी रसभरी और स्वच्छन्द प्रार्थना मैंने कभी नहीं देखी। मैं वहाँ पर कुरान की आयतें और पारसियों के धार्मिक गीत को सुनकर विस्मित रह गई। मुझे बाद में बताया गया कि वे ईसाइयों के धार्मिक गीत भी गाते हैं। वे किसी मंदिर, मसजिद या गिरजा में बैठकर नहीं बल्कि आसमान के नीचे खुले स्थान में प्रार्थना करते हैं, इसलिए कोई इसे बुरा नहीं मानता। वे मजहब को इससे अलग की चीज मानते हैं। इसलिए किसी भी धर्म या मजहब को माननेवाला इसमें सम्मिलित हो सकता है।

अगले दिन सुबह को जब मैं अपने काम में लगी हुई थी, गांधी जी ने पूछा—"यहाँ तुम्हें कोई कठिनाई तो नहीं अनुभव हो रही है?"

मैंने उनको धन्यवाद देते हुए कहा—"नहीं, मैं जब से यहाँ आई हूँ, बहुत प्रसन्न हूँ।" गांधी जी के चर्खे ने मानो मुझे कुछ कर दिया हो। मेरे मन में प्रश्नों के पुल बँधने लगे। प्रतिदिन कितने धैर्य से वह चर्खा चलाने बैठते हैं। जब कभी धागा टूट जाता है या चर्खा बिगड़ जाता है, तब वह बिलकुल घबराते नहीं और शान्तिपूर्वक अपना काम किये जाते हैं। उन्होंने कब यह अनुभव किया कि चर्खा युद्ध के अन्य अस्त्र-शस्त्रों से अधिक शक्तिवान् है? उन्होंने कब चर्खा चलाना प्रारम्भ किया और कब तक चलाते जायँगे? यह प्रश्न आप ही आप मेरे मस्तिष्क में उठने लगे।

वास्तव में विश्वास नहीं होता कि एक अकेला साधारण, निर्धन मनुष्य कठोर नियमों का पालन करता और आदर्श जीवन बिताता हुआ इतना महान् बन सकता है। एक शिष्या ने कहा—"उन्होंने तो हमें एक संगठित राष्ट्र में परिवर्त्तित कर दिया है।"

दोपहर को जब वह खाना खा रहे थे तो मैंने देखा कि उनके चेहरे पर असाधारण अस्थिरता प्रदर्शित हो रही थी। उनका प्रतिदिन का भोजन बिलकुल साधारण होता है, बहुत ही मितव्ययी। इसी भोजन के बल पर वे सवेरे साढ़े चार बजे उठ जाते हैं। शाम को आठ बजे सो जाते हैं। दिन भर भेंट-मुलाकात करने, चिट्ठियों के पढ़ने-लिखने आदि में अत्यधिक व्यस्त रहते हैं। वे सचमुच में महात्मा हैं। यदि मुझे उनकी तरह

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

कर्नल लक्ष्मी स्वामिनाथन् (झाँसी की रानी रेजिमेंट) और श्रीमती रुक्मिणी लक्ष्मीपति, मद्रास असेम्बली की नई सदस्या, (बीच में) का अखिल-भारतीय महिला सम्मेलन की

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष रूप से 'देशदूत' के लिये

कलाकार उपेन्द्र महारथी !

अगस्त क्रान्ति में बिहार का एक प्रसिद्ध चित्रकार !

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

कलाकार उपेन्द्र महारथी बिहार के प्रसिद्ध चित्रकार हैं। अगस्त-क्रान्ति में आपने भी विशेष हिस्सा लिया था। इस लेख में श्री प्रभुदयाल जी ने श्री महारथी जी का एक रेखा-चित्र अंकित किया है, जिससे आप की सेवावृत्ति, देशभक्ति और राष्ट्रप्रियता का सुन्दर परिचय प्राप्त होता है। लेख सुन्दर तथा पठनीय है।

देश की आजादी में हर वर्ग के स्त्री-पुरुषों का सम्मिलित होना अनिवार्य है। आजादी केवल एक दो आदमियों के बल से नहीं मिली और न मिल सकती है। उसमें लाखों-करोड़ों की आहुति देनी पड़ती है।

हमारे देश के कलाकारों की भी कुछ जिम्मेदारी है। उनका भी कुछ फर्ज है। वह अपनी कला-कृतियों से देश को बहुत आगे बढ़ा सकते हैं। देश को सही मार्ग पर ला सकते हैं। देश की आजादी को कलामय बना सकते हैं। कला और मुल्क की खिदमत से बहुत गहरा सम्बन्ध है।

मैं यहाँ एक बहुत दुबले पतले क्षीण-काय शरीरवाले कलाकार का रेखाचित्र रखना चाहता हूँ। आप उसे यह देखकर कभी अनुमान नहीं लगा सकते कि उसके भीतर आजादी के लिए कितना गहरा द्वन्द्व चल रहा है। अपनी कला-कृतियों से वह देश की कितनी सेवा कर रहा है। बहुत कम लोगों की दृष्टि इस कलाकार पर गई होगी। बंगाल के अकाल के समय वहाँ की दुर्दशाग्रस्त और पीड़ित जनता का जैसा करुणाजनक और हृदय पर आघात करने-वाली कृतियों का निर्माण भाई उपेन्द्र महारथी ने किया है वह बहुत कम लोगों के सामने आया है। आप अपनी कृतियों से मानव-जगत् को ऊपर उठाने का भाव रखते हैं, और रखते हैं, गरीब मानव-जगत् की कष्ट कहानी।

श्री महारथी अपनी कला-कृतियों से पैसा कमा कर अपनी जेब नहीं भरना चाहते। चित्रों से रुपया कमाया है लेकिन आप उनके पास एक पैसे का अभाव देख सकते हैं। फिर ये पैसे खर्च कहाँ होते हैं? गरीब विद्यार्थियों पर खर्च होते हैं, गरीब साहित्यिकों का सम्मान और खर्च होता है दुःखी पीड़ित मानव पर।

एक दिन हम लोग पैदल पटना शहर में घूम रहे थे। एक गली से गुजरे। रास्ते में एक बुढ़िया मिली। मैंने कहा—इस बुढ़िया को बहुत तकलीफ है। भाई महारथी जी हम लोगों से कुछ पीछे थे। उन्होंने आते ही पूछा—माता जी आप क्या चाहती हैं? बुढ़िया ने कहा—बेटा मैं भूखी हूँ कुछ खाने को दो। भाई महारथी ने अपनी जेब टटोली और फौरन एक रुपया निकाल कर दिया। फिर मुझसे पूछा—क्या भाई तुम्हारे पास कुछ पैसे होंगे उधार दोगे?

मैंने कहा—पैसे कुछ हैं लेकिन तुम जहाँ भी किसी को भूखा नंगा देखते हो कुछ न कुछ बाँटने लगते हो। इससे तो 'कारूँ' का खजाना भी खाली हो जावेगा। उन्होंने सिर को नीचा करके कहा—"अपनी शक्ति भर ही मैं काम करता हूँ जब पास कुछ नहीं होगा तब क्या दूँगा।" अंत में उनके पास रास्ते के लिए किराया भी नहीं रह गया। यह एक दो दिन की बात नहीं—जीवन में ऐसी घटनायें अकसर घटती रहती हैं।

एक उपेक्षित और निर्धन विद्यार्थी को आपने ऐसी शिक्षा दी है कि वह आज पटने शहर में ४-५ सौ महीना कमा रहा है। आपने उस निर्धन विद्यार्थी को ऐसा तैयार किया है कि वह कभी भूखा नहीं रह सकता है। कल तक जिसको कोई नहीं जानता था उसी के पास आज बड़े लोग आते हैं और सम्मान के साथ काम देते हैं। महारथी जी ने उसके जीवन को एक नये साँचे में ढाल दिया है। एक दिन मैंने मजाक में कहा कि गुरू गुड़ ही रह गया, चेला शक्कर हो गया। मेरे कहने का मतलब यह था कि आप खाली हाथ रहते हैं और चेले के पास काफी पैसा आता है। महारथी जी ने हँसते हुए कहा—मुझे बहुत अच्छा लगता है, मुझसे सौ गुना आगे बढ़ जावे ऐसी कामना करता हूँ। ऐसी है आपकी ऊँची विचारधारा। ऊँचे दिल का खयाल। जीवन में आडम्बर नहीं। एक फकीर-जैसा जीवन व्यतीत करते हैं। एक दिन मन में आया आप बौद्ध भिक्षु बन गये। कासाय वस्त्र धारण कर लिया। और बोले कि दुनिया में क्या रक्खा है? किसी वस्तु से आपका आकर्षण नहीं है। आस-पास के रहनेवाले लोग कहते ही हैं कि महारथी जी के पास कोई निजी सम्पत्ति नहीं। आपकी सम्पत्ति सब की है। गांधीजी के ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त आप अच्छी तरह पालते हैं। आप स्वयं एक संस्था हैं और उसके संचालक।

आपका कमरा धर्मशाला है। आने-वाले साहित्यिक बहुधा आपके यहाँ ही उतरते हैं। छोटे-मोटे देशसेवक आपके यहाँ ठहरते हैं। तभी तो १९४२ में बिहार-सरकार को सन्देह था कि कांग्रेस की मीटिंग महारथी के कमरे में होती है। फरार लोग इनके यहाँ ठहरते हैं। भूखे प्यासे जगह न पानेवाले असली देशभक्त यहीं रहते हैं। सरकार ने आपको गिरफ्तार किया। मकान की तलाशी ली गई, एक बार नहीं कई बार।

बिहार-सरकार कहती थी कि १९४२ की बहुत सी राजनैतिक घटनाएँ महारथी की जानकारी में होती थीं। उसमें वह जी-जान से भाग लेते थे। बिहार के लोग क्या इसीलिए इनकी इतनी इज्जत करते हैं? जब बहुत से लोग अपने सिद्धान्त से गिर चुके थे, पथभ्रष्ट हो चुके थे, अपने साथियों को देखकर सीधे मुँह बात नहीं करते थे, राजनैतिक अपराधियों को आश्रय देना पाप समझते थे, सगे दुश्मन बने थे, तब क्या हम महारथी जी की राष्ट्र-सेवाओं को भूल सकते हैं?

महारथी जी के पीछे गुप्तचर लगे रहते थे। वह कहाँ जाते हैं, क्या करते हैं, किससे मिलते हैं? दिन-रात पुलिस की निगरानी रहती थी। लेकिन जिसके दिल में देश-सेवा की सच्ची लगन है; उसे कौन रोक सकता है? महारथी जी अपनी कला-कृतियों का निर्माण भूल गये थे। उस समय आपका एकमात्र उद्देश्य था पीड़ित और सताये हुये मनुष्यों की सेवा करना। दुनिया में अभी तक कोई ऐसी शक्ति पैदा नहीं हुई है जो सेवा को रोक सके। लेकिन वह सेवा निःस्वार्थ भावना से होती हो। मनुष्य कहीं भी हो अपना कर्त्तव्य पालता रहेगा। भाई महारथी जी के पीछे बिहार-सरकार के कितने ही गुप्तचर काम कर रहे थे। फिर भी आप कभी देशसेवा से वंचित नहीं हुए। पुलिस ने आपको बार बार सावधान किया और कहा कि आप राजनैतिक कामों में भाग लेते हैं। आपने केवल एक उत्तर दिया कि सेवा से कोई रोक नहीं सकता। यदि मैं भूखे-भटकों की सेवा करता हूँ तो इसमें कौन-सा अपराध है? देखा नहीं जा सकता तो मुझे जेल में बन्द कर दीजिये।

बिहार के छात्रगणों से आपका खास प्रेम है। बहुत से छात्र आपके निवास-स्थान पर आते थे, मिलते थे और बातें करते थे। आपस में चर्चा करते थे। यदि वे लोग मामूली चर्चा करने के लिए आते थे तब भी सरकार समझती थी कि

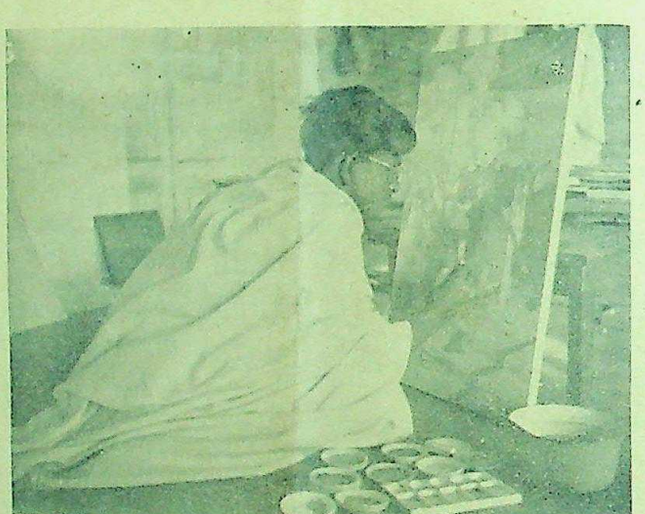

बिहार के प्रसिद्ध कलाकार श्री उपेन्द्र महारथी अपने कला-गृह में।

यहाँ किसी तूफान की चर्चा है। १९४२ में साहित्यिकों का आना कमरे में कम खतरनाक नहीं था। सरकारी पिट्ठुओं को था कि शायद साहित्यिक भी कामों के ख्याल से आते हैं। के निवास को सरकार राजनैतिक का केन्द्र मानती थी।

१९४२ के एक मुक्तभोगी ने ठीक ही कहा—"१९४२ में कहाँ पोश देशभक्त कहाँ चले गये थे भूखों मर रहे थे, कहीं ठहरने को भी नहीं मिल रही थी। आज देश की कमी नहीं लेकिन १९४२ में उँगलियों पर गिने जा सकते थे। जान हथेली पर रखकर सरकार से होली खेली है ऐसे कितने में निकल सकते हैं? जो आज कपड़ा पहन और कुछ बहुत बड़े देशभक्त बने फिर वही उस वक्त कोने में छिपे बचाने की फिक्र कर रहे थे। दुबले आदमी ने हम लोगों की से सेवा की है उस लगन ने किया है? इनकी सेवाओं को बासी और बिहार के तरुण कभी सकते।" उसने फिर गर्व के साथ "हमारा यह सौभाग्य है कि सेवा परायण कलाकार हमारे है। मुझे इस कलाकार पर नाज शान्तिप्रिय कलाकार सेवा की चेहरे पर कितनी शान्ति है। प्रति बुरे विचार नहीं। मानव अपना कुटुम्ब मानता है। न बुद्ध भगवान् का शिष्य है। उपासक है। राष्ट्रीय चित्रकार है कलाओं का नमूना रामगढ़ दिखा चुका है।"

मेरे खातिर भी इस दुबले-पतले कार को कम नहीं सताया गया। में मैं फरार था। काफी समय तक था इसकी भी एक लम्बी सरकार मेरे पीछे पड़ी थी, 'अन्डरग्राउन्ड' कांग्रेस का काम हूँ। लेकिन मैं कभी छिपा नहीं था। अपनी मूर्खता से मुझे गिफ्तार न यह दूसरी बात है।

मेरा पता पूछने के लिए को कई बार बिहार की पुलिस रही। पुलिस का कहना था कि जी जानते हैं मैं कहा हूँ। महारथी सारे पत्र सेन्सर होकर मिलते थे। छोटी चीजों पर कड़ी निगाह जाती थी। शायद मैंने बम्बई से उन्हें एक कार्ड लिखा था और स्वास्थ्य के बारे में पूछा था। उस कार्ड को पटना की गुप्तचर पुलिस ने आखिर परेशान किया।

उस कठिन और परीक्षा के दिन भी, कभी आपके चेहरे पर शिकन आई। शान्ति से भूखे और सताये मनुष्यों की सेवा में अविचल रहे। ऐसे कितने साहसी पुरुष कठिन मिल सकते हैं? आपका एकमात्र सेवा है। अपने सेवाव्रत को सचाई से निभाया। बुद्ध भगवान के अनुचर हैं। आपको सत्य अहिंसा धर्मों से अच्छा लगता है।

आप अपनी कला को बनाना चाहते। उससे मानव-

शेष पृष्ठ १८ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो सुंदर कहानियां

तो वह चोर था !

लेखक, वैनिंग पोलोक—भावानुवादक, श्री नानकचन्द्र टंडन

दरिद्रता, वैनिंग पोलोक को ऐसे कर्मों के करने की ओर प्रेरणा देती है, जिसे वह और गरीबी मनुष्य को ऐसे कर्मों के करने की ओर प्रेरणा देती है, जिसे वह अपनी आत्मा के विरुद्ध कभी नहीं चाहता। परिस्थितियाँ उसे मजबूर कर देती हैं कि वह अपनी आत्मा के विरुद्ध कार्य करे। बलजीत भी समय का मारा था, बच्चों का भूखों मरना वह देख नहीं सकता था, इसलिए उसे एक निमन्त्रण में चोरी करनी पड़ी। कहानी बड़ी सुन्दर है और हृदय पर मार्मिक आघात पहुँचानेवाली है।

दुनिया में हर बुरी चीज होती है और खास-तौर से हर बुरी चीज की बुनियाद होती है। सन् चौदह की लड़ाई का बुनियाद। सन् चौदह की लड़ाई में बलजीतसिंह और उसके साथी हिन्दुस्तानी सिपाही फ्लान्डर्स और फ्रांस के मैदानों में लड़े थे। कुल्लुनतुनियाँ और इराक की लड़ाइयों में। बलजीत के गाँव के बीस में से लौटे कोई दस एक वृद्ध सैनिक थे। वे नियत समय पर एक दूसरे के घर जाकर जश्न मनाते थे। इस जश्न में बुढ़ापा, बलजीतसिंह को हमेशा सताता रखा था। फौज में रहते हुए लड़ाई के हथियार बनाने के कारखाने में पड़कर वह तबाह हो गया था। अस्पताल से छुट्टी पाने पर न उसमें इतनी शक्ति बची थी, न इतना धन था कि वह खेती कर सकता था और न किसी की सहायता से वह खेती कर सकता था। बच्चों के लिए तीन लड़कियाँ थीं जो जवान हो

बलजीत ने कड़क कर कहा—मैं तलाशी नहीं दूँगा।

चुकी थीं। एक बड़ा लड़का, जिस पर कुछ वर्षों से वह बड़ी आशायें बाँध रखी थीं, फ्रांस की लड़ाई में चल बसा था। वर्षों हो चुके थे उसे मरे। यह भी अच्छा था कि वह दो मास पूर्व होनेवाली उसकी शादी के लिए नहीं रहा था और इसलिए कोई उसका कर्ज भर अपना करम ठोंकने के लिए नहीं रहा था। बलजीतसिंह के घर नहीं बैठी थी। उस दिन ठाकुर जगन्नाथ का बुलौवा आया था। ठाकुर के पास लेन-देन का काम था और जमीन-जथा भी थी। इस-लिए उस दिन अपने फौजी भाइयों को दावत दिया करता था। बलजीत के यहाँ न जाता, वह बदले में उसे बुला सकता था? पर किस्मत की बात, उस दिन ठाकुर की दावत में बलजीतसिंह को आड़े हाथों लेने आया क्यों नहीं करते। उस लोगों को लहँगा पहनना थोड़े ही सिखाता था।" बात खतम हुई, और लोग खाने-पीने का, इकट्ठे होने लगा। इसी में ठाकुर ने एक सोने की मुहर निकाली जिसकी प्राचीनता पर उसे बड़ा घमंड था, वह इराक में मिली थी उसे। एक एक कर सबने उसे देखा। फिर खूब हँसी-मजाक होने लगा, लोग भूल गये सोने के सिक्के को। थोड़ी देर बाद ठाकुर को ख्याल आया, तो पता चला सिक्का गुम हो गया था।

क्षण भर तो वहाँ घोर निस्तब्धता छाई रही, पर उसके बाद ही सब अपनी अपनी निर्दोषता प्रमाणित करने लगे। सभी एक दूसरे से कहते—"भाई किसी ने मजाक मजाक में लिया हो तो दे दो।" पर इसका कुछ नतीजा न निकलता देखकर तलाशी की ठानी गई। अंत में एक मुखिया ने कहा—"सब की तलाशी ले लीन जाय।" एक एक कर सबकी तलाशी ली गई, केवल बलजीत बचा। उसने तलाशी देने से इनकार कर दिया। उसके साथी अचम्भे में पड़ गये।

ठाकुर ने पूछा—तो तलाशी नहीं दोगे?" उसे विश्वास नहीं हो रहा था।

बलजीत का मुख रक्तवर्ण हो उठा। "नहीं", उसने कहा—"मैं तलाशी न दूँगा।"

सोने के सिक्के के मालिक ने फिर पूछा—"तुम इसका मतलब समझते हो?"

"मैंने सोने का सिक्का नहीं चुराया है, पर मैं तलाशी न दूँगा।"

एक एक कर सब ने नंगाझोरी दे दी थी, इसलिए बलजीत पर सबका संदेह केन्द्रित हो गया।

"मान न जाव, भैया! आखिर जिद करे से का फायदा है?"—मुखिया ने आखिरी तीर फेंका। ठाकुर क्रोधित होकर बैठक से बाहर चला गया। बलजीत कुछ न बोला। इसके बाद किसी ने उससे कुछ न कहा। वे उसकी ओर दया भरी दृष्टि से देखने लगे। बलजीत कलंक का टीका माथे पर लगाये घर लौटा।

दूसरे दिन गाँव में सर्वत्र इसी की चर्चा थी। लोग दाँतों तले उँगली दबाते, कहते 'हम तो बलजीत को कभी ऐसा नहीं समझते थे।' कोई कहता "रुपया बुरी चीज है और आदमी की नियत का क्या ठिकाना! सोना आदमी को अंधा बना देता है।" धीरे धीरे लोगों ने उससे बोलना छोड़ दिया, बहुतेरे उसे देखकर कतरा जाते। उसकी गरीबी बढ़ती गई और इस घटना के कुछ मास के भीतर ही उसकी पत्नी चल बसी। किसी ने यह जानने की चेष्टा न की कि उसकी मृत्यु कैसे हुई, गरीबी से या शर्म से। कुछ वर्षों के बाद, जब यह घटना गाँव में कहानी के रूप में प्रचलित हो गई, तब ठाकुर ने रुपये की बढ़ती के कारण बैठक और चौपाल नई बनवाई। सो बैठक के फर्श की खुदाई के एक संद में सोने का सिक्का फँसा निकला।

ठाकुर घमंडी व्यक्ति था और सहज ही अपनी गलती न माननेवाला था। फिर भी वह अन्याय का पक्षपाती न था। बलजीत के साथ भूल से जो अत्याचार हुआ था। जल्दी से जल्दी वह बलजीत के घर गया, और सिक्के के मिलने की बात बताई। अपने संदेह के लिए क्षमा-प्रार्थना भी की।

"पर", अंत में उसने कहा—"जब तुम जानते थे कि तुमने सिक्का नहीं लिया तो तुम्हें तलाशी देने में क्यों एतराज था?"

बलजीत इन वर्षों में अपनी अवस्था से अधिक वृद्ध हो गया था। गड्ढों में धुसी आँखों से उसने ठाकुर की ओर देखा। "क्योंकि मैं सचमुच चोर था," उसने भंग स्वर में कहा। "क्योंकि कई सप्ताह से मुझे और मेरे कुटुम्ब को भरपेट भोजन नहीं मिला था—और मैंने दावत की पूड़ी मिठाई जेब में भर रखी थी, अपनी पत्नी और अपने भूखे बच्चों के लिए।"

जय मातृभूमि तेरी !

लेखक, श्री करुणा सामणेर

श्री करुणा सामणेर स्याम-निवासी हैं। सन् ४२ के आन्दोलन में आप गिफ़्तार किये गये और आज भी नजरबन्द हैं। आप हिन्दी और संस्कृत के अच्छे जानकार हैं। यह कहानी भी आपने हिन्दी में लिखी है। इस कहानी में मातृभूमि के प्रेम के प्रति पागल एक युवक का चित्रण बड़ी सुंदरता तथा मार्मिकता से किया गया है। कहानी अत्यन्त सुंदर तथा प्रभावोत्पादक है।

उस दिन फ्रेंच-इंडोचाइना की राजधानी सेगाँव में बड़ी धूम-धाम थी। सारा शहर तरह तरह की सजावटों से जगमगा रहा था। जहाँ जहाँ दृष्टि दौड़ती वहाँ वहाँ एक विचित्र तथा कौतूहल-पूर्ण नवीनता दिखाई देती थी। नगर के सारे मकानों पर फ्रांसीसी झंडे गौरव-पूर्वक फहरा रहे थे। अमीर-गरीब, जवान-बुड्ढे, ऊँच-नीच सभी आनन्द की लहरों में डूबते-उतराते थे। सभी सड़कों पर शस्त्रों से सुसज्जित पुलिस की कतारें खड़ी थीं।

घड़ी में बारह बज रहे थे। पूर्व दिशा से एक बड़ा लम्बा जुलूस निकला। उसमें कई सौ लैस सिपाही सम्मिलित थे। जुलूस के बीच में एक मोटरकार थी। उसमें फ्रेंच इंडोचीन के नये वाइसराय अपनी धर्म-पत्नी सहित विराजमान थे। वे फ्रांस से कुछ ही घंटे पहले स्टीमर से उतर कर आये थे। उन्हीं के स्वागत में यह सब धूम-धाम हो रही थी।

जैसे जैसे जुलूस धीरे धीरे आगे बढ़ता था, वैसे ही वैसे चारों तरफ से जय जय की ध्वनि गूँजती थी। लाट साहब की कार पर फूलों की मूसलाधार वर्षा हो रही थी। बैंड इस प्रकार बजते थे मानो श्रोताओं के कानों को फाड़ रहे हों। प्रजा की इस अपूर्व भक्ति को देखकर नये लाट फूले न समाते थे। मुस्कराते हुए चेहरे के साथ वे बार बार अपना दाहिना हाथ उठाकर प्रजा की वन्दना स्वीकार करते थे।

आध घंटे के बाद जुलूस सड़क के एक घुमाव के पास आया। यहाँ पर भी बड़ी भीड़ लगी थी। सभी लाट साहब के दर्शन के इच्छुक थे। किसी के हाथ में फ़्रांसीसी झंडे थे तो किसी के हाथ में फूलों की मालायें। घुमाव में ज्यों ही लाट साहब की कार चक्कर काट रही थी त्यों ही अचानक एक गगन-भेदी आवाज सुनाई पड़ी। उसी क्षण क्या नजर आया कि लाट साहब की कार से घना धुँआ निकल रहा है। मोटर के कई टुकड़े हो गये हैं। उसके चारों पहिये तथा अन्य उपकरण आकाश में उड़कर यत्र-तत्र गिरकर बिखर गये हैं। सारी प्रजा घबड़ा गई। किसी की समझ में नहीं आया कि क्या हुआ? सैकड़ों सिपाही दौड़ पड़े। प्रलयकाल का-सा दृश्य सामने उपस्थित हुआ। प्रजा को डराने के लिए आकाश में गोलियाँ चलाई गईं। आस-पास के सभी लोग पकड़े गये। सब की जाँच होने लगी। सारे नगर में बड़ी हलचल मच गई।

लाट साहब, उनकी धर्मपत्नी तथा उनका ड्राइवर तुरन्त अस्पताल में पहुँचाये गये। वे बेहद घायल हो गये थे। तीनों बेहोश

सेगाँव का मातृभूमि के प्रति पागल युवक क्या यही है?

थे। घाव की पीड़ा उनके लिए इतनी असह्य थी कि अस्पताल पहुँचते-पहुँचते उनका दम निकल गया। घाव को जाँचने से पता चला कि उन पर विषैला बम फेंका गया था।

जिस वक्त सारी राजधानी में नये वाइसराय की मृत्यु का यह शोक-पूर्ण समाचार बड़वानल की भाँति चारों दिशाओं में फैल रहा था, उसी वक्त लोगों ने एक युवक को अपनी प्राइवेट कार हाँकते हुए नगर के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट के पास जाते हुए देखा। किसी को नहीं मालूम कि वह कौन था? उसका वहाँ जाने का क्या प्रयोजन था? उसकी आयु ज्यादा नहीं थी—होगी कोई तेईस-चौबीस वर्ष की। उसके चाल-ढाल, रंग-ढंग से यह स्पष्ट था कि वह मामूली खानदान का नहीं है।

सुपरिन्टेन्डेन्ट के आफिस में पहुँचते ही उसने पहले अपना कार्ड भेजा। १५ मिनट के बाद वह भीतर बुलाया गया। सुपरिन्टेन्डेन्ट के सामने खड़े होकर वह शान्ति-पूर्वक कहने लगा—"मैं अपने को आपके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ में सौंपने आया हूँ। मैं वही आदमी हूँ जिसने आध घंटे पहले वाइसराय की कार पर बम फेंका है। जो लोग पकड़े गये हैं, उनकी रिहाई कर दीजिये। वे निरपराध हैं। मेरी बदौलत उन्हें तकलीफ नहीं होनी चाहिए।" अपनी पाकेट से एक चीज निकाल कर सुपरिन्टेन्डेन्ट के टेबुल पर रखते हुए उसने कहा:—"यह है उसी बम का केस जिससे मैंने उस गोरे का संहार किया है।"

सुपरिन्टेन्डेन्ट को, जो एक अनामीस था, यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने उस युवक से पूछा—"आखिर तुम्हारे ऐसा करने का क्या अभिप्राय था?"

"यह भी कोई प्रश्न है?" युवक ने हँसते हुए कहा, "आपको ऐसा पूँछते हुए लज्जा नहीं आती? जिस मातृभूमि के वक्षस्थल पर आप खा-पीकर इतने बड़े हो गये हैं, उसी मातृभूमि को दूसरी जाति की गुलाम बनते देखकर आपको थोड़ी-सी शर्म भी नहीं आती? जिस देश की हमारे बाप-दादाओं ने खून बहाकर रक्षा की थी वही देश आज दूसरी जाति द्वारा पददलित हो रहा है! यह कहाँ का न्याय है? कहाँ की मनुष्यता है? आप लोगों के चेहरे विदेशियों की चरण-धूलि चाटते-चाटते इतने निर्लज्ज हो गये हैं कि गुलामी जैसी अधम चीज को भी आप स्वर्गानन्द-सा समझ रहे हैं!"

युवक के इन कठोर वचनों को सुनकर सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब भभक उठे। उस वक्त ऐसा प्रतीत होता था कि मानो किसी ने उनके हृदय में बरछी घुसेड़ दी हो। क्रोध के मारे उनका चेहरा एकदम लाल हो गया। उनका शरीर थरथर काँपने लगा। झट उन्होंने उस युवक को बन्दीगृह में भेजने की आज्ञा दी। "जय हो मातृभूमि की—जय हो मातृभूमि की—" ऐसा चिल्लाते हुए युवक ने हवालात में पदार्पण किया।

* * *

एक महीना बीत गया। उस नवजवान अभियुक्त का अंतिम फैसला सुनाने का दिन आया। सेशंस की हाईकोर्ट दर्शकों से खचाखच भरी थी। सब में फैसला सुनने की अपूर्व उत्सुकता थी।

यथा समय जज अपने आसन पर आसीन हुए। उन्होंने निर्णय-पत्र पढ़ना आरम्भ किया। फैसले का अन्तिम वाक्य यह था—"अमुक दफा के अनुसार अभियुक्त को फाँसी की सजा हुई।" "फाँसी" शब्द सुनते ही सभी श्रोताओं के चेहरे फीके पड़ गये। सभी एक दूसरे को कान्तिहीन नेत्रों से ताकने लगे। किसी के मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला।

इसी सन्नाटे के बीच अचानक किसी के खिलखिलाकर हँसने की आवाज सुनाई पड़ी। लोगों ने सिर उठाया तो देखा कि वह नवजवान अभियुक्त कुछ कहने जा रहा है। जब सब लोग शांत हो गये तब वह गम्भीरता-पूर्वक बोला:—"प्यारे देश-बन्धुओ! आज के दिन मैं अपने जीवन को कृतकृत्य समझता हूँ। मातृभूमि की बलि-वेदी पर अपने को निछावर करने की जो अभिलाषा मुझमें कई वर्षों से थी आज वह पूरी हो रही है। मैं अपनी प्यारी मातृभूमि को दूसरी जाति द्वारा पददलित होते हुए कदापि नहीं देख सकता। मेरे लिए तो मृत्यु इससे कहीं बढ़कर है। केवल इस जन्म में ही नहीं, मैं जन्मजन्मांतर तक इस दीन मातृभूमि को गुलामी के बन्धनों से मुक्त करने का प्रयत्न करता रहूँगा। मैं .....।" वह कुछ और कहना चाहता था परन्तु पुलिस ने उसे पकड़कर बिठा दिया। इसके बाद कचहरी भी विसर्जित हुई।

* * *

तीन दिन के बाद। प्रभात का सुहावना समय था। उषा रानी अपने दिव्य आभरणों से सज-धजकर संसार को पुनः दर्शन देने आई थी॥ पक्षी-गण खाने-पीने की खोज में इधर-उधर उड़ रहे थे। फूलों की कलियाँ खिल रही थीं। पूर्व दिशा से सूर्य भगवान् अपना रथ हाँकते हुए तेजी के साथ चले आ रहे थे। सर्वत्र आनन्द की झलक दिखाई दे रही थी। इसी भव्य अवसर में, सेगाँव जेल के एक कोने में, इसके विपरीत दूसरा ही दृश्य उपस्थित था। पन्द्रह लैस सिपाहियों ने एक नवजवान अभियुक्त को उसके वार्ड से निकाला और उस "काले मकान" में ले गये जहाँ उसके कई साथी पहले से मौजूद थे। आश्चर्य की बात थी कि ऐसे समय में भी उस अभियुक्त के मुख-मण्डल पर शोक, चिन्ता और दुख का चिह्न मात्र नहीं था। वह हँस-हँसकर और अपनी भाषा में चिल्ला-चिल्लाकर गान गाता था। "काले मकान" के दरवाजे पर पहुँचते-पहुँचते उसका गान समाप्त हुआ। भीतर प्रवेश करने के पूर्व वह पृथिवी की ओर नतमस्तक होकर उससे कहने लगा:—"जय हो तू मातृभूमि की—जय हो उस वीरों की! जो व्यक्ति समाज या राष्ट्र या अन्य व्यक्ति, समाज या राष्ट्र के हो उसका सर्वनाश हो! नाश हो शोषक शासन-प्रणाली का!"

हलवे का स्वाद खान से मिलता है

आप हमारा मिठाइया—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

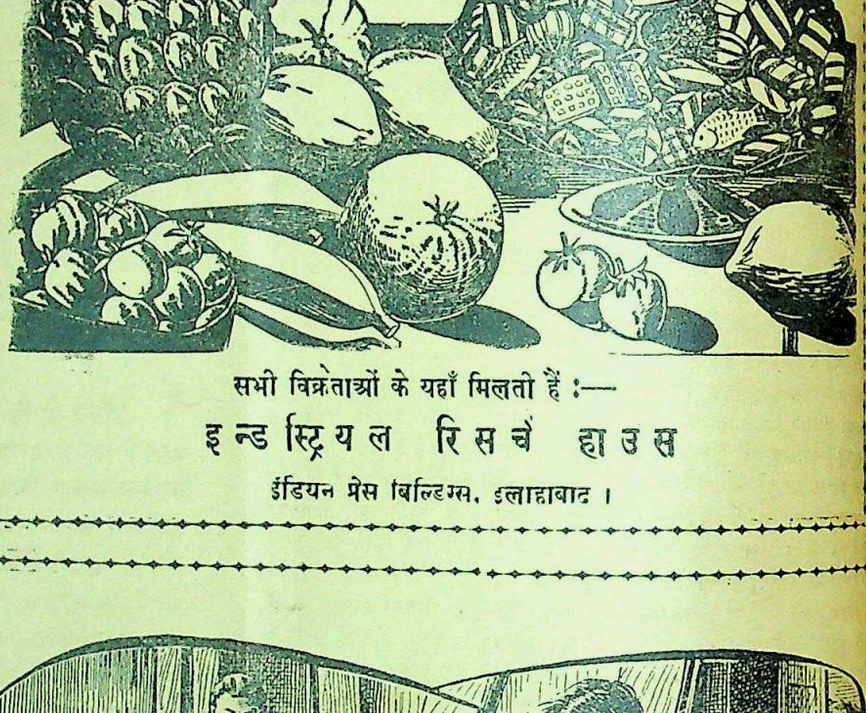

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

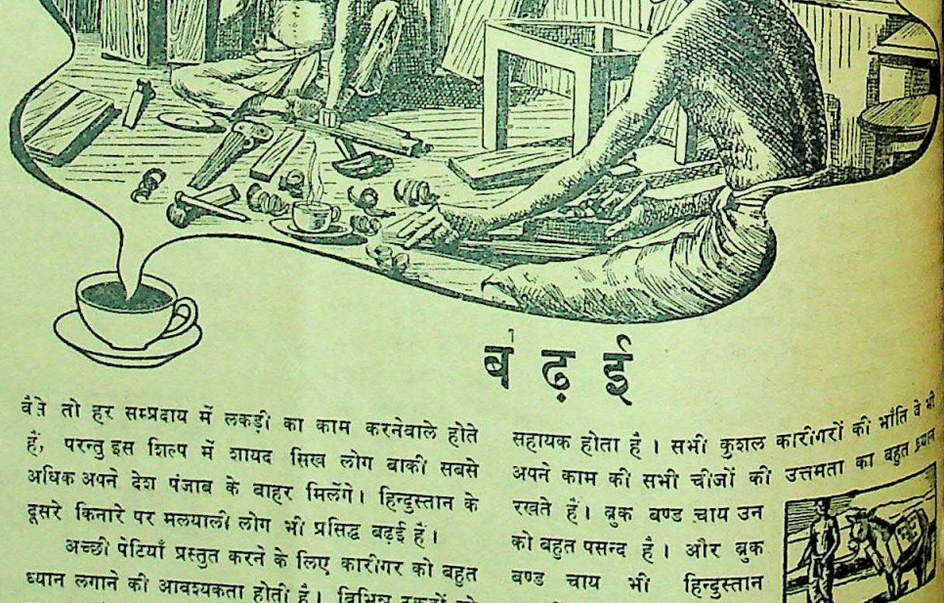

बढ़ई

बैसे तो हर सम्प्रदाय में लकड़ी का काम करनेवाले होते हैं, परन्तु इस शिल्प में शायद सिख लोग बाकी सबसे अधिक अपने देश पंजाब के बाहर मिलेंगे। हिन्दुस्तान के दूसरे किनारे पर मलयाली लोग भी प्रसिद्ध बढ़ई हैं।

अच्छी पेटियाँ प्रस्तुत करने के लिए कारीगर को बहुत ध्यान लगाने की आवश्यकता होती है। विभिन्न टुकड़ों को बराबर जोड़ने के लिए स्पष्ट दृष्टि तथा पुख्ता हाथ चाहिए।

इसी लिए हिन्दुस्तान के बढ़ई खाने-पीने के बारे में बहुत सावधान होते हैं। परन्तु चाय का प्याला उनके कार्य में सहायक होता है। सभी कुशल कारीगरों की भाँति वे भी अपने काम की सभी चीजों की उत्तमता का बहुत ध्यान रखते हैं। ब्रुक बण्ड चाय उन को बहुत पसन्द है। और ब्रुक बण्ड चाय भी हिन्दुस्तान भर में कारीगरों को बगीचों से ताजी पहुँचती है।

बगीचों से ताजी

ब्रुक बण्ड

दो पत्तियाँ और एक कली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमण्डल

आज की सुसभ्य नारियाँ किधर जा रही हैं ?
लोक तथा युग-धर्म को पहचानना जरूरी क्यों है ?

लेखक, श्री रामपरीक्षा सिंह 'पुष्प' एम० ए०

...ललनायें अपने उच्च आदर्श ...चरित्र के लिए सर्वदा से ...रही हैं। इनको लक्ष्य ...कहा गया था—"यत्र नार्यस्तु ...तत्र देवताः।" किन्तु दुःख ...प्रायः ललनायें कहना यह ...विलास की गुड़िया बन गई हैं ...नहीं भविष्य में क्या बनेंगी ? ...है क्यों ? मैं कहूँगा पथ-...के कारण। यह पथ-भ्रष्टता ...नहीं, नरों में भी है; परन्तु ...कहलानेवाली स्त्री-जाति ...ध्यान आकर्षित करना है। ...ग्रामीण नारियों का क्या ...शिक्षा-दीक्षा से कोसों दूर रक्खी ...सभ्य जगत् की एक झाँकी ...देखने को नहीं मिली है। इसका ...निस्सन्देह उस स्वार्थान्ध पुरुष ...है जिसने शताब्दियों से स्त्री-जाति ...पिंजरे में रखकर उन्हें बिलकुल ...बना डाला है। परन्तु पश्चिमी ...पश्चिमी शिक्षा में अपने को ...विश्वविद्यालयों में पढ़ने और ...देवियों के लिए कौन जिम्मेदार ...वह अपने आदर्श से दूर नहीं ...है! इनमें विद्यानुराग के स्थान ...परस्ती का ही बोल-बाला ...और अन्य स्वास्थ्यप्रद ...इनका कोई सम्बन्ध नहीं। ...में स्वास्थ्य कोई मूल्यवान् ...है। धर्म-कर्म में आस्था ...अपनी हँसी कैसे करा सकती ...इनके लिए पागलों का धन्धा ...है। यह देवियाँ आपाद-मस्तक ...में ही अपने जीवन की सफ-...है। यदि यह अपना धर्म किसी ...मानती हैं तो वह है स्वेच्छा-...एक बात के लिए वह बहुत ही ...दीखती हैं; और वह है पुरुषों से ...होड़। इनको इस बात का ...कि हिन्दुस्तान विलायत नहीं है; ...आना नकल यहाँ नहीं ...इस प्रकार की होड़ में पड़ ...जीवन दिनों-दिन दुर्गति को ...जा रहा है। आर्य रमणी के ...देवता की भाँति पूज्य होता है; ...सुसभ्य कहलानेवाली ...पति पुजारी की भाँति फर्मा-...सेवक की भाँति आज्ञाकारी ...। पतियों में अविश्वास यहाँ ...है कि अब पति-त्याग (तलाक) ...एक विचारणीय प्रश्न बन ...और स्त्री के अलग-अलग क्षेत्र ...प्रकार पुरुष के ऊपर जीविको-...का भार है, उसी प्रकार स्त्री पर ...और शिशुपालन का भार है। ...पुरुष अपने दायित्व की अव-...कुटुम्ब का अभिशाप बनता

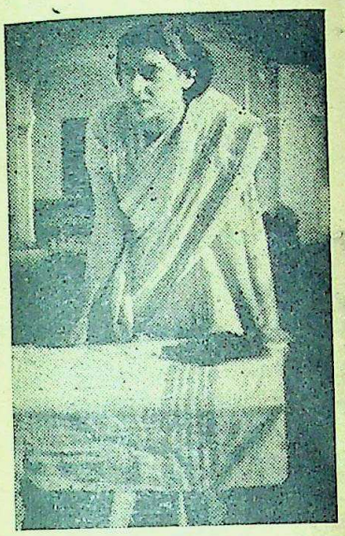

श्रीमती इंदिरा गांधी आजकल नैनीताल में हैं।

है, उसी प्रकार स्त्री भी अपने दायित्व से भागकर कुटुम्ब और समाज दोनों के लिए घातक सिद्ध होती है।

आज हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं कि मेज और कुर्सियों पर बैठनेवाली तितलियाँ गृहस्थी को रौरव नरक समझ कर उससे दूर भाग रही हैं। सीना-पिरोना, भोजन बनाना, बड़े-बूढ़ों की सेवा करना, घर में झाड़ू लगाना इत्यादि उनकी शान के खिलाफ़ है। शिशु-पालन में भी उनकी अभिरुचि नहीं। मेनका की तरह शकुन्तला को पैदा करके छुट्टी ले लेनी होती, तब तक तो ठीक था; किन्तु एक अबोध बच्चे को गले लगाकर पड़े रहने और कपड़े गन्दे करने की फ़ुर्सत किसे है ? ऐसे माता-पिता का सन्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? महाकवि अकबर ने क्या ही उपयुक्त कहा था :—

"अतफ़ाल में बू आये क्यों,
माँ बाप के एतबार की।
दूध डिब्बे का पिया,
तालीम है सरकार की॥"

पर्दे को हटा फेंकना तो ठीक था; किन्तु कब ? जब कि बेशर्मी को पास न बुलाया जाता। रँगीली और शौकीन मेमों को पुरुषों के साथ बेहयाई से नाचते देखकर कितनी देवियों के मन में बड़ा कौतूहल हुआ और इन्होंने भी ललित-कला की मिट्टी पलीद करने के लिए कमर कस ली है। ऐसी देवियों को इस प्रकार के गाने बहुत पसन्द हैं—

"ज़िन्दगी है प्यार से प्यार में बिताये जा।
हुस्न के हुजूम में अपना दिल लुटाये जा॥"

जब सभ्य और शिक्षित कहलानेवाली या बननेवाली माताओं की, बच्चों के लिए ऐसी ट्रेनिंग है, तो फिर ऐसे बच्चों का खुदा ही हाफिज है, कहना न होगा कि नई रोशनी में दीक्षित इन माताओं की सन्तानों का सभ्य और सुसंस्कृत होना उतना ही कठिन हो गया है, जितना कि अवध के अधिकांश ताल्लुकदारों का विवेकशील और समाजसेवी होना।

आज की सुसभ्य देवियों में सेवा और त्याग कहाँ है ? पुरुषों में अब भी शिवा और प्रताप की कमी नहीं है; पर स्त्रियों में झाँसी की रानी—"खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी"—श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित और कैप्टेन लक्ष्मी कितनी हैं ? क्या राष्ट्र-सेविका बनना इनका धर्म नहीं है ?

अभी समय है। हमारी गृहदेवियाँ अपनी प्राचीन परम्परा का स्मरण करें; लोक-धर्म और युग-धर्म को पहचानें, मेहँदी और महावर छोड़कर एक बार फिर रण-चंडी का उग्र रूप धारण करें, फिर देखें यह कलियुग उनके लिये सतयुग बन जाता है। निशाचरों के बीच रहकर भी खरे स्वर्ण की तरह चमकनेवाली सीता और सती सावित्री को यदि हम आदर्श-कल्पना भी मान लें तो क्या चित्तौड़ की चिता में चरित्र की रक्षा करनेवाली वीरांगना पद्मिनी हमारी देवियों का पथ-प्रदर्शन करने के लिए पर्याप्त नहीं है ?

जैहिन्द गीत मुफ़्त !

आज़ाद हिन्द फ़ौज के जोशीले गीतों का घर घर में प्रचार करने के लिए ये पुस्तकें मुफ़्त बाँटी जा रही हैं। आज ही १ कार्ड डालकर मँगा लीजिये।

संगीत कार्यालय, हाथरस—यू० पी०।

AC 60

शीराज़ का भोज

प्रसिद्ध ईरानी कवि, शीराज़ का शेख सादी एक बार दूसरे नगर में एक धनी व्यापारी के यहां गया, जहां उसका बहुत काफ़ी आतिथ्य-सत्कार किया गया। भोजनोपरान्त उसने शीघ्र एक आह भरी और कहा, "आह, दावत-ए-शिराज़" (आह, शीराज़ का भोज)। व्यापारी नें असंतोष का अनुभव करते हुये अपने प्रख्यात अतिथि के अनुकूल भोजन-व्यवस्था करने के दूने प्रयत्न किये। किन्तु प्रत्येक भोजन के उपरान्त वही "आह, दावत-ए-शीराज़" के उद्गार निकलते। तीन दिनों के बाद कवि चला गया। कुछ समय बाद वह व्यापारी शीराज़ गया और उसने कवि के घर जाकर यह पता लगाने का संकल्प किया कि उसके भोजन से शीराज़ का भोजन किस प्रकार श्रेष्ठ है। वहां वह साधारण भोजन पाकर चकित हुआ और क्रुद्ध भी। कवि ने कहा, "यह सरल और इतना सस्ता भोजन है कि यदि आप चाहें तो साल भर तक ठहर सकते हैं।" उसने समझाया कि यही सच्चा आतिथ्य-सत्कार है जिसमें गृहस्थ और अतिथि दोनों को असुविधा नहीं हो सकती। हम भी अपने अतिथियों को सादा भोजन प्रस्तुत करते हुये सद्गृहस्थ साबित हो सकते हैं। हम प्रत्येक भोजन को "शीराज़ का भोज" बना सकते हैं। खाद्य-सामग्री बहुत कम है और सबसे अधिक कष्ट गरीब उठाते हैं। सदैव की अपेक्षा यह समय ईरान के विद्वान कवि के उपदेश को अनुकरण करने का है।

खाद्य बचाना प्राण बचाने के बराबर है।

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्मी जगत् में भी पाकिस्तानी भावना क्यों ? राष्ट्रीय फिल्मों के विरोधी आन्दोलनों के लिए क्या हो ?

लेखक, श्री उमेश जोशी

अब तक फिल्मी संसार पाकिस्तानी ख्यालातों से बचा हुआ था, लेकिन इधर कुछ महीनों से यहाँ भी पाकिस्तानी विचार, दिन प्रतिदिन बढ़ रहे हैं। इस समस्या को लेकर दो एक चित्र भी निर्मित हुए हैं। इस प्रकार के विचारों के निर्माता लोग राष्ट्र की अखण्डता फूटी आँखों भी नहीं देख सकते। वह समय समय पर उन चित्रों के प्रदर्शन में अड़चन भी डालते हैं जो कि राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत हैं। इस प्रकार के लोग हमेशा परदे की ओट में ही काम किया करते हैं। इतना उनमें साहस नहीं कि वह सीधे राष्ट्रीयता पर कीचड़ उछाल सकें। कुछ लोगों के द्वारा वह अपने निम्नकोटि के उद्देश्य को सामने लाते हैं। कुछ महीनों पहले सुप्रसिद्ध कलाकार श्री पृथ्वीराज कपूर "दीवार" फिल्म के प्रदर्शन पर इसी प्रकार के लोगों ने विरोध प्रकट किया था। वह नाटक पूर्ण राष्ट्रीय था, हिन्दू-मुस्लिम एकता को लिये हुए। किन्तु हिन्दू-मुस्लिम एकता—पाकिस्तानवाले क्यों चाहने लगे ? उन्होंने कुछ लोगों को प्रोत्साहन दिया। अतः "दीवार" नाटक कुछ दिनों के लिये बन्द कर दिया गया और उसमें कुछ परिवर्तन करके उसका पुनः प्रदर्शन किया गया। इसी प्रकार कुछ दिन हुए बम्बई में "चालीस करोड़" राष्ट्रीय चित्र का प्रदर्शन किया गया था। यह चित्र सेन्सर से पास हो चुका था। फिर भी कुछ लोगों ने चित्र के प्रदर्शन में अड़चन डालनी प्रारम्भ की। परदा फाड़ डाला गया। हाल में काफ़ी दर्शकों के होते हुए भी कुछ प्रदर्शनकारी अपने काम में सफल हो गये, यह बड़े दुख की बात थी। "चालीस करोड़" फिल्म में हिन्दू-मुस्लिम एकता दिखलाई गई है। महात्मा गांधी और मिस्टर जिन्ना की तसवीर एक साथ प्रदर्शित की गई है। इस बात को पाकिस्तानी कैसे सहन कर सकते थे, वह तो डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग पकाने का ख्वाब देखते रहते हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि चित्र का प्रदर्शन नहीं हो सका। उस चित्र की जगह दूसरे सामाजिक चित्र का प्रदर्शन किया गया। यह बड़े दुख की बात है कि बम्बई में कांग्रेस मिनिस्ट्री होते हुए भी "चालीस करोड़" का प्रदर्शन न हो सका। कांग्रेस मिनिस्ट्री भी इस समस्या पर मौन रही। उसने भी कोई दिलचस्पी नहीं ली। इन सबका परिणाम राष्ट्र-हित कदापि नहीं हो सकता। आजकल राष्ट्रीय चित्र बहुत बन रहे हैं, लेकिन उन सब राष्ट्रीय चित्रों का भविष्य अन्धकारमय है। जब राष्ट्रीय चित्रों का प्रदर्शन ही न हो सकेगा, तो उनके बनाने में क्यों लाखों रुपया खर्च किया जावेगा ? पाकिस्तान के पुजारी प्रचार करने में बड़े एक्सपर्ट होते हैं। उन्होंने अपनी मनमानी के बल पर प्रान्तीय चुनावों में जिस प्रकार से विजय प्राप्त की उसी प्रकार के कार्य वह फिल्मी-संसार में करने लगे हैं, चन्द मुस्लिम निर्माताओं के इशारे पर ! अब सुना गया है कि सेन्सरवालों ने सार्टीफ़िकेट वापस ले लिया है और चित्र का भविष्य डावाँ-डोल है ! यदि इस मनमानी तथा व्यर्थ में प्रदर्शन करनेवालों के खिलाफ कुछ न किया गया और चुपचाप सहन कर लिया गया तो फिल्मी-संसार की प्रगति राष्ट्रीय दृष्टि से मन्द पड़ जायेगी। विचार यह करना है कि लाखों रुपया जो चित्र-निर्माण में खर्च होता है, और यदि प्रदर्शन कार्यों के विरोध पर ही लाखों रुपया खटाई में पड़ जाता है तब हमारा सिनेमा-व्यवसाय कदापि तरक्की नहीं कर सकता।

अन्त में हमारा निवेदन यही है कि सभी निर्माताओं को सामूहिक रूप से इस प्रकार की मनमानी के खिलाफ एक प्रस्ताव पास करना चाहिए। एक डेपूटेशन प्रधान मन्त्री के पास जाना चाहिए। उनके सामने सम्पूर्ण परिस्थिति को रखना चाहिये। उनसे अनुरोध करना चाहिये कि वे अपना पूर्ण सहयोग इस कार्य के लिए प्रदान करें। क्योंकि राष्ट्रीय चित्रों के प्रदर्शन पर देश आजादी की मंजिल तक पहुँचने में कुछ न कुछ सफलता तो प्राप्त करेगा ही।

सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेत्री अंजली देवी।

दिन चढ़े पर

सवेरे से काम करते करते ग्यारह बजने आये इस समय एक प्याला चाय पीने से आपकी स्फूर्ति और एकाग्रता दुबाला हो जाती है। आप आफिस के बाबू हों या घर की गृहिणी, मजदूर हों या कलाकार, चाय आपको आनन्द व खुशी से भर देती है। जो चाय-प्रेमी हैं, चाय के गुण-अवगुण समझते हैं, उन्हें से भी बहुतों को इसका पूरा पूरा आनन्द नहीं मिलता क्योंकि अच्छी चाय बनाने के कुछ नियमों पर वे ठीक ठीक ध्यान नहीं देते। जब भी आप दुखी थके हुए, उदास या अकेले हों चाय पीजिये परन्तु ध्यान रखिये चाय ठीक से बने।

अच्छी चाय बनाने का तरीका

१ केतली में चाय न सिझाइये। सिझाने का बर्तन अलग रखिये।
२ सूखी चाय डालते वक्त वह बर्तन सूखा व गर्म रहे : इससे चाय का रंग व स्वाद ठीक बनता है।
३ हर प्याले के लिये एक चम्मच, और बर्तन के लिये एक चम्मच तथा सूखी चाय की पत्ती उसमें डालिये।
४ उसी वक्त का उबला हुआ पानी डालिये—पहले का उबला, कम या ज्यादा उबला पानी मत डालिये। बुदबुदा उठने पर ही पानी उबलता है, उसके पहले नहीं।
५ चाय को पाँच मिनट से कम न सिझाइये।
६ प्यालों में चाय डालकर तब उसमें दूध व चीनी मिलाइये।

चाय

हर वक्त चाय का वक्त

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

भारतीय चायों में सर्वश्रेष्ठ

लिपटन की

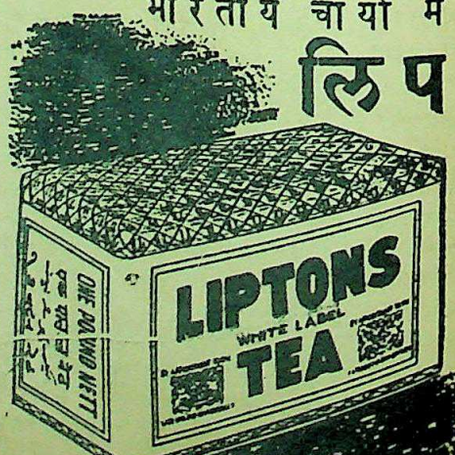

वहा इ
ले बु
चा य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...म अकाल से भी मोर्चा लेंगे

...द्यार्थी-कांग्रेस की एक महत्त्वपूर्ण योजना

लेखक, श्री नारायणदत्त तिवारी बी० ए०

...आया, खौफनाक, कँपकँपाने ...लिये, वर्णन की सीमा के ...की नालायकी और बद- ...का एक बदतर नमूना।' ...—'डिस्कवरी आफ़ इंडिया' में) ...के शहरों या ग्रामों में बिखरे ...गण जहाँ कहीं भी हों, ...को पुनः न आने दें। सदा ...कि कहीं इम्तहान में अपने फेल ...जाने के नतीजे की लिस्ट ...हमें मरते हुए भूखों और ...बढ़ती हुई संख्या भूल जाये। ...कि पास-पड़ोस के देहात, शहर, ...में हिन्दुस्तानी भाई भूखों ...और हम अपनी थोड़ी-बहुत पूँजी ...पर अपने उज्ज्वल भविष्य के ...ही रह जायँ और दुनिया हमें ...अव्यावहारिक या निकम्मा ...।

...सरकार के भूतपूर्व भोजन-सदस्य सर ...श्रीवास्तव को चलते-चलाते के० ...आई० की उपाधि मिली है।

...और शिमला में चलनेवाली ...से भी अधिक महत्त्वपूर्ण खबर ...अकाल की सम्भावना है। ...साम्राज्यवाद को पोषित करनेवाली ...आर्थिक प्रणाली—देश के कई ...वर्ष का न होना—संसार-व्यापी ...—चोर बाजार और घूसखोरी के ...प्रचार—इन सब कारणों ने ...परिस्थिति को अत्यन्त निकट ...है। प्रत्येक प्रान्त से 'भूख' और ...से बचाव की दारुण ध्वनि आ ...स्थिति भी विषम होती जा रही ...सरकार के खाद्य-सदस्य ने हाल ...घोषित किया था कि उचित ...और सहायता के न होने पर ...सारे भारत की राशनिंग-प्रणाली ...सकती है। बाहर की दुनिया से भी ...सहायता आने की सम्भावना नहीं ...के भूतपूर्व प्रेसीडेंट हर्बर्ट ...सद्भावना के मिशन को लेकर ...हिन्दुस्तान आये थे, पर यह केवल ...राजनीतिज्ञों का एक नैतिक ...था। इंडोनेशिया के डाक्टर ...ने अवश्य पंडित नेहरू को भारत ...लाख टन चावल देने का ...किया है, पर वह खतरे को दूर करने ...काफी नहीं है। कांग्रेसी मंत्री-मंडल स्थापित तो अवश्य हो गये हैं, पर वह इस खतरे का मुकाबिला जनता के सहयोग और बाहरी मदद के बिना नहीं कर सकते।

ऐसी अवस्था में क्या हम भारतीय विद्यार्थी खामोश, चुप्पी साधे बैठे रह सकते हैं? क्या अगस्त-क्रान्ति के कहे जानेवाले अग्रदूत, भारत के भावी निर्माता—केवल अँगुलियों पर आँकड़े गिननेवाले कोरे अर्थ-विज्ञानी बनकर ही अकाल का मुकाबला करेंगे? हम लोगों की जिम्मेदारी 'आई० एन० ए० दिवस' या 'एशिया छोड़ो दिवस' को मना कर ही खत्म नहीं हो जाती। हम केवल सांकेतिक गुड्डे मात्र नहीं हैं और न केवल प्रदर्शनकारी ही हैं। क्या यह विश्वास करने योग्य बात है कि माननीय पन्त जी बिना हमारी और जनता की सहायता अथवा सहयोग के एक व्यक्ति को भी यू० पी० में नहीं मरने देने की अपनी योजना में सफल होंगे?

अब वह पुनीत अवसर आ गया है जब कि हमें अपना सबसे महत्त्वपूर्ण इम्तहान दुर्भिक्ष-निवारण और अकाल के विरुद्ध स्थापित किये जानेवाले जन-मोर्चे में शामिल होकर देना है। अगर उस मोर्चे की रक्षा करते हुए हमें भी भूखा मरना पड़े, तो याद रखें, हमारे गले के नीचे उतरनेवाला आखिरी भोजन का कौर भी पास के तड़पते हुए भूखे साथियों का भी आखिरी निवाला हो। अगर इस स्फूर्ति और उद्देश्य से हम अखिल भारतीय विद्यार्थी-कांग्रेस के 'अकाल-विरोधी' प्रोग्राम को लेकर चलें, तो अवश्य हमारी मशाल ऊँची रहेगी। विद्यार्थी-कांग्रेस की वर्किंग-कमेटी की बनारस-मीटिंग में पास की हुई 'अकाल विरोधी' योजना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, इसलिये मैं उसे ज्यों का त्यों, विद्यार्थी भाइयों की सुविधा के लिये नीचे दे रहा हूँ:—

.....अखिल भारतीय विद्यार्थी-कांग्रेस की यह वर्किंग कमेटी भारत के राष्ट्रीय विद्यार्थियों से अपील करती है कि वह अकाल से मोर्चा लेने के लिये अपने को तत्पर रखें। इस दृष्टि से यह कमेटी विद्यार्थी-कांग्रेस के सब शाखाओं के सम्मुख निम्नलिखित प्रोग्राम रखती है:—

(१) 'विद्यार्थियों से प्रार्थना करो कि वे एक हफ्ते में एक खुराक खाना न खायें और इस प्रकार बचनेवाले अन्न को अपने स्थान की विद्यार्थी-कांग्रेस की शाखा को दे दें जो कि उसे स्थानीय अधिकारियों को 'अन्न-बैंक' या 'विद्यार्थी फूड-रिजर्व' में रखने के लिए दे दें। यह 'फूड-रिजर्व' अकाल के समय अधिकारियों द्वारा बाँटने के काम में लाया जायेगा।

(२) गांधीजी के वक्तव्यानुसार टोली बनाकर स्थान स्थान पर जाओ और प्रत्येक किसान से खाली जगहों और खेतों पर अनाज बोने के लिए कहो। प्रत्येक गाँव में कांग्रेसी मंत्रि-मंडलों के द्वारा ग्राम-पंचायतें खोली जा रही हैं। इन पञ्चायतों से 'गेहूँ व अनाज बैंक' स्थापित करने के लिए प्रार्थना करो।

(३) विज्ञान, कृषि और डाक्टरी पढ़नेवाले विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अपने को स्थानीय कांग्रेसकमेटियों के सुपुर्द कर दें ताकि अकाल के पड़ने पर वे अकाल-पीड़ितों की सेवा कर सकें।

भूख के इस चैलेंज को क्रान्ति की पुकार से कम न समझना चाहिए। यह सच है कि भूखे ही क्रान्ति के सृष्टा होते हैं, पर भूख से भयानक व नृशंस मौत भी होती है। भूख की आवाज क्रान्ति की ही आवाज है। एक हफ्ते में एक खुराक खाना अन्न के रूप में इकट्ठा कर लिया जाये। अगर दो लाख विद्यार्थी इस प्रकार का त्याग करेंगे तो वह चौदह हजार आदमियों को खिला सकते हैं। 'करो या मरो' की दूसरी आवृत्ति आपके सामने है—तो साथियो!.....आगे कदम...।

हमाम

सब के लिये बड़ा साबुन अथवा यह कह लीजिये कि बड़ा साबुन छोटे दामों में। इसके गुणों की सुप्रसिद्धता, इसका खास वज़न और कम दाम, जब कि हर चीज़ की क़ीमत बहुत बढ़ गई है, और इस सुगंधित तथा गाढ़े झाग ने इसे हिन्दुस्तान का सबसे बढ़िया साबुन सिद्ध कर दिया है।

स्टाक हर जगह उपस्थित है
अपने दूकानदार से हमाम माँगिये

दी टाटा आयल
मिल्स कं० लि०

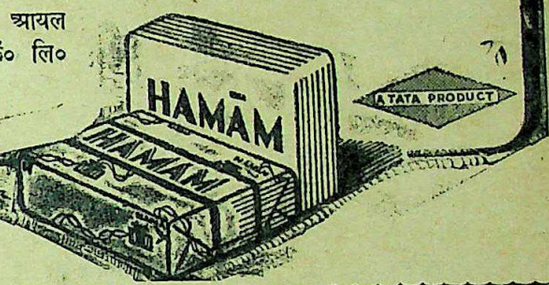

यह जल-अभेद्य
-और नमी-विरोधक है!

दांतों को ६० प्रतिशत अधिक चमकीला और स्वच्छ करने में प्रभावशाली।

विकार-विरोधी शीशे में बंद।

साल भर की गारंटी।

पशुओं के बालों से रहित

वितरक: व्यापारी निर्यात-संबंधी पूछताछ के लिए पूछिए: एल० डी० सेमूर एंड कं० (इंडिया) लि० बम्बई, कलकत्ता, कराँची, मद्रास।

डा. वेस्ट्स टूथ ब्रुश और टूथ पेस्ट

Copyright

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य-चर्चा

आम की गुठली का उपयोग क्यों?

अन्न की इस महँगी के समय में यह स्वास्थ्यवर्द्धक है

लेखक, श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालंकार

इस लेख के लेखक प्रसिद्ध भारतीय चिकित्सक श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालंकार।

भारत में रहनेवाले सब मनुष्यों के लिए ही नहीं, पशुओं के लिए भी इस समय हमारे देश में पर्याप्त भोजन नहीं है और यह कमी अभी काफी समय तक बनी रहेगी, ऐसी सम्भावना की जा रही है। पशुओं के लिए चारा इतना कम है कि भारतवर्ष की सारी पशु-संख्या के ७८·५ प्रतिशत का ही इससे गुजारा हो सकता है और पशुओं का दाना तो केवल २९·१ प्रतिशत के लिए ही काफी हो सकेगा। इस हिसाब में बकरी, भेड़, घोड़े, खच्चर और गदहे नहीं गिने गये हैं। सामने दीखनेवाले दुर्भिक्ष में चारे और दाने में कमी और भी अधिक बढ़ जायेगी। इन कमियों को पूरा करने के लिए इज्जतनगर की पोषक पदार्थों पर अनुसन्धान करनेवाली प्रयोगशालायें भोज्य पदार्थों के नये स्रोतों को खोजने में लग गई हैं। इस खोज ने आम की गुठली के अन्दर की गिरी को पशुओं और मनुष्यों के भोजन के रूप में प्रयोग किये जाने की बात बताई है। अब तक, गुठलियाँ कूड़े-कचरे में फेंक-कर बरबाद कर दी जाती रही हैं।

गिरी के रासायनिक विश्लेषण से पता चला है कि इसमें प्रोटीन, कर्बोदित (कार्बोहाइड्रेट्स) और वसा प्रचुर परिमाण में रहते हैं जो शरीर को पोषण प्रदान कर सकते हैं। सुखाई हुई गिरी का विश्लेषण यह है—

अपरिष्कृत प्रोटीन	८·५० प्रतिशत
ईथर सत्व (ईथर एक्सट्रैक्स्ट)	८·८५ ,,
कर्बोदित	७४·४६ ,,

२ बैलों के भोजनों में गुठली को शामिल करके देखा गया है कि इसकी प्रोटीन में पचास प्रतिशत पचाये जाने की योग्यता है। प्रारम्भ में पशु इसे खाने में अनिच्छा दिखाते हैं परन्तु दो-तीन दिन बाद खाना शुरू कर देते हैं और बाद में तो वे इसे बड़े चाव से खाते हैं। निरीक्षण के तीन महीनों के अन्दर पशुओं का औसत भार तैंतीस पौंड बढ़ गया था। देखने में भी वे पहले से स्वस्थ और खुशहाल नजर आने लगते हैं।

३ देहात के तीन बैलों के ऊपर किये गये परीक्षण बताते हैं कि गुठली के अपरिष्कृत प्रोटीन, ईथर सत्व और घुलनशील कर्बोदित में सम्मिलित पचने की योग्यता क्रमशः बहत्तर, छप्पन और सत्तर प्रतिशत है। सौ पौंड सूखी गिरी खिलाई जाने पर उसकी प्रोटीन और निशास्ता क्रमशः ६·१ पौंड और ६७·५ पौंड पच जाते हैं। दूसरे अनाजों से इन संख्याओं की तुलना की जाये तो मक्का और जौ से आम की गुठली की गिरी किसी भी तरह से घटिया नहीं है।

४ यह पर्यवेक्षण आम की गुठली को पोषण प्रदान करने की दृष्टि से अनाजों की श्रेणी में रखते हैं। अब तक भोजन के जिस स्रोत का हमने कभी उपयोग नहीं किया उसमें से हर साल करीब सात करोड़ पौंड पचाई जा सकनेवाली प्रोटीन और अठहत्तर करोड़ पौंड निशास्ता मिल सकता है। ये संख्यायें मिला दी जायँ तो हम कह सकते हैं कि पचासी करोड़ पौंड (एक करोड़ मन से अधिक) पोषक भोजन हम हर साल नष्ट होने दे रहे हैं। इस गणना में हमने केवल पोषक पदार्थ को ही लिया है। गेहूँ और दूसरे अनाजों में हम केवल प्रोटीन और निशास्ता आदि पोषक पदार्थ ही नहीं खाते, अपितु उनके साथ काष्ठोज आदि भी खाते हैं। आम की गुठली के खाये जानेवाले सम्पूर्ण पदार्थ का हिसाब लगाया जाय तो उपर्युक्त संख्या निस्सन्देह बहुत बड़ी हो जायेगी। यह भी गणना की गई है कि अस्सी पौंड जबी से पचाई जा सकनेवाली प्रोटीन का जितना परिमाण प्राप्त होता है वह सौ पौंड आम की गिरी से प्राप्त हो जाता है और निशास्ता छियासी पौंड से।

५ सर जॉर्ज वाट (डिक्शनरी ऑफ दी इकानोमिक प्रोडक्ट्स ऑफ इंडिया, जिल्द ५, १८९१, पृष्ठ १५३) के अनुसार गुठली में तेल काफी मात्रा में होता है और डा० ई० गार्डन विल्किन्स (१९४२) ने स्नेह का परिमाण १६·१३ प्रतिशत दिखाया है। किसी भी अनाज में स्नेह की इतनी अधिकता नहीं पाई जाती।

६ चूहों पर किये गये परीक्षणों में आम की गुठली का आटा बनाकर गेहूँ और मक्की के आटे के साथ मिलाकर खिलाया गया। चूहों की शारीरिक वृद्धि को देखकर कहा जा सकता है कि प्रोटीन की प्राणी-सम्बन्धी उपयोगिता में किसी प्रकार की कमी नहीं है। चूहों के एक समूह के भोजन में गेहूँ या मक्की के आटे में साठ प्रतिशत आम की गिरी का आटा मिला कर दिया जाता रहा और दूसरे समूह को उनके दैनिक भोजन गेहूँ या मक्की के आटे पर रखा गया। आम की गिरी मिला हुआ आटा खिलाये जानेवाला समूह दूसरे समूह के मुकाबले में किसी भी दृष्टि से कम नहीं था। परन्तु जब गेहूँ या मक्की का आटा बिलकुल न दिया गया और चूहों को पूर्णतया गुठली के आटे पर ही रखा गया तो दोनों समूहों में अन्तर दीखता था। इस तरह यह पता चला कि दूसरे अनाजों के आटे के साथ मिला कर आम की गुठली के आटे का प्रयोग किया जाना चाहिए। रक्तरञ्जक पदार्थ (हीमोग्लोबीन), रक्तवादि की प्रोटीन (ग्लाब्मा प्रोटीन), एल्बुमिन और ग्लोबुलीन का अनुपात, खून में प्रोटीन की शक्ल में न रहनेवाली नत्रजन (नॉन-प्रोटीन-नाइट्रोजन) और हड्डियों की राख के प्रतिशत की तुलना की गई है। आम की गिरी खिलाये जानेवाले समूह में कोई वर्णनीय अन्तर नहीं दिखाई दिया। आम की गिरीवाले समूहों के जिगर में खाद्योज (विटामीन) ए अधिक पाया गया।

७ आम की गुठलियों की सबसे पहले पोषक उपयोगिता का प्रतिपादन करनेवाले सम्भवतः श्रीयुत विलियम रॉक्सबर्ग थे। १८७४ (फ्लोरा इण्डिका, पृ० २१६) में उन्होंने लिखा था कि आम की गुठलियाँ बड़ी होती हैं, और प्रतीत होता है कि इनमें पोषक पदार्थ प्रचुर होता है। भोजन की कमी और दुर्भिक्ष के दिनों के सिवाय इनको खाने में उपयोग नहीं किया जाता।

८ मूर्शीद मेमोरियल हॉस्पिटल, उदयगिरि, गञ्जाम (दक्षिण भारत) के डाक्टर ई० गॉर्डन विल्किन्स ने दक्षिण भारत में आम की गिरी से आटा बनाने का अध्ययन किया है। 'भारतीय कृषि' (इण्डियन फार्मिंग, जिल्द ३, संख्या १२, दिसम्बर १९४२) में उन्होंने इस विषय पर एक लेख प्रकाशित किया है। उनके लेख का सार यहाँ दिया जाता है।

गुठलियों को तोड़कर गिरी निकाल ली जाती है। रात भर पानी में भिगोने के बाद इसे बारीक पीसा जाता है। अच्छी तरह दबा कर इसे खली की तरह चपटा कर लेते हैं। इसमें कई छिद्र किये जाते हैं। टोकरी में रखकर इसे कमरे के अन्दर गरम जगह पर चौबीस घण्टे तक रखा रहने के बाद टोकरियों को बहते हुए पानी में रखते हैं। पानी में इसे तब तक धोया जाता है जब तक कि आटे का ग्राही और कसैला स्वाद सर्वथा न लुप्त हो जाय। आटा तब टोकरियों में से निकाल कर सूखने के लिए धूप में फैला दिया जाता है।

९ आटा रोटियाँ सेंकने के काम आता है। गुँधे हुए आटे को बेल कर केले के हरे पत्तों के बीच में रखकर आग पर हलका सा सेंकते हैं। फिर इसे चावलों में मिला लेते हैं। जब इसे अकेला खाना होता है तो इसके पेड़े बनाकर गरम राख में सेंक लेते हैं। पड़ा रहने से आटा जल्दी ही बिगड़ जाता है इसलिए गुठ... बनाने के बाद इसे कुछ दिनों ... ही इस्तेमाल कर लेना चाहि...

भोजन-सम्बन्धी उपयोगिता ... चावलों से की जाती है। डाक्टर ... ने इसमें आवश्यक प्रोटीनों का ... ५·५६ प्रतिशत, वसा १६·१... और कार्बोदित ६९·२९ प्रतिशत ... हैं। इनके अतिरिक्त चूना (कै... प्रस्फुरक, लोहा और खनिज पदा... थोड़ी मात्रा में पाये जाते हैं।

११ पंजाब और संयुक्तप्रांत में ... है कि छोटे बच्चे बाहर के कष्टों ... समेत गुठलियों को तन्दूर या ... गरम राख में भूनकर बड़े चाव से ... इसका स्वाद मीठा कसैला होता है।

भारत में गुठलियों को पकाकर ... रिवाज व्यापक रूप में देखा ... मिट्टी के एक घड़े में गुठलियाँ ... जाती हैं और भूननेवाले के पास ... जाती हैं। वह इसमें जरा सा पानी ... कर ढकन को मिट्टी का या किसी ... पदार्थ का लेप करके ऐसा बन्द कर ... कि अन्दर का पानी बाहर न ... पाये। गाँव के बहुत से घड़े इकट्ठे ... पर ये एक ऐसी भट्ठी में रात भर ... दिये जाते हैं जहाँ गरम राख ... हुए कुछ कोयले इन्हें सेंक पहुँच... भट्ठी का दरवाजा तब लीप दिया ... जिससे गरमी बाहर निकलकर न ... घड़ों के मालिक सुबह आकर अपने ... ले लेते हैं। गुठलियों को तोड़कर ... पकी हुई गिरियों को बड़े स्वाद से ... जाता है।

१२ १८९६ में श्रीयुत कनाईलाल ... आम की गुठली की एक और ... उपज पर हमारा ध्यान खींचा ... उपज है—टैनिक अम्ल (टैनिक ... इण्डिजीनस ड्रग्स ऑफ इण्डिया ... के देशीय पौदे) के पृष्ठ १८१ पर ... हैं कि 'गुठली के अन्दर दस ... टैनिक अम्ल होता है और आमों के ... में हर साल इसका एक बहुत बड़ा ... यों ही नष्ट कर दिया जाता है। ... कुछ उपयोग नहीं किया जा रहा है।

१३ आजकल जब खाद्य पदार्थों ... अत्यन्त अभाव हो गया है, भूख ... सैकड़ों मौतें हो रही हैं और भरपेट ... करना पाप समझा जा रहा है तो ... इस नये स्रोत को सदा की तरह ... मिट्टी में नहीं मिलने देना ... आमों का मौसम आ गया है। ... महीनों तक ही आम सुलभ रहेंगे। ... तथा प्रान्तीय सरकारें जल्दी ही ... ध्यान देकर शहरों और गाँवों में ... की जानेवाली गुठलियों को इकट्ठा ... शुरू कर दें और इसके आटे को ... मक्का, बाजरा या जौ के आटे में ... मिलाकर उन स्थानों में बाँटना शु... दें जहाँ अकाल की छायायें ... लगी हैं।

प्रकृति—इसमें सौर जगत् की ... आकाशतरंग, पृथ्वी की आयु, ... आर्यजाति, परमाणु और ... १४ वैज्ञानिक विषयों के ... निबन्ध संगृहीत किये गये हैं। ... १॥=) एक रुपया ग्यारह आने। ... मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लि... इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठक के नाम चिट्ठियां

हिन्दुस्तानी का विरोध क्यों?

हिन्दुस्तानी का विरोध करने वाले हिन्दुस्तान की जनता को टंडन हिन्दुस्तान की कट्टर विरोधी हैं। हिन्दुस्तानी के कट्टर विरोधी हैं। यह तो भाषा का झगड़ा है। इलाहाबाद में थोड़े दिनों के बाद नेताओं में जायेगा परन्तु उस दिन साहित्य गोष्ठी में वर्धा की साहित्य गोष्ठी में के सम्बन्ध में जो विचार प्रकट हुआ तो ऐसा मालूम होता है कि वास्तव में हिन्दुस्तानी के विरोध का नहीं हिन्दी की है। दुःख के साथ कहना पड़ता है। दुःख के साथ कहना पड़ता है कभी कभी तो वह आवेश में ऐसी बातें भी कह जाते हैं जो उनके मुँह से शोभा नहीं देती। उनके भाषण में बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन के भाषण में बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन फरमाते हैं कि हिन्दुस्तानी हिन्दी हो ही नहीं सकती। इतना कह देते हुए वह कहते हैं कि हिन्दुस्तान इसमें न आयें यह संगम नहीं हो सकता। लेकिन मुझे अच्छी तरह याद है कि एक बार बाबू जी ने अपने किसी भाषण में यह कहा था कि हिन्दी मुसलमानों की ही भाषा है। उसे सर तेजबहादुर सप्रू भी नहीं कहते। उसी प्रकार हिन्दी सिर्फ हिन्दुओं की भाषा नहीं है वरन् वह रहीम और रसखान मुसलमानों की भी भाषा है। हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के मैदान में वह जो कुछ कह रहे थे सभा के बाहर की बात है। हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा में मुसलमान भी हैं। पाठकों की जानकारी के लिए मैं कुछ नाम देता हूँ। अन्दाजी दूर हो सकती है। सभा के नाम में मौलाना अबुलकलाम आज़ाद का भी हूँगा। आप हिन्दुस्तानी के अन्दर दफ्न हैं और आज़ाद के मेम्बर हैं। आप कट्टर मुसलमान होने के साथ ही राष्ट्रीय भी। यह एक बहुत बड़ा दावा किया जाता है। टंडन जी ने भी अपने भाषण में किया जा रहा है। उसी तरह हिन्दुस्तानी के अरबी बोर्ड (साहित्य-परिषद) में भी ऐसे ही सज्जन हैं। जैसे, डाक्टर आबिद हुसेन, प्रोफेसर मुजीबुर रहमान नदवी, डाक्टर ताराचन्द और सुदर्शन जी। इनके अलावा कई सभासद हैं जिनके नाम मुझे याद नहीं आता कि मुसलमान हिन्दुस्तानी प्रचार सभा में हैं तो फिर टंडन जी जैसे विद्वान इसमें शामिल क्यों नहीं हुए। अगर उनका किन्हीं खास कारणों से दूरी की ओर इशारा करना चाहिये कि उनका विरोध राष्ट्रीय?

कट्टर टंडन जी कहते हैं कि प्रचार हिन्दी उर्दू के मेल का लेकिन वह एकता या मेल आसमानों प्रकट करने से हो सकती, इसके लिए बापू के और प्रयत्न शुरू कर देना जी भी देरी होगी तो हिन्दुस्तान का भविष्य खतरे में पड़ जायेगा।

वह यह भी कहते हैं कि "मैं उर्दू अच्छी तरह जानता हूँ" और हिन्दुस्तान की जनता तो यह मानती है कि आप हिन्दी के अच्छे पंडित हैं। मक़सद यह कि आपके इलाहाबाद में जिस तरह से गंगा, जमुना मिलती हैं उसी तरह से आपमें भी हिन्दी उर्दू की दो धाराएँ बह रही हैं। ये दोनों धारायें अगर अलग अलग बहती हैं तो फिर त्रिवेणी कैसे बह सकती है? त्रिवेणी भी टंडन जी चाहें तो बह सकती है। अगर वह हिन्दी-उर्दू दोनों धाराओं के मेल कराने की कोशिश करें तो ऐसा होना बड़ा ही आसान है। जिस तरह से बापू जी ने कहा है कि मैं हिन्दी और उर्दू के मेल का हामी हूँ उसी तरह से मैं भी यह कहता हूँ कि यह मेल तो आप में है और आप चाहें तो धारायें अलग अलग न बहाते हुए एक ही कर सकते हैं।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की एक बैठक में किसी ने कहा था कि मुसलमान तो हिन्दी सीखते ही नहीं और हिन्दू तो उर्दू सीखते हैं। इस पर बापू जी ने जवाब दिया था कि "अगर दूसरे नहीं सीखते हैं तो खुद तो शुरू कर ही दें।" इस पर टंडन जी ने उस दिन की साहित्य-गोष्ठी में कहा था कि ऐसा कहना गलत है। उन्होंने आगे कहा कि ऐसा मालूम पड़ता है कि इस दलील के सामने कोई जवाब ही नहीं रहता। उन्होंने इसका खंडन करने की कोशिश की परन्तु गांधी जी की वह अकाट्य बात जैसी की तैसी ही रही जिसका मतलब सीधा और साफ है कि जिस चीज को हम अच्छा समझते हैं उसे हमें अपनाना चाहिए। अगर टंडन जी ऐसा समझते हैं कि हिन्दी-उर्दू का मेल अच्छी चीज है और एक कौमी जबान हिन्दुस्तानी के रूप में शुरू की जाये (जो पहले से ही है उसे सिर्फ चालना ही है) और जिस बात को उन्होंने खुद अपने उस दिन के वर्धा-वाले भाषण में भी स्वीकार किया था तो फिर अच्छी कोशिश अपनी तरफ से शुरू करने में बुराई तो नहीं भलाई ही है। दूसरे गलती करते हैं इसलिए समझदार लोगों को तो गलती नहीं करनी चाहिए।

गांधी जी ने हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा की बैठक में बहुत छोटा सा और लाजवाब उत्तर दिया; लेकिन अगर कोई मुझसे पूछे तो मैं यही कहूँगा कि फिर किस बिना पर टंडन जी रहीम, जायसी, कबीर, रसखान वगैरह को हिन्दीवाला कहते हैं? आजकल भी ऐसे मुसलमानों के उदाहरणों को टंडन जी शायद नजर अन्दाज ही कर देना चाहते हैं। कई ऐसे मुसलमान आज भी हैं जिन्होंने हिन्दी, मराठी ही नहीं वरन् संस्कृत में भी डिग्रियाँ हासिल की हैं। वर्धा के कामर्स कालिज में मुसलमान विद्यार्थियों ने मराठी कांपोजिशन लिया है जब कि वे चाहते तो उर्दू भी ले सकते थे।

वर्धा की साहित्य-गोष्ठी में टंडन जी ने यह भी कहा कि कांग्रेस में उन्होंने हिन्दुस्तानी का प्रस्ताव रखा था। उस वक्त उनके मन में शायद (उनके कहने के मुताबिक) यह बात थी कि रोमन लिपि और अँगरेजी जबान को हटाकर नागरी और उर्दू लिपि चलाई जाये। आपने जबान या भाषा के बारे में कहा कि हिन्दी और उर्दू दो जबानें रायज हों। लेकिन उसका कोई मतलब ही नहीं है। जिन्होंने वह ठहराव जिस वक्त पास किया था उसे तो वह जानें कि उस वक्त उनके मन में क्या भावनायें थीं; लेकिन जब तक अँगरेजी की जगह हमारी एक कौमी भाषा न ले तो हमारा वह ठहराव खोखला मालूम होता है। कोई संस्कृत के शब्द लेकर हिन्दी में बोले और कोई अरबी-फारसी के शब्द लेकर उर्दू में बोले और एक दूसरे की समझ में कुछ भी न आये तो इससे प्रस्ताव रखनेवाले और उसे पास करनेवाले किसी का भी मकसद हल नहीं होता। हमें तो उसी जबान को अपनाना चाहिए जो आम फहम हो, जो सर्वसाधारण की हो और ऐसी भाषा मेरे खयाल में सिर्फ एक हिन्दुस्तानी ही है जिसे सब लोग बोलते और समझते हैं।

वर्धा —मुहम्मदहयात खाँ 'आजाद'

कूटने से होनेवाले व्यर्थ नुक़सान को रोकिए।

कपड़ों को इस प्रकार धोइये।

कपड़ों को साफ़ करने के लिए कूटने के पुराने तरीके से व्यर्थ ही छेद हो जाते हैं, और कपड़े फट भी जाते हैं। आमतौर पर इस बेकार के नुक़सान से आप और आपके मित्र अक्सर परेशान होते होंगे।

इन अंकित चित्रों में दिये गये तरिकों को अपनाइये; निम्न लिखित हिदायतो का पालन किजिए; और आप यक़िन रखिए की आपके कपड़े बिना नुकसान के वास्तव में साफ धुलेंगे।

(१) जिस कपडे को धोना हो उसे पहले खूब भिगो लीजिए। यह आप नल के नीचे, टब में, तालाब में या नदी में कर सकते हैं – इससे कोई फर्क नहीं पडता।

(२) जब कपडे को खूब भिगो चुकें तो सारे कपड़े में सनलाइट साबुन मलें। जो भाग अधिक मैला हो वहाँ सनलाइट जरा ज्यादा मलें। (३) साबुन लगे हुए कपडे को हाथों से धीरे-धीरे गूँथिये। (इसे कूटिये नही) तबतक गूँथिये (ठीक उसी तरह जैसे रोटी का आटा गूँथा जाता है) जब तक साबुनकी झाक कपडे के हरेक तन्तु में प्रवेश पाजाए। कपडे को जोरसे रगड़ने की या बुरीतरह कूटनेकी अवश्यकता ही नहीं है सनलाइट का 'स्वयंकाम करनेवाला' फेन सरलता से सारे मैल को बाहर निकल देगा-यदि आपको यह विश्वास हो जाये की गूँथने से यह फेन कपडे के मैल में घुस चुका है। इस शक्तिशाली फेन में जो साबुन है वह मैल को घूते ही तत्काल फुला देता है। फेन उसे जजब कर लेता है। ऐसे जब आप कपडे को खूब धोएंगे तो फेन के साथ सब मैल निकल जायेगा। (४) फेन-जिसमें की अब सारा मैल आचुका है-छुटाने के लिये कपडे को खूब मलकर धो डालिए।

ऐसे सनलाइट के तरीकेसे धोए हुए कपडे बहुत समय तक चलते है।

सनलाइट साबुन कपड़ों की बचत करता है

S. 76-50-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

बदन का कालिमा दूर हो जाने पर गोर तथा सुन्दर त्वचा

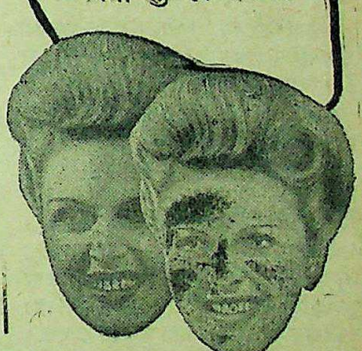

इस आश्चर्यजनक रहस्य को पढ़िए

जब चेहरे की कालिमा दूर हो जाती है तो नवीन गौर वर्ण की सुन्दरता निखर पड़ती है। वही कोमल एवम् मृदुल रूप जिसकी प्रत्येक स्त्री को चाह है और जिसकी प्रत्येक पुरुष प्रशंसा कर रहा है।

ह्वाइटेक्स आश्चर्यजनक तरल औषधि चेहरे की कालिमा को तुरन्त दूर करती है। इससे आपका रूप गौर तथा विशेष मृदु हो जाता है जिससे आपके सौन्दर्य, व्यक्तित्व, तथा आकर्षण में विशेष वृद्धि होती है।

ह्वाइटेक्स में चिपचिपाहट नहीं है, और न इससे किसी प्रकार के दूषित धब्बे ही रह जाते हैं। यह त्वचा में प्रवेश कर त्वचा को पोषता है। आज ही एक बोतल खरीदें।

वितरक: जी० अथरटन एण्ड कं० (ईस्टर्न) लि० २८, अपोलो स्ट्रीट, बम्बई, तथा ४ मिशन रो, कलकत्ता।

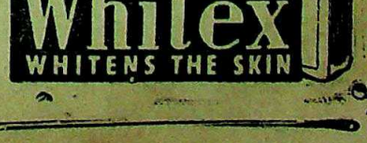

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजधानी की चिट्ठी

श्याम में भारतीयों के साथ दुर्व्यवहार क्यों ?

सेक्रेटेरियट के बाबुओं की हड़ताल—युवक छात्र और युवती छात्रायें—यातायात की सुविधा—क्या रेलवे-हड़ताल सफल होगी ?

(विशेष प्रतिनिधि-द्वारा)

लखनऊ, १७ जून आ० हि० फौ० के मेजर जार्ज म्यलर ली ने, जो मध्यप्रान्त के निवासी भारतीय ईसाई हैं और अनेक वर्षों से श्याम देश में रहते थे तथा नेता जी के पहुँचने पर आ० हि० फौ० में शामिल हुए थे, एक भेंट में मुझे बताया कि श्याम में ब्रिटिश अधिकारी वहाँ के भारतीयों के साथ बड़ा दुर्व्यवहार कर रहे हैं। उस देश को यहाँ की डाक साधारणतया एक सप्ताह में पहुँच जाती है, किन्तु भारतीयों की डाक पर इतना कड़ा सेंसर है कि यहाँ से फरवरी में भेजी गई डाक वहाँ मई में बँटी। भारतीयों में से अधिकांश स्वदेश लौटने के लिए उत्सुक हैं, किन्तु उन्हें पासपोर्ट नहीं दिये जाते और यदि किसी को पासपोर्ट मिल भी जाता है, तो उसे यातायात की सुविधा नहीं मिलती। मेजर ली ने उसी देश में एक श्यामी महिला से विवाह किया था, किन्तु श्रीमती ली को भारत में अपने पति के पास पहुँचने की अनुमति नहीं दी जा रही है। मेजर ली ने बताया कि भारतीयों को आतंकित करने के लिए वहाँ के १८ भारतीय नेता गिरफ्तार कर लिये गये। नजरबन्दी से रिहा होनेवाले भारतीयों को प्रति २९ तारीख को इमीग्रेशन आफिस में हाजिरी देनी होती है। बैंकाक स्थित आजाद हिन्द भवन को फौजी नृत्यशाला बना दिया गया है।

* * *

हड़ताल का ऐसा व्यापक रोग इस समय देश भर में फैल रहा है कि युक्त-प्रान्तीय सेक्रेटेरियट के बाबूगण भी उसकी छूत से नहीं बचे हैं। वेतन आदि बढ़ाने की उनकी माँग को प्रान्तीय सरकार ने अस्वीकार कर दिया। इस पर उन्होंने अगले मास से ही वेतन न लेने का निश्चय किया है और उनके प्रतिनिधियों की बैठक में भविष्य में हड़ताल अथवा किसी प्रकार के वैधानिक सत्याग्रह किये जाने के सम्बन्ध में विचार-विनिमय हो रहा है।

* * *

नागरिक छात्रों में इस सदय असदाचार की भीषण वृद्धि हो रही है और छात्राओं तथा युवतियों के प्रति युवक छात्रों का कुत्सित आचरण चरम सीमा तक पहुँच चुका है। लखनऊ में तो यह रोग उच्छृंखलता की परिधि को ही लाँघ चुका है। इसका नमूना जब तब हजरतगंज, अमीनाबाद और महिला-शिक्षण-संस्थाओं के आसपास मिलता रहता है, किन्तु विगत होली के अवसर पर तो हद हो गई थी, जब छात्रों ने एक गर्ल्स होस्टल में जबरन घुसकर युवा छात्राओं के साथ लज्जास्पद आचरण किया था, उस सम्बन्ध में मन्त्रिमंडल ने कड़ा रुख लिया है और शिक्षण-संस्थाओं के अध्यक्षों को आदेश दिया है कि इस प्रकार के दोषी छात्रों को कठोरतम दंड दिया जाय। साथ ही मन्त्रिमंडल शिक्षाक्रम में सदाचरण तथा नैतिक आदर्श की शिक्षा को पर्याप्त महत्त्व दिये जाने का प्रयत्न कर रहा है। इसके अतिरिक्त इस सम्बन्ध में जाँच करने और सरकार को उचित सलाह देने के लिए एक कमेटी का भी निर्माण हो रहा है।

* * *

हाफिज मोहम्मद इब्राहीम का यातायात विभाग प्रांत के यात्रियों की सुविधा के लिए प्रयत्नशील है। उसने मोटर-मालिकों को चेतावनी दी है कि यदि मुसाफ़िरों के साथ उनका व्यवहार अनुचित पाया जायगा, तो उनको नया लाइसेन्स न मिलेगा। इस सम्बन्ध में प्रांत भर में व्यापक देख-रेख रखी जायगी और ख्याल किया जाता है कि मुसाफिरों की दिक्कतें कुछ कम हो जायेंगी।

* * *

ईस्ट इंडियन रेलवे को भावी रेल कर्मचारी हड़ताल के प्रति अधिक आशंका नहीं है। इस रेलवे के अधिकारियों का कहना है कि अधिकांश मुस्लिम कर्मचारी काम करते रहने के लिए वादा कर चुके हैं। केवल हिन्दू एँग्लोइंडियन तथा ईसाई कर्मचारी ही हड़ताल में भाग लेंगे, परन्तु उनमें भी अनेक को लालच देकर राजभक्त बनाया जा चुका है। रेलवे अधिकारियों का यह भी कहना है कि उनके कर्मचारियों में से केवल ४५ प्रतिशत ही यूनियनों के सदस्य हैं, अतएव हड़ताल के बारे में इन लोगों का मत कर्मचारियों का बहुमत नहीं कहा जा सकता।

* * *

इस प्रांत में दो नई रेलवे लाइने बनाये जाने का निश्चय किया गया है। एक तो पुरानी अकबरपुर टाँडा लाइन है, जो युद्धकाल में तोड़ दी गई थी और दूसरी बिलकुल ही नई लाइन है। यह कानपुर और इटावा के बीच वर्तमान लाइन के समानान्तर जायगी और वे द्वारा कानपुर की दो तहसीलों के सदर मुकामों तथा इटावा के दो बड़े कस्बों को रेल से मिला दिया जायगा।

ग्रन्थि-आविष्कार २४ घंटे में जवानी प्रदान करता है

शक्ति की कमी, स्नायु-सम्बन्धी शिथिलता, दुर्बल शरीर, अशुद्ध रक्त और विस्मरण की जिन्हें शिकायत हो और यह महसूस करते हों कि समय से पहले ही वे वृद्ध और शिकस्त हो चुके हैं, उन्हें अमरीकन डाक्टर द्वारा ईजाद किये गये नवीन ग्रन्थि-आविष्कार (Gland Discovery) से प्रसन्न होना चाहिए।

इस नये आविष्कार द्वारा आप शरीर और ग्रन्थियों में सरलता और शीघ्रता से पुनः शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। इससे आपका रक्त शुद्ध और शरीर भरा-पूरा हो जायगा। सिर्फ़ आठ दिन में ही आपकी स्मरणशक्ति तरोताजा हो उठेगी और मन में एक नव-जवान जैसी शक्ति का अनुभव होने लगेगा। यथार्थ में यह नया आविष्कार घरेलू दवा है जो गोलियों के रूप में सरलता और प्रसन्नता से खाई जा सकती है और ग्रन्थियों की चीर-फाड़ से आपको बचाकर सिर्फ़ २४ घंटे में नई शक्ति और स्फूर्ति प्रदान करती है। इतने पर भी यह किसी तरह की हानि नहीं पहुँचाती, बल्कि स्वाभाविक रूप में ही अपना प्रभाव दिखलाती है।

'वाइ-टेब्स' नामक इस नये और आश्चर्यजनक आविष्कार को अमरीका में इतनी अधिक सफलता मिली है कि यहाँ अब यह सभी दवा विक्रेताओं द्वारा पूर्ण सन्तोष की शर्त के साथ वितरित की जा रही है, अन्यथा मूल्य वापस कर दिया जायगा। दूसरे शब्दों में 'वाइ-टेब्स' निश्चित रूप से आपको यह अनुभव करने देगा कि आपमें पूर्ण शक्ति और स्फूर्ति आ गई है और आप दस से बीस साल तक की कम उम्र के (तरुण जैसे) हो रहे हैं। ऐसा न होने पर आप सिर्फ़ खाली पैकेज लौटा दीजिये और अपना पैसा वापस ले लीजिये। ४८ वाइ-टेब्स की दुगुनी शक्ति देनेवाली एक विशेष शीशी का मूल्य बहुत ही कम है और गारण्टी आपको निश्चिन्त रखेगी।

Vi-Tabs वाइ-टेब्स

पुरुषत्व और शक्ति प्रदान करता है।

मधुस्रवा—लेखक. राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०। इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु बरसाने की पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रस-सिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

सभी दर्द
सारिडन
दुःखशामक टिकडियांसे
१० मिनटोमें दूर हो जाते है.

मंदाग्नि

मेकलीन ब्रांड स्टमक ... व्यापक ख्याति अम्लता, उदर-... दाह, पेट दर्द, वमन, पित्त-... पाचन-सम्बन्धी शिकायतों से ... वाले अन्य रोगों में प्रभावशाली ... मान्य प्रमाण है।

उदर-विकारों से उत्पन्न ... उदासी, अनिद्रा और हृदय की ... कन में भी यह अमूल्य है।

यदि आप इनमें से किसी ... रोग से पीड़ित हैं तो आज ही कुछ ... ब्रांड स्टमक पाउडर लीजिए ... प्रसिद्ध औषधि की शीघ्र ... स्वयमेव अनुभव कीजिए।

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर ... समय "एलेक्स सी० मेकलीन" के ... पहचान लीजिए क्योंकि असली ...

मेकलिन ब्रांड स्टमक पाउडर ... सेवन कीजिए

Copyright

हमारी
सम्मति
बही का एक
पृष्ठ

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस लिखते हैं

'मैंने आज शक्ति औषधालय ... ढाका देखा। कृपापूर्वक ... इसका कोना-कोना दिखलाया गया। आयुर्वेदिक सिद्धान्तों के अनुसार बहुत बड़े पैमाने ... यहाँ देशी औषधियाँ बनाई जाती हैं। यह संस्था ... मथुरामोहन चक्रवर्ती के ... बहुत ऋणी है, जिनके ... से आयुर्वेदिक औषधियाँ गरीबों के लिए भी सुलभ हो सकीं। मैं उनकी इस संस्था की समस्त सफलताओं की कामना करता हूँ, ... उन्होंने अपनी दीर्घकालीन कोशिशों और कठिन ... वसाय के बाद स्थापित ... है। शक्ति औषधालय ... की सफलता का अर्थ है ... भर में आयुर्वेद की ... प्रियता और दूसरे ... इसका अर्थ है ... वता का उद्धार।"

(ह०) सुभाषचन्द्र बोस
ढाका, जून ६, ...

अध्यक्ष मथुर बाबू
शक्ति औषधालय
ढाका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...दाताओं के पत्र

...पुर में जनवरी १९४६ के मध्य ...विद्यापीठ के प्रधान मन्त्री ...जनार्दनराय जी नागर एम० ...विद्यालंकार संस्था के लिए ...सहायता प्राप्त करने कलकत्ता ...के मध्य में पुनः उदयपुर ...आप आते ही संस्था के ...के काम में व्यस्त हो गये। ...का काम प्रायः समाप्त हो रहा ...के आन्तरिक संगठन के सम्बन्ध ...द्वारा आप को परिचित किया ...अथवा "हिन्दी विद्यापीठ पत्रिका" ...में प्रकाशित किया जायगा ...आपकी सेवा में भेजा जायगा। ...में श्री प्रधान मन्त्री जी को ...के लिये अर्थ-संग्रह के कार्य में ...हितैषियों, सहायकों एवं ...विशेष सहायता की :—सर्व श्री ...जी कानोड़िया, सीताराम ...बसन्तलाल जी मुरारका, ...जी सीधी, बजरंगलाल जी लाठ, ...जी शर्मा, चौथमल जी सराफ़, ...जी सिंघी, हरसुखलाल जी लोढ़ा, ...जी मोर एवं उदयपुर के ही ...मनोहरसिंह जी मुरड़िया, ...जी मुरड़िया और भाई पराक्रम-...मण्डारी आदि ने। इसके लिये-...आपकी आभारी है।

...अप्रैल १९४६ में हिन्दी-विद्यापीठ ...लोक शिक्षण विभाग एवं ...विभाग की स्थापना की गई। ...विभागों के कार्य को जमाने एवं ...करने के लिये दो नये दिन भर ...कर्ता नियुक्त किये गये। लोक ...विभाग का ध्येय है उदयपुर और ...के जनपदों में विभाजित कर उनका ...विकास किया जाय एवं नागरिक ...का काम नियमित तथा विस्तृत ...प्रारम्भ कर दिया जाय। अप्रैल में ...काम की प्रारम्भिक रूप-रेखा और ...बना दी गई एवं उदयपुर में ...कर दिया गया है। हिन्दी ...के समस्त कार्यकर्ता, महा ...के विद्यार्थी एवं श्रमजीवी ...के आठवीं तक के विद्यार्थियों ...का यह कार्य कराया जायगा। ...विभाग के अन्तर्गत हिन्दी-...प्रिंटिंग प्रेस, हिन्दी-विद्यापीठ ...एवं हिन्दी विद्यापीठ प्रगति-...संस्थापन आदि प्रवृत्तियाँ ...हैं। प्रेस खरीदने पुस्तक सदन ...करने एवं प्रगतिशील साहित्यकारों ...स्थापित करने के कार्य को भी ...दिया गया है। —संवाददाता

* * *

...में श्री बाँकेबिहारीचन्द्र के सभा-...ग्राम-वाचनालय का चतुर्थ वार्षि-...धूम-धाम से मनाया गया। वाचना-...अध्यक्ष मुंशी वागेश्वरीलाल अध्या-...प्राइमरी स्कूल ने उत्सव की ...में पूर्ण सहायता दी। पहले ...द्वारा देश-प्रार्थना तथा झंडा-प्रार्थना ...मास्टर बाबू रामराजसिंह-द्वारा ...की वार्षिक रिपोर्ट सुनाई गई। ...से १८६२ पुस्तकें वितरण हुई ...के अन्दर १६०० व्यक्तियों ने ...से लाभ उठाया। रिपोर्ट पढ़ने के बाद प्रधान पुस्तकालय पंडित झगरू पाण्डेय का वाचनालय की प्रगति पर भाषण हुआ। इसके बाद लड़कों-द्वारा मास्टर वागेश्वरीलाल की देख-रेख में शिक्षा-सम्बन्धी खेल खेले गये, जिसमें अछूत-उद्धार, अभिमन्यु, बातचीत का ढंग, प्रथम सहायता, मुकदमेबाजी से हानि जनता ने खूब पसन्द किया।

नये वर्ष के कार्य-संचालन के लिए पदाधिकारी चुने गये—सभापति पंडित झगरू पाण्डेय, उप-सभापति मुंशी हरिशंकरलाल, मंत्री ठाकुर गिरिजाशंकरलाल, उपमंत्री ठाकुर सिंगासनलाल, कोषाध्यक्ष श्री वीर साहु। कार्य-कारिणी के सदस्य—सर्वश्री दरबारी साहु, जगतनारायणसिंह, रामराजसिंह, अवधबिहारीसिंह, सर्वजीतसिंह, केदारनाथ मिश्र, खड़गसिंह, भोला धोबी, बन्ताप्रसाद, गोरखप्रसाद विद्यार्थी, रामप्रवेशसिंह।

चुनाव हो जाने के बाद प्रधान जी ने वर्तमान परिस्थिति और कांग्रेस के कार्य-क्रम तथा वाचनालय की प्रगति पर भाषण दिया। बच्चों को पारितोषिक वितरण भी किये गये। —गिरिजाशंकरलाल

* * *

मथुरा प्रेम में संगीत प्रतियोगिता श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के सुअवसर पर श्री संगीत प्रचारक मंडल की ओर से होगी। अतः छात्र या छात्राओं को सूचित किया जाता है कि प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए अपने नाम अगस्त के प्रथम सप्ताह तक कार्यालय में भेज दें। —मन्त्री

मथुरा में श्री देशबन्धु पुस्तकालय का तृतीय वार्षिकोत्सव जुलाई के प्रारम्भ में श्रीयुत आचार्य जुगुलकिशोर जी एम० एल० ए० के सभापतित्व में लक्ष्मीदास हाल में होगा। उत्सव की सफलता के लिये श्रीयुत मूँगा जी संलग्न हैं। —मन्त्री

गोरखपुर जिले के मुसलमान कार्यकर्त्ता श्री राजमुहम्मद अन्सारी आज तक अधिक अस्वस्थ होकर भी जेल से रिहा नहीं हुए।

श्री लोकमान्य तिलक मिडिल विद्यालय कुबेरनाथ सन् ४२ के कारण खोया हुआ स्थाई रिकागनेशन का अवसर नहीं प्राप्त किया।

देवरिया बोर्ड के अन्तर्गत तहसील पडरौना के शिक्षा वृद्धि हेतु मनसाधापरमटियानुजुरुग अमवा; पियरा जटामपुर इत्यादि प्राइमरी लोअर प्राइमरी स्कूलों को तोड़कर स्तुत्य प्रयत्न किया गया है जहाँ की जनता आज दिन स्कूलों के लिए प्रयत्नशील है अतः शिक्षाधिकारी इस अभाव की पूर्ति कर अपनावें अच्छा हो यदि सभी पुराने स्कूल जौलाई से चलने लगें। —संवाददाता

* * *

फतेहपुर जिला कांग्रेस कमेटी के मंत्री व प्रमुख नेता पंडित दयाशङ्कर मिश्र 'सूर्य' को जिला फूड प्रोक्योरमेन्ट असफर ने तहसील फूड प्रोक्योरमेन्ट कमेटी खजुहा का सदस्य नामजद किया है। आजकल गल्ला वसूली के लिए आप जोरों से प्रचार कर रहे हैं। इसी सम्बन्ध में आपके ग्राम खदरा में भी ग्राम-कमेटी बनी है, पं० दयाशंकर मिश्र 'सूर्य' अध्यक्ष, श्री गनेशीलाल अध्यापक खदरा मंत्री, श्री सुखलालसिंह कोषाध्यक्ष एवं श्री दयानारायण तिवारी, श्री जगन्नाथ लोहार मुखिया, श्री रामदयाल पासी, श्री मन्ना बकरकसख, श्री गिरधरलाल गुप्त सदस्य चुने गये हैं। श्री 'सूर्य' जी ग्राम-ग्राम में कमेटियाँ बना रहे हैं। खदरा के राजाराम हलवाई के ऊपर एक रुपये सेर शक्कर बेचने पर भारत-रक्षा कानून के अनुसार मुकदमा विचाराधीन है और उसकी शक्कर का कोटा सप्लाई अफसर ने बन्द कर दिया है। यह केस कांग्रेसवालों ने पकड़ा था।

ग्राम रासूपुर में राष्ट्रीय नवयुवकदल स्थापित हुआ है, जिसके अध्यक्ष श्री रामचन्द्र अग्निहोत्री, श्री जगरूपसिंह मंत्री, पं० भगवतीप्रसाद कोषाध्यक्ष एवं कई नवयुवक रासूपुर और शादीपुर के सदस्य चुने गये हैं। श्री झूरी लोहार कप्तान, श्री भीखू लोहार नायब कप्तान चुने गये हैं। यह दल कांग्रेस व राष्ट्रीयता का प्रचार बड़ी धूमधाम से कर रहा है। इसमें कई सदस्य हरिजनों के भी हैं। संवाददाता

* * *

सागर में गल्ला-व्यापारियों की एक सभा श्री लक्ष्मीनारायण माहेश्वरी की अध्यक्षता में डा० सप्रे के निवासस्थान पर हुई। सभा में सर्वानुमति से चार प्रस्ताव स्वीकृत हुए—(१) फुडएडवाइजरी कमेटी से यह सभा अनुरोध करती है, कि गुड़ अलग ही दूकानों पर बिकवाने का प्रबन्ध किया जावे। क्योंकि वर्षा के कारण गुड़ की बिक्री में बड़ी दिक्कतें हैं। (२) व्यापारियों को गल्ला ठीक समय पर नहीं मिलता। अतः उसे ठीक समय पर दिया जावे। (३) खजाने में रुपया जमा करने, गोदाम से गल्ला लाने, तथा कचेहरी-सम्बन्धी सभी कार्यों के लिए एक क्लर्क ५० रु० माहवार तक वैतनिक रूप से रखा जावे। (४) अभी जो बोरे दिये जाते हैं, वे ज्यादातर फटे-पुराने होने के कारण उठाते समय बिलकुल फट जाते हैं, जिससे गल्ले का नुकसान होता है। फुड आफिसर महोदय से अनुरोध है, कि साबित बोरे दिये जावें।

ता० ८ जुलाई से मकरोनिया नामक स्थान में "सागर विश्वविद्याय" खुल रहा है। —लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

* * *

जमींदारों का जुल्म

अँगरेजी राज्य छोटे-छोटे कार्यकर्ताओं पर जुल्म करते करते पनाह मान गया। इतनी कड़ी अँगरेजी सल्तनत स्वयंसेवकों के सामने झुक गई। शासन बदल रहा है। जुल्मी आदमी बदल गये। लेकिन अभी जमींदारों की आँखें नहीं खुल रही हैं। जमींदार समझते हैं ये जमींदारियाँ हमारे बापदादों की बपौती है। ईश्वर की दी हुई है और हमारी बपौती कायम रहेगी। वह किसानों-मजदूरों पर मनमानी जुल्म करते रहेंगे। लेकिन उन्हें समझ लेना चाहिए, दुनिया तेजी से बदल रही है। गरीब कांग्रेस स्वयंसेवकों को पीटने से उनकी जमींदारियाँ नहीं रह सकतीं। अभी पिछले दिनों भाई हंसराज नामक स्वयंसेवक को बगरा गाँव थाना उस्का बाँसी बस्ती के एक जमींदार ने बुरी तरह से पीटा है। यह अन्याय क्या कांग्रेसी शासन में भी स्वयंसेवक सहते रहेंगे।

वर्धा (मध्यप्रांत) —प्रभुदयाल विद्यार्थी

* * *

सेवदह (पटना) पंडित प्रजापति मिश्र बिहार के ग्रामसेवी नेता राजेन्द्र-साहित्य-महाविद्यालय में पधारे। आपने विद्यालय के सभी विभागों का निरीक्षण किया। विद्यालय तथा शिविर के अध्यापकों, छात्रों और शिक्षार्थियों के बीच उपदेश देते हुए आपने कहा, जब तक हम ग्रामोद्योग के स्तर को ऊँचा नहीं उठायेंगे तब तक हमारी सेवा और तपस्या पूरी नहीं हो सकती। वर्त्तमान सरकार बेसिक शिक्षा को प्रान्त में चालू करने को सोच रही है। अभी-अभी जो प्राथमिक बिल एसेम्बली में स्वीकृत हुआ है उसमें इस पद्धति के चालू करने का भी समावेश है। चम्पारन में बड़े पैमाने पर उद्योग होगा। सेवदह विद्यालय ग्राम-सेवकों के निर्माण का राष्ट्रसेवा के महत्त्व को बढ़ा दिया है। अन्त में आपने ग्राम-सेवकों से बातें कीं।

—संवाददाता

* * *

बस्ती धनघटा गाँव में पूज्य रामपति जी ब्रह्मचारी के आयोजन तथा परिश्रम से रुद्रयज्ञ सानन्द सम्पन्न हुआ। २५००० की जनता एकत्र थी। लगभग १५०० व्यक्तियों ने भोजन किया। दीन व्यक्तियों में अन्न तथा वस्त्र का वितरण किया गया। पं० कामताप्रसाद व्याकरणाचार्य, पं० महादेव वेदाचार्य आदि विद्वान् पधारे थे। यज्ञ-समाप्ति के दूसरे दिन पास-पड़ोस के लँगड़े-लूले और अंधे लगभग २०० व्यक्तियों को निमन्त्रित करके भोजन कराया गया।

—लखराज वैद्य

* * *

नवलगढ़ में श्री हीरालाल शास्त्री के सभापतित्व में शेखावाटी राजनैतिक सम्मेलन का आयोजन किया गया था। शेखावाटी की इस उलझनमय स्थिति के इन दिनों में ऐसा सम्मेलन होने की अत्यन्त आवश्यकता थी। ऐसे मौके पर विभिन्न विचारों का आदान-प्रदान होना बहुत जरूरी चीज थी। शेखावाटी लोक-परिषद् भी शेखावाटी की समस्याओं का अपना स्वतन्त्र दृष्टिकोण रखती थी। सम्मेलन में शेखावाटी की समस्याओं पर पूर्ण रूप से विचार-विनिमय हुआ।

—वेंकटेश पारीक

* * *

जयपुर (मंडावा) श्रीकृष्ण नवयुवक मण्डल (शेखावाटी) के पदाधिकारियों का वार्षिक चुनाव इस प्रकार हुआ—सभापति कुँवर प्रतापसिंह जी शेखावत प्रधान मन्त्री, श्री विश्वम्भरलाल जी जोशी, "श्रीदत्त" पुस्तकालय मन्त्री श्री हरीराम गाडोदिया, साहित्य-विभाग मन्त्री श्री हरीराम गाडोदिया नाट्यपरिषद् मन्त्री श्री गजानन्द वर्मा, सेवा विभाग मन्त्री श्री गंगाराम जी वर्मा, बाल-पुस्तकालय और वाचनालय से क्रमशः १०,००० और १५००० वाचकों वा पाठकों ने लाभ उठाया। इस समय पुस्तकालय में बालोपयोगी करीब १००० पुस्तकें संग्रहीत हैं।

—संवाददाता

* * *

पटना, सरथा, पोस्ट हरनौत का सूर्य-रश्मि ओषधालय पूर्णरूपेण प्राकृतिक है। श्री रामकिशोरप्रसाद मित्र-द्वारा संचालित होकर करीब डेढ़ वर्ष से कार्य कर रहा है। इसमें ओषधालय-द्वारा करीब ६०० रोगियों की चिकित्सा की गई। जिसमें हर प्रकार के रोगी थे और ९५ प्रतिशत सफलता मिली है।

—संवाददाता

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा गांधी को मैंने कैसा देखा !

(पेज ७ का शेष)

जीवन बिताना पड़े तो तीन सप्ताह में ही पागलखाने की शरण लेनी पड़े और फिर उनकी इतनी उम्र में। अवश्य ही उनकी शरीर-रचना अद्भुत होगी। इसमें कोई आश्चर्य नहीं यदि वह १२५ वर्ष तक जीवित रहने की इच्छा करें।

उस दिन शाम को गांधी जी मेरी झोंपड़ी से गुजरे और मेरी बच्ची, रीआ को देखकर बहुत प्रसन्न हुए।

उन्होंने कहा—"तुम्हारी बच्ची कितनी सुन्दरी है! अब तुम इसकी मूर्त्ति बनाओ, मेरी नहीं।"

मैंने उत्तर दिया—मैंने तो इसकी मूर्त्ति तभी बनाई थी जब यह कुल सात सप्ताह की थी।'

"तुम्हारे कितने बच्चे हैं?"

"तीन—एक सात साल का, दूसरा पाँच साल का और इसकी उम्र तीन वर्ष की है।"

"फिर तुम मूर्तियाँ क्यों बनाती हो जब तुम्हारे बच्चे इतने सुन्दर सुन्दर हैं? ये तो स्वयं जीती जागती मूर्तियाँ हैं। तुम यह कारीगरी की मिट्टी यहाँ के लोगों को दे दो, अपने काम में लायेंगे।"

मैं इसका उत्तर देने ही वाली थी कि वह सैर करने के लिए आगे बढ़ गये। मैं उनसे पूछना चाहती थी—"आपके भी तो बच्चे हैं, फिर आप चर्खा क्यों चलाते हैं?"

स्मृति के आधार पर मैंने चाँदनी में कई घंटों तक मूर्ति के धड़ पर काम किया। क्योंकि मेरा विचार था कि सिर सुबह पूरा हो जाने पर इसे धड़ से मिलाकर सम्पूर्ण मूर्ति पूरी कर दूँगी। पर होना कुछ और ही बदा था। सुबह होते ही मुझे बताया गया कि पड़ोस में दो बच्चों को 'चेचक' की बीमारी हो गई है। इसलिए आप अपने बच्चे की खातिर उसे लेकर यहाँ से चली जायँ तो ठीक है।" अतः ताँगे के आने तक सिर पूरा करने का निश्चय कर लिया। जाने से पहले मैं गांधी जी को नमस्ते करती गई। उन्होंने कहा कि दिसम्बर में यदि मैं यहाँ रहूँगा तो पूरी मूर्ति बनाने के लिए यहाँ अवश्य आना।

महात्मा जी ने अपने लिए कुछ नियम बना रक्खे हैं। उन पर वह सदैव दृढ़ रहते हैं। जब तक मैं उनके पास थी, मैंने कभी उन्हें क्रुद्ध होते नहीं देखा। सारा देश उन पर श्रद्धा रखता है, इसका कारण मैं समझती हूँ। उनका सदाचार और अहिंसक प्रवृत्ति है। कभी कभी मैंने उनके चेहरे पर असीम उदासीनता भी देखी है।

मैं तो गांधी जी के बारे में इतना कह सकती हूँ कि यदि उनकी आकृति की तुलना मस्तिष्क-विज्ञान पर आधारित विश्वास से की जाये तो बड़ी मनोरंजक बात होगी। वह देखने में किसी पौराणिक मनुष्य से मिलते-जुलते हैं जिसकी चेतना अभी प्रारम्भिक दशा में हो। उनका बाहर की ओर निकला हुआ जबड़ा ऐसा मालूम पड़ता है मानो कोई बड़े मांसाहारी का हो, परन्तु वह तो पूरे शाकाहारी हैं। लम्बे-लम्बे कान ऐसे मालूम पड़ते हैं मानो पागलपन की निशानी हो, पर उन्हें तो कोई ऐसा नहीं कह सकता! नाक जैसे यहूदियों की-सी हो, जो बेईमानी के द्वारा धन बटोरने का लक्षण है। और मोटे-मोटे निकले हुए ओंठ तो विषय वासना के परिचायक हैं पर वह तो अपने साधु-जीवन के लिए प्रसिद्ध हैं। इससे पता चलता है किस प्रकार लोगों ने मनुष्य की आकृति तथा माथे की बनावट के सम्बन्ध में गलत सलत बातें लिख रक्खी हैं। जिस किसी को गांधी जी से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ है वह इससे इनकार नहीं कर सकता कि उनकी आँखों में एक दिव्य आभा चमकती है।

अन्त में मैं सुप्रसिद्ध अँगरेज लेखक, ऐथल मैनिन का कथन यहाँ उद्धृत करूँगी। उन्होंने अपनी पुस्तक "ब्रेड ऐण्ड रोजेज" में लिखा है—"आज सबसे बड़ा ईसाई एक व्यक्ति है जो ईसाई मत का प्रचार नहीं करता और वह है, महात्मा गांधी, जिसका नैतिक प्रभाव जनता पर बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है।

कलाकार उपेन्द्र महारथी

(पेज ८ का शेष)

भारतीय कला की जितनी उन्नति करना चाहते हैं। पुरानी कलाओं के विरोध प्रेम है। खास कर उन्हें कलायें आपको बहुत प्रिय हैं। जमाने की कलाओं से आपको प्रेरणा मिलती है।

बुद्ध भगवान् जब अपने कुटुम्ब को छोड़कर वैराग्य-साधना के लिए निकले हैं; उस समय का चित्र आपने ही मार्मिक बनाया है। इसी तरह जिस निर्मम ढंग से अँग्रेजी सरकार की जनता को तबाह किया है उस को भी चित्र आपने हृदयग्राही और ढंग से खींचा है। आप अपनी में भी देश की वेदना का ही चि हैं। आप बड़े भावुक कलाकार हैं जो एक बार मिला है वह कभी सहृदयता को नहीं भूल सकता।

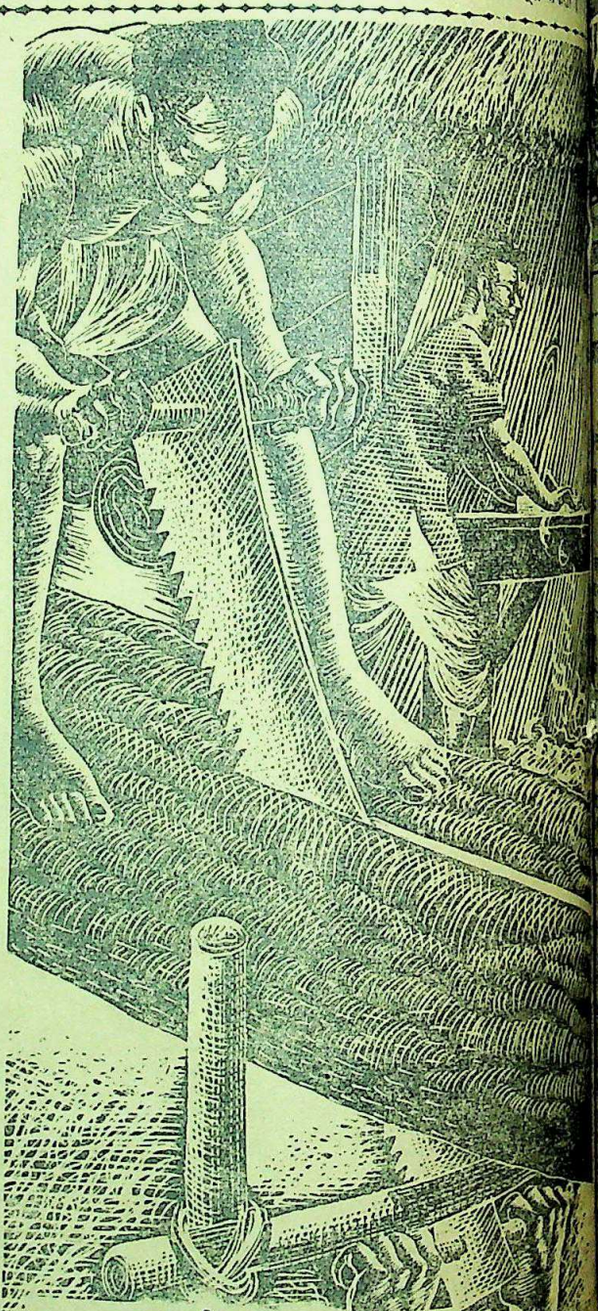

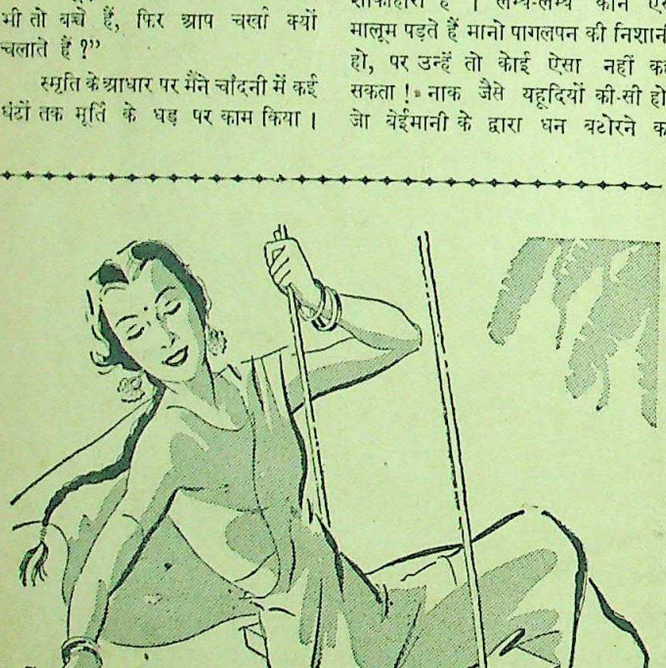

भारतीय गुलाब के उद्यान की समस्त प्रातःकाल की नवीनता विनोलिया व्हाइट रोज़ साबुन—द्वारा आप ला सकते हैं। उस का मृदु, भरपूर झाग सुकोमल त्वचा को सौम्यता से साफ़ करता है—और उस के सुगंध से आप के अतराफ़ एक मीठी महक लहराती है। आप के सौन्दर्य-वर्धन का इस से उत्तमोत्तम वा अत्युत्कृष्ट साबुन आप नहीं पा सकते। विनोलिया व्हाइट रोज़ को अपना प्रिय साबुन बना लो।

विनोलिया व्हाइट रोज साबुन

VWR. 10-111 HI

VINOLIA CO., LIMITED, LONDON, ENGLAND

लकड़ी का काम

लकड़ी के काम में हर समय इस्पात से बने हुए यन्त्रों की आवश्यकता पड़ती है—पेड़ों को गिराने से लेकर मेज कुर्सी या अलमारी बनाने तक।

नाना इस्पात

टाटा आयर्न एण्ड स्टील कं० लि० द्वारा प्रचारित।
हेड सेल्स आफ़िस १०२ ए, क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ही छत्रछाया के नीचे

गोदरेज ने ही अनेकों किस्म के सर्वोत्कृष्ट सामान, जैसे रक्षा के लिये धातु के सामान फर्नीचर, 'टायलेट' (नहानेका) साबुन, ग्लेसरीन, ओ. डी. कोलन आदि पारिवारिक व्यवहार की चीजों का निर्माण किया है। आज से ५० वर्ष पूर्व यह कार्य प्रारंभ किया गया था जो राष्ट्रीय स्वाधीनता के सिद्धान्त पर अभी तक उन्नति-पथ पर कूच कर रहा है।

प्रदर्शनमें गोदरेज का स्टील

Godrej गोदरेज के 'पेटेंट' अन्वेषण

गोदरेज की निपुणता के २४ पेटेंट तरीके है। चतुराई अधिक मजबूती और टिकाउपन की बनावट के साथ ही ये हल्के तथा मितव्ययिता के साथ बनाये गये हैं। उनके ४ नवीन पेटेंट गोदरेज तिजोरी, ७ पेटेंट आलमारी, और २ पेटेंट फाइल केबीनेट में नवीन अन्वेषण का समावेश है। सामूदिक उत्पादन की पद्धतियों के खास अनुभव व अपने संग्रहात तरीकों द्वारा गोदरेज सुरक्षा इन्जीनियरिंग में उच्चकोटि की श्रेणी पर पहुँच गया हैं और वे इस निपुणता द्वारा 'शीट-मेटल्स' (पतरे) तथा 'हार्ड वेयर' (भारी लोहे का सामान) (जिसमें ऐसे अनेकों सामानों का समावेश है जो हिन्दुस्तान भर में नहीं बने हैं) सबकुछ इस कोटि तथा मितव्ययिता से बनाने में समर्थ हुए हैं जैसे कि अन्य किसी जगह बनाये जाते हैं। वे केवल अपने कीमति कम्पलीट प्लन्ट 'मशीन टूल्स' (यांत्रिक ओजारों) की सहायता से ही इस योग्यता पर पहुचें हैं, इसमें से बहुत से यांत्रिक औजार भारत में सर्व प्रथम इनके ही द्वारा बनाये गये हैं।

लगभग तमाम 'सेफ डिपाजिट वाल्टस' जिनकी संख्या १००से उपर है और जो रिजर्व, इम्पीरियल और देश के दूसरे तथा बडे बेंको, 'सेफ डिपोजिट वाल्टस' व टकसाल में उपयोग किये जाते है समी गोदरेज के हैं। ये अभेघ वाल्ट्स "आक्सी रुसीटिलीन-ब्लो पाइप" तथा अन्य सभी आक्रमणों का सामना करते हैं। सेफ डिपाजिट की असंख्य तिजोरियां सुरक्षापूर्ण गोदरेज के पेटेंट तरीकों द्वारा ही बनाअी जाती हैं।

निःसन्देह गोदरेज की असंख्य तिजोरियां तमाम स्टील की, दरवाजे और दराजों सहित, राष्ट्रीय सम्पति का आफिसों सरकारी-विभागों, बैंकों व हर जगह सुरक्षित किये हुये हैं।

गोदरेज आधुनिक स्पात और 'टयुब्युलर' (नलीका) फर्नीचर, जो हर प्रकारके बडे बडे आधुनिक अस्पतालों में पूर्णरूप से व्यवहृत किये जाते हैं, बनाने में सब का अगुआ है।

गोदरेज के सामान—चावी छाप 'टायलेट' (नहाने का), 'शेविंग' (हजामत के लिये) साबुन और ग्लेसरीन ने गोदरेज को भारत का एक प्रिय घरेलू शब्द बना दिया है।

Godrej | गोदरेज एन्ड बाइस मेन्यु० कं०, लि० गोदरेज सोप्स, लि० | गोदरेज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह अति आकर्षक है।
यह अति सुन्दर है
परन्तु इसमें शिथिलता है। इसे दूर करना आवश्यक है।
जी.जी. फलपेय का एक ग्लास
किसी भी शारीरिक परिश्रम के पश्चात
स्फूर्ति और ठंढक प्रदान करता है।

फल पेय :—नीबू, माल्टा, आम, नीबू कोर्डियल, नीबू बार्ली।
फल शर्बत :—संतरा, केला, मिक्सडफ्रूट, नीबू, फाल्सा, स्टोबेरी, चाकोलेट और टाफी।

GG

जी.जी. फ्रूट प्रिज़र्विङ्ग फैक्टरी आगरा

जी. जी. इन्डस्ट्रीज़

जी० जी० सेल्स डिपो: —
मैसर्स गिरधरलाल वकील जनरलगंज कानपुर
बम्बई : देहली : कलकत्ता : ग्वालियर : अजमेर : बरेली।

स्वाद में परिपूर्ण
त्वरित पाचन-योग्य
विशुद्ध
विटैमिन-युक्त

डालडा में तली हुई पूरीयाँ आप के मूँह में आसानी से घुल जाती हैं—और स्फूर्ति भी देती हैं!

डालडा आपका भोजन स्वादिष्ट करता है और इस के अतिरिक्त वह आप का स्फूर्ति-दायक अन्न है! आप के दैनिक आहार को प्रसिद्ध पौष्टिक गुणवाले इस त्वरित् पाचनयोग्य, विटैमिन्-युक्त रसोई-साधन-द्वारा सुधारिये। डालडा प्रत्येक गृहिणी के लिये एक देन है—वह उसके साधी रसोई को भी अपनी स्वादिष्ट मधुरता से परीपूर्ण करके, उसके परिवार को अधिक शक्ति प्रदान करता है।

★ डालडा-पाकशास्त्र पुस्तक (केवल अंग्रेजी) की सहायता से अपने भोजन का प्रबन्ध कीजिये। इस में १५० से अधिक स्वादिष्ट भारतीय आहार के प्रकार निजी पौष्टिक गुणों के कारण चुने हुए समाविष्ट हैं। आप के कॉपी के लिये Dept. A411 P.O. Box No. 353, Bombay, के पते पर ४ आने के पो० स्टाम्पस् भेजियेगा।

HVM. 48-50 HI THE HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING CO., LTD.

मझली दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पिता भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार करती है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

राईट आनरेबल

सर तेज बहादुर स कहते हैं

"नवीन हिन्दुस्तान के निर्माण में मितव्ययिता पहिले से कहीं अधिक राष्ट्रीय सम्पत्ति सिद्ध होगी। प्रत्येक व्यक्ति की बचत इतनी नहीं होती कि वह मूल्यवान भूसम्पत्ति ख़रीदे या बड़ी २ सुरक्षित मदों में रुपया लगा सके। परन्तु थोड़ी आय वाला व्यक्ति भी नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स की मद में रुपया लगा सकता है और ऐसा करने में हानि का कुछ भी तो भय नहीं चाहे संसार की व्यापारिक दशा कुछ भी क्यों न हो जावे। मैं इस योजना के पक्ष में विशेषतया इसलिये हूं कि जनता से यह आशा की जाती है कि इस उद्देश्य को समझ कर वे अपनी इच्छा से रुपया लगायेंगे और उन पर किसी ओर से कोई अनुचित दबाव न डाला जायेगा।"

Tej Bahadur Sapru

संक्षिप्त विवरण

(१) आप ५), १०), ५०), १००), ५००), १०००) या ५०००) के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।
(२) एक व्यक्ति ५०००) से अधिक मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स नहीं ख़रीद सकता। ये इतने उपयोगी हैं कि इनका राशन करना ही उचित समझा गया है। हां दो व्यक्ति मिलकर १०,०००) के सर्टिफिकेट्स मोल ले सकते हैं।
(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है।
(४) इस प्रकार अवधि पूरी होने पर ४-१/६% वार्षिक ब्याज मिलता है।
(५) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।
(६) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं (५) का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष पश्चात ही भुनाया जा सकता है) परन्तु वास्तविक लाभ इसी में हैं कि १२ वर्ष के पहिले इन्हें न भुनायें।
(७) जिनकी बचत थोड़ी है वह १) ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्पस ख़रीद सकते हैं। ५) के स्टैम्पस जमा होने पर एक नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट मिल जाता है।
(८) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्पस डाकघर सरकार द्वारा अधिकृत एजण्टों तथा सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

आप अपनी बचत से ५०% लाभ उठाइये

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिये।

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, ... मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

DESHDOOT ILLUSTRATED HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

...क मूल्य ७॥)
...तिसंख्या =)

...३० जून, १९४६ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 30th June, 1946

लक्ष्मण-शक्ति—कविवर श्री राजाराम श्रीवास्तव बी० एस-सी० एल-एल० बी० की एक बहुत ही उत्तम कोटि की रचना है। इस खण्ड-काव्य की रचना रामायण के लंका काण्ड की उस सुप्रसिद्ध घटना के आधार पर की गई है, जब कि लक्ष्मण जी मेघनाद से युद्ध करते हुए उसके द्वारा चलाई गई शक्ति के हृदय में लग जाने पर मूर्च्छित होकर गिर पड़े थे और उनके जीवित रहने की आशा नहीं रह गई थी। कवि ने उस समय की मर्य्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी की शोभामय अवस्था का बहुत ही आकर्षक और हृदयग्राही वर्णन किया है। मूल्य ॥) आने।

...हिन्द फौज में झाँसी की रानी ...की कर्नल लक्ष्मी स्वामिनाथन्।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र

अफ़्रीका में भारतीयों पर संकट।
माननीय श्री आर० के० पाटिल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

J&N REMINDERS!

स्मारक पत्र

किस प्रकार का काम ? : भीतरी दीवारों की सजावट के लिए जहाँ तेल का रंग प्रयोग नहीं किया जा सकता, या जहाँ किफ़ायत आवश्यक है।

हमारी सिफ़ारिश : 'ऐक्वाटिंटा' (Acquatinta) आयल बाउण्ड धुलने योग्य दीवारों का रंग जो मख़मली फ़िनिश देता है। अथवा इससे भी सस्ता "जैन्सोलिन" (Jensolin) दीवारों का सूखा रंग जो अति सुन्दर मैट फ़िनिश देता है।

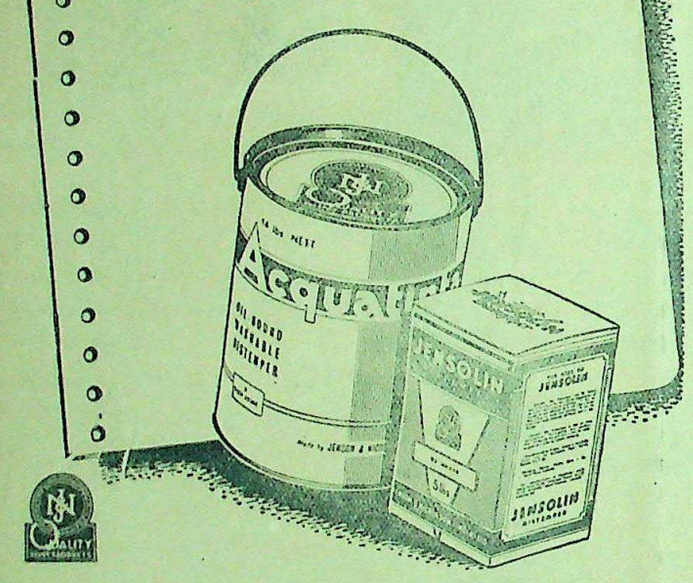

JENSON & NICHOLSON
MAKERS OF PAINTS

खांसी और शरदी के लिये
वैज्ञानिक इलाज

सिरोलीन
'रोचे'

खाद्य बचाना खाद्य उगाने के बराबर है

इस खाद्य - संकट में प्रत्येक समर्थ व्यक्ति का यह कर्त्तव्य है कि वह [illegible] से अधिक खाद्य उत्पन्न करे। यदि आप खाद्य-उत्पादक नहीं हो सकते कमसे कम खाद्य रक्षक तो हो सकते हैं। स्मरण रखिये खाद्य बचाना उगाने के बराबर है।

भारतीय इतिहास की इस गंभीर घड़ी में प्रत्येक नागरिक की मदद जरूरत है। अपने घरों की सरल और दैनिक मितव्ययिता के द्वारा खाद्य के सुधार में हम सब ठोस मदद दे सकते हैं? यहां ये चार तरीके दिये हैं जिनके द्वारा आप मदद कर सकते हैं:

१ आतिथ्य - सत्कार को कम कर दीजिये। यदि आपको अतिथि बुलाने ही हैं तो सादा भोजन बनवाइये। वे कारण को समझेंगे और उसको पसंद करेंगे।

२ थोड़ा खाना परोस कर अपने घर में ही बचत कीजिये। इस बात का स्मरण रक्खें कि रसोई घर में व्यर्थ क्षति न हो।

३ शादियों और धार्मिक एवं [illegible] जिक उत्सवों में कठोर मितव्यय का व्यवहार कीजिये।

४ अपने स्वाद पर निर्भर रहें [illegible] अधिक तरकारियाँ, फल, [illegible] मांस, अंडे और दूध से बनी [illegible] खाकर अपने भोजन को पौष्टिक [illegible] इये। अपनी चावल व रोटी [illegible] खुराक कम कर दीजिये।

खाद्य बचाना प्राण बचाने के बराबर है।

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा

पं० गौरीशंकर मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०
लिखित पुस्तकें

बलिदान-मन्दिर

इस उपन्यास की घटना बड़ी रोचक है। मनुष्य के चरित्र का उत्कर्ष किस प्रकार हुआ, वह लोकोपयोगी किस प्रकार हुआ और वास्तविक बलिदान क्या है, इसका बड़ा सुन्दर वर्णन इस उपन्यास में है। इसके पढ़ने से मनोरंजन के साथ-साथ आत्मसुधार की भी शिक्षा मिलती है। अच्छे टाइपों में छपी ढाई सौ पृष्ठों की अजिल्द पुस्तक का मूल्य १।) एक रुपया आठ आने।

भक्त जयदेव

यह उपन्यास अपने ढंग का एक ही है। इसमें 'हम भक्तन के भक्त हमारे' का प्रदर्शन बड़ी सुन्दरता से लेखक ने किया है। मूल्य केवल १।) एक रुपया आठ आने।

कलियुगी दुनिया की सच्ची कहानियाँ

पहला भाग

वर्तमान युग प्रगति का कहा जाता है। इसी युग की कहानियाँ इस संग्रह में हैं। ये विलक्षण हैं और पढ़नेवालों को एक मीठी सलाह देती हैं। कहानियाँ एक से एक बढ़कर हैं। पृष्ठसंख्या सवा सौ। मूल्य १) एक रुपया चार आने।

शबरी अछूत ?

यह एक रोमांचकारी नाटक है। मर्यादा-पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी की प्रसिद्ध भक्त मीरा के कथानक के आधार पर इस नाटक की रचना हुई है। अछूत समस्या के युग में यह नाटक सचमुच अपनी विशेषता रखता है। बढ़िया छपी पुस्तक का मूल्य केवल ।।) बारह आने।

मिलने का पता—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, ३० जून, १९४६

संख्या ४४]

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

... पेथिक लारेंस वृद्ध हैं ... भारतीय राजनीति में बड़ी ... ले रहे हैं।

... के अधिवेशन के ... लीग के एक सदस्य ... वर्धा-शिक्षा-योजना मुसलमानों ... और धार्मिक अधिकारों का ... है। एक दूसरे मुस्लिम ... कि वर्धा-शिक्षा-योजना ... करने के बजाय जेल जाना ... है। अपने राम की राय में ... को वाकई पढ़ने-लिखने ... क्या है? सरकारी नौक- ... ही जाती हैं। पढ़ने- ... अच्छा है, ब्रिटिश ... करते रहना क्योंकि ... ही तो आमद है। रह गई ... बात। सो मुस्लिम लीग ... पढ़ने-पढ़ाने के लिए ... क्या जरूरत है? अगर बिना ... हल हो जाता है तो ... परेशानी मोल लेने से। ... न मिलने पर अगर ... ठीक भी है, पढ़ने-लिखने ... के लिए कहीं भले आदमी ...

* *

... कहते हैं कि आगामी ... में योरोपियनों को वोट देने ... नहीं है। भारत के भावी

... नाडर। आप तामिलनाद ... के दुबारा सभापति चुने गये हैं।

विधान का निर्णय केवल भारतीय ही कर सकते हैं। महात्मा गांधी का कहना उचित है लेकिन योरोपियन तो भारत ही नहीं एशिया को अपनी बपौती समझे बैठे हैं। कहावत है कि दाल भात में मूसर-चंद। भारतीय विधान बने या और कुछ उन्हें उसमें कूद पड़ना जरूरी है। क्योंकि भारत में गोरी सरकार का राज्य है न! फिर कालों पर चड्ढी कसना योरोपियनों का जन्म-सिद्ध अधिकार भी है। दक्षिणी अफ्रीका में वह अपनी लीला का नंगा नाच दिखाने लगे हैं, फिर भारत में वह क्यों न दिखायेंगे? अपने राम की समझ में वह दिन लद गये। क्योंकि सबै दिन जात न एक समान। अब तक योरोपियनों ने खूब मौज उड़ाया लेकिन अब बिस्तर बँधने के दिन आ रहे हैं।

* * *

जेरुसलम के ग्रांड मुफ्ती आजकल मिस्र के शाह फारुख की शरण में पहुँच गये हैं! ब्रिटिश सरकार उनकी गिरफ्तारी के लिए टटोलती ही रह गई और मुफ्ती फुर्र से उड़कर मिस्र जा पहुँचे। ब्रिटिश सरकार परेशान है कि ऐसा न हो मुफ्ती मिस्र में भी पहुँचकर फिर कोई गड़बड़ घोटाला करे। वाकई मध्य-पूर्व की राजनीति के लिए मुफ्ती एक आफत बन बैठा है। ब्रिटिश सरकार चाहती है कि वह मुफ्त में उसके मेहमान बन जायें किन्तु मुफ्ती दूसरे के मेहमान बनने के इच्छुक हैं लेकिन ब्रिटेन के मुफ्त भी नहीं। मुफ्ती को सूखी रोटी पसन्द है लेकिन ब्रिटिश का मालपुआ नहीं। मुफ्ती सचमुच एक आफत बन गया है। वह पकड़ ही में नहीं आता। शिकारी बढ़े और मुफ्ती उड़े। देखना है ब्रिटेन अपने जाल में मुफ्ती को फँसा पाते हैं या नहीं? लेकिन अपने राम जानते हैं कि मुफती का फँसाना हँसी-खेल नहीं है।

* * *

कांग्रेस विधान-सम्मेलन में शरीक होगी किन्तु नई केन्द्रीय सरकार में वह शामिल नहीं होगी। कांग्रेस वर्किंग कमेटी का यह निर्णय बड़े मार्के का और मजेदार है। कहावत है कि तुम डाल डाल तो हम पात पात। इस वक्त सर स्टेफर्ड क्रिप्स और लार्ड वैवेल डाल डाल चल रहे हैं तो कांग्रेस वर्किंग कमेटी के नेता पात पात। अँगरेज अपनी राजनीति और दाँव-पेंच से सारी दुनिया को मूँड़े बैठे हैं किन्तु लँगोटीधारी महात्मा गांधी को मूँड़ना ज़रा टेढ़ी खीर है। अपने राम की समझ में यह बात भी आती है कि बिना विधान बने किसी भी सरकार का महत्व ही क्या है? मुस्लिम लीग ने नई सरकार में शामिल होना स्वीकार ही कर लिया है, बस सौंप दिया जाये सारे हिन्दुस्तान का इन्तजाम! ब्रिटिश सरकार मुस्लिम लीग के साथ है ही। फिर शासन बढ़िया कैसे न हो सकेगा? मुस्लिम लीगी और अँगरेज दोनों दीवाने मिलकर भारत का शासन करेंगे तो स्वराज्य जल्दी से जल्दी छलाँग मारता हुआ आ पहुँचेगा। इसीलिए तो कांग्रेस ने छूट दे दी है कि अंतिम समय में ज़रा फिर एक बार नङ्गा नाच हो तब तो हिन्दुस्तान को स्वाधीनता मिलेगी? बात है भी ठीक कि दोनों दीवानों का मेल जो न कर गुजरे सो थोड़ा!

* * *

भारतीयों पर इस वक्त आफत ही आफत दिखाई दे रही है। हिन्दुस्तान में तो जानबुल ने अपना माया जाल फैला ही रखा है, दक्षिणी अफ्रीका भी गोरों-कालों के हाथापाई का मैदान बन गया है। साथ ही लङ्का में भी भारतीयों को परेशान किया जा रहा है। लङ्का की सरकार हिन्दुस्तानियों को छूत की बीमारी समझने लगी है, इसलिए वह उन्हें वहाँ से भगाना चाहती है। लेकिन अब वह वक्त लद गया है। हिन्दुस्तानी समस्या भूत की तरह पीछे पड़ी है। चाहे भारत हो, दक्षिणी अफ्रीका हो या लङ्का हो। अब जान छूटनेवाली नहीं है। जान छूटने का केवल एक ही तरीका है, भारतवर्ष को स्वतन्त्रता देकर यहाँ से रफूचक्कर होना। किसी ने कहा है कि 'रसरी आवत जात ते, सिल पर होत निसान।' अभी तो सिल पर निशान हो रहा है, जहाँ रस्सी कटी कि फैसला हुआ।

* * *

सिक्ख कहते हैं कि हम केन्द्र की अस्थायी सरकार में शामिल न होंगे। बात सही भी है। सिक्ख शामिल होकर क्या मुस्लिम लीग के सामने अपनी हुरमत उतरवावेंगे? जब कांग्रेस ही अस्थायी सरकार में शामिल नहीं हो रही है तो सिक्ख, अछूत, पारसी और ईसाई अल्पसंख्यक शामिल होकर क्या करेंगे? क्योंकि गठबन्धन तो मुस्लिम लीग से है। यह बेचारे अल्पसंख्यक वहाँ क्या करेंगे? इसलिए अपने राम की राय में इस वक्त निहायत जरूरी है कि भारत पर मुस्लिम लीग का ही शासन हो। मुस्लिम लीग शासन करने में निपुण भी है। पारसाल बंगाल में जो अकाल पड़ा था वह लीगी शासन की छत्रछाया में। इसलिए इस बार अगर भारत में अकाल पड़े तो वह भी उसके शासन के अनुकूल ही होगा। हम तो खुदा से इस्तदुआ करते हैं कि कब वह दिन आयेगा जब मुस्लिम लीग का सारे हिन्दुस्तान में राज्य होगा क्योंकि पाकिस्तान को छोड़कर कौन भला मानुष नापाक स्थान में रहना पसंद करेगा?

* * *

सर स्टेफर्ड क्रिप्स वर्तमान राजनैतिक वार्ता के असली प्राण हैं।

बंगाल में फिर अकाल पड़ने के आसार दिखाई दे रहे हैं। जो खबरें आ रही हैं उससे जान पड़ता है कि यह अकाल पिछले अकाल से भी भयंकर होगा। पिछली बार के अकाल में बंगाल में मुस्लिम लीग का ही शासन था लेकिन अगर केन्द्रीय सरकार में भी हो गया तब तो पौ बारह! लीग की ताकत बढ़ने के साथ साथ अगर अकाल भी अपना मुँह फैलाये तो क्या बेजा? क्योंकि दोनों में पुरानी दोस्ती है।

* * *

पेरिस में चारों महाराष्ट्रों अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस और रूस के वैदेशिक मंत्रियों का सम्मेलन क्या हो रहा है मानो दंगल हो रहा है। मंत्रियों के केवल लँगोट कसकर लड़ने की खबर अभी तक नहीं मिली है, बाकी हर तरह की जबानी लड़ाई में कोई कसर बाकी नहीं है। देखना है इस दंगल में कौन कामयाबी हासिल करता है?

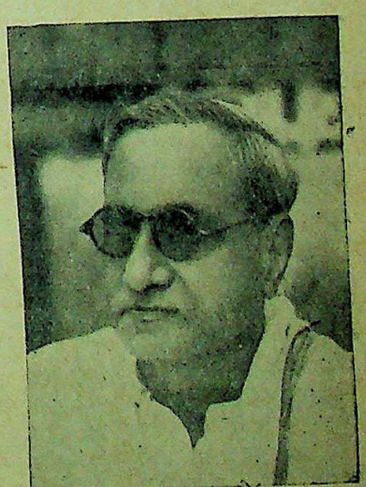

श्री के० बाश्याम। आप मद्रास के वर्तमान कांग्रेस मंत्रिमंडल के न्याय-मंत्री बनाये गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय पृष्ठ

दक्षिणी अफ्रीका में सत्याग्रह

दक्षिणी अफ्रीका में लाखों भारतीयों के अधिकारों के विरुद्ध गोरी स्मट्शाही ने जिन प्रतिबन्धों और नये क़ानूनों का निर्माण किया है, उसके विरुद्ध और प्रतिवादस्वरूप इस समय भारतीयों ने सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया है। सत्याग्रह दिन-प्रतिदिन व्यापक होता जा रहा है। गोरे अधिकारियों का अत्याचार भारतीय सत्याग्रहियों पर दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। गोरे अधिकारी सत्याग्रहियों के कैम्पों पर हमला करके अनाचार करते हैं। स्त्री-सत्याग्रहियों को भी वह अपमानित करने से बाज नहीं आते। सत्याग्रहियों की गिरफ्तारियाँ हो रही हैं और उन पर मुक़दमे भी चलाये जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में यह भी समझ लेने की बात है कि भारत तथा दक्षिणी अफ्रीका का व्यापारिक सम्बन्ध भी भंग हो गया है साथ ही भारत-सरकार के दक्षिणी अफ्रीका-स्थित एजेंट श्री देशमुख भी भारत वापस आ गये हैं। तात्पर्य यह है कि भारत और दक्षिणी अफ्रीका का सम्बन्ध टूट गया है। इसलिए और भी वहाँ भारतीयों पर अनाचार हो रहा है क्योंकि दक्षिणी अफ्रीका की गोरी स्मट्शाही को खुलकर खेलने और अपनी मनमानी करने का अब अच्छा अवसर प्राप्त हो गया है।

दक्षिणी अफ्रीका में गोरों का अत्याचार भारतीयों पर नया नहीं है। वर्षों से यह संघर्ष चल रहा है। अनेक बार वहाँ के भारतीय नागरिकों के विरुद्ध क़ानूनी दाँवपेंच खेले गये और उन्हें गुलाम तथा दलित बनाये रखने के लिए अवसर अवसर पर जाल बिछाये जाते रहे किन्तु इस बार फ़ील्ड मार्शल स्मट्स की गोरी सरकार ने उस पर अमल करने में पूरी सफलता प्राप्त कर ली है। इसी के परिणामस्वरूप गोरों का अनाचार बढ़ गया है और भारतीयों ने सत्याग्रह का हथियार लेकर इसका प्रतिवाद करना प्रारम्भ कर दिया है। जो कुछ हो रहा है उसका परिणाम तो कुछ न कुछ अन्त में निकलेगा ही किन्तु इससे एक बात तो स्पष्ट हो जाती है कि गोरी जाति भारतीयों को कितनी घृणा की दृष्टि से देखती है और इसका परिणाम दक्षिणी अफ्रीका को ही नहीं समस्त संसार को भोगना पड़ेगा। गोरे और काले के भेदभाव का ज़हर व्यापक रूप से फैल रहा है। स्मट्शाही ने 'पेगिंग ऐक्ट' को क़ानूनी रूप देकर केवल भारत ही नहीं बल्कि समस्त एशिया में बसनेवाली जातियों के प्रति घृणित भावना फैलाने की एक चुनौती दी है। हम तो समझते हैं कि दक्षिणी अफ्रीका की नौकरशाही का वर्तमान रवैया उस भावी आशंका का प्रथम चरण है जो एशिया बनाम योरोप के व्यापक समस्या को उत्तेजना देनेवाला है। हम पूछते हैं कि दक्षिणी अफ्रीका के गोरों को भारतीयों के अधिकारों पर कुठाराघात करने का क्या अधिकार है? जो भारतीय दक्षिणी अफ्रीका के नागरिक बन गये हैं, उन्हें भी नागरिकता का वही अधिकार प्राप्त है जो वहाँ के गोरे नागरिकों को। यदि जनरल स्मट्स ने गोरों की रक्षा के लिए नियम क़ानून बना दिये हैं तो भारतीय उन अपमानजनक क़ानूनों और नियमों को क्यों मानें जिनसे वह वहाँ के नागरिक अधिकारों से वंचित होते हैं? हम तो इस अवसर पर यह भी सोचने को बाध्य होते हैं कि भारत और दक्षिणी अफ्रीका के बीच जो आर्थिक और राजनैतिक सम्बन्ध-विच्छेद हुआ है, उसमें भी कुछ न कुछ रहस्य तो है ही। हमारा हृदय इसे स्वीकार करने में असमर्थ है कि वर्तमान भारत-सरकार दूध की धोई है और उसने दक्षिणी अफ्रीका से जो सम्बन्ध-विच्छेद किया है, वह केवल भारतीयों की हित-चिंतना से या भारतीयों पर होनेवाले अत्याचारों के विरोधस्वरूप! लेकिन जो कुछ हुआ है वह सामने है। फिर भी हिन्दुस्तान के हिन्दुस्तानियों की दक्षिणी अफ्रीका के त्याग करनेवाले भारतीयों के प्रति पूरी सहानुभूति और दिलचस्पी है। महात्मा गांधी ने अपने राजनैतिक जीवन का प्रारम्भिक समय दक्षिणी अफ्रीका के गोराशाही अत्याचारों के विरुद्ध सत्याग्रह का बिगुल बजाकर प्रारंभ किया था। अन्त में महात्मा गांधी की विजय हुई। इसलिए वहाँ के भारतीयों ने अहिंसात्मक सत्याग्रह की जो नीति ग्रहण की है वह भी अन्त में सफलीभूत होगी। त्याग और बलिदान का फल अच्छा ही होता है। दक्षिणी अफ्रीका की यूनियन सरकार को कभी न कभी अपने कृत्यों के लिए पछताना ही नहीं पड़ेगा बल्कि जातीय दृष्टि से गोरे और काले के विद्वेष की अग्नि को प्रज्वलित करने के अनौचित्यपूर्ण कार्य के लिए संसार की निष्पक्ष अदालत के सामने माफ़ी माँगनी पड़ेगी।

* * *

अस्थायी सरकार का बहिष्कार

ब्रिटिश मंत्रिदल और लार्ड वैवेल ने भावी केन्द्रीय सरकार के संगठन के लिए राजनैतिक दलों तथा अल्पसंख्यक वर्गों के प्रतिनिधिस्वरूप जिन नामों की घोषणा की थी, कुछ मतभेद के कारण कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने उसे अस्वीकृत कर दिया है। कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सामने सबसे बड़ा आदर्श है, राष्ट्रीयता की रक्षा करना। क्योंकि राष्ट्रीय दृष्टि से कांग्रेस समस्त राष्ट्र की संस्था है, वह किसी भी वर्ग के प्रति अन्याय नहीं कर सकती। कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सामने सबसे बड़ी समस्या है वाइसराय की कार्यकारिणी में राष्ट्रीय मुसलमानों के प्रतिनिधित्व की। वाइसराय तथा मंत्रिदल की घोषणा के अनुसार मुस्लिम लीग ही समस्त भारत के मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करनेवाली एकमात्र संस्था है। कांग्रेस की दृष्टि में मुस्लिम लीग मुसलमानों के ऐसे जमात का प्रतिनिधित्व करती है जो साम्प्रदायिक तथा पाकिस्तानी भावना से ओतप्रोत है और भारत के विभाजन में विश्वास करती है। मुसलमानों में राष्ट्रीय मुसलमानों का भी एक बहुमतप्राप्त वर्ग है जो भारतीय अखंडता में विश्वास तथा राष्ट्रीयता और भारतीय एकता का सिद्धान्त स्वीकार करता है। ऐसे मुस्लिम जमात के नेता हैं मौलाना अबुल कलाम आज़ाद और खान बहादुर अबुल गफ़्फ़ार खाँ। कांग्रेस अस्थायी सरकार में राष्ट्रीय मुसलमानों का केवल एक प्रतिनिधित्व चाहती है किन्तु चूँकि मिस्टर जिन्ना इस पर राज़ी नहीं हैं इसलिए ब्रिटिश मंत्रिदल तथा वाइसराय लार्ड वैवेल कैसे राज़ी हो सकते हैं? फिर कांग्रेस राष्ट्रीय मुसलमानों को अपने से कैसे अलग कर सकती है? कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने इसी सिद्धान्त पर प्रस्तावित कार्यकारिणी में भाग लेने से इनकार कर दिया है।

हमारी समझ में जिस आधार पर कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने वाइसराय के प्रस्तावित घोषणा को अस्वीकार करने का निर्णय किया है, वह उचित ही है। कांग्रेस ने जो कुछ किया है वह उस आदर्श और सिद्धान्त की परंपरा की रक्षा की है जिस पर वह सदा से अबर्दस्त क़ुर्बानी करती आई है। अपने आदर्श की रक्षा करना और बड़े से बड़े प्रलोभन को ठुकरा देना भारतीय संस्कृति की परम्परा का यही आदर्श रहा है। हम कह सकते हैं कि वाइसराय की कोई भी कार्यकारिणी या केन्द्रीय सरकार का संगठन तब तक दृढ़ और लोकप्रिय नहीं हो सकता जब तक कांग्रेस ऐसी राष्ट्रीय जमात का प्रतिनिधित्व पूर्ण रूप से वहाँ नहीं होता। हम जानते हैं कि यदि लार्ड वैवेल आज चाहें तो यह तनिक-सी कठिनाई एक क्षण में हल हो सकती है किन्तु मुस्लिम लीग को वह अप्रसन्न कैसे कर सकते हैं क्योंकि कहीं मुस्लिम लीग ने भी कार्यकारिणी के निर्माण से असहयोग कर दिया तब तो सरकार का सारा नाटक ही समाप्त हो जायेगा। सरकार ने समता के बँटवारे का जो मायाजाल रचा है, उसका खोखलापन स्वयं सिद्ध हो जायेगा। कांग्रेस नेताओं ने अब तक बड़ी सावधानी तथा शान्त चित्त से मंत्रि-दल तथा वाइसराय की योजना को सफल बनाने में सहयोग दिया और हद दर्जे तक वह अपने आदर्श से नीचे की ओर भी खिसक आये किन्तु नीचे खिसकने की भी एक सीमा होती है। इसलिए कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने जो निर्णय किया है, वह राष्ट्र के आदर्श के अनुकूल है। देखना है कि वाइसराय अपनी कार्यकारिणी के संगठन में अब कौन-सा मार्ग ग्रहण करते हैं?

मध्य-पूर्व का राजनीतिक जी

जेरुसलम के ग्रांड मुफ्ती के पलायन की

जनक कहानी

लेखक, श्री नारायणदत्त तिवारी, बी० ए०

इधर कुछ दिन हुए, फ्रांस से आये हुए एक सनसनीखेज समाचार ने सारे संसार का ध्यान आकर्षित कर लिया था। इस महायुद्ध में धुरीराष्ट्रों का पूरी तौर से साथ देनेवाले, अँगरेजों के कट्टर दुश्मन, हज अमीनअल हुसैनी, जो कि जेरुसलम के अरबों के धर्माध्यक्ष, यानी ग्रांड मुफ्ती थे, सहसा फ्रांस में अपने निवास-स्थान से भाग गये। कई दिन तक मुफ्ती अल हुसैनी का कोई पता न चला। लोग कई प्रकार की कल्पनाएँ करने लगे। लेकिन अरब जनता बहुत ही प्रसन्न थी। उसे अपना खोया हुआ नेता मिलने की उम्मीद थी। सारे अरब प्रदेश, सीरिया, फिलिस्तीन, लेबानन और सऊदी अरब में खुशियाँ मनाई गईं। इतने ही में पता चला कि ग्रांड मुफ्ती मिस्र के शाह फारुख के अतिथि हैं और मिस्र में सरकारी तौर से उनकी सुरक्षा का इंतजाम किया गया है।

जेरुसलम के अरब-नेता ग्रांड मुफ्ती आजकल मिस्र के शाह फारुख के यहाँ में जा पहुँचे हैं।

हमारे हिन्दुतान के नेता जी सुभाषचंद्र बोस की तरह अल हुसैनी ने भी अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच में अपने को प्रथम कोटि का राजनीतिज्ञ सिद्ध किया है। गरीब घराने में पैदा होकर इन्होंने जेरुसलम में अपनी प्रतिभा से शीघ्र ही प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया। अँगरेज शासक, जो उनकी स्वतन्त्र मनोवृत्ति तथा जोशीले स्वभाव से अनभिज्ञ थे, इनकी ओर आकर्षित हुए। जेरुसलम के बड़े मुफ्ती पद के लिए अल हुसैनी खड़े हुए और इनका नम्बर वोट पानेवालों की संख्या के क्रम में चौथा आया। फिर भी अँगरेजों ने इनको ग्रांड मुफ्ती बनाया और इस प्रकार इनके महत्त्वपूर्ण जीवन की दिनचर्या शुरू हुई। जिन अँगरेजों ने इनको अपने शोषण के लिए अस्त्र के रूप में उपयोग करना चाहा था, उन्हीं के साम्राज्यवाद के विरुद्ध हुसैनी ने अपने बढ़ते हुए प्रभाव को प्रयुक्त किया और उनका कट्टर दुश्मन बन गया।

अँगरेजों ने उसे गद्दी से उतारने, निकालने व गिरफ्तार करने की बहुतेरी कोशिश की, पर सब व्यर्थ हुई। में राजा सुलेमान के मन्दिर की बने हुए उमर पाक की मस्जिद पर बैठकर, मुफ्ती अल हुसैनी तक लगातार अँगरेजों की मुकाबला किया, और इस्लाम अँगरेजों के विरुद्ध धार्मिक दिया। उसके प्रचंड भक्तों में जाँनिसार निशानेबाज हर पहरे में रहते थे।

सहसा मुफ्ती जेरुसलम से गया और टर्की होते हुए धीरे राष्ट्रों तक पहुँच गया। उसने बिया में एक आजाद अरबों की बनाई। रशीदअली के द्वारा किया गया विद्रोह उसी के हुआ था। ७ मई १९४५ जर्मनी के आत्म-समर्पण करने मुफ्ती स्विटजरलैंड में बर्न के हवाई अड्डे में एक जर्मन द्वारा उतर गये और नजरबंद गये।

वहाँ से मुफ्ती चुपचाप चले गये, जहाँ की सरकार ने छेड़खानी नहीं की। अँगरेजों ने सरकार का रुख देखकर अधिक दिया, केवल यूगोस्लाविया के ने ही माँग की कि उन्हें मुफ्ती को चलाने के लिए सुपुर्द कर दिया पर फ्रेंच सरकार ने साफ मना कर उधर अरब में मुफ्ती का प्रभाव जा रहा था। उनके व्यक्तित्व इतनी जबरदस्त थी कि अरब की अरब-समिति ने उनको उनकी दरगी में ही अपना चेयरमैन चुन

अब मुफ्ती पुनः योरप छोड़कर पूर्व में आ गये हैं। उनका ब्रिटिश-साम्राज्यवाद की हिलती हुई जड़ के लिए एक भीषण भूकम्प है। अब यह देखना मुफ्ती किस प्रकार अरब राजनीति करते हैं और एक वृहत्तर स्वतन्त्र संघ का निर्माण करते हैं जो कि साम्राज्यवाद व रूस के स्टालिनवाद के चंगुल से मुक्त हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष और देशी रियासतें

स्वातन्त्र्य-आन्दोलन की उपेक्षा कैसे कर सकतीं हैं?

लेखक, श्रीयुत फेनर ब्राकवे

जब समस्त भारतवर्ष की जनता अपने उद्देश्य की अन्तिम सीढ़ी पार करने के लिए अन्तिम चेष्टा में रत है। आये दिन की घटनाएँ इसकी परिचायक हैं। देशी रियासतों की प्रजा भी चेतन हो उठी है और वह भी अपने अधिकारों को प्राप्त करने की चेष्टा में रत है। आये दिन की घटनाएँ इसकी परिचायक हैं। इसी विषय पर ब्रिटिश मज़दूर-दल के वृद्ध नेता और विद्वान् लेखक ने इसी विषय पर अपने विवेकपूर्ण विचार प्रकट किये हैं।

सन् १९३८ में जब अखिलभारतीय कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन बम्बई के हरिपुरा में हुआ था, तो मैं भी उसमें शामिल था। उस अधिवेशन का चित्र अब भी मेरे मस्तिष्क पर स्पष्ट रूप से अंकित है। मुझे याद है हम एक पंकिल स्थान से होकर एक विशाल पंडाल में प्रवेश करते हैं। इतना बड़ा पंडाल मैंने पहली बार देखा था। प्रतिनिधिगण हजारों की

जवाहरलाल नेहरू काश्मीर की जनता को पुनः काश्मीर जायेंगे।

संख्या में आये थे। वे सबके सब सफेद खादी पहने थे। उनके बीच बने हुए मंच पर कांग्रेस और ऐसे गोलाकार का दृश्य था। फुटबाल या ऐसे अन्य खेलों के मैदान में होता करता है। दिक्कत यह थी कि कोई वक्ता मंच के एक ओर को उठता तो कुछ लोग उसके दूसरी ओर रह जाते, कुछ कानों से दूर होते कुछ सामने। इस समस्या को हल करने के लिए व्याख्यान के चार केन्द्र बनाये गये थे और बारी बारी से हर एक भाग चारों ओर सुनाया जाता था। मुझे मालूम नहीं किस प्रकार प्रतिनिधियों ने तर्कों को सही सही समझा होगा। मैं यह सब कहकर कांग्रेस की निन्दा नहीं करना चाहता। मेरा तात्पर्य इस बात की बात वह नहीं थी जो कांग्रेस में कहा गया बल्कि वह थी कि विभिन्न प्रतिनिधित्व वहाँ पर इतनी बड़ी संख्या में प्रतिनिधि एकत्र हो रहे थे। वे प्रतिनिधि भारत के जाग्रत् जन-साधारण—किसानों तथा अग्रदर्शी बुद्धिजीवियों के थे जो नरेशों की सत्ता के विरुद्ध जनता के लिए जनतंत्रात्मक अधिकार दावा कर रहे थे।

इस समय उस सम्मेलन की स्मृति होती है कि पं० जवाहरलाल के फरीदकोट—मिशन का स्मरण में अत्यन्त पुलकित हो उठता है। भारत की स्वतंत्रता-युद्ध में उनके द्वारा अभिनय की महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक थी। 'फरीदकोट' के मि० नौरमन क्लिफ ने जवाहरलाल जी की फरीदकोट यात्रा का बड़ा ही सुन्दर और प्रभावोत्पादक चित्र खींचा है। अँगरेज पाठकों ने (कम से कम जो जनतंत्रवादी हैं) अवश्य ही बड़ी दिलचस्पी से इस समाचार को पढ़ा होगा। किस प्रकार पुलिस भीड़ को भगाने की चेष्टा कर रही थी, जनता पुलिस की परवाह न कर जवाहरलाल जी के स्वागत के हेतु ठट्ठ की ठट्ठ स्टेशन पर एकत्रित हो गई, इसके पश्चात् जवाहरलाल जलूस के आगे चले, प्रतिबन्ध के बावजूद उनकी फरीदकोट नरेश से भेंट, नरेश का हथियार डालना और फिर जवाहरलाल जी का जनता को एलान करना कि उनके सारे नागरिक अधिकार स्वीकार कर लिये गये हैं—इन सब बातों का मि० क्लिफ ने अत्यन्त मार्मिक ढंग से वर्णन किया है। मैं यह देखकर प्रसन्न हूँ कि भारतवर्ष में मि० नोरमन क्लिफ जैसे अँगरेजी पत्र-प्रतिनिधि भी हैं।

आनेवाले कुछ महीनों में जब कि स्वतंत्र भारत का विधान निर्माण करने के लिए परिश्रम किया जायेगा, देशी राज्यों के भविष्य की समस्या एक विकट रूप धारण करनेवाली है। देशी राज्य भारतवर्ष के अंग हैं। दोनों के जीवन तथा आचरण में कोई भेद नहीं है। दोनों ही एक धातु के बने हैं और कोई भी राजनैतिक व्यवस्था जो इस सारभूत एकता पर निर्भर न हो, सफल नहीं हो सकती। वे संधियाँ, जो भारतवर्ष पर विजय प्राप्त करने के लिए घूस या इनाम के रूप में अँगरेजों और नरेशों के बीच की गई थीं, आज की जाग्रत् जनता की शक्ति के सम्मुख टिक नहीं सकतीं, चाहे वह जनता किसी सीमा के इस पार हो या उस पार।

मुझे आशा थी प्रायः सभी देशी नरेश संयुक्त भारत का अंग बनकर रहना पसंद करेंगे। चाहे कुछ भी हो वे भारतीय हैं और उन्हें ज्ञात होना चाहिए कि आनेवाले नये तथा स्वतन्त्र भारत में वे पृथक् पृथक् द्वीपों की भाँति रहकर जी नहीं सकेंगे। कुछ राज्यों में जनतन्त्रवाद

काश्मीर के वर्तमान नरेश हिज हाइनेस महाराजा सर हरीसिंह।

और व्युत्पन्न आर्थिक नीति के अंकुर पनपते दृष्टिगोचर हो रहे हैं। नये जनतन्त्रवादी प्रगतिशील भारत में इनका आपस में सामंजस्य स्थापित करना कोई कठिन बात न होगी। वे देशी नरेश जो समय की गति को पहचानते हुए भारत की सर्वतोमुखी जागृति के साथ एक होना चाहते हैं, कालचक्र के विरुद्ध निरर्थक रुकावट डालने की अपेक्षा कहीं ऊँचा स्थान ग्रहण कर सकेंगे।

प्रश्न शेष रहा उन नरेशों का जो अब तक उन संधियों को लिये बैठे हैं और अपने एकतन्त्र शासन तथा अपने राज्यों की स्वाधीनता को कायम रखना चाहते हैं। मैं नहीं मानता कि जनतन्त्रवादी ब्रिटेन, जहाँ मजदूर-दल का शासन विद्यमान है, स्थायी रूप से इन संधि-अधिकारों को कायम रहने देगा। एक काग़ज़ का टुकड़ा, जिस पर आज से २०० वर्ष पूर्व ब्रिटेन और देशी राज्यों के प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर किये थे, कदापि अनन्त काल के लिए पत्र-प्रमाण बनकर नहीं रह सकता। आज न तो वह ब्रिटेन है और न वे देशी राज्य हैं। दोनों आज अतीत की वस्तुएँ हो चुकी हैं। ब्रिटेन के लिए, इन अतीत के शवों की

—शेष पृष्ठ १७ पर देखिए

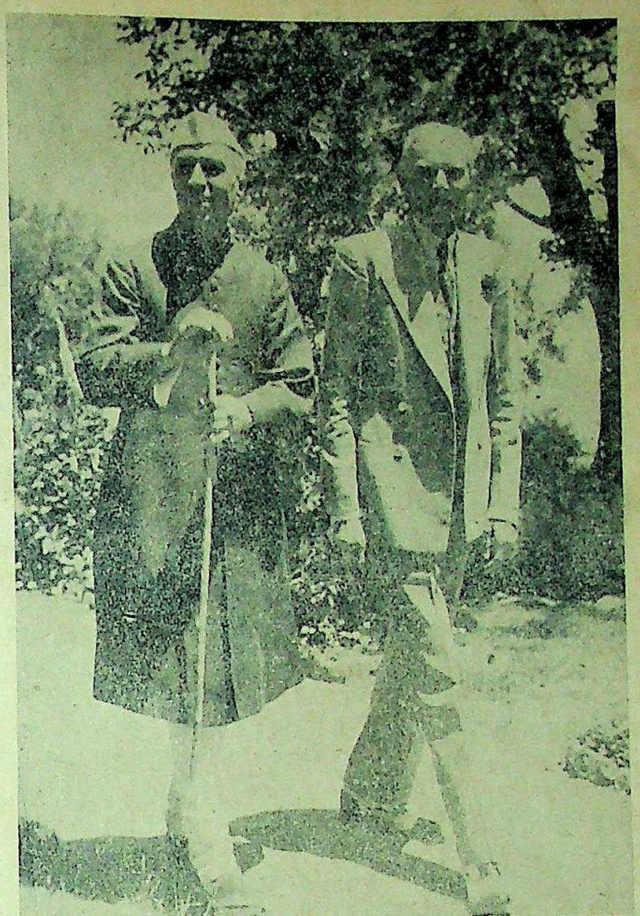

जिन्ना और जवाहर!

लेखक, श्री सोहनलाल द्विवेदी एम० ए०

ये जिन्ना और जवाहर हैं, दो नेता हैं, दो हैं चरित्र,
जातीय एक, राष्ट्रीय एक, दो मति हैं, दो हैं गति विचित्र!

* * * *

वैभवगृह में इनका जीवन, बन्दीगृह में उनका जीवन,
बीता, दोनों ही वृद्ध हुए, फिर भी, दोनों में है यौवन!

* * * *

ये राव बन गए हैं राजा, वे राजा थे अब हैं फकीर,
दोनों के दो जीवन-प्रवाह, ये भोगवीर, वे त्यागवीर।

* * * *

ये मुसलिम हैं, वे हिन्दू हैं, दोनों के दो हैं ज्ञान-ध्यान,
ये जाति-धर्म के संरक्षक, वे राष्ट्र-धर्म के महाप्राण!

* * * *

ये भारत ही के दो स्वरूप, दोनों अपनेपन में अनूप,
ये पश्चिम हैं, वे प्राची हैं, दो देशों के दो बने भूप!

* * * *

फिर भी, क्या आयेगा वह दिन, गत होगा अन्तर अंधकार?
ये बैठेंगे मिल एक साथ, बन कर स्वदेश के सूत्रधार!

* * * *

पर, कब तक, कौन कहेगा यह? मेरा कवि तो हो रहा मौन,
पश्चिम प्राची जो करे एक, वह व्यक्ति कौन? वह शक्ति कौन?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहीद श्री मणीन्द्रनाथ बनर्जी

लेखक, श्री साहबलाल सिनहा

भारतवर्ष के क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास भारत के पुनरुत्थान के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण अंग समझा जाता है। भारतवर्ष में पूर्ण स्वतन्त्रता का नारा सबसे पहले यहाँ के, क्रान्तिकारियों ने लगाया था। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के प्रगति तथा विकास का इतिहास यहाँ के हजारों क्रान्तिकारी शहीदों के खून से लिखा हुआ इतिहास है जिन्होंने अपनी हड्डियों को वज्र बनाकर स्वातन्त्र्य आन्दोलन में आत्मयोग दिया है और जिनका त्याग भारतवर्ष के क्रान्तिकारी इतिहास में सदैव अमर रहेगा। पर उनके सम्बन्ध में लोगों को कुछ पता नहीं है। अमर शहीद श्री मणीन्द्रनाथ बनर्जी ऐसे ही क्रान्तिकारियों में से एक थे। श्री मणीन्द्रनाथ ने २० जून १९३४ को सेन्ट्रल जेल फतहगढ़ के एक अज्ञात कोने में हँसते-हँसते भारतमाता के चरणों में अपने जीवन को भेंट चढ़ा दी।

सन् १९२५ ई० का जमाना था। देश में काकोरी-षड्यन्त्र की गूँज थी। सरकार के सम्मान को इस घटना से बहुत धक्का पहुँचा था और सच बात तो यह थी कि—सरकार को यह एक चुनौती थी इसलिए वह अपनी समस्त शक्ति को केन्द्रीयभूत करके इस षड्यन्त्र का पता लगाने लगी।

पाँच हजार के डकैती के उपलक्ष में जो मुकदमा चल रहा था उसमें सरकार ने दस लाख से अधिक रुपया व्यय किया। इस षड्यन्त्र का बहाना लेकर सरकार उस समय के क्रान्तिकारी आन्दोलन को समूल नष्ट कर देना चाहती थी। सन् १९२७ के काकोरी षड्यन्त्र केस के सिलसिले में चार होनहार नौजवानों पंडित रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्रनाथ लाहड़ी, रोशन सिंह और असफाक उल्ला को फाँसी हो गई। देश के नौजवानों को ही नहीं बल्कि भारतवर्ष के क्रान्तिकारी आन्दोलन को इससे बड़ी ठेस पहुँची। श्री मणीन्द्रनाथ बनर्जी के हृदय को इससे बहुत धक्का पहुँचा। उन्होंने सोचा कि इस प्रकार सजा देकर सरकार ने भारत के नौजवानों को चुनौती दी है। और इस प्रकार नौजवानों से यह कहा गया है कि वे क्रान्तिकारी मार्ग अपनायें। इस कारण मणीन्द्र ने यह चुनौती स्वीकार कर ली।

अमर शहीद श्री मणीन्द्रनाथ बनर्जी।

अपने तमंचे में केवल दो कारतूस लेकर उन्होंने १९२८ की जनवरी में बनारस के मारवाड़ी अस्पताल के सामने श्री राजेन्द्रनाथ लाहड़ी को गिरफ्तार करनेवाले डिप्टी सुपरिन्टेंडेंट जीतेन्द्र बनर्जी पर हमला कर दिया। और दोनों गोलियों का भली भाँति उपयोग कर वहीं गिरफ्तार हो गये। वे समझते थे कि यही व्यक्ति फाँसी के लिए जिम्मेदार है। उन्होंने बहुत पास से गोली चलाई। गोली पेड़ में घुस गई। तीन दिन तक तो जीतेन्द्र बनर्जी का बुरा हाल रहा, पर अन्त में बच गये। मणीन्द्र को दस वर्ष की सजा हो गई यद्यपि जिस तमंचे से उन्होंने गोली चलाई थी वह पुलिस बरामद न कर सकी। मणीन्द्र पर जेल में तरह-तरह के अत्याचार इस अभिप्राय से किये गये कि वे कमजोर पड़कर अपने साथियों के नाम पुलिस को बता दें। क्रान्ति का वह वीर अग्रदूत था, महान् आत्मा नरपिपासों के इन बर्बर अत्याचारों से तिल भर भी विचलित न हो सका और उनके सम्पूर्ण प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध हुए। इसके बाद वे सेन्ट्रल जेल फतहगढ़ भेजे गये। यहाँ उनके जेल-जीवन का क्या, बल्कि जीवन के ही बाकी दिन व्यतीत हुए। यहाँ उन्हें जेल-अधिकारियों के साथ बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़नी पड़ी जिनके फलस्वरूप उनको बराबर बेड़ी कोठरी आदि की सजायें दी गईं तथा उन्हें कई बार मारा भी गया। स्वयं 'बी' श्रेणी में होते हुए भी उन्होंने 'सी' श्रेणी के क्रांतिकारी राज राजबन्दियों के लिए १९३४ में एक अनशन किया। इसके पूर्व भी उन्होंने जेल-अधिकारियों के दुर्व्यवहार के प्रतिवाद में कई बार अनशन किया था। उनका स्वास्थ्य बिगड़ा हुआ तो था ही, बस, इस बार के अनशन के फलस्वरूप भारत माता का वह अनोखा लाल २० जून सन् १९३४ ई० को सदा के लिए इस संसार से विदा हो गया। इसलिए २० जून १९३४ राष्ट्रीय-आन्दोलन के इतिहास में अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है साथ ही हमें देश पर न्योछावर होने की शक्ति तथा प्रेरणा देता है उनके साथ इस अवसर पर अनशन करनेवालों में श्री मन्मथनाथ गुप्त तथा श्री यशपाल का नाम उल्लेखनीय है। इस प्रकार वह क्रान्तिकारी युवक शहीद हो गया पर बहुत दिनों तक, देशवासियों के निकट उनकी शहादत अज्ञात ही रह गई।

श्री मणीन्द्रनाथ बनर्जी काशी के सुप्रसिद्ध डाक्टर तथा कांग्रेस के प्रमुख कार्यकर्त्ता स्वर्गीय डाक्टर ताराचरन बनर्जी के तृतीय पुत्र थे। इनकी माता का नाम श्रीमती सुनयनी देवी है। मणीन्द्रनाथ बनर्जी के हृदय में देश-सेवा की भावना भरने क्या उन्हें देश पर सब कुछ कुरबान करने का पाठ उनकी माता ने उन्हें पढ़ाया था? मणीन्द्रनाथ के सम्पूर्ण परिवार ने स्वतन्त्रता-संग्राम में प्रमुख भाग लिया है और ले रहा है। १९२० में जिस समय, असहयोग-आन्दोलन चल रहा था उस समय इस रमणी ने काशी की महिलाओं का नेतृत्व किया। मणीन्द्र

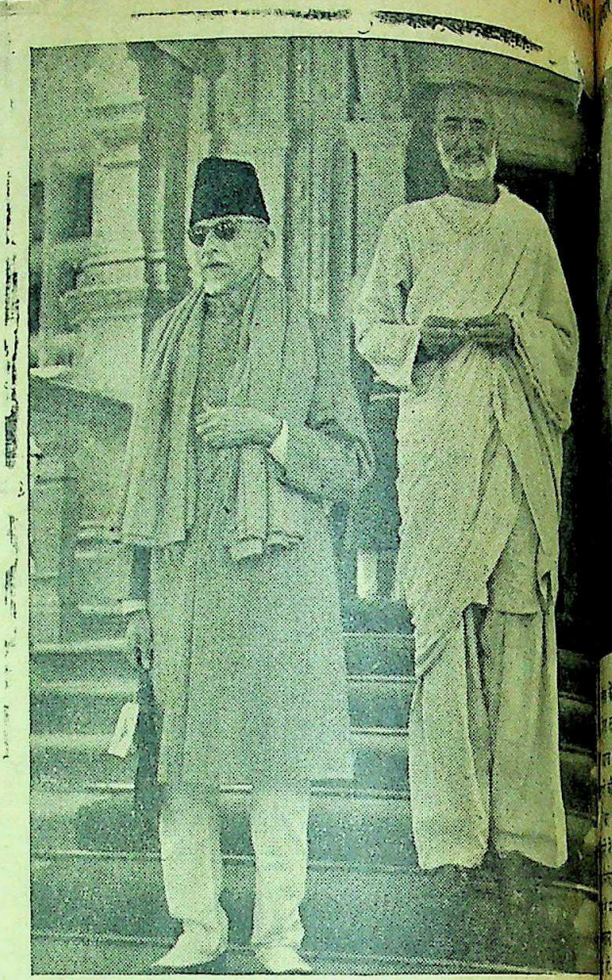

भारत के करोड़ों राष्ट्रीय मुसलमानों के प्रतिनिधि और त्यागी नेता राष्ट्रपति मौ
अबुलकलाम आजाद और सीमाप्रांत के गांधी खान अब्दुल गफ्फार खाँ।

के अतिरिक्त उनके एक सहोदर भाई श्री भूपेन्द्र बनर्जी १९३३ में स्वतन्त्रता के संग्राम में अपनी आहुति दे चुके हैं। मणीन्द्र के बड़े भाई श्री प्रभावचन्द्र बनर्जी कई बार क्रान्तिकारी अभियोगों में गिरफ्तार किये गये। लोधियाना कमीशन पर हमला करने के षड्यन्त्र के सम्बन्ध में तथा बेतिया में लाहौर षड्यन्त्र केस के मुखबिर फणीन्द्र घोष की हत्या के सम्बन्ध में भी कई वर्ष तक जेल में रहना पड़ा। इनके छोटे भाई श्री अमियकुमार बनर्जी को १९४२ के अगस्त-क्रान्ति के सम्बन्ध में भी कई वर्ष तक जेल में रहना पड़ा। फणीन्द्रनाथ बनर्जी कई बार क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग लेकर जेल जा चुके हैं। इतना ही नहीं फणीन्द्र भाई की धर्मपत्नी भी जेल जा चुकी हैं। मणीन्द्र के छोटे भाई श्री मोहितकुमार बनर्जी तथा श्री वसंतकुमार बनर्जी अप्रैल १९४२ में ही अग्रगामी दल के सदस्य होने के कारण नजरबन्द कर दिये गये और मेरे साथ ही इस प्रान्त के क्रान्तिकारी शिविर सेन्ट्रल जेल फतहगढ़ में रक्खे गये थे। जब मोहितकुमार और वसंतकुमार बनर्जी जेल में थे तब इनके सबसे बड़े भाई श्री जीवनधन बनर्जी का स्वर्गवास हो गया किन्तु सरकार ने इन दोनों को पैरोल पर नहीं छोड़ा।

मणीन्द्र की सबसे बड़ी बहन का विवाह बनारस के प्रमुख कांग्रेस नेता श्री तारापद भट्टाचार्य से हुआ है। यह बहन भी मणीन्द्र के क्रान्तिकारी काम में काफी हाथ बटाती थीं। श्री तारापद बाबू भी कई बार जेल जा चुके हैं। बात यह है कि श्री तारापद बाबू ४२ में जेल में थे तब उनकी पुत्री और बनर्जी-परिवार की श्रीमती आभारानी का देहा कन्या प्रसव करने के बाद हो महीनों तक जेलवासी पिता को हो पाया कि आभारानी मर गई।

मणीन्द्र मर गये पर उनके उनकी क्रान्तिकारी परंपरा हुये हैं और देश की पुकार पर जेल जाते हैं। जब भारतीय संग्राम का इतिहास लिखा इस परिवार का तथा मणीन्द्रनाथ का नाम स्वर्णअक्षरों में लिखा

श्रीमती सुनयना देवी, अमर
मणीन्द्र बनर्जी की माता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिणी अफ्रीका में हिन्दुस्तानी

'पेगिंग एक्ट' केवल भारत ही नहीं समस्त एशिया के अपमान के लिए एक चुनौती है

लेखक, स्वामी भवानीदयाल संन्यासी

दक्षिणी अफ्रीका में भारतीयों के विरुद्ध जो नया कानून बना है, वह भारत ही नहीं, समस्त एशिया के लिये एक चुनौती है। इस समय दक्षिणी अफ्रीका में भारतीय विरोधी कानून के विरोध में वहाँ के भारतीयों ने सत्याग्रह प्रारंभ कर दिया है और गोरों ने सत्याग्रहियों पर अत्याचार। इस लेख में प्रवासी भारतीयों के प्राण वयोवृद्ध स्वामी भवानीदयाल संन्यासी ने दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों के विरुद्ध समय समय पर बर्ती जानेवाली गोराशाही नीति पर ऐतिहासिक प्रकाश डाला है। लेख अत्यन्त सुंदर जानकारी से पूर्ण और सामयिक है।

दक्षिणी अफ्रीका में सत्याग्रह का प्रारंभिक मंत्र फूँकनेवाले महात्मा गांधी।

उस समय प्रवासी भारतीयों का कोई राजनीतिक संघ नहीं था; इसलिए उन्होंने हजारों भारतीयों के दस्तखत लेकर एक अर्जी इँगलैंड की ब्रिटिश सरकार के पास भेजी—क्योंकि उन दिनों नेटाल ब्रिटिश सरकार के मातहत एक राजकीय उपनिवेश था। चूँकि यह कानून स्पष्टत: वर्णविद्वेष के कारण बनाया जा रहा था और उसमें भारतीयों का नाम लेकर उनके अधिकार का अपहरण किया गया था; इसलिए ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों की अर्जी पर ध्यान दिया और कानून को पास होने की स्वीकृति नहीं दी।

इससे नेटाल के गोरे हताश नहीं हुए। उन्होंने सन् १८९६ में उस कानून को फिर पास किया; पर उसका रूप बदलकर। इस बार कानून में भारतीयों का नामोल्लेख नहीं किया गया; लेकिन भारतीयों से यह कहकर मताधिकार छीन लिया गया कि जिस देश के निवासियों को अपने देश में ही पार्लियामेंटरी मताधिकार प्राप्त नहीं है, उनको नेटाल के पार्लियामेंटरी चुनाव में वोट देने का अधिकार न होगा। सन् १८९६ में भारत में लोकतन्त्र का नामोनिशान भी नहीं था; इसलिए प्रवासी भारतीयों को अपने देश की पराधीनता का परिणाम नेटाल में भोगना पड़ा।

रहा म्युनिसिपल मताधिकार का सवाल। सन् १९२४ में एक कानून बनाकर उससे भी नेटाल के प्रवासी भारतीयों को वंचित कर दिया गया। इस प्रकार प्रवासी भारतीयों से वे सभी अधिकार छीन लिये गये, जिनके बल पर वे वहाँ सिर ऊँचा कर सकते थे। उसी साल जनरल स्मट्स ने उनको अछूतों की भाँति अलग बसाने का भी संकल्प किया और उनकी अनुमति से तत्कालीन गृह-मंत्री पेट्रिक डङ्कन ने यूनियन पार्लियामेंट में 'क्लास एरियाज बिल'। नामक कानूनी मसविदा भी पेश कर दिया। पर उन्हीं दिनों एक उप-निर्वाचन में जनरल स्मट्स की साउथ अफ्रीकन पार्टी के एक उम्मीदवार की हार हो गई। इससे खिन्न होकर स्मट्स ने पार्लियामेंट को भङ्ग कर दिया और नये निर्वाचन की घोषणा की। चुनाव में स्मट्स और उनकी पार्टी की ऐसी करारी हार हुई, जिसकी स्वप्न में भी किसी ने कल्पना नहीं की थी। स्वयं जनरल स्मट्स को राष्ट्रीय दल के एक साधारण उम्मीदवार ने पछाड़ दिया था। शासन का सूत्र जनरल हर्टजोग के हाथ में आ गया। हर्टजोग की सरकार ने भारत से विग्रह करना ठीक नहीं समझा। केपटाउन में सन् १९२७ के प्रारम्भ में गोलमेज परिषद् हुई और भारत के साथ समझौता हो गया, जो केपटाउन की सुलह के नाम से मशहूर है। जब तक जनरल हर्टजोग के हाथ में सत्ता रही, तब तक प्रवासी भारतीयों के दिन शान्ति से बीते। भारत से मित्रता बनाये रखने की जनरल हर्टजोग की नीति में कभी कोई फर्क नहीं पड़ा और उस ईश्वरभक्त बोअर नेता ने केपटाउन-समझौते का अक्षरश: पालन किया।

सन् १९३९ में तीसरी बार जनरल स्मट्स के हाथ में दक्षिण अफ्रीका की सरकार की बागडोर आई। प्रवासी भारतीयों के सर्वनाश के लिए स्मट्स ने सन् १९२४ में जो योजना बनाई थी और उनके पतन से जो कार्यान्वित नहीं होने पाई, उसी को फिर उन्होंने अपने शासन का मुख्य ध्येय और कार्य बना लिया। शासनारूढ़ होते ही उन्होंने प्रवासी भारतीय नेताओं से लिखित आश्वासन लिया कि वे भविष्य में गोरों के मुहल्लों में भारतीयों को जमीन खरीदने से रोकेंगे। फिर उन्होंने डरबन म्युनिसिपैलिटी के प्रतिनिधियों तथा कुछ भारतीय नेताओं की एक कमेटी बनाई और उसको यह काम सौंपा कि वह किसी भारतीय को गोरों की बस्ती में जमीन खरीदने अथवा बसने में रुकावट डाले।

दक्षिणी अफ्रीका के सर्वोच्च अधिकारी फील्ड मार्शल जनरल स्मट्स (दाहिनी ओर) स्वर्गीय प्रेसिडेंट रूजवेल्ट (बाईं ओर) के साथ बैठे हैं। (दाहिनी ओर) मिस्टर चर्चिल और कनेडा के प्रधानमंत्री मेकेंजी किंग के साथ खड़े हुए हैं।

इससे भी जब वे संतुष्ट नहीं हुए, तब उन्होंने जस्टिस ब्रम की अध्यक्षता में एक कमीशन बैठाया। कमीशन ने जाँच-पड़ताल करके यह राय दी कि गोरों की आशंका सर्वथा निर्मूल है। जिन भारतीयों ने गोरों के मुहल्ले में जमीन मोल ली है, उनकी संख्या नगण्य है। इस रिपोर्ट से अपना मतलब सिद्ध होता न देखकर जनरल स्मट्स ने उसकी जगह एक नया कमीशन बैठाया। कमीशन को सिर्फ यह बतलाने का काम सौंपा गया कि सन् १९२७ से १९४२ तक भारतीयों ने श्वेताङ्गों से कितनी जमीन खरीदी है। वे जमीनें हैं कहाँ—गोरों की बस्तियों में या भारतीयों के मुहल्ले में—इसका खुलासा करने का अधिकार कमीशन को नहीं दिया गया।

कमीशन ने दो सप्ताह में जाँच पूरी करके रिपोर्ट दे दी। उसी के आधार पर स्मट्स ने 'पेगिङ्ग एक्ट' (Pegging Act) नामक कानून पार्लियामेंट में पेश कर दिया और सन् १९४३ की अप्रैल में वह पास भी हो गया। यह ध्यान देने की बात है कि कमीशन की जाँच, पार्लियामेंट में कानून की पेशी, उस पर बहस-मुबाहिसा और अन्त में उसकी मंजूरी, ये सारी बातें एक मास के अन्दर हो गईं। पिछले महायुद्ध के जमाने में भी प्रवासी भारतीयों के सर्वनाश के लिए स्मट्स कितने व्यग्र थे, यह घटना उसका एक स्पष्ट प्रमाण है।

इस कानून से भारत का ही नहीं, संसार का लोकमत भी क्षुब्ध हुए बिना न रहा। जनरल स्मट्स की इस नीति और प्रवृत्ति की सर्वत्र कटु आलोचना हुई। दुनिया की आँखों में धूल झोंकने के लिए स्मट्स ने फिर एक कमीशन बैठाया और अपनी सफाई देते हुए कहा कि यह तो एक अल्पकालीन व्यवस्था है। कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार ही स्थायी रूप से भारतीय समस्याएँ हल की जायँगी। पर, जब कमीशन ने जाँच कर यह राय दी कि दक्षिण अफ्रीका और भारत के प्रतिनिधियों की एक गोलमेज परिषद् होनी चाहिए और उसमें प्रवासी भारतीय समस्याओं को हल करने के उपाय ढूँढ़ निकालने चाहिए, तो स्मट्स अपने वचन से फिर मुकर गये। उसकी रिपोर्ट को रद्दी की टोकरी में फेंककर 'पेगिङ्ग एक्ट' को और भी भयानक रूप दिया और यूनियन पार्लियामेंट में 'एशियाटिक लैण्ड टेन्यूर ऐक्ट' के नाम से एक नया और स्थायी कानून पास कर डाला।

इस नये कानून के मुताबिक, जो ३१

शेष पृष्ठ १२ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष रूप से 'देशदूत' के लिये

माननीय श्री आर० के० पाटिल

आई० सी० एस० छोड़नेवाले मध्यप्रांत के एक त्यागी मंत्री

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

अगस्त-आन्दोलन के समय मध्यप्रान्तीय सरकार के एक आई० सी० एस० अफसर श्री आर० के० पाटिल ने अपने पद से त्यागपत्र देकर राष्ट्रसेवा की शपथ ग्रहण की थी। आज वही श्री पाटिल मध्यप्रांतीय कांग्रेस सरकार के खाद्य-मंत्री बनाये गये हैं। इस सुन्दर लेख में श्री विद्यार्थी प्रभुदयालजी ने माननीय पाटिल का एक रेखा-चित्र अंकित किया है, जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

नाटा कद, गोल चेहरा, मामूली मोटी, खादी का पायजामा, कुर्त्ता और पैर में डेढ़ दो रुपये का चप्पल यही है भूतपूर्व आई० सी० एस० और मध्यप्रांतीय सरकार के नये खाद्य-मंत्री माननीय आर० के० पाटिल की पोशाक।

मैंने पहले-पहल उनको कस्तूर बा मेमोरियल ट्रस्ट की एक मीटिंग में देखा था। जेलखाने में अक्सर चौदा जिले के राजनैतिक बन्दियों से सुना करता था कि श्री आर० के० पाटिल साहब बहुत सीधे-सादे और सरल स्वभाव के हैं। सच्चाई के भक्त हैं। जीवन के आडम्बर से दूर हैं। दिखावा पसन्द नहीं करते। सादा जीवन में उच्च विचार के जो सिद्धान्त हैं उसे जीवन में अमली रूप देना चाहते हैं।

एक सरकारी अफसर से सुना था कि सरकारी नौकरी करते समय माननीय आर० के० पाटिल साहब बड़े शान से रहते थे। अच्छा कपड़ा पहनते थे। अच्छा बँगला रखते थे। बढ़िया मोटर रखते थे। जिले के आला अफसर थे। फिर भी आपका स्वभाव सरल था। सच्चाई का पालन करते थे। लेकिन सरकारी नौकरी करते समय सच्चाई का पालन आज के दिनों में हो सकता है या नहीं एक विचारणीय प्रश्न है। सार्वभौमसत्ता सच्चाई को पसन्द करे तब न? सरकारी नौकरी में सच्चे और नेक आदमियों का ठहरना कितना मुश्किल है इसे भुक्तभोगी ही समझ सकता है। वहाँ जो अफसर छल-कपट और आडम्बर नहीं रख सकता उसका ठहरना मुश्किल है। अपने बड़े की खुशामद एक मामूली-सा रिवाज हो गया है। माननीय आर० के० पाटिल साहब आई० सी० एस० हैं। विलायत में रह चुके हैं। स्वतन्त्र देश का वातावरण देख चुके थे। सरकारी कर्मचारियों का देश के प्रति क्या कर्त्तव्य है इसका अनुभव उन्हें इँगलैंड में ही हो चुका था। वहाँ की व्यवस्था से यहाँ की व्यवस्था में जमीन-आसमान का फर्क है। इँगलैंड की पुलिस और आला से आला अफसर भी अपने को इँगलैंड की जनता का सेवक मानता है। सेवक का क्या फर्ज होता है उन सब का वहाँ के अधिकारी पालन करते हैं।

लेकिन हिन्दुस्तान की पुलिस और बड़ा से बड़ा कर्मचारी यहाँ की जनता को अपना गुलाम समझता है। बुरा से बुरा बर्ताव करने में अपनी इज्जत मानता है। हरदम रोब-दाब जमाने में विश्वास रखता है। आतङ्क को उचित मानता है। सेवा करने के बजाय सेवा लेने में अपनी इज्जत समझता है। जनता को जितना ही परेशान किया जा सके यही यहाँ के सरकारी वेतनभोगी नौकरशाहों का काम है। देश की क्या माँग है, जनता क्या चाहती है, इन सब चीजों की उपेक्षा की जाती है।

१९४२ में यहाँ की जनता ने अपनी आजादी के लिए खुला विद्रोह किया। सारे देश में आजादी का बिगुल बज गया। हर जगह प्रत्येक ने अँगरेजी राज्य के खिलाफ कुछ न कुछ रोष प्रकट किया। लेकिन भारत के हिन्दुस्तानी गुलाम नौकरों ने जनता पर बड़ा अत्याचार किया। बुरी तरह से उन्हें सताया और परेशान किया। अपनी शक्ति भर क्रान्ति को दबाने की कोशिशें की गईं।

उन्हीं दिनों आर० के० पाटिल साहब बैतूल जिले के आला अफसर थे। इनके पास भी सरकारी हुक्म पहुँचा कि हर उपायों से जनता को दबाया जाय। अपराधी-निरपराधी देखने का यह मौका नहीं है। आतङ्क का साम्राज्य कायम किया जावे। नागरिक शासन उठा दिया जाये। मनुष्यता का नामोनिशान न रहे। देशभक्तों को चुन-चुनकर जेलों में बन्द कर दिया जाये। सहानुभूति रखनेवालों को भी कालकोठरी में बन्द करने में हिचकने का काम नहीं।

माननीय पाटिल साहब भारतीय आजादी के दुश्मन नहीं थे। उन्होंने मेहनत से आई० सी० एस० की परीक्षा पास की थी। अपने मुल्क की हालत से परिचित थे। गरीबों में दरिद्रता और भुखमरी का नंगा नाच देखते आ रहे थे। राष्ट्र की कैसी बुरी दशा है इससे भी वह वाकिफ थे। सरकारी हुक्म पर गौर किया। अच्छी तरह से मनन किया। अपने कर्त्तव्य और अधिकार की तरफ देखा। कई दिन तक सोचते रहे कि ऐसे मौके पर क्या किया जाये? क्या राष्ट्र और अपनी मातृभूमि को धोखा दूँ? हर्गिज नहीं। उन्होंने अपने नीचे के अधिकारियों को कड़ी हिदायत दी। किसी को नाजायज और शक पर गिरफ्तार न किया जाये। किसी गाँव में अत्याचार न हो। शान्ति से काम किया जाये। उपद्रव करके जनता को सताया न जाये। बस, पुलिस अधिकारियों और माननीय पाटिल साहब में संघर्ष होना शुरू हो गया। माननीय पाटिल साहब अपनी बातपर अड़े रहे कि हम जनता को तबाह करने के लिए अफसर नहीं बने हैं, उनकी सेवा के लिए सरकारी नौकरी स्वीकार की है। संघर्ष बढ़ता गया। सूबे के बड़े अधिकारियों तक पाटिल साहब की शिकायत पहुँची कि यह जनता का पक्ष लेते हैं। माननीय पाटिल साहब ने बड़े अधिकारियों से भी साफ साफ कह दिया कि मुझसे निरपराध व्यक्तियों पर अत्याचार नहीं हो सकता। सी० पी० के गवर्नर से भी कहा कि मैं भूल कर भी निरपराध जनता को तबाह नहीं करूँगा। देश में जो अत्याचार हो रहा है वह भी मुझे पसन्द नहीं है। जवानी कहा और लिखकर भी दिया।

अगस्त-क्रान्ति के दिनों में बड़े सरकारी कर्मचारियों और गवर्नर से संघर्ष करना हँसी-खेल का काम नहीं था। लेकिन नहीं, माननीय पाटिल साहब निर्णय कर

मध्यप्रांतीय कांग्रेस सरकार के [illegible]
श्री आर० के० पाटिल।

चुके थे। जो कुछ भी हो, चाहे [illegible] पड़े, बाल-बच्चों से अलग होना [illegible] सारी सम्पत्ति जप्त हो जावे, [illegible] है। वह फकीरी का व्रत ले चुके [illegible] बढ़ते देखकर पाटिल साहब को [illegible] प्रतीत हुआ कि वह नौकरी [illegible] हो जायें।

सरकार की सबसे सम्मानपूर्ण इज्जत की नौकरी 'आई० सी० [illegible] पद को ठोकर लगाकर अलग हो [illegible] ही आपने अपने और देश के लिए [illegible] समझा? सरकार ने आपको दबाव [illegible] दिया। धमकी दी। लेकिन आप [illegible] सिद्धान्त से एक इंच भी नहीं [illegible] झोपड़ी में रहना स्वीकार किया। [illegible] और सरकारी बँगलों के वैभव में [illegible] को अलग करने में राष्ट्र का भला [illegible] आखिर, गवर्नर साहब को आपसे [illegible] झुकना पड़ा। आपके त्यागपत्र को [illegible] करना पड़ा। कल तक जो सरकारी [illegible] आप धारण किये हुए थे जिसके [illegible] लोग हजारों रुपया खर्च करते हैं, [illegible] बड़ा आदमी समझते हैं उसे [illegible] आपने त्याग कर दिया। उस [illegible] भयंकर परिस्थिति में यह सब [illegible] का काम था। पाटिल साहब [illegible] उस भयंकर घोर दमन के दिनों में [illegible] सरकारी कर्मचारियों ने त्याग [illegible]

शेष पृष्ठ १२ पर

फरीदकोट राज्य के सत्याग्रही—पंजाब के कांग्रेस कार्यकर्ताओं का दो दल फरीदकोट में सत्याग्रह करने के लिए गया था। बाईं ओर का जत्था रावलपिंडी और दूसरा जत्था [illegible] से फरीदकोट जाने के लिए रेलवे [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

कुटनी

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

आज के जीवन में पेट की समस्या प्रधान है। रहीमन ने यद्यपि जीवन में पेट की खातिर ऐसा निकृष्ट कार्य अपनाया था किन्तु उसे भी अपने अंतिम समय में पछताना पड़ा। लड़की की आँखों में आँसुओं की धारा प्रवाहित होते देखकर वह द्रवित हो गई और प्रायश्चित करने पर तत्पर हुई। कहानी बड़ी हृदय-विदारक और समाज के एक निकृष्ट पहलू का रोमांचक चित्र प्रस्तुत करती है।

ढँक जाती। कदाचित् इसी से, वह इधर प्राय: सोचने लगती, रोजगार तो अच्छा है, पैसे देनेवाला है, पर कठिन भी कम नहीं है। और जब वह व्यवसाय की वास्तविकता पर आती तो अन्त में सोचती, 'यह अच्छा नहीं है। किसी की बहू-बेटी को भुलावे में डालना और उसका ईमान लेना, खुदा की निगाह में भी अच्छी बात नहीं'....

किन्तु ऐसी भावना तो रहीमन के मन में जिस प्रकार आँधी की तरह आती, उसी प्रकार बह जाती। जेल जाकर, हवालात में बैठकर और किसी नव-बाला के आँसुओं से द्रवित होकर जब तब वह ऐसी बातें सोचती और भूल जाती। वह उस पेशे को छोड़ने का विचार करके भी, उसे छोड़ नहीं पाती। खुदा को याद करती, उसकी महत्ता भी मानती पर जब उसे अपने रोजगार और ग्राहकों की माँग से फुरसत हो, तब तो उसे स्वीकार करती।

यों रहीमन के शत्रु भी थे, पर वह उनसे डरती नहीं, अपितु पैसे की नोक पर उन्हें देखती और उछाल देती। इस प्रकार वह निःशंक थी, निर्द्वन्द्व थी और अबाध्य बनकर अपने व्यवसाय में उत्तरोत्तर वृद्धि करती जाती थी।

सुबह और शाम वह अपने रंग-रूप को बदलकर घर से निकलती। क्या मजाल कि कोई उसे आँख उठाकर देख ले और पहचान ले। वह गंगा जी जाती तो जैसे पूरी भक्तिन हो। हाथ में छोटी डलिया, उसमें फूल और बताशे, बगल में धोती और छोटी लुटिया। हाथ की उँगलियों में उलझी, फिरती हुई माला। मस्जिद जाती, तो जमीन तक छूता हुआ बुरका और उसके भीतर साक्षात् रहीमन! बाजार में चलती तो छम-छम करके निकल जाती। दोस्त मिलते, मुसकरा देती।

इस रूप में, जब वह किसी उलझी हुई, अथवा भूली भटकी हुई बहू बेटी को किसी के लिए खोजते देखती, तो रहीमन तुरन्त उससे जाकर पूछती—क्यों बेटी, किसे खोज रही हो? अरे, तुम तो हमारे मुहल्ले की ही दीखती हो!'

"हाँ, जी, मैं मालीवाड़े में रहती हूँ। मैं भैया को...माँ को खोज रही हूँ।"

इतना सुनते ही, रहीमन उसे सान्त्वता देकर कहती—'तो डर क्या है, बेटी! आओ, मैं भी घर चल रही हूँ।'

इस तरह दोनों साथ चल देतीं। अनेक बाजार-मुहल्लों के चक्कर काटकर, अपनी गली के मोड़ पर आती तो कहती—'बाजारों में भंगी-चमार सब फिरते हैं! चलते-चलते धक्का देते हैं और इतने बीच में वह जान लेती कि वह ब्याही गई है...कि अभी नहीं।

अपनी गली के मोड़ पर रुककर वह कहती—'तुम जरा ठहरो, बेटी! मैं नन्दू की माँ से मिल लूँ। नन्दू बीमार है।' यह कहते वह अपने मकान के द्वार पर पैर रखती और मुड़कर फिर बोलती—'तुम भी आ जाओ, बेटी! गली में खड़ी क्या अच्छी लगोगी। मैं खड़े-खड़े दो बात कर लूँगी।'

फलस्वरूप, वह लड़की को साथ लेकर घर में प्रवेश कर जाती। फिर भीतर से द्वार बन्द कर लेती। वहाँ जाकर, वह और कई दरवाजे पार करती और फिर एक कमरे में जाकर कहती—बैठ, बेटी! और फिर दूसरी ओर जाकर वह एक-दो आदमियों के साथ लौटती। लड़की के पास बैठती और गिलास में शराब उँडेलकर कहती—'लो, शर्बत पियो, बेटी!'

किन्तु इतनी देर में, वह सहमी, डरी हुई लड़की या बहू उन आदमियों की आँखों को देखने के साथ, जब गिलास पर निगाह डालती और उसकी बदबू नाक का स्पर्श करती, तो वह काँप जाती। वह रो पड़ती। रहीमन के सामने गिड़गिड़ाती। लेकिन रहीमन फिर भी अपनत्व का नाट्य रचकर कहती—न, न, रो मत बेटी! धीरज रख! यह शर्बत पी।'

और जब वह नारी किसी प्रकार भी नहीं मानती, तो वही रहीमन, जो क्षण भर पूर्व सदयता की मूर्ति दिखाई दी थी, नितान्त कठोर रूप धारण कर, आँख निकालती हुई कहती—'चुप बदजात की बच्ची! भला, यहाँ से भाग जायगी, तू!' और कभी पास बैठे आदमी की ओर देख वह कहती—'कहो, कल्लन मियाँ! पसन्द आई न, यह चिड़िया?'.....

वह कल्लन मियाँ यह सुनकर लड़की की ओर देखता हुआ अपनी मूँछों पर बल देता और मुसकराता। वह रहीमन को भी शाबाशी देता।

* * *

परन्तु रहीमन में असन्तोष है कि वह जिस जीवन को पोसने के लिए इतना सब करती है, यह झुकता जाता है और नीचे को गिरता जाता है। अब उसपर न शराब की लाली का रंग जमता है, न गोश्त के कोफ़्ते और हड्डियाँ चूसकर दम आता है। वह फिर अपने में दम लाना चाहती है, और एक बार फिर अपने गये हुए यौवन की बहार में मस्त होना

रहीमन तमतमा उठी और अब्दुल के हाथ से लड़की को छुड़ाने के लिये झपटी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहती है! पर वह तो नहीं आता, कदाचित् इसी से यदा-कदा रहीमन को अपना किया-धरा सब व्यर्थ लगता है... ढोंग!.....

एक दिन वह गंगाघाट पर बैठी हुई माला फेर रही थी। उसकी आँखें किसी की टोह में लगी थीं। एकाएक उसकी आँखों ने देखा कि एक तेरह-चौदह वर्ष की लड़की इधर-उधर देखकर किसी को खोज रही है। रहीमन के मन में आया कि उठे और उसके पास पहुँचे। पर तभी उसने कहा—'अभी नई उम्र की है.... अजान बच्ची!.....

लेकिन यह तो एक क्षणिक भाव था, जो आया और चला गया। रहीमन ने इसके बाद ही कहा—पैसे अच्छे मिलेंगे.... नई चीज के! और इतने में उसने लड़की के पास जाकर पूछा—तू कौन से मुहल्ले में जायगी, बेटी?

लड़की ने रहीमन की ओर देखकर कहा—'मैं छोटे बाजार की गली में रहती हूँ। यहाँ कल ही आई हूँ। साथ में मां और भाभी थीं, उनसे छूट गई हूँ।

रहीमन ने तुरन्त ही कहा—'अच्छा, तू वहाँ रहती है—ठीक! तो डर क्या है बेटी, आ मैं भी वहीं रहती हूँ।

इतना सुन, लड़की तुरन्त उसके साथ हो ली।

बहुत सी गलियाँ पार कर, रहीमन एक जगह जाकर बोली—'मैं जरा छुटकू की बहू देख लूँ। खड़े खड़े। तू भी आ।'

मकान में गई। एक कमरे में जाकर वह उससे बोली—'बैठ।'

लड़की अजान थी, भोली। पर जब एक आदमी उसके पास आकर बैठा और उसकी ठोढ़ी को पकड़ मुसकाया, तो वह डरी। सकपकाई। उस आदमी का हाथ झिड़क, आँचल में मुँह दे फूट-फूट कर रोने लगी।

उसी समय आदमी ने रहीमन के हाथ पर दस रुपये का नोट रखकर कहा—'इस लड़की को मेरे हवाले कर, रहीमन! आँख अच्छी हैं...गाल...यह नुकीली ठोढ़ी...

किन्तु आश्चर्य की बात कि उस समय रहीमन ने उस दस रुपये की तरफ ध्यान नहीं दिया, अपितु, उसने देखा कि लड़की उसके पैरों में गिर गई है और मछली की तरह छटपटाकर कह रही है—तुम मेरी मा जैसी हो, मुझ पर रहम करो। मुझे छोड़ दो। तुम...

और रहीमन होठों से बड़बड़ाकर कह रही है—ओह, नादान लड़की! रो कितना रही है...आँखें लाल-लाल!...डर गई है।...हाँ, अभी बच्ची है...नई कली है... अभी तो थोड़ी थोड़ी कोपलें निकली हैं...

उसी अवस्था में रहीमन ने सुना, उसका ग्राहक अब्दुल कह रहा था—'तुम इसे छोड़ दो, रहीमन! मैं मना लूँगा, प्यार से नहीं तो मैं जबरदस्ती से मना लूँगा, रहीमन!...

रहीमन ने इतना सुना, तो एकाएक उसका माथा ठनक गया। साथ ही उसमें क्षुण्णता का भाव भी आ गया। उसने क्रुद्ध आँखों से अब्दुल की ओर देखकर कहा—ठहरो, अब्दुल! लड़की के हाथ न लगाना।' और फिर अपने आप कहा—हाय, हाय, कैसी सुर्ख हो गई हैं, लड़की की आँखें!...

किन्तु अब्दुल ने बात सुनकर तुरन्त ही कहा—'मैं भूल रहीमन, मैं पैसे दे चुका हूँ।'

इतना सुनकर तो रहीमन और अधिक तमतमा गई। जैसे उसकी आत्मा जाग गई। हाथ में लिये नोट के कई टुकड़े कर उसे फेंकती हुई बोली—'कुत्ते!' और उसने झपटकर अब्दुल के हाथ से लड़की को छुड़ा लिया।

किन्तु वह कामी और मदहोश हुआ अब्दुल स्वयं भी इतना तैश में आ गया कि छुरा निकाल, रहीमन की ओर बढ़ा। लड़की चीखी, डरी। और अब्दुल तो रहीमन के ऊपर झपटे कि वह वहाँ से भाग दरवाजे के बाहर हो गई।

× × ×

रहीमन के छुरा तेज लगा था। जब दो महीने बाद उसका घाव भर गया, तो अस्पताल से निकल, उसने जो के ताक पर बसेरा डाल लि जीवन के गत कर्मों से सन्त और उधर से उपेक्षित बनकर इतना अवश्य सोचती है, हाँ चाकू तो मेरे पहिले भी लगे रोती हुई आँखें मैंने उस लड़की ऐसी कभी नहीं देख पाई...औ पीड़ाओं का उनमें दरिया बह

और जब मस्जिद में आ बहू-बेटी उसे 'बुढ़िया-माई' क देती है, तो रहीमन उसके देख, उस लड़की की आँखों करती हुई पीड़ा से भरकर सब मुझे रोंदती क्यों नहीं...उफ नहीं...

यही कारण, न जाने और रहीमन पागल हो गई है अपने सिर को मसजिद की दे-दे मारती है।

खरीदने से पहले इस ट्रेड मार्क को देखो

वुडवर्ड के ग्राइप वाटर के बोतल सदैव साथ रक्खें। यह बच्चों को तन्दुरुस्त रखता है!

WOODWARD'S GRIPE WATER keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है, इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 105—117 W. WOODWARD LTD., LONDON, ENGLAND.

स्वाद्य का राशन

और वह आपकी कैसे मदद करता है

★ प्रत्येक व्यक्तिगत नागरिक के लिये विश्वस्त और बराबर खाद्य—राशनिंग का यही तो लक्ष्य है।

★ वितरण का केवल राशनिंग ही उचित तरीका है—जितना गरीब को मिलता है उतना धनिक को भी—जितना कमीवाले क्षेत्रों में उतना फालतूवाले क्षेत्रों में भी। राशनिंग के द्वारा ही मूल्यों में स्थिरता आती है और अनुचित संचय एवं अनुचित लाभ का निराकरण हो सकता है।

नागरिक एवं ग्राम्य क्षेत्रों में अब लगभग १३ करोड़ व्यक्तियों के राशन की व्यवस्था है। खाद्य कम है इसलिये दूसरे नगरों एवं क्षेत्रों में भी तेजी से राशन-व्यवस्था को विस्तृत किया जा रहा है।

★ याद रखिये खाद्य की रक्षा करना देश-भाइयों के प्राण बचाने के लिये आवश्यक है।

★ खाद्य के राशन में सहयोग देना आपका कर्त्तव्य है ईमानदारी से राशन के नियमों का पालन कीजिये—इसप्रकार अपना कर्त्तव्य पालन कीजिये और प्राण बचाइये।

उचित मूल्य पर R सबके लिये भोजन

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

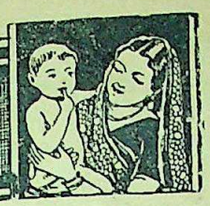

मातृमण्डल

दाम्पत्य जीवन और महात्मा गांधी
आत्मसंयम से ही जीवन सुखी रह सकता है

लेखिका, श्रीमती दुर्गा वैजल

...एवं युग-प्रवर्त्तक महात्मा ...की राजनीति में तो क्रान्ति ...है, देशवासियों की व्यक्तिगत ...समस्याओं को नैतिक रूप ...की ओर भी यथेष्ट ध्यान ...। हमारा असंयमपूर्ण जीवन, ...विलास की वृत्ति और हमारे ...की सन्तति-निरोध के कृत्रिम ...और द्रुत गति इत्यादि महात्मा ...देखी गई है। अतएव, न ...समय पर "नवजीवन" ...इण्डिया" में स्त्री-पुरुष-सम्बन्धी ...हैं वरन् अपना अमूल्य समय ...विषयों पर अनूठी पुस्तकें ...।

...जी को ५० से अधिक वर्ष ...अनुभव है। जो कुछ उन्होंने ...निजी अखंडित अभ्यास ...अनुभव के बल पर। ...जीवनपर्यन्त साहचर्य, ...तथा धर्म-सम्बन्ध बतलाते ...हैं कि विवाह के नाम पर ...विलासमय असंमयपूर्ण ...नहीं। विवाह की ...का नियम भी सामाजिक और ...महत्त्व रखता है। एक ...अच्छा दूसरा जीवन नहीं और ...के सामाजिक जीवन का केन्द्र ...कहते हैं कि "यदि हम ...की पवित्रता को स्थिर रखना ...भोग नहीं, आत्मसंयम ही ...समझा जाना चाहिए। नर ...के बीच का स्वाभाविक सम्बन्ध ...और बहन में, माँ और बेटे ...बेटी में होता है। अपनी ...लगाकर मुझे कहना ही पड़ेगा ...और पत्नी के बीच भी काम का ...अस्वाभाविक और अप्राकृतिक ...का उद्देश्य दम्पति के हृदयों से ...दूर करके उन्हें ईश्वर के निकट ...।"

...निरोध के बनावटी उपायों की, ...के अनुसार, कम से कम भारतवर्ष ...आवश्यकता नहीं। सबसे ...की दृष्टि से कृत्रिम गर्भ- ...कहीं स्थान ही नहीं क्योंकि ...केवल सन्तानोत्पत्ति की इच्छा से ...चाहिए जैसे कि भोजन केवल ...के लिए होता है। दूसरे ...निषेध है कि इन उपायों ...मनुष्य आचार-भ्रष्ट और ...हो गये हैं और कृत्रिम गर्भ- ...अपनी स्वास्थ्य-रक्षा अथवा ...की आर्थिक दशा को ठीक रखने ...से ही नहीं वरन् अपनी ...की पूर्ति के लिए किया गया ...श्रेणी के मनुष्यों का कथन ...आचार-विचार सब व्यर्थ है और खूब विषय-भोग करो" के विरोध में इतना कहना ही पर्याप्त है कि 'केवल सच्चरित्र जातियों का ही भविष्य उज्ज्वल होता है।' कृत्रिम उपायों से न लुक-छिपकर गर्भपात का होना रुक सकता है और न भ्रूण-हत्या बचती है। सन्तति-निग्रह की एक मात्र अचूक औषधि आत्म-संयम ही है।

विवाहितों में भ्रष्टाचार पर लिखते हुए महात्मा जी लिखते हैं कि विवाहित स्त्री-पुरुषों का ब्रह्मचर्य द्वारा गर्भ-निरोध करना एक बात है और उससे लाभ ही लाभ है, विषय-भोग के साथ-साथ तथा उसके परिणाम से नचानेवाले साधनों की सहायता से सन्तान-निग्रह करना पूर्णतया दूसरी बात है और इससे हानि ही हानि है। जन्म-संख्या का इस प्रकार निश्चय ह्रास होता है और एक दिन, राष्ट्र की सैनिक शक्ति घटने, जातीय संख्या कम होने, देश की भाषा और सभ्यता के अन्त होने से, घातक परिस्थिति पैदा हो जाती है।

भ्रष्टाचार के अनेक रूपों से व्यक्ति, परिवार तथा समाज की अपार हानि होती है। मनुष्य के गुप्त से गुप्त कार्य का भी प्रभाव दूर तक पड़ता है। पाप का विष बढ़कर सारे समाज में फैल जाता है और कोई नियम या विधान उसे नहीं रोक सकते। अतएव आत्म-संयम ही एक उपाय है और इस पक्ष में लोकमत तैयार करना अत्यन्त आवश्यक है कि मनुष्य अविवाहित, विवाहित अथवा विधुर अवस्थाओं में ब्रह्मचर्यपूर्वक रहें। ब्रह्मचर्य से न स्वास्थ्य को हानि होती है और न व्यक्तिगत स्वतन्त्रता में बाधा पड़ती है। कामवासना का विवेक से अवश्य दमन किया जा सकता है।

विषय की इच्छा और सोने और खाने की इच्छाओं में बहुत अन्तर है। न सोने और न खाने से हम निर्बल हो जायँगे पर विषय की इच्छा को रोकने से उलटा ही परिणाम होता है। डाक्टर फ्रेंक का मत है "कामेच्छा के ऊपर मन और इच्छा का पूर्ण अधिकार है क्योंकि यह कोई अनिवार्य शारीरिक आवश्यकता नहीं है। यह तो केवल एक इच्छामात्र है जिसका पालन हम जान-बूझ कर अपनी प्रसन्नता से ही करते हैं, न कि स्वभाव के वश होकर।" आजीवन ब्रह्मचर्य योगियों की ही वस्तु नहीं, वह उसके लाभ के कारण जन-साधारण की वस्तु है। श्री पाल ब्यूरो का सारपूर्ण कथन कि "भविष्य संयमशील व्यक्तियों के ही हाथ है" आजीवन ब्रह्मचर्य से ही सार्थक हो सकता है।

महात्मा जी के ब्रह्मचर्य-पालन के सीधे-सादे नियम निम्नलिखित हैं :—(१) बालकों की पवित्रता में सन्देह न करना चाहिए और उनका पालन इस विश्वास पर होना चाहिए कि वे पवित्र रह सकते हैं। माता, पिता तथा गुरुओं का यह परम कर्तव्य है। (२) गर्म और उत्तेजक आहारों, अचार, मुरब्बों तथा मसालों से सबको बचना चाहिए। हमारे भोजन का हमारे अवयवों के विकास के साथ घनिष्ट सम्बन्ध है। (३) पति-पत्नी को अलग कमरों में रहना और एकान्त से बचना चाहिए। विवाह का उद्देश्य, जैसा कि ऊपर बतलाया जा चुका है, कामवासना की तृप्ति नहीं वरन् उससे कहीं अधिक उच्च है। (४) शरीर और मन सर्वथा और सर्वत्र अच्छे कामों में लगाये रहना चाहिए। ठाली दिमाग को ही व्यर्थ के भोग सूझते हैं। (५) शीघ्र सोना और शीघ्र उठना चाहिए। इस उपाय से स्वास्थ्य, धन और बुद्धि—तीनों को लाभ होता है। (६) आजकल के बढ़ते हुए गन्दे साहित्य से दूर रहना चाहिए। बुरे विचारों की ओषधि अच्छे विचार हैं। (७) सिनेमा, नाच, रंग इत्यादि तमाशों से सदैव बचना चाहिए। यह सभ्यता के शाप हैं और विकारों को उत्तेजना देनेवाले हैं। (८) स्वप्नदोष यद्यपि किसी भी अवस्था में ठीक नहीं परन्तु उससे डरने की आवश्यकता नहीं है। स्वस्थ व्यक्तियों के लिए हर बार ठंडे जल से स्नान कर लेना ही स्वप्नदोष की सर्वोत्तम ओषधि है। (९) पति-पत्नी के मध्य भी ब्रह्मचर्य की बड़ी भारी आवश्यकता है। न यह असम्भव है और न किसी प्रकार कठिन। ब्रह्मचर्य तो जीवन का स्वाभाविक और साधारण अभ्यास है। (१०) पवित्रता के लिए सच्चे मन से नित्य प्रार्थना करनी चाहिए। महात्मा जी के दैनिक कार्य-क्रम में प्रातःकाल की प्रार्थना बड़ा प्रमुख और महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है।

काममुग्ध स्त्री-पुरुषों और लड़के-लड़कियों को गांधी जी ने बिलकुल पागल बनते देखा है और स्वयं उनका अनुभव भी इससे भिन्न नहीं है। वे कहते हैं कि एक रत्ती भर भी रति-सुख के लिए मन की शक्ति क्षण भर में खो बैठना अनुचित है। ब्रह्मचर्य ही आरोग्य की सर्वश्रेष्ठ कुंजी है। महात्मा जी के ब्रह्मचर्य-पालन का यह अर्थ नहीं कि वे किसी स्त्री को स्पर्श न करें। उनके अनुसार यदि स्त्री को स्पर्श करने से भी मन में किसी प्रकार का विकार उत्पन्न न हो, वही सच्चा ब्रह्मचर्य है।

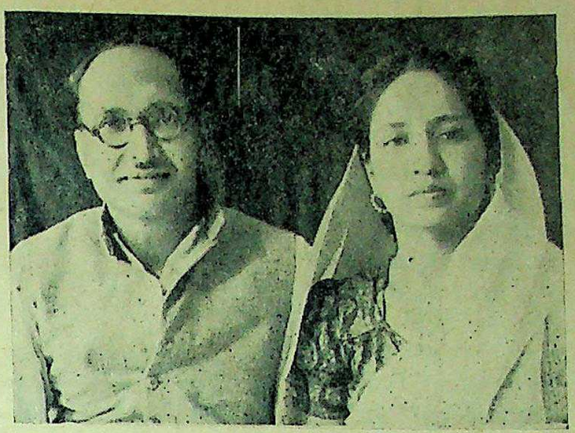

सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी और समाजवादी नेता और हिन्दी के लेखक श्री मनमथनाथ गुप्त और श्रीमती माया गुप्त बी० ए०, हजारीबाग। आप लोगों का विवाह पिछले दिनों हजारीबाग (बिहार) में बड़ी धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ। श्रीमती माया गुप्ता फ़ारवर्डब्लाक की प्रसिद्ध कार्यकत्री और सभानेत्री हैं।

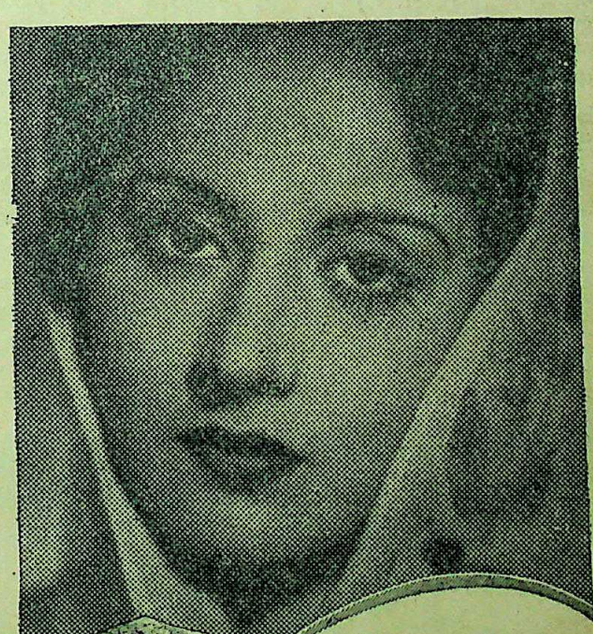

"लक्स टॉयलेट साबुन आपकी त्वचा को सतेज एवं मनोहर बनाता है"

हुस्न बानू कहती है

फिल्मी स्टार्स का सौंदर्य-साबुन !

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिणी अफ्रीका में हिन्दुस्तानी

(पेज ७ का शेष)

मार्च, १९४६ को खतम होनेवाले 'पेगिङ्ग एक्ट' की जगह लेगा, कुछ खास हल्कों को छोड़कर नेटाल के हिन्दुस्तानियों को नई जायदादें खरीदने या वहाँ जाकर बसने की मुमानियत हो जायेगी। 'पेगिङ्ग एक्ट' का असर और उसका दायरा सिर्फ डरबन शहर तक ही सीमित था और वह यूरोपियनों और हिन्दुस्तानियों के बीच होनेवाले अचल सम्पत्ति के व्यवहार को ही रोकता था; जब कि यह नया कानून नेटाल के शहरी और देहाती हल्कों सहित समूचे सूबे पर लागू होगा और इसके अनुसार न सिर्फ यूरोपियनों और हिन्दुस्तानियों के बीच ऐसे सब व्यवहार बन्द हो जायँगे; बल्कि यह कानून ऐसे हर व्यवहार को गैरकानूनी बनाता है, जो एक तरफ हिन्दुस्तानी और दूसरी तरफ गैरहिन्दुस्तानी—चाहे वह यूरोपियन, अफ्रीकन, बण्टू, चीनी, मलाई और दूसरे किसी राष्ट्र के निवासी हों—के बीच होगा।

इस नये कानून के अनुसार ट्रान्सवाल में हिन्दुस्तानियों के लिए शहरों, कस्बों और गाँवों में रहने और व्यापार करने के लिए कुछ हल्के अलग कर दिये जायँगे। इसका नतीजा यह होगा कि हिन्दुस्तानियों को अपना व्यापार, उनके लिए निश्चित किये गये इन हल्कों के अन्दर ही, नियंत्रित करना ही होगा। इस तरह व्यापार के केन्द्रों से कुछ दूर हटा दिये जाने के कारण और देश की आबादी के उन तमाम हिस्सों से उनके सम्पर्क के टूट जाने के कारण, जिनके साथ वे अब तक व्यापार-धन्धा करते आये थे, हिन्दुस्तानी व्यापारियों को तबाही का सामना करना पड़ेगा और उनका सर्वनाश हुए बिना न रहेगा।

इसके अलावा ट्रान्सवाल में व्यापार-धन्धे के लाइसेन्स या परवाने का कानून हिन्दुस्तानियों के लिए बहुत ही सख्ती के साथ बरता जाता है। यानी होता यह है कि परवाना देनेवाले बोर्ड को इस बात का पूरा अधिकार है कि बिना कोई कारण बताये ही हिन्दुस्तानियों को परवाना देने से इनकार कर दें। परवाने की आपस की अदला-बदली के मामले में भी यही कानून लागू होता है। इसी तरह नेटाल में परवाने (लाइसेन्स) के कानून पर हिन्दुस्तानियों के खिलाफ सख्ती के साथ अमल किया जाता है और इस सबकी तह में काले-गोरे का भेद ही काम करता है।

इस कानून के अनुसार नेटाल और ट्रान्सवाल के हिन्दुस्तानियों को यूनियन की धारा-सभा में बण्टुओं और दक्षिण अफ्रीका के दूसरे मूल निवासियों की तरह जातिगत प्रतिनिधित्व दिया जायगा। १५० से अधिक सदस्योंवाली धारा-सभा में हिन्दुस्तानियों का प्रतिनिधित्व तीन ऐसे यूरोपियन सदस्य करेंगे, जिनका चुनाव दक्षिण अफ्रीका के हिन्दुस्तानियों द्वारा किया जायगा।

यह कानून वास्तव में केवल भारत के लिए नहीं, बल्कि सारे एशिया के लिए चुनौती है। प्रवासी भारतीयों के सामने तो आज जीवन-मरण का प्रश्न उपस्थित है। मैं आज तीन साल से भारत-सरकार से आग्रह करता आ रहा हूँ कि दक्षिण अफ्रीका से व्यापार-सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया जाय। केन्द्रीय धारा-सभा ने भी एक प्रस्ताव-द्वारा मेरे अभिमत का समर्थन किया, और भारत-सरकार के प्रवासी भारतीय विभाग के सदस्य डाक्टर नारायण भास्कर खरे भी कुछ करवाना चाहते थे; पर चर्चिल और एमरी बीच में कूद पड़े, भारत के हित के लिए स्मट्स को नाराज करना उनके लिए अनहोनी बात थी। भारत-सरकार ठहरी इँगलैंड की ब्रिटिश सरकार की चेरी; इसलिए इसे चर्चिल और एमरी के हुक्म के सामने सिर झुका देना पड़ा।

पिछले मार्च मास में जब मैं दक्षिण अफ्रीका के भारतीय डेपुटेशन के साथ वायसराय लार्ड वैवेल से मिला, तो उन्होंने यह घोषणा की कि दक्षिण अफ्रीका से व्यापार-संबंध तोड़ देने के लिए नोटिस दे दी गई। इस नोटिस के अनुसार तीन मास के बाद व्यापार-सम्बन्ध-विच्छेद हो सकेगा। इस बार एक विशेष बात यह हुई है कि ब्रिटिश सरकार की अनुमति के बिना ही भारत-सरकार ने अपनी जिम्मेदारी पर यह साहस किया है। स्मट्स के दुराग्रह से तङ्ग आकर अब दक्षिण अफ्रीका से भारत के हाई कमिश्नर को भी वापस बुला लेने का विचार हो रहा है। और उस दिन केन्द्रीय धारा-सभा में सर रामस्वामी मुदालियर ने यह भी घोषणा की कि प्रवासी भारतीयों का यह मामला संयुक्त राष्ट्र-संघ में पेश करने का भारत-सरकार का विचार है। इस प्रकार प्रवासी भारतीयों की यह समस्या अव्वल दर्जे की अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बन गई है।

माननीय श्री आर० के० पाटिल

(पेज ८ का शेष)

त्यागपत्र देने के बाद पाटिल साहब एक साधारण किसान की तरह अपने गाँव में खेती-बारी का काम करने लगे। किसी प्रकार की नौकरी करने से इनकार कर दिया। साधारण जीवन व्यतीत करने में जीवन का बहुत बड़ा सुख माना। गाँव की सेवा में राष्ट्र की सेवा का दर्शन हुआ। पददलित राष्ट्र को ऊपर उठाने का मार्ग आपने किसानों की सेवा में ही सोचा। ग्रामीण उद्योग-धन्धों की उन्नति की योजना बनाकर अपने गाँव के आस-पास काम शुरू कर दिया। बिलकुल किसान बनकर उनके जीवन में घुल-मिल गये। पस्तहिम्मत जनता को धीरज देकर उद्योग-धन्धों के काम में लगाना शुरू कर दिया। कस्तूर बा मेमोरियल ट्रस्ट की तरफ से भी आपने गाँवों में काम शुरू किया। जी-जान से उस काम में लग गये। हर तरह से किसानों की भलाई में सारा समय देने लगे। नंगे पैर गाँवों में घूमकर रचनात्मक कामों का महत्त्व गाँववासियों को समझाना शुरू किया।

आपने कभी कल्पना भी नहीं की कि देश मेरी सेवाओं का महत्त्व समझेगा। अपना कर्तव्य समझकर आप सरकारी नौकरी से अलग हुए थे और एकान्त में रहकर सेवा करने का निश्चय किया था। लेकिन देश सच्चे देश-त्यागियों को नजरन्दाज नहीं कर सकता, आज नहीं तो कल उनका सम्मान होगा। देश की परिस्थिति सुधरी। कांग्रेस का जमाना आया। असेम्बलियों का चुनाव लड़ने का निर्णय किया गया। हर प्रान्तों से राष्ट्रकर्मी कार्यकर्ता कौंसिलों और असेम्बलियों में भेजे जाने लगे। मध्यप्रान्त की जनता ने भी अपने तपे राष्ट्रप्रेमी पाटिल को असेम्बली में भेजने का निर्णय किया। आप भारी बहुमत से चुनकर असेम्बली के सदस्य मनोनीत हुए। केन्द्रीय और प्रान्तीय पार्लामेन्टरी बोर्ड को बधाई दी जाय, जिसने आपको मंत्री चुना। आपका मंत्री चुना जाना हर प्रकार से उचित था। आपको सरकारी कल-पुर्जों का हाल मालूम है। सरकारी चालबाजों की हरकतें आप जानते हैं। आपने वैधानिक कामों की पूरी शिक्षा प्राप्त की है। मंत्री पद पर चुने जाने के बाद भी आप वही पहले की सादी पोशाक पहनकर सेक्रेटेरियट में जाते हैं। मंत्रियों में सबसे साधारण पोशाक आपकी है। आपके नीचे के क्लर्क अच्छा कपड़ा आदि पहनकर आते हैं फिर भी आप एक मामूली खादी का पायजामा, कुर्ता, गांधी टोपी और डेढ़ दो रुपये की चप्पल। आप कपड़े-लत्ते पर अधिक रुपया खर्च करना पसन्द नहीं करते।

दिन रात काम में डूबे रहते हैं। आप सरकारी हुक्कामों से जनता को हर तरह से बचाने की कोशिश कर रहे हैं। बार बार उन्हें सावधान करते हैं कि आप सब जनता की सेवा करने के लिए रक्खे गये हैं। पहले की नीति भूल जाइए। अब जनता का राज्य आ रहा है। जनता का सेवक बनकर रहिए। अपनी आवश्यकता के अनुसार वेतन आदि लेने के आप हामी हैं। मंत्रियों को कांग्रेस ने १॥ हजार रुपया लेने के लिए कहा है लेकिन आपका कहना है कि जनता का एक पैसा भी अधिक न लिया जाय। आप अधिक वेतन के पक्ष में नहीं हैं। पहाड़ों पर जाकर जनता की सेवा नहीं की जा सकती। अपने सहयोगियों से आप यही सलाह देते हैं। आप तन-मन-धन से जनता की सेवा में लगे हुए हैं। आप देहातों का दौरा कर देहातियों से मिल रहे हैं। आप शक्ति भर गरीबों से मिलकर उनके दर्द को कम करने की कोशिश करते हैं। अभी आप हाल ही में वर्धा के आपने सीधे देहातियों से मिलकर बातें कीं और उनकी तकलीफों को गौर किया। आप केवल वर्धा के से मिले हों ऐसी बात नहीं, जहाँ आप जाते हैं सीधे किसानों से कायम करते हैं।

आप आडम्बर और ढोंग करते हैं। आप अपना काम सादे विक ढंग से करना चाहते हैं। हैं, सच्चे हैं और त्यागी हैं, हाथ में लेते हैं उसे पूरी तौर से की कोशिश करते हैं। न नाम की और न आत्म-प्रशंसा की। सामने लोग अपनी मातृ-भाषा में देखने लगते हैं। यह कितने है। जिससे हमारा शरीर पल-पल खड़ा है हम उसी को छोड़ने उद्यत हो जाते हैं। अपनी इज्जत नहीं करते। राष्ट्रभाषा को दूर की है। आप मातृभाषा-प्रेमी राष्ट्र-भाषा के भक्त। यों तो सभी और राष्ट्रभाषा के गीत गाते हैं।

महात्मा गांधी ही ऐसे व्यक्ति राष्ट्रभाषा की शक्ति को समझ है और सारी शक्ति लगाकर जनता तक पहुँचा देना उनकी चले तो एक दिन भाषा को यहाँ से विदा अपने कामों में वे मातृभाषा का ही प्रयोग करते हैं। जहाँ मालूम है, यह पहला कदम के० पाटिल साहब का है—पहुँचते ही आपने राष्ट्रभाषा प्रान्तीय भाषा में काम शुरू सेक्रेटेरियट में अँगरेजी का वहाँ पहुचते ही आपने उसके बिलकुल कम करके अपने राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी और में काम करने की हिदायतें सब आर्डर हिन्दुस्तानी और में करना शुरू किया। तहलका मच गया। जनता ने कदम का स्वागत किया। के लिए आपका यह काम आप सुधार के काम को करना चाहते हैं। काले बाजार मूल से हटा देना चाहते हैं आप अकेले नहीं कर सकते। पूरा सहयोग चाहते हैं और सहयोगियों की पूरी मदद। मंडल में आ जाने से चार हैं। जनता खुशी मना रही है।

सेवाग्राम, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलसी—अनेक रोगों की सरल दवा

जीवन में स्वस्थ रहने के लिए बड़ी उपयोगी है

लेखक, श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालंकार

लाहौर के प्रसिद्ध चिकित्सक श्री रामेश बेदी ने आयुर्वेद इंस्टीट्यूट बदामी बाग लाहौर के स्वास्थ्य-संबंधी लेख हिन्दी जनता तथा 'देशदूत' के पाठक बड़ी रुचि से पढ़ते हैं। इस लेख में 'तुलसी' की उपयोगिता पर बड़ा सुंदर और उपयोगी प्रकाश डाला गया है। लेख बड़े काम का तथा पठनीय है।

...तुलसी को और शायद आप स्वयं ...तुलसी और शायद आप स्वयं ...दिन तुलसी के पौधे को रोज पूजते हैं। ...तुलसी के पौधे को रोज पूजते हैं। ...अनेक रोगों को दूर करने ...अनेक रोगों को दूर करने ...की शक्ति को भी यदि ...की शक्ति को भी यदि ...हों तो यह सचमुच आपका ...हों तो यह सचमुच आपका ...कर सकता है।

...क्या गुण हैं?

...के तुलसी को हिचकी, खाँसी, ...के तुलसी को हिचकी, खाँसी, ...का दर्द और विषविकार ...का दर्द और विषविकार ...जाता है। यह दुर्गन्ध दूर ...जाता है। यह दुर्गन्ध दूर ...और कफ को नष्ट करती ...और कफ को नष्ट करती ...को पैदा करती है। नरहरि ...को पैदा करती है। नरहरि ...और चरपरे स्वादवाली, भोजन ...और चरपरे स्वादवाली, भोजन ...हटानेवाली, गरम, सुगन्धित ...हटानेवाली, गरम, सुगन्धित ...छोटे कृमियों को मारने- ...छोटे कृमियों को मारने- ...है। धन्वन्तरि निघण्टु में इसे ...है। धन्वन्तरि निघण्टु में इसे ...और अग्निदीपक ...और अग्निदीपक ...मिश्र और मदनपाल इसे ...मिश्र और मदनपाल इसे ...हितकर, त्वचा के रोगों ...हितकर, त्वचा के रोगों ...और कष्ट से आते हुए ...और कष्ट से आते हुए ...को हटानेवाली बताते ...को हटानेवाली बताते ...सम्मति में यह शरीर में ...सम्मति में यह शरीर में ...पैदा करती है। कैपदेव ...पैदा करती है। कैपदेव ...में यह तेज है, उल्टियों को ...में यह तेज है, उल्टियों को ...और आँखों के रोगों में लाभ ...और आँखों के रोगों में लाभ ...

रसोई में व्यवहार

...इसका उपयोग चटनियों, ...इसका उपयोग चटनियों, ...को स्वादु बनाने में करते ...को स्वादु बनाने में करते ...के देहातों में चावल, ...के देहातों में चावल, ...तथा दूसरी महँगी ...तथा दूसरी महँगी ...खेतों को सुगन्धित करने ...खेतों को सुगन्धित करने ...का प्रयोग किया जाता ...का प्रयोग किया जाता ...में सुगन्ध अधिक होने ...में सुगन्ध अधिक होने ...प्रयोजनों में बरती जाती है। ...प्रयोजनों में बरती जाती है। ...निकाल लेते हैं ...निकाल लेते हैं ...पक जाती है तो चूल्हे ...पक जाती है तो चूल्हे ...के बाद रस के छींटे दे देते ...के बाद रस के छींटे दे देते ...तो तेजपत्र के पत्तों की तरह ...तो तेजपत्र के पत्तों की तरह ...को पुलावों में छोड़ देते हैं।

औषध में उपयोग

...देशी और विदेशीय सिविल- ...देशी और विदेशीय सिविल- ...डाक्टरों ने तुलसी को ...डाक्टरों ने तुलसी को ...की चिकित्सा में सफल ...की चिकित्सा में सफल ...करता है। इस लेख में ...करता है। इस लेख में ...अनुभवों को आयुर्वेद के ...अनुभवों को आयुर्वेद के ...चिकित्सकों के अनुभवों के साथ ...चिकित्सकों के अनुभवों के साथ ...अपने स्वयं भी जो अनुभव ...अपने स्वयं भी जो अनुभव ...उनका भी स्थान-स्थान पर ...उनका भी स्थान-स्थान पर ...किया गया है।

किन रोगों

...शरीर में और आँखों के अन्दर ...शरीर में और आँखों के अन्दर ...अत्यन्त लाभदायक है। ताजा ...अत्यन्त लाभदायक है। ताजा ...पत्तियों को रोकता है और कहा ...पत्तियों को रोकता है और कहा ...कीड़ों को भी मारता है। ...कीड़ों को भी मारता है। ...और की गुठली तथा खाण्ड ...और की गुठली तथा खाण्ड

प्रत्येक तीन माशे और काली मिर्च एक माशे को पानी के साथ रगड़कर बेर जितनी बड़ी गोलियाँ बना लें। ये गोलियाँ उल्टियों में देने से लाभ करती हैं। पत्तों के रस में दालचीनी का चूर्ण मिलाकर उल्टियों को रोकने के लिए पिलाया जाता है। बीजों को पीसकर गौ के दूध के साथ उल्टियों और दस्तों में दिया जाता है। दस्तों में सूखे पौदे का काढ़ा उत्तम दीपक औषध होता है। इससे लाभ न हो तो काढ़े में पिसा हुआ जायफल मिलाकर पिला देना चाहिए। पेचिश (डिसेंण्ट्री) और अजीर्ण में ताजे पत्तों के एक तोला रस को रोज सुबह पीने से लाभ होता है। पेट की पीड़ा में तुलसी तथा अदरक का रस समान भाग लेकर छोटा चम्मच भर दो-तीन बार तक पिला देते हैं।

तुलसी के ग्यारह पत्तों को एक माशा वायविडंग के साथ रगड़कर दो गोलियाँ बना लें। सुबह-शाम ताजे पानी के साथ एक गोली सात दिन तक सेवन करने से पेट के कीड़े मर जाते हैं। दोपहर के भोजन के बाद या किसी दूसरे समय तुलसी के चार-पाँच पत्ते प्रतिदिन चबाकर रस अन्दर लेना मन्दाग्नि, अरुचि, वमन और कृमियों के लिए लाभकारी होता है। इससे मुख का बिगड़ा हुआ स्वाद ठीक हो जाता है, मुख की दुर्गन्ध दूर होती है, श्वास स्वच्छ होता है और पाचन संस्थान ठीक काम करता है। सनत्कुमार की सम्मति में भी भोजन के बाद मुख की शुद्धि के लिए कुछ पत्ते चबा लेने चाहिए। जिन्हें पान चबाने की आदत है वे भोजन के बाद तुलसीदल खाना आरम्भ करें तो इससे उन्हें बहुत लाभ होगा। मसूड़ों और दाँतों को खराब करने के पान के दुर्गुण से वे बचे रहेंगे। गाँवों में क्योंकि सब जगह पान सुलभ नहीं होता इसलिए जो दवायें पान के रस के अनुपात से देनी होती हैं उन्हें देहाती वैद्य तुलसी रस के अनुपान से दे दिया करते हैं। तुलसी के पत्ते पान का प्रतिनिधि द्रव्य बन सकते हैं। पान की तरह इन पर भी सुपारी-कत्था लगाकर चबाने की आदत लङ्का में देखी जाती है।

जुकाम और नाक के रोग

सिर का भारीपन, सिरदर्द, आधा शीशी, मृगी तथा बेहोशी में, जुकाम में, नाक की गन्ध लेने की शक्ति के नष्ट हो जाने में और नाक के कीड़ों में तुलसी सिर में सञ्चित दोषों को निकालने के लिए दी जाती है। ताजे पत्तों के रस को नाक में टपकाने से नाक के कीड़े मर जाते हैं और नाक से दुर्गन्ध आनी बन्द हो जाती है। सूखी पत्तियों को पीसकर नुस्वार की तरह सूँघने से नाक से बहुत ज्यादा गन्दगी का सदैव बहते रहना रुक जाता है। यह नुस्वार नाक के कीड़ों को भी मारती है। बङ्गाली लोग इस नुस्वार को जुकाम में बहुत बरतते हैं। नाक के रोगों की चिकित्सा में चक्रपाणि ने जिन विभिन्न प्रकार के तेलों का प्रयोग किया है, उनमें तुलसी भी रहती है। ये तेल नाक की दुर्गन्ध को हटाते हैं। तुलसी के रस को बाँसे के रस में मिलाकर बहनेवाले जुकाम में देते हैं।

सरदियों में ठण्डा खा जाने से जब नाक और श्वास-प्रणालियों की श्लैष्मिक स्तरों में कफ का प्रयोग हो गया हो और परिणामतः जुकाम, छींकें, सिरदर्द और बर हो तो पत्तों के रस को शहद के साथ देते हैं। रोग के आरम्भ में ही तुलसी का प्रयोग शुरू कर दिया जाय तो यह नाक की श्लैष्मिक झिल्ली से शोथ और संक्रमण को आगे नहीं बढ़ने देती जिससे साँस की नलियाँ और फेफड़े ठंड खाने से बच जाते हैं। इन अवस्थाओं में वैद्य इसका एक सरल योग इस्तेमाल करते हैं जो इस प्रकार तैयार किया जाता है। नीरोग साफ़ काली मिर्चों के कपड़छन चूर्ण को तुलसी के हरे पत्तों के स्वरस की भावनायें दे-देकर छाया में सुखाते जायँ। इक्कीस भावनायें देने के बाद बने चूर्ण को चार से छः रत्ती तक शहद के साथ चटाते हैं या गरम पानी से फँका देते हैं।

श्वास-संस्थान

कफ निस्सारक गुण के कारण इसे कफ-प्रकोपजन्य अनेक अवस्थाओं में और श्वास-संस्थान के रोगों में प्रयोग करते हैं। शहद, अदरक और प्याज के रस के साथ इसके पत्तों का रस बलगम निकालनेवाली उत्तम औषधि बन जाती है और खाँसी, जुकाम तथा श्वांस-प्रणाली की शोथ में दी जाती है। तुलसी की मञ्जरी, सोंठ और प्याज को एक जगह पीसकर शहद मिला कर चाटने से सूखी खाँसी और बच्चों के दमे में लाभ होता है। खाँसी में और गला पड़ जाने में हरे पत्तों को सेंककर नमक के साथ चबा जाते हैं। खाँसी में बलगम आता हो तो चरक छोटी मक्खियों के शहद के साथ काली तुलसी का रस मिला कर चटाते हैं। तुलसी की मञ्जरियों में थोड़ा घी मिलाकर निर्धूम अङ्गारों पर रखें और उठते हुए धुएँ को खाँसी के रोगी को पिलायें। ऊपर से दूध पीने को दें। सूखे पौदे के एक तोला यवकुट को दस तोले पानी में काढ़ा कर जुकाम और खाँसी में पिलाते हैं। लङ्का में भी खाँसी और जुकाम के काढ़ों में पौदे को डालते हैं। निमोनियाँ में हरे पत्तों के साथ काली मिर्च को पीसकर निकाले रस को पिलाते हैं। दमे में तुलसी का प्रयोग करते हुए देखा जाता है। दमा दूर करनेवाली दस ओषधियों में चरक ने इसे गिनाया है।

देशी चाय

छाया में सुखाये हुए तुलसी के पत्ते तीन सेर, दालचीनी दो पाव, तेजपत्र एक सेर, सौंफ दो सेर, इलायची एक सेर, अगिया घास तीन सेर, बनफ़शा एक पाव, ब्राह्मी बूटी एक सेर और लाल-चन्दन दो सेर। गँड़ासे से कुतरकर इनके जौ के बराबर छोटे-छोटे टुकड़े कर लें।

तैयार करने की विधि—एक सेर स्वच्छ उबलते पानी में एक तोला डालकर उतार लें। जरा सीझने दें। फिर छानकर इच्छानुसार दूध और मीठा डालकर पियें।

लिपटन आदि विविध ब्रैंडों की चाय दिल और दिमाग को कमजोर करती है, ज्ञानवाही तन्तुओं को निर्बल बनाती है और रक्तवाहिनियों की दीवारों को कठोर बना देती है। परिणाम यह होता है कि समय से पूर्व ही बुढ़ापे के चिह्न प्रकट होने लगते हैं। यह सुगन्धित और ताजगी देनेवाला पेय इन सबसे बचाता है और सच्ची स्फूर्ति तथा आनन्द प्रदान करता है।

नशीली चाय की आदत छुड़ाई जा सकती है

आर्य-संस्कृति के प्राचीन केन्द्र गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी हरद्वार में जब चाय पीने की आदतवाले अतिथि आया करते थे तो कुलपति स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी उन्हें तुलसी के पत्तों से बनी चाय पीने को दिया करते थे। भारत के भूतपूर्व वाइसराय लार्ड चेम्सफोर्ड और संयुक्त-प्रान्त के सेवायुक्त गवर्नर लार्ड पेंटन तथा उस समय के अनेक अँगरेज कमिश्नरों के आतिथ्य में तुलसी की चाय ही दी जाती रही है। जलपान के समय उन अभ्यागतों में बातचीत का यह एक मनोरञ्जक विषय रहा है।

जो लोग चाय पीनेवाले हैं वे इसका सेवन करके चाय पीना छोड़ देते हैं। जो लोग बहुत तेज चाय पिया करते हैं, परिमाण में भी ज्यादा पीते हैं और दीर्घकाल से पीते रहने के कारण इस नशे के आदी हो गये हैं उन्हें एकदम चाय छुड़ाना बहुधा कठिन होता है। ऐसे रोगियों से इस नशीले पेय को छुड़ाने में चिकित्सक को विशेष प्रयत्नशील होना पड़ता है। चिकित्सक को इस बात पर आग्रह नहीं करना चाहिए कि रोगी पहले दिन से ही चाय का सर्वदा परित्याग कर दे। एक समय रोगी जितनी चाय पीता है उसमें सूखी चाय कितनी डाली जाती है इस बात को मालूम कर लेना चाहिए। पहले दिन इस चाय के परिमाण को थोड़ा कम करके और कम की गई चाय के बराबर तुलसीवाली देशी चाय मिलाकर चाय तैयार करायें। रोगी को यह अखरेगी नहीं और वह अनुभव कर रहा होगा कि जैसे वह इसमें उतना ही मजा और नशा ले रहा है। धीरे-धीरे देशी चाय का परिमाण बढ़ाते जाइये और चाय को कम करते जाइए। इस तरह अन्त में एक दिन देशी चाय पर ही आ जायँ।

जुकाम, खाँसी, कफ, गले के रोग तथा सब प्रकार के ज्वरों में इसे पीने को दिया जाता है।

एक लाभप्रद व्यवसाय

गुरुकुल काँगड़ी की सूझ तुलसी की इस चाय को बहुत-सी आयुर्वेदिक फार्मेसियाँ बड़े पैमाने पर बनाकर बेच रही हैं। उनमें मिलाये जानेवाले घटकों में और उनके अनुपात में बहुत विविधता है। इनकी सुगन्ध और स्वाद में उन्नति करने की बहुत गुंजाइश है। जिन संस्थाओं या फार्मेसियों के साथ रासायनिक प्रयोगशालायें (केमिकल लेबोरेटरीज) विद्यमान हैं उन्हें इस सम्बन्ध में खोजें करनी चाहिए। तुलसी के हरे पत्तों को तोड़ने के समय, उन्हें सुखाने के तरीके और उन्हें तथा अन्य घटकों को 'तुलसी चाय' में एक नियत अनुपात में मिलाने से पेय के सुगन्ध और स्वाद में आनेवाले परिवर्तनों को सूक्ष्मता से अध्ययन करते हुए एक ऐसे स्वादिष्ट पेय का निर्माण करना चाहिए जो सर्वसाधारण में बाजारू चाय के मुकाबले में अधिक लोकप्रिय हो सके। देश के सम्पन्न संगठन वैज्ञानिक आधार पर अन्वेषण करके एक ऐसा पेय निर्माण कर सकते हैं जो समस्त भारत ही नहीं, विदेशों में भी अपना स्थान बना ले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार के कांग्रेस मंत्रियों का जमघट

जमींदार बने रहेंगे किन्तु उनकी जमींदारी खत्म होगी

(निज संवाददाता द्वारा)

बिहार कांग्रेस मंत्रिमंडल के प्रधान मंत्री माननीय श्री श्रीकृष्णसिंह।

राजेन्द्र साहित्य महाविद्यालय, सेवदह (पटना) का वार्षिकोत्सव और समग्र ग्राम-सेवा-शिक्षण-शिविर का समावर्त्तन समारोह धूमधाम से सम्पन्न हुआ। दो बजे दिन से ही आमन्त्रित सज्जनों का आगमन होने लगा। माननीय मंत्रियों के शुभागमन से विद्यालय का वातावरण ओजपूर्ण हो उठा। आगन्तुक सज्जनों में माननीय बाबू श्रीकृष्णसिंह जी प्रधान मंत्री, माननीय आचार्य बदरीनाथ वर्मा, शिक्षा-मंत्री, माननीय बाबू रामचरित्रसिंह जी सिंचाई-मंत्री, माननीय पं० विनोदानन्द झा जी स्वायत्त मंत्री, बाबू गुरुसहायलाल जी चेयरमैन, पटना जिला बोर्ड, श्री जगतनारायणलाल एम० एल० ए०, ठा० लक्ष्मीनारायणसिंह 'सुधांशु' एम० एल० ए०, श्री कपिलदेव नारायणसिंह 'सुहृद' एस० डी० ओ० बाढ़, बाबू यदुनन्दनसिंह, बाबू दासुसिंह एडवोकेट, बाबू कीर्तिनारायण शर्मा, श्रीमती जगतनारायणलाल के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। बाबू श्यामनारायणसिंह एम० एल० ए० जी ने विद्यालय का संक्षिप्त परिचय देते हुए मनोनीत सभापति से आसन ग्रहण करने का अनुरोध किया। प्रधान अध्यापक ने अपने रिपोर्ट के सिलसिले में बिहारकेसरी की भूरि-भूरि प्रशंसा की और बिहार के चारों मंत्रियों के शुभागमन पर हर्ष प्रकट किया। पारितोषिक वितरण के पश्चात् बाबू जगतनारायणलाल 'सुधांशु' जी, विनोद बाबू और रामचरित्र बाबू के व्याख्यान हुए।

बाबू जगतनारायणलाल ने कहा कि सेवदह विद्यालय शान्त वातावरण में साधकों और विद्यार्थियों के लिए साधना और तपस्या की भूमि है। इस विद्यालय के संचालकों में मुझे त्यागी ही त्यागी नजर आते हैं। मंत्रियों को आह्वान करते हुए आपने कहा कि राष्ट्रीय जागरण के वसन्त काल में भी यह विद्यालय न पनपे तो मेरी तपस्या अधूरी ही रहेगी।

श्री सुधांशु जी ने पारितोषिक का विवेचन करते हुए विद्यालय की सराहना की, आपने कहा कि राजनीति गरीबों से वोट और अमीरों से पैसे माँगना सिखाती है। राजनीति के द्वारा साहित्य की बड़ी सेवा हो सकती है। इस वैज्ञानिक युग में अनुसन्धान करने के लिए ऐसे ही विद्यालयों की आवश्यकता है। प्राचीन काल में, बड़े-बड़े राजा-महाराजा तपोभूमि में मुनियों के सम्पर्क में ज्ञानानुभूति प्राप्त करने को जाया करते थे। राजेन्द्र महाविद्यालय सिर्फ शिक्षा और सहयोग-निमित्त ही नहीं वरन् देश के कल्याणार्थ है।

माननीय पं० विनोदानन्द झा जी ने किसानों को आश्वासन देते हुए कहा कि चेरों के समीप पुल-निर्माण करके मैं आपका मार्ग प्रशस्त कर दूँगा। आप लोगों के अंचल में सेवदह विद्यालय का जो दृष्टिकोण है उसे मैं जानता हूँ। इस विद्यालय से मेरा उतना ही घना सम्बन्ध है जितना हिन्दी-विद्यापीठ से। मैं इन दोनों शिक्षण-संस्थाओं की हृदय से उन्नति चाहता हूँ।

माननीय बाबू रामचरित्रसिंह जी ने संस्कृत भाषा के प्रचार पर जोर देते हुए कहा कि आप संस्कृत भाषा का उद्यान सिंचन करें। बालकों की योग्यता बढ़ाने के लिए संस्कृत भाषा का उपयोग आवश्यक है। संचालकों को बधाई देते हुए आपने कहा कि मैं अनुभव करता था कि सेवदह विद्यालय कुछ युवकों का अस्थायी गठन है किन्तु यहाँ आने से मेरा भ्रम दूर हो गया। मैंने विद्यालय के वातावरण में आकर जो सुख पाया वह तो हृदय में छिप गया है। अगर संचालकों का उत्साह ऐसा ही बना रहा तो आप देखेंगे कि संस्था का रूप कैसा भव्य होगा।

समग्र ग्राम-सेवा-शिक्षण-शिविर के शिक्षार्थियों को उपाधि वितरण करने के पश्चात् दीक्षान्त भाषण देते हुए माननीय आचार्य्य बदरीनाथ वर्मा, शिक्षा-मंत्री ने कहा कि छः महीनों की तालीम में आपने ग्राम-सेवा का जो अनुभव और ज्ञान प्राप्त किया है उसका प्रचार गाँवों में करना आपका फर्ज होगा। राष्ट्रसेवक समग्र ग्राम सेवा का व्रत लें। उनकी सारी कठिनाइयों को हल करने के उपायों को ढूँढ़ने और प्रयोग में लाने की सारी शक्ति लगा दें। जब तक ग्रामोद्योग का प्रचार नहीं करेंगे—घर-घर में चरखे की गूँज न उठेगी तो कलों के द्वारा यह कमी पूरी नहीं होगी। आप ग्रामों में बैठकर तपोभूमि की रचना करें तभी तो आपकी शिक्षा सार्थक और आपकी कलायें उद्देश्यपूर्त्ति में सहायक सिद्ध होंगी। आप उस महापुरुष को न भूलें जिनके नाम से यह विद्यालय है।

प्रधान सचिव माननीय बाबू श्रीकृष्णसिंह जी ने सिंहगर्जन के समान बोलते हुए कहा—कि मुझे इस बात का सचमुच दुख है कि मैं आज तक इस विद्यालय में नहीं आया। इस विद्यालय के प्रधानाचार्य्य कुछ दिन पहले राजगृह में मुझसे मिले थे उस समय मैं लाचार था—यह मेरा दोष था। संसार में शोर करना भी राष्ट्र-उत्थान का एक मार्ग है। जब मकान नाकामयाब हो जाता है और सुन्दर भवन-निर्माण करना होता है तो उसे नींव से ही उखाड़ कर काम प्रारम्भ करते हैं। उसी तरह इस पुराने ढंग की गन्दी सरकार को नींव-सहित उखाड़ना देशवासियों का कर्त्तव्य है। इस काम के लिए दिल्ली चलना भी था। किन्तु ध्वंसात्मक कार्यों का प्रारम्भ तो भूल से भी नहीं होना चाहिए। मैं जब हिन्दुस्तानियों का करुण-क्रन्दन सुनता हूँ—किसानों और मजदूरों का आर्त्तनाद सुनता हूँ तो मुझे उन जमींदारों के प्रति घृणा हो जाती है। जो किसानों के खून से अपने परिवार को विलासमय बना रहा है। मजदूरों से बेगार लेकर उसके जीवन को निकम्मा बना देता है। इनकी जमींदारी अब शीघ्र ही जाने को है। अन्न, वस्त्र, गरीबी और बेकारी को देखकर मैं अजीब घनचक्कर में पड़ गया हूँ इस गरीबी के प्रति मैं सोचता हूँ कि किस प्रकार यहाँ दौलत पैदा की जाय जीवन व्यतीत करने के लिए यह आवश्यक है कि पूरा भोजन मिले—पहनने को कपड़े मिलें। मनोविनोद के समयों को खाद्य-वस्त्र उत्पादन के समस्याओं में लगावे। जापान, इटली और स्पेन के एक बीघे में जितना धान पैदा होता है उतना हमारे यहाँ पाँच बीघे में। ईश्वर की दी हुई दौलत-जमीन को हम पैदावार नहीं बना सकते। लोग वैज्ञानिक खाद का भरोसा करते हैं। यह भूल है। हमें गोबर, मल और मूत्र का उपयोग करना चाहिए।

शिक्षा के सम्बन्ध में आपने कहा कि शिक्षकों के अल्प वेतन का मुझे भी दुख है। हम लोग दिक्कतों से घिरे रहने पर भी इनकी दशा में सुधार लाने का प्रयत्न करेंगे। गरीबों को शराब पिलाकर—उनके बच्चों को भूखा मारकर करोड़ों रुपये लेकर विश्वविद्यालय बनाना—सड़कें बनाना पाप है। मैं, लोगों में सूर्य्य के समान व्यापक ज्ञान-प्रकाश देना चाहता हूँ। जिस प्रकार सूर्य्य तालाब, नदी और समुद्र से पानी खींचकर फिर भूमि पर वृष्टि के रूप में देता है उसी प्रकार सरकार भी तो प्रजाओं से लेकर ही उसे देती है।

अन्त में सेवदह शिक्षण-शिविर में शिक्षा प्राप्त किये ग्रामसेवकों को सम्बोधन करते हुए आपने कहा कि आज गांधी जी ने ग्राम की ओर लोगों का ध्यान [illegible] है अतः आप लोग खाद [illegible] वस्त्रादि उत्पादन के लिए [illegible] ताओं को तैयार करें। हमारी [illegible] हुई है अतः इन बिगड़ी आदतों के लिए सेवदह विद्यालय से [illegible] ग्रामसेवकों की जरूरत होती है। सरकार की दिक्कतों को समझाते हुए कहा कि जमींदारों के आतंक से [illegible] दिनों के बाद लोग मुक्त हो जायेंगे।

अन्त में श्री बाबू ने मंत्रियों से दो हजार रुपये देने का वचन [illegible] उपस्थित जन-समूह से धन के लिए [illegible] की। ६०० रु० सभास्थल पर [illegible] गये और १,८०० रुपये का [illegible] मानी सज्जनों से मिले जिनमें बाबू [illegible] गुप्ता बख्तियारपुर ६०० रु०, [illegible] महंत जी २०० रु०, बाबू [illegible] मुंगेर १५१ रु०, मोतीबाबू [illegible] रु०, बाबू गुरुसहायलाल जी [illegible] बाबू नैपालीसिंह जी वादी १०१ [illegible] यदुनन्दनप्रसाद, चेयरमैन बाढ़ [illegible] बोर्ड १०१ रु० का दान विशेष [illegible] है। श्रीमती रामप्यारी देवी के [illegible] उपस्थित महिलाओं ने १०० रु० [illegible] श्याम बाबू के धन्यवाद देने के [illegible] ध्वनि के साथ वार्षिकोत्सव की [illegible] समाप्त हुई।

बंकिमबाबू के उपन्यास

अनु० पं० सूयकान्त त्रिपाठी 'निराला'

आनन्दमठ—मुसलमानों और [illegible] को हिन्दुस्तान से बाहर करने के [illegible] बंगाल में वैष्णवों ने जो विद्रोह [illegible] था, उसी का इस उपन्यास में [illegible] सम्राट् श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय [illegible] बड़ी खूबी से वर्णन किया है। [illegible] सुन्दर चित्रण इस उपन्यास में [illegible] पढ़कर मातृ-भूमि के लिए दिल [illegible] उठता है। मूल्य १।-) एक रुपया [illegible] आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड इलाहाबाद।

शीतल और सुरभित

तुम्हारे प्रतिदिन के प्रयोगार्थ

गर्मियों में अपने माथे, गर्दन और बाहों पर टाटा का ओ डी कोलोन लगाओ। इसका तीक्ष्ण शीतल स्पर्श आल्हादक है और गर्मी और थकावट को दूर करता है। इसकी कोमल सुगन्धि पहाड़ों से आते हुए वायु के शीतल झोंके के समान है।

यह तुम्हें ऐसे वैसे जलवायु में शीतल और ताजा रहने में सहायता करता है। सर्वदा टाटा के ओ डी कोलोन की एक शीशी पास रखकर प्रतिदिन प्रयोग करें।

टाटा का ओ डी कोलोन

दी टाटा आयल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

प्रतिबंधों से मुक्त मराठी दो राजनैतिक ग्रन्थ

...प्रांतों में कांग्रेसी मंत्रि-... प्रायः सभी राजबन्दी ... इससे बढ़कर महत्त्वपूर्ण ... अँधेरे में सड़ता हुआ ... भी बन्धन-मुक्त हुआ है। ... मन्त्रिमंडल ने जिन पुस्तकों ... हटा ली है, उनमें दो ... महत्त्व रखती हैं। ... तथा 'वॉर ऑफ इंडि-... १८५७'।

...चरित्र' के लेखक हैं श्री ... एम० ए०, एल० ... एल० ए० यह ग्रंथ ... जी की जीवन की घट-... नहीं है, बल्कि १९०४ से ... गरमदल ने, हिन्दुस्तान में ... के बाहर, भारतीय स्वाधी-... जो संग्राम किया उसका ... रोमांचकारी इतिहास है। ... बम्बई यूनिवर्सिटी ने सर्वोत्तम ... पारितोषिक दिया है। सरकार ... जब्त करके प्रकाशक पर ... जुर्माना किया था। इस पर ... के फुलबेंच के सामने ... और उस न्यायमंडल ने ... खर्च के वापस दिल-... को क्रान्ति का इतिहास ... था। किन्तु हठीली बम्बई ... होकर जुर्माना तो वापस ... ग्रन्थ पर से पाबन्दी नहीं ... मन्त्रिमण्डल ने बागडोर ... उसका प्रतिशोध किया। ... जीवन के इतिहास का ... हुआ। यह ग्रंथ मराठी में है। ... ग्रंथ है 'वॉर ऑफ इंडिपेंडन्स ...' यानी '१८५७ का स्वातन्त्र्य ... में श्रीमान् सावरकर जी ... लन्दन में मराठी में लिखा ... भेजा। लज्जा की बात है ... भारत भर में छापने की ... सकी और वह पांडुलिपि ... लौट गई। फिर उसका ... यूरोप में छपा किन्तु ... आने पर वह जब्त कर ली ... भगतसिंह के साथियों ने ... छपवाकर भारत में छिपे ... किया था। इस ग्रंथ में ... के लिए प्रमाण दिया गया है ... 'पार्लियामेंटरी पेपर्स' से। ... चिरोल-जिन पर लोकमान्य ... मुकदमा चलाया था—ने इस ... में लिखा है "अँगरेजों का ... कर दिया जाय तो यह ... का एक सुन्दर नमूना है।" ... में अँगरेजों के प्रति द्वेष नहीं; ... का भंडाफोड़ अवश्य है। ... इस ग्रन्थ की एक प्रति १० ... थी। नेता जी सुभाष की ... बड़ा आदर था।

... प्रान्तों का यह कर्तव्य है कि ... के सर्वोत्तम ग्रन्थों का ... राष्ट्रभाषा हिन्दी का भंडार भरने का यत्न करें। इसी लिए इन अद्वितीय ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित होना आवश्यक है। सावरकर-चरित्र का हिन्दी अनुवाद (पद्यों का पद्यों में अनुवाद) मैंने उसके जब्त रहते ही पूरा कर रखा है। लगभग ७०० पृष्ठों का (डिमाई साइज) यह ग्रन्थ होगा।

दूसरे ग्रन्थ का अनुवाद श्री सावरकर जी के अनुरोध से शुरू हो चुका है। उन देशभक्त प्रकाशकों से प्रार्थना है कि इन ग्रन्थों को सुन्दर स्वरूप में प्रकाशित कर हिन्दी के भंडार की शोभा बढ़ावें। इस बारे में निम्नलिखित पते पर पत्र-व्यवहार करें।

७८७ ब सदाशिव पेठ —ग० र० वैशंपायन
कुंटे चौक, पूना २

* * *

नेता जी की प्रस्तर मूर्ति

कुछ दिन पहले मैंने "महावीर और सुभाष" नाम से एक नोट 'देशदूत' में इस उद्देश्य को ले प्रकाशित कराया था कि महावीर के समान अद्भुत कार्य करनेवाले, विपुलपूर्ण सुभाष बाबू की भारत के प्रत्येक तीर्थ में प्रस्तर प्रतिमायें बनवाई जायें।

मेरे इस सुझाव को ले हरिद्वार के नवयुवकों ने एक समिति की स्थापना की और वे मेरे इस स्वप्न को कार्य-रूप में परिणित करने को दृढ़प्रतिज्ञ हो गये। भगवान् की असीम अनुकम्पा, सज्जनों की सद्भावना एवम् युवकों की कार्य-क्षमता से यह कार्य अब पूर्ण होने जा रहा है।

म्यूनिसिपल बोर्ड हरिद्वार ने अपने ता० २४ के एक प्रस्ताव द्वारा "युवक संघ" हरिद्वार को भूमि का एक टुकड़ा जिसमें भारत गौरव नेताजी श्री सुभाषचन्द्र बोस की प्रस्तर प्रतिमा बनाई जा सके—प्रदान करके इस पुण्य-कार्य का श्री गणेश किया है। जमीन का टुकड़ा हरि की पैड़ी पर गंगा तट में स्थित झंडे के समीप दिया गया है। पतित पावनी गंगा के तट पर जब यह सुन्दर प्रस्तर प्रतिमा तैयार हो जायेगी उस समय इसकी अद्भुत शोभा होगी।

इस सम्बन्ध में हरिद्वार के तथा बाहर के अन्य देश प्रेमी सज्जनों के वचन आर्थिक सहायता के लिये मिल रहे हैं। वर्त्तमान समय तक २०-२५ हजार रुपये के वचन मिल चुके हैं। इस सम्बन्ध में जो कोई सज्जन आर्थिक सहायता करना चाहें वे मुझे पत्र-द्वारा सूचित कर सकते हैं। प्रयत्न इस बात का किया जायेगा कि यह प्रस्तर मूर्ति अपने ढंग की अनूठी हो और इस प्रकार हम अपने राष्ट्रीय नेता का पूरा सम्मान कर सकें।

आशा की जाती है कि इस सम्बन्ध में कोई विघ्न न खड़ा होगा। अनुमान से व्यय लाख डेढ़ लाख तक का है। इस धन को पूर्ण करना तथा अपने इस अभूतपूर्व नेता का सम्मान करना प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य है। आशा है कि भारत के दूसरे तीर्थों में विशेष रूप से मथुरा, काशी, इलाहाबाद, आदि में भी जनता (प्रमुख रूप से नवयुवक) हरिद्वार के नवयुवकों का अनुसरण करेगी।

हरिद्वार —चिरंजीवलाल शर्म्मा
३ जून, ४६ (कर्म्मवीर)

*

टिहरी में सुधार कब होगा ?

पिछले दो-तीन वर्षों से टिहरी राज्य में दमन-नीति इस हद तक पहुँच गई है कि जनता अपने दुख-सुखों की कहानी महाराज के कानों तक पहुँचाने का साहस तक नहीं कर सकती। राजनैतिक कार्य-कर्त्ताओं के साथ जेलों में किये गये अमानुषिक व्यवहार की करुण कहानी छिपी नहीं। टिहरी के प्रसिद्ध लोक सेवक नेता अमर शहीद श्री श्रीदेव 'सुमन' की जेल ही में मृत्यु हो गई थी।

जब से छोटी-छोटी रियासतों को एक में मिलाने का प्रश्न उठा है, तब से राज्य ने अपनी आय २२ लाख वार्षिक से ५२ लाख वार्षिक कर देने का निश्चय कर लिया था। नियत समय के पहले ही भूमि की पैमाइश आरम्भ कर दी। करीब १॥ साल से राज्य में भूमि की पैमाइश हो रही है। इस विभाग में भी अंधेर कम नहीं है। राज्य में और भी अत्याचार हो रहे हैं, कुछ शिक्षित सज्जनों ने पिछले दिनों आजाद हिन्द फौज के सिपाहियों की सहायता से जनता को समझाया कि अपने को संगठित करके महाराज के सामने अपनी माँगें रखनी चाहिएँ। पिछले महीने तीन-चार पट्टियों की जनता ने, जिसमें करीब १ हजार आदमी थे, डाँगचौरा नामक स्थान में एकत्रित होकर, पं० दौलतराम शर्मा रिटायर्ड टेलीग्राफिक इंस्पेक्टर को अपना प्रतिनिधि घोषित किया और उन्हें अधिकार दिया कि वे महाराज से जनता की न्यायोचित शिकायतों को दूर करने का प्रबन्ध करने की माँग करें।

पं० दौलतराम शर्मा जनता की माँगों को पेश करने के लिए जाने ही वाले थे कि उससे पहले ही उन्हें गिरफ्तार करके डाँग चौरा में बन्द कर दिया गया, अन्य लोगों की गिरफ्तारी का प्रयत्न किया जा रहा है, एक कार्यकर्ता जिनके द्वारा हमें यह समाचार प्राप्त हुआ है, लिखते हैं—"मैं भी यदि आज वहाँ से रिपोर्ट देने के लिए न चला जाता तो अब तक गिरफ़्तार हो गया होता, शायद मेरे बच्चों को वहाँ तंग किया जा रहा होगा, मुझे इसकी कुछ चिन्ता नहीं, "किन्तु अन्याय को प्रकाश में लाने के लिए ब्रिटिश इलाके में आया हूँ।"

यहाँ के किसानों को खेती से इतनी कम आय है कि राज्य में मुश्किल से कुछ इने-गिने किसान होंगे जिन्हें खेती से पेट भर खाने लायक अन्न भी प्राप्त हो जाय। भूमि-कर और दूसरी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अधिकांश को मेहनत-मजदूरी अवश्य ही करनी पड़ती है, सीढ़ियों की तरह पहाड़ों को काटकर ऊबड़-खाबड़ खेतों की सिंचाई के लिए कहीं भी समुचित प्रबन्ध नहीं। ऐसी अवस्था में किसानों पर बन्दोबस्त विभाग के कर्मचारियों की आवभगत का भारी बोझ पड़ता है।

यदि सचमुच टिहरी नरेश इन बातों से अनभिज्ञ हैं तो उन्हें शीघ्रातिशीघ्र जनता की वैध माँगों को मंजूर कर और अत्याचार करनेवाले अधिकारियों को उचित दण्ड देकर, जनता के कष्टों को दूर करने की व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे भविष्य में यह मनमानी न चल सके। अभी तक आम जनता का यही विश्वास है कि यह सब कुछ महाराज की पीठ-पीछे हो रहा है। देखें यह विश्वास कहाँ तक सत्य है ?

हरिद्वार —टिहरी की प्रजा

शिक्षा-संस्थाओं के अधिकारियों से

यह चिन्ता की बात है कि बहुत-से हिन्दी-भाषी बन्धु हिन्दी नागरी के व्यावहारिक प्रयोग को उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं। यह मनोवृत्ति अत्यन्त शोचनीय है। यह सभा आवश्यक समझती है कि ऐसे लोगों को उनकी उपेक्षा से होनेवाली हानि के प्रति सचेत कर दें इस उपेक्षा के कारण ही जनता के हृदय पर प्रेमपूर्ण शासन करनेवाली राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि नागरी के मार्ग में बाधा डालनेवाली को अपनी कुप्रवृत्तियाँ-चरितार्थ करने में सुभीता होता है जिसके मार्जन और प्रतिकार में हिन्दी-हितैषी बन्धुओं और संस्थाओं को अपनी बहुत-सी शक्ति व्यय करनी पड़ती है। वे यदि गम्भीरतापूर्वक इस नैतिक कर्तव्य पर विचार कर भविष्य में अपना समस्त काम-काज देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा में किया करें तो देश की शक्ति का बहुत बड़ा अंश उन्हीं की अन्य सेवाओं में अनायास लगाया जा सकता है।

पंजाब ऐसे प्रान्त में सनातन धर्म संस्थाएँ, आर्य प्रतिनिधि सभाएँ तथा इनसे संबंधित हाईस्कूल एवं अन्यान्य शिक्षा-संस्थाएँ अपनी प्रबन्धकारिणी समितियों की समस्त कार्रवाई हिन्दी में करती हैं। किन्तु यह देखकर विशेष परिताप होता है कि बिहार, संयुक्त-प्रान्त, मध्यदेश एवं राजपूताना की शिक्षा-संस्थाएँ अभी तक विदेशी भाषा का पल्ला पकड़े हुए हैं। आज देश में नव जागृति हुई है। जयहिन्द के अनन्तर जय-हिन्दी का उद्घोष आरम्भ हो गया है। उक्त प्रान्तों की शिक्षा-संस्थाओं के अधिकारियों से सभा का आग्रह है कि इस जनवाणी के स्वर में स्वर मिलाकर आगे बढ़ें और अपने व्यक्तिगत एवं संस्था-सम्बन्धी यथासम्भव प्रत्येक कार्य में हिन्दी नागरी का ही व्यवहार करें।

नागरी-प्रचारिणी- —रामनारायण मिश्र
सभा, काशी प्रधान मन्त्री

* * *

अँगरेजी की गुलामी क्यों ?

आज भारत का नवनिर्माण-काल चल रहा है। हम स्वराज्य प्राप्ति की ओर लगन से लगे हैं। किन्तु दुख है कि एक तरफ हम गुलामी को दूर करने के नारे लगा रहे हैं, अँगरेजो भारत छोड़ो ही नहीं बल्कि एशिया छोड़ो का नारा बुलन्द कर रहे हैं, और दूसरी तरफ अँगरेजी पढ़ने-पढ़ाने के प्रति प्रेम बढ़ाते जा रहे हैं। आखिर यह क्यों ? क्या इससे हमारे राष्ट्र की समस्या हल होगी ? इसलिए हमारी राय है कि जगह जगह हिन्दी-हित-संघ की स्थापना की जाये और उसके प्रत्येक सदस्य हिन्दी में ही अपने दैनिक कार्य-क्रम तथा अदालतों की भी कार्यवाही में भाग लें। इस प्रकार हम अँगरेजी भाषा के अटल विस्तार को जो हमारे लिए सर्वथा घातक है, दूर कर, भाषा की चिर-दासता का दलन करके हिन्दी, हिन्द और हिन्दवासी होने का सौभाग्य प्राप्त करें।

चर्खा विद्यापीठ —भृगुराखन शर्मा
गोरखपुर

प्रकृति—इसमें सौर जगत् की उत्पत्ति, आकाशतरंग, पृथ्वी की आयु, मृत्यु, आर्यजाति, परमाणु और प्रलय आदि १४ वैज्ञानिक विषयों के अच्छे-अच्छे निबन्ध संगृहीत किये गये हैं। मूल्य १॥=) एक रुपया ग्यारह आने।

मैनेजर इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास परिहास

भंग की तरंग

बिहार असंबली में प्राथमिक शिक्षा के बिल का विरोध लीगी सदस्यों ने किया। लीग के सदस्य चाहते हैं कि शिक्षा की आवश्यकता ही क्या है? मुसलमानों को तो सरकार बिना शिक्षा के भी नौकरियाँ दे ही देती है पढ़ने की क्या ज़रूरत है?

* * *

मथुरा में भूखे लोगों ने उपद्रव किया जिसके कारण सरकार की ओर से गोली चली। दो व्यक्ति मर गये। खैरियत हुई कि गोली खा के मरे, भूखे नहीं मरे।

* * *

यह सप्ताह लौटने लौटाने का है। रेलवे के मजदूरों ने हड़ताल की नोटिस वापस ले ली; पण्डित जवाहरलाल नेहरू काश्मीर से लौट आये और कैबिनेट मिशन लौटने ही वाला है।

* * *

बनारस राज में भी दमन आरम्भ हो गया है क्योंकि यह भी तो दिखाना है कि हम भी देशीराज्य हैं। चाहे काश्मीर और हैदराबाद से छोटे ही क्यों न हों।

* * *

चम्पारन में बिना कफन का मुर्दा जलाया गया है। जब जिन्दा रहने पर ही मनुष्य नंगा रहता है तब सरकार ने सोचा कि मरने पर तन ढाँकने की क्या आवश्यकता है? सरकार को बेवकूफ न समझना चाहिए।

* * *

बिहार सदा से अद्भुत बातों का घर रहा है। साल में एक स्त्री को तीन बच्चे एक साथ ही पैदा हुए। वहाँ के साहित्यकार ही प्रगतिशील नहीं है, प्रकृति भी प्रगतिशीला है।

* * *

एक लीगी महिला ने कहा है कि यदि शेख अब्दुल्ला रिहा नहीं किये जाते तो स्त्रियाँ काश्मीर से मोरचा लेंगी। लेकिन इस दल का इनका नेता कौन होगा, बेगम शाहनवाज कि श्रीमती ..... ?

* * *

विवाह के अवसर पर

साधारण उबटन से अब काम नहीं चलता

गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड **रूप विलास** मंगाइए

शादी के पहले मित्रों को चाहिए कि वर-वधू की सुन्दरता बढ़ाने के लिए रूप विलास का डिब्बा मंगाकर आज ही भेंट करें ताकि उन्हें शादी पर उबटन से होना न पड़े। उनकी भद्दे पुराने चमड़े से छिपी हुई सौंदर्यता निखर कर असली सुन्दरता चमक आये। इसके लगाने से मुहासा, झांई, चेचक, कालेदाग़, फुन्सी, खुश्की, बदरौनकी, झुर्रियाँ वग़ैरह जल्द आराम होती हैं। थोड़े दिन के लगाने से मलिन मुख चमकदार होकर चेहरे पर गुलाबी छटा दमकने लगती है। यदि आप अपना चेहरा ख़ूबसूरत बनाना चाहते हैं तो २५ वर्ष से प्रचलित जगत्-प्रसिद्ध रूप विलास कम्पनी का रूप विलास ख़रीदने में देरी कीजिएगा। यह स्त्री-पुरुष दोनों का दिल ख़ुश करनेवाला है। इसकी ख़ुश्बू भी इतनी प्यारी है कि तबियत को मस्त करती है। क़ीमत एक डिब्बा तीन डिब्बा का ५।) डाक-ख़र्च माफ। पेकिंग ख़र्च, मनीआर्डर फीस अलग

रूप विलास कम्पनी नं० ४८१ धनकुट्टी कानपुर

आखिर क्यों ?

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

क्यों मुझको देती हो गाली ?
चुंबक सा है रूप तुम्हारा,
मैं कच्चा लोहा बेचारा।
कैसे खिंच न जाय ए आली ॥

मेरे जीवन पथ की संबल,
तुम हो देहरादूनी चावल।
मैं जैसे भूखा बङ्गाली ॥

मकड़ी सा है हृदय तुम्हारा,
फँसा जहाँ उसने पर मारा।
तुम तो हो मकड़ी की जाली ॥

तुम्हें देख होता हर्षित मन,
देख देख करता है नर्तन।
उसी भाँति जैसे संथाली ॥

चुग लो ये मोती के दाने,
आँखें लगीं इन्हें बिखराने।
मानस की हे मंजु मराली ॥

माननीय पन्त जी ने बताया है कि डोला-पालकी के झगड़े के सम्बन्ध में कानून बनाने की आवश्यकता नहीं है। हम समझते हैं कि हमारे प्रांत में कोई नया कानून बनाने की अवश्यकता ही नहीं है मंत्रियों का नाम ले लेने से सब काम सिद्ध हो जायेंगे। क्योंकि हमारे सब मंत्री देवता ही तो हैं!

* * *

कहा जाता है कि गोंडा में एक आदमी मरकर जी उठा। उससे स्वर्ग का हाल-चाल पूछना चाहिये। वह संभवतः यह भी बता सकेगा कि सुभाष बाबू वहाँ हैं कि नहीं?

* * *

सुना जाता है कि प्रांतीय सरकार ने मजिस्ट्रेटों को आज्ञा दी है कि वह देखें कि किसी से बेगार न ली जाय। हम उम्मीद करते हैं कि पुलिस और तहसीलदार इस आज्ञा के बाहर होंगे।

* * *

कहते हैं कि वाइसराय साहब ने काश्मीर के सम्बन्ध में वहाँ के रेजिमेंट से पूछ-ताछ की थी। ज़रूर की होगी, क्यों लार्ड वैवेल वाइसराय जो ठहरे!

* * *

पटना के एक गाँव में एक हिन्दू विधवा ने एक मुसलमान से विवाह कर लिया। इस पर वहाँ दंगा हो गया। इसमें दंगे की क्या आवश्यकता थी? यह तो राष्ट्रीय कार्य था। इस अवसर पर तो मंत्रिमंडल को पुलिस बैंड भेजना चाहिये था।

* * *

बलिया में एक मुख्तार के घर पर जुआड़ी पकड़े गये। इसमें किसी का दोष नहीं है। आजकल यदा-कदा वकीलों, मुख्तारों को कुछ दूसरे व्यवसायों का सहारा लेना पड़ जाये तो कुछ बुरा नहीं है।

—अगड़धत्त शर्मा

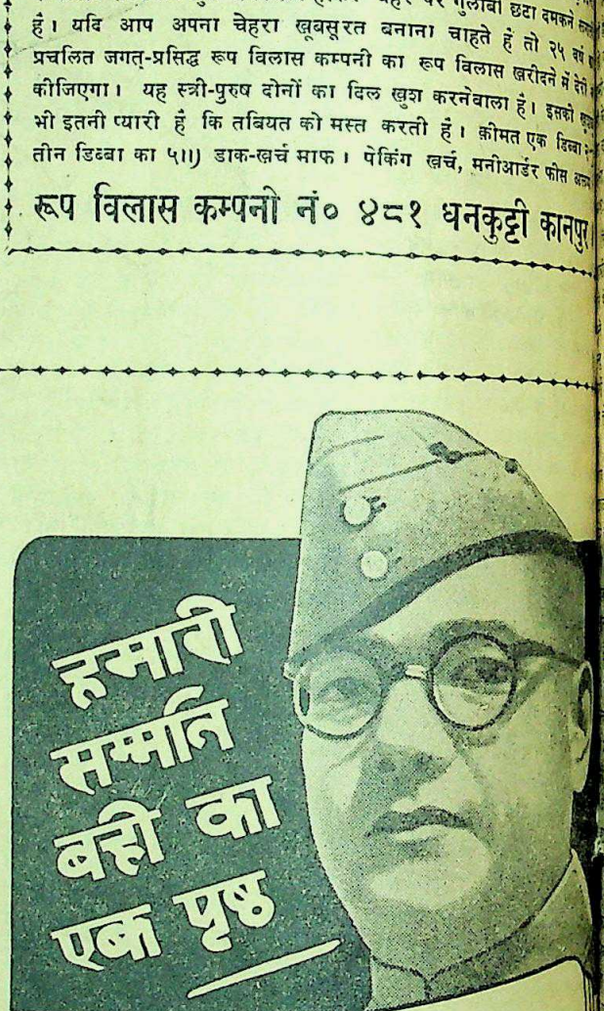

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस
लिखते हैं :

"मैंने आज शक्ति औषधालय, ढाका देखा। कृपापूर्वक मुझे इसका कोना-कोना दिखलाया गया। आयुर्वेदिक सिद्धान्तों के अनुसार बहुत बड़े पैमाने पर यहाँ देशी औषधियाँ बनाई जाती हैं। यह संस्था बाबू मथुरामोहन चक्रवर्ती के प्रति बहुत ऋणी है, जिनके उद्योग से आयुर्वेदिक औषधियाँ गरीबों के लिए भी सुलभ हो सकीं। मैं उनकी इस संस्था की सम्पूर्ण सफलताओं की कामना करता हूँ, जिसे उन्होंने अपनी दीर्घकालीन कोशिशों और कठिन अध्यवसाय के बाद स्थापित किया है। शक्ति औषधालय, ढाका की सफलता का अर्थ है देश भर में आयुर्वेद की लोक-प्रियता और दूसरे शब्दों में इसका अर्थ है पीड़ित मानवता का उद्धार।"

(ह०) सुभाषचन्द्र बोस
ढाका, जून ६, १९३६

अध्यक्ष मथुर बाबू की
शक्ति औषधालय : ढाका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'पहली नजर'

लखनऊ की नवाबी का सुन्दर चित्रण

लेखक, श्री पूरन खत्री

सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेता मोतीलाल।

मुस्ताक और शाहिदा के रोल में मोतीलाल तथा वीना हैं। मोतीलाल का अभिनय प्रशंसनीय नहीं है। वह वहीं तक अच्छा लगता है जहाँ तक वह खुश रहते हैं, जहाँ रोने लगते हैं वहाँ दर्शकों को हँसी आ जाती है। वीना का अभिनय प्रशंसनीय है। उसका चुनाव इस रोल के लिए उचित हुआ है। उसके अभिनय में सबसे बड़ी बात यह है कि शुरू से अन्त तक उसकी एक ही सी भाव-भंगी रही है। हुस्ना के रोल में मुन्नावर सुलताना अगर जँची नहीं है तो खराब भी नहीं है। शाहिदा के अब्बा तथा अम्मी के रोल में नीमो तथा बिब्बो हैं। न्यूथियेटर्स का वह पहुँचा हुआ नीमो अब नीमो नहीं रहा है, बिब्बो में भी अब वह बात नहीं है। बुद्धो अठवानी तथा बालकराम का अभिनय तथा हास्य प्रशंसा के योग्य नहीं है। बाबूराव पेठारकर का अभिनय भी प्रशंसनीय है।

टेकनिक के लिहाज से भी चित्र दूसरे दर्जे का है। अनील विश्वास के संगीत में कोई विशेषता नहीं है मोतीलाल के पहले गाने के शब्दों से म्यूजिक का जोड़-तोड़ प्रशंसा के योग्य है। वीना के गाने की तर्ज पुरानी है। ढोलक पर जो लड़कियों की गजल 'सैट' की है उसके प्रथम तो ढोलक जरूर है; परन्तु अन्त में गायब बिलकुल गायब है। आडियोग्राफी भी कोई खास नहीं है। उसमें भी क्रमशः दोष आ ही गये हैं। खासकर शादी की नाही कर देने पर नीमो तथा बिब्बो के 'डायलक' की लापरवाही से रेकार्ड किये गये हैं!

उपसंहार

सबसे बड़ी बात चित्र में लखनऊ के नवाबों के रहन सहन के पारसीपन के चित्रण

भारतवर्ष और देशी रियासतें

(पेज ५ का शेष)

रक्षा करना प्रतिक्रिया के सम्मुख आत्म-समर्पण करना होगा तथा इन दो सदियों के बीच अपनी जनता-द्वारा अर्जित जन-तन्त्रात्मक प्रगति को नकारना होगा। विवेकात्मक मार्ग तो यह है कि नरेशों को तत्काल नोटिस दे दी जाय और उन्हें कहा जाय कि ये पौराणिक संधियों की दीवारें शिथिल हो चुकी हैं; ये अब टिक नहीं सकतीं।

मुझे आशा है ये शब्द देशी राज्यों में पड़े जायेंगे। मैं उन भाइयों और बहनों की हृदय से सराहना करता हूँ जिन्होंने अपनी महान् तपस्या से जन-आन्दोलन को दृढ़ किया है। वह दिन दूर नहीं जब उनकी विजय होगी। उन्होंने स्वतन्त्रता देवी के मन्दिर में स्थान बना लिया है और सभी स्वतन्त्रता-प्रिय भाई-बहनें अवश्य अपना-अपना कर्त्तव्य निभायेंगी।

भविष्य की ओर दृष्टिपात करने से सामने वह सम्मेलन दृष्टिगोचर होता है जिसमें देशी प्रजा कांग्रेस के साथ एक दीखती है, श्रमिकों और किसानों की संस्थाएँ सीमा के व्यवधान को तोड़कर शेष भारत से मिल गई हैं और उनसे कन्धे से कन्धा मिलाकर सामाजिक और आर्थिक बन्धनों से मुक्त होने के लिए संघर्ष कर रही हैं। सम्भवतः भारतवर्ष को संसार के किसानों की प्रगति में आदान-प्रदान करने के लिए अवसर मिले। सामाजिक स्वतन्त्रता का सिद्धान्त है कि नेतृत्व औद्योगिक श्रमिकों से आना चाहिए। पर मेरा ख्याल है कि भारतवर्ष में नेतृत्व किसानों से आयेगा। मुझे स्मरण है—१९४२ तथा इसके पूर्व के आन्दोलनों में किसान अन्य श्रमिकों से किसी प्रकार पीछे नहीं रहे हैं। उन्होंने सजीवता और सहनशीलता भी कम नहीं दिखाई है।

मुझे विश्वास है देशी राज्यों के किसान आगे भी अपना पूरा पूरा कर्त्तव्य निभायेंगे। अब तक उन्हें दो शक्तियों का सामना करना पड़ा है। एक तो अपने एकतांत्रिक नरेशों की सत्ता से और दूसरे ब्रिटिश साम्राज्यवाद से। उन्होंने गत स्वतन्त्रता-संग्रामों में शेष भारत के सम्मुख समानता का अधिकार प्राप्त कर लिया है और मुझे आशा है वह दिन अत्यन्त समीप है जब स्वतन्त्र भारत में दोनों एक होंगे।

जहाँ तक भारत के नये विधान-सम्बन्धी वार्त्तालाप का सम्बन्ध है, हममें से जो भी देशी राज्यों के जन-आन्दोलन की शक्ति को पहचानते हैं, कदापि देशी राज्यों की समस्या की उपेक्षा नहीं होने देंगे।

हुआ है, जिसने कहानी में चार चाँद लगाये हैं। निर्माता तथा दिग्दर्शक की हैसियत से मजहर खाँ ने काफी मेहनत की है। मजहर खाँ पहले न्यूथियेटर्स में काम कर चुके हैं। उन्होंने कला की ओर ध्यान दिया है। चित्र प्रशंसा के योग्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कौमुदी—श्रीयुत बालकृष्णराव आई० सी० एस० की कमनीय कविताओं का संग्रह। मूल्य ॥≡) ग्यारह आने।

मेघदूत—राजा लक्ष्मणसिंह द्वारा अनुवादित तथा बाबू श्यामसुन्दरदास द्वारा संपादित मेघदूत का सर्वोत्तम संस्करण। मूल्य ॥।-) तेरह आने।

किंकिणी—इस पुस्तक के लेखक श्री राजाराम श्रीवास्तव की उत्तमोत्तम फुटकर कविताओं का संग्रह किया गया है। कविताओं की भाषा इतनी मधुर और कल्पना की उड़ान इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षण के लिए उसमें अपनी सुध-बुध भूले बिना नहीं रहता। मूल्य १।-) १ रुपया पाँच आने।

लक्ष्मणशक्ति—इसी लेखक द्वारा रचित एक खण्ड-काव्य। इसकी कथा का आधार रामायण का युद्ध काल है जिसमें लक्ष्मण मूर्छित हो गये थे। भाषा सुलझी हुई और मुहाविरेदार है। मूल्य ॥।) बारह आने।

हल्दीघाटी—(इस महाकाव्य पर दो हजार रुपये का देव-पुरस्कार मिला है।) लेखक, श्रीयुत श्यामनारायण पाण्डेय। इस पुस्तक में हल्दीघाटी के प्रसिद्ध युद्ध की पवित्र कहानी का वर्णन बड़े ही अनूठेपन से फड़कती हुई कविता में किया गया है। पुस्तक पढ़ते समय हल्दीघाटी के युद्ध की सभी बातें आँखों के सामने सिनेमा-फ़िल्म की तरह खिंच जायँगी। मूल्य २।॥) दो रुपये बारह आने।

नव-सतसई-सार—गोस्वामी तुलसीदास से लेकर श्री वियोगी हरि तक की नव सतसइयों का सारांश इस पुस्तक में दिया गया है। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

सरस सुमन—इस पुस्तक में पवन, भानु, चपला, जुगनू और वसन्त पर पाँच सुन्दर कवितायें संगृहीत की गई हैं। कवि प्रकृति-निरीक्षण में कितना कुशल है, इस बात का परिचय प्रत्येक कविता के द्वारा प्राप्त होता है। मूल्य ॥≡) ग्यारह आने।

गंगावतरण—हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कवि श्रीयुत जगन्नाथदास रत्नाकर का लिखा हुआ यह एक खण्ड-काव्य है। संयुक्तप्रान्त की हिन्दुस्तानी एकाडमी ने इसकी उत्तमता पर मुग्ध होकर रत्नाकर जी को ५००) का पुरस्कार दिया है। मूल्य १।) एक रुपया चार आने।

उद्धवशतक—श्रीकृष्ण के वृन्दावन से मथुरा चले जाने पर गोपिकाओं ने अपनी वियोग-व्यथा का जो संवाद उद्धव के द्वारा उनके पास भेजा था, उसी का वर्णन स्वर्गीय रत्नाकर जी ने अपनी अनूठी कविताओं के द्वारा मौलिक ढंग से किया है। मूल्य २) दो रुपये।

माधुरी—श्रीयुत नत्थाप्रसाद जी 'मिलिन्द' की कमनीय कविताओं का संग्रह। मूल्य ॥≡) ग्यारह आने।

सुबहवतन—स्वर्गीय पंडित ब्रजनारायण 'चकबस्त' लखनवी की देव-नागरी अक्षरों में लिखी गई उर्दू कविताओं का संग्रह। उर्दू न जाननेवाले पाठकों की सुविधा के लिए कविताओं में आने-वाले कठिन शब्दों का अर्थ भी दिया गया है। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

पद्यमाला—इस पुस्तक में अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के बारहवें अधिवेशन के सभापति हास्यरसावतार स्वर्गीय पंडित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, साहित्यभूषण की फुटकर कविताओं का संग्रह किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर—(बुकडिपो) इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

'निराला' गृह-निर्माण की योजना

'देशदूत' में दो बार 'निराला' गृह-निर्माण की आयोजना के सम्बन्ध में अपील प्रकाशित हो चुकी है। आयोजना में हिन्दी साहित्यानुरागियों से प्रार्थना की गई थी कि प्रस्तुत आयोजना में तन मन धन से सहायता प्रदान करके हिन्दी के गौरव कवि 'निराला' के प्रति प्रेम तथा श्रद्धा प्रकट करें। अपील के फलस्वरूप अनेक साहित्यिकों से सहायता का वचन मिल चुका है।

गृह के निर्माण हो जाने पर महाकवि से प्रार्थना की जायगी कि वे उन्नाव में ही रहकर साहित्य-सृजन करें। एक स्थाई कोष से उनकी दैनिक आवश्यकताओं का प्रबन्ध किया जायगा। इसी गृह के साथ एक पुस्तकालय तथा वाचनालय की भी आयोजना है; जहाँ पर बैसवारे के प्राचीन कवियों की हस्तलिखित प्रतियों की खोज का पूर्ण प्रबन्ध किया जायगा।

आयोजना का समर्थन हिन्दी के चिर सुप्रसिद्ध कवि पं० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' डा० रामविलास शर्मा, डा० केसरी नारायण शुक्ल, डा० दीनदयाल गुप्त, पं० भागीरथ मिश्र इत्यादि विद्वानों ने किया है—इसके अतिरिक्त हिन्दी के प्राय: सभी पत्रकारों ने यथा योग्य सहायता प्रदान करके योजना को सफलता प्रदान करने का वचन दिया है।

गृह-निर्माण के लिए उन्नाव में पं० राजाराम दीक्षित से दो प्लाट मिलने का वचन मिल चुका है। गृह के निर्माण हो जाने पर निराला जी निश्चिन्ततापूर्वक कितना और किस कोटि का साहित्य-सृजन करेंगे यह विवाद का विषय नहीं है।

गृह-निर्माण के अतिरिक्त निराला जी की आर्थिक दशा सुधारने के विषय में पं० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के कुछ नवीन सुझाव हमें प्राप्त हुए हैं। शर्मा जी का प्रस्ताव है कि गृह निर्माण के पूर्व 'निराला-सहायता-कोष' के हेतु कम से कम १५,०००) जमा कर दिया जाये। जिसमें प्राय: १५०) मासिक उनकी खान-पान सम्बन्धी आवश्यकताओं के लिए दिये जा सकें। शर्मा जी को पूर्ण आशा है कि इतना धन कोई विशेष बड़ी सम्पत्ति नहीं है; कानपुर जैसे व्यवसायी शहर में यह केवल कुछ घंटों का काम है। इन पंक्तियों के लेखक से शर्मा जी ने कुछ समय बाद मिलने के लिए कहा है क्योंकि इस समय वह कानपुर के चोर बाजार को बन्द करने में व्यस्त हैं। अवकाश प्राप्त होते ही यह सहायता कोष का कार्य यथाशीघ्र प्रारम्भ हो जायेगा। 'सहायता कोष' के लिए आया हुआ धन, अभी शर्मा जी के पास जमा होगा।

हिन्दी के सभी प्रेमियों से प्रार्थना है कि वे इस कार्य में सहायता प्रदान करके सफल बनावें।

मारवाँ उन्नाव —त्रिलोकीनारायण दीक्षित, एम० ए०

* * *

लखनऊ—२३ नवम्बर सन् १९४५ ई० को नौजा निवाई थाना सिधपुर जिला एटा में गुलजारी नामक चौकीदार और कुछ अन्य लोग एक बैलगाड़ी में काकोरा मेला से घर वापस आ रहे थे। चार डाकुओं ने जिनके पास बन्दूकें व लाठियाँ थीं इनको रास्ते में रोका और उनका माल व असबाब लूटना शुरू कर दिया। गुलजारी चौकीदार ने डाकुओं का मुकाबला किया जिसमें वह असफल रहा। लेकिन एक केदारनाथ नामक ब्राह्मण साइकिल पर उस रास्ते से गुजर रहा था। उसको भी उन्हीं डाकुओं ने रोक लिया। केदारनाथ ने मुकाबला किया और डाकुओं पर छड़ी से हमला शुरू कर दिया। डाकुओं ने उसे गोली से मार डाला। उसने डाकुओं का मुकाबला करने में बहुत बहादुरी और हिम्मत दिखाई और सरकार की मदद करते हुए मारा गया। सरकार ने निम्नलिखित पेंशनें उसके खानदानवालों को २४ नवम्बर सन् १९४५ ई० से देना मंजूर किया है। (१) श्रीमती विद्यावती बेवा को ६) रुपये माहवार जब तक कि वह जीवित रहें अथवा दूसरा विवाह न कर लें। (२) रवीदत्त। (३) शिवदत्त लड़कों को ३) रुपये माहवार १८ साल की उम्र तक।

—संवाददाता

* * *

सागर यूनिवर्सिटी के लिए प्रोफेसर तथा क्लर्क इत्यादि सभी योग्य व्यक्ति चुने गये हैं। मकरोनिया नामक फौजी अड्डे का आधा भाग सरकार-द्वारा यूनिवर्सिटी के लिए मिल गया है। शेष भाग सितम्बर तक मिल जायगा। विश्वविद्यालय ८ जुलाई से खुल जायेगा। मकरोनिया की विशेषता यह है, कि यहाँ की आबहवा अच्छी है, तथा इमारतों व बिजली आदि की सुविधाएँ तैयार हैं। विद्यार्थियों को शहर से यूनिवर्सिटी तक जाने के लिए बसों का प्रबन्ध भी हो रहा है। सागर से करीब ५ लाख रु० के वचन प्राप्त हो चुके हैं, जिसमें अभी २० हजार चन्दा एकत्र हो चुका है। सागर एक विश्वविद्यालय पाने ही नहीं जा रहा; बल्कि उसके योग्य एक सुन्दर तथा आदर्श नगर बनने जा रहा है, शीघ्र ही यहाँ नल, टेलिफोन आदि की व्यवस्था हो रही है। डा० सर हरिसिंह गौर इन सभी सुविधाओं के लिए विशेष रूप से प्रयत्नशील हैं। कारण सागर उनकी जन्मभूमि है और अपनी मातृभूमि से उन्हें विशेष प्रेम है। यहाँ सभी विषयों के शिक्षण के साथ कानून, उद्योग तथा हवाई शिक्षण का भी प्रबन्ध हुआ है।

ऐसा भी ज्ञात हुआ है कि महात्मा गांधी तथा वायसराय महोदय ने डा० गौर को धन्यवाद के तार पहुँचाये हैं।

—लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

* * *

गीत

रचयिता, हजरत जोश मलिहाबादी

क्या जाने मन क्या कहता है।
जब वर्षा ऋतु के गानों को—
जब कोइलिया की तानों को
जी सहते-सहते सहता है—क्या जाने मन क्या कहता है।

× × ×

जब बन में पंछी गाते हैं
जब रैन-संदेशा लाते हैं
जब पानी झम-झम बहता है—क्या जाने मन क्या कहता है।

× × ×

जब रातों के अँधियारे में
अँधियारे के उजियारे में
हर तारा चुप चुप रहता है—क्या जाने मन क्या कहता है।

(पृथ्वीराज-संयुक्ता में प्रेमातुरा संयुक्ता की वाणी)

गढ़वाल, लैंसडौन डा० बड़थ्वाल स्मारक ट्रस्ट कमेटी ने स्वर्गीय डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल स्मृति-ग्रन्थ यथाशीघ्र दो भागों में प्रकाशित करने का निश्चय किया है। प्रथम भाग में डा० बड़थ्वाल-सम्बन्धी संस्मरण यथा (१) जीवनी (२) साहित्य (३) व्यक्तित्व (४) अध्यापन (५) आलोचना (६) कविता (७) गद्य-काव्य (८) नाटक कला (९) व्यंग्य (१०) शोध-कार्य (११) सिद्धान्त (१२) विनोद (१३) हिन्दी को देन (१४) चिट्ठी-पत्रियाँ (१५) इन्टरव्यू (१६) विद्यार्थियों को सार्टिफिकेट (१७) ग्रंथों का परिचय (१८) भूमिका (१९) संपादन (२०) भाषण इत्यादि का उल्लेख रहेगा। इस भाग का संपादन स्मारक-प्रकाशन-कमेटी कर रही है।

दूसरे भाग में हिन्दी संत-साहित्य पर, जिसके डा० बड़थ्वाल विशेषज्ञ माने जाते हैं, अधिकारपूर्ण लेखों द्वारा विशेष प्रकाश डालने का प्रयत्न किया जायगा। इस भाग का संपादन पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी, शांतिनिकेतन, के प्रधानत्व में डा० धीरेन्द्र वर्मा, डा० वासुदेवशरण अग्रवाल और श्री शम्भूप्रसाद बहुगुणा कर रहे हैं। इसलिए इस सम्बन्धी लेख श्री हजारीप्रसाद जी द्विवेदी, शांतिनिकेतन, के पते पर भेजे जायँ।

—प्रबन्ध संपादक

* * *

हरिद्वार के प्रमुख कांग्रेसी नेता श्री त्रिलोकनाथ मंत्री कांग्रेस कमेटी पर कई व्यक्तियों ने बाजार में जाते हुए आक्रमण करके चोट पहुँचाई। अस्पताल में उनका इलाज हो रहा है। मालूम हुआ है कि इसी सम्बन्ध में एक डेपुटेशन भी कलक्टर साहब से मिला। कलक्टर साहब ने अस्पताल में जाकर त्रिलोकनाथ से मुलाकात भी की। कहा जाता है कि श्री त्रिलोकनाथ जी पर कुछ व्यक्तियों को यह सन्देह था कि उन्होंने जुए और सट्टे के सम्बन्ध में समाचार भेजा।

चन्द्रग्रहण के मेले पर स्नान करनेवालों की संख्या ३ लाख बतलाई जाती है। इस अवसर पर कई लारीवालों, ताँगेवालों और कुलियों ने मुँहमाँगे दाम लेकर यात्रियों को परेशान किया। यात्रा ट्रांसपोर्ट कम्पनी के प्रबन्धक सरदार भगवान सिंह ने सहारनपुर जानेवाले यात्रियों की सुविधा का हर प्रकार से खयाल रखा।

—संवाददाता

मथुरा के देशबन्धु पुस्तकालय के हस्तलिखित त्रैमासिक पत्र देशबन्धु का लय के तृतीय वार्षिकोत्सव उपलक्ष में प्रकाशित होने जा रहा है। लेखक-लेखिकाओं से निवेदन है कि जून तक अपनी रचनाएँ भेज दें। बन्धु' का पाँचवाँ अंक 'देशबन्धु अंक' होगा। सम्पादक देशबन्धु पुस्तकालय मथुरा के पते पर चाहिए।

* *

जयपुर में १५ जून को श्री प्रकाशन मन्दिर की स्थापना की स्थापना का उद्देश्य राजस्थान के अर्वाचीन साहित्य को प्रकाशित इसके कार्यकर्त्ता श्रेष्ठ साहित्य सेवी इस प्रकार हुआ—सभापति, श्री शास्त्री, प्रधान मंत्री श्रीहरि शर्मा कारिणी—श्री गुलाबराय मदनसिंह, श्री रामकुमार कान्त' श्री हरिश्चन्द्र गोलेछा, शर्मा साहित्य सुधाकर।

—

साहित्यालोचन

इसका संशोधित संस्करण तैयार हैं। इसमें संस्कृत के आचार्यों के साहित्य-सम्बन्धी के अतिरिक्त पाश्चात्य साहित्य साहित्य मर्मज्ञों के मत का ही मौलिक ढंग से कराया गया है। पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य पाँच रुपये पाँच आने।

मैनेजर बुक डिपो
इंडियन प्रेस, लि० प्रयाग

यदि आप किसी काम में का अनुभव करते हैं तो दिन गिलास निर्मल इनोज़ "फ्रूट लीजिए। इनो रक्त को शीतल व करता है, शरीर को स्फूर्ति देकर शक्ति व पोषण प्रदान करता है।

इनोज़ "फ्रूट साल्ट"

इनो व "फ्रूट साल्ट" शब्द ट्रेड मार्क हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शपट लोशन
दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.
शपट ऑन्ड कं. लि.
बम्बई नं. २.

स्वास्थ्य सम्बन्धी पुस्तकें

मक्खियों की करतूत--मक्खियों के द्वारा पहुँचनेवाली हानियों का वर्णन तथा उनसे बचने के उपाय। मूल्य ।।) आठ आने।

जलचिकित्सा--जर्मनी के विख्यात् जल-चिकित्सक 'लुई कुने' के सिद्धान्त के अनुसार जल से ही सब प्रकार के रोगों की चिकित्सा करने की विधि। मूल्य ।≡) सात आने।

मैनेजर बुकडिपो
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रामाला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

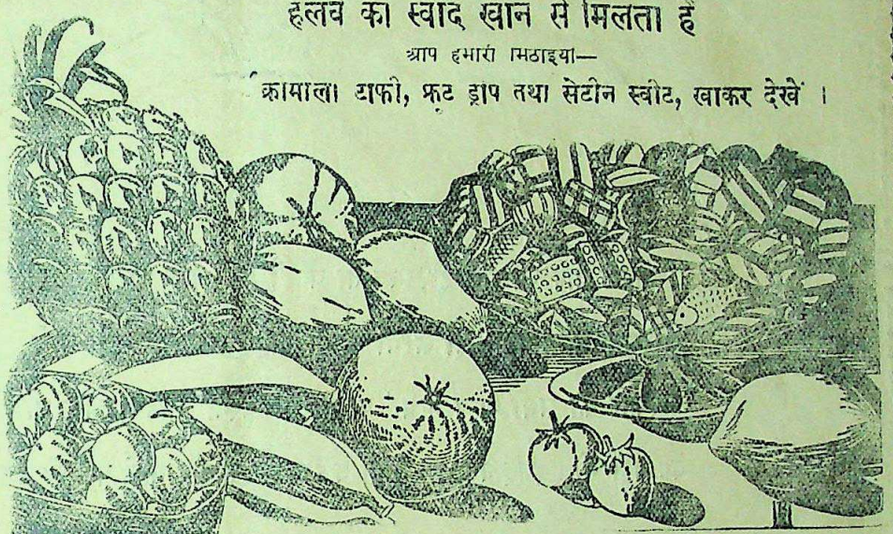

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

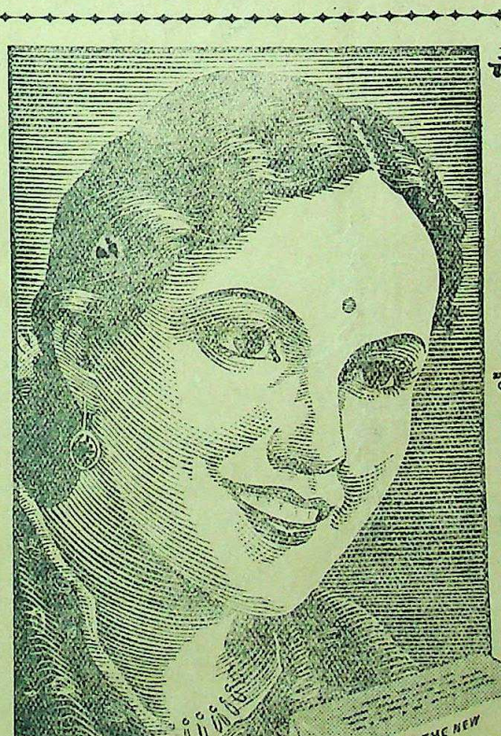

चर्म-स्वास्थ्य से ही चर्म-सौन्दर्य बढ़ता है!

रैक्सोना से

चर्म-स्वास्थ्य की रक्षा कीजिए

यह सुन्दर, हरा, जल्दी झाग देनेवाला स्नान का साबुन शांतिदायी, आरोग्यवर्धक, त्वचा-विकार-विरोधी कैडिल के रासायनिक सम्मिश्रण से बना हुआ है। 'रैक्सोना' द्वारा किया गया प्रत्येक बार का स्नान, शरीर-सौंदर्य की रक्षा करने के लिए चर्म-स्वास्थ्य का पोषण करता हुआ, आपकी त्वचा को धूल और पसीने के विकारों से मुक्त कर देता है।

बालकों के लिये रैक्सोना

रैक्सोना में मिश्रित 'कैडिल' बालकों के कोमल शरीर को, दागों और खराशों से सुरक्षित रखने में सहायक होगा।

★ 'त्वचा' को शांति देने और उसकी रक्षा करने में, वैज्ञानिक रूप से मान्य 'रैक्सोना' में मिश्रित 'कैडिल' विकार विरोधी और पोषक तैलों का एक विशिष्ट मिश्रण है।

त्वचा-सम्बन्धी सभी दागों के लिए रैक्सोना-मलहम प्रयोग में लाइये। यद्यपि इसका उत्पादन सीमित है। किन्तु अधिकांश विक्रेताओं के यहाँ कुछ प्रसिद्ध तिकोने डिब्बे प्राप्य हैं।

RP 27-392 HI

REXONA PROPRIETARY LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृषिचंद्रिका—(तीन भागों में) यह पुस्तक खेती करने या करानेवालों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इसमें खेती की उन्नति का ढंग बताने के साथ पशुओं का इलाज करना, खेती के सब तरह के हिसाब-किताब रखना और पैमाइश करना भी बताया गया है। भाँति भाँति की तरकारियाँ इत्यादि पैदा करने का तरीक़ा भी अत्यन्त सरल भाषा में लिखा गया है। मूल्य प्रथम भाग ।≡)।।। पौने आठ आने, द्वितीय और तृतीय भाग का प्रतिभाग ।।≈)।। साढ़े दस आने।

संचिता—इस संग्रह में ठा० गोपालशरण-सिंह ने सन् १९१४ से लेकर सन् १९३९ तक की सब प्रकार की रचनाओं का समावेश किया है। इस एक ही पुस्तक के द्वारा ठाकुर साहब के कवि-जीवन के क्रम-विकास का उत्तमतापूर्वक अध्ययन किया जा सकता है। संग्रह में कुल ७१ कवितायें हैं। मूल्य ३) तीन रुपये।

सुमना—'सुमना' ठाकुर साहब का सबसे नवीन संग्रह है जिसमें ५३ गीत हैं। जिनमें प्रकृति के प्रति उनका असीम अनुराग शब्द-शब्द द्वारा व्यंजित होता है। इस प्रकार के सरस भावपूर्ण गीत हिन्दी-साहित्य में अन्यत्र न मिलेंगे। मूल्य २) दो रुपये।

मधुस्रवा—लेखक, राज... बी० एस-सी०, एल-एल... अनुपम और नवीन शैली... पुस्तक में जीवन में ... पूरी-पूरी क्षमता है। ... रचनाओं को पढ़कर ... सिक्त बनाइए। मूल्य ... रुपया पाँच आने।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडि... लिमिटेड, प्रयाग

क्या करना चाहिये ?

—गांधीजी

"कारण चाहे जो भी हो, सत्य तो यह है कि यदि सरकार और जनता संकट का धैर्य और साहसपूर्वक सामना नहीं करेगी तो दुर्घटना निश्चित है। इस मोर्चे के अतिरिक्त हमें इस विदेशी सरकार का सभी अन्य मोर्चों पर विरोध करना चाहिये, और यदि तर्क-संगत जनमत के प्रति वह यहाँ भी हृदयहीनता या घृणा प्रकट करे तो इस मोर्चे पर भी हम उससे लड़ेंगे"

-१६ फरवरी का वक्तव्य।

हमारी प्रतिज्ञा और अपील

हम लोगों से जो कमीवाले क्षेत्रों में रहते हैं हम परिपूर्ण सहयोग की प्रतिज्ञा करते हैं। देश के समस्त साधनों का संगठन होगया है और उनके पास शीघ्रतासे सहायता भेजी जा रही है। उनके अभावको शेष देश के साथ, बराबर विभाजित किया जावेगा। राशनिंग का इस प्रकार विस्तार किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति अपना उचित भाग प्राप्त करले। मूल्य नियंत्रण की कठोर व्यवस्था की जावेगी। शान्तिसे विश्वास रखिये। अपनी आवश्यकता से अधिक मत खरीदिये। मुनाफ़ाखोरों से कोई सम्बंध मत रखिये अतिरिक्त क्षेत्रों में रहनेवालों से हम अधिकसे अधिक मदद की अपील करते हैं। यदि आपसे अतिरिक्त अनाज सुपुर्द करने को कहा जावे तो आपके पास आपकी आवश्यकता के अनुसार काफी बच जावेगा। यदि आपके नगर में राशनिंग योजना लागू की गयी है तो याद रखिये, वह आपके अन्य भाइयों की सहायता के लिये ही है। तब भी आपके पास काफी होगा। छोटे तरीके से भी अनुचित संग्रह मत कीजिये। अधिकारियों के साथ सहयोग कीजिये।

खाद्य संकट को पराजित कीजिए

एक साथ कार्य कीजिये – एक साथ हिस्सा बंटाइये

व्यापारियों एवं उत्पादकों को संदेश

अपनी सामर्थ्यानुसार सारा अनाज निकाल दीजिये अनुचित संग्रह का प्रत्येक मन अनाज एक भाई की मृत्यु का कारण हो सकता है नियंत्रित मूल्य पर ही बेचिये—आपके और खरीदनेवाले के दोनों के लिये यही उचित है। दूसरों को संकट दे कर कमाया हुआ धन पाप है।

अपनी समस्त शक्ति और साधनों से सरकार और जनता मुनाफाखोरों और चोर बाजारवालों का दमन करने के लिये कटिबद्ध है। चोर बाजार से बचिये यह अपराध है।

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मिश्र ... लिमिटेड १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक

Sunday, 7th July, 1946

जुलाई, १९४६

कुणाल—कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी का एतिहासिक प्रबंध-काव्य है। महापंडित राहुल सांकृत्यायन इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में लिखते हैं—'अशोक, तिष्यरक्षिता और कुणाल के चरित्र-चित्रण में—ख़ासतौर से—कुणाल के चरित्र-चित्रण में कवि ने कमाल किया है। शब्द सौकुमार्य और भावात्कर्ष के साथ ही नपे तुले शब्दों का हिन्दी कविता के क्षेत्र में 'कुणाल' का है। 'कुणाल' इंटर मीडियेट की कक्षा में पाठ्य-ग्रन्थ के रूप में निर्धारित है। यह संस्करण बहुत सुन्दरता से डिमाई साइज में, मोटे ऐंटिक काग़ज़ में प्रकाशित किया गया है। मूल्य २॥) रु०

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनताका पत्र

दक्षिण अफ्रीका में भारतीय कैसे हैं?
गोंड़वाने का वीर केसरी श्री विष्णु गोंड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शारीरिक उष्णता के लिये...

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

आज से ही शुरू कीजिए, सर्वत्र मिलता है।

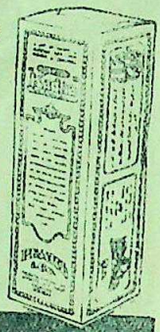

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली तलुओं और आंखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग में आग सी जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, जड़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढ़ा बालक वृद्ध, पुरुष सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक हानिरहित है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निस्संकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके शीतल, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

पर्ल कम्पनी
आ र्यो ष धी
का र ख ना
बम्ब ई २७

एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

यू० पी० प्रतिनिधि दोसर एण्ड को०, विरहना रोड, कानपुर।

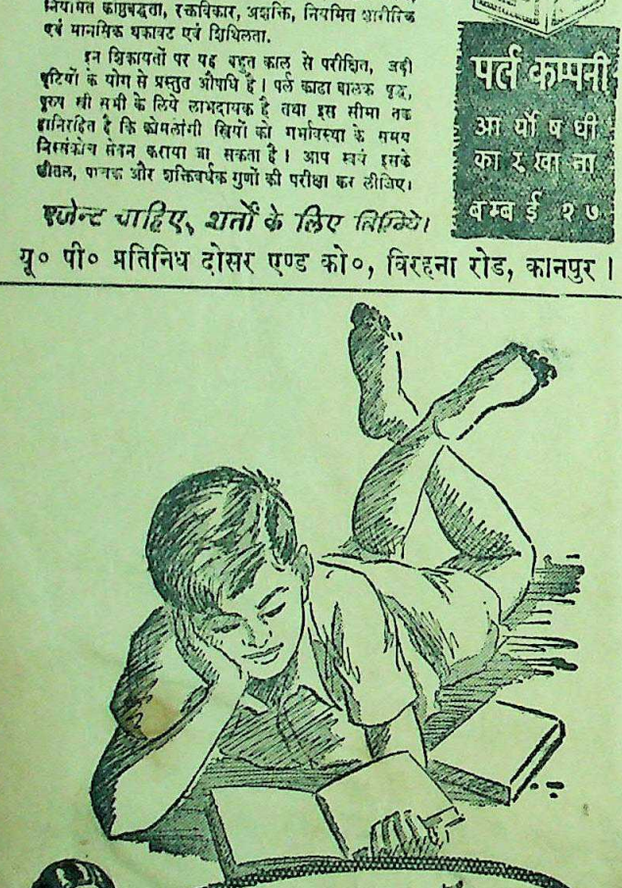

इसने लाइफबॉय उपयोग करने की आदत भी सीखी है!

इसने से यह बहुत सी बातें सीख रहा है परन्तु सब से ज्यादा फायदामंद लाइफबॉय साबुन के दैनिक उपयोग की आदत है। इसकी माँ को इस बात का गर्व और खुशी होती है कि उसकी दी हुई शिक्षा से उसके लड़के को 'गन्दगी के खतरे' से जो हर जगह हमला के लिए मौजूद है उससे रक्षा होती है।

लाइफबॉय का व्यवहार करना एक ज़रूरी आदत है

L 77-50 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

शक्ति का च्यवनप्रा

अध्यक्ष माथुर बाबू का
शक्ति औषधालय ढाका

जुकाम, खाँसी,
सीने की तकलीफों

भारत का सर्वश्रेष्ठ और प्राचीनतम आयुर्वेदीय प्रतिष्ठान

भारतीय महिलाओ

अब आपका सर्वोपरि महत्वपूर्ण कार्य

भारत की आवश्यकता है कि प्रत्येक गृहिणी अपनी व्यवस्था की स्वाभाविक योग्यता का पूरापूरा प्रयोग करे। वह खाद्य जो फालतू है और बचता है आपके उन देशवासियों के बहुत आवश्यक है जो आज भीषण खाद्याभाव का सामना कर अधिकारी - वर्ग यह विश्वास दिलाने का यथाशक्ति प्रयत्न कर कि जब तक संकट समाप्त न हो तबतक देशके प्रत्येक पुरुष, बालक के पास जीवन बनाये रखने के लिये पर्याप्त खाद्य हो इस मानवता के कार्य में आप भी सहायता दे सकती हैं।

आतिथ्य - सत्कार को कम कर दीजिये, यदि संभव उसे बंद ही कर दीजिये। किन्तु यदि आपको आतिथ्य-सत्कार ही है तो कृपया इस बात का ध्यान रखें कि वास्तविक आवश्य अधिक भोजन मत बनवाइये। अपने भोजन के अनुकूल यदि खाद्यों जैसे तरकारियां, दूध से बनी चीजें, अंडे, मांस या मछ प्रयोग में लावें तो आप अपनी चावल और गेहूं की खप कम कर सकती हैं, जो गरीबों के मुख्य खाद्य हैं। सरल और जीवन का दूसरों के सामने उदाहरण रखिये और अपने पुरुषों का आशीर्वाद प्राप्त कीजिये। कम से कम इतना तो सकती हैं।

खाद्य बचाना प्राण बचाने के बराबर है।

खाद्य - विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, ७ जुलाई, १९४६

८, संख्या ४५]

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

दिल्ली में होनेवाली अखिलभारतीय कांग्रेस-कमेटी का अधिवेशन राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम आजाद के सभापतित्व में हो रहा है।

कैसे दें? वाक़ई कांग्रेस के इन्कार करने पर भी मिस्टर जिन्ना और उनकी पार्टी को वाइसराय की कौंसिल की मेम्बरी न मिलना निहायत और परले सिरे की ज्यादती और बेइंसाफ़ी है। मुस्लिम लीगी नुमाइंदे बड़ी उम्मीदों में बैठे थे लेकिन साहब लोगों का जब दिमाग़ स्थिर हो तब तो गद्दी मिले! लीग ने सरकार का हमेशा से साथ दिया लेकिन ऐन मौक़े पर हलुआ खाने के वक्त थाली ही सामने से खिसका ली गई, यह तो वाकई है, सरासर ज्यादती और क्या कहा जाये? अब तो सिर्फ अफ़सोस ही साथ में रह गया है, कुछ हो भी तो नहीं सकता क्योंकि मन्त्रिदल के नेता पर झाड़कर उड़ गये। कहावत कि 'गँजेड़ी भाई- किसके, दम लगाया खिसके' दम लग चुका है, अब किसका कौन होता है?

* * *

इसलिए मुस्लिम लीग का कांग्रेस पर नाराजी ज़ाहिर करना मुनासिब नहीं है। इस मौक़े पर अपने राम को एक कहानी याद आती है। एक ताल्लुकेदार साहब का किसी जज की इजलास में मुक़दमा था। तालुकेदार साहब ने काफ़ी रुपया खर्च करके मुक़दमेबाजी की। एक बढ़िया वकील भी किया। लेकिन अन्त में वह मुक़दमा हार गये। तालुकदार साहब को हारने का उतना रंज नहीं था जितना वकील को मोटी रक़म मेहनताना देने का। हार जाने पर किसी ने तालुकेदार साहब से मजाक किया। तालुकेदार साहब ने देहाती जबान में गालियाँ देते हुए कहा---"वकीलवा तो हमार अस लड़ा जस मुर्गा लड़त है मगर जब जज साहब ने नाहीं सुना तो वकीलवा का आपन ऐसी की तैसी कराये।" जब चारों अँगरेज बहादुरों ने ही नहीं फ़ैसला दिया तो कोई क्या करता? मुस्लिम लीग के विधाता मिस्टर जिन्ना बेकार अपने दिल के गुबार निकालते हैं। हाँ, पुलाव खाने का वक्त अनक़रीब ही था, लेकिन तक़दीर खोटी निकल गई इसके सिवा क्या कहा जाये?

* * *

राजनीतिक क्षेत्र में भी तरह-तरह की हवा चलती रहती है। अभी तक लड़के-लड़कियों, औरतों और बच्चों के अपहरण या उड़ाये जाने की खबर मिला करती थीं किन्तु अब राष्ट्रों के मंत्रियों का अपहरण भी होना शुरू हो गया है। जावा के प्रधान मंत्री डाक्टर शहरयार तथा उनके कुछ साथियों को गायब कर दिया गया है। कहा जाता है कि यह कारस्तानी डच हुकूमत की है। अपने राम की समझ में नहीं आता कि क्या डच हुकूमत की जड़ इसी तरह के कारनामे से वहाँ जमेगी? डाक्टर शहरयार ने भारत को चावल भेजने का वायदा भी पंडित जवाहरलाल नेहरू को खत लिखकर किया था। डाक्टर शहरयार तो उड़ा ही दिये गये, भारत में आनेवाला चावल भी उनके साथ उड़ गया। उड़ाने की यह छूतही बीमारी अबचल पड़ी है, देखना है यह आगे कहाँ कहाँ फैलती है?

* * *

कांग्रेस वर्किंग कमेटी के अस्वीकार कर देने पर अब केन्द्रीय सरकार आई० सी० एस० अफ़सरों की काम चलाने के लिए बना ली गई है। इसके सिवा और होता ही क्या? मिस्टर जिन्ना की पार्टी को ही अगर खुश कर लिया जाता तो भी मंत्रिदल के आने की कोई न कोई निशानी रह ही जाती लेकिन कोई बात नहीं। सर स्टेफ़र्ड क्रिप्स कह गये हैं कि हिन्दुस्तानियों घबराओ नहीं, अगर तुम लोग अस्थायी सरकार के लिए ही भूखे हो तो जल्दी बन जायेगी। अपने राम की समझ में यह बात आती भी है। भारत में रहते हुए मंत्रियों को लन्दन से लिखा-पढ़ी में कुछ देर लगती थी, इसीलिए अब वह स्वयं लन्दन पहुँच गये हैं। वहाँ से सरकार बनाने में आसानी भी होगी। तब तक आई० सी० एस० राज्य करें। राज्य तो आई० सी० एस० अफ़सरों का केन्द्रीय सरकार में हमेशा ही रहा, लेकिन पहले पर्दे की ओट में होता था और अब वह वाइसराय की मेहरबानी से बुर्का हटाकर सामने आ खड़े हुए हैं। देखना है यह बुर्काविहीन आई० सी० एस० सरकार आगे आगे किस तरह का पैंतरा बदलती है?

* * *

विधान सम्मेलन के सदस्यों का चुनाव इसी महीने में बड़े ज़ोर-शोर से होने जा रहा है। अफ़सोस तो यह है कि मुस्लिम लीग विधान सम्मेलन की सदस्यता में आधे की हिस्सेदार कैसे बन पायेगी? सीमाप्रान्त से कांग्रेसी मुसलमान, पंजाब से यूनियनिस्ट, कांग्रेसी और एकाध लीगी सदस्य चुने जायेंगे। हाँ, सिन्ध और बंगाल के बल से आधे का कोटा कैसे पूरा होगा? फिर बंगाल से योरोपियन दल भी नहीं जा रहा है, नहीं तो उन्हीं से कुछ काम चलता रहता। इन कांग्रेसवालों ने वाकई बड़ा घोटाला कर दिया। अगर यह मालूम होता तो कुछ पहले से ही बन्धन बाँधा जाता, लेकिन देखते-देखते विधान सम्मेलन के चुनाव की आफ़त सर पर आ गई। देखना है आगे क्या-क्या होता है?

* * *

अकाली दल के नेता मास्टर तारासिंह कहते हैं कि मंत्रिदल की योजना एक ऐसा दैत्य है जो सिक्खों के राजनैतिक जीवन को निगल जाना चाहता है। अपने राम की राय में दैत्य ने कितने ही दलों के राजनैतिक जीवन को निगल डाला है, सिक्ख कहाँ से दूध के धोये आये हैं? बेचारे डाक्टर अम्बेडकर साहब मिस्टर चर्चिल तक से मिल गये लेकिन उनके दल के राजनैतिक जीवन को भी निगलने से दैत्य नहीं चूका। योजना का दैत्य चलते-चलाते मुस्लिम लीग की सारी आशाओं को भी निगल गया और डकार लेने की नौबत भी जल्दी जल्दी आती हुई नहीं दिखाई देती। अब तो योजना के दैत्य ने टाँग पसारी है, ज़रा फैलाने तो दीजिए, फिर देखिए।

* * *

महात्मा गांधी और उनकी पार्टी जिस ट्रेन से जा रहे थे, उसे उलटने का षड्यन्त्र पूना पहुँचने के कुछ पहले, रचा गया। किन्तु गांधी जी अपने दल के साथ सुरक्षित बच गये। बात सही भी है।

जाको राखै साइयाँ,
मारि न सकै कोइ।

* * *

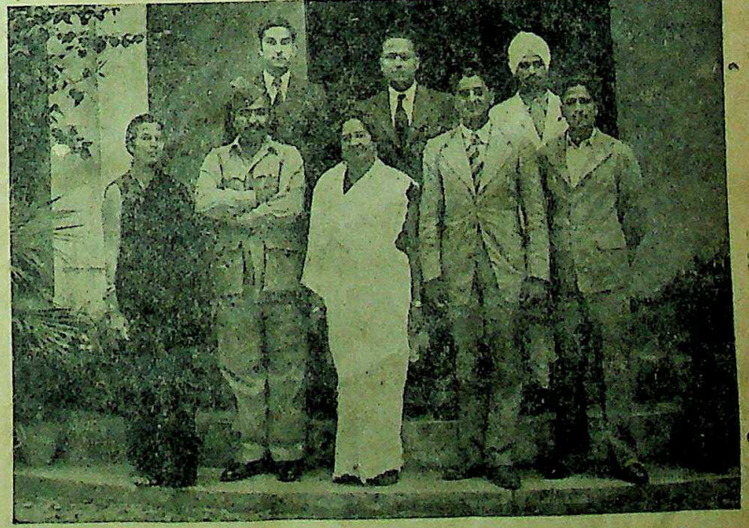

आजाद हिन्द फौज के सैनिक। दाहनी ओर मेजर जनरल शाहनवाज खाँ और बाईं ओर कर्नल कादिर खड़े हैं। बीच में बेगम कादिर दिखाई देती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

कांग्रेस का निर्णय

केन्द्रीय सरकार के निर्माण का नाटक समाप्त हो गया। मन्त्रिदल लन्दन पहुँच गया। कांग्रेस ने अस्थायी सरकार के निर्माण में अपनी असमर्थता और विधान सम्मेलन से सहयोग करने का निर्णय प्रकट करके ऐसी राजनैतिक स्थिति उत्पन्न कर दी कि अस्थायी सरकार के निर्माण का कार्य-क्रम ही भङ्ग हो गया। मिस्टर जिन्ना बड़ी आशा से अस्थायी सरकार में सम्मिलित होने की बाट जोह रहे थे किन्तु लार्ड वैवेल ने उन्हें भी अंत में निराशा के अंधकार में ढकेल दिया। अब केन्द्रीय सरकार आई० सी० एस० अफसरों के हाथ में 'कठपुतली' का खिलौना बन गई है। मन्त्रिदल तीन महीने तक भारत में रहा, भारतीय राजनैतिक दलों के नेता भी अपने दलबल के साथ डेरा डाले रहे, कभी दिल्ली और कभी शिमला में पड़े रहे, परामर्श, इंटरव्यू और विचार-विमर्श से राजनैतिक वातावरण आशा-निराशा के बीच झूलता रहा किन्तु अंत में कोई परिणाम नहीं निकला। केन्द्रीय अस्थायी सरकार का कार्यक्रम भङ्ग हो ही गया।

सच तो यह है कि कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने अस्थायी सरकार के निर्माण में सहयोग की अस्वीकृति देकर उचित कार्य ही नहीं किया वरन् उसने भारत की अखंड राष्ट्रीयता की रक्षा भी की है। दूसरी ओर कांग्रेस ने विधान-निर्माण के कार्य से सहयोग की स्वीकृति देकर भावी राजनैतिक वातावरण को शान्त बनाये रखने का सुन्दर उपक्रम किया है। मंत्रिदल, तथा वाइसराय लार्ड वैवेल ने भारत को स्वतन्त्रता प्रदान करने का जो राजनैतिक ढंग अख्तियार किया था, कांग्रेस ने अन्तिम अवसर पर अपना क्रान्तिकारी निर्णय देकर यह प्रमाणित कर दिया कि भारतीय राजनीतिज्ञ दाँव-पेंचों में ब्रिटिश राजनीतिज्ञों से कम नहीं हैं। ब्रिटिश राजनीतिज्ञ समानता, साम्प्रदायिकता तथा दलबन्दी के दृष्टिकोण से वाइसराय की कार्यकारिणी के निर्माण के लिए इच्छुक थे, किंतु उसकी पूर्ति अन्तिम अवसर पर कांग्रेस की अस्वीकृति से नहीं हो सकी। कांग्रेस की इस अवसर पर यह एक महान् विजय है। ब्रिटिश मजदूर मंत्रिमंडल अपनी जिस साम्राज्यवादी प्रवृत्ति का परिचय देने जा रहा था, वह उसमें असफल हुआ। इस प्रश्न पर जितना ही अधिक ध्यान दिया जाये राष्ट्रीय दृष्टि से वह उतना ही महत्त्वपूर्ण प्रमाणित होगा। अस्थायी या स्थायी सरकार तो कभी न कभी बनेगी ही। सरकारी अफसरों की 'कठपुतली' सरकार राष्ट्रीय सरकार के आदर्श की पूर्ति नहीं कर सकती है। हाँ, भविष्य में जो सरकार बनेगी वह वास्तव में राष्ट्रीय सरकार होगी न कि राजनैतिक दलों तथा साम्प्रदायिक अखाड़ेबाजों का अखाड़ा!

कांग्रेस वर्किंग कमेटी के अस्थायी सरकार के निर्माण में सहयोग न करने का निर्णय भविष्य को उस उज्ज्वल वातावरण को सूचित करता है जो वास्तव में राष्ट्रीयता और एकता की भावना से पूर्ण होगा। विधान-निर्माण के कार्य में पूर्ण सहयोग देने का कांग्रेस का निर्णय भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि कांग्रेस का आन्दोलन ही इसी सिद्धान्त पर आधारित है कि नेताओं के विचार-विमर्श से भारत का ऐसा विधान प्रस्तुत हो जिससे उसे पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हो, और संसार के राष्ट्रों के बीच उसकी एक स्वतंत्र सत्ता की स्थापना हो। बिना विधान के स्वतंत्रता कैसी? उचित विधान-निर्माण होने पर ही वास्तविक रूप से केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हो सकती है। इसलिए विधान-सम्मेलन के निर्माण का कार्य वैधानिक विद्वानों के हाथों में ही सौंपना चाहिए। कांग्रेस इस दिशा में जिस लगन से क्रियाशीलता का परिचय दे रही है, वह उसी के अनुरूप है। इस समय भारत के अनेक प्रान्तों में कांग्रेस-राज्य है। इसलिए कांग्रेस के लिए और भी अधिक उपयुक्त समय है कि वह अपने प्रान्तों से माने हुए कांग्रेसी तथा गैर-कांग्रेसी वैधानिक पंडितों को विधान-सम्मेलन में भेजने का प्रयत्न करे। हम समझते हैं कि कांग्रेस की उचित क्रियाशीलता और सतर्कता विधान सम्मेलन को सफलता दिलायेगी। कांग्रेस का निर्णय बुद्धिमत्तापूर्ण और भावी आदर्श की पूर्ति में सहयोग देनेवाला है, इसे राजनीति का प्रत्येक पाठक भली भाँति समझता है। बम्बई में होनेवाली अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी भी वर्किंग कमेटी के निर्णय को मान्य ही ठहरायेगी, इसमें भी संदेह की गुंजाइश नहीं है।

* *

स्वर्गीय गहमरी जी!

गत २० जून को हिन्दी के वयोवृद्ध उपन्यासकार श्री गोपालराम जी गहमरी का ८१ वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। गहमरी जी गहमर जिला गाजीपुर के रहनेवाले थे। आपने हिन्दी में जासूसी उपन्यासों के सृजन में अभूतपूर्व कार्य किया है। गहमरी जी की आधुनिक उपन्यास-साहित्य के निर्माताओं में गणना होती है। जासूसी उपन्यासों और कहानियों के सृजन के साथ साथ आपने 'जासूस' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन करके जासूसी साहित्य का प्रचार किया। आपकी रचनाओं की भाषा सरल, सुंदर, आकर्षक और रोचक होती थी। अंतिम समय तक आप जासूसी रचनाओं के सृजन में लगे रहे। ऐसे वयोवृद्ध के निधन से हिन्दी-संसार को क्षति तो हुई ही किंतु उनकी अवस्था भी परिपक्व हो चुकी थी। हमारी ईश्वर से प्रार्थना है कि वह मृत आत्मा को शांति प्रदान करें और कुटुम्बियों को धैर्य।

पद्यमाला—इस पुस्तक में अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के बारहवें अधिवेशन के सभापति हास्यरसावतार स्वर्गीय पंडित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, साहित्यभूषण की फुटकर कविताओं का संग्रह किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

पैनेजर—(बुकडिपो) इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

एटम-बम का प्रलयकारी विस्फ

विकुनी द्वीप-समूह पर चौथा प्रलयंकरी प्रयो

लेखक, श्री नारायणदत्त तिवारी, बी० ए०

अमरीका के सैनिक विभाग ने विकुनी द्वीप समूह पर चौथे एटम बम के [illegible] प्रदर्शन पिछले १ जुलाई को किया था। इस प्रदर्शन में किस तरह की [illegible] इसका रोचक वर्णन इस छोटे से लेख में किया गया है। साम्राज्यवादी राष्ट्र [illegible] की तैयारी में किधर जा रहे हैं, आटमबम के इस चौथे प्रयोग से इसका [illegible] अनुमान लगाया जा सकता है।

पिछली पहली जुलाई संसार के इतिहास में एक ऐतिहासिक प्रयोग की साधना के लिए सदा याद रखने की तिथि रहेगी। इस दिन अमेरिका के युद्ध-विद्या-विशारदों ने मध्य-पैसिफिक महासागर में विकुनी-एटोल के टापुओं में एटम बम डालकर खंड-प्रलय का ही लघु अभिनय किया है। यह एटम बम सत्तानवे जहाजों के बड़े बेड़े पर डाला गया है, जिनमें चार हजार जानवर एटम बम से होनेवाले विस्फोट का शिकार बनकर प्रयोग-साधक बने हैं। पिछले साल की पन्द्रहवीं जुलाई को एटम बम का पहला प्रयोग न्यू-मैक्सिको के रेगिस्तान में किया गया था। आज अपनी जल-सेना को पुष्ट करने के लिए अमेरिकनों ने एक टापू के किनारे अपने जहाजों के ऊपर एटम बम का प्रयोग किया है। सारे संसार की आँखें इस भीषण विस्फोट के नतीजे पर लगी रहीं। एक अमेरिकन लेखक विकुनी द्वीप-समूह पर होनेवाले प्रयोग का चित्रण करते हुए लिखता है :—

'जब विकुनी एटोल (टापू) के ऊपर एटम का खाक-स्याह पर्दा पड़ा, तब रोशनी की एक लौ सूर्य के तेज को भी मन्द कर देनेवाली चमक के साथ उठी, गर्मी की एक तेज हवा उष्ण कटिबन्ध में चलनेवाली सबसे अधिक गर्म हवाओं से भी हजारों गुना अधिक गर्मी लेकर वह निकली, और एक तेजी से मँडराता हुआ धुआँ आकाश में तेजी के साथ पहुँचकर छा गया। जब यह धुआँ विलीन हो गया तभी संसार को यह मालूम हुआ कि विकुनी द्वीप का क्या हुआ और मनुष्य ने कितनी ध्वंसकारी वस्तु का आविष्कार किया है।'

* * *

विकुनी द्वीप-समूह में किये गये इन्तजामों के बारे में एक अमेरिकन पत्र लिखता है :—

'इस नाटक का रंगमंच (विकुनी टापू) २१५ मील लम्बा और १० मील चौड़ा है। इसके चारों ओर मूँगे की दीवारों का एक घेरा है। यह मार्शल द्वीप समूहों में से एक टापू है। जापान से २५०० मील दक्षिण-पूर्व की ओर इसकी स्थिति है। विकुनी के चारों तरफ का समुद्र ११ फैदम गहरा है और जहाजों के ठहरने का अच्छा स्थान है।

इस नाटक का अभिनय वैज्ञानिकों के विभिन्न अनुसंधानों के तरीकों के अनुसार निर्धारित था। ज्यादा बातचीत या प्रचार का काम इन लोगों का नहीं। सिद्धान्त भी अस्पष्ट लगते हैं। सारे संसार के कोने कोने से ९७ जहाज इकट्ठे किये गये जिनमें अमेरिका के नये से नये जहाज, जापानी व जर्मन जंगी जहाज आदि शामिल थे। इन जहाजों पर कोई मनुष्य सवार नहीं था। जहाज के चलाने वाले जानवर [illegible] रक्षात्मक आवरण से ढके व [illegible] वाले मलहमों में मले हुए [illegible] गये थे। जगह जगह फौलादी [illegible] बहते हुए मजबूत लकड़ी के [illegible] प्रकार की मशीनें, जैसे सीमेंसे [illegible] हल्के मीटर, रिकार्डिंग मशीन [illegible] लगा हुए कैमरा, रेडियो-[illegible] सकनेवाली गीगर मशीनें [illegible] थीं जो सुरक्षित रहने पर अपना [illegible] कर संसार को एटम-शक्ति का [illegible]

टापू से सबसे नजदीक [illegible] मनुष्य वहाँ से दस मील की दू[illegible] जहाँ कि उसकी रक्षा सीसे [illegible] की दीवाले करती थीं। ये लोग [illegible] पहने थे जिनमें सूर्य की रोशनी [illegible] से घुस सकती है। निरीक्षकों [illegible] पंक्ति २० से ३० मील तक दू[illegible]

जहाजों की तोप रखने [illegible] पर ४००० सफेद चूहे थे, [illegible] के पुल और इंजिन के कमरे में [illegible] ही २०० बकरियाँ, जिनकी [illegible] विशेष गुण इन्तजाम था, [illegible] जिनकी खाल मनुष्य-चर्म से मि[illegible] थी और जिनके बाल काट जाने [illegible] वाला मलहम लगाया गया था। [illegible] जहाजों के अन्य विभिन्न स्थानों [illegible] गये। धुएँ की गहराई को [illegible] लिए हवाई जहाजों के पुतले, अलग [illegible] वायुयानों के साथ उसी धुएँ के [illegible] पार निकलने के लिए तैयार किये [illegible]

यह सब योजना अमेरिक[illegible] के वाइस-एडमिरल विलियम [illegible] की संरक्षता में हुई। एटम [illegible] नाम 'गिल्डा' रखा गया था, [illegible] रंगसाजों ने सिनेमा की अभिने[illegible] रिटा हेवर्थ के नमूने पर विकि[illegible] रंग दिया था। न्यूजर्सी प्रान्त के [illegible] उस बम को फेंका था। बम उ[illegible] हवा के शान्त होने पर 'ही [illegible]

इस विस्फोट से संसार को [illegible] के विनाशकारी रूप का जो [illegible] हुआ वह बड़ा भयोत्पादक [illegible] शक्ति के राक्षसी प्रयोग से मान[illegible] की ओर उत्तरोत्तर बढ़ती ही [illegible] तीसरा विश्व महायुद्ध पृथ्वी के [illegible] का कारण होगा। आज तो [illegible] शक्तियों को चाहिए कि वे इस [illegible] मनोवृत्ति में न पड़कर बनाई [illegible] (अमेरिका एटम-शक्ति कमीशन [illegible] मैन) की योजना को एटम बम [illegible] को ध्वस्त कर दें और इस प्रकार [illegible] को सर्वनाश से बचायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...तीय स्वायत्त शासन-सुधार

...स-सरकार की सुधार-सम्बन्धी एक नई योजना

लेखक, श्री विजयकुमार मिश्र

...ी कांग्रेस-सरकार स्थापित है। कांग्रेस-सरकार जहाँ अन्य विभागों का सुधार ...ने वहाँ स्वायत्त शासन-विभाग के सुधार के लिये भी योजना बना रही है। ...ोग्य लेखक ने यह बतलाया है कि कांग्रेस-सरकार का भावी कार्यक्रम ...किस प्रकार के सुधार से स्वायत्त शासन-विभाग जनता की दृष्टि में ...प्रकाशवान् हो सकता है। लेख जानकारी से पूर्ण और पठनीय है।

...सरकार मंत्रिमंडल ने इस ...नागरिकों को नागरिक स्वतंत्रता ...अधिकाधिक सीमा में प्रदान ...बनाई है। पिछले कांग्रेस ...में भी, जिसमें वर्तमान मंत्री ...इस प्रकार की योजना बनाई ...युद्ध प्रारम्भ हो जाने पर ...त्याग करना पड़ा, अतएव ...न्वित न की जा सकी। ...करते ही मंत्रियों का ध्यान ...तिपूर्ण योजनाओं पर गया ...इस योजना ने अपने ...प्रथम स्थान पाया।

...योजना इतनी व्यापक और ...थी। वह एक प्रकार से १९१६ ...डिस्ट्रिक्ट बोर्ड ऐक्ट तथा जिला ...संगोधनकारी ही थी। ...शहरी और ज़िला बोर्डों ...थी। ग्रामों को प्रजा-...कर ग्रामीणों को आत्म-...क स्वा कुछ भी अधिकार ...उस समय सोचा तक न ...पिछले छः वर्षों के अन्तर ...अद्भुत परिवर्तन कर दिया ...भाई अब देशकाल और ...स्थिति से अनजान अनभिज्ञ ...नहीं रहे हैं। राजनीतिक ...मन-प्राण में भी आत्मशासन ...रक्खा भर दी है जिस भावना ...एक लोकप्रिय शासन ही ...निरंकुश एडवाइज़र शासन ...प्रकार की भी आशा न कर ...

...शासन-मंत्रिणी श्रीमती ...पंडित तथा उनके सुयोग्य ...सेक्रेटरी श्री आत्माराम ...ने इस दिशा में प्रशंसनीय ...। उन्होंने इस कार्य के लिए ...कमेटी, जिसके सदस्य उन दोनों ...तथा अन्य मंत्री सर्वश्री ...काटजू, ख़ी अहमद किदवई ...एवं उन्नति मंत्री के ...सेक्रेटरी श्री केशवदेव माल-...कमेटी ने स्थानिक संस्थाओं ...के सम्बन्ध में यथेष्ट विचार ...म्युनिसिपैलिटियों तथा जिला बोर्डों ...विधान में क्रान्तिकारी परि-...का निश्चय किया। साथ ही ...भी अनुभव किया कि केवल

...शासन-विभाग के पार्लामेंटरी के ...श्री ए० जी० खैर एम० एल० ए०

इतने ही से जनता को आत्मशासन नहीं मिल जाता। इसीलिए इन्होंने ग्रामपंचायतों के निर्माण का भी निश्चय किया, ताकि प्रत्येक ग्राम आत्मशासन का अधिकार पाकर एक प्रजातंत्रीय इकाई बन जाय। इसमें सन्देह नहीं कि ग्रामपंचायत की योजना अति महत्त्वपूर्ण है और हमारे भावी सामाजिक और राष्ट्रीय निर्माण में उसका अभिनय निःसंदेह बहुत प्रभावोत्पादक होगा।

इस कमेटी ने ग्राम-पंचायतों के निर्माण की योजना बनाकर उसके सम्बन्ध में क़ानून का एक मसविदा भी बना लिया है। यह मसविदा अर्थात् बिल प्रांतीय एसेम्बली की आगामी बैठक में पेश कर दिया जायगा। इसी प्रकार म्युनिसिपल तथा ज़िला बोर्डों में सुधार किये जाने के सम्बन्ध के क़ानून भी उसी बैठक में पेश कर दिये जायेंगे। इसके बाद अगली बैठक में, जो सम्भवतः हेमन्त ऋतु में होगी, उन पर विचार किया जायगा। इस बीच उन पर जनता की सम्मति भी माँगी जायगी। अतएव उन बिलों के बारे में जान लेना आवश्यक है।

ग्राम-पंचायत-बिल का आशय है ग्रामीणों को अपना शासन आप करने की अधिकाधिक स्वतंत्रता और सुविधा देना। इस बिल के अनुसार प्रत्येक ग्राम में एक ग्रामसभा होगी, जिसका सदस्य उस गाँव का प्रत्येक बालिग़ निवासी होगा। इस ग्रामसभा की बैठकें साल में दो बार होंगी और उसे बजट पास करने तथा ग्राम-पंचायत का निर्वाचन करने और सिफ़ारिशी प्रस्ताव स्वीकृत करने का अधिकार होगा। आवश्यकता पड़ने पर ग्राम-सभा की बैठक असाधारण रूप में दो बार के अतिरिक्त भी बुलाई जा सकती है।

ग्राम-पंचायत ही इस आत्मशासन का असली अंग होगी। पंचायत का निर्माण ग्राम-सभा के सदस्यों द्वारा किया जायगा। १००० या इससे कम जनसंख्यावाले ग्रामों की पंचायत में ३० और अधिक जनसंख्यावाले ग्राम की पंचायत में ५१ सदस्य होंगे। इनमें से एक-तिहाई सदस्य प्रतिवर्ष आप से आप छँटते जायँगे और उनके स्थान पर नये सदस्य निर्वाचित होते जायँगे। ग्राम-पंचायत के सदस्य अपना एक सरपंच और नायब सरपंच चुनेंगे। ये पद अवैतनिक होंगे। किन्तु पंचायत का मंत्री वैतनिक होगा और सरकारी नियमों के अन्तर्गत उसका काम चलायेगा।

पंचायतों के कार्यों का वर्गीकरण दो श्रेणियों में किया गया है। एक तो अनिवार्य विषय हैं, जिनमें उल्लेखनीय ये हैं :—भूमि-सम्बन्धी काग़ज़ात रखना, फ़सलों और पशुधन का विवरण रखना, गाँव की सड़कों की देख-रेख और मरम्मत करना, सफ़ाई, चिकित्सा, शिक्षा, मेला, बाज़ार आदि की व्यवस्था करना, कृषि की उन्नति तथा अन्य उपयोगी कार्यों की व्यवस्था करना। ऐच्छिक विषयों में सहयोग-समितियाँ बनाना और उनको लोकप्रिय करना, वृक्ष लगवाना, कुआँ खुदवाना, व्यायाम के लिए अखाड़े आदि बनवाना रहेंगे। पंचायतों को अपने किसी भी सार्वजनिक कार्य के लिए सरकार की स्वीकृति लेकर किसी भी भूमि को तलब कर लेने का अधिकार होगा।

पंचायतों के उन कार्यों में उसकी व्यय की जो आवश्यकता होगी, उसकी भी सुन्दर व्यवस्था इस बिल में की गई है। उनको कर लगाने का अधिकार होगा। किसानों पर वे उसके लगान के आधार पर प्रति रुपया एक आना और ज़मींदार पर उसकी मालगुज़ारी के आधार पर प्रति रुपया आध आना टैक्स लगा सकेंगी। जिन लोगों के पास भूमि नहीं है, उन पर कर लगाने के लिए भी कुछ विशिष्ट नियम सरकार बनाने जा रही है। ग्रामीण भवनों पर भी टैक्स लगाया जा सकेगा। इसके अतिरिक्त कुछ विशेष सार्वजनिक कार्यों, जैसे शिक्षा, चिकित्सा आदि के लिए प्रांतीय सरकार उन पंचायतों को प्रत्यक्षतः अथवा ज़िला बोर्डों के मार्फ़त आर्थिक सहायता भी दे सकेगी।

ग्रामीणों की मुक़दमाबाज़ी को कम करने और उनमें आपस में ही झगड़े तय कर लेने की भावना भरने के उद्देश्य से पंचायतों को कुछ अदालती अधिकार भी दिये जायँगे। इस कार्य के लिए ज़िलों को अनेक क्षेत्रों में विभाजित कर दिया जायगा और प्रत्येक क्षेत्र के अन्तर्गत अनेक ग्रामपंचायतें रहेंगी। इसमें से प्रत्येक पंचायत से पंचायती अदालत के लिए, जो प्रत्येक क्षेत्र में एक ही होगी, अपने पाँच सदस्यों की नामावली भेजने को कहा जायगा। ये पंच बारी बारी से पंजायती अदालत के न्यायासन पर बैठेंगे। इन अदालती पंचायतों को १०० रु० तक के दीवानी के मामलों को सुनने का अधिकार होगा। फ़ौजदारी क़ानून की कुछ धाराओं के आनेवाले मामले भी वे सुन सकेंगी। पंचायती अदालतों को जुर्माना करने का अधिकार होगा, किन्तु क़ैद की सज़ा देने का अधिकार न होगा। माल-विभाग के मामले भी वह सुन सकेगी, किन्तु माल-सम्बन्धी जिन मामलों में काग़ज़ातों में परिवर्तन करने अथवा उत्तराधिकार का निर्णय करने का प्रश्न होगा, उनकी सुनवाई वह न कर सकेगी। पंचायती अदालतों में वकीलों को पैरवी की अनुमति न दी जायगी और उनके निर्णय की कहीं अपील न हो सकेगी।

संयुक्तप्रांतीय स्वायत्त शासन-विभाग की मंत्रिणी श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित।

इसमें सन्देह नहीं कि कांग्रेस मंत्रिमंडल की यह योजना अत्यन्त श्लाघनीय है और इससे कुछ ही वर्षों में इस प्रांत का ग्रामीण वातावरण अत्यन्त परिष्कृत हो जायगा और उनके सामाजिक जीवन का स्तर बहुत कुछ ऊँचा उठ जायगा। इस योजना के अन्तर्गत गाँव गाँव में स्कूल बना सकना मुश्किल न होगा और आसानी से शिक्षा-प्रसार हो सकेगा। गाँव गाँव में चिकित्सा की व्यवस्था हो जाने पर लोगों के स्वास्थ्य में वृद्धि होगी और अकाल-मृत्युओं की संख्या घट जायगी। किसानों में सहयोग की भावना फैलेगी और उनकी कृषि में उन्नति होगी। महाजनों और ज़मींदारों के अत्याचार से भी वे बच सकेंगे। पंचायती अदालतों द्वारा उनको वकीलों की फ़ीस और अपील दर अपील से भी परित्राण मिल जायगा। दुनिया जानती है कि भारतीय ग्रामीण पंचायत और पंच को कितना मानते हैं और पंच के आसन पर बैठ बैठ कर सबसे अधिक बेईमान ग्रामीण भी उतने समय के लिए ईमानदार और सत्यवादी बन जाता है। अतएव इन पंचों द्वारा, जो ग्राम के वातावरण तथा घटनाओं एवं व्यवस्थाओं से पूर्ण परिचित होंगे, सत्यासत्य का निर्णय करना कठिन न होगा और वे दोनों ही पक्षों को सन्तोष दे सकेंगे।

म्युनिसिपल शासन में सुधार की योजना भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है, क्योंकि उसका हमारे नागरिक जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। म्युनिसिपल शासन में सबसे गन्दी चीज़ उसके सदस्यों और चेयरमैन का चुनाव है। सदस्यों के चुनाव के लिए जो वोटर-लिस्ट बनाई जाती है, उनमें से अधिकांश ग़लत तथा उम्मेदवारों के समर्थकों के फ़र्ज़ी नामों से भरी होती है। किन्तु अब ऐसा न हो सकेगा। ये निर्वाचन अब बालिग़ मताधिकार के आधार पर होंगे, जिनके अन्तर्गत नगर के प्रत्येक बालिग़ निवासी को वोट देने का अधिकार होगा। इसके अतिरिक्त संयुक्त निर्वाचन की प्रथा भी जारी की जायगी, जिसमें सभी सम्प्रदायों के व्यक्ति एक साथ वोट करेंगे। मुसलमानों के लिए उनकी जन-संख्या के आधार पर सीटें सुरक्षित रहेंगी अवश्य, किन्तु उनके लिए भी हिन्दू और मुसलमान समान रूप से वोट करेंगे। सम्प्रदायों के हितों की कोई भी सदस्य उपेक्षा न कर सके, इसलिए प्रत्येक सफल उम्मेदवार के

शेष पृष्ठ १७ पर देखिए

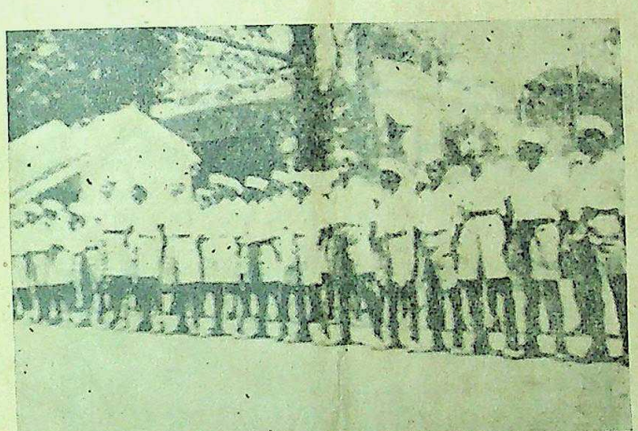

प्रांतीय कांग्रेस-कमेटी स्वयं-सेवकदल का संगठन कर रही है, जो गाँवों में संगठन का काम करेंगे। इस चित्र में स्वयंसेवक ड्रिल करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एशियाई राष्ट्रों की स्वतंत्रता

संसार में शांति-स्थापना का यही मूलमंत्र है

लेखक, राजनीति का एक विद्यार्थी

सन् १९२६ में बीरविले में फ्रेंच और जर्मन संस्थाओं की ओर से आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय विश्व-शान्ति-सम्मेलन में एक प्रमाण-पत्र (मेमोरेंडम) प्रस्तुत किया गया था। उस स्मरण-पत्र पर हस्ताक्षर करनेवालों में इन्डोनेशियन प्रजातंत्र के वैदेशिक मंत्री मोहम्मद हत्ता तथा अजरबेजान के टौर्शीवैशी भी थे। इन दोनों देशों का आज संसार में बड़ा महत्त्व है। इन्डोचीन के डुआँग वैन गिआओ जो उस स्मरणपत्र पर हस्ताक्षर करनेवालों में से थे और जो आज अनामी राष्ट्रीय दल के कर्णधारों में से हैं, फ्रान्सीसी और जापानियों के द्वारा बन्दी बना लिये गये थे। यह पत्र बड़े महत्त्व का है। क्योंकि इसमें सर्वप्रथम स्पष्ट शब्दों में भारतवर्ष और एशिया के स्वतंत्रता-आन्दोलनों का सम्बन्ध प्रकट किया गया था। वर्तमान परिस्थिति पर विचार करते हुई वह पत्र ऐतिहासिक महत्त्व का प्रतीत होता है और आज की योरोप तथा एशिया के संघर्ष पर प्रकाश डालनेवाला है।

इंडोनेशिया के प्रजातंत्रवादी नेता जनरल सोकार्नो।

प्रमाणपत्र (मेमोरेंडम) का शीर्षक है 'एशिया में शांति' और वह इस प्रकार है—

जो कोई भी यूरोप के शान्ति आन्दोलनों का अध्ययन करता है उसका ध्यान इस ओर अवश्य जावेगा कि यूरोप-निवासी जब कभी शान्ति की बातें करते हैं, तो उनके सामने सदैव यूरोप का ही चित्र रहता है। संसार के यूरोपीय विचारकों की कल्पना वहीं तक सीमित रहती है जहाँ तक यूरोपियन लोग बसते हैं। एशिया जैसा महान् विस्तृत महादेश जो अब भी कई पुरानी सभ्यताओं का केन्द्र है और जो मानव-समाज की बहुत बड़ी संख्या का निवास-स्थान है, तथा अफ्रीका जो आज कई समस्याओं से उलझा हुआ है—उनके लिए महत्त्व ही नहीं रखता। यह एक बड़ी भद्दी सी बात है। यदि संसार में स्थायी शान्ति की स्थापना होनी है, तो वह शान्ति केवल कुछ इने-गिने देशों के लिए नहीं होनी चाहिए, बल्कि समस्त मानव-समाज के लिए होनी चाहिए।

यूरोप में शान्ति स्थापित करने के लिए भी तो एशिया ही केन्द्रस्थल है। यूरोपवालों के झगड़े तो वहीं पर बढ़ रहे हैं। जिन लोगों का विश्वास है कि मानवता का विकास नैतिक गँठबन्धनों से नहीं, बल्कि समाज की एक ऐसी संस्था द्वारा हो जो न्याय और पारस्परिक सहनशीलता पर स्थित हो, वे बड़ी सुगमता से देख सकते हैं कि स्वयं यूरोप की शान्ति एशिया की उलझनों से भंग हो रही है। हमारा तो ऐसा विचार है कि यूरोपीय देशों की पारस्परिक स्पर्धा तथा उनका एशिया की देशों को अपने पैरों से कुचलना ही संसार की शान्ति में बाधक है। एशिया और अफ्रीका में सर्वत्र यूरोपीय देश वहाँ के कमजोर देशों का शोषण करने के लिए आपस में बाजी लगा रहे हैं।

यूरोपीय शक्तियों के साम्राज्यवादी मनसूबों तथा उनके अपने स्वार्थों के टक्कर ने चीन में बड़ी गड़बड़ी मचा रक्खी है। यह तो स्वयं शान्ति में बाधक है। जब हम यहाँ विश्व-शान्ति की चर्चा कर रहे हैं, यूरोपीय राष्ट्र चीन में युद्ध छेड़ने की चेष्टा कर रहे हैं। वे अपने स्वार्थों के हक में हैं और दुनिया को यह बताना चाहते हैं कि उनकी प्रतिस्पर्धा युद्ध द्वारा ही खत्म हो सकती है। सिंगापुर में जहाजों की किलेबन्दी हो रही है। यह भी तो युद्ध छेड़ने का ही लक्षण है। शान्ति का देवता तो साम्राज्यवाद के पापी पंजे में फँसा हुआ है। साम्राज्यवाद अपने हाथ-पैर दूर दूर तक फैलाने की चिन्ता में है।

जब तक एशिया के देश भारतवर्ष, इण्डोचीन और इण्डोनेशिया परतन्त्र हैं तथा चीन के अर्थ और राजनीति पर दूसरों का आधिपत्य है—चिरस्थायी शान्ति कदापि कायम नहीं हो सकती। वह शान्ति जिसे विदेशी शासन तलवार के जोर से लादते हैं, वह दिखावे की शान्ति भले ही हो, वास्तविक शान्ति कदापि नहीं हो सकती। ऐसी शान्ति तो युद्ध से भी बदतर है। क्योंकि यह लोगों के हृदय में घृणा का संचार करती है और वही घृणा एक न एक दिन विद्रोह का रूप धारण कर लेती है। यह सबको अच्छी तरह मालूम है कि किस प्रकार यूरोपवासी समस्त पूर्वी देशों में घृणा की दृष्टि से देखे जाते हैं। आखिर इसका कारण क्या है? क्या इसलिए वे ऐसा करते हैं कि वे अशिष्ट हैं? नहीं। बल्कि इसलिए कि हम सम्पूर्ण एशिया में यह अनुभव करते हैं कि वे निर्दयता पूर्वक तलवार के जोर से पददलित बना रहे हैं। अगर आप वास्तव में शान्ति की स्थापना करना चाहते हैं तो आपको उन कारणों को सबसे पहले दूर करना होगा जो एशिया में यूरोप के प्रति वैमनस्य या स्पर्धा पैदा कर रहे हैं। आपको एशिया और यूरोप के बीच पारस्परिक सहयोग की भावना उत्पन्न करनी चाहिए। यदि आप ऐसा करें तो शान्ति अवश्य ही स्थापित हो जायगी।

यूरोपीय देशों का एशिया का शोषण करने तथा और दूसरे देशों पर आधिपत्य जमाने के लिए आपस में मिलना ही उस सहयोग के रास्ते में बहुत बड़ा रोड़ा है। यह सब है कि यूरोप के राष्ट्रों को एशिया में पारस्परिक स्पर्धा है पर एशिया के विरुद्ध तो वह सब एक हैं। जहाँ राष्ट्रों के ऊपर अधिकार करने का प्रश्न आता है वे सब एक हो जाते हैं। आपस के सब झगड़े वे भूल जाते हैं। यूरोप के देशों की मानसिक प्रवृत्ति सदैव जातीय भेद से भरी रहती है। एशिया के सामने अँगरेज, फ्रेंच, डच या किसी विशेष राष्ट्र का प्रश्न नहीं है। उसके सामने तो सम्पूर्ण यूरोप का प्रश्न है। अभी हाल में ही एक उदार विचारक सर लिओ चिजा मनी ने अपनी पुस्तक में यह तर्क दिया है कि ग्रेट ब्रिटेन हिन्दुस्तान को स्वराज्य इसलिए नहीं दे सका कि उसे भय था कि दूसरी यूरोपीय जातियों की स्थिति खराब हो जायेगी। यह तर्क विशेष ध्यान देने योग्य है। जहाँ तक ग्रेट ब्रिटेन का भारतवर्ष के साथ

महात्मा गांधी दिल्ली से वापस लौटकर पूना के प्राकृतिक चिकित्सालय में पहुँच गये हैं।

चीन के प्रधान मंत्री जनरल च

सम्बन्ध है—भारतवर्ष, इंग्लैंड मानव-समाज के हितों पर नहीं किया जाता है बल्कि दूसरे यूरो के हितों का ही विचार किया जा

भारतवर्ष की भौगोलिक स्थि कि जो भी शक्ति इस पर शास वह चारों ओर अपना प्रभाव डाल है। उत्तर-पश्चिम सीमान्त से एशिया तथा वर्मा से दक्षिणी चीन इंडोचीन पर अपना आधिप सकती है। वास्तव में भारतवर्ष साम्राज्य की त्रिकोण भौगोलिक ही एक बहुत बड़ी समस्या है, जिसे के प्रेमियों को हल करना है।

एशिया की आत्मा को स्वतन्त्र कि शान्ति आई। किन्तु वह तलवार के आधार पर नहीं बल्कि रिक सद्भावना के आधार पर। की आत्मा तो है ही प्रशान्त। वाद हमने फिर भारतवर्ष में का अन्वेषण किया है, और महात्मा स्वयं अहिंसा की मूर्ति हैं। सम्पूर्ण धर्म इसी सिद्धान्त पर खड़ा है। जहाँ भी बौद्धधर्म का प्रचार हुआ शान्ति की प्रवृत्ति को युद्ध की अधिक महत्त्व दिया जाता है। प्रवृत्ति को स्वतन्त्र होने में मदद आप देखेंगे कि आपका उद्देश हो गया।

एशिया के लोग शान्ति की आज अपनी पूरी शक्ति नहीं लगा कारण, वे बन्धन में हैं। और जिसे यह भी न भूलें कि वह विकास भी स्थायी नहीं हो सकता जो केवल अंश के लिए हो। क्या एशिया के यूरोप का विकास हो सकता है? क्या बिना एशियावालों के सहयोग यूरोप का विकास सुरक्षित रह सकता इसलिए यदि आप चाहते हैं कि आये और संसार की वर्तमान स्थिति तो आपका फर्ज है कि आप भारत की उस बड़ी संख्या को स्वतन्त्र करने में मदद करें। यही है रास्ता लाने का। चीन, भारतवर्ष और एशिया के देश स्वतन्त्र हो जाएँ आप देखें कि लोग किस प्रकार मिलकर शान्तिपूर्वक रहते हैं।

हस्ताक्षर—

(१) डुआँग वैन गिआओ (के प्रतिनिधि) (२) टौर्शीवैशी (वैजान के प्रतिनिधि) (३) चु (चीन के प्रतिनिधि) (४) के पनिकर (भारतवर्ष के प्रतिनि मोहम्मद हत्ता (इंडोनेशिया के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...र से 'देशदूत' के लिये

...नर-केसरी श्री विष्णु गोंड़ !

...गस्त-क्रांति में गोंड़वाने का एक किसान, लड़ाकू और बहादुर नेता !

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

...प्रान्त में गोंड़वाना अपनी वीरता के लिए सदा से प्रसिद्ध रहा है। गत ...आन्दोलन में भी गोंड़वाने के गोंडों ने अपनी बहादुरी और बलिदान का बड़ा ...परिचय दिया था। इस लेख में श्री प्रभुदयाल जी विद्यार्थी ने गोंड़वाने ...नेता श्री विष्णु गोंड़ का बड़ा ही मार्मिक, सुन्दर और ओजस्वी चित्रण किया ...जो पठनीय तथा अगस्त-आन्दोलन की स्मृति को ताजा करनेवाला है।

...गरीबों के बलिदान से ही ...किन्तु उनके जीवन पर कौन ...है? बड़े से बड़ा आविष्कार ...किया है, अनोखी से अनोखी ...ईजाद उन्होंने ही की है, बड़े ...कारों का जन्म गरीबों में ...मन के गोकी दादा का जन्म ...में हुआ था। बाद में वह ...के सम्राट् बने। हमारी ...लड़ाई में भी गरीबों का हिस्सा ...गरीबों के बलिदान और ...ही हमारा देश आगे बढ़ा है। ...लड़ाई में गरीबों का त्याग ...रहा है। उनमें एक से एक ...साहसी पैदा हुए हैं। लेकिन ...हम उन्हें आगे बढ़ने ...उनके साहस भरे कामों को ...में नहीं पहुँचाते क्योंकि वह ...मैले-कुचैले हैं और अपढ़ हैं। ...नाबाकिफ हैं। उनके त्याग और ...कामों का फायदा हम मुट्ठी ...बाबू लोग उठाते हैं। हम ...बाबू लोग नेता बनकर उनके ...लाभ एक दूसरे को उठाने ...पूछता हूँ कि उनके बलिदान ...उन्हें अब तक किस रूप में ...! आज हम आजादी के इतने ...पहुँच गये हैं वह किसके बल ...आन्दोलनों का इतिहास बारीकी से ...हम इसी नतीजे पर पहुँचेंगे कि ...अधिक संख्या में गरीब किसान, ...ही अपनी बलि दी है। वह ...चढ़े हैं। संगीनों का मुकाबला ...पग पग पर संघर्ष किया है। ...लगा दी है। अपना सब ...कर दिया है। गाँव के ...हो गये हैं। सरकार ने अपनी ...लगाकर किसानों और मजदूरों ...की कोशिशें की हैं फिर भी ...बड़वानल जलता रहा है। ...उनकी शाखायें दिन-प्रतिदिन ...हैं। आजादी की एक अज्ञात ...कर रही है। किसानों में अब ...पैदा हो रहे हैं। कहीं कहीं ...में से एक-दो ऐसे होनहार ...काम करनेवाले मिले हैं जिनके ...लाखों किसानों ने अपना सब ...देने की तैयारी दिखाई है।

...की अगस्त-क्रान्ति में हम ...उदाहरण बैतूल जिले के ...नामक गाँव में पाते हैं? बैतूल ...अधिकांश गोंड़ जाति की बस्ती ...जंगलों में बसे हैं। आदिवासी ...गरीबी का साम्राज्य है। किसी ...के वंशजों ने यहाँ राज्य किया था। चारों तरफ़ राज्यवैभव फैला हुआ था। सुख-सम्पन्नता से जिन्दगी बसर कर रहे थे। स्वतन्त्र विचर रहे थे। बहादुरी और साहस के कामों में सबसे आगे बढ़े-चढ़े थे। शेरों से लड़ना इन्हीं की पैतृक सम्पत्ति है। आज भी जंगल की गोंड़ देवियाँ शेर-शेरनियों से खुलकर युद्ध करती हैं। शेरों को तीर-कमान से पछाड़ और जिदगी से मरहूम कर देती हैं।

आज इन गोंड़ों को गरीबी ने पस्त हिम्मत बना दिया है। साहस टूट गये हैं। मुसीबत में दिन काट रहे हैं। इनके साधन छीन लिये गये हैं। जमीन-जायदाद बिक गई है। जंगल की गुफाओं में बसर कर रहे हैं। जंगल के फल-फूलों और जानवरों को मारकर अपना पापी पेट भरते हैं। इनकी संख्या एक-दो हजार नहीं है कई लाख है। यह पिछड़ी हुई जातियों में से है। इन्हें पढ़ना-लिखना कहाँ मयस्सर है? पेट पालने के लाले हैं। मदरसे का दर्शन कहाँ? रहने के लिए अच्छी झोपड़ी भी तो नहीं है। जंगली जातियों में से यहाँ की प्रमुख जाति गोंड है। आजाद स्वभाव के हैं। निर्भीक हैं।

इन्हीं में से आज से कोई ४०, ४५ वर्ष पहले विष्णु गोंड़ नाम के एक होनहार लड़के का जन्म हुआ। बालक बढ़ा, खेला और कूदा। प्राकृतिक शिक्षा मिली। जंगल में ३२ नगर के कुछ लोगों के जीवन से परिचय प्राप्त किया। विष्णु गोंड़ ने सुना कि अपनी ही खोई हुई आजादी के लिए हिन्दुस्तान जंग कर रहा है। शासन मैशीनरी बदलने की कोशिश की जा रही है। गोंड़ जाति स्वभावतः स्वतन्त्रता प्रेमी है। आजादी का मंत्र तुरन्त विष्णु गोंड़ के दिल में पैठ गया। वह सोचने लगा कि मैं क्या कर सकता हूँ? किस तरह आजादी में शामिल हो सकता हूँ? अपनी खोई हुई आजादी किस तरह वापस ला सकता हूँ? अपने समाज का जीवन किस तरह ऊपर उठा सकता हूँ? दिन-रात इसी सोच में विष्णु गोंड़ का जीवन बीतने लगा। बेचारा पढ़ा-लिखा नहीं था। लड़ाई के तरीकों से भी वाकिफ नहीं। फिर भी उसे एक मंत्र मिला। एक साथ संगठित होकर आजादी के जंग में भिड़ जाओ।

गोंड़ जाति हम लोगों की तरह निकम्मी नहीं है। भले ही हम अपने को सुसभ्य और अच्छे नागरिक मानते हों लेकिन मैं फिर भी यह कहूँगा कि उनका जीवन हमसे कई गुना श्रेष्ठ है। वे धोखे-बाज नहीं। देश के साथ विश्वासघात नहीं कर सकते। छल-कपट का जीवन नहीं जानते। सीधा और सच्चा जीवन उन्हें प्रिय है। हाँ, उन्हें अपने बल का सही पता अभी मालूम नहीं हो सका है। उन्हें अपने तीर-कमान पर विश्वास है। आधुनिक लड़ाई की चीजों से वे अनभिज्ञ हैं। धीरे धीरे नई दुनिया की बातें उन्हें भी मालूम होने लगी हैं। शहरों से कुछ सम्बन्ध होने से आधुनिक चीजों से परिचय भी बढ़ने लगा है। फिर भी अभी वे उसी पुरानी दुनिया में हैं जहाँ से उनका वर्षों का सम्बन्ध है।

गोंड़ जाति के ख़ून में स्वाभाविक ढंग से एक नेता और एक पंचायत का हुक्म मान लेने की शक्ति है। नेता के हुक्म पर सारे गोंड़ मर मिटने के लिए तैयार हो जाते हैं। विष्णु गोंड़ ने भी अपने आस-पास के जंगलों में गोंड़ भाइयों की एक सभा की और उन्हें समझाया कि देश को स्वतन्त्र करने की कोशिश की जा रही है। अँगरेजों की बदौलत ही हमको रोटी नहीं मिलती और न रहने के लिए मकान। हम लोगों को भी आजादी के लिए कुछ करना चाहिए। सारे गोंड़ों ने कहा—"हम सब आज से आपको अपना सरदार मानते हैं। आप जैसा हुक्म देंगे वैसा करेंगे।"

सन् १९३० में देश में सत्याग्रह की लड़ाई छिड़ी हुई थी। कांग्रेस ने हुक्म दिया था कि जंगल कानून तोड़ा जाय। सारे गोंड़ जंगल कानून तोड़ने लगे। सरकार परेशान हो गई। लाखों रुपये की लकड़ी सरकार के हाथों से निकल गई। सैनिक बुलाकर सरकार ने गोंड़ों को दबाना चाहा लेकिन हजारों, लाखों गोड़ों से मुकाबला करना हँसी-खेल नहीं था। गोंड़ों ने सैनिकों का मुकाबला किया। सरकारी सिपाही गोलियाँ छोड़ रहे थे फिर भी गोंड़ों ने पीठ नहीं दिखाई। डटकर मुकाबला किया। अन्त में सरकारी सिपाही मैदान छोड़कर भाग गये। विष्णु गोंड़ को गिरफ़्तार करके आन्दोलन को दबाने की कोशिश की गई। इस प्रकार सन् ३०-३२ का आन्दोलन गोंड़ों में काफी कामयाब रहा। कितने ही गोंड़ जान से मारे गये लेकिन उनकी हिम्मत दबी नहीं। सरकार ने मान लिया कि गोंड़ों का संगठन मजबूत है। वह स्वतन्त्रता के प्रेमी हैं। साहस के पुतले हैं। मध्यप्रान्त के सत्याग्रह की लड़ाई में गोंड़ों का काम बहुत गौरव-पूर्ण है। आजादी की लड़ाई में गोंड़ों का प्रमुख स्थान है। आजादी की लड़ाई में गोंड़ भाई हमेशा सबसे आगे रहे और उन्होंने अधिक से अधिक कुर्बानी की।

एक निर्धन परिवार में श्री विष्णु गोंड़ का जन्म हुआ लेकिन आपने जैसा संगठन और दिलेरी का काम गोंड़-समाज में किया है वह आज इतिहास की एक घटना बन गई है। लाखों गोंड़ों को एक सूत्र में बाँधना बड़े हिम्मत का काम है। जहाँ किसी तरह की नई सामाजिक विचार-धारा की हवा तक न पहुँची हो वहाँ सबको एकाएक स्वतन्त्रता के युद्ध में हाँक देना कितने हिम्मत की बात है? भोले-भाले अपढ़ गोंडों को आजादी की बात ही समझाना कितना दुष्कर मालूम होता है। वहाँ भाई विष्णु गोंड़ ने उन्हें पक्का स्वतन्त्रता-प्रेमी सैनिक बना दिया है। ब्रिटिश शेर से जंगल के शेर को कुश्ती लड़ना सिखाया। एक तरफ हथियारों से लैस सैनिक दूसरी तरफ नंग-धड़ंग हाथ में तीर-कमान लिये हुए गोंड़। बैतूल जिले के गोंड़ों में भाई विष्णु गोंड़ ने इन्कलाब कर दिया। जान फूँक दी है। चैतनता ला दी है। उन्हें एक नई दुनिया से परिचित करा दिया है। सरकारी कर्मचारियों की हिम्मत नहीं होती है कि गोंड़-समाज से छेड़खानी करें।

अगस्त-क्रान्ति में देश में अशान्ति फैल गई। नेतागण बन्दी बना लिये गये। किसी को कुछ सूझ नहीं रहा था। बने देशभक्त चूहे के बिल में घुस रहे थे या

शेष पृष्ठ १२ पर देखिए

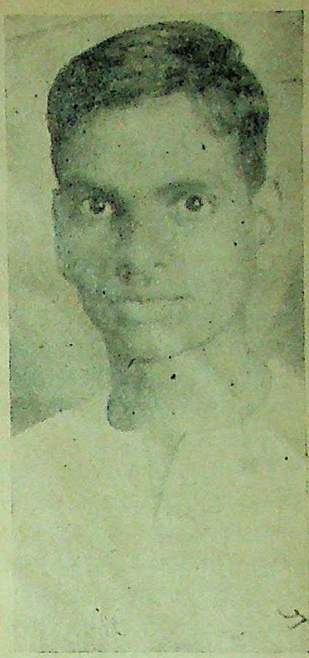

इस लेख के लेखक श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

जय बापू !

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव बी० ए० एल-एल० बी०

वृद्ध तपस्वी,
पूर्ण मनस्वी,
विश्व यशस्वी,
जय तेरी।

मुक्ति सिपाही,
सच के थाही,
कर्मठ राही,
जय तेरी।

रिपु, संगाती,
चींटी, हाथी,
सबके साथी,
जय तेरी।

दलित-विधाता,
आरत-भ्राता,
भारत-त्राता,
जय तेरी।

सत्पथ पर चल,
संयम में जल,
ध्रुव से निश्चल,
जय तेरी।

सत्य-पुजारी,
ऐक्य-भिखारी,
जन-हितकारी,
जय तेरी।

जग सहमत हो,
वन्दन रत हो,
कहता नत हो,
जय तेरी।

चहुँ दिशि गूँजे,
चहुँ दिश गूँजे,
चहुँ दिश गूँजे,
जय तेरी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्चर्यजनक किन्तु सत्य

उलटे पैरों से पैदल संसार-यात्रा!

मिस्टर विंगो की संसार-भ्रमण की आश्चर्य-जनक और मनोरञ्जक कहानी

लेखक, एक पत्रकार

आश्चर्यजनक और साहसपूर्ण कार्यों के लिए अमरीकन दुनिया में [illegible] हैं। वह कुछ न कुछ ऐसा काम करते रहते हैं जिनसे जनता में विशेष [illegible] उत्पन्न होता है। लोगों ने पैदल, साइकिल, मोटर आदि से संसार की [illegible] की हैं लेकिन मिस्टर विंगो ने उलटे पैरों चलकर संसार की यात्रा की है। [illegible] बड़े ही आश्चर्य की घटना है। इस लेख में मिस्टर विंगो की आश्चर्य जनक [illegible] का मनोरंजक वर्णन किया गया है। लेख सुन्दर, मनोरंजक और पठनीय है।

अभी तक हम पैदल या साइकिल पर संसार-यात्रा की कथायें सुनकर चकित होते रहे हैं लेकिन अब उससे भी अधिक आश्चर्यजनक उलटे पावों से संसार-यात्रा करने की कथा है।

हर एक को एक तरह की लत होती है, धुन होती है। जिसे लत सवार हुई; वह उसके पीछे ही पड़ जाता है। अमेरिकन अपनी धुन में अभी तक बड़े पक्के साथ ही अपने उमङ्ग, उत्साह और जीवट के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। इतना ही नहीं वहाँ तो इस तरह की चीजें खेल की वस्तुएँ बन गई हैं। एक दूसरे को चैलेंज करते रहते हैं और होड़ लगाई जाती है।

अमेरिका के मिस्टर विंगो ऐसे ही दुस्साहसी और धुन के पक्के व्यक्ति हुए हैं। उन्होंने उलटा चलना सीखा और फिर एक लम्बी यात्रा भी कर डाली। इस यात्रा में मिस्टर विंगो को पूरे दो वर्ष लग गये। वह अमेरिका के हेक्साज प्रदेश से उलटे पाँव चलकर न्यूयार्क पहुँचे और वहाँ से जहाज द्वारा यूरोप पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने समस्त यूरोप महाद्वीप की यात्रा उलटे कदमों चलकर कर डाली।

अपनी यात्रा की समाप्ति पर उन्होंने स्वयं अपने समस्त अनुभवों को संसार के सम्मुख प्रकट किया।

धीरे-धीरे उनके विश्राम-गृह की हालत अत्यन्त खराब होने लगी और अन्त में एक दिन दिवालिये की उपाधि ग्रहण करके उन्हें उसे बन्द करने के लिए मजबूर होना पड़ा। वह मारे मारे फिरने लगे। घूमते-घूमते एक दिन फोर्टवर्थ नगर के वार्षिक 'पशु-प्रदर्शनी' के अधिकारियों से उनकी भेंट हो गई। वे लोग ऐसे व्यक्ति की खोज में थे जो ढिंढोरा पीट पीटकर उनकी पशु-प्रदर्शनी का अच्छा विज्ञापन कर सके।

"आप लोग ऐसे व्यक्ति में किस प्रकार की विशेषता चाहते हैं।" मिस्टर विंगो ने डरते डरते अधिकारियों से प्रश्न किया।

"भाई, हम तो चाहते हैं कि हमारी प्रदर्शनी की ओर लोग आकर्षित हो जायँ।" विज्ञापन-मैनेजर ने सरलता से उत्तर दिया। "हाँ आपको एक बात बताऊँ। आप हमारी पशु-प्रदर्शनी का विज्ञापन अपनी पीठ पर लटका लें और इस प्रान्त के प्रमुख प्रमुख नगरों में उलटे पैरों अर्थात् पीछे की ओर चलकर घूम आवें। बस हमारा काम हो जायगा।"

मिस्टर विंगो पहले तो सन्नाटे में आ गये क्योंकि यह विचित्र और पागलों का-सा काम था। परन्तु मरता क्या न करता के अनुसार उन्होंने उसे स्वीकार कर लिया। उन्होंने उस काम को पूरा किया। पारिश्रमिक देते समय प्रदर्शनीवालों ने पारिश्रमिक दिया और उसके साथ साथ उनका मजाक भी उड़ाया।

"अच्छा, मि० विंगो यह तो बताइए कि आप इस तरह पीछे की ओर चलकर अधिक से अधिक कितनी दूर जा सकते हैं?" उन्होंने प्रश्न किया।

"समुद्र की होड़ तो मैं कर नहीं सकता लेकिन रोज संसार भर में कहीं भी इसी तरह पीछे घूमकर जा सकता हूँ।" मि० विंगो ने हँसते हुए जवाब दिया। काफी दिनों तक लगातार उलटे चलने से उनकी टाँगें इसकी अभ्यस्त हो चुकी थीं कि अब उनको इस तरह अपने रोजगार को बढ़ाने की सूझी।

उन्होंने सोचा कि जब 'उलटे पैरों' चलकर रुपया पैदा किया जा सकता है फिर क्यों न इसे कार्यान्वित किया जाय। यह सोचकर उन्होंने एक सप्ताह बाद पीछे की ओर चलकर यात्रा करने का निश्चय कर डाला।

लगभग दो वर्षों तक बराबर ये इस तरह यात्रा करते रहे। हाँ, चलते समय इन्हें रंगीन चश्में का व्यवहार अवश्य करना पड़ता था। इस चश्में में दो छोटे छोटे आईने लगे होते थे। इन आईनों के द्वारा उन्हें भवनों, बनों, पर्वतों, वृक्षों, उपवनों, मनुष्यों और पशु-पक्षियों आदि के उलटे स्वरूप देखने और पहचानने की आदत पड़ गई थी। यहाँ तक कि उन्हें स्थान स्थान पर लगे हुए साइनबोर्डों को उनकी विपरीत दिशा में—दाहनी ओर से बाईं ओर पढ़ने की आदत डालनी पड़ी।

ट्रेक्साज से चलने पर उन्हें अपने ऊपर इतना विश्वास हो गया था कि वे अपनी आजीविका उपार्जित कर सकेंगे और ऐसा ही हुआ। जब चलते चलते किसी शहर में पहुँचते तो वह सर्वप्रथम उस शहर के थियेटर और सिनेमा-गृह के संचालकों से जा मिलते, उनको अपने करतब का परिचय देते और अपनी सेवाओं को ग्रहण करने का अनुरोध करते। मि० लुंग उनके विज्ञापनों को नगर की प्रमुख सड़कों पर 'पीछे की ओर' चलकर घुमाने के लिए अपनी तत्परता से लोगों का ध्यान बरबस अपनी ओर खींच लेते। उनकी इस विचित्र सेवा के लिए उन्हें उचित मजदूरी मिलती। इस तरह उनकी आय आवश्यकता से अधिक होने लगी।

अपने दो वर्षों के भ्रमणकाल में मि० विंगो ने काफी रकम इकट्ठी कर ली। इनकी काफी आय तो पुरस्कारस्वरूप होती थी। जहाँ भी जाते वहाँ के अनेकों सज्जन उनकी इस विपरीत गति को देखकर बहुत आश्चर्यचकित होते और जबरदस्ती कुछ न कुछ धन अवश्य भेंट करते।

मि० विंगो हमेशा अपनी पीठ पर एक साइनबोर्ड लटकाये रहते जिस पर लिखा था—"उलटे पैरों संसार यात्रा।" जब आप यूरोप पहुँचे तो वहाँ आपको इस वाक्य को यूरोप में प्रचलित एक दर्जन से अधिक सभी भाषाओं में अनुवाद कराकर लिखाना पड़ा।

मि० विंगो हर जगह के लिए एक आश्चर्य की वस्तु बन गये थे। बच्चे इन्हें देखकर बहुत प्रसन्न होते। वे सैकड़ों की तादाद में सड़कों के मोड़ पर जमा हो जाते और उन्हें देखते ही अपने घरों को दौड़ जाते और इस विचित्र जन्तु का हाल अपनी माँ से कहते। माताएँ अपनी पड़ोसिनों से कहतीं और पड़ोसिनें अपने पतियों से। इस तरह उनके शहर के एक कोने में पहुँचने के पहले ही उनका खासा अच्छा विज्ञापन हो जाता। उनका उलटे पाँवों चलना वहाँ सनसनी फैला देता।

इतना ही नहीं मि० विंगो कुत्तों के लिए भी एक विचित्र जन्तु बन गये थे। वे उन्हें देखते ही सावधान हो जाते और विचित्र तरीके से भूँकने लगते। कभी कभी तो छोटे बच्चे इनकी विचित्र हरकत को देखकर डर जाते और भागकर घर में छिप जाते।

आपको ताज्जुब होगा कि शिकागो में जो संसार भर का सबसे अधिक व्यस्त नगर माना जाता है वहाँ तो आपके लिए ग्यारह बार पुलिस को आना पड़ा। अन्त में उन्होंने परेशान होकर आपके साथ अपना एक आदमी कर दिया। इस तरह आपको एक रक्षक मिल गया। जनता आपका मजाक उड़ाने का प्रयत्न करती, परेशान करती और तरह तरह के अजीब व गरीब प्रश्न करती।

पेन्सिलवेनिया प्रदेश के एक गाँव में तो एक अजीब ही बात हो गई। इस प्रदेश में मि० विंगो पहुँचे नहीं कि एक कुत्ता उनकी ओर तेजी से झपटा और उनकी टाँगों को सूँघ कर बेतहाशा इधर-उधर दौड़ने और भोंकने लगा। इसके फलस्वरूप मि० विंगो के गाँव में पहुँचने के पूर्व ही इन कुत्तों ने जो बहुत से गुट बनाकर इकट्ठे हो गये थे आक्रमण कर दिया।

"एक···दो···तीन···बारह···अठारह बीस।" वे पूरे [illegible] उन्होंने गिना कुछ जो अधिक साहसी थे उनके पास आये और शेष दूर से [illegible] कर भोंकते थे। शुभ इतना ही [illegible] उन्होंने मि० विंगो पर आक्रमण [illegible]

और वह पहला कुत्ता—[illegible] जवान भी न हुआ था—[illegible] मील तक लगातार उनका पीछा [illegible] रहा। उनको आश्चर्य हुआ कि [illegible] चुराने के अपराध में चालान [illegible] गये। उनको कितने ऐसे भी कुत्ते [illegible] जिन्होंने उनकी ओर दृष्टिपात भी [illegible] किया। कुछ ऐसे भी मिले जो [illegible] देखकर फिर चुप पड़े रह जाते। [illegible] कहना है कि उनको अपनी दो [illegible] महाद्वीपों की लम्बी यात्रा में [illegible] तरफ कोई भी ऐसा आदमी न [illegible] एक बार देखते ही उनकी ओर [illegible] न हुआ हो।

यदि कोई कुत्ता अकेले उन्हें [illegible] करता तो वे खुश होते क्योंकि [illegible] कुत्तों के साथ रहने में उन्हें [illegible] मिलता और वे उनकी हिफाजत के [illegible] आते। कभी-कभी तो ऐसा भी [illegible] उनको रात सड़क के किनारे ही [illegible] पड़ती। इसलिए वे अपने साथ एक [illegible] सा कम्बल रखते थे। खाने पीने के [illegible] भी थोड़ा बहुत सामान रखते ही थे [illegible] आवश्यक ही था। लेकिन खाने पीने [illegible] सामान हमेशा ताजा ही खरीदते थे।

शेष पृष्ठ १४ पर

Cool
Refreshing
Fragrant

शीतल और सुरभित

गर्मी के प्रति तुम्हारा सहायक है

गर्मियों में थकावट [illegible] करने के समय आप अपने [illegible] और गर्दन पर टाटा का ओ [illegible] कोलोन लगा लीजिये। इस [illegible] तीक्ष्ण शीतलता तुम्हें ताजा [illegible] देगी और तुम्हारी थकावट [illegible] दूर करेगी। यह तुम्हें [illegible] ताज़ा और सुरभित रखेगी। [illegible] आज ही अपने प्रयोगार्थ एक [illegible] मोल लीजिये।

टाटा का ओ डी कोलोन

दी टाटा आयल मिल्स कं०, [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by eGangotri Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS and Chennai and eGangotri

बच्ची का चम्मच

लेखक, श्री मन्मथनाथ गुप्त

दैनिक-जीवन की घटनायें मानवमात्र के लिए कभी अभिशाप सिद्ध होती हैं और कभी वरदान। बचपन में मालती ने चम्मच चुराया जो जीवन में उसके लिए अभिशाप बन गया। यह सुन्दर कहानी मनोवैज्ञानिक और मानव-जीवन की वास्तविक घटनाओं पर आधारित है जो हृदय पर एक मार्मिक अनुभूति छोड़ जानेवाली है।

इस कहानी के लेखक और प्रसिद्ध समाजवादी श्री मन्मथनाथ गुप्त

(१)

एक चम्मच खो गया है। चम्मच खो गया बच्ची के अन्नप्राशन के दिन बच्ची की मौसी ने उसे प्यार के मारे जो उपहार में दिया था, वह खो गया। इस प्रकार इस प्रकार की सुख-स्मृति होने के कारण घर के लोगों चम्मच बहुत प्यारा था। चम्मच खो गया तो बच्ची की माँ रेवा ने सारे मकान को बच्ची के बाप रमेश ने आल-, ड्रेसिंग, ड्राअर और खाट के नीचे सम्भव सभी स्थानों को ढूँढ़ कहीं उसका पता नहीं मिला। कौए ने चोंच में दबाकर दिया हो, इस सन्देह में दालान, के इधर तथा उधर भी आदमी दौड़े। तीनों का कमरा, खाने का ड्रेसिंग, नल के पास सर्वत्र खोज प्रत्येक कमरा, प्रत्येक कोना, सावधानी से खोज डाला कहीं नहीं मिला।

चम्मच खो गया! बाजार से खरीदा हुआ के यहाँ से बनवाया हुआ चम्मच कोई बात नहीं थी, पर यह तो प्यार से दी हुई चीज थी! खोया, यही चम्मच खोया। मामले को ठंडा पड़ने जायगा। और भी अच्छी तरह है।

मकान के प्रत्येक व्यक्ति को बुलाकर कहाँ था, किसने किससे कौन कब मकान के बाहर गया, किस कमरे में था, कौन कब किस कमरे में गया और क्यों कौन किस कमरे में कितनी देर तक था, किस काम के लिए था, मकान में आया कि नहीं; झाड़ूवाला, बर्तन माँजनेवाली कौन किस समय आया, कौन कब कौन किस कमरे में कितनी आदि बातों पर पूरी खोज फिर भी कुछ पता नहीं

इस बार बड़ी सावधानी से इस बात की गई कि नौकरानी या कोई बाहरी व्यक्ति किसी प्रकार की बातचीत या आचरण करता है कानाफूसी करता है या नहीं चेहरे पर किसी प्रकार के है या नहीं, कोई अपराधी या नहीं, कोई डरा या अथवा उन्मन मालूम होता

रेवा ने कहा—अब वह नहीं मामले को लेकर तूल-

ने कहा—मिलेगा कैसे नहीं। चम्मच का बाप। ऐसा कोई हँसी-कि चम्मच चोरी चला जाय!

फिर से शुरू हुई। बड़ी खोज, बातों, बड़े विश्लेषण तथा के बाद रेवा और रमेश की यह कि इस काम माँजनेवाली सौदा-की लड़की मालती ने

बीच बीच में अपनी माँ के करती है। कभी-कभी माँ के काम में मदद करती है, कभी रेवा को किसी काम में मदद देती है। रेवा भी बीच-बीच में उसे कुछ खाने को दे देती है; कभी-कभी तो दो-चार पैसे भी दे देती है। आखिर इसी लड़की ने चम्मच चुराया है।

तो इसमें अचरज की ऐसी क्या बात है? जिस संगति में वह पल रही है तथा जिस दशा में उसका जीवन बीत रहा है, उस दशा में थोड़ा लोभ होना कोई अचम्भे की बात नहीं है। फिर भी इसे प्रोत्साहन नहीं दिया जा सकता। चोरी चोरी ही है। इसकी उचित व्यवस्था करनी पड़ेगी। नहीं तो न तो इस घर का ही मंगल है और न समाज का। सन्देह पक्का होते ही मालती बुलाई गई। मालती की माँ भी बुलाई गई। उन लोगों ने इनकार किया। अच्छी

"क्या कहती हो? चोरी माने चोरी, चाहे वह बच्चा हो चाहे बच्ची। उचित सज़ा मिलनी चाहिए।"

रेवा की आँखें छलछला आईं। पुलिस आई और उन लोगों को हिरासत में लेकर उनके मकान में पहुँची। वहाँ सौदामिनी के एक फटे पैबंददार तथा मैले तकिये के नीचे से वह चम्मच बरामद हुआ। छोटे दारोगा दोनों को थाने ले गये।

मुकदमा हुआ। हाकिम ने नाबालिग अपराधी के नाते एक मामूली सजा की तजवीज करते हुए दारोगा जी से कहा—जरा लड़की को धमका-धुमकाकर छोड़ देते, यहाँ लाने की क्या जरूरत थी? देख नहीं रहे हो डर के मारे बच्ची का चेहरा सूखकर इतना सा हो गया है। गरीब की लड़की है,

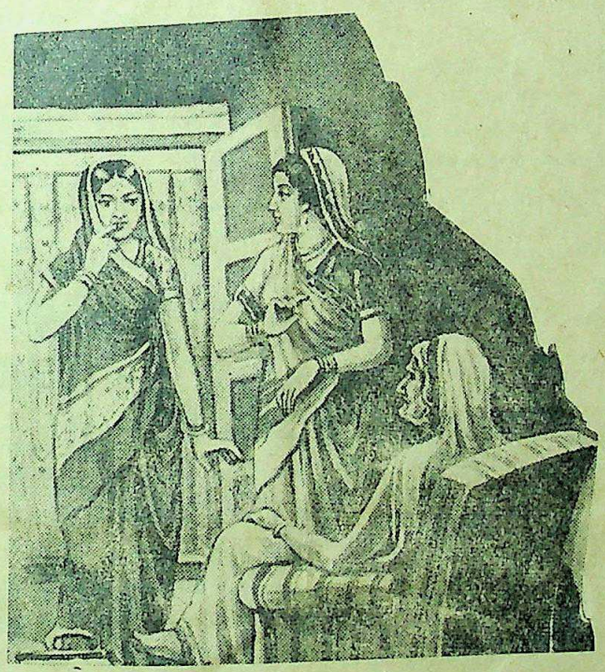

बच्ची की माँ रेवा ने कहा—कैसे ताज्जुब की बात है, चम्मच चला कहाँ गया?

तरह समझ में आ गया कि दोनों बहुत डर गई हैं। इधर पुलिस को भी खबर दी गई और न मालूम कब वह आ जाय।

सौदामिनी और मालती के त्रस्त चेहरों को देखकर रेवा ने पति से कहा—देखो सब समझ में तो आ ही गया कि इन्होंने ही लिया है। अब इसे लेकर बखेड़ा न खड़ा करो। कहीं पुलिस आकर इन पर मार-पीट न करे...

रमेश ने कहा—करने दो। समाज की इन कुरीतियों को कभी अबहेला की दृष्टि से नहीं देखनी चाहिए। रवीन्द्रनाथ ने कहा है कि जो अन्याय करता है तथा जो अन्याय सहता है, वे समान रूप से दोषी हैं, क्या तुम्हें याद नहीं है?

"फिर भी उस बच्ची का चम्मच

इतना लोभ होना कोई ऐसा भारी जुर्म नहीं था।

छोटे दारोगा ने कहा—हजूर मेरी भी ख्वाहिश नहीं थी। उसकी माँ ने बहुत दिनों तक मेरे यहाँ भी काम किया था, कभी इतनी सी चीज नहीं गई। पर जब बयान हो गया, माल बरामद हो गया तो मैं ही क्या कर सकता था?

(२)

पन्द्रह साल बाद।

लाहौर का लछमनझोला बैंक लिमिटेड ने एकाएक टाट उलट दिया। बात की बात में बैंक के सामने हजारों की तादाद में लोग अपना अपना जमा रुपया निकालने के लिए इकट्ठा हो गये। कहीं जनता [illegible] होगा, इसलिए पुलिस भी आ गई। शहर में कुहराम मचा हुआ है। कितने ही धनी, व्यापारी, जमींदार, मामूली गृहस्थ भय से अकड़े हुए खड़े हैं कि किसी प्रकार बैंक के मैनेजर से भेंट हो और मालूम हो कि रुपये मिलेंगे कि नहीं? सबके चेहरों पर आतंक है। जिन लोगों ने विश्वास करके अपना सारा जमा-जत्था बैंक के हवाले कर रक्खा था, उन्हीं की हालत सबसे खराब है। बैंक के फेल हो जाने से कदाचित् उन्हें रास्ते का भिखारी बन जाना पड़े। कितनी ही बेवायें अपनी सारी रकम इसमें जमा रख कर उसी के सूद से किसी प्रकार दिन काटती थीं। इस विपर्यय के कारण वे बेचारी तो कहीं की नहीं रहेंगी। शायद उन्हें दर-दर भीख माँगनी पड़े।

इस भीड़ में से एक भले आदमी, देखने से बंगाली जान पड़ते हैं, हाथ में एक छोटा सा सूटकेस लेकर बैंक से बाहर आये और रास्ते में चलने लगे। भीड़ ने उनको घेर लिया। लोग पूछने लगे—मामला क्या है साहब? कुछ उम्मीद है?

"वाह उम्मीद क्यों नहीं है। धीरज रखिए, मैनेजर हिसाब देख रहे हैं, शायद सबको कुछ न कुछ मिले।"

क्या किया जाता, सब धैर्य धारण किये रहे।

उधर वह बंगाली युवक सीधे स्टेशन पहुँचे और कलकत्ते का टिकट खरीदकर गाड़ी की प्रतीक्षा करने लगे। ज्यों ही गाड़ी आई, वे भयंकर भीड़ में तीसरे दर्जे की गाड़ी में चढ़ गये।

दो साल के अन्दर ही सदर्न एविनिउ में एक नई हवेली सिर उठाकर खड़ी हो गई। लाहौर के लछमनझोला बैंक के सहकारी खजांची राधेश्याम बाबू ही इस हवेली के सौभाग्यशाली मालिक हैं।

उस बैंक के फेल होने के साथ इस हवेली की नींव रक्खे जाने का सम्बन्ध है ऐसा कुछ लोगों के मन में सन्देह होने पर भी कुछ दिनों में ही दावतों और पार्टियों के कारण यह हवेली गूँज उठी।

(३)

वह बच्ची जिसका चम्मच खो गया था अब सयानी हो चुकी है। विवाह के बहुत से पैगाम आ रहे हैं, पर कोई भी सम्बन्ध पक्का नहीं हो रहा है।

बात यह है कि राधेश्याम बाबू अभी तक कारे हैं। अब वे विवाह करना चाहते हैं। पैगाम आते हैं, पर बात पक्की नहीं होती।

रमेश ने कहा—राधेश्याम ऐसा क्या बुरा है, देखूँ जरा कोशिश करके।

रेवा ने कहा—उम्र जरा ज्यादा है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri. In Public Domain. Guruvani Foundation Collection. Harivansh

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके अलावा कुछ ऐसा पढ़ा-लिखा भी तो....।

"अधिक पढ़ा-लिखा न होने पर भी मूर्ख तो है नहीं। एफ० ए० तक पढ़ा है। फिर यह भी देखना पड़ता है कि आर्थिक हालत कैसी है, मकान और दूकान भी तो है।"

"कैसे यह हवेली खड़ी हुई है, इसे तो जानते ही हो। इस रुपये में, हवेली में वे सुखी भी हो सकेंगे?"

"क्या बच्चियों की तरह बात करती हो, कुछ समझ में नहीं आता। अगर चोरी करने से ही कोई दुखी होता तो फिर दुनिया में चोरी अब तक बंद हो गई होती। यह सब फिजूल की बातें रहने दो। बिलकुल बेसिर-पैर की बातें हैं।"

"जो तुम्हारी खुशी। मैं क्या कहूँ?"

सम्बन्ध पक्का हो गया। बड़ी धूमधाम से शादी हो गई। अब बच्ची को कोई बच्ची नहीं कहता। अब वह सुमित्रा या श्रीमती सुमित्रा जी हैं।

सुमित्रा शादी के बाद ससुराल आई है। सदर्न एविनिउ के मकान में बड़ी धूमधाम, भोज तथा पार्टियाँ रहीं। सुमित्रा के साथ मालती आई है। चम्मच चोरी हो जाने के बाद सौदामिनी को निकाल दिया गया था, पर नौकरानियों का अभाव होने के कारण बड़ी डाट-डपट, गाली-गलौज के बाद फिर से दयावश सौदामिनी को रक्खा गया है। नौकरानियों के लिए मानापमान क्या है? सौदामिनी अपने पुराने मालिक के यहाँ काम करने लगी।

तब से वह पहले ही की तरह रेवा और रमेश के यहाँ काम करती आ रही है। शादी के अवसर पर माँ और लड़की ने मिलकर दस नौकरानियों का काम किया है। रेवा और रमेश ने मालती को नई साड़ी, कुर्ती आदि देकर और भी पुरस्कार का लोभ दिखाकर सुमित्रा के साथ भेज दिया है।

मालती जब से सुमित्रा की ससुराल में आई है, तब से वह बराबर छाया की तरह अपनी मालकिन की सेवा करती है। उसका सब काम करती है। इसके अतिरिक्त यह कोशिश करती है कि सुमित्रा का मन बहला रहे और उसे किसी समय माता पिता का अभाव न खटके।

विवाह की गड़बड़ खतम हो गई है। सब मेहमान विदा हो चुके हैं। सदर्न एविनिउ की ओर मुँह करके सुमित्रा और राधेश्याम बैठे हैं, पास में एक खिलौनों का बक्स रक्खा है। सुमित्रा बच्चियों की तरह उसमें से एक एक खिलौना निकालती और कुछ कहती है। शायद उसका इतिहास कहती है। इस पर बड़ी हँसी होती है।

इन खिलौनों में से एकाएक वह चम्मच भी निकल आया।

उस चम्मच को दिखाकर सुमित्रा बोली—इस चम्मच को देख रहे हैं। यह मेरे बचपन का चम्मच है। मेरे अन्नप्राशन के समय छोटी मौसी ने मुझे दिया था। वह जो मालती है न, इसने यह चम्मच चुराया था। इसलिए इसने हवालात की हवा भी खाई थी।

राधेश्याम जैसे चौंक पड़ा। बोला—अच्छा, यह बात है? ऐसी चोर है और उसे साथ में लेकर आई हो। यहाँ कितनी ही कीमती चीजें बिखरी पड़ी रहती हैं। न मालूम कब क्या चुरा ले, कुछ ठीक है?

"नहीं, नहीं, अब वह चोरी नहीं करती। वह और उसकी माँ वर्षों [illegible] घर पर रही हैं, कभी कोई चीज [illegible] गई।"

"नहीं, नहीं, कोई एतबार नहीं [illegible] घर में मैं चोर को नहीं रहने दूँगा।"

अगले दिन मालती को [illegible] मायके भेज दिया गया। सुमित्रा [illegible] छलाती आँखों से बरामदे की रेलिंग [illegible] कर मालती के यात्रा-पथ की ओर [illegible] रही।*

*एक बँगला कहानी

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

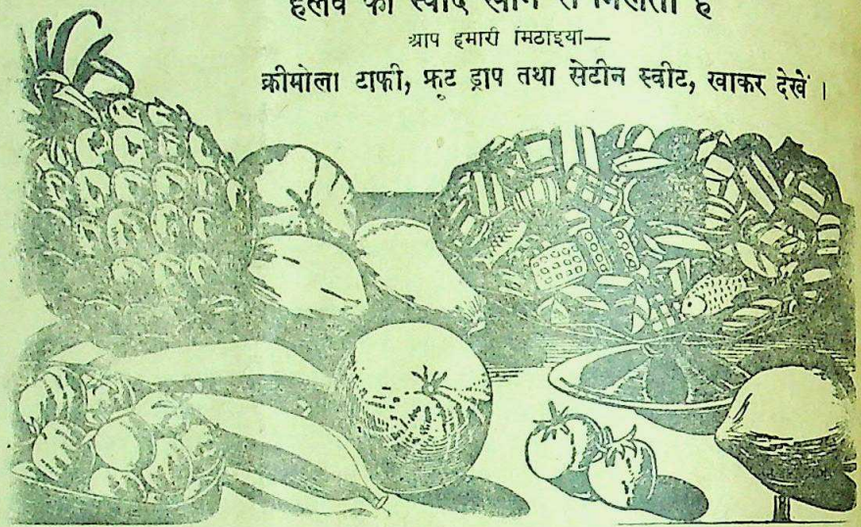

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

मेरी तरह तदरुस्ती हासिल करो

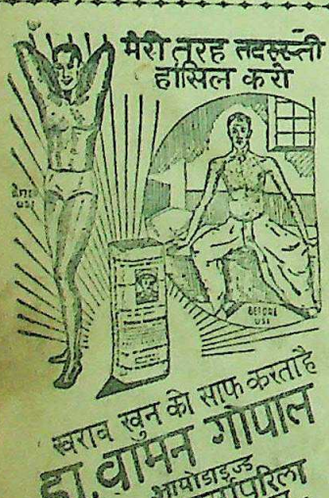

खराब खून को साफ करता है

डा. वामन गोपाल

आयोडाइज्ड सार्सापरिला

हर जगह बिकता है

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एल० एस० धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

हजामत (शेविंग) के लिये भी 'गोदरेज' साबुन का व्यवहार कीजिये!

सावधानी से बनाने की विधि, प्राकृतिक औषधियों का मिश्रण और परीक्षित [illegible] वनस्पति तेल का उपयोग ही अन्य गोदरेज नहाने के साबुन की तरह ही गोदरेज शेविंग सोप की भी विशेषताएँ हैं। इसमें उपयोग किये गये वनस्पति तेल के फेन से आपके चर्म पर किसी भी तरह की जलन नहीं होगी। इसमें दो [illegible] फायदे हैं—एक तो यह कड़ी से कड़ी दाढ़ी को मुलायम कर देता है जिससे हजामत बनाने में जरा भी [illegible] होता और दूसरा अत्यन्त कोमल चर्म को भी हजामत बनाने के बाद मुलायम और चिकना रखता है। इसके [illegible] की यह खास विशेषता है कि यह चेहरे पर जल्दी नहीं सूखता जिससे समय की बचत होती है। आप जिस [illegible] गोदरेज वनस्पति टायलेट साबुनों का उपयोग कर अपने शरीर को स्वस्थ और स्वच्छ रखते हैं उसी तरह [illegible] शेविंग साबुन—स्टिक या 'राउन्ड'—का उपयोग कर अपने चेहरे की सुन्दरता को बढ़ाइये।

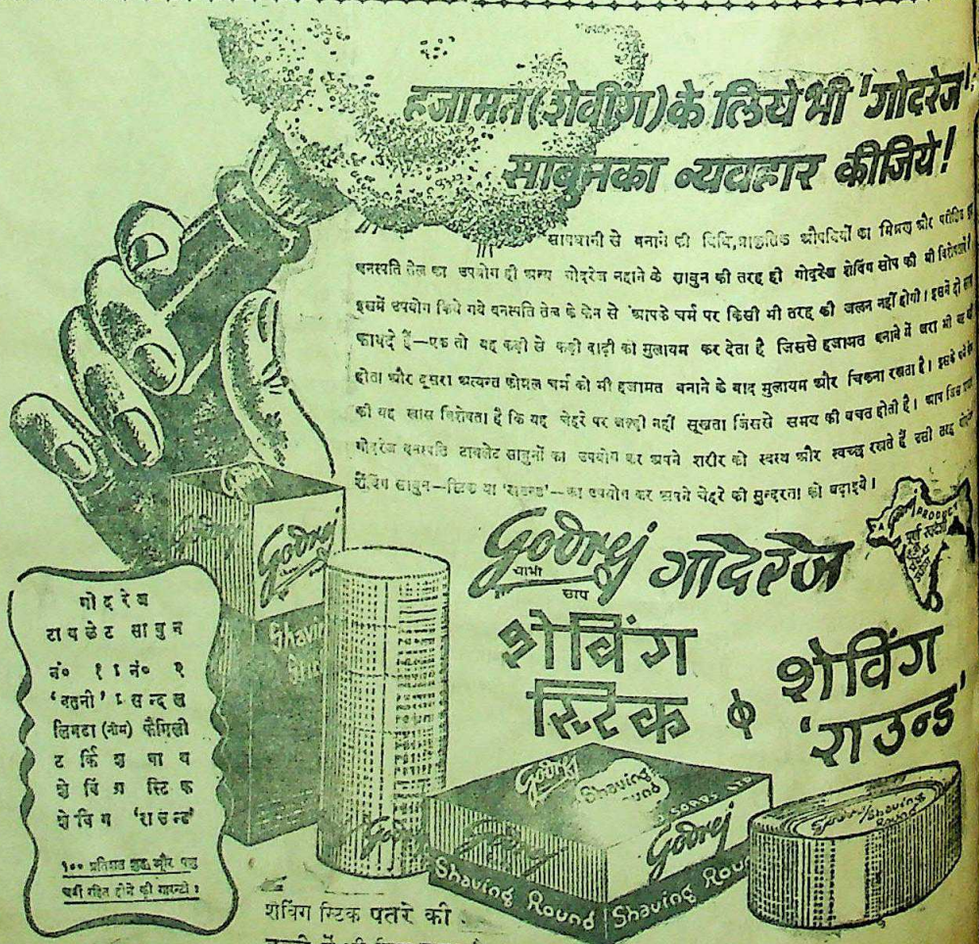

गोदरेज टायलेट साबुन नं० १ नं० २ 'वतनी' सन्दल लिमटा (नीम) फैमिली टर्किश बाथ शेविंग स्टिक शेविंग 'राउन्ड'

१०० प्रतिशत शुद्ध और पशु चर्बी रहित होने की गारन्टी।

Godrej गोदरेज

शेविंग स्टिक & शेविंग 'राउन्ड'

शेविंग स्टिक पतरे की डब्बी में भी मिल सकता है।

गोदरेज सोप्स, लि०—बम्बई : पी० ओ० जेकब सर्कल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या मातृत्व एक जीववैज्ञानिक ट्रेजेडी है ?

प्रत्येक माता को ऐसे राष्ट्र के लिए लड़ना पड़ेगा जो उसके भावी हितों का खयाल रखे

लेखिका, श्रीमती माया गुप्ता बी० ए०

इस लेख की लेखिका, विहार फार्वर्डब्लाक प्रसिद्ध कार्यकात्रों श्रीमती माया गुप्ता।

उनमें लड़कपन से ही यह धारणा कूट-कूट कर भर दी जाती है कि वे अबला हैं तथा जहाँ भी पुरुषों की इच्छा के साथ उनकी इच्छा का संघर्ष हो, वे अपनी इच्छा को दबावें। फिर स्त्रियाँ शिक्षा तथा सामाजिक चेतना में भी पिछड़ी हुई रक्खी जाती हैं।

युग-युगान्तर से स्त्रियाँ इसी प्रकार सोचती आ रही हैं और नतीजा यह हुआ कि पिंजड़ों में पाले हुए पक्षियों की तरह वे अपने परों का उपयोग भूल चुकी हैं। इनमें से कुछ तो इस प्रकार गुलाम हो चुकी हैं कि चहचहाकर कहती हैं कि पिंजड़ों का जगत् ही उनके लिए ठीक जगत् है। पिंजड़ों में बन्द रहते रहते ये सुनील विशाल आकाश के मूक निमन्त्रण को भूल चुकी हैं और वे यह नहीं जानतीं कि बहुत-से पक्षी ऐसे हैं जो इस विपुल आकाश के आनन्द को मंथन करते हुए फिरते हैं। वह यह नहीं जानती कि इच्छा करने मात्र से इनके पिंजड़ों के किवाड़े इन्हें मार्ग देने के लिए बाध्य होंगे। बस वे आत्म सचेतन होकर एक बार देखें तो !

साधारण स्वस्थ स्त्रियाँ साधारण स्वस्थ पुरुषों से न तो किसी प्रकार निकृष्ट ही हैं और न श्रेष्ठ। पुरुष या स्त्री का शरीर या मन न केवल रोग से बल्कि निरन्तर दमन तथा अवहेला से अवनति कर सकता है।

मातृत्व से न तो रोग का सम्बन्ध है, न दमन का न तो अवहेलना का। फिर इसको ट्रेजेडी किस अर्थ में कहा जा सकता है ? प्रकृति के नियम किसी भी प्राणी को स्त्रियों के प्रतिकूल नहीं हैं, फिर वे मनुष्य जाति की स्त्रियों के ही प्रतिकूल क्यों होंगे ? यदि ये नियम प्रतिकूल होते तो इनसे प्रकृतिदत्त उत्पादक तथा सृजनकारी शक्तियाँ कुंठित हो जातीं, पर ऐसा नहीं है। यदि मातृत्व ट्रेजेडी होता, तो प्रकृति यह काम स्त्रियों के सिपुर्द करती ही क्यों ? यदि फिर भी कोई कहे कि मातृत्व ट्रेजडी है तो कहना पड़ेगा कि प्रकृति ही ट्रेजडी है, जो एक हास्यास्पद बात होगी।

सच तो यह है कि मातृत्व गौरवमय है। मातृत्व के सिलसिले में हमारे समाज में आम तौर से पुरुषप्रधान समाजों में स्त्रियों को जो असुविधाएँ भोगनी पड़ती हैं और वे हमारी वर्तमान सामाजिक और आर्थिक पद्धति के कारण हैं न कि प्रकृति के कारण।

युद्ध चाहनेवाले लोग मातृत्व का दुरुपयोग करके अपने क्षुद्र स्थिर स्वार्थों के लिए लोगों को उत्साहित करते हैं, पर यह तो उसका दुरुपयोग हुआ। हम इस बात को क्यों नहीं देखते कि मातृत्व के सदुपयोग की बदौलत प्रगतिशील देश अपने को दूसरों के आक्रमणों से बचा सकते हैं। अधिक बच्चे पैदा न होते तो युद्ध न होते, यह तो उन लोगों का कहना है जो युद्ध क्यों होता है इसके असली कारणों में नहीं जाते या जाने से डरते हैं। ऐसे लोग जीवन के मौलिक सत्यों से मुँह मोड़कर कल्पना तथा वितंडावाद में आश्रय लेते हैं। ऐसे लोग तर्क के साथ बलात्कार करते हैं। ऐसे लोग मानव-जाति की विशाल जय-यात्रा में हिस्सा लेने से इनकार कर रास्ते में रह जाते हैं, और कोशिश करते हैं कि मानव-जाति को दकियानूसी तरीके से पीछे घसीटें।

प्राकृतिक रूप से मातृत्व में अगौरव का कोई भी उपादान न होने पर भी मातृत्व के साथ ऐसी बहुत सी कठिनाइयाँ तथा तकलीफें मिश्रित हो गई हैं जिनका निवारण हो सकता है। मातृत्व, उपजाऊपन, उत्पादकता प्रकृति का नियम है। मातृत्व जीवन है, बाँझपन मृत्यु। जब कि युद्ध-वादी, साम्राज्यवादी सृष्टि का संहार कर रहे हैं, मातृत्व उसकी रक्षा करता है। कोई भी शक्ति उस रोशनी का प्रतिरोध नहीं कर सकती है जो जगत् को उद्भासित करती हुई सृष्टि को चालू रखती है।

आज ऐसे पुत्र और कन्याओं का जन्म हो रहा है जो अन्याय तथा मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण की ग्लानि से इस जगत् का उद्धार करेंगे। इसी ग्लानि के कारण कुछ थोड़े से मुट्ठी भर लोग चैन की बाँसुरी बजाते रहते हैं और बाकी लोग गरीबी और अज्ञान की चक्की में पिसते रहते हैं। ये ही विद्वान् जो अपने कुतर्कों से मातृत्व को एक ट्रेजेडी बताते हैं, इन मुट्ठी भर शोषकों का पदचुम्बन करते रहते हैं, और कहते हैं ये ही लोग सफल तथा वीर हैं। फिर क्यों न ये लोग ऐसे सिद्धान्तों का प्रतिपादन करें जो इसी वर्ग के फायदे का हो ?

पर आज के इन शोषकों और शोषितों के साथ साथ कल की नवीन मानवता का जन्म हो रहा है, जो उन महापुरुषों के वाक्यों के साये में प्रतिपालित हो रही है जो शोषण के अन्तर्निहित नियमों को जान चुके हैं और इस 'सभ्यता' के खोखलेपन को जान चुके हैं जो समाज के अधिकांश लोगों को असभ्य और अमानुषिक अवस्था में रहने के लिए मजबूर करती है। यह नई पुश्त ही मानवता का उद्धार कर उसे उसके गौरव के सिंहासन पर प्रतिष्ठित करेगी। यही मातृत्व का उज्ज्वल पहलू है।

मातृत्व की अवहेलना तथा उसके साथ संयुक्त दमन के कारण ही मातृत्व आज के समाज में एक कष्टकर प्रक्रिया है। समाजवादी रूस के अतिरिक्त मातृत्व सभी देशों में एक कष्टकर प्रक्रिया है। रूस में मातृत्व किसी व्यक्ति विशेष की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि राष्ट्र की जिम्मेदारी है। दूसरे राष्ट्रों में कुछ धनी माताओं के अतिरिक्त अन्य सब माताओं के लिए मातृत्व वाकई एक कष्टकर प्रक्रिया है। ऐसे राष्ट्रों ने उत्पादन तथा युद्ध के लिए मातृत्व से फायदा तो उठाया है, पर माताओं को आराम, दवा, विश्राम तथा माता और शिशु के लिए पुष्टिकर भोजन का कम से कम प्रबन्ध किया है। इन शोषकों को तो अपने मुनाफे से मतलब है, भावी सन्तान तथा भावी पुश्त के विषय में कोई चिन्ता इन्हें नहीं है।

राष्ट्र का यह कर्त्तव्य है कि आधुनिकतम विज्ञान माताओं को जितना आराम पहुँचा सके पहुँचावे। ऐसा करने में राष्ट्र इन माताओं के प्रति किसी प्रकार का एहसान नहीं करता, बल्कि ऐसा करना तो उसका कर्त्तव्य है क्योंकि माताएँ राष्ट्र को नागरिक प्रदान करती हैं। इन्हीं नागरिकों की बदौलत ही तो राष्ट्र है।

सोवियट रूस में प्रत्येक माता को सूतिकागार की सुविधाएँ तथा दवायें आदि राष्ट्र की ओर से मुफ्त में मिलती हैं। वहाँ माताओं को पूरी तनख्वाह पर उपयुक्त समय के लिए छुट्टी मिलती है। केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, H

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही नहीं छुट्टी के बाद उसे उपयुक्त काम भी मिलता है, ऐसा नहीं कि छुट्टी के बाद वह अपने को बेकार पावे। प्रत्येक शिशु के जन्म के साथ राष्ट्र उसे और अधिक सहायता देता है, तथा शिशुशाला में बच्चों का पालन भी राष्ट्र की ओर से होता रहता है। जिस समय माँ काम पर होती है विशेषज्ञ डाक्टर तथा नर्सें शिशुशाला में बच्चे का लालन-पालन करती हैं। यों तो आज बहुत दिनों से यह स्वीकृत हो चुका है कि बच्चों के मन पर बचपन में जो रेखाएँ पड़ती हैं, उन्हीं के ऊपर बच्चे का भावी चरित्र बनता है, पर रूस ही एक ऐसा देश है जहाँ इस वैज्ञानिक तथ्य को आधार मानकर भावी पीढ़ियों का निर्माण हो रहा है। अन्य देशों में तो इस ढंग की शिशुशालाएँ केवल कुछ धनियों के शिशुओं के लिए ही खुली रहती हैं।

भारतवर्ष में तो माताओं की कुछ परवा ही नहीं की जाती, और शिशुओं की पुष्टि का कोई ख्याल नहीं किया जाता। केवल भारत की बात नहीं, भारत तो बहुत गरीब देश है, सभी देशों में कथित नीचे तबके के लोगों में माताओं और शिशुओं का यही हाल है। मजे की बात तो यह है कि यही तबका राष्ट्रीय धन का उत्पादक है। केवल समाजवादी राष्ट्रों में ही उत्पादक तबकों को सब सुविधाएँ प्राप्त हैं, इन देशों में तो परोपजीवियों का उच्छेद ही कर दिया गया है।

हमारे यहाँ वर्तमान पद्धति में माताओं की यह बेकद्री स्वाभाविक है। भारतवर्ष न केवल पूँजीवादी पद्धति का शिकार है, यहाँ तो एक दूसरी आफत भी है। यहाँ एक विदेशी गैरजिम्मेदार सरकार है जिसका एक-मात्र कार्य शोषण है। फिर यहाँ गरीबी बहुत बढ़ी हुई है, इसमें आश्चर्य ही क्या है?

पूँजीवादी राष्ट्र कुछ थोड़े से अस्पताल और शिशुशाला खोलकर रूस का अनुसरण करना चाहते हैं, पर ये थोड़ी सी दातव्य संस्थाएँ केवल जनता की आँखों में धूल झोंकने के लिए हैं। जो मकान के असली मालिक हैं, वे मकान के बाहर हैं, जो घर पर कब्जा किये हुए हैं वह उसे भीख देकर खुश रखना चाहते हैं। खूब रहा? पर इस भीख से क्या काम बनेगा? पूँजीवादी पद्धति के होते हुए कभी इतने अस्पताल नहीं हो सकते जो आम लोगों को पूरा फायदा पहुँचाया जा सके। धनी देश अमरीका का भी यही हाल है। केवल मुनाफे का एक अंश ही 'भीख' तथा दातव्य-संस्थाओं में खर्च हो सकता है। लोकतन्त्र भी नाममात्र का है। उसमें तो वोट खरीदकर वोटवालों को बेवकूफ बनाया जाता है।

प्रत्येक माता को अब यह समझ लेना चाहिए कि राष्ट्र से सब तरह की सहायता पाने का उसे हक है। उसे सुविधाएँ भीख के रूप में नहीं, हक के रूप में मिलनी चाहिए, नहीं तो समझना चाहिए इस पद्धति में भारी गलती है। प्रत्येक माता को अब ऐसे राष्ट्र के लिए संग्रामशील होना पड़ेगा जो उसके अर्थात् भावी पुश्त के हितों का ख्याल रक्खे। तभी नवनिर्माण होगा।

गोंड़ नर-केसरी श्री विष्णु गोंड़!

(पेज १२ का शेष)

भाग रहे थे। घबड़ाये हुए थे। भाई विष्णु गोंड़ ने पानी बरसते हुए में भी जंगलों में घूमना शुरू किया। अपने भाइयों को बुलाया। लगभग एक लाख गोंड़ भाई इकट्ठे हुए। सबने मिलकर तय किया कि क्या किया जाय? भाई विष्णु गोंड़ ने कहा—"आज का वक्त बहुत संकट का है। हम लोगों को हाथ पर हाथ रखकर बैठने का काम नहीं है। कुछ कर गुजरने का समय है। लेकिन आप सब यह अच्छी तरह समझ लें कि मौत से खेलना है। जान-बूझकर मौत के मुँह में जाना है। कबूल हो तो मेरे साथ आइये।" सब गोंड़ों ने एक स्वर से कहा—"हम मौत से नहीं डरते। अपनी आजादी के लिए मरना हमें कबूल है। आज से बेहतर हालत हम लोगों को पैदा करना है। बिना मरे कुछ नहीं कर सकते।"

चारों तरफ से बिगुल बज गया। जंगली कहानेवाले यह शूरमा आजादी के जंग में आ गये और श्री विष्णु गोंड़ की आज्ञा की बाट जोहने लगे। एक लाख लोगों की संख्या कुछ कम नहीं होती है।

निश्चय किया गया कि शान्ति तरीके से जो कुछ किया जा सकता है करना चाहिए। किसी को जान से नहीं मारना चाहिए। सभा के समय सरकारी कर्मचारी भी आ गये थे। लोगों ने कहा कि मुझे कपड़ा दो, खाना दो, हमारे नेताओं को मुक्त कराओ। हम रेलगाड़ियाँ नहीं चलने देंगे। सरकारी कर्मचारियों ने हर तरह से उन्हें समझाने की कोशिश की और कहा कि शान्ति रखने से सब प्रबन्ध होगा, राजनैतिक नेतागण छोड़ दिये जायेंगे, लेकिन गोंड़ जनता सरकारी भुलावे में आनेवाली नहीं थी। आखिर गोंड़ जनता ने कहा कि हम शान्ति से इन रेल-पटरियों और खंभों को उखाड़ फेंकते हैं तुम लोग शान्ति से यहाँ बैठे रहो। पुलिस बेचारी उस वक्त लाखों के बीच क्या कर सकती थी?

गोंड लोगों ने रेल की कई मील लाइन उखाड़कर फेंक दी। खंभों को नष्ट कर दिया। रेलगाड़ी का चलना कई दिन तक मुश्किल कर दिया। लाखों रुपयों का नुकसान हो गया। फौज में खबर भेजी गई। खबर मिलते ही फौजी सिपाही घटनास्थल पर पहुँचे। गोंड़ लोगों को भी खबर मिल गई कि फौज आ गई है। मशीनगन आ गई है। कई गुना शक्ति आ गई है। फिर भी गोंडों ने कहा कि हमको उनसे डर नहीं है। श्री विष्णु गोंड़ ने लोगों को समझाया कि समय नाजुक है। शान्ति से काम करना है। डी० एस० पी० को कैद करके गोंड़ लोग रखना चाहते थे लेकिन श्री विष्णु गोंड़ के बहुत समझाने-बुझाने पर उसे छोड़ दिया। भाई विष्णु ने पुलिसवालों को बचाया। बलवा होते होते बचा लिया। बड़ी बुद्धिमानी से काम किया। नहीं तो दोनों तरफ से सैकड़ों लोगों की जानें चली गई होतीं।

गोंड़ जंगलों में छिप गये। गोरिल्ला लड़ाई छिड़ गई। मौका पाते ही जंगली बहादुर गोंड़ लोग सरकारी चीजों पर छापामार लड़ाई लड़ने लगे। सरकारी लकड़ी के बड़े बड़े गोदामों को जला दिया। सरकार का कहना है कि लाखों रुपये का नुकसान हुआ। गोंड़ जनता काबू से बाहर हो गई थी। सरकारी सैनिकों से आमने-सामने खुलकर मुकाबला कर रही थी। बड़ी ही कठिनाइयों से सरकार को घोड़ाडोगरी में कामयाबी मिली। अफसरों के दाँत खट्टे हो गये। बहादुर गोंड़ लोग आजादी के हर जगहों पर लड़कर सरकार को शिकस्त दे रहे थे। यदि इन बहादुर गोंड़ों को आधुनिक गोरिल्ला-युद्ध की कला मालूम होती तो सरकार को माथा टेक देना पड़ता।

जिस बहादुर, निर्भीक श्री विष्णु गोंड़ ने कितने ही सरकारी अधिकारियों की जान बचाई और डी० एस० पी० की जान बख्शी, उसी डी० एस० पी० ने बेचारे विष्णु गोंड़ को गिरफ़्तार करके जेल भिजवा दिया। राजद्रोह का मामला चला। तरह तरह के केस कायम किये गये। भयानक से भयानक जुर्म लगाये गये। सरकारी गवाह गुजरे और सरकार को बताया गया कि विष्णु गोंड़ के कहने से ही यहाँ की जनता ने विद्रोह किया है। सरकार ने विष्णु गोंड को फाँसी की सजा दी। हाईकोर्ट से भी फाँसी की सजा बहाल रही। फाँसी देने की तिथि भी निश्चित हो गई। लेकिन देश का सौभाग्य था कि ऐसे त्यागी, साहसी और वीर देश-भक्त की अपील प्रिवी-कौंसिल में हो गई। किसी तरह से फाँसी की सजा बदल गई। आई हुई मौत लौट गई। आजन्म कारावास की सजा हो गई। बच्चे खाने के लिए मरने लगे। पत्नी को भी फाँसी की सजा हुई। छोटे-छोटे बच्चे बिलखने लगे। वह देश के पीछे अपना सब कुछ कुर्बान कर देने की प्रतिज्ञा ले चुके थे। श्री विष्णु गोंड़ की तरह कितने देश-भक्त फाँसी पर चढ़ने के लिए तैयार हैं? आजादी के असली स्रोत तो यही हैं न! लेकिन इन्हें कौन याद रक्खेगा? इनके पास कार नहीं, बढ़िया सूटकेस नहीं, अखबार नहीं, बँगला नहीं, अँगरेजी भाषा नहीं, धन का मद नहीं और न है फरेब की चाल। स्वतंत्र भारत में इन्हीं की पूजा होगी।

भाई श्री विष्णु गोंड एक बहादुर सरदार है। गोंड जाति को आज विष्णु पर गर्व है। इस पिछड़ी हुई जाति को विष्णु ऐसे बहादुर देश-भक्त को देखकर कोई उँगुली नहीं उठा सकता। गोंड जाति अपने पर अभिमान कर सकती है। विष्णु के इशारे पर गोंडों में एक अजीब जजबात उठ खड़ा होता है। वह तपे-तपाये देश-भक्त हैं। समाजवादी राजतंत्र की अभिलाषा लिये हुए अपने काम में लगे हुए हैं।

श्री विष्णु गोंड़ से मैंने पूछा—"आप लोगों की तरक्की किस राज-व्यवस्था में हो सकती है?"

उन्होंने तुरन्त ही उत्तर दिया—"वह व्यवस्था समाजवाद ही है जिसमें हमारे ऐसे पिछड़े लोगों को पूरी सुविधा और साधन मुहैया हो सकते है।"

सुभाष बाबू के लिए आपके दिल में बहुत बड़ा सम्मान है। महात्मा गांधी के प्रति वह पूरी श्रद्धा रखते हैं।

मैंने पूछा—"जेल में आपने क्या-क्या काम किया है?"

श्री विष्णु ने कहा—"भंगी बनकर कैदियों का पाखाना साफ़ किया, चक्की पीसा, झाड़ू लगाया, जेल में जितने भी काम दिये जाते थे सब करता था। मैं आजादी के लिए भारी यातनाओं को भूल जाता हूँ। मैं तो भारत की आजादी के लिए इनसे भी कष्टकर काम कर सकता हूँ। मैं एक श्रमजीवी काश्तकार हूँ और हूँ जँगली जाति का। मैं सफेदपोश नेता नहीं हूँ। मैं तो काम करना जानता हूँ। मौत आ जाय, तो लहर स्वीकार है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठक के नाम चिट्ठियां

ग्रामोद्योग का विकास

में ऊन-उद्योग को तरक्की देने के लिए
ने पहली बार प्रान्तों में मंत्रिमंडल
शासन में जिस लोक-हितकारी
का समावेश किया था उसका
स्तोष प्रभाव पास-पड़ोस के
शासन पर भी पड़े बिना नहीं
देशी रियासती शासन ने तब
अंगड़ाई ली और जनता
हिन्दुस्तान की अधिकांश
कृषि-सुधार, ग्राम-शासन
उद्योग आदि विषयों की ओर
और तब से ही वे जैसे तैसे
अपनी समस्याओं पर सोचने

रियासत ने भी इस दिशा में
कदम बढ़ाये ही उठाये हैं, लेकिन,
वर्षों के बाद यही कहा जा
सकता ऊन के उद्योग का विकास
ही जरूर सफलता मिली है।
उद्योग को तरक्की देने के लिए
का सहारा रियासत के
विभाग ने लिया उसे देखकर
कहा जा सकता है कि निस्सन्देह यह
एक सरकारी दिखावा-मात्र न
कुछ ठोस ग्रामोद्योग है जिससे
ग्रामीण जनता का मध्यवर्गी
का हल होनेवाला शोषण बन्द
सकता। इसमगाता आर्थिक ढाँचा
हो सका है और रियासत में हाथ
बुने ऊनी वस्त्रों के उत्पादन ने
प्राप्त किया है।

रियासत से प्रतिवर्ष लाख मन से भी
ऊन विदेशों को भेजा जाता है।
किसान और देहाती गड़रियों
बड़े व्यापारों ने आज तक कम से
कम दामों से सस्ते दामों पर ऊन
विदेशी कम्पनियों से बेरोक
खरीदा है। राज्य के उद्योग
ने ऊन-उद्योग को तरक्की देने के
लिये सबसे यह आवश्यक समझा
कि उत्पादक किसान रेबारी जातियों
का शोषण बन्द किया जाना चाहिए।
इसी लिए ऊन के उत्पादक
इलाकों में ऐसी केन्द्र स्थापित
की जाय जहां-जहां के गाँवों की भेड़ों
की ऊनाई करवा कर ऊन की
श्रेणी-विभागीकरण के हिसाब से की
जाय। बुला कटा ऊन देहातियों
से इन केन्द्रों के द्वारा खरीद
कर फिर विदेशी कम्पनियों से
तय करके वह ऊन उन्हें बेच
देने के ग्रामोद्योग-विभाग ने
विदेशी कम्पनियों के बीच
का कार्य शुरू किया है उसने
उत्पादक जातियों को ऊन
के ८० प्रतिशत से भी अधिक
दाम दिया है। आज मारवाड़ के
जिलों के हजारों देहातियों
को इससे सरकारी पा रही है।
ऊन की व्यवसाय-विभाग
बाहर भिजवाता है
यह अर्थ नहीं कि इससे मार-
वाड़ के निर्माण का काम
रुक ही गया है। व्यवसाय-
विभाग की लगत से अतिरिक्त
ऊन को भी बाहर भिजवाने की
व्यवस्था की है। मारवाड़ की आवश्यकता का ऊन मारवाड़ में ही रक्खा जाता है और इससे मारवाड़ के लिए कलापूर्ण और आकर्षक तथा टिकाऊ वस्त्र बनाने की योजनाएँ कार्यान्वित हो रही हैं।

मारवाड़ की बनी हुई लोई, कम्बल और पट्टू सारे हिन्दुस्तान में मशहूर हैं और कई अंशों तक वे राजपूताना, गुजरात और दक्षिण भारत एवं बङ्गाल की माँगों को पूरा करते रहे हैं लेकिन यह सब काम मारवाड़ के जुलाहों ने आज तक अपनी प्राचीन परिपाटी के अनुसार पुराने तरीकों से ही तैयार किये हैं। राज्य के व्यवसाय विभाग ने इन तरीकों में परिवर्तन लाकर उनके काम में एक नई चेतना पैदा कर दी है—कुछ दिनों तक उद्योग-विभाग ने अपने एक प्रदर्शन-मण्डल को चलते-फिरते शिक्षण शिविर के रूप में ऊन उत्पादक जिलों का दौरा करने के लिए भेजा था। इन प्रदर्शन-मंडलों ने जुलाहों के झोंपड़ों में जाकर उन्हें नये औजारों पर नये तरीकों से त्वरा और कलामय काम करने की पद्धति का शिक्षण दिया था—लेकिन प्रदर्शन-मंडल का काम जिस तेजी से चला वह प्रदर्शन के अतिरिक्त देहाती जुलाहों को नवीन कल्पना ग्रहण कर देने के लिए काफी नहीं था। नतीजा यह हुआ कि प्रदर्शन के अतिरिक्त शिक्षण का काम पूरा नहीं बन सका। व्यवसाय-विभाग ने अपनी इस भूल को कुछ समय बाद महसूस किया और अब वह १ अगस्त से मारवाड़ के १८ स्थानों में शिक्षण-शिविर स्थापित कर रही है। इन शिक्षण-शिविरों में केन्द्र और केन्द्रों के आस-पास के जुलाहों को एकत्रित करके उन्हें ऊन की कताई, बुनाई और धुलाई के नवीनतम तरीकों का ज्ञान दिया जायगा।

लेकिन जिन पुराने औजारों से ऊन की कताई और बुनाई का काम धीमी चाल से चला आ रहा था उनमें भी एक परिवर्तन लाने की निहायत जरूरत थी और खुशी के समाचार हैं कि इस विभाग ने राजधानी में एक ऐसा कारखाना भी स्थापित कर दिया है जहाँ स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार नवीन परिपाटी के चर्खे और कर्घे तैयार किये जा सकें। ये नये चर्खे और कर्घे व्यवसाय-विभाग द्वारा देहाती जुलाओं को हजारों की तादाद में प्रचार के दृष्टिकोण से लागत मूल्य की आधी कीमत में ही दिये जायँगे। यह हुई शिक्षण की बात।

लेकिन इसके अतिरिक्त इस विभाग के तत्वावधान में मारवाड़ के भिन्न भिन्न जिलों में ऊन का वस्त्र तैयार करनेवाली कई संस्थाएँ भी स्थापित की जा चुकी हैं और उनके द्वारा तैयार किया हुआ कपड़ा बाजार में पानीपत और अमृतसर के हाथ कते हाथ बुने ऊनी कपड़े की तुलना में अधिक पसन्द किया जाने लगा है। ऐसा अनुमान किया जाता है कि अगले वर्ष तक यह विभाग अपने प्रयत्नों से मारवाड़ की ही नहीं, अपितु समस्त राजपूताना और गुजरात एवं मध्यप्रान्त को हाथ कते हाथ बने ऊनी कपड़े काफी मात्रा में पहुँचा सकेगा।

अपने ढंग की यह राज्य की पहली योजना है जो इस तरह राष्ट्रीय रूप में सफल होती हुई नजर आ रही है।

प्रारम्भ के दिनों में जब यह उद्योग-विभाग कायम किया गया था उन दिनों शान्ति-निकेतन के भूतपूर्व अध्यापक श्री गिरिवरसहाय को सरकार ने ग्रामोद्योग के विकाश के लिए निमंत्रित किया था, लेकिन स्थानीय परिस्थितियों से अपरिचित होने के कारण उन्हें असफल होकर लौट जाना पड़ा। इसके बाद एक एक करके कई अधिकारी इस पद पर कार्य करने को आते रहे लेकिन वे अपने अराष्ट्रीय दृष्टिकोण और अनुभव की कमी से ग्रामोद्योग को विकास नहीं दे सके—लेकिन श्री किशनपुरी ने इस काम को बहुत अंशों तक आगे बढ़ाया है। जहाँ तक ऊन-उद्योग का सम्बन्ध है वहाँ तक उनका कार्य ठेठ देहातों में पहुँचकर बहुत अंशों में सफल और लोकप्रिय हुआ है लेकिन ऊन के उद्योग तक ही सारे ग्रामोद्योग सीमित नहीं हो जाते। और भी बहुत से ग्रामोद्योग अभी तक अछूते ही पड़े हैं और यदि इसी तरह लगन के साथ प्रयत्न किया जाय तो उनके विकास के लिए भी बहुत कुछ किया जा सकता है। अच्छा हो यदि श्री किशनपुरी एक बार वर्धा जाकर प्रोफेसर कुमारप्पा की भगनवाड़ी देख आयें उसके अनुसार अपने विभाग का विकास करने का प्रयत्न करें।

अगस्त के अंत में वर्धा में कांग्रेसी प्रान्तों के ग्रामोद्योग मंत्रियों का एक सम्मेलन बुलाने का निश्चय किया गया है और अखिलभारतीय ग्रामोद्योग-संघ के प्रधान मंत्री श्री जे० सी० कुमारप्पा ने इस आशय का आवेदनपत्र सभी प्रान्तों के संबन्धित मंत्रियों के पास विचारार्थ भेज दिया है कि उन प्रान्तों में ग्रामोद्योग का विकास किस तरह किया जाय। इस सम्मेलन में गांधी जी भी उपस्थित होंगे और प्रान्त-मंत्रियों को अपने अमूल्य सुझाव देंगे। बहुत अच्छा हो यदि भारत की प्रमुख रियासतें भी अपने उद्योग-विभाग के मंत्रियों को वहाँ उस सम्मेलन में भेजें और ग्रामोद्योग के लिए नई प्रेरणा और नये सुझावों के अनुसार अपनी रियासतों में काम कर सकें। मारवाड़ के उद्योग-विभाग के संचालक श्री पुरी से हमारा अनुरोध है कि वे वर्धा के सम्मेलन में जायें और जिस तरह मारवाड़ में ऊन-उद्योग का उन्होंने विकास किया है उसी तरह अन्य ग्रामोद्योगों को भी आगे बढ़ाने में दिलचस्पी लें।

चाँदबावड़ी —शोभालाल बियाणी
जोधपुर बी० काम०

* * *

सागर में विश्व-विद्यालय

शिक्षा मानव-जीवन का प्रमुख अङ्ग है। बालक को शिक्षा दे दो फिर ऐसी कौन सी बात रह जाती है जो उसे न दे दी गई हो, लेकिन शिक्षा हो ऐसी, जो बालक के भावी विकास में सहायक हो। दुर्भाग्य से हमारे इस अंग की भारतवर्ष में बड़ी अवहेलना की जा रही है। ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत और खासकर भारतवर्ष में जो शिक्षा-प्रणाली प्रचलित है वह मानव-जीवन में किसी तरह से उपयोगी न होकर प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में दफ्तरों की शोभा बढ़ानेवाले बाबुओं को पैदा करने तक ही सीमित है।

उचित शिक्षा-प्रणाली का उद्देश्य यही होना चाहिए कि वह प्रत्येक बालक की अभिरुचि, मनोदशा एवं बौद्धिक क्षमता को दृष्टि-कोण में रखते हुए उसके योग्य खाद्य-सामग्री जुटाने में सहायक होकर अपने अन्तस्तल में एक होनहार वकील के चिह्न प्रस्फुटित करनेवाले को एक कुशल वकील, चित्रकार को चित्रकार, डाक्टर को डाक्टर तथा एक वैज्ञानिक को वैज्ञानिक के रूप में तैयार कर सके।

डाक्टर सर हरीसिंह जी गौर ने अपने विगत जीवन में विभिन्न देशों का भ्रमण कर शिक्षण के इस रहस्य को भली भाँति समझ लिया है और अपने इस व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर सागर विश्वविद्यालय में इस तरह की शिक्षा-पद्धति प्रचलित करने का प्रबन्ध किया है ताकि उपर्युक्त सिद्धान्त की हत्या न होने पावे और यहाँ से निकले हुए स्नातक इस विश्वविद्यालय की उपाधियाँ प्राप्त करने के बाद अपने साथ ली हुई विशेषताओं को सही रूप में सार्थक कर सकें जिसके फलस्वरूप इस देश को अपने ढङ्ग के परमोत्तम कलाकार, अद्वितीय कानून-विशारद, सफल मूर्तिकार एवं उच्च कोटि के वैज्ञानिक प्राप्त होने में लेशमात्र भी कठिनाई न हो। इस तरह की शिक्षा देने के लिए अपने विचारों के अनुकूल विद्याविशारदों को प्राप्त करने के लिए डाक्टर सर हरीसिंह जी गौर विशेष रूप से प्रयत्नशील हैं। उनकी शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविख्यात प्रसिद्धि होने के कारण भारत-सरकार तथा प्रान्तीय सरकार ने उनकी प्रतिभा पर पूर्ण विश्वास रखते हुए आर्थिक सहायता प्रदान की है और अपने विचारों के अनुकूल कार्य आगे बढ़ाने के लिए डाक्टर साहब को पूर्ण स्वतन्त्रता दे दी है, परन्तु उनके इस महान् कार्य को सफल बनाने के लिए उन्हें अपने विचारों के अनुकूल सहयोगियों की आवश्यकता है, ताकि भारत के केन्द्र स्थित इस सागर शहर में नया विश्वविद्यालय पूर्ण सजीवता के साथ स्थायित्व को प्राप्त कर सके।

डाक्टर सर हरीसिंह जी गौर ने इस विश्व-विद्यालय में इंटर साइंस, इंटर आर्ट्स, बी० ए० साइंस बी० ए० आर्ट्स के साथ ही साथ कुछ ऐसे उद्योग-धन्धे भी विद्यार्थियों को सिखाने का प्रबन्ध किया है जिनकी सहायता से यहाँ से निकले हुए विद्यार्थी घरेलू उद्योग-धन्धों को प्रोत्साहन दे सकें। इसके साथ ही साथ यहाँ यह बतला देना भी अप्रासंगिक न होगा कि सागर को भारत-सरकार की ओर से हवाई अड्डा बनाने की कार्रवाई की जा चुकी है और इस विश्व-विद्यालय में हवाई शिक्षा का भी समुचित प्रबन्ध किया गया है। इस शिक्षा को प्राप्त करनेवालों की आयु १७ और २७ वर्ष के मध्य की होनी चाहिए और डाक्टरी रिपोर्ट के अनुसार उनका शरीर स्वस्थ होना चाहिए। इस शिक्षा की अवधि ६ माह तक की होगी और विश्व-विद्यालय में भर्ती होनेवाले विद्यार्थियों को भी प्रतिदिन कुछ समय के लिए यह शिक्षा देने का प्रबन्ध किया जायगा। जो विद्यार्थी इस विश्व-विद्यालय में भर्ती होना चाहते हैं, उन्हें अपने आवेदन-पत्र में इस बात का जिक्र करना होना कि वे हवाई शिक्षा लेना चाहते हैं या नहीं, दूसरे कालेजों के विद्यार्थियों को उसे प्राप्त करने के लिए सागर विश्व-विद्यालय के वाइस चान्सलर की स्वीकृति लेनी आवश्यक होगी।

२१ माल —पद्मनाभ तैलंग
सागर कैंट

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उलटे पैरों से पैदल संसार-यात्रा !

(पेज ८ का शेष)

तथा अन्य भारी वस्तुएँ मि० विंगो पहले ही आगे भेज दिया करते थे। और उनका प्रयत्न रहता था कि साथ में कम से कम सामान रखा जाय।

"क्या आप बराबर उलटे ही चलते हैं? जब आपको कोई भी नहीं देखता तब भी? अकेले पड़ जाने पर आप सीधा चलकर लोगों को धोखा तो नहीं देते?" आदि तरह तरह के प्रश्न अक्सर मि० विंगो से पूछे जाते। उनके लिए किसी को धोखा देना सम्भव ही कैसे था।

एक तो उनको अकेले चलने का मौका ही बहुत कम मिलता क्योंकि हमेशा कोई न कोई उनके साथ ही बना रहता। फिर सबसे बड़ी बात तो यह कि उनकी टाँगें उलटी चलने की इतनी अभ्यस्त हो चुकी थीं कि उनका सीधा चलना अत्यन्त ही कठिन था। कितने लोग तो छिप छिपकर सी० आई० डी० के रूप में दूर तक उनका पीछा करते। रोज उनसे कितने ही पत्रकार एवं संवाददाता मिलते रहते। उनके किसी गाँव में पहुँचने की खबर पहले ही समाचारपत्रों द्वारा वहाँ फैल जाती। फिर उनका साइनबोर्ड 'एराउंड वर्ल्ड बैकवर्ड' तो हमेशा उनकी पीठ पर रहता ही।

इस तरह यदि वे कभी भी किसी को धोखा भी देना चाहते तो तुरन्त गिरफ्तारी में आ जाते। फिर उन्होंने यह काम किसी स्वेच्छावश ही अपने ऊपर लिया था और उनको सीधे चलने के लिए कोई मजबूर भी तो नहीं कर रहा था। हामबर्ग (जर्मनी) में तो आपके कारण बड़ी सनसनी ही फैल गई। जब उलटे चलते चलते उन्होंने हामबर्ग में प्रवेश किया, तो उन्हें शुरू-शुरू में शहर में कोई दिखाई ही न पड़ा। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ; पर थोड़ी ही दूर आगे बढ़ने पर उन्हें कुछ पुलिस कर्मचारी मिले जो उन्हें राह बताने के लिए पहले ही से नियुक्त थे। वे उन्हें किसी विशेष रास्ते की ओर ले जाना चाहते थे। वे उस रास्ते से जैसे जैसे आगे की ओर बढ़ते जाते थे उनके साथ चलनेवालों की संख्या भी बढ़ती जाती थी और थोड़ी ही देर में एक विशालकाय जुलूस उनके साथ हो गया। आगे चलने पर उन्हें मालूम हुआ कि एक विशालकाय जनसमूह एक बड़े से मैदान में इकट्ठा होकर उनका इन्तजार कर रहा था।

जब वे उसके बिलकुल निकट पहुँचे तो उनमें से एक आदमी आगे बढ़कर आया और उसने अँगरेजी में उनका अभिवादन किया। इस दुभाषिये की सहायता से उपस्थित जनता ने उनका स्वागत सत्कार किया। कुछ ने तो उनके उलटे चलने की फिल्म भी ली और उपस्थित जन-समूह बराबर हर्ष-ध्वनि करता रहा। उनका स्वागत इस तरह किया गया जैसा कि एक प्रतिष्ठित नेता अथवा किसी वीर पुरुष का होता है।

बर्लिन और पेरिस में भी उनका खूब स्वागत किया गया। पेरिस में तो एक लारी भर सेवा दल ताओं, पत्र-प्रतिनिधियों ने दो दिन तक उनके साथ रहकर उनके चित्र और फिल्म लिये। और तरह तरह के इन्टरव्यू लेते थे। यहाँ तक कि पेरिस की प्रथानुसार वहाँ की अनेकों फ्रेंच युवतियों ने स्वयं उनका चुम्बन लिया और अनेकों आशिक मिजाजों ने उसके चित्र भी लिये।

गान

लेखक, श्री आरसीप्रसादसिंह

अश्रु की श्यामल घटा में
दिव्य तेरा रूप झलका इन्द्रधनु बनकर।
याद की बिजली चमकती है जहाँ,
प्रेम की वर्षा न रुकती है जहाँ;
उस सलोने देश के वासी, रहो,
बादलों में आग लगती है जहाँ।
आ रहे झोंके मधुर
पुरवा हवा के, और सुख की चाँदनी बन कर!

कुस्तुनतुनियाँ (टर्की) में तो उनका स्वागत एक विचित्र ही प्रकार से हुआ। प्रातः उन्होंने शहर में प्रवेश किया और कुछ ही दूर चलने पर उन्हें एक पुलिस-मैन अपनी ओर आता दिखाई पड़ा। पास पहुँचते ही उसने एकदम से तरह तरह के प्रश्न करने शुरू कर दिये। पर उसकी भाषा भिन्न होने से मि० विंगो उसकी बातें जरा भी नहीं समझ सके। वे आगे बढ़ते ही गये। पुलिस-मैन बड़बड़ाता रहा। उन्होंने अपनी स्थिति स्पष्ट करने के लिए अपने पासपोर्ट और प्रमाणपत्र आदि दिखाये पर उस पर कोई असर न पड़ा। वह बराबर बकता ही रहा। कुछ देर बाद इसी तरह चलने पर वे जेल में बन्द कर दिये गये। दो दिनों बाद वे जेल से रिहा कर दिये गये और छूटते ही तुरन्त टर्की से बाहर निकल भागे क्योंकि मि० विंगो से असाधारण प्रकृतिवाले मनुष्यों गुजर नहीं थी।

इतना ही नहीं उन्हें पश्चिमी भाग के किसी भी देश चलने की आज्ञा न मिल सकी उनके साथ जो व्यवहार हुआ था भूले नहीं थे इसलिए अन्त में वे फिर लौट पड़े। इस बार उन्हें के दक्षिण भाग के समस्त द्वीपों का पर्यटन किया। इस तरह वे जहाज द्वारा न्यूयार्क के लिए गये लेकिन इस जल्दबाजी में देखे गये जिसका पछतावा उन्हें अवश्य होता रहा।

वाह रे मि० विंगो न्यूयार्क सोचते हैं कि अभी उन्होंने महज़ आधे भाग की यात्रा की है लगे हाथों उसे भी पूरा कर लेते और उन्होंने ऐसा किया। कुछ तक इस तरह घूमते रहने से उन्हें मनोरंजक अनुभव और विशेष

ऐसा साहसिक कार्य करनेवालों कमी आज भी नहीं। आये साइकिल आदि पर यात्रा करते पड़ते हैं।

खुशखबरी!

'ऐस्प्रो' का माल आ गया है

किसी भी नकली माल को मत लीजिये। हर टिकिया पर 'ASPRO' खुदा हुआ देख लीजिये।

'ऐस्प्रो' का नियंत्रित मूल्य 3 टिकियों के पैकेट का दाम १ आना 30 टिकियों के डिब्बे का दाम १० आना

'ऐस्प्रो' दस मिनट में बुखार और दर्द रोकती है। यह हृदय या पेट को नुकसान नहीं पहुँचाती

बितरक:
जे. एल. मौरिसन, सन एण्ड जोन्स (इण्डिया) लि:
पोष्ट बक्स ३८७ कलकत्ता : टेलीफोन - कलकत्ता ७९६

'ऐस्प्रो' हर जगह मिलती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्तहास

भंग की तरंग

...आजम का फरमाना है कि ...मिशन की कार्यवाही के कारण ...का विश्वास इँगलैंड पर से ...। मिस्टर एटली को डरना ...क्योंकि मुसलमानों का विश्वास ...से उठ जायेगा तो इँगलैंड ...ही कहाँ रहेगी ?

* *

...साहब को चाहिये था जिन्ना ...कहते कि आपही राज्य कीजिए। ...मानती तो न माने। लेकिन ...बहक गये। जिन्ना साहब ...जिन्न सवार हो गया है इसी ...पलट रहा है। किसी ...लेना चाहिए।

* *

...लीगी अखबार 'डान' कहता ...धूर्त हैं। मुँह की खाने पर ...ही जाता है।

* *

...लिखा है कि अहिंसा का ...मुर्गी को हलाल करने के ...का पुजारी बन जाता है। ...मुर्गी है यह पता अब चला ...है तो वाकई हलाल नहीं ...बल्कि देखना चाहिए कैसा ...।

* *

...ब्रिटिश माल का बहिष्कार ...। किन्तु सिखों की विलायत ...होती है जरा इसका भी ...चाहिए।

* *

...चाहते हैं कि एक नया ...वालों का बने। बन जाये ...महाराज कुमार सर विजय ...बना दिये जायें तो और ...।

* *

सुना जाता है कि कैबिनेट मिशन के लौट जाने पर भारतीय नेता भी लंदन जायेंगे। हाँ, इतने दिनों तक दिल्ली और शिमले में चहल-पहल रही है अब कुछ दिनों तक लंदन में भी रंग रहे तो क्या बेजा !

* * *

'न्यूयार्क टाइम्स' ने कैबिनेट मिशन पर टीका करते हुए लिखा है कि मिशन सफल रहा। कांग्रेसवालों को समझना चाहिए कि सत्याग्रह करना एक बात है और शासन करना दूसरी। और दूर-दूर से बैठकर टिप्पणी करना सबसे कठिन काम है।

* * *

दक्षिण अफ्रीका में भारतीय सत्याग्रहियों को कठोर कारावास का दंड दिया जा रहा है। संभवत: स्मट्स की सरकार समझती है कि दंड से सत्याग्रह बन्द हो सकता है। इतिहास इतनी जल्दी लोग भूल जाते हैं, यह वाकई ताज्जुब की बात है।

* * *

कैबिनेट मिशन शनिवार को लन्दन लौट गया। सुना है कि मिशन शनिवार को इसलिए लौटा है कि शुक्रवार और रविवार को दिक्शूल है। तब तो इस बार लन्दन में सफलता ही सफलता नजर आ रही है।

* * *

कविवर निराला जी के लिए नीड़ निर्माण हो रहा है। उनके लिए भोजन इत्यादि का प्रबन्ध भी होगा। हिन्दीवालों को इसके लिए बधाई। कुछ सेवक सेविकाओं का भी प्रबन्ध होना चाहिए।

* * *

यह तो प्रसन्नता की बात है कि वहाँ भी साहित्यकार और साहित्यकर्त्री हैं जिनसे कविवर को सब तरह का आराम मिलेगा। आशा है निरालाजी वहाँ कोई क्रान्तिकारी साहित्य का सृजन करेंगे।

* * *

अम्बेदकर साहब बङ्गाल से विधान-परिषद् के लिए खड़े हो रहे हैं। बङ्गाल प्रांत में तो कोई कानून का पण्डित अच्छा है नहीं इसलिए इन्हीं को भेजना चाहिए, मुस्लिम लीग और अम्बेदकर साहब का जोड़ भी अच्छा रहेगा।

* * *

डाक्टर अम्बेदकर बङ्गाल से, जिन्ना साहब पञ्जाब से भेज दिये जायें तो दोनों फ्रांटियर सुरक्षित रहेंगे और जो विधान बनेगा उसका नाम 'जिन्नाडकर' विधान रखा जाये तो बहुत बेहतर होगा।

—अगड़धत्त शर्मा

बरसात में हुआ है उन्माद, रो रहा हूँ !

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

बरसात में हुआ है उन्माद, रो रहा हूँ।
सेना लिये गगन में क्या
मेघ यह खड़ा है ?
या कोलतार का घट
नभ में उलट पड़ा है ?
नम हो न जाय ईंधन—चूल्हा नहीं जलेगा,
लकड़ी बड़े सबेरे से आज ढो रहा हूँ।
है खेत एक लट्ठा तक
भी न पास मेरे,
सब लोग हो गये हैं
घर के उदास मेरे;
लोटा गिलास थाली प्याले बटोर करके,
'ग्रो मोर फूड्' के हित मैं धान बो रहा हूँ।
प्राचीन ठाट मेरा
बादल नवीन उनये,
मजदूर माँगते हैं
हर रोज तीन रुपये;
प्रत्येक बूँद मेरे घर में प्रवेश करती
ऊपर बिछा तखत है मैं मस्त सो रहा हूँ।

नई पुस्तक

कामायनी-अनुशीलन

महाकवि 'प्रसाद' का महाकाव्य 'कामायनी' बहुत प्रसिद्ध है। पर यह सबकी समझ में नहीं आता। इस पर अनेक समीक्षकों के विचार पत्रों में प्रकट हुए हैं। इसी ग्रन्थ का अनुशीलन इस पुस्तक में लेखक रामलालसिंह एम० ए०, बी० टी० साहित्यरत्न ने कामायनी का ऐतिहासिक तत्त्व, प्रकृति वर्णन, चरित्र-चित्रण, श्रद्धा, भाषा तथा भावाभिव्यक्ति, छंद विधान, रस संचार, कामायनी का मनस्तत्त्व, दार्शनिक तथ्य, युग की अभिव्यक्ति, प्रेम-निरूपण आदि शीर्षकों में बड़ी मार्मिकता से किया है। अच्छे कागज पर छपी कोई ढाई सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २)।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

AG 67

८ कारण-खाद्य राशन को क्यों विस्तृत करना चाहिये ?

★ भारत के अनेक भागों में अकाल का आतंक है।

★ आवश्यकता-पूर्ति के निमित्त पर्याप्त खाद्य-उत्पादन नहीं है।

★ सारे संसार में अभाव के कारण कमी के लिये पूरा-पूरा आयात संभव नहीं है।

★ अनिवार्य खाद्यों को सटोरियों के लिये मुक्त नहीं किया जा सकता।

★ मूल्य-नियंत्रण कायम रखना चाहिये।

★ व्यर्थ व्यय समाप्त होना चाहिये।

★ अतिरिक्त अन्न वाले क्षेत्रों से राशन की कमी वाले क्षेत्रों को खाद्य उपलब्ध होता रहे।

★ कमीवाले क्षेत्रों में खाद्य का सब में बराबर वितरण होता रहे।

नागरिक एवं ग्राम्य क्षेत्रों में अब लगभग १३ करोड़ व्यक्तिय के राशन की व्यवस्था है। इस सूची में और भी नगर एवं क्षेत्र जोड़े जा रहे हैं। खाद्य-राशन में सहयोग देना आपका कर्त्तव्य है। ईमानदारी से राशन के नियमों का पालन कीजिये—इस प्रकार अपना कर्त्तव्य पालन करते हुये औरों के प्राण बचाइये।

उचित मूल्य पर R सबके लिये भोजन

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजधानी की चिट्ठी

प्रान्त में कुछ ही वर्षों में अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा

कांग्रेस के निर्णय से प्रसन्नता—क्या कण्ट्रोल हटेंगे ?—

अन्न-वसूली योजना में सफलता—नगरों के किरायेदारों की परेशानी

(अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

अस्थायी सरकार-सम्बन्धी वाइसराय के आमंत्रण के कांग्रेस कार्यसमिति द्वारा ठुकरा दिये जाने के समाचार से यहाँ के राजनीतिक क्षेत्रों में हर्ष की एक लहर दौड़ गई। लार्ड वैवेल तथा ब्रिटिश मंत्री इस देश के राजनैतिक रंगमंच पर विधान सुधार-नाट्य का जैसा कुटिलतापूर्ण अभिनय कर रहे थे, लीगी क्षेत्रों को छोड़कर प्रायः सभी उससे असन्तुष्ट थे। बहुतेरे कांग्रेसजनों ने तो पहले ही से कहना प्रारम्भ कर दिया था कि कार्यसमिति को इस आमंत्रण को अस्वीकार कर देना चाहिए। राष्ट्रवादी मुसलमानों की अवहेलना कर दिये जाने के वाइसराय के निश्चय ने इस वर्ग को अत्यन्त क्रुद्ध कर दिया था और उन्होंने भी मौलाना आजाद को तार दिये थे कि आमंत्रण अस्वीकार कर दिया जाय। प्रान्तीय निर्वाचनों में राष्ट्रीय मुसलमानों ने जो ख्याति तथा लोकप्रियता अर्जन कर दिखाई है, वह इस बात का द्योतक है कि मुसलमानों में उनका प्रभाव इस सीमा तक अवश्य है कि उनको लीग की तिहाई मुस्लिम सीटें दी जायँ। स्थानीय सिक्खों में भी बड़ी उत्तेजना रही और उन्होंने गुरुद्वारे में गुरुग्रन्थ साहब के सम्मुख रक्त के प्रतिज्ञापत्र लिखकर पंथ के निर्णय पर जान तक देने का संकल्प किया। ऐंग्लो इंडियनों की जैसी अवज्ञा की गई है, उससे क्षुब्ध होकर वे असहयोग आन्दोलन चलानेवाले हैं और अपने अखिलभारतीय संघ के अध्यक्ष मि० एन्टनी के आदेशानुसार सरकारी समितियों आदि से पद त्याग कर रहे हैं। वे सैन्य-विभाग की स्वेच्छा सर्विस से भी त्यागपत्र देने जा रहे हैं।

* * *

विविध सुधारों के लिए कांग्रेस सरकार का उद्योग सराहनीय है। जेल में सुधार करने के लिए दो कमेटियाँ नियुक्त की गई हैं, जिनमें से एक बन्दियों के मानसिक और बौद्धिक सुधार के तरीकों की सिफारिश करेगी और दूसरी जेलों में कुटीशिल्प तथा अन्यान्य उद्योगों के बारे में ताकि बन्दी कुशल कारीगर होकर जेल से निकलें और ईमानदारी से अपना जीवनयापन कर सकें। शिक्षाप्रसार के सम्बन्ध में श्री सम्पूर्णानन्द की योजना बहुत महत्त्वाभिलाषापूर्ण है और उनका दावा है कि अगले ही कुछ वर्षों में प्रान्त में सर्वत्र अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा जारी कर दी जायगी। प्रधान मन्त्री पं० पन्त ने नैनीताल में एक भाषण में कहा था कि प्रान्त की सभी यूनिवर्सिटियों में अति शीघ्र सैनिक शिक्षा अनिवार्य कर दी जायगी।

* * *

विविध कंट्रोलों की आलोचना सभी क्षेत्रों में अनेक बार की गई है और मंत्रिगण भी अनुभव करते हैं कि नियंत्रण-विभाग का काम आलोचना से परे नहीं है। इसका एक कारण यह भी बताया जाता है कि इस विभाग तथा उससे संबंधित विभागों के कर्मचारियों में भ्रष्टाचार बहुत बढ़ गया है और इसीलिए उन्होंने एक भ्रष्टाचार विरोधी विभाग की स्थापना की है। यह खेद की बात है कि अभी इस विभाग को पूरे अधिकार नहीं मिले हैं और वह स्वेच्छा से किसी अफसर के सम्बन्ध में जाँच करने के लिए स्वतन्त्र नहीं है। उन्हें इसके लिए वैभागिक अध्यक्ष की अनुमति लेनी होगी। किन्तु कोई भी वैभागिक अध्यक्ष, जब तक वह उस अफसर विशेष से रुष्ट ही न हो, क्या अपने सहयोगी के लिए अनायास ऐसी अनुमति दे देगा और क्या विभाग में इस सम्बन्ध के कागज-पत्र चलने पर संदिग्ध अफसर सतर्क न हो जायगा ?

* * *

कंट्रोलों को हटाने के सम्बन्ध में मंत्रिमंडल ने श्री चन्द्रभानु गुप्त की अध्यक्षता में जिस कमेटी की नियुक्ति की थी, उसने सिफारिश की है कि आगामी अगस्त से मिट्टी के तेल का कंट्रोल बिलकुल ही हटा दिया जाय। बताया जाता है कि राशन-विभाग के अधिकारी इसके विरुद्ध थे, किन्तु गुप्त-कमेटी ने यह बड़ा महत्त्वपूर्ण निश्चय किया है। सूत के वितरण की भी उसने अनुपम व्यवस्था की है, जिसके अन्तर्गत जुलाहों और उनके करघों की गणना करा कर उसी हिसाब से उनको सूत दिया जायगा और इस प्रकार सूत की चोरबाजारी दूर होने पर खयाल किया जा सकता है कि हैन्डलूम के कपड़े का दाम कुछ कम हो सकेगा।

* * *

यह सन्तोष का विषय है कि मंत्रिमंडल की अन्नवसूली-योजना पूर्ण सफलता के साथ प्रगति कर रही है और अब तक काफी अन्न आ चुका है तथा औसतन प्रतिदिन ८,००० टन अन्न उसे देहातों से मिल रहा है। परन्तु अनेक क्षेत्रों से शिकायतें आई हैं कि जमींदार और ताल्लुकेदार उसमें बाधा डाल रहे हैं। गरीब किसान तो देश और कांग्रेस के नाम पर सरकार को अन्न दे रहे हैं, किन्तु जमींदार और ताल्लुकेदार अपने अपने फार्मों का गल्ला रोके हुए हैं और साथ ही अपने असामियों से भी जबरन गल्ला लेकर उसे चोरबाजारी के लिए संग्रहीत कर रहे हैं। ऐसे भयानक संकटकाल में, जब जीवन और मृत्यु के बीच झूल रहे हैं, इस प्रकार का समाजघातक कृत्य अत्यन्त गर्हित है और सरकार से आशा की जाती है कि अपराधियों को उनकी सामाजिक स्थिति का ख्याल किये बिना कठोरतम दंड दिया जायगा। बहराइच में कुछ ऐसा हुआ भी है, जहाँ बताया जाता है कि प्रख्यात ताल्लुकेदार को, जिसे नाइटहुड भी प्राप्त है, इसी सम्बन्ध में गिरफ्तार करके कुछ समय के लिए जेल में रखा गया, जहाँ से वह जमानत पर छूटा।

* * *

इस सम्बन्ध में एक और भी शिकायत बताई जाती है। अन्नवसूली योजना के अन्तर्गत सरकार १० रु० मन गेहूँ खरीदती है, किन्तु किसानों का कहना है कि सरकार का ही कृषि-विभाग उनसे १६ रु० मन में गेहूँ लेता है। अतएव स्वभावतः किसानों को १० रु० मन में गेहूँ बसूली केन्द्र में बेचने में कष्ट होता है। कुछ स्थानों से यह भी समाचार आये हैं कि बसूली योजना को अपने क्षेत्र में अधिक सफल बनाकर सुर्खरू बनने के लिए कुछ पुलिस तथा तहसीली-अधिकारियों ने देहातियों पर अत्याचार किये हैं, यह उपयुक्त अवसर है कि कांग्रेस सरकार अपने कर्मचारियों को बता दे कि उसमें और युद्धऋण बसूलनेवाले एडवाइजर शासन में जमीन-आसमान का अन्तर है और इस प्रकार की हरकतें वह बर्दाश्त न करेगी, वे चाहे जितनी सद्भावना से क्यों न की गई हों।

* * *

प्रांत के प्रायः सभी नगरों से प्राप्त समाचारों में इस बात से बड़ी आशंका प्रकट की गई है कि ३० सितम्बर को भारत-रक्षा-विधान समाप्त होते ही नगरों में जारी मकान किराया नियंत्रण आदेश स्वयमेव समाप्त हो जायगा। नगरों में अधिकांश व्यक्ति किराये के मकानों में ही रहते हैं और युद्धकाल में इन मकानों के किराये में कितनी वृद्धि हुई है, यह भी सभी जानते हैं अब तो जब से किराया-कंट्रोल हटने का समाचार मिला है, मकानमालिकों की बन आई है और उन्होंने अभी से किरायेदारों को तंग करना शुरू कर दिया है। बिजली और पानी कटवा देना, मेहतरों को देना, किरायेदारों को अपमानित आदि उनका नित्य-कर्म हो गया में रहनेवाले अधिकांश व्यक्ति यही ख्याल है कि प्रांतीय सरकार के मकान की किरायेदारी के एक निश्चित कानून बना ले, कम उतने दिन अवश्य ही लागू तक असाधारण परिस्थितियाँ

गीत

लेखक, श्री श्रीपालसिंह 'क्षेम'

मैं व्यथाओं में पला हूँ वेदना संसार मेरा।
एक तरु की शुष्क शाखा पर विसुध मुसकान फूटी।
वह मुकुल प्रारम्भ से जिस पर अटल तम-राशि छूटी।
सांध्य किरणों ने किया है अश्रु से शृंगार मेरा।
तिमिर-अंचल के तले मैंने प्रथम है आँख खोली।
टीस को उर में दबा मैंने किया जीवन-ठिठोली।
अग्नि की चिनगारियों ने है किया उपचार मेरा।
एक चिन्ता-संगिनी ले मैं विमन इस सरणि आया,
जिस तरफ़ देखा अपर कोई नहीं अपना दिखाया,
सूखने अब जा रहा है अश्रु का आधार मेरा।
आँख में मेरी निशा, तट-क्षितिज पर नीहारिकायें,
दग्ध उर से निकल पड़तीं विकल अस्फुट कारिकाएँ,
क्या पड़ी स्वप्निल जगत् को जो सुने उद्गार मेरा।
क्या करूँगा शीतता ले अग्नि से हूँ जल चुका जब,
चाहना क्या, बुझ पड़ें ये वेदना-चिनगारियाँ अब,
जल न लूँ, यदि अन्त में होगा हृदय जल छार मेरा॥

साहित्यालोचन

इसका संशोधित संस्करण तैयार है। इसमें संस्कृत के आचार्यों के साहित्य-सम्बन्धी के अतिरिक्त पाश्चात्य साहित्य साहित्य मर्मज्ञों के मत का दिग्दर्शन ही मौलिक ढंग से कराया गया है। पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य पाँच रुपये पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो
इंडियन प्रेस, लि० प्रयाग

केवल ७ रु० में ६ घड़ियाँ

३ डमी रिस्ट वाच और ३ स्यूट रिस्ट वाच
२ फैन्सी रूमाल और २५ सुन्दर उपहार

अमेरिकन फैन्सी न्यू गोल्ड के सुन्दर आभूषणों को सुप्रसिद्ध करने के लिए कम्पनी ने अपनी वर्षगाँठ की खुशी में घड़ियाँ और सुन्दर उपहार बिना मूल्य देने का निश्चय किया है। सुन्दर आभूषण नये डिजाईन ४ जोड़ी चूड़ियाँ डायमेंड कट, दो अँगूठियाँ बाम्बे फैशन, एक जोड़ी कान के बुन्दे नया माडल, एक गले का नैकलेस, २५ सुन्दर उपहार, रूमाल, ६ घड़ियों सहित सुन्दर बक्स में बन्द रिआयती मूल्य केवल ७) रु० व डाक-व्यय आदि १।-) अलग। हिन्दुस्तान की प्रसिद्ध पत्रिकाओं के अनेक गिनत लोगों ने इन आभूषणों की प्रशंसा की है।

गारंटी—माल पसन्द न आने पर मूल्य वापस। शीघ्रता कीजिए अवसर बार बार हाथ न आयेगा। अपना पता सुवाच्य अक्षरों में लिखें।

लारेंस ब्रादर्स, (D.D.A.) बाग रामानन्द, अमृतसर

LAWRENCE BROS. (D.D.A.) Bag Ramanand, Amritsar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...नों की उपेक्षा मत कीजिये !

...रीर को स्वस्थ्य बनाने में पुष्टिकर पदार्थ

लेखक, श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालंकार

...सेम, लोबिये, सोयबीन ...के दाने, ये सब दालों के ...किये जाते हैं क्योंकि ...संगठन और शरीर पर ...के समान ही है। दालों और ...में इस बात की समता है ...नये निकलने वाले पौदे के ...का भण्डार होते हैं। रासाय... से हमें दालों की मुख्य ...पता चलती है कि इनमें नत्र... होती है। इस गुण के कारण ...आदमी का मांस' कह दिया ...नत्रजन अधिकांश रूप में ...शुक्र में होती है।

...में पाई जाने वाली मुख्य प्रोटीन ...कहते हैं। दूध की मुख्य ...इसका अधिक सादृश्य होने ...वानस्पतिक केसीन भी ...यह सादृश्य कितना अधिक ...से जाना जा सकता है कि ...दालों से वास्तव में एक प्रकार ...जाता है। लेगुयीन में ...के साथ मिल जाने की ...इनके संयोग से जो समास ...पानी में विलेप नहीं होता। ...है कि चूने का अधिक अंश ...कठोर पानी में दालें जल्दी नरम ...ऐसे पानी में जरा सा ...(...कार्बोनेट आफ़ सोडा) मिला ...तो यह चूने को नीचे फेंक देता ...कठोर पानी में दालों को पकाते ...मिला लिया जाता है। रीश्टक ...है कि कठोर पानी में पकाने से ...अच्छी तरह न पकते हैं न जज्ब ...कि नरम पानी में उबाले हुए। ...की प्रोटीनों में प्राणियों की ...अपेक्षा गन्धक का परिमाण ...है, ऐसी कोई प्रोटीन नहीं ...जिसमें गन्धक बिलकुल न ...की तुलना में फलियों के ...गन्धक अधिक होती है। ...में अनाजों की अपेक्षा ...कम होता है, परन्तु पोटाश और ...होते हैं। दालों में चूना ...किसी भी दूसरे वानस्पतिक भोजन ...अधिक मात्रा में रहता है। दालों ...का पदार्थ होता है जिसके ...लोग इन्हें पसन्द नहीं करते। ...पदार्थ का परिमाण काफी ...जिसके परिणाम-स्वरूप इनके ...यूरिक अम्ल अधिक परिमाण ...लगता है। इसी बात को ...हुए गठिये के रोगियों को ...दालों के सेवन का निषेध कर ...है।

...को नरम करने के लिए पानी ...भिगोने की जरूरत पड़ती है। ...इन्हें भिगोया जाता है वह ...चाहिए या नहीं यह बात ...करते हैं। फेंकने में ...शर्करा का एक उपेक्षणीय ...होता है परन्तु उसमें एक ...कि बीजों के अन्दर विद्यमान ...का अधिक अंश इस तरह ...है।

सोयबीन पहले प्रोटीनवाले भोजनों में सबसे अच्छा माना जाता था क्योंकि इसमें सब दालों से अधिक वसा (बीस प्रतिशतक तक) होती है। कुन्नूर के परीक्षण बताते हैं कि सोयबीन में विद्यमान प्रोटीनों की मनुष्य के लिए उपयोगिता इतनी अधिक नहीं है जितनी कि समझी जाती रही है। सोयबीन के पूरे दाने से जो चीज़ें बनाई जाती हैं उनकी तुलना में उन पदार्थों की पोषक उपयोगिता सम्भवतः अधिक उच्च है जो इसे फ़र्मेण्ट करके बनाई जाती है। चीन और जापान में सोयबीन को इसी तरह फ़र्मेण्ट करके इस्तेमाल किया जाता है। परन्तु कुन्नूर के नये परीक्षणों के अनुसार, भारत में सोयबीन के विस्तृत प्रचार को प्रोत्साहन देने में विशेष कारण नज़र नहीं आता, और आजकल इस शिम्बी (logume) के विस्तृत प्रचार के लिए जो उत्साह दिखाया जा रहा है वह न्याय नहीं है। चूहों की वृद्धि के परीक्षणों से यह प्रकट होता है कि कुछ दालों की तुलना में इस की पोषक उपयोगिता में कोई लाभ नहीं, और ये दालें तो प्राचीन काल से ही भारतीय व्यवसाय का तथा भोजन का अंग बन चुकी हैं। इसलिए हमें इनके महत्व को कम नहीं करना चाहिए।

दालें (१) प्रोटीन की अत्युत्तम स्रोत हैं। (२) चूना, प्रस्फुरक और लोह इनमें खूब होता है। (३) इनमें निशास्ता अधिक और स्नेह कम होता है। इसलिए जिन्हें स्नेह की अधिक आवश्यकता नहीं उनके लिए ये अच्छी हैं। जिन्हें स्नेह की अधिक ज़रूरत होती है वे इनमें खूब घी डालकर खाएँ तो वह जल्दी हज़्म होगा। (४) सस्ती पड़ती हैं, क्योंकि पानी में भिगोने के बाद थोड़ी सी दाल भी फूलकर अधिक बन जाती है। (५) देर तक रखे रहने से भी इनकी भोजन-सम्बन्धी उपयोगिता में व्याघात नहीं आता। (६) इनमें खाद्योज (विटामीन) ए और बी होता है। (७) अङ्कुर निकलने दिये जाँय तो खाद्योज सी भी पैदा हो जाता है। जहाँ फल नहीं मिलते या महँगे होते हैं वहाँ खाद्योज सी का ये बहुत अच्छा स्रोत बन जाती हैं।

अमेरिका में दालों पर बहुत खोजें हुई हैं। परीक्षणों से मालूम किया गया है कि विविध रूपों में खिलाई गई दालें कितने परिमाण में हज़्म होती हैं। यह पता लगा है कि दालों की प्रोटीन औसत अस्सी प्रतिशतक और निशास्ता नब्बे प्रतिशतक शरीर में ग्रहण कर लिये जाते हैं। दालों की प्रोटीन की प्राणियों के लिए उपयोगिता, यद्यपि प्रथम श्रेणी की नहीं है परन्तु उच्च है। पकाने से इनकी उपयोगिता बहुत अधिक बढ़ जाती है।

साढ़े तीन छटाँक सूखे मटरों का रसा बनाकर खा लिया जाय तो ये आमाशय में साढ़े चार घंटे तक पड़े रहेंगे। इतने ही फ्रांसबीन इससे अधिक समय तक आमाशय में रहते हैं। ठीक तरह तैयार की जाय तो दालें आँतों में प्रायः सारी जज्ब हो जाती हैं। ठीक तरह बनाये हुए साढ़े तीन छटाँक मटर जब रोज लिये जाते हैं तो करीब आठ या नौ प्रतिशतक को छोड़कर शेष सारी प्रोटीन हज़्म हो जाती है।

दालों की पोषक उपयोगिता निस्सन्देह बहुत ऊँची है। एक सक्रिय जवान आदमी को रोज जितनी प्रोटीन की आवश्यकता होती है वह उसे साढ़े दस छटाँक मटर के आटे से प्राप्त कर सकता है। कल्पना कीजिये कि मटर का इतना परिमाण रसे के रूप में आपके अन्दर जा रहा है। अच्छे गाढ़े रसे की एक प्लेट में इसका कुल परिमाण भरा हुआ एक बड़ा चम्मच होगा। यह परिमाण तोल में प्रायः पच्चीस माशे होगा। इसकी प्रोटीन से आपके शरीर को उतना पोषण मिलेगा जितना एक औंस मांस से मिलता है। यदि आप किसी और रूप में प्रोटीन नहीं खा रहे तो सारे दिन में ऐसी चौबीस प्लेटों की आपको जरूरत होगी। रसे को पानी में न बनाकर दूध में बनायें तो एक प्लेट में इतनी अधिक प्रोटीन हो जायगी कि आपको सारे दिन में इस की आठ प्लेटें काफ़ी रहेंगी। सामान्यतया आपके दूसरे भोज्य पदार्थों में भी प्रोटीन सम्मिलित रहती है इसलिए दालों से ही इतनी अधिक प्रोटीन लेने की आवश्यकता नहीं। दिन में एक बार दाल खाना काफी होता है। आमाशय दालों को जल्दी नहीं हज़्म कर पाता। गैलन की सम्मति में दूसरे भोजनों के मुकाबले में इन्हें पचाना कठिन होता है और इसलिए रात को अधिक मात्रा में दाल खानेवालों को बुरे स्वप्न दीखते हैं।

मांस न खाने वालों को नत्रजनीय भोजन (प्रोटीन) की पर्याप्त राशि प्राप्त करने के लिए दालों के प्रयोग की बहुत जोर से सिफारिश की जाती है। जिन लोगों के सामने आर्थिक समस्याएँ अधिक महत्वपूर्ण हैं और वे महँगी चीजों से प्रोटीन प्राप्त करने में अपने को असमर्थ पाते हैं उनके लिए दालें निश्चय ही सबसे सस्ता भोजन हैं।

भारत में दालों को कई रूपों में खाया जाता रहा है। इन दानों को क्योंकि बहुधा दल कर बनाया जाता है इसीलिए इनका नाम दाल पड़ा। दालों को यूष और सूप इन दो रूपों में खाने का अधिक प्रचार रहा है। मूँग आदि को जरा सा भून कर चौदह या अठारह गुणे पानी में आधा पानी शेष रहने तक पकाते हैं। फिर छान कर इसका पानी अलग कर लेते हैं, इस पानी को यूष कहते हैं। पकाते हुए पानी यदि चौथाई ही बच रहे तो वह सूप बन जाता है। इनको अधिक स्वादु बनाने के लिए कई बार, इनमें अनारदाना, आँवला, इमली आदि मिलाकर इन्हें जरा खट्टा कर लिया जाता है। सूप में दाल के दाने और रसा दोनों ही खाये जाते हैं परन्तु यूष में रसा ही खाया जाता है। जिस तरह आजकल हमारे घरों में दाल बनाई जाती है वह सूप है। चरक के मत में पकी हुई दाल, जिसमें कोई खटाई न डाली गई हो, उस दाल से अधिक देर में पचती है जिसमें आँवले आदि की खटाई मिला दी गई हो। यूष में स्नेह, नमक आदि मिलाकर खाने से वह आमाशय तथा आंतों के लिए जरा दुष्पच हो जाता है। स्नेह आदि बिना मिलाए यूष को योंही खा लिया जाय तो यह जल्दी हज़्म हो जाता है। विविध प्रकार की दालें सामान्यतया भारी, गरम, बलनाशक और शरीर में रूक्षता पैदा करनेवाली होती हैं, इसलिए चरक कहते हैं कि जिन लोगों की पाचकाग्नि बलवान् है उन्हें इनमें घी आदि स्नेह मिलाकर खाना चाहिए।

विभिन्न रोगों में किन-किन दालों का प्रयोग करना चाहिए, इस सम्बन्ध में पाठकों को जानने की इच्छा होगी तो हम किसी दूसरे लेख में इस विषय पर प्रकाश डालेंगे।

(पेज ५ का शेष)

लिए अपने से ग़ैर सम्प्रदाय के वोटरों के मत भी एक निर्धारित अनुपात में प्राप्त करना अनिवार्य होगा।

म्युनिसिपल बोर्ड का चेयरमैन अब सदस्यों द्वारा न चुना जाकर जनता द्वारा चुना जायगा। इसका एक लाभ तो यही होगा कि जो धनिक लोग मुट्ठी भर सदस्यों को फाँस कर चेयरमैन बन जाया करते थे, उनके दिन लद जायँगे। अब तो वही व्यक्ति चेयरमैन हो सकेगा, जिसको जनता चाहे। चेयरमैन की योग्यता के लिए भी कुछ विशिष्ट नियम निर्धारित किये गये हैं। उनके अन्तर्गत चेयरमैनी के उम्मेदवार की आयु कम से कम ३५ वर्ष की होनी चाहिए। वह ग्रेजुएट हो। वह किसी म्युनिसिपल बोर्ड या ज़िला बोर्ड का एक पूरे कार्यकाल तक सदस्य रह चुका हो अथवा ऐसे किसी बोर्ड में काम कर चुका हो। हमारी राय में योग्यताओं के नियमावली में ग्रेजुएट होने की योग्यता अधिक महत्व नहीं रखती, बल्कि वह निस्सार है। इस देश में ऐसे बहुतेरे व्यक्ति हैं, जो यद्यपि किसी यूनिवर्सिटी के ग्रेजुएट नहीं हैं, किन्तु नागरिक शासन की समस्याओं में बहुत पटु हैं। यह प्रतिबन्ध हमारी राय में अनुचित होगा और बिल में इसको हटा दिया जाना चाहिए। यह सन्तोष का विषय है कि चेयरमैन के अधिकार अब से कहीं अधिक होंगे और उसे प्रायः वही अधिकार होंगे, जो ब्रिटिश नगरों के मेयरों को होते हैं।

म्युनिसिपल बोर्डों की सदस्य-संख्या नगर की जन-संख्या के अनुपात से होगी और बोर्ड में कम से कम २० सदस्य होंगे। एक क्षेत्र से दो से अधिक सदस्य नहीं चुने जा सकेंगे। नामज़दगी की प्रथा हटा दी जायगी और सरकारी नामज़द सदस्य बोर्डों में न रहेंगे। विशेष हितों के प्रतिनिधियों को बोर्ड के सदस्यों द्वारा कोआप्ट कर लिया जायगा।

ज़िला बोर्डों का चुनाव भी संयुक्त निर्वाचन और बालिग़ मताधिकार की प्रणाली से ही होंगे। उनमें कम से कम ४० और अधिकाधिक ८० सदस्य होंगे। विशेष हितों के प्रतिनिधित्व के लिए सदस्य-संख्या के १० प्रतिशत से अधिक लोग कोआप्ट न किये जा सकेंगे। ज़िला बोर्ड एक प्रकार से ज़िला की धारासभा की भाँति होगा, जो बजट पास करेगा और अपनी साधारण नीति निर्धारित करेगा। बोर्ड का शासन यथार्थतः एक कार्यकारिणी के आधीन होगा, जिसका अध्यक्ष बोर्ड का चेयरमैन होगा और विभिन्न उपसमितियों के अध्यक्ष उसके तथा वैधानिक अध्यक्ष उसके सदस्य होंगे। एक शिक्षा कमेटी भी रहेगी।

बोर्ड के चेयरमैन की स्थिति सुरक्षित रहेगी। यदि बोर्ड उसके विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव पास करेगा, तो सरकार को अधिकार होगा कि दोनों पक्षों को सुनने के बाद या तो वह चेयरमैन को निकाल दे अथवा बोर्ड को ही भंग करके दुबारा चुनाव कराये, क्योंकि चेयरमैन जनता द्वारा चुना जाने के कारण उसका विश्वासपात्र होगा।

इसके अतिरिक्त म्युनिसिपल तथा ज़िला बोर्डों पर से कलेक्टरों और कमिश्नरों का नियंत्रण हट जायेगा। उनके स्थान पर एक प्रांतीय लोकल सेल्फ़ गवर्नमेंट बोर्ड, जिसमें इन स्थानिक बोर्डों के प्रतिनिधि तथा कुछ सरकारी प्रतिनिधि होंगे, इन बोर्डों की देखरेख करेगा।

इसमें सन्देह नहीं कि यह योजना बहुत ही अच्छी है और इस प्रान्त के निवासियों को आत्मशासन की बहुमुखी सुविधाएँ प्रदान करेगी तथा इससे साम्प्रदायिक कटुता का भी, जिसने इस देश की राष्ट्रीयता को विषाक्त कर रखा है, अन्त करने में बहुत कुछ सहूलियत होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

कोठी स्टेट सी० आई० में गत २२ जून को राजनीतिक सम्मेलन कोठी राज्य प्रजामंडल की स्थापन-सम्बन्धी श्री सीता-रमण सेवा-संघ का सफल प्रयत्न था। देवी-गंज चौक के दोनों प्रवेश-मार्ग जवाहर द्वार और आजाद गेट बने थे। चौक के बीच में राष्ट्रीय पताका—तिरंगा झंडा फहरा रहा था। 'बढ़े चलो, बढ़े चलो' मार्च गीत के साथ जलूस संघ-कार्यालय से रवाना होकर सभास्थल पर पहुँचा। श्री मेजर कुँवर नरेन्द्रसिंह के अनुरोध पर श्री गोपीकृष्ण विजयवर्गीय ने राष्ट्रीय पताका फहराया। सभापति का आसन कवि, कहानीकार, आलोचक और विद्वान् पंडित गंगाप्रसाद पांडेय एम० ए० ने ग्रहण किया। उपमंत्री द्वारा संघ की कार्यवाही का विवरण पढ़ा गया जिसमें राज्य की उन विभूतियों का भी स्मरण किया गया था जिन्होंने सन् १८५७ से लेकर अब तक में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए समय समय पर शासन का दुर्व्यवहार सहा, आर्थिक हानि बर्दाश्त कर और रक्त बहाया था। संघ की सदस्य-संख्या, आय-व्यय तथा प्रमुख कार्यकर्ताओं पर भी प्रकाश डाला गया।

अधिवेशन में अनेक प्रस्ताव उपस्थित किये गये। प्रसन्नता की बात है कि संघ के सदस्यों के अतिरिक्त जनता ने भी उनका अनुमोदन किया। श्री महेश्वर मिश्रौलिया के प्रस्ताव पर (१) संघ का नाम कोठी राज्य-प्रजामंडल कर दिया गया। (२) उत्तरदायित्वपूर्ण शासन के माँग की घोषणा खुलकर की गई। (३) संघ के अध्यक्ष श्री लाल तीर्थराजसिंह बाघेल कोठी राज्य प्रजा-मंडल के भी अध्यक्ष निर्विरोध चुने गये। नागोद राज्य प्रजामंडल के प्रमुख कार्य-कर्ता श्री दद्दनसिंह ने प्रसन्नता के साथ उन्हें फूलों का हार पहनाया और प्रजा-मंडल के प्रथम अध्यक्ष की हैसियत से उनका स्वागत किया।

श्री सभापति महोदय के अनुरोध पर श्री विजयवर्गीय जी ने भाषण किया। रिया-सतों के सम्बन्ध की अँगरेजी नीति पर उन्होंने अच्छा प्रकाश डाला। गदर के पहले क्या रुख था और बाद में क्यों और कैसा परिवर्तन हुआ? उत्तरदायित्वपूर्ण शासन दिये जाने पर उन्होंने जोर दिया। विजयवर्गीय जी ने कहा—"जब अँगरेजी भारत में महान् परिवर्तन हो रहे हैं और अँगरेज़ भारत को आजादी देने के लिए आ पहुँचे हैं तब देशी राज्यों की पिछड़ी दशा चिन्तनीय है। नागरिक स्वतन्त्रता देने की बात नरेन्द्रमंडल के चान्सलर नवाब भोपाल भी कह चुके हैं। ऐसी हालत में रियासतों में अविलम्ब सुधार होना चाहिए अब प्रजा का राज्य होनेवाला है इसलिए लोगों को उसके लिए तैयार रहना चाहिए। बिखरी हुई, असंगठित रियासतों ने भारत का सदा अहित किया है; अब जनता अपने हितों को देखेगी और अपना प्रबन्ध स्वयं करेगी।"

पं० जवाहरलाल नेहरू की काश्मीर-सरकार द्वारा गिरफ्तारी पर श्री शिवानन्द (सतना) ने रोष प्रकट किया। राज्य के असंख्य मवेशियों की मृत्यु पर उन्होंने कहा—"राज्यनिवासियों में संगठन की कमी है, और यह लज्जा की बात है, जिससे समय पर अधिकारियों ने नहीं ध्यान दिया।

श्री दद्दनसिंह जी ने एकता की अपील की और प्रजामण्डल के सदस्य बनने पर जोर दिया। सभापति जी ने आगत व्यक्तियों का स्वागत, समस्त कार्यवाही का संक्षिप्त सिंहावलोकन तथा अधिवेशन की सफलता पर सन्तोष प्रकट किया। उन्होंने कहा—ऐसी व्यवस्थित सभा का आयोजन इस राज्य में प्रथम बार हुआ है जिसमें बूँदा-बाँदी के वक्त में भी न केवल मर्द, बल्कि स्त्रियाँ भी, भले ही उनकी संख्या न्यून है, शान्ति के साथ सभा में शरीक हैं।" उन्होंने लोगों से सदस्य बनने तथा संगठित होने की अपील की।

झंडाभिवादन सम्मेलन का अन्तिम कार्य था। अधिवेशन की सफलता से श्री विजयवर्गीय जी प्रसन्न थे। वह इससे भी प्रसन्न थे कि मेजर कुँवर नरेन्द्रसिंह ने चौराहों में नित्य दैनिक पत्रों के लगाने का अच्छा सुझाव दिया और प्रबन्ध किया है। जनता पर भी सम्मेलन का अच्छा प्रभाव पड़ा है। सम्मेलन में रियासत के महाजन तथा मुलाजिम लोग अच्छी संख्या में शामिल हुए थे।

महेश्वर मिश्रौलिया
प्रचार-मन्त्री

* * *

फतेहपुर जिले की खजुहा तहसील के एक क्लार्क इंस्पेक्टर का व्यवहार जनता के प्रति अच्छा नहीं है। प्रायः लोगों को कपड़े की पर्चियों के लिए कई बार इंस्पेक्टर साहब की जियारत करनी पड़ती है। पर्ची बाँटने में प्रायः धाँधलेबाजी की जाती है। ग्राम खदरा के ७० प्रति-शत लोगों को आज तक पर्चियाँ नहीं मिलीं। यद्यपि इंस्पेक्टर ने मुझे स्वयं खदरा आने को लिखा था। यहाँ के लोगों की यह माँग है कि इंस्पेक्टर इस ग्राम में आकर स्वयं एक जिम्मेदार आदमी के सामने पर्ची बँटवायें। इस ग्राम में ग्राम-कमेटी भी कायम है। अतः जिला और प्रान्तीय अधिकारियों से अनुरोध है कि इंस्पेक्टर के इस बर्ताव और जनता में बढ़ते हुए असंतोष के प्रति ध्यान देकर शीघ्र उचित कार्यवाही करें। यहाँ की कुव्यवस्था के प्रति जिले के कलेक्टर और सप्लाई अफसर व हाकिम-परगना आदि को भी लिखा जा चुका।

—दयाशंकर मिश्र, "सूर्य"
मन्त्री जिला कांग्रेस कमेटी

* * *

प्रयाग हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन श्री मौलिचन्द्र शर्मा, संयोजक, मङ्गलाप्रसाद पारितोषिक समिति सूचित करते हैं, संवत् २००२ के मङ्गलाप्रसाद पारितोषिक निबन्ध (निबन्ध-रीति, समालोचना, भाषा-विज्ञान, जीवन-चरित्र, भ्रमण, वर्णन आदि) के लिए विचारार्थ पुस्तकें आ चुकी हैं, विचारार्थ आई हुई पुस्तकों की जाँच के लिए दस निर्णायक नियुक्त किये जायँगे। साहित्य-प्रेमियों से निवेदन है कि वे ऐसे विद्वानों के नाम लिख भेजें जो उनके विचार में उक्त पारितोषिक के निर्णायक चुने जाने में सर्वथा योग्य हों। नाम १० जुलाई १९४६ तक कार्यालय में आ जाने चाहिए।

—संवाददाता

* * *

सागर मौज़ा शाहपुर के सेल-डीलर करीब १०० बोरा बरसाती नमक नहीं लाए। जिससे वहाँ की जनता बड़ी परेशान है। डीलर को चाहिए कि वह शीघ्र नमक का प्रबन्ध करे।

मौज़ा कर्णपुर के कंट्रोल-डीलर श्री बल्देवसिंह मुकद्दम लोगों को कंट्रोलरेट से अधिक भाव पर सामान देते हैं। वहाँ की जनता ने जिलाधीश महोदय के पास शिकायत की है। जिलाधीश महोदय की ओर से जाँच हो रही है। काले-बाजार के जुर्म में अपराध सबूत होने पर सजा मिलने की सम्भावना है।

—लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

* * *

नवलगढ़ (जयपुर) में झुंझुनू इलाका राजनैतिक सम्मेलन १६, १७ जून को हुआ। सभापति थे पंडित हीरालाल जी शास्त्री। सम्मेलन का उद्घाटन किसान नेता श्रीकृष्णदत्तजी पालीवाल ने किया। आपका भाषण बड़ा ही आकर्षक प्रभाव-शाली रहा। स्वागताध्यक्ष जी का भाषण काफी बड़ा था। सभापति जी का भाषण भी खूब लम्बा चौड़ा रहा। खाने-पीने का बन्दोबस्त भी अच्छा रहा १७ जून को सवेरे आजाद हिंद-फौज का निरीक्षण कर्नल कासलीवाल जी ने किया। सैनिकों की संख्या करीब ५० के थी, जो जयपुर रियासत के रहने वाले थे! कर्नल कासली-वाल ने उनको खाने-पीने के प्रबन्ध का आश्वासन दिलाया।

रात को खुला अधिवेशन प्रारम्भ हुआ कार्यवाही बहुत देर तक चली। विषय थे चोर बाजार, भीणों का प्रश्न, दरोगा जाति, कंट्रोल (तेल, चीनी) आदि। वक्ताओं में वेंकटेश पारीक, रामगढ़िया, मगराज पाटोदिया, जीवराजका, भीमराज, कविवर 'बिलाला' का हुआ।

मुकंदगढ़ (जयपुर) में जी नेहरू की गिरफ्तारी पर गया। श्री मोहनसिंह दूक फोड़े के बावजूद भी होना—देश-प्रेम का परिचायक कार्यकर्ताओं में महादेव जी चिरंजीलाल जी आदि थे।

मरुडावा (जयपुर) की बैठक टैक्सों के विरुद्ध एक सभासद् को, सभापति शंट वक देने के अपराध के गया।

नवयुवकों के लिए हर्ष

लेखक पं० श्रीराम

(नेशनल आर्गेनाईजिंग हिन्दुस्तान स्काउट एसोसिएशन का विषय नाम से स्पष्ट है। जहाजों का जमाना है, इस को थोड़ी बहुत जानकारी हरएक को होनी चाहिए। आशा है, की इस अनोखी पुस्तक से उठायेंगे। पुस्तक सचित्र है, कोष रहने से पाठकों को पुस्तक में बड़ी सहायता मिलेगी। रंगीन। मूल्य केवल एक रुपया मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस,

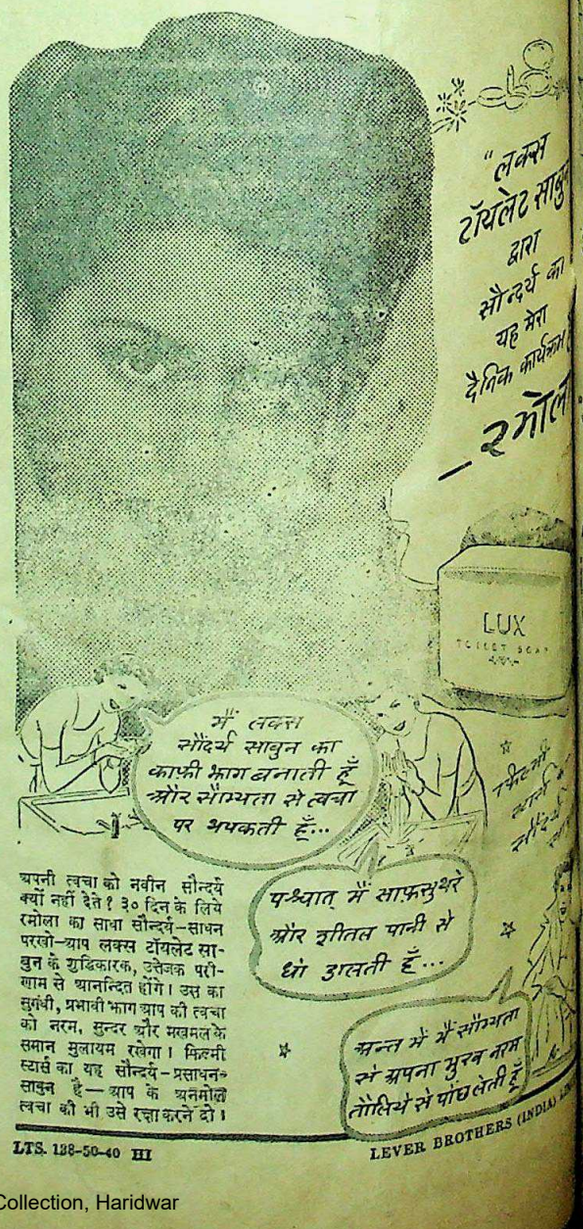

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ड़ी समाज में विधवा-विवाह

...ही में मारवाड़ी समाज में कई ...विवाह हुए हैं। २० वर्ष पहले ...विवाह को लेकर समाज में जो ...स्थान आया था, आज ठीक उसके ...विधवा-विवाह के लिए चारों तरफ ...वर्धक समाचार आ रहे हैं। जो ...विरोधी थे वही लोग आज विधवा-...का समर्थन कर रहे हैं। समाज की ...भी विधवा-विवाह कराने के ...करती है। समाज में प्रतिदिन ...दुःखित समाचार सुनने को मिलते ...अमुक लड़के की मृत्यु हो गई ...विवाह कुछ महीनों पहले ही हुआ ...ऐसी दुर्घटनाओं ने ही समाज के ...विचारवालों की आँखें खोल दी ...विधवा-विवाह के विरोधी थे आज वही लोग इन दुर्घटनाओं को देखकर विधवा-विवाह के समर्थक बन गये। मुझको वह लोग जहाँ मिलते हैं, यही कहते हैं कि समाज को वैधव्य के कलंक से मिटाना होगा। समाज को बिलखती हुई विधवा की हाय से बचाना होगा। अब कोई तरह का विरोध नहीं है। समाज के प्रतिष्ठित लोग भी ऐसे विवाहों में उत्साहपूर्वक सम्मिलित होते हैं। अब तो उन विधवा बहनों और विधवा-विवाह करनेवाले उत्सुक भाइयों के माता-पिता को भय और संकोच छोड़कर तैयार हो जाना चाहिए जिससे घर घर में फैले हुए इस अग्निकांड को दूर किया जा सके। निम्नलिखित पते पर विधवा-विवाह सम्बन्धी रजिस्टर खोल दिया गया है। सैद्धान्तिक रूप से विधवा-विवाह करनेवालों को लड़की और लड़के का नाम भेज देना चाहिए जिससे सम्बन्ध स्थिर करने में सुभीता हो।

५६, शिमला स्ट्रीट —वसंतलाल मुरारका
कलकत्ता

शिक्षा-मन्त्री ध्यान दें!

अगस्त सन् १९४२ में छात्रों ने जो बलिदान किया था वह किसी से छिपा नहीं है। देश को उन पर गर्व है। वे गोली के शिकार बने, जेल गये और फरार रहकर अनगिनत कष्ट सहते रहे। उनके भविष्य के लिए आवश्यक है कि शिक्षा-विभाग कुछ करे। सुना है मध्यप्रान्त ने यथोचित सुविधायें छात्रों को प्रदान की हैं। यदि संयुक्त-प्रान्त का शिक्षा-विभाग उन्हें उन कक्षाओं का सटिफिकेट या डिप्लोमा दे अथवा परीक्षाओं में बैठने दे जिनमें कि वे अब तक पढ़ते होते तो उन्हें पर्याप्त प्रोत्साहन मिलता और अन्य छात्रों के लिए भावी स्वातन्त्र्य संग्राम में भाग लेने के लिए नवीन प्रेरणा मिलती। क्या हमारे शिक्षा-मन्त्री श्री सम्पूर्णानन्द जी इस दिशा में ध्यान देकर शीघ्र ही छात्रों के लिए कुछ करेंगे?

आजमगढ़ —श्री हरि
२४ जून, ४६

जुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय
स्थापना १९२५
आरोंदा
सूरज १८६६
नीलगिरि तेल
हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, टाइफाइड आदि बीमारियोंमें...
प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

सपट लोशन
दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.
सपट अँड्रू के. लि.
बम्बई नं. २.

"माफ कीजिये"!
बच्चों के लिये भी!
"आन्तरिक सफाई अच्छे स्वास्थ्यकी पहली सीढ़ी है"

आदर्श रेचक

'स्वास्थ्यके लिये अन्दरूनी सफाई सर्वप्रथम अनुकरणीय है—' अन्दरूनी सफाईके लिए एण्डरूज का नियमित अथवा आवश्यकतानुसार सेवन ही काफी है। और बच्चे इस स्वास्थ्यवर्द्धक पेयको पसन्द करते हैं। इसकी प्रत्येक खुराक सफाईका काम करती है। एण्डरूज बच्चों और बूढ़ोंके लिये समान रूपसे रेचक है। यह औषधि सेवनकी आदत नहीं डालती है। देखिये एण्डरूज स्वास्थ्यको किस प्रकार अच्छा बनाता है:—

प्रथम...एण्डरूज मुंह और जीभको साफ करके तरोताजा बनाता है।

द्वितीय ..एण्डरूज पेटको व्यवस्थित करके अम्ल को साफ करता है।

तब ..एण्डरूज यकृतको ठीक रखता और पित्ताधिक्यको रोकता है।

अन्ततः—एण्डरूज अन्दरूनी सफाई कर कब्जियत दूर भगाता और रक्तको परिष्कृत और ठण्डा रखता है।

ANDREWS
एण्डरूज लिवर साल्ट
तरोताजा — बलवर्द्धक

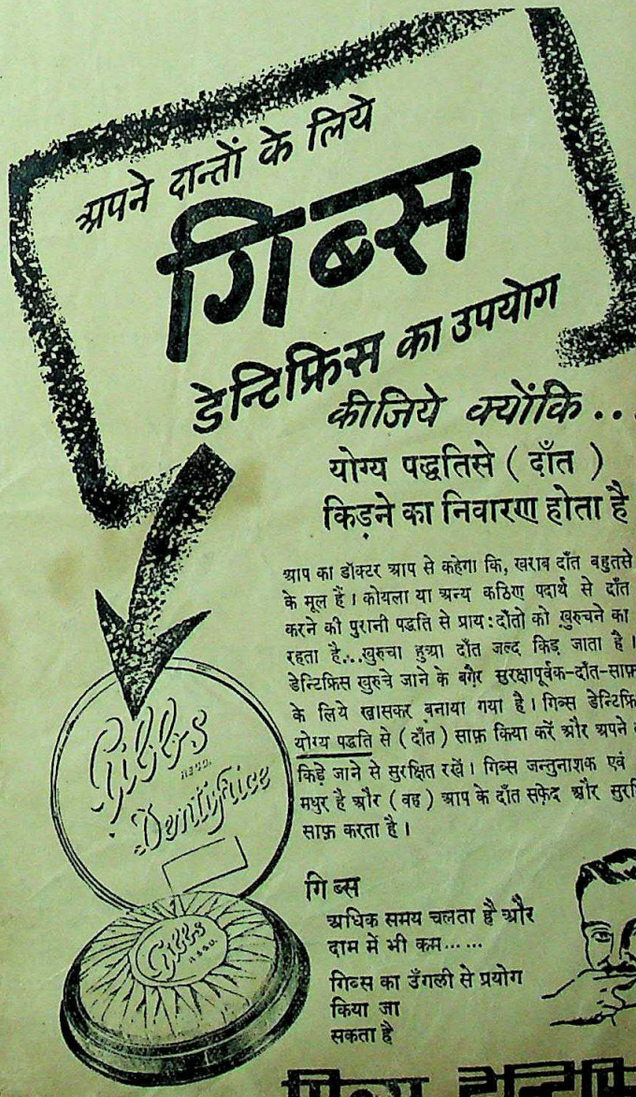
अपने दान्तों के लिये
गिब्स
डेन्टिफ्रिस का उपयोग
कीजिये क्योंकि...
योग्य पद्धतिसे (दाँत)
किड़ने का निवारण होता है

आप का डॉक्टर आप से कहेगा कि, खराब दाँत बहुतसे रोगों के मूल हैं। कोयला या अन्य कठिण पदार्थ से दाँत साफ़ करने की पुरानी पद्धति से प्रायः दाँतो को खुरुचने का खतरा रहता है...खुरुचा हुआ दाँत जल्द किड़ जाता है। गिब्स डेन्टिफ्रिस खुरुचे जाने के बग़ैर सुरक्षापूर्वक-दाँत-साफ़ करने के लिये खासकर बनाया गया है। गिब्स डेन्टिफ्रिस-द्वारा योग्य पद्धति से (दाँत) साफ़ किया करें और अपने दाँतो को किड़े जाने से सुरक्षित रखें। गिब्स जन्तुनाशक एवं स्वाद में मधुर है और (वह) आप के दाँत सफ़ेद और सुरक्षित रख, साफ़ करता है।

Gibbs Dentifrice

गिब्स
अधिक समय चलता है और दाम में भी कम.....
गिब्स का उँगली से प्रयोग किया जा सकता है

गिब्स डेन्टिफ्रिस

GD. 16-33 HI
D. & W. GIBBS LIMITED, LONDON, ENGLAN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृषिचंद्रिका—(तीन भागों में) यह पुस्तक खेती करने या करानेवालों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इसमें खेती की उन्नति का ढंग बताने के साथ पशुओं का इलाज करना, खेती के सब तरह के हिसाब-किताब रखना और सिंचाई करना भी बताया गया है। भाँति भाँति की तरकारियां इत्यादि पैदा करने का तरीक़ा भी अत्यन्त सरल भाषा में लिखा गया है। मूल्य प्रथम भाग ।≡)।।। दूसरे आठ आने, द्वितीय और तृतीय भाग का प्रतिभाग ॥≡)॥ बाढ़ दस आने।

संचिता—इस संग्रह में ठा० गोपालशरण-सिंह ने सन् १९१४ से लेकर सन् १९३९ तक की सब प्रकार की रचनाओं का समावेश किया है। इस एक ही पुस्तक के द्वारा ठाकुर साहब के कवि-जीवन के क्रम-विकास का उत्तमतापूर्वक अध्ययन किया जा सकता है। मू[illegible] रुपये। [illegible] है। [illegible] रुपये।

[illegible]—सुमन, [illegible] नवीन संग्रह है जि[illegible] गीत [illegible] जनमें प्रकृति के प्रति [illegible] तुरा[illegible] बुद्ध द्वारा व्यंजित [illegible] है। इस प्रकार [illegible] सरस भावपूर्ण गीत हिन्दी-साहित्य में अन्यत्र न मिलेंगे। मूल्य २) दो रुपये।

मधुरुवा—लेखक, राजाराम [illegible] बी० एस-सी०, एल-एल० बी० [illegible] अनुपम और नवीन शैली की [illegible] पुस्तक में जीवन में मधु बरसाने [illegible] पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी [illegible] रचनाओं को पढ़कर जीवन को [illegible] सिक्त बनाइए। मूल्य १।) रुपया पाँच आने।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन [illegible] लिमिटेड, प्रयाग।

AC 73

मिस्टर हूवर की राय

'शीघ्र, आनेवाले सप्ताहों की अत्यधिक आवश्यकता के समय भारत के कमीवाले क्षेत्रों को प्रत्येक संभाव्य अतिरिक्त स्रोत से सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिये—केवल आस्ट्रेलिया व स्याम से ही नहीं वरन् भारत के अतिरिक्त अनाजवाले क्षेत्रों से भी उधार लेना चाहिये जो बाद में चुका दिया जावेगा।"

—२६ अप्रैल को बंगलौर में हूवर (भूतपूर्व सभापति संयुक्त राष्ट्र अमेरिका) का वक्तव्य

हमारी प्रतिज्ञा और अपील

हम लोगों से जो कमीवाले क्षेत्रों में रहते हैं हम परिपूर्ण सहयोग की प्रतिज्ञा करते हैं। देश के समस्त साधनों का संगठन होगया है और उनके पास शीघ्रतासे सहायता भेजी जा रही है। उनके अभावको शेष देश के साथ, बराबर विभाजित किया जावेगा। राशनिंग का इस प्रकार विस्तार किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति अपना उचित भाग प्राप्त करले। मूल्य नियंत्रण की कठोर व्यवस्था की जावेगी। शान्तिसे विश्वास रखिये। अपनी आवश्यकता से अधिक मत खरीदिये। मुनाफ़ाख़ोरों से कोई सम्बंध मत रखिये अतिरिक्त क्षेत्रों में रहनेवालों से हम अधिकसे अधिक मदद की अपील करते हैं। यदि आपसे अतिरिक्त अनाज सुपुर्द करने को कहा जावे तो आपके पास आपकी आवश्यकता के अनुसार काफ़ी बच जावेगा। यदि आपके नगर में राशनिंग योजना लागू की गयी है तो याद रखिये, वह आपके अन्य भाइयों की सहायता के लिये ही है। तब भी आपके पास काफ़ी होगा। छोटे तरीके से भी अनुचित संग्रह मत कीजिये। अधिकारियों के साथ सहयोग कीजिये।

खाद्य संकट को पराजित कीजिए

एक साथ कार्य कीजिये - एक साथ हिस्सा बंटाइये

व्यापारियों एवं उत्पादकों को संदेश

अपनी सामर्थ्यानुसार सारा अनाज निकाल दीजिये अनुचित संग्रह का प्रत्येक मन अनाज एक भाई की मृत्यु का कारण हो सकता है नियंत्रित मूल्य पर ही बेचिये—आपके और खरीदनेवाले के दोनों के लिये यही उचित है। दूसरों को संकट दे कर कमाया हुआ धन पाप है।

अपनी सम्पन्न शक्ति और साधनों से सरकार और जनता मुनाफ़ाख़ोरों [illegible] बाजारों का दमन करने के लिये कटिबद्ध है। [illegible] लिये यह अपराध है।

प्रबन्धक सम्पादक एच० पी० घोष [illegible] मिश्र द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—व्योतिप्रसाद मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्य ७॥)
संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

१४ जुलाई, १९४६ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 14th July, 1946

वासवदत्ता—कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी की मुक्तछंद की रचनाओं का संग्रह है। वासवदत्ता के संबंध में कविवर मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं—'उस दिन रेडियो पर 'वासवदत्ता' का पाठ सुनकर सचमुच मैं बहुत प्रभावित हुआ। स्वच्छन्दतापूर्वक द्विवेदी जी जिस प्रौढ़ता की ओर अग्रसर हो रहे हैं, जान पड़ता है स्वयं वह भी उन्हें वरण करने के लिए आतुर हो रही है। मुझे यह देखकर प्रसन्नत हो रही है कि सोहनलाल जी का कवि स्वच्छन्द होकर भी संस्कारशील है और यथार्थवादी होकर भी आदर्शपरायण।' इस ग्रन्थ के प्रकाशन ने हिन्दी-जगत् में एक क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। रचनाएँ पढ़कर स्वयं आप इसका निर्णय कीजिए। मूल्य १॥)

...सिद्ध विधानवादी और कानून-... स्वर्गीय श्री भूलाभाई देसाई।

हिन्दी भाषाभाषी भारतीय जनता का पत्र

मूल्य २ आना

मंत्रिदल की योजना का आर्थिक पहलू
दक्षिणी अफ्रीका में सत्याग्रह का जोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

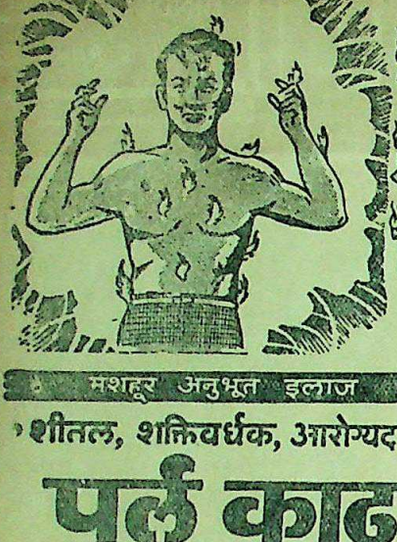

शारीरिक उष्णता के लिये...

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

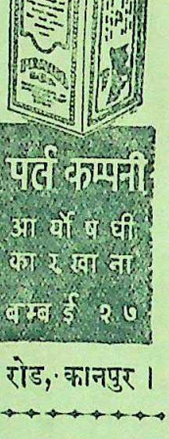

आज से ही शुरू कीजिए, सर्वत्र मिलता है।

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली वतुओं और आंखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग में आग सी जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, बढ़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढ़ा बालक वृद्ध, युवा सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक हानिरहित है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निस्संकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके शीतल, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

पर्ल कम्पनी आ यों ष धी का २ खा ना बम्बई २७

एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

यू० पी० प्रतिनिध दोसर एण्ड को०, विरहना रोड, कानपुर।

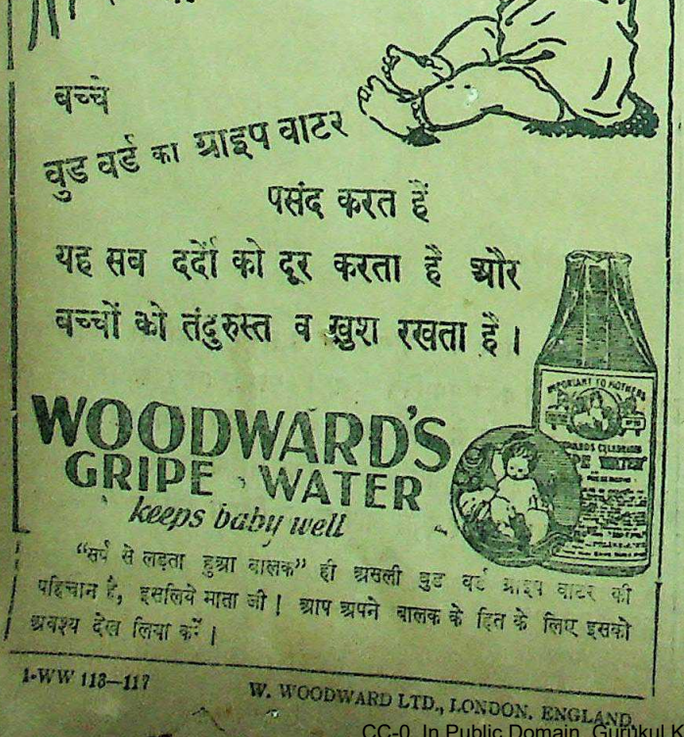

बच्चे वुड वर्ड का ग्राइप वाटर पसंद करते हैं

यह सब दर्दों को दूर करता है और बच्चों को तंदुरुस्त व खुश रखता है।

WOODWARD'S GRIPE WATER

keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है, इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 113—117

W. WOODWARD LTD., LONDON, ENGLAND.

खांसी और सर्दी में विश्वस्त और अचूक

सिरोलिन

'रुचि'

हजारों ही भूखे नहीं-

किन्तु लाखों भूखे हैं

भयंकर खाद्याभाव देश के सामने है जिससे कमी वाले क्षेत्रों में लाखों के प्राण संकट में पड़ रहे हैं। इन अभागे मनुष्यों के खाने की व्यवस्था वास्तव में एक महान् कार्य है। इस विशाल संकट में हममें से प्रत्येक का निश्चित दायित्व है। इन चार तरीकों द्वारा बहुत थोड़े प्रयत्न से ही आप इसकी पूर्ति कर सकते हैं :—

१. आतिथ्य सत्कार को कम कर दीजिये। यदि आपको अतिथि बुलाने ही हैं तो सादा भोजन बनवाइये। वे कारण को समझेंगे और उसको पसंद करेंगे।

२. थोड़ा खाना परोस कर अपने घर में ही बचत कीजिये। इस बात का स्मरण रखें कि रसोईघर में व्यर्थ क्षति न हो।

३. शादियों और धार्मिक एवं सामाजिक उत्सवों में कठोर मितव्ययिता का व्यवहार कीजिये।

४. अपने स्वाद पर निर्भर रहते हुये अधिक तरकारियाँ, फल, मछली, मांस, अंडे और दूध से बनी चीजें खाकर अपने भोजन को पौष्टिक बनाइये। अपनी चावल व गेहूँ की खुराक कम कर दीजिये।

इन तरीकों से हम उन पीड़ितों की कठिनाई और भूख में रक्षा कर सकते हैं जो सिर्फ इस प्रकार की व्यावहारिक मदद और आश्रय के लिये इस आपत्ति-काल में हमारी ओर देखते हैं।

खाद्य बचाना प्राण बचाने के बराबर है।

खाद्य - विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, १४ जुलाई, १९४६

संख्या ४६]

...धी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

...की कांग्रेसी सरकार देहातों ...में बड़ी सफलता प्राप्त कर ...ऐसी स्थिति आ गई है कि ...के राशन में भी एक या आधी ...हो जावे। यह सब देख ...सरकार के मुँह में पानी भर ...सरकार चाहती है कि ...उगाहे गेहूँ का कुछ ...दे दे। अपने राम की समझ ...कि भारत सरकार क्यों ...हो रही है? उसके पास ...भी अन्न का कहाँ अकाल ...भारत सरकार यह चाहती ...में गेहूँ के राशन में बढ़ती ...लेकिन सुना गया है कि ...कांग्रेसी सरकार ने भारत ...का जवाब दे दिया है ...सरकार अभी चुप रह, ...घर-गृहस्थी से फुरसत ...मैं तेरे लिए भी कुछ करूँ।' ...अपने घर में चिराग जलाकर ...घर में भी जलाया जाता ...प्रांतीय कांग्रेसी सरकार ...टिमटिमाता हुआ चिराग ...लेकिन भारत सरकार लंगी ...क्योंकि आजकल वाइस-...बुर्काविहीन आई० सी० ...की कार्य-कारिणी सारे ...खाला बन बैठी है। इसलिये ...में चूहे कूद रहे हैं कि अरे ...तो बाजी मारे जा रहा है, ...महकमों की जिम्मेदारी मैंने ...ली है, उनका पेट कैसे ...भी हो माननीय पन्त जी ...गृहस्थी सँभालेंगे बाद को ...बचा तो उसे चाहे खाला ...या अपने कुनबे को खिलायें।

* *

...गांधी अखिल भारतीय कांग्रेस ...में सम्मिलित होने के ...गये थे। महात्मा जी को ...पता चला कि कोई ...में शरीक नहीं हुआ है। ...इससे बड़ा दुख हुआ। ...कहा कि बम्बई आकर ...में कोई उज्र नहीं हुआ ...में एक भी हरिजन नहीं ...बड़ा दुख है। अपने ...में महात्मा जी का दुखी ...है, क्योंकि हरिजनों के ...जी ने जितना त्याग किया ...हरिजन नेता ने भी नहीं ...बम्बई के भंगियों तथा आदि ...ठेकेदारी तो ले रखी है डाक्टर ...कंपनी ने! हरिजन प्रार्थना ...न पाये होंगे तो आयें कहाँ से ...? महात्मा जी की यह ...और त्याग है कि वह भंगी बस्ती में ठहरते हैं और समय पर भंगी के कार्य से भी उन्हें उज्र नहीं होता लेकिन डाक्टर अम्बेदकर एंड कंपनी तो पाठ पढ़ा रही है कि भंगी भाइयो असली भंगियों की बात सुना करो, यह सब तो नकली भंगी हैं। ऐसी हालत में अम्बेदकर एण्ड कम्पनी के मुँह भले आदमी कैसे लगें? सबकी दवा है लेकिन जबान की दवा नहीं, सबकी गिरफ्तारी हो सकती है, जबान की गिरफ्तारी कैसे हो? लेकिन एक दिन आयेगा जब हरिजन सोचेंगे कि गांधी जी की तपस्या से उन्हें क्या मिला है?

* * *

इँगलैंड के सुप्रसिद्ध विचारक और राजनीतिज्ञ श्री एच० जी० वेल्स ने पिछले दिनों एक नया शिगूफा छेड़ दिया है। मिस्टर वेल्स कहते हैं कि ब्रिटिश सम्राट् तथा उनके कुटुम्ब को अपने सम्राटत्व के पद से त्यागपत्र दे देना चाहिए। इसी सिलसिले में मिस्टर वेल्स ने राजतन्त्र और जनतन्त्र की तुलनात्मक आलोचना की है और यह बतलाया है कि ब्रिटेन अभी तक पुराने युग के राजतन्त्र का शिकार होता चला आ रहा है। अपने राम की समझ में नहीं आता कि मिस्टर वेल्स ने यह नया तराना क्यों छेड़ा है? ब्रिटिश राज्य तो खुदाई जनतन्त्र के आधार पर गढ़ा ही गया है, वहाँ राजतन्त्र की गन्ध कहाँ है? ब्रिटिश सरकार का सारा कारबार ही जनतन्त्र के सहारे होता है। सारे ब्रिटिश साम्राज्य में जनतन्त्र का बोलबाला है। पिछला महायुद्ध भी ब्रिटेन ने जनतन्त्र के नाम पर लड़ा था है। फिर राजतंत्र की बू मिस्टर वेल्स को कहाँ से मिल रही है, और अँगरेज होकर जब वह ऐसी बातें करते हैं तब तो और भी आश्चर्य है। रह गया ब्रिटिश सम्राट् तथा उनके कुटुम्ब का प्रश्न सो इसे प्रत्येक अँगरेज जानता है कि वह आदर, सत्कार और सम्मान की प्रतिमा हैं। लेकिन वह भी पार्लामेंट और १० डाउनिंग स्ट्रीट के फरमानों से बँधे हैं। अफसोस है कि मिस्टर वेल्स के इस नये शिगूफे की लन्दन में कोई नोटिस लेनेवाला तक भी नहीं दिखाई दे रहा है।

* * *

सिंध मन्त्रिमंडल में अब एक नया चोंचला प्रारंभ हुआ है। मुस्लिम लीग पार्टी के दो प्रमुख मुस्लिम लीगरों ने लीग-पार्टी से त्यागपत्र दे दिया है और यह भी कह दिया है कि यहाँ का लीगी मंत्रिमंडल पूरी तरह से घोटाले में है। सिंध के लीगी मन्त्रिमंडल की नैया डगमगा रही है। सिंध के गवर्नर मिस्टर मुडी ने अब बड़े जोरों से साम्प्रदायिक एकता का महोपदेश देना शुरू कर दिया है। ठीक ही है, वक्त भी इसी काम का है, फिर मिस्टर मुडी तो पुराने जमाने के हिन्दू-मुस्लिम एकता के अखाड़े के एक सफल खिलाड़ी रहे हैं? जो कुछ भी हो, सिंध में यह गड़बड़ी क्यों हो रही है। इसमें भी कुछ न कुछ रहस्य तो है ही। विधान सम्मेलन के लिए प्रान्तों से सदस्यों के चुनाव का वक्त सर पर है। मिस्टर जिन्ना हिदातुल्ला मन्त्रिमण्डल के आँसू पोंछना चाहते हैं किन्तु दूसरे लीगी खुद अपना भी आँसू पोंछना चाहते हैं। बात यह है कि विधान सम्मेलन के सदस्यों को ७०) रोज भत्ता मिलेगा, यह मामूली बात नहीं है, एक गवर्नर की तनख्वाह समझना चाहिए। इसलिए अगर गवर्नर का पद न मिले तो न सही, बिलफेल गवर्नर के बराबर तनख्वाह ही सही। अँगरेज की किसी न किसी बात में बराबरी तो हुई, यही क्या कम है? बस, इसीलिए सिंध के लीगी लोगों में रस्साकशी हो रही है। इस वक्त लीग हाई कमांड के फर्मान की परवाह नहीं है बल्कि परवाह है विधान सम्मेलन का सदस्य बन जाने और ७०) रोज पाने की। हिन्दू नेता तो हैं नहीं कि यदि काम न बना तो उदासीन बन बैठें! सिंध मुस्लिम प्रान्त है। वहाँ तो सट्टेबाजी है, खुदा के नाम पर इस हाथ ले उस हाथ दे। मिस्टर मुडी लीगी-भिड़ंत में ताताथम्मा कर रहे हैं। विधान सम्मेलन के लिए सदस्यता के चुनाव की तिथि कुशल से बीत जाये, तो गनीमत है।

पावस-गीत

लेखक, श्री सोहनलाल द्विवेदी एम० ए०

बरसो बरसो हे सघनश्याम!
बरसो बरसो नयनाभिराम!!
बरसो वन उपवन में अपार, बरसो गृह आँगन में अपार,
बरसो सरिता सर में अपार, बरसो गिरि गह्वर में अपार,
शीतल कर दो तुम धराधाम,
बरसो बरसो हे सघनश्याम!
दिशि दिशि घिर घिर, दिशि दिशि फिर फिर, बरसो नभसागर को तिर तिर,
हीरे सी मोती सी सुन्दर, बरसो लघु लघु बूँदे प्रियतर,
वसुधा को कर दो पूर्णकाम,
बरसो बरसो हे सघनश्याम!

भारत के नये राष्ट्रपति पंडित जवाहरलाल नेहरू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

शांति-सम्मेलन का अभिनय

पेरिस में होनेवाला वैदेशिक मंत्रियों का सम्मेलन समाप्त हो गया। ब्रिटेन, अमरीका, रूस और फ्रांस के वैदेशिक मन्त्रियों में पहले तो परस्पर काफी वाक्-युद्ध हुआ, इटली के प्रश्न पर गरमागरम विवाद हुआ किन्तु अन्त में रूस का यह सुझाव मान लिया गया कि इटली को सोवियट रूस को पिछले युद्ध का हरजाना देना ही पड़ेगा। सम्मेलन में यह भी निश्चय किया गया कि आगामी २५ जुलाई को संसार के २१ राष्ट्रों का एक शान्ति-सम्मेलन बुलाया जाये, जिसमें यह निर्णय किया जाये कि किस प्रकार की नीति ग्रहण करने से राष्ट्रों में पारस्परिक सद्भाव स्थापित हो जिससे संसार को पुनः अशान्ति तथा युद्ध का शिकार न होना पड़े। जहाँ तक शान्ति-स्थापना के आदर्श और उद्देश्य का प्रश्न है वहाँ तक सम्मेलन की योजना का प्रस्ताव उचित ही है किन्तु महान् राष्ट्रों की आंतरिक तथा राजनीतिक गति-विधि देखते हुए यह कहना ही पड़ता है कि प्रस्तावित शान्ति-सम्मेलन एक प्रकार का श्रेष्ठ अभिनय-मात्र है। जब कि ब्रिटेन, अमरीका, रूस और फ्रांस के हृदय अभी तक साफ नहीं हैं, सभी अपने अपने स्वार्थों की गुटबन्दी में षड्यन्त्र करने पर तुले हुए हैं, तब उनका संसार में शान्ति-स्थापना का ढिंढोरा पीटना व्यर्थ सा जान पड़ता है। योरोपीय क्षेत्रों में ब्रिटेन और अमरीका अपने प्रभुत्व की स्थापना में व्यस्त हैं, रूस अपनी नीति के विस्तार में व्याकुल है और फ्रांस ब्रिटेन तथा अमरीका का पिछलग्गू बना हुआ है, फिर यह कैसे समझा जाये कि जो शान्ति-सम्मेल होने जा रहा है, वह सचमुच संसार में शांति-स्थापना के आदर्शवादी सिद्धान्त की पूर्ति के लिए हो रहा है? महान् राष्ट्र एक ओर शान्ति-स्थापना के लिए ललकार दे रहे हैं और दूसरी ओर तृतीय महायुद्ध की तैयारी में भी व्यस्त हैं। बात यह है कि द्वितीय महा-युद्ध की समाप्ति के बाद महान् राष्ट्र संसार में अपने लिए व्यापार, बाजार और प्रभुत्व की खोज में लगे हैं। वह सम्मेलनों, कान्फरेंसों तथा सभाओं द्वारा अपने साम्राज्य की नींव दृढ़ता के साथ स्थापित करने में लगे हैं। राजनीतिक दाँव-पेंच लड़ रहे हैं। फिर इसकी कैसे आशा की जा सकती है कि इन महान् राष्ट्रों के संयोकत्व में होनेवाला शांति-सम्मेलन संसार में शांति-स्थापना का कोई आदर्श स्थापित करेगा? अमरीका जो अपने को एक स्वतन्त्र और प्रजातन्त्रात्मक राष्ट्र घोषित करता है, वह भी अपने 'आटम बम' के प्रदर्शन में व्यस्त है। पिछले दिनों बिकनी द्वीप पर 'आटम बम' का प्रदर्शन हुआ किंतु वह एक प्रकार से असफल ही रहा। अब पुनः उसका प्रदर्शन समुद्र में होने जा रहा है। इसलिए प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि जब एक ओर शांति-सम्मेलन की पुकार मचाई जा रही है तो दूसरी ओर 'आटम बम' का इस प्रकार का प्रदर्शन क्यों किया जा रहा है? क्या अमरीका 'आटम बम' के इस प्रकार के प्रदर्शनों से संसार के राष्ट्रों को आतंकित करना चाहता है? क्या वह आतंक के बल पर शांति-सम्मेलन को सफल बनाने के लिए आंतरिक इच्छा नहीं रखता है?

तात्पर्य यह है कि संसार के महान् राष्ट्रों का हृदय स्वयं स्वच्छ नहीं है। एक राष्ट्र दूसरे को फूटी आँखों देखने को तैयार नहीं है। सब अपनी अपनी स्वार्थ-सिद्धि में लगे हुए हैं, सभी अपने अपने साम्राज्यवादी प्रभुता की स्थापना में पैतरेबाजी कर रहे हैं। वह मुँह से कहते कुछ हैं किंतु व्यस्त हैं आगामी युद्ध की तैयारियों में। प्रत्येक एक दूसरे के प्रति सशंकित हैं। सभी सोच रहे हैं कि ऐसा न हो युद्ध छिड़ जाये और हम हाथ पर हाथ रखे बैठे ही रह जायें? इसलिए ऐसी परिस्थिति में शांति-सम्मेलन की योजना के प्रति कैसी धारणा उत्पन्न होती है? इसमें संदेह नहीं है कि यह युग शांति का ही है, संसार-युद्ध की परिस्थितियों का पूरी तरह शिकार हो चुका है, वह वास्तविक शांति का ही इच्छुक है किन्तु साम्राज्यवादी राष्ट्रों के स्वार्थों के आगे वास्तविक शांति की स्थापना हो भी सकेगी या नहीं, यह संदेहजनक अवश्य है। साम्राज्यवादी राष्ट्रों को यदि शांति-स्थापना के लिए ईमानदारी से सद्बुद्धि प्राप्त हो तो शांति-सम्मेलन की सफलता निश्चित ही है नहीं तो शांति की आड़ में अशांति का व्यापक विष तो फैल ही रहा है।

* * *

अ० भा० कांग्रेस कमेटी का निर्णय

बम्बई में होनेवाली अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने बहुमत से कांग्रेस वर्किंग कमेटी का यह निर्णय स्वीकार कर लिया कि केन्द्रीय सरकार के अस्थायी निर्माण-कार्य को अस्वीकृत कर दिया जाये और वैधानिक सम्मेलन के निर्माण और कार्य में पूर्ण सहयोग दिया जाय। इस बार कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन नवीन राष्ट्रपति पंडित जवाहरलाल नेहरू के सभापतित्व में हुआ। कांग्रेस समाजवादी दल के नेताओं की ओर से वर्किंग कमेटी के निर्णय के विरोध में प्रस्ताव उपस्थित हुए किन्तु महात्मा गांधी, राष्ट्रपति आजाद, सरदार वल्लभ भाई पटेल आदि नेताओं के प्रभावशाली भाषणों के बाद कमेटी ने वर्किंग कमेटी के निर्णय को स्वीकृत कर लिया। इसमें सन्देह नहीं है कि कांग्रेस पर अभी दक्षिणपन्थी नेताओं का ही प्रभुत्व है किन्तु वामपन्थियों का भी अब जोर बढ़ रहा है। कांग्रेस हाई कमाण्ड के निर्णय के विपरीत कांग्रेस समाजवादी दल का २० प्रतिशत मत प्राप्त कर लेना एक विशेषता अवश्य है। इसमें सन्देह नहीं है कि मंत्रिदल तथा वाइसराय की नई योजना एक प्रकार का मायाजाल ही है, उससे राष्ट्र का भविष्य में किस प्रकार का भला होगा, यह स्पष्ट है, फिर भी यह समय न तो किसी प्रकार के आन्दोलन का है और न युद्ध छेड़ने का। समय की पुकार है कि कांग्रेस एक बार पुनः ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की मायावी-नीति का वैधानिक दृष्टि से सामना करके या तो सफलता प्राप्त करे या फिर उसका भंडा-फोड़ ही कर दे। कांग्रेस समाजवादी दल का विरोध तत्थ्यहीन नहीं है और समय स्वयं यह सिद्ध करेगा कि ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने भारत को स्वतंत्रता देने के लिए कहाँ तक सत्पथ ग्रहण किया है, फिर भी कांग्रेस वर्किंग कमेटी का निर्णय भी कम दूर-दर्शितापूर्ण नहीं है। इसलिए बम्बई-कांग्रेस ने जो निर्णय किया है, समय को देखते हुए वह उचित ही हुआ है।

कांग्रेस कमेटी के दूसरे निर्णय में दक्षिणी अफ्रीका के भारतीयों के प्रति सहानु-भूति प्रकट की गई है। दक्षिणी अफ्रीका में वहाँ की गोराशाही भारतीयों का किस प्रकार अपमान कर रही है, [illegible] प्रति किस प्रकार का [illegible] इसे कांग्रेस का समर्थन [illegible] ही चाहिए था। दक्षिणी [illegible] भारतीयों का प्रश्न भारत [illegible] भारतीयों का प्रश्न है। [illegible] बलिदान करनेवाली महान [illegible] से दक्षिणी अफ्रीका के त्यागी [illegible] विशेष बल प्राप्त होगा। [illegible] कांग्रेस के निर्णय राष्ट्र के लिए [illegible] और उचित ही हुए हैं।

* *

राष्ट्रपति पंडित जवाहरलाल [illegible] नई कांग्रेस वर्किंग कमेटी के [illegible] नामावली घोषित कर दी। [illegible] कमेटी में मौलाना अबुलकलाम [illegible] सरदार वल्लभ भाई पटेल, डाक्टर [illegible] प्रसाद, खान अब्दुलगफ्फार [illegible] गोविन्दवल्लभ पंत, श्री राजगोपालाचारी, श्री रफी अहमद किदवई, श्री [illegible] बोस, श्रीमती कमला देवी, श्री [illegible] पटवर्धन, श्री फखरुद्दीन अली [illegible] प्रतापसिंह, श्री मृदुला साराभाई [illegible] डाक्टर बालकृष्ण केसकर रखे गये [illegible] राम को नई वर्किंग कमेटी की सदस्यता [illegible] आश्चर्य तो नहीं हुआ क्योंकि भले [illegible] कभी न कभी पुराने भी होते हैं [illegible] सच है कि नई वर्किंग कमेटी पुराने [illegible] वादी' कमेटी अब नहीं रह गई [illegible] में सभी प्रमुख दलों को प्रतिनिधित्व [illegible] गया है। देना भी चाहिए। होना [illegible] ईसाई दल का प्रतिनिधित्व भी [illegible] वर्किंग कमेटी में हो जाता तो [illegible] था? ऐसा जान पड़ता है कि [illegible] कमेटी में नई जान आनेवाली है। [illegible] जमाने से चले आनेवालों का [illegible] पुराना हो गया था, इसलिए [illegible] वर्किंग कमेटी में जीवन लाने के [illegible] खून का इंजेक्शन दिया जाता। [illegible] पंडित नेहरू ने वर्किंग कमेटी को [illegible] अधिक क्रियात्मक बनाने के लिए [illegible] इंजेक्शन दिया है। यह राष्ट्र के [illegible] सौभाग्य की बात है।

चली आ रही क्रांति-पुजारिन

लेखक, प्रोफेसर अंचल एम० ए०

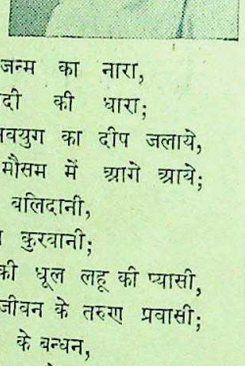

किसकी ज्वालामुखी-प्रगति ने एकाकी जंजीरें काटीं,
डूब रही लोहित किरणों में मरणशील तारों की घाटी;
चीर चलीं अस्तंगत अन्धकार को किसकी तरुण शिखायें,
एक महाज्वाला बन फूटीं किसकी बिजली सी रेखायें;
किस शोषणविहीन अनदेखी-सी समता का प्रबल तकाजा,
उठा रहा घर-घर से सदियों की हिंसा का रुका जनाजा;
गूँज रही जनगण के कानों में जागृति की अरुण प्रभाती,
उगती चेतनता में विप्लव की चिनगारी उड़ती आती;
पेट काट कर भूखे तन ने जो सपनों का महल बनाया,
उसे रौंदती और ढहाती आती बढ़ी नाश की छाया;

मिटते से स्वतन्त्रतादर्शों में फिर नये जन्म का नारा,
उमड़ रही संगीनों के सिरहाने आजादी की धारा;
चली आ रही क्रान्ति-पुजारिन-सी नवयुग का दीप जलाये,
कौन प्रवर्तक है जो शोलों के मौसम में आगे आये;
दूर नहीं है—दीख रहा जनसत्ता का मन्दिर बलिदानी,
जिसकी ईंट ईंट के गारे में लिपटीं असंख्य कुरबानी;
कदम कदम बलिदान चाहता—पथ की धूल लहू की प्यासी,
बढ़ते ही जाते उस पर लो! नवजीवन के तरुण प्रवासी;
युग की ऊर्ध्वमुखी लपटों में क्षार हो रहे छवि के बन्धन,
घायल महासिन्धु-सा रोषानल में क्षुब्ध देश का यौवन;
कौन कह रहा प्रतिक्षण बढ़कर स्वतन्त्रता की नींवें डालो,
कठिन लक्ष्य है, किन्तु समय कम, बिलकुल कम, उठ होश सँभालो;
जला रही मन के गीतों को किस अशान्ति की अन्तर्वाती,
धड़क रही किसकी लोहित किरणों से कुसुम कुसुम की छाती;

साहित्यालोचन

इसका संशोधित संस्करण [illegible] तैयार है। इसमें संस्कृत के [illegible] आचार्यों के साहित्य-सम्बन्धी [illegible] के अतिरिक्त पाश्चात्य साहित्यकार [illegible] साहित्य मर्मज्ञों के मत का दिग्दर्शन [illegible] ही मौलिक ढंग से कराया गया है। [illegible] पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य [illegible] पाँच रुपये पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो
इंडियन प्रेस, लि० प्रयाग

शानदार दूसरा संस्करण
आजाद हिन्द फौज के उन [illegible] गीतों का अनूठा संग्रह जो आज [illegible] और कोहिमा की घाटियों में गूँजे [illegible]
जय हिन्द चलो दिल्ली
सम्पादक—श्री उमाशंकर [illegible]
दाम १) डा० ख० १)
पुस्तक। एजेंटों की सर्वत्र जरूरत है
मंत्री—साहित्य-सेवासदन वर्धा, [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्त्रिदल की योजना का आर्थिक पहलू क्या है ?

सम्मेलन अनुभव करेगा कि मिशन के प्रस्ताव आर्थिक चट्टान से टकराकर चूर चूर हो जायेंगे

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

मन्त्रिदल भारत आया था, वह अपनी योजना देकर भारत से पुनः लन्दन मन्त्रिदल ने जो योजना प्रस्तुत की है वह बाह्य रूप से चाहे जितनी प्रजा- किन्तु आन्तरिक दृष्टि से वह कूटनीति से परिपूर्ण है विशेषकर आर्थिक करने पर वह निस्सार और भारत को और भी अधिक गुलामी की जंजीरों विद्वान् लेखक ने इस लेख में मन्त्रिदल की योजना के आर्थिक गम्भीर प्रकाश डाला है। लेख पठनीय तथा राजनीति के पाठकों तथा विद्वानों के लिए विचारणीय है।

मन्त्रिदल स्वदेश लौट गया। वह देश में शान्ति के साथ भारत को शासन सभा को भारतीय करने के लिए पर वह और भी अधिक दृढ़ मन्त्रिमिशन से १९०७ तक लार्ड मिण्टो तक— शासन था, वह वैसा ही स्थापित कर गया है। दोनों हुआ है कि वायसराय की भारतीय सिविलियनों—एक मुसलमान—को भी स्थान भारत को स्वाधीनता देने की यह भूमिका है।

की १६ मई की योजना को कांग्रेस ने मान लिया है। वह पूर्ण शक्ति से विधान-सभा के चुनाव की तैयारी में व्यस्त है। मन्त्रिमिशन की योजना पर राजनीतिक पहलू से जितना विचार किया गया है, उसका सतांश भी उस पर आर्थिक दृष्टि से विचार नहीं किया गया। सचाई तो यह है कि ब्रिटिश बोर्ड आफ ट्रेड के मन्त्री सर स्टेफर्ड क्रिप्स भारत में व्यर्थ नहीं आये थे। वे भारत के आर्थिक पक्ष को मजबूत करने आये थे और भारत से रवाना होते हुए सिविलियनों का शासन स्थापित करके उसको पूर्ण रूप भी दे गये हैं। राजनीतिक स्वाधीनता देने की उदारता

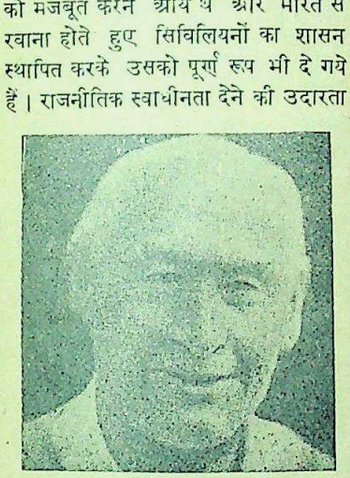

भारत-मंत्री लार्ड पेथिक लारेंस मंत्रिदल के नेता अपनी सफलता पर प्रसन्न हैं।

दिखाकर भारत को ब्रिटिश माल का बाजार बनाने की योजना लेकर मिशन आया था और वही देकर वह यहाँ से वापस गया है। इसलिए जब विधान-सभा १ अगस्त से बैठ रही है, तब योजना के आर्थिक पहलू पर विस्तार से विचार करने की जरूरत है, जिससे ब्रिटिश पक्ष को समय रहते छिन्न-भिन्न किया जा सके।

दुश्मन भी नहीं सोच सकता था

मिशन भारत में शुभेच्छाओं के साथ आया और शुभेच्छाओं के बीच वह विदा हुआ है। सर स्टेफर्ड क्रिप्स के बीमार होने पर गांधीजी अपने डाक्टर के हाथ प्रतिदिन उनके पास लस्सी भेजते रहे हैं, पर मिशन ने जो योजना भारत को दी है, वह आर्थिक दृष्टि से इतनी अधिक बुरी है कि भारतीय प्रगति का जानी दुश्मन भी इससे बुरी आगे की अनेक सदियों के वास्ते हमारे लिए नहीं सोच सकता था। राजनीतिक स्वाधीनता जिस मात्रा में दी गई है, उसको आर्थिक दासता से योजना के निर्माताओं ने संतुलित कर दिया है।

भारत की आकांक्षा

पिछले दो दशकों से राष्ट्रीय भारत आर्थिक और औद्योगिक विकास के लिए एकसूत्री नीति की माँग करता आया है। रियासतें अलग हैं और व्यापार और उद्योग के सम्बन्ध में वे ब्रिटिश भारत के साथ नहीं चलतीं; फलतः, दोनों में से किसी में भी औद्योगिक विस्तार सम्भव नहीं था। इसलिए रियासतों की आर्थिक नीति को ब्रिटिश भारत के समान बनाने के लिए नरेन्द्रमण्डल से भारत-सरकार ने सन्धि-चर्चा चलाई। इसलिए राष्ट्रीय भारत फेडरल यूनियन चाहता था, जिससे ब्रिटिश और रियासती भारत दोनों समान जनतन्त्रात्मक साझीदार की हैसियत से हो और शक्तिशाली केन्द्र हो जो उद्योग और व्यापार के लिए एक नीति का निर्देश करे।

यही नहीं किया

मिशन ने बस यही नहीं किया है। उसने रियासतों को एक करने और उन्हें शेष भारत से मिलाने के लिए जहाँ कोई मशीनरी नहीं बनाई, वहाँ उन्होंने प्रान्तों को भी फाड़ कर रख दिया है और उनके ग्रुप बनाकर उनको आपस में व्यापार और उद्योग के अन्दर परस्पर प्रतियोगिता करने के लिए खुला छोड़ दिया है। अकेला केन्द्र ही इस युद्ध को रोक सकता है, पर वह निःशक्त निस्तेज बनाया गया है।

केन्द्रीय गवर्नमेंट को मिशन-योजना ने सेना, यातायात और परराष्ट्र ये तीन काम सौंपे हैं। कोई कह सकता है कि विदेशी व्यापार परराष्ट्र के अन्तर्गत आ जाता है ? पर बात ऐसी नहीं है। क्योंकि घरेलू और देशी उद्योग और व्यापार प्रान्तिक रखा गया है अग्रूपों को दिया गया है। इसलिए केन्द्रीय गवर्नमेंट विदेशी राष्ट्र से व्यवसायिक और व्यापारिक सन्धि-चर्चा न कर सकेगी।

भेद-नीति से

संयुक्तभारत ब्रिटेन, अमरीका या और किसी भी देश से अच्छा और बड़ा सौदा कर सकेगा। पर यदि देश दो या तीन प्रतियोगी ग्रूपों में बँट जाय, तो सौदा करने का लाभ ब्रिटेन को मिलेगा। ब्रिटेन यही चाहता था। वह वर्तमान राजनीतिक प्रभुत्व के बदले इसी की आकांक्षा रखता है। उसके लिए एकसाथ तीनों सरकारों से व्यापारिक सन्धि-चर्चा चलाना और एक दूसरे के विरुद्ध दूसरे को रखकर सर्वोत्तम लाभ की शर्तें प्राप्त करना उसके लिए सम्भव होगा।

युक्तप्रांत को अटक का तेल पाने के लिए पंजाब से वैसी ही सन्धि करनी पड़ेगी, जैसी कि उसको संयुक्तराष्ट्र अमरीका, बर्मा या ईरान की किसी तेल-कम्पनी से करनी पड़ेगी। भारत फिर उसी पुराने जमाने पर पहुँच जायेगा जब साउथ ईंडियन रेलवे कम्पनी पड़ोस में स्थित कोयले की खान की अपेक्षा दक्षिण अफ्रीका से सस्ता और अच्छा कोयला पाती थी।

मनहूस इरादा

केन्द्र के पास यातायात और सेना मनहूस इरादे से रखे गये हैं। यातायात का चिर-विकास और विस्तार सेना और व्यापार दोनों उद्देश्यों से किया जाता है। एन० डब्ल्यू० आर० (नार्थ वेस्टर्न रेलवे) की अधिकांश लाइनें सामरिक और सैनिक कारणों से बिछाई गई हैं। इसके विपरीत गंगा घाटी की रेलवे का विस्तार व्यवसायिक दृष्टि से किया गया है। भारत-

कांग्रेस प्रेसिडेंट मौलाना अबुल कलाम आजाद।

सरकार की नीति चूँकि भारत के उद्योगों को न पनपने देकर ब्रिटिश उद्योगों को बढ़ाने की रही है इसलिए यातायात का अनुसरण व्यापार ने किया है। इसका उलटा बहुत कम हुआ है। भविष्य में प्रान्त परस्पर प्रतियोगी ग्रूपों में रखे जायेंगे, इसलिए केन्द्र व्यापार के हित को ख्याल में रखकर यातायात का विस्तार करेगा। इससे ब्रिटेन के निर्यात-व्यापार के बढ़ाने के आन्दोलन को बल मिलेगा। भारत-मन्त्री के साथ बोर्ड आफ ट्रेड के प्रेसीडेण्ड का आना इसी उद्देश्य से हुआ था।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के जमाने में

एक सामान्य एक्साइज और चुंगी-नीति न होने के कारण यह देश फिर ईस्ट इण्डिया कम्पनी के जमाने में पहुँच जायेगा, जब कि प्रतिमील पर चुंगीघर बने हुए थे और देशी नरेशों से ईस्ट इण्डिया कम्पनी जो सबसे बड़ी रियायत माँगती थी, वह यह कि उसका माल चुंगी फ्री जाने दी जाय। उस अवस्था में त्रावनकोर के लिए पेशावर की अपेक्षा स्पेन या माण्टीनीग्रो से सस्ते रेट पर किसमिश मँगाना सम्भव होगा।

बैंकिंग और बीमा

केन्द्रीय असेम्बली में इस समय बैंकिंग, बीमा और श्रम के सम्बन्ध में अनेक बिल विचारार्थ पेश हैं। इस योजना के बाद इनका भविष्य क्या होगा ? हैदराबाद के अफसर ने कहा है कि 'हैदराबाद स्टेट बैङ्क' का भारतीय रिजर्व बैङ्क के समान अधिकार और उसका कार्य-क्षेत्र होना चाहिए। इसका अर्थ होगा कि हैदराबाद में ही नहीं, बल्कि प्रत्येक प्रान्तिक ग्रूप और बहुत से महत्त्वपूर्ण बड़े स्टेटों या रियासतों के ग्रूपों में स्वतन्त्र और सर्वाधिकारपूर्ण बैङ्क होंगे और केन्द्रीय बैङ्क की स्थापना का स्वप्न भूत का विषय हो जायगा। यदि ऐसा हुआ तो हर एक की

शेष पृष्ठ १२ पर देखिए

प्रसिद्ध कूटनीतिज्ञ सर स्टेफर्ड क्रिप्स मंत्रिदल के दूसरे सदस्य लन्दन पहुँच गये हैं।

मन्त्रिदल के एक सदस्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष रूप से 'देशदूत' के लिये

त्यागवीर श्री एच० वी० कामथ

स्वतन्त्रता के लिए लड़नेवाला एक त्यागी नेता

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

त्यागवीर श्री एच० वी० कामथ, अखिल भारतीय फार्वर्ड ब्लाक के प्रधान मत्री हैं। आप नेता जी श्री सुभाषबोस के चलाये मार्ग पर चलकर भारतीय स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील हैं। इस लेख में श्रीयुत विद्यार्थीजी ने कामथ साहब के त्यागमय जीवन का सुंदर चित्रण किया है, जो पठनीय तथा सुंदर है।

मैंने श्री कामथ को कहाँ देखा, यह भी एक स्मरणीय घटना है। मैं नेता जी, सुभाष बाबू के पास कुछ काम से गया था। कामथ जी का नाम मैं पत्रों में पढ़ चुका था। वे आई० सी० एस० थे! अच्छे ओहदे पर काम कर रहे थे लेकिन कभी दर्शन करने का मौका नहीं मिला था।

सुभाष बाबू ने कहा—"कामथ साहब अमुक काम करना बहुत जरूरी है।" मैंने उन्हें गौर से देखा। लम्बा डील-डौल, बड़ी बड़ी आँखें, अँगरेजों की तरह खूबसूरत चेहरा, काफी तन्दुरुस्त लेकिन फिर भी विश्वास नहीं हुआ कि यही आई० सी० एस० पदवीधारी कामथ साहब हैं। वह बहुत साधारण सा कपड़ा पहने हुए थे। मामूली खादी का लम्बा कुर्त्ता और पाजामा। पैर में देहातियों की तरह मोटा और भद्दा सा चप्पल।

नेता जी और कामथ जी की जब बात-चीत खतम हो गई तब मैंने धीरे से नेता जी से पूछा, "क्या यही कामथ साहब हैं, जिन्होंने सरकारी ओहदे से त्यागपत्र दे दिया है?"

नेता जी हँसे और बोले—"तुमको अभी तक पता नहीं? हाँ, यही कामथ हैं। इन्होंने देश के लिए बड़ी कुर्बानी की है। हर तरह की मुसीबत उठाने के लिए तैयार हैं। ये नाम के भूखे नहीं हैं। इन्हें तो मानव-जगत् की सच्ची सेवा करने की धुन सवार है। साम्राज्यवादी ताकतों से लड़ने के लिए तैयार हैं। इनके दिल के भीतर एक द्वंद चल रहा है। गुलामी की जिन्दगी बिलकुल सहन नहीं कर सकते। कामथ साहब आराम की जिन्दगी व्यतीत कर सकते थे क्योंकि सारी सुविधाएँ मौजूद हैं। अपने देश-भाइयों को जिस तरह भी चाहें बचाने की ताकत आई० सी० एस० वालों को है। आई० सी० एस० वालों पर कोई अँगुली नहीं उठा सकता। बड़े से बड़े पद पर पहुँच सकते हैं। काफी रुपया कमा सकते हैं। लेकिन कामथ जी ने यह महसूस किया कि आखिर आई० सी० एस० वाले भी तो अँगरेजों के गुलाम ही हैं। एक मामूली अँगरेज भी अपमान कर सकता है। दूसरे स्वतंत्र देशवाले आई० सी० एस० वालों को गुलाम से गुलाम समझते हैं। लोग उन्हें अपमान की दृष्टि से देखते हैं और कहते हैं कि यह अँगरेजों के पिट्ठू हैं। अपने मुल्क के दुश्मन हैं। गुलामी को कायम रखने के लिए अपने देश, समाज और कुटुम्ब को भी धोखा दे सकते हैं। स्वाभिमान को भूल गये हैं। मातृभूमि क्या चीज है यह नहीं जानते। हर वक्त अँगरेजियत की बू सिर पर सवार रहती है। ठाट-बाट की जिन्दगी में ही सब कुछ देखते हैं। कामथ जी ने भी ठाट-बाट किया है लेकिन उस पर हमेशा गम्भीरता से सोचते रहे हैं और सोचते रहे हैं कि आखिर मेरा स्थान कहाँ है बाहरी दुनियाँ को भी आँखें खोलकर देखा है। स्वतन्त्र मुल्कों में गये हैं। आजाद लोगों से मिले हैं। इतिहास की घटनाओं को बारीकी से अध्ययन किया है, सोचा और समझा है। दूसरों से बहसें की हैं। दुनिया की उलट-पुलट को ध्यान से देखा है। आजादी क्या है? इस पर काफी मनन किया है। वीर देशभक्तों की आत्मकथाओं को भी बड़े ध्यान से पढ़ा है और अपनी जिन्दगी पर भी गौर किया है। मैंने इतना क्यों पढ़ा लिखा! आखिर जीवन का कुछ तो उद्देश्य है? पैसा कमाना ही जीवन का उद्देश्य नहीं हो सकता। गुलामी को मजबूत बनाने के लिए क्या मैं सरकारी कल-पुर्जे का काम इसी तरह करता रहूँ? कई दिनों और महीनों तक यही द्वन्द कामथ जी के भीतर चलता रहा। आखिर में अच्छा और सही मार्ग उन्हें यही दिखाई पड़ा कि देश के लिए यदि फकीरी का वेश धारण करना पड़े तो कोई हर्ज नहीं। साम्राज्यवादी लुटेरों की सेवा करने के बदले उनसे संघर्ष करते हुए जीवन होम देना पड़े तो हिचकिचाहट नहीं। अब वह उच्च सरकारी पद पर लात मारकर एक साधारण जनता की तरह हमारे बीच में काम कर रहे हैं।"

कामथ साहब को मैंने हमेशा एक साधारण व्यक्ति की तरह देखा। दूर से देखकर यह कोई अनुमान नहीं कर सकता कि यही आई० सी० एस० पास कामथ साहब हैं। उनके जीवन में किसी तरह का आडम्बर नहीं है। वे एक साधारण बालक से भी दिल खोलकर बातें कर सकते हैं। आप किसी भी वक्त उनसे मिल सकते हैं।

पिछले अगस्त-आन्दोलन में जब मैं जेल में था तो सिवनी जेल में मुझे श्रीमान् कामथ साहब के साथ रहने और बहुत निकट से उनके जीवन को देखने का मौका मिला था। सचमुच अँगरेजों की साम्राज्यवादी दुनिया से आपको बड़ी घृणा है। आप समाज में वर्गविहीन श्रेणी चाहते हैं। किसानों-मजदूरों की जिन्दगी को ऊपर उठाना चाहते हैं। उनके शोषण को जितनी जल्दी हो सके बन्द करा देने के पक्ष में हैं। आपका कहना है कि सबसे भूखे और सताये किसान मजदूर ही हैं। उन्हीं को सबसे आगे बढ़ाना है। सारे देश को शिक्षित बनाना है। देश की डरपोक वृत्ति को दूर करना है। हमको किसानों-मजदूरों के बीच में जाकर काम करना है। उनकी गंदी आदतों को रोकना है। कामथ साहब भाषणों में विश्वास नहीं करते, वह संगठन के पुजारी हैं। लोग कहते हैं कि गाँवों में जाना चाहिए लेकिन कामथ साहब सचमुच नंगे, भूखे, प्यासे,

अखिल भारतीय फारवर्ड ब्लाक के प्रधान-मंत्री श्री एच० वी० कामथ।

थके-माँदे देहातियों के बीच में जाकर रहते हैं। उनके सुख-दुःख में हिस्सा बँटाते हैं। सरकारी हुक्कामों से बचने की नेक सलाह देते हैं। देहातियों के जीवन में घुल-मिल जाते हैं। उन्हें कभी ख्वाब में भी यह याद नहीं आता कि मैं कभी आई० सी० एस० अफसर भी था।

आपने अपने और अन्य मुल्कों का इतिहास भी बड़े ध्यान से पढ़ा है। समाजवादी साहित्य का भी खूब अच्छी तरह से मनन किया है। वह आज यह महसूस करते हैं कि दुनिया के लिए समाजवादी व्यवस्था ही सबसे लाभप्रद है। समाजवादी व्यवस्था कायम हो जाने पर आज की तरह कहीं अन्याय नहीं हो सकता। हर एक को पूरी सुविधा रहेगी। एक देश दूसरे देश को हड़पने की ख्वाहिश छोड़ देंगे। मानव-समाज में शान्ति होगी। एक वर्ग दूसरे वर्ग को चूसने की मनोवृत्ति छोड़ देगा। सारी सम्पत्ति राष्ट्र की होनी चाहिए। उस पर सबका समान अधिकार होगा। बड़े बड़े कल कारखाने का राष्ट्रीयकरण होना चाहिए। गाँववालों को पूरी सुविधायें दी जानी चाहिए। वहाँ भी पक्की सड़कें हों, वाचनालय हों, सुन्दर अस्पताल हों। अखबार आदि पहुँचाने की पूरी सुविधाएँ होनी चाहिए। खेती की आधुनिक चीजों से उन्हें परिचित कराना चाहिए। नागरिक जीवन की उन्हें शिक्षा दी जानी चाहिए। आपका कहना है कि पढ़े-लिखे लोगों को आज गाँवों में जाकर संगठन के काम में लग जाना तथा उनके जीवन-स्तर को ऊँचा करने का प्रयत्न करना चाहिए। दुनिया की बातों से भी उन्हें परिचित कराया जाय।

आप नेशनल प्लानिंग कमेटी के मंत्री भी चुने गये थे लेकिन उसकी कछुए की-सी चाल देखकर आप उससे मुक्त हो गये। देश के गण्यमान्य नेता आपका आदर करते हैं। आपकी विद्वत्ता और देशभक्ति के सभी कायल हैं। आपकी सच्चाई पर कोई अँगुली नहीं उठा सकता। रुपयों से कोई पूँजीपति आपको खरीद नहीं सकता। आप नेता जी श्री सुभाषचन्द्र बोस की राष्ट्रीयता और कार्य-पद्धति को पसन्द करते हैं। उनके साथ कदम-बकदम चलकर देश की आजादी में हिस्सा बँटाना चाहते हैं। आपकी उग्रता की पहचान इसी एक बात से चलती है। नेता जी

और कांग्रेस के उच्च अधिकारि... बहुत ज्यादा मतभेद हो गया... जी के साथी एक एक करके दूसरे... मिल रहे थे और पदों के लिए... यहाँ तक कि सुभाष बाबू के... तक उन्हें धोखा दे रहे थे; तब... कामथ जी ने सुभाष बाबू का... छोड़ा। आज तक अखिल भारतीय... ब्लाक के प्रधान मंत्री के पद पर... हैं। नेता जी की गैरहाजिरी में... ही उत्साह से आप अग्रगामी... संचालन बड़ी सफलता से कर... आपने पीछे हटना सीखा ही... आपने एक दिन कहा था—"... में सुभाष बाबू का मार्ग ही चुनना...

शेष पृष्ठ १६ पर

काम पर जाते उसे डर लग...

भुजाओं की पीड़ा असह्य हो...

किन्तु क्रुशेन से वह चंगा हो...

गठिया की पीड़ा से उसकी... बेकाम हो चली थीं। यह कोई... नहीं कि उसे काम पर जाते डर लग... फिर भी आज वह इतना मुस्तैद हो... जितना पहले कभी नहीं था और... उसे आनन्द आने लगा है। उसके... आप पढ़ेंगे कि ऐसा किस प्रकार हुआ...

वह लिखता है, मैं गठिया के... बहुत ही परेशान था और मेरे घुटने... इतनी पीड़ा थी कि मैं कठिनता से उसे... कर पाता था। बरसात के दिनों में तो... पीड़ा होती थी। मैं परेशान था कि... भुजाओं से किस प्रकार काम लूँ और... मैं काम पर जाता था तो एकदम... बना रहता था।

इसके बाद एक व्यक्ति ने मुझे क्रुशेन-साल्ट सेवन करने की सलाह दी और... १ बोतल के सेवन से मुझे आराम... पड़ने लगा। अब मैं क्रुशेन-साल्ट का... बर सेवन करता हूँ और इससे अब मैं... दम अच्छा हो गया। इतनी चुस्ती आ... है जितनी कई वर्ष से नहीं थी मेरा... कष्टपूर्ण तथा अंधकारमय हो गया था... अब तो काम पर जाने में प्रसन्नता... है। डर का तो नाम-निशान नहीं।

—एस०...

मांसपेशियों तथा जोड़ों में अम्ल... हो जाने से ही गठिये का दर्द होता है... शरीर जकड़ जाता है। क्रुशेन-साल्ट... लीवर तथा पित्ताशय को सुचारु... स्वस्थ बनाता है जिससे पाचन-क्रिया... हो जाती है तथा अनावश्यक अम्ल... कष्ट का कारण है बाहर निकल जाता है।

क्रुशेन-साल्ट बाजार में सभी... ओषधि-विक्रेताओं के यहाँ मिलता है।

जुकाम सर्दीपर अकसीर...
स्थापना
आरोंदा
सूरज १८६६
नीलगिरि तेल
प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिणी अफ्रीका का सत्याग्रह

श्वेतांगों का प्रवासी भारतीयों पर यह अत्याचार क्यों ?

लेखक, श्री चन्द्रकुमार बी० ए०

दक्षिणी अफ्रीका में भारतीयों ने सत्याग्रह संग्राम प्रारम्भ कर दिया है। अफ्रीका की गोराशाही आन्दोलन को कुचलने के लिए दमन का अवलम्बन कर रही है किन्तु भारतीय अहिंसात्मक सत्याग्रह पर दृढ़ हैं। इस लेख में दक्षिणी अफ्रीका में भारतीय हितों के विरुद्ध बनाये जानेवाले कानूनों तथा भारतीयों द्वारा समय-समय पर होनेवाले विरोध का विस्तृत वर्णन किया गया है। लेख अत्यन्त सामयिक और अफ्रीका की वर्तमान समस्या पर प्रकाश डालनेवाला है।

महात्मा गांधी दांडी-यात्रा के प्रसिद्ध सत्याग्रह में—

है। दक्षिण अफ्रीका के श्वेतांगों में दो प्रकार के लोग हैं। एक तो बोअर जो अफ्रीका आनेवाले डच, पुर्तगालियों, स्पेनवासियों, जर्मनों आदि की मिश्रित जाति है, दूसरे ब्रिटिश। श्वेतांगों का अधिकांश भाग अँगरेजों का ही है। बोअरों और ब्रिटिश अधिवासियों में हमेशा संघर्ष चलता रहा है। रोज के झगड़े से थके बोअर १८३५ में उत्तर की ओर जाकर बस गये। १८५२ से लेकर १८५४ तक नैटाल और ट्रान्सवाल की स्वतंत्रता स्वीकार की गई। लेकिन बोअरों के झगड़े के कारण १८७७ में उन्हें ब्रिटिश साम्राज्य में सम्मिलित करना पड़ा। सन् १८८० से लेकर १८९९ तक बोअरों से कई युद्ध हुए इनमें से अन्तिम में महात्मा गांधी ने अँगरेजों को सहायता दी थी। १९०६ के आस-

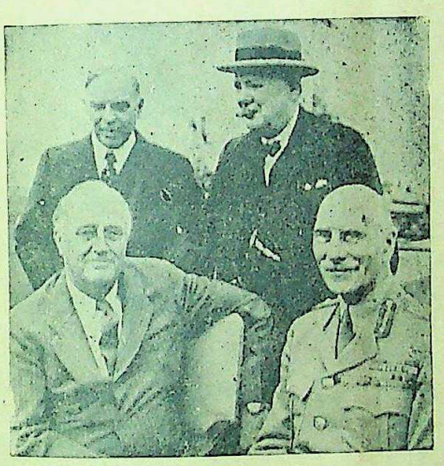

दक्षिणी अफ्रीका के गोराशाही के प्रधान जनरल स्मट्स बाईं ओर बैठे हुए दिखाई दे रहे हैं।

पास ट्रान्सवाल और ऑरेन्ज स्टेट को उत्तरदायी शासन दिया गया और सन् १९१० में शेष दो प्रान्तों को मिलाकर दक्षिण अफ्रीका की यूनियन सरकार बना कर उसे औपनिवेशिक पद दे दिया गया।

गोरों-कालों का झगड़ा

यूनियन सरकार के सम्मुख तीन बड़ी समस्यायें हैं। गोरी-काली जातियों का झगड़ा—सोने के निर्यात की समस्या और डच राष्ट्रवादियों द्वारा प्रजातन्त्र की माँग। जन-संख्या के ७० प्रतिशत मूल निवासियों को उनकी भूमि को सारी सम्पत्ति और सुविधाओं से वञ्चित रखा जाता है। डच शासन के विधान पत्र में लिखा था, 'गोरों और कालों में कोई समानता न रहेगी, न धर्म के बारे में और न शासन-व्यवस्था में।' १९१३ के 'भूमि-विधान' के अनुसार जन-संख्या के ७० प्रतिशत मूल-निवासियों को जबरन गोरों से अलग भूमि के तेरहवें भाग में रहना पड़ा जब कि शेष भाग बाहर से आनेवाले ३० प्रतिशत श्वेतांगों की सुविधा के लिए अलग रखा गया है। वर्जित भूमि में वही मूलनिवासी बस सकते हैं जो गोरों की चाकरी में हों। मूलनिवासियों के लिए अलग की गई भूमि बोने, उपजाने के काम के लिए बेकार हो चुकी है, जीवनयापन के कोई साधन न होने के कारण मूलनिवासियों की संख्या दिन पर दिन कम होती जा रही है। मूल-निवासियों के स्वत्वों की रक्षा के लिए एक कांग्रेस स्थापित की गई है जो उनके अधिकारों के लिए लड़ती है। आज्ञापत्र के कानून द्वारा मूलनिवासियों को वर्जित प्रदेश में केवल आज्ञापत्र प्राप्त करने के बाद ही जाने दिया जाता है। मूलनिवासियों को अफ्रीका की श्वेत सभ्यता को बदरंग करने से बचाने के लिए ऐसा किया गया है। मूलनिवासियों को मतदान का अधिकार नहीं है। सन् १९३६ के मूल-निवासी प्रतिनिधित्व विधान द्वारा असेम्बली में उन्हें ३ गोरों को चुनकर भेजने का अधिकार मिला है।

भारतीयों की समस्या

भारतीय अश्वेतांग जातियों में सबसे छोटी जाति है लेकिन इनकी समस्या सबसे पेचीदी है। मूलनिवासी और अन्य रङ्गीन जातियाँ वर्णभेद का विरोध करती हैं। लेकिन वे गरीब हैं और उनकी आवाज में बल नहीं—लेकिन भारतीयों का विरोध अकसर जनता के सामने आ जाता है।

नेटाल में चाय, गन्ने आदि की कृषि के मालिक गोरों ने मजदूरी के काम में मूलनिवासियों को अयोग्य पाया तो अफ्रीका से बाहर सस्ते मजदूरों की तलाश की। गुलाम भारत से अच्छे और सस्ते मजदूर उन्हें और कहाँ मिल सकते थे? भारत की ब्रिटिश सरकार की कृपा से अफ्रीका के गोरे पूँजीपतियों को १८६७ में भारत से श्वेत मजदूर ले जाने की आज्ञा मिल गई। सात रुपये महीने की मजदूरी के साथ उन्हें तीन साल के 'एग्रीमेन्ट' पर अफ्रीका ले जाया गया। एग्रीमेंट की अवधि समाप्त हो जाने के बाद अधिकांश भारतीय वहीं बस गये। मितव्ययी और व्यापार-कुशल होने के कारण योरोपियनों से वे प्रतिद्वन्दिता करने लगे। सन् १८९६ में एक कानून बनाकर प्रवासी भारतीयों का मताधिकार छीन लिया गया (१९२४ में म्युनिसिपल मताधिकार भी छीन लिया गया) एक अन्य कानून द्वारा 'एग्रीमेंट' समाप्त हो जाने के बाद टिकने-वाले प्रत्येक भारतीय से लाइसेंस का ३ पौंड सालाना लिया जाता था, फिर भी जब प्रवासियों की संख्या बढ़ती ही गई तो उनकी पत्नी और बच्चों से भी यह लाइसेंस लिया जाने लगा। भारत से नये आनेवाले भारतीयों को प्रवेश-आज्ञा प्राप्त करने के पूर्व एक योरोपीय भाषा की परीक्षा पास करनी पड़ती है।

गांधी जी का पहला सत्याग्रह

ट्रान्सवाल में स्वर्ण-खदानें मिलने के बाद भारतीय प्रवासियों की बढ़ती हुई संख्या को रोकने के लिए एक कानून बनाया गया जिसके द्वारा एशियावासियों को नागरिक अधिकार और अचल सम्पत्ति के स्वामित्व से वंचित किया गया। इसी कानून द्वारा एशियाइयों की बस्ती, सड़कें आदि गोरों की बस्तियों से अलग बनाई गईं। अवैध अफ्रीका-प्रवेश रोकने के लिए जो भारतीय अपने को ट्रान्सवाल प्रवासी बताते थे उनसे निशानी अँगूठा लिया जाता था। महात्मा जी के नेतृत्व में अफ्रीका प्रवासी भारतीयों ने इसके विरुद्ध सफल सत्याग्रह किया और सरकार को विधान में से भारतविरोधी अंश निकालना पड़ा।

दूसरा सत्याग्रह

सन् १९१३ में अफ्रीका-प्रवेश-विधान बनाकर और अधिक भारतीयों का अफ्रीका पहुँचना वर्जित किया गया। साथ ही एक प्रान्त से दूसरे प्रान्तों में आवागमन की भी मनाही की गई। भारतीय रीति से विवाहित स्त्रियों के विरुद्ध भी अफ्रीका-प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगाया। महात्मा जी और कस्तूर बा के नेतृत्व में जोरदार सत्याग्रह किया गया। जगह जगह उपद्रव हुए। भारत सरकार को बीच में पड़ना पड़ा और लार्ड हार्डिंग के नेतृत्व में जाँच के लिए एक कमीशन की नियुक्ति हुई जिसने भारतीय माँगों को जायज ठहराया।

केपटाऊन समझौता

१९१४ के महायुद्ध से परिस्थिति फिर बदली। युद्ध के दौरान में कुछ भारतीयों ने खूब पैसा पैदा किया जो गोरों की ईर्ष्या के कारण बने। १९२५ में गोरों की माँग पर यूनियन सरकार ने 'विभिन्न क्षेत्र

शेष पृष्ठ १७ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंग-मंच

पर्वत पै अपना डेरा

लेखक, श्री रसाकान्त त्रिपाठी बी० ए०

"पर्वत पै अपना डेरा" के निर्देशक हैं सुप्रसिद्ध फिल्म-कलाकार श्री वी० शान्ताराम। फिल्मी जगत् में शांताराम का नाम पहली श्रेणी के निर्देशकों में आता है। अपनी संस्कृति को अपने अनुरूप ही चित्रित करने में श्री शान्ताराम ने अन्य भारतीयों की अपेक्षा अधिक सफलता प्राप्त की है। उन्हें अपनी भारतीयता पर अभिमान है और वे सदैव इस बात का ध्यान रखते हैं कि हमें अपने पथ से कभी हटना नहीं चाहिए। उनका यह भाव ही बहुत कुछ अंशों तक उनकी सफलता का कारण है। केवल यही बात उनमें हो ऐसी बात नहीं। इस युग में कि जब संसार तेजी से प्रगति के पथ पर बढ़ा चला जा रहा है आधुनिकतम कला के उन्नत रूप को भी उन्होंने अपनाया है।

राजकमल-कला मन्दिर कृत "पर्वत पै अपना डेरा" भी ऐसा ही फिल्म है जिसमें जीवन की एक वास्तविकता का दिग्दर्शन कराया गया है। हमें जीवन में कठोर और दृढ़व्रती होकर चलना चाहिए। कठोर उस मानी में कि हम अपने पथ से किसी भी तरह विचलित न हों, किसी भी रंगीनी से फिसल न जायँ। यदि हम एक बार, यह सोचकर कि चलो क्या होता है, फिसलते हैं तो फिर निरन्तर फिसलते ही चले जायँगे। और अन्त में पतन के जिस खड्ड में हमें गिरना होगा उससे निकल नहीं सकते। सभी परिस्थितियाँ हमारे प्रतिकूल हो जायँगी और हम अपनी कमजोरी को दूर नहीं कर सकेंगे। अतः प्रारंभ में ही हमें इस बात से सचेत हो जाना चाहिए।

सुप्रसिद्ध अभिनेत्री और गायिका....

पर्वत पर एक साधु रहते हैं संसार से विरत होकर। एक धनी पिता की अन्धी लड़की उनके उपचार से नेत्र-ज्योति प्राप्त करती है और तदुपरान्त साधु को अपना स्नेह-प्रेम तथा सेवा सभी कुछ अर्पित कर देती है। पहले तो साधु उसे अस्वीकार कर देते हैं लेकिन लड़की की सेवा-परायणता पर उन्हें मुग्ध होना ही पड़ता है। बस यहीं से उनका फिसलना प्रारंभ होता है और वे धीरे धीरे यहाँ तक गिरते

सुप्रसिद्ध अभिनेत्री और गायिका
शान्ता आप्टे

हैं कि वेश्या के यहाँ जाना भी होता है। घर आने जानेवाली तथा अन्य मिलने जुलनेवाली यहाँ तक कि मालिक सरीखी अन्य निम्न जाति की लड़कियाँ तक उनके लिए आकर्षण की वस्तु हो जाती हैं और वे अपने संयम से हटकर इतने उच्छृङ्खल हो जाते हैं कि जिसका औचित्य ही नहीं रहता। उन पर सब कुछ निछावर कर देनेवाली लड़की उनकी उपेक्षा की वस्तु हो जाती है।

यह सब तो होता है लेकिन मनुष्य को जब ठोकर लगती है तभी उसकी आँखें खुलती हैं। साधु महोदय लड़की के पिता के यहाँ आकर रहने लगे थे। सभी तरह से सुखी थे। लेकिन उनके कृतियों ने उन्हें घर से निकलवाया, अन्धा बना दिया। इस अवस्था पर जब वे पहुँचते हैं तब उन्हें पूर्व स्थिति का ध्यान आता है और फिर अपने पुराने पर्वतवाले डेरे पर, किसी प्रकार पहुँचते हैं। और तभी उनका कल्याण हो सका है कि लड़की जो उन्हें सब कुछ अर्पित कर चुकी थी, ढूँढ़ती ढूँढ़ती वहीं पहुँच जाती है। उनके भी नेत्र फिर से अच्छे हो जाते हैं और दोनों का सुखी वैवाहिक जीवन हो जाता।

सिनेमा का मनोरंजन सस्ता पड़ता है—ऐसा प्रायः लोग सोचते हैं। लेकिन वे भूल जाते हैं कि हमारे जीवन पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा। आजकल जो खेल बनते हैं उनमें प्रायः पैसा पैदा करने का उद्देश्य ही मुख्य होता है। हमारे फिल्म-निर्माताओं को चाहिए कि वे इस बात का ध्यान करके उनका निर्माण करें कि उन्हें ऐसे देश को लाभ पहुँचाना है जो उन्हीं का है, पराधीन है और गरीब है। देश तथा उसके वासियों के प्रति उनका कर्तव्य है जिसे उन्हें हर प्रकार से पूरा करना चाहिए। साधारण फिल्म जिसमें केवल भद्दा नाच, गाना या इसी प्रकार की अन्य बातें हों केवल उन्हीं लोगों का मनोरंजन कर सकता है जो मजदूर हैं और दिन भर मिलों तथा फैक्टरियों में काम करने के बाद चूर चूर हो जाते हैं। सायंकाल उन्हें कुछ भी मनोरंजन चाहिए। वह अच्छा हो या बुरा इसकी उन्हें चिन्ता नहीं। लेकिन इस प्रकार के लोग भी हैं जिन्हें श्रेष्ठ मस्तिष्क प्राप्त हैं जो पढ़े-लिखे हैं और किसी बात पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहते हैं। ऐसे लोगों को निम्नकोटि के खेल किसी भी प्रकार का भोजन नहीं दे सकते। उनका मनोरंजन भी नहीं होता। इससे वे सिनेमा देखना छोड़ दें तथा अपने मनोरंजन का कोई अन्य साधन ढूँढ़ लें। परिणाम सिनेव्यवसाय करनेवालों के विपरीत ही होगा। लोग कम देखने जायँगे और इस प्रकार फिल्मों से आय कम होगी।

"पर्वत पै अपना डेरा" [illegible] तथा अन्य दृष्टियों से [illegible] है। वनमाला तथा [illegible] भी अच्छा है। भाषा में [illegible] काफी हैं।

नई पुस्तक

कामायनी-अनुशीलन

महाकवि 'प्रसाद' का महाकाव्य 'कामायनी' बहुत प्रसिद्ध है। पर [illegible] सबके में नहीं आता। इस पर अनेक समीक्षकों के विचार पत्रों में प्रका [illegible] इसी ग्रन्थ का अनुशीलन इस पुस्तक में लेखक रामलालसिंह एम० ए०, [illegible] साहित्यरत्न ने कामायनी का ऐतिहासिक तत्त्व, प्रकृति वर्णन, चरित्र-चित्रण, भाषा तथा भावाभिव्यक्ति, छंद विधान, रस संचार, कामायनी का मनस्तत्त्व निक तथ्य, युग की अभिव्यक्ति, प्रेम-निरूपण आदि शीर्षकों में बड़ी मार्मिकता से [illegible] अच्छे काग़ज पर छपी कोई ढाई सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २)।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

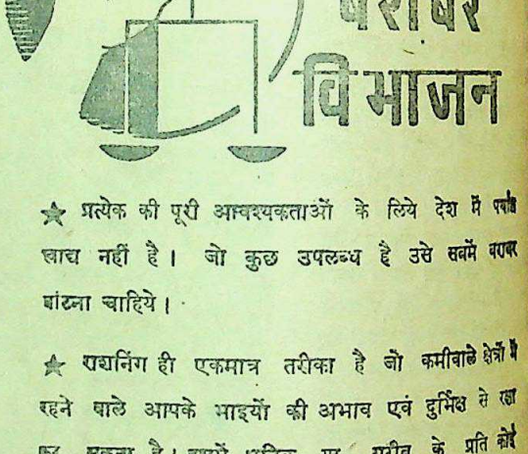

★ प्रत्येक की पूरी आवश्यकताओं के लिये देश में पर्याप्त खाद्य नहीं है। जो कुछ उपलब्ध है उसे सबमें बराबर बांटना चाहिये।

★ राशनिंग ही एकमात्र तरीका है जो कमीवाले क्षेत्रों में रहने वाले आपके भाइयों को अभाव एवं दुर्भिक्ष से रक्षा कर सकता है। इसमें धनिक या गरीब के प्रति कोई पक्षपात नहीं है, बल्कि प्रत्येक के लिये उचित मूल्य पर पर्याप्त खाद्य निश्चित है—आप अपने हिस्से के लिये विश्वास कर सकते हैं।

नागरिक एवं ग्राम्य क्षेत्रों में अब लगभग १३ करोड़ व्यक्तियों के राशन की व्यवस्था है। खाद्य कम है इसलिये दूसरे नगरों एवं क्षेत्रों में भी तेजी से राशन-व्यवस्था को विस्तृत किया जा रहा है।

★ आपके बचाव के लिये बनाये गये राशन के नियमों को यदि आप ईमानदारी से पालन करें और योग्य नागरिक की भांति अपना कर्तव्य करें तो अकाल के संकट से लड़ने में आप सरकार की सहायता करेंगे।

उचित मूल्य पर (R) सबके लिये भोजन

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मोत्सर्ग

लेखक, श्री 'विष्णु'

आजाद हिन्द-फौज के सैनिकों का आत्मसमर्पण, उत्सर्ग और देशभक्ति भारतीय स्वाधीनता के इतिहास में अमर है। यह कहानी आजाद हिन्द-सैनिक के उत्सर्ग की एक घटना को लेकर लिखी गई है। लेफ्टिनेंट दास ने अपने नेता की आज्ञा मानकर किस प्रकार कर्तव्य का पालन किया इसका रोचक वर्णन इस कहानी में किया गया है, कहानी सुन्दर और पठनीय है।

"मैं आज एक विशेष कार्य से यहाँ से जा रहा हूँ, शायद लौट न सकूँगा।"

पत्नी ने पति की आँखों में देखा और कहा—सैनिक जब घर से जाता है तो वह लौटने की चिन्ता नहीं करता।

लेफ्टिनेन्ट दास का हृदय गद्‌गद हो उठा। उसने प्रफुल्लित होकर कहा—मुझे तुम पर अभिमान है प्रिये।

"और मुझे आप पर।"

दोनों खुलकर हँसे। दोनों ने एक दूसरे को देखा। आँखों ने न जाने किस भाषा में अपने अपने दिल का भेद बताया वे क्षण भर के लिए आत्मविभोर, एक दूसरे में तन्मय, मौन-मुग्ध खड़े रह गये। हाँ, जैसे ही स्वप्न टूटा सैनिक चौंककर बोला—प्रिये विदा, मैं चला।

"विदा प्रियतम! मेरे साथी·····।"

लेफ्टिनेंट दास वहाँ से दूर बहुत दूर चला गया। पत्नी उसे जाते हुए देखती रही, देखती रही उसका दृढ़ कदम, स्थिर चाल और गर्वोन्नत मस्तक और तब तक देखती रही जब तक वह आँखों से ओझल होकर पीली धारियों के तम्बुओं के पीछे न छिप गया। जब छिप गया तो वह हठात् चौंक पड़ी। आँखों में बरबस पानी की बूँदें चमक उठीं।

लेफ्टिनेंट दास का कहना ठीक था। वह आज एक अहम कार्य करने जा रहा था। उस कार्य में प्राणों का खतरा तो था परन्तु वह आजाद हिन्द फौज का अपनी मंजिल पर आगे बढ़ने के लिए, एक दृढ़तापूर्वक बढ़ाया हुआ कदम था। उसने तब ब्रिटिश फौज के एक साधारण सैनिक की पोशाक पहन रखी थी और बहुत धीरे धीरे दुश्मन की छावनी की ओर बढ़ रहा था। छावनी उसके अपने कैम्प से बहुत दूर नहीं थी। उसी पहाड़ के पीछे नीचे की ओर दुश्मन का पड़ाव पड़ा हुआ था। धीरे धीरे रात भी बढ़ी आ रही थी और छावनी के पहरेदार और भी सतर्क होकर घूमने लगे थे। वह छावनी के पीछे की ओर मुड़ा और एक दरख्त के पीछे जाकर जेब से नकशा निकाला और आहिस्ता से जेबी टार्च की मदद से उसे देखने लगा। उसे पता लगा कि वह जिस मुकाम पर पहुँचना चाहता है वह ठीक उसके लगभग ३०० गज के फासले पर है। नकशा जेब में रखकर वह अपने रास्ते पर बढ़ चला। पहाड़ी रास्ता, पत्थर पर फिसल जाने का डर लेकिन वह आहट लेता हुआ आहिस्ता आहिस्ता चल रहा था। जरा खटका होता जमीन पर चित लेट जाता या वृक्षों के झुरमुट में छिप जाता। सहसा उसने एक सैनिक को देखा जो नंगी संगीन लिये उधर गश्त लगा रहा था।

उसने सोचा और सैनिक भी हो सकते हैं।

बस वह लेट गया और रेंग-रेंगकर आगे बढ़ने लगा। उसने देखा कि उसका भय ठीक था। दो और सैनिक उसके कुछ दूर से निकल गये थे। वह फुसफुसाया—एक मंजिल तय हुई और वह उठकर खड़ा हो गया। एक दरख्त के पीछे रुककर उसने फिर आहट ली और आगे बढ़ गया। अब वह मकान सामने था। वह एक पुराना मकान था उसके आस-पास कुछ टूटे मकान के खँडहर पड़े थे जो सम्भवतः जापानी बमों के शिकार हुए थे। उस मकान का, उसे विश्वस्तसूत्र से पता लगा था, दुश्मनों ने अपने गोले बारूद का गोदाम बनाया था। उसी में वह जाना चाहता था। सच तो यह है कि वह उसे उड़ा देना चाहता था। यही था वह भयंकर और अहम कार्य जिसे वह किसी और को सौंपना नहीं चाहता था। उसे किसी पर विश्वास ही नहीं होता था। फिर वह मौत से खेलना चाहता था।

वह यहाँ फिर रुका और अपनी जेबें टटोलीं। सब सामान ठीक था। उसे सँभालकर वह दृढ़ता से आगे बढ़ गया। जब वह बिलकुल समीप आ गया तो रेंगने लगा और खँडहर के पास आकर दो जानू के बल बैठ गया। क्षण भर रुककर उसने अपने चारों ओर देखा ऊपर आसमान में कहीं कहीं तारे चमकने लगे थे। चन्द्रमा के निकलने की कोई आशा नहीं थी। बादल धीरे-धीरे घिर रहे थे और बारिश किसी भी समय हो सकती थी। 'मुझे वर्षा होने से पहले अपना काम कर लेना चाहिए'—उसने सोचा और एक बार फिर आसमान की ओर देखकर सोचा—अगले क्षण चाहे कुछ भी हो कम से कम इस क्षण वर्षा नहीं हो सकती। और यही क्षण मेरे लिए बहुत कीमती है।

उसने मकान को अच्छी तरह देखा। उसे बताया गया था कि उसके पीछे की ओर एक खिड़की है। वह बिल्ली की तरह दबे पाँव खिड़की के नीचे पहुँचा और फिर कूदकर उसके ऊपर चढ़ गया। उसने महसूस किया वह काँपने लगा है। इसलिए वह क्षण भर रुका और दीवार से चिपका रहा फिर धीरे धीरे ऊपर छत पर चढ़ गया। तभी उसने देखा सन्तरी लौट रहे हैं वह मुस्कराया अब कोई डर नहीं है। मेरे दोस्तो खूब मजे से पहरा दो। मैं तुम्हारी पकड़ से बाहर हूँ, बिलकुल बाहर। और रेंगकर उसने अन्दर की ओर झाँका वहाँ बिलकुल सन्नाटा था। वह धीरे से नीचे लटक गया और चौक में पहुँचकर उसने उस बड़े कमरे को देखा जो गोले-बारूद का गोदाम था। वह अब अपने को कुछ थका-थका महसूस कर रहा था। काम करने की जल्दी के कारण उसे इस बात का विशेष ध्यान नहीं था। उसने अपनी जेब से सब सामान निकाला और डम्प में आग लगाने का प्रबन्ध करने लगा। उसे अपने आप को बचाने की बिलकुल चिन्ता नहीं थी। इसीलिए दियासलाई दिखाकर भी वह बहुत देर तक उसे काम करते देखता रहा। इसका नतीजा यह हुआ कि कुछ ही देर बाद जब वह लौटने के लिए मुड़ा तो एकाएक बड़े जोर का धमाका हुआ। धरती और आकाश सब काँप उठे। मानो बड़े जोर का भूचाल आ गया हो। वह एक झटके के साथ औंधे मुँह जमीन पर गिर पड़ा। उसे कुछ होश नहीं रहा लेकिन उसी अर्ध-जाग्रत् अवस्था में वह रेंगता चला गया। वह नहीं जानता था कि वह कहाँ जा रहा है? कैसे जा रहा है? क्यों जा रहा है? उसे जब होश आया तो उसने देखा कि वह एक खड्ड में

कैप्टन कमाल शाहनवाज।

लेफ्टिनेन्ट ढिल्लन।

कर्नल लक्ष्मी स्वामिनाथन्।

लेफ्टिनेन्ट कर्नल प्रेम सहगल।

आजाद हिन्द-फौज के चार प्रमुख सेनापति और नेता जिन्होंने भारत की स्वाधीनता के लिये राष्ट्र बाहर नेता जो श्री सुभाषचन्द्र बोस के नेतृत्व में राष्ट्रीय फौज का संगठन किया था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ा हुआ है और उसका बायाँ हाथ तेज दर्द के मारे टीस रहा है। उसे लगा जैसे किसी ने उसका हाथ काट डाला है। उसने सोचना चाहा लेकिन मस्तिष्क ने साथ नहीं दिया। यदि वह देख पाता तो उसे पता लगता कि उसका हाथ बिलकुल उड़ गया है परन्तु कुछ भी हो उसके अर्ध-चेतन मस्तिष्क में यह विश्वास पूरी तरह जड़ जमा चुका था कि वह अपना काम पूरा कर चुका है। इसीलिए उससे आगे सोचने की उसे कोई चिन्ता नहीं थी।

सवेरे जब उसके साथी उसे खोजने के लिए बाहर निकले तो वह उसी अर्धचेतनावस्था में खड्ड में पड़ा हुआ था। हाथ के जख्म ने उसके शरीर की सारी शक्ति को बेकार कर दिया था। उसे अपने जीने की कोई आशा नहीं रही थी। साथियों ने उसे देखा; उनकी आँखें भर आईं किन्तु उनसे बोला न गया; उन्होंने चाहा कि उसे उठाकर वह अस्पताल में पहुँचा दें।

पीड़ा की इस चरम सीमा पर भी वह मुस्करा पड़ा, बोला—मेरे प्यारे साथियो! मैं जिस काम के लिए इस दुनिया में आया था वह अब पूरा हो चुका है। मैं अब जा रहा हूँ। तुम मेरी चिन्ता मत करो। मैं अब बच नहीं सकता। फिर हमारे पास अब इतना समय नहीं है कि हम मुर्दों की फिक्र करें। इसलिए मेरी यह प्रार्थना है कि तुम अपने को देखो। अपनी प्रतिज्ञा को याद करो, दृढ़ता के साथ मैदान में डटे रहो और दुश्मन को भगा दो। मुझे विश्वास है कि जीत हमारी होगी। इतना बोलने के बाद उसकी साँस फूलने लगी थी। वह बड़ी पीड़ा महसूस कर रहा था। उसने अपने टूटे हुए हाथ को दबाया और कहा—तुम जब लौटो तो नेता जी के पास मेरा ये सन्देश पहुँचा देना—नेता जी से मैंने जो प्रतिज्ञा की थी उसे पूरी कर दी। आपने खून माँगा था। मैंने अपना खून दिया है। मैंने भारतमाता की आजादी के लिए जो कुछ भी उचित था वही किया है? मैं आज बहुत प्रसन्न हूँ बहुत...।

वह क्षण भर के लिए रुककर फिर बोला—और साथियो! मेरी पत्नी से कहना कि मैंने वीर पुरुषों की तरह मृत्यु को वरण किया है। वह मेरी वजह से सदा अपना सिर ऊँचा रख सकेगी। वह वीर-पत्नी है।

यह कहते कहते उसने अपने दाहिने हाथ से पिस्तौल टटोली। साथी उसे, देख न सके; देखते भी तो क्या रोक सकते? वह बोला—बस मेरे प्यारे साथियो विदा! व्यर्थ अपना समय बरबाद मत करो, जाओ! मुझे माँ बुला रही है। मैं जाना चाहता हूँ। मैं कायर नहीं हूँ; मैं तड़प नहीं सकता। मेरे दोस्तो! नेता जी के शब्द याद रखो। शहीदों के खून से ही हिन्दुस्तान आजाद होगा—आजाद हिन्द जिन्दाबाद—जय हिंद!

बस, अद्भुत शीघ्रता से उसने पिस्तौल उठाई और मुँह में गोली मार ली। पलक मारते मारते यह सब हो गया। उसकी गरदन एक ओर लुढ़क गई। वह सदा के लिए सो गया।

सदा के लिए.....।

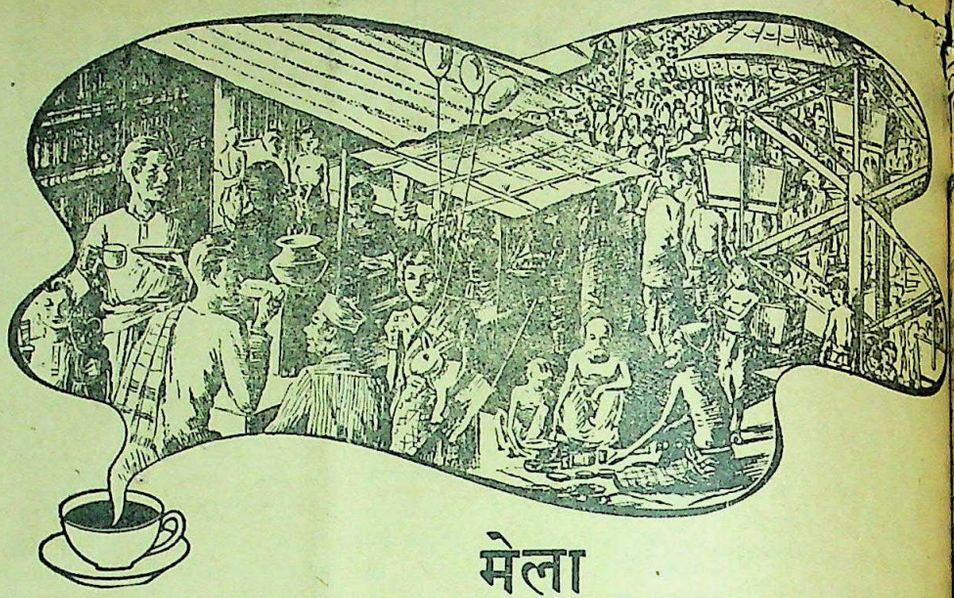

मेला

मेले का मजा! गाँव तथा नगरवासी अपने दैनिक काम-काज से अक्सर पाते हैं। सुन्दरतम कपड़े पहने लोग उमड़े चले आते हैं कि तमाशे का उपभोग करें। हिंडोले, बाजीगर, ज्योतिषी, बैंड बाजा, खिलौनों से लेकर बर्तनों तक सभी चीजों से सुसज्जित दूकानें—यह सभी मेले के दिन को अति आनन्ददायक बनाती हैं।

कोलाहल तथा उत्तेजना थकावटप्रद होती हैं। परन्तु गर्म चाय का एक प्याला थकावट दूर करता है। ब्रुक बण्ड चाय दूर-दूर के गाँवों तक बसीचों से ताजा पहुँचती है। हमारे विक्रेता ताजा चाय का बारम्बार वितरण करते रहते हैं।

ताजगी और सुगन्ध में अ

ब्रुक बण्ड

दो पत्तियाँ और एक कली

भाइयो!...
चर्म-स्वास्थ्य के लिये
रैक्सॉना
प्रयोग कीजिये

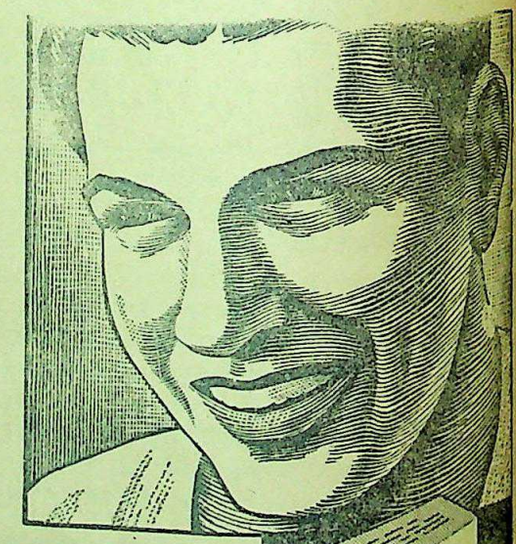

रेक्सोना महिलाओं के लिए नवीन रूप का ही साबुन नहीं है, अपितु जो कोई भी त्वचा के स्वास्थ्य को मान्यता देता है, उन सबके लिए यह आवश्यक शृंगार-साबुन है—यह वही स्फूर्तिप्रद साबुन है जो पुरुषों को भी प्रिय है।

यह उत्तम, शीघ्र झागप्रद साबुन शान्ति और उपचारदायी, त्वचा विकारविरोधी, कैडिल द्वारा औषध रूप से अनुप्राणित है। रेक्सोना का शीघ्र प्रारम्भ होनेवाला झाग इस स्वास्थ्य उत्पादक कैडिल को त्वचा के रोम-छिद्रों में गहरा लेजाता है—जहां से कि, अकसर चर्म-विकार उत्पन्न होते हैं, रेक्सोना का प्रयोग करने से त्वचा-आरोग्य वर्धित होता है और आप की त्वचा सुरक्षित रहती है। याद रखें कि, त्वचा-आरोग्य जितना स्त्रियों लिये उचित है, उतनाही पुरुषों के लिये भी आवश्यक है।

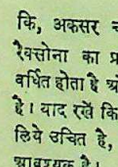

बालकों के लिए रेक्सोना:—"पिता का साबुन" बालकों के लिए भी आदर्श है। कैडिल को बालकों के हल्के शरीर-प्रदार्थों को शान्त करने दीजिए और रगड़ एवं जलन से बचाने दीजिए।

★ रेक्सोना में मिश्रित कैडिल विकारविरोधी पोषक तैलों का विशिष्ट रसायन द्वारा बनाया गया है, जिसका त्वचा के स्वास्थ्य पर शक्तिशाली प्रभाव पड़ता है।

रेक्सोना मरहम का प्रयोग कीजिये। कटने के और रगड़ के घावों, खुजली, मुँहासों, फफोलों, दाद, मसों, तथा अन्य सभी त्वचा की कुरूपताओं पर रेक्सोना मरहम का प्रयोगकीजिए

EP 23-392 HI

REXONA PROPRIETARY LIM

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशुद्ध शहद ही अमृत है!

...य के लिए सर्वोत्तम और लाभदायक पदार्थ

लेखक, श्री पी० दास

...पूर्व जो मक्खियाँ शहद ... ही आज भी बनाती हैं। ... इसका महत्त्व इतना नहीं था ... है। आज तो शहद भोजन ... बन गया है। यद्यपि ... का सबसे पुराना भोजन ... फिर भी बहुत से वैज्ञानिकों ... एक अद्भुत पदार्थ है। ... अभी तक फूलों से पुष्पासव ... शहद बनाने की गुप्त क्रिया ... में पड़ा हुआ है। इतना ही ... प्रवेश घरों में भी नहीं होने ... गृहणियों ने अभी तक ... नहीं जाना है। चिकित्सक ... मिठास के औषधि-सम्बन्धी ... ही जा रहे हैं विशेषतः ... के उपचार के लिए।

... कितने शहरों और देहातों में ... कायम हो गये हैं लेकिन ... मक्खियों का पालना अभी शुरू ... है। शहद ही केवल ऐसी मीठी ... तैयार करने के लिए किसी ... मशीन या कारखाने की जरूरत ... शहद की मक्खियाँ स्वयं ही ... पुष्प से पुष्पासव निकालकर ... हैं। कितने रसायन-... इस पुष्पासव के बनाने की ... लेकिन वह सफल नहीं हो ... मक्खियाँ ही इस रहस्य को ...

... तैयार होने की गुप्त और विचित्र ... पुष्पों के विकसित होने से ... है। पुष्पासव की बूँदें फूलों के ... पर खुशबू को अपना लेती ... को इतनी शक्ति प्रातः की ... देनेवाली ओस की बूँदों से ... एवं शक्तिदायिनी सूर्य की ... मिलती है। इसके बाद व्यस्त ... आती हैं जो पुष्पासव को ... और अपने छत्तों को रवाना ... है। यहाँ अलौकिक बुद्धिमानी से ... पदार्थ शहद में परिणत कर दिया ... यह शहद, मक्खियों के 'छत्तों' ... होता जाता है। पुष्पासव की ... बूँद लाने के लिए मक्खियों ... दूर जाना पड़ता है। एक-एक ... मक्खियाँ होती हैं, उन ... पुष्प एक ही जगह नहीं ...

... में एक प्रकार की चीनी ... रासायनिक रीति से गन्ने और ... चीनी की तरह होती है। ... पुष्पासव को अपने छत्ते में ... उसे इस खूबी से रखती हैं ... अतिरिक्त नमी बाहर निकल ... उसमें कुछ फेन की तरह ... पदार्थ मिलाती हैं। यह फेन ... शहद में परिणत कर ...

... में ७५ प्रतिशत चीनी मिली ... चीनी अंगूर और अन्य फलों ... प्रतिशत के लगभग गन्ने की ... होती है। साथ ही इसमें कितने ही खनिज पदार्थ मिले हुए हैं—कैलशियम, फासफोरस, लोहा, ताँबा और मैंगनीज। ये पदार्थ बड़े गाढ़े और गोंद की भाँति चिपकनेवाले हैं। इसके स्वाद में जो विलक्षणता है वह खुशबूदार पदार्थों में भी आता है। शहद में बीस प्रतिशत पानी भी होता है जिससे इतना तरल रहता है। यद्यपि शहद में बहुत तरह के खनिज पदार्थ हैं लेकिन फिर भी वे इतने थोड़े हैं कि उनका भोजन की भाँति उपयोग नहीं किया जा सकता।

इसमें की दो किस्म की शर्करा एक फलों की और दूसरी चिपचिपी पाचन शक्ति के लिए बड़ी ही लाभदायक हैं। शहद तो पहले ही से पचाया हुआ भोजन है। क्योंकि मक्खियों द्वारा मिलाया हुआ फेन पहले ही से इसे पूरा कर देता है। इसीलिए इसके खाने के आध घण्टे बाद ही यह अपना रास्ता खून तक पहुँचने के लिए निकाल लेता है। इस तरह शहद शीघ्र शक्ति बढ़ाने की एक दवा भी है। कमजोर बच्चों के लिए यह पुष्टिकारक चीज है। ग्ल्यूकोज जिसे लोग इतनी लाभदायक बताते हैं वह भी इस प्राकृतिक तरल ग्ल्यूकोज का मुकाबला नहीं कर सकती। अभी तक एलोपैथिक डाक्टरों की निगाह में यह बात नहीं आई है।

शहद भोजन को बहुत जल्द और आसानी से पचा देता है। शहद के स्वाद को उसका रंग इस तरह बदल देता है कि एक स्वादिष्ट पेय बन जाता है। शहद की सुगन्धि जो कि कितने ही प्रकार के सुन्दर फूलों से आती है, सचमुच आनन्ददायक है। शहद खानेवाले बहुत जल्द अपनी स्वाद-इन्द्रिय की उन्नति कर लेते हैं। बहुधा गाढ़े शहद का स्वाद अधिक मीठा होता है और पतले का कम।

शहद के विषय में कितनी भ्रान्तियाँ फैली हुई हैं। सबसे पहली चीज आजकल का नकली शहद है। ज्यों ज्यों शहद की माँग बढ़ती जा रही है त्यों त्यों नकली शहद भी तैयार होता जा रहा है। यह शायद शीरे इत्यादि से तैयार होता है जो बहुत ही हानिकारक है।

दूसरी चीज यह है कि शहद चीनी की तरह रवादार बनकर भी आने लगा है। इसके असली होने में भी बड़ा सन्देह रहता है। यदि असली रवादार शहद मिल भी गई तो यह तरल शहद की भाँति लाभदायक नहीं होता क्योंकि इसके कितने ही खाद्य पदार्थ रवादार बनाते समय जल जाते हैं।

शहद बहुत ही शुद्ध पदार्थ है। यह सभी को बड़ी आसानी से सोख लेता है। यहाँ तक कि यक्ष्मा के कीटाणु इसमें देर तक जीवित नहीं रहने पाते। इससे शहद की शुद्धता का अन्दाज बड़ी आसानी से लगाया जा सकता है।

लोग शहद कई तरह से खाते हैं। शहद का मक्खन अर्थात् शहद और मक्खन को बराबर बराबर हिस्सों में मिला कर खाया जाये। आप चाहें तो इसमें अखरोट, केला और सन्तरे का रस मिलाकर और स्वादिष्ट बना सकते हैं। केला बहुत ही घुला हुआ होना चाहिए जिससे वह मक्खन में बड़ी आसानी से मिल जाय। शहद चीनी की तरह व्यवहार में लाया जा सकता है। इसे व्यवहार में लाया जाय तो चीनी से कम, क्योंकि यह चीनी से बहुत ज्यादा मीठा होता है। हाँ पतला शहद दूध में छोड़कर, पानी में मिलाकर और सलाद में छोड़कर पीयें। हर तरह से चीनी की जगह इसे काम में ला सकते हैं। इसका स्वाद चीनी से बहुत ही मधुर होता है।

ज्यों ज्यों शहद का उपयोग बढ़ता जा रहा है त्यों त्यों मधुमक्खियों को पालतू बनाने का भी शौक होता जा रहा है। इसे देहात या शहर हर जगह बड़ी आसानी से पाल सकते हैं। इसमें अधिक देख-भाल की जरूरत भी नहीं होती। केवल शहद उतारते समय सावधान रहना पड़ता है और फिर शहद की उपयोगिता देखते हुए यह कुछ भी नहीं है।

आज चीनी की कठिनाई के समय सम्पन्न लोगों को शुद्ध शहद का ही उपयोग करना चाहिए।

शपट लोशन
दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.
शपट अँड्र के. लि.
बम्बई नं. २.

हमारी सम्मति बही का एक पृष्ठ

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस
लिखते हैं :

"मैंने आज शक्ति औषधालय, ढाका देखा। कृपापूर्वक मुझे इसका कोना-कोना दिखलाया गया। आयुर्वेदिक सिद्धान्तों के अनुसार बहुत बड़े पैमाने पर यहाँ देशी औषधियाँ बनाई जाती हैं। यह संस्था बाबू मथुरामोहन चक्रवर्ती के प्रति बहुत ऋणी है, जिनके उद्योग से आयुर्वेदिक औषधियाँ गरीबों के लिए भी सुलभ हो सकीं। मैं उनकी इस संस्था की समस्त सफलताओं की कामना करता हूँ, जिसे उन्होंने अपनी दीर्घकालीन कोशिशों और कठिन अध्यवसाय के बाद स्थापित किया है। शक्ति औषधालय, ढाका की सफलता का अर्थ है देश भर में आयुर्वेद की लोक-प्रियता और दूसरे शब्दों में इसका अर्थ है पीड़ित मानवता का उद्धार।"

(ह०) सुभाषचन्द्र बोस
ढाका, जून ६, १९३९

अध्यक्ष मथुर बाबू का
शक्ति औषधालय · ढाका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्रिदल की योजना का आर्थिक पहलू क्या है ?

(पेज ५ का शेष)

मुद्रा अलग अलग होगी। बर्मा का उदाहरण सामने है और इसकी अनिवार्यता बनी रही है।

आसाम और सीमाप्रान्त ग्रूपों से निकलने के लिए आन्दोलन कर रहे हैं। पर यदि यह वर्गीकरण केवल लीग को प्रसन्न करने के लिए किया गया हो तो इसमें परिवर्तन करना कठिन न होगा। मगर चूँकि वर्गीकरण से ब्रिटेन का स्वार्थ सधता है इसलिए समस्त भारत की शक्ति भी बोर्ड आफ ट्रेड के प्रेसीडेण्ट को एक इंच भी नहीं झुका सकती।

भूल है

यह समझना सरासर भूल है कि यह योजना इस देश को दुख और शोक से मुक्त करके सुखधाम बनाने के लिए बनाई गई है। यदि योजना में पूर्णतः आमूल परिवर्तन न किया गया, तो इस बात की आशंका है कि ब्रिटिश शासन के २०० सालों में भारत ने जो कष्ट और दुख सहा है, उससे भी अधिक दुख और कष्ट भविष्य में उसको सहना पड़ेगा।

घेरा

राजनीतिक दृष्टि से बाल्कनीकृत प्रदेश में यह आशा नहीं की जा सकती कि १९७५ में, जब भारत की आबादी ५० कोटि होगी, तब भारत अभाव से मुक्त हो जायेगा। केन्द्र जब न मुद्रा और न व्यापार की दिशा निर्दिष्ट कर सकेगा, न इनकी नीति का निर्धारण करेगा और न योजना बनायेगा, न चीजों के आवागमन की आज जैसी पूर्ण स्वतन्त्रता स्थापित करेगा, तब क्या यह सम्भव नहीं है कि बम्बई, बिहार या बङ्गाल के बड़े उद्योग बाजार के अभाव में तुरन्त मुरझा जावें ? कलकत्ता या करांची में विरोध सहकर अवरोध लगाने से पूर्वीय और पश्चिमी भारत या उत्तरीय भारत का आर्थिक दृष्टि से भला सोचने में उपयोग किया जा सकता है। भारत के खनिज और औद्योगिक स्रोत इस तरह बँटे हुए हैं कि प्रादेशिक दृष्टि से योजना बनाने से मूल और उपयोग के उद्योगों का विकास सम्भव नहीं है। केन्द्र के पास अधिकार न होने से श्रम के सम्बन्ध में सारे देश के लिए एक कानून नहीं बन सकेगा।

दुनिया के किसी भी फेडरल विधान में बीच के यूनियन नहीं हैं। पर यह केन्द्रीय सरकार की कृति और रचना है। भारत जैसे गरीब देश के लिए जहाँ जीवन-निर्वाह का मानदंड अत्यन्त नीचा है, महँगी और खर्चीली विभागीय धारा-सभाएँ भार हैं।

रियासतें

भारत में लगभग ६०० रियासतें हैं। इनमें से अधिकांश बगैर केन्द्रीय सहायता के नहीं जी सकतीं, न जीवन-निर्वाह के उचित स्टैंडर्ड की गारण्टी कर सकती हैं और न अच्छे शासन-प्रबन्ध की व्यवस्था कर सकती हैं। सार्वभौम सत्ता को मिटाकर योजना ने एक खाली जगह उत्पन्न कर दी है। रियासतों का पन्द्रह युनिटों में संगठित होना और उनका फेडरल यूनियन से सम्बन्ध होने में इसके कारण भारी अवरोध उत्पन्न होगा। रियासतों के बीच आर्थिक लड़ाई भी छिड़नी सम्भव है। पूर्ण प्रभुत्व और शक्ति का उपभोग करते हुए वे तट-कर और जकीर की भारी बाधाएँ खड़ी कर सकेंगी। ईस्ट इंडिया कम्पनी के हाथ से जब शासन-सत्ता ब्रिटिश ताज को हस्तान्तरित की गई थी तब सब रियासतों के ऊपर उसको सार्वभौम सत्ता भी प्राप्त हो गई थी। इसी प्रकार ब्रिटिश हाथों से भारतीय हाथों में शासन-सत्ता हस्तान्तरित होने पर भी यूनियन को सब रियासतों पर सार्वभौम सत्ता प्राप्त होनी चाहिए थी। इससे भारतीय जनता के शासन के नीचे ब्रिटिश और रियासती भारत राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से सर्वथा एक हो जाते। भारतीय रक्षा-पद्धति के अन्दर काठियावाड़, कोचीन, त्रावनकोर मयूरगंज और टिपरा सदृश रियासतों का आना अनिवार्य है। इसलिए पूर्वीय और पश्चिमी वर्ग बनाना और अधिक खतरनाक है। आर्थिक एकता की योजना के आधार पर बना फेडरल यूनियन ही जनता की पूँजीवाद और विदेशी आक्रमण से रक्षा कर सकता है और परराष्ट्रीय मामलों में अपना उचित प्रभाव डाल सकता है। विभक्त भारत डा० राधाकमल मुकर्जी के शब्दों में आग्नेय एशिया का नेदरलैण्ड होगा, और अपनी सारी शक्ति आन्तरिक झगड़ों में खत्म कर देगा साथ ही जनता की गरीबी, दीनता और दुःख को और अधिक बढ़ायेगा।

साख को खतरा

भारत-सरकार ने हाल में २¾ प्रतिशत पर १९७६ का लोन (कर्ज) लिया है। हाल ही में गवर्नमेण्ट ने १९६० का लोन (कर्ज) २¾ प्रतिशत सूद पर जारी किया था। प्रस्तावित परिवर्तन ऋण ३० साल बाद पूरा होगा। इसका अर्थ है कि भारत की साख अगले तीस सालों के वास्ते २¾ प्रतिशत पर स्थापित की जा रही है। यही नहीं गवर्नमेण्ट ने २½ प्रतिशत सूद पर लोन (कर्ज) की एक सिरीज लेने की योजना बनाई है। प्रथम महायुद्ध की समाप्ति के अगले पाँच वर्षों में सरकार ने जो कर्ज लिये थे उन पर युद्ध-कर ६ प्रतिशत सूद दिया जाता था। द्वितीय महायुद्ध के काल में भारत-सरकार ने दो प्रतिशत सूद कर्ज पर दिया था। आज कर्ज लेने की दर २¾ प्रतिशत है और वह २½ प्रतिशत पर ब्याज पर ऋण लेने की तैयारी कर रही है। २½ प्रतिशत के आधार पर भारत की साख स्थापित करना इतिहास में एक अनुपम कार्य माना जायगा। भारत निकट भविष्य में जो महान् खर्च करनेवाला है, उसको ध्यान में रखते हुए यह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। युद्धोत्तर पुनर्निर्माण का विभिन्न देशों के लिए विभिन्न अर्थ है पर भारत के लिए इसका अर्थ है जनता के जीवन-निर्वाह का मानदण्ड ऊँचा करना, जिससे भारत की झोपड़ियों में रहनेवाले भी सुन्दर जीवन व्यतीत कर सकें। भारत को व्यापक रूप से और साहस के साथ योजना बनानी चाहिए, जिससे जीवन-निर्वाह का न्यूनतम मानदण्ड कायम किया जा सके। आर्थिक योजना में भारत का जीवन निहित है। इसके अभाव में उसके लिए मृत्यु है। योजना की आवश्यकता सार्वभौम है। जनता की मनोवृत्ति योजना के अनुकूल है। कोई गवर्नमेण्ट इसका प्रतिरोध नहीं कर सकती। योजना की उपेक्षा करनेवाली गवर्नमेण्ट ज्यादा दिन नहीं जी सकती।

योजना के साथ विशाल खर्च का सम्बन्ध है। युद्ध-काल में विशाल परिणाम में खर्च हुआ। इससे अनेक लाभ हुआ। किसानों का कर्ज घट गया। बेकारी का लगभग अन्त हो गया। निम्न कर्मचारियों को अधिक वेतन मिलने लगा। योजना को पूरा करने के लिए प्रतिवर्ष करोड़ों रुपयों की आवश्यकता होगी। प्रश्न यह है कि क्या मिशन योजना के अन्दर भारत आर्थिक विकास की योजना के विशाल खर्च को पूरा करने के लिए २½ प्रतिशत ब्याज पर कर्ज ले सकेगा ?

घट जायगी

भारत एक न रहकर यदि विभक्त हो जाय और एक केन्द्रीय गवर्नमेंट की जगह कर्ज लेनेवाले अनेक ग्रूप या अनेक प्रान्त या अनेक रियासतें हो जायँ, तो भारत ने आज जो साख प्राप्त की है, वह अदृश्य हो जायेगी। बड़े परिमाण में कर्ज लेने और उचित आर्थिक योजना के वास्ते साख की एकता बनाये रखना आवश्यक है। साख की एकता का अर्थ है, मुद्रा की एकता। पर योजना यहाँ चुप है। प्रश्न यह है कि रिजर्व बैंक की भविष्य में क्या स्थिति होगी ? क्या वह एक साधारण बैंक हो जायगा ? स्टर्लिङ्ग पावना और अन्य जमा पूँजी का विवरण कैसे और किस अनुपात में किया जायगा ? क्या भारत के विभिन्न प्रान्तों में विभिन्न तरह की कागजी चलेगी ? दोनों के बीच परिवर्तन विनिमय का रूप क्या होगा ? क्या हर प्रान्त की सीमा पर हमें मुद्रा-परिवर्तन समस्या का सामना करना पड़ेगा ?

लगभग दो अरब

भारत का भविष्य में सैनिक-व्यय बातों के आधार पर निर्धारित होगा भारत की स्वाधीनता, (२) युद्ध-शास्त्र टेकनालोजिकल और सामरिक व्यूह-रचना की प्रगति और (३) अन्य देशों की के लिए तैयारी। इन तीन बातों को में रखकर भारत का सैनिक-व्यय भारत आर्थिक जादूगर श्री एम० सी० रंगस्वामी के मतानुसार लगभग १८० करोड़ होगा यह ग्रूपों को दिया जायगा या प्रान्तों को

इससे स्पष्ट है कि आर्थिक दृष्टि मिशन-योजना निस्सार है और विधान अनुभव करेगी कि मिशन के प्रकाश आर्थिक चट्टान से टकराकर चूर चूर जायेंगे। नवीन भारत को ऐसे जरूरत है, जो यातायात मुद्रा, साख और तट-कर का एकीकरण कर सके। मिशन-योजना भारत की प्रारम्भिक समस्याओं को भी सुलझाने में होगी।

J & N REMINDERS

स्मारक पत्र

किस प्रकार का काम ? : भीतरी या बाहरी लोहे या लकड़ी के काम या छतों की सजावट के लिए अथवा उन्हें उत्तम अवस्था में रखने के लिए।

हमारी सिफ़ारिश :–"झिलमिल" (Jhilmil) लकड़ी के काम के लिए, "बैरीको" (Barico) लोहे के काम और "काप्टिक" (Coptic) छतों के लिए। अपने अपने अण्डरकोटों के साथ यह सभी ठेकेदारों के आश्रय योग्य हैं।

JENSON & NICHOLSON
MAKERS OF PAINTS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

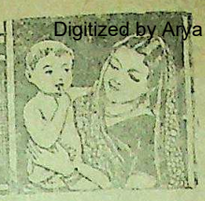

स्त्री-मण्डल

हिन्दू नारियों को कानूनी अधिकार प्राप्त हो !

पूर्ण परिवर्तन से ही उनकी स्थिति सुधर सकती है

लेखक, श्री त्रिलोकीनारायण दीक्षित एम० ए०

लेखक, श्री त्रिलोकीनारायण दीक्षित एम० ए०

नारियों की उन्नति के लिये [illegible] करें और चाहे जितने [illegible] उठाये जायें परन्तु [illegible] कानूनी अधिकारों को [illegible] किया जावेगा [illegible] होगा। हिन्दू-समाज [illegible] वैज्ञानिक युग में भी पुरानी [illegible] परिपोषक बना हुआ है। [illegible] में स्त्रियों के अधिकार शून्य-[illegible] उनके अधिकार अत्यन्त सीमित [illegible] के भार के समक्ष उनके अधि-[illegible] भी न चढ़ सकेंगे। स्त्रियों [illegible] सुधार करने के लिए सबसे [illegible] उनके अधिकारों को [illegible] देना और इस कठिन कार्य [illegible] के लिए अभीप्सित है कि [illegible] सहायता ली जाये। स्त्रियों के [illegible] आवश्यक है कि उनके [illegible] वैयक्तिक अधिकार उसी [illegible] की सहायता से निर्धारित [illegible] जायें जिस प्रकार पुरुषों ने [illegible] प्रयत्न करके नियमों का [illegible] किया है। साथ ही तिलक, [illegible] घातक कुप्रथाओं का अन्त [illegible] वोट देने तथा जीविकोपार्जन [illegible] पूर्णरूपेण स्वतंत्रता प्रदान की

[illegible] के नेता स्त्रियों को [illegible] तथा देवी इत्यादि सम्बोधनों [illegible] करने के लिए भले ही [illegible] हों पर क्या वे इस बात [illegible] देंगे कि हिन्दू विधवा अथवा [illegible] के वर्ग के लिये उन्होंने [illegible] का निर्माण किया है और [illegible] पर इस उपेक्षित वर्ग के साथ [illegible] किसी सहानुभूति प्रकाशित की [illegible] में नारी मानव की वासना-पूर्ति [illegible] हुई है। शक्ति से मदान्ध [illegible] भी इस वर्ग की ओर लेशमात्र [illegible] की आवश्यकता का महत्त्व नहीं [illegible]।

[illegible] को अधिकार न देकर उनके [illegible] जो अत्याचार कर रहे हैं, [illegible] में सबसे बड़ी हानि समाज [illegible] है। विधवाओं को पुनर्विवाह [illegible] न देकर हम समाज के पवित्र [illegible] कितना दूषित तथा पापमय [illegible] है। विधवाओं को साम्पत्तिक [illegible] प्राप्त होने के कारण फल यह [illegible] हैं कि स्त्रियाँ जीविकोपार्जन के [illegible] करती हैं। स्त्रियों के इस [illegible] अवनति का सर्वप्रथम कारण [illegible] अधिकार मनु तथा याज्ञवल्क्य [illegible] जिनकी दृष्टि में [illegible] में भी राई बीती तथा प्रयोग-[illegible]

[illegible] के अधिकार सामान्य रूप से [illegible] में विभाजित किये जा सकते हैं। [illegible] और दूसरे साम्पत्तिक। इन दोनों अधिकारों का उल्लेख ऊपर हो चुका है। वैयक्तिक अधिकार वे अधिकार हैं जो किसी भी देश की अथवा जाति की स्त्री को उपलब्ध होते हैं और जिसके द्वारा उन्हें अपनी जाति, धर्म, शरीर, सम्पत्ति, आचार आदि की रक्षा का अधिकार प्राप्त रहता है। इसी के अन्तर्गत हम मानव का जन्मसिद्ध अधिकार बोलने की स्वतंत्रता तथा प्रेमस्वातंत्र्य इत्यादि की भी गणना कर सकते हैं। वैयक्तिक अधिकारों की बृहत् तथा सम्पूर्ण सूची भारतीय दण्ड-विधान में उपलब्ध होती है। इन अधिकारों में स्त्रियों और पुरुषों के भिन्न भिन्न वर्ग तथा समुदाय में होने के कारण कोई भी विशेष अन्तर नहीं दृष्टिगत होता है। उल्लेखनीय बात, इस सम्बन्ध में पहले की अपेक्षा यह है कि स्त्रियों को उनकी निर्बलता के कारण कुछ विशेष अधिकार प्राप्त हुए हैं यथा पति से भरण-पोषण पाने का अधिकार। सतीत्व पर आक्रमणशील अथवा आततायी के वध का अधिकार, अपहरण अथवा व्यभिचार से आत्मरक्षा के अधिकार। इस प्रकार हम देखते हैं कि उनको जो भी विशेष अधिकार प्राप्त हुए हैं वे सब उनकी शारीरिक निर्बलता को दृष्टि में रखकर दिये गये हैं अन्यथा अन्य सभी अधिकार या तो पुरुषों से अल्प हैं अथवा पुरुषों के बराबर ही रक्खे गये हैं। कानून की दृष्टि में स्त्री और पुरुष भेदरहित हैं। अतः उनके अधिकार भी समान ही होने चाहिए।

इन्हीं अधिकारों के अन्तर्गत उनके विवाह, दत्तक, भरण-पोषण के अधिकार भी आ जाते हैं। स्त्री-धन, उत्तराधिकार तथा अन्य विल आदि साम्पत्तिक अधिकारों के अन्तर्गत आते हैं। स्त्रियों के साम्पत्तिक अधिकार अत्यन्त ही संकुचित हैं। अधिकारों के इस भाग में हिन्दू स्त्रियों को न तो कोई स्वतन्त्रता है और न वे विस्तृत ही हैं। साम्पत्तिक क्षेत्र में हिन्दू स्त्रियाँ अत्यन्त दीन-हीन हैं। उनकी दशा इस क्षेत्र में जितनी शोचनीय है उतनी संसार के किसी भी देश की स्त्री वर्ग की नहीं है। कानून के निर्माताओं ने स्त्रियों के इन अधिकारों के निर्माण में अपनी बुद्धि से लेशमात्र भी तर्क से काम नहीं लिया। कानून के अनुसार उनका सुधार बहुत ही कम हुआ है। जिन कानूनों का सुधार हुआ भी है वे मूल के दोषों का निवारण नहीं कर सके हैं। अब हम इन कानूनों को एक एक करके लेते हैं।

सर्वप्रथम विचारणीय और उपेक्षित प्रश्न है हिन्दू विधवा का। कानून ने हिन्दू विधवा के अधिकारों की बड़ी उपेक्षा की है। हिन्दू विधवा सम्पत्ति पा सकती, वह किसी भी जायदाद की उत्तराधिकारिणी भी बन सकती है परन्तु फिर भी उन्हें उस प्राप्त रियासत पर कोई साम्पत्तिक अधिकार नहीं है। वह उसे बेच नहीं सकती न उसके आधार पर ऋण ही ले सकती है। हिन्दू विधवा इस प्रकार प्राप्त रियासत न तो किसी को दे ही सकती है और न वसीयत ही कर सकती है। सम्पत्ति होते हुए भी उसे उस पर अधिकार नहीं। उपभोग की अधिकारिणी होते हुए भी आवश्यकता पर विक्रय करने का अधिकार प्राप्त नहीं। पति की आज्ञा के बिना वह किसी को दत्तक पुत्र नहीं बना सकती है। पति से प्राप्त धन का भी वह उपभोग मात्र कर सकती है परन्तु वह किसी को दे नहीं सकती। पति, बन्धु, माता, भगिनी इत्यादि से दिये गये स्त्री-धन पर भी उसका संकुचित अधिकार है। वह उनका उपयोग भले ही कर ले पर वसीयत नहीं कर सकती। इस प्रकार की दयनीय दशा है हिन्दू विधवा की जो न आकाश में है न पाताल में। हिन्दू स्त्रियों को स्त्री-धन पर भी पूर्ण अधिकार नहीं प्राप्त है। हिन्दू कानून में स्त्री-धन सौदायिक स्त्री-धन तथा असौदायिक में विभाजित है। एक पर उसका पूर्णाधिकार है दूसरे पर संकुचित अथवा सीमित।

हिन्दू स्त्रियों के अधिकार एक नाबालिग और पागल के अधिकारों से भी तुच्छ हैं। उन्हें अन्धे, लूले, नपुंसक, विक्षिप्त, चोर, दुराचारी पति को भी छोड़ने का अधिकार नहीं है। हिन्दू ला तलाक से पूर्ण-रूपेण अपरिमित है। कितना अन्याय है कि हर प्रकार से रहित और हीन पति का भी वह परित्याग नहीं कर सकती। तलाक कानून की हिन्दू स्त्रियों को कितनी आवश्यकता है यह किसी से भी छिपा नहीं है। पर हमारे धर्मान्ध नेता स्त्रियों को सदैव के लिए कोल्हू का बैल बनाये रखना चाहते हैं।

हिन्दू स्त्रियों के लिए बाल-विवाह, अवरोधक कानून और सहवास कानून आदि न जाने इसी प्रकार के कितने ही अन्यान्य नियम बने परन्तु उनसे हिन्दू स्त्री को कितना लाभ हुआ, यह लिखने की बात नहीं है। कहना न होगा कि इनसे उनके कोई भी दुख दरिद्रों का निवारण नहीं हो सका। आज हमारे हिन्दू-समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है तलाक कानून, विधवा-विवाह कानून, रियासत-सम्बन्धी कानून तथा स्त्री-धन-सम्बन्धी कानून में परिवर्तन कराना और उन्हें उचित अधिकार दिलाना।

बिहार (मुजफ्फरपुर) के नवदम्पति तरुण तथा तरुणी कलाकार श्रीयुत रमण और श्रीमती शांति रमण बी० ए०। श्रीयुत रमण हिन्दी-जगत के सुपरिचित और प्रगतिवादी कथाकार हैं। श्रीमती रमण भी उदीयमान और सुन्दर कहानी-लेखिका हैं। आप लोगों का विवाह पिछले दिनों समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ है।

शीतल और सुरभित

तुम्हारे प्रतिदिन के प्रयोगार्थ

गर्मियों में अपने सारे गर्दन और बाहों पर टाटा का ओ डी कोलोन लगाओ। इसका तीक्ष्ण शीतल स्पर्श आल्हादक है और गर्मी और थकावट को दूर करता है। इसकी कोमल सुगन्धि पहाड़ों से आते हुए वायु के शीतल झोंके के समान है।

यह तुम्हें ऐसे वैसे जलवायु में शीतल और ताजा रहने में सहायता करता है। सर्वदा टाटा के ओ डी कोलोन की एक शीशी पास रखकर प्रतिदिन प्रयोग करें।

टाटा का ओ डी कोलोन

दी टाटा आयल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

'शिशु भारती'

हिन्दी में बाल-साहित्य के लेखकों तथा उनकी रचनाओं का एक प्रतिनिधि संग्रह का प्रकाशन 'शिशुभारती' नाम से शीघ्र ही होने जा रहा है। इसके लिए बालकों के प्रतिनिधि कवियों की एक सूची हमारे मित्र 'कुमार हृदय' जी ने भेजी है। हम चाहते हैं कि इस सूची में जो नाम रह गये हों वह भी आ जायें। यह कार्य बिना सहयोग के पूर्णतः सफल नहीं हो सकता। बालकों के कवियों की प्रस्तावित सूची इस प्रकार है—

सर्वश्री अयोध्यासिंह उपाध्याय, कामताप्रसाद गुरु, श्रीधर पाठक, मन्नन द्विवेदी गजपुरी, रामनरेश त्रिपाठी, विद्याभूषण 'विभु', स्वर्णसहोदर, रामजीलाल शर्मा, श्रीनाथसिंह, सोहनलाल द्विवेदी, उर्मिला गुप्ता, बुद्धिभद्र दीक्षित, देवीप्रसाद गुप्त कुसुमाकर, मणिराम गुप्त, गौरीशंकर 'लहरी', सुदर्शनाचार्य, सुभद्राकुमारी चौहान, देवीदत्त शुक्ल, ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल, रामकुमार वर्मा, शम्भूदयाल सक्सेना, विद्याभास्कर शुक्ल, देवीदयालु चतुर्वेदी मस्त, नरेन्द्र मालवीय, श्रीधर कुलश्रेष्ठ, जगपति चतुर्वदी, गिरिजादत्त शुक्ल गिरीश, श्री शिक्षार्थी, रामलोचनशरण कंटक, आनन्दीप्रसाद श्रीवास्तव, श्रीराम बाजपेयी, मनोरंजन, विक्रम आदि।

हिन्दी-प्रेमियों से अनुरोध है कि वह बालकों के अन्य कवियों के नाम भी हमारे पास लिखकर भेज दें, जिनका नाम इस सूची में नहीं आया, हम चाहते हैं कि 'शिशुभारती' ऐसा सर्वोत्तम संग्रह-ग्रंथ हो जिसमें बालकों के सभी प्रतिनिधि कवियों की रचनाओं का समावेश हो सके और बाल-साहित्य का प्रामाणिक ग्रंथ प्रमाणित हो सके। इस सम्बन्ध में हिन्दी-प्रेमियों के सुझावों और सहयोग का स्वागत किया जायेगा।

इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग। —सोहनलाल द्विवेदी एम० ए०

* * *

अभिनन्दन ग्रन्थों का क्या हो रहा है?

'देशदूत' में निराला-अभिनन्दन-ग्रन्थ के सम्बन्ध में कुछ महीने हुए दो बार विज्ञप्ति पढ़ने को मिली। बड़ी प्रसन्नता हुई। आशा तो नहीं थी। चूँकि हमारी हिन्दी-संस्थाएँ व लेखक या कार्यकर्तागण काम को ढील बहुत दे देते हैं। फिर भी जब तक काम शुरू न हो जाय तब तक बौद्धिक योजनाओं को क्या महत्त्व दिया जा सकता है? उदाहरणार्थ राजेन्द्र-अभिनन्दन ग्रन्थ को प्रकाशित होने में न मालूम कितना समय और लगेगा? दो, तीन वर्ष से तो लेखों की माँग आ रही है। हाँ इसके सुप्रसिद्ध अनुभवी सम्पादक बाबू शिवपूजन जी इसको सज-धज से प्रकाशित करने में लगे हुए होंगे। तभी इतना समय लग गया। निराला-अभिनन्दन-ग्रंथ दरभंगा से विख्यात कविवर आरसी-प्रसादसिंह जी व नन्दकिशोर जी के सम्पादकत्व में प्रकाशित होनेवाला था, जान पड़ता है नन्दकिशोर जी तो अब 'हिमालय' को बेजोड़ी का पत्र बनाने में लग गये हैं।

स्मरण-पत्र द्वारा याद दिलाने पर भी ऐसा लगता है, मानो पत्र को कुएँ में डाल दिया हो। ठीक यही हाल 'तरुण-हिन्दी-परिषद्', मौन मन्दिर, गोरखपुर से प्रकाशित होनेवाले 'सुभाष-अभिनन्दन ग्रन्थ' का है। जहाँ तक मेरा खयाल है, उसका कोई प्रकाशन सुनने में नहीं आया। फिर सुमित्रानन्दन जी पंत अभिनन्दन-ग्रंथ का प्रस्ताव तो हिन्दी-संसार के सम्मुख रखना निरी मूर्खता ही तो होगी। समझ में नहीं आया, हम हमारे साहित्यकारों के प्रति इतने उदासीन क्यों हैं? 'कामायनी' के कवि को पुरस्कार उसके स्वर्गवास के पश्चात् मिला। मेरी हिन्दी-संसार के सामने करबद्ध प्रार्थना है कि वह इन कार्यों को शीघ्रातिशीघ्र पूरा करे। इसी प्रकार हिन्दी-साहित्यकारों को मैथिली बाबू और महादेवी जी को भी तो ग्रन्थ भेंट करने हैं।

हम एक-दो ग्रन्थों के प्रकाशन का भार अपने कंधों पर ले भी लें तो एक तो दूसरों का काम व्यर्थ में रोका जाय, दूसरे संतोषप्रद न निकले तो परिश्रम व्यर्थ चला जाय। इस प्रकार साहित्य के वे अधिकारी समालोचक जैसे नन्ददुलारे जी वाजपेयी, हजारीप्रसाद जी द्विवेदी, प्रो० सत्येन्द्र जी, नगेन्द्र जी, बाबू गुलाबराय जी, डा० रामकुमार वर्मा, रामविलास शर्मा, शिवपूजनसहाय जी, धीरेन्द्र वर्मा, बख्शी जी, इलाचन्द्र जी जोशी, आदि महारथीगण इस कार्य को उठायें तो हिन्दी-संसार को अनुपम भेंट हो सकती है और हमारा साहित्य शीघ्र ही विश्व-साहित्य के समकक्ष टक्कर लेने खड़ा हुआ-सा प्रतीत होता है।

जयपुर —'चञ्चल'

* * *

नेता जी की प्रस्तर-मूर्ति

'देशदूत' ता० ३० जून के पृष्ठ १५ कालम २ में "नेता जी की प्रस्तर-मूर्ति" शीर्षक लेख से एक लेख प्रकाशित हुआ है जिसके नीचे मेरा नाम प्रकाशित हुआ है। इसे पढ़कर मुझे आश्चर्य हुआ। क्योंकि यह लेख मेरा भेजा हुआ नहीं है किसी विरोधी जन ने मुझे बदनाम करने के लिए भेज दिया है। लेख में यह बातें गलत बतलाई गई हैं—(१) वर्तमान समय तक २०, २५ हजार रुपये के वचन मिल गये हैं। (२) अनुमान से व्यय लाख, डेढ़ लाख तक का है।

वास्तव में नेता जी श्री सुभाषचन्द्र बोस की सुभाष-मूर्ति स्थापना के लिए हरिद्वार युवक-मण्डल की ओर से एक कमेटी बन गई है। जिसके मंत्री श्री किशोरसिंह जी हैं। इस सम्बन्ध में सारा पत्र-व्यवहार उक्त मंत्री जी के पते से ही होना चाहिए। प्रतिमा पर व्यय अनुमान लगभग १० हजार रुपये के होगा, जिसके लिए वह प्रयत्न कर रही है। कृपया मेरे इस पत्र को भ्रम-निवारणार्थ अपने पत्र में प्रकाशित कर देवें।

हरिद्वार —चिरंजीवलाल शर्मा (कर्मवीर)

* * *

पं० गौरीशंकर मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०
लिखित पुस्तकें

बलिदान-मन्दिर

इस उपन्यास की घटना बड़ी रोचक है। मनुष्य के चरित्र का उत्कर्ष किस प्रकार हुआ, वह लोकोपयोगी किस प्रकार हुआ और वास्तविक बलिदान क्या है, इसका बड़ा सुन्दर वर्णन इस उपन्यास में है। इसके पढ़ने से मनोरंजन के साथ-साथ आत्मसुधार की भी शिक्षा मिलती है। अच्छे टाइपों में छपी ढाई सौ पृष्ठों की अजिल्द पुस्तक का मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

भक्त जयदेव

यह उपन्यास अपने ढंग का एक ही है। इसमें 'हम भक्तन के भक्त हमारे' का प्रदर्शन बड़ी सुन्दरता से लेखक ने किया है। मूल्य केवल १॥) एक रुपया आठ आने।

कलियुगी दुनिया की सच्ची

पहला भाग

वर्तमान युग प्रगति का है। इसी युग की कहानियाँ हैं। ये विलक्षण हैं और पढ़नेवालों मीठी सलाह देती हैं। कहानियाँ एक बढ़कर हैं। पृष्ठसंख्या सवा सौ। १) एक रुपया चार आने।

शबरी अछूत?

यह एक रोमांचकारी मर्यादा-पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी भक्त मीरा के कथानक के इस नाटक की रचना हुई है। के युग में यह नाटक सचमुच रखता है। बढ़िया छपी पुस्तक केवल ॥) बारह आने।

मिलने का पता—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

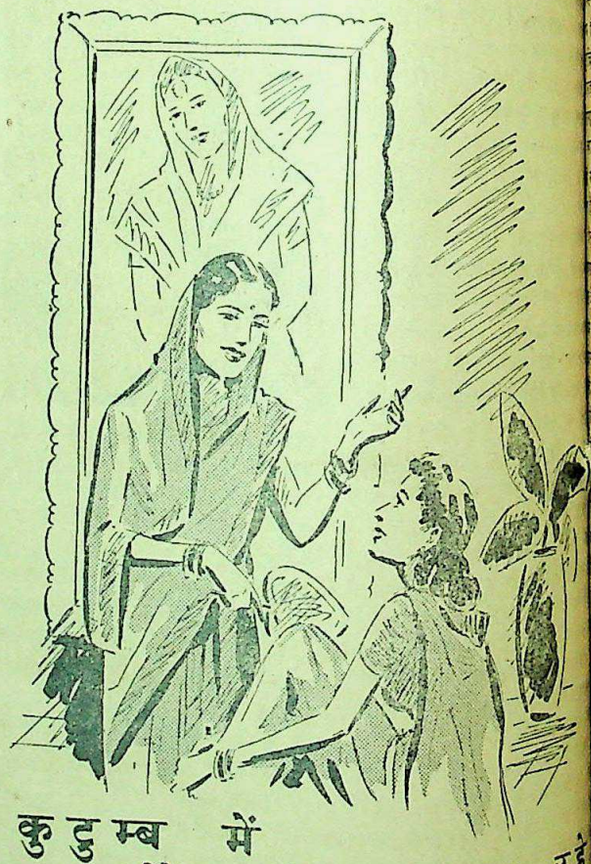

कुटुम्ब में सौन्दर्य कायम रहे

माताजी कह रही हैं: "मेरी माँ इतनी ही सुन्दर थी जितनी इस तसवीर में दिखाई देती है। परन्तु कोई भी तसवीर नहीं बता सकती उसकी त्वचा कितनी कोमल और सुन्दर थी।" माताजी ने अपनी त्वचा उनकी माँ के तरह सुन्दर रखी। और चाहती है कि बेटी भी त्वचा के सौन्दर्य की उसी तरह रक्षा करे। उन्होंने लड़की को सौन्दर्य-रक्षा के कौटुम्बिक रहस्य को सावधानी से समझा दिया है कि है पिअर्स साबुन और स्वच्छ पानी का उपयोग। इस सबक के सहारे वे पीढ़ियों तक कुटुम्ब में इस सौन्दर्य को कायम रख सकेंगी।

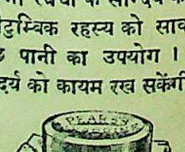

पिअर्स साबुन

सौन्दर्य का सेवक

TG. 40-172 HI A. & F. PEARS, ISLEWORTH, ENGLAND

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४ जुलाई, १९४६

साहित्य-चर्चा

त्रिफला'*

'त्रिफला' के लेखक श्री जगदीश वैद्य हरड़, बहेड़ा और आँवला को एक त्रिफला के नाम से पुकारा जाता है। त्रिफला वरक, सुश्रुत और भाव प्रकाश में बड़ी महिमा है। हरड़ के विषय में एक प्रसिद्ध उक्ति है 'माता नास्ति तत्र माता हरीतकी।' जहाँ माता न हो, उसकी माँ हरड़ का काम करती है। ऐसा इसके अद्भुत गुणों के कारण कहा है।

हरड़ को वयस्थापक कहा गया है। कहा जाता है कि वृद्ध च्यवन ऋषि ने त्रिफला के सेवन से पुनः युवा बन गए थे। च्यवन ऋषि के जीर्ण तन्तुओं में पुनः शक्ति का संचार करने वाला 'च्यवनप्राश' इत्यादि तैयार किया जाता है। नवीन खोज ने यह सिद्ध कर दिया है कि एक आँवला में सौ सन्तरों के बराबर शक्ति होती है। जहाँ अन्य फलों में उनके सूखने पर शक्ति नष्ट हो जाती है, सूखे आँवले में वह बढ़ जाती है।

इस प्रकार हरड़, बहेड़ा और आँवला इन्हीं गुणों के कारण आयुर्वेद के प्राण हैं। आयुर्वेद के प्रायः समस्त योगों में इनका किसी न किसी रूप में प्रयोग किया जाता है।

इन जीवनदायक औषधियों का सर्व साधारण में प्रचार अत्यन्त आवश्यक है। ये तो जैसे विटामिन-सी, आवश्यक तत्वों की कमी को, जनता धनाभाव के कारण आदि द्वारा प्राप्त नहीं कर सकती। इस सस्ते 'फलों' से उस कमी को पूरा की जा सकती है। जरूरत इस बात की है कि जनता में इनका प्रचार हो। इसी कमी को वैदी जी ने पूरा किया है। उन्होंने 'त्रिफला' पुस्तक में इस सम्बन्धी सभी प्रकार की बातें बताई हैं, वहाँ इसको समझ कर सकने सर्वसाधारण जनता भी बन सके।

पुस्तक में इन बातों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है—(१) त्रिफला के संस्कृत, हिन्दी, लैटिन तथा भारत की अन्य भाषाओं के नाम (२) इनका वानस्पतिक वर्णन तथा भारत में आजकल कहाँ पैदा होता है। (३) त्रिफला का ऐतिहासिक वर्णन (४) त्रिफला इतिवृत्त—प्राचीन भारत में ही पाया जाता था या बाहर से लाया जाता तथा 'द्रव्यगुण' ग्रन्थों में इनका वर्णन है। (५) त्रिफला के प्रकार तथा आयुर्वेदीय ग्रन्थों में रासायनिक विश्लेषण तथा इनके औषधीय उपयोग (७) आयुर्वेद के अनुसार त्रिफला के गुणों का वर्णन (८) त्रिफला के विभिन्न अंगों के (९) किस ऋतु में औषधि-

*त्रिफला—श्री रामेशवेदी, आयुर्वेदालंकार। प्रकाशक—श्री रामेशवेदी, आयुर्वेदिक इण्डस्ट्रियल इंस्टीट्यूट, वादामी बाग, शालीमार बाग। परिवर्द्धित संस्करण का मूल्य २) है। पृष्ठ संख्या ३०० और सजिल्द, पृष्ठ

निर्माण में कौन सा अंग संग्रह करना चाहिए। (१०) किन किन योगों में इसका इस्तेमाल किया जाता है। (११) योगों के बनाने की विधि (१२) पौधों के विभिन्न अंगों के चिकित्सा सम्बन्धी उपयोग (१३) त्रिफला का शरीर के विभिन्न संस्थानों पर कार्य (१४) आयुर्वेदीय योगों की आधुनिक प्रणाली से परीक्षा (१५) पौधों के विषय में उत्पादन सम्बन्धी निर्देश (१६) पौधों का आर्थिक दृष्टि से तथा व्यापारिक दृष्टिकोण से महत्त्व (१७) सहायक-पुस्तक-सूची। इसके अतिरिक्त पुस्तक के अन्त में विषय-अनुक्रमणिका भी दी गई है, जिससे पाठक शीघ्र ही ज्ञातव्य वस्तु पा सकते हैं।

इस वर्णन से स्पष्ट है कि लेखक ने त्रिफला के बारे में कितना अन्वेषण किया है। यह कहना सर्वांश में सत्य है कि त्रिफला के बारे में प्रस्तुत पुस्तक 'इंसाइक्लोपीडिया' है। लेखक ने विविध पुस्तकों में बिखरी हुई आयुर्वेद सम्बन्धी सामग्री का योग्यता से उपयोग किया है, उसे सुन्दर और मौलिक ढंग से उपस्थित किया है। विषय प्रतिपादन सरल और सुबोध होते हुए भी पुस्तक की वैज्ञानिकता नष्ट नहीं हो पाई है।

'त्रिफला' के लेखक और प्रसिद्ध चिकित्सक श्री रामेश वेदी, आयुर्वेदालंकार।

वेदी जी 'भारतीय-द्रव्य-गुण-ग्रन्थमाला' नाम से एक बृहत् पुस्तक का सम्पादन कर रहे हैं। इसमें भारत में पाई जानेवाली समस्त औषधों का वर्णन होगा। इस माला की ओर से सोंठ, तुलसी और अर्क्षीर पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। त्रिफला इस ग्रन्थमाला की प्रथम भेंट है। लेखक ने इस पुस्तक के लेखन में इतना परिश्रम किया है कि त्रिफला के बारे में जहाँ, जो कुछ भी प्राप्य था उसे खोजा, जो भी पुस्तकें इस बारे में सहायक हो सकती थीं—जैसा कि पुस्तकें अन्त में दी गई सहायक पुस्तक-सूची से स्पष्ट है—उनका अवगाहन-विलोडन किया है। इसी परिश्रम के परिणाम स्वरूप जो तत्त्व उन्होंने पाया वह पुस्तकाकार में जनता के समक्ष रख दिया। 'भारतीय-द्रव्य-गुण-ग्रन्थमाला' जब सम्पूर्ण हो जायेगी तब वह अपने ढंग की अनोखी तथा अद्वितीय चीज होगी। यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य की एक बहुत बड़ी कमी को पूरा करेगा।

'त्रिफला' की 'भण्डारकर रिसर्च इन्स्टिट्यूट' के क्यूरेटर पी० के० गोडे ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। उन्हीं के शब्दों में 'इतने वर्ष के अन्वेषण काल में मैंने अपने ढंग का यह प्रथम प्रयास देखा है।... लेखक का ज्ञान इस विषय में मेरे से भी कहीं अधिक है।' देहरादून की 'वन्य अनुसन्धानशाला' के डाक्टर एन० एल० बोर ने भी इसकी बड़ी तारीफ की है और आयुर्वेद महाविद्यालयों के आचार्यों तथा उपाध्यायों ने इसकी सराहना की है।

वेदी जी लाहौर के लब्ध प्रतिष्ठ वैद्य हैं। आपको महात्मा गाँधी जी के पास रह कर चिकित्सा-कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त रहा है। सेवाग्राम—आश्रम के प्रमुख कार्यकर्ता श्री विनोबा भावे, श्री किशोरीलाल मश्रुवाला तथा श्री डा० सय्यद महमूद की आप काफी समय तक चिकित्सा करते रहे हैं। गाँधी-परिवार तथा बजाज-परिवार की चिकित्सा करके आपने ख्याति पाई है।

आपका वानस्पतिक ज्ञान गहन है। गुरुकुलीय आयुर्वेद महाविद्यालय की वनस्पति विभाग के अध्यक्षपद को सुशोभित कर कई वर्ष तक आपने इस दिशा में गंभीर अध्ययन किया है। इसके अतिरिक्त संस्कृत तथा इंगलिश भाषा के आप पण्डित हैं। इन सब साधनों से सज्जित होने से ही आप इस कार्य को इतनी सुन्दरता से निभा सके हैं।

अन्वेषण-कार्य हिन्दी साहित्य में अभी बचपन में है। धनाभाव के कारण और भी कठिन है। इन सब विघ्नबाधाओं के बावजूद भी वेदी जी का प्रयत्न सराहनीय है, और हमारे प्रोत्साहन की अपेक्षा रखता है। हिन्दी-प्रेमी धनी सज्जनों को इस ओर ध्यान देना चाहिए। वेदी जी की योजना विस्तृत है और वह तभी सफल हो सकती है यदि अन्वेषण कार्य बड़े पैमाने पर जारी किया जाए, अन्यथा वे अकेले इस कार्य को अपने जीवनकाल में पूरा न कर सकेंगे। यदि ऐसा हुआ तो हिन्दी जगत् को एक अमूल्य देन से वञ्चित होना पड़ेगा। मेरी प्रार्थना है कि दानी सज्जन उदारता पूर्वक इस कार्य में उनका सहयोग करें। यह वेदी जी की सहायता नहीं, हिन्दी साहित्य की सेवा होगी, वस्तुतः जनता की सेवा होगी।

'त्रिफला' का प्रथम संस्करण समाप्त हो गया था। कागज की कठिनाई से कई मास बाद द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो सका है। आशा है इसका भी वैसा ही स्वागत होगा।

* * *

बिगुल—लेखक, पण्डित सोहनलाल द्विवेदी, प्रकाशक—साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग। पृष्ठ-संख्या ५६, सजिल्द और सचित्र, मूल्य १॥)

राष्ट्र-कवि पं० सोहनलाल द्विवेदी ने हिन्दी-जगत् के बालकों के लिए जो साहित्य निर्माण किया है उसका एक विशेष कारण है। द्विवेदी जी विचारक और राष्ट्र-सेवक हैं। वह जानते हैं कि भारत के भावी निर्माताओं पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव पड़ता जा रहा है और वह अपनी सभ्यता तथा संस्कृति भूलते जा रहे हैं। उनके हृदय में विदेशी माता के लिए जितना प्रेम है उतना अपनी उस माता के लिए नहीं जिसने उन्हें जन्म देकर बड़ा किया है। यह प्रभाव कितना दूषित है, इसके कहने की आवश्यकता नहीं। द्विवेदी जी ने भारतीय बालकों को इस प्रभाव से बचाने के लिए उन्हें जो साहित्य दिया है, उसका यही दृष्टिकोण है। प्रस्तुत पुस्तक में उनकी २७ कविताएँ हैं और प्रत्येक कविता राष्ट्र-प्रेम से सराबोर है। बालक इन कविताओं को पढ़कर अपना जीवन बना सकते हैं और अपनी मातृभूमि के सच्चे सेवक बन सकते हैं। कुछ पंक्तियाँ देखिए :—

अड़ा रहा जो अपने पथ पर
लाख मुसीबत आने में,
मिली सफलता उसको जग में
जीने में, मर जाने में।

* * *

कभी नहीं तुझको भूलूँगा
जब तक मेरे तन में प्राण।
झूम झूम गाऊँगा भारत
मैं तेरे गौरव के गान

* * *

कितने ही बलि चढ़े देश पर,
कितने ही अब चढ़ते हैं।
धन्य पुत्र जो माता के हित,
यों मरने को बढ़ते हैं।

* * *

तब तक पल भर आराम न लो
तब तक पल भर विश्राम न लो;
जब तक न लक्ष्य अपना पाओ
बढ़ते जाओ, बढ़ते जाओ।

इसी प्रकार की रचनाओं से प्रस्तुत पुस्तक भरी हुई है। इन रचनाओं की भाषा इतनी सरल, सुबोध और ओजपूर्ण है कि थोड़ी हिन्दी जाननेवाला बालक भी बड़े चाव से इन्हें पढ़कर अपना जीवन-पथ सुधार सकता है। पुस्तक सचित्र और आकर्षक है। चित्र प्रसिद्ध कलाकार श्री शम्भुनाथ मिश्र द्वारा अंकित किये गये हैं। भारत के प्रत्येक बालक को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

* * *

गीतादर्शन की पृष्ठभूमि—लेखक, श्री सत्यदेव शास्त्री, प्रकाशक—साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग। पृष्ठ-संख्या ११२, मूल्य १॥)

वर्तमान युग में गीतादर्शन का अधिक प्रचार हुआ है और इस सम्बन्ध में उत्कृष्ट ग्रन्थ भी प्रकाशित हुए हैं। इन पुस्तकों में प्रत्येक आलोचक तथा विचारक ने अपने-अपने दृष्टिकोण से विचार करने की चेष्टा की है। प्रस्तुत पुस्तक के लेखक का दृष्टिकोण भी भिन्न है। गीतादर्शन की इस छोटी-सी पुस्तक में लेखक ने महात्मा कृष्ण के केवल उन उपदेशों पर प्रकाश डालने की चेष्टा की है जिनका सम्बन्ध अनासक्ति योग से है। लेखक महोदय कांग्रेस के उत्साही कार्यकर्त्ता हैं, इसलिए उन्होंने मुख्यतः कार्यकर्त्ताओं के लिए ही यह विषय चुनकर उसे जनता के सामने लाने का प्रयत्न किया है। कार्यकर्त्ताओं की दृष्टि से यह विषय बड़े महत्व का है। जन-सेवक को कैसा होना चाहिए, अनासक्ति योग से इसकी जितनी सुन्दर शिक्षा मिलती है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। इसलिए जन-सेवा की इच्छा रखनेवाले व्यक्तियों को तो इसका अध्ययन अवश्य ही करना चाहिए। सत्यदेव जी ने इस पुस्तक-द्वारा एक बड़ी आवश्यकता की पूर्ति की है। उनके अनासक्ति योग सम्बन्धी विचार अनुभवजन्य और प्रौढ़ हैं।

अनासक्ति के अतिरिक्त प्रस्तुत पुस्तक में दूसरा विषय चातुर्वर्ण्य-व्यवस्था है। विद्वान् लेखक ने इस सम्बन्ध में भी अच्छा प्रकाश डाला है। इस प्रकार यह पुस्तक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण बन गई है। आशा है जनता में इसका अच्छा प्रचार होगा। —राजेन्द्रसिंह गौड़, एम० ए०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्यागवीर श्री एच० वी० कामथ

(पेज ६ का शेष)

अँग्रेजों की कूटनीति नेता जी खूब अच्छी तरह समझ गये थे। ब्रिटिश कभी भी अपने पंजे में उन्हें नहीं कर सकते थे। ब्रिटिश साम्राज्यवाद को मिटाने के लिए ही सुभाष बाबू जान हथेली पर लेकर विदेशों में गये थे। हम सब उनकी गैर हाजिरी में भी उन्हीं के बताये हुए मार्ग पर चलने की कोशिश करेंगे। नेता जी की सूझ बड़ी दूर की होती थी। उसका बहुत ज्यादा प्रभाव पड़ता है। अग्रगामी दल भारत को शीघ्र आजादी दिलायेगा। नेता जी का निस्वार्थ-त्याग कभी असफल नहीं जा सकता।"

नेता जी भी आपका विशेष ख्याल रखते थे। बड़ी से बड़ी बातों में आपकी सलाह लेते थे। कामथ जी के जीवन पर नेताजी के प्रभावशाली जीवन का असर पड़ा है। आप कभी भी अपने साथियों को धोखा नहीं दे सकते। हर मौके पर साथ देने के लिए तैयार रहते हैं।

सिवनी जेल में मैंने देखा कि आप छोटे छोटे कैदियों तक से बड़ी मुहब्बत करते थे। उनको किसी बात की तकलीफ न हो इसका पूरा ध्यान रखते थे। उनकी सारी चीजों की देखभाल आप स्वयं करते थे। एक दिन जेल का एक साधारण कैदी बीमार हो गया था। आप स्वयं जाकर डाक्टर के पास से दवा ले आये और उसे अपने हाथों से दवा पिलाई। जेल के कैदी आपको 'महात्मा' कहकर पुकारते थे और कहते थे कि ये तो हमारे माता-पिता के तुल्य हैं। किसी भी चीज की आवश्यकता पड़ने पर आप तुरन्त उन चीजों की पूर्ति करने की कोशिश करते थे।

जेल के बड़े बड़े अधिकारी भी आपकी इज्जत करते थे। एक दिन कुछ राजनैतिक बन्दियों को कपड़ा देने में जेलर आना-कानी कर रहा था। आप स्वयं जेलर से मिले और उसके ऊपर के अधिकारी से भी। सारी परिस्थिति समझाने की कोशिश की। फिर भी कुछ धीमी चाल देखकर आपने कहा कि यदि १२ घंटे के भीतर हमारे इन राजनैतिक बन्धुओं को कपड़ा नहीं मिला तो हम सब भी नंगे हो जायेंगे। जेल का कपड़ा छोड़ देंगे। बारह घंटे की नोटिस दे रहा हूँ। सारे वार्ड में सनसनी फैल गई। कामथ साहब ने कहा—"जो भी हो, मैं भी अपने भाइयों की तरह नंगा हो जाऊँगा।" जेल-अधिकारी कब कामथ जी का नंगा होना पसन्द करते। बारह घंटा बीतते बीतते सब राजबन्दियों के लिए कपड़ा हाजिर हो गया।

अपने आस-पास के सब कैदियों के स्वास्थ्य आदि का पूरा ख्याल और हर एक की मुसीबतों पर बहुत ध्यान रखते थे। हर एक से मिलते थे। सब की विचार-धाराओं को बड़े प्रेम से सुनते थे। छोटे से छोटे लोगों को पढ़ाने में कभी अपना अपमान नहीं समझते थे। एक दिन एक साधारण कैदी ने कहा—आपसे मुझे अँगरेजी पढ़नी है। कामथ जी ने तुरन्त खुशी से कहा—आप जब चाहें हमारे पास आकर पढ़ सकते हैं।

जेल के सारे राजबन्दी आपके कमरे में जाकर मनोविनोद किया करते थे। कामथ जी देश-विदेश की भिन्न भिन्न कथाएँ सुनाकर सबका दिल बहलाते थे। उदास से उदास और मनहूस से मनहूस कैदी तक को मनोरंजन में शामिल कर लिया करते थे। कभी किसी को ऐसा मालूम नहीं होने पाता था कि हम सब जेलखाने के बन्दी हैं। फिर भी जेल की ऊँची दीवार तो कहती ही थी कि तुम सब जेल के बन्दी हो। जेल में कामथ जी हर एक से पूछते थे कि तबियत कैसी है? क्या किसी चीज की आवश्यकता है? किसी भी राजबन्दी का अपमान आप कभी सहन नहीं कर सकते थे। छोटे से बड़े तक की आप देख-भाल करते थे।

आप मानते हैं कि साम्राज्यवादी शासन में परिवर्तन होना ध्रुव निश्चय है। ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो इसे डूबने से बचा सके। आप यह मानते हैं कि किसी दिन रूस, चीन और हिन्दुस्तान संयुक्त होकर सारी दुनिया का नेतृत्व करेंगे। रूस भी एक तरह का एशिया का ही राष्ट्र है। मोशिये स्टेलिन का जन्म तो एशिया में ही हुआ है। काश! तीनों मुल्कों में समाज-वादी व्यवस्था कायम हो जाये। साम्राज्य-वादियों की ऐसी शक्ति नहीं है कि फिर वे एशिया पर सवारी गाँठ सकें। लेकिन आपसी फूट के कारण आज चीन और हिन्दुस्तान पराधीन बने हैं। आप उस दिन की प्रतीक्षा में हैं जब चीन, रूस और भारतवर्ष एक सूत्र में बँध जायेंगे।

आनेवाले स्वतन्त्र भारत के आप सफल नेता बनेंगे यह विश्वास के साथ कहा जा सकता है। उग्र विचारों के कारण आपका मेल सुधारवादी नेताओं के साथ हो सकता है, यह कहना कठिन है। लेकिन जब आज प्रान्तों में कांग्रेसी शासन कायम है और हिन्दुस्तान का स्वतन्त्र विधान भी बनने जा रहा है तब आप ऐसे निस्वार्थी नेता भारत का नेतृत्व करने में सफल होंगे।

साम्राज्यवादी युद्ध का आपने और नेता जी ने जोरदार विरोध किया था। फलस्वरूप युद्ध शुरू होते ही आप लम्बे समय के लिए जेल में डाल दिये गये थे। कई वर्षों तक आप जेल की हवा खाते रहे। युद्ध समाप्त होने पर मुक्त किये गये। आज आप संगठन के काम में लगे हैं।

सन् ४२ की क्रांति पर आपको [illegible] हमेशा बहुत ही साधारण पोशाक [illegible] हैं। जेल में बड़ी बड़ी दाढ़ी [illegible] भी रखा लिये थे और बहुत [illegible] से मालूम होते थे।

बंकिमबाबू के उपन्यास

अनु० पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

आनन्दमठ—मुसलमानों और [illegible] को हिन्दुस्तान से बाहर करने के लिए बंगाल में वैष्णवों ने जो विद्रोह किया था, उसी का इस उपन्यास में [illegible] सम्राट् श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने बड़ी खूबी से वर्णन किया है। इसका सुन्दर चित्रण इस उपन्यास में [illegible] पढ़कर मातृ-भूमि के लिए दिल उठता है। मूल्य १।-) एक रुपया आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लि. इलाहाबाद।

खुश खबरी!

'ऐस्प्रो' का माल आ गया है

किसी भी नकली माल को मत लीजिये। हर टिकिया पर 'ASPRO' खुदा हुआ देख लीजिये।

'ऐस्प्रो' का नियंत्रित मूल्य ३ टिकियों की पैकेट का दाम १ आना ३० टिकियों के डिब्बे का दाम १० आना

'ऐस्प्रो' दस मिनट में बुखार और दर्द रोकती है। यह हृदय या पेट को नुकसान नहीं पहुँचाती

ऐस्प्रो बड़ी को भी नुकसान नहीं पहुँचाती

वितरक:
जे. एल. मौरिसन, सन एण्ड जोन्स (इण्डिया) लि:
पोष्ट बक्स ३८७ कलकत्ता : टेलीफोन - कलकत्ता ७९६

'ऐस्प्रो' हर जगह मिलती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सागर विश्वविद्यालय में इस वर्ष एम० ए० तथा एल० एल० बी० फाइनल व प्रीवियस कक्षाएँ खुल रही हैं। इसके अतिरिक्त कानून की एल० एल० एम०, एल० एल० डी० तथा बी० सी० एल० कक्षाएँ भी खुल रही हैं। अन्य विद्यालयों में कानून का जो कोर्स चार वर्ष में पूरा होता है, यहाँ वह योग्य विद्यार्थी मिलने पर ३ वर्ष में पूरा करने की योजना है।

सागर-विश्वविद्यालय में कानून की प्रथम वर्ष की पढ़ाई के साथ द्वितीय वर्ष की पढ़ाई का भी प्रबन्ध हो गया है। जो शिक्षार्थी द्वितीय वर्ष की कक्षाओं में भरती होना चाहें; वे अपने आवेदन-पत्र रजिस्ट्रार के नाम भेज दें?

सौभाग्य से इस संस्था के संस्थापक डा० सर हरिसिंह गौर ने कानून पर व्याख्यान देने की स्वीकृति पदान कर दी है। डा० गौर कानून के विश्व-विख्यात प्रकाण्ड पंडित हैं। उनके व्याख्यान विशेष कर "हिन्दू ला" पर होंगे। लोगों को इस मौके से लाभ उठाना चाहिए। डा० गौर को विधान-परिषद्-संबंधी उचित सुझाव पेश करने के उपलक्ष में गांधी जी व वायसराय महोदय ने धन्यवाद के तार दिये हैं। —संवाददाता

* * *

औरंगाबाद (गया) में बिहार प्रान्तीय संस्कृत छात्र-सम्मेलन तथा बिहार संस्कृत-हिन्दी-कवि-सम्मेलन का पाँचवाँ अधिवेशन शिक्षासचिव माननीय आचार्य श्री बद्रीनाथ वर्मा, काव्यतीर्थ तथा संस्कृत के रहस्यवादी कवि पं० लालविहारी मिश्र, व्याकरण-साहित्य-धर्मशास्त्राचार्य वेदरत्न, मुस्तफापुर के सभापतित्व में बड़े समारोह से २७ और २८ जुलाई को होने जा रहा है। अर्थ-मन्त्री श्री अनुग्रहनारायणसिंह, श्री जगत-नारायणलाल एम० एल० ए० प्रभृति देशनेताओं ने सम्मेलन में सम्मिलित होने की स्वीकृति दे दी है। संयुक्तप्रांत के शिक्षा-मन्त्री श्री सम्पूर्णानन्द जी के पधारने की पूरी आशा है। स्वागताध्यक्ष प्रिंसिपल 'द्विज' जी सफलता के लिए अथक प्रयत्न कर रहे हैं।

—जगदीश शास्त्री सं० मन्त्री

* * *

कालसी जौनसार बाबर में गत चार दिनों से अचानक बहुत जोर की वर्षा हुई। ता० २८ जून को प्रबल वर्षा के कारण हिमालय जलमय हो रहा है। जौनसार बाबर और बिहार में ग्राम लुधेरा, सर-रियाना तथा अन्य ग्राम जो जमुना नदी के किनारे पर हैं बहुत हानि हुई है। गाय भैंस की हानि का तो अभी ठीक पता नहीं चला। मालूम हुआ है कि ७ आदमी जमुना नदी में बह गये जिनमें ३ व्यक्ति बच गये हैं और शेष मर गये हैं। अशोक आश्रम कालसी के जो मकान जमुना के किनारे नये बन रहे थे उनमें से एक मकान की दीवाल और छत अति वर्षा के कारण गिर गई है जिसके कारण आश्रम को बहुत हानि हुई है। अब वर्षा भयानक रूप धारण कर गई है। —संवाददाता

* * *

बलिया, पोस्ट रेवती गायघाट भारती-भवन पुस्तकालय की वार्षिक रिपोर्ट शिक्षा-प्रसार अफसर के यहाँ सहायता प्राप्त के लिए निम्न प्रकार भेजी गई। इस साल पुस्तकालय में ४११ पुस्तकें वितरण हुईं। तथा साल के अन्दर ३६११ आदमियों ने वाचनालय से लाभ उठाया। पुस्तकालय में इस साल कुल आमदनी ८१≡)॥ और कुल व्यय ६३॥≡)॥ तथा बचत १७॥) हुई। पुस्तकालय में प्रति वर्ष ३६) सहायता शिक्षा-प्रसार-विभाग यू० पी० से मिलती है। इस वर्ष पुस्तकालय का निजी भवन बनाने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से प्राप्त हो चुका है। जिसके लिए जनता द्वारा २५०) चन्दा प्राप्त हो चुका है।

—लल्लूसिंह उपसभापति

* * *

फतहपुर खजुहा तहसील सम्मेलन ववेवर में ता० १७, १८, १९ जून को प्रांत प्रतिपति सेठ दामोदरस्वरूप के सभापतित्व में हुआ। ता० १७ को सभापति का जलूस ३१ जोड़ी बैलों के सुसज्जित रथ पर निकाला गया। बाहर के आये हुए नेताओं में श्री छैलविहारी कंटक व श्री रामदुलारे त्रिवेदी के भाषण हुए। सभा-कार्यवाही प्रारम्भ होने पर श्री पं० गुरुप्रसाद पांड़े ने स्वागताध्यक्ष पद से अपना भाषण दिया। श्री बाबू वंशगोपाल एम० एल० ए० व श्री शिवदयाल उपाध्याय एम० एल० ए०, स्वामी भगवान, पन्नालाल गुप्ता, हरिप्रसाद गुप्ता, रामगोपाल त्रिपाठी तथा योगेन्द्रपाल और जिले के सभी प्रमुख कार्य-कर्ताओं ने ओजस्वी भाषण से जनता को मुग्ध किया। —संवाददाता

* * *

प्रयाग जिला रविदास महासभा प्रयाग की बैठक बाबू रामदयाल रविदास के सभापतित्व में श्री रविदास मन्दिर सीता-रामपुर में हुई। जिसमें सर्वसम्मति से मंत्रिमंडल के स्थायी सरकार की योजना का विरोध किया गया क्योंकि इसमें अछूतों के साथ घोर अन्याय किया गया। शिमला कान्फरेन्स के प्रस्ताव के अनुकूल अछूतों को स्थायी सरकार में दो सीटें मिलनी चाहिए। —संवाददाता

* * *

इंदौर से मानव-जीवन के भविष्य-संबंधी गति-विधि का पथप्रदर्शक तथा व्यवसाय-संबंधी जानकारी का दीपक, सायन-पद्धति का एकमात्र "काबरा प्रिडीक्शन" मासिक पत्र हिन्दी अँगरेजी में श्री० प्रो० एस० जी० काबरा के सम्पादकत्व में प्रथम जुलाई से प्रकाशित हो गया है। डिक्लेरेशन के बाद होल्कर गवर्नमेंट ने मंजूरी दे दी है। —संवाददाता

* * *

लखनऊ से एक त्रैमासिक पत्रिका "मंदार" प्रकाशित करने का आयोजन किया जा रहा है। यह विद्यार्थी-समाज की प्रमुख त्रैमासिक पत्रिका होगी। इसका वार्षिक मूल्य २॥) और एक प्रति का ॥=) होगा। पता—रामकृष्ण श्रीवास्तव, बालकृष्ण कमर लेन, गणेशगञ्ज, लखनऊ।

—मुरलीधर मिश्र

* * *

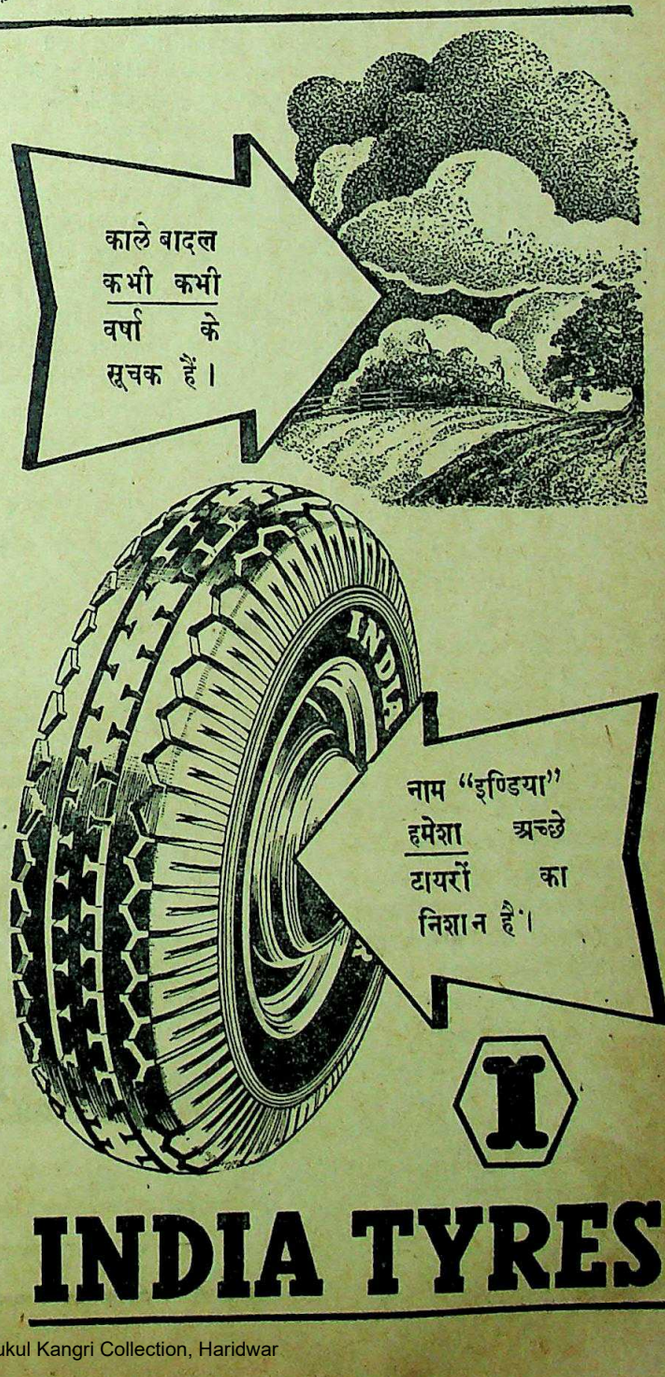
काले बादल
कभी कभी
वर्षा के
सूचक हैं।
नाम "इण्डिया"
हमेशा अच्छे
टायरों का
निशान है।
INDIA TYRES

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजधानी की चिट्ठी

संयुक्तप्रांतीय असेम्बली का बजट-अधिवेशन

पार्लामेण्टरी सेक्रेटरियों और विभागीय आई० सी० एस० सेक्रेटरियों में रस्साकशी—जमींदारों और तालुकेदारों के अनाचार—किसानों पर अत्याचार—आनरेरी मजिस्ट्रेटी की बिदाई—ग्रामोद्योग को प्रोत्साहन।

(अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

मंत्रियों तथा पार्लामेण्टरी सेक्रेटरियों के नैनीताल से लौट आने के कारण इस सप्ताह लखनऊ का वातावरण सजग हो उठा है। अर्थ-मंत्री श्री सम्पूर्णानन्द ने इस वर्ष का बजट तैयार कर लिया है और वह आगामी १६ जुलाई को प्रान्तीय असेम्बली के विचारार्थ पेश किया जायगा। असेम्बली के इसी अधिवेशन में विधान-निर्मात्री-परिषद् के लिए युक्तप्रान्त के प्रतिनिधियों का भी निर्वाचन होगा। इसके लिए १६ जुलाई को ही नामजदगी होगी, २० को निर्वाचन होगा और २२ जुलाई को निर्वाचन फल सुनाया जायेगा। मुस्लिम सीटों में से राष्ट्रीय मुसलमानों को कम से कम दो सीटें अवश्य मिल जायेंगी और उनमें से एक श्री मोहम्मद अहमद काज़मी होंगे। असेम्बली के इसी अधिवेशन में स्वायत्त शासन तथा ग्राम-पंचायत बिल भी पेश होंगे।

* * *

पार्लामेण्टरी सेक्रेटरियों तथा डिपार्टमेण्टल (वैभागिक) सेक्रेटरियों में अपने अपने अधिकारों के लिए इधर अरसे से चख-चख चल रही है। पार्लामेण्टरी सेक्रेटरी को मंत्री के पश्चात् अपने विभाग का सर्वोच्च अधिकारी समझा जाता है, किन्तु डिपार्टमेण्टल सेक्रेटरी, जो सिविल सर्विस के ऊँचे अधिकारी होते हैं, इसे अस्वीकार करते हैं। उनका कहना है कि पार्लामेण्टरी सेक्रेटरी केवल धारासभा से सम्बन्धित कार्यों के लिए उत्तरदायी है—साधारण शासन में उसे हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। इसी लिए वे उसका महत्त्व अपने से अधिक मानने के लिए नहीं तैयार हैं और कोई भी आई० सी० एस० अफ़सर किसी भी पार्लामेण्टरी सेक्रेटरी के पास जाने में अपमान का अनुभव करता है। यही हाल ज़िला अफ़सरों का भी है, जो पार्लामेण्टरी सेक्रेटरी को अपने से उच्च अधिकारी नहीं मानते और उसके पहुँचने पर यथोचित शिष्टता का प्रदर्शन नहीं करते। १९३५ के शासन-विधान में पार्लामेण्टरी सेक्रेटरी के पद और अधिकार की कोई विशिष्ट परिभाषा न होने से ही सिविल सर्विस के अधिकारियों को उनके सम्बन्ध में यह भ्रमपूर्ण धारणा बनाने का अवसर मिल गया है, अन्यथा इँगलैण्ड में पार्लामेण्टरी सेक्रेटरी को एक उपमंत्री (डिप्टी मिनिस्टर) से कम महत्त्व नहीं दिया जाता और इस देश में भी ऐसा ही चाहिए।

* * *

प्रान्त के प्रायः प्रत्येक ज़िले से ज़मींदारों और ताल्लुकेदारों के भीषण अत्याचारों के समाचार आ रहे हैं। एडवाइज़र शासन काल में इन लोगों को सरकारी अफ़सरों और पुलिस का पूर्ण सहयोग प्राप्त था। अतएव वे किसानों को मनमाना लूटते थे और उनका अन्न सस्ते मूल्य पर खरीद कर उसे चोर बाज़ार में ऊँची दर पर बेचते थे। कांग्रेस मंत्रिमण्डल की अन्न-वसूली योजना ने इस तिकड़म को मिट्टी में मिला दिया और किसानों से सरकार प्रत्यक्षतः खरीद करने लगी। जमींदारों को इससे स्पष्टतः हानि पहुँची है और वे इसी कारण योजना का विरोध करने और उसे विफल करने के लिए एड़ी चोटी का पसीना एक कर रहे हैं। बहुतेरे ताल्लुकदार, जो अपनी सीर बटाई पर दूसरे किसानों को उठाये हुए हैं, अपने भाग का अन्न भी अपने साझीदार किसानों के अंश से दिलाते हैं। अपना अन्न चोर-बाज़ारी के लिए छिपाये हुए हैं। इस आशय की शिकायतें एक दर्जन से अधिक ग्रामीणों ने पत्रकारों के एक दल के समक्ष राजा सलेमपुर के विरुद्ध की हैं, जिनके कुछ जिलेदारों के विरुद्ध बेगार और मारपीट के भी आरोप उन्होंने लगाये हैं।

* * *

अनेक स्थानों पर तहसीलों के अफ़सर भी जमींदारों का प्रत्यक्ष साथ देते देखे गये हैं। वे किसानों की बात ही नहीं सुनते। सरकारी पंचायतों के स्थान पर वे जाली पंचायतों को असली होने का फतवा देकर किसानों को भ्रम में डाल देते हैं। पुलिस भी किसानों पर ही अत्याचार करती है। जमींदार उन्हें दरख्तों से बँधवाकर पिटवा देते हैं, उनके घरों में आग लगा दी जाती है, उनकी बेइज्जती की जाती है। इस प्रकार के अत्याचार गोमती के पार के जिलों में (गोंडा बस्ती) विशेष रूप से हो रहे हैं और गोंडा से तो एक दिन इतने भयङ्कर समाचार आये कि प्रधान मन्त्री के पार्लामेंटरी सेक्रेटरी श्री लालबहादुर शास्त्री को यहाँ से रातोरात गोंडा जाना पड़ा।

* * *

न्याय-मन्त्री डा० कैलाशनाथ काटजू इस प्रांत से आनरेरी मजिस्ट्रेटी को सदा के लिए विदा देनेवाले हैं। उनकी धारणा है कि अधिकांश आनरेरी मजिस्ट्रेट अयोग्य हैं तथा सिफारिशों से शीघ्र प्रभावित हो जानेवाले हैं। इसके अतिरिक्त उनमें भ्रष्टाचार की भी अनेक शिकायतें सुनी गई हैं। अतएव वे इस वर्ग को ही समाप्त कर देना चाहते हैं। उनके स्थानों पर योग्य वकीलों में से वैतनिक मजिस्ट्रेटों की नियुक्ति होगी। डा० काटजू न्याय तथा शासन का काम भी किसी एक ही अधिकारी द्वारा किये जाने के विरुद्ध हैं। इसके लिए वे यह व्यवस्था कर रहे हैं कि न्याय का काम करनेवाले सभी अधिकारियों की नियुक्ति तबादला, मुअत्तली और बर्खास्तगी का पूर्ण अधिकार हाईकोर्ट को दे दिया जाये, प्रान्तीय सरकार का उससे कोई सम्बन्ध न रहे।

* * *

प्रान्त के ग्रामोद्योग को प्रोत्साहित करने के अभिप्राय से उन्नति मंत्री के पार्लामेंटरी सेक्रेटरी श्री केशवदेव मालवीय बम्बई गये हैं, जहाँ अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में भाग लेने के उपरान्त वे बम्बई सरकार के सूचना-विभाग के परिचालन की व्यवस्था का अध्ययन करेंगे और बाद में सूरत जाकर वहाँ हाथ के करघों के बिजली से चलाये जाने के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करेंगे और फिर इस ज्ञान का उपयोग वे युक्तप्रांत के ग्रामोद्योग तथा कुटीरशिल्प के विकास में करेंगे।

दक्षिणी अफ़्रीका का सत्याग्रह

(पेज ७ का शेष)

निवास' बिल पेश किया। उस समय के गृह-मन्त्री डाक्टर मालन ने भारतीयों को अफ़्रीका की भूमि में विदेशी कहा। भारत-सरकार के हस्तक्षेप से 'केपटाऊन समझौता' १९२७ में हुआ जिसके द्वारा यूनियन से कहा गया कि वह इस बिल को वापस ले ले और बदले में भारत-सरकार दक्षिण अफ़्रीकावासियों को भारत-प्रवेश की आज्ञा देगी। इस समझौते से कोई लाभ नहीं हुआ। ९० प्रतिशत प्रवासी भारतीय जन्म से ही अफ़्रीका में रहे हैं, वे भारत लौटना नहीं चाहते। दूसरे, नेटाल में क्षेत्र निवास' बिल दूसरे रूप में 'पेगिंग एक्ट' के नाम से दिया गया जिसके द्वारा भारतीय पर फिर से अनेक तरह की दी गई।

सबसे अधिक अत्यायपूर्ण का 'एशिया भूमि क्रय और विधान' है जिसके द्वारा एशियाई किसी भी प्रकार की भूमि अथवा सम्पत्ति के क्रय के अधिकार से गया है और यूनियन सरकार के प्रतिनिधित्व से वंचित रखा

अफ़्रीका की भारतीय कांग्रेस

अफ़्रीका में भारतीयों के लिए लड़नेवाली संस्था अफ़्रीका भारतीय कांग्रेस है जिसमें मुसलमान, व्यापारी और मजदूर के लोग हैं। इसकी शाखायें में हैं। इस भारत विरोधी के विरोध में नेटाल भारतीय श्री नायकर के नेतृत्व में अफ़्रीका तीयों ने सत्याग्रह करने का निश्चय समाचार मिला है कि अफ़्रीका लाख भारतीय अपने स्वत्वों की लिए कटिबद्ध होकर जत्थे पर जत्थे नेटाल के वर्जित क्षेत्र में पहुँचते अफ़्रीका की यूनियन सरकार अधिवासी भारतीयों के इस कदम से पहले तो किंकर्तव्यविमूढ़ गये पर बाद में यूनियन सरकार ही रही। गोरों ने कानून को अपने लेकर सत्याग्रहियों पर आक्रमण उनके ख़ीमें फूँकना आरम्भ कर नीचता की हद तो तब हो गई जब भारतीय महिलाओं के साथ अपमान व्यवहार करना प्रारम्भ कर दिया।

हो सकता है संयुक्तराष्ट्र आम बैठक इस प्रश्न पर न्याय सके क्योंकि पिछले शान्ति-सम्मेलन आंग्ल-अमरीकी गुट की ही मनमानी है और अफ़्रीका-प्रवासियों पर करनेवाले गोरों में अधिकांश ब्रिटिश ही हैं। लेकिन जिस तरह शक्ति करती हुई जनता की विजय आंग्ल-अमरीकी गुट के कुचक्रों के बावजूद हुई उसी तरह भारतीय सत्याग्रहियों सफलता मिलेगी ही।

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारा मिठाइया—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

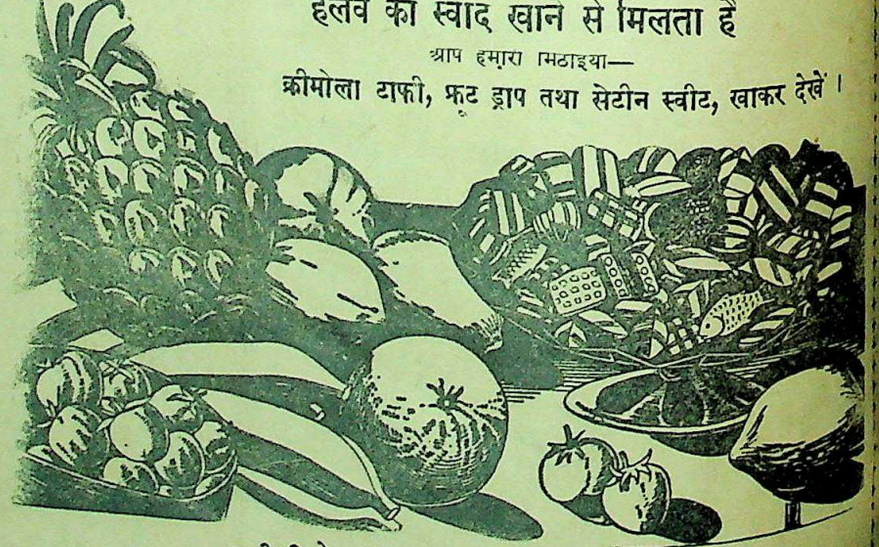

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

ईंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

18th August, 194

दूधवाला सदा ही देर से आता है।

और गृहस्वामिनी के लिए एक समस्या उपस्थित हो जाती है। परन्तु एक चतुर गृहस्वामिनी प्रयत्न करती है कि उसके घर में कुछ हो जो कि महमानों और घरवालों को दिया जा सके। वह जी. जी. फलपेय या फलशर्बत पेश करती है।

आप विश्वास रखिए कि यह अधिक सत्कार के लिए पूर्ण है।

फलपेय—नीबू, माल्टा, आम, नीबू कोर्डियल, नीबू वाली।
फल शर्बत—संतरा, केला, मिक्सडफ्रूट, नीबू, फाल्सा, स्ट्रोबेरी।

GG

जी. फ्रूट प्रिजर्विङ्ग फैक्टरी आगरा

जी. जी. इन्डस्ट्रीज़

जो० जी० सेल्स डिपो: —
मैसर्स गिरधरलाल वकील जनरलगंज कानपुर
बम्बई : देहली : कलकत्ता : ग्वालियर : अजमेर : बरेली।

अधिक स्वच्छ करता है!

अधिक चलता है!

1. यह जल—अभेद्य और नमी विरोधक है।
2. विकार विरोधी शीशे में बन्द
3. दांतों को चमकीला और स्वच्छ करने में ६० प्रतिशत अधिक प्रभावशाली।
4. साल भर की गारंटी

पशुओं के बालों से रहित!

व्यापारिक पूछ-ताछ :—
एल० डी सेमूर एंड कं० (इंडिया) लि०, बम्बई, कलकत्ता, कराची' मदरास।

Dr. West's Miracle-Tuft MEDIUM

डा. वेस्ट्स टूथ ब्रुश और टूथ पेस्ट

एक

दस मिनट में ही सा

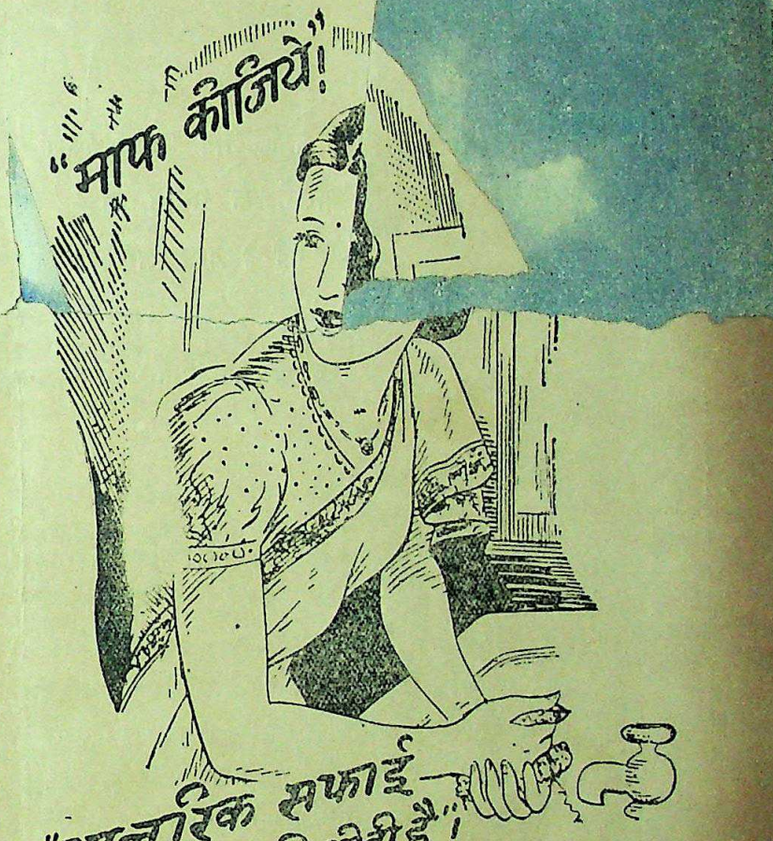

"माफ कीजिये!"

"आन्तरिक सफाई स्वास्थ्य की पहली सीढ़ी है"!

आदर्श रेचक

सवेरे सबसे पहले...हाथ मुंह धोनेसे पहले ...आन्तरिक सफाई स्वास्थ्य और सौन्दर्यकी जड़ है। एण्डरूजकी एक खुराक आपकी अन्दरूनी सफाई कर देती है...चर्मको साफ करती बीमारियोंसे आपकी रक्षा करती है। ऐण्डरूजका प्रभाव धीरे-धीरे किन्तु पूर्ण रूपसे पड़ता है। नियमित या आवश्यकतानुसार सेवन कीजिए।

प्रथम...एण्डरूज मुंह और जीभको साफ करके तरोताजा बनाता है।

द्वितीय...एण्डरूज पेटको व्यवस्थित करके अम्लको साफ करता है।

तब...एण्डरूज यकृतको ठीक रखता और पित्त-धिक्यको रोकता है।

अन्ततः—एण्डरूज अन्दरूनी सफाई कर कब्जियत दूर भगाता और रक्तको परिष्कृत करता है।

ANDREWS
एण्डरूज लिवर साल्ट
टंडा — तरोताजा — बलवर्द्धक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजधानी की चिट्ठी

संयुक्तप्रांतीय असे...

पार्लामेण्टरी सेक्रेटरियों और ... सेक्रेटरियों में रस्साकशी—जमींदा... चार—किसानों पर अत्याचार—आनर... ग्रामोद्योग

(अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

मंत्रियों तथा पार्लामेण्टरी सेक्रेटरियों के नैतीताल से लौट आने के कारण इस सप्ताह लखनऊ का वातावरण सजग हो उठा है। अर्थ-मंत्री श्री सम्पूर्णानन्द ने इ... वर्ष का बजट तैयार कर लिया है और ... आगामी १६ जुलाई को प्रान्तीय असेम्बली के विचारार्थ पेश किया जायगा। असेम्बली के इसी अधिवेशन में विधान-निर्मात्री परिषद् के लिए युक्तप्रान्त के प्रतिनिधियों का भी निर्वाचन होगा। इसके लिए १... जुलाई को ही नामजदगी होगी, २... निर्वाचन होगा और २२ जुला... निर्वाचन फल सुनाया जायेगा। सीटों में से राष्ट्रीय मुसलमानों ... कम दो सीटें अवश्य मि... उनमें से एक श्री ... काज़मी होंगे। असेम्बली ... में स्वायत्त शासन तथा ग्राम-पंचायत बिल ...

लन करनेवाले जेम्स एरवम् गारफ़ील्ड का जीवन-चरित। मूल्य १) एक रुपया।

गोस्वामी तुलसीदास—गोस्वामी जी के प्रामाणिक जीवन तथा उनके ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय इस पुस्तक में ... गया है। इसकी रचना हिन्दी ... सि... विद्वान् बाबू श्यामसुन्दर-... । मूल्य १) एक रुपया।

...रत के धुरंधर कवि—आदि कवि वाल्मीकि से लेकर कालिदास, भवभूति आदि छब्बीस संस्कृत के धुरंधर कवियों तथा चंदबरदाई से लेकर राजा लक्ष्मणसिंह तथा अट्ठाईस हिन्दी-कवियों का संक्षिप्त परिचय। मूल्य ।।) आठ आने।

हिन्दी-कोविद-रत्नमाला—(... द्वितीय भाग) रायबहादुर ... सुन्दरदास, बी० ए० ने ... गण्यमान तथा प्रतिष्ठित ... हिन्दी के अभ्युदय का प्रयत्न ... वाले महानुभावों और विद्वानों ... परिचय दिये हैं। पुस्तक ... मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन ... लिमिटेड, प्रयाग।

AC 74

...के स्टाक अभी बेच दीजिए"

—मिस्टर हूवर

उत्तरी ग... गीतकालीन गेहूँ की फसल जो प्रमुख गेहूँ की फसल है अच्छे भविष्य की ओर निर्देश क... गेहूँ के समस्त तलपट को परिवर्तित कर देने की आशा दिलाती है। यदि मैं सटोरिया ... गेहूँ के स्टाक रखता तो मैं उन्हें इसी वक्त बेच देता, क्योंकि सितम्बर के बाद ...

—२६ अप्रैल को बंगलौर में मि० हूवर (भूतपूर्व सभापति, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका) का वक्तव्य

हमारी प्रतिज्ञा और अपील

इन लोगों से जो कमीवाले क्षेत्रों में रहते हैं हम परिपूर्ण सहयोग की प्रतिज्ञा करते हैं। देश के समस्त साधनों का संगठन होगया है और उनके पास शीघ्रतासे सहायता भेजी जा रही है। उनके अभावको शेष देश के साथ, बराबर विभाजित किया जावेगा। राशनिंग का इस प्रकार विस्तार किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति अपना उचित भाग प्राप्त करले। मूल्य नियंत्रण की कठोर व्यवस्था की जावेगी। शान्तिसे विश्वास रखिये। अपनी आवश्यकता से अधिक मत खरीदिये। मुनाफ़ाखोरों से कोई सम्बंध मत रखिये अतिरिक्त क्षेत्रों में रहनेवालों से हम अधिकसे अधिक मदद की अपील करते हैं। यदि आपसे अतिरिक्त अनाज सुपुर्द करने को कहा जावे तो आपके पास आपकी आवश्यकता के अनुसार काफी बच जावेगा। यदि आपके नगर में राशनिंग योजना लागू की गयी है तो याद रखिये, वह आपके अन्य भाइयों की सहायता के लिये ही है। तब भी आपके पास काफी होगा। छोटे तरीके से भी अनुचित संग्रह मत कीजिये। अधिकारियों के साथ सहयोग कीजिये।

खाद्य संकट को पराजित कीजिए

एक साथ कार्य कीजिये — एक साथ हिस्सा बंटाइये

व्यापारियों एवं उत्पादकों को संदेश

अपनी सामर्थ्यानुसार सारा अनाज निकाल दीजिये अनुचित संग्रह का प्रत्येक मन अनाज एक भाई की मृत्यु का कारण हो सकता है नियंत्रित मूल्य पर ही बेचिये—आपके और खरीदनेवाले के दोनों के लिये यही उचित है। दूसरों को संकट दे कर कमाया हुआ धन पाप है।

अपनी समस्त शक्ति और साधनों से सरकार और जनता मुनाफ़ाखोरों और चोर बाजारवालों का दमन करने के लिये कटिबद्ध है। चोर बाजार से बचिये यह अपराध है।

खाद्य-विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रचारित

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

मूल्य ७॥)
तिसंख्या ३)

१८ अगस्त, १९४६ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 18th August, 194

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

प्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री डान्डेकर
गोआ में आज का राष्ट्रीय आन्दोलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

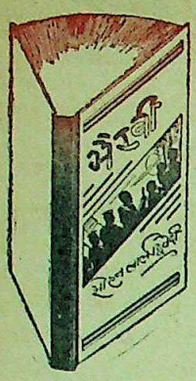

श्री सोहनलाल द्विवेदी लिखित

काव्य कृतियों के नवीन संस्करण

भैरवी

गांधी युग का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। महामना मालवीयजी के शब्दों में 'ऐसी कविता का प्रचार देश के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक होना चाहिए।' मूल्य २॥=)

वासवदत्ता

बाबू मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं 'इस रचना से मैं बहुत प्रभावित हुआ। स्वच्छन्दतापूर्वक जिस प्रौढ़ि की ओर द्विवेदीजी अग्रसर हो रहे हैं, जान पड़ता है, स्वयं वह भी उन्हें वरण करने के लिए आतुर हो रही है। 'वासवदत्ता' के प्रकाशन ने हिन्दी-साहित्य में एक नई क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। यह स्वयं पढ़कर निर्णय कीजिए। मूल्य १॥)

कुणाल

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की सम्मति में—अशोक, तिष्यरक्षिता और कुणाल खास तौर से—'कुणाल' के चरित्र-चित्रण में कवि ने कमाल किया है। शब्द-सौकुमार्य और भावोत्कर्ष के साथ ही नपे तुले शब्दों के प्रयोग ने काव्य को बहुत ऊँचा उठाया है। विशेष संस्करण मूल्य २॥)

पूजागीत

राष्ट्रीय चेतना को काव्य का सच्चा स्वरूप देने के लिए द्विवेदी जी को प्रचुर सम्मान तथा लोकप्रियता प्राप्त हुई है। ये पूजा-गीत कवि के गौरव के अनुरूप ही हैं। मूल्य २)

विषपान

सुप्रसिद्ध पौराणिक कथा का सरल तथा सबल खंड-काव्य है। भाषा का प्रवाह, प्रसन्न शैली तथा कथा के मार्मिक घटना-क्रम की वर्णना ने इसे बड़ा ही हृदयग्राही बना दिया है। मूल्य १)

झरना
शिशु-भारती
बाँसुरी

द्विवेदीजी पहले बालकों के कवि हैं पीछे राष्ट्र के। पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा माननीय सम्पूर्णानन्दजी ने इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा की है। 'अमृत बाज़ार पत्रिका' की सम्मति में—जिस प्रकार की शिक्षा बालकों को देने के लिए हमारे नेता वर्षों से प्रयत्न कर रहे हैं, इन पुस्तकों में उसी प्रकार का साहित्य है। प्रत्येक पुस्तक में कई रङ्गीन तथा अनेक सादे चित्र हैं। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १)

पूरे सेट का मूल्य १२) रु०

पता—मैनेजर (बुकडिपो) इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

खांसी और सर्दी में विश्वस्त और अचूक

सिरोलिन

'रुचि'

केवल ७ रु० में ६ घड़ियाँ

३ डमी रिस्ट वाच और ३ म्यूट रिस्ट वाच २ फैन्सी रूमाल और २५ सुन्दर उपहार

अमेरिकन फैन्सी न्यू गोल्ड के सुन्दर आभूषणों को सुप्रसिद्ध करने के लिए कम्पनी ने अपनी वर्षगाँठ की खुशी में घड़ियाँ और सुन्दर उपहार बिना मूल्य देने का निश्चय किया है। सुन्दर आभूषण नये डिजाईन ४ जोड़ी चूड़ियाँ डायमेंड कट, दो अँगूठियाँ बाम्बे फैशन, एक जोड़ी कान के बुन्दे नया माडल, एक गले का नैकलेस, २५ सुन्दर उपहार, ६ रूमाल, ६ घड़ियों सहित सुन्दर बक्स में बन्द रिआयती मूल्य केवल ७) रु० में व डाक-व्यय आदि १।-) अलग। हिन्दुस्तान की प्रसिद्ध पत्रिकाओं के अनेक गिनत लोगों ने इन आभूषणों की प्रशंसा की है।

गारंटी—माल पसन्द न आने पर मूल्य वापस। शीघ्रता कीजिए अवसर बार बार हाथ न आयेगा। अपना पता सुवाच्य अक्षरों में लिखें।

लारेंस ब्रादर्स, (D.D.A.) बाग रामानन्द, अमृतसर

LAWRENCE BROS. (D.D.A.) Bag Ramanand, Amritsar

Cool Refreshing Fragrant

सदैव अच्छा साथी

गर्मी के प्रति तुम्हारा सहायक

गर्मियों में थकावट करने के समय आप और गर्दन पर टाटा का कोलोन लगा लीजिये। तीक्ष्ण शीतलता तुम्हें देगी और तुम्हारी थकावट दूर करेगी। यह तुम्हें ताज़ा और सुरभित आज ही अपने प्रयोगार्थ मोल लीजिये।

टाटा का ओ डी कोलोन

दी टाटा आयल मिल्स कं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, १८ अगस्त, १९४६

वर्ष ८, संख्या ५१]

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

पंडित जवाहरलाल नेहरू को [illegible] वेवेल ने केन्द्रीय सरकार [illegible] के लिये निमंत्रित किया है।

[illegible] लीग ने सरकारी खिताबों [illegible] को वापस कर देने का प्रस्ताव [illegible] कर दिया किन्तु 'खानबहादुर' [illegible] तथा 'सर' जमात चुप्पी साध [illegible] हुआ है। लीग के खिताबधारी [illegible] पार्टी संस्था के हुक्म को दिल से [illegible] लिए उत्साहित नहीं जान पड़ते। [illegible] से एक लीगी खिताबधारी की [illegible] कर आ रही है। कुछ लीगी [illegible] एक खानबहादुर के पास [illegible] और बोले—खानबहादुरी छोड़ [illegible] हुआ नहीं कि बंबई में लीग की [illegible] बायकाट का प्रस्ताव पास कर [illegible]! खानबहादुर ने कहा—हाँ, [illegible] करना आसान है, लेकिन [illegible] खानबहादुरी छोड़ने को तैयार नहीं [illegible] कल से मेरा रोजाना काम पड़ता [illegible] का रुपया मिलता है, खिताब [illegible] के क्या लीग के नाम पर भीख [illegible]। लीगी स्वयंसेवक खानबहादुर [illegible] गये। खानबहादुर ने चिढ़ [illegible]—नहीं से चले जाओ नहीं तो [illegible] देशद्रोही कर दूँगा। सारी हवा [illegible] जायेगी। और ज्यादा बकबक [illegible] 'नेशनलिस्ट' बन जाऊँगा और [illegible] रह जायेगी। जाकर जिन्हा [illegible] लिख दो कि मैं 'नेशनलिस्ट' [illegible] हूँ।

* * *

[illegible] में खिताबधारियों की लीला ही [illegible] दिखाई दे रही है। सिंध के [illegible] सर हिदायतुल्ला ने गवर्नर [illegible] खिताब वापस कर दी फिर भी [illegible] वह प्रधान मन्त्री के पद पर [illegible]। अपने राम को मालूम है [illegible] के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री खान [illegible] अब्दुल्ला ने भी जब अपनी [illegible] लौटाई थी तब वह प्रधान [illegible] बरकरार कर दिये गये थे। गवर्नर [illegible] लीग पर बेहद प्रसन्न हैं [illegible]। लेकिन गवर्नर साहब कब तक [illegible] की रक्षा करते रहेंगे? [illegible] हिदायतुल्ला को लीगी मंत्रिमंडल [illegible] करना होनेवाली है। लीगी खिताब- [illegible] नहीं छोड़ना चाहते और [illegible] मिस्टर सैयद की जमात में [illegible]। कहना यह चाहिए कि

पृ० २

आधे 'नेशनलिस्ट' बनते जा रहे हैं। अनुमान है कि कांग्रेसवाले, सैयददल और नेशनलिस्ट तीनों मिलकर हिदायतुल्ला मंत्रिमंडल की धधिया बैठालने की फिक्र में लगे हैं।

* * *

ब्रिटिश सरकार भारतीय फौजों को वापस भेज रही है। फारस सरकार बहुत चींचपड़ कर रही है लेकिन ब्रिटेन इस मौके पर कुछ सुनने के लिये तैयार नहीं है। बात यह है कि तेल और पेट्रोल का मामला है। बिना तेल-पेट्रोल के ब्रिटिश-गाड़ी कैसे आगे बढ़ेगी, सचमुच बात पते की भी है। भारतीय नेता, फारस सरकार तथा संसार के अन्य नेता इस वक्त चाहे जितना भी सर धुनें मगर जो काम शुरू हो गया है, वह रुक नहीं सकता। यह कैसे हो सकता है कि फारस के तेल-पेट्रोल से सोवियट रूस तो लाभ उठाये और ब्रिटेन अपना-सा मुँह लेकर ताकता रहे? लड़ाई के दिनों में ब्रिटेन ने फारस को खूब गेहूँ खिलाया था, भारत का गेहूँ खाली हो गया और यहाँ महँगी ने धर दबाया। इसलिए अब समय आ गया है। फारस ने भारतीय गेहूँ खूब खाया है। उसी की कसर निकल रही है। लन्दन की कम्यूनिस्ट पार्टी चाहे जितनी उछल-कूद मचाये लेकिन ब्रिटेन अपनी फौजों को फारस के पास से हटाने को राजी नहीं है। लड़ाई के दिनों में भर पेट गेहूँ खिलाने की प्रतिक्रिया इसी तरह की होती है।

* * *

केन्द्रीय सरकार का अब पुनः निर्माण हो रहा है। वाइसराय लार्ड वेवेल ने कांग्रेस प्रसिडेंट को सरकार बनाने का निमन्त्रण दिया है। राष्ट्रीय सरकार तो अब बनेगी ही किन्तु मुसलिम लीग ने तो अपना मुँह फेर लिया है। अपने राम की राय में 'नेशनलिस्ट मुसलमान' तो हैं ही, वह केन्द्रीय सरकार के निर्माण में भाग लेंगे ही। मिस्टर जिन्ना के लिए यह नई मुसीबत खड़ी हो रही है क्योंकि लीगवाले 'नेशनलिस्ट' से वैसे ही भड़कते हैं जैसे भैंस रेलगाड़ी को देखकर भड़कती है। मिस्टर जिन्ना इस वक्त भड़क रहे हैं। वह कहते हैं कि जो कुछ भी होगा उसका हम मुकाबला करेंगे लेकिन लार्ड वेवेल तथा ब्रिटिश सरकार को मजा चखा देंगे। अगर केन्द्रीय सरकार में 'नेशनलिस्ट' शामिल हुए तो लीग के चौधरियाने में गड़बड़ी जरूर उत्पन्न हो जायेगी, इसमें तो कोई संदेह ही नहीं। इतने पर भी कांग्रेस ने यह तय किया है कि अगर लीग केन्द्रीय सरकार के निर्माण में भाग लेने के लिये राजी न हुई तो मुसलिम लीग के प्रतिनिधियों की कुर्सियाँ खाली रखी जायेंगी। अपने राम की राय में अगर उन कुर्सियों पर उन प्रतिनिधियों की एक एक तस्वीरें भी लगा दी जायें तो और भी अच्छा रहेगा।

* * *

पेरिस की पीस कान्फ्रेंस में संसार के छोटे छोटे राष्ट्रों को पीसने के लिए जिस तरह के काम हो रहे हैं, वह सचमुच 'चार महान राष्ट्रों' की भावी युद्ध-नीति को प्रगट करनेवाले हैं। लेकिन 'चार महानों' में फिलहाल अच्छी खासी हाथापायी हो रही है। रूसी वैदिशक मंत्री मोलोटोव अपना रंग अलग दिखा रहे हैं। अमरीका अपनी धुन में मस्त है। ब्रिटेन बगलें झाँकता हुआ आगे बढ़ रहा है। फ्रांस तरा की डांडी बना हुआ है। अपने राम को पीस कान्फ्रेंस की कार्यवाही पढ़ कर प्रसन्नता होती है क्योंकि इसी तरह से दुनियाँ में शांति स्थापित होती आई है। शांति के पुजारी साम्राज्यवादी राष्ट्रों को इसकी बड़ी फिक्र है। सही भी है कि बड़ों की फिक्र से ही छोटों का बाबा आदम के जमाने से उद्धार होता आया है।

* * *

इस समय मुसलिम लीग और अम्बेडकर दल 'सीधा मोर्चा' स्थापित कर रहा है। अम्बेडकर जमात सत्याग्रह पर उतारू है और मुसलिम लीग कांग्रेस तथा ब्रिटिश सरकार के खिलाफ जहाद की तैयारी में व्यस्त है। इसी दल में अब जमींदार और ताल्लुकेदार भी शामिल हो रहे हैं। अपने राम की समझ में यह अच्छा हो रहा है। सभी एक ही तरह के हैं, इसलिए इन सब के संयुक्त मोर्चे की स्थापना की आवश्यकता भी है। एक बात और। इस संयुक्त दल को खुल्लम खुल्ला मिस्टर चर्चिल को अपना नेता घोषित कर देना चाहिए। जिस तरह मिस्टर चर्चिल ने दूसरे महायुद्ध में विजय प्राप्त की थी, उसी तरह हिन्दुस्तान के इस नये जमात का यदि चर्चिल साहब नेतृत्व करेंगे तो सम्भव है कि ब्रिटिश मजदूर दल पर अन्त में विजय प्राप्त हो जाये। फिर तो पाकिस्तान वगैरह सब बन जायेगा। जमींदारी भी रह जायेगी और अछूतों का उद्धार भी ठिकाने से होने में कसर बाकी न रहेगी। देखना है इस सुझाव पर कहाँ तक असर होता है?

भारत का खिताबधारी और जमींदार दल—हः हः हः हः अगर विधान-सम्मेलन में मुस्लिम लीग शामिल नहीं हो रही है तो देखना है कि गाड़ी आगे कैसे चलती है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रनिर्माणक वर्ग पृष्ठ

वर्किंग कमेटी के प्रस्ताव

वर्धा में कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक समाप्त हो गई। कमेटी में भाग लेने के लिए नये निर्वाचित सदस्यों के अतिरिक्त पुरानी वर्किंग कमेटी के सदस्यों को भी निमंत्रित किया गया था। वर्किंग कमेटी की इस बैठक का महत्व इसलिए और अधिक बढ़ गया था कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के बम्बईवाले अधिवेशन के पश्चात् देश में कई ऐसी घटनाएँ घटी थीं जिनसे देश की स्वतन्त्रता का गहरा सम्बन्ध है। उन घटनाओं पर कांग्रेस को विचार करना अत्यावश्यक हो गया था। यद्यपि कांग्रेस को विधान-सम्मेलन में इतने स्थान प्राप्त हो चुके हैं कि यदि किसी राजनैतिक संस्था से किसी प्रकार का समझौता न भी करे तो भी वह बहुमत में है, परन्तु कांग्रेस स्वतन्त्रता के लिए लड़नेवाली देश की एकमात्र राष्ट्रीय संस्था है। इसीलिए समझौते के लिए वह देश की अन्य प्रमुख संस्थाओं से उत्सुकतापूर्वक आगे बढ़ती ही रहती है। फिर कांग्रेस क्यों न सभी दलों को एक सूत्र में बाँधने के लिए प्रयत्न करे? सिक्खों का विधान-सम्मेलन में भाग न लेने का निर्णय कांग्रेस के लिए खेदजनक हो ही रहा था कि उधर मुस्लिम लीग ने भी बम्बई की बैठक में एक नया प्रस्ताव कांग्रेस और ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध पास करके विधान-सम्मेलन में भाग न लेने का निर्णय कर डाला। यद्यपि कांग्रेस नेताओं का हृदय यह जानता है कि भावी विधान-सम्मेलन भी शिमला-सम्मेलन का एक प्रतिबिंब है फिर भी 'ब्रिटेन द्वारा दी जानेवाली स्वतन्त्रता से एकाएक इनकार कर दिया जाये', यह भी फिलहाल उचित नहीं। हम यह जानते हैं कि ब्रिटेन भारत को अभी स्वतंत्रता देना नहीं चाहता। यह उसके पिछले रवैयों से स्पष्ट है। इसलिए विधान-सम्मेलन से ही भारत को निश्चय रूप से स्वतंत्रता प्राप्त हो जायेगी यह दुविधामय तो है ही। फिर भी इस समय कांग्रेस ने जो किया वह ठीक ही है। इसीलिए सम्भवतः कांग्रेस ने विधान-सम्मेलन में भाग लेना उचित समझा। किन्तु तात्कालिक राजनीति शायद सिक्खों और मुस्लिम लीग के नेताओं के दिमाग में न आई हो, इसी से संभवतः वह सम्मेलन में भाग लेने से अलग हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में इन समस्याओं को कांग्रेस कैसे टाल सकती थी? अतः वर्किंग कमेटी की इस बैठक का होना आवश्यक ही था।

दिल्ली में जिस समय अस्थायी सरकार के निर्माण की वार्ता भंग हुई थी, मौलाना आजाद ने लार्ड वैवेल को लिखा था—"अब आप कब अस्थायी सरकार बनाने को सोच रहे हैं?" इस पर वायसराय ने विधान-सम्मेलन के चुनाव के बाद इसकी संभावना प्रकट की थी। इसका अस्पष्ट तात्पर्य यही था कि चुनाव में कांग्रेस कोटा के अन्दर अथवा मुस्लिम लीग के बाहर कुछ न कुछ मुसलमान विधान-सम्मेलन में आ जायँगे। उस समय कांग्रेस या राष्ट्रीय मुसलमानों को अस्थायी सरकार में स्थान देने में कोई हिचक न होगी। आज वही बात सामने आई है। अब तो मुस्लिम लीग को दूसरी ओर के मुसलमानों को भी स्वीकार करना पड़ेगा ही। चूँकि अस्थायी सरकार बनाने की वार्ता यहीं से भंग हुई थी और जिस मुसलमान जाति पर मिस्टर जिन्ना का एकाधिपत्य था (लार्डपैथिक लारेन्स ने लार्ड्स सभा में मिस्टर जिन्ना के सम्बन्ध में कहा था—भारत में अस्थायी सरकार न बनने का कारण मिस्टर जिन्ना का एकाधिपत्य था) आज चुनाव ने उस गर्व को भंग कर दिया है। चुनाव के दो-चार दिन पहले तक मिस्टर जिन्ना काफी प्रसन्न थे परन्तु ज्यों ही अमेरिकन पत्रकार श्री लुई फिशर ने पत्रों में 'मुस्लिम लीग की पहली हार' शीर्षक लेख प्रकाशित कराया त्यों ही लीग के नेताओं के कान खड़े हो गये। उन्होंने सोचा कि एक बार चूके तो चूके दूसरी बार न चूकना चाहिए। समाजवादी तो विधान-सम्मेलन को भी श्रेष्ठ नहीं समझ रहे हैं। देश के प्रत्येक प्रगतिवादी दल की विधान-सम्मेलन के प्रति सफल भावना नहीं है किन्तु राष्ट्र के नेता विधान-सम्मेलन की सफलता में आशा रखते हैं और प्रत्येक वर्ग को उसमें सम्मिलित होने की सलाह दे रहे हैं। यह क्यों? क्योंकि वह जानते हैं कि विधान-सम्मेलन बालू की भीत है और उसके दरवाजे तक पहुँचने में कोई हर्ज नहीं है। फिर क्यों न ब्रिटिश नीति का एक बार पुनः प्रत्यक्ष दर्शन किया जाये। सिक्खों के प्रतिनिधि पंथिक अकाली दल के नेता कर्नल निरंजनसिंह गिल ने संभवतः वर्किंग कमेटी की सलाह मान ली है। सिक्ख विधान-सम्मेलन में भाग लेंगे। रही लीग की समस्या। उस पर भी कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी ने एक प्रस्ताव पास करके देश की समस्त संस्थाओं से अपील की है कि कांग्रेस भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़नेवाली समस्त संस्थाओं से सहयोग के लिए तैयार है। इस प्रस्ताव से सिक्खों और मुस्लिम लीग दोनों की ओर इशारा है। अभी लीग में कांग्रेस के इस प्रस्ताव की प्रतिक्रिया नहीं हुई। वर्किङ्ग कमेटी का यह उदारपूर्ण प्रस्ताव लीग को देश की स्वतंत्रता की ओर लाने और उससे समझौता करने का एक नया कदम है। पंडित जवाहरलाल नेहरू और वायसराय का मिलन तथा वर्धा में फोन पर वायसराय और नेहरू जी की बातों से यह प्रकट हो रहा है कि वायसराय अस्थायी सरकार बनाने का काम प्रारम्भ करने जा रहे हैं। यह भी बड़ा आशाप्रद निर्णय होगा।

कांग्रेस वर्किंग कमेटी का गोआ-सम्बन्धी प्रस्ताव विदेशों के लिए एक स्वतंत्रत चुनौती है। गोआ भारत का अंग है। वह उससे अलग नहीं हो सकता। यह वर्किंग कमेटी के प्रस्ताव में [illegible] फ्रांसीसी सरकार ने भारत के [illegible] फ्रेंच उपनिवेशों को अपने देश [illegible] बनाने का अधिकार दे दिया है। [illegible] वे चाहें तो भारतवर्ष के संघ में [illegible] हो सकते हैं। कांग्रेस ने फ्रांस [illegible] का स्वागत किया है। इस [illegible] मुस्लिम लीग को भी एक [illegible] मिलेगा और अब अधिक [illegible] मुस्लिम लीग के नेता देश की [illegible] के लिए कुछ सोचें। कांग्रेस वर्किंग [illegible] अपनी उदारता में पीछे नहीं है।

* * *

कांग्रेस अस्थायी सरकार बनायेगी

राष्ट्रपति पंडित जवाहरलाल [illegible] वायसराय का निमन्त्रण मिला है। [illegible] उनको अस्थायी सरकार बनाने [illegible] गया है। नेहरू जी शीघ्र ही [illegible] जायँगे और वायसराय से अस्थायी [illegible] बनाने पर वार्ता करेंगे।

* * *

यू० पी० में जमींदारी प्रथा का [illegible]

यू० पी० की कांग्रेस सरकार [illegible] जमींदारी तोड़ने का प्रस्ताव अर्थात् [illegible] १४० वोट पक्ष और ३७ के विरुद्ध [illegible] हो गया। सैंतीसों विरोधी सदस्य [illegible] के समय बाहर चले आये।

* * *

संयुक्त राष्ट्रों का सम्मेलन

२१ राष्ट्रों ने संयुक्त राष्ट्र के [illegible] में भाग लिया है। सम्मेलन में [illegible] वैदेशिक मन्त्री मोशियो मोलोटोव [illegible] प्रस्ताव इँगलैण्ड के विपक्ष में होने [illegible] गया। प्रस्ताव में रूस ने बहुमत [illegible] की निन्दा की थी। परन्तु इँगलैण्ड [illegible] के पक्ष में था। इँगलैण्ड को १८ [illegible] और रूस को ६ वोट मिले।

* * *

इटली रूस से रुष्ट

रूसी वैदेशिक मन्त्री के प्रस्ताव [illegible] जिसमें इटली से युद्ध का हरजाना लेने [illegible] उसके उपनिवेशों को स्वतन्त्रता देने की [illegible] थी, इटली के राजनीतिज्ञ बहुत रुष्ट हैं।

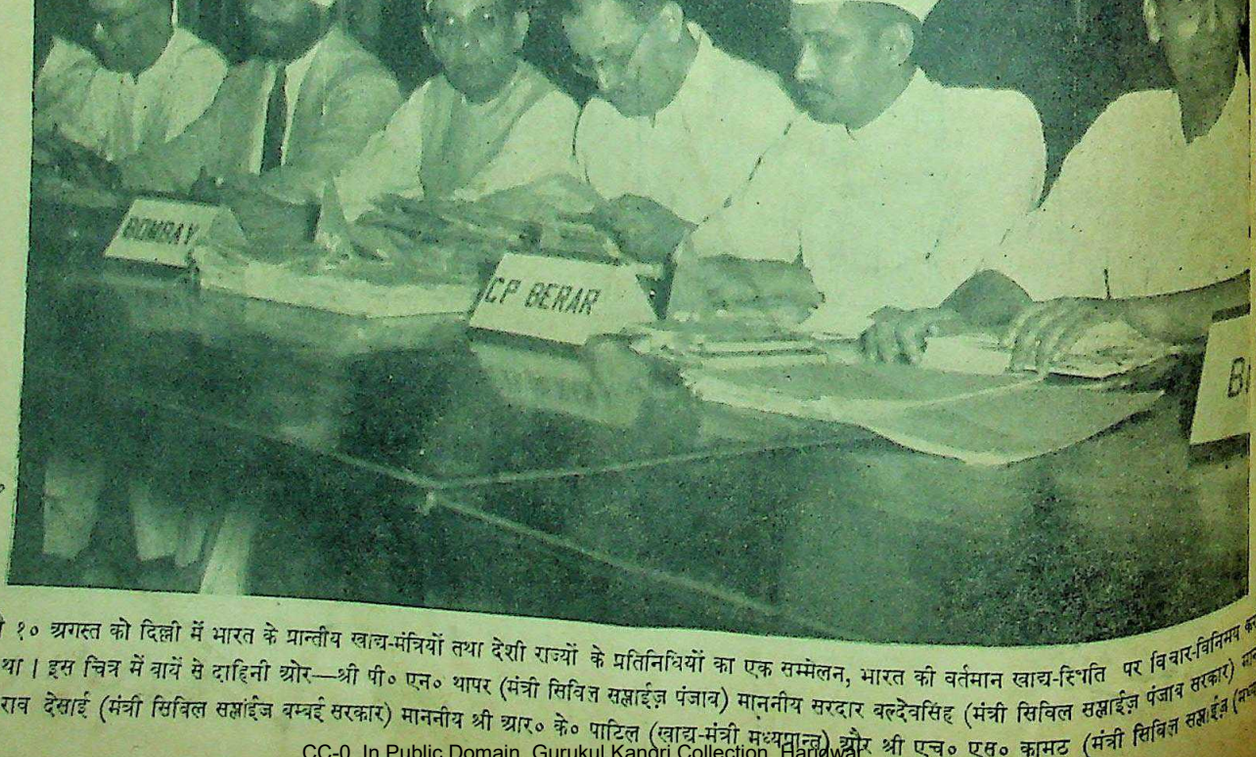

गत ६ और १० अगस्त को दिल्ली में भारत के प्रान्तीय खाद्य-मंत्रियों तथा देशी राज्यों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन, भारत की वर्तमान खाद्य-स्थिति पर विचार-विनिमय करने के लिए हुआ था। इस चित्र में बायें से दाहिनी ओर—श्री पी० एन० थापर (मंत्री सिविल सप्लाईज़ पंजाब) माननीय सरदार बलदेवसिंह (मंत्री सिविल सप्लाईज़ पंजाब सरकार) माननीय श्री दिनकर राव देसाई (मंत्री सिविल सप्लाईज बम्बई सरकार) माननीय श्री आर० के० पाटिल (खाद्य-मंत्री मध्यप्रान्त) और श्री एच० एस० कामट (मंत्री सिविल सप्लाईज़ [illegible])

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष रूप से 'देशदूत' के लिये

श्री विनायक सी० डान्डेकर

मध्यप्रांत के एक क्रांतिकारी और समाजवादी नेता

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

आज देश में समाजवादी विचार-धारा की व्यापकता बढ़ रही है। किसान-मजदूर और जनता के शासन की स्थापना की प्रतिक्रिया दिखाई दे रही है। मध्यप्रांत के समाजवादी नेता श्री डान्डेकर जी की राष्ट्रीय सेवा भी समाजवादी विचारधारा पर आश्रित है। इस लेख में श्री विद्यार्थी जी ने श्री डान्डेकर जी की राष्ट्रीय सेवाओं तथा त्याग का बड़ा ही रोचक और प्रभावपूर्ण वर्णन किया है जो जानकारी से पूर्ण और पठनीय है।

मध्यप्रान्त के सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता वि० सी० डान्डेकर।

आपने जिस क्षण से कालेज छोड़ा तब से आज तक बराबर देश की आजादी के लिए निरन्तर संघर्ष करते आ रहे हैं। आपने जीवन में कभी पीछे पग हटाना सीखा ही नहीं। हमेशा प्रगतिशील रहे। प्रगतिशील विचारों के साथ हमेशा आपका सम्बन्ध रहा है। बड़ी से बड़ी मुसीबतों को उठाकर भी आप सदैव आगे बढ़ते रहे। खतरों से कभी घबड़ाना नहीं सीखा। आप देश की आजादी पूँजीपतियों और मध्यम श्रेणी के बाबुओं के लिए नहीं चाहते। आजादी का सच्चा उत्तराधिकारी किसान-मजदूर है, उसकी आजादी के आप हामी हैं। किसानों-मजदूरों की सच्ची आजादी के लिए ही आप निरन्तर संघर्ष करते आ रहे हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा प्राप्त करने के लिए सन् १९२५ से सन् १९२८ तक आप काशी विद्यापीठ के स्नातक रह चुके हैं। आचार्य नरेन्द्रदेव जी आदि नेताओं के जीवन की अच्छी छाप आपके जीवन पर पड़ी है। आपके रग-रग में देश की आजादी के लिए तमन्ना है। सन् १९२० से लेकर सन् १९४६ तक के जीवन में आप संघर्षकारी खेल खेलते आ रहे हैं। आप-जैसे लड़ाकू मनोवृत्ति के नेता बहुत कम मिलेंगे। थकना और हताश होना तो आप जानते ही नहीं।

आपके कामों से सभी प्रगतिशील विचार के लोग प्रभावित रहते हैं। इसी लिए १९२८ में आपको प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी का मन्त्री चुना गया था। सन् १९२९ में आपके ऊपर राजद्रोह का मुकदमा चला और २॥ साल की सख्त कैद की सजा हुई। 'सी' क्लास में रखा गया। खराब खाना दिया गया। अपमान की कड़वी घूँट पीनी पड़ी। चक्की पीसनी पड़ी। रहट खींचकर कुएँ से पानी निकालना पड़ा। पैरों में बेड़ी छोड़ दी गई। जेल के अमन कानून की अशान्ति के डर से जेल-अधिकारियों ने आपको तनहाई कोठरी में बन्द रक्खा। जेल की जितनी मुसीबतें हैं सभी भोगनी पड़ीं। गांधी इरविन समझौते में जेल से मुक्त हुए। सन् ३२ का जमाना आ गया। फिर सत्याग्रह का जंग छिड़ा। दो साल के लिए आप पुनः जेल भेज दिये गये।

जेल से छूटने के बाद सन् १९३४ से सन् ३६ तक एक विशेष काम के लिए आपको जंगलों और पर्वतों की खाक छाननी पड़ी। आतंक के बीच से गुजरना पड़ा। सरकार की आँखों में धूल झोंककर देश में प्रगतिशील संस्थाओं की स्थापना में एड़ी-चोटी का पसीना बहा दिया। सोये भारत में नये खून का संचार किया। मुर्दे युवकों में जान फूँकने की एक नये सिरे से कोशिश जारी की

मध्यप्रान्त के कुछ प्रमुख समाजवादी कार्यकर्ता और पत्रकार। बैठे हुए बाईं ओर से—श्री श्यामनारायण काश्मीरी, श्री मगनलाल बागड़ी और श्री विनायक सी० डान्डेकर (संचालक लाल सेना) खड़े हुए बाईं ओर से—श्री भगवानप्रसाद त्रिपाठी (संवाददाता 'नवभारत') श्री लक्ष्मण यादव (प्रताप व्यायामशाला मंत्री, वर्धा) श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी (इस लेख के लेखक) श्री हरीसिंह गौर (सैनिक लाल सेना)।

गई। जब देश में शिथिलता और नैराश्य के बादल छा गये थे, तब आपके दल ने फिर देश में चैतन्यता और आजादी का बिगुल बजाया और युवकों को संगठित होकर काम करने का आह्वान किया।

सन् १९२५ से ही आपने समाजवादी साहित्य का अध्ययन शुरू किया। लेनिन के लेखों का आपने विशेष तौर से अध्ययन किया और उस वीर अमर क्रान्तिकारी के जीवन का प्रभावशाली असर आपके जीवन पर पड़ा है। आप सबसे बड़ा क्रान्तिकारी नेता और देश का पथ-प्रदर्शक लेनिन को ही मानते हैं। आपका अटल विश्वास है कि लेनिन के बताये मार्ग से ही पददलित और शोषित जनता-जनार्दन की आजादी स्थापित हो सकती है। सन् १९३२ और सन् ३४ के बीच फैजाबाद जेल में रहते हुए आपने मार्क्सवाद का बहुत गहरा अध्ययन किया। "दास कैपिरल" को बड़े ध्यान से पढ़ा है। आपने अब अच्छी तरह महसूस कर लिया है कि दुनिया के लिए मार्क्स से बढ़कर आजादी का मार्ग और व्यवस्था बतानेवाला फिलहाल दुनिया में और कोई नेता नहीं है। मार्क्स की 'फिलासफी' से ही सारी दुनिया में शान्ति स्थापित हो सकती है और ऊँच नीच का भेद मिट सकता है। मार्क्सवाद ही एक ऐसा सिद्धान्त है जिस पर सारे अमानुष युद्ध बन्द किये जा सकते हैं। सुधारवादी समझौतों से आप शोषित प्रजा का सच्चा उद्धार नहीं देखते। आप मानते हैं कि सच्ची आजादी के लिए गरीब तबके के लोगों को ही संघर्ष करना पड़ेगा। उन्हीं में से उनके सच्चे नेता बनेंगे। तभी किसानों मजदूरों का शोषण बन्द होगा।

डान्डेकर जी का कहना है कि भारत की राजनीति एक खास प्रकार के बाबुओं के हाथ में है। वह थोड़ा-सा त्याग करके गरीबों को भुलावे में छोड़कर उसका लाभ अपने लिए उठाते हैं। आज तक के—काग्रेस आन्दोलनों से एक खास वर्ग को ही लाभ मिलता आ रहा है। अब वक्त आ गया है जब किसानों और मजदूरों को अपना अलग मजबूत संगठन बनाना चाहिए। अपने भाग्य का फैसला उन्हें स्वयं करना चाहिए। अपने अधिकार के लिए बलिदान भी चढ़ाना पड़े तो रूस की भाँति अपना सब कुछ कुर्बान कर देने में कभी हिचक न होनी चाहिए। छोटी-छोटी सुधार की बातों में आकर अपने बड़े मकसद को भुलाया न जाये। क्या कन्याकुमारी से लेकर दर्रा खैबर तक किसानों-मजदूरों का अपना विशाल संगठन बिछा देना है। अगर किसान-मजदूरों का मजबूत संगठन आज नहीं होगा तो उसका लाभ लोभी, लालची और खुदगर्ज स्वार्थी नेता उठाते रहेंगे। अब किसान-मजदूर राज्य कायम करना है। जो लोग यह कहते हैं कि स्वराज्य करीब आ गया है मुमकिन है उनके लिए आया हो—वे लोग उस चीज को प्राप्त कर रहे हों लेकिन उससे किसानों-मजदूरों के जीवन में अभी कुछ फर्क तो आया

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमींदार और जमींदारी प्रथा

किसानों का यह भीषण अभिशाप आखिर कब दूर होगा ?

लेखक, श्री भोलानाथ 'भ्रमर'

आज जिन प्रान्तों में कांग्रेस सरकारें स्थापित हैं, वहाँ जमींदारी प्रथा के उन्मूलन के लिए प्रान्तीय असेम्बलियों में प्रस्ताव आये हैं। ऐसे प्रान्तों में संयुक्तप्रान्त सबसे आगे है। अन्य प्रान्त अभी जमींदारी प्रथा मिटाने के लिए विचार-विनिमय कर रहे हैं, किन्तु संयुक्त-प्रान्तीय सरकार ने असेम्बली में बहुमत से यह स्वीकार कर लिया कि जमींदारी प्रथा नष्ट होनी चाहिए। इस लेख में लेखक ने जमींदारी प्रथा तथा किसानों की दयनीय स्थिति का चित्र उपस्थित करते हुए यह बतलाया है कि सिद्धान्त और आदर्श की दृष्टि से जमींदारी प्रथा के उन्मूलन का जो प्रस्ताव पास हुआ है वह उचित ही है किन्तु जब उसका कोई क्रियात्मक स्वरूप दिखाई पड़े तभी वास्तविक सफलता समझनी चाहिए।

संयुक्तप्रांत के माल मंत्री माननीय श्री रफीअहमद किदवई ने असेंबली में जमींदारी प्रथा के अंत का प्रस्ताव रखा था।

आजकल के समय को संक्रान्ति काल की संज्ञा से अभिहित किया जा सकता है। आज विश्व के कोने कोने से विप्लव और विद्रोह की आवाज आ रही है; आज हमारे जीवन का प्रत्येक अंग किसी न किसी नवीन रूप में परिवर्तित होने के लिए आकुल-सा है। राजनीतिक चेतना और वर्ग संघर्ष के इस युग में किसी भी शोषक वर्ग के लिए यह बात असम्भव-सी हो गई है कि वह किसी वर्ग विशेष पर जोंक की तरह चिपट कर उसका रक्त-शोषण अधिक समय तक कर सके। भारतवर्ष के वर्तमान जीवन में जमींदारवर्ग इसका प्रतीक है।

भारतवर्ष में मध्ययुग में जागीरदारी और तालुकेदारी की प्रथा प्रचलित थी। हमें इस प्रथा में वर्तमान काल की जमींदारी प्रथा के आदिमस्वरूप की झाँकी मिलती है। परन्तु अपने वास्तविक रूप में जमींदारी प्रथा का जन्म ब्रिटिश शासन-काल में लार्ड कार्नवालिस के समय में हुआ था। उसके 'इस्तमरारी बन्दोबस्त' ने सरकार और प्रजा के बीच में जमींदारों का एक वर्ग खड़ा कर दिया। बंगाल, बिहार और यू० पी० के कुछ जिलों में तो, जहाँ उसने 'इस्तमरारी बन्दोबस्त' कर दिया था, स्थायी रूप से जमींदार हो ही गये, अन्य स्थानों में भी यह वर्ग अस्तित्व में ही नहीं आया बल्कि इसने देश के आर्थिक जीवन में अपने लिए एक प्रभावपूर्ण स्थान बना लिया है। स्कीमें बनाई जाती हैं जनता के लाभ के लिए, परन्तु कुछ ही काल के पश्चात् उनमें त्रुटियों का समावेश प्रारम्भ हो जाता है और इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है जमींदारी प्रथा।

इस प्रथा की नींव डालते समय लार्ड कार्नवालिस ने यह सोचा था कि प्रत्यक्ष रूप में जनता के सम्पर्क में न आ सकने के कारण सरकार जनता की जिन असुविधाओं अथवा कृषि की उन्नति के जिन पहलुओं पर उचित ध्यान देने में असमर्थ है उन्हें यह वर्ग भली भाँति सुचारुरूप से देख-सुन सकेगा। इस प्रकार उसकी धारणा थी कि यह नया वर्ग आगे चलकर देश और देश की जनता के लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। उसने सोचा था कि इसके कारण कृषि की उन्नति होगी, किसान सुखी रहेंगे और देश समृद्धिशाली होगा। परन्तु 'अपने मन कछु और है कर्त्ता के कछु और' धारणा असत्य सिद्ध हुई, वास्तविकता कल्पना के बिलकुल विपरीत निकली, और आज यह एक कठोर सत्य और सर्वविदित बात हो गई है कि कृषि और कृषकों का जितना अहित जमींदारों ने किया है उतना और किसी ने नहीं। कदाचित् समय-असमय पर पड़नेवाली भुखमरी, असामयिक वर्षा, बाढ़ आने एवं सूखा पड़ने से भी नहीं। यह ठीक है कि (जमींदारों की अपनी) कुछ जमीन ऐसी अवश्य है जिसकी उन्नति के लिए उन्होंने कुछ प्रयत्न किया है परन्तु आजकल के इस वैज्ञानिक युग में भी देहातों में वही उक्ति चलती है कि 'बाबा कहि गये हैं कि सरसोंइयै लाद्यौ' और इसका सबसे अधिक उत्तरदायित्व जमींदारों पर है; ठीक है कि (मारे जाने पर) मरते हुए किसानों के मुख में दो बूँद पानी डालने का कार्य इन्हीं जमींदारों की कृपा ने किया है परन्तु आज कृषि और कृषक-वर्ग के लिए सबसे अभिशाप जमींदार-वर्ग है (पीस दिये जाने के कारण चाहे कुछ कृषक इसे भली भाँति न समझ सकें) और जमींदारों के कारनामें इसकी गवाही देते हैं। जिस लोलुपता और निर्दयता के साथ स्वार्थान्ध विलास-रत जमींदारों ने कृषकों की हड्डियों को पीसा है, वह एक करुण कथा है। संयुक्तप्रांतीय एसेम्बली में कांग्रेसी हरिजन श्री गंगाप्रसाद ने हरिजन महिलाओं के प्रति किये गये जमींदारों के अत्याचारों और अमानुषिक कार्यों का उल्लेख किया है। अपनी जमींदारी में जमींदारों अथवा उनके कर्मचारियों के लिए ये बहुत ही साधारण हैं। श्री गंगा-प्रसाद जी का यह कथन कि 'तुमने सदियों से हमारा शोषण किया है; आज जनता की सरकार के पास शक्ति है और जमींदारों और नवाबों को उनके पिछले पापों का मूल्य चुकाना पड़ेगा' सर्वथा उपयुक्त है। जमींदारों-द्वारा किये गये अत्याचारों का विवरण एक बहुत बड़ी पुस्तक का आकार धारण कर सकता है। आज उसका संकेतात्मक उल्लेख ही पर्याप्त है।

परन्तु अब जमाना बदल रहा है। दासता और शोषण का बन्धन अब अधिक दिनों तक बँधा नहीं रह सकता। जन-क्रान्ति की भीषण-ज्वाला में कदाचित् इन बन्धनों की अवशिष्ट राख तक नहीं दिखाई पड़ेगी। यह मुगल काल नहीं है, यह ब्रिटिश राज्य का प्रारम्भिक अथवा मध्यकाल नहीं है; यह है जन-जागरण का युग, राजनीतिक चेतना का युग, किसानों और मजदूरों की प्रलय-हुंकारों का युग। है कोई अचल हिम-खंड, है कोई प्रस्तर शिला जो इसके आगे ठहर सके ? वह युग गया, वे चिड़ियाँ उड़ गईं; आज राजनीतिक आन्दोलनों, शहीदों के खून की बूँदों और नेताओं के अथक प्रयत्नों से हमारे देश के भी किसानों और मजदूरों में चेतना आ रही है। एक समय था जब वह सूट-पैण्ट पहन कर देहात में गया हुआ कोई भी मनुष्य 'बड़ा सरकार' ही समझा जाता था और वह देहाती भाइयों पर खूब रोब गाँठ सकता था; आज देहाती भाई उन जीवों से घृणा करते हैं जिनके संसर्ग से अँगरेजियत की दुर्गन्धि आये, खद्दरधारी ही आज उनका हित-मित्र है। अतएव जन-विरोधी शक्तियों को समय रहते चेत जाना चाहिए। उन्हें जन-हित की ओर मुड़ना ही पड़ेगा। चाहे

संयुक्तप्रांत के प्रधान मंत्री माननीय गोविन्द वल्लभ पंत जमींदारी प्रथा के विरोधी हैं।

वे अपनी कायापलट करके मुहँ चाहे कि स्थिति को 'सर्व' वै पूर्ण ॐ स्वाहा' कर प्रश्न यह है कि जमींदारी का हो किस प्रकार। विचारणीय प्रश्न कार्य करने का प्रकार है, कार्य और उ अभीष्ट परिणाम तो हमारे समुख है प्रत्येक कार्य के और विशेष रूप से कार्यों के करने के दो प्रकार होते हैं एक तो शान्तिपूर्ण वैधानिक उपा और दूसरे महान् क्रान्ति के द्वारा। में यह एक प्रश्न है और गम्भीर कि क्या जमींदारी प्रथा का अन्त पूर्ण वैधानिक उपायों-द्वारा हो सक क्या इतने दिनों तक निष्कंटक भोगे जानेवाले मनोहर सुखों और अधिकारों को जमींदार सरलता से देंगे ? यह प्रश्न ठीक उसी प्रकार कि क्या सरलतापूर्वक अँगरेज भारत छोड़ देंगे ? अनुभव कहता है कि और कदापि नहीं। संसार का कोई प्राणी अपना एक पैसा भी कहने-सुनने सरलतापूर्वक छोड़ देने को तैयार नहीं, यहाँ तो बहुत बड़ा प्रश्न है!

यदि असेम्बली में जमींदारी के करने का कानून पास भी हो गया उससे फिलहाल तो किसानों का कोई न होगा। क्योंकि जमींदारों के 'बराबर मुआवजे की रकम' देकर किये जायँगे; और यह रकम देगा सरकार ? किसानों से रकम लेकर ही फिर वह चाहे जिस रूप में हो! प्रकार इससे किसानों पर एक भार बढ़ जायगा। परन्तु इतना ही छिपे तौर पर गाँवों में जमींदारों दारी में भोले-भाले दीन किसानों और कितने प्रकार के अत्याचार कदाचित् हम उसकी कल्पना भी

शेष पृष्ठ १६ पर

कहाँ मैं ढूढूँ ?

लेखक, श्री श्रीपालसिंह 'क्षेम'

अपनी ज्वाला का अन्त कहाँ मैं ढूढूँ ?
जग में दुख के सोते, सुख के निर्झर हैं,
जग में स्मिति की मधुऋतु, आँसू-पतझर हैं।
हासों-आहों की इस झिलमिल नगरी में, अपनी लघु कुटिया हन्त, कहाँ मैं ढूढूँ ?
इस ओर वही आती जीवन की धारा,
उस ओर टूटकर गिरता मृत्यु-कगारा।
इस सृजन-ध्वंस की दोरङ्गी दुनियाँ में, आशा का छोर अनन्त कहाँ मैं ढूढूँ ?
इन आँखों में दो दीप जला करते हैं,
इन अधरों पर तूफ़ान पला करते हैं।
इस सुधा-गरल की स्वाद-भरी संसृत में, सपनों का सरस वसन्त कहाँ मैं ढूढूँ ?
हर रेखा में मुझको सुषमा मिल जाती,
प्रति किरण जला जाती प्राणों की बाती।
पग पग पर आकर्षण की इस बस्ती में, प्रेमी की राह अनन्त कहाँ मैं ढूढूँ ?
दो प्राण मिले जल रही वहीं पर होली,
दो प्राण मिले बरसती वहीं पर रोली।
होली-रोली से रचे गए इस जग में, चिर सुख का शून्य दिगन्त कहाँ मैं ढूढूँ ?

मुफ्त
फोटो हैण्ड केमरा
हम अपने फर्म की वर्षगाँठ के अवसर पर फोटो लेनेवाला हाथ का केमरा मुफ्त वितरित कर रहे हैं! आप इससे हर किस्म के फोटो ले सकते हैं!
आज ही एक पोस्टकार्ड लिखिए!
लारेंस ब्रदर्स (D.D.)
बाग़ रामानन्द, अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोआ में स्वाधीनता-संग्राम

प्रजातंत्रीय आन्दोलन हमारे संघर्ष का एक अंग है

लेखक, श्री चन्द्रकुमार बी० ए०

दक्षिणी भारत में गोआ एक पुर्तगाली उपनिवेश है। इस समय वहाँ की जनता स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिये आन्दोलन कर रही है किन्तु पुर्तगाली शासन-नीति राष्ट्रीय आन्दोलन को कुचल देना चाहती है। इस लेख में योग्य लेखक ने गोआ की वर्तमान राजनैतिक स्थिति और राष्ट्रीय आन्दोलन पर प्रकाश डालते हुए यह बतलाया है कि गोआ की जनता को स्वतंत्रता प्राप्त करने का पूरा अधिकार है और वहाँ का आन्दोलन भारतीय संघर्ष का एक अंग है।

जघन्य अत्याचारों का वर्णन किया है। हिन्दुओं को धार्मिक उत्सव मनाने पर कठोर प्रतिबन्ध था और धार्मिक भावनाओं को दबाया जाता था। रोमन कैथलिक धर्म के प्रचार में पुर्तगाली शासक इतने मदान्ध रहते थे कि धर्म-परिवर्तन से अस्वीकार करनेवाले प्रत्येक व्यक्ति की खाल खींच ली जाती थी। पुर्तगाली साम्राज्यवादियों ने समस्त

गोआ में भाषण देते हुए प्रसिद्ध समाजवादी डा० लोहिया

आर्थिक साधनों पर अपना ही कब्जा रखा है। इसके अतिरिक्त गोआ की जनता को कर-भार भी अधिक सहन करना पड़ता है। इससे जनता की आर्थिक स्थिति बड़ी शोचनीय है। शिक्षा-दीक्षा की स्थिति बड़ी दयनीय है। ८५ प्रतिशत लोग पढ़ना-लिखना नहीं जानते। गोआ का शासन एक गवर्नर-जनरल के द्वारा होता है जिसे परामर्श देने के लिए एक परिषद् है, जिसके अधिकांश सदस्य सरकारी हैं। नये शासन-नियम के अनुसार कम्युनिस्ट विचार का कोई भी व्यक्ति सरकारी कर्मचारी नहीं हो सकता।

भारत में अन्य योरोपीय उपनिवेश

भारत तो १५० साल से अपना स्वाधीनता-संग्राम चालू किये हुए है और पिछले २५ सालों के विकट संघर्षों के बाद भारत का बच्चा-बच्चा स्वतंत्रता हस्तगत करने को कटिबद्ध हो गया है। लेकिन ब्रिटिश साम्राज्यशाही के विरुद्ध स्वतंत्रता-युद्ध में लगे होने के कारण फ्रेंच, पुर्तगाली उपनिवेशों के रूप में इन छोटे साम्राज्यवादियों के अत्याचार गढ़ों की ओर राष्ट्रीय नेताओं का ध्यान कम गया था। लेकिन इन छोटे उपनिवेशों की स्वतंत्रतापूजक जनता अपने भारतीय बन्धुओं से संग्राम की प्रेरणा प्राप्त कर अदम्य उत्साह और साहस से इन टुटपुँजिये साम्राज्यवादियों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए संगठित होती रही है।

फ्रेंच-भारत में यह राजनीतिक जाग्रति हुई। और शीघ्र ही जनवादी प्रगतिशील शक्तियाँ प्रबलता प्राप्त कर गईं। वहाँ की 'राष्ट्रीय जनवादी मोर्चा' नामक संस्था ने, जिसमें सोशलिस्ट, कम्युनिस्ट, श्रमिक और राष्ट्रवादी सभी प्रगतिशील दल सम्मिलित हैं, पिछले दस सालों से संगठित आन्दोलन जारी करके आज नागरिक जीवन में स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है। शिक्षा निःशुल्क कर दी गई है। सांस्कृतिक प्रवृत्तियों के उन्नयन की सम्पूर्ण सुविधाएँ हैं। साथ ही औपनिवेशिक शासन में भी उन्हें बहुत कुछ अधिकार मिल गया है। फ्रेंच भारतीयों की सफलता का बहुत कुछ श्रेय योरोप की बदली हुई राजनीतिक परिस्थिति और फ्रांस में नये जनवादी शासन के आगमन पर है। लेकिन पुर्तगाली उपनिवेश 'गोआ' की स्थिति दूसरी है। युद्ध-काल के पहले भी पुर्तगाल कोई जनवादी राष्ट्रों में नहीं था। युद्ध-काल में प्रकट रूप से तो वह तटस्थ रहा लेकिन तीन जर्मन जहाज बहुत दिनों तक गोआ के समुद्रतट पर छिपे रहे और बाद में युद्ध की परिस्थिति बदलने पर खतरे के भय से उन्हें नष्ट कर दिया गया।

राष्ट्रीयता की लहर

गोआ में राष्ट्रीय जागरण के प्रतीक-रूप, १८ वर्ष पहले श्री कुनहा द्वारा कांग्रेस-समिति स्थापित की गई थी और अनेक वर्षों तक श्री कुनहा राष्ट्रीय कांग्रेस महासमिति के सदस्य भी रहे थे। उस समय कांग्रेस द्वारा छेड़ा गया साम्राज्य-विरोधी आन्दोलन अब तक प्रबल शक्ति प्राप्त कर गया है। गोआ के राष्ट्रीय जागरण में वहाँ के मजदूर-आन्दोलनों ने भी आगे बढ़कर भाग लिया। नींद से जागे हुए गोआवासियों की शान्तिमय रीति से की जानेवाली सभाओं और नागरिक अधिकार प्राप्त करने के लिए किये जानेवाले जन-आन्दोलनों को भी पुर्तगाली नौकरशाही क्रूरता और फासिस्ट दमन के तरीकों से कुचलने की कोशिश कर रही हैं। समाजवादी नेता श्री राममनोहर लोहिया ने सरकारी प्रतिबन्ध तोड़ और गोआ में भाषण देकर गोआवासियों का मनोबल और दृढ़ कर दिया। उनमें जोश और क्रियाशीलता की प्रचण्ड लहरें दौड़ गईं। हालत यहाँ तक पहुँच गई कि पुर्तगाली नौकरशाहों को राष्ट्रीयता के इस उफान को दबाने के लिए 'मार्शलला' और सेना का सहारा लेना पड़ रहा है। पुर्तगाली शासक अपने भग्नप्राय, जीर्ण साम्राज्य की रक्षा के लिए बहाना खोजकर कहते हैं—"पुर्तगाली भारत का उपनिवेश नहीं है, यह एक पुर्तगाल राज्य है जिसका निर्माण पुर्तगाल की संस्कृति और धर्म से हुआ है, हम गोआ नहीं छोड़ेंगे।" सहज बुद्धिवाले व्यक्ति को भी इस तर्क की मूर्खता पर हँसी आयेगी।

महात्मा गांधी ने गोआ के सत्याग्रह पर वक्तव्य देते हुए कहा—"गोआ की पुर्तगाली सरकार समय की गति पहचाने और वहाँ की जनता की माँगों पर ध्यान दे।" राष्ट्रपति पंडित नेहरू ने गोआ के स्वतंत्रता संग्राम के सम्बन्ध में वक्तव्य दिया, "गोआ भारत से अलग नहीं है, वहाँ का स्वातंत्र्य-संग्राम हमारे संघर्ष का अंग है।

योरोप में फासिस्ट तानाशाही जमीन पर लोट रही है। नई जनवादी शक्तियों की हुंकार कुचक्री साम्राज्यशाहों के दिल दहला रही है। साम्राज्यवादी पुर्तगाल पहले योरोप में तो अपने घर की फिक्र कर ले! राष्ट्रीय भारत गोआ की फिक्र कर लेगा। प्रजातंत्रीय भावनाओं के बढ़ाव से पुर्तगाली साम्राज्यशाहों की स्थिति खतरे में है। वह दिन दूर नहीं जब योरोप से फासिज्म के अवशेष, स्पेन के फ्रैंको शासन, पुर्तगाल, यूनान, हालैंड और ब्रिटेन के प्रतिक्रियावादी शासनों को जमीदोज होना पड़ेगा। गोआ का स्वतंत्रता-संग्राम भी उस महान् जनवादी संघर्ष का एक मोर्चा है।

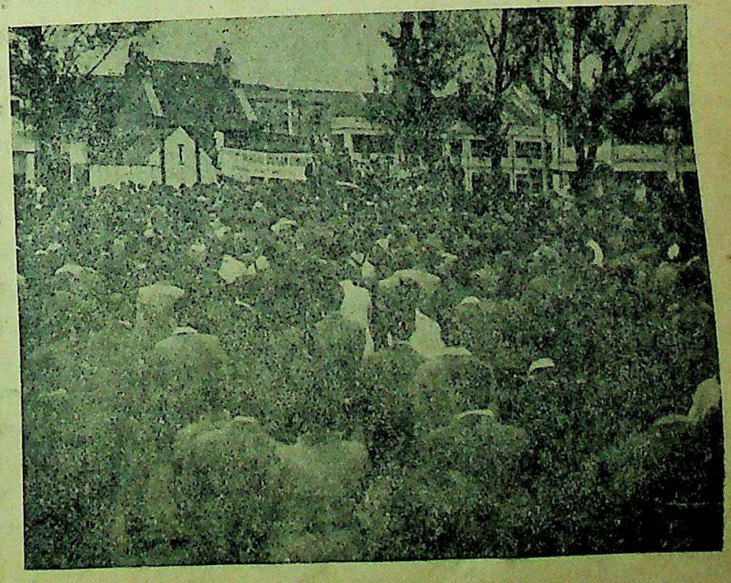

डरबन (दक्षिणी अफ्रीका) में सत्याग्रही भारतीयों की भीड़ का एक दृश्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गत महायुद्ध से क्या स्त्रियाँ प्रगतिवादी बनी हैं?

राजनैतिक दृष्टि से उनका स्तर पहले से ऊँचा हुआ है

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

युद्ध में भारतीय स्त्रियों ने क्या सहयोग दिया? इस पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है। परन्तु अभी तक यह नहीं समझ में आता कि आखिर इस युद्ध का भारतीय स्त्रियों पर क्या प्रभाव पड़ा? भारतीय नारियों को युद्ध में भाग लेने से क्या लाभ हुआ? तमाम प्रचारकों ने समाचार-पत्र, पत्रिकाओं और रेडियो तथा सिनेमा द्वारा प्रचार करके स्त्रियों को युद्ध में लगाया और कहा—'महिलाओं ने युद्ध जीतने में मित्रराष्ट्रों को काफी सहायता पहुँचाई।" परन्तु युद्ध ने भारतीय महिलाओं के उत्थान में क्या सहयोग दिया है? इस पर विचार करना है। उन्होंने भले ही उत्तम और लड़ाकू सैनिकों की सेवायें की हों; परन्तु जब तक वह अपने गृह-कार्य में दक्ष नहीं हो जातीं तब तक भारतीय धर्म-शास्त्र के अनुसार वे उत्तम सेविका नहीं बन सकतीं। परन्तु युद्ध ने कुछ ऐसी स्थिति पैदा कर दी है कि जिससे उनको गार्हस्थ्य जीवन में पारंगत होने के लिए प्रचुर सामग्री मिल गई है। उनके जीवन का स्तर गिरने के बजाय बढ़ा ही है।

युद्ध-काल में पुरुषों को युद्ध-स्थल में काम करना पड़ता था, सरकारी विभागों में, युद्ध-सम्बन्धी सामान पैदा करने के लिए फैक्टरियों, कारखानों में भी उनको रातों-दिन काम करना पड़ता था, अपनी ड्यूटी के अतिरिक्त ओवरटाइम (विशेष समय) भी लिया जाता था। इन कठिन दिनों में पुरुषों को अपने जीवन के अन्य साधनों के जुटाने की चिन्ता तक की फुरसत न थी। इस पर परिस्थिति यह थी—कि राशनिंग का युग। सारी चीजें तौलकर मिलती ही थीं। इससे स्त्रियों के ऊपर यह जिम्मेदारी आ पड़ी। वह घर के पर्दे की चहारदीवारी से बाहर निकलीं और राशनिंग की दूकानों पर चीनी, तेल स्वयं खरीदने लगीं। कपड़े की दूकानों पर ६ गज़ १२ गज़ के लिए परेशान होती रहीं। परन्तु इस प्रकार उन्हें बाह्य-जगत् का अनुभव प्राप्त हुआ। वह अपने घर का हिसाब-किताब रखने लगीं। परदे से कोसों दूर हो गईं। युद्ध-स्थल में घायलों की सेवा-शुश्रूषा के लिए आज से पाँच साल पहिले भारतवर्ष उसी प्रकार था जैसे क्रीमियन युद्ध के पूर्व इँगलैंड। भारतीय स्त्रियों ने अपने बूढ़े बच्चों और भाइयों की सेवाओं के लिए रण-स्थल में प्रवेश किया। वहाँ उन्होंने नर्स (सेविका) का काम किया। रण-स्थल में हज़ारों बच्चों के प्राण बचाये।

युद्ध में सम्मिलित स्त्रियाँ अपने नृत्य-गान कला द्वारा सैनिकों को नव जीवन प्रदान करती रहीं। बहुत सी महिलाओं ने वायुसेना और पैदल सेना में भी काम किया। इस प्रकार इस युद्ध में भारतीय स्त्रियों में एक नव-जागरण अथवा नवीन क्रान्ति पैदा कर दिया है। जिस कार्य को राजा-राममोहन राय के समय से लेकर सरोजनी नायडू के भाषणों और सुधारकों ने नहीं किया था वही कार्य षष्ठ-वर्षीय युद्ध ने कर दिखलाया। देश के प्रत्येक वर्ग में एक नवीन स्फूर्ति पैदा हो गई। महिलाओं ने जीवन की प्रत्येक आवश्यकताओं की ओर कदम बढ़ा दिया है।

गत युद्ध के पूर्व भारतीय नारियों में बहुत कम राजनैतिक विकास था। परन्तु सुभाष बोस की 'झाँसी की रानी' ब्रिग्रेड तथा संसार को अन्य महिला-सैनिक दलों ने भारतीय नारियों में सैनिक शिक्षा का उत्साह पैदा किया। बहुत-सी पढ़ी लिखी स्त्रियों ने इसको ऐसा अपनाया कि आज देश में नारियों के कितने ही सैनिक-शिक्षण-शिविर खुल गये हैं जिनमें उन्हें फौजी शिक्षा दी जा रही है। अपढ़ा और अशिक्षिता स्त्रियाँ अपने घर के पढ़े लिखे मर्दों से देश के नेताओं और राशनिंङ्ग की परेशानियों से बहुत राजनैतिक ज्ञान रखने लगी हैं। वे समय समय पर अपने घर के पुरुषों से कहने लगती हैं—"जब सरकार इतना परेशान किये है, खाना नहीं देती, कपड़ा नहीं मिलता, तेल चीनी आदि की परेशानी है तो फिर महात्माजी और जवाहरजी सरकार से क्यों नहीं लड़ते। रोज रोज मरने के बजाय एक दिन का मरना अच्छा है इत्यादि।" इसके साथ पुरुषों के उत्तर पर वे रूस, जापान, जर्मनी और अमेरिका तथा चीन की घटनाओं को सुनकर उनके सम्बन्ध में भी काफ़ी बातें पूछा करती हैं। यह क्यों? इसीलिए कि इस युद्ध में एक छोटा बालक तक चिल्ला उठता था—"हिटलर की सेनायें अब रूस की सेनाओं से लड़ती हैं। अमेरिका ने अपनी सहायता भेजी है। चीन को जापान की सेनाओं ने बिलकुल रौंद डाला है।" इन खबरों से अपढ़ा स्त्रियों में भी एक राजनैतिक विकास पैदा हुआ है। यह राजनैतिक विकास इस युद्ध की देन है।

* * *

युद्ध-काल से पहले अधिकतर स्त्रियाँ अपने दिन भूखों काट दिया करती थीं। अपने पति की कमाई पर उन्हें अवलम्बित रहना था। परन्तु इस कितनी ही स्त्रियों को कितने ही सिनेमा तथा अन्य फैक्टरियों में कारण काम करने पड़े हैं। उन्होंने द्वारा युद्ध-काल में अपनी समस्या हल की है। परन्तु गुण उनके लिए लाभकारी हो वे अब भी काम करके अपना बच्चों का पेट भर सकती है। को युद्ध के पहले तीन आने कठिन था आज वे ही स्त्रियाँ रोज तक पैदा करती हैं। नारियों के जीवन का स्तर बहुत उठ गया है। कम से कम वे की ओर चल पड़ी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृत्यु-शय्या

लेखिका, श्रीमती इन्दिरा खन्ना

वह मृत्यु-शय्या पर पड़ा था और अतीत के चित्र उसकी आँखों के सामने नाच जाते थे। उसके किसी बचपन के साथी की स्मृतियाँ स्मृति पटल पर नाचने लगती थीं। इस कहानी में लेखिका ने करुण तथा मार्मिक भावनाओं में उसकी पूर्व स्मृतियों को अंकित किया है जो पठनीय तथा हृदय पर प्रभाव डालनेवाली है।

इन्तजार कर रहे थे! उनके सामनेवाली कुर्सी पर एकमात्र सन्तान मातृहीना पुत्री वृन्दा चाय बना रही थी।

"आपने मुझे क्यों बुलाया था?"

"यों ही बुला लिया, तुम आज जा रहे हो न? तुमसे एक आवश्यक विषय पर बात करनी थी!"

"वह क्या?"

"पहले चाय पी लो तब बात करेंगे!"

यह कहकर उन्होंने वृन्दा की ओर देखा। शायद वह वृन्दा के सामने कुछ कहना नहीं चाहते थे।

थोड़ी देर बाद वृन्दा चाय पीकर उठ गई तो बृज बाबू ने कहना आरम्भ किया—"हाँ तो मैंने तुम्हें इसलिए बुलाया है कि तुमसे कुछ जरूरी बातों में सलाह करनी है!"

वह मृत्युशैया पर पड़ा था किन्तु उठकर एक लंबा पत्र लिखने लगा।

"वह क्या?" मेरी उत्सुकता बढ़ी!

"भाई रमेश, यह तो तुम्हें मालूम ही है कि वृन्दा का विवाह मैं इसी गर्मी में कर देना चाहता हूँ, और लगभग ठीक भी हो गया है। सब तरह की तैयारी भी हो चुकी है। अगर वृन्दा की माँ जिन्दा होती, तो मुझे कोई चिन्ता न होती—पर अब चारों तरफ का भार मुझे ही उठाना पड़ेगा।"

"मेरे लायक जो सेवा हो आज्ञा दीजिए?"

"बेटा, यों तो बहुत काम होगा—पर मेरे पास काम करनेवाले नहीं हैं। यों तो मैं जिससे चाहूँ काम करवा लूँगा पर विश्वास-योग्य कोई नहीं है। अगर किसी पर विश्वास है तो तुम पर। तुम्हें मैं बेटे की तरह मानता हूँ। इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम अपनी बहन की शादी में आकर मेरा भार हलका कर दो।"

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं मुझे बड़ी खुशी होगी, अगर आप मुझे इस योग्य समझें!"

बड़ी देर तक इधर-उधर की बातें करके मैं अपने कमरे में चला आया। सामान तैयार था ही इसलिए बाकी समय सिनेमा में काटने चला गया!

नियत समय पर फिर बनारस जा पहुँचा। इस बार बृज बाबू के मकान पर ही रुका था। घर मेहमानों से भरना शुरू हो गया था। कढ़ाये चढ़ रहे थे। चारों ओर मीठे पकवानों की सुगन्ध फैली हुई थी। वृन्दा छुईमुई बनी दुलहिन के भेष में अपने कमरे के अन्दर रहने लगी।

बरात आने को केवल एक दिन की देरी थी। मैं किसी काम से हाथ में साइकिल लेकर बाहर निकलनेवाला ही था कि सामने एक ताँगा आकर रुका। यह तो मुझे मालूम ही था कि वृन्दा की एक दूर के रिश्ते की मौसी आनेवाली है। घर पर बृज बाबू नहीं थे। इस कारण उनका स्वागत करने के लिए मैं ही आगे बढ़ा। देखता हूँ कि मौसी के पीछे एक कोई और भी उतरा है। उत्सुकतावश जो सूरत देखी, तो अवाक् रह गया। सूरत परिचित सी थी। मुँह से निकल गया—"रागिनी"! और तुमने भी हाथ जोड़कर नमस्ते किया। तुम्हारी माँ को आश्चर्य हुआ तो तुमने मेरा परिचय कराया, "मेरी सहेली लता के बड़े भाई रमेशचन्द।"

मेरा काम में जरा भी मन न लगता। आते-जाते मेरी आँखें सदैव तुम्हें खोजा करतीं। तुम दिखाई पड़ जातीं, तो मेरा रोम रोम प्रफुल्लित हो उठता। बड़ी उमंग के साथ काम करता। जरा भी सुस्ती न मालूम पड़ती। पर जब तुम न दिखाई पड़तीं तो बड़ा दुख होता। पर मैं यह बराबर देख रहा था कि तुम्हारा मेरी ओर जरा भी ध्यान नहीं है।

मेरे कमरे के पास ही तुम्हारा कमरा था। दिन में तो काम के कारण हर समय बाहर रहना पड़ता पर रात को जब गर्मी से परेशान होकर बाहर निकल आता तो अनायास तुम्हारे कमरे की ओर कदम बढ़ जाता। दरवाजा खुला ही रहता। देखता कि तुम अपने मा-बाप के साथ पंखे के नीचे सो रही हो, पर कहीं कोई देख न ले, इस डर से हट जाता और ओट में खड़ा होकर बीच में तुम्हारा करवट बदलना देखता। और जब तुम सबेरे उठकर बाहर आतीं तो देखता कि बड़ी बड़ी आँखों में नींद की खुमारी—केश इधर-उधर बिखरे—और सोचता—"ओह रागिनी कितनी सुन्दर है!"

बरात बिदा हो चुकी थी। मेहमान भी धीरे धीरे बिदा हो रहे थे। मुझे मालूम हो चुका था कि तुम भी दूसरे दिन जानेवाली हो। बड़ा दुख हुआ था सुनकर। समझ नहीं पाता कि अपने इस उठते तूफान को क्योंकर तुम्हें दिखाऊँ? सारी रात रोता रहा और तुमको जरा भी मेरा ख्याल न आया!

सबेरा हुआ और मैं रोज से पहले ही उठ गया। बाहर आकर देखता हूँ कि तुम मेरे दरवाजे पर ही खड़ी हो। मुझे देखते ही तुम मुस्करा पड़ीं। कितनी भली थी तुम्हारी वह मुस्कान! आज भी मेरी आँखों के आगे नाच रही है, वह सुन्दर भोलेपन से भरी मुस्कान!

"बड़ी देर में सोकर उठे आप?" तुमने पूछा।

"वाह मैं तो आज रोज से पहले ही उठा हूँ—यह कहिये कि आप जल्दी उठ गईं सोकर!"

"हाँ आज बड़े सबेरे ही आँख खुल गई।" तुम बात करती करती मेरे कमरे के अन्दर आ गईं!

"आप तो मुझे देखते ही पहचान गये?"

"भला क्यों नहीं पहचानता।"

"मैंने सोचा कि कितने ही साल हो गये मिले जब से हमने अलीगढ़ छोड़ा फिर तो कभी मिले ही नहीं।"

"पर इसका यह मतलब तो नहीं है कि मैं आपको पहचानू ही नहीं।"

"मैं एक चीज माँगूँ आप दे सकेंगी" मैंने डरते डरते तुमसे पूछा!

"इतना आप संकोच क्यों कर रहे हैं माँगिये न।" तुमने मेरी ओर झिझकते हुए देखकर कहा।

"आप अपनी तसवीर दे दीजिए।"

"तसवीर का क्या करेंगे, दूसरे यहाँ तो मेरी कोई तसवीर भी नहीं है।"

"अपने पास आपकी याद जो रखूँगा आप भेज तो सकती हैं।"

"मुझमें याद रखने की कौन-सी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दशदल

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खासियत है।" इतना कहकर तुम स्वयं ही शर्मा गई थीं।

"पर एक शर्त है बदले में आपको भी भेजनी होगी।" इतने ही में माँ के सोकर उठने की आहट पाकर तुम वहाँ से चली गईं।

स्नान आदि से निबट कर साइकिल लेकर बाजार जानेवाला ही था कि तुम अपने कमरे से निकल आईं और मुझे इशारे से रुक जाने के लिए संकेत किया। साइकिल दीवाल के सहारे खड़ी करके तुम्हारे पास गया। तुमने पूछा—"आप कहीं जा रहे हैं?"

"हाँ क्यों? क्या कोई काम है?"

"कब तक वापस आओगे?"

"तीन-चार घंटे तो लग ही जायेंगे। शहर में अपने एक मित्र से मिलने जाना है।"

"जल्दी न लौट सकेंगे? फिर तो हम चले जायेंगे" तुमने कहा था।

"अच्छा कोशिश करूँगा।" मैं साइकिल ले तुम्हारा ही ध्यान करता हुआ घूमने निकल गया।

तुम्हारी बातों से तो मुझे विश्वास हो गया था कि तुम भी मुझे प्यार करती हो। इसी उमंग में कितनी गली और सड़कें पार कर घर से दूर निकल गया था पर होश आया—और तब सीधा तेजी से पैडिल मारता घर आ गया।

मैं और बृज बाबू तुम सबको स्टेशन पहुँचाने गये। लौटकर घर आया। सूने घर में कदम रखने को इच्छा न होती थी। बार बार मेरी आँखों के आगे किसी की मूर्ति नाच जाती थी जिसके नेत्रों में जल था—और अधरों पर मुस्कान!

सबेरे काफी देर से उठा। एक बार फिर तुम्हारे खाली कमरे की ओर दृष्टि चली गई। मुझे सुनाई पड़ा कि उसके अन्दर से किसी की चूड़ियों की मधुर झंकार आ रही है।

मतवाले की भाँति अन्दर चारों ओर कोने कोने में ढूँढ़ा, सोचा, शायद तुम्हारा जाना केवल एक स्वप्न-मात्र हो। तुम अन्दर किसी जगह छिपी बैठी हो, पर जब तुम न मिलीं, तो निराश होकर लौट आया। और फिर तो अनेकों बार सुनी—तुम्हारी चूड़ियों की स्वर्गीय झंकार!

तुम्हारे जाने के बाद मैं दो दिन वहाँ और रहा! काम तो कभी का समाप्त हो चुका था—पर तुम्हारी मधुर स्मृति और चूड़ियों की झंकार का कुछ ऐसा आकर्षण मन में समा गया था कि वहाँ से जाने को मन राजी नहीं होता था। घंटों पागल की तरह तुम्हारे कमरे में बैठा हुआ विचार-सागर में गोते लगाया करता।

एक दिन तुम्हारी याद कलेजे में छिपाकर घर लौट आया। जिस दिन मुझे तुम्हारा पत्र और चित्र मिला उस दिन कितना प्रसन्न हुआ था, मानो बादशाहत ही मिल गई। पत्र के एक एक अक्षर की तसवीर बनाकर हृदय में उतार लिया था और तुम्हारी वह तसवीर—तब से अब तक तो मुझसे दूर हुई नहीं!

छुट्टियाँ खतम हो चुकी थीं, बनारस फिर आ गया था। पर इस साल पढ़ने में जरा भी मन नहीं लगा। सदैव अच्छे नम्बरों से पास होता आया, पर इस बार साधारण-सी परीक्षा में फेल होने लगा। सबको आश्चर्य था, मेरे इस परिवर्तन पर। एक दिन कुछ बूँदा-बाँदी हो रही थी। मैं कालेज जाने को बाहर निकला ही था कि बृज बाबू के दरवाजे पर मेरी दृष्टि पड़ी। पहले तो वृन्दा का विचार कर उधर नहीं देखा, पर एकाएक मन में विचार उठा, काश, इस जगह 'मेरी रागिनी' होती! आँखों के आगे वही कल्पना करके उधर देखा तो मेरी कल्पना सत्य में परिणित हो गई। और सच में वृन्दा की जगह मेरे स्वप्नों की रानी खड़ी थी। मैं तुमसे मिलने द्वार की ओर लपका—पर तुम बिना इधर-उधर देखे अन्दर चली गईं। मैं चोट खाकर लौट पड़ा। कालेज नहीं गया। सारे दिन बेचैनी से पलँग पर पड़ा करवट बदलता रहा।

शाम की झुटपुट हो चली थी मैं अपने द्वार पर खड़ा बृज बाबू के द्वार की ओर टकटकी बाँधे देख रहा था कि तुम बाहर आईं। मैंने सोचा कि जरूर तुम मुझसे मिलने आ रही हो। पर दूसरे ही क्षण पीछे से एक युवक निकला और बिना किसी तरफ देखे तुम्हारा हाथ अपने हाथों में थामें आगे बढ़ गया। मेरा मन कचोट उठा। मेरी रागिनी को इस तरह ले जानेवाला कौन है—प्राणों से एक चीत्कार निकली। मैं चुपचाप पीछे हो लिया।

कई सड़कें पार करते हुए तुम दोनों 'जगत सिनेमा' के अन्दर चले गये। मैं भी जल्दी से टिकट लेकर तुम दोनों के पीछे अपने को छिपाता हुआ जा बैठा!

खेल का नाम क्या था और क्या हो रहा था, इसका तो जरा भी ज्ञान न था। मेरी निगाहें तुम दोनों पर बराबर जमी रहीं।

क्या तुम्हारी शादी! घरवालों ने सवाल पर सवाल कर मेरे नाक में दम कर दिया था। मैं खीझ उठा। कमरा बन्द करके सारे दिन तुम्हारा ही विचार किया करता। तुम कहीं पढ़ते पढ़ते ऊब तो नहीं रही हो? बातें भी तो बहुत सी करनी हैं तुमसे! अगर आज न कर पाया तो? इतने वर्षों तक तो पीड़ा सही, मन की बात मन में रखी, अब घुल घुलकर प्राण न दूँगा। हाँ, अब बाकी सब बहुत ही संक्षेप में बताता हूँ!

तुमसे मिले पूरा एक वर्ष व्यतीत हो चुका था। रोज सबेरे उठकर तुम्हारे चित्र की पूजा करने का तो नियम ही बना लिया था। पर हाँ, यह सत्य है कि घाव थोड़ा थोड़ा पुर चला था। शायद भविष्य में तुम्हें मैं भूल जाता। अगर ऐसा हो जाता तो मेरा जीवन बरबाद होने से बच जाता! हाँ, तो एक घटना ने मुझे जड़ से उखाड़ दिया—

यह तो तुम्हें बताना भूल ही गया कि तुम्हारा चित्र पाते ही वादे के अनुसार अपना चित्र भेज दिया था—क्योंकि पहुँच की चिट्ठी भी आ गई थी उन दिनों तुम अपने मायके आई हुई थीं।

उस दिन इतवार था। मैं एक पुस्तक हाथ में लिये बैठा धूप में पढ़ रहा था। सर्दी काफी पड़ने लगी थी। पास ही मेरी बहन लता स्वीटर बुन रही थी! हफ्ते भर हुआ, वह ससुराल से आई थी। पूछ बैठी—"भैया तुम्हें याद है जब हम सब बहुत छोटे थे तब मेरी एक सहेली रागिनी अकसर हमारे घर आकर खेला करती थी। उसकी शादी हो गई? मन में प्रश्न उठा! हाल में प्रकाश हो चुका था—तुम्हारे पति बाहर अपने किसी मित्र से खड़े बातें कर रहे थे कि तुमने पीछे घूमकर देखा कि पलक झपकते—तुम्हारे नेत्र मेरे नेत्रों से जा टकराये। और वहीं ठिठककर रह गये। मैं भी बिना पलक झपाये तुम्हारे नेत्रों में न जाने क्या देखता रहा? शायद अपना खोया प्यार। तुम्हारे उदासी भरे मुख पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। तुम मुझे पहचान गई थीं। अपने पीछे-वाली कुरसी पर आने का संकेत करने ही वाली थीं कि इतने में द्वार पर पति को देखकर चुप हो गईं—और—फिर पहले की तरह गम्भीर बनकर बैठ गईं! खेल फिर आरम्भ हो गया।

मेरी आँखों के सामने बार बार तुम्हारी माँग का सिंदूर आकर सीधा, सीने में डंक सा, चुभाने लगा। अब मेरी देवी दूसरे की सम्पत्ति थी। अपनी लापरवाही पर क्रोध हुआ। अगर मैं कोशिश करता तो क्या तुम्हें नहीं पा सकता था? सबसे बड़ी बात तो यह थी कि हम दोनों की जाति और गोत्र भी एक ही था—फिर? पर मन में तो कभी विचार ही न उठा था कि अपनी शादी का प्रश्न उठाऊँ। अब मन में प्रश्न उठा। जब कि चिड़ियाँ चुग चुकीं थीं खेत—इन्हीं विचार-धारा में बहता हुआ—तुम्हारे निकट की कुरसी पर जा बैठा।

अनजाने में पैर मेरी इच्छा के विरुद्ध तुम्हारे पैरों से जा लगे। तुम एक बार काँप उठीं। मैं भी इस स्पर्श से काँपा था। शायद तुमने अनुभव भी किया हो।

किसी के शीतल स्पर्श पर चौंक उठा। तुम कुरसी के आगे झुकी थीं। तुम्हारे हाथ मेरे पैरों को मजबूती से पकड़े थे। तुम्हारे पति चित्र देखने में लीन थे। मेरी आत्मा ने मुझे धिक्कारा। मुझे क्या अधिकार था एक दूसरे पुरुष की पत्नी के इतने निटक जाने का। पैरों को खींचने की इच्छा हुई। तो तभी तुम्हारे गर्म गर्म अश्रु मेरे पैरों पर पड़े! तुम्हारी इस मूक वेदना ने हृदय में एक गहरी चोट उत्पन्न कर दी। मैंने तुम्हें पाने की क्यों नहीं चेष्टा की। बार बार सवाल आकर मन को मथ रहा था। पर अब तो सब बेकार था। समय बीत चुका था। बाजी एक अनजान युवक के हाथ लग चुकी थी।

फिर तो पता नहीं कब फिल्म समाप्त हुआ और कब तुम अपने 'उनके' के साथ बाहर आईं। मैं तो मन्त्रमुग्ध-सा तुम्हारे पीछे पीछे चलता रहा। तुम बीच में पीछे घूमकर देख लेती थीं, पर इस तरह कि किसी दूसरे देखनेवाले को शक न होने पाये।

दूसरे दिन तुम तड़के ही बनारस से चली गईं। इस अचानक के मिलन ने मुझे हिला दिया। मैं पागल हो उठा। तुम्हारी पल भर को भी याद दूर न होती। कालेज जाना तो एक तरह से छूट ही गया।

एक दिन बोरिया-बिस्तर बाँध घर आ गया।

मैं तुम्हारा नाम सुनकर चौंक उठा। हाँ, हाँ मैं रागिनी को खूब अच्छी तरह जानता हूँ। बनारस में उसके एक रिश्तेदार के यहाँ मुलाकात भी हुई थी।

"उसके बनारस में कोई रिश्तेदार हैं तो अवश्य। तो मेरी ससुराल के पास ही उसका घर है। वह पति के साथ अकेले ही रहती है। सास-ससुर कहीं और रहते हैं।" लता अपनी ही धुन में कहती जा रही थी।

"हाँ फिर?" मैंने [illegible] दिया।

"एक दिन वह मेरे [illegible] देखते ही मुझसे लिपट गई। [illegible] सहेली फिर मिल गई। [illegible] वह मेरे यहाँ आती रहती।

"दोपहर को मैं बैठी [illegible] थी। वह चुपचाप आकर [illegible] किये पास ही बैठ गई उसके [illegible] से मैं परेशान हुई। मैंने [illegible] देखा—आँखें लाल अंगारे [illegible] चमक रही थीं! चेहरे पर [illegible] गहरी छाप थी—

"आज क्या बात है? [illegible] क्यों—क्या रोई थीं? मैं [illegible] सवाल पर सवाल करती गई।

टपटप आँसू गिर चले—[illegible] शान्त हो जाने पर मेरे [illegible] करने पर बताया कि "मेरे [illegible] चित्र था—मैंने उसकी बड़ी [illegible] किन्तु नहीं मिला! पर आज [illegible] के अन्दर से पढ़ते पढ़ते नीचे [illegible] मुझे तो कुछ ध्यान भी न था। [illegible] में उनकी निगाह उस चित्र [illegible] गई। मैं तो काम करने चली [illegible] उन्होंने चित्र उठाकर देखा [illegible] एक युवक को देखकर क्रोध में [illegible] सीधे मेरे पास आये—और [illegible] प्रश्न के मुझ पर लात-घूँसों का [illegible] लगे। मैं चिल्लाती ही रह गई—[illegible] एक बात उन्होंने न सुनी। थोड़ी [illegible] लेने के बाद वह कपड़े पहनकर [illegible] खाये चले गये। "तो तुमने भी [illegible] खाया होगा"—मैंने पूछा—[illegible] ही गई—यह हैं बहन आजकल [illegible] हम अपनी इच्छाओं का खून [illegible] बाप जिसके साथ भाग्य का [illegible] देते हैं—उधर ही चल देती हैं। [illegible] पति ही को सब कुछ मानकर [illegible] उनकी सेवा में लग जाती हैं। [illegible] भी शिकायत नहीं लातीं। सोते-[illegible] सुख का ध्यान रखती हैं अत्यन्त [illegible] भी उनकी सेवा में कमी नहीं आने [illegible] बदले में क्या मिलता है, अवहेलना [illegible] बात पर लांछना।"

"बड़ी देर तक बेचारी रोती [illegible]

अधिक सुनने का मुझमें [illegible] रह गया। मेरा मन करने लगा कि [illegible] सिर दीवाल से टकराकर फोड़ [illegible] आह मेरे कारण ही उस निर्दोष [illegible] उसके पति ने दुर्दशा की! हाय री [illegible] निष्ठुर पुरुष जाति—अनन्त काल से [illegible] नारी पर हुकूमत करके उस पर [illegible] अत्याचार करता आ रहा है। [illegible] बन्द करके सारे दिन तुम्हारे चित्र के [illegible] रोता रहा। गुस्सा आता रहा [illegible] कि क्यों अपना चित्र तुम्हें भेजा। [illegible] पता था कि तुम्हारा पति इतना क्रू [illegible]

फिर भी मैं जिन्दा था—[illegible] लगाकर उड़े जा रहे थे। समय का [illegible] मैं भी बह रहा था। शादी के लि [illegible] ही कर दिया था। माँ हार कर [illegible] सिधार गई थीं। एक दिन पिता [illegible] हम लोगों के माया-मोह के बन्धन [illegible] तोड़कर माँ के पास चले गये। [illegible] राल चली गई थी। भाई पहले ही [illegible] शहर में अपने कुटुम्ब के साथ [illegible] उन्होंने अपना अलग कारोबार [illegible] था। इस कारण मैं ही घर में [illegible] रह गया। खाने की चिन्ता नहीं थी [illegible]

शेष पृष्ठ १२ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंगमंच

...तीय फिल्मों को ही क्यों देखना चाहिए ?
...-व्यवसाय को सफल बनाने का उपाय यही है

लेखक, श्री उमेश जोशी

...फिल्मों द्वारा भारतीय जनता ... इस समय विदेशों को ... जा रहा है। यह बड़े दुख ... है। यह सही है कि चित्र-निर्माण ... सामग्री विदेशों से आती है ... है कि हम गुलाम हैं। हम ... फिल्मों का भारत में निर्माण ... नहीं कर सकते। परन्तु जो ... सकते हैं उसे क्यों न किया ... क्यों न हम सिर्फ भारतीय चित्र ... हम सिर्फ इतना ही अपना ... लें, तो आज भारत का करोड़ों ... जाने से बच जायगा। क्या ... स्वार्थ के लिए यह संकल्प नहीं ... जिस प्रकार राष्ट्र की सेवा के ... पहिनना आवश्यक है, ठीक ... भारतीय चित्र देखना भी राष्ट्र ... महान् कर्त्तव्य है। फिर आज-... बहुत से अच्छे फिल्म भी बनने ... विदेशी फिल्मों के देखने से पैसों ... होता ही है साथ ही हम उनसे ... उच्छृङ्खलता का भी थोड़ा-... तो सीख ही लेते हैं। विदेशी ... नग्नता का अधिक प्रदर्शन होता ... भारतीय सभ्यता और पश्चिमीय ... जमीन-आसमान का फर्क है। ... का मेल कैसा ? आज शिक्षित ... के चित्रों के पीछे दीवाने ... अश्लील चित्रों को देखकर अनेक ... हो गये, और होते जा रहे ... मतलब यह नहीं कि विदेशी ... होते ही नहीं किन्तु उनकी श्रेष्ठता ... आदर्श के अनुकूल अधिक होती ... श्रेष्ठ विदेशी चित्र हमारे भारतीय युवकों को विकास-मार्ग पर प्रयाण नहीं करा सकता। इस दृष्टि से उन चित्रों को देखने से लाभ क्या हुआ ? पैसों का भी गँवाना, और उसके बाद भी कुछ ठोस चीज हाथ न आना। लोग कहेंगे मनोरंजन तो होता है, लेकिन ऐसे मनोरञ्जन से क्या लाभ जो कि हमें विकास की दुनिया से घसीटकर पतन की खाई में ढकेल दे। मनोरञ्जन हमको चाहिए, लेकिन ऐसा मनोरञ्जन जो कि हमारे भारतीय संस्कृति, भारतीय संस्कारों के अनुकूल हो। मनोरञ्जन को उपलब्ध करते वक्त हम अपनी राष्ट्रीयता तथा असली स्वरूप को ही न खो बैठें। इस बात का ध्यान तो हमें कम से कम रखना ही पड़ेगा।

सरदार वल्लभभाई पटेल ने प्रसिद्ध फिल्म-अभिनेता और डाइरेक्टर द्वारा निर्मित "वीर कुणाल" का उद्घाटन करते समय कहा था—"युवको, मेरा तुम्हारे लिए यही एक सन्देश है कि भारतीय फिल्म ही देखिए, जो कि हमारी संस्कृति के प्रतिरूप है। भारतीय फिल्म चाहे कितनी ही बुरी होगी, फिर भी वह भारतीय वातावरण में निर्मित हुई है। इसलिए उसमें भारतीय संस्कार तो आ ही जायेंगे। इसलिए प्रत्येक भारतीय दर्शक को भारतीय फिल्म ही देखनी चाहिए। दूसरा लाभ यह होगा कि भारतीय फिल्म देखने से भारतीय फिल्म-उद्योग बढ़ेगा। लाखों दरिद्रों के जीवन का सवाल भी हल होगा। क्योंकि आज इस उद्योग से लाखों गरीब मजदूर पेट पाल रहे हैं—फिर क्यों न भारतीय फिल्म देखकर इन गरीबों की पेट की समस्या हल की जाये ?"

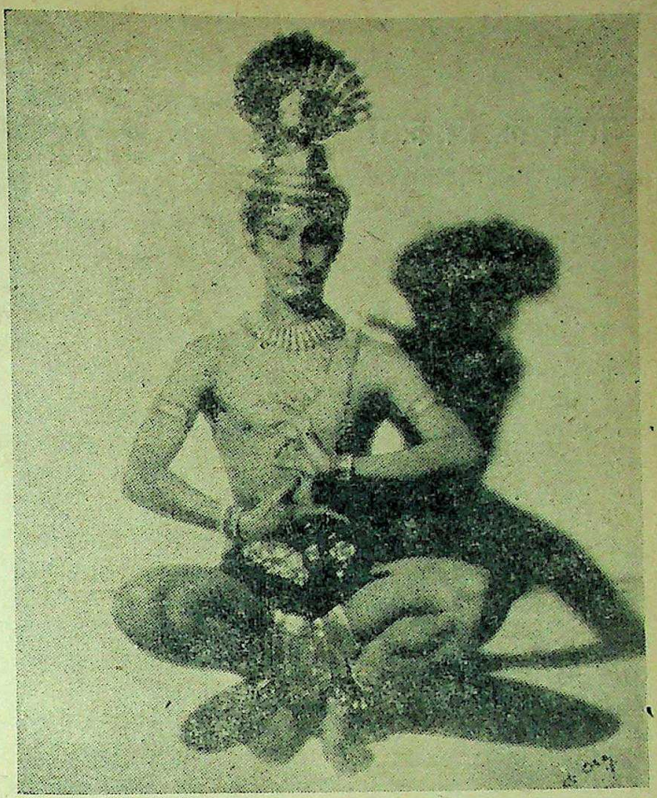

सुप्रसिद्ध कलाकार और नर्तक रामगोपाल अपनी भारतीय नृत्यकला का प्रदर्शन कर रहे हैं।

मेरा भी फिल्म-दर्शकों से निवेदन यही है कि वह हमारे राष्ट्रीय नेता सरदार वल्लभभाई पटेल के सन्देश पर चलना अपना मुख्य कर्तव्य समझें। उनके सन्देश को मानकर विदेशी फिल्म न देखने का संकल्प कर लें। बहुत से ऐसे भी दर्शक हैं जो कि भारतीय चित्रों का नाम भी लेना बुरा समझते हैं। वह हमेशा विदेशी चित्र ही देखा करते हैं। ऐसे दर्शकों से हमारा कहना यही है कि वह समय के तकाजे को सुनें, जमाने के साथ साथ चलना अपना फर्ज समझें। नहीं तो उनको "भारत" छोड़कर विदेशों में चला जाना चाहिए, जहाँ वह खूब डटकर विदेशी चित्र चौबीस घंटे देखें। अब विदेशी रहन-सहन, विदेशी खान-पान, विदेशी देख-भाल सब कुछ दफनाना पड़ेगा। विदेशी भावनाओं की होली जलाकर अपनी कायापलट करनी होगी। अपने को राष्ट्र के अनुकूल बनाना होगा। आज हमारा देश गुलाम है। हमको वह काम करना चाहिए जिससे गुलामी की बेड़ियाँ टूटती हों। परतंत्रता को मिटा देना युवकों का धर्म होना चाहिए। आज राष्ट्र की वाणी यही है, आज देश की पुकार यही है, समय की माँग भी यही है कि—भारतीय युवकों को भारतीय चित्र देखना चाहिए, यदि चित्र देखने का शौक है !

आज भारत में विदेशी चित्रों के दर्शक इतने बढ़ गये हैं, कि जिनसे उत्साहित होकर हालीवुडवाले भारत के लिए चित्र-निर्माण भारत की भूमि में करना चाहते हैं। वह इस प्रयत्न में भी हैं कि उन्हें किसी कुशल भारतीय निर्माता का सहयोग मिल जाये। भारत के लिए तथा भारतीय सिने-इतिहास में यह बड़ी दुखद घटना होगी जब कि भारतीय फिल्म-उद्योग किसी विदेशी कम्पनी के हाथों चला जाये। आज बहुत से फिल्म-निर्माताओं की निगाह इस ओर गई है, और बराबर इस प्रयत्न में हैं कि विदेशियों के पैर भारत की भूमि में न जमने पायें। चाहे वह हमें कितना ही प्रलोभन दें। हम दौलत के लोभ में अपने भारतीय व्यवसाय को विदेशियों के सुपुर्द नहीं करेंगे। इसलिए हमारा अन्त में भारतीय दर्शकों से यही विनम्र निवेदन है कि वह राष्ट्र के लिए कम से कम भारतीय चित्रों को देखकर भारतीय फिल्म-व्यवसाय की सफलता में पूर्ण सहयोग दें। राष्ट्रीयता तथा स्वतंत्र भारत की यही पुकार है।

हलवे का स्वाद खान से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमाला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखे।

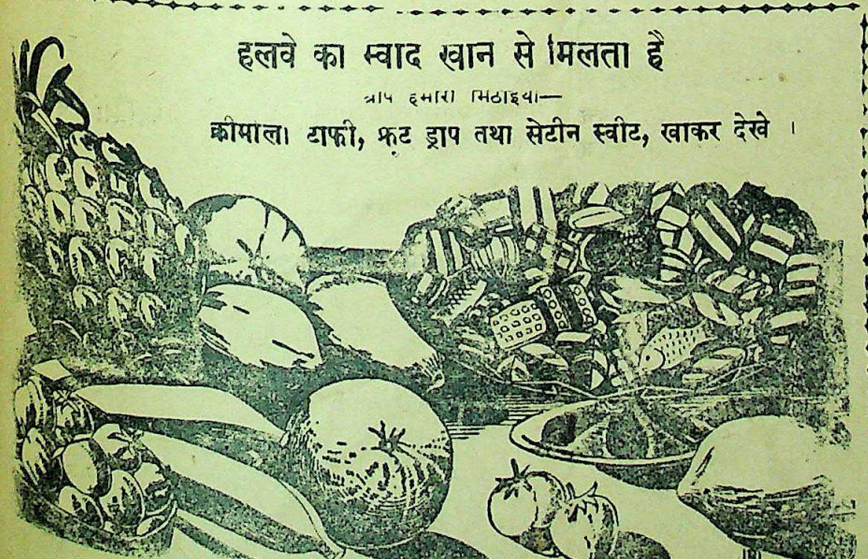

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलता है :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

मा और बच्चा—बच्चों का पालन-पोषण करने तथा उन्हें स्वस्थ और सबल बनाने के लिए जिन-जिन बातों का जानना आवश्यक है, वे सभी बातें इस पुस्तक में लिखी गई हैं। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य और व्यायाम

आँखों की चिकित्सा

औषधि और आपरेशन क्या हानिकारक हैं ?

लेखक, डाक्टर सुरेन्द्रप्रसाद गर्ग, एम० ए०

मनुष्य के शरीर में केवल वनस्पति-जन्य तत्त्व ही समा सकते हैं। किन्तु अधिकांश दवाएँ गैर वनस्पतिजन्य विष होने के कारण शरीर उन्हें न तो पचा सकता है और न आसानी से बाहर निकाल सकता है। भीतर रह करके वह शरीर के किसी प्राण-स्थान में जमा हो जाती हैं और उस अंग को नष्ट करने लगती हैं। अतः इन दवाओं के अस्थायी लाभ से प्रभावित होना बड़ा हानिकारक एवं नाशक है। इनके प्रयोग से स्नायुसंस्थान मर-सा जाता है जिससे रोग के रहते हुए भी रोगी को उसका अनुभव नहीं होता।

शल्य चिकित्सा (आपरेशन) का सफल होना जरूरी नहीं है। प्रायः यह नाकाम-याब भी रहता है। कभी कभी इसे आंशिक सफलता भी मिलती है। यहाँ उन रोगियों के विषय में लिखा जाता है जिन्हें सफल कहा जाता है।

स्वच्छन्द दृष्टि-रोग में नेत्र के भीतरी अधिक द्रव्य के निकलने के लिए एक सुराख बनाकर नेत्र के दबाव को कम करने का प्रयत्न किया जाता है। यह सुराख, पुतली के एक हिस्से को काटकर या कोर-निया के एक भाग को काटे या बिना काटे श्वेतपत्र में घाव करके बनाया जाता है।

नेत्रान्तः पटल के हट जाने की दशा में उसे पट्टियों के दबाव से, इन्जक्शनों से, इन क्रिया से तथा अन्तःपटल के छिद्रों को शल्य से बन्द करके जोड़ा जाता है। इसी प्रकार मोतियाबिन्दु का इलाज घुँधले द्रव्य को हटाकर या तरल लैन्स के सोखने की क्रिया द्वारा दर्द दूर करके होता है। बुढ़ापे के मोतियाबिन्दु में लैन्स को बिलकुल हटा दिया जाता है। पर यह सब ढंग रोग के फल को हटाते हैं, स्वयं रोग को नहीं। ये रोग की जड़ को छूते तक नहीं। इन उपायों से अक्षिगोल के रक्त-कोषाणुओं, पेशियों तथा स्नायुओं को मजबूत बनाने में कोई सहायता नहीं मिलती। फलस्वरूप नेत्र स्वस्थ नहीं होने पाते। इसके अलावा हमें आपरेशनों के खतरों का भी ख्याल रखना पड़ता है, कोई शल्य चिकित्सक यह गारंटी नहीं ले सकता कि आपरेशन के बाद उलझनें नहीं पैदा होंगी। आपरेशन के परिणामस्वरूप प्रायः सब भाँति के रोग—लक्षणोंयुक्त दशाएँ पैदा हो जाती हैं। जिनका असर तमाम शरीर अर्थात् फेफड़ों, स्नायुओं, मस्तिष्क आदि पर होता है।

दूसरी उलझन पुतली के फटने से सम्बन्ध रखती है। कभी कभी पुतली चाकू के सामने आ जाती है और दर्द तथा रक्त-प्रवाह होने लगता है। कभी कभी कटा हुआ जख्म फट भी जाता है। यह रोगी की अधिक स्नायु-दौर्बल्य की दशा में होता है। एकाएक तेज, जोर, उबाक, खाँसी, छींक, बेचैनी या झुकने के कारण से भी जख्म को फटना पड़ता है। भीतरी नेत्र-पेशी आगे सरक भी सकती है। इस संकटावस्था को आन्तरिक यन्त्र की स्थानच्युति कहते हैं। अपने स्थान से सरका हुआ जख्म में घुस सकता है और अक्षिगोल की नलियों में आड़ आ जाने से स्वच्छन्द दृष्टि पैदा हो सकती है।

उक्त उलझनों के अलावा नेत्र का आपरेशन कराने में काफी समय तक बिस्तर पर विश्राम भी करना पड़ता है। इससे समय तथा स्वास्थ्य की हानि होती है। यहाँ बेहोशी की दवा के परिणामों का भी विचार करना पड़ता है। डा० लुफटिग ने लिखा है कि मधुमेह, भिल्ली, प्रदर, दमा, सुर्दे या दिल की बीमारी तथा अन्य शारीरिक कष्टों में बेहोशी की दवा प्रयुक्त करना बड़ा खतरनाक है।

शल्य चिकित्सा की उलझनों में से एक नेत्र के रक्त-कोषाणुओं से भी सम्बन्ध रखती है। इसका प्रकटीकरण कम या अधिक रक्त बहने से होता है। अधिक रक्त बहने के बड़े खराब फल होते हैं। इससे रोगी दुर्बल होता है और उसे बेचैनी होकर बड़ा धक्का पहुँचता है।

पं० गौरीशंकर मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०

लिखित पुस्तकें

बलिदान-मन्दिर

इस उपन्यास की घटना बड़ी रोचक है। मनुष्य के चरित्र का उत्कर्ष किस प्रकार हुआ, वह लोकोपयोगी किस प्रकार हुआ और वास्तविक बलिदान क्या है, इसका बड़ा सुन्दर वर्णन इस उपन्यास में है। इसके पढ़ने से मनोरंजन के साथ-साथ आत्मसुधार की भी शिक्षा मिलती है। अच्छे टाइपों में छपी ढाई सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

भक्त जयदेव

यह उपन्यास अपने ढंग का एक ही है। इसमें 'हम भक्तन के भक्त हमारे' का प्रदर्शन बड़ी सुन्दरता से लेखक ने किया है। मूल्य केवल १॥) एक रुपया आठ आने।

कलियुगी दुनिया की सच्ची कहानियाँ

पहला भाग

वर्तमान युग प्रगति का कहा जाता है। इसी युग की कहानियाँ इस संग्रह में हैं। ये विलक्षण हैं और पढ़नेवालों को एक मीठी सलाह देती हैं। कहानियाँ एक से एक बढ़कर हैं। पृष्ठसंख्या सवा सौ। मूल्य १) एक रुपया चार आने।

शबरी अछूत ?

यह एक रोमांचकारी नाटक है। मर्यादा-पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी की प्रसिद्ध भक्त मीरा के कथानक के आधार पर इस नाटक की रचना हुई है। अछूत समस्या के युग में यह नाटक सचमुच अपनी विशेषता रखता है। बढ़िया छपी पुस्तक का मूल्य केवल ।॥) बारह आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

मृत्यु-शय्या

(पेज १० का शेष)

जी पहले ही काफी धन छोड़ गये थे। इससे मुझे नौकरी करने की भी चिन्ता नहीं करनी पड़ी।

अब मैं अकेला था और थी—साथ में तुम्हारी याद। घर पर मन उकता गया। हर समय तुम्हारी याद करते करते ऐसा ज्ञात होने लगा कि मानो मेरे चारों ओर तुम मुझसे लिपटी हो। जहाँ भी जाता तुम मेरे साथ रहतीं। प्रत्येक जगह तुम्हारा प्रति-बिम्ब नजर आता। सोकर उठता तो लगता कि सारी रात तुम मेरे निकट बैठी रही हो।

कुछ दिनों अकेलेपन से ऊबकर तुम्हारी याद से खीझकर विजयासुन्दरी की शरण ली। पर बहुत शीघ्र ही मन भर गया। तब कुछ दिनों अलकापुरी की सैर की। अनेकों उर्वशी और मेनकाओं से परिचय हुआ। आखिर उनसे भी खीझ कर फिर वही पुराना राग अलापना शुरू किया।

तुम्हारे हर कमरे में बड़ा बड़ा चित्र लगाया। घर के कोने कोने में तुम ही तुम नजर आतीं। मैं पागल न होकर भी पागल बन गया था।

इसी तरह साल पर साल बीतते गये। इस विस्तृत संसार में केवल मैं था और थी तुम्हारी मधुर याद! दिन कैसे बीते और मैंने क्या किया, कुछ याद नहीं। जब मैं पल पल पर चिता की सेज पर सोने के लिए बढ़ रहा हूँ तो तुम्हारी याद मुझे बार बार पीछे खींच ले आती है। आज यहीं पर तुम्हारी याद दिल की कब्र से खोदकर सदैव के लिए सो जाऊँगा। जो दर्द मैंने तुमसे लिया था, वह तुम्हें वापस करता जा रहा हूँ इसे सँजोकर रख लेना। कहीं हाथ से न चला जायें यह अमूल्य उपहार! क्या ही अच्छा होता—अगर मरने के पहले तुम एक बार केवल एक बार आकर अपना दर्शन दे जातीं—मेरा सिर होता तुम्हारी गोदी में और तुम्हारे कम्पित अधर मेरे अधरों पर प्रथम और अन्तिम चिह्न अंकित करते हुए मुझे मीठी नींद सुला देते!

पर क्या पता तुम्हारे पास यह पत्र पहुँच ही पायेगा? क्या तुम मेरा दर्द समझ भी सकोगी, पर खैर मुझे इतना तो सन्तोष है कि मैं अपने साथ कुछ भी नहीं ले जा रहा हूँ। तुम्हारी अमानत तुम्हें ही सौंपता जा रहा हूँ—इसी आशा पर कि कभी न कभी तो तुम्हें इस पत्र के बारे में ज्ञात होगा—मेरा विश्वास तो यही कह रहा है कि बस विदा दो रानी। तुम्हारी याद ही में दम तोड़ता हुआ।

—रमेश

श्री संपादक जी,

आप का अखबार [illegible] जो रमेशचन्द्र जी का पत्र [illegible] पढ़ा, अगर आपके पास उनका [illegible] भेजने की कृपा करें। शीघ्र ही [illegible] डाक से पता भेजने का [illegible]

धन्यवाद!

श्रीमती रागिनी जी!

पत्र मिला। धन्यवाद! आपको यह सूचना देते हुए [illegible] हो रहा है कि 'मृत्यु-शय्या' [illegible] के लेखक श्री रमेशचन्द्र जी [illegible] छपने के एक सप्ताह बाद स्वर्गवास [illegible] मैं उन्हें बहुत दिनों से जानता [illegible] अन्तिम समय तक उनके [illegible] उनका पता भेजना आपके लिए [illegible] बिलकुल व्यर्थ होगा। हाँ, उनकी [illegible] कुछ चीजें मरते समय सौंपी थीं [illegible] का पता लगाकर आपको भेज दूँगा। [illegible] लौटती डाक से पार्सल से स्वयं [illegible] हूँ। भगवान् उनकी आत्मा को [illegible]

सुंदर स्त्रियों का अभिमान 'आशा'

सौंदर्य साधन आशा फेस [illegible] डर, स्नो, नखरंजक, सुगंध [illegible] सब अच्छे दूकानों में मिलते हैं

विशेष ज्ञान के लिये

आशा एजेन्सी प्रिंस [illegible] स्ट्रीट बम्बई को लिखिए

शक्ति का

महाभृंगराज तैल

केश और मस्तिष्क के लिये सर्वोत्तम तैल

प्रयुक्त मधुर बालुका

शक्ति औषधालय : ढाका

भारत का सर्वश्रेष्ठ और प्राचीनतम आयुर्वेदीय प्रतिष्ठान-स्थापित १९[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

'चढ़ती धूप' (आलोचना)।

श्री राजेन्द्रसिंह, गौड़ एम० ए०

...देश के साहित्य में साधारणतः ...धाराएँ एक ही साथ प्रवाहित ...हैं; परन्तु जब उस देश की ...सामाजिक अथवा सांस्कृतिक ...में परिवर्तन होने लगता है, ...की उन धाराओं की संख्या में ...नहीं होती, वरन् उनके साथ-साथ ...प्रभाओं, आदर्शों तथा कलाओं ...भी होने लगता है और हम ...को उस साहित्य का संधिकाल ...संधिकाल में हमें विश्व-साहित्य ...हमें मिलता है ऐसा साहित्य ...को वर्तमान से और वर्तमान ...से मिलाने—प्रत्येक युग की ...तथा आदर्शों को एक सूत्र में ...की उत्कट लालसा और तड़पन ...इस तड़पन का, इस उद्वेग-...और ज्वाला का स्पष्टीकरण करने-...है साहित्यकार। संधिकाल का ...अपने सामने प्राचीन तथा ...मान्यताओं का संघर्ष देखकर ...और अशान्त हो जाता है और तब ...प्राचीन तथा नवीन आदर्शों को ...तुला पर तौल कर उनमें ...स्थापित करता है। किसी ...के जीवन में जब ऐसा अवसर ...तब वह ऐसे साहित्य को जन्म ...टीस होती है, तड़पन होती ...होती है और नई कल्पना ...इस प्रकार के साहित्य का स्पष्ट ...साहित्य में देखने को मिलता ...दृष्टि से अंचल की 'चढ़ती धूप' ...की एक विशिष्ट रचना है और ...इस नवीन प्रयास का हृदय से ...करते हैं।

'चढ़ती धूप' का नायक है मोहन। ...के एक कालेज का विद्यार्थी ...विद्यार्थी जीवन में उसने मार्क्स-...गम्भीर अध्ययन किया है और ...आदर्शों से वह इतना प्रभावित है ...विषमता के विरुद्ध उसकी ...विद्रोह-भावना प्रबल हो उठती ...की सत्ता को समूल नष्ट ...सतत् प्रयत्नशील रहता है। ...में अदमनीय ज्वाला है, उसकी ...को प्रकम्पित करने की शक्ति ...है अपने लक्ष्य को और ...के लिए वह प्राणपन से सचेष्ट ...आश्चर्यजनक साहस और अपार ...सांसारिक विपत्तियाँ उसे अपने ...नहीं सकतीं, जीवन का मोह ...लक्ष्य से गिरा नहीं सकता, प्रेम ...वृत्तियाँ उसे लक्ष्य-भ्रष्ट नहीं ...वह अटल है पर्वत की भाँति। ...ही उसके जीवन का सार है। ...जीवन की कोमल वृत्तियाँ ...हैं, प्रेम के मन्द-मन्द झकोरे ...जीवन का सब्ज बाग दिखाते ...ऐसा मालूम होने लगता है कि ...कि तब, परन्तु उसे अपनी मनोवृत्तियों पर इतना अधिकार है कि वह पाठक को एक क्षण के लिए विश्राम करने का अवसर नहीं देता और उसे अपने साथ लेकर कर्तव्य-पथ की ओर अग्रसर हो जाता है। सच पूछिए तो प्रेम और कर्तव्य के संघर्ष में ही मोहन के जीवन का विकास हुआ है। अंचल की प्रतिभा का, अंचल की कहानी-कला का सम्पूर्ण सौन्दर्य इसी संघर्ष के चित्रण से झलकता है।

ममता और मोहन के बीच भारतीय आदर्श के अनुसार जैसा प्रेम होना चाहिए वैसा ही चित्रित किया गया है। दोनों बचपन के साथी हैं। मोहन ने ममता के जीवन को उभारा है। उसने उसके जीवन में सरसता उत्पन्न की है और उसका नेतृत्व किया है, परन्तु मोहन का दृष्टिकोण इस दिशा में सर्वथा निःस्वार्थ रहा है। ममता के प्रति उसका प्रेम विशुद्ध प्रेम है। अपने उद्देश्य और लक्ष्य सिद्धि के लिए वह ममता की बातों पर, उसकी प्रार्थनाओं पर ध्यान नहीं देता। वास्तव में उसने ममता को कभी अपनी पत्नी के रूप में देखने की चेष्टा नहीं की। ममता में यह बात नहीं है। वह उसके जीवन में घुल-मिल जाना चाहती है, उसे अपना पति बनाना चाहती है, परन्तु यह उसे स्वीकार नहीं है। अन्त में उसका विवाह कानपुर के सुसम्पन्न युवक के साथ होता है; परन्तु इस परिवर्तन से भी वह मोहन को भूल नहीं पाती। इस प्रकार ममता मोहन के जीवन की एक भीषण समस्या बन जाती है। अंचल ने इस समस्या का—इस उलझन और परेशानी का बड़ी सुन्दरता से चित्रण किया है।

मोहन के जीवन-क्षेत्र में एक दूसरी स्त्री का भी समावेश होता है और वह है तारा। तारा समाजवादी सिद्धान्तों से परिचित है और मोहन के साथ आन्दोलनों में भाग लेती है। वह मोहन के कार्यों पर, उसकी लगन और देश-सेवा पर मुग्ध है और उससे प्रेम करती है। वह ममता के प्रेम से भी परिचित है और कुछ काल तक उसी तरह मोहन के लिए छटपटाती है, परन्तु मोहन प्रेम की इन दोनों धाराओं के थपेड़े सहन करता हुआ भी अपने जीवन को उनसे अछूता रखने की चेष्टा करता है। वह दिन भर कार्य करता है और रात में तारा और ममता के प्रेम का चिन्तन। वह कर्तव्य पालन की धुन में इन दोनों नवयुवतियों के प्रेम को भुलाने की भरपूर चेष्टा करता है, परन्तु भुला नहीं पाता। अन्त में तारा का प्रेम उसे स्वीकार करना पड़ता है और जिस दिन वह उसे स्वीकार करता है उसके दूसरे दिन ही वह पुलिस की गोली का शिकार हो जाता है। तारा और ममता दोनों को इस दुखद और आकस्मिक घटना से चोट लगती है, परन्तु ममता कुछ आगे बढ़ जाती है। वह मोहन की चिता के साथ जल मरने के लिए लपकती है। इस दृष्टि से ममता चढ़ती धूप की जान है।

मोहन, ममता और तारा—इन्हीं तीन चरित्रों की 'चढ़ती धूप' में प्रमुखता है, और इनका चित्रण अंचल जी ने मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया है। आप प्रथमतः यथार्थवादी लेखक हैं, इसमें सन्देह नहीं, परन्तु ममता और मोहन के प्रेम के सम्बन्ध में आपने आदर्शवाद का सहारा लिया है। इस प्रकार कोरे यथार्थवादी नहीं हैं। दोनों आपका समन्वय करने के पक्ष में हैं। मैंने कई प्रगतिवादी साहित्यकारों का उपन्यास पढ़ा है। उन्हें पढ़ने के पश्चात् मेरे हृदय पर जो प्रभाव पड़ा है उसके आधार पर मैं यह कह सकता हूँ कि उन उपन्यासों के पात्रों में कामुकता अधिक है, परन्तु अंचल जी की 'चढ़ती धूप' के सम्बन्ध में यह नहीं कहा जा सकता। अंचल जी के उपन्यास में शुद्धता है, संयम है, प्रेम-निर्वाह की भारतीय पद्धति है।

कथानक की दृष्टि से अंचल की चढ़ती धूप का एक विशिष्ट स्थान है। किसी उपन्यास की सफलता उसके कथानक से आँकी जाती है। कथानक जितना ही ठोस, संयत और चुस्त होता है, उपन्यास उतना ही लोकप्रिय होता है। 'चढ़ती धूप' का कथानक ठोस है। उसमें न तो कमी की जा सकती है और न वृद्धि। उसका ऐतिहासिक आधार है और वह एक विशेष लक्ष्य की पूर्ति करता है। कथानक की घटनाएँ क्रमानुसार हैं और थोड़ी हैं। इससे उपन्यास पढ़ने में पाठकों को किसी प्रकार की अड़चन नहीं होती। चरित्र के विकास के लिए जितनी घटनाएँ आवश्यक हैं उतनी ही घटनाओं का समावेश किया गया है। यही कारण है कि कथोपकथन में कहीं-कहीं जो शिथिलता आ गई है, वह दब-सी गई है।

'चढ़ती धूप' में पात्रों का चित्रण मनोवैज्ञानिक ढङ्ग से किया गया है। मोहन मार्क्सवादी है और अपने सिद्धान्तों पर ध्रुव की तरह अटल। ममता से उसे प्रेरणा मिलती है। वास्तव में ममता के आत्म-समर्पण पर ही मोहन की कार्यशीलता की भित्ति है। उसके मूक-बलिदान ने ही मोहन को उठाया है। इसमें सन्देह नहीं कि ममता मोहन की शिष्या है, परन्तु शिष्या होकर भी उसने मोहन का इतने निकट से अध्ययन किया है कि वह उसके सिद्धान्तों की साकार मूर्ति बन गई है। मोहन ने उसे उभारा है और उसने मोहन को। संसार की दृष्टि से ऐसी जोड़ी आनन्दमय जीवन व्यतीत कर सकती है, परन्तु दोनों का जीवन नीरस है। मोहन ममता को बहन के रूप में देखता है और ममता मोहन को पति के रूप में। अपने-अपने आदर्शों पर दोनों अटल हैं और इसीलिए दोनों दुखी हैं। मार्क्सवादी सिद्धान्तों के साँचे में ढले हुए ये दोनों प्राणी अपनी गति से चलते हैं; अपनी विचार-धारा के अनुसार अपना जीवन निर्माण करते हैं। इस प्रकार एक दूसरे से प्रेरणा ग्रहण करने पर भी दोनों एक नहीं हैं। ऐसे पात्रों के चित्रण में अन्य उपन्यासकारों से जो भूलें हुई हैं अंचल जी उनसे मुक्त हैं। अंचल जी की ममता ने मार्क्सवादी होकर भारतीय आदर्शों की रक्षा की है और इसीलिए मोहन का चरित्र उसके चरित्र के मुकाबिले में फीका पड़ गया है। कहने का तात्पर्य यह कि ममता बिना मोहन मोहन नहीं हो सकता था।

तारा और ममता दोनों में से ममता ही पाठक को अधिक आकर्षित करती है। तारा आज की महिला है। वह मोहन को पाने के लिए ही सब कुछ करती है। वह मोहन के रूप पर, उसके कार्यकलाप पर मुग्ध है। मोहन को मोहन किसने बनाया है, इसकी उसे उतनी चिन्ता नहीं है जितनी उसे पाने की। उसका दृष्टिकोण बाह्य है। वह भीतर घुसकर मोहन के जीवन का अध्ययन नहीं करती। वह वासना-प्रिय है, आदर्श-प्रिय नहीं। इसके विरुद्ध ममता आदर्श-प्रिय है। बचपन से उसने जिसकी उपासना की है, वही उसका उपास्यदेव, उसका पति है। हठात्, इच्छा के विरुद्ध किसी पुरुष के साथ शरीर का बन्धन करा देने से मन का बन्धन नहीं होता इसमें उसका विश्वास है, इसीलिए विवाह हो जाने पर भी वह अपने विवाहित पति को अपना मन नहीं दे पाती। वह मोहन को ही अपना पति मानती है और अन्त में उसी के शव के साथ जल मरने के लिए दौड़ती है। ममता का यही आदर्श उसे तारा से आगे बढ़ा देता है। तारा के चरित्र-चित्रण में संयम से काम लेने पर अंचल जी उसे समकक्ष नहीं बिठा सके हैं।

कवि 'अंचल'

चढ़ती धूप में अंचल की भाषा धारा-प्रवाहमय है। पद्य में उनकी भाषा का जो रूप हमने देखा है उससे गद्य की भाषा अधिक प्रांजल, चुस्त और शुद्ध है। भावों के प्रकाशन और तर्क-सिद्धि के लिए भाषा में उतार-चढ़ाव बराबर आता गया है और इस कारण से उपन्यास में रोचकता बढ़ गई है। कहीं कहीं शब्दों के चुनाव में भद्दी भूलें अवश्य पाई जाती हैं। आशा है दूसरे संस्मरण में उनका सुधार हो जायगा।

इस प्रकार अंचल का यह उपन्यास प्रायः प्रत्येक दृष्टि से सफल और उत्कृष्ट है। इसमें कलाकार की कलाकारिता और उसकी सौंदर्यलिप्सा, नारीत्व का सम्मान और उसकी रक्षा, यथार्थवाद और आदर्शवाद का समन्वय—इन सब बातों का सफलता से चित्रण किया गया है।

मैं अंचल जी को उनकी सफलता पर बधाई देता हूँ और उनकी इस रचना का हृदय से स्वागत करता हूँ।

जुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय
स्थापना १९२५
आरोंदा
१८६६
नीलगिरि तेल
प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

खांसी पर
बिजलीसम
आक्रमण
खांसी
जुकाम, दमा, फ्लू, फेफड़ों की सूजन और नजला सब विनोज से पराजित होजाते हैं।
विनोज
लाइटनिंग
कफ़ क्योर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिट्ठी-पत्री

शिक्षा-प्रसार-विभाग यू० पी० ग्राम पुस्तकालयों के लिए पुस्तकों का नया चुनाव

इस वर्ष (१९४६-४७) के लिए शिक्षा-प्रसार-विभाग अपने ग्राम-पुस्तकालयों के लिए पुस्तकों का चुनाव करेगा। प्रकाशक, लेखक तथा पुस्त-कविक्रेतागण जो चाहते हैं कि उनकी पुस्तकें उन ग्राम-पुस्तकालयों के लिए चुनी जायें। शिक्षा-प्रसार अफसर, यू० पी०, इलाहाबाद के पास प्रत्येक पुस्तक की पाँच प्रतियाँ १५ सितम्बर सन् १९४६ तक भेज दें।

पुस्तकें ऐसे विषय पर लिखी गई हों जो साधारण श्रेणी की जनता के लिए रुचिकर हों और विशेष कर गाँव के लोग उनको भली भाँति समझ सकें। सामयिक विषय की तथा सरल पुस्तकों पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। विज्ञान, साहित्य तथा दर्शन की पुस्तकें जो केवल उच्च श्रेणी के शिक्षित समाज के ही योग्य हैं न भेजी जावें क्योंकि इन पुस्तकालयों में ऐसी पुस्तकों की आवश्यकता बहुत कम है।

केवल वही पुस्तकें जो गत तीन वर्षों में प्रकाशित हुई हैं और अभी तक चुनी नहीं गई हैं विचार के लिए भेजी जावें।

जो पुस्तकें चुनी जा चुकी हैं अथवा खरीदी जा चुकी हैं उनको भेजने की आवश्यकता नहीं है।

प्रत्येक पुस्तक के विषय में निम्न-लिखित विवरण भेजा जाये—(१) पुस्तक का नाम। (२) विषय। (३) भाषा। (४) लेखक का नाम। (५) अनुवादक का नाम यदि कोई हो। (६) प्रकाशक का नाम अथवा उस व्यक्ति का नाम जिसकी यदि पुस्तक चुनी जावे तो उसको आर्डर दिया जाय। (७) पूरा पता। (८) मूल्य। (९) मूल्य पर कमीशन। (१०) भेजनेवाले का पता।

पुस्तकें या तो रजिस्टरी या रेलवे पार्सल से महसूल देकर भेजी जायें। पुस्तकें शिक्षा-प्रसार अफसर के नाम से न भेजी जायें। आफिस के समय में पुस्तकें आफिस में भी दी जा सकती हैं। यदि पुस्तकों के मिलने की सूचना प्राप्त करनी है तो उनकी सूची तथा पता और टिकट के साथ एक लिफाफा भेजा जावे।

जो पुस्तकें चुनाव के लिए भेजी जावेंगी वे लौटाई न जावेंगी। प्रकाशक को चुनाव होने पर चुनी हुई पुस्तकों की सूचना भेजी जावेगी। इस सम्बन्ध में कोई पत्र-व्यवहार न किया जावे।

यदि कोई प्रकाशक कल्पित नाम से पुस्तकें भेजेगा या लेखक का नाम न देकर दूसरे व्यक्ति का नाम देगा उस पर प्रति-बन्ध लगाया जावेगा और अगले दो वर्ष तक उसकी पुस्तकें चुनाव के लिए स्वीकार नहीं की जावेंगी।

इलाहाबाद— सी० एल० साहनी
(रायबहादुर)
डी० पी० आई (यू० पी०)

इधर उधर की

पेन्सिलिन पर नई खोज

न्यूजर्सी की एक विज्ञानशाला के डाक्टर हैन्स मोलीटर ने पेन्सिलिन पर नई खोज की है। डाक्टर के कथनानुसार पेन्सिलिन-एक्स बहुत ही उपयोगी औषधि है। पेन्सिलिन-एक्स से अजेय संक्रामक रोग को कुछ ही वर्षों के अन्दर दूर किया जा सकता है। निमोनिया, गर्मी, सुजाक तथा अन्य संक्रामक रोगों की यह अचूक औषधि है।

पेन्सिलिन-एक्स साधारण पेन्सिलिन से दूनी खुराक खाई जाती है। परन्तु इसका उत्पादन इतना नहीं है कि सर्वसाधारण के उपयोग के लिए काफी हो। संयुक्तराष्ट्र अमेरिका का कृषि-विभाग पेन्सिलिन के तत्त्वों को पैदा करने में तल्लीन है। वहाँ पेन्सिलिन-जी और पेन्सिलिन-एक्स दोनों समान मात्रा में तैयार की जाती हैं। पिछले दिनों पेन्सिलिन-एक्स की कुल उत्पादन का ½ भाग अमेरिका के कृषि-विभाग द्वारा पैदा किया गया था। पेन्सिलिन के ये नये तत्त्व व्यापारिक संस्थाओं के लिए इसी फार्म से मिल सकते हैं। पेन्सिलिन-एक्स संक्रामक रोगों में बहुत अधिक लाभकारी सिद्ध हुई है। सुजाक, गर्मी और निमोनिया में इसके सेवन से बहुत लाभ हुआ है।

* * *

एक्स-रे और क्षयरोग

एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में क्षय के कीटाणु फैलने के भय को रोकने का प्रयत्न वर्षों से किया जा रहा है। इस भयंकर संक्रामक रोग से बचने के लिए डाक्टरों ने एक्स-रे द्वारा कीटाणुओं के पैदा होने की परीक्षा ली। कीटाणुओं के चित्र लेने के लिए एक्स-रे का आविष्कार हुआ। अब तो एक्सरे-परीक्षा इतनी सर्वप्रिय हो रही है कि कोई भी व्यक्ति शंका के होते ही एक्स-रे लेने को तैयार हो जाता है संयुक्त-राज्य अमेरिका में अधिकतर लोग राज-यक्ष्मा से रोगी पाये गये हैं। एक्स-रे से चित्र लेने की सर्वप्रियता इतनी बढ़ी है कि आज के दैनिक एक्स-रे चित्रों की औसत ५०० से ८०० तक पहुँच गई है। गत ५ वर्षों में १,२०,००,००० सैनिकों और ६०,००,००० नागरिकों ने अपने सीने की एक्स-रे-परीक्षा कराई है।

अमेरिका में आज के बीमारों की संख्या का ६५ से ७० प्रतिशत राजयक्ष्मा से बीमार पाये गये हैं। जब कि आज से कुछ वर्ष पूर्व राजयक्ष्मा के बीमारों की संख्या १० से १५ प्रतिशत तक थी। अब संयुक्त-राज्य अमेरिका का ऐसा कोई नागरिक नहीं है जो अपने सीने की एक्स-रे-परीक्षा न कराता हो। पहले इसका इतना न तो डर था और न लोग एक्स-रे के लिए ही उत्सुक थे। हजार पीछे कहीं १२ से १५ संख्या राजयक्ष्मा से बीमार होती थी। परन्तु अब तो उसकी संख्या कई गुना बढ़ गई है। एक्स-रे परीक्षा के आधार पर अमेरिका के राजयक्ष्मा के बीमारों की संख्या १५,००,००० है। स्वास्थ्य-विभाग की रिपोर्ट के आधार पर यह कहा जाता है कि अमेरिका में आजकल राजयक्ष्मा का रोग एक को दूसरे से मिल रहा है। इससे परीक्षा का महत्त्व और भी बढ़ गया है।

* * *

दिन भर आफिस में काम करने के बाद शरीर और मन थक-सा जाता है। इच्छा होने लगती है, अब घर चलकर शान्ति से एक प्याला चाय पी जाय तो जी में जी आय। चाय पीने के घण्टे भर के भीतर ही दिलो दिमाग तरो ताजा हो जाता है और नई ताकत मालूम पड़ने लग है। आप और कोई भी पीते तो ऐसा असर न होगा इतना होने पर भी अ और गरीब दीनों ही आसानी से खरीद सकते हैं इसका पूरा आनन्द उठा सक हैं बशर्ते चाय अच्छ तरह से बनाई जाय।

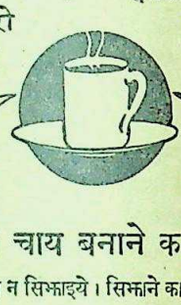

अच्छी चाय बनाने का तरीका

१ केतली में चाय न सिझाइये। सिझाने का बर्तन अलग रखिये।

२ सूखी चाय डालते वक्त वह बर्तन सूखा व गर्म रहे : इससे चाय का रंग व स्वाद ठीक बनता है।

३ हर प्याले के लिये एक चम्मच, और बर्तन के लिये एक चम्मच ताजी, सूखी चाय की पत्ती उसमें डालिये।

४ उसी वक्त का उबला हुआ पानी डालिये—पहले का उबला, कम या ज्यादा उबला पानी मत डालिये। बुदबुदा उठने पर ही पानी उबलता है, उसके पहले नहीं।

५ चाय को पाँच मिनट से कम न सिझाइये।

६ प्यालों में चाय डालकर तब उसमें दूध व चीनी मिलाइये।

चाय

हर वक्त चाय का वक्त

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

भारतीय चायों में सर्व

लिपटन की

जाकूजा चाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुनाव के पश्चात् मेजर कुँवर नरेन्द्रसिंह का भाषण हुआ। आपने कहा कि प्रजामंडल थोड़े से साफ कुर्ता-कमीजवाले उपस्थित व्यक्तियों के लिए नहीं है, वह उन सबके लिए है जो किसान, मजदूर के रूप में देहातों में रहते हैं; और जिनके पास न शीत से तन ढकने के लिए वस्त्र है और न धूप-वर्षा से रक्षित रहने का साधन! काम के समय इस बात को हमें ध्यान में रखना है। प्रजा-मंडल नागोद के कार्य-कर्ताओं को नागोद-दरबार ने गिरफ्तार कर लिया है। नागरिक स्वतंत्रता इस तरह से खतरे में है। सदस्य लोग संगठित हों और अपनी जिम्मेदारी महसूस करें।

सभापति महोदय ने योग्य कार्य-कर्ताओं के चुनाव पर सदस्यों को धन्यवाद दिया।

—महेश्वर मिश्रौलिया

* * *

औरंगाबाद (गया) में प्रान्तीय संस्कृत छात्र-सम्मेलन, बिहार प्रान्तीय संस्कृत-हिन्दी-कविसम्मेलन तथा प्रान्तीय वैद्य-सम्मेलन होने जा रहा है। जिनके सभापति शिक्षा-मन्त्री आचार्य श्री बद्रीनाथ वर्मा काव्यतीर्थ, एम० ए०; "वैदकी" के यशस्वी लेखक एवं संस्कृत के युगप्रवर्तक कवि पं० लालबिहारी मिश्र, साहित्य-व्याकरण-धर्मशास्त्राचार्य वेदरत्न; तथा पं० कालिकाप्रसाद मिश्र, आयुर्वेदाचार्य जी होंगे।

सम्मेलन का उद्घाटन यू० पी० के शिक्षा-सचिव उन्नतमना श्री सम्पूर्णानन्द जी करेंगे। बिहार के कई माननीय मंत्रियों ने उस अवसर पर आने की स्वीकृति दी है। प्रदर्शनी के एक भाग में संस्कृत भाषा के हस्तलिखित तथा प्रकाशित नई-पुरानी पत्र-पत्रिकाएँ भी प्रदर्शित होंगी। निबन्ध तथा कविता के विषय, संस्कृत छात्र-सम्मेलन के लिए—'संस्कृतस्य राष्ट्रभाषार्हता।' वैद्य-सम्मेलन के लिए—'आयुर्वैदिक चिकित्सा-पद्धतेः सांस्कृतिक प्रभावः।' संस्कृत तथा हिन्दी दोनों भाषाओं की कविता के लिए एक ही विषय है—हिमालयः, वीथी, जय हिन्द!, सैकत निकेतनम् तथा कवियों की अपनी प्रिय रचनाएँ।

सभी श्रेष्ठ रचनाएँ स्वर्ण तथा रजत पदकों से पुरस्कृत होंगी। पुरस्कार में प्रांतीयता का प्रतिबन्ध नहीं है। सम्मेलन को महत्त्वपूर्ण बनाने के लिए स्वागताध्यक्ष कविवर प्रिंसिपल जनार्दन झा "द्विज" जी अथक प्रयत्न कर रहे हैं।

—बदरीनाथ शास्त्री

* * *

काशी के मुहल्ला हनुमान फाटक के श्री हनुमान-मन्दिर में गत ४ अगस्त को दैनिक 'सन्मार्ग' के प्रबन्ध-सम्पादक पं० रघुनन्दनप्रसाद शुक्ल 'अटल' के सभापतित्व में श्री तुलसी जयन्ती महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाई गई। श्री रसराज नागर द्वारा प्रार्थना करने पर पश्चात् उत्सव के संयोजक श्री भागवतदत्त मिश्र ने गत वर्षों का कार्य-विवरण पढ़ा। सर्वश्री प्रो० कान्तानाथ पांडे 'चोच', राममूर्ति शुक्ल, कन्हैयासिंह एवं पारसनाथ मिश्र के भाषण हुए पंडित कान्तानाथ पाण्डेय ने गोस्वामीजी की पुण्य स्मृति में श्रद्धाञ्जलियाँ भेंट करते हुये कहा कि जब तक तुलसीकृत श्री रामचरितमानस रहेगा, तब तक हिन्दू धर्म का अस्तित्व मिटना असम्भव है। युद्ध के अवसर पर हमारे हाथ अपने आप 'मानस' को बचाने के लिए दौड़ेंगे। आज के सहायक सम्पादक श्री राममूर्ति शुक्ल ने कहा कि गोस्वामीजी भारतीय संस्कृति अर्थात् हिन्दू संस्कृति के पोषक रहे हैं।

तदन्तर एक सफल कवि-गोष्ठी हुई जिसमें सर्वश्री कान्तानाथ पाण्डेय 'चोच', 'रसराज' नागर देवनाथ पाण्डेय, श्रीनाथ मिश्र (गाजीपुर), स्वामीनाथ 'चंचल' (जौनपुर) श्री भागवतदत्त मिश्र, बालकृष्ण 'दर्शन', ठाकुरप्रसादसिंह, राममूर्ति राम, कुँवरबहादुरसिंह 'कुँवर', कन्हैयासिंह 'तरुण' आदि ने भाग लिया। आगत सज्जनों को जलपान कराया गया।

उपस्थित सज्जनों में सर्वश्री पं० गयादत्त मिश्र, डा० मलिक, राजदेव 'दीक्षित' शिवनाथ एम० ए० एवं पं० शारदाप्रसाद दुबे 'व्यथित' का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

—संवाददाता

* * *

अहमदाबाद में ३ अगस्त को ग्रामिस्ट लीजन की कार्यकारिणी की एक आवश्यक बैठक हुई। अध्यक्ष का आसन श्री डाक्टर दीक्षित ने ग्रहण किया। बैठक में अध्यक्ष ने वर्तमान राजनैतिक स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा कि नेता जी की देश-भक्ति में जरा भी संदेह नहीं परन्तु उनकी रण-नीति हमारे अनुकूल नहीं।

इसके अतिरिक्त समिति ने पिछले दिनों बम्बई में दिये जानेवाले सरदार पटेल के भाषण पर विचार किया। सरदार पटेल के भाषण से यह स्पष्ट है कि वह भारत की एकता को कायम रखना चाहते हैं। सरदार ही एक ऐसे दृढ़ नेता हैं जो एकता को कायम रखने में सफल होंगे। समिति में सरदार पटेल की भूरि-भूरि प्रशंसा की। गाँव की उन्नति के लिए, ग्रामीणों के उत्थान के लिए यह निश्चय हुआ कि एक आन्दोलन चलाया जाये। यहाँ का शासन ग्रामीणवाद के द्वारा हो, न कि साम्यवाद या किसी वाद के द्वारा।

—संवाददाता

* * *

अजमेर में कुँवर चाँदकरण शारदा की अध्यक्षता में राजपूताना प्रान्तीय हिन्दू-सभा की एक बैठक हुई जिसमें बाबू पद्मराज जैन की मृत्यु पर शोक प्रकट किया गया और एक शोक-प्रस्ताव पास करके उनकी सेवाओं की प्रशंसा की गई। वह हिन्दू-महासभा के एक सुदृढ़ स्तम्भ थे। बाबू पद्मराज जैन अखिल भारतीय हिन्दू-महासभा के प्रधान मंत्री भी रह चुके हैं। प्रस्ताव में मृत आत्मा के परिवार के साथ सहानुभूति प्रगट की गई।

कराची में होनेवाले आर्यसम्मेलन के लिए देश की सारी आर्य-संस्थाओं को आमंत्रित किया गया है। यह विशेष अधिवेशन कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर हो रहा है। इसकी बैठकें १८, १९ और २० अगस्त को होंगी जिसमें सत्यार्थ प्रकाश पर लगे प्रतिबंध के सम्बन्ध में विचार होगा।

—संवाददाता

* * *

जयपुर के श्री वीर संघ के तत्त्वावधान में चलनेवाले श्री वीर वाचनालय की ओर से एक अखिल भारतवर्षीय पत्र-पत्रिका प्रदर्शनी दीपमालिका के आसपास हो रही है। आठ सदस्यों की एक प्रदर्शनी-समिति का संगठन हुआ है जिसमें सर्वश्री सिद्धराज ढड्ढा सम्पादक 'लोकवाणी' दैनिक सभापति, लालचन्द जी पाटनी मंत्री और मिलापचन्द डंडिया संयुक्त मंत्री चुने गये हैं।

श्री गुलाबचन्द काला प्रधान मंत्री पत्रकार संघ, श्री जैनेन्द्रकुमार दिल्ली, श्री केशरलाल अजमेरा स० राजस्थान हेराल्ड, श्री चैनसुखदास प्रिंसिपल दि० जैन संस्कृत कालेज, श्री जगमोहनलाल जी मंत्री श्री वीर संघ सदस्य चुने गये हैं।

—संवाददाता

* * *

गोरखपुर (कुबेरनाथ) में ता० १ अगस्त को तिलक-जयंती का उत्सव समारोह श्री तिलक-विद्यालय द्वारा मनाया गया। सर्गना के सभी प्राइमरी स्कूलों के विद्यार्थी एवं जनता उपस्थित थी। इसी अवसर पर यह सार्वजनिक सभा में प्रांतीय सरकार से अनुरोध किया गया कि सन् १९४२ में इस विद्यालय की दो वर्ष तक बड़ी क्षति जो सरकार द्वारा की गई है, उसकी यथा-शीघ्र पूर्त्ति होनी चाहिए। साथ ही डिस्ट्रिक्ट बोर्ड द्वारा एक औषधालय की यहाँ पर माँग की गई।

जय हिन्द मिडिल विद्यालय मुजहना के साथ साथ प्राइमरी स्कूल भी चल रहा है। यद्यपि इस विद्यालय के नाम से चिढ़कर यहाँ के कुछ धनी-मानी विरोधी आवाज उठा रहे हैं फिर भी यहाँ १२५ लड़के शिक्षा पा रहे हैं और एक बी० टी० सी०, १ हाई स्कूल और १ हिन्दी-उर्दू मिडिल और विशेषयोग्यता पास अध्यापक काम कर रहे हैं।

—संवाददाता

पुराने गरम कोट

हर प्रकार के हाफ कोट, ओवरकोट, वास्कट इत्यादि साफ तथा मरम्मतशुदा तथा कराची का बना हुआ उच्च कोटि का माल एकदम उचित रेट पर सप्लाई किया जाता है। माल बहुत कम है। आज ही रेट मँगवाकर आर्डर बुक करा लें।

मेसर्स रमेशराज एन्ड कम्पनी, सौदागरान कोट, कराची।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरञ्जक चुटकुले

गधे की मस्ती

किसी गधे को मक्खियाँ काटने लगीं। वह भागा और जाकर एक पंडितजी के दरवाजे के किवाड़ में बदन रगड़ने लगा। किवाड़ भीतर से बन्द था। किवाड़ की रगड़ से गधे को प्रसन्नता होती थी। वह अपना काम जारी किये रहा। पंडितजी इस समय पूजा करने जा रहे थे। उन्होंने सोचा कोई आदमी उन्हें बुला रहा है इससे उठे और जाकर ज्यों ही किवाड़ की साँकल खोली। त्यों ही गधा किवाड़ के साथ ही आकर धड़ाम से उनके पैर पर गिर पड़ा। पंडितजी ने समझा कोई गाय-बैल है। परन्तु ज्यों ही वह उठ खड़ा हुआ त्यों ही देखा कि गधा है। उन्होंने धोबी को गालियाँ देनी शुरू कीं। धोबी भी एकाएक उधर ही गधे को ढूँढ़ता आ रहा था उसने पंडित जी को गाली देते सुनकर पूछा—"महाराज, क्या कहूँ आज इस बदमाश को मस्ती सूझ गई है, मुहल्ले भर दौड़ाकर परेशान कर डाला।

पंडितजी ने कहा, "देखो तुम्हें मस्ती न सूझे। गधों की मस्ती से बस्ती परेशान हो गई है तो फिर आदमियों का क्या कहना। जरा ठीक ठिकाने से इसे बाँधा करो।

धोबी चुपचाप गधे की पीठ पर डंडे मारता चल पड़ा।

* * *

ट्रेन की सफर

आजकल रेल के डिब्बे में काफी भीड़ रहती ही है। अधिकतर यात्री डिब्बे में खड़े हुए यात्रा कर रहे थे। सीट पर एक मोटे सज्जन पैर फैलाये हुए लेटे थे। एक यात्री ने कहा—"भाई साहब, पाँव जरा खिसका लेते तो मैं भी बैठ जाता।"

मोटे सज्जन—वाह साहब! मुझे दो दिन का रास्ता तय करना है, आपको क्या, अभी उतर जाइयेगा थोड़ी देर में।

यात्री चुप हो रहा। मोटे सज्जन को पेशाब मालूम हुई। वे अपनी सीट से उठे और पेशाबखाने में घुसने लगे कि गिर पड़े। डिब्बे में बैठे लोग हँस पड़े। यात्री को अच्छा अवसर दिखलाई पड़ा, वह और दो तीन आदमी उस खाली जगह पर जम गये। जब मोटे सज्जन लौटे और अपनी सीट पर तीन आदमियों को बैठे देखा तो आग-बबूला होकर बोले—"क्यों साहब मेरी सीट पर क्यों बैठ गये? मुझे दो दिन का सफर करना है।

उनमें से एक ने कहा—"अजी खड़े रहिये थोड़ी देर तक पाँव तो ठीक कर लीजिये हम लोग तो अभी उतर जायँगे, आपको दो दिन तक तो लेटना ही लेटना है। आप लेटे-थे, पाँव जकड़े थे, इससे आप गिर पड़े हैं। जरा जकड़ा छुड़ा लीजिए।

मोटे सज्जन खड़े उन तीनों यात्रियों की खरी खोटी सुना रहे थे इतने में एक टिकट-चेकर आ गया उसने कहा—"चलो जी उतरो इस डिब्बे से, गाली क्यों बक रहे हो तुम पर मुकदमा चलाया जायगा।"

बस फिर क्या था मोटे साहब चुप हो गये उन्होंने कहा, "नहीं साहब मैं क्यों गाली दूँगा। परन्तु चेकर न माना। ज्यों ही उसने मोटे सज्जन के पास आकर धक्का दिया बेचारे का पाँव लड़खड़ाया और गिर पड़ा। चेकर ने किसी प्रकार उसे उठाने का प्रयत्न किया परन्तु मोटे सज्जन इतने भारी थे कि उठ न सके। चेकर ने यात्रियों से प्रार्थना की कि आप ही लोग उठ जाइए। यात्री हँसते हुए उठ खड़े हुए। परन्तु मोटे सज्जन ज्यों के त्यों पड़े रह गये। खड़े यात्रियों में से एक ने कहा, "क्या आप यहीं पर दो दिन तक सोते रहेंगे?"

* * *

खानसामा

एक डिप्टी कलक्टर साहब के यहाँ रोटी बनाने के लिए एक पठान खान नौकर हुआ। पठान हिन्दी कम समझता था। डिप्टी साहब ने एक नौकर से पूछा "खानसामा कहाँ है?"

पठान वहीं पास ही के दूसरे कमरे में था। वह तुरन्त निकल आया और बोल उठा, क्या सामा हुजूर?"

डिप्टी साहब—"तुझे पुकार रहा हूँ।"

खान—"मैंने समझा कि आप मुझसे किसी सामान के मुतालिक पूछते हैं।

डिप्टी साहब ने हँसते हुए कहा—"आज से समझ लो कि खानसामा रोटी बनानेवाले को कहते हैं।"

अन्य नौकर और डिप्टी साहब हँस रहे थे। खान जाकर काम करने लगा।

* * *

भगवान् का दर्शन

एक यात्री मन्दिर में दर्शनार्थ आया। पुजारी ने सोचा कि यात्री ने कुछ चढ़ाया होगा। उसने कहा—"भगवान् के ऊपर कुछ चढ़ाया कि यों ही।"

यात्री ने उत्तर दिया—"हाँ, पुजारी जी, गुलाब के दो फूल।"

* * *

स्टेशन का समय

मुसाफिर—बाबू जी दूसरी गाड़ी कै बजे मिलेगी?

बाबू—१५ बजकर १० मिनट पर।

मुसाफिर (चौंककर)—घड़ी में तो बारह ही घंटे बजते हैं। यह १५ कैसा बाबू जी।

बाबू—स्टेशन पर २४ तक बजते हैं।

मुसाफिर—तब तो मेरी जेब के रुपये भी दूने हो गये होंगे।

बाबू—क्यों?

मुसाफिर—स्टेशन पर वक्त दूना हो जाता है तो रुपया क्यों न दूना होगा।

—सोमनाथ समदरिया

जमींदार और जमींदारी प्रथा

(पेज ६ का शेष)

सकते! असेम्बली में कानून पास कर देना और बात है तथा देश के वास्तविक जीवन में अभीष्ट परिवर्तन ला देना और! असेम्बली और धारा सभाओं की कुर्सियाँ वास्तविक जीवन की कठोरताओं को नहीं जानतीं। वे जानती हैं केवल सिद्धान्त और नियम! हम माननीय श्री सम्पूर्णानन्द जी के इस कथन का कि 'मैं एक समाजवादी हूँ और इस बात से सहमत हूँ कि उसके प्रत्येक रूप में पूँजीवाद का अन्त हो जाना चाहिये', और माननीय पंडित गोविन्द वल्लभ पन्त जी की इस गर्जना का कि 'मैं उद्योगों के पूर्णरूपेण राष्ट्रीयकरण का पक्षपाती हूँ और हमें जमींदारी को मिटाना ही होगा' हृदय से स्वागत करते हैं और देखना चाहते हैं कि क्रियात्मक रूप से उनके इन कथनों में कितनी वास्तविकता है?

परन्तु मेरा विश्वास है कि इतना महान् परिवर्तन सरलतापूर्वक न हो सकेगा। इस कार्य में सरकार जमींदारों का सहयोग प्राप्त होगा नहीं और वे देहातों के सामाजिक और आर्थिक जीवन के एक महत्त्वपूर्ण अंग बन चुके हैं। अतएव इस कार्य की पूर्ति के लिए सरकार को विधान के अतिरिक्त और किसी की भी सहायता लेनी पड़ेगी। सरकारी कर्मचारियों का भी सहयोग कदाचित् सरलता से न मिल सकेगा। सच बात तो यह है कि जमींदारी प्रथा का अंत देहातों के सामाजिक और आर्थिक जीवन के लिए एक बहुत बड़ी क्रांति होगी। इसमें सफलता शांतिमय उपायों की अपेक्षा क्रांतिमय उपायों से अधिक सुलभ होगी। राजा बीरेन्द्रशाह बहादुर की यह धमकी कि 'अपनी रोटी रक्तपात के बल पर भी सुरक्षित रखने की जमींदारों की मंशा है' एक कठोर सत्य है। जमींदारों को उनके भरण-पोषण के लिए आवश्यक भूमि भाग देकर शेष का राष्ट्रीयकरण हो जाना चाहिए। मुआवजे की रकम के भार से किसानों का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष किसी भी प्रकार का सरोकार न होना चाहिए। इतने पर सन्तुष्ट न हो धमकी को कार्यान्वित करने तब सरकार का कर्त्तव्य है कि वह धैर्यपूर्वक अपनी शक्तियों-द्वारा उनका चेष्टा करे। परन्तु इस आवश्यकता है वीरों की, राष्ट्र के लिए तिल तिल की आकांक्षा रखनेवाले और प्रतिहिंसा की भावना दारों का अत्याचार और बढ़ेगा, जब जनता-जनार्दन में ज्वालामुखी के विस्फोट गर्जन होगा, जब क्रांति की से सबके हृदय विदग्ध चेहरों पर एक क्रान्ति आवश्यकता पड़ेगी किसी किसी सुझाव की। तब जमींदारी प्रथा को मिटाने के उसके प्रयत्नों में वास्तविक त्याग, बलिदान और दृढ़ तक था!

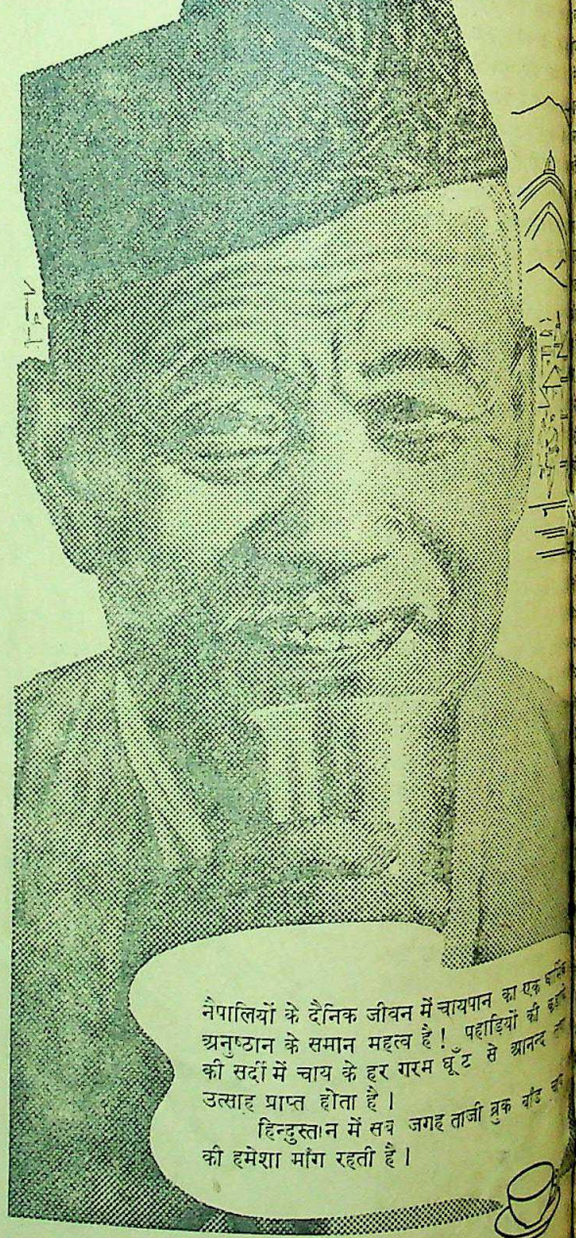

नैपालियों के दैनिक जीवन में चायपान का एक धार्मिक अनुष्ठान के समान महत्व है! पहाड़ियों की कड़ाके की सर्दी में चाय के हर गरम घूँट से आनन्द और उत्साह प्राप्त होता है।

हिन्दुस्तान में सब जगह ताजी ब्रुक बॉड चाय की हमेशा माँग रहती है।

ब्रुक बॉड

दो पत्तियाँ और एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ीय एसेम्बली में जमींदारी प्रथा की इति श्री

...न-वसूली की जाँच—किसान, मजदूर प्रजापार्टी—तथा भटनी की रेलवे दुर्घटनायें—आजाद हिन्द फौज के लिये सहायतार्थ धन-संग्रह।

(अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

...संयोग की बात थी कि गृह-... किदवई के नेतृत्व में ...धारा-सभा ने इस प्रान्त में ...का प्रस्ताव उस दिन ...दिन चार वर्ष पूर्व इस ...विक धारा-सभा (अखिल ...कमेटी) ने इस देश से ...मिटाने का प्रस्ताव स्वीकृत ...गैलरियों तथा सदस्यों ...ध्वनि के बीच जब अध्यक्ष ...के स्वीकृत किये जाने की ...समय रफी साहब के मुख ...आत्मतोष की जैसी आभा ...थी, उनके जीवन में इससे ...देखी गई और शायद ...न देखी जा सके। रफी साहब ...जमींदार के पुत्र हैं और इस ...आचरण तथा त्रासजनक ...भाँति अवगत हैं। अली-...कुल्यात) विश्वविद्यालय का ...के बाद सार्वजनिक जीवन में ...उन्होंने अपने प्रान्त के ...परोपजीवी शोषक वर्ग से ...संकल्प किया था, उनकी ...ने गत ८ अगस्त को उसकी ...

...ने इस अवसर पर जैसा ...वह उन्हीं के अनुकूल था। ...जमींदार पार्टी यदि अपने ...प्रयत्नशील रही, तो कोई ...न थी। किन्तु मुस्लिम लीग ...प्रस्ताव पर जैसा रुख धारण ...अनुचित था। अपने ...लीग ने प्रकट कर दिया कि ...किसानों के हित की उतनी ...जितनी मुस्लिम नवाबों और ...की। जमींदारी मिटाने के ...ने पूँजीवाद के भी मिटाने ...पूँजीवाद के प्रतीक बैंक, ...आदि केन्द्रीय विषय ...सरकार उन पर निर्णय ...थी। यदि गृहमन्त्री इस ...प्रस्ताव के साथ जोड़ना ...तो इन विषयों पर अधि-...इनके साथ साथ ...का काम भी बरसों के ...फिर भी वे सैद्धान्तिक ...आशय अपने प्रस्ताव में ...थे। किन्तु लीगियों को ...का विनाश करना अभीष्ट ...की; अतएव उन्होंने ...न माना। इनके अलावा ...उल्लेखनीय हैं। सामन्तवाद ...नारा का नारा लगाकर ...का जामा तो ओढ़ ...के भीतर रहा ...को छोड़कर प्रत्येक ...अपने भाषणों में जमींदारी ...ही किया।

...सभा द्वारा अनुमोदित ...इस निश्चय ने जमीं-...मचा दी है, वह स्वाभाविक ही है। नवाब यूसुफ की अध्यक्षता में उन्होंने एक सम्मेलन करके कांग्रेस को जली-कटी भी सुनाई। कुछ खुशामद भी की, तलवार उठाकर गृहयुद्ध की भी धमकी दी और महात्मा गांधी के पास दौड़ लगाने का भी निर्णय किया। आगरा प्रान्त के जमींदार जब गंगाप्रसाद हाल में यह बिना टिकट का अभिनय कर रहे थे, अवध के अक्लमन्द ताल्लुकदार मुलायम सोफ़ों पर बैठकर प्रख्यात बैरिस्टरों से इस सम्बन्ध में वैधानिक परामर्श ले रहे थे। सम्भवतः अपने देशद्रोहपूर्ण आचरण को देखते हुए महात्मा गांधी के पास दौड़नेवाले अपने वर्ग बन्धुओं का सा आत्मसाहस उनमें नहीं है। अतएव वे लोग वकीलों से सलाह कर रहे हैं कि इस प्रस्ताव के विरुद्ध संघ न्यायालय में अपील की जा सकती है अथवा नहीं तथा १८५७ के विद्रोह में अँगरेजों की सहायता करने के कारण उन्हें जो सनदें मिली हैं, क्या उनका प्रयोग ब्रिटिश सम्राट्-द्वारा इस सम्बन्ध में हस्तक्षेप कराने के लिए किया जा सकता है?

* * *

युक्तप्रान्त के नागरिकों को लखनऊ के पत्रकारों का कृतज्ञ होना चाहिए, जिन्होंने आस्ट्रेलियन मैदे से उनके मेदे बिगड़ने से बचा दिये। प्रान्तीय सरकार के पास १० हजार टन (प्रायः पौने ३ लाख मन) यह मैदा है, जिसे वह पाँच छः सप्ताह में ही निकाल देना चाहती है, अन्यथा वह खराब हो जायगा। इसी कारण २५ प्रतिशत मैदा और ७५ प्रतिशत गेहूँ का आटा मिलाकर उसने राशन का आटा नं० १ बनाया है। सरकार ने गत सप्ताह लखनऊ के स्वीकृत पत्रकारों को एक लञ्च देकर उन्हें इस आटे की चपातियाँ चखाईं और यह इच्छा जाहिर की कि कुछ दिनों के लिए गेहूँ के स्थान पर इस आटे का लेना अनिवार्य कर दिया जाये। किन्तु पत्रकारों ने इसका विरोध करते हुए अनेक सुझाव दिये, जिसके फलस्वरूप सरकार ने यह निर्धारित किया है कि ३ या ३॥ छटाँक (क्षेत्र के अनुसार) प्रति यूनिट गेहूँ के अतिरिक्त यदि कोई चाहे तो प्रतियूनिट ४ छटाँक तक यह मैदा अथवा आटा नं० १ ले सकता है।

* * *

'बाँदा की बदनामी' से कांग्रेस मन्त्रिमंडल भी अस्थिर हो उठा है कि प्रान्तीय सरकार उसकी अवहेलना नहीं कर सकती। इसीलिए प्रधान मन्त्री के पार्लामेण्टरी सेक्रेटरी श्री लालबहादुर शास्त्री को वहाँ जाँच के लिए भेजे जाने की व्यवस्था की गई है।

* * *

विगत सप्ताह पंडित श्रीकृष्णदत्त पालीवाल की अध्यक्षता में कांग्रेस किसान मजदूर प्रजा पार्टी की स्थापना से यहाँ के राजनैतिक क्षेत्रों में यह प्रश्न पूछा जाने लगा है कि क्या कांग्रेस के अन्तर्गत गुटबन्दी करना स्वस्थ राजनीति है? दूसरे कांग्रेस स्वयं एक पार्टी है अथवा मञ्च,

संयुक्तप्रान्त के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता पंडित श्रीकृष्णदत्त पालीवाल एम० एल० ए० (सेन्ट्रल) संचालक 'सैनिक' की ५०वीं वर्षगाँठ के अवसर पर स्वर्ण-जयन्ती आगरा में गत सप्ताह बड़े समारोह से मनाई गई है। पालीवाल जी ने जिस त्याग, बलिदान, साहस तथा सैनिक प्रवृत्ति से राष्ट्र की सेवा की है, उसका भारत के राष्ट्रीय इतिहास में गौरवपूर्ण स्थान है। इस शुभ अवसर पर हम पालीवाल जी को बधाई देते हैं।

जहाँ विभिन्न दल अथवा गुट अपनी-अपनी विचार-धारा पेश कर सकते हों। मुझे ज्ञात हुआ है कि स्वयं राष्ट्रपति पंडित जवाहरलाल नेहरू का ध्यान भी इस ओर आकर्षित हुआ है। पंडित नेहरू के निकट-सम्पर्क में रहनेवालों का कहना है कि राष्ट्रपति की व्यक्तिगत सम्मति कांग्रेस को एक दल ही बनाने की है, जिसमें विभिन्न गुटों का वैधानिक अस्तित्व न रहे और सब एक नेता के आधीन एक-सा अनुशासन पालन करें, अन्यथा गुटबन्दी के संघर्ष में कांग्रेस की सामूहिक शक्ति का ह्रास प्रारम्भ हो जायेगा।

* * *

पिछले दिनों इस प्रान्त में अनेक रेल-दुर्घटनाएँ हुईं, जिनमें ई० आई० आर० की अयोध्या तथा ओ० टी० आर० की भटनीवाली दुर्घटनाएँ—विशेषकर भटनी की—अत्यन्त ही लोमहर्षक थी। इस देश की रेल-व्यवस्था तथा रेलवे अधिकारियों की लापरवाही और कुशासन तथा अयोग्यता की ये दुर्घटनाएँ स्पष्ट परिचायक हैं। भटनी के लिए तो बताया जाता है कि वहाँ के रेलवे अफ़सर तथा बाबू लोग उस समय नौटङ्की देख रहे थे। एक रेलवे अधिकारी ने मुझसे बातचीत करते हुए बताया कि इस अव्यवस्था का एक कारण यह भी है कि कर्मचारी कम वेतन पाते हैं और उन्हें काम अधिक करना पड़ता है। अतएव वे मन लगाकर तथा समुचित सतर्कता से अपना कर्तव्य पूरा नहीं करते।

* * *

आजाद हिन्द फौज के युक्तप्रान्त-स्थित अफसरों के एक सम्मेलन में आजाद फौजियों की सहायतार्थ तीन लाख रुपये की निधि एकत्रित करने का निश्चय किया गया। इस धन से शहीद हो जानेवाले सैनिकों की विधवाओं तथा बच्चों को कुटी शिल्प सिखाकर उन्हें जीविका-उपार्जन के योग्य बनाया जायेगा तथा रिहा आजाद सैनिकों को आधुनिक यांत्रिक और सामूहिक कृषि में लगाया जायेगा। ख्याल किया जाता है कि इस राष्ट्रीय पुण्य-कार्य के लिए अपीलकर्ताओं को इस प्रान्त से सहानुभूतिपूर्ण प्रत्युत्तर मिलेगा और यह निधि चन्द सप्ताहों में ही संग्रहीत हो जायेगी।

सप्ताह के समाचार

अखिल भारतीय भोजन-मन्त्रियों का सम्मेलन

अभी हाल में भारत-सरकार के भोजन-सदस्य ने भारत के तमाम प्रान्तीय भोजन-मन्त्रियों और राज्यों के प्रतिनिधियों को दिल्ली में उनके प्रान्तों और राज्यों की भोजन-स्थिति के सम्बन्ध में आमंत्रित किया था। मन्त्रियों और प्रतिनिधियों की वार्ताओं अथवा रिपोर्टों से पता चलता है कि आसाम से अन्य प्रान्तों को कुछ चावल, पंजाब से गेहूँ दूसरे प्रान्तों को जिनमें कमी है भेजा जा सकता है। यू० पी० में दिसंबर तक किसी भोजन-सामग्री की आवश्यकता नहीं है। मध्यप्रान्त में चावल तो पूरा हो जायगा, परन्तु गेहूँ की मदद उसे चाहिए। मद्रास, ट्रावनकोर और कोचीन में चावल की कमी है। बिहार और बंगाल में भी चावल की कमी है। आसाम में दाल, गुड़ और सरसों के तेल की कमी है। सम्मेलन में करीब-करीब सभी प्रान्तों और राज्यों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। प्रान्तों से भोजन-मन्त्री, राज्यों के प्रतिनिधि आये थे। सम्मेलन में राशन की कमी को बढ़ाने की सिफारिश की गई है।

* * *

मास्टर तारासिंह को झाड़ू लगाने की सजा

शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष बाबा लाभसिंह ने मास्टर तारासिंह को अमृतसर के स्वर्णमन्दिर में सात दिन तक झाड़ू लगाने की सजा दी है। मास्टर तारासिंह ने विगत असेम्बली चुनाव में अकाली नामजद उम्मीदवार के विरुद्ध कांग्रेस उम्मीदवार की सहायता की थी। तीन अन्य सिक्ख-नेताओं (सरदार ऊधमसिंह नागोके, ईश्वरसिंह मुझिल और जेठेदार सोहनसिंह) को भी ऐसी ही सजाएँ दी गई हैं।

* * *

वायसराय और गवर्नरों का सम्मेलन

बंगाल, युक्तप्रान्त, पंजाब, सिन्ध और सीमाप्रान्त के गवर्नरों और वायसराय का सम्मेलन दिल्ली में हुआ। सम्मेलन में मुस्लिम लीग के वर्तमान प्रस्ताव, सिन्ध की राजनैतिक और बंगाल की भोजन-समस्या पर विचार हुआ।

* * *

मुस्लिम लीग विधान-सम्मेलन में भाग न लेगी

बम्बई की बैठक में पास हुए प्रस्ताव के आधार पर मुस्लिम लीग विधान-सम्मेलन में भाग न लेगी। अभी कांग्रेस का कोई नया कदम नहीं उठा। मिस्टर जिन्ना ने यह बात कही है। इससे विधान-सम्मेलन में मुस्लिम लीग के प्रतिनिधि शामिल न होंगे।

* * *

वर्किंग कमेटी का निर्णय

वर्धा में कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने विधान सम्मेलन में भाग लेना तय कर लिया है। मुस्लिम लीग से समझौते के लिए भी उसमें कहा गया है कि कांग्रेस भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़नेवाली संस्थाओं से समझौता करने को तैयार है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री विनायक सी० डान्डेकर

(पेज ५ का शेष)

नहीं। जैसे वे सैकड़ों वर्षों से मुसीबत के दिन काटते आ रहे हैं वैसे ही आज भी हैं। अभी तो किसानों को बहुत बड़ा संघर्ष अपने यहाँ के शासनों से करना है। उनके सामने बड़ी बड़ी अड़चने और पहाड़ जैसी मंजिलें तय करनी हैं। मुसीबतों और कठिनाइयों को अब नये ढंग से लाँघना है। राजे-महाराजे लखपतियों और करोड़पतियों से हुकूमत की बागडोर छीनकर किसानों को स्वयं सत्ता चलाने की शक्ति का निर्माण करने का दिन आज आ गया है।

हमें तो अँगरेजों और अवसरवादी हिन्दुस्तानी दोनों से लड़ना है। उनसे सावधान रहना है। माना कि यहाँ के धनिकों में से कुछ सेवक हमारे साथी बन कर किसानों की सेवा करने आयेंगे—किसानों की वे सेवा अच्छी तरह करें लेकिन किसानों के प्रतिनिधि और उनके मालिक न बनें। इस बात को आज किसानों को अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए। अपने नेता को पहचान लेना चाहिए। वोटों को रुपयों के बल से खरीदने की कोशिशें होंगी उससे भी सावधान होकर अपने हक की रक्षा करनी होगी। किसानों मजदूरों को अपने तपके के लोगों में से चुनकर एसेम्बलियों और बोर्डों में भेजना चाहिए। नये युग का श्रीगणेश १९४२ में हो गया है। एक बड़ी क्रान्ति के रास्ते से देश को अभी गुजरना है।

"सम्भव है यहाँ के सरमायेदारों और ब्रिटिश शासकों के साथ समझौता हो जाये और वे सरमायेदार अपनी रक्षा के लिए अँगरेजी फौज रखने में कभी हिचकेंगे नहीं और यह भी सम्भव है वह उस फौज का उपयोग यहाँ के समाजवादी विचारों को दबाने में करें।" इसलिये हमें और किसानों को खूब सावधान रहना है।

कुछ लोग यह समझते हैं कि अँगरेजों से जंग नहीं छेड़ना पड़ेगा। वैधानिक रास्ते से स्वराज्य प्राप्त हो जायेगा'। लेकिन डान्डेकर जी का पूर्ण विश्वास है कि एक बहुत बड़ा जंग अभी देश को और करना होगा। उन्होंने साफ शब्दों में कहा—"अब समाजवादी विचार के लोगों को साफ साफ कह देना चाहिए। मुझे स्वयं पर विश्वास है और जो कुछ होगा वह अपनी जिम्मेदारी पर। अपने संगठन पर। मुमकिन है बहुत से लोग वैधानिक प्रलोभनों में फँसकर असली ध्येय को भूल जायें लेकिन ४० करोड़ जनता वैधानिक मार्गों से अपना उद्धार कभी नहीं कर सकती। अंत में उन्हें यहाँ के सरमायेदारों से लड़ना होगा। नकली देश-भक्तों को मक्खी की तरह निकाल फेंकना होगा। नये लोगों को मौका देकर देश में समाजवादी राज्य-व्यवस्था कायम करनी होगी।

सन् १९४२ का आन्दोलन जनता का था। जनता ने स्वयं उस आन्दोलन को बड़ी बहादुरी से चलाया। हम लोगों ने कभी उसे गैर जिम्मेदारी का काम नहीं कहा। हमारे सबसे बड़े नेता श्री जयप्रकाश बाबू ने उसमें सहयोग दिया। मौत से जान की बाजी लगाकर जेल से निकले। जंगलों में छिपे। खेतों में रात काटी। भूखों रहे। नंगे पैर जंगलों में चले। देश में नया खून पैदा किया। अँगरेजों को चैलेंज दिया—'भारत छोड़ो' 'जेल खोल दो।' युवकों को संगठित किया। सारी जिम्मेदारी ले ली। पस्त हिम्मत जनता को धैर्य बँधाया। हमारे ऐसे युवक दिन-रात क्रान्ति को सफल बनाने में लगे रहे? हम थोड़े से युवक क्या कर सकते थे? हमारे पास साधन अल्प था। समय हाथ से निकल गया। जनता को नये मोर्चे की पूरी तालीम नहीं दी गई थी। धन नहीं था। हमारे सैनिक भूखों मरने लगे। रहने की जगह नहीं थी। हम हार गये। लेकिन हार कर भी अभी जीते हैं। जनता में एक नवीन विचार-धारा आ गई है। लेकिन पुराने विचारों की धुँधली भावुकता अभी तक मिटी नहीं है। झूठी भावुकता को भूलकर नया युग स्थापित करना है। १९४२ में इसका प्रारम्भ हो गया है।

जब मैं इस गठीले और कर्मठ व्यक्ति के जीवन पर कुछ सोचने लगता हूँ तब मन में बार बार यही सवाल उठता है कि यह मनुष्य किस धातु का बना है? इसमें कितना उत्साह है? कितनी उमंगें हैं? देश की सर्वहारा क्रान्ति के लिए कितना उत्साह है। थकना जानता ही नहीं। जीवन में समझौता नहीं बस संघर्ष ही संघर्ष। लोभों से कोसों दूर। प्रलोभनों में फँस नहीं सकता। नाम का इच्छुक नहीं। सेवा ही धर्मव्रत है। जेल ही घर है। खानाबदोशों जैसा जीवन है। न घर से सम्बन्ध है न पेट के लिए पैसेवालों की खुशामद। जब सोचता है तब किसान-मजदूरों की बात। चिन्तन करता है तो उन्हीं की दीन हीन दशा पर अपने विषय का पूरा पंडित है। परंगत विद्वान् है। बड़े-बड़े सुधारवादी और माने हुए तर्कवादी नेताओं को अपने समाजवादी विचारों का कायल बना देता है। उन्हें सोचने के लिए विवश कर देता है। कुछ समय के लिए तो वे यह मान ही लेते हैं कि समाजवाद ही अच्छा है।

सन् १९४२ में इस कर्मठ नेता ने बहुत से पराक्रम के काम किये हैं। 'लाल सेना' की मदद की। सरकार पीछे पड़ी थी फिर भी जल्दी गिरफ्तार नहीं कर सकी। गिरफ्तार करने के लिए सरकार ने काफी रुपये का इनाम भी घोषित किया था। मध्यप्रान्त के समाजवादी नेताओं में आपका स्थान सर्वप्रथम है। हर प्रकार के बन्धनों को तोड़कर आपने यहाँ समाजवादी विचारों का प्रचार बहुत वेग से किया है। थोड़े ही समय में आपने सारे प्रान्त में अपना खास स्थान बना लिया है। धन एक ऐसी बुरी चीज है कि यदि वह पास नहीं है या कोई मदद करनेवाला नहीं—तो काबिल से काबिल नेता पर्दे की ओट में छिपा रहता है। उसका कुछ मूल्य नहीं। यही हाल आपका रहा है। फिर भी आज यह मानना होगा कि धन न रहने से आप कभी निराश नहीं हुये। हिम्मत नहीं हारे। अपने सिद्धान्त को बेचा नहीं। अपनी धुन में लगे रहे। निरन्तर जनता और युवकों में समाजवादी विचार-धारा का प्रचार करते रहे। इसका परिणाम जो होना था वही हुआ। भाई मगनलाल बागड़ी, श्री श्यामलाल काश्मीरी और श्यामलाल श्रीवास आदि के सहयोग से नागपुर में 'लाल सेना' की स्थापना हुई। श्री मगनलाल बागड़ी संचालक बने। आपने युवकों को तालीम देने का भार अपने जिम्मे लिया। यदि लोगों का विचार कच्चा हुआ तो किसी समय भी वे दूसरी तरफ झुक सकते हैं, अपने बढ़ते हुये काम को छोड़ सकते हैं, मझधार में डूबने का अन्देशा रहता है। डान्डेकर जी ने उन्हें राजनीति विचार धाराओं से अवगत कराया। जहाँ पहिले मध्य-प्रान्त और बरार में बहुत ही इने-गिने उग्र समाजवादी थे वहाँ डान्डेकर जी के घोर परिश्रम और त्याग से आज हजारों युवक और कार्य-कर्ता समाजवाद के सिद्धान्त को अपना रहे हैं। उनका अपना एक मजबूत संगठन बन गया है। मुमकिन है थोड़े ही समय में वे लोग किसानों के लिये बहुत बड़ा काम कर सकें। स्वार्थियों की तूती बोलनी बन्द कर दें। रङ्गे नेताओं को जनता पहचान ले। श्री डान्डेकर जी भावी आन्दोलन की तैयारी में लग गये हैं।

श्री डान्डेकर जी को सन् १९४२ में मैंने एक दुकान में देखा। बम्बई और नागपुर की पुलिस आपके पीछे पड़ी हुई थी। अचानक बम्बई की एक दुकान में मैं कुछ सामान खरीदने गया था। वहाँ भाई डान्डेकर जी कुछ युवकों को आन्दोलन चलाने की बात समझा रहे थे। पीछे मैंने अपने एक साथी से पूँछा—यह कौन व्यक्ति है जो पुलिस चौकी के पास ही आन्दोलन की तैयारी करा रहा है। प्रोग्राम बता रहा है। क्या उसे कुछ भय नहीं। गिरफ्तार होने का अन्देशा नहीं, वह भी एक व्यापारी की दूकान पर। धीरे से मेरे साथी ने कान में कहा—ये ही डान्डेकर जी हैं। इनको गिरफ्तार करने के लिये ५००) रुपये का इनाम है। लेकिन यह और लोगों की तरह चूहे की बिल में छिपे रहकर काम करना नहीं जानते। जब तक बाहर रह सकते हैं बहादुरी और दिलेरी से काम करेंगे। कुछ लोगों का कहना है कि कम्युनिस्ट खुफिया पुलिस का काम कर रहे थे। लोगों को गिरफ्तार करा रहे थे। सम्भव है कहीं ऐसा हुआ हो। कुछ नये और अवसरवादी लोग कहाँ नहीं रहते? लेकिन मेरे सामने ऐसे कई उदाहरण मौजूद हैं जब अगस्त क्रान्तिकारियों की कई गतिविधियों का पूरा पता कम्युनिस्ट साथियों को था। भाई डान्डेकर जी से रोज कई कम्युनिस्ट साथी मिलते थे। बहसें होती थीं लेकिन उन लोगों ने कभी उन्हें गिरफ्तार नहीं कराया। मेरे साथ भी उन लोगों ने कभी विश्वासघात नहीं किया। जनता में बदनाम करने का एक नारा मिल गया है। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि यदि बम्बई के कम्युनिस्ट साथी चाहते तो हम लोगों की बुरी हालत कभी की पैदा हो सकती थी। पुलिस के पंजों में पड़ सकते थे। डान्डेकर जी कभी भी गिरफ्तार हो सकते थे। मैं इस घटना का उल्लेख इसलिये यहाँ कर रहा हूँ कि जनता समझे कि डान्डेकर जी के मित्र लोगों से मुसीबत के वातावरण में मिलने-जुलने में नहीं। कम्युनिस्ट साथियों से अपनी बात उन्हें समझाने की

उनसे हमारी दूसरी १९४५ में सिवनी जेल में उनके जीवन को बहुत निकट करने का मौका मिला। अपने के लिए उनके दिल में कैसा हर सुख दुःख में बराबर एक भी साथी के बीमार उसकी सारी तीमारदारी जिम्मे ले लेते थे। हर वक्त रहते थे। अपने विचारों प्रचार वे जेल की ऊँची भी निरन्तर करते रहते थे। सिद्धान्तों को समझाने के चलाते थे। राजनीति को बड़ी होशियारी से आसान शब्दों में कठिन से को समझा देते थे।

धनाभाव के कारण बात नहीं उठाई है। मैंने एक आबा जी, छूटने के बाद जायेंगे? उन्होंने तुरन्त बन्दियों में मैं ही ऐसा न रहने का ठिकाना है न किताबें। यहाँ भी देखते के पास काफी सामान है। पार्सल पर पार्सल फल की हैं; मेरे लिये कहाँ से आ में जो कुछ मिलता है चलता है। मैं तो श्रमजीवी नत करता हूँ तो खाने को जाने पर कहीं रहने की आपने देश के पीछे डाला है और स्वेच्छा ली है। आपकी राजनीति सामने मध्य-प्रान्त में बहुत मिलेंगे। इसका अनुभव कर बात-चीत करने पर सकता है।

तुलसी रत्नावली—गोस्वामी
समस्त ग्रन्थों का अध्ययन
विद्वान् सम्पादक ने कुछ
निकाले हैं, उन्हीं का यह
दूसरे शब्दों में गोस्वामी जी की
रचनाओं का यह निचोड़ है
१।) एक रुपया आठ आने।
इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

हर प्रकार की
धार्मिक, राष्ट्रीय एवं वीर-रस-पूर्ण पुस्तकें
मिलने का पता:—
राजपाल एण्ड सन्ज़,
(द०) अनारकली, लाहौर
लाइब्रेरियों व संस्थाओं को विशेष रियायत
(पुस्तकों का सूचीपत्र मुफ्त मँगवाएँ)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सपट लोशन

हाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.

सपट अँड कं. लि.
बम्बई नं. २.

...स का एक नवीन अद्भुत आविष्कार जिसने संसार को आश्चर्य में डाल दिया

...मस्ताना (रजिस्टर्ड) कोई साधारण तैल नहीं है बल्कि एक साइण्टिफिक ...नक आविष्कार है जिसने भारतवर्ष ही नहीं वरन् दुनिया के तमाम ...शास्त्र-विशेषज्ञों को हैरत में डाल दिया है। इस तैल से गत २५ वर्षों ...हताश असाध्य रोगी नवजीवन प्राप्त कर चुके हैं। हम आपको ...दिलाते हैं कि ऐसा गुणकारी तैल आप दूसरी जगह न पायेंगे। इसके ...से बाल्यावस्था की कुटेव से रगों की कमजोरी, सुस्ती कुटेव से पैदा हुई ...नसों का गर्भाधान के योग्य न रहना, नपुंसकता, शीघ्रपतन ...खराबियां एक हफ़्ते के अन्दर दूर हो जाती हैं। कद व बल को ...रग व पुट्ठों में बिजली की भाँति ताक़त भर जाती है। यह हर ...में लाभ करता है। छाले आदि का भय नहीं। आप आज ही एक शीशी ...सुख लूटिये। कीमत फ़ी शीशी ३=) तीन रुपया दो आना, दो शीशी ...), डाक-खर्च माफ़। मनीआर्डर =) यदि आपको धातुक्षीणता, शीघ्र ...दोष, प्रमेह आदि की शिकायत है तो धनी माननीय सहस्रों महान् ...प्रशंसित जगत्-प्रसिद्ध २५ वर्ष का आजमूदा वार्य-संजीवन सत ...कीजिए। मूल्य फी डिब्बा ३।-), डाक-खर्च माफ़. मनीआर्डर =)।

...का पता—रूपविलास कम्पनी, नं० ४८१, कानपुर।

"लक्स टॉयलेट साबुन आपकी त्वचा को सतेज एवं मनोहर बनाता है"

हुस्न बानू कहती है

★ फिल्मी स्टार्स का सौंदर्य-साबुन ! ★

LTS. 141-111-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

उत्तमोत्तम उपन्यास और कहानी-पुस्तकें

...शोध—लेखक, पंडित उमेशचन्द्र मिश्र। इस ...में प्रोफ़ेसर भारद्वाज नामक एक वैज्ञानिक ...की रहस्यपूर्ण कार्यवाहियों का वर्णन ...रोचक ढंग से किया गया है। इसे पढ़ते-पढ़ते ...ऐसे तल्लीन हो जायंगे कि बिना समाप्त किये ...हाथ से न छूटेगी। मूल्य १) एक रुपया।

...—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह ...सरोजकुमारी देवी नामक बंगला की एक ...उपन्यास-लेखिका की इसी नाम की रचना ...हिन्दी-अनुवाद है। इसमें मानव हृदय के अन्त-...तथा उसके कारण उत्पन्न होनेवाली अशान्ति ...बहुत ही उत्तमतापूर्वक विश्लेषण किया गया ...उपन्यास आदि से अन्त तक समस्यामय ...से परिपूर्ण है और इसका कोई भी ऐसा ...नहीं है जिसमें सरसता का अभाव हो। ...)।

...-क्रान्ति—लेखक, पंडित गौरीशंकर मिश्र, ...ए०, एल-एल० बी०। अनुभवी तथा विद्वान् ...ने इस उपन्यास में सेठ-साहूकारों तथा बड़े ...कहे जानेवाले व्यक्तियों की नर-पिशाचिता, ...तथा अन्य अधिकारियों के हथकण्डों और ...के लाभ से निरपराधों को अपराधी ठहराकर ...की नारकीय यातना भोगने के लिए विवश ...के माया-जाल का बहुत ही आकर्षक शैली में ...किया है। उपन्यास की एक-एक पंक्ति ...और हृदय में घर कर लेनेवाली है। ...)।

स्काटलैंड-यार्ड की जासूस स्त्री—यह पुस्तक लेडी मॉली की ९ जासूसी कहानियों का संग्रह है। इस पुस्तक की एक-एक कहानी इतनी मनोरंजक और कौतूहलवर्द्धक है कि आप इस पुस्तक को पूरी पढ़े बिना चैन नहीं पा सकते। लेडी मॉली के जितने कहानी-संग्रह अब तक प्रकाशित हुए हैं, यह उन सबसे अच्छा है। मूल्य ॥।-)।

संसार की प्रसिद्ध कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत शमशेर बहादुरसिंह, बी० ए०। इस पुस्तक में योरप के संसार-प्रसिद्ध कलाकारों की चुनी हुई कुछ कहानियाँ संगृहीत की गई हैं। ये सभी कहानियाँ बहुत ही कलापूर्ण और मनोरंजक हैं। यदि आपको योरप के कथा-साहित्य की बानगी लेनी हो, तो इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य १)।

मोपाँसा की चुनी हुई कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत गोपीनाथ जी क़ानूनगो। इस पुस्तक में मोपाँसा की चुनी हुई ग्यारह कहानियों का संग्रह किया गया है। मोपाँसा की रचनाओं की बानगी लेने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य १)।

व्रजनाथ का विवाह—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। आश्चर्यमयी घटनाओं से परिपूर्ण यह सामाजिक उपन्यास पढ़ने में ऐसा रोचक है कि एक बार आरम्भ करने पर फिर बिना समाप्त किये चैन नहीं पड़ता। मूल्य १।-)।

आनन्दमठ—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। मुसलमानों और अंगरेज़ों को हिन्दुस्तान से बाहर करने के लिए, बंगाल में वैष्णवों ने जो विद्रोह किया था, उसी का इस उपन्यास में उपन्यास-सम्राट श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने बड़ी ख़ूबी से वर्णन किया है। ऐसा सुन्दर चित्रण इस उपन्यास में है कि पढ़कर मातृ-भूमि के लिए दिल फड़क उठता है। मूल्य १।-)।

रजनी—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। यह उपन्यास-सम्राट श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का एक करुणापूर्ण अद्वितीय उपन्यास है। चमत्कारपूर्ण मनोवैज्ञानिक कहानी इस उपन्यास की एक ऐसी ख़ूबी है कि जिसके कारण पुस्तक पढ़ने का मोह संवरण नहीं किया जा सकता। मूल्य ॥≡)।

श्रीकान्त—(प्रथम और द्वितीय भाग)—अनुवादक, श्री रूपनारायण पाण्डेय। 'श्रीकान्त' शरद् बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना गया है। इसमें शरद् बाबू की अमर लेखनी ने उनके कलाकार का मंजा और सधा हुआ रूप चित्रित किया है, जो अत्यन्त मनोरम है। प्रत्येक भाग का मूल्य २)।

ब्राह्मण की बेटी—मूल लेखक, श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक, पंडित रूपनारायण पाण्डेय। शरद् बाबू भारत के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक माने जाते हैं। उनका यह उपन्यास लोक-प्रियता और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मूल्य सजिल्द पुस्तक का १।-)।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब आप ताज़ा और सुन्दर भारतीय गुलाबों को शाम के सन्धिप्रकाश में सिर हिलाते देखते हैं, तब आप को अपना प्रिय साबुन विनोलिया व्हाइट रोज़ का स्मरण आवेगा। आप के सौन्दर्य-वर्धन के लिये इस से उत्तमोत्तम वा अत्युत्कृष्ट सुगन्धित साबुन नहीं हो सकता। मृदु एवं फेनदार विनोलिया अतिशय कोमल त्वचा को सौम्यतापूर्वक साफ़ करता है...और आप के अतराफ़ सुगन्ध की एक मीठी महक लहराती है।

विनोलिया व्हाइट रोज साबुन

VWR. 20-111 HI VINOLIA COMPANY LIMITED, LONDON, ENGLAND

Estd. 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड [illegible]

सिन्हा होमियामेडिकल कालेज एण्ड [illegible]

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के [illegible] परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S. १०) H. १५) H.M.D.S. २५)। पुस्तक—अ० पारिवारिक १) [illegible] १००० रेडलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्शनरियाँ १॥) ऑपरेशन [illegible] कीमिया १॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायेंगी। [illegible] माफ़—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≡) इाम। [illegible] परेलु बक्स ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउरड।

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.)

बच्चों के लिये भी!

"आन्तरिक सफाई अच्छे स्वास्थ्य की पहली सीढ़ी

'स्वास्थ्य के लिये अन्दरूनी सफाई सर्वप्रथम [illegible] करणीय है—' अन्दरूनी सफाई के लिए एण्ड [illegible] का नियमित अथवा आवश्यकतानुसार सेवन [illegible] काफी है। और बच्चे इस स्वास्थ्यवर्द्धक [illegible] पसन्द करते हैं। इसकी प्रत्येक खुराक सन्तु [illegible] काम करती है। एण्डरूज बच्चों और बूढ़ों के लि [illegible] समान रूपसे रेचक है। यह औषधि शेषवर्ती [illegible] नहीं डालती है। देखिये एण्डरूज स्वास्थ्यको [illegible] प्रकार अच्छा बनाता है :—

प्रथम...एण्डरूज मुंह और जीभको साफ [illegible] तरोताजा बनाता है।

द्वितीय ..एण्डरूज पेटको व्यवस्थित करके [illegible] को साफ करता है।

तृ [illegible] ..एण्डरूज यकृतको ठीक रखता और [illegible] धिक्यको रोकता है।

अन्ततः—एण्डरूज अन्दरूनी सफाई कर कब्जि [illegible] दूर भगाता और रक्तको परिष्कृत और [illegible] रखता है।

ANDREWS

एण्डरूज लिवर साल्ट

[illegible] ऊँचा — तरोताजा — [illegible]

शारीरिक उष्णता के लिये...

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

आज से ही शुरु कीजिए, सर्वत्र मिलता है।

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली तलुवों और आंखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग में आग सी जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, जड़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढ़ा बालक वृद्ध, पुरुष स्त्री सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक हानिरहित है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निस्संकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके शीतल, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

यू० पी० प्रतिनिधि दोसर एण्ड को०, विरहना रोड, कानपुर।

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

साप्ताहिक मूल्य ७॥)
वार्षिक मूल्य =)

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

२५ अगस्त, १९४६ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 25th August, 1946

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य 2 आना

भारतीय विधान-परिषद् क्या है?
जहाँ राष्ट्र पहले था वहीं अब भी है?

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्रियों का भयानक शत्रु

प्रदर रोग जिसको लोग लिकोरिया भी कहते हैं यह स्त्रियों की सुन्दरता और जवानी को नष्ट करनेवाला भयानक शत्रु है। लज्जावश बेचारी रोग को छिपाये रहती हैं और दिन-रात घुला करती हैं। यह उनकी भूल है। भयानक रोग का इलाज कराने में लापरवाही नहीं करनी चाहिए। इस बीमारी से स्त्रियों के गुप्त शरीर से लाल, काला, धुमैला या श्वेत रंग का बदबूदार पानी या लेस-सा निकलता रहता है, महीना ठीक समय पर नहीं होता है, जिसके कारण कमर, रीढ़, सिर में दर्द, शरीर में जलन, मन मलीन, उठने-बैठने में थकावट, भूख का कम लगना, बदन दुबला और कमजोर हो जाना, मूर्छा, बेहोशी आदि रोग हो जाते हैं। और सन्तान नहीं होती, और यदि होती भी है तो दुबली और कमजोर होती है। ऐसी अवस्था में भारत-विख्यात वैद्यरत्न सत्यदेव ने अपूर्व शक्ति प्रदान करनेवाली २५ वर्ष की आजमूदा **नारी संजीवन** नामक दवा का आविष्कार किया है। जिसके द्वारा आज तक सहस्रों स्त्रियों को इस भयानक रोग के पंजे से छुड़ाया है। इस नारी संजीवन के सेवन से तमाम बीमारियाँ दूर होकर स्त्रियाँ सुन्दर और तन्दुरुस्त हो जाती हैं और सन्तानें सुन्दर बलवान् दीर्घायु पैदा होती हैं। यदि आवश्यकता हो तो आज ही पत्र डालकर एक डिब्बा **नारी संजीवन** को मँगाकर इसके अपूर्व गुणों का चमत्कार देखें। क़ीमत एक डिब्बा ३=) डाक ख़र्च माफ़, पैकिंग ख़र्च अलग।

मँगाने का पता—

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

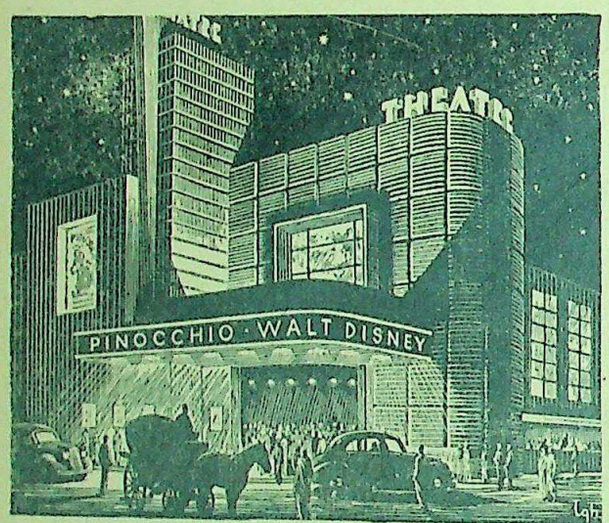

आज के सिनेमाओं का निर्माण।

आज, सिनेमा फिल्म (चलचित्र) शिक्षा और शान्ति की सम्भवतः सबसे अधिक शक्तिशाली तथा सर्व प्रिय साधन बनगई है यद्यपि उसका मुख्य कार्य आँशिक रूपसे कला तथा आँशिकरूप से कौतूहल उत्पन्न करना है, तथापि यह भी एक महत्वपूर्ण कार्य है। यही कारण है कि अनेकों रंगशालाओं के मालिक सस्ते मूल्य पर विशिष्ट एवं आकर्षक रंगशालाएँ बनाने के लिए कॉंक्रीट निर्माण का ही सहारा लेते हैं।

कॉंक्रीट, डीजाइनर (कल्पक) को हाथ की चित्रकारी तथा धरातल की सुन्दर आकृतियों तथा बनावटों के निर्माण के लिए पूर्ण सुविधा प्रदान करता है जिससे वह अपनी इच्छानुसार चित्रकला का प्रदर्शन कर सकता है। महान शक्ति, अग्निरोधिता, स्थायीत्व और मरम्मत की अपेक्षा न रखना इत्यादि इसके स्वाभाविक गुण हैं। इतनेपर भी यह धन को बचाने वाला है क्योंकि इस सस्ते उपादान द्वारा निर्मित फर्श, ढाँचे तथा चित्रकारियाँ एक ठोस स्तम्भ की भाँति दृढ़ समझी जाती हैं। कॉंक्रीट के निर्माण सम्बन्धी लाभों को अधिकाधिक प्रगतिशील बनाने के लिए दि कॉंक्रीट एसोशिएशन आफ इंडिया (७० क्वीन्सवे न्यू देहली) के टेक्निकल स्टाफ की सहायता प्राप्त हो सकती है।

दि सीमेंट मार्केटिंग कं. आफ इन्डिया लि.

खांसी और सर्दी में विश्वस्त और अचूक

सिरोलिन

'रुचि'

"आन्तरिक सफाई—स्वास्थ्यकी पहली सीढ़ी है"!

सवेरे सबसे पहले...हाथ मुंह धोनेसे पहले ...आन्तरिक सफाई स्वास्थ्य और सौन्दर्यकी जड़ है। एण्डरूजकी एक खुराक आपको अन्दरूनी सफाई कर देती है...चर्मको साफ करती बीमारियोंसे आपकी रक्षा करती है। पेण्डरूजका प्रभाव धीरे-धीरे किन्तु पूर्ण रूपसे पड़ता है। नियमित या आवश्यकतानुसार सेवन कीजिये। प्रथम...एण्डरूज मुंह और जीभको साफ करके तरोताजा बनाता है।

द्वितीय...एण्डरूज पेटको व्यवस्थित करके अम्लको साफ करता है।

तब...एण्डरूज यकृतको ठीक रखता और पित्त-विकृतको रोकता है।

अन्ततः—एण्डरूज अन्दरूनी सफाई कर कब्जियत दूर भगाता और रक्तको परिष्कृत करता है।

ANDREWS

एण्डरूज लिवर साल्ट

टॉनिक — तरोताजा — बलवर्द्धक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक

[रविवार, २५ अगस्त, १९४६

[...]८, संख्या ५२]

देश-विदेश में कहाँ क्या हो रहा है ?

[...] आजम मिस्टर जिन्ना आपने [...] सरकार में सहयोग देने [...] कर दिया है।

[...] ने रूस को सूचित किया है [...] के सैनिक नियंत्रण में [...] की रूसी माँग के विरुद्ध है।

[...] है कि ब्रिटेन का भी यही रुख [...] है कि अमेरिकन पत्र में चार [...] कही गई हैं—

[...] दर्रेदानियाल की रक्षा [...] रूप से सोवियट और टर्की [...] रूसी प्रस्ताव से सहमत नहीं [...]। अमेरिका रूस के इस [...] सहमत नहीं हो सकता कि दर्रे- [...] जहाजरानी के सम्बन्ध में [...] के तटवर्ती राष्ट्रों में समझौता [...] चाहता है कि सारा [...] राष्ट्र-संघ के सिद्धान्तों के [...] किया जाय। दर्रेदानि- [...] में संशोधन के सम्बन्ध [...] अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाया [...] प्रसन्नता से उसमें भाग

* *

[...] संधि में संशोधन की [...] मिस्री प्रतिनिधि के निकट- [...] क्षेत्रों का कहना है कि [...] गई है।

* *

[...] अफ्रीका के भारतीय सत्या- [...] सत्याग्रह का दूसरा मोर्चा [...] है। आज रात को उन्होंने [...] कांग्रेस के चेयरमैन मिस्टर [...] जमीन पर अपने दो तम्बू [...] से यूरोपियन वहाँ पर [...] किन्तु अभी तक कोई घटना [...] जिस जमीन पर उन्होंने [...] हैं उन पर वे अपना [...] आज्ञा के नहीं कर सकते। [...] कारपोरेशन की भूमि [...] है जिसके कारण उन [...] के स्थान पर जबर्दस्ती घुस [...] में दंडित होना पड़ा था।

* *

[...] सोरेवाया और बाइटन [...] क्षेत्र से सरकारी तौर पर [...] है कि इंडोनेशियन सैनिक [...] दस्तों पर मशीनगन [...] छोड़ रही हैं। बटाविया के [...] में भी एक आक्रमण का समाचार मिला है और पूर्वी क्षेत्रों में इंडोनेशियन सेनायें मित्र-सेनाओं से मुकाबला कर रही हैं। शहर के गश्ती दस्तों पर कुछ आक्रमणकारियों ने, जिनका पता नहीं है, गोली चलाई।

* * *

इंडोनेशियन प्रजातन्त्र के प्रथम वार्षिकोत्सव पर, जो कल होनेवाला है, भारत स्थित इंडोनेशियनों के संगठन को श्रीमती सरोजनी नायडू, मि० एम० ए० जिन्ना और श्री पी० सी० जोशी ने बधाई के सँदेश भेजे हैं।

* * *

यहाँ यह संदेह किया जा रहा है कि सारे फिलिस्तीन में किसी समय कोई भी घटना घटित हो सकती है। ब्रिटिश सेनायें आतंकवादियों की किसी भी संभावित कार्रवाई का सामना करने के लिए बिलकुल तैयार हैं।

दल के १८ सदस्यों को फाँसी का दंड दिया गया है और संभवतः यह उसी के परिणामस्वरूप है कि यह एहतियाती कार्रवाई करनी पड़ी है।

सारा नगर कल सशस्त्र कैम्प की भाँति दिखाई दे रहा था।

* * *

नील नदी में बाढ़ आ जाने से अधिकारीगण उसके तट पर बसे कई नगरों को खाली कराने का विचार कर रहे हैं। एक मन्त्री ने बताया है कि बाढ़ से ४०,००,००० एकड़ भूमि की रक्षा करने के लिए खड़ी मक्की के बहुत से खेत नष्ट करने होंगे। परन्तु कल से पानी कुछ घटा है जिससे खतरा कुछ कम हुआ है।

* * *

हैदराबाद रियासत में पुलिस ने एक प्रकार से स्त्रियों के खिलाफ अमानुषिक 'जेहाद' छेड़ दिया है। पुरुषों के दोष के लिए स्त्रियों पर अत्याचार किये जाते हैं—ऐसे अत्याचार जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। भय से जनता का साहस टूट गया है। सर्वथा लोग भय से त्रस्त हैं। वातावरण विषाक्त हो गया है। छोटी-छोटी बातों के आधार पर स्त्रियों की लज्जा लूटी जाती है। आज हैदराबाद रियासत की यही दशा है।

* * *

नामावली तैयार हो गई और वायसराय को भेज दी गई है। यदि दिल्ली और लंदन में विचार-विमर्श के लिए एक दिन दें तो नई सरकार की घोषणा बृहस्पतिवार को हो जानी चाहिए। दूसरी खबर है कि नये सदस्यों की नामावली पर अंतिम निर्णय होने में दो-तीन दिन लगेंगे। जो भी हो शनिवार से पहले सरकारी घोषणा अवश्य हो जायगी।

* * *

लाहौर में अफवाह फैली है कि पंजाब के प्रधान मंत्री सर हिज्र हयात खाँ तिवाना सम्मिलित पार्टी का नेतृत्व त्याग कर अस्थायी सरकार में जा रहे हैं।

* * *

युक्तप्रान्त के सारे जेल सुपरिन्टेन्डेन्टों को युक्तप्रान्तीय सरकार ने एक गश्ती पत्र भेज कर आज्ञा दी है कि कैदियों के साथ मानवीय व्यवहार किया जाय। गश्ती पत्र में कहा गया है कि इस आज्ञा का उल्लंघन करने पर उस पर गम्भीर रुख किया जायगा।

राष्ट्रपति पंडित जवाहरलाल नेहरू आप राष्ट्रीय सरकार के निर्माण में संलग्न हैं।

* * *

कलकत्ते में होनेवाले आतंकपूर्ण कार्यों के सम्बन्ध में मि० जिन्ना कहते हैं कि मैं इन हिंसात्मक कार्यों की जोरदार शब्दों में निन्दा करता हूँ और उन लोगों के साथ मेरी हार्दिक सहानुभूति है जिन्हें इस उपद्रव के फलस्वरूप हानि पहुँची है। अभी मुझे यह नहीं मालूम कि इस जन-धन की हानि के लिए कौन उत्तरदायी है।

* * *

'हिन्दुस्तान स्टैण्डर्ड' पत्र का अनुमान है कि कलकत्ते के दंगों में लगभग २००० आदमी मरे। और ८००० घायल हुए।

अस्पतालों, सहायता पहुँचानेवाली संस्थाओं, एम्बुलेन्स और रेड-क्रास की खबरों से मालूम हुआ कि २००० से कम आदमी नहीं मरे हैं। लगभग २५०० स्थानों में छोटी बड़ी आगें लगाई गई हैं। ऐसा अनुमान है कि लगभग ५ करोड़ रु० की हानि हुई है।

कल रात को कुछ घायल मनुष्यों को एम्बुलेन्स से अस्पतालों में पहुँचाया गया, उन्हें गोलियों के घाव लगे हैं।

* * *

आर्य-समाजियों के आन्दोलन का निवारण करने के लिए एक सत्यार्थप्रकाश विरोधी कमेटी बनाई गई है। लाहौर के प्रोफेसर इनायतुल्ला खाँ उसके अध्यक्ष हैं। सत्यार्थप्रकाश विरोधी कमेटी के कुछ सदस्यों ने सिंध के मुस्लिम लीगी प्रधान मंत्री मि० गुलाम हुसेन हिदायतुल्ला से भेंट की।

* * *

कांग्रेस कार्यकारिणी द्वारा निम्नलिखित कोटा प्रांतों को इस वर्ष के लिए निश्चित किया गया है।

अजमेर १०००),	महाकोशल २५००)
आन्ध्र २५००),	महाराष्ट्र ३०००)
आसाम १०००),	नागपुर २०००)
बिहार ५०००),	सीमाप्रान्त १०००)
बंगाल १०,०००),	पंजाब ५०००)
बम्बई १०,०००),	सिंध २५००)
दिल्ली २०००),	तामिलनाड ३०००)
गुजरात ५०००),	उत्कल १०००)
कर्नाटक २०००),	यू० पी० ७५,०००)
केरल १०००),	विदर्भ २०००)
बलूचिस्तान ५०)।	

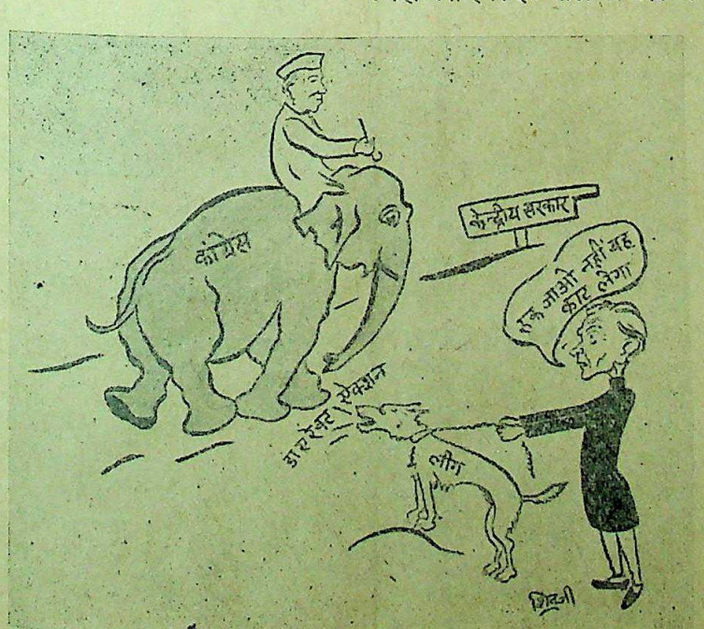

जिन्ना—अब आगे कैसे बढ़ोगे ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

कलकत्ता का दंगा

मुस्लिम लीग की हुकूमत के जिस काल्पनिक नग्न चित्र का वर्षों से अनुमान लगाया जा रहा था उसका प्रत्यक्ष दर्शन 'प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस' के अवसर कलकत्ता में पूर्ण रूप से दिखाई पड़ा। ब्रिटिश राज-सत्ता ने किसी प्रकार भारत से हटने का इरादा भी किया तो मिस्टर जिन्ना की जिद फिर से अड़ंगा उत्पन्न कर रही है। ब्रिटिश मंत्रिदल का प्रस्ताव कांग्रेस, लीग और ब्रिटिश मंत्रिदल तीनों को स्वीकार हो गया था। बात जो तय होने को रह गई थी वह थी—अस्थायी सरकार के निर्माण की, कांग्रेस ने लम्बे समय के प्रस्ताव को स्वीकृत किया। मुस्लिम लीग उसी समय मिलते हुए लड्डू—अस्थायी सरकार को बिना किसी त्याग अथवा कमाई को क्यों छोड़ती! उसने त्रुटिपूर्ण प्रस्ताव को भी स्वीकार किया, अस्थायी सरकार के लिए नामावली भी भेज दी परन्तु कांग्रेस के इनकार करने पर लार्ड वैवेल ने उस अस्थायी सरकार की वार्ता को वहीं दफना दिया। ठीक भी था एक साम्प्रदायिक दल के एकाधिपत्य को कैसे स्वीकार किया जाता? मिस्टर जिन्ना की यह एक करारी हार थी। विधान-सम्मेलन के चुनाव में भी राष्ट्रीय मुसलमान एक दो नहीं बल्कि कई की संख्या में चुन लिए गये। यही लीग के नेताओं की चिढ़ थी। तारीख १६ के प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस के मिस्टर जिन्ना ने शान्तिपूर्वक मनाने की राय दी थी। किन्तु बंगाल के प्रधान मंत्री सुहरावर्दी साहब खुलकर कांग्रेस और हिन्दुओं से लोहा लेने की अपील करते हैं और तारीख १६ को सारे दफ्तरों को छुट्टी देकर बन्द कर देने की आज्ञा देते हैं इसका अर्थ स्पष्ट है कि अस्थायी सरकार के लिए द्वार बन्द कर दो। हुआ भी वही जो लीगी नेता चाहते थे। उसी दिन कलकत्ते की सड़कें रक्तरंजित हो गई हैं, दूकानों के ताले तोड़कर लूट आरम्भ हो गई। नागरिकों (विशेष कर नेताओं) के मकानों में आग लगाकर होली का दृश्य उपस्थित किया गया। वही पाकिस्तानी शासन का शुभ चिह्न है जो मिस्टर जिन्ना और उनके साथी समय समय पर गरजते थे कि पाकिस्तान में किसी भी अल्प-सम्प्रदाय में जन-धन की हानि न होगी। उसके अधिकार सुरक्षित रहेंगे। लीग के अध्यक्ष की आज्ञाओं का पालन भी नहीं किया जाता या यों कहा जाय कि कायदे आजम का भीतरी उद्देश्य गुंडापन, लूट और डकैती से ओत-प्रोत है केवल वे मौखिक वक्ता हैं। यदि किसी संस्था का अध्यक्ष शान्ति से 'दिवस' मनाने का आदेश देता है तो फिर ऐसी अशान्ति क्यों? तीन दिन तक कलकत्ते में नादिरशाही जारी रही, फिर भी मिस्टर जिन्ना कहते हैं—"मैं घायलों और मृतकों के प्रति सहानुभूति प्रकट करता हूँ परन्तु यह नहीं जानता कि इस अशान्ति का जिम्मेदार कौन है?" इसके अतिरिक्त कायदे आजम यह नहीं कह सकते कि बंगाल में ही क्यों १६ तारीख को छुट्टी-दिवस हो गया जब कि सिन्ध में लीगी मंत्रिमंडल के बावजूद भी और छुट्टी की घोषणा करने पर भी वहाँ के गवर्नर ने सार्वजनिक छुट्टी घोषित की आज्ञा पर हस्ताक्षर नहीं किया। इससे प्रकट होता है कि भारत के इस महान् नगर कलकत्ते की दंगे के जिम्मेदारी में बंगाल के गवर्नर बारोज़ का भी हाथ है। अशान्ति दूर होने के अभी तक कोई लक्षण दूर नहीं हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में साम्प्रदायिक जैसी विषैली नागिन समस्या को ब्रिटिश शासक बंगाल से तभी दूर कर सकेंगे जब कि गवर्नर स्वयं वहाँ का शासन-भार लेंगे। यह समस्या उन्हीं के पूर्वजों (लार्ड चेम्सफोर्ड और मिस्टर मांटेग्यू) की पैदा की हुई है।

केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार का निर्माण हो रहा है। लार्ड वैवेल, पंडित जवाहरलाल नेहरू से सरकार बनाने पर वार्ता कर रहे हैं। ऐसे अवसर पर लीग अपनी 'प्रत्यक्ष कार्रवाई' करके उस वार्ता को भंग करने और ब्रिटेन को डराने की धमकी दे रही है। परन्तु सिद्धान्तवादी और वीर पुरुष इन धमकियों से थोड़े ही डरेंगे। लीगी गुंडापन का प्रत्यक्ष प्रमाण कलकत्ता में डाक्टर विधानचन्द्र राय के मकान और बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के दफ्तर को जलाने से स्पष्ट प्रकट है। पंडित नेहरू ने इस गुंडागीरी से मुकाबला करने का विचार प्रकट किया है। यद्यपि अस्थायी सरकार प्रान्तीय सरकार के कार्यों में सीधे बहुत कम हस्तक्षेप कर सकेगी। परन्तु क्या शान्ति-व्यवस्था के लिए उसकी जिम्मेदारी नहीं है। इससे यह कदापि सम्भव नहीं कि पंडित नेहरू की सरकार और लार्ड वैवेल ऐसी रक्त-रंजना देखते रहेंगे। इसके अतिरिक्त बंगाल के प्रधान मंत्री की यह गर्जना है कि—"हम अस्थायी सरकार के मातहत नहीं रहेंगे। हम उससे स्वतन्त्र हैं।" यह गर्जना प्रान्तीय स्वराज्य के नाम पर ठीक है परन्तु यह भी ठीक है कि शान्तिप्रिय नागरिकों को सोते और सड़कों पर चलते हुए खुले आम कोई भी सरकार हत्या करने का प्रोत्साहन और आज्ञा दे? बंगाल के सभी मंत्री क्या खुलकर यह नहीं कहते थे—'हम पाकिस्तान के लिए खून बहा देंगे।' 'खून बहाने में' श्लेष शब्द हो सकता है। आज वही लीग सत्य कर रही है। परन्तु केन्द्रीय सरकार इस खून की रक्षा की भी जिम्मेदार है। कलकत्ता का शान्तिप्रिय नागरिकों का रक्त-पात लीगी मंत्रिमंडल के लिए शुभ चिह्न न होगा बल्कि उनके लिए एक अभिशाप है। केन्द्रीय सरकार और लार्ड वैवेल को भी इन नागरिकों की रक्षा के लिए कमी न करना चाहिए।

स्वर्गीय एच० जी० वेल्स

सुप्रसिद्ध उपन्यासकार इतिहासज्ञ और अर्थशास्त्री एच० जी० वेल्स के निधन से संसार में एक महान् विचारक का अभाव हो गया। मिस्टर वेल्स की संसार के महानतम व्यक्तियों में गणना होती थी। अँगरेजी साहित्य में वह चोटी के कलाकार थे। उन्होंने साहित्य का कोई ऐसा विषय अछूता नहीं छोड़ा जिससे मानव समाज का कल्याण होता हो। ज्ञान का कोई ऐसा विषय नहीं बचा जिस पर वेल्स ने अपनी सफल लेखनी न चलाई हो।

श्री एच० जी० वेल्स का बाल्यकाल बड़े संकटों से व्यतीत हुआ। उन्हें अध्यापक जीवन से शिक्षाध्ययन का अवसर मिला। पढ़ लिखकर ही पत्रकार कला में पारंगत हुए। इन तमाम संकटों के झेलते हुए भी उन्होंने साहित्य को ही अपना लक्ष्य बनाया। साहित्य ही उनकी जीविका, परोपकार और संसार की एकमात्र सर्वप्रिय वस्तु बन गई। सन् १८९५ वेल्स के लिए एक प्रकाशमान वर्ष था। उसी वर्ष वेल्स की प्रथम पुस्तक 'दि टाइम मशीन' प्रकाशित हुई। इसके बाद तो वेल्स की पुस्तकें प्रकाशित ही होती रहीं। उन्होंने अपने ३२ वर्ष के साहित्यिक जीवन में ८९ पुस्तकों की रचना की। सन् १९२५ के पश्चात् भी वेल्स ने दर्जनों पुस्तकें लिखी हैं। प्रारम्भ से लेकर आज तक वेल्स शान्तिप्रिय कलाकार रहे हैं। उन्हें अशान्ति और लड़ाई-झगड़ों में रहना पसन्द नहीं था। उनका विचार था, संसार को एक सरकार के अन्दर रहना चाहिए।

वेल्स ने दो शादियाँ कीं। प्रथम स्त्री के देहान्त के पश्चात् जब वे जीवजन्तु विद्या के अध्यापक थे तो दूसरी शादी की। इनकी रचनाओं और पुस्तकों में अपनी स्त्री के प्रेम की बहुत कुछ चर्चा है।

प्रसिद्ध कलाकार जार्ज बर्नर्डशा ने वेल्स के सम्बन्ध में एक बार कहा था, १९वीं शताब्दी का एक [illegible] सोचता कुछ है और लिखता [illegible] दोनों को असाधारण देन [illegible] है। यह एक महापुरुष की [illegible] वेल्स को एक अद्वितीय पुरुष [illegible] वे मानव-जीवन की आलोचक [illegible] साहित्य के इतिहास और [illegible] सर्वदा अमर रहेंगे।

गांधी-मीमांसा

इस पुस्तक में प० राजकु[illegible] बी० ए० एल-एल० बी० ने [illegible] व्यक्तित्व और सिद्धान्तों की [illegible] विवेचना की है। इसे आद्योपान्त [illegible] पर गांधीवाद पूर्ण रूप से हृदयंग[illegible] है। विद्वानों ने मुक्तकंठ से [illegible] की है। पृष्ठ-संख्या ८५०। [illegible] प्रति का मूल्य ४) चार रुपये।

साहित्यालोचन

इसका संशोधित संस्करण तैयार है। इसमें संस्कृत के आचार्यों के साहित्य-सम्बन्धी के अतिरिक्त पाश्चात्य साहित्य साहित्य मर्मज्ञों के मत का [illegible] ही मौलिक ढंग से कराया [illegible] पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक [illegible] पाँच रुपये पाँच आने।

इंडियन प्रेस, लि० [illegible]

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एल० एम०
धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

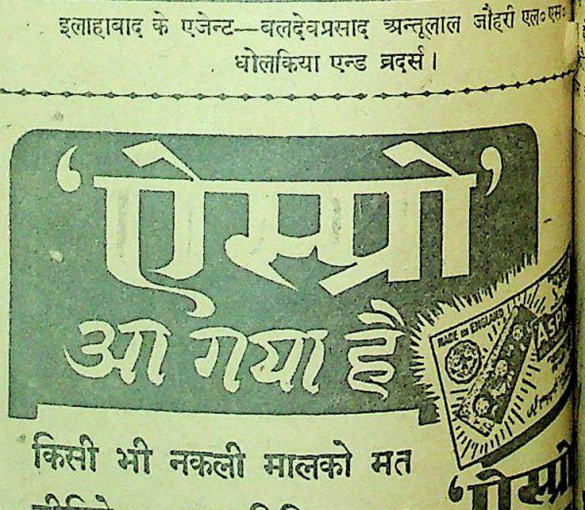

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधान-निर्मात्री परिषद् क्या है?

भारतीय राजनीति में एक नया अध्याय प्रारम्भ हुआ है

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

विधान-परिषद् की स्थापना क्यों हुई और वैधानिक दृष्टि से उसकी क्या स्थिति है, इस लेख में राजनीति के विद्वान् लेखक ने, इस पर विस्तृत प्रकाश डाला है। इसके सिवा लेखक ने यह भी बतलाया है कि विधान-सम्मेलन की सफलता किस प्रकार हो सकती है और राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए उसका उत्तरदायित्व कितना है? लेख विचारणीय तथा पठनीय है।

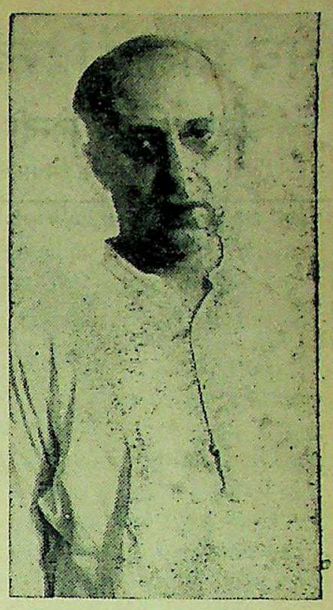

राष्ट्रपति पंडित जवाहर लाल नेहरू विधान-सम्मेलन में भाग ले रहे हैं।

रचना से भारतीय राजनीति में एक नया पर्व प्रारम्भ हुआ है, यह कहना अधिक ठीक होगा।

सत्ता के हस्तान्तरित होने की सूचना

भारत का नवीन विधान सभा के चुने हुए ३९२ सदस्य बनायेंगे, यह बात नहीं है। इतनी बड़ी मजलिस इस काम के लिए उपयुक्त नहीं हो सकती। यह कार्य तो कुछ चुने हुए विद्वान् पण्डित करेंगे और यह भी सम्भव है कि यह विधान सभा के बाहर के लोग ही करें। कमेटियों के कार्य को यह विशाल सभा पुष्ट करेगी, तभी वह माना जायेगा, यह ठीक है। यही क्यों बाद में इसके द्वारा बनाये गये विधान पर जनमत लिया जायेगा और यदि वह पास कर दे, तभी वह भारतीय राष्ट्र का विधान माना जायगा, अन्यथा फ्रांस के समान भारत में भी दूसरी विधान-सभा बुलानी होगी और उसके लिए नया चुनाव करना होगा। इसका बुलाना सूचित करता है कि राज्य के अन्दर एक नूतन प्रभुत्व शक्ति का उदय हुआ है।

तीन प्रकार की विधान-सभाएँ

भारतीय विधान-सभा से पहले भी अनेक विधान-सभायें विधान बनाने के लिए विश्व-इतिहास के महत्त्वपूर्ण अवसरों पर बैठी हैं। ये साधारणतः तीन प्रकार की हुई हैं। अमरीकी उपनिवेश, आयर्लैंड, चेकोस्लोवाकिया, युगोस्लेविया, फिनलैंड, पोलैंड, एस्टोनिया, लैटाविया, लिथुनिया आदि में विधान-सभा का तब निर्माण हुआ जब जनता ने विद्यमान साम्राज्यवादी शासन को उखाड़ फेंका और देश स्वाधीन हो गया। श्री जयप्रकाश-नारायण इसी कारण कहते हैं कि भारतीय विधान-सभा को बुलाने का अभी उपयुक्त अवसर नहीं आया है। क्योंकि देश में ब्रिटिश शासन और ब्रिटिश सेना मौजूद है। इनके होते हुए विधान-सभा कैसे बैठ सकती है?

दूसरी श्रेणी में फ्रांस, जर्मनी और आस्ट्रिया आते हैं, जिन्होंने निरंकुश स्वेच्छाचारी शासन का अन्त करके जनतन्त्र की स्थापना की थी। भारत में यह भी स्थिति नहीं है। तीसरा वर्ग है कनाडा, आस्ट्रेलिया, स्विट्जरलैंड और अमरीका की स्टेटों का, जहाँ पर कि विधान-सभा इसलिए बुलाई गई थी, जिससे स्वतन्त्र रूप से विद्यमान राज्य अपना यूनियन बना सकें। इनमें से अनेक विधान-सभाओं की स्थापना के साथ देश में क्रान्ति हुई और शासन-सत्ता एक पार्टी या एक देश से दूसरे के हाथ में चली गई। विधान-सभा का बनना नये हाथों में शासन चले जाने का चिह्न है। विधान-सभा स्वतः इसका एक उपाय और साधन है। भारत में विधान-सभा की स्थापना द्वारा शासन-सभा हस्तान्तरित करने के लिए शासकों को बाध्य किया जायगा। यही इसका महत्त्व है। स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए भारत के हाथ में एक नया अबोध अस्त्र आया है। यह एक नया परीक्षण है। बदलते समय को देखकर यह अनहोना भी नहीं कही जा सकती। अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय शक्तियों के प्रबल दबाव से साम्राज्यवादी सत्ता शासन सत्ता हस्तान्तरित करने को बाध्य हुई हो और उसके साधन के रूप में विधान-सभा की स्थापना की गई हो, यह इतिहास में पहली घटना है। यदि यह सफल हुई तो इतिहास में एक नया अध्याय आरम्भ होगा और यदि असफल रही, तो भारत को भी वही मार्ग अपनाना होगा, जो अन्य देशों ने अपनाया है और जिसकी ओर भारत का लेनिन श्री जयप्रकाश-नारायण संकेत कर रहा है।

असफलता भी सम्भव है

सभी विधान-सभाएँ सफल ही नहीं हुई हैं। अभी हमारी आँखों के सामने ही १९४५ में बैठी फ्रेंच विधान-सभा सफल नहीं हुई। इसका कारण क्या है? जो विधान-सभा अपने बाहर की राजनीतिक शक्तियों को अपने नियन्त्रण में नहीं रखती वह सफल नहीं होती। वास्तविक राजनीति से दूर होकर जब विधान सभा आदर्शों और सिद्धान्तों के चक्कर में पड़ जाती है, तो वह सफलता के मार्ग से हट जाती है। १९१७ में रूस में ऐसा ही हुआ। रूसी विधान-सभा बुर्जुआ विधान बना रही थी, मगर बाहर बोलशेविज्म की शक्ति बढ़ रही थी और उसने शासन-सत्ता ही केवल नहीं ले ली, बल्कि विधान बनाने का अधिकार भी ले लिया और नये आधार पर नया राज्य स्थापित किया। इससे पहले किया गया सारा कार्य और बना-बनाया विधान मिट्टी में मिल गया। भारत में भी यह अवस्था आ सकती है, यदि कांग्रेस-सोशलिस्ट, फारवर्ड ब्लाक, कम्युनिस्ट और लीग की सम्मिलित ताकत कांग्रेस से बढ़ जाय और ये कांग्रेस से शक्ति और शासन-सूत्र छीन लें। पर इसकी सम्भावना कम है। इन चारों पार्टियों में एकता सम्भव नहीं है। इसलिए यदि कांग्रेस बुद्धिमानी और दूरदर्शिता के साथ दृढ़ता से काम ले तो विधान-सभा के असफल होने का कोई कारण दिखाई नहीं देता। अन्तर्कालीन गवर्नमेंट बनाने का भार कांग्रेस पर है। यदि लीग के वर्तमान रवैये को देखते हुए, पाकिस्तान की माँग से जोंक की तरह लिपटे रहते हुए कांग्रेस साहब के साथ आगे बढ़ जाय और लीग की उपेक्षा कर दे, तो वह देश में एक नई शक्ति पैदा करने में समर्थ होगी, जो वस्तुतः राष्ट्रीय शक्ति होगी और इस अवस्था में विधान-सभा के द्वारा बनाये गये विधान के पीछे सारा राष्ट्र होगा और उसका इनकार करने का साहस ब्रिटिश पार्लियामेंट में न होगा।

प्रान्तों का वर्गीकरण

मन्त्री-मिशन के प्रस्तावों के अनुसार बुलाई गई विधान-सभा की क्या शक्ति है और उसके पीछे क्या अंकुश है, यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है। मिशन-योजना में १९ वें पैरे में कहा गया है कि प्रान्त तीन वर्गों में (सेक्शनों) में बँटेंगे और यदि वे चाहेंगे तो अपना उपसंघ ग्रुप बना सकेंगे। मूल योजना में सेक्शन और ग्रुप ये दो शब्द आये हैं और ये पृथक् पृथक् अर्थ को घोषित करते हैं। इन दोनों को एक समझने से भारी गड़बड़ी उत्पन्न हो गई है। १९ वें पैरे की चौथी धारा के अनुसार प्रान्तों का तीन वर्गों में बँटना आवश्यक है। ये विभक्त तीन वर्ग अलग-अलग बैठेंगे। मगर प्रान्तों का ग्रुप या उपसंघ बनाना अनिवार्य नहीं है। इसका निश्चय हर एक वर्ग बहुमत से करेगा। यदि किसी वर्ग का बहुमत उपसंघ या ग्रुप बनाने के पक्ष में है, तो वह अपने ग्रुप के लिए विधान बनायेगा। यदि कोई वर्ग ग्रुप बनाना पसन्द न करेगा तो वह प्रान्तिक विधान उसी वर्ग में रहकर बनायेगा। ग्रुप या उपसंघ या उपयूनियन का विधान बनाने के बाद, इस नये विधान के अनुसार चुनी गई धारा-सभा यदि किसी ग्रुप से निकलने का निश्चय करे तो वह प्रान्त उससे अलग हो

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

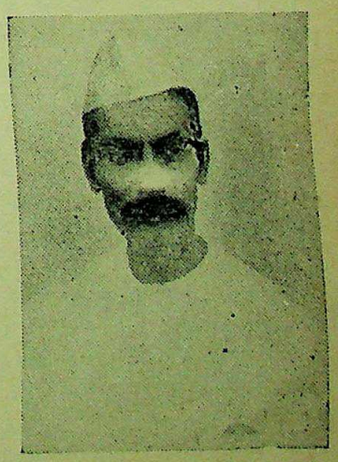

डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद विधान-सम्मेलन के सभापति बनाये जानेवाले हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंध-प्रांत में हिन्दी की क्या स्थिति है

सिंध सरकार हिन्दी की विरोधिनी क्यों है ?

लेखक, मंत्री सिंधप्रांतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का अगला अधिवेशन सिंध की राजधानी करांची में आगामी दिसंबर के अंतिम सप्ताह में होने जा रहा है। प्रांतीय सम्मेलन के मंत्री ने इस लेख में सिंध में हिन्दी की स्थिति का वर्णन करते हुए हिन्दी प्रेमियों से अनुरोध किया है कि वह सम्मेलन के अवसर पर उपस्थित होकर अधिवेशन को सफल बनाने में योग दें।

भारतवर्ष के पश्चिमी छोर को छूता हुआ सिंध एक छोटा-सा प्रान्त है। इस प्रान्त की जन-संख्या अड़तीस लाख है, जिसमें लगभग तेरह लाख हिन्दू हैं। इस प्रकार हिन्दू कुल संख्या के ३५% हैं। शेष जन-संख्या मुसलमानों की है। बम्बई प्रान्त से विलग हुए सिंध को अभी बहुत दिन नहीं हुए हैं। सन् ३५ के विधान के अनुसार यहाँ पर अपनी व्यवस्थापिका सभा की स्थापना हुई है और प्रान्तीय स्वायत्त-शासन प्रारम्भ हुआ है।

भाषा की दृष्टि से सिंध एक अहिन्दी प्रान्त है। यहाँ की मूल भाषा सिंधी है जो अपभ्रंश का ही एक रूप है। कालान्तर में मुसलमानों के संसर्ग में आने के कारण सिंधी भाषा में अरबी और फारसी के शब्दों का भी प्रचुर समावेश हो गया है। भाषा की लिपि फारसी है जिसकी व्यञ्जनात्मक शक्ति बढ़ाने के लिए उसमें काफी सुधार और परिवर्तन किया गया है। यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि अपभ्रंश के शब्दों की ध्वनियों को ग्रहण करने में अक्षम्य होने के कारण ही फारसी लिपि को यह सुधार स्वीकार करना पड़ा है। परन्तु इस सुधार से एक बड़ा लाभ यह हो गया है कि सिंधी फारसी लिपि की अपेक्षा अधिक मुद्रण सुलभ हो गई है।

आज से सत्तर वर्ष पूर्व उत्तर-भारत की अन्य भाषाओं के समान सिंधी भी देव-नागरी लिपि में ही लिखी जाती थी। जन-साधारण—हिन्दू और मुसलमान—समान रूप से इसी लिपि का प्रयोग करते थे; किन्तु यहाँ पर नवाबों का शासन होने के कारण राज-भाषा के लिए फारसी को स्थान मिला हुआ था। धीरे-धीरे राज-कर्मचारियों ने—जिनमें ऊँचे वर्ग के मुसल-मान तथा दीवान और आमिल जाति के हिन्दू सम्मिलित हैं—अपनी सुविधा के लिए सिंधी भाषा को फारसी लिपि में लिखना प्रारम्भ कर दिया। लिपि की अपूर्णता के कारण उसमें अनेक सुधार तथा परिवर्धन किये गये और आज उन्हीं अक्षरों में सिंधी भाषा पढ़ी और लिखी जाती है। शिक्षा की दृष्टि से सिंध काफी पिछड़ा हुआ प्रान्त है और यहाँ की भाषा भी अभी अविकसित अथवा अर्धविकसित अवस्था में ही है। इस प्रान्त की मुसलमान जनता विशेष रूप से बहुत अशिक्षित है और जहाँ जन-संख्या में हिन्दुओं और मुसलमानों का अनुपात ३५:६५ है वहाँ शिक्षा की दृष्टि से उनका अनुपात ६५:३५ है।

लगभग १२ वर्ष पूर्व राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति की स्थापना के बाद सिंधी में हिन्दी का नियमित प्रचार प्रारम्भ हुआ। इससे पहले भी श्री हिन्दी साहित्य भवन, श्री मारवाड़ी विद्यालय आदि संस्थाएँ हिन्दी का समुचित प्रचार एवं प्रसार कर रही थीं, किन्तु इन संस्थाओं का केन्द्र सीमित था आज सिंध में हिन्दी भाषा के लिए जो प्रेम एवं उत्साह है वह अत्यन्त सराहनीय है और उसका एक बड़ा श्रेय राष्ट्रभाषा-समिति और उसके कार्यकर्ताओं को है।

सिंध-प्रान्त की सरकार ने हिन्दी की ओर कभी झूटी आँख देखना भी पसन्द नहीं किया और सदा से उसके साथ विमाता का-सा व्यवहार करती आई है। इतना होते हुए भी इस प्रांत में हिन्दी का प्रचार जितना तेजी से हुआ है उतना शायद ही किसी अन्य अहिन्दी प्रान्त में हुआ होगा। इसके कई कारण हैं। यद्यपि अत्यन्त प्राचीन काल से ही सिंध हमारी सभ्यता और संस्कृति का केन्द्र रहा है—मोहन जोदड़ो के खँडहर उसका ज्वलन्त उदा-हरण हैं—तथापि अपनी जलवायु और स्थिति के कारण कई सदियों तक यह प्रांत अलग सा ही रहा है और यहाँ के निवा-सियों में हीनता के भाव पैदा हो गये हैं। हिन्दी भाषा ने उनको पुनः आत्मसम्मान प्राप्त करने में सहायता पहुँचाई है तथा सिंध का अन्य भारतीय प्रान्तों से सम्बन्ध जोड़ा है। इस समय हमारे देश में राष्ट्री-यता की एक जबर्दस्त लहर आई हुई है। भारतवर्ष का बच्चा-बच्चा इस बात को जानता है कि स्वतंत्र भारत में एक स्वतंत्र राष्ट्रभाषा की आवश्यकता होगी जो अँग-रेजी का स्थान ले सके और इसके लिए हिन्दी से अधिक उपयुक्त अन्य कोई भाषा नहीं है। सिंध में पाकिस्तान के बढ़ते हुए प्रभाव ने तथा लीगी मन्त्रिमण्डल के काले कारनामों ने भी हिन्दी के प्रचार में बहुत सहायता पहुँचाई है। यहाँ हम करांची नगर की म्युनिसिपैलिटी को भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जो गत पन्द्रह वर्षों से हिन्दी के प्रश्न पर सरकार से लगा-तार जूझती रही है और जिसने इस भाषा को प्रत्येक सम्भव सहायता प्रदान की है।

आज सिंध के घर घर में हमको हिन्दी भाषा का सन्देश पहुँचाना है। सिंध का कोई हिन्दू गाँव अथवा नगर ऐसा नहीं जहाँ पर राष्ट्रभाषा हिन्दी के अध्ययन के लिए लगन और उत्साह न हो। सिंध के शत-प्रतिशत नागरिक हिन्दी समझ और बोल सकते हैं। यहाँ तक कि बाजारों में आज से कुछ वर्ष पूर्व जो स्थान सिंधी, गुजराती आदि प्रान्तीय भाषाओं को प्राप्त था आज हिन्दी का अखण्ड बोलबाला है। सिंध की जनता इस बात के लिए हृदय से उत्सुक है कि वह हिन्दी का समुचित ज्ञान प्राप्त कर धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा अन्य क्षेत्रों में अपने अन्य प्रान्तीय भाइयों के साथ कदम मिला सके। इसी कारण उसने अत्यन्त प्रेमपूर्वक अखिल भारतीय हिन्दी - साहित्य - सम्मेलन को आगामी अधिवेशन के लिए जो २६, २७, २८, २९ और ३० दिसम्बर को होगा, करांची में निमंत्रित किया है।

प्रकाशित हो गया

वार्षिक बालसखा

इसमें बहुत से चित्र, कविताएँ, कहानियाँ, बढ़िया लेख और उपयुक्त सामग्री है। पृष्ठ-संख्या ३०० से ऊपर। यह अङ्क बड़ी सजधज से प्रकाशित हुआ है। मूल्य ३), मासिक बालसखा के ग्राहकों के लिए रियायती मूल्य २॥)

रियायती मूल्य के लिए अपना ग्राहक-नंबर अवश्य लिखिए

मैनेजर, बालसखा, इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

लिपटन लिः

उत्कृष्ट चाय

मिलाने और बेचने वाले

आप इनमें से चुन सकते है :

ग्रीन (हरा) लेबुल : सर्वोत्तम दार्जिलिंग। पहाड़ियों पर पैदा चाय की खुशबू ही अलग होती है। दार्जिलिंग चाय की यह सबसे बढ़िया क्वालिटी है। (दाम ३) पाउण्ड)

येलो (पीला) लेबुल : अच्छी अच्छी भारतीय चाय मिलाकर यह बनाई गई है। अपनी बढ़िया खुशबू, गहरे रंग और तेजी के लिये यह दुनियाँ भर में विख्यात है। (दाम २॥) पाउण्ड)

रेड (लाल) लेबुल : इस चाय की तेजी व स्वाद, खुशी व तृप्ति दायक है। (दाम २) पाउण्ड)

हिमालयन : हिमालय की मनोरम सुगंधिवाली औरेंज पीको। (दाम १॥=)पाउण्ड)

व्हाइट (सफेद) लेबुल : सुस्वादु व तेज—परिवार भर के इस्तेमाल लायक सस्ती और सर्वोत्तम चाय। लाखों पीने-वालों को खुश करती है। (दाम १॥=)। पाउण्ड)

जाकूजा बुकनी : टी गर्ल बुकनी : चमकीली, लज्जतदार, ज्यादा से ज्यादा कप तरल चाय बनाने वाली। (दाम १॥।) पाउण्ड)

लिपटन

आपकी मनपसन्द चाय मिलाते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र जहाँ पहले था वहीं आज भी

द्वितीय महायुद्ध के प्रारंभिक काल की राजनीति का लेखा-जोखा

(१)

लेखक, श्री का० न० रामन्ना, शास्त्री

भारतीय राजनीति की आज क्या स्थिति है, और द्वितीय महायुद्ध के प्रारंभिक काल में उसकी क्या स्थिति थी, और राष्ट्र के आगे बढ़ने में किस प्रकार का सहयोग प्राप्त हुआ या बाधा पहुँची इसका उल्लेख इस लेख में बड़ी सुन्दरता के साथ किया गया है। लेख अत्यन्त सामयिक और विचारणीय है।

संग्राम करने की अपनी बेचैन भावनाओं का प्रदर्शन किया था। लेकिन, दुर्भाग्यवश, नेताओं ने इन पवित्र भावनाओं का अर्थ अपना अनादर एवं अपमान समझा। नेताओं ने राष्ट्रपति से असहयोग कर दिया। महात्मा गांधी जी ने उस समय राजकोट में अपनी समस्त शक्ति लगाना उचित समझा। फलतः वे त्रिपुरी-कांग्रेस में उपस्थित नहीं हो सके। उच्च नेताओं ने गांधी जी का समर्थन किया। उग्रवादी नेताओं ने कांग्रेस के उच्च नेतागण और जनता में मेल कराने की अथक कोशिशें कीं किन्तु उनकी सारी कोशिशें व्यर्थ गईं। त्रिपुरी-कांग्रेस के अवसर पर, यह जानते हुए कि महायुद्ध के भयंकर बादल विनाशकारी गति से बरसनेवाले हैं जिसकी प्रलयंकारी बाढ़ में ब्रिटिश साम्राज्य की पुरानी और सड़ी-गली इमारत टिक न सकेगी—तिनके के समान बह जायगी—केवल भारत के एक जोरदार धक्के की आवश्यकता है। कांग्रेस की ओर से ब्रिटिश साम्राज्यशाही के विरुद्ध संग्राम छेड़ने का एक शब्द भी नहीं कहा गया। नतीजा अच्छा नहीं हुआ। नेता और जनता में खाई पड़ गई और वह धीरे-धीरे विस्तृत होने लगी। श्री सुभाषचन्द्र बोस को राष्ट्रपति पद त्यागना पड़ा। उन्होंने अग्रगामी दल की स्थापना की। उसे बहु-संख्यक जनता—किसानों, मजदूरों तथा अन्य पीड़ितों का समर्थन प्राप्त हुआ।

ब्रिटेन युद्ध के लिए तैयार नहीं था

१ सितम्बर १९३९ को हिटलर ने पोलैंड पर आक्रमण कर दिया। ३ सितम्बर को इँगलैंड और फ्रांस ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और साथ ही ब्रिटिश साम्राज्यशाही ने भारत की बिना अनुमति लिए ही भारत को जर्मनी के विरुद्ध युद्ध में अपने साथ घसीट लिया। क्या उस समय ब्रिटेन अथवा ब्रिटिश-साम्राज्य राजनैतिक और सैनिक दृष्टि से युद्ध के लिए तैयार थे? इस बात का जवाब योरप के बड़े बड़े सैनिक विशेषज्ञ—जैसे मेक्स बर्नर, टॉम विन्ट्रिंग टॉम आदि ने अपनी स्पष्ट लेखनी द्वारा दे दिया था। इन सैनिक-विशेषज्ञों की कृतियाँ काफी मात्रा में प्रकाशित हो चुकी थीं। बहुत से कांग्रेसी-नेताओं ने इन कृतियों का अवलोकन भी किया था। इन सैनिक-विशेषज्ञों ने प्रमाणयुक्त साफ-साफ शब्दों में बता दिया था कि ब्रिटिश-साम्राज्य की सैनिक तैयारी जर्मनी की सैनिक तैयारी की तुलना में नगण्य-सी थी। इतना ही नहीं, ब्रिटेन के युद्ध-मंत्री होर बेलिशा ने इस बात की तसदीक भी की थी और स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया था कि सन् १९३८ के सितम्बर में अर्थात् जिस समय जर्मनी और जेकोस्लोवाकिया का सुडेटनलैंड के बारे में झगड़ा चल रहा था और तत्कालीन प्रधान मंत्री चेम्बरलेन हिटलर की मनौती में लगे हुए थे, "इँगलैंड के पास केवल दो डिवीजन सेना थी जब कि जेकोस्लोवाकिया के पास ३५ और ४० डिवीजनों के बीच अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित सेना थी। ब्रिटेन की दो डिवीजन सेना भी पूरी तौर से तैयार नहीं थी।" इँगलैंड की इतनी गिरी हालत होते हुए भी ब्रिटेन का प्रचार-विभाग और इँगलैंड के समाचारपत्र ढिंढोरा पीट रहे थे कि इँगलैंड और फ्रान्स की सम्मिलित सेना के मुकाबले में जर्मनी टिक नहीं सकेगा।

ब्रिटिश साम्राज्य की सैनिक स्थिति

होर बेलिशा ने तो ब्रिटेन की सैनिक स्थिति का पर्दाफाश सन् १९३८ में किया था, लेकिन, उसके एक साल बाद अर्थात् युद्ध छिड़ने की तिथि तक इँगलैंड की सैनिक स्थिति में क्या कुछ परिवर्तन हुआ था? हाँ, कुछ परिवर्तन हुआ था और सेना में वृद्धि भी हुई थी। लेकिन यह वृद्धि जर्मनी की तुलना में पर्याप्त थी? इसके लिए हमें जर्मनी और इँगलैंड की सैनिक स्थिति की तुलना करके देखना होगा, तब कहीं, हमारे सामने असली चित्र उपस्थित होगा।

इँगलैंड अपने आपको समुद्र का स्वामी समझता था। बात भी सही थी। क्योंकि, उसका साम्राज्य दूर दूर तक फैला हुआ था। अतएव उसे अपने साम्राज्य की रक्षा के लिए समुद्री शक्ति को मजबूत रखना था। लेकिन, क्या इँगलैंड की यह समुद्री शक्ति बढ़ते हुए बलिष्ठ राष्ट्रों के मुकाबले में पर्याप्त थी?

(१) इँगलैंड अपने यहाँ सन् १९३८ में ६,५६,००० टन वजन के जहाज बना रहा था। सन् १९३५ की तुलना में यह जहाजी शक्ति कुछ अधिक थी। क्योंकि उस समय वह केवल १,३६,००० टन वजन के ही जहाज बना रहा था। यहाँ यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि, ये जहाज बिलकुल पुराने ढंग से बनाये जा रहे थे। परिवर्तन काल में नये विज्ञान से बहुत ही कम काम लिया जा रहा था। जिसका नतीजा यह हुआ कि जिस समय असली जोर आजमाने का अवसर आया, तो जर्मनी के 'यू बोटों' के सामने इँगलैंड के पुराने ढंग के जहाज टिक नहीं सके। जर्मनी के 'यू बोटों' ने इँगलैंड के जहाज डुबोने में ऐसा तूफान मचा दिया था कि उनका स्वतन्त्र रूप से समुद्र में विचरना कठिन हो गया था। सन् १९४१ तक तो समस्त ब्रिटेन अपनी जहाजी शक्ति के बारे में भारी चिन्तित हो उठा था। पार्लियामेंट के मजदूर सदस्य स्तिन वेल ने जर्मनी के विरुद्ध विजय में भारी सन्देह प्रकट किया था। ता० २६-५-४१ को अमेरिका के राष्ट्रपति जरूवेल्ट ने भी गहरी चिन्ता व्यक्त की थी और कहा था कि "जर्मनी जिस तेजी से इँगलैंड के जहाजों को डुबो रहा है, उनकी परिपूर्ति करने में इँगलैंड बिलकुल असमर्थ हो रहा है। इँगलैंड जितने जहाज बना रहा है उनसे तिगुने जहाज जर्मनी डुबो रहा है और सब मित्र-मुल्क मिलकर जितने जहाज बना रहे हैं उनसे दुगुने वह (जर्मनी) डुबो रहा है।" जुलाई सन् १९४१ तक जर्मनी ने सभी मित्र-मुल्कों के ७१,१८,१२२ टन वजन के जहाज डुबो दिये थे जिनमें अकेले इँगलैंड के ४६,०५,१३२ टन वजन के जहाज थे। सुदूरपूर्व में भी इँगलैंड की जहाजी शक्ति बिलकुल कमजोर थी। इस तथ्य की तसदीक उस बात से होती है कि जापान ने सिंगापुर और हांगकांग को कुछ ही दिनों में अपने-अपने आधीन कर लिया था।

(२) हवाई बेड़े की स्थिति जहाजी बेड़े से अच्छी नहीं थी। मार्च सन् १९३८ तक इँगलैंड के पास १७५० प्रथम पंक्ति के हवाई जहाज थे; आगे जिनकी संख्या बढ़कर २३७० हो गई थी। इसके अलावा समुद्रपार अन्य स्थानों में ५०० प्रथम पंक्ति के हवाई जहाज थे। लेकिन, ये तमाम के तमाम हवाई जहाज जर्मनी के 'लुटवाफे' के सामने बिलकुल हीन थे। इसकी पुष्टि कर्नल पेई के उस लेख से होती है जो उन्होंने १२ जून सन् १९३९ के 'डेली टेलिग्राफ' में लिखा था। कर्नल पेई ने स्पष्ट रूप से व्यक्त किया था कि सन् १९३९ में अकेले जर्मनी के 'लुटवाफे' की शक्ति इँगलैंड और फ्रान्स की सम्मिलित शक्ति

शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

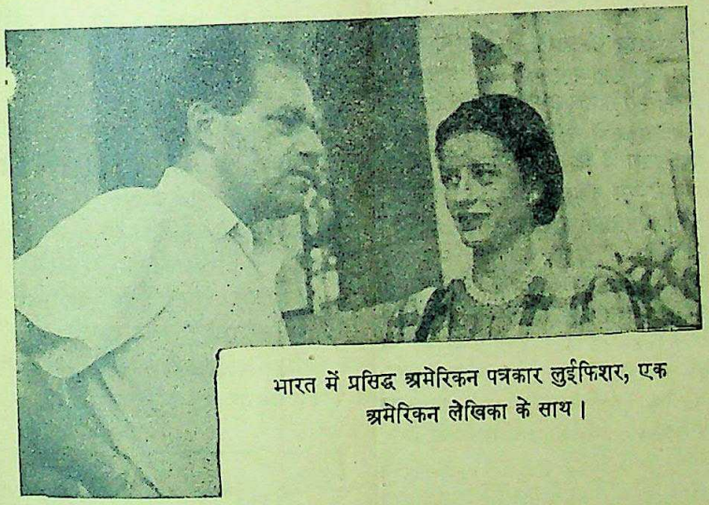

भारत में प्रसिद्ध अमेरिकन पत्रकार लुईफिशर, एक अमेरिकन लेखिका के साथ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा महेन्द्रप्रताप कौन हैं ?

स्वतन्त्रता के पुजारी, बलिदान और त्याग की मूर्ति

लेखक, दीनबन्धु पाठक

भारतीय इतिहास के दो सौ वर्ष का ब्रिटिश शासन-काल में भारतीयों के लिए नारकीय जीवन है। लोकमान्य-तिलक के अमर शब्द "स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" को लेकर देश के नवयुवक स्वतंत्रता की खोज में अपने प्राणों का मोह छोड़कर' निकले। सन् १९११ ई० के दिल्ली दरबार में लार्ड हार्डिञ्ज पर बम फेंका गया, देश के नव-युवकों का दल इस षड्यन्त्र में गिरफ़ार हुआ। उन्हीं षड्यन्त्रों के अभियुक्त वीर सेनानी राजा महेन्द्रप्रताप थे। उन्हें किसी प्रकार क्षमा मिली। परन्तु उनका हृदय ब्रिटिश-शासन से विमुख हो चला था। उन्होंने अपनी प्रथम विश्व-यात्रा में एक नया सबक सीखा था, प्रेम और स्वतंत्रता। उस सबक को वे केवल विचारों और दिमागों ही तक सीमित न रख सके। उन्होंने उसे क्रियात्मक बनाया। स्वदेश से विदेश की यात्रा बिना पासपोर्ट के ही की। अपनी मातृ-भूमि से विदा हुए उसकी स्वतंत्रता की खोज में। तब से आज तक वे निर्वासित थे। राजा साहब के स्वेच्छित निर्वासन का दण्ड—स्वतंत्रता की खोज थी। आज वे मातृ-भूमि की पवित्र भूमि पर पधारे हैं, यद्यपि वह स्वतंत्र नहीं है पर वह युग नहीं रह गया जिसे छोड़कर वे विदेश से विदा हुए थे।

* * *

राजा महेन्द्रप्रतापसिंह के माता-पिता राजा न थे परन्तु उच्च वंशों में से थे। राजा साहब एक दत्तक पुत्र हैं। कौन जानता था कि वे एक दिन संसार के परि-व्राजक होंगे—स्वतंत्रता की खोज में। अलीगढ़ मुस्लिम विश्व-विद्यालय से स्नातक हो ही जाते। परन्तु उस समय प्रिंसपल अँगरेज था। पुलिस और छात्रों में प्रदर्शनी में मुठभेड़ हो गई, राजा साहब को अँग-रेजों से घृणा थी। उन्होंने पढ़ना छोड़ दिया। बस उसी दिन से मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए अपने को अर्पित कर दिया। यही राजा साहब का शानदार बालपन था! जो मातृ-भूमि के सपूतों को उसके सम्मान रखने के लिए संदेश देता है।

* * *

राजा महेन्द्रप्रतापसिंह ने अपनी २८ वर्ष की अवस्था में मातृ-भूमि से विदा ली बिना पासपोर्ट के। वे अन्य देशों में घूमते-घामते फ्रांस और स्विटजरलैंड होकर जर्मनी पहुँचे। जर्मन कैसर से आपकी मुलाकात हुई। उसके पत्र के साथ आप अफगानिस्तान के अमीर से मिले परन्तु कोई फल न निकला। इस बीच प्रथम विश्व-युद्ध छिड़ा। आप जर्मनी की सहा-यता से अपने देश तथा पड़ोसी देशों की गुलामी दूर करने की क्रांति करना चाहते थे। इसी उद्देश्य को लेकर राजा साहब, ने तिब्बत, काशगार, चीन आदि देशों को पार करते हुए मैक्सिको आदि का भ्रमण किया परन्तु कोई विशेष सफलता न मिली। वे जिस समय चीन के उत्तरी भाग (पेकिंग) में रुके थे उसी समय चीन-जापान युद्ध प्रारम्भ हो गया फिर वे उसी देश में रह गये। तब से आज तक वे जापान ही के अन्दर रहे हैं। अमेरिकनों ने उन्हें जापान के बन्धन से छुड़ाया।

* * *

पिछले महायुद्ध तक तो राजा साहब का पता लगता रहा। चीन-जापान युद्ध के कुछ पहले तक उनके कार्यों पर कुछ न कुछ प्रतिक्रिया होती रहती थी; परन्तु युद्ध-आरम्भ के पश्चात् से आज तक उनका कुछ पता नहीं चला। जब जापान ने आत्म-समर्पण किया और अमेरिकनों ने उस देश में प्रवेश किया तो राजा महेन्द्र-प्रताप के जीवित रहने का समाचार प्राप्त हुआ। भारतमाता के अपने दो सपूतों की मृत्यु का शोक-समाचार मिल चुका था। लाला हरदयाल और श्री रासबिहारी बोस इस संसार में नहीं रहे। कहा तो यह भी जाता है कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस भी इस संसार में नहीं हैं पर अभी विश्वास कम जमता है। 'राजा साहब जापान में हैं' इस समाचार ने देश में उनके प्रति एक महान् अनुराग पैदा कर दिया। युक्तप्रांत के मन्त्रिमण्डल ने राजा साहब के स्वदेश लौटने की सिफारिश केन्द्रीय सरकार से की। देश की पुकार कब तक ठुकराई जा सकती है। राजा महेन्द्रप्रताप को स्वदेश लौटने की अनुमति मिली। बत्तीस वर्ष के पश्चात् पुनः भारत मा के चरणों के रज-कण की रोली उन्हें अपने मस्तक पर लगाने को मिली है।

* * *

जहाज से उतरते ही राजा साहब से देश की स्वतन्त्रता के लिए मद्रास के विद्यार्थियों ने एक सभा में नव-संदेश माँगा। राजा साहब में वही पूर्व उत्साह भरा है। देशानुराग के साथ ही साथ उनमें विश्व-प्रेम की एक नवीन साधना की चाह है। आज वे पारस्परिक कलह नहीं चाहते। संसार के सारे धर्मों का जब एक ही उद्देश्य है फिर कलह कैसी ? 'प्रेम' शब्द को उन्होंने साकार कर रक्खा है। जब उनसे कोई प्रश्न करता है तो वे अपने तीन पुत्र बतलाते हैं—(१) प्रेम (मनुष्य पुत्र), (२) प्रेम (समाचारपत्र), (३) प्रेम महा-विद्यालय)। ये प्रेम भारतवर्ष के लिए उनकी अमर देन हैं। ३२ वर्ष के लम्बे प्रवासी जीवन-काल में उन्होंने सारे संसार को 'प्रेम' का संदेश दिया है। इस संदेश में गुलामी शब्द तो है ही नहीं। वे गुलाम रखनेवालों से घृणा भी नहीं करते। बल्कि उनसे प्रेम करते हैं। हाँ, यह बात आव-श्यक है कि गुलामों को अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए रक्तपात से न डरना चाहिए। यह उस वीर सेनानी और साधु पुरुष का नव-संदेश है। भारतमाता के सच्चे सपूत ने अपने प्राणों का मोह त्यागकर उसकी स्वतन्त्रता के लिए संसार के सम-रांगण में अपने को झोंक दिया था यदि बच जायँगे तो भारतमाता के पुत्र हैं ही। यदि नहीं तो स्वतन्त्रता पर मिटनेवाले दीवानों का मस्तानापन तो है! आज राजा महेन्द्रप्रतापसिंह उन बचे हुए सेनानियों में से हैं जो भारतीय स्वतन्त्रता के लिए अन-वरत प्राणों को मृत्यु के मुख में डालने से हिचके नहीं बल्कि दो कदम आगे बढ़ गये हैं।

ऐसे वीर सेनानी का स्वागत स्वतन्त्रता का स्वागत है।

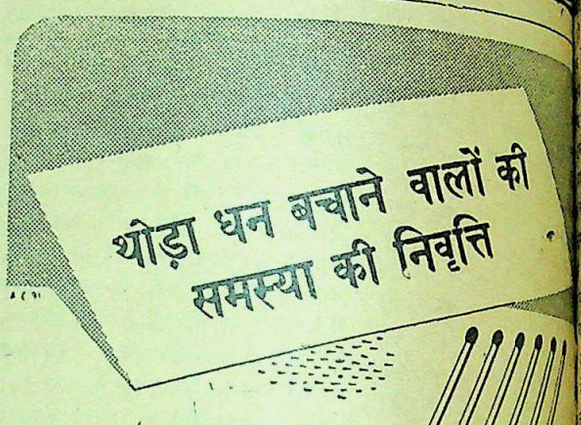

प्रश्न : दियासलाई की ६ तीलियों की सहायता से चार त्रिकोण

उत्तर : एक मेज़ पर तीन तीलियों को एक त्रिकोण के रूप में रखिये और शेष तीन की सहायता से एक सूच्याकार बनाइए जैसा आकृति में दिखाया गया है।

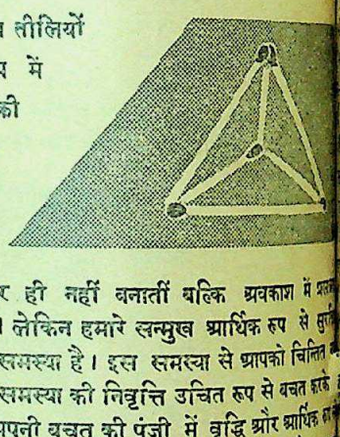

ऐसी समस्यायें केवल चतुर ही नहीं बनातीं बल्कि अवकाश में मनो और मनोरंजन भी देती हैं। लेकिन हमारे सन्मुख आर्थिक रूप से सुर रहना इन से कहीं कठिन समस्या है। इस समस्या से आपको चिन्तित रहना चाहिये क्योंकि इस समस्या की निवृत्ति उचित रूप से बचत करके सकती है। प्रति वर्ष आप अपनी बचत की पूंजी में वृद्धि और आर्थिक उन्नति कर सकते हैं यदि आप नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स और खरीद कर थोड़ा धन लगाने वालों की प्रतिदिन बढ़ती संख्या में सम्मिलित हो जायें। नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स रुपया लगाने की श्रेष्ठ मद हैं, यह पूर्णतया सुरक्षित और सब मदों से अधिक लाभदायक है।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

(१) आप ५, १०, ५०, १००, ५००, १०००, या ५०००, रु० के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफ़िकेट्स खरीद सकते हैं।

(२) कुटुम्ब का प्रत्येक व्यक्ति (वयस्क या अल्पवयस्क) ५००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स खरीद सकता है। दो व्यक्ति मिलकर १०,००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स खरीद सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य १०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया ११।) बन जाता है। सरकार द्वारा प्रचलित रुपया लगाने की मदों पर जो ब्याज दिया जाता है यह सब से अधिक दर है।

(४) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(५) ये १२ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट ५।।) पश्चात भी भुनाया जा सकता है।

(६) जिनकी बचत थोड़ी है वह भी खरीद सकते हैं। ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्प्स खरीद कर एक ५ रु० के स्टाम्प्स जमा होने पर एक सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट मिल जावेगा।

(७) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स सरकार द्वारा अधिकृत एजेंटों अथवा डाकघर ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

अपने सेविंग्ज़ ग्रुप में अभी सम्मिलित हो जाइ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो सुंदर कहानियाँ

राखी की स्मृति !

लेखिका, सुश्री लक्ष्मी अग्रवाल, एम० ए०

...अपनी धुरी पर अविराम ...घूमता रहता है। परिणाम-...सम्मुख जो आज है, वह कल ...के कल का वर्तमान के ...आभास नहीं। रानी के छोटे ...के जीवन में कितने उलट-...हैं किन्तु उसकी अल्पावस्था ...घटी जो उसके नन्हें ...मस्तिष्क को आकुल कर देने ...है।

...माँ-बाप की इकलौती बेटी ...समस्त स्नेह, दुलार और ...एकमात्र अधिकारिणी है। वह ...की थी तभी एक दिन ...मीरा ने आकर उसे ...के लिये निमंत्रित किया। ...तो देखती क्या है कि ...के समीप बैठी है। ...आदि के अतिरिक्त ...चमकती हुई एक चीज ...है। कौतूहल से उसने उसे ...प्रयत्न करने पर भी कुछ ...उसने मीरा से पूछा—"जे

...गरिमा के साथ, वयस्कों ...आश्चर्यान्वित होकर उत्तर ...लगो! इछे नई जानती! ...। इछे मैं अबी भैया ...तो देखो यह छुन्दल ...ने पहिनाई है।"

...मीरा का भैया आया ...ने देखा कि मीरा ने कितने ...तिलक लगाया, फिर अपनी ...अंगुलियों से "छुन्दल छी ...। उसके बाद भैया ने उसे ...को रुपये दिये। जाते समय ...पैर छुए और तब उस अल्प-...बड़े गौरव के साथ उसके ...रखकर आशीर्वाद दिया—...। जल्दी छे बले हो जाओ

औल मेले लिए छुन्दल छी प्याली प्याली भाभी लाओ।"

उसकी शिशुतामय प्रगल्भता पर सभी हँस पड़े। भैया भी प्यार से एक चपत लगाकर चला गया।

रानी जैसे इतनी देर तक स्वप्नलोक में थी। सब समाप्त हो जाने पर उसे चेतना आई। जाने क्यों उसका शिशु-हृदय उदास हो गया? मीरा के बहुत आग्रह करने पर भी फिर वह वहाँ रुक न सकी। चाची की आज्ञा भी विवश होकर उसने न मानी। घर आकर चुपचाप एक कोने में पड़ रही। माँ ने खाने को बुलाया तो इनकार कर दिया। माँ चिन्तित हो उठी। वह अस्वस्थ भी नहीं थी इससे उनकी चिन्ता और बढ़ गई। उसी समय उसके नन्हें से हाथ में उन्हें एक राखी दिखाई पड़ी। उन्हें तत्काल ही प्रायः सारी स्थिति का बोध हो गया। वह समझ गई कि मीरा का राखी बाँधना देखकर और उपहार-स्वरूप दी हुई उसकी राखी पाकर रानी की यह दशा हो गई है। यह समझकर माँ का दुख और बढ़ गया परन्तु पुत्री के अथवा अपने दुख को कम करने का कोई उपाय नहीं था। विधाता की लेखा में किसका वश!

इतने में ही रानी के पिता देवकी बाबू भी वहाँ आ गये। ऐसी प्रसन्नता के दिन घर की इस उदासी का कोई रहस्य उन्हें न मालूम हुआ। पत्नी से सब जानकर वह भी एक क्षण चिन्ताग्रस्त रहे और बिना कुछ बोले ही बाहर आ गये। बाहर आकर उन्होंने देखा कि पड़ोस के सभी बालक बहनों से राखी बँधवा और अपने को गौरवान्वित समझकर क्रीड़ा में मग्न हैं। उसी समय रमेश की शून्य कलाई और उदास मुख ने उन्हें आकर्षित किया जो सब बालकों से अलग कुछ दूर पर खड़ा था। बाबू साहब एक क्षण उसकी ओर देखते रहे। अचानक उनके हृदय-प्रदेश में प्रकाश की एक रेखा दिखाई पड़ी और उन्होंने किंचित् प्रसन्न वदन से रमेश को संकेत से निकट बुलाकर कहा—'मेरे साथ आओ।'

उसे लिये हुए वह रानी के पास पहुँचे। तब भी वह वैसी ही नीरव, निस्पंद, छत की ओर निर्निमेष दृष्टि किये, एक हाथ में वही राखी पकड़े पड़ी हुई थी। कमरे में घुसते ही देवकी बाबू ने पुकारा—"रन्नो! ओ रन्नो! यहाँ आ। देख।" विवश होकर रानी ने उस ओर निहारा, व्यथित दृष्टि से पिता की ओर देखा पर उठी नहीं और कुछ बोली भी नहीं।

शेष पृष्ठ १० पर

...को देखकर राखी बाँधने के लिए उठने लगी।

मेहमान !

लेखक, श्री रामेश्वरदयाल दुबे, एम० ए०

कानपुर स्टेशन से जो सड़क परेड की ओर जाती है उसी के दाहिनी ओर जनरलगञ्ज है। उसी पर आगे बढ़िये, तो तिराहे के पास ही पीपल का एक विशाल वृक्ष है, नीचे हनूमान की मठिया है। बस इसी के ठीक सामने गली में मेरा घर है। स्टेशन से कोई १० मिनट का रास्ता!

बीचोबीच शहर में घर बड़ा हो भी क्या सकता है? बैठक के पीछे छोटा-सा आँगन है। छत पर एक कमरा बड़ा, दो छोटे हैं। रसोईघर है। ऊपर छत खुली है। गर्मियों में सोने के काम में आ जाती है।

इस मकान को अभी कोई तीन साल पहले खरीदा है। पहले किराये पर, उधर परेड की ओर रहा करता था। जिस दिन इस मकान को खरीदा था, बड़ा खुश हुआ था और जिस दिन अपने इस घर में प्रवेश किया था बेहद खुश हुआ था। मगर अफसोस, यह खुशी बहुत दिन कायम न रह सकी। क्योंकि इस खुशी को कानपुर के आस-पास रहनेवाले मेरे नजदीक और दूर के रिश्तेदारों ने बँटा लिया है।

मकान खरीदते समय सोचा था, स्टेशन के पास रहेंगे, सब तरह का आराम रहेगा, खर्च भी बचेगा। मगर जो सुविधा मेरे लिए हो सकती थी वही मेरे इन रिश्तेदारों को भी हो सकती है, इस ओर तो ध्यान भी नहीं गया था। आये दिन उन्हें किसी न किसी काम से तो आना ही पड़ता था। स्टेशन से उतरकर बेचारे कहाँ जायँ? फिर अपना ही तो घर ठहरा। किसी का मामा हूँ तो किसी का चाचा, किसी का नाना हूँ तो किसी का फूफा। यों मैं अपने पिता की एकमात्र सन्तान, हूँ; पर सुविधा की दृष्टि से अगर दूर दूर का सम्बन्ध रखनेवाले भी निकट का सम्बन्ध स्थापित कर लें तो फिर क्या किया जाय? जो घर पर आ जाय उससे यह किस मुँह से कहा जाय कि "यहाँ स्थान नहीं है।" जैसे भी हो निबाहना ही पड़ता है।

मगर निबाहने की भी हद होती है। सच कहता हू—महीने के तीस दिन में २५ दिन कोई न कोई मेहमान टिका ही रहता है। आज बिठूर के रामलाल हैं तो कल कालपी के मथुराप्रसाद। मेरी पत्नी की बुआ के लड़के आज सामान खरीदने के सिलसिले में ठहरे हैं, तो कल न जाने कहाँ का रिश्ता निकालकर मुझे मामा कहनेवाला मेरा भानजा। इटावा से प्रयाग जाते समय पंडित रामसनेही, जो मेरे कुछ नहीं हैं, मेरे पिता से परिचित थे, एक दिन के लिए कानपुर उतरकर हमें आभारी बना ही जाते हैं। मेरे मकान की नीचेवाली बैठक एक प्रकार की धर्मशाला ही समझिए।

इन तथाकथित मेहमानों से सबसे अधिक परेशान तो मेरी लड़की इन्दु है। उसे किवाड़ खोलने या बन्द करने के लिए दिन में पचास बार नीचे जाना पड़ता है। बेचारी मन ही मन घुरघुरा लेती है। इधर अब देखता हूँ, श्रीमती जी का भी धीरज समाप्त होता जाता है। क्योंकि

राशनिंग के इस जमाने के भाग्यवान मेहमान।

उधर डब्बे में शक्कर जो खतम हो रही है। राशन के दिन ठहरे।

जिस दिन कोई मेहमान नहीं होता है, संतोष की साँस ली जाती है। इन मेहमानों द्वारा पैदा होनेवाली कठिनाइयों का मुझसे सीधा सम्बन्ध कम होता है। इसलिए मैं उन्हें अच्छी तरह अनुभव भी नहीं करता, मगर एक परेशानी तो मुझे भी होती है। रात को जब थका हुआ सोना चाहता हूँ तो पास लेटे हुए मेहमान साहब न जाने कहाँ कहाँ की बातें मुझसे करते हैं, जिनसे मेरा स्वप्न में भी सम्बन्ध नहीं होता है। तुर्रा यह कि चाहते हैं कि मैं उनकी बातों में पूरा रस लूँ।

मेरा लड़का सतीश तो इन मेहमानों के प्रति उनकी अनुपस्थिति में अपनी झुँझलाहट भी प्रकट कर देता है। मैं सभी के प्रति सहानुभूति रखता हूँ, पर करूँ क्या? मेहमानों को मैं बुलाने तो जाता नहीं, वे आ टपकते हैं तब करें क्या?

एक दिन मैं टट्टी गया था। सामने की दीवार पर निगाह गई। पेंसिल से उस पर लिखा था, "अनेक आफतों में से एक आफत मेहमान भी हैं।" यह सतीश की शरारत थी। मैंने हस्ताक्षर पहचान लिये। अक्षर मिटाने की कोशिश की। कुछ धूमिल हो गये। मगर मिटे नहीं। पढ़े जा सकते थे। बदतमीजी के लिए डाँट-फटकार कर दी। बात, आई गई हुई।

कन्नौज के रामगोपाल आये दिन आ जाते थे। मेरे मामा के साले के लड़के थे। यह दूर का ही रिश्ता कहा जावेगा। मगर वे न जाने किस हिसाब से मुझे चाचा कहते थे और श्रीमती जी को चाची। फिर सतीश और इन्दु तो उनके भाई-बहन हो ही गये थे।

रामगोपाल का बार बार आ धमकना मुझे भी अच्छा न लगता था। घुमा-फिराकर शहर की कठिनाइयों का जिक्र करते हुए मैंने उन्हें बताना चाहा कि वे मेरे घर की कठिनाइयों का ख्याल करके कृपा करना सीखें, मगर उन्होंने ध्यान नहीं दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दैनिक

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे आये दिन आते ही रहे। अपना ही घर जो समझते थे।

अभी-अभी तो गये हैं कोई चार दिन हुए हैं। इस बार बेचारे कुछ परेशान होकर गये। बात यह हुई कि अपनी दूकान के लिए कुछ सामान खरीदने आये थे। आज यह खरीदा, तो कल वह। छोटी छोटी पोटरियों में बाँध-बाँधकर घर की नीचेवाली बैठक में एक तरफ रखते गये। प्रातः ६ बजे की गाड़ी से जानेवाले थे। रात को कोई १० बजे बाजार से सारा काम समाप्त करके लौटे। बैठक का दरवाजा मैंने ही खोला। वे अन्दर आये। सामान एक तरफ रखकर कपड़े उतारे। भोजन करना ही था। ऊपर आये। सोना छत पर था। हम दोनों साथ साथ ही ऊपर गये। कुछ इधर-उधर की बातें करके आज जल्दी सो गये। कल जल्दी जो उठना था।

प्रातःकाल वे ही सबसे पहले उठे। शौच आदि से निवृत्त होकर चलने के लिए तैयार हुए। कोट पहना, मगर यह क्या? चप्पल नहीं हैं। इधर देखा, उधर देखा, आँगन में देखा कहीं कुछ पता नहीं। बड़े परेशान! परेशानी की बात ही थी। यहीं तो चप्पल उतारी थी। गई तो कहाँ गई? खोजते भी तो कहाँ तक? गाड़ी का समय जो हो रहा था।

मैंने पूछा—"कमरे के बाहर बरामदे में तो चप्पल नहीं उतारी थी?

"नहीं चाचा! गंगा की कसम मैंने बैठक में ही उतारी थी। आप तो यहीं थे, गंगा की कसम" उनका उत्तर था।

"हाँ, मुझे भी कुछ यही ख्याल है पर चली कहाँ गई?"

"खैर, कोई बात नहीं चाचा। रम्मू की शादी के लिए ४ रु० २ आने की कल ही एक चप्पल 'हिमालया स्टोर' से खरीदी है, गंगा की कसम। आज कौन दिन है चाचा। शुक्रवार है न! चलो अच्छा दिन है गंगा की कसम आज ही पहने लेता हूँ।"

यह कहते-कहते उन्होंने एक पोटरी में से अखबार में लपेटी नई चप्पलें जल्दी से खींच लीं, और जल्दी से पहनकर मेरे पैर छुये और चलने के लिए तैयार हो गये। समय जो कम था। सारी पोटरियाँ लिये कुली तो तैयार खड़ा ही था।

मैंने कहा—"अच्छा! लेकिन बड़ा ताज्जुब है कि चप्पलें गईं कहाँ?" और रामगोपाल चले गये।

मैंने ऊपर जाकर चप्पल गायब होने की बात कही। पत्नी ने कहा—"बरामदे में उतारी होंगी। बैठक में उतारते तो कहाँ जातीं" इन्दु और सतीश मौन ही रहे। मैं फिर और कामों में लग गया।

कल की डाक से रामगोपाल का पत्र मिला है जिसे यहाँ नीचे दे रहा हूँ। इस घटना में कुछ कहानी जैसी छटा है इसलिए इस घटना को लिपिबद्ध कर दिया है। रामगोपाल का पत्र यह है:—

कन्नौज

पूज्य चाचा जी, १३-६-४४

चरणस्पर्श। आपसे अलग होकर स्टेशन पहुँचा। टिकट लेने के लिए जो बटुआ खोला तो धक्क रह गया। १०) का एक नोट गायब था। करता क्या? खैर दो रुपये और कुछ रेजगारी पड़ी थी। टिकट खरीद कर गाड़ी में बैठा। चप्पल तो गायब हुई ही थी, इस नोट का गायब होना तो और बुरा हुआ। मैं सोचने लगा कि जरूर ही कोई बाहर का आदमी बैठक में आया होगा। और उसी का यह काम होगा। मगर एक बात समझ में न आ रही थी, कि पूरा मनीबेग ही क्यों न ले गया? मनीबेग और उसमें रखे दो रुपये क्यों छोड़ गया? मैं अत्यधिक चिन्ता में पड़ गया और गाड़ी के कोने में चुपचाप मन मारे बैठा रहा। आपत्ति वहीं खतम न हुई थी। कन्नौज स्टेशन पर उतरने लगा तो देखा नई चप्पलें भी नहीं मिल रहीं हैं। खूब खोजा, न मिलीं। कोई उन्हें उड़ा ले गया था। गलती तो मेरी ही हुई। चप्पलें नीचे छोड़कर पैर सीट पर रखकर बैठा जो था।

गाड़ी से उतरा और नंगे पैरों घर जाना पड़ा। इस बार न जाने किसका मुँह देखकर कानपुर गया था, यही सोच रहा था।

दोपहर को मैंने सामान की पोटरियाँ खोलीं और मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। यह देख कर, कि मेरी खोई हुई दोनों पुरानी चप्पलें और उनके बीच में १०) का नोट मेरे कपड़ेवाले बंडल के बीच में रखा है।

आपको सूचना के लिए लिख रहा हूँ। सतीश और इन्दु को बहुत प्यार कहना।

आपका भतीजा—रामगोपाल

* * * *

ऊपर जो कुछ लिखा गया है वह गत वर्ष ही लिखा गया था। तब से करीब एक वर्ष बीत गया है। दूसरे मेहमान तो आते रहते हैं पर अब रामगोपाल घर पर ठहरने नहीं आते। कानपुर तो आते ही रहते हैं। बाजार में मिलने पर प्रणाम नमस्कार हो जाता है।

राखी की स्मृति

(पेज ९ का शेष)

पिता ने पास आकर रानी के राखीवाले हाथ को रमेश की ओर बढ़ा दिया और रानी से बोले—'अरे! अब तो उठ। देख भैया आया है।' रानी खिल उठी और चटपट उठकर उसने रमेश को राखी बाँधी और 'रमेश भैया' कहकर मुस्करा उठी। देवकी बाबू ने उसे रमेश से रुपये दिलवाये। 'रमेश भैया' का उत्तर रमेश ने 'रानी बहन' कहकर दिया। एक क्षण में ही दो परिवारों की विषाद छाया छिन्न-भिन्न हो गई। वे एक अटूट, दृढ़, पवित्र बन्धन में आबद्ध हो गये। रानी ने जीवन में एक भाई पाया और रमेश ने एक बहन पाई। रानी ने राखी बाँधकर मौन रूप में रमेश को अपनी जीवन-रक्षा के लिए आमन्त्रित किया, रमेश ने रुपये देकर, प्रसन्नतापूर्वक राखी बँधवा कर उस आमन्त्रण को सहर्ष स्वीकार किया। सचमुच भाई-बहन का वह कैसा अपूर्व सम्मिलन था!

* * *

रानी उस पुण्य-स्मृति को एक अमूल्य निधि की भाँति अभी तक संचित किये रही। प्रत्येक 'रक्षाबन्धन' उसके परम उत्साह का दिवस होता है। रमेश भी महीनों से बहन को देनेवाले उपहार की वस्तु पर विचार करने लगता है। रानी भाँति-भाँति के राखी के नमूने मँगाने में व्यस्त रहती है। ऐसे ही हँसी-खुशी में अनेक वर्ष बीत गये। पर काल की गति को कौन जान सका है? समय, प्रकृति की परिवर्तनशील गति के साथ ही मानवों का परिवर्तन आश्चर्यजनक अथवा अस्वाभाविक नहीं। रमेश बड़ा हुआ, उसकी दुनिया बदली, फिर हृदय ही अपरिवर्तित कैसे रहता? उसने स्कूल से कालेज में प्रवेश किया। कालेज में साथ साथ लड़कियाँ भी पढ़ती थीं। वह उनका आदर्श भाई बन गया। उसे इस नवीन भगिनीत्व में रस मिलने लगा। उनकी 'राखियों' में रानी की 'राखी' से कहीं अधिक आकर्षण था। वह भूल गया कि उसके जीवन की सबसे प्रथम बहन रानी है। अपनी शून्य कलाई पर सबसे पहले रानी से राखी बँधवाकर ही वह इस अपार संसार में भ्रातृत्व के पद पर सुशोभित हो सका था। बहन रानी की आजीवन रक्षा के मौन व्रत की स्मृति उसके हृदय-पटल से क्षीण होने लगी। विस्मृत हो गये उसके हृदय से राजपूत वीरों के आदर्श! परिवर्तन-चक्र में पड़कर पुराने कर्त्तव्यों का स्मरण भी न रहा।

भोली भाली रानी आह! सब देखती है, समझती है। किससे क्या कहे? अपनी असह्य वेदना मौन होकर अपने आप ही सहती है। हृदय का आवेग जब बहुत बढ़ जाता है तो उसे अश्रु-मुक्ताओं में बिखेर कर फिर शान्त हो जाती है। माँ पूछती है—"रमेश आजकल कहाँ रहता है? अब बहुत कम आता है। आता भी है तो जैसे बड़ा अस्त-व्यस्त सा रहता है। भागने की जल्दी पड़ी रहती है।" रानी क्या उत्तर दे? वह सोचती कि उत्तर दे दूँ—"अब उसके भ्रातृत्व के अधिकारी और लोग भी हो गये हैं, इसी से उन्हें समय नहीं मिलता। अब वह स्थिति नहीं है कि रानी उन्हें 'भैया' कहे तो कहे, नहीं तो कोई कहनेवाला ही नहीं है। 'राखी' बाँधने का अधिकार सीमित न रहकर अब विस्तृत हो गया है।" पर नहीं! इससे माँ को दुःख होगा, इसलिए वह मौन ही रह जाती।

रानी को रमेश भैया की ईर्ष्या नहीं। वह उनसे प्रसन्न ही होगी। रमेश भैया उसकी बहनें भी तो हैं। यह चाहे तब न? रानी से अधिक से अधिक प्रच्छन्न रखकर उसके सम्मुख मीठी मीठी बातें उसे सदैव एक भ्रम, एक छल, रण में रखना चाहता है। कि रमेश को अपनी अब कारण उसके यहाँ आने मिलता—पर रमेश उसे दिलाता रहता है कि अध्ययन कता से उसे अवकाश नहीं का यह छल, यह कपटपूर्ण तो रानी के दुख का मूल है। सब स्पष्ट रूप में कह दे स्थिति न रहे। रमेश रानी को तक भ्रम में डाले रहा कि इस में एकमात्र वही उसकी प्रिय परन्तु वास्तविकता का, सत्य का के मेघ से अधिक समय तक रह सका, उसकी तीव्र प्रकाश किरणें प्रकट हो ही गईं। के इस स्वरूप का उसे ज्ञान हुआ कितना रोई थी। वह यह कभी कि संसार में वही उसकी एकमात्र पर उसका यह छल उसे अखरता है। विश्वास के साथ उसके उस किया जिसे वह अपने जीवन का पथ-प्रदर्शक, एकमात्र प्यारा है और जो उसका बड़ा भैया, वहन सब कुछ है।

पिछले दिन भी राखी थी। गई थी। वह प्रातः से ही भैया की प्रतीक्षा में बैठी थी। आग्रह की उपेक्षा करके उसने जल भी कंठ से नहीं उतारा था। राखी बाँधे वह जल ग्रहण अपनी निष्ठा, अपने नियम को करती? भैया का हृदय बदल उसका तो नहीं ही बदल सकता। प्रति आज भी वैसा ही अटूट विश्वास और श्रद्धा है। वह हृदय में ही तर्क-वितर्क करती हुई आसन भैया के लिए बिछाए पर आप स्वयं बैठी रही। तिलक राखी-सहित सम्मुख रखे रहीं। निर्निमेष होकर प्रवेश द्वार की रहें—किसी के आगमन की कौन कह सकता है कि इस अन्त कब और कैसे होगा! या नहीं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमण्डल

क्या मातृत्व सचमुच एक ट्रेजेडी है ?

स्त्री और पुरुष दोनों ही समान रूप से दोषी या निर्दोष क्यों नहीं समझे जाते ?

लेखिका, श्रीमती माया गुप्ता बी० ए०

इस लेख की लेखिका श्रीमती माया गुप्ता बी० ए०

बिहार की प्रसिद्ध जनसेविका और राष्ट्रीय कार्यकर्त्री श्रीमती माया गुप्ता, प्रसिद्ध क्रांतिकार और समाजवादी श्री मन्मथनाथ गुप्ता की पत्नी हैं। आपका इसी सम्बन्ध में एक लेख गत १४ जुलाई के 'देशदूत' में प्रकाशित हो चुका है। यह लेख उसी का पूरक लेख है। श्रीमती गुप्ता ने इस लेख में मातृत्व की महत्ता तथा समाज के आज की दोषपूर्ण व्यवस्था की कटु आलोचना की है। लेख सुन्दर और विचारणीय है।

समाज में उसकी भद्द होने की आशंका है। यह ठीक है कि समाज उसे यह नहीं कहता कि तुम बच्चे को मार डालो, पर उसे ऐसी परिस्थितियों में डाल देता है कि उसके लिए और कोई चारा नहीं रह जाता है।

जिस समय माता लोक-लज्जा के कारण अपने ही जिगर के टुकड़े बच्चे को फेंक देती है, उस समय प्रकृति तथा समाज ने उस पर जो कर्तव्य लादे हैं, वह उन्हें उल्लंघन कर रही है। उसके सामने यह परिस्थिति होती है कि लोक-लज्जा के मारे इन कर्तव्यों की अवहेला करे, पर वह ऐसा कर सकती है कि समाज से निकाला जाना स्वीकार करे, पर प्रकृति द्वारा दिये हुए कर्तव्य को मान कर उस बच्चे की रक्षा करे।

लोक-लज्जा कितनी भी तीव्र हो, और समाज का दबाव कितना भी अधिक हो, अविवाहिता माता यदि अपने बच्चे को मारती है, तो उसे सम्पूर्ण रूप से दोषयुक्त नहीं कहा जा सकता। आखिर उसने जो गुप्त प्रेम किया था, उसकी जिम्मेदारी उसे समझनी चाहिए थी। ऐसे अवसरों पर केवल समाज की दुहाई देकर शिशु-हत्या करना स्वार्थपरता तथा कायरता का द्योतक है। साथ ही यह मानना पड़ेगा कि स्त्री को इस प्रकार स्वार्थी तथा कायर बनाने के लिए समाज का निर्यातन जिम्मेदार है।

समय के साथ साथ नैतिक मूल्य परिवर्तित हो रहे हैं। प्राचीन काल में भी कुमारी माता से ईसा मसीह पैदा हुए थे। समाज को ईसा के सामने मस्तक झुकाकर उन्हें मानना पड़ा, और उनके अमर व्यक्तित्व का सम्मान करना पड़ा। समय ने कुमारी माता को देवी का रूप दिया। पर इस समय हजारों बच्चों को अकालमृत्यु का शिकार होना पड़ रहा है, और उनकी माताओं को वेश्या बनना पड़ता है। समय आ गया है कि इन बातों को रोका जाय, और नैतिक मूल्य की उस धारणा को बदला जाये जिसमें विवाहिता स्त्री के मातृत्व को तो गौरव का पद प्रदान किया जाता है, पर विवाह के बाहर माता होने की इतनी निन्दा की जाती है कि बच्चा मार डाला जाये और माता वेश्या बन जाये।

समाज लोगों के आश्रय तथा सहयोग की जगह है। इसको एक बदला लेनेवाले यंत्र में परिणत करना गलत होगा। यदि कोई स्त्री अवैध बच्चे की जननी हो जाये, तो उस पर समाज अपने बदला लेने की सब प्रतिभा को क्यों इस्तेमाल करे ? जिस समय आज की तरह समाजवाद की बात ज्ञात नहीं थी, उस समय भी तरह तरह के कारणों से स्त्रियाँ, समाज के निषेधों के जाल में फँसकर माँ बन जाती थीं, और उस समय भी ऐसे लोग मौजूद थे जो स्त्रियों की मजबूरी को समझ जाते थे। वे यह समझते थे कि इसका माकूल कारण है क्योंकि मातृत्व तथा संभोग की भूख के ही कारण स्त्रियों के पैर फिसले हैं, अर्थात् समाज द्वारा खींची हुई लकीर के बाहर जा गिरे हैं। विधवा हो जाने से या और किसी प्रकार के दुर्भाग्य से ही स्त्री ने विवश होकर दूसरा मार्ग अपनाया है। चाहे शास्त्र और कानून कुछ भी कहें, और सात 'पर्दे के अन्दर निगरानी रक्खी जाय, पर प्रकृति जोर मारेगी ही। इनको बन्द करने का उपाय यह नहीं है कि ख्वामख्वाह सख्ती करके झूठे नियम बनाये जायँ, बल्कि होना तो यह चाहिए कि प्रकृति तथा वास्तविकता के अनुसार नैतिक मूल्यों में परिवर्तन किया जाये।

सोवियट रूस में ऐसा ही किया गया है। वहाँ समाज ने अपने लिए यह नहीं मान लिया कि वह तरह तरह के फरमान निकाले, और स्त्रियों को सौ बार गरज हो, तो वे उसे मानकर चलें, बल्कि वहाँ तो अविवाहिता माता और विवाहिता माता में कोई फर्क नहीं है। समाज से स्त्री यदि बच्चे के बाप का नाम नहीं बताती तो न बताये, यह स्त्री का निजी मामला है, समाज को तो माता तथा बच्चे के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में परेशानी है। जब तक इनका स्वास्थ्य ठीक है, तथा ये ठीक नागरिक हैं, तब तक समाज को कोई फिक्र नहीं। वहाँ के समाज में ऐसे उत्पन्न बच्चे को कभी भी बुरी निगाह से नहीं देखा जाता। स्त्री के सम्बन्ध में तो समाज यह कह भी सकता है कि उसने जो कुछ किया परिस्थितियों तथा परिणामों को जानकर किया, पर उस मासूम बच्चे ने क्या किया ? क्या वह अपने जन्म के लिए जिम्मेदार है ? फिर उसे क्यों कोढ़ी की तरह समझा जाता है ? तो यही समाज का सबसे बड़ा अन्याय है ! रूस में इस अन्याय का अन्त कर दिया गया। वहाँ मातृत्व हर हालत में गौरव की ही बात है।

यदि विवाह के बाहर मातृत्व आये, तो भी उसमें अगौरव की बात नहीं है। यदि समाज इसे स्वीकार न करे, तो माता को चाहिए कि वह बल्कि समाज के बदले को स्वीकार कर ले, पर बच्चे को न त्यागे। सामाजिक अन्याय को दूर करने का तरीका यह नहीं है कि उससे डरा जाये, बल्कि साहसपूर्वक उसका सामना किया जाये। रही रोटी कमाने की बात, सो समाज उन्हीं क्षेत्रों में, ऐसी माता को रोटी कमाने से रोक सकता है जो मध्यम वर्ग के कामों के हैं तथा उसके दायरे में आते हैं, नहीं तो हाथ के सब काम उसके लिए खुले ही रहते हैं।

अविवाहिता माता तथा उसके बच्चे को समाज के संरक्षण पर समाज के सब सदस्यों की तरह हक हासिल है। पूँजीवादी सभ्यता के सामाजिक नियम वैयक्तिक सदाचार को बुत बनाकर पूजते हैं, और इस धारणा में सबसे जो अन्यायपूर्ण बात है, वह यह है कि इस प्रकार के सदाचार में पुरुष और स्त्री में अंतर किया जाता है, और इस सारी पद्धति में जो शोषण अन्तर्निहित है, उसे बिलकुल देखा ही नहीं जाता। यदि कुछ अभागी माताओं को सम्मान-जनक तरीके से संगठित, नैतिक तथा द्राव्यिक सजाओं से बचकर रहने दिया जाता है, तो इससे किसका क्या बिगड़ता है ? आम लोगों को

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

Estd. 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S. १०) H.M.B.S १५) H.M.D.S. २५)। पुस्तक—अ० पारिवारिक १) बायोकेमिक १) १००० रेडलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्सनरियाँ १॥) आर्गेनन १), फार्माकोपिया १॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायँगी। डा० ख० माफ—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≡) ड्राम। आउन्स ॥) परेलू बक्स ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S (U.S.A.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंग-मंच

'भँवर' फिल्म कैसा है ?

दिग्दर्शक केदार शर्मा की कृति

लेखक, श्री पूरन खत्री

सच्चे प्रेम का अंत दुखमय होता है। सृष्टि के आदि से है और अंत तक रहेगा। 'भँवर' के कथाकार श्री केदार शर्मा ने कहानी इसी के आधार पर लिखी है।

'भँवर' की कहानी का प्रारंभ दो नौजवानों से होता है, जो काम की तलाश में लखनऊ से बम्बई गये थे। गये तो थे काम की तलाश में मगर वहाँ कयामत बरस पड़ी। जिस मकान में वह ठहरे उसके ऊपरी कमरे में इन्दु और बिन्दु दो बहनें रहती थीं। इन्दु का प्रेम एक पहलवान से था जो सरकस में पार्ट किया करता था। दोनों बहनों को गाने का शौक था। पंचम और रेखब दोनों की मुलाकात इन्दु और बिन्दु से हुई। रेखब का बिन्दु से प्रेम हो गया। पंचम की भी बातचीत इन्दु से हुई। पहलवान को इससे ईर्ष्या होने लगी। मौका मिलने पर उसने एक दिन पंचम को डाँट बताई। भाग्यवश पंचम और इन्दु को एक ही मकान में गाना तथा नाच सिखाने का काम मिल गया। दोनों में क्रमशः दोस्ती बढ़ने लगी। बिन्दु और रेखब का प्रेम भी क्रमशः बढ़ने लगा। दोनों साथ साथ बाजार जाते, साथ साथ घूमते और कभी कभी साइकिल से सैर भी करते।

शहर में एक सर्कस-कम्पनी आई। उसमें पहलवान को काम मिल गया, परन्तु बिना पार्टनर के उसका काम नहीं चल सकता था। इसलिए उसने इन्दु को इस काम के लिये प्रोत्साहन दिया। इन्दु नाच की शौकीन थी, इसलिए डरती थी कि कहीं गिरकर उसकी टाँग न टूट जाये? कहीं नाच में बाधा न हो? इसी से वह उसका साथ नहीं देती थी। इसका उलटा ही असर पहलवान पर पड़ा। वह पूर्ण रूप से पंचम को नीचा दिखाने की सोचने लगा। पर धीरे धीरे सर्कस के दिन एक के बाद एक कम होते जा रहे थे, इसलिए उसको मौका न मिल सका। अपनी दीदी के न जाने पर बिन्दु ने सर्कस में जाने का निश्चय किया और वह रिहर्सल में भी जाने लगी। सर्कस के दिन सैकड़ों टिकट बिके, काफी तादाद में लोग तमाशा देखने आये। सर्कस शुरू हुआ। पहले बिन्दु ने मोटर-साइकिल चलाई, फिर बिन्दु और पहलवान दोनों ने। जब पहलवान मोटर-साइकिल चलाने के लिये अन्दर जाने लगा तब उसकी निगाह इन्दु और पंचम पर पड़ी जो पास पास बैठे थे। मोटर-साइकिल का खेल खतरनाक हुआ और उसी में एकाएक पहलवान की मृत्यु हो गई, और बिन्दु की एक टाँग भी बेकार हो गई। फिर भी रेखब तथा बिन्दु में प्रेम का रिश्ता न टूटा। इस तरह अंत में इन्दु और पंचम तथा बिन्दु और रेखब एक दूसरे की नैया के खिवैया बने।

* * *

पंचम और इन्दु के रोल में प्रसिद्ध गायक सहगल और मैनका देसाई हैं। दोनों में किसी का भी अभिनय प्रशंसा

'भँवर' फिल्म के प्रधान अभिनेता सहगल।

करने के योग्य नहीं है। सहगल ने प्रायः अच्छा अभिनय नहीं किया। मैनका कुमारी नहीं मालूम देती हैं। रेखब तथा बिन्दु के रोल में अरुणकुमार तथा कमला चटर्जी हैं। दोनों की भूमिका प्रशंसा योग्य है। कमला चटर्जी ने बड़े ही प्रशंसनीय ढंग से अभिनय किया है। अगर सचमुच देखा जाये तो फिल्म में कमला चटर्जी का अभिनय ही सबसे सुन्दर है। श्रीयुत कोल (पहलवान) की भूमिका लाला याकूब ने की है। उसका अभिनय भी प्रशंसा-योग्य है। नौकर तथा सर्कस के मैनेजर के रोल में केशरी और बैराम शा हैं। यह लोग भी अपनी अपनी जगह अच्छे हैं।

* * *

'चित्रलेखा' के ख्याति-प्राप्त निर्माता श्री केदार शर्मा अब वह केदार शर्मा नहीं रह गये हैं। अब वह रणजीत मूवीटोन में हैं। 'भँवर' टेकनिक के लिहाज से भी प्रशंसनीय नहीं है। फोटोग्राफी में भी क्रमशः दोष आ ही गये हैं। आउटडोर शूटिंग बड़ी ही अप्राकृतिक है। चित्र का संगीत भी प्रशंसनीय नहीं है। बुलु ईरानी ने कोई नई ट्यूनिंग नहीं दी है। हाँ, कमला चटर्जी के पहले गाने के साथ संगीत का जोड़-तोड़ प्रशंसनीय है। सहगल और मैनका देसाई के तो सभी गाने बेतुके हैं। अरुण ने भी एक गाना गाया है जिसकी शूटिंग ठीक नहीं हुई है। ध्वनि सामान्य है। ध्वनि-लेखक ने काफी श्रम किया है।

चित्र प्रशंसा के योग्य नहीं है, इसलिए नहीं है कि, रणजीत जैसी श्रेष्ठ कम्पनी इसकी निमाता है और श्री केदार शर्मा ऐसे कुशल दिग्दर्शक इसके दिग्दर्शक हैं बल्कि चित्र में वास्तविकता कम दिखलाई देती है।

इधर उधर की

टूटे अंगों के लिए पलस्तर

ब्रिटेन में टूटे अंगों के लिए पलस्तर का एक प्रयोग किया गया है। रसायन के खोज करनेवाले मिस्टर एच० कोलिन्सन ने 'नर्सिंग मिरर" में "हड्डी टूटने में पलस्तर का उपयोग" शीर्षक एक लेख लिखा है। उसमें उन्होंने कहा कि टूटी हुई हड्डी को पलस्तर के लिक्विडयूरिया फार्मलडेहाइड नामक घोल को लेकर हड्डियों को बाँध कर पलस्तर कर दिया जाये। आधे घंटे बाद जब लेप सूखकर कड़ा हो जायेगा तो उस कड़ाई के साथ हड्डियाँ भी कड़ी हो जायेंगी। दूसरे दिन वह बन्धन और भी कड़ा हो जायेगा। काफी मोटाई में वह पलस्तर कड़ा बना रहेगा जिस पर पैरिस बन्धन की गाँठ रहेगी। इस बन्धन से चमड़ों में कोई अन्तर न होगा। अन्त में इस बन्धन को कैंची से काट देना चाहिए।

* * *

पेड़ लगाने में पलस्तर का उपयोग

योरोप में एक ऐसा कैबिल बनाया गया है जिसमें स्वयं गर्मी पैदा होती है। यह मालियों के लिए बहुत ही उपयोगी है। इसका इस्तेमाल पलस्तर द्वारा होता है। बीजवाले पौधों, फूलों आदि सभी किस्म के पौधों में इस पलस्तर का उपयोग कर सकते हैं।

चींटियों में गुलामी

अमेरिका में वैज्ञानिकों ने देखा है कि चीटियों में भी गुलामी की प्रथा है। एक प्रकार का चींटी दल दूसरे प्रकार के चींटी दल पर हमला करता है। यह दल दूसरे को गुलाम बनाकर उससे काम लेता और बैठे बैठे उसकी कमाई खाता है।

एटम बम के निर्माता

अभी तक एटम बम के [illegible] रहस्य छिपा हुआ है। विगत [illegible] में एटम बम के सम्बन्ध में [illegible] प्रकाशित हुआ है जिसमें [illegible] है कि जर्मनी के प्रोफेसर हान ने [illegible] का आविष्कार सन् १९३६ ई० [illegible] था। यह आविष्कार प्रोफेसर [illegible] से बेलजियम और फ्रान्स होते [illegible] ले आये। तब से उन्होंने इस [illegible] छोड़ दिया। आगे अमेरिकन [illegible] ने फिर से एटम बम का अनुसंधान

* *

रेडियो का विकास

रेडियम धातु ने विज्ञान में [illegible] अद्भुत चमत्कार पैदा कर दिया। अभी तक रेडियो से समाचार सुन [illegible] थे अब इतनी उन्नति हो गई है कि [illegible] अपनी जेब में रेडियो सेट रख [illegible] के एक कोने से दूसरे कोने में [illegible] कर सकते हैं। अँधेरे स्थानों में [illegible] देख सकते हैं। इतनी उन्नति हो [illegible] ही साथ खोज हो रही है कि [illegible] रेलगाड़ियाँ तक चलाई जा सकेंगी।

* *

बिना चर्बी के साबुन

विदेशों में अभी तक साबुन में [illegible] मिलाया करते थे। परन्तु चूँकि [illegible] भोजन की दिक्कत है। इससे [illegible] का भी इस्तेमाल कर लेते हैं। अब [illegible] में बिना चर्बी के साबुन बनेंगे।

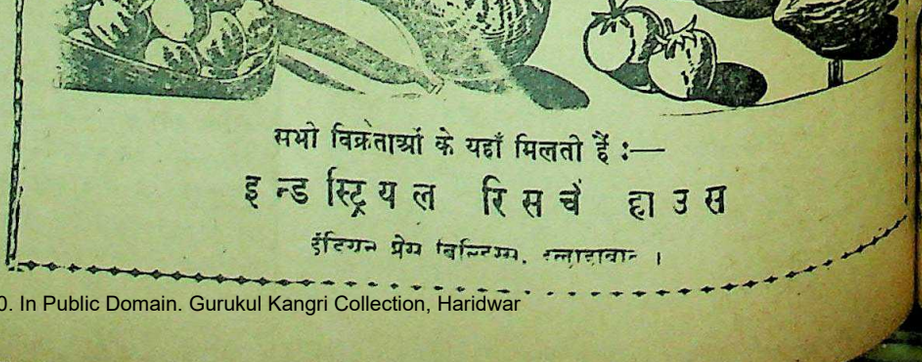

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

अरुणा आसफअली—लेखक, श्री सुरेश गांधी, प्रकाशक, श्री लाड 'दर्शन'। गो० लाड एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स, काल्बादेवी रोड नं० २। मूल्य २) सजिल्द।

भारत की सुप्रसिद्ध समाजसेविका श्रीमती अरुणा आसफअली के ओजमयी वाणी और कार्यों से कौन परिचित नहीं है। उन्होंने ही राष्ट्रीय चेतना की साकार प्रतिमा बनकर १९४२ के आन्दोलन में अपने राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में जो महान कार्य की थी, उसका भी एक संक्षिप्त वर्णन पुस्तक में श्रीमती अरुणा के अज्ञातवास के बाद ही रोचक और सुन्दर ढंग से किया गया है। पुस्तक पाँच परिच्छेदों में विभाजित है। पहले परिच्छेद में भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन का विशद प्रकार लुत हुई, इसका वर्णन है। दूसरे परिच्छेद में उनके जीवन पर प्रकाश डाला गया है। तीसरे परिच्छेद में अगस्त-प्रस्ताव के बाद श्रीमती अरुणा की विचार-धाराओं पर प्रकाश डाला गया है। चौथे परिच्छेद में उनका अन्य प्रान्तों में अगस्त-क्रान्ति का प्रभाव तथा श्रीमती अरुणा के ऊपर सुन्दर प्रकाश डाला गया है। पाँचवें परिच्छेद में अज्ञातवास से बाहर आने पर उनके कुछ ओजपूर्ण भाषणों का संकलन किया गया है। पुस्तक के प्रारम्भ से अन्त तक श्रीमती अरुणा के क्रान्तिकारी विचार-धाराओं का चित्रण किया गया है। पुस्तक प्रत्येक व्यक्ति के पढ़ने योग्य है। जहाँ इसके द्वारा के राष्ट्रीय जीवन की झाँकी का पता चलता है वहाँ नवयुवकों को नवीन भावनाओं तथा विचारों को प्राप्त करने की प्रेरणा होती है। छपाई-सफाई भी सुन्दर और आकर्षक है। राजनीति से दिलचस्पी रखने-वालों के लिए पठनीय है।

* * *

नाट्य-शतक—रचयिता लेफ्टिनेंट गोपीनाथ भाटी। प्रकाशक, हितैषी पुस्तकालय, उदयपुर (मेवाड़)।

इस छोटे से युग से भारत के कितने ही वीर स्वतन्त्रता के लिए बलिदान हो गये हैं। उनमें से महाराणा प्रताप का नाम अमर तथा ऐतिहासिक है। उदयपुर के श्रेष्ठ कवि ठाकुर श्यामलदास छत्रसाल के सम्बन्ध में ओजस्वी तथा रोमांचपूर्ण कवित्त लिखे जो पढ़ने से प्रतीत होते हैं। कवितायें ओजस्वी हैं और हृदय पर प्रभाव डालने-वाली हैं। पाठकों के लिए अवश्य पठनीय है।

* * *

विज्ञान—सम्पादक, श्री प्रवासी-लाल वर्मा, प्रकाशक, श्री उमेदी-लाल। रामसुन्दर रसायनशाला, जयपुर। मूल्य १)।

इस पुस्तक के सम्बन्ध में ज्ञातव्य बातें हैं। घोड़ों की अनेक बीमारियों के सम्बन्ध में और रोगों के दूर करने के उपायों के अध्ययन तथा मनन से यह पुस्तक लिखी गई है। घोड़ों के शौकीन लोगों के लिए, जो अँगरेजी नहीं जानते, यह पुस्तक काम की और पठनीय है। विशेषकर देहात में घोड़े पालनेवालों के लिए अधिक उपयोगी है।

* * *

ग्राम-साहित्य—लेखक, श्री सत्येन्द्र-प्रकाश, श्री भारतभूषण अग्रवाल, प्रधान मन्त्री व्रज साहित्य-मण्डल, मथुरा।

लोक-साहित्य के संकलनकर्त्ताओं को प्रायः अपने कार्य-सम्पादन में व्यावहारिक शंकायें और अड़चनें उत्पन्न होती रहती हैं, प्रस्तुत पुस्तक में उन्हीं का समाधान किया गया है। जनपदीय संकलनकर्त्ताओं के लिए पथ-प्रदर्शक का काम देगी। पुस्तक उपयोगी है।

—चक्रपाणि

मनोरञ्जक चुटकुले

दो यात्री नाव से उतरे और वहीं पास ही हाथ-मुँह धोने लगे। नाव के माझी को नाव पर दो गठरी मिलीं। कुछ अँधेरा था। उसने समझा यात्री चले गये। माझी ने अपने साथी से कहा,—'लो एक गठरी तो सफेद कपड़े की मिली गई है, इसमें कुछ न कुछ होगा ही।'

इतने में यात्रियों में से एक बोल उठा—"पीले कपड़ेवाली गठरी भी तो नाव ही पर है।" माझी चुप हो गया।"

* * *

पोस्टमास्टर साहब ने एक आदमी का मकान किराये पर ले रक्खा था। पोस्टमास्टर साहब का तबादला हो गया। जिस वक्त वे जाने लगे, उस वक्त मकान-मालिक नहीं था। मकान का किराया अपने स्थानापन्न पोस्टमास्टर को दे गये। और उसी मकान में टिका गये। जब मालिक-मकान आया और उन साहब से किराया माँगने लगा तो उन्होंने कहा—"मास्टर साहब ने तो मुझे किराया नहीं दिया। इतना ही कहा था—"किराया हमने दे दिया है आप हर महीने पाँच रुपये दिये जाइयेगा।"

मास्टर साहब उस मकान का दस रुपये किराया देते थे। अब तो मकान मालिक को लेने के देने पड़े। दस रुपये तो गये ही थे। हर महीने पाँच और देने पड़े। मकान-मालिक ने कहा—कृपया मकान छोड़ दीजिए हम सब पा चुके।"

नये मास्टर साहब—"क्यों अब तो महँगी और युद्ध-काल है। जो जहाँ रहता है उसे नहीं छोड़ सकता।

मकान-मालिक मास्टर साहब का मुँह देखने लगा।

* * *

"काश्मीर-सरकार को पंडित जवाहर लाल नेहरू के काश्मीर आने में कोई एतराज नहीं।" यह बात श्री काक ने कही।

"हो कैसे सकता है महोदय! जब मछली ही बगुले से बड़ी है तो बगुला उसे कैसे निगलेगा?"

* * *

एक समाचारपत्र ने लिखा है—"हैदराबाद स्टेट के सुधार की सारी स्कीम बहुत ही खराब है।"

"बतलाइये महोदय किस स्टेट के सुधार अच्छे हैं। भारत में अभी राजसत्ता है न!"

* * *

भारत-मंत्री ने अभी पार्लियामेण्ट की एक बैठक में कहा है—"विधान परिषद् में भारत के कुछ उच्चतम योग्य व्यक्ति होंगे। परन्तु शायद उन्होंने भूतपूर्व भारत-मंत्री मिस्टर एमरी से उन उच्चतम व्यक्तियों के सम्बन्ध में नहीं पूछा। कृपया उनसे भी राय ले लीजिए कि वे कैसे हैं? अभी आपका नया अनुभव है।

* * *

बर्नर्डशा इस समय ९० वर्ष के हैं। उन्होंने ९९ वर्ष की अवस्था तक के लिए अपना एक नया बीमा कराया है। उन्हें विश्वास है कि वे ९९ वर्ष तक जीवित रहेंगे। परन्तु गांधी जी को अपने १२५ वर्ष जीने का विश्वास है फिर भी बीमा में विश्वास नहीं।

—सोमनाथ समदरिया

नसों की जलन से उस स्त्री को छुटकारा मिलता ही न था

न दिन में चैन और न रात में नींद

आखिरकार क्रुशेन से ही फायदा हुआ

उन लोगों के हित के लिए जो लोग उसी की भाँति रोगग्रस्त हैं यह कृतज्ञ स्त्री इस प्रकार लिखती है :—

"पिछले मई के महीने में मेरी नसों में बड़ी जलन होने लगी जिसके कारण दिन में चैन तथा रात में नींद हराम थी—दर्द का तो कहना ही क्या था।

अनेकों दवायें सेवन कीं किन्तु बहुत कम फायदा हुआ। अन्त में एक स्त्री ने जो कि मेरी ही भाँति पहले बीमार थी और जिसको क्रुशेन से लाभ हुआ था, मुझे क्रुशेन सेवन करने की सलाह दी। पहली बोतल सेवन करने से मुझे फायदा मालूम हुआ और अब मैं पीड़ा से एकदम मुक्त हूँ। नींद खूब आती है। मैं क्रुशेन की कृतज्ञ हूँ। श्री० यच० सी०

नसों की जलन भी गठिये की तरह खून में अम्ल की अधिकता से होती है। क्रुशेन में संमिश्रित ९ प्रकार के प्राकृतिक लवणों में से कुछ तो अम्ल को गलाते हैं और कुछ उसे शरीर से बाहर निकाल देते हैं।

क्रुशेन शरीर की व्यवस्था इतनी सुचारु रखता है, अनावश्यक मेल से इतना मुक्त रखता है कि शरीर में अम्ल इत्यादि एकत्र होने ही नहीं पाता। क्रुशेन साल्ट बाजार में सभी औषधि-विक्रेताओं के यहाँ मिलता है।

सुंदर त्वचा, यह स्त्री का एक महान् तंत्र है। अपनी त्वचा की उपेक्षा न कीजिये - लक्स टॉयलेट साबुन की सौम्यता से उसकी सुरक्षा करो। ३० दिन के लिये सितारा के सौन्दर्य-साधन का अनुसरण क्यों नहीं करते — आप उसके मृदु, शुद्धिकारक परिणाम से आनन्दित होंगे, और आपको इस सुगन्धित, सफ़ेद साबुन का विपुल मलाईदार झाग लुभावेगा। फिल्मी स्टार्स का सौन्दर्य - साधन आप की अनमोल त्वचा को ताज़ा, साफ़-सुथरी और रेशम के समान नरम रखता है।

LTS. 140-50-40 HI — LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र जहाँ पहले था वहीं आज भी

(पेज ७ का शेष)

से अधिक है। यदि यह युद्ध एक साल पहले छिड़ जाता अर्थात् सन् १९३८ के सितम्बर में ही छिड़ जाता तो हवाई शक्ति में इँगलैंड के लेने के देने पड़ जाते। इँगलैंड के प्रमुख सैनिक विशेषज्ञ लिडेल हार्ट ने कहा था कि "उस समय इँगलैंड के लिए उनका उपयोग भी मुश्किल से हो सकता था। क्योंकि, उस समय ये हवाई जहाज न तो आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित थे न इनके चलाने के लिए पर्याप्त संख्या में चालक ही उपलब्ध थे।"

(३) खुश्की की सेना—जिसमें पैदल, घुड़सवार, तोपखाना, हवामार तोपें, टैंकें, बख्तर बन्द मोटरें आदि शामिल हैं—की हालत और भी बुरी थी। ऊपर यह बताया गया कि 'म्यूनिख संकट' के समय इँगलैंड के पास केवल दो ही डिवीजन सेना थी। 'म्यूनिख संकट' टल जाने के बाद इस सेना का पुनर्संगठन किया गया था। अप्रैल सन् १९३९ में अनिवार्य भरती शुरू की गई थी और यह भी तय हुआ था कि, ६ महीने शिक्षा देकर प्रति-वर्ष दो लाख सेना तैयार की जाय। जिस दिन अर्थात् २६ अप्रैल सन् १९३९ को अनिवार्य भर्ती शुरू की गई उस दिन रोम और बर्लिन रेडियो ने ब्रिटेन की सैनिक तैयारी का खूब मजाक उड़ाया था। बर्लिन रेडियो ने तो यहाँ तक कह डाला था कि 'लार्ड चेटफिल्ड की यह घोषणा कि इँग-लैंड युद्ध के लिए शस्त्र और सैनिक बल से इतना तैयार है कि वह पहले कभी नहीं था' दुनिया की आँखों में धूल झोंकने के लिए भारी चकमा है।

इँगलैंड की तुलना में जर्मन सेना की ओर देखा जाय तो एकदम आश्चर्य-चकित होना पड़ता है। जिस समय युद्ध आरम्भ हुआ उस समय जर्मनी के पास २० लाख सेना की १५० डिवीजनें थीं। सब की सब सेना आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों से अच्छी तरह सुसज्जित थीं। क्योंकि जर्मनी ने सन् १९३३ से ही सैनिक तैयारी शुरू कर दी थी। वर्सेई-संधि के अनुसार उसे निश्चित सेना से (शायद १ लाख सेना से) अधिक सेना रखने की मनाई थी। अतः उसने अपनी सेना को सुसज्जित सेना और स्वयंसेवक सेना के रूप में विभक्त कर दिया था। सुसज्जित सेना हर समय तैयार रहती थी और स्वयंसेवक सेना जब चाहे तब बुलाई जा सकती थी। नाजी सेना के पास ७५ मिलीमीटर की बड़ी बड़ी तोपें थीं जिनका इँगलैंड के पास बिलकुल अभाव था। स्पेन के गृह-युद्ध में जर्मन सेना ने अपनी शक्ति को अच्छी तरह परख भी लिया था। उसने ऐसे अस्त्र-शस्त्रों को बिलकुल अलग कर दिया था जो स्पेन के गृह-युद्ध में निम्न-कोटि के सिद्ध हुए थे। उनके स्थान पर उसने नये-नये अस्त्र-शस्त्र तैयार किये थे। युद्ध के प्रारम्भिक काल में उसके पास दो मोटरोंवाले ऐसे ऐसे शक्ति-शाली हवाई जहाज थे जिनकी गति प्रति-घंटा ३०० मील की थी और जो एक ही उड़ान में दो हजार मील का चक्कर काट सकते थे। इसके साथ साथ जर्मनी इन हवाई जहाजों से तोपखानों का भी काम लेता था। इन सब बातों का इँगलैंड के पास बिलकुल अभाव था। इन्हीं तमाम तैयारियों का फल यह हुआ कि जर्मनी ने पोलैंड को १८ दिन में, नार्वे को ३ दिन में, हालैंड और बेलजियम को कुछ ही घंटों में तथा फ्रांस को—जिसके बारे में यह उड़ाया गया था कि योरप भर में उसे हराना मुश्किल है—कुछ ही सप्ताह में पराजित कर दिया था। और इँगलैंड? यह तो हिटलर की कृपा अथवा बेवकूफी थी, वर्ना, न इँगलैंड ही रह पाता न उसका साम्राज्य!

हिन्दुस्तान में सैनिक स्थिति

बहुत से लोगों का अनुमान होगा कि युद्ध के पूर्व ब्रिटिश साम्राज्यशाही ने भारत जैसे ४० करोड़ जन-संख्या के विशाल देश में विराट् सेना रखी होगी। उनका यह अनुमान बिलकुल आधार-रहित था। हिन्दुस्तान में कुल दो लाख पचीस हजार सेना थी जो ब्योरेवार इस प्रकार थी—१,५०,००० भारतीय सेना (ब्रिटिश सेना को छोड़कर), १५,००० प्रादेशिक सेना (टेरिटोरियल फोर्स), ४५,००० रियासतों की सेना। हिन्दुस्तान की यह सब की सब सेना न केवल आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों से विहीन थी, बल्कि वह इन अस्त्र-शस्त्रों से बिलकुल अनभिज्ञ भी थी। सारे हिन्दुस्तान में कुल ११ हवाई जहाज थे। उसके चालक कितने होंगे, केवल अनुमान-मात्र से जाना जा सकता है।

साम्राज्य की राजनैतिक स्थिति

ब्रिटिश साम्राज्य विस्तृत और विशाल होने की वजह से उसकी जवाबदारी भी गम्भीर थी। वर्षों के साम्राज्यवादी शोषण के कारण उपनिवेश तथा साम्राज्य के आधीन देशों में साम्राज्यशाही के प्रति काफी असन्तोष था। पूर्व से लेकर पश्चिम तक मलाया, बर्मा, हिन्दुस्तान, मिस्र, फिलिस्तीन, साइप्रस आदि देशों में असंतोष की आग कभी प्रकट रूप से और कभी गुप्त रूप से दहक रही थी।

चीन के अन्दर टिन्सिन और शांघाई में अँगरेजों को पद पद पर जापानियों द्वारा अपमान सहना पड़ रहा था। टिन्सिन में तो जापानी लोग अँगरेजों को नंगा कर करके तलाशी ले रहे थे और वास्तविक अर्थ में लात और घूँसों से बातचीत कर रहे थे।

योरप के अन्दर इँगलैंड ने हिटलर के सामने घुटने टेक दिये थे; जिसके फल-स्वरूप आस्ट्रिया और जेकोस्लोवाकिया का बलिदान हो चुका था। जेकोस्लोवाकिया का स्कोडा का शस्त्र तैयार करने का प्रसिद्ध कारखाना हिटलर के हाथ लग गया था। पूर्व में इँगलैंड और सोवियट रूस के बीच में समझौता नहीं हो पाया था। क्योंकि इँगलैंड सोवियट रूस को एक अछूत देश समझता था। इसीलिए उसने समझौते की बातचीत करने के लिए राजनैतिक और सैनिक विशेषज्ञों के स्थान पर कुछ मुंशियों को भेज दिया था और वह भी सामान ढोनेवाले लद्दू जहाजों पर। समझौते की शर्तों में इँगलैंड की ओर से एक शर्त यह भी रक्खी गई थी कि जर्मनी द्वारा पोलैंड पर हमला होने की अवस्था में सोवियट सेना पोलैंड की धरती पर पैर न रक्खे। इसके विपरीत हिटलर ने तत्परता दिखाई। उसने सोवियट रूस से अनाक्रमण संधि कर ली और अपने पूर्वीय मोर्चे को सुरक्षित बना लिया। इन तमाम बातों के अलावा भी एक बात और थी, वह यह कि संसार भर की विचारशील और इन्साफ-पसन्द जनता इँगलैंड द्वारा स्थापित [illegible] कलुषित कारनामों से घृणा कर रही थी।

भारत ने क्या किया?

द्वितीय महायुद्ध छिड़ने के पहले और युद्ध छिड़ने के एक-डेढ़ साल तक ब्रिटिश साम्राज्य के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सैनिक और राजनैतिक परिस्थितियाँ न केवल गम्भीर थीं, बल्कि बिलकुल प्रतिकूल थीं। इधर भारत की जनता साम्राज्यवाद से मुक्त होने के लिए छटपटा रही थी। जनता की जबान पर स्व० लोकमान्य तिलक की उक्ति 'इँगलैंड की मुसीबत ही भारत की संधि' (England's adversity is India's opportunity) खेल रही थी। नेताओं के केवल एक इशारे पर वह अपने लक्ष की प्राप्ति के लिए अपूर्व बलिदान करने के लिए आतुर थी। लेकिन? कांग्रेस के उच्च नेताओं ने बिलकुल अकर्मण्यता का सहारा लिया। युद्ध छिड़ने के बाद उन्होंने अपने आपको धारा-सभाओं से हटा लिया। जनता को केवल प्रतीक्षा करने का आदेश दिया। धीरे धीरे साम्राज्यशाही ने अपने दमन का चक्र शुरू किया। सन् १९४० के प्रारम्भिक महीनों में अर्थात् रामगढ़ कांग्रेस के पहले उसने कांग्रेस के उग्रवादी नेताओं को जेलों में बन्द करना शुरू किया। रामगढ़ कांग्रेस में फिर से बचे-खुचे उग्रवादी नेताओं ने ब्रिटिश साम्राज्यशाही के विरुद्ध अन्तिम संग्राम छेड़ने की प्रार्थना की उनकी प्रार्थना को 'बच्चों का खेल' कहकर टाल दिया गया। गांधी जी के हाथ में भावी संग्राम की बागडोर थमा दी गई। गांधी जी के पास सिवाय 'विधायक कार्य-क्रम' और चर्खा चलवाने का कोई कार्य-क्रम नहीं था। कांग्रेस की अकर्मण्यता को देखकर निरंकुश ब्रिटिश साम्राज्यशाही का हौसला बढ़ा। उसने एक-एक करके लगभग सभी उग्रवादी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। जो गिरफ्तारी से बच गये थे वे अन्तर्धान हो गये। स्वयंसेवकों की परेड को गैरकानूनी करार दिया गया। नागरिक स्वतन्त्रता का सम्पूर्ण अपहरण कर दिया गया। साम्राज्यशाही की इन तमाम कार्र-वाइयों के अनन्तर, गांधी जी ने एक महा-प्रचार के बाद एक संग्राम शुरू किया—स्वाधीनता के लक्ष की प्राप्ति के लिए नहीं, युद्ध के विरुद्ध भाषण-स्वाधीनता के लिए—व्यक्तिगत सत्याग्रह। लगभग सभी नेताओं ने बिना किसी प्रदर्शन के अपने आपको गिरफ्तार करा दिया। यह 'संग्राम' भी कुछ समय के बाद शिथिल हो गया। इस अवधि में ब्रिटिश साम्राज्यशाही शक्ति-शाली होने लगी। उसने जब कांग्रेस की शक्तिहीनता को अच्छी तरह परख लिया तो उदारता के साथ जेलों के फाटक खोल दिये।

इस तरह कांग्रेस ने स्वाधीनता-[illegible] स्वर्ण अवसर को खो दिया। [illegible] सकते हैं कि यहाँ कांग्रेस का ही [illegible] क्यों किया गया, मुस्लिम लीग [illegible] नहीं? इसका उत्तर यही है कि [illegible] तक कांग्रेस ही वास्तविक अर्थों में [illegible] अति प्रचण्ड जनसमाज की [illegible] थी। मुस्लिम लीग उस समय [illegible] शक्तिशाली नहीं हो पाई थी [illegible] आज है। मुस्लिम लीग में [illegible] तो तब से हुआ जब से मार्च [illegible] के लाहौर-अधिवेशन में 'पाकिस्तान' [illegible] प्रस्ताव पास किया गया।

क्या करना चाहिए था?

युद्ध के प्रारंभिक काल में [illegible] नेताओं को उग्रवादी नेताओं ने [illegible] सलाह दी थी कि कांग्रेस के [illegible] शासनारूढ़ स्थान से हटें नहीं [illegible] साथ साथ शासन के अन्दर [illegible] में ऐसे क्रांतिकारी कदम उठाने [illegible] कारण प्रान्तीय गवर्नरों को [illegible] पर मजबूर होना पड़े। कांग्रेस के [illegible] गवर्नरों के हस्तक्षेप को ठुकरा दे और [illegible] के लिए ऐसी परिस्थिति पैदा [illegible] कांग्रेस मंत्रियों को पदों से हटाने [illegible] मजबूर हो जाये। पदों से हटने [illegible] जनता को आदेश दें कि जब तक [illegible] की बागडोर जनता के प्रतिनिधियों [illegible] में न होगी तब तक जनता [illegible] किसी प्रकार का कर न देंगे। [illegible] अवस्था में नेतागण गिरफ्तार किये [illegible] जनता नेताओं के आदेशों का पालन [illegible] लगान और कर देना बन्द करेगी। [illegible] तरफ मजदूरों, किसानों और आम जनता [illegible] हड़तालें होतीं। सरकार का पुर्जा-[illegible] पड़ जाता। जनता द्वारा पत्नी [illegible] घोषणा होती। अन्तर्राष्ट्रीय [illegible] गुत्थियों में उलझी हुई ब्रिटिश [illegible] शाही के होश ठिकाने आते। [illegible] मजबूर होकर भारत के सामने [illegible] होना पड़ता। भारत अपनी [illegible] को प्राप्त करता और दुगुने बल से [illegible] और फासिस्टों का मुकाबला करता। [illegible] महायुद्ध को लम्बे अर्से तक [illegible] रोकता।

दुर्भाग्यवश वामपंथियों की [illegible] सलाह को कांग्रेस के उच्च नेताओं ने [illegible] से इनकार किया और हम आज [illegible] हैं जहाँ महायुद्ध के पहले थे बल्कि [illegible] गिरी हालत में।

हर प्रकार की
धार्मिक, राष्ट्रीय एवं वीर-रस-पूर्ण पुस्तकें
मिलने का पता:—
राजपाल एण्ड सन्ज़,
(द०) अनारकली, लाहौर
लाइब्रेरियों व संस्थाओं को विशेष रियायत
(पुस्तकों का सूचीपत्र मुफ्त मँगवाएँ)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोल की अध्यक्षता से मनाया गया। संगीत, प्रवचन, कविता-पाठ आदि के पश्चात् हिन्दी विद्यापीठ के लिए ११ लाख की 'तुलसी स्मारक कोष' की स्थापना हिन्दी विद्यापीठ के संस्थापक एवं भूतपूर्व कुलपति श्रीमान् पं० लक्ष्मीलाल जी जोशी अध्यक्ष मेवाड़ शिक्षा-विभाग द्वारा की गई। सारे भारतवर्ष में अब तक महात्मा तुलसीदास का स्मारक नहीं है। महात्मा तुलसीदास जैसे महान् मनीषी का स्मारक जो उनके आदर्शों के अनुकूल हो आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। महात्मा तुलसीदास की भारतवर्ष को अमूल्य देन है भारतवर्ष उनके ऋण से कभी भी उऋण न हो सकेगा। तुलसीदास की अमर वाग्धारा चार सौ वर्षों से भारतीय मानस को सींचती आ रही है। एवं कितने ही निराश हृदयों में आशा का संचार करती आ रही है। और आगे भी निरन्तर करती रहेगी। ऐसी महान् विभूति के स्मारक का न होना एक बहुत बड़ा अभाव था। इसकी पूर्ति के लिए हिन्दी विद्यापीठ उदयपुर शीघ्र ही तुलसी-स्मारक के रूप में परिणत कर दिया जायगा। यह ग्यारह लाख का कोष पाँच वर्षों में एकत्रित करने का प्रयत्न किया जायगा। यह स्मारक मेवाड़ भूमि के गौरव को और भी बढ़ायेगा। तुलसी नगर और तुलसी पाठशाला की स्थापना भी की जायगी। ता० ४ अगस्त को ६ बजे सायंकाल इसका बीजारोपण किया गया और ५ अगस्त तक हिन्दी विद्यापीठ के कार्यकर्ताओं से ४,००० चार हजार से भी ऊपर चन्दा हो गया है, हमें आशा है समस्त भारतवर्ष की जनता इसका स्वागत करेगी और इसे सम्पूर्ण सहायता देगी।

—गिरधारीलाल शर्मा

* * *

कोठी राज्य प्रजा-मंडल की ओर से कोटी और बरहना दो स्थानों में ६ अगस्त की पवित्र यादगार में सार्वजनिक सभाएँ हुईं। कोठी में बा० रामयश गुप्ता और बरहना में वयोवृद्ध लाल रामभगतसिंह ने सभापति का आसन ग्रहण किया। वक्ताओं में पं० गंगाप्रसाद पाण्डेय, ठा० ब्रजभूषणसिंह, मेजर कुँवर नरेन्द्रसिंह व पं० बालकृष्ण चतुर्वेदी और बरहना में प्रजा-मंडल अध्यक्ष लाल तीर्थराजसिंह बाघेल थे। 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव को उपस्थित लोगों ने दिल खोलकर दोहराया। श्री रमेशप्रतापसिंह ने '६ अगस्त' शीर्षक कविता को आकर्षक ढंग से गाकर सुनाया।

११ अगस्त को कोठी राज्य प्रजा-मंडल की ओर से एक सभा ग्राम कंचनपुर में पं० रामायणदास पाण्डेय के सभापतित्व में हुई। लाल तीर्थराजसिंह बाघेल, लाल ब्रजभूषणसिंह, पं० गंगाप्रसाद पाण्डेय, मेजर कुँवर नरेन्द्रसिंह, पं० जागेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी और लाल दर्शनसिंह ने भाषण दिया। वक्ताओं ने जोर के साथ कहा कि जब पैसा और मजदूर दोनों की कमी है तब खेती के हर तरह के काम, खासकर हल जोतना, जो एक बुनियादी और शुरुआती काम है, कोहर जात के लोगों, ब्राह्मण-क्षत्रियों को भी निःसंकोच करना चाहिये। पं० हरेश्वरप्रसाद ने वक्ताओं का राष्ट्रीय नारों से सम्मान किया!

—महेश्वर मिश्रौलिया

* * *

फीजी द्वीप का हिन्दी पुस्तकालय जो युद्धकाल में बन्द था, अब पुनः चालू हो गया है और नाम बदलकर हिन्द-पुस्तकालय रखा गया है। इसमें संसार के विभिन्न स्थानों से पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं। इस बार इसका निःशुल्क वाचनालय भी खोलने का प्रबन्ध हो रहा है, अतः भारतीय पत्रकारों से भी प्रार्थना है कि अपने अखबार भेजना आरम्भ कर दें। पुस्तकालय में आनेवाले हर पत्र या पत्रिका के परिवर्तन में हम अपना "तारा" और "ज्ञान" भी भेजेंगे। जो सज्जन अपने प्रवासी-भाइयों के लाभार्थ पुस्तकें आदि भेजेंगे, उनकी प्राप्तिस्वीकार भी उपर्युक्त पत्रिकाओं में प्रकाशित की जायगी।

फीजी में भारतीय संस्कृति और सभ्यता का प्रतिदिन ह्रास हो रहा है, जिससे भारतीयों की रक्षा आवश्यक है। इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिये इस पुस्तकालय की उत्पति हुई है। भारतवासियों को भी इस उद्देश्यार्थ हिन्दी, उर्दू, गुजराती और अँगरेजी की भारतीयता जाग्रत करनेवाली पुस्तकें और पेपर भेजना चाहिये। हमें इस शुभ कार्य में भारत के धनी-मानी सज्जनों से शीघ्र उत्तर की आशा है। पता—ज्ञानीदास, मंत्री—हिन्द पुस्तकालय, नसीनू, सूवा (फीजी)

* * *

सागर शहर के मंडल चुनाव में निम्न व्यक्ति चुने गये—मंडल १ दागगंज श्री लक्ष्मीकिशोर, २ कटरा श्री दयालचंद जैन, ३ कटरा श्री भैयालाल जैन, ६ शराफी श्री पद्मकुमार जैन, ७ शराफी श्री कन्छेदीलाल दलाल, १० इतवारी श्री रामभरोस स्वर्णकार, १२ परकोटा श्री जी० के० लोकरस, १४ पुरव्याऊ श्री पी० जी० सप्रे०, १५ पुरव्याऊ श्री छोटेलाल सेन, १६ काकागंज श्री रामनारायण, १७ काकागंज श्री शिवचरन सेन, १६ दिवालानाका श्री केदारनाथ रोहण, २० दिवालानाका श्री गयाप्रसाद कबीरपंथी, २१ मढ़ियानाका श्री गौरीशंकर पाठक, २३ मढ़ियानाका श्री गंगासिंह राय, २४ बड़ा बाजार श्री रामभरोस पाठक।

निर्विरोध चुने गये सदस्य—४ सदर-खेमचन्द बिलथरे, ५ सदर—जमनाप्रसाद राजपूत, ८ चकराघाट परमानन्द स्वर्णकार, ६ चकराघाट मोदी दुलीचन्द, ११ इतवारी ग्यारसीलाल जड़िया, १३ शनीचरी गोपीलाल श्रीवास्तव, १८ जमशेर खाँ रामसेवक दुबे, २२ मढ़ियानाका प्रेमनारायण तिवारी, २५ गोपालगंज शिवशंकर दुबे।

नोट—खुरई तहसील के प्रायः सभी उम्मेदवार निर्विरोध आ गये। तहसील सागर से भी २६ में २३ निर्विरोध आये।

हड़ताल की नोटिस—ऐसा समाचार है कि म्यु० प्रा० शालाओं के अध्यापकों ने हड़ताल के लिए कमेटी को एक माह की नोटिस दिया है। उनकी ८ माँगों में से वेतन-वृद्धि की मुख्य माँग है। नोटिस की एक प्रति डी० पा० आई० व डि० कमिश्नर साहब के पास भी गई है।

रँगे हाथ पकड़े गये—बंडा के नायब तहसीलदार श्री के० आर० सोनी व उनका चपरासी मि० भगवानदास ८०) रिश्वत लेते समय रँगे हाथ पकड़े गये।

ता० १८ को शिक्षक-दिवस मनाया गया। —लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

* * *

प्रयाग के अखिल भारतीय शिक्षा-परिषद् के रजिस्ट्रार सूचित करते हैं—

अखिल भारतीय महिला शिक्षा-परिषद् की परीक्षाएँ ११ नवम्बर १९४६ ई० से आरम्भ होंगी। आवेदन पत्र भेजने की अन्तिम तारीख ८ अगस्त १९४६ ई० थी किन्तु डाक अव्यवस्था एवं वहाँ के कर्मचारियों के हड़ताल कर देने के कारण आवेदन पत्र भेजने की अन्तिम तारीख ८ सितम्बर कर दी गई है। अतएव केन्द्र व्यवस्थापकों को चाहिए कि अपने केन्द्र से सम्मिलित होनेवाली परिक्षार्थिनियों के आवेदन पत्र ८ सितम्बर १९४६ ई० तक अवश्य भेज दें। अतिरिक्त शुल्क सहित आवेदन पत्र ३१ सितम्बर तक लिए जा सकते हैं। अन्तरङ्ग परिषद् ने यह निश्चय किया है कि उक्त तिथि के बाद आये हुए आवेदन पत्रों पर कोई विचार नहीं किया जायगा। आवेदन पत्र रजिस्ट्रार महिला शिक्षा-परिषद् द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। —रजिस्ट्रार

* * *

गया से प्रकाशित होनेवाले 'उषा' पत्र के सम्पादक शारदारंजन पांडेय लिखते हैं—हिन्दी भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा है और उसके बोलनेवालों की संख्या बीस करोड़ से ऊपर ही होगी। इस दृष्टि से हिन्दी के पत्रों के तथा हिन्दी के पत्रकारों के प्रश्न अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। हिन्दी पत्रकारों की जिम्मेवारी भी सबसे अधिक है। यद्यपि 'विश्वमित्र' के रजत जयन्ती अंक तथा 'रामराज्य' और 'मधुकर' के पत्रकार अंकों में इस विषय पर बहुत कुछ निकल चुका है तथापि कितने ही ऐसे प्रश्न बाकी हैं जिन पर प्रकाश डालना आवश्यक है। अपने सहयोगियों से हमारा अनुरोध है कि वे अपने लेखों तथा रचनात्मक सुझावों द्वारा 'उषा' के पत्रकार अंक को उपयोगी बनाने में सहायक हों।

—संवाददाता

* * *

रीवाँ, डभौरा में श्री परमहंस रामायणी बाबा के सभापतित्व में हिन्दी मिडिल स्कूल में श्री तुलसी-जयन्ती उत्सव मनाया गया। पूजन, स्तुति, गायन के उपरान्त पं० चन्द्रिकाप्रसाद जी, पं० ईश्वरदीन जी, पं० कृष्णकुमार जी और लाल लखनप्रताप सिंह उरगेश का भाषण हुआ। उसके बाद पंडित कृष्णकुमार जी तथा 'उरगेश' का कविता-पाठ हुआ।

—संवाददाता

* * *

दिल्ली से निकलनेवाले 'मानवधर्म' का महापुरुष अंक सचित्र विशेषांक प्रकाशित हो रहा है जिसमें लगभग १०० युग-प्रवर्त्तक महापुरुषों के ज्वलन्त जीवन चरित्र होंगे। लेखकों तथा कवियों से प्रार्थना है कि अपने लेख शीघ्रातिशीघ्र मानवधर्म कार्यालय पीपल महादेव देहली, भेजने की कृपा करें।

—दीनानाथ दिनेश

* * *

सुलतानपुर से श्री शिवकुमार त्रिपाठी लिखते हैं—राघव पब्लिशिंग हाउस दोस्तपुर सुलतानपुर पुस्तिका "कविता" कुछ काल के लिए बन्द कर दी जा रही है। अतः 'कविता' के पाठकगण अब कविता सिरीज से ही सन्तोष प्राप्त करें।

—संवाददाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधान-निर्मात्री परिषद् क्या है ?

(पेज ५ का शेष)

सकता है। यह बात १९वें पैरे की ८वीं धारा में स्पष्ट कर दी गई है। इस दृष्टि से मुस्लिम लीग का यह कहना यथार्थ से विपरीत है कि ग्रुप या उपसंघ से कोई प्रान्त दस साल बाद ही निकल सकता है। इसी प्रकार कांग्रेस की यह व्याख्या भी प्रतिकूल है कि प्रान्तों का वर्गों में विभक्त होना अनहोना उनकी इच्छा पर निर्भर है।

स्थिति यह है कि आसाम बंगाल से मिलने को तैयार नहीं है। सीमाप्रान्त और सिन्ध भी पंजाब से भयभीत हैं और उसके साथ मिलकर रहने को तैयार नहीं हैं। प्रश्न यह है क्या विधान-सभा वर्गीकरण और उपसंघ बनाने के प्रश्न पर विचार कर सकेगी और इस बात का निर्णय कर सकेगी कि यदि कोई प्रान्त किसी के साथ नहीं मिलना चाहता तो उसके लिए उस प्रान्त को बाध्य नहीं किया जा सकता है प्रान्त स्वेच्छा से यदि उपसंघ या उप यूनियन बनाना चाहें तो बना सकते हैं, पर वे बाध्य नहीं हैं। यदि यह निर्णय हो गया, तो अगला प्रश्न उत्पन्न होगा कि आसाम या बंगाल को किसी और अन्य प्रान्त से मिलने की अनुमति होगी ? क्या बंगाल पंजाब से मिलने की अनुमति पा सकेगा ? क्योंकि पैरा १५ (५) से यही अभिप्राय मालूम होता है कि प्रान्त ग्रुप या उपसंघ बनाने में स्वतन्त्र है। प्रश्न यह है क्या विधान-सभा इस प्रश्न का निर्णय करने के लिए स्वतन्त्र है ?

एक और कठिनाई

प्रान्त अपना और उपसंघों या ग्रुपों का विधान बनावेंगे, और सारी सम्मेलन विधान-सभा यूनियन का विधान बनायेगी। यूनियन को केवल तीन विषय दिये गये हैं, अतः उसका विधान-निर्माण-कार्य इन तीन विषयों तक सीमित रहेगा। यहाँ प्रश्न होता है कि यूनियन और प्रान्तों का विधान बनाने की कार्य-प्रणाली और कार्य-विधि क्या होगी ? क्या विधान-सभा यूनियन का सर्वप्रथम विधान बनायेगी ? यदि युक्ति की दृष्टि से देखा जाय तो पहले विधान-सभा को यूनियन का विधान बनाना चाहिए। क्योंकि विधान के मूलतत्त्वों का वह निश्चय करेगी, केन्द्रीय असेम्बली की व्यवस्था करेगी, जिसका प्रान्त अनुसरण करेंगे। यूनियन के पास सेना, परराष्ट्र और यातायात, ये तीन जिम्मेदारियाँ रखी गई हैं। परराष्ट्र विभाग की साधारण व्याख्या के अन्दर भी आयात और निर्यात व्यापार आ जाता है। राष्ट्र-रक्षा और यातायात से सम्बन्धित सब उद्योग और उनके सहायक उद्योग आ जाते हैं। स्वाधीन भारत ब्रिटेन और ब्रिटिश कामनवेल्थ के आदेशों से क्या सम्बन्ध रखेगा, इसका भी पहले से ही निश्चय करना होगा। इसी प्रकार अन्य देशों के साथ के सम्बन्ध का भी इसी समय निश्चय करना आवश्यक होगा। स्टर्लिंग पावनों का प्रश्न भी नहीं छोड़ा जा सकता। ये सब प्रश्न नाजुक हैं और पेचीदा हैं। ब्रिटेन इस समय स्टर्लिंग पावना चुकाने को तैयार नहीं है और न वह इस स्थिति में है। मगर भारत को मैशीनरी चाहिए, जिससे भारत की वर्तमान आर्थिक अवस्था सुधारी जा सके। ब्रिटेन मैशीनरी दे नहीं सकता। अमरीका मैशीनरी देने की क्षमता रखता है। भारत के लिए यह एक अजीब समस्या है। क्या विधान-सभा ब्रिटिश गवर्नमेंट से कह सकेगी कि वह भारत के लिए अमरीका से मैशीनरी लेने की व्यवस्था कर दे और उसका मूल्य स्टर्लिंग-पावना में दे दे, या वह उतनी रकम ब्रिटेन अपने ऊपर अमरीका का ऋण समझे ?

२० प्रतिशत

भारतीय राजनीति का यह एक विचित्र पर्व है। लीग ने पुनः मि० जिन्ना के नेतृत्व में पाकिस्तान का नारा बुलन्द किया है। उसका दावा है कि लीग भारत के तमाम मुसलमानों की प्रतिनिधि संस्था है। मगर इसके साथ मि० जिन्ना ने माना है कि चुनाव में लीगी मुसलमान १० प्रतिशत सीटें और कांग्रेस ४ से ५ प्रतिशत सीटें लेने में समर्थ हुई है। मगर लीगी उम्मीदवारों के पक्ष में आये वोटों से मालूम होता है कि २० प्रतिशत वोट मुस्लिम लीगियों को मिले हैं। इसलिए लीग का यह दावा गलत है कि वह समस्त मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करती है।

लीग की पाकिस्तान की माँग के विषय में मिशन-योजना के ७वें पैरे में स्पष्ट रूप से लिखा है :—मुस्लिम प्रधान प्रान्तों का पूर्ण शक्ति-सम्पन्न पाकिस्तान समझौते का आधार हो सकता है या नहीं, इस पर हमने विचार किया है। मगर मुस्लिम लीग इस प्रकार के पाकिस्तान को सर्वथा अव्यवहारिक मानती है, क्योंकि (क) पंजाब में से अम्बाला और जालन्धर डिवीजन निकल जावेंगे, (ख) सिलहट को छोड़कर सारा आसाम निकल जायगा और (ग) कलकत्ता समेत पश्चिमी बंगाल का एक बड़ा भाग निकल जायगा।

इससे मालूम होता है कि मि० जिन्ना लाहौर-प्रस्ताव से आगे बढ़ गये हैं और मुस्लिम-प्रधान प्रान्तों तक ही पाकिस्तान की सीमा खींचने को तैयार नहीं हैं।

सीमा का पुनः बँटवारा

प्रान्तों और ग्रुपों का विधान बनने से पहले यूनियन का विधान और एक दृष्टि से भी आवश्यक है। क्योंकि आज प्रान्तों की जो सीमा है, वह अवैज्ञानिक है और वह भाषा और संस्कृति के आधार पर नहीं है। महाराष्ट्र और कर्नाटक अनेक भागों में बँटे हुए हैं। दिल्ली अपने प्रांत का विस्तार चाहता है और पंजाब और यू० पी० से लेकर अपने को एक बड़े प्रान्त में बदलना चाहता है। बंगाल और उड़ीसा बिहार के छोटा नागपुर पर नजर गड़ाये हुए हैं। छोटा नागपुर के ईसाई मिशनरी और उनके प्रभाव के आदिमवासी छोटा नागपुर का अलग प्रान्त बनाना चाहते हैं। आन्ध्र, कर्नाटक और केरल आज अलग प्रान्त नहीं हैं, पर वे अलग अलग प्रान्त बनना चाहते हैं। आन्ध्र, कर्नाटक, केरल और महाराष्ट्र का कुछ भाग रियासतों में भी है। प्रश्न यह है कि जब सीमा का पुनर्निर्धारण होगा तो केवल ब्रिटिश भारत का होगा या देशी रियासतों का भी ? यदि सीमा के पुनर्निर्धारण से देशी रियासतों को अलग रखा जायगा, तो संस्कृति और भाषा के अनुसार प्रान्त न बन सकेंगे। ये प्रश्न अपेक्षा करते हैं कि प्रान्तों का विधान बनाये जाने से पहले इनका निर्णय कर लिया जाय।

लीग अधिकारी नहीं है

मिस्टर जिन्ना और मुस्लिम लीग का कहना है कि मुसलमान एक अलग राष्ट्र है। उनकी यह मान्यता और धारणा गलत है या सही, इसके लम्बे विचार में जाने की हमें जरूरत नहीं है। हम मान लेते हैं कि मुसलमान एक अलग राष्ट्र है। इस अवस्था में प्रश्न होता है कि क्या लीग फिर विधान-सभा में भाग लेने की अधिकारिणी है ? १५ मार्च १९४६ को प्रधान मन्त्री मि० एटली ने घोषणा की थी कि यह निर्णय करना भारतीयों का काम है कि वर्तमान शासन की जगह कौन शासनतन्त्र ले। मिशन-योजना के पैरा ३ में कहा गया है कि 'भारतीय भावी भारत का विधान बनायेंगे। चौथे पैरा में कहा है कि मुस्लिम लीग के सदस्यों को छोड़कर अन्यों ने भारत की एकता के पक्ष में अपनी राय दी है। ८वें पैरा में कहा गया है कि भारत की जल, थल और नभ सेना यदि दो में बाँट दी गई तो भारतीय सेना की उच्च परम्परा और कार्य-क्षमता को गहरा धक्का लगेगा। इस अवस्था में भी यदि लीग का पाकिस्तान की स्थापना का दुराग्रह बना रहे, तो यह विचारणीय प्रश्न हो जाता है कि क्या लीग के सदस्य विधान-सभा में भाग लेने के अधिकारी हैं ?

यूरोपियनों को विधान बनाने में अवसर नहीं दिया गया है, क्योंकि वे विदेशी हैं। इसी प्रकार क्या लीग के सदस्य भी, जो अपने को भारतीय नहीं मानते, विदेशी नहीं हैं और विदेशी होने के कारण विधान-सभा में [illegible] अधिकार नहीं रखते ? [illegible] योजना के १६वें पैरे में कहा है [illegible]

हमारा उद्देश्य ऐसी [illegible] चालू कर देना है जिसमें [illegible] भारतीयों के लिए विधान [illegible]

क्या लड़कर पाकिस्तान लेंगे ?

धर्म-परिवर्तन से एक [illegible] और राष्ट्र बन जाता है, इसका [illegible] हरण इतिहास में नहीं मिलता [illegible] लीगी मुसलमान इसका अपवाद [illegible] और युक्ति और विचार सुनने को [illegible] हैं, तो वह घोषणा कर रहे हैं कि [illegible] लेंगे पाकिस्तान' जब वह अपने [illegible] स्वाभाविक है कि लीग को विधान [illegible] सभा में बैठने का क्या अधिकार [illegible] तीय राजनीति की यह एक विचित्र [illegible] है, कि जो इस देश की अपनी [illegible] मानते, उनको भारतीय समस्या [illegible] झाने में भाग लेने के वास्ते [illegible] बुलाया जाता है। क्या यह प्रकृति [illegible] है ? क्या यह अधिक उपयुक्त [illegible] हम यह मनोवृत्ति बनायें कि जो [illegible] देश को अपना देश नहीं मानते [illegible] हैं और उनको भावी भारत [illegible] निर्माण करने का कोई अधिकार [illegible]

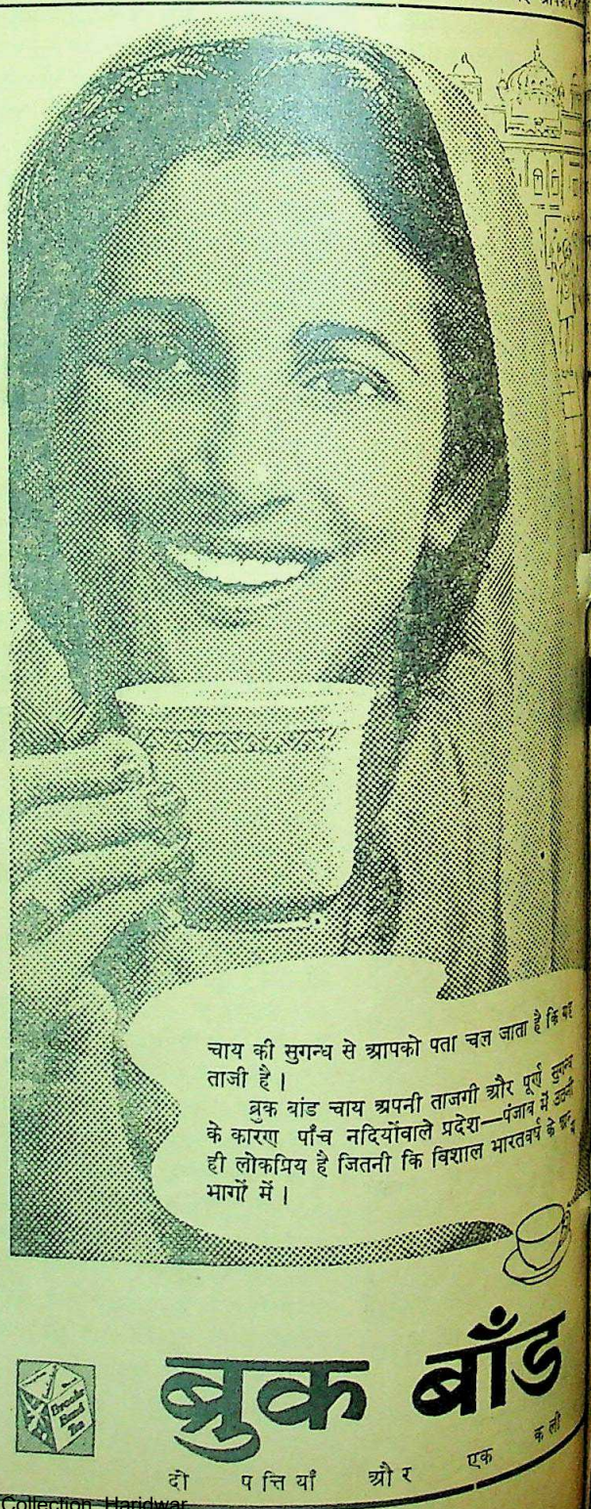

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ह के समाचार

...राष्ट्रीय सरकार

...लार्ड वैवेल ने राष्ट्रपति ...जवाहरलाल नेहरू को अस्थायी ...के लिए निमन्त्रित किया ...१७ अगस्त को नेहरू जी दिल्ली ...

* * *

...सरकार से बाहर

...जवाहरलाल नेहरू और मिस्टर ...शहर में ८० मिनट तक ...परन्तु मिस्टर जिन्ना ने अस्थायी ...में भाग लेने से इनकार कर ...मुस्लिम जगहों में राष्ट्रीय मुस-...जायेंगे।

* * *

...लीग 'सुझाव दिवस'

...आजम मिस्टर जिन्ना ने १६ ...को 'सुझाव-दिवस' मनाने का ...किया है। एक वक्तव्य में ...ने उस दिवस को शान्ति से ...दूसरी आज्ञा दी है। बङ्गाल ...की लीगी सरकारों ने उस दिन ...छुट्टी-दिवस घोषित किया है। ...असेम्बली से कांग्रेस एम० एल० ...प्रस्ताव पर उठकर बाहर चले

* * *

...लीगी मन्त्रिमण्डल चिन्तित

...परिषद् के चुनाव के अवसर पर ...लीगी मन्त्रि-मंडल पर अविश्वास ...पेश करने की सूचना जी० एम० सैयद ने गवर्नर को दी थी, परन्तु गवर्नर ने उसे बचा लिया। अभी वह संदेह दूर नहीं हुआ है। लीगी मिनिस्टर मिस्टर सैयद से बार-बार मिलकर बहकाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

* * *

पूँजीवाद का अन्त होगा।

युक्तप्रान्तीय असेम्बली में एक प्रस्ताव पूँजीवाद के अन्त करने का सर्वसम्मति से पास हुआ है। इसी आशय का प्रस्ताव उसी तारीख को कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी ने वर्धा में पास किया है। प्रस्ताव में देश के सभी प्रान्तीय कांग्रेस मंत्रिमंडलों से पूँजीवाद के अन्त करने के लिए कार्रवाई करने को कहा गया है।

* * *

नया राष्ट्रपति कौन हो ?

पंडित जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय सरकार में सम्मिलित हो जाने पर कांग्रेस के अध्यक्ष न रह सकेंगे। ऐसी दशा में राष्ट्रपति कौन हो ? अनुमान किया जाता है कि श्री आचार्य कृपलानी अथवा डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद कांग्रेस-अध्यक्ष होंगे।

* * *

युक्तप्रांतीय असेम्बली का उपाध्यक्ष

युक्तप्रांतीय असेम्बली के उपाध्यक्ष श्री नफीसुल हसन (लीग) एडवोकेट इटावा से चुने गये हैं। कांग्रेस ने लीग उम्मीदवार के विरोध में कोई उम्मीदवार नहीं खड़ा किया था।

* * *

कलकत्ते में दंगा

कलकत्ता में १६ अगस्त को (लीग के सुझाव-दिवस पर) हिन्दू-मुस्लिम दङ्गा हो गया। उस दंगे में अब तक १००० मरे और २५०० घायल हुए।

तुर्की-सोवियट मन-मुटाव

सोवियट रूस ने डार्डेनेलीज पर अन्तर्राष्ट्रीय अधिकार होने का प्रस्ताव किया है। तुर्की के राजनीतिज्ञ इस प्रस्ताव से असंतुष्ट हैं उन्होंने रूस के प्रस्ताव को नामंजूर कर दिया है।

* * *

फिलिस्तीन में यहूदियों का प्रवेश

आजकल यहूदियों से भरे हुए जहाज चोरी चोरी फिलिस्तीन में प्रवेश कर रहे हैं। हैफा बन्दरगाह में अभी कई जहाज उतरे हैं। ब्रिटिश जहाजी बेड़ा पहरा दे रहा है। कई यहूदियों को प्रवेश करते हुए गोली से मार दिया गया है।

* * *

अफ्रीका में हब्शियों पर गोली

आजकल दक्षिण अफ्रीका में सोने के खानों में हड़ताल जारी है। जनरल स्मट्स की सरकार उस हड़ताल को दबाने का प्रयत्न कर रही है। वहाँ की पुलिस ने खुली गोलियाँ चलाईं। जिसमें बहुत से मर गये और कितने ही घायल पड़े हैं।

* * *

संयुक्तराष्ट्र-सम्मेलन

पेरिस में संयुक्तराष्ट्र-सम्मेलन की बैठक हो रही है उसमें इटली, रूमानिया, हंगरी और बल्गारिया के खिलाफ कार्रवाई की सुनवाइयाँ हो रही हैं।

* * *

अन्य राष्ट्र भी संयुक्तराष्ट्र में

मिस्र, क्यूबा, मेक्सिको और आयरलैंड तथा ईरान ने संयुक्तराष्ट्र में सम्मिलित होने की प्रार्थना की है।

* * *

अस्थाई सरकार के मन्त्री

शनिवार को पंडित जवाहरलाल नेहरू ने लार्ड वैवेल से अस्थायी सरकार बनाने के सम्बन्ध में बातें कीं। कलकत्ते के दंगे के सम्बन्ध में भी कुछ बातें हुई हैं। समझा जाता है कि अस्थायी सरकार में निम्नांकित व्यक्ति होंगे :—पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद, श्री राजगोपालाचारी, श्री शरच्चन्द्र बोस, श्री जगजीवनराम, डाक्टर जाकिर-हुसेन और चार गैर-मुस्लिम लीगी मुसलमान, डाक्टर जानमथाई और एक पारसी।

* * *

रूस और ब्रिटेन में झड़प

पेरिस के शान्ति-सम्मेलन में रूसी वैदेशिक मन्त्री मोशिये मोलोटोव और ब्रिटिश वैदेशिक मन्त्री श्री बेविन में काफी वाद-विवाद हो गया है।

खरीदने से पहले इस ट्रेड मार्क को देखो

वुडवर्ड के ग्राइप वाटर के बोतल सदैव साथ रक्खें। यह बच्चों को तन्दुरुस्त रखता है !

WOODWARD'S GRIPE WATER
keeps baby well

...में लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की ...इसलिये माता जी ! आप अपने बालक के हित के लिए इसको

...ULEX ...ENS THE SKIN

WOODWARD LTD., LONDON, ENGLAND.

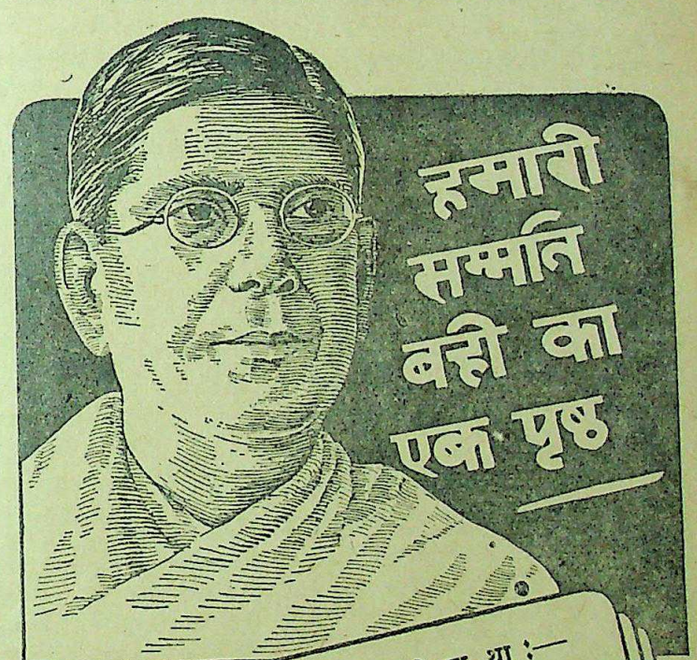
हमारी सम्मति बही का एक पृष्ठ

देशबन्धु चितरञ्जनदास ने लिखा था :—

"शक्ति औषधालय की फैक्टरी का काम मुझे बहुत पसन्द आया। अनुशासन के साथ व्यवस्थित ढंग पर इसका कारबार चलाया जाता है। निरीक्षण में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं है। इस कारबार में पहले से ही जो सफलता प्राप्त हो चुकी है, उसके लिए मैं अध्यक्ष को बधाई देता हूँ।"

(ह०) सी० आर० दास
२४ अक्टूबर, १९२१

अध्यक्ष मथुर बाबू का शक्ति औषधालय · ढाका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या मातृत्व सचमुच एक ट्रेजेडी है?

(पेज १२ का शेष)

मानसिक तथा शारीरिक सुख मिले यही तो सदाचार की परिभाषा तथा उद्देश्य है न!

जिस समय समाज अपनी अपेक्षाकृत कम भाग्यवान सन्तानों तक अपना संरक्षण नहीं पहुँचने देता, और अविवाहित माताओं को वेश्याओं में परिणत कर देता है, जैसा कि आमतौर से होता है, तो क्या केवल उन्हीं को क्षति पहुँचती है, समाज को नहीं? वैयक्तिक तौर से प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह वेश्यावृत्ति को रोके। जिस समय कोई आदमी एक अभागी माता का मजाक उड़ाता है या उसे घृणा के साथ देखता है, तो वह व्यक्ति एक अन्याय को चिरस्थायी बनाता है।

फिर समाज का इस सम्बन्ध में सबसे बड़ा अन्याय यह है कि वह समान रूप से दोषी पुरुष और स्त्री को दो निगाह से देखता है। यदि वह पुरुष और स्त्री को एक निगाह से देखे, और अविवाहित पिता को समाज से निकाल दे, तो जल्दी ही ऐसे पुरुष तथा स्त्रियों का एक उपनिवेश बस जाय। उस हालत में अविवाहित पिता अपनी प्रेमिका को या यों कहिए उसके द्वारा शोषिता को स्वीकार कर ले। इस प्रकार समस्या सुलझ जाये। पर होता तो कुछ और ही है। बात यह है कि इस समाज में पुरुष प्रबल हैं। उत्पादन के सब साधनों पर उन्हीं का अधिकार है।

मैं यह नहीं कहती कि स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक सदाचारिणी हैं। मेरा कहना केवल इतना है कि दोषी हैं तो ऐसे क्षेत्र में दोनों दोषी हैं। पुरानी परम्परायें बड़ी मजबूत होती हैं, पर समय की आवश्यकताओं को देखकर उनमें परिवर्तन करना ही पड़ेगा। सच तो यह है कि वे बदल रही हैं, पर परम्पराओं के बदलने की प्रक्रिया मन्थर होती है, यदि सज्ञान तरीके से उनको बदला जाय तो क्या ही अच्छा है। बहुत सी स्त्रियों और बच्चों के जीवन नष्ट होने से रह जाये।

फिर इन निर्यातनों और बदलों के बावजूद चीज़ें होती ही आई हैं। यह है कि इन विधिनिषेधों के ठीक ठीक विकास न हो सका, स्वस्थ सदाचार की उत्पत्ति न हो

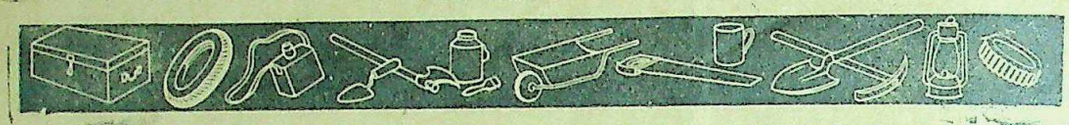

GOVERNMENT OF INDIA

"DISPOSALS

(SECTION CPM OF 2nd CATALOGUE)

CAPITAL ASSETS, PLANT, MACHINERY, HEAVY CONSTRUCTIONAL MATERIALS

Following types of stores are available for sale:

***Hand Tools*:-** Eyed tools including agricultural implements, etc.

***Machine Tools*:-** Lathes, drilling, shaping, binding, blotting, planing, milling machines, grinders, etc.

***Engineering and Constructional machinery*:-** Air compressors, workshop, lifting and transport, gas welding and cutting machinery, etc.

***Electrical machinery and plant*:-** motors, generators, generating plant, transformers, distribution and control apparatus, electrical engines, electric furnaces and ovens, batteries and cells, refrigerating, heating and lighting equipment, boilers, etc.

***Engines*:-** Internal Combustion engines, steam turbines, gas engines, etc.

***Road making machinery*:-** Excavating, earth shifting and surfacing machinery, road rollers, asphalt and surface treating machinery, tar sprayers, stone crushers, concrete mixers, etc.

***Other machinery*:-** Agricultural, Dairy, pumping, waterworks, refuelling machinery, etc.

Full details giving description and condition of stores, quantity, location, etc. and the method of tendering are contained in Section CPM of the Second Catalogue which is available at Rs. 3/- from the addresses given below:

1. Publicity Officer, Directorate General of Disposals, Shahjahan Road, New Delhi.
2. Regional Commissioner, Strand House, Ballard Estate, Bombay.
3. Regional Commissioner, 6, Esplanade East, Calcutta.
4. Regional Commissioner, The Mall, Lahore.
5. Regional Commissioner, 15/159 Civil Lines, Cawnpore.
6. Dy. Regional Commissioner, Variawa Building, Mcleod Road, Karachi.
7. DY. Regional Commissioner, United India Life Building, Esplanade, Madras.
8. All important Chambers of Commerce and Trade Associations.

Mail orders for the catalogue must be accompanied by Money Order or Indian Postal Order.

In addition to the Officers mentioned in the catalogue, permits to view stores located in any area may be obtained from the Regional Officer for that area.

Note: Watch for further announcement regarding Section CPM of Third Catalogue which will contain a further list of stores available for disposal.

ISSUED BY THE DIRECTORATE GENERAL OF DISPOSALS, DEPARTMENT OF INDUSTRIES & SUPPLIES, NEW DELHI

डलियाना

भारत का मुख्य उद्योग खेती है। के समय फटकने का परिचित दृश्य सभी खेतों में देखने में आता कृषक-जीवन का यह निर्बाधित है, जिसमें समस्त परिवार के स्त्री भी सम्मिलित होकर सहायता देती है।

तब जैसे ही कोई गाँव की आगे बढ़ता है उसे ग्रामीणों की आवश्यकता की चीजों के साथ हमाम साबुन भी देखने को मिलेगा।

हमाम

भारत का प्रियतम साबुन

टाम्को सेल्स डिपार्टमेंट जवाहर स्क्वायर इलाहाबाद

दी टाटा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3 कारण हैं जिनसे दुनिया भर के मोटरवाले

फ़ायरस्टोन

अधिक पसन्द करते हैं।

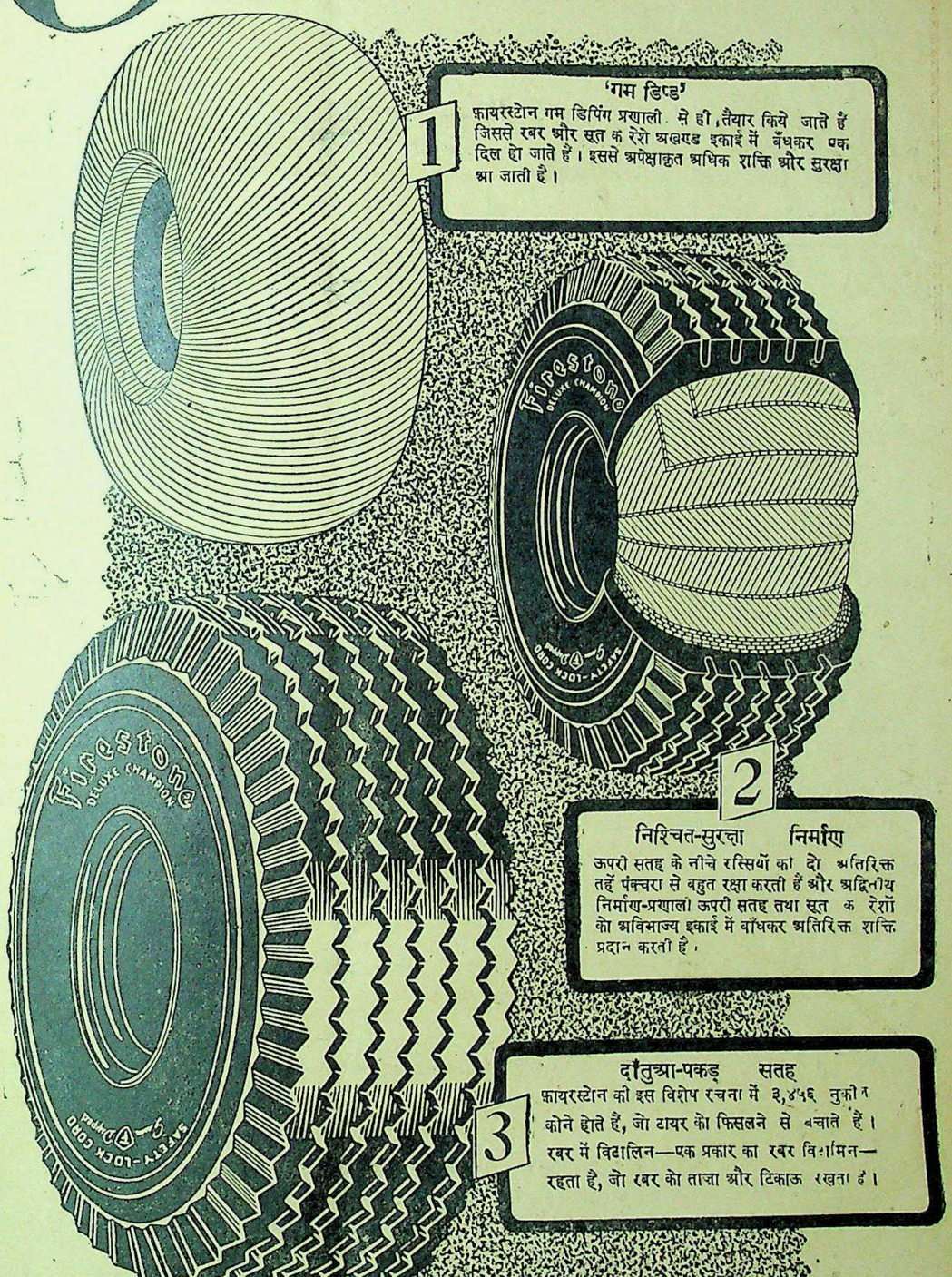

1 'गम डिप्ड'

फ़ायरस्टोन गम डिपिंग प्रणाली में ही तैयार किये जाते हैं जिससे रबर और सूत के रेशे अखण्ड इकाई में बँधकर एक दिल हो जाते हैं। इससे अपेक्षाकृत अधिक शक्ति और सुरक्षा आ जाती है।

2 निश्चित-सुरक्षा निर्माण

ऊपरी सतह के नीचे रस्सियों की दो अतिरिक्त तहें पंक्चरों से बहुत रक्षा करती हैं और अद्वितीय निर्माण-प्रणाली ऊपरी सतह तथा सूत के रेशों को अविभाज्य इकाई में बाँधकर अतिरिक्त शक्ति प्रदान करती है।

3 दाँतुआ-पकड़ सतह

फ़ायरस्टोन की इस विशेष रचना में ३,४५६ नुकीले कोने होते हैं, जो टायर को फिसलने से बचाते हैं। रबर में विटालिन—एक प्रकार का रबर विटामिन—रहता है, जो रबर को ताज़ा और टिकाऊ रखता है।

फ़ायरस्टोन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह अति आकर्षक है।
यह अति सुन्दर है
परन्तु इसमें शिथिलता है। इसे दूर करना आवश्यक है।

जी.जी. फलपेय का एक ग्लास
किसी भी शारीरिक परिश्रम के पश्चात
स्फूर्ति और ठंडक प्रदान करता है।

फल पेय :—नीबू, माल्टा, आम, नीबू कोडियल, नीबू बार्ली।
फल शर्बत :—संतरा, केला, मिक्सड फ्रूट नीबू, फालसा, स्टोबेरी, चाकोलेट और टाफी।

GG

जी.जी. फ्रूट प्रिज़र्विङ्ग फैक्ट्री आगरा

जी. जी. इन्डस्ट्रीज़

जो० जी० सेल्स डिपो :—

मैसर्स गिरधरलाल वकील जनरलगंज कानपुर

बम्बई : देहली : कलकत्ता : ग्वालियर : अजमेर : बरेली।

J&N REMINDERS

स्मारक पत्र

किस प्रकार का काम ?: साधारण सुरक्षा और सजावटी फ़िनिश के लिए, जहाँ कार्यास्थान पर ही रंग को तेल आदि से मिला कर तैयार करना आवश्यक हो।

हमारी सिफ़ारिश: "जे एण्ड ऐन" जेनुइन हाईट ज़िंक पेंट "J & N" Genuine White Zinc Stiff. शुद्ध और शिष्ट वस्तु।

JENSON & NICHOLSON

MAKERS OF PAINTS

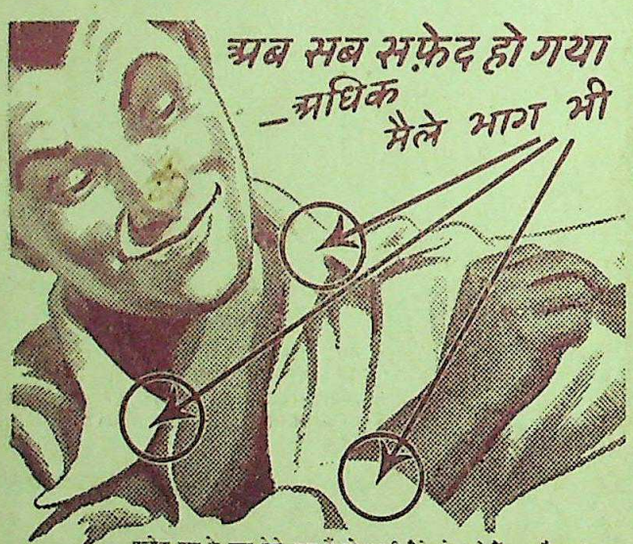

अब सब सफ़ेद हो गया
—अधिक मैले भाग भी

प्रत्येक वस्त्र के कुछ ऐसे भाग हैं जो जल्दी मैले हो जाते हैं — और वही भाग हैं, जब कि उन्हें थोड़ा साबुन लगाने के बाद पानी में भिगोकर साफ़ करने के लिये ज़्यादा पटकने से हानि पहुँचती है।

सनलाइट के पद्धति से अपने कपड़े धुलाइये और उन्हें पटके जाने के नुक़सान से दूर रहने दीजिये।

सनलाइट साबुन के भरपूर, स्वयं-क्रियाशील झाग से जब सौम्यता के साथ भीगे हुए वस्त्रों को निचोड़ते हैं और बाद में पखारने से वे बिलकुल सफ़ेद और साफ़-सुथरे हो जाते हैं...आप के वस्त्र पंख के समान मुलायम हो जाते हैं जिस से यह शुद्ध साबुन उपयोग करनेवालों को खुशी होती है। सनलाइट आप के कपड़ों और उन के रंगों के लिये अच्छा है और आप के हाथों को सौम्य तथा कोमल रखता है।

सनलाइट साबुन

S. 70-60 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

शीतल और सुरभित

तुम्हारे प्रतिदिन के प्रयोगार्थ

गर्मियों में अपने माथे, गर्दन और बाहों पर टाटा का ओ डी कोलोन लगाओ। इसका तीक्ष्ण शीतल स्पर्श आल्हादक है और गर्मी और पसीने को दूर करता है। इसकी कोमल सुगन्धि पहाड़ों से आते हुए शीतल झोंके के समान है।

यह तुम्हें ऐसे वैसे जलवायु में शीतल और ताजा रहने में सहायता करता है। सर्वदा टाटा के ओ डी कोलोन की एक शीशी पास रखो। प्रतिदिन प्रयोग करें।

टाटा का ओ डी कोलोन

दी टाटा आयल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [के० हिन्दुस्तान प्रिंटिंग एण्ड पब्लिशिंग कम्पनी, लिमिटेड, १, पंडितलाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्य ७॥)
वर्ष ३

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

सितम्बर, १९४६ साचेत्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 1st September, 1946

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

राष्ट्रीय आर्थिक योजना समिति क्या है ?

सेवाग्राम—चार वर्ष के बाद का दृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तमोत्तम उपन्यास

शरद् बाबू के उपन्यास

छुटकारा—एक निठल्ले और बेरोज़गार भाई की सहायता उपार्जनशील भाई को किस प्रकार करनी चाहिए, यह बात इस उपन्यास से भली भाँति सीखी जा सकती है। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

नव-विधान—पाश्चात्य सभ्यता के अन्धानुकरण में पड़कर अत्यन्त अशान्तिमय जीवन व्यतीत करनेवाले पति को प्राचीन पद्धति से गृहकार्य का संचालन करनेवाली गृहिणी किस प्रकार सुखी करने में समर्थ हुई, यह बात इस उपन्यास में दरसाई गई है। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

मँझली दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पिता से हीन भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर सकती है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

परिणीता—एक निर्धन परिवार की भोली-भाली नवयुवती ने एक साधन-सम्पन्न परिवार के युवक के प्रति आकर्षित होकर किस प्रकार खेल-खेल में ही उसके साथ विवाह कर लिया और दूर रहने पर भी उसे सदा हृदय से अपना पति मानती रही, यह कहानी इस उपन्यास में बहुत ही प्रभावोत्पादक ढंग से लिखी गई है। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

गृहदाह—इसमें दो ऐसे विभिन्न प्रकृति के स्त्री-पुरुषों के चरित्र चित्रित किये गये हैं, जिनके परस्पर प्रतिकूल स्वभाव के होने पर भी दाम्पत्य-जीवन में बँध जाने पर बनी-बनाई गृहस्थी सत्यानाश हो गई। मूल्य ३।–) तीन रुपये पाँच आने।

लेनदेन—शरद् बाबू के बँगला उपन्यास का अनुवाद है। इसमें चण्डीगढ़ की भैरवी पोडशी तथा वहाँ के ज़मींदार जीवानन्द का चरित्र बहुत ही उत्तम ढंग से चित्रित किया गया है, जिसके द्वारा सहृदय पाठकों का जहाँ मनोरंजन होगा वहीं मानव-चरित्र के सम्बन्ध की बहुत-सी ज्ञातव्य बातें भी उन्हें मालूम होंगी। मूल्य ३।–) तीन रुपये पाँच आने।

बैकुण्ठ का बिल—इस उपन्यास में जिन पात्रों की सृष्टि की गई है, उनके चरित्रों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करके मानव-सुलभ दुर्बलता से हम समुचितरूप से परिचित हो सकते हैं। मूल्य ।।≡) ग्यारह आने।

स्वामी—अपने हृदय की उदारता और क्षमाशीलता के बल पर विपथगामिनी स्त्री को भी किस प्रकार ठीक रास्ते पर लाकर उसे अपनी अनुगामिनी बनाया जा सकता है, यह बात इस उपन्यास में दरसाई गई है। मूल्य ।।≡) ग्यारह आने।

देहाती समाज—यह उपन्यास ग्राम्य जीवन का सुन्दर और सजीव चित्र है। मूल्य ।।=) दस आने।

विचित्र प्रबन्ध—रवीन्द्र बाबू के कुछ उत्तमोत्तम निबन्धों का संग्रह। मूल्य २।।≡) दो रुपये ग्यारह आने।

व्यंग्य कौतुक—इस पुस्तक में कवीन्द्र-रवीन्द्र बाबू के द्वारा व्यंग्य और विनोदमयी भाषा में लिखे गये कुछ निबन्धों का संग्रह है। मूल्य ।।≡) ग्यारह आने।

सीताराम-संग्रह—स्वर्गीय रायबहादुर लाला सीताराम द्वारा किये गये संस्कृत के समग्र काव्यों और नाटकों के अनुवादों का संग्रह। आरम्भ में लाला जी का आलोचनात्मक परिचय भी दिया गया है। मूल्य २।।≡) दो रुपये ग्यारह आने।

मौलाना हाली और उनका काव्य—उर्दू के श्रेष्ठ कवि मौलाना हाली का जीवनचरित और उनकी चुनी हुई कविताओं का संग्रह। प्रत्येक कविता का अर्थ सरल हिन्दी में दिया गया है। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

मौलिकता—साहित्यिक मौलिकता की विशद व्याख्या। मूल्य ।–) पाँच आने।

आल्हा—लेखक, चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा। इस पुस्तक में महोबे के प्रख्यात वीर आल्हा और ऊदल का जीवन-चरित और समस्त लड़ाइयों का वर्णन रोचक व सरस भाषा में दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३।–) तीन रुपये पाँच आने।

कहानी कैसे लिखनी चाहिए—सफल कहानी-लेखक बनने की इच्छा रखनेवालों के लिए इसमें बहुत-सी ज्ञातव्य बातें लिखी गई हैं। मूल्य ।।≡) ग्यारह आने।

माधव मिश्र-निबन्धमाला—हिन्दी-गद्य के आरम्भिक काल के प्रतिभाशाली लेखक पंडित माधव मिश्र के चुने हुए निबन्धों का संग्रह। मूल्य ३।–) तीन रुपय पाँच आने।

हिन्दी ग्रामर—(ई० ग्रीव्ज़ कृत) अँगरेज़ी के द्वारा हिन्दी का अध्ययन करनेवाले विदेशियों के बहुत काम की पुस्तक। साथ ही भाषा विज्ञान के विद्यार्थी इससे बहुत लाभ उठा सकते हैं। मूल्य ८।।≡) आठ रुपये ग्यारह आने।

तुलसी-रत्नावली—का संकलन, विवेचन केदारनाथ गुप्त, एम० ए० ने किया है। इसमें गोस्वामी तुलसीदासजी के अमूल्य ग्रन्थों—रामचरित-मानस, विनयपत्रिका, कवितावली, दोहावली, गीतावली आदि—से रत्न चुने गये हैं। अनेक ग्रन्थों से अमूल्य रत्नों का संग्रह करना सचमुच बड़ा कठिन होता है। जो लोग गोस्वामी जी के समस्त ग्रन्थ न तो ले सकते हैं और न उनका अध्ययन कर सकते हैं, उनको इस संग्रह से बड़ा लाभ होगा। मूल्य केवल एक रुपया आठ आने।

मैनेजर—(बुकडिपो) इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग।

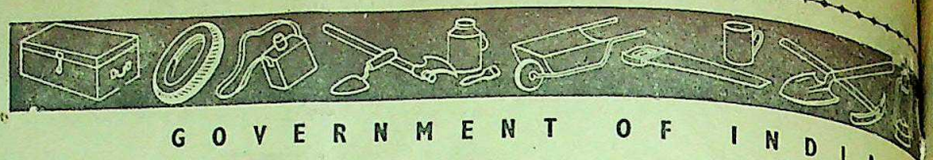

GOVERNMENT OF INDIA

DISPOSALS

(SECTION CPM OF 2nd CATALOGUE)

CAPITAL ASSETS, PLANT, MACHINERY, HEAVY CONSTRUCTIONAL MATER

Following types of stores are available for sale:

***Hana Tools*:-** Eyed tools including agricultural implements, etc.

***Machine Tools*:-** Lathes, drilling, shaping, binding, blotting, planing, milling machines, grinders, etc.

***Engineering and Constructional machinery*:-** Air compressors, workshop, lifting and transport, gas welding and cutting machinery, etc.

***Electrical machinery and plant*:-** motors, generators, generating plant, transformers, distribution and control apparatus, electrical engines, electric furnaces and ovens, batteries and cells, refrigerating, heating and lighting equipment, boilers, etc.

***Engines*:-** Internal Combustion engines, steam turbines, gas engines, etc.

***Road making machinery*:-** Excavating, earth shifting and surfacing machinery, road rollers, asphalt and surface treating machinery, tar sprayers, stone crushers, concrete mixers, etc.

***Other machinery*:-** Agricultural, Dairy, pumping, waterworks, refuelling machinery, etc.

Full details giving description and condition of stores, quantity, location, etc. and the method of tendering are contained in Section CPM of the Second Catalogue which is available at Rs. 3/- from the addresses given below:

1. Publicity Officer, Directorate General of Disposals, Shahjahan Road, New Delhi.
2. Regional Commissioner, Strand House, Ballard Estate, Bombay.
3. Regional Commissioner, 6, Esplanade East, Calcutta.
4. Regional Commissioner, The Mall, Lahore.
5. Regional Commissioner, 15/159 Civil Lines, Cawnpore.
6. Dy. Regional Commissioner, Variawa Building, Mcleod Road, Karachi.
7. DY. Regional Commissioner, United India Life Building, Esplanade, Madras.
8. All important Chambers of Commerce and Trade Associations.

Mail orders for the catalogue must be accompanied by Money Order or Indian Postal Order.

In addition to the Officers mentioned in the catalogue, permits to view stores located in any area may be obtained from the Regional Officer for that area.

Note: Watch for further announcement regarding Section CPM of Third Catalogue which will contain a further list of stores available for disposal.

ISSUED BY THE DIRECTORATE GENERAL OF DISPOSALS, DEPARTMENT OF INDUSTRIES & SUPPLIES, NEW

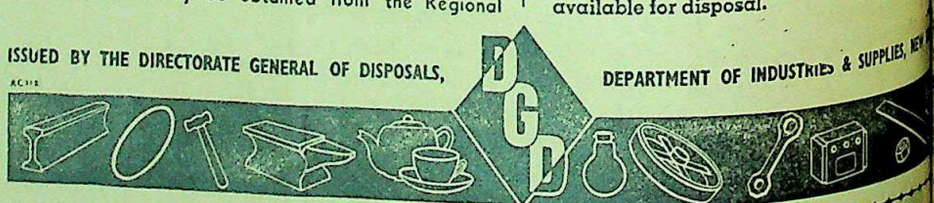

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक

[रविवार, १ सितम्बर, १९४६

[illegible] ९, संख्या १]

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

[illegible] वल्लभभाई पटेल अस्थायी केन्द्रीय [illegible] के सदस्य बनाये गये हैं।

[illegible] राष्ट्रीय सरकार की स्थापना [illegible] कांग्रेस नेताओं के साथ राष्ट्रीय [illegible] लीग-विरोधी मुसलमान [illegible] कांग्रेस से सहयोग किया है। [illegible] तथा पारसी सम्प्रदाय का [illegible] केन्द्रीय सरकार के निर्माण [illegible] मुसलमानों पर लफ्जी बाद- [illegible] करनेवाली मुस्लिम लीग ताकती ही [illegible] लीग के विधाता जिन्ना साहब ने [illegible] कि बिना उनके सरकार बन ही [illegible] लेकिन अपने राम जानते हैं [illegible] चाहें तो सब कुछ कर सकते [illegible] चाहा और केन्द्रीय सरकार [illegible] जिन्ना साहब अकड़े रहें, [illegible] से। कल जिन्ना साहब और [illegible] की दांत काटी रोटी थी और [illegible] खुट्टी! अँगरेज चाहते हैं [illegible] साहब और उनकी लीग [illegible] दिन चैन की बंसी बजाये। अब [illegible] किया, खूब खाया पिया [illegible] के नाम पर गुलछर्रे [illegible] इसलिए अब लीद करने का [illegible] आना चाहिए। सो अब वह [illegible] साकार रूप धर कर आ खड़ा [illegible] समय का फेर इसी को [illegible]

* *

[illegible] ऐतिहासिक डाक्टर शफात अहमद खाँ मुसलिम लीग के एक जबरदस्त नेता थे। किन्तु पिछले विधान सम्मेलन के चुनाव में मिस्टर जिन्ना ने उन्हें पूछा तक नहीं। इसलिए बेचारे क्या करते, कहीं तो उन्हें रहना ही चाहिए था। केन्द्रीय सरकार के नये निर्माण में वह शामिल हो गये। और लगभग एक महीना हुआ वह लीग से अलग हो गये थे। किन्तु ज्यों ही वह राष्ट्रीय सरकार के सदस्य घोषित हुए त्यों ही उन पर घातक आक्रमण किया गया। आक्रमणकारियों ने तो अपनी समझ में उन्हें मार ही डाला था किन्तु भाग्य से उनके प्राण बच गये। कहा जाता है कि इस काण्ड में मुसलिम लीगी गुंडों की ही साजिश थी। जो कुछ भी हो अपने राम जानते हैं कि 'जाको राखै साइयाँ मारि न सकिहै कोय।' सर शफात बच गये और छुरे के सात घाव खाकर वह लीग के बागी और पक्के राष्ट्रवादी बन गये। कुर्बानी की महिमा ऐसी ही होती है। बात यह है कि अब कांग्रेस वालों के साथ चलना है न! अब उन्हें सचाई के मार्ग से कौन बरगला सकता है?

* * *

सिन्ध के मिस्टर गजधर ने घोषित किया था कि बिना लीग के सहयोग से जिस दिन केन्द्रीय सरकार बनी उसी दिन सिन्ध प्रान्त अपनी स्वतन्त्रता घोषित कर देगा। इसी तरह बंगाल के सोहरावर्दी ने भी ललकारा था कि जहाँ बिना लीग के केन्द्रीय सरकार बनी वहाँ बंगाल ने अपनी स्वतन्त्रता घोषित की। लेकिन अफसोस है कि बिना लीग के केन्द्रीय सरकार का राष्ट्रीयकरण भी हो गया और २ सितम्बर से सरकार का काम भी चालू हो जायेगा लेकिन सिंध और बङ्गाल अभी तक गुलाम के गुलाम ही बने हुए दिखाई दे रहे हैं। क्यों नहीं दोनों मुसलिम लीगी प्रांत अब तक स्वतन्त्र हो गये? सिंध के चीफ सेक्रेटरी ने लीग मंत्रिमंडल की घोषणा के पहले ही घोषित कर दिया कि सिंध स्वतन्त्र नहीं हो सकता। लेकिन कम से कम सुहरावर्दी साहब तो बङ्गाल को स्वतंत्र घोषित कर देते। लार्ड वेवेल पिछली बार कलकत्ता गये भी थे। लगे हाथों पाकिस्तान का यह सौदा भी तय हो जाता तो क्या बुरा था? कहावत है कि जो बादल गरजते हैं वह बरसते नहीं। लीगी नेताओं को गरजना तो खूब आता है फिर वह बरस कैसे सकते हैं?

* * *

मुस्लिम लीग के विधाता मिस्टर जिन्ना को सूझी भी तो आखिर में जब चिड़ियां चुन गई खेत। अस्थायी राष्ट्रीय सरकार बन भी गई, सिक्खों के प्रतिनिधि सरदार बलदेवसिंह सदस्य भी घोषित हो गये लेकिन मिस्टर जिन्ना को सिक्खों की भलाई का खयाल अब आया है। जिन्ना साहब ने अकाली नेता मास्टर तारासिंह को मिलने के लिये बुलाया है और यह भी कहा है कि मुस्लिम लीग सिक्खों के साथ न्याय करेगी। अपने राम की समझ में नहीं आता कि मुस्लिम लीग पहले अपना तो भला कर ले फिर सिक्खों का करेगी। अंग्रेज इस वक्त लीग तथा मिस्टर जिन्ना को दूध की मक्खी की तरह किनारे ढकेल रहे हैं। इसलिये पहले मिस्टर जिन्ना अपनी फिक्र करें और लीग के सिपहसालारों की। सिक्खों का भला करने के लिये कांग्रेस ही काफी है और अंग्रेज ही जब अब भला करने पर तुल गये हैं, तब किसी की सहायता की आवश्यकता क्या है? जिन्ना साहब अब अपनी ओर देखें, दूसरों की भलाई का राग अलापना छोड़ दें।

* * *

वाइसराय लार्ड बेवेल ने केन्द्र में अस्थाई राष्ट्रीय सरकार की स्थापना के संबंध में रेडियो पर जो भाषण दिया उससे मिस्टर जिन्ना का कलेजा धक से रह गया।

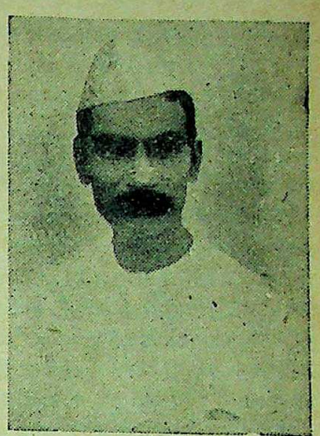

डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद, अस्थायी केन्द्रीय सरकार के सदस्य बनाये गये हैं।

उन्हें सपने में भी उम्मीद नहीं थी कि वाइसराय लार्ड बेवेल अंत में ऐसी बेवफाई करेंगे। अपने राम की समझ में सचमुच लाट साहब ने बेवफाई की। मुसलिम लीग ने सदा से ब्रिटिश सरकार का साथ दिया, लेकिन लाट साहब अंत में लीग के दुश्मनों की जमात में जा मिले। वाकई, यह निहायत अफसोस की बात है। लेकिन कहावत है कि जल में गाड़ी नाव पर थल गाड़ी में नाव। कल नाव पर गाड़ी उतारी जा रही थी और आज गाड़ी पर नाव लद गई है। समय का फेर इसी को कहते हैं। कल लाटसाहब जिन्ना के बगैर चैन से एक मिनट नहीं बैठ सकते थे और आज बिना जिन्ना साहब के ही सारा हिसाब किताब हो रहा है। इसलिये लार्ड वेवेल के भाषण से मिस्टर जिन्ना का दुखी होना अनिवार्य था। उन्हें आशा थी कि शायद अंत में ही कुछ न कुछ हो जाये। लेकिन अब कोई आशा नहीं है। 'प्रत्यक्ष कार्यवाही' ने तो रास्ते में और भी बाधा खड़ी करदी है। कहा भी है—सबै दिन जात न एक समान।

श्री शरद्चन्द्र बोस

श्री राजगोपालाचार्य।

सरदार बल्देवसिंह।

श्री आसफअली।

[illegible] अस्थायी राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हुई हैं। आप [illegible] नई [illegible] के सदस्य बनाये गये हैं। २ सितंबर से नई सरकार का काम नियमितरूप से प्रारंभ हो जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

नवाँ वर्ष

इस अंक से 'देशदूत' अपने जीवन के आठ वर्ष समाप्त करके नवें वर्ष में पदार्पण कर रहा है। समाचार पत्रों के इतिहास में पिछले छः-सात वर्ष का समय कितने संघर्ष संकट और कठिनाइयों का रहा है, यह सर्वविदित है। युद्ध-जनित कठिनाइयाँ, आर्थिक मंदी तथा प्रेस संबंधी वस्तुओं के अभाव तथा मंहगाई का व्यापक प्रभाव समाचार पत्रों पर पड़ना अनिवार्य था किंतु वह हिन्दी तथा राष्ट्रसेवा की भावनाओं से सदा जागृत तथा जीवित रहे। अब तो समय भी परिवर्तित हो गया है, संकट की अवस्था भी धीरे धीरे टल रही है, इसलिये भविष्य में वह और भी अधिक सक्रिय होकर हिन्दी तथा राष्ट्र की सेवा में अग्रसर होते जायेंगे, इसमें संदेह नहीं है। 'देशदूत' भी समय के अनुकूल कठिनाइयों से अपने को अलग नहीं रख सका है, किन्तु अब समय आ रहा है जब कि हिन्दी तथा राष्ट्र की सेवा करने में वह और भी अधिक सक्रिय होकर आगे कदम बढ़ाता जायेगा।

'देशदूत' का जन्म सन् १९३८ ई० में कांग्रेस मंत्रि-मडल के समय हुआ था। वह जिस आदर्श तथा नीति को लेकर हिन्दी क्षेत्र में आया था, आज भी वह उसी नीति पर दृढ़ है। अधिक से अधिक ठोस, प्रगतिशील, सामयिक, जनता तथा हिन्दी संसार के लिये उपयोगी सामाग्री प्रस्तुत करने में उसका एक अलग दृष्टि-कोण रहा है, पत्रकार जगत् में विशेषकर साप्ताहिक पत्रों की दुनियाँ में—एक स्टैंडर्ड स्थापित करना उसका ध्येय रहा है। हमें प्रसन्नता है कि 'देशदूत' द्वारा उसका कई अंशों में पालन किया गया है और भविष्य में भी वह उसी प्रकार अपनी नीति पर दृढ़ रहेगा। 'देशदूत' सदा से स्वतन्त्र विचारों को प्रश्रय देता और गम्भीर, स्पष्ट तथा राष्ट्रीय विचारों का पोषण करता आया है। यही उसकी भविष्य में भी नीति रहेगी। हमें विश्वास है कि हमारे हजारों पाठक तथा हिन्दी के सुपरिचित विद्वान्, लेखक तथा कवि जिस प्रकार आज तक हमें सहयोग देते तथा हमारा पथ-प्रदर्शन करते आये हैं भविष्य में भी हम उनकेसहयोग से वंचित नहीं रहेंगे। इसलिए नये वर्ष के उपलक्ष में हम 'देशदूत' के पाठकों तथा अपने लेखकों तथा सहयोगियों को बधाई देते हैं और आशा रखते हैं कि वह हम पर पूर्ववत् कृपा बनाये रहेंगे क्योंकि उनके पथ-प्रदर्शन से ही हम भविष्य में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

* * *

राष्ट्रीय सरकार का स्वागत

केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हो गई है। आगामी २ सितम्बर से राष्ट्रीय-सरकार भारतीय शासन की बागडोर अपने हाथ में लेगी। केन्द्र में जिस राष्ट्रीय सरकार की स्थापना के लिए सारा देश वर्षों से चिल्लाता आ रहा था, अन्ततोगत्वा उसकी पूर्ति ब्रिटिश मंत्रिदल तथा वाइसराय लार्ड वैवेल को करनी ही पड़ी। पिछले दिनों ब्रिटिश मंत्रिदल जब भारत आया था, तब उसने यहाँ के विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं से वार्ताएँ की थीं और राजनैतिक अड़ंगे को दूर करने का कोई न कोई हल ढूँढ़ निकालने का उद्योग किया था। मंत्रिदल ने अन्त में केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार के निर्माण तथा विधान-सम्मेलन की स्थापना के सम्बन्ध में एक योजना प्रस्तुत की। कांग्रेस ने राष्ट्रीय सरकार के निर्माण की प्रस्तावित योजना को अस्वीकार कर दिया किन्तु विधान-सम्मेलन की योजना स्वीकृत कर ली। मुस्लिम लीग ने मंत्रिदल की समस्त योजना को स्वीकृत कर लिया था किन्तु कांग्रेस ने जब राष्ट्रीय सरकार के निर्माण की प्रस्तावित योजना अस्वीकृत कर दी तब लीग के लिए कठिनाई उत्पन्न हुई और राष्ट्रीय सरकार का निर्माण न हो सका। इसके बाद विधान-सम्मेलन के सदस्यों का निर्वाचन हुआ जिसमें कांग्रेस, मुस्लिम लीग तथा अन्य राजनैतिक दलों ने पूर्णरूप से भाग लिया। कांग्रेस की पूर्ण विजय हुई। मुस्लिम लीग को अपनी विजय की जितनी आशा थी, उतनी नहीं हो सकी। इसीलिये अन्त में लीग असंतुष्ट हो गई और उसने यह निर्णय किया कि वह विधान सम्मेलन ही नहीं मंत्रिदल द्वारा प्रस्तावित योजना का वह विरोध ही नहीं करेगी वरन् अडंगा भी उत्पन्न करेगी। लीग ने अपना निर्णय तो दे दिया किन्तु वाइसराय अपनी पूर्व घोषणा के अनुसार योजना को सफल बनाने के कार्य में आगे बढ़ते रहे और अंत में उन्होंने केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना करने का निश्चय कर लिया। पंडित जवाहरलाल नेहरू और लार्ड वेवेल ने मुसलिम लीग के सभापति मिस्टर जिन्ना से विशेष आग्रह किया कि वह राष्ट्रीय सरकार के निर्माण में लीग का प्रतिनिधित्व करें किन्तु मिस्टर अपने निर्णय पर अटल रहकर बराबर पाकिस्तान की माँग करते जा रहे हैं।

परन्तु लीग के असहयोग के बावजूद भी केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार का निर्माण हो गया और सम्राट् की सरकार की ओर से घोषणा हो गई। पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल, डाक्टर राजेन्द्र-प्रसाद, श्री राजगोपालाचार्य, श्री आसफअली, डाक्टर शफात अहमद खाँ, सरदार बल्देव सिंह, श्री जान मथाई, श्री शरद्चंद्र बोस, श्री जगजीवनराम, सैयद अलीजहीर और श्री भावा अस्थायी सरकार के सदस्य बनाये गये हैं। इस मंत्रिमंडल में कांग्रेस, राष्ट्रीय मुसलमान, ईसाई, सिक्ख, अछूत सभी दलों का प्रतिनिधित्व है। केवल मुसलिमलीग का प्रतिधित्व नहीं है। दो मुसलिम सदस्यों का स्थान अभी रिक्त है। इस प्रकार मंत्रिदल योजना के अनुसार राष्ट्र के सभी दलों के प्रतिनिधि स्वरूप १४ सदस्यों द्वारा केन्द्रिय सरकार का निर्माण हुआ है। भारतीय राजनैतिक इतिहास में यह पहला अवसर है जब कि भारत का शासन राष्ट्रीय सरकार के हाथों से होगा। इसमें संदेह नहीं है कि राष्ट्र की आर्थिक, सैनिक, सामाजिक तथा वर्तमान परिस्थित में बहुत बड़े परिवर्तन की आशा है। हम कह सकते हैं कि अब केन्द्रीय सरकार भारत की अपनी राष्ट्रीय सरकार है। इसलिये हम नई राष्ट्रीय सरकार का हृदय से स्वागत करते हैं और भावी भारत के कल्याण की कामना करते हैं।

कलकत्ता का रक्तरंजित हत्या

लीगी शासन के षट्यंत्रों की जाँच होना चाहि

(प्राप्त)

पिछले सप्ताह कलकत्ता में जो रक्त रंजित दंगा हुआ, भारतीय इतिहास में वह कलंकित पृष्ठों में अंकित किया जायेगा। ४ हजार बेगुनाहों की हत्या और हजारों को बरबाद करके करोड़ों की सम्पत्ति की जिस प्रकार होली खेली गई, वह बंगाल के मुस्लिम लीगी शासन की एक कलंकित कहानी है। मुस्लिम लीग ने प्रत्यक्ष कार्यवाही का सक्रिय और जागृत नमूना कलकत्ता का भीषण अनाचार और दंगा भारतीय जनता को सदा के लिये स्मरण रहेगा। बंबई में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग ने मंत्रिदल योजना के विरोध प्रदर्शित करने के लिये जिस 'प्रत्यक्ष कार्यवाही' की घोषणा की थी, कौन जानता था कि उसका अर्थ है छुरेबाजी, निहत्थों पर हमला और अजान फुँकवाकर तमाशा देखना। शा के प्रधान मंत्री मिस्टर एम० एस० बर्दी ने १६ अगस्त को सार्वजनि घोषित करके यही दृश्य दिखाने बनाई थी? जिन लोगों ने ऐसे एंग्लो इंडियन अखबार को पढ़ा है, उन्हें कलकत्ता के अत्याचार के संबंध में अच्छी प्राप्त हुई होगी। जो 'स्टेट्मैन' के मुसलिम लीगी शासन का गुण हुआ नहीं अघाता था वही आज बंगाल मन्त्रि-मंडल को घोषित कर रहा है। इससे बढ़ के लीगी शासन की प्रशंसा मिल सकती है? 'स्टेट्मैन' के कलकत्ता का रक्तरंजित दंगा लीगी का एक षड्यन्त्र था। जो कुछ लीगी प्रधान मन्त्री की सोहराबदी जानकारी में हुआ। पुलिस की उपयोग भी भली भाँति नहीं किया लीगी गुंडों को खुलकर लूटपाट और भीषण रक्तपात की पूरी छूट दो दिन तक जनता की अपार धन हानि हुई किन्तु तीसरे दिन जब की सिक्ख और हिन्दू जनता प्रति लिए पिल पड़ी और मुसलिम धन हानि प्रारंभ हुई तो लीगी गोरी फौज बुलाने की सूझी। कमांडर मिस्टर सिक्सस्मिथ ने वक्तव्य में साफ साफ लीगी हथकंडों की निन्दा की है और कर दिया है कि ऐनमौके पर फौजें गई हैं। बंगाल के गवर्नर ने कभी ऐसी रक्तरंजित लीला नहीं देखी गवर्नर बरोज को भी लीगी शासन हथकंडों का शायद विशेष ज्ञान फिर वह करते ही क्या? गवर्नर टुकुर टुकुर देखते रहे और प्र

शेष पृष्ठ १८ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by ... Chennai and eGangotri

जहाँ पहले था वहीं आज भी

महायुद्ध की समाप्ति के बाद की राजनीति का लेखा-जोखा

(२)

लेखक, श्री का० न० रामन्ना शास्त्री

द्वितीय महायुद्ध के प्रारम्भिक काल से ही ब्रिटिश साम्राज्यशाही के लिये छुटपटा रहा है। द्वितीय महायुद्ध के प्रारम्भिक काल में राजनीतिक प्रगति क्या थी, इस पर 'देशदूत' के पिछले अंक में सुन्दर प्रकाश डाला जा चुका है। इस लेख में 'युद्ध के समाप्त हो जाने पर राजनीतिक क्षेत्र में क्या परिवर्तन हुआ और किस प्रकार की प्रति-क्रियाओं से राष्ट्र स्वाधीनता की ओर बढ़ा' इस पर विचार किया गया है। लेख अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसमें ब्रिटिश साम्राज्यशाही के लिये छुटपटाता रहा, इस पर सुन्दर प्रकाश डाला गया है। लेख अत्यन्त तथा भारतीय स्वाधीनता के क्रमिक विकास पर प्रकाश डालनेवाला है।

भारतीय सेना का नकशा

युद्ध-काल में भारतीय सेना की अधिक से अधिक संख्या	...	२०,५३,०००
नाविक बेड़े की सेना	...	३२,८१७
हवाई बेड़े की संख्या	...	२६,८२०
२८ फरवरी सन् १९४६ तक सभी तरह के सैनिक सेना से मुक्त किये गये		३,७४,०००

—भारत-सरकार द्वारा प्रकाशित आँकड़ा।

"आजाद हिन्द फौज"

मलाया के अन्दर भारतीय युद्ध-बन्दी	...	६०,०००
'आजाद हिन्द फौज' में शामिल	...	१८,०००
'आजाद हिन्द फौज' में नागरिक शामिल	...	२४,०००

—आर० ए० हुसेन लाहौर

लेख में यह बताया गया है कि द्वितीय महायुद्ध के प्रारंभ होते ही ब्रिटिश साम्राज्यशाही ने राजनैतिक और सैनिक दृष्टि से अपने को शक्तिहीन पाया। ब्रिटिश साम्राज्यशाही शक्तिहीन थी और भारत की जनता किस तरह ब्रिटिश साम्राज्यशाही के चंगुल से सदा के लिए मुक्त होने की कोशिश कर रही थी, इसे वह भली भाँति जानती थी। इसी कारण उसने युद्ध के समय ब्रिटिश साम्राज्यशाही से छुटपटा रही थी। परन्तु, हमारे उच्च नेताओं ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। द्वितीय महायुद्ध समाप्त होने के बाद भी, क्या ब्रिटेन में ऐसी पार्टियाँ थीं, जिनसे भारत को पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त कर सकने की आशा की जा सकती थी! इस बात का सही सही अन्दाज तभी लगा सकता है जब हम अन्तर्राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति पर एक नजर डालें।

अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति

द्वितीय महायुद्ध समाप्त होते ही, सारे संसार में उपनिवेश और पराधीन देशों की जनता ने अपने निरंकुश शासकों और उनके सहायकों के विरुद्ध सक्रिय आवाज उठानी शुरू कर दी। ब्रिटेन के अन्दर मजदूरों की हड़तालें शुरू हो गया। घाट-मजदूरों की हड़ताल ने इंग्लैण्ड के तथा-कथित जहाजों को हिला दिया। इंग्लैण्ड की छावनियों में सेना के विद्रोह फैलने लगा। हवाई बेड़े-वालों ने हड़तालें शुरू कीं। ब्रिटिश शासक वर्ग इन हड़तालों के तो आदी थे; परन्तु सैनिकों की हड़ताल उनके लिए बिलकुल नई थी। उन्हें इस बात का स्वप्न में भी ख्याल नहीं था कि सैनिक भी अपनी माँगों को मनवाने के लिए हड़तालों का सहारा लेंगे। परिवर्तित काल की परिवर्तित परिस्थिति के प्रति जागरूकचेतना है। अतः उन्होंने अपने और सड़े-गले कानूनों को लादकर बगावत की आवाज को दबाने की कोशिश की।

भारत में भी मजदूरों का असंतोष हड़तालों के रूप में व्यक्त हो रहा था। देश की कोई भी कारखाना अथवा व्यवसाय ऐसा नहीं था जहाँ के मजदूरों ने कुछ एक हड़ताल नहीं कर ली हो। यहाँ तक कि अखबारों के हाकरों ने भी हड़ताल करके अपनी माँगें मनवा ली थीं। डाक-तार की हड़ताल अपनी चरम सीमा पर पहुँची, जब कि हड़ताल के दौरान में लगभग सात लाख मजदूरों ने अपनी एकता का परिचय देकर आम जनता को चकित कर दिया था।

युद्धकाल में अपनी सेना के बल पर मित्र मुल्कों की सेना वहाँ पहुँच सकी थी। युद्ध समाप्त होते ही जब उन्होंने आजादी और भूख की आवाज उठानी शुरू की तो उन्हें गोलियों से भूना जा रहा था। अतः वहाँ साम्राज्यशाही के विरुद्ध घोर असंतोष था।

हिन्द-एशिया जापानी निरंकुशता से मुक्त होकर फिर से उच्च साम्राज्यशाही की आधीनता स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था। लेकिन ब्रिटिश साम्राज्यशाही, जिसका काफी धन हिन्द-एशिया के कारोबार में लगा हुआ है—अपने पाशविक बल से फिर से वहाँ उन्हीं की सत्ता कायम करना चाहती थी। संसार की स्वाधीनता-प्रेमी इन्साफपसन्द जनता ब्रिटिश साम्राज्यशाही के इस घृणित रवैये पर रोष प्रकट कर रही थी। विभिन्न देशों के नाविक अपना विरोध हड़तालों के रूप में व्यक्त कर रहे थे और कितने ही देशों के नाविक उच्चसेना भी उच्च अस्त्र-शस्त्र को हिन्द-एशिया ढोकर ले जाने से इनकार कर रहे थे। हिन्द-चीन में भी स्वाधीनता का संग्राम छिड़ चुका था।

निकट-पूर्व और मध्य-पूर्व में साम्राज्यवाद और शोषण के विरुद्ध असंतोष की आग प्रज्वलित हो उठी थी। मिस्र, इराक, फिलिस्तीन, सीरिया, लेबनान, सायप्रस आदि देशों में 'अँगरेज निकल जाओ' के नारों से आकाश गूँज रहा था। मिस्र में छात्रों की हड़तालें और हड़तालों के दौरान में पुलिस और फौज की सम्मिलित शक्तियों से संघर्ष उग्र रूप ले रहा था। यूनान में प्रतिक्रियावादियों के योग में उलझी हुई ब्रिटिश साम्राज्यशाही और उसकी सेना वहाँ की प्रगतिशील शक्तियों के अन्दर अपने लिए शत्रुओं की सृष्टि कर रही थी।

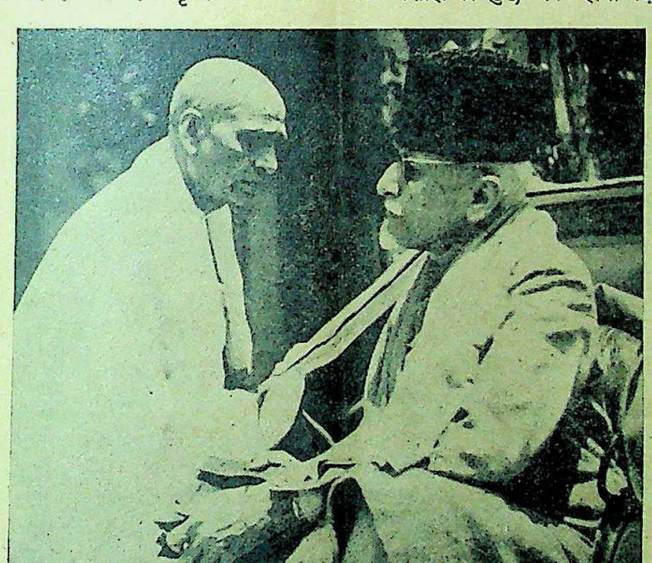

कांग्रेस वर्किंग कमेटी में केन्द्रीय सरकार के राष्ट्रीय करण पर सरदार वल्लभ भाई पटेल मौलाना अबुलकलाम आजाद से परामर्श कर रहे हैं।

भारत के अन्दर

भारत भी साम्राज्यवाद के विरोध में पीछे नहीं था। ब्रिटिश साम्राज्यशाही ने 'आजाद हिन्द फौज' के सदस्यों पर मुकदमा चलाना शुरू किया। भारतीय जनता ने एक होकर अपनी सम्मिलित आवाज में घोषित किया कि, "साम्राज्यशाही को इन पर मुकदमा चलाने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है।" साम्राज्यशाही दृढ़ रही। जनता ने असंतोष के प्रदर्शनों द्वारा इसका जवाब दिया। कलकत्ते के अन्दर कई दिनों तक पुलिस और फौज ने निहत्थी जनता को भूनना शुरू किया। अन्य नगरों में भी जनता और पुलिस की झड़पें हुईं और ये झड़पें बराबर बढ़ती गईं। साम्राज्यशाही को कुछ नरम होना पड़ा। उसने जनवरी के प्रथम सप्ताह में 'आजाद हिन्द फौज' के अफसर केप्टन शाहनवाज, लेफ्टिनेण्ट ढिल्लन और केप्टन सहगल को मुक्त कर दिया।

लेकिन, साम्राज्यशाही का अस्तित्व भेदनीति पर ही कायम है। उसने इसी भेदनीति का सहारा लिया। अबकी बार 'आजाद हिन्द फौज' के केप्टन अब्दुल-रशीद को ७ साल की सजा दी। इन्हें मुक्त नहीं किया। क्योंकि, केप्टन रशीद की पैरवी मुस्लिम लीग ने की थी। मुस्लिम जनता भड़क उठी। मुस्लिम जनता का असंतोष मुस्लिम जनता तक ही सीमित नहीं रहा। भारत की समस्त जनता उसमें सम्मिलित हो गई। क्योंकि, दोनों का शत्रु एक था—ब्रिटिश साम्राज्यवाद। ब्रिटिश साम्राज्यशाही की भेदनीति यहाँ असफल रही। भारत के कोने कोने में ब्रिटिश साम्राज्यशाही की पुलिस और सेना की सम्मिलित शक्ति से जनता की मुठभेड़ें हुईं। कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, दिल्ली आदि प्रमुख नगरों में जनता की घनिष्ठता का अपूर्व योग दृष्टिगोचर हो रहा था। कलकत्ता और बम्बई में कांग्रेस, मुस्लिम लीग और कम्यूनिस्ट पार्टी की पताकाएँ साथ साथ लहरा रही थीं। कलकत्ते के अन्दर मुस्लिम लीग के नेता और कांग्रेस के नेता सतीशचन्द्र दास गुप्ता जनता और छात्रों के जुलूस का नेतृत्व कर रहे थे। उस समय के समस्त भारतवर्ष के चित्र को देखने से ऐसा मालूम हो रहा था कि जनता का अपूर्व योग, उसका स्वाधीनता-प्राप्ति के लिए अभूतपूर्व बलिदान करने का दृढ़ निश्चय और गुलामी की तीव्र घृणा के त्रिवेणी संगम की प्रलयंकारी बाढ़ में साम्राज्यशाही तिनके के समान बह जायगी। किन्तु, वह अनेक कारणों से बह न सकी। उसकी नींव हिलने लगी। ठीक है, फौलाद की मजबूत दीवार एक अथवा अनेक प्रहारों से एकदम टूटती नहीं। वह प्रत्येक प्रहार से कमजोर होती जाती है। लेकिन अंतिम हलका प्रहार भी उसे कागज के घरौंदे के समान नष्ट-भ्रष्ट कर देता है। बाढ़ भी रुकी नहीं उसने और उग्र रूप धारण किया।

चरम सीमा

साम्राज्यवाद को भारत के अन्दर से जड़ से उखाड़ फेंकने की उस भयंकर बाढ़ की चरम सीमा तब पहुँची जब १८ फरवरी सन् १९४६ को भारतीय नाविकों ने बगावत का झंडा बुलन्द किया। नाविकों की बगावत का मूल कारण तो देखने से बहुत ही मामूली था। १८ फरवरी को 'तलवार' नाम के जहाज के नाविकों ने जहाज के कमाण्डर किंग से दूषित अन्न की शिकायत की। शिकायतों को दूर करने के बजाय सत्ता के घमण्ड में मदोन्मत्त कमाण्डर किंग ने नाविकों को यह कहकर अपमानित किया कि 'तुम काले हिन्दुस्तानी होते हुए अन्न की शिकायत करने की गुस्ताखी करते हो!' कमाण्डर की इस बदतमीजी ने नाविकों के गुस्से को भड़का दिया, जिसकी अभिव्यक्ति रामसिंह नाम के नाविक ने अपने खाने की तश्तरी कमाण्डर किंग के मुँह पर फेंक कर प्रगट की। कमाण्डर ने रामसिंह को तुरन्त दो महीने की सजा सुना दी। इसको नाविक साथियों ने कमाण्डर किंग की ही नहीं—बल्कि ब्रिटिश साम्राज्यशाही की चुनौती समझी। 'तलवार' के नाविकों ने इस चुनौती को स्वीकार किया। उन्होंने भूख-हड़ताल की घोषणा की।

शेष पृष्ठ १२ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय आर्थिक योजना-समिति

राष्ट्रीय दृष्टि से भारत की आर्थिक स्थिति सुधारनेवाली सक्रिय संस्था

लेखक, श्री विजयचन्द्र टंडन बी,० ए०

भारत का आर्थिक तथा व्यापारिक दृष्टि से कितना पराभव हुआ है, इसका प्रमाण इस देश की निर्धनता और गरीबी है। इसी निर्धनता को सक्रिय रूप से दूर करने के लिये राष्ट्रीय आर्थिक योजना-समिति का निर्माण हुआ है। राष्ट्रीय आर्थिक योजना-समिति का क्या उद्देश्य है और भारतीय आर्थिक स्थिति को सुधारने का वह किस प्रकार उद्योग कर रही है, इसका वर्णन इस लेख में किया गया है। लेख पठनीय तथा विचारणीय है।

आधुनिक काल में किसी भी देश की उन्नति उस देश की आर्थिक अवस्था की उन्नति पर निर्भर करती है। जिन देशों की आर्थिक अवस्था अच्छी है, आज वही संसार में ऊँचे और सबसे आगे हैं। प्रश्न उठ सकता है कि आर्थिक अवस्था कैसे सुधारी जाती है? आर्थिक अवस्था का आधार औद्योगिक क्षमता है। आज संसार में अमरीका और रूस चढ़े बढ़े राष्ट्र हैं। इसलिए कि इन देशों की औद्योगिक क्षमता या इनकी आर्थिक अवस्था अन्य देशों की बनिस्बत कहीं अच्छी है। इसी कारण द्वितीय महायुद्ध में अमरीका ने ब्रिटेन को लड़ाई के सामान से भर दिया और रूस को किसी और देश से अधिक मदद लेने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

भारतवर्ष की स्थिति बिलकुल प्रतिकूल है। कहाँ अमरीका, रूस और ब्रिटेन और कहाँ भारतवर्ष? जमीन-आसमान का फर्क है। एक तरफ औद्योगिक क्षमता और दूसरी ओर औद्योगिक मंदी। एक तरफ हृष्ट-पुष्ट सुसज्जित बूढ़ा और दूसरी ओर दुर्बल कमजोर वस्त्रहीन नवजवान।

तो क्या भारतवर्ष सदा से इसी हालत में है? कदापि नहीं। १७वीं और १८वीं शताब्दी के बीच का समय बिलकुल भिन्न था। उस समय भारतवर्ष संसार भर की आवश्यकताओं को पूरा करने का दावा रखता था। भारतीय घरेलू उद्योग-धन्धों और कारखानों का माल योरोप, पश्चिमी अफ्रीका, मिस्र, फारस, मध्य-एशिया और जापान के बाजारों में बिकने जाया करता था; परन्तु भारतवर्ष की पवित्र भूमि पर ज्यों ज्यों विदेशियों के अपवित्र पैर जमते गये भारतवर्ष के सुख के दिन पीछे हटते गये। आज भारतवर्ष की हालत यह है कि बेकारी का बाजार बहुत गर्म है, उद्योग-धन्धों की कमी और श्रम की अधिकता के कारण स्थिति बहुत गिर गई है, जितनी जमीन नहीं है उससे ज़्यादा जोतनेवाले मौजूद हैं और अकालदेवता अपनी करामातें आनन्द के साथ दिखा रहे हैं।

देश की ऐसी अवस्था पर भारतवर्ष की एकमात्र संस्था अखिल भारतीय कांग्रेस का ध्यान गया है। चारों ओर त्राहि-त्राहि सुनकर हमारे नेताओं ने अनुभव किया है कि भारतवर्ष की इस दर्दनाक आर्थिक अवस्था को सुधारने का भार उन्हीं के कन्धों पर है। सन् १९३८ में कांग्रेस कार्य्यकारिणी-समिति की एक बैठक में इस अवस्था पर विचार किया गया। एक प्रस्ताव द्वारा समस्त भारतवर्ष की आर्थिक अवस्था को सुधारने के लिए एक योजना बनाये जाने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया।

इस प्रस्ताव के केवल तीन ही महीने बाद आठ कांग्रेस प्रान्तों के उद्योग-धन्धों के मन्त्रियों की एक सभा दिल्ली में हुई। इस सभा में भारतवर्ष की आर्थिक अवस्था को सुधारने के लिए एक योजना बनाने के लिए राष्ट्रीय आर्थिक योजना-समिति की नींव डाली गई। पंडित जवाहरलाल नेहरू इसके सभापति बनाये गये। राष्ट्रीय योजना-समिति का सबसे पहला अधिवेशन बम्बई में हुआ। आरम्भ में केवल कांग्रेस प्रान्तों के प्रतिनिधियों को ही इसमें सम्मिलित किया गया। परन्तु बाद में बहुत से गैर-कांग्रेसी प्रान्तों और कुछ बड़ी और प्रसिद्ध रियासतों, जैसे हैदराबाद, ट्रावनकोर और मैसूर आदि के प्रतिनिधि भी शामिल कर लिये गये।

राष्ट्रीय योजना-समिति ने एक एक करके भारतवर्ष की सब समस्याओं को हल करने की कोशिश की है। सबसे गूढ़ समस्या गरीबी की समस्या है। आज भारतवर्ष में न जाने कितने ऐसे भरे पड़े हैं कि जिनको भरपेट दोनों समय खाना भी नसीब नहीं होता। जो देश कुछ साल पहले अनाज और खाने-पीने की चीजों से भरा-पूरा था आज उसी देश के निवासी टुकड़े टुकड़े के लिए भटक रहे हैं। देश के लिए यह आज की एक बहुत बड़ी समस्या है। ऐसी गरीबी चन्द दिनों के अन्दर दूर नहीं की जा सकती। राष्ट्रीय योजना-समिति की नीति के अनुसार दस साल के भीतर ही भीतर मनुष्य एक ऐसी सभ्य जिन्दगी बसर कर सकेगा जिससे खाने-पीने की तथा और आवश्यक वस्तुओं के लिए उसको भटकना नहीं पड़ेगा। परन्तु इस जिन्दगी को प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय आय आधुनिक आय से तीन गुनी अधिक होनी चाहिए। इसके साथ साथ राष्ट्रीय लाभांश के वितरण में समानता होनी चाहिए। राष्ट्रीय आय बढ़ाने का केवल एक तरीका है और वह यह कि उद्योग-धंधों को बढ़ाया जाये; परन्तु पूँजीवादी प्रथा को अपनानेवाले देशों ने हमको एक सबक सिखा दिया है। इन देशों में भी आय बढ़ाने के लिए बड़े बड़े निजी उद्योग-धंधे चलाये गये हैं जिनमें अबाधित प्रतियोगिता की गई है। इस तरह से राष्ट्रीय आय अवश्य बढ़ गई परन्तु साथ ही साथ इस आय के वितरण में घोर असमानता का भी सामना करना पड़ा है। इसीलिए राष्ट्रीय समिति ने बड़े बड़े उद्योग-धंधों के साथ साथ घरेलू उद्योग धंधों के चलाये जाने पर अधिक जोर दिया है। इस तरीके से राष्ट्रीय आय के बढ़ने के साथ ही साथ वितरण में भी समानता प्राप्त कर ली जाती है।

दूसरी समस्या है कृषि-समस्या। भारतवर्ष की अधिकतर जनता कृषि पर निर्भर करती है। आबादी के बढ़ने के

राष्ट्रीय आर्थिक योजना-समिति के सभापति पंडित जवाहरलाल नेहरू।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवा-ग्राम—चार वर्ष बाद !

महात्मा गांधी के आगमन से पुनः नवजीवन

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

चार वर्ष बाद महात्मा गांधी पुनः सेवाग्राम में पधारे। सन् ४२ के पूर्व की चहल-पहल पुनः अगस्त सन् ४६ में दिखाई पड़ने लगी। इस लेख में श्री विद्यार्थी जी ने सेवाग्राम की नई जागृति का सुन्दर वर्णन किया है, विशेष कर ९ अगस्त के दिन शहीदों की स्मृति में जो राष्ट्रपति के सभापतित्व में जलसा हुआ, उसका भी सुन्दर वर्णन किया है। लेख सामयिक, सुन्दर और पठनीय है।

कमेटी की बैठकें यहीं हुईं। सारे देश का ध्यान फिर एक बार इधर खिंच गया। १९४२ का वह दिन तूफान का था। आज १९४६ का दिन भारत की आजादी निकट लाने का है। इन वर्षों के भीतर देश के अन्दर कितना उलट-फेर हुआ और दुनिया कितनी बदल गई। देश में लोकप्रिय प्रान्तीय सरकारें काम कर रही हैं। फिर भी देश का दुःख अभी तक कुछ कम नहीं हुआ। सारी चीजों पर देश के नेताओं ने यहाँ बैठकर विचार-विनिमय किया।

स्वतन्त्र भारत का विधान कैसा हो ? क्या किया जाय ? सब पर गौर किया। १९४२ में जब यहाँ बैठकें हो रही थीं तब सरकार सारे मुल्क में दमन-चक्र की भीषण तैयारी करने में लगी हुई थी। आज ४६ में वह कांग्रेस नेताओं को पास बुला चुकी है देश की बागडोर सँभाल लीजिए। अपना घर देखिए।

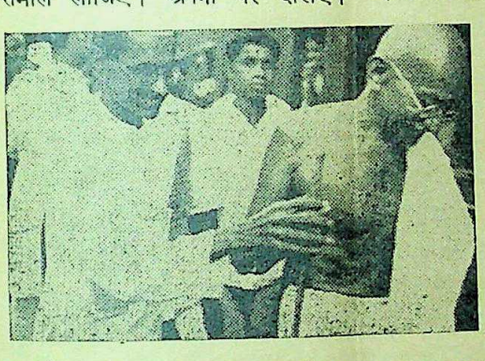

चार वर्ष बाद सेवाग्राम में महात्मा गांधी का आगमन। महात्मा जी के प्राइवेट सेक्रेटरी श्री प्यारेलाल भी खड़े दिखाई दे रहे हैं।

अपनी प्रजा की तरक्की सोचिए। हम जाना चाहते हैं। तैयारी कर रहे हैं। अपनी जिम्मेदारी सँभालने की तैयारी कर लीजिए। १९४२ और १९४६ में कितना फर्क है। सच है, जो आज है कल नहीं रह सकता, दुनिया परिवर्तनशील है।

४ वर्ष के बिछुड़े अपने लोकप्रिय नेताओं को पाकर यहाँ की जनता धन्य धन्य मनाने लगी। छोटे बच्चे से लेकर बूढ़े तक में एक जोश आ गया। दिल भरकर नेताओं का स्वागत किया गया और जी भर कर उनका दर्शन। पिछले दिनों दूर दूर की जनता यहाँ आई थी। दूर देहात के किसान तक आये थे। हजारों स्कूलों के विद्यार्थी आये थे। ८ अगस्त से लेकर ११ अगस्त तक यहाँ मेला लगा हुआ था। आने-जाने के लिए सवारियाँ मिलनी मुश्किल हो गई थीं। होटलों में चाय मिलना कठिन हो गया। सड़कों पर हमेशा भीड़ लगी रहती थी।

अम्बेडकर दलवालों ने भी अपनी माँगों के लिए यहाँ खूब प्रदर्शन किया। नेताओं के निवास के सामने दिन भर नारे लगाते रहे। धूप में भूखे-प्यासे दिन भर मैदान में बैठे रहे।

गुरुदेव की पुण्यतिथि सेवाग्राम में खूब धूम-धाम से मनाई गई। प्रभातफेरी निकाली गई। सामूहिक सूत-यज्ञ कातकर सब लोगों ने अपनी अपनी श्रद्धाञ्जलि चढ़ाई। महात्मा गांधी ने भी सूत-यज्ञ में सब लोगों के साथ भाग लिया। महात्मा गांधी ने कहा कि गुरुदेव का सारा जीवन मुल्क की सेवा करते करते बीता है। उन्होंने मुल्क की बड़ी सेवा की है। वे महापुरुष थे। अन्तिम घड़ी तक वे देश की सेवा करते रहे। उनकी आज पुण्यतिथि है। हम सबको उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि मुल्क की सेवा का व्रत लें। अधिक से अधिक अपने जीवन को शुद्ध करें।

९ अगस्त का दिन यहाँ विशेष तौर से महत्त्व का था। राष्ट्रपति की रहनुमाई में यह ऐतिहासिक दिवस यहाँ मनाया गया। सब लोगों ने खड़े होकर शहीदों की स्मृति पर दो मिनट के लिए मौन धारण किया। मृत आत्माओं को शान्ति मिले और उनकी आत्माओं से प्रकाश मिले ऐसी प्रार्थना हुई। राष्ट्रपति नेहरू जी ने कहा—"हम अब गुलाम नहीं रह सकते। आजादी का प्रभात आ गया है। किसी भी तरह भारत गुलाम नहीं रह सकता। अँगरेजों को यहाँ से जाना ही पड़ेगा। वे जानेकी तैयारी भी कर रहे हैं। यदि सीधे रास्ते वे जाना पसन्द नहीं करेंगे तो टेढ़े रास्ते से जायँगे। वे इस युद्ध में बहुत निर्बल हो गये हैं। उनमें ऐसी ताकत नहीं है कि वह हम पर अब अधिक दिन सवारी कस सकें। हममें कमजोरियाँ हैं, खराबियाँ हैं उन्हें दूर करना है। अपने संगठन को मजबूत करना है। खराबियों को हटाना है। सच्चा स्वराज्य स्थापित करना है। जनता का सच्चा स्वराज्य होना चाहिए। बाबुओं को तो आज भी स्वराज्य मिला है। उस स्वराज्य से क्या मतलब है ? हमें ४० करोड़ भूखी जनता का स्वराज्य लाना है। यह स्वराज्य आप सब अपनी ताकत से पैदा करें। किसानों मजदूरों का राज्य हो, ऐसी आबो-हवा हमें और आपको पैदा करनी है। १९४२ से हमारा देश बहुत आगे बढ़ा है। हम गिरते हैं और आगे बढ़ते हैं। यह दुनिया का रिवाज है। हमारी आजादी की लड़ाई बहुत दिनों से चल रही है। अब हम अपने मंजिले मकसूद पर पहुँच रहे हैं। आप सब तैयार रहें। जब भी पुकार हो आप सब मैदाने जङ्ग में आने को तैयार रहें। ऐसा खयाल न करें कि अब आजादी मिल गई है। आजादी मिलने के बाद भी बहुत से मसले हैं। उन सबको आप सबको तय करना है। १९४२ की क्रान्ति, जब क्रान्ति हुई तो यहाँ की जनता ने जैसी हिम्मत और बहादुरी की है उस पर हमें बहुत अभिमान है। यहाँ की प्रजा ने बड़े बड़े कष्ट झेले हैं उन सबको देखकर हमारा हृदय पिघल जाता है, हृदय सिहर उठता है। हमें अपने भाइयों की बहादुरी पर अभिमान है। वह जुल्मों से दबी नहीं। लोग कुछ समय के लिए पस्त-हिम्मत हो गये थे लेकिन जिस तेजी से हमारा देश फिर उठ गया है वह बड़े महत्त्व का है। कुचली और सताई गई प्रजा के साथ हमारी पूरी सहानुभूति है। १९४२ में हमने सब अच्छा ही अच्छा किया हो, ऐसा तो मैं नहीं कह सकता हूँ। कहीं कुछ गलती भी हुई होगी। इतने बड़े देश में यदि कुछ गलतियाँ हुई हों तो क्षम्य हैं। लेकिन हमें उन गलतियों को आगे सुधारना है। आगे बढ़ना है। अपनी गलतियों से शिक्षा लेनी है। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि अब हमको ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो गुलाम रख सके। स्वराज्य आ गया है। वह स्वराज्य किसानों-मजदूरों का होना चाहिए।

९ अगस्त के दिन ही कामर्स कालेज में मातृभाषा के जरिये उच्च शिक्षा देने का श्रीगणेश यहाँ के अधिकारियों ने किया। महात्मा जी ने इसका उद्घाटन किया। मातृभाषा के जरिये ही सारी शिक्षा देनी चाहिए ऐसा महात्मा जी ने कहा और कहा कि अँगरेजी भाषा के जरिये हमारे देश में शिक्षा देने के कारण बहुत सी खराबियाँ आ गई हैं। हमारा पतन किया गया है। जबरन हमारे ऊपर विदेशी भाषा का बोझ लादा गया है। जितनी जल्दी यहाँ से अँगरेजी का बोलबाला मिटाया जा सके वह सब करना चाहिए। सारी शिक्षा अपनी प्रान्तीय भाषा या हिन्दुस्तानी में दी जानी चाहिए। ४० करोड़ जनता को शिक्षा देनी चाहिए। सारी प्रजा को शिक्षित करना है। वह विदेशी भाषा से कभी नहीं हो सकता। कुछ मुठी भर लोगों के लिए अँगरेजी सुलभ है। अँगरेजों ने अपना शासन चलाने के लिए यह सहूलियत बर्ती है। उन्होंने अपने स्वार्थ के लिए ऐसा किया है। अब हमें ऐसी बातों को स्वीकार नहीं करना चाहिए। मातृभाषा और हिन्दुस्तानी में सारे ग्रंथ तैयार किये जायें। उन्हीं के द्वारा सब शिक्षा हो। यह कदम प्रशंसनीय है। बड़ी जिम्मेदारी का है। हमारा देश अब आजाद हो रहा है। अपनी भाषा में ही सारी शिक्षा होनी चाहिए। सात लाख गाँवों तक में अपनी जबान पहुँचानी है। देहातियों के पास भी बहुत कुछ शब्द-भण्डार हैं, वहाँ से भी संग्रह किया जाना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक स्केच

पंडित श्रीकृष्णदत्त पालीवाल

राष्ट्रीय संग्राम और संघर्ष का एक तपा हुआ राष्ट्रनेता

लेखक, प्रोफेसर ओंकारशंकर विद्यार्थी, एम० ए०

संयुक्तप्रांत के प्रसिद्ध कांग्रेस-नेता पंडित श्रीकृष्णदत्त पालीवाल की स्वर्ण-जयंती पिछले दिनों आगरा में बड़ी धूमधाम से मनाई गई थी। इस लेख में श्रीयुत विद्यार्थी जी ने पालीवाल जी की जीवन-संबंधी घटनाओं को लेकर एक सुंदर स्केच तैयार किया है। इस स्केच में पालीवाल जी के राजनैतिक और साहित्य-जीवन पर सुंदर प्रकाश डाला गया है, जो पठनीय तथा आकर्षक है।

इस वर्ष का रक्षाबन्धन एक पांच घोष लेकर आया। इसी पुनीत दिवस पर हमारे प्रान्त के एक शक्तिशाली नेता ने ५२ वर्ष पहले जन्म लिया था। सम्पन्न परिवार में जन्म लेकर भी श्रीमान् श्रीकृष्णदत्त जी पालीवाल ने संयुक्तप्रांत के गरीब किसानों के हृदय में ही अपना महल बनाने की प्रतिज्ञा की, और उसको पूरा कर दिखाया। बचपन ही से असाधारण ज्ञान-पिपासा थी हमारे जन-नायक के हृदय में। किशोरावस्था में ही उन्होंने आगरे में "ज्ञानवर्धिनी सभा" की स्थापना की थी, और आस-पास के नवयुवकों के बीच उच्चतम ज्वालावान् नक्षत्र की भाँति देदीप्यमान होने लगे थे, इसी समय उनकी भेंट प्रताप-संस्थापक स्वर्गीय विद्यार्थी जी से हुई। इस प्रकार अपनी अपनी प्रतिभा की ज्योति से जगमगानेवाले दो दीपस्तम्भों के बीच संयुक्त प्रकाश की एक लौ संदीप्त हो उठी।

* * *

श्री पालीवाल जी कानपुर आये और स्वर्गीय विद्यार्थी जी के दाहने हाथ बन गये। जिन लोगों ने उस समय के दैनिक साप्ताहिक "प्रताप" एवं "प्रभा" की फाइलें देखी हैं, वह जान सकते हैं कि श्रीमान् पालीवाल जी की लेखन सम्बन्धी स्वयं अपनी विशेषताएँ भी थीं। मुहावरों और शैली के सम्बन्ध में श्रीमान् पालीवाल जी के कुछ प्रयोग सर्वथा अपने थे। विद्यार्थी जी के प्रयोगों पर उर्दू की विशेष झलक थी और आचार्य महावीरप्रसाद जी द्विवेदी के शिष्यत्व के कारण व्याकरण-सम्बन्धी सम्मार्जन भी बहुत था। इसके अलग, पालीवाल जी की लेखनी पर प्रारम्भ से ही अँगरेजी और संस्कृत साहित्य की वेगपूर्ण विचार-धारा का बहुत प्रभाव पड़ा था। सीधी-खरी भाषा में जोरदार, आग्नेय आलोचना करने की शैली में पालीवाल जी विशिष्ट थे। स्वर्गीय विद्यार्थी जी तर्कपूर्ण तीखे और चुभते हुए तरीके से, एवं बहुत ही उफनाते हुए क्रोध को भी कानून का जामा पहनाते हुए लिखा करते थे। पालीवाल जी प्रारम्भ से ही परुष एवं सीधे शब्दों को प्रयोग करने में विशेष आनन्द लेते रहे हैं।

लेखक और पत्रकार के अन्दर ज्ञान एवं शैली के अतिरिक्त लगन, अध्यवसाय एवं जुटने की शक्ति भी होनी चाहिए। स्वर्गीय विद्यार्थी जी के जेल चले जाने के पश्चात् "प्रभा" का सम्पादन श्रीयुत पालीवाल जी के हाथ में आया। उस समय "प्रभा" अपने ढंग की अद्वितीय राजनैतिक पत्रिका थी। आज तो हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में राजनैतिक एवं आर्थिक विषयों पर लिखनेवाले योग्य लेखकगण आगे आ गये हैं, परन्तु उस समय, सन् २२-२३ में, इस तरह के लेखकों का अपेक्षाकृत अभाव था। मुझे बचपन में याद है कि पालीवाल जी "प्रभा" के लिए रात-दिन परिश्रम किया करते थे और कभी-कभी तो उन्होंने कई लेख विभिन्न नामों से "प्रभा" के लिए लिखे, और तभी उन्हें सन्तोष हुआ। यह पालीवाल जी की ही खूबी थी कि उन्होंने स्वर्गीय विद्यार्थी जी की अनुपस्थिति में "प्रताप" और "प्रभा" के धरातल को अक्षुण्ण रखा।

* * *

कुछ कारणवश श्रीयुत पालीवाल जी को आगरा वापस आना पड़ा। आगरे में ही उनकी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा हुई थी, आगरे के वातावरण में ही उन्होंने विकास के सोपानों पर पद-न्यास किया था, इसलिए पालीवाल जी का आगरे वापस जाना स्वाभाविक ही था। आगरे जाकर बहुत थोड़ी पूँजी से पालीवाल जी ने "सैनिक"—साप्ताहिक पत्र की स्थापना की। "सैनिक" की स्थापना सम्भवत: उस मुहूर्त्त में हुई थी जब नौकरशाही की भृकुटियाँ बड़ी बुरी तरह से कुटिल थीं। "सैनिक" और पालीवाल जी का विकास बलिदानी बन्धनों में पड़कर संश्लिष्ट हो गया। जितनी ज़मानतें "सैनिक" को देनी पड़ी हैं, और दमन की जितनी चक्कियों के बीच इस पत्र को पिसना पड़ा है, उतना दमन बहुत कम समाचारपत्रों को सहना पड़ा है। सैनिक की तुलना विद्यार्थी जी के "प्रताप" और लोकमान्य के "केसरी" से ही दी जा सकती है।

* * *

पालीवाल जी आदर्श संगठनकर्त्ता हैं। आगरे के निवासियों पर उनका प्रभुत्व तो है ही, परन्तु इससे भी बढ़कर बात यह है कि पश्चिमी युक्तप्रांत के गाँव-गाँव में आप के जादू की लकड़ी घूमती है। सन् ३०-३१ के किसान-आन्दोलनों का शानदार नेतृत्व आपने किया था।

जिस किसान-सत्याग्रह की कल्पना पं० जवाहरलाल जी नेहरू ने की थी, उसको साकार रूप में करके आपने दिखला दिया। जिस समय सन् ४२ की क्रांति के विस्फोट-कण बम्बई के गगन में उड़ रहे थे, उस समय पालीवाल जी हमारे प्रांत के नायक थे। प्रांतपति की हैसियत से उन्होंने एक प्रस्ताव कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सामने भेजा था, जिसमें बहुत-सी बातें बीजरूपेण थीं, जो सन् ४२ के आन्दोलन में हमारे सामने आग की [illegible] में लिखकर आईं। राजनैतिक दूरदर्शिता के हिसाब से भी पालीवाल जी का [illegible] बहुत ऊँचा है।

पंडित श्रीकृष्णदत्त पालीवाल एम० ए० (केन्द्रीय)

* * *

राजनीति में उनसे बहुत से लोगों [illegible] मतभेद हो सकता है। उनके स्वयं [illegible] हृदय में गांधीवाद के लिए चरम [illegible] है, परन्तु सुभाष बाबू के नाम पर [illegible] पालीवाल जी का हृदय उत्तालतरंगों [illegible] दोलायमान हो उठता है। अभी हाल [illegible] आपने एक नवयुवक दल की स्थापना [illegible] है, और साथ ही कांग्रेस के अन्दर [illegible] किसान-मजदूर प्रजादल की भी संस्थापना की है। आशा है ये दोनों दल पालीवाल जी की राजनैतिक दूरदर्शिता को [illegible] सिद्ध करेंगे।

* * *

परंतु यह कितने दुःख की बात है [illegible] राष्ट्रीय संग्राम और संघर्षों की आग [illegible] वाल जी ऐसे व्यक्तियों को यह अवसर [illegible] देती कि सरस्वती के चरणों में या पत्रकार कला के मन्दिर में वह अपना पूरा [illegible] दे सकें। उन्हें तो रण-सज्जा करनी ही है इसलिए बहुत कम लोग जानते हैं [illegible] अन्तर्राष्ट्रीय घटनाचक्रों के ऊहापोह [illegible] पालीवाल जी जितनी कुशलतापूर्वक [illegible] झते हैं, उतनी निपुणतावाले पत्रकार हिन्दी में प्रभातकालीन नक्षत्रों की भाँति [illegible] हैं, और हिन्दी-साहित्य का कोई भी [illegible] पालीवाल जी के प्रति अपनी [illegible] प्रकाशित किये हुए नहीं रह [illegible] क्योंकि आपने हालकेन के अमर [illegible] इटर्नलसिटी ("अमरपुरी") को [illegible] भाषा-सौष्ठव के साथ, और जिस [illegible] शैली में अनूदित किया है, वह [illegible] हिन्दी के चरणों में अविगलित [illegible] शाली राजीव है। क्या यह [illegible] पुष्पाञ्जलि होगी?

विधवा

लेखक, श्री निरंकारदेव सेवक, एम० ए०

कल आई थी मैं जीवन में अमर हास उल्लास लिये,
पलकों में सुख स्वप्न मधुर यौवन का पूर्ण विकास लिये।
आँखों की पुतली में फिरता मधुवन का मधुमास लिये,
अधरों से उमड़ी पड़ती-सी चिर-अतृप्ति की प्यास लिये।
मेरे रोम रोम से फूटी पड़ती नई जवानी थी,
रंग-बिरंगी इच्छाओं की दुनिया की मैं रानी थी।
कल तक मैं सबकी आँखों में कोमल थी सुकुमारी थी,
कल तक मैं मन में रख लेने योग्य प्राण से प्यारी थी।
आज कहा जाता है मुझसे भाग्यहीन विधवा हूँ मैं,
फूट गई है किस्मत मेरी एकाकिनि अबला हूँ मैं।
इसी हाथ से माँग भरा सिन्दूर छुटा डालूँ कैसे,
बार बार सुलझाई थीं जो लट खुद उलझा लूँ कैसे?
बना-बनाया अरमानों का खेल मिटा डालूँ कैसे,
यह यौवन शृङ्गार उमंगें हाय लुटा डालूँ कैसे?
कल तक मैंने जो कुछ अपनी इन आँखों से देखा था,
कैसे कह दूँ आज कि वह सब केवल झूठा सपना था।
सत्य और सपने में धोखा खा न सकेंगी यह आँखें,
दुनियावालों के कहने में आ न सकेंगी यह आँखें।
वेणी में गूँथी कलियो, मैं तुम्हें न कुम्हलाने दूँगी,
मेरे माँग भरे सेंदुर, मैं तुझे न धुल जाने दूँगी।
मेरे गजरे के फूलो, मैं तुम्हें न मुरझाने दूँगी,
मेरी इच्छा की परियो, मैं तुम्हें न उड़ जाने दूँगी।
जिसने कभी दिखाया सपने में भी मुझ पर प्यार नहीं,
जिसके मन पर समझा मैंने अपना कुछ अधिकार नहीं।
अपने उस कल्पित पति को भी भूल नहीं सकती हूँ मैं,
पर जीते जी महामरण का व्रत भी तो कैसे लूँ मैं।
मैं जिन्दा रहने को जन्मी हूँ समाज की छाती पर,
मेरा यह अधिकार छीन ले गया कोई कैसे मर कर।

साहित्यालोचन

इसका संशोधित संस्करण छपकर तैयार है। इसमें संस्कृत के प्रमुख आचार्यों के साहित्य-सम्बन्धी सिद्धान्तों के अतिरिक्त पाश्चात्य साहित्यकारों तथा साहित्य-मर्मज्ञों के मत का दिग्दर्शन बहुत ही मौलिक ढंग से कराया गया है। ४०० पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य [illegible] पाँच रुपये पाँच आने।

इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाह

लेखक, श्री मन्मथनाथ गुप्त

मानव-हृदय बड़ा विचित्र है, वह आदर्शवादी, विवेकी, तत्वज्ञानी बनने की धुन में तो रहता अवश्य है किन्तु परिस्थिति के अनुकूल यदि न चले तो वह कहीं का न रहे। अनंत बाबू भी ऐसे ही जीवों में थे। उन्हें परिस्थितियों को देखते हुए अपने तत्वज्ञान में परिवर्त्तन करना पड़ा। कहानी अत्यन्त सुन्दर है। मानव-स्वभाव और हृदय का चित्रण बड़ी ही मार्मिकता से किया गया है।

इस कहानी के लेखक सुप्रसिद्ध समाजवादी श्री मन्मथनाथ गुप्त।

खाली पाऊँ.....इधर और टाइम भी तो नहीं है।

उस शरीफ आदमी ने एक कदम पीछे हटकर एक बार सिर से पैर तक देखकर कहा—आप तब से खड़े खड़े कानून और धर्म की बात सोच रहे हैं, इस बाजार में...। इस जमाने में आपको तो घर ही से नहीं निकलना चाहिए था।

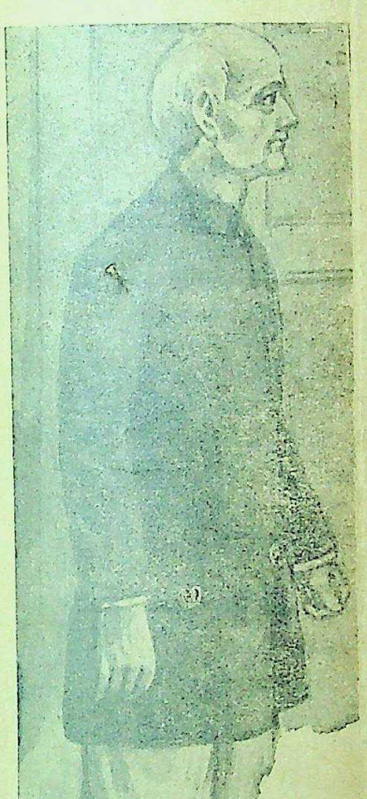

अनन्त बाबू ट्राम के पास खड़े खड़े देखते ही रह गये।

अनन्त बाबू कुछ सिटपिटाकर बोले—नहीं, नहीं, यह बात नहीं, पर यदि ऐवाएड कया जा सके.....फिर शरीर से जरा स्थूल हूँ न।

उन्होंने जरा भी मुस्कराने की चेष्टा नहीं की।

एक ट्राम और आ रहा है। इस नवागन्तुक ने अनन्त बाबू को जरा ढकेलकर आगे कर दिया। कहा—यह सब सोचने का समय नहीं है। ट्राम में भीड़ हो तो धक्कमधक्का करके चढ़ सकें, इसीलिए तो ईश्वर ने आपको स्थूल शरीर दिया है, यह जमाना तो आप ही जैसे लोगों का है, एक धक्का खायँ तो क्या बिगड़ेगा?

ट्राम के खड़े होते ही उस भले आदमी ने अनन्त बाबू को कुछ ढकेलकर, कुछ प्रोत्साहन देकर ट्राम पर चढ़ा दिया, और स्वयं उनकी तोंद की आड़ में आगे बढ़ गया। इस जबर्दस्ती चढ़ने के लिए कुछ लोगों ने आँखें लाल-पीली कीं, कुछ उग्र मन्तव्य किये, किन्तु उस भले आदमी ने सबको समझा बुझाकर ठंडा कर दिया। भीड़ के केन्द्रस्थल में पैर रखने की जगह मिली। ट्राम छूट गया।

अनन्त बाबू इस भयङ्कर भीड़ में किसी प्रकार से जेबी घड़ी निकालकर देखते हुए बोले—और भी बीस मिनट है। जो कुछ भी हो, शायद गाड़ी मिल जाय। सौभाग्य से आप थे नहीं तो चढ़ ही न पाता। ओह!

"मेरा भी तो यही कहना है"—कहकर वह भला आदमी हँस उठा।

अनन्त बाबू बात देर में समझे। समझकर जोरों से हँसते हुए बोले—अच्छा आप मेरी आड़ में दाखिल हो गये, यही?

तोंदियल मोटे आदमी की हँसी थी। चारों तरफ से कुछ दबाव पड़ा। बहुत से चेहरों पर झुँझलाहट थी। उस भले आदमी ने हँसते हुए अनन्त बाबू से कहा—अब हँसकर भी आप हिंसा कर रहे हैं। जरा रुक जाइये, देख नहीं रहे हैं?

हँसी घटी नहीं, बढ़ी; बल्कि कुछ संक्रामक हो गई। अनन्त बाबू झेंप मिटाने के लिये हँसते हुए बोले—मोटा होना भी एक विपत्ति है? कहाँ जा रहे हैं?

जब उस भले आदमी ने बता दिया कि वह कहाँ जा रहा है, तो बोले—अच्छा? मेरा भी तो वही डेस्टीनेशन है। इसी गाड़ी से चलेंगे न?

"और गाड़ी कहाँ धरी है?"

अवलम्बन न मिलने पर अनन्त बाबू एक कदम भी नहीं चल पाते, इसलिये यह जानकर कि ये महाशय भी वहीं चल रहे हैं जहाँ उन्हें जाना है, वे बहुत संतुष्ट हो गये। बोले—जरा साथ ही साथ रहियेगा।

"वायोलेन्स कोई करे तो साथ छोड़ूँ, नहीं तो भला छोड़ सकता हूँ।"

फिर हँसी हुई।

उतरने का समय आ गया। अनन्त बाबू एकाएक घबड़ाकर बोले—टिकट नहीं लिया गया। सिर्फ तीन स्टपेज बाकी है, अच्छा महाशय जी ट्राम का टिकट तो लिया ही नहीं।

जरा उचककर कनडक्टर को ढूँढने लगे।

वह भला आदमी सुनकर भी चुप रहा, किन्तु जब दुबारा प्रश्न किया तो वह बोल उठा—तो आप बिना टिकट दिये उतरेंगे कैसे?

केवल विवेक नहीं, विचार की तसवीर भी शायद उनके सामने आ गई। वे गम्भीर चेहरा बनाकर बैठे हैं, सामने फैसले के लिये वकील हैं, कठगढ़ा भी है एक किनारे। व्याकुल तथा विस्मित होकर अनन्त बाबू बोले—टिकट न लेकर इतना दूर आ गये...?

वह सिर झुकाकर चश्मे के बीच से ताकते रहे।

अति धार्मिक के पाले पड़ने पर झुँझलाहट होती ही है। एक तो मामला कुछ अस्वाभाविक है, तिस पर इस तरह साफ साफ कहना। भले आदमी ने गम्भीर होकर कहा—तो ठीक है, तभी उतरियेगा जब कनडक्टर आवे। दिन में किसी न किसी समय वह इधर आयेगा ही।

अनन्त बाबू ने यन्त्रचालित की तरह जेब में हाथ डालकर भाड़ा निकाला और अत्यन्त व्याकुल होकर कहा—तो क्या करूँ? कभी तो जीवन में मैंने ऐसा नहीं किया...।

एक स्टापेज निकल गया। पुराने ढंग का ट्राम है। एकदम आखिर की ओर एक किवाड़ा है। लोग चढ़ रहे हैं, उतर रहे हैं, पिस रहे हैं, झगड़ रहे हैं, सबका पारा गरम है। भले आदमी ने जरा कड़वाहट से कहा—तो मैं तो उतरने जा रहा हूँ, मुझमें इतना धर्मज्ञान नहीं है।

जरा चुप रहकर तर्क की शैली में फिर बोला—कनडक्टर वह दिखाई पड़ रहा है, गाड़ी के उस सिरे पर, बीच में कुछ नहीं तो पचास आदमी हैं। यदि आप चिल्लावें और वह सुनकर चल भी दे तो आध घंटे के इधर तो आता नहीं...।

तर्क करने के झोंके में दो चार पड़ोसियों को गवाह मानते हुए भले आदमी ने कहा—क्या हमारा ही गर्ज है? पैसा लूट रहा है हर ट्राम में। यह नहीं कि दो तीन कनडक्टर और बढ़ा दे। लीजिये, आ गया, अभी से कोशिश न करें तो उतर ही न पावें, बड़ी आफत है!

मानो जज के आसन पर बैठकर अनन्त बाबू किसी मुकदमे में बहस सुन रहे थे। जब जगह आ गई, तो उन्होंने घड़ी निकाल ली। जरा शायद दुविधा में पड़ गये। फिर भाड़ा हाथ में लेकर लोगों को हटाते बचाते उन्होंने भले आदमी का अनुसरण किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनन्त बाबू जब कलकत्ता आये थे तो एक मित्र की मोटर में आये थे, इसलिये स्टेशन की क्या हालत है यह कुछ कुछ सुन रखने पर भी वे सब बातों को ठीक से नहीं जानते थे। स्टेशन के आँगन में घुसते ही वे और भी हतबुद्धि हो गये। जनसमुद्र था। लोग अपने सामान, पोटला तथा पोटलियों को लेकर निराशा की निश्चिन्तता में बैठे हुए थे। भारतवर्ष की सब जातियाँ। बाल, वृद्ध, वनिता; इन्हीं में एक चंचलता। आदमी लाँघकर, पोटली लाँघकर चलना, फिरना। गाड़ी की कोशिश, आहार्य-वस्तुओं का संग्रह सभी जारी था। इस जनसमुद्र को पार करके गाड़ी पकड़ना। अनन्त बाबू जरा दुविधा में पड़ गये थे, फिर ट्राम से उतरते समय अकेले हो गये थे। पदमर्यादा भूलकर अनन्त बाबू व्याकुल होकर बोले—अरे साहब, किधर चले गये। अरे नाम भी तो नहीं पूछा।

एक छोटी सी भीड़ की आड़ में ही महाशय जी विराजमान थे। जरा झुककर अनन्त बाबू से प्रश्न कर बैठे—तो आखिर तक आप उतर ही गये?

"हाँ सोचकर देखा...।"

"आप सोचकर ही सब नाश कर देंगे। चले आइये बाबाजी की उस पोटली को लाँघकर। अरे आप ठिठक क्यों रहे हैं?"

एक बाबाजी साथ में कुछ गेरुआ रंग के कपड़ों में बँधी हुई पोटलियों को लेकर सो रहे थे, आश्चर्य तो यह है कि इस जनसमुद्र में भी लोग सो रहे हैं। अनन्त बाबू मय पोटलियों के उसको लाँघकर भले आदमी के पास पहुँचे, बोले—कैसी विपत्ति है, कितने अन्याय तथा अनाचार हो रहे हैं?

भले आदमी ने कहा—अब मैं आगे बढ़ता हूँ, आप पीछे पीछे आइये। कुछ नहीं, आप भी अजीब आदमी हैं, काहे का अन्याय और काहे का अत्याचार? आप सोच रहे हैं कि बाबा जी की उस पोटली में कोई शालिग्राम शिला या देवता वगैरह हैं? राम, राम! लोग इतना इसे लाँघ चुके हैं कि अब तक देवता वगैरह भाग चुके हैं। और अन्याय अत्याचार हो ही तो हम कर क्या सकते हैं। और कौन लोग यह सब अन्याय अत्याचार हम लोगों से करवा रहे हैं, यह तो सभी जानते हैं। यही अलाइज और ऐक्सिस शक्तियों के नेतागण न। 'त्वया हृषीकेश हृदि स्थितेन' कहकर सब पाप इन्हीं लोगों पर डाल दीजिये। मैंने महाशय जी यही सार समझा है।

तत्त्व की बातें सुनते सुनते वक्र गति से चीजों को, पोटलियों को, घूँघटवाली स्त्रियों को, सोये हुए लोगों को लाँघते हुए अनन्त बाबू अपने साथी के साथ चले जा रहे थे। इतने में एक बिन्दु पर ठिठकते हुए अनन्त बाबू ने कहा—उधर कहाँ, टिकटघर तो बीच ही में छूट गया। टिकट-घर तो उधर है.....

"टिकट? टिकट कैसा?"—कहकर भले आदमी आश्चर्य से पीछे की ओर ताकते हुए बोले—टिकट आपको दे कौन रहा है? टिकट देना तो घंटा भर पहले ही बन्द हो गया। वह देखिये काउन्टर बन्द है, देख रहे हैं वहाँ कोई है भी?

अनन्त बाबू खड़े हो गये, बोले—फिर?

सिर झुकाकर वे चश्मे के बीच से एकटक ताकने लगे, उनको कोई थाह नहीं मिल रही थी।

"घूस देंगे और क्या? इतना आप आश्चर्य में क्यों पड़ गये, मानो किसी दूसरे ग्रह से अभी उतर आये हों?"

अनन्त बाबू ने इतने जोर से मुँह बाया कि मानो वे ब्रह्मांड को ग्रस जायेंगे। बोले—घूस! घूस क्या महाशय!! आप कह क्या रहे हैं?

"यहाँ गेट पर घूस। गाड़ी चढ़ने में घूस। फिर उतर कर गेट से निकलते समय घूस। आप निकले थे किस भरोसे पर यह तो बताइये। क्या कोई खाला जी का घर है?"

"मैं और घूस! मैं तो....."

कुछ सोचकर परिचय देते देते रह गये। भले आदमी कुछ बिना बोले आगे बढ़ गये। अनन्त बाबू अचल अटल होकर खड़े रहे। थोड़ी देर में ही उनके मन में न मालूम क्या क्या बातें खेल गईं, संस्कार, विवेक, कानून, कचहरी में विचारक का आसन। उधर जाना भी बहुत जरूरी था। इस डाँवाडोल स्थिति के समय वे दो तहसील के मालिक हैं। मैजिस्ट्रेट बीच-बीच में धोखे से आ जाते हैं परि-दर्शन के लिए। फिर आदर्श तो पहले ही टूट चुका। वायोलेन्स भी किया, उसे खैर जाने दिया जा सकता है, पर ट्राम में टिकट नहीं लिया और उस पर चढ़े। हाथ में जो भाड़े के लिए पैसे निकाले थे, वे भी अन्यमनस्कता के आवेश में पाकेट में पहुँच गये।

कई एक सेकंड के अन्दर ही मन के पर्दे पर ये सब बातें झंकृत होकर विलीन हो गईं, केवल एक ही तसवीर बारबार सामने आने लगी कि मैजिस्ट्रेट मुआईना करने आये हैं, उन्हें बताया गया है कि एस० डी० ओ० का पता नहीं है, वे सुनकर स्तंभित से खड़े हैं। इस तसवीर को देखते देखते वे सभी बातें भूल गये। एकबार घड़ी की तरफ नजर डालते हुए देखा तो सिर्फ सात मिनट बाकी थे। चिल्ला उठे—अरे साहब कहाँ चले गये, अरे नाम भी तो नहीं पूछा...

दो बार बुलाने पर भले आदमी ने पीछे मुड़कर देखा।

लौटकर, सिकुड़, सुचलकर वे आगे आते हुए बोले—क्या करूँ साहब, जाना तो हमें पड़ेगा ही।

लड़ाई के जमाने में यही, असली बात है। तो लीजिये अब आप आगे, रहिये। कोट, पैन्ट पहने हैं, काम अब आपसे ही बनेगा। घूस अगर ले ले तो उसे कृपा ही समझिये क्योंकि गाड़ी में जगह तो होनी चाहिये। आप गैरकानूनी बात कह रहे हैं, सो कानून की कौन सी बात हो रही है? मुझे जाना है, तुम कम्पनी खोलकर बैठे हो, किन्तु गाड़ी नहीं छोड़ते हैं तो क्या हम जायँ न? इसमें अगर तुम्हारा पैसा मारा जाय तो मैं करूँ क्या? और मैं तो जान बूझ कर तुम्हारी हक-तलफी नहीं कर रहा हूँ, तुम टिकट-घर बन्द करके बैठे हो तो मैं क्या करूँ? सोच देखिये न, इस बात में अन्याय क्या है? धर्म दृष्टि से भी देखिये तो मैं पैसा देने से कब बचता हूँ, बल्कि एक ही जगह गाँठ से जाते हैं चार। तो फिर अधर्म कहाँ है? जरा सोचिये।...

तत्त्व की बातें सुनाते सुनाते भीड़ ढकेलते हुए गेट के पास आकर बोले—एक पाँच रुपये का नोट निकाल लीजिये, और देखिये...

अनन्त बाबू देखने के लिए मुड़ने पर अपने को दिखाते हुए उँगलियों से गिनते हुए बोले—कह दीजियेगा दो आदमी हैं, चूकियेगा नहीं।

* * *

किसी प्रकार अव्वल दर्जे में जगह मिली। इन स्टेशनों में एक भी टिकट-चेकर नहीं चढ़ा, नहीं तो उन्हीं से टिकट ले लिया जाता। अगर टिकट मिलता तो परेशानी दूर होती। लड़ाई के समय गाड़ियों में बहुत परिवर्तन हुआ है। फिर पाँच रुपये जो गये थे, उससे न केवल विवेक के दंशन को दूर कर दिया था, बल्कि हृदय पर भी चोट लगी थी। कौन अब अधिक दे? पर उतरकर तो फिर देना है। फिर घूस?

अनन्त बाबू ने तय कर लिया। विवेक ने भी हामी भर दी। वे यहाँ के प्रतिष्ठित अफसर हैं, स्टेशन में सभी उन्हें पहचानते हैं, वे यहाँ पर घूस नहीं देंगे। तय है।

उन्होंने मन ही मन योजना गाड़ी से उतरकर छड़ी घुमाते धीरे बाहर चले जायेंगे, मानो सी-आफ करने आये थे।... विचार से बहुत हल्का हो गया।

प्लैटफार्म में भीड़ बहुत थी। बाबू अब की बार जरा कोशिश भले आदमी से अलग हो गये। योजना के अनुसार भौंके से भी के ढंग से प्लैटफार्म से बाहर चले

* *

अदालत में विचारासन पर पहले तो दफ्तर सम्बन्धी कुछ काम कुछ दस्तखत, कुछ आर्डर, किसी की मंजूरी। इसके बाद पेशकार ने की फाइलों को सामने रक्खा।

पहले ही बिना टिकट चलने मामला आया।

दृष्टि-शक्ति क्षीण है, इसलिये आँख लगाकर ही कागजात पढ़ते पड़ गये। आज इस मुकद्दमें को और ही निगाह से देख रहे हैं। कह रहा है कि उसने टिकट खरीद पर पाकेट कट जाने से टिकट एक्जिबिट में जेब कटा हुआ भी है।

अच्छा, अभियुक्त मौजूद है? नाम है? कहकर सामने देखते ही बाबू को ऐसा हो गया कि खून नहीं।

कठघरे में वे ही सज्जन खड़े तरह तरह के तत्त्वज्ञान की सहायता विभिन्न अवस्थाओं के जरिये तरह की विपत्तियों को पार कर से अर्थात् अपने विचारपति के ले आये थे।

सिर नीचा करके मुँह बन्द बाबू चश्मे के ऊपर से सीधे ताकने कुछ थाह नहीं पा रहे थे।*

*एक बङ्गला कहानी से अनूदित।

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयां—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डियन स्टूयल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंग-मंच

'वन फूल' प्रोडक्शन का एक और नया फिल्म

उमेश जोशी

"वन-फूल" के कहानीकार हैं श्री प्रनावराव, जिन्होंने कुछ भी अपनी प्रतिभा का परिचय नहीं दिया। बड़े ऊट-पटाँग तरीके से कहानी लिखी है। कहानी के तथ्यों में भी कोई मजबूती नहीं और न उन तथ्यों को ठीक तौर से एकत्रित किया गया है। विचार कुछ बिखरे हुए से मालूम होते हैं। कहानी का प्रवाह भी चित्र में कहीं कहीं रुक जाता है। कहानी में मानव-जीवन का कोई नया पहलू नहीं प्रस्तुत किया गया है वरन वही पुराना रोना रोया गया है और वह भी निहायत बेहूदे तरीके से। "वन फूल" की कहानी इस प्रकार है—

गाँव की एक छोकड़ी है, जिस पर उस गाँव का जमींदार आसक्त हो जाता है। जमींदार के एक मित्र हैं। लड़की उसी मित्र से प्रेम करने लगती है। जमींदार उस लड़की को अपना जीवन-साथी बनाने के लिए बहुत कोशिश करता है। तरह तरह के प्रलोभन देता है—दुनिया की शान-शौकत का लोभ भी दिखाता है, अपने रुआब के रुतबे को भी समझता है—लेकिन वह सीधे हाथों उसके पल्ले नहीं पड़ती। वह चाल चलता है। लड़की के बाप को किसी जुर्म में गाँव से बाहर निकलवा देता है। लड़की शहर भाग जाती है। शहर में लड़की की भेंट अपने जीवन-प्रेमी से होती है। दोनों बहुत प्रसन्न होते हैं। फिर दोनों साथ साथ रहने लगते हैं। कुछ दिन बाद ही जमींदार उस शहर में आता है, उसे लड़की का पता लगता है। वह फिर अपने मित्र और लड़की के बीच कटुता की खाई खोद देता है। लाचार होकर लड़की अपने गाँव में ही पहुँच जाती है। और जमींदार से विवाह करने के लिए तैयार हो जाती है। ठीक इसी समय लड़की का खोया हुआ पिता एक काजी के साथ वापस लौटता है। फिल्मों की अधिकांश कहानियों की तरह इसमें भी आपस में झड़प होती है लेकिन फिर सब मिल जाते हैं। प्रेम-प्रदर्शन होता है। अन्त में कहानी के नायक को लड़की मिल जाती है।

'वन फूल' की प्रमुख अभिनेत्री और गायिका काननबाला।

अभिनय में चित्र-लेखन सन्तोषपूर्ण हुआ है। चित्र-लेखन ने बंगाल की इज्जत रख ली। निर्देशन तो बहुत ही निम्न-कोटि का है। मालूम होता है कि आँख मीचकर चित्र का निर्देशन किया गया है। कहीं भी, किसी भी स्थल में हमें निर्देशक की प्रतिभा का परिचय नहीं मिलता। इस चित्र में कानन भी हमें सन्तुष्ट नहीं कर सकी। उसका अभिनय भी दर्शक की उमंग को जीत न सका। मधुर गला होते हुये भी गानों में वह रागिनी पैदा न कर सकी। चित्र के अभिनय से कानन एकदम उच्चता के शैल से फिसलकर निम्नता के धरातल पर आ पड़ी है—जहाँ से उठने के लिए काफी समय लगेगा। नायक की भूमिका में कृष्णकान्त भी बिलकुल असफल रहे। वह भी फालतू समय हमारा नष्ट करते रहे। उनके अभिनय में कलात्मक भावनाओं का एकदम अभाव मालूम हुआ इसीलिए उनका अभिनय प्राण-शून्य हो गया है! वह चित्र में अपने अभिनय से कोई आकर्षण पैदा न कर सके। हाँ थोड़ी-बहुत लाज सुप्रसिद्ध अभिनेता अहीन्द्र चौधरी ने रख ली है। उन्होंने कुछ मनोरञ्जन प्रदान किया और अभिनय भी कुछ अच्छा किया है। लेकिन उसके पुराने चित्रों के अभिनय से यह अभिनय एकदम फीका है। जमीन-आसमान का फर्क है। इतने उच्च कोटि के कलाकारों के होते हुए भी "वन फूल" जनता के हृदय का फूल न बन सका—आश्चर्य नहीं। इस चित्र के गाने पंडित मधुरजी ने लिखे हैं। पण्डितजी से हमें इतने भाव-शून्य गानों की उम्मीद नहीं थी। उनसे हमें उच्च कोटि के गानों की आशा थी। क्योंकि उनकी कलम "जवाब" में एक बार जौहर दिखा चुकी है। लेकिन वही कलम "वन फूल" में आकर कुंठित हो गई। "वन फूल" के गाने—गाने नहीं बल्कि एक तरह के मर्सिया हैं—ये गाने हमारे सामने मानव-जीवन की उठती हुई भावनाओं का सफल चित्रण न कर सके? आखिर क्यों पण्डितजी "वन फूल" के गानों में असफल हुए? क्या वह हमें समझा सकेंगे? इस चित्र के संवाद भी पूरे दकियानूसी हैं। संवादों में कहीं भी ओज नहीं संवाद कहीं भी कहानी के स्थलों को उठाते नहीं बल्कि वह स्वयं बोझ बनकर कहानी के प्रवाह को दाब देते हैं।

सब मिलकर "वन फूल" एक साधारण चित्र है। मनोरंजन के लिहाज से भी यह चित्र सफल नहीं है, फिर साहित्य और कला की कौन कहे? क्या भविष्य में बंगाल अपनी गलती अनुभव कर हमें "देवदास" जैसे चित्र प्रदान करेगा? क्या हम उससे यह आशा करें?

श्रीकृष्ण-चरित्र—लेखक, रावबहादुर काशीनाथ, एम० ए०, एम० बी० ई०। पतितपावन भगवान् श्रीकृष्ण का पावन चरित्र इस पुस्तक में महाभारत के अनुसार वर्णन किया गया है। जिसे पढ़ने पर उपन्यास का मज़ा आता है। भाषा प्रांजल और परिमार्जित है। कृष्ण की जीवनी पर विवेचनात्मक ढंग से प्रकाश डालनेवाली हिन्दी में अपने ढंग की यह प्रथम पुस्तक है। मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने। मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद। चरित्र-चित्रण की दृष्टि से मूल्य सजिल्द पुस्तक का १।-)

चाय अभ्यर्थना के लिये

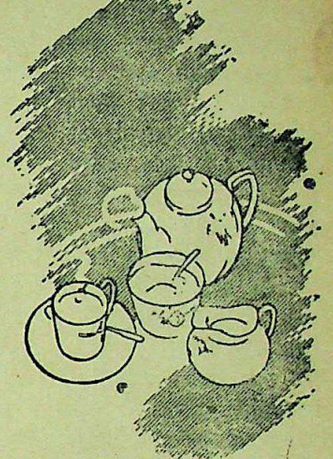

भारत का अनिवार्य पेय

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IM 199

भारतीय चायों में सर्वश्रेष्ठ लिपटन की

हाइट लेबुल चाय LTK 80

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र जहाँ पहले था वहीं आज भी

(पेज ५ का शेष)

अधिकारियों ने इस घोषणा को मामूली समझा। उन्होंने इतिहास की अवहेलना की। फ्रांस की क्रान्ति का सूत्रपात भी मामूली घटना से हुआ था। फ्रांस के अन्दर से भी शहनशाहियत का सदा के लिए अन्त कर दिया था। सन्' ५७ का गदर भी मामूली घटना से आरम्भ होकर अति उग्र और बृहद्रूप धारण कर चुका था। रूस की क्रान्ति भी मामूली घटना से शुरू होकर उसने संसार के छठे भाग से साम्राज्यवाद को खतम कर दिया। नाविकों की इस छोटी-सी घटना ने भी तमाम संसार में तहलका मचा दिया था। नाविकों के पास बेतार से बातचीत करने का सारा सामान मौजूद था। उन्होंने भूमध्यसागर से लेकर सिंगापुर-टोकियो आदि के हिन्दी महासागर और प्रशान्त महासागर में स्थित तमाम भारतीय नाविकों को इस चुनौती की सूचना दी। समस्त संसार के भारतीय नाविकों ने 'तलवार' के नाविकों का समर्थन किया। बम्बई के बन्दरगाहों में लंगर डाले हुए अन्य जहाज जैसे 'जमुना', 'गुड़वाना', 'आसाम', 'मद्रास', 'नर्बदा', 'सिंध', 'अमृतसर', 'पंजाब', 'नासिक', 'कलावती' आदि के बहुत से नाविकों ने भी 'तलवार' के नाविकों का समर्थन किया। कराँची, मद्रास, कलकत्ता और दिल्ली के नाविक हड़ताल में शरीक हो गये। अधिकारीगण चेते। उन्होंने फौरन नाविकों की अन्न आदि की शिकायतें दूर करने का वचन दिया। लेकिन नाविकों की हड़ताल अब आर्थिक माँगों तक ही सीमित न थी। वह राजनैतिक संघर्ष में परिवर्तित हो चुकी थी। नाविकों ने अपनी वह माँगें रक्खीं जो समस्त भारतीयों की माँगें थीं।

(१) केप्टन अब्दुल रशीद को बिला शर्त मुक्त किया जाय।

(२) 'अजाद हिन्द फौज' के मुकदमे हटा लिये जायँ।

(३) हिन्द एशिया से भारतीय फौजें बुला ली जायँ।

नाविकों ने संग्राम-समिति की स्थापना की। संग्राम-समिति ने भारत की विभिन्न राजनैतिक संस्थाओं से सहायता के लिए अनुरोध किया। नाविकों ने ब्रिटिश साम्राज्य के प्रतीक 'यूनियन जेक' को फाड़ फेंका। कांग्रेस, मुस्लिम लीग और कम्यूनिस्ट पार्टी का झण्डा फहरा दिया और तीनों झंडों को लेकर ५ हजार का जुलूस बनाकर वे बम्बई की सड़कों पर निकल पड़े। जुलूस का मुकाबला करने के लिए बम्बई की पुलिस का साहस नहीं हुआ। एकआध अँगरेज अफसर ने जुलूस में हस्तक्षेप करने का घमंड दिखाया। लेकिन जुलूस के दृढ़ निश्चय के सामने उन्हें भी अपनी जान लेकर भागना पड़ा। बम्बई, कलकत्ता और मद्रास की जनता ने नाविकों का साथ दिया। अन्य स्थानों के भारतीय हवाई बेड़े ने साथ दिया। अन्य स्थानों में स्थिति अन्य भारतीय सेना बिलकुल तैयार बैठी हुई थी—वह भारतीय नेताओं के संकेत-मात्र की प्रतीक्षा कर रही थी। भारतीय नाविकों का यह कदम अपनी आर्थिक माँगों की परिपूर्ति के लिए नहीं था। वह दीर्घ प्रतीक्षित भारतीय आकांक्षाओं की प्राप्ति के लिए क्रान्ति का सूत्रपात था—आह्वान था। इस आह्वान के सामने से साम्राज्यशाही का आसन डोला। क्योंकि ब्रिटिश साम्राज्यशाही अगर किसी बात से घबराती है तो केवल एक ही बात है—एका। यहाँ भी नाविकों और नाविकों का समर्थन करनेवाले अन्य खुश्की और हवाई बेड़े की सेना में अपूर्व एका थी। वहाँ धर्म, सम्प्रदाय और जाति का कोई भेद न था। सेना में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख और यहाँ तक कि आंग्ल-भारतीय भी शामिल थे। सबके सब स्वाधीनता की पवित्र भावना से प्रेरित थे। इस अपूर्व एके को देखकर ब्रिटिश साम्राज्यशाही चिन्तत हुई। साथ ही साथ वह बौखला भी उठी। उसने सैनिकों को आत्मसमर्पण कराने के लिए अपने पाशविक बल का प्रदर्शन किया। उसने नाविकों पर गोलियाँ छोड़ीं और तोपों से गोले फेंके। नाविकों ने भी आत्मसंरक्षण में गोलियाँ चलाईं और तोपों से गोले फेंके। क्योंकि उन्होंने पहले ही से समस्त शस्त्रागार पर अधिकार कर लिया था। अँगरेज अफसरों को बन्द कर दिया था और साम्राज्यशाही के समर्थक भारतीय अफसरों को जहाजों से निकाल दिया था। इस बल-परीक्षा में नाविकों ने साम्राज्यशाही के चार-साढ़े चार सौ सिपाहियों को सदा के लिए सुला दिया था। इस पर साम्राज्यशाही और भी घबराई। उसने साम, दाम, दंड और भेद का सहारा लिया। वह नाविकों की आर्थिक माँगें पहले ही मानने के लिए तैयार हो गई थी और उसने बल का प्रयोग करके देख लिया था। उसमें भी वह बलहीन साबित हो रही थी। अब उसने प्रलोभन देना शुरू किया। नाविकों की संग्राम-समिति के प्रधान शेख खान को अधिकारियों ने सैनिक सलामी दी और उनका सम्मान किया और उन्हें आत्मसमर्पण कराने के लिए सेना के अन्दर ऊँचा से ऊँचा पद देने का लालच दिखाया। शेख खान ने इस लालच की स्वीकृति को साथियों के साथ विश्वासघात समझा। साम्राज्यशाही ने भारतीय नेताओं का सहारा लिया। सरदार वल्लभभाई पटेल ने कमांडर-इन-चीफ सर अकिनलेक का समर्थन किया। नाविकों ने भारतीय नेताओं के सामने आत्मसमर्पण किया।

नतीजा

जब कांग्रेस के उच्च नेताओं ने साम्राज्यशाही की हाँ में हाँ मिलाकर नाविकों की बगावत की निन्दा करनी शुरू की और मुस्लिम लीग के नेताओं ने नाविकों का साथ न देकर आत्मसमर्पण की सलाह दी, तब सम्राज्यशाही के हाथ मजबूत हुए। उसने ३९६ नाविकों को कैद कर लिया। २०० को फौरन बरखास्त कर दिया। १९६ को सजा देकर जेलों में सड़ने के लिए भेज दिया। इन ३९६ को फौज की सभी सहूलियतों से वञ्चित कर दिया। और बम्बई की जिस जनता ने नाविकों का समर्थन किया था, उस पर अंधाधुन्ध गोलियाँ चलाकर हजारों बच्चे, बूढ़े और स्त्रियों को बुरी हरह घायल करके ३०० की हत्या कर डाली। और हम टुकुर-टुकुर देखते रहे।

निष्कर्ष

संसार का साम्राज्यवाद जब घोर संकट में फँसा हुआ था और वह संसार के [illegible] र [illegible] सिस्टवाद—दोनों के [illegible] पूँजीवाद से जन्म [illegible] के सगे भाई—के भीषण प्रहारों को सहन करने में असमर्थ हो रहा था, तब साम्राज्यवाद के दो प्रधान प्रतिनिधि—चर्चिल और रूजवेल्ट—ने अतलान्तिक महासागर में मिलकर १५ अगस्त सन् १९४१ को एक घोषणा की जो अतलान्तिक घोषणा के नाम से प्रसिद्ध हुई। इस घोषणा द्वारा संसार की जनता के न केवल आत्म-निर्णय के अधिकार को स्वीकार किया गया था बल्कि, विभिन्न देशों और प्रदेशों की स्वाधीनता-प्राप्ति में अनहस्तक्षेप की नीति को भी अंगीकार किया गया था। इतना ही नहीं, साम्राज्यशाही के इन दो प्रधान प्रतिनिधियों ने सारे युद्ध के दौरान में जनता को लच्छेदार शब्दों में बड़े बड़े अश्वासन भी दिये थे। लेकिन, काम निकलते ही संसार की साम्राज्यशाही ने दाँत दिखा दिये। उसने न केवल युद्धकाल में दिये गये वचनों को ताक पर रख दिया, बल्कि युद्धकाल में साम्राज्यवाद की खोखली हुई जड़ों को मजबूत करने पर कमर कसी। संसार की पीड़ित और पराधीन जनता ने इसको चुनौती समझी। इसी चुनौती के जवाब में हिन्दएशिया, हिन्दुस्तान, मिस्र, फिलिस्तीन, सीरिया, लेबनान, इराक, साइप्रस आदि देशों और प्रदेशों की जनता ने अपनी रुष्ट भावनाओं को रोब में परिवर्तित करके साम्राज्यवाद पर प्रहार करना शुरू किया, जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका है। साम्राज्यशाही—विशेषकर ब्रिटिश साम्राज्यशाही काफी उलझन में पड़ गई। जिस समय भारतीय नाविकों ने बगावत का झंडा बुलन्द किया और जिसके समर्थन में भारतीय हवाई बेड़े के सैनिकों ने साथ दिया और अन्य भारतीय सेना संग्राम के लिए भारतीय नेताओं के इशारे-मात्र की प्रतीक्षा कर रही थी उस समय ब्रिटिश साम्राज्यशाही दूर दूर तक फैली हुई अपनी सेना को एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए एक पल भर के वास्ते भी हटा नहीं सकती थी। वह अपनी सेना न यूनान से, न हिन्दएशिया से न मध्य और निकटपूर्व से न जर्मनी के अधिकृत क्षेत्रों से हटाने की जोखिम ले सकती थी। अगर वह हिन्द एशिया से सेना को हटाने का साहस करती तो हिन्दएशिया बात की बात में बची-खुची डचों की सेना को मार भगाता और सम्पूर्ण स्वाधीन हो जाता, जिससे साम्राज्य को वहाँ अपनी लगी हुई पूँजी से सदा के लिए हाथ धोना पड़ता। अगर वह यूनान से अपनी सेना को हटाने का प्रयास करती तो यूनान वहाँ की प्रगतिशील शक्तियों के हाथ में पहुँच जाता और वहाँ से भी साम्राज्यशाही को अपनी लगी हुई सम्पत्ति से वंचित [illegible] इतना ही नहीं, भूमध्यसागर [illegible] प्राणधारा सदा के लिए [illegible] जाती। इसके भी आगे—यदि नाविकों द्वारा प्रारम्भ किया हुआ स्वाधीनता का संग्राम और [illegible] तक चलता—जिसके चलने में [illegible] का संदेह नहीं था क्योंकि नाविकों [illegible] पूरे वर्ष तक चलने योग्य अस्त्र-[illegible] गोला और सूखा भोजन [illegible] था, जिसको भारतीय सेना का [illegible] था और जनता स्वयं सेना का [illegible] लिए बेचैन थी—तो साम्राज्य[illegible] अन्य देशों की पीड़ित जनता को [illegible] मिलता और वह भी अपना [illegible] समर्थ होती, जिसका साफ [illegible] भारतीय स्वाधीनता के लिए [illegible] सहायता। इस तरह भारतीय [illegible] संग्राम के साथ संसार के अन्य [illegible] देशों की स्वाधीनता गुँथी हुई [illegible] की स्वाधीनता से अन्य पराधीन [illegible] मुक्ति होती; अन्य पराधीन [illegible] स्वाधीनता-प्राप्ति के संग्राम से [illegible] स्वाधीनता-संग्राम में सहायता [illegible] लेकिन, इस सुनहरी संधि को भी [illegible] दिया जिसकी जवाबदारी जनता [illegible] दुर्भाग्यवश नेताओं पर है। [illegible] क्रान्तिवाद के मार्ग का परित्याग [illegible] विधानवाद के जाल में बुरी तरह [illegible] जा रहे हैं जिसके अन्दर से [illegible] उनके लिए अति कठिन हो रहा है।

लेकिन अब भी स्वाधीनता-[illegible] अवसर बिलकुल निकल नहीं गया। [illegible] वे लोग देख रहे हैं जिनकी [illegible] वे लोग सुन रहे हैं जिनके कान हैं, [illegible] महसूस कर रहे हैं जिनके बुद्धि है [illegible] तैयारी कर रहे हैं जो पराधीनता [illegible] में पिसे जा रहे हैं और मुक्त [illegible] वास्ते छटपटा रहे हैं। इन तमाम [illegible] के बारे में विस्तार से लिखना [illegible] का विषय है।

जुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय
स्थापना
आरोंदा
सुरज १८६६
नीलगिरि तेल
हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, [illegible]
प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई

Estd. 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided
सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल
(पो० लहरिया सराय, बिहार प्रान्त)
हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए [illegible] परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S १०) H.M.B.S १५) H.M.D.S २५)। पुस्तक—अ० पारिवारिक १) बायोकेमिक १) १००० रेडलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्सनरियां १॥) आर्गनन १) [illegible] कोपिया १॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायँगी। डा० [illegible] माफ—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≡) ड्राम। आउन्स [illegible] बरेलू बक्स ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—
Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और लड़कियों की स्वतन्त्रता जरूरी क्यों है?

को अपने उत्तरदायित्व का पालन करना चाहिए

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

उनकी भावी सन्तानों को उन्हीं की तरह अशान्तिमय जीवन बिताना पड़ेगा जो ज्ञान-शून्यता का एक ज्वलन्त प्रमाण होगा। इससे संरक्षकों को अपनी सन्तान के विवाह के लिए स्वतन्त्रता देनी चाहिए जिससे वे अपने भावी जीवन को सुखमय बनाने के लिए अपनी इच्छानुसार विवाह कर सकें। परन्तु प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि कोई लड़का किसी नीची जाति की सुन्दरी लड़की को देखकर आकर्षित हो जाये उसके स्वभाव से परिचित न हो इस पर भी दोनों का विवाह कर दिया जाय तो क्या ऐसा विवाह आनंदमय है और वह प्रेम बन्धन कहा जायेगा? जब दोनों के स्वभाव भिन्न हैं, दोनों एक-दूसरे के प्रतिकूल हैं फिर दोनों में प्रेम-बन्धन कैसा? ऐसा जीवन सुखमय हो ही नहीं सकता। इससे यह आवश्यक है कि लड़के और लड़कियों को स्वच्छन्दता से मिलने देना चाहिए। वे किसी भी समुदाय में स्वतन्त्रता से मिलकर अपनी मैत्री और परिचय बढ़ायें; परन्तु स्वतन्त्रता से समुदायों में मिलने से भी कुछ बुराइयाँ पैदा हो सकती हैं।

प्रथम यह कि समुदाय में मिलने से हो सकता है व्यभिचार की मात्रा बढ़ जाय। दूसरे यह कि यदि नवयुवक और नवयुवतियों को उनकी इच्छानुसार पति-पत्नी वरण करने का मौका दिया जाय तो वे भूल कर सकती हैं। क्योंकि यौवन में चंचलता, दुर्बलता और भावुकता होती है। उसमें संयम, बुद्धिमत्ता और विवेक नहीं होता। इसलिए संरक्षकों का यह कहना कि वे बिना अपने बड़ों के सहयोग और परामर्श के भूल कर जायँगे, ठीक ही है।

प्रथम बुराई के सम्बन्ध में यह कहना कि समूह में मिलने-जुलने से व्यभिचार बढ़ जायगा यह गलत धारणा है। स्वतन्त्रता से मिलने पर लड़के-लड़कियाँ एक दूसरे के गुण-अवगुण से भी परिचित हो जायँगी उनमें आकर्षण पैदा होंगे। यह सब काम चाञ्चल्यमय नहीं बल्कि दोनों मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रेमी होंगे। दूसरे अवगुण के लिए कोई इनकार नहीं कर सकता कि चञ्चलता, भावुकता और दुर्बलता, यौवन में नहीं होते। परन्तु यह दोष भी दूर किया जा सकता है। लड़के-लड़कियाँ एक दूसरे को पहचानने में भूल कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में उनका दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं रह सकता। फिर कौन-सी ऐसी दवा अथवा उपाय काम में लाये जायँ जिससे दोनों सुखी रह सकें। तलाक अथवा अदालती

कांग्रेस वर्किंग कमेटी की सदस्या श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय।

विवाहों की पद्धति चलाई जाय। इसके लिए समाज में नवीन विचार-धारा का प्रादुर्भाव अवश्य होगा जिसके पीछे कुछ रूढ़िवादियों की उँगलियाँ उठ सकती हैं। परन्तु जब सभ्य और शिक्षित समाज इसको अपना लेगा तो सारी दिक्कतें शीघ्र ही दूर हो जायँगी। इसलिए यह आवश्यक है कि प्रेम-युक्त विवाह के लिए स्वतन्त्र विचार से वर-वधू काम लें। लड़के लड़कियाँ स्वच्छन्दता से समूहों में मिला करें। इसके लिए समाज के नेताओं को अपनी संतानों के लिए स्वतन्त्रता देनी चाहिए जिससे देश में नर-नारियों का दाम्पत्य जीवन दुखमय न हो।

उत्तमोत्तम उपन्यास और कहानी-पुस्तकें

स्काटलैंड-यार्ड की जासूस ब्रो—यह पुस्तक लेडी मॉली की ६ जासूसी कहानियों का संग्रह है। इस पुस्तक की एक-एक कहानी इतना मनोरंजक और कौतूहलवर्द्धक है कि आप इस पुस्तक को पूरा पढ़े बिना चैन नहीं पा सकते। लेडी मॉली के जितने कहानी-संग्रह अब तक प्रकाशित हुए हैं, यह उन सबसे अच्छा है। मूल्य ॥।-)

संसार की प्रसिद्ध कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत शमशेर बहादुरसिंह, बी० ए०। इस पुस्तक में योरप के संसार-प्रसिद्ध कलाकारों की चुनी हुई कुछ कहानियाँ संगृहीत की गई हैं। ये सभी कहानियाँ बहुत ही कलापूर्ण और मनोरंजक हैं। यदि आपको योरप के कथा-साहित्य की जानकारी लेनी हो, तो इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य १)।

मोपाँसा की चुनी हुई कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत गोपीनाथ जी कानूनगो। इस पुस्तक में मोपाँसा की चुनी हुई ग्यारह कहानियों का संग्रह किया गया है। मोपाँसा की रचनाओं को जानकारी लेने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य १)।

व्रजनाथ का विवाह—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। आश्चर्यमयी घटनाओं से परिपूर्ण यह सामाजिक उपन्यास पढ़ने में ऐसा रोचक है कि एक बार आरम्भ करने पर फिर बिना समाप्त किये चैन नहीं पड़ता मूल्य १।-)

आनन्दमठ—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। मुसलमानों और अँगरेज़ों को हिन्दुस्तान से बाहर करने के लिए, बंगाल में वैष्णवों ने जो विद्रोह किया था, उसी का इस उपन्यास में उपन्यास-सम्राट श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने बड़ी खूबी से बयान किया है। ऐसा सुन्दर चित्रण इस उपन्यास में है कि पढ़कर मातृ-भूमि के लिए दिल फड़क उठता है। मूल्य १।-)।

रजनी—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। यह उपन्यास-सम्राट श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का एक करुणापूर्ण अद्वितीय उपन्यास है। चमत्कारपूर्ण मनोवैज्ञानिक रहस्य इस उपन्यास की एक ऐसी खूबी है कि जिसके कारण पुस्तक पढ़ने का मोह संवरण नहीं किया जा सकता। मूल्य ॥≈)।

श्रीकान्त—(प्रथम और द्वितीय भाग)—अनुवादक, श्री रूपनारायण पाण्डेय। 'श्रीकान्त' शरद बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना गया है। इसमें शरद बाबू की अमर लेखनी ने उनके कलाकार का मजा और सधा हुआ रूप चित्रित किया है, जो अत्यन्त मनोरम है। प्रत्येक भाग का मूल्य २)।

ब्राह्मण की बेटी—मूल लेखक, श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक, पंडित रूपनारायण पाण्डेय। शरद् बाबू भारत के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक माने जाते हैं। उनका यह उपन्यास लोक-प्रियता और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मूल्य सजिल्द पुस्तक का १।-)।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन
कराँची में चौंतीसवाँ अधिवेशन

अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का आगामी वार्षिक अधिवेशन सिन्ध-प्रान्त के कराँची नगर में हो रहा है। राष्ट्रभाषा का प्रश्न वैसे तो सदैव महत्त्वपूर्ण रहा है किन्तु इस समय के वातावरण में उसका महत्त्व कई गुना बढ़ गया है। स्वतन्त्रता के निकट आने के साथ हमें अपनी भाषा तथा उसके साथ बँधी हुई संस्कृति की रक्षा तथा विकास के लिए भी सचेत रहना नितान्त आवश्यक हो गया है।

विशेषकर सिन्ध प्रान्त में (वैसे तो प्रायः सभी अहिन्दी प्रान्तों में) हमारी शक्ति का लगना अधिक आवश्यक है। यहाँ पर हमारी मूल भाषा का स्वरूप भी बदल दिया गया है, और अरबी लिपि में उसे अब लिखा जाता है। गत कुछ वर्षों से उस भाषा के संस्कृत तथा तत्सम शब्दों को धीरे-धीरे हटाकर फारसी तथा अँगरेजी शब्दों से भरने का यत्न निरन्तर हो रहा है। अतः यह आवश्यक है कि सिन्ध में सम्मेलन का अधिवेशन बड़ी धूम-धाम से हो, उसमें भारत भर के प्रतिनिधि अधिकाधिक संख्या में आवें तथा अपनी शक्तिशाली वाणी से सिन्ध-निवासियों को अपनी भाषा तथा संस्कृति के प्रति जागरूक करें।

सिन्ध भारत के एक कोने में है, तथा अधिकतर नगरों से सुदूर भी है। किन्तु भारतीय संस्कृति का सबसे प्राचीन केन्द्र होने का सौभाग्य इसी बृहस्पति क्षेत्र को है। भारत के प्राचीन गौरव का स्मृति-चिह्न 'मोहन-जो-दड़ो', तथा सक्खर का महान् तीर्थ 'साधुबेला' कराँची से अधिक दूर नहीं है। सिन्धु-नद पर निर्मित सक्खर का विशाल सेतु एक दर्शनीय स्थल है। स्वयं कराँची नगर भारत के सबसे सुन्दर नगरों में एक है। अतः कष्ट होते हुए भी आपका सम्मेलन के अधिवेशन में आना आवश्यक है।

दिसम्बर की २६,२७,२८,२९,३० तारीख को यहाँ सम्मेलन का अधिवेशन हो रहा है। हम अनेक परिषदों तथा मूल अधिवेशन के अतिरिक्त एक विराट् कवि-सम्मेलन, एक प्रदर्शनी, एक साहित्यिक नाटक, एक लेखक-सम्मेलन, प्रान्तीय भाषाओं का सम्मेलन, आदि अनेक आयोजन कर रहे हैं। आशा है हमें अखिल भारतीय हिन्दी-संसार का सहयोग प्राप्त होगा।

—प्रचार-मंत्री

* * *

वृन्दावन के इतिहास में राजा महेन्द्रप्रताप जी का जैसा स्वागत आज तक किसी का भी नहीं हुआ। गत १७ ता० को स्वागत में शहर में ६५ गेट बनाये और सारे बाजार अच्छी तरह से सजाये गये थे। एक मील लम्बा जलूस निकाला गया। स्थान स्थान पर राजा साहब को इतनी फूल-मालायें पहनाई गईं कि वह ढक गये थे। शाम को २० हजार की एक विराट् सभा में राजा साहब का भाषण हुआ। शहर की कई संस्थाओं की ओर से राजा साहब को मानपत्र दिये गये। १८ ता० को गुरुकुल विश्वविद्यालय में राजा साहब का स्वागत किया गया।

राजा महेन्द्रप्रताप ३१ वर्ष बाद भारत पधारे हैं। आपका स्वागत सारे देश ने किया है।

१९ ता० को वृन्दावन म्युनिसिपल बोर्ड में वाइस चेयरमैन गोस्वामी अद्वैतकुमार ने राजा साहब का स्वागत किया। २० ता० को वृन्दावन के राधारमण मन्दिर के गोस्वामी समाज की ओर से राजा महेन्द्रप्रताप जी का स्वागत समारोह के साथ किया गया। प्रारम्भ में राजा साहब को एक टी-पार्टी दी गई। कुछ नवयुवक गोस्वामी लोगों ने राजा साहब के साथ बैठकर खाना खाया। फिर राजा साहब का एक फोटो ग्रुप गोस्वामी लोगों के साथ उतारा गया। एक सुन्दर पंडाल में राजा साहब को लाया गया। प्रारम्भ में कुमारी प्रभा गोस्वामी, कुमारी सुलेखा गोस्वामी तथा मालती देवी शर्मा ने राष्ट्रीय गायन द्वारा राजा साहब का स्वागत किया। स्थानीय गोस्वामी समाज, गौरांग क्लब वाचनालय, राधाचरण पुस्तकालय की ओर से राजा साहब को मानपत्र भेंट किये गये। गोस्वामी अद्वैतकुमार जी ने राजा साहब का स्वागत करते हुए उन्हें यह विश्वास दिलाया कि यहाँ का गोस्वामी समाज कांग्रेस के काम में कभी भी न तो किसी से पीछे रहा और न आगे रहेगा। गोस्वामी गोपीलाल जी वकील ने एक प्रस्ताव द्वारा वृन्दावन की जनता की ओर से राजा साहब को बधाई देते हुए महात्मा गांधी के प्रति कृतज्ञता प्रकट की कि जिनके प्रबल उद्योग से आज राजा साहब हमारे बीच में हैं।

प्रस्ताव के पक्ष में गोस्वामी दामोदराचार्य शास्त्री, गोस्वामी कृष्ण चैतन्य, गोस्वामी गौरकृष्ण शास्त्री के भाषण हुए। राजा साहब ने अन्त में एक घंटा तक बड़ा ही मार्मिक भाषण दिया।

स्थानीय ब्रज-नारी-मण्डल की ओर से भी राजा साहब का स्वागत शीघ्र ही किया जायेगा। नारी-मण्डल की मंत्री श्रीमती विष्णुप्रिया देवी शर्मा राजा साहब के स्वागत की आयोजना बना रही हैं।

स्थानीय म्युनिसिपल बोर्ड भी राजा साहब को मानपत्र दे रहा है और खर्चा के लिए ५५० रुपया स्वीकृत हो गया है।

—संवाददाता

* * *

बगड़ (जयपुर) श्री हनुमान व्यायामशाला का वार्षिक उत्सव पं० कृष्णस्वरूप जी, आयुर्वेदाचार्य, व्याकरणाचार्य, 'विशारद' के सभापतित्व में सम्पन्न हुआ। चारों ओर खूब सज-धज थी, पहलवानों और व्यायाम विशारद प्रोफेसर राममूर्ति आदि के चित्र थे। कुश्ती प्रशंसनीय रही। एक भाई का तो हाथ भी उतर गया। व्यायामशाला के संचालन का श्रेय श्री चिरंजीलाल पहलवान को दिया गया। अन्त में पंडित जी का प्रभावशाली भाषण हुआ।

नवलगढ़ (जयपुर) रामदेव जी के मेले पर श्री नवयुवक-मंडल की ओर से वालीबाल टूर्नामेंट का आयोजन किया गया है। इसी अवसर पर फुटबाल टूर्नामेंट और वाद-विवाद प्रतियोगिता भी होगी। सैनी क्षत्रिय-सम्मेलन और मैंढ क्षत्रिय-सम्मेलन होना भी निश्चित हो चुका है।

मण्डावा (जयपुर) के श्री छात्र-साहित्य-संघ का वार्षिक उत्सव श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर बड़े समारोह से सम्पन्न हुआ।

मुकुन्दगढ़ (जयपुर) में होनेवाली तुलसी-जयन्ती में श्री शान्तिस्वरूप जी अग्रवाल ने सभापति का आसन ग्रहण किया। मानसपाठ, कवितापाठ और समस्यापूर्ति हुई। निबन्ध आदि की प्रतियोगिता भी थी। कानोड़िया छात्रावास में जयन्ती मनाई गई थी। उपस्थित व्यक्तियों में सर्वश्री राधेश्याम भटनागर एम० ए०, महादेव 'विशारद', 'चंचल', 'राम', चमनसिंह, ईश्वरी पाठक 'साहित्यरत्न', हनुमानसिंह, बृजलाल बी० ए० आदि थे।

—संवाददाता

जयपुर में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी कवि-सम्मेलन की योजना बनाई गई। स्वागत-समिति का चुनाव इस प्रकार हुआ—स्वागताध्यक्ष—श्रीअद्भुत शास्त्री, स्वागत-मन्त्री—हरिश्चन्द्र जी गोलेछा, प्रचार-मन्त्री—हरि शर्मा। कार्यकारिणी के श्यामसुन्दर परसराम पुरिया, कुमार शर्मा, विजयनारायण शुक्ल, विजयसिंह, मदन शर्मा।

जयपुर में अ० भा० मारवाड़ी कवि-सम्मेलन २९-३० सितम्बर को होने जा रहा है। सम्मेलन में होनेवाली परिषदों के लिए सभापतियों के नाम भी प्रस्तावित हो चुके हैं।

—संवाददाता

* * *

वर्धा की हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा की ओर से ली जानेवाली परिक्षाओं की तारीख १५ सितम्बर जाहिर की गई थी। लेकिन डाक-हड़ताल की वजह से करीब एक महीने तक डाक नियमित रूप से नहीं मिल सकी थी। जिससे केन्द्रों को परीक्षार्थियों की किताबें भी समय पर नहीं मिल सकीं। इस हालत में १५ सितम्बर को इम्तहान लेना नामुमकिन हो गया है। अब सभा की ओर से १७ नवम्बर १९४६ रविवार को परीक्षाएँ ली जायेंगी। उम्मीद है कि इस सुविधा से लाभ उठाने के लिए नये केन्द्र खुलेंगे और परीक्षार्थी तैयार होंगे। परीक्षा के लिए वर्धा-कार्यालय में अर्जी भेजने की आखिरी तारीख ३० सितम्बर है।

—परीक्षा-मंत्री

* * *

प्रयाग (जसरा) में [illegible] को जमुनापार के लगभग [illegible] ब्राह्मण प्रतिनिधियों की [illegible] जसरा बाजार में हुई। जिसमें [illegible] के ब्राह्मणों को संगठित करने [illegible] योजना बनाई गई जो आगे [illegible] संगठन में परिणत हो जा[illegible] विद्यामंदिर खोलने के लिए [illegible] निश्चय किया गया। [illegible] साहित्य, चुनाई आदि की [illegible] प्रबन्ध करने पर भी निरन्तर [illegible] भी उसी रोज हो गया। [illegible] प्रकार चुने गये—सभापति [illegible] (भीटा), उपसभापति [illegible] (पचखरा), मंत्री शारदाप्र[illegible] (अमरेहा), उपमंत्री [illegible] (जसरा), सदस्य सर्वश्री [illegible] पाण्डेय (जसरा), केदारनाथ [illegible] गिया), द्वारिकाप्रसाद मिश्र [illegible] आनन्दीराम दुबे (दुबहा), [illegible] (बसंती), जगदम्बाप्रसाद (सिरस[illegible] कृपाल (बजहिया), जगन्नाथ [illegible] सुखनन्दन (इदारतगंज), [illegible] (बैजला), मदनमोहन (गढ़वा)।

—[illegible]

* *

आगरा में श्रीकृष्ण [illegible] दिन प्रातः युक्तप्रान्त के [illegible] डाक्टर कैलाशनाथ जी काटजू [illegible] में पधारे। आपने मन्दिर द्वार [illegible] किये गये कार्य से जानकारी प्राप्त [illegible] इस बात पर प्रसन्नता प्रकट की कि [illegible] का पाक्षिक मुख-पत्र "कर्मयोग" [illegible] ही गीता-मन्दिर प्रेस से छपना [illegible] होने लगा है। पत्र के सम्पादक [illegible] शास्त्री दर्शनकेसरी को आपने [illegible] रूप से 'कर्मयोग' के लिए कुछ [illegible] लिखते रहने के लिए कहा है। [illegible] स्थान, स्थिति और व्यवस्था [illegible] भी आपने सराहना की।

—[illegible]

* *

सोनबरसा (बलिया) के कुछ युवकों ने मिलकर साहित्य-सेवा [illegible] एक संस्था स्थापित की है। जिसे [illegible] गणपति उपाध्याय, चन्द्रमा [illegible] वीरेन्द्रनाथ उपाध्याय, शिवदत्त [illegible] तथा सुरेन्द्रनाथलाल क्रमशः सभापति, प्रधान मन्त्री, [illegible] प्रचार-मन्त्री चुने गये हैं। [illegible] सदन का उद्देश्य अपने [illegible] विश्व की प्रगति से परिचय कराना [illegible] ही हिन्दी और भोजपुरी साहित्य [illegible] करना। सदन के प्रधान मंत्री [illegible] वीरेन्द्रनाथ उपाध्याय [illegible] लिखित 'बलि बलिया' नामक [illegible] की ओर से प्रकाशित होगी।

—वीरेन्द्रनाथ [illegible]

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की [illegible]
मास्टर साहब—कवीन्द्र रवीन्द्र [illegible] एक उत्कृष्ट कहानी का हिन्दी [illegible] मूल्य ।/) पाँच आने।
गल्प-गुच्छ—(चार भाग) [illegible] की एक एक कहानी एक एक [illegible] सजीव चित्र है। आदर्श [illegible] हास्य आदि भावों का ऐसा [illegible] कहीं न मिलेगा। मूल्य [illegible] १) एक रुपया और शेष [illegible] का १।/) एक रुपया पाँच आने।
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

देशदूत
...विवार, १ सितम्बर, १९४६

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

...ज का ग्राम-साहित्य

...देश के विचारवान् व्यक्तियों ...की उन्नति की ओर जा ...ग्रामों में जनता का ९८ प्रति- ...कर रहा हो, उनकी ...देश की सामूहिक उन्नति की ...व्यर्थ है। भारतीय संस्कृति ...हमारे ग्राम ही हैं। महात्मा ...कि वास्तविक भारत हमारे ...करता है।

...की उन्नति के लिए नाना प्रकार ...स्थापित की जा रही हैं, जिनके ...शीघ्र ही नव जागृति उत्पन्न ...है। ग्रामों की वास्तविक ...जागृति से भी घनिष्ट ...जब तक ग्रामों से निरक्षरता ...है, तब तक साहित्यिक ...चर्चा किस प्रकार चलाई जा ...

...ग्रामों में साहित्य-चर्चा ...होती है, किन्तु अब से ...ऐसी बात नहीं थी। खोज ...ग्रामों में अटूट साहित्य ...में ऐसे अनेक घर मिलते ...में बँधा हुआ प्राचीन ...जाता है। आखिर इन ग्रामों ...कहाँ से? क्या इससे यह ...होता कि किसी काल में ...साहित्य की कला जग- ...में एक वह समय था, ...की चौपालों पर साहित्य- ...विनोदों का आयोजन ...के युवक अपनी झोंपड़ी ...अथवा किसी पेड़ की सुखद ...में, अपने खेत-कार से समय ...साहित्य सर्जन में भी अपना ...थे। यदि फिर से वे दिन ...देश का कल्याण हो जावे।

...ब्रजमंडल की एकमात्र प्रति- ...संस्था "ब्रज साहित्य ...अन्य प्रवृत्तियों के साथ ...भी महत्त्वपूर्ण कार्य कर ...के प्रचार-विभाग ने ब्रज के ...अपने केन्द्र स्थापित किये हैं। ...उद्देश्य जहाँ ग्रामीण जनता ...का नवसंदेश पहुँचाना है, ...ग्राम-साहित्य की ओर ...करना है।

...वर्ष से अपने विविध ...ग्राम-साहित्य के संकलन का ...किया है। संकलन कार्य- ...हुए पत्रों पर हुआ है। ये ...में मंडल कार्यालय में ...हैं। गीत, कहानियाँ, चुट- ...पारमार्थिक शब्द आदि ...ग्राम साहित्य एकत्रित किया ...साहित्य का निरीक्षण मंडल ...पूर्व अपने भूतपूर्व प्रधान ...के विख्यात समालोचक ...एम० ए० द्वारा कराया ...ने इस पर एक ...लिखने की कृपा की है, ...शीघ्र ही प्रकाशित कराई ...में ब्रज के ग्राम-

साहित्य की वर्तमान अवस्था का वर्णन करते हुए विद्वान् लेखक ने सम्मति दी है—

"मंडल द्वारा ग्राम-साहित्य के संकलन में शीघ्रता की जानी चाहिए। नई धाराएँ पुराने परम्परागत ग्रामीण-साहित्य पर कठोर आक्रमण कर रही हैं। और विजय प्राप्त कर रही हैं। ग्राम गीतों और कथाओं के मग्न रूपों को देखकर किसी वैभवपूर्ण चित्रे के खंडहर को देखने से अधिक दुःख होता है। ब्रज में ऐसा अत्यन्त तीव्र गति से हो रहा है। इन ग्रामीण रत्नों की रक्षा हमें सब कुछ बलिदान करके भी करनी चाहिए।"

मंडल इस सफाई के अनुसार ब्रज के ग्राम-साहित्य के पुनरुद्धार में संलग्न है, किन्तु अपनी सीमित शक्तियों और अपने संकुचित साधनों के होते हुए भी इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है। दुर्भाग्य से हमारे यहाँ भी रामनरेश त्रिपाठी अथवा श्री देवेन्द्र सत्यार्थी जैसी लगन के विद्वान् कार्यकर्त्ता तो नहीं हैं, किंतु मंडल के अनेक केन्द्र संयोजक इस कार्य को बड़े उत्साह के साथ कर रहे हैं। मंडल इस बात की चेष्टा कर रहा है कि ब्रज के संकलित ग्राम-साहित्य का श्री सत्येन्द्र जी द्वारा संपादन कराकर उसे शीघ्र प्रकाशित करा दिया जाय।

हिन्दी-साहित्य-संमेलन द्वारा "मैथिली लोक गीत" राजस्थानी लोक गीत" तथा "भोजपुरी ग्रामगीत" नामक पुस्तकों के प्रकाशन में जितना उत्साह दिखलाया गया है, उससे चौथाई उत्साह में ही "ब्रज ग्राम गीत" का भी एक सुन्दर संस्करण प्रकाशित हो सकता था। हिन्दी भाषा की समस्त बोलियों में 'ब्रज' का जो महत्व है, उसे देखते हुए तो यह कार्य सबसे पहले होना उचित था, किंतु जो कार्य हिन्दी साहित्य-संमेलन नहीं कर पाया, उसे ब्रज-साहित्यमंडल को करना चाहिए। आशा है ब्रज के ग्राम-साहित्य के प्रकाशन द्वारा ब्रज-साहित्यमंडल अपने एक महत्वपूर्ण उद्देश्य की पूर्ति कर सकेगा।

ब्रज साहित्यमंडल —प्रभुदयाल मीतल
मथुरा

* * *

स्वामी करपात्री जी और ऋषिकुल

गत वर्ष अर्द्धकुंभी के मेले के अवसर पर स्वामी करपात्री जी ने ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम हरिद्वार के डेपुटेशन से कहा कि हम ऋषिकुल का सभापति बनने तथा उसके आयोजित करने के लिए तैयार हैं। इस शर्त पर कि श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि-सभा पञ्जाब, लाहौर के कार्यकर्ताओं और उपदेशकों को न बुलाया जावे। ऋषिकुल-वालों ने सोचा कि करपात्री जी के पास लक्ष्मी हैं और शिष्यों के झुण्ड इनके साथ हैं, स्वीकार कर लिया। करपात्री जी ऋषिकुल के उत्सव पर व्याख्यान देने के लिए गये और अपील की जिस पर खर्च भी पूरा नहीं हुआ। सर्वसम्मति से करपात्री जी सभापति चुने गये, और उन्होंने कुल-पति बनना स्वीकार कर लिया। और आश्रम का सारा भार अपने ऊपर ले लिया। मजे की बात यह हुई कि करपात्री जी के साथ ऋषिकुल के प्रेसिडेंट सेठ नारायणदास जी बाजोरिया बनें जो इँग्लैंड रिटर्न और अछूतोद्धार के माननेवाले हैं। करपात्री जी के कुलपति होने पर ऋषिकुल की जो अवस्था हुई, अध्यापकों को छः छः महीने का वेतन न मिला, विद्यार्थियों के लिए अन्न का अभाव रहा, गायों को चारा-दाना न मिला, कालिज में हड़ताल हुई। पुलिस आई, ताले लगे। अब जनता कर-पात्री जी से पूछती है कि वह सनातन धर्म की वृद्धि के लिए हवाई जहाजों में चक्कर काटते हैं परन्तु सनातन धर्म के स्थायी कार्य की ओर ध्यान नहीं देते। ऋषिकुल इनकी बला से कल टूटता आज ही टूटे। जब करपात्री जी लाहौर गये तो सनातन धर्म प्रतिनिधि-सभा पञ्जाब ने उनको निमंत्रण दिया कि भूपेन्द्र हाल में आप भाषण दें। जवाब में करपात्री जी ने कहा कि मैं किसी मसजिद, गिर्जा में जा सकता हूँ पर सनातन धर्म प्रतिनिधि-सभा के भवन में नहीं जा सकता। क्योंकि वे हरिजनों को पाठशा-लाओं, मन्दिरों में प्रवेश कराते हैं। परेशानी की बात है कि एक जगह तो वह ऋषिकुल में हरिजनों के हामी प्रेसिडेंट के साथ कुलपति बन सकते हैं दूसरी ओर उन्हीं विचारवालों से घृणा करते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि करपात्री जी की वर्तमान नीति अछूतों को हिन्दुओं से पृथक् करना, स्वयं धर्म के विरुद्ध आचरण करना और धर्म की दुहाई देना ही रह गया है क्या?

महावीरदल —चिरंजीवलाल शर्मा
हरिद्वार (कर्मवीर)

इधर उधर की

सूत-कताई से पागलपन दूर

बंगाल के एक सिविलसर्जन ने बत-लाया है कि मैंने कुमिल्ला जेल में एक अमेरिकन सम्भ्रान्त महिला की राय से पागलों को सूत कताना आरम्भ कराया था। अमेरिकन महिला भी स्वयं सूत कातती हैं। सूत कातने से पागलों का दिमाग दुरुस्त होने लगा। मुझे बहुत कुछ सफलता मिली। बाद में जब मेरा तबादला मिदनापुर जेल में हुआ तो मैंने इस ओर अधिक ध्यान दिया। पहले मैंने पागलों से तकली पर सूत कताया। धीरे-धीरे चरखे पर। वहाँ भी मुझे बहुत काफी सफलता मिली है।

* * *

चन्द्रमा और मंगलग्रह में कल-कारखाने

अमेरिका में रैकट के सहारे वैज्ञानिकों ने चन्द्रमा और मंगल-ग्रहों तक पहुँचने की खोज आरम्भ की थी किन्तु अब इससे भी अधिक खोज की ओर वह जुट पड़े हैं। एक वैज्ञानिक ने यहाँ तक कहा है कि हम लोग शीघ्र ही चन्द्रमा और मंगलग्रह में नये नये कल-कारखाने चलाने का उद्योग कर रहे हैं।

* * *

एटम बम के धुएँ का बादल

विध्वंसकारी अमरीकन एटम बम के धुएँ का प्रभाव कैसा होगा इसका पता अभी तक नहीं चला। परन्तु यह सिद्ध हो चुका है कि एटम बम के धुआँ का बादल हजारों मील तक उड़कर जा सकता है। अभी कुछ दिन हुए, प्रशान्त महासागर में बिकनी द्वीप में जो एटम बम छोड़ा गया था उससे उत्पन्न धुआँ मँडराता हुआ अब अमेरिका में बादल का रूप धरकर पहुँचा है। अभी उसके प्रभाव का अनुभव नहीं हुआ है।

* * *

पेन्सिलिन की सफलता

अभी तक पेन्सिलिन मनुष्यों की बीमारियों में ही इस्तेमाल किया गया था ब्रिटेन में गायों की बीमारियों में भी इसका प्रयोग हुआ है और बहुत काफी सफलता मिली है।

* * *

आगा खाँ ने सीरिया के एक सेकण्डरी स्कूल की इमारत बनाने के लिए एक लाख लीरा का दान दिया है।

* * *

ब्रिटेन में गत अप्रैल, मई और जून में इतने बच्चे पैदा हुए जो १९२५ ईसवी से आज तक किसी भी तीन महीनों में नहीं हुए। बच्चों की संख्या २,०३,७९७ है।

* * *

कनाडा में गेहूँ की इतनी अच्छी फसल पैदा हुई है कि फसल काटने के लिए मजदूरों की कमी पड़ रही है। इस काम के लिए २,५०० आदमी भेजे गये हैं। आठ हजार अभी और भेजे जायँगे।

* * *

अन्य देशों की अपेक्षा जापान में स्त्रियों को अधिक अधिकार दिये जाते हैं। एक हजार जापानी व्यापारियों के संघों से जिनमें करीब ग्यारह लाख सदस्य हैं एक हजार प्रतिनिधि चुनकर टोकियो शहर में पहुँचे हैं। इन प्रतिनिधियों में १०९ स्त्रियाँ हैं।

* * *

पेरिस के शान्त-सम्मेलन में भारत के एक प्रतिनिधि सर खिजर हयात खा तिवाना के साफे (पगड़ी) ने पेरिस के धनियों में एक नवीन आकर्षण पैदा कर दिया है। वे धनी लोग साफे के ढंग की नई हैट बनवा रहे हैं।

* * *

अमेरिका में इस वर्ष खेती की पैदावार में इतनी उन्नति हुई कि वहाँ से अकाल-पीड़ित क्षेत्रों को काफी सहायता की जा सकेगी।

* * *

आस्ट्रेलिया से २०० मुर्गियों के बच्चे सिंगापुर हवाई जहाज से भेजे गये हैं। उनमें सभी बच्चे जीवित हैं। अब आस्ट्रे-लिया से मलाया और बर्मा तथा स्याम को वहाँ के मुर्गीपालन उद्योग-धन्धे को बढ़ाने के लिए काफी अंडे और बच्चे भेजे जायँगे।

उमदा व नया स्टाक
अम्रीकन गर्म कोट

हर प्रकार के ओवरकोट, हाफ़कोट वासकोट आदि उमदा और नया माल बा-जबी दामों पर स्पलाई कि-या जाता है। हज़ारों पक्के ग्राहक वर्षों से फ़ायदा उठा रहे हैं। आज ही ताज़ा निर्खनामा मंगा कर आर्डर बुक करा लीजिये।

सैकन्ड हैंड कोटों की सब से पुरानी कम्पनी
रमेश राज ऐन्ड कम्पनी
सौदागान कोट
पो० बक्स नं० 682 कराची।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरञ्जक चुटकुले

'पानी बिजली को आकर्षित करता है।' रामू बोला।

'क्या तुमने इसकी जाँच की है?' श्यामू ने पूछा।

'हाँ, हर बार जब मैं नहाता होता हूँ, तो टेलीफोन की घंटी बजती है।' रामू का उत्तर था।

* * *

नया किरायेदार—मेरी पिछली मकान-मालकिन रो पड़ीं जब मैंने उनका मकान छोड़ा।

नई मकान-मालकिन—मैं नहीं रोऊँगी। मुझे हमेशा किराया पेशगी मिल जाता है।

* * *

यू० टी० सी० के लड़कों को ड्रेस दी जा रही थी। अर्दली सब सामान देता जाता था और क्लर्क लिखता जाता था।

क्लर्क ने पूछा—अर्दली, तीन कमीजें, तीन नेकर?

अर्दली ने बतलाया—जी हाँ, दो ऊपर और एक सन्दूक में, नेकर धुलने गये।

'दो जोड़ी बूट?'

'सरकार! एक जोड़ी बाहर, और एक सन्दूक के अन्दर।'

'दो जोड़ी मोजे?'

'हुजूर; एक बाहर, एक सन्दूक के भीतर।'

'अच्छा। अब सन्दूक कहाँ है?'

'मालूम नहीं, जी, मुझसे खो गया।'

* * *

एक कुँवारे ने तीन लड़कियों से अपने विवाह का प्रस्ताव किया। उन्होंने इनकार कर दिया। तब उसने अपने भाग्य को सराहा, 'मेरी शान्ति और आनन्द का श्रेय उन्हीं को है।'

* * *

पिता—तुम बी० ए० पास क्या हो गये, तुमने अपनी मातृभाषा बोलनी छोड़ दी। जब देखो तब अँगरेजी के अतिरिक्त दूसरा शब्द मुँह से नहीं निकालते।

पुत्र—पिता जी! मातृभाषा तो मेरी माँ की भाषा है। मेरी माता उसे बोला करें। मैं क्यों उसे बोलूँ?

* * *

वहीद—अब्बा! कूटनीति क्या है?

अब्बा—बेटे, कूटनीति की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है कि यह राज्य में पड़ी रहती है।

* * *

मास्टर—गोविन्द, तुम कहाँ रहते हो?

गोविन्द—जी, घर में।

मास्टर—घर कहाँ है?

गोविन्द—इलाहाबाद में?

मास्टर—यह तो मुझे भी मालूम है। मेरा मतलब यह है कि तुम किस मुहल्ले में रहते हो?

गोविन्द—जिसमें मेरा मकान है।

* * *

एक कृपण महाशय भोजन करते समय अपने सामने एक बड़ा आईना रख लेते थे। इस प्रकार यदि वे एक रोटी खाते, तो समझते कि दो रोटियाँ खा गये।

* * *

बाबूराम—मैं अपनी पत्नी से सारी होनेवाली घटनाएँ कह देता हूँ।

दयाकृष्ण—मैं अपनी पत्नी से बहुत सी अनहोनी बातें कहता हूँ। होनेवाली घटनाएँ सुनाने में क्या तारीफ रखी है?

* * *

सुधा—भैया, तुम्हारा रूमाल बहुत गन्दा है।

राजेन्द्र—वाह दीदी! तुमने भी खूब कहा। सुबह से २० जने इसी में हाथ-मुँह पोंछ चुके हैं, मगर किसी ने भी इसे गन्दा नहीं बताया। एक तुम्हीं अनोखी हो, जो इसे ऐसा बता रही हो!

* * *

पिता—(पुत्र से)—बेटा! व्यर्थ समय न गँवाया करो। समय बहुत बड़ा धन है।

पुत्र—तब तो पिता जी, मैं सचमुच बहुत अमीर हूँ, क्योंकि मेरे पास समयरूपी इतना अधिक धन मौजूद है कि मेरी समझ में नहीं आता कि कैसे उसका उपयोग करूँ?

* * *

गंगाप्रसाद—अजी तुमने सुना?

चन्दूलाल—क्या?

गंगाप्रसाद—यही कि कल काशीराम शर्बत के दस गिलास पी गया।

चन्दूलाल ने 'हुँ' करके सिर हिला दिया।

गंगाप्रसाद ने विस्मय के साथ पूछा—क्या तुम्हें विश्वास नहीं होता?

उत्तर मिला—शर्बत पी लेना तो कोई बड़ी बात नहीं, किन्तु वह दस गिलास पी गया, यह कैसे सम्भव हो सकता है?

* * *

शंकर—रमेश! तुमने अपनी पत्नी को क्यों मार डाला?

रमेश—क्योंकि वह बहुत खूबसूरत थी, और उसके प्रति मैं अत्यधिक आकर्षित हो चला था।

शंकर—तब फिर क्या बात हुई?

रमेश—मनुष्य को संसार की सभी बुरी चीजों से बचकर रहना चाहिए। औरत भी एक बुरी चीज है। मेरा उसके प्रति झुक जाना बुराई से प्रेम करना था। जितना अधिक संग मैं उसका करता, उतना ही बुराई से चिपटता जाता, इसीलिए मैंने उसकी हत्या की।

—'ललित' शाहजहाँपुरी

राष्ट्रीय आर्थिक योजना-समिति

(पेज ६ का शेष)

जनता के हित के लिए समिति ने बहुत कुछ किया है। जितनी भी भारतवर्ष में योजनाएँ तैयार हुईं उन सब में विदेशियों की मदद ली गई है। परन्तु योजना-समिति इन सबसे दूर है। वह ऐसे आदमियों की मदद लेती है कि जो भारतवर्ष के कण कण से जानकार हों और जो भारतवर्ष में ही पले हों।

१७ दिसम्बर १९३८ से ३० अगस्त १९४० तक राष्ट्रीय योजना-समिति ने बगैर रोक-टोक के काम किया। परन्तु सन् १९४० के बाद देश की हालत में कुछ अन्तर आ गया। सन् १९३९ में महायुद्ध छिड़ जाने से भारतवर्ष पर काफी असर पड़ा। सन् १९४२ में देश इन्कलाब की लहर से जाग उठा। देश के कोने कोने में इन्कलाब की आवाज सुनाई देने लगी। गोली और मार खाकर भी लोगबाग चुप न हुए। इसके बीच में अकाल देवता ने अपने प्रचंड क्रोध में आकर मनुष्य-भक्षण आरम्भ कर दिया। कारणों से राष्ट्रीय योजना-साल तक कुछ कर न सकी। १९४५ में पुनः समिति ने शुरू किया।

पाँच साल के बाद राष्ट्रीय समिति जब पुनः मिली तो कुछ बदली हुई मालूम हुई। और संसार की आर्थिक अवस्था बिलकुल बदल गई। नई नई जीतकर खुशी के मारे अपने नहीं रही थीं। भारतवर्ष में एक अकाल की सम्भावना प्रतीत हो इन सब कारणों ने राष्ट्रीय को बाध्य कर दिया कि वह योजनाओं को सुधारे और नई अनुकूल उसको दुबारा बनावे।

भारतवर्ष की उन्नति का योजना-समिति पर ही है। उन्नति के लिए तो हमारे नेता हैं परन्तु हमको आर्थिक दृष्टिकोण नहीं देना चाहिए। राजनैतिक दृष्टिकोण दोनों साथ साथ राष्ट्रीय योजना-समिति पर विश्वास है। भारतवर्ष के ही वह एक ऐसी योजना सामने जिसके द्वारा भारतवर्ष अपने फिर देख सकेगा।

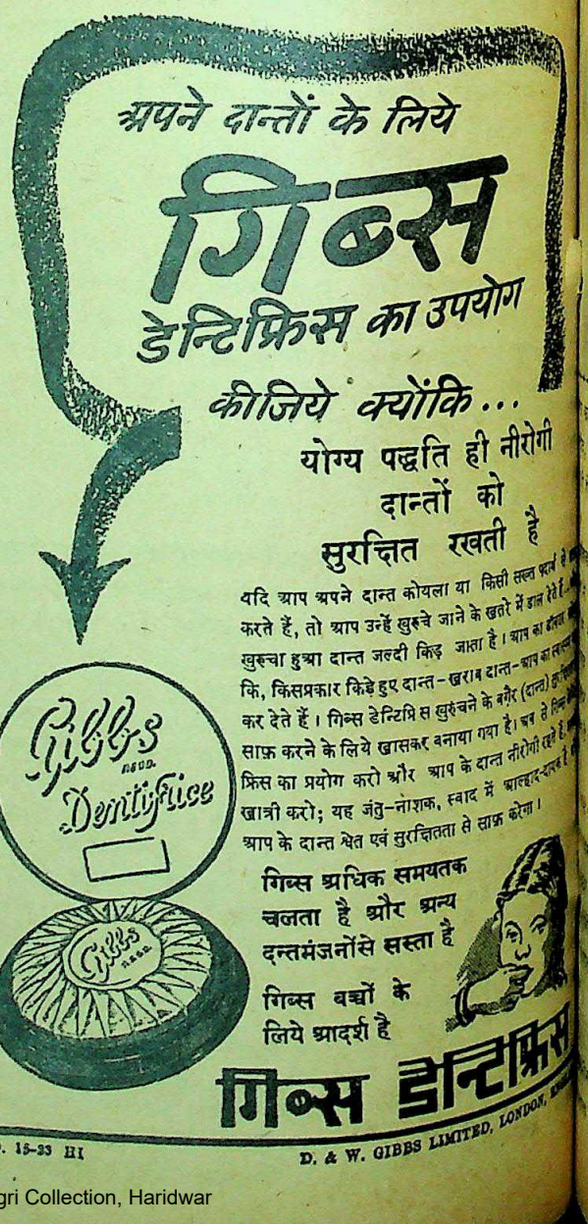

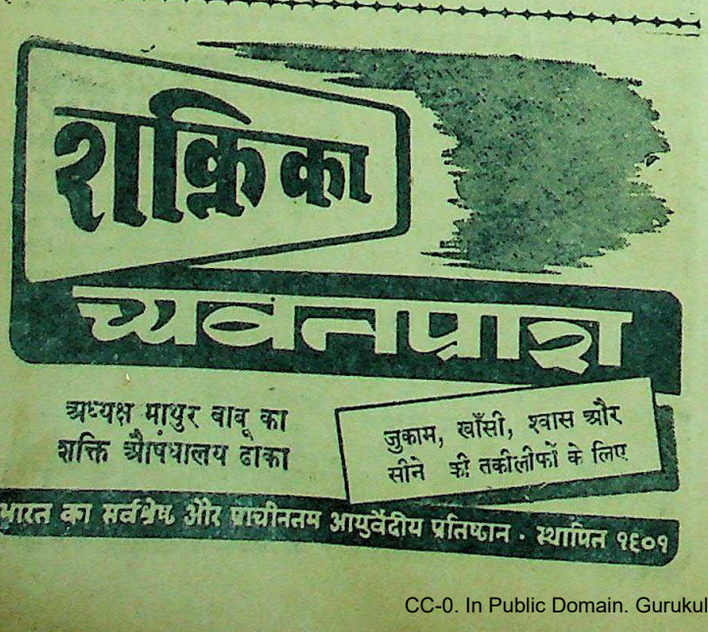

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्तहास

भंग की तरंग

...में लीग ने बड़े सुन्दर ढंग से ...दिवस मनाया। इस कांड ...वाले संभवतः स्वतंत्रता की ...

* *

...विधानचन्द्र राय का घर ...गया। कलकत्ते के और ...का पता शायद लीग के ...नहीं मालूम था।

* *

...में एक मुसलिम बुद्धिमान् ...है कि लीग के बाहर जो ...वे यदि दस दिनों में लीग ...हो जायेंगे तो लीग उनके ...करेगी। चलिये यह मरे ...मरे तो शहीद। शहीदों की ...रहेगी।

* *

...भारतीय महिला-सम्मेलन की ...है कि हैदराबाद में ...अत्याचार हुआ है। अरे ...होगी। हैदराबाद में तो ...है। वहाँ ऐसा होना

* *

...के अखबार 'डान' ने ...की वायसराय लीग के ...कर रहे हैं। अवश्य ...लीग से उन्हें उतना ...जितना मुसलमानों को

* *

...हाल सुनकर पंडित ...नेहरू से दौड़े चले गये।

हैदराबाद का हाल सुनकर संभवतः उन्होंने विश्वास नहीं किया। नहीं तो वहाँ भी उसी तेजी से वह दौड़े चले जाते।

* * *

चौधरी खलीकुज्जमाँ ने कहा है कि हमारी लड़ाई अँगरेजों से है। कलकत्ता में जो पाँच हजार मरे और दस हजार घायल हुए यह सब अँगरेज ही थे शायद!

* * *

लखनऊ सेंन्ट्रल जेल में गांधी टोपियाँ जला दी गईं। आशा है कांग्रेस सरकार की ओर से आगामी वर्ष इस घटना की जाँच के लिए एक कमेटी बैठा दी जायगी जो तीन-चार वर्षों के भीतर इस पर अपनी रिपोर्ट प्रकाशित कर देगी।

* * *

यदि कांग्रेस ने अकेले अकेले मध्यवर्ती सरकार बनाई तो सिंध और बंगाल स्वतन्त्र हो जायँगे, कुछ लोगों की ऐसी कल्पना है। कायदे आजम को बैठाने के लिए अभी से तख्त बन जाना चाहिये।

* * *

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने प्रांत के स्वास्थ्य पर बड़ा ध्यान रखा है। आशा है पहलवानों की संख्या इस प्रांत में खूब बढ़ेगी।

* * *

कानपुर में मेहतरों की हड़ताल अभी चल रही है। प्रांत का स्वास्थ्य विभाग इसलिए नहीं बोल रहा है कि लोग अपने स्वास्थ्य को ठीक रखने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लें।

* * *

पंडित जवाहरलाल कहते हैं कि कलकत्ते की घटना से हम विचलित नहीं हो सकते। न कायदे आजम विचलित हो सकते हैं। दोनों महापुरुष हैं देखिये क्या क्या होता है?

—अगड़धत्त शर्मा

अपनी सरकार बनी प्रियतम!

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

जागो जागो आया प्रभात!
अपनी सरकार बनी प्रियतम,
अब छानो भंग घनी प्रियतम,
है समय मान का बीत गया
छोड़ो अब तनातनी प्रियतम,
अब ताजा मोहनभोग बने फेंको बासी जो पड़ा भात!
पाटो जो बीच पड़ी खाड़ी,
चलने दो आपस की गाड़ी,
है घबड़ाने की बात नहीं
होगी ही रक्तमयी नाड़ी,
चलने पायेगी खुराफातियों की न तनिक भी खुराफात!
तुम तो स्वतन्त्र सी थी रानी,
मैं भी स्वतन्त्र हूँ अभिमानी,
आओ हम तुम मिल कर गाएँ
स्वाधीनमयी युग की वाणी,
सपने की दुनिया छोड़ चलो खोलो आँखें हो गई रात!

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने नाम पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्री में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगतप्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक-खर्च माफ़ पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

सावधानी से बचत बढ़ाइए

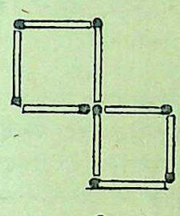

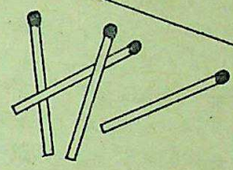

प्रश्न : दिया सलाई की चार तीलियों की सहायता से दो समकोण चर्तुभुजों को चार में पलटिए

उत्तर : इन चार तीलियों को ऐसे रखिये जैसे आकृति में दिखाया गया है।

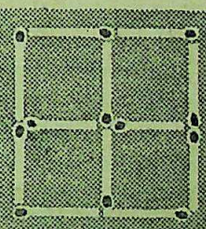

दियासलाई की चार तीलियों को उचित ढंग से रख कर इन से आठ तीलियों का काम लिया जा सकता है। इसी प्रकार यदि आप अपनी बचत को उचित ढंग से प्रयोग में लगाना जानते हैं तो गृहस्थी में अपनी आय से आप अधिक से अधिक लाभ उठा सकते हैं। नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए। छोटी पूंजी वालों के हित के लिए ही यह मद प्रचलित की गई है।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

(१) आप ५, १०, ५०, १००, ५००, १०००, या ५०००, रु० के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) कुटुम्ब का प्रत्येक व्यक्ति (वयस्क या अल्पवयस्क) ५००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स खरीद सकता है। दो व्यक्ति मिलकर १०,००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है। सरकार द्वारा प्रचलित रुपया लगाने की मदों पर जो ब्याज दिया जाता है यह सब से अधिक दर है।

(४) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(५) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष पश्चात भी भुनाया जा सकता है)

(६) जिनकी बचत थोड़ी है वह १), ॥), ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं, ५ रु० के स्टाम्प्स जमा होने पर एक नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट मिल जायेगा।

(७) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकृत एजंटों अथवा सेविंग्ज ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

अपने सेविंग्ज़ ग्रूप में अभी सम्मिलित हो जाइए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजधानी का रंगमंच

कलकत्ता और प्रयाग के दङ्गों की प्रतिक्रिया

प्रान्तीय सरकारें और मुस्लिम लीग के कारनामे—सेक्रेटेरियट की चहल-पहल में मन्दी—श्रीमती पण्डित के विभाग के दो महत्त्वपूर्ण कार्य—'बंगाल सप्ताह'—संयुक्तप्रान्त में बैंक-हड़ताल—सरकारी कर्मचारियों का वेतन।

[अपने विशेष प्रतिनिधि द्वारा]

कलकत्ता और प्रयाग के दंगों का असर प्रान्त के विभिन्न नगरों में पड़ रहा है, जहाँ अफवाहों का बाजार गर्म है और बात बात पर भगदड़ शुरू हो जाती है। इसमें सन्देह नहीं है कि प्रान्त का साम्प्रदायिक वातावरण उग्र है और इसीलिए प्रान्तीय पत्रकार-संघ के अध्यक्ष श्री एस० एन० घोष तथा मंत्री श्री गोपीनाथ श्रीवास्तव ने पत्रकारों से साम्प्रदायिक समस्याओं के सम्बन्ध में अपनी लेखनी संयत रखने की अपील की है।

* * *

पत्रकारों की संयत लेखनी ही साम्प्रदायिकता के ताण्डव नर्तन को रोके रख सकने में सफल हो सकेगी—ऐसा विश्वास करने का कोई कारण नहीं है। प्रान्तीय मुस्लिम लीग इस सूबे में अशान्ति की जो योजनाएँ बना रही है, वे शान्ति की द्योतक नहीं हैं। बल्कि आवश्यकता इस बात की है कि उसके गोपनीय प्रयत्न प्रकाशन में आ जायें, ताकि इस प्रान्त में कलकत्ता की आकस्मिक विनाशलीला की पुनरावृत्ति न हो सके।

* * *

कहा जाता है कि विध्वंस कार्यों तथा विनाशकृत्य के लिए लीग व्यापक योजना बना रही है। प्रान्तीय लीग के गश्ती पत्रों में आदेश दिया गया है कि मुस्लिम नौजवानों को संगठित किया जाये और उन्हें कसरत,

संयुक्त-प्रांत के गृह-मंत्री माननीय श्री रफ़ी अहमद किदवई।

कुश्ती, पटेबाजी, शस्त्रास्त्र-चालन, विध्वंस-योजना आदि की शिक्षा दी जाये। लीग एक प्रान्तीय 'युद्ध-समिति' भी बनाने जा रही है, जिसके सदस्यों की नामावली गुप्त रखी जायगी, ताकि अगस्त १९४२ की भाँति कांग्रेस के सर्वोच्च नेताओं की तरह वे भी गिरफ़्तार न कर लिये जायँ।

* * *

कांग्रेस मंत्रिमंडल इन योजनाओं से पूर्ण अनभिज्ञ हो—ऐसी बात नहीं है। इसीलिए उसने जिला-अधिकारियों को आदेश दिया है कि कहीं पर भी साम्प्रदायिक अशान्ति होते ही उसे सख्ती से दबा दिया जाये। सद्भावना-प्रसार के लिए नगरों और मोहल्लों में शान्ति-समितियाँ स्थापित करने पर भी जोर दिया गया है।

* * *

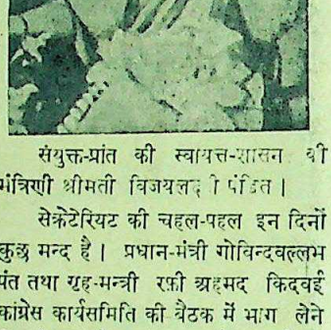

संयुक्त-प्रांत की स्वायत्त-शासन की मंत्रिणी श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित।

सेक्रेटेरियट की चहल-पहल इन दिनों कुछ मन्द है। प्रधान-मंत्री गोविन्दवल्लभ पंत तथा गृह-मन्त्री रफ़ी अहमद किदवई कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक में भाग लेने दिल्ली गये हैं। शिक्षा और अर्थमंत्री सम्पूर्णानन्द मथुरा और स्वायत्त शासन मंत्रिणी श्रीमती पंडित प्रयाग गई हैं। राजस्व मन्त्री ठाकुर हुकुमसिंह ने पूर्वी जिलों के दौरे से लौटकर वहाँ होनेवाली अपरिमित हानि का विवरण पत्रकारों को बताया है।

* * *

सेक्रेटेरियट में इस समय सबसे अधिक चहल-पहल का कमरा यातायात मंत्री हाफिज मुहम्मद इब्राहीम का है, जहाँ मोटर-मालिकों और चोर फरोशों (लकड़ी बेचनेवालों) का जमघट हाफिज जी और उनके हुक्के की ताजीम बजाता रहता है। हाफिज जी का हुक्का इस बार कुछ अधिक प्रभावशाली हो उठा है और उसने सम्पूर्णानंद जी को भी आकृष्ट कर लिया है, जो हुक्का पीना सीखने लगे हैं। धूम्रपान का शौक सेक्रेटेरियट में कुछ बेहद बढ़ गया है। रफ़ी अहमद किदवई की इजीशियन सिगरेटों की खुशबू दिमाग खुश कर देती है। आबकारी मंत्री गिरधारीलाल देशी सिगरेट पीते हैं। श्रीमती पंडित भी धूम्रपान करती हैं, मगर जरा अकेले में। पंत जी तथा डाक्टर काटजू धूम्रपान नहीं करते। राजपूत होते हुए भी ठाकुर हुकुमसिंह इस आदत से कैसे बचे हैं—यह आश्चर्य की बात है!

* * *

श्रीमती पंडित का विभाग दो महत्त्वपूर्ण किन्तु उपयोगी कार्य करने जा रहा है। एक तो सरकारी डाक्टरों द्वारा प्राइवेट प्रैक्टिस की जानी रोकना तथा दूसरा कानपुर और इलाहाबाद में एक एक मेडिकल कालेज स्थापित करना। इन कालेजों में से प्रत्येक पर ६६ लाख रुपया व्यय होगा। कानपुर में एक चिकित्साशास्त्र अन्वेषण केन्द्र भी स्थापित होगा।

* * *

प्रान्तीय हिन्दू-सभा कलकत्ता के दंगे के फलस्वरूप प्रान्त भर में 'बंगाल सप्ताह' मना रही है, जिसमें बंगाल गवर्नर के वापस बुलाये जाने तथा सुहरावर्दी मंत्रिमंडल के बरखास्त किये जाने की माँग की जायगी। हिन्दू-सभा को एक और भी शिकायत है, जो कांग्रेस मंत्रिमण्डल से है। बरेली में राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघ के कार्य पर सिटी मजिस्ट्रेट ने रोक लगा दी है। बताया जाता है कि यह संस्था राजनीति से पूर्णतया पृथक् हिन्दुओं में केवल व्यायाम और शरीर पुष्ट करने का आन्दोलन करनेवाली सामाजिक संस्था है। ऐसी संस्था पर रोक लगाना अति साधारण नागरिक अधिकार का अपहरण करना है।

* * *

लखनऊ म्युनिसिपल बोर्ड के चेयरमैन श्री नवलकिशोर हलवासिया ने बोर्ड के कर्मचारियों को महँगाई का भत्ता देने पर होनेवाले व्यय की पूर्ति के लिए हाउस टैक्स और वाटर टैक्स में वृद्धि करने तथा अध्यापन, वकालत, चिकित्सा आदि व्यवसायों पर कर लगाने का निश्चय किया है। जब वे बोर्ड में इसे प्रकट कर रहे थे, तो एक सदस्य ने कहा, "वेश्यावृत्ति भी तो व्यवसाय है, उस पर भी टैक्स लगाया जाये।"

* * *

युक्तप्रान्त में अति शीघ्र प्रान्तव्यापी बैंक-हड़ताल होनेवाली है। गृह-मंत्री रफ़ी अहमद किदवई ने उसे टालने के उद्देश्य से बैंक-अधिकारियों तथा कर्मचारियों की एक संयुक्त-बैठक समझौता करा देने की गरज से आयोजित की थी परन्तु वादा करके भी बैंक-अधिकारी उसमें शामिल न हुए। समझौते की बात-चीत वहीं टप हो गई और कर्मचारियों ने हड़ताल का नोटिस दे दिया है।

* * *

सन् १९४२ की अगस्त-क्रान्ति के पश्चात् हैलेट की प्रत्यक्ष कृपा से छूटकर मुस्लिम लीग के साथ संयुक्त मंत्रिमण्डल बनाने की चेष्टा करनेवाले श्री गोपीनाथ श्रीवास्तव पं० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल की शरण में जाकर इन दिनों कांग्रेस समाजवादियों के विरुद्ध बड़ा जहर उगल रहे हैं। वे और उनका साप्ताहिक "हिन्दुस्तानी" जिस भाषा में समाजवादियों पर आक्रमण कर रहा है, वह उस वक्तव्य से मेल नहीं खाता, जिसमें उन्होंने पत्रकारों को अपनी लेखनी संयत रखने का उपदेश दिया है।

* * *

प्रान्तीय सरकार ने निम्नपदस्थ सरकारी कर्मचारियों के वेतन में ५) मासिक की वृद्धि तथा उन्हें १७॥) प्रतिशत अथवा २२) मासिक, जो भी अधिक हो, महँगाई का भत्ता देने की घोषणा करके असन्तुष्ट सरकारी कर्मचारियों को आशावान बना दिया है। यह सहायता अस्थायी है और सरकारी वेतन कमीशन द्वारा वेतनों की नई दरें निर्धारित होने तक के लिए है। परन्तु मंत्रिमंडल ने इस कार्य से अपने इस विश्वास को प्रकट कर दिया है कि पर्याप्त वेतन दिये बिना कर्मचारियों से ईमानदारी की आशा नहीं की जा सकती।

(पृष्ठ ४ का शेष)

मिस्टर सुहरावर्दी ने अपने कथन द्वारा दिखा दिया कि अगर हिन्दू-सभा कांग्रेस मुस्लिम लीग की भाँति है तो इसी तरह के 'डाइरेक्ट ऐक्शन' वह अपनी माँगों को पूरा कराने के लिए करेगी।

किन्तु धमकी और हिंसा के बल पर आजतक शासन-परिवर्तन हुआ है और न किसी की माँगें पूरी की जा सकी हैं। शासक हिंसा के डर से अंग्रेज भले ही देश से अपना प्रभुत्व छोड़ने को तैयार हो गये हैं। फिर भारत की तो बात ही क्या है। हिंसा का मुकाबला हिंसा से किया जा सकता है। ब्रिटेन हिंसा करने की शक्तियों में कम नहीं है। परन्तु वह हिंसा के बल से कभी भी भारत को अपना आजाद नहीं कर सकती थी। भारतीय गुलामों की यह केवल अहिंसा ही थी, जिसने मुस्लिम लीगी शासक और उनके अंग्रेज आका अभी तक भारतीय स्वतंत्रता के रास्ते में खड़े हुए थे आज वही बागी तलवार और डंडों के बलपर पाकिस्तान की स्थापना के लिए ललकारते फिर रहे हैं। यह केवल बंदरघुरकी और धमकी है। इससे पाकिस्तान की स्थापना तो कभी नहीं हो ही नहीं सकती है। मुसलमान जनता के नाम पर अधिक से अधिक कुछ प्रान्त रह सकती है। बंगाल का उदाहरण सामने है। बंगाल भी इसीलिये आज हिंसा का नंगा नाच दिखाकर कलंक का टीका अपने माथे पर लगा रहा है। इससे यह तो सच हो गया कि बंगाल में अब लीगी शासन नहीं रह सकता। कलकत्ता के दंगों ने स्पष्ट प्रकट कर दिया है कि केवल शासन में प्रांत की जनता विशेष जनता की जान माल सुरक्षित नहीं है। प्रांत के शासन की पूरी शक्ति मंडल के हाथ में रहती है तो वहाँ जनिक शांति सुरक्षित नहीं है। केवल दो ही उपाय हैं। (१) शासन की बागडोर ६३ धारा के गवर्नर अपने हाथ में ले ले या (२) मंत्रिमंडल की स्थापना हो जिस की हिन्दू मुसलमान जनता का हो। और तीसरा कोई उपाय कलकत्ता के 'स्टेट्समैन' पत्र ने इसी के शासन-परिवर्तन का सुझाव वास्तव में विचारणीय है। क्योंकि लीगी मंत्रिमंडल की अब तनिक भी भरोसा नहीं है। मंत्रिमंडल ने बंगाल में अकाल करके लाखों को भूखों मार डाला लीगी मंत्रिमंडल का प्रोत्साहन सप्ताह में कलकत्ता में खुलेआम होली खेली गई है।

इसलिए आवश्यक है कि दंगे की सबसे पहले पूरी जाँच दंगा क्यों हुआ? लीगी शासन के नागरिकों के जान-माल की लिए क्यों नहीं पूर्णरूप से कर सकी? हम लार्ड वेवेल सरकार का ध्यान इस ओर हैं। एक गैर सरकारी तुरन्त कायम किया जाना जाँच के अनुसार जो मंत्री दोषी करार दिये जायँ उन्हें मिलना चाहिए। बंगाल के मानों का बहुमत है तो इसका नहीं है कि हिन्दुओं की की सम्पत्ति वहाँ बिखरी सर्वनाश होने दिया जाये। सरकार को इसका पूरा कि जनता जान और माल मुसलिम लीगी शासन में असम्भव है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ही छत्रछाया के नीचे

गोदरेज ने ही अनेकों किस्म के सर्वोत्कृष्ट सामान, जैसे रक्षा के लिये धातु के सामान फर्नीचर, 'टायलेट' (नहानेका) साबुन, ग्लेसरीन, ओ. डी. कोलन आदि पारिवारिक व्यवहार की चीजों का निर्माण किया है। आज से ५० वर्ष पूर्व यह कार्य प्रारंभ किया गया था जो राष्ट्रीय स्वाधीनता के सिद्धान्त पर अभी तक उन्नति-पथ पर कूच कर रहा है।

प्रदर्शनमें गोदरेज का स्टील

Godrej गोदरेज के 'पेटेंट' अन्वेषण

गोदरेज की निपुणता के २४ पेटेंट तरीके है। चतुराई **अधिक मजबूती और टिकाउपन** की बनावट के साथ ही ये **हल्के तथा मितव्ययिता** के साथ बनाये गये हैं। उनके ४ नवीन पेटेंट गोदरेज तिजोरी, ७ पेटेंट आलमारी, और २ पेटेंट फाइल केबीनेट में नवीन अन्वेषण का समावेश है। सामूदिक उत्पादन की पद्धतियों के खास अनुभव व अपने संग्रहात तरीकों द्वारा गोदरेज सुरक्षा इन्जीनियरिंग में उच्चकोटि की श्रेणी पर पहुँच गया हैं और वे इस निपुणता द्वारा 'शीट-मेटल्स' (पतरे) तथा 'हार्ड वेयर' (भारी लोहे का सामान) (जिसमें ऐसे अनेकों सामानों का समावेश है जो हिन्दुस्तान भर में नहीं बने हैं) **सबकुछ** इस कोटि तथा मितव्ययिता से बनाने में समर्थ हुए हैं जैसे कि **अन्य किसी जगह** बनाये जाते हैं। वे केवल अपने कीमति कम्पलीट प्लन्ट '**मशीन टूल्स**' (**यांत्रिक ओजारों**) की सहायता से ही इस योग्यता पर पहुचें हैं, इसमें से बहुत से यांत्रिक औजार भारत में **सर्व प्रथम** इनके ही द्वारा बनाये गये हैं।

लगभग तमाम 'सेफ डिपाजिट वाल्टस' जिनकी संख्या १००से उपर है और जो रिजर्व, इम्पीरियल और देश के दूसरे तथा बडे बेंको, 'सेफ डिपोजिट वाल्टस' व टकसाल में उपयोग किये जाते है सभी गोदरेज के हैं। ये अभेघ वाल्ट्स "आक्सी रुसीटिलीन-ब्लो पाइप" तथा **अन्य सभी आक्रमणों का सामना करते हैं।** सेफ डिपाजिट की असंख्य तिजोरियां सुरक्षापूर्ण गोदरेज के पेटेंट तरीकों द्वारा ही बनाअी जाती हैं।

निःसन्देह गोदरेज की असंख्य तिजोरियां तमाम स्टील की, दरवाजे और दराजों सहित, **राष्ट्रीय सम्पति का** आफिसों सरकारी-विभागों, बैंकों व हर जगह **सुरक्षित किये हुये हैं।**

गोदरेज आधुनिक स्पात और 'टयुब्युलर' (नलीका) फर्नीचर, जो हर प्रकारके बडे बडे आधुनिक अस्पतालों में **पूर्णरूप** से व्यवहृत किये जाते हैं, बनाने में सब का अगुआ है।

गोदरेज के सामान—चावी छाप 'टायलेट' (नहाने का), 'शेविंग' (हजामत के लिये) साबुन और ग्लेसरीन ने गोदरेज को भारत का एक प्रिय घरेलू शब्द बना दिया है।

Godrej

गोदरेज एन्ड बॉइस मेन्यु० कं०, लि०
गोदरेज साप्स, लि०

गोदरेज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सपट लोशन
दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.
सपट अँड कं. लि.
बम्बई नं. २.

पं० गौरीशंकर मिश्र, बी० ए०, एल-एल्० बी०

लिखित पुस्तकें

बलिदान-मन्दिर

इस उपन्यास की घटना बड़ी रोचक है। मनुष्य के चरित्र का उत्कर्ष किस प्रकार हुआ, वह लोकोपयोगी किस प्रकार हुआ और वास्तविक बलिदान क्या है, इसका बड़ा सुन्दर वर्णन इस उपन्यास में है। इसके पढ़ने से मनोरंजन के साथ-साथ आत्मसुधार की भी शिक्षा मिलती है। अच्छे टाइपों में छपी ढाई सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

भक्त जयदेव

यह उपन्यास अपने ढंग का एक ही है। इसमें 'हम भक्तन के भक्त हमारे' का प्रदर्शन बड़ी सुन्दरता से लेखक ने किया है। मूल्य केवल १॥) एक रुपया आठ आने।

कलियुगी दुनिया की सच्ची कहानियाँ

पहला भाग

वर्तमान युग प्रगति का कहा जाता है। इसी युग की कहानियाँ इस संग्रह में हैं। ये विलक्षण हैं और पढ़नेवालों को एक मीठी सलाह देती हैं। कहानियाँ एक से एक बढ़कर हैं। पृष्ठसंख्या सवा सौ। मूल्य १।) एक रुपया चार आने।

शबरी अछूत ?

यह एक रोमांचकारी नाटक है। मर्यादा-पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी की प्रसिद्ध भक्त मीरा के कथानक के आधार पर इस नाटक की रचना हुई है। अछूत समस्या के युग में यह नाटक सचमुच अपनी विशेषता रखता है। बढ़िया छपी पुस्तक का मूल्य केवल ।॥) बारह आने।

मैनेजर [illegible]कडिपा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

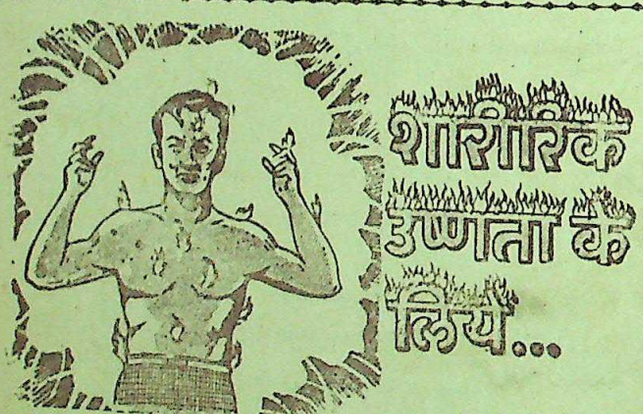
शारीरिक उष्णता के लिये...

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

आज से ही शुरू किजिए, सर्वत्र मिलता है।

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली तलुवों और आंखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग में आग सी जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, अपनी घूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढ़ा बालक वृद्ध, पुरुष स्त्री सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक हानिरहित है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निस्संकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके शीतल, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

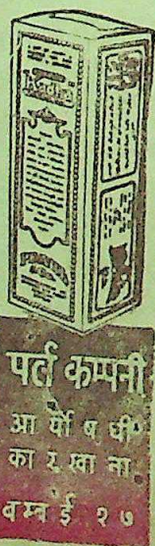
पर्ल कम्पनी
आर्योषधी का रखाना.
बम्बई २७

यू० पी० प्रतिनिधि [illegible]सर एण्ड को०, बिरहना रोड, कानपुर।

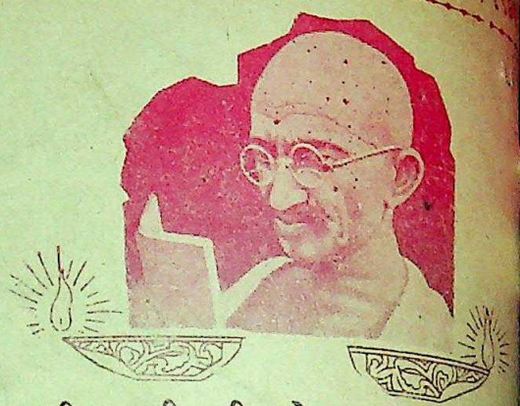

गान्धी-जयन्ती की योजना का शुभारम्भ

आगामी गान्धी-जयन्ती

के

पुण्य अवसर

पर

दूसरा महान् राष्ट्रीय ग्रन्थ

'सेवाग्राम'

प्रकाशित हो रहा है

गान्धी-अभिनन्दन-ग्रन्थ के सम्पादक पंडित सोहनलाल द्विवेदी की राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित कविताओं का वृहद संग्रह 'सेवाग्राम' बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित किया जा रहा है।

'सेवाग्राम' गान्धीवाद का ही नहीं, अपितु, जन-आन्दोलन का महाकाव्य है। भैरवी में राष्ट्रीय चेतना के जिस स्वर को कवि ने उठाया था, वह सेवाग्राम में सप्त-स्वरों में गुञ्जायमान हुआ है। 'सेवाग्राम' आगामी गांधी-जयन्ती में गान्धीजी को भेंट किया जायेगा।

सेवाग्राम बड़े आकार-प्रकार में प्रकाशित किया जा रहा है। पृष्ठ-संख्या [illegible] तीन सौ।

सर्वश्री अवनीन्द्रनाथ ठाकुर, [illegible] बोस, रविशंकर रावल, कुमारी [illegible] गिल तथा असितकुमार हलदार [illegible] चूड़ान्त कलाकारों के बहुरंगे [illegible] से ग्रन्थ अलंकृत किया गया है।

'सेवाग्राम' पाने के लिए पहले [illegible] सूचना भेजना अनिवार्य है, क्योंकि [illegible] के अभाव तथा प्रकाशन की अनेक [illegible] नाइयों के कारण—यह सीमित [illegible] ही प्रकाशित किया जा रहा है।

मूल्य केवल साढ़े सात रुपये

मिलने का पता—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

हर प्रकार की

धार्मिक, राष्ट्रीय एवं वीर-रस-पूर्ण पुस्तकें

मिलने का पता:—

राजपाल एण्ड सन्ज़,

(द०) अनारकली, लाहौर

लाइब्रेरियों व संस्थाओं को विशेष रियायत

(पुस्तकों का सूचीपत्र मुफ्त मँगवाएँ)

प्रबन्धक [illegible] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

मूल्य ७॥)
[illegible] =)

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

८ सितम्बर, १९४६ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 8th September, 1946

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

[illegible] नेता श्रीशरद्चंद्र बोस [illegible] के सदस्य बनाये गये।

हिन्दी भाषाभाषी भारतीय जनता का पत्र

मूल्य २ आना

राष्ट्रीय सरकार और देश की समस्यायें
स्वर्गीय श्री महादेव देसाई के संस्मरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह अति आकर्षक है।
यह अति सुन्दर है
परन्तु इसमें शिथिलता है। इसे दूर करना आवश्यक है।
जी. जी. फलपेय का एक ग्लास
किसी भी शारीरिक परिश्रम के पश्चात
स्फूर्ति और ठंढक प्रदान करता है।

फल पेय :—नीबू, माल्टा, आम, नीबू के डियल नीबू वाली।
फल शर्बत :—सतरा वाला, मिक्सड फ्रूट नीबू, पाल्सा, स्टोबेरी, चाकोलेट और टाफी।

GG

जी. जी. फ्रूट प्रिज़र्विङ्ग फैक्टरी आगरा

जी. जी. इन्डस्ट्रीज़

जी० जी० सेल्स डिपो :—
मैसर्स गिरधरलाल बकाल जनरलगंज कानपुर
बम्बई : देहली : कलकत्ता : ग्वालियर : अजमेर : बरेली।

हर प्रकार की
धार्मिक, राष्ट्रीय एवं वीर-रस-पूर्ण पुस्तकें
मिलने का पता:—
राजपाल एण्ड सन्ज़,
(द०) अनारकली, लाहौर
लाइब्रेरियों व संस्थाओं को विशेष रियायत
(पुस्तकों का सूचीपत्र मुफ्त मँगवाएँ)

छोटी पूंजी और अधिक लाभ

प्रश्न : दियासलाई की ६ तीलियों से ५ त्रिकोण बनाइए

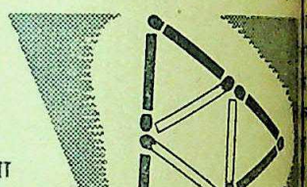

उत्तर :
तीलियों को ऐसे रखिये जैसे आकृति में दिखाया गया है। ५ वीं त्रिकोण धूमिल तीली की सहायता से बनेगी।

यदि विचार पूर्वक व्यय न किया जाये तो आजकल की परिस्थिति में जब प्रत्येक वस्तु के दाम बढ़े हुए हैं थोड़ी आय में भोजन, कपड़ा और पढ़ाई सम्बन्धी निर्वाह भली प्रकार करना कठिन है। क्यों न शुरू की आय-व्यय का ऐसे ढंग से अनुमान लगाया जावे कि आकस्मिक संकट के समय भी कठिनाई का सामना न करना पड़े? यदि आप आग्रह पूर्वक और यथा क्रम बचत करने में प्रयत्न शील होंगे तो कुछ न कुछ पूंजी एकत्रित रहेगी। ऐसी बचत को सुरक्षित रखने के लिये नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स की मद ही सर्वोत्तम है।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

(१) आप ५, १०, ५०, १००, ५००, १०००, या ५०००, रु० के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) कुटुम्ब का प्रत्येक व्यक्ति (वयस्क या अल्पवयस्क) ५००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकता है। दो व्यक्ति मिलकर १०,००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है। सरकार द्वारा प्रचलित रुपया लगाने की मदों पर जो ब्याज दिया जाता है यह सब से अधिक दर है।

(४) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(५) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट १-१/१ पश्चात भी भुनाया जा सकता है)

(६) जिनकी बचत थोड़ी है वह १) वाले सेविंग्ज स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं। ५ रु० के स्टाम्प्स जमा होने पर एक सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट मिल जावेगा।

(७) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स सरकार द्वारा अधिकृत एजेंटों अथवा पोस्ट ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

अपने सेविंग्ज़ ग्रूप में अभी सम्मिलित हो जाइए

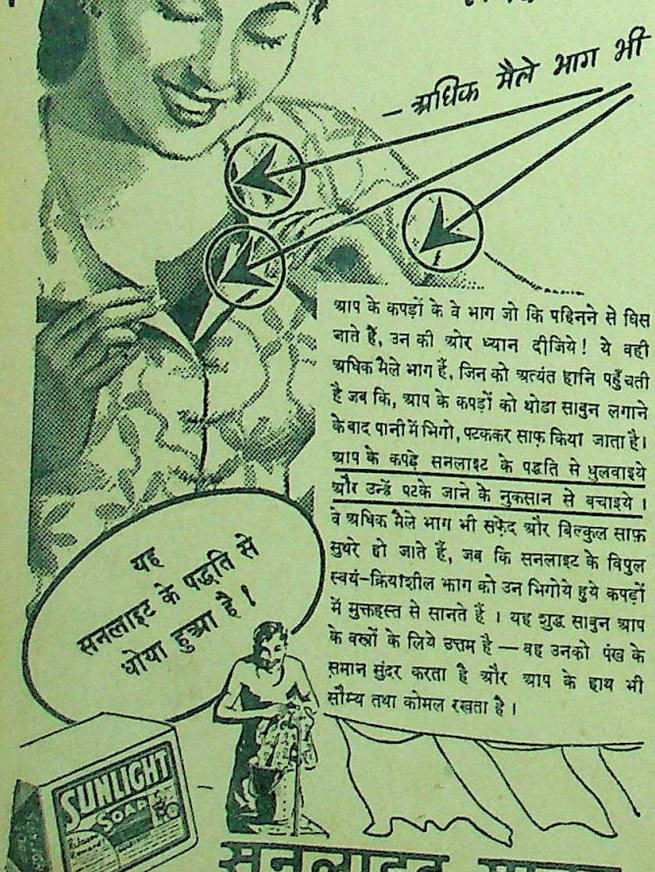

बग़ैर किसी नुक़सान के साफ़-सुथरे और सनलाइट-द्वारा सफ़ेद होगये

— अधिक मैले भाग भी

आप के कपड़ों के वे भाग जो कि पहिनने से घिस जाते हैं, उन की ओर ध्यान दीजिये! ये वही अधिक मैले भाग हैं, जिन को अत्यंत हानि पहुँचती है जब कि, आप के कपड़ों को थोडा साबुन लगाने के बाद पानी में भिगो, पटककर साफ़ किया जाता है। आप के कपड़े सनलाइट के पद्धति से धुलवाइये और उन्हें पटके जाने के नुकसान से बचाइये। वे अधिक मैले भाग भी सफ़ेद और बिल्कुल साफ़ सुथरे हो जाते हैं, जब कि सनलाइट के विपुल स्वयं-क्रियाशील झाग को उन भिगोये हुये कपड़ों में मुक्तहस्त से सानते हैं। यह शुद्ध साबुन आप के वस्त्रों के लिये उत्तम है — वह उनको पंख के समान सुंदर करता है और आप के हाथ भी सौम्य तथा कोमल रखता है।

सनलाइट साबुन

S. 80-59 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, ८ सितम्बर, १९४६

[... संख्या २]

...और बाहर!

...की धमकी!

...के परराष्ट्र मन्त्री मिस्टर ... में विश्वशान्ति के गाना ... की हिन्द-एशिया में ... ऊपर गोलियाँ बरसाने में सहा- ... हैं। अंगरेज वहाँ साम्राज्य- ... के लिए पूरी चेष्टा कर ... वार्नस् अच्छी तरह जानते ... तक साम्राज्यवादी प्रवृत्ति ... तक दूसरे देशों को ... लूटा जा सकेगा। अम- ... जो देश नहीं मानेंगे उस ... बम गिराया जायगा। ... भी धमकी दे रहा है कि ... अणुबम बनाया ... अणु बम की धमकी अब ... भाँति समझ लिया है। ... शक्ति को खूब बढ़ा- ... जाता है। इसलिए अब ... अणु बम की महाशक्ति की ... प्रशंसा के साथ धमकी ...

* *

...की चिन्ता

... देशों की भलाई की चिन्ता ... इंगलैंड और अमेरिका कर रहे हैं। सिर्फ इसीलिए ब्रिटिश सरकार ने दर्रेदानियाल में फौजी अड्डा बना लिया है। भारत की अँगरेजी सरकार ईराक में सेनाएँ भेज रही है और चीन के अधिवासियों के कहने पर भी चीन से अमरीकी फौज नहीं हटाई जा रही है।

* * *

अमरीका की कृपणता

हिन्द-एशिया में हिन्दुस्तानी उस देश के रहनेवालों को गोली का निशाना बना रहे हैं। इस पर भी हिन्द-एशियावासी कठिनतम लड़ाई लडते हुए हिन्दुस्तान को चावल भेज रहे हैं। हिन्दुस्तानी खुद भूखों मरके लड़ाई के जमाने में अमरीकी सिपाहियोंको खूब खिलाया। वही अमरीका आज हिन्दुस्तान को अनाज देने में कृपणता कर रहा है।

* * *

स्वाधीनता के लिए

भारत की नई अस्थाई सरकार देश के सच्चे नेताओं को लेकर बनाई गई है। पुरानी अस्थायी सरकार और इस सरकार में केवल यही एक भेद है। नई अस्थायी सरकार में जङ्गी मन्त्री हिन्दुस्तानी हैं, परन्तु फौज सम्राट् की सरकार और पार्लियामेंट के मातहत रहेगी। जब तक फौज राष्ट्रीय सरकार की आज्ञा के अनुसार बिना रोक-टोक काम नहीं कर सकती तब तक राष्ट्र स्वाधीन नहीं कहलाया जा सकता। स्वाधीनता तो दूर रही, उपनिवेश का दरजा हासिल करने में भी हिन्दुस्तान को अब भी प्रयत्न करना पड़ेगा। इसीलिए वायसराय से अब कहा जायगा कि वह अधिकांश रूप में केन्द्रीय सरकार की सभा में सभापतित्व न करें। कहीं कहीं यह भी सोचा जाता है कि जब हमारी अस्थायी सरकार कायम हो गई तब आजादी भी मिल गई। यह धारणा पूर्ण रूप से भ्रमात्मक है। पं० मदनमोहन मालवीय ने कहा है कि अपने देश में अपना राज कायम करने के लिए हम लोगों को प्रयत्न करना चाहिए। ऐसी दशा में इस अस्थायी सरकार की स्थापना के बाद भी लोगों को स्वाधीनता के लिए और प्रयत्न करना चाहिए।

* * *

हैदराबाद और गोआ

समाचार मिला है कि रियासत हैदराबाद की सरकार पुर्तगाल से किसी तरह गोआ को लेना चाहती हैं। गोआ मिल जाने से हैदराबाद का अरब सागर से सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। इसी तरह वह हिन्दुस्तानी सरकार की बिना सहायता से अपना स्वतन्त्र राज्य चला सकता है। यह भी खबर है कि गोआ मिल जाने के बाद ही हैदराबाद औपनिवेशिक दरजे के लिए ब्रिटिश सरकार के पास माँग पेश करेगा। लोगों का यह भी विश्वास है कि साम्राज्यवाद की रक्षा के लिए उत्सुक ब्रिटेन हैदराबाद की माँग पूरा करेगी।

* * *

इस संवाद के प्रकाशित होने के दूसरे ही दिन हैदराबाद की सरकार के एक अफसर ने इस खबर को बाजारू कहानी कहकर उड़ा दिया। परन्तु यह स्पष्ट बात है कि हैदराबाद की सरकार इस संवाद को गलत नहीं बता रही है। हैदराबाद के सरकारी अफसर को यह बतलाना चाहिए था कि पुर्तगाल से गोआ लेने के लिए कोई चेष्टा हो रही थी अथवा नहीं?

* * *

मिस्टर जिन्ना और चर्चिल

कुछ समय से मिस्टर जिन्ना मिस्टर चर्चिल से पत्र व्यवहार कर रहे हैं। कुछ लोगों की यह धारणा है कि मिस्टर जिन्ना मिस्टर चर्चिल के कहने पर ही विधान-परिषद् और अस्थायी सरकार में भाग लेने से इन्कार कर दिया है। इन लोगों में ब्रिटिश पार्लियामेंट के सदस्य माइकेल फूट और अमरीकी पत्रकार भी हैं। कायदे आजम मिस्टर जिन्ना अभी तक सवर्ण हिन्दुओं को अपना शत्रु समझते हैं और उन लोगों को राष्ट्र का दुश्मन कहते हैं। यह आश्चर्य की बात है कि दूसरे देशों के लोग भी अब उनसे शत्रुता करने लगे हैं। शायद जो सत्य बात कहते हैं वही इस जमाने में दुश्मन कहलाते हैं।

—डी० एन० बी०

...तीय राष्ट्रीय सरकार के सदस्यों ने २ सितम्बर को शासन-शक्ति अपने हाथों में ले ली है।

...शासन-भार ग्रहण के बाद ही लिया गया है। बाईं ओर से दाहिनी ओर—श्री शरद्चन्द्र बोस, श्री जगजीवनराम, डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद, सरदार बल्लभ भाई पटेल, श्री आसफ अली, पंडित जवाहरलाल नेहरू और सैयद अली जहीर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

अपने देश में अपना राज

भारत के शासन का भार नई राष्ट्रीय सरकार ने ग्रहण कर लिया। पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा उनके साथियों ने २ सितम्बर से अपना काम शुरू कर दिया। महात्मा गांधी ने नई राष्ट्रीय सरकार को आशीर्वाद दिया। इसमें संदेह नहीं है कि २०० वर्ष के अँग्रेजी शासन के बाद यह प्रथम अवसर है जब कि केन्द्रीय शासन जनता के प्रतिनिधियों के हाथ में आया है। जनता को अपने नेताओं के नेतृत्व और कार्यों में पूरा भरोसा है। पंडित नेहरू ने शासन-भार ग्रहण करने के बाद एक वक्तव्य देते हुए जनता को आश्वासन दिया है कि वह और उनके सहयोगी सदा की भाँति जनता के सेवक बने रहेंगे। राष्ट्रीय सरकार में भारत के प्रमुख दलों के नेताओं का सहयोग प्राप्त है। केवल मुसलिम लीग का सहयोग प्राप्त नहीं है। किन्तु पंडित नेहरू को अब भी आशा है कि मुसलिम लीग अपना निर्णय बदल कर सरकार में सम्मिलित होने का निर्णय करेगी और इसके लिये सहयोग का दरवाजा सदा खुला हुआ है।

हम नई राष्ट्रीय सरकार का स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि पंडित नेहरू के नेतृत्व में सरकार जनहित के कार्यों में तथा पूर्ण स्वतंत्रता की प्राप्ति में अधिक से अधिक मार्ग प्रशस्त करती जायेगी। यद्यपि हम जानते हैं कि नई सरकार के सामने अनेक कठिनाइयाँ भी हैं। वातावरण, कार्यपद्धति तथा नियम और कानून वही पुराने हैं केवल व्यक्तियों का परिवर्तन हुआ है। पहले शासन दकियानूसी व्यक्तियों के हाथ में था और अब जनता के प्रतिनिधियों के। इसलिए भविष्य में यदि कठिनाइयाँ उत्पन्न हों तो आश्चर्य नहीं। फिर भी तब से और आज के शासकों की विचारधारा और कार्य-प्रणाली में महान् अंतर है। इसलिए वातावरण तथा कार्य-प्रणाली में भी महान् परिवर्तन होगा, इसमें संदेह नहीं है। आज देश परिवर्तन और जागरण के पथ पर अग्रसर है। पंडित नेहरू, सरदार पटेल, डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ऐसे अन्तराष्ट्रीय ख्याति के राष्ट्रवादियों और नेताओं के हाथ में भारतीय स्वतंत्रता सुरक्षित रहेगी, इसमें संदेह नहीं है। इसलिए हम राष्ट्रीय सरकार का स्वागत करते हैं।

* * *

शान्ति अथवा युद्ध !

पेरिस में होनेवाले संसार के २१ राष्ट्रों का शान्ति-सम्मेलन असफल होता हुआ दिखाई दे रहा है। संसार ने युद्ध के पश्चात शांति की एक साँस ली थी परन्तु उसमें कितना स्थायित्व है, यह विचारणीय है। शान्ति-सम्मेलन के सामने ग्रीस (बाल्कन प्रदेशों) को लेकर एक नई समस्या उपस्थित हो गई है। ग्रीस, अल्बानिया तथा यूगोस्लाविया की सीमाओं के संबंध में झगड़े उठ खड़े हुए हैं। इनको दूर करना सरल नहीं है। इसके अतिरिक्त तटस्थ और अन्य राष्ट्रों के संयुक्त राष्ट्रों में सम्मिलित होने के सम्बन्ध में भी गम्भीर मतभेद है। परन्तु यह सब तय होकर भी तय के बराबर नहीं कहा जा सकता। स्वीडेन, आइसलैंड और अफगानिस्तान को संयुक्त राष्ट्रों में सम्मिलित कर लिया गया है परन्तु अन्य पाँच राष्ट्रों को ब्रिटेन अमेरिका और रूस की कोप-दृष्टि का शिकार बनना पड़ा है। अल्बानिया, मंगोलिया, आयरलैंड, पुर्तगाल और ट्रान्सजार्डन को संयुक्त राष्ट्र में सम्मिलित करने के लिए बहुमत तो प्राप्त था परन्तु ब्रिटेन ने अल्बानिया, मंगोलिया तथा रूस ने आयरलैंड, पुर्तगाल और ट्रान्सजार्डन का विरोध किया। यह स्थिति है शान्ति परिषद् की। ग्रीस की समस्या को लेकर इतना कटुवादविवाद हुआ है कि परिस्थिति सुलझने के बजाय एक बड़ी उलझन में पड़ गई है। आस्ट्रेलिया मत देने की पद्धति से अत्यन्त असंतुष्ट है। संयुक्त राष्ट्रों में दो दल हो गये हैं। बारह राष्ट्रों का एक समूह ब्रिटेन और अमेरिका का और सात राष्ट्रों का दूसरा समूह रूस का समर्थन करता है। दो राष्ट्र कारणवश तटस्थ रहते हैं। जब ऐसी स्थिति शान्ति सम्मेलन में मौजूद है तब संसार में शान्ति की आशा ही कहाँ तक संभव हो सकती है?

अमेरिका, ब्रिटेन और रूस अपने अपने वैज्ञानिकों को ध्वंसकारी अस्त्रों और अणुबम बनाने का आदेश कर रहे हैं। डाक्टर बर्नार्ड बारूश ने न्यूयार्क में एक वक्तव्य देते हुये कहा है कि 'यदि संयुक्त राष्ट्रों ने शान्ति के लिए कोई मार्ग न ढूँढ निकाला तो संयुक्त राष्ट्र अमेरिका बड़ा से बड़ा और अच्छा से अच्छा अणुबम बनायेगा।' रूस के वैज्ञानिक भी अणुबम के पीछे हाथ धोकर पड़ गये हैं। जर्मनी के वैज्ञानिकों से रूस इस मामले में काफी सहायता ले रहा है। इँगलैण्ड के वायुयान भी कई प्रकार की परीक्षा कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त ब्रिटेन की सेनायें फारस की खाड़ी में पहुँच रही हैं। फारस संयुक्तराष्ट्रों के सामने एक बड़ी समस्या है। रूस की टर्की के दर्रे दानियाल पर अधिकार की माँग ने शन्ति सम्मेलन में जबरदस्त अशान्ति पैदा कर दी है। यद्यपि अभी निकट भविष्य में युद्ध के लक्षण दिखलाई नहीं पड़ते परन्तु सेना सम्बन्धी एक प्रस्ताव पिछले दिनों शान्ति सम्मेलन में पेश हुआ है—"सभी राष्ट्रों की सैनिक शक्ति की रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्रों के पास दो सप्ताह के अन्दर आ जानी चाहिए—" इस प्रस्ताव को ब्रिटेन तथा उसके सहायकों ने गिरा दिया है।

एक तरफ शान्ति चर्चा और सैनिक तैयारियाँ। प्रत्येक राष्ट्र स्थिति को छिपा रहा है। है कि एक बार डाक्टर जर्मनी के प्रचार मंत्री और अमेरिका को सम्बोधित कहा था—"पूर्व से कम्युनिज्म दीवाल गिरती आ रही है। जर्मनी ही अकेला न दबेगा योरप के सारे देश उस दीवाल होंगे।" आज गोबेल्स की सत्य होने जा रही है। मुस्लिम कम्युनिज्म का जोर बढ़ रहा है। सारे पूर्वी राष्ट्र ही नहीं बल्कि तथा पुर्तगाल को छोड़कर सारे निज्म की ओर जा रहे हैं। सम्मेलन में ब्रिटेन और अमेरिका तो उनके उपनिवेशों का मत प्राप्त गिने इटली जैसे राष्ट्र का। युग में ब्रिटेन और अमेरिका हैं। इसलिए शान्ति सम्मेलन की कोई आशा नहीं झलकती। पेरिस के राज्यप्रासादों से एक प्राप्त हो रहा है—तीसरा महायुद्ध

तब सपना !

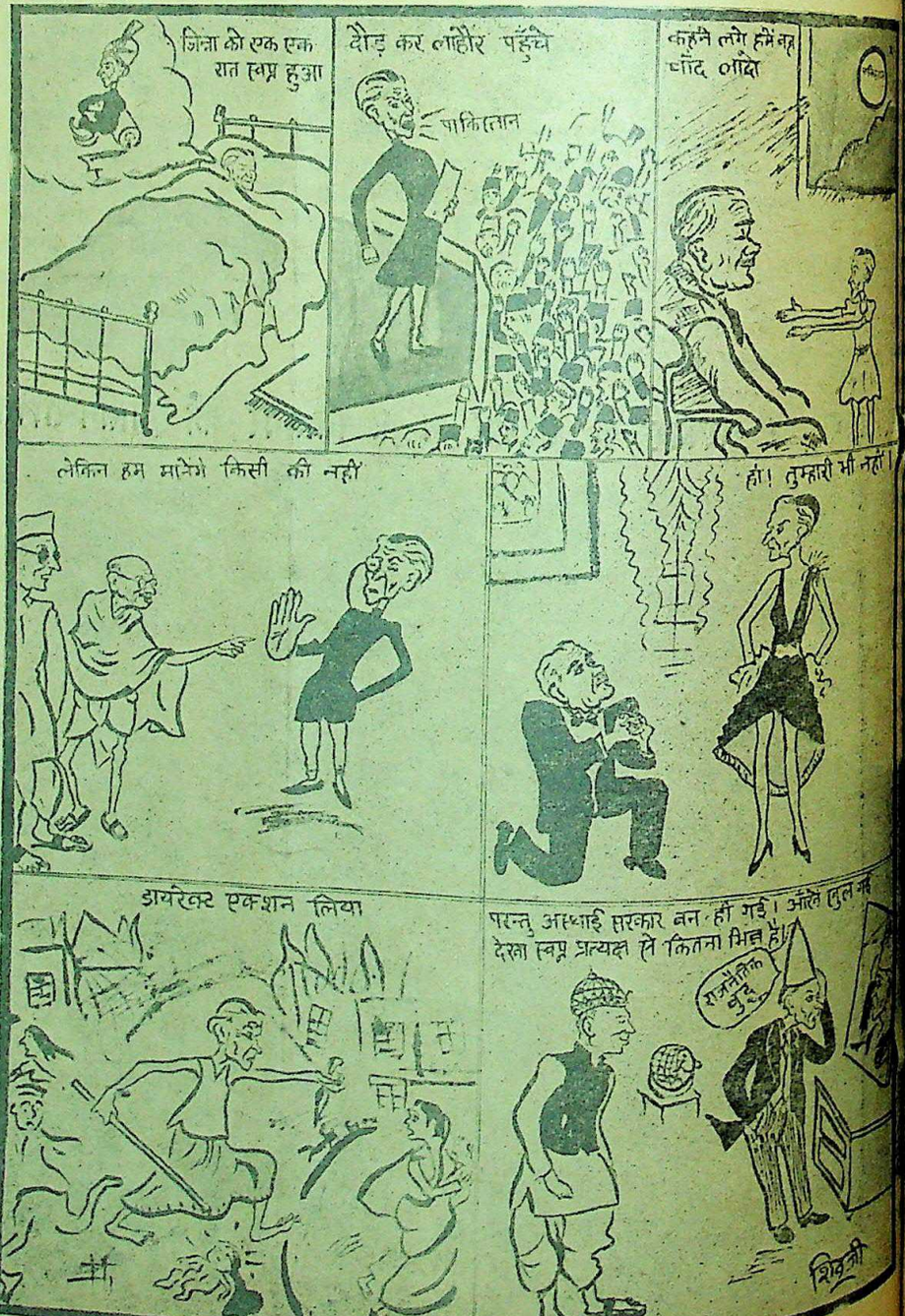

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तर्कालीन केन्द्रीय सरकार

राष्ट्र की व्यापक समस्याओं का हल कैसे होगा?

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

भारतीय राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हो गई है। पंडित नेहरू के नेतृत्व में नये सदस्यों ने अपना विभागीय कार्य प्रारम्भ कर दिया है। नई सरकार के सामने राष्ट्र की व्यापक समस्याओं के हल करने का प्रश्न उपस्थित है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने अन्तर्कालीन सरकार के सामने उपस्थित समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए यह बतलाया है कि उनके हल का क्या उपाय है। लेख अत्यन्त सामयिक और विचारणीय है।

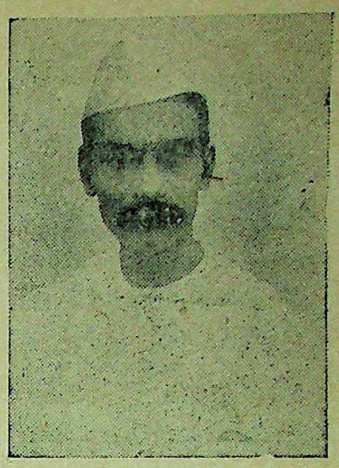

भारत-सरकार के नये खाद्य-सदस्य देशरत्न डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद।

गवर्नमेंट के संस्थापक महात्मा गांधी में अपूर्व समता है। विशाखदत्त ने आचार्य चाणक्य की कुटिया का वर्णन इस प्रकार किया है :—

उपलशकलमेतद् भेदकं गोमयान्तं
वटुभिरुपहृतानां बर्हिषां स्तोम एषः।
शरणमपि समिद्भिः शुष्यमाणाभिरामि—
र्विनमितपटलान्तं दृश्यते जीर्णकुड्यम्॥

सेगांव के सन्त की कुटिया इस 'एटम-युग' में पुरानी स्मृति को ताजा कर देती है। गांधी जी की तपस्या उनकी महान् साधना और उनका महान् त्याग आज सफल हुआ है कि जर्मन-विजयी ब्रिटिश साम्राज्य की अतुल शक्ति को उन्होंने

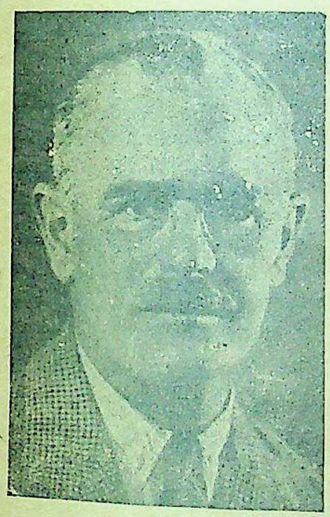

भारत के वाइसराय लार्ड वैवेल।

बिना सेना, और शस्त्रास्त्रों की सहायता के भारत से छोड़कर चले जाने के लिए तैयार कर दिया है। अहिंसात्मक जन-क्रान्ति का दुनिया के इतिहास में यह बेजोड़ उदाहरण है। पिछले पच्चीस साल में भारत ने आयरलैंड और स्वाधीनता के लिए प्रयत्नशील देशों के मुकाबले स्वाधीनता-प्राप्ति के लिए बहुत कम नर-बलि दी है, बहुत कम रक्त-पात देखा है, और बहुत कम नुक़सान सहा है। यह गांधी जी की नीति और महिमा का प्रभाव है। लँगोटीवन्द गांधी का यह चमत्कार है। यह वस्तुतः धोती-क्रान्ति है और इसका श्रेय गांधी जी को है।

कुटिल चाल

द्वितीय विश्व महायुद्ध छिड़ने पर राष्ट्रीय गवर्नमेंट बनाने का प्रश्न उस समय भी उठा था। पर लार्ड लिनलिथगो की कुटिल चाल के कारण उस समय राष्ट्रीय गवर्नमेंट नहीं बन सकी। ८ अगस्त १९४० की घोषणा में कहा गया था, कि वाइसराय की कौंसिल का विस्तार किया जायगा, जिससे राजनीतिक पार्टियों के प्रतिनिधियों को उसमें सम्मिलित किया जा सके। कांग्रेस की माँग थी कि केन्द्रीय असेम्बली की विभिन्न पार्टियों का विश्वास प्राप्त करनेवाली और कमान करनेवाली राष्ट्रीय गवर्नमेंट बनाई जाय। मगर वह नहीं मानी गई।

मगर लार्ड लिनलिथगो ने एक और कुटिल चाल चली। ८ अगस्त १९४० की घोषणा द्वारा मि० जिन्ना और मुस्लिम लीग के हाथ में 'वीटो' की शक्ति दे दी और भारतीय स्वाधीनता की प्रगति को उनकी दया पर छोड़ दिया। घोषणा में कहा गया था—भारत की शान्ति और मंगल की अपनी वर्तमान जिम्मेदारी को ब्रिटिश गवर्नमेंट ऐसी प्रणाली या पद्धति को हस्तान्तरित नहीं कर सकती जिस गवर्नमेंट की सत्ता और अधिकार को भारतीय राष्ट्रीय जीवन का महत्त्वपूर्ण और शक्तिशाली विशाल तत्त्व मानने से इन्कार करे। न वह इस प्रकार के तत्त्व को डरा-धमकाकर इस प्रकार की गवर्नमेंट की अधीनता स्वीकार करने के लिए विवश करने में वह पार्टी होगी। आज मि० जिन्ना ब्रिटिश सरकार द्वारा दिये गये इसी आश्वासन की दुहाई देकर उस पर विश्वासघात करने का आरोप कर रहे हैं।

अन्य प्रयत्न

जापान का भारत पर आक्रमण होने का खतरा बढ़ जाने पर चर्चिल गवर्नमेंट ने क्रिप्स-योजना के रूप में भारत के सामने पुनः सहयोग का प्रस्ताव रखा। ब्रिटिश गवर्नमेंट ने तत्काल भारतीय जनता के मुख्य वर्गों को देश, ब्रिटिश कामनवेल्थ और संयुक्त राष्ट्र-संघ की कौंसिलों में प्रभावशाली भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया। मगर युद्ध का विषय सुरक्षित रखते हुए भी राष्ट्रीय गवर्नमेंट की कोई निश्चित परिभाषा नहीं की गई थी और प्रेसीडेंट रूजवेल्ट के प्रतिनिधि कर्नल जान्सन के हस्तक्षेप करने पर भी कोई समझौता न हो सका और क्रिप्स-योजना को देश के विभिन्न दलों ने ठुकरा दिया।

१९४५ में

१४ जून १९४५ में लार्ड वैवेल ने घोषणा की कि वाइसराय की कौंसिल का पूर्णतः भारतीयकरण किया जायगा। युद्ध-विभाग केवल भारतीय के पास न रहेगा और परराष्ट्र-विभाग भारतीय के हाथ में रहेगा। वाइसराय केन्द्र और प्रान्तों के नेताओं में से कौंसिल के सदस्यों को इस अनुपात से चुनेंगे, मुख्य जातियों का प्रतिनिधित्व सन्तुलित हो और मुसलमानों और सवर्ण हिन्दुओं का समान प्रतिनिधित्व होगा।

इस योजना में भी मि० जिन्ना और लीग के हाथ वीटो अधिकार रखा गया था। इस योजना पर विचार करने के लिए बुलाई गई शिमला कान्फ्रेंस विफल हो गई, क्योंकि मि० जिन्ना का आग्रह था कि कौंसिल की सब मुस्लिम सीटें लीग के नुमाइन्दों को ही दी जायँ। वाइसराय ने इस बात को नहीं माना। मि० चर्चिल कांग्रेस और लीग के सहमत हुए बगैर आगे बढ़ने को तैयार न थे। फलतः गति-अवरोध बना रहा।

एटली की घोषणा

१५ मार्च १९४६ को ब्रिटिश पार्लमेंट में मि० एटली ने घोषणा की कि भारतवर्ष तत्काल स्वाधीनता के पक्ष में वोट देने को स्वतन्त्र है और बहुमत की प्रगति को रोकने के लिए किसी भी अल्प-संख्यक वर्ग को 'वीटो' का अधिकार न दिया जायगा। मि० जिन्ना के आग्रह से इसमें लारेंस-मिशन ने परिवर्तन किया कि यदि कोई पार्टी मिशन-योजना (१६ मई की) को स्वीकार न करे, तो उसको छोड़ दिया जाय और स्वीकार करनेवाली पार्टी को गवर्नमेंट बनाने दिया जाय। मि० जिन्ना को आशा थी कि कांग्रेस दूर भागी योजना को अस्वीकार कर देगी। २९ जुलाई को लीग कान्फ्रेंस में मि० जिन्ना ने भाषण देते हुए अपने हृदय के इस भाव को छिपाया नहीं और कांग्रेस पर आरोप किया कि उसने अपने सिद्धान्त का परित्याग करके दूरगामी योजना को स्वीकार किया है। मि० जिन्ना और लीग द्वारा १६ मई और १६ जून की दोनों योजनाओं को अस्वीकार करने पर वायसराय ने श्री नेहरू को मन्त्रिमण्डल बनाने के लिए आमन्त्रित किया।

अब तक वायसराय अपनी कौंसिल के

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

भारतीय राष्ट्रीय सरकार के मुस्लिम सदस्य श्री आसफअली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेडियो-कमेटी क्या कर रही है ?

हिन्दी, उर्दू हिन्दुस्तानी की समस्या कब हल होगी ?

लेखक, श्री रविशङ्कर शुक्ल, बी० ए०, एल०-एल० बी०

भारत सरकार के सूचना तथा ब्राडकास्टिंग सदस्य सरदार वल्लभ भाई पटेल।

(१)

जब से हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने रेडियो सलाहकार कमेटी में अपना प्रतिनिधि भेजना स्वीकृत किया तब से अब तक उस कमेटी की तीन-चार बैठकें हो चुकी हैं, परन्तु रेडियो की नीति में रत्ती भर परिवर्तन लक्षित नहीं होता। समाचारों की भाषा वही है, स्टाफ में उर्दूवालों का उसी प्रकार बोल-बाला है और 'हिन्दुस्तानी' की आड़ में उसी प्रकार हिन्दी की दस-पाँच प्रतिशत और शेष उर्दू की चीजें हो रही हैं। सम्मेलन के अधिकारियों का कर्तव्य है कि वे हिन्दी-संसार को बतावें कि इन बैठकों में क्या हुआ और आगे क्या होनेवाला है ? सर अकबर हैदरी की बैठाई हुई ऐड-हाक कमेटी ने यह सिफारिश की थी कि खबरों को छोड़कर हिन्दी की चीजें अलग और उर्दू की चीजें अलग हों, और सर-कार ने इस सिफारिश को स्वीकार कर लिया था, परन्तु अभी तक इस सिफारिश पर भी अमल आरम्भ नहीं हुआ। भाषणों, नाटकों आदि चीजों के आगे अब भी उसी प्रकार 'हिन्दुस्तानी में' लिखा जाता है, और एक हिन्दी सुनने-वाला पहले से यह मालूम नहीं कर सकता कि कौन-सी चीज हिन्दी में है और कौन-सी उर्दू में जिससे वह अपना कार्य-क्रम निश्चित और अपने समय का सदुपयोग कर सके। और स्त्रियों तथा बच्चों के प्रोग्राम सुननेवाली हिंदी स्त्रियों और बच्चों का तीन चौथाई समय उसी प्रकार नष्ट होता है। वस्तुतः 'लिसनर' से 'हिन्दी' शब्द अब भी पूर्ववत् पूर्ण रूप से बहिष्कृत है। हम यह जानना चाहते हैं कि सम्मेलन का प्रतिनिधि अभी तक सरकार द्वारा स्वीकृत इस सिफारिश पर भी अमल कराने में क्यों असमर्थ रहा, और प्रत्येक स्टेशन के लिए हिन्दी और उर्दू की चीजों का अनुपात अभी तक निश्चित हुआ या नहीं, और यदि हुआ है तो वह क्या है और उस पर अमल किस शुभ घड़ी से आरम्भ होगा ?

अब समाचारों को लीजिए। हम यह कदापि स्वीकार नहीं कर सकते कि भारत के रेडियो से सब प्रान्तीय भाषाओं में समाचार हों परन्तु 'हिन्दी' में न हों। जहाँ तक प्रान्तीय भाषा हिन्दी का सम्बन्ध है, हमें किसी दूसरी भाषा, राष्ट्र-भाषा, 'हिन्दुस्तानी' आदि से कोई मतलब नहीं। 'हिन्दी' भारत में है, एक हजार वर्ष से है, उसे लाखों आदमी पढ़ते और लिखते हैं और उसमें समाचार ब्राडकास्ट करने पड़ेंगे, उसके अतिरिक्त समाचार किसी दूसरी भाषा या राष्ट्र-भाषा या 'हिन्दुस्तानी' में ब्राडकास्ट किये जायँ अथवा न किये जायँ। यदि भारत में उर्दू भी बोली या लिखी जाती है तो उर्दूवालों को उर्दू मुबा-रक हो। हम इस कारण 'हिन्दी' शैली के स्थान में किसी दूसरी शैली को कदापि स्वीकार नहीं कर सकते। कामन-भाषा या राष्ट्रभाषा का मामला विवादग्रस्त हो सकता है, परन्तु 'हिन्दी' भारत की एक व्यापक भाषा है, यह विवादग्रस्त नहीं है और उसे कम से कम वही स्थान मिलना चाहिए जो अन्य भारतीय भाषाओं को प्राप्त है। इसका अर्थ यह है कि 'हिन्दी' में तो समाचार कल से ही आरम्भ हो जाने चाहिए। उसके बाद रेडियो सलाह-कार कमेटी राष्ट्र-भाषा, कामन-भाषा, 'हिन्दुस्तानी' इत्यादि का स्वरूप तय करती रहे और जब वह सर्व-सम्मति से तय हो जाय तो उसमें भी चाहे कोई प्रोग्राम ब्राडकास्ट किया जाय। हम जानना चाहते हैं कि इस विषय में सम्मेलन का क्या मत है ? अगर इससे भिन्न मत है तो क्या सम्मेलन इस बात को गवारा करेगा कि विदेशों में (और स्वदेश में भी) प्रत्येक भारतीय भाषा-भाषी तो यह कह सके कि उसकी भाषा का भारत में अस्तित्व है और उसकी भाषा में भारत के रेडियो से समाचार ब्राडकास्ट होते हैं परन्तु एक हिन्दी यह न कह सके कि भारत में 'हिन्दी' का अस्तित्व है और उसमें भार-तीय रेडियो से समाचार ब्राडकास्ट होते हैं ? यह कैसी विडम्बना होगी ? और यदि सम्मेलन का यही मत है जिसे यहाँ व्यक्त किया गया है तो सम्मेलन के प्रतिनिधि को सलाहकार कमेटी में यह कहना उचित है कि हिन्दी में समाचार ब्राडकास्ट करने के लिए 'हिन्दुस्तानी' बनने तक रुकने की कोई आवश्यकता नहीं है, और हर हालत में यह जरूरी है कि कल से ही हिन्दी में खबरें ब्राडकास्ट की जाने लगें। 'हिन्दु-स्तानी' बनने के बाद यदि हिन्दी-संसार राजी हुआ तो हिन्दी की खबरें बन्द की जा सकती हैं और यदि वह इसके लिए राजी नहीं हुआ तो उसे हिन्दी में खबरें पाने का सदैव अधिकार है। हिन्दी-संसार को इस अधिकार से सम्मेलन भी अपने हस्ताक्षर-द्वारा वंचित नहीं कर सकता। यदि सम्मेलन ने उसके विरुद्ध कोई सम-झौता किया तो उसे मानने के लिए हम बाध्य न होंगे। हिन्दी किसी व्यक्ति-विशेष या संस्था-विशेष की सम्पत्ति नहीं है। हिन्दी की सेवा करने का सबको अधिकार है, उसके जन्म-सिद्ध अधिकारों का सौदा करने का किसी को नहीं। हमारा सिद्धान्त सही और शाश्वत है। सम्मेलन को इसी पर जमना चाहिए। राष्ट्रीय सरकार अब आ गई है। पिछली सरकार ने हमारे सिद्धान्त को नहीं माना तो राष्ट्रीय सरकार को मानना पड़ेगा। थोड़े से साम-यिक लाभ के लिए इस सिद्धान्त को छोड़ कर सम्मेलन भयंकर भूल करेगा—वस्तुतः वह हिन्दी को कहीं का न रक्खेगा।

इस सम्बन्ध में एक और बात सोचने की है। सलाहकार कमेटी की बैठकें डेढ़-डेढ़ दो-दो महीने बाद होती हैं, और अधिक से अधिक दो दिन तक रहती हैं। इस प्रकार 'हिन्दुस्तानी' कितनी पीढ़ियों में बन पायेगी ? क्या तब तक इसी 'हिन्दु-स्तानी' नामधारी उर्दू में समाचार होते रहेंगे ? क्या यह श्री बोखारी की एक नई चाल नहीं है ? क्या सम्मेलन का प्रतिनिधि इतना भी नहीं कह सकता कि 'हिन्दु-स्तानी' का किस्सा एक निश्चित अवधि—अधिक से अधिक दो महीने—के अन्दर तय किया जाय और यदि इस अवधि के अन्दर तय न हो अथवा तय करना संभव न हो, तो हिन्दी में अलग समाचार आरंभ कर दिये जायँ ?

(२)

सिद्धान्त के बाद जरा विस्तार में जाने की आवश्यकता है। हर हालत में हिन्दी में अलग से समाचार अवश्य होना चाहिए, यह हमारा सिद्धान्त है। रेडियो ने इस सिद्धान्त को स्वीकार नहीं किया है। हमें इसके लिए जी-जान से लड़ना पड़ेगा। इस सिद्धान्त को अलग रखते हुए, अब हमें जरा विस्तार से दो-तीन बातों पर विचार करना है। हैदरी कमेटी की जिन सिफारिशों को सरकार ने स्वीकार कर लिया है उनका क्या परिणाम है, 'हिन्दुस्तानी' के निर्माण और प्रयोग के विषय में कौन कौन-सी बातें विचारणीय हैं और रेडियो की वर्तमान 'हिन्दुस्तानी' कैसी है ? ये सब बातें रेडियो सलाहकार कमेटी का विषय हैं। नीचे ये बातें एक मेमोरैन्डम के रूप में उपस्थित की गई हैं और अन्त में रेडियो की वर्तमान हिन्दु-स्तानी के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। हम इन दोनों की ओर सम्मेलन के प्रतिनिधि का ध्यान आकृष्ट करते हैं। आशा है उसे अपने काम में इनसे मदद मिलेगी।

मेमोरैन्डम

(अ) (१) हिन्दी की चीजों (Items) के आगे लिसनर आदि में और उनके सम्बन्ध की घोषणाओं में 'हिन्दी में' लिखा या कहा जाय।

(२) स्त्रियों तथा बालकों के प्रोग्राम अलग से हिन्दी में हों जिस प्रकार बम्बई से ये प्रोग्राम मराठी और गुजराती में अलग अलग होते हैं। इन प्रोग्रामों में वातावरण तथा अभिवादन आदि हिन्दी की संस्कृति के अनुरूप हों और उनके संचालक हिन्दी के विद्वान् हों।

(३) प्रवासी भारतीयों (Indians Overseas) के लिए अलग से हिन्दी में प्रोग्राम हों। (इस समय प्रवासी भारतीयों के प्रोग्राम प्रतिदिन अलग अलग गुजराती, तामिल, अँगरेजी और 'हिन्दुस्तानी' में भिन्न भिन्न समय पर होते हैं जिनमें से 'हिन्दुस्तानी' में प्रोग्राम दो भिन्न समयों, दोपहर और संध्या, अर्थात् दिन में दो बार होता है; इनमें से सरलता से एक बार का प्रोग्राम हिन्दी में और दूसरी बार का प्रोग्राम उर्दू में हो सकता है।)

(४) स्कूली प्रोग्राम (School Broadcast) अलग से हिन्दी में हों। (इस समय ये प्रोग्राम बम्बई से सप्ताह में

सर सुल्तान अहमद, मुख्य
कास्टिंग विभाग के मंत्री

चार दिन मराठी, गुजराती और 'हिन्दुस्तानी' में होते हैं, से सप्ताह में चार दिन देवल में होते हैं। ये प्रोग्राम बम्बई से एक दिन हिन्दी में और दि में दो दिन हिन्दी में होने

(५) दिल्ली का देहाती हिन्दी में, या हिन्दी और अलग अलग होना चाहिये का देहाती प्रोग्राम स्थानीय जैसे पेशावर का पश्तो में, पंजाबी में और लखनऊ में होता है। दिल्ली का प्रोग्राम खड़ीबोली में होता खड़ीबोली के दो साहित्यिक और उर्दू हैं, इसलिए दिल्ली प्रोग्राम हिन्दी उर्दू दोनों में होना चाहिये। चूंकि देहाती समय एक ही निश्चित है और देहाती एकत्र होते हैं, प्रतिदिन पहले हिन्दी में और उसके उर्दू में किया जा सकता है। ऐसा किया जा रहा है। वहाँ का समय दो भागों में बाँट है—पहले भाग में मराठी में होता उसके तुरन्त बाद दूसरे भाग में में (लिसनर देखिये)।

(६) अन्य मिले जुले जैसे भारत और लंका स्थित भारतीय सैनिकों का प्रोग्राम, जापान कत्ता की 'मजदूर मंडली' समय 'हिन्दुस्तानी में होते हैं, हिन्दी और उर्दू में होने प्रोग्राम का अलग अलग में दो भिन्न दिनों या करना संभव न हो, वह प्रोग्राम की भाँति एक ही हिन्दी में और फिर उर्दू में

(७) वाद-विवाद (Rad... cussions); प्रश्नोत्तरियाँ Questions and Answers pared by a Question तथा अन्य मिश्रित (composite जैसे 'मैगजीन प्रोग्राम' Programme) लहरें, आदि या तो हिन्दी में हों जिस प्रकार ये प्रोग्राम से एक समय में केवल एक हैं। (ऐसा नहीं होना चाहिये आजकल प्रायः होता है कि में एक व्यक्ति हिन्दी में बोले,

शेष पृष्ठ १२ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेषरूप से देशदूत के लिए

स्वर्गीय श्री महादेव देसाई

त्यागमय और बलिदानी जीवन का एक संस्मरण

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

गत मास में स्वर्गीय श्री महादेव देसाई की बर्षी सारे देश में मनाई गई थी। राष्ट्र के कर्णधारों ने उस अवसर पर अपनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित की थीं। इस लेख में भी श्री विद्यार्थी जी ने स्वर्गीय महादेव भाई के त्यागमय और बलिदानी जीवन का एक संस्मरण लिखते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की है। लेख अत्यन्त सुन्दर और पठनीय है और महादेव भाई के जीवन पर प्रकाश डालनेवाला है।

स्वर्गीय श्री महादेव देसाई।

स्वर्गीय महादेव भाई गांधी-साहित्य के ख्यातनामा लेखक थे। गांधी जी के विषय में उन्होंने विपुल साहित्य निर्माण किया है। गांधी जी के विषय में वे छोटी छोटी बातों को भी नोट करते थे। दिन-रात वे कुछ न कुछ लिखते रहते थे। एक एक मिनट का उपयोग करते थे। आलस्य के वे दास नहीं थे। वह नई से नई पुस्तकें मँगा कर पढ़ते थे। हर विषय की पुस्तकों का अध्ययन करते थे। अहिंसा के बारे में जहाँ कहीं कुछ प्रमाण पाते थे उसका संग्रह करते थे। बड़े लोगों की जीवनियाँ भी पढ़ते थे। मार्क्स साहित्य का भी अध्ययन किया था। उनके पुस्तकालय में हर तरह की पुस्तकें देखने में आती थीं। कुछ दिनों तक अपनी किताबों की देख-भाल के लिए मुझे भी नियुक्त किया था। मैंने देखा कि हिन्दी-साहित्य, गुजराती साहित्य, अँगरेजी साहित्य, ग्रामीण साहित्य, आरोग्य साहित्य और बाल-साहित्य की अच्छी से अच्छी पुस्तकें उनके पास मौजूद हैं। मासिक पत्रों को भी बड़े ध्यान से पढ़ते थे। जो कुछ पढ़ते थे उसका रस निकाल कर अपने लेखों-द्वारा आम जनता तक पहुँचाना चाहते थे।

(१) स्वर्गीय महादेव देसाई महात्मा गांधी के साथ

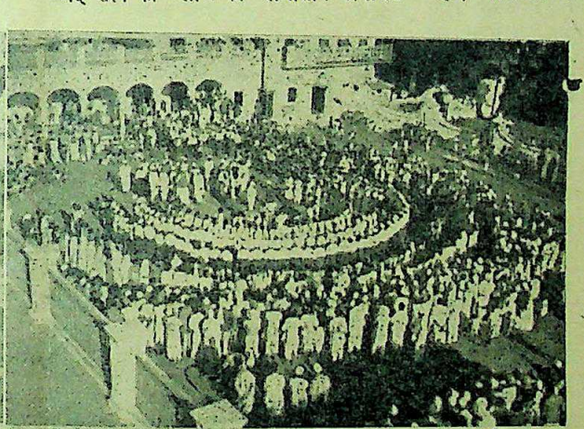

(२) स्वर्गीय महादेव देसाई वर्धा में राष्ट्रीय झंडा फहरा रहे हैं।

गांधी जी के बारे में कुछ कह सकने और लिखने के वे एक-मात्र अधिकारी माने जाते थे। गांधीवाद पर जितना अधिक साहित्य उन्होंने लिखा है उसका संग्रह यदि किया जाये तो एक विशाल ग्रंथ तैयार हो सकता है। यहाँ तक कि वे जब आगा खाँ महल में बन्दी थे तब अपने चन्द दिनों की जिन्दगी में भी गांधी जी ईश्वर किसे मानते हैं एक अच्छा नोट उनकी वाणी का लिखा था। पाठकों के लिए उसका कुछ अंश देना यहाँ उचित जान पड़ता है—"गांधी जी कहते हैं कि भगवान् के नाम अनगिनत हैं। हमारा विश्वास है—मेरे ख्याल से यह सच है—कि दुनिया में जितने प्राणी हैं, उतने ही ईश्वर के नाम हैं। इसलिए हम यह भी कहते हैं कि ईश्वर नाम रहित (बिना नाम के) है। और चूँकि ईश्वर के अनेक रूप हैं, इसलिए हम उसे निराकार भी मानते हैं। चूँकि वह कई जबानों में बोलता है, इसलिए हम उसे न बोलनेवाला मानते हैं। इसी तरह की और और बातें भी हम ईश्वर के बारे में कहते हैं। जब मैंने इस्लाम धर्म का अध्ययय किया तो मुझे पता चला कि इस्लाम धर्म में भी ईश्वर के कई नाम हैं।"

"जो लोग यह कहते हैं कि ईश्वर प्रेमरूप है, उनके साथ मैं भी यही कहता हूँ लेकिन मेरे दिल की गहराई में मैं यह मानता कि हालां कि भगवान् प्रेमस्वरूप है, फिर भी खास करके वह सत्य स्वरूप ही है। अगर इन्सान अपनी जबान से ईश्वर का पूरा पूरा और सच्चा बखान कर सकता हो तो मैं अपने तईं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि ईश्वर सत्य स्वरूप है—ईश्वर ही सत्य है। लेकिन आज से दो साल पहले मैं एक कदम और आगे बढ़ा और कहने लगा कि सत्य ही ईश्वर है। 'ईश्वर सत्य है' और 'सत्य ईश्वर है' इन दोनों के बारीक भेद को आप समझ सकेंगे। आज से ५० साल पहले शुरू की गई सत्य की खोज की लगातार अखण्ड रूप से जारी रखने की वजह से ही मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि सत्य ही ईश्वर है। तब मैंने यह पता लगाया कि प्रेम के जरिये ही हम सत्य के नजदीक पहुँच सकते हैं।" इस अवतरण पर गौर करने से पता चलता है कि गांधी जी की जबान को महादेव भाई कितनी सावधानी से लिखते थे। सही माने में महादेव भाई गांधी जी के विश्व में कोश बन गये थे। गांधी जी के सम्बन्ध में वे एक बड़े ग्रंथ की तैयारी कर रहे थे। गांधी जी की हर प्रवृत्तियों में वे ओत-प्रोत हो उठते थे। गांधी जी द्वारा जितनी नई प्रवृत्तियाँ संचालित होती थीं उनके बारे में महादेव भाई ही सुन्दर रूप से उन संस्थाओं का परिचय अपने लेखों-द्वारा जनता तक पहुँचाते थे। गांधी जी को और नई संस्था खोलने की क्यों आवश्यकता हुई आदि बातों पर वे बड़े सुन्दर ढंग से प्रकाश छोड़ते थे।

गांधी-मिशन का अधिक से अधिक प्रचार हो और जनता उनकी प्रवृत्तियों को अपनाये यह महादेव भाई के लेखों को पढ़कर जाना जा सकता है। अन्त समय तक वे गांधी जी में ओत-प्रोत थे। कई भाषाओं के जानकार थे। अँगरेजी के वे कि धुरंधर पंडित थे। उनके लिखे अँगरेजी लेखों को पढ़ने से पता चलता है वे कितनी सुन्दर सरस धारा-प्रवाह अँगरेजी लिखते थे। गुजराती तो उनकी मातृ-भाषा ही थी। गुजराती-साहित्य को प्रौढ़ अवस्था पर पहुँचाने में स्वर्गीय महादेव भाई का कम हाथ नहीं? अंतिम दिनों में अपनी मातृ-भाषा में कितने ही मूल लेख गुजराती में लिखे हैं। पंडित जवाहरलाल जी की 'मेरी कहानी' का अँगरेजी से गुजराती अनुवाद स्वय महादेव भाई ने ही किया है। पण्डित जी की लिखी अँगरेजी में उनकी जीवनी पढ़कर वह इतने खुश हो उठे थे कि तुरन्त ही उन्होंने पंडित जी से कहा कि मैं स्वयं इसका अनुवाद करूँगा। गुजराती अनुवाद का काम अपने हाथ में लिया। एक तरफ महात्मा जी के कामों का पहाड़ जैसा बोझ, दूसरी तरफ 'मेरी कहानी' जैसा अँगरेजी का कठिन अनुवाद। महादेव भाई घबड़ाये नहीं। दोनों कामों का भारी बोझ स्वयं अपने कन्धों पर उठा लिया।

गांधी जी के कामों में कमी नहीं आई। मिलनेवालों की जिज्ञासा में धक्का नहीं लगा। दिन भर बापू जी का काम करते। आये हुए पत्रों का जवाब लिखते। 'हरिजन' के लिए नोट तैयार करते। रात में अँगरेजी पुस्तक के अनुवाद के काम में लग जाते थे। सारी किताब का अनुवाद बड़े झपाटे में किया। अनुवाद करते करते रात के दो दो बज जाते थे। फिर सबेरे आये हुए पूर्वों को देखने का काम करते। थकना जानते ही नहीं थे। बिना किसी की सहायता से 'मेरी कहानी' का सुन्दर अनुवाद का काम उन्होंने पूरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया। अँगरेजी मूल में जितना रस आता है वैसा ही रस पैदा करने की कोशिश महादेव भाई ने अपने अनुवाद में की है। जिन दिनों महादेव भाई पंडित जी की अँगरेजी किताब का अनुवाद कर रहे थे उन दिनों काफी गर्मी पड़ रही थी। वह पसीने से तर-बतर होकर छत के फर्श पर लेटे-लेटे अनुवाद का काम जारी रखते थे।

महादेव भाई ने कभी मेज-कुर्सी पर बैठकर कुछ नहीं लिखा। सारा का सारा साहित्य जमीन और चटाई पर बैठकर लिखा है। सरल से सरल जीवन बिताने की कोशिश हर क्षण करते थे। काम के बोझ से कभी कभी मिलनेवालों के साथ वह कटु भी हो जाते थे लेकिन वह उसके लिए पछताते थे। माफी भी माँग लेते थे। मगनवाड़ी से ५ मील दूर सेवाग्राम बापू जी से मिलने और सारा पत्र-व्यवहार एक झोले में भरकर पैदल आते-जाते थे। कभी तो जोर की गर्मी पड़ रही है नंगे सिर बगल में थैला लिये खेतों में से सेवाग्राम जा रहे हैं कभी जोर की बारिश में ओवरकोट पहिने झमझम पानी में भीगते-भागते लौटे मगनवाड़ी में जाते थे। आने के बाद कुछ खा पीकर फिर अपने काम में लग जाते थे। महादेव भाई केवल कुशल सेक्रेटरी ही नहीं थे बल्कि एक ऊँचे दर्जे के साहित्यकार और नेता भी थे। मौलाना आजाद, खान अब्दुल गफ्फार खाँ (दो खुदाई खिदमदगार) बारडोली का सत्याग्रह और गांधी जी की आत्मकथा अँगरेजी में लिखी हैं। पुस्तकों को अपने विषय में अनोखे ढंग से लिखने की कोशिश की गई है।

बंगाल के आजन्म राजनैतिक बन्दियों को छुड़ाने के लिए स्वर्गीय महादेव भाई ने कम कोशिश नहीं की है। सर नाजिमुद्दीन से कई बार वे मिलने गये और बड़ी खूबी से आजन्म राजनैतिक बन्दियों के प्रश्न को भूतपूर्व प्रधान मंत्री के सामने रक्खा। गांधी जी को भी राजनैतिक बन्दियों की मनोदशा को अच्छी तरह समझाया। बड़े से बड़े काम को वे बड़ी सरलता से करते थे। कभी घबड़ाना और हताश होना उनके शब्दकोष में नहीं था। बात सन् ३६ या ३७ की है। एक दिन मैंने पूँछा—महादेव भाई, बंगाल के आजन्म कारावासी, राजनैतिक बन्दियों की रिहाई कब होगी?" उन्होंने कहा—"बापू जी और मैं—दोनों इस काम में लगे हैं। बंगाल गया था। प्रधान मंत्री से बातें हुई हैं। आशा है कुछ सफलता होगी। बापू जी को वहाँ के राजनैतिक बन्दियों का पूरा ख्याल है। अपनी शक्ति भर वे काम कर रहे हैं। धीरज रखकर काम करना है। फल खुदा के हाथ में है।"

काम करते करते महादेव भाई काफी बीमार हो जाते थे। गश भी आ जाता था फिर भी उनका पढ़ना-लिखना रुकता नहीं था। उनके बीमार होने पर एक बार बापू जी ने कहा था—"यह बीमारी उन्हें आराम देने के लिए आई है।" बापू जी को आशा थी कि वह पूर्ण आराम करेंगे लेकिन लेटे-लेटे भी कुछ न कुछ पढ़ते रहते और 'हरिजन' के लिए लेख लिखते रहते थे। उनको ऐसा लगता था कि यदि मैंने पूर्ण आराम किया तो पूज्य बापू जी को अधिक काम करना पड़ेगा और 'हरिजन' के लिए अधिक लेख उन्हीं को लिखना पड़ेगा।

गांधी जी को कम से कम काम करना पड़े इसका वे पूरा ध्यान रखते थे। गांधी जी कहते भी हैं—"महादेव मुझमें पूरी तरह खो गया था। मैं यह कह सकता हूँ कि मुझसे अलग उसकी कोई हस्ती ही नहीं रह गई थी।"

महादेव भाई बड़े सहृदय व्यक्ति थे। इसमें कोई दो राय नहीं रख सकता है। मैंने कई घटनाएँ नजदीक से देखी हैं। जब वे दूसरों की कठिनाइयों को स्नेह से सुनते थे और उसके दुःखों को दूर करने की कोशिश करते थे और बापू तक उसकी बातों को पहुँचाते थे। आश्रम के सभी छोटे बड़े भाई-बहन और बच्चे उन्हें आदर की दृष्टि से देखते थे। अपना हितेच्छु समझकर अपने हृदय की बात उन्हें बताने में धोखा नहीं समझते थे।

एक बार गांधी जी ने श्री सुशीला नायर से कहा था—"महादेव मेरा सब कपड़ा धोता था जब मैं खादी की एक भारी भरमक पगड़ी खादी की मोटी धोती पैरन और अँगरखा पहना करता था। महादेव को जो काम करना पड़ता था उसके मुकाबले तुम्हारा कपड़े धोने का काम तो बच्चों का खेल-सा लगता है। इसके अलावा वह मेरा खाना भी पकाता था मेरी तरफ से मिलता था, पत्र-व्यवहार, खत-किताबत करता था और 'यंग इंडिया' के लिए लेख भी लिखता था।"

श्री सुशीला नायर महादेव भाई के आखिरी काम के बारे में लिखती हैं—"१५ अगस्त १९४२ की आखिरी सुबह रोज के बनिस्बत वह जल्दी उठे। उन्होंने बापू के नाश्ते के लिए मौसम्बी का रस निकाला और हमारे तैयार होने के पहले ही सारे कुनबे के लिए चाय और टोस्ट तैयार किया। टोस्ट इतना अच्छा बना था कि सबने महादेव भाई की तारीफ की। अपने विनोदी स्वभाव के अनुसार उन्होंने मजाक में कहा—"तब तो कहीं भी मुझे खानसामा की जगह मिल जायगी" तब श्रीमती नायडू ने जवाब दिया—बापू की गृहस्थी में तुम क्या नहीं हो? खानसामा, चपरासी, सेक्रेटरी सब कुछ।"

महादेव भाई का जन्म सूरत जिले में हुआ था। सरस नामक एक छोटे से ग्राम में सन् १८९२ के जनवरी महीने में एक 'अनाविल' कुटुम्ब में जन्म लेकर कितने ऊँचे स्थान पर पहुँचे यह किसी से छिपा नहीं है। इनके पिता श्री स्कूल में पढ़ाने का काम करते थे। साधारण स्थिति की दशा कही जा सकती है। पिता श्री धर्म-परायण और जिज्ञासु मनोवृत्ति के थे। महादेव भाई को धर्मबुद्धि और बौद्धिक शक्ति अपने कुटुम्ब में से ही मिली थी, ऐसा कहना भी अनुचित नहीं है। पीछे जहाँ जहाँ से इनको अनुकूल वातावरण मिलता गया वहाँ वहाँ से महादेव भाई का विकास दिन-रात होता ही गया। महादेव भाई का विद्यार्थी जीवन बहुत ही उज्ज्वल और तेजस्वी था। सूरत जिले के भिन्न भिन्न देहाती स्कूलों में इनकी शिक्षा हुई थी। सूरत जिले के हाई स्कूल में प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा पूरी करके बम्बई के एल्फिन्स्टन कालेज में पढ़ने के लिए चले गये। कालेज में भी महादेव भाई की गणना तेजस्वी और होशियार छात्रों में होती थी। केवल होशियार छात्रों में गणना ही नहीं होती थी बल्कि कुशाग्र बुद्धि और होशियारी के परिणामस्वरूप कई बार छात्रवृत्ति भी मिली थी। प्रारम्भ के दिनों में महादेव भाई को भी सरकारी पदों का आकर्षण तो था ही लेकिन उस समय लोकमान्य तिलक की हलचलों का जोर था। राष्ट्रीय जागरण का जमाना था। महादेव भाई राष्ट्रीय कार्यों का गौर से अध्ययन करते थे। दुनिया में कहाँ क्या हो रहा है, सबकी पूरी खबर रखते थे। अभ्यास-क्रम के दिनों में ही उन्होंने स्वामी विवेकानन्द जी और स्वामी रामतीर्थ के ग्रंथों का अध्ययन किया। जीवन में एक नई ज्योति का प्रकाश मिला। नीति, धर्म और सदाचार का सुन्दर संस्कार महादेव भाई को अपने माता-पिता से ही मिला था लेकिन स्वामी विवेकानन्द और स्वामी रामतीर्थ के ग्रंथों से उसका और प्रभाव पड़ा।

बंगभंग, स्वदेशी आन्दोलन आदि की घटनाओं से महादेव भाई खूब अच्छी तरह परिचित थे। सरकार की दमन नीति और लोकमान्य तिलक के कालापानी की सजा से महादेव भाई बहुत अधीर हो उठे थे। १८ वर्ष की अल्प आयु में ही कांग्रेस की महासमिति की बैठकें देखने इलाहाबाद गये। कांग्रेस के कामों में खूब रस लेने लगे थे।

महादेव भाई एल० एल० बी० तो हो गये। क्या करें? विद्यार्थी-जीवन से ही अपने जीवन का आदर्श बहुत ऊँचा बना रक्खा था। ऊँचे आदर्श की कल्पना कर रक्खी थी उसे जीवन में कैसे पूरा करें यही सोचा करते थे उचित मौके की खोज में थे। सरकारी नौकरी और वकालत आदि का धन्धा ऊँचा गिना जाता था। महादेव भाई दोनों काम ठीक ढंग से कर सकते थे। महादेव भाई को अँगरेजी और गुजराती भाषा पर पूरा अधिकार था। शुरुआत के दिनों में 'ओरियेन्टल ट्रान्सलेटर आफिस' में काम किया। सरकारी कचहरी में वकालत भी की। आर्थिक दृष्टि से दोनों स्थानों में अच्छा मौका था। सहकारी विभाग में इन्स्पेक्टर के पद पर नियुक्त हुए। रुपया कमाने का बहुत अच्छा मौका मिला। लेकिन महादेव भाई का दिल इन कामों में कुछ भी नहीं लगता था। पिता जी की नौकरी खतम हो रही थी। सारे कुटुम्ब की जिम्मेदारी महादेव भाई के सिर पर आनेवाली थी। कुछ न कुछ काम महादेव भाई को करना जरूरी था लेकिन जहाँ जहाँ नौकरी आदि का धन्धा करना था, वहीं वहीं कृत्रिम आडम्बर, खुशामद आदि देखकर महादेव भाई का स्वतन्त्र मिजाज घबड़ा जाता था। अपने निर्भयपन को उसमें जोड़ नहीं पाते थे। महादेव भाई का निर्मल हृदय गन्दे वातावरण में नहीं लग सका। कचहरी और सरकारी नौकरियों में इनका दिल अधिक समय के लिए नहीं लग सका। जहाँ अपने सिद्धान्त के प्रतिकूल वातावरण मालूम देता वहाँ वहाँ से त्यागपत्र देकर अलग हो जाते। अपने ऊँचे आदर्श के लिए प्रयत्नशील थे। इसी बीच सन् १९१६ में गांधी जी के परिचय में आ गये मई १९१७ की सातवीं तारीख को महात्मा गांधी के राष्ट्रीयशाला के जीवन में शरीक हो गये। तब से सन् १९४२ तक लगातार वे बापू जी के साथ परछाईं की तरह लगे रहे। एक लम्बा इतिहास है। राष्ट्रीय आन्दोलनों में बराबर देश के

साथ रहे। बापू जी के [illegible] सन् १९२१ में प्रथम बार [illegible] १००) रुपये का जुर्माना भी [illegible] यातनाओं को भुगता। [illegible] वर्ताव से इनके जीवन [illegible] लगी और बहुत दुखी हुए। [illegible] में पूरी सजा काटकर बाहर [illegible] बाद तो कई बार जेल गये [illegible] जी की अनुपस्थिति में [illegible] दारियों को खूबी के साथ [illegible] उनके प्रसिद्ध पत्र 'यंग इंडिया' [illegible] जीवन' आदि साप्ताहिक का [illegible] अच्छा नाम कमाया। [illegible] नेहरू के साथ काम किया। [illegible] नामक अँगरेजी पत्र का [illegible] किया। सरकार ने जब [illegible] लिया तब उसे हाथ से [illegible] जेल में पंडित नेहरू के साथ [illegible] कई महीने लखनऊ में रहे।

देश के सभी गण्यमान्य [illegible] साथ आपका बहुत अच्छा [illegible] सम्बन्ध था। सरदार वल्लभ [illegible] देशरत्न राजेन्द्र बाबू, पं० [illegible] और राजगोपालाचारी जैसे [illegible] आपकी सलाह समय समय [illegible] सरदार वल्लभभाई पटेल [illegible] आदरणीय भाई ही बन गये [illegible] में गाढ़ी मैत्री थी। देश-विदेश [illegible] गण्यमान्य नेता और कार्यकर्ता [illegible] जानते थे। सारे देश में [illegible] लेखों को लोग चाव से पढ़ते थे।

सुशीला नायर एक जगह [illegible] "१९१७ में महादेव भाई बापू के [illegible] के बाद एक दिन दोनों बड़ी लम्बी [illegible] कहीं के लिए सफर कर रहे थे। [illegible] के लिए लेट गये और महादेव [illegible] पर पंखा करने लगे। पर [illegible] वजह से वे खुद ही गहरी नींद [illegible] गये। और जब शोकर उठे, [illegible] उन पर पंखा कर रहे थे। मौसम [illegible] गर्म था कि जब महादेव सोते [illegible] और पंखा बन्द हो गया तो झट [illegible] पड़े। उठते ही वे पंखा लेकर [illegible] ममता के साथ महादेव भाई पर [illegible] लगे, बापू महादेव भाई के [illegible] पिता थे। महादेव भाई की [illegible] सुशीला बहिन से अपने हृदय [illegible] बताते हुए कहते हैं "महादेव [illegible] बस वेल (जीवनी लिखनेवाला) [illegible] चाहता था। फिर भी मुझसे [illegible] गया। इससे अच्छा वह क्या [illegible] था? सो तो वह चला गया, [illegible] अपनी जीवनी लिखने का [illegible] छोड़ गया। यह कुदरत का कैसा [illegible] एक दूसरे मौके पर फिर [illegible] कहा "बच्चे अपने माँ-बाप के [illegible] चाहें इससे बढ़कर बेरहमी और [illegible] सकती है। यह उनका निरा [illegible] फिर अपनी "फिलॉसफी" के [illegible] "भले ही मैं दूसरों को इस बात [illegible] न दिला सकूँ लेकिन मैं यह [illegible] कि मौत कभी वक्त से पहले [illegible] दुनिया में अपना काम खत्म [illegible] कोई मर्द या औरत कभी [illegible] महादेव ने पचास साल में [illegible] काम पूरा कर डाला था। [illegible] करने चला गया; उस पर [illegible] हक था।

महादेव भाई ने [illegible] में जीतोड़ मेहनत की [illegible]

शेष पृष्ठ १५ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जूठन का ढेर

लेखक, श्री राजेन्द्र शर्मा

गरीबी मानव-जीवन का एक अभिशाप है। कितने ही गरीब अपने पेट की ज्वाला में त्रस्त होते रहते हैं किन्तु उनकी कौन परवाह करता है, न सरकार और न अपने स्वार्थों में लिप्त मानव! कलावती भी जीवन की यातनाओं से भिखारिन बन गई थी। उसकी भी अंत में वही दशा हुई जो आज निरीह प्राणियों के लिए स्वाभाविक है। कहानी अत्यन्त मार्मिक है और दुर्भाग्यपूर्ण जीवन का एक व्यथित चित्र प्रस्तुत करती है।

रायबहादुर ने कहा यह कौन बाहर शोर मचा रहा है?

भी मानव ही है, दो हाथ, दो पैर, दो आँख, और एक मुँह और एक पेटवाला। फलवाले अपनी सुरीली, आकर्षक आवाज लगाते इधर से गुजरते हैं, और हाथ में चमड़े का टुकड़ा लिये, "काम मोची!" की आवाज लगाते हुए चमार भी। फटे-मैले कपड़ोंवाले श्रमजीवी भी, और मध्य-वर्ग के बाबू भी जिन्होंने अपनी भूख-बेचारी का गला टाई से घोंट-सा रक्खा है। सर पर भारी बोझ लादे हुए डेढ़ हड्डी पसलीवाला मजदूर भी, और 'अबे, जरा-सी दूर में ही थक गया, साले! वहाँ से लपककर उठा ला।' कहनेवाला भरे

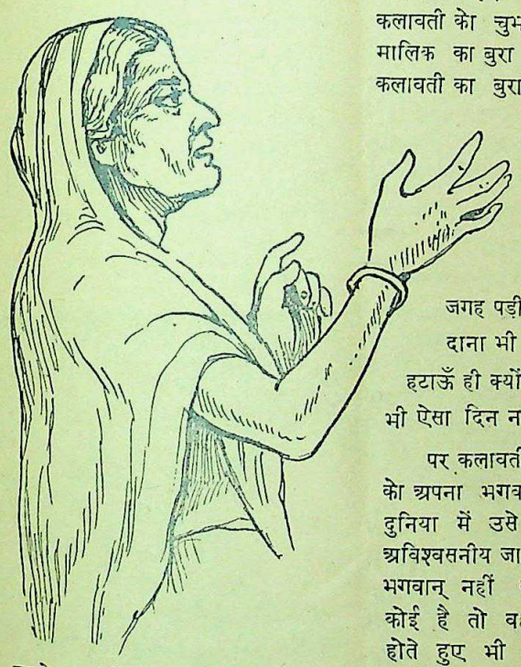

उसने राहगीरों से कहा—मेरा बच्चा भूखा है, कुछ दे दो।

पेट का लाला भी। किसी से कुछ नहीं माँगा उसने। केवल दुनिया देखी है, दुनियावालों की दुनियादारी देखी है। दुनिया के मानव की मानवता देखी है। किसी से कुछ माँगा नहीं है।

है तो माँगनेवाली ही भिखारिन, पर कलावती ने माँगा कुछ नहीं है। हाँ, अपने गनपत के लिए अपने पेट पर कभी-कभी हाथ पटक कर और कभी माथा ठोंक कर इतना जरूर कहा है, 'दाता, मेरा बच्चा भूखा है।" केवल भूख का ही प्रदर्शन उसने किया है, अकर्मण्यता का नहीं। कभी नहीं। जब मानव ने अपने सगे को भिक्षुक बना दिया, तो उसमें कर्मण्यता देखने का उसे अधिकार भी है क्या? कलावती माँग कर भी नहीं माँगती। विवशता ने उसकी सरस्वती को कुंद कर दिया है; शरीर को प्राण की उपस्थिति में भी निष्प्राण कर दिया है। पर कलावती के भीतर जो माँ है, उसकी ममता वह नहीं छीन सकी।

इसी से तो कलावती मर कर भी अभी जी रही है। जीकर मरना भी नहीं चाहती। मोह प्राणों का नहीं, कुछ है तो गनपत का।

* * *

रायबहादुर साहब ने कई बार सिद्दू से कहा कि इन भँगती से कह दे, हमारी दीवार के साथ न बैठा करे। पर सिद्दू ने गरीबी का सुख-चैन अपने आप देखा है, कलावती पर वह न जाने क्यों कृपा-दृष्टि रखता है। कभी उसने भूल कर भी कलावती को चुभती हुई बात न कही। मालिक का बुरा बन गया, पर उसने कलावती का बुरा न बनने का तो प्रण-सा ठान लिया था। वह सोचता—"अपना क्या लेती है! सड़क क्या हमारे ही बाप की है! बेचारी पेट की खातिर इस जगह पड़ी रहती है। मालिक अन्न दाना भी नहीं देने देते, तो इसे हटाऊँ ही क्यों! हे भगवान्! शत्रु को भी ऐसा दिन न दिखाये।"

पर कलावती इतने पर भी सिद्दू को अपना भगवान् नहीं समझती। इस दुनिया में उसे भगवान् का अस्तित्व अविश्वसनीय जान पड़ता है, वह किसी को भगवान् नहीं समझती। भगवान् कहीं कोई है तो वह अंधा है। सहस्र आँखें होते हुए भी अंधा है। उसकी सृष्टि अंधी है। फिर भी वह जानती है, दुनिया का भगवान् है। इसी से वह यहाँ बैठे-बैठे भगवान् की दुहाई दिया करती है। 'भगवान्, तुम्हारा भला करे। मेरे बच्चे को दो दिन से दाना नहीं मिला।'

दिन भर में कहीं बीस बार वह ऐसी दुहाई देती है और पर सैकड़ों बार इसका उत्तर सुनती है। आने-जानेवालों में वह सभी से तो नहीं माँगती। फिर भी वहाँ से सब दाता ही तो गुजरते हैं। नीची गरदन किये, फटी धोती के आँचल में ढके हुए कानों से वह सुनती है—"दुनिया में आग लग रही है, माँगनेवाले जाने कहाँ से इतने फट पड़े हैं..."

"कलकत्ते की तरह मरेंगे भूखों यहाँ भी!"

कलावती गनपत की ओर देखती है; काँपते हाथों उसे धड़कते कलेजे में छिपा लेती है। राहगीर हँसते हुए निकल जाते हैं। नीली पड़ी कलावती धीरे-धीरे सफेद पड़ जाती है। नित्य का यही क्रम है।

कलावती एक साहूकार को देखकर एक दिन बोली—"दाता, बच्चा भूखा है।" और उसने सुना—"भूखा है तो क्या करूँ? हमें भर पेट नहीं मिलता, तो तुम्हें कहाँ से देंगे।" वह एक सेर मुँह से कुतरता हुआ आगे बढ़ा। कलावती की पत्थर-सी छाती टुकड़े-टुकड़े भी तो नहीं हुई। वह जैसे संज्ञाहीन हो। पदचाप भी कभी-कभी नहीं सुन पड़ते। झुकी-झुकी गरदन नहीं दुखती। आँखें उस कोलतार की सड़क को देखते-देखते दर्द नहीं करतीं। और कान जो उसे दुनिया का परिचय देते हैं, अब फूटती नहीं; क्योंकि दुनिया की बातों से उसे घृणा है।

उसके कानों को अत्यन्त धीमी आवाज आई—"ये देखो, दिन भर यों माँगती है, रात को मजा उड़ाती है...।"

"हाँ, देखो न, गोद का बच्चा साल भर का भी न होगा और पेट अभी से..."

कलावती की गरदन तनिक ऊपर उठी; देखा तो दो मियाँ भाई बात करते उसके आगे से निकल गये हैं। कलावती की गरदन फिर झुक गई। आँखों से आँसू टपक चले।

तभी पास से एक मोटर निकल गई, कलावती के कानों में किलकारियों की आवाज आई। फिर ताँगे भी गुजरे, ठेले भी, रिक्शा भी... रास्ता चल रहा है। डूबी हुई कलावती को लगा कि वह दुनिया में ही है। जी रही है, गनपत की भी साँस आ-जा रही है।

* * *

न देखकर भी कलावती ने देखा कि उसके आगे ही चार ठेले आकर रुक गये हैं। एक पर ईंधन है, एक पर बोरियाँ; शायद आटे की, मैदा की, जाने काहे की पता नहीं! एक पर बर्तन हैं, फल हैं, सब्जी तरकारी। पर कलावती के नेत्रों की प्यास न तो बढ़ी, न घटी। उसकी प्यास उतनी ही थी, जितनी और दिन होती है। जो कुछ उसने देखा, उसके अभाव में भी जो उतनी ही रही है। मन में कोई आश्चर्य-भाव भी नहीं जगा। हाँ, वह कुछ मिच-सी गई। सड़क तङ्ग थी। फलतः जब तक ठेले वहाँ से खाली होकर लौट न गये, उसने न देखकर भी दुनिया देखी। जैसे वह कीली हो, और दुनिया उसके चारों ओर घूम रही हो; उसे घूमने की आवश्यकता नहीं। उसने सुना—इन्हें भी यहीं मरने को जगह मिली है...सँभल जा, बच्चे के लात लगी तो चींचीं करेगी कि अंधे ने बच्चे को मार दिया।...हम निकल जायें, आप जरा उठ जायें। नहीं-नहीं हम उधर से निकल जायँगे। इन्हें मौत भी तो नहीं आती, यहाँ अड़कर बैठे हैं रास्ते में।.. कलावती का मन तो कुआँ है, कुआँ, अथाह। जो और भी अथाह होता जाता है।

आखिरी ठेला भी खाली हो गया तो अचानक सिद्दू ने उसके पास आकर कहा, "कल बड़ी भारी दावत है। मालिक को सर का 'औदा' मिला है। तुझे भर पेट खिलाऊँगा!"

कलावती के शुष्क अधरों पर मन्द हँसी पल भर को आई, शुष्क! शुष्क भी क्या, मृत्यु जैसे रो रही थी।

सिद्दू को गये थोड़ी देर भी न हुई थी कि एक मोटर कोठी से निकली, कलावती के सामने आकर रुक गई। "कल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ न बैठियो हरामखोर।" एक गर्जना कलावती ने सुनी। घर...मोटर चली गई। कलावती की आँखों में अँधेरा छा गया, पेट्रोल का बदबूदार धुआँ दिमाग़ में चढ़ गया, कलावती को चक्कर दे गया। गले में हीक छोड़ गया। गनपत जागकर उसका सूखा स्तन झँझोड़ने लगा।

इतने में सिद्दू फिर आया। उसके पास ही सड़क पर बैठकर धीरे से बोला, "मोटर यहाँ रुकी थी, क्या कहते थे मालिक?"

कलावती का कलेजा जैसे घाव था। पर सिद्दू की बात ने उस पर नमक का काम नहीं किया। हाथ टेककर उठते हुए, दूसरे हाथ से गनपत को सँभालते हुए उसने सूखे कण्ठ से कह दिया, "कुछ नहीं।"

सिद्दू उसे देखता रह गया। कलावती उसी दिशा में चल दी जिधर मोटर गई थी। उसे लगा जैसे दुनिया चल रही है, वह नहीं, दुनिया।

क्षण भर की अचेतना ने सिद्दू को छोड़ा तो वह कलावती का रास्ता रोककर खड़ा हो गया, "अब तो दस बजेंगे, कहाँ जायेगी, इत्ती रात में? मालिक तो सुबह होते आयेंगे; आज तो होटल में..."

"सिद्दू!" कलावती का हृदय चीत्कार उठा। "मुझे जाने दे... मैं अब यहाँ न बैठकर..." पर वह वहीं लुढ़क गई। मूर्छा ने उसका साथ दिया, दुनिया खो गई। सिद्दू ने उसे गिरने से बचाया। उसे सड़क पर छोड़कर वह पानी लेने कोठी की ओर दौड़ा, "हाय हाय! जाने कब की भूखी है। राम राम!"

तभी आवाज आई, "सिद्दू, इत्ती रात गये कौन है बगीचे के नल पर? देख तो!"

सिद्दू सहम गया, "कोई नहीं, मैं..."

"क्या कर रहा है? इधर आ!" स्वर कठोर था।

"अभी आता हूँ, बहू जी!"

"अभी कब? यहाँ दर्द के मारे मरे जा रहे हैं। पैर दाबो चलकर। फिर क्या आधी रात को दबायेगा, चल एकदम!"

सिद्दू बहू जी के पैर दबाता रहा। पर यह स्थूलकाय, पसरी पड़ी हुई सेठानी उसे अस्थिपंजर कलावती की याद दिलाती रही। छाती पर जिसकी गनपत चिपक रहा था।

सेठानी की आँख लगी तो सिद्दू एक पलक में सड़क पर आ गया। पर वहाँ कलावती नहीं थी। सिद्दू का हृदय टूक टूक हो गया।" कहाँ कई! मालिक ने उसे जरूर कुछ कहा है आज! वह तेजी से सड़क के उस मोड़ की ओर बढ़ा... कलावती!... नहीं है...और भी तेज चाल से उसके पैर बढ़े। फिर सिद्दू दौड़ने लगा। चौराहे पर आकर बुद्धि धोखा देने लगी। किधर जाये? शहर?... जमुना...? नहीं नहीं, वह आत्महत्या नहीं कर सकती। मण्डी...? नहीं...सिद्दू सिविल लाइन की तरफ दौड़ा...काफी दूर निकल आया। ...टन! कहीं एक बजा। कलावती नहीं मिली।

सिद्दू लौटा, शहर की तरफ बढ़ा। पर जहाँ सड़क कोठी की तरफ मुड़ती थी, वहीं सहसा एक सिपाही ने उसे रोक लिया।

"कौन है बे तू?" अन्ध प्रकाश में भी वह आँखें चमकीं। सिद्दू काँप गया, "मैं...सर रायचन्द का..."

"जाओ, जाओ!" वह लट्ठ पटकता आगे बढ़ गया। सिद्दू का साहस उड़द पर सफेदी बन गया। कोठी लौट आया। कोठरी में आकर लेटा। पर उसे नींद न आई।

पौ फटते-फटते वह शहर की तरफ बढ़ा। कोठी में उसकी ढूँढ़ मच रही थी। रायचन्द बड़बड़ा रहे थे, "काम के दिन हरामजादा सुबह से गायब है। घर देखो, कुछ चुराकर न भागा हो।"

और सिद्दू शहर का कोना कोना छान रहा था। जैसे उसका कुछ अपना ही खो गया हो। सब ओर से निराश होकर सिद्दू ने सोचा—मन्दिर के पास और देखूँ, शायद वहाँ मिल जाय। उधर बहुत भिखारी पड़े रहते हैं, पर उसके मन ने गवाही न दी—नहीं, कलावती उन भिखारियों में नहीं जायेगी। ...फिर भी सिद्दू उस तरफ मुड़ा। उसने सोचा—वहाँ न मिली तो जमुना होता हुआ कोठी पर लौट चलूँगा।

सिद्दू उधर घूमा तो देखा भीड़-सी चली आ रही है, शोर-गुल-गपाड़ा, क्या समुद्र-सा उठा आ रहा है! जैसे उसका विवेक और भी शून्य हो चला।

"गुलामी की ज़ंजीरें...तोड़ दो।"

"हिन्दुस्तान...आजाद हो।"

आवाजें धीरे-धीरे साफ होती गईं। सिद्दू के सामने से जुलूस गुजर रहा था। सिद्दू का ज्ञान जैसे लोप हो चला। पर कानों में गूँज रहा था—"हम भूखों नहीं मरेंगे...हिन्दुस्तान आजाद हो...अपनी माँग...पूरा करेंगे...हिन्दुस्तान आजाद हो...हम भूखों नहीं मरेंगे....हमारा नारा जय हिन्द....हम भूखों....."

सिद्दू मंदिर की ओर दौड़ा। भीड़ ने उसका रास्ता रोक लिया। आँखें कुछ नहीं देख रही थीं। देख रही थीं तो केवल सड़क पर मूर्च्छितपड़ी कलावती को। उसने फिर सुना—"सरकार भूखों मारना चाहती है—इसी से ये बलवा है।"

"पूँजीवाद का...नाश हो। अपनी माँग...पूरी करेंगे...हिन्दुस्तान..."

थोड़ा-सा रास्ता मिलने पर सिद्दू दौड़ा। मन्दिर के पास आकर रुका। आँखें कलावती को खोजने लगीं। दिन बराबर ढल रहा था। निराश सिद्दू ने जमुना की ओर कदम उठाये।

कलावती कहीं न मिली। सूरज डूबा ही चाहता था। सिद्दू मुँह लटकाये सीधा कोठी की ओर चल दिया। सड़क सीधी कोठी पर निकल जाती थी।

आधी सड़क पार करके सिद्दू सहसा फिर जमुना की ओर लौट पड़ा, उसने सोचा—चलो, सामनेवाले घाट पर और पूछ देखूँ!

और हाँफते हुए उसने पूछा, "भैया, इधर कोई औरत बच्चा गोद में लिये तो नहीं देखी?"

"नहीं...तो!" एक आशंका से घाट-वाला बोला।

"अब नहीं भाई, रात को!" घबराकर सिद्दू ने पूछा।"

"रात को? कोई दस बजे?"

"हाँ-हाँ, देखा था?"

"वह तो भिखारिन थी!"

"हाँ-हाँ, देखा था?"

"हाँ! चली थी डूबने!" इस बार घाटवाले के स्वर में उपेक्षा थी—"जाने कहाँ से आ जाती हैं बच्चे ले लेकर। पहले नहीं सूझता। फिर मरने आती हैं। वह तो हमने पुलिस में नहीं दिया कि चलो भिखारिन है।....."

सिद्दू की आँखें अब बैठ गया। वह लौट पड़ा पूछा—"तुम्हारी कौन थी?"

पर सिद्दू कुछ न भारी हो गया, पैर कल वती की छाया हलकी रायचन्द की लाल आँखों

दूर सड़क के मोड़ भुटपुटे में सिद्दू ने देखा वहीं जहाँ कलावती बैठती वह मन ही मन झल्लाया छान डाला और यह उसके तेजी के बजाय भाव में उपेक्षा। ध्यान ही हटा लेना चाहा। जब सिद्दू पहुँचा और दृष्टि चली ही अवखाई मिठाइयों लगा था। सिद्दू स्तब्ध खिन्न, निर्जीव-सा।

उम्दा व नया

अमरीकन गमले

हर प्रकार के
हाफ़ कोट, बगीचे
उमदा और नया
नवी शाखें
या जाता है।
ग्राहक वर्षों से
उठा रहे हैं।
मिलें। नाम

बुक करा लीजिये।

सैंकन्ड हैंड कोटों की सबसे पुरानी

रमेश राज एण्ड कं

सौदागान कोट

पो० बक्स नं० 682 कराची

चर्म-स्वास्थ्य से ही
चर्म-सौन्दर्य बढ़ता है!

रैक्सोना से

चर्म-स्वास्थ्य की रक्षा कीजि

यह सुन्दर, हरा, जल्दी झाग देनेवाला स्नान का साबुन शांतिदायी, आरोग्यवर्धक, त्वचा-विकार-विरोधी कैडिल के रासायनिक सम्मिश्रण से बना हुआ है। 'रैक्सोना' द्वारा किया गया प्रत्येक बार का स्नान, सौंदर्य की रक्षा करने के लिए चर्म-स्वास्थ्य का पोषण करता हुआ, आपकी त्वचा को धूल और गंदगी के विकारों से मुक्त रखने देता है।

बालकों के लिये रैक्सोना

रैक्सोना में मिश्रित 'कैडिल' बालकों के कोमल शरीर को, दागों और खराशों से सुरक्षित रखने में सहायक होगा।

★ 'त्वचा' को शांति देने और उसकी रक्षा करने में, वैज्ञानिक रूप से मान्य 'रैक्सोना' में विशेष 'कैडिल' विकार विरोधी और पोषक तैलों का एक विशिष्ट मिश्रण है।

त्वचा-सम्बन्धी सभी दागों के लिए रैक्सोना-मलहम प्रयोग में लाइये। यद्यपि इसका उत्पादन सीमित है, किन्तु अधिकांश बिक्रेता दागों के मरहमों के कुछ प्रसिद्ध टिकाने हिन्दी में प्राप्य हैं।

REXONA PROPRIETARY LIMITED

RP 87-392 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमण्डल

...तीय स्त्रियों को कैसी शिक्षा मिलनी चाहिए ? ...ता की दृष्टि से पश्चिमी पद्धति का वहिष्कार जरूरी है

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

...समाज में स्त्री-पुरुष का भेद ...चला आया है। आज बीसवीं ...जब कि संसार एक महान् ...गुजर रहा है। क्या स्त्रियों ...प्रति कोई नये विचार न उठते ...अपने लिए कुछ सोचती ...के आदि काल से लेकर ...स्त्रियों का न तो साहित्य पर ...रहा और न राजनीति पर। ...शताब्दी में, जब कि स्त्रियाँ ...प्रत्येक क्षेत्र में कार्य के ...हैं, अब भी पीछे रहेंगी ? ...का एक मूल उत्तर है— ...काल से लेकर आज तक ...शिक्षा केवल पुरुषों की सेवा ...थी। उसमें भी केवल ...स्थान था। पर पुरुष की ...स्त्रियों की आचरण-हीनता ...किया जाता था। परन्तु स्त्री- ...ज्यों ज्यों शिक्षा का विकास ...उनमें भी नव-जीवन आया। ...वायुमंडल पैदा करने की ...संसार के दो बड़े भाग (पूर्व ...) आपस में कभी मिल नहीं ...की संस्कृति, रहन-सहन, वेश-भूषा और भाषा-साहित्य एक दूसरे से प्रतिकूल हैं। फिर दोनों को एक कर देना सरल कार्य नहीं।

संसार का पश्चिमी भाग पूर्व के पश्चात् सभ्यता की ओर बढ़ा। वह भी इतना कि सीमा पार कर गया स्त्रियाँ मातृत्व के कारण दयालुता की साक्षात मूर्ति होती हैं। उन्हीं स्त्रियों ने कारखानों में मानव-समाज के विनाश के लिए विनाशकारी बम, जहाज और अन्य युद्ध सामग्रियाँ बनाईं। वायुयान-संचालक होकर बूढ़े से लेकर बच्चों तक के ऊपर क्रूरता और निर्दयता से बम बरसाये हैं। यह शिक्षा का प्रभाव था अथवा पुरुषों की अभिलाषा की पूर्ति के लिए स्त्रियों को जबर्दस्ती ये कार्य करने पड़े हैं ? फिर सामने प्रश्न आता है कि स्त्रियों की शिक्षा कैसी होनी चाहिए ? क्या स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखा जाय ? यदि स्त्रियाँ शिक्षा से वंचित रहती हैं तो उनके मौलिक अधिकारों को पुरुष अपनी अभिलाषा की चेरी कर लेता है जैसे कि अनादि काल से होता आया है। और यदि शिक्षिता हो जाती है तो उनकी शिक्षा का उपयोग मानव-विनाश-लीला में किया जाता है। फिर शिक्षा का करीक्यूलम कैसा हो जो स्त्रियों की इच्छा और कार्य के अनुकूल हो ? स्त्रियों का स्वभाव पुरुषों की अपेक्षा दयालु और कोमल होता है। वे किसी भयावनी वस्तु से बहुत अधिक भयभीत होती हैं। शरीर-रचना की दृष्टि से उनके अंगों में वह बल और शक्ति नहीं होती जो पुरुषों में हो सकती है। इस दृष्टि से स्त्रियों की शिक्षा मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से कोमल और पुरुषों की सहयोगी होनी चाहिए। पश्चिमी देशों ने स्त्रियों के जीवन-स्तर को इतना बढ़ा दिया है कि वे शिक्षा प्राप्त करके पुरुषों की समानता करने लगी हैं। दो महान् युद्धों ने पश्चिमी स्त्रियों की मातृत्व भावना का एकदम अन्त कर दिया है। वे उतनी सहृदया और स्नेहमयी नहीं रह गईं जैसी पूर्व की स्त्रियाँ आज हैं। फिर क्या संसार की शिक्षा का करीक्यूलम पूर्व की स्त्रियों का सा होना चाहिए ? पूर्व के स्त्री वर्ग में शिक्षा का इतना अभाव है कि उनकी संख्या उँगलियों पर गिनी जा सकती है। जो स्त्रियाँ शिक्षित भी हैं उन पर पश्चिमी सभ्यता की छाप है। पूर्व की शिक्षित स्त्रियाँ पश्चिम के रहन-सहन, संस्कारों की बहुत कुछ नकल कर रही हैं। परन्तु उन्हें सफलता नहीं मिल सकी। भारतवर्ष में कहीं कहीं तो ऊँची शिक्षा प्राप्त स्त्रियों की आत्महत्या तक के समाचार मिले हैं। ऊँची शिक्षा प्राप्त दम्पतियों का वैवाहिक जीवन भी कहीं कहीं कष्टदायक सुनने में आया है। परन्तु यह बात सार्व-भौमिक नहीं है। फिर शिक्षा का करीक्यूलम कैसा हो, जिससे स्त्री-समाज की शिक्षा द्वारा मानव-समाज का कल्याण हो ?

पूर्व और पश्चिम की शिक्षा में अन्तर हो सकता है। परन्तु दोनों की आवश्यकतायें एक ही हैं। पश्चिम पूर्व की नकल करने में संकुचित होता है क्योंकि आजकल पश्चिम, संसार के ऊपर शासक और मालिक की स्थिति में है। फिर वह अपने (शासित) उपनिवेशों की नकल क्यों करे। रही पूर्व की बात। उसकी शिक्षा कैसी हो ? क्या पूर्व की स्त्रियाँ पश्चिम की नकल करें ? ऐसा उपयुक्त विवरण से उपयुक्त नहीं। स्त्रियों की शिक्षा देश और मानव-समाज के हित के लिए हो। फिर उनके कैसे विद्यालय हों ? क्या स्कूल, कालेज और यूनिवर्सिटियों में सहशिक्षा कर देने से स्त्री-समाज की उन्नति हो जायगी ? यह भी ठीक नहीं, क्योंकि विदेशों में सह-शिक्षा प्रचलित है और भारतवर्ष में भी प्रचलित हो गई है; परन्तु भारतवर्ष पश्चिम नहीं है। यहाँ की स्त्रियाँ मानव-समाज के कल्याण की शिक्षा पसन्द करती हैं न कि विनाश की। अतः भारतवर्ष में स्त्रियों की शिक्षा का आधार राष्ट्रीयता पर आधारित हो। महात्माजी के वर्धाश्रम में स्त्रियों का विद्यालय (महिलाश्रम) है। जिसमें पूर्व की आदर्श आभा मौजूद है। राष्ट्रोत्थान के लिए माहात्मा जी ने बेसिक शिक्षा का बीजारोपण किया है। स्त्री पुरुष दोनों उस शिक्षा को ग्रहण करके राष्ट्रनिर्माण में लग जायँगे। अन्य कलाओं के साथ चर्खा कातना और खद्दर पहिनना राष्ट्रीयता का एक बड़ा आधार है। स्त्रियों को राष्ट्रीयता, सेवा की भावना, अनुशासन और नम्रता की शिक्षा देना आवश्यक है। यदि देश के स्कूल और शिक्षण-संस्थायें अपनी शिक्षा-पद्धति की रूप रेखा देश के अनुकूल बनायें, उनमें पूर्व के संस्कार, रहन सहन की शिक्षा दें तो पूर्व में भारतवर्ष का स्त्री-समाज एक आदर्श समाज होगा जिसकी एक न एक दिन पश्चिम की स्त्रियाँ नकल करेंगी।

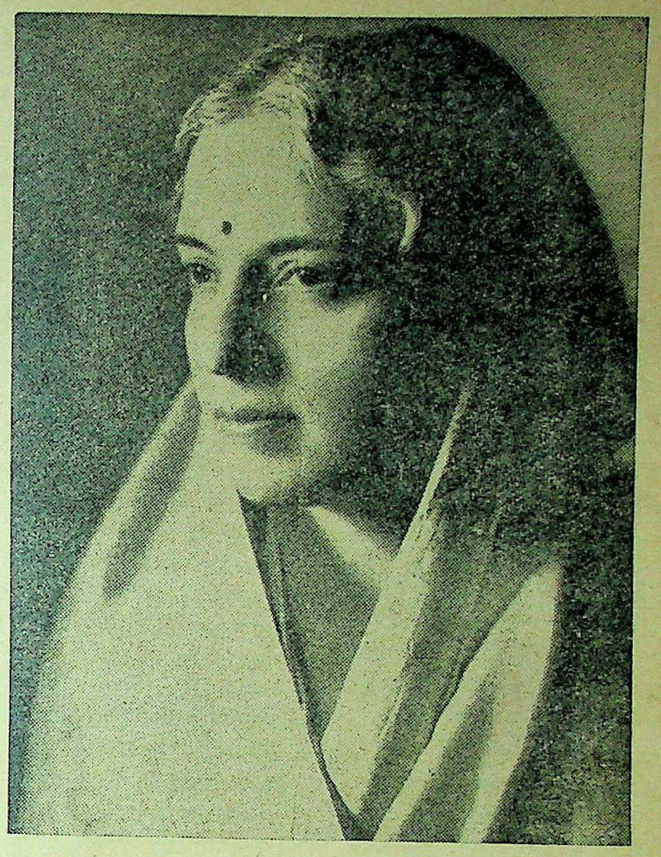

माननीया श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित न्यूयार्क में होने वाले संयुक्तराष्ट्र संघ में भारत का प्रतिनिधित्व करने जा रही हैं।

"...क्स टॉयलेट साबुन ...सुरक्षितता का ३० दिनोंके ...अनुभव कीजिये"

यशोधरा काटजू कहती है

...स्टार्स का सौंदर्य-साबुन !

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डियो-कमेटी क्या कर रही है ?

(पेज ६ का शेष)

में; प्रश्नोत्तरी में प्रश्नकर्ता उर्दू में प्रश्न करे, उत्तर देनेवाला हिन्दी में उत्तर दे; 'मैगजीन प्रोग्राम' ना 'लहरें' वा 'झलकियाँ' में एक चीज हिन्दी की हो, उसके तुरन्त बाद दूसरी चीज उर्दू में की हो, आदि)।

(८) सुननेवालों (Listeners) के हिन्दी में आये हुये पत्रों का उत्तर हिन्दी में अलग और उर्दू में आये हुये पत्रों का उत्तर उर्दू में अलग दिया जाय, जिस प्रकार बम्बई से एक सप्ताह में मराठी पत्रों का उत्तर मराठी में, उसके बाद के दूसरे सप्ताह में गुजराती पत्रों का उत्तर गुजराती में और इसी क्रम में दिया जाता है।

(९) संगीत में (प्रत्येक स्टेशन से—कलकत्ता, बम्बई, ढाका सहित), पक्के गाने और अधपक्के गाने (ठुमरी और दादरा) को छोड़कर, गज़लों के मुकाबले में प्राचीन और आधुनिक हिन्दी कवियों के काव्य को उचित और निश्चित अनुपात के अनुसार (अर्थात् हिन्दी की चीजों के विषय में निर्धारित अनुपात के अनुसार) स्थान दिया जाय। हिन्दी के गीत आदि गवैयों को अनिवार्य रूप से देवनागरी में लिखकर दिये जायँ जिससे वे शुद्ध उच्चारण कर सकें।

(१०) हिन्दी की चीजों, हिन्दी के रूपकों और नाटकों तथा हिन्दी के अन्य प्रोग्रामों की सब प्रकार की व्यवस्था समुचित रूप से करने के लिए प्रत्येक स्टेशन के प्रोग्राम स्टाफ में ऐसे व्यक्तियों का अनुपात निश्चित कर दिया जाय जिसकी प्रथम भाषा हिन्दी रही हो। हिन्दी के प्रोग्राम ऐसे ही व्यक्तियों के सुपुर्द किये जायँ। दूसरे शब्दों में, प्रत्येक स्टेशन में हिन्दी के प्रोग्रामों के लिए उसी प्रकार एक अलग हिन्दी प्रोग्राम विभाग हो जिस प्रकार अँगरेजी के प्रोग्रामों के लिये है।

(११) एक सर्वमान्य 'हिन्दुस्तानी' निर्मित हो अथवा न हो, हिन्दी की चीजों की घोषणायें उसी प्रकार हिन्दी में हों जिस प्रकार अँगरेजी की चीजों की घोषणायें अँगरेजी में होती हैं।

(१२) हिन्दी की चीजें, उनके सम्बंध की घोषणायें, हिन्दी प्रोग्रामों (जैसे रूपकों और नाटकों) में भाग लेनेवालों के पार्ट (जिसका अर्थ है कि हिन्दी प्रोग्रामों में भाग लेनेवाले प्रत्येक व्यक्ति का हिन्दी और देवनागरी जानना आवश्यक होगा) आदि अनिवार्य रूप से देवनागरी में लिखे जायँ। हिन्दी की स्वाभाविक लिपि देवनागरी है, इस नाते ऐसा करना आवश्यक तो है ही, शुद्ध उच्चारण की दृष्टि से ऐसा करना अनिवार्य है। अँगरेजी के प्रोग्रामों में भाग लेने के लिए अँगरेजी न जाननेवाले तो कभी न लिए जायँगे और अँगरेजी की चीजें रोमन लिपि को छोड़कर किसी दूसरी लिपि में तो कभी न लिखी जायँगी।

ऊपर की सब बातें सर अकबर हैदरी द्वारा बैठाई हुई रेडियो कमेटी की सरकार द्वारा स्वीकृत इस शिफारिश के अन्तर्गत और परिणामस्वरूप हैं कि खबरों के अतिरिक्त सब प्रोग्राम हिन्दी और उर्दू में हों और हिन्दी की चीजों और उर्दू की चीजों का पारस्परिक अनुपात निर्धारित कर दिया जाय। इसलिए ये बातें बिलकुल विवादग्रस्त नहीं हैं, और इन पर अमल तुरन्त आरम्भ हो जाना चाहिये। सारांश में इन बातों का अर्थ यह है कि खबरों के मामले को छोड़कर हिन्दी को एक स्वतन्त्र और पृथक् भाषा मान लिया जाय, और तदनुसार उसे खबरों को छोड़कर शेष सब प्रकरणों में वही स्थान और पद दिया जाय जो अन्य प्रान्तीय भाषाओं को दिया गया है। रेडियो कमेटी की उपरलिखित सिफारिश का यही अर्थ है।

(ब) यदि एक सार्वमान्य हिन्दुस्तानी बन जाती है तो भी आवश्यक होगा कि—

(१) 'हिन्दुस्तानी' में खबरों के बुलेटिन या और भी कोई दूसरी चीज अनिवार्य रूप से देवनागरी में लिखी जाय और उसी से पढ़ी जाय। ऐसा हुए बिना हिन्दी शब्दों और नामों का शुद्ध उच्चारण होना असंभव है। किसी लिपि में रेडियो का दफ्तर 'हिन्दुस्तानी' बुलेटिन लिखता है अथवा किस लिपि में रेडियो का घोषक उन्हें पढ़ता है, इससे जनता का कोई सम्बन्ध नहीं, इसलिए एक बार हिन्दुस्तानी के स्वरूप के विषय में समझौता हो जाने के बाद इस बात पर सिद्धान्त के आधार पर कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। घोर अशुद्ध उच्चारण के कुछ उदाहरण जो पिछले कतिपय सप्ताहों में खबरों और घोषणाओं में सुनने में आये हैं निम्नलिखित हैं—

सत्यानराइन सिन्हा, किसन परशाद, के० भाशियम, कमला देवी चट्टोपाध्या, राजिन्दर परशाद, यस० पी० सिंघा, हिन्दोस्तानी, बलोचिस्तान, अलाहाबाद, रतन, पराथना (प्रार्थना), ध्रू नराइन, असोक मेहता, सर अतोल चटर्जी, अचुत पटवर्धन, सिरी किशन सिन्हा, कुँवर जगदीश परशाद चव्वन, चवरासी, 'जाऊँ कहाँ तजी चरन तुम्हारे', परजा, अमरतसर, कानपूर, रामपूर, साहित्या, सेातनतारा (स्वतन्त्रता !), 'सुरगवाश मि० शास्त्री के सेाक में', परशेातम दास टंडन, शरतचन्दर बोस, तीरथ, धरम, पूरन सेाराज यानी मुकम्मल आजादी, परेग (Prague !), सूरयाकांती तिरपाठी, आचार्या नरेन्दर देओ, सिरीनगर, महारास्टरा, मनचेारिया, गवालियर, पच्चहत्तर, सामराज (स्वराज्य !), तेापार कान्ती घोष, सिक्खों का मजहबी स्थान, शरोमनी गुरदवारा परबन्धक कमेटी, सत्यारथ परकाश, ओरिया (उड़िया !), नागपूर, ('ट्रान्समिटर' का भी 'ट्रान्समीटर' हो गया है), यमन कल्यान किरशन, दुरत, बरत, आरिया समाज, पंडत, मन्दर, जनम, शास्तर, परेम, दोगाना, रामचन्दर, विदभी, मिरनाल कांती घेाष, दामेादर सेारूप, सेठ सत्या चौधरी।

(इन उदाहरणों में अधिकतर नाम इस कारण हैं कि हिन्दी शब्द तो, दो-चार को छोड़कर प्रयुक्त ही नहीं किये जाते)

इस समय जब कि भूल-चूक से केवल दो चार हिन्दी शब्द प्रयुक्त होते हैं अगर यह हालत है तो जब ठिकाने की 'हिन्दुस्तानी' होगी तो उसके हिन्दी शब्दों की क्या दुर्दशा होगी इसकी सहज कल्पना की जा सकती है। इस घोर अशुद्ध उच्चारण का मुख्य कारण यह है कि खबरों के बुलेटिन सदैव उर्दू लिपि में तैयार किये जाते हैं और उर्दू लिपि से ही पढ़े जाते हैं। बुलेटिन लिखनेवाले व पढ़नेवाले हिन्दी नाम को भी नहीं जानते। यह बात अलग है। चाहे जैसी हिन्दुस्तानी बने, जब तक 'हिन्दुस्तानी' की खबरें तथा अन्य प्रोग्राम अनिवार्य रूप से देवनागरी में नहीं लिखे जायँगे, तब तक अवस्था नहीं सुधर सकती।

(२) हिन्दुस्तानी के बुलेटिनों तथा अन्य प्रोग्रामों के लिखनेवाले व पढ़नेवाले हिन्दी और उर्दू दोनों के अच्छे ज्ञाता होने चाहिये। यह उनकी नियुक्ति की एक शर्त होनी चाहिये।

(३) 'हिन्दुस्तानी' में खबरों के अतिरिक्त अन्य कोई प्रोग्राम ब्राडकस्ट न किया जाय। खबरों को छोड़कर अन्य किसी भी प्रोग्राम को उसमें ब्राडकास्ट करना स्पष्टतः रेडियो कमेटी की सिफारिशों के विरुद्ध होगा। (अधिक से अधिक 'हिन्दुस्तानी' ऐसे स्थलों और प्रकरणों में प्रयुक्त की जा सकती है जिनका स्टेशन के प्रत्येक सुननेवाले से लगाव हो और जहाँ हिन्दी और उर्दू से अलग अलग काम नहीं चल सकता, जैसे स्टेशन के खुलने और बन्द होने के समय की घोषणायें, संगीत के चीजों की घोषणायें आदि। इतना होना भी आपसी समझौते पर निर्भर होगा क्योंकि रेडियो कमेटी की सिफारिशों में इस बात का जिक्र कहीं नहीं है।) आवश्यक यह है कि प्रत्येक स्टेशन की एक प्रमुख भाषा हो जो उस स्टेशन के क्षेत्र की प्रमुख साहित्यिक भाषा हो और ऐसे स्थलों और प्रकरणों में उसी से काम लिया जाय, और वह स्टेशन उसी भाषा का स्टेशन कहलाये। एक कामन 'हिन्दुस्तानी' या खबरों की कामन 'हिन्दुस्तानी' का यह अर्थ कदापि नहीं हो सकता कि स्थानीय स्टेशनों में स्थानीय भाषाओं को उनका प्राप्य स्थान और पद न दिया जाय—पेशावर से कामन भाषा का काम पश्तो से न लिया जाय, लाहौर से पञ्जाबी से न लिया जाय, दिल्ली और लखनऊ से हिन्दी से न लिया जाय और बम्बई से मराठी से न लिया जाय।

(४) स्थानीय सूचनायें (Local announcements) प्रत्येक स्टेशन से स्थानीय भाषाओं में अलग अलग हों, न कि 'हिन्दुस्तानी' में। विशेषरूप से लखनऊ, दिल्ली, लाहौर, पेशावर और बम्बई से स्थानीय सूचनायें अलग से हिन्दी में हों। लाहौर से अलग पञ्जाबी में, पेशावर से अलग पश्तो में, बम्बई से अलग मराठी तथा गुजराती में भी देनी पड़ेंगी। (इस समय इन पाँचों स्टेशनों—बम्बई सहित—से स्थानीय सूचनाएँ केवल अँगरेजी और 'हिन्दुस्तानी' में होती हैं।)

(५) प्रत्येक अवस्था में हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, पश्तो, मराठी या गुजराती की चीज की घोषणा उसी भाषा में की जाय, 'हिन्दुस्तानी' में नहीं।

(६) प्रत्येक स्टेशन से उस स्टेशन की स्वीकृति स्थानीय भाषाओं में सुननेवालों के पत्रों के उत्तर पत्र की भाषा में दिये जायँ, और उनके अतिरिक्त किसी दूसरी भाषा के पत्र का उत्तर उस स्टेशन की प्रमुख भाषा में दिया जाय। विशेष प्रोग्रामों जैसे स्त्रियों और बच्चों के प्रोग्रामों में किसी भी भाषा के पत्र का उत्तर प्रोग्राम की भाषा में दिया जाय (जैसा अँगरेजी के प्रोग्राम में होता है।)

(७) इसके पूर्व कि बम्बई से घोषणाओं या किसी दूसरे काम के लिए 'हिन्दुस्तानी' से कोई काम लिया जाय, इस 'हिन्दुस्तानी' पर मराठी भाषियों और गुजराती भाषियों के प्रतिनिधियों की स्वीकृति लेना आवश्यक होगा—केवल सम्मेलन, अंजुमन तरक्की उर्दू और हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के प्रतिनिधियों की स्वीकृति काफी नहीं होगी।

(८) इसके पूर्व कि दिल्ली या किसी अन्य स्टेशन से कोई प्रोग्राम 'हिन्दुस्तानी'

रविवार, ८ सितम्बर,

में सब भारतीयों के लिए ब्राडकास्ट किया जाय (जैसे कि भारत-स्थित भारतीय सैनिकों का प्रोग्राम Forces' Programme), उसे 'हिन्दुस्तानी' पर भारत के सब हिन्दी भाषियों के प्रतिनिधियों की स्वीकृति आवश्यक होगा—केवल सम्मेलन, तरक्की उर्दू और हिन्दुस्तानी प्रचार प्रतिनिधियों की स्वीकृति काफी नहीं दूसरी शर्त यह है कि या तो सब का ऐसा कोई प्रोग्राम केवल में हो, और यदि वह किसी प्रोग्राम में भी होता है (जैसे Indians seas का प्रोग्राम तामिल और भी होता है) तो उसे अलग से भी देना पड़ेगा, उसके अतिरिक्त स्तानी' में भी हो अथवा न हो।

(९) 'हिन्दुस्तानी' की सीमा की जाय। उदाहरणार्थ, 'हिन्दुस्तानी' सब जगह (जैसे स्टेशन के खुलने होने की घोषणाओं में—यदि वे 'हिन्दुस्तानी' में होती हैं तो) 'आदाब' या 'नमस्ते' या 'नमस्कार', 'Friday', 'Religion' आदि (अर्थात् उन शब्दों का जिनका 'प्रचलित' के आधार पर नहीं दोनों ही प्रचलित हैं) अनुवाद 'जुमा', 'मज़हब' (रेडियो की हिन्दुस्तानी में प्रयुक्त) होगा या 'शुक्र', 'धर्म'; 'Wife', 'Father, Princess Eliz The Queen, His Exc the Viceroy, His Majesty King, Died, Pray, Hell, Husband, Mother, आदि का अनुवाद बीवी, शुक्रि या अब्बाजान, शहज़ादी, मल्का, हुज़ूर, वाइसराय, वाइराय मत, इन्तकाल फरमा गये, दोज़, दोज़ख, खाविन्द, अम्मीजान, (रेडियो की वर्तमान हिन्दुस्तानी होगा या पत्नी, धन्यवाद, शिक्षा, एलिज़ाबेथ, महारानी या सम्राज्ञी, राय महोदय, सम्राट्, स्वर्गवास प्रार्थना, स्वर्ग, नर्क, पति, मातृ कुमार ? यदि यही निश्चित कि मुसलमानों के प्रकरण में और मुहावरों का और हिन्दुओं में हिन्दी शब्दों और मुहावरों किया जाय (जो निश्चय भी एक निश्चय, एक प्रकार का भाषा स्तान बनाना, होगा—किसी जैसे अँगरेजी में, धर्म के अनुसार में परिवर्तन नहीं किया जाता), तथा अन्य धर्मावलम्बियों के किन शब्दों का प्रयोग होगा। रेडियो को 'हिन्दुस्तानी' की प्रकार से मुसलमानी संस्कृति से अभिन्न है।)

(स) अगर 'हिन्दुस्तानी' है तो प्रत्येक स्टेशन के कथन के अनुसार 'हिन्दु जाता, वह उस स्टेशन की लिया जाय। विशेष रूप से दिल्ली की प्रमुख भाषा उसी में कामन घोषणाएँ (जैसे खुलने और बन्द होने के णाएं; संगीत की चीजों की और स्टेशन के अन्य कामन और उसी में उर्दू के

शेष पृष्ठ १९ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...सारा रंग-मंच

...ली' फिल्म कैसा है ?

...र्ष की प्रसिद्ध नाटिका रजतपट पर

...ली' श्रीहर्ष की प्रसिद्ध संस्कृत ... है, जिसको रजतपट पर उतारने ... अमर पिक्चर्स ने किया है। ... कहानी इस प्रकार है, जो मूल ... की कथा से काफी भिन्न है—

...ईश्वर की कन्या अपने मन्त्री के ... आती है। तूफान के कारण ... जाता है किन्तु वह लकड़ी के ... किनारे आ लगती है, जहाँ ... नरेश उदयन के मन्त्री यौगंध... लाते हैं। वे चाहते हैं कि ... विवाह राजा उदयन से हो ... सिंहलेश्वर भी उनकी सहायता ... उनकी शक्ति बढ़ जाये। राजा ... से अपनी महारानी वासव... करते थे। रत्नावली वासवदत्ता ... की लड़की थी।

...रायण रत्नावली को अपने एक ... सागरिका बता, रानी वासव... राजमहल में रखने की प्रार्थना ... रानी प्रार्थना स्वीकार कर लेती ... उदयन सागरिका के अपूर्व रूप ... देख उस पर लट्टू हो जाते ... को भी इसका ज्ञान हो ... कोकिल हो वह सागरिका की ... करती है। एक दिन उदयन ... कह देते हैं कि वे उसके ... रह सकते। वे सागरिका को ... उपवन में मिलने को कहते हैं। ... के द्वारा वासवदत्ता भी यह ... करती है। वह भी उपवन में ... है।

सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेत्री रत्नमाला जिन्होंने रत्नावली में अभिनय किया है।

इसी समय उदयन प्रवेश करते हैं और रानी वासवदत्ता को सागरिका समझ उन पर अपना प्रेम प्रकट करते हैं। जब रानी कोई उत्तर नहीं देती, तो वे रानी का मुँह अपनी ओर फेरते हैं और यह देख आश्चर्य में रह जाते हैं कि वह सागरिका न होकर वासवदत्ता है। इसी समय सागरिका आती है और उदयन को रानी से बात करता देख अपने दुर्भाग्य पर आँसू बहाने लगती है। रानी वासवदत्ता रूठ कर रोती हुई दूसरे कुंज में चली जाती है। उदयन उनके पीछे जाते हैं और उस स्थल पर पहुँचते हैं जहाँ सागरिका बैठी रो रही थी। अब वे सागरिका को वासवदत्ता समझ अपनी सफाई दे उसे मनाने लग जाते हैं और कह देते हैं कि उन्हें सागरिका से बिलकुल भी प्रेम नहीं है। तब सागरिका उठ खड़ी होती है और पूछती है कि यदि प्रेम नहीं था तो आज रात बुलाया क्यों था। अब वासवदत्ता के स्थान पर सागरिका को देख, राजा उदयन अपना मस्तिष्क थाम बैठ जाते हैं। इस प्रकार सागरिका और वासवदत्ता दोनों उदयन से रूठ जाती हैं।

राजा का सागरिका पर प्रेम देख, रानी वासवदत्ता डाहवश, सागरिका को बन्दी कर देती है। यह समाचार जान मन्त्री यौगन्धरायण आते हैं और सागरिका को मुक्त कर देने की प्रार्थना करते हैं। जब वासवदत्ता नहीं मानती, तो वे बतला देते हैं कि सागरिका उसके मामा सिंहलेश्वर की कन्या रत्नावली है, जिसकी समुद्र में डूब जाने की गलत खबर मिली थी। इसी समय कोलाहल होता है कि बन्दीगृह में आग लग गई है। वासवदत्ता घबराकर कहती है कि वहीं तो उसने सागरिका को बन्दी कर रखा है। सब उस ओर दौड़ते हैं और राजा उदयन अग्नि में प्रवेश कर मूर्च्छित सागरिका (रत्नावली) को उठा लाते हैं।

रानी वासवदत्ता अपनी ममेरी बहन रत्नावली से मिल अत्यन्त प्रसन्न होती है और सहर्ष उसे अपनी सौत बना लेती है।

राजा उदयन का अभिनय, इस चित्र में सुरेन्द्र ने किया है, जो साधारण है। 'रत्नावली' के रूप में रत्नमाला ने अच्छा अभिनय किया है। रानी वासवदत्ता के रूप में उषा मन्त्री और यौगन्धरायण के रूप में के० एन० सिंह का अभिनय भी सुन्दर है।

चित्र के संवाद काफी शिथिल और गाने रोते हुए से हैं। गोविन्दराम का संगीत सुन्दर है, लेकिन इस चित्र में वह कर्णप्रिय नहीं हो पाया है। इसमें तो तेज बाजों की गड़गड़ाहट न होकर शांत संगीत होना चाहिए था।

टेकनीक दृष्टि से चित्र सर्वथा निर्दोष नहीं कहा जा सकता। रात्रि में उपवनवाले दृश्य काफी अच्छे लिये गये हैं।

सुप्रसिद्ध डाइरेक्टर सुरेन्द्र देसाई का निर्देशन अच्छा है। —सत्येन्द्र 'शरद्'

...फिल्म में वासवदत्ता का अभिनय करनेवाली श्रीमती उषा मंत्री

पेट दर्द

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर की व्यापक ख्याति अम्लता, उदर-वायु, हृदय-दाह, पेट दर्द, वमन, पित्त-प्रकोप तथा पाचन-सम्बन्धी शिकायतों से पैदा होनेवाले अन्य रोगों में प्रभावशाली होने की मान्य प्रमाण है।

उदर-विकारों से उत्पन्न सिरदर्द, उदासी, अनिद्रा और हृदय की तीव्र धड़कन में भी यह अमूल्य है।

यदि आप इनमें से किसी कष्टकारी रोग से पीड़ित हैं तो आज ही कुछ मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर लीजिए और इस प्रसिद्ध औषधि की शीघ्र सांत्वना का स्वयमेव अनुभव कीजिए।

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर माँगते समय "एलेक्स सी० मेकलीन" के हस्ताक्षर पहचान लीजिए क्योंकि असली यही है।

मेकलिन ब्रांड स्टमक पाउडर सेवन कीजिए

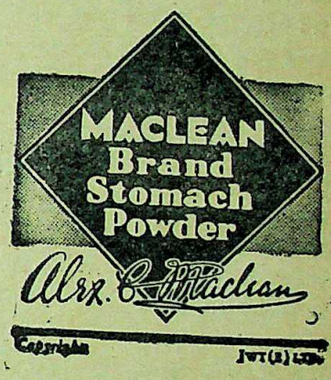

कलकत्ते के दंगे से सबक

दस हजार की मौत हमें क्या सिखाती है

कलकत्ते के दंगे की दिल कँपानेवाली कहानियाँ हम अभी पढ़ रहे हैं। दो चार दिन के अन्दर ही दस हजार आदमियों की मौत। इससे दूने घायल अवस्था में मौत की गोद में, कितने खेद की बात है कि हमारे देश की जिन्दगी में आये दिन ऐसे दंगे और दुर्घटनाएँ देखने को मिलती हैं।

उपरोक्त आम दंगे (Riots) व कत्ल के अतिरिक्त रेल और मोटर-दुर्घटनाएँ, अग्निकांड, बाढ़, बिजली से मौत, जहरीले जानवरों द्वारा काटना या अन्य विषैली चीजों का असर आदि अनेक कारण हैं जिनसे आदमी कभी भी मृत्यु की गोद में जा सकता है।

इसी कारण स्वदेशी ने

घातक दुर्घटना पालिसी

FATAL ACCIDENT POLICY

निकाल कर एक बार लगभग २५ रु० प्रति हजार देकर बीमा कराने की प्रणाली निकाली है। आप भी अपना बीमा कराने के लिए विशेष विवरण मँगा लें···

नोट—इस योजना में कम्पनी एक व्यक्ति का १०,००० रु० से अधिक का बीमा नहीं करती।

गोविन्दप्रसाद चतुर्वेदी
जनरल मैनेजर

श्रीचन्द दौनेरिया
मैनेजिंग डायरेक्टर

स्वदेशी बीमा कम्पनी लिमिटेड, स्वदेशी बीमा नगर, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीय श्री महादेव देसाई

(पेज ८ का शेष)

शरीरश्रम या लेखनी को विश्राम नहीं लेने दिया। कलम से स्याही नहीं सूखने पाती थी। १९४२ में उनकी तबीअत कई बार बिगड़ी-सँभली। लेकिन जैसे जैसे आन्दोलन करीब आने लगा उनका काम बढ़ने लगा। विश्राम का मौका ही नहीं मिला। मुमकिन है यदि अगस्त की क्रान्ति न आई होती तो वे हमारे बीच में से इतनी जल्दी न जाते। लेकिन अगस्त-क्रान्ति में अपना पवित्र बलिदान जेल में चढ़ाना पवित्र समझा। बापू के आमरण उपवास के कारण वे और भयभीत थे। उनके दिल पर कई बातों का असर पड़ा। देश में जो दमन-चक्र चला उसकी पीड़ा उनके दिल पर और असर कर गई और वे १५ अगस्त १९४२ के दिन सवेरे इस दुनिया से सबको छोड़कर चले गये। उस वक्त के आगा खाँ महल का मर्मस्पर्शी चित्र खींचते हुये सुशीला नायर ने हृदय द्रावक वर्णन कितने मार्मिक शब्दों में किया है। "आगा खाँ बन्दीगृह में गांधी जी रोज सुबह करीब साढ़े सात बजे बगीचे में घूमने निकल पड़ते थे। १५ अगस्त को हम लोगों के साथ महादेव भाई भी घूमने आ गये। टहल कर आने के बाद मैंने बापू जी की मालिश शुरू की। आई० जी० पी० जेल के बड़े अफसर, आये थे, सो महादेव भाई, बा और मीरा बहन उनसे मिलने श्रीमती नायडू के कमरे पर गये। दूर से हमें उनकी हँसी सुनाई देती थी। एकाएक खामोशी छा गई और किसी ने मुझे पुकारा। मैंने सोचा वे मुझे आई० जी० पी० से मिलने के लिए बुलाते हैं। मैं जाने की तैयारी में ही थी कि बा घबराई हुई आईं—"सुशीला, जल्दी चलो। महादेव को गश आ गया है।" मैं दौड़ी। वे एक बिस्तर पर पड़े हुए थे। संगमरमर की तरह सफेद पड़ गये थे। सारे अंग अकड़ गये थे। मुझसे कहा गया कि जब वे खड़े-खड़े बातें कर रहे थे, तभी उन्होंने जी घबराने और चक्करों की शिकायत की थी। उन्हें लिटा दिया गया और मुझे बुलाया गया। एक मिनट में मैं उनके पास जा पहुँची थी। मैंने जाँच की, उनकी नाड़ी गायब थी। दिल की धड़कन सुनने की कोशिश की, वह भी बन्द हो गई थी। "बापू जी को बुलाओ" मैंने कहा और दिल को ताकत पहुँचानेवाली दवा माँगी। आई० जी० पी० ने जो कुछ ला सके मुझे लाकर दिया। मैंने दो इंजेक्शन दिये, पर कोई नतीजा न निकला। इसी बीच बापू आ गये। वे बिस्तरे के पास खड़े होकर 'महादेव, महादेव!' पुकारने लगे। लेकिन पहली बार महादेव ने कोई जवाब नहीं दिया। बापू ने दुःखी होकर कहा—"एक बार भी वह आँख खोलकर मेरी ओर देख ले, तो वह नहीं जायगा।" लेकिन उन्होंने तो जाने का तय कर लिया था। उन्होंने आँखें नहीं खोलीं। मेडिकल हेल्प के बावजूद भी मैं यह उम्मीद करने लगी कि शायद बापू की मौजूदगी वह कर गुजरे, जो दवा भी नहीं कर सकी। लेकिन करामात का जमाना अगर वह कभी रहा होगा, खत्म हो चुका है। उनकी सिकुड़न और कराहना बन्द हो गया। सारा खेल खत्म हो गया! सिविलसर्जन आया और सिर हिलाकर लौट गया। वह मेरे चेहरे की तरफ देखने लगीं। उन्होंने रूँधे कंठ से पूछा—'महादेव कैसा है?' मैं क्या जवाब देती? 'चल बसा!' वे जोर से रो पड़ीं। विलाप करने लगीं। बापू आये और उन्हें धीरज बँधाया। बापू को भी भारी सदमा पहुँचा था लेकिन उन्हें हिम्मत रखनी पड़ी। "हम सब प्रार्थना करें और शव को नहला दें" बापू जी ने कहा। हम सब बैठे और गीता के १२वें अध्याय का पाठ किया। 'वैष्णवजन तो' वाला भजन गाया और रामधुन लगाई। जिस कमरे में सुबह महादेव भाई ने 'शेविंग' की थी, वहाँ से फर्नीचर हटा दिया गया। शव को बापू जी बाथ रूम में ले जाया गया और उन्होंने मेरी मदद से उसे नहलाया। बापू को यह सब काम काँपते हाथों से करते देखकर बहुत ही दुःख हुआ था। तब उन्होंने एक पल के लिए चारों तरफ देखा और कहा—"महादेव कैदी की हालत में मरे इसलिए उनका दाह-संस्कार भी कैदी जैसा ही होनी चाहिए।" सो हमने लाश को जेल के कपड़ों में लपेटा और उसे बाहर ले आये।

सुपरिण्टेण्डेण्ट ने बहुत से फूल मँगा लिये थे। मीरा बहन ने बड़े सुन्दर ढंग से उनको लाश के चारों तरफ सजाया। उन्होंने थोड़ा चन्दन घिस लिया था। बापू जी ने महादेव भाई के माथे पर उसका तिलक किया और लाश के पास बैठ गये। जब तक दाह-संस्कार की तैयारियाँ होती रहीं, बापू जी और मैं बारी-बारी से गीता का पाठ करते रहे। मैंने देखा कि बापू जी जिस तरफ बैठे हुए थे उस तरफ की महादेव भाई की आँख आधी खुली हुई थी। यह उनकी बापू के प्रति भक्ति और दिली मोहब्बत की निशानी थी। मर जाने पर भी जैसे वे अपने गुरु की ओर एकटक देख रहे थे।

जरा अब अन्तिम संस्कार की दर्दभरी कहानी सुनिए "अधिकारी लोग पुलिस और ब्राह्मणों के साथ एक लारी लेकर आये। वे शव को बाहर ले जाकर खुद अग्नि-संस्कार कराना चाहते थे। लेकिन बापू जी ऐसा नहीं चाहते थे। बापू ने उन लोगों से कहा—"कौन पिता अपने लड़के के शव को अनजान लोगों को सौंप देगा? महादेव मुझे अपने लड़कों से भी ज्यादा प्यारा था। मैं खुद उसका अग्नि-संस्कार करना चाहता हूँ लेकिन अगर सरकार मुझे बाहर नहीं ले जा सकती तो मैं शव को दोस्तों को सौंप देने के लिए तैयार हूँ। लेकिन जेल के हाकिमों को तो हरगिज नहीं दूँगा।" हालाँकि सरकार हत्यारों को फाँसी पर लटका देने के बाद उनके शव को रिश्तेदारों या दोस्तों को सौंपकर खुले आम उनका दाह-संस्कार करने देती है लेकिन महादेव भाई जैसे अहिंसक विद्रोही के शव के लिए वह ऐसा करने को तैयार नहीं थी! वह नहीं चाहती थी कि उनका शव दोस्तों या रिश्तेदारों को सौंपा जाय। सारा वातावरण बड़ा गमगीन बन गया। हम सब घबरा गये। बापू क्या जवाब देंगे? कुछ देर बापू सोचते रहे। फिर वे बोले, "मैं अपने लड़के की मौत को सियासी मामला नहीं बनाना चाहता। अगर सरकार मुझे बाहर जाकर शव का दाह-संस्कार करने से मना करेगी और उसे दोस्तों को सौंप देने से भी रोकेगी, तो मैं यह कर्मभूमि करूँगा।" यह बापू जी की बिलकुल नई सूझ थी। आज तक किसी ने घर के भीतर शव का दाह-संस्कार करने की बात नहीं सुनी थी। आई० जी० पी० ने ऊपर जाकर इस बारे में बम्बई सरकार को फोन किया। बम्बई सरकार को इस बारे में भारत-सरकार की राय लेनी पड़ी। आखिर वे नीचे आये। सरकार ने यह बात मान ली थी कि दाह-संस्कार कम्पाउण्ड के अन्दर किया जाय। हम सबको इससे राहत मिल गई। श्रीमती नायडू जगह तय करने के लिए नीचे गईं।"

आई० जी० पी० ने पूछा—"बापू, क्या आप महादेव भाई के घरवालों को इसकी खबर देना चाहेंगे?" उन्होंने जवाब दिया—"अगर बिना काट-छाँट के जाने दिया जाय तो मैं एक तार करना चाहूँगा।" और उन्होंने मुझे तार का मजबून लिखाया। उन्होंने शुरू किया। "मुझे दुःख है" फिर वे रुक गये। ऐसी अच्छी मौत की खबर देने के लिए मुझे रंज क्यों करना चाहिए? नहीं 'दुःख है' कहो लिखो, "महादेव एकाएक चल बसा" यह खबर आई० जी० पी० को दी और कहा गया कि मेहरबानी एक्स-प्रेस तार से उसे भेज दें। जैसा बाद में हमें पता चला वह महादेव भाई के घरवालों को डाक से भेजी गई थी।"

यह कितना हृदयद्रावक दृश्य बापू जी स्वयं लकड़ी के बड़े भाई का अग्नि-संस्कार कर "आखिर अग्नि-संस्कार की पूरी हो गई। एक हाथ में दूसरे हाथ में आग का जी लाश के पीछे पीछे चले। कुछ मन्त्र पढ़ा और अग्नि किया। लाश को चिता पर और बापू जी ने चिता में जल्द ही चिता की लपटें लगीं। वा सब कुछ भूलकर बैठी हुई चिता को एकटक दोनों हाथ जोड़कर वे बार जाती थीं—"महादेव, मेरे कहीं भी तुम रहो, सुखी रहो। देव क्यों चला गया, मैं क्यों छावनी का सुपरिन्टेन्डेन्ट बनता सुपरिन्टेन्डेन्ट और आई० जी० बैठकर सबके प्यारे महादेव भाई को खाक होती हुई देखते रहे।"

"आखिर में हम सब जेल से लौटे। शाम को पाँच बजे के ८ या ९ के बीच में उनको मौत बापू जी ने कहा—"महादेव ने मरेंगे' के मन्त्र को पूरी तरह निबाहा कुरबानी से हिन्दुस्तान जल्दी ही होगा।"

अपनी बात

मनुष्यों के चरित्र होता है उन्हें दूर करके जीवन को उन्नत बना बात इस पुस्तक में निजी अनुभव के आधार पर लिखी है। यह पुस्तक प्रत्येक पढ़नी चाहिए। मूल्य ।।) मात्र

ईंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

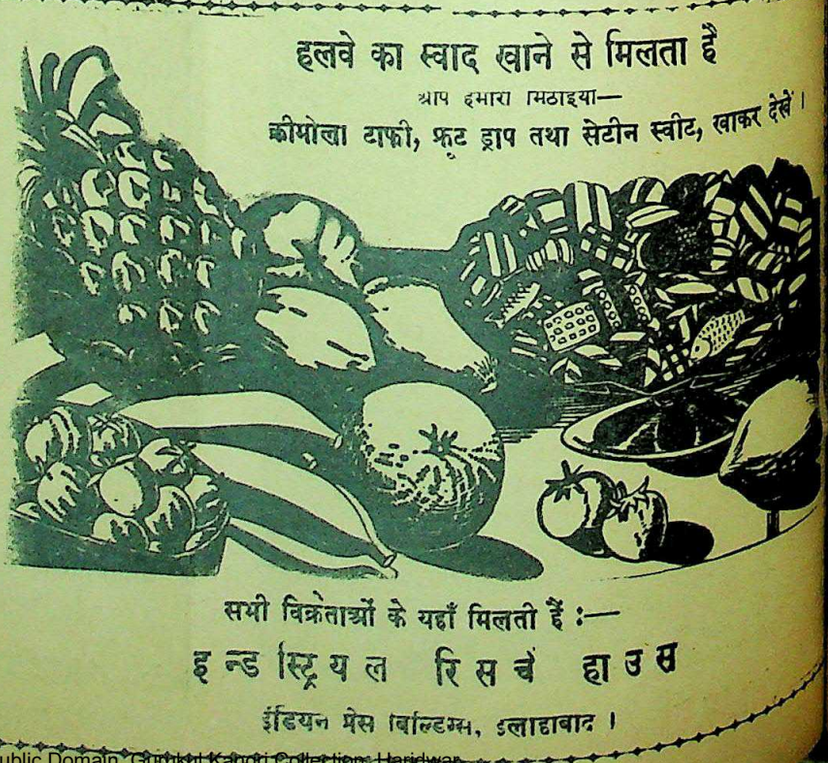

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारा मिठाइया—

कीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

ईंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य-चर्चा

विटामिन या खाद्योज और भोजन

विटामिन की इस देन से प्रत्येक प्राणी को लाभ उठाना चाहिए

लेखक, श्री रामेश वेदी, आयुर्वेदालंकार

इस लेख के लेखक श्रीरामेश वेदी, आयुर्वेदालंकार ।

कुछ अधिक समय नहीं हुआ कि भोजन के क्षेत्र में एक नवीन नाम विटामिन का प्रादुर्भाव हुआ। चौथाई शताब्दी पूर्व कुछ ऐसा होता कि विटामिन्स का महत्त्व स्पष्टतया देखा गया और उसके बहुत से हिस्सों में इस खोज को पहुँचने बहुत समय तक मालूम नहीं था, पर साधारण लोग भी विटामिन से परिचित हो गये हैं।

हमारी ओजनों में कुछ ऐसे पदार्थ हैं जैसे प्रोटीन, न कार्बोहाइड्रेट्स (कर्बोदित), न चर्बी, न लवण ही हैं। इन विशेष पदार्थों की कमीवाला भोजन खाने के कारण मृत्यु के पास पहुँचे हुए प्राणियों को जीवन देने की शक्ति इन पदार्थों में है। इन पूर्व-अज्ञात रासायनिक पदार्थों में जीवन देनेवाले तत्त्व होने से इन्हें जीवन तत्त्व (विटामिन) पड़ा। इन जीवन तत्त्व खाद्य पदार्थों के ओज रूप होने के कारण इनके लिए हिन्दी में 'खाद्योज' शब्द उपयुक्त प्रतीत होता है।

खोज किये गये परीक्षणों ने इस को प्रकाश में ला दिया कि यह ठीक है। यह देखा गया है कि इन खाद्योज से प्राणी को वंचित रखने से विविध रोग उत्पन्न हो सकते हैं। इन मिश्रणों का रासायनिक विश्लेषण किया गया, इसलिए जिस तरह ये मिश्रण बने थे उसके अनुसार वर्णमाला के अक्षरों के क्रम से इनका नाम ए, बी, सी, डी, और ई० रखा गया।

यह क्या है?

विटामिन सर्वप्रथम तो भोजन नहीं है, परन्तु भोजन के बहुत महत्त्वपूर्ण भाग हैं। शरीर के लिए आवश्यक हैं और शरीर में मुख्य भाग लेते हैं। इनके बिना जीवन-यापन कठिन है। पहले समझा जाता था कि भोजन के मुख्य—प्रोटीन, वसा, निशास्ता, लवण खनिज और जल को तो हम देख सकते हैं, परन्तु खाद्योज जिन्हें हम आँखों से न प्रत्यक्ष कर सकते हैं, न नासिका द्वारा गन्ध लेकर और न जिह्वा द्वारा चख कर अनुभव कर सकते हैं। हमने अच्छी तरह अध्ययन कर लिया है अब तो प्रयोगशालाओं में बनाकर ये बाजार में खूब बिक रहे हैं।

कुछ अस्वीकरण

यह कहना ठीक है कि हम भोजन के प्रोटीन आदि तत्त्वों को पृथक्-पृथक् मात्रा में लेकर आपस में मिला लेते हैं जिसमें खाद्योज भी होते हैं। भोजन के मिश्रण को छोटे-छोटे टुकड़ों में खाने के लिए दिया जाय तो इसका प्रभाव यह पड़ेगा कि खाद्योज नष्ट हो जायँगे। भोजन के साथ यदि हम ऊपर से खाद्योज की गोलियाँ खाते हैं तो उनकी वृद्धि और उन्नति होने लगती है। इससे यह प्रतीत होता है कि दूध में कोई ऐसा पदार्थ अवश्य है जो सामान्य भोजन-मिश्रण को जीवनी शक्ति प्रदान करता है, जो प्राणियों के जीवन को उत्तम रूप से चलने के योग्य बनाता है और उनकी वृद्धि करता है। इसी पदार्थ को हम खाद्योज कहते हैं, क्योंकि जीवन के लिए आवश्यक यह तत्व भोजन-द्रव्यों का ओज है, इसके बिना भोजन निर्वीर्य हो जाता है। यदि दूध के इस थोड़े से परिमाण को अधिक तापमान पर खुली वायु में पकाएँ और तब प्राणियों को दें तो वही परिणाम होगा—प्राणी न तो बढ़ेंगे और न ही जीवित रह सकेंगे। इससे मालूम होता है कि अधिक गरमी दूध में विद्यमान खाद्योजों को नष्ट कर देती है और इसलिए भोजन मिश्रण जीवनीय शक्तिविहीन जाता है।

खाद्योज 'ए'

अब कल्पना कीजिए कि दूध को इतना अधिक गरम नहीं किया जाता परन्तु खुली वायु में गरम किया जाता है और इसे भोजन-मिश्रण के साथ परीक्षणात्मक प्राणियों को दिया जाता है। फिर भी हम यही पाते हैं कि उनकी वृद्धि नहीं हो रही और उनकी आँखें, फेफड़े या आँतें रुग्ण हो गई हैं। यह इसलिए कि वायु में थोड़ा गरम करने से दूध के सब खाद्योज तो नष्ट नहीं हो जाते परन्तु उनमें से एक अवश्य नष्ट हो जाता है जिसे हम खाद्योज 'ए' कहते हैं।

खाद्योज 'बी'

एक और परीक्षण कीजिए। चावलों के खेतों से ताजा धान लेकर उस पर से छिलका उतार लीजिए। इन्हें भोजन के रूप में पानी के साथ कबूतरों को दिया जाय तो वे स्वस्थ बने रहते हैं। परन्तु यदि धान को एक ऐसे कारखाने में भेज दें जहाँ यह सफेद, चमकदार चिकने चावल के रूप में बदल दिया जाय और तब उसे पानी के साथ कबूतरों को खिलाया जाय तो वे अपनी भूख खो बैठेंगे, बहुत कमजोर और पतले हो जायँगे, अतिसार से पीड़ित हो जयँगे, सुस्त और शिथिल पड़ जायँगे और इन सबका अन्त उनकी मृत्यु के रूप में होगा। इससे इस परिणाम पर पहुँचना युक्तिसंगत प्रतीत होता है कि मशीन में जाकर चिकना और चमकदार बन जाने से चावलों में किसी ऐसी चीज का अभाव हो गया है जो पक्षियों के स्वास्थ्य और जीवन के लिए आवश्यक था। यह आवश्यक पदार्थ खाद्योज 'बी' था।

खाद्योज 'सी'

परीक्षण के लिए हम मैदे से बनी सफेद रोटी, मसाले और नमकवाले मांस, सूखे मेवे और सूखी वनस्पति के ऊपर अथवा जई के आटे और उबाले दूध के ऊपर किसी मनुष्य या गिनिपिग को रख रहे हैं। शीघ्र ही वह बीमार पड़ जायगा और स्कर्वी से आक्रान्त हो जायगा। इस बीमारी में मसूड़ों में व्रण हो जाते हैं, उनमें से रक्त निकलता है और शोथ हो जाती है, टाँगें वेदनायुक्त हो जाती हैं, त्वचा के नीचे रक्त सञ्चित हो जाने से दाने या चकत्ते प्रकट हो जाते हैं। इस बीमारी से पीड़ित मनुष्य और दूसरे प्राणी प्रायः मर जाया करते हैं। परन्तु यदि हम उपर्युक्त प्रकार के भोजन में नीबू, नारङ्गी का रस या दूसरे हरे फल और पत्तेवाले हरे शाकों का समावेश कर दें तो स्कर्वी रोग रुक जाता है और रोगी अच्छा हो जाता है। यह इसलिए होता है कि इन फलों के रसों में और हरे पत्तों में एक खाद्योज होता है जिसे खाद्योज 'सी' कहते हैं। परन्तु यदि हम फलों के रसों को उबाल कर दें तो स्कर्वी नहीं रुकेगा और न ही रोगी अच्छा हो सकेगा, क्योंकि यह खाद्योज उबालने और पकाने से नष्ट हो जाता है।

खाद्योज 'डी'

यदि बच्चे सूर्य की किरणों से रहित अँधेरे और गन्दे घरों में रहें, उनके भोजन में दूध, घी, मक्खन या मछली के तेल की पर्याप्त मात्रा न हो तो वे बेचैन तथा विक्षुब्ध हो जाते हैं और बहुत अधिक रोते रहते हैं। उनकी हड्डियाँ मुलायम हो जाती हैं और मुड़ जाती हैं। उनकी मांस-पेशियाँ और सन्धियाँ निर्बल, ढीली तथा पिलपिली हो जाती हैं और वे रिकेट्स नामक रोग के शिकार बन जाते हैं। यह इसलिए होता है कि उनके भोजन में एक खाद्योज की मात्रा पर्याप्त नहीं है जिसे खाद्योज 'डी' कहते हैं।

खाद्योज 'इ'

चूहे या परीक्षण के लिये लिए गये अन्य प्राणियों को इस प्रकार के भोजन पर रखा जाय जिसमें चरबीयुक्त मांस, नीरोग गेहूँ या कुछ प्रकार की सब्जियाँ न हों तो उनकी सन्तान पैदा होनी बन्द हो जायगी। सन्तान होगी भी तो वह जीवन-संग्राम में सफल नहीं हो सकेगी और शीघ्र ही मर जायगी। यह इसलिए है कि उनके माँ-बाप के भोजन में एक खाद्योज नहीं मिल सका जिसे खाद्योज 'इ' कहते हैं।

अन्य खाद्योज

यही सब मुख्य खाद्योज हैं जिन्हें वैज्ञानिकों ने खोज निकाला है। परन्तु अभी और भी ऐसे बहुत से खाद्योज हैं जिन्हें वैज्ञानिकों को खोज निकालना है। कुछ नये खाद्योज खोजे भी गये हैं और चिकित्सा में प्रयुक्त होने लगे हैं।

यह स्मरण रखने योग्य है कि अब तक जितने भी खाद्योज खोज निकाले गये हैं वे सब उस भोजन से प्राप्त किये जा सकते हैं जिसे प्रकृति हमें भोग के लिए प्रदान करती है। हमें भोजनों को प्राकृतिक देन समझना चाहिए। इनमें से खाद्योजों को निकालकर इन्हें खराब नहीं करना चाहिए और हमें सदा सतर्क रहना चाहिए कि हम भोजन के पदार्थों के साथ कोई ऐसा व्यवहार तो नहीं कर रहे हैं जिससे उनमें विद्यमान खाद्योज नष्ट हो जायँ।

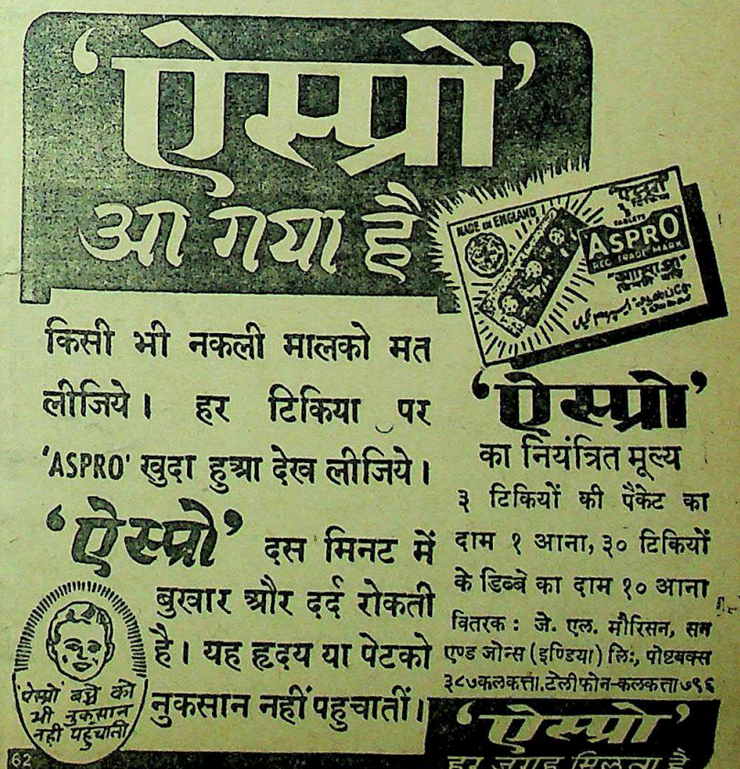

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर उधर की

मोटरों में पंचर न होगा

गत महायुद्ध में मोटरों को इतना काम करना पड़ता था जिससे उनके टायर घिस जाते थे। ऐसी दशा में ब्रिटिश टायर निर्माण असोसियेशन के श्री एच० एल० केनवाड ने बतलाया है कि अब ऐसे टायर बनाये जायँगे जो लगभग ४० हजार मील के सफर करने पर भी पंचर के खतरे से दूर रहेंगे। इस युद्ध में मोटरों को १० हजार मील चलने पर भी टायरों में पंचर नहीं होता था। अब पंचर न होने के ऊपर खोज हो रही है।

* * *

किसानी की मशीन

जंगलों में जहाँ घास का विस्तृत मैदान होता है, वहाँ की घास सूख कर व्यर्थ हो जाती है। ब्रिटेन में एक ऐसी मशीन का आविष्कार हुआ है जो सूखी घास को काटती और उसके बोझ बाँधती है। वह मशीन १ घंटे में करीब ४ टन घास बाँध डालती है। इस मशीन में १५ घोड़ों की शक्ति का इंजन लगता है।

* * *

ब्रिटेन के लोग जंगल में रहेंगे

इधर ब्रिटेन की आबादी बढ़ रही है। साथ ही उसके उपनिवेश (साम्राज्य) भी उसके हाथ से जा रहे हैं। ऐसी दशा में ब्रिटेननिवासियों के भोजन और आमोद-प्रमोद के लिए कोई स्थान चाहिए ही। अब वे घर (इँगलैण्ड) छोड़कर जंगल (आस्ट्रेलिया) जा रहे हैं। समाचार है कि ६० हजार ब्रिटिश आस्ट्रेलिया में जाने के लिए तैयार हैं।

* * *

जमीन की नदियों से रक्षा

संसार की नदियों और वर्षा के कारण पृथ्वी की बहुत सी उर्वराशक्ति कटकर बह जाती है। अभी हाल में साम्राज्य वैज्ञानिक सम्मेलन ब्रिटेन में इस विषय का काफी वाद-विवाद रहा। संसार की जमीन में भारत और अफ्रीका की भूमि ऐसी है जो बहुत अंश में कटकर बहा करती है। इससे भूमि की उर्वरता कम हो जाती है। सम्मेलन ने इस विषय पर अपनी राय दी है कि भूमि कटने की तीन स्थिति होती है, प्रथम तो यह कि मशीन-सम्बन्धी गलतियाँ दूसरी यह कि भूमि की उर्वरता का ठीक ठीक सदुपयोग, तीसरी यह कि भूमि की आर्थिक स्थिति ठीक करने के लिए इस पर काफी खोज की जाय। सम्मेलन भूमि-रूप (जमीन कटने) पर काफी खोज करेगा।

* * *

भूमि के लिए भोजन

जो भूमि पैदा करते करते कमजोर हो गई हैं उनकी उर्वरता बढ़ाने पर सम्मेलन में विचार हुआ। वैज्ञानिकों ने भूमि की उर्वरता बढ़ाने पर कई वैज्ञानिक तरीके इस्तेमाल करने को सोचा है।

* * *

मनुष्य की चन्द्रलोक के लिए तैयारी

बहुत दिनों की कल्पना को अब मनुष्य सत्य करके दिखलायगा। ब्रिटेन के एक खगोलवेत्ता का मत है कि बर्फ के जूतों, विशपतः बने बस्त्रों और आक्सीजन गैस के यन्त्र से सुसाज्जत अन्वेषक चन्द्रलोक में १५ वर्ष में पहुँच जायँगे। चन्द्रमा की आकर्षण-शक्ति पृथ्वी की अपेक्षा केवल १/६ है। वहाँ का आकाश गहरा काला, चमकदार तारे और सूर्य की असह्य-नीय तेज़ धूप होगी। चन्द्रलोक में थोड़ी थोड़ी धूल निरंतर उड़ती होगी क्योंकि टूटनेवाले तारे टुकड़े-टुकड़े होकर चन्द्रमा में बराबर गिरते रहते हैं।

* * *

युद्ध-काल में खोज

युद्ध-काल में वैज्ञानिकों ने कई नये-नये अविष्कार किये हैं। कहा जाता है अभी तक १७ प्रकार के अनुसंधान हुए हैं। जिनमें पेंसिलिन, एटामिक बम, हवाई जहाज़, विमान-वेधी तोपें और राडर आदि हैं।

* * *

रेडियो-कमेटी क्या कर रही है ?

(पेज ६ का शेष)

भाषाओं के सुननेवालों के पत्रों का उत्तर दिया जाय, अर्थात् वह सब काम जो हिन्दी में अलग और उर्दू में अलग नहीं हो सकता, हिन्दी में हो। बम्बई स्टेशन की प्रमुख भाषा या तो हिन्दी, अगर वह मराठी और गुजराती भाषियों को स्वीकृत हो तो, रक्खी जाय या मराठी।

(ह) जब तक 'हिन्दुस्तानी' नहीं बनती तब तक तो अवश्य ही खबरें अलग अलग हिन्दी और उर्दू में होनी चाहिए, और विभिन्न स्टेशनों का अन्य कार्य जो 'हिन्दुस्तानी' से लिया जाता ऊपर (स) के अनुसार होना चाहिए।

(ल) नियामत रूप से होनेवाले तथा त्योहारों के उपलक्ष्य में होनवाले धार्मिक प्रोग्रामों की उचित व्यवस्था की जाय और सानुपातिक समय निश्चित किया जाय।

मेमोरेंडम का साराश

(१) हिन्दी की चीजों के लिए 'हिन्दी में' लिखा व कहा जाय। हिन्दी की चीजों का अनुपात निश्चित हो।

(२) स्त्रियों तथा बालकों के प्रोग्राम अलग से हिन्दी में हों। इसी प्रकार के अन्य प्रोग्राम भी अलग से हिन्दी में हों।

(३) संगीत में हिन्दी-काव्य को उचित स्थान मिले।

(४) हिन्दी की चीजें सदैव देवनागरी में लिखी जायँ।

(५) प्रत्येक स्टेशन पर स्टाफ में हिन्दी के विद्वानों की उचित संख्या में नियुक्ति हो।

(६) 'हिन्दुस्तानी' जो बने उसकी सब चीजें शुद्ध उच्चारण की दृष्टि से सदैव देवनागरी में लिखी जायँ।

(७) 'आदाबअर्ज़' तथा अन्य मामलों का निबटारा किया जाय।

(८) जब तक 'हिन्दुस्तानी' कार्य चल रहा है तब तक तो हिन्दी उर्दू में अलग अलग कास्ट की जायँ। ऐसा तुरन्त जाना चाहिए।

क्या आप अपने लिन से साफ किए

हाँ, यही उचित तरीका है

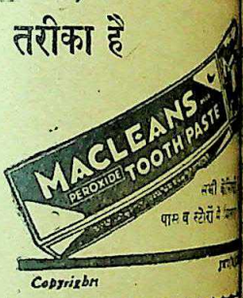

Copyright

हिन्दी साहित्य

बाबू श्यामसुन्दरदास प्रणीत

मूल्य चार रुपये

हिन्दी में ऐसे ही इतिहास-ग्रन्थों की कमी है। जो कुछ इनी-गिनी पुस्तकें लिखी गई हैं उनमें से बहुत-सी अप्रामाणिक और अधूरी हैं और बाकी अप्राप्य हैं। खासकर हिन्दी साहित्य का इतिहास पढ़नेवालों को कोई भी प्रामाणिक इतिहास-ग्रन्थ उपलब्ध न होने के कारण बड़ी ही कठिनाई थी। इसी कठिनाई को दूर करने के लिए हिन्दी के माने हुए विद्वान् तथा समालोचक बाबू श्यामसुन्दरदास ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'हिन्दी भाषा और साहित्य' का परिमार्जित और संशोधित संस्करण 'हिन्दी साहित्य' के नाम से उपस्थित किया है।

पुस्तक में केवल विभिन्न कालों का ऐतिहासिक वर्णन ही नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को विभिन्न कवियों की कविताओं से परिचित कराने के लिए उदाहरण-स्वरूप कविताएँ भी दी गई हैं। हिन्दी-साहित्य के इतिहास के सम्बन्ध में जितने भी नये अनुसन्धान हुए हैं, उन सबका इसमें समावेश किया गया है। इस प्रकार हिन्दी-साहित्य के विद्यार्थियों के लिए यह एकमात्र पुस्तक है जिससे वे साहित्य की समस्त प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

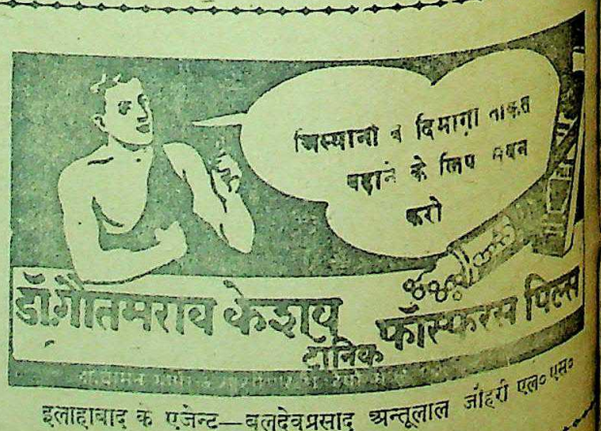

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एल० एल० धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

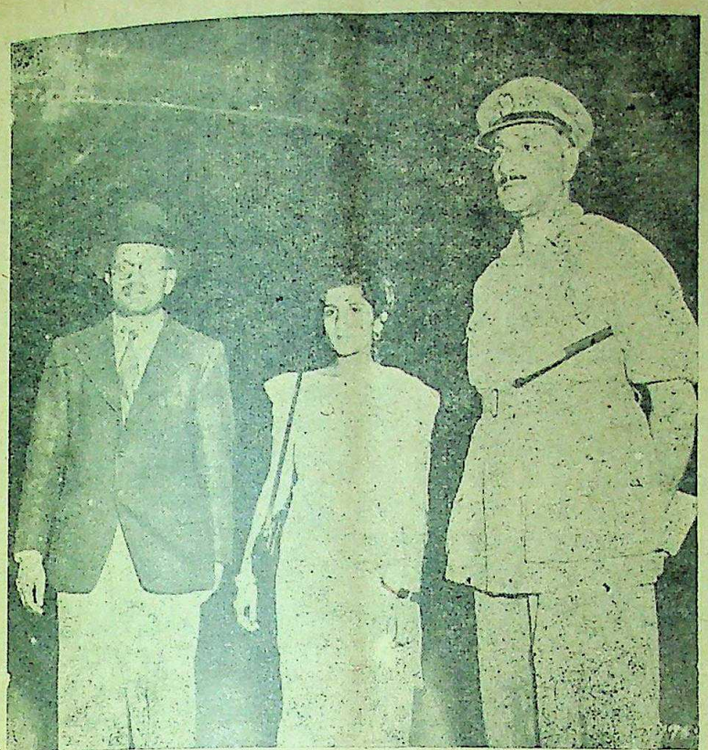

फिलीपाइन की स्वतंत्रता-दिवस के अवसर पर मनीला में पंजाब विश्व-विद्यालय के अर्थशास्त्र-विभाग के अध्यक्ष डाक्टर लक्ष्मीचन्द्र जैन, उनकी पुत्री और ब्रिगेडियर जनरल के० एस० थिमाया।

साथ करने के एकमात्र उद्देश्य को लेकर इस संस्था की स्थापना की है। संगठन की सहूलियत के ख्याल से उन्होंने अपनी संस्था के वर्त्तमान उद्देश्यों को स्थानीय एसोसियेशन ऐक्ट के अंतर्गत रक्खा है। किन्तु अधिकारी वर्ग संतुष्ट नहीं हैं क्योंकि वे किसी भी प्रकार के संगठन को पसंद नहीं करते हैं। शीघ्र ही संघ के उद्देश्यों में वह वृद्धि होनेवाली है।

यों तो नागरिक अधिकार का अर्थ लम्बा चौड़ा है किन्तु यहाँ की प्रजा को साधारण अधिकार भी प्राप्त नहीं हैं। लोगों को संगठन की मनाई है। देश के राजनैतिक वातावरण से दिलचस्पी रखनेवाले अपराधी माने जाते हैं। लोगों को लेखन तथा भाषण की स्वतन्त्रता नहीं है। पत्रकारों को तो जीना असंभव है। किन्तु सुना जाता है कि यहाँ की सरकार शीघ्र ही नागरिक अधिकार दिये जाने की घोषणा करने जा रही है।

अफवाहें हैं कि राज्य की शासन-व्यवस्था के लिये एक राज्यसभा बनाई जानेवाली है। इसमें जनता द्वारा चुने कुछ प्रतिनिधि रक्खे जायँगे। यहाँ के सरकारपरस्त तथा पदलोलुप लोग अभी से अफवाहें सुनकर ही सभा के सदस्य होने का स्वप्न देख रहे हैं।—संवाददाता

* * *

सागर डिस्ट्रिक्ट एण्ड लोअर ग्रेड स्टाफ यूनियन की एक सभा श्री के० पी० उग्गिल वकील की अध्यक्षता में स्वतंत्री वाचनालय में हुई। पदाधिकारियों का चुनाव हुआ—सभापति श्री जे० के० लोकरस, उपसभापति श्री डा० हेमचन्द पाँड़े, मन्त्री श्री हरीशंकर, उपमन्त्री श्री शेख अहमद, श्री सीताराम तिवारी, खजांची श्री रामदास। इसके सिवाय ५ सदस्य कार्यकारिणी में सम्मिलित किए गए।

खबर है कि १ सितम्बर से सागर में लड़कों का नार्मल स्कूल खुल रहा है।

रहली तहसील से सर्वश्री पन्नालाल नारायण, मनमोहनलाल व परमानन्द चुने गए। अधिक वर्षा के कारण ४ स्थानों का चुनाव रुक गया। बंडा तहसील से श्री देवकीनन्दन, हीरालाल, वसन्तीलाल, खूबचन्द, कन्छेदीलाल, मुन्नीलाल, नन्हूँराम, राजाराम व नर्मदाप्रसाद पंडलेश्वर चुने गए। सागर तहसील से सर्वश्री मुरलीधर चौबे, सुन्दरलाल, बंशीधर, रामसिंह, नन्हूँराम व्यास व गन्धर्वसिंह मंडल चुनाव में विजयी हुए।

खबर है, म्यूनिसिपल कमेटी ने अपने सभी कर्मचारियों के वेतन में २०% की वृद्धि की है। प्राइमरी शिक्षक का एक डेपुटेशन श्री जिलाधीश महोदय से मिला। उन्होंने वेतन व महँगाई बढ़ाने का आश्वासन देते हुए शिक्षकों से हड़ताल स्थगित करने को कहा।

—लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

* * *

इन्दौर में डायमण्ड टाकीज़ में साहित्यिक और पत्रकारों की एक सभा राज्य-वैद्य पं० ख्यालीराम जी द्विवेदी के सभापतित्व में हुई, जिसमें यह प्रस्ताव पास हुआ—इन्दौर नगर के साहित्यिक और पत्रकारों की यह सभा उज्जैन-निवासी पं० सूर्यनारायणजी व्यास जो कि एक उच्चतम साहित्यिक मध्यभारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के भूतपूर्व सभापतित्व तथा अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की विज्ञान परिषद् के भूतपूर्व सभापति तथा पत्रकार होने के साथ ग्वालियर राज्य के एक अत्यन्त सम्माननीय प्रतिष्ठित नागरिक के गिरफ्तार किये जाने पर आश्चर्य प्रकट करती है। यह सभा महाराजाधिराज ग्वालियार से निवेदन करती है कि उनका मुकदमा एक स्पेशल निष्पक्ष तथा बाहरी अदालत के द्वारा किया जाना चाहिए।

—संवाददाता

* * *

इंदौर (आलमपुर) की जनता और सरकारी कर्मचारियों ने धर्मपरायणादर्श महिला-रत्न देवी श्री अहिल्याबाई होलकर की पुण्य-तिथि का महोत्सव २५ अगस्त को अत्यन्त समारोहपूर्वक मनाया। इसी अवसर पर स्थानीय 'बजरंग-व्यायाम-शाला' के व्यायाम-सम्बन्धी विविध प्रदर्शन हुए। श्री अहिल्योत्सव-कमेटी, आलमपुर के सभापति श्री रमाशंकर चतुर्वेदी, बी० एस० सी० ने संस्था को प्रोत्साहन देने के लिए ११) का पुरस्कार दिया। —मंत्री

* * *

गोरखपुर में तरुण हिन्दी परिषद् की बैठक श्री जयमंगलजी के निवास-स्थान जगन्नाथपुर में उन्हीं की अध्यक्षता में हुई जिसमें नये वर्ष के लिए पदाधिकारी चुने गए। सभापति श्री जयमंगल द्विवेदी बी० ए० एल-एल० बी० वकील, उपसभापति श्री उमाशंकर राम त्रिपाठी 'विशारद' मंत्री श्री पुरुषोत्तमदास मोदी उपमंत्री श्री परमानन्द त्रिपाठी कोषाध्यक्ष श्री मणिभद्रदास गुप्त।

सर्वसम्मति से यह निश्चित हुआ कि इस वर्ष का वार्षिक अधिवेशन सितम्बर के तीसरे सप्ताह में किया जाय और उसके सभापतित्व के लिए बाबा राघवदास का नाम विचाराधीन है।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

* * *

जयपुर राज्य वैद्य-सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति के निश्चय के अनुसार रियासत में ४ सितम्बर १९४६ को "आयुर्वेद-दिवस" मनाया गया। जिसमें प्रभावशाली भाषणों के बाद भारत सरकार से अनुरोध किया गया कि वह आयुर्वेद को राष्ट्रीय वैज्ञानिक चिकित्सा पद्धति मानकर उसकी उन्नति के लिये अधिकाधिक प्रोत्साहन दे।

युद्धोत्तर पुनर्निर्माण के लिए भारत-सरकार द्वारा नियुक्त स्वास्थ्यपर्यवेक्षण और उन्नति समिति की कथित मोर कमेटी ने अन्य अपनी दोषपूर्ण योजना के अतिरिक्त जो सरकार को यह सुझाया है कि देश में एलोपैथी चिकित्सकों का भारी विस्तार किया जाये और आयुर्वेदिक चिकित्सा-प्रणाली बन्द कर दी जाय, इसका घोर विरोध किया जाय।

—वैद्य रामसुन्दरलाल बाजपेयी

* * *

अजमेर सरस्वती बालिका विद्यालय की कन्याओं ने विश्ववंद्य महात्मा गांधी जी की ७८वीं वर्षगाँठ के पवित्र पर्व पर ७८ हजार गज सूत कात कर देने का निश्चय किया है। इसी अवसर पर महिला-सम्मेलन और वार्षिकोत्सव मनाने की भी आयोजना की गई है।

—पन्नालाल माहेश्वरी

* * *

बलिया जिले के अन्तर्गत भारती-भवन पुस्तकालय गायघाट की हालत अत्यन्त शोचनीय है। सार्वजनिक पुस्तकालय होते हुए भी जनता को इससे विशेष लाभ नहीं हो रहा है। मैंने मंत्री-पद से तथा साधारण-सदस्यता से भी इस्तीफा दे दिया है। चूँकि यह गवर्नमेंट एडेड लाइब्रेरी है क्योंकि शिक्षा-प्रसार-विभाग यू० पी० से इसमें ३६) प्रतिवर्ष सहायता मिलती है। अतः शिक्षा-आफिसर ध्यान दें तथा जाँच कराकर इसकी समुचित व्यवस्था करायें।

—गणेशदत्त पांडेय 'विशारद'

* * *

कोटा सेलसिया, मंडल कांग्रेस कमेटी का चुनाव इस प्रकार हुआ—सभापति, पं० महेश्वरदत्त जोशी, उपसभापति पं० कमलापति जोशी, उपसभापति पं० पूर्णानन्द जी, उपसभापति श्री खुशालीराम, मंत्री गो० रामगिरी जी, उपमंत्री ठाकुर कुँवरसिंह नेगी, उपमंत्री ठाकुर पानसिंह जी, कोषाध्यक्ष ठाकुर हीरासिंह नेगी।

—रामगिरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तर्कालीन केन्द्रीय सरकार

(पेज ५ का शेष)

सदस्यों को नामजद करते थे। भारतीय इतिहास में यह पहला अवसर है कि जब एक भारतीय नेता को मन्त्रिमण्डल बनाने के लिए निमंत्रित किया गया है और वायसराय ने आश्वासन दिया है कि वे रोजमर्रा के शासन में कोई हस्तक्षेप न करेंगे और डुमीनियनों के गवर्नर-जनरलों के समान वैधानिक गवर्नर-जनरल होकर रहेंगे। यह पहला मौका है, जब ब्रिटिश सत्ता ने वस्तुतः शासन-सत्ता भारतीय हाथों में हस्तान्तरित की है। और यही कारण है कि कांग्रेस ने भी वनवास का मार्ग त्याग करके राजमार्ग ग्रहण किया है और वल्कल वस्त्र उतारकर राजसी वस्त्र पहना है। इस अवस्था को लाने का श्रेय महात्मा गांधी को है, जिन्होंने अँगरेज़ों के प्रति घृणा और द्वेश के भाव न रखते हुए यह लड़ाई लड़ी है। इसलिए यदि सम्पूर्ण राष्ट्र गांधी जी का सार्वजनिक रूप से अभिनन्दन करे, तो कोई अचरज की बात नहीं है।

अव्यवस्था और गड़बड़

पाँच बैरिस्टरों, दो वकीलों और भारतीय जीवन के प्रमुख व्यक्तियों से बनी नेहरू गवर्नमेंट के सामने अनेक गम्भीर समस्यायें हैं। सबसे पहले हमें यह बात याद रखनी चाहिए कि यह अन्तर्कालीन और अस्थायी गवर्नमेंट है। इसको अपनी जगह स्थायी गवर्नमेंट शीघ्र से शीघ्र स्थापित करनी है। स्थायी गवर्नमेंट विधान-निर्माण सभा द्वारा बनाये गये विधान के अनुसार चुनी गई पहली भारतीय गवर्नमेंट के बनने पर बनेगी। इसलिए विधान-सभा को सफल बनाना और देश को सन्तुष्ट करनेवाला और राष्ट्र की आकांक्षाओं को पूरा करनेवाला विधान बनाना सर्वप्रथम कार्य इसके सामने है। स्वतन्त्र भारत का विधान बनाना, वह भी जल्दी से जल्दी, सबसे पहला काम है।

कलकत्ता में चार दिन जो महान् हत्याकाण्ड हुआ है, उसका विपाक्त धुआँ सारे देश में फैला हुआ है। 'लड़कर लेंगे पाकिस्तान' का लीग का नारा आज भी आकाश में गूँज रहा है। 'सीधी कार्रवाई' की लीग की धमकी सिर पर मँडरा रही है। इसलिए यदि देश में साम्प्रदायिक दंगे हों, अव्यवस्था हो, अशान्ति हो, तो कोई आश्चर्य नहीं। अन्य देशों के इतिहास में भी हम संक्रमण काल के समय अव्यवस्था को पाते हैं। यह अव्यवस्था और गड़बड़ी कितने दिन और कितने वर्ष तक रहेगी, यह कोई नहीं कह सकता। इसका काल बीस से ६० साल तक हो सकता है। यह जन-साधारण की समझदारी पर निर्भर है कि वह अव्यवस्था और अशान्ति को उत्पन्न न होने दे। गृह-युद्ध के बाद संयुक्त-राष्ट्र अमरीका ने बड़ी कठिनाई के दिन गुज़ारे थे। शासन का अनुभव न होना, शक्ति प्राप्त करने की आकांक्षा, लोभ आदि कारणों से इसकी उत्पत्ति होती है। रूस के अन्दर भी १९१९ तक गड़बड़ रही। और लेनिन के आने के बाद ही वह शान्त हुई। फ्रांस का इतिहास हत्याकाण्ड गुइलोरिन का इतिहास है। आयर में भी कमलेन्स और डीवेलरा के झगड़े के कारण पर्याप्त समय अशान्ति और गड़बड़ी रही। इसलिए हमें लीग के असहयोग से घबराना न चाहिए। न अम्बेदकरी हरिजनों के सत्याग्रह को देखकर सन्तुलन होना चाहिए। अतः शासन कठोर होना ही चाहिए इस समय। इस कठोरता को देखकर सरकार की कड़ी आलोचना करने से पहले हमें संयुक्तकाल की अवस्था का ध्यान कर लेना चाहिए।

भारतीय गौरव

इस अवसर पर हमें आपको गौरव और परम्परा मिली गौरवपूर्ण उत्तराधिकार को नभूलना चाहिए। स्वतन्त्र भारत का विधान उसके अनुरूप होना चाहिए। भारतीय समाज से अब टोरियों, खुशामदियों रायबहादुरी के भूखों का अन्त होगा। भारत की निभिन्न पार्टियों में जिनका लक्ष्य राष्ट्रविरोधी है, उनके लिए कोई स्थान न होना चाहिए। उनके साथ किसी प्रकार की दया न दिखानी चाहिए। साम्प्रदायिकता और पृथक् निर्वाचन प्रणाली का अन्त होना चाहिए। राष्ट्र-शरीर का यह युग है और इसका अन्त होना आवश्यक है।

मुद्रास्फीती

देश में औद्योगिक हड़तालें बड़े पैमाने पर हो रही हैं क्योंकि जीवन-निर्वाह का व्यय प्रतिदिन बढ़ता जाता है। फलतः वेतन बढ़ाने की माँग की जाती है। वह पूरी न होने पर हड़ताल होती है। हड़ताल होने से उत्पान कम हो जाता है। फलतः मुद्रास्फीती और अधिक बढ़ जाती है। इस दूषित चक्र को रोकने का एकमात्र उपाय उत्पादन को बढ़ाना है। अन्न-वस्त्र की भयंकर समस्या भी उत्पादन को बढ़ाने से ही हल होगी। औद्योगिक उत्पादन के लिए मैशीनरी और शक्ति चाहिए। यह स्टर्लिङ्ग पावना के प्रश्न को हल किए हुए सम्भव नहीं है। नेहरू गवर्नमेंट को अविलम्ब स्टर्लिङ्ग पावना की बातचीत चलानी चाहिए। दरिद्रता, निरक्षरता और रोग-निवारण की सब योजनायें ताक पर धरी रहेंगी। चोर बाजार का अन्त भी उत्पादन को बढ़ाए वगैर सम्भव नहीं है।

औद्योगीकरण

इस समस्या की ओर ध्यान देने का एक और कारण भी है। युद्ध के कारण बहुत से लोग अनावश्यक रूप से भरती कर लिए गए। जो लोग लड़ाई के कारण भरती किए गए थे उनकी भी अब जरूरत नहीं रही है। बेकारी के भय से उनको रोके रखना भी बहुत देर तक सम्भव नहीं है। इसलिए छटनी अनिवार्य है। पर इन अलग हुए लोगों को काम देना भी आवश्यक है। यह गवर्नमेंट का काम है कि वह हरएक व्यक्ति के लिए काम ढूँढे। खेती द्वारा यह सम्भव नहीं है। अतः देश का औद्योगीकरण आवश्यक है।

राष्ट्रीयकरण

उद्योगीकरण की समस्या के साथ मूल व कुंजी उद्योगों का राष्ट्रीयकरण का प्रश्न भी जुड़ा हुआ है। यदि नये उद्योगों को चलाने के लिए जापान के समान गवर्नमेंट ५० प्रतिशत पूँजी लगावे तो भारत का उद्योगीकरण भी तेजी से होगा और उद्योगों के राष्ट्रीयकरण का प्रश्न भी आसानी से हल हो जायगा। जापान ने १९०५ से इसी आधार पर अपने उद्योगों का निर्माण किया था। राष्ट्र के मुख्य उद्योगों को किसी एक व्यक्ति समूह के हाथ में नहीं दिया जा सकता। योजन-विशेषज्ञों की भी भारत को जरूरत होगी। योजना बनानेवाले और योजना को अमल में लानेवालों की भी आवश्यक न होगी, रूस की आबादी का इस कार्य में ५६ प्रतिशत भाग लगा हुआ है। इस अनुमान से भारत को इस काम के लिए २·२ कोटि जनों की आवश्यकता होगी।

खेती में सुधार आवश्यक है और यह भोजन के अनुसार होना चाहिए। किसानों का कर्ज भार दूर करना होगा। किसान नए ढंग से खेती करें और उत्पादन अधिक से अधिक करें, पशुओं को अच्छी तरह पालें और दूध और घी का उत्पादन अधिक करें, इसके लिए एक लाख माडल फार्म बनाने होंगे।

निरक्षरता

पन्द्रह सालों के अन्दर भारत में कोई निरक्षर न रहे, इसके लिए शिक्षितों की साक्षरता-प्रसार के लिए बाधित भरती आवश्यक होगी। डिग्री पानेवाले छात्रों को तब तक डिग्री न दी जाय जब तक वे अपना कुछ समय शिक्षा-प्रसार में न दें।

भारतीय सेना का निर्माण हमें नए आधार पर करना चाहिए। हमें यह न भूलना चाहिए कि भारत को एशिया की एक महान्शक्ति बनाना है। भारत की रक्षा की दृष्टि से सीमा सिंगापुर और स्वेजनहर है। वृहत्तर भारत का निर्माण करना हमारा ध्येय है। इसके लिए भारत की सेना शक्तिशाली आधुनिक शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित प्रकार से उद्यत होनी चाहिए की सेना रूस और संयुक्तराष्ट्र की सेना के समान होनी चाहिए। भारत एक विस्तृत देश है समुद्री किनारा बहुत बड़ा है।

सेना बलवान हो, इसके करण का प्रोग्राम हमें अ यह गांधी जी की आदिंसा विरुद्ध है, पर हम शस्त्रीकरण रहे हैं यह न भूलना चाहिए सैन्य-शक्ति हमारी परराष्ट्र नीति त्तर भारत के विस्तार के चाहिए। भारतीय स्वाधीनता की स्वाधीनता निर्भर है, अतः सेना का विशाल और शक्तिशा अनिवार्य है। भारत की करोड़ है अतः उसकी जलसेना सेना भी अमरीका, ब्रिटेन और सम्मिलित शक्ति के बराबर होनी जो एशिया और अफ्रीका की की गारण्टी कर सके। अशोक भारत अपनावे, इसके लिए भी है कि भारत शस्त्रीकरण में पिछड़ न रहे और अपने धर्मप्रचारकों मिशनरियों की रक्षा करने के लिए समर्थ होना चाहिए।

छप गया ! छप गया

वार्षिक बालसखा १९४६

यह अङ्क बालक-बालिकाओं को कितना पसन्द आ
इसका प्रमाण कुछ विद्वानों की निम्नलिखित पंक्तियों में देखि

श्री राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस्-सी०, एल्-एल० बी०, बरेली—बालसखा के वार्षिकाङ्क के लिए घर में बच्चों में छीना-झपटी मच गई। पठनीय, लाभप्रद व रोचक है। सजधज सुन्दर व आकर्षक। ऐसे को स्वयं कुछ लिखने व पढ़ने का प्रोत्साहन मिलता है।

श्री विद्याबागीश 'वत्स', फ़ीरोज़ाबाद—वार्षिक बालसखा सुन्दर, लुभावना, सुहावना खिलौना है। मिलते ही हम लोगों में लड़ आशा कहती है, पहले मैं पढ़ूँगी। उसकी माता कहती है, पहले मुझे पढ़ और यह बूढ़ा बैल कहता है, तुम दोनों तो पढ़ती ही रहोगी, पहले मुझे दो। अभी तय नहीं हो पाया कि कौन पहले पढ़ेगा। छीना-झपटी जारी है।

श्री ऋषभचरनाथ भट्ट, बी० ए०, आगरा—वार्षिक अङ्क को जो दिया है, उसके लिए कहाँ तक धन्यवाद दूँ? आते ही मेरे पौत्रों के हाथ तीन दिन तक उन्होंने सब काम छोड़कर—जैसे पहले लोग 'चन्द्रकान्ता' उसे पढ़ डाला। बालकों को इतना पसन्द आनेवाला पत्र सम्पादित करने आप वास्तव में धन्यवाद के भागी हैं।

श्री राजेन्द्र शर्मा, प्रबन्ध-सम्पादक 'योगी' पटना—वार्षिक मेरे पुत्र की सम्पत्ति हो चुका है। कई कविताएँ उसने याद कर ली हैं। आलोचना लिख सकता, तो स्वयं ही लिखता। शीघ्र ही मैं इसको प्रकाशित करूँगा।

* *

मँगानेवालों को शीघ्रता करनी चाहिए। बहुत थोड़ी प्रतियाँ तीन सौ पृष्ठों में इस सचित्र वार्षिकांक का मूल्य ३) तीन रुपया है। भी हैं। 'बालसखा' के स्थायी ग्राहकों के लिए रियायती मूल्य २॥) मूल्य के लिए ग्राहक-संख्या लिखना ज़रूरी है। वी० पी० से नहीं भेजा जाता।

मैनेजर 'बालसखा', इंडियन प्रेस लि०, इलाहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने नाम पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए कीमत १ डिब्बा ३।–) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्री में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगतप्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ 'तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

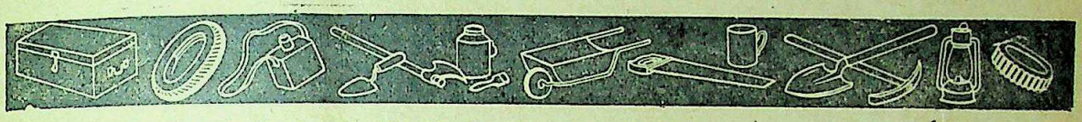

GOVERNMENT OF INDIA

DISPOSALS

(SECTION CPM OF 2nd CATALOGUE)

CAPITAL ASSETS, PLANT, MACHINERY, HEAVY CONSTRUCTIONAL MATERIALS

Following types of stores are available for sale:

Hand Tools :- Eyed tools including agricultural implements, etc.

Machine Tools :- Lathes, drilling, shaping, binding, blotting, planing, milling machines, grinders, etc.

Engineering and Constructional machinery:- Air compressors, workshop, lifting and transport, gas welding and cutting machinery, etc.

Electrical machinery and plant :- motors, generators, generating plant, transformers, distribution and control apparatus, electrical engines, electric furnaces and ovens, batteries and cells, refrigerating, heating and lighting equipment, boilers, etc.

Engines :-Internal Combustion engines, steam turbines, gas engines, etc.

Road making machinery :- Excavating, earth shifting and surfacing machinery, road rollers, asphalt and surface treating machinery, tar sprayers, stone crushers, concrete mixers, etc.

Other machinery :-Agricultural, Dairy, pumping, waterworks, refuelling machinery, etc.

Full details giving description and condition of stores, quantity, location, etc. and the method of tendering are contained in Section CPM of the Second Catalogue which is available at Rs. 3/- from the addresses given below:

1. Publicity Officer, Directorate General of Disposals, Shahjahan Road, New Delhi.
2. Regional Commissioner, Strand House, Ballard Estate, Bombay.
3. Regional Commissioner, 6, Esplanade East, Calcutta.
4. Regional Commissioner, The Mall, Lahore.
5. Regional Commissioner, 15/159 Civil Lines, Cawnpore.
6. Dy. Regional Commissioner, Variawa Building, Mcleod Road, Karachi.
7. DY. Regional Commissioner, United India Life Building, Esplanade, Madras.
8. All important Chambers of Commerce and Trade Associations.

Mail orders for the catalogue must be accompanied by Money Order or Indian Postal Order.

In addition to the Officers mentioned in the catalogue, permits to view stores located in any area may be obtained from the Regional Officer for that area.

Note: Watch for further announcement regarding Section CPM of Third Catalogue which will contain a further list of stores available for disposal.

ISSUED BY THE DIRECTORATE GENERAL OF DISPOSALS, DEPARTMENT OF INDUSTRIES & SUPPLIES, NEW DELHI

AC 112

CC-0. In Public Domain.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शारीरिक उष्णता के लिये...

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

आज से ही शुरू किजिए, सर्वत्र मिलता है।

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली तलुवों और आंखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग में आग सी जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, जड़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढा बालक वृद्ध, पुरुष स्त्री सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक हानिरहित है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निर्व्यंकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके शीतल, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

पर्ल कम्पनी
आर्यावधी
कार्यालय
बम्बई २७

एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

यू० पी० प्रतिनिधि दोसर एण्ड को०, बिरहना रोड, कानपुर।

बच्चे
वुड वर्ड का ग्राइप वाटर
पसंद करते हैं
यह सब दर्दों को दूर करता है और
बच्चों को तंदुरुस्त व खुश रखता है।

WOODWARD'S GRIPE WATER

keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर का पहिचान है, इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए इसको अवश्य देख लिया करें।

W. WOODWARD LTD., LONDON, ENGLAND.

Estd 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और

सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S. १०) H.M.S. १५) H.M.D.S. २५) पुस्तक—अ० पारिवारिक १) बायोकेमिक १००० रेडलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्शनरियाँ १॥) आर्गनन १) कापिया १॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायेंगी। डा० माफ—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≡) ड्राम। आउन्स बरेलु बक्स ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.)

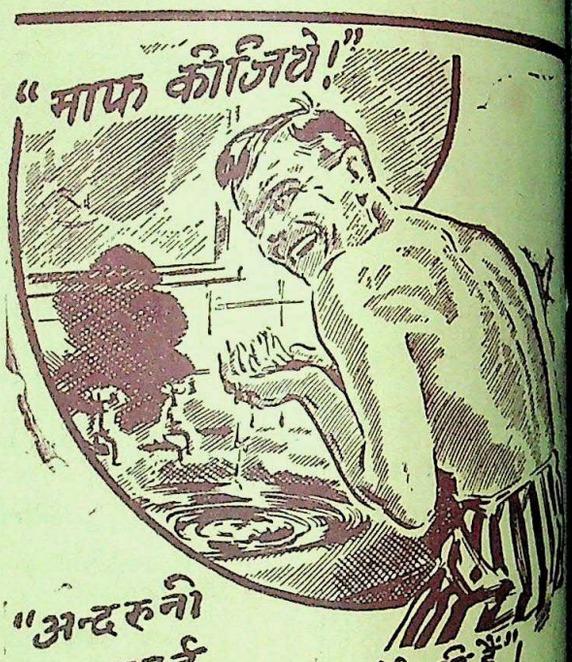
"माफ कीजिये!"

"अन्दरूनी सफाई स्वास्थ्य के लिये सर्वोपरि है"!

अधिकाधिक लोग यह अनुभव करने लगे हैं कि स्वास्थ्यके लिये एण्डरूजका सेवन कर अन्दरूनी सफाई अत्यावश्यक है। शरीरकी बाहरी सफाई जितनी आवश्यक है उतनी ही भीतरी। इसके लिये एण्डरूज का सेवन जरूरी है। एण्डरूज केवल रेचक ही नहीं, यह समस्त संस्थानको साफ कर विषाक्त मलको दूर करता है। इसका नियमित सेवन आपको पूर्णतः स्वस्थ बनायेगा।

इसका फल देखिये :—

प्रथम...एण्डरूज मुंह और जीभको साफ करके तरोताजा बनाता है।

द्वितीय...एण्डरूज पेटको व्यवस्थित करके आंत को साफ करता है।

तब...एण्डरूज यकृतको ठीक रखता और पित्ताधिक्यको रोकता है।

अन्ततः—एण्डरूज अन्दरूनी सफाई कर कब्जियत दूर भगाता और रक्तको परिष्कृत और [illegible] रखता है।

ANDREWS

एण्डरूज लिवर साल्ट

ठण्डा — तरोताजा — बलवर्द्धक

प्रबन्धक सम्पादक - एच० पी० घोष | के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक —ज्योतिप्रसाद मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्य ७॥)
विदेश ३)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

१५ सितम्बर, १९४६ साप्ताहिक हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 15th September, 194

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

श्री सुभाषचंद्र बोस के भारत में ... की आशा की जा रही है।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

संसार की स्वराज्य पंचायतें कैसे बनी ?
त्यागी और तपस्वी संत विनोबा कौन हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शारीरिक उष्णता के लिये...

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

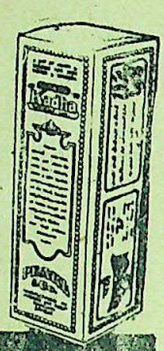

आज से ही शुरु कीजिए, सर्वत्र मिलता है।

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली तलुवों और आंखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग में आग सी जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, जड़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढा बालक वृद्ध, पुरुष स्त्री सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक हानिरहित है कि कमजोरी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निस्संकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके शीतल, रक्त और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

पर्ल कम्पनी आर्योषधी कारखाना नम्बर २७

एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

यू० पी० प्रतिनिधि दोसर एण्ड को०, बिरहना रोड, कानपुर।

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, पेशाब के आगे पीछे धातु का गिरना पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे पीछे धातु का गिरना को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने नाम पाया है हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए १ डिब्बा २।–) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग। यदि आपको किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जलतरंगसिद्ध रोगियों पर परीक्षा किया हुआ 'तिला मस्ताना" की मालिश इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती कीमत १ शीशी २=), दो शीशी ५॥=) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

इसने लाइफबॉय उपयोग करने की आदत भी सीखी है!

अभी से यह बहुत सी बातें सीख रहा है परन्तु सब से ज्यादा फायदामंद लाइफबॉय सानुन के दैनिक उपयोग की आदत है। इसकी माँ को इस बात का गर्व और खुशी होती है कि उसकी दी हुई शिक्षा से उसके लड़के को 'गन्दगी के खतरे' से जो हर जगह हमला के लिए मौजूद है उससे रक्षा होती है।

लाइफबॉय का व्यवहार करना एक ज़रूरी आदत है

L 77-40 MI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

प्रातः - बुलबुलेदार एण्डरूजके सेवनका यह समय है जो आपको दिन भर भला चंगा रखेगा याद रखिये—एण्डरूज आपके स्वास्थ्य की रक्षा और आपकी अन्दरूनी सफाई करता है।

प्रथम...एण्डरूज मुंह और जीभको साफ करके तरोताजा बनाता है।

द्वितीय...एण्डरूज पेटको व्यवस्थित करके अन्न को साफ करता है।

तब...एण्डरूज यकृत को ठीक रखता और पित्ताधिक्यको रोकता है।

अन्ततः...एण्डरूज अन्दरूनी सफाई कर कब्जियत दूर भगाता और रक्तको परिष्कृत और ताजा रखता है।

ANDREWS

एण्डरूज लिवर साल्ट

ठंडा — ताजा —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, १५ सितम्बर, १९४६

[संख्या ३]

और बाहर!

सभ्यता की रक्षा की लड़ाई

१९३९ के महायुद्ध के बाद फिर १९४५ में महायुद्ध शुरू हुआ था। १९४५ में महायुद्ध समाप्त होने बाद तीसरे महायुद्ध की तैयारियाँ हो रही हैं। जान पड़ता है कि ज्यादा से ज्यादा कुछ वर्षों में तीसरा महायुद्ध आरंभ हो जायगा। तीसरे महायुद्ध के बाद प्रजातन्त्र की रक्षा तेजी के साथ आगे बढ़ रहे साम्राज्यवादी शक्ति का केन्द्र-बिन्दु सोवियट यूनियन है। इसी-लिये साम्राज्यवाद के साथ सोवियट यूनियन का संघर्ष अवश्यम्भावी है। दुनिया भर के चारों तरफ इन्द्रजाल फैला है। रूसी रेडियो का यह कहना है कि अँगरेजी फौजें भेजी जा रही हैं ग्रीस के अमरीकन प्रधान मेक नीस में प्रजातन्त्र कायम करने के लिये ही कर रहे हैं, बल्कि पुराना राजा प्रतिष्ठित करके प्रजातन्त्र की हत्या कर रहे हैं। भावी युद्ध रूस के खिलाफ भिड़ाया जा रहा है। अँगरेजी फौजें तो अच्छी हैं, हिटलर की फौजों की शक्ति को मिट्टी में मिलाने के लिये तीन तैयारियाँ की थीं। लोग भूल जाते हैं कि प्रजातन्त्र का संघर्ष साधारण से साधारण मनुष्यों के साथ है। इसको साम्राज्यवाद कभी नहीं रोक सकती।

* *

उपाधियों का हरजाना

१५ सितम्बर को पं० जवाहरलाल नेहरू संवाददाताओं से बातचीत करते हुए कहेंगे कि सरकारी उपाधियाँ देना बन्द कर दिया जाय, क्योंकि किसी भी नाम के साथ उपाधियों को जोड़ना सम्मान-जनक नहीं है, वरन् असम्मानजनक है। उपाधियाँ बन्द करने से उपाधियों की कीमत कम हो जायेगी। बहुत से लोग उपाधियाँ हासिल करने में काफी रुपया (दावतों आदि आदि में) खर्च करते हैं। अब इन उपाधियों की कदर ही नहीं रहेगी तो कम से कम भारत सरकार उपाधिधारियों को हरजाना तो देगी।

* *

पाकिस्तान की रचना

मुस्लिम लीग ने "सीधी कार्रवाई" का ऐलान कर लिया, परन्तु लीग की सीधी कार्रवाई क्या रूप धारण करेगी, इसका लीग के कर्णधारों ने कोई संकेत नहीं किया है। पहले जिन्ना साहब ने कहा था कि यह आन्दोलन का बहुत ही शान्त रूप होगा। उन्होंने कहा था कि वे अहिंसा की तरह गोली नहीं चलायेंगे। कुछ दिन पहले पंजाब के मुसलिम लीगी राजा गजनफर अली खाँ ने 'सीधी कार्रवाई' के एक कार्य-क्रम को बतलाने की कोशिश की थी। उनका कार्यक्रम कांग्रेस के सत्याग्रह की नकल करनी थी। बंगाल के प्रधान मंत्री सुहरावर्दी ने कहा है कि लीग की 'सीधी कार्रवाई' अहिंसात्मक नहीं होगी। अभी तक यह भी साफ़ नहीं है कि यह 'सीधी कार्रवाई' किसके ख़िलाफ़ है? साफ इसलिए नहीं बतलाया जा सकता कि बंगाल की मुस्लिम लीग ने कलकत्ते में 'सीधी कार्रवाई' के कुछ नमूने दिखा दिये हैं।

पिछले दिनों दिल्ली में 'सीधी कार्रवाई' की कमेटी का जलसा हुआ था। जिन्ना साहब बड़े चतुर बैरिस्टर हैं परन्तु, क्रान्ति नहीं समझते। मिस्टर जिन्ना इस जलसे में शामिल नहीं हुए। आगे बढ़ बढ़ के बातें कीं, मुसलमान जनता में हिंसा के वातावरण की सृष्टि की और मुसलमान जनता के सामने कार्य-क्रम रखते वक्त दूर रहे। मिस्टर एम० ए० जिन्ना सचमुच कायदेआज़म हैं।

* * *

राष्ट्रों के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप

यह अभीतक लड़नेवाले मुल्कों को भी ठीक से नहीं पता चला कि दूसरा महायुद्ध क्यों लड़ा गया था? अमेरिका और ब्रिटेन कहते हैं कि दुनिया की आज़ादी के लिये यह लड़ाई लड़ी गई है। परन्तु इन देशों की सरकारें कुछ और ही मतलब से लड़ाई के मैदान में उतरी थीं। कम से कम यह बात स्पष्ट है कि एक देश दूसरे देश के घरेलू मामले में दखल न दें। दखल देने की नौबत आने पर उनकी यह चेष्टा होनी चाहिए कि घरेलू झगड़ा बिना पक्षपात के तय हो जाये। अमरीका का चीन के मामले में दखल देना उचित नहीं था परन्तु वास्तव में अमरीका चीन की सरकार को चीनी साम्यवादियों को कुचलने के लिये लड़ाई के सामान दे रहें हैं। साम्यवादियों को कुचल के ही अमेरिका अपना कारोबार चीन में जारी रख सकता है।

* * *

हवाई हमला

अपने देश में अपना राज होने पर वाजीस्तान में जो एकाएक हवाई जहाज़ों से बम्बारी हुई वह कभी न होती। बम्बारी करने के पहले कम से कम उस देश के सच्चे नेताओं से सलाह करना आवश्यक था। वाजीरिस्तान में शायद सब लोग मुसलमान हैं। इस पर भी अपने देश में अपना राज क़ायम करने के लिए मुस्लिम लीग प्रयत्न नहीं करती। इससे यह स्पष्ट है कि मुस्लिम लीग न तो मुसलमानों की भलाई करना चाहती है, और न देश की आजादी प्राप्त करना चाहती है।

—श्री देवेन्द्रनारायण वाजपेयी

* * *

सिन्ध में लीगी मन्त्रिमण्डल के विरुद्ध ता० ११ को अविश्वास-प्रस्ताव पर वाद-विवाद होनेवाला था। परन्तु असेम्बली की उपाध्यक्षा कुमारी सिपाही मलानी के इस्तीफा दे देने के कारण अध्यक्ष का पद सूना हो गया। गवर्नर ने असेम्बली को स्थगित कर दिया है। विरोधी पार्टी के नेता श्री जे० एम० सैयद ने भारत-मन्त्री और वायसराय को हस्तक्षेप करने का तार दिया है।

कश्मीर नेशनल कान्फ्रेंस के प्रेसीडेंट शेख अब्दुल्ला को तीन अभियोगों में से प्रत्येक अभियोग पर तीन तीन साल की सादी कैद की सजा हुई है। तीनों सजायें साथ साथ चलेंगी। सजाओं के अतिरिक्त उन पर १५००) रुपये जुर्माना भी हुआ है। फैसला सुनाये जाने के बाद शेख अब्दुल्ला को जम्मू प्रान्त भेज दिया गया।

* * *

श्री सुभाषचन्द्र बोस के साथी और पंजाब अग्रगामी दल के अध्यक्ष प्रो० मोती-सिंह ने यह विश्वास प्रकट किया है कि शीघ्र ही नेता जी किसी तिथि को किसी स्थान में प्रकट होंगे।

* * *

भारतीय सरकार ने श्री सुभाषचन्द्र बोस पर से समस्त प्रतिबन्ध उठा लिये हैं। गृहमन्त्री वल्लभभाई पटेल ने कहा है—जब समाचारपत्रों तक में यह प्रकाशित हो चुका है कि श्री सुभाषचन्द्र बोस जीवित नहीं हैं फिर उनके विरुद्ध किसी मुकदमे को चलाने की आवश्यकता ही क्या? अतः उनके विरुद्ध चलनेवाले सारे मुकदमों को सरकार उठा रही है।

* * *

मद्रास के शिक्षा-मन्त्री श्री अविनाश लिंगम ने मद्रास प्रान्त की पाठ्य-पुस्तकों से सम्राट् के लिए ईश्वर से प्रार्थना की पंक्तियों को हटा देने को कहा है।

* * *

बंगाल की कृषक प्रजा पार्टी के नेता मियाँ फजलुल हक ने फिर से लीग में सम्मिलित होने की घोषणा की है।

* * *

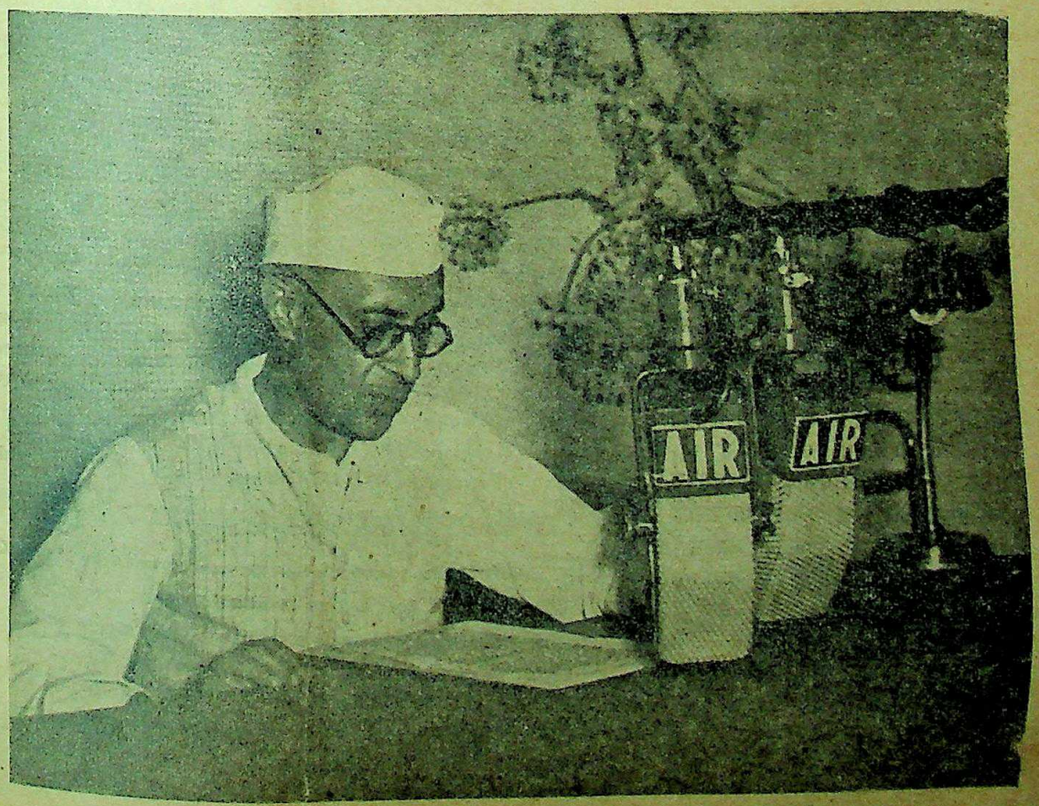

पंडित जवाहरलाल नेहरू आल इंडिया रेडियो पर राष्ट्र के लिए शांति और व्यवस्था का संदेश दे रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय विचार

अनिवार्य शिक्षा

संयुक्त प्रांत में अनिवार्य शिक्षा की योजना को कार्यान्वित करने के लिये राष्ट्रीय सरकार विशेष चिन्तित है। लखनऊ रेडियो से शिक्षा मंत्री बाबू सम्पूर्णानन्द जी ने अनिवार्य शिक्षा और उसके लिये प्रचार-साधन के सम्बन्ध में एक भाषण ब्राडकास्ट किया है। अभी तक प्रांत अथवा भारत का शासन प्रबन्ध ब्रिटिश नौकरशाही के हाथ में रहा है। इसलिये उसे राष्ट्र की अनिवार्य शिक्षा की चिन्ता ही क्यों होती? अनिवार्य शिक्षा वास्तव में तभी सफल हो सकती है जब इस देश का शासन प्रबन्ध बालिग मताधिकार द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा हो। किन्तु इस प्रकार के विधान-निर्माण में अभी देरी है। तब तक क्या शिक्षा की उन्नति का मार्ग अवरुद्ध रक्खा जायेगा? यदि ऐसा ही करना है तो फिर लोकप्रिय सरकार और ब्रिटिश नौकरशाही के शासन में अन्तर ही क्या? संयुक्त प्रांतीय मंत्रिमंडल ने प्रान्त में शिक्षा प्रसार की जो उपयोगी योजना तैयार की है उससे अशिक्षा का अंत हो जायेगा, इसमें संदेह नहीं है। शिक्षा मंत्री ने असेम्बली के गत बजट अधिवेशन में अशिक्षा को दूर करने का जो चित्र खींचा था, रेडियो के भाषण में उन्होंने उसे कार्यान्वित करने के लिये प्रान्त निवासियों से अपील की है। शिक्षा-कार्य करनेवाले कर्मचारियों को शिक्षा प्रसार के कुछ उपयोगी मार्ग भी सुझाये गये हैं।

श्री सम्पूर्णानन्द जी ने बतलाया है कि हमारे प्रान्त में ६० लाख ऐसे व्यक्ति हैं जिनको शिक्षित करना आवश्यक है। इन ६० लाख व्यक्तियों की प्रारम्भिक शिक्षा के लिये ४०,००० स्कूलों और १ लाख २० हजार अध्यापकों की जरूरत पड़ेगी। इसके अतिरिक्त स्कूल की इमारतों का होना कम आवश्यक नहीं है। सच तो यह है कि देश में पक्की इमारतों के बनाने के लिये इतना रुपया नहीं है और यदि कच्चे मकान अथवा फूस के झोपड़ों में भी स्कूल खोले जायें तो भी काफी खर्च पड़ेगा। फिर भी कुछ न कुछ तो करना ही होगा। इमारतों की रचना में विद्यार्थियों के स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना ही होगा। इन सब पर काफी व्यय होगा फिर भी मंत्रिमंडल इस ओर काफी प्रयत्नशील है, प्रांत के लिये यह कम सौभाग्य की बात नहीं है।

शिक्षा के सुचारु रूप से प्रसार के लिये ट्रेण्ड अध्यापकों का होना आवश्यक है। सार्जेण्ट रिपोर्ट में इस ओर अधिक ध्यान देने की राय दी गई है परन्तु प्रारम्भ में यदि ट्रेण्ड अध्यापक न प्राप्त हो सकें तो क्या हाथ पर हाथ रख कर बैठे रहा जायेगा? इसलिये जब तक ट्रेण्ड अध्यापक न मिलें तब तक बिना ट्रेण्ड अध्यापकों के ही कार्य चलाया जाना चाहिये। शिक्षित न होने की अपेक्षा अशिक्षा के अंधकार को दूर करना राष्ट्रीय दृष्टि से बड़ा महत्वपूर्ण कार्य है। हाँ ऐसे व्यक्तियों की ओर अधिक ध्यान देना है जो प्रारम्भिक शिक्षा के उपयुक्त हैं।

अध्यापन कार्य करनेवाले ऐसे हों जो विद्यार्थियों के साथ सहानुभूति रखते हों। वही अध्यापक सफल हो सकेंगे जो विद्यार्थियों को शीघ्र से शीघ्र शिक्षित देखना चाहते हों। अध्यापक ऐसे नियुक्त हों जो शिक्षा-प्रसार की इच्छा तथा भावना से ओत-प्रोत हों। शिक्षा-विभाग के कर्मचारियों को अध्यापक नियुक्त करने में कम से कम उम्मीदवार अध्यापक की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति का भी अध्ययन करना चाहिये। गाँवों में शहरों की अपेक्षा अधिक अशिक्षा है। वहीं प्राइमरी स्कूलों की अधिक आवश्यकता भी है। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के प्रचारार्थ हजारों मिडिल पास अध्यापक मिल सकते हैं। इससे अशिक्षा को दूर करने के लिये शिक्षा विभाग कई प्रकार के साधनों का उपयोग कर सकता है। रेडियो और सिनेमा इसके लिये दो बड़े उपयोगी साधन हैं। परन्तु गाँवों में न तो सिनेमा हैं और न रेडियो। फिर वहाँ कैसे सफलता मिल सकेगी? गाँव में अशिक्षा दूर करने का प्रचार सरल तभी हो सकता है जब कि ग्राम पंचायतें स्थापित हो जायँ। उनको सरकार की ओर से कुछ वैधानिक अधिकार प्राप्त हो जायें। इसमें सरकार को कोई हानि न होगी। रेडियो सिनेमा के लिये विज्ञापन रूप में कुछ देना ही पड़ेगा। परन्तु पंचायतों से सरकारी अदालतों, पुलिस और माल विभागों को भी काफी सहायता मिलेगी। इसलिये अशिक्षा दूर करने के लिये प्रान्तीय सरकार ग्राम पंचायतों को वैधानिक करार देकर उनके अधिकारों को विस्तृत कर दे तो काफी काम हो सकती है।

इस वर्ष शिक्षा प्रचार के [illegible] मंत्री के सामने एक बड़ा [illegible] जिसके लिये ६७ लाख [illegible] रुपयों का व्यय होगा। इस [illegible] लोकप्रिय सरकार और [illegible] कर्तव्य है कि वह भरसक [illegible] शिक्षा मंत्री के साथ [illegible] अशिक्षा दूर करने की [illegible] है जिसके लिये वह करोड़ [illegible] प्रयत्नशील हैं। उनकी [illegible] करने में उपयोगी साधन [illegible] अवश्य होंगे?

GOVERNMENT OF INDIA

DISPOSALS (SECTION ECS) 2nd CATALOGUE

ELECTRICAL ENGINEERING STORES, COMMUNICATION STORES, SCIENTIFIC INSTRUMENTS, ARMS, AMMUNITION.

Following types of stores are available for sale:

Electrical Machinery and Plant: Motors and generators; transformers; distribution, control and electrical apparatus; electrical furnaces and ovens; batteries and cells; refrigerating, heating and lighting appliances etc. ***Typewriters and Office Machinery:*** Typewriters; duplicating and computing machines; etc. ***Electrical Wire, Cable and Fittings:*** Electrical wires—domestic and transmission; electric cables and fittings including fans and lamps; etc. ***Radio Equipment:*** Receivers; transmitters; radio parts; valves and testing sets; etc. ***Telephone and Telegraph Equipment:*** Telephone and telegraph equipment excluding batteries, cells and wire; cable laying and linemen's apparatus; posts—timber and steel; etc. ***Survey and Optical Instruments:*** Binoculars; monoculars; telescopes; range finders; microscopes; watches; clocks; compasses; drawing instruments; etc. ***Photographic and Cinematographic Equipment:*** Cinema projectors; cine cameras; cameras; films including cine-films; printing and developing material including papers and chemicals. ***Searchlights, Floodlights and Signalling Lamps, etc.*** ***Small Arms:*** Rifles; shot guns and carbines; automatic weapons; machine guns; tommy guns; pistols; revolvers; small arms accessories, spares and components; bayonets; kukris; lances; swords; etc. ***Guns and Equipment:*** Guns of various [illegible] infantry supporting weapons; bomb and flame throwers; rockets and projectiles; etc. ***Ammunition:*** Small arms ammunition; artillery, pyrotechnic, naval and infantry supporting ammunition; aerial bombs; [illegible] demolition explosives; etc.

Full details giving description and condition of stores, quantity, location, etc. and the method of tendering are contained in Section ECS of the Second Catalogue which is available at Re. 1/- from the addresses given below:

A. Regional Commissioners, Directorate General of Disposals at

Bombay - Mercantile Chambers, Graham Road, Ballard Estate.
Calcutta - 6, Esplanade East.
Lahore - G. P. O. Square, The Mall.
Cawnpore - 15/159, Civil Lines.

B. Dy. Regional Commissioners, Directorate General of Disposals at

Karachi - Variawa Building, McLeod Road.
Madras - United India Life Building, Esplanade.

C. All important Chambers of Commerce and Trade Associations.

Mail orders for the catalogue must be accompanied by Money Order or Indian Postal Order.

NOTE: Watch for further announcement regarding Section ECS of Third Catalogue which will contain a further list of stores available for disposal.

ISSUED BY THE DIRECTORATE GENERAL OF DISPOSALS, DEPARTMENT OF INDUSTRIES & SUPPLIES, NEW DELHI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष रूप से 'देशदूत' के लिए

संत विनोआ भावे कौन हैं ?

राष्ट्रवादी, त्यागी, तपस्वी और दार्शनिक विद्वान्

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

सेवाग्राम के सुप्रसिद्ध तपस्वी, त्यागी और दार्शनिक संत विनोआ भावे राष्ट्र के गौरवपूर्ण व्यक्तियों में हैं। इस लेख में विद्यार्थी जी ने संत विनोआ के जीवन पर सुन्दर प्रकाश डाला है और उनके आदर्श जीवन की बारीकियों को बड़ी सुन्दरता के साथ प्रकट किया है। लेख अत्यन्त सुन्दर और जानकारी से पूर्ण है।

सेवाग्राम के सुप्रसिद्ध विचारक और संत विनोआ भावे।

सादगी को वरण किया है, उनसे अधिक भी अधिक सादगी से रहनेवाले गांधी जी के अनुयायियों में कई हैं। वे रचनात्मक कार्य के महान् पुरस्कर्त्ता और दिन-रात उसी में लगे रहनेवाले व्यक्ति हैं; ऐसे भी कुछ गांधी मार्गानुगामी हैं। उनकी जैसी तेजस्वी बुद्धि शक्तिवाले भी कई हैं। परन्तु उनमें कुछ और भी चीजें हैं जो और किसी में नहीं हैं। एक निश्चय किया, एक तत्त्व ग्रहण किया तो उसका उसी क्षण से अमल करना उनका प्रथम पंक्ति का गुण है। उनका दूसरा गुण निरन्तर विकासशीलता का है। शायद ही हममें से कोई ऐसा हो जो कह सके कि मैं प्रतिक्षण विकास कर रहा हूँ। गांधी जी ने भी तो विनोआ जी के लिए उन्होंने अरबी भी सीखी। अपने पड़ोसी मुसलमान भाइयों से अपना सजीव सम्पर्क बनाये रखने के लिए उन्होंने आवश्यक समझा।"

संत भावे जी एक ऊँचे दर्जे के विचारक हैं। मानव-समाज को सुखी बनाने के लिए व्रत लिया है। कर्मयोगी संत हैं। सारे युद्धमात्र से उन्हें नफरत है। सारे विश्व को अपना ही परिवार समझते हैं। साम्राज्यवाद के शोषकों से उन्हें घृणा है। पूँजीवाद को समाज के लिए हानिकर मानते हैं। विनोआ जी के दिल में गरीबों के प्रति पूरी सहानुभूति है। वे उनके साथ घुल मिलकर एक हो जाने की शक्ति रखते हैं।

विनोआ जी के माता-पिता की आर्थिक

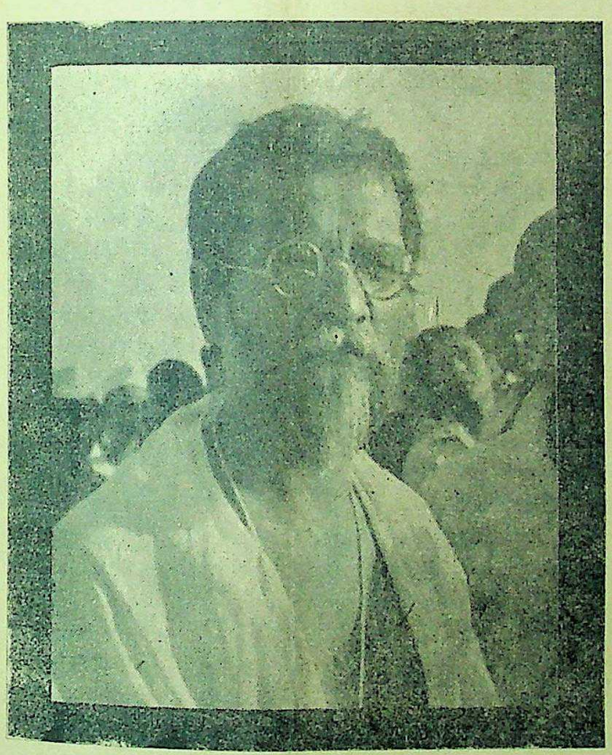

संत विनोआ भावे सन् ४२ के आन्दोलन में जेल से छूटने के बाद।

बारे में कहा है "वे आश्रम में सब प्रकार की सेवा-प्रवृत्तियों—रसोई से लगाकर पाखाना-सफाई तक—में हिस्सा ले चुके है। उनकी स्मरण-शक्ति आश्चर्यजनक है। वे स्वभाव से ही अध्ययनशील हैं अपने समय का ज्यादा से ज्यादा हिस्सा वे कातने में ही लगाते हैं और उसमें ऐसे निष्णात हो गये हैं कि बहुत कम लोग उनकी तुलना में रखे जा सकते हैं।"

"उनके हृदय में छुआछूत की गंध तक नहीं है। साम्प्रदायिक एकता में उनका उतना ही विश्वास है जितना कि मेरा। इस्लाम धर्म की खूबियों को समझने के लिए उन्होंने एक वर्ष तक कुरानशरीफ का मूल अरबी में अध्ययन किया। इसके, हालत अच्छी थी। न बहुत गरीब थे न बहुत धनी ही। खाने पीने और पढ़ने-लिखने की पूरी सुविधा थी। प्राइमरी और हाई स्कूल की शिक्षा समाप्त करके कालेज में पढ़ने गये। महायुद्ध शुरू हो गया था। देश को आजाद करने के लिए कुछ लोग प्रयत्न कर रहे थे। क्रांतिकारी तैयारी हो रही थी। महाराष्ट्र के कुछ युवक भी इसी प्रयत्न में थे। उन लोगों ने कुछ शस्त्र आदि भी इकट्ठा कर लिया था। समर्थ विद्यालय के पिंगले नाम का एक विद्यार्थी इस आन्दोलन में लगा हुआ था। सरकार ने पिंगले को गिरफ्तार करके और मुकदमा चलाकर फाँसी के तख्ते पर लटका दिया। उस समय विनोआ जी के दिल में कौन विचार

सेवाग्राम के सुप्रसिद्ध विचारक और संत विनोआ भावे।

मंथन चल रहा था ईश्वर ही जाने लेकिन इन्टर मीजिएट में पढ़ रहे थे। मन अशान्त हो गया। देश में स्वतंत्रता के लिए पुकार मची हुई थी। बंगाल के युवक क्रान्तिकारी जोरों से गिरफ्तार किये जा रहे थे। उसी वक्त विनोआ जी 'इन्टर' की परीक्षा देने के लिए बम्बई जाने के लिए निकले। लेकिन बम्बई में परीक्षा देने का विचार छोड़ दिया। सीधे सूरत चले आये और वहाँ से भुसावल आये। रास्ते में अपने घर के लोगों के लिए इस आशय का एक पत्र लिखा "मैं परीक्षा देने के लिए बम्बई नहीं जा रहा हूँ। मैं कहीं भी जाऊँ या रहूँ मेरे हाथ से कुछ अनभल नहीं होगा। मैं आप लोगों को विश्वास दिलाता हूँ।"

यह पत्र तो छोटा-सा है लेकिन इसके पीछे जीवन का इतिहास है। बड़े महत्त्व का पत्र है। सन् १९१६ में यह पत्र लिखा गया था। आज सन् १९४६ है। उस वक्त संत भावे की उम्र यही २०, २२ साल की होगी। बंगाल पहुँच गये। वहाँ के क्रान्तिकारी आन्दोलन का अध्ययन किया। लेकिन विनोआ जी का दिल उधर नहीं लगा। घर भी वापस नहीं हुए। काशीवास के लिए चले गये। गंगा के किनारे रहने लगे। संस्कृत के अध्ययन में जुट गये। 'अन्नछात्र भोजनालय में जाकर भोजन करते थे। रात दिन ज्ञान की उपासना में लग गये। मूर सेंट्रल पुस्तकालय में जाकर बहुत-सी पुस्तकों का अध्ययन किया। ज्ञान की पिपासा को वहाँ जाकर शान्त किया और जीवन में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन आया। सन् १९१५ में महात्मा गांधी का दर्शन किया। उनके जीवन की तरफ झुक गये। महात्मा जी के साथ पत्र-व्यवहार भी किया। फिर साबरमती आश्रम में चले गये। संत विनोआ जी ने स्वयं एक बार अपने भाषण में कहा था कि सन् १९१६ में मैंने घर छोड़ा। यों तो घर की परिस्थिति कुछ ऐसी न थी कि मेरा वहाँ रहना असम्भव था। माँ तो मुझे ऐसी मिली थी कि जिनको याद मुझे आज भी नित्य आती है। पिता जी अभी जीवित हैं। उनकी उद्योगशीलता, अभ्यासवृत्ति, साफ-सुथरापन, सज्जनता आदि गुण सभी को अनुकरणीय लगेंगे। लेकिन यह सब होते हुए भी मुझे ऐसा लगा कि मैं अब इस घर में नहीं समा सकता। जब घर छोड़ा तब 'इन्टर मीजिएट' में था। कितने ही मित्रों ने कहा—'दो ही साल और

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हासपरिहास

भंग की तरंग

सुना है कि डाक्टर अम्बेदकर साहब मुसलमान होने जा रहे हैं। बात तो ठीक है क्योंकि पाकिस्तान में कायदे आजम को एक विद्वान् प्रधान मन्त्री की आवश्यकता पड़ेगी। डाक्टर साहब से बढ़कर और कौन इस योग्य हो सकता है?

* * *

आजकल छुरे और करौलियों के पारसल खूब भेजे जा रहे हैं। थोड़ा थोड़ा भेजने या भिजवाने की क्या आवश्यकता है? बंगाल के प्रधान मन्त्री महोदय ताता कम्पनी से दस करोड़ छुरे बनवा लें और प्रत्येक मुसलमान को बँटवा दें तो ज्यादा आसानी होगी।

* * *

मेरठ में कांग्रेस का अधिवेशन होने जा रहा है। उसके श्रीगणेश के लिए वहाँ एक गाँव में जाटों ने चमारों पर गोलियाँ चलाईं। यह इसलिए कि कांग्रेस के अधिवेशन के बाद तो सब लोग अहिंसात्मक हो जायँगे। इसलिए सोचा कि गोलियाँ इत्यादि अभी से खर्च कर डालनी चाहिए।

* * *

चुके अब कुछ दिन तक ऐसी वस्तुएँ भी भेंट में दी जानी चाहिए।

* * *

निज़ाम साहब गोआ खरीदनेवाले हैं। उन्हें आरम्भ से आरम्भ करना चाहिए। पहले कोआ खरीदना चाहिए तब खोआ तब गोआ। गोआ नम्बर अंतिम होना चाहिए।

* * *

यह भी सुना जाता है कि हैदराबाद एक स्वतन्त्र राज बननेवाला है। हमारी राय में इसका नाम बदलकर पाकिस्तान नम्बर दो कर देना चाहिए।

* * *

एक अमरीकी महिला ने यह अनुभूति की है कि भोजन घटाने से सुन्दरता बढ़ती है। यदि यह ठीक है तो अब तक भारतवर्ष तो पाकिस्तान बन गया होता।

* * *

कायदे आजम चर्चिल और एटली से छिपे छिपे पत्र व्यवहार कर रहे हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। खूँटा के बल बछड़ा कूदता ही है।

* * *

पेरिस के शान्ति-सम्मेलन में बड़ी हुल्लड़बाजी हुई। ऐसा होना उचित भी था। अँगरेजी में मसल है कि आँधी के बाद शान्ति होती है।

* * *

नया मन्त्रिमण्डल

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

आज शासन के लिए नव मन्त्रिमण्डल बन गया,
देशभक्तों का नया-सा एक बण्डल बन गया;
चल पड़े स्वाधीनता-सरिता जहाँ से बेरुके,
वह नये युग के लिए पावन कमण्डल बन गया।

* * *

जागरण है देश में 'बेढब' सवेरा हो गया,
जो कभी मालिक बना था आज चेरा हो गया;
हैं विहंगों के नये सन्देश का कलगान अब,
देश के द्रोही उलूकों का बसेरा हो गया।

मिस्टर सुहरावर्दी साहब दंगे के विशेषज्ञ जान पड़ते हैं। कलकत्ता की आग ठंडी ही हो रही थी कि ढाका में दंगा आरम्भ हो गया। देखें वहाँ कितने हजार मरते हैं?

* * *

ढाका के मजिस्ट्रेट ने सब नागरिकों से बन्दूक जमा कर देने की आज्ञा निकाली थी। पीछे यह आज्ञा एक सप्ताह के लिए स्थगित कर दी गई। जान पड़ता है अभी मौत का कोटा पूरा नहीं हुआ है।

* * *

कहा जाता है कि कलकत्ते के दंगे में पुलिस ने भी लूट-मार की। यह तो कोई नई बात नहीं थी। पुलिस अपना सनातन धर्म निबाहती थी और क्या?

* * *

श्रीमती अरुणा आसफ अली कहती हैं कि जमींदारों तथा पूँजीपतियों का अन्त होगा। वाह उन्हें क्या नहीं पता है कि जमींदार लोग कमर में फेंटा और लँगोटा अभी से बाँध रहे हैं?

* * *

श्रीयुत किदवई महोदय को कानपुर में जुए के ६८ अड्डों की सूची भेंट की गई। हाँ मानपत्र इत्यादि तो बहुत भेंट किये जा

एक अँगरेज स्त्री एक जर्मन के साथ भागी। इसके लिए उसे एक मास के कारावास का दंड दिया गया। वाह वाह! वह तो जर्मन को फँसा रही थी। इसके लिए उसे पुरस्कार मिलना चाहिए था। लेकिन मामला उलटा ही हुआ।

* * *

राजा जी ने अस्पताल में शपथ लिया। दवा के साथ शपथ लेना ठीक भी है। वह रग रग में पेवस्त हो जायगा।

—अगड़धत्त शर्मा

कहानी कैसे लिखनी चाहिए—सफल कहानी-लेखक बनने की इच्छा रखनेवालों के लिए इसमें बहुत-सी ज्ञातव्य बातें लिखी गई हैं। मूल्य ॥≡) ग्यारह आने।

माधव मिश्र-निबन्धमाला—हिन्दी-गद्य के प्रारम्भिक काल के प्रतिभाशाली लेखक पंडित माधव मिश्र के चुने हुए निबन्धों का संग्रह। मूल्य ३।–) तीन रुपये पाँच आने।

हिन्दी ग्रामर—(ई० ग्रीव्ज़ कृत) अँगरेजी के द्वारा हिन्दी का अध्ययन करनेवाले विदेशियों के बहुत काम की पुस्तक। साथ ही भाषा विज्ञान के विद्यार्थी इससे बहुत लाभ उठा सकते हैं। मूल्य ८॥≡) आठ रुपये ग्यारह आने।

तुलसी-रत्नावली—का संकलन, [illegible] केदारनाथ गुप्त एम० ए० ने [illegible] है। इसमें गोस्वामी तुलसीदास [illegible] अमूल्य ग्रन्थों—रामचरित [illegible] विनयपत्रिका, कवितावली, [illegible] गीतावली आदि—से रत्न चुने [illegible] हैं। अनेक ग्रन्थों से अमूल्य सामग्री [illegible] संग्रह करना सचमुच बड़ा कठिन [illegible] होता है। जो लोग गोस्वामी [illegible] समस्त ग्रन्थ न तो ले सकते हैं [illegible] उनका अध्ययन कर सकते हैं, [illegible] इस संग्रह से बड़ा लाभ होगा। [illegible] केवल एक रुपया आठ आने।

मैनेजर—(बुकडिपो) इंडियन [illegible] लिमिटेड, प्रयाग।

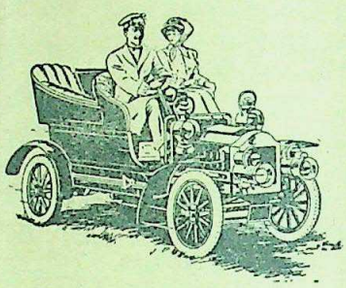

पुरानी हो अथवा नई

आपकी कार

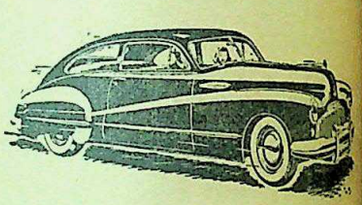

सर्वोत्तम टायर चाहती है

इसी पर जोर दीजिए

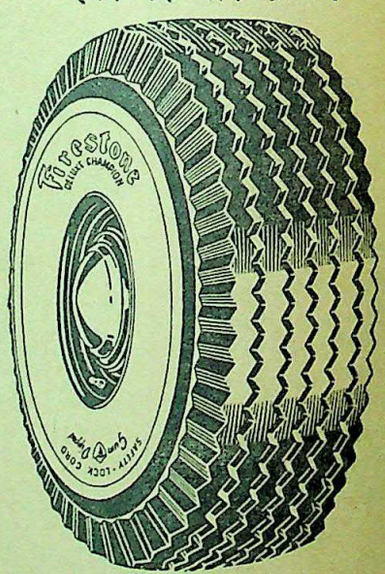

Firestone

फायरस्टोन

'गम डिप्ड टायर्स'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ार की वैधानिक पंचायतें

...देशों की जनता ने किस प्रकार अपने विधान और नियम बनाये हैं ?

लेखक, श्री चन्द्रोदय दीक्षित

...भारतीय विधान-परिषद् की बैठक प्रारम्भ होनेवाली है। उसमें ...के लिये विधान और नियम बनाये जायँगे कि जिससे स्थायी रूप से ...जनता के प्रतिनिधियों द्वारा हो। भारत ब्रिटिश गुलामी से छुटकारा ...में लेखक ने यह बतलाया है कि संसार के अन्य राष्ट्रों में स्वाधीनता-...की स्वराज्य-पंचायतों की स्थापना हुई और गुलामी से उन्हें ...प्रकार की स्वराज्य-पंचायतों की स्थापना हुई और गुलामी से उन्हें ...लेख सामयिक, जानकारी से पूर्ण और पठनीय है।

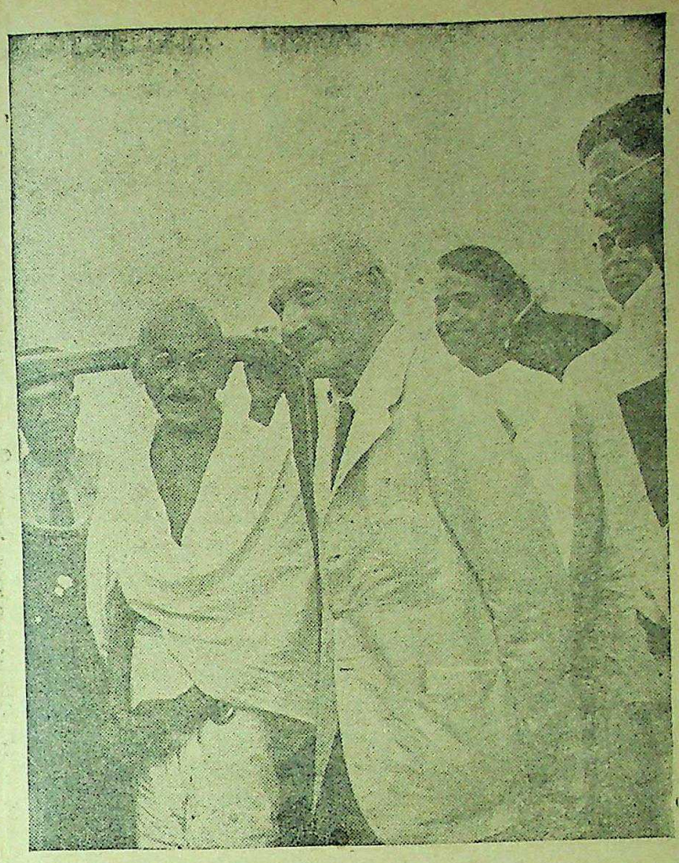

महात्मा गांधी के साथ भारत-सचिव लार्ड पेथिक लारेंस।

...न्दोलन के आरम्भ ...रोप या अन्य देशों में ...करते थे। जनता ...में हस्तक्षेप करने का ...था। राजा का ईश्वरीय ...उनकी इच्छा ही राज्य ...होता था। धीरे धीरे ...अधिकार के विरुद्ध ...और उसके साथ ही ...तन्त्र के विचार जोरों ...। प्रजातन्त्र के सिद्धान्त के ...महत्त्वपूर्ण प्रश्न है वह ...स्वयं राज्य का विधान ...राज्य की सार्वभौम सत्ता ...अधिकार (Sovereig-...हाथ में आ जाता है। ...है कि यह अधिकार जनता ...मिले परन्तु अधिक-...कि यह अधिकार ...शक्ति के प्रयोग से ही ...है। ऐसा भी हुआ है कि ...तान्त्रिक विधान-निर्माण ...स्वराज्य पंचायत अथवा ...परिषद् बुलाई और जैसे ...कि सार्वभौम सत्ता का ...के हाथ में है और वह ...विधान का निर्माण करेगी, वैसे ...की ओर से उसे सशस्त्र ...चेष्टाएँ हुईं। यदि ...असन्तुष्ट और क्रुद्ध ...रखने के लिए यह घोषणा ...जनता को अपना विधान बनाने का पूर्ण अधिकार है या कुछ अधिकार है तो विधान-निर्मात्री-परिषद् अथवा स्वराज्य पंचायत के निर्माण होने के बाद जब विधान बनने का सूत्रपात होता है तो शासकवर्ग और जनता के स्वतन्त्र प्रतिनिधियों में संघर्ष उत्पन्न हो गया और उसके अन्त में अपने अधिकारों की रक्षा के लिए जनता को युद्ध का आश्रय भी लेना पड़ा।

अमरीका में

सन् १७७६ के पहले अमरीका में १३ छोटे राज्य थे और उन पर अँगरेज गवर्नर राज्य करते थे। सन् १७७६ में इन राज्यों ने एक साथ घोषित किया कि उनका अब अँगरेज राजा से कोई सम्बन्ध नहीं है और वे स्वतन्त्र हैं। इस घोषणा ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि उनका अँगरेजों से कोई सम्बन्ध न रहेगा। अमरीका में अब यह १३ स्वतन्त्र राज्य हो गये। स्वतन्त्रता का मूल अर्थ है कि देश या राज्य की जनता के ही हाथ में सार्वभौम सत्ता हो। सन् १७७७ में अमरीका के इन राष्ट्रों का एक संघ बन गया और सन् १७८१ तक सभी राज्यों से इसकी स्वीकृति मिल गई। सन् १७८७ में एक विधान-परिषद् बुलाई गई जिसने संघ के विधान में परिवर्तन और संशोधन किये। यहाँ पर पहले आधीन राज्यों ने सार्वभौम सत्ता पर अपना अधिकार किया और उसके बाद विधान-परिषद् को बुलाया गया।

फ्रांस में

इसके बाद हम फ्रांस के इतिहास को देखते हैं। सन् १७९१ के पूर्व फ्रांस के शासक अपनी निरंकुशता के लिए प्रसिद्ध हैं। नियम और विधान उनकी इच्छा समझे जाते थे। सामन्तवाद की समस्त प्रगतिशील सम्भावनाएँ नष्ट हो चुकी थीं और फ्रांस की जनता—कृषक, कारीगर और व्यापारी सभी राजा के शोषण और अत्याचार से क्षुब्ध होकर विद्रोह की ओर अग्रसर होते जा रहे थे। सन् १७९१ में फ्रांस के राजा लुई ने पेरिस नगर के नागरिकों की एक समिति को निमंत्रित किया और यहीं से फ्रांस की ऐतिहासिक क्रान्ति का सूत्रपात होता है। जनता के प्रतिनिधियों और राजा के हितों में कोई सामंजस्य होने की असम्भावना में दोनों को एक दूसरे के विरुद्ध शक्ति का प्रयोग करना पड़ा और योरोप के समस्त राजधरानों ने यह बड़े आश्चर्य के साथ देखा कि फ्रांस का राजमुकुट भूलुंठित हो रहा है। फ्रांस की इस क्रान्ति ने क्रांतियों का सूत्रपात आरम्भ कर दिया और यही कारण है कि प्रजातांत्रिक क्रान्ति का यदि कोई उदाहरण दिया जाता है तो फ्रांस की क्रान्ति का। इस क्रान्ति के द्वारा राजा का ईश्वरीय अधिकार और उसके निरंकुश शासन का अन्त कर दिया गया और इसी समय से राष्ट्र की एक जीवित शक्ति समझी जाने लगी जिसमें देश के समस्त रहनेवालों का समान अधिकार होता है। इस क्रान्ति के उच्चादर्श, समानता, भ्रातृत्व और स्वतन्त्रता संसार के सभी देशों की जनता के आदर्श बन गये। इसके बाद फ्रांस में सन् १८७५ तक अनेक बार विधान बनाये गये। ११ विधान देश में लागू किये गये और नष्ट कर दिये गये। अन्त में सन् १८७५ में एक विधान का निर्माण हुआ जो जनतन्त्रात्मक था।

जर्मनी में

सन् १८४८ में समस्त योरोप में क्रान्तियों की एक लहर आई। सामन्तवाद को नष्ट करके प्रजातन्त्र को स्थापित करने के लिए प्रत्येक देश की जनता ने विद्रोहात्मक मार्ग का अनुसरण किया। सन् १८४८ में जर्मनी में भी असफल क्रान्ति हुई। सन् १८४८ में एक विधान-निर्मात्री-परिषद् को आमंत्रित किया गया—फ्रंकफोर्ट में जनता की विधान-निर्मात्री-परिषद् बैठी और उसने एक विधान भी बनाया। इसी समय 'प्रशा' राज्य की ओर से भी विधान बनाने की एक कमेटी बनाई गई और बिस्मार्क ने अपनी कूट-नीति से इसको सफल बनाया। फ्रंकफोर्ट में विधान बनानेवाली समिति छिन्न-भिन्न हो गई और उसका विधान रद्दी की टोकरी में फेंक दिया गया। यहाँ के शासकवर्ग ने कूटनीति और चाल से जनता को धोखे में डाल दिया। जनता की विधान-निर्मात्री-परिषद् की असफलता का एक ही कारण था और वह यह कि उसने राज-सत्ता पर अपना अधिकार नहीं किया था।

बेलजियम में

बेलजियम के छोटे से राष्ट्र ने जो नीदरलैंड साम्राज्य के अन्तर्गत था, सन् १८३० में राजा के विरुद्ध विद्रोह किया अपने अपने देश को स्वतन्त्र घोषित कर दिया। राज्य-संचालन के लिए एक अन्तर्कालीन सरकार बना दी और उसके बाद अपना विधान स्वयं बनाया।

सोवियट रूस में

फरवरी सन् १९१७ की क्रान्ति के बाद रूस में करेंसकी की सरकार का राज्य था। करेंसकी की सरकार अपने को जनता की सरकार कहती थी परन्तु लेनिन उसे विदेशी पूँजीपतियों की कठपुतली सरकार ही बतलाता था, करेंसकी की सरकार ने रूस के विधान को बनाने के लिए विधान-परिषद् को बुलाया। विधान-परिषद् के चुनाव में राज्य में होने के कारण करेंसकी पक्षवालों का बहुमत स्पष्ट दिखलाई देता था। निर्वाचन अधिकार भी बहुत सीमित था। लेनिन जो पहले विधान-परिषद् में स्वयं भाग ले रहा था; परन्तु जब उसने उसके खोखलेपन का अनुभव किया तो उसने देश में पंचायतों 'सोवियटों' का संगठन किया और उनके प्रतिनिधियों को निमंत्रित

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

...अध्यक्ष अर्ली जिन्ना और उनकी ...होने वाली विधान परिषद् में सम्मिलित ...होंगी।

पंजाब के प्रधान मंत्री श्री खिजिर हयात खाँ, अस्थायी सरकार के सदस्य बननेवाले हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेडियो-कमेटी क्या कर रही है?

रेडियो की वर्त्तमान हिन्दुस्तानी का स्वरूप क्या है?

लेखक, श्री रविशंकर शुक्ल, बी० ए०, एल०-एल० बी०

भारत-सरकार ने रेडियो की हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी की भाषा-सम्बन्धी नीति में सुधार के लिए एक कमेटी नियुक्त की थी किन्तु उस कमेटी ने अब तक क्या किया, जब कि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का एक प्रतिनिधित्व भी वहाँ है, हिन्दी संसार को अभी तक इसका कुछ ज्ञान नहीं है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने रेडियो की वर्तमान भाषा-सम्बन्धी नीति की आलोचना करते हुए यह बतलाया है कि पहले और आज की नीति में कोई अन्तर नहीं है। 'देशदूत' के पिछले अंक में इस लेखमाला का प्रथम अंश प्रकाशित हो चुका है, शेष नीचे दिया जा रहा है। आजकल केन्द्रीय सरकार राष्ट्रीय नेताओं के हाथ में है, इसलिए वर्षों से उलझी रेडियो की हिन्दी-विरोधी नीति के सुधार में आशा की जाती है।

भारत-सरकार के सूचना तथा ब्राडकास्टिंग विभाग के सदस्य सरदार वल्लभ भाई पटेल

(३)

१—रेडियो की हिन्दुस्तानी में पिछले कुछ हफ्तों में प्रयुक्त हुए कुछ उर्दू शब्दों के उदाहरण—

बर्रे आज़म, इन्तिहापसन्द (Extremist का अनुवाद), दहशत अंगेज़ (Terrorist का अनुवाद), यक़ीदा, मुज़ाहिरा, खते इस्तबा, तालिब इल्म, क़ौल बावस्ता, ग़ैर-मुल्की हुकूमत, दयानतदारी, रक़बा, अम्न, अहम, अहमियत, तारीख़ (इतिहास के अर्थ में) तारीख़ी, मसरूफ़, तशद्दुद का जज्बा, तरमीम, मक़सद, बराहिरास, अख़लाक़ी, जाँनशीन, शहादत, हजूम, मुत्तफ़िक़, खद्दरपोश, अंजुमन, इल्ज़ाम, इरादा, खायत, मुल्ज़िम, मुस्तक़िल, ज़ालिमाना, मुनज्ज़म, आरज़ी, मुलाज़मत, वसीले, मौसमे बहार, छालिया (सुपारी के लिए!), मुलाज़िम, ख़िलाफ़, तजवीज, गुरब्बा मील, मुस्तक़बिल, आला, मुल्तवी, ख़ुद-मुख़्तार, इमकान, मख़लूत इन्तख़ाब, इस्तक़बाल, मुखालफ़त, मुख़ालिफ़, इस्तक़बालिया कमेटी, मिक़दार, एतराज़, जश्न, तनज़ीम, क़दीमी, बावर्दी सिपाही, बवा, मातमी दिन, अक्सरियत, क़ौमी रहनुमाई, अक़िल्लियत, क़ायम, मुक़ाम, मुक़ामी, पोशीन गोई, तावान, फ़िरक़ावाराना निस्बत, तहज़ीब याफ़्ता, ग़ैर मुल्की मामलों का वज़ीर (Foreign Minister के लिए!) हफ़्तावार अख़बार, आज़ाद, शाया, वरजिश, मजलिस, ईजाद, तसल्ली बख़्श, ज़ाती, मुल्क़, लफ़्ज़, सदर, सदारत, सदारती, एलची, बग़ावत, बाग़ी, वज़ीर-ए-हिन्द, नायब वज़ीर-ए-हिन्द, ख़त, नस्ल और ज़ात, ज़रात, ग़ैर-ज़राती, शरह, तमद्दुब, नामुनासिब, नामानिगार, तक़रीर, नुमायन्दा, ख़सूसियत, नुमायन्दा असेम्बली (Constituent Assembly का अनुवाद!), मुक़म्मल आज़ादी, ज़बान, (भाषा के अर्थ में!), मादरी ज़बान माहिर, अदब, हिस्से बख़रे, ऊँची ज़ात के हिन्दू, बादशाहियत (Monarchy का अनुवाद!) शख़्सी हुकूमत (Autocracy का अनुवाद), फलसफ़ा, अख़लाक़ी और तामीरी लिहाज़, लैसाब, रिसाले (Magazine के अर्थ में), सेहत, मुतामइन, इत्तिहादी, क़ौमी ज़बान, शहर, दरिया, मशविरा, तक़दीर, साइन्सदान, स्यासत, स्यासी, स्यासतदान, ज़िन्दगी, आला तालीम, जबरी तालीम, इब्तिदाई तालीम, फ़ौज़गर्दी, फतह, नाक़ामयाब, कामयाब, नाकाम, नाकारा, नाकाफ़ी, किफ़ायत, राशन ख़याल, तरक़्क़ी, तरक़्क़ीपसन्द, साजिश, हवाबाज़, नाफ़र्मानी, गिज़ा, गिज़ाई हालत, इक़्तिसादी, मुताल्लिक़, मुसव्विर, मुसव्वरी, ख़िताब, तमग़ा, बारिश, ताउम्र क़ैद, बमशक्कत, तनहाई, नज़्म, शायर, तफ़सील, ख़ुलासा, इज़हार, मज़मून, मरहम तर्जुबगाह (Laboratory के अर्थ में), सत्यारथ परकाश का चौदहवाँ बाब, क़ाबिल, क़ाबलियत, फेहरिस्त, नुस्ख़, हरूफ़, तमन्ना, ख़्वाहिश, सलामती की कौंसिल (Security Council का अनुवाद), वाक़या, वाक़यात, मुक़र्रर, कबीला, क़ौम, क़ौमी, क़ौमियत, नशाबन्दी, डरमान, मुक़र्रर, जम्हूरी, जम्हूरियत, आला अख़्त्यार, ताज, ताजपोशी, मुहिम, वज़ारती डेलीगेशन, अक़्ल, ख़त्म, शुरू बेक़सूर, रोज़गार, इब्तिदाई तालीम का तरमीमी बिल, जलसा मुल्तवी करने की तहरीक, मुताबिक़, नातरफदार, हक़, हक़ूक़, अन्दाज़ा, मुख़्तलिफ़, फ़िक्र, उम्मीद, खुश, ज़ाहिर,

हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा के प्रधान मन्त्री प्रिंसिपल श्रीमन्नारायण अग्रवाल रेडियो-कमेटी के एक सदस्य हैं।

ज़र्रे, इन्तकाल, सब्र, इनायत, ग़ल्ला, मुत्तनास्बत नुमायन्दगी, मर्तबा, आहिस्ता आहिस्ता, तलफ़्फ़ुस, मंसूख़, मुअत्तल, बर्ख़ास्त, मौसिक़ी, ज़रख़ेज़, उसूल, निज़ाम, जमात, आईन, मुबारकबाद, पैग़ाम, मुश्तर्का, मदद, मरकज़, मरकज़ी, शरीफ़, शराफ़त, आशारिया, म्यार, जुमला, हिन्दसा, वज़ारती, वज़ारत, सज़ा, क़ैद, जुगराफ़िआई, जुगराफ़िया, हब्बुलवतन, हुब्बलवतनी, आमपसन्द (Popular के अर्थ में), सिम्त, मशरबाती, माली, सफ़ीर, मुशीर, अमलीजामा, ग़ैर मुमालिक, सफ़ों, वादी, आबनाय, ख़ाकनाय, सनत, टापूनुमा, फ़ैयाज़ी, जाती ऐजाज़, जुदागाना, इन्तख़ाब, सफ़ारतख़ाना, राहिबख़ाना, ख़लीज़, फ़र्ज़, ख़िदमत, रायकार, उस्ताद (अध्यापक या गुरु के अर्थ में), शहरी (नागरिक के अर्थ में), बाशिन्दा, सरदियों का मौसम (या 'ऋतु'?) तहरीक (Motion के अर्थ में), तहरीक ('आन्दोलन' के अर्थ में) के हक़ में ('के पक्ष में' के अर्थ में), दरम्यान, दरयाफ़्त, वक़्त, वक़्ती कार्रवाई, असर, दरख़्त, बादशाह, मजमुआ, मजमुई, सुलह, मंजूर, मंजूरी, ऐलान, कर्ज़, फैसला, ख़ास, सूबा, सूबाई, क़ायम, जगह, वजह, जिस्म, जिस्मानी, हिस्सा, मुब्तिला, तौहीन, ज़हीन, ज़हनियत, सवाल, सवालनामा, ख़ैरियत, ख़ूबसूरत, फौज़, ख़िदमत, ख़िदमात, यक़ीन, हिदायत, ग़ैर-हाज़िर, ग़ैर-हाज़िरी, वाक़अ, तादाद, ख़्याल (विचार के अर्थ में), लाज़मी, इलाका, ताल्लुक़, ताल्लुक़ात, रिश्ता, मासूम, मायूम, मायूसी, हुक्म, रियाया, हमदर्दी, तसल्ली, कारख़ानेदार, सनत, सरमायादार, सरमाया, सरमायादारी, क़िस्मत, किताब, मुआफ़, काश्त, काश्तकार, आबपाशी, बस्ती, नेज़ा, ग़ार, मजमा, मुख़्तसर, कुदरत, कुदरती, म्वाफ़िक, वाकिफ़, वकफ़ियत, तोहफा, इज़ाज़तनामा, इन्सान, इन्सानियत. ख़ुशहाल, ख़ुशहाली, वहशियाना, फ़ख़, हिमायत, ख़तरा, ताईद, शक, शुबहा, हलफ, प्लोहरा, किनारा, मुलाक़ात, मसलन, ख़बर, सुबह, ख़ूराक, शाम, इत्तिफ़ाक़, बेइत्तिफ़ाक़ी, मातहत, प्लाइन्दा, जज़्बा, जायज़, नाजायज़, सल्लूक, बदसलूकी, सहूलियत, दलील, पनाह, पाबन्दी, रहम, ज़ुल्म, ज़ख़ीरा, ज़ब्त, ज़ाया, तबाह, फर्माबरदार।

यदि ऊपर के कुछ शब्दों जैसे शहर, वज़ीर, रिश्ता, ख़ुश, ख़ुशी, मेहरबानी, मोहब्बत, उम्मीद, वजह, जगह, मज़हब, माफ़, शरीफ, जिस्म, मदद, हक़, मुल्क़, ख़ूबसूरत, ख़ैरियत, क़िस्मत, किताब, बादशाह, यक़ीन, हुक्म, दरिया, अक़्ल, फ़िक्र, सब्र, वक़्त, मर्जी आदि के लिए यह कहा जाता है कि के शब्द तो बहुत प्रचलित हैं और सब समझते हैं, तो नगर, मन्त्री, सम्बन्ध, प्रसन्न, आनंद, कृपा, प्रेम, आशा, कारण, स्थान, धर्म, क्षमा, सज्जन, शरीर या देह, सहायता, अधिकार, देश, सुन्दर, कुशल, भाग्य, पोथी, राजा, विश्वास, आज्ञा, नदी, बुद्धि, चिन्ता, धीरज या संतोष, समय, इच्छा आदि शब्द भी तो बहुप्रचलित हैं, और सब समझते हैं, इनको भी प्रयुक्त क्यों नहीं किया जाता? और तमग़ा, ख़त, ग़ल्ला, सैलाब, छालिया, सर्द, सरदी, अन्दरूनी, मर्तबा, दरम्यान, दरयाफ़्त, आहिस्ता, दरख़्त, ज़रख़ेज, ज़रात,

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के कार्य... श्री पुरुषोत्तमदास टंडन

काश्त, काश्तकार, आबपाशी, सुर्ख़, हजूम आदि शब्दों के ... चिट्ठी, अनाज, बाढ़, सुपारी, ... भीतरी, बार, बीच, पूछना, ... उपजाऊ, खेती, खेती, किसान, गिनती, लाल, भीड़, आदि ... क्यों नहीं किया जाता?

ऊपर इकट्ठे किये हुए ... प्रकट है कि भाषा तो उर्दू है ही, ... भौगोलिक, आर्थिक, वैज्ञानिक ... पारिभाषिक शब्द भी उर्दू ... हैं और भविष्य में भी जिन ... शब्दों की आवश्यकता पड़ेगी, ... सब उर्दू से (या अँगरेज़ी से ... लिये जायँगे।

२—रेडियो की वर्तमान हिन्दुस्तानी में प्रयुक्त होनेवाले अँगरेज़ी शब्दों के उदाहरण—साइंस, कलचर, ... मिशन, शार्टवेव, रीडियम वेव, ... फूड मिशन, फिनान्स मिनिस्टर, ... फिनिस्टरों की कान्फ़रेंस, ... डिफेन्स, यूनियन, कम्यूनिकेशन, ... ऐटम बम, कमेटी, ट्रेनिंग, ... अडीटर, अडीटोरियल (मज़मून ... क़ौमों की) आरगनाइजेशन, ... असेम्बली, आर्ट, आर्टिस्टों, लीडर, ... मैन, थ्योरी, प्राब्लेम, केरेक्टर, ... (इदारे), रेज़ोल्यूशन, पोज़ीशन, ... सेक्रेटरी, सिस्टेम सेशन इन्स्टीट्यूशन, साइंटिफिक छानबीन, एसोसिएशन, ... लिज़्म, सोशल सर्विसों, हाउस, ... साइंटिफिक मालूमात, इन्सटालेशन, ... सेन्ट्रल, डेपूटेशन पब्लिक, ब्रांच, ... ज़मींदारी सिस्टम, सेक्शन, ... डिक्शनरी, फार्मूला, सोशलिज़्म, ... लिस्ट, लिबरल, लिबरलिज़्म, ... बाडी, सर्किल, कौंसिल, ... ऐड्रेस, बोर्ड, कमीशन, ... ऐक्सिस, डिसिपलिन, प्लारिटी, ... नेशनलिस्ट, यूनिट, मैजारिटी, ... रेशन, वर्किंग कमेटी, कैबीनेट, ... आल इंडिया, चैलेंज, मेम्बरशिप, ... ऐक्शन, कन्ट्रोल, लेबर, लेबर ... लेबर ऐसोशिएशन, आरगनाइज़, ... गनाइज़र, ग्रेड, आबज़र्नर।

इसका अर्थ यह है कि रेडियो की वर्त्तमान हिन्दुस्तानी में या तो ... फारसी शब्दों को स्थान है या ... शब्दों को। हिन्दी के शब्द ... नहीं घुसने दिये जाते। किसी भी ... शब्द के घुसने पर कोई रोक टोक ... परन्तु हिन्दी का शब्द किसी प्रकार ... नहीं। अँगरेज़ी शब्दों के विषय में ...

शेष पृष्ठ १२ पर ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेबसी

लेखक, श्री शम्भुनाथ सक्सेना

मनुष्य के दैनिक जीवन में कभी ऐसा घटनाएँ भी घटती हैं, जो अपनी अमिट छाप छोड़ जाती हैं। नरेश के जीवन में भी एक ऐसी ही घटना घटी थी। इस कहानी में लेखक ने एक साधारण घटना को बड़ी मार्मिकता से चित्रित किया है, जो पठनीय तथा सुन्दर है।

नरेश बड़े ध्यान से संगीत की ओर आकर्षित होता रहा।

मैंने मनस्थिति ठीक करते हुए पूछा—'और अब बजा क्या है?'

'सवा चार।'

मुझे एक बार अपनी गैर-जिम्मेदारी पर झुँझलाहट हुई और फिर नरेश जी की लापरवाही पर! उनसे कुछ कहूँ कि सामने का कमरा सप्तम में गूँज उठा—

'बद्ध दुआर देखलि बले अमनि की
तुइ आसिबे चले,
तोरे बारे बारे ठेलते हबे.....।'

मैंने नरेश जी से कहा—'नरेश जी इस बार इस फर्मे में न योरोपीय महायुद्ध जायेगा और न सम्पादकीय!' नरेश जी ऐसे चौंके मानो वी० टू० के इस्पात पर उनका हाथ अनायास पड़ गया है—अँगुलियाँ गलने लगी हैं।

उन्होंने अत्यन्त बोझिल स्वर में पूछा—'फिर?'

मैंने हँसते हुए कहा—'पहले सच बताओ नरेश जी, तुम्हारे जीवन में कभी कोई रोमेंटिक घटना हुई है?'

नरेश जी सिहर उठे। ऐसे, मानो पौष मास में सुबह चार बजे हुगली में स्नान करके निकले हों। पहले तो उन्होंने नये घोड़े की तरह अपने पर हाथ ही नहीं रखने दिया। लेकिन साहब हम भी उन्हें यूँ ही आसानी से छोड़नेवाले नहीं थे। अतएव अत्यन्त सकुचाते हुए उन्होंने कहा—'देखिए मजाक न बनाएगा।'

हमने उन्हें सान्त्वना दी—'आप निश्चिन्त रहें।'

उन्होंने कहा—'अभी उस दिन 'माल्लिक गार्डन' में मुझे सोने का एक ईयरिंग मिला था। सामने ही मेरे कुछ औरतें जा रही थीं। मुझे संदेह हुआ, सम्भवतः उनमें से ही किसी का हो। मैंने पास जाकर उनमें से एक से पूछा। उनमें से एक लड़की ने कान टटोलते हुए बँगला में साथ की वृद्ध स्त्री से कुछ कहा और तब वृद्धा ने टूटी-फूटी विकृत हिन्दी में मुझसे कहा—'अरे बाबा ई तो ईश लड़की का है।'

मैंने ईयरिंग उस लड़की की ओर बढ़ा दिया। लड़की ने एक बार भुवन मोहिनी दृष्टि से मेरी ओर देखा। स्त्री सुलभ लज्जा उसके कपोलों पर खेल गई। उसने ईयरिंग ले लिया। और.....।

नरेश जी अपनी दोनों हथेलियों को मलते हुए हि...हि....इ...हि कर हँस

अन्दर बेचैनी और असहनीय खोखलापन-सा अनुभव किया। कुछ देर ऐसा प्रतीत होता रहा कि अन्दर से जो कुछ रिक्त हो गया है, उससे शिथिलता और उदासी छा गई है, जो अभी अभी कुछ न करने देगी। मैंने माथे पर हाथ फेरा, सोचा, चाहा कि विचारों का तारतम्य बँध जाये, तो लिखने लगूँ। प्रयत्न किया लेकिन सब व्यर्थ! एक जगह कुछ लिखा और काट दिया, दूसरी जगह लापरवाही के कारण स्याही का एक बड़ा बिन्दु गिर पड़ा, उस बिन्दु का आकार भी सहज ही बढ़ गया। बिन्दु के चारों ओर महीन मकड़ी के जाले-सी रेखाएँ स्फुटित हो गईं। मैंने फिर आँखें बन्द कीं, खोलीं लेकिन अपने पर बोझ का भार बढ़ता-सा ही अनुभव किया और तब अँगड़ाई लेकर उठा, दाहनी ओर की पुस्तकों की अलमारी खोली—चाहा लिखूँ नहीं, पढ़ूँ। लेकिन उस दिशा में भी किताबें निकालने, पन्ने पलटने और उन्हें पटकने के सिवा कुछ अधिक सफलता न पा सका।

शीलो ने गाना प्रारम्भ किया।

और.....और.....! हार कर अपनी जगह पर आकर बैठ गया। ग्वाले[1] को आवाज दी और दो डाँब[2] का पानी लाने का आर्डर देकर फुल स्पीड से पंखा खोलकर आँखें बन्द किये बैठा रहा। सहसा एक 'चट' की आवाज हुई। मैं चौंका, सबसे पहले मैंने पंखे की गति की ओर देखा, लेकिन वहाँ मुझे कोई भी सन्देह का कारण नहीं मिला! उसी समय फिर 'चट' की आवाज सुनाई दी। मैंने देखा सामने की गोख में रेलिंग से टिकी एक युवती तौलिया द्वारा अपनी लम्बी घनी काली केशराशि को झाड़ रही है। उसने तौलिया में बालों की साँप-सी केडुली बाँधी और फिर खींच दिया। फिर आवाज 'चट' की हुई और सफेद सफेद पानी की बूँदें मोती की तरह आस-पास केशराशि से छिटक कर, बिखर गईं, मानो श्वेतवर्ण बगुले ने पंख फड़फड़ा दिये और बूँदें धीमी फुहार-सी झड़ गईं।

युवती काले चौड़े बार्डर की सफेद धोती पहने थी, शरीर पर वही धोती वक्ष पर होकर पीठ तक पहुँच गई थी। उस पांडु वर्ण धोती पर काली, घनी, लम्बी केशराशि सावन की वृहद्काय बदरी-सी फहरा रही थी। उसने गुनगुनाना, फिर गाना शुरू किया—

'शुने तोमार मुखेर बानी,
आसबे घिसे बनेर प्रानी
तबु हय तो तोमार आपन
घरे पाषाण हिया गलबेना—
ता बले भावना करा चलबे ना!'

इस 'ना' को पंचम में भरते हुए उसने पीठ फेरी और मुझे एकटक अपनी ओर अनिमेष देखकर वह सकुचा गई। उसकी वाणी 'ना' की अन्तिम मात्रा पर अवरुद्ध हो गई। वह किनारे से टकराई हुई लहरों की भाँति क्षण भर ठिठकी, एक बार अपनी बड़ी कजरारी आँखों से देखा, मानो इस अविलम्ब क्षणेक दृष्टिपात में ही दोनों प्यालियों का मद उड़ेल देना चाहती हो। और फिर दूसरे ही क्षण ग्रीष्मऋतु-कालीन मन्द प्रवाहित सरिता-सी अन्दर चली गई। अन्दर से फिर सरस ध्वनि आ रही थी—

'तबु हय तो तोमार आपन घरे
पाषाण हिया गलबे ना—
ता बले भावना करा चालबे ना।'

मैं तो जैसे उस संगीत में नहाकर नवीनता पा रहा था, एकदम आत्मविभोर था, कि उसी समय मेरे सहायक नरेश जी ने आकर कहा—'कल 'पत्र' निकलेगा। सम्पादकीय और योरोपीय महायुद्ध:..... अभी पूरा एक फर्मे का मैटर चाहिए।'

मैं आवाक्-सा नरेश जी की तरफ देखने लगा। अस्फुट स्वर में मेरे मुँह से केवल इतना निकला—'पहले फर्मे का मैटर, सम्पादकीय, योरोपीय महायुद्ध।'

नरेश जी ने अपनी आवाज पर जोर देते हुए कहा—'जी, आज शनिवार है और नियम के अनुसार कल पत्र प्रकाशित होना चाहिए।'

---

(२) नौकर। (३) बंगाल-प्रान्त में नारियल के हरे फल को डाँब बोलते हैं। वहाँ इसके अन्दर के पानी पीने का रिवाज है। उसका पानी मीठा, सुस्वादु और स्फूर्तिप्रद होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़े। हमने कहा—'देखो नरेश जी, अब पूरी बात बताओ। हि....हि...इ...हि... से काम नहीं चलेगा।'

अभी हमारी बात पूरी भी होने नहीं पाई थी कि कम्पोजीटरों में भूकम्प की-सी हलचल महसूस की। अपने कमरे से निकलकर हमने देखा कम्पोजीटर आपस में गुप्त मन्त्रणा कर रहे हैं। और नरेश जी की मेज के पास एक छोटी बच्ची हाथ में कागज का चिट लिये खड़ी है। उसी समय कान पर जनेऊ चढ़ाये रामधन ने बिना मेरी ओर देखे आवाज दी—'अरे कहाँ गये हो नरेश जी, इहाँ ई चिटवा तुम्हार बाट गुहारति।'

कम्पोजीटर हँस पड़े। मैंने बढ़कर चिट बच्ची के हाथ से ले ली। मैंने मुड़कर देखा तो नरेश जी मेरे पीछे खड़े थे। और ऐसे खड़े थे मानो रास्ता चलते जुआ खेलते पकड़ लिये गये हों। हमने उनका हाथ पकड़ा और अपने कमरे में ले गये। कुर्सी पर बैठकर हमने पूछा—'तो नरेश जी यही मल्लिक-गार्डनवाली लड़की है।'

नरेश जी फिर उड़े और छायावादी कवियों की तरह खूब उड़े। लेकिन हमारे सामने उनकी एक न चली। अन्त में उन्होंने किसी तरह पीछा छूटते न देखा, तो कहा—'जी, यही वह लड़की है। अभी तक सियालदह में रहती थी। साक्षात् भेंट तो न हो सकी लेकिन लुक-छिपकर देख अवश्य लेता था। अभी परसों.....!'

मैंने बीच में बात काटते हुए कहा—'बस, नरेश जी बस! लो पहले फर्मे का मैटर अबकी हम और तुम मिलकर लिख डालें। तुम मल्लिक-गार्डन से आज तक की घटनाओं का सजीव भाषा में संस्मरण लिख डालो। और मैं भी आज की घटना का।'

मैं अपना संस्मरण कम्पोज़ होने दे रहा हूँ। और नरेश जी! वे एक बार एक शब्द लिखते हैं फिर काट डालते हैं। एक लाइन लिख डालते हैं और बाद को उसे तीन-तीन बार गाढ़ी स्याही से काटते हैं। बात यह है कि सामने के कमरे में लाइट जलाकर उस लड़की ने बेले की गति में गाना शुरू कर दिया है—

'हालेर काछे माझि आछे करबे तरी पार।'[1]

नरेश जी की मनस्थिति भँवर में पड़ी तरिणी के समान है। वे विकृत हैं, परेशान हैं। कम्पोजीटरों के चेहरे पर मुस्कान है। और वे कभी कभी नरेश जी की इस बेबसी को देखकर 'टाइप' की स्टिक पर चोट कर हँस लेते हैं।*

---

(१) पतवार के पास मल्लाह है, नैया पार कर देगा—इस कहानी में आये हुए कवीन्द्र रवीन्द्र के गीत का सारांश।

* तेरे आदमी तुझे छोड़ देंगे। सिर्फ इसीलिए चिन्ता करने से काम नहीं चलेगा। तेरी आशालता छिन्न होकर गिर जावेगी। और कदाचित् उसमें फल भी नहीं आवेगा। सिर्फ इसीलिए चिन्ता करने से काम नहीं चलेगा। तेरे रास्ते में अन्धकार उतर आयेगा, तो क्या इसीलिए तू रुक जावेगा। अरे तुझे बार-बार बत्ती जलानी होगी, कदाचित् अन्त तक बत्ती भी नहीं जलेगी। सिर्फ इसीलिए चिन्ता करने से काम नहीं चलेगा। तेरे मुख की वाणी सुनकर जंगली जानवर तुझे घेर लेंगे। तो भी शायद तेरे अपने घर के पत्थर के हृदय नहीं पसीजेंगे। सिर्फ इसीलिए चिन्ता करने से काम न चलेगा। तूने दरवाजा बन्द देख लिया, क्या तू तत्काल लौट पायेगा। अरे, तुझे बार-बार धक्का मारना होगा, फिर भी कदाचित् दरवाजा नहीं खुलेगा। सिर्फ इसीलिए चिन्ता करने से काम नहीं चलेगा।

इधर उधर की

आस्ट्रेलिया के डाक्टर कर्टवान फिसर ने एक ऐसी मशीन का आविष्कार किया है जिसके द्वारा पौधे शीघ्रता से उगाये और बढ़ाये जाते हैं। इस मशीन में बीज जमीन में रखने के बजाय मशीन में रक्खा जाता है। मशीन में एक विशेष प्रकार का नमक रखते हैं। इस मशीन के पौधों की जड़ें साधारण जमीन के पौधों की अपेक्षा तिगुनी मोटी बढ़ती हैं। २४ घंटे के अन्दर पौदे रोपने के योग्य हो जाते हैं। मक्का, राई, जव, ओट और सेयाधीन के पौधे ६ दिन के अन्दर १८ इंच के हो जाते हैं। मशीन के चलाने का खर्च बहुत कम है और बिजली का खर्च २५ वाट बल्ब के बराबर है।

* * *

अमेरिका के मलेरिया-नाशक डाक्टरी प्रतिनिधि-मंडल ने मलेरिया दूर करने की एक ऐसी औषधि खोजी है जो चूर्ण है और जिसको मनुष्यों और पशु दोनों पर प्रयोग किया गया है। इस खोज में २४४ रोगियों में से केवल पाँच रोगियों को ही चंगा करने में असफलता रही। शेष सभी स्वस्थ हो गये। इस चूर्ण को क्लोरोक्वाइन कहते हैं। इस चूर्ण के मालिश से चमड़े के रङ्ग में कोई खराबी नहीं पैदा होती। इसके सेवन की तादाद कुनैन अथवा मेपाक्रीन की तिगुनी है।

* * *

जर्मन डाक्टर हिमलवेट ने एक नई खोज की है। जिसमें इंफ्लूएंजा के लिए वैक्सीन अचूक दवा सिद्ध हुई है।

* * *

चन्दलोक की यात्रा के लिए वैज्ञानिकवर्ग तैयारी कर रहा है। वह ऐसे स्थल की खोज में है जहाँ राकेट से उतरा जा सके। प्रथम पुरुष जो चन्द्रलोक की यात्रा करेगा वह १,५०० से २,००० टन तक के रैकेट यान-द्वारा चन्द्रलोक को जावेगा। उसे बर्फीले जूते, आक्सीजन की नकाब, विशेष वस्त्र पहनना पड़ेगा। यह दिन पन्द्रह वर्ष के भीतर है जब प्रथम पुरुष चन्द्रलोक में अपना प्रथम पैर रक्खेगा।

* * *

ब्रिटेन में वैज्ञानिकों का एक सम्मेलन हुआ था जिसमें एक नई खोज हुई है। इस नई खोज के अनुसार अब मनुष्य दो सौ वर्षों तक अच्छी तरह जीवित रह सकता है!

* * *

पेन्सिलिन करीब करीब सारे रोगों पर लाभकारी सिद्ध हो रही है। इसका प्रयोग सब जगह किया गया है जिसमें आशातीत सफलता मिली है।

* * *

अभी हाल में लन्दन के एक फार्म पर एक नये ट्रैक्टर का आविष्कार हुआ है। जो बिना चालक के चलता है। ट्रैक्टर रेडियो द्वारा चलाया जाता है। रेडियो की सहायता से एक चालक ६ ट्रैक्टरों का कण्ट्रोल करता है।

* * *

सीरिया की सरकार ने साउदी अरब के तेल-क्षेत्र से तेल की नलियों को सीरिया की सीमा तक बढ़ाने की योजना को स्वीकार कर लिया है। सीरिया में इसका एक कार्यालय होगा। अमेरिका की तेल कम्पनी उस लाइन की रक्षा के लिए उसकी चुंगी और कर अदा किया करेगी।

* * *

एक जर्मन गुप्तचर ३० वर्षीया महिला ने मैड्रिड में एक ७६ वर्षीय वृद्ध से शादी की। उसने सोचा था कि वह अपने देश वापस चली जायगी। परन्तु उसे मित्र-राष्ट्रों ने पहचान लिया।

* * *

रूस के युद्ध-स्थानों से साल बड़ी अच्छी फसल उगी है कि उससे अन्न की कमी काफी सहायता पहुँच सकेगी।

* *

ब्रिटेन और अमरीका के एयर मेल-सर्विस (रैकेट-इंजन शुरू की जायगी। जिसमें लगेंगे। इस पर प्रयोग हो रहे हैं शीघ्र सफल होने की बहुत रेडियो कंट्रोल से हलके चलेंगे जिनकी गति दो हजार होगी। इन राकेटों की गति से बहुत अधिक होगी!

* *

इँगलैंड के लोग शीघ्र ही रेडियो का उपयोग करने रक्खा जा सकेगा। ऐसे रेडियो १८ पौंड होगा। जो सूखी माल से संचालित हुआ करेगा।

* *

ऐसी नावों का आविष्कार तीन दिन में अटलांटिक महासागर कर जायँगी।

* *

ब्रिटेन में पैराशूट मोटर बेची जा रही हैं। कुछ तो खरीद लिया है। अब वे ब्रिटेन रही हैं जिनका मूल्य ४० ५६० रुपये) है। इन साइकिलों बहुत कम खर्च होगा।

* *

इँगलैंड के वैज्ञानिकों ने ऐसे की खोज की है जिससे समुद्री पालतू मछलियों की अच्छी वृद्धि है। वैज्ञानिकों को सरकार ने की खोज के लिए निमन्त्रित

* *

वैज्ञानिकों ने युद्ध-काल में ढोने के लिए इस्पात की जगह यम के जहाज़ बनावे थे। अब काफी संख्या में बनेंगे। वे की अपेक्षा हल्के होंगे इसके काई भी न लगेगी।

* *

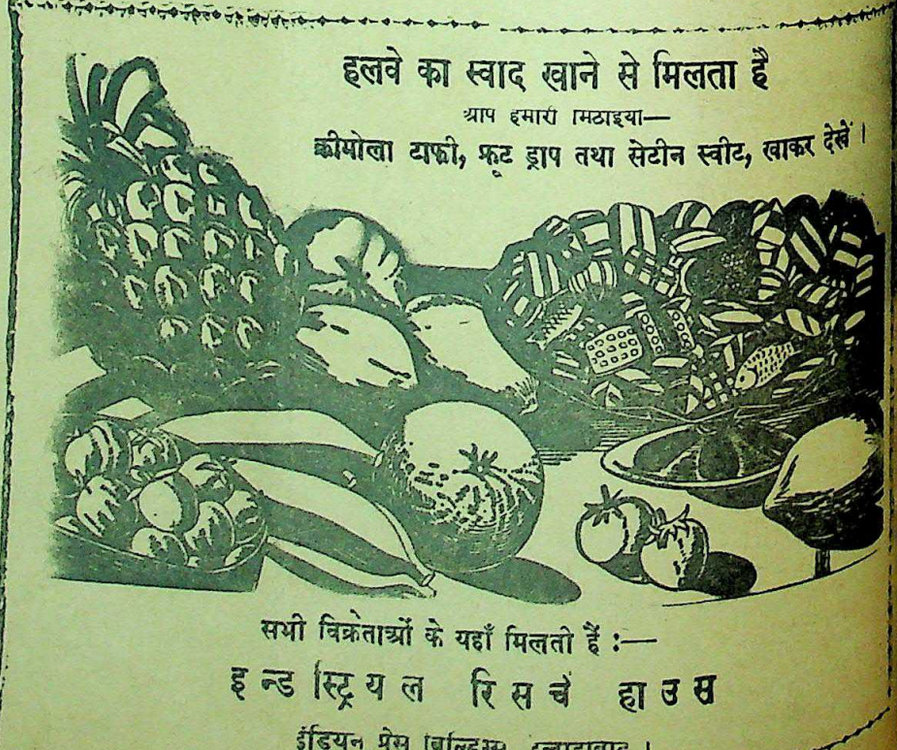

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...रा रंग-मंच

'कलियाँ'

...के जीवन का एक सुन्दर ...और सामयिक फिल्म

...लेखक, श्री पूरन खत्री

...परियों में उत्पन्न होता है। ऊँचे ...ग्रहलिकाओं में न सत्य की ...ही जाती है, और न उसकी ...ा। प्रासादों और अट्टालि-...नेवाले प्रेम करना सीखते हैं, ...को लिखाने का दावा करते हैं, ...करते कि जीवन में प्रेम अनि-...एक ईश्वरीय देन है। जीवन ...प्रेम की उतनी ही जरूरत ...मिश्री चाय में शक्कर की। ...फिल्म के कहानी-लेखक ने कथा ...आधार पर लिखा है।

...नाम का एक युवक शहर की ...किरण के प्रेम से निराश होकर ...चला आया। गाँव में उसे लज्जो ...मिला। लज्जो भी गाँव भर के ...ठुकराई हुई थी, इसलिए वह ...आश्रय चाहती थी, जहाँ वह ...की सांस ले सके। मनोहर और ...दिन एक दूसरे के सहवास में ...मजूर रहे थे। गाँव भर में ...किसी एक ही सहेली थी और ...देवर की बहन। दीपक अपनी ...गाँव में अकेला रहता था। ...नामक एक गाँव की ही ...था। एक बार जब मनोहर ...शहर से उसके साथ एक ...भी आई। उसने आकर ...उजाड़ने की कोशिश की। ...हुई और लज्जो के साथ-

सुप्रसिद्ध अभिनेत्री रमोला।

जब दीपक गाँव पहुँचा, तब ज्योति की शादी गाँव के जमींदार से हो चुकी थी। दीपक की याद में ज्योति ने अफीम खा ली, इस तरह उसकी लाश ससुराल पहुँची। मनोहर के इलाज से लज्जो ने आराम पाया। उसको लेकर वह गाँव चला आया, जहाँ उसने लज्जो के नाम से लाजवन्ती पाठशाला खोलकर बच्चों को पढ़ाना आरम्भ किया।

'कलियाँ' फिल्म में सादे देहाती जीवन का चित्रण है। किस तरह देहातवाले शहरवालों से मनुष्यत्व के नाते प्रेम करके उन्हें दूध पिलाते हैं, जब कि शहर में पानी भी मोल बिकता है। दूसरी बात है चरित्रों का चित्रण। पात्रों के चरित्र-चित्रण में लेखक ने बड़ी खूबी से काम लिया है। इस चित्र के चरित्र-चित्रण ने चित्र को उच्च कोटि का बना दिया है। तीसरी बात लेखक ने शिक्षा पर जोर देने की कोशिश की है। आज भारतीय जनता ८० प्रतिशत अपढ़ है। एक समय था, जब दूसरे देशों के विद्यार्थी नालन्दा-विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने आते थे। भारतवर्ष में शिक्षा पाकर वह अपने को धन्य समझते थे। किन्तु आज की स्थिति ही भिन्न है।

'कलियाँ' फिल्म के कलाकार पुराने तथा मँजे हुए हैं। लीला देसाई, मोतीलाल रमोला, सुलोचना चटर्जी तथा राजदुलारी सबने उच्च कोटि का अभिनय किया है। निर्माता तथा दिग्दर्शक हैं श्री केदार शर्मा। यह उनका निर्माण किया हुआ प्रथम चित्र है। पूरी सफलता तो उन्हें नहीं मिली है फिर भी प्रशंसनीय अवश्य हैं। दो-चार जगह उन्होंने अपने पुराने चित्रों के विचार भी अंकित किये हैं, जिनमें 'देवदास' तथा 'चित्रलेखा' का नाम उल्लेखनीय है। वेष-भूषा और प्रतिन्यास में यह चित्र 'गौरी' फिल्म से भी बहुत कुछ मिलता-जुलता है। चित्रालेखन दो-एक जगह को छोड़कर उच्च कोटि का है। चित्रलेखक गोगटे इस बात को भूल गया है कि प्रेम के चित्र 'लाइट एण्ड शेड' में दिखाये जाते हैं। ध्वनि निम्नकोटि की है। संगीत के साथ शब्दों का जोड़-तोड़ भी कमजोर है। कैंची भी ठीक नहीं चली है। 'एडीटर' ऊँघता नजर आता है। फिर भी दिग्दर्शक की हाल की रचनाओं में चित्र प्रशंसनीय है। श्री केदार शर्मा बधाई के पात्र हैं।

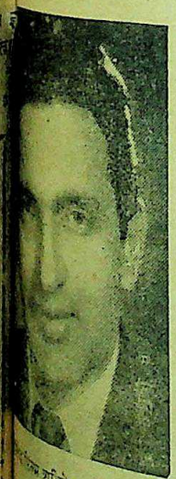

...अभिनेता और गायक ...मुकेश।

...के भी अरमानों को ...आने साथ दीपक ...गई। सात महीने बीत ...घर नहीं आया। शहर ...साहब बन गया था। ...हमको भी औरों की ...कार्ड, तब तक दीपक की ...लेने पहुँच चुकी ...मोटर से 'एक्सिडेंट' हो ...ने मनोहर ने जाना, ...आ गया। बहन ...फटकार के बाद

इष्ट मित्रों के स्वागत में
बढ़िया से बढ़िया चीज लगती है

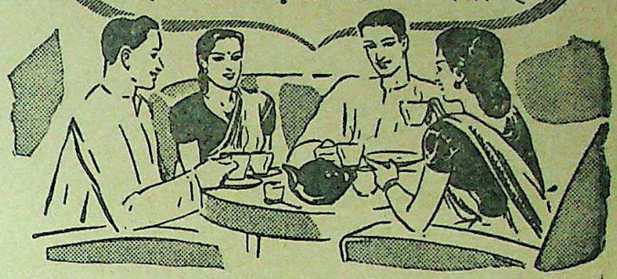

चाहे कोई वार तेहवार हो, उत्सव आनन्द हो, हजारों व्यक्ति आमंत्रित हों या यों ही दोन तीन आदमियों को बुलाया जाय, चाय वहाँ होगी ही। बातचीत और मिझत बढ़ाने का यही तो एक जरिया है।

सभी चीजों के बनाने का एक तरीका होता है। तरीके से बनाने से ही वे अच्छी बनती हैं अन्यथा नहीं। नीचे लिखे तरीके से बनाकर देखिये, चाय कितनी अच्छी बनती है। आपके मेहमान बिना तारीफ किये न रह सकेंगे।

अच्छी चाय बनाने का तरीका

१ केतली में चाय न सिझाइये। सिझाने का बर्तन अलग रखिये। २ सूखी चाय डालते वक्त वह बर्तन सूखा व गर्म रहे: इससे चाय का रंग व स्वाद ठीक बनता है। ३ हर प्याले के लिये एक चम्मच, और बर्तन के लिये एक चम्मच ताजी, सूखी चाय की पत्ती उसमें डालिये। ४ उसी वक्त का उबला हुआ पानी डालिये— पहले का उबला, कम या ज्यादा उबला पानी मत डालिये। बुदबुदा उठने पर ही पानी उबलता है, उसके पहले नहीं। ५ चाय को पाँच मिनट से कम न सिझाइये। ६ प्यालों में चाय डालकर तब उसमें दूध व चीनी मिलाइये।

चाय
हर वक्त चाय का वक्त

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 250

भारतीय चायों में सर्वश्रेष्ठ
लिपटन की
व्हाइट लेबुल चाय

LTK 51

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेडियो-कमेटी क्या कर रही है ?

(पज ८ का शेष)

सिद्धान्त नहीं, अर्थात् किन हालतों में अरबी फारसी का शब्द लिया जायगा और किन हालतों में अँगरेज़ी का शब्द, यह तय नहीं, परन्तु इतना तय है कि हिन्दी शब्द नहीं लिया जायगा। ऊपर के शब्दों में से कितना ही के उर्दू पर्याय है ही नहीं अथवा प्रचलित नहीं हैं (जैसे साइंस, मेम्बर, आर्ट, आर्टिस्ट, एडाप्टर, एडीटोरियल, लीडर, स्कीम, पालिसी, पोज़ीशन, साइंटाफिक, प्राब्लम, नशनालिज़्म, कैरैक्टर) परन्तु फिर भी अँगरेज़ी शब्द ग्रहण किये गये, बहुप्रचलित हिन्दी पर्यायों को नहीं लिया गया। वस्तुतः इस समय हिन्दुस्तान की 'हिन्दुस्तानी' में हिन्दी-संस्कृत शब्दों से तो अंगरेज़ी शब्दों का संख्या कई गुनी है। यह समझा जाता है कि हिन्दुस्तानी की ख़बरों से दिलचस्पी रखनेवाला हर कोई—अपढ़ देहातियों सहित—इन अंगरेज़ी शब्दों को तो जानता है और समझ लेता है; परन्तु हिन्दी शब्दों को नहीं समझता। सभाओं, संस्थाओं आदि के अँगरेज़ी नाम भी ज्यों के त्यों प्रयुक्त किये जाते हैं और उनका अर्थ नहीं बतलाया जाता (जैसे 'आल इंडिया यूनियन')।

(याद रक्खें यह है कि अंगरेज़ी शब्द हिन्दी उर्दूवाले दोनों समझते हैं तो ऊपर १ में एकत्र अरबी फारसी शब्दों में से तीन चौथाई शब्दों के भी अँगरेजी पर्याय प्रयुक्त करने चाहिये थे और बड़े मज़े से प्रयुक्त हो सकते हैं और वे हिन्दीवालों की समझ में भी आ जाते। अँगरेज़ी शब्दों के विषय में सिद्धान्त क्या है? अगर 'इंटर नेशनल' रक्खा जा सकता है तो 'स्यासत' के स्थान में 'पालिटिक्स' भी लिया जा सकता है और यदि 'योजना' के स्थान में 'स्कीम' लिया जा सकता है तो 'मरकज़ी' के स्थान में 'सेन्ट्रल' भी लिया जा सकता है, आदि)।

अँगरेज़ी शब्दों की भरमार केवल रेडियो की 'हिन्दुस्तानी' में है। अन्य प्रान्तीय भाषाओं के बुलेटिनों में लगभग इन सब अंगरेज़ी शब्दों के देशी पर्याय प्रयुक्त होते हैं। क्या हिन्दुस्तान की प्रमुख भाषा घोषित की जानेवाली भाषा इसी प्रकार संसार के सामने अपना दारिद्र्य प्रकट करेगी (और वह भी एक कामन भाषा के झूठे फर्म में!) अथवा क्या उसमें अँगरेज़ी शब्दों को तो स्थान होगा परन्तु हिन्दी-संस्कृत शब्दों को नहीं।

३—रेडियो की वर्त्तमान हिन्दुस्तानी में प्रयुक्त होनेवाले ऐसे हिन्दी शब्दों की संख्या जहाँ उर्दू शब्द भी प्रयुक्त किये जा सकते थे परन्तु मेहरबानी करके नहीं किये गये, एक दर्जन के लगभग हैं। उनमें से अधिकांश निम्नलिखित हैं—

समन्दर, ध्यान, राजधानी, सोच बिचार, आर्थिक ('यानी इक्तिसादी' के पुछल्ले के साथ), पूरब, पच्छिम, उत्तर, दक्खन या दकन, सुधार, काल।

४—हिन्दी के उँगलियों पर गिनने लायक जिन शब्दों को लिया गया है उन्हें यथाशक्ति और यथा-सम्भव बिगाड़कर (जान बूझकर, उर्दू लिपि के कारण नहीं) लिया गया है। इसी प्रकार जिस किसी हिन्दी शब्द को प्रसंगवश या मजबूर होकर कभी कदा प्रयुक्त करना पड़ जाता है, उसे बिगाड़ कर प्रयुक्त किया जाता है। पिछले कुछ सप्ताहों में हिन्दुस्तानी खबरों में प्रयुक्त हुए, कुछ जान बूझकर बिगाड़े हुए हिन्दी शब्दों के उदाहरण—

गाहक, समन्दर, पूरब, पच्छिम, दक्खन या दकन, बैपार, बैपारी, सपना, सकत, देस, सुगन, सनीचर, सोच बिचार, सोक, सिरी (श्री!), बरखा, बदेसी, सुरगबाश, बरत, किसन परशाद, सत्येग्रह, सत्येग्रही, मूरखपन, परचार, सामराजी Imperialist के अर्थ में!) इसके बरक्स ऐसे उर्दू शब्दों को भी जो तद्भव रूप में बहुप्रचलित हैं सदैव शुद्ध तत्सम रूप में प्रयुक्त किया जाता है। पिछले कुछ सप्ताहों की खबरों में से लिए गये कुछ उदाहरण—

नव्वाब, जवाब, मसव्विदा, मुक़द्दमा, दस्तखत, अस्ल, रक़्म, फ़स्ल, सब्र, दख़्ल, अक़्ल, तख़्त, स्वाल, रौशनी, क़ला, कश्ती, फ़िक्र, ज़िक्र, ग़लअती, अम्न, बेदख़्ल, तक़ाजा, तक़दीर, ख़त्म, मुआफ़, मुआमला, इस्तेफा, ख़याल, नक़्द।

हिन्दी शब्दों और हिन्दुओं के नामों के घोर अशुद्ध उच्चारण (जिसका प्रधान कारण उर्दू लिपि है) के विषय में पहले (मेमोरैन्डम देखिये) कहा जा चुका है।

५—एक कामन हिन्दुस्तानी के फेर में अँगरेज़ी शब्दों का प्रायः ग़लत और भ्रामक अनुवाद किया जाता है और भाषा को और अधिक दरिद्र बनाया जाता है, अथवा हिन्दी शब्दों को दूर रखने के फेर में भाव और अर्थ को पूर्णतया व्यक्त करनेवाले व्यंजनाशील हिन्दी शब्दों के होते हुए ग़लत, भ्रामक और अर्थ तथा भाव को ठीक ठीक व्यक्त न करनेवाले उर्दू शब्दों को प्रयुक्त किया जाता है। पिछले कुछ सप्ताहों की खबरों से कुछ उदाहरण—

'Sovereign' का अनुवाद 'ख़ुद-मुख़्तार', 'Paramountcy' का 'आला अख़्त्यार', Spirit, Thought, Belief, Imagination चारों का अर्थात् भावना, विचार, धारणा, कल्पना चारों के स्थान में 'ख़्याल'; 'Goodwill' का 'अच्छा ख़्याल'; 'Facilities' का 'आसानियाँ'; 'Interests' का 'फायदे या हक़', 'Racial Discrimination' का 'नस्ली फ़र्क'; 'Discrimination' का 'फ़र्क'; Communications का 'रेल, डाक और तार'; 'Civil rights' का शहरी हक़; Debate और 'Discuss' दोनों के लिये 'बहस', 'Public institutions' का 'आम जमातें'; Competition का मुक़ाबला; 'Exploitation' का 'लूट खसोट'; 'Reliable Source' का 'भरोसे का जरिया'; 'Statistics' का 'बातें'; 'Political stability' का 'स्यासी अम्न'; 'Organisational matters' का 'इंतज़ामी मामले'; 'Co-operation' का 'मदद' या 'एक दूसरे के साथ चलने का जज़्बा' 'Recognition' का 'मंज़ूरी'; 'Zemindari system' का 'ज़मींदारी का तरीक़ा', 'Socialise' का 'गवर्नमेन्ट अपने हाथ में ले'; 'Proposal' और 'Suggestion' 'दोनों का तजवीज'; 'Character' और 'Conduct' 'दोनों का चलन'।

रेडियो की वर्त्तमान हिन्दुस्तानी कितनी ग़रीब, अपरिमार्जित और अभिव्यंजना शक्ति-रहित है अर्थात् बना दी गई है, इसका पूरा हाल ख़बरों को सुनकर ही जाना जा सकता है। अँगरेज़ी में खबरों को सुनने के बाद उन्हीं ख़बरों को 'हिन्दुस्तानी' में सुनने से यह बात और भी अच्छी तरह प्रकट हो जाती है। यह बात केवल 'हिन्दुस्तानी' के साथ है। रेडियो से जिन अन्य प्रान्तीय भाषाओं में ख़बरें होती हैं उनके समाचार बुलेटिन संतोषजनक भाषा में लिखे होते हैं। किसी भी दूसरी भारतीय भाषा के समाचार बुलेटिन का 'हिन्दुस्तानी' के समाचार बुलेटिन का मुक़ाबला करने से स्पष्ट हो जायगा कि किस प्रकार भारत को सबसे प्रमुख भाषा, राष्ट्रभाषा आदि घोषित की जानेवाली भाषा की रेढ़ मारी गई है। वस्तुतः 'हिन्दुस्तानी' की ख़बरों से केवल अपढ़ गँवारों को सन्तोष हो सकता है। उन्हें सुनकर सूक्ष्म दृष्टि रखनेवाला कोई भी व्यक्ति यह नहीं जान सकता कि ठीक ठीक क्या बात हुई अथवा किसने ठीक ठीक क्या कहा और उसका क्या भाव था। यह सब जानने के लिए उसे अँगरेज़ी की ख़बरों को सुनने की आवश्यकता फिर भी रह जाती है। किसी दूसरी भारतीय भाषा के समाचारों के साथ यह बात नहीं है।

६—रेडियो की हिन्दुस्तानी की शैली, मुहावरे, वाक्य-विन्यास, व्याकरण, उच्चारण, हिज्जे या शब्द-विन्यास, शब्दों का रूप आदि सब उर्दू के साँचे में ढले हुए हैं अर्थात् उर्दू के अनुरूप हैं, हिन्दी के अनुरूप नहीं। कुछ उदाहरण—

(१) ब्रिटेन, ब्रिटिश, श्रीनगर, अमृतसर, इलाहाबाद, बल्गेरिया, बेल्ग्रेड, बाल्कन, अलबेनिया, मंचूरिया या मैनचूरिया, ग्वालियर, बलूचिस्तान, कानपुर, नागपुर, हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तानी, प्रेग, फिलिस्तीन आदि न कहकर बरतानिया, बरतानवी, सिरीनगर, अमरतसर, अलाहाबाद, बलगारिया, बलगराड, बलकान, अलबानिया, मनचोरिया, गवालियार या गवालियर, बलोचिस्तान, कानपूर, नागपूर, हिन्दोस्तान, हिन्दोस्तानी, परेग, फलस्तीन कहा जाता है। ये सब उर्दू में प्रचलित रूप हैं और इनमें से अधिकांश पर उर्दू लिपि या उर्दू की ध्वनि-प्रणाली की छाप प्रत्यक्ष है।

(२) भारत-मंत्री, उप-भारत-मंत्री, लाल सेना, लाल कुर्ती, 'ऊँची जाति के हिन्दू', शाखा, सुपारी, बसन्त आदि न कहकर वज़ीर-ए-हिन्द, नायब वज़ीर-ए-हिन्द, सुर्ख फौज, सुर्ख पोश, 'ऊँची जाति के हिन्दू', शाख, छापिया, मौसमे बहार कहा जाता है। यह सब उर्दू का अनुकरण है।

(३) सिर, डिब्बा, उनतिस, पैंतिस, छत्तिस, सैंतिस, चौवालिस, चउअन, सत्तावन, पिछत्तर, चौरासी, पिच्यासी, इक्यानवे, चौरानवे, पिच्यानवे आदि न कहकर सर, डब्बा, उनत्तिस, पैंत्तीस, छत्तीस, सैंतीस, चवालिस, चव्वन, सतावन, तिरसठ, पचहत्तर, चवरासी, पचासी, इकानवे, चवरानवे, पचानवे कहा जाता है। इनमें से भी अधिकांश पर उर्दू लिपि की छाप प्रत्यक्ष है।

(४) हिन्द - वजीर, खजाना - वजीर, दिल्ली सूबा, गंगा दरिया, डाक का महकमा, आदि न कह कर वजीर-ए-हिन्द, वजीर-ए-खजाना, सूबह-ए-दिल्ली, दरिया-ए-गंगा, महकमा-ए-डाक आदि कहा जाता है। 'तफरीह के लिए', 'मिसाल के लिए', 'मसलहत से', 'यकीन के साथ' (या 'अवश्य'), 'इरादे के साथ' (या 'जानबूझकर') आदि न कहकर तफरीहन, मसलन, मसलहतन, यकीनन, इरादतन आदि कहा जाता है। 'सामाजिक' का 'समाजी' कर दिया गया है परन्तु हालात, वाकयात, खिदमात, कागजात, ताल्लुकात, सवालात (अभी हाल में सुने हुए कुछ उदाहरण) वैसे ही बने हुए हैं। सारांश यह कि रेडियो की हिन्दुस्तानी ने उसी फारसी व्याकरण को अपनाया है जिसे उर्दू ने।

(५) मदरास सूबा, बंबई बम्बई गवर्नमेंट, बीकानेर के महाराजा महाराज या 'ट्रावनकोर के दरिया, बनारस शहर, डाक स्वेज नहर, ३० दिन की न कहकर सूबा मदरास, गवर्नमेंट बम्बई, महाराजा महाराजा ट्रावनकोर, दरिया बनारस, महकमा डाक, दिन का क़ैद सख़्त, आदि यह उर्दू का सुपारिचत प्रयोग है।

(६) प्रश्न यह है कि हिन्दुस्तानी में अरबी-फारसी शब्दों की जायगी, या उर्दू में हिन्दी मिलाकर। दोनों रास्ते एक ही पहुँचते। 'हिन्दुस्तानी' का हो यह निश्चित करना पड़ेगा, सामने एक मजा हुए और का आदर्श रखना पड़ेगा, और करना पड़ेगा कि यह अथवा उर्दू। केवल शब्दों का करने से काम नहीं चलेगा। का ज्ञान नहीं होता। नहीं बनती।

(७) रेडियो की 'हिन्दुस्तानी' लिपि और उसके फलस्वरूप हिन्दू और हिन्दुओं के नामों के घोर उच्चारण के विषय में पहले कहा जा चुका है (मेमोरैन्डम देखिए)।

(८) रेडियो का 'हिन्दुस्तानी' संस्कृत के विषय में भी कहा जा चुका है (मेमोरैन्डम देखिए)।

रेडियो की 'हिन्दुस्तानी' का परिचय तो सुनने से ही मिल सकता है, जो पूरी तौर से यह जानना चाहते हैं कि रेडियो किस प्रकार 'हिन्दुस्तानी' के नाम से भाषा पर अत्याचार, साहित्यिक चार, हिन्दी भाषा, हिन्दी भाषा और हिन्दी संस्कृत का अपमान, तीयता का विनाश, राष्ट्र और राष्ट्र हँसा और उर्दू का प्रचार कर रहे हैं, कम से कम एक सप्ताह तक नित्य सवा नौ बजेवाला 'हिन्दुस्तानी' का चार बुलेटिन सुनें। जिनके पास रेडियो नहीं है वे मित्रों या परिचितों के यहाँ जाकर सुनें। जब तक हिन्दीवाले खबरों की 'हिन्दुस्तानी' का पूरा ज्ञान नहीं होगा और जब तक हिन्दुस्तानी का पूरा ज्ञान नहीं होगा तब तक उसे हटाने के लिए उनका आन्दोलन तड़पेगा। हिन्दीवालों और उर्दूवालों सहमति और स्वीकृति से 'हिन्दुस्तानी' बनने से रही, देखना केवल यह है कि कार हिन्दीवालों को कमीटियों और में उलझाकर वर्त्तमान 'हिन्दुस्तानी' रखने में कब तक सफल होती है। हिन्दी में अलग और उर्दू में अलग चार होकर रहेंगे—इसके अतिरिक्त दूसरा रास्ता नहीं, देखना यह है कि स्तानी-वाद के भक्त रेडियो की स्तानी' के नाम से हिन्दी की और अपमान कब तक करते रहेंगे, सम्मेलन कब तक इस मृग-तृष्णा के पीछे दौड़ता रहेगा, उसे अक्ल आयेगी कि सारे जाल और शब्दाडंबर को छोड़कर साफ हिन्दी की रचना करने से ही हिन्दी की रक्षा हो ताराचन्दी गढ़ कमेटियों में समय नष्ट करने से नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमण्डल

जन-सेविका गर्ल्स स्काउटों का संगठन
नगरों तथा मुहल्लों में साम्प्रदायिक सद्भावना की स्थापना के लिए एक सुझाव

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

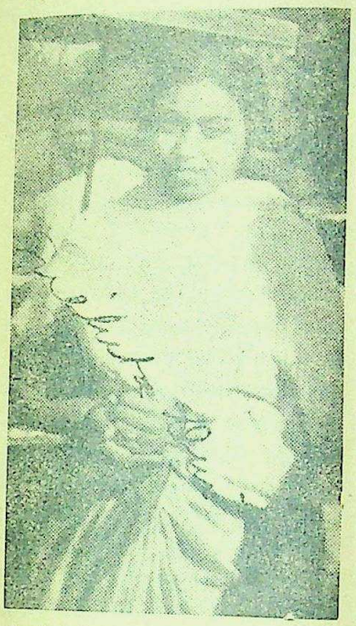

श्रीमती शुचिता कृपलानी कस्तूर बा स्मारक ट्रस्ट की व्यवस्था के लिए प्रांत का दौरा कर रही हैं।

[illegible] में जब से स्काउटिंग का जन्म [illegible] जाति की सेवाओं में उसका [illegible] हाथ रहा है। अफ्रीका के [illegible] में छोटे छोटे बच्चों की छोटी [illegible] दिन संसार की एक बड़ी [illegible] संस्था बन जायगी, इसका [illegible] स्काउटिंग के संस्थापक के [illegible] में शायद ही रहा होगा। [illegible] महत्त्वपूर्ण जनहित है? स्काउटिंग [illegible] सेवा ही है। भारत में [illegible] की आवश्यकता थी। भारत [illegible] सेवा-कार्य ही से ओत-[illegible]। अभी तक स्काउटिंग ने [illegible] का क्षेत्र अधिकांश रूप से [illegible] तक सीमित रक्खा था परन्तु [illegible] में राष्ट्रों ने अपनी स्त्रियों [illegible] भी कार्य लिया है। स्त्रियों [illegible] में पुरुषों के साथ [illegible] डटकर काम किया है। [illegible] उन्होंने वायुयान और मोटरें [illegible] सेनाओं, बड़े बड़े शहरों पर [illegible] बरसाये हैं। पैदल सेनाओं [illegible] किया है। परन्तु ये सब [illegible] हैं। स्त्रियों के उपयुक्त [illegible] उनमें मातृत्व है, पुत्र [illegible] के प्रति स्नेह है। वे पुरुषों [illegible] निष्ठुर नहीं कि अपनी [illegible] अपने हाथों वध कर डालें। [illegible] समाज को कभी सभ्यता [illegible] स्त्रियों की सेवाओं की [illegible] तो उन्हें स्त्रियों को ऐसे [illegible] जो मातृत्व के संहारक न [illegible] युद्ध में स्त्रियों को उनकी [illegible] काम करना पड़ा है। [illegible] में वह अधिकतर अस्पतालों [illegible] की देख-भाल और [illegible] में काम करती थीं। अब [illegible] लौट आई हैं। आजाद [illegible] महिलाओं ने युद्ध की [illegible] प्राप्त की हैं। अब उनसे [illegible] कार्य लिया जाय? आज [illegible] के जागरण और उत्थान [illegible] ऐसी स्थिति में स्त्रियों को [illegible] आवश्यक है? इस पर [illegible] सिद्ध होता है कि स्त्रियों [illegible] आवश्यक है परन्तु उनमें [illegible] भावना का उदय करना [illegible] है। इससे कौन-सा उपाय [illegible] सैनिक-शिक्षा के साथ [illegible] भी स्थिर रह सके? [illegible] कार्य पुरुषों की अपेक्षा [illegible] कर सकती हैं। स्काउटिंग [illegible] सच्चे स्वयंसेवकों को [illegible] स्काउटिंग के लिए अभी [illegible] की आवश्यकता [illegible] परन्तु आज का युग [illegible] विस्तृत हो गया है। [illegible] युद्ध और उपद्रव [illegible] हो सकते हैं। भारतवर्ष में भी आज का युग क्रान्ति का ही है। चारों ओर छुट-पुट साम्प्रदायिक दंगों के नाम पर गृह-युद्ध हो रहा है। ऐसे समय में सैनिक-सहायता से दंगों को दबाने का अर्थ होता है दूसरे के अधिकारों का अपहरण, हत्या और सैनिक-शक्ति का अपव्यय। देश की आन्तरिक स्थिति को ठीक रखने के लिए देश में सभी नेताओं को यह भास होने लगा है कि देश में होम गार्ड (गृह-रक्षक) के नाम पर प्राइवेट रक्षकों का जन्म होना चाहिए। ये होम गार्ड यदि पुरुष होंगे तो वे निर्दयता के साथ किसी भी उपद्रवी का खून कर सकते हैं परन्तु यदि इस कार्य में स्त्रियों को नियुक्त किया जाय तो वे अपने स्वाभाविक मातृत्व के कारण उतनी निर्दयता न करेंगी जितनी पुरुष कर सकता है।

स्काउटिंग की शिक्षा का प्रसार इतना बढ़ गया है कि देश के बड़े-बड़े शहरों से लेकर गाँव गाँव तक फैल गया है। यू० पी० में तो शायद ही कोई शहर हो जहाँ स्काउटिंग की शिक्षा न दी जाती हो चाहे वह स्कूल का अध्यापक हो चाहे विद्यार्थी। पर, आज की स्काउटिंग केवल खेल-कूद, डंडा लाठी और ड्रिल (कवायद) ही तक सीमित नहीं है। स्काउटिंग संस्था के कर्णधारों ने संस्था के सदस्यों को सैनिक-शिक्षा देने की आज्ञा भी सरकार से प्राप्त की है। इसके अतिरिक्त उसका क्षेत्र भी शहर अथवा किसी विशेष स्थान ही तक सीमित नहीं रह गया। अब मुहल्लों में लड़के और लड़कियों को स्काउटिंग की शिक्षा दी जायगी। पंडित हृदयनाथ कुँजरू ने सन् १९२५ ईसवी में ही इस योजना के अनुसार कार्य करने को सोचा था। परन्तु वह पूर्ण न हो सकी थी। आज देश में साम्प्रदायिक उपद्रवों ने बड़े-बड़े नेताओं के भी कान खड़े कर दिये हैं। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इलाहाबाद के दंगे के अवसर पर वहाँ के नागरियों से मुहल्ले-मुहल्ले रक्षा-समितियाँ बनाने की सलाह दी थी। बस उसी दिन से रक्षा-समितियाँ बनने लगीं। परन्तु ये रक्षा-समितियाँ क्या कर सकती हैं? न उनके पास कोई अस्त्र और न अपने को बचाने की कोई कला! ऐसे समय पर स्काउटिंग की आवश्यकता है। रक्षा-समितियों में स्त्रियों का दल हो। ऐसी समितियाँ जो गृह की रक्षा के लिए बनाई जायँ। उनमें स्त्रियों के ही दल का होना आवश्यक है। उन्हें स्काउटिंग द्वारा सैनिक-शिक्षा में निपुण करना चाहिए। सैनिक मनोवृत्ति के बावजूद भी उनमें मातृत्व का अभाव नहीं होता। अतः दुर्घटनाओं के समय वे पुरुषों के संहार की अपेक्षा उपद्रवी अथवा गुंडों की हत्या नहीं कर सकतीं बल्कि उनको उचित मार्ग पर ला सकती हैं। इसके अतिरिक्त वह पीड़ितों का उपचार भी भली भाँति कर सकेंगी। इससे आज उपद्रवों अथवा गृह-युद्ध में जो मृत्यु-संख्या सुनाई पड़ रही है, बिलकुल उँगलियों पर गिनी जा सकेगी। अतः स्काउटिंग के कर्णधार, सरकारी ऊँचे अफसर और नेताओं का कर्त्तव्य है कि वे अपनी कर्तव्य-परायणता के लिए महिला स्काउटिंग का संगठन प्रत्येक नगर तथा मुहल्लों में करें।

किसी मेले अथवा जलसे में भूले-भटके व्यक्तियों के साथ जो नम्रता का व्यवहार स्त्रियाँ कर सकती हैं, पुरुषों में वह भाव स्वभावतः कम होता है। स्काउटिंग में फर्स्ट एड (प्रथम चिकित्सा) तथा अन्य सेवा-कार्य स्त्रियों के लिए अधिक उपयुक्त हैं। अतः यह आवश्यक है कि स्त्रियों को स्काउटिंग में प्रथम स्थान दिया जाय। इससे संस्था से उनके मातृत्व की रक्षा भी हो सकती है। यही नहीं बल्कि स्त्रियों में स्काउटिंग-शिक्षा अनिवार्य कर दी जाय। वह स्कूल और कालेजों की चहारदीवारी तक सीमित न रहे। बल्कि शहरों में मुहल्ले-मुहल्ले और गाँव-गाँव में स्त्रियों के दल बनाये जायँ उन्हें स्काउटिंग की शिक्षा दी जाये। ये दल जनता की सेवा के लिए बहुत ही उपयुक्त होंगे। स्त्रियों के अतिरिक्त पुरुषों को भी स्काउटिंग की अनिवार्य शिक्षा देनी चाहिए। ऐसे स्काउट देश के रक्षक ही होंगे। परन्तु जो इस समय शीघ्र ही आवश्यकता है वह है—स्त्री स्काउटों की जिनसे जन-सेवा-कार्य में अत्यधिक सहायता मिलेगी और होगी गृह-रक्षा क्योंकि वे गृहलक्ष्मी हैं।

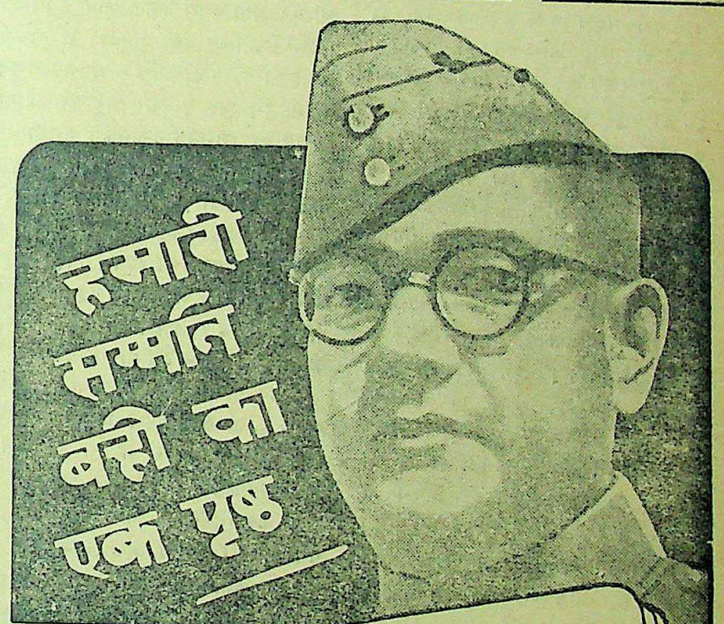
हमारी सम्मति बही का एक पृष्ठ

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस
लिखते हैं :

"मैंने आज शक्ति औषधालय, ढाका देखा। कृपापूर्वक मुझे इसका कोना-कोना दिखलाया गया। आयुर्वेदिक सिद्धान्तों के अनुसार बहुत बड़े पैमाने पर यहाँ देशी औषधियाँ बनाई जाती हैं। यह संस्था बाबू मथुरामोहन चक्रवर्ती के प्रति बहुत ऋणी है, जिनके उद्योग से आयुर्वेदिक औषधियाँ गरीबों के लिए भी सुलभ हो सकीं। मैं उनकी इस संस्था की समस्त सफलताओं की कामना करता हूँ, जिसे उन्होंने अपनी दीर्घ-कालीन कोशिशों और कठिन अध्यवसाय के बाद स्थापित किया है। शक्ति औषधालय, ढाका की सफलता का अर्थ है देश भर में आयुर्वेद की लोक-प्रियता और दूसरे शब्दों में इसका अर्थ है पीड़ित मानवता का उद्धार।"

(ह०) सुभाषचन्द्र बोस
ढाका, जून ६, १९३९

अध्यक्ष मथुर बाबू का
शक्ति औषधालय · ढाका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

श्री किशोर साहू की कहानियाँ

हिन्दी-साहित्य में प्रगतिशील कलाकार की अमूल्य देन

लखक, श्री उमेश जाशी

हिन्दी-जगत् के लोकप्रिय कलाकार और कहानीकार श्री किशोर साहू के जीवन को यदि नज़दीक स देखा जाये तो मालूम होगा कि उनक जीवन के प्रत्येक क्षण में कला साकार रूप म प्रगट होती है और ऐसी कला जो कि मानव-समाज को संकीर्णता की गली से निकालकर विकास के विशाल प्रागण की ओर प्रयाण कराती है! म लगभग सभा हिन्दी साहित्यकारा के जावन स परिचित हूँ—लेकिन जो विशेषताएँ मुझे श्री साहू के व्यक्तित्व में मिली, दुभाग्य से वह अन्य साहित्यकारों में नहीं मिल सकी। वास्तव म श्री साहू का व्यक्तित्व बड़ा ही उत्कृष्ट है! आज वह कला के जिस उच्च शिखर पर खड़े हुए है, वहा तक कोई भी हिन्दी का कहानीकार नहीं पहुच सका है। फिर भी वह अपन को सदा आमम्मान की दुनिया से बहुत दूर रखत है। उनके चहरे पर मुस्कराहट की मधुर रखायें हर वक्त बिखरी रहती है, और उन्हीं बिखरी हुई रेखाओं के बीच कलाकार का आत्मा की दिव्यता स्पष्ट झलकता है। उसी आत्मिक-झलक म श्री साहू के हृदय की अनुभूतिया स निर्मित एक विशाल दाष्टकोण दिखाई देता है। ऐसा दाष्टकोण जिसमें कि इन्सान की जिन्दगी की पुस्तक के प्रत्यक परिच्छेद का नक्शा चित्रित है। उसी नक्शे के सहारे दुनिया के टेढ़-मेढ़ रास्तों को पार करते हुए जीवन को मजिल तक सफलता के साथ पहुँचा जा सकता है। उनकी हिन्दी की कृतियाँ अधिक तो नहीं है, लेकिन जो कुछ भी है वह अपन स्थान म उत्कृष्ट है! अब तक उन्होंने हिन्दी-साहित्य को दो कृतियाँ प्रदान की हैं "टेसू के फूल" एवं "वीर-कुणाल"। "वीर-कुणाल" उपन्यास है, और "टेसू के फूल" कहानी-संग्रह है। गद्य-काव्य का सग्रह "भगवान का घर" के नाम स प्रकाशित होने जा रहा है।

श्री साहू की कहानियों ने हिन्दी-साहित्य में अपना एक अनूठा स्थान बना लिया है! उनकी कहानी लिखने की शैली बड़ी ही आकर्षक और प्रभावोत्पादक है। उन्होंने अपनी कहानियों म स्वाभाविक ढंग से मानव का सजीव और स्फूर्तिदायक जीवन जनता के सामने प्रस्तुत किया है। इन्सान की जिन्दगी के तथ्यों का चित्रण श्री साहू ने अपनी कहानियों में इतनी सफलता के साथ किया है कि किसी भी तथ्य की पवित्र भावना के स्वरूप में अस्वाभाविकता नहीं आने पाई है। यही कहानीकार की सबसे बड़ी सफलता है! कहानीकार का कार्य बड़ी ही जिम्मेदारी का है और इस जिम्मेदारी को श्रीयुत साहू ने भली भाँति निभाया है। आपकी कहानियों में "मानव" का आत्म-गौरव उभरा हुआ दिखाई पड़ता है। दुनिया की वेदना की भयङ्कर बाढ़ में आपने किसी भी पात्र

सुप्रसिद्ध कलाकार और कहानीकार श्री किशोर साहू।

के आत्म-गौरव को जिन्दगी की निम्नता की सतह पर नहीं पहुँचाया है, बल्कि बाढ़ के प्रतिकूल ही अपने पात्र का स्वाभिमान के साथ बढ़ाया है और इतना बढ़ाया है कि वह अपनी मञ्जिल तक पहुँच गया है। किसी भी कहानी का कोई भी पात्र जीवन की पगडंडी पर ही मायूसी के चट्टान से टकराकर अपनी जीवन-नौका को चूर चूर नहीं कर लेता, बल्कि वह धैर्य के साथ निराशा के कुहरे को इधर-उधर चीरकर आगे कदम बढ़ाता जाता है। जिस सिद्धान्त के लिए वह दुनिया के दारुण कष्टों को सहता है, उसे वह सफलीभूत बनाता है। यह है श्री साहू की कहानी लिखने का अभिनव टेकनिक। कहानी का स्वरूप गठित करते समय श्रीयुत साहू मानव-भावनाओं का इतना ताड़-मड़ार नहीं करते कि जिससे मानव-प्रकृति के स्वरूप में विकृति आ जाये। विकृत-दोष आज हिन्दी के अधिकतर कहानीकारों में पाया जाता है। लेकिन श्रीयुत साहू की कहानियाँ एकदम इस दोष स दूर है।

जब आप किसी भी कहानी का ढाँचा बनाते है, तो सबसे पहले मानव-भावनाओं के उलझे हुए ढेर में स एक एक को खिसकाकर काफी झकझोरते हैं—ताकि उस भावना के स्वरूप पर यदि कुछ गर्द-गुबार हो तो वह साफ हो जाय। फिर उस वह कलात्मक जामा पहनाकर कहानी का अङ्ग बना लेते हैं। हाँ कलात्मक जामा पहनाते वक्त भावना को स्वभाविकता में लेशमात्र भी अन्तर नहीं आता—इसलिए आपका प्रत्यक कहानी इन्सानी जिन्दगी का एक सजीव चित्रण है, जिस पढ़कर पाठक कहानी की स्वाभाविकता के प्रवाह में अपने व्यक्तित्व को इतना लीन कर लेता है कि उस अपनी सुध-बुध भी नहीं रहती। श्री साहू की कहानियाँ इतनी प्रभावपूर्ण है कि आज हिन्दी में ऐसी श्रेष्ठ कहानियाँ उँगलियों पर गिनी जा सकती हैं। कहानी-क्षेत्र में यह नया कदम सराहनीय और प्रशंसनीय है। उनकी कहानियों से हिन्दी-साहित्य के एक अभाव की पूर्ति होती है क्योंकि इस प्रकार की नवीन शैली और उच्च आदर्श की कहानियों का अभाव हिन्दी-साहित्य में खटकता है। कोई भी कहानी ले लीजिए, कहानी टेकनिक के हिसाब से कोई भी गुण उसमें कम न होगा। चरित्र-चित्रण में तो आपने कमाल ही कर दिखाया है। चरित्र-चित्रण में श्री साहू पात्र के व्यक्तित्व को शब्दों के बोझ से नहीं लाद देते, वह एक एक शब्द को तौलकर [illegible] का वास्तविक प्रतिबिम्ब हमारे सामने खींच देते हैं। उस प्रतिबिम्ब में कहीं भी हमें कृत्रिम कल्पना की उड़ान नहीं झलकती। मानव की नैसर्गिक भावनाओं का विश्लेषण आपने अपनी कहानियों में बड़ी कुशलता के साथ किया है। कहानियों में हर जगह हमें आपके उज्ज्वल और प्रगतिशील व्यक्तित्व की छाप मिलती है, जो कि प्रत्यक सहृदय साहित्यक के लिए अनुकरणीय है। आप सीधी-सादी पर कलात्मक भाषा में अपने भाव व्यक्त करते हैं। मामूली पढ़े-लिखे पाठकों को भी आपकी रचनाओं में उतना ही आनन्द मिलेगा, जितना कि एक बड़े कलाकार को। आप अपनी कहानियों में यथार्थवाद का ही अधिक चित्रण करते हैं, लेकिन नग्न यथार्थवाद का नहीं। आप इन्सान की जिन्दगी के प्रत्येक तथ्य को ज्यों का त्यों चित्रित करते हैं। आपका कथन है कि यथार्थवाद के चित्रण में आदर्शवाद स्वभावतः आ ही जायेगा—जब हम मानव के तथ्यों की यथार्थता ही चित्रित न कर सकेंगे, तो हम उनको आदर्शवाद का मार्ग किस तरह दिखा सकते हैं? दरअसल यथार्थवाद के वातायन से ही आदर्शवाद का स्पष्ट प्रतिबिम्ब प्रतिबिम्बित होता है। तथ्य की नग्नता और यथार्थता, इन दोनों में फर्क है। दोनों देखने में चाहे भले ही एक लगते हों, लेकिन एक निम्नता का द्योतक है, और दूसरा उच्चता का प्रतीक। श्रीयुत साहू तथ्य की नग्नता के विरोधी हैं। वह तो तथ्य की यथार्थता के कायल हैं क्योंकि वह इसको कला की स्वाभाविकता का एक अंग मानते हैं।

आपकी एक कहानी है "कुदाली।" यह कहानी हिन्दी-साहित्य में अपने ढंग की अकेली ही है। इस कहानी में आपने बड़ी स्पष्टता के साथ मुफलसी के आलम में सरमायदारों के जुल्म दिखलाये हैं। दौलत के मद में इन्सान "इन्सान" नहीं रहता, बल्कि वह हैवान बनकर इन्सानियत को दुनिया में मिटाना चाहता है। लेकिन ज्यों ज्यों गरीबी की दुनिया पर जुल्मों के सितम ढाये जाते हैं, त्यों त्यों उस असहाय दुनिया से एक ऐसी आत्मा आविर्भूत होती है, जो कि अत्याचारी के ऊपर विजय प्राप्त कर लेती है। 'कुदाली' में भी एक ऐसे कुदाली चलानेवाले का वर्णन है जिसने कि अपने सुन्दर आदर्श की पूर्ति के लिए सरमायदारी से भी मोर्चा लिया और अपना सब कुछ उसी आदर्श-पूर्ति के लक्ष में बलिदान कर दिया। कुदाली चलानेवाले के व्यक्तित्व का बड़ा ही सजीव चित्रण किया गया है। व्यक्तित्व की इतनी स्पष्टता आजकल की कहानियों में कम पाई जाती है। मैं तो यह कहूँगा कि "कुदाली" कहानी में व्यक्तित्व की सजगता उतनी ही है जितना चार्ल्स-डिकन्स के "डेविड कैम्पर फील्ड" के व्यक्तित्व में है।

"हिन्दू बच्चे की रक्षा के लिए एक मुसलमान पहलवान ने अपनी जान होम दी" इस आदर्श को आपने "उस्ताद की कसम" कहानी में स्थापित किया है। हिन्दू-मुस्लिम एकता का पाठ आपने बड़ी खूबी से इस कहानी में अंकित किया है। इस सिद्धान्त के सिवा भी इस कहानी में एक दूसरा आदर्श भी है। वह यह कि उस्ताद की कसम की रक्षा के लिए दोनों पहलवानों ने अपना जीवन उत्सर्ग कर [illegible] उस्ताद या गुरु के सम्मान के [illegible] उसे अपने जीवन को भी [illegible] पड़े, तो पीछे कदम नहीं [illegible] चाहिए, क्योंकि गुरु ही जीवन [illegible] शक हुआ करता है। इसलिए [illegible] यह कर्तव्य हो जाता है कि वह [illegible] के लिए मौत की दुनिया में [illegible] न डरे। दो आदर्शों का चित्रण [illegible] ने 'उस्ताद की कसम' में किया [illegible] कहानी मानव-हृदय पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाती है।

हम ऐसी कहानियों की पुस्तकें चाहते जो कि सदा शीशे की [illegible] की शोभा ही बढ़ा सकें। ऐसी [illegible] साहित्य से क्या लोक-कल्याण [illegible] है? आज हमको ऐसी कहानियों [illegible] जो कि कोटि-कोटि मानवों के [illegible] क्रियात्मक भावना की पुट दें, [illegible] लते हुए आदर्श को थाम सकें, [illegible] यौवन को निखार सकें, डगमगाते [illegible] को सँभाल सकें, लड़खड़ाती हुई [illegible] का सहारा बन सकें, भूले हुए [illegible] पथ-प्रदर्शक बन सकें, देश पर [illegible] वालों की साध को अमरत्व का [illegible] धान पहना सकें, टूटी हुई [illegible] स्नेह के डोरे मे पुनः जोड़ सकें, [illegible] हुए अरमानों में आशाओं की [illegible] दुनिया बसा सकें, सेवा के प्रसून [illegible] बढ़नेवाले कर्मवीरों में अमर [illegible] भावना भर सकें, फटे हुए [illegible] पैबन्द लगा सकें और तथ्य की [illegible] के बितान में जीवन-दीपक [illegible] सकें।

"टेसू के फूल" की सभी [illegible] में आप यह सब प्रगतिशील [illegible] सकेंगे यही "टेसू के फूल" की [illegible] की खूबी है और यही खूबी है [illegible] श्री किशोर साहू की प्रौढ़ लेखन-[illegible]

क्या आज आपने मेक-लिन से दाँत साफ़ किये हैं?

हाँ, यही उचित तरीका है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंदूक के नाम चिट्ठियां

बंदूक का नाश हो

शहर में स्थान-स्थान पर गुंडों के उपद्रव होते रहते हैं तब से यह बात स्पष्ट हो गई है कि भारतवासियों को आत्मरक्षा के लिए हथियार कानून (आर्म्स एक्ट) के विरुद्ध के रह होना पड़ेगा। जब वायुमंडल में ऐसी बात हो तो, तब हथियार कानून को शायद कुछ लोगों को शायद अनुचित कानून हो, परन्तु वस्तुतः ऐसी बात नहीं है। इस घटनाओं का विरोध और निरोध है। यदि ऐसा होना जाय तो हम असंतोष के इस परिणाम पर पहुँचेंगे कि देश को बचने का सबसे प्रमुख उपाय है कि प्रत्येक नागरिक के पास बंदूक का लायसन्स भी विद्यमान बतलाये जाते हैं। पुलिस में किसी ने रिपोर्ट कर दी, जिसके आधार पर छुन्नामलवालों की तलाशी ली गई। पुलिस गुंडों के यहाँ से कोई हथियार नहीं निकाल सकी, परन्तु शहर के सबसे धनी शहरी के घर पर हथियारों की तलाश में पहुँच गई। निपट मूर्ख भी समझ सकता है कि यदि छुन्नामलवालों के पास कोई हथियार हो भी तो उसका उद्देश्य केवल आत्मरक्षा हो सकता है, आततायीपन नहीं। यह है हथियार-कानून का असली रूप। गुंडे बेखटके होकर हथियार रखते और उनका प्रयोग करते हैं, शहरी आत्मरक्षा के लिए लाठी रखने के भी अधिकारी नहीं। इस घोर अन्याय का स्थूल परिणाम देखना हो तो कलकत्ते की लाशों से भरी हुई नालियों और राख बने हुए बाजारों और गलियों में जाकर देखो।

हथियार-कानून ब्रिटिश राज्य द्वारा भारत को दी हुई सबसे विषैली देन है। उसने अपने धीमे परन्तु गहरे प्रभाव से भारतवासियों की मनुष्यता को नष्ट कर दिया है। आज इस काले कानून की कृपा से ब्रिटिश भारत में गुंडे के अधिकार अमनपसन्द शहरी की अपेक्षा बहुत अधिक हैं। गुण्डा उत्पात करने में स्वतन्त्र है, परन्तु शहरी आत्मरक्षा करने में भी परतन्त्र है। यह हमारी राजनैतिक परतन्त्रता का नग्न रूप है।

सारा देश इस बात पर प्रसन्न हो रहा है कि शासन की बागडोर राष्ट्र के नेताओं ने सँभाल ली है। देश उनसे आशा रखता है कि वह देशवासियों को स्वाधीनता की ओर ले जायँगे। स्वाधीनता का पहला कदम यह है कि प्रजा को आत्मरक्षा का अधिकार दिया जाय। आत्मरक्षा तब तक सम्भव नहीं जब तक प्रत्येक नागरिक आततायियों का मुकाबला करने के लिए तैयार न हो; इस आधार पर मेरा यह प्रस्ताव है कि राष्ट्रीय सरकार को अपनी सारी शक्ति लगाकर हथियार-कानून को रद्द कराने का यत्न करना चाहिए। देशवासियों का कर्त्तव्य है कि वह आत्मरक्षा के साधन रखने की माँग को ऊँचे स्वर से राष्ट्रीय नेताओं के सम्मुख रखें और उन्हें प्रेरित करें कि वह ब्रिटिश प्रभुत्व के इस काले कलङ्क को शीघ्र से शीघ्र धोने का यत्न करें।

दिल्ली —इन्द्र विद्यावाचस्पति

* * *

किसानों की जमीनें कब लौटाई जायेंगी ?

मैं प्रायः समाचार-पत्रों में यह पढ़ा करता हूँ कि सन् ४२ में जिन लोगों का नुकसान हुआ है, अथवा जिनके ऊपर जुर्माना हुआ है, या जिनकी जायदाद जप्त हो गई है उन सबको प्रान्तीय सरकार वापस करने की योजना बना रही है। प्रान्तीय सरकार का यह निर्णय प्रशंसनीय है। किन्तु दुख है कि इसके पहले के त्याग वीरों को भुला दिया गया है। मुझे स्मरण है कि सन् ३० और ३२ में जिस समय कांग्रेस ने सत्याग्रह आन्दोलन शुरू किया था, पं० जवाहरलाल नेहरू ने अपने भाषण में ऐलान किया था कि जिन लोगों का जो नुकसान होगा वह सब स्वराज्य होने पर वापस कर दिया जायेगा। जिन लोगों का खेत बेदखल होगा वह सब वापस दिया जायेगा। नेहरू जी के इस आश्वाशन पर ही किसानों ने जुटकर लगानबन्दी किया था। गांधी-इर्विन समझौता के बाद जिला कांग्रेस कमेटी प्रयाग ने जिन किसानों का खेत बेदखल हुआ था उसकी सूची भी तैयार की थी परन्तु आज तक कुछ पता न चल सका। किन्तु आज फिर कांग्रेसी सरकार प्रान्त में है. और जमींदारी-प्रथा भी तोड़ देने का प्रस्ताव पास हो गया है। ऐसी अवस्था में यह अत्यन्त आवश्यक है कि सन् ३० में किसानों के कब्जे में जितनी जमीन थी वह जमीन उन्हीं किसानों को दी जाये। चाहे वह जमीन बेदखल होकर या स्तीफा दिलाकर जमींदार ने ली हो वह तुरन्त वापस दी जाये। लगानबन्दी के पश्चात् बहुत से किसानों के इकट्ठा लगान न दे सकने तथा जमींदारों की सख्ती के कारण विवश होकर जमींदार से इस शर्त पर समझौता कर लिया और जमींदार ने किसानों को इस शर्त पर राजी कर लिया कि यदि खेत से स्तीफा दे दिया जाये तो बकाया लगान जो लगानबन्दी में टूट गया है छोड़ दिया जायेगा। किसानों ने मजबूर होकर ऐसा किया। जो किसान गाँव का अच्छा किसान माना जाता था वही आज एक एक बिस्वा के लिए तरस रहा है जिसके यहाँ दो-तीन मजदूर बारहों मास लगे रहते थे वही खेत निकल जाने की वजह से खुद ही दूसरे की मजदूरी करके अपने बच्चों को जिला रहा है। इसी आशा पर जी रहा है कि स्वराज्य होने पर तो हमारा भाग्य उदय होगा ही अतः प्रान्त में इस वक्त स्वराज्य है यही कहा जा सकता है। मैं प्रान्तीय सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करके उन गरीबों के माँग की पूर्ति की आशा करता हूँ।

जसरा, प्रयाग —ब्रजमोहनलाल शुक्ल

उत्तमोत्तम उपन्यास

शरद् बाबू के उपन्यास

छुटकारा—एक निठल्ले और बेरोजगार भाई के सहायता उपार्जनक्षम भाई को किस प्रकार करनी चाहिए, यह बात इस उपन्यास में भली भाँति सीख जा सकता है। मूल्य १।—) एक रुपया पाँच आने।

नव-विधान—पाश्चात्य सभ्यता के अन्धानुकरण में पड़कर अत्यन्त अशान्तिमय जीवन व्यतीत करनेवाले धनी की प्राचीन पद्धति से गृहकार्य का संचालन करनेवाली गृहिणी किस प्रकार सुखी करने में समर्थ हुई, यह बात इस उपन्यास में दरसाई गई है। मूल्य १।—) एक रुपया पाँच आने।

मँझली दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पिता से हीन भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर सकती है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

परिणीता—एक निर्धन परिवार की भोली-भाली नवयुवती ने एक साधन-सम्पन्न परिवार के युवक के प्रति आकर्षित होकर किस प्रकार खेल-खेल में ही उसके साथ विवाह कर लिया और दूर रहने पर भी उसे सदा हृदय से अपना पति मानती रही, यह कहानी इस उपन्यास में बहुत ही प्रभावोत्पादक ढंग से लिखी गई है। मूल्य १।—) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर
बुकडिपो इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

श्रेष्ठ एवं सुंदर भारतीय गुलाब के फूल अपने मन्मोहक मधुर सुगंध से चाँदनी रात का वायु व्याप्त करते हैं—वे विनोलिया व्हाइट रोज की कैसी स्मृतियाँ जागृत करते हैं! आप के सौन्दर्य-वर्द्धन के लिये इस से उत्तमोत्तम वा अत्युत्कृष्ट प्रिय साबुन हो नहीं सकता। मृदु एवं झागदार विनोलिया अतिशय कोमल त्वचा को सौम्यतापूर्वक साफ़ करता है...और उस के सुगंधित झाग की आप के अतराफ़ एक मीठी महक लहराती है।

विनोलिया व्हाइट रोज साबुन

VWR. 21-111 HI VINOLIA COMPANY LIMITED, LONDON, ENGLAND.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संत विनोआ भावे कौन हैं ?

(पेज ५ का शेष)

लगेंगे। बी० ए० करके डिग्री लेकर जाओ।" उन सबके लिए एक ही जवाब था कि "विचार करने का मेरा यह ढंग नहीं है।" घर छोड़ने के पहले भिन्न-भिन्न विषयों के सर्टिफिकेट लेकर चूल्हे के पास बैठ गया और तापते-तापते उन्हें जलाने लगा। माँ ने पूछा—"क्या कर रहा है ?" मैंने कहा, सर्टिफिकेट जला रहा हूँ। उसने पूछा क्यों ? मैंने कहा, "उनकी मुझे क्या जरूरत ?" माँ ने कहा, "अरे, जरूरत न हो तो भी पड़े रहें तो क्या हर्ज है ? जलाता क्यों है ? पड़े रहें तो क्या हर्ज है ?" इन शब्दों की तह में भावना छिपी हुई है कि आगे कभी उनका उपयोग करने की जरूरत न पड़े।"

विनोआ जी में वैराग्य की जबरदस्त भावना काम करती रहती है। आपका वैराग्य गरीबों के लिए है और है समाज का जीवन ऊँचा बनाने के लिए। संन्यासी का जीवन व्यतीत करते हुए भी जब जब देश की आजादी के लिए युद्ध की पुकार हुई है, आप बराबर देश के लिए जेल गये हैं। सख्त से सख्त जेल का अनुशासन माना है। युद्धमात्र का विरोध करने के लिए सन् १९४० में महात्मा जी ने आपको ही प्रथम सत्याग्रही चुना था। आपके शान्तिमय और अहिंसामय विरोध को भी सरकार ने सहन नहीं किया। आपको जेल में बन्द कर दिया गया। सजा काट-कर वापस आने पर आपने गाँवों में प्रचार-कार्य शुरू किया। अगस्त-क्रान्ति शुरू होते ही सरकार ने आपको गिरफ्तार करके नजरबन्द कर लिया। आपको सरकार इतना खतरनाक समझती थी, जब कि बहुतेरे गर्म विचार के राजनैतिक बन्दी रिहा हो रहे थे या कर दिये गये थे। महात्मा जी जेल से बाहर आ गये थे फिर भी सरकार ने आपको मुक्त नहीं किया। सबसे आखिर में आपकी रिहाई हुई।

धनिकों के बारे में विनोआ जी कहते हैं—जो धनिक अपने आसपास के लोगों की परवाह नहीं करता और धन इकट्ठा ही करता रहता है वह धन प्राप्त करने के बदले अपना वध करता है। 'वध' और 'मृत्यु' में यद्यपि सायणाचार्य कोई भेद नहीं करते तथापि मेरी दृष्टि में उन दोनों का भेद अत्यन्त स्पष्ट है। इस मन्त्र को आप समाजवाद का मंत्र कह सकते हैं। मजदूरों या श्रमजीवियों के तमाम प्रश्नों का पूरी मजदूरी ही एक-मात्र अहिंसक हल है।"

कला-कौशल के बारे में विनोआ जी कहते हैं, "प्राचीन काल में हमारे यहाँ कला कम नहीं थी। लेकिन पूर्वजों से मिलनेवाली कला एक बात है और उसमें दिन-प्रतिदिन प्रगति करना दूसरी बात। आज भी काफी प्राचीन कारीगरी मौजूद है। उसको देखकर हमें आश्चर्य होता है। अपनी प्राचीन कला को देखकर हमें आश्चर्य होता है, यही सबसे बड़ा आश्चर्य है! आश्चर्य करने का प्रसंग हमारे सामने क्यों आना चाहिए ? उन्हीं पूर्वजों की तो हम संतान हैं न ? तब तो उनसे बढ़कर हमारी कला होनी चाहिए। लेकिन आज आश्चर्य करने के सिवा हमारे हाथ में और कुछ रहा। यह कैसे हुआ ? कारीगरों में ज्ञान का अभाव और हममें परिश्रम-प्रतिष्ठा का अभाव ही इसका कारण है।

संत विनोआ भावे कौन हैं ?

समान प्रतिष्ठा में विश्वास रखते और कहते भी हैं—प्राचीन काल में ब्राह्मण और शूद्र की समान प्रतिष्ठा थी। जो ब्राह्मण था वह विचार-प्रवर्त्तक, तत्त्वज्ञानी और तपश्चर्या करनेवाला था। जो किसान था वह ईमानदारी से अपनी मजदूरी करता था। प्रातःकाल उठकर भगवान् का स्मरण करके सूर्यनारायण के उदय के साथ खेत में काम करने लग जाता था और सायंकाल सूर्य भगवान् जब अपनी किरणों को समेट लेते तब उनको नमस्कार करके घर वापस आता था। उस ब्राह्मण में इस किसान में कुछ भी सामाजिक, आर्थिक या नैतिक भेद नहीं माना जाता था।

तपस्वी विनोआ जी ने कितना सुन्दर कहा है "अपनी उच्चारण पद्धति पर भी हमें ऐसा ही मिथ्या अभिमान है। देहाती लोग जो उच्चारण करते हैं उसे हम अशुद्ध कहते हैं। लेकिन पाणिनि तो कहते हैं कि साधारण जनता जो बोली बोलती है वही व्याकरण है। तुलसीदास जी ने रामायण आम लोगों के लिए लिखी। वे जानते थे कि देहाती लोग 'ष', 'श' और 'स' के उच्चारण में फर्क नहीं करते। आप लोगों की जबान में लिखने के लिए उन्होंने रामायण में सब जगह 'स' ही लिखा। वे नम्र हो गये। उनको तो आम लोगों को रामायण सिखानी थी तो फिर उच्चारण भी उन्हीं का होना चाहिए। लेकिन आज के पढ़े-लिखे लोगों ने तो मजदूरों को बदनाम करने का ही निश्चय कर लिया है।" भूख भगवान् का सन्देश है ऐसा विनोआ जी का पूर्ण विश्वास है। वे कहते भी हैं "परिश्रम से उनकी भूख बढ़ेगी। जिनको दिन भर में तीन बार अच्छी भूख लगती है उसे अधिक धार्मिक समझना चाहिए। भूख लगना जिन्दा मनुष्य का धर्म है। जिसे दिन भर में एक ही दफा भूख लगती है, वह सम्भवतः अनीतिमय होगा। भूख तो भगवान् का सन्देश है। भूख न होती तो दुनिया बिलकुल अनीति-मान् और अधार्मिक बन जाती। फिर नैतिक प्रेरणा ही हमारे अन्दर न होती। किसी को भी भूख प्यास अगर न लगती तो हमें अतिथि-सत्कार का मौका कैसे मिलता ? सामने खम्भा खड़ा है। इसका हम क्या सत्कार करेंगे ? इनको न भूख है न प्यास ! हमें भूख लगती है इसी लिए हमारे पास धर्म है।" संयमी जीवन कैसे व्यतीत किया जा सकता है विनोआ जी कहते हैं। "मेरी माता जी काम करते करते भजन गाया करती थीं। रसोई में कभी कभी नमक भूल से दुबारा पड़ जाता था। लेकिन चिन्तन में मैं इतना मग्न रहता था कि मुझे इसका पता ही न चलता था। वेदाध्ययन करते समय मैंने अनुभव किया है कि देह मानो है ही नहीं, कोई लाश पड़ी है ऐसी भावना उस समय हो जाती थी। इसी लिए ऋषियों ने कहा है कि 'बचपन से वेदाध्ययन करो।' मैंने अध्ययन के लिए ब्रह्मचर्य रक्खा। उसके बाद देश की सेवा करता रहा। वहाँ भी इन्द्रिय-निग्रह की आवश्यकता थी। लेकिन बचपन में इन्द्रिय-निग्रह अभ्यास हो गया था, इस-लिए बाद में मुझे वह कठिन नहीं मालूम हुआ। मैं यह नहीं कह सकता कि ब्रह्मचर्य आसान चीज है। हाँ, विशाल कल्पना मन में रक्खेंगे तो आसान है ऊँचा आदर्श सामने रखना और उसके लिए संयमी जीवन व्यतीत करना यही ब्रह्मचर्य कहता है।

हम सादगी से कितने ऊँचे उठ सकते हैं वह संत विनोआ की वाणी से सुनो "राष्ट्र ऊपर उठते हैं और गिरते हैं। लेकिन आलस्य, विलासिता और जड़ता कभी ऊपर उठती ही नहीं। शिवाजी महाराज कहा करते थे कि "हम तो धर्म के लिए फकीर बने हैं।" लेकिन पेशवा तो पानी-पत की लड़ाई के लिए भी सकुटुम्ब सपरि-वार गये, मानो किसी बरात में जा रहे हों। और वहाँ से कार्य-सिद्धि से हाथ धोकर अपना-सा मुँह लेकर लौटे। गिबन ने कहा है—"रोम चढ़ा कैसे ?" "सादगी से", "रोम गिरा कैसे ?" "भोग-विलास से।"

विनोआ जी कहते हैं "असली शक्ति तो ग्राम संगठन है। जनता की शक्ति ग्राम-संगठन से बढ़ेगी। स्वराज्य आयेगा। रो-धोकर भीख माँगने से थोड़े ही हमारी शक्ति बढ़ सकती है। हिन्दुस्तान की आर्थिक तबाही अँगरेजों के व्यापार के कारण हुई है। और जब तक देहात की शक्ति नहीं बढ़ेगी हिन्दुस्तान भली भाँति सम्पन्न कैसे हो सकता है ? हमें गाँवों में जाकर पूरा प्रयत्न करना चाहिए कि देहा-तियों का जीवन-स्तर ऊँचे उठे, सुखी बने।

"मैं अपने जीवन में शरीर-श्रम में उद्योग को पहला स्थान देता हूँ। हमारे देश में आलस्य का भारी वातावरण है। यह आलस्य बेकारी के कारण आया है। शिक्षितों का तो उद्योग से कोई सम्बन्ध ही नहीं रहता। और जहाँ उद्योग नहीं वहाँ सुख कहाँ से आ सकता है ? मेरे मत से जिस देश से उद्योग गया उस देश को भारी घुन लगना समझना चाहिए। जो खाता है उसे उद्योग तो करना ही चाहिए। फिर वह उद्योग चाहे जिस तरह का हो। पर बिना उद्योग के बैठना काम की बात नहीं। घरों में उद्योग का वातावरण होना चाहिए। जिस घर में उद्योग की तालीम नहीं है उस घर के लड़के जल्दी घर का नाश कर देंगे।"

जीवन साक्षर हो या सार्थक के बारे में विनोआ जी कहते हैं "सदियाँ बीत गईं जिनके सयानेपन की सुगन्ध आज भी दुनिया में फैली हुई है। उन लोगों का ध्यान जीवन को साक्षर करने के बजाय सार्थक करने की ओर ही था। साक्षर जीवन निरर्थक हो सकता है, इसके उदा-हरण वर्तमान सुशिक्षित समाज में बिना ढूँढ़े मिल जायेगा। इसके विपरीत निरक्षर जीवन भी सार्थक हो सकता है, इसके अनेक उदाहरण इतिहास में देखे हैं। पुस्तकों के रटने से कोई विद्वान् नहीं होता बल्कि उनके गुणों को जीवन में उतारे और चले वही पढ़ा और लिखा है।"...

दूसरों के अनुभव से सयानापन सीखने की मनुष्य की इच्छा नहीं होती। उसे स्वतंत्र अनुभव चाहिए, स्वतंत्र ठोकर चाहिए। मैं हित की बात कहता हूँ कि "पोथियों से कुछ फायदा नहीं है। फजूल पोथियों में न उलझो।" तो वह कहता है, "हाँ तुम तो पोथियाँ पढ़ चुके हो और मुझे ऐसा उपदेश देते हो।" "हाँ मैं पोथियाँ पढ़ चुका हूँ पर तुम न चूको इसलिए कहता हूँ।" वह कहता है मुझे अनुभव चाहिए। ठीक है। लो अनुभव। ठोकर खाने का स्वातन्त्र्य तुम्हारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। इति-हास के अनुभवों से हम सबक नहीं लेते। इसी से इतिहास की पुनरा... हम इतिहास की कब्र को... आगे बढ़ जावें। इतिहास... लगाने से उसकी कीमत... पर जब इस ओर ध्यान...

गाँवों में जाकर... चाहिए। विनोआ जी ने... तरह कहा है—"गाँव में... तो समझ में आने लगा है... बनना चाहिए यह आज... नहीं जमा है। यह... कि झोपड़ों में तो जाना है... रना नहीं है। अभी यह... है कि ऊँट से उतरे बिना... नहीं हो सकता। मैं गाँव में... शहर का सारा ठाट-बाट... जाऊँगा। इसका मतलब... गाँव को शहर बनाऊँगा। ... गाँव में जाना हो तो इसके... अच्छा है। चाकरी की शर्तें... शिव को पूजना। किसान... हो तो किसान बनकर ही...

जीवन में त्याग का बहुत... है। विनोआ जी का कहना... बिलकुल जड़ पर ही आघात... दान ऊपर ही ऊपर से... है। त्याग पीने की दवा है... लगाने की सोंठ है। त्याग... प्रति चिढ़ है। दान में नाम... त्याग से पाप का मूलधन... दान से पाप का ब्याज। ... दयालु है। दान का ममत्व... ही पूर्ण हैं। त्याग का निवास... पर है; दान का उसकी तलहटी...

विनोआ जी का जीवन... है। आकाश के नीचे सोना... करते हैं। आकाश की... देखते सो जाते हैं। आकाश... देखते उठते हैं। आकाश की... है ऐसा उन्हें अनुभव में लगता है। ... को देखकर उनके मन में... विचार आते रहते हैं। ... सुन्दर सिनेमा आकाश है।

विनोआ जी बड़े नम्र हैं... भी उनसे मिल सकता है। उन... की ख्वाहिश नहीं है। बिना... से गप्प मारना जीवन का... खोना मानते हैं। घण्टों गाँव... झाते हैं उनके साथ काम... में जाते हैं। साथ बैठकर भोजन... जीवन में शरीर-श्रम का महत्त्व... कुदाली चलाते हैं। पाखाना... कहते हैं जीवन में जिस चीज... कता पड़े सब सीखना चाहिए। ... बूढ़ा कभी नहीं बनाना चाहिए। ... बूढ़ा तर्क बहुत प्रसिद्ध है। ... "किसी विद्वान् ने कहा है कि ... सीखने की आशा जितने... बूढ़ा है। ऐसे बूढ़े अपने... मिल जायेंगे। बचपन में... पड़ गया। इसके बाद यदि... किसी धन्धे से लग गये... गया कि एक-आध चीज... कुछ होने का नहीं। इस... अनपढ़ दोनों में मुद्दतों की... कारण घर-सा कर लिया है। ... यह कुछ अधिक ही है कम... तर्क छोड़कर कुछ सीखो... ऐसा विनोआ जी कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा गांधी के पत्र

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ

संशोधित-संवर्धित सचित्र

शीघ्र प्रकाशित हो रहा है।

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ महात्मा गांधी की पुण्यस्मृति में ...वन्ती की पुण्यस्मृति में ...हुआ था, तथा इसके प्रकाशन के ...गांधी जी को भेंट कर दी ...

...लब्धस्वरूप का लाभ गांधी जी की ...हरिजन कोष में दे दिया ...ग्रन्थ-अभिनन्दन ग्रन्थ का यह ...बहुत ही सुन्दर रूप में प्रका- ...जा रहा है। इसके प्रकाशन का ...देस, लिमिटेड ने ग्रहण किया ...उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए ...

...तत्करण बड़े आकार-प्रकार में ...किया जा रहा है, और प्रत्येक ...ही रचना देने से ग्रन्थ का ...जाना स्वाभाविक है।

...का पूर्ण प्रयत्न किया जा ...प्रकाशन की दृष्टि से यह ...सुन्दर हो।

...की भूमिका सर्वपल्ली सर राधा- ...लिखी है। तथा इसके संरक्षक ...श्यामदास जी बिड़ला हैं।

...भाषा की कविता हिन्दी लिपि ...रही है, तथा उसका अनुवाद भी ...है।

...हिन्दी की ओर से महात्मा ...के प्रति यह एक ऐतिहासिक ...श्रद्धांजलि है।

...नाथ झा जी के शब्दों में ...भाषा में इससे पहले इस प्रकार ...ग्रन्थ नहीं प्रकाशित हुआ, ...भाषाओं के इतने कवियों की ...कविताएँ भारतवर्ष के सबसे ...के सम्बन्ध में लिखी गई हों।

...अभिनन्दन-ग्रन्थ प्रत्येक पुस्तका- ...ही सम्मानपूर्वक स्थान प्राप्त ...पाठक इस ग्रन्थ का बारम्बार ...मुख प्राप्त करेंगे।

...के प्रधान मन्त्री का सन्देश

...अभिनन्दन-ग्रन्थ के दूसरे ...लिए माननीय गोविन्दवल्लभ ...सन्देश भेजा है :—

...जानकर कि गांधी-अभिनन्दन ...संशोधित-संवर्धित तथा ...गांधी जी के आगामी जन्म- ...अक्टोबर को निकलनेवाला है, ...। महात्मा जी के सम्बन्ध में ...निकलें उनसे लोक ...निरन्तर लाभ पहुँचता है। ...से ही मनुष्य के चरित्र ...आत्मिक प्रभाव पड़ता है। ...देश में नया जीवन डाल- ...प्राचीन गौरव के पद ...दिया है। भारतीय संस्कृति, ...आचार का सन्देश आज ...बाद हमारे देश में सर्वत्र ...इस सबका श्रेय मुख्यतः ...ही है। उन्होंने केवल ...ही नहीं बल्कि कई और ...देश को मुक्त किया है। ...स्वतन्त्रता के द्वार पर ...और अब हमको यह भी

सागर में गणेशोत्सव के अवसर पर माडल स्कूल में श्री० बी० एल० सराफ के राम-मन्दिर में लक्ष्मीप्रसाद मिश्र के सभापतित्व में कवि सम्मेलन हुआ। सर्वश्री श्रीकृष्णकुमार, शिवकुमार दीनदयाल, नत्थालाल गुलाबचन्द, कृष्णकान्त, इकराम, "बेधड़क" पद्मनाभ, बिहारीलाल, लल्लूलाल व लक्ष्मीप्रसाद मिश्र का कविता-पाठ हुआ।

रहली के ब्रजबिहारी वकील का नौकर देवशरण कुछ मवेशी कांजीहौस लिए जा रहा था। राह में पटना ग्राम की मु० गुलाबबाई काछिन का बछड़ा मवेशियों में मिल गया। ज्योंही गुलाबबाई अपना बछड़ा पकड़ने को दौड़ी त्योंही देवशरण ने गाली के साथ सात लाठी के प्रहार उस अबला पर किए तथा तीन मुक्के मारे। गुलाबबाई के चेहरे पर ७ निशान बन गये। एक दाँत टूटा तथा रक्त भी निकला। उसने रहली की पुलिस में कथित घटना की रिपोर्ट की। पर पुलिस ने उसे डाक्टरी मुलाहजे को नहीं भेजा और गाली देकर भगा दिया। तब गुलाबबाई ने सागर आकर डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस के पास उक्त शिकायत की। सागर पुलिस ने उसे डाक्टरी मुलाहजे को भेजा। फलस्वरूप लेडी डाक्टर ने उसे (३२५) का सार्टिफिकेट दिया है। सागर की पुलिस ने मामले को फिर रहली भेजा है। ऐसा ज्ञात हुआ है।

श्री बी० एल० सराफ की पब्लिक प्रासीक्यूटर-पद पर नियुक्ति नगर के लिए हर्ष का विषय है। आप अनेक संस्थाओं के प्राण हैं। प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का अधिवेशन, हिन्दू कालेज और सागर विश्वविद्यालय की स्थापना में आपका सहयोग प्रशंसनीय है।

—संवाददाता

* * *

कोठी राज्य में ता० २७, २८ अगस्त को मौजा झाली, बरहना और दिदौंध में सदस्यों की सभा हुई। प्रजामंडल अध्यक्ष लाल तीर्थराजसिंह बाघेल सभापति थे। सभापति के आदेश से प्रचार-मन्त्री श्री मिश्रौलिया ने प्रजामंडल का उद्देश्य व उससे होनेवाले हर वर्ग के लोगों का लाभ, भारतीय स्वतन्त्रता से उसका सम्बन्ध व उसके प्रति जिम्मेदारी तथा सदस्यों के कर्तव्य की व्यापकता आदि पर भाषण दिया। बा० श्यामसुन्दर राजपूत, पं० रामकृपाल चौबे और लाल रंगमन्दारसिंह बाघेल कार्यकारिणी के सदस्य बहुमत से चुने गये।

अध्यापक मण्डल कोठी राज्य ने अपनी माँगों की उपेक्षा होने पर पोलिटिकल विभाग के वर्तमान शासन को नोटिस दिया था कि ३१ अगस्त तक माँगों के सम्बन्ध में संतोषजनक उत्तर न मिलने पर वह दूसरी नोटिस देगा जिसमें काम बन्द करने की तारीख लिखी होगी। इस पर श्री एजुकेशन सुपरिंटेंडेंट ने लिखित आश्वासन दिया व इतमीनान दिलाया है कि अक्टूबर में प्रकाशित होनेवाले बजट में माँगों का पूरा ख्याल है; और यदि माँगों के मुताबिक कुछ कमी पाई जायगी तो उसकी पूर्ति के लिए विभाग की ओर से पूरी चेष्टा की जायगी। इस सामयिक मध्यस्थता को आंशिक सफलता मानकर फिलहाल १० अक्टूबर तक के लिए नोटिस देने के लिए अध्यापक-मंडल ने [illegible]

जयपुर में होनेवाले अखिल भारतीय मारवाड़ी कवि-सम्मेलन के लिए स्वागत-समिति में प्रति परिषद् के लिए तीन सभापति चुनने के लिए नाम प्रस्तावित हुए हैं—

प्रधान सम्मेलन—कविवर श्री मस्त व्यास पूना। पुरोहित श्री प्रतापनारायण जी कविरत्न, जयपुर। रायबहादुर श्री रामदेव जी चोखानी। हिन्दी कवि-सम्मेलन—श्री सुमनेश जी जोधपुर। श्री खेमराज जोशी, इन्दौर। श्री शम्भुदयाल जी सक्सेना, बीकानेर। राजस्थानी कवि-सम्मेलन—कविवर हिंगलाजदान जी, सेवापुरा। पं० इन्दू, बम्बई। नाथुराम जी महेरिया, उदयपुर। कवि-परिषद्—प्रोफेसर कन्हैयालाल सहलपिलाणी, श्री नरोत्तमदास स्वामी बीकानेर, श्री मोतीलाल मेनारिया उदयपुर। मारवाड़ी पत्रकार-सम्मेलन—श्री मूलचन्द्र अग्रवाल कलकत्ता, डा० श्री रामजीवन त्रिपाठी फतेहपुर, कनक मधुकर उदयपुर।

प्रत्येक विश्वस्त मारवाड़ी साहित्य-प्रेमी को छपा हुआ जवाबी पोस्टकार्ड भेजा जा रहा है। जिसमें कि प्रस्तावित सभापतियों एवं विविध परिषदों का नामोल्लेख है। साहित्य-प्रेमियों को प्रति परिषद् के लिए तीनों में से एक का नाम निर्णय के लिए भेजना चाहिए। —हरि शर्मा

* * *

मथुरा नगर में सेकेन्डरी एज्यूकेशन के अध्यापकों के प्रान्तीय सम्मेलन की जोरदार तैयारियाँ हो रही हैं। उपसमितियाँ कार्य में लगी हुई हैं। आचार्य नरेन्द्र देव का नाम सभापति पद के लिए प्रस्तावित हुआ है और उनकी स्वीकृति की पूर्ण आशा है। कान्फरेंस कमेटी का एक डेप्यूटेशन सूबे के शिक्षा-मन्त्री माननीय श्री सम्पूर्णानन्द जी से मिला। उन्होंने प्रान्तीय फेडरेशन के निर्माण का स्वागत किया। मथुरा स्टेशन पर अध्यापकों के प्रतिनिधियों ने महात्मा गांधी जी से भेंट की और अध्यापकों की दशा का वर्णन किया। मौन-दिवस के कारण बापू जी उस समय कुछ न कह सके पर इस प्रश्न पर विचार करने का वचन दिया। प्रान्त के अनेक स्थानों में एसोसिएशन बन चुके हैं। अन्य स्थानों से भी बड़े आशापूर्ण उत्तर मिले हैं। कान्फरेंस कमेटी के मन्त्री अन्य सदस्यों के साथ प्रान्त के प्रमुख स्थानों का शीघ्र ही दौरा करनेवाले हैं। कान्फरेंस की तिथियाँ १ और २ अक्टूबर हैं।

—शर्मनलाल अग्रवाल, एम० ए०
प्रचार मंत्री

* * *

पचमढ़ी में राष्ट्रीय सरकार-दिवस के उपलक्ष में २ सितम्बर के प्रातःकाल प्रभात-फेरी झण्डा अभिवादन का आयोजन किया गया था, सायंकाल एक विराट् जलूस १२ बैलों के रथ में निकला जिसमें महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा सब नेताओं की फोटो विराजमान थी। जलूस में मुस्लिम लीगी गुण्डों ने दंगे की लहर फैलाई मगर पुलिस का अच्छा इन्तजाम होने से दंगा होते होते बचा। जलूस गांधी चौक में समाप्त हुआ। रात एक आम सभा भी दुर्गाप्रसाद जायसवाल के सभापतित्व में हुई जिसमें बालाराम जी गुप्ता, और प्रेमनारायण जी जायसवाल के तेजस्वी भाषण हुए। इसके बाद जय-हिन्द अँगरेजो भारत छोड़ो के गननभेदी नारे लगाते हुए सभा समाप्त हुई। —संवाददाता

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजधानी का रंगमंच

माननीय पं० गोविन्दवल्लभ पंत की हीरक जयंती

गृहमन्त्री प्रांत की शांति और सुव्यवस्था की ओर—उड़ाका क्लब—श्री बटुकेश्वर दत्त की परेशानी—आजाद हिन्द फौज के अफसरों का साम्प्रदायिक एकता आन्दोलन—मुसलिम लीग का रवैया,—पालीवाल जी की किसान मजदूर प्रजा-पार्टी।

प्रधान मन्त्री पं० गोविन्दवल्लभ पन्त की हीरक जयन्ती गत सप्ताह की एक प्रमुख घटना है, विगत १० सितम्बर को पन्तजी ने अपनी आयु के ६० वर्ष पूरे कर लिये हैं, इस अवसर पर पन्तजी को प्रांत के कोने कोने तथा देश-विदेश से शुभ कामनाओं के जो संवाद मिले हैं, वे उनकी लोक-प्रियता के स्पष्ट परिचायक हैं, प्रांत और देश की सेवा में पन्तजी को एक चौथाई से अधिक शताब्दी बीत गई है। वे एक मेधावी छात्र, कुशल वकील, तर्कपूर्ण वक्ता, विशुद्ध आलोचक, सुचतुर राजनीतिज्ञ तथा लोकप्रिय शासक रहे हैं, जनवरी १९२४ में स्वराज्य पार्टी के टिकट पर प्रांतीय कौंसिल में प्रवेश करके उन्होंने अपना व्यवस्थापक जीवन प्रारम्भ किया था और तब से कौंसिल बहिष्कार काल को छोड़ वे प्रांतीय कौंसिल, केन्द्रीय एसेम्बली तथा प्रान्तीय एसेम्बली के सदस्य रहे, सन् १९३७ में वे प्रान्तीय एसेम्बली की कांग्रेस पार्टी के नेता चुने जाकर प्रांत के प्रधान मन्त्री हुए और तब से उनके सुशासन से प्रांत का प्रत्येक नागरिक सुपरिचित है।

* * *

योग्य व्यक्तियों के चुनाव में पन्तजी विशेषज्ञ हैं, पिछले मन्त्रिमंडल तथा वर्तमान में भी उन्होंने प्रांत के गृह-विभाग पुलिस और जेल का संचालन श्री रफीअहमद किदवई को दिया। इस मूक किन्तु कृत-संकल्प राजनीतिज्ञ की दृढ़ता को पन्तजी से अधिक कौन जान सकता था? पन्तजी का यह चुनाव असफल न सिद्ध हुआ और यह गृह-मंत्री किदवई की संगठन बुद्धि का ही चमत्कार है कि इन दिनों जब देश के विभिन्न प्रांतों में साम्प्रदायिक युद्ध हो रहे हैं, युक्तप्रांत में पूर्ण शान्ति और व्यवस्था स्थिर है।

* * *

गृह-मन्त्री प्रांत में शान्ति स्थिर रखने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ हैं और उसके लिए कोई भी सम्भव उपाय कार्यान्वित करने से न चूकेंगे। गुंडों के इस महाशत्रु की जनता से केवल एक माँग है, वह यह कि एक तो जनता अफवाहों पर विश्वास न करे और न उनसे आतंकित हो, क्योंकि उसकी रक्षा के लिए सरकार ने पूर्ण व्यवस्था कर रखी है तथा अपनी सरकार पर भरोसा रखे। गुंडों का दमन करने और सुनागरिकों को शान्ति से जीवन-यापन करने में मदद देने का गृह-मन्त्री ने पुलिस और मैजिस्ट्रेटों को सख्त आदेश दिया है और स्वयं भी उसका निरीक्षण करते रहते हैं।

* * *

गृह-मन्त्री ने प्रांत के सभी नगरों और कस्बों में, जहाँ गुंडों द्वारा दंगे का डर हो सकता है, पुलिस की अनुपम व्यवस्था कर रखी है, किन्तु केवल पुलिस पर ही भरोसा करके वे चुप नहीं हैं, वे होमगार्ड्स के नाम से एक जन-सैन्य का भी संगठन करने जा रहे हैं, जिसको आधुनिक शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित किया जायगा और वह उनकी प्रत्यक्ष अधीनता में रहेगी। पुलिस के

संयुक्तप्रांत के प्रधान मंत्री माननीय पंडित गोविन्दवल्लभ पंत की ५९वीं वर्षगाँठ सारे देश में बड़े समारोह से मनाई गई।

इन्स्पेक्टर जेनरल से इस सैन्य का कोई सम्बन्ध न होगा और गद्दारी करनेवाले सरकारी कर्मचारियों का इलाज भी यह सैन्य करेगी।

* * *

कांग्रेस मंत्रिमंडल इस प्रांत के नागरिकों में उड्डयन-कला को प्रोत्साहित करने के लिए सचेष्ट है। लखनऊ में इसी लिए एक उडाका क्लब की स्थापना की जा रही है, जिसको सरकारी सहायता भी मिलेगी। कालान्तर में इस क्लब की शाखायें इलाहाबाद, बनारस, आगरा, अलीगढ़ तथा अन्य बड़े बड़े नगरों में स्थापित की जाएँगी। कानपुर में तो भारत-सरकार द्वारा सहायता प्राप्त एक बड़ा सा उड्डयन क्लब है भी। छात्रों को उड्डयन-कला सीखने के लिए विशेष सुविधा भी दी जायगी।

* * *

एसेम्बली बमकांड के श्री बटुकेश्वर दत्त को, जो पिछले कांग्रेस शासन में अंडमान से लौटा लिये गये थे, बंगाल, पंजाब तथा दिल्ली प्रान्तों में प्रवेश की अनुमति नहीं है। बंगाल सरकार तो उनके अनुरोध पत्रों का उत्तर तक नहीं देती। पंजाब सरकार ने कहा कि उन पर लगा प्रतिबन्ध हटाने की क्षमता केवल केन्द्रीय सरकार में है। केन्द्रीय सरकार का कहना है कि यह मामला प्रान्तीय सरकारों के निर्णय का है। लाल फीते की इन अद्भुत प्रणालियों से दत्त महोदय अपने परिवार तक में जाने से वंचित हैं। खयाल किया जाता है कि नई राष्ट्रीय सरकार उन पर लगे हुए इस आवश्यक प्रतिबन्ध को शीघ्र हटा लेगी।

* * *

आजाद हिन्द फौज के युक्तप्रान्त के कमांडिंग अफसर कर्नल नागर ने प्रान्त में साम्प्रदायिक एकता का आन्दोलन प्रारम्भ करने की योजना बनाई है, जिसमें उनको लीग और कांग्रेस दोनों से सहयोग का वचन मिला है। कर्नल नागर ने आजाद हिन्द फौजियों को आदेश दिया है कि वे अपने अपने क्षेत्रों में सार्वजनिक सभाओं का आयोजन करें, जिसमें कांग्रेस और लीग के नेताओं को भाषण देने के लिए एक मंच पर [illegible] और इस प्रकार दोनों सम्प्रदायों में पारस्परिक विश्वास और एकता के भाव उपजाये जायँ।

* * *

प्रान्तीय मुस्लिम लीग द्वारा सरकारी शान्ति-समितियों से लीगियों को असहयोग करने का आदेश दिये जाने की मुस्लिम क्षेत्रों में ही कटु आलोचना हो रही है। अनेक मुसलमानों को, जो अशान्ति और गुंडागीरी को प्रोत्साहन देने के बजाय शांत और वैधानिक उपायों से आन्दोलन करने के पक्ष में हैं, विचार है कि लीग के इस कार्य से अशान्ति की ही वृद्धि होगी। स्वयं लीगियों का भी एक वर्ग इसके विरुद्ध है और इस श्रेणी में श्री जहीरुल हुसनैन लारी प्रभृति लीगी नेता प्रमुख हैं। ये लोग मि० जिन्ना के पास एक डेपुटेशन भी ले जाने का प्रयास कर रहे हैं, जो कायदे-आजम को व्यर्थ के रक्तपात के बजाय कांग्रेस से सहयोग करने के लिए प्रेरित करने का प्रयत्न करेगा।

* * *

पालीवाल जी की किसान मजदूर प्रजा-पार्टी ने यथेष्ट प्रभाव संचय कर लिया है और प्रायः २९ जिलों में उसका संगठन हो गया है। पार्टी के सदस्य केवल क्रियाशील कांग्रेसजन ही बनाये जा रहे हैं, जो जनता से प्रत्यक्ष सम्पर्क रखेंगे और किसान कांग्रेस के मार्फत किसानों में तथा हिन्दुस्तान मजदूर सेवक-संघ के मार्फत मजदूरों में कार्य करेंगे। पार्टी की कार्य-कारिणी की एक बैठक गत सप्ताह लखनऊ में हुई थी, जिसमें अन्य बातों के अलावा कांग्रेसजनों के लिए आचरण की एक नियमावली बनाकर उसे प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी से स्वीकृत कराने का निश्चय किया गया। कांग्रेस में अनुशासन स्थिर रखने का यह अनुपम उद्योग है।

संसार की वैधानिक पंचायतें

(पेज ७ का शेष)

किया। जब विधान-परिषद् विधान बनाने के लिए एकत्रित हुई तो लेनिन ने घोषित किया कि जनता का प्रतिनिधित्व सोवियटें, पंचायतें करती हैं। इसलिए राज्य-शक्ति इन पंचायतों के हाथ में होनी चाहिए। इस घोषणा के साथ ही रूस में अक्टूबर-क्रान्ति का श्रीगणेश हुआ और जनता ने अपने अधिकार-रक्षा के लिए जो बलिदान किये वह तो स्वयं एक इतिहास है।

संसार के विधान-निर्मात्री-परिषद् और स्वराज्य पंचायतों के इतिहास पर दृष्टि डालने से हम एक निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि विधान-निर्मात्री-परिषद् का आयोजन तो स्वतन्त्र जनता-द्वारा हो सकता है। इसमें जनता स्वच्छन्दता से अपने विधान का निर्माण करती है और सार्वभौम सत्ता पर उसका अधिकार सर्वमान्य हो जाता है। जब शासकवर्ग किसी देश में विधान-परिषद् बुलाने पर बाध्य भी होता है उस दशा में ही उसका निहित स्वार्थ उसकी मनोवृत्ति को दूषित करता रहता है और वह जनता के सार्वभौम सत्ता के अधिकार को पूर्ण रूप से प्रकट और विकसित नहीं होने देता। शासक और शासित, शोषक और शोषित के हितों में सामंजस्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जब तक राज्य-शक्ति [illegible] अधिकार न हो, जनता की [illegible] की रक्षा के लिए जन-चेतना [illegible] तक प्रत्येक बालिग को [illegible] प्रतिनिधित्व न हो, उस [illegible] भी विधान-परिषद् वास्तविक [illegible] की विधान-परिषद् नहीं [illegible] और उस समय तक यह [illegible] शासकवर्ग उसे छिन्न-भिन्न [illegible] का उपहास करे।

अपने आपको शीतल

टाटा का ओ-डी-कोलोन दिन पुरुषों के लिए नहाने के नहाने के पश्चात् के प्रयोग की वस्तु बन रही है। इसकी भिन्न विधियों से प्रयोग में लाइये और कि कैसे यह गर्मी से छुटकारा ठण्डक पहुँचा देगा।

(१) प्रातः नहाने के पानी में कुछ बूँदें डाल दीजिये— इससे पानी सुगन्धित हो जायेगा।

(२) दाढ़ी बनाने के पश्चात् और कपड़े पहनते समय अपने शरीर पर लगाइये। इसकी बर्फीली ठंडक आपको श्रमापहार करेगी। अपनी रूमाल को इससे सुगन्धित कर लीजिये।

(३) दफ्तर में कठिन काम सँभालते समय अपने माथे को ठंडक पहुँचाने के लिए एक शीशी अपने मेज पर रख लीजिये।

(४) यात्रा करते समय टाटा का ओ-डी-कोलोन पास रख लीजिये। यह आपको थकावट को दूर करने और आप को स्वच्छ रखने में सहायता देगा।

सदैव अच्छा साथी

टाटा का

ओ डी

दी टाटा आयल मिल्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५ सितम्बर, १९४६

...भारत का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

...होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

...ढ़े लाख भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर ...ड़ते हैं। इजेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S. १०) H.M.B.S. H.M.D.S २५)। पुस्तक—अ० परिचारक १) धायोकेमिक १) ...मेटिरिया १) मेडिकल डिक्शनरियां १॥) आर्गनन १), फार्मा... ...कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायँगी। डा० ख० ...वन दवाइयां—३ न० से २०० न० तक ≡) ड्राम। आउन्स ॥) ...१६ ओ ७) सुगर और गोली—२॥) गाउण्ड। संरक्षक :—

...Sahib Dr Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.)

आपको शीतल

...का ओ-डी-कोलोन ...के लिए नहाने के ...पश्चात् के प्रयोग से ...ही है। इसको ...प्रयोग में लाइये और ...ह गर्मी से छुटकारा ...चा देगा।

: नहाने के पानी ...डाल दीजिये— सुगन्धित हो

...बनाने के पश्चात् ...इनते समय अपने ...गाइये। इसकी ...आपका श्रमापनोदन ...अपनी रूमाल को ...त कर लीजिये।

...र में कठिन काम ...य अपने माथे को ...ने के लिए एक ...मेज पर रख

...करते समय टाटा ...तौलिए पास रख ...ह आपको थका- ...करने और आप ...खने में सहायता

...छा साथी

...डी

...टा आयल मिल्स

अपट लोशन

...द, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.

अपट ऑण्ड कं. लि. ...बम्बई नं. २

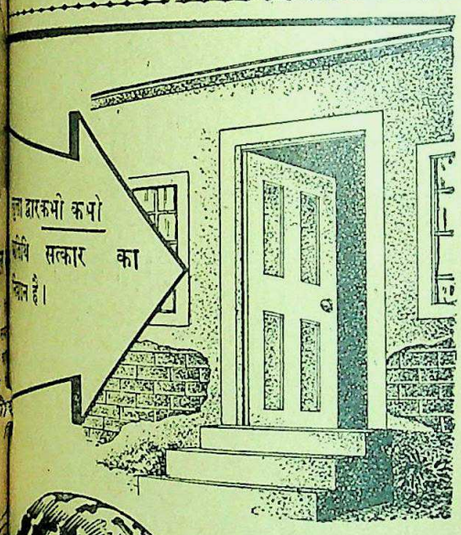

...हमारा बारूभी कपो ...कॉर्पोरेशन सत्कार का ...भाजन है।

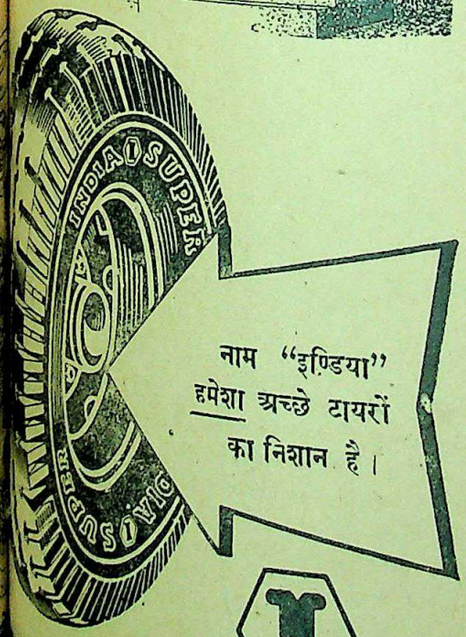

...नाम "इण्डिया" हमेशा अच्छे टायरों का निशान है।

INDIA SUPER SIVIC

INDIA TYRES

J&N REMINDERS!

स्मारक पत्र

किस प्रकार का काम? : सुन्दरता बढ़ाने और सुरक्षित बनाने के लिए लैक्कर और वारनिश का काम।

हमारी सिफ़ारिश : **"जैन चाईनीज लैक्कर"** (Jen Chinese Lacquer) रंग तथा चमक देता है। **"सुपर जैनस्पार वारनिश"** (Super Jenspar Varnish) के ऊपर पानी अल्कहल और अन्य तरल वस्तुओं का कोई असर नहीं होता। इन दोनों की सिफ़ारिश फ़र्नीचर और अन्य घरेलू सामान के वास्ते की जाती है।

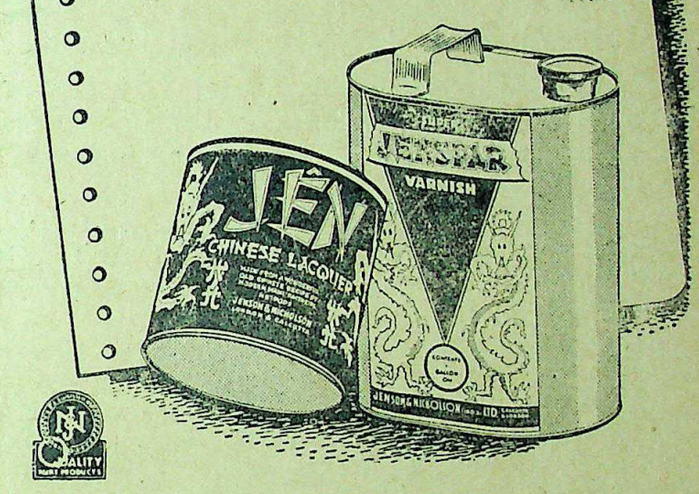

JENSON & NICHOLSON

MAKERS OF PAINTS

हिन्दी में

अभूतपूर्व क्रान्तिकारी साहित्य

नेता जी श्री सुभाषचन्द्र बोस-सम्बन्धी प्रसिद्ध हिन्दी साप्ताहिक

'अभ्युदय'

के पाँच विशेषांक जिन्होंने भारत भर में हलचल मचा दी है।

पहला, दूसरा, तीसरा और चौथा विशेषांक एक में (सजिल्द) केवल ५) ...या।

पाँचवाँ विशेषांक जिसमें जियाउद्दीन के भेष में नेता जी सम्बन्धी दो अलभ्य चित्र भी उत्तमचन्द्र द्वारा लिखित उनके भारत से बाहर जाने की कहानी पूरी की पूरी, १०० से ऊपर अनमोल चित्र तथा २०० के करीब पेज, कवर पर माता भवानी द्वारा नेता जी को तलवार प्रदान करते हुए सुन्दर तिरंगा चित्र है—तीन रुपया मात्र।

दोनों एक साथ लेनेवाले को पोस्टेज माफ। हजारों प्रतियाँ बिक चुकीं। कुछ प्रतियाँ अभी शेष हैं। जल्दी कीजिए नहीं तो बाद में इनका मिलना भी मुश्किल हो जायगा।

मैनेजर 'अभ्युदय' प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्वेतकुष्ठ वनोषधि

अमोघ प्रदत्त श्वेतकुष्ठ (सफेदी) की दवा से तीन दिन में पूरा फायदा। यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, विज्ञापन-दाताओं की दवा से निराश हो चुके हों तो इसे लगा कर आराम होवें। १५ दिन की दवा का मूल्य २॥)।

सफेद बाल काला

इस तेल से बालों का पकना रुक कर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दूना मूल्य वापसी की शर्त लिखा लें। यह तेल सिर के दर्द व सिर में चक्कर आना आदि को आराम कर आँख की रोशनी बढ़ाता है। एकाध बाल पका हो तो २), आधा पका हो तो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मँगवा लें। एजेण्टों की हर जगह आवश्यकता है।

स्तम्भक वटी

एक गोली शाम को खा लें और इसके अद्भुत चमत्कार को देखें। एक घंटे तक स्तम्भन कर गजब ढा देगी। १६ गोली १), ५० का २॥), १०० का ५)।

पता—वैद्यराज अखिलकिशोर राम नं० ३७ पो० कतरीसराय (गया)।

उसके सारे अंग गठिये से जकड़ उठे थे

न बेचारी चल सकती थी और न सो सकती थी

क्रुशेन के नियमित सेवन से अब वह वेदना-मुक्त हो गई है

वह इतने दिन तक बीमार ही थी वह यह समझती थी कि अब कभी अच्छी ही न होगी। सभी प्रकार की औषधियों से निराश होकर उसने क्रुशेन सेवन करना आरम्भ कर दिया। केवल १३ मास में काफी परिवर्त्तन हो गया और आज वह वेदना से एकदम मुक्त है।

"गठिये के कारण मेरे हाथ-पैर फूल गये थे। मैं चल नहीं सकती थी और न मुझे नींद ही आती थी। बहुत रुपया खर्च किया किन्तु कोई स्थायी लाभ नहीं हुआ। पहले तो मैं क्रुशेन साल्ट सेवन करने को तैयार नहीं हुई। अच्छी होने की सभी आशा जाती रही। मैं जिन्दगी से ऊब उठी थी और मृत्यु चाहने लगी थी। दो सप्ताह क्रुशेन साल्ट सेवन करने के बाद मुझे आराम होने लगा। मैंने क्रुशेन साल्ट को जारी रक्खा और केवल ६ हफ्ते में मैं घर का काम करने लगी। तीन बोतल पीने के पश्चात् मुझमें टहलने की शक्ति आ गई। अब मेरा सारा दर्द जाता रहा। सूजन दूर हो गई और अब मैं सचमुच स्वस्थ जान पड़ती हूँ"—श्रीमती यफ० डब्ल्यू०

गठिये का दर्द विशेषतः शरीर में अम्ल के एकत्रित हो जाने से होता है यह साधारण जोड़ और गाँठों पर हुआ करता है। क्रुशेन इस विषैले मल को निकाल देता है तथा इसको दोष-रहित तत्त्वों में परिवर्तित कर देता है इससे शरीर का भीतरी अंग निर्धारित रूप से काम करता है जिससे फिर अम्ल एकत्रित नहीं होने पाता।

क्रुशेन साल्ट बाज़ार में सभी बड़े औषधि-विक्रेताओं के यहाँ बिकता है।

छप गया !! छप गया !!

वार्षिक बालसखा १९४६

यह अङ्क बालक-बालिकाओं को कितना पसन्द आ रहा है, इसका प्रमाण कुछ विद्वानों की निम्नलिखित पंक्तियों में देखिए :—

श्री राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०, वकील, बाँदा—बालसखा के वार्षिकाङ्क के लिए घर में बच्चों में छीना-झपटी मच गई। पाठ्य-सामग्री पठनीय, लाभप्रद व रोचक है। सजधज सुन्दर व आकर्षक। ऐसे अङ्कों से बालकों को स्वयं कुछ लिखने व पढ़ने का प्रोत्साहन मिलता है।

श्री विद्यावागीश 'वत्स', फ़ीरोज़ाबाद—वार्षिक बालसखा मिला। क्या ही सुन्दर, लुभावना, सुहावना खिलौना है। मिलते ही हम लोगों में लड़ाई हो गई। आशा कहती है, पहले मैं पढ़ूँगी। उसकी माता कहती है, पहले मुझे पढ़ लेने दो। और यह बूढ़ा बैल कहता है, तुम दोनों तो पढ़ती ही रहोगी, पहले मुझे खत्म कर लेने दो। अभी तय नहीं हो पाया कि कौन पहले पढ़ेगा। छीना-झपटी जारी है।

श्री ऋषीश्वरनाथ भट्ट, बी० ए०, आगरा—वार्षिक अङ्क को जो रूप आपने दिया है, उसके लिए कहाँ तक धन्यवाद दूँ? आते ही मेरे पौत्रों के हाथ लग गया। तीन दिन तक उन्होंने सब काम छोड़कर—जैसे पहले लोग 'चन्द्रकान्ता' पढ़ते थे—उसे पढ़ डाला। बालकों को इतना पसन्द आनेवाला पत्र सम्पादित करने के लिए आप वास्तव में धन्यवाद के भागी हैं।

श्री राजेन्द्र शर्मा, प्रबन्ध-सम्पादक 'योगी' पटना—वार्षिक बालसखा मेरे पुत्र की सम्पत्ति हो चुका है। कई कविताएँ उसने याद कर ली हैं। यदि वह आलोचना लिख सकता, तो स्वयं ही लिखता। शीघ्र ही मैं इसकी आलोचना प्रकाशित करूँगा।

* * *

मँगानेवालों को शीघ्रता करनी चाहिए। बहुत थोड़ी प्रतियाँ बच रही हैं। तीन सौ पृष्ठों में इस सचित्र वार्षिकांक का मूल्य ३) तीन रुपया है। सात तिरंगे चित्र भी हैं। 'बालसखा' के स्थायी ग्राहकों के लिए रियायती मूल्य २॥) रुपया। रियायती मूल्य के लिए ग्राहक-संख्या लिखना ज़रूरी है। वी० पी० से नहीं भेजा जाता।

मैनेजर 'बालसखा', इंडियन प्रेस लि०, इलाहाबाद।

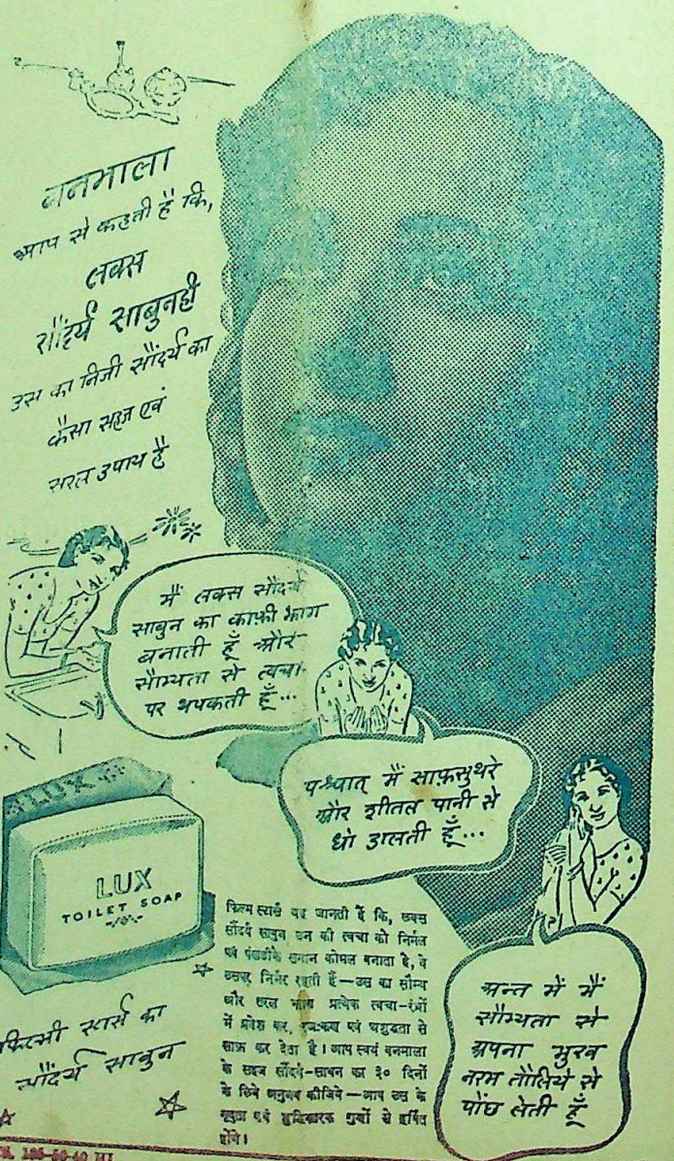

LUX. 105-30-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

श्रीकृष्ण-चरित्र—लेखक, काशीनाथ, एम्० ए०, पतितपावन भगवान् पावन चरित्र इस पुस्तक के अनुसार वर्णन किया जिसे पढ़ने पर उपन्यास का है। भाषा प्रांजल और कृष्ण की जीवनी पर ढंग से प्रकाश डालनेवाली अपने ढंग की यह प्रथम मूल्य ३।-) तीन रुपये मैनेजर चुकाइए। इंडियन इलाहाबाद।

उम्दा व नया अमेरिकन गर्म

हर प्रकार के हाफ़ कोट उम्दा और नया जबी रंगों में पाया जाता है। ग्राहक वर्ष में उठा दें। निर्लज्ज मत बुक करा लीजिये।

सेकन्ड हैंड कोटों का स्वयं के मूल्य

रमेश राज एण्ड सौदागर कोट पो० बक्स नं० 682

एक खुराक पेट दर्द करती है।

मेकलीन ब्रांड स्टमक व्यापक ख्याति अम्लता, उदर- दाह, पेट दर्द, वमन, पाचन-सम्बन्धी शिकायतों वाले अन्य रोगों में मान्य प्रमाण है।

उदर-विकारों से उदासी, अनिद्रा और कन में भी यह अमूल्य है।

यदि आप इनमें से रोग से पीड़ित हैं तो ब्रांड स्टमक पाउडर प्रसिद्ध औषधि की शीघ्र स्वयमेव अनुभव कीजिए।

मेकलीन ब्रांड स्टमक समय "एलेक्स मी० मेकलीन" पहचान लीजिए क्योंकि मेकलीन ब्रांड स्टमक सेवन कीजिए

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष | के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १९ पुराना कटरा रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित | प्रधान सम्पादक—उमेशचन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

२२ सितम्बर, १९४६ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 22nd September, 194

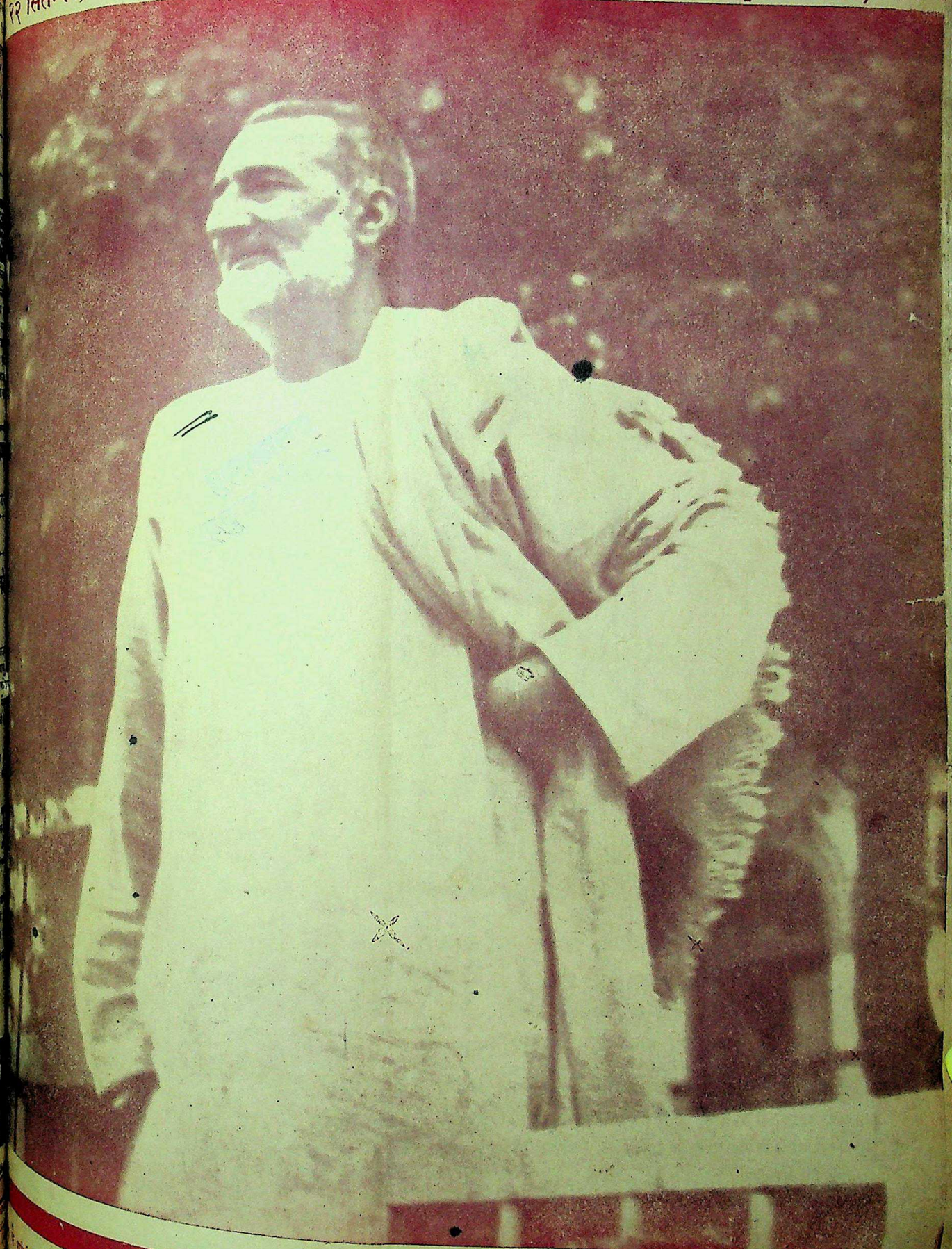

हिन्दी भाषाभाषी भारतीय [illegible]

मूल्य २

राष्ट्रपक्ष को एकता जरूरी क्यों है ?

महाकोशल और नागपुर का पृथक्करण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

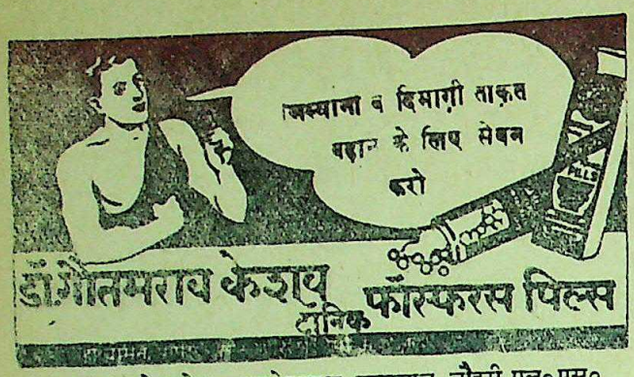

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एल० एस०
धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

Estd. 1929 हिन्दुस्तान की सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Ai...

सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पत्र-परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S. १०) H.M.B.S. १५) H.M.D.S. २५)। पुस्तक—अ० पारिवारिक १) बायोकेमिक १) १००० रेडलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्सनरियां १॥) आर्गनन १), ... कापिया १॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायँगी। डा० ... भाफ—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≡) ड्राम। आउन्स ... परेलू बक्स ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.

चिर प्रतीक्षा के पश्चात्

गान्धी-अभिनन्दन-ग्रन्थ का द्वितीय संशोधित तथा संवर्धित संस्करण छप रहा है किन्तु, सीमित संख्या में—

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ महात्मा गांधी की हीरक-जयन्ती की पुण्य स्मृति में प्रकाशित हुआ था, तथा इसके प्रकाशन के लाभ की आय गांधी जी को भेंट कर दी गई है।

प्रत्येक भाषा की कविता हिन्दी-लिपि में छापी गई है, तथा उसका अनुवाद भी दे दिया गया है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी की ओर से महात्मा गांधीजी के प्रति यह एक ऐतिहासिक साहित्यिक-श्रद्धांजलि है।

दूसरा संस्करण बड़े आकार-प्रकार में प्रकाशित किया जा रहा है, और प्रत्येक पृष्ठ में एक ही रचना देने से ग्रन्थ का सौन्दर्य निखर जाना स्वाभाविक है।

इस बात का पूर्ण प्रयत्न किया जा रहा है, कि प्रकाशन की दृष्टि से यह संस्करण सर्वाङ्ग सुन्दर हो।

ग्रन्थ की भूमिका सर्वपल्ली सर राधाकृष्णन ने लिखी है। तथा इसके संरक्षक श्रीमान् सेठ घनश्यामदास जी बिड़ला हैं।

गान्धी जी की सम्मति

जो काव्य मेरी स्तुति में लिखे गए हैं, उनके बारे में क्या कहूँ, इतना कह सकता हूँ सही, काफ़ी परिश्रम किया गया है और कोई शुभ परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता।

डा० अमरनाथ झा जी के शब्दों में 'किसी भी भाषा में इससे पहले इस प्रकार का कोई भी ग्रन्थ नहीं प्रकाशित हुआ, जिसमें इतनी भाषाओं के इतने कवियों की इतनी उत्कृष्ट कविताएँ भारतवर्ष के सबसे महान् पुरुष के सम्बन्ध में लिखी गई हों।

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ प्रत्येक पुस्तकालय में सहज ही अग्रिम स्थान प्राप्त करेगा, और पाठक इस ग्रन्थ को बारम्बार पारायण करने में सुख प्राप्त करेंगे।

इस संस्करण का लाभ हरिजन-कोष में दिया जायेगा।

मूल्य साढ़े छः रुपये **प्रकाशक**

इप्रे

तुलसी-रत्नावली—का संकलन, प्रिंसिपल केदारनाथ गुप्त, एम० ए० ने किया है। इसमें गोस्वामी तुलसीदासजी के अमूल्य ग्रन्थों—रामचरित-मानस, विनयपत्रिका, कवितावली, दोहावली, गीतावली आदि—से रत्न चुने गये हैं। अनेक ग्रन्थों से अमूल्य स्थानों का संग्रह करना सचमुच बड़ा कठिन काम होता है। जो लोग गोस्वामी जी के समस्त ग्रन्थ न तो ले सकते हैं और न उनका अध्ययन कर सकते हैं उनको इस संग्रह से बड़ा लाभ होगा। मूल्य केवल एक रुपया आठ आने।

मैनेजर—(बुकडिपो) इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग।

खांसी पर
बिजलीसम
आक्रमण
खांसी
विनोज
लाईटनिंग
कफ़ क्योर

बीमारी के बाद, खून की कमी
मेहनत पड़ना और कमजोरी
ग्रिमौल्ट की
हिमोग्लोबिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, २२ सितम्बर, १९४६

वर्ष, ९ संख्या ४]

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

[illegible] लीग के विधाता मिस्टर [illegible] जिन्ना वाइसराय से मिल [illegible] वाइसराय लार्ड वैवेल ने बड़ी [illegible] से जिन्ना साहब का स्वागत [illegible] काम समय के अनुकूल हो रहा [illegible] एक्शन' का तमाशा कल- [illegible] में दिखाया ही जा चुका [illegible] आगे कुछ करने को भी तो [illegible] क्यों न अस्थायी सरकार में घुसा [illegible] सोचते हैं कि कांग्रेस दल [illegible] की सारी खेती चरे ले रहा है, [illegible] दूर से टुकुर टुकुर ताक रहे हैं। [illegible] अपने राम की समझ में आता [illegible] लीग अस्थायी सरकार में [illegible] होगी। हाँ, अभी मानमनौअल [illegible] होगी। फिर देखिये, जहाँ [illegible] सरकार में शामिल हुई कि [illegible] उसकी शुरू हुई क्योंकि उसे तो [illegible] लेना है न! उसके सामने दो [illegible] है। या तो वह पैतरेबाजी करके [illegible] ले या पाकिस्तान का नाम लेना [illegible]।

* * *

[illegible] ब्लाक की कार्यकारिणी समिति [illegible] किया है कि नेताजी श्रीसुभाषचन्द्र [illegible] हैं और वह उपयुक्त अवसर [illegible] प्रकट होंगे। वास्तव में यह [illegible] आश्चर्यजनक अवश्य है क्योंकि भारत सरकार का फौजी विभाग तो नेताजी को पहले से स्वर्गवासी बना चुका है। फौजी डिपार्टमेंट की जासूसी इतनी कमजोर है, फारवर्ड ब्लाक की घोषणा से साफ जाहिर है। अपने राम भी यही समझते थे कि नेताजी जीवित हैं, भारत सरकार को उनके भारत से गायब होने का जब पता नहीं चला तब भला उनके जीवन-मरण की सही बात का वह कैसे पता लगा सकती थी। जो कुछ भी हो नेताजी जीवित हैं, यह राष्ट्र के लिए गौरव की बात है। जब अभी से अवसरवादी देशभक्त गड़बड़ाने लगे हैं तब उनके आने पर यहाँ क्या होगा, भगवान् जाने।

* * *

सिन्ध के प्रधान मन्त्री सर हिदायतुल्ला की अब इच्छा होने लगी हैं कि प्रांत में कांग्रेस और लीग का संयुक्त-मन्त्रिमंडल बनाया जाये। समझ में नहीं आता कि लीगी प्रधान मन्त्री की जिह्वा पर सरस्वती कैसे विराजमान हो गईं? सिन्ध के गवर्नर सर फ्रांसिस मुडी से कुछ नाउम्मीदी हो गई है क्या? लेकिन क्या करेगी कांग्रेस, सिंध के नेता तो मिस्टर सैयद बन गये हैं। कांग्रेस तो किसी कदर लीग को अछूत करार न भी देगी तो सैयद साहब का दल तो लीग को अछूत करार दे ही रहा है। इसलिए हिदायतुल्ला साहब की बुद्धि अंत में चाहे बिल्कुल ठीक ही हो जाये किन्तु सच पूछा जाये तो इस वक्त सिंध की लीडरी है मिस्टर सैयद के हाथ।

* * *

विधान-सम्मेलन का अधिवेशन अब अगले दिसम्बर महीने में होगा। चलिए यह अच्छा ही हुआ क्योंकि अस्थायी सरकार को अभी बहुत-सा मामला निबटाना है। मुस्लिम लीग से अभी वाइसराय तथा कांग्रेस का समझौता हो रहा है, यह सब काम सुलझ जाये तो विधान-सम्मेलन हो, नहीं तो विधान बनायेगा कौन? फिर विधान-सम्मेलन का अधिवेशन होना कोई आसान काम तो है नहीं, हिन्दुस्तान भर के जब तक सभी जमाती इकट्ठा न होंगे तब तक विधान क्या बनेगा पत्थर! अपने राम की समझ में और जो कुछ भी हो किन्तु एक बात समझ में आती है कि जब पहली बैठकी ही टलती जा रही है तो अन्तिम बैठकी के लिए भगवान् ही मालिक हैं। ब्रिटेन बड़ा चतुर है। वह सब काम बड़ी होशियारी से करता है।

* * *

संयुक्तराष्ट्र-संघ का अधिवेशन टल गया। क्यों? इसलिए कि सोवियट रूस की इच्छा नहीं थी कि इतनी जल्दी—शांति-सम्मेलन के बाद ही—संयुक्त-राष्ट्र-संघ की मीटिंग बुलाई जाये। बात ठीक भी है। इस वक्त सोवियट की खुशामद चारों ओर हो रही है। क्योंकि उसने चारों ओर अपनी टाँग अड़ा रखी है। चूँकि साम्राज्यवादी राष्ट्र भी इस वक्त अपने इन्द्रजाल में पड़े हैं, कहते हैं पूरब और सुनते हैं पच्छिम। लेकिन सोवियट रूस जो कुछ कहता है उसे सब सुन लेते हैं। इसीलिए संयुक्त-राष्ट्र-संघ की भी मीटिंग उन्हें स्थगित करनी पड़ी। समय का फेर है, जबरा मारै, रोवै न देय।

* * *

महात्मा गांधी कहते हैं कि नमक-कर उठा देना चाहिए। बहुत सुन्दर है, देश में मिठास ज्यादा आ गई और ज्यादा मिठास से पड़ते हैं कीड़े। इसलिए नमक की ज़रूरत भी महसूस हो रही है।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय पृष्ठ

कलकत्ता-काण्ड की जाँच

कलकत्ता का भीषण साम्प्रदायिक दंगा अब बन्द हो गया है परन्तु उसकी पूर्व भयंकरता के स्मरण से हृदय काँप उठता है। तीन-चार दिन तक कलकत्ते में लीगी नादिरशाही का नग्न तांडव उपस्थित था। 'प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस' की वास्तविकता का प्रदर्शन कलकत्ता में भली भाँति किया गया, इसमें संदेह नहीं।

मुसलिम लीगी सरकार के लिए शर्म की बात है कि उसके देखते निरीह जनता का रक्तपात और लूट हुई। समस्त राष्ट्र की पुकार वहाँ की जनता के साथ चिल्ला उठी। आखिरकार वाइसराय लार्ड वैवेल को स्वयं कलकत्ता जाना पड़ा। वाइसराय ने कलकत्ता की भग्नावस्था को अपनी आँखों देखा, जनता के नेताओं से बातें कीं और उन्हें इस भीषण दुर्घटना की जाँच का आश्वासन दिया। भारत सरकार ने इस दंगे की जाँच के लिए एक कमेटी नियुक्त की है जिसमें बंगाल सरकार के सरकारी आदमी नहीं होंगे। प्रसन्नता की बात है कि इस जाँच-कमेटी के सभापति संघ अदालत के चीफ जस्टिस सर पैट्रिक स्पेन्स हैं। कमेटी का नाम 'कलकत्ता दंगा जाँच कमीशन' है। इस कमीशन के अन्य सदस्यों से भी पूर्ण स्वतन्त्रता और बुद्धिमत्ता से कार्य करने की आशा है। यद्यपि यह कमीशन बंगाल सरकार द्वारा ही नियुक्त किया जाना चाहिए था और गवर्नर से भी राय ली जा सकती थी; परन्तु जब दंगे में स्वयं बंगाल सरकार एक अभियुक्त के रूप में है तो फिर किस प्रकार बंगाल सरकार द्वारा निर्मित किसी कमीशन की नियुक्ति होती। जाँच कमीशन कलकत्ता के सरकारी ऊँचे अफसरों की गवाहियाँ अथवा मंत्रिमंडल के सदस्यों से पूछ-ताछ करके ही चुप हो जाय इससे दंगे के मूल कारण का पता नहीं लगाया जा सकता। इसलिए आवश्यक है कि ऐसे कागजातों अथवा कारणों और कार्यों का पता लगाया जाय जिनसे इस दंगे का सूत्रपात हुआ है। बिना गहरी छानबीन, कागजातों को तलब किये अथवा स्थानीय सम्मानित लोगों की गवाहियों के कमीशन के इस दंगे की सच्ची रिपोर्ट नहीं तैयार की जा सकती।

कलकत्ते में दारुण दृश्य उपस्थित करनेवालों का नाम खोज निकालना कोई कठिन काम नहीं है। श्री सुहरावर्दी बंगाल के प्रधान मंत्री हैं, साथ ही मुसलिम लीग के प्रान्तीय नेता भी। प्रान्तीय लीग की एक बैठक में उन्होंने भाषण देते हुए कहा था—'हम पाकिस्तान के लिए कोई कसर उठा न रक्खेंगे। उन्होंने १६ अगस्त को लीग की ओर से घोषित 'प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस' के अवसर सारे प्रान्तीय दफ्तरों को बन्द कर दिया था। इससे क्या बंगाल के प्रधान मन्त्री की मनोदशा का पता नहीं चलता कि वह उस दिन क्या करना चाहते थे? साथ ही यह भी है कि श्री सुहरावर्दी ने बंगाल गवर्नर को कलकत्ते की स्थिति से बिलकुल अनभिज्ञ रक्खा था। दंगे के समय दो-तीन दिन तक गवर्नर को कलकत्ते की स्थिति की सच्ची रिपोर्ट नहीं प्राप्त हुई थी। उन दिनों प्रधान मन्त्री अपने अधिकारों का जबरदस्त उपयोग कर रहे थे। इस सच्ची स्थिति को छिपाया नहीं जा सकता, यदि बंगाल की लीगी सरकार दफ्तरों के सरकारी कागजातों को नष्ट नहीं करती तो ऐसी कोई कठिनाई नहीं कि दंगे के मूल स्रोत का पता न लग जाये? पुलिस विभाग की सारी जिम्मेदारियाँ श्री सुहरावर्दी पर ही हैं। जब बंगाल का प्रधान मन्त्री भारत के कलकत्ता ऐसे प्रधान नगर की एक दिन भी रक्षा नहीं कर सकता तो उसे सीधे गवर्नर से सैनिक शक्ति की सहायता लेनी चाहिये थी। परन्तु लीगी शासक ने तीन दिन तक उस भयंकर लूट-मार और नर-संहार की स्थिति को कायम रहने दिया। यह क्यों? सच तो यह है कि किसी भी देश के जिम्मेदार मन्त्री के शासन में ऐसी अव्यवस्था और नर-संहार के उत्पन्न होते ही वह किसी भी जिम्मेदारी के पद पर नहीं रह सकता; परन्तु श्री सुहरावर्दी आज भी अपने प्रधान पद पर डटे हुए हैं। जाँच कमीशन के सदस्य देश की ऊँची अदालतों के प्रधान हैं फिर वह श्री सुहरावर्दी को, जो पुलिस विभाग के जिम्मेदार हैं, कैसे भूल सकते हैं? वायसराय ने स्वयं कलकत्ते का दृश्य देखा है, आज सैकड़ों निरीह और निरपराध प्राणियों की मृत्यु का मुकदमा होने जा रहा है, जिनकी स्मृति से हृदय काँप उठता है। हमें आशा है कि जाँच कमीशन सदस्य इस मामले को राजनैतिक दृष्टि से न देखेंगे बल्कि वह अपनी कुशाग्र बुद्धि से आज घटना के मूल स्रोत की अवश्य खोज करेंगे।

घर और बाहर!

लेखक
श्री देवेन्द्रनारायण वाजपेयी
एम० ए० एल्-एल० बी०

हमको विलायत में बुलाओ

मिस्टर जिन्ना ब्रिटिश सरकार से बातचीत करने के लिए इँगलैंड जाने को उत्सुक हैं। भारतवर्ष का भविष्य आलोचना का विषय होगा। हम लोगों की यह धारणा है कि आत्म-सम्मान का ज्ञान जिस मनुष्य को होगा वह अपने देश का भाग्य नियन्त्रण करने के लिए दूसरे देश में जाने के लिए तैयार न होगा। ब्रिटेन की टोरी पार्टी साम्राज्यवाद की पोषक है। जिन्ना साहब इस पार्टी के एक हिन्दुस्तानी कठपुतली हैं। इसमें हम लोगों को कोई आपत्ति न थी, परन्तु जिन्ना साहब मुसलमान जनता को गलत रास्ते में चलाना चाहते हैं।

* * *

पावर हाउस

प्रायः सभी प्रान्तों में जमींदारियाँ सरकार अपने हाथों में ले रही है। ऐसा करना कालोपयोगी भी है। हिन्दुस्तान में अधिकांश बिजली पैदा करनेवाले ये पावर हाउस विदेशी पूँजी-पतियों के हाथ में हैं। वह लोग इस व्यवसाय से बहुत लाभ उठाते हैं। बिजली पैदा करने में जितना खर्च होता है उससे कई गुना ज्यादा बिजली व्यवहार करनेवालों से वसूल किया जाता है। इसीलिए कुछ थोड़े ही कामों में हिन्दुस्तानी बिजली का व्यवहार करते हैं। कई साल पहले जापान में भी बिजली के साहाय्य से

मकानों में झाड़ू लगाया जाता था [illegible] ऐसा करना सस्ता पड़ता था। [illegible] सरकारों को शीघ्र से शीघ्र पावर [illegible] को अपने हाथों में ले लेना चाहिए। [illegible] देश की उत्पादन करने की शक्ति [illegible] बढ़ जायगी और जनता इससे लाभ [illegible] सकेगी।

* *

पार्लियामेंट का अगला जलसा

ब्रिटेन की प्रतिक्रियाशील टोरी [illegible] हिन्दुस्तान में जो कुछ दंगे हुए हैं [illegible] परेशान हो उठी है। वह पार्लियामेंट [illegible] अगले जलसे में इस विषय पर अपने [illegible] जाहिर करेगी। यह मालूम पड़ता है [illegible] टोरी पार्टी मुस्लिम लीग का पक्ष [illegible] इसी टोरी पार्टी के हाथ में जब हुकूमत [illegible] था तब बंगाल में १९४३ में अकाल [illegible] था। इस अकाल से कम से कम [illegible] आदमी मरे थे। टोरी पार्टी ने इस [illegible] बचाने के लिए किसी तरह की चेष्टा [illegible] की थी। इसी पार्टी ने सन् १९४२ [illegible] लन में हवाई जहाजों से गोलियाँ [illegible] और निःशस्त्र जनता के साथ [illegible] अत्याचार किया। अब वही [illegible] हिन्दुस्तान के कुछ दंगे से [illegible] गई है! हम लोग टोरी पार्टी को [illegible] हैं और उसके प्रधान चर्चिल [illegible] वास्तव में यह लोग भारत में [illegible] साम्राज्यवाद के नाश होने की सम्भा[illegible] घबड़ा गए हैं।

* *

यूगोस्लाविया पर अन्य देशों [illegible] हवाई जहाज

दूसरे देशों के हवाई जहाज [illegible] स्लाविया के ऊपर चक्कर [illegible] यूगोस्लाविया की सरकार ने [illegible] हवाई जहाजों को नीचे उतार लिया [illegible] यूगोस्लाविया में हाल ही में प्रजातन्त्र [illegible] सरकार प्रतिष्ठित हुई है। प्रीत में [illegible] सिपाहियों के सहारे से बादशाह [illegible] हुई है। कुछ दिनों पहले अमरीकी [illegible] जहाज यूगोस्लाविया में नीचे उतर [illegible] था। इस पर अमरीकी सरकार ने [illegible] नाराजी जाहिर की थी हाल में [illegible] एक हवाई जहाज फिर नीचे उतर [illegible] है। इस हवाई जहाज में चलनेवालों [illegible] स्वीकार कर लिया कि उनके [illegible] स्लाविया का फौजी नक्शा था। [illegible] फौजी हवाई जहाजों के नीचे [illegible] कैमरा लगा रहता है और किसी [illegible] के ऊपर से जाते वक्त इसके [illegible] जा सकता है। इसलिए एक [illegible] देश के ऊपर से हवाई जहाजों [illegible] लगाने का अर्थ समझना कुछ [illegible] नहीं है।

*

सिन्ध के चुनाव

सिन्ध के गवर्नर ने [illegible] को तोड़ दिया क्योंकि उनके [illegible] इस एसेम्बली से कोई स्थायी [illegible] नहीं बन सकता। फिर दुबारा [illegible] तैयारियाँ हो रही हैं। [illegible] मुस्लिम लीगी मन्त्री प्रान्त का [illegible] चलायेंगे। ऐसी हालत में [illegible] चुनाव कैसे पक्षपात रहित होंगे? शेष पृष्ठ १० पर

आज आना है उन्हें.....

लेखक, प्रोफेसर 'अंचल' एम० ए०

आज आना है उन्हें काली घटा थम जा!

चाँदनी बरसा चलो आकाश के अन्तर!
चाँद! बदली में छिपो मत व्योम सूना कर,
ज्योतिमय नक्षत्र! तम के पट उठा दो आज,
मत लजाओ तारिकाओ! खोल दो मुख आज,
आज मदमाती नदी—इठला रहे निर्झर,
आज हरियाली बिछाती पंथ पर मर्मर,
आ पपीहे की रटन! प्रतिरोम में रम जा।
बज रहे हैं दूर उनकी बाँसुरी के स्वर,
मैं झरोखे पर खड़ी अभिमान से तन कर,
व्यग्र है प्रणिपात को पर प्राण की लघुता,
कल्पना जाती जहाँ तक—मन उन्हें तकता,
ताप मोचन स्पर्श उनका—ज्योति पावन दृष्टि,
चितवनों से हो चले जैसे उष्ण की वृष्टि,
आज आना है उन्हें जल सृष्टि तू थम जा।
मग्न आँखों की तृषा छकने नहीं आती,
आज पा संवाद उनका फूलती छाती,
रूप अन्तर्दीप्त प्रिय का मर्म भर जाता,
पर न वह बाहर निकल साकार हो पाता,
साध बरसों की—युगों की मोहिनी ज्वाला,
आज तृष्णा की प्रणति में मान मतवाला,
आज थम जा! वृष्टि की ओ स्वामिनी! थम जा।
बीन वे मेरी—विधुर झंकार मैं उनकी,
स्रोत-बिछुड़ी भ्रान्त जीवन धार मैं उनकी,
थक गई होकर विफल असहाय बिछुड़न में,
दूर होकर ज्यों तटी से ऊर्मि क्रन्दन में,
हैं ठिठकते भाव मन के होंठ पर आते,
किन्तु पलकों पर नये सपने बिछे जाते,
[illegible]ती सौदामिनी थम जा!
जाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वामपक्ष की एकता ज़रूरी क्यों ?

नहीं तो फासिस्तवाद का खतरा सामने खड़ा है

लेखक, श्री मन्मथनाथ गुप्त

देश में वामपक्ष के कई राजनैतिक दल कायम हैं और सभी अपने अपने ढंग से राष्ट्र-सेवा कर रहे हैं। इस लेख में प्रसिद्ध वामपक्षी श्री गुप्त ने सभी वामपक्षी दलों की वर्तमान स्थितियों पर प्रकाश डालते हुए यह बतलाया है कि यह अवसर अब आ गया है जब कि उन्हें एकता में संबद्ध हो जाना चाहिए। लेख अत्यन्त सामयिक और विचारपूर्ण है।

हाल में वामपक्ष की एकता के नाम पर जो कुछ हुआ है वह बहुत ही दुःखदायी है क्योंकि उनके अनुसार एकता का जो आदर्श है जो कभी प्राप्त करना था। यह लोग इस विचार के कितने दूर हैं इसका भी एक अर्थपूर्ण तरीके से पता चल गया है। अभी बम्बई में फारवर्ड ब्लाक कांग्रेस समाजवादी दल के नेताओं की जो बातचीत होकर टूट गई, बल्कि एक दूसरे के प्रति जो कटुता पैदा हो गई उससे इस बात की आशंका की और भी पुष्टि होती है।

मैं यहां यह भी स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि हर समय एकता की दुहाई देते रहने की नीयत से मैं यह लेख नहीं लिख रहा हूँ। मैं भी एकता का कायल हूँ, पर मैं यह भी मानता हूँ कि यदि वामपक्ष के दल अलग-अलग ईंट ईंट जोड़कर ईंट की मसजिद बनाते रहेंगे तो निकट-भविष्य में सफलता की उम्मीद नहीं रहेगी। यह बात ठीक है कि कुछ वामपक्षी नेताओं की देश में कमी होती जा रही है, परन्तु क्रान्ति के लिए इस आवभगत का मूल्य कम नहीं करता है। इन स्वागतों से भले ही नेताओं की जनप्रियता बढ़ती हो पर इससे एक alternative leadership अर्थात् वैकल्पिक नेतृत्व की सृष्टि की दिशा में केवल उससे कोई ठोस सहायता नहीं मिलती।

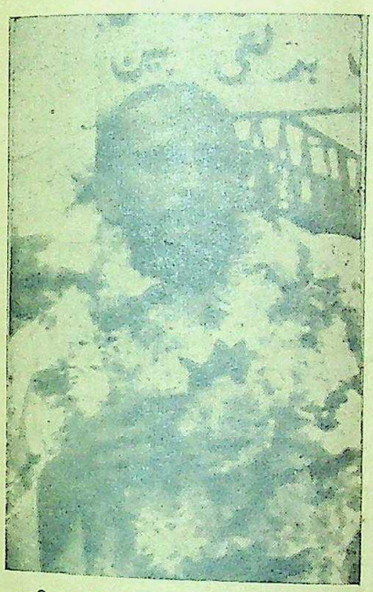

अखिल भारतीय फारवर्ड ब्लाक के प्रमुख नेता श्री कामथ।

यदि हम विश्लेषण करें तो हमें ज्ञात होगा कि ये आन्दोलन कांग्रेस की पुकार पर उठे हुए किसानों के आन्दोलन थे। अब यदि इस तथ्य को समझने पर भी बहुसंख्यक किसान सभाएँ रहें यानी हर एक पार्टी की एक एक किसान-सभा रहे, तो वह तो एक तरह से आत्महत्या ही होगी।

हाँ, हमने यह बतलाया है कि १९२१ आदि में आन्दोलन उठे हुए किसानों के आन्दोलन थे, यह बात एक ही हद तक सत्य है। वह यों कि यह आन्दोलन किसानों के आन्दोलन जरूर थे, यानी इनमें किसानों ने जरूर हिस्सा लिया, पर किसानों ने जो भाग लिया वह वर्ग रूप से नहीं लिया। इस प्रकार इन आन्दोलनों में किसानों का बहुत बड़ा भाग होने पर भी उन्होंने बृहत् जनता के हिस्से के रूप में ही भाग लिया। इससे उनको अवश्य लाभ हुआ, वह लाभ इस अर्थ में हुआ कि उनमें जागृति पैदा हो गई, और उन्होंने एक हद तक जमींदारों के विरुद्ध विद्रोह भी किया। फिर भी वर्ग रूप में भाग लेना दूसरी ही बात है।

किसान सभा दल के प्रमुख नेता श्री इन्दु देव।

इतनी तो बात स्पष्ट है कि कांग्रेस का देश के किसानों पर सभी किसान-सभाओं के सम्मिलित प्रभाव से अधिक प्रभाव है, पर जैसा कि मैंने दिखलाया यह प्रभाव उनको कभी भी वर्ग के रूप में उठने के लिए समर्थ नहीं करेगा। यहीं पर किसान-आन्दोलन में वामपक्षी नेतृत्व तथा वामपक्षी विचारों की जरूरत आ पड़ती है। वामपक्ष का असली कर्त्तव्य यह है कि वह इस दिशा की कमी की पूर्त्ति करे। इस कमी की पूर्त्ति करने के लिए यह जरूरी है कि वह [illegible] कांग्रेस से अलग किसान-स[illegible] संगठन किया जाय। पर यह संगठ[illegible] सफल हो सकता है, जब सब वामपक्षियों का सम्मिलित प्रभाव एक संस्था के जरिये से प्रवाहित हो। नहीं तो पाँच पार्टियों की पाँच किसान-सभाओं से कोई फायदा न होगा।

इस समय जैसी परिस्थिति है, वह बहुत आशाजनक नहीं है। यदि वामपक्ष के नेतागण इस बात को नहीं समझेंगे, या समझकर भी अपनी व्यक्तिगत नेतागिरी के लिए क्रांतिकारी शक्तियों को विच्छिन्न रखेंगे, तो इसमें सन्देह नहीं कि असली जरूरत के समय वे कुछ भी नहीं कर सकेंगे यानी उतनी ही कर सकेंगे जितनी कि दक्षिणपंथी उन्हें करने देंगे। हम और एक बात इस सम्बन्ध में देख लें कि यदि सब वामपक्षी शक्तियाँ मिलकर वर्गयुद्ध की लाइन पर किसानों को संगठित नहीं करेंगी, तो दक्षिणपंथी नेतागण किसानों से अपने काम तो करवा लेंगे, पर किसानों का निजी काम सिद्ध न होगा। यह बहुत खुशी की बात है कि किसान स्वतन्त्रता-संग्राम में उपयोगी सिद्ध होंगे, पर किसानों का जो असली काम है कि पूँजीवाद तथा सामन्तवाद का नाश हो, वह खटाई में पड़ जायगा, और गोरे प्रभुओं की जगह हिन्दुस्तानी प्रभु आकर जम जायँगे।

हम एक बात और भी साफ साफ यह बता देना चाहते हैं कि यदि वामपक्ष की पार्टियाँ सम्मिलित न हो गईं, तो यह हो सकता है कि भारत से अँगरेजों के चले जाने के बाद भी यहाँ पर न केवल पूँजीवाद बल्कि फासिस्तवाद की स्थापना हो। इस समय नारा जरा दब गया है, पर एक दल और एक नेता के रूप में जो नारा कांग्रेस के अन्दर बीच बीच में उठता रहता है, उसमें फासिस्तवाद का बीज बहुत स्पष्ट है। दुनिया का इतिहास हमें यह बतलाता है कि जहाँ मजदूर-आन्दोलन या समाजवादी आन्दोलन इतना कमजोर नहीं होता है कि कुचल दिया जा सके पर इतना तगड़ा नहीं है कि शक्ति पर कब्जा कर सके, वहीं पर फासिस्तवाद का उदय होता है। कांग्रेस के अन्दर कट्टर गांधीवादियों में धीरे धीरे बहुत गरम गरम नारे देकर जिन दलों तथा गुटों की सृष्टि हो रही है, वे आसानी से फासिस्तवादी गुटों में परिणत हो सकते हैं। यदि वामपक्षवालों ने ठीक से एका कायम नहीं किया तो वे यहाँ पर फासिस्तवाद को लाने के लिए जिम्मेदार साबित होंगे, इसमें सन्देह नहीं।

किसानों में तो हम देख चुके कि वस्तुस्थिति क्या है, अब हम मजदूरों की ओर आँख बढ़ायें तो वहाँ वामपक्ष की हालत सम्मिलत रूप से गांधीवादियों से अच्छी होने पर भी असल में उनकी हालत यदि वे अलग अलग रहें, और एक दूसरे के विरुद्ध लड़ें तो कुछ भी नहीं रह जाती। ऐसी अवस्था में जो बात किसानों के सम्बन्ध में कही गई है वही बात मजदूर-आन्दोलन के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। मजदूरों को वर्गरूप में आगे बढ़ाने के लिए यह जरूरी है कि सब वामपक्षी उनमें जाकर सम्मिलित आवाज से कुछ कहें। यदि ऐसा न हो सका तो मजदूर भी पूँजीवाद के विरुद्ध लड़ने के बजाय केवल स्वतंत्रता के लिए अर्थात् विदेशी पूँजीवाद के विरुद्ध लड़कर चुप रह जायँगे। ऐसी [illegible] में [illegible] की बात दूर

इस लेख के लेखक श्री मन्मथनाथ गुप्त।

विगत निर्वाचन में कम्यूनिस्ट पार्टी ने भी, जिसका दावा था कि उसका मजदूरों पर सबसे अधिक प्रभाव है, जिस प्रकार हार खाई, उससे स्पष्ट है कि मजदूर जनता में भी कांग्रेस का प्रभाव सबसे अधिक है। अकसर कम्यूनिस्टों की तो जमानतें ही जब्त हो गईं। कम्यूनिस्ट पार्टी ने चूँकि १९४२ के जमाने में विश्वासघास किया था, इसलिए हम भले ही इस परिणाम से सुखी हों, पर इसमें और भी बातें छिपी हैं, जिन्हें हम नहीं भूल सकते और जो काफी ख़तरनाक हैं।

प्रश्न तो यह है कि जहाँ कम्यूनिस्ट पार्टी हार गई, वहाँ और कोई वामपक्षी पार्टी और यदि किसी को यह शब्द अस्पष्ट मालूम हो तो कहा जाय वर्गयुद्ध में विश्वास रखनेवाली पार्टी जीत सकती थी ? यह कहा जा सकता है कि यह प्रश्न अप्रासंगिक है; परन्तु कुछ गहराई के साथ सोचने पर यह ज्ञात होगा कि यह प्रश्न अप्रासंगिक नहीं है। प्रश्न तो यह है कि मजदूरों में किसका प्रभाव है, किसी पार्टी विशेष का या महात्मा गांधी जी के नाम का या कांग्रेस का ?

कुछ वामपक्षी पार्टियाँ भले ही आज यह दावा करें कि वे बराबर कांग्रेस के साथ रही हैं, भले ही वे कहें वे कम्यूनिस्ट पार्टी की तरह कभी भी कांग्रेस के विरुद्ध नहीं गईं पर यह बात तो सत्य है, इसे कोई भले ही सार्वजनिक रूप से स्वीकार न करे कि आगे चलकर रास्ते भिन्न हो जायँगे और सम्भव है भयङ्कर विरोध हो। प्रश्न यह है कि इस विरोध के समय वे पार्टियाँ कितने आदमियों को अपने साथ ले जा सकेंगी ? यदि वे अपने साथ उस समय बहुसंख्यक को न ले जा पाईं तो इसमें संदेह नहीं कि वे बुरी तरह दबा दी जायेंगी।

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

कांग्रेस समाजवादी दल के नेता श्री जयप्रकाशनारायण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंध का लीगी मन्त्रिमण्डल गया

वर्तमान और भविष्य की राजनीति का एक लेखा-जोखा

लेखक, श्री लक्ष्मीकांत वर्मा

सिंध में लीगी मंत्रि-मंडल समाप्त हो गया और एसेम्बली भंग कर दी गई। अब वहाँ पुनः चुनाव होनेवाला है। इस लेख में लीगी मंत्रि-मंडल, योरोपियन, संयुक्त तथा कांग्रेस दलों की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए यह बतलाया गया है कि भविष्य में यदि स्थिति आज की सी ही रही तो लीग की हार अवश्य होगी। लेख सामयिक है।

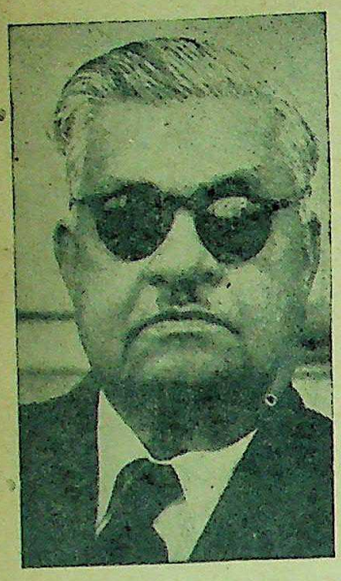

सिंध के प्रधान मंत्री सर हिदायतुल्ला जिनके मंत्रि-मंडल और असेम्बली को गवर्नर ने भंग कर दिया है।

महीनों के लम्बे-चौड़े झगड़े, झंझट, शक्ति और शासन की अनधिकार चेष्टा के पश्चात् सिंध का लीगी मंडल अपने आप मौत के मुँह में समा गया! जनमत के विरुद्ध लड़ते लड़ते, प्रतिक्रियावादी सिद्धांतों के अनुसरणस्वरूप जिन अवसरवादियों के बल पर वहाँ का लीगी मन्त्रिमण्डल खड़ा था उसे समाप्त हो जाना पड़ा। यों तो प्रांतीय गवर्नर सर फ्रांसिस मुडी ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति से प्रयत्न किया था कि वह योरोपियनों के सहयोग से वहाँ के मन्त्रिमंडल को सशक्त बनाये रहें पर जनमत के विरुद्ध जन सत्तात्मक सिद्धांतों की हत्या के आधार पर उसका टिक सकना ही असम्भव था। बुन्देअली खाँ तालपुर की समस्या से लेकर जितने भी अविश्वास के प्रस्ताव अब तक असेम्बली में रखे गये, उन सबकी योजना केवल गवर्नर और योरोपियन सदस्यों की सहायता से ही बचाया जा सका है।

वर्तमान परिस्थिति में लीगी मन्त्रिमंडल का चलाना और भी असंभव था! जी० एम० सैयद ने जो कुछ अपने वक्तव्य में बताया था; उससे पता चलता है कि लीगी मंत्रिमंडल एक गहरी हार अवश्य होगी। यह बात स्पष्टतः सत्य इसलिए और हो जाती है क्योंकि लीग मन्त्रिमंडल के प्रधान मंत्री श्री गुलामहुसेन हिदयतुल्लाह ने स्वयं अपने वक्तव्य और मन्त्रिमंडल के कई सदस्यों के इस्तीफा द्वारा यह स्पष्ट कर दिया था कि आगामी लीगी मंत्रिमंडल का टिकना असम्भव है! स्पीकर श्री शाह के स्तीफा से भी यही पता चलता है कि लीगी मन्त्रिमंडल की हार हो जाती। वस्तुतः लीगी मंत्रिमंडल प्रारंभ से ही कमज़ोर रहा है परन्तु योरोपियन सदस्यों की सहायता से ही वह अपने को अधिक देर तक टिका सकने में सफल बना रहा। इस सम्बन्ध में हो सकता है और निस्सन्देह वर्तमान परिस्थितियों के विवेचनात्मक अध्ययन से यह कहा जा सकता है कि लीगी मन्त्रिमंडल जिस प्रकार से प्रारंभ से चलाया जा रहा था उसके अनुसार उसका अधिक दिन तक टिकना असम्भव था। आँकड़ों की व्याख्या से पता चलता है कि ६० सदस्यों के पूर्ण परिषद् में लीग—२७, कांग्रेस और सैयद—३०, योरोपियन—३ सदस्य थे।

स्पीकर एक लीगी सदस्य थे इसलिए योरोपियन की सहायता से भी मन्त्रिमंडल की मृत्यु आवश्यक थी। स्पीकर को वोट देने का अधिकार नहीं है इसलिए ऐसी परिस्थिति में लीग की सदस्यता—२६ योरोपियन सदस्यों को मिलाकर होती। विरोधी दल में स्पष्टतः ३० वोट होते और लीगी मन्त्रिमंडल को हारना पड़ता। इस दृष्टिकोण से मन्त्रिमंडल से चार व्यक्तियों का स्तीफा और उसके साथ साथ स्पीकर का स्तीफा बड़ा महत्त्व रखता है। जिस एक वोट से जी० एम० सैयद हिदायतुल्लाह मन्त्रिमंडल को हराने की सोच रहे थे स्पीकर के त्यागपत्र से लीग की शक्ति ३० हो जाती थी और सुश्री सिफैमालनी यदि स्पीकर का पद ग्रहण करतीं तो विरोधी दल को एक वोट से हार खानी पड़ती। यही कारण है कि विरोधी दल ने श्री सिफैमालनी को उपस्पीकर शिप से त्यागपत्र दिलवाया।

* * *

इन सब बातों के होते हुए भी श्री हिदायतुल्लाह को यह पूर्ण विश्वास था कि वह गवर्नर की सहायता से अपना मन्त्रिमंडल स्थापित किये रहेंगे। केवल तीन परिस्थितियाँ उत्पन्न हो सकती थीं। हिदायतुल्लाह मन्त्रिमंडल का कायम रहना—असेम्बली के अधिवेशन को स्थगित करने का बहाना। दफा ९३ द्वारा प्रांत का शासन चलाना। मन्त्रिमंडल को खत्म करके फिर से चुनाव करवाना।

अनुमानतः यदि केन्द्र में राष्ट्रीय शासन-व्यवस्था न होती तो स्पष्ट था कि गवर्नर पहली बात को अधिक अच्छा समझते। परन्तु अब उनके लिए धाँधली करना असंभव था। इसीलिए पुनर्निर्वाचन का मत उन्होंने प्रकट किया है। इस प्रकार प्रत्येक प्रजातंत्रात्मक नियमों के विरुद्ध आज तक सिंध में जो वैधानिक कठिनाइयाँ गवर्नर ने उत्पन्न की थीं उससे उन्हें हटना भी पड़ा है। दुःख तो यह है कि ब्रिटिश प्रतिक्रियावादी विचार-धारा अभी भी अपनी प्राचीन परिपाटी से विमुख होना नहीं चाहती। मुस्लिम लीगी मंत्रिमंडल स्थापित होने के समय से लेकर आज तक साम्राज्यवादी सिद्धान्तों के अनुसार गवर्नर मुडी ने वहाँ की वैधानिक बागडोर अपने हाथ में रखने की कोशिश की है। लीग और गवर्नर गुटबन्दी में प्रांत की जनसत्तात्मक प्रगतिशील शक्तियों को दबाने की चेष्टा की गई है। कांग्रेस और अन्य पार्टियों की संयुक्त पार्टी के प्रत्येक वैधानिक व्यवहारों को अपनी विशेष शक्ति द्व[illegible] हटाने का प्रयत्न [illegible] जाय समय लीग

दिया गया है कि वह अपनी सुविधा के अनुसार ही काम करे।

* * *

प्रश्न यह उठता है कि इस प्रकार के व्यवहार का उत्तरदायित्व किस पर है? निर्विवाद रूप से यह बात सिद्ध हो जाती है कि इस प्रकार के व्यवहार का उत्तरदायित्व उस ब्रिटिश साम्राज्यवादी प्रतिक्रियाशील गवर्नर के ऊपर है जो अपने वैधानिक शक्तियों का दुरुपयोग कर रहे हैं। वहाँ के मुस्लिम लीगी मंत्रिमंडल में स्वयं इतनी शक्ति नहीं है कि वह विरोध का सामना कर सके। इसके पहले बुन्देअली खाँ के मामले में मुस्लिम लोग ने जिस निकृष्टता का परिचय दिया है उससे भी साफ पता चलता है कि गवर्नर की सहायता और आशीर्वाद के ही सहारे यह समस्त योजना चल रही है। बुन्देअली खाँ को मन्त्रिपद पर नियुक्त करते समय इस बात का प्रमाण मिल जाता है कि वहाँ का मंत्रिमंडल केवल कुछ चमगीदड़ों के ही सहारे चल सकता है। उसमें स्वयं इतनी शक्ति नहीं है कि वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके।

* * *

सिंध की वर्तमान परिस्थिति का उत्तरदायित्व वहाँ के योरोपियन दल के ऊपर विशेष रूप से है। उन्होंने अपने अधिकार का दुरुपयोग किया है और इस रूप से इस बात का भी परिचय दिया है कि संसार के परिवर्तन का अब भी उन पर असर नहीं पड़ा है। यदि देखा जाये तो सिंध की समस्या उस महान् योजना की प्रतिछाया है जो आजकल लीग और टोरी दल के अग्रगण्य नेता श्री विन्स्टन चर्चिल के बीच चल रहा है। इसमें सन्देह नहीं कि इसी से देश की प्रति-

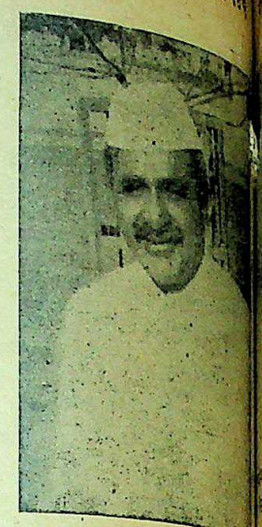

सिंध प्रांत के सुप्रसिद्ध कांग्रेस नेता श्री आर० के० सिधवा।

क्रियाशील ब्रिटिश नौकरशाही को [illegible] सीमित दायरे में मनमानी करने का [illegible] भी हो रहा है। ऐसा साहस दो कारणों [illegible] हो सकता है—पहला यह कि मुस्लिम [illegible] का सहयोग—दूसरा यह कि साम्राज्यवा[illegible] चुने हुए अँगरेज अफसरों के अधिक[illegible] विचार। जहाँ तक इस सम्बन्ध में [illegible] साहब का सम्बन्ध है वह चर्चिल विच[illegible] धारा के पोषक अवश्य ही हैं। [illegible] शासनकाल में मिस्टर मुडी की मनोवृत्ति [illegible] कटु अनुभव युक्तप्रांतवालों को है जो [illegible] कल सिंधवाले स्वयं अनुभव कर रहे [illegible] सिंध में वहाँ के गवर्नर ने दो चीजों [illegible] लाभ उठाया है—पहली चीज तो [illegible] को कठपुतली बनाने का अवसर [illegible] दूसरे योरोपियन दल को क्या में करने [illegible] साहस। इन्हीं दो कारणों से वहाँ [illegible] स्थिति ऐसी हुई है।

* * *

अंत में बात सोचने की यह है कि सिंध का भविष्य क्या होगा? यदि [illegible] से चुनाव किया गया तो उसमें सैयद [illegible] को सफलता मिलेगी या हिदायतुल्ला को? इस सम्बन्ध में तो कुछ कहा नहीं जा सकता परन्तु वर्तमान परिस्थितियों [illegible] देखते हुए इसमें सन्देह भी नहीं किया जा सकता कि जी० एम० सैयद की [illegible] का वहाँ की प्रगतिशील शक्तियों [illegible] क्योंकि वर्तमान समय में नौकरशाही [illegible] बल पर न तो वहाँ के गवर्नर और [illegible] के मुस्लिम लीग के सदस्य ही [illegible] सकेंगे। आशा इसी बात की की [illegible] कि लीग को सफलता नहीं मिल [illegible]

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने नाम पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए कीमत १ डिब्बा ३।–) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग। यदि आप की गुप्तेन्द्री में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है कीमत १ शीशी ३–), दो शीशी ५॥–) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग।

विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यप्रांत का विभाजन किस लिए?

महाकोशल—हिन्दी और नागपुर—मराठी प्रान्तों की एकता से ही जनता का हित है

लेखक, श्री रामगोपाल माहेश्वरी बी० ए०, एल-एल० बी०

मध्यप्रान्त की आज की एक प्रधान समस्या महाकोशल-हिन्दी और नागपुर-मराठी दो भागों में विभाजन की है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने इसी प्रश्न पर व्यापक प्रकाश डाला है। लेखक ने दोनों प्रान्तों की सांस्कृतिक, भाषा-सम्बन्धी, आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति का वर्णन करते हुए यह बतलाया है कि जनता का कल्याण प्रान्त के पृथक्करण में नहीं, वरन् एकता में ही है। लेख अत्यन्त सुन्दर, सामयिक और विचारणीय है।

मराठी भाषाओं के नाम पर हम अन्य प्रान्तों की ओर खिंचते जा रहे हैं जिनके सहारे के बिना कि सम्भवतः हिन्दी मराठी दोनों प्रदेश स्व-निर्भर नहीं हो सकते। नागपुर-विदर्भ को महाराष्ट्र की ओर खिंचने का प्रयत्न हो रहा है और महाकोशल का भाग्य शायद युक्तप्रान्त पर निर्भर हो जाय, हालाँकि अभी महाकोशल की माँग अपने विस्तार के रूप में दिखाई पड़ रही है।

❀ ❀ ❀

उक्त प्रवृत्तियों के लिए भाषाओं की एकता के सिद्धान्त की बात अपनाई जा रही है। शासन का कोई घटक बनाने के लिए भौगोलिक स्थिति, शासन की क्षमता या प्रभाव भाषा व संस्कृति आदि का विचार किया जाता है भौगोलिक स्थिति का सम्बन्ध प्रान्त के आर्थिक साधनों से रहता है। उदाहरणार्थ विन्ध्याचल की घाटी के किसी जल-प्रपात से विद्युत्-उत्पादन की योजना बनानी हो तो प्रश्न यह उठता है कि वह किस प्रदेश की उत्तम सेवा के लिए उसका उपयोग होगा। इसी तरह की अन्य कई बातें हो सकती हैं जिनका एक विशेष प्रभाव पड़े। भौगोलिक दृष्टि से मध्यप्रान्त विदर्भ का वर्तमान स्वरूप एक स्वाभाविक व उपयुक्त घटक है इसमें इन्कार नहीं किया जा सकता, इसी प्रकार शासन की क्षमता या प्रभाव की दृष्टि से भी, वर्तमान, सीमाएँ बिलकुल उपयुक्त हैं। नागपुर से चारों ओर की सीमाएँ करीब करीब समानान्तर हैं, यहाँ के शासन-सूत्र-धार प्रान्त की स्थिति से बहुत निकटता से परिचित रह सकते हैं और जनता भी शासन को अपने से बहुत नजदीक व उनसे सीधा सम्पर्क अनुभव कर सकती है। इस प्रान्त का अन्य प्रान्तों के साथ संयोग इस लाभ से जनता को वंचित कर देगा, इसमें सन्देह नहीं है।

* * *

इस विश्लेषण से केवल एक ही बात पृथक्करण के पक्ष में रह जाती है और वह है भाषाओं की भिन्नता। एक ही भाषा के प्रदेश पर एक शासन कुछ दृष्टियों से उपयुक्त रहता है; भाषा की एकता श[illegible] सुगमता प्रदान करती है और भाषा[illegible] भाषा से सम्बन्धित संस्कृति को भ[illegible] मिलता है। इसी आधार पर का[illegible] भाषा के आधार पर प्रान्तों के विभाजन का सिद्धान्त मान्य किया है। पृथक्करण की माँग के लिए यह एक सबल कारण है और उस पर पर्याप्त गम्भीरता में विचार भी किया जाना चाहिए। तथापि भाषा के आधार पर प्रान्त-रचना प्रथम दो बातों अर्थात् भौगोलिक व शासन क्षमता, इन सिद्धान्तों का महत्त्व कम नहीं करती और न इतिहास की पृष्ठ-भूमि को ही एकदम भुलाया जा सकता है जिसका असर जनता की मनोभावना पर पड़ता हो।

* * *

मराठी व हिन्दी इन दो भाषाओं की दृष्टि से इस प्रान्त के दो भाग होते हैं। जो शासन के स्वतन्त्र घटक बन सकते हैं या उसी भाषाओं के बड़े प्रदेशों में अपना अस्तित्व मिला सकते हैं। इस प्रान्त के कई मराठी भाषी विद्वानों ने हिन्दी के वेष को स्वरूप व अलंकार प्रदान किया है आज भी हमारे प्रान्त में कई मराठी नेता उतनी ही अच्छी हिन्दी बोलते हैं जिस पर एक हिन्दी भाषी अभिमान कर सकता है। अतः हिन्दी-मराठी भाषाएँ इस प्रान्त में ऐसी भिन्न नहीं हैं कि उनको इस प्रान्त के शासन या प्रगति में बाधक माना जाय। इसके अलावा इस प्रान्त में हिन्दी-मराठी दोनों मुख्य भाषाएँ हैं जिन्हें लाखों की संख्या में लोग बोलते हैं कोई एक भाषा यदि अल्प-संख्या में कुछ लोगों की भाषा होती तो उसकी प्रगति रुक सकती थी; परन्तु इस प्रान्त में इन दोनों भाषाओं में से किसी भी भाषा के स्वाभाविक विकास, प्रयोग या प्रगति में बाधा नहीं पहुँचाती। शासनतन्त्र दोनों भाषाओं में स्थानिक सुविधा के अनुसार चल सकता है जैसा कि अभी चल रहा है और दोनों ही भाषाएँ इस प्रदेश में स्वतन्त्र रूप से प्रगति कर सकती हैं।

यह मान लें कि दोनों प्रदेशों का संयुक्त रूप आखिर संयुक्त ही है और इस कारण शायद पार्थक्य दोनों के हित में होगा, तथापि यह प्रश्न विचारणीय है कि ये प्रदेश स्वतन्त्र प्रान्तों का रूप धारण करें या अन्य बड़े [illegible] में मिल जायँ। [illegible] में मिलाकर [illegible] एक धारा मराठी प्रदेश में इधर चल रही है। महाकोशल की प्रवृत्ति भाषा की समता के आधार पर युक्तप्रान्त में मिलने की नहीं दिखाई देती। बल्कि वह युक्त-प्रान्त के बुन्देलखंड के दो जिलों को अपने में मिलाकर बृहत् महाकोशल का रूप धारण करना चाहता है। महाकोशल युक्त-प्रान्त व मध्यभारत की रियासतों का जो मुल्क अपने में मिलाना चाहता है, उसे मिला देने से जबलपुर, बुन्देलखंड, निमाड़, छत्तीसगढ़ इन प्रदेशों का केन्द्रीय स्थान बन जाता है जो शासन की दृष्टि से उपयुक्त होगा, हालाँकि भौगोलिक स्थिति इस प्रान्त रचना के लिए हमें उपयुक्त नहीं मालूम होती। तथापि महाकोशल के नये स्वरूप में उसकी ऐतिहासिक पार्श्व-भूमि कायम रहेगी और वह उसमें एकता व आत्म-गौरव का संचार करेगी।

* * *

इधर मध्यप्रान्त का मराठी प्रदेश यदि महाराष्ट्र में मिला दिया गया तो नागपुर व विदर्भ की भूमि शासन की दृष्टि से परमुखापेक्षी बन जायगी। बम्बई और पूना जैसे सांस्कृतिक व्यापारिक व विशाल स्थान स्वाभाविकतः ही 'संयुक्त महाराष्ट्र व गतिविधि का नियंत्रण व संचालन करेंगे। ये स्थान यदि शासन का केन्द्र रहें और यह निश्चित है कि इनमें से कोई एक स्थान ही संयुक्त महाराष्ट्र की राजधानी का गौरव प्राप्त करेगा, तो विदर्भ व नागपुर की जनता का शासन के साथ निकट-सम्पर्क नहीं रहेगा जो कि सुशासन के लिए अत्यन्त आवश्यक है। भावना की दृष्टि से भी विदर्भ नागपुर की जनता जिसके पीछे अपनी ऐतिहासिक परम्परा है, दूर से संचालित शासन के प्रति वह अपनापन, गौरव व संतोष अनुभव न करेगी, जो अपने स्वतन्त्र शासन से उसे मिल सकता है।

* * *

एक भाषा के नाम पर गोवा से गोंदिया तक ८०० मील लम्बे प्रदेश को शासन का एक घटक बनाना हमें व्यवहार्य व प्रभावी कार्य नहीं दिखाई देता। हिन्दी भाषा के नाम पर यदि मेरठ से जगन्नाथपुरी तक एक शासन घटक बनाया जाय, तो वह हास्यास्पद होगा। जिस तरह हिन्दी-भाषी प्रदेश के भावी राज्य-विधान में पाँच या छः प्रान्त होंगे। उसी प्रकार यदि भाषा के सिद्धान्त के आधार पर प्रान्तों का पुनर्विभाजन अभीष्ट ही हो, तो मराठी प्रदेश में दो प्रान्तों का आविर्भाव होना चाहिए। एक गोवा से धुलिया तक और दूसरा जलगाँव से गोंदिया तक। एक की राजधानी पूना या बम्बई रहे और दूसरे की नागपुर या अमरावती। अन्य कोई योजना उत्तम व स्थायी शासन तन्त्र स्थापित नहीं कर सकती, यह हमारी विचारपूर्ण सम्मति है।

* * *

हमारा अभी भी यह ख्याल है कि मध्यप्रदेश की वर्त्तमान सीमाएँ ही शासन का सबसे उत्तम घटक हैं। उनमें केवल थोड़े बहुत परिवर्तनों की गुंजाइश है। मध्यप्रान्त का आधुनिक इतिहास जिन कर्णधारों ने बनाया है उनका वर्त्तमान व्यापक व्यक्तित्व बना रहे और संकीर्णता के बजाय प्रान्त में आदर्शोन्मुख प्रवृत्ति जागृत हो। यही हमें इस प्रदेश के सर्वोच्च

शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

मध्य-प्रांत के प्रांतीय कांग्रेसी सरकार के प्रधान मन्त्री पंडित रविशंकर शुक्ल।

* * *

मध्य-प्रांतीय कांग्रेस मंत्रि-मण्डल के सूचना-विभाग के मन्त्री पण्डित द्वारिका-प्रसाद मिश्र।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् ४२ के दो किसान नेता

किसानों और मजदूरों के लिए त्याग और बलिदान करनेवाले

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

सन् ४२ के आन्दोलन में राष्ट्र के कितने ही किसानों और मजदूरों ने अपना बलिदान दिया और एक महान् संकट का सामना किया, इससे जनता वास्तव में अनभिज्ञ है। व्यक्ति-पूजा के इस युग में कितने ही त्यागी, तपस्वी और बलिदानी आत्माओं का इतिहास लोप होता जा रहा है, किन्तु वायु के सामने किसी की सुनता कौन है? इस लेख में श्री विद्यार्थी जी ने इसी प्रकार के दो किसान-त्यागियों का वर्णन किया है जो जानकारी से पूर्ण और पठनीय है।

इस लेख के लेखक श्री प्रभुदयाल

ये दोनों ठेठ देहाती किसान हैं। गाँवों में ही रहते हैं। मामूली पढ़े-लिखे हैं। अपना नाम मुश्किल से लिख सकते हैं। कुदाली चलाते हैं। घास काटते हैं। साधारण जीवन व्यतीत करते हैं। किसानों के बीच में रहते हैं। किसी तरह का व्यसन नहीं। इन लोगों की उम्र लगभग ४०-४५ की होगी। व्याख्यान देना नहीं जानते। लेख कैसे लिख सकते हैं? बड़े शहरों से आमद-रफ़ नहीं। किसी बड़े शहर का दर्शन भी तो नहीं किया है। बड़े बड़े नेताओं से बातें भी नहीं हुई हैं। राज नैपाल की सीमा से सटे हैं। पूर्वी यू० पी० जिला बस्ती के निवासी हैं। दुखी जनता में रहते हैं। जल्लाद जमींदारों के घेरों में हैं। किसान-परिवार के बेटे हैं। प्रकृति से सब कुछ पढ़ा है।

स्वराज्य तो असल में किसानों-मजदूरों को ही चाहिए। वे ही समाज में सबसे मुसीबत में हैं। दुःखों में अपनी जिन्दगी काट रहे हैं। वही असली त्यागी तपस्वी और दरिद्रनारायण हैं। किसी चीज की सुविधा नहीं। मुसीबत के सारे बादल उन पर भँडराते और बरसते हैं। बिजली चमकती है। तूफान आता है। पुलिस, जमींदार, सेठ-साहूकार सब उन पर अत्याचार करते हैं। वह स्वराज्य की आशा लगाये जिन्दा हैं—और उस दिन की प्रतीक्षा में हैं जब फिर सुख की जिन्दगी बिता सकेंगे। स्वराज्य के लिए किसानों मजदूरों को अपनी जिन्दगी से हाथ धोना पड़ा है, जिनका नाम आज किसी को मालूम ही नहीं। देहाती स्वराज्य के मैदान में आज से नहीं आधी सदी से संग्राम कर रहे हैं। बड़ी से बड़ी कुर्बानी किसानों और मजदूरों ने ही की है। यह दोनों नौजवान किसान १९२० से आजादी के संग्राम में जूझ रहे हैं। हर बार के आन्दोलनों में जेल गये हैं।

* * *

ठाकुर हुबराजसिंह ने देहातों में नव जागृति फूँकी है। इन्हीं लोगों ने तपस्या की है। आज कांग्रेस का चारों तरफ बोलबाला है। सन् १९२० में वहाँ के किसान इन्हें पागल कहते थे और मजाक उड़ाते थे। इन्हें बहुत से लोग समझाते थे कि अँगरेजों से नाहक क्यों छेड़-छाड़ कर रहे हो? वे कुचल देंगे। चटनी बनाकर खा जायेंगे। उनके राज में कभी सूरज डूबता नहीं। इतनी बड़ी शक्ति से मूर्खों की तरह क्यों लड़ते हो। जमींदारों से क्यों झगड़ा करते हो? चुपचाप खेती करो। अपने बच्चों का पालन करो। शान्ति से जिन्दगी व्यतीत करो। जैसे सारे किसान रहते हैं उसी तरह रहो। हवाई किले क्यों बना रहे हो? नाहक जेल जाकर और मार खाकर क्या लाभ उठा सकते हो? हर तरह से लोगों ने इन लोगों को समझाया। लेकिन हजारों विरोधियों के बीच में भी अपने सिद्धान्त से ये कभी विचलित नहीं हुए। आगे बढ़ते गये। हिम्मत नहीं हारे। लगातार २६ वर्ष से युद्ध कर रहे हैं। गाँव गाँव और घर घर कांग्रेस और आजादी का सन्देश पहुँचाया। गाँवों में कांग्रेस के पदों का क्या महत्त्व? किसानों में पदों के लिए कोई संघर्ष नहीं। आपस में द्वन्द्व नहीं। गाँवों में पैदल घूमते हैं। मैंने स्वयं देखा है पैरों के तलुवे चलते चलते कट गये हैं। रात में काम करते हैं। कड़ी धूप में इस गाँव से उस गाँव में चलते हैं। किसानों का संगठन करते हैं। स्वराज्य की बात समझाते हैं। गाँवों का महत्त्व बताते हैं।

गाँववालों को जब तक प्रत्यक्ष किसी चीज का लाभ नहीं होता है तब तक वे किसी की बात नहीं सुनते। सन्देह का वातावरण रहता है। किसानों में काम करना हँसी-खेल नहीं। यह कहना आसान है—"हम किसानों के सेवक हैं, हितैषी हैं और रहनुमा।" मुझे इन शब्दों में आडम्बर दिखाई देता है। देश के कितने पढ़े-लिखे और समझदार व्यक्ति गाँवों में जाकर काम करते हैं? उनकी रात-दिन की उलझनों को सुलझाते हैं? देहातों में जितना काम हुआ है और उनमें जो स्वराज्य की भूख जाग्रत हुई है वह ठेठ देहाती किसान कार्यकर्ताओं के एड़ी-चोटी के परिश्रम का फल है। सन् १९३० और सन् १९३२ में इन बहादुर किसानों ने भूखे-प्यासे रहकर देहातों में काम किया है। भूखों रहकर गाँवों में कांग्रेस का काम करते थे। सन् १९३० में आज की तरह गाँवों में जागृति नहीं थी। जमींदारों और पुलिस ने वहाँ उत्पात मचा रखा था 'गांधी टोपी' लगाने और कांग्रेस जिन्दाबाद के नारों पर स्वयंसेवक पीटे जाते थे।

मैंने ठाकुर हुबराजसिंह जी से एक दिन पूछा—"आपको कौन-कौन-सी कठिनाइयाँ उठानी पड़ी हैं?"

ठाकुर साहब ने कहा—"मेरी कठिनाइयों के बारे में क्या पूछते हो। मेरा मजाक करते हो। किसानों का जन्म ही मुसीबतों में होता है और वे अन्त में मुसीबतों की गोद में अनन्तकाल के लिए सो जाते हैं। मैं सन् १९२० से कांग्रेस का काम कर रहा हूँ। सैकड़ों मुसीबतों को झेला है। भूखों मर रहा हूँ। गाँव, समाज और परिवार की फटकार सुनी है। किसानी का काम ठीक न कर सकने के कारण बच्चे भूखों मरे हैं। घर की आर्थिक हालत खराब रही है। जेल चले जाने के बाद घर की देख-भाल करनेवाला कोई नहीं रहा। कुनबे की हालत खराब हो गई। छूतछात का परहेज न करने से कुटुम्बी बहिष्कार करते हैं। गाँव के लोग नीच समझते हैं। गाँवों में हर तरह की रुकावट है। लोग पुरानी रूढ़ियों में जकड़े हैं। जरा-सी सुधार की बातों पर भड़क जाते हैं। मेरे हाथ का पानी पीने तक में हिचकने लगते हैं। मैं तो छोटे से बड़े तक को बराबर मानता हूँ। किसी से घृणा नहीं करता। चमार, पासी और भंगी भी मेरे भाई हैं। उनके [illegible] उठता-बैठता [illegible] करता हूँ [illegible] जाय।

फिर मैंने पूछा—"क्या आपकी बातों को देहातवाले मानते हैं?"

उन्होंने कहा—"अगर देहातियों का कुछ भी आर्थिक लाभ मेरे हाथ से हो तो वह खूब मानते हैं। बातों पर ध्यान देते हैं। जहाँ कहूँ वहाँ चलकर काम करने के लिए तैयार रहते हैं। उनके साथ प्रत्यक्ष जीवन-संग्राम करना पड़ता है। मैंने सैकड़ों किसानों का आर्थिक प्रश्न लेकर जमींदारों से संघर्ष किया है। वैर मोल लिया है। जमींदारों का कोप-भाजन बना हूँ। जीवन से हाथ धोने तक की नौबत आई है। पुलिस के अदना आदमियों ने गालियाँ दी हैं और मारा है। सन् १९३२ में अमन सभावालों ने हम लोगों को बहुत पीटा है। वह हमको मिटा देने पर तुल गये थे। घर जला दिये गये। रास्ता चलना बन्द कर दिया। घर का सामान लुटवा लिया करते थे। जरा जरा सी बात पर तूफान खड़ा कर देते थे।"

सन् १९४२ में पूर्वी युक्तप्रान्त में क्रान्ति की ज्वाला धधक उठी थी। बस्ती जिले में बहुत जोरदार क्रान्ति हुई थी। देहातियों ने सारे तार के खम्भों को तोड़ डाला था। बड़ी बड़ी [illegible] सारा काम वहाँ के देशभक्तों [illegible] सरकारी आवागमन रुक गया था। [illegible] में स्वराज्य हो गया था। [illegible] चारियों के होश-हवास उड़ गये थे।

* *

लेकिन सरकार फिर [illegible] ताकत आ गई। फौज बुला [illegible] सरकारी पुलिस और वहाँ के [illegible] हो गये। सबने मिलकर [illegible] अत्याचार किया। चुन-चुन [illegible] स्वयंसेवकों को जेलों में [illegible] मारते मारते बेदम कर दिया [illegible] बाँसी रियासत के सिपाही [illegible] थे। रास्ता चलनेवालों को [illegible]

शेष पृष्ठ [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह

लेखक, श्री मदनमोहन खंडूरी, बी० ए०

चीनी प्रजातन्त्र की रक्षा के युद्ध में कितनी ही नारियों ने युद्ध-भूमि में सेवा-शुश्रूषा का पवित्र कार्य किया था। मा-ला-पेन भी उन्हीं में से एक थी। कहानी साधारण है किन्तु राष्ट्र के लिए सेवा और जीवन के लिए वैवाहिक भावनाओं का अच्छा चित्रण किया गया है, जो पठनीय है।

था और वह 'हॉनगूही' में अपनी सुन्दर 'मा-ला-पेन' को ब्याहने आया था।

वह चाहता था कि उसकी रानी ब्याह के बाद अपना नर्सिंग पेशा छोड़ दे—"मैं तुम्हें खतरे के मुँह में चौबीसों घंटे नहीं देख सकता कि अपने को युद्ध की भीषण लपटों में अर्पित करो। मेरी पत्नी होने पर तुझे ऐसे कार्य करने की आवश्यकता नहीं।"

"कोई जरूरत नहीं?" 'मा-ला-पेन' की भवें धीरे से वर्तुलाकार ऊपर घूम गईं। "सारे संसार में, असंख्य लोग अपना सर्वस्व

मा-ला-पेन ने कहा—मैं अस्पताल न छोड़ूगी।

अर्पित कर रहे हैं"; मृत्यु का मुकाबिला कर रहे हैं और प्रसन्नता के साथ अभिमान-सहित कर्तव्य भी रक्षा के लिए प्राण दे रहे हैं, मैं नारी हूँ, और चूँकि नारी हूँ इसीलिए नहीं लड़ सकती? लेकिन मैं अपनी मातृ-भूमि की सेवा कर सकती हूँ, उन माँ के वीर सैनिकों की अपनी वाणी से सहायता कर सकती हूँ। यह कुछ भी सेवा नहीं है। मैं जानती हूँ परन्तु जो कुछ है यही और इतनी ही कर सकती हूँ। क्या तुम मुझे मेरे इस कर्तव्य से वंचित रखोगे? क्या तुम मुझे जीवित और प्रसन्न समझोगे जब हजारों मरते और कष्ट भोगते रहेंगे?"

पति की आँखें लाल थीं जैसे उसने मा-ला-पेन से कहा, "मैं तुम पर अभिमान करता हूँ और एक दिन हमारा देश भी तुम पर अभिमान करेगा।"

"ओ मा-ला-पेन क्या तुम्हें प्र... हो रही है?" युवती के चेहरे पर...

"ओह! तो हमें दिखलाओ न ..."

अपनी आलमारी से मा-ला-पेन ने नीले सुन्दर रेशम का गाउन, सिलकन जैकिट, नये सलीपर और एक सुन्दर नीले फूलों से कढ़ा रूमाल निकाला।

"मेरी माँ ने अपने हाथों ये फूल मेरे लिए बनाये हैं। मुझे दुःख है कि मेरी माँ मुझे इन कपड़ों में देखने, समय पर यहाँ न आ सकेगी। लड़ाई का वक्त है न... .....। और....."

"ये बहुत सुन्दर बन पड़े हैं। और तुम...कितनी सुन्दर लगोगी !!! ओह; बहुत सुन्दर!

मा-ला-पेन हँस पड़ी, उसकी हँसी में आनन्द था।

* * *

लोग मुँह-हाथ धो चुकने के पश्चात् सायंकाल की क्रीड़ा के लिए तैयार ही थे कि महान् भोंपू की आवाज ने जापानी ...ों के उड़ने की सूचना दी।

...र ...और स्ट्रैचरवाले

सभी मरीजों की सेवा में तत्पर एक साथ चलने लगे। घुमाने-फिराने योग्य रोगियों को पेड़ के नीचे खाइयों में रखा गया; दूसरे धीरे से भूमि पर रख दिये गये। उनके बिस्तरों के नीचे ही.....उनकी अधिक से अधिक सेवा हो सकती थी; परन्तु कुछ एक ऐसे भी थे जो किसी प्रकार हिलाये भी नहीं जा सकते। उनकी दशा उन्हें जैसी की तैसी ही रहने को थी। और इस वार्ड में मा-ला-पेन ही मैट्रन थी।

"मा-ला-पेन तुम खाइयों के अन्दर क्यों नहीं चली जाती हो; तुम्हें विज्ञप्ति का खयाल है—स्टाफ को अपने को खतरे में नहीं डालना है क्योंकि उन्हीं पर कई मरीज निर्भर हैं।" एक डाक्टर ने कहा!

"लेकिन मैं उन्हें कैसे छोड़ दूँ?" लड़की का कण्ठ रुद्ध था। वे इतने अकेले.....और घबड़ाये मौत की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

मैट्रन की आँखें कमरे को सींच रही थीं।

"अच्छा; मा-ला-पेन जैसी तुम्हारी इच्छा हो करो।" उसने कहा।

युवती नर्स कमरे में घूमती रही, जैसे वह अपने कोमल कण्ठ से मधुर स्वर धीरे-धीरे अलापने लगी.....सारी कृतज्ञ आँखें उसकी ओर टकटकी लगाये थीं। .....

जापानी बमवर्षों की भीषण ध्वनि निकट ही निकट बढ़ती चली आ रही थी, इस ध्वनि में भयंकरता थी, संकट की अवश्यम्भावी सूचना थी। स्टाफ, रोगी घुटनों के बल ट्रेंचों के अन्दर चुपचाप, खामोशी के साथ दुख भोगते थे क्योंकि इन्तजार की घड़ी—बम्बारी से भी दुखप्रद होती है। धड़धड़ाहट निकट चली आती थी।....वे ठीक सिर के ऊपर थे। खाइयों में वे साँस न लेते थे, एक दूसरे के निकट-तम चिपकते-सिमटते चले जाते थे।

और अब, बम गिरने लगे।.....

* * *

आज मा-ला-पेन के ब्याह का दिन था। वह अति सुन्दर, आसमानी रेशमी गॉन जैकिट, नये स्लीपर और पीले रंग कढ़े फूलों का स्कार्ट पहने थी जिसे उसकी माँ ने अपने हाथों से इस अवसर के लिए तैयार किया था। दुलहन की कोमल उँगलियाँ सुन्दर फूलों के गुलदस्ते को छाती के निकट पकड़े थीं। वह अति भोली, आकृष्ट, मनभावनी लगती; सुन्दर सिर के बालों का गुच्छा उससे पीले मुखाकृति पर मँडरा रहा था।

उसका दुलहा, युवक लैफ्टिनेंट उसको देख रहा था, आँसुओं को छिपाना कठिन मालूम दे रहा था। वह कुछ अद्भुत, पवित्र वस्तु अपने हाथों में लिये था।

पादरी ने अपनी मंत्रों की पोथी खोली। उसने पहले मा-ला-पेन की ओर देखा, जी भर देखा, फिर उसके पति की ओर। उसकी आँखों में ज्ञान था, वे समझ रही थीं और उसमें प्रमोद था।

एक शान्ति की साँस उसने छोड़ी और तब मंगल-पाठ पढ़ने लगा।... आज मा-ला-पेन की शादी होती!!*

*एक चीनी कहानी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य और व्यायाम

प्रान्त में बीमारियों का प्रकोप

गवर्नरी शासन के समय प्रांत का स्वास्थ्य

इधर युक्तप्रान्तीय सरकार की सन् १९४५ की रिपोर्ट अभी हाल में प्रकाशित हुई है जिससे प्रांतीय स्वास्थ्य के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है। सन् १९४५ ईसवी में प्रान्त का स्वास्थ्य बहुत ही खराब रहा है। सन् १९३९ में कांग्रेस-मन्त्रिमंडल के इस्तीफा देने के पश्चात् प्रान्त का शासन सलाहकारों की एक समिति से चलता था। सलाहकारों को प्रान्त की दशा अथवा उन्नति से क्या मतलब! उन्हें ऊँची गद्दी, ऊँची तनख्वाहें और ऊँची पदवियाँ चाहिए। उनके शासनकाल में युद्ध का बोल-बाला था। सन् १९४५ तक प्रान्तीय सरकार की गद्दियों पर यही सलाहकार साहबान विराजमान थे। सलाहकारी शासन-काल के अंतिम वर्ष का जो चित्र सामने आया है वह कितना मार्मिक और हृदय-द्रावक है वह निम्नांकित विवरण से प्रगट हो जाता है।

सन् १९४५ में हैजे और चेचक के प्रकोप से जितनी जन-हानि हुई थी उतनी विगत पाँच वर्षों की औसत में नहीं हुई। हैजे से सन् १९४५ में ७७३४५ और चेचक से २२१२८ व्यक्तियों की मृत्यु हुई है। जब कि पिछले वर्ष सन् १९४४ में हैजे से ४०२९१ और चेचक से १०,०६६ व्यक्तियों की मृत्यु हुई थी। इन आँकड़ों को देखने से स्पष्ट प्रकट हो जाता है कि सन् १९४५ का वर्ष जनता के लिए कितना अनिष्टकारी था। यह तो मृत्यु-संख्या है। पर जिनको हैजे की सुई लगाई गई है उनकी संख्या भी कम नहीं है। तैंतीस लाख तिहत्तर हजार छः सौ चौआलीस। यह संख्या या तो बीमारों की रही या बीमारी से बचाने के लिए सुई लगाई गई है। तात्पर्य यह कि सन् १९४५ का वर्ष प्रान्त में हैजे की बीमारी की दृष्टि से बहुत ही बुरा रहा।

मलेरिया की बीमारी का प्रकोप गत वर्षों की अपेक्षा सन् १९४५ में कम रहा। इसका प्रकोप सन् १९४३ में २८ जिलों और सन् १९४४ में १७ जिलों में अधिक था। परन्तु इस वर्ष केवल १२ जिलों ही तक सीमित रहा। विशेष बात तो यह रही कि पूर्वी जिले जो मलेरिया के केन्द्र कहे जाते थे उनमें कम, पश्चिमी जिले जो मलेरिया से बहुत कुछ अछूते रहते थे इसके शिकार रहे हैं। प्लेग से भी इस वर्ष गत वर्ष की अपेक्षा कम मृत्यु हुई है। सन् १९४४ में १५,४५४ और इस वर्ष १४,०२४ मृत्यु हुई, विगत पाँच वर्षों की औसत मृत्यु ६,५४५ प्लेग से रही है। इससे इस वर्ष भी प्लेग की बीमारी में सुधार नहीं कहा जा सकता।

सरकार ने प्रान्त में अस्पतालों के अभाव का अनुभव किया है। इन संक्रामक बीमारियों से बचने के लिए प्रांत के ग्रामीण क्षेत्रों में, जहाँ की जन-संख्या नगरों की अपेक्षा ढाई गुनी है अस्पताल की संख्या नहीं के बराबर है। बनारस जिले के प्लेग-पीड़ित क्षेत्रों में केवल एक अस्पताल है। अब झाँसी में एक सैनिक अस्पताल प्लेग की बीमारी के लिए खुल गया है। प्रांत की साढ़े ६ करोड़ जनता के लिए नाकाफी है। यद्यपि सरकार की ओर से एक अस्पताल और खोले जाने की घोषणा की गई है।

प्रान्त में सन् १९४५ का स्वास्थ्य-विवरण देखने से प्रगट होता है कि सरकार जितना खर्च सैनिकों अथवा युद्ध के लिए करती थी उसका आधा भी नागरिक जनता पर नहीं करती थी। विगत पाँच वर्षों का औसत स्वास्थ्य (यद्यपि उस समय भी बहुत कम सरकारी सहायता अथवा औषधियाँ ग्रामीण क्षेत्रों को जाती थी फिर भी) मृत्यु-संख्या इन दो वर्षों की आधी के लगभग है। सन् १९४५ के अंत के पश्चात् पुनः कांग्रेस मिनिस्टरी पदारूढ़ हो गई है। देखना है अगले साल की दशा कैसी रहेगी।

GOVERNMENT OF INDIA

DISPOSALS (SECTION ECS OF 2nd CATALOGUE)

ELECTRICAL ENGINEERING STORES, COMMUNICATION STORES, SCIENTIFIC INSTRUMENTS, ARMS, AMMUNITION.

Following types of stores are available for sale:

Electrical Machinery and Plant: Motors and generators; transformers; distribution, control and electrical apparatus; electrical furnaces and ovens; batteries and cells; refrigerating, heating and lighting appliances etc. ***Typewriters and Office Machinery:*** Typewriters; duplicating and computing machines; etc. ***Electrical Wire, Cable and Fittings:*** Electrical wires—domestic and transmission; electric cables and fittings including fans and lamps; etc. ***Radio Equipment:*** Receivers; transmitters; radio parts; valves and testing sets; etc. ***Telephone and Telegraph Equipment:*** Telephone and telegraph equipment excluding batteries, cells and wire; cable laying and linemen's apparatus; posts—timber and steel; etc. ***Survey and Optical Instruments:*** Binoculars; monoculars; telescopes; range finders; microscopes; watches; clocks; compasses; drawing instruments; etc. ***Photographic and Cinematographic Equipment:*** Cinema projectors; cine cameras; cameras; films including cine-films; printing and developing material including papers and chemicals. ***Searchlights, Floodlights and Signalling Lamps, etc. Small Arms:*** Rifles; shot guns and carbines; automatic weapons; machine guns; tommy guns; pistols; revolvers; small arms accessories, parts and components; bayonets; kukris; lances; swords; etc. ***Guns and Equipment:*** Guns of various sizes; infantry supporting weapons; bomb and flame throwers; rockets and projectiles; etc. ***Ammunition:*** Small arms ammunition; artillery, pyrotechnic, naval and infantry supporting ammunition; aerial bombs; civil defence; demolition explosives; etc.

Full details giving description and condition of stores, quantity, location, etc. and the method of tendering are contained in Section ECS of the Second Catalogue which is available at Re. 1/- from the addresses given below:

A. **Regional Commissioners, Directorate General of Disposals at**
Bombay - Mercantile Chambers, Graham Road, Ballard Estate.
Calcutta - 6, Esplanade East.
Lahore - G. P. O. Square, The Mall.
Cawnpore - 15/159, Civil Lines.

B. **Dy. Regional Commissioners, Directorate General of Disposals at**
Karachi - Variawa Building, McLeod Road.
Madras - United India Life Building, Esplanade.

C. **All important Chambers of Commerce and Trade Associations.**

Mail orders for the catalogue must be accompanied by Money Order or Indian Postal Order.
NOTE: Watch for further announcement regarding Section ECS of Third Catalogue which will contain a further list of stores available for disposal.

ISSUED BY THE DIRECTORATE GENERAL OF DISPOSALS, DEPARTMENT OF INDUSTRIES & SUPPLIES, NEW DELHI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्मी जगत् में हिन्दी-लेखकों की स्थिति

निर्माता लोग इनकी दशा सुधारने की ओर ध्यान देंगे

लेखक, श्री उमेश जोशी

आज के सिनेमा संसार में लेखकों को कम उजरत देना एक नियम-सा हो गया है, जब कि अभिनेता तथा अभिनेत्रियों को वह लाखों रुपया दे सकते हैं लेकिन एक लेखक को फी गाना एक हजार भी देने में उनका दिवाला निकलता है। लेखकों के देने में वह हाथ सिकोड़ लेते हैं—कहानी या संवाद मैंने सौ-सौ रुपये में बिकते देखे हैं। पचास रुपये में मैंने लेखकों को गाना देते हुए देखा है। कितने आश्चर्य की बात है? मैं तो यह कहता हूँ कि कहानी, संवाद और गीत ही फिल्म के महत्त्वपूर्ण भाग हैं और इन्हीं के प्रणेताओं को इतनी कम उजरत दी जाती है, जब कि उनको सबसे ज्यादा मिलना चाहिए। क्योंकि फिल्म की मूल सफलता बहुत कुछ कागजी कार्य पर ही निर्भर है। यदि कागजी कार्य किसी फिल्म का अच्छा नहीं, तो वह फिल्म कदापि कामयाब नहीं हो सकता। आज बहुत-सी फिल्में उच्च कोटि की नहीं बन रही हैं क्योंकि उन फिल्मों का कागजी कार्य बहुत ही ऊटपटाँग है। जब तक कि निर्माता चित्र के कागजी कार्य की तरफ ध्यान नहीं देंगे तब तक चित्र की कामयाबी आकाश-कुसुम के पाने के समान ही होगी। कागजी कार्य की ओर ध्यान देने से मतलब श्रेष्ठ लेखकों को अच्छे वेतन पर अपनाना। यह अकसर देखा गया है कि किसी फिल्म के गाने लिखवाते वक्त निर्मातागण यह सोचते हैं कि कौन लेखक कम रुपयों पर गाने लिख देगा—और वह ढूँढ-ढूँढकर कम उजरत लेनेवाले लेखकों से कागजी कार्य पूरा कराते हैं। फिर इस प्रकार के बने हुए ढाँचे पर जो इमारत खड़ी होगी उसका क्या हाल होगा—इसका तो अंदाज लगाया ही जा सकता है।

फिल्मों के प्रमुख हिन्दी गीत-लेखक और अभिनेता श्री भरत व्यास।

अब प्रश्न उठता है कि क्या लेखक का काम किसी भी अभिनेता तथा अभिनेत्री के कार्य से कम होता है? यदि नहीं तो फिर उसे क्यों कम वेतन कलाकार के मुकाबिले दिया जाता है? वास्तव में यदि देखा जाय तो लेखक का कार्य आर्टिस्ट से भी दुस्तर है। फिर क्यों न लेखक को कलाकार से अधिक वेतन दिया जाय। क्योंकि लेखक की निर्मित की हुई दुनिया में ही कलाकार विहार करता है। कलाकार उस दुनिया को आकर्षक बनाता है। लेकिन दुनिया के बनाने का कार्य भी कोई मामूली नहीं। लेखक की भावनाओं के [illegible] पंखों पर ही प्रेम के मीठे सपने दे[illegible]

हैं। उसी लेखक की उजरत देने के वक्त उपेक्षा की जाती है। कितने दुख की बात है! जिनकी कृतियों पर ये निर्मातागण लाखों रुपया कमाते हैं और उन्हीं लेखकों को उचित उजरत देने में नाक-भौं सिकोड़ते हैं।

आज फिल्मी दुनिया में सभी अभिनेता और अभिनेत्रियों के पास मोटरकार हैं। कोई दो कदम पैदल चलना भी शान के खिलाफ समझता है। यहाँ तक कि वेश्यायें जिनको कि कोई दो टकों में भी नहीं पूछता, अब वह भी सिनेमा-संसार में आकर रुआब दिखाने लगी हैं। ये रुआब निर्माताओं के बल पर दिखाया जाता है। ये विलासी निर्मातागण उनकी एक मदभरी चितवन पर हजारों रुपया उनके कदमों पर डाल देते हैं। फिर क्या कहना उनके नखरों के? सातवें आसमान पर उनके दिमाग रहते हैं। निर्माता उनकी खुशामद करते हैं। रोज उनके घर की हाजिरी बजाते हैं। फिर भी उनके दिमाग का पारा नहीं उतरता और इधर निर्माताओं के पास जाते लेखक के पैरों में छाले पड़ जाते हैं फिर भी सीधे मुँह बात करना वह अपनी शान के खिलाफ समझते हैं। हाँ तो मैं यह कह रहा था कि आज जब कि फिल्मी दुनिया में लेखक जमीन पर पैर रखना अपनी इज्जत के विरुद्ध समझते हैं, हमारे साहित्यकार स्टूडियो तक जाने के लिये पैदल ही रास्ता नापते हैं, क्योंकि उनके पास इतना पैसा है नहीं जिससे वह मोटर-कार खरीद सकें। आज हालीवुड में लेखकों को कलाकारों के बराबर ही वेतन मिलता है। और एक लेखक की कद्र ऊँचे से ऊँचे स्टार से कम नहीं होती। हालीवुड के एक मामूली लेखक के पास भी कम से कम दो मोटरकार अवश्य होंगी। हालीवुडवाले साहित्यकारों का सम्मान करना जानते हैं इसी लिए उनकी फिल्में अधिकतर कामयाब रहती हैं। अभी हमारे भारतीय निर्माताओं ने साहित्यकारों का सम्मान करना नहीं सीखा है। सम्मान की तो कौन कहे काम कराकर पैसों के नाम अँगूठा दिखा देना ही सीखा है। देते भी हैं तो जब कि लेखक ऐड़ी चोटी का पसीना एक कर देता है। इस तरह का ढंग करीब करीब सभी फिल्म-कम्पनियों का है क्या छोटी और क्या बड़ी।

इस लेख के लेखक श्री उमेश जोशी।

हमारा अन्त में विनम्र निवेदन है कि वह हालीवुडवालों से सबक लें तथा चित्र-पट की मूल सफलता का रहस्य समझें कि चित्रपट की सफलता के गर्भ में लेखक की अलभ्य भावनायें ही कार्य कर रही हैं। इसी लिए जो आज भाव की नीति काम में लाई जा रही है उसको शीघ्र से शीघ्र निवारण करने के लिए क्रियात्मक कदम उठाना चाहिए। साहित्यकारों की स्थिति को सुधारना निर्माताओं का मुख्य लक्ष्य होना चाहिए, क्योंकि उसी की हस्ती पर आनन्द का विशाल सागर बहाया जाता है। बिना उनका सहयोग लिए हुए निर्माताओं का भविष्य उज्ज्वल और दीप्तमान न होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

जमींदार और किसान

संयुक्तप्रान्तीय कांग्रेसी सरकार जमींदारी-प्रथा तोड़ने के लिए जो प्रयत्न कर रही है, उसकी प्रतिक्रिया से तमाम बड़े छोटे जमींदार बौखला उठे हैं। परिणाम-स्वरूप उनकी जमीनों में बसे हुए किसानों की जमीनें डंडे के बल से धड़ाधड़ छीनी जा रही हैं। किसान अपढ़ हैं। अपने अधिकारों और जमीन-जायदाद-सम्बन्धी कानूनी गोरख-धन्धों से अनभिज्ञ हैं। पटवारियों ने भी किसानों की परम्परा से जोती जानेवाली जमीनों को भी प्रायः जमींदारों की सीर के रूप में दर्ज कर रखा है। तथा इसी प्रकार की बहुत सी ऐसी कानूनी धाँधलियाँ और भी की गई हैं, जिनके कारण किसानों को स्वयं अपनी जमीन पर भी अपना अधिकार नहीं है। अतः वे धड़ाधड़ बेदखल हो रहे हैं।

छोटे छोटे जमींदारों ने भी अपने सुभीते के लिए कुछ आसामियों को अपनी जमीनों में बसा रखा था तथा उन्हें जोतने को कुछ जमीनें भी दे रक्खी थीं। इसके बदले में वे उनसे अपने खेतों में मजदूरी कराते थे, तथा हरी, बेगार, भूसा आदि भी लेते थे, तरह तरह से तंग भी करते थे, आये दिन बेगार कराने के लिए लट्ठ लिये उनके सिर पर सवार रहते थे, बरायनाम मजदूरी वह भी कई कई महीनों और सालों में चुकता होती थी, कभी कभी क्या प्रायः नहीं भी होती थी। लेकिन, किसान उनके खेतों से कुछ न कुछ पैदा कर लेते थे। अतः उनके इन तमाम जुल्मों को किसी न किसी तरह सह लेते थे। अब उनके वे खेत भी प्रायः निकाल लिये गये हैं या निकाले जा रहे हैं। जिससे वे भीषण संकट में फँस गये हैं, दुर्भाग्यवश उनके कानूनी हाथ भी मजबूत नहीं हैं।

ऐसे लोग बड़ी परेशानी में पड़ गये हैं। क्या करें और क्या न करें? अब उनके सामने दो ही रास्ते हैं, या तो चुपचाप बाल-बच्चों समेत भूखों मर जायें क्योंकि देहात में लोग कुछ खास मौसमों में ही मजदूरी करते हैं, वह भी बहुत थोड़ी मजदूरी पर, जिससे उनका पेट भरना भी असम्भव है। किसानों को यों तो साल भर के लिए काफी मजदूरी की जरूरत पड़ती है किन्तु पूँजीहीन होने के कारण वे मजबूर होने ही पर मजदूर लगाते हैं। अतः इन देहाती मजदूरों को मजबूरन स्वयं भी कुछ न कुछ खेती अवश्य करनी पड़ती है, अन्यथा केवल मजदूरी से उनका पेट नहीं भर सकता। ऐसे निरीह मजदूर किसानों की ही संख्या देश में अधिक है। या तो भूखों मरें या चोरी-डाका का काम शुरू करें, जैसा कि प्रायः करते हैं, खेतों में चोरी उनमें से अधिकांश का पेशा है। घरों में चोरी करनेवाले भी इनमें से ही अधिकांश निकलते हैं, या तो यह करें या उन जमीनों के उनके छीननेवालों से सामूहिक रूप में युद्ध करें। ऐसे निरीह, बेचारे भूखों, नंगों मरते हुए अभागे इंसानों के मार्ग प्रदर्शन की अत्यन्त तथा तुरन्त आवश्यकता है। आशा है, कांग्रेस सरकार इनके लिए सबसे पहले कुछ सोचेगी।

एक उपाय हो सकता है। बड़े जमींदारों से जो जमीनें छीनी जायें उन्हें सरकारी फार्मों के रूप में बदलकर उन लोगों को उनमें नौकर करा दें तथा जो नये उद्योग-धंधे खोले जायँ उनमें भी उन्हें पहले स्थान दिया जाय। अथवा छीनी हुई जमीनें पहले उन्हें ही बाँटी जायँ, उनसे बचे तब ऐसे किसानों को दी जाँय जिनके पास कुछ न कुछ जमीन अब भी मौजूद है। तथा, देहात के उन लोगों को, जिनके पास अपनी जमीनें हैं, खेती में लगाने के लिए तकावी का बन्दोबस्त ग्राम-पंचायत की मार्फ़त उस सर्किल के जिरात के स्टोर से कराया जाय, किश्तों पर उन्हें अच्छे बैल के लिए रुपये कर्ज दिये जायँ। कृषि-गोदामों की क्षमता बढ़ाई जाय, ताकि वे अधिक औजार, खाद और बीज दे सकें। इसके साथ ही साथ, देहाती मजदूरों के कामों के घंटे और मजदूरी की दर भी यथासमय निश्चित की जाती रहे। इस प्रकार किसानों एवं छोटे जमींदारों की आर्थिक क्षमता बढ़ जाने पर तथा मजदूरों के वेतन या मजदूरी की अदायगी के सम्बन्ध में सख्ती से सरकारी देखभाल होते रहने पर बहुत से मजदूरों के लिए रोजी निकल आयेगी।

इसके अतिरिक्त देहातों के एक एक सेंटर में वहाँ के अनुकूल कोई उद्योग सरकार की ओर से संचालित कराया जाय, यथा—दूध सुखाना, घी इकट्ठा करना, शहद इकट्ठा करना, सब्जी और फल सुखाना, हड्डी इकट्ठा करना तथा उसकी खाद बनाना या विनिमय, चमड़े का काम, ऊन का काम, इसके अतिरिक्त बिजली के कारखाने खोलकर उनके जोर से चलनेवाले चर्खे, कर्घे, चावल कूटने, आटा पीसने, तेल पेरने की घरेलू मशीनें किस्तों पर बाँटी जायँ।

उक्त कामों के लिए निश्चय ही बड़ी पूँजी की जरूरत होगी, जिसकी गुंजायश वर्तमान बजट में नहीं है अवश्य। किन्तु, यदि प्रान्त की लोकप्रिय कांग्रेस सरकार जिस पर जनता का पूर्ण विश्वास एवं श्रद्धा है, उक्त आवश्यकताओं के लिए जनता से ऋण के रूप में रुपये माँगेगी और उक्त आवश्यक रकम को दस दस, पाँच पाँच रुपये के शेयरों में बाँट देगी तो जनता उस शेयरों को अवश्य सहर्ष खरीद लेगी। क्योंकि आज प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में देश-प्रेम लहरें मार रहा है। यद्यपि, 'वार-फंड' में जनता से बलात् काफी रुपया छीना जा चुका है, फिर भी अपने इस राष्ट्रीय उन्नति के काम के लिए अभी जनता में काफी उत्साह और लगन है। जनता देश की माँग पर करोड़ों रुपये हँसते हँसते न्योछावर कर देगी, खास कर जब उसके रुपये शेयरों के रूप में एक व्यापार में लगेंगे और उससे उन्हें लाभ की पूर्ण आशा रहेगी।

आशा है, हमारी लोकप्रिय प्रान्तीय कांग्रेसी सरकार जनता की इन माँगों पर अवश्य उदारतापूर्वक विचार करेगी।

ग्रामसेवक, पूरा —अशोक
फैजाबाद

बाल-विकास का कार्य

राष्ट्र के आधार-रूप बच्चों को स्कूलों में दी जानेवाली शिक्षा ही उनके लिए पर्याप्त नहीं है। स्वाभाविक मनोरंजन द्वारा, विकास के भाव तथा अपने उद्देश्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा बाल-हृदयों में उत्पन्न होना भी आवश्यक है। इस सिद्धान्त का प्रारम्भ शहरों में तो हो चला है; पर इससे भारत के ७ लाख ग्रामों के निर्धन बच्चों का जीवन, साधनों के अभाव से, विकसित नहीं हो रहा है। ज़रूरत है कि बाल-विकास के आन्दोलन का प्रचार गाँवों की झोपड़ियों में रहनेवाले गरीब किसान बालकों तक भी हो। इस अभाव के दूर करने के लिए मरियानी (चौबेपुर) को केन्द्र बनाकर वहाँ के बाल-मंडल ने जिला के बालकों में जागृति पैदा करने का आयोजन किया है। निवेदन है कि अपने यहाँ के बालकों को मंडल के सदस्य बनाइए और मंडल की शाखा स्थापित कीजिए। उन्हें मंडल की प्रतियोगिताओं में भाग लेने को तैयार कीजिए। उनकी बनाई हुई कला की चीज़ें भेजवाले का प्रबन्ध कीजिए।

मंडल के सहायक - आजीवन सदस्य सहायक-संरक्षक आप स्वयं बनिए तथा इष्ट-मित्रों को आग्रहपूर्वक बनाइए। शारीरिक व्यायाम के प्रदर्शन करनेवालों, जादू—मैस्मेरिजम अथवा नटों के खेल दिखानेवालों, बालकों को रोचक गीत, कविताएँ, कहानियाँ सुनानेवालों, लाठी, तलवार, गदा, बनेठी, आसन आदि के विशेषज्ञों एवं बाल-चित्रकार, फोटोग्राफर, कवि, लेखक, गायक, कहानीकार, अभिनयकार, खिलाड़ी, पहलवान आदि को मंडल से सहयोग देने के लिए अनुरोध कीजिए अथवा इनकी जानकारी की सूचना भेजिए।

हम आशा करते हैं कि इस प्रयास का जनता स्वागत करेगी एवं इसमें हाथ बटाकर अपनी सात्विक उदार बुद्धि का परिचय देगी। आइए, इस आयोजन में सम्मिलित हो गरीब, ग्रामीण बालकों के विकास में हाथ बटाइए और हम लोगों का उत्साह बढ़ाइए। जो सज्जन तथा संस्थायें इस पुनीत कार्य में दिलचस्पी रखते हों वे मंत्री बाल-मंडल, मरियानी पो० चौबेपुर (कानपुर), से मिलकर अथवा पत्र-व्यवहार-द्वारा आवश्यक परामर्श दें ताकि मंडल को समुचित ढंग से चालू करने में सहायता व सहयोग मिल सके।

कानपुर —श्रीकृष्ण विनायक फड़के
एम० ए०

* * *

भारतीय इतिहास-परिषद्

भारतीय इतिहास-परिषद् ने भारतीय राष्ट्र का इतिहास जिन बीस जिल्दों में तैयार करने की योजना बनाई थी उनमें से एक जिल्द प्रकाशित हो गई है। यह जिल्द वाकाटक गुप्तकाल (२०० से ५५० ई०) की है जो डा० रमेशचन्द्र मजुमदार और डा० अनन्त सदाशिव अल्सेकर द्वारा सम्पादित हुई है। परिषद् की ओर से लाहौर के श्री मोतीलाल बनारसीदास ने प्रकाशित किया है और उन्हीं से यह पुस्तक मिल सकती है। इसका हिन्दी संस्करण भी तैयार हो रहा है, जो सम्भवतः अगले कुछ महीनों में प्रकाशित हो जायगा। इतिहास की एक दूसरी जिल्द भी, जो मौर्यकाल की है, [illegible] ही है और शीघ्र ही प्रकाशित हो [illegible]। कुछ और जिल्दों पर भी काम [illegible] है। पाठकों को यह स्मरण होगा कि इतिहास की यह योजना [illegible] में तैयार की गई थी और १९४[illegible] जिल्दों पर काम आरम्भ हो गया [illegible] वर्षों तक देश में अशान्त [illegible] रहने के कारण इसकी प्रगति में [illegible] पड़ी। परन्तु अब कार्य का पुनर्नि[illegible] उसे तेजी से आगे बढ़ाने का प्रयत्न [illegible] है, जिससे इतिहास की जिल्दें [illegible] रूप से प्रकाशित होती रहें।

पटना —गदाधर [illegible]
सहायक [illegible]

* *

सम्मेलन की परीक्षाएँ

इस वर्ष कांग्रेस कार्य-समिति [illegible] में २२, २३, २४ नवम्बर को [illegible] कांग्रेस अधिवेशन करने का निश्चय [illegible] है और २२ नवम्बर से ही हिन्दी [illegible] सम्मेलन की समस्त हिन्दी परीक्षाएँ [illegible] हैं। अतः समस्त हिन्दी परीक्षाएँ [illegible] अधिवेशन में सम्मिलित होने [illegible] उठाने में असमर्थ रहेंगे। क्या [illegible] परीक्षाओं के अधिकारियों से यह [illegible] जा सकती है कि वे इस ओर ध्यान [illegible] परीक्षा तिथि को आगे बढ़ा देंगे [illegible] महान् सुकार्य में हाथ बटाकर [illegible] प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करें।

लक्ष्मण गढ़ —सम्पतराम [illegible]
अलवर "प्रभाकर"

श्वेतकुष्ठ वनौषधि

महात्मा प्रदत्त श्वेतकुष्ठ [illegible] दवा से तीन दिन में पूरा फायदा [illegible] सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, [illegible] दाताओं की दवा से निराश हो [illegible] तो इसे लगा कर आराम होवें। [illegible] की दवा का मूल्य २॥)।

सफेद बाल काला

इस तेल से बालों का पकना [illegible] और पका बाल काला पैदा होकर [illegible] ६० वर्ष तक काला न रहे तो [illegible] वापसी की शर्त लिखा लें। [illegible] के दर्द व सिर में चक्कर आना [illegible] आराम कर आँख की रोशनी [illegible] एकाध बाल पका हो तो २) [illegible] हो तो ३॥) और कुल पका [illegible] तेल मँगवा लें। एजेण्टों की [illegible] आवश्यकता है।

स्तम्भक वटी

एक गोली शाम को [illegible] इसके अद्भुत चमत्कार को देखें [illegible] तक स्तम्भन कर गजब ढा देंगे [illegible] गोली १), ५० का २॥), १०० [illegible]

पता—वैद्यराज अखिलकिशोर [illegible]
नं० ३७ पो० कतरीसराय [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमण्डल

स्त्रियों के अधिकारों की अवहेलना क्यों करता है? ...ता के इस युग में पारस्परिक भेद-भाव असम्भव है

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

श्रीमती राधादेवी गोयका,
एम० एल० ए०, अकोला।

...सर्वदा स्त्रियों की सेवाओं के ...रहते हैं; परन्तु वे स्त्रियों की उन ...की तनिक भी परवाह नहीं करते। ...प्राचीन इतिहास ऐसी कथाओं ...रहा है।

...युद्ध में घायल पुरुषों की ...के लिए कोई व्यवस्था नहीं थी। ...युद्ध में लड़ते-लड़ते मर जाते किन्तु ...दारू के लिए कोई अच्छा ...नहीं था। मिस फ्लोरेंस नाइटंगेल ...की सर्वप्रथम महिला थीं जिन्होंने ...युद्ध के घायल सिपाहियों की सेवा के ...इंग्लैंड की सम्भ्रान्त महिलाओं को ...किया। और उनके साथ स्वयं ...कार्य करती रहीं। युद्ध से ...सैनिक और सेनापतियों को ऊँचे ...पुरस्कार मिला; परन्तु उन महि-...के लिए पुनः वही घर का काम-...प्रथम युद्ध में भी यही दशा थी। ...युद्ध में पिछले युद्धों की अपेक्षा ...जो कार्य किया है वह पहले से ...अधिक था। स्त्रियाँ युद्ध-कार्य में ...के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर ...। किसी किसी क्षेत्र में तो पुरुषों ...उनकी सेवायें अधिक श्रेयस्कर ...घायलों की सेवा-शुश्रूषा में ...नहीं प्राप्त कर सकता, किन्तु ...प्राप्त कर सकती हैं। युद्ध-स्थल में ...के गोलों के बरसते रहने पर भी महि-...सैनिकों की जो शुश्रूषा की है वह ...है। वायुयान-चालक होकर ...सैनिक स्थानों पर स्वयं अपने हाथों ...लाते हैं, परन्तु आज जब युद्ध समाप्त ...है या तो उन्हें नौकरियों से निकाला ...है या वह नौकरियों से निकाली ...हैं। यही उनकी सेवाओं का ...है!!

...कहने को तो पश्चिमी देशों में हर ...की स्वतन्त्रता है; परन्तु अधिकारों के ...में पुरुष ही अधिकारी बने बैठे हैं। ...के किसी भी ऊँचे पद पर भी कुछ ही ...हैं। मैडम क्युरी ने रेडियम जैसी ...धातु का आविष्कार करके संसार ...उपकारी वस्तु प्रदान की है। मिसेज ...ने गरीबों का सुन्दर चित्रण अपने ...में करके स्त्री-समाज की सहृदयता ...परिचय दिया है; परन्तु पुरुष-...की सेवाओं को अपनी समता ...समझता। यदि स्त्री मानव-समाज ...(दुखी) वर्ग का सच्चा चित्र ...कर सकती है तो क्या वह मान-...के लिए किसी ऊँचे पद ...नहीं कर सकती?

...युद्ध-स्थल से लौटी हैं, कल-...से छुट्टी पाकर अपने घरों की ...हैं। परन्तु यह उनके दुर्दिन ...हैं। कुछ तो विवाहिता हैं और ...अविवाहिता। ऐसे समय में वे जीविका-...रही हैं। उनकी दिनचर्या क्या होगी? पुरुषों के स्वार्थों और महत्त्वाकांक्षाओं ने स्त्रियों की सेवाओं का पुरस्कार यही दिया कि वे अब बेकार हो रही हैं। उनका जीवन संकटमय हो रहा है। ऐसे ही प्रमाण सभी देशों में मिलेंगे। पुरुषों में शक्ति है, बल है। यही कारण है कि वे स्त्रियों को अपने शासन में रख सकते हैं; परन्तु स्त्रियों का अपना कोई ऐसा संगठित राजनैतिक आन्दोलन नहीं है जिसमें उन्होंने अपने अधिकारों के लिए पुरुषों से द्वन्द्व किया हो। सभ्यता के आदि से लेकर आज तक स्त्रियों की किसी संस्था ने पुरुषों की समानता के अधिकारों की माँग को इतना अधिक नहीं बँटाया कि वे पुरुषों के शासन में सुरक्षित रह सकें। यहाँ, पश्चिमी देशों में महिला-आन्दोलनों ने स्त्रियों के अधिकारों की काफी रक्षा की है, फिर भी अभी वह कमजोर ही है। यदि स्त्रियों को अधिकार मिल जाये तो उनकी सेवाओं की इतनी अवहेलना न हो। अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन केवल अपनी बैठकों ही तक सीमित रहता है। प्रस्ताव के अतिरिक्त उसके पास कोई विशेष क्रियात्मक कार्य नहीं है। इसलिए पुरुषों का यह कर्तव्य है कि वह अपनी जीवन-संगिनी के अधिकारों की उतनी ही परवाह करें जितना अपने अधिकारों की। सेवायें तो दोनों की बराबर हैं। माँ के रूप में स्त्रियों ने पुरुषों के साथ जो उपकार किया है वह स्त्री-समाज की महानतम सेवा है। पत्नी के रूप में वे पुरुषों के थके और शुष्क जीवन में सरसता का संचार करती हैं, फिर भी स्त्रियों की सेवाओं की अवहेलना पुरुषों द्वारा क्यों होती है?

यदि अब भी नासमझी को दूर कर दिया जावे तो संसार के ... बहुत कुछ परिवर्तन दिखा...

रोना

हँसना

ग्राइप वाटर के उपयोग के बाद पेट के दर्द व खट्टे डकार से छुटकारा मिलता है।

WOODWARD'S
GRIPE WATER
— keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है, इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 116—112 W. WOODWARD LTD., LONDON, ENGLAND

डालडा आपके दिल्पसन्द भाजी को स्वादिष्ट करता है—और आप को स्फूर्ति भी देता है!

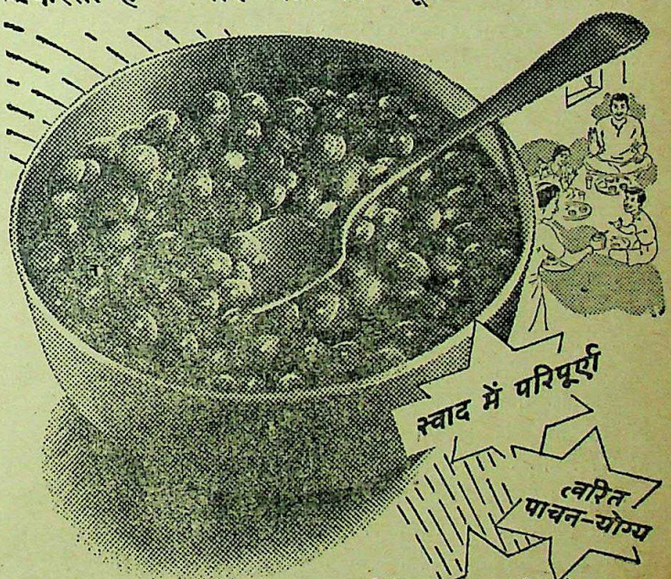

डालडा में पकाये हुए भोजन की "बचत" नहीं होगी! त्वरित् पाचन-योग्य और विटैमिन्-युक्त डालडा सादे भोजन को भी अपने मधुर स्वाद से परिपूर्ण करता है—और दैनिक आहार की एकरूपता से आप को मुक्त करता है। डालडा से पकावो और प्रसिद्ध पौष्टिक गुण-संपन्न इस विशुद्ध रसोई-साधन-द्वारा आप का आहार सुधारो। और याद रखो, डालडा साधारण रसोई-साधन नहीं—बल्कि वह परिवारों को तन्दुरुस्त रखता है और उन को अधिक स्फूर्ति देता है।

★ डालडा-पाकशास्त्र पुस्तक (केवल अंग्रेजी) की सहायता से अपने भोजन का प्रबन्ध कीजिये। इस में १५० से अधिक स्वादिष्ट भारतीय आहार के प्रकार निजी पौष्टिक गुणों के कारण चुने हुए समाविष्ट हैं। आप के कॉपी के लिये Dept. B411 P.O. Box No. 353, Bombay, के पते पर ४ आने के पो० स्टाम्पस् भेजियेगा।

...THE HINDUSTAN VANASPA... MANUFACTURING CO., LTD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् ४२ के दो किसान नेता

(पेज ८ का शेष)

खादी का कपड़ा पहननेवालों को इतना पीटते थे कि वह अधमरा हो जाता था। गांधी टोपी देकर रियासत में कोई नहीं चल सकता था। मैं स्वयं वहाँ गया हूँ। वहाँ के पीड़ितों की दर्दभरी कहानी सुनी है। आज भी वे बाँसी राज्य के अत्याचारों का स्मरण करते काँप उठते हैं। तीन चार महीने उन्होंने जैसा चाहा वैसा अत्याचार किया। मनमाना राज्य किया। किसी का डर नहीं। कई आदमियों को इतना पिटवाया कि वे मरते-मरते बचे। घरों को बरबाद कराया।

उस समय के डिप्टी कलक्टर केरवानी को वहाँ के बच्चे बच्चे जानते हैं। उनकी नादिरशाही मशहूर हो गई थी। उनकी नादिरशाही मैंने १९४२ की क्रान्ति में देखी है। सन् १९४३ में जब घूमते-फिरते मैं बस्ती जिले के देहातों में घूमा और वहाँ का नज्जारा देखा तो हृदय काँप उठा। केरवानी की करतूतों को देखकर मैंने महसूस किया कि क्या यह काम मनुष्यों का है? क्या मनुष्य इतने नीचे उतर सकते हैं? मनुष्यता को भूल सकते हैं? इन्सानियत छोड़ सकते हैं?

ठाकुर हुबराजसिंह को गिरफ्तार करने के लिए उस्का थाने के थानेदारने मय फौज के गाँव मेरवा को घेर लिया। चारों तरफ से फौजी सिपाहियों ने घेरा डाल दिया। आस-पास के गाँवों में भय का राज्य छा गया। किसान डर गये। चारों तरफ संगीन लेकर फौजी सिपाही मार्च करने लगे। बन्दूकों का फायर छोड़ा गया। चारों तरफ सन्नाटा छा गया। औरतों और बच्चों का घर से बाहर निकलना मुश्किल हो गया। ठाकुर हुबराजसिंह गिरफ्तार किये गये। फौजियों के बीच में खड़ा किया गया और थानेदार ने पूछा—'क्या तुम यहाँ से अँगरेजी राज्य मिटा देना चाहते हो?' खुली बगावत करने के लिए तैयार हो? ठाकुर साहब ने शान्त स्वर से कहा—"मैं कांग्रेस का एक अदना स्वयंसेवक हूँ। उसकी जो आज्ञा होगी वह करूँगा।" थानेदार का पारा गर्म हो गया। गालियों की बौछार शुरू कर दी। सारे घर की तलाशी ली गई। सिपाहियों को हुक्म दिया कि इनकी मरम्मत करो। जब तक माफी न माँगें तब तक पीटते रहो। ठाकुर साहब का हाथ और कमर रस्सियों से बाँधकर वह उस्का थाने पर ले गये। माफी माँगने के लिए तरह तरह से सताया गया। लेकिन इस बहादुर देशभक्त ने कांग्रेस की शान कायम रखने के लिए कड़वा घूँट पी जाना पसन्द किया।

* * *

अब श्री रामबरन यादव की भी कहानी सुनिये। कांग्रेस की सेवा करते हुए अपनी सारी जिन्दगी इन्होंने उसमें बिता दी है। गाँवों में घूम-घूमकर स्वराज्य की नींव मजबूत की है। अपने घर को बरबाद कर दिया है। पत्नी तब का ख्याल नहीं किया। ऐसे कई मौके आये हैं जब आपने कई दिन तक भूख-प्यासे रहकर गाँवों में काम किया। लाखों मील पैदल चलकर देहातों में कांग्रेस का संगठन किया। सन् १९३२ की बात है। बस्ती जिले के जमींदारों ने कांग्रेस को मिटा देने के लिए कुछ उठा नहीं रक्खा। कांग्रेसियों को देख [illegible] अपना सारा गुस्सा शान्त कर लेते [illegible] चगेरा (बाँसी) में कांग्रेसियों को पिटवाया गया। जिसकी याद आज भी ताजी है। किसानों के मवेशियों को राज्य नैपाल में भेजवा दिया। तिरंगे झंडे को जलवा दिया। कांग्रेस आफिस को जलवा दिया। कांग्रेस की सारी चीजें जब्त कर ली गईं।

श्री रामबरन यादव को वहाँ के जमींदारों ने कम नहीं सताया। कांग्रेस का काम छोड़ने के लिए तरह तरह की ज्यादतियाँ की गईं। घर जलवा दिया गया। फसल कटवा ली गई। खेत छीन लिये गये। सन् १९४२ में इस कर्मठ व्यक्ति को पुलिस-अधिकारियों ने इतना पीटा कि चलना-फिरना, उठना-बैठना मुश्किल हो गया था। सारा शरीर सूज गया था। हड्डियाँ टूट गई थीं। घर लूट लिया गया। जमीन पर घसीटा गया। बार बार माफी माँगने के लिए कहा गया। लेकिन वीर रामबरन यादव ने कहा—"किस लिए माफी। आज़ादी माँगना गुनाह है, पाप है? मैं मरते दम तक भी माफी नहीं माँग सकता।" सरकारी अधिकारी और चिढ़े। कई सिपाहियों को पीटने के लिए लगा दिया। जब तक रामबरन जी का होश बन्द नहीं हुआ तब तक मार पड़ती रही। देश की आज़ादी के क्या ये सैनिक कभी भुलाये जा सकते हैं? इनके बलिदान बड़े महत्त्व के हैं। अपना सारा जीवन इन्होंने राष्ट्र की वेदी पर चढ़ा दिया है। किसानों के यही सच्चे हितैषी हैं। देश के यही सच्चे शूरमा हैं। इनका जीवन कितना पवित्र है। देश की आजादी में कितना बलिदान चढ़ाया है। अपना सब कुछ खो दिया। कितनी मुसीबतों से गुजरे हैं। अपने भाई-बन्द से तिरस्कृत होकर भी इन्होंने कभी कांग्रेस का काम नहीं छोड़ा। ये पूजनीय किसान हैं। भारतमाता के सच्चे लाड़ले सैनिक हैं। बस्ती जिले के तपस्वी हैं। किसानों के रहनुमा हैं। राष्ट्र के सच्चे सेवक हैं। सन् १९४२ के शूरमा सैनिक हैं। कांग्रेस के हवाई जहाज, टैंक और मशीनगन यही किसान सेवक हैं। गाँवों में फिर से सुदिन लानेवाले यही उसके भाग्य-विधाता हैं। क्या किसी बड़े नेता से इनका जीवन कम पवित्र और महत्त्व का नहीं?

जब स्नायु आपको सोने नहीं दे[illegible]

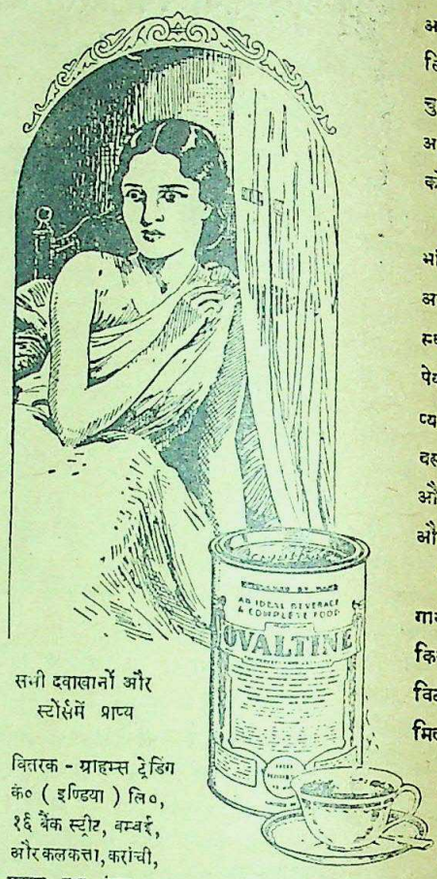

अनिद्रामयी रातें आपके [illegible] लिये घातक हैं। प्रति प्रातः [illegible] चुस्त रहनेके लिये रात्रिमें [illegible] आवश्यक है अर्थात् अपनी [illegible] को व्यवस्थित रखना [illegible]

आपके शरीर और [illegible] भांति स्नायुओं को भी [illegible] आवश्यकता है और यह [illegible] स्वादिष्ट 'ओवल्टीन'से, जो [illegible] पेय खाद्य है। शयनसे [illegible] प्याला 'ओवल्टीन' पान [illegible] बस, रातमें अच्छी नींद [illegible] और प्रातःकाल आप ताजा, [illegible] और उछलते उठेंगे।

'ओवल्टीन' पके जौ के [illegible] गायके ताजे मलाईदार दूधसे [illegible] किया जाता है। इसमें [illegible] विटामिन तथा अन्य [illegible] मिलाये जाते हैं। नकलीसे [illegible]

सभी दवाखानों और स्टोर्समें प्राप्य

वितरक - ग्राहम्स ट्रेडिंग कं० (इण्डिया) लि०, १६ बैंक स्ट्रीट, बम्बई, और कलकत्ता, करांची, मद्रास तथा रंगून।

'ओवल्टीन'
OVALTINE शक्तिप्रद खाद्य पानीय

ओवल्टीनसे शान्तिपूर्ण नींद आती है

OV/100

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयां—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

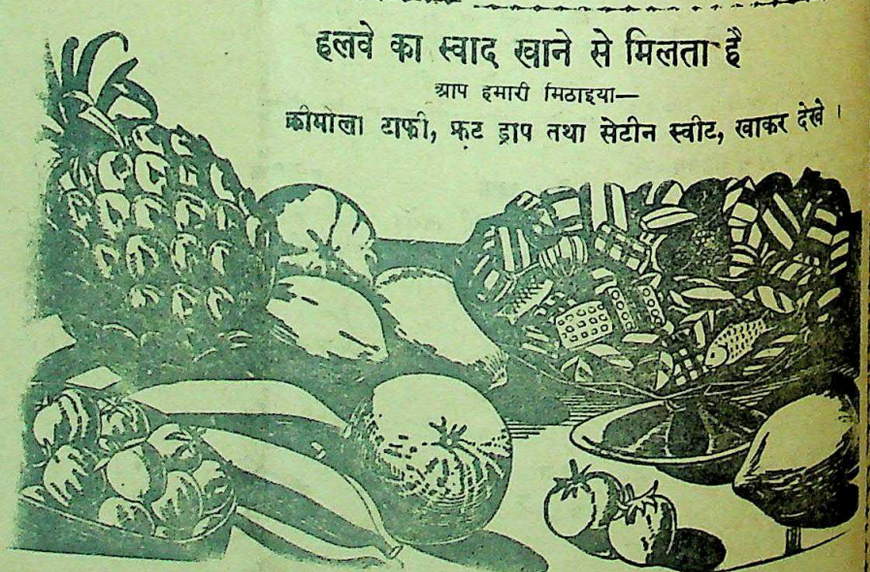

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

[illegible] रिसर्च हाउस

[illegible]स बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...निस्ट पार्टी गैरकानूनी घोषित की जायेगी ?

...पार्टी के कार्यकर्ताओं को गुप्त आदेश—मजदूर नेता छोड़े ...शिक्षा और समाज-सेवा—अलीगढ़ विश्वविद्यालय ...हर्जाना देने को तैयार—वैद्यों और हकीमों में पक्षपात ...शुक्ल लंदन विश्वविद्यालय के हिन्दी प्रोफेसर नियुक्त हुए।

...प्रतिनिधि-द्वारा)

...पश्चिमोत्तर सीमा पर ...का जमाव तथा भारत के ...रहस्यमय रूप से विलुप्त ...महत्वहीन नहीं है। मुझे ...ज्ञात हुआ है कि कम्युनिस्ट ...समिति से प्रांतीय समि- ...आदेश मिले हैं, जिनमें ...कि सक्रिय कम्युनिस्ट कार्य- ...अन्तर्द्धान होकर काम ...बनाना चाहिए, क्योंकि ...गतिविधियों को देखते हुए ...सरकार किसी भी दिन ...घोषित कर सकती है ...सदस्य भी गिरफ्तार ...हैं।

* *

...निकाले जाने के पश्चात् ...का राजनैतिक प्रभाव ...विलुप्त हो ही गया था ...केवल मजदूरों का मोर्चा ...और उन्हें उत्तेजित करके ...के सम्मुख परेशानियाँ ...चेष्टा कर रहे थे, किन्तु ...नेताओं के प्रभाव के सामने ...मजदूरों पर अधिक न पड़ा, ...जनता तथा मजदूरों में ...विरुद्ध गलतफहमियाँ पैदा ...करने में कुछ उठा न ...में पिछले सप्ताह जो ...हो गई, वे इन्हीं गलत- ...थीं।

* *

...ने बड़ी चतुरतापूर्वक कुछ ...कार्यकर्ताओं को अपना साथ ...प्रलुब्ध कर लिया, जिनका ...में कोई प्रभाव नहीं ...में अपने कामों में ...लेकर वे कार्यकर्ताओं को ...इन भोले-भाले कार्यकर्ताओं ...यूनियन कांग्रेस के अध्यक्ष ...श्रीवास्तव भी थे, जिन्होंने ...लायक अभी कोई ...नहीं किया है और जो ...के सहारे कांग्रेस समाज- ...में धूल झोंककर इस ...

* *

...जिस प्रकार प्रांत में ...का बीजारोपण कर रहे ...वर्गों में अनुचित ...इसी लिए गृह-मन्त्री ...गिरफ्तार करने की ...अधिकारियों को दे दी। ...ने उनकी वकालत ...मनोवृत्ति का ...उत्तेजना में गृह-मन्त्री ...सम्बोधित करते हुए ...कन्हैयालाल जी को

जेल में रखकर प्रांत में शान्ति स्थापित नहीं कर सकते। बाद में श्री शिब्बनलाल ने भी कुछ ऐसे आयोजन किये, जिससे न केवल अशान्ति उत्पन्न होती, बल्कि राजधानी के ५ लाख व्यक्तियों पर महामारियों का संकट भी आ जाता। इस पर अधिकारियों को उन्हें भी गिरफ्तार करना पड़ा और इन गिरफ्तारियों का प्रभाव यह पड़ा कि समस्त श्रमिक अशान्ति, जो केवल निराधार बातों पर खड़ी की गई थी, अन्तर्हित हो गई। अब श्री सक्सेना जी तथा अन्य मजदूर नेता जेल से छोड़ दिये गये हैं।

* * *

शिक्षा-मन्त्री सम्पूर्णानन्द की उस योजना का स्वागत प्रांत में सर्वत्र किया जायगा, जिसके अन्तर्गत वे माध्यमिक शिक्षा के पश्चात् युवकों के लिए समाज-सेवा का एक वर्ष का व्यवहारिक कोर्स अनिवार्य कर देना चाहते हैं। इस योजना के अन्तर्गत डिप्लोमा प्राप्त करने के पश्चात् युवकों को कुछ काल ट्रेनिंग देकर उन्हें देहातों के सुधार तथा उन्नति के लिए ग्रामों में भेज दिया जायगा। इससे न केवल ग्रामों की उन्नति ही होगी, बल्कि नागरिकों तथा ग्रामीणों का सम्पर्क भी अधिकाधिक बढ़ जायगा। पहले तो यह योजना सबके लिए अनिवार्य न होगी, क्योंकि खयाल किया जाता है कि इस देशभक्तिपूर्ण कार्य के लिए स्वेच्छा से आगे आनेवाले युवकों की इस प्रांत में कोई कमी नहीं होगी। किन्तु जो युवक यह कार्य करके उसका प्रमाणपत्र न ले लेंगे, उन्हें किसी सरकारी नौकरी आदि में जगह न मिलेगी। कालान्तर में यह कार्य सभी युवकों तथा युवतियों के लिए अनिवार्य भी किया जा सकता है।

* * *

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के अधिकारी अब राह पर आ रहे हैं और उन्होंने गत २९ मार्च के दंगे में अपने छात्रों के अभिनय के फलस्वरूप २५,००० रुपया जुर्माना देना स्वीकार कर लिया है। किन्तु यह रकम अत्यन्त अपर्याप्त है और गृह-मंत्री उसे स्वीकार करने को तत्पर नहीं हैं।

* * *

मुस्लिम लीगी पत्र कांग्रेस सरकार के विरुद्ध प्रचार करने में असत्याचरण का प्रयोग करने में नहीं चूकते। कुछ लीगी पत्रों ने हाल ही में छापा था कि बोर्ड आफ इंडियन मेडिसिन द्वारा वैद्यों और हकीमों को जो सहायता दी जाती है, उसमें वैद्यों के साथ पक्षपात किया जाता है और हकीमों को बहुत कम सहायता मिलती है। इस सम्बन्ध में मिलने पर एक सरकारी प्रवक्ता ने मुझे बताया कि यह आरोप गलत है। प्रांत में वैद्यों की संख्या ८००० तथा हकीमों की २००० है; इस अनुपात से हकीमों को तो वैद्यों को दी जानेवाली सहायता का चतुर्थांश ही मिलना चाहिए किन्तु सरकार ने वैद्यों की सहायतार्थ ७२ हजार रुपया दिया है और हकीमों की मदद के लिए ५३ हजार रुपया।

* * *

लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के अध्यापक डा० केशरीनारायण शुक्ल को लन्दन यूनिवर्सिटी ने अपने यहाँ हिन्दी का लेक्चरर नियुक्त किया है, डा० शुक्ल यहाँ के प्रख्यात तथा सर्वप्रिय हिन्दी अध्यापक रहे हैं और स्थानीय ज्ञानवर्धिनी सभा ने उनकी बिदाई के अवसर पर उन्हें एक अभिनन्दनपत्र भी दिया।

नवयुवकों के लिए हवाई शिक्षा

लेखक पं० श्रीराम वाजपेयी

(नेशनल आर्गेनाइजिंग कमिश्नर हिन्दुस्तान स्काउट एसोसिएशन) पुस्तक का विषय नाम से स्पष्ट है। अब हवाई जहाजों का जमाना है, इस कारण इस विषय की थोड़ी बहुत जानकारी हरएक भारतीय को होनी चाहिए। आशा है, अपने विषय की इस अनोखी पुस्तक से पाठक लाभ उठायेंगे। पुस्तक सचित्र है। अन्त में शब्द-कोष रहने से पाठकों को पुस्तक समझने में बड़ी सहायता मिलेगी। आवरण पृष्ठ रंगीन। मूल्य केवल एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

नीम का तेल

चर्म स्वास्थ्य और सौन्दर्य के लिये

बीस वर्षोंसे देश वासियों को स्वच्छ एवं नीरोग रखने में गोदरेज की सेवायें स्मरणीय हैं। केवल शुद्ध वनस्पतियों से साबुन निर्माण का आरम्भ इस देश में गोदरेज ने ही किया। लोगों की भिन्न भिन्न रुचियों कों सन्तुष्ट करने वाले तरह तरह के उत्तम साबुनों के द्वारा गोदरेज का नाम सारे हिन्दुस्तान में विख्यात हो गया है। संस्कृति आरम्भ कालसे प्रशंसा प्राप्त प्रकृति की अद्भुत देन नीम के आरोग्यवर्धक गुणोंको जो जानते हैं उन्हे गोदरेज 'लिमडा' साबुन भेट करते हैं। नीमके ठण्डक पहुंचाने वाले, शान्तिदायक, जन्तुनाशक एवं चर्मरोग नाशक गुण इस नीमके तेलसे बने 'लिमडा' साबुन में पुर्ण रुपसे विद्यमान हैं। गोदरेज अन्य दूसरे नहानेके साबुन को विख्यात वैज्ञानिकों और चर्मरोग विशेषज्ञोंने जिस लिये मुक्त कण्ठसे सराहना की है इस 'लिमडा' को भी उन गुणोंसे आप पुर्ण पायेंगे। 'लिमडा' साबुन के घने एवं कोमल फेनसे अपने शरीर को स्वच्छ रखिये और भारतीय चर्म की पुस्तेंनी आरोग्यता और सुन्दरता को कायम रखिये।

Godrej Limda NEEM

गोदरेज चावी छाप नीम लिमडा टायलेट साबुन

गोदरेज टायलेट साबुन

नं० १ नं० २ 'वतनी' सन्दल लिमडा (नीम) फैमिली टर्किश बाथ शेविंग स्टिक शेविंग 'राउन्ड'

१०० प्रतिशत शुद्ध और पशु चर्बी रहित होने की गॉरन्टी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

अकोला जिला महिला-परिषद् की कार्यकारिणी की बैठक श्रीमती राधादेवी गोयनका की अध्यक्षता में हुई। प्रारम्भ में आपने इस आशय की सूचना दी कि आज लगभग ३ सप्ताह से हम लोगों ने अधिवेशन-सम्बन्धी काम प्रारम्भ किया है और उसकी ४ बैठकें हुई हैं। बरार की समस्त महिलाओं में अधिवेशन के लिए प्रचार करना है। प्रत्येक कार्यकर्त्री महिला परस्पर सहयोग और लगन के साथ कार्य करे जिससे अधिवेशन महिला-परिषद् के इतिहास में एक उदाहरण सिद्ध हो सके।

बैठक में निश्चय हुआ कि आगामी ७ अक्टूबर को स्वागत-सदस्याओं की सभा बुलाई जाय और इस समय अखिल भारतीय महिला-परिषद् की जनरल सेक्रेटरी मिसेज कुलसुम सयानी को बुलाया जाय। बैठक ने अधिवेशन के लिए दिसम्बर की २७, २८, २९ तारीखें निश्चित कीं तथा उन इमारतों के तय करने का निर्णय किया गया।

अधिवेशन में आनेवाली प्रतिनिधियों के लिए नगर के विभिन्न स्थानों में ठहराने की व्यवस्था पर कुछ इमारतों का प्रबन्ध करने का निश्चय किया गया।

अधिवेशन के समय हस्तोद्योग कला-प्रदर्शनी की योजना तैयार की जा रही है। बैठक ने निर्णय किया कि योजना अलग से देश के समाचारपत्रों को प्रकाशन के लिए भेज दी जानी चाहिए।

अकोला जिला महिला-परिषद् की कार्यकारिणी की बैठक श्रीमती राधादेवी गोयनका एम० एल० ए० की अध्यक्षता में हुई। अखिल भारतीय महिला-परिषद् के आगामी अकोला-अधिवेशन की तैयारी-सम्बन्धी विचार-विमर्श के बाद सर्वश्री दुर्गाताई जोशी, प्रमिलाताई ओक तथा ताराबाई रणदिवे की एक समिति प्रान्त में अधिवेशन के लिए प्रचार करने तथा स्वागत सदस्या बनाने के लिए बनाई गई। अधिवेशन के प्रचार-सम्बन्धी कार्यों के लिए श्रीमती राधादेवी गोयनका, प्रमिलाताई ओक तथा ताराबाई रणदिवे को नियुक्त किया गया।

अपने दौरे के दिनों में श्रीमती दुर्गाताई जोशी ने वाशीम व हालेगाँव में महिला-परिषद् की शाखायें कायम कीं तथा मुर्तिजापुर और अकोट में शाखायें खोलने का निश्चय किया। सुश्री ताई ने प्रान्त की मुस्लिम, ईसाई तथा मिशनरी महिलाओं से अधिवेशन के लिए पूर्ण सक्रीय सहयोग प्राप्त होने का वचन लिया।

श्रीमती दुर्गाताई जोशी ने भारतीय महिला-परिषद् का इतिहास प्रकाशित किया है। जो परिषद् के बारे में पूरी जानकारी देने के योग्य है, इसकी कीमत चार आना है। जो श्रीमती दुर्गाताई जोशी अकोला के पते पर प्राप्त किया जा सकता है।

—संवाददाता

* * *

सागर में गढ़ाकोटा का समाचार है, कि वहाँ जिलाधीश का दौरा, श्री बहादुरसिंह कंट्रोल इन्सपेक्टर के साथ हुआ, अपने दौरे के दरम्यान में जिले के लोकप्रिय डिप्टी कमिश्नर श्री जे० के० 'अटल' ने गढ़ाकोटा में दूकानों की जाँच की और जनता को अपनी तकलीफें सुनाने का मौका दिया। [illegible] पर आपने [illegible] लेते [illegible] चगेरा

परसोरिया की दूकानों की जाँच करके जब जिलाधीश सागर वापस आ रहे थे, तब उनकी मोटर अचानक एक बैलगाड़ी से टकराकर ५० फुट दूर कीचड़ में जा धँसी। फल-स्वरूप जिलाधीश महोदय बाल-बाल बच गये।

जैन भ्रातृ-संघ के तत्त्वावधान में पर्यक्षण पर्व के अवसर पर श्री बिहारीलाल सराफ की अध्यक्षता में एक कवि-सम्मेलन हुआ। सर्वश्री शिवकुमार इकराम, लक्ष्मणसिंह, बिहारीलाल, दीनदयाल नत्थालाल, सिंघई गणेशप्रसाद, रामसिंह चौहान, पद्मनाभ तैलङ्ग व लक्ष्मीप्रसाद मिश्र का कविता-पाठ हुआ। ता० ९ को गवर्नमेंट हाईस्कूल में भी एक कवि-सम्मेलन हुआ।

देहातों में बीड़ी बनने से खेती के काम में नुकसान होता है। सरकार से अनुरोध है, कि देहातों में बोनी के समय दो माह को बीड़ी का काम बन्द रहे।

शहर में प्लेग की शिकायत है। म्युनिसिपल कमेटी को इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

—लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

* * *

कानपुर (चौबेपुर) राधन के ब्रह्मदेवाश्रम सेवा-संघ के मंत्री लिखते हैं—

साधन-विहीन गरीब ग्रामीणों के शारीरिक स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान देकर सब प्रकार की सेवा करने के लिए श्री ब्रह्मदेवाश्रम सेवा-संघ की स्थापना की गई है। गाँवों की स्वास्थ्य-दशा संतोषप्रद नहीं है, इस ओर संघ लगन से कार्य कर रहा है। फिर भी संघ को कुछ ऐसे त्यागी संन्यासियों की आवश्यकता है जो स्वास्थ्य की आवश्यक बातों तथा ग्रामीण जड़ी-बूटी, दवा-दारू का ज्ञान रखते हों और सदैव को गंगातट के आश्रम में रहकर दुखी-रोगी ग्रामीण जनता को औषधि-उपचार आदि से सहायता पहुँचा सकें। एवं आश्रम के गोशाला व कृषिशाला की व्यवस्था स्वावलम्बी बनाते हुए अपना सारा व्यय सँभाल सकें।

* * *

हरिद्वार में संयुक्तप्रांत के प्रधान मंत्री माननीय श्री पं० गोविन्द वल्लभ पंत की ५९वीं जयन्ती के उपलक्ष में पञ्जाब महावीर-दल शाखा हरिद्वार की ओर से रात्रि को भवन में रोशनी की गई। और दल के कार्यकर्ताओं की पं० चिरंजीवलाल शर्मा के सभापतित्व में मीटिंग हुई जिसमें सम्मिलित रूप में भगवान् से प्रार्थना की गई कि देश का नेतृत्व करने के लिए पन्त जी को दीर्घजीवी करें।

—संवाददाता

* * *

लखनऊ मारवाड़ी युवक-मंडल ने चार भागों में एक बृहत् ग्रंथ प्रकाशित करने का आयोजन किया है, जिसमें समस्त सुप्रसिद्ध मारवाड़ी व्यक्तियों का जीवन-चरित्र तथा उनके द्वारा संचालित अथवा उनसे सम्बन्धित राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक व व्यापारिक संस्थाओं का सचित्र और सविस्तृत वर्णन होगा। लेखकों व समस्त मारवाड़ी सज्जनों को चाहिए कि इस ग्रन्थ की प्रकाशन योजना में पूर्ण सहयोग देकर अपने कर्त्तव्य का पालन करें! विशेष विवरण के लिए मंत्री—मारवाड़ी युवक-मंडल, लखनऊ से पत्र-व्यवहार [illegible]

—अशोक [illegible]

* [illegible]

लखनऊ के विद्यान्त हिन्दू इन्टर कालेज में हिन्दी-साहित्य-परिषद् का निर्वाचन हुआ। पदाधिकारी श्री मोहनलाल शर्मा सभापति, श्री जयनारायण श्रीवास्तव, पं० केशवनाथ मिश्र 'अशंक', उप-सभापति श्री महेशकुमार शर्मा 'कुमार', मंत्री श्री मनोरञ्जन उप-मन्त्री, श्री प्रेमप्रकाश अग्रवाल उप-मन्त्री, श्री एन० के० दत्त कोषाध्यक्ष चुने गये।

—मन्त्री

* * *

लखनऊ हिन्दी-विद्यापीठ के चार सदस्यों का एक शिष्ट दल पं० ब्रह्मदत्त तिवारी 'नागर' प्रधान मन्त्री की अध्यक्षता में माननीय श्री सम्पूर्णानन्द, शिक्षा तथा अर्थ मन्त्री संयुक्त-प्रांत से मिला। प्रधान-मन्त्री ने हिन्दी भाषा-भाषियों के साथ होनेवाले अहितकर व्यवहारों को तथा अन्य कठिनाइयों को उनके समक्ष उपस्थित किया। माननीय शिक्षा मन्त्री ने समस्त कठिनाइयों को यथा साध्य दूर करने का प्रयत्न करने का आश्वासन दिया।

हिन्दी विद्यापीठ द्वारा ली जानेवाली प्रवेशिका, 'साहित्य-भूषण, साहित्य-सुधाकर तथा 'संगीत-भूषण' एवं "संगीत-कला विशारद" की परीक्षाएँ इस वर्ष २० अक्टूबर ४६ से प्रारम्भ होंगी, आवेदनपत्र भेजने की अन्तिम तिथि २५ सितम्बर ४६ है।

—प्रेमलता तिवारी "विशारद" मन्त्रिणी

* * *

उज्जैन में राष्ट्रशृङ्गार मित्र-मंडल के गणेश उत्सव के कार्यक्रम दस दिन तक चले। कवि-सम्मेलन, मुशायरा, वाद-विवाद "बलिदान" नाटक बालक-बालिकाओं के गायन, भजन और संगीत के कार्य-क्रम के साथ महात्मा जी, नेहरू जी, आजाद हिन्द फौज के नेताओं के सुन्दर दृश्य की झाँकी रक्खी गई। अंतिम दिन [illegible] नेता खान शाकिर अली [illegible] मध्यभारत प्रादेशिक देशी [illegible] की हिन्दू-मुस्लिम-एकता पर [illegible] वैध पत्रकार की अध्यक्षता [illegible] आपने बताया कि देश [illegible] सुभाष बाबू-जैसे नेता की [illegible] करे वे जिंदा हों और [illegible] आप ने एकता के लिए [illegible] पर से सेंसर बिठाने, [illegible] रक्षक कमेटियाँ बनाने, [illegible] एकत्रित करने और नेताओं [illegible] करने के लिए दबाव डालने [illegible]

* *

बलिया जिले के [illegible] भवन पुस्तकालय की शिकायत [illegible] सितम्बर के 'देशदूत' में [illegible] निराधार है। पं० गणेशदत्त [illegible] पूर्व मंत्री ता० १३ अगस्त [illegible] के प्रस्ताव के कारण पुस्तकालय [illegible] दिये गये हैं। शिक्षा-अधिकारियों [illegible] अनुरोध है कि पुस्तकालय [illegible] करके सत्यता की पुष्टि करें।

—हरनारायण [illegible]

* *

प्रयाग साधना-परिषद् [illegible] श्रेष्ठ उपन्यासकार स्वर्गीय [illegible] चट्टोपाध्याय की ७०वीं [illegible] ता० १५—९—४६ को [illegible] ओंकारनाथ शरद ने शरत्चन्द्र [illegible] चरित्र और उनकी रचनाओं [illegible] डालते हुए एक लेख पढ़ा। [illegible] कुमार तथा श्री ज्योतिर्मय [illegible] के कुछ गीतों का हिन्दी अनुवाद [illegible] श्री कामेश्वरप्रसाद अग्रवाल [illegible] व्याख्यान में शरत्चन्द्र [illegible] राष्ट्रीय आन्दोलन के उत्थान [illegible] प्रकाश डाला।

—[illegible]

दार्जिलिंग तराई टी कार्पोरेशन लिमिटेड

हेड आफिस, १२ चौरंगी स्क्वायर कलकत्ता

अधिकृत और चालू पूँजी ५,००,०००) रुपए हैं—जो १०) रुपयों के [illegible] में ३००० साधारण हिस्सों और १००) रुपए प्रति हिस्सा सुविधा के [illegible] (बन्धकों से) २००० हिस्सों में (६% बिना टैक्स के बन्धक की [illegible] हिस्सों में बँटी हुई है।

प्रत्येक श्रेणी के लोग इसको अदा कर सकते हैं। दरख्वास्त के साथ [illegible] भेजना चाहिए। शेष बँटवारे के एक महीने के भीतर। प्रत्येक दरख्वास्त [illegible] साथ १) दाखिला फीस आवश्यक है।

अच्छी स्थिति और आधुनिक मशीनरी (कल पुर्जों) से पूर्ण एक [illegible] चालू चाय के बाग़ को जो दार्जिलिंग में है, ख़रीदने की बातचीत [illegible] हो चुकी है। इस बाग़ का नाम टिनढरिया टी स्टेट है जिसका [illegible] १०७५ एकड़ है। उस बाग़ में अच्छे जंगल, औज़ार, पौदे और [illegible] तथा इमारतें इत्यादि हैं। सन् १९४६ ईसवी में उस बाग़ से १,२०,[illegible] पौण्ड चाय की पैदावार और ७५ हज़ार रुपए के लाभ की अनुमान है।

प्रारम्भिक वर्ष में ही अच्छे लाभ की आशा है।

बाक़ी हिस्सों को बेचने के लिए एजेण्टों की आवश्यकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...की तरंग

...ऊपर से एक अग्नि-बाण ...पड़ा। कायदे आजम ...कोई सिगनल तो नहीं

* *

...है कि काश्मीर की सरहद ...एकत्र हो रही है। जान ...काश्मीर में फलों की ...है। बादाम खाने सैनिक

* *

...नारायण का कहना है ...लड़ाई अभी समाप्त नहीं ...हुई है कि नहीं, इसी में ...है।

* *

...है कि युक्तप्रान्त के शिक्षा-...समाज-सेवा अनिवार्य ...अच्छा ही है। बेगारी ...बहुत-सा काम नहीं ...विद्यार्थी उसे कर डालेंगे, ...नहीं।

* *

...के परराष्ट्र-मंत्री का कहना है ...इंगलैंड के झगड़े में नहीं ...तीसरी लड़ाई और हो जाने ...निर्णय कीजिए तो बेह-

* *

...बम्बई में अब भी छुरे-...जा रही है। इससे और तो ...बहुत-सी अन्य बाजियाँ ...रही हैं।

* *

...है प्रान्तीय सरकार राष्ट्रीय ...पर रोक लगानेवाली है। ...संस्थाएँ राष्ट्रीय कैसे हो

सिंध-प्रान्त की असेम्बली भंग कर दी गई। अब फिर से चुनाव होगा। आशा है इस बार साठ में पचास मुस्लिम लीगी सदस्य चुने जायँगे और मूडी साहब को पाकिस्तान के शासन का गौरव प्राप्त होगा।

* * *

नेताजी जीवित हैं और शीघ्र ही प्रकट होनेवाले हैं। यह समाचार आजकल देश में गूँज रहा है। सम्भवतः हिटलर के साथ ही भारत में वह आयेंगे और दोनों साथ होकर ब्रिटिश साम्राज्य से युद्ध ठानेंगे।

* * *

मद्रास की पाठ्य-पुस्तकों में से 'सम्राट् चिरजीवी हों' की प्रार्थना हटा दी जायगी। उस प्रार्थना के कारण सम्राट् की आयु को ईश्वर को जितना बढ़ाना रहा होगा बढ़ा ही चुके होंगे। अब आगे हटाइए या न हटाइए, जब चिड़ियाँ चुन गईं खेत, तब पछताये होत का।

* * *

एक प्रकाशित समाचार से पता चलता है कि सातवें एडवर्ड भारतवासियों को बहुत निम्नकोटि का समझते थे। ऊँचा पद देना भी उचित नहीं समझते थे। अवश्य इस समय कांग्रेसियों को भारत सरकार का सदस्य देखकर उनकी रूह को बड़ा कष्ट होता होगा। विलायत के पादड़ियों को चाहिए कि गिरजाघरों में इसके लिये प्रार्थना करें।

* * *

सुना जाता है कि अब सरकार की ओर से पदवियों का प्रसाद नहीं मिलेगा। क्यों न कुछ कांग्रेसी पदवियाँ बाँटी जायँ। जैसे सूत बहादुर, चरखोपाध्याय, झंडा खाँ इत्यादि, इत्यादि।

* * *

मुस्लिग लीग ने निश्चय किया है कि लीगी सदस्य अब रेलों पर बिना टिकट चलेंगे। अभी तक क्या मुस्लिम लीगवाले टिकट लेकर चलते थे?

—अगड़धत्त शर्मा

इधर उधर की

संयुक्तराष्ट्र अमेरिका में ९४,००,००० घर बिना बिजली के हैं।

* * *

हिन्दुस्तान में चलनेवाले नवीन चित्र-पट ये हैं:—प्रेम की दुनिया, अरेबियन नाइट्स, परवाना, जग-बीती, दीवार, नेक पर्विन, कल्पना, शाहजहाँ, बैरम ख़ाँ, पारो, शिकायत, शहर से दूर, सुभद्रा, वाल्मीकि, इन्क़लाब।

* * *

भूतपूर्व वायसराय के पुत्र लार्ड वेलिङ्गडन ने लन्दन में एक 'नाइट गार्ड्स लिमिटेड' नामक कम्पनी खोली है। उनके आदमी इमारतों और फ़ैक्टरियों की रक्षा करने में सहायता देंगे। व्यक्तिगत निवासी दिन या रात के किसी भी समय अपने घरों का पहरा देने के लिए भाड़े पर आदमी रख सकते हैं। उनके रात्रि-रक्षक हरी पोशाक और चोटीदार स्काई-टोपियाँ (स्विस लोगों की तरह) पहनते हैं तथा हाथ में छोटा-सा डण्डा लिये रहते हैं। उनके आदमी जो मिलिट्री और रॉयल एयर फोर्स की पुलिस से लिये गये हैं, फौज के अनुशासन का पूर्णतया पालन करेंगे।

* * *

विण्डसर के ड्यूक ने अपनी पत्नी-सहित नाइस में महारानी विक्टोरिया की बनती हुई मूर्त्ति को देखा, जो अब नाजियों के द्वारा नष्ट कर दी जाने के अनन्तर पुनर्निर्मित हो रही है।

* * *

रोम की सरकार ने घोषणा की है कि १९२५ ईसवी में पैदा हुए ४४,००० युवकों के लिए इटली की सेना में भर्ती होना अनिवार्य है।

* * *

मदरास में बरमा से ५,००० टन चावल आया है।

* * *

घर और बाहर

(पेज ४ का शेष)

साधारण मनुष्यों के समझ में नहीं आ सकती है परन्तु सिन्ध के गवर्नर मुडी साहब असाधारण हैं। कम से कम संयुक्त-प्रान्त के रहनेवालों को तो मुडी साहब को अच्छी तरह जानना ही चाहिए।

* * *

फिलस्तीन में यहूदी "पाकिस्तान"

फिलस्तीन अरबों का देश है। इस देश में कुछ यहूदी भी बसते हैं। अमरीका और ब्रिटेन की अब यह इच्छा है कि इस देश में और भी यहूदी बसाये जायें। यह दोनों देश यह अच्छी तरह जानते हैं कि इस प्रस्ताव का विरोध अरब लोग जरूर करेंगे। इस पर भी अमरीका और ब्रिटेन फिलिस्तीन में एक झगड़ा खड़ा करने के लिए और भी यहूदी बसाना चाहते हैं। झगड़ा खड़ा होने से वहाँ अमरीकी और अँगरेजी फौजी अड्डा बनाना जरूरी हो जायगा।

ब्रिटेन ने पोलैण्ड को १४,००,००,००० पौंड की कर्ज दिया है। समझौते की मुख्य बातें मान ली गई हैं। १५,००,००,००० पौंड का ऋण घटाकर १,००,००,००० पौंड कर दिया गया है। ३०,००,००० पौंड ब्रिटेन में पोलैण्ड के रिजर्व बैंक से स्वर्ण के रूप में दिये जायँगे। ७०,००,००० पौंड शेष रहे। ये पाँच वर्षों में थोड़ा थोड़ा करके दिये जायँगे।

* * *

एडिनबरा के एक मजदूर टॉम मैक-कोर्ट को खिड़कियाँ तोड़ने की आदत है क्योंकि वह जेल जाना पसन्द करता है। दूकान की दो खिड़कियाँ तोड़ डालने पर १५ मई को जब उसे तीन महीने के कारागार का दण्ड सुनाया गया, तो उसने यह वाक्य कहा—'बहुत कम दण्ड दिया गया।' जज ने उत्तर दिया कि उन्हें इस बात का शोक है कि वे उस समय उससे अधिक और कुछ नहीं कर सकते थे। मैक-कोर्ट कटघरे में चला गया और गुनगुनाया 'अत्यन्त निराशपूर्ण'।

—'ललित' शाहजहाँपुरी

पाकिस्तान

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

...जगह हो कुछ न कीमत आदमी की जान की,
...हो जिस जगह गुंडे बड़ी ही शान की;
...बच्चों का जहाँ हो लूट हो ईमान की,
जिस जगह बाकी नहीं कुछ धर्म या ईमान है।
देख लो मित्रो वही तो आज पाकिस्तान है।

...की कुछ नहीं कीमत जहाँ पर पाइये,
...पानी छुरे का और डंडा खाइये;
...सारी आदमीयत को जहाँ पर जाइये,
जिस जगह इन्सान अब बाकी नहीं इन्सान है।
देख लो मित्रो वही तो आज पाकिस्तान है।

...जगह इज्जत न बेटी और बहनों की रही,
...जगह सारी गलत है बात हो जाती सही;
...की जिस जगह सारी इमारत है ढही,
खून की होली जहाँ पर खेलता शैतान है।
देख लो मित्रो वही तो आज पाकिस्तान है।

...दिल में ज़रा किसने लगाई आग है,
...ले साज़ छेड़ा दुश्मनी का राग है,
...दिल में आज देता दाग पर भी दाग है,
भाइयों के बीच कैसा आज यह ख़फकान है।
है नमूना ही अजब जो आज पाकिस्तान है।

...में शंख की आवाज भी आती रहै,
...मसजिद से अजाँ की गूँज भी जाती रहै,
...दोनों साथ मिल्लत् का भजन गाती रहै,
एक को 'बेढब' न जब तक दूसरे का मान है।
है न हिन्दुस्तान कुछ या कुछ न पाकिस्तान है।

दि आसाम टी कम्पनी लि०

रजिस्टर्ड आफिस, १२ चौरंगी स्क्वायर कलकत्ता

अधिकृति पूँजी ८,००,०००) रुपये
चालू पूँजी ५,००,०००) रुपये

(जो दस रुपये प्रतिहिस्से के तीन हज़ार साधारण हिस्सों में, १००) रुपये प्रतिहिस्सा के (प्रत्येक के लिए अदायगी के बन्धकों में) सुविधाजनक हिस्सों के दो हज़ार हिस्सों में (६% बिना टैक्स के बन्धकों की एकता में) बँटे हुए हैं। प्रत्येक इसको अदा कर सकता है। दरख़्वास्त के साथ ५०% और ५०% बँटवारे पर। प्रत्येक दरख़्वास्त के साथ १) मेम्बरी फीस दाखिला के लिए आवश्यक है।)

बिक्री की हुई पूँजी ४,७८,९५०) रुपये है।

हमने मेसर्स जेम्स फाइनले ऐण्ड को० लिमिटेड, दि हिंगाजिया टी स्टेट आफ आसाम से २४४४.८० एकड़ चालू स्थिति का बाग़ ख़रीदा है जिसमें उपयोगी जंगल, पौधों के औजार और कल-पुर्ज़े भी हैं, इन सबके लिए हमने ८,००,०००) रुपये उचित दाम दे दिये हैं।

सन् १९४६ की फ़सल से ३५०० मन पैदावार और एक लाख अठहत्तर हज़ार रुपयों की आमदनी की आशा है।

एक सीमित संख्या के हिस्से अब भी समता पर मिल सकते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वामपक्ष की एकता ज़रूरी क्यों?

(पेज ५ का शेष)

कांग्रेस जैसी कि वह आज है अधिक से अधिक पूँजीवादी या राष्ट्रीय क्रांति तक जायेगी, पर उसके बाद क्या होगा? उसके बाद के दिनों की तैयारी के लिए ही यह जरूरी है कि सारा वामपक्ष अभी से एक हो जाय।

इस सम्बन्ध में यह एक बहुत जरूरी प्रश्न है कि कम्यूनिस्ट पार्टी के सम्बन्ध में क्या रुख लिया जाय? इसमें सन्देह नहीं कि १९४२ के जमाने में कम्यूनिस्ट पार्टी ने बहुत भारी विश्वासघात किया था, किन्तु यह भी सत्य है कि वह अब भी किसानों, मजदूरों तथा छात्रों में कुछ शक्ति रखती है। यह सम्भव नहीं है कि यह बताया जाय कि यह शक्ति अन्य वामपक्षी दलों के मुकाबले में कम है या अधिक। इस बात को कूतने की शायद उतनी आवश्यकता भी नहीं है। राजनीति का क्षेत्र वास्तविकता को लेकर ही चल सकता है, अतएव यदि कम्यूनिस्ट पार्टी के साथ सहयोग करना जरूरी हो तो वह करना ही पड़ेगा। यों सिद्धान्त रूप से न मानते हुए भी बम्बई में भारतीय नौ सेना के विद्रोह तथा कलकत्ते में कई मौकों पर जिनमें डाक की हड़ताल सबसे ताजी घटना है दूसरी पार्टियों को कम्यूनिस्ट पार्टी से कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करना पड़ा। ऐसी हालत में इस प्रश्न पर व्यवहारिक दृष्टि से सोचना पड़ेगा।

मामूली व्यक्तियों के लिए तो इन विभिन्न वामपक्षी पार्टियों में क्या भेद है यह तो समझना असम्भव है ही, पर विशेषज्ञों के लिए भी यह समझना कठिन है कि इन पार्टियों में किन विषयों में मतभेद है। जब से कम्यूनिस्ट पार्टी ने जनयुग का नारा अपनाया, तब से उसको लोग समझ गये हैं कि वह क्यों अलग हैं, पर दूसरी पार्टियों के लिए इस बात को समझना कि क्यों वे अलग हैं बहुत कठिन है। उनमें किसी विषय में कोई विशेष मतभेद तो नहीं ज्ञात होता।

आम आदमी फारवर्ड ब्लाक के सम्बन्ध में समझते हैं कि यह नेता जी की पार्टी है, इसी प्रकार कांग्रेस समाजवादी दल के सम्बन्ध में वे समझते हैं कि यह श्री जयप्रकाशनारायण, अच्युत पटवर्द्धन आदि की पार्टी है। यहाँ तक तो ठीक है, क्योंकि आम जनता जो चीजों को गहराई तक सोचने के लिए अभ्यस्त नहीं है वह व्यक्तियों तथा वीरों के जरिये से चीजों को अच्छी तरह समझती है। सच तो यह है कि आम जनता के निकट यही एक कसौटी है। पर यह आम जनता भी उस समय बहुत भुलावे में पड़ जाती है जब श्री जयप्रकाश जी यह कहते हैं कि वे सुभाष बाबू को अपना नेता मानते हैं। आम जनता उस समय इस विचार-संकट में पड़ जाती है कि जब ऐसी बात है तब यह अलग अलग मसजिद काहे की? फिर कुछ अधिक जाननेवाली जनता के सामने यह भी प्रश्न उठता है कि जयप्रकाश जी सुभाष बाबू को कब से अपना नेता मानते हैं? वे तथा उनकी पार्टी ने त्रिपुरी में तो उनको अपना नेता नहीं माना था।

ये सब प्रश्न है जिनसे आम जनता भी भुलावे में आ जाती है। अब आम जनता को छोड़कर सिद्धान्तों की ओर चलिए तो भी सबसे [illegible] लेते चगेरा होता। अभी अभी समाजवादी दल के सदस्य डा० राममनोहर लोहिया ने संयुक्तप्रांत में एक वक्तव्य देते हुए यह कहा है कि तीन बातों के मानने से ही कोई भी कांग्रेस-समाजवादी हो सकता है। वे तीन बातें ये हैं, एक तो मोटे तौर पर समाजवाद को मानना, दूसरा किसी और पार्टी का सदस्य न होना, तीसरा रोज दो घंटे पार्टी का काम करना।

अब यह पूछा जाय कि ये तीन शर्तें किस पार्टी पर लागू नहीं होतीं। कांग्रेस समाजवादी, फारवर्ड ब्लाक, क्रांतिकारी समाजवादी सभी तो इन तीनों बातों को मानते हैं। फिर भेद किस बात में है? यदि इसी तरह गुट बनाना है तो फिर उसमें सिद्धान्तों की छौंक क्यों लगाई जाती है। फिर प्रश्न यह है कि समाजवाद की मोटी मोटी बात से क्या मतलब है? यों तो आजकल सभी किसान मजदूर राज्य का नारा दे रहे हैं, यदि केवल इसी बात को समाजवाद की मोटी बात मान ली जाय तो उस हालत में तो इस समय घोर से घोर गांधीवादी भी समाजवादी हैं क्योंकि सभी इसका नारा दे रहे हैं; परन्तु जैसा कि हम जानते हैं कि इतने से कोई समाजवादी हुआ नहीं जाता। हम यहाँ पर यह नहीं गिनायेंगे कि समाजवाद की मोटी मोटी बातें क्या हैं, पर यदि मार्क्स को विश्वास किया जाय तो Force जिससे डा० लोहिया परहेज करेंगे भी समाजवाद की मोटी बातों में हैं, और चूँकि डा० लोहिया अहिंसावादी हैं इसलिए वे खुद ही समाजवाद के अन्दर नहीं आते।

तो इस प्रकार केवल मोटी मोटी बातों को लेने से तो कुछ समझ में नहीं आता कि क्यों इतनी पार्टियाँ हैं? हमें तो ऐसा जान पड़ता है कि सिद्धान्तों पर तथा उनके स्पष्टीकरण पर कम जोर है, पार्टीबन्दी पर अधिक जोर है। कहना न होगा कि इससे कुछ विशेष लाभ न होगा। फिर यह टिकाऊ भी नहीं है। यदि सिद्धान्तों का बहुत अच्छी तरह स्पष्टीकरण नहीं किया गया तो केवल वीर-पूजा को लेकर पार्टियाँ नहीं चलेंगी अर्थात् वे स्वतन्त्र रूप से किसी कार्य के लायक नहीं होंगी।

कांग्रेस के अन्दर बहुत सी वामपक्षी पार्टियाँ हैं, पर कांग्रेस से अलग होने पर या विरोध करने पर इनमें जो सबसे तगड़ी पार्टियाँ हैं उनकी कैसी हालत होगी, इसमें बहुत संदेह है। और जैसा कि हम कह चुके हैं कि बहुत बचाने पर भी समाजवादी पार्टियाँ एक हद तक ही कांग्रेस के साथ जा सकेंगी, आगे रास्ता जुदा जुदा होने के लिए वह बाध्य है।

कांग्रेस की अन्तर्गत पार्टियों के सम्बन्ध में यह एक जानी हुई बात है कि वे ऐसे लोगों से भरी हुई हैं जो कांग्रेस के कारण कई तरह के पदों पर आरूढ हैं। यदि ये पार्टियाँ कभी कम्यूनिस्ट पार्टी की तरह कांग्रेस से अलग पर कांग्रेस से गरम कार्यक्रम दें, और उसके कारण अलग कर दिये जायँ, तो इन पदस्थ व्यक्तियों में से कितने अपनी पार्टी का साथ देंगे इसमें बहुत भारी संदेह है।

ऐसी हालत में चाहिए यह कि सब वामपक्षी दल बिलकुल एक संस्था में परिणत होकर एक तगड़ी शक्ति के रूप में [illegible] दिखाई पड़ें। इसके अतिरिक्त [illegible] तक समाज [illegible] यद विचारार्थ है। यदि किसी कारण से सब पार्टियाँ एक न हो सकें तो कम से कम वे एक कार्यक्रम बनावें और एक हाई कमांड कायम करें। यदि इतना भी नहीं हो पाता तो यह समझना पड़ेगा कि अभी समाजवादी शक्तियाँ बहुत कमजोर हैं। प्रत्येक पार्टी के प्रत्येक सदस्य को इस बात की आत्म-परीक्षा करनी चाहिए कि कहाँ तक उसकी पार्टी केवल कुछ नेताओं की आत्मश्लाघा को सन्तुष्ट करने के लिए है और कहाँ तक वह सही पार्टी है। इसके लिए प्रत्येक सदस्य को समझना पड़ेगा कि सही सिद्धान्त क्या है। तभी सच्चे मानी में किसान मजदूर राज्य का आदर्श निकट आयेगा। सिद्धान्त को न समझ कर केवल किसी वीर के पीछे चलना है तो उसमें तो बड़ा खतरा है क्योंकि यह बात स्मरण रहे कि यूरोप में समाजवाद का नाम लेते लेते और वीर या फुहरर के पीछे पीछे चलते चलते लोग फासिस्ट हो गये।

श्रीकृष्ण-चरित्र—लेखक, रावबहादुर काशीनाथ, एम० ए०, एम० बी० ई०। पतितपावन भगवान् श्रीकृष्ण का पावन चरित्र इस पुस्तक में महाभारत के अनुसार वर्णन किया गया है। जिसे पढ़ने पर उपन्यास का मज़ा आता है। भाषा प्रांजल और परिमार्जित है। कृष्ण की जीवनी पर विवेचनात्मक ढंग से प्रकाश डालनेवाली हिन्दी में अपने ढंग की यह प्रथम पुस्तक है। मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने।
मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड इलाहाबाद।

मध्यप्रांत का विभाजन

(पेज ७ का शेष)

हित में मालूम होता है। [illegible] आधा भाग अन्ततः महाराष्ट्र भाग महाविदर्भ में यदि [illegible] तो एक करोड़ जनसंख्या का प्रान्त 'नागपुर-विदर्भ' की भूमि बन सकता है। यह दृष्टि से उत्तम होगा ही, स्वयं पूर्ण भी बन सकेगा। कोशल में विकास के अवसर जब कि संघ-शासन के शासन की तजवीज भी बन रही है प्रत्येक प्रान्त बने यह आवश्यक नहीं है जहाँ शासन-खर्च की सुविधाजनक हो सकता है, अनेक कठिनाइयाँ भी अधिक गम्भीर सिद्ध होंगी। बाजी से किसी निर्णय के हो यदि हमारे प्रान्त के बैठकर प्रान्तों के पुनर्विभाजन माँग या संभावना पर और दोनों प्रदेशों को उचित करें। इस बारे में उचित में प्रकाश देना हमारे है, हमें तो अन्ततः वही चीज जो प्रत्येक प्रदेश के विभिन्न धाराओं को यों ही इस विषय में नेतृत्व की नेताओं को लेनी ही चाहिए, दिशा में बढ़ेंगे?

हिन्दी में
अभूतपूर्व क्रान्तिकारी साहित्य
नेता जी श्री सुभाषचन्द्र बोस-सम्बन्धी प्रसिद्ध हिन्दी साप्ताहिक
'अभ्युदय'
के पाँच विशेषांक जिन्होंने भारत भर में हलचल मचा दी है

पहला, दूसरा, तीसरा और चौथा विशेषांक एक में (सजिल्द) केवल [illegible] रुपया।

पाँचवाँ विशेषांक जिसमें जियाउद्दीन के भेष में नेता जी सम्बन्धी अलभ्य चित्र भी उत्तमचन्द्र द्वारा लिखित उनके भारत से बाहर जाने की कहानी पूरी की पूरी, १०० से ऊपर अनमोल चित्र तथा २०० के करीब कवर पर माता भवानी द्वारा नेता जी को तलवार प्रदान करते हुए सुन्दर चित्र है—तीन रुपया मात्र।

दोनों एक साथ लेनेवाले को पोस्टेज माफ। हजारों प्रतियाँ बिक चुकी, कुछ प्रतियाँ अभी शेष हैं। जल्दी कीजिए नहीं तो बाद में इनका [illegible] हो जायगा।

मैनेजर 'अभ्युदय' प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...गाल शेयर डीलर्स सिण्डीकेट लिमिटेड

प्रधान कार्यालय—'शेयर्स डीलर्स हाउस' कलकत्ता

ब्रांच और एजेन्सियाँ—सारे भारतवर्ष, सीलोन और पूर्व अफ्रीका में

पूजा

अधिकृत.....२५,००,०००) रुपये
बिकी हुई.....१८,००,०००) रुपये
अदा हुई.....१०,२९,३५९) रुपये

...गाल शेयर डीलर्स सिण्डीकेट—भारतवर्ष के स्टाक और शेयर्स (हिस्सों) के व्यापार में प्राचीन और सबसे बड़ा ज्वाइंट स्टाक है ...व्यापार में धन लगानेवाली जनता के लाभ के लिए बड़ी ईमानदारी से सेवा की है और आज भी देश में शेयर्स (हिस्सों) ...व्यापार की उन्नति के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य करती है।

डिविडेण्ट (मुनाफा)

...सिण्डीकेट के शेयर होल्डरों (हिस्सा लेनेवालों) को लगी हुई पूँजी का २७% मुनाफे के रूप में प्राप्त हो चुका है। चालू ...इससे अच्छे मुनाफे की आशा है।

आमदनी

...सिण्डीकेट को निम्नांकित मदों से आमदनी होती है—
...ग्राहकों के हिसाब से व्यापार करने पर दलाली से।
...ग्राहकों के शेयर (हिस्से) के ऊपर कर्ज देने की पेशगियों के ब्याज से।
...वार्षिक किराया से जो ३० हजार रुपयों के मकानों से प्राप्त होता है। इसमें अपनी निजी पाँच तल्ले की इमारत 'शेयर ...डीलर्स हाउस' है जो कलकत्ते के चौरंगी स्क्वायर में है।
...विभिन्न एजेन्सी के पारिश्रमिक और कमीशन से, जो ४० हज़ार रुपये के नेशनल न्युट्रीमेंट लिमिटेड (विटामिन के व्यव-...साय) से प्राप्त होता है। सिण्डीकेट को कोयले की अपनी दो कम्पनियों से जो इसी वर्ष खरीदी गई हैं, प्रतिवर्ष अच्छी रकम ...मिलने की बड़ी आशा है। उन कम्पनियों में से एक इंडियन कोलियारीज लिमिटेड है जो बहुत पहले ही खरीदी गई थी ...धनबाद जिले के झरिया की अच्छी कोयले की खानों में से है। उस खान से प्रतिवर्ष ७ हज़ार टन कोयला निकाला जाता है।

हमारा कार्य

(१) हम हर प्रकार के शेयरों (हिस्सा) में व्यापार करते हैं—
(२) हम व्यापार में धन लगाकर कमाने के लिए मुनाफे-सम्बन्धिनी राय देते हैं।
(३) हम, निश्चित जमा (रकम) स्वीकार करते हैं।

निश्चित जमा पर ब्याज

१ वर्ष के लिए ..	३½%
२ वर्ष के लिए ..	४%
३ और ४ वर्ष ..	४½%
५ और ६ वर्ष ..	५%
७ वर्ष	५½%
८ वर्ष	५%
९ वर्ष	५½%
१० वर्ष ...	५½%

मुनाफा अतिरिक्त धन जमा की पद्धति पर कमाया जाता है

...अंतरिम राष्ट्रीय सरकार बन गई है और भारतवर्ष की स्वतन्त्रता द्वार पर है। स्वतन्त्र भारत में सारे व्यापार की उन्नति और ...उनका प्रसार निश्चित है। इस परिवर्तन काल में शेयर बिजनेस (हिस्से के व्यापार) के प्रसार होने की भी बड़ी आशा है। ...इसके लिए अतिरिक्त धन जमा की पद्धति ठीक रहेगी तो हमारे इस मुनाफे के व्यापार के लिए अधिक धन की आवश्यकता न ...होगी। पद्धति के अनुसार पार्टी खरीदे हिस्से के लाभ का ५...रुपया नहीं देती बल्कि मुनाफे का एक भाग देती है।

...हमारी मासिक रिपोर्ट 'आवर मंथली शेयर मार्केट ...सकता है। प्रार्थना पर हम नमूने की कापी भेज सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारे संसार का प्रिय!

सिरोलिन

'रुचि'

फेंफड़ों के विकारों में

यह अति आकर्षक है।
यह अति सुन्दर है
परन्तु इसमें शिथिलता है। इसे
करना आवश्यक है।
जी.जी. फलपेय का एक ग्लास
किसी भी शारीरिक परिश्रम के
स्फूर्ति और ठंठक प्रदान करता

फल पेय :—नीबू, माल्टा, अन
कोडियल, नीबू वाली।
फल शर्बत :—सतरा, कला, नि
नीबू, पाल्मा,
चाकोलेट और
टाफी।

66

जी. जी. फ्रूट प्रिज़र्विङ्ग फैक्ट्री आगर

जी. जी. इन्डस्ट्रीज़

जी० जी० सेल्स डिपो :—
मैसर्स गिरधरलाल बकाल जनरलगंज कानपुर
बम्बई : देहली : कलकत्ता : ग्वालियर : अजमेर : बरेली

"माफ कीजिये"

स्वास्थ्य के लिये
अन्दरूनी सफाई सर्वोपरि है!

अब यह सभी जानने लगे हैं कि एण्डरूज के नियमित सेवन से अन्दरूनी सफाई होती है यह आनन्ददायक, शक्तिवर्द्धक और स्वास्थ्य-प्रद पेय है। यह समस्त संस्थानको ठंडा व तरो-ताजा रखता है। सभी उम्रके लोगोंके लिये एण्डरूज आदर्श रेचक है। यह आपको किस प्रकार सुन्दर, स्वस्थ व प्रसन्न करता है देखिये—

प्रथम...एण्डरूज मुंह और जीभको साफ करके तरोताजा बनाता है।

द्वितीय ..एण्डरूज पेटको व्यवस्थित करके अम्ल को साफ करता है।

तृ...एण्डरूज यकृत को ठीक रखता और पित्तधिक्य को रोकता है।

अन्ततः-एण्डरूज अन्दरूनी विशेषकर कब्जि-यत दूर भगाता और रक्त को परिष्कृत और ठण्डा रखता है।

ANDREWS

एण्ड्रूज लिवर साल्ट

— तरोताजा — बलवर्द्धक

अब!

वे फिर मिलते हैं

बुश की प्रत्येक रगड़ में अधिक सफ़ाई की शक्ति

★ यह जल-अभेद्य और लार-विरोधक होता है।

★ दांतों को स्वच्छ और चमकीला बनानेमें ६० प्रतिशत अधिक कारगर

★ साल भर की गारंटी

पशुओं के बालों से रहित

व्यापारिक पूछ-ताछ :—एल० डी सेमूर एंड कं० (इंडिया) लि०, बम्बई, कलकत्ता, कराची, मदरास।

डा. वेस्ट्स ट्रूथ ब्रुश और ट्रूथ पेस्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

मूल्य ७॥)
वर्ष ३

सितम्बर, १९४६ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 29th September, 1946

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

J & N REMINDERS!

स्मारक पत्र

किस प्रकार का काम: पुलों, फाटकों, टेलिग्राफ़ के खम्बों, ...ोर करने के टैंकों आदि के लिए।

हमारी सिफ़ारिश: "रेडिएंटा अलुमिनियम पेंट" (Radianta Aluminium paint), साफ़ और चमकीली फ़िनिश, जो ...ां नहीं पकड़ती।

JENSON & NICHOLSON
MAKERS OF PAINTS

दि आसाम टी कम्पनी लि०

रजिस्टर्ड आफिस, १२ चौरंगी स्क्वायर कलकत्ता

अधिकृति पूँजी ८,००,०००) रुपये
चालू पूँजी ५,००,०००) रुपये

(जो दस रुपये प्रतिहिस्से के तीन हज़ार साधारण हस्सों में, १००) रुपये प्रतिहिस्सा के (प्रत्येक के लिए अदायगी के बन्धकों में) सुविधाजनक हिस्सों के दो हज़ार हिस्सों में (६% बिना टैक्स के बन्धकों की एकता में) बँटे हुए हैं। प्रत्येक इसको अदा कर सकता है। दरख़्वास्त के साथ ५०% और ५०% बँटवारे पर। प्रत्येक दरख़्वास्त के साथ १) मेम्बरी फीस दाखिला के लिए आवश्यक है।)

बिक्री की हुई पूँजी ४,७८,९५०) रुपये है।

हमने मेसर्स जेम्स फाइनले ऐण्ड को० लिमिटेड, दि हिंगाजिया टी स्टेट आफ आसाम से २४४४·८० एकड़ चालू स्थिति का बाग़ ख़रीदा है जिसमें उपयोगी जंगल, पौधों के औजार और कल-पुर्ज़े भी हैं, इन सबके लिए हमने ८,००,०००) रुपये उचित दाम दे दिये हैं।

सन् १९४६ की फ़सल से ३५०० मन पैदावार और एक लाख अठहत्तर हज़ार रुपयों की आमदनी की आशा है।

एक ... के हिस्से अब भी ...
लेते ... चगेरा ... सकते हैं ...

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, ... पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे पीछे धातु का गिरना ... को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने नाम पाया ... हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए ... १ डिब्बा ३।-) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग। यदि आप की ... किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध ... रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश ... इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर ... कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च ...

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, का...

"माफ कीजिये"!

बच्चों के लिये भी!

"आन्तरिक सफाई अच्छे स्वास्थ्यकी पहली सी...

आदर्श रेचक

'स्वास्थ्यके लिये अन्दरूनी सफाई सर्वप्रथम ... करणीय है—' अन्दरूनी सफाईके लिए ... का नियमित अथवा आवश्यकतानुसार ... काफी है। और बच्चे इस स्वास्थ्यवर्द्धक ... पसन्द करते हैं। इसकी प्रत्येक खुराक ... काम करती है। एण्डरूज बच्चों और बूढ़ों ... समान रूपसे रेचक है। यह औषधि ... नहीं डालती है। देखिये एण्डरूज स्वास्थ्य ... प्रकार अच्छा बनाता है:—

प्रथम...एण्डरूज मुंह और जीभको साफ ... तरोताजा बनाता है।

द्वितीय ..एण्डरूज पेटको व्यवस्थित करके ... को साफ करता है।

तब ..एण्डरूज यकृतको ठीक रखता और ... धिक्यको रोकता है।

अन्ततः—एण्डरूज अन्दरूनी सफाई कर ... दूर भगाता और रक्तको परिष्कृत और ... रखता है।

ANDREWS
एण्डरूज लिवर साल्ट
... — तरोताजा — ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दक्षिण

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, २९ सितम्बर, १९४६

संख्या ५]

देश में कहाँ क्या हो रहा है ?

समाचार है कि महात्मा जी पूज्य मालवीय जी से मिलने के लिए बनारस जायँगे। अस्थायी सरकार के बनने पर हिन्दी दैनिक 'संसार' में मालवीय जी का एक समाचार छपा था जिसमें उन्होंने अस्थायी सरकार के लिए कहा था—'अपने देश में अपना राज'। इस वाक्य ने गांधी जी को पूज्य मालवीय जी के दर्शन के लिए आकर्षित किया होगा।

* * *

समाचार है कि राष्ट्रीय सरकार की नीति लम्बे वेतनों में कमी करने की ओर है। इसका प्रभाव हाईकोर्ट के जजों और चीफ जस्टिस तक पर पड़ेगा। चीफ जास्टस का वेतन घटाकर ढाई हजार और जजों का दो हजार तक कर दिया जायेगा। परन्तु जिन जजों ने आज तक सेवाएं की हैं वे पेन्शन के अधिकारी हैं, अतः उनके वेतनों में कमी न होगी। अब जो नये जज नियुक्त होंगे, उनका वेतन नई परम्परा के अनुसार होगा।

* * *

हिन्दू-मुस्लिम जमात सिन्ध असेम्बली के चुनाव में मुसलमानों की ३५ सीटों पर चुनाव लड़ेगी। शेख अब्दुलमजीद जमात के प्रधान हैं। उन्होंने यह वक्तव्य दिया है। मिस्टर जी० एम० सैयद ने भी जमात को मदद देने की राय जाहिर की है।

* * *

सिन्ध एसेम्बली का दूसरा चुनाव २ दिसम्बर १९४६ ईसवी को होगा। नामजदगी के परचे १ नवम्बर को दाखिल होंगे। वोटों की गणना ९ दिसम्बर से आरम्भ होकर १२ दिसम्बर को समाप्त हो जायगी। इस्तीफा देनेवाले मन्त्रियों को फिर से नियुक्त किया गया है। मंत्रियों में इलाहीबख्श, गुलामअली खाँ, मि० बन्दे-अली खाँ, अब्दुलसत्तार पीरजादा हैं।

* * *

प्रसिद्ध कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के पुत्र श्रीरामकृष्ण त्रिपाठी ने पत्रों में एक समाचार छपवाया है जिसमें उनके लापता होने का वर्णन है। निराला जी अब उन्नाव में हैं।

* * *

पेरिस सम्मेलन की १७ सितम्बर की बैठक में प्रथम बार भारत ने ब्रिटेन के विरुद्ध वोट दिया। श्री एस० एस० वाजपेयी ने बालकन और फिनलैण्ड की आर्थिक समिति में ब्रिटेन के एक प्रस्ताव का विरोध किया जिसमें संयुक्त-राष्ट्रों के मालिकाने के लिए रूमानिया द्वारा जहाज़ों की क्षतिपूर्ति पर विशेष धारा बनाई जाय। ब्रिटिश प्रस्ताव ९ के विरुद्ध ४ वोटों से गिर गया।

* * *

यहूदी प्रतिनिधियों के फिलिस्तीन-सम्मेलन में भाग लेने की बहुत बड़ी आशा है। प्रतिनिधि लन्दन पहुँच गये हैं। वे फिलिस्तीन-विभाजन पर वार्ता चलाना चाहते हैं। फिलिस्तीन-सम्मेलन जिस निर्णय पर पहुँचा है उसका प्रतिनिधि-मंडल विरोध करेगा।

* * *

बलगारिया के अस्थायी प्रेसीडेंट वैसिल कोलारोव ने बलगेरियन पार्लियामेंट के सामने उस देश को प्रजातन्त्र घोषित किया है। पार्लियामेंट के सदस्य अपनी सीटों से उठ खड़े हुए और दस मिनट तक खुशियाँ मनाते रहे।

अफ्रीका की भारतीय कांग्रेस के १९वें अधिवेशन में ९ प्रस्ताव पास हुए हैं, जिनमें अफ्रीकी, अरब और भारतीय जातियों के बीच सद्भाव पैदा करना, इमीग्रेशन रिस्ट्रिक्शन (ऐक्ट) बिल के विरुद्ध भारतीय-जनता और सरकार से इस बिल की वापसी का विरोध के लिए प्रार्थना, भारत सरकार से यह प्रार्थना करना कि संयुक्त-राष्ट्र संघ के सारे सदस्यों में समानता का प्रस्ताव करे। इसके अतिरिक्त अफ्रीका में अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए फण्ड स्थापित करना, केन्या सरकार को भारत सरकार द्वारा यह प्रेरित कराना कि उस देश में यूरोपीय और भारतीयों का समान प्रतिनिधित्व बना रहे।

* * *

संयुक्तराष्ट्र अमरीका के वाणिज्य-मन्त्री श्री वैलेस ने ब्रिटेन की नैतिकता के विरुद्ध एक वक्तव्य दिया है। वक्तव्य देने के पहले उन्होंने वह वक्तव्य राष्ट्रपति ट्रूमन को दिखला लिया था। वक्तव्य पर राष्ट्रमन्त्री श्री बायर्नेस के विपक्ष में पड़ता है। पहले तो राष्ट्रपति ट्रूमन ने वैलेस को वक्तव्य देने को कहा था पर अब वे बायर्नेस का पक्ष लेकर उस वक्तव्य के लिए वैलेस को दोष देते हैं। उनका कहना है "या तो वैलेस मन्त्रि-मंडल से अलग हो जायँ या अपने विचार बदल दें।" यह खींचातानी चल रही है—कुछ लोग ब्रिटेन की ओर और कुछ रूस की ओर खिँच रहे हैं। ताजे समाचारों से पता चलता है कि मिस्टर वैलेस ने इस्तीफा दे दिया है।

* * *

जर्मनी के फ्रांस, ब्रिटेन और रूसी अधिकृत क्षेत्रों में चुनाव हुए हैं। प्रत्येक क्षेत्र के चुनाव के नतीजे भिन्न भिन्न प्रकार के हैं। किसी क्षेत्र में स्वतन्त्र उम्मीदवार अधिक जीते हैं, किसी में क्रिश्चियन डेमोक्रेट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

कांग्रेस महासमिति की बैठक

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की महत्त्वपूर्ण बैठक दिल्ली में पंडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हो रही है। इस बैठक का महत्त्व पिछली सारी बैठकों से बहुत अधिक है। सन् १९३६ ई० में जब कांग्रेस ने प्रान्तीय धारा सभाओं के प्रवेश करने का निर्णय किया था उस समय भी कांग्रेस के राजनैतिक गगन में दो विरोधी वायुमंडल मौजूद थे। पदग्रहण का प्रश्न तो गौण था। स्वयं पंडित जवाहरलाल नेहरू पद-ग्रहण के सख्त विरोधी थे। वे उस समय भी राष्ट्रपति के पद को सुशोभित कर रहे थे। उस समय वर्धा में वर्किङ्ग कमेटी की बैठक में यही आज का विषय उपस्थित था। आज उसी की पुनरावृत्ति है। समाजवादी सिद्धान्तों में अटूट विश्वास रखनेवाले सज्जन आज भी अस्थायी सरकार में कांग्रेस के पदग्रहण को ठीक नहीं समझते। मौलाना अबुलकलाम आजाद ने महासमिति में प्रस्ताव पेश किया है—वर्किङ्ग कमेटी ने अध्यक्ष को अस्थायी राष्ट्रीय सरकार बनाने की आज्ञा दे दी है। यद्यपि यह कार्य महासमिति की स्वीकृति से होना चाहिए था, परन्तु वर्किङ्ग कमेटी ने तत्काल महासमिति को आमंत्रित करना ठीक नहीं समझा। क्योंकि लार्ड वैवेल से अस्थायी सरकार के अधिकार आदि की बातें चलानी थीं। ज्यों ही सारी बातें तय हो गईं जिनको वर्किङ्ग कमेटी ने स्वीकार किया है, सरकार बना ली गई। आज मैं उसी की स्वीकृति के लिए महासमिति में प्रस्ताव पेश कर रहा हूँ। राष्ट्रीय सरकार का उद्देश्य भारत की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करना है, न कि दफ़्तरों में बैठना। प्रस्ताव सुन्दर है।

अभी राष्ट्रीय सरकार के मंत्रियों ने प्रेस प्रतिनिधियों के सम्मुख जो भाषण दिये, रेडियो से तथा अन्य रीति से राष्ट्र के नाम जो वक्तव्य दिये हैं उनसे पूर्ण स्वतंत्रता का समर्थन हो जाता है। स्वयं समाजवादी नेताओं ने, जिनमें श्री जयप्रकाशनारायण और सेठ दामोदरस्वरूप भी हैं, राष्ट्रीय सरकार के निर्माण पर अपने समर्थन के वक्तव्य दिये हैं। अन्तर इतना ही है कि समाजवादी नेता सरकार से पूर्ण स्वतंत्रता का आश्वासन चाहते हैं। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अध्यक्षपद से भाषण देते हुए सदस्यों के सम्मुख कहा है कि अस्थायी सरकार ने अपनी विदेशी और घरेलू नीति की घोषणा नहीं की है, पर निश्चय ही वह अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस की नीति होगी। इस घोषणा का स्पष्ट अर्थ है, कांग्रेस के अन्तःकालीन सरकार के सदस्य इस समय भी पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा कर रहे हैं। वे कांग्रेस के अनुशासन में रहेंगे। यदि महासमिति का निर्णय अस्थायी सरकार के विरुद्ध होगा तो वे अस्थायी सरकार से अलग हो जायँगे। पर महासमिति ने मौलाना साहब के प्रस्ताव को बहुमत से पास करके राष्ट्रीय सरकार के हाथ मजबूत कर दिये हैं। समाजवादी नेता श्री जयप्रकाशनारायण ने समाजवादी पार्टी की नीति को व्यक्त [illegible] हुए कहा है—[illegible] के हि[illegible] के [illegible] लेते [illegible] चगेरा [illegible] सकते [illegible]

सरकार बनाने की नीति का विरोध किया है। इससे पद-ग्रहण की जिम्मेदारी कांग्रेस पर है; समाजवादियों पर नहीं। फिर भी समाजवादी लोग कांग्रेस के साथ हैं। वे न तो अस्थायी सरकार का विरोध करेंगे और न उसका समर्थन। इस वक्तव्य से समाजवादी दल की नीति का स्पष्टीकरण नहीं होता। एक ओर वह अस्थायी सरकार का विरोध भी नहीं करता, दूसरी ओर समर्थन भी नहीं। वे तटस्थ रहेंगे और कांग्रेस का साथ देते रहेंगे। इसका अर्थ राष्ट्रीय सरकार का समर्थन ही है। रही अग्रगामी दल की बात। वह तो जब से स्थापित हुआ है, सर्वदा कांग्रेस-नीति का विरोधी रहा है। फिर यदि उसके कतिपय सदस्य अस्थायी सरकार का विरोध करें तो कोई बड़ी बात नहीं। यद्यपि अग्रगामी दल के सारे अधूरे कार्यों की पूर्ति कांग्रेस के द्वारा हो रही है, फिर भी अग्रगामी दल राष्ट्रीय सरकार का विरोध कर रहा है। यह आवश्यक भी है। क्रान्तिकारी मनोवृत्ति का कांग्रेस से लुप्त हो जाना राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिए घातक होगा। अतः अग्रगामी दल का नाममात्र का विरोध भी बुरा नहीं है।

दूसरा प्रस्ताव पंडित गोविन्दवल्लभ पन्त का है जिसके द्वारा अस्थायी सरकार के सदस्य वर्किंग कमेटी के सदस्य भी रह सकेंगे। यह प्रस्ताव उतना महत्त्व का नहीं कहा जा सकता जितना कि कांग्रेस-अध्यक्ष के इस्तीफा देने का। पंडित जवाहरलाल जी अध्यक्ष-पद से इस्तीफा देंगे ऐसी घोषणा हो गई है। परन्तु पंत जी के प्रस्ताव से अस्थायी सरकार के सदस्य वर्किंग कमेटी के सदस्य रहेंगे। इसका स्पष्ट अर्थ है—कांग्रेस-नीति निर्धारित करने में सरकारी नीति की प्रधानता रहेगी। हालां कि यह प्रस्ताव तो पास हो ही जायगा क्योंकि जब यू० पी० सरकार के मंत्री पंतजी और किदवई वर्किंग कमेटी के सदस्य रह सकते हैं तब अस्थायी सरकार के सदस्य क्यों न कमेटी के सदस्य होंगे। यद्यपि यह नीति वैधानिक नहीं जान पड़ती, परन्तु देश की राजनैतिक स्थिति को देखते हुए यह आवश्यक हो गया है कि अस्थायी सरकार के कुछ सदस्य कांग्रेस वर्किंग कमेटी में रहें परन्तु प्रधानता गैर सरकारी सदस्यों की रहे। उसका दूसरा हल भी हो सकता है—पार्लियामेण्टरी बोर्ड में अस्थायी सरकार के सदस्य रह सकते हैं। परन्तु बोर्ड का अध्यक्ष गैर-सरकारी सदस्य रहे। उस बोर्ड का अध्यक्ष और एक मंत्री वर्किंग कमेटी के सदस्य रहकर सरकार की नीति को प्रस्तुत किया करें। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की इस बैठक से कांग्रेस की पिछली प्रणाली में आमूल परिवर्तन हो गया है। परन्तु इससे देश को चिन्ता न करनी चाहिए। राष्ट्रीय नेता जो आज तक कारागार में बन्द रहते थे, वे उन दुःखों को शीघ्र नहीं भूलेंगे। स्वयं जवाहरलाल नेहरू और मौलाना साहब के भाषण स्पष्ट प्रकट कर रहे हैं कि नेतागण राष्ट्रीय सरकार में भी रहकर पूर्ण स्वतन्त्रता के लिए लालायित हैं। राष्ट्रीय सरकार की वैदेशिक नीति भी [illegible] नेहरू ने [illegible] जाय [illegible]

युद्ध के लिए नहीं बल्कि विश्व-शान्ति के लिए किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सम्मिलित होगी। अ० भा० कां० क० की यह बैठक संसार के राष्ट्रों के लिए शान्तिदूत और गुलाम राष्ट्रों की स्वतन्त्रता के लिए पथ-प्रदर्शन का कार्य कर रही है।

* * *

अमरीकी राजनीति

अमरीका के वाणिज्य-मंत्री मिस्टर वैलेस को अमरीका की वैदेशिक नीति के सम्बन्ध में अपने स्वतन्त्र विचारों को व्यक्त करने की आज्ञा राष्ट्रपति ट्रूमन ने दे दी थी। उसका उपयोग उन्होंने किया भी। परन्तु उनके वक्तव्य अमरीकी वैदेशिक मंत्री मिस्टर वायर्नेस के विचारों के बिलकुल प्रतिकूल पड़ते हैं। मिस्टर वायर्नेस पेरिस सम्मेलन में भाग ले रहे हैं और ब्रिटेन की वैदेशिक नीति से बहुत कुछ सहमत हैं। परन्तु मिस्टर वैलेस के वक्तव्य मिस्टर वायर्नेस के बिलकुल प्रतिकूल रूस की नीति को समर्थन करते हैं। इस खींचतान में वायर्नेस ने अमरीका के राष्ट्रपति को अपनी नीति का समर्थन करने के लिए तैयार कर लिया। राष्ट्रपति ने मिस्टर वैलेस को स्वतन्त्र वक्तव्य देने से रोका तो उन्होंने इस्तीफा दे दिया। अब वे एक स्वतन्त्र पार्टी बना रहे हैं। कहा जाता है कि अमरीका की डेमोक्रैटिक पार्टी में मिस्टर वैलेस का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। डेमोक्रैटिक पार्टी की सहायता से शायद मिस्टर वैलेस अगले राष्ट्रपति पद के लिए खड़ा होना चाहते हैं। रूस का राजनैतिक दृष्टिकोण ब्रिटेन के साम्राज्यवादी सिद्धान्तों के बिलकुल प्रतिकूल है। अमरीका अपनी पूँजी से संसार के सारे राष्ट्रों को ऋणी बना चुका है। ऐसी स्थिति में यदि अमरीका ब्रिटेन के साथ रहता है तो संसार के अधिकतर राष्ट्र रूस के सिद्धान्तों के साथ सहमत होकर एक नया गुट बना लेंगे। हो सकता है, यही गुट ब्रिटेन और अमरीका का एक प्रतिद्वन्द्वी बन जाय जिसकी बहुत सम्भावना है। ऐसी दशा में अमरीका के पूँजीवाद के विरुद्ध रूस का गुट प्रस्ताव पास कर सकता है। उस समय अमरीका की पूँजी का एक बहुत बड़ा [illegible] नष्ट हो जायगा। उसको बचाने के [illegible] रूस की मैत्री अत्यन्त आवश्यक [illegible] त होगी।

घर और बाहर!

गांधी-जयन्ती

२ अक्टूबर १९४६ को महात्मा गांधी के ७७ वर्ष पूरे होते हैं। इस अवसर पर हम लोग गांधी जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पण करते हैं और ईश्वर से उनके दीर्घायु होने की प्रार्थना करते हैं। गांधी जी ने अपने जीवन के उदाहरण से दुनिया में आत्मविश्वास जगा दिया है। इस आत्मविश्वास में औद्धत्य का लेश भी नहीं है। ऐसा आत्मविश्वास आत्मज्ञान पर प्रतिष्ठित है।

किसी महापुरुष के जीवन की झलक उसके क्रियाकलाप ही में पाई जाती है। आधुनिक जगत् में गांधी जी का सत्याग्रह एक अनमोल दान है।

हिन्दुस्तान की वर्तमान परिस्थिति में हम लोग यदि हिन्दू-मुसलमान-एकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्रियों के दाँव-पेंच

शान्ति-सम्मेलन या विग्रह की तैयारी ?

लेखक, श्री भूपेन्द्र सान्याल

श्रीयुत भूपेन्द्रनाथ सान्याल गम्भीर विचारक हैं। उन्होंने इस लेख में बतलाया है कि शान्ति-सम्मेलन में अशान्ति पिशाची अठखेलियाँ कर रही है। राष्ट्रों के मन्त्री लोग समझौते के सरल मार्ग पर न चलकर साजिशों के गलियारे बना रहे हैं और यह सब हो रहा है विश्व में शान्ति की स्थापना करने के नाम पर। लेखक ने बतलाया है कि इस दशा में अभी रणभेरी क्यों नहीं बजने लगती।

वैदेशिक मंत्री मो० मोलोटोव

शान्ति-सम्मेलन में आप साम्राज्य-वादियों के विरुद्ध लड़ रहे हैं।

राष्ट्र मिलकर शान्ति-स्थापना के लिए काम कर रहे हैं। लेकिन हम देख रहे हैं कि वास्तव में शान्ति का नहीं बल्कि युद्ध का वातावरण पैदा हो रहा है। आस्ट्रेलिया के प्रतिनिधि को आशा है कि थोड़े समय में शान्ति-सम्मेलन दुनिया में शान्ति स्थापित करेगा। परन्तु सम्मेलन की कार्यवाही से यह प्रमाणित होता है कि शान्ति-सम्मेलन कुछ भी तो थोड़े समय के लिए भी नहीं होगी सशस्त्र शान्ति। ऐसे समय दुनिया के दो हिस्सों में विभाजित कर देने वाली लड़ाई न ठनने का कारण क्या है? पूर्वी युद्ध से थकी हुई जनता अब अस्त्रों की झंकार को सुन नहीं सकती। लेकिन लड़ाई के बादल नहीं लग पावेगा इस लिए किसी पैगम्बर की आवश्यकता नहीं यह ऐटमबम का

यह बात है कि सम्मिलित राष्ट्रों में केवल दो ही बड़ी ताकतों के किसी न किसी के कटाक्ष के कारण हुआ। एक-दो अजियों को उत्तेजित कारण हो सकता है, शान्ति टिकाऊ नहीं हो सकती। सच तो यह है थोड़े से राष्ट्रों के बिगड़ी बागडोर एक हाथों में है।

क्या हो रही है? युद्ध या शान्ति? प्रश्न जनता के मन में उठ रहा है। विद्रूप और धमकी, संशय और सम्मेलन का संगीत आदर्शवादिता लुप्त की ओर से सब ने कर के सचिव मोलोटोव की यही गति रही है। तीस साल लग पाये हैं, उसके बाद फिर शान्ति-सम्मेलन। ओर जरा ध्यान हो सकता है रूस ने अँगरेज-के मार्ग का ने ठीक ही अमरीकन तथा ये तीन भिन्न प्रश्नों

पर विभिन्न राय दी है लेकिन सोवियट मण्डली में तो एक बार भी फूट नहीं पड़ी। सम्भव है, प्रश्न ऐसा सरल न हो जैसा हम देख रहे हैं और किसी ओर फैसला देने के हम अधिकारी न हों, लेकिन सच तो यह है कि हम किसी को निर्दोष नहीं ठहरा सकते। दरेदानियाल-सम्बन्धी रूसकी मांगों का समर्थन नहीं किया जा सकता। लेकिन जब रूस कहता है कि अंगरेज यूनान की आन्तरिक राजनीति में हस्तक्षेप कर रहे हैं तो उसका यह कथन सत्य प्रतीत होता है। हम नहीं जानते कि रूस का यह कहना कहाँ तक सही है कि अँगरेज यूनानियों को अलबानिया पर आक्रमण करने के लिए भड़का रहे हैं लेकिन एक सन्देह तो पैदा हो ही जाता है। चित्र का एक दूसरा पहलू भी है। बसरा में अँगरेजी फौज उतरते ही खूजीस्तान में स्वातन्त्र्य संकल्प प्रबल हो जाय तो इससे अँगरेजों की नीयत पर अच्छा प्रकाश नहीं पड़ता। लेकिन कहा जा सकता है कि यह तब हुआ जब रूस ने ईरान को अपना पुछल्ला बना लिया। इधर रूस के तीस लाख सैनिक, रूस-नियन्त्रित जर्मनी के हिस्सों में शस्त्रों का कारखाना खोलना, बाल्टिक समुद्र में रूसी तैयारियाँ और रूसी जहाजी बेड़ों में जर्मन अफसरों की भर्ती,

इस लेख के लेखक श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल

इन सबसे शान्ति-स्थापना में सहायता नहीं मिलती। जहाँ तक भय की मनोवृत्ति का सम्बन्ध है, आर्थर कोयस्टलर के अनुसार, यह समस्या वैसी ही कठिन है जैसा कि हिटलर को सन्तुष्ट करना था। जरा तुलना कीजिए, राष्ट्र-संघ में लिटविनफ की सम्पूर्ण निःशस्त्रीकरण की माँग और आज जब आस्ट्रेलिया ने यह प्रस्ताव किया कि शत्रु देशों को युद्ध-सामग्री बजाय बाँटने के विनष्ट कर दी जाय तब वाइशिंस्की का उसको ठुकरा देना। स्वीडेन् के आकाश में रहस्य-शस्त्र आज भी एक रहस्य ही है। रूस के बन्दरगाहों से अमरीकन दूतों को हट जाने का आदेश शान्ति रक्षा के लिए अच्छा सगुन नहीं है। रूस के संरक्षण में युगोस्लाविया का इटली के ऊपर क्षतिपूर्ति का दावा वारसाई की पुनरावृत्ति का ही द्योतक है।

ब्रिटेन की ही अभिसन्धि को हम क्या कहें? पोलैंड के निर्वासितों के सहारे आज भी ब्रिटेन वहाँ की राजनीति में दखल देने से चूकता नहीं। ब्रिटेन के पोलिश षड्यन्त्र के साथ उसके प्रजासत्तात्मक इरादों का मेल नहीं बैठता। फिलस्तीन और मिस्र के भी दिमाग पर अच्छा असर नहीं पड़ता। इधर अमरीका ने सारी दुनिया की प्रायः सम्पूर्ण सम्पत्ति हड़प ली है और इसका एक सामान्य अंश केवल उन्हीं देशों को भीख के रूप में देता है जो उसके इशारे पर चलने को तैयार हैं। अमरीका का चीन में साजिश एक और खतरे की घंटी है।

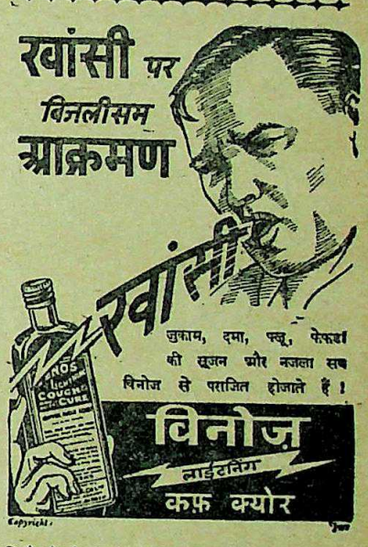

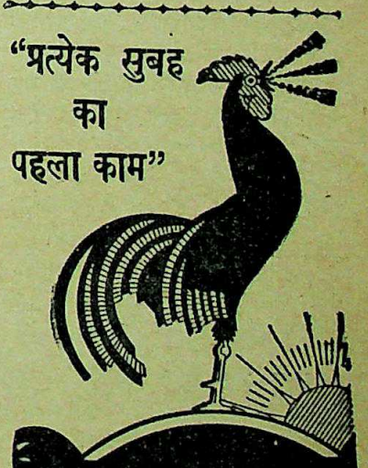

उत्तम स्वास्थ्य का रहस्य आपके शरीर के शुद्ध नियमन में है। सबसे पहले सुबह एक चमकता हुआ इनोज 'फ्रूट साल्ट' का एक गिलास शरीर की शुद्धि करता है, रक्त-स्रोत को निर्मल बनाता है और अंगों के उत्तम संचालन में सहायता देता है।

ईनोज़
"फ्रूट साल्ट"

निशा-गान

लेखक, श्रीपालसिंह 'क्षेम' बी० ए०

निशा आज आती!

अरुण रश्मि में प्यार के कन पिरोता, शिथिल श्रान्ति की साँस में मौन होता,
अलस-सा दिवस डबडबाए दृगों से, प्रतीची क्षितिज पर धरे शीश सोता,
अधर खुल पड़े मौन सहसा कुमुद के, हँसा चाँद जागी सुरभि की कहानी,
तिमिर-कुन्तला व्योम की वीथियों से, चली आ रही नील-कुंकुम लुटाती।
तिमिर-तार पर ज्योति के गान जागे, गगन-नयन में आस के प्रान जागे,
पदों के मदिर लालिमा का शिखा छू, सुरों के घरों के शमादान जागे,
उड़ा जा रहा रश्मि का रम्य अंचल, धुली जा रही कालिमा की निशानी,
हसित हीरकों में गगन खिलखिलाया, धरा ओस के प्यार से भींग जाती।
मधुर चाह में मौन अभिसार करते, किरन से हृदय-सिंधु-तटपर उतरते,
कहीं दूर वन को उड़े स्वप्न-पंछी, चले आ रहे ज्योति के पंख भरते,
हृदय की तपन झप गयी एक क्षण को, उतरती सिहर 'नींद की राजरानी'
पलक में सिमट कर दिशा झूमती है, अधर पर सुधा चाँदनी जगमगाती।
यहाँ अर्चि पर प्राण के स्वप्न पलते, यहाँ अग्नि में फूल के कन बिछलते,
तिमिर-पत्र पर ज्योति से लिख कहानी, किसी का मधुर स्नेह से दीप जलते,
विरह का मदिर आवरण छा उठा लो, बिकल हो उठी फिर शिखा की जवानी,
पदों में रणित नूपुरों की तृषा है, कि स्वर में सधी झिल्लियाँ गीत गाती।
गगन-जूहियों की मदिर गंधबेला, उमड़-सा रहा प्राण में भाव मेला,
इसी चाँदनी में विरह-साँस से [illegible] भर रहा कोक कोई अकेला,
कुमुद एक मुरझा रहा पर [illegible] पा रहे निशा नयन दानो,
इधर भूमि पर एक तारा [illegible]
[illegible]य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतन्त्रता के पथ-यात्रियों से...

समाजवादी सिद्धान्त ही स्वतन्त्रता के लिए सद्मार्ग है।

लेखक, श्री नारायणदत्त तिवारी

अस्थायी राष्ट्रीय सरकार की स्थापना के समय महात्मा गांधी ने जो बातें कही थीं और प्रसिद्ध समाजवादी नेता बाबू जयप्रकाशनारायण ने इस सम्बन्ध में जो विचार प्रकट किये हैं उनके आधार पर लेखक का कहना है कि अस्थायी सरकार के मार्ग में बहुत बड़ी कठिनाइयाँ हैं, सम्प्रदायवादी लोग अलग अड़ंगा लगा रहे हैं, दंगे कराकर व्यवस्था को भंग करने पर तुले हुए हैं। इस दशा में सरकार से बहुत बड़ी आशा न करके हमें कष्ट सहने के लिए पहले की तरह तैयार रहना चाहिए। ऐसा करने पर ही स्वतन्त्रता का मार्ग प्रशस्त होगा।

समाजवादी नेता श्री जयप्रकाशनारायण कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी के सदस्य मनोनीत हुए हैं।

एक लम्बे समय की उथल-पुथल के बाद जमाने ने करवट बदली है। कल तक जो समस्याएँ हमारे सामने रुकावटें डालती थीं, आज वे दूसरे ही रूप में राष्ट्र की परेशानियाँ बढ़ा रही हैं। नई दिल्ली के सेक्रेटेरियेट में राष्ट्रीय अस्थायी सरकार काम कर रही है। जनता को उससे बहुत बड़ी आशाएँ हैं। करोड़ों की तकलीफ दूर करने के लिए जो नेता वहाँ पहुँचे हैं, उनकी कर्तव्य-परायणता पर सबको भरोसा है। पर आज भारतीय स्वतन्त्रता के समस्त पथ-यात्रियों को समझ लेना चाहिए कि आजादी और समाजवाद का संदेश सुनानेवाली दिल्ली का निर्माण होना अभी बाकी है। जब तक देश की नौकरशाही में सन् ४२ में दमन-कार्य करनेवाले साम्राज्यवादी मौजूद हैं, जब तक भारत का थोड़ा भी राजनीतिक सम्बन्ध ब्रिटिश पार्लियामेंट से भारत-मंत्री के द्वारा रहता है, जब तक डानिंग स्ट्रीट में एटली की जगह चर्चिल द्वारा टोरी पार्टी के पुनः चुनाव जीत लेने की थोड़ी भी सम्भावना है और जब तक भारत में ब्रिटिश-अमेरिकन पूँजी भारतीय धन-कुबेरों की मदद से आर्थिक नियंत्रण करती है, तब तक भूख और गुलामी से मुक्ति पाने की हमारी आशा निरी कल्पना है। अगर हमारे नेता अस्थायी सरकार के द्वारा इस भयंकर कूड़े-कचरे को हटा सके, तो यह एक बड़ी राजनीतिक विजय होगी।

हमें गांधी जी के उन ऐतिहासिक शब्दों को न भूल जाना चाहिए जो उन्होंने अस्थायी सरकार की स्थापना के दिन (२ सितम्बर को) दिल्ली की एक प्रार्थना-सभा में कहे थे। नेताओं के नये प्रयास, कांग्रेस के नये कदम और जमाने की नई करवट तथा नई परेशानियों का इससे ठीक चित्रण और कहीं नहीं मिल सकता। गांधी जी ने कहा था, 'पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल और दूसरे नेता, दो सितम्बर को एक ताज पहनेंगे, वह ताज काँटों का मुकुट होगा जो उन्हें लहूलुहान कर देगा।' 'भारत दो सितम्बर को आजाद होने जा रहा है' ऐसी कल्पना भारतीय जनता को कभी नहीं करनी चाहिए। आजादी सस्ती नहीं खरीदी जाती—वह क्रय-विक्रय द्वारा ली जा सकने वाली वस्तु-विशेष नहीं है। उसका पूरा दाम चुकाना आवश्यक ही नहीं वरन् असंदिग्ध है। नेतागण आजादी के पथ की कुछ कठिनाइयों को हल करने के ही लिए वहाँ जा रहे हैं। जनता भी नेताओं की मदद करे तथा और भी अधिक त्याग करने के लिए तत्पर रहे...।" गांधी जी का यह वक्तव्य बहुत ही स्पष्ट और सारयुक्त है।

चालीस करोड़ भारतवासियों ने तो पिछले दो सौ वर्षों से काँटों का ताज पहना ही है। वे उसका दर्द जानते हैं। पर आज की पीड़ा कुछ अधिक कष्टदायी और गम्भीर है। गांधी जी के शब्दों में 'भारत-माता, द्रौपदी की तरह, आज एक मुकदमे का सामना कर रही है। उसे वस्त्र-विहीन किया जा रहा है। ऐसा कौन है जो उसे वस्त्र देकर उसकी लज्जा को ढक सके।' अगस्त के सेनानी जयप्रकाश के शब्दों में, 'ब्रिटेन के साम्राज्यवादी स्वार्थ जिसका प्रतिनिधित्व ब्रिटिश टोरी पार्टी, अँगरेज नौकरशाही और भारत में लगाई गई अँगरेज पूँजी करती है, भारतीय स्वतन्त्रता के मार्ग में प्रबल रुकावट डालने का अंतिम प्रयत्न कर रहे हैं। मिस्टर जिन्ना और उनकी मुस्लिम लीग इस ब्रिटिश प्रतिक्रिया के कठपुतले हो चले हैं।' जयप्रकाश बाबू के इस वक्तव्य का समर्थन ब्रिटिश पार्लियामेंट के लेबर पार्टी के सदस्य श्री मिचेल फुट के उस लेख से होता है जो उन्होंने 'डेली हैरल्ड' में चर्चिल-जिन्ना पत्र-व्यवहार पर रोशनी डालते हुए लिखा था। कलकत्ता और बम्बई में हुए भयानक साम्प्रदायिक दंगों, अम्बेडकर के द्वारा जारी किये गये अछूतिस्तान के हथकंडों और जमींदारों के द्वारा किसानों पर किये जानेवाले जुल्मों का निराकरण किस प्रकार हो? भूखे को भर-पेट खाना किस तरह मिले? आम जनता की तरक्की कैसे हो? इस सम्बन्ध में एक ही बात डंके की चोट पर कही और लिखी जा सकती है। बिना पूर्णतया स्वतन्त्र किसान-मजदूर सरकार के उपर्युक्त समस्याएँ हल नहीं हो सकतीं। अस्थायी राष्ट्रीय सरकार तो पूर्ण स्वतन्त्र सरकार की स्थापना की ओर सफल प्रयत्न जनता की पीड़ा को कुछ हलका कर, तथा भारतीय साम्प्रदायिक और राजनीतिक एकता द्वारा अँगरेजी हुकूमत की बची हुई निशानियों को भारत छोड़ने को मजबूर कर सकने के संगठित प्रयत्न भर ही कर सके, तो सफल मानी जा सकती है।

जन-प्रतिनिधि जयप्रकाश ने अपने विशुद्ध समाजवादी दृष्टिकोण से

इस लेख के लेखक श्री नारायण...

अस्थायी सरकार के इस ... का कितना सफल विवेचन ... यह उनकी निम्नलिखित उक्ति ... जाता है, 'सिद्धान्ततः राज... स्थिति, हमारे दृष्टिकोण के ... बदली है। अस्थायी सरकार ... के यह मानी नहीं हैं कि ... लड़ाई खत्म हो चुकी। वह ... है और पहले ही की तरह कांग्रेस ... जनता का यही मुख्य ध्येय ... कि वे उस युद्ध की तैयारी ... हम वैधानिक योजना के ... अब जब कि एक निश्चय ... कांग्रेस के सहयोग द्वारा ... बन गई है, हमें कांग्रेस जन ... उसका विरोध या मार्ग में ... नहीं डालनी चाहिए। ... कर्तव्य हो जाता है कि हम ... हाथों को मजबूत करें ताकि ... स्वतन्त्रता-प्राप्त करने की ... के अनुसार चले। खाने ... समस्या अवश्य गम्भीर है ... आर्थिक हालत भी खतरनाक ... कोई आश्चर्यकारी परिवर्तन ... आशा नहीं रखता। मैं यह ... गलत समझता हूँ कि ... जल्दी ही ऐसा कोई बदलाव ... देश की आर्थिक स्थिति में ... नहीं हो सकता जब तक कि ... आर्थिक ढाँचे को ही नहीं ... जाता। यह बात वर्तमान ...

शेष पृष्ठ १६ पर

छप रहा है! छप रहा है !!

ऐतिहासिक भौतिकवाद

लेखक श्री मन्मथनाथ गुप्त, श्री रमेन्द्रनाथ वर्मा

भूमिका-लेखक आचार्य नरेन्द्रदेव

ऐतिहासिक भौतिकवाद मार्क्सवाद के विषयों में सबसे गहन है। इस विषय पर विश्वसाहित्य में बुखारिन की पुस्तक सबसे अच्छी समझी जाती है, किन्तु लेखकों का यह दावा है कि यह हिन्दी-पुस्तक उससे भी विस्तृत तथा गहन है क्योंकि जो कुछ भी बुखारिन के समय तक उपलब्ध था, वह तो इसमें है ही, इसके अतिरिक्त नवीनतम ज्ञानविज्ञान, नृतत्व तथा अन्य विषयों में जो खोजें हुई हैं, वे सब इसमें सन्निविष्ट हैं। इस पुस्तक की एक विशेषता यह है कि सभी विरोधी मतों का पहले वर्णन किया गया है। इतिहास की आर्थिक व्याख्या के अतिरिक्त इस पुस्तक में धर्म तथा सदाचार पर एक एक गम्भीर अध्याय ... के लिए यह पुस्तक बहुत जरूरी है।

स्वर्गीय पण्डित कृष्णकान्त जी मालवीय लिखित

वैवाहिक जीवन-सम्बन्धी प्रसिद्ध हिन्दी पुस्तक

'सुहागरात'

फिर से छप गई किन्तु परिमित संख्या में ही पुस्तकें छपी हैं इसलिए ... कीजिए। विवाह के शुभ अवसर पर इससे अधिक सुन्दर देने योग्य ... कोई दूसरा नहीं हो सकता।

सुहागरात (प्रथम भाग) या बहूरानी को सीख

सुहागरात (दूसरा भाग) या पतियों को सीख

सुहागरात (तीसरा भाग) या मातृत्व और बच्चों ...

तीनों भागों का मूल्य अलग अलग पाँच ... हो जायगा। उसको बचाने के ... ए रूस की मैत्री अत्यन्त आवश्यक ... त होगी।

... से ट्रीस्ट का मामला ... दूसरे देशों की नौ... का अर्थ साफ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शासन-विधान और देशी रियासतें

विधान-परिषद् से पूरा लाभ उठाया जाय

लेखक, कुँवर चाँदकरण शारदा बी० ए०, एल्-एल० बी०

कुँवर चाँदकरण शारदा ने राजपूताने की रियासतों का दौरा किया था। वहाँ पर रियासती प्रजा ने आपसे राष्ट्रीय सरकार के सम्बन्ध में जो प्रश्न किये और उनका जो सुन्दर उत्तर दिया उस पर आपने प्रकाश डाला है। कुँवर साहब हैं तो हिन्दू महासभा के स्तम्भ पर राष्ट्रीय विचारों के समर्थक हैं। आपने रियासतवालों को समझाया है कि हमें राष्ट्रीय सरकार का समर्थन करना चाहिए और विधान-निर्मात्री सभा में रियासती प्रजा के प्रतिनिधियों को भेजकर विधान बनाने में पूर्ण सहयोग देना चाहिए।

हमारा मित्र है।" इसी भावना से सदा कांग्रेस को सहायता देने का रहेगा।

विधान-निर्मात्री-सभा और देशी राज्य

तीसरा प्रश्न मुझसे पूछा गया था कि भावी संघ शासन-विधान में सैकड़ों देशी रियासतों का क्या स्थान रहेगा? इस पर सैकड़ों योजनाएँ बन चुकी हैं। नरेन्द्र मंडल और दूसरे देशी नरेशों से हमको बार-बार आश्वासन मिल चुके हैं कि वे भारत के राजनैतिक उत्थान के साथ हैं और भारत को स्वतन्त्र देखना चाहते हैं। ब्रिटिश भारत में जो प्रजातन्त्रात्मक सिद्धान्तों का प्रचार किया जा रहा है, उन्हीं के अनुसार वे अपने राज्यों के प्रजा-मण्डलों को बनाना चाहते हैं और कौंसिलें आदि बनाने की उत्तरदायित्वपूर्ण शासन अपनी प्रजा को प्रदान करेंगे। इधर कांग्रेसवाले भी देशी रजवाड़ों को बिलकुल मिटाना नहीं चाहते। हिन्दू-महासभा तो आर्य संस्कृति की रक्षा के लिए तथा मुस्लिम रियासतों के मुकाबले के लिए उनका रखना आवश्यक समझती ही है। इस वास्ते हम देशी नरेशों से यही निवेदन करते हैं कि "आप भी रहो और दूसरों को भी रहने दो।" यही नीति बर्तो। इस पर देशी नरेश भी राजी हो गये हैं।

पं० जवाहरलाल नेहरू तथा उनके मन्त्री जब देशी राज्यों में गये तब उनका बड़ा अतिथिसत्कार हुआ तथा उन्हें बड़ी बड़ी थैलियाँ भेंट में मिलीं। यह आपस का आदान-प्रदान यदि सच्चे दिल से हो रहा है तो देश के लिए बड़ा उज्ज्वल भविष्य है परन्तु मैंने कहीं कहीं देखा है कि इस ऊपरी सहानुभूति में अंदरूनी राजनैतिक विभाग काम कर रहा है। कितने ही नरेशों के हृदयों में कांग्रेस के प्रति सन्देह उत्पन्न किये जा रहे हैं। कितनों को डर है कि कांग्रेसवाले ज़मींदारों के साथ साथ जागीरदारों, ठाकुर और राजा-महाराजाओं सबको रूस के समान जड़ से उखाड़ फेंकेंगे। बड़े ज़ोरों से इसका प्रचार किया जा रहा है। मैंने सबको समझाया है कि ऐसा नहीं होगा। पर मनोमालिन्य अभी तक विद्यमान है। अभी तक सत्ता को अपने हाथ में रखने की और अधिक से अधिक धन अपने पास संचित रखने की भावना कई नरेशों के हृदयों में है। अतः हमको यह भली भाँति समझ लेना चाहिए कि स्वराज्य अर्थात् उत्तरदायित्व-पूर्ण शासन हमें सीधे हाथों नहीं मिलेगा। निज़ाम राज्य में बिना युद्ध हुए कोई अधिकार मिलनेवाले नहीं हैं। नरेन्द्र मण्डलवालों ने नवाब साहब भोपाल के झंडे के नीचे अभी से बगावत का बिगुल बजा दिया है। वे कहते हैं कि देशी रियासतों के लिए पं० जवाहरलाल नेहरू को स्वायत्त शासन अर्थात् भारतीय संघ में एक एक प्रान्त के समान स्वायत्त शासनवाला प्रान्त मानना भूल होगी। उन्होंने यह घोषणा कर दी है कि यदि ब्रिटिश भारत स्वतन्त्र होगा तो देशी नरेश प्रजातन्त्र राजा होंगे और वे अपनी फौजें रखेंगे।

इसी से हम कहते हैं कि अभी दिल्ली दूर है और विधान-निर्मात्री-सभा के सामने बड़ी बड़ी अड़चने हैं। भारतीय स्वतन्त्रता के विरोधी कूट-नीतिज्ञ यह जाल भी रच रहे हैं कि नरेश अपने प्रतिनिधि संघ-शासन असेम्बली में भेजें ही नहीं। मुसलमान चाहते हैं कि यदि मुस्लिम लीग विधान-निर्मात्री-एसेम्बली का बहिष्कार कर दे, जैसा कि वह कर चुकी है, तो देशी नरेश दूर खड़े खड़े तमाशा देखें। इस समय मुस्लिम लीग वालों का यह प्रयत्न हो रहा है कि संघ-शासन विधान-निर्मात्री-कमेटी में देशी रियासतों के ६३ प्रतिनिधि जावें ही नहीं और हमारा प्रयत्न यह है कि देशी नरेशों तथा देशी राज्यों के चुने हुए प्रतिनिधि विधान-निर्मात्री-सभा में अवश्य सम्मिलित हों। कई स्थानों में हमारा प्रयत्न सफल हो रहा है। परमात्मा करे, हमारा प्रयत्न सफल हो जिससे शीघ्र होनेवाली भारतीय संघ-निर्मात्री-समिति में भारतीय विधान बनने की रूप रेखा तैयार होगी। वहाँ मुस्लिम लीग की सहायता के बिना ही राष्ट्रीय मुसलमानों की सहायता से हम अपने देश को स्वतन्त्र कर सकें।

गीत

लेखक, श्री धर्मेन्द्रनाथ त्रिपाठी, बी० ए०

आज चल रही विचार की प्रथम किरन
कह रहा गगन !
उठ रहे प्रयाण के प्रहार के प्रथम विचार,
जल रहे सुधार के विहार के वे दीप चार,
बढ़ रहे अभीत भीत बज रहे हैं तार तार !
मूक देशवासियों की लग रही रटन,
मिट रहे भवन !!
नाश की विनाश की वतास की विषम लहर,
पुण्य की प्रकाश की सुआस की सुधा सुघर,
फेरती, बटोरती बिखेरती चली निखर !
पाप-पुण्य मिट रहा मिटा रहा पवन
बढ़ रही जलन !!
चूर-चूर हड्डियाँ विरक्त-रक्त से हुईं,
दूर-दूर धज्जियाँ अभय अशक्त सी हुईं,
नवीन दीन इन्द्रियाँ वे वक्त सी हुईं !
वज्र बन रहा दधीचि का विशाल तन,
युद्ध का वसन !!
काल की अकाल लोल-लालिमा बता रही,
लाल हो गई दिशा निशा रसा सेजा रही,
ध्वंस-कंस-वंश-दंश-अंश भी न पा रही !
मिट रहे निशान आसमान के सघन,
कर रहा सहन !!
आग बन गया स्वदेश-देश यह हरा,
राख बन गई भूकम्प-कम्प से धरा,
हो गई प्रलय निलय हुई वसुन्धरा !
इसी चाँदनी में विरह-साँच से [illegible] अब प्रत्येक कण,
कुमुद एक मुरझा रहा पर [illegible]
इधर भूमि पर एक तारा [illegible]
[illegible]प्य।

श्री चित्रकोट पर्वत की (रजिस्टर्ड) श्वाँस (दमा) की अनुभव-सिद्धि जड़ी-बूटी आश्विन सुदी शरद (पूर्णिमा) तारीख़ १०-१०-४६ को, रात्रि को एक ही खूराक सेवन करने से नया वा पुराना स्वाँस (दमा) हमेशा के लिए अच्छा हो जाता है। घर बैठे मँगाकर सेवन करें।
मँगाने का पता—
मैनेजर, श्रीमहात्मा नागा बाबा आयु-वेदाश्रम, पोस्ट. चित्रकोट, यू० पी०।

मौलिकता—साहित्यक मौलिकता की विशद व्याख्या। मूल्य ।-) पाँच आने।
आल्हा—लेखक, चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा। इस पुस्तक में महोबे के प्रख्यात वीर आल्हा और ऊदल का जीवन-चरित और समस्त लड़ाइयों का वर्णन रोचक व सरस भाषा में दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३।-) तीन [illegible] लि०, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जौनपुर में सन् ४२ की जन-क्रांति

कितने ही राष्ट्रीय वीर वीर-गति को प्राप्त हुए

लेखक, श्री श्रीपालसिंह 'क्षेम' बी० ए०

सन् १९४२ की क्रान्ति का जौनपुर शहर और जिले में जैसा रूप था उसका मार्मिक चित्र लेखक ने उपस्थित किया है। सुनते हैं, यहाँ पर एक ऐसा निष्ठुर देशी हाकिम था जिसने लोगों को त्रस्त करने के लिए 'करेंट' लगाने की रीति चलाई थी। इस क्रिया से मर्द की इन्द्रिय से खून गिरने लगता और वह नपुंसक हो जाता था। उसके कष्ट का कहना ही क्या।

जौनपुर के अगस्त-क्रांति के नेता श्री राजदेवसिंह, एम० ए०

सन् १९४२ की जनक्रान्ति भारतवर्ष के राजनीतिक इतिहास में एक चिरस्मरणीय घटना है। भारतीय जन-जीवन के जागरण में उसका अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। सन् १८५७ की क्रान्ति के पश्चात् यह प्रथम प्रयास था जब दासता की कठोर बेड़ियों में आबद्ध जनता ने—लौह-शृङ्खलाओं से घिरी जन-चेतना ने क्रान्ति की करवट ली थी। इसके लिए न कोई पूर्व संगठन हुआ था और न कोई निश्चित योजना थी। यह जन-जीवन के अंतरतम से उठी क्रान्ति की वह उफान थी जो प्रकृति के नियम के अनुसार किसी क्रिया की प्रतिक्रियास्वरूप प्रत्येक युग में जाग पड़ती है। सन् ४२ के अगस्त में जब राष्ट्रीय महासभा के सभी बड़े नेता बन्दी कर लिये गये, तो जनता क्षुब्ध हो उठी। एक भीषण तूफान उठा और सारे भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक विप्लव की आग जल उठी।

गांधीवाद का शीतल जल इस तूफान के आलोड़न को न शान्त कर सका। राष्ट्रीय जीवन का यही महापर्व था जब जौनपुर भी अपनी मस्ती में झूम उठा। ९ अगस्त के पुण्य दिन के १० बजे जब मैं 'क्षत्रिय-इंटर-कालेज' के क्रीड़ास्थल पर पहुँचा तो देखा विद्यार्थी क्लास छोड़कर निकले आ रहे थे। धीरे-धीरे सामने की सड़क पर एक जमघट हो गया। नेता विद्यार्थी 'भारत छोड़ो' और 'साम्राज्यशाही का नाश हो' का नारा लगवाकर व्यग्र हो रहे थे कि क्या किया जाय। निश्चय हुआ कि एक जुलूस निकाला जाय और सारे शहर में हड़ताल हो। इतने में, उस समय के जिले के मान्य कार्यकर्त्ता और प्रांत के वर्तमान एम० एल० ए० श्री द्वारकाप्रसाद मौर्य आये। उन्होंने विद्यार्थियों को तात्कालिक राजनीतिक दुरवस्था का परिचय कराया। विद्यार्थी उत्तेजित हो रहे थे। वे आपस के नेतृत्व में ही आगे बढ़े। जुलूस में आगे चलकर स्थानीय कायस्थ-पाठशाला के विद्यार्थी भी मिल गये और लोग क्रान्ति के नशे में झूमते, राष्ट्रीय गान गाते, नगर की ओर बढ़ चले। जनता भी उत्कण्ठित थी। सभी मिलते गये और भीड़ बढ़ती गई। विद्यार्थियों के नारों पर दूकानें बन्द होने [illegible] और दू[illegible]दार तथा अन्य [illegible] के [illegible] कार्य स्थ[illegible] लेते [illegible] चगेरा आक[illegible] सकते [illegible]

कर खींचे लेती थी। जुलूस आगे बढ़ा; फिर उसके दो भाग हुए। एक गवर्नमेंट हाईस्कूल की ओर बढ़ा और दूसरा राजस्कूल की ओर। सभी स्कूल के विद्यार्थी मिल गये। शहर का मध्यभाग विद्यार्थियों और आबाल-वृद्ध नागरिकों से जनाकीर्ण हो उठा। वहाँ से सभी लोग 'जैन-मन्दिर' के मैदान में गये। वहाँ वीर दिवाकरसिंह और हरिहरसिंह आदि तरुणों की प्रमुखता में एक सार्वजनिक सभा हुई और लोगों ने राष्ट्रीयता की शपथ ली।

दूसरे दिन प्रभात में ही विद्यार्थी और जनता तिरंगे झंडे की छाया में कचहरी के सभी पथों पर इकट्ठा हो गई। लोग 'पिकेटिंग' द्वारा कचहरी जाने से सविनय रोके जाने लगे। फिर वहाँ से जुलूस निकला और कचहरी की ओर बढ़ा। कलक्टरी को बन्द कराते हुए लोग दिवानी गये। वहाँ इमली के नीचे वीर दिवाकरसिंह का ओजपूर्ण भाषण हुआ। दीवानी भी लगभग बन्द हो गई। इसके पहले विद्यार्थी और जनता जिले के जेल पर भी जा चुकी थी। वहाँ अधिकारियों ने उन पर निर्ममतापूर्वक लाठीचार्ज किया था। अब तक जनता पूर्ण अहिंसक थी, किन्तु इस लाठीचार्ज से सभी नागरिक असन्तुष्ट हो उठे। तीसरे दिन के जुलूस पर कलक्टरी में गोली चली। निहत्थी जनता ने ईंटों और पत्थरों का आश्रय लिया। लाठीचार्ज भी हुआ और फलस्वरूप कई विद्यार्थी घायल हुए। घायल विद्यार्थी जिले के अस्पताल भेज दिये गये। सारी जनता अस्पताल की ओर दौड़ पड़ी। अब तक कांग्रेस के सभी कार्यकर्त्ता आराम से जेल भेजे जा चुके थे। जिले की समाजवादी पार्टी के तरुण कार्यकर्त्ता विश्वनाथसिंह और वीर दिवाकरसिंह आदि वहीं पकड़कर जेल भेज दिये गये। सारी जनता ने नगर के बीच पार्क में अधिकारियों की इस कार्यवाही के विरोध में एक विराट् सभा की। पुलिस के इन कारनामों की पूरी भर्त्सना हुई।

* * *

धीरे-धीरे आन्दोलन की चिनगारियाँ ग्रामों में फैल गईं। देहात के लोग भी क्रान्ति की पूजा के लिए चल पड़े। दमन और भी बढ़ा। बाहर से सैनिक बुलाये गये। इतने में ही एमरी साहब का सुझाव सामने आया। प्रतिक्रिया में रेल उखाड़ना, तार काटना शुरू हो गया। 'मिलीटरी' ने देहात में भी दौड़ लगाई। सड़कें खोदी जाने लगीं। उधर ग्रामीणों के घर जलाये जाने लगे तो इधर स्टेशन और सरकारी स्थान फूँके जाने लगे। जनता ने ओ० टी० रेलवे पर अधिकार-सा कर लिया और सदर को छोड़कर [illegible] जाय [illegible]

जन-क्रान्ति के संचालक जो वीर थे उनमें प्रमुख राय अम्बिकाप्रसादसिंह, हरिहरसिंह, दलसिंगारसिंह, राजनारायण मिश्र और उत्तरी भाग में वीर गंगासिंह थे।

* * *

धनियामऊ में जमींदारसिंह के नेतृत्व में एक सभा हुई। जवानों ने मिलिटरी को रोकने के लिए सड़क तोड़ दी। किन्तु आर्म्ड-पुलिस ने पहुँच कर यहाँ लाठी-चार्ज करना प्रारम्भ किया। जनता उन पर टूट पड़ी। गोली चली और जमादारसिंह तथा उनके तीन साथी यहीं बलि हो गये। यहीं श्री राजाराम शर्मा के नेतृत्व में एक तरुण-दल बना जो पुलिसवालों से उन कामों का बदला लेता था। जो वे अत्याचार-स्वरूप जनता पर ढा रहे थे। देहात में ढूँढ़-ढूँढ़कर कांग्रेसियों के घर जलाये जाने लगे। राजाराम शर्मा का घर जला दिया गया। उनके माँ-बाप निर्ममतापूर्वक पीटे गये।

* * *

जिले के पश्चिमी भाग में आन्दोलन राय अम्बिकासिंह के नेतृत्व में चल रहा था। इन्होंने उस समय गांधीजी के 'हरिजन' के लेखों को पढ़ा और यह निष्कर्ष निकाला कि बापू भी देश की इस स्थिति से काँप उठे हैं। उन्होंने तरुणों के कार्य को समझा और जन-क्रान्ति के महायज्ञ के सचेत 'होता' बन गये। सुजानगंज थाने से बन्दूकें छिनीं और कुछ बाहर से आईं। प्रोग्राम बना कि रेल-तार आदि यातायात के साधनों को छिन्न-भिन्न कर दो। अत्याचारों की मर्मान्तक कथा से राय साहब की आत्मा तड़प उठी और उन्होंने बदले की दृढ़ शपथ ली। बँधवा बाजार में कार्यकर्त्ताओं की बैठक बुलाई गई। पुलिस को पता चल गया। वहीं तरुणों से मुठभेड़ हो गई और दो पुलिसवाले मरे। रामशिरोमणि, राजनारायण मिश्र, भगवतीलाल, गौरीशंकर, गिरिजाशंकरसिंह और रामचरण इस केस में फाँसी के अभियुक्त हुए, जिनके लिए समस्त देश से प्रस्ताव पास हुए और स्वयं महात्माजी ने सिफारिश की थी। हरिहरसिंह, सूर्यप्रतापसिंह और डा० सुरेश भी इसी केस में थे। अम्बिकासिंह बहुत दिनों तक नहीं पकड़े गये। अन्त में बम्बई में एम० जी० पर्डी के साथ गिरफ्तार हुए और फाँसी की सजा मिली। सूबे में राष्ट्रीय सरकार के आगमन के साथ सभी लोग मुक्त कर दिये गये।

सिकरारा में लोगों ने बीजगोदाम लूट लिया और उसे जला दिया। यहाँ कई महीने पुलिस पड़ी रही और जनता को खूब पीसा गया। यहीं पास के [illegible] के [illegible] में सूर्यप्रतापसिंह गिरफ्तार [illegible] थे। जो कोई भी गांधी टोपी दिये [illegible] वह पीटकर जेल भेज दिया [illegible] एक विशाल जन-

जौनपुर के अगस्त-क्रांति के [illegible] राय अम्बिकाप्रसादसिंह [illegible] समूह जुटा और थाना घेर [illegible] पुलिस ने फायरिङ्ग की जिसमें [illegible] मरे और बहुतेरे घायल हुए। [illegible] भाग में दलसिंगारसिंह का [illegible] था। उस भाग में उन्हीं के [illegible] क्रान्ति का संचालन हुआ। [illegible] और मौन कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। [illegible] सरकारी प्रतिरोध इस भाग में [illegible] उसका श्रेय इन्हीं को है। [illegible] पास किसान हाईस्कूल फूँक [illegible] वहाँ के अध्यापक जगदीश [illegible] के प्रसिद्ध क्रांति-संचालक [illegible] प्रकार कर्रा स्कूल किरांकत को [illegible] ने फूँक दिया। संगठित [illegible] से इस प्रकार यह महान् [illegible] दी गई। कितने नौजवानों ने [illegible] से इसका अभिषेक किया [illegible] इतिहास का पन्ना भूल जाय [illegible] स्वर अब भी वातावरण में [illegible] और गूँजता रहेगा।

श्वेतकुष्ठ वनौषधि

महात्मा प्रदत्त श्वेतकुष्ठ [illegible] दवा से तीन दिन में पूरा [illegible] सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, [illegible] दाताओं की दवा से निराश [illegible] तो इसे लगा कर आराम होवें [illegible] की दवा का मूल्य २॥)।

सफेद बाल काला

इस तेल से बालों का [illegible] और पका बाल काला पैदा [illegible] ६० वर्ष तक काला न रहे तो [illegible] वापसी की शर्त लिखा लें। [illegible] के दर्द व सिर में चक्कर [illegible] आराम कर आँख की रोशनी [illegible] एकाध बाल पका हो तो [illegible] हो तो ३॥) और कुल पका [illegible] तेल मँगवा लें। एजेण्टों की [illegible] आवश्यकता है।

स्तम्भक वटी

एक गोली शाम को [illegible] इसके अद्भुत चमत्कार को [illegible] तक स्तम्भन कर गजब [illegible] गोली १), ५० का २॥।)

पता—वैद्यराज अखिल[illegible] नं० ३७ पो० कतरीसराय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकोच

लेखक, श्री मन्मथनाथ गुप्त

ब्रजेन्द्र भैया के स्त्री-पुत्र आदि कोई न था। कलकत्ते में नौकरी करते और मेस में रहते थे। सामने के मकान में गौरी रहती थी। मेसवालों ने जोड़ तोड़ लगाकर उसका विवाह अपने मेस के छात्र शंकर से करा दिया। विवाह से पूर्व के दाँव-पेंच देखकर ब्रजेन्द्र भैया इतने नाराज हुए कि मेस छोड़कर अन्यत्र रहने लगे। किन्तु वे ही अन्त समय में पाँच-सात साड़ियाँ उस नटखट छात्र को गौरी के पास पहुँचा देने के लिए सौंप गये जिसने विवाह का जाल फैलाया था तो इस संकोच की तह में क्या था?

आशा है, तुम लोगों के लिए इन सब बातों का अर्थ होता है। मेरी आँखों में अब बनारस का घाट और क्लाइव स्ट्रीट की चौमुहानी सब एक है। मेरे निकट अब जीने का कोई अर्थ ही नहीं रह गया। खुदकुशी इसलिए नहीं करता कि कायरता होगी। जीना है, इस कारण नौकरी करता हूँ। बात यह है, जीने के लिए रुपये चाहिए। अब मेरे लिए कोई सुख नहीं है।

साथ ही हम यह भी जानते थे कि ब्रजेन्द्र भैया अच्छी नौकरी पर थे। ठीक उनका शरीर सुन्दर न होने पर भी उनकी हँसी बहुत मीठी थी। सामने केवल एक दाँत रह गया था, उसे निकालकर जब वे हँसते थे तो ऐसा ज्ञात होता मानो मनुष्य-मात्र के लिए उनका हृदय स्नेह से भरा है।

ऐसे शान्त, सौम्य, निरीह व्यक्ति एक दिन हम लोगों के एक मामूली मज़ाक से उतने नाराज़ क्यों हो गये, यह हम समझ नहीं पाये।

बात खुलासा यों है—

हमारे मेस में छात्रों की संख्या ही

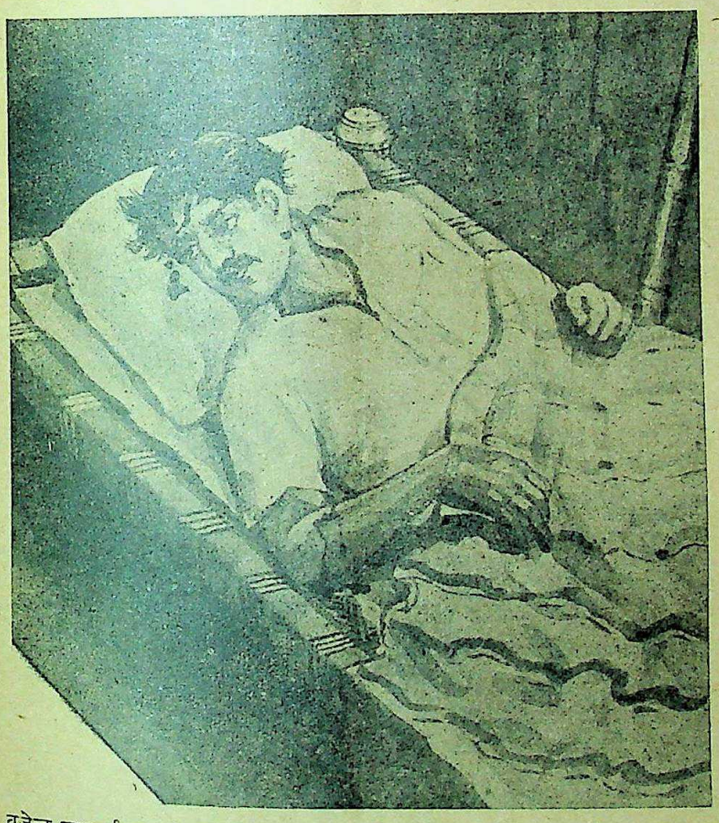

ब्रजेन्द्र चारपाई पर बीमार पड़ा था। वह अपनी सन्दूक में रक्खी साड़ियों को गौरी के देने को कह रहा है।

कितनी तनख़्वाह पाते थे, यह तो नहीं मालूम, फिर भी दो सौ के लगभग पाते थे इसमें सन्देह नहीं। मेस में वे ही एक ऐसे थे जो पूरा कमरा लेकर अकेले रहते थे, और तम्बाकू भरने तथा सन्ध्या के बाद हाथ-पैर दबा देने के लिए मेस के एक नौकर को आधी तनख्वाह देते थे।

वे बहुत दुबले आदमी थे। सारी देह में जैसे रस्सी की तरह एक ऐंठन थी। दुबला होने के साथ ही लम्बे थे, [illegible] हमेशा कुछ झुके हुए रहते [illegible] छुटने का हिस्सा कुछ टेढ़ा था [illegible] एक जीवित प्रश्न-चिह्न [illegible]।

अधिक थी। इनमें कुछ डाक्टरी स्कूल के छात्र भी थे। इसी नाते एक डाक्टरी छात्र के जरिये परिचय प्राप्त कर शंकर एक दिन हमारे मेस का सदस्य हो गया। यह कोई ऐसी अनहोनी बात नहीं थी। मेसों में लोग आया-जाया करते ही हैं। जब कोई नया आता था तो उससे परिचय प्राप्त कर उसके सम्बन्ध में सब ज्ञातव्य का पता लगा लेते थे। जब उसका नयापन जाता रहता, वह भी हम [illegible] ता तो हम उस [illegible] छोड़कर चल भी देता, तो उस पर भी हम विचलित नहीं होते थे।

शंकर की बात और ही थी।

पहली बात यह थी कि यह नौजवान बहुत ही सुन्दर था। दूसरी बात यह थी कि वह जितना ही मिष्टभाषी था, उतना ही मज़ाकिया और प्रफुल्ल-चित्त। वह स्वयं हँसता और दूसरों को हँसाता रहता था। सारांश यह कि मनुष्यों के प्रिय होने के सभी गुण उसमें थे। इसलिए सभी चाहते थे कि ऐसे व्यक्ति से दोस्ती रहे।

इस प्रकार चला जा रहा था, पर एक दिन पता लगा कि हम लोगों के अतिरिक्त एक और प्राणी भी शंकर के सम्बन्ध में दिलचस्पी रखता है। वह थी सामने के मकान की गौरी।

हम लोगों का मेस ठीक मिर्जापुर स्ट्रीट पर था। सामने की सड़क चौड़ी थी, फिर हमारे मेस में अधिक उम्र के लोग भी अधिक थे। इसलिए सामने के मकान के निवासी, गौरी के पिता, अपने को बिलकुल ख़तरे में नहीं समझते थे जैसा कि मेस के आस-पासवाले समझते हैं। बात भी ठीक थी।

सामने के मकान में गौरी नाम की कोई लड़की रहती थी, इसका हमें पता नहीं था। फिर गौरी अभी किशोरी थी। ऐसी सुरूपा भी नहीं थी। हाँ, उसके चेहरे में कुछ श्री अवश्य थी। इसी लिए शायद हमारे मेस के छात्र उस तरफ विशेष ध्यान नहीं देते थे।

एकाएक मैंने ही एक दिन यह देखा कि आजकल गौरी सवेरे तथा सन्ध्या के समय, तरह तरह के बहाने से, छत पर आती है और जिधर से शंकर की आवाज आती है, उधर ताक कर खड़ी रहती है। कोशिश तो वह करती थी कि किसी को कानोंकान खबर न हो, पर थी वह बच्ची ही, इसलिए उसका रहस्य मुझ पर खुल गया।

बस, खबर मिलते ही मेस में तहलका मच गया। उस प्रकार जो मज़ाक और हँसी हुई, उसका शोर सड़क पार कर उस मकान में लड़की के कान में जा पहुँचा। वह चिढ़ गई। तीस-बत्तीस जोड़ा आँखें उसके गुप्त अभिसार को ताड़ा करती हैं। यह जानकर उस बेचारी ने छत पर आना ही छोड़ दिया।

उसने तो छोड़ दिया, पर हम उसे छोड़ देते तब न। हम लोग उसकी प्रणय-भीरुता को लक्ष्य कर जोश में आ गये थे। अब उसे हम आसानी से छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे। उपेन्द्र भैया ऐसे मामलों में बहुत दिलचस्पी रखते थे। वे एक दिन सड़क के उस पार जाकर गौरी के पिता से परिचय प्राप्त कर आये और लोगों से उछलते हुए यह बताया कि गौरी के साथ शंकर के ब्याह होने में कोई बाधा नहीं है, क्योंकि दोनों का गोत्र अलग अलग है, इसलिए प्रणय-लीला यदि कुछ आगे भी बढ़े तो भी वियोगान्त होने की कोई सम्भावना नहीं।

शंकर को पहले इस मामले में कोई दिलचस्पी नहीं थी, पर हम लोगों ने उसके कानों के पास ऐसा गुनगुनाना शुरू किया कि धीरे धीरे उसकी आँखों में भी स्वप्न जम गया [illegible] उसकी दृष्टि रंगीन हो गई। [illegible] का पत्र पाकर [illegible] ना असंभव [illegible] फिर से छत

CC-0) In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर दिखाई पड़ी। हम लोगों के जरिये अब पत्र-व्यवहार भी शुरू हो गया।

कम लिखी-पढ़ी लड़की के हाथों के लिखे पत्र में अपटु प्रेमनिवेदन था। यों तो उसमें कोई भी रस नहीं था, पर हम लोग इसी में रस लेने लगे। सुना गया कि शंकर इन पत्रों को दिन में तो बुकपाकेट में रखता है, और रात को उन्हें सिरहाने। इस बीच शंकर के साथ हममें से कुछ लोगों का न्यौता हुआ। इसी उपलक्ष्य में किसी प्रकार सीढ़ी के पास शंकर के साथ गौरी की भेंट हो गई, और पान लेते समय शायद शंकर की मुट्ठियों में गौरी का कोमल हाथ आ गया। ये सब तुच्छ बातें हैं। असल बात यह है कि मामला खूब जम उठा। अब सिर्फ इसके परिणाम को मधुरतम कर देना रह गया।

* * *

हम लोग जब इस प्रकार इस बाईस साल के नवयुवक और पन्द्रह-सोलह साल की किशोरी की प्रणय-लीला को लेकर यों खुश हो रहे थे, उसी समय भीतर ही भीतर ब्रजेन्द्र भैया के अन्तरलोक में इतना विद्वेष पुँजीभूत हो रहा था, इसका हमें पता नहीं था।

एक दिन एकाएक उन्होंने मुझे बुलाया और डाँट-फटकार शुरू कर दी—यह सब क्या सुन रहा हूँ। यह शरीफों का मेस है। इस तरह शोहदापन होगा तो मैं तो इस मेस से बाज आया...। यह सब क्या तूफाने बदतमीजी मचा रक्खी है?

मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। ब्रजेन्द्र भैया यों ही बड़े निरीह हैं, स्वभाव मधुर है। वे इस तुच्छ मामले को इतना तूल देकर बिना समझे-बूझे इस प्रकार बदजबानी करेंगे, इसकी मुझे आशंका नहीं थी। मैं तो भौंचक्का रह गया।

जब कुछ सँभला, तो बोला—शोहदापन तो कुछ भी नहीं है भैया। शंकर लड़का अच्छा है, गोत्रादि सब ठीक है, यदि इसी बहाने शरीफ आदमी कन्यादान से उद्धार पा जाय तो क्या बेजा है...।"

ब्रजेन्द्र भैया बीच ही में उबल पड़े—रहने दो, वह सब मुझे मालूम है। उस शरीफ आदमी के कन्या-संकट के लिए तो तुम लोगों को रात में नींद नहीं आती। इसी मुहल्ले में बहुत सी और कन्यायें हैं, उनके लिए तो तुममें से किसी को चिन्तित नहीं पाता! जाओ, जाओ, ये फजूल की बातें न करो। उनको गरज हो तो वे उसके बाप के पास पुरोहित भेजें। इससे तुमसे क्या?

ब्रजेन्द्र भैया के दिमाग में कहीं कोई स्क्रू (पेचकश) ढीला हो गया है, जानकर उस समय मैंने इस विषय को वहीं पर छोड़ दिया। चुपचाप वहाँ से चला आया।

सारे मेस के लोग उनकी इस नाराजी से चकित हो गये। बहुत आलोचना करने पर भी किसी को यह मालूम नहीं हुआ कि इस क्रोध का क्या कारण है।

जो हो, हम आगे से और भी सतर्क हो गये। उनसे डरने की कोई बात नहीं थी। वे हममें से किसी के अभिभावक भी नहीं थे, पर हम सभी उन पर श्रद्धा रखते थे, और यह नहीं चाहते थे कि उनको अकारण कष्ट पहुँचे।

फिर भी उनसे चीजों को एकदम छिपाना असंभव था। हम लोग उन दिनों उत्साह और आनन्द की तरंगें [illegible] ले रहे थे, [illegible] रही थी। [illegible] फिकरे ब्रजेन्द्र [illegible] लेते [illegible] चगेरा [illegible] जाते थे और उनके अन्दर का बादल बढ़ता ही जा रहा था।

इसी के बाद एक दिन उपेन्द्र भैया के आग्रह और चेष्टा से गौरी को, उसकी बहन के साथ, मेस में लाया गया और उसे शंकर के साथ भेंट करने की सुविधा दी गई। उन दिनों मेस करीब करीब खाली था। हम दो-तीन आदमियों के अतिरिक्त मेस में कोई नहीं था; इसलिए बात हम लोगों के अतिरिक्त किसी को मालूम नहीं होनी चाहिए थी, पर न मालूम कैसे यह बात ब्रजेन्द्र भैया को ज्ञात हो गई। दूसरे ही दिन सबेरे ब्रजेन्द्र भैया ने मेस के मैनेजर को मेस छोड़ने की नोटिस दे दी।

मैंने, उपेन्द्र भैया ने तथा सभी ने ब्रजेन्द्र भैया को बहुत समझाना चाहा। यह भी बताया कि ब्याह का दिन भी तय हो गया, पर वे अटल रहे। किसी की न सुनी। इस दुबले-पतले मीठे स्वभाव के व्यक्ति में इतनी जिद्द है, यह हम नहीं जानते थे।

उन्होंने नया मेस ढूँढ़ लिया, और ठीक शंकर के विवाह के एक दिन पहले वे चले गये। यह नया मेस हमारे मेस के एक मकान बाद ही के मकान में था।

बहुत दिनों तक एक साथ रहने के बाद इस प्रकार ब्रजेन्द्र भैया को खोकर हम लोग दुखी हुए, परन्तु इस बात पर अधिक सरमग़ज़न करने का समय नहीं था। शंकर के ब्याह के उत्सव में ब्रजेन्द्र भैया क़तई सो गये।

* * *

इसके बाद पाँच-छः वर्ष बीत गये।

शंकर डाक्टरी पास कर अपने ज़िले में चला गया। गौरी अब दो-तीन लड़कों की माँ हो गई हैं। ये खबरें हमें लोगों से मालूम हुई हैं। कभी शंकर दवा खरीदने कलकत्ते आता है तो भेंट हो जाती है। बस, अब परिचय यहीं तक रह गया है।

हम लोगों के एकरस जीवन से उनके जीवन की धारा बहुत पहले ही विच्छिन्न हो गई है। कभी पुराने दोस्तों से बातचीत में ज़िक्र आ जाता है तो याद पड़ती है नहीं तो उनको हम भूल से गये हैं। एक जमाने में जिस बात को लेकर जोश ही जोश था, आज वह दूरतमस्मृति में पर्यवसित है।

ब्रजेन्द्र भैया उसी मकान में हैं।

हम लोग बीच बीच में खबर लेने जाते हैं। वे भी कभी कभी आ जाते हैं। इन दिनों उनका स्वास्थ्य बहुत टूट गया है। हम सभी उनसे यह कहते हैं कि कुछ अधिक छुट्टी लेकर पछाँह में हो आइए, पर वे वही एक बात कहते हैं—क्या होगा इस शरीर की परवा कर, जो जा रहा है उसे जाने दो।

एकाएक एक दिन उस मेस के नौकर ने आकर कहा कि ब्रजेन्द्र भैया की तबियत खराब है। मुझे बुला रहे हैं।

मैं जल्दी से पहुँचा।

उनके बिस्तरे के पास जो लोग बैठे थे वे ब्रजेन्द्र भैया के इशारे पर बाहर चले गये। समझ गया कि मेरे साथ कुछ गुप्त बातें उन्हें करनी हैं।

कमरा जब खाली हो गया तो उन्होंने इशारे से मुझे और पास बुलाया, फिर चुपके से बोले—मेरे सिरहाने चाबी है। उससे उस बक्स को खोलो। ऊपर मेरे ही कुर्ते आदि हैं। उनको हटाने पर कुछ साड़ियाँ मिलेंगी। उन्हें निकालकर लाओ।.....

साड़ी? साड़ियाँ! ब्रजेन्द्र भैया के बक्स में? मैं आश्चर्य-सागर में डूब गया, पर न मालूम क्यों उस सम्बन्ध में प्रश्न करने की इच्छा नहीं हुई। इन थोड़ी सी बातों को कहकर ही वे हाँफ रहे थे।

बक्स खोलकर कुर्ता-कमीजों को हटाकर और भी आश्चर्य बढ़ गया। छः-सात साड़ियाँ थीं और [illegible] थीं। अब भी उन पर दुकान [illegible] चिपका था। ढाके की, जोड़ [illegible] विभिन्न रंगों तथा उपादानों [illegible] मूढ़ की ही तरह उन साड़ियों [illegible] मैं उनके बिस्तरे के पास बैठ [illegible] गई थी। उन्होंने बड़े आग्रह [illegible] मुझे अब अधिक देरी नहीं है। [illegible] एक अन्तिम अनुरोध है। पर [illegible] न पूछना, मैं कुछ नहीं बताऊँगा।

उनकी हालत देखकर [illegible] आर्द्र हो चुकी थीं। बहुत [illegible] आँसू रोककर मैंने कहा—[illegible] अवश्य आपकी आज्ञा का [illegible]

जरा चुप रहकर ब्रजेन्द्र [illegible] कहा—तुम्हें वह गौरी याद है [illegible] जिसके साथ शंकर की शादी हुई [illegible] उसके पास इन साड़ियों को भेज [illegible] पता तो जानते होगे। प्रतिवर्ष [illegible] अवसर पर उसी के लिए एक [illegible] था, पर अन्त तक दे नहीं [illegible] न मालूम कैसा संकोच [illegible] शायद कुछ ग़लत समझ बैठे... काहे की लज्जा है। बुड्ढा हूँ [illegible] मरने बैठा हूँ। फिर भी [illegible] इन्हें स्वीकार करेगी? जैसे भी [illegible] इन्हें पहुँचा देना। क्यों?

ब्रजेन्द्र भैया चुप हो गये।

इतने में उनकी साँस ऐसे [illegible] जल्दी से बाहर निकल कर सबको [illegible] उनके भतीजे गाँव से आ गये [illegible] आश्चर्य से साड़ियों की ओर घूर [illegible] पर किसी को हिम्मत नहीं हुई कि [illegible]

उसी दिन सन्ध्या-समय [illegible] का देहान्त हो गया।*

* एक बँगला कहानी के आधार

रेक्सोना महिलाओं के लिए नवीन रूप का ही साबुन नहीं है, अपितु जो कोई भी त्वचा के स्वास्थ्य को मान्यता देता है, उन सबके लिए यह आवश्यक शृंगार-साबुन है—यह वही स्फूर्तिप्रद साबुन है जो पुरुषों को भी प्रिय है।

यह उत्तम, शीघ्र झागप्रद साबुन शान्ति और उपचारदायी, त्वचा विकारविरोधी, कैडिल द्वारा औषध रूप से अनुप्राणित है। रेक्सोना का शीघ्र प्रारम्भ होनेवाला झाग इस स्वास्थ्य उत्पादक कैडिल को, त्वचा के रोम-छिद्रों में [illegible]

कि, अकसर चर्म-विकार उत्पन्न होते हैं। रेक्सोना का प्रयोग करने से त्वचा-आरोग्य वर्धित होता है और आप की त्वचा सुरक्षित रहती है। याद रखें कि, त्वचा-आरोग्य जितना स्त्रियों लिये उचित है, उतनाही पुरुषों के लिये भी आवश्यक है।

बालकों के लिए रेक्सोना:— "पिता का साबुन" बालकों के लिए भी आदर्श है। कैडिल को बालकों के हल्के शरीर-प्रदाहों को शान्त करने दीजिए और रगड़ एवं जलन से बचाने दीजिए।

[illegible] में [illegible] कैडिल विकारविरोधी पोषक [illegible] शिष्ट रसायन द्वारा बनाया गया है, जिसका [illegible] त्वचा पर शक्तिशाली प्रभाव पड़ता है।

रेक्सोना मरहम का प्रयोग कीजिये। कटने के और रगड़ के घावों, खुजली, मुँहासों, फफोलों, दाद, मसी, तथा अन्य सभी त्वचा की कुरूपताओं पर

रेक्सोना मरहम का प्रयोग कीजिये

REXONA PROPRIETARY LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय फिल्मों में हिन्दी की रूप-रेखा

निर्माताओं द्वारा हिन्दी की अवहेलना

लेखक, श्री उमेश जोशी

प्रसिद्ध कवि 'प्रदीप' सिनेमा-संसार के आप एक अमूल्य-निधि हैं।

आज मुस्लिम समाज के चित्रों में तो शत-प्रतिशत अरबी-फारसी से लदी भाषा का प्रयोग होता है किन्तु हिन्दू धार्मिक, पौराणिक एवं ऐतिहासिक चित्रों में भी हिन्दी-उर्दू की ऐसी खिचड़ी पकाई जाती है जो हमारी संस्कृति के लिए घातक और अपमानजनक है। आज सिनेमा-संसार में हिन्दी के उच्च कोटि के साहित्यकारों के होते हुए भी हिन्दी के चित्रों में उर्दू लेखकों को क्यों लिया जाता है, जिनको हिन्दू संस्कृति का रत्ती भर भी ज्ञान नहीं होता। यह बड़े शर्म की बात है हिन्दू निर्माताओं के लिए, और उससे भी लज्जाजनक बात है हिन्दी-भाषा-भाषियों के लिए जो चुपचाप इस प्रकार के चित्रों को देख लिया करते हैं।

हिन्दी के लाखों प्रेमियों के स्वाभिमान से यह निवेदन है कि वे अपनी गाढ़ी कमाई के लाखों रुपये सिनेमा के पूँजीपतियों को भेंट कर अपनी संस्कृति और भाषा का अपमान देखना बन्द करें। प्रश्न केवल भाषा की हत्या का ही नहीं है—बल्कि ये सिनेमा-व्यवसायी बरसों से अपने चित्रों-द्वारा हिन्दू समाज का अपमान करते आये हैं और कर रहे हैं। इन्होंने हमारे देवताओं और महापुरुषों का भी कचूमर निकाल डाला—इतिहास की भी छीछालेदर कर दी।

आप लोग इतने स्वाभिमान-हीन नहीं हो गये कि यह सब चुप्पी मारकर देखते रहें और सहन करते रहें। क्या आप इतना भी नहीं कर सकते कि विभिन्न फिल्म-कम्पनियों के निर्माताओं तथा निर्देशकों को हिन्दी की महत्ता, उसकी संस्कृति-पोषकता तथा राष्ट्रीय-गौरव का ज्ञान पत्र-द्वारा करावें—तथा उन्हें हिन्दी-विरोधी, लेखकों का बहिष्कार करने की चेतावनी दें? आज हमारे हिन्दू-निर्माता अधिक से अधिक मुसलमान लेखकों को प्रश्रय दे रहे हैं, जो अपनी इस्लामी संस्कृति हमारे प्रत्येक चित्र में संवादों तथा गजलों द्वारा घुसेड़ना चाहते हैं। आज सिनेमा-पत्रों में उर्दू-लेखकों का ही नाम दिखाई दे रहा है। जैसे काले बालों में कोई एक आध सफेद बाल चमक जाता है, उसी तरह हिन्दी के लेखक सिनेमा-पत्रों में दिखाई दे जाते हैं। काशी नागरी-प्रचारणी-सभा और हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को इस ओर क्रियात्मक कदम उठाना चाहिए। निर्माताओं के पास नोटिस भेजी जानी चाहिए—एक चेतावनी के रूप में कि यदि भविष्य में उन्होंने हिन्दी की रूप-रेखा को विकृत करने का साहस किया तो उनके खिलाफ कदम उठाया जायगा।

Estd. 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

सिन्हा होमियामेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S. १०) H.M.B.S. १५) H.M.D.S २५)। पुस्तक—अ० पारिवारिक १) वायोकेमिक १) १००० रेडलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्सनरियां १॥) आगंनन १), फार्माकोपिया १॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायँगी। डा० ख० साफ—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≡) ड्राम। आउन्स ॥) परलू बक्स ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.)

दार्जिलिंग तराई टी कार्पोरेशन

लिमिटेड

हेड आफिस, १२ चौरंगी स्क्वायर कलकत्ता

अधिकृत और चालू पूँजी ५,००,००० रुपए हैं—जो १० रुपयों के हिस्सों में ३००० साधारण हिस्सों और १०० रुपए प्रति हिस्सा सुविधा के हिस्सों में (बन्धकों से) २००० हिस्सों में (६% बिना टैक्स के बन्धक की समता) के हिस्सों में बँटी हुई है।

प्रत्येक श्रेणी के लोग इसको अदा कर सकते हैं। दरख्वास्त के साथ ५०% भेजना चाहिए। शेष बँटवारे के एक महीने के भीतर। प्रत्येक दरख्वास्त के साथ १) दाखिला फीस आवश्यक है।

अच्छी स्थिति और आधुनिक मशीनरी (कल पुर्जों) से पूर्ण एक बढ़िया चालू चाय के बाग़ को जो दार्जिलिंग में है, ख़रीदने की बातचीत भी पूरी हो चुकी है। इस बाग़ का नाम टिनढरिया टी स्टेट है जिसका रक़बा १०७५ एकड़ है। उस बाग़ में अच्छे जंगल, ओज़ार, पौदे और मशीनरी तथा इमारतें इत्यादि हैं। सन् १९४६ ईसवी में उस बाग़ से १,२०,००० पौण्ड चाय की पैदावार और ७५ हज़ार रुपए के लाभ की अनुमान है।

प्रारम्भिक वर्ष में ही अच्छे लाभ की आशा है।

[illegible] हिस्सों को बेचने [illegible]

CC-0) In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंध-सरकार की हिन्दी-विरोधिनी नीति

लेखक, श्री शरदेन्दु, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, कराची

सिन्ध-सरकार की हिन्दी के प्रति जो नीति है उसका स्पष्ट वर्णन इस लेख में है। घटनाओं का क्रमबद्ध वर्णन ही सिन्ध की सरकार के संकल्प को प्रकट करने के लिए पर्याप्त है। स्पष्ट है कि सरकार हिन्दी को कुचलने के सब प्रयत्न करने के लिए कटिबद्ध है; केवल स्थानीय शासन-संस्थाओं की दृढ़ता, जनता के हिन्दी-प्रेम तथा भारत के जनमत की शक्ति के कारण ही वह अपने प्रयत्न में सफल नहीं हो रही है। इस साल कराची में अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का अधिवेशन होने जा रहा है। वहाँ पर उस समय हिन्दीवालों को ऐसा प्रयत्न करना चाहिए जिससे मुस्लिम लीगी सरकार हिन्दी के प्रति अन्याय करने से अपना हाथ खींच ले।

आज से अठारह वर्ष पूर्व, जब सिन्ध बम्बई-प्रान्त का ही एक भाग था, बम्बई-सरकार ने अपने प्रस्ताव सं० २५३४/२३-४-२८ के द्वारा हिन्दी को प्रारम्भिक शिक्षा का एक माध्यम स्वीकृत किया था, तथा सिन्ध की स्थानीय शासन-संस्थाओं (म्युनिसिपैल्टियों) के लिए हिन्दी की न केवल सहायक भाषा के रूप में प्रत्युत मातृभाषा के रूप में शिक्षा देने का प्रबन्ध करना अनिवार्य किया था। यह निश्चय उस समय की उठती हुई राष्ट्रीय लहर तथा देश की एक राष्ट्रभाषा होने की आवश्यकता के अनुभव के फलस्वरूप ही हुआ था।

किन्तु सन् ३० में आरम्भ होनेवाले राष्ट्रीय आन्दोलन के उपरान्त एक प्रतिक्रियावादी नीति का बोलबाला रहा। राष्ट्र को एकता के धागे में बाँधनेवाली राष्ट्रभाषा हिन्दी पर भी इन प्रतिक्रियावादी शक्तियों का आक्रमण होना स्वाभाविक था। २५-११-३१ के प्र० सं० एस ९६ द्वारा बम्बई-सरकार ने निम्न निश्चय किया—"प्रान्त में आर्थिक संकट के कारण परिस्थितियाँ बदल गई हैं; सरकार को सहायता-व्यय घटाने पर बाध्य होना पड़ा है अतः सरकार हिन्दी शिक्षण के लिए स्थानीय शासन-संस्थाओं पर दबाव डालना उचित नहीं समझती, विशेषकर जब कि उनमें से अधिकांश के पास अपनी प्रादेशिक भाषा सिखाने के लिए भी कोष नहीं है।... अतः सरकार प्र० सं० २५३४/२३-४-२८ को रद्द करती है।"

ध्यान देने की बात है कि सरकार को "आर्थिक संकट" के अतिरिक्त कुछ बहाना न मिला। यदि संकट हो तो भी अस्थायी ही होगा। ऐसी दशा में प्रस्ताव को स्थगित किया जाना चाहिए था, रद्द नहीं। सैद्धान्तिक रूप से हिन्दी-शिक्षण की आवश्यकता को सरकार भी अस्वीकृत नहीं कर सकी।

इस प्रकार सरकार द्वारा दबाव हटने पर भी स्थानीय शासन-संस्थाओं ने स्वेच्छा से अपने हिन्दी स्कूल चालू रखे। सरकार को विश्वास था कि प्र० सं० २५३४ के बन्धन को हटाने से स्था० शा० संस्थाएँ 'भारस्वरूप' हिन्दी को हटा देंगी, किन्तु यह न हुआ। सरकार चिढ़ गई। उसे हिन्दी की जड़ खोदनी ही थी। उसने प्र० सं० ९६/२-८-३३ के द्वारा घोषणा की—"१९३३-३४ के आर्थिक वर्ष से स्था० शा० संस्थाओं द्वारा हिन्दी स्कूलों पर व्यय किया गया धन सरकारी सहायता के लिए स्वीकृत नहीं किया जायगा।"

इस आर्थिक धमकी [illegible] प्रभाव स्था० शा० [illegible] हार न [illegible] झेलक [illegible] लेते [illegible] चगेरा [illegible] सकते [illegible]

कराची तथा शिकारपुर की म्युनिसिपैल्टियाँ इनमें प्रमुख हैं।

इसके पश्चात् ही देश की स्थिति में तेजी से परिवर्तन हुए और १९३५ के विधान द्वारा सिन्ध-प्रान्त बम्बई से अलग हुआ; तथा प्रान्तीय-स्वायत्त-शासन की घोषणा के अनुसार सिन्ध की बागडोर भारतीय मन्त्रियों के हाथ में आई। किन्तु उससे भी पर्याप्त अन्तर न पड़ा। कराची की स्थानीय शासन-संस्था के प्र० सं० २३/१०-१-३६ के उत्तर में शिक्षा-विभाग के इन्स्पेक्टर के २१-३-३६ के पत्र-द्वारा सूचना मिली "आर्थिक संकट इस समय भी जारी है, अतः हिन्दी-शिक्षण पर सरकारी सहायता के विषय में पुनर्विचार सम्भव नहीं।" इस पर स्था० शा० संस्था ने प्र० सं० ३७६/७-६-३८ द्वारा एक शिष्ट-मण्डल शिक्षा-मन्त्री के पास भेजना निश्चित किया। उस शिष्ट-मण्डल को २५-७-३९ का निम्न उत्तर मिला जो ध्यान देने योग्य है। "सिन्ध में आनेवालों को प्रान्त की प्रादेशिक भाषा अथवा उर्दू, जिसकी लिपि सिन्धी के ही समान है, सीखने के लिए तैयार होना चाहिए। सरकारी कोष से पहले ही गुजराती, मराठी और उर्दू शिक्षालयों के लिए व्यय स्वीकृत है। सरकार एक चौथी अप्रादेशिक भाषा पर व्यय स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है।"

आर्थिक संकट का बहाना समाप्त हो चला था। अब प्रादेशिक भाषा का प्रश्न खड़ा किया गया। कराची नगर में हिन्दी-भाषियों की संख्या उर्दू-भाषियों के बराबर तथा मराठी-भाषियों से बहुत अधिक है। इसके अतिरिक्त सिन्धी जनता का एक बड़ा भाग हिन्दी को सहायक भाषा के रूप में पढ़ता है। जब तीन भाषा-भाषियों को प्रान्त की भाषा सीखना आवश्यक नहीं तो हिन्दी-भाषियों को ही क्यों हो? उर्दू की लिपि सिन्धी से मिली-जुली है तो क्या देवनागरी लिपि सिन्धी से और अधिक मिली-जुली है? क्या भाषा का महत्त्व लिपि से कम है? इन प्रश्नों का सिंध सरकार के पास कोई उत्तर नहीं।

युद्धकाल में सिंध-सरकार की आर्थिक स्थिति बहुत सुधर गई, साथ ही कराची में हिन्दी-भाषियों की संख्या का अनुपात भी बहुत बढ़ गया है। कराची की स्था० शा० संस्था को हिन्दी के नये स्कूल खोलने पड़े और पुरानों को बढ़ाना पड़ा। इस बढ़ते हुए आर्थिक भार के कारण सरकारी सहायता की फिर माँग की गई, जिसका उत्तर मिला—"प्रश्न का निपटारा हो चुका है। गड़े मुर्दे उखाड़ने की आवश्यकता नहीं।"

इस बीच में प्रश्न उठाया गया कि जब हिन्दी को एक प्रादेशिक भाषा स्वीकृत नहीं किया गया है तब स्थानीय शासन-संस्थाएँ अपने प्रारम्भिक शिक्षा-कोष में से हिन्दी-शिक्षण पर खर्च कर सकती हैं या नहीं। सरकार को 'नहीं' कहने का साहस तो न हुआ किन्तु उसने अपनी असहिष्णु नीति को प्र० सं० १३७/६-४-४४ द्वारा दोहरा अवश्य दिया—"सरकार ने हिन्दुस्तानी-भाषी विद्यार्थियों को देव-नागरी लिपि में शिक्षण की सुविधा पर विचार किया है, और उसे प्राइमरी [illegible] लिए एक माध्यम के रूप में स्वीकृ[illegible] है। स्थानीय शासन-संस्थाएँ अपने [illegible] शिक्षा-कोष से ऐसे स्कूल चला [illegible] किन्तु उन पर व्यय किया [illegible] कारी सहायता के लिए मान्य न [illegible]

इस प्रकार प्रादेशिक भाषा [illegible] (केवल प्राइमरी स्कूलों के लिए) [illegible] स्वीकृत होने पर भी प्रस्ताव के [illegible] भाग के कारण स्थानीय शासन-[illegible] या हिन्दी-भाषियों की स्थिति [illegible] तहाँ रही।

कराची की स्था०-शा०-स० [illegible] सं० ५०६/२०-६-४४ के द्वारा [illegible] का तीव्र विरोध करते हुए सरकार [illegible] प्रतिनिधित्व करने का निश्चय [illegible] उसके उत्तर में शिक्षा-विभाग के [illegible] का २३-११-४४ का पत्र मिला—[illegible] के पास मामला भेजा गया है। [illegible] पर भेजा जायगा।" आज २० [illegible] पर भी सरकार का उत्तर नहीं [illegible]

जुकाम सर्दीपर अ[illegible]
स्थापना
आरोंदा
सुरज १८६६
नीलगिरि [illegible]
प्रो. खांडालेकर बंधु [illegible]

सपट लोशन
दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.
सपट अँड कं. लि.
बम्बई नं. २.

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमाला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।
सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—
इन्[illegible]यल रिसर्च हाउस
[illegible]ोस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

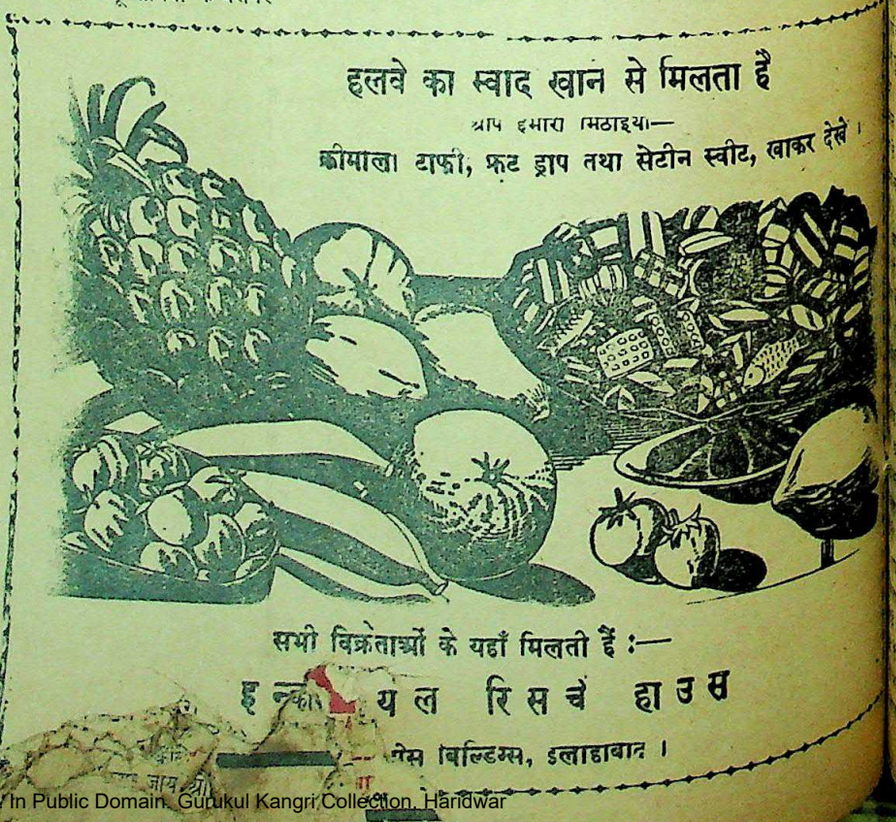

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized By Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार की शासन-व्यवस्था में नारियों के अधिकार !

क्या नारी-अधिकारों की माँग स्वीकृत होगी ?

लेखका, श्रीमती 'कल्ली'

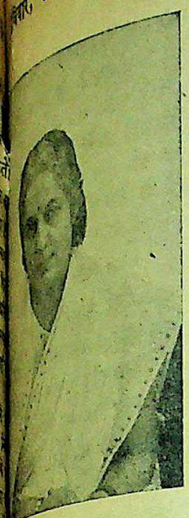

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित

भारत सरकार ने आपको संयुक्त राष्ट्रीय संघ में भारतीय प्रतिनिधि-मंडल की नेता नियुक्त किया है। आप शीघ्र ही अमरीका जायँगी।

संसार के इतिहास में स्त्रियों का किसी देश के शासन में बहुत कम हाथ रहा है। संसार के इतिहास में इनी-गिनी स्त्रियाँ शासक हो सकी हैं। किसी किसी देश में तो एक भी नहीं। इंग्लैंड में महारानी एलिजाबेथ और महारानी विक्टोरिया इतिहास-प्रसिद्ध शासक हुई हैं। दोनों के शासनकाल में इंग्लैंड की बहुत अधिक उन्नति हुई है। एलिजाबेथ के शासनकाल में अँगरेजी साहित्य उन्नति की चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी। विक्टोरिया के समय में इँगलैंड-साम्राज्य ने संसार के अत्यधिक भागों पर अपना अधिकार कर लिया था। ऐसे ही अन्य देशों में भी कई स्त्रियाँ हुई हैं जो शासन-सूत्र ग्रहण करके उसे सफल बना सकी हैं। इनमें रजिया बेगम, अहिल्याबाई, लक्ष्मीबाई आदि स्त्रियाँ हैं जिन्होंने शासन में भाग लिया था। परन्तु सृष्टि के आरम्भ से लेकर आज तक के इतिहास में यदि दस पाँच स्त्रियों को शासन करने का अवसर मिला हो तो कौन सी प्रशंसा की बात है। यदि हम भारतवर्ष में कुछ वर्षों से सभ्यता का युग मान लें तो भी शासन का शासनकाल कुछ वर्षों से सभ्यता के युग में करीब दस पाँच स्त्रियों ने शासन किया है। संसार के मुख्य पुरुष स्त्रियों का यह कहते हैं कि वे स्त्रियों को उनके अधिकार नहीं देना चाहते, फिर वे शासन में किस प्रकार सफल हो सकती हैं।

संसार की नई व्यवस्था होने जा रही है। शान्ति सम्मेलन के लिए प्रत्येक देश अपने अपने प्रतिनिधि भेज रहा है। परन्तु किसी भी देश के प्रतिनिधि-मंडल में एक भी महिला का नाम नहीं है। क्या संसार में एक भी महिला का ऐसा नहीं है, जब कि विगत महायुद्ध में स्त्रियों ने जल, थल और वायु में पुरुषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर काम किया है। राजनीतिज्ञों की दृष्टि में स्त्री पुरुषों का बलिदान कोई महत्व नहीं रखता। पेरिस में संसार के सारे राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व होगा जिसमें मर्द और महिला का अनुपात पुरुष ही कर रहे हैं। जिसके कई करोड़ पौरुष हजारों में कुछ सौ होंगी। जर्मनी और जापान के अक्षरों, बड़े बड़े राजनीतिज्ञों और नेताओं को लम्बी सजायें और फाँसी के दंड मिल रहे हैं। क्या संसार का शासक वर्ग उन देशों की स्त्रियों का हृदय नहीं परख सका है। उस हर्जाने के अदा करने में क्या इटली की स्त्रियों से कोई रक़म न ली जायगी अथवा उनके बच्चे या वे अपने श्रम द्वारा इस कोष को पूरा न करेंगी ! जापान के बड़े राजनीतिज्ञ जनरल टोजो, मतसुओका, मत्सुई आदि के अंत से क्या उस देश में एक प्रकार की दुखमय लहर न दौड़ेगी। उन सेनापतियों की स्त्रियाँ क्या विदेशी शासकों के इस व्यवहार को पसंद करती होंगी ? डाक्टर गोबेल्स ने रूस के फैलते हुए कम्युनिज्म (साम्यवाद) की ओर चेतावनी देते हुए कहा था—रूस की वह भयंकर नीति अकेले जर्मनी ही को न हड़पेगी बल्कि संसार के सभी पश्चिमी देश उसके प्रभाव से अछूते न बचेंगे। आज उस राजनीतिज्ञ का कथन सोलहों आने सत्य हो रहा है। उस डाक्टर के अंत से क्या जर्मनी की जनता दुखी न होगी ? उस देश की स्त्रियाँ क्या अपनी राष्ट्रीय भावनाओं का अन्त कर देंगी ?

शान्ति-सम्मेलन अथवा विश्व-व्यवस्था समिति में किसी महिला का प्रतिनिधित्व नहीं है। यदि एक भी महिला उस सम्मेलन में होती तो देशों पर होनेवाले अत्याचारों का याद अवश्य दिलाती। सिक्योरिटी कौन्सिल (व्यवस्था-समिति) में कम से कम एक महिला का होना अत्यावश्यक था। परन्तु विजयोन्मादी राष्ट्रों में उदारता और स्त्रियों के अधिकारों के लिए स्थान नहीं है, ऐसा उसकी कार्य-प्रणाली से प्रकट होता है।

प्रथम विश्व-युद्ध की सन्धिवार्ता अथवा राष्ट्रसंघ के सदस्यों में एक भी महिला न थी। आज के संयुक्त राष्ट्र-संघ में भी उसी की पुनरावृत्ति है। पहला राष्ट्र संघ साम्राज्यवादी राष्ट्रों का खिलौना था, आज का संघ दो समान शक्तियों का एक खुला अखाड़ा है। संसार की शान्ति अखाड़े अथवा शक्ति-संचय से कायम नहीं रह सकती। किसी को दबाकर नहीं बल्कि प्रेमपूर्वक रखा जा सकता है फिर संयुक्त राष्ट्र-संघ ने प्रत्येक राष्ट्र से क्यों न एक एक महिला को आमन्त्रित किया ? यह संघ के संचालकों की बुद्धि का दिवालियापन हो सकता है परन्तु संघ-शान्ति के लिए थोड़े ही स्थापित हुआ है। संघ द्वारा विजित देशों पर अधिकार जमाना, गुलाम राष्ट्रों को अपने बन्धन में जकड़ रखने का प्रयत्न करना था। परन्तु आज उसमें रूसी प्रतिनिधियों द्वारा एक नवीन हलचल है। सम्मेलन किसी भी परिणाम पर नहीं पहुँच पाता। यदि सम्मेलन में महिलाओं का प्रतिनिधित्व होता तो वे इस अशान्ति को शान्ति की ओर लाने में कुछ सफल अवश्य होतीं। पर आज की स्थिति भिन्न है। यह सम्मेलन सफलता से कोसों दूर है। [illegible] परस्परिक विश्वास तो है ही नहीं। [illegible] की ओर खबर है। वह [illegible] भारत की ओर से भी सम्मिलित होने के लिए जो प्रतिनिधि-मंडल यहाँ की राष्ट्रीय सरकार भेज रही है। उसकी अध्यक्षा श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित हैं। संसार के अन्य राष्ट्र इस प्रतिनिधि-मंडल से अवश्य चौंकेंगे। कोई भी राष्ट्र अपने प्रतिनिधि-मंडल में एक भी महिला को स्थान नहीं दे सका। इसके विपरीत भारत ने अपने प्रतिनिधि-मंडल की प्रधानता एक महिला को दी है। हजारों वर्षों की प्रचलित परम्परा को एशिया का एक गुलाम देश तोड़ने जा रहा है।

भारतवर्ष यहीं तक सीमित नहीं रह सका, हम जिस सम्मेलन का ऊपर संकेत कर आये हैं वह पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा आयोजित एशियाई राष्ट्रों का एक सम्मेलन दिल्ली में होगा जिसमें एशिया के ३२ देशों को निमंत्रित किया गया है। प्रत्येक देश के प्रतिनिधि-मंडल में एक महिला का होना आवश्यक है। इस समय श्रीमती सरोजनी नायडू उस सम्मेलन की अध्यक्षा का कार्य करेंगी। भारत का स्त्रियों के प्रति कितना सम्मान है, संसार की शासन-व्यवस्था और शान्ति-स्थापना में स्त्रियों के सहयोग के बिना कार्य नहीं चल सकता। बल्कि यों कहा जाय—कि संसार स्थायी शान्ति से कोसों दूर रहेगा। ऐसी दशा में संसार अथवा देशों के किसी प्रकार के शासन प्रबन्ध में स्त्रियों की सम्मति से कार्य करने में बहुत कुछ सहायता मिलेगी। ३२ राष्ट्रों की बत्तीस स्त्रियाँ उन देशों के नारी जागरण, नारियों के अधिकारों, शान्ति स्थापना में सच्चे मातृत्व का सजीव रूप उपस्थित करेंगी। अभी तक भारत के अतिरिक्त एशिया के अन्य राष्ट्रों में केवल मलाया, चीन और टर्की को छोड़कर नारी-आन्दोलन अथवा नारी-जागरण की कोई भी प्रगतिशील संस्था नहीं है। मलाया और बर्मा में भारतीय महिलाओं ने नारी जागरण का द्वार उन्मुक्त किया है। टर्की चूँकि योरपीय देशों के अधिक सम्पर्क में है इससे वहाँ उस देशों की छाया आ पड़ी है। कुछ ऐसे देश और हैं जो नारी जागरण में पीछे नहीं हैं चीन अभी कुछ ही आगे बढ़ा है। मैडम च्यांग काई शेक उस जागरण की प्रतीक नहीं है, जो ईसाई परिवार अमेरिका आदि देशों से उस देश में आया है उसने चीन के नारी-जागरण में काफी सहायता पहुँचाई है। रूसी एशियाई देशों में नारी जागरण काफी आगे बढ़ा है। परन्तु स्त्रियों को वहाँ के राजनैतिक जीवन में अब भी उचित स्थान नहीं मिल सका है। ईरान और अरब में स्त्रियों की कोई अपनी प्रगतिशील बड़ी संस्था नहीं है। फिर भी पंडित जवाहरलाल नेहरू उन देशों के प्रतिनिधि-मंडल में स्त्रियों का प्रतिनिधित्व चाहते हैं। यह इसीलिए कि उन देशों में नारी-जागरण का जोर बढ़े। नारियों को भी अपने अधिकारों के लिए माँग करने का बल बढ़े। सभ्यता के लिए स्त्री और पुरुष [illegible] हैं इसलिए संसार [illegible] स्त्रियों [illegible]

श्रीमती पूर्णिमा बनर्जी

आप कांग्रेस टिकट पर यू० पी० से विधान-परिषद् की सदस्या चुनी गई हैं।

आज नारी-जागरण का मुख्य द्वार भारत से खोला जा रहा है। विश्व के गुलामों की स्वतन्त्रता का पथ-प्रदर्शक भारत हो रहा है, साथ ही नारी स्वतन्त्रता का भी। हजारों वर्षों की परम्परा को तोड़कर नारियों को पुरुषों के समक्ष समता दिलाने का बीड़ा भारत ने सर्वप्रथम उठाया है। नारियों को संसार की शान्ति-व्यवस्था और शासन में भाग मिलना आवश्यक है। जब वे पुरुषों के साथ प्रत्येक कार्य कर सकती हैं तब उन्हें किसी भी व्यवस्था में क्यों न भाग दिया जाय। भारत में स्त्रियाँ धारा-सभाओं की सदस्या से लेकर पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी और मंत्राणी तक हैं। विधान-परिषद् में भी वे सदस्या होकर पहुँची हैं। संसार के अन्य राष्ट्र भी एशिया सम्मेलन के बाद नारियों को अपनी प्रत्येक व्यवस्था में स्थान देने के लिए अवश्य विवश होंगे।

३१ वर्ष की उम्र में ही बूढ़ा जान पड़ता था

पीठ की पीड़ा से झुकना मुश्किल हो गया था

क्रुशेन से उसका दर्द जाता रहा

यह ३१ वर्ष का आदमी गुर्दे की ख़राबी के कारण अपनी जवानी में ही बूढ़ा मालूम पड़ता था। कई सप्ताह की पीड़ा के बाद उसको किस प्रकार क्रुशेन से आराम मिला वह आदमी स्वयं बतलाता है :—

"कई सप्ताह से मुझे गुर्दे की बीमारी थी और मैं अपनी ३१ वर्ष की युवा अवस्था में ही बूढ़ा मालूम पड़ता था। यदि किसी काम के लिए मैं कभी झुक जाता तो फिर सीधा होना मौत का सामना करना था। कई लोगों ने मुझे क्रुशेन साल्ट सेवन करने का आदेश किया क्योंकि उन्हें स्वयं इससे फ़ायदा हुआ था। मैंने स्वयं भी सेवन किया और उससे मुझे प्रतिदिन लाभ होने लगा। अब तो मैं २८ मील साईकिल पर चढ़कर काम करने जाता हूँ। मैं क्रुशेन साल्ट बराबर सेवन करूँगा क्योंकि इसी के कारण अब मैं यात्रा कर सकता हूँ तथा बिना किसी थकावट के दिन भर काम कर सकता हूँ—एस० वी० सी०।

गुर्दे मनुष्य के शरीर के छन्ने हैं और जब तक वे अपना काम ठीक तौर से नहीं करते विषैली चीज़ें जिन्हें बाहर निकल जानी चाहिए रक्त में मिल जाती हैं और शरीर में पीड़ा पैदा कर देती हैं जैसे पीठ का दर्द, गठिया, थकावट इत्यादि। क्रुशेन साल्ट गुर्दों को ठीक रखने की एक उत्तम [illegible] इससे शरीर का सारा विष बाहर [illegible] तथा दूकान-

CC-0) In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

खरीफ की गल्ला-वसूली और सरकार

एक वर्ष की बात है, समाचारपत्रों में यह पढ़ने को मिला था कि द्वितीय महायुद्ध समाप्त हो गया। इस समाचार से युद्ध से पीड़ित जनता ने अपने दुःखों को थोड़ी देर के वास्ते भुलाकर खुशियाँ मनाई थीं। इस प्रसन्नता का मुख्य कारण यह आशा थी कि युद्ध-समाप्ति के पश्चात् कन्ट्रोल कुछ ही महीनों में उठ जायगा और जीवनोपयोगी वस्तुएँ जैसे अन्न-वस्त्र आदि सरलतापूर्वक मिल सकेंगी। चोर बाजार आपसे आप बन्द हो जायगा। मामूली से मामूली चीजों के लिए लोगों को दर दर भटकना न पड़ेगा किन्तु यह आशा निराधार निकली। बड़े विशेषज्ञों की चेतावनी ठीक निकली कि युद्धोपरान्त स्थिति और भी जटिल हो जायगी। चीजों का दाम युद्ध के समय से भी अधिक बढ़ गया है बल्कि सवाया और ड्योढ़ा तक हो गया। सबसे ज्यादा भाव गल्ले का बढ़ा है। आज बाजारों में गेहूँ २० रुपया और चावल २५-३० रुपया मन बिक रहा है।

आज प्रांत में जनता की सरकार भी कायम हो गई परन्तु मन्त्रियों की परेशानी बढ़ गई है। जनता को जितनी सुविधा की आशा थी उतनी सुविधा आज तक नहीं हो सकी बल्कि खेतिहरों की दशा और भी शोचनीय हो गई है। कारण यह है कि प्रान्त में कांग्रेसी सरकार कायम होने के पहले नौकरशाही किसानों से गल्ला-वसूली की योजना बना चुकी थी। इसलिए नौकरशाही ने जो योजना गल्ला-वसूली की बनाई थी, प्रान्तीय सरकार ने यह जानते हुए भी कि यह योजना बिलकुल गलत ढंग से बनाई गई है और खेतिहरों को परेशान करने का कर्मचारियों को अच्छा मौका मिल गया है—उसी योजना के अनुसार कार्य-संचालन करना मंजूर कर लिया। इस योजना से खेतिहरों को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा उस पर विचार करना अनुचित न होगा। मैं कह नहीं सकता कि पटवारियों को ऊपर से कोई हुक्म था अथवा अपने हुक्म से उन्होंने इस निन्दनीय कार्य को अपनाया था। पटवारी लोगों की काली करतूत गाँव या हल्का ही तक या तहसील तक सीमित न होकर प्रायः जिले भर में विस्तृत रूप से फैली थी। उन्होंने अपने कागजों में बजरा की जगह चना, ज्वार की जगह चना अरहर बेर्रा आदि की जगह चना गेहूँ लिखने की बड़ी भारी कृपा कर रखी थी। जिन किसानों को दस सेर भी न लगता था उन्हें भी पटवारियों की कृपादृष्टि से मन दो मन देना ही पड़ा। मेरे पास ऐसी शिकायतें बराबर आया करती थीं, क्योंकि मैं भी सर्किल जसरा की गल्ला-वसूली कमेटी का संयोजक था। यदि आज भी कागजों की जाँच की जाये तो पटवारियों की इस धाँधली के सैकड़ों प्रमाण एकत्रित किये जा सकते हैं और यह अपराध ऐसा है जो अक्षम्य कहा जा सकता है। खेतिहरों की ओर देखें आज अत्यन्त शोचनीय [illegible] की फसल तैयार [illegible] लेते [illegible] चोरों [illegible] सकते [illegible] जाय [illegible]

खर्च से अधिक गल्ला था उसे बेचकर शादी-ब्याह और कपड़ा आदि में खर्च कर डाला। इसके बाद जो बेचा था उसे बेचकर लगान दे दिया। बाद को उन्हें सरकारी नोटिस मिली। नोटिस पाने पर कितने लोग तो दंग रह गये कि उन्होंने तो चना-गेहूँ बोया ही नहीं था जो बोया था वह भी उतना नहीं जितने कि उन्हें नोटिस दी गई थी। बहुत से लोगों ने तहसील में दरख्वास्त भी दी किन्तु कोई सुनवाई नहीं हुई। बहुत लोगों ने विवश होकर तब गल्ला दिया जब वह पकड़कर दिन दिन भर थानों में बैठाये गये। कितने ऐसे लोग हैं जिन्होंने बाजारों से खरीद करके गल्ला दिया है। उन लोगों को बाजारों में इतना महँगा गल्ला मिला है और सेन्टरों पर इतना सस्ता लिया गया है कि उन बेचारों को रुपये का ॥-) वसूल हुआ है। यानी जो १६) का बाजार से गल्ला खरीद कर सेन्टर पर दिया है उसको ६) दाम मिला है। हमारे पास प्रमाण मौजूद हैं। लोग इसको बदौलत आज कर्जदार हो गये हैं। कहीं कहीं और किस्म की सख्तियाँ हुई हैं। मुझे संतोष भी है कि जहाँ कर्मचारियों ने उद्दण्डता दिखलाई वहाँ की जाँच कराकर उन्हें उचित दण्ड देने की व्यवस्था सरकार ने की है।

मुझे अब यह पता चला है कि खरीफ की फसल में भी गल्ला-वसूली की योजना बनाई जानेवाली है। अतः अभी से प्रान्तीय सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करता हूँ कि भविष्य की योजना में इस धाँधली की पुनरावृत्ति न होने पावे। यह ठीक है कि नगरों में राशनिंग योजना को चलाने के लिए सरकार को गल्ले की आवश्यकता है। खेतिहर भी सरकार को सहयोग देने में कभी पीछे न रहेंगे बशर्ते कि उनके साथ अन्याय न होने पावे। यही समय पटवारियों के जिन्सवार लिखने का है अतः सरकार [illegible] को कड़ी चेतावनी दे दे कि किस [illegible] ने जिस खेत में जो चीज बोई [illegible] लिखें और बाद में यदि एक [illegible] पटवारी लोगों ने गलत [illegible] है और इस पर भी गलत [illegible] है तो ऐसे लोगों को कड़ा से [illegible] देने की व्यवस्था की जावे।

दूसरी बात यह है कि [illegible] नदियों की बाढ़ से नुकसान [illegible] उन गाँवों से गल्ला न वसूल किया [illegible]

जिस गाँव के लोग पंचायत में [illegible] करें कि किस पर कितना रखा [illegible] चाहिए उसे कर्मचारी पंचायत का [illegible] बाध्य होकर मानें। इस बात की [illegible] पंचायतों के फैसले की अवहेलना [illegible] देनी चाहिए।

जसरा, प्रयाग —ब्रजमोहनलाल

* *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छापी जाती जिससे हिन्दी-प्रेमी जनता को यह मालूम हो जाता कि इतने पत्र हिन्दी के ब्रिटिश भारत तथा देशी रियासतों से निकल रहे हैं। इसका कोई विशेष क्रमबद्ध रूप नहीं है जिससे हर वर्ष यह मालूम हो सके कि कौन से हिन्दी के नये पत्र चालू हुए, कितने बंद हुए और किस कारण। नियमानुसार या क्रमानुसार हर वर्ष प्रदर्शनी भी बदल बदल कर प्रान्तों में भी नहीं होती जिसमें हिन्दी का प्रचार हो सके। हमारा यह प्रयत्न होगा कि इसके लिए एक अखिल भारतीय सम्पत्ति कायम करें जिसमें हर भाषा का पत्र अगली प्रदर्शनी में आ सके इस अवसर पर श्री राव साहब रंगनाथन् जी एम० ए० एल० टी०, एम० एल० ए० पुस्तकाध्यक्ष काशी विश्वविद्यालय, शास्त्री श्री मुरारीलाल जी नागर बी० ए० तथा श्री परमेश्वरीलाल गुप्त पधार रहे हैं। पत्र-सम्पादक तथा प्रकाशक अपने अपने पत्र तथा यदि कोई उनके पुराने विशेषांङ्क हों तो भेजने का कष्ट करें। इनकी प्रकाशित डाइरेक्टरी उनके पास भेजी जायगी।

नोट--इस प्रदर्शनी का कुल कार्य-भार श्री राममोहन जी बी० कॉम चन्दौसी ने अपने ऊपर लिया है जो इस विषय के विशेषज्ञ हैं।

रघुनन्दनप्रसाद गर्ग
प्रधान

* * *

पचमढ़ी नगर में शानदार गणेशोत्सव और चन्द दिन पूर्व जो साम्प्रदायिक घटनाओं से जनता एकादशी में भ्रम फैल रहा था कि एकादशी और गणेशोत्सव के दिन यहाँ कोई गड़बड़ी न हो जाय इससे पचमढ़ी की जनता ने यहाँ के प्रमुख हिन्दू मुस्लिम नागरिकों की एक शांति-समिति बना ली थी। उसी की कृपा से यहाँ गांधी चौक में एक आम सभा कर लोगों का भ्रम व्याख्यान द्वारा दूर कर दिया और हिन्दू मुस्लिम गले मिले। फिर यहाँ एकादशी और गणेशोत्सव के दिन किसी प्रकार की गड़बड़ी नहीं हुई। जुलूस में हिन्दू-मुस्लिम स्वयंसेवक शांति बनाये रखने के लिए अच्छा इन्तजाम कर रहे थे। मुस्लिम भाइयों ने बहुत सहयोग दिया। एकादशी और गणेशोत्सव का यह भव्य समारोह कभी इतना सुन्दर नहीं हुआ था। —संवाददाता

* * *

आर्यमित्र संयुक्तप्रान्त की आर्य प्रतिनिधि सभा का ४८ वर्ष पुराना साप्ताहिक पत्र है। अब इसका प्रकाशन १२ सितम्बर सन् १९४६ से लखनऊ से होने लगा है। बारह वर्ष पहले इसका सम्पादन पं० हरिशंकर शर्मा कविरत्न करते थे। उनके अलग होने पर कई सम्पादकों ने काम किया। अब उक्त शर्मा जी ने फिर इसे अपने हाथ में लिया है। 'क़लम के मज़दूर' कविरत्न जी ने 'किसी प्रकार का वेतन या पारिश्रमिक लिये बिना सभा के अधिकारियों के अनुरोध और आग्रह' को स्वीकार करके खासा त्याग किया है जो आपके ही अनुरूप है। इस अंक में नामी लेखकों के उत्तम लेख हैं। आर्यमित्र का कायापलट हो गया है। आर्यसमाजी तो इसका आदर करेंगे ही, पर जो समाजी नहीं हैं उनके काम की भी खासी सामग्री इसमें रहेगी। आशा ऐ[illegible] ही है। हम इसकी उन्नति के इच्छुक हैं [illegible] ५) और छः मास का ३) [illegible] प्रेस, लखनऊ से प्राप्य।

प्रयाग करछना तहसील के गाँवों में जमुनाजी की दो बार की बाढ़ के कारण जोंधरी और बजरी की सारी फसल चौपट हो गई है। ग्रामीणों का भविष्य अन्धकार मय है। रबी की फसल लगान, कपड़ा, शादी-ब्याह आदि में समाप्त हो चुकी थी, जो कुछ बचा था वह गल्ला-वसूली में चला गया। आज कितने ही घरों में खाने का ठिकाना नहीं है। बेचारे आशा के ऊपर जी रहे थे कि एक मास बाद नई फसल तैयार हो जायगी फसल नष्ट हो जाने से वह आशा मिट्टी में मिल गई। जिन गाँवों की जितने बीघा फसल नष्ट हो गई है उसका लगान माफ होना चाहिए। गाँव-वालों को और उनके मवेशियों को चारे की सहायता देनी चाहिए। बीकर, देवरिया, भीटा, कन्जासा, कैनुआ, चितौरी, कचरा, मझियारी आदि कितने ही गाँव हैं जिनको सहायता की आवश्यकता है। आशा है प्रान्तीय सरकार इस ओर शीघ्र ध्यान देगी। इस क्षेत्र के गाँवों में जाँच की आवश्यकता है कि कौन कौन से गाँवों को नुकसान हैं। —संवाददाता

* * *

डेरा इस्माइल खाँ में ऋषिगोपालजी शास्त्री 'स्वतन्त्र' ने बालक तथा बालिकाओं की साहित्यिक उन्नति के लिए 'स्वतन्त्र भारत बालसंघ की स्थापना की है। वह प्रतिमास 'स्वतन्त्र भारत मासिक पत्रिका' नामक हस्तलिखित मासिक पत्रिका भी निकालते हैं। प्रत्येक हिन्दी-प्रेमी को चाहिये कि वह पत्रिका में बालोपयोगी लेखादि भेजकर शास्त्री जी का हाथ बटाएँ।

पता—ऋषिगोपाल शास्त्री 'स्वतन्त्र' मारफत—सेठ राधाकृष्ण चबाक, चबाक स्ट्रीट, डी० आई० ख़ान।

* * *

काल्सी अशोक आश्रम जिला देहरादून की ओर से ता० २ अक्टूबर को गांधी जयन्ती पर्व धूम-धाम से मनाया जायगा। इसी दिन गाँधी गुरुकुल की स्थापना भी होगी। गुरुकुल में सभी विषयों की शिक्षा के साथ उद्योग की भी शिक्षा दी जायगी। गुरुकुल के लिए सब तैयारी पूरी हो चुकी है। जो अपने बालकों को गुरुकुल में प्रविष्ट करना चाहें वह व्यवस्थापक अशोक आश्रम कालसी जिला देहरादून से पत्र-व्यवहार करें। —धर्मदेव शास्त्री

* * *

सेवाग्राम

'सेवाग्राम' नामक जन-आन्दोलन की कविताओं का संग्रह आगामी दो अक्टूबर को गांधी जी को भेंट किया जायगा। ग्रन्थ के संरक्षक श्री घनश्यामदास जी बिड़ला ने 'सेवाग्राम' के सम्बन्ध में यह वक्तव्य दिया है—

'सेवाग्राम' सोहनलालजी द्विवेदी की कविताओं का संग्रह है। द्विवेदीजी की कविताएँ कलाकारों ही के लिए नहीं हैं। उनमें रस तो होता ही है, पर साथ में कुछ जीवनोपयोगी सार भी रहता है। कविता केवल विलास के लिए हो और सार न हो तो फिर वह निर्जीव सी बन जाती है। इस दृष्टि से सेवाग्राम की रचनायें अत्यन्त उपयोगी और पठन-पाठन योग्य हैं।

माया बॅनर्जी
कहती है-
"लक्स टॉयलेट साबुन
मेरा सरल
सौंदर्य-उपाय है"
मैं लक्स सौंदर्य साबुन का काफ़ी झाग बनाती हूँ और सौम्यता से त्वचा पर थपकती हूँ...
पश्चात् मैं साफ़सुथरे और शीतल पानी से धो डालती हूँ...
LUX TOILET SOAP
फिल्मी स्टार अपने परमोत्कृष्ट त्वचा को केवल इसलिये सुरक्षित नहीं रखती कि, वह उसका मनमोहक सौन्दर्य है, बल्कि वह उसके व्यावहारिक जीवन की एक अमूल्य पूँजी भी है। इसीलिये भारत की प्रमुख फिल्मी स्टार्स लक्स टॉयलेट साबुन से अपने मूल्यवान् सौन्दर्य की सुरक्षा करती हैं। आप स्वयं अपने घर में इस सरल उपाय का प्रयोग कर देख सकते हैं—
फिल्मी स्टार्स का सौन्दर्य साबुन
अन्त में मैं सौम्यता से अपना मुख नरम तौलिये से पोंछ लेती हूँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतन्त्रता के पथ-यात्रियों से....

(पेज ६ का शेष)

सरकार की ताकत और योग्यता के बाहर की चीज है। मेरे अनुसार इस सरकार के मुख्य कार्य राजनीतिक, रचनात्मक और परिवर्तन लाने के लिए वातावरण तैयार करना ही है। निर्माण होने के बाद प्रत्येक सरकार का यह कर्त्तव्य है कि वह शासन करे, पर अगर अस्थायी राष्ट्रीय सरकार अपने अस्थायी रूप को और स्वतन्त्रता के युद्ध के लिए एक अस्त्र बनने के अपने महत्त्व को भूल जाती है, तो वह एक सख्त गलती करती है। मैं (जयप्रकाश) तो अस्थायी सरकार को तब पूर्ण सफल समझूँगा, जब (मान लीजिए) एक साल बाद चाहे अन्न-परिस्थिति आज ही की सी क्यों न रहे, वायसराय और उसके द्वारा प्रतिनिधित्व प्राप्त समस्त व्यवस्था हमारे देश को अच्छे के लिए छोड़कर चले जावें।'

हो सकता है, बहुत-से पथयात्री जयप्रकाश बाबू के उक्त दृष्टिकोण से सहमत न हों, और अस्थायी सरकार की स्थापना में उन्हें रामराज्य या किसान-मजदूर प्रजाराज्य की झलक दीखती हो, पर जनता को कभी इस भ्रम में न पड़ना चाहिए। अगस्त सन् ४२ के जन-संग्राम तथा आजाद-हिन्द फौज के अभियान में भाग लेनेवाले स्वतन्त्रता के पथ-यात्रियों को तो जन-शक्ति के संगठन में ही विश्वास रख राजनीतिक तथा सामाजिक ढाँचे को बदल देने की तैयारी करनी है। हमें तो अस्थायी राष्ट्रीय सरकार को भी एक अस्त्र के रूप में प्रयुक्त करना है जो हमें अपनी पूर्ण विजय प्राप्त करने में अधिकाधिक मदद दे सके। हमें धर्मान्ध एवं प्रतिक्रियावादी नेतृत्व से मुस्लिम जनता को बचाना है। हमें उन सभी गुलामी-पसन्द ब्रिटिश टोरीवाद के एजेन्टों का मुकाबला करना है जो साम्प्रदायिक दंगे फैला कर देश की राष्ट्रीय शक्ति को क्षति पहुँचाते हैं। अभी हमारे मार्ग में बहुत झाड़ियाँ हैं—इसलिए हम अस्थायी सरकार की स्थापना में ही अपने ऐतिहासिक क्रान्तिकारी प्रयत्नों की सफल इतिश्री न समझ लें, पर उसे अपने उन बहुत से प्रयोगों में से एक प्रयोगमात्र समझें जिन्हें हम पिछले कई वर्षों से भारतीय राजनीति के कूटनीतिज्ञ क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त करते आ रहे हैं। हम जनता को कभी सफलता के भूल-भुलैये में न डालें, पर उसे विगत अगस्त क्रयालीस की तरह काँटों का ताज पहनने को तत्पर रखें। संकट सहने के लिए खुद भी तैयार रहें और जनता को भी तैयार रखें, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार हमारे नेता आज अपने नवीन प्रयोग को कार्यान्वित करने में तत्पर हैं।

युक्तप्रांत की शाखाएँ—
बनारस—दशाश्वमेध घाट और
इलाहाबाद, कानपुर, आगरा,
गाजीपुर, बलिया, गोरखपुर,
वृन्दावन, गोंडा, बरेली,
बाद, अलीगढ़, दिलदारनगर,
बहराइच, जमानिया, सीतापुर,
तहसील देवरिया, पडरौना,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...दायिक दंगों के रोकने के लिए सरकार कटिबद्ध है

...किसी भी दङ्गे को रोकेगी—मजदूरों में अशान्ति उत्पन्न ...कार्यकर्ताओं के लिए सरकार कठोर बनी है—मजदूरों की ...सुधारने के लिए सरकार प्रयत्नशील है—गल्ला-वसूली-योजना ...पीड़ित तथा अन्य क्षेत्रों की सहायता—शिक्षा-प्रचार के लिए सरकार कटिबद्ध है।

(विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

...और नवम्बर में हिन्दुओं ...के कुछ त्यौहार साथ साथ ...अनेक क्षेत्रों में आशंका की ...इन दिनों साम्प्रदायिक दंगा ...। किन्तु गृह-मंत्री और उनके ...का विश्वास है कि साम्प्र... ...दंगों से प्रान्त को पवित्र रखने की ...व्यवस्था अदोष है और अशान्ति ...करनेवाले साम्प्रदायिक नेताओं ...के दमन की उन्होंने परिपक्व ...कर ली है।

* *

...मंत्रिमंडल के सम्मुख एक अन्य ...औद्योगिक अशान्ति के सम्बन्ध में ...के लिए कम्युनिस्ट तथा कुछ ...कांग्रेसजन दायित्व ग्रहण करते ...में कम्युनिस्ट कार्यकर्ता मजदूरों ...हड़ताल के लिए बल्कि हिंसा ...भड़काते थे और काम पर ...शान्त मजदूरों को धमकियाँ देते ...प्रकार लखनऊ में कुछ उन ...ने जो प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ...में पराजित हुए थे, यहाँ के ...पर प्रभाव जमाने के लिए सफाई, ...और प्रेस कर्मचारियों की ...करानी चाही; परन्तु मंत्रिमंडल ने ...के साथ इन लोगों का दमन ...।

* *

...सम्बन्ध में प्रश्न किये जाने पर ...डा० काटजू ने बहुत स्पष्टवादिता ...दिया। आपने हड़ताल करने ...हड़तालियों द्वारा काम पर जानेवाले ...मजदूरों को भी हड़ताल के लिए तर्क ...करने का मजदूरों का अधि... ...स्वीकार किया, किन्तु कहा कि यदि ...शान्त उपायों को छोड़कर हड़ताली ...काम पर जानेवाले मजदूरों को ...और हिंसा करने पर उतर आवें, ...कानूनी चक्र को बिलकुल न ...।

* *

...मन्त्रिमंडल मजदूरों का वास्त... ...है। वह उन्हें अनुशासन-हीन ...देना चाहता, किन्तु उनकी ...के लिए निरन्तर प्रयत्नशील है। ...रहने के लिए साफ हवादार ...बनाने की उसने एक १० वर्षीय ...स्वीकार की है, जिसपर उसे ...व्यय करने होंगे। हड़तालों ...आउटों का नियंत्रण करके ...और मजदूरों में समझौता करा ...सरकारी मध्यस्थ पंचायत के ...में भी एक कानून शीघ्र बन रहा ...यूनियन अर्थात् मजदूर संगठन ...के विकास के लिए सरकार ...अफसर को विदेशों के श्रम ...का अध्ययन करने भेज रही है, जो वापस आकर इस प्रांत में उसका विकास करेगा। कारखानों से छूटनेवाले मजदूरों का काम दिलाने की व्यवस्था हो रही है और अधिक मज़दूरों को काम दिलाने के लिए प्रांत के औद्योगिक विकास का प्रयत्न किया जा रहा है, जिसके लिए विदेशों से मशीने मँगाने की प्राथमिकता प्राप्त करने की चेष्टा की जा रही है।

प्रधान मंत्री पं० गोविन्दवल्लभ पन्त की अन्नवसूली योजना को आशा से अधिक सफलता मिली है। गत ३१ अगस्त तक ३ लाख २७ हजार टन अर्थात् प्रायः ६० लाख मन अन्न सरकारी भंडारों में जमा हो गया था। सरकार का लक्ष्य केवल ४ लाख टन का था। इस आशातीत सफलता का एकमात्र कारण किसानों का अपनी सरकार पर पूर्ण विश्वास है और केवल इसी कारण कांग्रेस सरकार न केवल नागरिकों को अन्न का राशन बढ़ा सकने में समर्थ हुई, बल्कि प्रांत के बाढ़पीड़ित क्षेत्रों में उन लोगों के भोजन की व्यवस्था कर सकी, जिनका सर्वस्व जलप्रलय ने नष्ट कर दिया था।

गृहमंत्री के होमगार्ड्स नामक जनरक्षक सैन्य के संघटन के सम्बन्ध में श्री सम्पूर्णानन्द की अध्यक्षता में जो कमिटी बनी थी, उसने अपनी रिपोर्ट सरकार को दे दी है, जिसमें कहा गया है कि २० से ४० वर्ष तक जवानों को इस फौज में भर्ती किया जाय, जो छै मास तक ट्रेनिंग लेकर अपने पिछले पेशों में लौट जाएँ और आवश्यकता पड़ने पर बुलाये जा सकें। ट्रेनिंग काल में उन्हें प्राथमिक चिकित्सा, लाठी और बन्दूक चलाने, आग बुझाने आदि की शिक्षा दी जायगी और उस काल में उन्हें २० रु० मासिक भत्ता भोजन वर्दी आदि मिलेगी। बाद में शस्त्र ग्रहण करने के लिए बुलाये जाने पर उनको १ रुपया दैनिक भत्ता भोजन, वर्दी आदि मिलेगी। इस रक्षक सैन्य के सिपाही सच्चे देशभक्त और जनसेवक होंगे, यह भावना ही इसको आकर्षणयुक्त बनाने के लिए यथेष्ट है।

शिक्षामंत्री सम्पूर्णानन्द ने नागरिकों के शारीरिक बल विकास तथा व्यायाम-प्रसार के लिए प्रान्तीय शारीरिक शिक्षा कौंसिल का पुनर्गठन किया है, जिसमें से हैलेट के चाटुकारों को हटाकर उन व्यक्तियों को रखा गया है, जो प्रान्त में व्यायाम-प्रसार में सदा सचेष्ट रहे हैं। इन नये सदस्यों के सहयोग से शिक्षामंत्री अपना अभीष्ट सिद्ध कर सकेंगे, इसमें सन्देह नहीं।

कृषिमंत्री निसार अहमद खाँ शेरवानी ने लखनऊ-यूनिवर्सिटी के छात्रों के सम्मुख भाषण देते हुए उन्हें साम्प्रदायिक द्वेष फैलानेवालों से सचेत र... और उनका सामाजिक बहिष्कार करने... आपने छात्रों को यह भी परामर्श दिया कि वे अपने अध्ययन में विशेष ध्यान दें और अनुशासन में रहें, किन्तु देश की राजनैतिक स्थिति के प्रति जागरूक रहें और जब राष्ट्र की पुकार हो, तो पुस्तकें समेट कर समर-भूमि में अग्रिम पंक्ति में खड़े होने को प्रस्तुत रहें।

श्रीमती पंडित ने होमियोपैथिक चिकित्सा के सुधार की भी एक योजना तैयार की है। जिसके द्वारा होमियोपैथिक डाक्टरों के संकट से मुक्त करना है, जो दो एक किताबें पढ़कर और होमियोपैथिक बाक्स ख़रीदकर डाक्टर बन जाते हैं। श्रीमती पंडित एक बिल प्रस्तुत कर रही हैं, जिसके क़ानून बन जाने के पश्चात् प्रांत में एक होमियोपैथिक मेडिसिन बोर्ड होगा और उसके बनाये नियमों के अन्तर्गत शिक्षा न पानेवाला व्यक्ति होमियोपैथिक चिकित्सा नहीं कर सकेगा। प्रांत में उच्चकोटि का होमियोपैथिक कालेज स्थापित होगा।

* * *

राजस्वमंत्री ठाकुर हुकुमसिंह ने प्रांतीय धारा सभाओं के सदस्यों को एक गुप्त पत्र भेजा है, जिसमें उनके क्षेत्रों के रेविन्यू अफसरों के चरित्र के बारे में पूछताछ की गई है। वे उनकी पूरी जाँच करने के बाद रेविन्यू अफसरों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करेंगे।

* * *

गृहमंत्री रफीअहमद किदवई ने मुझे एक भेंट में बताया कि अनेक पत्रों में प्रकाशित वे समाचार नितांत भ्रमोत्पादक तथा निराधार हैं, जिनमें कहा गया है कि गृहविभाग युक्तप्रांत में राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघ पर रोक लगाना चाहता है।

लिपटन लिः
उत्कृष्ट चाय
मिलाने और बेचने वाले

आप इनमें से चुन सकते है :

ग्रीन (हरा) लेबुल : सर्वोत्तम दार्जिलिंग। पहाड़ियों पर पैदा चाय की खुशबू ही अलग होती है। दार्जिलिंग चाय की यह सबसे बढ़िया क्वालिटी है। (दाम ३) पाउण्ड)

येलो (पीला) लेबुल : अच्छी अच्छी भारतीय चाय मिलाकर यह बनाई गई है। अपनी बढ़िया खुशबू, गहरे रंग और तेजी के लिये यह दुनियाँ भर में विख्यात है। (दाम २≡) पाउण्ड)

रेड (लाल) लेबुल : इस चाय की तेजी व स्वाद, खुशी व तृप्ति दायक है। (दाम २) पाउण्ड)

हिमालयन : हिमालय की मनोरम सुगंधिवाली औरेंज पीको। (दाम १।।।=) पाउण्ड)

व्हाइट (सफेद) लेबुल : सुस्वादु व तेज—परिवार भर के इस्तेमाल लायक सस्ती और सर्वोत्तम चाय। लाखों पीनेवालों को खुश करती है। (दाम १।।=)। पाउण्ड)

जाकूजा बुकनी : टी गर्ल बुकनी : चमकीली, लज्जतदार, ज्यादा से ज्यादा कप तरल चाय बनाने वाली। (दाम १।।।) पाउण्ड)

लिपटन
आपकी मनपसन्द चाय मिलाते हैं
LTK 105

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरंजक चुटकुले

किसी बहरे आदमी ने एक सज्जन से पूछा—आप कहाँ से आ रहे हैं ?

सज्जन—'कलकटा।'

बहरा घबड़ा उठा और कहने लगा—कौन भैया ?

सज्जन—मैं।

बहरा—ज्यादा चोट तो नहीं लगी थी।

सज्जन को अब उसकी बात समझ में आई और कहने लगे—नहीं जी, समझते भी हो मैं कलकत्ता से आ रहा हूँ।

* * *

रमेश ने अपने ईसाई मित्र मिस्टर सिमियन से पूछा—आपकी स्त्री आजकल कहाँ है ?

सिमियन ने कहा—दिल में।

रमेश—अजी यह तो मैं भी जानता हूँ। पर हैं वे किस शहर में ?

सिमियन—क्या मैं आपसे झूठ बोलता हूँ ?

* * *

हमारे एक मित्र ने कहा—मई और जून के महीने में मंत्रिदल प्रतिनिधि-मंडल ने भारत की वैधानिक वार्ता में किसी भी महिला से वार्ता नहीं की। लोगों का अनुमान है कि उन्हें अस्थायी सरकार में ही शायद स्थान मिले। राष्ट्रीय सरकार तो बन गई पर स्त्रियों की संख्या एक भी नहीं है। भारतीय महिलाएँ तो लीग की तरह कोई 'प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस' न मनायेंगी ?

मैंने कहा—अभी तक तो महिलाएँ इस मामले में चुप हैं, शायद प्रस्ताव पास करके अस्थायी सरकार में एक सीट की माँग करें !

* * *

मुस्लिम लीग की कौंसिल ने तय किया था कि सभी लीगी सदस्य अपनी सरकारी उपाधियाँ त्याग दें। परन्तु अभी तक शायद कुछ ने ही ऐसा किया है।

अब अम्बेदकर-दल ने भी सरकारी उपाधियाँ त्यागने का प्रस्ताव पास किया है। यद्यपि उस दल में उपाधिधारी बहुत ही कम हैं, परन्तु देखना है लीग की नकल में अम्बेदकर-दल पीछे रहता है या आगे।

* * *

मिश्र जी ने एक मौलवी से पूछा—क्यों मौलवी साहब, आजकल मुसलमानों के कौन से ऐसे देश हैं जो काफी तरक्की पर हैं ?

मौलवी साहब ने कहा—मिस्र, तुर्की।

मिश्र जी बड़े आश्चर्य में पड़े। उन्होंने कहा—अजी मौलवी साहब मैं तो मुसलमानों के देश के सम्बन्ध में पूछ रहा हूँ।

मौलवी साहब ने कहा—क्या आपको मिस्र और तुर्की में भी सन्देह है ?

* * *

किसी मकान में तीन आदमी रहते थे। एक दिन उस मकान के दरवाजे को किसी ने भड़भड़ाया। रहनेवालों में एक बड़ा नटखट था दौड़ा हुआ दरवाजे के पास जा पहुँचा, पूछने लगा—'तुम कौन हो ?'

'दरवाजा खोलो' बाहर से आवाज आई।

आदमी ने दरवाजा खोल दिया।

दरवाजे पर एक अजनबी खड़ा था उससे मकानवाले ने पूछा—"कौन और दूसरे हो ?"

अजनबी (...) ... लेते ... चगेरा

सज्जन यहाँ रहते थे। उन्हीं से कुछ काम था।"

मकानवाले व्यक्ति ने कहा—"हम लोग तो यहाँ तीन सज्जन हैं।"

* * *

किसी वकील साहब के नौकर का नाम था मंसूर। एक दिन वे कचहरी से ज्यों ही वापस आये रसोइया ने पूछा—'बाबू जी दाल किस की बनावें ?'

वकील साहब का ध्यान उधर न था उनको मुकदमे की एक फाइल का ख्याल आ गया, उन्होंने मंसूर को पुकारा—मंसूर ! मंसूर !!

रसोइये ने सोचा बाबू जी कुछ नाराज हैं। वह वहाँ से चुपचाप जाकर रसोई बनाने लगा। दाल मसूर की बनाया। शाम को जब रसोइया खाना लाया और वकील साहब ने मसूर की दाल देखी तो रुष्ट होकर कहने लगे—'तुमने यह दाल किस चीज की बना रक्खी है ?'

रसोइया ने डरते हुये कहा—'आप ही ने तो मंसूर की दाल बनाने कहा था ?'

वकील साहब बातें सोचकर मुस्कराने लगे। उन्होंने कहा—'मैं तो मंसूर को पुकार रहा था। खैर तुमने दूसरा ही कुछ समझा।'

* * *

किसी वकील ने एक नेता से पूछा—'क्यों महाशय जी विधान-निर्मात्री-परिषद् क्या है ?"

नेता ने बड़े गर्व से कहा—एक स्वतंत्र संस्था।

वकील—'तब तो हिन्दुस्तान, मुस्लिम (पाकिस्तान) और राज्य तीनों स्वतन्त्र रहेंगे।'

नेता जी झल्ला उठे। उन्होंने कहा—यह आप क्या कहते हैं। जरा समझकर बात कीजिए।

* * *

किसी व्यक्ति ने एक स्त्री से प्रार्थना करते हुए कहा—'प्रिये मुझे आशा है तुम मुझसे शादी करोगी ? यदि तुमने इनकार किया तो मैं निश्चित ही मर जाऊँगा।'

उस स्त्री ने शादी करने से इनकार कर दिया इससे वह पुरुष मर गया—पचास वर्ष के बाद।

* * *

श्रीनगर के समाचार से मालूम हुआ है कि शेख अबादुल्ला के ऊपर चलाये गये मुकदमे में सरकार की ओर से १५०० रुपये प्रतिदिन खर्च किया जा रहा है। ब्रिटिश सरकार भी आजाद हिन्द सेना के सैनिकों और सेनापतियों को सजा देने के लिए १००० रुपये प्रतिदिन खर्च कर रही थी परन्तु उसमें ब्रिटिश सरकार को झुकना पड़ा कश्मीर-सरकार को जो ५०० रुपये से अधिक खर्च करती है क्या करना पड़ता है देखना है।

* * *

हिंसा से पाकिस्तान शायद अब न मिलेगा। कायदे आजम ने शान्ति ग्रहण करने की राय जाहिर की है। इस उद्देश्य में यदि उन्हें जेल जाना पड़ेगा तो भी बर्दाश्त करेंगे। यह नया वैराग्य कितना मर्म स्पर्शी है !

* * *

कांग्रेस ने अपने पिछले आ... में ... आन... सकते ... जाय ...

लीग भी 'लगानबन्दी' करने की तैयारी कर रही है। समानता तो ठीक ही है, पर कांग्रेस ने किसानों की तकलीफों के लिए आन्दोलन किया था और लीग नवाबों और बड़े बड़े तालुकदारों के लिए।

* * *

सदस्य ने युवक से गम्भीर... कहा—पर वह तो जमीन पर ... चेयरमैन तो कुर्सीवाले को कहते ... आप लोगों को भूमिमैन नाम रखना ... पर भूमिमैन तो हलवाहे को कहते हैं।

—माताम्बर ...

मेरी करुण कहानी

नवीन सहधर्मिणी का संग और दुर्भाग्य का मेरी दशा पर मुस्कराना।

नपुंसकता तथा निर्बलता ने, जो कि मेरे बचपन के अविवेक-पूर्ण कार्यों की ... थी, मुझे जीवन ने निराश कर दिया था। हम स्त्री-पुरुष दोनों ही चिन्तित ... विक्षिप्त थे। दोनों का जीवन कलह तथा संघर्ष का केन्द्र था। जीवन अशान्त ... शान्ति की खोज में मैं हिमालय पर्वत की दुर्गम घाटियों में घूमता हुआ शिमला ... भी १०० मील आगे उन चट्टानों पर पहुँचा जहाँ मई और जून के महीनों में भी ... जमी रहती है। एक दिन मैं जीवन से पूर्ण निराश हो चुका था तथा जीवन-दीपक ... प्रकाश मन्द हो रहा था। इसको प्रज्वलित करने के साधनों का पूर्ण अभाव हो ... था, अतः मैंने सोचा कि ऐसे दुखद जीवन से छुटकारा क्यों न कर लिया जाये। ... इन्हीं विचारों में डूबा हुआ था कि अचानक एक साधु ने, जिसकी आयु लगभग ... वर्ष की थी, जिसके चेहरे पर सूर्य जैसा प्रकाश था, देखने में तन्दुरुस्त तथा ... मालूम पड़ता था, पीछे से मेरा हाथ पकड़कर बोला, 'बेटा, इस सुनसान स्थान में ... घूमने का क्या कारण है।' मैंने उस महात्मा को अपनी दुख-भरी कहानी ... उसने मुझे ढाढ़स बँधाया और कहा कि "यदि आप सच्चे हृदय से दृढ़ प्रतिज्ञा करें ... बुरे कामों से बचेंगे और अपने सरीखे दुखी आदमियों का उपकार करेंगे तो आपका अवश्य भला होगा ?" मैंने सच्चे हृदय से उसकी आज्ञा पालन करने का निश्चय किया। उस साधु ने एक दवा खाने के लिए और एक परचा मालिश करने का ... दिया और बर्फ से खोदकर एक लाल जड़ी दी। मैंने १५ दिन तक उस दवा ... बनाकर खाया। निस्सन्देह पहली खुराक ने अपना फायदा दिखाया। ७ दिनों में मेरी दशा पलट गई। सारे कष्ट दूर हो गये। शरीर में बिजली की तरह स्फूर्ति अनुभव होने लगी तथा उसे संचित रखना कठिन हो गया। उस महान् साधु की ... का यह प्रभाव है कि आज तक किसी और दवा के खाने की जरूरत न पड़ी और तमाम साथियों ने अपने जीवन को सार्थक बनाकर विशेष आनन्द अनुभव किया। ... प्रकार की सुस्ती, नपुंसकता, जिरियान, स्वप्नदोष, पेशाब में जलन, रगों व पट्ठों का कमजोर पड़ जाना, मतलब यह कि यह दवा हरएक प्रकार के गुप्त रोगों का शीघ्र अति शीघ्र अन्त करती है, जवानी के लक्षण दिखाई पड़ने लगते हैं, चिपके गाल उभर आते हैं, बदन लाल तथा पुष्ट हो जाता है। १५ दिन की ३० खुराक, जो कि तन्दुरुस्ती के लिए काफी है, ४॥) में और मालिश करने की फी शीशी का मूल्य ३) रु० है। मालिश करने से किसी प्रकार के फफोले नहीं पड़ते व जलन भी नहीं होता। शरीर के समस्त निर्जीव रगों में चैतन्यता पैदा कर देती है। इस दवा ने मुझे पुनर्जीवन प्रदान किया है। अतः मैंने अपना कर्तव्य समझकर लागत ही मूल्य रखा है। अविश्वासी आदमी मेरी दवा का प्रयोग न करें, क्योंकि शक की दवा हकीम "लुकमान" के पास भी न थी, स्वास्थ्य-लाभ करने पर आपका धर्म है कि साधु का सन्देश घर घर पहुँचा कर अपने दुखी भाइयों का भला करें।

प्रो० जे० के० गुप्ता, पोस्ट बाक्स नं० १६०, कानपुर

Cool Refreshing Fragrant

सदैव अच्छा साथी

गर्मी के प्रति तुम्हारा सहायक है

गर्मियों में थकावट अनुभव करने के समय आप अपने माथे और गर्दन पर टाटा का ओ डी कोलोन लगा लीजिये। इसकी तीक्ष्ण शीतलता तुम्हें ताज़ा कर देगी और तुम्हारी थकावट को दूर करेगी। यह तुम्हें सर्वदा ताज़ा और सुरभित रखेगी। आज ही अपने प्रयोगार्थ एक शीशी मोल लीजिये।

टाटा का ओ डी कोलोन

दी टाटा आयल मिल्स कं०, लि०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति का

दशनसंस्कार चूर्ण

सुगंधित और औषधियुक्त दंत मंजन

अध्यक्ष माथुर बाबू का
शक्ति औषधालय, ढाका
सन् १९०१ से आयुर्वेद का मार्ग-प्रदर्शक

समस्या कठिन-निवृत्ति सरल

AC 94

दियासलाई की चार तीलियों से छोटे से छोटा समकोण चतुर्भुज बनाइए ?

तीलियों के ऐसे रखिये कि उत्तर, दक्षिण, पश्चिम की ओर हो चित्र में दिखाया

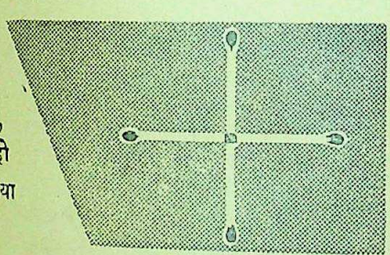

शिक्षा के निमित्त या विवाह में खर्च करने और नौकरी से ... पर उपयोग में लाने के लिये रुपया बचाना बहुत से मनुष्यों ... सरल नहीं। परन्तु उन मनुष्यों के लिये चिन्ता का कोई ... जो थोड़ा रुपया लगाने वालों के हित के लिये प्रचलित नेशनल सर्टिफिकेट्स की योजना में सेविंग्ज़ ग्रूप के मैम्बर बन कर सम्मिलित ... सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स की मद पूर्णतया सुरक्षित है और इस पर ... अधिक ब्याज मिलता है।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

... ५, १०, ५०, १००, ५००, ... १०००, रु० के मूल्य के ... सर्टिफिकेट्स खरीद सकते हैं। ... प्रत्येक व्यक्ति (वयस्क या ... ५००० रु० तक के सर्टिफिकेट्स ... व्यक्ति मिलकर १०,००० ... सर्टिफिकेट्स खरीद सकते हैं। ... में इनका मूल्य ५०% बढ़ ... रुपया १॥) बन जाता है। ... रुपया लगाने की मदों ... जाता है यह सब से

(४) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(५) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं (५ रु० का सर्टिफिकेट १·१/२ वर्ष पश्चात भी भुनाया जा सकता है)

(६) जिनकी बचत थोड़ी है वह १), ॥), ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्प्स खरीद सकते हैं, ५ रु० के स्टाम्प्स जमा होने पर एक नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट मिल जायेगा।

(७) सर्टिफिकेट्स और स्टाम्प्स डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकृत एजंटों अथवा सेविंग्ज ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

... सेविंग्ज़ ग्रूप में अभी सम्मिलित हो...

सब दर्दों के लिये

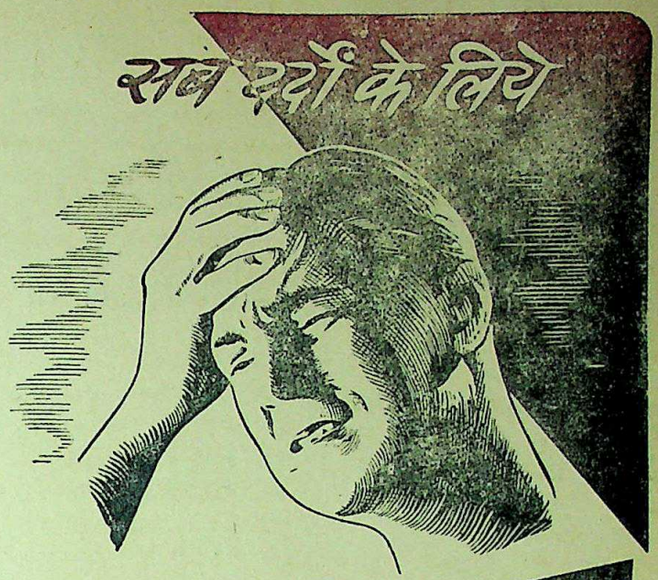

सारिडन

१० मिनट में अच्छा करता है

अपने दान्तों के लिये

गिब्स

डेन्टिफ्रिस का उपयोग कीजिये क्योंकि...

योग्य पद्धतिसे (दाँत) किड़ने का निवारण होता है

आप का डॉक्टर आप से कहेगा कि, खराब दाँत बहुतसे रोगों के मूल हैं। कोयला या अन्य कठिण पदार्थ से दाँत साफ़ करने की पुरानी पद्धति से प्रायः दाँतो को खुरुचने का खतरा रहता है...खुरुचा हुआ दाँत जल्द किड़ जाता है। गिब्स डेन्टिफ्रिस खुरुचे जाने के बग़ैर सुरक्षापूर्वक-दाँत-साफ़ करने के लिये खासकर बनाया गया है। गिब्स डेन्टिफ्रिस-द्वारा योग्य पद्धति से (दाँत) साफ़ किया करें और अपने दाँतो को किड़े जाने से सुरक्षित रखें। गिब्स जन्तुनाशक एवं स्वाद में मधुर है और (वह) आप के दाँत सफ़ेद और सुरक्षित रख, साफ़ करता है।

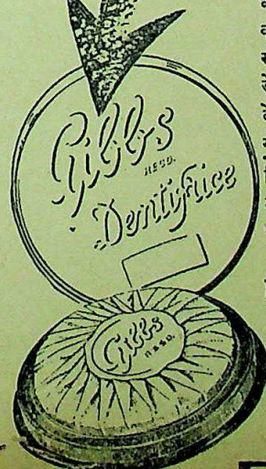

गिब्स

अधिक समय चलता है और दाम में भी कम.....

गिब्स का उँगली से प्रयोग किया जा सकता है

गिब्स ... फ्रिस

...NGLAND

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाल शेयर डीलर्स सिण्डीकेट लिमिटेड

प्रधान कार्यालय—'शेयर्स डीलर्स हाउस' कलकत्ता

ब्रांच और एजेन्सियाँ—सारे भारतवर्ष, सीलोन और पूर्व अफ्रीका में

पूँजी

अधिकृत.....२५,००,०००) रुपये
बिकी हुई.....१८,००,०००) रुपये
अदा हुई.....१०,२६,३५६) रुपये

बंगाल शेयर डीलर्स सिण्डीकेट—भारतवर्ष के स्टाक और शेयर्स (हिस्सों) के व्यापार में प्राचीन और सबसे बड़ा ज्वाइंट स्टाक है जिसने व्यापार में धन लगानेवाली जनता के लाभ के लिए बड़ी ईमानदारी से सेवा की है और आज भी देश में शेयर्स (हिस्सों) के व्यापार की उन्नति के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य करती है।

डिविडेण्ट (मुनाफा)

इस सिण्डीकेट के शेयर होल्डरों (हिस्सा लेनेवालों) को लगी हुई पूँजी का २७% मुनाफे के रूप में प्राप्त हो चुका है। चालू साल में इससे अच्छे मुनाफे की आशा है।

आमदनी

सिण्डीकेट को निम्नांकित मदों से आमदनी होती है—

(१) ग्राहकों के हिसाब से व्यापार करने पर दलाली से।
(२) ग्राहकों के शेयर (हिस्से) के ऊपर कर्ज देने की पेशगियों के ब्याज से।
(३) वार्षिक किराया से जो ३० हजार रुपयों के मकानों से प्राप्त होता है। इसमें अपनी निजी पाँच तल्ले की इमारत 'शेयर डीलर्स हाउस' है जो कलकत्ते के चौरंगी स्कायर में है।
(४) मैनेजिङ्ग एजेन्सी के पारिश्रमिक और कमीशन से, जो ४० हज़ार रुपये के नेशनल नुट्रीमेंट लिमिटेड (विटामिन के व्यवसाय) से प्राप्त होता है। सिण्डीकेट को कोयले की अपनी दो कम्पनियों से जो इसी वर्ष खरीदी गई हैं, प्रतिवर्ष अच्छी रकम पैदा होने की बड़ी आशा है। उन कम्पनियों में से एक इंडियन कोलियारीज लिमिटेड है जो बहुत पहले ही ख़रीदी गई थी और झरिया की अच्छी कोयले की खानों में से है। उस खान से प्रतिवर्ष ७ हज़ार टन कोयला निकाला जाता है।

हमारा कार्य		निश्चित जमा पर ब्याज	
(१) हम हर प्रकार के शेयरों (हिस्सों) में व्यापार करते हैं— (२) हम व्यापार में धन लगाकर कमाने के लिए मुनाफे-सम्बन्धिनी राय देते हैं। (३) हम, निश्चित जमा (रकम) स्वीकार करते हैं।		१ वर्ष के लिए २ वर्ष के लिए ३ और ४ वर्ष ५ और ६ वर्ष ७ वर्ष ... ८ वर्ष ... ९ वर्ष .... १० वर्ष ...	३½% ४% ४¼% ४½% ४¾% ५% ५¼% ५½%

मुनाफा अतिरिक्त धन जमा की पद्धति पर कमाया जाता है

अस्थायी राष्ट्रीय सरकार बन गई है और भारतवर्ष की स्वतन्त्रता द्वार पर है। स्वतन्त्र भारत में सारे व्यापार की उन्नति और उद्योग-धन्धों का प्रसार निश्चित है। इस परिवर्तन काल में शेयर बिजनेस (हिस्से के व्यापार) के प्रसार होने की भी बड़ी आशा है।

जब हमारे अतिरिक्त धन जमा की पद्धति ठीक रहेगी तो हमारे इस मुनाफे के व्यापार के लिए अधिक धन की आवश्यकता न रहेगी। पद्धति के अनुसार पार्टी खरीदे हिस्से के लाभ का पूरा [illegible] नहीं देती बल्कि मुनाफे का एक भाग देती है। इसका पूरा विव[illegible] के [illegible] डिपोट 'आवर मंथली शेयर [illegible] सकता है। प्रार्थना पर हम नमूने की कापी भेज सकते हैं।

[illegible] लेते [illegible] चंगेरा [illegible] सकते [illegible] जाय औ[illegible]

प्रबन्धक सम[illegible] [illegible] दित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ब्योतिप्रसाद मिश्र
CC-0 In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्य ७॥)
३)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

६ अक्टोबर, १९४६ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 6th October, 1946

देश के प्राण महात्मा गांधी

अपराजिता—ले०, कविवर 'अंचल'। भूमिका में पं० नन्ददुलारे वाजपेयी लिखते हैं—अंचल की विरह-साधना में बड़ी ही एकनिष्ठ, गहरा, विह्वलताकारी तथा जीवनमय अनुभूतियों का संचय है। इन कविताओं में आपको हिन्दी-कविता की प्रगति के विराम-चिह्न मिलेंगे। पंक्ति-पंक्ति में कवि का हृदय स्वर्गीय माधुर्य का वेग होकर बह उठा है। भाषा पर अधिकार और अभिव्यक्ति के निखार में कवि बेजोड़ है। हिन्दी-काव्य का एक नया रूप आपको इन गीतों में मिलेगा। मूल्य ३) तीन रुपये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

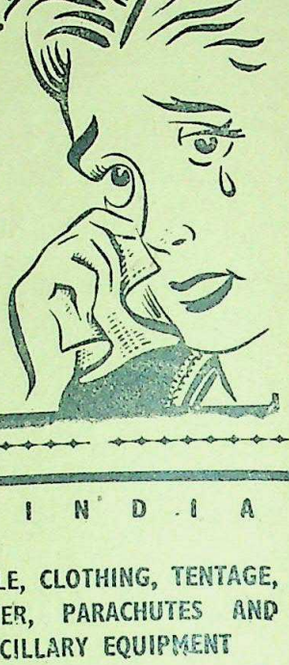

जुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय
स्थापना १९२५
आरोंदा
सुरक्षा १८६६ नीलगिरि तेल
प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

इस प्रकार क्यों पीड़ित हैं?
Saridon
सारिडन
२० मिनट में
सारे दर्द शेक देती है

GOVERNMENT OF INDIA

DISPOSALS

TEXTILE, CLOTHING, TENTAGE, LEATHER, PARACHUTES AND ANCILLARY EQUIPMENT

(SECTION TX OF 2nd CATALOGUE)

Following types of stores are available for sale:

Clothing (serviceable made-up garments): Cotton and Woollen outer and inner; Hosiery and knitted wear; Gloves and Mittens; Headwear; Apparel accessories; Proofed Clothing, antigas and rubberised; etc.

Textile Materials of cotton, wool and silk: Cotton waste yarn and thread; Cotton broad and narrow woven; Cotton knit; Woollen waste yarn and thread; Woollen broad and narrow woven; Woollen knit; Woollen felt; Silk waste yarn and thread; Narrow and broad woven silk; etc.

Textile Materials and manufacture of jute, sisal, ramie, coir, and other fibres: Woven fabrics; Manufactured gunny bags and sandbags; Proofed fabrics; etc.

Cordage and Twine: Cotton, Silk and Jute cordage and twine; etc.

Garniture: Metal and non-metal buttons and badges; Braids; buckles and slides; etc.

Heavy Textile articles: Woollen and cotton carpets and rugs; Fibre; Floor coverings (Mattings); Household linen; Blankets; Web equipment; etc.

Footwear: Boots and shoes; Chaplies and slippers; Gym. shoes; Galoshes; Rubber footwear; cutstocks including soles, heels, tip fillings, etc.; Grindery items including nails, heels and toe tips; etc.

Harness, saddlery and leather equipment: Harness and saddlery (horse, mule and other types) and accessories; etc.

Other leather goods: Belting.

Leather: Buff and cow leather; Sheepskins; Goatskins; Vegetable Tanning materials; etc.

Tentage and connected stores: Tent and tent components; Tent pins and poles; etc.

Parachutes and fittings: Man-dropping, equipment-dropping and supply-dropping equipment; parachutes; parachute fittings; etc.

Full details giving description and condition of stores, quantity, location, etc and the method of tendering are contained in Section TX of the Second Catalogue which is available at Rs. 2 from the addresses given below:

A. Regional Commissioners, Directorate General of Disposals at

Bombay
Mercantile Chambers, Graham Road, Ballard Estate.

Calcutta
6, Esplanade East.

Lahore
G. P. O. Square, The Mall.

Cawnpore
15/159, Civil Lines.

B. Dy. Regional Commissioners, Directorate General of Disposals at

Karachi
Variawa Building, McLeod Road.

Madras
United India Life Building, Esplanade.

C. All important Chambers of Commerce and Trade Associations.

Mail orders for the catalogue must be accompanied by Money Order or Indian Postal Order.

NOTE: Watch for further announcement regarding Section TX of Third Catalogue which will contain a further list of stores available for disposal.

ISSUED BY
THE DIRECTOR GENERAL OF DISPOSALS, DEPARTMENT OF INDUSTRIES AND SUPPLIES, NEW DELHI

DGD

C 116

मृतसञ्जीवनी सुधा
अशोकारिष्ट
सारिबाद्यासव
ढाका आयुर्वेदी फार्मेसी लि.
युक्तप्रांत की शाखाएं
बनारस—दशाश्वमेध घाट
इलाहाबाद, कानपुर,
गाजीपुर, बलिया,
वृन्दावन, गोंडा,
बाद, अलीगढ़,
बहराइच, जमानिया,
तहसील देवरिया,

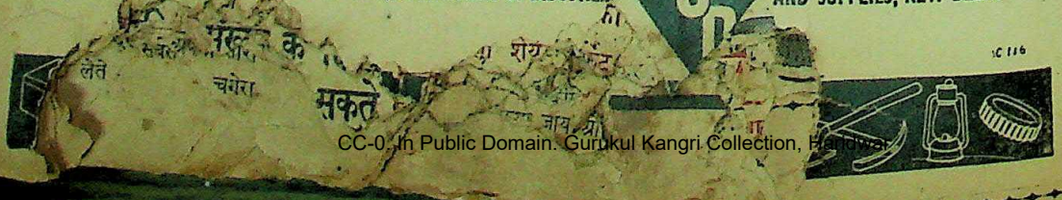

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीदार

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, ६ अक्टोबर, १९४६

सं० १० संख्या ५]

स्वदेश-विदेश में कहाँ क्या हो रहा है ?

पं० जवाहरलाल नेहरू ने पत्र-परिषद् के सम्मुख भाषण देते हुए अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की वैदेशिक नीति के सम्बन्ध में भारत गुटबन्दी की विरोधी बना रहेगा। अन्य देशों से विशेषकर एशिया और मध्य पूर्व के सम्बन्ध बढ़ावेगा। परन्तु यह नीति वैदेशिक विभाग द्वारा संचालित होगा। भारत-सरकार अपनी वैदेशिक नीति शीघ्र ही वर्तमान कार्यान्वित करेगा।

* * *

कांग्रेस अध्यक्ष के लिए आचार्य कृपलानी का नाम चार प्रांतों से प्रस्तावित हुआ है। बंगाल, बिहार, यू० पी० और कर्नाटक। कुमारी मृदुला साराभाई ने सारी प्रान्तीय कां० कमेटियों के पास एक सर्कुलर भेजकर सूचित कर दिया है कि अध्यक्ष की नामजदगी की तारीख ५ अक्टूबर और ६ तारीख को नामों की घोषणा, १६ अक्टूबर तक नामों की वापसी, १७ अक्टूबर को उम्मीदवारों के नामों की घोषणा, २० अक्टूबर को डेलीगेटों द्वारा वोट तथा २२ अक्टूबर को अध्यक्ष के नाम की घोषणा होगी।

* * * * * *

फल्गू नदी की बाढ़ के कारण गया शहर जलमग्न हो गया था। उस समय इम्पीरियल बैंक की स्थानीय शाखा की इमारत में पानी घुस जाने से ६० लाख रुपये के नोट भींग गये।

* * *

मध्य-प्रान्त की सरकार ने मद्रास-प्रान्त को अन्न की सहायता करने की विशेष कृपा की है। मद्रास प्रान्त के प्रधान मंत्री श्री टी० प्रकाशम और भोजन-मंत्री श्री राघव मेनन नागपुर जाकर मध्य-प्रान्त के प्रधान मंत्री रविशंकर शुक्ल और भोजन-मंत्री श्री आर० के० पाटिल से मिले हैं। मध्य-प्रान्तीय सरकार ने पाँच हजार टन चावल उतने ही गेहूँ के बदले में देना स्वीकार किया है। इस गल्ले की पहली किस्त सम्भवतः नवम्बर के पहले ही भेज दी जायगी।

* * *

अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस के अध्यक्ष श्री मृणालकान्ति बोस ने बंगाल के गवर्नर श्री बरोज को एक दूसरा खुला पत्र भेजा है जिसमें उन्होंने लिखा है कि भारत ने बहुतेरे बुरे और खराब गवर्नरों को देखा है, पर आप की तरह जनता के साथ किसी ने भी विश्वासघात नहीं किया। गवर्नर को राजनीति के ऊपर रहना चाहिए, पर आपने अपना सम्बन्ध मुस्लिम लीग की राजनीति के साथ जोड़ लिया है।

* * * * * *

गृह के बाजार के लिए जूट का मूल्य निर्धारित करने में बंगाल-सरकार और पंडित नेहरू की अस्थायी सरकार में एक प्रथम श्रेणी का संघर्ष होने की आशंका की जाती है।

* * *

बंगाल-सरकार ने भारत-रक्षा कानून के अंतर्गत एक आदेश जारी करके बंगाल में साम्प्रदायिक दंगे के समाचार प्रकाशित करने और छापने पर रोक लगा दी है।

* * *

युक्तप्रान्तीय सरकार आर्डिनेन्स निकालकर भारत-रक्षा कानून की धारा २६ तथा १२९ का कार्यकाल बढ़ायेगी। इसके अतिरिक्त कुछ राजद्रोही संस्थाओं को गैर-कानूनी घोषित कर देने का सरकारी अधिकार भी बढ़ा दिया जायेगा।

* * *

सोवियट रूस और टर्की में दर्रेदानियाल को लेकर काफी विवाद उठ खड़ा हुआ है। टर्की ने दर्रेदानियाल की रक्षा के लिए सैनिककरण की योजना बनाई है। रूस ने इस योजना के विरुद्ध चेतावनी दी है। जो पत्र टर्की को लिखा है उससे टर्की में एक निराशा दौड़ गई है। टर्की के प्रति रूस के इस रुख पर अमेरिका और ब्रिटेन टर्की का समर्थन करेंगे।

* * *

पं० जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तिगत प्रतिनिधि श्री बी० के० कृष्ण मेनन ने रूसी वैदेशिक मंत्री मो० मोलोटोव से पेरिस में मुलाकात की है। मुलाकात में श्री मेनन ने रूस से भारत को गल्ला देने और पारस्परिक कूटनीतिक सम्बन्ध बनाये रखने पर वार्ताएँ की हैं। वार्ता बहुत मैत्रीपूर्ण हुई है।

* * *

श्री सुधीर घोष ने जो अभी लन्दन में मौजूद हैं, बतलाया है कि शायद अब भविष्य में चर्चिल-जिन्ना पत्र-व्यवहार न होगा।

* * *

इँगलैंड के प्रमुख पत्र मैनचेस्टर गार्जियन ने लिखा है कि ब्रिटेन को भारत से मैत्री प्राप्त करनी चाहिए।

* * *

इँगलैंड के एक पत्र में प्रकाशित हुआ है कि ईपी का फकीर लीग के पक्ष में है। उस पत्र में ईपी का फकीर और खाँ अब्दुल गफ्फार का चित्र साथ साथ दिया हुआ है।

* * *

अमेरिका में इंडिया लीग के प्रेसीडेंट श्री जे० जे० सिंह ने एक प्रस्ताव पास किया है जिसका उद्देश्य है कि अफ्रीका के भारतीयों की एशियाई विरोधी कानून के खिलाफ लड़ाई जातीय श्रेष्ठता के सिद्धान्त के विरुद्ध मानवीय स्वतन्त्रता तथा अधिकारों की विश्वव्यापी लड़ाई का एक

[illegible] में दक्षिण
[illegible] शिकायत
[illegible] का प्रयत्न

जनगणनायक

लेखक, श्री सोहनलाल द्विवेदी

(जन-आन्दोलन के राष्ट्रीय महान् काव्य 'सेवाग्राम' से)

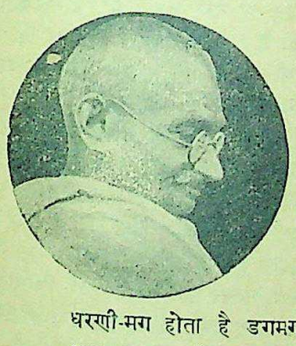

मन में नूतन बल सँवारता,
जीवन के संशय भय हरता,
वृद्ध वीर बापू वह आया,
कोटि कोटि चरणों को धरता।

धरणी-मग होता है डगमग, जब चलता यह धीर तपस्वी,
गगन मगन होकर गाता है, गाता जो भी राग मनस्वी,
पग पर पग धर धर चलते हैं, कोटि कोटि योधा सेनानी,
विनत माथ उन्नत मस्तक ले, कर निःशस्त्र, आत्म अभिमानी
युग युग का घन तम फटता है, नव प्रकाश प्राणों में भरता,
वृद्ध वीर बापू वह आया, कोटि कोटि चरणों को धरता।

निद्रित भारत जगा आज है, यह किसका पावन प्रभाव है
किसके करुणांचल के नीचे, निर्भयता का बढ़ा भाव है?
नवजीवन की श्वांस ले रहे, हम भी जाग उठे हैं जग में,
उठा लगाया कंठ प्राण से, किसने पददलितों को मग में?
व्यथित—राष्ट्र पर आँचल करता, जीवन के नवरस कब ढरता,
वृद्ध वीर बापू वह आया, कोटि कोटि चरणों को धरता।

यह किसके तप का प्रकाश है, नवचेतन जन जन में छाया
'सत्य' जगा, 'करुणा' उठ बैठी, सिमटी मायावी की माया,
'वैभव' से 'विराग' उठ बोला, चलो बढ़ो पावन चरणों में
मानव-जीवन [illegible] उपकरणों में।
जननी की [illegible]
वृद्ध वीर बापू [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

महात्मा जी दीर्घजीवी हों

दो आक्टोबर वर्तमान भारत का एक पर्व दिन हो गया है। जिस प्रकार हम भगवान् राम और कृष्ण की जयन्ती बड़े गर्व से मनाते हैं उसी प्रकार यह दो आक्टोबर भी हमारे लिए बड़े गर्व की तिथि हो गई है। भारतवर्ष में जब कभी महान् संकटों का समय आया है, उससे उद्धार के लिए एक न एक महापुरुष का आविर्भाव हुआ है। उन्होंने अपने देश ही के लिए नहीं वरन् सारे संसार के पथ-प्रदर्शक का कार्य किया है। भगवान् रामचन्द्र ने राक्षसों (तामस मनोवृत्तिवालों) को ठिकाने लगाकर ऋषि-मुनियों (सभ्य नागरिकों) की रक्षा की थी। भगवान् कृष्ण ने कंस-जैसे दुराचारी का वध किया और दुर्योधन को पाण्डवों द्वारा चौपट करवाया था। महात्मा बुद्ध ने हिंसा को रोकने के लिए अहिंसा का अवलम्बन किया था।

वर्तमान युग में पश्चिमी शक्तियाँ महात्मा ईसा के अमर उपदेश आहिंसा को भूलकर हिंसा का पथ पकड़ चुकी हैं; संसार के सारे देशों को गुलाम रखकर उन पर कठोरता से शासन करती हैं; उनके सामने निरस्त्र जातियाँ कर ही क्या सकती हैं? आज अफ्रीका और एशिया के सारे देश पश्चिमी देशों की गुलामी में जकड़े हुए हैं, ऐसे ही युग में हमारे पूज्य नेता महात्मा जी वर्तमान हैं। उन्होंने अफ्रीका में अपने देशवासियों को साथ लेकर बिना अस्त्र के हिंसक शक्ति का मुकाबिला किया। यद्यपि उसमें उन्हें न केवल गालियों और डंडों की मार सहनी पड़ी, बल्कि जेलखाने की हवा खानी पड़ी। फिर भी वह महापुरुष अपने संकल्प पर अटल रहा। हिंसक शक्ति के मुकाबले जिस अस्त्र को उन्होंने अपनाया था उसका नाम उन्होंने अहिंसा रक्खा और जिस संकल्प को लेकर वे लड़ते थे उसका नाम सत्याग्रह। अपने अस्त्र से उन्हें अपने संकल्प में सफलता मिली थी। स्वदेश वापस आने पर उन्होंने देश की स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए ब्रिटिश सरकार के मुकाबले इसी अस्त्र को अपनाया। इसकी पूर्ति में महात्मा जी को स्वदेशी आन्दोलन और चर्खा-प्रचार का विशेष सहारा मिला है। चर्खा तो उनके जीवन का एक अभिन्न अंग हो गया है। उनके दैनिक जीवन के और कार्य चाहे न हों पर सूत कातना कभी नहीं भूलेंगे।

हजारों वर्षों से चली आ रही अस्पृश्यता को जड़-मूल से नष्ट करने की प्रतिज्ञा गांधी जी ने ली है। हिन्दू-धर्म में दो वर्गों का विभाजन उन्हें उतना ही खला जितना भारत का दासत्व। इसके लिए उन्होंने आमरण अनशन तक किया। वे केवल हिन्दू-धर्म को ही ऊँची दृष्टि से नहीं देखते। ईसाई और इस्लाम दोनों को वे उसी दृष्टि से देखते हैं जैसे हिन्दू-धर्म को। उन्होंने स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए अपने रच[illegible] मुस्लिम-एक[illegible] इसके लिए [illegible] से मिल[illegible] क[illegible]

फैला वह आज प्रारम्भ से कई गुना अधिक विस्तृत हो गया है। कांग्रेस द्वारा महात्मा जी ने स्वतन्त्रता के लिए कितने ही आन्दोलन चलाये। यद्यपि कुछ आन्दोलनों में पूरी सफलता नहीं मिली परन्तु उन आन्दोलनों ने जनता में स्वतन्त्रता की ऐसी ज्योति जगा दी है कि वह कभी मद्धिम नहीं पड़ सकती। सत्याग्रह का अवलम्ब आजकल संसार के सभी देशों में किसी न किसी रूप में लिया जा रहा है। विश्वशांति के लिए महात्मा जी देवदूत होंगे यह अनुभव अब संसार के सारे देशों को हो गया है। वे जीवन के ७८वें वर्ष में पदार्पण कर रहे हैं। भारतवर्ष के कोने-कोने में उनकी यह जयन्ती मनाई जा रही है। भारत से बाहर भी उत्सव हुए हैं। देश सूत की गुंडियाँ उन्हें भेंट कर रहा है। हम अपने राष्ट्र के उन्नायक की इस जयन्ती पर अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं और उनके दीर्घायुष्य के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

* * *

बंगाल में समाचारों पर कंट्रोल

आखिर वह घड़ी आ गई जिसकी आशंका थी। बंगाल का लीगी मंत्रिमंडल अपने कारनामों के लिए प्रसिद्ध हो गया है। १६ अगस्त को कलकत्ता-काण्ड ने तो उसके ऊपर स्याही पोत दी है। मंत्रिमंडल के प्रधान मंत्री ने अपने को बचाने का प्रयत्न किया है। असेम्बली की बैठक में उनके विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव तो पास नहीं हो सका परन्तु जनता की आवाज ने उनको यह बतला दिया कि वे उस संहार के जिम्मेदार हैं। ढाका और अन्य शहरों की घटनाओं से लीगी शासन की पोल खुल रही है। समाचारपत्रों के पृष्ठ दंगों के समाचारों से भरे रहते थे जिसमें लीगी नेताओं और गुंडों की कार्रवाइयों का दिग्दर्शन हो जाता था। समाचारपत्र ही जनता की स्थिति बतलाने और उनका न्यायोचित पक्ष करने के सहायक थे। परन्तु लीगी मंत्रिमंडल इसे कब बर्दाश्त कर सकता है? उसने बंगाल से प्रकाशित होनेवाले सारे समाचारपत्रों पर भारत रक्षा-कानून के अन्दर रोक लगा दी है कि वे साम्प्रदायिक दंगों के समाचार प्रकाशित न करें। इस आज्ञा ने बंगाल के राष्ट्रीय समाचारपत्रों की जबान बन्द कर दी है। राष्ट्रीय सरकार के स्थापित होने, प्रान्तों में लोकप्रिय सरकारों का अर्थ क्या यही है कि जो प्रेस-स्वतन्त्रता थी उसका भी अन्त हो जाय? सन् १९४२ के दिनों में सैनिक-शासन के होते हुए भी ब्रिटिश सरकार ने भी इतनी नृशंसता नहीं दिखलाई थी। युक्तप्रान्त के गृह-मन्त्री मुसलमान हैं परन्तु न तो हिन्दुओं की संस्थाओं पर रोक लगाते हैं और न मुसलमानों की। प्रेस-स्वतन्त्रता तो एक प्रकार से इस प्रान्त का मौलिक अधिकार है। अभी तक अन्य प्रांतों में भी प्रेस-स्वतन्त्रता का अपहरण नहीं हुआ। [illegible] गया है।

[illegible] की घोषणा की है। परन्तु उन्होंने समाचार पत्रों पर मन्त्रिमंडल द्वारा लगाई गई रोक को हटाने के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहा। अखिल भारतीय पत्रकार-संघ बंगाल में प्रेस-स्वतन्त्रता के इस अपहरण को क्या देखता रहेगा? कितने ही नामी समाचार-पत्रों ने अपना प्रकाशन अनिश्चितकाल के लिए बन्द कर दिया है। पत्रकार-संघ को अपना डेपूटेशन राष्ट्रीय सरकार के प्रधान लार्ड वैवेल और बंगाल के गवर्नर के पास [illegible] चाहिए। प्रेस-स्वतन्त्रता ऐसी रोक बंगाल के लीगी [illegible] लिए चाहे लाभकारी हो [illegible]-मुस्लिम जनता के लिए और विनाशकारी है।

श्री हरिवंश राय 'बच्चन'

लेखक, श्री धर्मेन्द्र बी० ए०

स्व० 'शुक्ल' जी के 'हिन्दी-साहित्य के इतिहास' के अनुसार 'बच्चन' जी आधुनिक काल की स्वच्छन्द धारा के कवियों में हैं। वर्तमान हिन्दी-संसार बच्चन से कितना परिचत है, इसे कौन नहीं जानता। उनके स्वर और 'मधुशाला' के पात्र लगभग सबों ने चूमे हैं और यदि पीनेवाला झूम न उठा तो मस्ती में अपने को भूल अवश्य गया होगा। आइए, आज की साहित्य-चर्चा में अपने मस्ती के कवि पर एक आलोचनात्मक दृष्टि डालें।

जैसा कि बच्चन जी की सभी पुस्तकों में रहता है, 'सतरङ्गिनी' के आरम्भ में भी एक प्रकाशक का विज्ञापन है। 'सतरङ्गिनी' को उनकी कविता के प्रेमियों के सम्मुख उपस्थित करते समय कहा गया है, 'उनकी प्रत्येक रचना, जैसा कि उनके पाठक देखते आये हैं, उनके जीवन-विचार और भावों के विकास की एक नई सीढ़ी होती है।' मधुशाला, मधुकलश, निशा-निमन्त्रण, एकान्त-संगीत, आकुल अन्तर सतरङ्गिनी और हलाहल। यही हैं वे सीढ़ियाँ।

बच्चन ने जीवन को सदा एक यात्रा के रूप में देखा है और यात्रा भी मनुष्य की नहीं, पर्वत के उच्चतम शिखर से चली हुई सरिता की। इसमें संघर्ष है, बहाव है, तेजी भी है और प्रशान्ति भी।

यौवन के आरम्भ में बच्चन की मस्ती संसार के बन्धनों में तड़फड़ा उठी। झूठी सभ्यता का अभिशाप—जिसमें पाप करना मना नहीं है, उसका कहना मना है—उन्हें असह्य हो उठा! नौजवान व्यक्ति आश्चर्य और क्रोध से भरकर जगत् की सीमा के विरुद्ध विद्रोह कर उठा। उस समय उसके सम्मुख केवल एक धुँधला-सा आदर्श था जिसे पकड़े हुए वह चल रहा था। वह नहीं जानता था कि वह कहाँ जा रहा है। केवल एक विश्वास था कि 'पथ सभी मिल एक होंगे तम भरे यम के नगर में।'

उस समय से आज तक बच्चन की जीवन-सरिता न जाने कितनी घाटियों, मैदानों और पर्वतों के बीच से होकर गुजर चुकी है। कहीं दोनों किनारों पर लहलहाते हुए पीले-पीले सरसों के खेत मिले, कहीं मरघट की जलती हुई चिताएँ; पर वह धारा रुकी नहीं। उसने देखा सबको, पर अपने बहाव के साथ। संसार के सुख-दुःख से वह आकर्षित अवश्य हुई पर उसकी क्षणभंगुरता उन्हें किसी क्षण भी न भूली। उस धारा में एक विचित्र अनिवार्य आक-

[illegible] पर्ण है जो नरवस डाल की ओर [illegible] जाता है। उन्हें इसका पता [illegible] शक्ति कौन है और कहाँ से [illegible] मधुकलश में इसे उन्होंने लिखा था—

"हो नियति इच्छा तुम्हारी
पूर्ण मैं चलता रहूँ
पथ सभी मिल एक होंगे
तम भरे यम के नगर में।"

मंजिल स्वयं अपने में कोई [illegible] आदर्श, अदृश्य अथवा धुँधला [illegible] दृढ़ आशा और संकल्प उनके [illegible] साथी हो गये थे। इसी [illegible] घहराता हुआ अंधकारमय [illegible] पर भी वे तैर कर उस स्तब्ध [illegible] पहुँचना चाहते थे।

आज बच्चन की 'सतरङ्गिनी' [illegible] वही आशा, वही विश्वास और [illegible] दृष्टिगोचर हो रहा है। आज की [illegible] इतनी काली हो जाती है कि [illegible] अब सवेरा नहीं होगा तो [illegible] से वही उषा की मोहिनी मुस्कान [illegible] पर छा जाती है। 'सतरङ्गिनी' [illegible] मधुकलश में लहरों के पास [illegible] स्वप्नों से बहुत मिलता है—'मिल [illegible] सहसा', 'वह आई आँधी' आदि।

बाह्य रूप से देखने पर [illegible] भावनाओं को लेकर चले थे उन्हें [illegible] आ गये और नहीं तो कुछ [illegible] की राय में बच्चन अपना मैदान [illegible] दूसरे अखाड़े में उतर आये हैं। [illegible] निशा-निमन्त्रण और एकान्त-संगीत के विकास में केवल एक अन्तिम [illegible] ही होकर रह गई हैं!

सच तो यह है कि न बच्चन [illegible] लौटे हैं और न उन्होंने दूसरा [illegible] नाया है। यह केवल उनकी [illegible] उन्हें जीवन के विभिन्न अंशों [illegible] इधर से उधर घुमा रही है। [illegible] गंगा हिमालय पर भी गंगा ही [illegible] प्रकार बच्चन की धारा, शैली और [illegible] के प्रति दृष्टिकोण में कोई [illegible] परिवर्तन नहीं हुआ है भले ही [illegible] भावनाएँ परिवर्तित होती रहीं।

'बच्चन' की विशेषता यही [illegible] सदा उनकी भावनाएँ उनके हृदय [illegible] छोड़कर नीचे चली जाती हैं। [illegible] युवक और नवयुवक हृदय को [illegible] अत्यिधिक प्रिय हैं। क्योंकि [illegible] अपने को संकोचों में नहीं [illegible] उसकी भावनाएँ उसके [illegible] वस्तु होती हैं। हमारे छोटे-[illegible] छोटे-छोटे सुख अपार बनकर [illegible] हैं। 'बच्चन' हमारे उन्हीं [illegible] कवि हैं। जीवन को विविध [illegible] देखते समय जो कुछ एक [illegible] चेतन मनुष्य पर उसकी [illegible] समय समय पर उनके [illegible] होती रही है। कभी उन्होंने [illegible] कोशिश नहीं की। प्रारम्भ [illegible] कह दिया है—"औलिया [illegible] की नहीं अभिलाष मेरी।" [illegible] केवल मनुष्य-हृदय को [illegible] सामने रक्खा है जो गुरुत्वाकर्षण [illegible] है, दर्द होने पर रोता है और [illegible] संघर्षों का सामना [illegible] करता है। उसे वह सोचने [illegible] है कि जीवन का आदर्श [illegible] अन्त क्या है। जीवन उसके [illegible] की वस्तु-मात्र है। उसने [illegible]

शेष पृष्ठ ५ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे राष्ट्र को बापू की अमूल्य देन

भारत के प्राण महात्माजी चिरजीवी हों

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

महात्माजी ने अपने भूखे-नंगे देशवासियों के लिए अफ्रीका में जिस अस्त्र, सत्याग्रह और अहिंसा को अपनाया था, वही अस्त्र भारतवर्ष में इतना सफल हुआ कि आज राष्ट्र स्वतन्त्रता के द्वार पर है। महात्माजी ने अपने स्वदेशी आन्दोलनों से भारतवासियों में जो जान डाल दी है, लेख में उसका सुन्दर चित्रण है।

स्वर्गीया माता कस्तूर बा।

भारत को हर तरह से बुजदिल बना दिया गया है। १९२० के पहले गाँवों, शहरों में एक मामूली सरकारी चपरासी भी गजब ढा देने में कुछ उठा नहीं रखता था। लाल पगड़ी को देखते ही गाँवों में सनसनी फैल जाती थी। वे घरों से बाहर निकलने की हिम्मत नहीं कर सकते थे। सरकारी अमलों ने देहातों में काफी जुल्म किया है। और डरपोक बनाने की कोशिश की है। अखाड़े तक बन्द कर दिये गये। व्यायाम शरीर के लिए कितना उपयोगी और लाभप्रद है लेकिन अँगरेजों ने साम्राज्यवाद की रक्षा करने के लिए इसे भी बन्द करा दिया। भारत के नौजवानों पर कड़ी निगाह रखना शुरू कर दिया। तन्दुरुस्त और ताकतवर युवकों को देशद्रोही करार देकर जेलों में बन्द कर दिया जाता था। कोई मुँह नहीं खोल सकता था। अभी तो स्वराज्य की मंजिल का कहीं पता ही नहीं था। नागरिकता के अधिकार छीन लिये गये थे। गाँवों की पंचायतें छिन्न-भिन्न करके सरकारी गुलामों के हाथों में उनका सूत्र दे दिया गया। लाठी लेकर चलना अपराध गिना जाने लगा था। कितना भयानक अपमान भारतवासियों का किया जाने लगा था।

विदेशों की बातें छोड़िए। वहाँ तो हिन्दुस्तानियों का कुछ मूल्य ही नहीं—कुली गिने जाते थे। गुलामों की तरह काम लिया जाता था। पग पग पर अपमान किया जाता था। मनुष्य का स्वाभिमान क्या है अपनापन? क्या है—सबको अँगरेजों ने छीन लिया।

गांधी का उदय हुआ। उन्होंने पहला मोर्चा दक्षिण आफ्रिका में लिया। अपने देश से हजारों मील की दूरी पर अँगरेजों से जंग छेड़ दी और कहा कि हम हिन्दुस्तानी भी मनुष्य हैं। मनुष्य की तरह रहने का पूरा हक हमें ईश्वर से प्राप्त है। तुम कौन हो—हमारे जन्मसिद्ध अधिकार को छीननेवाले? अँगरेजों का क्रोध उबल गया। गांधी जी को बुरा-भला कहने लगे और अपमान करने लगे।

लेकिन गांधीजी हार माननेवाले नहीं थे। अपने देश-भाइयों को समझाया और कहा कि सत्य के लिए और अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए यदि सड़-सड़कर जेलों में मरना पड़े तो कभी घबड़ाना नहीं। गोलियों को सीने पर सहो। हमारा हथियार सत्य और अहिंसा का होगा। हमको आततायी साम्राज्यवादी अँगरेज मार डालें, तब भी उनके ऊपर हमें क्रोध नहीं करना है। हथियार तो कभी भूलकर भी नहीं चलाना है। अहिंसा की [illegible] लिए सबसे श्रेष्ठ लड़ाई [illegible] आपसे आप शर्मिन्दा [illegible] अहिंसा की लड़ाई में उनके [illegible] हथियार निकम्मे हों उनके [illegible]

पर विश्वास करो। मैं कोई कल्पना की बात नहीं करता। इसका परिणाम आपके सामने आवेगा।

लोगों ने गांधी जी की बातों को माना और उनके बताये मार्ग को अपनाया—फिर तो वहाँ के शासकों को लेने के देने पड़ गये। अहिंसा के सामने नतमस्तक होकर उन्हें समझौता करना पड़ा। मनुष्य का अधिकार माना और महसूस किया जिस तरह हमको जिन्दा रहने का अधिकार है, उसी तरह हिन्दुस्तानियों को भी है। मि० गांधी की बात सत्य है। आप दक्षिण अफ्रिका का सत्याग्रह का इतिहास पढ़िए और देखिए गांधीजी ने वहाँ क्या अद्भुत काम किया है और हिन्दुस्तान का माथा कितना उज्ज्वल कर दिया।

हिन्दुस्तान वापस आने पर गांधी जी ने देखा। हमारे देश-बन्धुओं की हालत तो यहाँ विदेशों से भी खराब है। लोगों में हिम्मत की कमी थी। सारे मुल्क का दौरा किया। हिन्दुस्तान की सच्ची हकीकत जानने की कोशिश की। फिर देश को जगाने की कोशिश की। एक नये युग का निर्माण करना शुरू किया। इतनी बड़ी ब्रिटिश सल्तनत को हिन्दुस्तान से निकालने का काम गांधी जी ने अपने अनोखे ढंग से शुरू किया। लोग जेलों से घबड़ाते थे, वहाँ जाने में अपना घोर अपमान समझते थे; संगीनों को देखकर प्राण सूख जाते थे; एक मामूली सिपाही को देखकर भयभीत हो जाते थे। ऐसी हालत में गांधी जी ने देश को आह्वान किया। भाइयो, मैं तुम्हें एक अनोखा और सच्चा हथियार बता रहा हूँ। केवल बता ही नहीं रहा हूँ, मैंने स्वयं उसका प्रयोग करके देखा है। यहाँ भी आपके साथ कदम ब कदम चलकर उस हथियार से अँगरेजों की संगीनों का मुकाबला करूँगा। आप सब हमारे साथ चलिए। आप गुलामी से आजादी की साँस लेंगे। हिन्दुस्तान सुखी होगा। आपके बाल-बच्चे स्वतन्त्रता का सच्चा सुख उठावेंगे। कीड़ों की तरह जिन्दा रहने में क्या फायदा है? यदि जिन्दा रहना है तो मनुष्य की तरह रहो। गुलामी के बन्धन से मुक्त हो।

हिन्दुस्तान ने एक कंठ से गांधी की आवाज को सुना। और महसूस किया कि यह कोई महान् व्यक्ति है। सचमुच हमें गुलामी से मुक्त कराने के लिए आया है। सदियों की गुलामी से मुक्त होंगे। गांधीजी ने कहा—हर तरह के अन्याय और जुल्म का प्रतिकार अहिंसक ढंग से करना है। यदि हमारी माँग के लिए हम पर गोलियाँ बरसाई जावें, मशीनगन की वर्षा हो, [illegible] गिराये जावें, फाँसी पर लट[illegible] में बन्द किया [illegible] अत्याचारियों के प्रति हम हाथ न उठावें, वे जितना भी जुल्म करना चाहें, कर लें। शरीर का नाश हो जावेगा। लेकिन आत्मा अमर है। घबराना नहीं। मेरा मार्ग सही और सच्चा है।

गांधीजी के मार्ग पर देश चला। धीरे धीरे आगे बढ़ा। जो बच्चे अपनी मा की गोदी छोड़कर गाँव के बाहर जाना पसन्द नहीं करते थे वे ही जेलों को भरने लगे। स्त्रियाँ पर्दे से निकलकर जेलों में जाने लगीं। सारे देश के जेलखाने भर गये, रखने को जगह नहीं। जेल जाना, फाँसी पर चढ़ना और सीने पर गोलियाँ खाना सबसे बड़ी इज्जत की चीज बन गई। देश में एक नई चेतना पैदा हो गई—बच्चे बच्चे में स्वदेशाभिमान जाग गया। राष्ट्रीयता की एक नई लहर उठी और चारों तरफ दौड़ गई। देश ने मरना सीखा और आगे बढ़ना। गांधीजी ने अँगरेजों से यहाँ कई जंग छेड़े और हर जंग में देश आगे बढ़ा।

शासकों ने सोचा यह नंगा फकीर कैसा है! इसका जादू कितना कारगर है! लोगों के दिलों पर इसका कैसा प्रभाव है! मरना जानता है, मारना नहीं। मरने ही में तो खूबी है। बड़ी कला है। हिम्मत की सबसे अधिक परख है। बलवान् ही मरना जानता है। सरकार के बड़े बड़े हथियार निकम्मे होने लगे और यह स्वीकार किया कि हिन्दुस्तान की आजादी की माँग सही है। इन्हें कुचला नहीं जा सकता। दबाया नहीं जा सकता। इनकी माँग सत्य है। गांधी सही मार्ग पर हैं।

गांधी जी ने देश को सत्य और अहिंसा का आला दरजे का हथियार दिया। इस हथियार से कभी मनुष्य की हार होती ही नहीं। एक छोटा बच्चा भी इस अहिंसक लड़ाई में देश की आजादी के लिए पूरा हिस्सा ले सकता है। गांधीजी के अहिंसक युद्ध में बच्चों ने कम हिस्सा नहीं लिया! डर की सारी भावनाएँ काफूर हो गईं। खुशी खुशी जेल जाना और पुलिस की लाठियों को सहना सीखा।

देश की माँ-बहनों को भी गांधी जी ने खुद [illegible] बढ़ाया। जो बहने कभी पर्दे [illegible] मान समझती थीं [illegible] रह करके जेल [illegible] मुकाबिला [illegible] का नारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लीगी मंत्रिमंडल के काले कारनामे

बंगाल के मन्त्रिमण्डल में अविश्वास !

लेखक, श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा (पत्रकार)

कलकत्ते में १६ अगस्त को जो नर-संहार हुआ है, उसकी जिम्दारी लेने से लीगी मंत्रिमंडल दूर भाग रहा है। परन्तु लीगी मंत्रिमंडल के पिछले और वर्तमान कारनामों को सामने रखकर लेखक ने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि कलकत्ते का यह दंगा वर्तमान मंत्रिमंडल की देन है उसमें बंगाल के गवर्नर भी कम दोषी नहीं।

मुस्लिम लीग के सर्वस्व मि० जिन्ना

सिन्ध के बाद पाकिस्तान का दूसरा बड़ा प्रान्त बंगाल है। यहाँ सिन्ध की भाँति वैधानिक अड़चन तो नहीं है फिर भी यहाँ के गवर्नर महोदय या तो स्वयं मुस्लिम लीगी मन्त्रिमण्डल के हाथ की कठपुतली हैं या इनमें यह क्षमता ही नहीं कि वहाँ की परिस्थिति को सँभाल सकें। गत १६ अगस्त को कलकत्ते में जो वीभत्स प्रदर्शन वहाँ के लीगी मन्त्रिमण्डल ने किया है, उससे इस बारे में कोई भ्रम रह ही नहीं जाता कि उस तमाम अराजकता की जड़ में वहाँ के मन्त्रिमण्डल की सक्रिय योजना थी और उसे अराजकता का उत्तरदायित्व वहाँ के शासन-संचालकों और गवर्नर पर है।

* * *

गत २० सितम्बर को कांग्रेस और विरोधी दल की ओर से असेम्बली में जो अविश्वास का प्रस्ताव पेश किया गया था उसमें बंगाल के लीगी मन्त्रिमण्डल को विजय तो मिल गई है पर यदि जनमत देखा जावे और पद्धति के आधार पर वहाँ की जनता से इस प्रस्ताव की अनुमति माँगी जावे तो निःसन्देह, वहाँ की समस्त जनता क्या हिन्दू क्या मुसलमान, एक स्वर से इसका उत्तरदायित्व वर्तमान मन्त्रिमण्डल पर ही आरोपित करेगी। १९४३ में नाजिमुद्दीन मन्त्रिमण्डल ने बंगाल की जनता को अन्न बिना मार डाला था। उस काल का उत्तरदायित्व सिवा उस मन्त्रिमण्डल के निकम्मेपन के और किसी पर हो ही नहीं सकता। उन दिनों सुहरावर्दी साहब सप्लाई मिनिस्टर थे और बंगाल का नामी व्यापारी 'इस्फहानी' उन दिनों सप्लाई एजेंट के रूप में सरकार को अनाज सप्लाई करता था। उन दोनों व्यक्तियों के गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार से वहाँ की जनता कीड़ों-मकोड़ों की भाँति मरी थी। अनजान सीधी-सादी जनता को, जंगी दिवस की खुशी में, दुबारा सुहरावर्दी ने अपने शासन का अभिशाप दिया है।

* * *

यह तो मालूम ही था कि अविश्वास का प्रस्ताव बंगाल असेम्बली में कभी सफल नहीं हो सकता, क्योंकि इस हत्याकाण्ड के पहले कई ऐसी घटनाएँ हुईं जिनसे परिस्थिति में काफी परिवर्तन आ गया है। यूरोपियन दल के नेता श्री मारगन ने निरपेक्ष होकर इस मामले में वोट देने से इनकार कर दिया। वास्तव में इस यूरोपियन दल की क्या नीति है, यह समझना कुछ कठिन है। सिन्ध के प्रतिक्रियावादी मन्त्रिमण्डल को बचाने के लिए तो वहाँ के दल ने मुस्लिम लीगी मन्त्रिमण्डल का साथ देना ही उचित समझा था। इसके विपरीत बंगाल में यूरोपियन दल ने उसी प्रतिक्रियावादी मन्त्रिमण्डल की आलोचना तक की है पर जहाँ उनकी ईमानदारी में शक करने का प्रश्न उठता है वहाँ अपना मत देने से अच्छा नपुंसक बन जाना ही पसन्द करते हैं। इस दल के पास अपने इस प्रस्ताव या व्यवहार का क्या जवाब है? क्या सुहरावर्दी साहब के वक्तव्य से वहाँ का शिक्षित यूरोपियन दल सन्तुष्ट है? क्या वास्तव में जो कुछ भी आरोप सुहरावर्दी के ऊपर बंगाल में लगाये गये हैं, उनमें वहाँ के यूरोपियन दल का विश्वास नहीं है? जब कभी कोई प्रतिक्रियावादी शक्ति वहाँ की शासन-व्यवस्था कायम रखना चाहती है तभी इस यूरोपियन दल का पसंगा प्रयोग में लाया जाता है।

* * *

यूरोपियन दल के नेता श्री मारगन ने अपने दल की विचार-धारा के संरक्षण में जो वक्तव्य दिया है उससे यह बात साफ हो जाती है कि वह वर्तमान दोषारोपण में विश्वास नहीं करते। आपने यूरोपियन दल का मत प्रकट करते हुए कहा है कि जब तक कमीशन की रिपोर्ट न आ जावे तब तक बंगाल-मन्त्रिमण्डल के प्रति अविश्वास का प्रस्ताव रखना मन्त्रिमण्डल के साथ अन्याय करना है। सच तो यह है [illegible] मण्डल के विरुद्ध [illegible] नफाखोर, चोर बाजार और बंगाल की जनता का शोषण करनेवाला यूरोपियन दल ही है। बंगाल के भूतपूर्व गवर्नर पर रिश्वत का मुकदमा चलने की खबर थी; बंगाल के चावल सम्बन्धी और अनेक अभियोगों के विषय में जो बंगाल के काल के समय वहाँ के गवर्नर के खिलाफ केन्द्रीय असेम्बली में पूछा गया था—उससे साफ पता चलता है कि वहाँ का यूरोपियन दल किस विचारधारा का पोषक है। वह दल यह जानता है कि प्रगतिशील शक्तियों के साथ उसका टिकना असंभव होगा। इसी कारण इस दल को मुस्लिम लीग के विरुद्ध बंगाल में वोट देने में हिचकिचाहट मालूम पड़ी।

* * *

दूसरी ओर फजलुलहक साहब को लीजिए। बहुत से लोग यह समझते थे कि मुस्लिम लीग मंत्रिमंडल के विरुद्ध संयुक्त मंत्रिमंडल के नेता सिवा फजलुलहक के और कोई नहीं हो सकता परन्तु पाँच साल के बाद आप मुस्लिम लीग में फिर शामिल कर लिये गये हैं। इसमें संदेह नहीं कि बंगाल-मुस्लिम लीग ने इस योजना को केवल इसलिए पसन्द किया कि असेम्बली की शक्ति में उसे कुछ सन्देह होने लगा था। इस नई परिस्थिति से अवसरवादी फजलुलहक ने वहाँ की प्रगतिशील शक्ति की पीठ में छुरा भोंक दिया है। परिणाम यह हुआ है कि वहाँ की लीगी मंत्रिमंडल को अनियंत्रित रूप से अपने ढंग पर अटल रहने का नया साहस और नई शक्ति दोनों ही मिल गई है।

* * *

बंगाल के कम्युनिस्ट सदस्यों ने यूरोपियन दल का अनुसरण किया है। भारतीय राजनीति में कम्युनिस्ट पार्टी वस्तुतः एक कलङ्क है। अब इसमें सन्देह नहीं किया जा सकता कि 'जंगी दिन' की आयोजना में कम्युनिस्ट पार्टी का हाथ रहा होगा। हाथी की दुम की भाँति ये लोग पाँचों सवारों के साथ हमेशा दिल्ली को ही जाना चाहते हैं। कम्युनिस्ट पार्टी के पास अपने इस प्रतिगामी व्यवहार का क्या उत्तर हो सकता है? क्या कम्युनिस्ट पार्टी कांग्रेस के द्वारा लगाये गये आरोपों में अविश्वास करती है? क्या उसे विश्वास नहीं कि सुहरावर्दी के कार्यों के पीछे एक नियन्त्रित धारणा थी? क्या वह इसमें गवर्नमेंट को जिम्मेदार बनाने को तैयार नहीं हैं?

* * *

जहाँ तक विश्वसनीय समाचार द्वारा ज्ञात [illegible] उससे पता चलता है कि [illegible] जनता ही इस व्यवहार [illegible] यह कहना कि राष्ट्रीय [illegible] कम्युनिस्ट पार्टी ने लीग [illegible] गलत है। यदि ऐसी

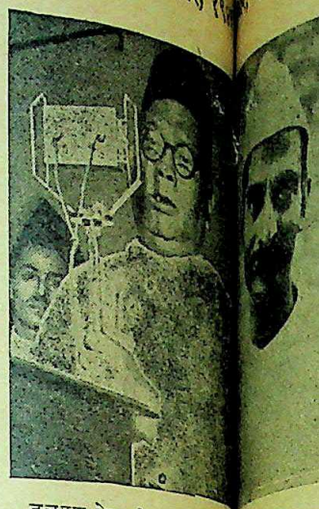

ढुलमुल नेता मि० ए० के० [illegible] धारणाओं पर राष्ट्रीय एकता [illegible] की जाती है तो इस धारणा का [illegible] महत्त्व नहीं है और न ऐसी एकता [illegible] सकती है। लीग की प्रतिगामी [illegible] का समर्थन करके उसके अमानुषिक [illegible] हारों के प्रति अपनी मूक श्रद्धा [illegible] कम्युनिस्ट दल ने अपना वीभत्स [illegible] दिया है।

अन्त में सर जान बरो को [illegible] छोड़ देना ठीक न होगा। [illegible] प्रगतिशील विचार-धारा के पोषक [illegible] बरो साहब इँगलैंड के सभ्य [illegible] आपके कानों पर अब भी जूँ [illegible] रेंगी। यदि सिंध के गवर्नर सर [illegible] सतर्कता के लिए प्रसिद्ध हैं तो [illegible] गवर्नर महोदय एक कठपुतली [illegible] सुहरावर्दी के हाथ में नाच रहे हैं। [illegible] सर जान बरो यह समझते हैं कि [illegible] मन्त्रिमण्डल के बंगाल का शासन [illegible] असंभव होगा? जिस लापरवाही [illegible] सुहरावर्दी साहब ने असेम्बली में [illegible] जिम्मेदारी से किनारा कसा है उससे [illegible] इतने अयोग्य साबित होते हैं कि [illegible] किसी रूप में मंत्रिमंडल में न रहें।

'स्टेट्समैन' के संवाद द्वारा [illegible] है और साथ ही जैसा कि फेडरल [illegible] प्रधान विचारपति श्री स्पेन्स ने [illegible] में लीग मंत्रिमंडल को चेतावनी [illegible] उससे भी लीग के अनैतिक [illegible] का पता चलता है। लीग में [illegible] जाने ही से वहाँ से अफसरों, [illegible] साधारण कर्मचारियों द्वारा उस [illegible] का सही और ठीक पता लग [illegible]

परन्तु जैसी परम्परा चली [illegible] उसके अनुसार किसी भी शक्ति [illegible] नौकरशाही का दिमाग नहीं ठीक [illegible] सकता। केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार [illegible] पर इस राष्ट्रीय सरकार की [illegible] सीमित है कि वह समस्त देश [illegible] को सँभाल ही नहीं सकती। [illegible] में जब तक इन प्रांतों के [illegible] प्रगतिशील शक्तियों का साथ [illegible] तब तक इस अराजकता का [illegible] कठिन है।

स्वदेशी वस्तुओं का महत्त्व गांधीजी ने हमें सिखाया। देश की बनी चीजों का कितना महत्त्व है, यह हमने गांधीजी से सीखा। गाँवों में कितनी शक्ति है, इसका भी महत्त्व गांधीजी ने ही देश के सामने रक्खा। हर पहलू पर गांधीजी देश का ध्यान खींच रहे हैं। राष्ट्रभाषा, अस्पृश्यता-निर्वाण, नशाबन्दी, स्वदेशी का अभिमान, हिन्दू-मुस्लिम-एकता, गाँवों का संगठन और चर्खे का महत्त्व गांधी जी बराबर बताकर देश की उन्नति में सबका हाथ बँटा रहे हैं। देश के हर अंग पर गांधीजी ने प्रकाश डाला है।

गांधीजी की रहनुमाई में देश बहुत आगे बढ़ा है और हम आज देश की मुकम्मिल आजादी हासिल कर लेने के दरवाजे पर पहुँच गये हैं। अगर गांधीजी अपने ७८वें [illegible] हिन्दुस्तान [illegible] कर रहा है [illegible] और दे[illegible] हमारा [illegible]

हास्य-कौतुक

हँसते-हँसते लोटपोट हो [illegible] आकांक्षा करनेवालों के लिए [illegible] नुकूल सामग्री मिलेगी, साथ ही [illegible] चरित्र का भी सुन्दर चित्र [illegible] पायेंगे। मूल्य ।।)

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन [illegible] लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में प्रसिद्ध बारह बुरे शासक

देश का हर एक नर-नारी इनसे परिचित है

लेखक, डाक्टर सच्चिदानन्द सिनहा

भारत की केन्द्रीय सरकार चाहे भारत के सभी हितों का प्रतिनिधित्व न करती हो, परन्तु वह भारत के ज्यादा से ज्यादा लोगों का प्रतिनिधित्व अवश्य करती है। इस लेख में डाक्टर सिनहा उन बारह बुरे (?) आदमियों पर अपने विचार प्रकट करते हैं, जो आज भारत पर शासन कर रहे हैं। डाक्टर सिनहा ने यह लेख खास तौर पर लिखा है।

पं० जवाहरलाल नेहरू

कि उनमें बहुमत वकीलों का है। पं० नेहरू, सरदार पटेल, मि० आसफ अली, श्री शरतचन्द्र बोस, सैयदअली जहीर लन्दन की किसी न किसी "इन" के बैरिस्टर हैं। डा० राजेन्द्रप्रसाद श्री राजगोपालाचारी, डा० जान मथाई कानूनी ग्रेजुएट हैं और सबों ने बतौर एडवोकेट "प्रैक्टिस" की है। डा० जान मथाई ने भी १९१० से १४ तक कोर्ट-रूमों की खाक छानी है। इस तरह १२ में से ८—यानी पूरे दो-तिहाई वकील हैं और इस "फर्ज अदा करने के मैदान" में आने के पहले इनमें से आधों की प्रैक्टिस खूब चलती थी। बाकी तीन में शफाअत अहमद बड़े ही विद्वान् हैं। आप एक बहुत ही बड़े इतिहासकार हैं

श्री आसफ अली

श्री शरच्चन्द्र बोस

और बड़े ही चुस्त जनता के सेवक। सरदार बलदेवसिंह दक्षिणी अफ्रीका में भारत के एक बहुत ही सफल प्रतिनिधि थे। आप बहुत ही प्रसिद्ध व्यापारी और शासक थे—आप पंजाब मन्त्रि-मंडल में थे। हरिजनों के प्रतिनिधि श्री जगजीवनराम पटना यूनिवर्सिटी के विज्ञान के ग्रेजुएट हैं—बड़े सफल पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी और भक्त कांग्रेसी। डा० जान मथाई ने जब से कानून को तिलांजलि दी तब से बड़े अर्थशास्त्री और व्यवसायी शासक होने का परिचय दिया। अन्तःकालीन सरकार के खजाने का भार उन्हें सौंपना बहुत ही उपयुक्त है।

शिक्षा और पेशे के बाद अब आप इन सबकी पब्लिक सेवा पर विचार करें। इनमें से तीन—पं० नेहरू, सरदार पटेल और डा० राजेन्द्रप्रसाद कांग्रेस के प्रधान रह चुके हैं। उनमें से किसी ने भी पहले कभी सूबे या केन्द्रीय धारा-सभा के लिए चुने जाने की कोशिश नहीं की। अतएव २ सितम्बर १९४६ को पद ग्रहण करते समय उन्होंने पहले-पहल बादशाह की वफादारी की कसम खाई। कांग्रेस मेम्बरों में से सिर्फ श्री राजगोपालाचारी जो मद्रास के प्रधान मंत्री थे इसके पहले बतौर शासक अनुभव हासिल कर चुके हैं। बिहार के भूतपूर्व गवर्नर सर टामस रदर फोर्ड ने, जो पहले मद्रास की सिविल सर्विस में थे और जो श्री राजगोपालाचारी के शासन-अनुभव की बाबत व्यक्तिगत जानकारी रखते थे, मुझसे कई बार उनकी तारीफ की है। सरदार बलदेवसिंह को फौजी-विभाग सौंप कर बहुत ही उचित कार्य किया गया है। उनके पद ग्रहण करने पर जंगी लाट ने उन्हें बधाई दी और अपने ब्राडकास्ट में उन्होंने अंतःकालीन सरकार में भारतीय फौजी मेम्बर के नीचे काम करने की इच्छा प्रकट की।

सैयद अली जहीर लखनऊ चीफ कोर्ट के भूतपूर्व चीफ जज सर वजीरहसन के पुत्र हैं, जिनका बुढ़ापा इस समय भी जवानी-पूर्ण है। जहीर साहब की वकालत लखनऊ चीफ कोर्ट में बहुत ही चलती थी। आप शियाओं के नेता हैं। पद पाने पर आपने कहा कि "मुसलमानों के एक बड़े भाग के साथ उचित न्याय किया गया है।" श्री जगजीवनराम का पद डा० अम्बेदकर के अनुयायियों को बहुत ही कड़ुवा लगा होगा, पर देशभक्त हरिजनों ने इस पर प्रसन्नता प्रकट की है। यह स्वाभाविक है, क्योंकि वे पिछली बार बिहार की कांग्रेस मिनिस्ट्री में एक सफल पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी थे।

मिस्टर आसफ अली अपने जीवन में सदैव राष्ट्रवादी रहे हैं। मैं उनसे करीब ३५ साल पहले अपने इलाहाबाद के मकान में मिला था, जब वे मेरे यहाँ एक मेहमान से मिलने आये हुए थे। उस समय भी वे बड़े ही सुशील, तीव्र और चतुर थे। वे विदेशी पोशाक—उम्दा कटी हुई—पहने हुए थे और एक आँखवाला चश्मा लटकाये हुए थे। उस समय उनकी उम्र २० साल से ज्यादा न थी। उसके बाद उन्होंने बहुत-सी अच्छी बातें अपने और देश के लिए की हैं। बैरिस्टरी पास की, दिल्ली में शान के साथ वकालत की, अरुणा के साथ शादी की जो अब राजनैतिक कार्य के कारण कई साल से उनसे कोसों दूर रहती हैं और कांग्रेस सत्याग्रह के आन्दोलन में कई बार जेल जा चुकी हैं। मि० आसफ अली केन्द्रीय धारा-सभा की कांग्रेस पार्टी के उपनायक थे और मुस्लिम लीग की आँख के काँटे। केन्द्रीय धारा-सभा के विरोधी दल के नेता, श्री शरतचन्द्र बोस, कलकत्ता हाईकोर्ट के एक बड़े बैरिस्टर थे। वे बहुत ही प्रतिभाशाली कटक खानदान के हैं। कटक उड़ीसा की ऐतिहासिक राजधानी है। शरद बाबू के पिता तीन पीढ़ियों

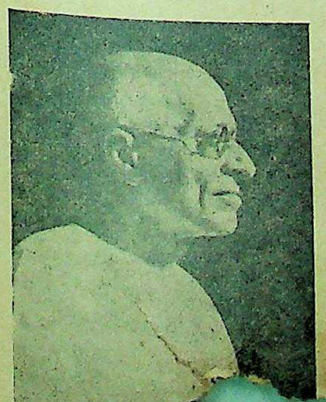

श्री राजगोपालाचारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरदार वल्लभ भाई पटेल

सैयद अली जहीर

सर शफात अहमद

श्रीजगजीवन राम

से कटक में बैरिस्टर थे। शरद बाबू के सबसे प्रसिद्ध भाई सुभाष बाबू हैं जो आज दुनिया में आजाद हिन्द फौज के "नेता जी" के नाम से मशहूर हैं। आजाद हिन्द फौज के संगठनकर्ता वही थे। शरद बाबू पिछले साल सितम्बर में, चार साल के बाद, रिहा किये गये थे।

तीन कांग्रेसी प्रधानों में से मैं सरदार पटेल से, जिन्हें लोग खून और लोहे का बना हुआ करार देते हैं, खुद वाकिफ नहीं हूँ। फिर भी गो कि मैं उन्हें प्रत्यक्ष नहीं जानता, उनकी बड़ी तारीफ सुनी है—खासतौर पर उनके चरित्र और उनकी भाषा के तीखेपन की, जिसे वे अपने चहकते हुए विरोधी पर अहिंसात्मक वार करने के लिए इस्तेमाल करते हैं। गृह-विभाग के लिए ऐसे ही मेम्बर की आवश्यकता भी थी, क्योंकि समय बड़ा तूफानी और जोरदारी का है। डा० राजेन्द्रप्रसाद को जब से वे सन् १९०२ में कलकत्ता विश्वविद्यालय के सफल परीक्षार्थियों में से प्रथम हुए, अच्छी तरह जानता हूँ। मेरे विचार से वे बड़े ही अहिंसात्मक और सर्वस्व त्यागी सार्वजनिक कार्य-कर्ता हैं। मैंने गुस्सा तो उनके पास फटकते हुए भी नहीं देखा। बड़े चतुर, विनीत और शान्त हैं। आप करीब २५ साल से सर्व-साधारण के हित का कार्य करने में लगे हुए हैं। सन् १९३४ के भूचाल-पीड़ितों की जो सेवा आपने की उसकी प्रशंसा करना जिह्वा के मान की बात नहीं। महात्मा गांधी के तो आप बड़े ही भक्त हैं। हाल में ही उन्होंने एक पुस्तक खंड भारत लिखी है जो सोने से भी ज्यादा मूल्यवान् है। इस पुस्तक ने इस विषय पर तमाम पुस्तकों को मात कर दिया है और उसकी कद्र अभी बहुत समय तक बनी रहेगी।

पं० जवाहरलाल नेहरू के विषय में मैं जो भी लिखूँ थोड़ा है। मैं उनसे करीब ५० वर्ष पहले शुरू शुरू में मिला था। चूँकि अब वे अगले साल अखिल भारत वैज्ञानिक सभा पटना के सभापति होने जा रहे हैं, मैं वैज्ञानिक ढंग से कहूँगा कि वे मुझे ४९ साल ११ महीने पहले मिले थे। उस समय वे ७ वर्ष के भी न थे। यह अक्तूबर १८९६ की बात है। उनकी जन्मतिथि दिसम्बर १८८९ है। जिन्दा लोगों में से इसके पहले शायद उन्हें पं० मदनमोहन मालवीय ने देखा [illegible] उस समय जवाहरलाल [illegible] थे—खुश औ[illegible] नहीं। दूस[illegible] लेते [illegible] इलाहा[illegible] चगेरा [illegible]

और उनके पिता पं० मोतीलाल जी से मेरी दोस्ती हो गई जो तमाम जीवन भर गहरी और प्रेमपूर्ण रही। १८९७ के वसंत में हम दोनों के खानदान काश्मीर देखने गये। हम लोग रावलपिंडी से तरमलाँ तक ताँगे में गये, फिर वहाँ से श्रीनगर को नाव में। रास्ते में जवाहरलाल जी ने हँसी-मजाक से हम सबों को बहुत ही खुश रक्खा। मैं इलाहाबाद में उनके पिता के पास रहने के कारण उनके घर रोज आता-जाता था और जवाहरलाल की तमाम बातों को देखा करता था—खास तौर पर इँगलैंड जाने के पहले उनकी शिक्षा को। जब वे इँगलैंड से वापस आकर इलाहाबाद हाईकोर्ट में वकालत करने लगे तो उनके पिता इस बात की बड़ी फिक्र में थे कि उनकी वकालत बहुत ही अच्छी हो जाय। उस समय उनका और मेरा एक टेढ़े-मेढ़े तालुकदारी के मामले में परतावगढ़ की कचहरी में सामना हुआ। जवाहरलाल जी अपने पिता की सदारत में थे। उन्होंने मामले में बहस करते हुए ऐसी दलीलें पेश कीं कि बाद में मैंने अपनी बहस के दौरान में उनकी प्रशंसा की। मुझे इस बात का यकीन है कि अगर वे वकालत करते तो बहुत सफल होते।

लेकिन होना कुछ और ही था। जवाहरलाल जी ने अपने प्रारम्भिक जीवन में ही जनता की सेवा और राजनैतिक कार्य को अपनाया, जिसमें उन्होंने आज बड़ा नाम कर लिया है। भारत में आज उनका गांधी जी के बाद दूसरा नम्बर है। उनका जनता की सेवा का कार्य बहुत ही सरगर्म रहा है। भारत-सरकार के सूचना-विभाग के अनुसार सन् १९४२ की उनकी जेल-यात्रा नवीं थी। वे कितने काल तक जेल में रहे, लिखना व्यर्थ है; मगर उन्होंने उस सब का सामना बड़ी बहादुरी से किया और कुछ अन्य लोगों की तरह उनका स्वास्थ्य भी इस सर्वसाधारण की सेवा में बरबाद हुआ। भिन्न भिन्न कार्यों में लगे होने पर भी उन्होंने आध्यात्मिक कार्य नहीं छोड़ा। वे एक वैज्ञानिक पण्डित भी हैं। उनकी तमाम पुस्तकों में से सबसे प्रसिद्ध उनकी "आत्म-कथा" और उससे बढ़कर भी, हाल ही में प्रकाशित—'भारत की खोज' है। अब वे अपने जीवन के ५७वें साल में गवर्नर-जनरल की कार्यकारिणी सभा के उपसभापति हुए हैं मगर वास्तव में वे सर्व-साधारण की सरकार [illegible] प्रथम मंत्री हुए हैं जो बात [illegible] के शुरू से [illegible] जाय [illegible]

जन-साधारण की सरकार की स्थापना हुई है, जिससे सबको बहुत ही खुशी और उत्साह हासिल हुआ है—सिर्फ भारतवर्ष में ही नहीं, बल्कि तमाम दुनिया भर में। परन्तु मुस्लिम लीग को इससे खुशी नहीं हुई। फिर भी ७ सितम्बर की ब्राडकास्ट में पंडित जी ने मुस्लिम लीग से कांग्रेस का साथ देने की अर्ज की है। उन्होंने दिली दोस्ती के खयाल से अपना [illegible] सामने फैलाया है और उनके [illegible] शुभ कामना है। इसलिए अभी [illegible] है—गो कि संभावना बहुत ही [illegible] कि मुस्लिम लीग पंडित नेहरू [illegible] सचाई की असलियत को समझ [illegible] बात को मान ले और फिर भारत [illegible] के अगुआ मुल्कों में से एक हो [illegible]

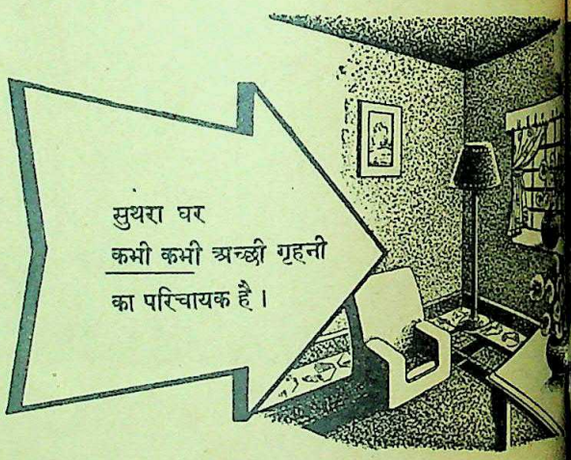
सुथरा घर
कभी कभी अच्छी गृहनी
का परिचायक है।

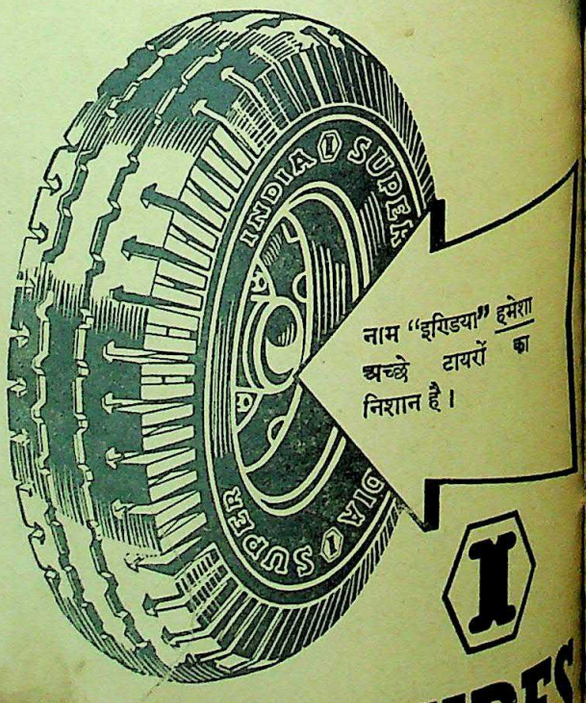

नाम "इण्डिया" हमेशा
अच्छे टायरों का
निशान है।

I

INDIA TYRES

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी दूर !

लेखक, श्री विश्वनाथ राय बी० ए०, एल-एल० बी०

[illegible] के आन्दोलन से देश में बड़े परिवर्तन की आशा थी। परन्तु आज भी [illegible] की दशा कुछ उन्नत नहीं हुई है। कहानी देशभक्तों के कष्टों का सच्चा चित्र बतलाती है।

[illegible] हो गई, तब भी अनेकों [illegible] राजनीतिक बन्दी कारागार [illegible] कई जेलों में भूख-हड़ताल [illegible] फतहगढ़ जेल की अँधेरी [illegible] की हालत चिन्ताजनक [illegible] और सीने में दर्द होने [illegible] की रात में अनशन करने- [illegible] ओढ़ने के लिए काफी कम्बल

* *

[illegible] बजा। नम्बरदारों का [illegible] हुआ। "जँगला, ताला, [illegible] के बदले वार्डरों के जूते [illegible] कुंजियों के गुच्छे झनझनाने [illegible] की पीड़ा के बाद आनन्द [illegible] आ गई। तब तक कोठरी [illegible] वार्डर ने एक डंडा जमाया। [illegible] लोहे का दरवाजा "ठक" [illegible] गया। तनहाई में भूख- [illegible] पड़ा।

आनन्द ने कहा—ऐसी हालत में कहाँ जाऊँ ?

[illegible] जमादार ने कहा।

[illegible] बन्दी ने पूछा—"कहाँ ?"

[illegible]—"फाटक पर।"

[illegible] ने धीमी आवाज से कहा [illegible] "जैसे हो वैसे चलो" [illegible] स्वर में जवाब दिया। [illegible] के साथ कहा—"नहीं जा [illegible] से बढ़कर यहाँ और [illegible] दूसरी है ?"

[illegible] एक वार्डर और आया। [illegible] चिल्ला उठा "क्यों देर हो [illegible] जमादार ने ओवरकोट [illegible] निकाला। ताले खोले। नम्बर- [illegible] ठेला। "खट, खट, धड़" [illegible] बन्दी का सिर ठनक गया। [illegible] "बड़ी बदबू है।" [illegible] में कैसे जाऊँ ?" यह कई [illegible] सिपाही की आज्ञा पा [illegible] आनन्द को जबरदस्ती तथा- [illegible] पर बैठा दिया। कमजोरी [illegible] झुक गया। यह कौन [illegible] के सिवा कोई नहीं

था। उसे पानी भी नहीं मिला। यहीं अनशनकारी दोपहर तक कराहता रहा। एक बजे बड़ी तोंदवाले हेड जेलर ने पान चबाते हुए कहा "हालत खराब होने की वजह से सरकार ने आपको रिहा किया।"

आनन्द ने कहा—"ऐसी हालत में कहाँ जाऊँ ?"

जेलर ने कहा—"सदर अस्पताल में।"

मुक्त बन्दी किसी तरह वहाँ पहुँचा दिया, गया। उसे राजनीतिक कार्यकर्ता जान डाक्टर ने सहानुभूति दिखलाई। चारपाई पर पड़े पड़े आनन्द ने किसी दवा से लम्बा अनशन तोड़ा। वमन बन्द हो गया; किन्तु सीने का दर्द रह गया। अब दस दिन बाद शरीर में कुछ बल आया। तब तक किसी कांग्रेसी मित्र ने कुछ देर के लिए अपने घर आने के लिए उन्हें निमन्त्रण दिया। वह उसे अस्वीकार नहीं कर सका। मगर डाक्टर ने कहा कि अभी उसकी हालत अच्छी नहीं है।

आनन्द बाहरी दुनिया देखने की उत्सुकता नहीं रोक सका। डाक्टर की इजाजत बिना बड़े सवेरे वह अस्पताल की चारपाई छोड़ सड़क की तरफ चल पड़ा। उसे एक ही फर्लाङ्ग चलना था।

फाटक से बाहर निकलते ही मोटर का हार्न बजा। कमजोरी के कारण आनन्द जल्दी हट नहीं सका। कार की रफ़्तार धीमी हो गई। ड्राइवर तथा मोटे बाबू ने "गदहा, सूअर" आदि कह उसे गालियाँ सुनाईं। कोई मिल-मालिक स्टेशन जा रहे थे। कुछ सेकंडों की देर उन्हें सह्य नहीं थी। वर्षों बाद कारागार से मुक्त होने पर आनन्द को गालियों का पुरस्कार मिला। उसका दिल मसोस कर रह गया।

खैर, वह आगे बढ़ा। सामने ही किसी मिलिटरी कांट्रैक्टर की आलीशान इमारत मिली। सवेरे की लालिमा से साइनबोर्ड चमक रहा था। लेकिन नीचे दरवाजे के पास ही बोरा के छोटे चिथड़े में लिपटी हुई कोई चीज हिलती हुई दिखाई पड़ी।

आनन्द उसके पास गया। दस-ग्यारह वर्ष का बालक काँप रहा था। उसके दाँत कट कट कर रहे थे। आनन्द के मुँह पर मानसिक वेदना झलक उठी। उसने पूछा—"कहाँ घर है ?" जाड़े के कारण लड़का जवाब नहीं दे सका। फिर पूछने पर उसने सँभलकर अस्पष्ट आवाज से कहा—"बली (बड़ी) दूर।"

फिर सवाल हुआ—"तुम्हारे माँ-बाप कहाँ हैं ?"

"मर गये।"

फिर पूछा गया—"यहाँ क्यों पड़े हो ?"

"घर नहीं है।"

देशभक्त की मानसि[illegible] [illegible] उसके नेत्र सजल हो ग[illegible] "अस्पताल चलो।"

एक और बेचारा !

लेखक, श्री विश्वनाथ वैशम्पायन

बिना धन के संसार में सत्कार्य बहुत कठिन है। देश के सच्चे और त्यागी कार्यकर्ताओं की बिना रुपये-पैसे के कैसी दुर्गति होती है, कहानीकार ने इस कहानी में उस दशा को चित्रित करने का भरसक प्रयत्न किया है।

"इन्कलाब जिन्दाबाद ! मदनमोहन जिन्दाबाद !"

विनय की तराजू हाथ की हाथ में ही रह गई। वह झाँककर दूकान के बाहर देखने लगा। एक जुलूस टिड्डियों के दल-सा आगे बढ़ा चला जा रहा था। आगे बैण्ड, फिर स्वयंसेविकाएँ, उनके चारों ओर वालण्टियरों का एक घेरा—जो नारी की असहायता को अक्षुण्ण रखे हुए है—और उनके पीछे वालंटियरों का दल। इनसबके पीछे एक चार घोड़ों की टमटम, जिस पर सफेद कपड़ों में लिपटा एक कोचवान बुत की तरह बैठा है। उसी के पास एक स्वयंसेवक, आज्ञा की प्रतीक्षा में, कान खड़े किये निश्चल बैठा है। मानो उसके आस-पास जो कुछ हो रहा है या है, उसका उससे कोई सम्बन्ध ही नहीं है। वह तो आदेश के लिए ही जीता है। जब किसी हवेली के सामने कोई हार या माला लिये दिखाई देता है, तब गाड़ी में बैठे वृद्ध नेता, जो शुद्ध 'खद्दर' सिल्क की पोशाक पहने कठोर बने बैठे हैं, इतना ही कहते 'बिगुल' और उनके समाप्त होते न होते बिगुल बज उठता और जुलूस जहाँ का तहाँ रुक जाता। हार पहनानेवाली देवी के लिए जगह कर दी जाती। पहला हार वह नेता महाशय के गले में डालतीं और दूसरा उस व्यक्ति के गले में जो शरीर की हड्डियों पर पतली सी चमड़े की झिल्लीचढ़े होने के कारण

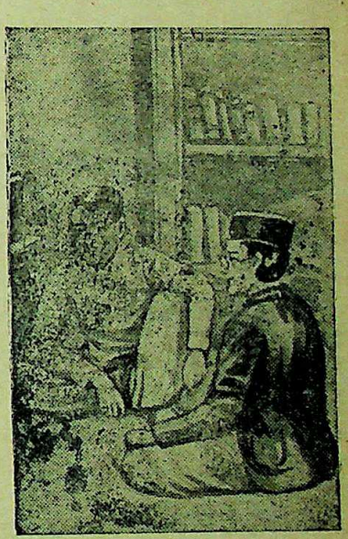

विनय ने तरकारी तौल दी और तराजू एक ओर फेंककर शून्य की ओर देखने लगा।

जीवित मालूस होता है। वह भी एक मोटा खद्दर का कुरता पहने हुए है जो अपना अस्तित्व अलग बता रहा है। वह मानो चीख-चीखकर कह रहा है कि मेरा इन हड्डियों से कोई सम्बन्ध नहीं। मैं जबर्दस्ती इससे सम्बद्ध कर दिया गया हूँ।

हार पहनाने पर नेता महाशय तनिक मुस्करा देते हैं जो उस हार का उपहास करना-सा लगता है। मदनमोहन माला पहनने पर दोनों हाथ जोड़कर इस प्रकार प्रणाम करता है मानो वह एहसान के बोझ से दबा जा रहा है। माला पहनानेवाला अपने बहुत बड़े कर्तव्य की इति समझ भीड़ से बाहर निकल जाता है। उसे अधिक प्रसन्नता इस बात की है कि नेता महाशय से, जो धनी समाज के अगुआ तथा नेताओं और जनता के मान्य हैं, परिचय बढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। [illegible] शहर में जितनी [illegible]क, राजनैतिक [illegible] कुछ न कुछ

एक दो मिनट बाद बालक ने पूछा—"कहाँ ?"

"देखो वहीं।"

बच्चे ने कहा—"बली (बड़ी) दूर...।"

लड़का अधिक नहीं बोल सका। उसके दाँत जोरों से बजने लगे। वह और सिमट गया लेकिन दाँत कड़कड़ाते थे।

आनन्द भी चुप हो गया। उसका चेहरा उदास हो गया। बन्दी जीवन में उसे बाहरी दुनिया की हालत में बहुत बड़े सुधार की उम्मीद थी। वह १९४० तथा १९४२ के क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग लेने से वंचित कर दिया गया था मगर उसे उनसे महान् परिवर्तन की उम्मीद थी। लेकिन जेल से बाहर आते ही वही पराधीनता—वही दरिद्रता—उसके सामने नाचती दीख पड़ी। एक तरफ करोड़पति की ऊँची अट्टालिका दूसरी तरफ जवाहरात की दूकान—उन्हीं के दरवाजे पर जीवित अस्थिपंजर !

उसके मन में प्रश्न उठने लगे—"क्या हिन्दुस्तान की आज़ादी दूर है ? क्या भारतीय राष्ट्र की गरीबी मिटने के दिन दूर हैं ?" आदि आदि। वह उद्विग्न हो उठा किन्तु शिथिल नहीं हुआ।

स्वयं कमजोर होने के कारण वह बालक को उठा कर अस्पताल नहीं ले जा सकता था। उसने सोचा कि अपने मित्र से उसे वहाँ पहुँचाने के लिए कहें।

आनन्द उठा परन्तु उसे बड़ी कमजोरी मालूम हुई। उसके दोस्त का घर नजदीक ही था। वह चल पड़ा मगर पाँव थर-थराने लगे। फिर भी वह आगे बढ़ा। लेकिन मित्र का घर उसे दूर मालूम हुआ।

तब तक एक अँगरेज और एक मेम घोड़े दौड़ाते हुए नजदीक आ गये। हवाखोरी में उनके तगड़े कुत्ते भी घोड़ों के पीछे दौड़ रहे थे। आनन्द सड़क पार नहीं कर सका। साहब को घोड़ा रोकना पड़ा अन्यथा आनन्द को शायद धक्का लग जाता। गोरा बिगड़ गया। देश-सेवक घोड़ों की टापों से तो बच गया लेकिन अँगरेज के हण्टरों से नहीं बच सका। पीठ पर कई हन्टर जम गये।

आनन्द के मुँह से निकल पड़ा—"क्या अभी तक वही गुलामी ? क्या आजादी [illegible] दूर है ?"...उसकी आत्मा [illegible] मारवा[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवश्य हैं। वे जिस कमेटी या समाज के प्रेसिडेण्ट नहीं उसका कुछ भी अस्तित्व नहीं। वे नगर म्युनिसिपल कमेटी के चेयरमैन, आर्यसमाज के मंत्री, अनाथालय के प्रेसिडेण्ट और महिला सेवासदन के सर्वेसर्वा हैं। कई ऐसी संस्थाएँ थीं जिनके प्रेसिडेण्ट होने पर भी उन्हें कभी उनके अधिवेशनों में जाने को समय नहीं मिलता था। ऐसी संस्थाओं के संचालक उनका नाम ही पाकर अपने को धन्य समझते थे। प्रत्यक्ष तो जुलूस में हार और मालाएँ मदनमोहन को पहनाई जा रही थीं और उनका स्वागत हो रहा है पर सत्य इससे दूर था।

धीरे धीरे जुलूस आगे निकल गया। बाजों की आवाज धीरे-धीरे कम हो गई।

विनय ने साँस भरकर कहा—ओह बेचारा!

'वाह यार! वाह! तुम बेचारा किसे कह रहे हो?' एक ग्राहक ने पूछा जो तरकारी लेने आया था।

'अरे भाई गुलाब! इसी मदन को जो इस समय माला पहने भविष्य के सुख-स्वप्नों में बहा चला जा रहा है।'

बेंच पर बैठते हुए गुलाब ने उत्सुकता से पूछा—क्यों? क्यों?

'क्यों क्या! एक दिन मैं भी इसी मार्ग का राही था, इसी हक का दावेदार जो अपने आपको देश के और कांग्रेस के लिए मिटा देना चाहता था। पर मैं निराश हुआ। जानते हो, आज कौन देशभक्त कहला सकता है? वह जो नेताओं के हाथ अपना जीवन सौंप दे, उनका अन्धभक्त बन जाय—अपने को मिटाकर नेताओं को बनावे। उनके हाथ की तलवार या ढाल बन जाय। नेता जब चाहे, जिस तरह चाहे, उसका उपयोग कर सके। हमारा नेता उस व्यक्ति को उतना ही बढ़ने देगा जितना नेता के लिए आवश्यक है। जहाँ वह उसकी इच्छा के विरुद्ध कार्य करने लगा कि समाप्त हुआ। वह इस प्रकार ठुकराया जायगा जैसे रास्ते की धूल। आज की राजनीति के बवंडर इन्हीं नेताओं के चलाये चलते और समाप्त हो जाते हैं। जिन्हें नेता चाहे, जनता के सिर पर चढ़ा सकता है और दूसरे ही क्षण उसे जनता के पैरों तले कुचलवा सकता है।'

पर मैं तो अपने विषय में कह रहा था। हाँ, मैं दो-एक बार नहीं, पाँच बार जेल हो आया हूँ। पाँचवीं बार मैं ७ वर्ष के लिए जेल गया। मूँज बटने से लेकर चक्की, कोल्हू तक से मेरी दोस्ती हो चुकी है। सारे काम मैंने हँसते हँसते किये, यही सोचकर कि मैं देश के लिए कुछ कर रहा हूँ।

इसी प्रकार सोचते सोचते और जेल-यातनाओं को भोगते भोगते मेरी रिहाई के दिन निकट आने लगे। मेरे क्षीण शरीर में रिहाई का आनन्द भर गया। मैं जिन जिन हितैषियों और सम्बन्धियों को छोड़ आया था, उन सभी की स्मृतियाँ स्पष्ट और सजीव होने लगीं। बाहरी दुनिया में और मुझमें केवल एक दिन का अन्तर रह गया। दिन जेल के साथियों से विदा लेते कटा, रात जागते और भविष्य के सुनहले स्वप्नों को देखते कटी। सवेरे ही मैं जेल के फाटक पर बुलाया गया। मैं [illegible] से बाहर निकला [illegible] दरवाजा बन्द [illegible] बार मुझे [illegible] लेते [illegible] चगेरा [illegible] हुआ। पर मैं अधिक देर न ठहर सा क कारण बाहर मेरे स्वागत के लिए खड़े व्यक्तियों के नारों का आकर्षण इस मोह से कहीं आकर्षक था।

आखिर मैं ठीक इसी मदन की तरह खादी की धोती और कुरता पहने जेल के फाटक के बाहर निकला। मैं खो-सा गया। जब सचेत हुआ तो मैंने अपने को मालाओं से लदा कार में बैठा पाया। मेरे पास बैठे ये ही नेता मुस्कुरा रहे थे। बैंड बज रहा था और मैं अपने आपको कृतार्थ समझ रहा था। मेरा भी जुलूस इसी तरह स्थान-स्थान पर ठहरता; लोग गले में मालाएँ पहनाते।

परन्तु सपने की दुनिया चार दिन में समाप्त होने लगी। दावतों और जलसों से छुट्टी मिली। भविष्य का प्रश्न-चिह्न जो अब तक मेरी आँखों के सामने धुँधला था, स्पष्ट होने लगा। देश की राजनीति में मैं अपना स्थान महत्त्वपूर्ण समझने लगा। मैं कांग्रेस का सदस्य बन गया। कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारियों के चुनाव के लिए मैं खड़ा हुआ और निर्विरोध चुन लिया गया। इस बार जितने भी पदाधिकारी चुने गये थे, सभी नवयुवक थे। यह बात पुराने नेताओं को बुरी लगी। उस दल के नेता हमारे नेता जी ही थे। नेतागण यह हार सहन न कर सके। उन्होंने तरुण नेतृत्व को समाप्त करने का प्रयत्न प्रारम्भ किया। उन्हें अपना मार्ग निष्कंटक करने का साधन मिल गया। बिना पैसे के राजनीति आधा कदम भी आगे नहीं चल सकती। हमारे मार्ग में सबसे बड़ी कठिनाई यही थी। कारण कांग्रेस-कमेटियों का खर्च चवन्नी मेम्बरों की सहायता से नहीं चलता। चलता है धनिकों की थैलियों से। और इन थैलियों के मुँह तभी खुलते हैं जब मोटरों में घूमनेवाले नेता अनुरोध करें।

मतलब यह कि इन राजनीति के ठेकेदारों को छोड़कर युवक कांग्रेस के पदों पर अधिक दिन टिक न सके। हम असफल होने लगे। अक्षुण्ण नेताओं की बाछें खिल गईं। पदाधिकारियों की मीटिंग हुई। पुराने नेताओं के लिए स्थान खाली किये गये। मैंने इसका विरोध किया। परिणाम यह हुआ कि मैं सबसे पहले निकाला गया। मैं समझ गया कि आज की राजनीति में या तो अपनी बुद्धि से काम लेकर आँख-कान बंद कर अन्ध भक्त बन जाओ या अन्ध-भक्तों को जमा करने के लिए पैसों की वर्षा करो तभी तुम इसमें सफलतापूर्वक काम कर सकते हो।

यही बात यदि आज मैं दुनिया के सामने कहूँ तो लोग मुझे देशद्रोही और न जाने क्या क्या कहेंगे। मैंने अमीरों की राजनीति छोड़ दी और मजदूरों की तकदीर के साथ अपनी तकदीर मिला दी है। उनकी यूनियनें बनाना और उनके अधिकारों के लिए लड़ना मेरे जीवन का उद्देश्य रह गया है। और मेरी दृष्टि में यही सच्ची देशभक्ति है।

'ओह बहुत देर हो गई।' कहकर गुलाब तरकारी लेकर चला गया।

विनय ने तरकारी तौल दी [illegible] एक ओर फेंक फिर बात [illegible] के [illegible] सकते [illegible] जाय [illegible]

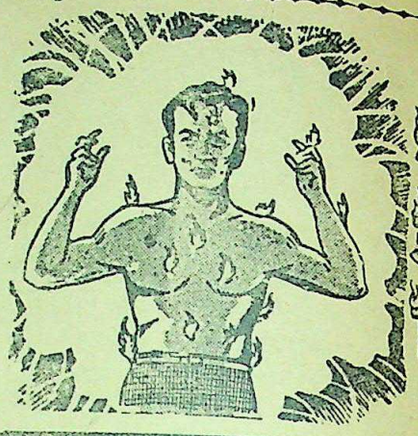
शारीरिक उष्णता के लिये...

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

आज से ही शुरू किजिए, सर्वत्र मिलता है।

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली तलुवों और आँखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग में आग सी जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, जड़ी पत्तियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढ़ा बालक वृद्ध, युवक स्त्री सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक हानिरहित है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निस्संकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके शीतल, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

पर्लेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

यू० पी० प्रतिनिधि दोसर एण्ड को०, बिरहना रोड, कानपुर

भारत माता

अपने बच्चों से कहो! कि वुड वर्ड का ग्राइप वाटर बच्चों को तंदुरुस्त रखता है

WOODWARD'S GRIPE WATER

keeps baby well

"[illegible] लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर [illegible] लिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिए इसको [illegible] करें।

W. WOODWARD LTD., LONDON, ENGLAND

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...रा रंग-मंच

...ती पिक्चर्स-कृत ...ख्याम' पर एक दृष्टि

...श्री त्रिपाठी गंगा बी० ए०

...ख्याम निशापुर का रहनेवाला ...दिन वह पेड़ के नीचे बैठा हुआ ...रहा था कि उधर से एक ...निकला। उसमें एक प्रसिद्ध ...थी। वह उमर के गाने से ...हुई। उसने अपने रूप और ...जादू उमर के ऊपर डालने ...किया परन्तु असफल रही। एक ...नर्तकी को मनुष्य के बदले ...लगन लगाने का उपदेश ...घर से बाहर आया, तो ...निशापुर के जालिम आमिल ...हुई। गयासबेग को उमर ...दोनों के चरित्र पर संदेह होता ...नर्तकी का मुँह जलाकर ...निकाल देता है।

...उमर के घर पहुँचती है और ...के अत्याचार का हाल बताती ...उसे अपने शागिर्द की माँ के ...देता है और हकीम होने के ...करता है। नर्तकी अच्छी हो ...उमर की रुबाइयों को दुनिया ...जागते रूप में प्रदर्शित ...इसी बीच विलासी गयासबेग ...उसी नर्तकी से प्रेम करने ...रहता है। लेकिन उसे मुँह की ...है। इस पर झुँझलाकर गयास ...उमर का नर्तकी से अनुचित ...जलाकर उन्हें भड़काता है। ...चल जाती है और उमर का ...राख कर दिया जाता है। ...रहनेवाला सूफी उमर जंगल ...है। उमर के साथ रहने-...इस्तहान जाकर गरीबों का

प्रसिद्ध अभिनेता श्री सहगल

से होती है। उमर उसकी सहायता से फिर एक दवाखाना खोलता है। परन्तु एक दिन वह बादशाह की आज्ञा के विरुद्ध एक बागी को शरण देने के अपराध में गयास-बेग द्वारा कैदी बनाकर बादशाह के सामने लाया जाता है। बादशाह उमर का फैसला निजामउद्दीन को सौंपकर बागियों की टोह में निकलते हैं; परन्तु रास्ते में तूफान में फँसकर जख्मी होते हैं, और उमर के चेले द्वारा वे उसी दवाखाने में शरण पाते और अच्छे होते हैं। कुछ ही समय बाद उमर के शागिर्द के पास संदेशा आता है कि उमर को ईद के दूसरे दिन फाँसी होने-वाली है। यह बात बादशाह को भी ज्ञात होती है। उनकी जो देख-रेख उमर के दवाखाने में हुई उससे वे बहुत ही प्रभा-वित हुए और उनको उसके प्रति अपने व्यवहार पर दुःख हुआ। उनसे अब उमर की सच्चाई व लगन का भेद छिपा न रहा। वे तुरन्त सबके साथ वहाँ से कूँच करते हैं और ठीक समय पर उमर को फाँसी पर चढ़ाने से बचाते हैं।

ईरान के बादशाह के सामने गयास-बेग की काली करतूतें आती हैं। वे उसे फाँसी का हुक्म देते हैं परन्तु उमर के कहने पर वे गयास को माफ कर देते हैं। इस प्रकार कहानी का अन्त होता है और उमर इज्जत के साथ फिर अपने काम में लग जाता है।

अभिनय की दृष्टि से यह चित्र सफल नहीं कहा जा सकता। सहगल, सुरैया आदि का अभिनय उनके अनुरूप नहीं गया। सुरैया का नाच भी कोई अधिक आकर्षक नहीं। वास्ती ने गयास-बेग के अभिनय में ऊपर उठने का प्रयत्न किया है परन्तु वे सफल नहीं हो सके। कथोपकथन कहीं कहीं पर अच्छा है, परन्तु गाने मामूली हैं और आवाज़ तो इतनी खराब है कि कहीं कहीं पर कथोपकथन समझना बहुत ही कठिन हो जाता है। इस प्रकार यह फिल्म भी 'कादम्बरी' और 'कालिदास' की भाँति अत्यन्त असफल रहा है। यह बड़े खेद की बात है कि हमारे निर्माता और निर्देशक ऐसी मामूली फिल्म पर, जो सहगल ऐसे कलाकार को निम्नकोटि के धरातल पर ला पटकती है, इतना अधिक धन व्यय कर रहे हैं। आशा है, ये भविष्य में जनता के सम्मुख कला-पूर्ण, ओजपूर्ण और सुन्दर चित्र उपस्थित करने का प्रयत्न करेंगे। ऐतिहासिक असफलता और तोड़मरोड़ ... का ... सीमा तक मान्य हो... कलात्मक असफलता ... निर्देशक के लिए श्रेय...

...की अभिनेत्री रामोला

...के लिए, उमर की नज़में ...माँगती है। इस प्रकार ...वजीर निजामउद्दीन के ...पहुँचती है। निजामउद्दीन ...बनानेवाले का नाम पूछता ...का नाम सुनकर उससे मिलने ...करता है। ...नर्तकी मेहरु के कारण ...पुराने मित्र निजामउद्दीन

'ऐस्प्रो' आ गया है

'किसी भी नकली मालको मत लीजिये। हर टिकिया पर 'ASPRO' खुदा हुआ देख लीजिये।

'ऐस्प्रो' दस मिनट में बुखार और दर्द रोकती है। यह हृदय या पेटको नुकसान नहीं पहुचातीं।

'ऐस्प्रो' का नियंत्रित मूल्य

३ टिकियों की पैकेट का दाम १ आना, ३० टिकियों के डिब्बे का दाम १० आना

वितरक : जे. एल. मौरिसन, सन एण्ड जोन्स (इण्डिया) लि:, पोष्टबक्स ३८७कलकत्ता, टेलीफोन-कलकत्ता ७९६

'ऐस्प्रो' हर जगह मिलता है

स्नायु पीड़ा से स्वास्थ्य और सुख नष्ट न होने दें।

आपके स्नायु थक जानेके कारण जब आप दुर्बल चिड़चिड़े और दुःखी हो जायें तब आपको पुष्टिकर खाद्य लेनेमें देरी नहीं करनी चाहिये।

स्नायु को ताकत पहुंचाने के लिये नियमित रूपसे स्वादिष्ट 'ओवल्टीन' का सेवन करें। स्नायुकी क्षीण शक्ति को यह हर प्रकारसे ताकत पहुंचायेगा। इसके अलावा शरीर और मस्तिष्क की शक्तिको कायम रखता है। ओवल्टीन पके जौके गूदे, गायके मलाईदार दूध और बहुमूल्य प्राकृतिक विटामिनसे तैयार किया जाता है।

खानेके पहले एक प्याला 'ओवल्टीन' पीने से गाढ़ी नींद आती है और सबेरे तरो-ताजा रखता है।

ओवल्टीन

'OVALTINE शक्तिप्रद खाद्य पानीय'

हर दवाखाने और स्टोरमें मिलता है

डिस्ट्रि... (इण्डिया) लि०

...और रंगून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

ग्राम-सुधार-समस्या

इस समय भारतवर्ष में जिस ओर देखिए, ग्राम-सुधार की ही चर्चा सुनाई देती है। असेम्बली के रंगमंच पर ग्रामों की दशा सुधारने के लिए व्याख्यान होते हैं। शहरों के आनन्दमय जीवन व्यतीत करनेवाले कितने ही महाशय किसानों की दुर्दशा और ग्राम-सुधार पर लेक्चर झाड़ा करते हैं। परन्तु ऐसे कम व्यक्ति हैं जो ग्रामों में जाकर किसानों की कठिनाइयों का अनुभव प्राप्त कर उनके कष्टों को निवारण करने का प्रयत्न करते हों। ग्राम-सुधार तो ग्राम में रहे बिना नहीं किया जा सकता। दिन भर कठिन से कठिन परिश्रम करने के उपरान्त भी जिन ग्रामीणों को पेट भर खाना तक प्राप्त नहीं होता है और उनकी स्त्री और बच्चों को शरीर ढाँकने के लिए मोटा कपड़ा तक नसीब नहीं होता है, उनकी दशा सुधारने के लिए स्वयं सुधारकों को भी कठिन त्याग की आवश्यकता है। आज का ग्राम गन्दगी से भरा हुआ है। वर्षा अधिक हो जाने से कूड़ा-कचरा पड़ा सड़ रहा है, जगह जगह गड्ढों में पानी भरा हुआ सड़ रहा है जिससे मच्छर पैदा होकर हैज़ा और मलेरिया पैदा करते हैं। ऐसी दशा को सिर्फ कांग्रेस सरकार ही सुधार सकती है।

यदि पढ़े-लिखे बेकार युवक, जो कि छोटी छोटी नौकरियों के लिए मारे मारे फिर रहे हैं, ग्राम-सुधार कार्य में लग जायें तो यह कार्य आसानी से हो सकता है। अविद्या का घोर अंधकार भी इस कार्य में रुकावट पैदा करता है। इन नवयुवकों को ग्रामों के प्रति अपने आपको अर्पण कर देना चाहिए।

ग्रामोद्धार के लिए हमें किसी नई प्रणाली की आवश्यकता नहीं दिखाई देती है। प्राचीन उद्योग-धन्धों का पुनरुद्धार होने से ही ग्रामों की दशा सुधर सकती है। रोटी और कपड़ा दो ही समस्याएँ हमारे लिए दुःखदायक हैं। कपड़े के लिए ग्रामीणों को कपास बोने, कपास ओटने तथा रुई कातने, बीनने का काम सिखलाया जाय तो कपड़े की समस्या तो स्वयं हल हो जाती है। इस कार्य को स्त्रियाँ भी कर सकती हैं। पहले प्रत्येक घर में चर्खा रहा करता था, और आज भी चर्खा-संघ इस कार्य में दत्तचित्त है। परन्तु कल-कारखानों की नई रोशनी में हमें इस प्राचीन धन्धे के पुनरुद्धार के लिए जोरों से प्रचार करना चाहिए।

यह दुर्भाग्य की बात है कि ग्रामों में भी मशीन से कुटे हुए चावल और इंजन (मशीन) से पिसे आटे का रवाज दिन-प्रतिदिन अधिक होता जा रहा है। डाक्टरों ने इसे स्वास्थ्य के लिए बड़ा हानिप्रद बतलाया है। अतः ग्रामीण जनता को इन चीजों का पूर्ण बहिष्कार कर देना चाहिए। चक्की से पिसा आटा और ओखली से कुटे हुए चावलों का व्यवहार बन्द न करना चाहिए।

ईख से गुड़ या [illegible] व्यवसाय भी [illegible] है। परन्तु [illegible] हानि पहुँची है। सुधारकों को इस कार्य में भी तुरन्त कदम उठाना चाहिए।

फलों तथा किराने की पैदावार भी सुगमतापूर्वक ग्रामों में की जा सकती है। परन्तु आधुनिक-वैज्ञानिक अनुसंधानों से अनभिज्ञ होने के कारण किसान पैदा नहीं कर सकते हैं। अधिकतर किसान तो ऐसे हैं जिन्हें खेतों में नियमपूर्वक खाद डालना भी नहीं आता है और न वे अच्छी खाद ही बनाना जानते हैं। अतः इन सब बातों का पूर्ण ज्ञान कराना सुधारकों का परम कर्त्तव्य है। ग्राम-सुधारकों में कुछ ऐसे भी व्यक्ति होने चाहिए जिनको आयुर्वेदिक औषधियों का भी ज्ञान हो जिससे वे लोग रोगग्रसित ग्रामीणों को रोगों से मुक्त करा सकें।

प्रत्येक ग्राम में एक रात्रि पाठशाला तथा पुस्तकालय भी स्थापित होने चाहिए। कुछ ग्रामों को मिलाकर एक बैंक भी होना चाहिए। ऐसे ग्राम-सुधार कार्यकर्त्ताओं की जीविका का प्रबन्ध सरकार द्वारा हो और इन्हीं कार्य-कर्ताओं द्वारा ग्राम की पैदावार बेची जाये और ग्रामीणों की आवश्यकता की सामग्री भी कार्य-कर्त्ता बाहर से लाकर ग्रामवासियों को देवें। ऐसा होते ही ग्राम-सुधार-समस्या हल हो सकती है।

मवाना कलाँ —हरीशमोहन "हितैषी"
मेरठ

* * *

प्रेमी-अभिनन्दन-समारोह

श्रद्धेय नाथूरामजी प्रेमी की सेवाओं से हिन्दी-जगत् भली भाँति परिचित है। प्रेमीजी उच्च कोटि के लेखक हैं और अनुसन्धान के क्षेत्र में उन्होंने जो कार्य किया है, वह हिन्दी के बहुत कम विद्वान् कर पाये हैं। आज से लगभग डेढ़ वर्ष पूर्व प्रेमीजी की सेवाओं के उपलक्ष में उन्हें एक अभिनन्दन-ग्रन्थ भेंट करने का आयोजन हुआ था। पाठकों को यह जानकर हर्ष होगा कि वह आयोजन अगले मास पूर्ण हो रहा है। ग्रन्थ की तैयारी में हिन्दी, गुजराती, मराठी, बँगला और अँगरेजी के लगभग चार दर्जन विद्वान् और एक सौ पैंतीस लेखकों का सहयोग है।

इसमें सर राधाकृष्णन्, पुरुषोत्तमदास टंडन, काका कालेलकर, हरिभाऊ उपाध्याय, बेचरदास जी० दोशी, सियारामशरण गुप्त, जैनेन्द्रकुमार, डा० ए० एन० उपाध्ये, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, पं० देवकीनन्दन, प्रो० गो० खुशाल, मुनि जिनविजय, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० आर्येन्द्र शर्मा, प्रो० पी० के० गोडे, डा० मंगलदेव शास्त्री, मैथिलीशरण गुप्त, हजारीप्रसाद द्विवेदी, ठा० गोपालशरणसिंह, सोहनलाल द्विवेदी, अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, प्रो० सत्येन्द्र, डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, सुधीन्द्र, उदयशंकर भट्ट, श्री किशोरलाल घ० मश्रूवाला, सन्त निहालसिंह, आचार्य क्षितिमोहन सेन, पं० सुन्दरलाल, डा० प्रबोधचन्द्र बागची, डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० मोतीचन्द, डा० जगदीशचन्द्र जैन, पं० माधवस्वरूप 'वत्स' प्रभृति विद्वानों की रचनाएँ हैं।

एक विभाग में कुछ स्फुट और कुछ उन लेखों का समावेश किया गया है, जो हमें देर से प्राप्त होने के कारण यथास्थान नहीं जा सके। लेखकों में डा० सत्यप्रकाश, काशिनाथ त्रिवेदी, जुगलकिशोर मुख्तार, परमेष्ठीदास जैन, शंकरदेव विद्यालंकार, सुरेशसिंह प्रभृति के नाम उल्लेख योग्य हैं।

चित्रों में पुरातत्त्व विभाग के सौजन्य से प्राप्त देवगढ़ के अनेक सुन्दर अतिरिक्त अहार, ग्वालियर [illegible] स्थानों के बहुत से महत्त्वपूर्ण चित्र हैं। बुन्देलखण्ड-चित्रावली [illegible] ढंग की एक ही है। इनके [illegible] सुधीर खास्तगीर तथा अन्य [illegible] कारों की कलापूर्ण कृतियाँ हैं। [illegible] मूल्य दस रुपया होगा; लेकिन [illegible] २० सितम्बर तक हमारे पास [illegible] भेजकर ग्राहक बन जायँगे, उन्हें [illegible] में ही दे दिया जायगा। ग्रन्थ [illegible] सितम्बर में पूर्ण हो जायगी [illegible] की छुट्टियों में, अर्थात् ५ अक्टूबर [illegible] बम्बई में अभिनन्दन-समारोह [illegible] हुआ है। अभिनन्दन-समारोह में [illegible] होने के लिए हम विद्वानों और [illegible] सेवियों को अभी से आमन्त्रित [illegible] निस्सन्देह प्रेमीजी का यह सम्मान [illegible] जगत् का सम्मान है।

टीकमगढ़ —[illegible]
(सी० आई०) बी० ए०, एल्[illegible]

मौलिकता—साहित्यिक मौलिकता [illegible] विशद व्याख्या। मूल्य [illegible]
आल्हा—लेखक, चतुर्वेदी द्वारका[illegible] शर्मा। इस पुस्तक में महोबे के [illegible] वीर आल्हा और ऊदल का [illegible] चरित और समस्त लड़ाइयों का [illegible] रोचक व सरस भाषा में दिया [illegible] सजिल्द पुस्तक का मूल्य [illegible] रुपये पाँच आने।
मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, [illegible]

स्पट
लोशन
दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.
स्पट अँड कं. लि.
बम्बई नं. २.

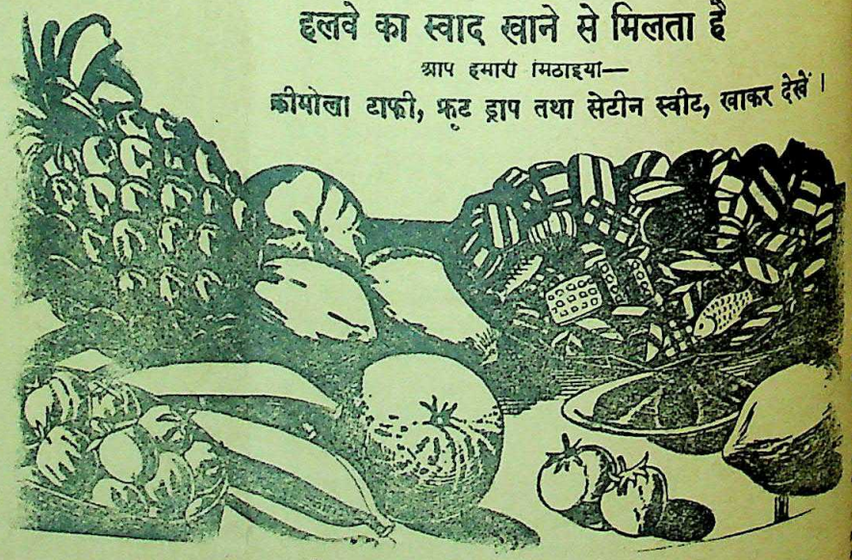
हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।
सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—
रिसर्च हाउस
[illegible] इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...सताओं के पत्र

...र २२ को नगर की जनता ...मंत्री श्री० जी० के० लोक... ...की अध्यक्षता में हुई जिसमें ...ारे में बहुमत से यह प्रस्ताव ...जनता की तकलीफों को ...हुए वर्तमान मोटर स्टैण्ड ...तत्व से शीघ्र हटाया जावे ...ओर से एक डेपुटेशन ...मिलकर स्टैण्ड के योग्य ...निश्चित करे।

...में प्रान्तीय सरकार से ...गया कि वह यू० पी० ...करके सागर की लारियों ...यू० पी० की हद में ...दिलावे। तीसरे प्रस्ताव ...से प्रार्थना की गई कि ...आदि के लाइसेन्स आदि ...जबलपुर के बजाय ...श्री वासुदेवराव सूबेदार ...सभा समाप्त हुई।

...२-९-४६ को ...जयन्ती ...की अध्यक्षता में मनाई ...प्रसाद शास्त्री, मास्टर ...नायक तथा राम... ...दाता

* *

...सितम्बर १९४६ को फाल्गू, ...नदियों में अचानक ...गया जिला में भयंकर ...हजारों गाँव जलमग्न तथा ...विहीन हो रहे हैं। ...सेवादल भी चारों ओर ...गया। विद्यालय के ...बाँध, बाँधकर ...रात भर ...बढ़ती हुई जल-राशि ...पड़ा। विद्यालय, ...बिनाईघर, छात्रा... ...गिर गये। सिर्फ एक ...कालेज (उद्योग) शाला ...गये।

...विद्यालय के छोटे-छोटे ...के ठा० ब्रजकिशोरसिंह ...तथा अन्य शिक्षार्थियों ...का प्रबन्ध किया है। ...श्री विद्यालय में शिक्षण... ...है अतः दुर्गापूजा तक ...बन्द करा दिया गया है। ...१९४६ को संध्या समय ...श्रीकामलाक्षनसिंह वैद्य, कुछ ...के साथ सहायता कार्य के ...आये।

...जनों से प्रार्थना है कि वे ...देश पर ध्यान देंगे।

संवाददाता

❀ ❀

...साहित्य-मंडल के तत्त्वा... ...ठि० रामठौदास वल्लभदास ...स्थापित १०१) रु० का ...पुरस्कार इस वर्ष प्राचीन ...संस्करण एवं स्फुट ...पर दिया जावेगा। ...अब से ६ वर्ष पूर्व तक ...पर विचार किया ...मतियोगिता में ...पुस्तकों की ६ ...में शीघ्र भेजने की ...प्रार्थना है। दीपावली के बाद आनेवाली पुस्तकें पुरस्कार के लिए स्वीकार नहीं की जा सकेंगी।

—प्रधान मंत्री

* * *

जसरा बाजार (इलाहाबाद) में श्री केशरवानी विद्यालय की स्थापना हुई है। श्री केदारनाथ जी गुप्त बी० ए०, एल-एल० बी० वकील, मंत्री केशरवानी वैश्य पाठशाला हाईस्कूल इलाहाबाद ने विद्यालय का उद्घाटन किया। तहसील करछना के जसरा बाजार के आस-पास ८-१० मील तक हिन्दुस्तानी तथा अँगरेजी पढ़ाई का कोई प्रबन्ध न होने के कारण कितने ही गरीब होनहार बच्चे उच्च-शिक्षा से वंचित रह जाते थे। वे शहर में रहकर पढ़ाई का खर्च उठाने में असमर्थ थे। इन्हीं कठिनाइयों को दूर करने के लिए १० सितम्बर को यह विद्यालय खोला गया है। आशा है, शीघ्र यह विद्यालय हाई स्कूल में परिणत हो जायगा, क्योंकि बाजारवालों के अलावा आस-पास की जनता ने भी विद्यालय का जी खोलकर स्वागत किया है। केशरवानी वैश्य पाठशाला हाई स्कूल इलाहाबाद की प्रबन्ध-कमेटी केशरवान शिक्षा-समिति के संरक्षक में इसका काम होगा। गरीब विद्यार्थियों को विशेष सुविधा दिये जाने का प्रयत्न है। बाहर के विद्यार्थियों को भी स्थान दिया जायगा। इस विद्यालय के खोलने में सर्वश्री छेदीलाल गुप्त, हरिश्चन्द्र गुप्त, हनुमानदीन गुप्त, शारदाप्रसाद गुप्त, रामखेलावन गुप्त, दीनानाथ गुप्त, लक्ष्मीनारायण गुप्त, बचऊलाल गुप्त, पीताम्बरलाल गुप्त, परमेश्वरदीन गुप्त और मास्टर महादेवप्रसाद गुप्त मुख्य हैं।

—नारायणदास गुप्त

* * *

लखनादौन (सी० पी०) से श्री मंत्री गोरक्षा-प्रचार-विभाग लिखते हैं—भारत से समूल गोवध उठवा देने के लिए विधान-निर्मात्री-परिषद् के समक्ष सामूहिक माँग रक्खी जायेगी। बढ़ते हुए अनियन्त्रित पशुवध ने राष्ट्र का कितना बड़ा अहित किया है। भोजन का प्रधान अंग शुद्ध घी खाने को तो क्या देखने तक को नहीं मिल रहा है। पशुओं की शोचनीय कमी ने जीवन का एकमात्र सहारा खेती का भविष्य निराशापूर्ण अंधकार में है। गोरक्षा का प्रश्न राष्ट्र का जबर्दस्त आर्थिक और चालीस करोड़ जनता के जीवन-मरण का प्रश्न बन रहा है। इसे हल करके ही आगे बढ़ा जा सकेगा। अब समय आ गया है। योजना की सफलता के लिए ठोस संगठन और उत्साही कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। जो गो-प्रेमी इसके लिए अपनी निःशुल्क सेवा देना चाहते हैं, वे निम्न पते से शीघ्र सूचित करें जिससे उनकी सेवा में प्रचारार्थ गो-साहित्य भेज दिया जावे।

—संवाददाता

* * *

अमृतसर श्री लोकनाथ पुच्छरत का शुभ विवाह अश्विन प्रविष्टे २५ शुक्रवार को गुरदासपुर तिब्बड़-निवासी पं० रक्खाराम जी सारस्वत की कन्या से होना निश्चित हुआ है। श्री लोकनाथ जी पुच्छरत हिन्दी के पुराने लेख[illegible] का[illegible] जगन्नाथ पुच्छरत साहि[illegible] हैं।

*

साहित्य-चर्चा

डाक्टर कोटनीस—लेखक, श्री राजेश्वर गुरु, एम० ए०; प्रकाशक, चलचित्र-कार्यालय, दीक्षितपुरा, जबलपुर; पृष्ठ-संख्या ८०; मूल्य १।) रुपये।

श्रीमती सनयातसेन के शब्दों में—"डाक्टर कोटनीस की कहानी न केवल अपने दो राष्ट्रों की है, किन्तु मानव-जाति की उन्नति और आजादी के लिए लड़नेवाले दुर्दम सिपाहियों की श्रेणी की है। आज से ज्यादा आनेवाला जमाना उनकी इज्जत करेगा; क्योंकि उन्होंने आनेवाले जमाने के लिए लड़ाई की और जान दी।"

भारतवर्ष से चीन की सहायता के लिए भेजे गये डाक्टरी मिशन में डाक्टर कोटनीस भी थे। चीन में पहुँचकर डाक्टर कोटनीस ने जापानी बम-वर्षा के बीच भी, जिस साहस और धैर्य के साथ घायल चीनियों की सेवा शुश्रूषा कर अपने कर्त्तव्य का पालन किया था, वह प्रत्येक भारतीय के लिए गौरव की वस्तु है। चीन में डा० कोटनीस ने एक चीनी लड़की के साथ अपना विवाह कर लिया था; लेकिन अधिक समय तक वे जीवन-सुख का उपभोग न कर सके। १९४१ के नवम्बर में उनका विवाह हुआ; जुलाई १९४२ में पुत्र उत्पन्न हुआ और ९ दिसम्बर १९४२ को वे इस दुनिया से उठ गये।

इस कहानी का चित्रपट बन चुका है। इसके मूल-लेखक हैं ख्वाजा अहमद अब्बास। प्रस्तुत पुस्तक इसी कहानी का अनुवाद है। श्री राजेश्वरजी ने हिन्दुस्तानी में यह अनुवाद किया है। भाषा में गति है और लोच भी। लेकिन कुछ शब्दों के प्रयोग चिन्त्य हैं। जहाज का प्रयोग कई स्थानों पर स्त्रीलिङ्ग में किया गया है। कुछ जहाजों के नाम भी गलत दिये गये हैं। उदाहरणार्थ 'पी० और ओ०' कोई जहाज नहीं; बल्कि जहाज कम्पनी है। प्रूफ की अशुद्धियाँ भी बहुत रह गई हैं। आशा है, दूसरे संस्करण में ये भूलें सुधार ली जायँगी। सब मिलाकर पुस्तक पठनीय है।

* * *

बंगाली मिठाइयाँ और नमकीन—लेखिका, श्रीमती कमलादेवी दीक्षित; विक्रेता, मधुर मन्दिर, हाथरस; पृष्ठ-संख्या १६२; मूल्य १॥) डेढ़ रुपये।

एक ही प्रकार का भोजन करते-करते औसत दर्जे का मानव-स्वाद बदलने के लिए मिठाइयाँ भी खाना चाहता है। स्वास्थ्य के लिए ये मिठाइयाँ कितनी ही हानिकर क्यों न हों; लेकिन बहुत-से लोग इन्हें तिलांजलि नहीं दे पाते। कदाचित् यही कारण है कि बढ़िया मिठाइयों का प्रचलन दिनों-दिन हमारे देश में बढ़ता जा रहा है। मिठाइयों के मामले में बंगाल प्रान्त बहुत आगे है। वहाँ तरह-तरह की मिठाइयाँ बनाई जाती हैं। अन्य प्रान्तों में भी इन बंगाली मिठाइयों का प्रचार बढ़ रहा है। लेकिन इन मिठाइयों को तैयार करने की विधि से बहुत कम लोग परिचित हैं।

प्रसन्नता की बात है कि प्रस्तुत पुस्तक में लेखिका ने इसी कठिनाई को दूर करने का स्तुत्य प्रयत्न किया है। तरह-तरह की बंगाली मिठाइयाँ और नमकीन चीजें तैयार करने की न केवल विधि इस पुस्तक में दर्शाई गई है, अपितु आवश्यक सामग्री आदि का प्रामाणिक उल्लेख भी कर दिया गया है। पुस्तक की भाषा सरल है। साधारण पढ़ा-लिखा पाठक भी इससे पूरा पूरा लाभ उठा सकता है। पुस्तक की छपाई-सफाई अच्छी है। हाँ, यत्र-तत्र प्रूफ की अशुद्धियाँ खटकती हैं।

बंगाली मिठाइयों और नमकीन के शौकीनों के लिए पुस्तक उपादेय और संग्रहणीय है।

—देवीदयाल चतुर्वेदी

* * *

कृषक—सम्पादक माणिकचन्द्र बोन्द्रिया बी० एस० सी० (अग्री), सह-सम्पादक गोरेलाल अग्निभोज। सचित्र हिन्दी मासिक 'कृषक' का प्रथम अंक सितम्बर हमारे सामने है। पत्रिका को देखते ही भास होने लगता है कि इस पत्रिका का उद्देश्य क्या है। प्रथम कवर पेज पर ग्राम्य-जीवन का सुन्दर चित्र हल, से जुताई और बोझ ढोती हुई स्त्री को प्रकट करता है कि पत्रिका का उद्देश्य कृषकों को उन्नतिशील खेती की ओर ले जाना है। पत्रिका कृषि में पारंगत विद्वान् लेखकों के लेखों से युक्त है।

मध्यप्रांत के कृषि-सम्बन्धी सरकारी कार्य, ज्ञान-विज्ञान आदि लेखों से पत्रिका का कलेवर सजा हुआ है। इन लेखों के अतिरिक्त सम्पादकीय और बड़े बड़े नेताओं के संदेश तथा विद्वानों और साहित्यिकों की शुभ कामनाएँ, जो पत्रिका के प्रति भेजी गई हैं, प्रकाशित हैं।

पत्रिका में नेताओं तथा अन्य मिनिस्टरों के संदेश और शुभ कामनाएँ हैं। पत्रिका के सम्पादकीय से प्रकट होता है कि देश के कृषकवर्ग की इतनी उपेक्षा की गई है और वह कराह रहा है। देश के शिक्षितों को 'गाँवों की ओर' जाना चाहिए, बिना कृषकों के उद्धार के देश का उद्धार असंभव है। देश में साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएँ तो बहुत निकलती हैं, पर अभी तक विज्ञान, कृषि और इतिहास आदि विषयों की पत्र-पत्रिकाएँ इनी-गिनी हैं। भारत के लिए प्रत्येक वर्ग की पत्रिका और पत्र होने चाहिए। 'कृषक' आज देश की रीढ़ हो रहे हैं। उनके लिए 'कृषक' पत्रिका [illegible] रीढ़ का रूप धारण [illegible] 'कृषक' अंक को [illegible]

जयपुर अ० भा० मारवाड़ी कविसम्मेलन द्वितीय अधिवेशन जयपुर की भिन्न-भिन्न समितियों के लिए निम्नांकित अध्यक्ष चुने गये—प्रधान सभापति—श्री भारत व्यास, पूना, हिन्दी-कविसम्मेलन—श्री खेमराज जोशी, इन्दौर। राजस्थानी कविसम्मेलन—श्री गजानन्द जी शास्त्री, रतनगढ़। कविपरिषद्—प्रो० श्री कन्हैयालाल जी सहल, (पिलाणी)। मारवाड़ी पत्रकार सम्मेलन—डा० रामजीवन त्रिपाठी, फतेहपुर।

२९-३० सितम्बर को, जयपुर में होने[illegible] अ० भा० मारवाड़ी कविसम्मेलन के [illegible] अधिवेशन का उद्घाटन, भारत के [illegible] एवं मारव[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोंठ–पेट के रोगों की चिकित्सा

पाचन-शक्ति के लिए अचूक औषधि है

लेखक, श्री रामेश वेदी आयुर्वेदालंकार

हिमालय हार्बल इंस्टीट्यूट लाहौर के प्रसिद्ध चिकित्सक श्री वेदी का अनुभव बहुत व्यापक है। आपने इस लेख में 'सोंठ' की उपयोगिता का सुन्दर वर्णन किया है। आपके उपयोगी लेखों से 'देशदूत' के पाठक परिचित हैं।

इस लेख के लेखक श्री रामेश वेदी आयुर्वेदालंकार।

मसालों और चिकित्सा में इसका प्रयोग भूमण्डल पर सब जगह बहुत विस्तृत होता है। एक समय यह शराबों को स्वादु बनाने में बहुत इस्तेमाल होती थी। अब भी शीत-ऋतु में पसन्द की जानेवाली और शीत-ऋतु के लिए उपयोगी तथा हृदय को शक्ति देनेवाली शराबों में 'जिंजर बियर' का ऊँचा स्थान है। अदरक का चरपरापन हलका और स्वादु होने से और इसमें प्रिय सुरभि होने से इसने बहुत प्रकार के भोज्य द्रव्यों के निर्माण में मसाले के रूप में विस्तृत उपयोगिता प्राप्त कर ली है। साधारण व्यञ्जनों से लेकर रोटियों और स्वादु पेयों में भी इसका प्रयोग किया जाता है। मसाले के रूप में सोंठ का दैनिक उपयोग उत्तर पंजाब के कुछ प्रदेशों में बहुत है। मटर, चना, उर्द आदि व्यञ्जनों में पिसी हुई सोंठ बुरक दी जाती है। उर्द, मूँग, निशास्ता और सूजी की पिन्नियों में भी यहाँ सोंठ डाली जाती है।

जिंजर की बोतल

सोडावाटर, लेमोनेड आदि खनिज जल बेचनेवाले जिंजर की जो बोतल देते हैं उसे बनाने की विधि यह है—पौने चार सेर पानी में पाँच सेर खाँड़ मिलाकर बनाई गई चाशनी, खौलता पानी बारह छटाँक, नीबू तेल (ऑयल ऑफ लेमन्स) चार बूँद, सिरकाम्ल दो छटाँक और शुण्ठी मद्यासव (टिंक्चर ऑफ जिंजर) इच्छानुसार। इन सबको एक बर्तन में मिला लें। पानी की एक बोतल में यह मिश्रण एक से डेढ़ औंस तक मिलाना चाहिए और फिर कार्बोनिकाम्ल गैस (कार्बोनिक एसिड गैस) गुज़ार लेनी चाहिए। इसमें क्योंकि सोंठ का मद्यासव पड़ता है इसलिए बेचनेवाले इसे शुण्ठीमद्य (जिंजर बिअर) नाम से बेचते हैं।

जिंजरेड

खाँड़ की चाशनी तीन सेर, शुण्ठी मद्यासव (टिंक्चर ऑफ जिंजर) दो छटाँक, सिरकाम्ल (एसिटिक एसिड) दो छटाँक, लिन्टन नारंगी मद्यासव (बिटर आरेंज टिंक्चर) इच्छानुसार। इससे पेय बनाने का तरीका पहले की तरह है।

'जिंजर एल'

खाँड़ की चाशनी तीन सेर, संयुक्त शुण्ठी मद्यासव (कम्पाउंड टिंक्चर ऑफ जिंजर) दो छटाँ[illegible] और शर्करा [illegible] पेय [illegible] लेते [illegible] तरह है [illegible] चगेरा [illegible] सकते [illegible]

शुण्ठीमद्य

उत्सेचन (फर्मेण्ट) करके बनाई गई असली शुण्ठीमद्य जिंजर की बोतल से सर्वथा भिन्न चीज़ है। उसका नुस्ख़ा यह है—पानी ६३ सेर, खाँड़ १०॥ छटाँक, छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ी हुई सोंठ ३ पाव, तार्तरिकाम्ल (टार्टरिक एसिड) ३ छटाँक, बबूल की गोंद २ पाव, नीबू का तेल ¼ छटाँक और खमीर ३ छटाँक। आसव-अरिष्टों की तरह इसे सड़ाएँ। उत्सेचन के बाद इसमें कम से कम दो प्रतिशतक और कभी-कभी इससे भी काफी अधिक एल्कोहल होती है।

रागषाडव

कच्चे आम को उबालकर गुड़ तेल मिश्रित एक प्रकार का मुरब्बा बनाया जाता था जिसमें सोंठ भी डाली जाती थी। इस मुरब्बे को चरक रागषाडव कहते थे और दीपन, पाचन के लिए तथा भोजनों को स्वादु बनाने के लिए इसका उपयोग किया जाता था।

भोजन से पहले थोड़ी सी अदरक को नमक के साथ या सोंठ के चूर्ण में नमक मिलाकर खाने से भूख बढ़ती है और भोजन में रुचि पैदा होती है, लाला-स्राव अधिक होने से भोजन जल्दी पच जाता है। कैपदेव ने भोजन से पहले नमक के साथ अदरक खाने के लाभ बताये हैं—वायु के प्रकोप की शान्ति, प्रसन्नता, अग्नि-दीपन, पाचन, वायु और कफ की सफाई, हृदय के लिए बलप्रदान, जीभ और गले की शुद्धि और भोजन में रुचि। वृन्दमाधव भी इन विचारों की पुष्टि करता है।

काञ्जी और सिरके में अदरक के टुकड़े करके डालते हैं। भूख उत्तेजित करने के लिए इसे नमक लगाकर खाते हैं। मुख का स्वाद ठीक करने के लिए इसे बड़हर का रस मिलाकर खिलाते हैं। शाक-सब्ज़ी और दालों आदि में अदरक का दैनिक उपयोग होता है। जलीय अंश होने से सोंठ की अपेक्षा यह कम गरम और शुष्क है। इसका अचार बहुत शौक से खाया जाता है।

आमाशय और छोटी व बड़ी आँतों की क्रियाओं को सोंठ उत्तेजना देती है और उनकी वायु को अधोमार्ग द्वारा निकाल देती है। इसलिए यह वातानुलोमक है और अजीर्ण, अफ़ारा तथा आमाशय के उद्वर्त के कारण उत्पन्न विकारों में उपयोगी है। सोंठ से पकाई हुई यवागू वात का अनुलोदन करती है। दीपक और पाचक होने से फ़ार्मेसी में सोंठ का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ब्रिटिश और दूसरे फ़ार्माकोपियों में अनेक ऐसे योग हैं जिनमें सोंठ डाली जाती है।

अफ़ारे और अजीर्ण के लिए [illegible] दवा के रूप में यह [illegible] सोंठ [illegible] बदहज़्मी दूर हो जाती है। आठ औंस ब्राण्डी में एक औंस सोंठ डालकर दस दिन पड़ा रहने दें। एक चाय के चम्मच की मात्रा में पानी में मिलाकर दीपक और उत्तेजक के रूप में प्रयोग करें। प्यास से व्याकुल रोगी को अदरक और शुण्ठीमद्य में आधा पानी मिलाकर पिलाना चाहिए। हृदय को शक्ति देनेवाली यह सुगन्धित मद्य जल्दी ही प्यास को शान्त कर देती है। एक माशा सोडा बाइकार्ब को एक छटाँक सोंठ के फान्ट में मिलाकर अजीर्ण और वमन में दिया जाता है। आमाजीर्ण में सोंठ और गुड़ खाने से पाचकाग्नि ठीक हो जाती है। स्निग्ध किये हुए रोगी को अन्न देने में अजीर्ण हो जाने की आशङ्का हो तो पहले सोंठ के साथ हरड़ देकर हितकर भोजन देना चाहिए। सोंठ आधी रत्ती, सोडा बाइकार्ब डेढ़ रत्ती और रेवकचीनी एक रत्ती; यह योग बच्चों की दूषित पाचकाग्नि को ठीक करता है। गर्मियों में या बरसात में पेट में पाचन-सम्बन्धी कुछ गड़बड़ी होने से जिंजर की बोतल अच्छी लाभदायक होती है।

विरेचन द्रव्यों से जी मचलाना या ऐंठन आदि लक्षण प्रकट हों तो उनमें सोंठ मिला देने से वे दूर किये जा सकते हैं। पेट के रोगियों को विरेचन के बाद हलके पथ्य पर रखते हुए पीने को सादा पानी न देकर सोंठ से पकाया हुआ कोसा पानी देना चाहिए। चौथाई से आधे तोले तक अदरक के रस को इतने ही दूध में मिलाकर या दसगुने अदरक के रस से पकाये तिल-तेल को उदर रोगों में चरक पिलाते हैं। बड़ी पिप्पली और सोंठ के चूर्ण को दूध के साथ उदर रोगी को दिया जाता है। जिन लोगों को अकेला दूध हज्म न होता हो, दूध पीने से दस्त आ जाते हों, उन्हें दूध में सोंठ की गाँठ पकाकर या पिसी हुई सोंठ को दूध में बुरक कर पिलाते हैं। पेट के कीड़ों को मारने की दवाओं में अदरक के काढ़े को मिलाकर अनीमा दिया जाता है और इसे अन्दर ही कुछ देर रोकने के लिए रोगी को निर्देश दिया जाता है।

बार बार उल्टी आती [illegible] आते हों तो सोंठवाली [illegible] से आधे से एक चाय की चम्मच [illegible] में हर दो घंटे बाद दे सकते [illegible] और अफ़ारे में भी यह लाभ [illegible] ब्राण्डी न हो तो सोंठ के [illegible] प्रयोग कर लेना चाहिए। [illegible] हाथ-पैर ठण्डे पड़ गये हों [illegible] चूर्ण को मलने से लाभ होता [illegible] खून की गति ठीक होकर [illegible] आने लगती है। सोंठ, अतीस [illegible] मोथे का या धनियाँ और [illegible] बनायें। प्यास, शूल तथा [illegible] निवृत्ति के लिए इस पाचन, [illegible] हलके काढ़े का सेवन कराना [illegible] एक भाग सोंठ और तीन [illegible] की जड़ के काढ़े में हींग और [illegible] नमक डाल कर वायु के शूल [illegible] करने के लिए पिलाते हैं। [illegible] व्रण हो तो भोजन के पच [illegible] खाली आमाशय में पाचक [illegible] कर शूल पैदा करते हैं। इसको [illegible] लिए गोविन्ददास कहते हैं कि [illegible] तिल से बनाई दूध की खीर [illegible] मीठा करके सात रात तक [illegible] चाहिए। आधी छटाँक यवकुट [illegible] बारह छटाँक उबलते पानी में [illegible] रहने दें। छानकर आधी छटाँक [illegible] में अफारे और शूल के लिए [illegible] जाता है।

ग्रहणी रोग में आम के पाचन [illegible] सोंठ, मोथा और अतीस का काढ़ा [illegible] सेवन कराया जाता है। इनके [illegible] गरम जल के अनुपान से भी प्रयोग [illegible] जा सकता है। अकेली सोंठ के [illegible] गरम पानी के साथ देने से आम [illegible] पाचन होता है। इन तीनों चीज़ों [illegible] कभी गिलोय का काढ़ा भी [illegible] जाता है। सोंठ और कच्चे बेल [illegible] के कल्क को मसूर के यूष के साथ [illegible] संग्रहणी नष्ट होती है। सोलह [illegible] में एक सेर सोंठ की चटनी और [illegible] गौ का घी डालकर पकाये गये [illegible] सेवन करने से ग्रहणी रोग, बढ़ी हुई [illegible] खून की कमी, खाँसी और बुखार [illegible] में लाभ होता है। पेट में [illegible] को भी यह नीचे के मार्ग से निकाल [illegible] एक सेर सोंठ की लुगदी को [illegible] के घी और सोलह सेर दशमूल के [illegible] डालकर बनाये घी को आधे [illegible] मात्रा में सेवन करने से पाण्डु, [illegible] ग्रहणी रोग दूर होते हैं, आँव [illegible] तो बन्द हो जाता है। आँव बन्द [illegible] लिए गुड़ और सोंठ की बनाई [illegible] प्रयोग में शार्ङ्गधर ने लाभ देखा है।

जिस्मानी व दिमाग़ी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
डॉ. गौतमराव केशव टॉनिक फॉस्फरस पिल्स
के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी एल० एस०
धोलकिया एन्ड ब्रदर्स।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमण्डल

हमारी सन्तान नीरोग कैसे हो सकती है ? सन्तानों के लिये हमारे कर्तव्य क्या हों ?

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

झाँसी की रानी ब्रिगेड की प्रधानकर्नल लक्ष्मी

तालों की कमी नहीं है; परन्तु स्त्रियों की भयंकर बीमारियों के लिए दवाखानों की संख्या अँगुलियों पर गिनी जा सकती है। जहाँ तक देखा जाता है, प्राकृतिक नियमों का पालन करनेवाले अन्य प्राणियों में प्रसव की बीमारी उतनी अधिक नहीं है जितनी मनुष्यों में। नर-नारी अपनी उच्छृंखलता से संयम को बिलकुल भूल जाते हैं। संयम करने में वे अन्य प्राणियों की नकल को मूर्खता समझते हैं। परन्तु वे यह नहीं देखते कि उनके बच्चे और वे स्वयं स्वास्थ्य की दृष्टि से कितने दुखी रहते हैं। पुरुषों की भयंकर बीमारियाँ मैथुन द्वारा स्त्रियों के गर्भाशय में पहुँच जाती हैं जिनका प्रभाव उनकी संतान पर पड़े बिना नहीं रहता। कभी कभी तो स्वयं स्त्रियाँ ही उस रोग से इतनी ग्रसित हो जाती हैं कि उनका जीवन भार होने लगता है। जिस पुरुष को सुजाक और गर्मी की बीमारी रहती है उसमें गठिया की बीमारी के कीटाणु अवश्य मौजूद रहते हैं। ऐसे पुरुष से जो सन्तान पैदा होगी वह गठिया, आदि बीमारियों से ग्रसित रहेगी। उस सन्तान में माता-पिता की बीमारी के सारे दोष मौजूद रहेंगे। माता भी उन बीमारियों के प्रभाव से अछूती न रहकर प्रसूति आदि बीमारियों का शिकार बन जायगी। ऐसी दशा में स्त्री-पुरुष के जोड़े का जीवन संसार का एक नारकीय जीवन रहता है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि सन्तानों की अधिकतर बीमारियाँ माता-पिता की विरासत हैं। विदेशों में सभ्य देशों की कुछ सरकारों ने शादी के पहले नर-नारियों के जोड़ों की स्वास्थ्य-परीक्षा कराने के नियम बना दिये हैं। यदि दोनों में से कोई भी बीमार है तो वह शादी नहीं कर सकता। क्योंकि उनसे यौन बीमारियाँ हो जाने का [illegible] रहता है। परन्तु हमारे [illegible] पुरुष अपनी शादी के [illegible] पत्नी को भी नहीं [illegible] इतने बड़े सुधार [illegible] तैयार हो सकता है। देश में स्वस्थ और सुदृढ़ सन्तानों के लिए आवश्यक है कि वर-वधू अपने भावी जीवन और सन्तानों को स्वस्थ और नीरोग रखने के लिए अपने वैवाहिक जीवन के पहले अपनी स्वास्थ्य-परीक्षा अवश्य करावें। बिना परीक्षा के भीतरी स्वास्थ्य का पता नहीं चलता। स्वास्थ्य-परीक्षा करनेवाले डाक्टरों को रिश्वत से भी प्रसन्न किया जा सकता है। ऐसी दशा में परीक्षा का कोई महत्त्व न रहेगा। इसलिए आवश्यक है कि देश का शिक्षित समुदाय इस आन्दोलन को आगे बढ़ावे। अब चूँकि अपनी सरकार है, ऐसे समय में सभी सुधारों के साथ इस ओर भी उसका ध्यान अवश्य आकर्षित होगा ऐसा विश्वास है। परन्तु बिना जनता के सहयोग के कोई कार्य अच्छी तरह सफल नहीं हो सकता। इसलिए हम अपनी सन्तानों को स्वस्थ और नीरोग रखने के लिए यह नया फारमूला (सिद्धान्त) अवश्य अपनावें कि अपने सन्तान की शादी के पहले उनकी स्वास्थ्य-परीक्षा करावें। यदि उनमें बीमारी है तो ब्याह के पहले उस बीमारी को दूर कराने का प्रयत्न करें।

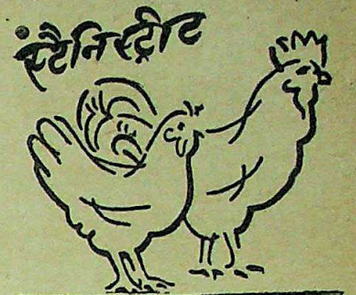

चिकेन (कंसिंट्रेटेड) एसेंस

विशुद्धता व उत्कृष्टता की गारंटी है—
विदेशी चिकेन एसेन्सों से किसी भी
हालत में खराब नहीं, वरन् अच्छा ही है।
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं, लिमिटेड
कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ अमृतसर कराची
SSK 129

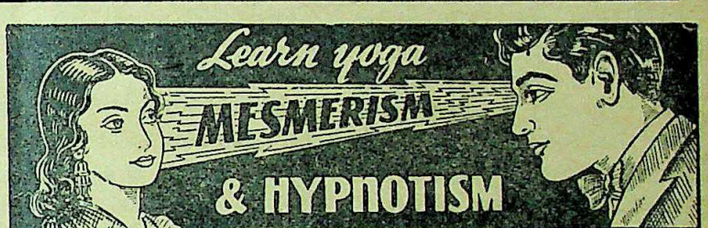

स्त्री-पुरुषों के लिए अपने घर पर उपर्युक्त क्रिया दिमाग़ को शान्ति और जीवन में वास्तविक प्रसन्नता के लिए आनन्ददायिनी प्राणशक्ति है। प्रथम तीन सौ ग्राहकों को परीक्षा के लिए मुफ़्त ! कृपा कर शीघ्र लिखें।

मैनेजर—योग-भवन
नं० १९ ऋषीकेश, यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजधानी का रङ्गमञ्च

प्रान्त में ही नवीन योजनाएँ शीघ्र कार्यान्वित होंगी

नये नागरिकों की ऊँचे पदों पर नियुक्ति होगी—अगली धान की अच्छी फसल का अनुमान—कांग्रेस में अकांग्रेसी व्यक्तियों का निषेध होगा—प्रान्तीय कांग्रेस अधिकारियों पर आरोप—कांग्रेस-मजदूर-प्रजा-पार्टी की मोर्चेबन्दी—जयप्रकाश के सम्मान में थैली भेंट की जायगी—शहरों में अँधेरे की आशंका—प्रान्त में हवाई सर्विस जारी होगी।

(अपने विशेष प्रतिनिधि-द्वारा)

युक्तप्रांत में इस समय अफसरों की कमी है। कहा जाता है कि प्रांत में १७४ आई० सी० एस० तथा ३८१ पी० सी० एस० अफसरों की व्यवस्था है, किन्तु इनमें से प्रायः ५० अफसर केन्द्रीय तथा अन्य प्रांतीय सरकारों की सेवा में भेज दिये गये हैं। इधर राशनिंग, नागरिक रसद, यातायात आदि अनेक नये विभाग खुल जाने के कारण अफसरों की माँग बहुत बढ़ गई है और बहुत से सिविलियनों के इन विभागों में ले लिये जाने के कारण शासन-व्यवस्था के लिए सुयोग्य अफसरों की कमी हो गई है। मंत्रिमंडल के समक्ष एक प्रस्ताव यह आया था कि वह अपने बाहर भेजे गये अफसरों को वापस बुला ले, किन्तु पंत-सरकार केन्द्र की राष्ट्रीय सरकार के सम्मुख नई कठिनाइयाँ नहीं पैदा करना चाहती। ज्ञात हुआ है कि वह विचार कर रही है कि सुयोग्य नागरिकों में से अफसरों की भर्ती की जाय और उनकी ट्रेनिंग की व्यवस्था करके उन्हें शासन-कार्य में सुदक्ष बनाया जाय।

* * *

अति वर्षा और सूखा दोनों ने ही युक्त-प्रांत की खरीफ की फसल चौपट करने का षड्यन्त्र किया है। गंगा, यमुना, सरयू, गंडक आदि नदियों की बाढ़ के कारण अनेक गाँव बह गये और खड़ी फसलें नष्ट हो गईं। कुछ जिलों में खेतों में पानी भर जाने के कारण फसलें बरबाद हो गईं। दूसरी ओर सितम्बर मास में सूखा पड़ जाने के कारण कम से कम सात जिलों में खरीफ की फसलों को बहुत अधिक हानि पहुँची है, जिसका पूरा अंदाजा अभी नहीं लगाया जा सकता। धान की फसल को बहुत अधिक क्षति पहुँचने का समाचार है, किन्तु फिर भी धान की पैदावार के बहुत घटने की आशंका नहीं है, यदि अक्टूबर में उपयुक्त वर्षा हो जाय।

* * *

युक्तप्रांतीय कांग्रेस कमिटी की पिछली बैठक में, जो मेरठ में हुई थी, अनेक सदस्यों का मत था कि कांग्रेस कमेटियों में ऐसे व्यक्तियों का प्राधान्य हो रहा है, जिन्होंने १९४२ के आन्दोलन में न तो अपने को गिरफ्तार कराया और न जेल गये अथवा यदि गये भी, तो अत्यन्त संशयात्मक ढंग से उनकी रिहाई हुई। अब दो प्रमुख सदस्यों ने आगामी बैठक में एक प्रस्ताव पेश करने का नोटिस दिया है, जिसमें इस प्रकार के व्यक्तियों पर कांग्रेस के निर्वाचित पदों पर रहने पर प्रतिबन्ध लगा दिया जायगा, किन्तु फरारों के लिए छूट रहेगी।

*

अनेक [illegible] प्रांतीय [illegible] स्थानिक कांग्रेस कमेटियों के निर्वाचनों में अनुचित हस्तक्षेप करते हैं और इस प्रकार अपनी पार्टी को सर्वत्र मजबूत बनाने के लिए सचेष्ट हैं। प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के प्रायः १०० सदस्यों ने कमेटी की एक आवश्यक बैठक इसी सम्बन्ध में विचार करने के लिए बुलाने का अनुरोध प्रांतपति से किया है। उन्होंने नवनिर्मित प्रांतीय कांग्रेस सूबा अदालत पर भी कुछ इसी प्रकार के आरोप लगाये हैं।

* * *

कांग्रेस मजदूर प्रजा-पार्टी अपना संगठन सुदृढ़ करने के लिए प्रयत्नशील है। उसकी कार्य-कारिणी की विगत बैठक में निश्चय किया गया कि पार्टी का आर्थिक मोर्चा मजबूत बनाने के लिए उसके सदस्य चंदा एकत्र करें और अपने नेता पंडित श्रीकृष्णदत्त पालीवाल को शीघ्र ही दो लाख रुपये की थैली इस कार्य के लिए भेंट करें।

* * *

प्रख्यात समाजवादी नेता श्री जयप्रकाशनारायण आगामी १४ अक्टूबर से युक्तप्रांत का दौरा प्रारम्भ कर रहे हैं। समाजवादी दल ने उनको युक्तप्रांत की ओर से ढाई लाख रुपये की एक थैली भेंट करने की योजना बनाई है और उसके लिए प्रांतवासियों से धन देने की अपील की है। इस अपील पर आचार्य नरेन्द्रदेव, डाक्टर बालकृष्ण केसकर, प्रांतपति दामोदरस्वरूप सेठ, श्रीमती विजयालक्ष्मी पंडित, श्री रफीअहमद किदवई तथा अन्य अनेक मन्त्रियों एवं नेताओं के हस्ताक्षर हैं, जिनका कहना है कि अगस्त-क्रान्ति के इस अलबेले नायक का सम्मान करके हम अपनी मातृभूमि का ही सम्मान करेंगे। आशा की जाती है कि इस थैली के लिए युक्तप्रांत में धन की कमी न होगी।

* * *

युक्तप्रांत के आधा दर्जन से अधिक नगरों में ब्लैक आउट का मजा आनेवाला है। युक्तप्रांत के आठ नगरों में—जिनमें इलाहाबाद, बनारस, आगरा, मथुरा, मेरठ, बरेली आदि भी शामिल हैं—बिजली का उत्पादन और वितरण मार्टिन कम्पनी की व्यवस्था में होता है, जिसने अपने कर्मचारियों को वेतनवृद्धि तथा महँगाई के भत्ते के नाम पर सदा अँगूठा ही दिखाया है। पिछले सप्ताह इन कर्मचारियों ने हड़ताल के लिए बैलट प्रणाली से मतदान किया है और यदि अधिकांश कर्मचारियों ने हड़ताल के पक्ष में वोट दिये, तो इन नगरों को कुछ समय के लिए अन्धकार का सामना करने के लिए [illegible] पड़ेगा।

इधर उधर की

काश्मीर के ऊपर एक राकेट बम उड़ता हुआ दिखाई पड़ा था। उसके निकल जाने पर एक प्रकार का उड़ता हुआ धुआँ रह गया। मालूम होता है रूसी वैज्ञानिक पामीर के पठार पर राकेट बम और अणु बम सम्बन्धी खोज कर रहे हैं।

* * *

चन्द्रमा तक पहुँचने के लिए वैज्ञानिक ऐसे राकेट बना रहे हैं जो ४० मील प्रतिघंटा चलेंगे। इँगलैंड में इस विषय पर

को प्रोत्साहित करने की घोषणा की थी, अब वह प्रांत में हवाई सर्विसों के विकास के लिए भी प्रयत्नशील है। उसने लखनऊ से प्रांत के विभिन्न नगरों के लिए तीन हवाई सर्विस स्थापित करने का निश्चय किया है तथा जो प्राइवेट कम्पनियाँ हवाई सर्विस जारी करना चाहें, उन्हें वह आर्थिक सहायता देने को भी तैयार है।

* * *

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग कालेज के सम्बन्ध में युक्त-प्रांतीय सरकार ने एक जाँच-कमेटी नियुक्त की है। इस कालेज के सम्बन्ध में प्रांतीय इंजीनियरों का ख्याल है कि उसकी शिक्षा का स्तर अत्यन्त निम्नकोटि का है और उसके स्नातक अच्छे इंजीनियर नहीं होते। यदि कमेटी की भी यही राय होगी, तो सरकार अलीगढ़ के इंजीनियरिंग के डिप्लोमा को अमान्य घोषित कर देगी।

* * *

बाँदा जिले की अन्न-वसूली के सम्बन्ध में सरकारी कर्मचारियों द्वारा वहाँ के ग्रामीणों पर अत्याचार किये जाने के जो आरोप लगाये गये थे, उनकी जाँच के लिए सरकार ने अब एक न्याय कमीशन नियुक्त करने का विचार किया है। यह स्मरणीय है कि झाँसी के कमिश्नर खुरशीद-हसन तथा पार्लामेंटरी सेक्रेटरी लाल-बहादुर शास्त्री ने एक कमीशन द्वारा इन आरोपों की जाँच की चेष्टा की थी, किन्तु सरकारी अफसरों के अप्रत्यक्ष असहयोग के कारण जाँच सम्भव नहीं हुई और दोनों अधिकारियों को वहाँ से बैरंग वापस लौटना पड़ा।

काफी कार्य शुरू हो गया [illegible] के निर्माणों में यह [illegible] निर्माण है। मिस्टर [illegible] इसके आविष्कारक हैं, [illegible] ये राकेट एक प्रकार के [illegible] लोक की यात्रा २० वर्षों [illegible] की आकर्षण शक्ति उन [illegible] हजार प्रतिमिनट चलने [illegible] खींच सकेगी। [illegible] समय ४० मील प्रतिघंटे [illegible] इसके पश्चात् इच्छानुसार [illegible] जा सकता है।

* *

शिकागो में एक ऐसा [illegible] है जिसमें हवाई शादी को [illegible] गैर कानूनी ठहराने पर विवाद [illegible] एक क्लर्क ने इस शादी को [illegible] बताया है। परन्तु स्थानीय [illegible] उस क्लर्क से भिन्न है। एक [illegible] है कि शादी के जोड़े किसी [illegible] के ऊपर थे। यह समस्या [illegible] अदालत तक जायगी।

विना आपरेशन

: खोईहुई नेत्र ज्योति फिरसे [illegible]
मोतिया बिन्दु और अनेक [illegible]
आईडाल बिना आपरेशन के [illegible]
— डाक्टरों के मत :—
मैंने आईडाल [illegible]
सभी बीमारों पर अत्यन्त [illegible]
डाक्टर सी. अपालाचार्य [illegible]
(यु. एस. ए.) एस. एम. ([illegible])
एम. एस. (जाईना)
मैंने स्वयं आईडाल [illegible]
कीया है, बहुतसी अच्छी [illegible]
डाक्टर [illegible]
आईडाल नेत्रबिन्दु [illegible]
कीमत रु० २-८-० [illegible]
पोस्ट बाक्स १६९, [illegible]

स्वर्गीय पण्डित कृष्णकान्त जी मालवीय लिखित

वैवाहिक जीवन-सम्बन्धी प्रसिद्ध हिन्दी पुस्तक

'सुहागरात'

फिर से छप गई किन्तु परिमित संख्या में ही पुस्तकें छपी हैं इसलिए [illegible] कीजिए। विवाह के शुभ अवसर पर इससे अधिक सुन्दर देने योग्य [illegible] कोई दूसरा नहीं हो सकता।

सुहागरात (प्रथम भाग) या बहूरानी को सीख
सुहागरात (दूसरा भाग) या पतियों को सीख
सुहागरात (तीसरा भाग) या मातृत्व और बच्चों की [illegible]

तीनों भागों का मूल्य अलग अलग पाँच रुपया प्रति भाग मात्र। [illegible] एक साथ मँगानेवाले के लिए डाक-खर्च माफ। जल्दी कीजिए [illegible] प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

मैनेजर 'अभ्युदय' प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्तहास

...की तरंग

...कयूम साहब चाहते हैं कि ...र इस्लामी झंडा फहराये। ...बहुत छोटी है। सारे ...इस्लामी राज न हुआ तो

* *

...कवि निराला लापता हो ...राजेन्द्रशंकर के यहाँ ...पड़ता है, गुम होकर वहीं ...अब कोई खो जाय तो ...साहब के यहाँ खोज कर तब ...चाहिए।

* *

...भी छापा कि कविवर का ...गर्म हो गया है। गर्म तो ...है। उसमें कोई नई बात ...होता तो नई बात होती।

* *

स्वराज्य हो गया, अब जितना गाँजा चाहे पिया जा सकता है।

* * *

पंडित विश्वम्भरदयाल त्रिपाठी ने एक वक्तव्य दिया है कि नेताजी उचित अवसर पर प्रकट होंगे। वह उचित अवसर इस युग के बाद भी आ सकता है। लोगों को घबराना नहीं चाहिए।

* * *

महात्माजी ने सलाह दी है कि ईश्वर पर भरोसा रक्खो। बदला मत लो। जब छुरा कलेजे में भोंक दिया जाता है तब ईश्वर पर भरोसा रखने के अतिरिक्त और हो भी क्या सकता है।

* * *

आगरा में भी ताजीरी टैक्स लगनेवाला है तो लगे। क्या मुस्लिम लीग के पास फंड नहीं है! मुस्लिम रियासतें क्या यों ही, मुस्लिम लीग की सदस्या हैं?

* * *

बिलासपुर में प्रजा पर बड़ा अत्याचार हो रहा है ऐसी ख़बर छपी है। बिलासपुर के शासकों ने विलास नहीं किया तो किस युग में करेंगे। जनता को कुछ नाम का भी तो लिहाज़ करना चाहिए।

* * *

पंजाब के डाक्टर आलम का कहना है कि हिन्दू-मुसलमानों को मेल से रहना चाहिए। छुरा और शरीर का भी तो मेल ही है। पता नहीं कयूम साहब डाक्टर आलम का कथन सुनेंगे तो क्या कहेंगे।

* * *

मदरासियों को महात्माजी ने सलाह दी है कि चावल के अभाव में नारियल और शकरकंद खाकर रहें। और ... की मछली भी किनारे ... हिन्द-महासागर में ... के लिए मछलि...

...में भी दंगा हो गया। बहुत ...वहीं आरम्भ होना चाहिए। ...शुभ स्थान तो वहीं है।

* *

...ने कहा है कि पंजाब ...की सेना का गरमागरम ...। तब तक तो कयूम साहब ...कहीं और होंगे। जब ...आती है तब कयूम ...होते हैं।

* *

...में भी राष्ट्रीय सरकार बन गई। ...आजम वहाँ नहीं पहुँच ...बिना पाकिस्तान के ...में दो व्यक्ति एक मन गाँजा ...। उन्होंने समझा होगा कि

मैं क्या चाहता हूँ?

'वेढब' बनारसी

जब हो प्रभात अंबर में, नींद टूट जाये,
ऊषा चले रँगीला-सा थाल जब सजाये।
तेरी मधुर मनोहर मुसकान चाहता हूँ।
हो चाय और उसमें हो दो छटाँक चीनी,
हलवा, गुलाब की हो जिसमें सुगंध भीनी।
मैं नित्य प्रात ऐसा जलपान चाहता हूँ।
मुझको विहाग का स्वर कुछ है नहीं सुहाता,
है राग सोहनी का भी कुछ मुझे न भाता।
मैं शुद्ध भैरवी का बस गान चाहता हूँ।
मोटर, विमान, जोड़ी, से प्रेम हूँ न करता,
पतवार-हीन नौका की खोज में विहरता।
बन्धनविहीन जो हो वह यान चाहता हूँ।
शीतल समीर उर में मद है कभी न भरता,
पावस पयोद से उर मेरा नहीं सिहरता।
जो रुक सके न रोके तूफ़ान चाहता हूँ।
वैभव न विश्व का धन या मान चाहता हूँ,
बस प्रेम की सुरीली सी तान चाहता हूँ।
ले लो हृदय इसी का प्रतिदान चाहता हूँ।

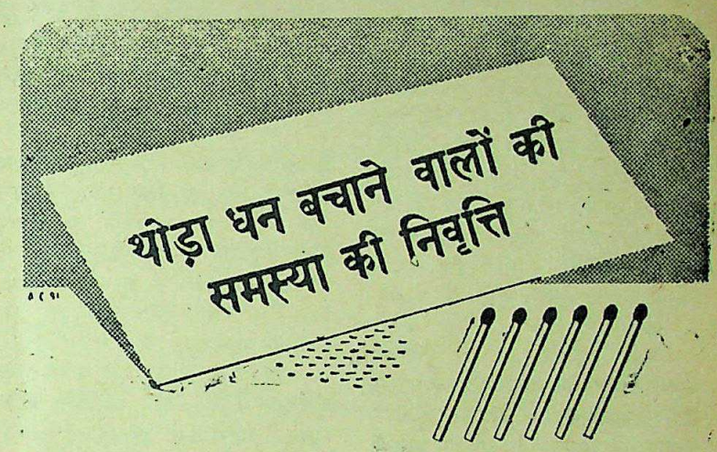

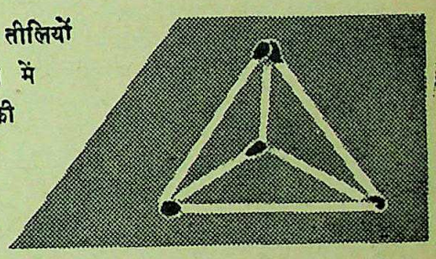

नई पुस्तक

कामायनी-अनुशीलन

महाकवि 'प्रसाद' का महाकाव्य 'कामायनी' बहुत प्रसिद्ध है। पर यह सबकी समझ में नहीं आता। इस पर अनेक समीक्षकों के विचार पत्रों में प्रकट हुए हैं। इसी ग्रन्थ का अनुशीलन इस पुस्तक में लेखक रामलालसिंह एम० ए०, बी० टी० साहित्यरत्न ने कामायनी का ऐतिहासिक तत्त्व, प्रकृति वर्णन, चरित्र-चित्रण, श्रद्धा, भाषा तथा भावाभिव्यक्ति, छंद विधान, रस संचार, कामायनी का मनस्तत्त्व, दार्शनिक तथ्य, युग की अभिव्यक्ति, प्रेम-निरूपण आदि शीर्षकों में बड़ी मार्मिकता से किया है। अच्छे काग़ज़ पर छपी कोई ढाई सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २)।

मैनेजर इंडियन प्रेस लि०, इलाहाबाद।

थोड़ा धन बचाने वालों की समस्या की निवृत्ति

प्रश्न : दियासलाई की ६ तीलियों की सहायता से चार त्रिकोण बनाइए

उत्तर : एक मेज़ पर तीन तीलियों को एक त्रिकोण के रूप में रखिये और शेष तीन की सहायता से एक सूच्याकार बनाइए जैसा आकृति में दिखाया गया है।

ऐसी समस्यायें केवल चतुर ही नहीं बनातीं बल्कि अवकाश में प्रसन्नता और मनोरंजन भी देती हैं। लेकिन हमारे सन्मुख आर्थिक रूप से सुरक्षित रहना इन से कहीं कठिन समस्या है। इस समस्या से आपको चिन्तित नहीं रहना चाहिये क्योंकि इस समस्या की निवृत्ति उचित रूप से बचत करके हो सकती है। प्रति वर्ष आप अपनी बचत की पूंजी में वृद्धि और आर्थिक रूप से उन्नति कर सकते हैं यदि आप नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स खरीद कर थोड़ा धन लगाने वालों की प्रतिदिन बढ़ती संख्या के साथ सम्मिलित हो जायें। नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स रुपया लगाने की सबसे श्रेष्ठ मद हैं, यह पूर्णतया सुरक्षित और सब मदों से अधिक लाभदायक हैं।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

(१) आप ५, १०, ५०, १००, ५००, १०००, या ५०००, रु० के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) कुटुम्ब का प्रत्येक व्यक्ति (वयस्क या अल्पवयस्क) ५००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स खरीद सकता है। दो व्यक्ति मिलकर १०,००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है। सरकार द्वारा प्रचलित रुपया लगाने की मदों पर जो ब्याज दिया जाता है यह सब से अधिक दर है।

(४) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(५) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष पश्चात भी भुनाया जा सकता है)

(६) जिनकी बचत थोड़ी है वह १), ॥), ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं, ५ रु० के स्टाम्प्स जमा होने पर एक नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट मिल जायेगा।

(७) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकृत एजंटों अथवा सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

...सेविंग्ज़ ... हो जाइए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरंजक चुटकुले

सिन्ध में लीगी मन्त्रिमंडल के अधिकांश मन्त्रियों ने इस्तीफा दे दिया है। इस्तीफा मंजूर होने पर भी मन्त्रिमंडल जीवित है।

* * *

सिन्ध प्रान्तीय असेम्बली की १० तारीख को बैठक थी। अध्यक्ष श्री मीर मुहम्मद शाह और उपाध्यक्षा कुमारी सियाधी-मलानी के इस्तीफा दे देने से अध्यक्ष का आसन खाली था। असेम्बली की कार्यवाही तो दूर रही। सभा भवन में हुल्लड़ था। पाकिस्तानी प्रदेशों में ऐसी ही व्यवस्था वास्तव में शोभाजनक है।

* * *

पंजाब में लीगी अपनी चल अचल सम्पत्ति अपनी बेगमों के नाम कर रहे हैं। इसके पश्चात् वे आन्दोलन करेंगे—लगान और कर न दो। इसके अर्थ हैं वे स्वयं जेल न जायँगे, उनकी स्त्रियाँ भी जेल की हवा खायँगी। क्योंकि सम्पत्ति और खेत तो बेगमों के नाम रहेंगे। शौहर को क्या?

* * *

कांग्रेस द्वितीय युद्ध को पूँजीवादी अथवा समाजवादी युद्ध कहता था। परन्तु उसी के शासनकाल में सीमाप्रान्त के वजीरिस्तान में ब्रिटिश सरकार बम बरसाती है। कैसा रामराज्य है।

* * *

युक्तप्रान्तीय कांग्रेस सरकार ने जमींदारी तो तोड़ दी परन्तु अभी जमींदार बाकी हैं। नेताओं को क्या? जब फिर वोट अथवा चुनाव का समय आयेगा पूरे त्यागवीर कर्मवीर के रूप में प्रकट हो जायँगे। फिर किसानों के हितचिन्तकों की कमी न होगी। उस समय देश की सारी सम्पत्ति किसानों और मजदूरों की रहेगी।

* * *

एक सज्जन ने अपने मित्र से कहा—'संसार' के मतानुसार पूँजीवाद शीघ्र ही खतम होनेवाला है। मित्र ने कहा—पर 'भारत' में कुछ देर है। सज्जन ने कहा—अजी आपने संसार के अर्थ का अनर्थ कर दिया। मेरा मतलब 'संसार' पत्र से है।

* * *

कांग्रेसी सभा में बैठे हुये एक महाशय ने अपने एक मित्र से कहा—'अजी अब तो.....की बिक्री कम हो गई है।'

मित्र ने हँसते हुये उत्तर दिया—'इसीलिए कि अब सरकारी दफ़्तरों में कांग्रेसियों की अधिक माँग है। सभी दफ़्तर में सारे नेता भरे जा रहे हैं।'

उक्त महाशय ने हँसते हुये कहा—आपने दूसरी बात समझ ली। मैंने तो अखबार के सम्बन्ध में कहा था।

* * *

किसी पंजाबी ने लाहौर में एक काले रंग के आदमी को देखकर उससे पूछा—'तुम कौन हो?'

आदमी ने उत्तर दिया—'उड़िया।'

पंजाबी, बड़े चक्कर में पड़ा। उसने कहा—'तुम्हारे पंखे तो नहीं हैं।'

आदमी ने कहा—'भाई उड़ीसा का रहनेवाला हूँ। वहाँ हम लोग उड़िया कहे जाते हैं?'

* * *

युवकों की एक कमेटी की बैठक थी। एक नया सदस्य भर्ती हुआ था। सदस्य ने अपने बगलवाले युवक से पूछा—'सामनेवाले महा[illegible]'

युवक ने [illegible] तक तुम्हें [illegible] चेयरमैन [illegible]

श्री हरिवंश राय 'बच्चन'

(पेज ४ का शेष)

की कोई आवश्यकता नहीं। बच्चन मानव के कवि हैं, मानवता के नहीं।

'मधुकलश' उसी अज्ञात के प्रति आकर्षण था। अन्धकारमय लहरों का निमन्त्रण था। सहसा बच्चन के जीवन में नियति ने एक ठोकर दी। वे उस अथाह सागर में कूद पड़े। 'निशा-निमन्त्रण' और 'एकान्त-संगीत' वही अपार सागर है। कवि के चारों ओर केवल अन्धकार ही अन्धकार दृष्टिगोचर हो रहा था। कोई साथी नहीं। बहुत दूर छूटे हुए साथी की कल्पना थी, फिर वह कल्पना भी पीछे छूट गई। आशा और विश्वास में भी कम्पन उत्पन्न होने लगा। कहीं तीर का पता न था। पर कवि तैरता गया; नियति के वेग में बहता हुआ चला गया। आकुल अन्तर में दूसरी ओर का किनारा दिखाई पड़ने लगा। फैले हुए अन्धकार में एक किरण फूटी जो बढ़ते बढ़ते इन्द्र-धनुषी रंगों से सजकर नवीन संसार पर छा गई। अन्धकार मिट गया। कवि तैरकर तब तक दूसरे पार पहुँच चुका था।

यदि जीवन के क्षण क्षण में परिवर्तित वातावरण में रोना, क्रोध, गम्भीरता आदि मनुष्य के व्यक्तित्व के परिवर्तन के स्मारक हैं तो निःसन्देह 'बच्चन' में परिवर्तन हुआ है। जिस प्रकार किसी का व्यक्तित्व अनेक दशाओं में रोते, हँसते, गाते हुए भी एक ही बना रहता है उसी प्रकार मधुकलश से लेकर सतरङ्गिनी तक बच्चन कहीं भी अपने मुख्य सिद्धान्त से विलग नहीं हुए।

प्रश्न यह उठता है कि तब अन्तर क्या है? 'मधुकलश' में आशा उनके लिए दूर स्वर्ग की एक किरण थी! उनके और उस स्वप्न के बीच में निराशा का दीर्घ हाथ व्यवधान बनकर हिला रहा था। उनकी उत्कट अभिलाषाएँ विद्रोह कर रहीं थीं। संसार उनके लिए एक बन्दीगृह था। कवि ने अपना संसार अलग ही बसाया। बन्धन की भावना उनके ऊपर इतनी अधिक छा गई कि यह शरीर भी एक बन्धन हो गया। इस समय उन्होंने गाया—

मैं नहीं हूँ देह-धर्मों से बँधा जग जानता है

* * *

प्राण प्राणों से सके मिल,
किस तरह दीवार है तन।
काल है कड़ियाँ न गिनता,
बेड़ियों का शब्द झनझन॥

सतरङ्गिनी में कवि अपने को मुक्त संसार में पाता है। बन्दीगृह उस पार छूट गया। शरीर और सृष्टि अब व्यवधान नहीं रह गये। अब वे मिलन के प्रतीक और कारण बन गये:—

प्राण प्राणों से गये मिल,
क्या मिले दो कण्ठ के स्वर।
प्राण प्राणों से गये घुल,
क्या मिले आतुर अधर कर॥

काल अब नाशक अथवा अरमानों का अवरोध नहीं है:—

ध्वंस की अब हो न शक्ति प्रचण्ड।
सभ्यता के वृद्धिनायक दण्ड॥
सब समय रह वर्तमान समाप्त।
विश्व का करता सतत कल्याण॥

इस प्रकार विद्रोही कवि ने अपने चारों ओर के वातावरण से अपना मेल स्थापित कर लिया है। पर इसका यह अर्थ नहीं कि वह बन्दीगृह को भूल गया। नहीं, पहले वह कैदखाने के सीखचों से टकराता था, उन पर अपना जोर आजमाता था और एक बार तो उसने संसार की शक्तियों ने हार भी मान ली। पर वह उस बन्दीगृह से छूट न सका। अन्त में उसने उन सीखचों से दोस्ती कर ली। अपने छोटे से कमरे की ओर देखा तो उसमें एक मधुवन दृष्टिगोचर हुआ। ठीक वैसा ही जैसा सीखचे के बाहर दिखाई पड़ता था। अरे, यह तो उसके[illegible] था। आज कवि उसी [illegible] खेल रहा है। अब भी [illegible] सीखचों पर दृष्टि पड़ [illegible] की रागिनी फूट पड़ती है। [illegible] का संवादी स्वर है, [illegible] तीव्र। लेकिन फिर वह [illegible] अपने खेल में लगा जाते हैं। [illegible] में कितना सत्य है और [illegible] यह समय बता देगा।

मेरी करुण कहानी

नवीन सहधर्मिणी का संग और दुर्भाग्य का मेरी दशा पर मुस्कराना।

नपुंसकता तथा निर्बलता ने, जो कि मेरे बचपन के अविवेक-पूर्ण कार्यों की देन थी, मुझे जीवन से निराश कर दिया था। हम स्त्री-पुरुष दोनों ही चिन्तित तथा विक्षिप्त थे। दोनों का जीवन कलह तथा संघर्ष का केन्द्र था। जीवन अशान्त था। शान्ति की खोज में मैं हिमालय पर्वत की दुर्गम घाटियों में घूमता हुआ शिमला से भी १०० मील आगे उन चट्टानों पर पहुँचा जहाँ मई और जून के महीनों में भी बर्फ़ जमी रहती है। एक दिन मैं जीवन से पूर्ण निराश हो चुका था तथा जीवन-दीपक का प्रकाश मन्द हो रहा था। इसको प्रज्वलित करने के साधनों का पूर्ण अभाव हो चुका था, अतः मैंने सोचा कि ऐसे दुखद जीवन से छुटकारा क्यों न कर लिया जाये। मैं इन्हीं विचारों में डूबा हुआ था कि अचानक एक साधु ने, जिसकी आयु लगभग ८० वर्ष की थी, जिसके चेहरे पर सूर्य जैसा प्रकाश था, देखने में तन्दुरुस्त तथा जवान मालूम पड़ता था, पीछे से मेरा हाथ पकड़कर बोला, 'बेटा, इस सुनसान स्थान में निराश घूमने का क्या कारण है।' मैंने उस महात्मा को अपनी दुख-भरी कहानी सुनाई। उसने मुझे ढाढ़स बँधाया और कहा कि "यदि आप सच्चे हृदय से दृढ़ प्रतिज्ञा करें कि बुरे कामों से बचेंगे और अपने सरीखे दुखी आदमियों का उपकार करेंगे तो अपका अवश्य भला होगा?" मैंने सच्चे हृदय से उसकी आज्ञा पालन करने का निश्चय किया। उस साधु ने एक दवा खाने के लिए और एक परचा मालिश करने का लिख दिया और बर्फ़ से खोदकर एक लाल जड़ी दी। मैंने १५ दिन तक उस दवा को बनाकर खाया। निस्सन्देह पहली खुराक ने अपना फायदा दिखाया। ७ दिनों में मेरी दशा पलट गई। सारे कष्ट दूर हो गये। शरीर में बिजली की तरह स्फूर्ति अनुभव होने लगी तथा उसे संचित रखना कठिन हो गया। उस महान् साधु की देन का यह प्रभाव है कि आज तक किसी और दवा के खाने की जरूरत न पड़ी और तमाम साथियों ने अपने जीवन को सार्थक बनाकर विशेष आनन्द अनुभव किया। हर प्रकार की सुस्ती, नपुंसकता, जिरियान, स्वप्नदोष, पेशाब में जलन, रगों व पट्ठों का कमजोर पड़ जाना, मतलब यह कि यह दवा हरएक प्रकार के गुप्त रोगों का शीघ्र अन्त करती है, जवानी के लक्षण दिखाई पड़ने लगते हैं, चिपके गाल उभर आते हैं, बदन लाल तथा पुष्ट हो जाता है। १५ दिन की ३० खुराक, जो कि तन्दुरुस्ती के लिए काफी है, ४॥) में और मालिश करने की फी शीशी का मूल्य ३) रु० है। मालिश करने से किसी प्रकार के फफोले नहीं पड़ते व जलन भी नहीं होती। शरीर के समस्त निर्जीव रगों में चैतन्यता पैदा [illegible] दवा ने मुझे पुनर्जीवन प्रदान किया है। अतः मैंने अपना कर्त्तव्य [illegible] य रखा है। अविश्वासी [illegible] "लुकमान" के पास [illegible] देश घर घर पहुँचा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अस्तता?
मेकलीन ब्रांड स्टमक [illegible] व्यापक ख्याति अम्लता, उदर-[illegible] दाह, पेट दर्द, वमन, [illegible] पाचन-सम्बन्धी शिकायतों [illegible] वाले अन्य रोगों में प्रभावकारी [illegible] मान्य प्रमाण है।
उदर-विकारों से उत्पन्न [illegible] उदासी, अनिद्रा और हृदय की [illegible] कन में भी यह अमूल्य है।
यदि आप इनमें से किसी [illegible] रोग से पीड़ित हैं तो आज ही [illegible] ब्रांड स्टमक पाउडर लीजिए [illegible] प्रसिद्ध औषधि की शीघ्र [illegible] स्वयमेव अनुभव कीजिए।
मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउ[illegible] समय "एलेक्स सी० मेकलीन" [illegible] पहचान लीजिए क्योंकि [illegible]
मेकलिन ब्रांड स्टमक पाउ[illegible] सेवन कीजिए

यदि आप किसी काम में [illegible] का अनुभव करते हैं तो दिन [illegible] गिलास निर्मल इनोज़ "फ्रूट [illegible] लीजिए। इनो रक्त को शीतल व [illegible] करता है, शरीर को स्फूर्ति देकर [illegible] शक्ति व पोषण प्रदान करता है।
इनोज़ "फ्रूट साल्ट"
इनो व "फ्रूट साल्ट" [illegible] ट्रेड मार्क हैं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...मात्मा पर भरोसा करो

...विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का ...पतला होना, पेशाब के आगे पीछे धातु का गिरना आदि ...नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने नाम पाया है और ...प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए कीमत ...डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्री में ...की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों ...परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए ...से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। ...शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग।

...विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

Estd. 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S. १०) H.M.B.S. १५) H.M.D.S. २५)। पुस्तक—अ० पारिवारिक १) बायोकेमिक १) १००० रेडलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्सनरियाँ १॥) आर्गेनन १), फार्माकोपिया १॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायँगी। डा० ख० माफ—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≡) ड्राम। आउन्स ॥) घरेलू बक्स ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.)

...बाद, खून की कमी, ज्यादा ...पड़ना और कमजोरी में

...ग्रीमोल्ट का ...मोग्लोबिन

श्वेतकुष्ठ वनौषधि

...प्रदत्त श्वेतकुष्ठ (सफेदी) की ...दिन में पूरा फायदा। यदि ...डाक्टरों, वैद्यों, विज्ञापन-...की दवा से निराश हो चुके हों ...कर आराम होवें। १५ दिन ...का मूल्य २॥)।

सफेद बाल काला

...तेल से बालों का पकना रुक कर ...बाल काला पैदा होकर यदि ...तक काला न रहे तो दूना मूल्य ...की शर्त लिखा लें। यह तेल सिर ...में चक्कर आना आदि को ...आँख की रोशनी बढ़ाता है। ...पका हो तो २), आधा पका ...और कुल पका हो तो ५) का ...लें। एजेण्टों की हर जगह ...है।

स्तम्भक वटी

...शाम को खा लें और ...चमत्कार को देखें। एक घंटे ...कर गजब ढा देगी। १६ ...का २॥), १०० का ५)।

...अखिलकिशोर राम ...पो० कतरीसराय (गया)।

चिर प्रतीक्षा के पश्चात्

गान्धी-अभिनन्दन-ग्रन्थ क संशोधित तथा संवर्धित संस्करण तैयार हो गया है किन्तु, सीमित संख्या में—

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ महात्मा गांधी की हीरक-जयन्ती की पुण्य स्मृति में प्रकाशित हुआ था, तथा इसके प्रकाशन के लाभ की आय गांधी जी को भेंट कर दी गई है।

प्रत्येक भाषा की कविता हिन्दी-लिपि में छापी गई है, तथा उसका अनुवाद भी दे दिया गया है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी की ओर से महात्मा गांधीजी के प्रति यह एक ऐतिहासिक साहित्यिक-श्रद्धांजलि है।

दूसरा संस्करण बड़े आकार-प्रकार में प्रकाशित हो गया है, और प्रत्येक पृष्ठ में एक ही रचना देने से ग्रन्थ का सौन्दर्य निखर जाना स्वाभाविक है।

इस बात का पूर्ण प्रयत्न किया गया है, कि प्रकाशन की दृष्टि से यह संस्करण सर्वाङ्ग सुन्दर हो।

ग्रन्थ की भूमिका सर्वपल्ली सर राधाकृष्णन ने लिखी है। तथा इसके संरक्षक श्रीमान् सेठ घनश्यामदास जी बिड़ला हैं।

गान्धी जी की सम्मति

जो काव्य मेरी स्तुति में लिखे गए हैं, 'उनके बारे में क्या कहूँ, इतना कह सकता हूँ सही,' 'काफ़ी परिश्रम किया गया है और कोई शुभ परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता।

डा० अमरनाथ झा जी के शब्दों में 'किसी भी भाषा में इससे पहले इस प्रकार का कोई भी ग्रन्थ नहीं प्रकाशित हुआ, जिसमें इतनी भाषाओं के इतने कवियों की इतनी उत्कृष्ट कविताएँ भारतवर्ष के सबसे महान् पुरुष के सम्बन्ध में लिखी गई हों।

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ प्रत्येक पुस्तकालय में सहज ही अग्रिम स्थान प्राप्त करेगा, और पाठक इस ग्रन्थ को बारम्बार पारायण करने में सुख प्राप्त करेंगे।

इस ...ण का लाभ हरिजन-कोष में दिया जायेगा।

मूल्य ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाल शेयर डीलर्स सिण्डीकेट लिमिटे

प्रधान कार्यालय—'शेयर्स डीलर्स हाउस' कलकत्ता

ब्रांच और एजेन्सियाँ—सारे भारतवर्ष, सीलोन और पूर्व अफ्रीका में

पूँजी

अधिकृत.....२५,००,०००) रुपये
बिकी हुई.....१८,००,०००) रुपये
अदा हुई.....१०,२६,३५६) रुपये

बंगाल शेयर डीलर्स सिण्डीकेट—भारतवर्ष के स्टाक और शेयर्स (हिस्सों) के व्यापार में प्राचीन और सबसे बड़ा ज्वाइंट स्टाक जिसने व्यापार में धन लगानेवाली जनता के लाभ के लिए बड़ी ईमानदारी से सेवा की है और आज भी देश में शेयर्स (हिस्सों) के व्यापार की उन्नति के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य करती है।

डिविडेण्ट (मुनाफा)

इस सिण्डीकेट के शेयर होल्डरों (हिस्सा लेनेवालों) को लगी हुई पूँजी का २७% मुनाफे के रूप में प्राप्त हो चुका है। चालू साल में इससे अच्छे मुनाफे की आशा है।

आमदनी

सिण्डीकेट को निम्नांकित मदों से आमदनी होती है—

(१) ग्राहकों के हिसाब से व्यापार करने पर दलाली से।
(२) ग्राहकों के शेयर (हिस्से) के ऊपर कर्ज देने की पेशगियों के ब्याज से।
(३) वार्षिक किराया से जो ३० हज़ार रुपयों के मकानों से प्राप्त होता है। इसमें अपनी निजी पाँच तल्ले की इमारत 'शेयर डीलर्स हाउस' है जो कलकत्ते के चौरंगी स्क्वायर में है।
(४) मैनेजिङ्ग एजेन्सी के पारिश्रमिक और कमीशन से, जो ४० हज़ार रुपये के नेशनल न्युट्रीमेंट लिमिटेड (विटामिन के व्यवसाय) से प्राप्त होता है। सिण्डीकेट को कोयले की अपनी दो कम्पनियों से जो इसी वर्ष खरीदी गई हैं, प्रतिवर्ष अच्छी रकम पैदा होने की बड़ी आशा है। उन कम्पनियों में से एक इंडियन कोलियारीज लिमिटेड है जो बहुत पहले ही खरीदी गई थी और झरिया की अच्छी कोयले की खानों में से है। उस खान से प्रतिवर्ष ७ हज़ार टन कोयला निकाला जाता है।

हमारा कार्य

(१) हम हर प्रकार के शेयरों (हिस्सों) में व्यापार करते हैं—
(२) हम व्यापार में धन लगाकर कमाने के लिए मुनाफे-सम्बन्धिनी राय देते हैं।
(३) हम, निश्चित जमा (रकम) स्वीकार करते हैं।

निश्चित जमा पर ब्याज

१ वर्ष के लिए	३½%
२ वर्ष के लिए	४%
३ और ४ वर्ष	४½%
५ और ६ वर्ष	४¾%
७ वर्ष ...	४¾%
८ वर्ष ...	५%
९ वर्ष	५½%
१० वर्ष ...	५¾%

मुनाफा अतिरिक्त धन जमा की पद्धति पर कमाया जाता है

अस्थायी राष्ट्रीय सरकार बन गई है और भारतवर्ष की स्वतन्त्रता द्वार पर है। स्वतन्त्र भारत में सारे व्यापार की उन्नति और उद्योग-धन्धों का प्रसार निश्चित है। इस परिवर्तन काल में शेयर बिजनेस (हिस्से के व्यापार) के प्रसार होने की भी बड़ी आशा है। जब हमारे अतिरिक्त धन जमा की पद्धति ठीक रहेगी तो हमारे इस मुनाफे के व्यापार के लिए अधिक धन की आवश्यकता न रहेगी। पद्धति के अनुसार पार्टी खरीदे हिस्से के लाभ का पूरा [illegible] नहीं देती बल्कि मुनाफे का एक भाग देती है। इसका पूरा विवरण [illegible] है। प्रार्थना पर हम नमूने की कापी भेज सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

मूल्य ७॥)

आक्टोबर, १९४६ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 13th October, 1946

अपराजिता—ले०, कविवर 'अंचल'। भूमिका में पं० नन्ददुलारे वाजपेयी लिखते हैं—अंचल की विरह-साधना में बड़ी ही एकनिष्ठ, सजग, विह्वलताकारी तथा जीवनमय अनुभूतियों का संचय है। इन कविताओं में आपको हिन्दी-कविता की प्रगति के विराम-चिह्न मिलेंगे। पंक्ति-पंक्ति में कवि का हृदय स्वर्गीय माधुर्य का वेग होकर बह उठा है। भाषा पर अधिकार और अभिव्यक्ति के निखार में कवि बेजोड़ है। हिन्दी-काव्य का एक नया रूप आपको इन गीतों में मिलेगा। मूल्य ३) तीन रुपये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शारीरिक उष्णता के लिये...

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

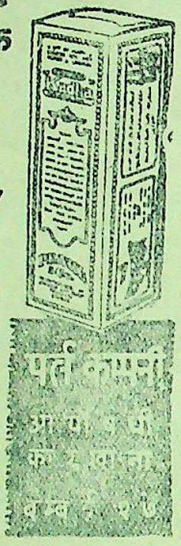

आज से ही शुरू किजिए, सर्वत्र मिलता है।

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली तलुवों और आंखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग में आग सी जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, जड़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढ़ा बालक वृद्ध, पुरुष सी सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक हानिरहित है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निस्संकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके शीतल, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

यू० पी० प्रतिनिधि दोसर एण्ड को०, बिरहना रोड, कानपुर।

दांतों को ६० प्रति शत अधिक स्वच्छ करता है!

यह जल-अभेद्य और नमी-विरोधक होता है।
साल भर की गारंटी
विकार-विरोधी शीशे में बंद
अब मांगिए—
पशुओं के बालों से रहित!

वितरक : व्यापारी निर्यात संघ. पूछताछ के लिए पूछिए : धा डी. सेमूर एंड कं० (इंडिया), लि. बम्बई कलकत्ता, करांची मद्रास।

डा. ... टूथ ब्रुश और ...

सारे संसार का प्रिय!

सिरोलि...

फेंफड़ों के विकारों ...

सावधानी से बचत बढ़ाइए

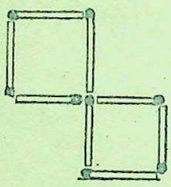

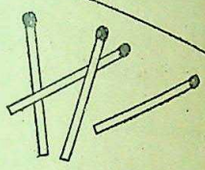

प्रश्न : दिया सलाई की चार तीलियों की सहायता से दो ... चर्तुभुजों को चार में पलटिए

उत्तर : इन चार तीलियों को ऐसे रखिये जैसे आकृति में दिखाया गया है।

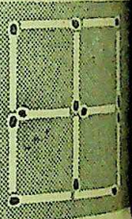

दियासलाई की चार तीलियों को उचित ढंग से रख कर इन से ... तीलियों का काम लिया जा सकता है। इसी प्रकार यदि आप ... बचत को उचित ढंग से प्रयोग में लगाना जानते हैं तो गृहस्थी में ... आय से आप अधिक से अधिक लाभ उठा सकते हैं। नेशनल सेविंग्ज सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए। छोटी पूंजी वालों के हित के लिए ही यह ... प्रचलित की गई है।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

(१) आप ५, १०, ५०, १००, ५००, १०००, या ५०००, रु० के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) कुटुम्ब का प्रत्येक व्यक्ति (वयस्क या अल्पवयस्क) ५००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकता है। दो व्यक्ति मिलकर १०,००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है। सरकार द्वारा प्रचलित रुपया लगाने की मदों पर जो ब्याज दिया जाता है यह सब से अधिक दर है।

(४) इस ब्याज पर इन्कम ... लगता।

(५) ये २ वर्ष पश्चात् भुनाये जा ... हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट ... पश्चात भी भुनाया जा सकता है।

(६) जिनकी बचत थोड़ी है ... ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद ... ५ रु० के स्टाम्प्स जमा होने पर ... सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट मिल जायेगा।

(७) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स ... सरकार द्वारा अधिकृत एजेंटों ... ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

... सेविंग्ज़ ग्रूप में अभी सम्मिलित हो जा...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, १३ आक्टोबर, १९४६

१०, संख्या ७]

नाजी शासकों को प्राण-दण्ड

गोयरिंग, रिबनट्राप और नव अन्य नेताओं को फाँसी दी जायगी

नाजी नेता, जनरल गोयरिंग।

...के अन्तर्राष्ट्रीय सैनिक न्याया-... अक्टूबर को नाजी शासकों ... फैसला सुना दिया। बारह ... को, जिनमें गोयरिंग, रिबन-... और स्ट्रेचर हैं, फाँसी की ... है।

... और रीडर को आजन्म ... शीराच, डोनेट्ज, स्पीर और ... की हल्की सजा। शाट, ... और फ्रिट्श निर्दोष घोषित। ... अदालत की ओर से लार्ड ... ने गोयरिंग का फैसला ... कहा—गोयरिंग नाजी शासन-... प्रभावशाली नेता है। वह ... पाया गया है। उसे प्राण-... दी गई।

... के डिपुटी थे। वे किसी ... स्थापित करने के लिए ... पहुँचे थे। उन्हें युद्ध का ... वरन् षड्यन्त्र का अपराधी ... शान्ति के अपराधी हैं, इससे ... के विरुद्ध अपराधी पाया ... अपराध में उन्हें आजीवन ... दी गई।

... प्रकार से अपराधी ठहराये ... उनको फाँसी की सजा मिली। ... युद्ध के अपराधी और मानवता के अपराधी ठहराये गये। उन्हें केवल दस वर्ष की सजा दी गई।

वान रिबनट्राप नाजी वैदेशिक मंत्री थे। वे गोयरिंग की श्रेणी के अपराधी हैं। उन्हें भी फाँसी की सजा दी गई। अदालत उठ ही रही थी कि डा० शाट, वान पापेन और फ्रिट्श को बरी कर देने की आज्ञा दी गई। अदालत के सोवियट सदस्य ने इन तीनों नेताओं को मुक्त कर देने का विरोध किया। इसके अतिरिक्त सोवियट सदस्य ने हेस को, आजीवन कारावास की सजा के बदले प्राणदण्ड देने की राय दी।

लार्ड जस्टिस लारेन्स ने आगे कहा—रूसी जज जर्मनी की पार्लियामेंट रीख के

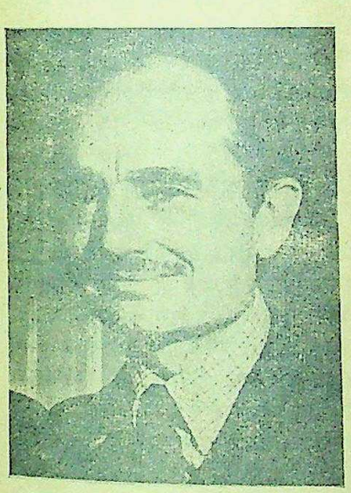

नूरेम्बर्ग न्यायालय के अमरीकी जज, श्री फ्रैन्सिस बिडले।

मंत्रिमंडल, सेनानायकों और बड़े अफसरों के खिलाफ हैं। इन सब पर विचार करने के बाद ये सब संस्थाएँ अपराधी घोषित की जा रही हैं। सदस्य का यह विरोध फैसले में दर्ज कर लिया जायगा और शीघ्र ही प्रकाशित होगा।

ग्रेट-ब्रिटेन के समयानुसार ७ बजकर ३० मिनट पर २१ अभियुक्तों को अदालत के कटघरे में लाया गया। उस समय अदालत दर्शकों से ठसाठस भरी हुई थी। मित्रों के शासन कमीशन ने संयुक्त राष्ट्रों के उस प्रस्ताव को जिसमें अधिकृत प्रदेशों के शासकों के प्रत्येक क्षेत्र से दो दो संवाददाता, युद्ध अपराधियों को जिनको प्राणदण्ड की सजा दी गई है, शासन की गवाही देने के लिए अदालत में लिए जाने चाहिए, स्वीकार किया है।

नाजी अभियुक्तों की ... फाँसी की सजा—

गोयरिंग, रिबनट्राप, ब्रानर, रोजन वर्ग, फ्रैंक, फ्रिक, स्ट्रीचर, शाकल, जाड, सीस-इन्क्वार्ट, बोरमन (अनुपस्थित)।

हेस, फंक, रीडर को आजीवन कारावास। डोनेट्ज को दस वर्ष की सजा। शीराच, बीस वर्ष की सजा। स्पीर, बीस वर्ष की सजा। वान न्युरथ, पन्द्रह वर्ष की सजा।

नाजी युद्ध-अपराधियों का जुर्म।

गोयरिंग—प्रत्येक अपराध में अपराधी पाये गये।

हेस के मामले पर विचार करते हुए अदालत ने कहा—हेस, आस्ट्रिया, जेकोस्लोवाकिया और पोलैण्ड के विरुद्ध जर्मन-आक्रमण में भाग ले रहे थे और इन सबको अच्छी तरह जानते थे। वे प्रथम और दूसरे अपराध (षड्यन्त्र और शान्ति के विरुद्ध जुर्म के) अपराधी हैं। परन्तु तीसरे चौथे जुर्म (युद्ध-अपराध और मानवता के विरुद्ध जुर्म) के अपराधी नहीं।

कीटेल—चारों अपराधों में दोषी हैं।

रिबनट्राप—चारों जुर्मों के अपराधी हैं।

काल्टन ब्रनर—प्रथम जुर्म के अपराधी नहीं वरन् तीसरे और चौथे जुर्म के हैं।

रोज़नवर्ग—सारे अपराधों के अपराधी हैं।

फ्रैंक—प्रथम जुर्म के लिए नहीं वरन् तीसरे और चौथे जुर्म के अपराधी हैं।

डा० शाट—किसी भी जुर्म में नहीं आते, इससे मुक्त किये गये।

स्ट्रीचर—प्रथम जुर्म के नहीं, बल्कि चौथे जुर्म के अपराधी हैं।

डोनट्रेज—प्रथम जुर्म के नहीं बल्कि दूसरे और तीसरे जुर्म के अपराधी हैं।

शीराच—प्रथम के नहीं बल्कि चौथे जुर्म के अपराधी हैं।

शाकल—प्रथम और दूसरे के नहीं बल्कि तीसरे और चौथे जुर्मों में आते हैं।

फ्रिक—प्रथम जुर्म के नहीं बल्कि दूसरे, तीसरे और चौथे जुर्मों के अपराधी हैं।

फ्रंक—प्रथम जुर्म के नहीं, बल्कि दूसरे, तीसरे और चौथे जुर्म के अपराधी हैं।

रीडर—दूसरे, तीसरे और चौथे जुर्म के अपराधी हैं।

बोरमन का फैसला उनकी अनुपस्थिति में किया गया। वे प्रथम जुर्म के ... बल्कि तीसरे और चौथे ...

नाजी जर्मनी और ब्रिटेन-मैत्री के विशेष दूत, हर हेस।

दूसरे, तीसरे और चौथे जुर्म के अपराधी हैं।

वान-पापेन—निरपराध पाये जाने से बरी किये जायँगे।

स्पीर—प्रथम और दूसरे के नहीं बल्कि तीसरे और चौथे जुर्म के अपराधी हैं।

न्युरथ—सभी जुर्मों के अंदर आते हैं।

फ्रिट्ज—सारे जुर्मों में निरपराध हैं और बरी किये जायँगे।

जाड—सारे जुर्मों के अपराधी पाये गये।

जुर्म सुनाने के बाद अदालत १० मिनट के लिए उठ गई।

हैन्स फ्रंक को प्रथम, तृतीय और चौथे जुर्म का अभियुक्त ठहराया गया।

रीडर के ऊपर चौथा जुर्म नहीं लगेगा।

स्ट्रीचर को चौथे जुर्म का अभियुक्त पाया गया और प्रथम से मुक्त कर दिये गये।

वे सिर्फ एक ही जुर्म के अपराधी हैं।

काल्टन ब्रनर—दूसरे जुर्म से बरी किये गये।

मुक्त हुए अभियुक्तों में से डा० शाट और वानपापेन के ऊपर केवल प्रथम और दूसरे जुर्म लगेंगे। फ्रिट्ज के ऊपर पहला, तीसरा और चौथा।

... हर वान रिबनट्राप।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

नया परिवर्तन

अस्थायी राष्ट्रीय सरकार की स्थापना को एक माह से अधिक हो गया। परंतु अभी तक उसे ब्रिटिश सरकार द्वारा राष्ट्रीय सरकार नहीं कहा गया। लीग के नेता मिस्टर जिन्ना के राष्ट्रीय सरकार में सम्मिलित होने से इनकार करने पर कांग्रेस ने सर्वमान्य नेताओं को लेकर जिस पुनीत संस्था की स्थापना की उसके मार्ग में इतने ही थोड़े दिनों में मिस्टर चर्चिल ने जो जो चालें चली हैं उनको छिपाया नहीं जा सका। मिस्टर जिन्ना ने ब्रिटेन के युद्धकालीन प्रधान मन्त्री को मजदूर सरकार के कार्यों की रिपोर्ट दी। परन्तु आज वे पदासीन नहीं हैं, कर ही क्या सकते हैं? टोरी नेताओं से निराश हो जाने पर मिस्टर जिन्ना ने पुनः दिल्ली के वायसराय भवन का आश्रय लिया। बङ्गाल के प्रधान मन्त्री मिस्टर सुहरावर्दी को विशेष दूत बनाकर वायसराय से मुलाकात के लिए भेजा। लार्ड वैवेल और सुहरावर्दी के बीच क्या बातें हुईं यह तो मालूम नहीं, पर उस मिलन से वायसराय-जिन्ना-मिलन का द्वार खुल गया। देश को यद्यपि यह विश्वास नहीं था कि लीगी नेता स्वयं ऐसा कार्य करने को प्रस्तुत होंगे। किन्तु मिस्टर जिन्ना का हृदय शायद बङ्गाल के नर-संहार से कुछ द्रवित हुआ हो अथवा पंडित जवाहरलाल नेहरू के जिस वक्तव्य ने यह स्पष्ट कर दिया है कि कांग्रेस आज भी अन्तःकालीन सरकार में लीग का हिस्सा देने को तैयार है। साथ ही विधान-सम्मेलन में दलों की बैठकें वे चाहें तो अलग कर सकते हैं, इस वक्तव्य ने कांग्रेस-लीग-मिलन का द्वार खोलने का इशारा किया। परन्तु जो मिस्टर जिन्ना मौलाना आजाद से सलाम नहीं ले सकते, उनसे हाथ मिलाने को तैयार नहीं हुए वह भला कांग्रेस से सीधे पत्र-व्यवहार कैसे करते! नवाब भूपाल और सर सुलतान अहमद इस कार्य के लिए नियुक्त किये गये। सर सुलतान को अपने कार्य में सफलता नहीं मिली, परंतु नवाब भूपाल और वायसराय ने कांग्रेस-लीग मैत्री की पुनरावृत्ति शुरू की। आज वह जहाँ तक पहुँची है उसका धुँधला चित्र हमारे सामने है।

कोई भी सरकार हो विरोधी विचारों को साथ लेकर सफल नहीं हो सकती। कांग्रेस और लीग दोनों का ध्येय अलग अलग है। एक देश को एक सूत्र में बाँधकर स्वतन्त्र करने की धुन में है तो दूसरी उसको टुकड़े टुकड़े करके अँगरेजी छत्र-छाया में रखना पसन्द करती है। एक स्वतन्त्रता और देशहित के लिए साम्प्रदायिक को तिलाञ्जलि देती है तो दूसरी साम्प्रदायिकता के नाम पर देश को टुकड़े करने के लिए संसार से हस्तक्षेप की अपील करती है। कितना विरोधाभास है! इतने पर भी द्विदली सरकार बनाने की योजना है। सीमाप्रान्तीय गांधी अब्दुल गफ्फार खाँ ने इसका विरोध किया है। परन्तु समय का प्रवाह है। गुंडों ने देश के कितने निरीह [illegible] नारियों की [illegible] प्रभाव ली[illegible] पड़ा हो[illegible] लेते [illegible] चगेरा [illegible] सकते [illegible]

उन्हीं से प्रेरणा मिली हो। नवाब भूपाल ने महात्मा जी और अन्य नेताओं से कितनी ही मुलाकातें कीं। लीग और कांग्रेस के बीच की खाई को पाटने का काफी प्रयत्न किया है। इस कार्य के लिए उन्होंने कांग्रेस-अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू और मिस्टर जिन्ना की मुलाकात की व्यवस्था की। दोनों नेताओं में कई घंटे की वार्ताएँ हुईं। मिस्टर जिन्ना ने लीग कार्यकारिणी की बैठक बुलाई। बहुत कुछ मामले तय होने के संकेत मिले हैं। अब केवल शेष है बैठक में स्वीकृति की। नवाब भूपाल जब महात्माजी से मुलाकात करके निकल रहे थे, पत्र-प्रतिनिधि के मिलने पर उनका जो उत्तर था वह मैत्री की ओर स्पष्ट संकेत कर रहा था। नवाब साहब का कहना था—"अब मैं आप लोगों से कह सकता हूँ कि वार्ता में बहुत काफी प्रगति हो गई है।" इसके अतिरिक्त महात्माजी ने अपनी प्रार्थना के समय एक संदेश दिया। जिससे एक आशा झलक रही है। संदेश में लीग-कांग्रेस समझौते से एक नई परिस्थिति पैदा होगी, जिसमें भाई भाई को मारेगा नहीं बल्कि सन् १९१६ और २० के खिलाफत आन्दोलन के समय के हिन्दू-मुस्लिम प्रेम से बढ़कर यह गठबन्धन होगा। लीग राष्ट्रीय सरकार में शामिल होगी। देश की आँखें दिल्ली की ओर लगी हैं। मिस्टर जिन्ना में यदि अच्छी सूझ पैदा हुई है तो देश का उससे कल्याण ही होगा। परन्तु यदि सीमाप्रान्तीय गांधी के शब्दों में—सरकार में शामिल होकर अडंगा डालने की नीति रही तो वह घातक ही होगी। कुछ भी हो आज के इस नये परिवर्तन के लिए हमारी शुभ कामना है और हम चाहते हैं कि यदि मिश्रित-मंडल बने तो देश की कल्याणकारी भावनाओं से ओत-प्रोत हो।

* * *

साम्राज्यवादी चर्चिल!

ब्लैकपूल में टोरियों की एक सभा में भाषण देते हुए ब्रिटेन के युद्धकालीन प्रधान मन्त्री मिस्टर चर्चिल ने अपनी हार्दिक भावनाओं का जो प्रदर्शन किया है वह नया नहीं है। ज्यूरिच यूनिवर्सिटी में दिये गये उनके भाषण में भी नई झलक है जो ब्लैकपूल में उन्होंने दिया है। उनकी निगाहों में ब्रिटेन के सारे उपनिवेश ज्यों के त्यों रहने चाहिए। भारत की स्वतन्त्रता के वे जानी दुश्मन हैं। भारत के ऊपर बोलते हुए उन्होंने कहा—"मजदूर सरकार ने भारत को पूर्ण स्वतन्त्रता देकर वहाँ की ४० करोड़ जनता के साथ घोर अन्याय किया है। उनमें पारस्परिक कलह पैदा हो जायगी जिससे वे बच नहीं सकते। हमारी सरकार भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य का पद देना चाहती थी। परन्तु आज भारत की जो स्थिति है उससे वहाँ की जनता को सन्तोष नहीं।" चर्चिल ने सदा भारत की अवहेलना की है फिर वे आज क्यों उसकी स्वतन्त्रता का समर्थन करने लगें। मिस्टर जिन्ना और चर्चिल के पत्र व्य[illegible] समझा जाता था [illegible] सोंठ [illegible] [illegible] जाय [illegible]

संदेह नहीं रह जाता कि भारतीय स्वतन्त्रता के मार्ग में टोरियों की सरकार मिस्टर जिन्ना, एम० एन० राय तथा पी० सी० जोशी आदि नेताओं का सहयोग नहीं लेती थी। अँगरेजों की यही नीति आज से दो सौ वर्ष पूर्व से आज तक जारी है।

फिलिस्तीन के सम्बन्ध में भी यही इशारा है। वक्तव्य पूर्ण रूप से साम्राज्यवादी भावनाओं से भरा है। अन्य देश चाहे मौन ही रहते। परन्तु महात्मा जी के सत्याग्रह और अहिंसा ने संसार को बिना पैसे का अस्त्र दे दिया है। वह कभी चूकता नहीं। उसको कौन नहीं अपनायेगा। चर्चिल के ये साम्राज्यवादी विचार इस बीसवीं शताब्दी में राजतन्त्र के अस्त होनेवाले सूर्य की स्वर्णीय किरणें हैं जो शीघ्र ही लोप होने जा रहा है। वर्मा के सम्बन्ध में मजदूर सरकार की घोषणा की भी मिस्टर चर्चिल ने कड़ी आलोचना की है।

मिस्टर चर्चिल शायद यह समझते हैं कि उपनिवेशों की स्वतन्त्रता उनके देश-वासियों की देन है परन्तु यह उनका भ्रम है। स्वतन्त्रता अपने बलिदानों के बल पर आती है। इँगलैंड को नाजी बम-वर्षकों ने तहस-नहस कर डाला था। यदि भारत, कनाडा और आस्ट्रेलिया आदि देशों की सेनाएँ जर्मन नाजियों को अफ्रीका, फ्रांस और इटली से न खदेड़ देतीं तो ब्रिटेन अपंग हो जाता और शायद आज संसार का एक नया मान-चित्र होता। इन देशों की सेनाओं ने दिखला दिया है कि वे अपने देश की रक्षा स्वयं कर सकती हैं। फिर मिस्टर चर्चिल का यह सपना कैसा!

* * *

भारत की वैदेशिक नीति

पत्र-प्रतिनिधियों के बीच दिये गये पंडित जवाहरलाल नेहरू के भाषण को यदि ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय तो प्रकट होगा कि भारत कुछ थोड़े से अंश में स्वतन्त्रता प्राप्त कर सका है। उनके लम्बे भाषण से स्थिति बहुत कुछ स्पष्ट हो जाती है। वायसराय का पद और हाई कमिश्नर दोनों ही दो प्रकार की ब्रिटिश शक्तियाँ हैं। एक इँगलैंड की सत्ता को भारत में स्थापित रखना चाहता है और दूसरा विदेशी मामलों में अपनी राय देता है। परन्तु इतने पर भी वैदेशिक मामलों में भारतीयों को स्वतन्त्रता रहेगी। वे अपने राजदूत भेज सकेंगे। इससे प्रकट होता है कि अँगरेजों का हृदय कुछ परिवर्तित हुआ है। पेरिस-सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि-मंडल ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध अभी हाल में मत दिया है। ब्रिटिश शासन में आज तक ऐसा नहीं हुआ। इससे यह आशा हो रही है कि ब्रिटिश सरकार भारतीयों के वैदेशिक मामलों में हस्तक्षेप न करेगी।

पंडित जवाहरलाल जी के वक्तव्य से स्थिति और भी स्पष्ट हो जाती है। भारत किसी भी शक्ति के साथ रहकर आक्रमणकारी नीति नहीं ग्रहण करना चाहता। वह औपनिवेशिक राष्ट्रों के साथ सहानुभूति चाहता है। उनको गुलामी से दूर करने में जो भी अहिंसात्मक सहायता कर सकता है, करेगा। एशिया में अपने पड़ोसी राष्ट्रों [illegible] मित्रता बढ़ायेगा। मध्यपूर्व के [illegible] के लिए मौलाना [illegible] की अध्यक्षता में शिष्ट [illegible] अतिरिक्त एशियाई [illegible] भी करने की तैयारी

है। अफ्रीका भेजे गये भारतीय [illegible] राजा सर महाराजसिंह ने [illegible] का एक पत्र, पंडित नेहरू को [illegible] उसके उत्तर में पंडितजी ने [illegible] के नेताओं को भी उसी [illegible] सम्मेलन के अवसर पर [illegible] है। रूस के वैदेशिक मंत्री [illegible] से पंडित नेहरू के विशेष प्रतिनिधि [illegible] की मुलाकात भी मैत्रीपूर्ण रही है। [illegible] वे मास्को भी जायँ। इस प्रकार [illegible] भारत का कूटनीतिज्ञ सम्बन्ध [illegible] का प्रयत्न हो रहा है। [illegible] भी योग्य प्रतिनिधि भेजे [illegible] नेहरू ने वैदेशिक विभाग के लिए [illegible] योग्य व्यक्तियों की माँग की है। [illegible] पास ऐसे व्यक्ति केवल पचास हैं। [illegible] शीघ्र ही योग्य व्यक्तियों को [illegible] कार्य करने के योग्य बनावेगी।

* *

चीन का गृह-युद्ध

एशिया का सबसे बड़ा और [illegible] देश चीन आज भी युद्ध की लपटों [illegible] नहीं पा सका। संसार का युद्ध [illegible] को बन्द हो गया है परन्तु उसकी [illegible] इसी समय दृष्टिगोचर हो रही है। [illegible] का वक्षस्थल आज भी विदेशी सेनाओं [illegible] क्रीड़ास्थल है। संसार के दो बड़े [illegible] चीन की राजनीति को राहु की [illegible] हुए हैं। चीनी जनता का [illegible] को एक नया सन्देश देगा। [illegible] और कम्युनिस्ट सेनाओं का [illegible] दोनों ओर की सेनाएँ चीन के [illegible] गाँवों का अपनी गोला-बारी से [illegible] कर रही हैं। दोनों में सन्धि के लिए [illegible] प्रयत्न हुए पर व्यर्थ। डाक्टर [illegible] चित् इसी उद्देश्य से मास्को [illegible] डाक्टर चूतेह कम्युनिस्ट नेता हैं। [illegible] और जनरस्सिमों के सन्धि-वार्ता [illegible] लिए अमेरिकन राजदूत ने [illegible] किया था, परन्तु वे बातें व्यर्थ [illegible] जनरस्सिमों च्यांग काई शेक ने [illegible] चुनाव करने की घोषणा की थी [illegible] कुछ भी नहीं। इनकी तह में [illegible] आज संसार की जन-संख्यावाला [illegible] संकट-ग्रस्त है?

पेरिस-सम्मेलन में जो [illegible] है उसमें दो सिद्धान्तों का पारस्परिक [illegible] दृष्टिगोचर हो रहा है। इसका [illegible] पेरिस-सम्मेलन नहीं कर सकता। [illegible] इटली आदि के उपनिवेशों को [illegible] का प्रस्ताव रूस कर रहा है। परन्तु [illegible] से उसने अपनी सेना आज तक न [illegible] साइबेरिया की सीमा पर उसकी [illegible] आज भी काफी संख्या में रण-[illegible] सुसज्जित कतार बाँधे खड़ी हैं। [illegible] चीन के गृह-युद्ध के जन्मदाता हैं, [illegible] सहायता से युद्ध-संचालन कर रहे हैं। [illegible] स्वयं भी स्वतन्त्र नहीं। किसी [illegible] वार्ता में उनको रूस की मध्यस्थता [illegible] रूस की सलाह लेनी पड़ती है। [illegible] नीति है। यही स्थिति जनरस्सिमों [illegible] है। प्रशान्त महासागर के [illegible] अमेरिका के जहाज सैनिक-सामग्री [illegible] लदे चले आ रहे हैं। अब जापान [illegible] रीकी सेना को सैनिक-सामग्री की [illegible] श्यकता ही नहीं। फिर ये [illegible] जाते हैं? अमेरिका के ताजे [illegible] पता लगता है कि वह चीन के [illegible] सामग्रियाँ बेच रहा है। शान्ति [illegible]

शेष पृष्ठ १८ पर [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्त की खाद्य-समस्या का हल

क्या कृषि की उन्नति से सुधार हो जायगा ?

लेखक, श्री रामशंकर तिवारी, बी० ए०

देश में दुर्भिक्ष का इतना डर है कि सारे नेता और समझदार लोग अत्यन्त चिन्तित हैं। ये दुर्भिक्ष क्यों पैदा हो जाते हैं ? इनको कैसे दूर किया जा सकता है ? लेखक ने अपने दृष्टिकोण से समझाने का प्रयत्न किया है।

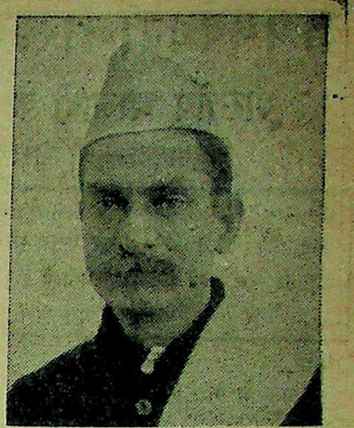

खाद्य-सदस्य माननीय डा० राजेन्द्रप्रसाद

सकती है। पहाड़ी नदियों का पानी, जिनके द्वारा बाढ़ आती है, नहरें निकाल कर तथा बाँध बाँधकर कम किया जा सकता है। इससे दोहरा लाभ होगा। बाढ़ न आने पावेगी और नहरों के पानी से सूखे के महीने में सिंचाई होगी तथा बाँधों के द्वारा बिजली की शक्ति बनेगी जिससे ऊँचे स्थानों पर ट्यूब वेल बन सकेंगे। इसके अतिरिक्त जहाँ इन सबका प्रबन्ध न हो सके वहाँ पक्के और गहरे कुएँ काफी बन जाने से किसानों को अकाल से बचाया जा सकता है।

इस प्रान्त के पूर्वी जिलों में जहाँ कुओं से सिंचाई होती है, कुएँ बहुत कम हैं। एक कुएँ से लगभग एक मील चारों तरफ के खेत सींचे जाते हैं। परिणाम यह होता है कि खेतों को ठीक समय पर पानी नहीं मिलता और वे सूख जाते हैं। कुएँ बहुधा जमींदारों के होते हैं जो गरीब किसानों को जल्दी सींचने को नहीं देते। उनसे बेगार लेते और अपना खेत सिंचवाकर बाद में उन्हें देते हैं। ऐसी दशा में सरकारी कुएँ किसानों का बड़ा उपकार करेंगे, साथ साथ प्रान्त की पैदावार भी बढ़ जायगी।

दूसरा प्रश्न उठता है जुताई का। हमारे प्रान्त में बैलों के खिलाने के लिए कोई खास हरी फसल नहीं बोई जाती। उन्हें भूसा या पैरा खाने को दिया जाता है जो सूखा होता है। इससे न तो बैल मजबूत होते हैं और न वे लोहे का हल ही खींच सकते हैं। परिणाम यह होता है कि खेत ठीक नहीं जोता जाता और उसमें घास लगी रह जाती है जो खेत की उपज बढ़ाने की शक्तियों को क्षीण करती है। सरकार को इस बात का प्रचार करना चाहिए कि किसान बैलों के लिए हर-हरी फसलें बोयें और बैलों को खिलावें जिससे वे खूब मजबूत रहें और खेत की जुताई अच्छी कर सकें। अच्छी नसल के साँड़ तथा भैंसे गाँवों में पहुँचाये जायँ जिससे अच्छे बछड़े पैदा हों।

तीसरा प्रश्न खाद का है। हमारे प्रान्त में खाद का प्रयोग कम होता है। जो होता भी है वह इतना खराब कि उससे फसल को कोई लाभ नहीं होता। कारण यह है कि देहाती लोग अच्छी खाद बनाना नहीं जानते। गोबर को बिना सड़ाये खेतों में फेंक देते हैं जिससे उसमें वह रासायनिक गुण नहीं आता जिससे पौधे ज्यादा बढ़ते हैं।

खाद यदि निम्नलिखित रीति से बनाई जाय तो अधिक उपयोगी हो। पहले एक गड्ढा खोदना चाहिए। उसके चारों तरफ थोड़ी ऊँची दीवाल उठा देनी चाहिए जिससे न बाहर का पानी उसमें आ सके, न उसकी खाद बाहर जा सके। इसके बाद उसमें गोबर छोड़ना [illegible] उसके ऊपर रोज पानी [illegible] जब उसके ऊपर कीड़े [illegible] ऊपर एक पर्त पत्ती छोड़नी चाहिए। पत्ती पर भी पानी छिड़का जावे। जब पत्तियाँ सड़ जायँ तो फिर उसके ऊपर गोबर छोड़ कर फिर उसे सड़ाया जाय और फिर पत्तियाँ छोड़ी जायँ। जब गड्ढा भर जाय तो उसे मिट्टी से ढक दे। ५ या ६ महीने के बाद उसे खोल कर खेत में छोड़ना चाहिए। यह खाद बहुत ही लाभदायक होगी। किसान खेतों में खुर्पी से खोद कर उसमें पाखाना फिरा करें और बाद में उसे पाट दिया करें।

हमारे प्रान्त में किसान लोग अगहन से लेकर फागुन तक गोबर के कण्डे बना डालते और जला देते हैं। इससे उनके पास खाद उतनी नहीं जमा हो पाती जितनी उनको आवश्यक होती है। गोबर के जलाने से उनकी बड़ी हानि होती है परन्तु ईंधन की कमी से वे ऐसा करते हैं। यदि किसानों में कपास तथा रेंड़ बोने का प्रचार किया जाय, उनको बीज तथा अन्य सुविधाएँ दी जावें तो इनके डंठलों से यह कमी पूरी हो सकती है। इसके अतिरिक्त कपड़ों के लिए रुई और जलाने के लिए रेंड़ी का तेल भी मिल सकता है। गोबर की बचत से किसानों के पास खाद खूब तैयार हो सकती है और काफी अन्न की उपज हो सकती है।

अन्न की कमी का एक दूसरा कारण यह है कि किसानों के खेत एक स्थान पर न होकर इधर-उधर फैले हैं। बहुतों के खेत इतनी दूर हैं कि उन्हें पाही करनी पड़ती है। एक खेत १ मील उत्तर है तो दूसरा एक मील दक्खिन। इससे किसान न तो अपने खेतों को ठीक रीति से कमा सकते हैं और न जानवरों से उसकी रक्षा कर सकते हैं। ऐसे खेतों में वे खाद भी नहीं डाल सकते, क्योंकि उनके पास बैलगाड़ी तो होती नहीं, सिर पर ढोते हैं। कहीं दिन में दो-चार बार खेत तक पहुँच पाते हैं। तात्पर्य यह कि खाद होने पर भी वे उसे खेतों तक नहीं पहुँचा पाते और फसल खराब हो जाती है। इसलिए पैदावार की बढ़ती के लिए खेतों की चकबन्दी बहुत आवश्यक है। बीच में किसान का घर हो। चारों तरफ उसके खेत हों। घर के पास कुआँ और पास ही एक बगीचा हो जिसमें किसान फल बो सके। फलों के पौधे सरकार की तरफ से मिलने चाहिए। कुएँ के पास तरकारी के लिए १ बीघा खेत हो। घर से थोड़ी दूर पर बैलों के लिए सरिया हो।

हमारे प्रान्त में अन्न की कमी का सबसे बड़ा कारण यह है कि सबके पास बराबर खेत नहीं हैं। किसी किसी के पास आवश्यकता से अधिक हैं और किसी किसी [illegible] आवश्यकता से कम। दोनों दशाओं [illegible] होती है। जिनके [illegible] बोते चले जाते हैं। न तो उसमें खाद छोड़ते हैं, न उसकी सिंचाई ही करते हैं। परिणाम यह होता है कि बहुत से खेतों में बीज के बराबर भी गल्ला पैदा नहीं होता। दूसरी तरफ बहुत से ऐसे किसान हैं जिनके पास बिलकुल थोड़ी जमीन है। वे रात-दिन उसी के कमाने में लगे रहते हैं। वह भूमि यदि ऐसे आदमियों के पास होती तो पैदावार जरूर ज्यादा होती। वे लोग अपने लिए मुहताज न होकर दूसरों को भी गल्ला दे सकते। यह समाज का अन्याय है। जब तक यह दूर नहीं होगा, समाज का कल्याण नहीं हो सकता। जमींदारी का तो सफाया हो रहा है। आशा है, हमारी सरकार सबको जरूरत भर के लिए खेत देगी। ऐसा करने से पूरी आशा है कि देश की दशा सुधर जायगी और अन्न की कमी न रह जायगी।

हमारे प्रान्त में वर्षा के दिनों में पानी काफी तेजी से बरसता है। इससे खेतों को बड़ी हानि पहुँचती है। पानी के बहाव के साथ खेत की खाद तथा कमाई हुई मिट्टी बह जाती है। इससे खेत का उपजाऊपन कम हो जाता है। इससे बचाव के लिए किसान अपने खेतों के चारों तरफ मजबूत मेढ़ बाँधें। इससे खेत की कमाई हुई मिट्टी तथा खाद खेत ही में रह जायगी और उपज बढ़ेगी। गेहूँ के खेतों में असाढ़ में सनई बो देना चाहिए और पौधों के बड़े होने पर उसे जुतवा देना चाहिए ताकि उसके पौधे पानी में सड़ जायँ और खाद का काम करें। ऐसा करने से गेहूँ की पैदावार अच्छी होगी।

इस प्रान्त में अन्न की कमी का एक सामाजिक कारण भी है। ऊँची जाति-वाले लोग अपने हाथों से हल नहीं चलाते। इनको एक हलवाहे की जरूरत होती है। लड़ाई के पहले ये हलवाहे तीन रुपया महीना लेते थे परन्तु लड़ाई के समय में मजदूरों की माँग बढ़ जाने के कारण तथा चीजों के दाम बढ़ जाने से ये लोग १०) से १५) रुपया महीना तक लेने लगे। इस दाम पर भी बहुतों को हलवाहे नहीं मिले। परिणाम यह हुआ कि उनके खेत नहीं बोये गये और उनकी दशा उसी समय से खराब होने लगी। ब्राह्मण अपने हाथ से हल नहीं जोतते, इससे बड़ी हानि होती है। इस प्रथा को किसी न किसी प्रकार समाप्त करने से ही समाज का उपकार होगा और अन्न की कमी पूरी होगी।

बिना आपरेशन
आईडान्स मोतियाबिन्द और अनेक [illegible] कार के नेत्र रोग से [illegible] मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयप्रकाशनारायण का खुला पत्र

भारतीय आजादी के समस्त सैनिकों के नाम

अनुवादक—श्री नारायणदत्त तिवारी बी० ए०

प्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री जयप्रकाशनारायण इस महीने हमारे प्रान्त में दौरा करनेवाले हैं। प्रान्त में आपका खासा सम्मान होगा। गण्य-मान्य नेताओं की सलाह से आपको एक थैली भेंट की जानेवाली है। आपने ही यह पत्र प्रकाशित किया है जिसका एक अंश यहाँ दिया जा रहा है।

मित्रो,

वर्तमान परिस्थिति अत्यन्त परिवर्तनशील है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी इस बात के लिए तैयार हो गई है कि कांग्रेसवाले अँगरेजों के द्वारा बनाई गई विधान-निर्मात्री परिषद् में जायँ। चाहे यह परिषद् सफल हो या अपना कार्य करते हुए असफल। स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए एक और संग्राम का होना अवश्यम्भावी है। किसी भी व्यक्ति को, जिसे देश की शक्तियों के संतुलन और परस्पर सम्बन्ध का समुचित ज्ञान है, इस निश्चय के स्वीकार कर लेने में कोई कठिनाई न होनी चाहिए। आज भी ब्रिटिश साम्राज्य के लिए यह सम्भव है कि वह परिस्थितियों की मजबूरी के बहाने हमारे मुकाबले की कोशिश करे। जब तक यह मजबूरी का दबाव क्रान्तिकारी कार्य-प्रणाली द्वारा हटा नहीं दिया जाता, तब तक स्वतन्त्रता मृग-मरीचिका मात्र रहेगी। यह भी सम्भव नहीं कि कोई व्यक्ति वर्तमान परिस्थिति के आधारभूत बीजों को तर्क, छूट या कूटनीतिक चक्रों से बदल सके। आजादी के लिए लड़ाई ब्रिटिश वैधानिक प्रस्तावों को मंजूर कर लेने से ही खत्म नहीं हो जाती। वह लड़ाई जारी रहेगी। दरअसल उस लड़ाई का क्षेत्र और रूप-रेखा दोनों अधिक विस्तृत एवं गहरे हो जायँगे। स्वतन्त्रता की लड़ाई की कशमकश के साथ राष्ट्रीय एकता और 'रोटी' के लिए लड़ी जानेवाली लड़ाई भी जोड़ दी जायगी।

सबकी लड़ाई

अँगरेजों के प्रस्तावों को स्वीकार कर लेने से राष्ट्रीयता की विरोधिनी अनेक शक्तियाँ उठ खड़ी होंगी। यह सर्वव्यापी धारणा है कि अँगरेजों के द्वारा सारे मुल्क को भौगोलिक रूप में एक करना, भारतीय राजनैतिक विधान के लिए उनकी एक काफी महत्त्वपूर्ण देन है। साथ ही यह खयाल जोर पकड़ रहा है कि आज अँगरेज ही मूर्खतापूर्वक अपने उस श्रद्धास्पद और ईमानदारी के कार्य को नष्ट करने पर तुले हुए हैं। ऐसी राय रखना सबसे मूर्खता की बात है। भारतीयों की जिन्दगी में एकता लाना तो दूर रहा, अँगरेजों ने हमें अलग अलग रखने की, हिन्दू और मुसलमानों को एक न होने देने की, हरिजनों को दूसरे हिन्दुओं से खींचने की, एक सिक्ख अल्पमत कायम करने, देशी राजा-महाराजाओं के द्वारा शासित भारतवर्ष को बाकी देश से जुदा करने की, राजा-महाराजाओं को जनता के विरुद्ध उकसाने की, जमींदारों को ऊँचा उठाकर अँगरेजी शासन का स्तम्भ बनाने की और देश की पूँजी तथा मध्यम-वर्ग की जनता को अपने ही मुल्क का दुश्मन बना देने की निरंतर कोशिशें की हैं। तात्पर्य यह है कि अपने पिछले सौ साल के शासन में उन्होंने लगातार एक ऐसी परिस्थिति लाने की कोशिश की है जिसमें अँगरेजी शासन के उठ जाने पर, सारे देश में अवश्यम्भावी तौर पर अराजकता फैल जावे। अँगरेजी शासन के नीचे तनी हुई एकता—केवल अधिनायक शासन-यंत्र के द्वारा जबर्दस्ती ढाली गई एकता है। वह जन-ऐक्य या राष्ट्रीय एकता नहीं है। इस प्रकार की सच्ची (राष्ट्रीय) एकता कांग्रेस के द्वारा बनाई गई है, जो आज ख़तरे में है। इसलिए अँगरेजों के प्रस्तावों को स्वीकार करने के साथ ही राष्ट्रीय एकता के लिए लड़ी जानेवाली लड़ाई और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है।

दूसरी तरफ निकट भविष्य में वैधानिक परिवर्तन होते ही आर्थिक और वर्ग-सम्बन्धी मामले अवश्य सामने आयेंगे। स्वराज्य की रूप-रेखा, और 'स्वराज्य किसके लिए' सवाल दूरन्देशी या बौद्धिक पेचीदगियों से मतलब रखनेवाले प्रश्नमात्र न रह जायेंगे, बल्कि तात्कालिक महत्त्व की समस्याओं के रूप में सामने आयेंगे, जिनका हमें जवाब देना होगा। ये बातें हमारी राजनीति को नीति के रूप में ही नहीं, बल्कि व्यावहारिक रूप में भी प्रभावित करेंगी। इसका तात्पर्य यह है कि रोटी की लड़ाई, जो कि स्वतन्त्रता की लड़ाई का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, हमारे मोर्चे के अग्रभाग में आकर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रूप धारण कर लेगी। इसकी हैसियत किसी भी अन्य समस्या से कम न होगी।

मित्र, यहाँ पर यह साफ़ कर देना [illegible] तीन अलग लड़ी जानेवाली [illegible] पर जनता के द्वारा सम्मिलित रूप में लड़े गये [illegible] संघर्ष के हिस्से हैं। खास [illegible] एक या दूसरा हिस्सा [illegible] महत्त्व पाकर संघर्ष का [illegible] पर जैसे ही वर्त्तमान वैधानिक [illegible] कार्यान्वित होती हैं, इन [illegible] समान महत्त्व रखना लाजिमी [illegible]

परिस्थितियों के अनुसार [illegible] का सम्मिलित संघर्ष, विधान-[illegible] या शायद एक अस्थायी सरकार [illegible] काल के समय या बाद को [illegible] या प्रान्तों की या अलग-अलग [illegible] में बँधी हुई प्रान्तीय सरकारों [illegible] दायित्व के समय, लड़ा जाना [illegible]

कांग्रेस का, जिसके हम [illegible] इन परिवर्तनों के साथ [illegible] सम्भव जान पड़ता है। इस [illegible] जरूरी है कि कांग्रेस के [illegible] जानेवाली आजादी, एकता की [illegible] लड़ाई वैधानिक और सरकार [illegible] के द्वारा लड़ी जायेगी। [illegible] से एक पार्लियामेंटरी [illegible] में बदल दी जा रही है। [illegible] तरीका अपने अवश्यम्भावी [illegible] पहुँचता ही है, तब इस बात [illegible] ही संदेह रह जाता है कि [illegible] अपनी इस तीन मोर्चों की [illegible] अधिक सफलता मिलना सम्भव [illegible] एक वैधानिक और शासन-[illegible] तरह चलानेवाली कार्य-[illegible] खास परिस्थितियों में काम [illegible] हो सकती है। पर [illegible] जनता की लड़ाई को पूर्ण [illegible] और सरकारी विभागों के [illegible] ही लड़ना चाहिए।

इसी लड़ाई को जारी [illegible] आजादी के सभी [illegible] कर्तव्य है।

मजदूर

श्री राजाराम श्रीवास्तव बी० एस्-सी०, एल्-एल० बी०,

ऐ मज़दूर, ऐ मज़दूर
तेरा दिल, दुनिया का नूर।
दुनिया की यह कंचन काया
दुनिया की यह मनचल माया।
तेरे ही कंधों से उतरी
हँसती धूप, चमकती छाया।
इस दुनिया से तेरी दुनिया फिर भी कितनी दूर।
दौलत है दौलत की प्यासी
दौलत भरे अमर तृष्णा-सी,
तेरे धेले के घेरे में
किन्तु चमकती पूरणमासी।
सब खोकर, तू खोनेवाले अपने में भरपूर।
पृथ्वी से आकाश मिलाया
चीरी हवा, समुद्र हिलाया।
अपनी मेहनत के मेघों से
मिट्टी पर जीवन बरसाया।
इतना ताक़तवर होकर भी तू इतना मजबूर।
तेरी बाँहों के खम्भों पर
तना हुआ वैभव का अम्बर।
तेरे जीवन की घड़ियों से
बनता रहता है संवत्सर।
तेरे ही माथे की बूँदें दुनिया के अंगूर।
दुनिया रोती पर तू गाता
सब कुछ खोकर सब कुछ पाता।
जीवन की उलझी वीणा में
दो साँसों के तार बजाता।
मस्ती के मेघों पर नाचे, तू मन मुदित मयूर।
ऐ मज़दूर, ऐ मज़दूर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूस की किसी से क्यों नहीं पटती ?

सबल राष्ट्रों को सशस्त्र शान्ति की मृग-मरीचिका

लेखक, श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

युद्धोत्तर-काल में जिस शान्ति की आशा की जा रही थी, वह आज आकाश-कुसुम-सी प्रतीत होने लगी है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर आज सबल राष्ट्रों की स्वार्थ पूर्ण नीति का गहरा कोहासा व्याप्त है। इस कोहासे में रूस की अन्तर्राष्ट्रीयता क्या और कितनी संकीर्ण है, इस पर प्रस्तुत लेख में सुन्दर प्रकाश डाला गया है।

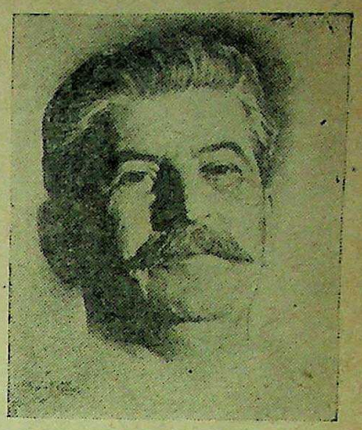

रूस के सर्वेसर्वा स्टालिन

अमरीका के राष्ट्रपति ट्रूमन

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री मि० एटली

विस्तार करने की चेष्टा कर रही है। यह चेष्टा मित्रता की आड़ में की जा रही है; परन्तु इसमें उसे सफलता नहीं मिल रही है। अमरीका न तो रूस का शत्रु है, न मित्र। अमरीका तो आगामी कुछ वर्षों के लिए सशस्त्र शान्ति की ही आशा कर रहा है।

जब हमारा स्वार्थ सामने होता है, तब हमें विरोधी दल से मोर्चा लेने में उसके बराबर की शक्ति का ही प्रयोग करना पड़ता है, लेकिन दुनिया की समस्याओं को हल करने की दिशा में यह एक घोर प्रतिक्रियात्मक उपाय है। और, सोवियट रूस की सरकारी नीति प्रतिक्रियात्मक ही है। विजित राष्ट्रों के प्रति उसका व्यवहार इस बात का प्रमाण है। मंचूरिया में भी लाल सेना का व्यवहार इसी नीति का समर्थक है। सोवियट संघ के अन्तर्गत सोवियट सरकार अपनी जबरदस्ती की नीति थोपने की आदी है, अतः बाहरी मामलों में भी वह इसी जबरदस्ती की नीति का प्रयोग करती है।

यद्यपि सोवियट विद्रोह का भयंकर समय शायद बीत चुका है, फिर भी उसकी एक आध रेखा का अस्तित्व अब भी बना हुआ है। यह कोई नहीं जानता कि कितने लाख राजनीतिक बन्दी जेलों में जीवित हैं अथवा कितने लाख निर्वासित हैं। यह संख्या अनुमानतः एक से डेढ़ करोड़ तक होगी।

सोवियट सरकार का यह विश्वास है कि गुप्त मामलों में उसे अपनी नीति बरतने की स्वच्छन्दता होनी चाहिए—ऐसी जिसे शीघ्र ही कार्यान्वित किया जा सके और आवश्यकता पड़ने पर जबरदस्ती की नीति का भी अवलम्बन किया जा सके। जो प्रदेश इनके आश्रित हैं, उनमें ऐसी नीति स्वभावतः अपना असर दिखलाती है।

कोई भी विदेशी यह कह सकता है कि सोवियट नेताओं की स्थिति सुदृढ़ है। उन्होंने अपनी जनता को आधुनिक युग के महान् संघर्ष--द्वितीय महासमर--में विजयी होने का गौरव प्रदान किया है। और, वहाँ की कम्युनिस्ट पार्टी स्वभावतः युद्ध समाप्त करने का श्रेय ले रही है--इस तथ्य की उपेक्षा करके कि मित्र-राष्ट्रों ने भी अनेक मोर्चों पर जर्मनी को परास्त करने में सहयोग दिया है। यही नहीं, जापान को भी खदेड़ने का श्रेय यही पार्टी ले रही है। किसी भी विवेकशील पार्टी के लिए यह सब उचित नहीं कहा जा सकता।

एक पिछड़ी हुई और असंगठित जाति के नेताओं-जैसा यह जल्दबाजी और जबरदस्ती का कार्य अप्रिय वातावरण उत्पन्न कर सकता है। यद्यपि [illegible] की वर्तमान स्थिति [illegible] नेता मनचाही [illegible] फिर भी उनकी कोई [illegible] सकती—की नहीं जा सकती। यह कार्य सन्देह से परे हो सकता है; लेकिन कभी-कभी इसमें षड्यन्त्रकारी छाया का आभास भी होने लगता है।

सोवियट सरकार की नीति परराष्ट्र-विरोधी है। सन् १९३६ के खूनी प्रायश्चित्त से लेकर अब तक विदेशियों के प्रति वहाँ असीम भय समाया हुआ है। विदेशियों को वहाँ सदा सन्देह की नजरों से देखा जाता और उन्हें गुप्तचर समझा जाता है। इतने पर भी वहाँ के नेता सुरक्षित नहीं हैं। परराष्ट्रों से उनका पृथक्-वाद ही उन्हें परेशान किये रहता है। विदेशों से उन्हें यथेष्ट सूचनाएँ मिलती हैं; लेकिन उनका लाभ उठाना वे नहीं जानते।

सोवियट रूस के नेता बहुत ही सशंक रहते हैं। उन्हें प्रतिपल ऐसा प्रतीत होता है, मानो प्रत्येक व्यक्ति उनका विरोध कर रहा है और वे चारों तरफ से घिरे हुए हैं और, दूसरे देशों के प्रति इस प्रकार के वातावरण में पहले घबराहट, फिर घृणा और अन्त में दुश्मनी हो जाने के सिवा दूसरा मार्ग ही क्या रह जाता है? क्षेत्र-विस्तार, शक्ति, साहस तथा सोवियट रूस की साधन-सम्पन्नता को देखते हुए परराष्ट्रों से उसका सम्बन्ध बहुत सुखद हो सकता है बशर्ते कि विदेशियों को, जो उसके साथ अपना सम्बन्ध कायम करना चाहते हैं, किसी प्रकार की कठिनाइयों का सामना न करना पड़े।

अमरीका में एक ऐसा दल है, जो बुढ़िया-पुराण के अनुसार यह समझता है कि सोवियट संघवाले चालाक, कूटनीतिज्ञ और यथार्थवादी हैं, जो बखूबी यह जानते हैं कि किस क्षण वे कितने गहरे पानी में हैं। लेकिन अनेक राजनीतिज्ञों को सन्देह है कि सोवियट संघ प्रजातन्त्र का वास्तविक अर्थ भी समझता है या नहीं, कारण दूसरे देशों के प्रजातन्त्र को देख-सुनकर वह स्वयं असमंजस में जो पड़ जाता है। बाहरी देशों के मत-वैषम्य को वह रूस के प्रति विश्वास-घात समझता है।

सोवियट रूस के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध स्थापित करने में जो सबसे बड़ी बाधा अमरीका के सामने आती है, वह यही कि सोवियट संघ ऐसा समाजवादी संघ है जिसका विस्तार पूँजीवादी दुनिया में हो रहा है। और, कम्युनिस्ट पार्टी के मतानुसार सोवियट रूस तब तक किसी आक्रमण की आशंका से मुक्त नहीं समझा जा सकता, जब तक संयुक्त राज्य अमरीका और ग्रेट-ब्रिटेन-जैसे पूँजीवादी देशों का प्रभुत्व प्रबल है।

[illegible] लोगों के मत में समाजवाद [illegible] जिसे सोवि[illegible]

की समानता हो जाने पर दोनों पाश्चात्य देशों की पटरी सोवियट रूस के साथ अच्छी बैठ सकती है और लाभदायक भी हो सकती है।

लेकिन सोवियट रूस के नेताओं का यही दृष्टिकोण नहीं है। वे अपने को भावी दुनिया का रक्षक समझते हैं। उनकी समझ में दुनिया का रुख उन्हीं के साथ है। वे दुनिया के असन्दिग्ध भाग्य-निर्णायकों में अपनी गिनती करते हैं। पोलैण्ड और बालकन प्रदेश में इसी असन्दिग्ध भाग्य का उदय कर रहे हैं ये लोग, हालाँ कि भयंकर विरोध का सामना करना पड़ रहा है।

समाजवाद राजनीतिक विज्ञान न रहकर उनके लिए धर्म बन गया है। लेनिन और स्टालिन की मूर्त्तियाँ प्रत्येक सार्वजनिक इमारत में आज रूस में विद्यमान हैं। रूस के किसी भी समाचार-पत्र के प्रथम पृष्ठ पर आपको यह पढ़ने को मिलेगा कि रूस दुनिया में बड़ा भाग्यशाली राष्ट्र है, कारण उसने सत्य की रक्षा की है, सत्य को उसने कभी त्यागा नहीं है और रूस का भविष्य प्रेम, प्रसन्नता और संगीत से ओतप्रोत रहेगा। मार्क्स, लेनिन और स्टालिन की पूजा जो देश नहीं करते, उनसे रूस के नेताओं की पटरी कभी नहीं बैठती।

इन सब बातों के होते हुए भी वह स्वीकार करना पड़ेगा कि दुनिया में रूस अधिक से अधिक मित्र बनाना चाहता है और किसी से विरोध नहीं रखना चाहता। वह दुनिया की सलाह की उपेक्षा भी नहीं करना चाहता, लेकिन अपने दृष्टिकोण के अनुसार। रूस के लोग ईमानदार और सज्जन हैं। ऐसी दशा में भी अमरीका तथा ग्रेटब्रिटेन के साथ एक राष्ट्र की हैसियत से इसके सम्बन्धों में जो कटुता और विरोध दीखता है, वह वास्तव में चिन्तनीय है। शायद कोई मार्ग भी नहीं, जिस पर चलकर राष्ट्र की हैसियत से रूस इन देशों से अपना स्तुत्य और निश्छल सम्बन्ध बनाये रख सके।

दुनिया की शान्ति वास्तव में आज रूस, अमरीका और ग्रेटब्रिटेन के सहयोग पर ही निर्भर करती है। यदि इन राष्ट्रों में से कोई सशस्त्र शान्ति की मृग-मरीचिका देखता है, तो इससे सारी दुनिया का राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक भविष्य अन्धकारपूर्ण ही समझना चाहिए।

मुफ्त— घर बैठे आयुर्वेदिक, यूनानी [illegible], होम्योपैथिक के इस्त- [illegible] करने के नियम [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम्युनिस्ट पार्टी और कांग्रेस

क्या कम्युनिस्ट कांग्रेस का विरोध करेंगे ?

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

जीवनोपयोगी चीजें बहुत महँगी हैं, चोर बाजार और रिश्वतखोरी बन्द नहीं हुई है। जमींदारों और पूँजीपतियों की चक्की में गरीब किसान और मजदूर पिस रहे हैं। इसी कारण उनमें कम्युनिस्टों को प्रचार करने का काफी सुभीता है। यदि मजदूरों की कठिनाइयाँ कम हो जायँ तो कम्युनिस्टों को अपने काम की दिशा बदलनी पड़े। लेखक ने यही आशा प्रकट की है।

कम्युनिस्ट नेता श्री पूर्णचन्द्र जोशी।

देश में एक अजीब परिस्थिति हो गई है। चारों तरफ हड़तालों का जोर है। कहीं डाकियों की हड़ताल है, कहीं रेलवालों की। शहर के मेहतर अलग अड़ जाते हैं। सरकारी कर्मचारी और बैंकवाले भी हड़तालों पर उतर आते हैं। केन्द्रीय सरकार और प्रान्तीय सरकारें परेशानी में पड़ जाती हैं। हड़तालें क्यों हो रही हैं? यह अध्ययन का विषय है। देश के सामने महत्त्व की समस्या है। कभी कभी हड़तालों से जनता का काम ठप्प हो जाता है। आवागमन रुक जाता है। जनता मुसीबत में पड़ जाती है। रोजाना की जिन्दगी अस्तव्यस्त हो जाती है। रेलवालों की हड़ताल बड़ी भयानक होती है। सामान का आना-जाना बिल्कुल बन्द हो जाता है।

मिल के या कारखानों के मजदूरों का भी एक सवाल है। वे भी हड़तालों पर आये दिन उतर आते हैं।

डाकखानेवालों की हड़ताल का दृश्य देश पिछले महीनों अच्छी तरह देख चुका है। जनता का और व्यापारियों का कितना नुकसान हुआ है, अन्दाज लगाना कठिन है। सरकार को भी घाटा उठाना पड़ा है। सवाल है, ऐसी परिस्थितियाँ क्यों उठ आती हैं। एकाएक ऐसी बातों का उठना असम्भव है। हड़तालों के लिए काफी तैयारियाँ करनी पड़ती हैं। अधिकारियों के पास हड़ताली अपनी मुसीबतें पेश करते हैं। तफसीलवार माँगें अधिकारियों के पास रखते हैं। मालिकों से बार बार प्रार्थना करते हैं, मिलते हैं। मजदूर एकाएक अपने सिर पर भारी खतरा नहीं उठाते। अपनी हालत पर विचार करते हैं। अपने लाभ और नुकसान पर वे बार बार विचार करते हैं। हड़ताल करने से मजदूरों को भूखों मरना पड़ता है।

युद्धकाल में सरकार और मिल-मालिकों को करोड़ों रुपयों की आय हुई है। डाकखाने के महकमे को कई करोड़ आय हुई थी। महँगी के जमाने में छोटी छोटी चीजों और नित्य काम आनेवाली चीजों का दाम बढ़ गया है। मामूली शाक-भाजी का दाम चौगुना-पचगुना हो गया है। जिस रुपये का मूल्य १९४२ के पहले १६ आना था, उसी का मूल्य घट कर ४५,४६ में तीन [illegible] आने के बराबर हो गया [illegible] पहले ४ [illegible] मकते [illegible] चवन्नी [illegible] और वह भी समय पर मिलता नहीं। दूध दो सेर का मिलना भी कठिन है। अब एक सेर खालिस घी ४ या ५ रुपया देने पर भी जल्दी नहीं मिलता। चीजों का भाव कितने ऊँचे गया, यह हर मनुष्य को मालूम है। जिसके परिवार में दो-चार बाल-बच्चे हैं, सिवा नौकरी के और कुछ साधन नहीं, उसका निर्वाह १०० रुपये महीने में भी नहीं हो सकता।

नौकरी-पेशा के लोगों को बड़ी मुसीबत है। मजदूरों को भी तकलीफ है। एक ओर मिल-मालिक अरबों की आमदनी करके मालामाल हो गये; लेकिन उनकी मिलों में दिन-रात मेहनत करनेवाले भूखे, नंगे रहते हैं। अँधेरी कोठरी और गन्दी आब-हवा में उनकी जिन्दगी बीत रही है। उनकी शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया गया। जीने भर की सहूलियत है। पास ही शराब और सिनेमा की दुकानें खोल कर उनकी सारी आमदनी छीन लेने का उपाय पूँजीपतियों ने कर रक्खा है।

यदि वे आज माँग करते हैं पूरी मजदूरी मिलने की तो क्या बेजा करते हैं। मजदूरों को हक़ है, वे अपनी कमाई की आमदनी माँगें। लेकिन उनकी माँगों पर कुछ ध्यान नहीं दिया जाता। मिल-मालिक समझता है—हाथी अपनी चाल से चला जायगा। ये चिल्ला चिल्ला कर थक जायेंगे और फिर हमारी शरण में आयेंगे। ऐसी स्थिति में मजदूर कोई अच्छा सहारा चाहते हैं।

उन्हें कांग्रेस के देशभक्तों से बड़ी बड़ी आशाएँ थीं। कांग्रेस ने जब चुनाव लड़ने की घोषणा की और अपना घोषणा-पत्र प्रकाशित किया तो देश की जनता में एक अपूर्व जागृति फैली। बड़ी बड़ी आशाएँ लेकर कांग्रेस की पेटियों में अपना वोट खुशी खुशी दिया। और माना कि जब हमारे चुने हुए मंत्री या एम० एल० ए० सरकारी दफ्तरों पर कब्जा करेंगे तब हमारी रोजाना की मुसीबत मिट जावेगी। जमींदारों और सरकारी कर्मचारियों के पंजे से राहत मिलेगी। काला बाजार बन्द हो जावेगा। बड़े बड़े देशभक्तों ने कहा था कि काला बाजार करनेवालों को सख्त से सख्त सज़ा दी जावेगी, रिश्वतखोरी बन्द कर दी जावेगी। जनता का राज्य स्थापित हुए कई महीने हो गये लेकिन जनता की तकलीफ बढ़ती ही जा रही है। ज़मींदारों का जुल्म बढ़ गया है। काला बाज़ार ज़ोरों से चल रहा है। कपड़ा, तेल आदि आज भी नहीं मिलता। [illegible] रिश्वतखोरी चालू है। [illegible] सौंठ [illegible] जाय [illegible] है। यदि जनता की माँग निकट भविष्य में पूरी नहीं हुई तो इसका परिणाम क्या होगा? वह किसी भी दल का नेतृत्व कबूल कर लेगी। जहाँ से उसे राहत मिलेगी उसी की बात मान कर अपनी कुर्बानी करेगी। जनता इस बात से सन्तुष्ट न रहेगी कि हमारे मंत्री के सुन्दर कार (मोटर) पर तिरंगा झंडा लहरा रहा है या हमारे मंत्री मोटी खादी पहनते हैं, और जेल काट आये हैं। जनता चाहती है कि हमारा जीवन ऊपर उठे। हमारे जुल्मों का खात्मा हो—इसीलिए उसने कांग्रेस को वोट दिया है।

इधर कांग्रेस की चाल कछुए की-सी चाल है। मिल-मालिक मजदूरों से कसकर काम लेते हैं फिर उनके जीवन की कठिनाइयाँ दूर क्यों नहीं करते? मजदूरों के संगठन को दबाने की कोशिश होने लगी है। उनके नेताओं को कभी कभी जेलों में बन्द किया जाने लगा है। अमलनेर में कई मजदूर गोलियों से मारे गये। दक्षिण भारत के रेलवे यूनियन के कई नेताओं को जेलों में ठूँस दिया गया। क्या यह लोकप्रिय सरकारों को शोभा देता है? कहा जाता है, मजदूरों को कम्युनिस्ट भड़का रहे हैं, हड़ताल करा रहे हैं। इसमें सचाई हो सकती है, पर मजदूर अपनी तकलीफों को कैसे भूल जायँ? वे निराधार भड़काये जाने पर अपना जीवन खतरे में नहीं डालते। आखिरी दर्जे पर पहुँचने पर वे किसी का भी नेतृत्व स्वीकार कर लेंगे। कांग्रेस के हाथ में सत्ता है। अधिकारी लोग जनता की ज़रूरी तकलीफ़ों को भूलकर फाइलों के बोझ में दब-से गये हैं। जनता की माँगों की तरफ हिम्मत और दिलेरी से आगे नहीं बढ़ रहे हैं। इससे मजदूर निराश हो रहे हैं। जनता निराश हो रही है। यदि निकट भविष्य में जनता की माँगों पर ध्यान न दिया गया तो भयंकर स्थिति उत्पन्न होने का ख़तरा सामने है। आनेवाले संघर्ष को लोकप्रिय कामों से ही रोका जा सकेगा।

कम्युनिस्ट निरे देशद्रोही नहीं कहे जा सकते। देश की आज़ादी के लिए उन लोगों ने भी त्याग किया है। मजदूरों की अच्छी ज़िन्दगी बनाने के लिए उनमें बहुत काम किया है। किसानों में भी उन्होंने अधिक काम किया है। किसानों की सेवा करते हुए उनके कई बहादुर नेता फाँसी के तख़्ते पर झूल गये।

चर्चा सुनाई दे रही है कि उनकी संस्था ग़ैर क़ानूनी होनेवाली है। यदि ऐसा हो तो यह देश के लिए बुरा है। प्रजातन्त्र में हर एक को क़ानून की रक्षा करते हुए काम करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए। भाषण-स्वाधीनता और लेखन-स्वाधीनता पर अंकुश लगाना ठीक नहीं। मजदूर-[illegible] पर तो रोक होनी ही न [illegible] आग भड़कानेवालों [illegible] की जान ख़तरे [illegible] अवश्य हो।

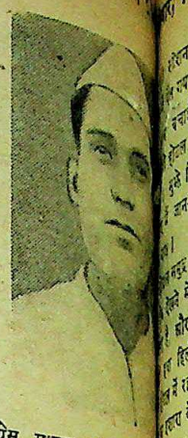

कांग्रेस सामाजवादी नेता [illegible] नारायण।

डा० पट्टाभि सीतारमैया [illegible] समाचारपत्रों में पढ़ने को [illegible] मननशील लेखक और [illegible] के रूप में प्रसिद्ध हैं। वे [illegible] सम्बन्ध में लिखते हैं—"उनके [illegible] के भयंकर जन्तुओं का-सा [illegible] जाना चाहिए।"

ऐसा व्यवहार शायद [illegible] हो। जब पट्टाभि साहब [illegible] विश्वास करते हैं तब कम्युनिस्ट [illegible] भयंकर जन्तुओं का-सा [illegible] सलाह चिन्त्य है। कम्युनिस्ट [illegible] मनुष्य ही हैं। उनके भी हृदय [illegible] पतियों की अपेक्षा कम्युनिस्ट [illegible] अच्छा माना जायगा। हाँ, [illegible] सम्भव है। हृदय-परिवर्तन [illegible] कम्युनिस्ट समाज के प्रति [illegible] हैं और मजदूरों के सच्चे भाई [illegible] जिन्होंने बुरे समाज को [illegible] अपना जीवन उसमें लगा [illegible] हृदय क्यों नहीं बदल सकता। [illegible] समाज-व्यवस्था कैसी हो [illegible] इँगलैंड और अमेरिका की [illegible] की सी भूखी जनता नहीं रहती।

यदि हमारी प्रान्तीय [illegible] जनता की सच्ची माँग को पूरा [illegible] कोशिश करेंगी और ज़मींदार [illegible] पूँजीवादी व्यवस्था को बदल [illegible] फिर कम्युनिस्टों को कार्यक्रम [illegible] पड़ेगा। किसानों-मजदूरों का [illegible] ऊँचा उठने पर संघर्ष अपने आप [illegible] गांधी जी कहते हैं "भंगी मुहल्ले [illegible] सुथरे हों। हमारी राष्ट्रीय सरकार [illegible] मुहल्लों पर भी ध्यान देना [illegible] उपेक्षित मानव की सेवा [illegible] सेवक शासन कर सकते हैं [illegible] कठिनाई का सामना करना पड़ेगा।

रुपया कमाने का सरल [illegible]
हम से सीखो। कार्ड में १० [illegible] लिखकर पूरा हाल मुफ़्त [illegible] ठाकुरप्रसाद, शिवप्रसाद, [illegible] KANAU

CC-0 In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छायावादी कहानी

लेखक, श्री मन्मथनाथ गुप्त

कहानी का नायक पुरी के होटल में जिस कोठरी में ठहरा था उसमें पहले छायावादी साहित्यिक असीम ठहर चुके थे। एक दिन उस कोठरी में, तख़्त के नीचे, धूल में लिपटा एक पुलिंदा उसे मिला। उसको निकालकर पढ़ा तो देखा कि यह एक विचित्र कहानी है। समुद्र-किनारे अँधेरे में, बालू के ऊपर, अनुपम लेटा हुआ था कि एक महिला आकर उसके पास लेट गई। कहानी विचित्र है। पढ़ने योग्य है।

होटलवाला उनकी उपाधि याद करने में असमर्थ रहा, फिर भी हार माननेवाला जीव वह थोड़े ही था। बोला—अरे वही असीम बाबू छायावादी साहित्यिक, तमाम अखबारों में लिखते हैं। पूरा डेढ़ महीना इस कमरे में रह गये। एक दफे कमरे के भीतर जाकर तो देखिए, बाहर निकलने को जी न चाहेगा। असीम बाबू तो कभी निकलते ही न थे। पैंतालीस दिन तक ठहरे। इनमें से शायद ही पाँच दिन वे समुद्र-किनारे गये हों।

इसके बाद कोई उज्र कैसे की जा सकती थी? इसलिए छायावादी लेखक असीम बाबू के द्वारा कुछ दिन पहले छोड़ी हुई कोठरी में मैं घुस पड़ा। पुरी के अच्छे अच्छे होटलों के कमरे जिस प्रकार आधे गन्दे होते हैं, यह कोठरी भी उसी प्रकार की थी। इससे पहले जो साहब रह गये थे, उनके रहने के चिह्न कुछ कुछ अभी तक मौजूद थे—अधजले सिगरेट और सिगरेट के बक्स, जली हुई दियासलाई की सींकें, जूते की पालिश की एक खाली डिबिया, तख़्त के नीचे फटी हुई एक चप्पल, दो-चार फटे हुए लिफाफे और कुछ कागजात। खैरियत यह थी कि कहीं थूक या खखार का चिह्न ज्ञात नहीं हुआ।

तबियत बहुत अप्रसन्न हो गई कि कहाँ आकर फँस गया।

अपने को तसल्ली देने लगा कि यहाँ थोड़े ही रहना है, अधिक से अधिक दो-चार घंटे रहूँगा। ऐसी हालत में कोठरी की भलाई-बुराई लेकर माथापच्ची करना व्यर्थ है। हाँ, केवल एक बात के सम्बन्ध में इतमीनान कर लेना था कि कहीं ये छायावादी महाशय तपेदिक के रोगी तो न थे। एक तो छायावादी होने से ही तपेदिक होने का शक होना स्वाभाविक है, या कि तपेदिक होने के कारण ही कोई छायावादी होता है; फिर पुरी में खासकर तपेदिकवाले आते हैं। ये छायावादी महाशय पैंतालीस दिनों में केवल पाँच ही दिन होटल के बाहर गये थे, यह भी शक की बात थी।

मैंने होटलवाले को अपना शक बताया।

सुनते ही होटलवाला रूठ-सा गया, बोला—"वाह साहब, इसे क्या आपने कोई मामूली होटल समझ र[illegible] जो चाहे आकर टिक[illegible] कोई इस होटल [illegible] होटल में ज[illegible] रायसाहब, रा[illegible]

अगर आपको विश्वास नहीं है तो इसे..."—अब उसने एक बहुत भारी रजिस्टर की ओर हाथ बढ़ाया। मोटे रजिस्टर की सूरत से ही मुझे इतमीनान हो गया। मुझे डर था कि कहीं इसी में घंटों न लग जायँ।

मैं इस कोठरी में ठहर गया।

* * *

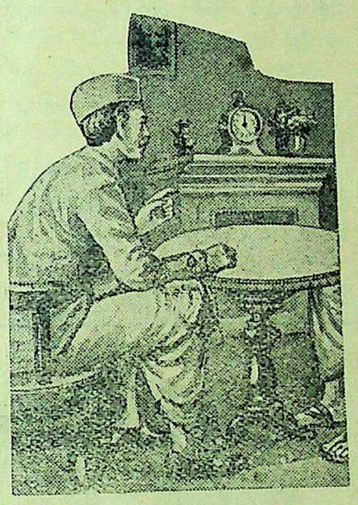

मैंने होटल के नौकर से पूछा—क्यों जी, होटल में कोई किताब है?

अब मेरा समय समुद्र के किनारे ही कटता है। होटल की छायावादी कोठरी तथा जबरदस्ती दूर की हुई उस शंका की बात जब भी याद आती है तो होटल में लौटने की इच्छा नहीं होती।

हाँ, दोपहर मुश्किल से कटता है। पुरी के सारे समुद्र-तट के बालू पर कहीं भी कोई छायादार जगह नहीं है जहाँ बैठकर धूप से सिर बचाया जा सके। मेरे पास एक छाता जरूर है। किन्तु पुरी की धूप के सामने यह छाता कुछ भी नहीं है।

दो दिन की दुपहरी तो मछुवों की एक अधबनी नाव की आड़ में काट दी। ऐसा दिखता था मानो नाव तैयार करने की कला सीख रहा हूँ। इसी बहाने इन मछुवों से बातें करता और समय काटता।

तीसरे दिन यह साधन भी हाथ से निकल गया। बात यह है कि आज नाव समुद्र में चलने लगी।

दोपहर का खाना-पीना खतम कर चिन्ता में पड़ गया कि क्या करूँ, कहाँ जाऊँ। पुरी में ऐसी जगह कहाँ है जो गन्दी तो हो नहीं, साथ ही छायादार हो। 'भले आदमियों के होटल' के बै[illegible] सकता था [illegible]

गालियाँ देने लगा कि समुद्र के किनारे कोई छायादार जगह क्यों नहीं बनवाई, क्यों न ऐसी एक जगह बनाकर वहाँ दो-चार बेंचें रखवा दीं।

जब इस प्रकार कुछ भी वश नहीं चला तो मैं उस कोठरी में दोपहर काटने के लिए तैयार हो गया जिसमें मेरे पहले एक छायावादी लेखक रह गये थे, और जो इस कोठरी पर यहाँ तक जान देते थे कि पैंतालीस दिनों में केवल पाँच दिन बाहर निकले।

मैंने होटल के नौकर रामकेष्टो को बड़ी मुश्किलों से बुलाकर कहा—क्यों जी, होटल में कोई किताब है?

रामकेष्टो ने अपनी गंजी से सुपारी निकालते हुए विनय के साथ कहा—क्यों नहीं। हर महीने कलकत्ते से न मालूम कितनी किताबें आया करती हैं।

—"एक-आध ले तो आओ, किसी तरह दोपहर कटे।"

रामकेष्टो को और बताना नहीं पड़ा। वह बख्शीश की उम्मीद लगाये हुए था, तुरन्त हुक्म बजा लाने के लिए दौड़ पड़ा और थोड़ी ही देर में पाँच-छः साल पहले की, जिल्द उड़ी हुई, एक मासिकपत्रिका ले आया।

तबियत और भी मन्दा गई। सोचा, काफी परेशान हुए। अब मुँह ढककर सो जाने में ही भलाई है। अनावश्यक समय को काटने के लिए निद्रा से बढ़कर कुछ नहीं है। हाँ, भूल गया। कविता लिखना भी इसी श्रेणी में आता है। कविता लिखनी मुझे आती नहीं थी, इसलिए जब कभी परेशानी में पड़ता हूँ, समय काटे नहीं कटता तो मैं निद्रादेवी की शरण में चला जाता हूँ।

इसी इरादे से कुर्सी से खड़ा हो गया। देखा, जो छोटा-सा जँगला है, उसमें से होकर दोपहर की धूप कोठरी में चोरी से प्रवेश कर रही है। पहले यह बात नहीं देखी थी, क्योंकि आज ही पहले-पहल इस समय होटल में रहने का सौभाग्य हुआ था। पर देखा कि धूप की महिमा अपरम्पार है। मेरी यह कोठरी भी—यद्यपि उसमें केवल धूप का स्पर्श ही हो रहा था, तप रही थी। उसमें भी इस समय खूब रोशनी हो रही थी।

इस रोशनी की कृपा से सबसे पहली बार मेरी दृष्टि तख़्त के नीचे गई। वहाँ पर कुछ दुर्गम स्थान में नीले रंग के कागजों, शायद पत्रों, का एक बंडल ऐसी हालत में पड़ा था। मन में सहज ही कौतूहल बढ़ा।

इसके पहले कभी इस बंडल पर मेरी दृष्टि नहीं पड़ी थी। आज ज्यों ही देखा त्यों ही मेरी सारी चेतना सजग हो गई कि न मालूम इसमें कौन-सी सम्भावनाएँ निहित हैं।

कहानियों में पढ़ रक्खा था कि इसी प्रकार से छूटे हुए पत्रों से बहुत से असफल प्रेमिकों के जीवन के इतिहास का पता लगा है तथा बहुत सी रोमान्टिक घटनाओं का भंडाफोड़ हुआ है। क्या आश्चर्य इस बंडल से भी इसी प्रकार किसी रहस्य का पता लगे।

मेरी आशा विशेषकर इसलिए और [illegible] यहाँ मुझसे पहले जो [illegible] छायावादी लेखक थे। [illegible] की तरह अनु- [illegible] बात —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी ? सिर में ठोकर खाकर, कमीज फड़वाकर और पीठ छिलवाकर भी मैंने तख्त के नीचे से उस पांडुलिपि को बाहर निकाला। पर बंडल को खोलकर मुझे निराशा हुई। यह किसी का रोमान्टिक या रहस्यमय जीवनेतिहास ज्ञात नहीं हुआ, क्योंकि पांडुलिपि के ऊपर ही लिखा था 'प्रकृति' (कहानी)।

सोचा फेंक दूँ। पर कुछ कौतूहल भी हुआ कि असीम बाबू किस प्रकार लिखते थे, यह तो मालूम हो। सब छायावादी एक ही से जीव नहीं होते। वे किस किस्म के थे, यह भी तो मालूम हो। असीम बाबू का पहले मैंने कभी नाम भी नहीं सुना। होटलवाले से ही मालूम हुआ था कि वे छायावादी लेखक हैं। मैं हूँ बीमा-कम्पनी का दलाल, इसलिए सभी छायावादी लेखकों को जानने का मेरा दावा था ही नहीं। हो सकता है, ये कोई अच्छे लेखक हों। कम से कम पांडुलिपि की हालत में कहानियाँ कैसी लगती हैं, यह तो मालूम हो जायगा। इसलिए बिस्तरे पर आराम से चित होकर लेट गया और उसे पढ़ने लगा—

"धीरे धीरे अनुपम नरम बालू पर लेट गया। गरम, कोमल, स्पन्दमान बालू। मानो वह बालू न हो, कोई धड़कता हुआ हृदय हो। समुद्र कर रहा है गर्जन। तेज हवा सायँ सायँ करती आ रही है। जैसे सारी प्रकृति में नशा छाया हुआ है, और वह नशा मन में धीरे धीरे समा रहा है। ...अनुपम स्पंदित हुआ, सिहर उठा। उसे ऐसा ज्ञात हुआ मानो समुद्र-मेखला पृथ्वी के साथ उसका मिलन सम्पूर्ण हो गया है।

रोशनी की अन्तिम उज्ज्वलता समुद्र के कहीं उस पार विलुप्त हो गई। अन्धकार का पर्दा पूर्व सागर के क्षितिज से उठकर सारे आकाश को ढकने के लिए प्रवृत्त हो रहा है...। जाय, सब लुप्त हो जाय, आँखें कुछ न देखें। रूप का क्या प्रयोजन ? रेखा की क्या आवश्यकता ?...निरन्तर गर्जनशील, निरन्तर चलमान समुद्र के किनारे बैठकर हृदय प्रकृति के साथ मिलन के रस में स्पंदित होता रहे, अव्यक्त आनन्द में झंकृत होता रहे, ठीक उसी प्रकार जैसे सितार के तार स्पंदित होते रहते हैं। ...हे समुद्र, हे कृष्ण वारिधि, अपने शब्द के अवास्तविक लोक में तुमने आज हमें बुला लिया, एक अचिन्तितपूर्व मिलन-स्पंदन के लिए मेरी अन्तरात्मा उन्मुख हो चुकी है...आकाश और पृथ्वी तक परिव्याप्त एक सुगन्ध। सघन-सुकोमल मिलन...।

'—प्रवीर'

बिलकुल पास ही, ऐन हृदय के पास नारी-कण्ठ का स्वर सुनकर अनुपम ने चौंककर आँखें खोलीं।

देखा, आकाश तक परिव्याप्त अंधकार। सुदूर समुद्र-तरंगों के सिर पर फासफोरस का फेन और पास ही एक छाया...। नारी की छाया।

उसके सुगन्धित बिखरे बाल अनुपम के सीने को स्पर्श कर रहे थे। उसकी ठोस साँस आकर उसके कन्धे को छू जाती थी..। फिर धीरे से एक वलयित सुकोमल बाहु ने उसके सिर को घेर लिया। फिर दोनों बाहु मिल गये।

एक अद्भुत रोमांच, मृत्यु की तरह एक आराम के आवेश ने अनुपम की चेतना को आच्छन्न क[illegible] स्वादितपूर्व सु[illegible] गया, और सुर [illegible] धमनियाँ उथल-पुथलकारी गति से नृत्य करने लगीं।

गर्जनशील समुद्र। बालों की सुगन्ध। नारी-मांस का चिकनापन। तारों से भरा आकाश। सुकोमल बालू की शय्या। देह के साथ देह के स्पर्श का ऐक्य...।

इतना होने पर भी अनुपम की कर्त्तव्य-बुद्धि एकाएक चाबुक की तरह उसकी चेतना पर पड़ी। उसका मोह भङ्ग हो गया। उसने कहा—श्रीमती जी, आप गलती पर हैं। मैं प्रवीर नहीं हूँ।

'ओह' कहकर वह गुगसुम हो गई। उसके भुजबन्धन शिथिल हो गये।

अनुपम ने कोमल उदारता के साथ कहा—कोई बात नहीं। ऐसे अँधेरे में ऐसी भूल हो सकती है।

—हो सकती है और हुई भी...

इसके बाद उस स्त्री ने करीब-करीब रोने के स्वर में व्याकुल होकर कहा—तो मैं अब क्या करूँ ?

"जो होना था, हो गया...इसके अतिरिक्त इतना अँधेरा है कि हाथ को हाथ नहीं सूझता"—अनुपम ने कहा, और तसल्ली के लहजे में इतना और कह गया—कोशिश करने पर भी आप आइन्दा मुझे नहीं पहचान सकेंगी। आपको लज्जित होने की कोई बात नहीं हो सकती।

"ठीक कह रहे हैं कि पहचान नहीं पायेंगे ? किसी प्रकार नहीं, चेष्टा करने पर भी आप मुझे नहीं पहचान पायेंगे न ?"

"कैसे पहचानूँगा ? मुझे अपना हाथ भी तो नहीं सूझ रहा है, आपको मैं कैसे पहचान पाऊँगा ? आप पूरा इतमीनान रक्खें।"

"बड़ी अच्छी बात है"—अपरिचिता का आलिंगन फिर से निविड़ हो गया। ठोस द्रुत साँस अबकी बार फिर अनुपम के कन्धे को स्पर्श करने लगी। स्पर्श की मधुरता सारी देह में व्याप्त हो गई।

"यह क्या" ? अनुपम की क्षीण सामाजिक-नैतिक बुद्धि ने मृदु स्वर में कहा।

"ऐसा अँधेरा है, घना अँधेरा...। कोई भी नहीं पहचानेगा। न मैं आपको, न आप मुझे। यह कहानी अँधेरे में ही ढकी रहेगी। फिर क्या भय है मित्र ? काहे का भय ?"

अनुपम ने कहा—तब रोशनी में ही मित्रता होने में क्या डर है ?

उस स्त्री ने कुछ उत्तर नहीं दिया। एकाएक उठकर खड़ी हो गई जैसे एक कम्पमान छाया-मूर्ति हो। एक बार चौंककर इधर देखा उधर देखा, फिर समुद्र की हवा के एक झोंके की तरह बालू पर से दौड़ती हुई जल्दी अन्धकार में विलीन हो गई। केवल उसके बालों की मन्द मन्द सुगन्ध वायु में देर तक हिलोरें लेती रही—सुखस्मृति की तरह।

समुद्र की लहरें बालू पर अपना माथा दे दे मारने लगीं।

फिर समुद्र-तट पर गर्जनशील स्रोतजल के पास, अनन्त आकाश के नीचे, आक्सिजनपूर्ण अँधेरे में अनुपम ने इस रहस्यचारिणी की आशा में बहुत सी सन्ध्याएँ बालू पर लेटकर काट दीं, किन्तु वह फिर कभी नहीं आई। अब तो उसे सन्देह हो चला है कि ऐसी कोई घटना घटित भी हुई थी या बालू की शय्या पर लेटकर समुद्र की लोरियों से सो जाकर उसने एक स्वप्न देखा था।

कहानी यहीं समाप्त थी। सोचा, कुछ बुरा नहीं लिखते थे असीम बाबू। फिर समुद्र-तट का वर्णन इतना संक्षिप्त क्यों है।

चार-पाँच दिन में भेंट होती, [illegible] हो जाती तो ठीक था। असीम [illegible] छायावाद का यही दोष है। [illegible] ढर्रे का लेखक होता तो [illegible] ही मानता।*

* एक बँगला कहानी

श्वेतकुष्ठ वनौषधि

महात्मा प्रदत्त श्वेतकुष्ठ (सफेद) दवा से तीन दिन में पूरा फायदा। सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, [illegible] दाताओं की दवा से निराश हो [illegible] तो इसे लगा कर आराम होवें। [illegible] की दवा का मूल्य २॥)।

सफेद बाल काला

इस तेल से बालों का पकना [illegible] और पका बाल काला पैदा होकर [illegible] ६० वर्ष तक काला न रहे तो दूना [illegible] वापसी की शर्त लिखा लें। यह तेल [illegible] के दर्द व सिर में चक्कर आना [illegible] आराम कर आँख की रोशनी बढ़ाता [illegible] एकाध बाल पका हो तो २), आधा [illegible] हो तो ३॥) और कुल पका हो तो [illegible] तेल मँगवा लें। एजेण्टों की [illegible] आवश्यकता है।

स्तम्भक वटी

एक गोली शाम को खा लें [illegible] इसके अद्भुत चमत्कार को देखें। [illegible] तक स्तम्भन कर गजब ढा देगी। [illegible] गोली १), ५० का २॥।), १०० का [illegible]

पता—वैद्यराज अखिलकिशोर [illegible]
नं० ३७ पो० कतरीसराय (गया)

रेक्सोना अर्थात् चर्म-स्वास्थ्य ...स्वस्थ त्वचा अर्थात् सौन्दर्य

THE NEW Rexona MEDICATED SOAP

चर्म-स्वास्थ्य यह मनोहर त्वचा का रहस्य है, और आप अपनी त्वचा आरोग्य-रहित हो तो, सौन्दर्य प्राप्त नहीं कर सकते। यहां वही रेक्सोना का विपुल शीघ्रोत्पादक झाग है जो कैडील नामक औषधी से बनाया गया है और त्वचा-आरोग्य के लिये मूल्यवान् (उत्तम) है। यह अँन्टिसेप्टिक, शांति-दायक, त्वचा-पुष्टिकर तैलों से विशेषरूपेण बनाया हुआ है, रेक्सोना का शीघ्रोत्पादक फेनदार झाग, उक्त कैडील को नन्हे नन्हे त्वचा-रंध्रों में गहराईतक ले जाता है, [illegible] लीनता को हटाके, त्वचा को सुरक्षित [illegible] है, उसको (त्वचा को) शांति प्रदान करता है और सुंदर बनाता है। इस में लेषमात्र भी शंका नहीं कि, चर्म-स्वास्थ्य त्वचा-माधुर्य (सौन्दर्य) की नींव है, और उक्त रेक्सोना का औषधी (मिश्रित) झाग त्वचा-सौन्दर्य की वृद्धि करता है।

पुरुषों के लिये रेक्सोना: आप कभी यह विचार न करें कि, रेक्सोना यह केवल स्त्रियों के लिये उपयुक्त साबुन है, अपितु वह पुरुषों के लिये भी अत्यंत [illegible] है। पुरुष कांतिमय स्वास्थ्य में गर्व [illegible] स्वस्थ त्वचा की देन है, चर्म-[illegible] आरोग्यकर, अँन्टिसेप्टिक रेक्सोना के कैडील की सम्पति है, वह (कैडील) चर्म-स्वास्थ्य बनाये रखता है।

बच्चों के लिये रेक्सोना: रेक्सोना का संरक्षक मृदु झाग बच्चों की कोमल त्वचा को शांत करता है। रेक्सोना का कैडील (बच्चों के) नन्हे नन्हे [illegible] की रगड़ (खुजली) और फुंसियों से सुरक्षा करता है। रेक्सोना, बच्चों के लिये उत्कृष्ट साबुन है।

★ रेक्सोना का कैडील, यह विशेषतः अँन्टिसेप्टिक आरोग्यकर एवं पौष्टिक तैलों का मिश्रण है; जो कि त्वचा की सुरक्षा के लिये खासकर बनाया गया है।

REXONA PROPRIETARY LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्मी-संसार में पूँजीवालों का अभाव क्यों ?

निर्माताओं के कारनामों का बुरा प्रभाव

लेखक, श्री उमेश जोशी

प्रसिद्ध अभिनेत्री श्रीमती देविकारानी।

फिल्म-अभिनेता श्री अशोककुमार।

निर्माताओं ने पूँजीवालों की अनुभव-हीनता से अनुचित लाभ उठाया। किसी-किसी निर्माता ने पूँजीवालों का इतना कचूमर निकाल दिया है कि वह स्वप्न में भी फिल्म-व्यवसाय का नाम न लेगा। इसका यह मतलब नहीं है कि तमाम निर्माताओं ने पूँजीवालों के साथ धोखा-धड़ी का व्यवहार किया, फिर भी एक मछली तमाम तालाब को गंदा तो कर ही देती है।

आज बम्बई में करीब सौ चित्र ऐसे पड़े हैं जिनका शूटिंग अधूरा रुका पड़ा है। उन चित्रों को समाप्त करने के लिए पैसा ही नहीं। उनकी कहानी या संवाद भी अच्छे नहीं फिर किस भरोसे पर कोई उनमें पूँजी लगावे? लड़ाई का जमाना बीत गया, जब बड़े-बड़े स्टारों के नाम पर ही कूड़ा-करकट तक चल जाता था। अब तो जमाना बदल गया है। आज बड़े-बड़े स्टारों के नाम पर ही कोई फिल्म सफल नहीं हो सकती, जब तक उस फिल्म की कहानी, संवाद एवं सीन श्रेष्ठ न हों! इस प्रकार के निर्माताओं की हालत बहुत ही दयनीय हो रही है। इधर गिरें तो खाई और उधर गिरें तो कुआँ। मतलब यह कि दोनों तरफ ही संकट है! संकट इसलिए कि यदि भाग्य से पूँजीवाला मिल भी जावे और चित्र पूरा किया जावे तो क्या भरोसा कि आज के जमाने में चित्र कामयाब हो सकेगा। और न बनावें तो जो पैसा लग चुका है उसका क्या हो? इसी गोरखधन्धे में हमारे निर्मातागण पड़े हुए हैं।

आज वितरकों और निर्माताओं के बीच अविश्वास का जाल बिछ गया है। एक दूसरे के पास बहुत ही सँभल कर आते हैं। ऐसा ही जाल पूँजीवालों और निर्माताओं के बीच में है। निर्माताओं से दोनों ही चौकन्ने हो गये हैं! यह अविश्वास का जाल जब तक हट नहीं जायगा तब तक सिने-व्यवसाय की हालत सुधरना मुश्किल है। आज बहुत से चित्र रिलीज होने के लिए डिब्बों में बन्द पड़े हैं, क्योंकि उनको कोई कौड़ियों में भी नहीं पूछता। ये चित्र लड़ाई के जमाने में बने थे, इसलिए उनमें काफी रुपया खर्च हो गया, लेकिन लड़ाई का मौसम बीत जाने से इन चित्रों के दाम ठीक नहीं लग रहे हैं। इसलिए इनका प्रदर्शन रुका हुआ है, इसी लिए पूँजीवालों की पूँजी, जो कि इन चित्रों में लगी हुई है, खटाई में पड़ गई।

पूँजीवाला न मिलने से आज हर निर्माता सस्ते से सस्ते दामों पर फिल्म बनाना चाहता है। इसलिए वे अब पुराने स्टारों को अपने चित्रों में स्थान कम देने लगे हैं। वे नये चेहरों की फिक्र में रहते हैं।

आज पूँजीवालों के अभाव से फिल्म-व्यवसाय का भविष्य अन्धकारमय है। फिर भी निर्माताओं से हमारा यही कहना है कि अब समझदारी से काम लीजिए, ईमान-दारी के व्यवहार को आदर्श बनाइए। फिर कोई वजह नहीं कि आपको पूँजी की कमी रहे। आज भी इस अभाव की गहराई में सैकड़ों पूँजीवाले अपनी थैली लिये हुए खड़े हैं—लेकिन है कोई ऐसा माई का लाल जो ईमानदारी के साथ चित्र-निर्माण के लिए रुपयों की थैलियों को थाम सके? उसको सँभालने के लिए स्वच्छ हृदय और छल-कपट से शून्य बर्ताव चाहिए। ईश्वर आज के निर्माताओं को सत्प्रेरणा दे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रामीण मजदूरों की समस्या

गाँव के हलवाहों की स्थिति सुधारना आवश्यक

लेखक, श्री व्रजमोहनलाल शुक्ल

देश में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हो गई है। प्रान्तों में भी अपनी लोकप्रिय सरकारें हैं। वे सरकारें शहरों और कस्बों के मजदूरों तथा किसानों की समस्या हल करने में लगी हैं। परन्तु गाँवों में किसानों के भी हलवाहे आदि नौकर रहते हैं। उनकी दशा में आज तक कोई परिवर्तन नहीं है। न तो सरकार उनकी ओर ध्यान देती है और न किसान ही। लेख में उन्हीं की वर्तमान स्थिति का चित्रण है।

संयुक्तप्रान्त के प्रधान मन्त्री
पण्डित पन्त

आज देश में हड़तालों की धूम है, मिलों, कारखानों, खानों, प्रेसों, बैंकों, रेलवे और आफिसों में, सर्वत्र जागृति और उत्साह है, सबको अधिक वेतन पाने की लालसा है। इन हड़तालियों के प्रति शिक्षित नवयुवक-समुदाय तथा देश के नेताओं की भी सहानुभूति है। इससे हड़तालियों की अधिक माँगें स्वीकृत हो जाया करती हैं। पर यह चेतना बड़े बड़े नगरों तथा शहरों तक ही सीमित रह गई है। कितने ही पिछड़े हुए मजदूर आज इन फायदों से वंचित हैं।

गाँवों में २५ से ३० फी सदी ऐसे मजदूर हैं जिनके प्रति उदासीनता नहीं दिखलाई जा सकती। ग्रामीण मजदूरों की शोचनीय अवस्था पर विचार कर लेना अनुचित न होगा। किसी भी गाँव में किसानों के नाम पर मजदूर अथवा हलवाहे मिलेंगे। उनके दैनिक कामों को देखकर तथा उनके फटे-चिथड़ों और कृश-शरीरों को देखकर ठंढे दिल से शहरों के मजदूरों से उनकी तुलना की जाय तो प्रकट होगा कि शहरों के मजदूरों को बहुत-सी सुविधाएँ हैं। ग्रामीण मजदूर दो सेर अन्न की मजदूरी से कैसे निर्वाह कर पाता होगा। देहात में कठिन परिश्रम करने पर भी दिन भर की मजदूरी वही दो सेर है। साथ में दस-पाँच बालियाँ और झिड़कियाँ मिल जाती हैं भत्ते में। काम करनेवाला मजदूर दिन भर में चार-पाँच पाव से कम नहीं खाता। यदि एक परिवार में सात आदमी हैं और कमानेवाले दो प्राणी—स्त्री और पुरुष—हों तो दिन भर की कमाई चार सेर हुई। बारह पाव तीन आदमी आसानी से खा सकते हैं। यदि मिल-जुल कर आपस में एक वक्त किसी प्रकार खा भी लें तो दूसरे वक्त का ठिकाना नहीं। कभी कभी इनको काम ही नहीं मिलता। काम न मिलेगा तो मजदूरी कहाँ पावेंगे?

कुवार से अगहन तक और फागुन से जेठ तक मजदूरी आसानी से मिल जाती है, शेष महीने कठिनाई से व्यतीत करने पड़ते हैं।

ग्रामीण मजदूर अन्न के अभाव में निम्नलिखित चीजें खाकर पेट भर लेते हैं—शकरकन्द, आलू, गाजर, मूली, ककड़ी, महुआ तथा साग-पात, आम की गुठली आदि। यदि इससे भी तृप्ति न हो सकी तो ये चूहे और चींटियों के बिलों से अन्न निकाल कर तथा खेतों और खलिहानों से बाल का दाना बिन कर काम चलाते हैं। ये मजदूर इतने विचारशून्य हैं कि जिस चीज को [illegible] लोग घृणा करते हैं [illegible] जो सज्जन [illegible] लेते [illegible] चगेरा [illegible] सकते [illegible] जाय, [illegible]

प्रान्तीय अर्थ-मन्त्री श्री सम्पूर्णा[illegible]

अनाजों को माँड़ते हैं और गेहूँ, जव आदि खाते हैं उनके गोबर को मजदूर लोग उठा ले जाते, उस गोबर को धोकर उसमें से अनाज निकाल लेते और उसे खाने के काम में लाते हैं। सूखा और समूचा दाना रहने के कारण बैलों को पच नहीं सकता लेकिन दूषित तो हो ही जाता है। वही अन्न खाने से तरह तरह के रोग पैदा हो जाते हैं। इससे कितने ही ग्रामीण मजदूर हर वर्ष काल के गाल में समा जाते हैं।

जब कोई मजदूर बीमार होता है तो झाड़-फूँक, ओझाई आदि की तरफ आकर्षित होता है। इसका कारण उनमें अशिक्षा है। दूसरे अंधविश्वास। तीसरे दवा आदि का साधन न होना। यह तो हुई उनके भोजन की समस्या। उनका ब्याह-शादी आदि किस प्रकार होता होगा? जब उनके खाने और पहनने का भी ठिकाना नहीं तो शादी-ब्याह का खर्च सिवा कर्ज के हो ही क्या सकता है? कर्ज लेने के मानी होते हैं अपने को किसानों के हाथ बेच देना। जिस प्रकार खेतिहरों को पटवारी, कारिन्दा, जमींदार, महाजन और सरकार शोषण करती है उसी तरह इन मजदूरों को छोटे-बड़े किसान चूसते हैं। महाजन इनको कर्ज देते नहीं और किसान इसके लिए सदा तैयार रहता है। महाजन उसे कर्ज देता है जिसके पास जगह-जमीन व माल हो। परन्तु किसान मजदूर को इसलिए कर्ज देने में प्रसन्न रहता है कि कर्ज देकर मजदूर को अपने पञ्जों से जकड़ रक्खेगा जिससे वह भागकर न जा सके। मजदूर जब तक काम करता रहता है तब तक किसान उससे बोलता नहीं। किन्तु आनाकानी करते ही किसान अपना दाम और ब्याज जोड़ने लगता है। ब्याज और मूल का हिसाब सुनकर मजदूर फिर काम शुरू कर देता है। इस प्रकार मजदूर का किसानों के चक्कर से निकलना असम्भव हो जाता है। कोई भी ग्रामीण मजदूर ऐसा न होगा जिसके ऊपर कर्ज न हो।

मजदूरों को विशेषतया पूस-माघ में अधिक कठिनाई होती है जब कि कड़ाके की सरदी पड़ती है। अमीर लोग रजाई के अन्दर से मुँह नहीं निकालते पर असहाय ग्रामीण मजदूर एक फटी धोती और चादर से ही जाड़ा व्यतीत करने का प्रयत्न करता है। अपने जीवन के दिन ग्रामीण मजदूर दूसरों की सेवा में अपना पेट भरने के लिए बिताना चाहता है परन्तु अन्न भी नहीं मिलता। अब तो उनको, मर जाने पर, कफन भी नसीब नहीं होता। प्रश्न यह है कि [illegible] देख सुनकर भी अब इस अन्याय [illegible] होगा, या एक [illegible] सोंट [illegible] जाय, [illegible]

जिस प्रकार किसानों का बकाया लगान व कर्ज दूर करने की व्यवस्था की थी उसी प्रकार इन ग्रामीण मजदूरों का कर्ज भी सरकार माफ कर दे। कर्ज चाहे किसान से लिया गया हो अथवा महाजन से, बशर्ते कि पाँच-छः वर्ष से अधिक का हो। इसके अतिरिक्त शिक्षितवर्ग को जल्द से जल्द इन मजदूरों को संगठित करके मजदूरी बढ़ाने के लिए आन्दोलन चलाना चाहिए। मजदूरों के बच्चों को पढ़ाने के लिए सरकार [illegible] वृत्तियाँ दी जावें। बीमारी की [illegible] मुफ्त दवा मिले। ग्रामों में [illegible] द्वारा इन मजदूरों को [illegible] दिलाने की व्यवस्था होनी चाहिए। इनको कुछ सुख मिल सकेगा। [illegible] यतों में अधिक से अधिक [illegible] दूरों के होने चाहिए।

भारतवर्ष के अन्य प्रदेशों की भाँति राजपूताने में भी परिवार के लोग चायपान के लिए एकत्रित होते हैं। भारतवर्ष के अन्य प्रदेशों की भाँति यहाँ के परिवारों में भी चायपान के अवसर पर बुरुक बाँड की चाय अपनी स्थायी ताज़गी के लिए पकड़ कर जाती है।

बुक बाँड
[illegible] पत्तियाँ और [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त समाचार

भंग की तरंग

भंग की तरंग में ज़मींदारों का अंत [illegible] के अंदर ज़मींदारों [illegible] समय काफ़ी है, ज़मींदारों [illegible] लिए घर भर लेना चाहिए। [illegible] तो खाने-पीने का ठिकाना [illegible]

* *

[illegible] के राजनीतिक नेताओं का [illegible] कि जापान स्वयं अपना शासन [illegible] उदारता से कैसे काम चलेगा। [illegible] रूस और अमेरिका क्या बेकार [illegible]

* *

[illegible] विद्रोहियों की सहायता के [illegible] देना बसरा भेजी गई है। [illegible] कुछ काम करते रहना [illegible] तो हथियार चलाना भूल [illegible]

* *

[illegible] उमा नेहरू ने आदेश दिया [illegible] भारत में स्वराज्य न हो महोदय की कृतज्ञ हैं कि मौखिक गाने पर रोक नहीं लगाई।

* * *

डाक्टर लोहिया को गोआ की सरकार-ने पकड़ लिया है। जान पड़ता है, गोआ के अधिकारी कुछ अफ़ीम का सेवन अधिक करते हैं। उन्हें पता नहीं कि भारत ब्रिटिश शक्ति से लड़ रहा है जिसके सामने गोआ वैसा ही है जैसे हिमालय के सामने सूई।

* * *

सागर में भी साम्प्रदायिक दंगा हो गया। जान पड़ता है कि सागर में घोंघे बहुत पैदा हो गये हैं।

* * *

मेरठ में कांग्रेस के अवसर पर स्त्री वालंटियरों के लिए अपील की गई है। बहुत से लोग पहले से जानना चाहते हैं कि कितनी स्त्री वालंटियर वहाँ भरती होंगी।

* * *

प्रांतीय सरकार ने आदेश दिया है कि शिक्षा-संस्थाओं के निकट सिनेमा-घर न बनाये जायँ। प्रयाग विश्वविद्यालय के बहुत से अध्यापकों को इससे बड़ा दुःख हुआ होगा। हमें उनसे सहानुभूति है।

* * *

अमेरिका आटम बम का प्रयोग नहीं करेगा। यदि यह बात सत्य है तो जितने आटम बम उसके पास तैयार हों, कायदे आजम के पास भेज दे वे काम में लायें।

* * *

कायदे आजम ने सौ मिनट तक भूपाल के नवाब से बातें कीं। इसके पश्चात् सवा दो घंटे तक [illegible] और कुछ हो या [illegible] ही जा सकता है भर [illegible] देर तक कर [illegible]

देश-प्रेम

श्रीयुत बेढब बनारसी

मैं देश-प्रेम कैसा हो खूब जानता हूँ
हिसकी बरांडी के मैं पास हूँ न जाता।
ये वस्तु हैं विदेशी कैसे इन्हें मँगाता,
यों कभी, कभी मैं कुछ भंग छानता हूँ।
बाहर सदैव खद्दर मैं ठाट से पहनता,
घर में विलायती में कुछ दोष हूँ न गिनता।
बीच बीच खद्दर के गुण बखानता हूँ,
घर में विलायती हैं सामान भी हमारे
है बैठका हमारा चरखा मगर सँवारे।
मैं सूत कातने का कानून जानता हूँ।
सेवक स्वदेश का मैं चंदा वसूल करता,
थोड़ा बहुत कभी कुछ हूँ जेब बीच धरता।
अपनी सदा सभी की संपत्ति मानता हूँ
जैरी किसान का हूँ मज़दूर को सताता,
अनपढ़ गरीब जनता पर रोब भी जमाता
पर राष्ट्रीय झंडा मैं रोज़ तानता हूँ।

[illegible] सत्कार न करें। साड़ी पहनें [illegible] नहीं बताया आपने। * * [illegible] यह भी बताया कि जिस दिन [illegible] होगा उस दिन मैं भी गहने [illegible] तब मोना सस्ता होने की भी [illegible]

* * *

[illegible] में इस साल एक लाख [illegible] हजार दुधियाँ संयुक्तप्रांत में [illegible] बराना लीडरों की आमदनी [illegible] और उद्योग में भी वृद्धि हुई।

* * *

[illegible] के नये डिविजनल अफसर [illegible] बजाने पर रोक लगा [illegible] की भौंडामुखियाँ अफसर

स्मारक पत्र

किस प्रकार का काम : पालिश का हुइ चीज़ों की चमक कायम रखने तथा बढ़ाने के लिए।

हमारी सिफ़ारिश : जेन्सन्स वैक्स पालिश (Jenson's wax Polish) का स्थायी आइने जैसा चमकीला बनाता है। तथा मोटर गाड़ियों की चमक-दमक बढ़ाता है।

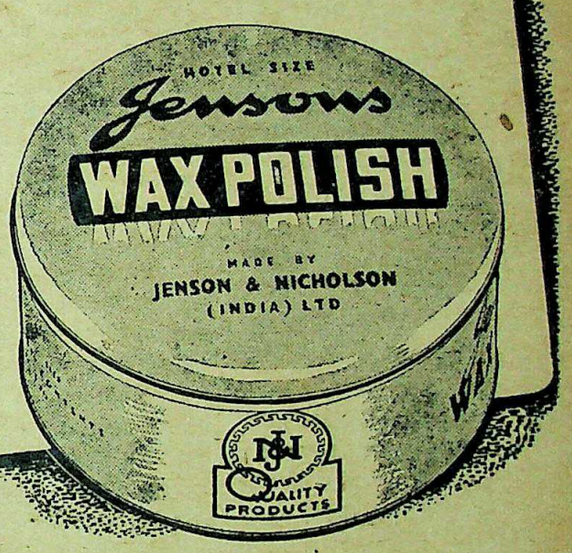

JENSON & NICHOLSON
MAKERS OF PAINTS

हिन्दी में

अभूतपूर्व क्रान्तिकारी साहित्य

नेता जी श्री सुभाषचन्द्र बोस-सम्बन्धी प्रसिद्ध हिन्दी साप्ताहिक

'अभ्युदय'

के पाँच विशेषांक जिन्होंने भारत भर में हलचल मचा दी है।

पहला, दूसरा, तीसरा और चौथा विशेषांक एक में (सजिल्द) केवल ५) रुपया।

पाँचवाँ विशेषांक जिसमें जियाउद्दीन के भेष में नेता जी सम्बन्धी दो अलभ्य चित्र भी उत्तमचन्द्र द्वारा लिखित उनके भारत से बाहर जाने की कहानी पूरी की पूरी, १०० से ऊपर अनमोल चित्र तथा २०० के करीब पेज, कवर पर माता भवानी द्वारा नेता जी को तलवार प्रदान करते हुए सुन्दर तिरंगा चित्र है—तीन रुपया मात्र।

दोनों एक साथ लेनेवाले को पोस्टेज माफ। हजारों प्रतियाँ बिक चुकीं। कुछ प्रतियाँ अभी शेष हैं। जल्दी कीजिए नहीं तो बाद में इनका मिलना भी मुश्किल हो जायगा।

मैनेजर 'अभ्युदय'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

मौलाना गांधी—लेखक श्रीरविशंकर शुक्ल बी० ए०, एल्-एल० बी०; प्रकाशक गंगाग्रंथागार, ३६ लाटूश रोड, लखनऊ; पृष्ठ ७२ और मूल्य ।।।)

'हिन्दुस्तानी-प्रचार सभा वर्धा' के प्रधान मन्त्री श्रीयुक्त श्रीमन्नारायण अग्रवाल ने 'मौलाना गांधी' शीर्षक एक लेख लिखा था जो कई पत्रों में प्रकाशित हुआ था। यह उसी का उत्तर है। उत्तर कुछ लम्बा हो गया है, इस कारण पत्रों में न छपवाकर पुस्तकरूप में प्रकाशित किया गया है। लेखक की इच्छा है कि पत्रकार लोग इसे या तो लेखमाला के रूप में अथवा कुछ अवतरण देकर ही इसकी चर्चा करें जिससे तसवीर के दूसरे पहलू पर भी प्रकाश पड़े।

महात्मा गांधी की प्रेरणा से उनके गढ़ के लोगों ने जब से हिन्दुस्तानी का आन्दोलन चलाया है, हिन्दी-जगत् में उसकी प्रतिक्रिया हुई है और हिन्दीवालों का बहुमत इस आन्दोलन में हिन्दी के अहित की घोर आशंका करता है। इस सम्बन्ध में जो लेख हिन्दी-पत्रों में प्रकाशित हुए थे उन्हीं का समाधान करने के प्रयत्न में अग्रवालजी का लेख था, किन्तु उसमें ऐसी कोई बात न थी जिससे हिन्दीवालों को सन्तोष होता। प्रस्तुत पुस्तक में सुयोग्य लेखक ने बतलाया है कि हिन्दुस्तानीवाले भाषा का पाकिस्तान बनाने को प्रस्तुत हैं। जैसी बीहड़ भाषा हिन्दुस्तानी के हिमायती लिखते हैं उसके लिहाज़ से लेखक का यह कथन बिलकुल ठीक है "जिस प्रकार अंगरेज़ी की संस्कृति और धर्म ईसाइयत है उसी प्रकार हिन्दुस्तानी की संस्कृति और धर्म इस्लाम माना जाय।"

लेखक ने अग्रवाल महोदय की प्रत्येक बात का उत्तर दिया है और उत्तर देते समय यत्र-तत्र चुटकियाँ ली हैं। जैसे "हिन्दी-शैली बिगाड़ने का अधिकार किसी को नहीं—न तो महात्मा गांधी को और न टण्डनजी को ही। हमने गांधी जी को राजनीतिक और सामाजिक नेता के रूप में माना है, साहित्यिक नेता के रूप में नहीं।...भाषा का प्रश्न राजनीतिक प्रश्न नहीं है। राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर बोलने का पूरा पूरा अधिकार भाषा-विशेषज्ञों को भी है।... हज़ारों लाखों आदमी जैसी हिन्दुस्तानी लिखते आ रहे हैं वह 'हिन्दुस्तानी' नहीं, हिन्दुस्तानी है वह जैसी वर्धा के डेढ़ दर्जन व्यक्ति लिखें।"

हिन्दुस्तानी के हमले से हिन्दी का जैसा कुछ रूप होता जा रहा है उसके सम्बन्ध में लेखक का मत है "हिन्दुस्तानी वह हलका विष है जो हिन्दी को और केवल हिन्दी को समाप्त करके छोड़ेगा।" "संसार की 'भाषा' नाम को सार्थक करनेवाली किसी भाषा की दो लिपियाँ नहीं।... हिन्दू, हिन्दी और हिन्दू प्रान्त कांग्रेस की मुट्ठी में हैं, इसलिए कांग्रेस-सरकारों द्वारा हिन्दुओं पर वर्धा की हिन्दुस्तानी लादी जायगी।" यों अनेक प्रकार से अपना अभिमत प्रकट करते हुए एक [illegible] ने कहा है—

"जो इक[illegible]
[illegible]
[illegible]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

सम्पादक जी,

...जयपुर विद्यापीठ में 'सर्वोदय ...मन्दिर' के नाम से प्रकाशनकार्य ...प्रबन्ध हो रहा है। इसके परा... में सर्वश्री काका कालेलकर, ...गुप्त, हरिभाऊ उपाध्याय, ...वर्मा, राजा महेन्द्रप्रताप, ...चतुर्वेदी और सुधीन्द्र के ...। यहाँ से ७ पुस्तक-मालाएँ ...होने की योजना है जिनमें ...विषयों की पुस्तकें छापी जायँगी। ...मन्दिनी', 'राष्ट्रवीणा', 'राष्ट्रीय ...और 'राम-रहमान', प्रकाशन ...पर हैं। 'कापी राइट' और ...दोनों शर्तों पर पुस्तकें ली ...योजना अच्छी है। हम इसकी ...की कामना करते हैं।

...संसार में प्रकाशकों की बहुत ...लेखक प्रायः इतने निर्धन हैं कि ...अपनी रचनाओं को प्रकाशित ...असमर्थ हैं। ऐसी स्थिति में ...जब तक इस प्रकार की ...की स्थापना में सहयोग न करेगा, ...की उन्नति और विकास में बाधा ...

...तरीका तो यह है कि प्रकाशन ...के लिए कई व्यक्ति मिलकर बड़ी ...योजना चलावें। यदि व्यवस्था से ...हुआ तो सर्वोदय प्रकाश-मन्दिर ...साहित्य की उन्नति में एक आदर्श ...।

—देवीप्रसाद शुक्ल

* *

सम्पादक जी,

...एकसठ वर्षों के संघर्ष के बाद ...हमें विश्वास दिलाने लगे हैं ...हम स्वराज्य के द्वार पर खड़े हैं। ...है कि राजनीतिक दासता से ...ही मुक्ति मिल जायगी लेकिन ...अपना राज्य होने पर भी हो ...पूर्ण स्वराज्य का प्रश्न हल ...साहित्यिक तथा सांस्कृतिक ...हमें पिसते रहना पड़े। युक्तप्रान्त ...माननीय सम्पूर्णानन्द जी ...साहित्य-सेवियों के संरक्षण ...है। तदर्थ हम उनके कृतज्ञ हैं। ...तो स्थिति यह है कि चारों ओर ...अत्याचार ही हैं। प्रकाशक ...रहता है, लेखक नुकसान में ...साहित्यिक सिनेमा-क्षेत्र में गये, ...यथोचित कद्र न की गई। ...सिर्फ १०००) और गीत के ...तथा अन्य कलाकारों को लाखों ...वैषम्य है। ज़रा हालीवुड से ...देखिए। क्या खुद भूखों मर... साहित्यिक जनता की बढ़ती ...को मिटाने के लिए स्वस्थ ...साहित्य का निर्माण कर ...बुरी दशा यह है कि अगर ...अनुवाद करने बैठते हैं ...कोष हमें नहीं मिलता। ...कार्यालय के दस वर्षों में ...चतुर्वेदी अपना काम 'अँगरेजी-बँगला कोष' से चलाते थे और 'आर्यमित्र' के यशस्वी सम्पादक पं० हरिशंकर शर्मा—जो काफी पुराने लेखक हैं—अंजुमन तरक्किए उर्दू द्वारा प्रकाशित 'अँगरेज़ी-उर्दू डिक्शनरी' से अपना काम चलाते हैं! अँगरेजी विश्वकोष की तरह का ग्रंथ निकालने में कम से कम पन्द्रह वर्ष तो लग ही जायँगे और सो तब, जब अभी से कार्य प्रारम्भ कर दिया जाय। एक 'डायरेक्ट ऐक्शन' शब्द के ५-६ अनुवाद विभिन्न पत्रों में—सीधी कार्रवाई, प्रत्यक्ष कार्रवाई, खुली लड़ाई, सीधा कदम, प्रत्यक्ष संघर्ष आदि—प्रयुक्त हुए हैं।

आशा है इस ओर उन लोगों का ध्यान जायगा जिनके प्रयत्न से यह समस्या हल हो सकती है।

विनीत
अखिल विनय

* * *

श्रीमान् सम्पादक जी

कांग्रेस में आजकल ऐसे लोगों की प्रधानता बढ़ रही है जिन्होंने सन् १९२० के आन्दोलन से लेकर सन् १९४५ के चुनाव-आन्दोलन तक कांग्रेस का विरोध किया है। सन् १९३० ईसवी के लगान-बंदी आन्दोलन में ज़मींदारों ने किसानों की भूमि छीन ली, उनके घर-द्वार तक बिकवा लिये, इसके अतिरिक्त वे सन् १९३२ के आन्दोलन में भी अपने अत्याचारों से बाज नहीं आये। सन् १९३६ ईसवी के चुनाव-आन्दोलन से लेकर सन् १९४१ तक वे विरोध करते ही रहे। ज़मींदारी तोड़ने को कौन कहे, हमारे प्रांत में तो किसानों को काश्तकारी पर भी हक नहीं मिला। सन् १९४२ में उन लोगों ने ब्रिटिश सरकार को भरसक मदद दी। सन् १९४४ में कांग्रेस के जेल से बाहर आने पर सरकार की ओर से चुनाव की जो घोषणा हुई उसमें भी देश-भक्तों का विरोध किया गया। आज ऐसे लोग कांग्रेस में बिना किसी रोक-टोक के आ रहे हैं। कांग्रेस के दो-एक स्वार्थी कार्यकर्ता उनकी सहायता लेकर किसानों के ऊपर अत्याचार करा रहे हैं। ऐसी शिकायतें कांग्रेस के उच्चाधिकारियों के कानों तक पहुँच चुकी हैं। यद्यपि उन्होंने बहुत कुछ आश्वासन दिया था परन्तु कांग्रेस के कुछ नेता अपनी नेतागीरी कायम रखने के लिए ज़मींदारों को मिलाये रखना चाहते हैं। कांग्रेस की नीति साफ होनी चाहिए और उसे अपने छोटे कार्यकर्ताओं की सच्ची रिपोर्ट पर किसानों का साथ देना चाहिए वरना किसान और छोटे कार्यकर्ताओं को बड़े पूँजीपतियों और ज़मींदारों की गालियों तथा मार का शिकार तो बनना ही पड़ेगा साथ ही सरकारी अदालतों में उनके विरुद्ध जुर्म के मामले भी चलाये जायँगे। इससे देश की आज़ादी में बलिदान और त्याग करनेवालों की दुर्दशा होगी। क्या कांग्रेस के बड़े नेता और हाईकमांड इस ओर ध्यान देने की कृपा करेंगे?

—भुल्ली महराज, शंकरगढ़

पहले के लँगड़े को देखकर उसके मित्र चकित हो उठे

अब वह बाहरी खेलों में भी भाग लेता है

क्रुशेन से उसके पाँव का गठिया जाता रहा

यहाँ एक ऐसे आदमी की कहानी है जो खेल-कूद में भाग लेने की आशा त्याग चुका था। उसने किस प्रकार एक के बाद अन्य दवाओं का सेवन किया और कैसे उसको एक पूर्व रोगी ने चङ्गा होने का रास्ता दिखलाया? जिसको वह स्वयं बतलाता है।

दो वर्ष पूर्व मेरे पाँव में दर्द शुरू हुआ जो धीरे-धीरे बढ़ कर बहुत भयङ्कर हो गया। मैंने सारी दवाइयाँ कीं। पर उनका कुछ भी असर न हुआ। बीमारी में एक दिन मैं शाम को बैठा था कि एक रोगी ने मुझे क्रुशन साल्ट के सेवन की राय दी। आज बारह मास हो गये। हालाँकि जल्दी चङ्गा न हो सका। परन्तु दर्द और सूजन धीरे-धीरे पाँव से ६ माह के भीतर दूर हो गये। मैं जब दूर तक टहलने के लिए जाने लगा तब मेरे मित्र मुझे देखकर दंग रह गए। इस वर्ष मैंने टेनिस भी अच्छी तरह खेला है। वह फिक्र जिससे मैं सदैव परेशान रहता था मेरे दिमाग से बिलकुल गायब हो गई।" सी० डब्ल्यू०।

गठिये का दर्द इसलिए होने लगता है कि गाँठों के जोड़ों में अम्ल अलग अलग इकट्ठे हो जाते हैं, क्रुशन साल्ट ऐसे तत्वों अथवा जरों से सम्बन्धित है जो इस इकट्ठे अम्ल को तितर-बितर कर देता है साथ ही ऐसे जरों की सहायता करता है, जो गुदों को अच्छी तरह काम करने में सहायता देते हैं।

क्रुशेन साल्ट सभी अ... और दूकानों पर ...

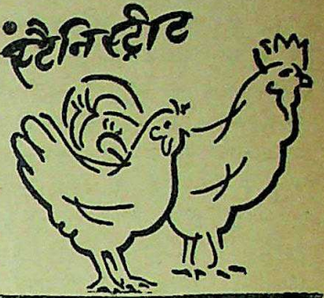
स्टैनिस्ट्रीट

चिकेन
(कंसिंट्रेटेड)
एसेंस

विशुद्धता व उत्कृष्टता की गारंटी है—
विदेशी चिकेन एसेन्सों से किसी भी हालत में खराब नहीं, वरन् अच्छा ही है।
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं, लिमिटेड
कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ अमृतसर कराची
SSK 129

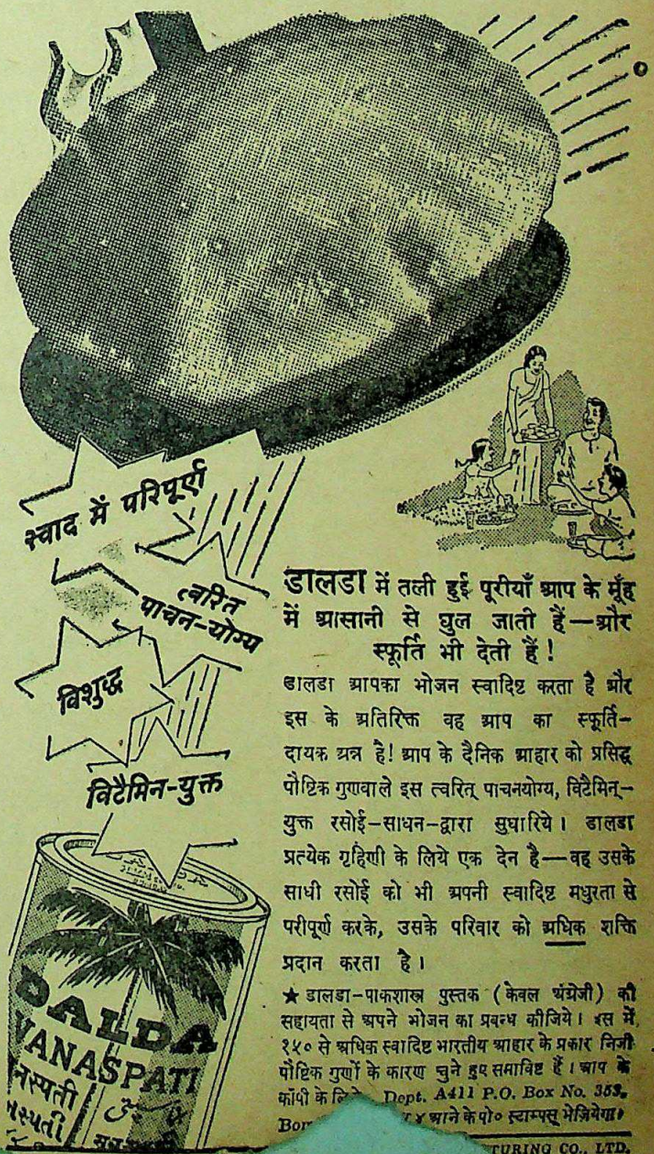
स्वाद में परिपूर्ण
त्वरित पाचन-योग्य
विशुद्ध
विटैमिन-युक्त

डालडा में तली हुई पूरीयाँ आप के मूँह में आसानी से घुल जाती हैं—और स्फूर्ति भी देती हैं!

डालडा आपका भोजन स्वादिष्ट करता है और इस के अतिरिक्त वह आप का स्फूर्तिदायक अन्न है! आप के दैनिक आहार को प्रसिद्ध पौष्टिक गुणवाले इस त्वरित् पाचनयोग्य, विटैमिन्-युक्त रसोई-साधन-द्वारा सुधारिये। डालडा प्रत्येक गृहिणी के लिये एक देन है—वह उसके साधी रसोई को भी अपनी स्वादिष्ट मधुरता से परीपूर्ण करके, उसके परिवार को अधिक शक्ति प्रदान करता है।

★ डालडा-पाकशास्त्र पुस्तक (केवल अंग्रेजी) की सहायता से अपने भोजन का प्रबन्ध कीजिये। इस में १५० से अधिक स्वादिष्ट भारतीय आहार के प्रकार निजी पौष्टिक गुणों के कारण चुने हुए समाविष्ट हैं। आप के कॉपी के लिये Dept. A411 P.O. Box No. 353, Bom... ४ आने के पो० स्टाम्पस् भेजियेगा।

...TURING CO., LTD.

48-50 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

उन्नाव २ अक्टूबर को महिला कांग्रेस मण्डल की एक सभा गांधी-जयन्ती मनाने के उपलक्ष्य में महिला कला-भवन के हाल में श्री चन्द्रावती अष्ठाना की अध्यक्षता में हुई। अधिक संख्या में स्त्रियाँ तथा कन्याएँ उपस्थित थीं। झंडा गान तथा वन्दे मातरम् गान के बाद प्रधान मंत्राणी कुमारी पुष्पलता निगम ने महापुरुष गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की तथा गांधी-जयन्ती पर स्वरचित कविता सुनाई। श्री सुमित्राकुमारी सिनहा ने महात्माजी को १२५ वर्ष तक जीवित रखने की प्रार्थना तथा उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। कुमारी कुन्ती सक्सेना ने महात्मा जी की जीवनी तथा देश में उनके द्वारा जो जागृति हुई उस पर भाषण दिया। श्री मदनजीत कौर ने महात्मा जी के जीवन के उद्देश्य तथा उनकी राजनीति पर भाषण दिया। कुमारी शकुन्तला दीक्षित ने सेवाग्राम का सन्त शीर्षक कविता सुनाई तथा कोरस में "भारत का दुलारा गांधी है" गाना गाया गया। राष्ट्रीय गान तथा अध्यक्षा के भाषण के पश्चात् 'चरखे के तार कहते भारत के भाग्य जागे' गीत के साथ चरखा-प्रदर्शन किया गया। महात्मा जी १२५ वर्ष तक जीवित रहें, यह प्रार्थना ईश्वर से करने के पश्चात् सभा समाप्त हुई।

—हसंवाददाता

* * *

जयपुर उदयपुर राज्य के प्रधान मन्त्री सर टी० विजय राघवाचार्य ने वनस्थली की छात्राओं के बीच बोलते हुए कहा कि यह एक विशिष्ट संस्था है जो दिवंगत शान्ताबा के प्रति अनश्वर प्रेम को प्रकट करती है। यहाँ की स्नातिकाओं को चाहिए कि वे जब जीवन के कर्म-क्षेत्र के प्रविष्ट हों, तब अपने आचरण द्वारा वनस्थली विद्यापीठ की शिक्षा को निरंतर चरितार्थ करती रहे, क्योंकि किसी भी शिक्षण-संस्था का सच्चा परिचय उसके स्नातकों की व्यावहारिकता में ही होता है। वनस्थली विद्यापीठ के कार्य से पूर्ण संतोष प्रकट करते हुए सर विजय ने कहा कि यहाँ की शिक्षा-प्रणाली की अपनी असामान्य विशेषताएँ हैं। उन्होंने कहा कि हम छात्राओं को क्या उपदेश दे सकेंगे, जब कि हम स्वतः यहाँ आज यह पाठ पढ़ा है कि प्रेम सर्वत्र सब लोगों को एक सूत्र में बाँध देता है। संस्था के संस्थापकों को बधाई देते हुए उन्होंने राजपूताना के राजनैतिक क्षेत्र में श्री हीरालाल शास्त्री के उज्ज्वल कार्यों की प्रशंसा की। वनस्थली में तीन घंटे ठहर कर सर विजय जयपुर लौट गये।

जयपुर २९-३० सितम्बर को अ० भा० मारवाड़ी कवि-सम्मेलन का द्वितीय अधिवेशन बड़े ही समारोह के साथ हुआ। राजपूताना व मध्य भारत के प्रतिष्ठित कवियों ने भी इस सम्मेलन में विशेष रूप से भाग लिया। हिन्दी कवि-सम्मेलन के सभापति पं० खेमराज जोशी व राजस्थान के सर्वप्रिय कवि भरतजी व्यास तथा श्रीमती लीलादेवी जोशी, [illegible] देवी, मदनकुमार जी चौबे [illegible] छाजेड़, बालकृष्ण [illegible] लाल जी पाण्डेय, [illegible] भुवनेश जी, दक्ष जी, अमरनारायण जी माथुर, कुमार शर्मा, कमलाकर जी कमल, दुर्गालाल जी वाड़धार आदि कवियों और कवियित्रियों ने अपनी कविता से जनता को मुग्ध किया। इस कविसम्मेलन के अन्तर्गत पत्रकार परिषद् के सभापति डा० रामजीवनजी त्रिपाठी, कवि-परिषद् के सभापति प्रो० कन्हैयालाल जी सहल एम० ए० तथा मीरां के सम्पादक दीपक जी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

कवि-सम्मेलन को सफल बनानेवाले मारवाड़ी गौरव के यशस्वी सम्पादक व कवि अद्भुत जी प्रशंसा के पात्र हैं।

—संवाददाता

* * *

सागर मौजा सेमरा के मालगुज़ार ठाकुर निजामसींग ने एक चोर बाज़ार का मुक़दमा अपने भाई-बन्धुओं के ख़िलाफ चलवाया था। पेशी के बाद जब वे अपने गाँव वापस जा रहे थे, तो रास्ते में अमझिरा के जङ्गल में कत्ल कर दिये गये। पुलिस ने इस मामले में जाँच के बाद कई धनिक व्यक्तियों को गिरफ़्तार किया है। श्री राजाराम हेडकान्सटेबुल ने बड़ी मुस्तैदी से कर्त्तव्य का पालन किया और अपराधियों का चालान किया।

३ आक्टोबर को रात्रि के १० बजे हिन्दुओं का एक जुलूस 'जयकाली, जयकाली' करता हुआ सदर से आया, जिससे कटरा में मस्जिद के करीब व सदर में मामूली झगड़े की नौबत आ गई। किन्तु पुलिस के कड़े इन्तज़ाम के कारण परिस्थिति शीघ्र काबू में आ गई। फिर भी एक-दो व्यक्तियों को मामूली चोट लगने के समाचार मिले हैं। धारा १४४ और करफ़्यू लगे हैं। यादगार शू-फेक्टरी में गोली भी चली।

सुपरिण्टेण्डेण्ट नार्मल स्कूल सूचित करते हैं, कि अब स्कूल की भरती समाप्त हो गई। इसलिए कोई विद्यार्थी दरख्वास्त न भेजे। स्कूल का कार्य १ अक्टूबर से आरम्भ हो गया।

२ अक्टूबर को यहाँ गांधी जयन्ती समारोह-पूर्वक मनाई गई। पाठशालाओं में भी मनाई गई। कांग्रेस दफ़्तर तथा अन्य कांग्रेसी जनों के घर दीपावली मनाई गई। रात्रि को चकराघाट पर श्री केशव रामचन्द्र खाँडेकर की अध्यक्षता में सभा हुई। सर्व श्री डा० वी० वी० राय, वासुदेवराव सूबेदार और सुरेशचन्द्र मुकुर्जी के भाषण के बाद श्रीमती सुदर्शनकुमारी की "धधक रहे अगार इन्हें कैसे छिपाऊँ" शीर्षक जोशीली कविता पढ़ी गई। प्रोफेसर सराफ, स्वामी कृष्णानन्द और श्री खाँडेकर जी के भाषण के बाद "महात्मा गांधी चिरायु हों" के नारों के साथ सभा समाप्त हुई।

—संवाददाता

* * *

कोठी बाघेलखण्ड स्टेट्स ग्रूप तथा उसकी समस्त रियासतों में प्रजामंडल स्थापन के उद्देश्य से गत ता० ३०-९-४६ को कोठी राज्य के प्रजामंडल की ओर से एक सभा जैतवार (G. I. P.) सोहावल राज्य में हुई जिसमें ग्रूप की रियासतों से निम्नलिखित कार्यकर्ता सम्मिलित हुए :—

पं० गोदीन शर्मा, प० मुकुन्दल[illegible] रावत, श्री कुँवर कुंजलसिंह [illegible] सिंह, श्री [illegible] लाल गुलाबसिंह, लाल लक्ष्मणप्रतापसिंह, लाल तीर्थराजसिंह बाघेल, लाल ब्रजभूषणसिंह बाघेल, मेजर कुँवर नरेन्द्रसिंह, पं० गंगाप्रसाद पाण्डेय, महेश्वर मिश्रौलिया।

प्रधान कार्यालय कोठी स्टेट रखा गया। कार्यारम्भ के लिए नीचे लिखे पदाधिकारी चुने गये :—

लाल तीर्थराजसिंह बाघेल, सभापति, बाबू राजेन्द्रबहादुरसिंह उपसभापति, लाल गुलाबसिंह उपसभापति, महेश्वर मिश्रौलिया प्रधान मंत्री, श्री रामदयाल मंत्री, पं० वृन्दावन शर्मा, कामता जागीर मंत्री, वा० रामयश गुप्ता कोषाध्यक्ष उपस्थितों में से शेष व्यक्ति कार्य-कारिणी समिति के सदस्य चुने गये। सोहावल, जसो, पालदेव, तराँव और बरौंधा राज्य से अभी और सदस्य का० का० स० में लिये जायँगे।

२ अक्टूबर को कोठी राज्य प्रजामंडल की ओर से गान्धी जयन्ती अत्यन्त समारोह के साथ मनाई गई। प्रभात फेरी के पश्चात् आज से कार्यालय प्र० मं० में राष्ट्रीय झण्डा फहराया गया। आरम्भ में महेश्वर मिश्रौलिया ने तिरंगे झण्डे का महत्त्व बताया तथा मेजर कुँवर नरेन्द्रसिंह ने अनुरोध किया कि मुंशी महम्मद ज़हूर इस कार्य को सम्पादित करें।

श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय ने उनका सम्मान किया और उन्हें फूलों का हार पहिनाया।

—संवाददाता

* * *

बलिया पो० रेवती के अन्तर्गत ग्राम गायघाट में श्री भारती भवन पुस्तकालय की ओर से गांधी-जयन्ती बड़े समारोह के साथ मनाई गई। गाँव के सभी गण्यमान्य प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे। श्रीयुत ठा० सकलदीपसिंह जी सरपंच ने सभापति का आसन ग्रहण किया था। सर्वश्री ठा० रामनारायणसिंह जी "आनन्द" साहित्यालंकार, पं० कैलाशशंकर शर्मा प्रभृति विद्वानों ने अपने भाषणों द्वारा महात्मा जी की जीवनी पर पूर्ण प्रकाश डाला और एक प्रस्ताव द्वारा महात्मा जी की दीर्घायु के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई। अन्त में सभापति ने धन्यवाद देते हुए सभा विसर्जित की।

साहित्य-सेवा सदन सोनबरसा की एक बैठक श्री वीरेन्द्रनाथ उपाध्याय 'लल्लन' की अध्यक्षता में हुई। सदन के प्रमुख कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

(१) हिन्दी और भोजपुरी साहित्य के प्रचार के लिए सदन के पाँच सदस्यों की समिति बनाई गई।

(२) सदन के अगले वर्ष के सभापतित्व के लिए दो सज्जनों का नाम लिया गया—डा० कृष्णकुमार उपाध्याय तथा पं० बलदेव उपाध्याय एम० ए०।

—संवाददाता

* * *

कालसी २ अक्टूबर को अशोक आश्रम में गांधी-जयन्ती मनाई गई। प्रभात-फेरी, ग्राम-सफाई, सामूहिक कताई और सभा का कार्यक्रम उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस दिन गांधी गुरुकुल का उद्घाटन श्री धर्मदेव जी ने किया। सभा के प्रधान पं० सोमप्रकाश थे। गांधी जी के जीवन पर श्री आशाराम जी मैठाणी, श्री बालादत्त [illegible] मेय्याल जी आदि के भाषण [illegible] उत्साहपूर्वक [illegible]

—संवाददाता

प्रयाग—शङ्करगढ़ में [illegible] अक्टूबर को कांग्रेस की एक [illegible] जिसका आयोजन गांधी-जयन्ती [illegible] उपलक्ष्य में किया गया था। [illegible] आसन श्री राजाराम ने ग्रहण [illegible] वक्ताओं में सर्वश्री सोमनाथ [illegible] महावीरप्रसाद, भुल्ली महाराज, [illegible] नारायण द्विवेदी बी० ए०, [illegible] श्रीवास्तव, छोटेलाल गुप्त और [illegible] प्रसादसिंह थे। सभा में [illegible] दीर्घायु होने की प्रार्थना की गई। [illegible] प्रथा का शीघ्र अन्त कर देने का [illegible] पास हुआ। अन्य प्रस्ताव था—[illegible] पहाड़ों में करीब १०, १२ हजार मजदूर [illegible] करते हैं। उनकी इतनी कम मजदूरी [illegible] वे अपना पेट नहीं भर पाते। [illegible] सरकार से अनुरोध करती है [illegible] शंकरगढ़ और लोहगड़ा में [illegible] एक एक राशनिङ्ग दूकान [illegible] मजदूरों की सहायता करें। —[illegible]

खांसी पर
बिजलीसम
आक्रमण
खांसी
विनोज
लाईटनिंग
कफ़ क्योर

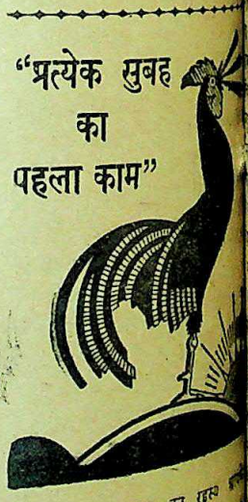
"प्रत्येक सुबह का पहला काम"

उत्तम स्वास्थ्य का रहस्य [illegible] शरीर के शुद्ध नियमन में है। [illegible] सुबह एक चमकता हुआ इनोज़ 'फ्रूट साल्ट' का एक गिलास शरीर को [illegible] करता है, रक्त-स्रोत का निर्मल [illegible] और अंगों के उत्तम संचालन में [illegible] देता है।

ईनोज़ "फ्रूट साल्ट"

इनो व "फ्रूट साल्ट" शब्द [illegible] ट्रेड मार्क है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...हि के समाचार

देशी

...मोहमन्द कबीलों ...देते हुए कांग्रेस वर्किंग ...पठान नेता खान अब्दुल ...ने दिल्ली की राजनीतिक ...संकेत किया। मोहमन्द ...खान अब्दुल गफ्फार खाँ ...का परिचय देने के ...सभा में बुलाया था। ...खाँ ने कहा—'मेरे विचार से ...विशेष उद्देश्य को ध्यान ...जिन्ना को बुलाया है। ...के सम्बन्ध में वायसराय ...अनुभव हुए हैं वे उन्हें ...प्रतीत हुए। वायसराय ...उनकी तानाशाही क्रमशः ...है। फलतः वे चाहते हैं ...सरकार दैनिक संघर्ष का ...

...राजनीतिक वार्ताओं और ...का मुसलमानों की ओर ...हुए बादशाह खाँ ने कहा ...किसलिए हो रहा है? ...मि० जिन्ना के दोस्त ...मि० जिन्ना को पाकिस्तान ...लीगी अस्थायी सरकार ...दे दी होती।

* *

...बादशाह खाँ ने 'पखतून' ...में प्रकट किया है ...ने शिमला-सम्मेलन के ...आजाद के सलाम-वालेकुम ...नहीं दिया तथा उन्होंने ...चाहा तो अपना हाथ ...। आपने लिखा है कि ...मि० अब्दुस समद खाँ तथा ...सम्मेलन से पूर्व दिल्ली में ...करने की भरपूर ...दोनों ने मेरी मदद करने का ...आशा के साथ शिमला ...था कि यदि ...दोनों को बुला लूँगा। ...ने मौलाना आजाद ...के पहले दिन ऐसा ...मुझे बहुत दुख हुआ। ...खाँ तथा मि० जिन्ना ...में हिन्दू तथा ब्रिटिश ...अभिवादन किया, परन्तु ...वालेकुम का जवाब नहीं ...नहीं मिलाया। क्या यह ...थी? क्या नबी के ...साहब के साथ ऐसा ...देते थे?

* *

...अखिल भारतीय ...के मंत्रियों का ...मा० कांग्रेस कमेटी के ...के आगामी अधिवेशन ...के लिए दो नाम आये ...अब्दुल कलाम आजाद ...जे० बी० कृपलानी। ...धारा १५ के अनुसार ...दिये गये हैं। कोई ...के भीतर उम्मीदवारी ...ले सकता है।

अध्यक्ष पद का चुनाव प्रांतों में २० अक्टूबर को होगा। यदि दोनों उम्मीदवारों में से किसी ने अपना नाम वापस ले लिया तो २० अक्टूबर को प्रतिनिधि लोग वोट नहीं डालेंगे।

* * *

नई दिल्ली से पंडित जवाहरलाल नेहरू ने यह वक्तव्य प्रकाशित किया है—

ब्लैकपुल में टोरी-पार्टी के सम्मेलन में दिये गये कुछ भाषणों से यह प्रकट होता है कि टोरी पार्टी के कुछ प्रमुख सदस्यों ने भारत की अस्थायी सरकार के प्रति बहुत उग्र रुख धारण किया है। ये भाषण गैर-जिम्मेदारी के साथ ईर्ष्यापूर्ण हुए हैं। ये इस इरादे से दिये गये हैं कि भारत में कलह पैदा हो और एकता तथा राष्ट्रीय सरकार की स्थापना न होने पाये। मुझ पर यह आरोप किया गया है कि भारत से ब्रिटिश सेनाओं के वापस बुला लिये जाने के सम्बन्ध में मैं चुप हूँ और मैं साम्प्रदायिक उपद्रवों को दबाने में ब्रिटिश सेनाओं का उपयोग करना चाहता हूँ। टोरियों का यह आरोप बिलकुल गलत है। हम घरेलू दंगों को दबाने के लिए ब्रिटिश फौजों से काम लेना नहीं चाहते। पद-ग्रहण करने के पहले भी हमारी यही नीति थी। हमारी यही नीति अब भी है कि भारत से ब्रिटिश फौजें या तो फौरन हटा ली जायँ या जल्द से जल्द। ब्रिटिश सेनाओं को यहाँ पर रखना हमारे साथ और उन सेनाओं के साथ भी अन्याय है। जहाँ हमने ब्रिटेन के साथ सहयोग करने के लिए अपनी स्वीकृति दी है, वहाँ मैं अपनी तरफ से और भारत-सरकार के अपने अन्य सहयोगियों की तरफ से इस बात को भी स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि जो लोग हमारे प्रति अमैत्रीपूर्ण रुख रक्खेंगे और भारत की आजादी के साथ खिलवाड़ करेंगे, उनके साथ हमारा सहयोग न होगा।

* * *

लखनऊ, जिन दो गाँवों में साम्प्रदायिक दंगा हुआ था उन पर सामूहिक जुर्माना लगाने का प्रश्न यू० पी० सरकार के विचाराधीन है। यह सामूहिक जुर्माना उस क्षेत्र की गैर मुसलिम जातियों पर लगाया जायगा। इनमें से एक गाँव मेरठ ज़िले का चतौली है।

* * *

रीवा, रीवा-विधान-कमेटी के चेयरमैन सर हरीसिंह गौर ३० सितम्बर को रीवा पहुँच गये। वे शीघ्र ही अपना कार्य प्रारम्भ करेंगे। सर हरीसिंह गौर ने पं० शम्भूनाथ शुक्ल तथा कप्तान अवधेशप्रतापसिंह को विधान कमेटी में सम्मिलित होने के लिए निमंत्रित किया है।

* * *

बिलासपुर के फर्स्ट क्लास मैजिस्ट्रेट श्री घाटपांडे ने स्त्रियाँ भगानेवाले अन्तर्प्रान्तीय गुट के मामले में फैसला सुना दिया। यह मुकदमा लगभग तीन साल से चल रहा था। ... डिवीजन से स्त्रियों को वेश्यावृत्ति ... जबर्दस्ती कलकत्ता भर ... षड्यंत्र में १२ अभि... स्त्रियाँ थीं। अभियुक्त... के बीच रायपुर, बि... से अनेक स्त्रियों को शादी कराने या अच्छा काम दिलाने के बहाने कलकत्ता ले गये। वहाँ उन्हें चकलों में रखा गया और उनसे जबर्दस्ती वेश्यावृत्ति कराई। १९४३ में बिलासपुर से भगाई गई चार स्त्रियाँ किसी प्रकार अभियुक्तों के चंगुल से निकल कर बिलासपुर आ गईं। उन्होंने अपना हाल पुलिस को सुनाया जिससे अभियुक्तों की गिरफ्तारी हुई। सभी अभियुक्तों को १ साल से लेकर ६ साल तक की सजा हुई है।

* * *

लखनऊ युक्त प्रान्तीय सरकार ने एक आदेश जारी करके तलवार, गुप्ती, भाला, बल्लम, काँटा, करौली, कटार, फरसा, संगीन, औद्योगिक तथा घरेलू काम में आनेवाली छूरियों को छोड़कर अन्य प्रकार की ४ इंच से लम्बी और नुकीली छुरियाँ और गँड़ासों के उत्पादन, बिक्री तथा अपने पास रखने पर रोक लगा दी है।

* * *

लाहौर ज्ञात हुआ है कि सर ख़िज्र हयात को लीग में शामिल करने के लिए पंजाब के नेताओं का प्रयत्न विफल हुआ।

* * *

दिल्ली में वायसराय-जिन्ना-मिलन से इतनी आशा हो गई है कि लीग के नेता बहुत कुछ सुधरे हुए जान पड़ते हैं। कांग्रेस और लीग की कड़ी जोड़ने में नवाब भूपाल का बहुत बड़ा हाथ है। नवाब भूपाल ने पंडित जवाहरलाल नेहरू और मिस्टर जिन्ना को बड़ौदा हाउस में निमंत्रित करके समझौते के बिलकुल नजदीक कर दिया है। बहुत सम्भव है, देश को कांग्रेस-लीग समझौते के सुखद समाचार एक-दो दिन में सुनाई पड़ें।

* * *

लखनऊ का समाचार है कि सिंचाई-विभाग के हड़तालियों ने उन्नाव से लगभग ८ मील पर शारदा नहर की हरदोई शाखा का बाँध और दूसरा काकोरी के निकट शारदा नहर की लखनऊ शाखा का बाँध तोड़ डाला है जिससे लगभग ७॥ लाख मन धान का नुकसान हुआ है।

इससे धान पैदा करनेवाली लगभग ५४,००० एकड़ भूमि तथा लगभग ५ लाख रुपये का नुकसान हुआ है। पहली सितम्बर से लगभग ५ हजार कर्मचारी हड़ताल पर थे। अनुमान किया जाता है कि बाँधों के बँधवाने में सरकार का तीस हजार रुपया का खर्च होगा। सरकारी वक्ता के अनुसार सरकार को इस हड़ताल से लगभग ५ करोड़ का नुकसान हुआ है।

* * *

इलाहाबाद विजयादशमी के अवसर पर पुनः साम्प्रदायिक दङ्गा हो गया है। छुरेबाजी बन्द नहीं हुई है। स्थिति को काबू में लाने के लिए २४ घंटे का करफ़्यू आर्डर लगा है। केवल शाम-सुबह शहर खुला रहता है। पुलिस का काफी कड़ा प्रबन्ध है। शान्ति रक्षा-समितिवालों से भी बहुत कुछ सहायता मिल रही है परन्तु खतरनाक क्षेत्रों में शान्ति कमेटी के सदस्य जाने से हिचकते हैं।

* * *

कलकत्ते के २० समाचारपत्रों ने ... समाचारों के प्रकाशन के सम्बन्ध ... की निषेधाज्ञा के विरोध ...

विदेशी

लंदन ६ अक्टूबर। श्री ए० बी० एलेक्जेण्डर ब्रिटेन के नये रक्षा-मन्त्री नियुक्त हुए हैं। वे सम्भवतः भारत के वायसराय बनकर अपना राजनीतिक जीवन समाप्त करें।

* * *

लन्दन के स्वराज्य-भवन में गांधी-जयन्ती पर हुई सभा में भाषण देते हुए श्री आर० एस० रुइकर ने कहा—महात्मा गांधी का अनुगमन हिन्दू और मुसलमान, अछूत और ब्राह्मण सभी करते हैं। जब हिन्दुस्तान स्वतन्त्र हो जायगा तब हम पूँजीवाद से लड़ेंगे और देखेंगे कि हम पर किसी वर्ग का प्रभुत्व तो नहीं है। हम अँगरेजी राज्य को हटा कर जमींदारों और राजाओं की हुकूमत जमाना नहीं चाहते। हमारे सन् १९४२ के आन्दोलन को पंचम दस्ते की कारगुजारी बताया जाता है। यदि ऐसी बात है तब तो पंचम दस्ते में श्री चर्चिल और जोसेफ स्टालिन का नाम भी होना चाहिए।

जब भावी इतिहासकार बीसवीं शताब्दी का इतिहास लिखेंगे तो इस युग के महापुरुष एक महात्मा गांधी ही माने जायँगे। हिन्दुओं और मुसलमानों में फूट डालना और पाकिस्तान तथा पृथक्करण की माँग करना निन्दनीय है।

स्वतन्त्र मजदूर दल के भूतपूर्व राजनैतिक मंत्री और हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता के समर्थक श्री फ्रेनर ब्राकवे ने कहा—हिन्दुस्तान को राजनैतिक स्वतन्त्रता ऐसे समय मिली है जब वह संसार को संकट से बचाने के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भाग ले सकता है। यदि हिन्दुस्तान को यह कार्य करना है तो उसे न तो पश्चिमी शक्तियों का मित्र बनना चाहिए और न रूस का। आज की संसार की सब से बड़ी खबर यह है कि संयुक्त देशीय संघ में अगले अधिवेशन में हिन्दुस्तान का प्रतिनिधित्व हिन्दुस्तान के लोगों के चुने हुए प्रतिनिधि करेंगे। प्रत्येक आदमी आशा करता है कि महात्मा गांधी हिन्दुस्तान के ही नहीं, बल्कि संसार के आम लोगों की ओर से बोलने के लिए वहाँ हों।

खाँसिये मत
अगर खाँसी आये तो
ग्रिमौल्ट्स
को

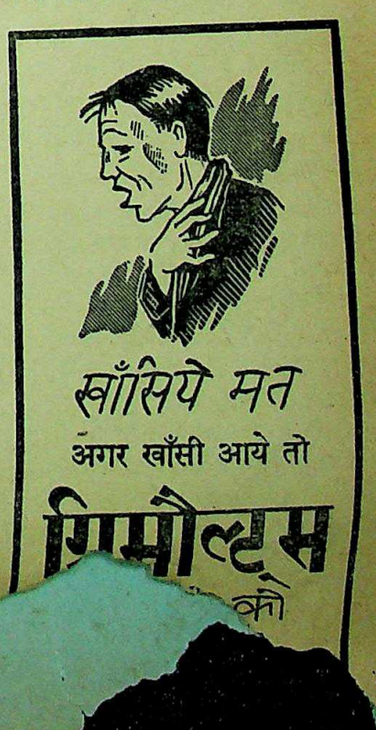

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरंजक चुटकुले

कहावत प्रचलित है कि भूत की चोटी पकड़ लो तो वह आदमी हो जायगा। सुभाषचन्द्र बोस को ब्रिटिशों ने मार कर भूत बना दिया था। हिन्दुस्तानियों ने उनकी चोटी 'आजाद हिन्द फौज' को पकड़कर अपनी ओर घसीट लिया। अब तो वे भूत से आदमी होकर मिलने ही वाले हैं। ब्रिटिश राजनीतिज्ञ उस दानवी मनुष्य से बहुत ही डर रहे हैं।

* * *

सारे देशी और विदेशी संस्थाओं और सरकारों ने राष्ट्रीय सरकार के लिए बधाइयाँ भेजी हैं। अग्रगामी दल के पास भेजने को कुछ नहीं था उसने कुछ गालियाँ ही भेजी हैं। जिसके पास जो रहता है वही देता है और कहाँ से पावे ?

* * *

राष्ट्रीय सरकार के बनते ही विदेशों में दूत भेजने की होड़ लग गई है। कांग्रेस सरकार तो पीछे रह गई। लीग के दूत डेपूटेशन के रूप में रूस जायेंगे। कहावत है भी पाँच सवारों में गधेवाले सवार ने पहिले ही कहा था 'ये पाँचों सवार दिल्ली जा रहे हैं।'

* * *

एशियाई राष्ट्रों का सम्मेलन होने जा रहा है। चीन, रूस और अन्य गुलाम राष्ट्रों को निमंत्रित किया गया है। पर दुख इस बात का है कि जो गुलाम राष्ट्रों के मालिक हैं उनसे राय भी नहीं ली गई है वे क्या सोचते होंगे।

* * *

सेठ जी एक वेश्या से बोले, "तुम्हारी क्या उम्र है ?"

वेश्या ने जवाब दिया, "हुजूर ! बीस बरस।"

सेठ जी ने कहा, "यह तो मैं पन्द्रह साल से सुन रहा हूँ।"

* * *

किसी मजदूर ने अपने दूसरे मजदूर साथी से कहा—'हम लोगों के हित रक्षार्थ अब कई संस्थायें खुल रही हैं। अब हम लोग शीघ्र ही दुख-मुक्त होंगे ?'

साथी ने कहा—'हाथी के दाँत दिखाने के और और खाने के और होते हैं। ये संस्थायें हम लोगों की नींव पर अपनी नेतागीरी कायम रखना चाहती हैं।'

'ललित' शाहजहाँपुरी

(पेज ४ का शेष)

ऐसे व्यापार का अर्थ ही स्पष्ट करता है कि युद्ध जारी रखना। रूसी प्रतिनिधियों ने ऐसे कई प्रस्ताव शान्ति-सम्मेलन में पेश किये हैं। पर वह स्वयं अब उनकी अवहेलना करता है तो फिर दूसरे क्यों सुनेंगे ? कश्मीर के पास हाल ही में एक ऐसा उड़ता हुआ बम देखा गया था जिसके निकल जाने पर धुआँ ही धुआँ रह गया था। इसके अतिरिक्त जापान के कारखानों में जो सामान तैयार हो रहा है उसका उपयोग अमेरिका करता है। इन सबके होते हुए अन्य समाचारों से पता [illegible] रीका अपनी चीन [illegible] से हटाना [illegible] सकता [illegible]

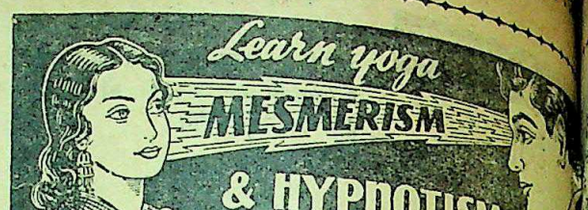

स्त्री-पुरुषों के लिए अपने घर पर उपर्युक्त क्रिया दिमाग को शान्ति और में वास्तविक प्रसन्नता के लिए आनन्ददायिनी प्राणशक्ति है। प्रथम बीस को परीक्षा के लिए मुफ़्त ! कृपा कर शीघ्र लिखें।

मैनेजर—योग-भवन
नं० १९ ऋषीकेश, यू०

GOVERNMENT OF INDIA

DISPOSALS

(SECTION MMH OF 2nd CATALOGUE)

Following is a comprehensive list of stores that will be sold by MMH Directorate as and when they become available. Some of them are now available and listed in the above Catalogue.

Ferrous Metals, including unfabricated steel: Bars, Billets, Blooms, Ingots, Slabs, Spring Steel; Structural; Hoop Iron; Steel plates; Steel sheets; Cast Iron, Clear and Irony; Pig Iron; Wires and wire products including galvanised; Chains; Wire nails; Coated plates; Galvanised, Terne and Tin; Alloy steel; Carbon steel; Mild steel; etc.

Non-Ferrous Metals: Aluminium; Brass; Bronze; Magnesium Alloy, crude, semi-finished and finished; etc.

Timber: Timber Baulks; Sawn Timber (Planks and Scantlings); Railway Bridging Timber and Sleepers; Bamboos and Ballies; Plywood and other items; etc.

Building Materials, Cement, Asbestos, Masonite, etc: Masonry; Cement products; Asbestos products; Door and Window fittings; Masonite; Bakelite; etc.

Sanitary fittings including water-supply fittings and pipes, etc.

Furniture: Steel, Wooden, and mixed furniture items; etc.

Antigas Stores, ARP and Fire-fighting equipment: Antigas Respirators and components; Fire-fighting equipment including Extinguishers and Refills; Manual and Mechanical Pumps; Hoses and accessories including Couplings, Nozzles; etc.

Pol Drums and Cans: Barrels, 20 gallons and above; Drums and kegs below 20 gallons; Kero type tins and canisters; etc.

Other Containers: Cisterns and storage tanks; Packing cases; Bottles; Jars; Carboys; etc.

Full details giving description and condition of stores, quantity, location, etc. and the method of tendering are contained in Section MMH of the Second Catalogue which is available at Rs. 3 from the addresses given below:

A. Regional Commissioner (Disposals) at
BOMBAY - Mercantile Chambers, Graham Road, Ballard Estate.
CALCUTTA - 6, Esplanade East.
LAHORE - G.P.O. Square, The Mall.
CAWNPORE - 15/159, Civil Lines.

B. Dy. Regional Commissioner (Disposals) at
KARACHI - Variawa Building, McLeod Road.
MADRAS - United India Life Building, Esplanade.

C. All important Chambers of Commerce and Trade Associations.

Mail orders for the catalogue must be accompanied by Money Order or Indian Postal Order.

NOTE: Watch for further announcement regarding Section MMH of Third Catalogue which will contain a further list of stores available for disposal.

DGD

ISSUED BY THE DIRECTORATE GENERAL OF DISPOSALS, DEPARTMENT OF INDUSTRIES & SUPPLIES, NEW DELHI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी करुण कहानी

पूर्व जन्म के महापापों का संग और दुर्भाग्य का मेरी दशा पर मुस्कराना।

पूर्व जन्म के महापापों का संग और दुर्भाग्य का मेरी दशा पर मुस्कराना। बचपन के अविवेक-पूर्ण कार्यों की देन थी या मेरी निर्बलता ने, जो कि मेरे बचपन के अविवेक-पूर्ण कार्यों की देन थी, मुझे बुरा निर्बलता ने, जो कि मेरे बचपन के अविवेक-पूर्ण कार्यों की देन थी, मुझे बुरा निराश कर दिया था। हम स्त्री-पुरुष दोनों ही चिन्तित तथा जीवन से निराश कर दिया था। हम स्त्री-पुरुष दोनों ही चिन्तित तथा जीवन से निराश थे। दोनों का जीवन कलह तथा संघर्ष का केन्द्र था। जीवन अशान्त था। दोनों ने मैं हिमालय पर्वत की दुर्गम घाटियों में घूमता हुआ शिमला से आगे उन चट्टानों पर पहुँचा जहाँ मई और जून के महीनों में भी बर्फ़ जमी हुई थी। एक दिन मैं जीवन से पूर्ण निराश हो चुका था तथा जीवन-दीपक का तेल समाप्त हो रहा था। इसको प्रज्वलित करने के साधनों का पूर्ण अभाव हो चुका था। मैंने सोचा कि ऐसे दुखद जीवन से छुटकारा क्यों न कर लिया जाये। मैं पहाड़ी पर खड़ा हुआ था कि अचानक एक साधु ने, जिसकी आयु लगभग ८० वर्ष थी, पीछे से मेरा हाथ पकड़कर बोला, 'बेटा, इस सुनसान स्थान में निराश होने का कारण है।' मैंने उस महात्मा को अपनी दुख-भरी कहानी सुनाई। उसने मुझे ढाँढ़स बँधाया और कहा कि "यदि आप सच्चे हृदय से दृढ़ प्रतिज्ञा करें कि आप भविष्य में दूसरे और अपने सरीखे दुखी आदमियों का उपकार करेंगे तो आपका कष्ट दूर हो सकता है।" मैंने सच्चे हृदय से उसकी आज्ञा पालन करने का निश्चय किया। साधु ने एक दवाखाने के लिए और एक परचा मालिश करने का लिख दिया। उसने मुझे

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाल शेयर डीलर्स सिण्डीकेट लिमिटेड

प्रधान कार्यालय—'शेयर्स डीलर्स हाउस' कलकत्ता

ब्रांच और एजेन्सियाँ—सारे भारतवर्ष, सीलोन और पूर्व अफ्रीका में

पूँजी

अधिकृत..... २५,००,०००) रुपये
बिकी हुई.....१८,००,०००) रुपये
अदा हुई..... .....१०,२६,३५६) रुपये

बंगाल शेयर डीलर्स सिण्डीकेट—भारतवर्ष के स्टाक और शेयर्स (हिस्सों) के व्यापार में प्राचीन और सबसे बड़ा ज्वाइंट स्टाक है जिसने व्यापार में धन लगानेवाली जनता के लाभ के लिए बड़ी ईमानदारी से सेवा की है और आज भी देश में शेयर्स (हिस्सों) के व्यापार की उन्नति के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य करती है।

डिविडेण्ट (मुनाफा)

इस सिण्डीकेट के शेयर होल्डरों (हिस्सा लेनेवालों) को लगी हुई पूँजी का २७% मुनाफे के रूप में प्राप्त हो चुका है। चालू साल में इससे अच्छे मुनाफे की आशा है।

आमदनी

सिण्डीकेट को निम्नांकित मदों से आमदनी होती है—

(१) ग्राहकों के हिसाब से व्यापार करने पर दलाली से।
(२) ग्राहकों के शेयर (हिस्से) के ऊपर कर्ज देने की पेशगियों के ब्याज से।
(३) वार्षिक किराया से जो ३० हज़ार रुपयों के मकानों से प्राप्त होता है। इसमें अपनी निजी पाँच तल्ले की इमारत 'शेयर डीलर्स हाउस' है जो कलकत्ते के चौरंगी स्क्वायर में है।
(४) मैनेजिङ्ग एजेन्सी के पारिश्रमिक और कमीशन से, जो ४० हज़ार रुपये के नेशनल न्युट्रीमेंट लिमिटेड (विटामिन के व्यवसाय) से प्राप्त होता है। सिण्डीकेट को कोयले की अपनी दो कम्पनियों से जो इसी वर्ष खरीदी गई हैं, प्रतिवर्ष अच्छी रकम पैदा होने की बड़ी आशा है। उन कम्पनियों में से एक इंडियन कोलियारीज लिमिटेड है जो बहुत पहले ही खरीदी गई थी और झरिया की अच्छी कोयले की खानों में से है। उस खान से प्रतिवर्ष ७ हज़ार टन कोयला निकाला जाता है।

हमारा कार्य

(१) हम हर प्रकार के शेयरों (हिस्सों) में व्यापार करते हैं—
(२) हम व्यापार में धन लगाकर कमाने के लिए मुनाफे-सम्बन्धिनी राय देते हैं।
(३) हम, निश्चित जमा (रकम) स्वीकार करते हैं।

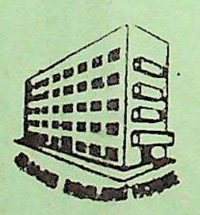

निश्चित जमा पर ब्याज

१ वर्ष के लिए	१%
२ वर्ष के लिए	२%
३ [illegible] वर्ष	[illegible]%
५ [illegible] ६ वर्ष	[illegible]%
७ वर्ष ...	[illegible]%
८ वर्ष ...	[illegible]%
९ वर्ष	[illegible]%
१० वर्ष ...	[illegible]%

मुनाफा अतिरिक्त धन जमा की पद्धति पर कमाया जाता है

अस्थायी राष्ट्रीय सरकार बन गई है और भारतवर्ष की स्वतन्त्रता द्वार पर है। स्वतन्त्र भारत में सारे व्यापार की उन्नति और उद्योग-धन्धों का प्रसार निश्चित है। इस परिवर्तन काल में शेयर बिजनेस (हिस्से के व्यापार) के प्रसार होने की भी बड़ी आशा है। जब हमारे अतिरिक्त धन जमा की पद्धति ठीक रहेगी तो हमारे इस मुनाफे के व्यापार के लिए अधिक धन की आवश्यकता न रहेगी। पद्धति [illegible] पार्टी खरीदे हिस्से के लाभ [illegible] ही देती बल्कि मुनाफे का एक भाग देती है। इसका [illegible] [illegible] प्रार्थना पर हम नमूने की कापी भेज सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्य ७॥)
३)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

आक्टोबर, १९४६ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 20th October, 1946

...जवाहरलाल नेहरू
...के सर्वस्व मि० जिन्ना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Estd. 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S १०) H.M.B.S १५) H.M.D.S. २५)। पुस्तक—अ० पारिवारिक १) बायोकेमिक १) १००० रेडलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्सनरियाँ १॥) आर्गेनन १), फार्माकोपिया १॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायँगी। डा० ख० माफ—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≋) ड्राम। आउन्स ॥) घरेलू बक्स ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S (U.S.A.)

Learn yoga
MESMERISM
& HYPNOTISM

स्त्री-पुरुषों के लिए अपने घर पर उपर्युक्त क्रिया दिमाग़ को शान्ति और ... में वास्तविक प्रसन्नता के लिए आनन्ददायिनी प्राणशक्ति है। प्रथम तीन ... को परीक्षा के लिए मुफ़्त! कृपा कर शीघ्र लिखें।

मैनेजर—योग-भवन
नं० १९ ऋषीकेश, यू०

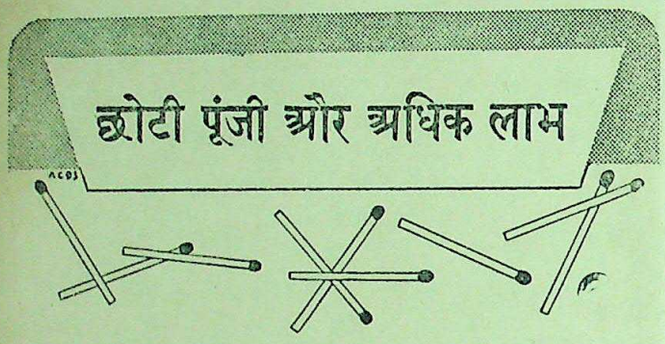
छोटी पूंजी और अधिक लाभ

प्रश्न : दियासलाई की ९ तीलियों से ५ त्रिकोण बनाइए।

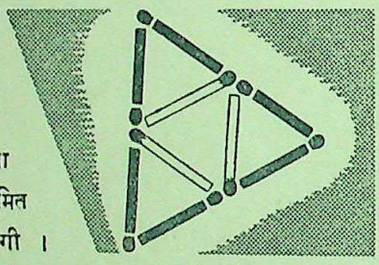

उत्तर :
तीलियों को ऐसे रखिये जैसे आकृति में दिखाया गया है। ५ वीं त्रिकोण धूमित तीली की सहायता से बनेगी।

यदि विचार पूर्वक व्यय न किया जाये तो आजकल की परिस्थिति में जब प्रत्येक वस्तु के दाम बढ़े हुए हैं थोड़ी आय में भोजन, कपड़ा और पढ़ाई सम्बन्धी निर्वाह भली प्रकार करना कठिन है। क्यों न गृहस्थी की आय-व्यय का ऐसे ढंग से अनुमान लगाया जावे कि आकस्मिक संकट के समय भी कठिनाई का सामना न करना पड़े? यदि आप आग्रह युक्त और यथा क्रम बचत करने में प्रयत्न शील होंगे तो कुछ न कुछ पूंजी एकत्रित रहेगी। ऐसी बचत को सुरक्षित रखने के लिये नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स की मद ही सर्वोत्तम है।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

(१) आप ५, १०, ५०, १००, ५००, १०००, या ५०००, रु० के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) कुटुम्ब का प्रत्येक व्यक्ति (वयस्क या अल्पवयस्क) ५००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकता है। दो व्यक्ति मिलकर १०,००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है। सरकार द्वारा प्रचलित रुपया लगाने की मदों पर जो ब्याज दिया जाता है यह सब से अधिक दर है।

(४) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(५) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष पश्चात भी भुनाया जा सकता है)

(६) जिनकी बचत थोड़ी है वह १), ॥), ।) वाले सेविंग्ज स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं, ५ रु० के स्टाम्प्स जमा होने पर एक नेशनल सेविंग्ज सर्टिफ़िकेट मिल जायेगा।

(७) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकृत एजंटों अथवा सेविंग्ज ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

अपने सेविं... सम्मिलित हो ...

"माफ कीजिये"

बच्चों के लिये भी!
"आन्तरिक सफाई अच्छे स्वास्थ्यकी पहली सीढ़ी"

आदर्श रेचक

'स्वास्थ्यके लिये अन्दरूनी सफाई सर्वप्रथम ... करणीय है—' अन्दरूनी सफाईके लिए ... का नियमित अथवा आवश्यकतानुसार ... काफी है। और बच्चे इस स्वास्थ्यवर्द्धक ... पसन्द करते हैं। इसकी प्रत्येक खुराक ... काम करती है। एण्डरूज बच्चों और बूढ़ों ... समान रूपसे रेचक है। यह औषधि सेवन ... नहीं डालती है। देखिये एण्डरूज स्वास्थ्य ... प्रकार अच्छा बनाता है :—

प्रथम...एण्डरूज मुंह और जीभको साफ ... तरोताजा बनाता है।

द्वितीय ..एण्डरूज पेटको व्यवस्थित करके ... को साफ करता है।

तब ..एण्डरूज यकृतको ठीक रखता और ... धिक्यको रोकता है।

अन्ततः—एण्डरूज अन्दरूनी सफाई कर ... दूर भगाता और रक्तको परिष्कृत और ... रखता है।

ANDREWS
एण्डरूज लिवर साल्ट
तरोताजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तान

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, २० अक्टोबर, १९४६

१०, संख्या ८]

सप्ताह के समाचार

पण्डित जवाहरलाल नेहरू

सरकार में परिवर्तन का प्रवेश

में कांग्रेस और लीगी नेताओं
एक रखवारा से नवाब भूपाल
ल रही थी, भंग हो गई।
परिणाम निराशायुक्त रहा।
में समझौता न हो सका।
है कि कांग्रेस ने मुस्लिम
प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया
लीग को भारतवर्ष में मुसल-
एकमात्र संस्था माना जाय।
स्वीकार कर लिया कि देश
में मुस्लिम लीग एक बड़ी
उन्हीं अधिकारों पर
में सम्मिलित होगी,
वायसराय ने २४ अगस्त को
लीग को निमन्त्रित किया था।
समझा जाता है कि मुस्लिम
कमेटी अस्थायी सरकार में
के पक्ष में है। क्योंकि लीग
मिस्टर लियाकत अली
के सामने कहा है—
निर्णय पर पहुँच चुकी है
के पास लिखकर भेज

की नियुक्ति और विभागों के
में वायसराय से परामर्श
जायगा। यह निश्चित हो
जिन्ना अस्थायी सरकार
न होंगे। मिस्टर लियाकत-
चुन्दीगर, मिस्टर अब्दुर्रब
नश्तरअली खाँ और मि०

मिस्टर जिन्ना

जे० सी० मंडल जैसे व्यक्तियों की टोली अस्थायी सरकार में लीग का प्रतिनिधित्व करेगी। इन लोगों को स्थान देने के लिए सर्वश्री शरच्चन्द्र बोस, सर शफातअहमद खाँ और सैयद अलीजहीर अस्थायी सरकार से इस्तीफा देंगे।

मिस्टर जिन्ना ने लीग वर्किंग-कमेटी के निर्णय को लेकर वायसराय से मुलाकात की। यह समझा जाता है कि मिस्टर जिन्ना ने वायसराय से यह कहा है कि अन्तर्कालीन सरकार की अध्यक्षता कोई मेम्बर न करे और उसके मेम्बरों का अधिकार इक्जीक्यूटिव कौंसिलरों की तरह हो, मिनिस्टरों की तरह नहीं। इसके अतिरिक्त यह कि सदस्यों की कोई सामूहिक जिम्मेदारी न होगी।

* * *

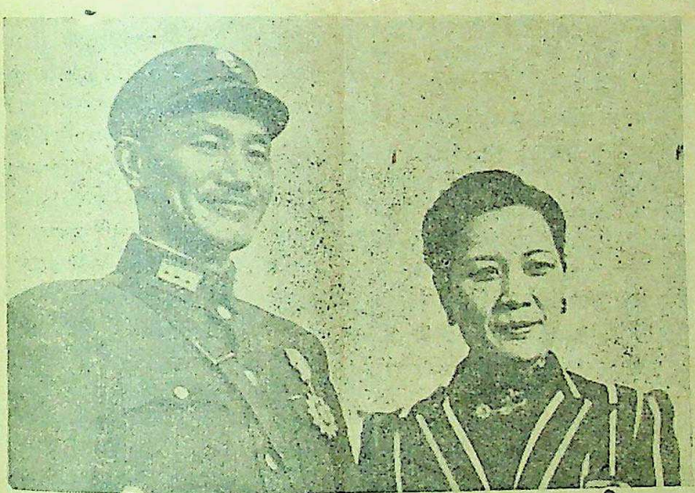

चीनी प्रजातंत्र के अध्यक्ष जनरलिसमो च्यांगकाई शेक और मैडम च्यांगकाई शेक

बङ्गाल में लीगी कार्रवाई

अभी तक यह पता नहीं कि मुस्लिम लीग ने प्रत्यक्ष कार्रवाई के लिए अपना अन्तिम निर्णय क्या किया। यदि वे अपना पुराना रुख जारी रखना चाहते हैं तो क्या निरपराध व्यक्तियों की हत्या से भारतवर्ष के शहरों में अशान्ति बनाये रखना चाहते हैं? बङ्गाल में सुहरावर्दी क्या करेंगे? कलकत्ता शहर में आज तक अविश्वास की भावना बनी है, भयावनी वक्तृताओं से सारे व्यापार बिलकुल बन्द हैं। बङ्गाल में मुस्लिम लीग निन्दनीय कार्यों का विरोध करने में या तो अयोग्य है या उसकी इच्छा है कि हत्याएँ जारी रहें। आश्चर्य है कि वायसराय बङ्गाल के इस मामले में कोई आवश्यक कदम क्यों नहीं उठाते। अभी ढाका से जो समाचार प्राप्त हुए हैं जिनसे प्रकट होता है कि [illegible] साम्प्रदायिक दंगे में कितनी ही [illegible] पूर्वी बङ्गाल की दर्दभरी [illegible] मिलती हैं। [illegible] दहाड़े हो रही [illegible] करना बड़ा कठि[illegible]

और गार्ड रात में ड्यूटी देने को तैयार नहीं होते जब तक कि उन्हें किसी रक्षा का साधन नहीं मिलता। ऐसी गम्भीर स्थिति सर्वदा नहीं रह सकती।

* * *

चीनी प्रजातन्त्र के अध्यक्ष

जेनरलिसमो च्यांगकाई शेक चीनी प्रजातन्त्र के फिर से अध्यक्ष चुने गये हैं। पं० जवाहरलाल नेहरू ने चीनी प्रजातंत्र की वर्षगाँठ पर अपनी शुभ कामना भेजी है।

* * *

स्टालिन दरेंदानियाल के इच्छुक

रूसी चाहते हैं कि दरेंदानियाल के मिश्रित शासन में तुर्की उसको भी सम्मिलित रक्खे। परन्तु तुर्की यह नहीं चाहता। संयुक्तराज्य अमेरिका और ब्रिटेन ने तुर्की को रूस से सन्धिवार्ता करने को रोक दिया है। पश्चिमी यूरोप की शक्तियाँ रूस के भूमध्यसागर में प्रवेश को पसन्द नहीं करतीं क्योंकि अफ्रीका और पूर्वी एशिया ब्रिटिश-व्यापार के क्षेत्र हैं।

* * *

पुलिस का अत्याचार

श्री रफीअहमद क़िदवई, जो कि पुलिस-विभाग के मन्त्री हैं, गोरखपुर के किसानों से कहा है कि पुलिस की सारी शिकायतों को जिला-अधिकारियों तक पहुँचाया करें।

* * *

इटली की संधि

पेरिस शान्ति-सम्मेलन में एक लम्बे वाद विवाद के बाद अब इटालियन-संधि का मसविदा तैयार हो गया है। इटली फ्रांस-सीमा और इटली-यूगोस्लाव-सीमा [illegible] महीनों के वाद-विवाद के पश्चात [illegible] है। संधि की

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने एक वक्तव्य में कहा है कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के जीवित होने के सम्बन्ध में जो समाचार सुनाई पड़ रहे हैं, वे निराधार हैं। इसमें विश्वास नहीं किया जा सकता। कर्नल हबीबुर्रहमान ने उन्हें सूचित किया है कि उनके सामने नेताजी का अंतिम संस्कार हुआ है। सारी अफ़वाहें गैर जिम्मेदारी की हैं।

* * *

मजदूरों की कम से कम १२५) मासिक की माँग

पी० डब्ल्यू० डी० वर्कर्स यूनियन के मेम्बरों की संख्या २०,००० बतलाई जाती है। उसने एक माँग पेश की है कि मजदूरों की कम से कम तनख्वाह १२५) प्रतिमास हो।

* * *

रक्षामन्त्री का भाषण

भारत-रक्षा-मन्त्री सरदार बलदेवसिंह ने अपने ताजे ब्राडकास्ट में कहा है कि साम्प्रदायिक कारणों से सेना की एकता कभी भङ्ग न होगी। भारत स्वतन्त्रता के द्वार पर है और मानसिक, आत्मिक एकता के रंग में रँगा हुआ है। सेना भारत की पूर्ण आजादी के लिए अपना पूर्ण सहयोग देगी। सरदार ने ब्रिटिश अफसरों को भी विश्वास दिलाया है कि सेना के भारतीयकरण में उनके सहयोग और सहायता का अर्थ यह न होगा कि परिवर्तन के पश्चात् उनके स्वार्थों को धक्का लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

अन्तर्कालीन सरकार का ढाँचा

'मुस्लिम लीग अपने अधिकारों के साथ अन्तर्कालीन सरकार में शामिल होगी' लीग के इस निर्णय और तत्पश्चात् जिन्ना-वायसराय-वार्ता से नई दिल्ली के राजनैतिक क्षेत्रों में पूर्ण आशा हो गई है कि बहुत दिनों का विवाद शान्त हो जायगा। सरकार का निर्माण चाहे जिस प्रकार का हो, मुस्लिम लीग और कांग्रेस के राजनैतिक नेताओं में यह विचार न होना चाहिए कि अन्तर्कालीन सरकार के मेम्बरों में अपने-अपने दल का स्वर गुंजार करे। यदि यही भावना बनी रही तो कोई भी ठोस कार्य नहीं होगा बल्कि केवल कागजी नाव दौड़ाना मात्र होगा। यह बड़े खेद की बात है कि मुस्लिम लीग ने कांग्रेस विचार-धारा को पसन्द नहीं किया। कांग्रेस समय समय पर मिस्टर जिन्ना से मिलकर मुस्लिम-अधिकारों की रक्षा के लिए काफी आश्वासन देती रही है। अब यह भी देखना है कि क्या मिस्टर जिन्ना हिन्दू मेम्बरों में वर्तमान विभाजित विभागों को स्वीकार करेंगे? मुस्लिम लीग के सदस्यों का नाम तो घोषित हो ही गया है, अब सारी बातें एक-दो दिन में स्पष्ट हो जायँगी।

हमें आशा है कि अन्तर्कालीन सरकार में कोई ऐसा कार्य न किया जायगा जिसमें यह सरकार एक मजाक बन जाय और वर्तमान मेम्बरों ने अब तक जो कार्य किया है, उस पर पानी फिर जाय।

जहाँ तक हमारा विचार है, सदस्यों द्वारा तय किये हुए आवश्यक विषयों पर कोई मतभेद न होना चाहिए जैसा कि वे अब तक साम्प्रदायिक प्रश्नों से मुक्त रहे हैं। लीग के उच्च अधिकारियों ने अन्तर्कालीन सरकार में कांग्रेस की ६, और लीग की ५ जगहें स्वीकार की हैं। कांग्रेस ने पूर्णतः स्पष्ट कर दिया है कि वस्तुतः विभागों के पुनः बँटवारे में कोई एतराज न होगा। उन्नतिशील रचनात्मक कार्यक्रम में, जिसको कि इस समय प्रत्येक हिन्दुस्तानी पसन्द करता है, रुकावट न होनी चाहिए।

जहाँ तक भारतवर्ष की भलाई का सम्बन्ध है, दोनों दलों का सार्वभौमिक कर्तव्य है कि वे इसकी जिम्मेदारी लें। हम आशा करते हैं कि नई वैधानिक सरकार, जो शीघ्र ही बनने जा रही है, देश की उन्नति के मूल सिद्धान्तों में अड़ंगा न बनेगी। गहन साम्प्रदायिक समस्याओं पर विशेष रूप से विचार किया जा सकता है। जो बड़े बड़े विषय भारतीयों से सम्बन्ध रखते हैं उनमें सरकारी सदस्यों को पूर्ण सहयोग से कार्य करना चाहिए।

* * *

मजदूरी की समस्या

भारत-सरकार के श्रम-मंत्री श्री जगजीवनराम ने नई दिल्ली के अपने खुले वक्तव्य में कहा है कि केन्द्र और प्रान्तों को श्रम-व्यवस्था की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। इसके लिए योग्य शासन और जाँच-विभाग जैसी संस्था स्थापित करके कार्य को सुचारु रूप से चलाना चाहिए। हम श्रम-मंत्री के कार्यक्रम का हृदय से समर्थन करते हैं। उनकी पंचवर्षीय योजना देश में मजदूरों की मजदूरी और उनके जीवन के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए है। यह कार्य बहुत बड़ा है। इसको सफल बनाने के लिए सभी का सहयोग आवश्यक है। यह आवश्यक है कि विभिन्न पेशों के मजदूरों की वर्तमान स्थिति जानने के लिए ठीक ठीक संख्या और अन्य सम्बन्धित बातों की छानबीन की जाय। ऐसे कागज प्राप्त किये जायँ जो प्रमाणित हों, क्योंकि उन्हीं के ऊपर व्यवस्था के वाद-विवाद और सम्मतियाँ आधारित होंगी। भारतवर्ष के विभिन्न भागों में मजदूरों की जीविका का वर्तमान स्तर बदलता रहता है। इस कार्य के लिए इन सबकी पूर्ण रूप से जानकारी प्राप्त करनी होगी। जीविका के कम से कम स्तर के लिए अनुरोध करना चाहिए और व्यवस्था को वैधानिक कर देना चाहिए जिससे धीरे धीरे सारे देश के मजदूरों के परिश्रम की कमाई का स्तर उठकर एक हो जावे।

* * *

संसार का सबसे बड़ा वायुयान

संयुक्तराज्य अमेरिका में एक विमान तैयार हुआ है जिसका मूल्य लगभग ८ करोड़ रुपये है। यह आशा है कि उसमें ७०० यात्रियों को ले जाया जायेगा। संभवतः १९४८ के अंत तक समुद्र-यात्रा करनेवाले यात्री ५० प्रतिशत सुदूरपूर्व की यात्रा इसी वायुयान से करेंगे। इस वायुयान की गति ५०० मील प्रतिघंटा है।

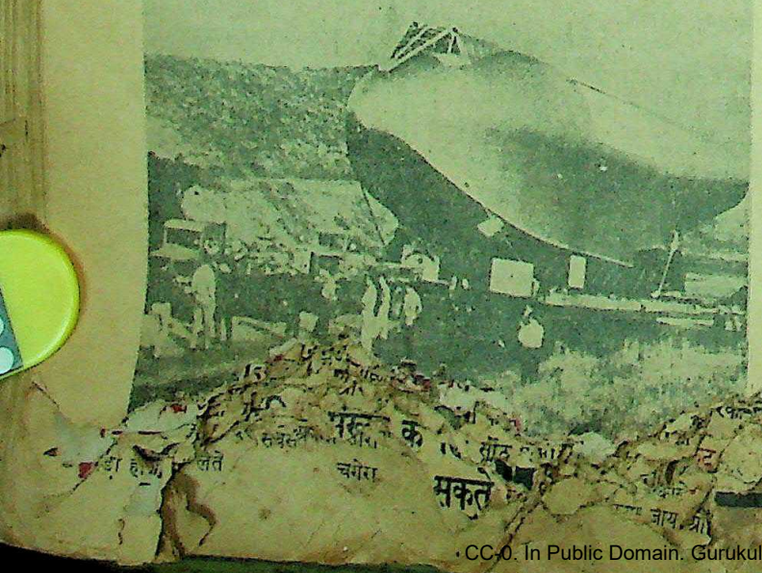

घर और बाहर!

इंडियन सिविल सर्विस

अस्थायी सरकार ने यह निश्चय कर लिया है कि आजकल हिन्दुस्तान में जैसी इंडियन सिविल सर्विस है उसमें जरूर परिवर्तन किया जाय। भविष्य में इंडियन सिविल सर्विस के अफसर को भारत-मन्त्री के बजाय भारतीय सरकार नियुक्त किया करेगी; क्योंकि यह देखा गया है कि सिविल सर्वेंटों ने भारत सरकार के नीचे न रहने से हिन्दुस्तान की आजादी के रास्ते में हमेशा रुकावट डाली है। ऐसा ही परिवर्तन इंडियन पुलिस सर्विस में भी होगा।

अब यह तय करना है कि इन अफसरों के ऊपर प्रान्तीय सरकार का क्या अधिकार होगा। इन अफसरों पर प्रान्तीय सरकार का कोई अधिकार न रहने से इनसे प्रान्त का कार्य ठीक ठीक नहीं हो सकता। वैसे ही केन्द्रीय सरकार का कोई अधिकार न रहने से अर्थनीति और बहुत जरूरी परिकल्पनाएँ बेकार हो जायँगी, इसलिए अस्थायी सरकार इन सर्विसों के प्रश्न पर बड़े ध्यान के साथ विवेचना कर रही है।

* * *

गम्भीर विचारशील व्यक्ति हैं

गत २२ अक्टूबर को जनरल स्मट्स ने बेलजियम की पार्लियामेंट में भाषण देते हुए यह आशंका प्रकट की कि यूनाईटेड नेशन्स आर्गनाइजेशन से ठोस काम लेने के बजाय कुछ आदर्शवादी इसको अपने मत के प्रचार-कार्य में लगाना चाहते हैं। प्रचार-कार्य कुछ खराब नहीं है। प्रचार जब किसी अच्छे काम का किया जाय तब अच्छा है और किसी खराब काम का किया जाय तो खराब है। फिर जनरल साहब किसी आदर्श के प्रचार-कार्य का विरोध क्यों कर रहे हैं?

इसी भाषण में यूरोप को संयुक्तराष्ट्र बनाने की अपील जनरल स्मट्स करते हैं। कहते हैं, मनुष्यों के आत्मिक बल का केन्द्र-स्थल यूरोप है। किन्तु दो विश्वसंग्राम होने के बाद इस बात पर कोई भी स्वस्थ आदमी विश्वास नहीं करेगा। हाल ही में यूनाईटेड नेशन्स आर्गनाइजेशन में दक्षिणी अफ्रिका के श्वेताङ्गों के खिलाफ हिन्दुस्तान का आवेदन पेश हो रहा है। स्मट्स साहब श्वेताङ्गों की तरफ के वकील हैं।

हम लोग बर्नार्ड शा के पिछले जन्म-दिवस के कथन का समर्थन करते हैं। उन्होंने कहा था—जनरल स्मट्स गम्भीर विचारशील व्यक्ति हैं।

* * *

अस्त्र की ताकत पर बादशाहत कायम है

ग्रीस में बादशाहत कायम हो गई है। इसके कायम करने में अँगरेज सिपाहियों की कार्रवाई सभी को मालूम है। ब्रिटिश सिपाही इस समय भी ग्रीस में मौजूद हैं, बादशाहत की हिफाजत के लिए। कई दिन हुए, ग्रीस के साम्यवादियों ने बादशाहत के खिलाफ आवाज उठाई [illegible] पर ग्रीस की वर्तमान सरकार ने [illegible] भी हथियार माँगे हैं। [illegible] के लिए ग्रीस की [illegible]। दुनिया के [illegible] दोस्ती है न!

लेखक
श्री देवेन्द्रनारायण बाजपेयी

भावी संग्राम का बीज

भूमध्यसागर के साथ [illegible] का संस्पर्श न हो, इस [illegible] सामने रखकर ट्रीस्ट का [illegible] गया है। पेरिस शान्ति-सम्मेलन [illegible] ने ट्रीस्ट के सम्बन्ध में जो [illegible] किया था वह साम्राज्यवादी [illegible] सहायता से शान्ति-सम्मेलन [illegible] गया है। इस समझौते की [illegible] ट्रीस्ट का गवर्नर ट्रीस्ट का [illegible] होगा। ऐसे गवर्नरों की बादशाह [illegible] की अभिज्ञता हिन्दुस्तानियों को है [illegible] की शक्ति से प्रतिष्ठित विधान-[illegible] हीन रहेगी।

यूगोस्लाविया ने इस [illegible] मानने से इनकार कर दिया। [illegible] स्लाविया का एक अंश है। ऐसी [illegible] में ही भावी संग्राम का बीज निहित [illegible]

साम्राज्यवादी देश की फौज

मध्य एशिया के देशों पर [illegible] कब्जा कायम रखने के लिए [illegible] तरह की कोशिशें कर रहा है। [illegible] ब्रिटिश फौज हटाने में इतना किया [illegible] लिए हो रहा है। फिलस्तीन में [illegible] खड़ा करने की कोशिश ऐंग्लो-[illegible] कर रहे हैं। ब्रिटिश फौज [illegible] जायगी तो उसको सूडान और [illegible] ले जाने का प्रबन्ध है। ब्रिटेन [illegible] को या तो अपने देश में ले जाय [illegible] तोड़ दे।

* *

यहूदी फिलिस्तीन में बस रहे हैं

राष्ट्रपति ट्रूमन ने [illegible] फिलिस्तीन में बसाने की [illegible] यही आवाज ब्रिटिश राजनीतिक [illegible] जोर पकड़ रही है। मि० एटली ने [illegible] के वक्तव्य का समर्थन किया है। [illegible] क्षेत्रों में इस घोषणा पर बड़ा [illegible] पड़ा है।

* *

खैबर विश्व-विद्यालय

खैबर विश्व-विद्यालय के [illegible] वास्तविकता अब सत्य होगी। [illegible] कितने ही कालेज और [illegible] स्थापित होंगी।

*

महात्मा गांधी को समर्पित

'सेवाग्राम' और [illegible] ग्रन्थ' दिल्ली में श्री घनश्यामदास [illegible] तथा पंडित सोहनलाल द्विवेदी [illegible] गांधी को समर्पित किया। महात्मा [illegible] सेक्रेटरी श्री प्यारेलाल तथा मह[illegible] आश्रमवासियों ने सेवाग्राम [illegible] अभिनन्दन-ग्रंथ के उत्कृष्ट प्रकाशन [illegible] साहित्य की बहुत प्रशंसा की।

निवेदन

देशदूत के ग्राहकों, [illegible] एजेण्टों को बड़े खेद के साथ [illegible] जाता है कि इस वर्ष हम कागज [illegible] के कारण 'दीपावली अंक' नहीं [illegible] कर सकेंगे। अतः निवेदन है कि [illegible] 'दीपावली अंक' के सम्बन्ध में [illegible] व्यवहार न करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिस्र की वर्तमान राजनीति

क्या अँगरेजी सेनाएँ मिस्र खाली करेंगी ?

लेखक, श्री चन्द्रकुमार बी० ए०

ब्रिटेन के प्रधान मंत्री मिस्टर एटली, मिस्र-ब्रिटेन-संधिवार्ता चला रहे हैं।

मिस्र की वर्तमान राजनीति क्या है—अँगरेज मिस्र छोड़कर चले जायँ। ब्रिटेन और मिस्र की राजनैतिक संधियों का विश्लेषण करते हुए लेखक ने यह दर्शाने का प्रयत्न किया है कि मिस्र की वर्तमान सरकार कितनी प्रतिक्रियावादी है और वह साम्राज्यवाद का प्रत्यक्ष नहीं तो परोक्ष में समर्थन करती है। प्रगतिशील दल मिस्र की स्वतन्त्रता का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं।

रुख जानने के लिए वहाँ की आन्तरिक राजनीति की जानकारी आवश्यक है। स्थूल रूप से देखा जाय तो मिस्र में तीन प्रमुख राजनीतिक प्रवृत्तियाँ क्रियाशील दिखाई पड़ रही हैं, पहली—समझौतावादी, नम्रदली लोगों की जो मिस्र के व्यापारी और भू-स्वामी-वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। शासन-सूत्र इस समय इसी प्रवृत्तिवाले दल के हाथ में है। इसके नेता सिदकी पाशा हैं जो मिस्र में ब्रिटिश स्वार्थों को बने रहने देने के मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं। अपने विरोधियों का दमन करने में इन्हें किसी तरह की हिचक नहीं है। पिछले दिनों इनकी ब्रिटिशपक्षीय नीति का विरोध करनेवाली प्रगतिशील पार्टियों और सरकारी रवैये की आलोचना करनेवाले पत्रों को इन्होंने अपनी दमननीति का शिकार बनाया। लेकिन इनकी इस नीति से मिस्री जनता पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। वह ब्रिटेन के खिलाफ अधिक कड़ा रुख बर्तनेवाली नीति को पसन्द करती है। इसलिए सिदकी पाशा के विरोधी दलों का बल बढ़ता जा रहा है। इस दूसरी ब्रिटिश-विरोधी उग्रवादी प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति मिस्र की राष्ट्रीय 'वफद' पार्टी, युवक-आन्दोलन और गुप्त कम्युनिस्ट पार्टी की क्रियाशीलताओं के रूप में हो रही है। वर्तमान समय में इन तीनों दलों ने मिस्र से ब्रिटिश स्वार्थ का खात्मा करने के लिए और नये जनवादी मिस्र का निर्माण करने के लिए एक प्रकार से संयुक्त मोर्चा बनाया हुआ है। इनकी माँग पूर्ण स्वतंत्रता है, 'मिस्र छोड़ो' इनका नारा है और इनके पीछे मिस्र के तरुणों, विद्यार्थियों, श्रमिक, किसानों एवं बुद्धिजीवी मध्यम-वर्ग का बल है, साथ ही इसी प्रगतिशील संयुक्त मोर्चे को विश्व की तमाम जनवादी शक्तियों की सहानुभूति और समर्थन प्राप्त है। इसके नेता नहस पाशा हैं। तीसरी प्रमुख प्रवृत्ति, लेकिन उतनी उग्र नहीं; इस्लामवादी' भावना की है। मुस्लिम भातृत्व (अल - इरक्वान - अलमुसलमीन) अर्थात् मुस्लिम भाई चारा संघ इस प्रवृत्ति का प्रकट रूप है। इस संघ का जन्म १९२८ में फलतः धार्मिक प्रचार और संगठन की दृष्टि से हुआ था लेकिन यह अब राजनीति के भी इस्लामवादी जामा पहनाना चाहता है। इसके सदस्य पीली कमीज पहनकर फासिस्टों की तरह कवायद करते हैं। यह दल भी नील नदी की घाटी की स्वतन्त्रता का समर्थक है।

सन्धि की आवश्यकता

जैसा हम पहले कह चुके हैं, नवीन आंग्ल-अमरीकी सन्धि का महत्त्व मिस्र और ब्रिटेन के घरेलू मामलों के लिए महत्त्व का तो है ही लेकिन आज की स्थिति में इसका विशेष महत्त्व मध्यपूर्व की संकटपूर्ण स्थिति के कारण है। मिस्र योरोप, एशिया और अफ्रीका के उस सन्धि-स्थल पर है जहाँ ब्रिटेन और अमेरिका का स्वार्थ भूमध्यसागरीय प्रदेशों की बढ़ती हुई जनवादी ताकतों से टक्कर खाता है। इस केन्द्र में विरोधी तत्त्वों की शक्ति प्राप्त करने से ब्रिटेन के पूर्वी साम्राज्य और व्यापार को तो प्रकट खतरा है ही, सुदूर अमेरिका के आर्थिक स्वार्थों और एकान्तिक सुरक्षा की मनोवृत्ति को भी इससे धक्का पहुँचता है। इसलिए ये दोनों देश किसी न किसी तरह इस महत्त्वपूर्ण सामरिक केन्द्र में अपना प्रभुत्व रखने की कोशिश में रहते हैं, जिसका उदाहरण कभी हमें फिलस्तीन के यहूदियों के प्रति अमेरिका की दिलचस्पी में मिलता है, कभी यूगोस्लाविया की जनवादी सरकार के विरुद्ध दोषारोपण करने के रूप में; कभी ईरान-इराक की आन्तरिक राजनीति में हस्तक्षेप किया जाता है, कभी तुर्की-रूसी झगड़े को तूल दिया जाता है। ब्रिटेन की मिस्र में दिलचस्पी को इस पृष्ठ-भूमि में रखने से ज्ञात हो जाता है कि आक्रमण के समय मिस्र की सुरक्षा के खयाल से ब्रिटिश सेना की उपस्थिति की आवश्यकता (अर्थात् सन्धिवार्ता के जिस अंश पर गतिरोध उत्पन्न हुआ) की बात मिस्र की रक्षा में उतनी दिलचस्प न होकर स्वयं ब्रिटिश स्वार्थों की रक्षा के प्रति दिलचस्प है। वैसे तो ब्रिटिश प्रतिनिधि मण्डल और मिस्री सरकार ने सन्धि-[illegible]खा है लेकिन प्राप्त हुए [illegible]से ज्ञात होता है कि [illegible]मतैक्य

भूली याद !

लेखक, श्री ब्रह्मदत्त विद्यार्थी

सच जानोगी क्या तुम इसको, जब याद तुम्हारी आती है।
तारे नभ से हैं उतर-उतर कर धरती पर बिखरा जाते
कुछ भूले, भटके धुँधले से क्षण आसमान में छा जाते
कुछ जलता, दहता सा यह मन अमरत्व प्राप्त कर जी उठता
कुछ पत्थर को निज साँसों से यह क्षण आकर पिघला जाते
जग को मैं कैसे, दूँ यह क्षण जो जीवन की निधि थाती है।
हिल उठता पीपल सा यह तरु जिसका जीवन ही है पतझर
जिसमें न कभी यौवन आता, होती न कभी तरु की मर-मर
जिस पर न भूल कोई पंछी टुक बैठ ताप, श्रम खोता है
जिसकी न ओर कोई पंथी आता न छाँह को है लखकर
हिल उठता सूखा तन इसका टहनी पत्ती भर लाती है।
वह सुरभि भरी अमराई फिर आँखों के सम्मुख छा जाती
वह खोई धुँधली बस्ती है जो अंधकार से उठ जाती
वह आसमान तारोंवाला वह चाँदी सी भीगी रातें
वह लोल-लहरियों की सिहरन इन आँखों पर फिर छा जाती
तब स्नेह-सिक्त हो करके फिर जग उठती जीवन-बाती है।
जिसके प्रकाश में अंधकार से उठने लगता है यह जग
वर्षों की काली चादर तज लखने लगता है भूला मग
बन जाती मेरे चरणों से ले अंतरिक्ष तक पगदण्डी
जिसके कण-कण में बसने लगते कितने ही नव अग, जग
तब तब आकृति क्यों इन सबकी बस एक परिधि बन जाती है।
माना कि राह हम दोनों की दो ओर दूर तक जाती है
माना कि राह हम दोनों की कुछ थाह न अपना पाती है
माना कि [illegible]
माना[illegible]
फिर [illegible]
सच [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की जङ्गली जातियाँ और उनकी संस्कृति

छोटा नागपुर में सीताहरण का उपाख्यान

लेखक, श्री चन्द्रचूड़ एम० ए०

किसी भी देश की आदिम जातियों की ओर वर्तमान काल के पहले किसी का ध्यान उतना आकर्षित नहीं हुआ था जितना कि इस प्रजातन्त्र युग में हुआ है। भारत में प्राचीन आदिम जातियों की संतान छोटा नागपुर के जंगलों में रहती हैं। उनमें कुछ अपनी प्राचीन परंपरा के आदमी प्रचलित हैं। लेखक ने उन्हीं का वर्णन किया है। लेख पठनीय है।

छोटा नागपुर के आस-पास के जङ्गलों और पहाड़ियों में द्रविड़ शाखा की कई जातियाँ बसती हैं। वे लोग काले-कलूटे, ठिगने और देखने में बिलकुल असभ्य प्रतीत होते हैं; परन्तु वनमानुषों जैसी उनमें कोई प्रवृत्ति नहीं पाई जाती। कुछ वर्ष पूर्व इनमें से बिढ़ौर लोगों का मनोरञ्जक वर्णन प्रोफेसर शरतचन्द्र मित्र ने 'जर्नल आव दि बिहार ऐण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी' नामक शोध-सम्बन्धी पत्रिका में प्रकाशित किया था।* इसके पूर्व १९११ की जन-गणना में बिढ़ौरों की संख्या इस प्रकार बतलाई गई थी, १०२४ हजारी बाग जिले में, ९२७ राँची में और सम्पूर्ण छोटा नागपुर प्रदेश में २३४०।

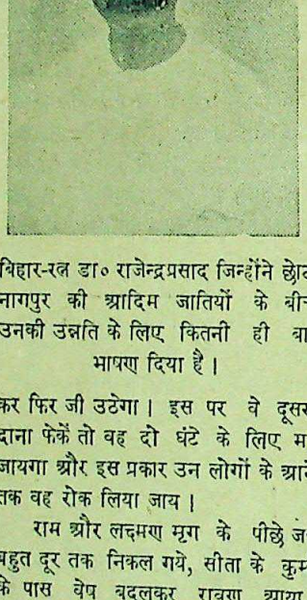

बिहार-रत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद जिन्होंने छोटा नागपुर की आदिम जातियों के बीच उनकी उन्नति के लिए कितनी ही बार भाषण दिया है।

स्वयं बिढ़ौरों के कथन के अनुसार वे और खारवार जातियाँ सूर्य से उत्पन्न हुई हैं। अब तो ये जातियाँ काफी सभ्य हो गई हैं और अपने पड़ोसी हिन्दुओं के समीप रहने के कारण इनकी हिन्दू और कोलारी-मिश्रित एक नवीन संस्कृति भी बन गई है जिसमें सामाजिक और नैतिक नियमों के साथ साथ धार्मिक विश्वासों की भी एक अविच्छिन्न परम्परा स्थापित हो गई है। सीता-हरण का उपाख्यान इन जातियों में थोड़े मतभेद के साथ सर्वत्र प्रचलित है। यहाँ हम बिढ़ौर संस्करण देंगे; क्योंकि वही सबसे अधिक प्रचलित और उद्धरण के योग्य समझा जाता है।

जब राम, लक्ष्मण और सीता को राजा दशरथ ने वन-वास दिया, तो वे वन में एक 'कुम्बा' (पर्णकुटी) बनाकर रहने लगे। राम और लक्ष्मण नित्य दिन को आखेट के लिए निकल जाया करते और सीता माता घर पर रसोई बनाकर तैयार रखतीं। इस प्रकार जब कुछ समय बीता तो सीता ने देखा कि कई दिनों से एक नन्हा सुकुमार मृग-शावक उनके कुम्बे के पास आकर घास चरने लगा है। एक दिन सायंकाल को जब राम और लक्ष्मण आखेट से अपने स्थान को लौटे तो सीता ने कहा, "आप लोग व्यर्थ आखेट के लिए इतनी दूर जाते हैं जब कि एक मृग-शावक प्रतिदिन पर्ण-कुटी के पास आकर घास चर जाता है; उसे ही पहले क्यों नहीं मारते?" फिर क्या था, दूसरे दिन दोनों भाई मृग-छौने के पीछे पड़ गये। जाने के पूर्व लक्ष्मण ने सीताजी को मन्त्र से अभिषिञ्चित कर सरसों के मुट्ठी भर दाने देकर यह चेतावनी दे दी कि यदि हमारी [illegible] स्थिति में कोई अपरिचित कुटि[illegible] उस पर सरसों [illegible]

[illegible] चुकने के [illegible] चुकते [illegible] चरते चरते चरते [illegible] जाय, श्री [illegible] ड, प्रयाग

देखा है। पेड़ ने उत्तर दिया—"हाँ, हाँ, मैंने देखा है। यही नहीं, उनके वस्त्र पकड़ कर यथाशक्ति रोकने का भी मैंने प्रयत्न किया है। मेरे काँटों के बीच अभी तक उनके वस्त्र का एक छोर उलझा हुआ है। परन्तु राक्षस से उनको छुड़ाना मेरी शक्ति के बाहर था।"

यह उत्तर सुनकर राम बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने बेर को आशीर्वाद दिया—"हे बेर, मैं तुम्हारा आभार मानता हूँ। यह सत्कार्य करने से तुम्हारा नाश कभी न होगा। यदि मनुष्य तुम्हें काट डालें तो जब तक एक भी जड़ तुम्हारी बची रहेगी तुम फिर पनप उठोगे।" इसी कारण बेर का पेड़ अपनी स्थायी-शक्ति के लिए प्रसिद्ध है। आगे चलने पर उन्हें धान के खेत की एक चिड़िया मिली। उससे भी राम ने वही प्रश्न किया। उसने उत्तर दिया—"मैं सीता-फीता को क्या जानूँ। मुझे तो सब से बड़ी चिन्ता अपना पेट भरने की लगी रहती है।" राम को उस पर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने लक्ष्मण को उसे दण्ड देने को कहा कि उसका गला भोड़ दें। लक्ष्मण ने उसका गला पकड़कर ऐसा झटका दिया कि उस चिड़िया का गला सदा के लिए लम्बा और तंग हो गया।

कुछ दूर और चलने पर उन्हें एक गिलहरी दिखाई पड़ी। उससे भी उन्होंने सीता के बारे में पूछा। इस छोटे जानवर ने भी 'हाँ' किया। इसके उत्तर से राम इतने प्रसन्न हुए कि उसकी पीठ पर अपनी तीन अँगुलियों से थपकी दी जिसके कारण आज तक गिलहरियों की पीठ पर तीन अँगुलियों का चिह्न बना हुआ है। राम ने इसे यह आशीर्वाद दिया कि यदि यह उँचाई पर से गिर पड़े तो भी इसकी मृत्यु न होगी। सभी जानते हैं कि गिलहरी ऊँचे वृक्षों की चोटी पर से उछाल लेती हुई भी बच जाया करती है।

शेष आख्यान प्रायः हिन्दू कथानक के आधार पर ही मिलता है जिसे उद्धृत करने की यहाँ कोई आवश्यकता नहीं। बिढ़ौरों की तरह सन्थाल और मुण्डा जातियों में भी इसी तरह की कहानियाँ प्रचलित हैं जिनमें अन्ध-विश्वास और मंत्र-तंत्र की भावनाएँ किसी अंश में कम नहीं हुई हैं। पश्चिमी बंगाल, भागलपुर, उड़ीसा के उत्तरी प्रदेश और संथाल परगना में प्रचलित "सात भाई और बंगा लड़की" की जनश्रुति तथा "राजकुमारी चँदैनी और सहदे ग्वाला" की कहानियों में बिढ़ौरों के उपाख्यान की छाया स्पष्ट है। इसी प्रकार मुण्डा लोगों की "सीता और सीतालि" जनश्रुति भी केवल मनगढ़ंत कहानी न होकर सीता-हरण के उपाख्यान से प्रभावित मालूम पड़ती है। क्योंकि इन सभी कहानियों का वर्ण्य-विषय एक-सा ही है और इनमें हिन्दू कथानक के साथ कोलारी अथवा द्रविड़ जनश्रुतियों का समावेश है।

साहित्यालोचन

इसका संशोधित संस्करण छपकर तैयार है। इसमें संस्कृत के प्राचीन आचार्यों के साहित्य-सम्बन्धी सिद्धान्तों के अतिरिक्त पाश्चात्य साहित्यकारों तथा [illegible] के मत का दिग्दर्शन बहुत [illegible] कराया गया है। ४०० [illegible] का मूल्य [illegible]

मिस्र की वर्तमान राजनै[illegible]

(पेज ५ का शेष)

सन्धिवार्ता के मुख्य अंश

पहली बात, जो मिस्री जनता की माँग का मुख्य अंश ब्रिटिश सेना का पूर्णरूपेण निष्क्र करना। सन्धिवार्ता में सिद्धान्त स्वीकार कर लिया गया, झगड़ा यह उठा कि ब्रिटेन भीतर अपनी सेनाएँ मिस्र से हटाने था, परन्तु मिस्र ने उसकी साल रखने पर ही जोर दिया। ब्रिटेन यह चाहता था कि आक्रमण का खतरा होते ही मिस्र में आ सकें और मिस्र उन्हें की सहायता दे। इसके लिए ब्रिटेन का संयुक्त-सुरक्षा-बोर्ड बात रखी गई। सिद्धान्त रूप से भी स्वीकार कर लिया गया लेकिन इसी बात पर अड़ा रहा कि उसी समय मिस्र में आ सकेंगी मिस्र के लिए कोई खतरा होगा और प्रमुख प्रश्न था नील घाटी के प्रदेश के संयुक्त स्वामित्व का। इस बात पर एकमत थे कि मुसलिम हित सर्वोपरि होना चाहिए की यह शिकायत थी कि इस की योजना में ब्रिटेन हमेशा को खत्म करने की कोशिश करता है।

प्रस्तुत अवसर पर तो जनता के डर से और मिस्र की आन्तरिक शील शक्तियों के जरिये अपनी जाने से बचाने के लिए मिस्र की वादी शक्तियाँ ब्रिटेन से स्वयं अधिक सुविधा प्राप्त करने के लिए शील हैं। वे कभी नहीं चाहतीं साम्राज्यवादी ब्रिटेन की संगीनों का उसके सिर से एकदम हट जाय। वे किसी न किसी रूप में दोनों में सामंजस्य स्थापित करने की इच्छा है! इसके लिए मिस्री सरकारी पार्टी अरब-संघ के नाम से एक [illegible] कर रखा है जो ब्रिटेन की कठपुतली जार्डन के शाह अब्दुल्ला, सीरिया आदि के शासकों के [illegible] के लिए बना है। दूसरी ओर [illegible] मोर्चे के नेता श्री नहस पाशा ने [illegible] समझौतावादी नीति का भंडाफोड़ हुए स्पष्ट शब्दों में घोषणा कर दी अँगरेजों के लिए एक ही शर्त और है—वह है 'मिस्र छोड़ो।' नया निर्वा फ्रांस और पश्चिमी योरोप में ब्रिटेन उसके गुट के कारनामे देख रहा है। इस प्रदेश में किस तरह जनवादी शील आन्दोलन को बदनाम करने कुचलने की कोशिश कर रहा है। वह मिस्र को स्वाधीन साम्राज्यवादी हाथ में इस कुत्सित कुचक्र की एक न बनने देकर स्वतन्त्र और प्रगतिशील राष्ट्रों का साथी बनना चाहता है, अमेरिका के एटम बम और [illegible] ब्रिटेन के पिछलग्गू गुट के खिलाफ वादी राष्ट्रों का मोर्चा शक्तिशाली हो मिस्री सरकार की प्रतिक्रियावादी विरुद्ध प्रबल जनमत के पीछे नई दिल्ली शक्ति काम कर रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ह चौड़ी खाई कैसे पटेगी ?

मानवता का भयङ्कर अभिशाप : गरीबी

लेखक, श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

...मानवता का सबसे बड़ा अभिशाप है और अमीरों तथा गरीबों के बीच ...चौड़ी होती जानेवाली खाई मानवता के लिए बहुत बड़ा कलङ्क है। इस ...के लिए जिस विचार-परिवर्तन की आज आवश्यकता है, उसका तात्त्विक विवेचन इस लेख में किया गया है।

...का विकास ज्यों-ज्यों होता ...धनवानों और गरीबों के बीच ...ही चौड़ी होती जा रही ...में जिन सैद्धान्तिक आदर्शों ...गया, वे निरे सिद्धान्त ही ...उनको प्रयोग में आज तक ...दिया। आज गरीबों की स्थिति ...नहीं है। गरीब ही क्या, ...के लोगों का जीवन-निर्वाह ...समस्यामूलक हो उठा ...बेचैनी और पारिवारिक ...लगी है। युद्ध समाप्त ...दुनिया की तीन-चौथाई ...मर रही है। भुखमरी के ...विचार करने के लिए स्वतन्त्र ...बहुत अधिक लिखने की ...है। यहाँ इतना ही कहा ...कि एक ओर इस भुखमरी ...जन-साधारण के सामने ...खड़ी है और दूसरी ओर ...अत्यन्त विषमता से वित-...है। जिन लोगों के पास ...राशि है, वे बहुत थोड़े हैं ...धनिक हैं। यही कारण है कि ...अमीरी का भेद, गरीब और ...की खाई आज जितनी ...है, इतनी पहले कभी नहीं ...खाई को पाटने अथवा ...बाँधने की आवश्यकता से ...कर सकता है ?

...अधिकता के साथ साथ ...धनिकवर्ग में स्वयं को ...की अपेक्षा श्रेष्ठ समझने ...देखी जाती है, वह बड़ी ...गरीबों से यह धनिकवर्ग ...उनकी अवज्ञा भी करता ...नहीं कि धनिकवर्ग इस ...है कि जो धन उनकी ...है अथवा बैंकों में ...चालू है, वह इन ...का ही परिणाम है।

भारत के सबसे बड़े धनिक, हैदराबाद रियासत के निजाम

जिन आलीशान कोठियों में ये धनवान् रहते हैं, जिन सुख-सुविधाओं के बीच ऐश्वर्य का अनुभव करते और जीवन की रंगीनियों में डूबे रहते हैं, उनकी ओर यह गरीब सदा तृषित नेत्रों और भूखे पेट को पीठ से चिपकाये हुए देखता रहता है। यदि इन भूखे-प्यासे और अभावों के बीच रात-दिन पिसनेवाले गरीबों की ओर हमारा धनिक-वर्ग सहृदयतापूर्ण दृष्टि से देखने लगे और उन्हें सर्वथा नगण्य न समझ उसी हाड़-मांस का बना पुतला समझने लगे, जिससे स्वयं उसके अमीरी शरीर का निर्माण हुआ है, तो यह विषमता अपेक्षाकृत बहुत कम हो सकती है। लेकिन हम जिस सभ्यता के युग में आज जीवित हैं, उसमें मशीन की प्रधानता है और मशीन का मानव की अपेक्षा अधिक मूल्य है। मशीन को प्रधानता देनेवाले यह भूल जाते हैं कि मानव ने ही मशीन का आविष्कार किया है और मानव के सहारे ही यह मशीन उपयोगी सिद्ध होती है। यह मानव न रहेगा, तो ये मशीनें किस काम आवेंगी, इनका उपयोग ही क्या रह जायगा और इन्हें चलावेगा कौन ? मशीन-युग में भी हमें यही कहना पड़ता है कि धनिक-वर्ग हो या श्रमिक, सबको भर ... देनेवाला और तन की ... वस्त्र देनेवाला ... गरीब मानव— ... के रूप में बहात...

भारत के ये भूखे-नंगे ग़रीब

...व्यापारी सेठ घनश्याम-...

भी मशीनों के साथ यन्त्रवत् मजदूरी करते-करते सारा जीवन खपा देता है।

बर्नार्ड शा का कथन है—"हमारा सबसे बड़ा पाप और भयंकर अभिशाप है गरीबी, और हमारा प्रथम कर्तव्य है उसके प्रति अपनी समस्त सहानुभूति उँड़ेलना। इससे हम गरीब नहीं हो जायँगे।" लेकिन कितने धनिक इस ओर ध्यान देते हैं और गरीबों के प्रति उनकी नृशंसता में क्या अन्तर आया है ? यह कहा जा सकता है कि गरीबों पर ये धनवान् आखिर कौन सी नृशंसता करते हैं ? गरीबों की स्थिति से जो परिचित हैं, वे इस प्रश्न का उत्तर सहज ही दे सकते हैं। वास्तव में धनिक-वर्ग किसी शस्त्र को लेकर इन गरीबों की हत्या नहीं करता; लेकिन उसके कितने ही काम ऐसे होते हैं जो परोक्ष रूप में गरीबों के प्राण ले डालने के लिए उत्तरदायी कहे जा सकते हैं। ऐसे कामों में गरीबों को कम से कम पारिश्रमिक देकर उनसे अधिक से अधिक काम लेना और मानव की तरह उनकी सुविधाओं का खयाल न रखते हुए अपने ऐश-आराम का रात-दिन ताना-बाना बुनना आदि अनेक बातें कही जा सकती हैं।

आम तौर पर दुनिया के सभी गरीब, ...: भारतवर्ष के गरीब भाग्यवाद ... उनके मन...

शक्ति को सदा के लिए समाप्त कर बैठती और उन्हें निष्क्रिय बना देती है। उनकी आकांक्षाएँ मर चुकती हैं। उनमें आशा का कहीं कोई अंकुर पल्लवित नहीं हो सकता। जिस दयनीय स्थिति में वे रहते हैं, उसमें किसी सुधार की कहीं कोई गुंजाइश नहीं रह जाती। यदि उन्हें कभी कोई सुविधाएँ भी दी जायँ तो वे उनसे समुचित लाभ नहीं उठा पाते। उनके अन्धविश्वास उन पर हरदम हावी रहते हैं। वे प्रतिक्षण अपने आपको अभिशप्त मानते हैं। कदाचित् इन्हीं बातों के आधार पर कोई-कोई धनिक यह भी कह उठता है—'गरीबों से दूर रहना ही अच्छा है। भाग्य को चमकाकर हमें सुखी रहना चाहिए। उन गरीबों के लिए हमारा कोई भी प्रयत्न व्यर्थ है, जो स्वयं अपनी भलाई से अपरिचित हैं।'

परिणामतः हम देखते हैं कि अमीरों और गरीबों के बीच में जो खाई है वह उत्तरोत्तर चौड़ी ही होती जाती है। गरीब का शोषण किया जाता है और धनवान् उसे उत्तरोत्तर उत्पीड़ित करता जाता है। धनवान् सुख से जीवन बिताता और गरीब मुसीबतों से टकराता रहता है। प्रश्न उठता है, ऐसा क्यों होता है ? क्या गरीब ऐसी ही उदासीनता का पात्र है—सर्वथा अवज्ञेय ? क्या यह उन्हीं गरीबों का दोष है कि उनकी आकांक्षाएँ मर चुकी हैं ? क्या यह सत्य नहीं है कि जीवन के प्रति ये गरीब जो इतने उदासीन नजर आते हैं। उनमें कहीं किसी आकांक्षा अथवा महत्त्वाकांक्षा का जो अस्तित्व नहीं है, वह सब इसीलिए कि उनके हित में बुलन्द किये जानेवाले नारे; उनके जीवन के मानदंड को ऊँचा उठानेवाली योजनाएँ आदि सभी कुछ वर्तमान समाज-व्यवस्था और सभ्यता की विषम भूमि पर कभी फलदायक सिद्ध नहीं हो सकीं ?

गरीबों को इस दुनिया में सर्वत्र यही अनुभव होता है कि उनके प्रति कहीं कोई दया-माया नहीं, उनके लिए कहीं कोई स्नेह नहीं—... भूति नहीं। गरीब अथवा ... अपनी सारी शारीरिक ... उसके पारि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस-किसान-मज़दूर-प्रजा-पार्टी

समाज वाद सद्धान्तों की प्रतिद्वन्द्विता होगी ?

लेखक, श्री अभय साहित्यरत्न, वर्धा

आजकल देश में समाजवाद का जोर बढ़ रहा है। युक्तप्रान्त इससे अछूता नहीं है, पिछले युक्तप्रान्तीय कांग्रेस-कमेटी के अध्यक्ष के चुनाव में समाजवादी नेता श्री दामोदरस्वरूप सेठ विजयी रहे हैं। उनके विपक्षी आज एक नया दल बनाकर पुनः प्रभाव में आना चाहते हैं। लेखक ने उसी स्थिति का चित्रण किया है।

समाजवादी नेता आचार्य नरेन्द्र देव।

संयुक्तप्रान्त में इस नाम की एक नई पार्टी का जन्म हाल ही में हुआ है। अखबारों में तो इसका प्रचार इतने ज़ोर-शोर के साथ हो रहा है कि मालूम पड़ता है, अगर इसकी प्रगति ऐसी ही रही तो यह कांग्रेस को भी पीछे छोड़ जायगी। अभी इस पार्टी को जन्म लिये कुछ ही सप्ताह हो पाये हैं। शैशव काल में ही जब यह तूफान उठा रही है तो आगे न जाने क्या करेगा।

हमारी इच्छा है कि यह पार्टी दिन दूनी रात चौगुनी बढ़े; पर इस पार्टी का मुख्य प्रयोजन, आदर्श एवं कार्यशैली क्या है, इसको समझना दुःसाध्य है।

इसका जन्म क्यों हुआ ?

हमारे सामने प्रश्न यह है कि जब कांग्रेस देश के किसान-मजदूरों का प्रतिनिधित्व करती है, तब इस पार्टी की आवश्यकता क्यों प्रतीत हुई। अलग पार्टी बनाने का मतलब है कांग्रेस की शक्ति का विघटन करना। इसके अलावा भी अन्य बातें हो सकती हैं, जिन पर हमें शीतल अन्तस्तल से विचार-विमर्श करना है। सबसे पहली बात, जो इस पार्टी के जन्म में कार्य करती है 'वामपक्षियों की बढ़ती हुई शक्ति' है, जो खास तौर से संयुक्तप्रान्त में पैदा हुई है। संयुक्तप्रान्त में प्रान्तीय कांग्रेस-कमेटी का इतिहास ही बदल गया। किया क्या जाय? इसमें दोष किसका है? सन् ४२ की कुरबानी ने संयुक्तप्रान्त ही नहीं, समस्त प्रान्तों की जनता ने वामपक्षी नेताओं को हृदय में स्थान दिया। बाबू जयप्रकाश-नारायण, डा० लोहिया, आचार्य नरेन्द्रदेव, अरुणा आसफअली, अच्युत पटवर्धन आदि के नाम सबकी जिह्वा पर हो गये। फिर जब प्रान्तीय कांग्रेस-कमेटियों का संगठन हुआ तब जनता ने एक स्वर से इन कमेटियों से पुराने नेताओं को पृथक् कर दिया और अपने त्यागी तपस्वियों को उस कैंटीली गद्दी पर बिठाया जहाँ से ठीक तौर पर जनता के विचारों का प्रतिनिधित्व किया जा सके। पुराने नेताओं को इसमें बुरा लगने की कोई बात नहीं। उनकी गद्दी जरूर छिन गई, पर इसका यह अर्थ नहीं कि उनके हाथ से जनता की सेवा करने के साधन छिन गये। पद-परिवर्तन होने से यदि वे रुष्ट होते हैं तो लोग कहेंगे कि उनका असली रूप जनता के सम्मुख आ गया और

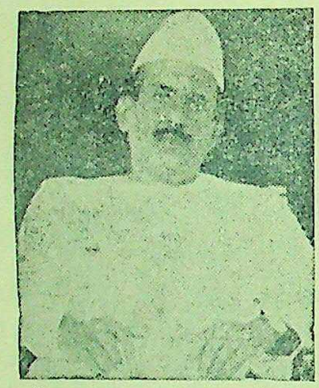

शिक्षा-सचिव माननीय सम्पूर्णानन्द।

ने किसान-

प्रधान मंत्री चुने गये। अब इन लोगों को हटाने के लिए क्रान्तिकारी पार्टी तैयार की गई है। लोहा लोहे से जरूर कटता है। पर इसका अभिप्राय क्या? जो लोग इस विचार-धारा के थे, उन्होंने धड़ाधड़ 'किसान-मजदूर-प्रजापार्टी' के पीछे 'कांग्रेस' का पिछल्ला लगा दिया। वस्तुतः जनता के सामने कहने लगे—सन् ४२ का कार्य हमने किया। हम सच्चे क्रान्तिकारी मनस्वी हैं। जयप्रकाश, लोहिया, अरुणा आदि दो दिन के छोकरे हैं, आदि। इसका परिणाम यह हुआ कि जनता आपके सिंहगर्जन से सावधान हो गई। आपने अपने २५ वर्षों की अर्जित शक्ति साम्राज्यशाही से मोर्चा लेने के बदले अपने कांग्रेस समाजवादियों से टक्कर लेने में लगा दी। यह संक्षेप में आपके चन्द हफ्तों की करतूत है।

पार्टी के भावी नेता

इस पार्टी के कर्णधार हैं श्री श्रीकृष्ण-दत्तजी पालीवाल। हम पालीवालजी के त्याग, बलिदान तथा कार्य-क्षमता की वन्दना करते हैं और उनके चरणों में नतमस्तक होते हैं। इसके साथ साथ हमें पालीवालजी की नई पार्टी, उसके मूल उद्देश्य एवं कार्यशैली की अनुपयोगिता की ओर ध्यान देते हुए तरस खाना पड़ता है कि पालीवालजी घोर गांधीवादी हैं, उन्हें संयम एवं सुव्यावहारिकता से ओतोप्रोत होना आवश्यक है। उन्हें तो वामपक्ष एवं दक्षिणपक्ष की संचित शक्ति के साथ साम्राज्यशाही से मोर्चा लेने को उद्यत रहना चाहिए। पर इस सम्बन्ध में हम श्री पालीवालजी से कह ही क्या सकते हैं।

हमारे दूसरे नेता हैं श्री बालकृष्ण शर्मा। आप किस विचार-धारा के हैं, कहना कठिन है। आप न तो वामपक्षी हैं, न दक्षिणपक्षी। फिर प्रश्न उठता है कि आप किस पक्ष के हैं, तो कहना पड़ता है कि आप 'ढुलमुल पक्ष' के हैं। कभी आप घोर क्रान्तिकारी, उग्रवादी बनकर उथल पुथल मचाने लगते हैं तो कभी गांधीवाद के बन्धन में लटकते हुए रचनात्मक कार्य-क्रम के प्रमुख अंग बन जाते हैं। सन् ४२ में आपने बम्बई अधिवेशन में 'भारत छोड़ो' से सम्बन्धित बातों का विरोध किया था,

प्रसिद्ध चित्रकार श्री [illegible] पालीवाल एम० एल० ए०

फिर सन् ४६ में जब मौलाना [illegible] गांधीजी की प्रतिमूर्ति बन बैठे।

पार्टी का कार्य-क्षेत्र

उक्त पार्टी का कार्य-क्षेत्र और [illegible] क्या है, यह समझ में नहीं आता। वाक्य में यह कहना पड़ता है कि पार्टी के पास न तो कोई कार्यक्रम है न कोई शैली है। हाँ, नाम अवश्य रख दिया गया है। इस पार्टी में [illegible] है कि नेताओं की छीटाकशी जरूर [illegible] सकती है। अन्त में यह कहना [illegible] कि इस पार्टी का जन्म अनुपयोगी, [illegible] हानिकर तथा किसान-मजदूरहितों के [illegible] अहितकर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणाम

लेखक, आचार्य साहनी

मनुष्य को जीवन में कभी कभी आशा की जगह निराशा का सामना करना पड़ता है। विमल के माता-पिता ने सोचा था कि विमल एम० ए० पास कर इँगलैंड जायगा परन्तु परमात्मा को यह मंजूर न था। उसको परीक्षा का परिणाम सुनने का अवसर ही न आया। यह विधि का विधान ही तो है। कहानी में इसी का सच्चा चित्रण किया गया है।

विमल सोच रहा है कि रति किस कालेज की छात्रा है।

पाँव पर धूल भी नहीं पड़ती। बूट पहन लिया। इतनी बड़ी पगड़ी छोड़कर हैट भी रख लिया। एक ही वर्ष में अनेक मित्र बन गये, जिनकी सोसाइटी में मिलने के लिए पैंट-कोट आदि भी अपनाने पड़े। प्रति रविवार किसी न किसी मित्र द्वारा घसीटा हुआ सिनेमा में भी जाने लगा। प्रायः अँगरेज़ी फिल्मों को ही देखने में रुचि बढ़ गई। शाम के साढ़े छः बज गये थे। खेल आरम्भ होने में आध घंटे की देर थी। टिकटघर अभी बन्द था। विमल वहाँ टिकटघर के पास टहलने लगा। पन्द्रह-बीस मिनट में ही भीड़ बढ़ गई। परन्तु, विमल पहले दरजे का टिकट ले ही आया।

"यह टिकट हमें दे दीजिए। आप तो बलवान् पुरुष हैं, दूसरा ले लेंगे।" यह एक कोमल तथा मधुर स्वर था जो विमल के कानों में होकर हृदय के अन्तस्तल तक पहुँच गया। इसी कारण वह कुछ बोल न सका, केवल सहम गया। उसने बिना कुछ सोचे-विचारे टिकट उस मधुर-भाषिणी के हाथ पर रख दिया। क्यों ?. यह वह स्वयं नहीं जानता। अब लपककर दूसरा टिकट लेने चला गया।

"अजी दो टिकट और भी लेते आइए। आपको कष्ट तो होगा।"

विमल के पास रुपये थे ही। उनसे तीन टिकटों के दाम लेने का तो उसके सामने प्रश्न ही नहीं था। एक युवक के मनरूपी पोत को बाँधने के लिए एक ही स्त्रीरूप जंजीर पर्याप्त होती है। यहाँ तो तीन थीं। फिर वह क्या करता। सिनेमा-हाल में वह पहुँचा ही था कि खेल आरम्भ हो गया। अँधेरा था। अँधेरे में सूझता तो कुछ था नहीं। जैसे-तैसे वह एक कुर्सी पर बैठ गया।

"रति ! आओ यहाँ बैठ जायँ। जब हाफ टाइम होगा तो कहीं और बैठ जायँगी।"

"यह टिकट हमें दे दो" आदि शब्दों को बार बार याद कर विमल उनकी मधुरता की परीक्षा कर रहा था। उसी मुख से निकले हुए इन शब्दों को सुनकर उसने अनुमान किया कि ये वही तीनों लड़कियाँ मेरे साथवाली कुर्सियों पर आ बैठी हैं। लोग चित्र को देखकर तालियाँ बजा रहे थे; पर विमल अपने चित्त के चित्रपट पर एक नया चित्र बन बनाकर स्वयं ही देख रहा था। इस मानसिक चित्रावली में कुछ विशेष आकर्षण आ गया था। आशा नहीं कि अब यह किसी के निकाले से भी निकले। सच्चा प्रेम तो यही है। पर वह यह नहीं जानता कि जिसके लिए वह तड़पता है क्या वह भी उसके लिए...। इससे उसको कुछ वास्ता नहीं। मछली नदी के किनारे पर पड़ी तड़पा करती है जल के लिए। पर जल उसकी ओर देखता भी नहीं, अपनी धुन में चला ही जाता है। मछली तड़पना नहीं छोड़ती, प्राण छोड़ देती है।

ज्यों-त्यों कर विश्राम के लिए छुट्टी हुई। विमल चुपचाप अपनी कुर्सी पर बैठा था। लड़कियों की परस्पर बातचीत से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वे किसी कालेज में पढ़ती हैं। मन में प्रश्न उठा, किस कालेज में पढ़ती हैं। पर कोई उत्तर न मिला।

खेल फिर आरम्भ हो गया। परन्तु विमल को कुछ आनन्द नहीं आ रहा था। न तो उसे खेल की कहानी का कुछ पता लगा और न उसने उसे कुछ समझने की ही चेष्टा की। खेल समाप्त हुआ। विमल अपने होस्टल को चला गया। उस रात उसे नींद नहीं आई। उसी दिन से उसके जीवन में भारी परिवर्तन हो गया। वह कुछ चिन्तित तथा उदास-सा रहने लगा। पुस्तकें उसे बोझ प्रतीत होने लगीं। टेनिस खेलने में उसे अब कोई उत्साह नहीं रहा। मित्रों के साथ भी हँसी-मजाक करने में उसकी रुचि नहीं। प्रतिदिन सायंकाल अकेला ही टहलने चला जाया करता था। उसे टहलते हुए ऐसा प्रतीत होता था मानो किसी वियुक्त वस्तु को खोज रहा है।

एक दिन सायंकाल उसने घूमते घूमते रति को एक कालेज के होस्टल में प्रवेश करते देखा। रति ने भी उसे पहचान लिया। दोनों एक दूसरे को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। दोनों के मुख खिल उठे। रति ने कुछ लजाते हुए नमस्ते कहा। विमल ने भी इसी प्रकार उत्तर दे दिया। आज इनमें इससे अधिक बातचीत नहीं हुई। परन्तु विमल के मुख से ऐसा प्रतीत होता था कि वह कुछ और कहना चाहता है। रति कालेज के होस्टल की चहारदीवारी के भीतर चली गई और विमल वापस लौट आया परन्तु आज वह प्रसन्न था। उसे कोई खोई वस्तु मिल गई थी।

दिसम्बर में नवमासिक परीक्षा हुई। [illegible] माता-पिता तथा प्रोफेसरों की [illegible] को बाध्य कर दिया [illegible]

विपरीत। विमल सब ओर से असफल रहा। इतने पर भी वह निराश नहीं हुआ। प्रिन्सिपल ने आड़े हाथों लिया परन्तु उस पर इसका कुछ प्रभाव न पड़ा।

विमल ने यह कालेज छोड़ दिया और उसी कालेज में भर्ती हो गया जहाँ रति पढ़ती थी। इस बात का उसके माता-पिता को पता नहीं लगा। उनको इसके चरित्र पर कभी कुछ शंका भी नहीं हुई। वे उसे वही विमल समझते थे जो पहले उनके पास रहता था। पर अब यह वह विमल नहीं था। कालेज में रति से उसकी खुलकर बातचीत होने लगी। होती भी क्यों न ! अब तो सह-पाठी थे। दुनिया की निगाहों से जिस सम्बन्ध को पहले छिपाने की चेष्टा होती थी उसकी अब कोई आवश्यकता न थी। उनको हिल-मिलकर पढ़ने, चलने-फिरने आदि में कोई रोक नहीं सकता था। यही तो सह-शिक्षा है। इधर रति भी प्रत्येक विषय में अनुत्तीर्ण थी। दोनों ने मिलकर पढ़ना आरम्भ किया। दोनों बगीचे में चले जाते और दिन भर पढ़ते रहते। अप्रैल की परीक्षा में दोनों पास हो गये। रति प्रैक्टिकल साइंस में विमल की अनुचित सहायता से पास हुई थी। इसका भेद केवल वही दोनों जानते थे। रति को इसके लिए विमल का अत्यन्त आभारी होना पड़ा।

रति ने एक बार विमल से कहा कि आप जब पहली बार सिनेमा-हाल में मुझसे मिले थे तब से अब तक आप निरन्तर मुझ पर उपकार कर रहे हैं। इन उपकारों से आपने मुझे खरीद लिया है।

विमल के मन में भी प्रतिदिन के रति के भावों से प्रेम की लता अधिक बढ़ चुकी थी। उसने रति के स्पष्ट भावों को जान लिया और स्पष्ट करते हुए कहा—"यदि सचमुच खरीदी गई हो तो प्रतिज्ञा करो कि तुम अब और किसी से खरीदी न जाओगी।" अपने बेचने का अधिकार तुम्हें नहीं। इस शरीर पर अधिकार तुम्हारे माता-पिता का है। वे भी इसे किसी धन के लोभ से, किसी के उपकार में अथवा अपने पुत्र के [illegible] में किसी को नहीं [illegible] का स्वरूप है। [illegible] लेकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विष्णु-स्वरूप जानकर, उसको सौंप देते हैं अपनी शक्ति के अनुसार अन्न-वस्त्र, भूषण आदि भी साथ देते हैं।

"अजी ठीक है। शरीर पर तो उनका अधिकार है। किन्तु मन पर तो मेरा ही अधिकार है। यदि वे शरीर किसी और को दे देंगे तो दें। मैं मन तो आपको दे ही चुकी हूँ। अब बार बार परिवर्तन तो हो ही नहीं सकता।"

इस प्रकार वे आपस में दृढ़ प्रतिज्ञाएँ कर रहे थे। पर भावी उनको देख-देखकर हँस रही थी। इन दोनों के माता-पिता को इस प्रतिज्ञा का कुछ भेद ज्ञात न था। वे अपनी ओर से दोनों के विवाहों का प्रबन्ध कर रहे थे।

विमल को तो अभी एम० ए० पास करना था। उसके माता-पिता का विचार था कि लड़का होनहार है, इससे विलायत भी अवश्य भेजा जाये। उनके अनुरोध से अथवा कुछ अपनी इच्छा से वह एम०ए० में भर्ती हो गया।

सहपाठी होने के नाते परस्पर मिलने-जुलने में तो कोई बाधा थी नहीं, पर अब कैसे मिला जाय? कई दिन हो गये थे, भेंट नहीं हुई थी। रति कैसे आ सकती है, आखिर है तो स्त्री। विमल ने किसी प्रकार उसके घर तक जाने का साहस किया। पुराने साथी हैं, चलकर सिनेमा देखेंगे यह बहाना करना होगा।

विमल अभी बड़े बाजार के कोने पर था, कि रति की गली में किसी घर से मधुर मधुर बजती हुई ढोलक तथा कन्याओं के गाने के शब्द सुनाई दिये। विमल ठिठककर वहीं रह गया। क्षण भर कुछ विचार किया और वहीं से लौट आया। सिनेमा का समय हो चुका था। वह उसको बुलाने में अपना समय गँवाना नहीं चाहता था। पर वह उसके घर के पास से ही क्यों वापस आ गया? क्या उसे गाने-बजाने से घृणा थी? और वे लड़कियाँ जो किसी के सुहाग के गीत गा रही थीं क्या वह इनको नहीं सुन सकता था? इस संभावना के सर्वथा विपरीत वह अपने होस्टल में लौट आया। खाट पर लेट गया। कुछ अर्द्ध-निद्रित अवस्था में हो गया। स्वप्न आने लगे। क्या देखता है—एक अस्सी वर्ष का वृद्ध, वर के उपयुक्त शृङ्गार से सजा हुआ, बरातियों के बीच में, घोड़ी पर चढ़ा है! पर बाजे नहीं बज रहे हैं। कारण पूछने पर प्रतीत हुआ, कि वधू ने माता-पिता की इस करतूत के विरोध में अपना प्राण त्याग दिया है। अतः वधूवालों ने सूचना भेज दी है कि बरात लौट जाय।

स्वप्न देखते ही विमल चौंक उठा। मन कुछ भय से त्रस्त-सा हो गया। खाना नहीं खाया। गरमी के दिन थे। भय, चिन्ता तथा अनशन से वात-पित्त प्रकुपित हो गये और ज्वर आने लगा। डाक्टर साहब ने हिलना-डोलना भी रोक दिया। दूध का फटा पानी देने लगे। दिन प्रति-दिन क्षीणता अधिक होने लगी। तार पाकर माता-पिता आ गये। पुत्र की दशा देखकर उनकी आँखों से आँसू गिरने लगे।

एक सप्ताह बाद होस्टल के पीछे से किसी की बरात जा रही थी। दुलहिन को फूलों से सजी हुई कार में ले ... परन्तु वह रो क्यों रही थी! ... किसी प्रकार अपनी खिड़की ... देखा। मोटर के अन्दर दो ... तारे उसकी आँखों में चुभते ... हुए। उसने देखा कि कार के ... रति का भाई रोता हुआ ... विमल की आँखें भीग गईं। ... ठेस को सहन न किया। ... अचेत हो गया और चारपाई ... पड़ा। माता-पिता उसके पास ही ...

अखबारवाला आया और खुशी ... रने लगा—विमल बाबू मिठाई ... आप परीक्षा में सर्वप्रथम हैं। ... दरवाजे पर पहुँचा, अवाक् खड़ा ...

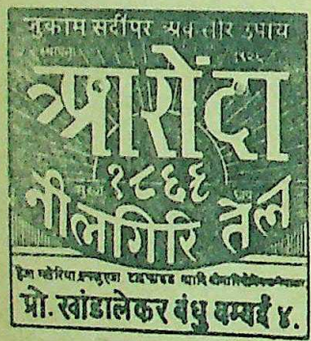
शुकाम सर्दीपर अब तीर उपाय
आरोंदा
१८६६
नीलगिरि तेल
प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

दमे से
मुक्त होना चाहें तो
ग्रिमौल...

चिर प्रतीक्षा के पश्चात्

गान्धी-अभिनन्दन-ग्रन्थ का संशोधित तथा संवर्धित संस्करण तैयार हो गया है किन्तु, सीमित संख्या में-

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ महात्मा गांधी की हीरक-जयन्ती की पुण्य स्मृति में प्रकाशित हुआ था, तथा इसके प्रकाशन के लाभ की आय गांधी जी को भेंट कर दी गई है।

प्रत्येक भाषा की कविता हिन्दी-लिपि में छापी गई है, तथा उसका अनुवाद भी दे दिया गया है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी की ओर से महात्मा गांधीजी के प्रति यह एक ऐतिहासिक साहित्यिक-श्रद्धांजलि है।

दूसरा संस्करण बड़े आकार-प्रकार ... प्रकाशित हो गया है, और ... पृष्ठ में एक ही रचना देने से ग्रन्थ ... सौन्दर्य निखर जाना स्वाभाविक है।

इस बात का पूर्ण प्रयत्न ... गया है, कि प्रकाशन की दृष्टि ... संस्करण सर्वाङ्ग सुन्दर हो।

ग्रन्थ की भूमिका सर्वपल्ली सर ... कृष्णन ने लिखी है। तथा इसके ... श्रीमान् सेठ घनश्यामदास जी बिड़ला ...

गान्धी जी की सम्मति

जो काव्य मेरी स्तुति में लिखे गए हैं, उनके बारे में क्या कहूँ, इतना कह सकता हूँ सही, काफ़ी परिश्रम किया गया है और कोई शुभ परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता।

डा० अमरनाथ झा जी के शब्दों में 'किसी भी भाषा में इससे पहले इस प्रकार का कोई भी ग्रन्थ नहीं प्रकाशित हुआ जिसमें इतनी भाषाओं के इतने कवियों की इतनी उत्कृष्ट कविताएँ भारतवर्ष के सबसे महान् पुरुष के सम्बन्ध में लिखी गई हैं।

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ प्रत्येक पुस्तकालय में सहज ही अग्रिम स्थान प्राप्त करेगा, और पाठक इस ग्रन्थ को ... पारायण करने में सुख प्राप्त करेंगे।

इस संस्करण का लाभ हरिजन-कोष में दिया जायेगा।

मूल्य साढ़े छः रुपये

प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय नारी-जीवन में आवश्यक सुधार !

नारियों को अपने अधिकार के लिए लड़ना पड़ेगा

लेखिका, श्री कमलादेवी

श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय।

मस्तिष्क में यह धारणा उत्पन्न कर दी गई कि पति ही उसका परमेश्वर है और उसके साथ संसार-सागर में अपनी नाव खे ले जाना ही श्रेष्ठ नारी का पुनीत कर्तव्य है। सहस्रों प्रातःस्मरणीया देवियों ने इसे स्वीकार कर अपनी निरीह दशा का ख्याल ही जी से उतार दिया। कालान्तर में स्त्रियों ने पति के देहान्त पर उसके शव के साथ चिता पर भस्म हो जाने अथवा विरक्त तपस्विनी की तरह जीवन बिता लेने को ही धर्म माना। अपने इसी विश्वास को लेकर अगणित नारियाँ पति

अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती हंसा मेहता।

के शव के साथ सती हो गईं। इसके विपरीत पुरुष अपनी पत्नी के देहान्त के बाद ही नहीं, उसके जीवित रहते अनेक विवाह कर सकता था और करता रहा। परन्तु स्त्रियों के लिए इसकी मनाही थी।

जब तक बलिदान की स्वेच्छा से भावना हो तब तक कोई भी त्याग या तपस्या अपना मूल्य रखती है। [illegible] भय, आशंका और लोकाप[illegible] विरुद्ध कोई भी [illegible] दशा में आ[illegible] समाज के अग्रग[illegible] जाता है। वर्णाश्रम व्यवस्था के अनुसार भारत में धर्म की बागडोर ब्राह्मणों के हाथ में थी। विधवाओं की ओर सहानुभूति न रखते हुए अति कठोर हृदय से नये-नये विधान बनते चले गये और एक समय ऐसा आ गया, जब ये विधान एक अत्याचार का रूप धारण कर बैठे।

ब्राह्मणधर्म के पुनरुत्थान के पश्चात् तो स्त्रियों की दशा और बिगाड़ दी गई। आद्य शङ्कराचार्य के ब्रह्म और माया के सिद्धान्तों के विवेचनकार स्पष्ट कहने लगे कि स्त्री माया है; वह पुरुष को संसाररूपी मायाजाल में फँसाती है। अतः पुरुष को स्त्री के मोह से, उसके बन्धन से मुक्त रहना चाहिए। 'कामिनी और काञ्चन माया के विकट पाश हैं' इत्यादि कह-सुनकर सन्तकवियों ने समाज को कोई लाभ नहीं पहुँचाया। उनसे देश का कल्याण भी न हो सका, क्योंकि उनके प्रभाव में आकर पुरुषवर्ग स्त्री-जाति के प्रति सख्तियाँ करता चला गया और उनकी उन्नति में रोड़े अटकाकर एक क्रीत दासी की स्थिति में स्त्री को रखने की बहुसंख्यक पुरुषों ने कोशिशें कीं। रामायण के प्रातः-स्मरणीय कवि महात्मा तुलसीदास ने पुरुषों को इस मामले में अच्छी सलाह नहीं दी है। देश, काल और समाज का ध्यान रखकर उन्होंने सलाह दी होती तो स्त्री-जगत् का बहुत कल्याण हुआ होता।

स्त्रियों की दशा सुधारने की इच्छा रखनेवाले भी कभी-कभी उलटी बातें करने लगते हैं, जिनका जिक्र करना अनुचित न होगा। स्त्रियों को पुरुषों के बराबर शिक्षा और अधिकार देने के प्रश्न पर प्रायः ऐसे बहुत से लोगों को यह कहते सुना जाता है कि पुरुष स्वभाव से शक्तिशाली और साहसी होता है और मन चंचल तथा अस्थिर होता है; अपने सबल शरीर और तेज दिमाग से वह बहुत कुछ ऐसे कार्य कर सकता है जो प्रकृति से कोमलांगी और कमजोर नारी नहीं कर सकती। अतएव पुरुष और स्त्री के कार्यक्षेत्र अलग-अलग होने चाहिए। शिशुसंगोपन, दाम्पत्य-जीवन और व्यवस्था—स्त्री के क्षेत्र मान लिये गये हैं। बाहर की दुनिया पुरुष के स्वच्छन्द विचरण और संघर्ष के लिए छोड़ दी गई है। अपने रोजगार-धन्धे से जो कुछ कमाकर पुरुष लावे उसका उपयोग करना स्त्री का कार्य है; वह घरेलू जीवन को सुखमय रखे—यह स्त्री से पुरुष की माँग है। किन्तु निष्पक्ष विचार करने पर यह बात छिपी नहीं रहती कि इस तरह के कार्य-विभाजन में एक स्वार्थ की भावना होती है। यह कार्यों का वर्गीकरण पुरुष ने किया है और उसका पालन करते जाने [illegible] को बाध्य करना [illegible]

उस प्रकार का जीवन बिताने का उसे हक होना चाहिए। इस दिशा में कुछ देशों में प्रयत्न किये गये हैं किन्तु उनमें एक मर्यादा का अभाव देखने में आया है अतः वे नये सुधार पूर्ण कदम, जो औषधि के रूप में प्रयुक्त हुए, आज विष का-सा असर दिखा रहे हैं। भारत की परम्परा की रक्षा करते हुए बहुत ही नपा-तुला कदम उठाये जाने की मेरी माँग है।

चूड़ीवाली

चूड़ीवाली की 'चूड़ियाँ, चूड़ियाँ' ध्वनि गूँज उठती है और उसकी रंगीन चीजों के आस-पास स्त्रियों का एक समूह एकत्र हो जाता है। वे उत्सुकता से अपनी खरीद करती हैं तथा अन्य और चीजों को खरीदने के आनन्द-विनोद में आगे बढ़ जाती हैं।

हमाम को वे सर्वत्र देखती हैं। दैनिक स्नान में उसकी ताजगी और सुगन्धि गरीब और अमीर के मन में जाग्रत हो जाती है और इस प्रकार एक और वस्तु खरीद ली जाती है।

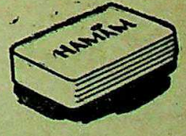

हमाम

भारत का प्रियतम साबुन

टाम्को सेल्स डिपार्ट-

A TATA PRODUCT

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

तुलसी*

लेखक, श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार, सम्पादक 'कल्याण'

श्रीयुत रामेश वेदी के तुलसी पर जो तीन-चार लेख 'देशदूत' में छपे थे वे प्रस्तुत पुस्तक के ही अंश थे। ये लेख कितने लोकप्रिय हुए और उपयोगी समझे गये, इसका अनुमान इस तथ्य से किया जा सकता है कि इनको हिन्दी के अनेक दैनिकों, साप्ताहिकों और मासिकों ने ससम्मान उद्धृत किया है। हम वेदीजी के इस नये प्रकाशन 'तुलसी' का स्वागत करते हैं। प्रत्येक घर और पुस्तकालय में तुलसी के इस ज्ञानकोष की एक प्रति रहनी चाहिए।

भगवान् का सृष्टिवैचित्र्य कुछ ऐसा है कि प्रत्येक वस्तु के तीन रूप हो जाते हैं—(१) भौतिक, (२) आधिदैविक और (३) आध्यात्मिक। जगत् के क्षुद्र से क्षुद्र पदार्थ में खोज करने पर तीनों रूपों की अनुभूति होती है। आर्ष ऋषियों द्वारा हमें जिस विषय के जो भी विवरण प्राप्त होते हैं, वे ऐसी प्रतिभामयी भाषा में हैं कि एक ही विवेचन से तीनों रूपों के लिए पर्याप्त समर्थन मिल जाता है। उन्हें आधार मानकर मनीषीवृन्द अपनी अपनी रुचि के अनुरूप क्षेत्र चुन लेते हैं, एवं गवेषणा प्रारम्भ करते हैं। कुछ विद्वान् पदार्थों को भौतिक क्षेत्र में रखकर भौतिक दृष्टिकोण से उनके सम्बन्ध में खोज करते हैं तथा परिश्रम के अनुपात से पदार्थ का भौतिक रूप उनके सामने प्रकट होने लगता है। कुछ लोग पदार्थ को आधिदैविक दृष्टिकोण से परखते हैं, उनके सामने आधिदैविक रूप व्यक्त होने लगता है। इसी तरह कोई महानुभाव खोज के द्वारा पदार्थ के आध्यात्मिक रूप का अनुभव कर लेते हैं। कुछ ऐसे पुरुष भी होते हैं जिनके सामने क्रमशः तीनों ही रूप आ जाते हैं। अपनी अपनी अनुभूति के अनुरूप ही वे मनीषीगण साहित्य की रचना भी करते हैं। इन विविध दृष्टियों से रचित सभी साहित्य आदर के योग्य है और बड़े काम का है।

पुस्तक के रचयिता श्री रामेश वेदी।

प्रस्तुत 'तुलसी' पुस्तक में सम्मान्य विद्वान् श्री रामेश वेदी ने 'तुलसी' नामक पौधे के सम्बन्ध में खोज की है। यह पुस्तक वेदीजी के द्वारा ग्रथित 'भारतीय द्रव्य-गुण ग्रन्थमाला' का एक पुष्प है। इस माला के 'त्रिफला', 'सोंठ' और 'अक्षीर' नामक पुष्प प्रकाशित हो चुके हैं। तुलसी का स्पष्ट व्यक्त सौरभ वेदीजी की खोज में आदि से अन्त तक भरा है; अथवा यों कहें, तुलसी पौधे के भौतिक रूप का अत्यन्त सुन्दर वैज्ञानिक विवेचन पाठकों को इस पुस्तक में मिलेगा। घर-घर में प्राप्त होनेवाले इस पौधे के सम्बन्ध में बिखरे हुए साहित्य को एकत्र कर वेदीजी ने नये ढंग से अपनी सरल सुन्दर सुबोध भाषा में रक्खा है।

तुलसी की कितनी जातियाँ हैं, किस देश में इसकी कौन-सी जाति किस नाम से व्यवहृत होती है, पुराणों में तुलसी के सम्बन्ध में क्या विवरण मिलता है, तुलसी का रासायनिक संघटन क्या है, इसके क्या-क्या और कैसे-कैसे उपयोग हैं, विभिन्न रोगों में किस तरह तुलसी से सफल चिकित्सा की जा सकती है, सर्प-विष भी इससे दूर होता है, होम्योपैथी चिकित्सा में भी तुलसी का प्रयोग होने लगा है, इन सबका सुन्दर वर्णन पुस्तक में किया गया है। इनके अतिरिक्त तुलसी की जाति की ही अन्य वनस्पतियों जैसे बबुर्क तुलसी, बन तुलसी, रामतुलसी आदि का भी प्रातिस्थान तथा रोगों पर प्रयोग-विधि आदि के सहित अलग-अलग विवेचन किया गया है जिससे इसकी उपादेयता और भी बढ़ गई है।

आज जब भारतवर्ष के अधिकांश परिवारों में रोगों की तथा रोगियों की संख्या दिन-प्रति-दिन बढ़ती जा रही है एवं डाक्टर-वैद्यों की चिकित्सा अत्यन्त महँगी हो गई है—इतनी महँगी कि एक गरीब ग्रामीण मजदूर तो निपुण डाक्टर-वैद्य से चिकित्सा कराने की बात सोच ही नहीं सकता—ऐसे समय सर्वत्र सुलभ, बिना मूल्य प्राप्त होनेवाली तुलसी के द्वारा अनेक रोगों की चिकित्सा बतानेवाली इस पुस्तक का प्रकाशन सर्वथा स्वागत के योग्य है। भारतीय असंख्य नर-नारियों के हृदय श्रद्धा से पूजित तुलसी के पाठकों का ज्ञान तो बढ़ेगा ही, पढ़ने से प्रभावित होकर उनकी प्रवृत्ति भी बढ़ सकती है जो ऐहिक पारलौकिक सभी दृष्टियों से है। तुलसी के आधिदैविक रूप रखनेवाली—पापनाशिनी, प्रदायिनी आदि—शक्तियों में करनेवाले प्राणियों में भी सिद्ध औषधि की दृष्टि से ही की प्रवृत्ति बढ़ती है तो उसमें मंगल ही होगा। क्योंकि एक वस्तुगत स्वाभाविक वह श्रद्धा या विश्वास की रखती। अग्नि को दाहिका-विचार नहीं करती कि वाले किसी अबोध शिशु में पर विश्वास है या नहीं। भी भाव से छू जाने पर जला ही है। इसी प्रकार तुलसी में शिष्टानुमोदित, सन्तों के द्वारा स्वभावगत पापनाशिनी आदि तो वे भी काम करेंगी ही। के मुख में सर्वथा औषधि की दिया गया तुलसी-रस अपने गुण से उस प्राणी को वेगा ही। इस दृष्टि से भी हमें विशेष महत्त्व की प्रतीत हो

श्री रामेश वेदीजी ने लिखकर वास्तव में की बड़ी सहायता की है। भी पुस्तक का मूल्य समुचित आदर करेंगी

* तुलसी, लेखक श्री रामेश वेदी आयुर्वेदालङ्कार, बढ़िया छपाई, सचित्र, सजिल्द, सुन्दर गेट-अप, मूल्य दो रुपये। मिलने का पता—श्री रामेश वेदी, हिमालय हर्बल इंस्टिट्यूट, बादामी बाग, लाहौर।

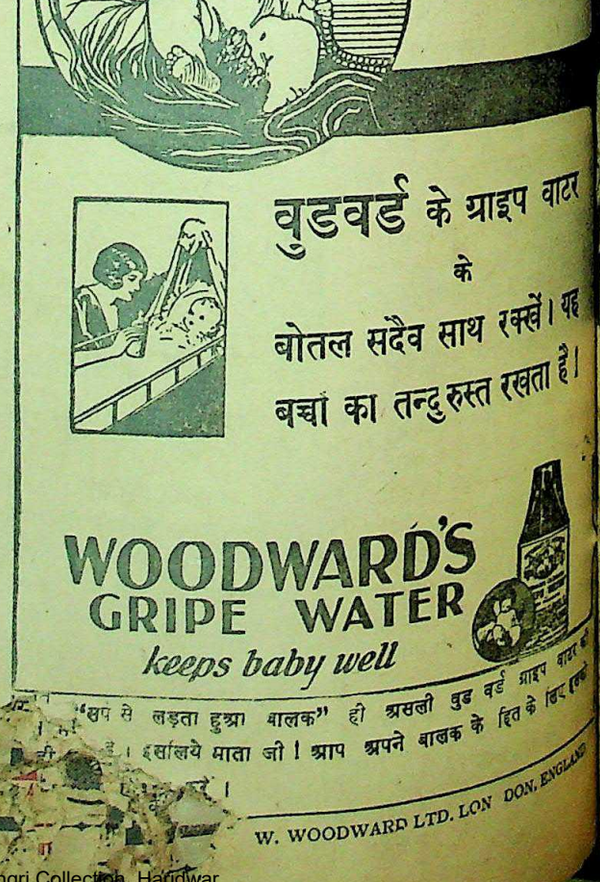

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंगमंच

फिल्म-नर्तकी अजूरी

फिल्मों में नृत्यकला का सम्मान क्यों नहीं?

लेखक श्री शैलेन्द्रकुमार पाठक

विख्यात अभिनेत्री लीला चिटनिस

फिल्म-संसार में लीला देसाई ... नृत्य-कला की जीती-... कही जाती हैं, परन्तु ... सीमा से कभी आगे नहीं ... जितना दोष फिल्म-... को दिया जा सकता ... उससे कम नहीं। यदि ... आकर्षण है, तब प्रगति ... की जा सकती है। ... तो अपने काम से काम ... पूरा हो जाय, फिर उसके ... कला और कलाकार। ... नहीं। यही कारण है ... अगाध ज्ञान होने के बाद ... और साधना बोस आगे ... अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की ... है, यहाँ भी उनका उतना ... जसकी वे अधि-...

... अजूरी का सम्मान भारतीय ... अवश्य हुआ है, परन्तु वह ... है। अजूरी जाति की ... अजूरी के पिता कोचीन में ... थे। वहीं २१ अप्रैल सन् ... जन्म हुआ। क्वींस मेरी ... सम्मान के साथ अजूरी ने ... डिग्री ली।

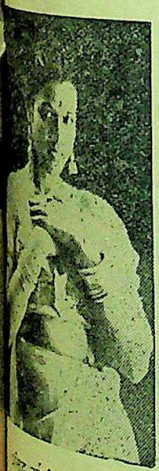

... नर्तकी अजूरी।

... अजूरी को बचपन से ... नृत्य-दिग्दर्शक अशिक-... में आने पर अजूरी की ... हुआ और प्रौढ़ता ... अजूरी का फिल्मी जीवन सन् ... होता है। उस समय ... की अच्छी धाक ... फिल्म-क्षेत्र में लाने का ... है।

... प्रथम चित्र 'नर्स' है। ... बम्बई के ताजमहल ... किया। सबसे प्रथम

दिग्दर्शक जगीरदार का ध्यान अजूरी की ओर आकर्षित हुआ। उन्होंने 'सिंहासन' में अजूरी को नृत्य के लिए निमन्त्रित किया। इस चित्र में अजूरी को आशातीत सफलता मिली और 'सिंहासन' की सफलता का अधिकांश श्रेय अजूरी के नृत्य को है।

'सिंहासन' की सफलता के साथ ही फिल्म-संसार में अजूरी की माँग हुई। अपने १५ वर्ष के फिल्मी जीवन में अजूरी ने लगभग १५० हिन्दी-चित्रों में नृत्य किया है। फिल्म-संसार के अलावा देश की विभिन्न संस्थाओं एवं यूनीवर्सिटियों द्वारा भी अजूरी को पुरस्कारस्वरूप लगभग १५ कप प्राप्त हो चुके हैं। 'कांग्रेस कप' भी पुरस्कारस्वरूप अजूरी को मिल चुका है। अजूरी को इतने से संतोष नहीं है। उसका कथन है कि भारतीय फिल्म-निर्माताओं ने अभी तक उसकी कला को पूर्णरूप से पहचान नहीं पाया है।

अजूरी का वास्तविक नाम ऐनेत गुई जेलर है। अजूरी तो उसका फिल्मी नाम है। अजूरी का शारीरिक गठन आकर्षक है। उसका वजन १०० पौंड के लगभग है, और लम्बाई लगभग ५ फुट के। बोली मधुर है। अजूरी का शादी करने का विचार नहीं है। इसका सबसे बड़ा कारण यही है कि विवाह उसके विचारों में एक ऐसा बन्धन है जिसमें बँध जाने के पश्चात् फिर अपनी इच्छा और अपने विचारों का कोई मूल्य नहीं रह जाता।

अजूरी के नृत्यों की फिल्मों का विदेशों में बहुत अधिक सम्मान हुआ है। इँगलैंड के मि० कोरडा ने अपने चित्रों में काम करने के लिए अजूरी को बुलाया परन्तु उसने जाना स्वीकार नहीं किया। फ्रान्स तथा अमेरिका के निर्माताओं ने भी अजूरी को अपने यहाँ फिल्मों में कार्य करने के लिए अनेक प्रलोभन दिये किन्तु अजूरी विदेशी प्रस्तावों को सदैव ठुकराती रही है। उसने किसी भी कीमत पर कभी विदेशी फिल्मों में कार्य करना स्वीकार नहीं किया।

नृत्य उसकी आत्मा है। अजूरी का कथन है कि नृत्य करते समय मैं अपने को भूल जाती हूँ। कला की वास्तविकता वही है जहाँ कलाकार तन्मय हो जाय—उसे अपनी सुधि ही न रहे।

Before going out

अपने चमड़े पर काश्मीर स्नो लगाइये और जब तक उसका अंश दीख न पड़े तब तक उसको हथेली से घिसते रहिए। काश्मीर स्नो चिलकती धूप, हवा अथवा बरसात में आपके चमड़े को सुरक्षित रखता है। इतना ही नहीं चेहरों में नया लावण्य और कोमलता देता है। प्रत्येक प्रकार के चमड़े की सुन्दरता के लिये यह स्नो सर्वोत्तम है।

Kashmir SNOW

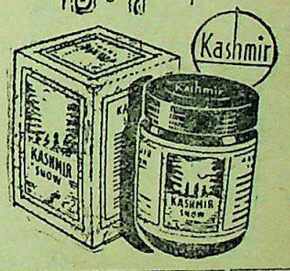

Mfd. by: THE NATIONAL TRADING CO.
MANGALDAS RD. BOMBAY 2.

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

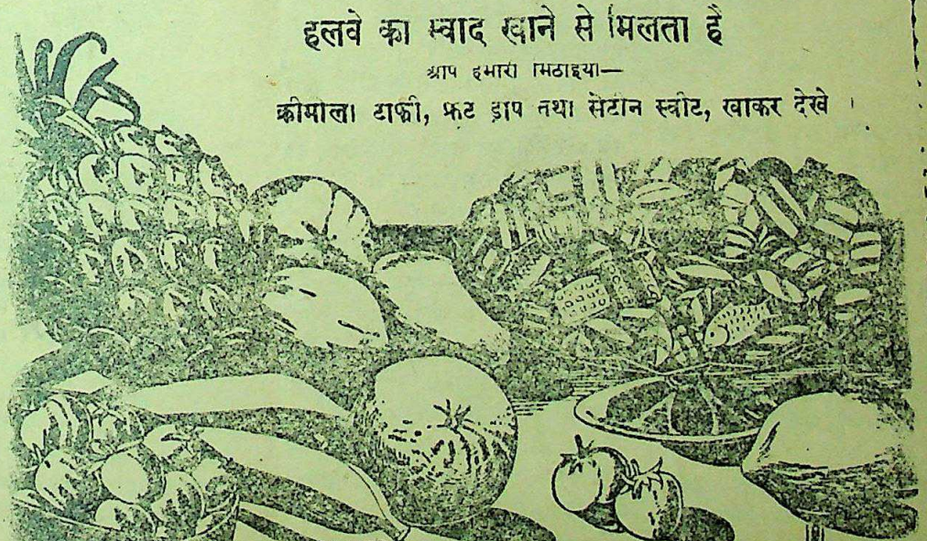

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—
... रिसर्च हाउस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिट्ठी-पत्री

श्रीमान् सम्पादक जी,

गरीबों की निःस्वार्थ सेवा और जनता-जनार्दन के कल्याण के लिये, संसार के प्रायः सभी देशों में कुछ लोक-सेवी संस्थाओं की आवश्यकता होती है, जो उन देशों के धनी-मानी व्यक्तियों की उदारता का आश्रय पाकर स्थापित होती है और उनकी हार्दिकता एवं सेवा-भाव के सहारे पनपती हैं। आज से लगभग ५० वर्ष पूर्व, तीर्थ-राज हरिद्वार के निकटवर्ती कनखल क्षेत्र में, एक ऐसी ही संस्था का जन्म "राम-कृष्ण मिशन सेवाश्रम" के नाम से हुआ था। तब से यह संस्था निरन्तर सेवा-कार्य में संलग्न रही है और विगत महायुद्ध के लम्बे ६ वर्षों में अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए भी, अपने कर्तव्य से विमुख नहीं हुई। सहारनपुर की गरीब जनता की चिकित्सा सम्बन्धी निःशुल्क सहायता करके, उसके लिये शिक्षा की समुचित सुविधाएँ उपलब्ध करके और प्रायः समस्त भारत से आनेवाले तीर्थार्थियों की सेवा-सहायता द्वारा उसे अपने प्रति देशवासियों की पूर्ण सहानुभूति प्राप्त करने में सफलता मिली है। सेवाश्रम द्वारा १९४५ में किये गये जन-सेवा-कार्य की रिपोर्ट हाल ही में प्रकाशित हुई है, जिसके मुख्य अंशों का संक्षिप्त उल्लेख नीचे किया जा रहा है।

सेवाश्रम से सम्बद्ध अस्पताल में ५० रोगियों को रखने की स्थायी व्यवस्था है और बाहरी मरीजों के लिये भी एक दवा-खाना है। १९४५ में इस अस्पताल में ३३,८४३ रोगियों का इलाज किया गया। अस्पताल के भीतरी तथा बाहरी मरीजों की दैनिक संख्या लगभग १२० के रही। रोगियों में भारत के प्रायः सभी प्रान्तों के लोग थे। अस्पताल में रोगियों का मुफ्त इलाज किया जाता है और उन्हें दवा तथा भोजन भी मुफ्त मिलता है। अस्पताल की देखरेख सुयोग्य डाक्टरों के हाथ में है और रोगियों की शुश्रूषा आदि का कार्य मिशन की संन्यासिनियाँ करती हैं, जिन्होंने पीड़ित मानवता की सेवा के लिये अपना जीवन अर्पित कर दिया है। रोगियों की सुविधा के लिये, अस्पताल में ही एक रोगी-पुस्तकालय की भी व्यवस्था है।

हरिजन वयस्कों तथा युवकों के लिये आश्रम की ओर से एक रात्रि-पाठशाला की भी व्यवस्था है। १९४५ के अन्त में पाठशाला में शिक्षार्थियों की संख्या ४१ थी। पाठशाला के लिये उपयुक्त जमीन और इमारत की जरूरत है, जिनके बिना उसका कार्य सुचारु रूप से नहीं चलाया जा सकता।

सेवाश्रम में एक अच्छा खासा पुस्तकालय भी है, जिससे सर्व-साधारण लाभ उठा सकते हैं।

अस्पताल तथा पाठशाला की उन्नति के लिये कई बातों की भारी आवश्यकता है, किन्तु पैसे की कमी के कारण वे पूरी नहीं की जा सकतीं। अस्पताल में गन्दे पानी के निकास के लिये [illegible] नालियाँ बनवाने तथा रोगियों [illegible] के लिये, ध[illegible] के लिये [illegible] रुपये की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त अस्पताल का दैनिक खर्च भी कई गुना बढ़ गया है, क्योंकि खाद्य-पदार्थ, वस्त्र आदि काफी महँगे हो गये हैं और रोगियों को ये मुफ्त दिये जाते हैं।

सेवाश्रम के व्यवस्थापकों का विनम्र अनुरोध है कि देश के धनी-मानी एवं उदार सज्जन, आर्थिक सहायता प्रदान करके, उपर्युक्त सेवाओं में हाथ बटायें और [illegible] अपना जनोप[illegible]

(पेज ७ का शेष)

यह चौड़ी खाई कैसे पटेगी

भी नहीं कि वह और उसका परिवार बखूबी अपना भरण-पोषण कर सके।

इन सब तथ्यों को ये गरीब और श्रमिक कदाचित् भली भाँति समझ चुके हैं। इसी का यह परिणाम है कि यह वर्ग जीवन के प्रति अप्रत्याशित रूप से उदासीन हो उठा है। यही नहीं, वह ऐसे प्रत्येक कार्य को सन्देह की दृष्टि से भी देखने लगा है, जो धनिकवर्ग की ओर से उनकी सहानुभूति में किया जाता है। कहीं एक-आध औषधालय की स्थापना और कहीं किसी उपहारगृह की व्यवस्था कर देने से देश के समस्त श्रमिकवर्ग के लिए संतोष-प्रद या संकटमोचन नहीं कहा जा सकता। ऐसे प्रयत्नों से सीमित दायरे के गरीबों का ही हितचिन्तक हो सकता है।

समस्त श्रमिकवर्ग अथवा गरीबों का कल्याण तभी सम्भव है, जब पैसा कमानेवाले अर्जित धन को पुनः समान रूप से इन श्रमिकों में विभाजित करने की दिशा में क्रियात्मक कदम उदारता से बढ़ावें। यह तभी हो सकता है जब धनिकों में श्रमिक-मात्र के प्रति मानवोचित भावनाएँ लहराती हों, छोटे-बड़े का भेद-भाव उत्पन्न करनेवाली घृणास्पद बातें अपना कोई अस्तित्व न रखती हों और बन्धुत्व की स्तुत्य भावनाएँ उनमें निरन्तर प्रतिबिम्बित हों।

अपार धन एकत्र करने और बैंक की पूँजी को उत्तरोत्तर बढ़ाने की चिन्ता में रात-दिन लगे रहनेवाले धनवान् एक-आध सार्वजनिक इमारत बनवाकर ही गरीबों के प्रति यदि अपनी उदारता का परिचय देना पर्याप्त समझते हैं, तो यह उनकी बहुत बड़ी भूल है। ऐसे काम तो उनकी पूँजीवादी मनोवृत्ति का विज्ञापन ही अधिक करते हैं। इससे न तो उनके वैयक्तिक ऐश-आराम में ही कोई कमी आती है, न उनकी अपरिमित पूँजी का कोई बड़ा-सा भाग ही खर्च होता है। ऐसा करके वे अपने कल्पित आत्म-सन्तोष से स्वयं भले ही धोखा खाते रहें, किन्तु दूसरों को धोखा नहीं दे सकते।

जब तक प्रत्येक देशवासी यह न समझने लगे कि गरीबी एक असह्य रोग है—ऐसा रोग जिसे समूल नष्ट करना [illegible] हमारा एकमात्र कर्तव्य है और किसी व्यक्ति की आय इतनी कम न हो कि वह शान-शौकत के साथ अपना जीवन व्यतीत कर सके और सपरिवार अपना भरण-पोषण कर सके, तब तक इस भयावह छाया से मानवता मुक्त नहीं हो सकती।

जिस देश में धनवानों को समस्त सुविधाएँ दी जाती हों—महज इसलिए कि पैसे के बल पर प्रतिष्ठा और वैभव खरीदा जा सकता है, वहाँ गरीबों और अमीरों में समानता की आशा करना आकाश-कुसुम ही होगा। ऐसे देश में गरीब सदा उपेक्षित रहेगा—अपने जीवन से उदासीन और अभिशप्त। इस अन्याय का प्रतिकार भी ये गरीब न कर सकेंगे।

सभ्यता का पहला लक्षण यह होना चाहिए कि गरीब और अमीर समान रूप से जीवन की सुविधाएँ उपलब्ध कर सकें। एक ओर गगन-चुम्बी अट्टालिकाओं पर धनवानों के बच्चे स्वादिष्ठ व्यंजनों को भी सीधी तरह न खाते हों और उनके कुत्ते भी सामने रखे दूध से भरे कटोरे को पेट भरा रहने के कारण उलट देते हों; परन्तु दूसरी ओर विशाल सड़कों की पटरियों पर गरीबों के बच्चे दाने-दाने के लिए मुँहताज रहते हों अथवा किसी दीन-हीन किसान की झोपड़ी में रोटी के एक टुकड़े के लिए बच्चों में पारस्परिक छीना-झपटी देखी जाती हो, वहाँ की सभ्यता को वास्तविक सभ्यता नहीं कहा जा सकता।

उद्योगपतियों में जब तक यह भावना नहीं आ जाती कि श्रमिकों के श्रम से होनेवाली आय का श्रमिकों में ही समान रूप से वितरण किया जाना चाहिए तब तक गरीबी और अमीरी की चौड़ी खाई सँकरी नहीं हो सकती। देखा यही जाता है कि उद्योगपतियों को जो लाभ होता है, उसे वे अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति समझते हैं—ऐसी जिसमें हिस्सा बटाने का इन श्रमिकों को उनकी समझ में कोई अधिकार नहीं। वास्तव में यह उद्योगपतियों का लालच है। जिन श्रमिकों के श्रम से उनका धन बढ़ता है, उनके भरण-पोषण और [illegible] धाओं का पूरा-पूरा खयाल उन्हें [illegible] चाहिए। इसी तरह किसी रि[illegible] महाराजा को अपनी प्रजा के [illegible] के जीवन को सम्पूर्ण अर्थों में [illegible] का प्रयत्न करना चाहिए। [illegible] आय का बहुत बड़ा हिस्सा [illegible] के सुखों के लिए खर्च नहीं [illegible] यह सम्भव नहीं। मानवता का [illegible] हम इतने स्वार्थी न हों कि [illegible] रोटी-रोटी चिल्लाते रहें, [illegible] अपने तन की लाज भी न ढक [illegible] हम अजीर्ण का उपचार करते [illegible] कई पोशाकें बदलते रहें और [illegible] पर इतराते रहें।

यह सब तभी सम्भव होगा, [illegible] मानव को समान रूप से जीवन [illegible] धाएँ दी जायँगी। यह तभी हो [illegible] जब धन का विषम वितरण न [illegible]

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की [illegible]

मास्टर साहब—कवीन्द्र रवीन्द्र[illegible] एक उत्कृष्ट कहानी का हिन्दी-[illegible] मूल्य ।-) पाँच आने।

गल्प-गुच्छ—(चार भाग) [illegible] की एक एक कहानी एक एक [illegible] सजीव चित्र है। आश्चर्य, [illegible] हास्य आदि भावों का ऐसा सुन्दर [illegible] कहीं न मिलेगा। मूल्य पहले [illegible] १) एक रुपया और शेष प्रत्येक [illegible] का १।-) एक रुपया पाँच आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रया[illegible]

डालडा आपके दिलूपसन्द भाजी को स्वादि[illegible] करता है—और आप को स्फूर्ति भी देता है!

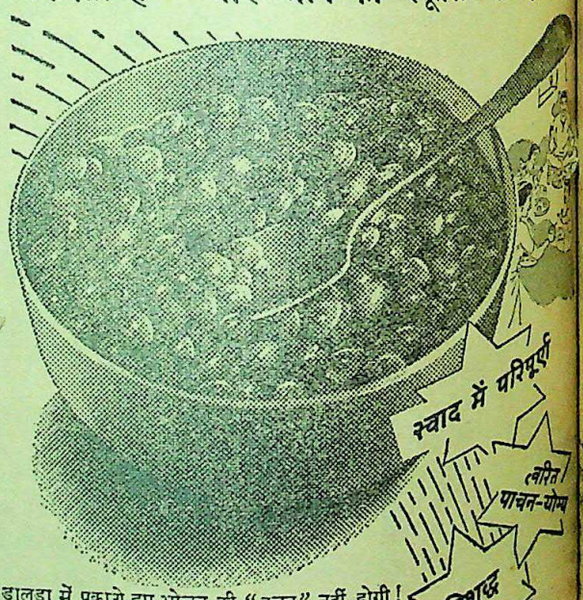

डालडा में पकाये हुए भोजन की "बचत" नहीं होगी! त्वरित् पाचन-योग्य और विटैमिन्-युक्त डालडा सादे भोजन को भी अपने मधुर स्वाद से परिपूर्ण करता है—और दैनिक आहार की एकरूपता से आप को मुक्त करता है। डालडा से पकावो और प्रसिद्ध पौष्टिक गुण-संपन्न इस विशुद्ध रसोई-साधन-द्वारा आप का आहार सुधारो। और याद रखो, डालडा साधारण रसोई-साधन नहीं—बल्कि वह परिवारों को तन्दुरुस्त रखता है और उन को अधिक स्फूर्ति देता है।

★ डालडा-पाकशास्त्र पुस्तक (केवल अंग्रेजी) की सहायता से अपने भोजन का प्रबन्ध कीजिये। इस में [illegible]धिक स्वादिष्ट भारतीय आहार के प्रकार निजी [illegible] के कारण चुने हुए समाविष्ट हैं। आप के [illegible] B411 P.O. Box No. 353, [illegible] के पो० स्टाम्पस् भेजियेगा।

[illegible]E HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING CO., LTD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...की तरंग

...है कि पनामा और स्वेज ...लिए खोल दी जायँ। आगे ...कि इंगलैंड की गद्दी पर जो ...

* *

...के गवर्नर पंडित जवाहर- ...आये हैं कि सीमाप्रान्त के ...क्या क्या प्रबन्ध होना ...तो साधारण ही है। फाटक ...। पैली तो अब भेंट ले ही ...तो घूसखोरी में पकड़े जा

* *

...महोदय बम्बई जाकर निरी- ...दंगा कहाँ कहाँ हो रहा है। ...प्रबन्ध किया जायगा कि ...समझा दिया जाय कि ...बिना देश में दंगा बन्द ...

* *

राजस्व-मन्त्री हुकुमसिंह ने कहा है कि जमींदार लोग बँदरघुड़कियाँ न दें। अपने जीविकोपार्जन का प्रबन्ध करें। इसके लिए भी सरकार को ही प्रबन्ध करना पड़ेगा। सरकार को बड़े बड़े 'लान' अभी से लगवा देना चाहिए।

* * *

बड़े बड़े नाजी नेताओं को फाँसी दी जायगी। देना भी चाहिए। उन्होंने क्यों अपने देश के लिए युद्ध किया।

* * *

एक बन्दरगाह में रूसी राजदूत की तलाशी लेने की कोशिश अमरीकी अधिकारियों ने की। किन्तु यह सब बहुत साधारण सी बातें हैं। युद्ध के लिए कुछ बड़ी बात होनी चाहिए।

* * *

हिन्देशिया से भारत में चावल आ रहा है। कोई युग था कि नमक खाकर लोग वफादार रहते थे। अब चावल खाकर लोग वफादार रहेंगे।

* * *

श्री टी० प्रकाशम ने घोषणा की है कि मद्रास प्रान्त में कपड़ों की मिलें न खुल सकेंगी। ठीक है, अधिक कपड़े की आवश्यकता भी क्या है। जब संसार का सबसे बड़ा पुरुष केवल एक लँगोटी से काम चला सकता है, तब साधारण व्यक्ति को तो आधी लँगोटी से काम चलाना चाहिए।

* * *

आपका कहना है कि सब लोगों को चरखा कातना और करघा चलाना चाहिए। हाँ, सब लोग चेष्टा अवश्य करेंगे किन्तु नेता लोग कब भाषण देंगे यदि चरखा चलायेंगे।

* * *

श्री जयप्रकाशनारायण ने कहा है कि लीग से समझौते में कांग्रेस ... और नहीं झुकना चाहिए। ... राय है कि कांग्रेस ... देना चाहिए।

पीड़ा के स्वर में मत गाओ

रचयिता, श्री बेढब बनारसी

खाने को गेहूँ भी कम है
पड़ा दाल में कोकोजम है,
थोड़ी तरकारी थाली में
मानो आँखों का मलहम है।
...उगा लो तुम आँगन में, साँझ-सवेरे उसको खाओ।
धोती का सपना मत देखो,
नंगा तन अपना मत देखो।
सरदी के मारे बीबी-बच्चों का
भी कँपना मत देखो।
...की संतान खास हो, वल्कल के तुम वस्त्र बनाओ।
हानि बड़ी ही मिल से होगी
मिल से हुआ देश है रोगी,
मिल के कारण त्याग छोड़
हम सब बनते जाते हैं भोगी।
...मिलों को कर दो सारी चरखे-को अब तुम अपनाओ।
नहीं कठिन है आना-जाना
है सब केवल व्यर्थ बहाना।
बहुत भीड़ हो जाती है
रेलों में मैंने यह भी माना।
...हो, जाना तुम्हें कहीं यदि हो तो पैदल जाओ।

छप रहा है! छप रहा है !!

ऐतिहासिक भौतिकवाद

लेखक श्री मन्मथनाथ गुप्त, श्री रमेन्द्रनाथ वर्मा

भूमिका-लेखक आचार्य नरेन्द्रदेव

ऐतिहासिक भौतिकवाद मार्क्सवाद के विषयों में सबसे गहन है। इस विषय पर विश्वसाहित्य में बुखारिन की पुस्तक सबसे अच्छी समझी जाती है, किन्तु लेखकों का यह दावा है कि यह हिन्दी-पुस्तक उससे भी विस्तृत तथा गहन है क्योंकि जो कुछ भी बुखारिन के समय तक उपलब्ध था, वह तो इसमें है ही, इसके अतिरिक्त नवीनतम ज्ञानविज्ञान, नृतत्व तथा अन्य विषयों में जो खोजें हुई हैं, वे सब इसमें सन्निविष्ट हैं। इस पुस्तक की एक विशेषता यह है कि सभी विरोधी मतों का पहले वर्णन किया गया है। इतिहास की आर्थिक व्याख्या के अतिरिक्त इस पुस्तक में धर्म तथा सदाचार पर एक एक गम्भीर अध्याय है। समाजवाद के अध्ययन के लिए यह पुस्तक बहुत जरूरी है।

मैनेजर इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

एकमात्र गम-डिप्ड टायर

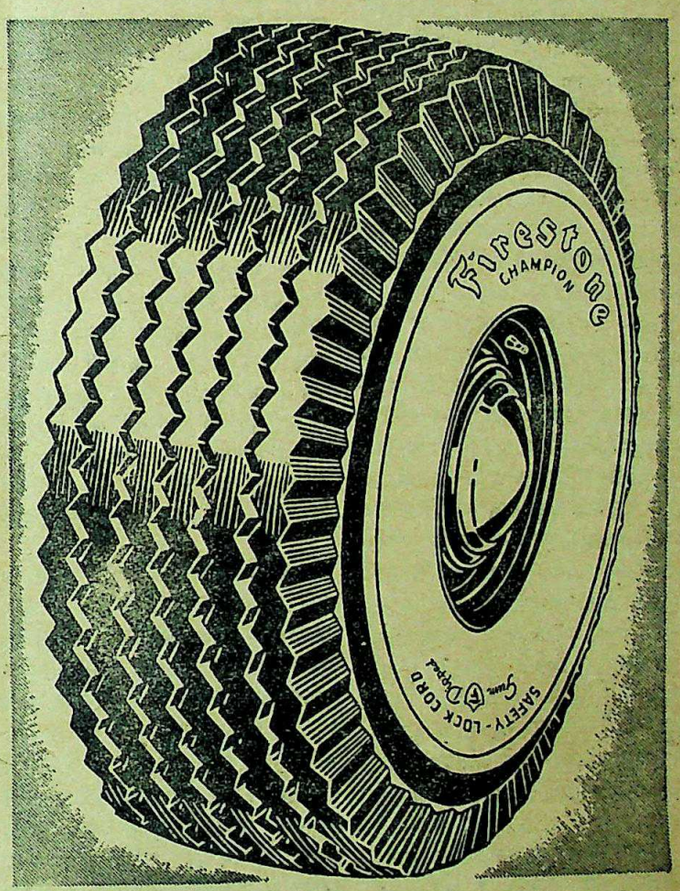

गोंद में डुबाने की विशेष प्रकार की पेटेन्ट प्रणाली से बने हुए फायरस्टोन टायर आपको
*रबर से फटने की और भी अधिक सुरक्षा,
*आपके रुपयों की अतिरिक्त कीमत एवं अपेक्षाकृत
*अधिक मील की यात्रा देंगे।

Firestone

फायरस्टोन

फायरस्टोन टायर एण्ड रबर कम्पनी, ऑफ इण्डिया, लिमिटेड।

बम्बई * मद्रास * कलकत्ता * नागपुर
देहली * ...खनऊ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

उदयपुर अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के ३३वें अधिवेशन के अवसर पर सम्मेलन की स्थायी समिति ने एक करोड़ रुपये की तुलसी-स्मारक की योजना स्वीकार की थी एवं इसकी विस्तृत योजना बनाने के लिए एक समिति भी बना दी गई थी। इसके बाद ही हिन्दी-विद्यापीठ कुल ने विद्यापीठ को स्थायित्व देने तथा इसकी वर्तमान चालू प्रवृत्तियों को विकसित करने एवं साथ ही साथ महात्मा तुलसीदास के स्मृतिरूप में तुलसीनगर बसाने, तुलसी पान्थशाला स्थापित करने के लिए ११ लाख की "महात्मा तुलसी स्मारक कोष" की स्थापना गत ४ अगस्त को की थी। हिन्दी विद्यापीठ ने सम्मेलन से उदयपुर-योजना के एक भाग तुलसी-स्मारक को निकालकर हिन्दी-विद्यापीठ को देने की प्रार्थना की थी। इस बात की बड़ी खुशी है कि सम्मेलन की स्थायी समिति ने हिन्दी-विद्यापीठ की आवश्यकता को ध्यान में रखकर ११ लाख की तुलसी-स्मारक कोष की योजना को स्वीकार किया है एवं साथ ही साथ स्थायी समिति ने हिन्दी-विद्यापीठ की इस योजना की सफलता चाहते हुए अपनी समस्त शुभ कामनाएँ प्रकट की हैं। हिन्दी विद्यापीठ सम्मेलन की इस नैतिक शक्ति को समझकर उसे धन्यवाद देती है।

ता० २३ सितम्बर सन् ४६ को प्रातः-काल ७॥ बजे से हिन्दी-विद्यापीठ कार्य-कारिणी की बैठक कुलपति सेठ श्री गोपाल-जी मोहता की अध्यक्षता में उन्हीं के निवासस्थान मनोहर भवन में ११ बजे तक होती रही। कार्य-कारिणी की इस लम्बी बैठक में बहुत वाद-विवादों के बाद हिन्दी-विद्यापीठ का नया विधान स्वीकृत कर लिया गया। इस स्वीकृत विधान के अनुसार हिन्दी-विद्यापीठ में एक क्रान्ति-कारी युग का प्रवेश होता है। कार्यकारिणी द्वारा स्वीकृत विधान को कुल से पास कराने के लिए ता० २३ को ही सायंकाल कुल की बैठक बुलाई गई थी पर कुल के नियमानुकूल उपस्थिति के अभाव में बैठक स्थगित कर आगामी ३० सितम्बर को रखी गई है।

प्रधान मन्त्री श्री जनार्दनराय नागर ने कुलपति की स्वीकृति से अपनी नई कार्यकारिणी का संगठन कर लिया है हिन्दी-विद्यापीठ के विकास में मालूम होता है यह कार्यकारिणी सजीव और जीवट की बनी है। अवश्य ही केबिनेट का रूप नया है।

—गिरिधारीलाल शर्मा
प्रचार-मन्त्री

* * *

वनस्थली जयपुर ७ अक्टूबर को तीसरे पहर जयपुर के महाराजा, रियासत के मंत्रियों और अन्य पदाधिकारियों के साथ वनस्थली पधारे। पन्द्रह हजार का जमाव हो गया।

विद्यालय के प्रवेश-द्वार पर महाराजा का स्वागत हुआ। फिर उन्हें यहाँ की पंच-मुखी शिक्षा-प्रणाली के [illegible] विभागों को दिखलाया गया। [illegible] के बाद जय[illegible] घुड़सवा[illegible] [illegible] चगेरा [illegible] सकते [illegible]

जिसमें यहाँ की छात्राओं के गायन-वादन का कार्य-क्रम था। श्रीमती रतन शास्त्री ने महाराजा के आगमन पर प्रसन्नता प्रकट की और उन्हें विद्यापीठ में निर्मित उनका एक चित्र भेंट किया। श्री हीरालालजी शास्त्री ने महाराजा के इस कथन का कि उनका पहला आगमन अन्तिम आगमन नहीं है, स्वागत करते हुए कहा कि वे भविष्य में कभी अचानक पधारें। शास्त्री-जी ने डा० पट्टाभि सीतारमैया के इस कथन को दोहराते हुए कहा कि एक दिन यह विद्यापीठ अखिल भारतीय-महिला-विश्व-विद्यालय बन जायगा; बताया कि इस राष्ट्र-निर्माण के तथा नारीवर्ग में जन-सेवकों को तैयार करने के नाजुक और महत् कार्य में उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, कई सवालों को हल करना पड़ता है।

अन्त में जयपुर महाराज ने संक्षिप्त भाषण में कहा कि यहाँ आकर बड़ी प्रसन्नता हुई। आपने अभिनन्दन के लिए आभार प्रकट किया और श्री हीरालाल शास्त्री तथा श्रीमती रतन शास्त्रीजी को इस संस्था में उनकी प्रेम-मजदूरी के लिए बधाई दी। तीन घंटे ठहरकर महाराजा साहब शाम को जयपुर लौट गये।

"वनस्थली विद्यापीठ का ग्यारहवाँ वार्षिकोत्सव शनिवार ५ अक्टूबर, ४६ को अ० भा० देशी राज्य लोकपरिषद् के कार्य-वाहक अध्यक्ष और सुप्रसिद्ध राष्ट्र-नेता डा० पट्टाभि सीतारमैया की अध्यक्षता में होगा तथा ७ अक्टूबर ४६ को श्री महा-राजा साहब जयपुर वनस्थली पधारेंगे। इस समय विद्यापीठ की पंचमुखी शिक्षा-सम्बन्धी विभिन्न प्रवृत्तियों का दिग्दर्शन कराया जायगा तथा स्थानीय राष्ट्रसभा के अधिवेशन होंगे।"

—संवाददाता

* * *

कोठी ऐडमिनिस्ट्रेशन के प्रतिनिधि दल व कोठी राज्य प्रजा-मण्डल के कार्य-कर्ताओं के बीच चलनेवाले राजनीतिक वार्तालाप के फलस्वरूप ऐडमिनिस्ट्रेटर बाघेलखंड स्टेट ग्रूप ने सुधार-घोषणा के लिए अवधेन्द्र पाठशाला-हाल में ता० ७-१०-४६ को एक सभा की। घोषणा के बाद उन्होंने वही वेतनवृद्धि की माँगवाले पुलिस के सिपाहियों में से चार-पाँच को हथकड़ी पहनाने का आदेश दिया तथा हड़ताल में न शामिल होनेवाले को इनाम दिलाया। इससे भीड़ उत्तेजित हो गई। बाहर शोर होने लगा। महेश्वर मिश्रौ-लिया ने साहब को धन्यवाद दिया और उनके भाषण के आपत्तिजनक स्थलों की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया तथा पाठशाला की पवित्रता, रक्षा आदि की सुधि दिलाकर पुलिस-हड़तालियों को आज जमानत पर रिहा कर देने का अनुरोध किया। साहब के स्वीकार न करने पर लाल तीर्थराजसिंह बाघेल, मेजर कुँवर नरेन्द्रसिंह और सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस की सिफारिश का भी कुछ असर न हुआ। अन्त में रियासत के सभी कर्मचारियों ने उनकी रिहाई का प्रयत्न किया। ईश्वर को धन्यवाद है कि हड़ताली सिपाही जमा-नत पर रिहा हो गये। —संवाददाता

* * *

[illegible] ता० ३ [illegible] ता० ४ और ६ को एक-दो छुट-पुट हमले हुए, जिनमें १,२ व्यक्ति आहत हुए। कुल ४ व्यक्ति आहत हुए। काली का जुलूस पुलिस-लारियों के सख्त पहरे में निकल सका। पुलिस ने शहर के अधिकांश गुंडों को गिरफ़्तार कर लिया तथा हथियारों को जब्त कर लिया। श्री जे० के० अटल डिप्टी कमिश्नर की अध्यक्षता में एक आम सभा म्युनिसिपल हाईस्कूल में हुई। सभा में हिन्दू-मुस्लिम सभी मिलाकर ४,००० के लगभग व्यक्ति थे, जिनमें सर्वश्री डा० सप्रे, जमीरुद्दीन वकील, स्वामी कृष्णानन्द मौलाना चिरागुद्दीन, पी० एल० रोहण, मा० बल्देवप्रसाद तथा सभापति महोदय ने इस बात पर जोर दिया कि "आज के दिन सारे देश में झगड़े नहीं हुए, पर सागर के लिए यह बड़े अफसोस और शर्म की बात है। सागर शुरू से हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए प्रसिद्ध था।

खबर मिली है कि यहाँ के प्रसिद्ध कालाबाजार कर्त्ता पं० बालमुकुन्द पटियार जमानत पर रिहा हुए हैं। समाचार मिला है, कि नगर के प्रसिद्ध कांग्रेस-कार्यकर्त्ता मौलाना चिरागुद्दीन ने कांग्रेस की चवन्नी सदस्यता से भी इस्तीफा दे दिया है।

—संवाददाता

* * *

टीकमगढ़ हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् और उच्च कोटि के प्रकाशक श्री नथूराम जी प्रेमी को अभिनन्दनग्रन्थ भेंट करने के लिए १९,२०,२१ अक्टूबर को नागपुर में समारोह होना निश्चित हुआ है। इसी अवसर पर वहाँ ओरियंटल कान्फरेंस भी हो रही है।

प्रेमी अभिनन्दन समारोह में अनेक विद्वान् सम्मिलित हो रहे हैं। सभापतित्व के लिए श्री काका कालेलकर से प्रार्थना की गई है।

हिन्दी के विद्वानों, साहित्यकारों एवं प्रेमियों से समारोह में सम्मिलित होने की प्रार्थना है। कृपया सम्मिलित होने की सूचना हमें तुरंत दे दें, जिससे ठहरने आदि की व्यवस्था की जा सके।

—यशपाल बी० ए०, एल्-एल० बी०

* * *

कराची अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के आगामी दिसम्बर २६ से ३० तक कराची में होनेवाले अधिवेशन पर विभिन्न परिषदों, सम्मेलनों आदि में पढ़े जानेवाले लेखों के लिए विषय प्रस्ता-वित करने को समस्त हिन्दी-सेवियों को साग्रह आमन्त्रित किया जाता है।

विषय-सूचियाँ २० अक्टूबर तक स्वागत मन्त्री के पास 'सेवाकुञ्ज कराची १' के पते पर पहुँच जायँ।

लेखन-पठन अधिवेशन का अत्यन्त आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण अङ्ग है। गम्भीर विषयों तथा महत्त्वपूर्ण समस्याओं पर विचार होने के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक हिन्दी-प्रेमी विषयों के चुनाव में सक्रिय सम्मति दें। —मंत्री स्वागतसमिति

* * *

सहारनपुर महाविद्यालय ज्वालापुर के स्नातक-शास्त्रार्थ-महारथी, श्री पण्डित विश्वनाथजी शास्त्री न्याय-व्याकरणतीर्थ लुधियाना-निवासी का ता० २३ सितम्बर [illegible] वास हो गया। महाविद्यालय-[illegible] की आत्मा की सद्गति के [illegible] के लिए संवेदना [illegible] करते हैं।

—संवाददाता

रायगढ़ श्री [illegible] संघ के निश्चयानुसार [illegible] यहाँ बड़े समारोह के [illegible] तरीकों से गांधी-जयन्ती [illegible]

करीब ७ बजे शाम को [illegible] राष्ट्रकर्मी तथा सुप्रसिद्ध [illegible] बन्देअली जी फातमी के [illegible] विराट् आम सभा हुई जहाँ [illegible] कर्ताओं ने अपना वक्तव्य दिया [illegible]

* * *

सरदार शहर ता० ४-१० [illegible] की प्रमुख कार्यकर्त्री श्रीमती [illegible] सूरि के सभापतित्व में दिन [illegible] एक विराट् महिला-सम्मेलन [illegible] आत्मादेवीजी ने उपस्थित [illegible] को चर्खे का महत्त्व बतलाया [illegible] बापूजी की शिक्षाओं से [illegible] कराया तथा एक महिला-मंडल [illegible] की। पचासों महिलाएँ उक्त [illegible] सदस्याएँ बनीं। उन्होंने नियमित चर्खा चलाने का आश्वासन [illegible] सायंकाल ५॥ बजे गांधी [illegible] ५-६ हजार की महती सभा [illegible] करते हुए आपने बताया कि [illegible] बलिदान के कारण ही आज [illegible] के द्वार तक पहुँच सके हैं।

* * *

इंदौर उज्जैन में गांधी [illegible] समारोह के साथ मनाई गई [illegible] दुर्गापूजा उत्सव २ अक्टूबर को [illegible] गया। लोगों ने भविष्य में [illegible] बुरी प्रथा को दूर करने की प्रतिज्ञा [illegible]

* * *

(मंडावा) जयपुर तारीख [illegible] को श्री छात्र साहित्य-संघ-भवन [illegible] साहित्य-गोष्ठी हुई। साहित्य [illegible] 'चंचल' ने छात्रों व निवेदित [illegible] समाचार पत्र-पत्रिकाओं की कुछ [illegible] बातें बतलाईं।

१०००) इनाम
ठगी, धोखा या लाटरी नहीं। [illegible] नियामावली के लिए दो-दो [illegible] डाक टिकट भेजो—पता-मीतल, [illegible]
P. O. MANPUR (INDORE)

स्टैनिस्ट्रीट
चिकेन
(कंसिंटेटेड)
एसेंस
विशुद्धता व उत्कृष्टता की गाय [illegible] विदेशी चिकेन एसेन्सों से [illegible] हालत में खराब नहीं, वरन् [illegible]
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड [illegible]
कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्योग-धन्धों के लिए जोरदार आन्दोलन

...नामों का सांस्कृतिक उच्चारण होगा—बस-सर्विस ...सीमेण्ट के कारखाने में नया गुल—दीवाली में दो ...में रहेंगे—पुलिस और जेल-विभाग की जाँच-कमेटी ...बिल पेश होगा—गोपालन की उन्नति की जायेगी—पान की बेगम के पीछे झगड़ा।

...विशेष प्रतिनिधि द्वारा ...के विगत अधिवेशन में ...उत्कर्ष का जो वचन ...सम्पूर्णानन्द ने दिया था, ...वे देशी नामों के साहबी ...सरकारी रूप से समाप्ति करने ...१८वीं और १९वीं शताब्दी ...अँगरेजों का प्रादुर्भाव होते ...के विचित्र उच्चारण और ...गंगा गैन्जीज़ बन गई ...हो गया। सम्पूर्णानन्द- ...ही बना रहने देना ...मथुरा को मुट्रा कहलाना ...करते। अतएव वे एक ...हैं, जिसके अन्तर्गत देशी ...लिपि में वैसा ही लिखा ...वे देशी भाषा में उच्च-

* *

...मोहम्मद इब्राहीम और ...विभाग प्रांत के निवा- ...सस्ती सवारी सुलभ ...देहातों और शहरों में ...का प्रयत्न कर रहा है। ...अन्तर्गत प्रांत के विभिन्न ...मोटर-कम्पनियाँ बनाई ...अपने क्षेत्रों में मोटर ...करेंगी। म्युनिसिपल ...शहरी बस-सर्विस जारी की ...शहरी बस कम्पनियों के ...स्थानिक म्युनिसिपेलिटी, ...तथा जनता को तीस ...शहरी बस-कम्पनी के ...दस प्रतिशत शेयर ...योजना के अन्तर्गत लखनऊ ...प्रारम्भ हो रही है।

* *

...प्रांत में सीमेंट का ...स्थापित करने के लिए ...ही वह बरेली-स्थित ...भी अपने अधिकार में ...है। यह उल्लेखनीय है कि ...प्रसाद श्रीवास्तव इस प्रांत ...शिक्षा-मन्त्री थे, तब उन्होंने ...की स्थापना की थी और ...से प्रान्तीय सरकार ने ...लाख रुपया लगाया था। ...सर ज्वाला और उनके ...हाथ में था। पिछले मास ...विभाग ने इस कारखाने ...छापा मारकर चोर बाजारी ...पता लगाया था। इस ...सनसनीदार और दिलचस्प ...होने की आशा है।

* *

...प्रमुख मन्त्रियों की ...अमेरिका में बीतेगी। ...श्रीमती विजया-

लक्ष्मी पंडित मित्रराष्ट्रीय असेम्बली में भारतीय प्रतिनिधि दल का नेतृत्व करने जा रही हैं और अन्तर्राष्ट्रीय मित्र खाद्य-बोर्ड में न्यायमन्त्री डा० कैलाशनाथ काटजू भारतीय खाद्य मिशन के नेता बनकर पहुँच रहे हैं।

* * *

गृह-मन्त्री रफीअहमद किदवई ने जेल और पुलिस में सुधार करने का बीड़ा उठाया है। जेल में सुधार के निमित्त आपने दो कमेटियाँ बना दी हैं, जिनमें एक महिला जेल के निमित्त है। दोनों में प्रख्यात राजनैतिक नेता तथा समाजसेवी पुरुष और महिलाएँ हैं और वे अपना कर्त्तव्य भली भाँति सम्पन्न करेंगे। इसमें सन्देह ही क्या। साथ ही श्री किदवई ११ सरकारी तथा गैर सरकारी व्यक्तियों की एक कमेटी पुलिस-विभाग की जाँच करने और उसे जनता का सेवक बनाने के उपाय बताने के निमित्त नियुक्त करने जा रहे हैं।

* * *

प्रधान मन्त्री पं० गोविन्दवल्लभ पन्त ने हरिजनों के हित में एक अस्पृश्यता-निवारक कानून का मसविदा बनवाया है, जो असेम्बली की अगली बैठक में पेश किया जायगा। इस कानून के अन्तर्गत हरिजनों को सभी सार्वजनिक कुओं, मन्दिरों, धर्मशालाओं, स्कूलों आदि में प्रवेश और उपयोग का पूरा अधिकार मिल जायगा।

* * *

कृषि-मन्त्री श्री निसारअहमद खाँ शेरवानी प्रान्त में गोपालन तथा दुग्धोत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए प्रयत्नशील हैं। इसी लिए उन्होंने पंजाब से कुछ सिंधी, हरियाना और साहीवाल साँड़ मँगाये हैं, जो वास्तविक गोपालकों को दिये जा रहे हैं। बुन्देलखंड के ऊसरों को खेती के योग्य बनाने का भी प्रयत्न हो रहा है।

* * *

पान की बेगम और चार दोस्तों की कहानी भी मजेदार है। लखनऊ से कुछ दूर साहेबनगर गाँव में चार ग्रामीण गहरी छान कर ताश खेलने बैठे। अकस्मात् एक खिलाड़ी ने अपने एक विपक्षी के हाथ में पान की बेगम देख ली, जो तुरुप का पत्ता थी। उसने यह बात अपने साथियों पर प्रकट भी कर दी। इस पर उसके विपक्षी बिगड़ गये और चारों दोस्तों ने ताश के तुरुप त्याग कर लाठी के तुरुप पकड़े। शोर-गुल सुनकर पड़ोसी जब दौड़ ... तो देखा कि चारों दोस्त ... टूटे हाथ लिये ... बेगम ताश ...पजाद... रही थी।

इधर उधर की

किसानों को भत्ता

इँगलैण्ड में वहाँ के किसानों को विदेशों में खेती के अनुभव सीखने के लिए सफर-खर्च दिये जायँगे। ये भत्ते ६ माह तक आधुनिक कृति सीखने के लिए स्वीकृत हुए हैं।

* * *

अणु-शक्तियों से रोग दूर होंगे

ब्रिटेन के वैज्ञानिक आजकल अणु-शक्ति के सहारे बीमारियों को दूर करने का प्रयत्न कर रहे हैं। वैज्ञानिकों का विचार है कि यदि मनुष्य के मांसल छिद्रों में घाव हो गया हो तो अणु-ताप उस घाव के लिए एक्सरे और रेडियम की अपेक्षा अधिक लाभकारी सिद्ध होगा। यह अणु-शक्ति घावों तक ही सीमित न रहेगी। यह अन्य रोगों पर भी लाभ पहुँचायेगी।

* * *

दौरे के लिए उड़नेवाले कमरे

एक उड़नेवाला छिपा हुआ कमरा बनाया गया है। इसकी परीक्षा भी अभी हाल में हुई है। कार्नवाल से लेकर मध्य-पूर्व, भारत, न्यूजीलैण्ड और आस्ट्रेलिया तक २५,००० मील की उड़ान को उसने एक सप्ताह के अन्दर तय किया है। रायल एयर फोर्स इस ओर अधिक प्रयत्नशील है। एक उड़नेवाले कमरे के पीछे दस हजार पौंड (लगभग एक लाख ४० हजार रुपये) खर्च होंगे।

* * *

मोटरों के लिए 'जेट' इंजिन

इँगलैण्ड में एक प्रकार का नया इंजिन तैयार हुआ है। इसकी कीमत एक हजार पौंड (लगभग चौदह हजार रुपये) है।

टायर कभी नष्ट न होंगे

ब्रिटेन के वैज्ञानिकों ने ऐसे टायर का आविष्कार किया है जो कभी नष्ट न होंगे। विगत युद्ध में इस कार्य की ओर बहुत ध्यान दिया गया है। गोलियों के लगते ही टायर खराब हो जाते थे। उस समय मोटरों का चलना ही नहीं बंद हो जाता था बल्कि युद्ध-क्षेत्र में शत्रु के सामने घुटने तक टेकने पड़ते थे। उस समय की आवश्यकता ने ऐसे टायरों को बनाने के लिए विवश कर दिया था। आज संसार में ऐसे टायरों के बन जाने से बहुत कुछ बचत हो सकेगी।

* * *

भावी शहर कैसे होंगे ?

सभी देश अपनी उन्नति करने में लगे हैं। किसी भी देश की अधिकांश जन-संख्या उसके देहातों में रहती है। परन्तु इँगलैण्ड की जन-संख्या का ४/५ भाग शहरों और कस्बों में रहता है। शहर और कस्बे-वाले अपनी छुट्टियों के दिन देहात में जाकर बिताते हैं। शहरी मनुष्य हमेशा तड़क-भड़क और शान-शौकत-पसन्द होते हैं। इससे यह आवश्यक हो गया है कि वहाँ के देहात को शहर का सा रूप दिया जाय। अब वहाँ के गाँवों को शहर जैसा बनाने का आयोजन है। सारे गाँव शहर की तरह बसाये जायँगे। यह तो इँगलैण्ड का हाल है। ऐसे ही सारे देश अपने गाँवों को शहर बना देना चाहते हैं।

* * *

ग्रामीण स्कूलों के विद्यार्थियों के लिए अमेरिका में बसों (लारियों) की व्यवस्था है। ९३ हजार लारियाँ स्कूल-बस सर्विस में हैं जो अमेरिका की बस-सर्विस के आधे से अधिक हैं। इस कार्य में संयुक्त राज्य ८ करोड़ डालर प्रतिवर्ष खर्च करता है।

—शिवमूर्ति शर्मा

दीवाली की भेंट

इस त्यौहार के अवसर पर मित्रों एवं सम्बन्धियों के लिये टाटा का ओ. डी. कोलोन श्रेष्ठ भेंट है। यह सभी स्टोरों में आकर्षक पेंचदार बोटलों में मिलता है।

दी टाटा ... मिटेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेताजी श्री सुभाषचन्द्र बोस के प्रति

लेखक, रायबहादुर ठाकुर उमासिंह भदोरिया

(१)

बलि बलि जैहैं वीर सुभग स्वतंत्रता पै,
त्रिविध तिरंगा धाम धाम पर नाचैगो।
गलित गुलामी के सुदृढ़ गढ़ टूटि जैहैं,
गब्बर गनीमन को गरब न बाचैगो।
जगमग ह्वैहैं जग जौहर जवाहर के,
धरम अहिंसा धारि कर्म-रेख खाँचैगो।
गोरेन की कारी करतूतैं मिटि जैहैं,
जब सुभट सुबासचन्द्र बोस रन राचैगो।

(२)

काटि दैहै कूटनीति कपटी कुचालिन की,
गालिब गनीमन की गुमक निकारैगो।
दरि दैहै दीनन की दीनता दुनी ते,
दीह द्वारन ते दंभिन के दमन दरारैगो।
हरि जैहै चीर हरिजन की हमारे ज्ञान,
पुर परिजन लौं पँवारे से पसारैगो।
समर स्वराज में सुबासचन्द्र बोस बीर,
बैरिन के दपटि गुमान गारि डारैगो॥

(३)

गारि दैहै गरब गुमान गढ़ डारि दैहै,
विश्व बीच विजय-पताके फहरावैगो।
मेटि दैहै कठिन कुअंक भाल भारत के,
लहर लहर ये तिरंगा लहरावैगो।
जौहर जवाहर सों जगमग ह्वैहै जग,
जालिम जुलुम जोर रहन न पावैगो।
धरम अहिंसा असि धारि कै सुबास बीर,
प्रबल प्रचंड जब जंगहि रचावैगो॥

(४)

राम राज राजि है हमारी भूमि भारत पै,
कछुक दिना को कष्ट और नेक सहि लेउ।
पूरन स्वतंत्रता बिराजिहै समाज बीच,
द्रोहिन के द्रोहन सों और नेक दहि लेउ।
ब्योम बीच बढ़व बवंडर बिलोकि लेउ,
बैहरि बहति तामें और नेक बहि लेउ।
आरत के त्रान श्री सुबासचन्द्र बोस बीर,
धरम अहिंसा धारि नेक असि गहि लेउ।

(५)

काटि देहु कठिन कलेस दीन हीनन के,
आरत पुकारत तुम्हें हैं सब टेरि टेरि।
दाहि रहे दुख में अधीन पराधीन बनि,
केते दिन बीते हैं तिहारी बाट हेरि हेरि।
कुटिल कुशासन की केती यातनायें सहीं,
गये मातु भारत के हित जेल फेरि फेरि।
धरम अहिंसा असि धारि कै सुबास बीर,
बैरिन के ब्यूहन बिदारौ बेगि घेरि घेरि॥

(६)

बस्त्र को न लेश अस्थिमात्र ह्वै रहे शरीर,
भूँखन की ज्वालन सों जीव जले जाते हैं।
लूट सी मची है आज भारत बसुंधरा पै,
अगणित धनराशि ढोये चले जाते हैं।
गारत भयो है दीन देश ये अनाथ सम,
जाकी रोटियों से ये परिन्दे पले जाते हैं।
बीरबर बाँकुरे बहादुर बिजै के हेत,
बोस बाबू बिगुल बजाते चले आते हैं॥

(७)

छाई रहै कीरति अखंड नभ-मंडल लौं,
कमला करोर कृपा दुरि दुरि टारती।
जागी रहै [illegible] अनूप ज्योति जीवन की,
जालिम जुलुम जग जारती।

[illegible]

मनोरंजक चुटकुले

लीग के प्रचारकों ने वजीरिस्तान में राष्ट्रीय सरकार के विरुद्ध प्रचार करने के लिए एक रास्ता निकाल लिया है—बम-वर्षा की आज्ञा राष्ट्रीय सरकार ने दी है। अच्छा ही है, कोई बधाई देता है तो कोई रुलाता है। लीग के पास है ही क्या!

* * *

सिन्ध में गवर्नर ने असेम्बली भंग कर दी। चुनाव की धूम फिर से शुरू हो गई है। नये मेढक भी फुदकने लगे। लीग सारी सीटों पर अपने उम्मीदवारों को खड़ा करेगी। मंत्रिमंडल ने जो कमाया था वह सब फिर आहुति होगा। परेशानी है तो केवल राष्ट्रीय मुसलमानों और कांग्रेसवालों की जिनको चुनाव जीतने में ढेले खाने होंगे और रुपये देने होंगे।

* * *

अखिल भारतीय कांग्रेस की बैठक समाप्त हो गई। परन्तु श्री सुभाषचन्द्र बोस न प्रकट हुए। सुभाष की आशा में अग्रगामी दल अब भी अपने नये प्रस्ताव मेरठ-अधिवेशन में अवश्य पेश करेगा। दल के प्रचार के लिए कोई न कोई बहाना ठीक ही है।

* * *

वर्किङ्ग कमेटी में वही पुराने सदस्य ज्यों के त्यों बने रहेंगे। बेचारे अग्रगामी दल और वामपन्थियों की आशा का क्या होगा?

* * *

पंडित नेहरू को राष्ट्रपति-पद छोड़ते हुए बड़ा दुःख हुआ है। पर करें क्या, विधान ही तो है। दोनों हाथों में लड्डू खाने से बदहज़मी हो जायगी। हाथ से खाइए। चाहे राष्ट्रपति रहिए, चाहे कांग्रेस के अध्यक्ष।

* *

बंगाल में सुहरावर्दी मंत्रिमंडल गया। उसी उपलक्ष में खुशियाँ जा रही हैं। मालूम होता है, लीग के किसी कार्यक्रम की पूर्ति लिए रक्त-पात ही सर्वोत्तम जाती है।

* *

अग्रगामी दल के कार्यकर्ता जिम्मेदार होते हैं। सी० आई० कहीं अधिक खोजनेवाले। से आत्मबोध ने पेशावर में पता लगा लिया। ऐसे व्यक्ति दर्शी हैं। ज्योतिषियों को अब पुरखों के सम्बन्ध में भी जाना जा सकता है कि वे को अपने प्रचार-कार्य के लिए की अधिक चिन्ता न होगी।

* *

अभी हाल में बंगाल से चीनी गायब होने का समाचार इसमें आश्चर्य की बात है बंगाल से हजारों मन मीठी हो सकती हैं, ६ सौ बोरे की

* *

बंगाल सरकार ने भोजन में एक नई कटौती की है। अभी नई हत्याओं से आबादी अवश्य ही हो गई है फिर उतना ही रहे। ज्यों ज्यों घटती जायगी, राशन भी घटेगा।

हमारी उत्तम उत्तम पुस्तकें

शासक—सुप्रसिद्ध राजनीति-विशारद निकोलो मेकियावली की 'प्रिंस' नामक पुस्तक का हिन्दी रूपान्तर। इसमें राजा के कर्त्तव्यों तथा राज्य-शासन-प्रणाली का बहुत ही विशद विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

गांधी-मीमांसा—लेखक पंडित रामदयाल तिवारी। गांधीजी के व्यक्तित्व और सिद्धान्तों की ऐसी तर्कपूर्ण विवेचना आज तक किसी ने नहीं की है। इसे एक बार आद्योपान्त पढ़ जाने पर गांधीवाद पूर्ण रूप से हृदयंगम हो जाता है। विद्वानों ने इसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। यह ८५० पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक है। मूल्य ४) चार रुपये।

राज्य-विज्ञान—राज्य की भिन्न भिन्न समस्याओं, उसके प्रति नागरिकों के कर्त्तव्य तथा उसकी सुव्यवस्था और शासन-प्रणाली आदि की इसमें विद्वत्तापूर्ण विवेचना की गई है। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

इंसाफ़-संग्रह—(तीन भागों में) इसमें प्राचीन राजाओं, बादशाहों और सरदारों के द्वारा किये गये बहुत ही जटिल मामलों के निर्णयों का संग्रह किया गया है। मूल्य प्रत्येक भाग का ॥=) ग्यारह आने।

एक आत्म-कथा—उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के एक प्रतिष्ठित विद्वान् मुंशी लुत्फुल्ला की आत्मकथा का सारांश। इसमें विख्यात यात्रा तथा मार्ग में पड़नेवाले स्थानों का तत्कालीन वर्णन दिया गया मूल्य २) दो रुपये।

[illegible] करते डिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी करुण कहानी

मेरी अज्ञानता का संग और दुर्भाग्य का मेरी दशा पर मुस्कराना। मेरी अज्ञानता ने, जो कि मेरे बचपन के अविवेक-पूर्ण कार्यों की देन थी, मुझे निर्धनता ने, जो कि मेरे बचपन के अविवेक-पूर्ण कार्यों की देन थी, मुझे निराश कर दिया था। हम स्त्री-पुरुष दोनों ही चिन्तित तथा निराश थे। हमारा जीवन कलह तथा संघर्ष का केन्द्र था। जीवन अशान्त था। इसी दशा में मैं हिमालय पर्वत की दुर्गम घाटियों में घूमता हुआ शिमला से कुछ आगे उन चट्टानों पर पहुँचा जहाँ मई और जून के महीनों में भी बर्फ़ जमी रहती है। एक दिन मैं जीवन से पूर्ण निराश हो चुका था तथा जीवन-दीपक का तेल समाप्त हो चुका था कि ऐसे दुखद जीवन से छुटकारा क्यों न कर लिया जाये। मैं यह सोच ही रहा था। इसको प्रज्वलित करने के साधनों का पूर्ण अभाव हो चुका था कि अचानक एक साधु ने, जिसकी आयु लगभग ८० वर्ष की प्रतीत होती थी, जिसके चेहरे पर सूर्य जैसा प्रकाश था, देखने में तन्दुरुस्त तथा जवान दिखाई देता था, पीछे से मेरा हाथ पकड़कर बोला, 'बेटा, इस सुनसान स्थान में निराश क्यों बैठा है?' मैंने उस महात्मा को अपनी दुख-भरी कहानी सुनाई। उसने मुझे धैर्य बँधाया और कहा कि "यदि आप सच्चे हृदय से दृढ़ प्रतिज्ञा करें कि आप दुखी और अपने सरीखे दुखी आदमियों का उपकार करेंगे तो आपका कष्ट दूर हो जायेगा।" मैंने सच्चे हृदय से उसकी आज्ञा पालन करने का निश्चय किया तथा उसने एक दवाखाने के लिए और एक परचा मालिश करने का लिख दिया। उसने एक दवाखाने के लिए और एक परचा मालिश करने का लिख दिया। उसने मुझे दवा देकर एक लाल जड़ी दी। मैंने १५ दिन तक उस दवा को खाया। निस्सन्देह पहली खुराक ने अपना फायदा दिखाया। ७ दिनों में मेरे सारे कष्ट दूर हो गये। शरीर में बिजली की तरह स्फूर्ति अनुभव होने लगी।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुफ्त—घर बैठे आयुर्वेदिक, यूनानी चिकित्सा, होम्योपैथिक के इम्तहान देकर सार्टीफिकेट प्राप्त करने के नियम मुफ्त मगवायें।
ओल्ड इण्डियन मैडिकल कालिज,
कोटगढ़ शिमला।

श्वेतकुष्ठ वनौषधि

महात्मा प्रदत्त श्वेतकुष्ठ (सफेदी) की दवा से तीन दिन में पूरा फायदा। यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, विज्ञापनदाताओं की दवा से निराश हो चुके हों तो इसे लगा कर आराम होवें। १५ दिन की दवा का मूल्य २॥)।

सफेद बाल काला

इस तेल से बालों का पकना रुक कर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दूना मूल्य वापसी की शर्त लिखा लें। यह तेल सिर के दर्द व सिर में चक्कर आना आदि को आराम कर आँख की रोशनी बढ़ाता है। एकाध बाल पका हो तो २), आधा पका हो तो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मँगवा लें। एजेण्टों की हर जगह आवश्यकता है।

स्तम्भक वटी

एक गोली शाम को खा लें और इसके अद्भुत चमत्कार को देखें। एक घंटे तक स्तम्भन कर गजब ढा देगी। १६ गोली १), ५० का २॥), १०० का ५)।

पता—वैद्यराज अखिलकिशोर राम
नं० ३७ पो० कतरीसराय (गया)।

आधुनिक जीवन-यापन की परास्थातया पाकस्थली में अम्लता पैदा कर देती है, जिसके कारण पाचन-सम्बन्धी शिकायत उत्पन्न हो जाती है। ताज़गी देनेवाले इनोज़ 'फ्रूट साल्ट' का एक गिलास शारीरिक क्रियाओं को व्यवस्थित करता है, समस्त विषों का शमन करता है, लिवर को स्फूर्ति देता है और अम्लता को निराकरण करता है।

GOVERNMENT OF INDIA

DISPOSALS

(SECTION MMH OF 2nd CATALOGUE)

Following is a comprehensive list of stores that will be sold by MMH Directorate as and when they become available. Some of them are now available and listed in the above Catalogue.

Ferrous Metals, including unfabricated steel: Bars, Billets, Blooms, Ingots, Slabs, Spring Steel; Structural; Hoop Iron; Steel plates; Steel sheets; Cast Iron, Clear and Irony; Pig Iron; Wires and wire products including galvanised; Chains; Wire nails; Coated plates; Galvanised, Terne and Tin; Alloy steel; Carbon steel; Mild steel; etc.

Non-Ferrous Metals: Aluminium; Brass; Bronze; Magnesium Alloy, crude, semi-finished and finished; etc.

Timber: Timber Baulks; Sawn Timber (Planks and Scantlings); Railway Bridging Timber and Sleepers; Bamboos and Ballies; Plywood and other items; etc.

Building Materials, Cement, Asbestos, Masonite, etc: Masonry; Cement products; Asbestos products; Door and Window fittings; Masonite; Bakelite; etc.

Sanitary fittings including water-supply fittings and pipes, etc.

Furniture: Steel, Wooden, and mixed furniture items; etc.

Antigas Stores, ARP and Fire-fighting equipment: Antigas Respirators and components; Fire-fighting equipment including Extinguishers and Refills; Manual and Mechanical Pumps; Hoses and accessories including Couplings, Nozzles; etc.

Pol Drums and Cans: Barrels, 20 gallons and above; Drums and kegs below 20 gallons; Kerosene type tins and canisters; etc.

Other Containers: Cisterns and storage tanks; Packing cases; Bottles; Jars; Carboys; etc.

Full details giving description and condition of stores, quantity, location, etc. and the method of tendering are contained in Section MMH of the Second Catalogue which is available at Rs. 3 from the addresses given below:

A. Regional Commissioner (Disposals) at
BOMBAY - Mercantile Chambers, Graham Road, Ballard Estate.
CALCUTTA - 6, Esplanade East.
LAHORE - G.P.O. Square, The Mall.
CAWNPORE - 15/159, Civil Lines.

B. Dy. Regional Commissioner (Disposals) at
KARACHI - Variawa Building, McLeod Road.
MADRAS - United India Life Building, Esplanade.

C. All important Chambers of Commerce and Trade Associations.

Mail orders for the catalogue must be accompanied by Money Order or Indian Postal Order.

NOTE: Watch for further announcement regarding Section MMH of Third Catalogue which will contain a further list of stores available for disposal.

ISSUED BY THE DIRECTORATE GENERAL OF DISPOSALS, DGD DEPARTMENT OF INDUSTRIES & SUPPLIES, NEW DELHI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

मूल्य ७॥)
या =)

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

२७ आक्टोबर, १९४६ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 27th October, 194

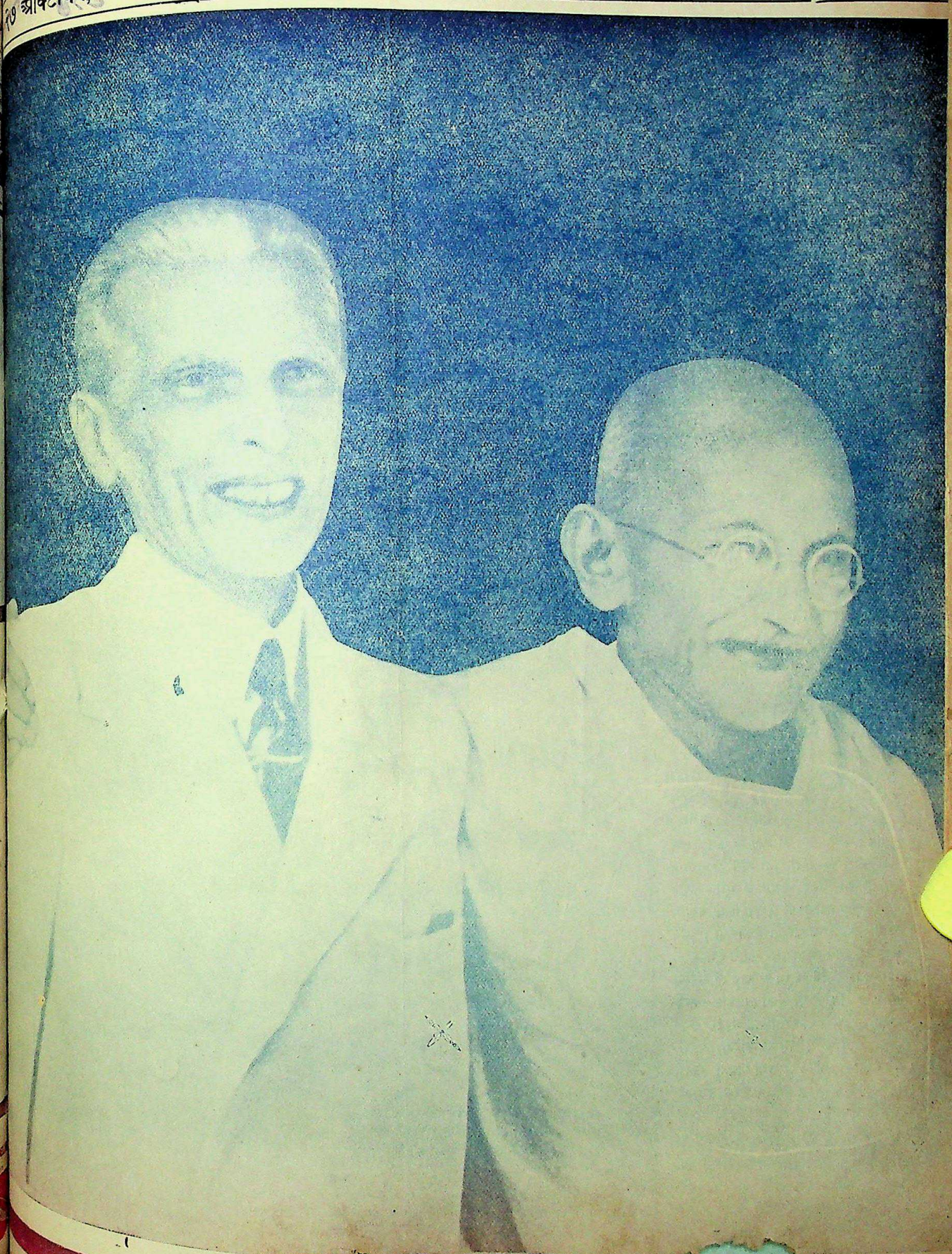

कायदेआजम मि० जिन्ना
विश्ववन्द्य महात्मा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Estd. 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

सिन्हा होमियामेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S. १०) H.M.B.S. १५) H.M.D.S. २५)। पुस्तक—अ० पारिवारिक १) बायोकेमिक १) १००० रेडलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्शनरियाँ १॥) आर्गेनन १), फार्माकोपिया १॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायँगी। डा० ख० माफ—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≡) ड्राम। आउन्स ॥) घरेलू बक्स ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.)

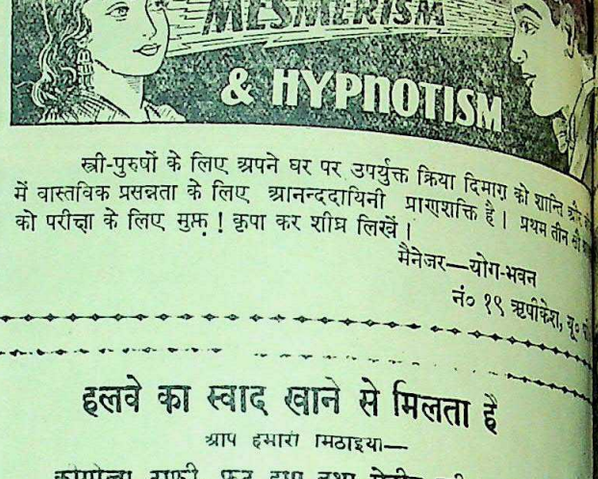

स्त्री-पुरुषों के लिए अपने घर पर उपर्युक्त क्रिया दिमाग़ को शान्ति और में वास्तविक प्रसन्नता के लिए आनन्ददायिनी प्राणशक्ति है। प्रथम तीन को परीक्षा के लिए मुफ़्त! कृपा कर शीघ्र लिखें।

मैनेजर—योग-भवन
नं० १९ ऋषीकेश, यू०

३१ वर्ष की उम्र में ही बूढ़ा जान पड़ता था

पाठ का पीड़ा से झुकना मुश्किल हो गया था

क्रेशेन से उसका दर्द जाता रहा

यह ३१ वर्ष का आदमी गुर्दे की ख़राबी के कारण अपनी जवानी में ही बूढ़ा मालूम पड़ता था। कई सप्ताह की पीड़ा के बाद उसको किस प्रकार क्रेशेन से आराम मिला वह आदमी स्वयं बतलाता है :—

"कई सप्ताह से मुझे गुर्दे की बीमारी थी और मैं अपनी ३१ वर्ष की युवा अवस्था में ही बूढ़ा मालूम पड़ता था। यदि किसी काम के लिए मैं कभी झुक जाता तो फिर सीधा होना मौत का सामना करना था. कई लोगों ने मुझे क्रेशेन साल्ट सेवन करने का आदेश किया क्योंकि उन्हें स्वयं इससे फ़ायदा हुआ था। मैंने स्वयं भी सेवन किया और उससे मुझे प्रतिदिन लाभ होने लगा। अब तो मैं २८ मील साइकिल पर चढ़कर काम करने जाता हूँ। मैं क्रेशेन साल्ट बराबर सेवन करूंगा क्योंकि इसी के कारण अब मैं यात्रा कर सकता हूँ तथा बिना किसी थकावट के दिन भर काम कर सकता हूँ—एस० बी० सी०।

गुर्दे मनुष्य के शरीर के छन्ने हैं और जब तक वे अपना काम ठीक तौर से नहीं करते विषैली चीज़ें जिन्हें बाहर निकल जानी चाहिए रक्त में मिल जाती हैं और शरीर में पीड़ा पैदा कर देती हैं जैसे पीठ का दर्द, गाँठिया, [illegible] क्रेशेन साल्ट गुर्दों [illegible]

[illegible] सकते

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारा मिठाइया—

कामोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

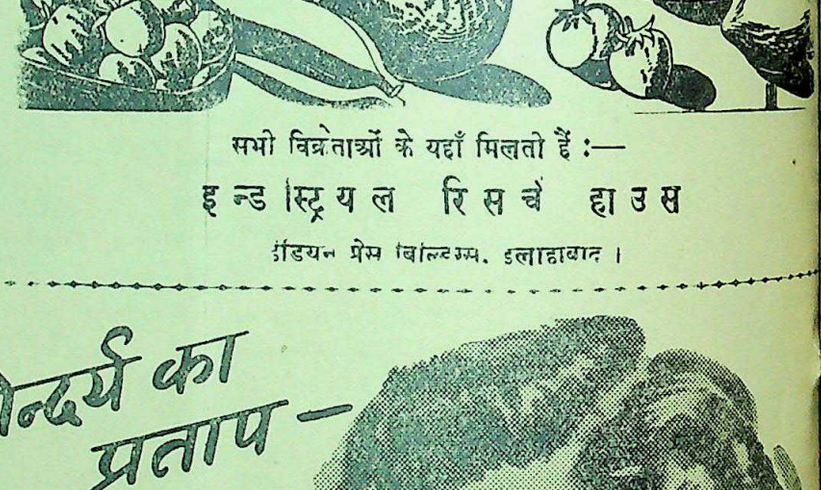

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

सौन्दर्य का प्रताप—

स्वस्थ त्वचा की कीर्ति

चर्म-स्वास्थ्य के लिये

रेक्सोना

व्यक्तिगत सौन्दर्य अधिकतर मनोहर त्वचा पर अवलंबित रहता है और केवल स्वस्थ त्वचा ही त्वचा-माधुर्य की कीर्त्ति प्राप्त कर सकती है। रेक्सोना, न केवल त्वचा को स्वस्थ बनाये रखता है, किन्तु त्वचा-सौन्दर्य निर्माण करने में भी सहायकारी होता है; क्यों कि वह कैडील से बनाया हुआ है, जो ऐंटिसेप्टिक त्वचा-पुष्टिकर तैलों का अभिनव शास्त्रीय मिश्रण है। रेक्सोना का विपुल फेनदार, शीघ्रोत्पादक झाग इस त्वचा-रक्षक कैडील को रोमरंध्रोंमें गहराईतक ले जाता है, जो त्वचा को शांति प्रदान करता है और [illegible] रखता है।

पुरुष, जो आरोग्य-युक्त, कांतिमय त्वचा का महत्व जानते हैं, वे रेक्सोना के त्वचा को आनन्द देनेवाले, ओजस्वी उत्तम परिणाम का आदर करते हैं। यह सत्य कहा जा सकता है कि, जो पुरुष स्वस्थ त्वचा की आकांक्षा करते हैं, उन के लिये रेक्सोना अवश्यंभावी साधन है।

रेक्सोना: बच्चों की कोमल, मृदु [illegible] रगड़ और फोड़े-फुंसियों का [illegible] औषधीयुक्त, शांतिप्रद [illegible] करते हैं से बच्चों के नन्हे

★ रेक्सोना का कैडील यह विशेषज्ञ [illegible] आरोग्य-दायक एवं पौष्टिक [illegible] मिश्रण है, जो कि, त्वचा सुरक्षित रखने के खासकर बनाया गया है।

REXONA PROPRIETARY [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, २७ आक्टोबर, १९४६

...१०, संख्या ९]

सप्ताह के समाचार

...गांधी अब्दुलगफ्फार खाँ

...लाल नेहरू का सीमान्त-दौरा

...का राजनैतिक विकास ...आगे बढ़ा है। वहाँ के ...अब्दुलगफ्फार खाँ ने उस ...सेवाओं से जनता का हृदय ...आकर्षित कर रक्खा है। पठानों ...देश में लीग के नेताओं ने ...को बहकाने और हिंसा की ...का काफी प्रयत्न किया, परन्तु ...श्री गफ्फार ने अपनी ...आगे उनकी दाल नहीं गलने ...के वजीरिस्तान हिस्से की ...जातियों को ब्रिटिश सरकार ...में रखने में सदा असफल ...निगन, बम-वर्षा और सेनाओं ...से उन्हें दबाया नहीं जा ...अगस्त मास तक ब्रिटिश ...प्रदेश पर बम बरसाते रहे ...ही गाँवों को जलाकर भस्म ...। ज्योंही कांग्रेस ने राष्ट्रीय सर-...अपने हाथ में ली, ...खाँ के बतलाने पर पंडित ...नेहरू ने उस बम-वर्षा को ...। लीगी नेताओं ने कबीलेवाले ...मंत्रिमंडल को बम बरसाने ...काफी प्रचार किया; ...के सरदार इपी के ...घटना मालूम हुई तो ...सरकार से मैत्री के लिए ...। पंडितजी १६ अक्टूबर ...के हवाई अड्डे पर उतरे तो ...झंडे आदि दिखलाना ...पंडितजी दूसरे मार्ग से ...खान साहब के मकान ...। मुस्लिम लीग पंडित नेहरू ...से सीधा सम्बन्ध देखना ...। हमें आशा है कि ...के विचारों को पूर्ण रूप ...हार्दिक सहयोग देंगे।

* *

...बाबू नाराज

...अस्थायी सरकार बनाने ...और लीग के नेताओं को ...किया था। परंतु मिस्टर जिन्ना उस समय राजी नहीं थे। कांग्रेस ने वायसराय का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और राष्ट्रीय सरकार बना ली। इन दिनों राष्ट्रीय सरकार ने देश-हित के जो-जो कार्य करने का श्रीगणेश किया था उससे आशा होने लगी थी कि अब देश स्वतन्त्रता के द्वार पर है। इधर इस बीच लीग की प्रत्यक्ष कार्रवाइयों ने यह प्रकट कर दिया कि लीग में कितनी ओछी मनोवृत्ति के लोग हैं। उधर लीगी प्रतिनिधि रूसी वैदेशिक मन्त्री मो० मोलोटोव से देश के विभाजन के लिए सहायता माँगने गया था। सब ओर से निराश होकर अब लीग अस्थायी सरकार में शामिल हुई है। उसने अपनी ओर से एक हरिजन को भी लिया है। लीग के इस रुख और कार्रवाइयों को देखकर समाजवादी नेता बाबू जयप्रकाशनारायण ने कहा है कि मुझे संदेह है कि मन्त्रिमंडल में कठिनता से शान्ति रहेगी। यह अशान्तिमय वातावरण क्या देश-हित के लिए लाभकारी होगा?

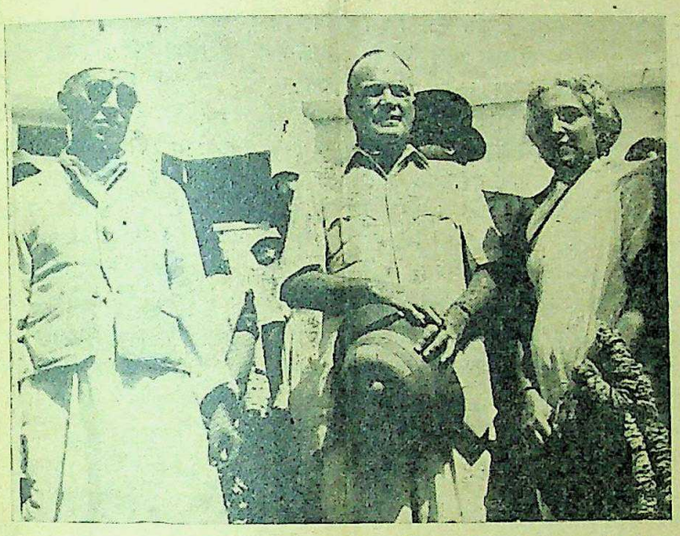

भारत-स्थित अमरीकन कमिश्नर जार्ज आर० मेरेल और नेहरूजी के साथ हवाई अड्डे पर श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित, जिनके तत्त्वावधान में भारतीय शिष्ट-मंडल अमरीका गया

* * *

आचार्य कृपालानी राष्ट्रपति

राष्ट्रपति पंडित जवाहरलाल नेहरू के अस्थायी सरकार के प्रधान मन्त्री होने पर कांग्रेस अध्यक्ष के कार्य में बाधा पड़ती। इस कारण उन्होंने इस भार को ग्रहण करने से इनकार कर दिया। अध्यक्ष-पद से उनके त्यागपत्र देने के बाद इस पद के लिए आचार्य कृपलानी का नाम प्रस्तावित हुआ। पिछले चुनाव में भी आचार्य कृपलानी का नाम प्रस्तावित हुआ था। परन्तु उन्होंने अपना नाम वापस ले लिया था। अब वे पुनः राष्ट्रपति-पद के लिए खड़े हुए। समाजवादी नेता श्री जयप्रकाशनारायण ने मौलाना अबुलकलाम आजाद का नाम राष्ट्रपति पद के लिए प्रस्तावित किया था। अन्य कई प्रान्तों ने भी मौलाना साहब का समर्थन किया था। इसका चुनाव २० आक्टोबर को होता; परन्तु मौलाना साहब ने महात्माजी से परामर्श करके अपना नाम वापस ले लिया, इस कारण कृपलानीजी निर्विरोध अध्यक्ष मनोनीत हुए।

मनोनीत राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी

* * *

पूर्वी युक्त-प्रान्त के जमींदार और किसानों में मनमुटाव

यह विचार-धारा अब ज़ोर पकड़ती जा रही है कि जमींदारी शीघ्र ही तोड़ दी जायगी। इससे किसानों और जमींदारों दोनों का जमीन पर गैर-क़ानूनी अधिकार कर लेने का प्रयत्न हो रहा है। इस प्रयत्न में पूर्वी युक्त-प्रान्त में बहुत कुछ झगड़े भी हुए हैं। सरकार इन झगड़ों को निबटाने के लिए काफी प्रयत्नशील है।

* * *

अन्तर्कालीन सरकार के सदस्य

राष्ट्रीय सरकार की स्थापना का उद्देश्य यह नहीं है कि देश की आजादी शीघ्र होने के बजाय वर्षों ब्रिटिश सरकार की कृपा पर निर्भर रहे। परन्तु, यह तभी हो सकता है जब अन्तर्कालीन सरकार के सदस्य योग्य व्यक्ति हों, उनकी योग्यता केवल इस बात से न परखनी चाहिए कि वे किसी विशेष दल के प्रतिनिधि हैं; सदस्य को कम से कम एक बड़ा राजनैतिक व्यक्ति और वक्ता होना चाहिए। उसके वैयक्तिक जीवन का ... से हो। परन्तु ... मेम्बर साहब में ... देश को

हैं! यह पूँछ कहाँ से आई?

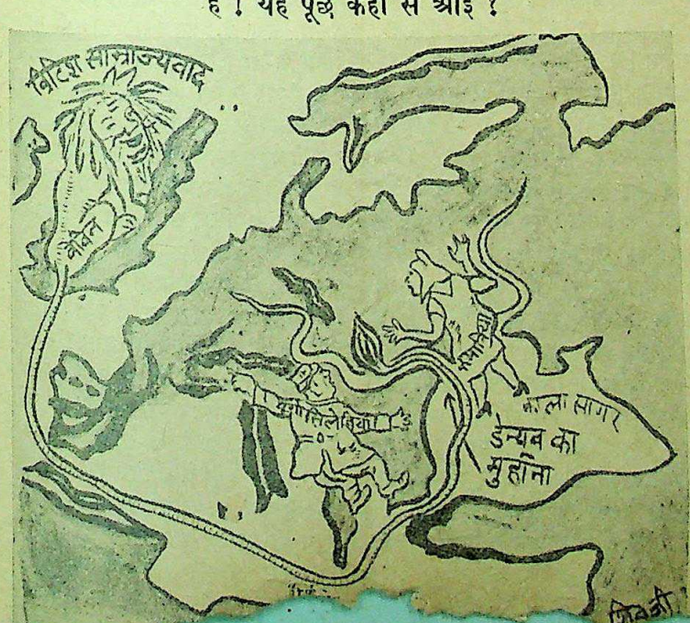

ब्रिटिश प्रतिनि... को ... समान आजाद...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

पूर्वी बंगाल में दयनीय दृश्य

नोआखली और उसके पड़ोसी जिलों की बीभत्स कहानियाँ पाठक नित्य-प्रति समाचार-पत्रों में पढ़ते रहे हैं। वहाँ की वास्तविक स्थिति के सम्बन्ध में अभी तक जो समाचार मिलते थे, बंगाल की लीगी सरकार उनको महत्त्व देने के बजाय उसको हिन्दू-सभा आदि का प्रचार कहती रही है। परन्तु जब बंगाल के नेताओं ने उस प्रान्त की बीभत्स कहानियाँ सुनाकर भारत सरकार और भारत मन्त्री के पास सहायतार्थ अपील की तो देश का ध्यान उस ओर एकाएक खिच गया है। देश की राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस के मनोनीत राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी, शरत्चन्द्र बोस और अन्य नेताओं ने उन क्षेत्रों का निरीक्षण किया है जो क्षतिग्रस्त हैं और जहाँ से बच्चों तथा स्त्रियों को भगाया गया है। उन लोगों ने बंगाल के गवर्नर और प्रधान मन्त्री श्री सुहरावर्दी से भी इसके सम्बन्ध में बातें की हैं। तीन सौ वर्षों के बीच, हिन्दू-मुसलमान एक दूसरे को सर्वदा से घृणा तो करते रहे हैं, पर ऐसी स्थिति कभी नहीं पैदा हुई। आज की यह स्थिति पिछले वर्षों से बिलकुल भिन्न है।

बंगाल के गवर्नर और सरकार दोनों इस ओर यदि कड़ा रुख धारण करते तो ये घटनायें इस पराकाष्ठा पर न पहुँचतीं। आज यही विश्वास अधिक जोर पकड़ता जा रहा है। आचार्य कृपलानी के कथनानुसार मालूम होता है कि मुल्की सरकार कितनी अकर्मण्य और गैर जिम्मेदार रही है। ऐसे समय इतनी लापरवाही दिखलाई गई है और गैर जिम्मेदारी का परिचय दिया गया है कि उन जंगली की सी निर्दयता करनेवाले व्यक्तियों को, जो अरक्षित जनता पर अत्याचार कर रहे थे गिरफ्तार तक नहीं किया। स्त्री भगाने के अपराध में कम से कम १२ साल तक की सजा दी जाती रही है, परन्तु ऐसे समय जब कि स्त्रियाँ भगाने का सामूहिक अपराध किया गया है, बहुत कम गिरफ्तारियाँ हुई हैं। इसमें भी सन्देह है कि वे किस जुर्म में लिये जायँगे और उनको कौन-सा कानूनी दंड दिया जायगा। ऐसी स्थिति में मुल्की अधिकारियों को अत्यधिक अधिकार दिया जाना चाहिए और ऐसे कार्य करनेवाले गुण्डों को कड़ी से कड़ी सजा देकर कानून और सभ्यता की रक्षा करनी चाहिए। सामूहिक हत्या, सामूहिक स्त्रियों का अपहरण, सामूहिक विनाश और सामूहिक असभ्यता के व्यवहार की जिम्मेदारी किसके सिर होगी? मि० सुहरावर्दी के लिए नोआखाली विप्लव की निन्दा ही काफी नहीं है, यदि वहाँ की स्थिति को सुधारना उनके काबू से बाहर है तो उन्हें शीघ्र इस्तीफा दे देना चाहिए। केवल मौखिक सहानुभूति काफी नहीं। यह बहुत पहले से मालूम है कि लीग ने बंगाल में मुसलमानों [illegible]

नहीं कहा है। मुस्लिम लीग के ऐसे मेम्बरों से, जिन्होंने अपनी वक्तृता से हिंसात्मक कार्यों को बढ़ावा है, किसी प्रकार का कोई उत्तर नहीं पूछा गया और न यही कहा गया कि उन्हें लीग से अलग किया जाय। यदि लीग यह कार्य करने को तैयार है तो उसे चाहिए कि हर प्रकार की हिंसात्मक वक्तृताओं पर, जो ऐसे समय दी गई, कड़ी कार्रवाई करे। वहाँ की पुलिस भी एक मजाक करती है। न तो वह कार्य ही करती है और उसके पास शस्त्र ही हैं। बंगाल के गवर्नर का भी ध्यान इस ओर खींचा गया है कि जो फौजें वहाँ भेजी गई हैं वे बहुत कम हैं। इसलिए उस संगठित आक्रमण को रोकने के लिए यह आवश्यक हो गया है कि सुदृढ़ सेनायें वहाँ भेजी जायँ। दो लाख से अधिक शरणार्थी उस क्षेत्र में इस समय मौजूद हैं जिनकी रक्षा और भरण-पोषण का कोई खास प्रबन्ध नहीं है। मृत्यु-संख्या अभी तक ठीक ठीक नहीं मालूम हुई परन्तु यह कई हजार तक पहुँच गई है। आक्रमण की घटनाएँ यह प्रकट करती हैं कि मानो पहले से ही सैनिक ढंग से इसकी तैयारी की गई है। कुछ लोगों को आगे भेज दिया जाता है। वे लोग सड़कें काट देते और यातायात के साधन नष्ट कर देते हैं। इसके पश्चात् संगठित आक्रमण होता है। कुल अत्याचार हिन्दू जनता पर हुए हैं। जलते हुए गाँवों, घरों और आक्रमणकारियों को घर लूटते हुए वायुयानों से देखा गया है।

यह निर्णय किया गया है कि जो स्त्रियाँ अथवा बच्चे भगा ले जाये गये हैं अथवा जिनसे निकाह कर लिया गया है उन्हें हिन्दू समाज में सम्मान के साथ ले लिया जाय। स्वयंसेवकों के दल ऐसी लड़कियों और स्त्रियों के छुटकारे के लिए भेजे जा रहे हैं। लीगी गुंडों के ये कारनामे भारत के इतिहास में तैमूरलंग की याद दिलाते हैं।

* * *

नेहरूजी का सीमांत दौरा

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सीमांत का दौरा करने का विचार इसलिए किया था कि कबीलेवाले क्षेत्रों से भारत का घनिष्ठ सम्बन्ध हो। परन्तु मुस्लिम लीगवालों ने कबीलोंवालों को नेहरूजी के दौरे के विरुद्ध काफी भड़का दिया। जिस मार्ग से नेहरूजी गुजरे उसी मार्ग पर लीगियों के संगठित दल ने पंडितजी के साथियों पर गोलियाँ दागीं और पत्थर बरसाये। यह सब होते हुए भी कबीलों के प्रमुख सरदारों और मुखियों ने पंडित जवाहरलाल और उनके साथियों का सम्मान किया है। लीगियों ने पेशावर के हवाई अड्डे से ही पंडितजी का विरोध करना शुरू किया था। कबीलेवालों में आज तक लीग ने अपने प्रचार के लिए काफी रुपया खर्च किया है। उसी प्रचार और संगठन ने नेहरूजी और उनके साथियों के दौरे का घोर विरोध किया है। पर जहाँ तक सीमांत [illegible]

भी संस्था या सम्प्रदाय इनसे आर्थिक लोभ द्वारा कोई भी कुत्सित कार्य करा सकता है। परन्तु ज्योंही कबीलेवालों की शिक्षा, रहन-सहन और आर्थिक स्थिति में परिवर्तन हुआ, बस वहाँ भी एक नवीन युग आरम्भ हो जायगा जो शायद इस प्रदेश में कनिष्क अथवा प्राचीन किसी राजा महाराजा के समय में ही रहा हो। मुस्लिम लीग कबीलेवालों में कुछ रुपये बाँट कर उनको अपनी हिंसात्मक मनोवृत्ति का पृष्ठ-पोषक बनाना चाहती है, जो दासता से कम नहीं। उस प्रदेश में कितने ही उद्योग-धन्धे आदि संचालित करके कबीलेवालों को कामों में लगाया जा सकता है जिससे वे साल भर तक अपनी जीविका एक अच्छे नागरिक के रूप में चला सकें। शिक्षा के लिए उसमें आन्दोलन चलाकर स्कूलों में मुफ्त शिक्षा दी जाय। बल्कि सरकार की ओर से यह प्रबन्ध हो कि स्कूल में पढ़नेवाले विद्यार्थियों को भी सहायता के रूप में छात्र-वृत्ति दी जाया करे। देश के अन्य सब प्रान्तों की भी जिम्मेदारी है कि वे अपने रक्षक प्रदेश के भाइयों को सच्चा नागरिक बनाने के लिए दिल खोलकर सहायता करें। पंडित जवाहरलाल नेहरू के उस प्रदेश के दौरे के वक्तव्यों से यही भाव प्रकट होते हैं। दिल्ली वापस आने पर उन्होंने अपने सम्पूर्ण दौरे के सम्बन्ध में जो वक्तव्य दिया है उससे स्पष्ट है कि उस प्रान्त की वास्तविक स्थिति यही है कि कबीली भाइयों की वर्तमान स्थिति का सुधार करने के लिए देश का ध्यान उस ओर आकर्षित होना चाहिए।

* * *

लीग का नया कदम

बहुत आगा-पीछा करने के बाद मुस्लिम लीग ने अस्थायी सरकार में सम्मिलित होने का निर्णय किया है। अन्तर्कालीन सरकार में उसके सदस्यों की सूची भी प्रकाशित हो गई। बड़े आश्चर्य की बात लीग ने कर दिखलाई—अछूतों का एक सदस्य मुस्लिम लीग का प्रतिनिधित्व करेगा। सिन्ध के लीगी मंत्री मिस्टर खुरो ने कहा है—'लीग अल्पसंख्यक जातियों के प्रतिनिधित्व की अवहेलना नहीं कर सकती।' परन्तु खेद है, आज तक लीग में मुसलमानों के अतिरिक्त किसी दूसरे सम्प्रदाय को मेम्बर बनने का हक नहीं है। यदि लीग अल्पसंख्यक जातियों का प्रतिनिधित्व मानती और उनका अस्तित्व स्वीकार करती है तो उसको प्रारम्भिक सदस्यता का द्वार अछूतों के लिए खोल देना चाहिए था। परन्तु यह कहाँ हो सकता है। ब्रिटिश सरकार की छत्रछाया में रहनेवाले मिस्टर जिन्ना और अम्बेदकर आज पदासीन होते तो यह तूफान ही क्यों आता? भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के सूर्यास्त की अम्बेदकर और जिन्ना अन्तिम ज्योति हैं। इस ज्योति से स्पष्ट हो जाता है कि ब्रिटिश सरकार का हृदय कैसा है। एक ओर देश के स्वतन्त्र होने की घोषणा और दूसरी ओर मुस्लिम लीग को बढ़ाकर इस हद तक पहुँचाना कि मुसलमानों की एक-मात्र संस्था होने [illegible] करनेवाली जमात, एक अछूत [illegible] करे। लीग कांग्रेस [illegible] आई है। [illegible] मिस्टर जिन्ना ने [illegible] के लीग मुसलमानों [illegible] का भी प्रति-

निधित्व करती है। जब अन्तर्कालीन [illegible] कार में अपने अपने सदस्य [illegible] देने की बात आई तो कांग्रेस ने [illegible] दिया—कांग्रेस कोई साम्प्रदायिक [illegible] नहीं है। उसके सदस्यों में हिन्दू, [illegible] मान, सिक्ख, ईसाई, पारसी और [illegible] जातियों के लोग भी हैं। परन्तु [illegible] नेता मिस्टर जिन्ना की हठधर्मी [illegible] न मानी। विधान-परिषद् के [illegible] घोषित कर दिया कि कांग्रेस सभी [illegible] की संस्था है, किसी विशेष व्यक्ति [illegible] की नहीं। सरकार को अन्त में [illegible] राष्ट्रीय संस्था मानना पड़ा। अन्त में [illegible] देश की बागडोर कांग्रेस के हाथ [illegible] तो दी, परन्तु कूटनीति का चक्र [illegible] रहा। लीग के नेता से मिलकर [illegible] कार में पाँच लीगियों के भीतर [illegible] को भी ठूँस दिया। यह आश्चर्य [illegible] क्या है। बंगाल की घटनाएँ [illegible] जिन्ना और खुरो से छिपी हैं? [illegible] अल्पसंख्यकों की इस तरह [illegible] लगाकर मकानों को भस्म कर देना, [illegible] का अपहरण, डाका और चोरियाँ [illegible] यही अल्पसंख्यकों की रक्षा की [illegible] यदि लीग हृदय को साफ करके [illegible] सरकार में सम्मिलित होती तो इस [illegible] बुरे काम न होते। देश की संस्कृति [illegible] साथ वह समझौता नहीं करना चाहती [illegible] सीधे ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि [illegible] बातें करती है। फिर इस नये कदम [illegible] आश्चर्य की बात ही क्या!

सरकार में लीग की ओर से भेजे [illegible] मिस्टर गजनफर अली ने सार्वजनिक [illegible] से जो बातें कही हैं उनसे लीगवालों [illegible] की बात बिलकुल साफ हो जाती [illegible] उनका सरकार में प्रवेश पाकिस्तान [illegible] प्राप्ति के लिए है, देश की आजादी [illegible] उन्हें अधिक चिन्ता नहीं।

* *

संकट में दीपावली

देश में यत्र-तत्र अशान्ति है [illegible] खराबी हो रही है, अरक्षित जनता [illegible] धर्मान्ध आततायी विनष्ट कर रहे [illegible] जिनके हाथ में शासन की बागडोर [illegible] कर्तव्य निर्धारण नहीं कर पा रहे हैं [illegible] बुरे समय में हम दिवाली किस [illegible] मनावें। संकट में कहीं उत्सव [illegible] जाता है। महाकाली दीनों पर दया [illegible] दुष्टता का संहार करें, उनसे हमारी [illegible] प्रार्थना है।

*

भूतपूर्व अमरीकी सचिव श्री कर्डेल [illegible] अभी हाल ही में देहान्त हो गया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाजवाद-प्रवर्तक कार्ल मार्क्स

क्रान्तिकारी विचार-धारा और जीवन-दर्शन

लेखक, श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

[१]

जिस क्रान्तिकारी विचार-द्रष्टा कार्ल मार्क्स के सिद्धान्तों की छाया पकड़कर सोवियट रूस आज दुनिया का स्वर्ग कहलाता है, उसके जीवन-दर्शन और विचार-धारा का एक अध्ययनपूर्ण पहलू इस लेख में चित्रित किया गया है।

कार्ल मार्क्स का अनन्य मित्र फ्रेडरकि एंगिल्स

व्यावहारिकता उसके आधारभूत गुणों पर बहुत कुछ प्रकाश डालती है।

फ्रेंच-सीमा के निकटवर्त्ती राइन प्रान्त में ट्रीयर नामक स्थान में कार्ल मार्क्स का जन्म सन् १८१८ ई० में हुआ था। इनके पिता नामी वकील थे। परिवार सम्पन्न था। इनके पितामह का नाम मार्क्स लेवी था; लेकिन कालान्तर में सिर्फ मार्क्स ही उन्होंने अपने नाम में रहने दिया और 'लेवी' शब्द का त्याग कर दिया। सन् १८२४ ई० में जब कार्ल सिर्फ छः वर्ष का

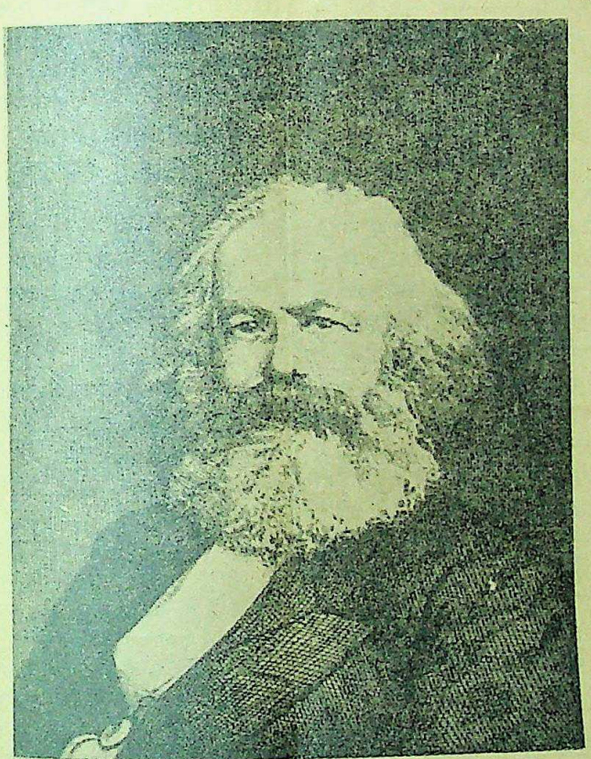

महान् क्रान्तिकारी कार्ल मार्क्स

था, तभी उसके पिता हिर्शेल मार्क्स ने लूथर-स्थापित धर्म-संघ के अन्तर्गत सपरिवार ईसाई धर्म की दीक्षा ले ली और अपना नाम हेनरिक मार्क्स रख लिया। इस प्रकार योरपीय सभ्यता में प्रवेश करने का उसने मानो टिकट प्राप्त कर लिया, जो आज भी जर्मनी में यहूदियों के खिलाफ भेदभाव की दीवार खड़ी किये है। यद्यपि भेदभाव की यह दीवार उतनी विकट नहीं है जितनी मध्ययुग में थी, अथवा हिटलर के समय में होने जा रही थी। ट्रीयर में वह अग्रगण्य वकील रहा।

हेनरिक को आशा थी कि उसका प्यारा पुत्र कार्ल उसी का पदानुसरण करेगा; लेकिन उसकी यह आशा कभी पूर्ण नहीं हुई। यद्यपि हेनरिक का देहान्त तभी हो गया था, जब कार्ल [illegible] का तरुण [illegible] की गई अपेक्षा [illegible] का आभास पहले [illegible] विश्व-विद्यालय

ईश्वर से घृणा

जब कभी प्रकट हो जानेवाली चंचलता रहते हुए भी मार्क्स की बौद्धिक प्रतिभा बराबर अपना चमत्कार दिखलाती रहती थी। जन्मस्थान की एक पड़ोसिन और सुन्दर तरुणी जेनी को कार्ल बहुत स्नेह करता था। इस जेनी के प्रति अपने विश्व-विद्यालय-काल में ही कार्ल ने तीन कविता-पुस्तकें लिख डाली थीं; रोमन नागरिक कानून के भी दो भाग लिख लिये थे और कानून का मौलिक दर्शन भी उसने लिखा था, जिसे स्वयं व्यर्थ समझकर फाड़ डाला था।

हेगल का स्वर्गवास हुए अभी कुछ ही साल बीते थे; लेकिन कार्ल पर उसका बहुत प्रभाव पड़ चुका था। हेगल के सम्बन्ध में भी कार्ल ने एक अध्ययनपूर्ण पुस्तक लिखी थी, जिसमें उसे प्रारम्भ से लेकर अन्त तक समझने का प्रयत्न किया गया था। बर्लिन यूनिवर्सिटी में पढ़ते समय ही कार्ल हेगल के अनुयायियों की संगति में पड़ गया। हेगल के अनुयायी न केवल तत्कालीन अप्रगतिशील प्रशा-सरकार के प्रति घृणा करते थे, प्रत्युत हेगल [illegible]

की पूर्ण सुधारवादी नीति, अहंभावना और उच्छृङ्खलता आदि का आभास होने लगा था।

और जिसके कारण उसे पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त हुई थी, उसमें उसने लिखा था—'दार्शनिकता किसी तथ्य का रहस्योद्घाटन नहीं करती। परम्परागत आस्था में ही उसका विश्वास रहता है। मैं सभी देवताओं से घृणा करता हूँ।' और जीवन भर मार्क्स ने सदा अपने दृष्टिकोण से विचार किया—ऐसा विचार जिसके सहारे पीड़ित मानवता का उद्धार हो सके।

मार्क्स ने पहला राजनीतिक लेख सन् १८४२ ई० में लिखा था। इसके कारण वह काफी परेशानी में पड़ गया था। प्रशियन सेन्सरशिप के खिलाफ जिहाद था इस लेख में। यह तरुण विद्रोही इसके बाद ही एक दूसरे पत्र में लेख लिखने लगा और शीघ्र ही उस पत्र का प्रधान सम्पादक भी हो गया। लेकिन पत्र ने तत्कालीन रूसी जारशाही सरकार की खरी-खरी आलोचना की, अतः उसका प्रकाशन बन्द कर दिया गया।

मित्र और शत्रु

सात वर्ष के मीठे सम्बन्धों के बाद मार्क्स ने जेनी नामक तरुणी के साथ विवाह कर लिया। अब वह पेरिस जाकर समाजवाद का अध्ययन करने लगा। पेरिस में मार्क्स एक विद्रोही से शीघ्र ही क्रान्ति-

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीयुत कृष्ण मेनन कौन हैं ?

ब्रिटेन में भारतीय स्वतन्त्रता के प्रचारक

लेखक, श्री शीतलादीन

भारतमाता के कितने ही सपूत विदेशों में भारतीय सम्मान और स्वतन्त्रता के लिए लड़ रहे हैं। श्रीयुत मेनन उन्हीं सपूतों में से हैं। ब्रिटेन की जनता और पार्लियामेण्ट के सदस्यों में भारतीय स्वतन्त्रता का जो भाव आपने भरा है, वह अकथनीय है। मेनन को पंडित नेहरू ने रूस के लिए विशेष दूत नियुक्त किया है। लेख पठनीय है।

राष्ट्रीय सरकार के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू

संसार में कुछ ऐसे व्यक्ति हुए हैं जिनकी प्रसिद्धि उनके कार्यों से इतनी शीघ्र हुई कि संसार को उनकी प्रसिद्धि पर चकित हो जाना पड़ा। अमेरिका के वेण्डर विल्की, जर्मनी का फील्ड मार्शल रोमेल, फ्रांस के डी गाले, इसी श्रेणी के व्यक्ति हैं। भारतवर्ष भी ऐसे व्यक्तियों को पैदा कर सका है जो अपने अलौकिक गुण के कारण इतनी जल्दी चमक उठे कि संसार को चकित होना पड़ा। संसार-प्रसिद्ध आजाद हिन्द सेना के उन्नायक नेता श्री सुभाषचन्द्र बोस प्राणों की बाजी लगाकर काफी प्रसिद्ध हो गये हैं। संसार में कोई उनकी अवहेलना भले ही करे पर भारतवर्ष में बच्चे बच्चे की जबान पर 'नेताजी जिन्दाबाद' है। अल्पकाल में प्रसिद्धि पानेवाले लोगों में चरित्रनायक श्री कृष्ण मेनन भी हैं। संसार के समाचार-पत्रों में आजकल आपके कार्यक्रम को बड़े मोटे शीर्षक में छापा जाता है। भारत की राष्ट्रीय सरकार के प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू के आप विशेष राजदूत हैं। पेरिस और मास्को में रूसी सरकार के प्रधान और वैदेशिक मंत्रियों से मिलकर भारत की मैत्री को बढ़ाने का कार्य पंडितजी ने आपके सुपुर्द किया है। आपकी इस नियुक्ति ने संसार में आपको एक महान् व्यक्ति बना दिया है।

श्रीयुत कृष्ण मेनन का जन्म सन् १८९७ ई० में उत्तरी मलाबार के एक सम्पन्न जमींदार-घराने में हुआ था। मेनन के पिता का नाम कामथ कृष्ण कुरुप था। वे काटाथण्ड के तत्कालीन बड़े राजा के पुत्र थे। कृष्ण मेनन अपने पिता की आठ सन्तानों में से हैं। कामथ कृष्ण कुरुप असाधारण व्यक्ति थे। बहुत दिनों तक वे टेलीचेरी वकील संघ के अध्यक्ष थे। राष्ट्रीय विचारों की प्रधानता आपमें कूट-कूटकर भरी थी। कृष्ण मेनन में भी राष्ट्रीयता सहज ही भर गई। इन्होंने अपने पिता की हस्तलिपि, चलने के ढंग और अन्य तरीकों को अपना लिया। आज भी उनको अपने पिता की स्मृतियाँ आती हैं।

बाल्यकाल में मेनन में खास प्रतिभा न थी। परन्तु वे प्रायः अपने अध्यापकों से नाराज हो जाया करते थे। उनसे जवाब-सवाल करके उनको [illegible] थे। वे अपनी सम्[illegible] करते [illegible]

कृष्ण मेनन यह जानते थे कि नौकर बिलकुल निर्दोष है। उन्होंने अदालत में जाकर उसकी ओर से गवाही दी। उनके पिता उस समय अदालत में थे। वे पुत्र को अदालत में देखकर बड़े चकित हुए। मेनन ने पिता और घरवालों की इस मामले में जरा भी परवा न की। नवयुवक मेनन ने अपने शहर के स्कूल की पढ़ाई समाप्त करके मद्रास के प्रेसीडेंसी कालेज में नाम लिखाया। वहाँ वे बड़े आदमियों के सम्पर्क में आये। श्रीमती एनी बेसेण्ट से वे मद्रास में मिले और उनसे काफी परिचय प्राप्त कर लिया। एनी बेसेण्ट ने कृष्ण मेनन को थियोसोफिकल संस्था में भर्ती होने और राष्ट्रीय बनने की प्रेरणा दी। इतिहास का विषय लेकर आपने परीक्षा पास की। इसके पश्चात् कालेज में कानून पढ़ने लगे। परन्तु दिल न लगने से कालेज छोड़ दिया। वे श्री अरण्डेलकर के साथ अडयार में थियासोफिस्टों के साथ रहने लगे और स्वयं एक थियासोफिस्ट हो गये। परन्तु वे निरे थियासोफिस्ट न थे, उनमें राष्ट्रीयता की भावना दौड़ रही थी। इससे उन्होंने अडयार में रहना अच्छा न समझा। अडयार छोड़ने के बाद वे इँगलैंड को चल पड़े। उन्होंने वहाँ अपनी पढ़ाई पूरी करने का विचार किया। इँगलैंड पहुँचकर वे सोचने लगे कि केवल पढ़ लेना ही जीवन का मुख्य उद्देश्य नहीं है जब तक वह कार्यरूप में न लाया जाय। उनमें राष्ट्रीयता कूट-कूटकर भरी थी ही। उन्होंने देखा कि इँगलैंड-निवासी चाहे सर्वसाधारण हो अथवा पार्लियामेंट का मेम्बर, सभी भारतवर्ष की दशा से बिलकुल अपरिचित हैं। यह दशा देखकर उन्होंने मातृभूमि की सेवा करने की प्रतिज्ञा की। अन्त में उन्होंने वैधानिक लड़ाई लड़कर देश की स्वतंत्रता प्राप्त करने का विचार किया। सोचा कि इस मार्ग-द्वारा हम इँगलैंड और भारत का अधिक भला करेंगे। उन्होंने 'इंडिया लीग' का संचालन इस विचारधारा को लेकर किया। उन्होंने यह नहीं सोचा कि इसके लिए लोगों की सम्मति लें बल्कि वे इस काम में जुट गये। उनका कहना था—हमारे देश को स्वतंत्रता के लिए कितने ही मोर्चों पर लड़ना है। कुछ घरेलू मोर्चे हैं, कुछ विदेशी। मैं विदेशी मोर्चों पर लड़ूँगा। ये वाक्य मेनन अपने मित्रों से प्रायः कहा करते थे।

इँगलैंड में रहते हुए ही श्री मेनन पंडित जवाहरलाल नेहरू के परिचित हुए थे। यह परिचय धीरे धीरे बढ़ता गया। मेनन ने अच्छे ढंग से इंडिया लीग का कार्य शान्तिपूर्वक चलाया और इँगलैंड में भारतवर्ष के प्रति सहानुभूति पैदा कर दी। समय बीतने पर मेनन के स्वप्न पूरे होते दिखाई देने लगे। मजदूर दल के ७५ प्रतिशत सदस्य इंडिया लीग के भी सदस्य हैं।

देश में राष्ट्रीय सरकार के स्थापित होते ही कृष्ण मेनन नये भारत के दर्शन को वापस आये। उन्हें आज देश में सभी जानने लगे। जनता उनको धन्यवाद देती है। जहाँ जाते हैं, उनका सम्मान होता है। जब वे अपनी जन्मभूमि कालीकट पहुँचे तो उनका खासा स्वागत किया गया। इँगलैंड में वे ६ पेनीवाली पेलिकन पुस्तक के सहकारी सम्पादक हैं, पंडित जवाहरलाल नेहरू की नई निकली हुई पुस्तक के सम्पादक हैं। मेनन अभी तक अविवाहित हैं; परन्तु वे बच्चों को बहुत प्यार करते हैं। यद्यपि वे इस समय ४९ वर्ष के हो रहे हैं, परन्तु देखने में बिलकुल नवयुवक प्रतीत होते हैं। आपको मांस से परहेज है। आपके घनिष्ठ मित्रों का कहना है कि आप बड़े ही उदार हैं। सहृदयता आपमें कूट कूटकर भरी है।

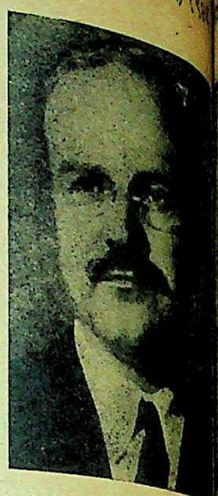

रूस के वैदेशिक मंत्री मो० मोलोटोव [illegible] श्री मेनन ने वार्ता की।

परन्तु आप निर्भीकता के पक्के पुजारी [illegible] किसी भी अवसर पर आप कायरता [illegible] नहीं करते। इन्हीं सब कारणों ने [illegible] पंडित जवाहरलाल के निकटतम [illegible] पहुँचा दिया है। संयुक्त राष्ट्रसंघ [illegible] में भारत की ओर से जो प्रतिनिधि [illegible] गया है उसके एक प्रतिनिधि आप हैं।

साहित्यालोचन

इसका संशोधित संस्करण [illegible] तैयार है। इसमें संस्कृत के [illegible] आचार्यों के साहित्य-सम्बन्धी [illegible] के अतिरिक्त पाश्चात्य साहित्यकारों [illegible] साहित्य-मर्मज्ञों के मत का दिग्दर्शन [illegible] ही मौलिक ढंग से कराया गया है। [illegible] पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य [illegible] पाँच रुपये पाँच आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

मुफ्त

बेस्टोजेम

श्रेष्ठ बलवर्द्धक टानिक

स्वास्थ्य, शक्ति और सजीवता के [illegible] बेस्टोजेम एक बढ़िया टानिक (शक्ति[illegible] औषध) है। यह महान् शक्तिवर्द्धक [illegible] स्फूर्तिदायक आश्चर्यजनक टानिक [illegible] शरीर पर बिजली के करेण्ट की [illegible] की तरह असर करता है। बेस्टोजेम [illegible] भी स्त्री या पुरुष को उसकी यथार्थ [illegible] से २० से २५ साल तक कम उम्र का [illegible] देता है। इससे अच्छी भूख लगने [illegible] और एक सप्ताह में ही ३ से ५ पौंड [illegible] वजन बढ़ जाता है। समस्त [illegible] बेस्टोजेम को लोकप्रिय बनाने की [illegible] प्रत्येक नगर के उन कुछ पहले [illegible] को कृष्णा फाउण्टेनपेन (इंग्लिश [illegible] उपहार के रूप में मुफ्त भेजा जाय [illegible] हमारे इश्तहार दवा के साथ अपने [illegible] में हमारी हिदायतों के माफिक [illegible] ताकि बेस्टोजेम लोकप्रिय हो जाये। [illegible] प्रतिशीशी सिर्फ ५) रु० है। [illegible] बनने के लिए कृपया आज ही लिखिए [illegible]

नोट :—दवा छुड़ाने के पहले [illegible] पार्सल पर कृपया 'पहले ग्राहक' [illegible] टिप्पणी देख लीजिए, ताकि [illegible] मुफ्ती उपहार के अधिकारी हो [illegible] ऊपर लिखा गया है। [illegible] लिखिए—

बेस्टोजेम लेबारेटरीज़
पोस्टबाक्स नं० ८, देहली

दीप-राग

रचयिता, श्री गोविन्दराव मराठे

जलीं आज फिर दीपावलियाँ।
वसुन्धरा ने कवरी में या
राशि-राशि गूँथी हैं कलियाँ
मन्द हुआ उडु-विजन लजीला
बन्द हुई ज्योत्स्ना की लीला
इन्द्रपुरी से होड़ लगाये मना रही दुनियाँ रँगरलियाँ
लिये थालियाँ नवल वसन में
इठला-इठला प्रेम-सदन में
[illegible] जलाती फिरतीं [illegible] तितलियाँ।
[illegible] सकते [illegible] याँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्थायी सरकार और गृह-युद्ध ?

अँगरेजों की कूटनीतिज्ञता से गृह-युद्ध हो सकता है

लेखक, श्री मिथलेशकान्ति

भारतवर्ष में डेढ़ सौ वर्षों का अँगरेजी राज्य हमारी गुलामी का जीता-जागता चित्र है। कितने ही बड़े त्याग और तपस्याओं से आज अँगरेजों का दिल बदला है, इससे वे केन्द्र में थोड़े से अधिकार देने को राजी हुए हैं, परन्तु वे अधिकार को छीनने के लिए कम प्रयत्नशील नहीं हैं। लीग की धमकियाँ और हठधर्मी अँगरेजों की कूटनीति का परिणाम है। लेख में इसका सुन्दर वर्णन है।

सरदार पटेल, गृहसदस्य

मुस्लिम लीग के तानाशाह मि० जिन्ना

कर सकता। नेहरूजी हमारी शक्ति पर विश्वास करके असेम्बली-भवन में आजादी के रास्ते को थोड़ा आसान करने गये हैं। अतः हमें अपनी इस शक्ति को, जिस पर उन्होंने विश्वास किया है, सुचारु रूप से रखना है। आज हमें चुपचाप नहीं बैठना है। देश को संगठित करने का यह स्वर्ण अवसर है। आज हम आसानी से अपनी ताकत को सौ गुनी कर सकते हैं। प्रत्येक कांग्रेसवाले का कर्त्तव्य है कि वह अपने देश की उस बड़ी लड़ाई के लिए तैयारी शुरू कर दे, जो यदि अँगरेज सीधे से भारत को नहीं छोड़ते तो हमें लड़नी होगी और जिसे हम जीतेंगे।

लगातार दो सौ वर्ष की गुलामी ने हमारे दिमागों को बेकार कर दिया है। हमारा भोजन, शिक्षा, वातावरण सब कुछ दूषित हो गया है। हमारा शारीरिक, नैतिक और आत्मिक पतन हो गया है। अस्थायी सरकार के सम्मुख यह प्रश्न है जिसे कि हल करना है।

किसी ने सत्य कहा है कि यदि किसी देश का पतन करना हो तो वहाँ के मनुष्यों का भोजन दूषित कर दो। हमारे साथ यही हुआ है। किसी देश का नैतिक स्तर जानने के लिए दो बातें देखी जाती हैं। प्रथम, वहाँ की वस्तुओं के मूल्य में कितना मोल भाव होता है; और द्वितीय वहाँ की

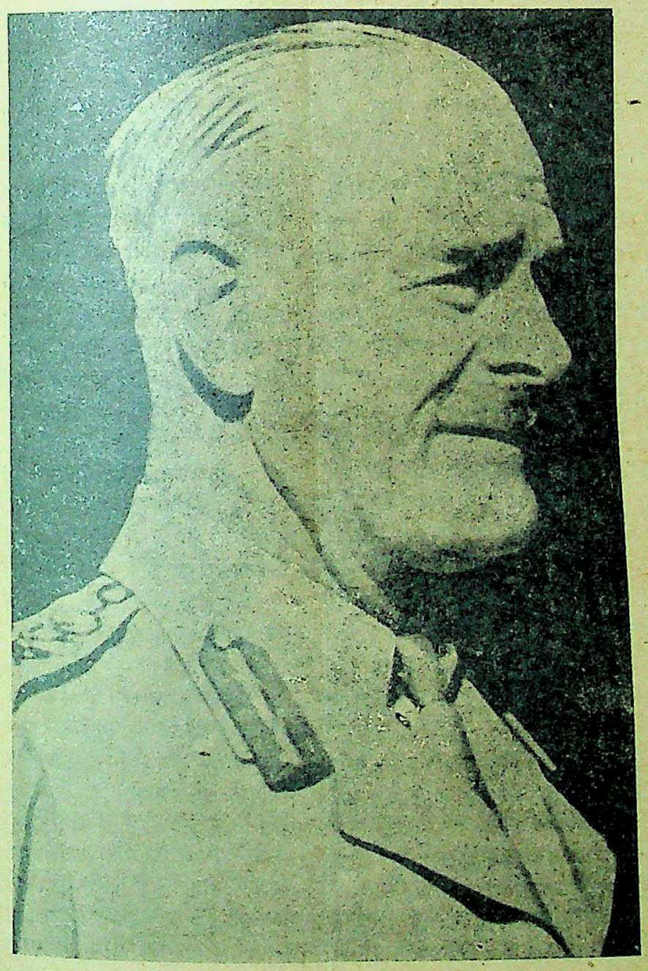

वायसराय लार्ड वैवेल

यदि हमें चेम्बर-भवन में पूर्ण आजादी नहीं मिलती तो हम उसे लड़ाई के मैदानों में, जहाँ हमने उसे खोया था, अपने सिरों की मशाल बनाकर ढूँढेंगे।

इसके साथ ही अस्थायी सरकार के सम्मुख अनेकों कठिनाइयाँ हैं। भारत के भाग्य-विधाता युग-पुरुष, महात्मा गांधी ने जैसा कहा है कि [illegible] सोने का [illegible] रहे हैं और [illegible] उत्तरदायित्व [illegible] दायित्व को ले[illegible] पात्र हैं।

खालिस कहकर बिकनेवाली वस्तुओं में कितनी मिलावट होती है। जिस देश का नैतिक स्तर जितना नीचा होगा, उतना ही अधिक वहाँ मोल-भाव और मिलावट मिलेगी और इस कसौटी पर हिन्दुस्तान का क्या स्थान है, यह लिखने की आवश्यकता नहीं। आज हमें खालिस दूध-घी नहीं मिलेगा तब वे अच्छे नागरिक, नीरोग और विद्वान कैसे हो सकते हैं। अस्थायी सरकार यदि भारत में श्रेष्ठ नागरिक उत्पन्न करना चाहती है तो उसे हमारे भोजन को सुधारना और नकली तथा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक वस्तुओं की बिक्री बन्द करनी होगी।

हमारी शिक्षा की अपूर्णता का वर्णन बड़े बड़े लेखक कर चुके हैं। हमारे स्कूल और कालेज में आज राष्ट्रीय शिक्षा का कोई स्थान नहीं। हमारे राष्ट्र-निर्माता शिक्षकों की बुरी हालत है। उनको इतना कम वेतन मिलता है कि जीवन-निर्वाह के लिए उन्हें दूसरे तरीकों को अपनाना पड़ता है जो न्यायसंगत नहीं हैं। इसके कारण वे अपनी पूर्ण शक्ति और पूर्ण समय विद्यार्थी की शिक्षा में नहीं लगा पाते। इन राष्ट्र-निर्माताओं को कम से कम इतना वेतन मिलना चाहिए कि वे नोन-तेल-लकड़ी की चिन्ता से बचकर अपना पूरा समय विद्यार्थियों के मानसिक और नैतिक विकास में लगा सकें। देश की उन्नति के लिए ये दो कार्य अत्यन्त आवश्यक हैं।

हिन्दुस्तान के हर एक बूढ़े और बच्चे, स्त्री और पुरुष के सम्मुख सबसे महत्त्व-पूर्ण एक प्रश्न यह है, 'क्या हम आजाद होने जा रहे हैं?' स्कॉट ने अपनी एक प्रसिद्ध कविता में कहा है—'क्या ऐसा भी कोई मनुष्य है जिसकी आत्मा इतनी मर गई हो, कि उसने यह कभी न कहा हो—'यह मेरा देश है; यह मेरा है।' कल ही की बात है, दिल्ली में 'यह मेरा देश है; यह मेरा है' नहीं कहा गया परन्तु अपने को हिन्दुस्तानी होने से भी इनकार किया गया। बेचारे स्कॉट को क्या मालूम था कि एक शताब्दी बाद ही धरती पर कोई ऐसा विचित्र जीव पैदा होगा। जन्मभूमि से प्रेम तो पशु को भी होता है। मि० जिन्ना ने गुलामी को हटाने की कौन कहे, उसे मजबूत बनाये रखने की सदैव कोशिश की। उन्होंने घृणा के गीत गाये हैं। क्या इससे भी अधिक आत्मा का पतन हो सकता है; और ऐसे मनुष्य की धमकी पर कुछ लोगों [illegible] घूमा करता है—[illegible] गुलामी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमींदारी-प्रथा का अन्त

किसानों की दशा में परिवर्तन की आशा

लेखक, श्री 'ललित' शाहजहाँपुरी

देश में जमींदारी-प्रथा के विरुद्ध आवाज बहुत दिनों से उठ रही थी। कांग्रेस ने पद ग्रहण करते ही इस विषय को सबसे पहले हल करने की ओर ध्यान दिया है। जमींदारी तोड़ने के लिए एक कमेटी बना दी गई है जो शीघ्र ही निर्णय देगी। लेख में जमींदारी के अंगों पर प्रकाश डाला गया है। लेख पठनीय है।

प्रधान मन्त्री पं० गोविन्दवल्लभ पन्त

आठ अगस्त, सन् ४६ को यू० पी० की एसेम्बली ने जमींदारी-प्रथा के अन्त का प्रस्ताव पास कर दिया। प्रस्ताव का विरोध बड़ा तीव्र रहा और प्रस्ताव पास होते समय जमींदार-प्रतिनिधि तथा मुस्लिम लीग के सदस्य उठकर चले गये। वाद-विवाद में काफी गर्मी आ गई थी। विरोधी-दल तथा सरकारी बेञ्चों के बीच खूब बहस हुई। जमींदारों की सूराखदार नाव को डूबने से बचाने के लिए विचित्र ढङ्ग काम में लाये गये। सर विजय (कांग्रेसी), सर जगदीशप्रसाद (स्वतन्त्र) तथा नवाब छतारी (लीग) का डेपुटेशन महात्मा गांधी के पास पहुँचा कि उनसे यू० पी० मन्त्रिदल की जबर्दस्ती को रोकने के लिए एक फरमान ले लें। किन्तु ये सब प्रयत्न और रक्तपात की धमकियाँ तथा गुप्त कोशिशें बेकार रहीं।

आइए, हम इस प्रश्न पर शान्ति-पूर्वक तथा निष्पक्ष होकर विचार करें। हम जमींदारी-प्रथा को क्यों मिटाना चाहते हैं? प्रधान मन्त्री ने हमें विश्वास दिलाया कि यह ऐसा प्रश्न नहीं है जिस पर रक्त-पात करानेवाले झगड़े हों। उन्होंने कहा कि वे गरीब जनता के रहन-सहन में सुधार करने के लिए चिन्तित हैं। बहुत सी कमेटियों और कमीशनों का निर्णय उनके पक्ष में है। एक राष्ट्र का जीवन उसके लोगों की उपज पर सदा निर्भर होता है। कृषि-विज्ञान यही कहता है कि जब हम खेती की पैदावार बढ़ावेंगे, तभी गाँववालों के रहने का ढङ्ग उच्च कोटि का हो सकता है। यह प्रकट है कि वर्तमान समय में हमारी खेती की पैदावार बहुत कम है। उदाहरणतः, जब हिन्दुस्तान प्रतिएकड़ लगभग ९० पौंड बीज से अलग की हुई रुई उत्पन्न करता है, तो संयुक्तराष्ट्र अमेरिका २०० पौंड पैदा करता है और मिस्र ४५० पौंड प्रतिएकड़। फिर, जब हिन्दुस्तान में गन्ने की औसत पैदावार १३ टन प्रति एकड़ है, तो जावा में ५० टन है। अतः हमारी मुख्य समस्या यह है कि पैदावार क्योंकर बढ़ाई जाय। जमींदारी-प्रथा को मिटा देने से क्या हमारी जमीन से अधिक उपज होगी? और, कृषि की आय का क्या उत्तमतर वितरण होगा? जमीन के पट्टे की जमींदारी-प्रथा बङ्गाल, बिहार, उड़ीसा, संयुक्तप्रान्त, उत्तरी मदरास और बम्बई के कुछ भागों तथा मध्य-प्रान्त में पाई जाती है। रैयतवाड़ी-प्रथा बम्बई, मध्य प्रान्त, मदरास एवं सिन्ध में है। जमीन के पट्टे का मुख्य प्रकार [illegible] में 'भार्ग[illegible]

गोंडा एवं बहराइच जिलों के कुछ क्षेत्रों में स्थायी बन्दोबस्त है। शेष प्रान्त में अस्थायी बन्दोबस्त है जो प्रति ३० वर्ष प्रायः बदला जाता है। अकाल-कमीशन-रिपोर्ट से ली गई निम्नलिखित सूची खेतों के अधिकारी मालिकों की जमीन के ('खुद-काश्त' या 'सीर') और बहुत से किराये-दारों की जमीन के क्षेत्रफल को बतलाती है :—

(लक्ष) एकड़ों में क्षेत्रफल

अ—'सीर' व 'खुदकाश्त'	५·९६०	५·९६०
ब—(१) मौरूसी किरायेदार	१४·९९०	
(२) जब-तब के किरायेदार	१०·४१०	
(३) भूतपूर्व मालिकों के किरायेदार तथा अवध में विशेष पट्टों के अधिकारी	०·८१०	
(४) एक-दर के किरायेदार तथा स्थायी पट्टे के अधिकारी	०·७१०	२६·९२०
स—व्यक्तिगत किरायेदार	०·१९०	०·१९०
	योगफल	३३,०७०

जमींदार का मुख्य कार्य ज़मीन की मालगुजारी इकट्ठा करना है। वह प्रान्त के किन्हीं भागों में सिंचाई के टैक्स भी वसूल करता है जिसके लिए उसे सरकार से कमीशन मिलता है। वह प्रायः गाँव का मुखिया होता है तथा खोज-खबरों और पकड़ा-धकड़ी में पुलिस की सहायता करता है। वह राज्य के उन अफसरों का स्वागत-सत्कार करता है जो उसके ऊपर रहते हैं और जिनकी छत्रछाया की उसे समय-समय पर आवश्यकता पड़ती है। राजनैतिक उभारों के दिनों में, वह आन्दो-लन को दबाने में सहायक होता है और 'अमन सभा' चलाता है। मतलब यह कि आधुनिक 'पुलिस' गवर्नमेंट के लिए वह शक्ति का उद्गम है। 'पुलिस' सरकार का मुख्य कार्य कानून लागू करना तथा शांति बनाये रखना है। किन्तु हमें आश्चर्य है कि सार्वजनिक सरकार में शायद ही किसी विशेष महत्त्व का वह रह जाता है, यदि क्रान्ति के ढंग से वह अपने तरीके नहीं बदलता। उसने जो सेवाएँ की हैं, उनसे कोई आशाएँ नहीं रखी जा सकतीं।

लार्ड कार्नवालिस ने १७९३ में स्थायी बन्दोबस्त चलाया, कुछ तो मालगुजारी की वसूली को सहल बनाने के लिए और कुछ हिन्दुस्तान में ब्रिटिश ढंग पर जमींदार उमराओं की एक जमात उत्पन्न करने के लिए। उनका विश्वास था कि जमींदार अपनी जमीन में सुधार करेगा और अपने किरायेदारों से मिलकर रहेगा। दुर्भाग्य से, उसकी आशाओं पर भरोसा रखा गया है। जमीन के मालिक तथा जमीन जोतनेवाले के बीच में बिचौलियों की एक सेना [illegible]

है। इससे वह कृषि की दशाओं की पूरी जानकारी नहीं रख सकती।

एक गलत इतिहास

अस्थायी बन्दोबस्त में, दशाएँ लगभग वैसी ही हैं, सिवा इसके कि मालगुजारी सदा के लिए पक्की नहीं होती। बड़ा जमीं-दार या ताल्लुकदार कोई अच्छा व्यवहार नहीं करता। उस पर दोष लगाया जाता है कि वह न केवल पट्टे की तजदीद पर बल्कि दूसरे बहुत-से अवसरों पर जबर्दस्ती 'नजराने' और बख्शीश लेता है। बहुत-से जमींदार गाँव के घर छोड़कर शहरों में रहने लगते हैं जहाँ उन्हें जीवन के उत्तमतर साधन मिल सकते हैं। काम 'कारन्दों' पर छोड़ दिया जाता है जो गरीब आदमियों को परेशान करते हैं। ऐसी बुरी दशाओं में उत्साह के लिए गुंजाइश कहाँ? पिछले समय में जमींदारी-प्रथा चाहे जितनी न्यायोचित रही हो, इसमें अब कोई लाभ नहीं रह गया है और आधुनिक समय में तो इसका इतिहास निन्दाजनक रहा है। संसार शीघ्रता से पैदा-वार के औजारों को बढ़िया बनाने की ओर झुक रहा है। 'पूँजीवाद' के पिता ब्रिटेन में भी हम ऐसी ही प्रवृत्तियाँ देख रहे हैं।

अगला प्रश्न यह है कि जमींदारी अधिकार जब्त कर लेने चाहिए किंवा रहने देने चाहिए। भिन्न-भिन्न प्रकार के जमींदार हैं—उनमें से कुछ ने अपनी रियासतें उत्तराधिकार में पाई हैं, दूसरों को 'जागीरें' मिली हैं, और किसी ने ऋण के बदले में प्राप्त की हैं। कुछ ने अपनी जमीनें मोल ली हैं। हर मामले को एक प्रकार से हल करना मुश्किल है। जमींदार लोगों की कमी को उचित आधार पर पूरी करने के लिए एक या कई नुस्खे बनाने पड़ेंगे जो आम तौर से लागू हो सकें।

पूर्त्ति के आकार नकद या काफी समय के दस्तावेज या सालाना वजीफा के रूप में हो सकते हैं। जमींदारी हकों के एवज में आजकल काफी नकद इकट्ठा कर लेना कठिन है, किन्तु दूसरे दो तरीके बिलकुल [illegible] २० से ३० साल के अर्से के [illegible] रगड़ पर जमींदारों [illegible] तवर्ष एकत्रित [illegible] से न केवल [illegible] कता है बल्कि ऋण

गृह-सदस्य श्री रफी अहमद [illegible] का कुछ भाग भी चुकाया जा [illegible] राज्य जमींदार को अपनी एकत्रित [illegible] गुजारी का ६० प्रतिशत देता है। [illegible] बहुत बड़े माल के अफसर के [illegible] पर, इकट्ठा करने का खर्च जमीन की [illegible] गुजारी का ५ से १० तक प्रतिशत [illegible] लगाया जाता है। यदि १० प्रतिशत [illegible] लगाया जाय तो परिवर्तन से प्रान्त [illegible] काफी मालगुजारी बढ़ जायगी। [illegible] वृद्धि राज्य को मिलनी चाहिए। [illegible] सालाना वजीफे का तरीका [illegible] तथा सबसे अधिक सरलता के साथ [illegible] में लाने योग्य होगा।

प्रान्त में जमींदारों के अंतर्गत [illegible] हैं—मामूली जमींदार से लेकर [illegible] खेत में काश्तकारी करता है [illegible] ताल्लुकेदार तक। कमेटी को यह [illegible] करना है कि हर जमींदार को कितनी [illegible] 'सीर' या 'खुदकाश्त' मिलेगी। [illegible] और बहुत से अन्य प्रश्नों को [illegible] की आवश्यकता है।

सब कुछ हो जाने के पश्चात [illegible] को टुकड़ों में किफायतशारी को [illegible] बनाना चाहिए। छोटी-छोटी [illegible] की बुराइयाँ इतनी अधिक हैं कि [illegible] यहाँ चर्चा नहीं हो सकती। [illegible] उन्हें रोकना चाहिए। यह सत्य बात [illegible] जमींदारी अधिकारों के समाप्त हो [illegible] राज्य उत्तमतर तथा अधिक [illegible] अवस्था में होकर टुकड़ों को एक [illegible] सकेगा और काश्तकारी में सुधार [illegible] इसे उत्तराधिकार के नियम भी [illegible] करने पड़ेंगे। उत्तराधिकार केवल [illegible] उचित हो सकता है जब राज्य [illegible] के उन छोटे लड़कों को, जो [illegible] कानून के अनुसार खेतों के टुकड़ों [illegible] वञ्चित हो जाते हैं, लाभदायक [illegible] और उद्यम दे। इसका अर्थ है [illegible] यतशारी की आयोजना जो पूर्णोन्नति [illegible] लोगों का उत्तमतर रहन-सहन [illegible] रखे। ये सब कार्य हैं तो कठिन [illegible] बनाये जा सकते हैं यदि राज्य [illegible] सीधा सम्बन्ध स्थापित करे।

National's BORATALC MEDICINAL & TOILET TALCUM POWDER
THE NATIONAL TRADING CO. [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६ अगस्त

लेखक, श्री नित्यानन्द तिवारी

कलकत्ते के दंगे में वहाँ की वास्तविक स्थिति क्या थी, गुंडों का संगठित दल भले आदमियों के जान-माल के सर्वनाश में किस प्रकार संलग्न था ? दत्त और यासीन दोनों विभिन्न धर्मानुयायी थे परन्तु उनके प्रेम में साम्प्रदायिकता का स्थान न था। कहानीकार ने कलकत्ता के विनाशकारी दंगे का चित्र कहानी में चित्रित कर दिया है।

जान पड़ता है, मार्ग में दत्त को बेहोशी आ गई थी। डाक्टर द्वारा प्राथमिक उपचार के बाद दत्त ने आँखें खोलकर देखा।

सामने वही यासीन खड़ा था। वही फैज़-अचकन और पायजामा पहने।

सम्भवतः उसे पहचानने में दत्त को कठिनाई हो रही थी।

पूछा उसने—यासीन ?

'हाँ, क्या पहचान नहीं पा रहे हो ?'

दत्त ने सर हिलाकर बताया, 'पहचान रहा हूँ।' इसके बाद उसने फिर अलसाये भाव से नेत्र बन्द कर लिये।

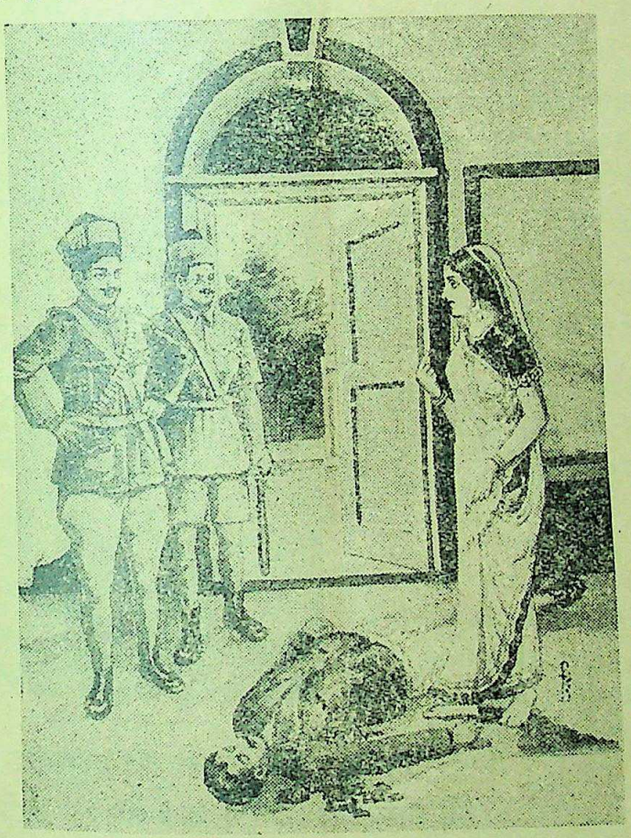

मैंने यासीन की हत्या कर दी है यह देखो रक्त। कहकर दत्त फफक-फफककर लेटकर रोने लगा।

कुछ देर बाद उसने फिर नेत्र खोले। पूछा—'उन लोगों ने मुझे क्यों मारा यासीन ? मैंने तो उन लोगों का कुछ बिगाड़ा नहीं ? फिर क्यों मारा ? मैं तो उन लोगों को पहचानता भी नहीं।'

यासीन ने कहा—बातें न करो अमर। सब बातें बाद में बताऊँगा।

दत्त ने और आग्रह न किया। शान्त भाव से लेटा रहा।

कुछ देर बाद फिर आँखें खोलीं—तुम यह कैसी पोशाक पहने हो ? ऐसी पोशाक तो तुम कभी न पहनते थे।

यासीन [illegible] सका, आज इस [illegible] निकलने का दूसरा

लोगों के विभिन्न अस्त्रों के सामने दत्त को बचाना भी सम्भव न होता।

उसने चुपचाप डाक्टर से पूछा—कैसी अवस्था है ?

डाक्टर ने कहा—प्रहार हलका ही है। आप इन्हें ले जा सकते हैं।

डाक्टर के उत्तर से सन्तुष्ट होकर यासीन ने मन्द-मुस्कान भरे नेत्रों से दत्त की ओर देखा।

डाक्टर ने फिर पूछा—ये कहाँ रहते हैं ?

'बालीगंज में।'

'क्या वह हिन्दू बस्ती है ?'

'पूर्णतया।'

'तब तो इसी समय भेज दीजिए। किन्तु आप धर्मतल्ला पार करा कर ही उतर पड़िएगा।'

'क्यों, भला ?'

डाक्टर हँसे। बोले—पार्क स्ट्रीट के उस ओर जाना आपके लिए निरापद न होगा। उधर के हिन्दू लोग पागल हो उठे हैं।

यासीन जैसे विश्वास [illegible] न कर पा

यासीन ने भरे नेत्रों से दत्त की ओर देखा

दत्त को लेकर धर्मतल्ला स्ट्रीट की ओर से जाते ही डाक्टर की बात की सत्यता और भी स्पष्ट हो गई।

* * *

सन्ध्या के समय दत्त को कुछ ज्वर हो आया।

डाक्टर को सूचित किया गया। वे आये और देखकर बोले—कोई डर नहीं है। चोट साधारण है। ज्वर की जो तेजी है वह चोट के कारण नहीं वरन् उत्तेजनावश। यदि प्रातः भी ज्वर रहे तो मुझे सूचित कीजिएगा।

यह सुनकर कि भय का कोई कारण नहीं है, घर के लोग आश्वस्त हुए। फिर भी रात में तापमान कुछ और बढ़ा। उसी में दत्त ने दो-तीन बार पूछा—यासीन ने कोई फोन नहीं किया ?

दत्त की स्त्री ने कहा—फोन करेंगे कैसे ? टेलीफोन लाइन ही बन्द है।

कहा नहीं जा सकता, बात दत्त की समझ में आई या नहीं। उसने चुपचाप आँखें बन्द कर लीं।

प्रहार के कारण रक्त अधिक गिरा हो, ऐसी बात न थी। ज्वर भी साधारण था। तब भी दत्त न जाने कैसा थका-सा और अवसन्न हो गया था। उसकी स्नायुएँ जैसे स्पन्दनहीन हो गई हों। लोहे के डंडे का सर पर प्रहार बहुत भीषण तो नहीं हुआ था, किन्तु स्नायु-तन्तु को जैसे उसने बेकार कर दिया हो।

वह जैसे इसके लिए प्रस्तुत न था।

इस समय भी वह न जान पाया था कि उन लोगों ने उसे क्यों मारा। उसने तो किसी का कुछ बिगाड़ा नहीं।

दत्त इंजीनियर है। यन्त्र तैयार करता है और मरम्मत करता है। उसके साथ किसी का क्या विरोध हो सकता है ? केवल हिन्दू होने के कारण ही क्या उसे मुसलमान के हाथ से मार खानी पड़ेगी ?

किन्तु यासीन ? वह भी तो मुसलमान है। उसने तो उसे नहीं मारा ? वरन् रूमाल भिगोकर उसके घायल अंग को उसने धोया है, बड़े यत्न से गोद में उठाकर मोटर-द्वारा अस्पताल ले गया और पुनः अस्पताल से उसकी मोटर को संकट-ग्रस्त स्थान से पार कराया।

वह भी तो मुसलमान है। उसने तो [illegible] नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दैनिक

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुओं को मारने के लिए क्यों इस प्रकार उन्मत्त हो उठे हैं और हिन्दू लोग मुसलमान को। फिर भी मारने के हिंस्र आनन्द से सभी का रक्त जोश से फूटकर निकला पड़ रहा है।

दत्त सोचता है, सोचने की चेष्टा कर रहा है।

अपने दुर्बल मस्तिष्क के लड़खड़ाते पटल पर इसी बात को सोचता और सोचते ही सोचते न जाने कब निद्रा देवी की गोद में हिलोरें लेने लगा। सम्भवतः यह निद्रा न थी, न जाने कैसी एक मूर्च्छा-सी थी।

* * *

उस समय रात को तीन बज गये थे। सारी रात घर के लोगों की आँखों में नींद न आई।

क्षण-क्षण में चारों ओर शोर-गुल सुनाई पड़ रहा है। 'वन्दे मातरम्', 'जय हिन्द', 'अल्ला हो अकबर' के नारे लग रहे हैं। प्रतिघंटे भाँति-भाँति की ख़बरें आ रही हैं—लोमहर्षण नर-संहार की भयावनी कहानियाँ। जो जैसे ही अवसर पाता है, दूसरों की बस्तियों पर आक्रमण कर बैठता है। धायँ-धायँ करके महल और झोपड़ियाँ भस्म हो रही हैं। दमकलों के घंटे बज रहे हैं।

रात जैसे साँय साँय कर रही हो।

उन लोगों के घर के युवा पुरुष एक भी घर में नहीं हैं। मुहल्ला और अपने घरों की रक्षा के लिए वे सब गलियों में, मोटी मोटी लाठियाँ लिये, चक्कर लगा रहे हैं।

शंख और घंटों के शब्द सुनकर विपद् की आशंका से भयातुर हो अमर दत्त की स्त्री कभी बाहर बरामदे में जाकर खड़ी होती और कभी आकर घायल स्वामी के पलँग पर एक किनारे बैठ जाती।

एक किसी अनैसर्गिक भय से उसका हृदय बैठा जा रहा था। उसका मन अन्धकार से पूर्ण हो रहा था। हाथ-पाँव की नसें जैसे कठोर हो गई हों। वह जैसे मनुष्य नहीं, एक यंत्र हो गई थी। उसके हृदय नहीं, मन नहीं, बुद्धि नहीं, कुछ नहीं।

इसी प्रकार कभी कमरे में, कभी बरामदे में आते-जाते दत्त-पत्नी ने रात्रि के तीन प्रहर काट दिये।

बिस्तर पर पड़ा दत्त गहरी नींद में था।

उसकी ही बग़ल में अत्यन्त सावधानी से वह भी लेट रही।

बाहर धीरे-धीरे सम्पूर्ण कोलाहल शान्त हो चला। गृहिणी के नेत्र भी धीरे-धीरे मुँद गये।

* * *

अचानक धम्म-धम्म के शब्द से गृहिणी की नींद टूट गई।

कमरे में नीली बत्ती जल रही थी।

गृहिणी ने नेत्र खोलकर देखा, एक गाव-तकिये पर दोनों पैर फैलाये बैठा हुआ दत्त तकिये को धमाधम पीट रहा है।

'यह क्या, यह क्या, क्या कर रहे हो?' हड़बड़ाकर गृहिणी उठ बैठी।

दत्त की आँखें गुलाबी रंग की भाँति लाल हो गई थीं। पट्टी खुल गई थी। क्षत स्थान से पुनः रक्त की धारा बह चली है। वही रक्त न जाने कब हाथों में लग गया है।

"यह क्या कर रहे हो जी?" कर रहे हो जी?" गृहिणी चीत्कार कर उठी।

'खून, खून। मैंने बाघ को मार डाली। यह देखो, रक्त!' बिछौने पर लोटकर पटक-पटक लगा।

मुहल्ले के डाक्टर उसी आये। उन्होंने फिर से सँभाल दी। टेम्प्रेचर लिया—१०४। अवस्था है। डाक्टर ने बनाया।

(एक बँगला कहानी के

श्वेतकुष्ठ वनोषधि

महात्मा प्रदत्त श्वेतकुष्ठ (सफेदी) की दवा से तीन दिन में पूरा फायदा। यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, विज्ञापन-दाताओं की दवा से निराश हो चुके हों तो इसे लगाकर आराम होवें। १५ दिन की दवा का मूल्य २॥)।

सफेद बाल काला

इस तेल से बालों का पकना रुक कर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दूना मूल्य वापसी की शर्त लिखा लें। यह तेल सिर के दर्द व सिर में चक्कर आना आदि को आराम कर आँख की रोशनी बढ़ाता है। एकाध बाल पका हो तो २), आधा पका हो तो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मँगवा लें। एजेण्टों की हर जगह आवश्यकता है।

स्तम्भक वटी

एक गोली शाम को खा लें और इसके अद्भुत चमत्कार को देखें। एक घंटे तक स्तम्भन कर गजब ढा देगी। १६ गोली १), ५० का २॥॥

पता—वैद्य

चिर प्रतीक्षा के पश्चात्

गान्धी-अभिनन्दन-ग्रन्थ का संशोधित तथा संवर्धित संस्करण तैयार हो गया है किन्तु, सीमित संख्या में-

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ महात्मा गांधी की हीरक-जयन्ती की पुण्य स्मृति में प्रकाशित हुआ था, तथा इसके प्रकाशन के लाभ की आय गांधी जी को भेंट कर दी गई है।

⚜

प्रत्येक भाषा की कविता हिन्दी-लिपि में छापी गई है, तथा उसका अनुवाद भी दे दिया गया है।

⚜

राष्ट्रभाषा हिन्दी की ओर से महात्मा गांधीजी के प्रति यह एक ऐतिहासिक साहित्यिक-श्रद्धांजलि है।

दूसरा संस्करण बड़े आकार-पत्र पर प्रकाशित हो गया है, और प्रत्येक पृष्ठ में एक ही रचना देने से ग्रन्थ का सौन्दर्य निखर जाना स्वाभाविक है।

⚜

इस बात का पूर्ण प्रयत्न किया गया है, कि प्रकाशन की दृष्टि से भी संस्करण सर्वाङ्ग-सुन्दर हो।

⚜

ग्रन्थ की भूमिका सर्वपल्ली सर राधाकृष्णन ने लिखी है तथा इसके संपादक श्रीमान् सेठ घनश्यामदास जी बिड़ला हैं।

गान्धी जी की सम्मति

⚜ जो काव्य मेरी स्तुति में लिखे गये हैं, उनके बारे में क्या कहूँ, इतना कह सकता हूँ सही, काफ़ी परिश्रम किया गया है और कोई शुभ परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता। ⚜

डा० अमरनाथ झा जी के शब्दों में 'किसी भी भाषा में इससे पहले इस प्रकार का कोई भी ग्रन्थ नहीं प्रकाशित हुआ जिसमें इतनी भाषाओं के इतने कवियों की इतनी उत्कृष्ट कविताएँ भारतवर्ष के सबसे महान् पुरुष के सम्बन्ध में लिखी गई हों।

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ प्रत्येक पुस्तकालय में सहज ही अग्रिम स्थान प्राप्त करेगा, और पाठक इस ग्रन्थ को बारम्बार पारायण करने में सुख प्राप्त करेंगे।

इस संस्करण का लाभ हरिजन-कोष में दिया जायेगा।

मूल्य साढ़े छः रुपये

प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

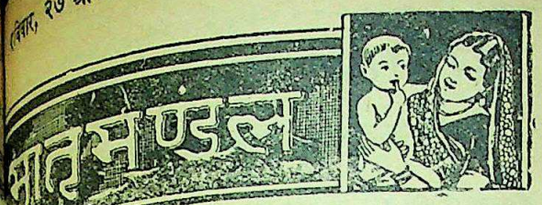
मातृमण्डल

...की के जीवन-चरित्र से महिलाओं में नवीन साहस
...को जयिनी के चरित्र का अध्ययन आवश्यक

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

...में ऐसी नारियों के जीवन-...हैं जो मानव-समाज के लिए ...। किसी भी महापुरुष के उत्थान ...की का बहुत बड़ा सहयोग ...। मनुष्य अपने उच्च आदर्शों के ...अपने और अपने परिवार के ...आहुति देता है। तत्पश्चात् वह ...चमकने के योग्य होता है। ...संग्राम है। मनुष्य इस जीवन-...अपना कोई साथी पाता है ...उसकी धर्मपत्नी ही होती है। ...पिता अपने बच्चों का अहित ...सकते, फिर भी जो ममता और ...पुरुष में होता है वह माता-...कम मिलता है। इसका अर्थ ...कि माता-पिता बच्चों को प्यार ही ...। अबोध स्थिति में माता-पिता ...पालन-पोषण निःस्वार्थ भावना ...उनकी शिक्षा-दीक्षा में सब ...को तैयार रहते हैं; परन्तु बड़े ...प्यार कम हो जाता है जो ...होता है। यह स्थिति अधिक-...की होती है। माताएँ अपने ...उसी स्थिति में देखती हैं ...उन्होंने बाल्यकाल में देखा है।

संयुक्त राष्ट्र-संघ के लिए भारतीय प्रतिनिधि मंडल की सदस्या श्रीमती विजया लक्ष्मी पंडित

...के संगठन की संयोजिका ...सरोजनी नायडू

...को हम सर्वथा योग्य पाते हैं। ...कष्ट संकटों में नहीं बल्कि ...में बीता था। उनके पिता ...में खासे ऊँचे पद पर थे। ...की बड़ी बहन सूफी के साथ ...पढ़ती थीं। कभी कभी वे ...आया करती थीं। यहीं ...कार्ल मार्क्स का परिचय ...। इसी प्रेम से बढ़कर दोनों ...में बदल दिया। इधर ...सम्पन्न जर्मन परिवार की ...और उधर कार्ल मार्क्स ...यकील का लड़का, ...थी! परन्तु उस जोड़ी ...प्रेम था कि जयिनी ने ...न की और कार्ल से ...।

...में अंधड़, तूफानों और न जाने कौन कौन सी विपत्तियों के पहाड़ आते हैं। पर, संयमी उसे हँसते हँसते झेलते और उनका सामना करते हैं। कार्ल के साथ में उस वीरांगना को क्या नहीं करना पड़ा? कार्ल की लाई हुई वस्तुओं का तो वह क्या इस्तेमाल करती, अपने मायके से मिले हुए आभूषणों और अनमोल जवाहरातों को कार्ल के संकट के समय बेचकर उसने पारिवारिक खर्च चलाया। यह गुण बहुत कम स्त्रियों में मिलेगा। अधिकतर स्त्रियाँ आभूषणों और शृङ्गार के पीछे परेशान रहती हैं। परन्तु माता जयिनी पति को संकटों में देखकर परेशान रहती थीं। उन्हें अपने आराम की परवा नहीं थी, उन्हें तो पति और बच्चों की ही चिन्ता रहती थी। कार्ल मार्क्स लन्दन में रह रहे थे। डीन स्ट्रीट के नं० २८ में दो छोटे छोटे कमरों में, निर्धन आदमियों की बस्ती में, अपने बाल-बच्चों के साथ ६ वर्ष तक उन्हें रहना पड़ा था। एक शयनगृह और दूसरा बैठकखाना, रसोईघर और पढ़ने-लिखने के कमरे का काम देता था। उस समय कितने ही ऐसे संकट मार्क्स दम्पति के ऊपर आये जिनको जयिनी ने कितने साहस के साथ झेला। उनके सम्बन्ध में जयिनी ने अपनी एक सहेली को लिखा है—

"बहना, यह मत सोचना कि इन छोटे-छोटे कष्टों के कारण मैंने अपना साहस खो दिया है। यह मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि मैं अकेले ही संकट में नहीं हूँ। संसार में कितने ही ऐसे मनुष्य हैं जो मुझसे कहीं अधिक कष्ट पा रहे हैं, बल्कि मैं यह कहूँगी कि इन सारे कष्टों के होते हुए भी मैं बड़ी सौभाग्यशालिनी हूँ। मैं सचमुच अपने को बड़ी ही सुखी समझती हूँ, क्योंकि मेरे जीवनाधार हर समय मेरे ... पर मुझे जो विशेष ... मेरी अन्तर्रात्मा को ... जिससे मेरा हृदय ... वह यह है कि मेरे ... करनी पड़ती और कष्ट उठाना पड़ता है। वे भयङ्कर से भयङ्कर स्थिति में भी आत्म-विश्वास नहीं खोते, भविष्य के लिए आशा करते हैं, सदैव प्रसन्नचित्त बने रहते हैं और हँसी-मजाक करते रहते हैं। मुझे प्रसन्नचित्त देखकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता होती है। वे प्यारे बच्चों को मेरे चारों ओर किलकारियाँ मारते देखते हैं, तो उनका हृदय प्रफुल्लित हो उठता है।"

जयिनी के ये वाक्य उस जीवन का चित्रण करते हैं जिसके बीच मार्क्स-दम्पति को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। उस संकटमय जीवन से जयिनी को कष्ट नहीं हुआ। कार्ल मार्क्स साम्यवाद के जन्मदाता थे। वे स्वयं साम्य का प्रयोगात्मक पाठ पढ़ रहे थे। उनको धन-वैभव की उतनी चिन्ता न थी जितना परिवार (मानव समाज) को सुखी देखने की। इसी आशा में वे चिन्तित रहते थे। उनकी अर्द्धाङ्गिनी जयिनी उनकी चिन्ता को दूर करने का प्रयत्न करती रही। लन्दन में आर्थिक स्थिति से वे बहुत परेशान थे। घर में एक पैसा न था, न किसी मित्र से कुछ उधार मिला और न किसी दूकानदार ने सामान उधार दिया। यह स्थिति उस दम्पति के सामने थी। इस दशा में जयिनी ने कहा—"और तो कुछ है नहीं, मेरे मायके के ये ठोस चाँदी के चम्मच हैं। इन्हें कहीं गिरवी रखकर कुछ ले आओ। ऐसे कष्टों के समय पतिव्रता स्त्रियों का यह निःस्वार्थ जीवन-चरित्र कितना हृदयाकर्षक हैं। जयिनी को भविष्य की चिन्ता नहीं होती, वह यह नहीं समझती कि भावी संकटों के समय क्या होगा? बड़े आदमी की बेटी होकर उसको इस निर्धन पति के साथ रहने में क्या आनन्द मिलता है। परन्तु जीवन-संग्राम में साथी जो चुन लिया है। दुःख और सुख दोनों में उसी के साथ रहना ही शोभा देता है, फिर जयिनी क्यों पीछे हटती। भोजन-वस्त्र का अभाव उस दम्पति को दुःखी किये हुए था। एक बार कार्ल मार्क्स के एक मित्र ने जयिनी तथा उनकी दो लड़कियों के लिए सुन्दर कपड़े भेज दिये थे। उसको धन्यवाद देते हुए जयिनी ने लिखा था—

"आपको यह सुनकर हर्ष होगा कि आपकी भेजी हुई पोशाक पहनकर लड़कियाँ बड़ी ही मनोहारी हो रही हैं। इन वस्त्रों से उनके चेहरे सुन्दर मालूम होते हैं और ताजगी झलक रही है। मेरे लिए जो कपड़े आपने भेजे हैं उन्हें पहनकर मैं भी शानदार जँचती हूँ। जब मैं पहनकर अभिमान के साथ कमरे में टहलती जाती, तो छोटी बच्ची ने पीछे से चिल्लाकर कहा—'अम्मा-अम्मा, मोर-जैसी-अम्मा।' यदि आज कड़ी सर्दी न होती, तो मैं तुम्हारे भेजे हुए इन्हीं वस्त्रों को पहनकर बाहर निकलती, जिससे पास-पड़ोस के अभिमानी आदमियों को भी कुछ मालूम होता कि मैं क्या हूँ।"

जयिनी को अपने पति के साथ जीवन भर संकट झेलना पड़ा था; परन्तु वह सच्ची सहधर्मिणी थी। जीवन-संग्राम में पति के दुःखों को उसने अपने दुःख से बहुत अधिक माना है।

उनका जीवन-चरित्र आधुनिक नारियों के लिए एक आदर्श है। गृहस्थ-जीवन में प्रवेश करते समय प्रत्येक स्त्री पुरुष यदि जयिनी का चित्र अपनी पुत्री के हाथों में देकर वही कर्तव्य पूरा करने की सम्मति दें तो एक नवजीवन पैदा हो जायगा। भावी साम्यवादी नागरिकों के लिए कार्ल मार्क्स की धर्मपत्नी के चरित्र का एक आदर्श रखकर चलने से सफलता में अत्यधिक शीघ्रता होगी।

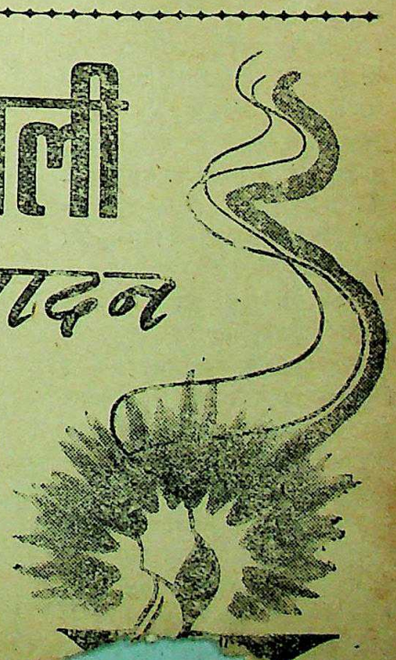
दीपावली
अभिवादन
हम कामना करते हैं कि दीवाली शांति और शुभेच्छा के नववर्ष की संदेश-वाहिका बने और यह नववर्ष देश में सुख-समृद्धि के युग का सूत्रपात करे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरद् ऋतु और आहार-विहार

इस ऋतु में हम कैसा बर्ताव करें ?

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

ऋतु के अनुकूल आहार-विहार करने से स्वास्थ्य ठीक रहता है। आजकल शरद् ऋतु है। इसमें कैसा आहार-विहार करना चाहिए, इसका वर्णन लेखक ने एक गुजराती लेख के आधार पर किया है। समय की चीज है। लेख में बतलाई सूचनाओं पर पाठक ध्यान देंगे तो लाभ होगा।

स्वस्थ जीवन व्यतीत करने के लिए यह आवश्यक और बहुत आवश्यक है कि अपने दैनिक आहार-विहार पर पूरा ख़याल रक्खे और स्वस्थ रहने के लिए जिन नियमों की आवश्यकता है उनका पालन कड़ाई से करे।

ऋतु-विरोधी भोजन कितना ही अमृल्य और बल-वर्द्धक क्यों न हो, फिर भी वह स्वास्थ्य के लिए हानिकर साबित होता और अनेक रोगों का कारण बनता है।

हमारे देश में साधारण तौर पर छः ऋतुएँ होती हैं, जिनका नाम ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर और वसन्त है। उत्तर और दक्षिण दिशाओं की तरफ जब सूर्य और चन्द्र का प्रभाव होता है तब ऋतुओं का जन्म होता है।

शिशिर, वसन्त और ग्रीष्म ये तीन ऋतुएँ उत्तरायण के वक्त और वर्षा, शरद् तथा हेमन्त का काल दक्षिणायन में होता है।

उत्तरायण में सूर्य और उसका वायु-मंडल अधिक गर्म तथा सूखा होता है। पृथ्वी की रसीली चीजें सूखने लगती हैं। इस कारण प्राणि-मात्र का बल दिन पर दिन कम होने लगता है। दक्षिणायन में दिन छोटा होने के कारण सूर्य का प्रभाव कम होने लगता है और चन्द्रमा का प्रभाव खूब बढ़ने लगता है। इसलिए दक्षिणायन में प्राणियों के बल-वीर्य और तेज की वृद्धि होती है।

यहाँ हम शरद् ऋतु के विषय में कुछ खास बातों का जिक्र करना चाहते हैं। शरद् ऋतु में क्वार और कार्तिक ये दो महीने शामिल हैं।

आजकल शरद्ऋतु ही है। इस ऋतु में सूर्य का रंग पीला होता है। आकाश में बादलों का अभाव होता है। चन्द्रमा अधिक चमकने लगता है। चाँदनी स्वच्छ, शीतल और आह्लादकारक लगने लगती है। चन्द्र की किरणें स्निग्ध और तेज होती हैं। इस समय का पवन स्वच्छ और स्वास्थ्य-वर्द्धक होता है। यह मौसम वात-रोग, घाव और सूजन आदि के मरीजों के लिए भी उपयोगी होता है।

शरद् ऋतु कुछ उष्ण होने के कारण पित्तकारक तथा बलदायक होती है। वर्षा ऋतु में प्राकृतिक शीतलता के कारण शरीर की पित्तरूपी गर्मी बाहर न निकल कर अन्दर ही अधिक इकट्ठा होती है।

शरद् ऋतु में सूर्य की गर्मी की अपेक्षा शरीर की गर्मी बाहर निकलना चाहती है। इसको हम पित्त-प्रकोप कहते हैं। यह गर्मी स्वाभाविक होते हुए भी पित्त-रोग उत्पन्न करनेवाली हो [illegible]

इस ऋतु की गर्मी बहुत ही मशहूर है। मलेरिया बुखार से बचने के लिए संयत भोजन और थोड़े परिमाण में व्यायाम करना चाहिए। सवेरे पहर तुलसी के पत्तों को इस्तेमाल में लाना बहुत लाभप्रद है।

शरद् ऋतु में पित्तनाशक, मीठा और चरपरा, कषाय रसयुक्त पदार्थों का सेवन करना चाहिए। इस ऋतु में चावल, मूँग, गेहूँ, गर्म दूध, आमला, भाजी, फल द्राक्षा वगैरह का सेवन हितकारी होता है।

हरी मिर्च, जीरा आदि पित्तनाशक पदार्थों का भी सेवन करे। नींबू का उपयोग खूब करना चाहिए। सूर्य से तपा और चन्द्र की किरणों से ठंडा हुआ जल भी पीना चाहिए। इसे 'हंसोदक' कहते हैं।

ओस गिरने के पहले चाँदनी रात में घूमने का क्रम बनाना चाहिए। घूमकर आने के बाद सो जावे। खिले हुए फूलों को भी सूँघे और उनकी माला पहने। रहने के स्थान को खूब स्वच्छ रखना जरूरी है। गन्दगी से हर वक्त बचने की कोशिश की जाय। कपड़ों को धूप में फैलाकर सुखा लेना बहुत जरूरी है।

इस मौसम में घी और मक्खन अधिक मात्रा में नहीं खाना चाहिए।

शरद् ऋतु में अतिभोजन, अतिश्रम, दिन में सोना, धूप में घूमना, खारी और कड़ू रसवाले पदार्थों का सेवन निषिद्ध है। दही, खटाई, तेज, चरबी तथा क्षारयुक्त पदार्थ तथा तेज और गर्म चीजों का सेवन बहुत हानिकारक है।

ओस और पूर्व दिशा से चलनेवाली हवा भी अहितकर है।

मच्छरों से सावधान रहिए। तुलसी के पत्तों का सेवन कीजिए। पित्तनाशक पदार्थों का बराबर सेवन करते रहिए। ऐसा करने से आपका स्वास्थ्य नहीं बिगड़ेगा।

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, [illegible] पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे पीछे धातु का गिरना [illegible] को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है [illegible] हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए [illegible] १ डिब्बा ३।-) डाक-खर्च माफ़ पैकिंग खर्च अलग। यदि आप की गुप्तेन्द्रियों में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक-खर्च माफ़ पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टो, कानपुर

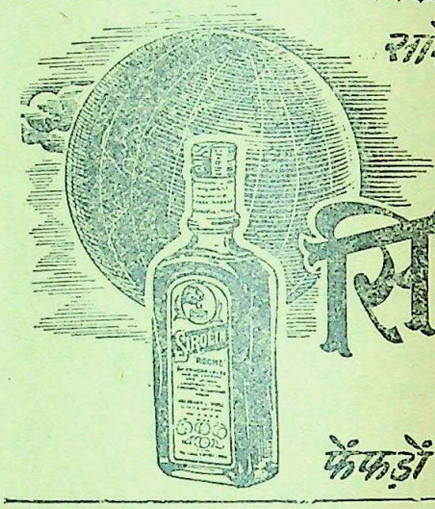

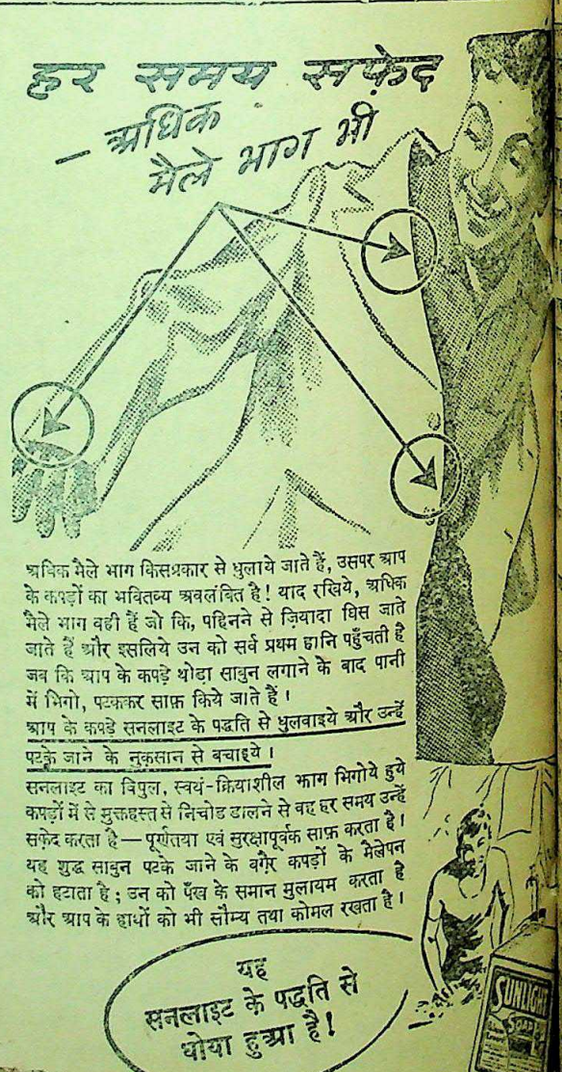

अधिक मैले भाग किसप्रकार से धुलाये जाते हैं, उसपर आप के कपड़ों का भवितव्य अवलंबित है! याद रखिये, अधिक मैले भाग वही हैं जो कि, पहिनने से ज़ियादा घिस जाते जाते हैं और इसलिये उन को सर्व प्रथम हानि पहुँचती है जब कि आप के कपड़े थोड़ा साबुन लगाने के बाद पानी में भिगो, पटककर साफ़ किये जाते हैं।

आप के कपड़े सनलाइट के पद्धति से धुलवाइये और उन्हें पटके जाने के नुकसान से बचाइये।

सनलाइट का विपुल, स्वयं-क्रियाशील झाग भिगोये हुये कपड़ों में से मुक्तहस्त से निचोड डालने से वह हर समय उन्हें सफ़ेद करता है—पूर्णतया एवं सुरक्षापूर्वक साफ़ करता है। यह शुद्ध साबुन पटके जाने के बग़ैर कपड़ों के मैलेपन को हटाता है; उन को पँख के समान मुलायम करता है और आप के हाथों को भी सौम्य तथा कोमल रखता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पादक के नाम चिट्ठियां

सरकार के हथकण्डे

जवाहरलाल नेहरू १६ अक्टू- ... गये तो हवाई जहाज के ... लीगवालों ने अपने ... करके दिल के फफोले ... नहीं रक्खी। इन भले ... भी नहीं सोचा कि जब ... अस्थायी सरकार में सम्मि- ... रही है तब उसी सरकार ... पण्डित नेहरू का स्वागत ... नहीं है तो कम से कम ... तो छिपाये रहें। इस ... करने पर सीमान्त गांधी ... वालों के क्षेत्र में नेहरूजी ... देखिए क्या क्या देखने ... है। कबीलेवालों के क्षेत्र में ... यात्रा की जाने के समाचार ... से ही पिछले कुछ दिनों ... सुनने को मिलता रहा है ... पोलिटिकल डिपार्टमेंट ने

... के अर्थमंत्री श्री मेहरचन्द ... —यदि नेहरूजी के कार्यक्रम ... मुस्लिम लीग को पहले से ... है तो इससे यही प्रकट ... मुस्लिम लीग के साथ पोलि- ... की सांठ-गांठ है।

... प्रतिष्ठित पुरुषों की बातों ... नहीं सकता। इसलिए पोलि- ... के मुखिया पर यह ... है कि या तो वह अपने ... कड़ा करके ऐसी ढील- ... को दण्ड दे और यदि उक्त ... इस साजिश में न हो तो ... बात को प्रकट करे। सर- ... मुहकमा उसी सरकार के ... और जननायक के साथ ... खेल रहा है। यदि इसका ... होता तो वायसराय के ... हुई यह अफ़वाह जोर ... कांग्रेसी मन्त्रियों के शासन- ... के लिए मिस्टर जिन्ना ... लीग से मिले हुए हैं।

...कियों पर ऐसा प्रहार क्यों?

... के दंगे का आरम्भ जिस ... और असावधान जनता ... हाथ रँगे थे उन पर ... होने से पहले तो गुण्डों ... पस्त हुई, इसके बाद ... ढील-पोल होने से उनका ... फिर अशान्ति मची। ... शासन के समय ... पुलिस ने दंगे को ... प्रयत्न किया, फिर ... नहीं है जो देशभक्ति ... में होता है। एक ... के पुलिसविभाग में ... गैर-हिन्दू हैं जो प्रायः ... नहीं समझते। ऐसे ... को दबाने में ज्यादह ... अब इस बात की

जरूरत है कि पुलिस-विभाग में ऐसे लोग भर्ती किये जायँ जो धर्मान्ध न हों और देशभक्ति की भावना से अछूते न हों। ऐसे लोगों से ही सुप्रबन्ध की आशा की जा सकती है।

रेलवे पुल के दक्षिण ओर के हिस्से पर सरकार ने ताजीरी पुलिस का जो टैक्स चन्दे के रूप में लगाया है, उसमें विवेक की कमी जान पड़ती है। जिन मुहल्लों ने शान्तिकमेटियाँ बनाकर दंगे को रोकने का भरपूर प्रयत्न किया है, उनसे इस ढंग का चन्दा माँगना सरासर अन्याय ही नहीं, उन दंगाइयों को बढ़ावा देना भी है जो शान्त जनता की हत्या करके अपने बदनाम फिर्के में नेकनाम बनने को तैयार बैठे रहते हैं। शान्ति के लिए प्रयत्न करनेवालों को यदि टैक्स देना पड़ेगा तो फिर वे कभी ऐसी शान्ति के लिए काहे को प्रयत्न करेंगे? मैं यह नहीं कहता कि दंगे होते ही रहेंगे, फिर भी शान्ति के लिए प्रयत्न करनेवालों की ज़रूरत तो सदा रहेगी ही। आक्रान्त और आक्रामक दोनों से ही चन्दा लेना दण्डविधान का मज़ाक़ करना है। जिन पर आक्रमण किया गया है, उनकी सुरक्षा न करने का दण्ड तो अधिकारी को स्वीकार करना चाहिए।

पण्डित पन्त ने १७ तारीख़ की सन्ध्या को प्रयाग में भाषण देते हुए यह कहा है—"इलाहाबाद की यदि यही शकल कायम रही और पुलिस बढ़ानी पड़ी तो और भी अधिक रकम देनी पड़ेगी। यदि लोग शान्ति कायम कर लेंगे तो १० दिन में पुलिस वापस कर ली जायगी। १० दिन का पुलिस रखने का खर्च लगभग पाँच हजार रुपया आप से, चन्दे के रूप में, माँग लिया जायगा।" यह सुझाव अच्छा है, पर ताली तो एक हाथ से नहीं बजती है। जिनका पेशा ही दंगा करना है उनको यदि पुलिस अपने नियंत्रण में ले ले तो उनकी सदिच्छा सचमुच सफल हो सकती है। लेकिन गुंडे और चोर यदि शान्त कर दिये जायँ तो फिर पुलिस का काम बहुत घट जायगा। इसकी भी तो चिन्ता उस मुहकमे को हो सकती है।

झूसी का पुराना नाम अन्धेर नगरी बताया जाता है। अन्धेर नगरी का किस्सा सभी को मालूम है। वहाँ के जलवायु का असर कभी कभी काम कर जाता है। श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी को उसी अन्धेर नगरी से पकड़कर हिरासत में ले लिया गया है। मामला है रामलीला की चौकियाँ निकलने का। अधिक बस्ती हिन्दुओं की है, न रमजान है और न मुहर्रम कि गैर-हिन्दुओं का दिल दुखेगा। बैठे-ठाले की आफत मोल ले ली। थोड़ा सा प्रबन्ध करके, मेल-जोल के साथ, रामलीला का जुलूस निकलवा देने से अधिकारियों की प्रशंसा होती। पर अन्धेर नगरी की याद जो दिलानी थी। एक साधु को हाजत में डालना चिन्ता का विषय है। साधारण मामले को ... बात का बतंगड़ ... कुछ नहीं बिगड़ा ... सँभाल लेने में ही ...

भारत की राष्ट्रभाषा

ट्रावनकोर के दीवान सर सी० पी० रामा स्वामी अय्यर ने अगस्त १५ के अधिवेशन में कहा है कि "हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा कभी नहीं हो सकती।" यद्यपि उसे सुधारने के लिए बहुत कोशिश हुई है तो भी वह राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती। उनका जब यह प्रस्ताव आया तब असेम्बली के एक मेम्बर के० वी० जोसफ़ ने कहा कि मातृभाषा मलयालम में सब विषयों को सिखाना कुछ देर के लिए कठिन होगा, और अँगरेजी में ही उन विषयों को सिखाना चाहिए। बाद में उन्होंने यह भी कहा कि रोमन लिपि स्वीकार करने के लिए एक प्रस्ताव हुआ पर लोग उसे भी पसन्द नहीं करेंगे।

हम उनकी राय को मान नहीं सकते। यह तो ठीक है कि हिन्दी को अखिल-भारत की राष्ट्रभाषा होने के लिए बहुत कुछ सुधारना चाहिए; अन्य भाषाओं के बराबर होने के लिए हिन्दी में विदेशी शब्दों का परिवर्तन करना चाहिए। फिर भी राष्ट्रभाषा बनने से उसका त्याग करना ठीक नहीं है।

भारत में २५ करोड़ आदमी उसे बोलते हैं, इसलिए वह बहुत आसानी से राष्ट्रभाषा बन सकती है। पर २५ करोड़ आदमियों के बोलने से ही एक भाषा राष्ट्रभाषा बनने लायक नहीं होती। उसके लिए आधुनिक शास्त्रों के नये ग्रन्थ होना चाहिए और उसके उपयुक्त पदों को चुनकर स्वीकार करना चाहिए।

अब भारत में लोग कई भाषाएँ बोलते हैं। अगर विभिन्न भाषा बोलनेवालों के विभिन्न आशयों को उचित रीति से प्रकट करने के लिए उपयुक्त गुण उत्पन्न हो जायँ तो हिन्दी निश्चय ही भारत की राष्ट्रभाषा हो जावे। इसलिए हम चाहते हैं कि लोग हिन्दी को छोड़ने की जगह उसे सुधार करके दुनिया की अच्छी अच्छी भाषाओं के बराबर करने की कोशिश करें।

केरल में मलयालम भाषा की लिपि का वैशिष्ट्य यह है कि वहाँ के लोग कोई भी भाषा बहुत आसानी से बोल सकते हैं। पर इस समय भारत के अन्य लोगों की भलाई के लिए कोशिश करना हमारा कर्त्तव्य है। इसलिए भारत के अन्य लोग जिस भाषा को पसन्द करते हैं उसे हमें भी स्वीकार करना चाहिए। हम चाहते हैं कि केरल के हिन्दी-द्वेषी लोग भी धीरे धीरे हमारी इस राय को स्वीकार करके हिन्दी को अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा बनाने की कोशिश करें।

—डी० दामोदरन् नम्बूद्री

गांधी-मीमांसा

इस पुस्तक में पं० रामदयाल तिवारी बी० ए० एल-एल० बी० ने गांधीजी के व्यक्तित्व और सिद्धान्तों की तर्कपूर्ण सुन्दर विवेचना की है। इसे आद्योपान्त पढ़ जाने पर गांधीवाद पूर्ण रूप से हृदयंगम हो जाता है। विद्वानों ने मुक्तकंठ से इसकी प्रशंसा की है। पृष्ठ-संख्या ८५०। सुन्दर सजिल्द प्रति का मूल्य ४) चार रुपये।

मौलिकता—साहित्यिक मौलिकता की विशद व्याख्या। मूल्य ।-) पाँच आने।

आल्हा—लेखक, चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा। इस पुस्तक में महोबे के प्रख्यात वीर आल्हा और ऊदल का जीवन-चरित और समस्त लड़ाइयों का वर्णन रोचक व सरस भाषा में दिया गया है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन-प्रेस, लि०, प्रयाग

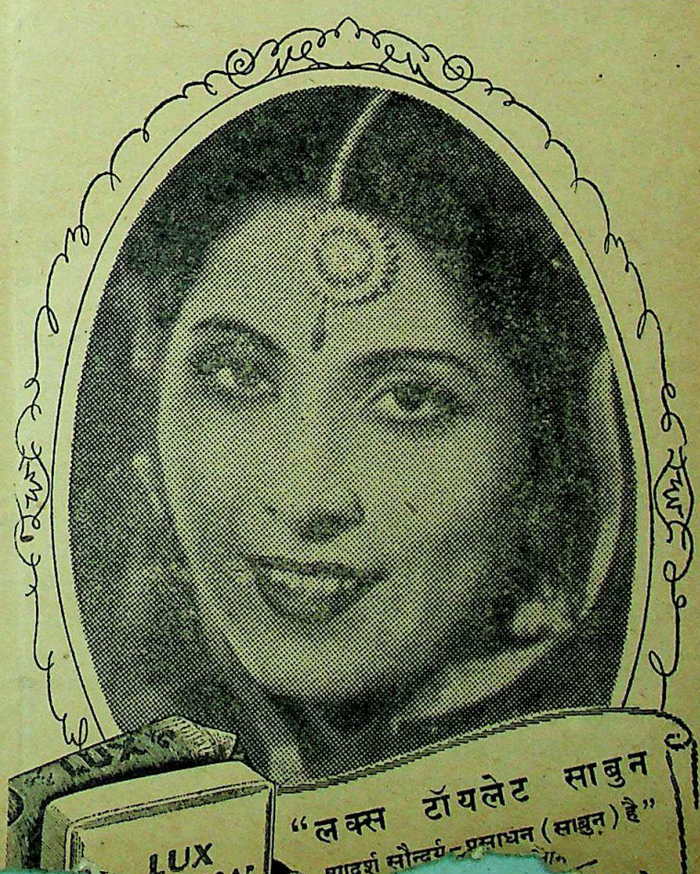

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्थायी सरकार और गृह-युद्ध ?

(पेज ७ का शेष)

आज की शिक्षा ने हमारे दिल और दिमाग को गन्दा कर दिया है। हम मिट्टी में पड़े हीरे और काँच की समता कर रहे हैं। आज हम आजादी और उसकी तकलीफ़ों को सोच नहीं सकते। अभी कुछ ही दिनों की बात है कि दो मुसलमान भाई आपस में बातें कर रहे थे। एक साहब खूब बढ़िया 'कैमरीन' की कमीज़ पहने थे। उनके दूसरे साथी ने पूछा—"यार, कपड़ा कहाँ से पा गये ?" उत्तर मिला—"भाई जब तक खद्दर की कमीज चलती रही, उसे पहना। वह फट गई तो इसकी बनवा ली। यदि तुम्हें कपड़ा नहीं मिलता तो खद्दर पहनो।" वे मुसलमान भाई बोले—"खद्दर ! मैं उसे कैसे पहन सकता हूँ। मैं तो लीगी हूँ।" फिर थोड़ी देर बाद कहा—"दोस्त ! हिन्दुस्तान अभी आजाद नहीं होने का; और न वह इस लायक है।" दूसरा बोला—"सच है ! यदि इन्हें आजादी मिल जाय तो यह आजादी का दुरुपयोग करेंगे।"

मैं उनकी बातें सुन रहा था। मुझे बड़ा खेद हुआ। मैंने सोचा, ये भारत के भावी नागरिक हैं। इनका कितना पतन हो गया है। ये जुलाहे का खद्दर इसलिए नहीं पहन सकते कि ये लीगी हैं परन्तु अँगरेजों की मिलों का बना विदेशी कपड़ा शौक से पहनते हैं। ये आज़ादी की कल्पना नहीं कर सकते और उस पर दीनदार मुसलमान होने का दावा करते हैं जब कि कुरान में साफ लिखा है, 'किसी भी परिस्थिति में एक मुसलमान, आजादी के मूल्य पर जीवन को नहीं भोग सकता। एक सच्चे मुसलमान को उसके धर्म के अन्दर केवल एक रास्ता है। वह या तो आजाद रहे अथवा मर जाय।'

काँग्रेस और उसके नेताओं ने हमारे दिमाग़ों से गुलामी निकाल दी। फिर भी अनेक ऐसे मनुष्य हैं जिनका शरीर ही नहीं, आत्मा तक गुलाम है। आज हमें गृह-युद्ध की धमकी दी जा रही है। हम जानते हैं कि यह बहुत खराब है। इससे देश उजड़ जाता है, अनेक निरपराध मनुष्यों की जानें जाती हैं और आपस के सम्बन्ध सदैव के लिए कटु हो जाते हैं; परन्तु हम यह भी जानते हैं कि गृह-युद्ध गुलामी से लाख दर्जे अच्छा है। बुलबुल और कौवे की बराबरी हो सकती है परन्तु गृह-युद्ध और गुलामी की नहीं। हमारे जो भाई गृह-युद्ध की धमकी दे रहे हैं, उनसे मैं कहना चाहता हूँ कि जहाँ के मनुष्य अपने देश के लिए सब कुछ त्याग कर देने की क्षमता रखते हैं वे मनुष्य और वह देश सर्वश्रेष्ठ है। अब हम गुलामी को किसी भी मूल्य पर मंजूर करने के लिए तैयार नहीं हैं। हमें आजादी किसी भी मूल्य पर लेनी है। आजादी का मूल्य कभी थोड़ा नहीं होता।

हम गृह-युद्ध [illegible] मुलझाने की कोशिश [illegible]

छप रहा है ! छप रहा है !!

ऐतिहासिक भौतिकवाद

लेखक श्री मन्मथनाथ गुप्त, श्री रमेन्द्रनाथ वर्मा

भूमिका-लेखक आचार्य नरेन्द्रदेव

ऐतिहासिक भौतिकवाद मार्क्सवाद के विषयों में सबसे गहन है। इस विषय पर विश्वसाहित्य में बुखारिन की पुस्तक सबसे अच्छी समझी जाती है, किन्तु लेखकों का यह दावा है कि यह हिन्दी-पुस्तक उससे भी विस्तृत तथा गहन है क्योंकि जो कुछ भी बुखारिन के समय तक उपलब्ध था, वह तो इसमें है ही, इसके अतिरिक्त नवीनतम ज्ञानविज्ञान, नृतत्व तथा अन्य विषयों में जो खोजें हुई हैं, वे सब इसमें सन्निविष्ट हैं। इस पुस्तक की एक विशेषता यह है कि सभी विरोधी मतों का पहले वर्णन किया गया है। इतिहास की आर्थिक व्याख्या के अतिरिक्त इस पुस्तक में धर्म तथा सदाचार पर एक एक गम्भीर अध्याय है। समाजवाद के अध्ययन के लिए यह पुस्तक बहुत जरूरी है।

मैनेजर इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

तुलसी-रत्नावली—का संकलन [illegible] केदारनाथ गुप्त, एम० ए० [illegible] है। इसमें गोस्वामी तुलसीदास [illegible] अमूल्य ग्रन्थों—रामचरित [illegible] विनयपत्रिका, कवितावली, [illegible] गीतावली आदि—से रत्न [illegible] हैं। अनेक ग्रन्थों से अमूल्य [illegible] संग्रह करना सचमुच बड़ा कठिन होता है। जो लोग गोस्वामी समस्त ग्रन्थ न तो ले सकते हैं [illegible] उनका अध्ययन कर सकते हैं [illegible] इस संग्रह से बड़ा लाभ होगा। केवल एक रुपया आठ आने।

मैनेजर—(बुकडिपो) इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग।

GOVERNMENT OF INDIA

DISPOSALS

(SECTION MS OF 2nd CATALOGUE)

Following is a comprehensive list of stores that will be sold by MS Directorate as and when they become available. Some of them are now available and listed in the above catalogue.

Stationery Stores: Paper and paper products; Books, maps and magazines; Cabinets and filing devices; Pens; Nibs; etc.

Drugs and Chemicals: Injectible and oral drugs; Vaccine and sera; Biological reagents; Hygienic chemicals; Ointments and external appliances; etc.

Dressings and Bandages: Plasters, etc.

Surgical and Dental Instruments: Anaesthetic, ear, nose, throat and orthopaedic equipments; Ligatures; Nursing, dispensary, hygienic, dental, veterinary and post-mortem appliances and instruments; Anti-malarial, blood transfusion, opthalmic and gynaecological equipment; X-ray apparatus; Films and chemicals; other instruments including hypodermic syringes and suture needles; etc.

Other Medical and Veterinary Stores.

Acids and Chemicals: Basic chemicals; Fine chemicals excluding photographic and medicinal chemicals; Gases including refrigerant and industrial gases; Coal-tar and products; Soaps; Perfumery; Detergent Alcohol and industrial solvents;

Paints, Varnishes and Enamels: Dry and [illegible] paints; Enamels; Varnishes; Dopes; Distempers;

Petrol, Kerosene and Fuel Oil: Motor [illegible] Kerosene; Fuel oil; etc.

Lubricating Oils: Mineral and vegetable [illegible] cating oils, etc..

Other Petroleum and Oil Products: Greases and petroleums; Road-dressing materials; Vegetable, castor, linseed and cocoanut oils; etc.

Amenity Stores: Games materials; Musical instruments; etc.

Other Miscellaneous Stores: Cutlery and crockery; Glass sheet and holloware excluding bottles; Rubber and rubberised goods; Enamelware; Kitchenware; Brushware and components;

Full details giving description and condition of stores, quantity, location, etc. and the method of tendering are contained in Section MS of the Second Catalogue which is available at Rs. 3/- on or about 21st October, 1946, from the addresses given below:

A. Regional Commissioner (Disposals) at

BOMBAY - Mercantile Chambers, Graham Road, Ballard Estate.
CALCUTTA - 6, Esplanade East.
LAHORE - G.P.O. Square, The Mall.
CAWNPORE - 15/159, Civil Lines.

B. Dy. Regional Commissioner (Disposals) at

KARACHI - Variawa Building, McLeod Road.
MADRAS - United India Life Building, Esplanade.

C. All important Chambers of Commerce and Trade Associations.

Mail orders for the catalogue must be accompanied by Money Order or Indian Postal Order.

NOTE: Watch for further announcement regarding Section MS of Third Catalogue which will contain further list of stores available for disposal.

DEPARTMENT OF INDUSTRIES & SUPPLIES, NEW [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना अनिवार्य होगा। ऐसी महिलाएँ जो अपने व्यय से पढ़ना चाहती हों और छात्रवृत्ति न लेंगी वे भी आवेदनपत्र भेज सकती हैं। उनके लिए अध्ययन-काल के बाद निधि में काम करना अनिवार्य न होगा। आवेदनपत्र १५ नवम्बर १९४६ तक आ जाना चाहिए।

सुचिता कृपलानी
प्रान्तीय प्रतिनिधि
कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक-निधि
स्वराज भवन, इलाहाबाद

* * *

मथुरा अखिल भारतीय ब्रज-साहित्य-मंडल की ओर से साहित्य-वाचस्पति सेठ कन्हैयालालजी पोद्दार की हीरक जयन्ती अत्यन्त समारोह से मथुरा में नवम्बर में मनाई जा रही है। जयन्ती की निश्चित तिथियों की घोषणा शीघ्र ही होगी। आनुमानिक व्यय लगभग १०,००० रुपये है। जयन्ती का सभापतित्व युक्तप्रान्त के शिक्षा-सचिव श्री सम्पूर्णानन्दजी करेंगे। इस अवसर पर पोद्दारजी को जो अभिनन्दन ग्रंथ भेंट होगा उसके सम्पादक डा० वासुदेवशरण अग्रवाल होंगे। जयन्ती में देश के सर्वोच्च श्रेणी के विद्वानों के पधारने की आशा है।

मथुरा में जयन्ती-समारोह की तैयारी आरम्भ हो गई है। स्वागत-समिति के सदस्य बनाये जा रहे हैं। मंडल ने इस कार्य के लिए जो समिति नियुक्त की है उसके संयोजक बाबू रामकृष्ण अग्रवाल बी० काम० हैं।

—संवाददाता

* * *

पीलीभीत के शेरपुर गाँव में मुस्लिम आबादी के मुकाबले में हिन्दू आबादी १/५ है। यहाँ पर देवी-पूजा में जानवरों की बलि दी जाती थी परन्तु म० भगवानदीनजी वर्मा, सेवारामजी तथा बालकरामजी, मुंशी भूदरलालजी की महान् कोशिश से इस वर्ष वैदिक रीत्यानुसार हवन हुआ और उसमें मुसलमान भाइयों ने भी चन्दा देकर सहयोग किया। कार्य निर्विघ्न समाप्त हुआ।

—भगवानदीन वर्मा

* * *

बलिया जिले के अन्तर्गत पो० रेवती गायघाट भारती-भवन पुस्तकालय का वार्षिकोत्सव ता० ७ अक्टूबर १९४६ ई० को जिला कांग्रेस-कमेटी के प्रधान मंत्री पंडित रामअनंत पांडेजी के सभापतित्व में बड़े समारोह के साथ मनाया गया। श्री वैद्यनाथ पांडेजी द्वारा मंगलपाठ करने के पश्चात् श्री रामनारायणसिंह जी 'आनन्द' साहित्यालङ्कार स्वागताध्यक्ष का भाषण हुआ। तत्पश्चात् पं० शुभनारायण पाण्डेय, श्री उमाशंकरसिंह जी द्वारा स्वागत-गान तथा मंत्री पं० कैलाशशंकर शर्माजी ने वार्षिक कार्यविवरण पढ़कर सुनाया। इसमें पुस्तकों की संख्या ४२२, पुस्तक लेकर पढ़नेवालों की संख्या २८ प्रतिमाह, पढ़नेवालों की दैनिक हाजिरी १७ तथा वार्षिक आय ३१६॥=), व्यय ८७॥।≡)।, बचत २२८॥=)॥। है। इसके बाद पं० वैद्यनाथ पाण्डेय, शास्त्री काव्यतीर्थ विशारद, पं० रा[illegible] व श्री रामनरेशसिं[illegible] पूजनसिंहजी तथा अ[illegible] हुए। तदनन्तर ए[illegible] जिसमें पं० सूर्यनाराय[illegible] श्री रामनारायणसिंह जी 'आनन्द' तथा पं० कैलाश शर्मा आदि लोगों ने भाग लिया।

—कैलाशशङ्कर शर्मा मंत्री

* * *

बलिया जिले के अन्तर्गत भारती-भवन पुस्तकालय की ता० ८ सितम्बर के 'देशदूत' में छपी शिकायत का खण्डन पुस्तकालय-सभापति हरनारायणसिंह ने गत ता० २२ सितम्बर के 'देशदूत' में प्रकाशित कराया है। वह पूर्ण निराधार है। पं० गणेशदत्त पाण्डेय 'विशारद' ने स्वयं पुस्तकालय से इस्तीफा दे दिया है जो ता० ८ सितम्बर के 'देशदूत' में प्रकाशित है। उक्त सभापति की अनुपस्थिति में यह कार्य मेरी अध्यक्षता में हुआ है। अतः मैं तथा पुस्तकालय के अन्य अधिकारीवर्ग इसके सबूत हैं। उक्त सभापति ने अपने कुछ साथियों की मदद से जबर्दस्ती पुस्तकालय पर अपना कब्जा करके उसकी मीटिंग-कार्यवाही रजिस्टर के उन पन्नों को फाड़ फेंका है जिनमें मन्त्री आदि के इस्तीफे आदि की चर्चा की गई थी। इससे स्थानीय जनता में असंतोष है।

—लल्लूसिंह उपसभापति

* * *

छिन्दवाड़ा (सी० पी०) गांधी-जयन्ती-सप्ताह जिला कांग्रेस कमेटी के सभापति श्री श्यामाचरणजी सोनी के आदेशानुसार "युवक संघ" द्वारा शानदार ढंग से मनाया गया। रोज सुबह झंडावन्दन, दोपहर में युवक संघ-दफ़्तर में सूत कताई और रोजाना प्रत्येक मोहल्ले में आम सभायें की गईं। शहर सफाई, रचनात्मक कार्यक्रम किये गये। युवक-संघ द्वारा विद्यार्थी वर्ग एवम् युवकों के लिए गांधीजयन्ती निबन्ध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें ३९ विद्यार्थी एवम् युवक तथा २ बालिकाओं ने भाग लिया। ५ चाँदी के कप और ५ चाँदी के पदकों का पारितोषिक रक्खा गया था। ता० २-१०-४६ को स्थानीय म्यूनिसिपल हाई स्कूल में प्रतियोगियों ने अपना निबन्ध श्री नाथूलाल जी वर्मा, सूरजप्रसाद सिगारे, श्री गौरीशंकर श्रीवास्तव के समक्ष लिखा। परीक्षक का कार्य श्री रामनिवासजी व्यास 'विशारद' ने किया नतीजा इस प्रकार रहा—

१—श्री दिनेशचन्द्र जैन ग० हा० स्कूल, २—श्री डेविड एच० मार्टिन ग० हा० स्कूल, ३—श्री क्लेमेन्स डेविड मिशन स्कूल, ४—श्री कुन्दनलाल ग० हा० स्कूल, ५—श्री रविशंकर दुबे म्यु० हा० स्कूल, ६—श्री जागेश्वरदयाल वर्मा प्राइवेट, ७—श्री सुन्दरलाल जायसवाल ग० हा० स्कूल, ८—इन्दिरा के० लाल मिशन स्कूल।

रात्रि को आम सभा हरिजन मोहल्ले में श्री अर्जुनसिंह सिसोदिया एम० एल० ए० की अध्यक्षता में हुई। विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय गायन किये। श्री राधेश्याम भारद्वाज, श्री क्लेमेन्स डेविड, श्री दामोदर शर्मा आदि विद्यार्थियों का गाना जनता ने बहुत पसन्द किया और तालियाँ बजाकर उनका स्वागत किया। पारितोषिक वितरण-कार्य श्री केदारप्रसादजी शुक्ला के कर-कमलों द्वारा हुआ। [illegible] ने बहुत [illegible] में

सागर का साम्प्रदायिक दंगा अब प्रायः समाप्ति पर है। करीब ४-५ दिन से नगर में शान्ति है। रात को करीब ११ से ५ तक करफ़्यू आर्डर लगा रहता है। दिन में सब कार-बार होता है। दिन-रात पुलिस-लारियों के गश्त शहर की मुख्य सड़कों पर जारी हैं। शान्ति-कमेटियाँ सभी मुहल्लों में शान्ति स्थापित किये हुए हैं।

सुरखी गाँव में किसी धुनिया ने एक नाइन को, पेट दिखाने के बहाने, रात को घर बुला अपनी पत्नी की सहायता से उसकी हत्या कर डाली और उसका जेवर उतार लिया। पुलिस ने अपराधियों को पकड़ लिया है।

सिरोंज (टोंक रियासत) की खबर है, कि वहाँ से ६ मील दूर देहरी गाँव की प्रेमबाई नामक एक जैन महिला को इमलानी थाने की पुलिस ने भेलसा के एक डाके के सिलसिले में गिरफ़्तार किया और उसके पति जीतमल को पीटा तथा महिला से कहा—"तू अपने भाई बाबूलाल का नाम ले दे।" महिला के ऐसा न करने पर पुलिस ने उसके साथ अमानुषिक अत्याचार किया, गुप्तांगों में मिर्चें कूटकर भरीं तथा उसे ऊघर गाँव में ग्वालियर पुलिस के हवाले कर दिया। ऊघरवालों ने भी उसकी वही दुर्गति की। जीतमल और बाबूलाल ने कथित मामले की शिकायत थाना सिरोंज में की, तो पुलिस ने बाबूलाल को गिरफ़्तार कर लिया। करीब ५ दिन बाद देहरी के पास एक कुएँ से उक्त महिला की लाश निकाली गई। एक शराबी डाक्टर की जाँच के बाद लाश उसके पति को दी गई तथा उससे एक कोरे कागज पर अँगूठा लगवाया गया। क्या ग्वालियर तथा टोंक रियासत की सरकारें अपने पुलिस-विभाग की इस नादिरशाही को बरदाश्त करेंगी?

—संवाददाता

* * *

प्रयाग जिले के बारा परगने की जलवायु किसी से छिपी नहीं है। इस परगने के कितने ही सैकड़ा आदमी मलेरिया से प्रतिवर्ष मर जाते हैं। सरकारी अफसर इस स्थिति से पूर्ण परिचित हैं। दुबहा गाँव के आस-पास गाँवों में जहाँ तक मुझे बीमारों को देखने का अवसर आया है, कितने ही सैकड़ा आदमी इस बीमारी से बीमार हो रहे हैं। मैंने इसकी इत्तला सेनेटरी इन्स्पेक्टर और हेल्थ अफसर तक को दे दी है। परन्तु अभी तक इस ओर शायद किसी का ध्यान ही नहीं गया। इस संवाद को भेजते हुए खेद होता है कि मैंने स्वयं अपनी आँखों से बवन्धर के पंडित रामदास मिश्र के साथ जाकर लौंद कलां, बघला, धरा, ओठगी, गोल्हैया, कोटा और असवाँ गाँव में कितने ही बीमारों को मुफ्त दवा दी है। मैं अपने जेब से खर्च कर मलेरिया की दवा खरीदकर बाँटने का प्रयत्न करता हूँ। पर इस समय विवश हूँ। मेरे घर पर भी बीमारी है। हेल्थ अफसर आदि को इस ओर ध्यान देना चाहिए। उनको भी जनता के कष्टों का कुछ न कुछ ख्याल करना चाहिए।

—अनन्दीप्रसाद दुबे दुबहा

* * *

सूचना सम्मेलन के सभापति-पद के लिए प्र[illegible] नामों में चतुर्वेदी द्वार[illegible] था। [illegible] है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पेज ५ का शेष)

समाजवाद-प्रवर्तक कार्ल मार्क्स

कारी हो गया। उसने वर्तमान समाज को नष्ट कर उसके स्थान में पूर्ण मानवता को जन्म देने का निश्चय कर लिया। पेरिस में मार्क्स के कई मित्र हो गये जिनके सहयोग से वह अपने लक्ष्यवेध की ओर बराबर अग्रसर होता गया।

फ्रेडरिक एंजिल्स नामक एक तरुण से पेरिस में कार्ल की भेंट उल्लेखनीय है। एंजिल्स भी राइन प्रान्त का ही निवासी था। यह बहुत बड़े मिल-मालिक का पुत्र था। लेकिन कपड़े की मिल में काम करनेवाले मजदूरों के प्रति अपने कट्टर पिता के व्यवहार से उसे तीव्र असन्तोष था। वह स्वयं उन्नीस वर्ष की उम्र में मैनचेस्टर की एक मिल में काम करने जा पहुँचा। वहाँ उसने मजदूरों की दयनीय दशा अपनी आँखों देखी और उनके परिवारों की शोचनीय स्थिति से वह बहुत द्रवित हुआ।

बाहरी रूप-रेखा का जहाँ तक सम्बन्ध है, एंजिल्स और मार्क्स दोनों एक दूसरे से सर्वथा भिन्न थे। मार्क्स का कद छोटा और गठीला था। वक्षःस्थल चौड़ा और उभरा हुआ था। उसके बाल काले, लम्बे और गर्दन तक लटकते थे तथा दाढ़ी भी घनी थी। एंजिल्स ऊँचे कद और छरहरे बदन का था। इसकी आँखें नीली और बाल सुन्दर थे। मार्क्स मनहूस, चिन्तनशील, विद्वान्, अनाड़ी और लोकाचारहीन था। एंजिल्स परिहासशील, समाजप्रिय, शौकीन, लोमड़ियों का शिकारी, अन्य खेल-कूद का शौकीन तथा मदिरा और संगीत का प्रेमी था। परन्तु सन् १८४४ ई० में जब एंजिल्स पेरिस में मार्क्स से मिला, तो इन दोनों के विचारों में बहुत साम्य पाया गया। इस साम्य के फलस्वरूप लगातार दस दिनों तक दोनों की बातचीत चलती रही। इसके बाद दोनों संयुक्त रूप से लिखते-लिखाते, वाद-विवाद करते और एक-दूसरे के प्रयत्नों में सहायक होते। इन दोनों का जीवन और कार्य समान गति से चलता था। मार्क्स के साथ रहते-रहते एंजिल्स की विनोदप्रियता दब गई और वह भी गम्भीर चिन्तक हो गया।

मार्क्स अब आरामकुर्सी पर बैठा रहनेवाला क्रान्तिकारी नहीं रह गया था। पेरिस से निर्वासित किये जाने के बाद वह और एंजिल्स दोनों ही कम्युनिस्ट लीग में शामिल हो गये। इस लीग को उसने गुप्त स्थानों अथवा घर के कोनों में छिपकर षड्यन्त्र करने की संस्था न बनाकर खुले-आम लेख लिखकर और भाषण देकर विद्रोहाग्नि की लपटों को प्रज्वलित किया—वह विद्रोहाग्नि जिसने सन् १८४८ ई० में योरप को झुलसा दिया था। इस विद्रोहाग्नि के एक वर्ष पहले कार्ल ब्रूसेल्स से निर्वासित किया जा चुका था। इससे झुँझलाकर कार्ल और एंजिल्स ने अपना एक स्वतन्त्र क्रान्तिकारी अखबार प्रकाशित किया। एंजिल्स ने कई बार प्रशियन फौज के खिलाफ, जब उसने पैलेटिनेट पर धावा बोला, अपने पिस्तौल [illegible] परन्तु यह [illegible]

दोनों मित्रों ने एक अन्तर्राष्ट्रीय कार्यकर्ता-संघ की स्थापना की—प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय। मन की दृढ़ता और इच्छा-शक्ति की प्रबलता के कारण मार्क्स लीग और अन्तर्राष्ट्रीय संघ, दोनों का ही नेता था। उसके एक दामाद ने मार्क्स के सम्बन्ध में कहा था, मार्क्स का मन उस भाप उगलते समुद्री जहाज की तरह था, जो भावनाओं के सागर पर किसी भी दिशा में अग्रसर होने के लिए हर वक्त तत्पर रहता है। वाद-विवाद में वह सदा विजयी होता था। वह अपने सिद्धान्तों का सबल उपासक था। वह किसी की हाँ में हाँ नहीं मिला सकता था। कदाचित् इसी कारण वह अपने सभी समाजवादी साथियों से कभी न कभी झगड़ बैठता था। और इन सैद्धान्तिक झगड़ों में एक दूसरे को अपमानित करनेवाले शब्दों का भी प्रयोग किया जाता था। जो भी हो, कार्ल मार्क्स जो कुछ कहता था, वह बहुत ही वजनदार, दार्शनिक और स्पष्ट होता था। उसके विपक्षियों ने भी इस तथ्य को स्वीकार किया था।

विलहेम वेटलिंग नामक एक जर्मन दर्जी भी समाजवाद का कट्टर अनुयायी था। समाजवाद का प्रचार करने के अभियोग में उसे कई बार जेल के सींखचों में बन्द रहना पड़ा था। ब्रूसेल्स में एक बैठक के सिलसिले में, जिसका अध्यक्ष मार्क्स था, उसने इस दर्जी से प्रश्न किया था—वेटलिंग, तुमने अपने कम्युनिस्ट विचारों का प्रचार करके जर्मनी में काफी हलचल मचा दी है। अनेक मजदूरों पर तुमने विजय भी प्राप्त की है—ऐसी विजय जिसके कारण उनका काम भी गया और रोटी भी छिन गई। तुम अपनी क्रान्तिकारी समाजवादी योजना के पक्ष में क्या दलील दे सकते हो? क्या इससे इन मजदूरों की क्रियाशीलता नष्ट नहीं होती और वे आलसी नहीं हो जाते?

वेटलिंग ने इसे स्वीकार नहीं किया। उसने जोर देकर अपनी बात कही—"मजदूरों से दूर रहकर सिद्धान्तों की आलोचना-प्रत्यालोचना करने की अपेक्षा उनमें सम्मिलित होकर उनकी भलाई का काम करना मैं अधिक अच्छा समझता हूँ।"

मार्क्स की भौंहें तन गईं, आँखें लाल हो गईं। मेज पर उसने इतने जोर से मुक्का मारा कि उस पर रक्खा हुआ लैम्प काँप उठा। गरजकर उसने कहा—अज्ञान से आज तक किसी का उपकार नहीं हुआ।

उस दिन की बैठक समाप्त हो गई। बैठक में आये हुए सभी व्यक्तियों के साथ वेटलिंग ने भी मार्क्स की बात समझी और उसका अनुसरण किया।

अपनी बात

लेखक, श्रीयुत चन्द्रभूषण वैश्य

मनुष्य के चरित्र में किस प्रकार की दुर्बलतायें होती हैं और उन्हें दूर करके वह किस प्रकार अपने जीवन को उन्नत बना सकता है, यह बात इस पुस्तक में बहुत ही ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है और लिखी गई है व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर। अपने चरित्र का निर्माण करने के लिए प्रत्येक युवक को यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ।।।) बारह आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

एक खुराक पेट दर्द को [illegible] करती है।

मेकलीन ब्रांड स्टमक [illegible] व्यापक ख्याति अम्लता, उदर-[illegible] दाह, पेट दर्द, वमन, [illegible] पाचन-सम्बन्धी शिकायतों [illegible] वाले अन्य रोगों में प्रभावशाली [illegible] मान्य प्रमाण है।

उदर-विकारों से उत्पन्न [illegible] उदासी, अनिद्रा और हृदय की [illegible] कन में भी यह अमूल्य है।

यदि आप इनमें से किसी [illegible] रोग से पीड़ित हैं तो आज ही [illegible] ब्रांड स्टमक पाउडर लीजिए [illegible] प्रसिद्ध औषधि की शीघ्र [illegible] स्वयमेव अनुभव कीजिए।

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर [illegible] समय "एलेक्स सी० मेकलीन" [illegible] पहचान लीजिए क्योंकि असली [illegible]

मेकलिन ब्रांड स्टमक पाउडर [illegible] सेवन कीजिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized By Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोरटक चुटकुले

...लड़की का नाम ...ने उसकी एक दूसरी सहेली से ...ते लोग डरते हैं कि कहीं ...ते जाओ।'

...क्यों?

...—तुम पर पतिंगों के ...ते हैं। वे तुम्हारे पास आने ...सकते ही नहीं। तुम्हें काटेंगे ...

...चुपचाप हसती खड़ी रही।

* * *

...में मो० मोलोटोव ने ...के बहुराय का और वहाँ ...का विशेषाधिकार है। ...नहीं जानते कि जिलों में ...में तहसीलदार, थाने में ...गाँवों में चौकीदार तथा ...उनके ही विशेषाधिकार हैं ...के। सभी अपने अपने क्षेत्र ...।

* *

...है कि मौलाना अबुल ...मध्यपूर्वीय देशों में राष्ट्रीय ...होकर जायँगे। चुनाव ...है। मुसलमानों के लिए ...पर पूर्वी देशों में कौन ...हैं। सरकार बौद्ध राजदूत के ...दे। अजियों द्वारा ...व्यक्ति मिल जायँगे।

* *

...परिषद् की बैठक ने प्रस्ताव ...रियासतों में भी अस्थायी ...जायँ। शायद प्रजा- ...मालूम कि रियासतों में ...सरकारें कायम हैं, केवल ...ही है कि रियासतों की ...और रायबहादुर हैं, केन्द्रीय ...और साहब। अध्यक्ष में ...नहीं। वहाँ वाइसराय और ...महाराजे, फिर परिषद् ...सरकार चाहती है?

* *

...से भारत-रक्षा-विधान ...का कहना है कि चोर ...ही देन है। रक्षा- ...ने से सौदागर नेकनीयत ...अब तो महात्माजी ...मला कौन सत्यवादी

* *

...१० साल में देहातों ...देगी ऐसी योजना ...हिन्दुस्तान के बच्चे १० ...और इंगलैण्ड के ...भगतग्रहों के स्वामी होंगे। उन्नति धीरे ही धीरे होती है। किसी दिन भारतवासी भी सूर्यग्रह के स्वामी होने का प्रयत्न करेंगे।

* * *

हिन्दुस्तान में सबसे ऊँचा बाँध तैयार किया जायगा। सभी कामों में हिन्दुस्तान आगे है फिर बाँध ही में क्यों पीछे रहे। पहाड़ों में ऊँचा, नदियों में अधिक, सभ्यता में सयाना साथ ही अशिक्षा में भी अधिक। देश के नाम भी सबसे अधिक हैं—हिन्द, हिन्दुस्तान, भारत, भारतवर्ष और इंडिया। जिन्ना साहब को पाकिस्तान के बजाय इंडिया अथवा हिन्दुस्तान ही माँगना था, व्यर्थ पाकिस्तान माँगकर परेशान हो रहे हैं।

* * *

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने एशियाई संघ का नारा लगाया। ब्रिटेन के कान खड़े हुए। झट मिस्टर चर्चिल ने यूरोप-संघ का नारा बुलंद कर दिया। चले थे हिन्दुस्तानी अँगरेजों से बढ़ने।

* * *

सिन्ध की प्रान्तीय लीग ने एक डेपूटेशन विदेशों में लीग की माँगों का प्रचार करने भेजा था। डेपूटेशन लंदन से पेरिस गया सम्मेलन को अपनी आत्मकथा सुनाने। मोलोटोव को अपनी माँग 'इस्लाम खतरे में है' पर जोर देने के लिए कहा, पाकिस्तान को बचाइए। परन्तु रूस तो अनीश्वरवादी है फिर इसलाम कैसे बचेगा? इसके अतिरिक्त जितने भी आज रूस के साथ मिले सभी सोवियटस्थान (पंचायती स्थान) हो गये फिर उनमें तालुकेदार और नवाबों का स्थान कहाँ रहेगा?

* * *

डा० राजेन्द्रप्रसाद और उनके सहकारी अन्नविहीन क्षेत्रों का एक सप्ताह तक दौरा करेंगे। उस दौरे में जाँच करेंगे कि इस क्षेत्र को दुर्भिक्ष से बचाने के लिए कौन से उपाय किये जायँ। दौरे में उनका दल उन भुक्खमरों का एक सप्ताह का भोजन खा जायगा। इसका क्या उपाय होगा?

* * *

हिंसा भी थककर अहिंसा के पाँव पड़ती है। मिस्टर जिन्ना ने शान्ति और अहिंसात्मक रुख धारण करने की घोषणा की है। अहिंसात्मक के आगे अहिंसात्मक बनना ही पड़ता है। जैसा देश वैसा ही भेष रखना पड़ता है।

* * *

सिंध का मंत्रि-मंडल मरते-मरते जी तो गया, किन्तु है परेशानी में। सिन्ध में अब चुनाव का जबर्दस्त उपद्रव है और बंगाल में धर्मान्धता नंगी नाच रही है।

दीपमालिका-गान

रचयिता, श्री सुरेशकुमार 'सुमन'

जगमगाती दीपमाला।
इस अमा की घोर निशि में संतुलित करता उजाला!
कर अखिल मित्रत्व में लय विश्व को अपराजिता-सी,
मानवी अस्तित्व का तन ढाँपती अभ्यागता-सी,
कर रही आलोक-वितरण
दे मदिरता को निमन्त्रण,
कुलवधू परिहासिनी प्रिय खिलखिलाती दर्पिता-सी,
दिग्दिगंतों में बहाती स्नेह सन्देशा निराला।
जगमगाती दीपमाला।
सम्पदा-दात्री रमा का भव्य बन्दनवार सजता,
प्राण में श्रद्धा प्रणय का मूर्च्छनाम्य वाद्य बजता,
निमिष में आतिश सुनहरी—
छूटती ले छाप गहरी,
तारिकाओं का प्रगल्भी चिर रजत-सा लोक लगता,
नव प्रभा प्रतियोगिता की खुल गई आलोकशाला।
जगमगाती दीपमाला।
ओष्ठ पर औत्सुक्य की मृदु गूँथ जन-समुदाय लड़ियाँ,
मग्न अपने में बिताता मोह से आसक्त घड़ियाँ।
दीप्त हैं अट्टालिकाएँ
स्निग्ध मन्दिर की शिखाएँ,
भावना आत्मीयता की जोड़ती उन्मुक्त कड़ियाँ,
ज्यों दिवाली-प्रेयसी ने मर्त्य में अनुराग ढाला।
जगमगाती दीपमाला।
क्या नहीं स्वाधीनता का प्रात मंगलकर उगेगा?
अन्त में साम्राज्यवादी प्रेत का मस्तक झुकेगा?
शोषणों के तन्तु दुर्दम
टूटते सम्पूर्ण निर्भ्रम,
बन्धगत शाश्वत प्रभा का वास्तविक आमुख खुलेगा,
स्फुट प्रखरता पर कपट ने आवरण म्रियमाण डाला।
जगमगाती दीपमाला।

बाती सुलग रही है!

रचयिता, श्री भरत व्यास

दीपक तो बुझ चुका—किन्तु यह बाती सुलग रही है।
मरकर भी किसने पाया है चैन,
कसक रह ही जाती है।
महाशून्य में गिरकर भी
उर की आँखें भर ही आती हैं।
नैन-अश्रु धुल चुके—नैन की मछली तड़प रही है।
जग-पीड़ा के प्राण अमर हैं
इसका चिर निर्वाण क...

MACLEAN Brand Stomach Powder
सौन्दर्य के
सेवन कीजिए
NEEM
कपट लोशन
स्नान और बुलबुली की अनूपम औषधि
कपट ऐण्ड कं.
बम्बई नं. २.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र के प्राण महात्मा गान्धी

स्वदेश

महात्माजी का भय

महात्मा गांधी ने अपनी नित्य की प्रार्थना के समय उपस्थित जनता से कहा—हमें भय है कि मुस्लिम लीग अस्थायी सरकार में शामिल होकर सहयोग देने के बजाय 'लड़ाई' करेगी, क्योंकि उसका अपने प्रतिनिधियों में एक हरिजन को रखना यह स्पष्ट करता है कि लीग का उद्देश्य सहयोग नहीं बल्कि झगड़े की ओर है।

* * *

जिन्ना-नेहरू पत्र-व्यवहार

मिस्टर जिन्ना और पंडित जवाहरलाल नेहरू के पत्र, जो हाल में दोनों ने लिखे थे, प्रकाशित हो गये हैं। पत्रों के लिखने का उद्देश्य था कि कांग्रेस और लीग में कोई समझौता करने का प्रयत्न किया जाय। पत्रों का मुख्यांश भी हम प्रकाशित नहीं कर रहे हैं। परन्तु पत्रों से प्रकट होता है कि मिस्टर जिन्ना को अपने तार्किक उद्देशों को प्रकट करने में संदेह होता है। कांग्रेस-लीग में वही विचार-धाराएँ दौड़ रही हैं जो पहले थीं। इससे कांग्रेस और लीग में भविष्य में किसी समझौते की आशा नहीं।

विदेश

नाजी नेताओं का प्राण-दण्ड

१६ अक्टूबर को अपराधी नाजी नेताओं को फाँसी के तख्ते पर लटका दिया गया। गोयरिंग ने आत्महत्या कर ली परन्तु उसका रहस्य प्रकट नहीं कि किस प्रकार उसने आत्महत्या के सामान जुटाये थे। बोरमन को छोड़कर (जो अभी तक फरार है), नूरेम्बर्ग न्यायालय से सजा पाये हुए नाजी अपराधी इस संसार से विदा हो गये हैं। इस प्रकार नाजीवाद और उसके समर्थकों का नाटक समाप्त हो गया। जिस नाजीवाद के भूत ने संसार को एक बार चकित कर रक्खा था वह इस संसार से ऐसा गायब हुआ कि किसी ने उसके अन्तिम दिनों में सहानुभूति प्रकट करने को अपनी जबान तक न खोली। परन्तु जिस देश का वे नेतृत्व करते थे उस देश के वासी क्या उन दिवंगत आत्माओं को भूल जायँगे? भले ही उनकी स्मृति कुछ के मानस-पटल पर हो, पर नाजी नेताओं ने संसार का जो विनाश किया है उसके लिए उनको यह प्राण-दण्ड उचित ही है।

* * *

ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री मि० एटली

फ्रैंको पद-च्युत होंगे

ब्रिटिश सरकार फ्रैंको को पद पर देखना नहीं चाहती। फ्रैंको का राज्यकाल आज कितने ही वर्षों से निर्विघ्नता के साथ चला आ रहा है। प्रजातन्त्र-अध्यक्ष अजाना के पद से अलग होने के पश्चात् से आज तक स्पेन के शासन पर फ्रैंको का एकाधिपत्य है। इस महायुद्ध में यद्यपि स्पेन कहने को तटस्थ था। पर, उसके स्वयंसेवक नाजियों के साथ रूस की भूमि पर लड़

स्पेन के तानाशाह जनरल फ्रैंको

रहे थे। ब्रिटिश सरकार के वर्तमान मंत्रि-मंडल ने सर्वसम्मति से तय किया है कि फ्रैंको को पद से अलग कर देना चाहिए। फ्रैंको एक सख्त चट्टान है। स्पेन की सरकार में परिवर्तन करना सरल कार्य नहीं। जब तक फ्रैंको के समर्थकों से डटकर मुकाबला और विरोध न किया जायगा तब तक फ्रैंको-शासन का अन्त नहीं हो सकता।

* * *

फिलिस्तीन में यहूदियों का प्रवेश

फिलिस्तीन का झगड़ा आज कितने ही वर्षों से चला आ रहा है। वह देश अँगरेजों की दासता में है। वे यहूदियों को ला-लाकर बसा रहे हैं। परन्तु अरब इसको पसन्द नहीं करते। ब्रिटेन की इस नीति की कड़ी आलोचना हो रही है। इस सम्बन्ध में संयुक्तराज्य अमेरिका के प्रेसीडेंट और इँगलैंड के प्रधान मंत्री से बहुत कुछ लिखा-पढ़ी चली। ब्रिटेन ने फिलिस्तीन-सम्मेलन का आयोजन भी किया परन्तु वह अधूरा ही रहा। प्रेसीडेंट ट्रूमन इस मामले को हल करने के प्रयत्न में हैं।

आना चाहते। फिलिस्तीन की समस्या ज्यों की त्यों बनी रहेगी।

* *

चर्चिल बेकार न बैठेंगे

चर्चिल द्वितीय युद्ध के [illegible] से हैं। एक समय था जब उनके [illegible] में लाखों नर-नारी कतार [illegible] हो जाते थे। वायुयानों के [illegible] रक्षा के लिए चला करते [illegible] चौबीस घंटे में दो ही चार [illegible] करने को मिलते थे। कभी कभी [illegible] काम करना पड़ता था। आज वे [illegible] बैठ सकते हैं? इस समय वे [illegible] आन्तरिक इतिहास लिख रहे हैं [illegible] कर वह भाग जिसमें उनको [illegible] लता मिली है।

एक रुपये का सवा रुपया

टायर्स खरीदते वक्त आप 'फायरस्टोन' ही खरीदिए और एक रुपये का सवा रुपया बनाइए। यह अतिरिक्त लाभ आपको अपेक्षाकृत अधिक मीलों की दौड़ने की उस शक्ति के रूप में प्राप्त होगा जो 'फायरस्टोन टायर्स' में सिद्ध एवं निराली गमडिपिंग प्रणाली है। गमडिपिंग से रबर के फूलने का भय नहीं रह जाता और अधिक मीलों की दौड़ लगाने की शक्ति बढ़ जाती है।

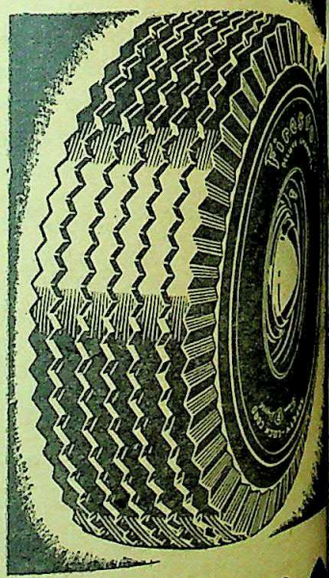

गमडिपिंग द्वारा निर्मित एकमात्र टायर

Firestone

फायरस्टोन

फायर एण्ड रबर कम्पनी, ऑफ इण्डिया, लिमिटेड
कलकत्ता * बँगलोर
कराची * कोलम्बो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

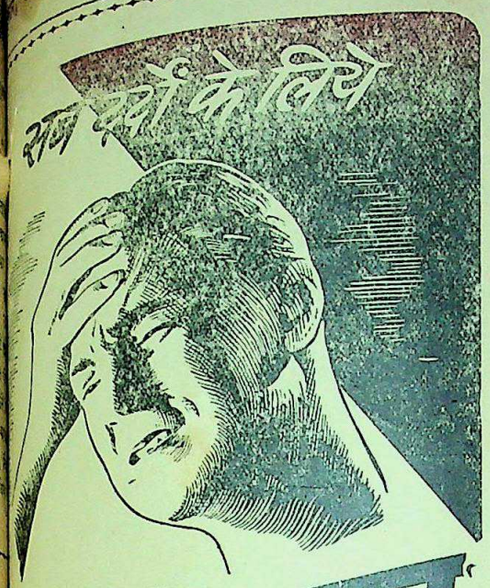

भारिडन

१० मिनट में अच्छा करता है

अपने दान्तों के लिये

गिब्स

डेन्टिफ्रिस का उपयोग

कीजिये क्योंकि...

योग्य पद्धति ही नीरोगी दान्तों को सुरक्षित रखती है

यदि आप अपने दान्त कोयला या किसी सख्त पदार्थ से साफ़ करते हैं, तो आप उन्हें खुरचे जाने के खतरे में डाल देते हैं... और खुरचा हुआ दान्त जल्दी किड़ जाता है। आप का डॉक्टर कहेगा कि, किसप्रकार किड़े हुए दान्त-खराब दान्त-आप का स्वास्थ्य नष्ट कर देते हैं। गिब्स डेन्टिफ्रिस खुरचने के बग़ैर (दान्त) सुरक्षिततासे साफ़ करने के लिये खासकर बनाया गया है। अब से गिब्स डेन्टिफ्रिस का प्रयोग करो और आप के दान्त नीरोगी रहते हैं, इसकी खात्री करो; यह जंतु-नाशक, स्वाद में आल्हाद-दायक है और आप के दान्त श्वेत एवं सुरक्षितता से साफ़ करेगा।

गिब्स अधिक समयतक चलता है और अन्य दन्तमंजनोंसे सस्ता है

गिब्स बच्चों के लिये आदर्श है

गिब्स डेन्टि...

D. & W. GIBBS LIMITED, ...

J&N REMINDERS!

रमास्क पत्र

किस प्रकार का काम ? : भीतरी दीवारों की सजावट के लिए जहाँ तेल का रंग प्रयोग नहीं किया जा सकता, या जहाँ किफ़ायत आवश्यक है।

हमारी सिफ़ारिश : 'ऐक्वाटिंटा' (Acquatinta) आयल बाऊण्ड धुलने योग्य दीवारों का रंग जो मख़मली फ़िनिश देता है अथवा इससे भी सस्ता "जैन्सोलिन" (Jensolin) दीवारों का सूखा रंग जो अति सुन्दर मैट फ़िनिश देता है।

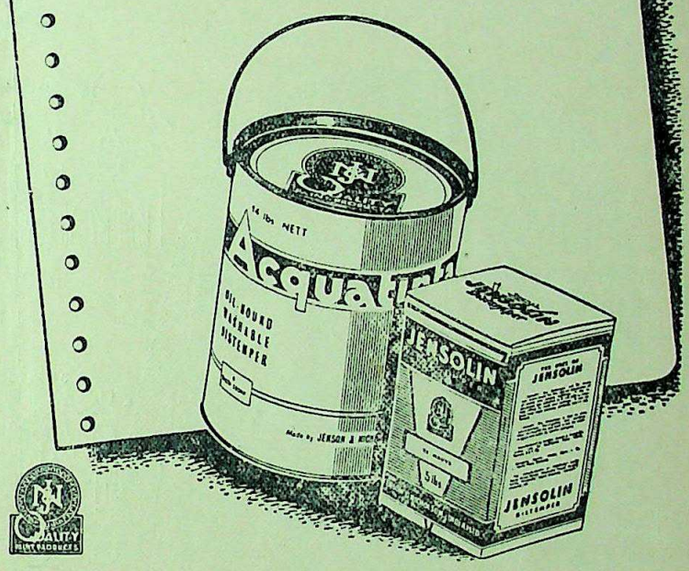

JENSON & NICHOLSON

MAKERS OF PAINTS

हिन्दी साहित्य

बाबू श्यामसुन्दरदास प्रणीत

मूल्य चार रुप...

हिन्दी में ऐसे ही इतिहास-ग्रन्थों की कमी है। जो कुछ इनी-गिनी पुस्तकें लिखी गई हैं उनमें से बहुत-सी अप्रामाणिक और अधूरी हैं और बाकी अप्राप्य हैं। खासकर हिन्दी साहित्य का इतिहास पढ़नेवालों को कोई भी प्रामाणिक इतिहास-ग्रन्थ उपलब्ध न होने के कारण बड़ी ही कठिनाई थी। इसी कठिनाई को दूर करने के लिए हिन्दी के माने हुए विद्वान् तथा समालोचक बाबू श्यामसुन्दरदास ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'हिन्दी भाषा और साहित्य' का परिमार्जित और संशोधित संस्करण 'हिन्दी साहित्य' के नाम से उपस्थित किया है।

पुस्तक में केवल विभिन्न कालों का ऐतिहासिक वर्णन ही नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को विभिन्न कवियों की कविताओं से परिचित कराने के लिए उदाहरण-स्वरूप कविताएँ भी दी गई हैं। हिन्दी-साहित्य के इतिहास के सम्बन्ध में जितने भी नये अनुसन्धान हुए हैं, उन सबका इसमें समावेश [illegible] प्रकार हिन्दी-[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीय पण्डित कृष्णकान्त जी मालवीय लिखित

वैवाहिक जीवन-सम्बन्धी प्रसिद्ध हिन्दी पुस्तक

'सुहागरात'

फिर से छप गई किन्तु परिमित संख्या में ही पुस्तकें छपी हैं इसलिए जल्दी कीजिए। विवाह के शुभ अवसर पर इससे अधिक सुन्दर देने योग्य उपहार कोई दूसरा नहीं हो सकता।

सुहागरात (प्रथम भाग) या बहूरानी को सीख

सुहागरात (दूसरा भाग) या पतियों को सीख

सुहागरात (तीसरा भाग) या मातृत्व और बच्चों की फ़िक्र

तीनों भागों का मूल्य अलग अलग पाँच रुपया प्रति भाग मात्र। तीनों भाग एक साथ मँगानेवाले के लिए डाक-ख़र्च माफ़। जल्दी कीजिए नहीं तो प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

मैनेजर 'अभ्युदय' प्रयाग

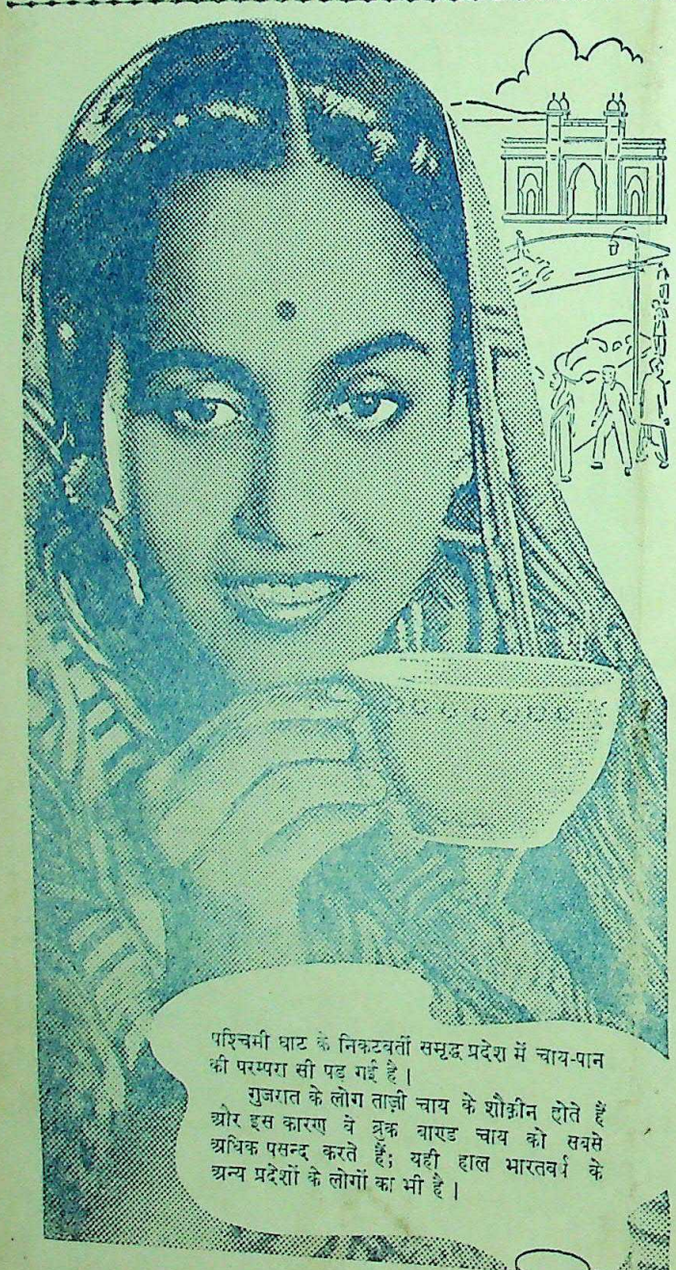

पश्चिमी घाट के निकटवर्ती समृद्ध प्रदेश में चाय-पान की परम्परा सी पड़ गई है।

गुजरात के लोग ताज़ी चाय के शौक़ीन होते हैं और इस कारण वे ब्रुक बाण्ड चाय को सबसे अधिक पसन्द करते हैं; यही हाल भारतवर्ष के अन्य प्रदेशों के लोगों का भी है।

शक्ति का

महाभृंगराज तैल

केश और मस्तिष्क के लिये सर्वोत्तम तैल

अध्यक्ष मथुर बाबू का

शक्ति औषधालय · ढाका

भारत का सर्वश्रेष्ठ और प्राचीनतम आयुर्वेदीय प्रतिष्ठान

समस्या कठिन—निवृत्ति सरल

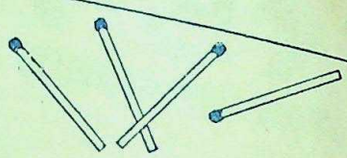

प्रश्न : दियासलाई की चार तीलियों से छोटे से छोटा ... चतुर्भुज बनाइए ?

उत्तर : तीलियों के सिरों को ऐसे रखिये कि उनका संकेत उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम की ओर हो जैसा कि चित्र में दिखाया गया है।

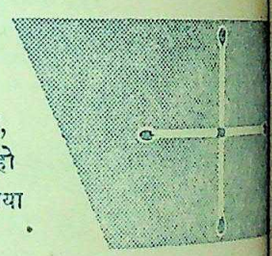

बच्चों की शिक्षा के निमित्त या विवाह में ख़र्च करने और ... अलग होने पर उपयोग में लाने के लिये रुपया बचाना बहुत से ... के लिये इतना सरल नहीं। परन्तु उन मनुष्यों के लिये चिन्ता ... कारण नहीं जो थोड़ा रुपया लगाने वालों के हित के लिये प्रचलित ... सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स की योजना में सेविंग्ज़ ग्रूप के मेम्बर बन कर ... हैं। नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स की मद पूर्णतया सुरक्षित है और ... सब मदों से अधिक ब्याज मिलता है।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

(१) आप ५, १०, ५०, १००, ५००, १०००, या ५०००, रु० के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) कुटुम्ब का प्रत्येक व्यक्ति (वयस्क या अल्पवयस्क) ५००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकता है। दो व्यक्ति मिलकर १०,००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है। सरकार द्वारा प्रचलित रुपया लगाने की मदों पर जो ब्याज दिया जाता है यह सब से अधिक दर है।

(४) इस ब्याज पर इनका ... लगता।

(५) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये ... हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट ... पश्चात भी भुनाया जा सकता है।

(६) जिनकी बचत थोड़ी है ... ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद ... ५ रु० के स्टाम्प्स जमा होने पर ... सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट मिल जायेगा।

(७) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स ... सरकार द्वारा अधिकृत एजेंटों ... ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

सेविंग्ज़ ग्रूप में अभी सम्मिलित हो ...

... तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्य ७॥)
३)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

नवम्बर, १९४६ सचित्र हिन्दी साप्ताहिक Sunday, 3rd November, 1946

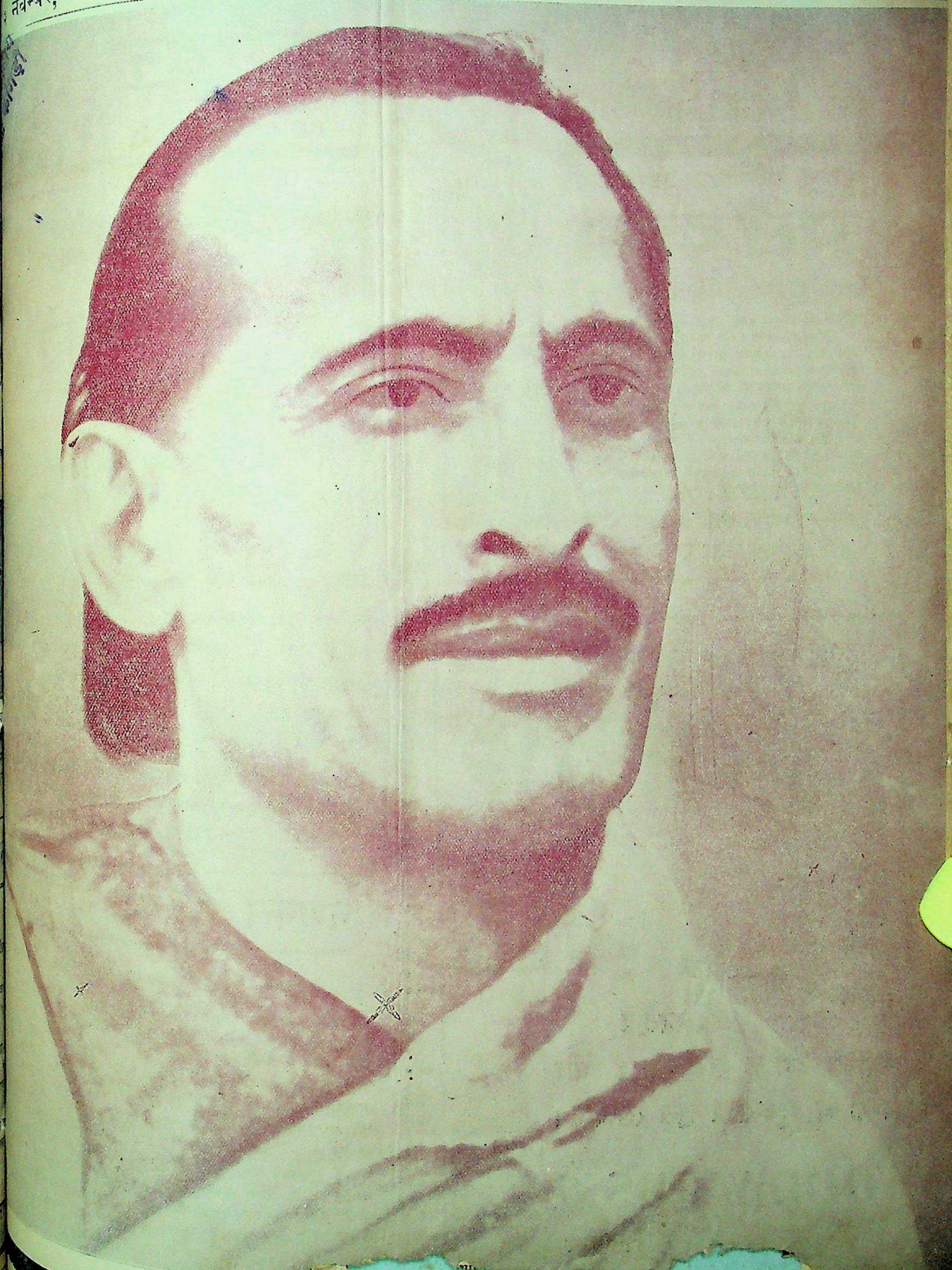

हिन्दुस्तानी कांग्रेस के राष्ट्रपति
निर्वाचित हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शारीरिक उष्णता के लिये...

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

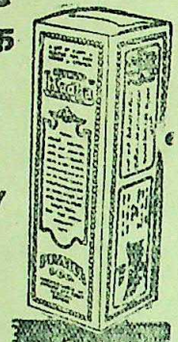

आज से ही शुरु कीजिए, सर्वत्र मिलता है।

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली तलुवों और आंखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग में आग सी जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, जड़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढ़ा बालक वृद्ध, युवक स्त्री सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीधा सच्चा ज्ञानिहित है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय बिसंकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके शीतल, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

एजेन्ट चाहिए, शहरों के लिए लिखिये।

यू० पी० प्रतिनिधि दोसर एण्ड को०, बरहना रोड, कानपुर।

बच्चे वुड वर्ड का ग्राइप वाटर पसंद करते हैं

यह सब दर्दों को दूर करता है और बच्चों को तंदुरुस्त व खुश रखता है।

WOODWARD'S GRIPE WATER

keeps baby well

इस प्रकार क्यों पीड़ित हैं?

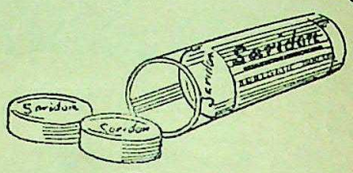

सारिडन

२० मिनट में सारे दर्द रोक देती है

दो समस्यायें

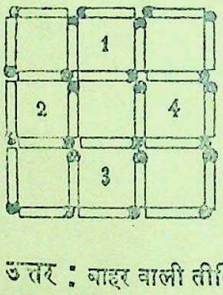

प्रश्न: दिया सलाई की ४ तीलियों को [illegible] हटाइए कि ५ समकोण चतुर्भुज शेष रह [illegible]

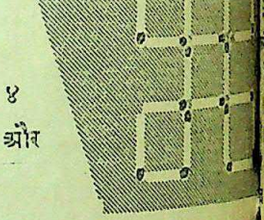

उत्तर: बाहर वाली तीलियों को जो नं० १, २, ३, और ४ समकोण चतुर्भुज बनाती हैं, हटाइए। ४ समकोण चतुर्भुज लुप्त हो जायेंगे और शेष ५ रह जायेंगे।

इस समस्या का निवारण कठिन नहीं था। "अपनी बचत का व्यय किया जाय"–इस दूसरी समस्या की निवृत्ति भी कठिन नहीं है।

अपनी बचत नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स में लगाइए।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

(१) आप १, १०, ५०, १००, ५००, १०००, या ५०००, रु० के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) कुटुम्ब का प्रत्येक व्यक्ति (वयस्क या अल्पवयस्क) ५००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकता है। दो व्यक्ति मिलकर १०,००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है। सरकार द्वारा प्रचलित रुपया लगाने की मदों पर जो ब्याज दिया जाता है यह सब से अधिक दर है।

(४) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(५) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट ११) पश्चात भी भुनाया जा सकता है)

(६) जिनकी बचत थोड़ी है वह [illegible] वाले सेविंग्ज़ स्टाम्पस् ख़रीद [illegible] ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्पस् जमा होने पर एक ५ रु० के स्टाम्पस् जमा होने पर एक सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट मिल जायेगा।

(७) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्पस् सरकार द्वारा अधिकृत एजेंटों अथवा पोस्ट ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

[illegible] ग्रुप में अभी सम्मिलित हो जाइ[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized By Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तान

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, ३ नवम्बर, १९४६

संख्या १०]

सप्ताह के समाचार

ब्रिटिश पार्लमेण्ट के स्वतन्त्र सदस्यों का एक प्रतिनिधि दल इस सप्ताह भारत पहुँच रहा है। आशा की जाती है कि इस प्रतिनिधि दल का नेतृत्व लिबरल पार्टी के नेता मि० क्लीमेण्ट डेविस करेंगे।

यह प्रतिनिधि दल, जिसमें ६ सदस्य होंगे, सारे भारत का दौरा करेगा और सभी दलों तथा जातियों के नेताओं से मिलेगा।

गोवा-सरकार को गांधीजी की चेतावनी

डा० लोहिया के प्रति किया गया व्यवहार हमारे उन देशवासियों के प्रति समझा जायगा जो गोवा में रहते हैं। यदि डा० लोहिया के पीछे किसी का बल होगा तो गोवा-सरकार को क्षमा माँगनी पड़ेगी, जो क्षति होगी उसकी भी पूर्ति करनी होगी। डा० लोहिया कोई साधारण व्यक्ति नहीं हैं और बड़ी शक्तियों के लिए भी यह आसान नहीं है कि वे अपनी क्षति-पूर्ति किसी का अपमान करके या उन्हें क्षति पहुँचा कर करें।

भारत में अब राष्ट्रीय सरकार बन गई है। वह यदि गोवा-सरकार से सभ्यतापूर्ण व्यवहार करने के लिए कहे तो कोई आश्चर्य नहीं है।

पूर्व बंगाल के हत्या काण्ड से अमेरिकन रुष्ट

संयुक्तराज्य अमेरिका के राजनैतिक नेता पूर्व बंगाल में मुसलमानों द्वारा किये गये असभ्यता के अपराध की घोर निन्दा कर रहे हैं। समाचार-पत्रों में हृदय-विदारक कहानियाँ मोटे शीर्षक में प्रकाशित हो रही हैं। कुछ समाचारपत्र आश्चर्य कर रहे हैं कि ब्रिटिश सरकार तत्क्षण ऐसी हरकतों को क्यों नहीं बन्द करती? अँगरेजों की भारत-सम्बन्धी भेद-नीति के कारण उन पर खुला दोष लगा रहे हैं।

ग्रीस

राजा के पक्ष में ग्रीस के ७० प्रतिशत बहुमत ने यह निर्णय कर दिया कि ग्रीस कम्युनिज्म (साम्यवाद) अथवा विधानवाद को पसन्द करेगा। कम्युनिस्ट पत्र मास्को के इशारे पर चलते हैं, इससे वे देश के शान्तिमय दैनिक कार्य करने में बाधक हो रहे हैं। चारों ओर कम्युनिस्ट देशों से घिरे हुए ग्रीस को एक विकट युद्ध करना होगा, क्योंकि यह बहुत दिनों से यूरोप का एक ऐसा केन्द्र रहा है जो झगड़े की नींव कहा जा सकता है।

जर्मनी

जर्मन रूसी क्षेत्र में भी वोटर कम्युनिस्ट प्रभाव के प्रसार के पक्ष में सोवियट द्वारा प्रभावित न हो सके। यह निश्चित हो गया कि वहाँ की जन-संख्या कम्युनिज्म के प्रसार के विरुद्ध है। सैक्सोनी में जर्मनों का वोट डेमोक्रैटिक पार्टी के पक्ष में था। यह सन्देह किया जाता है कि जर्मनी कभी कम्युनिज्म को अपना सकेगा।

मोलोटोव और टीटो

टीटो को अधिकतर मास्को से प्रेरणा मिलती है। यद्यपि ट्रीस्ट का भाग्य चार महान् शक्तियों द्वारा निर्णीत हो चुका है। यह संदिग्ध है कि यह बन्दरगाह अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े से मुक्त हो सकेगा। टीटो प्रधान मन्त्रियों के निर्णय का ख्याल नहीं करेंगे। इस समय टीटो के मातहत सारा देश है। परन्तु टीटो की मौलिकता को कोई नहीं जानता। कुछ कहते हैं, यह यूक्रेन का एक यहूदी है और कुछ कहते हैं कि वह छद्मवेशधारी रूसी सेनापति है। उन्होंने यूगोस्लाविया में सब सैनिकों से अधिक जर्मनों की हत्या की है। वे क्रेमलिन (रूसी राजमहल) के अत्यधिक विश्वासपात्र और योग्य मित्र हैं। उन्होंने कम्युनिस्ट पुलिस राज्य आदर्श में अपनी सरकार बनाई है। उनकी सेना में इस समय ८ लाख आदमी हैं।

विशिंस्की

पत्र-प्रतिनिधियों के सम्मुख भाषण देते हुए सोवियट राजनीतिज्ञ विशिंस्की ने कहा है—प्रत्येक व्यक्ति यह जानता है कि इटालियन युद्ध करने की अपेक्षा भागने में अधिक कुशल हैं। इस वक्तव्य से रोम में बड़ी नाराजी पैदा हो गई है। इसके परिणामस्वरूप रोम से कितने ही पत्र विशिंस्की के पास भेजे गये हैं जिनमें उनको द्वन्द्व के लिए ललकारा गया है।

सन्धि की शर्तों के कारण इटालियनों द्वारा द्वन्द्व को बहुत बचाया गया है। समाचार-पत्रों ने ललकार को प्रकाशित कर दिया है और आशा करते हैं कि सोवियट राजदूतावास इसकी ओर ध्यान देगा। विशिंस्की जैसे लोगों को बिना किसी अस्त्र वाले युद्ध को पसन्द करना चाहिए न कि सारे बन्दरगाहों, खानों और द्वन्द्व-

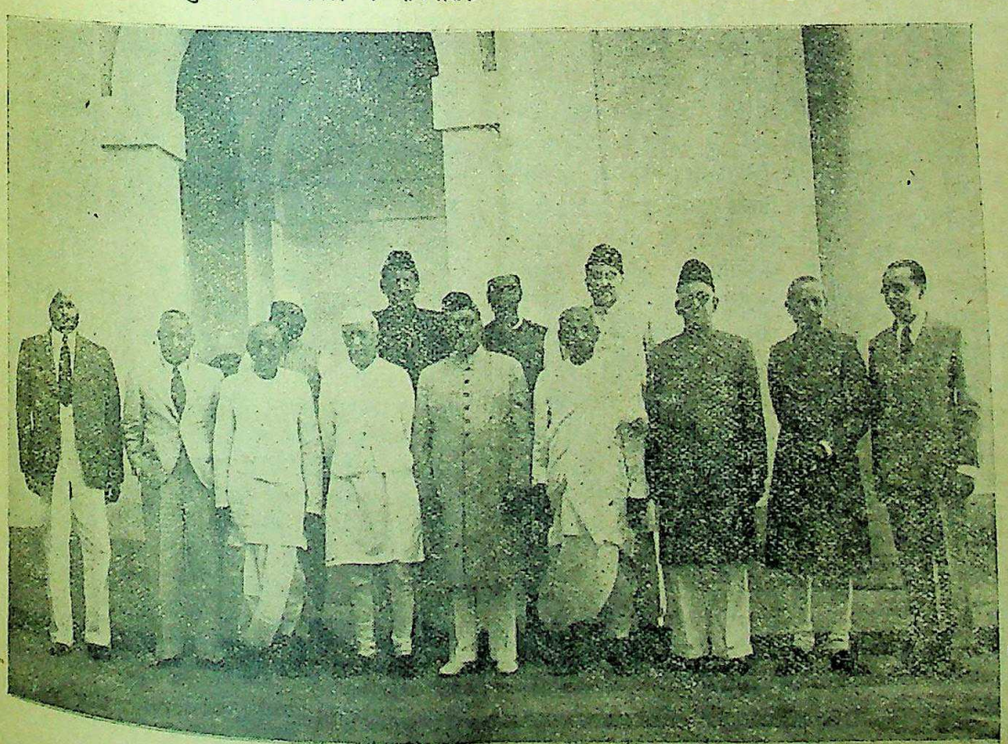

तारीख २६ अक्टूबर को वायसराय-भवन में अस्थायी सरकार के मंत्रियों का लिया गया चित्र।
पहली पंक्ति में (बायें से दायें) [illegible] श्री सी० राजगोपालाचारी, नेहरू, मिस्टर लियाकत अली [illegible] एच० भामा।
पिछली पंक्ति में (बायें से दायें) [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

प्रत्यक्ष कार्रवाई

अक्टूबर महीने के मध्य में लोगों की यह धारणा हो चली थी कि मुस्लिम लीग द्वारा हत्या की जो परेशानियाँ उपस्थित हो गई थीं वे तो कम से कम शान्त हो जायँगी। जनता अपने दैनिक कार्य करने के लिए लालायित थी। गत सप्ताह की कलकत्ता और बम्बई की घटनाओं ने सिद्ध कर दिया कि यह अभी असम्भव है। पूर्व बंगाल की घटनाओं ने स्पष्ट कर दिया है कि मुस्लिम लीग के गहरे षड्यन्त्र ने हिन्दुओं को जड़-मूल से नष्ट कर देने के लिए प्रत्यक्ष कार्रवाई का कार्यक्रम बना रक्खा है। यह कोई विश्वास नहीं करता था कि मुस्लिम लीग की हिन्दुओं के प्रति घृणा ऐसी स्थिति में पहुँच जायगी, जो मानवता में बर्बरता और रक्तपात का रूप धारण कर लेगी। हम प्रतिदिन दुःखद घटनाओं की खबरें सुना करते हैं। बंगाल की लीगी सरकार ही खतम न हो बल्कि उस सरकार के प्रत्येक व्यक्ति पर खुली अदालत में इस अपराध के लिए मुकदमा चलाया जाय कि उन लोगों ने अप्रत्यक्ष रूप से मुसलमान जनता को हिन्दुओं के विरुद्ध भड़काया है। घटनाएँ सिद्ध करती हैं कि मुल्की अधिकारियों ने किस प्रकार दुर्व्यवहार किया है जिससे सामूहिक हत्या, लूट और हिन्दुओं को गाँवों से नष्ट कर देने का प्रयत्न हुआ है। यहाँ के ये अपराध नाजियों के बर्बर अत्याचारों से कम नहीं थे। अपने आराम के लिए जो काम नाजियों ने किये वही घटनाएँ बंगाल में हुईं।

हजारों घर नष्ट हो गये हैं। कितने ही व्यक्ति भूखों मर गये हैं। कितने ही अपने घर में बन्द कर दिये गये हैं, और बहुतों को जिन्दा जला दिया गया है। गुंडों का झुंड क्षेत्रों में सर्वनाश बनकर खड़ा हो गया है। ये लोग अभी तक तितर-बितर नहीं किये जा सके।

बंगाल सरकार ईमानदार संवाददाताओं और समाचारपत्रों या रिपोर्टरों की इसलिए निन्दा करती रहती है कि वे सच्ची रिपोर्ट प्रकाशित करते हैं। लीगी सरकार चाहती है कि सामूहिक हत्या का कायरतापूर्ण कार्य प्रकाशित न किया जाय। क्योंकि ऐसे कार्यों का पूर्व बङ्गाल की जनता को डटकर सामना करना पड़ा है। लीगी सरकार चाहती है कि दिन-दहाड़े जो बर्बरता और अत्याचार बङ्गाल में हुआ है उस पर एक भी शब्द न कहा जाय और पूर्व बङ्गाल के मुसलमानों को वहाँ के हिन्दुओं का सत्यानाश करने की सुविधा दे दी जाय जिससे उस प्रान्त को विशुद्ध पाकिस्तानी प्रान्त कहा जा सके।

हम यह कैसे विश्वास कर सकते हैं कि बङ्गाल की सम्पूर्ण हिन्दू जनता सामूहिक हिन्दू हत्याओं, हिन्दू स्त्रीत्व और हिन्दू संस्कारों के विरुद्ध एक सामूहिक नागरिक क्रान्ति को तैयार हो जायगी? क्या हम यह आशा [illegible] के करोड़ों हिन्दू [illegible] मान [illegible]

युक्तराष्ट्र-संघ में भारत

न्यूयार्क में संयुक्तराष्ट्र-संघ की बैठक हो रही है। भारत का प्रतिनिधिमंडल भी उसमें भाग ले रहा है। गत महायुद्ध की समाप्ति के बाद जो राष्ट्र-संघ बना था वह मित्रराष्ट्रों की दया पर निर्भर रहता था। ब्रिटेन और अमेरिका उसके मुख्य चौधरी थे। परन्तु इस द्वितीय युद्ध के बन्द होने के समय से जिस राष्ट्र-संघ का जन्म हुआ है उसमें भी कम कटुता नहीं है। एक नई बात इस संघ में अवश्य हुई है। वह यह कि ब्रिटेन और अमेरिका का चौधरीपन बहुत कुछ खतम हो रहा है। भारत अभी तक ब्रिटेन का पिछलग्गू राष्ट्र बनकर हाथ उठाया करता था परन्तु भारत में अस्थायी सरकार बन जाने से अब वह अपनी स्वतंत्र नीति रखता है। पेरिस-सम्मेलन में भारत के प्रतिनिधि ने खुलकर ब्रिटेन का विरोध किया था। न्यूयार्क-सम्मेलन में वे व्यक्ति नहीं हैं जो पेरिस में थे। इस प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित कर रही हैं। श्रीमती विजयलक्ष्मी एक देशभक्त और उस वीर सेनानी की बहन हैं जिसकी ओर भारत ही नहीं वरन् सारा संसार आशापूर्ण दृष्टि से देख रहा है। न्यूयार्क की बैठक में विजयलक्ष्मी ने जो प्रस्ताव पेश किया है उसका एक-मात्र उद्देश्य संसार के गुलाम देशों को मुक्ति दिलाना है। भारत के प्राण महात्माजी के आदेशानुसार अस्थायी सरकार में कांग्रेस सम्मिलित हुई है। महात्माजी और कांग्रेस के कर्णधार केवल अपने देश को नहीं बल्कि संसार के गुलाम देशों को इस दुःखमय बंधन से छुड़ाने के लिए प्रयत्नशील हैं जिसमें वे स्वयं हैं।

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित भारत का वैसा प्रतिनिधित्व करने नहीं गई हैं जैसा भारत सरकार के पहले के प्रतिनिधि किया करते थे। स्वयं विजयलक्ष्मी जी ने कहा है—'संयुक्त राष्ट्र-संघ के लिए भारत का यह प्रतिनिधिमंडल मिस्टर एटली द्वारा शासित नहीं है बल्कि यह भारत की राष्ट्रीय सरकार का सच्चा प्रतिनिधि है। भारतवर्ष संयुक्तराष्ट्र संघ में अपनी वर्तमान स्थिति को नहीं पसन्द करता। अब सन् १९२० का समय निकल गया। यह सन् १९४६ है।' संयुक्तराष्ट्र-संघ की तीन मुख्य संस्थाओं में से एक में भी भारत का नाम नहीं है। शायद इसी ओर श्रीमती पण्डित का लक्ष्य है, क्योंकि भारत की आबादी देश और प्रवासियों को लेकर संसार के सभ्य देशों में बहुत आगे है। इसके अतिरिक्त संसार की आधी से अधिक आबादी भारत का नेतृत्व चाहती है।

श्रीमती पंडित ने संघ की शक्ति की याद दिलाते हुए कहा है, यद्यपि हिटलर का अन्त हो गया पर हिटलरवाद का अंत नहीं हुआ। जनरल स्मट्स भारत के प्रस्ताव के सम्बन्ध में कहते हैं, किसी देश के आन्तरिक मामलों में संयुक्तराष्ट्र [illegible] चाहिए। [illegible]

घर और बाहर

नरमेध का परिणाम

मुस्लिम लीग उपद्रव करनेवाली अपनी शक्तियों पर कोई नियंत्रण नहीं रख सकती। वह उपद्रव करनेवाली अपनी शक्तियों के ऊपर नियंत्रण करने की इच्छा भी नहीं करती। बल्कि लीग के नेता लोग हिंसात्मक वायुमण्डल तैयार करते रहते हैं। ये मुसलमान जनता को गलत रास्ते पर चलाकर अपने नेतृत्व और ओहदे को सुरक्षित रखना चाहते हैं। आवश्यक अर्थनीतिक, स्वास्थ्य और शिक्षा परिकल्पनाओं से ये लोग डरते हैं; क्योंकि मुसलमान जनता की अज्ञता से लाभ उठाना हैं। हिन्दू लोग न तो ज़बर्दस्ती गोमांस खिला देने से मुसलमान बन सकते हैं और न बलात्कार से। लीग के नेता यह भी अच्छी तरह जानते हैं कि हिन्दुओं की हत्या करके पाकिस्तान बनाना हाथों से चाँद पकड़ने का प्रयास है। कोई जाति छोटी से छोटी क्यों न हो, धरातल से उसके लोप कर

न्सिसको में यह घोषित कर दिया है कि किसी भी जाति अथवा राष्ट्र की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए यह संघ जिम्मेदार है। फिर अफ्रीका के घेटो बिल पर जनरल स्मट्स क्यों परेशान होते हैं। उन्हें भारतीयों की माँगों को स्वीकार करना चाहिए। रूस ने भारत के पक्ष का समर्थन किया है। हम उसके कृतज्ञ हैं। यह विषय केवल भारत का नहीं बल्कि संसार के राष्ट्रों का है। यदि अफ्रीका के श्वेतांगों ने इस प्रस्ताव को ठुकराया तो संसार के सामने शान्ति कहाँ? एक नये युद्ध की साफ चुनौती है।

पण्डित जवाहरलाल जी ने एसेम्बली के शरदकालीन अधिवेशन में भी सदस्यों को आश्वासन देते हुए कहा है, मुझे आशा है कि संयुक्तराष्ट्र-संघ में फैसला हमारे पक्ष में होगा। यह हमारे पक्ष में हो या न हो, हम दक्षिण अफ्रीका में अपने देशवासियों के साथ अन्त समय तक रहेंगे। यों हम राष्ट्र-संघ में ब्रिटेन के पिट्ठू राष्ट्रों में नहीं बल्कि एक स्वतन्त्र राष्ट्र होकर भाग ले रहे हैं।

* * *

राष्ट्रपति की रिपोर्ट

राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी हाल ही में पूर्व बंगाल के क्षतिग्रस्त गाँवों की दयनीय स्थिति देखकर लौटे हैं। उन्होंने जो रिपोर्ट दी है वह स्वयं वहाँ की सच्ची कथा कहती है। मुस्लिम लीग की प्रत्यक्ष कार्रवाई का जो सच्चा चित्र हो सकता है वह पूर्व बंगाल में मौजूद है। रिपोर्ट के अनुसार समाचारपत्रों में बहुत सी सच्ची घटनाएँ तो प्रकाशित ही नहीं हुईं। राष्ट्रपति ने प्रधान मंत्री सुहरावर्दी के साथ कितने ही गाँवों को जलते देखा है, कितने ही गाँवों में लुटेरों का गिरोह घरों को लूटता हुआ देखा गया है। हत्याओं के सम्बन्ध में कितनी ऐसी सच्ची घटनाएँ हैं जो हृदय विदीर्ण कर देती हैं। घरों में बन्द कर मनुष्यों के जलाये जाने, स्त्रियों और नव [illegible] की दुःखद घटनाएँ [illegible] लक रही हैं। क्या [illegible] मंडल सम्मानित [illegible] सोचने की कृपा

लेखक
श्री देवेन्द्रनारायण वा[illegible]
एम० ए०, एल्-एल० बी०

देने की कल्पना पागल आदमी [illegible] में ही स्थान पा सकती है। [illegible] और नोआखाली की गुण्डा[illegible] (गुण्डाशाही नहीं, क्योंकि [illegible] नहीं सँभाल सकते, उनमें [illegible] बीज रहता है कि वे आपस में [illegible] हैं) क्या फल? ऐसा मनोभाव [illegible] दुर्बलता से पैदा होता है। दुर्बल[illegible] बड़ा काम नहीं होता। हिन्दुओं [illegible] बनाने से कभी पाकिस्तान [illegible] सकता।

स्त्रियों को अस्त्र दिये जायँ

नोआखाली और कलकत्ते [illegible] कांड में यह देखा गया है कि [illegible] गुण्डों की नजर ज्यादातर हिन्दू [illegible] ऊपर है। बलात्कार करने [illegible] पाशविक इच्छा को रोकने के लिए [illegible] नारियों को अस्त्र चलाने की [illegible] इससे महिलाएँ गुण्डों से अपनी [illegible] बचा सकेंगी और जरूरत पड़ने [illegible] हत्या भी कर सकेंगी। आजुनिक [illegible] चलाने की प्राथमिक शिक्षा भी [illegible] देना चाहिए। नारी की असहाय [illegible] को दूर करने का यही उपाय है। [illegible] जब इन नारियों की रक्षा नहीं [illegible] तब कम से कम उनको अपनी [illegible] करने की इजाजत तो दे दे।

ग्रीस में और ब्रिटिश फौज

पिछले सप्ताह यह आशंका [illegible] गई थी कि ग्रीस में साम्यवादियों [illegible] कुचलने के लिए ब्रिटेन और [illegible] भेजेगा। ग्रीस की वर्तमान सरकार [illegible] माँग थी। परन्तु समाचार [illegible] ब्रिटेन अस्त्रों के बदले ग्रीस में [illegible] ब्रिटिश फौज भेज रहा है। ब्रिटेन [illegible] वाद की रक्षा के लिए जैसा उदार [illegible] ही और मामलों में होता तो दुनिया [illegible] बहुत सी उलझनें अब तक तय हो [illegible]

पेरिस-सम्मेलन का ठोस फल

युद्ध समाप्त होते समय [illegible] पास बम गिरानेवाले जितने [illegible] जहाज थे उनसे आजकल [illegible] एसोशियेटेड प्रेस आफ अमेरिका [illegible] है कि अमेरिका के पास इस [illegible] हजार बम गिरानेवाले बड़े हवाई [illegible] यह समाचार आश्चर्यजनक नहीं है। [illegible] शान्ति-सम्मेलन की कार्रवाई [illegible] मालूम हो गई थी कि बड़े राष्ट्रों [illegible] तैयारियाँ जोर शोर से हो रही हैं। [illegible] राष्ट्रों के प्रतिनिधि शान्ति [illegible] थे परन्तु तैयारियाँ लड़ाई [illegible] अब अमरीकी परराष्ट्र मंत्री [illegible] अमेरिका पहुँचते ही घोषणा कर [illegible] अमेरिका और रूस की [illegible] गई है।

यह एक ऐतिहासिक सत्य है [illegible] जब लड़ाई की तैयारियाँ हुई हैं [illegible] लड़ाई होकर ही रही है।

बंगाल सरकार की उदासीनता

ज्ञात हुआ है कि विश्वकवि [illegible] नाथ के 'विश्वभारती' विश्व[illegible] भारत सरकार चार लाख नब्बे [illegible] देगी और सालाना पचहत्तर [illegible] भी देगी। विश्वभारती [illegible] अनमोल दान है। इसकी रक्षा [illegible] प्रत्येक मनुष्य को चेष्टा करना [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्तीय कांग्रेस में एकता का ह्रास

गत २० अक्टूबर की बैठक का चित्र

लेखक, श्रीयुत महादेव भट्ट

प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी में अभी तक खुलकर विरोध करने का कोई प्रस्ताव नहीं हुआ था। पालीवाल जी के प्रस्ताव से चकित होकर शायद लेखक ने यह लेख लिखा है यद्यपि लेख में मौलिकता नहीं है, केवल बैठक की एक रिपोर्ट है। फिर भी रिपोर्ट सुन्दर ढंग से लिखी गई है।

पुरुषोत्तमदास टण्डन

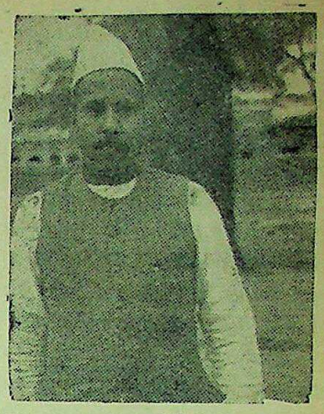

किसान-मजदूर प्रजापार्टी के नेता पालीवालजी

सिंह हारौल और गोपालनारायण सक्सेना का नाम विशेष रूप से लिया जा सकता हैं। संयोजक और प्रचारकों में कांग्रेस जन तो थे, परन्तु न वे किसान थे और न किसान-कार्यकर्ता। किसानों से सीधे सम्बन्ध का नाता यही था कि वे जिले के चुनाव-क्षेत्रों से असेम्बली के या तो मेम्बर होकर आये थे या जिला कांग्रेस कमेटी अथवा सूबा कमेटी में सदस्य होकर पहुँचे थे। परन्तु मजदूरों की कमी थी। मजदूर नेता गांधीवाद से दूर रहने का प्रयत्न करते हैं। इससे वे समाजवादियों को क्यों छोड़ेंगे? इस पार्टी को जरूरत थी मजदूर कार्यकर्ता की। अतः श्री शिब्बनलाल सक्सेना को इस पार्टी में मिलाया गया। अब यह पार्टी किसान, मजदूर और प्रजा की त्रिवेणी बन गई। सूबे की कांग्रेस में जो संगठन चला आ रहा था उस पर पार्टी ने हथौड़े से प्रहार करना शुरू किया। शिब्बनलालजी ने प्रान्तीय कांग्रेस अध्यक्ष पर अविश्वास का प्रस्ताव करने का विचार प्रकट किया। मेरठ कांग्रेस में अविश्वास से सम्बन्ध रखनेवाला एक प्रस्ताव था परन्तु वह पास न हो सका। पीछे ७० सदस्यों के हस्ताक्षर से एक ऐसा ही प्रस्ताव, जिसमें अविश्वास की स्पष्ट झलक थी, प्रान्तीय कांग्रेस अध्यक्ष के पास भेजा गया था। इस प्रस्ताव ने प्रांत में काफी हलचल पैदा कर दी। सक्सेनाजी अविश्वास का मूल प्रस्ताव पहले ही भेज चुके थे।

लखनऊ शहर-कांग्रेस कमेटी ने प्रान्तीय प्रतिनिधियों के ठहरने और भोजन का प्रबन्ध चौक में एक धर्मशाले में कर रक्खा था। परन्तु किसान-मजदूर-प्रजा-पार्टी अपने को बिलकुल अलग रखना चाहती थी। इससे उसने अपना कैम्प अमीनाबाद के छेदीलाल धर्मशाले में रक्खा। शहर-कमेटी ने प्रतिनिधियों को सभा-स्थान और ठहरने के स्थान तक पहुँचने के लिए सवारियों की भी सुविधा कर रक्खी थी; किसान मजदूर-प्रजा-पार्टी ने अपने पक्षवालों के लिए अलग से ताँगा, मोटर आदि का प्रबन्ध किया था। सभा-स्थल विक्टोरिया पार्क में एक शामियाने में कनातों के घेरे के अन्दर था। परन्तु उस दिन वर्षा होने के कारण सारा प्रबन्ध गड़-बड़ हो गया। बेचारे चन्द्रभान गुप्त सभा-स्थल के लिए परेशान थे। अन्त में मेडिकल कालेज का हाल बैठने के लिए मिल गया। बैठक २ बजे से होनेवाली थी। प्रबन्ध आदि बदलने से वह टाल कर ४ बजे कर दी गई। समय टालने का और भी एक कारण था। वह यह कि प्रांत के गृहमन्त्री श्री रफीअहमद किदवई तथा अन्य नेता मजदूर-प्रजा-पार्टी और वर्तमान अधिकारी दल से समझौता कराने का प्रयत्न कर रहे थे। प्रान्तीय कांग्रेस कौंसिल (कार्यकारिणी) की बैठक २० अक्टूबर को सुबह ९ बजे से १२ बजे तक इसी उद्देश्य से होती रही कि समझौता हो जाय परन्तु कोई नतीजा न निकला। २ बजे के लिए वह बैठक स्थगित कर दी गई थी। इससे प्रतिनिधियों की बैठक दो से टालकर चार बजे कर दी गई। दो बजे की बैठक में भी कोई समझौते की आशा न हुई तो पाली-वालजी ने अपना इस्तीफा दे दिया। परन्तु बाबू शिब्बनलालजी ज्यों के त्यों मेम्बर बने रहे। यहीं से प्रान्तीय प्रतिनिधियों की कार्यवाही आरम्भ होती है।

मेडिकल कालेज के अहाते में नहर के उन कर्मचारियों का जुलूस अपनी माँगों की पूर्ति के नारे लगाता हुआ खड़ा था जिनको सरकारी नौकरी से अलग कर दिया गया है। एक प्रतिनिधि को प्रांतपति ने नहर के कर्मचारियों की माँग की जानकारी के लिए भेजा। कर्मचारियों में आशा और प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। एक स्वर से आकाश गूँज उठा—'कांग्रेस जिन्दाबाद, सेठजी जिन्दा-बाद!' पास मिल रहे थे। प्रतिनिधि पास लेकर भीतर प्रवेश कर रहे थे। पत्र-प्रतिनिधियों को बैठक में जाने की मनाही थी। जिस विश्वस्त सूत्र से यह सब समाचार मालूम हुआ है वे एक प्रतिनिधि हैं। उन्होंने बतलाया कि जिस समय सभा में प्रतिनिधि अपनी अपनी जगह पर बैठे, किसान-मजदूर-प्रजा-पार्टी के सदस्य दल और हथौड़े से भूषित तिरंगे बैज अपने सीनों पर लगाये थे। दो-एक नेता, जैसे पालीवाल जी और श्री शिब्बनलाल सक्सेना इस चिह्न से वंचित थे। बैठक में राष्ट्रपति का चुनाव तो करना न था। दूसरा नम्बर प्रांत से अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की सदस्यता के लिए दो खाली जगहों की पूर्ति करने का था। इसमें क्या देर थी। सेठजी अध्यक्ष के आसन पर थे। उन्होंने सभा को बतलाया, कि ये दोनों जगहें खास उद्देश्य से खाली कराई गई हैं। एक तो अ० भा० कां० क० के प्रधान मंत्री डा० केसकर के लिए और दूसरी डाक्टर राम-मनोहर लोहिया के लिए। बस यहीं से विवाद आरम्भ हुआ। दो जगहों के लिए प्रजा-पार्टी ने अपने दो सदस्यों का नाम पेश कर दिया। परन्तु पार्टी अध्यक्ष के वक्तव्य पर एक नाम वापस हो गया। डा० केसकर; डा० लोहिया और [illegible] रह गये। इनके [illegible] अपनी [illegible] थी

मधुऋतु में गाये तो क्या?

कवि श्री बालकृष्ण राव, आई० सी० एस०

दिन भर जो मिल न सका, वह पथ
यदि सन्ध्या-समय मिले तो क्या?
जो उपवन में विकसित न हुआ
वह वन में सुमन खिले तो क्या?

की भूल नियति ने जो याचक
निष्काम उपासक को समझी;
दे चुकी जिसे अभिशाप कभी,
वरदान उसे अब दे तो क्या?

है वर्तमान क्या, यदि प्रतिपल
भावी गत में परिणत होती?
जब बुझा आरती का दीपक,
मन्दिर के द्वार खुले तो क्या?

वह क्या जाने जीवन, जिसका
परिचय केवल स्मृति, आशा से?
सुन सके प्रतिध्वनि ही स्वर की,
छवि की छाया देखे तो क्या?

अविराम निरन्तर चलने का
यदि राही को अभिशाप मिले,
गति स्वयं बनाती रहे मार्ग,
फिर लक्ष्य [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य-चर्चा

राष्ट्र-निर्माण के लिए अगला कदम

देश के युवकों और युवतियों के लिए शारीरिक-शिक्षा

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

पिछले महीने अमरावती में अखिल भारतीय शारीरिक-शिक्षा-सम्मेलन हुआ था। वहाँ भारत के सभी प्रान्तों के लोग पहुँचे थे। किन्तु वहाँ राष्ट्रभाषा हिन्दी का एक भी पत्र-प्रतिनिधि नहीं था। इसमें श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी ने भाग लिया था। आपने वहाँ का हाल संक्षेप में लिखा है। 'देशदूत' में ही यह पहला लेख प्रकाशित हो रहा है। आशा है, लोग इसे चाव से पढ़ेंगे।

पिछले महीने में प्रथम अखिल भारतीय शारीरिक-शिक्षा-परिषद् का अधिवेशन अमरावती में हुआ था। हिन्दुस्तान में जैसे जैसे जागृति हो रही है वैसे ही वैसे हर चीज की तरफ लोगों का ध्यान खिंचता जा रहा है। हमारे देश में शारीरिक-शिक्षा की कितनी कमी है, इसको हर एक महसूस करता है। लेकिन हम गुलामी की जंजीर में ऐसे कसे गये थे कि अपनी तरक्की कर ही नहीं सकते थे। अब देश की स्थिति बहुत कुछ बदल गई है।

अचानक १६ अक्टूबर को मुझे अमरावती जाने का मौका मिला। अखिल भारतीय शारीरिक-शिक्षा कान्फ्रेंस हो रही थी। मेरी तबियत खराब थी, फिर भी मित्र शरत् मालपाणी ने आग्रह कर कहा कि ऐसे महत्त्वपूर्ण अधिवेशन को जरूर देखना चाहिए। उनकी कृपा से ही मैंने ऐसे महत्त्वपूर्ण अधिवेशन को देखा।

देश के विभिन्न प्रान्तों और नगरों से हजारों युवकों ने इस अधिवेशन में भाग लिया था। एक विशाल नगर का निर्माण हुआ था। शारीरिक-शिक्षा का प्रथम अधिवेशन होते हुए भी यह काफी भव्य अधिवेशन था।

१८८५ ई० में कांग्रेस का जैसे प्रथम अधिवेशन स्वराज्य के लिए हुआ था, वैसा ही यह अधिवेशन स्वास्थ्य की उन्नति के लिए यहीं प्रथम हुआ। ६० वर्ष की तरक्की का ही यह फल है कि अब देश अपने प्रत्येक अंग पर सोचने और कुछ करने की कोशिश कर रहा है।

* * *

मध्य-प्रान्त और बरार में अमरावती शहर का खास स्थान है। इस प्रान्त में अमरावती का चौथा स्थान है। ८० हजार की बस्ती है। कपास का खास रोजगार यहाँ होता है। डा० शिवाराज जी पटवर्धन, हरिहर राव देशपांडे और कोकरकेकर के प्रयत्न से २० साल पहले यहाँ 'हनुमान व्यायामशाला' की स्थापना हुई थी। महाराष्ट्र और मध्य-प्रान्त के घर घर में व्यायाम का सन्देश पहुँचाने में इस शाला ने बहुत काम किया है। हिन्दुस्तान के भिन्न भिन्न भागों में आज लगभग दो हजार तालीम युक्त नौजवान काम कर रहे हैं। खास कर महाराष्ट्र, मध्य-प्रान्त और गुजरात में इस शाला ने व्यायाम का अच्छा वातावरण पैदा किया है। डा० शिवाराज पटवर्धन ने अपने मूक कार्य से हनुमान व्यायामशाला का काम खूब आगे बढ़ाया और इस व्यायामशाला का नाम विदेशों तक में फैलाया। इसी कारण यहीं अखिल भारतीय व्यायाम-प्रेमियों का विशाल समूह इकट्ठा हुआ।

हिन्दुस्तान की जनता के स्वास्थ्य और जरूरी तालीम के लिए भावी संगठन और कार्य का प्रारम्भ आज इसी नगर से शुरू किया गया है।

* * *

अमरावती नगर से २॥ मील पर किंग एडवर्ड मेमोरियल कालेज के विशाल मैदान में भव्य और शानदार स्व० डा० काकोर्डेकर पंडाल बनाया गया था जहाँ २५ हजार [illegible] कार्यवा[illegible]

तो पूरा चेहरा सामने दिखाई पड़ता। ऐसा ही बाईं तरफ और सामने से भी दिखाई पड़ता था। इस चित्र की रचना बड़े कला-पूर्ण ढंग से की गई थी। यह चित्र सारे नगर का आकर्षण-केन्द्र बना हुआ था। पंडाल के बीच के मैदान में देशी व्यायामों का प्रदर्शन किया जा रहा था। सैकड़ों लड़के-लड़कियों ने इस व्यायाम-प्रदर्शन में भाग लिया। राष्ट्रीय खेलों को महत्त्व दिया गया था। पूना और बड़ौदा के युवकों ने 'हतुतु' और 'खो, खो' का अच्छा खेल किया। मलखाम और गजग्राह का खेल हनुमान व्यायामशाला के युवकों ने किया।

जब मैं अपने मित्र शरत् के साथ पंडाल में पहुँचा तब कुश्तियाँ हो रही थीं। एक दूसरे दल से आगे बढ़ने का मुकाबिला चल रहा था। एक तरफ गदका फरी का खेल हो रहा था। चारों तरफ प्रसन्नता और कल्लोल का वातावरण था। हिन्दुस्तान में पेशेवर पहलवानों को ही प्रायः व्यायाम की शिक्षा मिलती है लेकिन यहाँ दूसरी ही बात थी। यहाँ तो तालीम के खयाल से सारी चीजों का प्रबन्ध था जिससे हमारे देश की निर्बलता और भीरुपन का समूल नाश हो और हमारे बच्चे फिर से हिम्मती, ताक़तवर और सच्चे नागरिक बनें।

इस अधिवेशन में एक खास विशेषता यह थी कि महाराष्ट्र की बहनों ने इसमें खूब भाग लिया। वे पुरुषों के साथ मिल कर खेलों में हिस्सा बटा रही थीं। पुरुषों के साथ कदम ब कदम कवायद और कसरत में भाग लेती हुई दिखाई दीं। लज्जा या झेंप का कहीं नाम नहीं था। महाराष्ट्र के लिए ही नहीं, सारे भारत के लिए इनका काम अनुकरणीय होगा। यहाँ की लड़कियों के दिल में शारीरिक शिक्षा के लिए बहुत उत्साह और प्रेम है। इन्हें व्यायाम की हर एक कला में निपुण बनने की इच्छा है।

* * *

इस अवसर पर हजारों व्यायाम-वीर और मनोरंजन के खेल करनेवाले तो आये ही थे, साथ ही कुछ तन्दुरुस्ती के विशेषज्ञ भी आ गये थे। नागपुर युनिवर्सिटी के वाइस चान्सलर श्री पुराणिक, मद्रास के शरीर-शिक्षक कालेज के प्रिंसपल श्री मेफार और अब्राहम, यू० पी० सरकार के शारीरिक-शिक्षक-विभाग के श्री माथुर, [illegible] प्रेसीडेंसी के डा० [illegible]

बम्बई प्रान्त के प्रसिद्ध प्राकृतिक चिकित्सक (नेचर क्योर) कैवल्यानन्द जी, फार्वर्ड ब्लाक के मंत्री श्री एच० बी० कामथ और आजाद हिन्द सरकार के भूतपूर्व अफसर मेजर जनरल शाहनवाज आदि भी सम्मेलन में मार्ग-दर्शन के लिए आ गये थे। इन सब महानुभावों के सहयोग से अखिल भारतीय शारीरिक-शिक्षा-अधिवेशन को बड़ी सफलता मिली।

* * *

माननीय खेर साहब का भाषण बहुत मधुर और शिक्षा-पूर्ण होता है। खेर साहब के अंग-प्रत्यंग से सौजन्य टपकता है। उन्होंने बड़ी मधुर और हृदय पर असर करनेवाली वाणी में कहना शुरू किया—"इस देश में जिस तरह से अब तक शिक्षा दी जाती रही है वह यदि जारी रही तो देश का नाश होना निश्चित है।" फिर कहा—"बम्बई प्रान्त में शारीरिक-शिक्षा देने के लिए जल्दी पूना के पास ६०० विद्यार्थियों का प्रबन्ध किया जा रहा है।" सैनिक-शिक्षा की तालीम की आवश्यकता भी बताई। माननीय खेर साहब ने कहा, सौन्दर्य और तन्दुरुस्ती का सारा तत्त्व शरीर में है। एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर देते हुए आपने कहा—एक भाई ने पूछा है कि लड़के और लड़कियों को एक ही प्रकार की शिक्षा दी जाय या अलग अलग। मेरे ख्याल से लड़के और लड़कियों के शरीर में बहुत कुछ मौलिक भेद है—शरीर-रचना में भिन्नता है। इसी तरह इनकी शारीरिक तालीम में भी भेद रहना चाहिए। फिर भी इस प्रश्न पर बड़ी बारीकी से विचार करना होगा।

आगे खेर साहब ने फिर कहा "मेरे जीवन का यह धन्य प्रसंग है। आजाद हिन्दुस्तान दुनिया को जो सन्देश देगा उसका निर्माण करने के लिए हम सब यहाँ बैठे हैं। वर्षों की सेवा का यह परिणाम है। हम सबको इकट्ठे होकर स्वतन्त्र भारत का निर्माण करना है। आज मुख्य कार्य का आरम्भ किया है। हम लोगों का काम मनोरञ्जन और 'ओलेम्पिक' का नहीं है। देश का सबसे महत्त्वपूर्ण काम है सेवा का।

"आज तक हम लोगों ने जितना खर्च बौद्धिक शिक्षा पर किया है उतना ही शारीरिक शिक्षा पर करने की हमारी इच्छा है। अपने देश की रक्षा करने के लिए इतनी तैयारी करनी ही पड़ेगी।"

गृहमन्त्री सरदार वल्लभभाई पटेल [illegible] लिखा था—आजादी [illegible] की जरूरत [illegible] युवतियों को [illegible] ताकत पैदा [illegible] और फौज की [illegible] रक्षा करनी

श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

चाहिए। स्वस्थ शरीर में ही [illegible] रह सकता है। हर हिन्दुस्तानी [illegible] को योग्य शारीरिक तालीम [illegible] हिन्दुस्तान का पहला काम है।

मेजर जनरल शाहनवाज ने [illegible] भाषण में कहा—मुझे यह [illegible] खुशी हुई कि यहाँ हिन्दुस्तान के [illegible] भागों से नौजवान आये हैं, [illegible] मुसलमान एक-सा हिस्सा बँटा रहे [illegible] बड़ी खुशी की बात है। हिन्दु[illegible] को इसी भूमि में रहना है। [illegible] सबका प्यारा वतन है, सबको [illegible] काम करना चाहिए, अँगरेजों के [illegible] आकर हमें एक दूसरे की जान को [illegible] नहीं डालना चाहिए। किसी का [illegible] खतरे में नहीं है। नौजवानों को [illegible] यिक झगड़ों में कतई नहीं पड़ना [illegible] हमें गुलामी से आजाद होना है। [illegible] मिलकर यहाँ से अँगरेजों को निकालें।

सारे राष्ट्र का भाग्य स्वस्थ [illegible] पर ही निर्भर है। युवक ही राष्ट्र [illegible] हैं। शारीरिक शिक्षा पर पूरा [illegible] हमारी राष्ट्रीय सरकार का पहला [illegible] राष्ट्र के सभी बच्चों को पीने के [illegible] मिलना बहुत जरूरी है। पौष्टिक [illegible] पर भी ध्यान रखना चाहिए।

अखिल भारतीय शारीरिक [illegible] परिषद् ने सरकार से सिफारिश [illegible] १—हिन्दुस्तान के हर प्रान्त में [illegible] शारीरिक शिक्षा देने के लिए [illegible] यूनिवर्सिटी की स्थापना की जाय। [illegible] सारे देश में फौजी शिक्षा [illegible] जाय। ३—प्रत्येक छोटे से छोटे [illegible] पास खेल-कूद के लिए काफी मैदान [illegible] साधन हों। ४—हर स्कूल के [illegible] शारीरिक जाँच के लिए डाक्टर [illegible] ५—शारीरिक शिक्षा देनेवाले [illegible] स्कूल में योग्य स्थान मिले।

मौलिकता—साहित्यिक मौलिकता [illegible] विशद व्याख्या। मूल्य [illegible] पाँच आने। आल्हा—लेखक, चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा। इस पुस्तक में महोबे के [illegible] वीर आल्हा और ऊदल का [illegible] चरित और समस्त लड़ाइयों का [illegible] रोचक व सरस भाषा में दिया गया [illegible] सजिल्द पुस्तक का मूल्य [illegible] रुपये पाँच आने।
मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाजवाद-प्रवर्तक कार्ल मार्क्स

क्रान्तिकारी विचारद्रष्टा और श्रमिकों का सखा

लेखक, श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

[२]

समाजवाद के प्रवर्तक और श्रमिकों के लिए सर्वस्व समर्पण करनेवाले कार्ल मार्क्स का जीवन कष्ट इतना अव्यवस्थित-सा दीखता था कि लोग उसे सनकी समझने लगे थे। लेकिन उसकी इस अस्तव्यस्तता के लिए उसकी विषम परिस्थितियाँ कहाँ तक जिम्मेदार थीं, और इनके बीच भी वह अपने लक्ष्य की ओर किस प्रकार निरन्तर बढ़ता रहा, इसका हृदयग्राही चित्रण इस लेख में है।

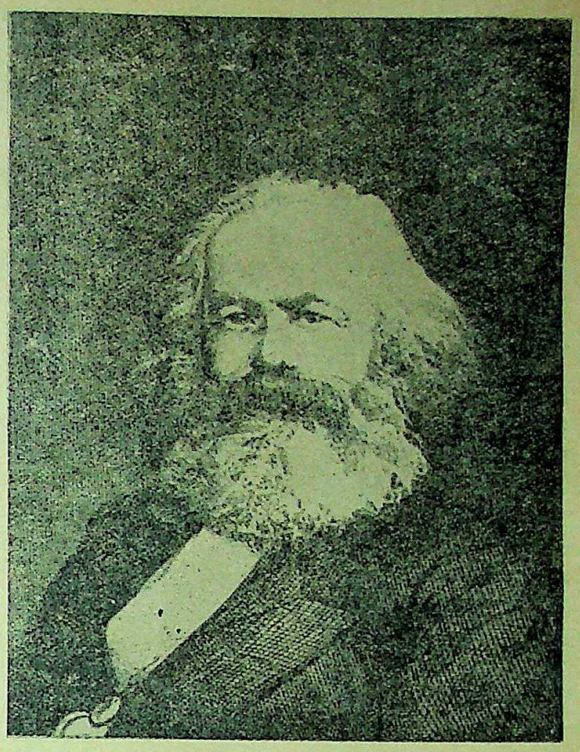

महान् क्रान्तिकारी कार्ल मार्क्स

फकीरी

१८४८ की क्रान्ति विफल हो गई। उस क्रान्तिकारी अखबार का प्रकाशन बन्द कर दिये जाने के कारण, जिसमें उसने अपनी और जेनी की सारी सम्पत्ति झोंक दी थी, मार्क्स दिवालिया होने से बच न सका। जर्मनी से निर्वासित किये जाने पर उसने अपनी नागरिकता को भी त्याग दिया। अपने अवशिष्ट जीवन में सदा के लिए निर्धन हो गया था—उसका धन कहीं रहा। वह कुछ समय तक पेरिस में रहा और अन्तिम निर्वासन लन्दन में रहने के लिए चला गया। वहाँ उसने अपने लक्ष्य पर पहुँचने का निश्चय किया।

मार्क्स का कुछ अव्यवस्थित चित्त का था—अपनी जैसा। व्यक्तिगत जीवन में उसका चित्त कभी नहीं रमा। वह हमेशा धुन में रहता था। एक बार १८५० ई० में उसने एक पत्र लिखा था। तीसरे के स्थान पर उसने गलती से ई० लिख दिया। तैंतीस वर्ष के निर्वासन के दरम्यान सिर्फ दो बार मार्क्स ने निराशाजन्य कदम लेते हुए स्थायी नौकरी करने का प्रयत्न किया था; पर रेलवे कम्पनी की हस्तलिपि के कारण उसे अस्वीकृत कर दिया था। कुछ समय 'न्यूयार्क ट्रिब्यून' ने भी मार्क्स के कुछ लेखों और राजनीतिक लेखों के लिए पारिश्रमिक दिया था।

मार्क्स ने अपनी उत्कृष्ट कृति 'कैपीटल' के लिए निरन्तर और कठोर श्रम किया था। विभिन्न भाषाओं की इस विषय की अनेक पुस्तकें उसने पढ़ी थीं और उनसे ढेरों टिप्पणियाँ तैयार की थीं। ब्रिटिश म्यूजियम में ही वह अधिकांश समय यह काम किया करता था। दस बजे प्रातः से सात बजे सन्ध्या तक उसका दैनिक काम यही था। इसके बाद रात्रि में घर पर भी उसका यही कार्य चलता रहता था। मार्क्स ने जब सन् १८६७ ई० में अपनी यह पुस्तक प्रकाशित की 'जिसके लिए उसने अपने स्वास्थ्य, सुख और परिवार की आहुति दे दी थी,' तो उसने

गीत

कवि, श्री० राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस्-सी, एल्-एल० बी०

कलियाँ खिल होयेंगी फूल।

गला बिंधा कर विजयी सैनिक, तेरे हृदय सकीं यदि भूल।
अपना हृदय जलाकर दीपक मेट सका घर का अँधियारा।
अपना सब परिवार मिटाकर बना बाल-रवि, निशि का तारा।
जय-फल देख न पाया विजयी, सैनिक यही विजय का मूल।
कोकिल पतझर की चिन्ता क्या, केवल रक्षित रख निज बोल।
पथ की कठिन शिलाओं पर ही निर्भर करता है कल्लोल।
नभ-प्रकोप पर भी पथ-स्थिर है, यदि राही के पग अनुकूल।
भले रक्त-सागर सम्मुख हो भले रक्त-रंजित आकाश।
भीषण झंझाएँ घेरे हों भले पंथ का लुप्त प्रकाश;
पर माता के अर्चन-पथ का, नाविक सके न झुक मस्तूल।
मुक्ति, लक्ष अपने नयनों का मुक्ति-पंथ ही अपनी राह।
तब जय-गर्वित सैनिक, माँ के ले तेरे स्वागत की चाह।
फूल बनेंगे शूल पंथ के, कुंकुम होगी पथ की धूल।
कलियाँ खिल होयेंगी फूल।

एक पुत्र गुज़र गया। सन् १८५७ ई० में सातवीं और अन्तिम सन्तान उत्पन्न हुई थी। सिर्फ तीन पुत्रियाँ जीवित रहकर सयानी हो सकीं।

सन् १८५० ई० में मार्क्स की पत्नी जेनी ने लन्दन से एक मित्र के नाम जो पत्र लिखा था, उसमें मार्क्स की फकीरी का करुणतम चित्र अङ्कित किया गया था। लेकिन अनेक कठिनाइयों और संघर्षों के बीच गुजरते हुए यह दम्पति कभी अपने ध्येय से विचलित नहीं हुआ। इस बीच इन्हें रहने के लिए मकान के लाले पड़ने लगे थे। जिस मकान में यह परिवार रहता था, उसकी मालकिन ने न केवल बेरहमी से मात्र पाँच पौंड न दे सकने की दशा में मार्क्स को, दो अमीनों की सहायता से, वह मकान छोड़ देने पर बाध्य किया था; उसकी गृहस्थी के सारे [illegible]

के लिए कागज और डाक-टिकट खरीदने को भी पैसे नहीं रहते थे। कई दिनों तक उसे सपरिवार सूखी रोटियाँ और आलू खाकर रहना पड़ा। जेनी की नानी आर्गाइल ड्यूक घराने की स्काटिश महिला थीं। एक बार जब मार्क्स कुछ चाँदी के गहने गिरवी रखने गया, तो गिरवी रखनेवाले ने गहनों पर उक्त ड्यूक का कुल-चिह्न पहचान लिया और पुलिस को बुला भेजा। सन्देह में ही मार्क्स को पुलिस ने सप्ताह के अन्त तक हिरासत में बन्द कर रक्खा था।

सद्गृहस्थ

ऐसी विषम परिस्थितियों के बीच भी यह आश्चर्यजनक बात है कि मार्क्स अपने परिवार के प्रति बराबर अनुरक्त रहता तथा मध्यम श्रेणीवालों और विरोधी क्रान्तिकारियों के प्रति पूर्ववत् निर्मम। घर की सीमा में मार्क्स बकौल एक पुलिस-एजेण्ट—'अत्यन्त सज्जन और विनम्र गृहस्थ था।' परिवार की स्त्रियों अथवा बच्चों के पास जब वह रहता था, उसकी दार्शनिकता और गहन बातें बहुत कुछ

—शेष पृष्ठ १२ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लीग का वर्तमान और भविष्य

क्या लीग देश की स्वतंत्रता में बाधक बनेगी ?

लेखक, श्री धर्मेन्द्र बी० ए०

लीग के कर्णधारों ने राष्ट्रीय सरकार से अलग रह कर अपना प्रचार-कार्य जारी रखना चाहा था परन्तु विदेशों में उसकी कटु आलोचना हुई। उसके नेता ने फिर से गौर किया और लीग को सरकार में शामिल कर दिया। परन्तु लीग सरकार में शामिल होकर भी असहयोगी नीति अपनाये हुए है। इस दुर्नीति से लीग का चाहे जो कुछ हो पर देश को उससे बड़ी क्षति उठानी पड़ रही है। लेख में कठिनाइयों का वर्णन किया गया है।

१५ आक्टोबर को मुसलिम लीग ने अस्थायी सरकार में प्रवेश करने की घोषणा कर दी और उसी दिन वाइसराय लार्ड वैवेल ने पाँच लीगी सदस्यों के नाम स्वीकृत कर लिये फलतः डा० सर शफात अहमद खाँ, श्री शरत्चन्द्र बोस और सैयद अली जहीर ने इस्तीफा दे दिया। अब अस्थायी सरकार में ६: ५: ३ अर्थात् ६ कांग्रेस के, ५ लीग के और ३ अन्य वर्गों के भेजे हुए प्रतिनिधि रहेंगे। तात्पर्य यह कि वाइसराय ने लीग के प्रस्ताव के सामने कांग्रेस को ठुकराया नहीं, वरन् अपने प्रथम आदर्शों की स्थापित रक्खा है।

महात्मा गांधी

लीग ने अस्थायी सरकार में क्यों प्रवेश किया ? उसका कारण यह है कि लीग विदेशों में बदनाम होती जा रही थी। उसका अन्य देशों पर पड़ा हुआ बाह्य आतंक नष्ट हो रहा था। अतः उसने अस्थायी सरकार में प्रवेश करके भी अपनी नीति में कोई परिवर्तन नहीं किया है। उसका कार्य हमेशा स्वराज्य प्राप्ति में रोड़े अटकाना रहा है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि कायदे आज़म ने इस बार अपने प्रतिनिधियों में एक हरिजन को भी रखलिया है। क्या यह शान्ति और स्वराज्य में शीघ्रता करने की नीति है ? अछूत प्रतिनिधि का लीग द्वारा सरकार में भेजा जाना कांग्रेस की बराबरी करने की झक है। सरकार में लीग के प्रवेश का मुख्य कारण यह है कि कोई

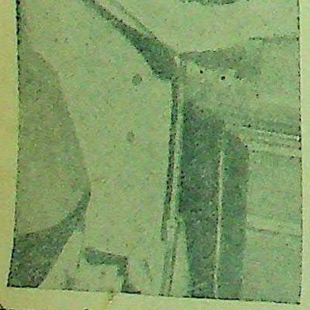

घोर साम्प्रदायिकता के प्रवर्तक मि० जिन्ना भी सफल सरकार न बनने देंगे जिससे [illegible] एक न [illegible] कायदे [illegible] सरकार [illegible] चलते [illegible] चगेरा [illegible] मक्त [illegible] जाय [illegible]

उत्तरदायित्व नहीं रहेगा। ऐसे समझौते से देश को केवल हानि है, लाभ नहीं। इस समय हम जिस स्थान पर हैं वहाँ से आगे बढ़ने के बदले हम फिर १६ मई १९४६ में पहुँच गये। लीग हमें समय से पीछे हटा लेना चाहती है और हम घिसटते चले जा रहे हैं। लीग जानती है कि उसके प्रवेश से बंगाल-उपद्रव की जाँच ठीक ठीक न होगी। अलीगढ़ में सामूहिक जुर्माने रुक जायँगे। कांग्रेस उसके सामने झुक जायगी और लीग उसे जितना चाहेगी, झुका देगी

कांग्रेस का विरोध करते करते भविष्य में एक दिन ऐसा आयेगा जब उसे पद त्याग कर देना पड़ेगा। तब धोखा खाकर दुनियाँ कहेगी कि लीग समझौता करना चाहती थी, कांग्रेस के साथ कदम मिला कर चलना चाहती थी, किन्तु कांग्रेस इतनी स्वार्थी है कि वह समझौता पसन्द नहीं करती। इस प्रकार कांग्रेस बदनाम हो सकेगी और लीग का बोलबाला हो जायगा। तीन दो सताह पूर्व डा० अम्बेदकर ने धमकी थी कि यदि कांग्रेस उनकी बातों को नहीं मानती तो वे तीन करोड हरिजनों के साथ मुसलमान हो जायँगे। लीग ने इस धमकी को भली भाँति समझा और अम्बेदकर को मुसलमान होने से बचा लिया।

मि० जिन्ना ने जब अगस्त में वाइसराय को कांग्रेस की ओर झुका देखा तब उन्होंने प्रत्यक्ष कार्रवाई बड़ी धूमधाम से मनाई। उसका फल कलकत्ते के १५००० भारतीयों की हत्या और अरबों की सम्पत्ति का विनाश हुआ। संसार ने लीग की प्रत्यक्ष कार्रवाई को आँखें खोलकर [illegible] उसके बाद गांधी-जिन्ना

खून-खराबी लीग के इशारे से हुई है। इधर दशहरे के अवसर पर भी स्थान स्थान पर खून-खराबी की गई।

किन्तु जिस दिन से लीग ने अपने पाँच नुमायन्दों को भेजना स्वीकृत किया उस दिन से तो विद्रोह शान्त हो जाना चाहिए था। पर ऐसा नहीं हुआ। कलकत्ते के निकट नोआखाली जिले में १० अक्टूबर से अत्याचार हो रहा है। समाचारों द्वारा प्रकट है कि पाँच हजार हिन्दू मारे गये। उनके घर फूँक दिये गये। सामान लूट लिया गया और उनकी इज्जत भी ले ली गई। उनकी बालिकाएँ और स्त्रियाँ बर्बरता के साथ मुसलमान बना ली गईं। उनके साथ बलात्कार और अत्याचार खुले आम किये गये और वह भी असहाय माता-पिता के समक्ष। भगवान् ? तू कहाँ है ? जर्मनी में यहूदियों के ऊपर जो अत्याचार हुए उनमें भी जर्मनों ने यहूदियों की स्त्रियों पर आँच नहीं आने दी थी। रूस की क्रान्ति में भी वह बात नहीं हुई जो आज बंगाल-प्रान्त में हो रही है। लीगी सरकार चुप है। क्या उसे पहले से संचालित बलवाइयों की सूचना न थी ? पूर्ण रूप से और अवश्य थी। और यदि नहीं थी तो वह निकम्मी सरकार है। वह तो खुलेआम बलवा और हिन्दुओं का नाश चाहती है। बंगाल के हिन्दुओं को किसी न किसी प्रकार मुसलमान बना लेने को उद्यत है। तभी तो पाँच दिन के बाद रोकथाम के लिए सेना भेजी गई सो भी थोड़ी। नोआखाली और टिपरा में पाँच दिन तक पाशविक अत्याचार होते रहे फिर भी फौजी कानून घोषित नहीं हुआ।

सिन्ध और बंगाल की [illegible] जो आदर्श उपस्थित कर रही है [illegible] चलता है कि उन प्रान्तों में [illegible] नाश निकट है।

कांग्रेस के नेता लीग के [illegible] करने के लिए सब कुछ सहन कर [illegible] उनके रोटीवाद के सामने धर्म और [illegible] दोनों मिट जायँगे। वे मेल चाहते [illegible] की बलिवेदी पर। वे भारतीय संस्कृति [illegible] हैं किसी भी मूल्य पर। हमें ऐसी [illegible] नीति नहीं चाहिए। हम अपने [illegible] नहीं गिरना चाहते। कांग्रेस में केवल [illegible] हिन्दू सदस्य अस्थायी सरकार में [illegible] जिससे उनका धार्मिक संगठन [illegible]

हमें अपनी परम्परा को नहीं [illegible] हमें अपनी मर्यादा नहीं लुटानी है। [illegible] नीति धर्म का एक अंग है, धर्म [illegible] का नहीं। नेताओं से प्रार्थना है [illegible] राजनीति में धर्म को न सही, [illegible] स्थान दें। कम से कम अन्याय [illegible] होने दें।

साहित्यालोचन

इसका संशोधित संस्करण [illegible] तैयार है। इसमें संस्कृत के [illegible] आचार्यों के साहित्य-सम्बन्धी सिद्धान्त के अतिरिक्त पाश्चात्य साहित्यकारों [illegible] साहित्य-मर्मज्ञों के मत का दिग्दर्शन [illegible] ही मौलिक ढंग से कराया गया है। [illegible] पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य [illegible] पाँच रुपये पाँच आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, [illegible]

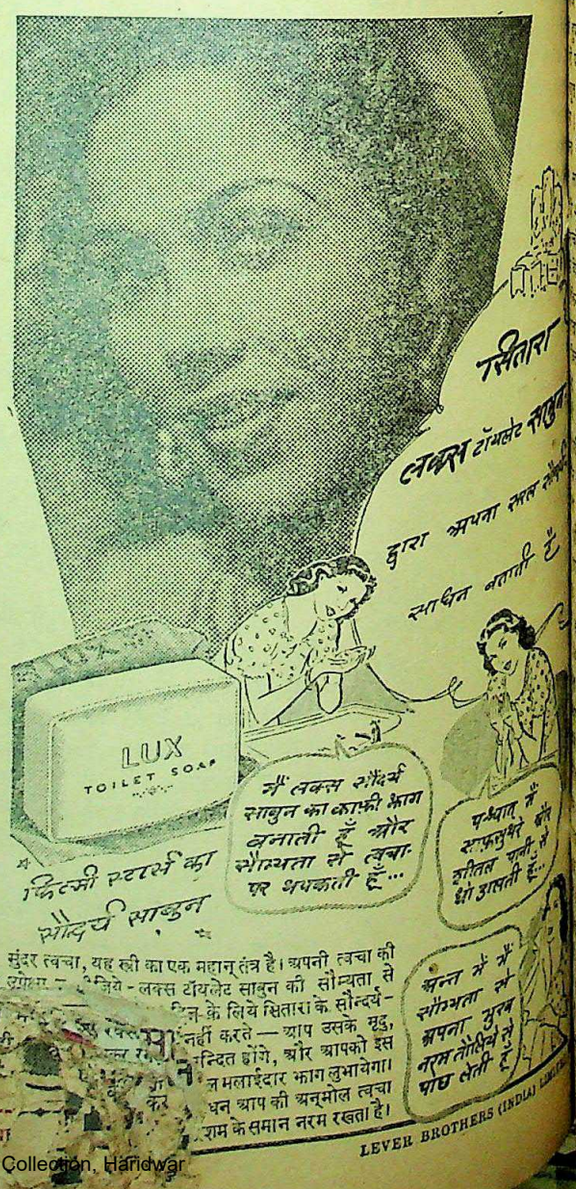

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिकार

लेखक, श्री हरेन्द्रप्रताप सिनहा

दहेज की विडम्बना ने कुमारी निर्मला बी० ए० को एक पार्टी में नौकरी करने को विवश किया। यहाँ वह नाचती-गाती थी। अच्छा वेतन पाती थी। दैवयोग से एक युवक नाच देखने गया। वहाँ पर निर्मला को देख उसने निश्चय किया कि यह अच्छे घर की लड़की है। जैसे बने, इसका उद्धार करूँगा। अन्त में बड़े प्रयत्न से उसने अपने निश्चय को पूर्ण किया। कहानी बड़ी मार्मिक है।

जयन्तकुमार कमरे के भीतर जाने की प्रतीक्षा में

हो गये, बाकी हँसते और कहा करते कि यह बहुत मुश्किल और उलझन का काम है। इसको करोगे तो पढ़ाई रखी रह जायगी, दुनिया थूकेगी। कहेगी कि इसी बहाने वेश्याओं के यहाँ जाना चाहता है। माता-पिता रुष्ट हो जायँगे। कहेंगे कि लड़का आवारा हो गया, कलंक लगा दिया वंश पर। फिर वेश्या तो वेश्या ही हैं। वे आचरण की भ्रष्ट और पतित होती हैं। उनको दूषित रोग होते हैं। उनके संसर्ग में जाना अपने जीवन को बरबाद करना है। वे अपनी खुशी से ही वेश्या होती हैं, कोई उन्हें बनाने नहीं जाता। घर-गृहस्थी के जंजाल को वे पसन्द नहीं करतीं।

इन बातों को सुनकर मैं जल उठता। हम छहों का साहस ज्यों का त्यों था। हम लोगों ने शपथपूर्वक इस कार्य को करना चाहा। भाग्यवश मेरे दल में एक ताल्लुकेदार का एकलौता लड़का था, इसलिए रुपये-पैसे का मामला भी कुछ कुछ हल हो चला था। यह नशा मुझे तब चढ़ा जब मैं एम० ए० और वकालत साथ-साथ कर रहा था। पहला साल था। अब तो तीन साल बीत गये। हम छहों ने अपना अपना खर्च कम कर दिया। सादा जीवन व्यतीत करते थे। इस तरह कोई ढाई हजार रुपया जमा कर लिया था। अब तो शहर के एक प्रमुख और प्रतिष्ठित रईस का भी सहयोग मिल गया था। वे तन-मन-धन से हम लोगों की सहायता करते; परन्तु कार्यकर्ता हमीं छः थे।

हम लोगों को बड़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ा, विकट मसलों को हल करना पड़ा, वेश्याओं के दरवाजों की ठोकरें खानी पड़ीं, गालियाँ सुननी पड़ीं। हमारे सीने पर हमेशा छुरी तनी रहती। पहले तो मैं अकेला उनकी गलियों में जाता तो दिल कचोट उठता जब देखता कि वे सुन्दर शृङ्गार किये हुए रूप की हाट में सौदा करने बैठी हैं। कोई मुझे इशारा करती, कोई कहती आइए बाबूजी, यहाँ आपको आराम मिलेगा। मैं उन्हें कैसे समझाता कि मैं उनके रूप को नहीं बल्कि जीवन को मोल लेने आया हूँ। मैं आज-कल इसी धुन में था। इसी इच्छा से प्रेरित होकर मैं शाम को अपने दोस्तों के साथ स्टेज पर नृत्य देखने चला। सबसे आगे बैठे। घंटी बजी। नृत्य शुरू हुआ। स्टेज पर सुन्दरियों की टोलियाँ आईं, नाचीं, चली गईं पर जब निर्मलादेवी आई तो वाह वाह की धूम मच उठी। लोग क[illegible] ताल्लुकेदार [illegible] पर मैंने उनको [illegible] को कहा।

बीच में विश्राम के समय मैंने पता लगाया तो निर्मला मेरी ही जाति की निकली। अब तो आग लग गई बदन में। मैं कैसे सहन करता कि वह मेरी जाति की होकर स्टेज पर नाचे, लोगों का मनोरंजन करे! निम्न श्रेणी के लोग उस पर आवाज कसें, और वह रहे मुसलमानों के बीच में। मैं सोचने लगा कि यह ज़बरदस्ती इस कम्पनी में है या खुशी से। काम तो ऐसा करती है गोया इसमें वह खुश है। इसके लिए क्या यही काम रह गया है? दूसरा अच्छा काम करके भी तो रुपया पैदा किया जा सकता है। खैर, खेल खत्म होने के बाद मैंने एक चिट पर अपना नाम लिखकर भेज दिया। अन्दर से जवाब आया 'स्वीकार नहीं' अँगरेजी में। तो यह पढ़ी-लिखी भी है! मैंने मिलने का आग्रह किया तो दूसरे दिन सुबह पर टाल दिया।

मैं दूसरे दिन सुबह ताज होटल में, जहाँ वह पार्टी ठहरी थी, ७ बजे ही पहुँच गया और अपने नाम का कार्ड बैरे से भेजवा दिया। मैं कमरे के अन्दर गया। वह मेज पर चाय पी रही थी। सामने की कुर्सी पर बैठकर मैंने नमस्ते किया।

"लीजिए, चाय पीजिए" एक प्याले में चाय बनाकर देते हुए कहा। "कहिए, मिलने को आप इतने उत्सुक क्यों हो रहे थे कि एकदम सुबह ही आ गये। मालूम पड़ता है, आपको अभिनेत्रियों से मिलने का बड़ा शौक़ है मिस्टर...।"

"जयन्त, पूरा नाम जयन्तकुमार सिनहा।"

"जी मिस्टर जयन्त, कहिए कैसे तशरीफ लाये। मेरा हस्ताक्षर चाहिए या किसी अखबार के प्रतिनिधि हैं, आप मेरा चित्र लेना चाहते हैं, या लेखक हैं, कुछ मेरे जीवन के विषय में लिखना चाहते हैं या....."

"देखिए मिस निर्मलादेवी, गम्भीर होकर सुनिए। मैं आपके कहे हुए किसी पद पर नहीं हूँ। मैं तो एक विद्यार्थी हूँ।"

"तब तो और भी ज्यादा शौक होगा।"

"हटाइए इन बातों को। आप मेरी जाति की हैं, मुझसे यह सहन नहीं होता कि आप स्टेज पर नाचें और वेश्याओं की तरह हाव-भाव दिखावें। मैं आपको इस जीवन से निकालना चाहता हूँ।"

"अच्छा" कहकर निर्मला [illegible] हँसती

वह चुप हो गई और आँखें फाड़ फाड़ कर मेरी ओर देखने लगी। "देखो, तुम हँसी मत समझो। मेरी बात पर विश्वास रखो। मैं सचमुच तुम्हारा उद्धार करना चाहता हूँ। पर इससे मुझे उद्धारक मत कहना। मेरा हृदय कचोट उठता है जब किसी अपनी जाति की लड़की को ऐसे काम की ओर प्रवृत्त देखता हूँ।"

"तो आप शादी करना चाहते हैं मेरे साथ? क्यों साहब, मुझमें कौन सी विशेषता देखकर आप इस बुरी तरह रीझ गये हैं? नाचना, गाना या सुन्दरता—" और वह मुस्करा पड़ी।

मैं फिर खीझ उठा। मैंने मुँह बनाते हुए कहा—"माफ कीजिएगा। मैं आपकी तरफ नाचने, गाने या आपके रूप की वजह से आकर्षित नहीं हुआ हूँ, बल्कि आपको अपनी जाति की समझ कर आकर्षित हुआ हूँ। मुझे आपसे और कुछ लेना-देना नहीं। ईश्वर पर भरोसा रखकर मेरी बातों पर विश्वास कीजिए।"

निर्मला आश्चर्य-चकित हो आँखें फाड़ फाड़ कर मुझे देख रही थी। सोचती थी, यह विलक्षण मनुष्य है। इस दो साल के जीवन में सैकड़ों आये जिन्होंने रूप या नृत्य की ही प्रशंसा की पर एक यह है जिसने उस विषय की कोई बात ही नहीं की। बस उद्धार-उद्धार की रट लगा रक्खी है। वह बोली "आप बड़े [illegible] हैं।"

[illegible] कीजिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा था। वह आकर्षित होती जा रही थी। यह मानव-स्वभाव है कि वह अपने आप विलक्षण और अजीब प्रकृति के मनुष्य की ओर आकर्षित होता है। उसने कुछ सोचा—फिर कहा देखिए मि० जयन्त, मैं न तो जन्मजात गणिका हूँ और न नर्त्तकी। मैं कायस्थ समाज का एक शिकार हूँ। लोभी मृग-तृष्णावाले बुड्ढों का शिकार बन गई। कायस्थों में यह बड़े गर्व की बात उस युवक के लिए होती है, उसके माँ-बाप के लिए होती है कि वह दुलहिन के घर से बहुत धन-दौलत, और सामान वसूल कर लाता है, लूट लाता है। लूट का नाम रख दिया है दहेज। मेरी भी शादी में दहेज माँगा गया—पूरे पाँच हजार नकद। मेरे पिता की लहलहाती आशाओं पर तुषारपात हो गया। न जाने किसने मेरे पिता के कान भर दिये थे कि यदि लड़कियों को खूब पढ़ा-लिखा दिया जाय, नृत्य-संगीत सिखा दिया जाय, घरेलू-कार्य में दक्ष कर दिया जाय तो लड़के आजकल दहेज नहीं माँगते—खुशी से जितना दे दो उसी में राजी हो जाते हैं। मुझे भी बी० ए० तक शिक्षा दी गई। मेरी दो बहनें और थीं। वे भी पढ़ाई जा रही थीं। तीनों बहनें एक दूसरी से दो साल छोटी थीं। नाच गान सीखने के लिए म्यूजिक एकेडेमी जाया करतीं। मेरे पिता मामूली क्लर्क ही तो थे। उन्हें क्या मालूम था कि इस शिक्षा के साथ भी दहेज जरूरी होता है। मैं जब बी० ए० पास कर चुकी तो शादी की चिन्ता हुई। वर मिलने में देरी न होती। मैं प्रदर्शनी की वस्तु की तरह सबको दिखाई जाती—कुछ फोटो में कुछ प्रत्यक्ष पर बात ठप हो जाती दहेज पर आकर। चूँकि मैं बी० ए० थी इसलिए आवश्यक था कि वर मुझसे ज्यादा पढ़ा-लिखा और सुन्दर भी हो। जब ये सब चीजें ढूँढ़ी जायँगी तो रुपये की बड़ी आवश्यकता होगी। क्योंकि वर तो बिकते हैं। जो जितना दे सके, ले जाय खरीद कर। सो मेरे पिता यह न कर सके। तनख्वाह का आधा हिस्सा तो हम तीन बहनों पर खर्च हो जाता था। एक छोटा भाई और पढ़ रहा था। वे खुशी से एक हजार तक देने को तैयार थे।

अब मैंने देखा कि लोगों की, रिश्तेदारों की बौछारें पड़ने लगीं पिताजी और माताजी पर "जवान लड़की घर में बैठा रक्खी है, ब्याह नहीं करते। पहले ही कहा था कि लड़की को कोई वकालत नहीं करनी है, जज-मैजिस्ट्रेट नहीं बनना है पर कौन सुने। उसे तो नाचना-गाना तक सिखा दिया।" पिताजी इन धक्कों को न सह सके। उन्हें लोगों के कहने का सबसे बड़ा धक्का यह लगा कि पढ़ाया है बुढ़ाई में लड़की की कमाई खाने को।

"तो तुमने मैदान में आकर विरोध क्यों नहीं किया?" मैंने जोश में आकर पूछा।

"जयन्त बाबू, मैं विरोध करती तो लोग बेशर्म, बेहया कहते। यही तो नारी की दुर्बलता है! मैंने निश्चय कर लिया घर छोड़ने का। माता-पिता से कहकर दिल्ली चली आई। मुझे दो-एक जगह काम मिले पर तनख्वाह कम थी सो मैंने [illegible] इस कम्पनी में [illegible] जल्दी है [illegible] रखते [illegible] चंगेरा [illegible] मकते [illegible] जाय [illegible] हूँ, १००) भाई और बहन के लिए भेज देती हूँ, पिताजी अभी कमा रहे हैं।"

"तो निर्मला, क्या तुम इस थियेटर की जिन्दगी से सुखी हो?"

तनिक सोचकर निर्मला बोली "हृदय तो सदैव विरोध करता है। किसी की गृहिणी बनने की इच्छा करती हूँ, पर रुपये की हम लड़कियों को आवश्यकता है, पुरुषों को खरीदने के लिए। यह नौकरी ऊपरी मन से कर रही हूँ।"

"तो इसका यह अर्थ है कि अगर तुम्हें चाँदी के टुकड़े मिलें तो तुम सब कुछ....."

"जयन्त बाबू....."निर्मला ने जोर से कहा—"आज मैं बाईस वर्ष की हो गई हूँ पर क्या मजाल कि.....मुझ पर विश्वास कीजिए।"

"मुझे क्षमा कीजिएगा। आपने शादी के लिए क्या सोचा है?"

"मेरी शादी अब व्यर्थ है। मेरे साथ कोई विवाह नहीं करेगा। मैं तो एक नाचनेवाली हूँ।"

"ये व्यर्थ की बातें हैं। आदमी हर वक्त अपना सुधार कर सकता है। अब भी कुछ नहीं बिगड़ा। मैं तुम्हारी शादी करवाऊँगा।"

"करवाऊँगा या स्वयं कीजिएगा?" कुटिल हास्य हँसते हुए निर्मला ने पूछा।

"मेरे सिर पर अभी बहुत बोझ है।"

कुछ और बातें करके मैं चला आया। बहुत खुश था। आज मैं अपनी जाति की एक युवती को राह पर लाया था। अपने दोस्तों को यह खबर दी। वे भी उछल पड़े। अब हम कायस्थों में लड़के ढूँढ़ने लगे। एक भी कायस्थ युवक साहस न कर सका कि आगे बढ़कर एक पीड़ित, समाज की सताई हुई नारी को सहारा दे।

यों तो हमारे मित्र तैयार हो गये पर वे स्वजातीय न थे। खैर।

महीना भर हो गया। अब तो कम्पनी के जाने का समय आ गया। तो मैं ही क्यों न कर लूँ? पर दिल कन्नी काटने लगा। मा-बाप यों ही नाराज रहते हैं, अब तो मुँह भी न देखेंगे। समाज विश्वास न करेगा कि मैंने किसी कुलटा से नहीं, कुमारी से विवाह किया है। दुनिया कहेगी कि वह वेश्या है।

बहुत सोच-विचार कर जब मैंने निश्चय कर लिया कि मैं ही उसको स्वीकार करूँगा तो साहस न हुआ जाने का। मैं सोचता, वह क्या कहेगी। उसका कहना ठीक ही निकला कि 'जयन्त बाबू, करवाइएगा या स्वयं कीजिएगा।' इसी उधेड़-बुन में मुझे तीन दिन हो गये। मैं ताज गया तो पता लगा कि कम्पनी जा चुकी है। मैं सर पर हाथ रखकर बैठ गया। मैंने मैनेजर से पूछा "क्यों साहब, तो कम्पनी कहाँ गई है?"

"पता नहीं।" कुछ सोचकर उसने पूछा "क्या आपका नाम मि० जयन्त है?"

"जी हाँ, मेरा यही नाम है।"

"लीजिए, आपके नाम एक चिट्ठी मिस निर्मला दे गई हैं।"

मैंने चिट्ठी ले ली। डूबते को तिनके का सहारा मिला। सोचा, शायद इसमें पता-ठिकाना लिखा हो। पत्र यह है—

[illegible] [illegible] [illegible] [

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन काल की भारतीय स्त्रियाँ और उनके चरित्र

भारतीय समाज में महिलाओं को सदा उच्च-स्थान प्राप्त था

लेखक, श्री रामनरेश मिश्र

से शिक्षा लेनी चाहिए। स्वयं भगवान् रामचन्द्र ने इनके विवाह की स्वीकृति दी थी। इन महिलाओं के पुत्र काफी युवक हो चले थे फिर भी इन्होंने शादियाँ कीं।

कौशल्या रामायण काल की आदर्श माता हैं। कौशल्या के चरित्र-चित्रण में रामायणकार को कितने साहस से काम लेना पड़ा होगा। उसने भावी समाज के लिए एक सुंदर चित्र अंकित कर दिया है। राजा दशरथ रामचन्द्र को युवराज बनाना चाहते हैं। कौशल्या को हर्ष है। कैकेयी ने माँग की कि रामचन्द्र को १४ वर्ष का वनवास मिलना चाहिए और भरत युवराज हों, यह आज्ञा सुनकर रामचन्द्र दुःखित नहीं होते। माता से वन जाने की आज्ञा लेते हैं। कौशल्या को राजा के वचन की पूर्ति में जरा भी हिचकिचाहट नहीं हुई। परन्तु वे चकित अवश्य हुईं कि आखिर कैकेयी को यह क्या सूझा। फिर भी वे पुत्र को पिता की आज्ञा का पालन करने की सम्मति देती हैं। कैसा आदर्श चित्र है माँ का।

कैकेयी कौशल्या से कम दयावान् नहीं है। इस नारी के चरित्र से पता लगता है कि नारियाँ भी युद्ध-क्षेत्र में पुरुषों के साथ कन्धा से कन्धा भिड़ाकर लड़ती थीं। दोनों वरदानों को पूरा करने का हठ यह बतलाता है कि समाज में ऐसी भी हठीली नारियाँ थीं। परन्तु ज्यों ही बुद्धि ठिकाने आती है, ज्ञान का परदा खुलता है, स्त्रियाँ अपनी गलती समझ कर पश्चात्ताप करने को तैयार हो जाती हैं। ये सारे गुण कैकेयी के चरित्र में हैं।

सुमित्रा शायद राजा दशरथ की सबसे छोटी रानी होने के कारण समाज में उतना अधिक अधिकार नहीं रखती थी जितना कि अन्य दो रानियाँ। राम और लक्ष्मण बाल्यकाल के साथी थे; दोनों में खूब बनती थी। राम के वनवास पर सुमित्रा क्या कह सकती थी? वह उन्हें राम के साथ वन जाने की आज्ञा देती है; परन्तु, यह विचार नहीं करती कि राम के साथ उनकी सीता तो उनके साथ वन को जा रही है, उसका पुत्र अपनी दुलहिन उर्मिला को क्यों छोड़ रहा है। यह कठोर दण्ड सुमित्रा ने उर्मिला को क्यों दिया? इस सम्बन्ध में शायद उस समय के ग्रंथकारों ने देखा हो कि स्त्रियाँ इतने अधिक समय के लिए पुरुष के साथ न रहें तो अच्छा हो। सुमित्रा के चरित्र से यही मालूम होता है कि वह उस समय की रूढ़िवादी महिला थी।

उर्मिला ऐसी नारी है जो अपनी आँखों से अपना सर्वस्व छिनते देखकर भी मौन रहती है। इसके चरित्र से प्रकट होता है कि राजवंश अथवा बड़े घरानों में छोटे भाई की स्त्री की कोई कदर न थी। यों कहा जाय कि ल[illegible] आदर्शों की कुछ [illegible] राम अपनी रू[illegible] लक्ष्मण क्यों नहीं [illegible] ग्रंथकारों ने उनके [illegible] नहीं किया? रामायण काल की उर्मिला का चरित्र उस समय की नारी-अवहेलना का सच्चा रूप प्रकट करता है।

उपर्युक्त रामायणकालीन माताओं और पत्नियों के चरित्र को जब हम सामने रखते हैं तो प्रकट होता है कि उस समय स्त्रियाँ पुरुषों के साथ युद्ध-क्षेत्र में जाती थीं। शूर्पणखा जैसी स्त्रियाँ सघन वनों में पुरुषों का साहस कम करने को विवश करती थीं। अनसूया आदि ऋषि-पत्नियाँ कितनी पति-परायणा थीं। अपने पति के सिवा वे पर-पुरुष से बात करना तक पाप समझती थीं। इस चित्रण का उद्देश्य यही जान पड़ता है कि वैदिक काल में वैवाहिक पद्धति का शायद प्रारम्भ था। क्योंकि जब महाभारत काल में आते हैं तो एक स्त्री अनेक पति कर सकती है। सन्तानोत्पत्ति के लिए अपने पति की आज्ञा से वे देवताओं अथवा पर-पुरुष से समागम कर सकती हैं, इत्यादि।

महाभारत-काल की नारियों में कुन्ती और द्रौपदी विशेष उल्लेखनीय हैं। गान्धारी का नाम भी आदर्श नारियों में आता है। परन्तु वह उतनी श्रेष्ठ नहीं मानी गई जितनी ये दोनों।

कुन्ती महाभारत-काल की माता के रूप में सामने आती है। इस युग में स्त्रियों का सम्मान अधिक बढ़ चला था। कुन्ती की आज्ञा से द्रौपदी पाण्डवों की स्त्री होती है। कर्ण कुन्ती का प्रथम पुत्र कहा जाता है। वह माता की आज्ञा मानकर अपने सारे अस्त्र दे देता है। युद्ध-काल में माता कुन्ती पांडवों की युद्ध-परिषद की सलाह देती थीं। इस युग में नियोग की प्रथा थी। कुन्ती सन्तानोत्पादन में अपने पति की असमर्थता पर अन्य देवताओं का सहयोग लेती है। उस युग की नारियों को इसमें कोई परहेज नहीं था। प्रत्येक युग का आचरण अलग होता है।

द्रौपदी महाभारत-काल की एक आज्ञाकारिणी महिला थी। अर्जुन की एक-मात्र पत्नी के रूप में द्रौपदी आई थी; परन्तु उनकी माता की आज्ञा मानकर उसने पाँच पतियों को अंगीकार किया। युद्ध-काल में जब महारथी लोग शाम को वापस आते थे तो मंत्रणागृह में द्रौपदी भी बुलाई जाती थी। उस युग की नारी का समाज में काफी आदर था।

रामायण और महाभारत काल के बाद हिन्दू और बौद्ध काल आता है। हिन्दू काल का वर्णन संस्कृत ग्रन्थों में अधिक मिलता है। बौद्ध काल का चित्रण प्राकृत भाषा में है। कालिदास, भवभूति और बाणभट्ट आदि कवियों ने संस्कृत काल का चित्रण किया है। कालिदास के रघुवंश, शाकुन्तल, कुमारसम्भव और मेघदूत में स्त्री-समाज का जो चित्र अंकित है [illegible]

आदर्श महिला स्वर्गीय कस्तूर बा गाँधी

साथ बातें करती हैं। जो सीता वाल्मीकि के रामायण में एक साधारण स्त्री थीं वही रघुवंश में काफी वाद-विवाद करती नजर आती हैं। भवभूति की सीता तो एक आदर्श हिन्दू स्त्री हो जाती है। उनको माता सदृश माना जाता है, उनकी पूजा होने लगती है।

शकुन्तला कालिदास के प्रसिद्ध नाटक में वर्णित है। वह, पूर्वकालीन स्त्रियों से भिन्न है। वह अपने अधिकारों के लिए राजा दुष्यन्त से लड़ती है, यद्यपि वह शकुन्तला की बातों को स्वीकार नहीं करता। फिर वह अपने पत्नीत्व की रक्षा के लिए कण्व के आश्रम को वापस हो जाती है। वह कण्व के प्रत्येक काम में मदद करती है। आश्रम की व्यवस्था और प्रबन्ध में ऋषि को राय दिया करती है। ऐसी ही घटनाएँ कालिदास के अन्य ग्रन्थों में नारियों के सम्बन्ध में हैं।

बाणभट्ट की कादम्बरी में बदले युग का वर्णन है। परन्तु उसके चित्रण से भी स्पष्ट हो जाता है कि उस युग में स्त्रियों का सम्मान बढ़ा ही था, क्योंकि बाण का नाम हर्ष के समकालीन आता है। हर्ष का युग नारियों के सम्मान के लिए कम महत्त्वपूर्ण नहीं।

बौद्धकालीन ग्रन्थों में भी नारियों के सम्मान की अवहेलना न थी। राजा उदयन की स्त्री मगध की राजकुमारी थी। वह भगवान् बुद्ध को अपने राज्य कौशाम्बी में निमंत्रित करके धर्म-प्रचार करती थी। राजा उदयन पहले हिन्दू धर्म को मानता था परन्तु अपनी स्त्री के नागरिक अधिकारों को छीनना नहीं चाहता था। इससे वह अपनी स्त्री को बौद्धधर्म का प्रचार करने की आज्ञा दे चुका था। उस महिला के परिश्रम और प्रचार से उत्तर भारत में बौद्ध धर्म बढ़ा। अशोक की लड़की और लड़का धर्म-प्रचारार्थ सीलोन गये थे। इससे सिद्ध होता है कि बौद्धकाल में स्त्रियों के सम्मान में कोई कमी न थी।

मुसलमान काल से पर्दे की प्रथा का चलन हुआ। परन्तु हिन्दू-समाज ज्यों ही अपनी पुरातन प्रथाओं को अपनायेगा, यह पर्दा [illegible] हो जायगा।

[illegible] काल तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाजवाद-प्रवर्तक कार्ल मार्क्स

(पेज ७ का शेष)

दब जाती थीं। लेकिन लिखाने का जहाँ तक सम्बन्ध है, कहते हैं कि अनेक उत्कृष्ट पृष्ठ उसने तब लिखे हैं जब कि उसके बच्चे शोरगुल करते हुए घोड़े का खेल उसके निकट ही खेलते रहते थे।

बच्चों के साथ वन-विहार करने में मार्क्स को बड़ा आनन्द आता था। ऐसे अवसरों पर बच्चे जहाँ आनन्दपूर्वक गीत गाते और खेलते-खाते थे, वहाँ मार्क्स और जेनी साथ-साथ गोथे, दान्ते और शेक्सपीयर की रचनाएँ पढ़ते और प्रसन्न होते थे। घर में अनेक प्रकार के खेल भी वह खेला करता था। मार्क्स अधिकतर शतरंज खेलने का शौकीन था।

मार्क्स-परिवार को गरीबी कभी किंकर्त्तव्य-विमूढ़ नहीं बना सकी। आगन्तुकों का इस परिवार में बराबर स्वागत किया जाता था। तम्बाकू, चुरुट अथवा जो कुछ प्राप्त होता, उससे आगन्तुकों का सम्मान किया जाता।

मार्क्स बहुत ही संस्कृत था। पश्चिम के प्रायः सभी साहित्यों का उसने अच्छा अध्ययन किया था। आधी जीवन-यात्रा के बाद मार्क्स का स्वास्थ्य जवाब देने लगा था। अनिद्रा रोग से वह सदा पीड़ित रहा। नेत्र-प्रदाह, सरदर्द, वातरोग और बवासीर से भी वह बहुत परेशान रहा। बवासीर तो कभी-कभी इतना कष्टकर हो जाता था कि कई दिनों तक वह न तो बैठ सकता और न कोई काम कर सकता था। उसका यकृत सदा बढ़ा रहता था। उसकी सबसे भयङ्कर व्याधि थी लीवर-कैंसर, जिसका उसे सदा भय रहता था। इस भय का कारण कदाचित् यह था कि इसी रोग से उसके पिता का देहान्त हुआ था। जीवन के अन्तिम दिनों में मार्क्स श्वास रोग और फेफड़े के प्रदाह से पीड़ित रहा। अन्त में यही रोग उसकी मृत्यु का कारण हुआ—फेफड़े में फोड़ा हो गया था। यद्यपि अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए कार्ल मार्क्स ने साहस के साथ नाना कष्टों और रोगों का सामना किया; परन्तु मौन रहकर कष्ट सहनेवालों में से वह नहीं था। जब उसने अपनी 'कैपीटल' (पूँजी) पुस्तक का प्रथम भाग प्रकाशित किया था, तब उसने एंजिल्स को लिखा था—'मुझे आशा है, जब तक मध्यम श्रेणीवाले जीवित रहेंगे, मेरे फोड़े का कारण उन्हें याद रहेगा।'

कार्ल मार्क्स का व्यक्तित्व किसी पहेली से कम रहस्यपूर्ण नहीं था। विषम पारिवारिक उलझनों से सर टकराते हुए वह मानवता के प्रति सदा अपना प्यार लुटाता और कार्य करता रहा। पूँजीवादी समाज के प्रति उसके तन-मन में सदा घृणा की चिनगारियाँ उड़ती रहीं। इतने पर भी उस मजदूर श्रेणी से उसने अपने को बहुत दूर रक्खा, जिसके हितों के लिए वह सदा प्रयत्नशील रहा।

मार्क्स का सबसे प्रिय नारा था—'दुनिया के लिए काम करना।' उसने अपनी रचनाओं में

ईसवी सन् की अठारह शताब्दियों में समाजोत्थान करने में प्रेमानुग्रह विफल हो चुका है, अतः श्रमजीवियों के लिए यही एक चारा रह गया है कि वे पूँजीवाद को नष्ट कर दें। तब पूँजीपति वर्तमान आर्थिक किलेबन्दी के दरवाजे सर्वसाधारण के लिए जल्द खोल देंगे और अपेक्षित स्नेह के सम्बन्ध कायम होंगे। उसका कथन था कि मजदूरवर्ग को क्रिश्चियन आत्महीनता, मौन रहकर कष्ट सहन, आत्म-समर्पण और विनम्रता की नहीं, बल्कि साहस, आत्मविश्वास, स्वाभिमान और स्वतन्त्रता की आवश्यकता है—दैनिक भोजन से भी अधिक।

तर्कयुक्त भौतिकवाद

'कैपीटल' नामक पुस्तक में मार्क्सवाद का स्पष्ट रूप सामने नहीं आता—विशेषतः प्रथम भाग में, जिसे अधिकांश व्यक्तियों ने पढ़ा है। 'कैपीटल' में मार्क्स ने जो कुछ लिखा है, उसे उन्नीसवीं शताब्दी के मध्यकाल के इँगलैंडव्यापी समाजवादी विधान की मीमांसा कह सकते हैं। उसके ऐतिहासिक, राजनीतिक और क्रान्तिकारी सिद्धान्त उन रचनाओं में भरे पड़े हैं, जो उसने चालीस वर्षों में समय-समय पर लिखी थीं। अनेक स्थलों पर उसके लिखे तर्कों को समझना आसान नहीं है—विशेषकर जर्मन फिलासफी (दर्शनशास्त्र) के भव्य और रहस्यपूर्ण सिद्धान्त। किसी-किसी सिद्धान्त में परस्परविरोध भी है—एक भाग में जो कुछ लिखा है, दूसरे में उसी का खंडन मिलता है। तरुणावस्था और परिपक्वावस्था में तीक्ष्ण अन्तर पाया जाता है; परन्तु मार्क्स के प्रमुख तत्त्वों में, उसके मूल सिद्धान्तों में जो तर्क उपस्थित किये गये हैं, वे बहुत ही स्पष्ट हैं।

मार्क्स ने अपने सिद्धान्त को ऐतिहासिक भौतिकवाद कहा है। यह उसी इतिहास का प्रयोग था जिसे एंजिल्स ने 'तर्कपूर्ण भौतिकवाद' की संज्ञा दी थी। हेगल से लेकर इस दल ने राष्ट्र को जो कुछ दिया, वह यही कि इस दुनिया में प्रत्येक वस्तु एक निश्चित प्रवाह में बहती रहती है; कुछ न कुछ नवीनता उत्पन्न होती रहती और प्राचीनता नष्ट होती रहती है। और, यह परिवर्तन सदा अच्छे के लिए होता है। हेगल के कथनानुसार तर्क के सहारे ही प्रगतिशीलता प्राप्त होती है। आवर्त्तन-प्रत्यावर्त्तन ही इस दुनिया का क्रम है।

ईश्वर-विरोधी मार्क्स की दार्शनिक विचार-धारा सर्वथा नवीन थी—अपनी विशेषताएँ लिये हुए। उसका कहना है कि किसी भी समाज का कार्य और उसकी विचार-धारा—उसके नियम, राजनीति, धर्म, आदर्श आदि—मूलतः उसके जीवन की भौतिक आवश्यकताओं से उत्पन्न होती है और सैद्धान्तिक रूप से उसके उत्पादन एवं आदान-प्रदान के तरीके से। मार्क्स का कहना है कि मानव चेतना से जीवन (जीने के तौर तरीकों) का निर्माण नहीं होता; बल्कि सामाजिक जीवन से मानव-चेतना का जन्म होता है। दूसरे शब्दों में यों कह सकते हैं कि मानव अपने सत्य और न्यायशील विचारों के अनुसार मितव्ययिता को कार्य रूप में व्यवहृत नहीं करता, बल्कि अपनी मितव्ययिता के अनुसार सत्य और न्याय सम्बन्धी विचारों को जन्म देता है।

'कैपीटल' में मार्क्स ने यह दर्शाया है कि पूँजीवाद के तौर-तरीके ऐसे हो चुके हैं, जो मजदूर वर्ग को एकदम असह्य हो उठे हैं। इस दशा में सम्पन्न (व्यापारी) वर्ग और श्रेणीहीन समाज के खिलाफ मजदूर-वर्ग का विद्रोह अवश्यम्भावी है। यों इस श्रेणीहीन समाज पर मार्क्स ने पर्याप्त प्रकाश नहीं डाला कि इसकी रूप-रेखा क्या हो। उसने यह भी स्वीकार नहीं किया कि यह विद्रोह मानवता की सारी बुराइयों को समूल नष्ट कर देगा। उसके लिए तो यही पर्याप्त था कि (अ) दुनिया की अधिकांश बुराइयाँ एक श्रेणी द्वारा दूसरी श्रेणी से अनुचित लाभ उठाए जाने के कारण उत्पन्न हुई हैं, (ब) मजदूर श्रेणी के प्रभाव से श्रेणियों का खात्मा हो जायगा और प्रत्येक व्यक्ति उत्पादक हो जायगा, (स) उत्पादन के रूप में व्यक्तिगत सम्पत्ति का उन्मूलन किसी एक व्यक्ति को दूसरे का शोषण न करने देगा।

इस प्रकार मार्क्स के दृष्टिकोण से तर्कयुक्त भौतिकवाद कोई दर्शन-शास्त्र नहीं, बल्कि एक विज्ञान है—समाज-विज्ञान।

उसके अनुयायी भी तर्कयुक्त [illegible] के न केवल हिमायती हैं, [illegible] मानवता का उद्धार भी इसी [illegible] निश्चित समझते हैं।

अपनी बात

लेखक, श्रीयुत चन्द्रभूषण [illegible]

मनुष्य के चरित्र में किस [illegible] दुर्बलतायें होती हैं और उन्हें दूर [illegible] किस प्रकार अपने जीवन को [illegible] सकता है, यह बात इस पुस्तक में [illegible] ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई [illegible] लिखी गई है व्यक्तिगत अनुभवों के [illegible] पर। अपने चरित्र का निर्माण करने [illegible] प्रत्येक युवक को यह पुस्तक एक बार [illegible] पढ़नी चाहिए। मूल्य ।।।) बारह [illegible]

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

श्वेतकुष्ठ वनौषधि

महात्मा प्रदत्त श्वेतकुष्ठ (सफेद [illegible] दवा से तीन दिन में पूरा फायदा। [illegible] सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, [illegible] दाताओं की दवा से निराश हो [illegible] तो इसे लगाकर आराम होवें। [illegible] की दवा का मूल्य २।)।

सफेद बाल काला

इस तेल से बालों का पक्का [illegible] और पका बाल काला पैदा होकर [illegible] ६० वर्ष तक काला न रहे तो [illegible] वापसी की शर्त लिखा लें। बद [illegible] के दर्द व सिर में चक्कर आना [illegible] आराम कर आँख की रोशनी बढ़ा [illegible] एकाध बाल पका हो तो २), आधा हो तो ३।) और कुल पका हो तो [illegible] तेल मँगवा लें। एजेण्टों की [illegible] आवश्यकता है।

स्तम्भक वटी

एक गोली शाम को खा [illegible] इसके अद्भुत चमत्कार को देखें। [illegible] तक स्तम्भन कर गजब ढा देगी। [illegible] गोली १), ५० का २।।), १०० [illegible]

पता—वैद्यराज अखिलकिशोर [illegible]
नं० ३७ पो० कतरीसराय (पटना)

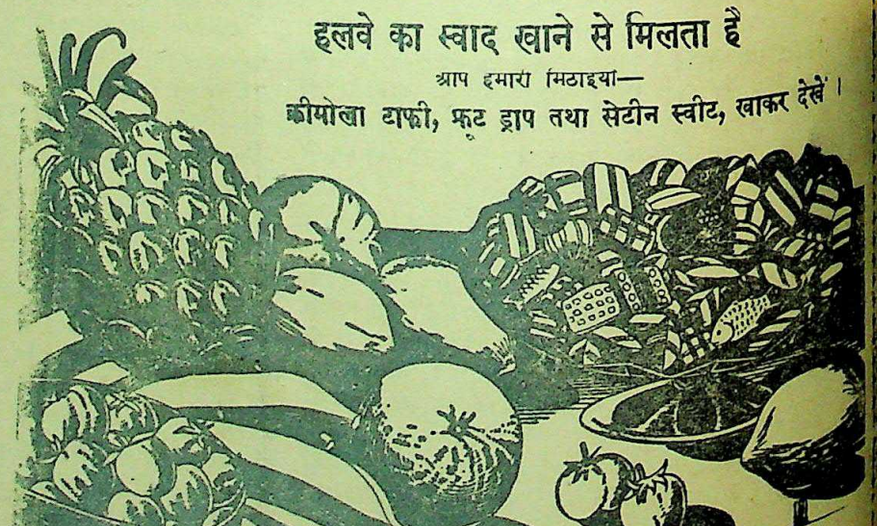

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

कीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

मिलती हैं :—

[illegible] नम चैं हाउस

[illegible] इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिणी अफ्रीका के सत्याग्रही

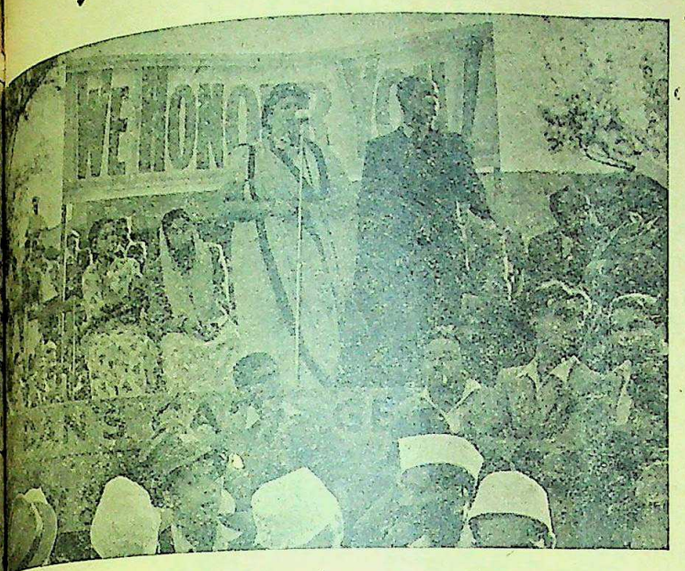

...यों द्वारा आयोजित एक सभा में विरोधी-आन्दोलन की सहायता के लिए चन्दा किया जा ...दक्षिण अफ्रीका के भारतीय प्रतिनिधिमंडल के अध्यक्ष श्री सोराबजी रुस्तमजी की पुत्री कुमारी डी रुस्तमजी भाषण दे रही हैं।

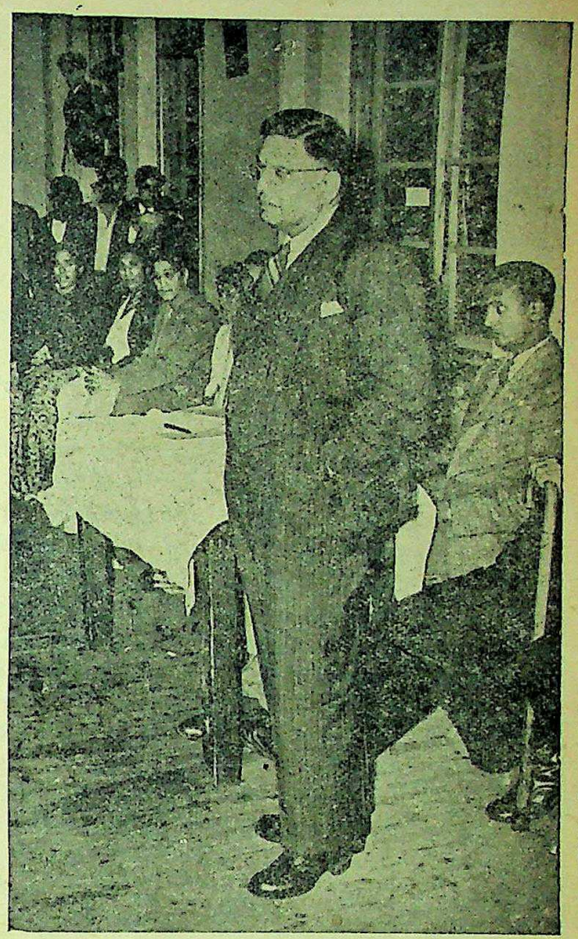

महात्मा जी के पुत्र श्री मणिलाल गान्धी, सत्याग्रहियों के एक जत्थे के सम्मान में आयोजित सभा में भाषण दे रहे हैं।

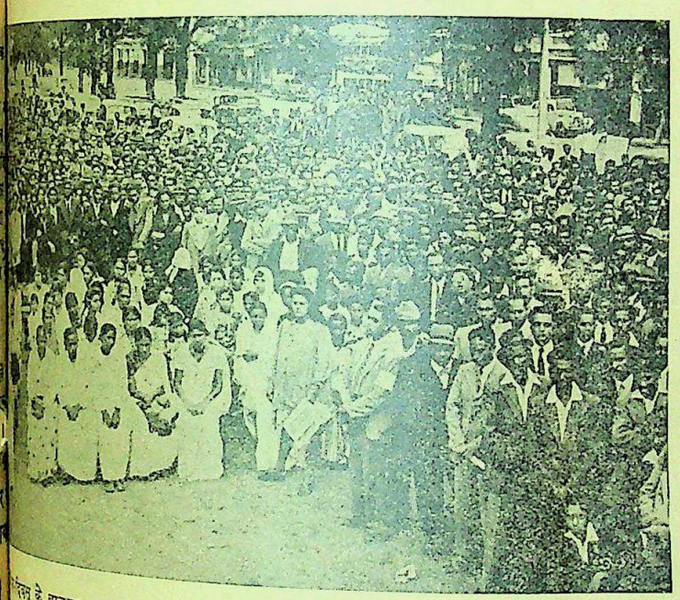

...के अवसर पर आयोजित एक सभा में दक्षिण-अफ्रीका के भारतीयों की भीड़।

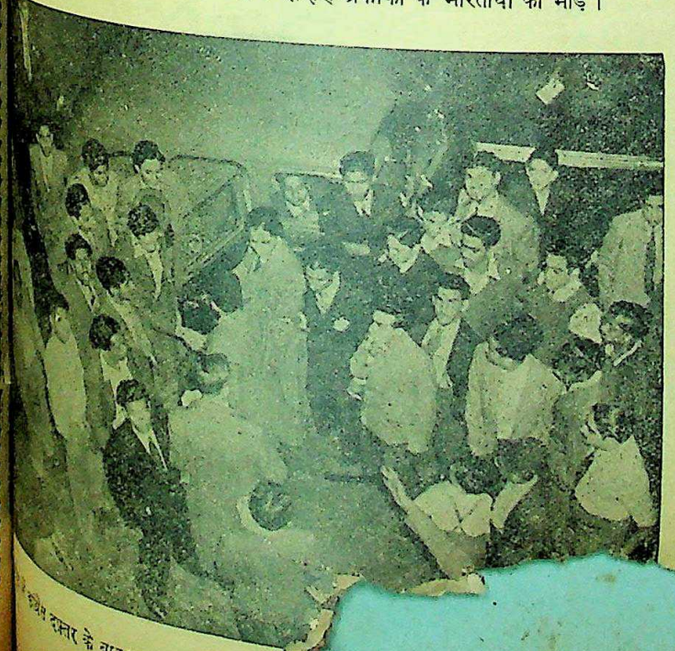

...दफ्तर के बाहर का एक दृश्य। सत्...
जा रहा है। मित्रगण उनको विदा...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

अनाथ बंगाली बालाएँ

पूर्वी बंगाल में जो रोमांचकारी घटनाएँ हो रही हैं उनका हाल सुनकर कौन ऐसा मनुष्य होगा जो आँसू न बहाता होगा। वहाँ की बहनों की दुर्गति हो रही है, उनकी इज्जत, उनका धर्म, उनका सतीत्व आततायियों द्वारा लूटा जा रहा है। हजारों बहनों का धर्म-परिवर्तन कराया गया। यह देखते हुए मालूम होता है कि बंगाल अनाथ है, उसका रक्षक ईश्वर ही है। सभा में एक द्रौपदी का चीर खींचे जाने पर १८ अक्षौहिणियों का संहार हुआ था। आज हजारों ललनाओं की इज्जत जाने पर भी लोगों के कानों पर जूँ तक नहीं रेंग रही है। पूज्य महात्मा जी, सरदार पटेल, भाई जवाहरलाल इत्यादि वैसे ही चुप हैं जैसे भीष्म, द्रोण और कृपाचार्य दुर्योधन के आतंक से मौन थे। पूज्य महात्मा जी ने विष खाने की सलाह दी है। यह सुनने में जितना सरल है, करने में उतना ही कठिन है। जान देना सहज होता तो ये अत्याचार ही क्यों होपाते? गोस्वामी तुलसीदास को यह कहने की नौबत न आती:—"जो पथ प्रिय वियोग विधि कीना। तो कस मौत न माँगे दीना।" इस स्थिति में हमें खुद सोचना पड़ेगा कि हमारी इज्जत की रक्षा कैसे हो सकती है।

मौजूदा समय में पुरुषों तथा स्त्रियों में विशेष अन्तर नहीं मालूम दे रहा है। पुरुष भी स्त्रियों के माफिक अहिंसक हो रहे हैं। आततायियों को दंड देने की शक्ति उनमें नहीं रह गई है। दुनिया में जब जब ऐसे अत्याचार हुए हैं, तब तब स्त्रियों द्वारा उनका अन्त हुआ है। दुर्गा, काली तथा रणचंडी के हाथ से शुंभ तथा निशुंभ ऐसे आततायियों का संहार हुआ था। रानी लक्ष्मीबाई तथा दुर्गावती की तरह हम लोगों को भी अपने धर्म के लिए मरना पड़ेगा तभी कल्याण की आशा है।

आजकल हमारे देश में कांग्रेस की हुकूमत है। हम लोगों को अपनी रक्षा के लिए हथियार रखने की आज्ञा माँगनी चाहिए, हथियार न मिलने पर उसके लिए प्रयत्न करना चाहिए। जिस राज्य में स्त्रियों पर अत्याचार हो और सरकार उन आततायियों को दंड दे सकने में असमर्थ हो, ऐसी सरकार से सहयोग करना घोर पाप है। कांग्रेस हुकूमत या तो हमें हथियार दे या इस सरकार से सहयोग छोड़ कर बाहर हो जाय।

श्यामकुमारी मालवीय, अहियापुर, प्रयाग

* * *

हमारा नैतिक कर्तव्य

बंगाल के नोआखाली और टिपरा जिले की हृदय-विदारक घटनाएँ कितने ही दिनों से कानों के पर्दे फाड़े डालती हैं। [illegible] और इस्लाम [illegible] हजारों बहनों और माताओं का सतीत्व नष्ट किया गया। कुमारियों और विवाहित स्त्रियों से नीच कायरों ने जबरदस्ती शादियाँ कर लीं। सुना है, १० हजार से कुछ ऊपर हिन्दू स्त्री-पुरुष विधर्मियों के चंगुल में फँस गये हैं। बर्बरता और अनाचारपूर्वक किये गये इस पातक से उन १० हजार भाइयों को छुड़ाना ही है, साथ-साथ अन्धविश्वास और छूत-छात के वशीभूत हो अगर हमारे कतिपय बंगाली हिन्दू भाई मुसलमानों द्वारा छुड़ाई गई कुमारियों और स्त्रियों को ग्रहण या वरण न करें तो हमारा यह नैतिक कर्तव्य हो जाता है कि उन्हें विधर्मी हरगिज न रहने दें। आशा है, हिन्दू नेतागण एवं आर्यसमाज इस प्रश्न पर गंभीरतापूर्वक विचार करेंगे और आर्यकुमार एवं विधुर इस ओर कदम उठाकर राष्ट्र-निर्माण में प्रशंसनीय सहयोग प्रदान करेंगे। जो हिन्दू भाई इस विचार से सहमत हों, निम्न पते पर विचार-विनिमय कर सकते हैं।

c/o पोस्ट बाक्स ४५४२ —अखिल विनय
बम्बई ८

[पूज्य मालवीयजी, हिन्दूसभा, तथा अन्य प्रतिष्ठित लोगों का मत है कि ऐसे सभी व्यक्ति, बिना किसी प्रकार के प्रायश्चित्त के, समाज में ले लिये जायँ। गुण्डों के दाँत तोड़ने के लिए हमें कुछ तो करना ही पड़ेगा।—सं०]

* * *

गाँवों में चीनी का अभाव

सरकार ने गाँवों में एक यूनिट पर आध पाव चीनी एक महीने में देने की राशानिङ्ग की है। आध पाव चीनी से भला एक महीने में क्या हो सकता है? गाँववाले जब किसी से कुछ कहते हैं तो अधिकारी लोग कह उठते हैं—"देहात में तो लोग गुड़ खाते हैं फिर चीनी की आवश्यकता ही क्या!" पर वे नहीं समझते कि आजकल गुड़ बारह आने सेर से नीचे नहीं मिलता। सरकार चीनी खानेवालों को साढ़े सात आने सेर देती रही है। गरीब क्या करें? जब वे चीनी नहीं खरीद सकते थे तभी गुड़ खाने की आदत डाली थी। गुड़ पहले समय में सस्ता था। देहात के किसान सस्ती चीजें खाते हैं। सरकार को चाहिए कि देहात में भी चीनी का कोटा शहर के बराबर करे और गुड़ पर भी कंट्रोल कर दे अथवा सस्ता बिकने का प्रबन्ध करे। सरकार एक बहाना निकालेगी कि गुड़ तो एक घरेलू उद्योग-धन्धा है, इस पर कंट्रोल करने का अर्थ होगा एक उद्योग-धन्धे का नाश करना। परन्तु शक्कर जो मिलों द्वारा बनाई जा सकती है उस पर भी सरकार ने नियन्त्रण किया था। अब नियन्त्रण हटते ही शक्कर का भाव चौदह-पन्द्रह आने सेर तक पहुँच गया है। ऐसी स्थिति [illegible]

सरकारी गल्ला-वसूली की मजदूरी बाकी है

युक्तप्रान्तीय सरकार ने गल्ला वसूल करने के लिए पिछले साल सर्किल कमेटियाँ बनाई थीं। सर्किल कमेटियों की राय से गल्ला खरीदने के हर केन्द्र पर पाँच-पाँच पंच इसलिए रखे गये थे कि किसानों को कोई कष्ट न हो। पंचों ने लगातार तीन माह तक कठिन परिश्रम किया है। सर्किल कमेटी के सदस्यों ने दौड़ दौड़कर पंचायत बनाई थी। मैं भी इलाहाबाद जिले की बारा सर्किल कमेटी का एक मेम्बर हूँ। गल्ला-वसूली का कार्य अगस्त में बन्द हो गया है। सारे किसानों ने गल्ला दिया, यह सर्किल कमेटी के सदस्यों के प्रचार का फल था। खरीद के सेंटर पर पंचों ने बड़ी मेहनत से काम किया। परन्तु न तो पंचों को उनकी मजदूरी (दैनिक भत्ता) मिली और न सर्किल कमेटीवालों का भत्ता ही। सूबे के अन्य जिलों से जो समाचार मिले हैं, उनसे मालूम हुआ है कि अन्य जिलों में सारे भत्ते और मजदूरी मिल गई है। यह अन्धेरखाता इलाहाबाद ही का है। सुना है, एम० एल० ए० और बड़े बड़े अफसरों ने अपने अपने भत्ते वसूल कर लिये हैं। बेचारे गरीब कार्यकर्त्ताओं का हर प्रकार से मरण है। हम लोग एक पखवारे तक और इन्तजार करते हैं वरना नोटिस देकर उन रुपयों के लिए अदालत में बाकायदा सरकार के विरुद्ध मुकदमा लड़ा जायगा।

—विष्णुराम तिवारी

एक खुराक पेट दर्द को [illegible] करती है।

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर व्यापक ख्याति अम्लता, उदर-शूल, दाह, पेट दर्द, वमन, पित्त-प्रकोप, पाचन-सम्बन्धी शिकायतों से पैदा होने वाले अन्य रोगों में प्रभावशाली एवं मान्य प्रमाण है।

उदर-विकारों से उत्पन्न सिर दर्द, उदासी, अनिद्रा और हृदय की धड़कन में भी यह अमूल्य है।

यदि आप इनमें से किसी रोग से पीड़ित हैं तो आज ही इस मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर लीजिए और इस प्रसिद्ध औषधि की शीघ्र लाभकारी स्वयमेव अनुभव कीजिए।

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर लेते समय "एलेक्स सी० मेकलीन" के हस्ताक्षर पहचान लीजिए क्योंकि असली और मेकलिन ब्रांड स्टमक पाउडर सेवन कीजिए

Copyrights

स्त्री-पुरुषों के लिए अपने घर पर उपर्युक्त क्रिया दिमाग़ को शान्ति और में वास्तविक प्रसन्नता के लिए आनन्ददायिनी प्राणशक्ति है। प्रथम तीन को परीक्षा के लिए मुफ़! कृपा कर शीघ्र लिखें।

मैनेजर—योग-भवन
नं० १९ ऋषीकेश, यू०

हिन्दी साहित्य

बाबू श्यामसुन्दरदास प्रणीत

मूल्य चार रुपया

हिन्दी में ऐसे ही इतिहास-ग्रन्थों की कमी है। जो इनी-गिनी पुस्तकें लिखी गई हैं उनमें से बहुत-सी अप्राप्य और अधूरी हैं और बाकी अप्राप्य हैं। खासकर हिन्दी साहित्य का इतिहास पढ़नेवालों को कोई भी प्रामाणिक इतिहास उपलब्ध न होने के कारण बड़ी ही कठिनाई थी। इसी कमी को दूर करने के लिए हिन्दी के माने हुए विद्वान् तथा सम्पादक बाबू श्यामसुन्दरदास ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'हिन्दी साहित्य' का परिमार्जित और संशोधित संस्करण 'हिन्दी साहित्य' नाम से उपस्थित किया है।

पुस्तक में केवल विभिन्न कालों का ऐतिहासिक वर्णन ही नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को विभिन्न कवियों की कविताओं से परिचित कराने के लिए उदाहरण-स्वरूप कविताएँ भी दी गई हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास के सम्बन्ध में जितने भी नये अनुसन्धान हुए हैं इन सबका इसमें समावेश किया गया है। इस प्रकार [illegible] के विद्यार्थियों के लिए यह एकमात्र पुस्तक है जिसके द्वारा वे हिन्दी साहित्य की समस्त प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे।

[illegible] नम की समस्त प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे।

[illegible] ला, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेद के साथ लिखना पड़ता है कि रियासत के अधिकारी हड़ताल समाप्त करने की कोशिश न करके उसका मिथ्यारोप कांग्रेसवालों पर करने की चेष्टा कर रहे थे। उनकी गिरफ्तारी की तैयारियों की भी खबर थी।

समझौता कराने के निमित्त श्री ठाकुर प्यारेलालसिंह जी आये थे। १६ ता० को श्री राधाकिशन जी केजड़ीवाल के सभापतित्व में एक सभा हुई जिसमें लगभग तीन हजार की उपस्थिति थी। ठाकुर साहब ने मिल के अधिकारियों को चेतावनी देते हुए कहा कि वे शीघ्र मिल की बुराइयों को दूर करें और मजदूरों को कानून के अनुसार प्राप्त सारी सुविधाएँ दें। आपने मिल के मामलों में स्टेट अधिकारियों की लापरवाही की निन्दा की।

गत २१-१०-४६ ई० को स्टेट कांग्रेस की खरसियाँ शाखा के तत्त्वावधान में आजाद-हिन्द-सरकार-दिवस मनाया गया। रात को गांधी चौक में सभा हुई जिसके सभापति श्री सिद्धेश्वर गुरु अध्यक्ष स्टेट कांग्रेस रायगढ़ थे। —संवाददाता

* * *

अजयगढ़ (मध्य भारत) हिन्दी-संसार के प्रतिभासम्पन्न नवीन कथाकारों की आज के आलोचकों द्वारा जो उपेक्षा की जा रही है, वह किसी से छिपी नहीं है। कदाचित् यही कारण है कि प्रतिनिधित्व करनेवाले जितने भी कहानी-संग्रह प्रकाशित हो रहे हैं, उनमें हमारे प्रतिभासम्पन्न कथाकारों को भूलकर भी सम्मलित नहीं किया जा रहा है। इस धाँधली को किसी हद तक मिटाने के उद्देश्य से ही निश्चय किया गया है कि 'हिन्दी के नवीन कलाकार' नामक एक ग्रन्थ प्रकाशित किया जावे, जिसमें कथाकार अथवा कहानी लेखिका का संक्षिप्त परिचय और उसी के द्वारा चुनी हुई उसकी सर्वश्रेष्ठ कहानी संकलित रहें।

हिन्दी के सभी प्रतिभासम्पन्न नवीन कथाकारों और कहानी-लेखिकाओं से हमारा अनुरोध है कि वे अपनी एक एक सर्वश्रेष्ठ कहानी अपने संक्षिप्त परिचय के साथ निम्न पते पर भेजकर, इस कार्य में अपना सहयोग दें। ग्रंथ के प्रकाशन की व्यवस्था हो चुकी है, अतः सामग्री प्रेषित करने में शीघ्रता प्रार्थनीय है।

समस्त प्राप्त सामग्री का उपयोग किये जाने का हम आश्वासन नहीं दे सकते। फिर भी कलात्मक कहानियों की उपेक्षा न की जावेगी।

ग्रंथ का संपादन करेंगे—
(१) श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'
(२) श्री विश्वनाथ मिश्र एम० ए०
पत्र-व्यवहार का पता:—

—नारायणप्रसाद त्रिपाठी
प्रबन्ध संपादक
पोस्ट—अजयगढ़

* * *

मथुरा साहित्य-वाचस्पति सेठ कन्हैयालालजी पोद्दार के [illegible] की तैयारी धूम[illegible] अवसर पर ए[illegible] से आयोजन [illegible] संयोजक श्री [illegible] सभापतित्व के लि[illegible] शरण गुप्त को निमंत्रित किया गया है। इस उत्सव में शरद-सम्बन्धी राग-रागिनी और काव्य का विशेष आयोजन होगा। महारास के लिए व्रज की प्रसिद्ध रासमंडली निमंत्रित की गई है।—संयोजक श्री पोद्दार हीरक-जयन्ती-समारोह।

अ० भा० व्रज-साहित्य-मंडल के प्रतिनिधियों से राजा महेन्द्रप्रताप ने २० अक्टूबर को प्रातःकाल लगभग डेढ़ घंटे वार्तालाप किया और व्रज-साहित्य-मंडल के कार्यक्रम के साथ पूर्ण सहानुभूति प्रकट की। आपने कहा—मुझे यह सुनकर हर्ष हुआ कि एक ऐसा विद्यालय का मन्दिर बनने जा रहा है। विद्या का प्रत्येक रूप से फैलना देश के लिए लाभदायक है। हमको समस्त मनुष्य-शक्ति नई नई खोज में लगा कर समाज की उन्नति करनी चाहिए। मैं आशा करता हूँ कि यह व्रज का विद्यापीठ जहाँ पिछली खोज करेगा वहाँ आनेवाले कल को भी सुखमय बनावेगा। —संवाददाता

* * *

सोहावल राज्य गत ३०।१०।४६ को सोहावल राज्यान्तर्गत सभापुर में, जो राज्य के परगनों में सबसे बड़ा है, एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें सोहावल राज्य प्रजामंडल की स्थापना घोषित हुई। पदाधिकारियों का चुनाव हुआ। कार्यालय सभापुर में रहेगा। राष्ट्रीय झंडोत्तोलन पं० गौरीशंकर ने किया और सभापतित्व मुंशी अकबर खाँ ने। सभा में बाघेलखंड स्टेट्स ग्रूप प्रजा-परिषद् के सभापति लाल तीर्थराजसिंह बाघेल और प्रधान मंत्री महेश्वर मिश्रौलिया के भाषण हुए। रिश्वत, कंट्रोल-व्यवस्था, सेटिलमेंट, स्वास्थ्य, शिक्षा, जंगल। परमिट सम्बन्धी अनेक प्रस्ताव स्वीकृत हुए।

जिन टैक्सों को उठा देने के बाबत ग्रूप अधिकारियों और कोठी राज्य प्रजामंडल के बीच वार्तालाप चल रहा था उनमें से नीचे लिखे कर उठा दिये गये—(१) मौजों की बयाई, (२) बकरा पिछौराया रस्म उठाई-बैठाई, (३) डेहरी, (४) कनौटी सिंगौटी। अन्य करों को उठाने तथा सुधारों को जारी करने की ओर लोगों का आग्रह है। —संवाददाता

* * *

हरिद्वार हिन्दी-साहित्य-संघ हरिद्वार का तृतीय वार्षि-कोत्सव ३ से ५ नवम्बर तक श्री श्रवणनाथ ज्ञानमन्दिर में मनाया जायेगा, जिसके लिए जोर-शोर से तैयारियाँ हो रही हैं। बाहर से बहुत से कवियों व संगीतज्ञों को आमंत्रित किया गया है। सेठ बालचन्द जी रईस को सर्वसम्मति से स्वागताध्यक्ष चुना गया है।

शारदा आश्रम कन्या विद्यालय ज्वालापुर जि० सहारनपुर का दाखिला दीवाली बाद प्रारम्भ होगा, जिसमें पंजाब व प्रयाग आदि की हिन्दी परीक्षाएँ व यू० पी० की हिन्दी मिडिल तक की शिक्षा का प्रबन्ध है। हिन्दी शिक्षा-प्रेमी अपनी कन्याओं को सुयोग्य एवं गृह-कार्यदक्ष बनाने के लिए उक्त पते पर पत्र-व्यवहार करें। —संवाददाता

* * *

बम्बई 'जूट यूनियन काटन' क्लाथ के सारे व्यवसायियों को सूचित किया गया है कि भारत-सरकार के टेक्सटाइल कमिश्नर ने रुई के टुकड़े के निर्यात पर प्रतिबन्ध लगाना तय कर लिया है। ऐसे कपड़ों के निर्यात पर, सूती कपड़ा और सूत (नियंत्रण) आज्ञा, १९४६ के अनुसार नियंत्रण हुआ है।

'जूट काटन यूनियन क्लाथ' के उत्पादन में लगा हुआ कोई भी व्यवसायी व्यापार विभाग की २२ जून की सूचना के अनुसार निर्यात के लिए बिना टिकट लगाये कपड़े का व्यापार नहीं कर सकता। —संवाददाता

श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी की रचनाएँ

सञ्चारिणी

इसमें लेखक के भक्तिकाल की अन्तर्चेतना, व्रजभाषा के अन्तिम प्रतिनिधि और शरत्साहित्य का औपन्यासिक स्तर आदि १० निबन्धों का संकलन है। निबन्ध परस्पर क्रमबद्ध हैं और हैं विविध युगों के प्रतीक-स्वरूप। नवीन ढंग के साहित्य में पुस्तक अपने ढंग की एक ही है। ढाई सौ से अधिक पृष्ठों की, अच्छे काग़ज़ पर छपी सजिल्द पुस्तक का मूल्य दो रुपये।

युग और साहित्य

इस पुस्तक में युगद्वन्द्वों और उससे उत्पन्न भावी सम्भावनाओं को, साहित्य के माध्यम से, उपस्थित करने का प्रयत्न है। इसे वर्तमान साहित्य का संक्षिप्त इतिहास भी कह सकते हैं। साहित्यिक, राजनीतिक और सामाजिक गतिविधियों की जानकारी के लिए यह पुस्तक अनुपम है। अच्छे काग़ज़ पर छपी साढ़े तीन सौ से अधिक पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य दो रुपये ग्यारह आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।-) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या [illegible] है तो [illegible] प्रसिद्ध हजारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

अखिल-भारतीय कुमार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

कुमार लेखक-लेखिकाओं के संगठन का आयोजन

अखिल-भारतीय कुमार-हिन्दी-साहित्य-मंडल की ओर से 'कुमार-साहित्य-सम्मेलन' का दूसरा अधिवेशन इंदौर में 'मध्यभारत हि . साहित्य-समिति' के सभागृह में १९-२० अक्टूबर १९४६ को किया गया। प्रो० प्रभाकर माचवे, एम० ए०, साहित्य-रत्न अध्यक्ष थे। उज्जैन, धार, पूना और शाहपूर आदि से प्रतिनिधि आये थे। सहायक मंत्री सुश्री सुशीलाकुमारी आगाशे ने स्वागत किया। सम्मेलन के आयोजक श्री वीरेन्द्रकुमार अढ़िया ने कुमार-साहित्य आन्दोलन का इतिहास बताया। आपने हस्तलिखित पत्रिकाएँ निकालनेवाले सम्पादकों के संगठन की आवश्यकता बतलाई। कुमारोपयोगी साहित्य लिखना और पढ़ना, उसका प्रचार करना, हस्तलिखितों और चित्रों की प्रदर्शनी करना, कुमारों के लेख-संग्रह प्रकाशित करना, कुमारों के लिए पृथक् बोलपटों की माँग करना, अखबारों में कुमारों के लिए चर्चा के स्थान रखवाना, वार्षिक अधिवेशन करना आदि इस संस्था के उद्देश्य हैं।

मराठी में 'कुमार-साहित्य-मंडल' की चालीस शाखाएँ और नौ सौ सदस्य हैं। गुजराती में पच्चीस शाखाएँ और सात सौ सदस्य हैं। हिन्दी में आठ शाखाएँ और तीन सौ सदस्य हैं। तीन साल पहले पूना में इस संस्था का आरम्भ हुआ। हिन्दी मण्डल का पहला अधिवेशन दिल्ली में पं० सोहनलालजी की अध्यक्षता में हुआ था।

सम्मेलन के साथ हस्तलिखित पत्रों की और चित्रों की प्रदर्शनी की गई थी। सरदार किबे ने उसका उद्घाटन किया। श्रीमती कमलाबाई किबे ने अपने भाषण में कहा कि धर्म, जाति और प्रान्त का भेद भूलकर कुमारों को अच्छे संस्कार मिलने की आवश्यकता है। कुमारों के लिए एक साप्ताहिक की बहुत ही आवश्यकता है। उज्जैन के प्रतिनिधि महेन्द्रजी ने प्रचार के लिए पूरी सहायता देने का आश्वासन दिया। अध्यक्ष प्रो० प्रभाकर माचवे का भाषण विद्वत्तापूर्ण था।

२० तारीख की शाम को साढ़े छः बजे श्रीमती कमलाबाई किबे की अध्यक्षता में कवि-सम्मेलन हुआ। प्रसिद्ध कवि श्री खेमराज जोशी ने राष्ट्रीय कविताएँ सुनाईं। इंदौर के युवा कवि तोमर, धरमपुर स्टेट के गुजराती कवि श्री भोगीलाल और अन्य कुमार भाई-बहनों ने भी कविताएँ पढ़ीं। फिर परस्पर परिचय करवाया गया। मंडल का वार्षिक वृत्तान्त संक्षिप्त रूप में पेश किया गया। मंडल की जबलपुर शाखा के दो सदस्य स्व० गुरुनाथ और स्व० गुप्त के स्वर्गवास पर शोक-प्रस्ताव पास हुआ।

तीसरे अधिवेशन के लिए जोधपुर के साहित्य-सदन का आमन्त्रण स्वीकृत हुआ। इस वर्ष के पदाधिकारी:—संरक्षक—सरदार किबे और श्रीमती कमलाबाई किबे, अध्यक्ष—प्रो० प्रभाकर [illegible] अध्यक्ष श्री० [illegible]

महात्मा गांधी : घर और बाहर—लेखक, श्री सूर्यपाल आर्य, प्रकाशक श्री देवकीनन्दन बंसल, मधुर मन्दिर, हाथरस; पृष्ठ १४०; मूल्य १॥=)

विश्ववन्द्य महात्मा गांधी की जीवन-चर्चा को क्रमबद्ध रूप देने का प्रयत्न इस पुस्तक में किया गया है। लेखक ने जो सामग्री उपस्थित की है, वह पर्याप्त नहीं है, फिर भी लेखक के प्रयत्न को निष्फल नहीं कहा जा सकता। भारतीय राष्ट्रोद्धार के सूत्रधार महात्मा गांधी की जीवन-चर्चा प्रत्येक भारतीय के लिए न केवल पठनीय, अपितु अनुकरणीय है। दुनिया के जिस महापुरुष को जन्म देने का श्रेय भारत को है, और भारत में राष्ट्रीय चेतना का शङ्खनाद फूँकने का श्रेय जिस महापुरुष—मोहनदास करमचन्द गांधी—को है, उसके सम्बन्ध में लिखी गई इस पुस्तिका का हम स्वागत करते हैं।

गांधीजी की जीवनी के अतिरिक्त इस पुस्तक में कुछ अन्य लेखकों द्वारा उन पर लिखी गई सामग्री भी संकलित की गई है—श्री उमाशंकर शुक्ल-लिखित 'विनोदी बापू', स्वर्गीय सर सी० वाई० चिन्तामणि-लिखित 'जीवनमुक्त गांधी', श्रीमती क्लेयर सैरीडीन-लिखित 'लेनिन और गांधी' और स्वर्गीय दीनबन्धु सी० एफ० एण्ड्रूज-लिखित 'संसार को महात्माजी की देन'। अन्त में गांधीजी के सम्बन्ध में विश्व-विख्यात महापुरुषों के उद्गार और स्वयं गांधीजी द्वारा दिये गये कुछ उपदेश भी सङ्कलित किये गये हैं। गांधीजी के आठ चित्र एकरंगे और आवरण-पृष्ठ पर उनका एक दुरङ्गा चित्र भी है। लेकिन प्रूफ-संशोधन, भाषा के प्रवाह और उसके परिमार्जन पर ध्यान नहीं दिया गया। यदि इस ओर भी लेखक और प्रकाशक समुचित ध्यान देते, तो प्रस्तुत पुस्तक सर्वाङ्ग-सुन्दर कही जा सकती।

* * *

कसीदाकारी—लेखिका, श्रीमती मुन्नी-देवी बंसल; प्रकाशक, मधुर मन्दिर, हाथरस; मूल्य १॥।=)

भारतीय घरेलू उद्योग-धन्धों में कसीदाकारी का प्रमुख स्थान है। संपन्न और साधारण परिवार समान रूप से इस कारीगरी का लाभ उठा सकते हैं। अवकाश के समय शिक्षित नारियाँ कसीदाकारी से जहाँ अपनी कला को उत्तरोत्तर सुन्दर रूप दे सकती हैं, वहीं कितनी ही उपयोगी वस्तुओं का निर्माण कर पारिवारिक खर्चों में भी बहुत कुछ बचत कर सकती हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक प्रकार की सुन्दर डिजाइनें छापी गई हैं जिनकी सहायता से तरह-तरह की कसीदाकारी की जा सकती है। इन डिज़ाइनों की सहायता किस प्रकार ली जा सकती है और एक ही पुस्तक खरीदकर स्थायी रूप से कि[illegible] लाभ उठाया जा सकता है, इसकी भी पुस्तक के प्रारम्भ में दे दी [illegible] कसीदा-मशीन के चलाने की विधि, लगाना, काढ़ना आदि पर भी [illegible] प्रकाश डाला गया है।

कसीदाकारी की शौकीन [illegible] के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है।

—देवीदयाल [illegible]

Estd. 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेण्ट रिकगनाइज्ड और Aided

सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस :—H.L.M.S १०) H.M.B.S १५) H.M.D.S २५) पुस्तक—अ० पारिवारिक १) बायोकेमिक १) १००० रेडलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्सनरिया १॥) आर्गेनन १), फार्मा कोपिया १॥) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायेंगी। डा० [illegible] माफ—अमेरिकन दवाइयाँ—३ न० से २०० न० तक ≡) ड्राम। आउन्स [illegible] घरेलू बक्स ३६ का ७) सुगर और गोली—२॥) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.

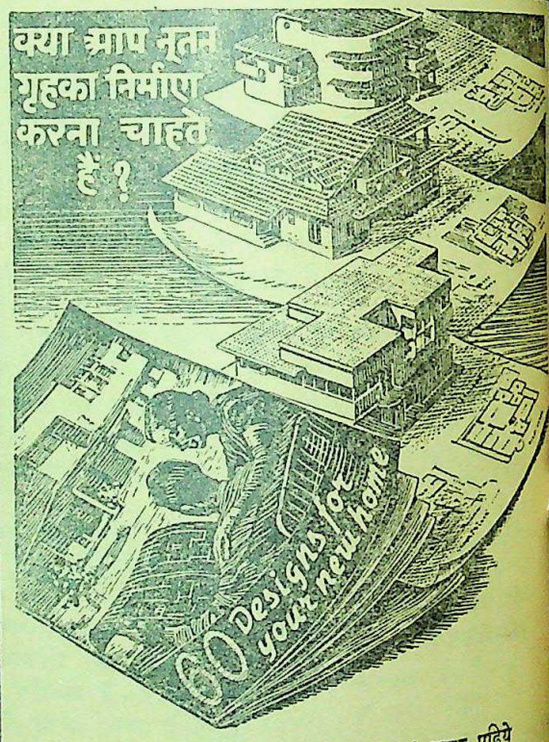

..यदि हाँ, तो इस प्रकाशन को मंगाकर पढ़िये

- ६० नमूने—योजनाओं और संभव कीमतों के साथ
- यह आद्योपान्त रंगीन चित्रों में चित्रित हैं।
- मूल्य २ रु. मात्र (डाकखर्च के लिए ५ आने अतिरिक्त)

दी कॉंक्रीट एसोसियेशन ऑफ इंडिया
७० क्वीन्सवे, न्यू
देहली।

कृपया 'सिक्स्टी डिज़ाइन्स् फॉर युवर न्यू होम' नामक पुस्तक की ..... प्रति/प्रतियाँ भेजने की कृपा कीजिए। मैं पुस्तक के मूल्य और डाक व्यय के लिए..... रु. भेजरहा हूँ।

नाम .....

पता .....

D.A.D. .....

मार्केटिंग कं. आफ इन्डिया लिमिटेड

खाँसिये मत

अगर खाँसी आये तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त समाचार

...ग की तरंग

...ज़म ने फरमाया है कि ...के कुकृत्यों से लीग की बड़ी ...ती है। आप सपना तो नहीं ...संसार में चारों ओर लीग की ...ड़ा बज रहा है।

* * *

...ी चाहिए कि एक पदक ...ुलफ़क़ार साहब को आगामी ...ओलंपिक पर भेंट करे। उनके ...देखता देखकर औरंगजेब की ...ल रही है।

* * *

...ादल ने पार्लिमेंट को सूचना ...कलकत्ता में बहुत हानि नहीं ...ता है कि हानि हुई है। ...ता वहाँ आपस में गिल्ली-...ते थे।

* * *

...ेजेडालों ने नेहरू जी से कहा ...ा राजनीतिक-विभाग का कहना ...ारी पेंशन जब्त हो जाती।

जुरमाना मुसलमानों पर भी करना पड़ता। न्याय की रक्षा करनी थी।

* * *

गजनफर अली का सामान किसी ने नीलाम में नहीं खरीदा। पता नहीं, कोई सामान खरीदने लायक था कि नहीं।

* * *

जनाब लियाकत अली खाँ अर्थमन्त्री हुए हैं। हम इन्हें इसके लिए बधाई देते हैं। खैरियत है कि अनर्थ मन्त्री नहीं हुए।

* * *

कलकत्ते के किसी थाने पर दिन-दहाड़े हमला कर दिया गया। बंगाल के प्रधान मन्त्री को कहना चाहिए कि यह हमला नहीं था, थानेदार को उनके अच्छे प्रबन्ध के लिए बधाई देने के लिए भीड़ गई थी।

* * *

युक्तप्रान्त में जेलों का सुधार होनेवाला है। प्रत्येक बारिक में बिजली के पंखे, रेडियो तथा रेफरीगरेटर का प्रबन्ध होना चाहिए।

* * *

बेढब दोहावली

श्रीयुत बेढब बनारसी

खड्डा मिलता ही नहीं बने कहाँ से कोट।
यही बहुत है यदि मिलै 'बेढब' एक लँगोट॥

वह करते वश में जगत चला चला कर तोप।
हम करते हैं अनुकरण सिर पर रखकर टोप॥

लीडर मार्केट से हुए हैं वह मालामाल।
एक रुपये में ले रहे हैं दो सेर पुआल॥

नहीं बनाने जानती भोजन मिसेज नवीन।
मगर नाचने की कला में हैं बहुत प्रवीन॥

कविता कर करके हुए हैं 'बेढब' विख्यात।
भोजन को है मिल रहा केवल बासी भात॥

कविता सुन सुनकर गये हँस हँसकर सब लोट।
बोला यह कोई नहीं 'बेढब' लो यह नोट॥

...क्टर खाँ और नेहरू जी का ...ने की जागीरें मिलतीं।

* *

...ल पर से कंट्रोल उठ गया और ...ाम बढ़ गया। जान पड़ता ...ल पर से भी हमारे प्रांत में ...ते हैं।

* *

...ोटेन शौहब चाहते हैं कि ...ाने वाली नौकरी बन्द कर ...ते की कभी बन्द हो जानी ...ही कलक्टर या कमिश्नर ...म जेल में बीस साल ...दि इसकी घोषणा कर दी ...ाने बच्चों को अभी से ...काम कर दें।

* *

...ी सामूहिक जुरमाना हुआ ...ा होगा। कहीं हो? दंगों में ...ई दोष नहीं और

डाक्टर अम्बेदकर ब्रिटिश मन्त्रिदल पर बहुत क्रुद्ध हो रहे हैं। मुस्लिम लीग ने भी उन्हें अंतरिम सरकार में प्रतिनिधि नहीं चुना। मंडल को पकड़ लाये। यह भी दुर्घटना ही कही जाती है।

* * *

आप इँगलैंड अछूतों के एलची होकर गये थे हैं, पर कुछ होने की आशा नहीं। खेद है कि आप न पाकिस्तान बना सके न अछूतिस्तान। इस समय कुछ दिनों तक आप मलाबार हिल पर बैठकर कायदे आजम के साथ शतरंज खेलें।

* * *

सिंध में ...र्थप्र...
सत्याग्रह होग...
विद्वान् कि...
को मूर्ख नहीं...

विज्ञान

विदेशों से रेडियो टेलीफोन पर वार्ता

युद्धकाल में समुद्रों के पारवर्ती देशों से रेडियो-टेलीफोन पर भारत से वार्ता करने में बड़ी असुविधा थी। नौबत यहाँ तक आ गई थी कि टेलीफोन सर्विस को बन्द कर देना पड़ा था। अब पुनः वह सर्विस चालू हो गई है। भारत-इँगलैण्ड और अमेरिका के बीच चलनेवाली लाइनों पर पहली अक्टूबर से खबरें मिलने लगी हैं।

* * *

विचित्र भौतिक पलास्टिक

पलास्टिक का प्रयोग बहुत पहले से विभिन्न क्षेत्रों में होने लगा था। सबसे ताजा समाचार जो पलास्टिक के सम्बन्ध में प्राप्त हुआ है वह यह है कि अब जहाजों में भी पलास्टिक इस्तेमाल किये जायँगे। पलास्टिक से जहाजों को काफी दिनों तक सुरक्षित रक्खा जा सकता है। इसके अतिरिक्त नया लाभ यह होगा कि कितनी ही धातुओं की आवश्यकता जहाजों में पड़ती थी वह पलास्टिक से पूरी हो जायगी। भारतवर्ष में हम बहुत पहले से ही पलास्टिक साड़ियाँ और दूसरे सूती माल पर पलास्टिक का इस्तेमाल कर रहे हैं। अमेरिका से शीघ्र ही पलास्टिक माल काफी तादाद में भारत को रवाना किये जायँगे।

व्यापार

मध्यप्रान्त में कपड़े की नई मिलों की आज्ञा वापस

संसार में कपड़े की कमी है जिसके कारण उस पर राशनिंग करनी पड़ी है। भारत अपने सूती माल के व्यापार में इस युद्धकाल में काफी उन्नति कर गया है। अफ्रीका के एक सिरे से लेकर आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड तक भारतीय कपड़ों का इस्तेमाल हो रहा है। मद्रास-सरकार ने अपने प्रान्त में कपड़े के उद्योग-धन्धे को बढ़ाने के लिए मिल खोलना उतना अच्छा नहीं समझा जितना कि खादी के उत्पादन को महत्त्व दिया है। मध्यप्रान्त की सरकार ने भी मद्रास का अनुकरण किया है। प्रान्त में कपड़े की ६ नई मिलें खुलने जा रही थीं जिसकी आज्ञा सरकार दे चुकी थी। परन्तु खादी का उत्पादन बढ़ाने के लिए मिलों के खोलने की आज्ञा वापस ले ली है। मध्य प्रान्तीय सरकार का यह रुख अच्छा नहीं है। इससे प्रान्त के उद्योग-धन्धों की उन्नति को गहरा धक्का लगेगा।

* * *

भारतीय जहाजों से व्यापार

बहुत दिनों की आशा सफल होती दिखलाई दे रही है। प्राचीन काल में भारत के नाविक संसार के समुद्रों पर अपनी नावों द्वारा विदेशों से व्यापार करते थे। परंतु थोड़े दिन ही कहना चाहिए कि जहाजों और नावों का व्यापार ब्रिटिश सरकार की कृपा से विदेशियों के हाथ में चला गया। राष्ट्रीय सरकार के आते ही इस ओर पुनः ध्यान दिया गया है। राष्ट्रीय सरकार के वाणिज्य मन्त्री को धन्यवाद है। उन्होंने कहा है कि भारतीय व्यापारी जहाजों का भविष्य उज्ज्वल है। इस समय व्यापारिक जहाजी कम्पनियों में डाक-विभाग का व्यापार ८०% विदेशी कम्पनियों के हाथ में है। भविष्य में यदि वर्तमान व्यापारिक जहाजी उद्योग धन्धों को सहायता मिलती रही तो डाक विभाग के लिए व्यापारिक जहाज बनाये जायँगे जो राष्ट्र की रेलों पर लदे बोझ को हल्का करने में सहायक होंगे। उस समय ६०% व्यापारिक पोस्टल जहाज भारतीयों के होंगे।

* * *

कानपुर में व्यावसायिक शान्ति

डा० के० एन० काटजू की अनुपस्थिति में परीक्षा-मंत्री श्री सम्पूर्णानन्द जी ने उनका चार्ज ले लिया है। वे कानपुर में मज़दूरों, लेबर कमिश्नर तथा तत्संबन्धी अन्य व्यक्तियों से मिलकर काम करने में लगे हुए हैं।

गर्मी में पसीने से चमड़ी नम तथा चिकनी रहती है जब कि सर्दी में सूखी तथा खुरदरी रहती है नेशनल के 'बोराटाल्क' टालकम पावडर जो चमड़ी का खुरदरापन दूर करने में अक्सीर है, वो किसी भी ऋतु में चमड़ी की रक्षा करता है उनको व्यवहार में लाकर अपनी त्वचा नरम तथा सुगंधित रखिये। खास कर नहाने के बाद लगाने से अच्छा रहता है, आज ही व्यवहार कर देखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरंजक चुटकुले

लेखक, श्री 'ललित' शाहजहाँपुरी

"तुम पिछली जगह से क्यों छुड़ा दिये गये ?" नये मालिक ने पूछा।

"अच्छे व्यवहार के कारण", नौकर ने जवाब दिया।

"क्या ?" मालिक गरज पड़ा। "क्या मतलब ?"

"अच्छे व्यवहार के कारण मुझे तीन महीने पहले की तनख्वाह मिल गई, और मैं यहाँ चला आया।"

* * *

मेरी श्रीमती जी एक घण्टाघड़ी खरीद-कर लाईं और उन्होंने कमरे में, दीवाल में, उसे लटका दिया। फिर उन्होंने नौकर को आवाज दी और कहा—इसे कहीं और उचित स्थान पर लगा दो।

"आप मुझसे कहाँ रखाना चाहती हैं ?" नौकर ने पूछा।

"पोर्टिको में बिजली के लैम्प के नीचे।" उन्होंने उत्तर दिया, "तब हम अँधेरे में भी समय देख सकेंगे।"

* * *

जज—मुजरिम ! जो अभियोग तुम पर लगाया जाता है वह सच है या झूठ ? तुमने यह अपराध किया है या नहीं ?

मुजरिम—मुझे नहीं मालूम कि मैंने क्या किया और क्या नहीं।

* * *

पूरे दिवालिये एक व्यापारी की धर्म-पत्नी ने नाश्ते के समय कहा—"प्रियतम ! क्या तुम, मेरे खातिर, यह पत्र डाल दोगे ? यह जौहरी के नाम है, जिसमें उसे १००० रुपयेवाले नेकलेस के आर्डर की याद दिलाई गई है। तुम याद रखोगे न ?"

परेशान व्यापारी की आँखें प्रसन्नता से चमक उठीं। उसने एक लम्बी रस्सी उठा ली जो एक कोने में गुड़ियों और खिलौनों के बीच में पड़ी थी और अपनी भार्या से कहा—"देखो, मेरा सीधा हाथ मेरे बायें पैर से बाँध दो जिससे मैं भूल न जाऊँ।"

* * *

"प्रिये" ब्रह्मकुमार, चाय पीते हुए, बोले—ये मठरियाँ क्या तुम्हीं ने बनाई हैं ?

"हाँ, सचमुच, मेरे प्रियतम," उसने उत्तर दिया। "क्या तुम यही कहनेवाले थे कि वे वैसी ही बनी हैं जैसी तुम्हारी माता जी बनाया करती थीं ?"

"सचमुच यही बात थी।"

"सच, प्यारे। कितनी अच्छी बात ?"

"हाँ", वे बड़बड़ाये। "और—मुझे खयाल नहीं पड़ता कि मैं तुमसे पहले कह चुका हूँ—लेकिन उसी वजह से पिताजी ने उन्हें छोड़ दिया था !"

* * *

किसी वैद्य से एक रोगी ने कहा—मेरे सिर में दर्द हुआ करता है। वैद्यजी, कोई ऐसी दवा दीजिए जिससे आराम हो जाय।

वैद्य—कब से दर्द हुआ ?

रोगी—करीब एक सप्ताह से।

वैद्य—तो फिर आप जुलाब ले लीजिए। कुछ बदहजमी रहती होगी।

रोगी—वैद्यजी, आज दो दिन से तो मैंने खाना ही नहीं खाया। जुलाब किसके लिए लूँ !

कांग्रेसमैन ने कहा—जिसको हम लोगों ने निकाल दिया वह तो तुम्हारा नेता हो गया।

* * *

एक बंगाली महाशय हिन्दी के प्रेमी थे। उन्होंने अपनी छोटी लड़की से पूछा—खेदी, सन्देश आया ?

खेदी चौंक उठी और कहने लगी—बाबा, कल जो सन्देश (मिठाई) खरीदा था उसे तो मैं खा गई थी। आज तो मैंने खरीदा ही नहीं।

बंगाली महाशय हँसते हुए कहने लगे—अरी पगली, सन्देश हिन्दी अखबार, जो आता है।

* * *

एक वकील साहब किताबों का बोझ लिये अदालत में घुस रहे थे। उनके एक मित्र ने कहा—"क्यों भाई, मुकदमे की सारी बातें तो आपके दिमाग में हैं फिर इन पुस्तकों का ढेर लादने की क्या आवश्यकता ?"

वकील ने उत्तर दिया—ये किताबें मेरे लिए नहीं हैं बल्कि जज के लिए हैं।

* * *

दो आदमी सड़क पर साथ साथ जा रहे थे। एक साहब मौन भंग करते हुए कहने लगे—कहिये, आप कहाँ चल रहे हैं ?

दूसरे ने उत्तर दिया—मान-मन्दिर।

पहले साहब हँसते हुए कहने लगे—भाई, अभी तक तो पुरुषों को उस मन्दिर में जाते हुए नहीं सुना गया था।

दूसरा—फिर कौन जाता है ? क्या स्त्रियाँ ?

प्रथम—मान (दोष) मन्दिर में तो अभी तक प्रायः स्त्रियों ही के जाने का विवरण पढ़ा था। परन्तु आज से आप नया काम करने जा रहे हैं।

प्रान्तीय कांग्रेस में एकता का ह्रास

(पेज ५ का शेष)

आया। सेठ जी ने सभा से कहा—अब अध्यक्ष-पद पर मुझे न बैठना चाहिए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि श्रद्धेय टंडन जी इस कार्य को पूर्ण करें। "अपने ऊपर विश्वास के प्रस्ताव का संक्षिप्त विवरण देते हुए सेठ जी ने कहा कि मैंने इस प्रस्ताव को राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल जी के पास इसलिए भेज दिया था कि बाबू शिब्बनलाल सक्सेना कार्य-कारिणी के एक सदस्य होते हुए कार्य-कारिणी और उसके अध्यक्ष पर अविश्वास का प्रस्ताव नहीं पेश कर सकते। इस पर मैंने अपनी रूलिंग देना अच्छा न समझ कर उक्त प्रस्ताव पंडितजी के पास भेजा था। पंडितजी का उत्तर मेरे पास है। शिब्बनलालजी उसको राष्ट्रपति की रूलिंग नहीं मानते। उसको सुनकर सभा उस पर गौर कर सकती है।" अब सेठ जी बैठ गये। श्रद्धेय टंडनजी ने अध्यक्ष का आसन ग्रहण किया। यहीं से अविश्वास के प्रस्ताव का कार्य आरम्भ हुआ।

श्रद्धेय टंडनजी ने जवाहरलालजी के पत्र पर शिब्बनलालजी की सम्मति माँगी। उन्होंने कहा—मैं इस पत्र को राष्ट्रपति की रूलिंग नहीं मानता। पत्र में क्या था ? यह तो मुझे मालूम नहीं, पर भाव से प्रकट हो रहा था कि वह एक प्रकार की रूलिंग थी, जो नम्र भाषा में थी। अन्त में सदस्यों की सम्मति राष्ट्रपति के पत्र पर माँगी गई तो पत्र का रूप रूलिंग का माना गया। इससे सक्सेनाजी को अविश्वास का प्रस्ताव पेश करने का हक न रह गया। तब मजदूर-प्रजा-पार्टी के एक बड़े नेता ने अविश्वास का प्रस्ताव पेश किया। उस प्रस्ताव पर नेता ने सबूत देने का प्रयत्न किया। प्रस्ताव के संशोधन में एक दूसरा प्रस्ताव मुरादाबाद के एक सोशलिस्ट कार्यकर्ता ने पेश किया जिसमें अविश्वास के रहते हुए भी विश्वास ... लाया गया था। इस संशोधन ... हरदोई जिले के एक सदस्य ने ... धन पेश किया जिसमें प्रान्तीय ... और उनके मन्त्रिमंडल पर ... का समर्थन था। दोनों पार्टियों ने ... में काफी भाग लिया। ... से लेकर पार्लियामेण्टरी सेक्रेटरियों ... खुल कर भाग लिया था। ... सर्वश्री गोविन्दवल्लभ पन्त, ... किदवई, सम्पूर्णानन्द और ... मौजूद थे। परन्तु मत-दान के ... लोग चले गये थे। बैठक ४ ... से २ बजे रात तक होती रही, ... तक के लिए स्थगित न हुई। ... प्रस्ताव पर मत लिया गया। ... ने इस समय भी समझौते का प्रयत्न ... स्वयं पालीवालजी के वक्तव्यों में ... की बातें झलक रही थीं। पहले ... सज्जन के मूल प्रस्ताव पर मत लिया ... सेठजी पर विश्वास का प्रस्ताव ... गया। विश्वास के पक्ष में ... विपक्ष में १४५ मत थे। इसके ... सभा विसर्जित हो गई। सभा ... तालियों से गूँज रही थी। प्रान्तीय ... गले मिलते दरवाजे से बाहर ... थे। उस समय मैंने भी उस ... हाथ मिलाया। यह समाजवादी ... की विजय है। सेठजी के ... भी कम महत्त्व नहीं है। वे १२ ... अवस्था से देश-सेवा कर रहे हैं। ... मजदूर-प्रजा-पार्टी कदाचित् सोशलिस्ट ... की समानान्तर प्रतिद्वन्द्विता करना ... है। परन्तु यह समय उसके लिए ... नहीं है। सन् १९४२ ई० की ... ने समाजवाद को बहुत ऊँचे ... है। कांग्रेस के रंगमंच पर ... विशेष दल या पार्टी का जन्म ... की स्वतन्त्रता के लिए घातक है।

दिल्ली में प्रधान मन्त्रियों का सम्मेलन

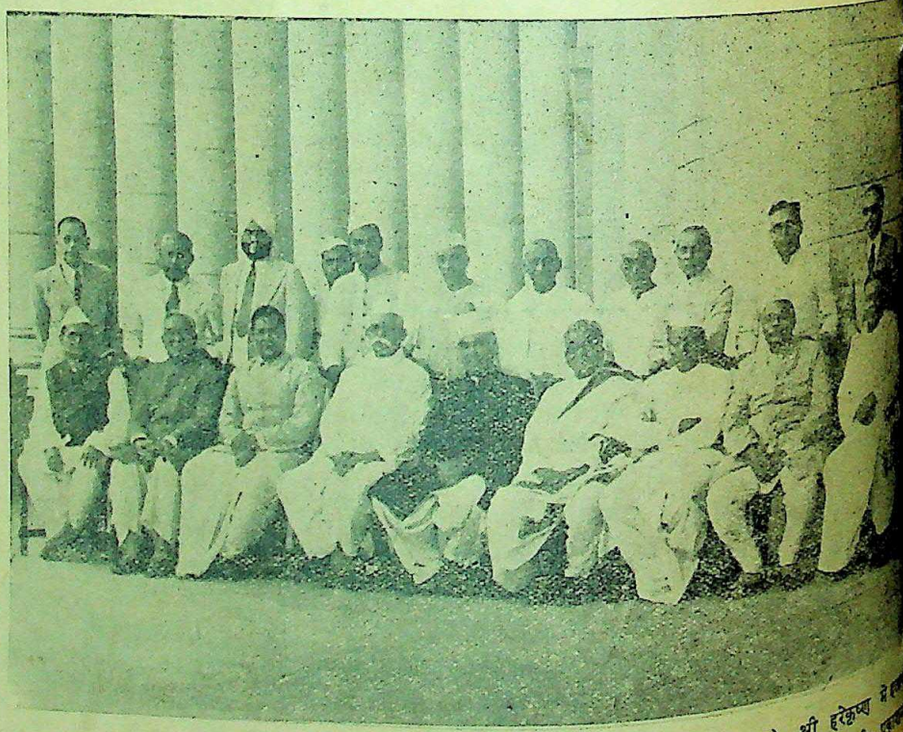

बैठे हुए (बायें से दायें)—श्री श्रीकृष्णसिंह (बिहार), डा० खान साहब (सीमाप्रान्त), श्री हरेकृष्ण ... (उड़ीसा), ... नवाब सर मुजफ्फर अली कज़िलबाश (गृहमन्त्री पंजाब), श्री टी० ... और गोपीनाथ बारदोलोई (आसाम)। ... जान मथाई, सरदार बलदेवसिंह, श्री के० बी० ... दार वल्लभभाई पटेल, सी० राजगोपालाचार्य, ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी में

अभूतपूर्व क्रान्तिकारी साहित्य

श्री सुभाषचन्द्र बोस-सम्बन्धी प्रसिद्ध हिन्दी साप्ताहिक

'अभ्युदय'

विशेषांक जिन्होंने भारत भर में हलचल मचा दी है।

दूसरा, तीसरा और चौथा विशेषांक एक में (सजिल्द) केवल ५)

विशेषांक जिसमें जियाउद्दीन के भेष में नेता जी सम्बन्धी दो भी उत्तमचन्द्र द्वारा लिखित उनके भारत से बाहर जाने की की पूरी, १०० से ऊपर अनमोल चित्र तथा २०० के करीब पेज, भवानी द्वारा नेता जी को तलवार प्रदान करते हुए सुन्दर तिरंगा रुपया मात्र।

साथ लेनेवाले को पोस्टेज माफ। हजारों प्रतियाँ बिक चुकीं। अभी शेष हैं। जल्दी कीजिए नहीं तो बाद में इनका मिलना भी जायगा।

मैनेजर 'अभ्युदय' प्रयाग।

'ऐस्प्रो' आ गया है

किसी भी नकली मालको मत लीजिये। हर टिकिया पर 'ASPRO' खुदा हुआ देख लीजिये।

'ऐस्प्रो' दस मिनट में बुखार और दर्द रोकती है। यह हृदय या पेटको नुकसान नहीं पहुचातीं।

'ऐस्प्रो' का नियंत्रित मूल्य

३ टिकियों की पैकेट का दाम १ आना, ३० टिकियों के डिब्बे का दाम १० आना

वितरक: जे. एल. मौरिसन, सन एण्ड जोन्स (इण्डिया) लि:, पोष्टबक्स ३८७कलकत्ता, टेलीफोन-कलकत्ता ७९६

'ऐस्प्रो' हर जगह मिलता है

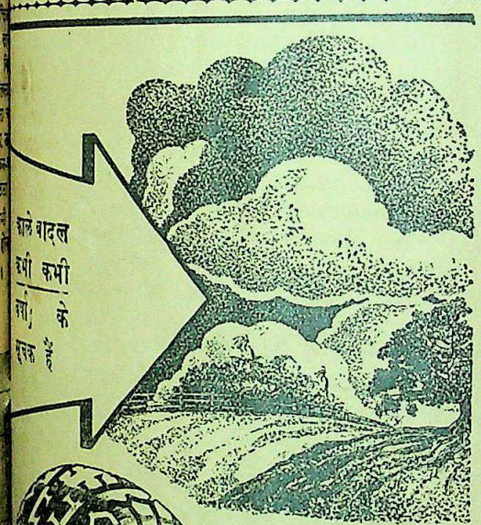

काले बादल कभी कभी वर्षा के सूचक हैं

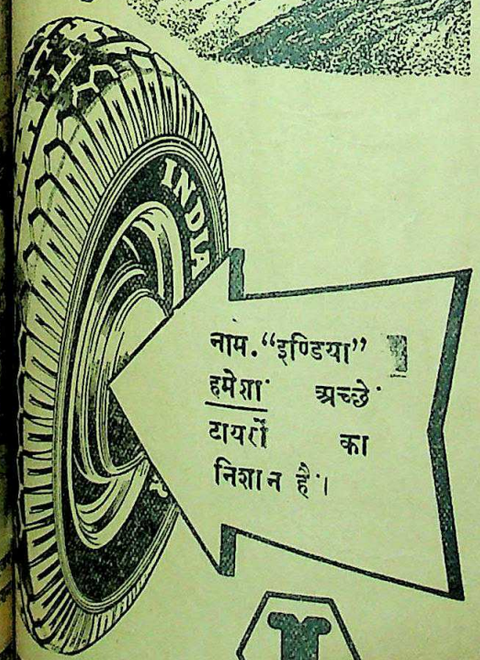

नाम. "इण्डिया" हमेशा अच्छे टायरों का निशान है।

INDIA TYR

'ओवल्टीन' आपके परिवारके स्वास्थ्यकी किस प्रकार रक्षा करता है

सारी दुनियांके लाखों घरोंमें 'ओवल्टीन' का व्यवहार प्रतिदिन क्यों होता है? कारण सरल है। 'ओवल्टीन' का, प्रत्येक व्यक्ति केवल आनन्द ही नहीं लेता और यह विशेषतः बच्चोंके लिये ही प्रिय नहीं है किन्तु यह पौष्टिक और स्वास्थ्यवर्द्धक पदार्थ है।

यह पके जौके गूदे और गायके ताजे मलाईदार दूधसे बनाया जाता है। इसमें कीमती प्राकृतिक विटामिन और अन्य तत्व भी मिलाये जाते हैं जो इसे एक पूर्ण पेय खाद्य बना देते हैं। यही कारण है कि यह स्वादिष्ट है और पौष्टिक भी। अपने घरमें प्रतिदिन 'ओवल्टीन' का सेवन कराइये और आप देखेंगे कि सारे परिवारकी शक्ति, स्वास्थ्य और स्फूर्ति अक्षुण्ण है। नकलीसे बचिये।

सभी दवाखानों और स्टोर्स में प्राप्य

वितरक: ग्रेहम्स ट्रेडिंग कं० (इण्डिया) लि०, १६, बैंक ... और कल...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोयला देनेवाला

क्या आपने कभी कोयला देनेवाले की कारवाने को मट्टी या भाफ के एंजिन में बेल्चों से कोयला देते हुये देखा है? वह कठिन परिश्रम करता है किन्तु उसका श्रम और पसीना व्यर्थ नहीं जाता। वह एक महत्वपूर्ण और आवश्यक कड़ी है जो व्यवसाय और यातायात के पहियों को सदैव गतिशील रखता है।

इसी प्रकार, जीवन के पहियों के भी महत्त्वपूर्ण और आवश्यक कड़ियाँ हैं जिनमें एक स्वस्थ्य और स्वाच्छता है। हमाम का काम व्यक्तिगत स्वच्छता प्रदान करते हुये मैल और रोग को निकालना है।

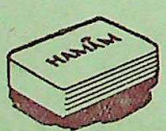

हमाम

भारत का प्रियतम साबुन

टाम्को सेल्स
डिपार्टमेंट
जवाहर स्क्वायर
इलाहाबाद

A TATA PRODUCT

सपट लोशन

दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.

सपट अँड्रू कं. लि.
बम्बई नं. ३

GOVERNMENT OF INDI

DISPOSALS

(SECTION MS OF 2nd CATALOGUE)

Following is a comprehensive list of stores that will be sold by MS Directorate as and when they become available. Some of them are now available and listed in the above catalogue.

Stationery Stores: Paper and paper products; Books, maps and magazines; Cabinets and filing devices; Pens; Nibs; etc.

Drugs and Chemicals: Injectible and oral drugs; Vaccine and sera; Biological reagents; Hygienic chemicals; Ointments and external appliances; etc.

Dressings and Bandages: Plasters, etc.

Surgical and Dental Instruments: Anaesthetic, ear, nose, throat and orthopaedic equipments; Ligatures; Nursing, dispensary, hygienic, dental, veterinary and post-mortem appliances and instruments; Anti-malarial, blood transfusion, opthalmic and gynaecological equipment; X-ray apparatus; Films and chemicals; other instruments including hypodermic syringes and suture needles; etc.

Other Medical and Veterinary Stores.

Acids and Chemicals: Basic chemicals; Fine chemicals excluding photographic and medicinal chemicals; Gases including refrigerant and in trial gases; Coal-tar and products; Soaps; Per ery; Detergent Alcohol and industrial solvents;

Paints, Varnishes and Enamels: Dry and paints; Enamels; Varnishes; Dopes; Distempers

Petrol, Kerosene and Fuel Oil: Motor sp Kerosene; Fuel oil; etc.

Lubricating Oils: Mineral and vegetable cating oils, etc..

Other Petroleum and Oil Products: Gr and petroleums; Road-dressing materials; V able, castor, linseed and cocoanut oils; etc.

Amenity Stores: Games materials; M instruments; etc.

Other Miscellaneous Stores: Cutlery and ery; Glass sheet and holloware excluding ba Rubber and rubberised goods; Enamel Kitchenware; Brushware and components

Full details giving description and condition of stores, quantity, location, etc. and the method of tendering are contained in Section MS of the Second Catalogue which is available at Rs. 3/- on or about 21st October, 1946, from the addresses given below:

A. Regional Commissioner (Disposals) at

BOMBAY - Mercantile Chambers, Graham Road, Ballard Estate.
CALCUTTA - 6, Esplanade East.
LAHORE - G. P. O. Square, The Mall.
CAWNPORE - 15/159, Civil Lines.

B. By. Regional Commissioner (Disposals)

KARACHI - Variawa Building, McLeod R
MADRAS - United India Life B Esplanade.

C. All important Chambers of Commerce Trade Associations.

Mail orders for the catalogue must be accompanied by Money Order or Indian Postal Order.

NOTE: Watch for further announcement regarding Section MS of Third Catalogue which will contain a further list of stores available for disposal.

ISSUED BY THE DIRECTORATE GENERAL OF DISPOSALS, DEPARTMENT OF INDUSTRIES & SUPPLIES, N

...था प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मि...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

मूल्य ७॥)
संख्या ३)

१० नवम्बर, १९४६ सचित्र हिन्दी साप्ताहिक Sunday, 10th November, 194

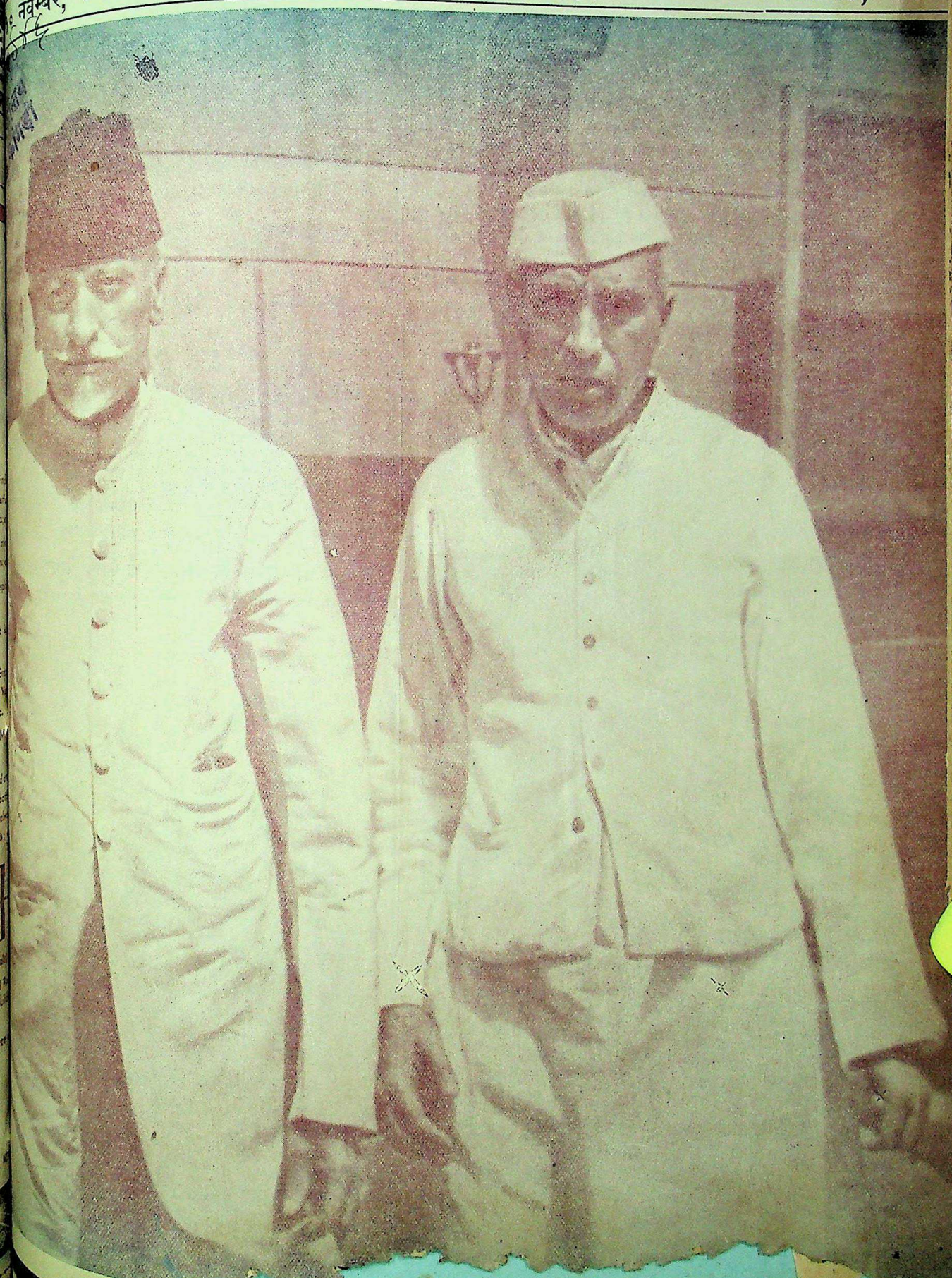

मौलाना आजाद
के प्रधान मंत्री पं० नेहरू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सुहागरात'

लेखक—श्रद्धेय स्वर्गीय पं० कृष्णकान्त जी मालवीय

ऐसी पुस्तक अभी तक हिन्दी-संसार में नहीं प्रकाशित हुई। वैवाहिक ही नहीं घरेलू जीवन किस प्रकार स्वर्गीय हो सकता है, पत्नी किन उपायों से पति को हाथ में ही नहीं रख सकती वरन् किस प्रकार पति के हृदय पर अखंड राज्य कर सकती है। पुस्तक तीन भाग में है और प्रत्येक भाग का दाम ५) रुपया पृथक् पृथक् है। पूरा तीन भाग १५) रुपया में मिलेगा।

नीचे कुछ सम्मतियाँ दी जा रही हैं—

हिन्दुस्तान टाइम्स, दिल्ली—"पुस्तक ज्ञान से भरी है और बड़ी सफाई से शुद्ध भाषा में अच्छे ढंग से लिखी गई है। अभी तक हमारे सामने इस पुस्तक के टक्कर की कोई भी पुस्तक अँगरेजी अथवा देशी भाषाओं में नहीं आई है जो इस प्रकार शुद्ध भाषा में इस बारीक विषय पर लिखी गई हो। पुस्तक को कोई भी पिता बिना संकोच या भय के अपनी कन्या के हाथ में दे सकता है।"

अर्जुन, दिल्ली—"विषय की दृष्टि से यह पुस्तक केवल नव-विवाहिता दम्पतियों के ही नहीं बहुत से बालकों के माता-पिताओं तथा अन्य गृहस्थियों के लिए भी उपयोगी साबित होगी।"

माधुरी, लखनऊ—"हिन्दी-साहित्य में यह पुस्तक अपने ढंग की अद्वितीय है।"

बन्देमातरम्, लाहौर—"पुस्तक न केवल स्त्रियों के लिए बल्कि हरएक गृहस्थ के पढ़ने योग्य है।"

पुस्तक मिलने का पता—

मैनेजर—अभ्युदय प्रेस, प्रयाग

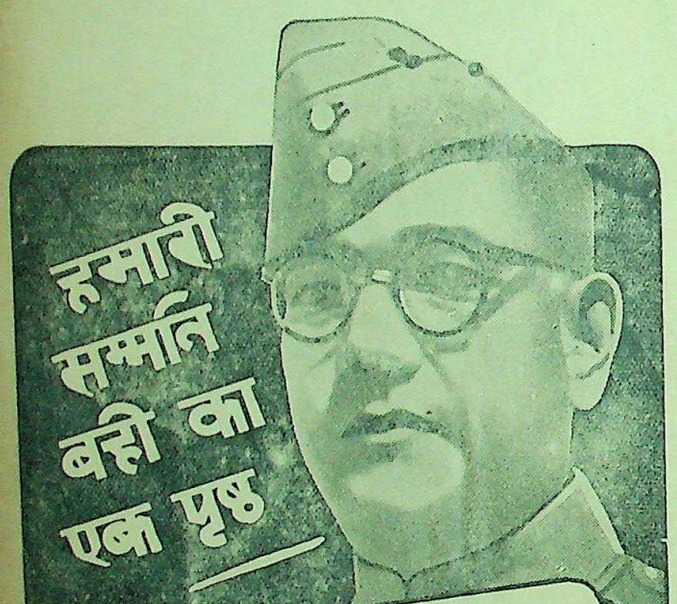
हमारी सम्मति बही का एक पृष्ठ

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

लिखते हैं :

"मैंने आज शक्ति औषधालय, ढाका देखा। कृपापूर्वक मुझे इसका कोना-कोना दिखलाया गया। आयुर्वेदिक सिद्धान्तों के अनुसार बहुत बड़े पैमाने पर यहाँ देशी औषधियाँ बनाई जाती हैं। यह संस्था बाबू मथुरामोहन चक्रवर्ती के प्रति बहुत ऋणी है, जिनके उद्योग से आयुर्वेदिक औषधियाँ गरीबों के लिए भी सुलभ हो सकीं। मैं उनकी इस संस्था की समस्त सफलताओं की कामना करता हूँ, जिसे उन्होंने अपनी दीर्घ-कालीन कोशिशों और कठिन अध्यवसाय के बाद स्थापित किया है। शक्ति औषधालय, ढाका की सफलता का अर्थ है देश भर में आयुर्वेद की लोक-प्रियता और दूसरे शब्दों में इसका अर्थ है पीड़ित मानवता का उद्धार।"

(ह०) सुभाषचन्द्र बोस

ढाका, जून ६, १९३९

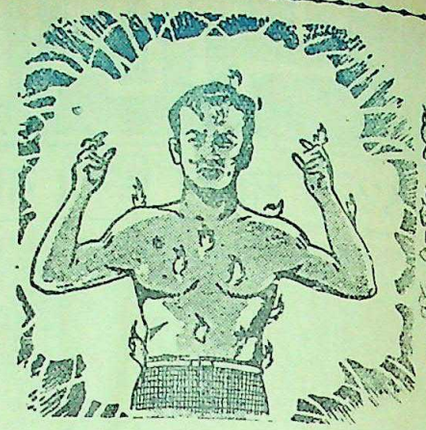
शारीरिक उष्णता के लिये...

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

आज से ही शुरू किजिए, सर्वत्र मिलता है।

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली तलुवों और आंखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग में आग सी जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, जड़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढा बालक वृद्ध, पुरुष स्त्री सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक हानिरहित है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निस्संकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके शीतल, वाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

यू० पी० प्रतिनिधि दोसर एण्ड को०, बिरहना रोड, कानपुर

भारतीय गुलाब के उद्यान की समस्त ... की नवीनता विनोलिया व्हाइट रोज़ साबुन आप ला सकते हैं। उस का मृदु, भरपूर ... मल त्वचा को सौम्यता से साफ़ करता है ... उस के सुगंध से आप के अतराफ़ एक मीठी ... लहराती है। आप के सौन्दर्य-वर्धन का इस ... मोत्तम वा अत्युत्कृष्ट साबुन आप नहीं ... विनोलिया व्हाइट रोज़ को अपना प्रिय साबुन ...

...लिया व्हाइट रोज साबुन

VINOLIA CO., LIMITED, LONDON

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हिन्दू

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, १० नवम्बर, १९४६

१०, संख्या ११]

सप्ताह के समाचार

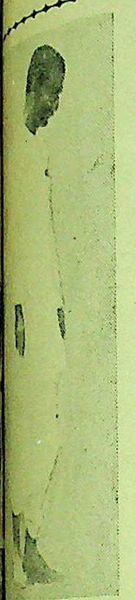

बिहार सरकार के खाद्यमंत्री डा० राजेन्द्रप्रसाद

देशी

नोजल-स्थिति

सन् १९४६ के लिए ४० लाख टन के आयात की आवश्यकता थी, वर्ष के अन्त तक केवल १५ लाख टन आ सका है। ४० लाख टन में से जुलाई से दिसम्बर तक ३० लाख टन अनाज की आवश्यकता थी, परन्तु इस बड़ी आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्राप्त हो

देश की नाविक हड़ताल के कारण लाख हजार टन अनाज भारत पहुँचा। साल को दक्षिण अमेरिका से आने में ६ सप्ताह लगते हैं; पहुँचना ही रही है। बर्मा, स्याम, जावा की बहुत सहायता मिलेगी, आशा है इतने धीरे-धीरे पहुँच जायेंगी। संगठनियों में साग देगी या

से यद्यपि ५ लाख टन

बिहार के गृह-मंत्री सरदार पटेल

चावल मिलने का वचन मिला है, परन्तु २५ हजार से ३० हजार टन तक चावल प्रतिमास रवाना हो सका है।

आजकल विपदावाला क्षेत्र भारत का दक्षिणी और दक्षिणी-पश्चिमी भाग है जिसमें बम्बई प्रान्त भी है। अमेरिकन दुर्भिक्ष प्रतिनिधि-मंडल ने अनुरोध किया था कि वर्ष के अन्तिम तीन महीने में काफी अनाज देश में भेजा जाय; परन्तु उसके अनुरोध पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। क्योंकि प्रतिमास जो भी अनाज देश में आया वह प्रतिनिधि-मंडल की माँग से बहुत कम था। जुलाई में २ लाख २५ हजार टन आना चाहिए पर केवल २ लाख ६ हजार टन आ सका है। अगस्त में तीन लाख अस्सी हजार टन चाहिए था पर दो लाख ९ हजार टन आया। सितम्बर में ६ लाख १५ हजार टन आना चाहिए था पर अनुमानतः दो लाख पचास हजार टन ही आया। अक्टूबर में ५ लाख नब्बे हजार टन आना चाहिए था। सरकार के कार्य-क्रम के अनुसार वितरण के लिए ३,४४,००० टन चाहिए था, परन्तु अब १,९९,००० हजार टन की आशा की जाती है। नवम्बर में २,५०,००० टन के लिए अनुरोध किया था।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि देश को अधिकतर अपने ही ऊपर अवलम्बित रहना पड़ा है। इससे देशवासियों—विशेष-कर उत्पादकों को चाहिए कि अधिक से अधिक अन्न अपने देशवासियों की प्राण-रक्षा के लिए पैदा करें। अनाज का एक दाना भी इस समय बरबाद करना अपने भाइयों का प्राण गँवाना है।

* * *

मालवीयजी की चेतावनी

देश की दुर्घटनाओं से त्रस्त होकर पूज्य पंडित मदनमोहन मालवीयजी ने बनारस में एक वक्तव्य देते हुए कहा है—मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि मानवता आज एक संकट-काल से गुजर रही है। हिन्दू संस्कृति और धर्म खतरे में है और अब समय है कि हिन्दू लोग आत्म-रक्षा तथा आत्म-दृढ़ता के लिए संगठित होकर शक्तिशाली बनें। कितने ही वर्षों से हिन्दुओं ने हिन्दू-मुस्लिम-एकता के लिए काफी प्रयत्न किया है। आज भी हिन्दू उसमें सहयोग देना चाहते हैं और अपने ऊपर आनेवाली सारी विपदाओं को टालते हैं। परन्तु मैं यह देखता हूँ कि इस टाल-मटोल को मुसलमानों की बहुसंख्या में कमजोरी कहा जाता है और सहयोग [illegible] कोई महत्त्व नहीं

*

बिहार में भ

शायद [illegible]
पड़ रही है

साम्प्रदायिक दंगे काफी संख्या में हुए हैं। गाँवों में भी यह विष फैल गया है। कितने ही गाँवों में आग लगा दी गई है। मृत्यु-संख्या भी कम नहीं है। पटना शहर में भी काफी उपद्रव और दंगे हुए हैं। स्थिति को काबू में करने के लिए प्रान्त के प्रधान मन्त्री और बिहार-सरकार ने काफी प्रयत्न किया है। सोनपुर के मेले को, जो बिहार का सबसे बड़ा मेला है, दंगे के कारण रोक दिया गया है।

* * *

राष्ट्रपति की बंगाल लीग को चुनौती

प्रमुख लीगी अँगरेजी पत्र 'डान' में बंगाल प्रान्तीय मुस्लिम लीग का एक प्रस्ताव प्रकाशित हुआ है जिसमें राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी के पूर्व बंगाल के दौरे-सम्बन्धी वक्तव्य की आलोचना करते हुए कहा गया है कि आचार्य कृपलानी-जैसे व्यक्ति का यह वक्तव्य गैर-जिम्मेदारी का है। इस पर राष्ट्र-पति ने कहा है—"मैं अपनी वर्तमान स्थिति की महान् जिम्मेदारी का अनुभव करता हूँ। मैं स्वयं उस समय बंगाल में नहीं रहना चाहता था जब कि दिल्ली में कांग्रेस वर्किङ्ग-कमिटी की बैठक हो रही थी और मुझे उसकी अध्यक्षता करनी थी। परन्तु वहाँ की स्थिति से मुझे वहाँ रुकना ही पड़ा। मैं यह दावे के साथ कहता हूँ कि मेरा पिछला वक्तव्य एकपक्षीय नहीं था बल्कि यदि स्वतन्त्र जाँच की जायगी तो सत्यता प्रमाणित हो जायगी।"

* * *

सरदार पटेल की स्पष्टोक्ति

सरदार पटेल ने पत्र-प्रतिनिधि से बातें करते हुए कहा है—"हम लोगों ने वायसराय को चेतावनी दे दी थी कि यदि बंगाल का उपद्रव रोका न गया तो बिहार में उसका प्रतिकार प्रारम्भ हो जायगा, जिसका असर सारे देश पर पड़ सकता है। इससे स्थिति काबू से बाहर हो सकती है। जहाँ तक स्थिति का सम्बन्ध है, सम्भाव-नाएँ ठीक उतरी हैं।"

* * *

'शासन सर्विस' के अफसरों का वेतन ५००) माहवार

अभी हाल में दिल्ली में प्रान्तीय सर-कार के प्रधान मंत्रियों का एक सम्मेलन हुआ था जिसमें आई० सी० एस० तथा आई० पी० सर्विसों के नियंत्रण पर काफी विवाद रहा। अभी तक इन सर्विसों पर अन्तिम नियंत्रण भारत-मंत्री का रहता है। [illegible] में इन नियंत्रण को अखिलस्व

राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी जिन्होंने हाल ही में पूर्वी बंगाल का दौरा किया है।

में वेतन का क्रम ३५०-४००-४५०-५०० रुपये अधिकांश मत से निश्चित किया गया है। इस सम्मेलन की अध्यक्षता अस्थायी सरकार के गृहमंत्री माननीय सरदार वल्लभ-भाई पटेल ने की जो उन्हीं के द्वारा आयो-जित किया गया था।

* * *

गांधीजी आमरण अनशन करेंगे

डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने पटना में एक रहस्योद्घाटन किया है जिसमें उन्होंने बत-लाया है कि बिहार की हिंसाओं से पीड़ित होकर गांधीजी ने कहा है—यदि बिहार का दंगा बन्द नहीं हो जाता तो वे आमरण अनशन करेंगे।

* * *

पंडित जवाहरलाल नेहरू अत्यन्त क्षुब्ध

भागलपुर में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने हिन्दू - मुसलमानों की एक सभा में बोलते हुए कहा है—आप लोग आपस में एक दूसरे की हत्या करने के पहले मुझे मार डालिए और मेरी लाश के ऊपर से आगे बढ़िए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

साम्प्रदायिक दंगों का परिणाम

"पूर्वी बंगाल में मुसलमानों द्वारा अमानुषिक बर्बरता की प्रतिक्रिया ने बिहार में एक गहन साम्प्रदायिक तनातनी पैदा कर दी है और जिसका होना स्वाभाविक है।" साम्प्रदायिकता के नाम पर बर्बरतापूर्ण अत्याचारों का उत्तर शान्ति और क्षमा से नहीं दिया जा सकता। पूर्वी बंगाल के मुसलमानों का असभ्यतापूर्ण अत्याचार वहाँ के हिन्दुत्व को जड़-मूल से साफ कर देने में उभड़ पड़ा था फिर भी वहाँ की मुस्लिम लीगी सरकार उसको छिपाती थी। समाचारपत्रों के पन्ने, वायसराय और भारत-मंत्री के पास दया के लिए पत्र और तार जब सुने नहीं जाते तो दूसरी दवा क्या थी? यदि मुसलमान गुंडे पूर्वी बंगाल से हिन्दुत्व का अन्त कर देना चाहते थे तो यह कोई नई बात नहीं कि बिहार अपने उन हिन्दू भाइयों का रक्तपात और स्त्रियों का अपहरण चुपचाप देखता रहे। बिहार का दंगा तो बंगाल के आततायियों का पैदा किया हुआ है। मुस्लिम लीग के तानाशाह कायदे आजम जिन्ना ने 'प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस' द्वारा कलकत्ते में जो विष बोया था वह बढ़कर नोआखाली और टिपरा आदि में जा फैला। उस 'प्रत्यक्ष कार्रवाई' का स्पष्ट परिणाम सामूहिक हत्या, लूट तथा आग लगाना ही सिद्ध होता है। फिर बिहार में यदि उसकी प्रतिक्रिया होती है तो क्या कोई नई बात है। यदि बिहार के दंगे को बन्द करना है तो पूर्वी बंगाल में लीग के नेताओं को सच्ची और शुद्ध भावना से जाकर वहाँ की स्थिति को सँभालना चाहिए। तभी बिहार की स्थिति सुधर सकती है वरना ऐसी ही स्थिति अन्य प्रान्तों में भी पैदा हो सकती है।

अभी अभी नेताओं और वायसराय ने बंगाल का दौरा किया है। जिस समय पूर्वी बंगाल का उपद्रव अपनी पराकाष्ठा पर था उस समय वायसराय ने उस ओर जरा भी ध्यान नहीं दिया। इतने दिन बाद वे पूर्वी बंगाल क्यों गये इसका कारण वे ही जानें। परन्तु हम अपने नेताओं से यह कहना चाहते हैं कि उन लोगों ने अस्थायी सरकार में रहकर भी बंगाल की स्थिति पर कुछ नहीं किया। उन्हें चाहिए था कि वे वायसराय को बंगाल के लीगी मंत्रिमंडल को तोड़ देने के लिए बाध्य करते। यदि वायसराय न तैयार होते तो उन्हें अस्थायी सरकार से हट आना था। जो हुआ उस पर विचार नहीं करना है किन्तु कांग्रेस इस मामले में चुप न थी। हमारे मनोनीत राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी पूर्वी बंगाल का दौरा करने निकले। उन्होंने क्षतिग्रस्त क्षेत्रों को निकट से देखा और सच्ची रिपोर्ट भी दी है। बंगाल की लीगी सरकार चाहे मौन ही हो, पर वहाँ की प्रान्तीय मुस्लिम लीग ने राष्ट्रपति की रिपोर्ट के ऊपर रोष प्रकट किया है। राष्ट्रपति कृपलानी ने अपने दूसरे [illegible] में उसी रिपोर्ट की [illegible]

ऊपर जो विचार प्रकट किया है वह मानवता की दृष्टि से बहुत ऊँचा है। हिन्दुओं को इस बर्बरता से बचने के लिए संगठित होकर शक्ति पैदा करनी चाहिए। हिन्दू-मुस्लिम एकता के नाम पर हिन्दुओं ने बहुत कुछ त्याग और सहयोग किया है पर यदि मुसलमानों द्वारा उसका यही जवाब है तो हिन्दुओं को अवश्य महामना मालवीयजी के उपदेशों को मानकर हिन्दुत्व की, मानवता की रक्षा के लिए कार्य करना चाहिए।

बंगाल की लीगी सरकार इन सबको देखते हुए अब भी हिन्दुओं के विरुद्ध अपना कार्य-क्रम बनाती चली जा रही है। कलकत्ता के दंगे के लिए कौन जिम्मेदार है? किन कारणों से दंगा शुरू हुआ? इस पर जब दृष्टि जाती है तो स्पष्ट हो जाता है कि 'प्रत्यक्ष कार्रवाई-दिवस' लीग द्वारा पैदा हुआ; उसी ने वहाँ दंगा शुरू किया, लूट मचाई और आग लगाकर बर्बादी की। हिन्दुओं पर डेढ़ लाख का सामूहिक जुर्माना किया तो मुसलमानों पर केवल ४० हजार! यह कैसा व्यवहार है? आसाम में मुस्लिम लीग के डिप्टी लीडर (उपनेता) को वहाँ के मजिस्ट्रेट ने झगड़े के सम्बन्ध में गिरफ्तार किया है। परन्तु पूर्वी बंगाल में ६ मुस्लिम लीगियों से, जो मुसलमानों को हिन्दुओं के विरुद्ध भड़काते थे, आज तक कोई जवाब भी नहीं माँगा गया। यह धारणा दूसरे प्रान्तों के हिन्दुओं पर क्या प्रभाव डालेगी?

यदि कोई सुदृढ़ कार्रवाई न हुई तो दूसरे प्रांतों से भी बिहार जैसी घटनाओं की प्रतिक्रिया हो सकती है। पंडित जवाहरलाल नेहरू और अन्य नेताओं ने बंगाल का दौरा किया है। यदि वहाँ की अयोग्य सरकार को हटाने में वे कुछ न कर सके तो इसका परिणाम ही क्या?

बंगाल के बाहर कितनी ही जगहों में मुसलमान बंगाल की हिन्दू स्त्रियों को भगा कर जाते हुए पकड़े गये हैं और कितनी ही जगहों पर हिन्दू स्त्रियों का उद्धार हुआ है। प्रमुख पंडितों ने भी ऐसी स्त्रियों से विवाह करने की हिन्दुओं से सिफारिश की है। यह प्रसन्नता की बात है कि कितने ही हिन्दू नवयुवकों ने ऐसी स्त्रियों से बिना किसी खर्च के शादी करने की राय प्रकट की है।

उपर्युक्त विवरण और घटनाओं से प्रकट होता है कि बंगाल के ये जघन्य अत्याचार संगठित रूप से शुरू किये गये थे। बंगाल के गैर जिम्मेदार एम० एल० ए० आदि ने अपनी जोशीली वक्तृताओं से इस उपद्रव को पैदा किया था। इससे इस उपद्रव की सच्ची जाँच करने के लिए यह आवश्यक है कि एक निष्पक्ष अदालत बैठे जिसमें पूर्वी क्षेत्र के हिन्दुओं की सच्ची रिपोर्ट जानने और सच्ची गवाही देने के लिए यह आश्वासन मिले कि प्रमाण देनेवालों पर भविष्य में आक्रमण न होने पावेंगे और अपराधियों को कड़ी सजाएँ दी जायँगी।

* *

फारस का तेल

रूस और फारस के साथ एक सन्धि हुई है जिसके द्वारा रूसी-फारस आयल कम्पनी (रूस और फारस की तेल कम्पनी) स्थापित होगी। यह समाचार ब्रिटिश सरकार को रुचिकर थोड़े ही हो सकता है, क्योंकि फारस के तेल पर ब्रिटिश सरकार एकाधिपत्य रखने की आशा में थी।

* * *

अमरीकन तलाक

विगत ३ वर्षों में अमरीका में ३० प्रतिशत शादियाँ तोड़ दी गई हैं। अमरीका में यों लगातार तलाक होने से सिद्ध होता है कि भविष्य में वहाँ के गार्हस्थ्य-जीवन को इससे गहरा धक्का लगेगा।

* * *

मद्रास के प्रधान मंत्री श्री टी०

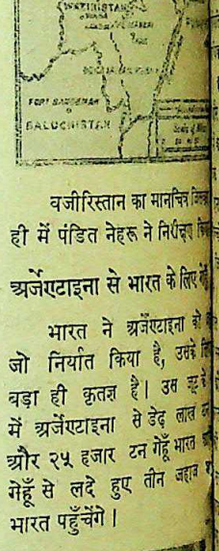

वजीरिस्तान का मानचित्र जिस

अर्जेण्टाइना से भारत के लिए

भारत ने अर्जेण्टाइना को जो निर्यात किया है, उससे बड़ा ही कृतज्ञ है। उस में अर्जेण्टाइना से डेढ़ लाख और २५ हजार टन गेहूँ भारत गेहूँ से लदे हुए तीन जहाज भारत पहुँचेंगे।

इस सभा में भाषण दे रहे हैं। उनकी दाहिनी ओर खाँ बैठे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाजवाद-प्रवर्तक कार्ल मार्क्स

क्रान्तिकारी विचारद्रष्टा के गहन सिद्धान्त

लेखक, श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

[३]

कहने के लिए तो रूस मार्क्स का अनुयायी है; लेकिन मार्क्सवाद के साथ-साथ वहाँ लेनिनवाद और स्टालिनवाद का भी अपना महत्त्व है। मार्क्सवाद की नकाब लगाकर रूस दुनिया की राजनीतिक घटनाओं को किस प्रकार देखता है और मार्क्स के सिद्धान्त क्या हैं, यही इस लेख में दर्शाया गया है।

ही पाते हैं और न उस पर कोई नियन्त्रण कर सकते हैं। 'कैपीटल' द्वारा अमानवीयता के अभियोगों और एक शताब्दि के सुधारों के होते हुए भी पूँजीपतियों का वही रंग-ढंग है। हाँ, इस ढंग में विश्वास करनेवालों के लिए मार्क्स के अभियोग एक चुनौती हैं। श्रमिकवर्ग के सुधारों के लिए की गई माँगों का मार्क्स ने विरोध नहीं किया। अर्थ-शास्त्रियों, लोकोपकारियों, मानव-हितवादियों, श्रमिकवर्ग की स्थिति में सुधार करनेवालों, दान-पुण्य के व्यवस्थापकों और पशुओं [illegible] क्रूरता न करनेवाली सम्मिति[illegible]ज्यवादी आदि [illegible]ाह कहाँ? भारतीय [illegible]द्धार सेना के किसी भी सैनिक को अपने ऊँचे अफसरों से रत्ती भर भी डर नहीं

आजाद हिन्द सरकार के प्रधान नेताजी सुभाषचन्द्र बोस।

था। उनमें परस्पर भाई-चारे का वर्ताव था। नेताजी के व्यक्तिगत नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय सैन्य एक कुटुम्ब था। भारतीय राष्ट्रीय सेना का यह रहस्य था कि समय आते ही वह एक बड़ी संस्था बन गई।

जुलाई सन् १९४३ को नेताजी [illegible] पहुँचे [illegible] इन बाद उन्होंने थे। ऐसे लोगों की समझौते से भरी बातों पर उसकी आस्था नहीं थी। श्रमिकवर्ग की स्थिति में कितना ही सुधार क्यों न हो जाय, निर्णायक समझौता हरगिज संभव नहीं—इसके लिए तो वर्गयुद्ध करना ही होगा। मार्क्स की समझ में सारे समाज के ढाँचे में एक क्रान्तिकारी परिवर्त्तन हुए बिना इस युद्ध का अन्त नहीं हो सकता अथवा यह भी कहा जा सकता है कि स्पर्द्धा करनेवाले वर्ग का जब तक नाश नहीं होता, तब तक श्रमिकवर्ग की समस्याओं [illegible] हल सम्भव नहीं। [illegible] समर्थक था और [illegible] जोह रहा था। [illegible] सुधार की [illegible] कर दिखलाने [illegible] श्रमिकवर्ग [illegible] युक्त समय [illegible] प्रतीक्षा करनी पड़ी। उसका विश्वास था कि श्रमिकवर्ग की विजय तभी होगी, जब पहले मध्यम श्रेणीवाले प्रजातन्त्रवादियों से अस्थायी मैत्री की जाय और इसके पश्चात् राजतन्त्र और अमीरी के खिलाफ विद्रोह किया जाय।

सन् १८५० ई० में मार्क्स ने कम्युनिस्ट लीग को अनेक महत्त्वपूर्ण हिदायतें दीं, जिनमें विपक्षियों से मोर्चा लेते समय ध्यान में रखी जानेवाली बातों और विजय के पश्चात् श्रमिकों के काम करने के तरीकों [illegible] में—[illegible] गया था। इन में दो चीजों की [illegible] ने अपने राष्ट्रीय सेना और (२) राष्ट्रीय सरकार [illegible] युद्ध में सेना का नेतृत्व करे।" नेताजी ने २१ अक्टूबर सन् १९४३ को जो यह घोषणा की थी वह एक ऐतिहासिक सबूत है। भारतवर्ष के उस स्वतन्त्रता आन्दोलन से इसका सम्बन्ध है जो १७५७ ईसवी में प्लासी के युद्ध से भारतीय राष्ट्रीय सेना और भारत की स्वतन्त्र सरकार के निर्माण तक हुआ है। आज घोषणा की तीसरी वर्षगाँठ पर नेताजी के प्रभावित करनेवाले शब्दों का सारांश सचमुच बड़ा उपयोगी होगा। नेताजी ने घोषणा के सम्बन्ध में कहा था—

"इस समय स्वतन्त्रता का प्रभाव हमारे सामने है। भारतवासी अपनी अस्थायी सरकार स्थापित कर लें और सरकार के झंडे के नीचे अन्तिम युद्ध छेड़ दें। परन्तु भारत के सारे नेताओं के जेल में होने और जनता के एकदम निरस्त्र होने के कारण यह सम्भव नहीं कि भारतवर्ष के भीतर कोई भी अस्थायी सरकार उस सरकार के आश्रय में स्थापित की जाय। इसलिए पूर्वी एशिया का भारतीय स्वतन्त्रता संघ (जिसके तमाम देशभक्त भारतीय देश और विदेश में समर्थक हैं) इस कार्य को सँभाले। आजाद हिन्द की अस्थायी सरकार की स्थापना कार्य और स्वतन्त्रता के लिए अन्तिम [illegible] का नेतृत्व करने के लिए आजाद हिन्द फौज का संघ-द्वारा संगठन होना कहा था कि श्रमिकवर्ग की यह क्रान्ति तब तक चलती रहेगी, जब तक कि तत्कालीन सत्ताधारी श्रेणी की शक्ति छीन न ली जायगी और श्रमिकवर्ग के हाथों शासन-सूत्र न आ जायगा। यह तब तक चलती रहेगी जब तक कि दुनिया के अन्य प्रभुत्व-सम्पन्न देश इतने आगे न बढ़ जायँगे कि श्रमिकों के प्रति होनेवाली उनकी प्रतिस्पर्द्धा समाप्त हो चुकेगी और निर्णायक [illegible] शक्तियाँ जब तक श्रमिकों के समाज को बेहतर बनाने का भी प्रश्न हमारे सामने नहीं है; बल्कि एक नवीन समाज की स्थापना का प्रश्न उपस्थित है।

इनके सिद्धान्त-पत्र (मेनीफेस्टो) में यह लक्ष्य अंकित किया गया था—"कम्युनिस्ट खुले रूप में यह घोषणा करते हैं कि उनका उद्देश्य वर्तमान समाज-व्यवस्था को उखाड़कर फेंक देने पर ही सफल हो सकता है।·····श्रमिकवर्ग इसमें कुछ भी नहीं खोयेगा; हाँ, उसके बन्धन अवश्य टूट जायँगे। उन्हें एक दुनिया पर विजय प्राप्त करनी है। सभी देशों के श्रमिक, संगठित हो जाओ।"

मार्क्स क्या चाहता था?

चतुराई से भरे हुए अपने कुशल वक्तव्यों द्वारा मार्क्स वास्तव में क्या चाहता था, उसका क्या अर्थ था, इस पर उसके अनुयायियों में गहरा मतभेद रह चुका है। इसे एक मजेदार बात ही कहना चाहिए कि मार्क्स ने कभी किसी भाषण में उस पार्टी की बात नहीं की, जिसकी वह स्थापना करना चाहता था। सिद्धान्त-पत्र में उसने यही लिखा था कि श्रमिकों की जो पार्टियाँ हैं, उनसे भिन्न पार्टी की स्थापना कम्युनिस्ट नहीं करना चाहते। किसी पार्टी की तानाशाही का भी उसने विचार नहीं किया। हाँ, इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि अपने लक्ष्य की पूर्त्ति के लिए श्रमिकों की उस तानाशाही का वह हिमायती था, जो वर्गहीन समाज की स्थापना के लिए युद्ध कर सके और [illegible] के लिए किसी शिक्षितों की संस्था के प्रतिनिधित्व में भी उसका विश्वास था। [illegible]किन उसने न तो कभी ऐसी सर्वव्यापी राष्ट्र देखी ही थी और न स्वप्न तक में करना की कल्पना की होगी, जैसी कि आज धूर्त्तता [illegible] शासन कर रही है।

करना है [illegible]ाशाही' शब्द का प्रयोग मार्क्स ने ईश्वर [illegible] व्यक्तिगत पत्र में सन् १८७५ जनता के [illegible] किया था। परन्तु उसने किस अर्थ नाम [illegible] प्रयुक्त किया अर्थात् इस शब्द से पर [illegible] का वास्तविक आशय क्या था, इस पर काफी वादविवाद होता रहा। हाँ, इतना स्पष्ट है कि उसी पत्र में मार्क्स ने स्वतन्त्रता की परिभाषा करते हुए लिखा था कि स्वतन्त्रता वह स्थिति है जिसमें राष्ट्र अथवा राज्य समाज के अधीन रहे। और, एंजिल्स ने श्रमिक तानाशाही को 'प्रजातन्त्रीय शासन' का समकक्षीय बतलाया है। इन विचार-विन्दुओं में जो विभेद है, उसके आधार पर यह समझ सकना टेढ़ी खीर है कि मार्क्स इस सम्बन्ध में क्या चाहता था।

कुछ अनुयायियों का विश्वास है कि इसका अर्थ राजनीतिक प्रजातन्त्र है—ऐसा जिसमें श्रमिकवर्ग आर्थिक साधनों को पूँजीपतियों के खिलाफ प्रेरित कर सके। उस स्थिति में इस पार्टी का काम शासन करना न रह जायगा; बल्कि श्रमिकों को शिक्षित और उनका नेतृत्त्व करने का ही रह जायगा। इस परिवर्त्तित विचार-धारा का [illegible] प्रारम्भ में मार्क्स [illegible] नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुस्लिम लीग किधर जा रही है ?

बंगाल के क रनामों से मुसलमानों में असन्तोष !

लेखक श्री श्यामबिहारी विरागी, बी० ए०

मुस्लिम लीग की नीति क्या है, वह कांग्रेस से क्यों शत्रुता रखती है, मुस्लिम लीगी मन्त्रिमंडल के शासन में बङ्गाल के मुसलमान हिन्दुओं की हत्या और संस्कृति का विनाश क्यों अन्धाधुन्ध कर रहे हैं, इस पर लेखक ने प्रकाश डाला है। पाठक इस पर विचार करें।

लीग के विधाता मि० जिन्ना।

थोड़े ही दिन हुए कि करांची में कायदे आजम जिन्ना के दायें हाथ, मुस्लिम लीग के प्रधान मंत्री नवाबजादा लियाकत-अली खाँ ने अपने भाषण ये में मुस्लिम लीग की नीति काफी खुले शब्दों में बतलाई है। उनके भाषण का सारांश यह है:—

१—कांग्रेस मुस्लिम लीग की शत्रु है। अतएव कांग्रेस जो कुछ भी करना चाहेगी, मुस्लिम लीग की नीति सदैव उसके विरुद्ध करने की होगी। कांग्रेस मुस्लिम लीग को अस्थायी सरकार से अलग रखना चाहती थी अतएव मुस्लिम लीग ने इसके विपरीत अस्थायी सरकार में जाने का निश्चय किया है।

२—अस्थायी सरकार शान्तिपूर्वक तभी चल सकेगी जब कांग्रेस मुस्लिम लीग को बिलकुल बराबरी का दर्जा देगी। अस्थायी सरकार में लीग के सदस्य हर एक प्रश्न को साम्प्रदायिक दृष्टि से देखेंगे और उस काम का घोर विरोध करेंगे जिससे मुस्लिम हित का हनन होगा।

३—मुस्लिम लीग का अस्थायी सरकार में शामिल होने का निश्चय बम्बई अति मुस्लिम लीग द्वारा स्वीकृत प्रत्यक्ष क अन्य के प्रस्ताव से विपरीत नहीं। अतएव लीग को अपना आदर्श, पाकिस्तान हासिल करने के लिए लड़ाई की तैयारी समय प्रकार की ढील न देनी चाहिए। इस पर तोड़ना लीग की नीति आज भी है।

४—अस्थायी सरकार में मुस्लिम लीग ने एक दलित जाति का सदस्य इसलिए लिया है कि पाकिस्तान की लड़ाई जीतने में अल्पसंख्यकों की सहायता मिले।

मुस्लिम लीग के एक बहुत जिम्मेदार आदमी के मुँह से निकली हुई ये बातें आसानी से टाली नहीं जा सकतीं। अतएव यह आवश्यक है कि निष्पक्ष रूप से इस पर विचार किया जाय और मुस्लिम लीग की वास्तविक नीति को समझने की कोशिश की जाय।

हिन्दुस्तान की एकमात्र राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस है। परन्तु कांग्रेस की रूपरेखा मुस्लिम लीग के तानाशाह कायदेआजम जिन्ना की दृष्टि में राष्ट्रीय नहीं। वे इसे हिन्दुओं की एक जमात समझते हैं जिसका उद्देश्य भारत से अँगरेजी हुकूमत को हटाकर हिन्दुओं का राज्य कायम करना है। उनका विश्वास है कि कांग्रेस-द्वारा संचालित सरकार में मुसलमानों [illegible] अतएव [illegible]

करने के लिए मुस्लिम लीग के नाम पर एक संगठित ताकत ऐसे अमानुषिक काम कर रही है, जिनकी कल्पना कोई भी भला आदमी नहीं कर सकता। बंगाल में आज मुस्लिम लीग का मंत्रिमंडल शासन कर रहा है। हिन्दू लोग मुस्लिम लीग के शत्रु हैं अतएव अपने मंत्रिमंडल की हुकूमत में लीग अपने शत्रुओं का नाश करे तो आश्चर्य ही क्या। हाँ, एक बात का भ्रम अवश्य था। कायदेआजम तथा उनके लेफ्टिनेंट लियाकतअली खाँ ने लीग द्वारा स्वीकृत प्रत्यक्ष कार्रवाईवाले प्रस्ताव के बाद अपने वक्तव्यों द्वारा यह [illegible] प्रत्यक्ष कार्रवाई हिन्दुओं पर डेढ़ लाख [illegible] आर्थिक जुर्माना किया तो मुसलमानों पर केवल ४० हजार! यह कैसा व्यवहार है? आसाम में मुस्लिम लीग के डिप्टी लीडर (उपनेता) को वहाँ के मजिस्ट्रेट ने झगड़े के सम्बन्ध में गिरफ्तार किया है। परन्तु पूर्वी बंगाल में ६ मुस्लिम लीगियों से, जो मुसलमानों को हिन्दुओं के विरुद्ध भड़काते थे, आज तक कोई जवाब भी नहीं माँगा गया। यह धारणा दूसरे प्रान्तों के हिन्दुओं पर क्या प्रभाव डालेगी?

यदि कोई सुदृढ़ कार्रवाई न हुई तो दूसरे प्रांतों से भी बिहार जैसी घटनाओं की प्रतिक्रिया हो सकती है। पंडित जवाहरलाल नेहरू और अन्य नेताओं ने बंगाल का दौरा किया है। यदि वहाँ की अयोग्य सरकार को हटाने में वे कुछ न कर सके तो इसका परिणाम ही क्या?

संसार के किस देश में इस ढंग की साम्प्रदायिक संस्थाओं को राजनीतिक क्षेत्र में इतना महत्त्व मिल रहा है? किसी साम्प्रदायिक संस्था को वास्तव में यह कहीं हक नहीं होना चाहिए कि वह उस देश के शासन में भाग ले। अगर मुस्लिम लीग एक साम्प्रदायिक संस्था है जो किसी विशेष धर्म को लेकर कटुता फैला रही है तो फिर उसे क्या हक है कि उसके हाथ में किसी प्रकार का शासन दिया जाय? ऐसी संस्थाओं को तो वैधानिक नियमों द्वारा राजनीति में हिस्सा लेने से रोक देना चाहिए। परन्तु आज वाइसराय मुस्लिम लीग को अस्थायी

फारस का तेल

के लिए इतने लालायित

रूस और फारस के साथ [illegible] ब्रिटिश हुई है जिसके द्वारा रूसी-फारस आयल कम्पनी (रूस और फारस की तेल कम्पनी) स्थापित होगी। यह समाचार ब्रिटिश सरकार को रुचिकर थोड़े ही हो सकता है, क्योंकि फारस के तेल पर ब्रिटिश सरकार एकाधिपत्य रखने की आशा में थी।

* * *

अमरीकन तलाक

विगत ३ वर्षों में अमरीका में ३० प्रतिशत शादियाँ तोड़ दी गई हैं। अमरीका में यों लगातार तलाक होने से सिद्ध होता है कि भविष्य में वहाँ के गार्हस्थ्य-जीवन को इससे गहरा धक्का लगेगा।

* * *

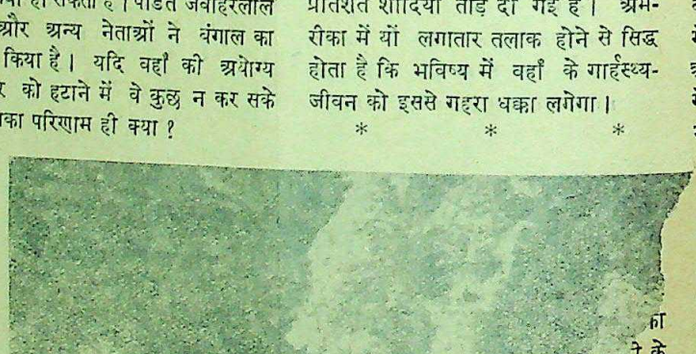

आज सुहरावर्दी की सरकार अटल खड़ी होकर आये दिन अमानुषिक हत्याएँ होने दे रही है? जिन सूबों में आज कांग्रेस मन्त्रिमंडल का शासन है वहाँ, बात की बात में, सैकड़ों नोआखाली तथा कलकत्ता हत्याकाण्ड पैदा हो सकते हैं, परन्तु क्यों नहीं हो रहे हैं? कांग्रेस मन्त्रिमंडल अपने सूबों में जब शान्ति रख सकते हैं तो क्या बंगाल में नरहत्या काण्ड नहीं रोका जा सकता? वजीरिस्तान में नेहरूजी के [illegible] उस लड़ाई लेनी है। इधर जो जो घटनाएँ हुई हैं और हो रही हैं वे वाइसराय से छिपी नहीं हैं। इस समय आवश्यकता है सख्त कार्रवाई की। देखना है ब्रिटिश साम्राज्यवाद इस परीक्षा में कहाँ तक सफल होता है।

बंगाल के दुलमुल लीगी [illegible] मि० फजलुल हक।

अस्थायी सरकार में जानेके [illegible] सदस्यों में एक दलित जाति के [illegible] नवाबजादा साहब के कथनानुसार [illegible] अल्पसंख्यकों की सहायता से [illegible] लेना चाहती है। गैर मुस्लिम [illegible] लीग को पाकिस्तान के लिए [illegible] यह बात अभी समझ में नहीं आ [illegible] पाकिस्तान में गैर मुस्लिम [illegible] को क्या विशेष सुविधा मिलेगी, [illegible] व्याख्या अभी तक कायदे आजम [illegible] की ही नहीं। लीग की हरकतों [illegible] रूर पता चल रहा है कि उनकी [illegible] किस्तान में बहुत बुरी होगी। [illegible] का सबूत है जहाँ के गैर मुस्लमान [illegible]

क भेड़-बकरियों की तरह [illegible] ही में प पर काटे जा रहे हैं, [illegible] लात्कार हो रहा है, लड़कियाँ [illegible] अजगर हैं और धर्म-परिवर्तन के [illegible] र किया जा रहा है। यदि [illegible] जो र मुस्लिम अल्पसंख्यकों [illegible] बड़ा सुविधाएँ हैं जो आज पूर्व [illegible] में आ रही हैं तो कम से कम [illegible] और शंका है कि मुस्लिम लीग [illegible] नीति में कहाँ तक सफल हो [illegible] गेहूँ इस समय मुस्लिम लीग [illegible] भ वैया है उससे तेजी के साथ [illegible] में घृणा और द्वेष का प्रचार हो [illegible] भारत के राष्ट्रीय नेताओं के [illegible] आधुनिक घटनाओं से काफी [illegible] हो गई है। वे इस पर गम्भीरता [illegible] कर रहे हैं। एक बात तो [illegible] सबको स्पष्ट हो ही गई है कि [illegible] लीग से अब आन्तरिक मेल होना [illegible] है। वजीरिस्तान से लौटने [illegible] सरदारयाद में खुदाई खिदमतगार [illegible] सामने भाषण देते हुए पंडित जवाहर [illegible] नेहरू ने कहा था कि मुस्लिम लीग [illegible] साम्प्रदायिक घृणा का बीज [illegible] उसका फल कड़ुवा ही होगा। [illegible] चेतावनी दी है कि घृणा के [illegible] ही मिलेगी और जो युद्ध के [illegible] उसे आगे चलकर युद्ध से [illegible] करना पड़ेगा।

नई पुस्तक

कामायनी-अनुशीलन

महाकवि 'प्रसाद' का महाकाव्य 'कामायनी' बहुत प्रसिद्ध है। पर [illegible] इस पर अनेक समीक्षकों के विचार पत्रों में [illegible] इस पुस्तक में लेखक रामलालसिंह एम० ए० [illegible] का ऐतिहासिक तत्त्व, प्रकृति वर्णन, चरित्र-चित्रण, छंद विधान, रस संचार, कामायनी का संदेश, प्रेम-निरूपण आदि शीर्षकों में बड़ी मार्मिकता से [illegible] ढाई सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य [illegible]

[illegible] न प्रेस, लि०, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ० हिन्द-सरकार का जन्म-दिवस

भारत के लिए २१ अक्टूबर एक पर्व है

लेखक, श्री गोपीनाथ

२१ अक्टूबर को नेताजी श्री सुभाषचन्द्र बोस ने सिंगापुर में आजाद हिन्द-सरकार की स्थापना की थी। चूँकि भारत अभी आजाद नहीं है। अतः अग्रगामी दल ही नहीं बल्कि देश के अन्य दल भी उस दिन को आजाद भारत का एक पर्व-दिन मानते हैं। लेख में तारीख २१ अक्टूबर के गौरव की महिमा का वर्णन है।

झाँसी की रानी ब्रिगेड की प्रधान कर्नल लक्ष्मीबाई।

आजाद हिन्द फौज के सेनानायक जनरल शाहनेवाज।

२१ अक्टूबर भारतीय स्वतन्त्रता-[illegible] का एक स्वर्णिम दिवस है, [illegible] सन् १९४३ में इसी दिन श्री [illegible] ने सिंगापुर में पूर्वी एशिया [illegible] के एक बड़े समूह के सामने [illegible] की अस्थायी सरकार बनाने [illegible] थी। आजाद हिन्द सरकार [illegible] राष्ट्रीय सेना का मुख्य कार्य [illegible] प्रचार को झूठा करना [illegible] भारतीयों को शासन करने [illegible] सकते हैं। अँगरेजों ने मशहूर [illegible] कि भारतीय अच्छे सिपाही [illegible] उसे अफसर नहीं हो सकते। [illegible] कमीशन ने कहा [illegible] राष्ट्रीय सेना को पूर्णरूपेण [illegible] की और अफसरों का [illegible] कार्य है। नेताजी ने [illegible] कि भारतीयों द्वारा भार-[illegible] सरकार और सेना [illegible] ही, बल्कि भारतीयों [illegible] दिखलाया है जिसको [illegible] सकते।

राष्ट्रीय सेना—एक शक्तिशाली संस्था

[illegible] ने अँगरेजों द्वारा युद्धप्रिय [illegible] जातियों [illegible] की पुरानी नीति का [illegible]। भारतीय राष्ट्रीय सेना [illegible] आर्मी) सारे भारत के [illegible] लोगों से बनी थी। इस [illegible] व्यक्तियों को ठीक सैनिक [illegible] थी। इन सैनिकों में [illegible] पूर्व एशियाई देशों में [illegible] आबाद थे। नेताजी [illegible] जिन्होंने दो वर्ष के [illegible] राष्ट्रीय सेना खड़ी कर [illegible] के लिए बड़ा कठिन [illegible] उस समय कपड़े का अभाव, भोजन की कमी आदि उनको बहुत परेशान कर रही थी। आजाद हिन्द-सेना के सामने से दिक्कतें हटने पर उस युद्ध की अमर कहानी स्वर्णाक्षरों में लिखी जायगी, जो इस सेना द्वारा दक्षिण-पूर्व एशिया में वीरता से लड़ा गया था। भारतीय राष्ट्रीय सेना के सैनिक अपनी मातृ-भूमि को पुनः स्वतन्त्र करने के लिए लड़ रहे थे। वे दूसरों के मूल्यवान् अधिकारों को छीनना नहीं चाहते थे। भारतीय राष्ट्रीय सेना के युद्धप्रिय सैनिकों का हृदय अत्यधिक उत्साह से ओत-प्रोत था। किसी भी सेना में नैतिकता को कायम रखना महान् कार्य है। यह भावना भारतीय राष्ट्रीय सेना में मौजूद थी। साम्राज्यवादी सेनाओं में ऐसा उत्साह कहाँ? भारतीय राष्ट्रीय सेना के किसी भी सैनिक को अपने ऊँचे अफसरों से रत्ती भर भी डर नहीं

आजाद हिन्द सरकार के प्रधान नेताजी सुभाषचन्द्र बोस।

था। उनमें परस्पर भाई-चारे का बर्ताव था। नेताजी के व्यक्तिगत नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय सैन्य एक कुटुम्ब था। भारतीय राष्ट्रीय सेना का यह रहस्य था कि समय बदलते ही वह एक बड़ी संस्था बन जायगी।

घोषणा

२ जुलाई सन् १९४३ को नेताजी सिंगापुर पहुँचे। दो दिन बाद उन्होंने प्रसिद्ध कैथे इमारत में पूर्वी एशियाई भारतीयों की एक बड़ी सभा में भाषण दिया। सिंगापुर पहुँचते ही नेताजी ने भारतीय-स्वतन्त्रता-संघ (इंडियन इंडिपेण्डेंस लीग) का कार्य अपने हाथ में ले लिया। भारतीय राष्ट्रीय सेना शीघ्र ही बन गई और पाँच तारीख को बाकायदे इसकी घोषणा कर दी गई। नेताजी ने आई० एन० ए० की स्थापना का उद्देश्य एक बड़ी सभा में जनता को समझाया। इसके अतिरिक्त जो साढ़े बारह लाख भ[illegible] आबाद हैं उनसे [illegible] भारतीय स्वतन्त्र[illegible] अपील की। [illegible] वृत सरकार [illegible] या संघ के [illegible]

इस कठिनाई को दूर करने के लिए उन १२॥ लाख भारतीयों की अपनी 'आजाद हिन्द-सरकार' कायम हुई। स्वतन्त्र भारत की सरकार बनाने की कानूनी घोषणा पूर्वी एशिया के तमाम भागों से आये हुए प्रतिनिधियों के एक सम्मेलन में हुई। यह सम्मेलन २१ अक्टूबर सन् १९४३ को सिंगापुर की ऐतिहासिक कैथे इमारत में हुआ। प्रतिनिधियों ने स्वतन्त्र भारत की अस्थायी सरकार के प्रधान नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के सम्मुख राजभक्ति की शपथ ली। आजाद हिन्द-सरकार के निर्माण की आवश्यकता बतलाते हुए नेताजी ने कहा—"भारत के स्वतंत्रता-संग्राम में दो चीजों की कमी है—(१) राष्ट्रीय सेना और (२) राष्ट्रीय सरकार जो युद्ध में सेना का नेतृत्व करे।" नेताजी ने २१ अक्टूबर सन् १९४३ को जो यह घोषणा की थी वह एक ऐतिहासिक सबूत है। भारतवर्ष के उस स्वतन्त्रता आन्दोलन से इसका सम्बन्ध है जो १७५७ ईसवी में प्लासी के युद्ध से भारतीय राष्ट्रीय सेना और भारत की स्वतन्त्र सरकार के निर्माण तक हुआ है। आज घोषणा की तीसरी वर्षगाँठ पर नेताजी के प्रभावित करनेवाले शब्दों का सारांश सचमुच बड़ा उपयोगी होगा। नेताजी ने घोषणा के सम्बन्ध में कहा था—

"इस समय स्वतन्त्रता का प्रभाव हमारे सामने है। भारतवासी अपनी अस्थायी सरकार स्थापित कर लें और सरकार के झंडे के नीचे अन्तिम युद्ध छेड़ दें। परन्तु भारत के सारे नेताओं के जेल में होने और जनता के एकदम निरस्त्र होने के कारण यह सम्भव नहीं कि भारतवर्ष के भीतर कोई भी अस्थायी सरकार उस सरकार के आश्रय में स्थापित की जाय। इसलिए पूर्वी एशिया का भारतीय स्वतन्त्रता संघ (जिसके तमाम देशभक्त भारतीय देश और विदेश में समर्थक हैं) इस कार्य को सँभाले। आजाद हिन्द की अस्थायी सरकार की स्थापना का कार्य और स्वतन्त्रता के लिए अन्तिम युद्ध का नेतृत्व करने के लिए आजाद हिन्द-फौज का संघ-द्वारा संगठन होना चाहिए।"

पूर्वी एशिया की इंडियन इंडिपेंडेंस लीग (भारतीय स्वतन्त्रता संघ) द्वारा आजाद हिन्द की अस्थायी सरकार के वैधानिक होते ही हम जिम्मेदारी के साथ अपने कर्तव्य में जुट पड़े। वह जिम्मेदारी हम पर बढ़ती ही गई है। हम प्रार्थना करते हैं कि परम पिता परमेश्वर हमारे कार्यों और युद्ध में अपनी मातृ-भूमि के उद्धार के लिए हमारी सहायता करे। हम अपने जीवन और अपनी फौज के साथियों के [illegible]

से ब्रिटिश और उसके मित्रराष्ट्रों को हटाने के लिए लड़ा जावे। इसके पश्चात् अस्थायी सरकार का कार्य होगा भारत की जनता के इच्छानुसार आजाद हिन्द की स्थायी सरकार स्थापित करना जो भारतीय जनता की विश्वसनीय हो। ब्रिटिश और उसके मित्रराष्ट्र जब भारत से हट जायँ और जब तक स्थायी राष्ट्रीय सरकार भारत में स्थापित न हो जाय तब तक यह अस्थायी सरकार भारतीय जनता की जिम्मेदारी के लिए देश का शासन-भार हाथ में रक्खेगी।

अस्थायी सरकार प्रत्येक भारतीय की राजभक्ति की अधिकारी है और आज से उसके लिए उसका दावा हो जाता है। यह सरकार विश्वास दिलाती है कि प्रत्येक नागरिक को धार्मिक स्वतन्त्रता का और उन्नति का बराबर अधिकार है। अस्थायी सरकार यह घोषित करती है कि इसका मुख्य उद्देश्य सारे राष्ट्र की उन्नति करना और उसके प्रान्तों की समृद्धि बढ़ाना है। राष्ट्र के बच्चों का बराबरी के साथ पालन करना और पहले की शत्रु सरकार-द्वारा धूर्त्तता से सारे झगड़ों के प्रोत्साहन को दूर करना है।

ईश्वर और जिस पीढ़ी ने भारतीय जनता को एक राष्ट्र में बाँध दिया है, उसके नाम पर तथा उन स्वर्गीय वीरों के नाम पर जिन्होंने हमें वीरता और आत्मत्याग की परम्परा की वसीयत दी है—हम भारतीय जनता को आमन्त्रित करते हैं कि हमारे झगड़े के साथ आवें और भारतीय स्वतन्त्रता की प्राप्ति का प्रयत्न करें। हम सभी भारतीयों को भारत में ब्रिटिश और उनके मित्रों के विरुद्ध युद्ध के लिए आमन्त्रित करते हैं। जब तक हमारे देश से शत्रु निकल न जायँ और भारतीय जनता एक बार पुनः स्वतन्त्र न हो जाय, हम अन्तिम विजय तक वीरता और दृढ़ता के साथ युद्ध को जारी रक्खेंगे।

[illegible] के सेनानायक कर्नल [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दशदूत

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशी रियासतों का भविष्य

नरेश लोकसत्ता में परिणत होंगे ?

लेखक, श्री ओंकारलाल बोहरा, साहित्यरत्न

भारतवर्ष की देशी रियासतें यद्यपि ब्रिटिश शासन के अधीन हैं, फिर भी वे अपने को स्वतन्त्र मानती हैं। उनमें बसनेवाली जनता दोहरे शासन में है। राष्ट्रीय जागरण की भावना अब रियासतों में काफी फैल गई है। यदि देशी नरेश उस जागरण की ओर ध्यान न देंगे तो ब्रिटिश शासन के साथ उनका भी अन्त हो जायगा। लेख में देशी रियासतों की वर्तमान स्थिति का सच्चा चित्र है।

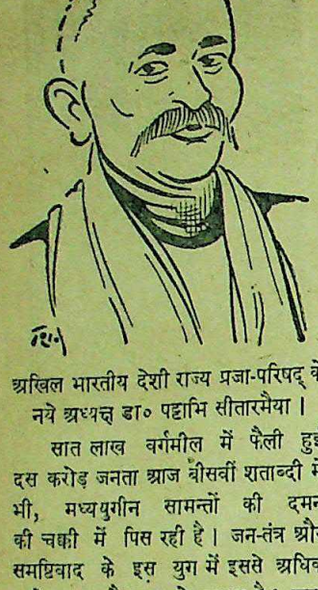

अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा-परिषद् के नये अध्यक्ष डा० पट्टाभि सीतारमैया।

सात लाख वर्गमील में फैली हुई दस करोड़ जनता आज बीसवीं शताब्दी में भी, मध्ययुगीन सामन्तों की दमन की चक्की में पिस रही है। जन-तंत्र और समष्टिवाद के इस युग में इससे अधिक कठोर सत्य और क्या हो सकता है? लगभग ६०० छोटे-मोटे राजे इस समय भी प्रजा की एक बड़ी आय का मनमाना उपयोग कर रहे हैं।

फ्रान्स की राजक्रान्ति आज भी मानव जाति को एक बहुत बड़ा सन्देश और प्रेरणा दे रही है। भारत की देशी रियासतें और उनके शासक उस घटना से सबक लें या न लें। यह उनके कर्त्तव्य और अधिकार की बात है। जनता से कर द्वारा प्राप्त किया हुआ बेशुमार धन अब भी देशी नरेशों की यूरोपीय यात्राओं और नाच-गान का साधन बनता जाता है। यह स्पष्ट है कि देशी रियासतें ब्रिटिश सरकार की इच्छा और कूटनीति का परिणाम है। यदि हेस्टिंग्ज और वेलेजली के उत्तराधिकारी चाहते तो आज सारे भारत का मानचित्र लाल रंग का हो सकता। इसमें भी सन्देह नहीं कि ब्रिटिश कूटनीतिज्ञों की चेष्टा शत-प्रतिशत सफल रही है।

देशी शासकों का भविष्य दस करोड़ जनता का ही भविष्य नहीं बल्कि आज मानव जाति के पाँचवें भाग का जबर्दस्त प्रश्न हो गया है। अतः भारतीय आन्दोलन के प्रवाह में इसे मामूली रोड़ा समझकर इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। देशी रियासतों की दस करोड़ जनता अब जाग उठी है। अब उसमें सुप्तावस्था और उदासीन वृत्ति नहीं है। राष्ट्रीय महासभा के प्रभाव और विशेषतया भारतीय राजनैतिक संघर्षों ने देशी रियासतों की प्रजा को चेतना की दृष्टि से बहुत आगे बढ़ा दिया है। लेकिन चित्र का दूसरा पहलू अब भी कठोर और आँख मूँदकर सत्य की उपेक्षा करना चाहता है। ब्रिटिश सरकार की सहायता के बल पर नरेन्द्र-मंडल और पोलिटिकल डिपार्टमेण्ट के आपसी समझौते चल रहे हैं। सवाल है कि जनता के इस बढ़ते हुए तूफानी उत्साह का उपयोग किया जाय अथवा राजाओं के हृदय-परिवर्तन के लिए अभी इन्तजार करने की जरूरत है। तूफान को डिबिया में बन्द नहीं किया जा सकता। हाँ, उसे अपनी नीति के बल पर शान्त किया जा सकता है, लेकिन उसका [illegible] हमारा [illegible]

देशी रियासतों का आन्दोलन फिर भी ठंडा नहीं पड़ सकता। अब ऐसे नवजवान मैदान में आ रहे हैं जो शायद अधिक तेजी से रियासती जनता का साथ दे सकेंगे।

रियासती जनता निरंकुश शासन से ऊब उठी है। उसका रोम-रोम आज निरंकुशता के प्रतिरोध के लिए तैयार है। हमारा कर्त्तव्य है कि ऐसे अवसर पर हम उनको मदद दें।

देशी रियासतों को अब समाप्त होना है। सुना जाता है कि देशी रियासतों का बँटवारा इस प्रकार किया जायगा कि कुछ तो संघ कायम कर दिये जायँ, कुछ बड़ी रियासतों को बना रहने दिया जाय और कुछ प्रान्तों के साथ मिला दी जायँ। लेकिन रियासती जनता क्या चाहती है, इस तरफ किसी ने ध्यान नहीं दिया। रियासती प्रजा को इस बात का मोह नहीं है कि वह अपने पूर्वजों से चलते आये शासन में ही रहे और वह हुकूमत उसे प्रिय हो। हैदराबाद की जनता से सवाल किया जाय कि स्वतंत्र बड़ी रियासतों के रूप में भारत की इकाई बनाकर रखा जाना क्या तुम्हें पसन्द है तो मेरा विश्वास है कि उनको स्वीकृत न होगा। हैदराबाद की जनता एक हुकूमत में रहते हुए भी अपने सांस्कृतिक रहन-सहन और भाषा-साहित्य की दृष्टि से भिन्न है। मसलन हैदराबाद का उत्तरी-पश्चिमी भाग आन्ध्र के साथ मिलकर, उत्तरी-पूर्वी भाग कर्नाटक के साथ मिलकर और ठेठ दक्षिण का भाग तामिलवालों के साथ रहना पसन्द करेगा। क्या हम उनकी इच्छा के विरुद्ध उनको उसी पुरानी सीमा के कटघरे में बाँधे रहेंगे? साफ है, भाषा के आधार पर प्रान्तों का जो नया विभाजन होगा उसमें देशी रियासतों को अपने-अपने सम्बन्ध और रहन-सहन के आधार पर बाँट दिया जायगा और ऐसा होने पर निश्चित है कि देशी नरेशों का अस्तित्व खतरे में पड़ जायगा।

लेख का विषय है 'देशी रियासतों का भविष्य।' अतः मैं स्पष्ट करना चाहूँगा कि देशी नरेशों का भावी भारत में क्या होगा।

जनता के हाथ में जब सारी ताकत लाना हमारा ध्येय है तो देशी नरेशों की क्या महत्ता है। कुछ नेताओं का विचार है कि वे वैधानिक शासक होंगे। कुछ का खयाल है कि वे अपने-अपने अतीत के अनुसार रत्ना पाने के अधिक[illegible]

विलासमय जीवन बिताया तथा प्रजा को बेबसी की स्थिति में डालकर स्वयं गैर-जिम्मेदार हो गये। इन्होंने प्रजा का धन छीना। प्रजा को धोखा दिया, उनकी माँग को दबाया, ठुकराया, सैकड़ों को खपा दिया। इसका यदि निष्पक्ष निर्णय न्यायालय में कराया जाय तो निश्चय ही ये न तो वैधानिक शासक बनने के अधिकारी ठहरते हैं न सुरक्षा या पेंशन के हकदार। सच तो यह है कि इनको न्यायानुसार दण्ड दिया जा सकता है जिससे भविष्य में कोई निरंकुशतापूर्वक समाज का शोषण न कर सके।

अधिकांश भावुक तथा पुरातन-प्रेमी कहते हैं कि ये हमारी अतीत की स्मृतियाँ हैं, इन्होंने हमारी स्वतन्त्रता के गौरव, हमारे इतिहास तथा संस्कृति की रक्षा की है। अतः हमें इनका उचित सम्मान करना चाहिए। मतलब यह कि वे इनको वैधानिक शासक बनाये रखना चाहते हैं। लेकिन यह प्रश्न इस तरह हल नहीं किया जा सकता। जनतन्त्र के इस युग में हमें जनता की भावनाओं को कसौटी मानकर चलना होगा। आज किसने यह भावना प्रकाशित की है कि हम राजाओं को वैधानिक रूप से पसंद करेंगे? यदि किसी को इनाम दिया जाता है तो उसको जिसने कोई अच्छा काम किया है अथवा हमारे स्वातन्त्र्य-आन्दोलन में हमें सहायता पहुँचाई हो। हमारे अनुभव तो राजाओं के सम्बन्ध में श्री देवसुमन, श्री गोपाजी आदि शहीदों की स्मृति से पूर्ण हैं। ऐसी अवस्था में ये लोग किसी प्रकार का परिवर्तन पाने के हकदार नहीं ठहरते।

अधिकांश देशी नरेशों ने अपने संगठित प्रयत्न और बल से भारतीय जनता की आत्माओं के साथ द्रोह किया है। हम हिटलर या मुसोलिनी के आदर्श को नहीं मानते। बुद्ध और महावीर की सन्तान अपनी परम्परा को नहीं छोड़ सकती। इस कारण हम तो इनको क्षमा ही कर देंगे।

देशी नरेशों का कटु अंत नहीं होगा बल्कि मानव जाति के इतिहास में स्मरणीय अंत होगा। जब ५६२ देशी नरेश और उनके संगी-साथी जागीरदार सामन्त आदि मानव बनकर जनता में जायेंगे तो उसका बड़ा महत्त्व होगा। हमारे जनतांत्रिक जीवन की यही सबसे बड़ी कसौटी होगी।

[illegible] यरोप की राजगद्दियों के [illegible] छोड़नेवाले [illegible] । [illegible] दन में शरण मिली [illegible] पनी खानदानी [illegible] न्हींने कोशिश [illegible] इस में यह नहीं [illegible] ी प्रजा बना

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने [illegible] राज्य प्रजा-परिषद् के [illegible] इस्तीफा दे दिया है।

दिया गया हो, वह साधारण [illegible] तरह काम कर रहा हो। ऐसी [illegible] स्वाभिमानी और कुलीन राजवंश [illegible] मान की रक्षा के लिए अन्य व्यक्ति [illegible] वे शायद ही साधारण जनता [illegible] खड़े हों। इस पर विचार [illegible] काम नहीं। हम तो उन्हें [illegible] देंगे और काम भी देंगे। देशी [illegible] यह अंत सचमुच भारतीय [illegible] परम्परा के अनुरूप होगा। देशी [illegible] चाहेंगे तो वे उस दशा में भी [illegible] अपना महत्त्व बढ़ा सकेंगे।

मुफ़्त
बेस्टोजेम
श्रेष्ठ बलवर्द्धक टानिक
स्वास्थ्य, शक्ति और सजीवता [illegible]
बेस्टोजेम एक बढ़िया टानिक (शक्ति औषध) है। यह महान् शक्तिवर्द्धक स्फूर्तिदायक आश्चर्यजनक टानिक शरीर पर बिजली के करेण्ट की [illegible] की तरह असर करता है। बेस्टोजेम भी स्त्री या पुरुष को उसकी [illegible] से २० से २५ साल तक कम उम्र [illegible] देता है। इससे अच्छी भूख लगने और एक सप्ताह में ही ३ से ५ पौंड वजन बढ़ जाता है। समस्त बेस्टोजेम को लोकप्रिय बनाने की प्रत्येक नगर के उन कुछ पहले [illegible] को कृष्णा फाउण्टेनपेन (लिमिटेड) उपहार के रूप में मुफ्त भेजा जाता हमारे इश्तहार दवा के साथ [illegible] में हमारी हिदायतों के मुताबिक ताकि बेस्टोजेम लोकप्रिय हो जाने प्रतिशीशी सिर्फ ५) रु० है।
नोट :—दवा छुड़ाने के [illegible] बनने के लिए कृपया आज ही [illegible]
पार्सल पर कृपया 'पहले [illegible] टिप्पणी देख लीजिए, ताकि मुफ्ती उपहार के अधिकारी हो ऊपर लिखा गया है।
लिखिए—
बेस्टोजेम लेबोरेटरीज
पोस्टबाक्स नं० ८, [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदमी के दो रूप

लेखक श्री जयन्त

पद के मद में चूर आदमी दूसरे की कठिनाइयों की परवा कम करता है। दीवान साहब ने भीखू के बर्बाद होने की रत्ती भर भी परवा नहीं की, लेकिन विधाता ने एक दिन उनसे करतूतों का लेखा-जोखा कसकर ले लिया—उनकी आँखें खुलीं लेकिन बहुत देर में। कहानी बहुत ही करुण है। 'क्या खूब सौदा नक़द है, इस हाथ दे उस हाथ ले।'

गया, इज्जत बिगड़ चुकी। क्या बचा है। जान प्यारी है तो हमारे साथ भाग आ।

भीखू खड़ा हो सोचने लगा, ये सब कैसी बातें हैं? लेकिन लखिया और लखिया की माँ कहाँ हैं, क्या हुआ होगा उनका? ये लोग क्यों भाग रहे हैं? हैजा फैल गया या आग लग गई गाँव में या बाढ़ आ गई गंगाजी में—क्या हुआ आखिर?

"चल, लखिया और उसकी माँ तुझे याद कर रही होंगी।" भीखू के दिल ने कहा।

साहू के तालाब के पास लीक के दोनों तरफ पुलिसवाले खड़े थे। भीखू उन्हें देखकर सहमा। एक बार उसका जी किया,

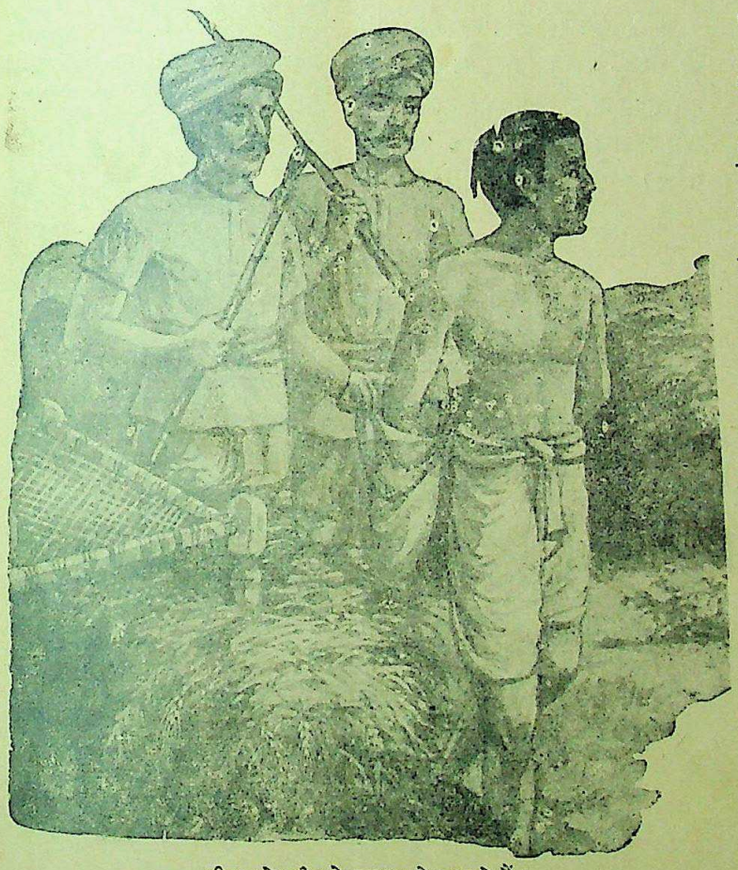

भीखू को गाँव के अन्दर ले जा रहे हैं।

लौटकर भाग जाय, लेकिन पुलिसवालों ने उसे देख लिया था—"कौन है बे तू?" दाढ़ीवाले सिपाही ने पुकारा।

"भीखू हूँ संतरीजी।"

"अबे लाट साहब के बच्चे, वहाँ खड़ा क्या जवान चला रहा है? [illegible]" दूसरे ने कहा।

भीखू [illegible] बढ़कर एक [illegible] मारा—"[illegible]

"[illegible] सँभालकर [illegible]

"मुँह सँभालने के बच्चे, किस गाँव का है?"

"इसी गाँव का हूँ।"

"यह तो हम समझ गये थे। इस गाँव के साले सभी सूअर के बच्चे हैं। कैसी अकड़ है इनमें। तूने चौकी के पास रेल की पटरी उखाड़ी थी?"

"कौन पटरी!"

"कुत्ते का तुखम, कहता है कौन पटरी। अबे रेल की पटरी।"

"क्या कह रहे हो? मुझे नहीं पता। मैं तो तीन साल बाद गाँव आया हूँ।"

"क्या नाम है तेरा?"

"भीखू।"

"लिख भगवाना इसका नाम। यह भी पटरी उखाड़नेवालों में था।"

दूसरे सिपाही ने डायरी में नाम लिखा।

"ले चलो इसे दीवानजी के पास", [illegible] सिपाही [illegible] और भीखू की [illegible] रहे थे। दो सिपाही छप्पर की बल्ली से एक बूढ़े को बाँधकर शहतूत की कमचियों से पीट रहे थे। एक सिपाही एक पन्द्रह-सोलह साल की मुसलमान लड़की के सामने हाथ में पेटी लिये खड़ा माँ की गाली देकर पूछ रहा था—बता, तेरा खसम कहाँ गया है?

"यह कौन है?" दीवानजी ने भीखू को देखकर पूछा।

"भीखू है सरकार, यह भी पटरी उखाड़नेवालों में था।" साथ के सिपाही ने कहा।

"मैं तो तीन साल बाद गाँव आया हूँ दीवानजी.....।"

"बकवास मत कर। हमें पता है, तू भी जापानियों का आदमी है।"

भीखू सोचने लगा, "क्या पटरी, क्या जापानी.....कौन सा पानी?" वह बोला—सरकार, मुझे पटरी पानी का कुछ पता नहीं। न जाने क्या कह रहे हैं आप।

"हम क्या कह रहे हैं तेरी.....साले! लगाओ दस दुहत्थड़ अभी बकेगा।" कहकर दीवानजी हुक्का गुड़गुड़ाने लगे।

पाँच-सात मिनिट तक पिटाई होने के बाद भीखू को दो सिपाही उसके मकान की तरफ़ ले चले। मकान के सामने जाने पर भीखू ने देखा कि उसके मकान का दरवाजा बन्द है। सिपाहियों ने धक्के देकर उसे खोलना चाहा। भीखू ने क्रोध से दोनों को ढकेलकर कहा—किसी के घर में घुसते लाज नहीं आती तुम्हें?

"कौन है अन्दर" एक सिपाही ने गरजकर कहा।

भीखू की आवाज उसकी लड़की ने सुन ली थी। उसने पूछा—कौन, बापू?

"लखिया, दरवाजा न खोलियो।" भीखू ने कहा।

एक सिपाही ने कमर में लात मारकर भीखू को गिरा दिया और उसकी छाती पर चढ़ बैठा। दूसरे ने अपने वजनी जूतों से दुलत्तियाँ मारकर पुरखों के समय से चला आया दरवाजा उखाड़ दिया। लखिया ने जोर की एक चीख मारी। उसकी माँ चिल्लाई, "लखिया के बापू?" और सिपाही ने आगे बढ़कर लखिया को पकड़ना चाहा। वह अन्दर भागी, सिपाही पीछे दौड़ा। लखिया की माँ अपने पति को छुड़ाने के लिए आगे बढ़ी। सिपाही ने अपने गोल मुठ के डंडे से मारकर भीखू का सिर खोल दिया, और लखिया की माँ की ओर बढ़ा। लखिया की माँ को कुछ न सूझा तो उसने अपने पास पड़ा एक पत्थर उठाया और सिपाही की ओर दे मारा। पत्थर सिपाही के घुटने में लगा, वह लड़खड़ाकर दुहाई मचाता हुआ वहीं बैठ गया।

* * *

आगा खाँ के महल में चर्खा कातते हुए गांधीजी अहिंसा की महत्ता पर विचार कर रहे थे।

अहमदनगर के किले में अपनी पालतू बिल्ली से खेलते हुए नेहरूजी अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति सुलझाने का प्रयत्न कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हथेली पर लिये क्रांति की ज्वाला में आहुतियाँ दे रहे थे।

* * *

लखिया अपने रक्तरंजित लड़के की ओर देखती आले में रखे कृष्ण की मूर्ति से जैसे पूछ रही थी—क्या तुम्हें भी अब हमारी लाज रखने को कपड़ा नहीं मिलता?

लखिया की माँ अपनी छाती में चुभी संगीन से निकलते लहू से रँगी उँगलियों को देख जैसे सोच रही थी, धरती माँ, अब तेरे में भूकंप भी नहीं आते!

और भीखू अचेत होता हुआ जैसे सोच रहा था, वसूला भी न हुआ आज मेरे पास।

और अपनी टाँग सहलाता सिपाही लखिया के पीछे गये सिपाही पर रश्क कर जैसे सोच रहा था, साला मजे लूट रहा है और हम यों ही मारे गये।

भीखू के मकान के पास खड़े दीवानजी से उनका दोस्त, गाँव का जमींदार, कह रहा था—कौल साहब, बड़े हरामजादे हैं ये गाँववाले।

और दीवानजी कह रहे थे, जी बड़े बहन.....

* * *

उसके छः महीने बाद—वही दीवानजी कौल साहब जेल की एक कोठरी में जँगले के सहारे खड़े थे। आप पूछेंगे, सरकार के इतने प्रिय कौल साहब जेल में कैसे? तो सुनिये—

उनकी एक लड़की थी—जवान, करीब बीस साल की। उसका हेलमेल एक ताँगेवाले से हो गया था। ताँगेवाला उसे भगाकर पेशावर ले गया। कौल साहब ने उनका पीछा किया, पेशावर में जा उन्हें ढूँढ़ लिया और ताँगेवाले तथा अपनी कुँवारी गर्भवती बेटी दोनों को गोलियों से छलनी कर दिया।

कौल साहब ने अदालत में बयान दिया था—कौन ऐसा बाप होगा जो अपनी बेटी की इतनी बेइज्जती बर्दाश्त करके भी चुप रह सके! अगर मुझे अदालत इजाजत दे तो मैं अपनी लड़की की इज्जत लेनेवाले की एक हजार पुश्तों को खतम करने का इरादा रखता हूँ।

और तभी—

भीखू का भूत अदालत की मुँडेर पर बैठा यह सब सुन रहा था और पहचानने की कोशिश कर रहा था कि क्या ये वे ही गाँववाले दीवान साहब हैं?

इधर उधर की

हम दीर्घजीवी हो सकते हैं

क्या हम दो सौ वर्षों तक जीवित रह सकते हैं? आज के वैज्ञानिकों का ध्यान इस ओर आकर्षित है। इँगलैण्ड के एक पत्र में इस सम्बन्ध के समाचार प्रकाशित हुए हैं। वैज्ञानिकों का यह कथन है कि कोई ऐसा वैज्ञानिक कारण नहीं है जिससे मनुष्य ७० अथवा ८० वर्ष से अधिक दिनों तक न जीवित रहे।

* * *

अमरीका में बच्चों की शिक्षा

संयुक्त-राष्ट्र अमरीका में ग्रामीण जनता के स्कूलों की संख्या बहुत अधिक है। संयुक्त-राष्ट्र में २ करोड़ ६० लाख विद्यार्थी हैं। इनमें से २ करोड़ १० लाख प्रारम्भिक विद्यार्थी हैं और १० लाख से अधिक प्रोफेसर और अध्यापकों को इनको शिक्षा देने की आवश्यकता पड़ती है। १९४० में जनता के स्कूलों पर २,३४,४०,००,००० डालर खर्च हुए थे।

* * *

अमरीका के ग्रामीण स्कूलों में प्रारम्भिक शिक्षा में चार मुख्य बातें सिखलाई जाती हैं।

(१) अन्य व्यक्ति के साथ रहकर कैसे पढ़ा जाय?

(२) अपने स्वास्थ्य की रक्षा करना और उसको कायम रखना।

(३) अपने खाली समय का [illegible] से इस्तेमाल करना सीखना।

(४) गुणों को बढ़ाना और [illegible] घर, जाति और अपने व्यक्तित्व [illegible] की आवश्यकताओं को समझकर [illegible] करना।

* *

कच्ची गन्धक

बलूचिस्तान के कोहे सुल्तान [illegible] भग ८५ हजार टन गन्धक की [illegible] मिल सकती है। करीब १० हजार [illegible] अच्छे परिमाण की गन्धक [illegible] प्राप्त हुई है। १९४१ से १९४२ [illegible] में लगभग ६६,३०० टन गन्धक [illegible] धातु इस क्षेत्र से बाहर रवाना की [illegible]

चिर प्रतीक्षा के पश्चात्

गान्धी-अभिनन्दन-ग्रन्थ का संशोधित तथा संवर्धित संस्करण तैयार हो गया है किन्तु, सीमित संख्या में-

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ महात्मा गांधी की हीरक-जयन्ती की पुण्य स्मृति में प्रकाशित हुआ था, तथा इसके प्रकाशन के लाभ की आय गांधी जी को भेंट कर दी गई है।

⚜

प्रत्येक भाषा की कविता हिन्दी-लिपि में छापी गई है, तथा उसका अनुवाद भी दे दिया गया है।

⚜

राष्ट्रभाषा हिन्दी की ओर से महात्मा गांधीजी के प्रति यह एक ऐतिहासिक साहित्यिक-श्रद्धांजलि है।

दूसरा संस्करण बड़े आकार-प्रकार में प्रकाशित हो गया है, और प्रत्येक पृष्ठ पर एक ही रचना देने से ग्रन्थ का सौन्दर्य निखर जाना स्वाभाविक है।

⚜

इस बात का पूर्ण प्रयत्न किया गया है, कि प्रकाशन की दृष्टि से संस्करण सर्वाङ्ग-सुन्दर हो।

⚜

ग्रन्थ की भूमिका सर्वपल्ली डा० राधाकृष्णन ने लिखी है तथा इसके सम्पादक श्रीमान् सेठ घनश्यामदास जी बिड़ला हैं।

गान्धी जी की सम्मति

⚜ जो काव्य मेरी स्तुति में लिखे गये हैं, उनके बारे में क्या कहूँ, इतना कह सकता हूँ सही, काफ़ी परिश्रम किया गया है और कोई शुभ परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता। ⚜

डा० अमरनाथ झा जी के शब्दों में 'किसी भी भाषा में इससे पहले इस प्रकार का कोई भी ग्रन्थ नहीं प्रकाशित हुआ जिसमें इतनी भाषाओं के इतने कवियों की इतनी उत्कृष्ट कविताएँ भारतवर्ष के सबसे महान् पुरुष के सम्बन्ध में लिखी गई हों।

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ प्रत्येक पुस्तकालय में सहज ही अग्रिम स्थान प्राप्त करेगा, और पाठक इस ग्रन्थ को बारम्बार पारायण करने में सुख प्राप्त करेंगे।

[illegible] चरित्र-कोष में दिया जायेगा।

प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमण्डल

गुलामों की आराध्य देवी श्रीमती हैरियट एलिजाबेथ स्टो

श्रीमती स्टो ने नीग्रो की गुलामी-प्रथा को समूल नष्ट कर दिया

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

नाम था कैलविन ऐलिस स्टो। ६ जनवरी सन् १८३६ को हैरियट का विवाह मिस्टर स्टो के साथ हो गया तभी से हैरियट श्रीमती स्टो के नाम से प्रसिद्ध हो गईं।

वैवाहिक जीवन में प्रवेश करने पर श्रीमती स्टो को तमाम कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनके पति मिस्टर स्टो का स्वास्थ्य खराब रहा करता था और आमदनी उनकी थोड़ी ही थी। श्रीमती स्टो को बहुत चिन्ता करनी पड़ती थी और कभी-कभी तो खाने-पीने का भी कष्ट हो जाता था। ऐसी स्थिति में श्रीमती स्टो पत्र-पत्रिकाओं में लिखकर अपने घरेलू खर्च को पूरा करने लगीं। श्रीमती स्टो ने कई किताबें लिखी हैं। जिस पुस्तक ने श्रीमती स्टो को संसार-प्रसिद्ध कर दिया उस पुस्तक का नाम 'टाम काका की कुटिया, है। उन्हें तमाम घरेलू कार्य—बर्तन साफ करना, कपड़े धोना, कपड़े सीना, भोजन बनाना, सामान ठीक-ठिकाने से रखना इत्यादि खुद ही करना पड़ता था। इसके अतिरिक्त वे खुद ही किवाड़ों पर रंग करती थीं; तकिये, गिलाफ, रजाई सीती थीं और तो और पति के जूते की सिलाई भी खुद ही कर लेती थीं। श्रीमती स्टो के पति हेब्रू ग्रीक, लेटिन तथा अरबी के अच्छे पंडित थे। अपनी पत्नी से प्रसन्न होकर एक बार उन्होंने कहा था—"तुम्हारी जैसी स्त्री दुनिया में थोड़ी ही मिल सकती हैं। भला कौन औरत ऐसी होगी, जो इतनी परिश्रम शील हो और इतनी मितव्ययी जिसकी भाषणशक्ति इतनी प्रबल हो, पर जो कभी डाट-फटकार न बतलावे, जिसमें इतना माधुर्य हो और साथ ही इतनी दृढ़ता।" इसका उत्तर श्रीमती स्टो ने बड़ी मधुरता से दिया था—अगर आप पहले से ही मेरे प्रिय पति न होते तो जरूर ही आपके गुणों पर मुग्ध होकर मैं आपके प्रेम में फँस गई होती।

श्रीमती स्टो में मातृत्व काफी था। बच्चों की सेवा-सुश्रूषा करते हुए अपना जीवन बिता देने में वे अपना गौरव मानती थीं। स्कूल का जीवन बिताते समय उन्होंने अपनी एक सहेली को लिखा था—बहन, मुझे तो अपने ५ बच्चों की देख-भाल और उनका पालन-पोषण करने में बड़ा आनन्द आता है। इच्छा होती है कि इसी प्रिय कार्य को करते-करते बूढ़ी हो जाऊँ और अपना जीवन बिता दूँ। मैं चाहती हूँ कि कभी तुम यहाँ आकर इन बच्चों के बीच में मुझे देखो। मेरी सारी चिन्ताओं और ज्ञान का वे मूल आधार हैं। वे यदि कहीं दूसरी जगह चले जायँ, तो मेरे जीवन में शून्यता ही रह जाय। ये बच्चे ही मेरे कार्य-क्षेत्र हैं और डरती काँपती मैं इन्हीं की सेवा किया करती हूँ।

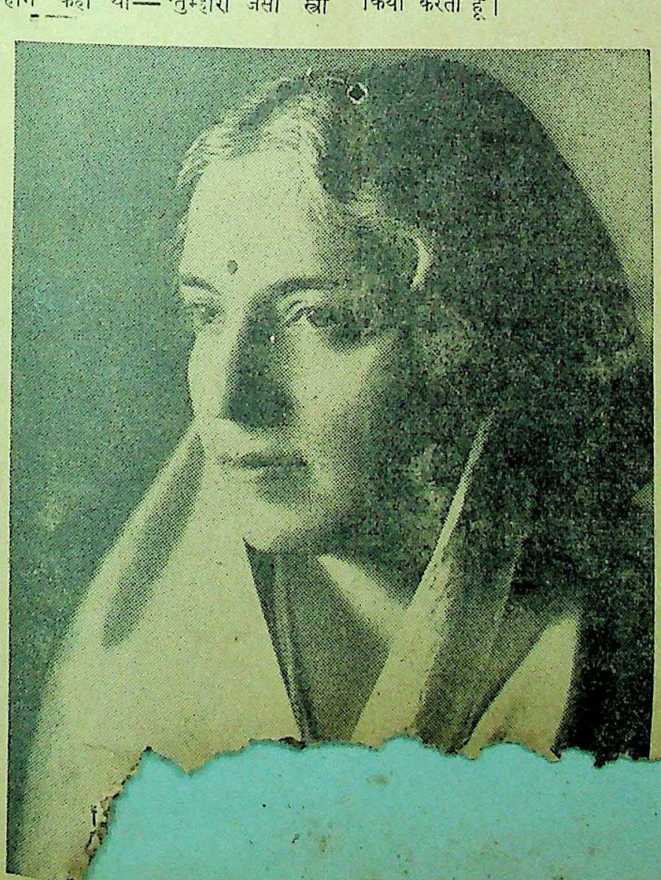

सन् १८५२ ई० में श्रीमती स्टो की पुस्तक 'टाम काका की कुटिया' प्रकाशित हुई थी। इसके प्रकाशित होते ही देश-विदेश में श्रीमती स्टो की प्रसिद्धि की पताका फहराने लगी। जो इस पुस्तक को पढ़ता, बिना आँसू बहाये न रहता। इस रचना से श्रीमती स्टो को दासता के विरुद्ध आन्दोलन में बड़ी सहायता मिली। इस पुस्तक ने जो कार्य किया, वह अभी तक किसी पुस्तक ने नहीं किया था। उत्तरी और दक्षिणी रियासतों में युद्ध करा दिया और गुलामी प्रथा को जड़ मूल से नष्ट ही करा दिया। सन् १८६३ में जब श्रीमती स्टो अमेरिका के (ह्वाइट हाउस) पार्लियामेंट भवन में गईं और उनका परिचय प्रेसीडेंट लिंकन से कराया गया तो लिकन ने जो कद के काफी ऊँचे थे, श्रीमती स्टो से हाथ मिलाते हुए कहा—"क्या इस छोटी-सी महिला ने वह महान् युद्ध करा दिया?" गुलामी प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन के लिए श्रीमती स्टो ने अपना जीवन अर्पण कर दिया था। उनके पाँच बच्चे थे जिनकी सेवा में वे लगी रहती थीं फिर भी उन्होंने अपनी भाभी को एक पत्र में लिखा था—भाभी, जब तक यह बच्चा मेरे पास रात में सोता है, तब तक मैं कोई काम नहीं कर सकती। पर मैं करूँगी जरूर। यदि जीवित रही तो दासत्व प्रथा के विरुद्ध जरूर लिखूँगी।

अमेरिका में नीग्रो (हब्शी) लोगों को उस समय कड़ी यातनाएँ दी जाती थीं। माँ बच्चों से अलग की जाती थी; पति पत्नी से, पिता—पुत्र और पुत्रियों से। गुलामों की इस दुर्दशा को देखकर श्रीमती एलिजाबेथ स्टो का दिल पिघल गया। उन्होंने प्रतिज्ञा कर ली कि इस दासत्व प्रथा के विरुद्ध अवश्य लिखूँगी। इसी पर उन्होंने एक बार लिखा था—"अगर मेरे समुद्र में डूबने के साथ-साथ गुलामी की प्रथा के तमाम पाप और अत्याचार भी डूब जायँ, तो मैं समुद्र में डूबकर प्राण देने को खुशी से तैयार हो जाऊँगी।" इन्हीं विचारों से प्रणोदित होकर श्रीमती स्टो ने 'टाम-काका की कुटिया' की रचना की थी। श्रीमती स्टो पहली जुलाई सन् १८९६ ईसवी में ८५ वर्ष की अवस्था में इस संसार को छोड़ गईं। अण्डोवर नामक स्थान में पति की समाधि के पास उनकी समाधि बनी हुई है। उस करुणामयी वीर रमणी की नश्वर काया आज संसार में नहीं है पर उसकी अमर रचना उन गुलामों को स्वतन्त्रता दिलाने में अब भी अपना कार्य कर रही है।

भारतीय नारियों ने इस समय दासता के विरुद्ध जो आन्दोलन छेड़ा है, वह केवल देश के लिए ही नहीं वरन् संसार भर के गुलामों को आजादी दिलाने के लिए है। अतः ऐसे अवसर पर श्रीमती स्टो का जीवनचरित्र और उनकी अमर रचना 'टाम काका की कुटिया' इस पुनीत कार्य को सफल बनावे।

मौलिकता—साहित्यिक मौलिकता की विशद व्याख्या। मूल्य ।-) पाँच आने। ... द्वारकाप्रसाद ... प्रख्यात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवयुवकों और विद्यार्थियों से अपील

लेखक, श्री अशोक

बड़े खेद की बात है कि आज दुनिया में जो व्यक्ति जितना ही अधिक परिश्रम करता है, उसे उतना ही कम खाने को मिलता है और जो जितना ही कम परिश्रम करता है उसे उतना ही अधिक खाने को मिलता है। पूँजीवाद की यह कितनी भयंकर, अन्यायपूर्ण एवं हास्यप्रद व्यवस्था है। नौजवानों को इस अन्याय का अन्त कर देने के लिए आगे बढ़ना चाहिए। निश्चय ही, आज बहुत से नौजवान और विद्यार्थी इस दिशा में काफी आगे बढ़कर काम कर रहे हैं, फिर भी अभी ऐसे ही नौजवानों एवं विद्यार्थियों की अधिकता है, जो अपना अधिकांश समय भोग-विलास, विषय-वासना, सौन्दर्य-भावना, सिनेमा, खेल-कूद, गन्दी कहानियाँ, उपन्यासों आदि की चर्चा-अर्चा में ही नष्ट कर डालते हैं। उन्हें भी इस दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। जब कि देश में, संसार में, चारों ओर भुखमरी, अकाल, बीमारी, गरीबी, गुलामी, अत्याचार आदि के कारण भयंकर हाहाकार मचा हुआ है, हमारे लिए भोग-विलास आदि में डूबे रहना बड़ी लज्जा की बात है।

बहुत से नौजवान पढ़-लिखकर आज भी अपने को बेकार, बेरोजगार या भाग्य का मारा हुआ समझकर हाथ पर हाथ रक्खे घर बैठे मक्खियाँ मार रहे हैं। उन्हें याद रखना चाहिए कि नौजवान यदि सचमुच नौजवान है तो वह कभी दलित, पीड़ित, बेबस, बेकार, बेरोजगार या बेजार नहीं हो सकता।

नौजवानों के लिए इस समय बहुत काम है। उन्हें अपढ़, मूक, असहाय, दलित और पीड़ित जनता एवं मजदूरों तथा किसानों के संगठन में जी-जान से जुट जाना चाहिए। यही उन्नति और बेरोजगारी के दूर करने की एक-मात्र कुंजी है। बिना इन दलित एवं पीड़ित वर्गों में पूर्ण जागृति तथा चेतना उत्पन्न किये न तो उनका उद्धार करना बन गया है। यह बड़ी लज्जा की बात है। विद्यार्थियों को उद्योग और कृषि की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए और एक सभ्य मजदूर, किसान, कारीगर एवं व्यवसायी बनकर इन वर्गों का उचित नेतृत्व तथा मार्ग-प्रदर्शन करना चाहिए।

निकट भविष्य में अवश्यंभावी युगान्तरकारी विश्व-व्यापी महाक्रान्ति में, जो पूँजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध होगी, नौजवान और विद्यार्थी ही देश के दलित एवं पीड़ित वर्गों का, किसानों-मजदूरों का नेतृत्व करेंगे। इसके लिए उन्हें अभी से तैयारी कर लेनी चाहिए। अन्यथा, सन् पन्द्रह और सन् बयालीस की क्रान्ति की तरह हमारे सारे परिश्रम पर उस समय भी पानी फिर जा सकता है। नौजवानों और विद्यार्थियों के लिए यह बहुत बड़ी चेतावनी है। वह दिन जल्दी या देर में देखना हमारे हाथ में है। यदि हम आज की भयंकर यातनाओं से जल्दी छुटकारा पाना चाहते हैं तो वह दिन निकट लाने के लिए अधिक तेजी, लगन और उत्साह से काम करना होगा।

देश के नौजवानों और विद्यार्थियों को रूस के क्रान्तिकारियों से, जो अधिकांश नौजवान और विद्यार्थी ही थे, शिक्षा लेनी चाहिए और जिस प्रकार वे स्वयं भी मजदूर और किसान बनकर उनके बीच काम करते थे, उसी प्रकार हमें भी करना चाहिए। पढ़े-लिखे लोगों के किसान और मजदूर बनने से किसानों और मजदूरों की इज्जत बढ़ेगी। वे आप लोगों से स्वाभिमानी एवं अच्छे मजदूर-किसान बनना सीखेंगे। अब देश को सुशिक्षित मजदूरों और किसानों की आवश्यकता है जो इन कामों को फिर इज्जतदार पेशा बना सकें और दूसरों के लिए आदर्श उपस्थित कर सकें। यदि पढ़े-लिखे लोग खेती-बारी में लगेंगे तो अपढ़ किसानों की अपेक्षा अधिक अन्न उत्पन्न करेंगे और अपनी

प्रातिकाल में भी विद्यार्थियों को अपने अवकाश का वह भाग—जो अध्ययन के बदले वे व्यर्थ के कामों में खो देते हैं—किसानों, मजदूरों एवं अन्य दलित, पीड़ित, असहाय तथा अशिक्षित और दुर्व्यसन-ग्रस्त जनता की बस्तियों में अखबार पढ़कर सुनाने तथा उनके दर्द में शामिल होने या उन्हें मार्ग-प्रदर्शन एवं उनके सुधार में चाहिए।

गीत

गीतकार : श्री ब्रजेन्द्र गौड़

डगमग डोले प्रान, हो मेरे डगमग डोले प्रान।
मनबसिया ने नाम छिपाकर,
ठौर-ठिकाना ग्राम छिपाकर,
बीच डगर में नयन मिलाये,
की मुझसे पहचान, हो मेरे डगमग डोले प्रान।
पवन उड़ाये मेरा अंचल,
चंचल लहरों-सा मन चंचल,
बदल रही है जीवन-धारा,
बदल रहे हैं गान, हो मेरे डगमग डोले प्रान।
मधुर उमंगें रस बरसातीं,
उलझे सपनों को सुलझातीं,
बने वही जीवन-साथी, जो
पहले थे मेहमान, हो मेरे डगमग डोले प्रान।

पं० गौरीशंकर मिश्र, बी० ए०, एल्-एल० बी० लिखित पुस्तकें

बलिदान-मन्दिर

इस उपन्यास की घटना बड़ी रोचक है। मनुष्य के चरित्र का उत्कर्ष किस प्रकार हुआ, वह लोकोपयोगी किस प्रकार हुआ और वास्तविक बलिदान क्या है, इसका बड़ा सुन्दर वर्णन इस उपन्यास में है। इसके पढ़ने से मनोरंजन के साथ-साथ आत्मसुधार की भी शिक्षा मिलती है। अच्छे टाइपों में छपी ढाई सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

भक्त जयदेव

यह उपन्यास अपने ढंग का एक ही है। इसमें 'हम भक्तन के भक्त हमारे' का प्रदर्शन बड़ी सुन्दरता से लेखक ने किया है। मूल्य केवल १॥) एक रुपया आठ आने।

कलियुगी दुनिया की सच्ची

पहला भाग

वर्तमान युग प्रगति का है। इसी युग की कहानियां इस हैं। ये विलक्षण हैं और पढ़नेवालों मीठी सलाह देती हैं। कहानियों एक बढ़कर हैं। पृष्ठसंख्या सवा १) एक रुपया चार आने।

शबरी अछूत?

यह एक रोमांचकारी मर्यादा-पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी की भक्त मीरा के कथानक के इस नाटक की रचना हुई है। के युग में यह नाटक सचमुच रखता है। बढ़िया छपी केवल ॥) बारह आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

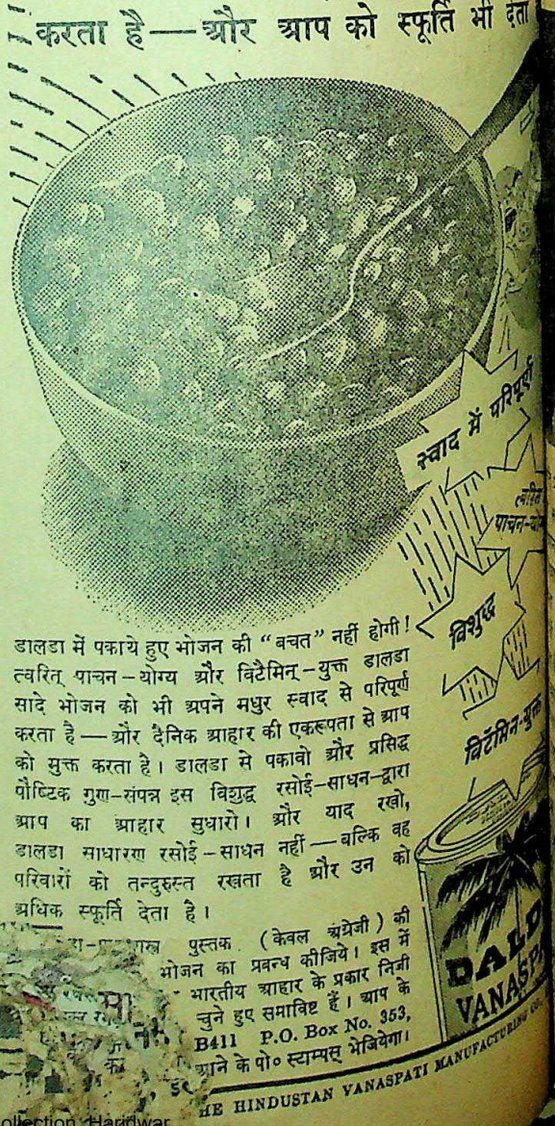

डालडा में पकाये हुए भोजन की "बचत" नहीं होगी! त्वरित् पाचन-योग्य और विटैमिन्-युक्त डालडा सादे भोजन को भी अपने मधुर स्वाद से परिपूर्ण करता है—और दैनिक आहार की एकरूपता से आप को मुक्त करता है। डालडा से पकाओ और प्रसिद्ध पौष्टिक गुण-संपन्न इस विशुद्ध रसोई-साधन-द्वारा आप का आहार सुधारो। और याद रखो, डालडा साधारण रसोई-साधन नहीं—बल्कि वह परिवारों को तन्दुरुस्त रखता है और उन को अधिक स्फूर्ति देता है।

[illegible] पुस्तक (केवल अंग्रेजी) की भोजन का प्रबन्ध कीजिये। इस में भारतीय आहार के प्रकार निजी चुने हुए समाविष्ट हैं। आप के B411 P.O. Box No. 353, आने के पो० स्टाम्प्स् भेजियेगा।

THE HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING CO.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...रा रंग-मंच

...के चल-चित्र

...श्री नन्दकिशोर शर्मा

...भारत में सिनेमा का शौक ...है। इसी लिए हमारे निर्माता ...लोग संवरण नहीं कर सके। ...के पथ पर बड़ी तेजी से दौड़ ...बिना इस बात का ध्यान ...के निर्माण, उत्थान अथवा ...फिल्में कितनी सहायक ...रात-चौगुनी फिल्में बना रहे ...साथ ही निर्माता-मण्डली ...खिलाड़ी भी हर साल ...हैं।

...की नीयत भले ही बुरी ...मेरे अनुभव में इनका जो ...पर पड़ रहा है वह बहुत ...है। हमारे देश में अश्लीलता ...करने को जहाँ और बहुत ...सिनेमा-संस्था भी इसका ...हुई है। सिनेमा वर्तमान ...अभिशाप है। इससे प्रतिष्ठित ...बहुतेरी कुमारियाँ नाचने-...छिपे तौर से अनाचार का ...हो गया। युवक भी ...व्यवहार खो बैठे। इनमें ...सम्मान के गुणों का ...इस सम्बन्ध में सिनेमा ...और नीति के प्रभाव और ...गीत अलापा जाता है वह ...भर्त्सना पर परदा डालने के

प्रसिद्ध अभिनेत्री सुल्ताना।

अपने सौन्दर्य का विज्ञापन करने की लालसा जाग उठी है। स्त्री का स्वरूप-सौन्दर्य-प्रदर्शन वासना को जाग्रत् करता है; यह स्वाभाविक सत्य है। इसी लिए यह कहा गया है कि स्त्री जब पति के पास जाय तभी शृङ्गार करे; किन्तु आज अविवाहित युवतियों में अपने सौन्दर्य से पुरुषों को प्रभावित करने की मनोवृत्ति बहुधा पाई जाती है और इस बात में सिनेमा-क्षेत्र उनकी पूरी सहायता कर रहा है। आज जो हमारे यहाँ युवक-युवतियों का आचार गिरा हुआ दिखाई दे रहा है यह सिनेमा की ही देन है। काफी लेखों में इस बात की चेतावनी दी जा चुकी है किन्तु फिर भी अभी तक इसको प्रगति मान कर हमारे मान्य कुल के लोग एवं सिनेमा-संस्थाओं से सम्बन्ध रखनेवाले महानुभाव अपनी प्रवृत्ति बदलने को तैयार नहीं।

इधर तो देश में अन्न के लाले पड़ रहे हैं, लाखों लोग भूखों मर रहे हैं और उधर ...ा में जा-जाकर अमीर-गरीब सभी अपना पैसा लुटा रहे हैं और बदले में वहाँ से लेकर आते हैं—कुविचार, कुप्रवृत्ति और कुवासनाएँ, साथ ही उधर वह धन खर्च होता है मांस, अंडे, मदिरापान और फैशन में इस घोर पतन को देखकर हृदय काँप उठता है।

हमारे यहाँ जो धार्मिक चित्र बने उनके बारे में भी मुझे कुछ कहना है। ध्येय अच्छा था। ऐसे चित्र बनाकर धार्मिक भावों के नर-नारियों को आकर्षित किया गया और इस प्रकार उनकी जेब का पैसा भी किसी सद्-व्यवहार में लगने से रोकने की चेष्टा की गई। उन चित्रों में केवल राधा सीता जैसी देवियों का स्वाँग धारण करके सिनेमा की कथित कुमारियों ने अश्लील गाना गाकर, अर्धनग्न दशा में प्रणय-चेष्टा करके, उनकी छीछालेदर ही की जिससे किसी भी आर्य-जाति के सच्चे सपूत का खून खौल उठता है। यह सब कुछ हमारे देश में सहा जा रहा है और हम बड़े शौक से इस मिथ्या सुख का सपना देख रहे हैं। हमारी नई निर्मित सरकार का ध्यान इस ओर गया है। वह चित्रपटों को ... सम्मुख रखना ... वह सञ्चालकों ... और इस प्र... देश को ...

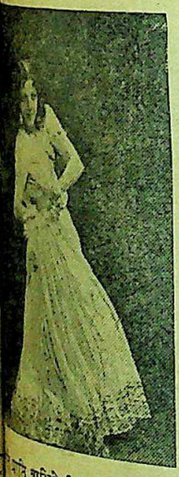

...अभिनेत्री स्नेहप्रभा !

...है कि कला की दृष्टि में ...मूल्य है और इसका सदुप-...जाय तो समाज का लाभ ...। जो काम लेखों और ...नहीं होता, वह चित्रपटों से ...लेख तथा व्याख्यान एक ...अपना असर रखते हैं। ...पर प्रभाव डालते हैं, ...के लिए लाभप्रद वह तभी ...जब संचालकों का लक्ष्य ...। आजकल जिस दशा में ...प्रसार हो रहा है, उससे ...किशोरियों की मनोवृत्ति ...है। जिन संभ्रान्त हिन्दू ...के सौन्दर्य का प्रकाशन ...अपमान समझा जाता था, ...कन्याओं के हृदय में

परमात्मा पर...

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता ... पानी के समान पतला होना, पेशाब के ... को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसं... हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी ... १ डिब्बा ३।–) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च ... में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है त... रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्त... इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, ... कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक-खर्च म...

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धन...

राष्ट्रीय कवि पं० सोहनलाल द्विवेदी की रचनाएँ

सारे सं... प्रिय!

सिरोलिन

'रचि'

फेंफड़ों के विकारों में

यह जल-अभेद्य

-और नमी-विरोधक है!

फिर आगये-

दांतों को ६० प्रतिशत अधिक चमकीला और स्वच्छ करने में प्रभावशाली।

विकार-विरोधी शीशे में बंद।

साल भर की गारंटी।

पशुओं के बालों से रहित

वितरक: व्यापारी निर्यात-संबंधी पूछताछ के लिए पूछिए : एल० डी० सेमूर एंड कं० (इंडिया) लि० बम्बई, कलकत्ता, करांची, मद्रास।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवयुवकों और विद्यार्थी

लेखक, श्री

बड़े खेद की बात है कि आज दुनिया में जो व्यक्ति जितना ही अधिक परिश्रम करता है, उसे उतना ही कम खाने को मिलता है और जो जितना ही कम परिश्रम करता है उसे उतना ही अधिक खाने को मिलता है। पूँजीवाद की यह कितनी भयंकर, अन्यायपूर्ण एवं हास्यप्रद व्यवस्था है। नौजवानों को इस अन्याय का बीचा कर देने के लिए आगे बढ़ना सम्बन्धी निश्चय ही, आज बहुत से नवयुवक हो चुका विद्यार्थी इस दिशा में काफी अपनी चरम काम कर रहे हैं, फिर भी अर्थात् प्रत्येक नौजवानों एवं विद्यार्थियों एक लाभ की है, जो अपना अधिकांश समय अथवा विचार विषय-वासना, सौन्दर्य-भाव कार के अर्थ-खेल-कूद को फटकारा भी था—उसकी आलोचना की थी। और मार्क्स की मृत्यु के बाद एंजिल्स ने भी इस सम्बन्ध में अपने और मार्क्स के दृष्टिकोण को स्पष्ट किया था।

द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय श्रमजीवी-संघ का विश्वास था कि श्रमिकों द्वारा धीरे-धीरे शक्ति बढ़ाई जाय, इसी से नवीन समाजवादी समाज की स्थापना हो सकेगी। इसका अर्थ था कि समाजवादियों को वांछित नवीन वर्गहीन समाज की स्थापना के लिए प्रचार करने की आवश्यकता थी और यह सब क्रमागत परिवर्तन के साथ ही अपेक्षित था। यह परिष्कृत आन्दोलन 'नवीनवाद' के कितने समीप है, यह स्पष्ट है। संयुक्तराज्य अमरीका के थोड़े से समाजवादी प्रजातन्त्रवादियों ने भी (द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय श्रमजीवी-संघ का अवशिष्टाङ्ग, जो अब तक अपना अस्तित्व रखता है) गैर-समाजवादी एफ० डी० आर० का, मार्क्स की मृत्यु तक जोरों का समर्थन किया और आज भी वे ट्रूमन का समर्थन करते हैं। 'मई दिवस' की बैठकों में अब तक पवित्र विद्रोही नारे सुनाई पड़ते थे; परन्तु 'साम्यवादी प्रजातन्त्रवाद' ने, जिसने अपनी मुख्य शक्ति गैर-समाजवादी संगठित श्रमिकों से प्राप्त की है, शोषण न करने-वाले पूँजीपतियों के सुधार का एक नया कार्यक्रम उपस्थित किया। वास्तव में इस कार्यक्रम ने व्यावहारिक रूप में मार्क्स के इन सिद्धान्तों को भुला दिया कि भविष्य में पूँजीवाद स्थिर नहीं रह सकता; अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक विस्तार-सम्बन्धी झगड़ों को मिटा दिया जाय अथवा युद्ध न होने दिया जाय। लेकिन प्रथम महायुद्ध ने इस द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक-संघ को नीचे झुका दिया क्योंकि सन् १९१४ ई० में इसके झंडे के नीचे जो मजदूर थे और जिस पर मार्क्स का नाम अंकित था, उन्होंने सभी भू-भागों पर अपने-आपको उतना ही देशभक्त सिद्ध कर दिखलाया, जितना कि अन्य किसी भी सामाजिक दल के व्यक्तियों ने।

और तीसरा भी

लेनिन ने मार्क्स के विचारों का एक दूसरा अर्थ यह [illegible] ने श्रमिकवर्ग की तानाशाही की दी और आगे चलकर यही समाज-पार्टी की तानाशाही में परिणत हो ई।

इस बात का कहीं कोई प्रमाण नहीं मिलता कि लेनिन ने मार्क्स के किसी भी विचार के प्रति अपना कोई विरोध प्रकट किया। फिर भी सभी विचारों में लेनिन और मार्क्स की समानता सम्भव नहीं। उदाहरणार्थ, पूँजीवाद के सम्बन्ध में लेनिन के विचार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापकता पर आधारित थे और उसका कहना था कि किसी भी स्थान पर—ऐसे स्थान में भी, जहाँ पूँजीवाद अत्यन्त गिरी दशा में होगा—समाजवादी विद्रोह की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। युद्धजन्य दुखदायी परिणामों और आर्थिक विभीषिका ने सन् १९१७ ई० में पिछड़े हुए रूस में विद्रोही स्थिति उत्पन्न कर दी; जब कि मार्क्स ने समुन्नत राष्ट्रों में शिक्षित और कुशल श्रमिकों की बड़ी संख्या द्वारा पहले-पहल इस स्थिति के उत्पन्न होने की आशा कर रक्खी थी।

लेनिन ने जर्मनी में जिन विद्रोहों की बात सोच रक्खी थी, जब वे नहीं हुए और पश्चिमी योरप में भी, जो व्यावसायिक क्षेत्र में काफी आगे बढ़ चुका था, जब इस ओर कोई प्रगति नहीं हुई—उस तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक-संघ की चिनगारियाँ पाकर भी, जो मास्को में स्थापित हो चुका था, तब उसने प्राप्त हो चुकी शक्ति को त्यागना ठीक नहीं समझा। उसने स्वयं औद्योगिक विकास करने का निश्चय किया। वह किसी उथल-पुथल की प्रतीक्षा करने लगा। उसकी समझ में युद्ध अवश्यम्भावी था; लेकिन इस सम्बन्ध में जो कुछ भी लेनिन ने कहा वह सब मार्क्स की आड़ में।

लेनिन अपने उद्देश्य में सफल हुआ। उसके जीवन के अन्तिम समय में रूसी लेखक अपने सिद्धान्तों की चर्चा करते हुए 'मार्क्सवाद-लेनिनवाद' का प्रयोग करने लगे थे—सीधा-सादा 'मार्क्सवाद' नहीं लिखते थे। लेनिन की मृत्यु के बाद ट्राट्स्की ने स्टालिन पर आरोप करते हुए तत्कालीन सिद्धान्तों को घृणा के साथ 'स्टालिनवाद' कहा है। एक समय था जब इस शब्द का प्रयोग राजतन्त्र-द्वारा विरोध और राजद्रोह का सूचक था। लेकिन आज यही 'स्टालिन-वाद' सोवियट सरकार का अपना प्रयोग है।

लेनिनवाद को 'साम्राज्यवादी युग का मार्क्सवाद' कहा जाता है; स्टालिनवाद को दलगत तानाशाही युग का लेनिनवाद कहा जा सकता है। यह मार्क्सवाद का ही एक विशेष प्रकार है। इसमें सन्देह नहीं कि इस प्रकार मार्क्सवाद शब्द का अस्तित्व मिटा नहीं है; परन्तु एक युग था जब सोवियट रूस के नागरिकों को मार्क्स के लेखों का ही अध्ययन करने का अनुरोध किया जाता था और आज का युग है कि उन लोगों पर लेनिन और स्टालिन के लेखों और भाषणों को निरन्तर पढ़ डालने का दबाव डाला जाता है ताकि वे लोग यह समझ सकें कि रूस की सरकारी दृष्टि में मार्क्सवाद का क्या अर्थ ग्राह्य है। आज यदि मार्क्स को देवदूत समझा जाता है तो सिर्फ मशीन में ही उसका देवत्व [illegible] रह गया है।

हुए पूँजीवाद के विनाश और समाजवादी क्रान्ति के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये। उसने कहा कि रूसवासी राज्यहीन समाज को तभी स्वीकार कर सकते हैं जब समस्त अथवा अधिकांश देशों में समाजवाद विजयी हो जायगा और 'आक्रमण किये जाने का कोई खतरा न रह जायगा।'

लेकिन युद्धकाल में मार्क्सवाद पर मानो ग्रहण लग गया था। सम्पूर्ण युद्ध-काल में रूस के प्रमुख फौजी प्रकाशन 'रेड स्टार' में उसका नाम भी निषिद्ध था। पोस्टरों पर भी मार्क्स और एंजिल्स के स्थान पर प्रिन्स नेवस्की और फील्ड मार्शल सुवारोव के चित्र थे, जो सामन्त-वादी (रोमनाव) साम्राज्य के वीर थे।

प्रचार का जहाँ तक सम्बन्ध है, मार्क्स का सहारा लिया जाता है; लेकिन वास्तव में सोवियट नीति मार्क्स से बहुत दूर है—मुक्त है। उदाहरण के लिए मार्क्स का कहना था कि 'हम समाजवादी कभी अपने उद्देश्य छिपाते नहीं!' परन्तु मास्को की नियन्त्रित कम्युनिस्ट पार्टी तो स्वयं अपने-आपको छिपाती और रूप बदलती है।

जो हो, रूसवालों के लिए मार्क्सवाद उस अर्थ में, जो उनके नेताओं ने समझ रक्खा है, अपने व्यापक प्रचार के साथ दुनिया की बदलती राजनीतिक घटनाओं को देखने में एक नकाब का काम दे रहा है। मार्क्सवाद ने उन्हें दुनिया में एक-मात्र और महान् 'श्रमजीवी राष्ट्र' का प्रतिनिधि तो बना ही दिया है। और इसी लिए अन्य विदेशी राष्ट्रों को पूँजीवादी राष्ट्र कहने और उन पर सन्देह किये जाने का अवसर भी दिया है। सोवियट नीति न तो संसार-व्यापी विप्लव की है, न सीधी-सादी राष्ट्रीयता की; बल्कि दोनों का अस्तित्व साथ-साथ है।

मार्क्स के सिद्धान्तों में से यदि किसी ने समस्त आधुनिक संसार को प्रभावित किया है, तो वह यही है कि राजनीतिज्ञों की आजमाइश उनके कृत्यों से ही की जा सकती है, न कि उनकी बातों से। मार्क्स की विनोदप्रिय आत्मकथा में उसका जो सर्वप्रिय सूत्र मिलता है, वह है 'प्रत्येक बात में सन्देह करो।' और ठीक यही बात सोवियट राजनीतिज्ञों में मार्क्स का उल्लेख करते समय पाई जाती है। इससे यह समझने में सरलता होती है कि अपने अनुयायियों की गति-विधि को तोलते हुए एक बार उसने कहा था—'मैं मार्क्सवादी नहीं हूँ।'

अन्त

मार्क्स और जैनी का स्नेह अन्त तक अक्षुण्ण रहा। जैनी की मृत्यु सन् १८८१ में, मार्क्स की १८८३ में और एंजिल्स की १८९५ ई० में हुई—'कैपीटल' के दूसरे और तीसरे भागों को प्रकाशित कर देने के बाद।

मार्क्स की पुत्री एलीनर ने सन् १८९८ ई० में ४३ वर्ष की उम्र में किसी प्रेम-सम्बन्धी निराशा के कारण आत्महत्या कर ली थी। दूसरी पुत्री लौरा और उसके पति डाक्टर पाल लेफार्ग्यू ने सत्तर वर्ष की उम्र में इसलिए आत्महत्या कर ली थी कि उनके जीवन के सुनहरे दिवस समाप्त हो चुके थे और अपनी वृद्ध और [illegible] नकर जीवित नहीं पुत्री लांग्वेट का पुत्र जीन और इसका [illegible] क फ्रेंच

श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी
रचनाएँ
सञ्चारिणी
इसमें लेखक के अन्तर्चेतना, व्रजभाषा के और शरत्साहित्य का आदि १० निबन्धों का निबन्ध परस्पर क्रमबद्ध युगों के प्रतीक-स्वरूप। साहित्य में पुस्तक अपने ढंग की है। ढाई सौ से अधिक पृष्ठों के कागज़ पर छपी सजिल्द पुस्तक दो रुपये।
युग और साहित्य
इस पुस्तक में युगद्वन्द्वों उत्पन्न भावी सम्भावनाओं के माध्यम से उपस्थित करने है। इसे वर्तमान साहित्य इतिहास भी कह सकते हैं। राजनीतिक और सामाजिक की जानकारी के लिए यह पुस्तक है। अच्छे कागज़ पर छपी से अधिक पृष्ठों की सजिल्द मूल्य दो रुपये ग्यारह आने।
इंडियन प्रेस, लिमिटेड

गौर एवम्
सुकोमल त्वचा
का रहस्य

सौन्दर्य तथा
आकर्षण का नवविधान
काली तथा कुरूप त्वचा जादू की अदृश्य हो नवीन मनमोहक त्वचा जाती है। यह कोमल तथा आकर्षण, व्यक्तित्व, एवम् सौन्दर्य प्रधान कारण है।
इस सौन्दर्य का रहस्य है। यह आश्चर्यजनक तरल तुरन्त काम करती है। इसमें प्रकार की चिपचिपाहट नहीं होती। त्वचा में प्रवेश कर जाती है तथा को पोषती है। आप स्वयं इसका करें और देखें कि आपका बाँह तथा हाथ कितने जल्दी गोरे हो हैं। ह्वाइटेक्स की एक बोतल खरीदिये।
वितरक: जी० अबरटन एण्ड कं० २८, अपोलो स्ट्रीट, बम्बई
४ मिशन रो, कलकत्ता
Whitex
WHITENS THE SKIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...दक के नाम चिट्ठियां

...ओं से अपील

...में स्त्रियों के साथ जो ...प्रचार हो रहे हैं उनसे ...परिचित हैं। इस दयनीय ...पर विशेष उत्तरदायित्व ...विचार से हम बहनों ...परिस्थिति का सामना ...कुछ हो, करना चाहिए ...मेरे सुझाव निम्नलिखित

...एसेम्बलियों की स्त्री- ...अपने प्रान्त में इन अत्याचारों ...उठावें। इसके लिए वे ...अन्य प्रमुख महिलाएँ ...या धार्मिक भेद-भाव के ...रूप से इसका विरोध

...इंडिया वीमेंस कान्फरेंस ...महिलाओं का एक डेपुटेशन ...वायसराय, बंगाल-गवर्नर ...प्रधान मंत्री से मिले तथा ...जाँच करे।

...मिशन की व्यवस्था की

...में अपना मत तार द्वारा ...और कृपया तुरन्त सूचित करें कि आप इस सम्बन्ध में क्या क्रियात्मक सहयोग दे सकेंगी ?

—राधादेवी गोयनका
एम० एल० ए०
अकोला

* * *

हिन्दी विद्यापीठ उदयपुर

हिन्दी विद्यापीठ गत कई वर्षों से मेवाड़ और राजस्थान के साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं विशेषकर शिक्षा-क्षेत्र में रचनात्मक कार्य कर रहा है। राजस्थान के साहित्यिक जगत् को एक सूत्र में आबद्ध कर उनमें सांस्कृतिक वातावरण उत्पन्न करने का प्राथमिक प्रयत्न भी हिन्दी विद्यापीठ-द्वारा ही किया गया। सर्वप्रथम मेवाड़ में साक्षरता-प्रसार का आन्दोलन भी इसी के द्वारा किया गया था। हिन्दी विद्यापीठ जनता के हृदय में प्रथम से ही प्रवेश करता जा रहा है। जिस समय विद्यापीठ की स्थापना हुई थी उस समय इसके पास न तो कोई कार्यकर्त्ता था और न पैसा ही। केवल साहस और ईश्वर के आश्रय पर इसे चलाया गया था। अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं के प्रसार के ध्येय को लेकर हिन्दी विद्यापीठ महाविद्यालय की स्थापना हुई। तब से आज तक इसमें विकास होते-होते जमीन-आसमान का अन्तर हो गया है। इस समय यह राष्ट्र की सर्वाङ्गीण उन्नति के लिए शिक्षण देनेवाला लोक-शिक्षण केन्द्र हो रहा है। इस समय हिन्दी विद्यापीठ के अन्तर्गत निम्नलिखित स्वतन्त्र शाखाएँ कार्य कर रही हैं—

(१) राष्ट्रभाषा-द्वारा उच्च शिक्षण देने के लिए हि० वि० पी० महाविद्यालय, (२) दिन में काम करनेवाले श्रमजीवियों के लिए पाँचवीं तक श्रमजीवी पाठशाला तथा (३) श्रमजीवी कालेज, (४) गाँवों के प्रौढ़ों के लिए प्रौढ़-शिक्षण-संस्था, (५) उदयपुर के नागरिकों के सामयिक और आवश्यक शिक्षण के लिए "सरस्वती मन्दिर", (६) प्राचीन साहित्य की खोज तथा सम्पादन के लिए प्राचीन साहित्य शोध-संस्थान, (७) सार्वजनिक कार्यकर्त्ता - शिक्षण के लिए महात्मा गांधी लोक-शिक्षण विद्यालय, (८) उदयपुर तथा मेवाड़ के प्रौढ़ नागरिकों की शिक्षा के लिए क्षेत्रिय जन-पद संस्था, (९) प्रौढ़-साहित्य-सृजन, लोक-साहित्य-सृजन, सद्साहित्य-सृजन एवं प्रगतिशील साहित्यकारों के साहित्य के प्रकाशन के लिए हि० वि० पी० प्रिन्टिंग प्रेस और प्रगतिशील संस्थान, (१०) गाँवों के किसान-मजदूर बालकों के लिए ग्राम्य रात्रिशालाएँ, (११) हि० वि० पी० की प्रवृत्तियों को स्वावलम्बी बनाने के लिए उद्योग-विभाग आदि संस्थाओं के अलावा साहित्य-परिषद्, शिक्षा-परिषद् एवं कलाकार संसद् आदि भी कई लोकोपयोगी प्रवृत्तियाँ चालू हैं।

अभी गत अगस्त मास में महात्मा तुलसीदास-स्मारक के लिए ११ लाख के "महात्मा तुलसीदास स्मारक कोष" की स्थापना की है। इस निधि से तुलसीनगर, तुलसी पान्थशाला का निर्माण किया जायेगा, जिसमें प्रस्तर रामायण भी होगी। विद्यापीठ में इस समय ८० कार्यकर्त्ता वैतनिक कार्य कर रहे हैं और ढाई हजार रुपया प्रतिमास का खर्चा है। इस तरह यह संस्था शुद्ध रचनात्मक राष्ट्र-निर्माण का कार्य कर रही है। इसका सारा ढाँचा जनतन्त्र के आधार पर है।

—गिरिधारीलाल शर्मा

* * *

श्रीमान् सम्पादक जी,

देहात में दशहरे की वर्षा के झोंके से फसल को बहुत अधिक नुकसान हुआ है। परन्तु यह बात सभी जिलों के लिए लागू नहीं हो सकती। जहाँ तक मैं अपने जिला इलाहाबाद के सम्बन्ध में जानता हूँ, बाजरे की फसल को बहुत हानि हुई है। खेतों की खड़ी फसल गिर पड़ी है जिनमें दाने नहीं पड़े। केवल बालियों का आ जाना ही अच्छी फसल का लक्षण नहीं है। किसानों की बहुत बड़ी संख्या इस हानि की दरख्वास्त भी दे चुकी है। पर सरकारी कर्मचारी अभी तक मौन हैं। आशा है, सरकारी कर्मचारी इस पत्र की ओर ध्यान देंगे और फसल की सच्ची स्थिति की जाँच करके लगान में वास्तविक छूट देने की कृपा करेंगे।

—राममनोहर, काजीपुर

हमारी कुछ चुनी हुई पुस्तकें

...जयदेव—पण्डित गौरीशंकर मिश्र बी० ए० ...बी० लिखित इस उपन्यास में 'हम भक्तन ...हमारे' का सुन्दरता-पूर्वक प्रदर्शन हुआ है। ...१॥)

...की दशा—अनुवादक पण्डित ठाकुरदत्त ...। श्रीमती काञ्चनमाला देवी के 'शनिर दशा' ...बंगला उपन्यास का यह अनुवाद है। लेखिका ...ने उपन्यास की नायिका के चरित्र में जिस ...और महिमा का समावेश किया है, वह विश्व ...महिला-समाज में हिन्दू-महिलाओं को गौरवपूर्ण ...दिलाने के लिए सर्वथा उपयुक्त है। मूल्य २)

...धड़ी—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। ...के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार बाबू चारुचन्द्र ...ध्याय के धोखार टाटि नामक उपन्यास का ...है। सीधे-सादे और उदार-हृदय व्यक्ति ...सौजन्य, सहानुभूति और विनय प्रदर्शित करने- ...के मायाजाल के शिकार होकर किस प्रकार ...ही अगणित दुःख-क्लेश सहन करने के ...हो जाते हैं, यही इस उपन्यास का विषय ...मूल्य १॥≡)।

...—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। श्री ...देवी के इस उपन्यास में पति-प्रेम वंचिता ...ऐसा सजीव और भावपूर्ण चित्र अंकित ...है कि पढ़ते-पढ़ते हृदय द्रवित हो जाता है। ...पूर्ण उपन्यास आपके पढ़ने में कम आये ...सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-)।

...पथिक—अनुवादक, पण्डित सुन्द... ...त्रिपाठी और पण्डित ठाकुरदत्त मिश्र।

मैनेज...

चारुचन्द्र वन्द्योपाध्याय-लिखित इस उपन्यास का उपन्यास-प्रेमियों में अच्छा सम्मान है। हिन्दी के उपन्यास-पाठकों की प्रेरणा से ही इसका हिन्दी अनुवाद हमने पहली बार प्रकाशित कराया है। उपन्यास की रोचकता और महत्ता के लिए चारुचन्द्र बाबू का नाम ही पर्याप्त है। मूल्य २॥≡)।

कृष्णकान्त का विल—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। यह बंकिम बाबू का एक अत्यन्त लोकप्रिय उपन्यास है। एक भारतीय पतिव्रता का जैसा सुन्दर चित्र इस उपन्यास में खींचा गया है वैसा अन्यत्र न मिलेगा। मूल्य १)।

युद्ध और शान्ति—अनुवादक, श्री रुद्रनारायण अग्रवाल। टॉल्सटॉय के 'वार एण्ड पीस' नामक प्रसिद्ध रूसी उपन्यास का यह हिन्दी-रूपान्तर है। इसमें लेखक ने मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तसवीर और राष्ट्रों की खींच-तान बड़ी खूबी से चित्रित किया है और जीवन तथा मृत्यु के रहस्य का उद्घाटन किया है। मूल्य ५।-)।

कपाल-कुण्डला—अनुवादक, श्रीयुत पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी, 'निराला'। यह बंकिम बाबू की कपाल-कुण्डला का हिन्दी-रूपान्तर है। कथानक की रोचकता तथा वर्णन की अपूर्वता के कारण यह ... है कि ... नये

देवी चौधरानी—अनुवादक, श्रीयुत पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी, 'निराला'। मूल-लेखक स्वर्गीय बंकिम बाबू ने इस उपन्यास में बंगाल की उस समय की अवस्था का चित्रण किया है, जब कि मुसलमानों की शक्ति का अवसान हो चुका था और अँगरेज़ों की प्रभुता का अभ्युदय हो रहा था। आदि से अन्त तक पुस्तक रोचक और शिक्षाप्रद है। मूल्य १।-)

वैकुण्ठ का विल—मूल लेखक, स्वर्गीय डा० शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय। यह उपन्यास है तो छोटा किन्तु बहुत ही भावपूर्ण है। मानव-हृदय की स्वाभाविकता इसके प्रत्येक पात्र से प्रकट हो रही है। शरद् बाबू उपदेश देने की दृष्टि से रचना नहीं करते; किन्तु उपदेश अज्ञात रूप से अपना काम किये बिना कब रहता है। यह बात उनके इस उपन्यास में भी अपवाद नहीं हो सकी। मल्य ॥≡)।

अज्ञात दिशा की ओर—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह श्री सौरीन्द्रमोहन मुखोपाध्याय के 'निरुद्देशेर यात्री' नामक उपन्यास का अनुवाद है। इस उपन्यास में हिन्दू-समाज की वैवाहिक समस्या पर बहुत ही रोचक ढंग से प्रकाश डाला गया है। मूल्य १)।

पुष्करिणी—लेखक, श्रीयुत भगवतीप्रसाद वाजपेयी। यह हिन्दी के प्रसिद्ध कहानी लेखक श्री भगवतीप्रसाद जी वाजपेयी ... है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

बीकानेर आगामी बड़े दिनों के अवकाश पर ता० २६-२७-२८ दिसम्बर तदनुसार मिति पौष शुक्ला ३-४-५ बार बृहस्पति, शुक्र एवं शनि को तारानगर (बीकानेर) में श्री बीकानेर राज्य साहित्य-सम्मेलन का छठा अधिवेशन होना निश्चित हुआ है। इसलिए बीकानेर राज्य के सभी प्रतिष्ठित विद्वान्, कवि एवं साहित्यिक अपने-अपने सुझाव भेजने की कृपा करें और इस सम्मेलन पर अवश्य पधारें। सम्मेलन इस बार और भी विशेष रूप से अपने उद्देश्य की पूर्ति में आप विद्वज्जनों के अदम्य उत्साह एवं सहयोग से सफल हो सकेगा, ऐसी पूर्ण आशा है। सम्मेलन-सम्बन्धी सब तरह का पत्र-व्यवहार प्रधान मंत्री श्री बीकानेर राज्य साहित्य-सम्मेलन तारानगर से करें।

—गोवर्द्धनप्रसाद शास्त्री, नारायणप्रसाद शास्त्री

* * *

झुंझुनू (जयपुर) राजा महेन्द्रप्रतापजी जयपुर, सीकर, डूँडलोद में भाषण देते हुए १५-१०-४६ को झुंझुनू पधारे। दो बजे के करीब आपने विद्यार्थी-भवन के पुस्तकालय का उद्घाटन किया। करीब ५ बजे राजाजी का जुलूस निकला। अपार भीड़ थी। दरवाजे भी आपके स्वागतार्थ बनाये गये थे। नारे लगाये जा रहे थे; किन्तु दूकानदारों ने हाथ नहीं बटाया।

रात को भीणा किसान-सम्मेलन पं० लादूरामजी जोशी के सभापतित्व में हुआ। राजेन्द्रकुमारजी 'अजय' और सरदार हरलालसिंहजी ने क्रमशः भीणा और किसानों पर होनेवाले अत्याचार बतलाये। मथुरा के ब्रजलालजी ने राजाजी का परिचय दिया। फिर राजाजी का भाषण हुआ। आपने हिन्दू और मुसलमानों में प्रेम बढ़ाने के लिए कहा। आपने दुष्टों के दमन के लिए हिंसा को आवश्यक बतलाया। यही तो भगवान् कृष्ण का उपदेश है।

* * *

मंडावा (जयपुर) के श्री रामचन्द्र त्रिवेदी का गत मास में स्वर्गवास हो गया है। त्रिवेदीजी बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के स्नातक थे और इधर 'बाल-हित' में प्रबन्ध सम्पादक का कार्य करते थे। इधर उनके मित्र उनकी स्मृति कायम रखने के लिए प्रयत्नशील हैं।

—चञ्चल

* * *

रायगढ़ सी० पी० हिन्दुस्तान में सभी जगह सुधार ही रहे हैं। राष्ट्रीय सरकार के कायम होने से काले बाजार के चोरों ने चोरी बंद सी कर दी है; किन्तु रायगढ़ राज्य के चोर बाजार में अब तक कोई सुधार नहीं हुआ है। सूत-बाजार की घनघोर कालिमा से यहाँ के गरीब बुनकर धक्का उठे हैं यद्यपि सूत बाजार का नियन्त्रण राज्य के महा मन्त्री के हाथ है। यहाँ की स्टेट कांग्रेस ने सरकार को एक सूचना दी थी कि वह काले बाजार का अंत कर[illegible]

[illegible] सकते

१ प्रठहत्तर बैलों के रथ पर महात्माजी की तसवीर रखकर एक शानदार जुलूस निकाला गया था। शाम को श्री बन्देअलीजी फातमी के सभापतित्व में एक विराट् सभा हुई। सभा का कार्य चार घंटे तक चलता रहा।

स्टेट कांग्रेस की प्रतिद्वन्द्विता में एक प्रजामंडल की स्थापना हो रही है जिसमें बड़े बड़े उपाधिधारी तथा राज्यमंडल के लोग शामिल हैं।

—सुरेन्द्रनाथ मिश्र

* * *

हरिद्वार तारीख २० अक्टूबर १९४६ को चौधरी गिरधारीलालजी मिनिस्टर यू० पी० सरकार के बँगले पर मंसूरी में, मेरठ कमिश्नरी के हरिजन कार्यकर्त्ताओं की एक विशेष मीटिंग स्वामी रामानन्दजी के संयोजकत्व में हुई जिसका सभापतित्व माननीय मिनिस्टर चौ० गिरधारीलालजी एम० ए० ने किया। डिवीजन भर के कार्यकर्त्ताओं ने पहले अपने जिलों की संस्थाओं से एक दूसरे को अवगत कराया और इस समय के हुए झगड़े-फसादों का ठीक ठीक हल निकालने पर विचार किया। अन्त में सब लोग इस निर्णय पर पहुँचे कि कमिश्नरी भर के कार्यकर्त्ताओं द्वारा एक दलित वर्ग रक्षा-समिति बनाई जावे, जिसमें हर जिले से दो आदमी लिये जायँ। वह हर प्रकार के झगड़ों को यथासम्भव दूर करने का प्रयत्न करेगी। हरिजनों के सामाजिक संगठन और धार्मिक सुधार पर भी विचार हुआ। माननीय चौ० साहब ने सब लोगों को आश्वासन दिया कि हरिजनों की सब उचित माँगों को कांग्रेस सरकार द्वारा दूर करने का भरसक प्रयत्न किया जायगा।

—संवाददाता

* * *

उदयपुर हिन्दी-विद्यापीठ-महाविद्यालय के तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष के समान इस वर्ष भी नवम्बर १९४६ से 'साहित्यरत्न तथा मध्यमा' परीक्षा में सम्मिलित होनेवाले छात्रों के लाभ के लिए 'साहित्यरत्न व्याख्यान 'माला' चलाने का आयोजन किया गया है। यह व्याख्यानमाला १ नवम्बर से प्रारम्भ होकर २५ नवम्बर तक चलेगी। इसका समय सायंकाल ६॥ बजे उदयपुरी रखा गया है। साहित्यरत्न तथा मध्यमा परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे इस व्याख्यानमाला से लाभ उठावें।

—संवाददाता

* * *

सागर जिला-कांग्रेस कार्यकारिणी का संगठन हो गया।

३० ता० को स्थानीय हाई स्कूलों तथा सागर विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों ने हड़ताल रक्खी। विश्वविद्यालय में 'नोआखाली दिवस' मनाया गया जिसमें एक प्रस्ताव-द्वारा बंगाल की अयोग्य सरकार को हटाने की माँग की गई तथा बंगाल के पीड़ितों के प्रति शोक प्रकट करते हुए उनके सहायतार्थ कुछ निधि संग्रह [illegible]

[illegible] प्रश्नोत्तर [illegible]

[illegible] चक्कर [illegible]

[illegible] लते चक्कर

की अध्यक्षता में हुई। सर्वसम्मति से बंगाल-पीड़ितों के सहायतार्थ कुछ निधि एकत्र करने का प्रस्ताव पास हुआ। यह रकम आल इंडिया कांग्रेस-कमिटी के पास भेज दी जायगी।

यहाँ गल्लाबाजार (हागगंज) में किसानों का जो अनाज बिकने आता है; उस पर मन्दिरों और धर्म की ओट में 'मालमुट्ठी' के नाम पर १०० बोरे पर २५ सेर अनाज काट लिया जाता है। इसमें केवल १० सेर उक्त फंड में जमा करके शेष पचा लिया जाता है। क्या प्रान्तीय सरकार यह शोषण बन्द करेगी?

करोंदा स्टेशन के स्टेशन मास्टर मि० तिवारी स्टेशन पर पुलिस के एन्टीकरप्शन विभाग द्वारा रिश्वत के अपराध में रँगे हाथ पकड़े गये।

सागर रेलवे स्टेशन पर बहादुरसिंह कन्ट्रोल इंस्पेक्टर ने सूत की दो गाँठें पकड़ीं। ज्ञात हुआ है कि गाँठोंवाला रेलवे-रजिस्टर पर दस्तखत करके फरार हो गया है। भ्रष्टाचार विरोधी विभाग की जाँच-पड़ताल जारी है।

—संवाददाता

* * *

नागपुर जैन विद्या और हिन्दी-साहित्य के विद्वान् श्री नाथूराम प्रेमी की साहित्यिक सेवाओं के सम्मानार्थ अभिनंदन ग्रंथ भेंट करने के लिए २०-१०-४६ को श्री काका कालेलकर के सभापतित्व में समारोह हुआ। प्राच्यभाषा-परिषद् में आये हुए अनेक विद्वान् भी समारोह में सम्मिलित हुए। सर्वप्रथम महामहोपाध्याय डा० उमेशजी मिश्र, डा० वासुदेवशरण जी अग्रवाल और यशपाल जैन के भाषणों के बाद सर्वश्री किशोरलाल मश्रूवाला, सम्पूर्णानन्द, डा० अमरनाथ झा, श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, श्रीप्रकाश, मैथिलीश रणगुप्त, राय कृष्णदास, बाबूराव विष्णु पराड़कर, अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, डा० धीरेन्द्र वर्मा और पं० श्रीराम शर्मा प्रभृति के संदेश सुनाये गये। समारोह में मध्यप्रान्त के एक मंत्री श्री द्वारिकाप्रसाद मिश्र भी उपस्थित थे। सर्वश्री जैनेन्द्रकुमार, महात्मा भगवानदीन, भदन्त आनन्द कौशल्यायन, व्योहार राजेन्द्रसिंह, बैरिस्टर जमनाप्रसाद जैन तथा डा० ए० एन० उपाध्ये ने प्रेमीजी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की और उनकी सरलता, अध्यवसाय, कार्यक्षमता आदि गुणों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

अन्त में सभापति ने अपने भाषण में कहा कि प्रेमीजी सफल प्रकाशक तो हैं ही, साथ ही वे उच्च कोटि के विद्वान् भी हैं। उनकी रचनाओं के पढ़ने से पता चलता है कि उन्होंने कितना अन्वेषण कार्य किया है और अपने तथ्यों में वे कितने प्रामाणिक हैं। भाषण समाप्त करते हुए श्री काका कालेलकर ने खादी के केसरिया वेष्टन में लिपटा बृहद् ग्रन्थ प्रेमीजी को भेंट किया।

[illegible] किये गये उद्गारों [illegible]

[illegible] नी ने कहा कि [illegible] घबड़ाता हूँ। [illegible] लिए मैंने [illegible] आयोजन- [illegible] तैयार [illegible] सब

एकत्र हुए हैं तब उसे [illegible] और आप सबके प्रति कृतज्ञता [illegible] के अतिरिक्त मेरे लिए अन्य [illegible] अन्त में आपने हिन्दी के [illegible] की ओर संकेत किया कि [illegible] सुदिन आ रहे हैं।

अन्त में विभिन्न प्रान्तों [illegible] सेवी संस्थाओं की ओर से [illegible] मालाएँ समर्पित की गईं।

* *

राजेपुर (पूरा) ग्राम में [illegible] रानी लक्ष्मीदेवी एम० ए० [illegible] यतघर के मैदान में राष्ट्रीय [illegible] स्थापनार्थ ११ तथा १२ नवम्बर [illegible] विराट् कुश्ती दंगल कराने का [illegible] किया है। लखनऊ, [illegible] जौनपुर, गोंडा, फैजाबाद [illegible] आदि के नामी पहलवान [illegible] बाहर से आनेवालों की [illegible] (ई० आई० आर०) स्टेशन [illegible] चाहिए। फैजाबाद तथा [illegible] वाले इक्का से राजेपुर आवें। फैजाबाद से ८ मील पूरब [illegible] सड़क पर है। पहलवान १० [illegible] ही पहुँच जायँ।

—[illegible]

* *

बलिया जिले के अन्तर्गत [illegible] पुस्तकालय - गायघाट - सेवाश्रम [illegible] पुस्तकें हैं। पुस्तकालय की [illegible] संख्या ४६० है। वाचनालय [illegible] संसार, सचित्र साप्ताहिक देश [illegible] मासिक पत्रिका माधुरी आदि [illegible] की एक बड़ी संख्या प्रतिदिन [illegible] रही है। शिक्षा-विभाग द्वारा [illegible] वर्ष सहायता मिलती है जो [illegible] क्योंकि गाँव की गरीब जनता [illegible] कालय को अच्छी सहायता [illegible] पाती जिससे पुस्तकालय की [illegible] नहीं हो पाती। अतः शिक्षा-[illegible] प्रार्थना है कि पूरी सहायता [illegible] की कृपा करें।

* *

पटना युवक-समिति [illegible] वार्षिकोत्सव समारोह के [illegible] हुआ। नोआखाली की बर्बरता [illegible] भर्त्सना की गई। रात में अखिल [illegible] खेला गया। अगले वर्ष के लिए [illegible] कामेश्वर शर्मा, श्री राणा [illegible] कृष्णेश्वरसिंह, श्री रामचरित्र [illegible] सभापति, उपसभापति, मंत्री [illegible] चुने गये तथा श्री विजयचन्द्र [illegible] मनोहरप्रसाद, श्री रामेश्वर [illegible] कृष्ण-चन्द्रप्रसाद, श्री [illegible] और श्री हरिचरणराम सदस्य [illegible]

—श्री [illegible]

* *

काशी-नागरी-प्रचारिणी [illegible] ५४वाँ वार्षिकोत्सव ९ और १० शनिवार, रविवार को सानंद [illegible] से बिहार के शिक्षा-मंत्र [illegible] श्री बदरीनाथ वर्मा के सभापतित्व [illegible] इसके अन्तर्गत दिवंगत साहित्यिकों [illegible] का उद्घाटन तथा पुरस्कार-वितरण [illegible] होगा। समस्त हिन्दी-प्रेमियों से [illegible] कि उत्सव में पधार कर उसे [illegible]

—[illegible] प्रधान [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास परिहास

भंग की तरंग

असेम्बली में एक प्रश्न के उत्तर से पता चला है कि भारत सरकार का कृषि-विभाग वनस्पति घी बनाने में सहायता कर रहा है। कृषि-विभाग तो वनस्पति में सहायता देगा ही।

* * *

वहीं से यह भी पता चलता है कि तीसरे दर्जे में पंखा लगाने का विचार रेलवे-विभाग की ओर से हो रहा है। साथ ही हर तीसरे दर्जे में एक एक डाक्टर का भी प्रबन्ध होना चाहिए। आजकल जितनी भीड़ चलती है उसमें लोग जीते बच जाते हैं, इसके कारण की खोज होनी चाहिए।

* * *

मित्र दल के जर्मनी के शासकों ने निश्चय किया है कि गोरिंग ने आत्म-हत्या के पहले जेल में जो पत्र लिखे हैं वे प्रकाशित न किये जायँगे। यदि उनमें गालियाँ हों तो होली पर प्रकाशित की जा सकती हैं।

* * *

रूसी पत्र 'प्रवदा' ने श्रीमती पंडित के भाषण की बड़ी प्रशंसा की है। किन्तु उन्हें जानना चाहिए कि लीग ने भी एक महिला को भेजा है। और 'डान' उसकी प्रशंसा छापेगा।

* * *

डाक्टर मुंजे ने भारत-मंत्री को तार दिया है कि लीगी मंत्रिमंडल पर हिन्दुओं का विश्वास नहीं है। यह भी पता है कि हिन्दुओं को अपने ऊपर भी विश्वास नहीं है।

* * *

प्रान्त भर में मोटरों की हड़ताल होने-वाली है। इससे इतना तो हो ही सकता है कि दंगा करनेवाले जल्दी से भाग नहीं सकेंगे। यदि रेल भी हड़ताल कर दे तो शायद दंगे में भी कमी हो जाय।

* * *

प्रयाग में चौबीस घंटे का करफ्यू लगा था। तो वहाँ एक साल का करफ्यू क्यों नहीं लगा दिया जाता। यदि केवल करफ्यू से दंगा कम हो जाय तो बड़े लाट को सारे भारत पर करफ्यू लगा देना चाहिए।

* * *

बरेली के कलक्टर ने आदेश दिया है कि काम के सिवा केवल मिजाजपुरसी के लिए मेरे यहाँ कोई न आया करे। बात ठीक है किन्तु बरेली में मिजाजपुरसी कर लेना आवश्यक होता है।

* * *

आचार्य नरेन्द्रदेव को आगरा विश्व-विद्यालय से डाक्टर की उपाधि मिलने-वाली है। पता नहीं लोग उन्हें अब डाक्टर नरेन्द्रदेव कहेंगे या आचार्य नरेन्द्रदेव या डाक्टर आचार्य नरेन्द्रदेव।

* * *

आचार्य शब्द कुछ खटकता-सा है भी। बिना डाक्टर के आजकल [illegible] ठीक नहीं जमता।

*

अप्रैल से [illegible] बाजी बन्द [illegible] नहीं। एक [illegible] प्रबन्ध [illegible]

सुना जाता है कि आई० सी० एस० की भरती अब बंद होगी। इँगलैंड के युवकों पर कुछ तो दया अंतरिम सर-कार को करनी चाहिए। क्या अब वे सब केवल क्लर्की करेंगे?

* * *

लीग के प्रतिनिधियों ने अमेरिका में बताया है कि यदि पाकिस्तान न मिलेगा तो भारत में गृह-युद्ध आरम्भ हो जायगा। जब भारत मुसलमानों का घर ही नहीं तो फिर घर का युद्ध कैसा?

* * *

राष्ट्रीय कवि पं० सोहनलाल द्विवेदी की रचनाएँ

अशोक के पुत्र कुणाल की कथा करुणापूर्ण भाषा में बड़े रोचक ढङ्ग से लिखी गई है। पढ़ते समय अशोक-कालीन भारतवर्ष का चित्र आँखों के सामने खिच जाता है। मूल्य १।) एक रुपया चार आने। राजसंस्करण २॥)

समुद्र-मन्थन की पौराणिक कथा के आधार पर रचित खण्ड-काव्य। भाषा में प्रवाह तथा ओज और पात्रों का सजीव चित्रण कवि की खास विशेषता है। मूल्य १) एक रुपया।

यह कवि की बालकोपयोगी २३ कविताओं का संग्रह है। मातृभूमि, जय-जय स्वदे[illegible] का झोंका, तुम बढ़ो

राष्ट्रीय कवि पं० सोहनलाल द्विवेदी की रचनाएँ

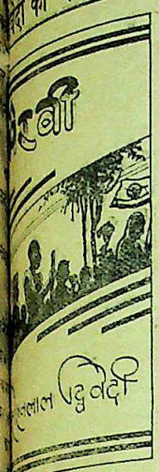

जवाहरलाल नेहरू तक ने [illegible] राष्ट्रीय कविताओं को पसन्द [illegible] हजारों प्रतियाँ बिकी हैं। [illegible] में भैरवी 'गांधीयुग' [illegible] है। मूल्य २॥) दो [illegible]

[illegible] एक आधुनिक काव्य है। [illegible] विद्वानों ने मुक्त कण्ठ [illegible] दो रुपये।

[illegible] की नवीनतम राष्ट्रीय कवि-[illegible] है। प्रत्येक कविता जीवन [illegible] करती है। फेदरवेट [illegible] पुस्तक का मूल्य २)

[illegible] बुकडिपो [illegible] लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश

इलाहाबाद की स्थिति

इलाहाबाद की स्थिति सुधारने के बजाय और भी बदतर हो रही है। प्रयाग स्टेशन की दुर्घटना के अतिरिक्त छुटपुट हमले जारी हैं। कहा जाता है, ता० १० नवम्बर से उपद्रवी क्षेत्रों में फौज तैनात कर दी जायगी और उसका खर्च उस क्षेत्रवालों से लिया जायगा।

* * *

मेरठ-कांग्रेस

कांग्रेस स्वयंसेवक-विभाग के डिप्टी जी० ओ० सी० श्री कैलाशप्रकाशजी ने ३१ अक्टूबर को लालपुर और अलीपुर नामक दो गाँवों का ग्रामसुधार-इन्स्पेक्टर श्री सूरजभानसिंह के साथ दौरा किया और वहाँ ट्रेनिंग पानेवाले स्वयंसेवकों का निरीक्षण किया। ट्रेनिंग पानेवाले मजबूत और तन्दुरुस्त हैं। इन गाँवों से काफी स्वयंसेवक मिलने की आशा है। स्वयंसेवकों ने अपनी वर्दियों का मूल्य देना स्वीकार कर लिया है।

* * *

बंगाल में संयुक्त मंत्रि-मंडल बनेगा ?

महात्माजी के कलकत्ता पहुँचने पर बंगाल के प्रधान मंत्री मि० सुहरावर्दी ने उनसे कई बार भेंट की। महात्माजी ने बंगाल के गवर्नर से भी मुलाकात की। इसके अतिरिक्त अन्य नेता—सर्वश्री शरत्चन्द्र बोस, किरणशंकर राय आदि से भी बातें कीं। वायसराय लार्ड वैवेल भी बंगाल का दौरा कर आये हैं। अस्थायी सरकार के चार मंत्रियों ने भी वायुयान से वहाँ दौरा किया है। पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल, श्री लियाकतअली खाँ और अब्दुर्रब निश्तर ये चारों मंत्री कलकत्ता गये थे। वहाँ से पटना ठहरकर दिल्ली गये। कलकत्ते में भारत-सरकार के मंत्रियों का जाना और बंगाल-सरकार के प्रधान मंत्री का गांधीजी से बार बार मिलना तथा गवर्नर आदि की भेंट से यह आभास होता है कि बंगाल में लीग अकेली सरकार चलाने में असमर्थ है। अतः ऐसे समय बिना संयुक्त-दल की सरकार के प्रान्त की सुव्यवस्था स्थिर नहीं रह सकती।

* * *

एक ही डिब्बे में जन्म और मृत्यु

पूर्व बंगाल की दुखभरी कहानियाँ नित्य समाचारपत्रों में प्रकाशित हो रही हैं। मरघेरिटा का समाचार है कि नोआखाली से ५०० शरणार्थी आ रहे थे। एक डिब्बे में एक ६० वर्ष का वृद्ध हृदय की गति रुक जाने से मरा पड़ा था। उसी डिब्बे में एक स्त्री मारे भय के शिशु को जन्म दे चुकी थी।

विदेश

मोलोटोव ने भारत का समर्थन किया

न्यूयार्क में, संयुक्तराष्ट्र संघ की बैठक में भारत के समर्थन में बोलते हुए रूस के वैदेशिक मन्त्री मो० विचस्लाव मोलोटोव ने कहा—'भारत की माँगों को स्वीकार करना चाहिए। हम लोग [illegible] अब भी [illegible]

भारत और रूस में मैत्री की आशा

संयुक्तराष्ट्र-संघ की बैठक में भारत के प्रतिनिधि-मंडल की नेत्री श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने साम्राज्यवाद के विरुद्ध जो प्रस्ताव रक्खा था उससे मास्को के समाचारपत्रों ने श्रीमती पण्डित की बड़ी प्रशंसा की है। मो० मोलोटोव के भारत का पक्ष समर्थन करने पर श्रीमती ने उनके वक्तव्य का स्वागत किया है। उनका कहना है कि इस वक्तव्य से भारत और रूस में मैत्री के लक्षण प्रकट हो रहे हैं। मो० मोलोटोव ने भारत के प्रतिनिधि श्री कृष्ण मेनन को अपने निवासस्थान पर मिलने को बुलाया था जहाँ काफी देर तक बातें कीं।

* * *

इंडोनेशियन प्रजातंत्र

जावा और सुमात्रा इंडोनेशियन प्रजातंत्र का निर्माण करेंगे। इस प्रजातंत्र की स्वीकृति शीघ्र ही हालैण्ड देगा। उपर्युक्त प्रजातंत्र के अतिरिक्त वहाँ एक संघ भी होगा जिसमें सिलीबीज, बाली और मलक्काज तथा अन्य द्वीप सम्मिलित रहेंगे।

* * *

संयुक्तराष्ट्र और भारतीय मामला

संयुक्तराष्ट्र-संघ में भारतीय मामला पेश है। प्रसिद्ध घेटो बिल के जन्मदाता जनरल स्मट्स संयुक्तराष्ट्र-संघ की राजनैतिक कमेटी में भारतीय मामले को विशेषाधिकार द्वारा गिराने के लिए काफी प्रयत्न करेंगे। भारतीय प्रतिनिधि-मंडल श्रीमती विजय-[illegible] करेगी। हरिजनों के सामाजिक संग-[illegible] और धार्मिक सुधार पर भी विचार हुआ। माननीय चौ० साहब ने सब लोगों को आश्वासन दिया कि हरिजनों की सब उचित माँगों को कांग्रेस सरकार द्वारा दूर करने का भरसक प्रयत्न किया जायगा।

—संवाददाता

* * *

उदयपुर हिन्दी-विद्यापीठ-महाविद्या-[illegible] के तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष के समान [illegible] वर्ष भी नवम्बर १९४६ से 'साहित्यरत्न [illegible] मध्यमा' परीक्षा में सम्मिलित होनेवाले [illegible] के लाभ के लिए 'साहित्यरत्न [illegible]यान 'माला' चलाने का आयोजन [illegible] गया है। यह व्याख्यानमाला १ [illegible]र से प्रारम्भ होकर २५ नवम्बर तक [illegible]ी। इसका समय सायंकाल ६॥ बजे [illegible]पुरी रखा गया है। साहित्यरत्न तथा

२० वर्षों के अन्दर भारत कृषि-कार्य में बहुत आगे बढ़ जायेगा।

* * *

स्टालिन और मोलोटोव

संयुक्तराज्य अमरीका के कुछ राजनैतिक क्षेत्रों में यह धारणा हो रही है कि रूस के दो बड़े राजनीतिज्ञों में कुछ मतभेद रहता है। मो० मोलोटोव की कुछ विरोधी वक्तृताओं से यह आभास होता है कि वे सोवियट सिद्धान्तों के कुछ मूलभूत विचारों में स्टालिन से मतभेद रखते हैं।

* * *

जापान का नया विधान

द्वितीय महायुद्ध में जापान के पराजित हो जाने के बाद से वहाँ आज तक फौजी कानून था। परन्तु अब एक नया कानून उस देश के लिए बना है। उसको लागू करने की स्वीकृति भी [illegible] आर्थर ने दे दी है। इस कानून [illegible] है देश के अन्दर शुद्ध प्रजातंत्र [illegible] के लिए व्यक्तिगत स्वतंत्रता [illegible]

* *

चित्रकूट-दमा-[illegible]

दमा की इस ख्यातिप्रा[illegible] कारी बूटी को सिद्ध महात्मा[illegible] इस पहाड़ी बूटी को पूर्णमा[illegible] तारीख ८ दिसम्बर सन् १९४[illegible] चाहिए। बूटी की एक मात्रा [illegible] दमा से एकदम मुक्ति मिल जा[illegible]

कृपया नीचे लिखे पते पर [illegible] पत्र-व्यवहार करें:—

श्री महात्मा मौनी [illegible]
आयुर्वेदिक आश्रम, चित्रकूट [illegible]

Before going out

अपने चमड़े पर काश्मीर स्नो लगाइये और जब तक उसका अंश दीख न पड़े तब तक उसको हथेली से घिसते रहिए। काश्मीर स्नो चिलकती धूप, साहित्यिक सेवाओं में आपके चमड़े को ग्रंथ भेंट करने के लिए २०-१०-४६ को श्री काका कालेलकर के सभापतित्व में समारोह हुआ। प्राच्यभाषा-परिषद् में आये हुए अनेक विद्वान् भी समारोह में सम्मिलित हुए। सर्वप्रथम महामहोपाध्याय डा० उमेशजी मिश्र, डा० वासुदेवशरण जी अग्रवाल और यशपाल जैन के भाषणों के बाद सर्वश्री किशोरलाल मश्रूवाला, सम्पूर्णानन्द, डा० अमरनाथ झा, श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, श्रीप्रकाश, मैथिलीश रणगुप्त, राय कृष्णदास, बाबूराव विष्णु पराड़कर, अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, डा० धीरेन्द्र वर्मा और पं० श्रीराम शर्मा प्रभृति के संदेश सुनाये गये। समारोह में मध्यप्रान्त के एक मंत्री श्री द्वारिकाप्रसाद मिश्र भी उपस्थित थे। सर्वश्री जैनेन्द्रकुमार, महात्मा भगवानदीन, भदन्त आनन्द कौशल्यायन, व्यौहार राजेन्द्रसिंह, बैरिस्टर जमनाप्रसाद जैन तथा डा० [illegible]

खुशबूदार हो सकते हैं,

अगर आप

तानसेन हेयर आयल

(रजिस्टर्ड)

का लगातार इस्तेमाल करें।

तानसेन सेण्ट
की सुगन्ध अत्यन्त आकर्षक और तबीयत को खुश करती है

[illegible] अमृतसर

[illegible] आगरा एजेन्टस्—हैथसी एण्ड कम्पनी बेनलगंज [illegible]
[illegible]रनपुर एजेन्टस्—बन्नूमल जयभगवान स्वरूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सपट
लोशन
दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.
सपट अँड्रू कं. लि.

जुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय
आरोंदा
१८६६
नीलगिरि तेल
प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयां—

क्रीमाला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

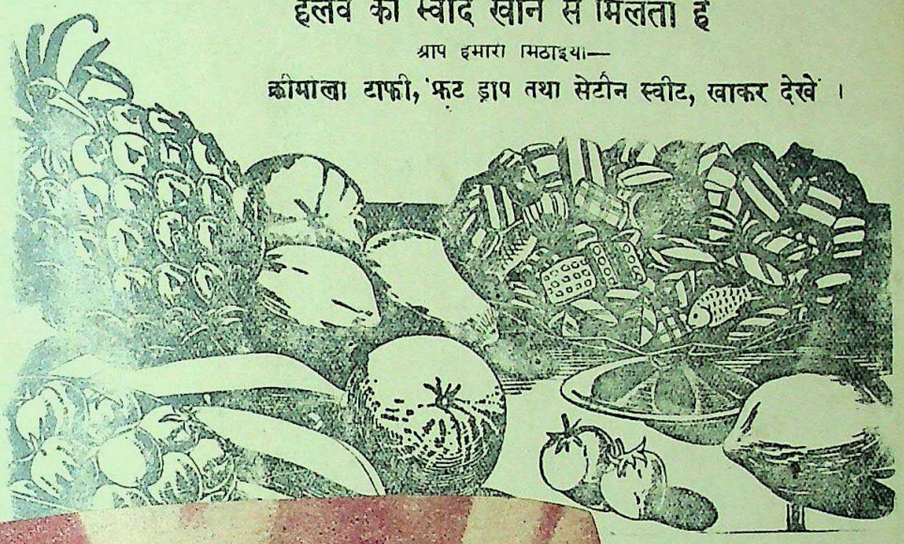

उस

से ही

र्म-सौन्दर्य बढ़ता है!

सॉनासे

चर्म-स्वास्थ्य की रक्षा कीजिए

यह सुन्दर, हरा, जल्दी झाग देनेवाला स्नान का साबुन शांतिदायी, आरोग्यवर्धक, त्वचा-विकार-विरोधी कैडिल के रासायनिक सम्मिश्रण से बना हुआ है। 'रैक्सोना' द्वारा किया गया प्रत्येक बार का स्नान, शरीर-सौंदर्य की रक्षा करने के लिए चर्म-स्वास्थ्य का पोषण करता हुआ, आपकी त्वचा को धूल और पसीने के विकारों से मुक्त कर देता है।

बालकों के लिये रैक्सोना

रैक्सोना में मि...

★ 'त्वचा' को शांति देने और उसकी रक्षा करने में, वैज्ञानिक रूप से 'रैक्सोना' में मिश्रित

को, ...

क्षित

ज्वर, कमजोरी, सूतिका, वात के लिये
सजीवनी सुधा
रक्तप्रदर, मासिक-धर्म की खराबी और जरायु की हरतरह की बीमारी के लिये
कारिष्ट
खुजली, बिखाज, घाव, खून की खराबी, आमेह, श्वेतप्रदर और हरतरह चर्म रोग के लिये
बाद्यासव
आयुर्वेदीय ...सी लि.
...की शाखाएँ—
...घाट और नीचीबाग
...आगरा, जौनपुर,
...गोरखपुर, लखनऊ,
...मिर्जापुर, फैजा-
...दिलदारनगर, आजमगढ़,
...सीतापुर, बस्ती,
...सकलडीहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Registered No. A—295
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इलाहाबाद—रविवार, १० नवम्बर

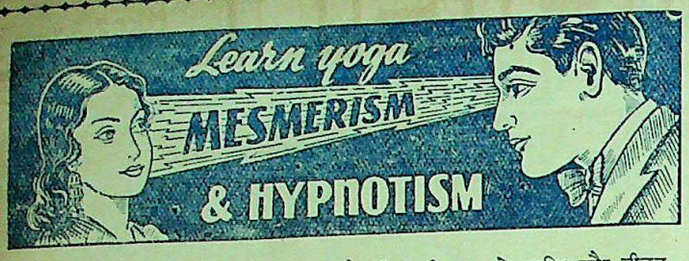
Learn yoga
MESMERISM
& HYPNOTISM

स्त्री-पुरुषों के लिए अपने घर पर उपर्युक्त क्रिया दिमाग़ को शान्ति और जीवन में वास्तविक प्रसन्नता के लिए आनन्ददायिनी प्राणशक्ति है। प्रथम तीन सौ ग्राहकों को परीक्षा के लिए मुफ़्त! कृपा कर शीघ्र लिखें।

मैनेजर—योग-भवन
नं० १९ ऋषीकेश, यू० पी०

इस प्रकार क्यों पीड़ित हैं?

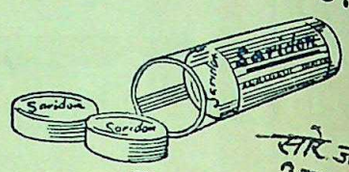

सारिडन
२० मिनट में
सारे दर्द रोक देती है

लिपटन लिः

उत्कृष्ट चाय
मिलाने और बेचने वाले

आप इनमें से चुन सकते है :

ग्रीन (हरा) लेबुल : सर्वोत्तम दा... चाय की खुशबू ही अलग हो... यह सबसे बढ़िया क्वालिटी है।

येलो (पीला) लेबुल : अच्छी ... यह बनाई गई है। अपनी बढ़िया ... के लिये यह दुनियाँ भर में विख्...

रेड (लाल) लेबुल : इस चाय की ... तृप्ति दायक है।

हिमालयन : हिमालय की मनो... पीको।

व्हाइट (सफेद) लेबुल : सुस्वादु ... इस्तेमाल लायक सस्ती और स... वालों को खुश करती है।

(दाम १॥=)। पाउण्ड)

जाकूजा बुकनी : टी गर्ल बुकनी : चमकीली, लज्जतदार, ज्यादा से ज्यादा कप तरल चाय बनाने वाली।

(दाम १॥=)॥ पाउण्ड)

लिपटन

...न करेगी। हरिजनों के सामाजिक संग-...न और धार्मिक सुधार पर भी विचार ...आ। माननीय चौ० साहब ने सब ...लोगों को आश्वासन दिया कि हरिजनों ...की सब उचित माँगों को कांग्रेस सरकार ...द्वारा दूर करने का भरसक प्रयत्न किया ...जायगा।

—संवाददाता

* * *

उदयपुर हिन्दी-विद्यापीठ-महाविद्या-... के तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष के समान ...वर्ष भी नवम्बर १९४६ से 'साहित्यरत्न ...मध्यमा' परीक्षा में सम्मिलित होनेवाले ...के लाभ के लिए 'साहित्यरत्न ...ध्यान 'माला' चलाने का आयोजन ...गया है। यह व्याख्यानमाला १ ...र से प्रारम्भ होकर २५ नवम्बर तक ...। इसका समय सायंकाल ६॥ बजे ...पुरी रखा गया है। साहित्यरत्न तथा

साहित्यक सेवाओं ... ग्रंथ भेंट करने के लिए २०-१०-४६ को श्री काका कालेलकर के सभापतित्व में समारोह हुआ। प्राच्यभाषा-परिषद् में आये हुए अनेक विद्वान् भी समारोह में सम्मिलित हुए। सर्वप्रथम महामहोपाध्याय डा० उमेशजी मिश्र, डा० वासुदेवशरण जी अग्रवाल और यशपाल जैन के भाषणों के बाद सर्वश्री किशोरलाल मश्रूवाला, सम्पूर्णानन्द, डा० अमरनाथ झा, श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, श्रीप्रकाश, मैथिलीश रणगुप्त, राय कृष्णदास, बाबूराव विष्णु पराड़कर, अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, डा० धीरेन्द्र वर्मा और पं० श्रीराम शर्मा प्रभृति के संदेश सुनाये गये। समारोह में मध्यप्रान्त के एक मंत्री श्री द्वारिकाप्रसाद मिश्र भी उपस्थित थे। सर्वश्री जैनेन्द्रकुमार, महात्मा भगवानदीन, भदन्त आनन्द कौशल्यायन, व्यौहार राजेन्द्रसिंह, बैरिस्टर जमनाप्रसाद जैन तथा डा० ए० एन...

थोड़ी थोड़ी बचत बड़ी बड़ी समस्या... की निवृत्ति करती है

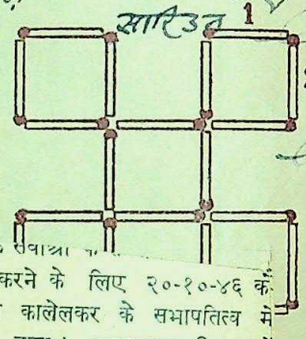

उत्तर : तीली नं० १ ... को हटा दीजिये और ... तीली 'X' और 'Y' के ... रखिये। इस प्रकार ६ ... चतुर्भुज बन जायेंगे।

...किस प्रकार" सब समस्याओं की ... स्कीम से आपकी आर्थिक समस्या ... अथवा प्रति मास थोड़ा बहुत ... सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिये।

...ग्ज़ सर्टिफिकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

(१) आप ५, १०, ५०, १००, ५००, १०००, या ५०००, रु० के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) कुटुम्ब का प्रत्येक व्यक्ति (वयस्क या अल्पवयस्क) ५००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स खरीद सकता है। दो व्यक्ति मिलकर १०,००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स खरीद सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है। सरकार द्वारा प्रचलित रुपया लगाने की मदों पर जो ब्याज दिया जाता है यह सब से अधिक दर है।

(४) इस ब्याज पर इन्कम ... लगता।

(५) ये २ वर्ष पश्चात ... हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट ... पश्चात भी भुनाया जा सकता है।

(६) जिनकी बचत थोड़ी है ... ।) वाले सेविंग्ज स्टाम्प्स ... ५ रु० के स्टाम्प्स जमा होने ... सेविंग्ज सर्टिफिकेट मिल जायेगा।

(७) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स ... सरकार द्वारा अधिकृत एजेंटों ... ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

...गरा एजेन्टस्—हैथसी एण्ड कम्पनी बेनलाल ...
...रनपुर एजेन्टस्—बन्नूमल जयभगवान स्वरूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

१७ नवम्बर, १९४६ सचित्र हिन्दी साप्ताहिक Sunday, 17th November, 194

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Learn yoga
MESMERISM
& HYPNOTISM

स्त्री-पुरुषों के लिए अपने घर पर उपर्युक्त क्रिया दिमाग़ को शान्ति और जीवन में वास्तविक प्रसन्नता के लिए आनन्ददायिनी प्राणशक्ति है। प्रथम तीन सौ ग्राहकों को परीक्षा के लिए मुफ़्त! कृपा कर शीघ्र लिखें।

मैनेजर—योग-भवन
नं० १९ ऋषीकेश, यू० पी०

इस प्रकार क्यों पीड़ित हैं?

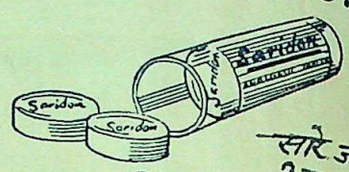

सारिडन
२० मिनट में
सारे दर्द रोक देती है

लिपटन लिः

उत्कृष्ट चाय
मिलाने और बेचने वाले

आप इनमें से चुन सकते है :

ग्रीन (हरा) लेबुल : सर्वोत्तम दा... चाय की खुशबू ही अलग हो... यह सबसे बढ़िया क्वालिटी है।

येलो (पीला) लेबुल : अच्छी ... यह बनाई गई है। अपनी बढ़िया ... के लिये यह दुनिया भर में विख्...

रेड (लाल) लेबुल : इस चाय की ... तृप्ति दायक है।

हिमालयन : हिमालय की मनो... पीको।

व्हाइट (सफेद) लेबुल : सुस्वादु ... इस्तेमाल लायक सस्ती और स... वालों को खुश करती है।

(दाम १॥=)॥ पाउण्ड)

जाकूजा बुकनी : टी गर्ल बुकनी : चमकीली, लज्जतदार, ज्यादा से ज्यादा कप तरल चाय बनाने वाली।

(दाम १॥=)॥ पाउण्ड)

लिपटन

...ल करेगी। हरिजनों के सामाजिक संग-...न और धार्मिक सुधार पर भी विचार ...आ। माननीय चौ० साहब ने सब ...लोगों को आश्वासन दिया कि हरिजनों ...की सब उचित माँगों को कांग्रेस सरकार ...द्वारा दूर करने का भरसक प्रयत्न किया ...जायगा।

—संवाददाता

* * *

उदयपुर हिन्दी-विद्यापीठ-महाविद्या-... के तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष के समान ...वर्ष भी नवम्बर १९४६ से 'साहित्यरत्न ...मध्यमा' परीक्षा में सम्मिलित होनेवाले ...के लाभ के लिए 'साहित्यरत्न ...यान 'माला' चलाने का आयोजन ...गया है। यह व्याख्यानमाला १ ...र से प्रारम्भ होकर २५ नवम्बर तक ...। इसका समय सायंकाल ६॥ बजे ...पुरी रखा गया है। साहित्यरत्न तथा साहित्यक सेवाओं ... ग्रंथ भेंट करने के लिए २०-१०-४६ को श्री काका कालेलकर के सभापतित्व में समारोह हुआ। प्राच्यभाषा-परिषद् में आये हुए अनेक विद्वान् भी समारोह में सम्मिलित हुए। सर्वप्रथम महामहोपाध्याय डा० उमेशजी मिश्र, डा० वासुदेवशरण जी अग्रवाल और यशपाल जैन के भाषणों के बाद सर्वश्री किशोरलाल मश्रूवाला, सम्पूर्णानन्द, डा० अमरनाथ झा, श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, श्रीप्रकाश, मैथिलीश रणगुप्त, राय कृष्णदास, बाबूराव विष्णु पराड़कर, अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, डा० धीरेन्द्र वर्मा और पं० श्रीराम शर्मा प्रभृति के संदेश सुनाये गये। समारोह में मध्यप्रान्त के एक मंत्री श्री द्वारिकाप्रसाद मिश्र भी उपस्थित थे। सर्वश्री जैनेन्द्रकुमार, महात्मा भगवानदीन, भदन्त आनन्द कौशल्यायन, व्यौहार राजेन्द्रसिंह, बैरिस्टर जमनाप्रसाद जैन तथा डा० ए० एन...

थोड़ी थोड़ी बचत बड़ी बड़ी समस्या... की निवृत्ति करती है

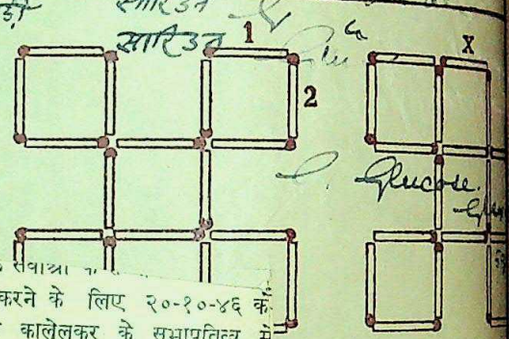

उत्तर : तीली नं० १ ... को हटा दीजिये और ... तीली 'X' और 'Y' के ... रखिये। इस प्रकार ६ ... चतुर्भुज बन जायेंगे।

...किस प्रकार" सब समस्याओं की ... स्कीम से आपकी आर्थिक समस्या ... अथवा प्रति मास थोड़ा बहुत ... सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिये।

...ग्ज़ सर्टिफिकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

(१) आप ५, १०, ५०, १००, ५००, १०००, या ५०००, रु० के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) कुटुम्ब का प्रत्येक व्यक्ति (वयस्क या अल्पवयस्क) ५००० रु० तक के सर्टिफिकेट्स खरीद सकता है। दो व्यक्ति मिलकर १०,००० रु० तक के सर्टिफिकेट्स खरीद सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है। सरकार द्वारा प्रचलित रुपया लगाने की मदों पर जो ब्याज दिया जाता है यह सब से अधिक दर है।

(४) इस ब्याज पर इन्कम ... लगता।

(५) ये २ वर्ष पश्चात ... हैं (५ रु० का सर्टिफिकेट ... पश्चात भी भुनाया जा सकता है।

(६) जिनकी बचत थोड़ी है ... ।) वाले सेविंग्ज स्टाम्प्स ... ५ रु० के स्टाम्प्स जमा होने ... सेविंग्ज सर्टिफिकेट मिल जायेगा।

(७) सर्टिफिकेट्स और स्टाम्प्स ... सरकार द्वारा अधिकृत एजेंटों ... ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

...विंग्ज़ ग्रूप में अभी सम्मिलित हो ...

...शित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्य ७॥)
दूसरा ≡)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

१७ नवम्बर, १९४६ सचित्र हिन्दी साप्ताहिक Sunday, 17th November, 194

नव-जागरण के लिए
[illegible]वाली श्रीमती अरुणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शारीरिक उष्णता के लिये...

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

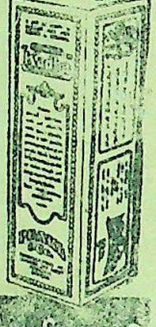

आज से ही शुरू किजिए, सर्वत्र मिलता है।

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या हथेली तलुवों और आंखों की असह्य जलन, मूत्रमार्ग में आग सी जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठबद्धता, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, बड़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढ़ा बालक वृद्ध, पुरुष स्त्री सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक हानिरहित है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निस्संकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके शीतल, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

पर्ल कम्पनी

एजेन्ट चाहिए, शर्तों के लिए लिखिये।

यू० पी० प्रतिनिधि दोसर एण्ड को०, बिरहना रोड, कानपुर।

रोना

हँसना

ग्राइप वाटर के उपयोग के बाद पेट के दर्द व खट्टे डकार से छुटकारा मिलता है।

WOODWARD'S GRIPE WATER

झपट लोशन

दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.

झपट अंड कं. लि.

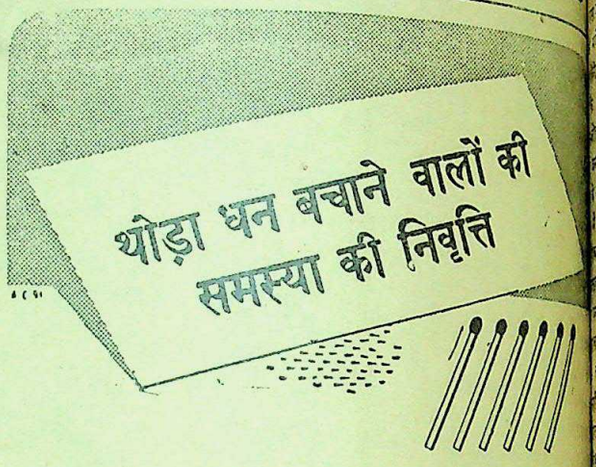

थोड़ा धन बचाने वालों की समस्या की निवृत्ति

प्रश्न : दियासलाई की ६ तीलियों की सहायता से चार त्रिकोण बनाइए।

उत्तर : एक मेज़ पर तीन तीलियों को एक त्रिकोण के रूप में रखिये और शेष तीन की सहायता से एक सूच्याकार बनाइए जैसा आकृति में दिखाया गया है।

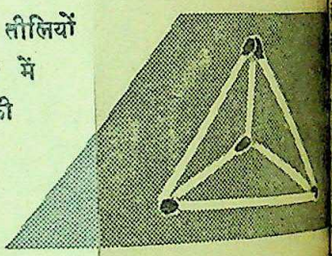

ऐसी समस्यायें केवल चतुर ही नहीं बनातीं बल्कि अवकाश में प्रसन्नता और मनोरंजन भी देती हैं। लेकिन हमारे सन्मुख आर्थिक रूप से सुरक्षित रहना इन से कहीं कठिन समस्या है। इस समस्या से आपको चिन्तित न रहना चाहिये क्योंकि इस समस्या की निवृत्ति उचित रूप से बचत करके हो सकती है। प्रति वर्ष आप अपनी बचत की पूंजी में वृद्धि और आर्थिक रूप से उन्नति कर सकते हैं यदि आप नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स खरीद कर थोड़ा धन लगाने वालों की प्रतिदिन बढ़ती संख्या के साथ सम्मिलित हो जायें। नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स रुपया लगाने की सबसे श्रेष्ठ मद हैं, यह पूर्णतया सुरक्षित और सब मदों से अधिक लाभदायक है।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

(१) आप ५, १०, ५०, १००, ५००, १०००, या ५०००, रु० के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) कुटुम्ब का प्रत्येक व्यक्ति (वयस्क या अल्पवयस्क) ५००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स खरीद सकता है। दो व्यक्ति मिलकर १०,००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ [illegible] रुपया १॥) बन जाता है। [illegible] लगाने की मदों [illegible] है यह सब से

(४) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स [illegible] लगता।

(५) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा [illegible] हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट १-१/[illegible] पश्चात भी भुनाया जा सकता है)

(६) जिनकी बचत थोड़ी है वह [illegible] ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद [illegible] ५ रु० के स्टाम्प्स जमा होने पर एक [illegible] सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट मिल जायेगा।

(७) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स [illegible] सरकार द्वारा अधिकृत एजेंटों अथवा [illegible] ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

[illegible] में अभी सम्मिलित हो जाइए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

देशदूत

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, १७ नवम्बर, १९४६

१०, संख्या १२]

महामना पूज्य मालवीयजी का स्वर्गारोहण

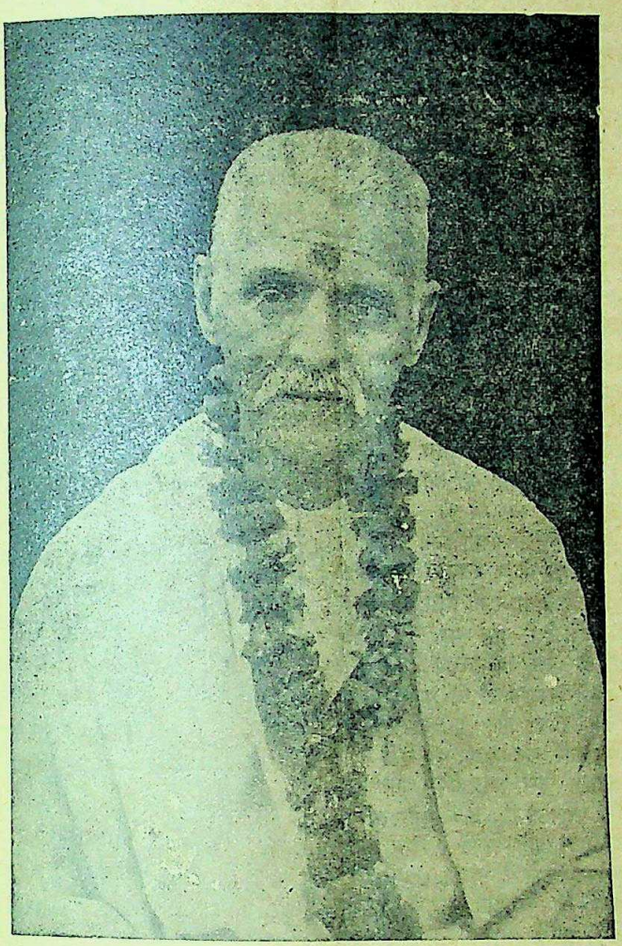

महामना पूज्य पण्डित मदनमोहन मालवीयजी महाराज का १२ नवम्बर को ४ बजकर १३ मिनट पर दोपहर बाद काशी में स्वर्गवास हो गया।

महामना पंडित मदनमोहन मालवीय इस बार की बीमारी में एक सप्ताह से अधिक न चल सके। उनकी जीवन-चर्या को देखकर कोई भी देश या विदेशवासी कह सकता है कि वे देश के लिए जिये और देश के लिए मरे। पूर्वी बंगाल की घटनाओं ने पूज्य मालवीयजी की वृद्धावस्था के अनवरत विश्राम में बाधा दी। वहाँ के बर्बर अत्याचारों ने उनको बेचैन कर दिया। आखिरकार उन्हें पूर्वी बंगाल के निरपराध हिन्दुओं पर होते हुए अत्याचारों ने अपना अन्तिम वक्तव्य देने के लिए विवश किया। मालवीयजी ने वक्तव्य देते हुए कहा था—'अब समय आ गया है जब कि हिन्दुओं को अपनी पूर्ण शक्ति से संगठित हो जाना चाहिए। मानवता की रक्षा के लिए यह बहुत आवश्यक है।' इसके बाद वे फिर संसार अथवा देश के लिए कोई वक्तव्य न दे सके। तारीख १२ नवम्बर को ४ बजकर १३ मिनट पर वे इस संसार से चल बसे। प्रत्येक भारतीय उनकी इस असामयिक मृत्यु से दुखी है। यह अनुमान था कि वे अभी कुछ दिनों तक जीवित रहेंगे। पर बर्बरता-द्वारा मानवता का अन्त देखकर उनका हृदय काँप उठा; उसी समय से वे अस्वस्थ होने लगे थे। अपनी बीमारी में जब कभी भी वे अच्छे रहते पूर्वी बङ्गाल की स्थिति को पूछते रहे। यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि पूर्वी बं[illegible] में मानवता के सत्यानाश ने मालवीयजी के जी[illegible] अवस्था से [illegible] मानवता [illegible] लिया है [illegible]

चाहिए। बंगाल-उपद्रव के लिए लीगी मंत्रि-मंडल उत्तरदायी है। बात तो सही है, बावन तोला पाव रत्ती। लेकिन किया क्या जाय? बंगाल मुस्लिम-बहुमत प्रांत है ही, अल्पमत में वह बदला नहीं जा सकता। अपने राम की समझ में यह भी आता है कि इस वक्त जरूरत यह है कि किसी तरह लीगवाले नाराज न होने पायें। बंगाल में इतना अनाचार हुआ किन्तु केन्द्रीय सरकार के कान पर जूँ तक नहीं रेंगी। बिहार में भी अनाचार हुआ लेकिन केन्द्रीय सरकार अनाचार दबाने के लिए ताबड़तोड़ दौड़ पड़ी। इसलिए अपने राम तो जानते हैं कि हिन्दुओं की रक्षा किसी में करने की हिम्मत नहीं है, जब तक कि वह खुद अपनी रक्षा के लिए तैयार नहीं होते। जो स्वयं अपनी रक्षा नहीं कर सकता उसकी रक्षा त्रिलोक में कोई नहीं कर सकता। चाहे कांग्रेस हो या हिन्दू-महासभा। रह गई ब्रिटिश सरकार वह तो सबको एक नजर से देखती है, पहले लीगरों की रक्षा हो, इसके बाद बकायों की।

* * *

कहा जाता है कि बर्मा में अँगरेजों की करतूत के कारण हजारों टन चावल सड़ गया। हिन्दुस्तान में अकाल पड़ा; लेकिन अँगरेजों ने अन्न से कोई मदद नहीं की। अपने राम की समझ में नहीं आता कि अँगरेज भारतीय भुखमरों की मदद क्यों करते? क्या करते बेचारे इँगलैंड नहीं भेज पाये नहीं तो चावल सड़ने न पाता। अँगरेज हिन्दुस्तान में आये हैं यहाँ के अनाज को बाहर भेजने के लिए न कि अपने यहाँ की चीज भी यहाँ भेजने के लिए। अँगरेज बहादुरों ने बर्मा के चावल के लिए यह निश्चय किया कि न खाओ और न खिलाओ भले ही सड़ जाये।

* * *

केन्द्रीय सरकार में अब मुस्लिम लीग भी शामिल हो गई है। देखने में तो केन्द्रीय सरकार प्रतिनिधित्वपूर्ण बन गई है लेकिन शासन आगे कैसे संचालित होगा, इसे लार्ड वैवेल जाने या भगवान्। केन्द्रीय सरकार जब कांग्रेस के हाथ में थी तो लार्ड वैवेल के अन्तिम फैसले का उतना महत्त्व नहीं दिया जाता था लेकिन अब चूँकि लीग भी सरकार में शामिल हो गई है इसलिए मंत्रिमंडल के निश्चय का अन्तिम निर्णय लार्ड वैवेल को ही करना पड़ेगा। चलिये केन्द्रीय सरकार में लीग का आगमन सरकार के लिए शुभ ही [illegible] शुभ काम के लिए ही तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय पृष्ठ

गृह-युद्ध और दंगे

भारत में जिस संदिग्ध गृह-युद्ध की आशंका की जाती थी, उसके प्रारम्भ होने के पहले ही साम्प्रदायिक दंगे अपना कौशल दिखलाने लगे। मुस्लिम लीग के कर्णधारों ने भारत विभाजन की जो योजना बना रक्खी है उसका कोई क्रियात्मक स्वरूप देश और संसार के सम्मुख आज तक नहीं आ सका। पर, लीगी नेताओं की मानसिक भावनाओं का पता उनके वक्तव्यों और कुछ दिनों के होनेवाले कारनामों से प्रकट हो जाता है। सरदार वल्लभभाई पटेल ने मिस्टर जिन्ना और उनके सहकारियों के गर्म वक्तव्यों और गृह-युद्ध की धमकियों से प्रेरित होकर अहमदाबाद की एक सभा में कहा था—'राष्ट्र को विभाजन से बचाने के लिए देश में भयंकर लड़ाई होगी।' इस भाषण को लेकर लीगी साम्प्रदायिक पत्र 'डान' ने अपने सम्पादकीय में 'सिविल वार' शीर्षक के अन्तर्गत लेख में सरदार पटेल की कड़ी आलोचना की थी। किन्तु वह दिन बीत गया। कांग्रेस-लीग दोनों दलों से मिलकर ब्रिटिश सत्ता ने भारत के साथ नये-नये खेल खेले। लीग सर्वदा ब्रिटिश-सत्ता की कठपुतली रही है वह अपने मार्ग पर ज्यों की त्यों चलती रही। अंत में लार्ड वैवेल की कृपा से अन्तर्कालीन सरकार में कांग्रेस को लीग के लिए समानता का प्रतिनिधित्व स्वीकार करना पड़ा फिर भी अभी असंतोष बाकी है।

लीग किसी प्रकार विधान-परिषद् में जाने के लिए राजी हुई। प्रतिनिधि भी चुनकर भेज दिये गये। फिर भी अमरीकन पत्रकार लुई फिसर के वक्तव्य से कि 'लीग की यह प्रथम हार है।' मिस्टर जिन्ना भड़क उठे। गृह-युद्ध की पहली धमकी थी उसकी ओर उन्होंने कदम बढ़ाया। अन्तर्कालीन सरकार से असहयोग करने के साथ ही 'प्रत्यक्ष कार्रवाई' की एक नई योजना को सामने लाकर संसार के राजनीतिज्ञों का ध्यान आकर्षित किया।

ईमानदारी की बात तो यह है कि कलकत्ता १६ अगस्त का दिवस कभी भुलाया नहीं जा सकता। कितने ही हजार निरपराध बूढ़े, बच्चे और युवक नर-नारी उस प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस के शिकार बन बैठे। सचमुच बंगाल मुस्लिम लीग की यह प्रत्यक्ष कार्रवाई थी, उससे कोई इनकार नहीं करता। गुंडों का दल संगठित था। वही दल विकृत रूप में नोआखाली और टिपरा के इलाकों में डाकू, लुटेरा और आग लगानेवाला बनकर उदय हुआ। मुस्लिम लीग के कितने ही सदस्य उस संगठित आन्दोलन के उत्तेजक थे जो पीछे गिरफ्तार भी हुए हैं। यदि इन सबकी प्रतिक्रिया बिहार, संयुक्तप्रांत अथवा अन्य सूबों में हो तो आश्चर्य की बात नहीं है। यह भी एक प्रकार से खुले विद्रोह का मुकाबला है। हम पूछते हैं कि पूर्वी बंगाल में यदि मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य सम्प्रदाय के लोग न रह पायेंगे तो फिर वहाँ पाकिस्तान के सिवा रह ही क्या जायगा? आज भी मिस्टर जिन्ना गर्म वक्तव्य

की रक्षा की जा सके। मिस्टर जिन्ना ने अपने एक वक्तव्य में कहा है—"हम मुसलमान देशों का एक सम्मेलन करना चाहते हैं। काहिरा में जो सम्मेलन होने की आयोजना है बड़ी ही सुन्दर चीज है। हम मुस्लिम राष्ट्र एक होना चाहते हैं।" पंडित जवाहरलाल नेहरू अथवा कांग्रेस के एशियाई देशों के सम्मेलन की यह नकल है। वह भी महाद्वीप के संगठन में विभाजन और मतभेद लम्बे पैमाने पर बढ़ाने का प्रयत्न कर रहे हैं। इस पर भी हमारे राष्ट्रीय नेता अपना रक्त दान देकर उस आजादी को प्राप्त करना चाहते हैं। क्या यह संभव है कि कायरता से हिन्दुओं का एक बड़ा समूह साम्प्रदायिक गुंडों द्वारा पददलित कर दिया जायगा? यदि ईमानदारी के साथ निष्पक्ष रूप से अनाचार को दबाया न गया तो अंत में फिर कांग्रेस अथवा राष्ट्रवादियों को पाकिस्तान स्वीकार करना ही होगा। हम अल्लामा मशरकी की उस योजना को अच्छा समझते हैं जिनमें २५ हजार हिन्दू-मुसलमान खाकसार बंगाल और बिहार भेजे जायेंगे। वहाँ वे जनता की सहायता करेंगे। इन साम्प्रदायिक दंगों का रूप लीग की प्रत्यक्ष कार्रवाई है; गृह-युद्ध की जो धमकियाँ लीग की ओर से आरम्भ की गई थीं वह बढ़ती जा रही हैं। परन्तु जिन राष्ट्रवादी नेताओं ने देशों को विभाजन से बचाने का प्रयत्न किया है वे आज भी लीग को प्रसन्न करने में लगे हैं। क्या यह दंगे भावी गृह-युद्ध के प्रारंभिक नमूने नहीं हैं? यदि इनके जन्मदाताओं को समझ लिया गया है तो शांति और सुरक्षा के लिए उन्हें गिरफ़्तार कर कड़ा दंड क्यों नहीं दिया जाता? हम भारतीय जनता के एकता के पक्षपाती हैं, शांति और सुरक्षा के कार्यों में विश्वास करते हैं किन्तु कुछ बर्बर साम्प्रदायिकों के सामने ४० करोड़ देशवासियों को अरक्षित रूप में छोड़ने के पक्षपाती नहीं हैं।

* * *

भारत-सरकार का शिक्षा-सुधार

केन्द्रीय असेम्बली में शिक्षा-सचिव श्री राजगोपालाचार्य ने एक प्रश्न के उत्तर में वक्तव्य देते हुए भारत-सरकार के शिक्षा-सुधार-सम्बन्धी नीति को स्पष्ट किया है। सरकार चाहती है कि देश से अशिक्षा का अन्त हो जाये। सीमाप्रान्त को छोड़कर अन्य प्रान्तीय सरकारें अपने यहाँ सरकार की पंचवर्षीय योजना कार्यान्वित करने को तैयार हैं। भारत-सरकार वर्तमान शिक्षा में सुधार करने की योजना बना चुकी है। इस योजना में १२५ करोड़ रुपये खर्च होंगे। सिन्ध और सीमा-प्रान्त को छोड़कर सारे प्रान्तों में अनिवार्य बेसिक शिक्षा बच्चों में प्रारम्भ की जायेगी। इस शिक्षा से ६ से १४ वर्ष तक के लड़के-लड़कियाँ लाभ उठायेंगे। भारत-सरकार ने प्रान्तीय सरकारों के सहयोग से एक योजना तैयार की है जिसके अनुसार ५०० विद्यार्थी प्रतिवर्ष विज्ञान की विशेष शिक्षा के लिए विदेशों में भेजे जाया करेंगे। इसमें ३ करोड़ ६० लाख रुपये खर्च होंगे। भारत

हलचल

भंग की तरंग

बिहार में गोली चली। नोआखाली में कम लोग मरे होंगे इसलिए आवश्यक संख्या की पूर्ति होनी ही चाहिए थी।

* * *

गढ़मुक्तेश्वर के मेले में भी साम्प्रदायिक दंगा हो गया। पश्चिम पूरब से किस बात में कम है। वहाँ न होता तो पूरब बढ़ जाता। पश्चिम यह अपमान कैसे सह सकता था?

* * *

महात्मा जी की आज्ञा है कि मुसलमान हिन्दुओं की रक्षा का भार अपने ऊपर लें। सब लोग मुसलमान हो जायँ तो इसका प्रश्न ही खड़ा न हो। इसका प्रचार होना चाहिए।

* * *

मेरठ में कांग्रेस कैम्प में किसी ने आग लगा दी। जिसने आग लगाई उसने समझा होगा कि स्वराज्य मिल गया। अब कांग्रेस की क्या आवश्यकता है?

फ्री टिकट मिलना चाहिए। भी विद्यार्थियों को इतनी जायगी तो कर दी जायगी।

* *

श्री मुहम्मद यूनुस शामिल हो गये। चार रहे हैं। इसके बाद आप

* *

जिन्ना साहब कहते हैं मुसलमानों पर जुल्म हो बात ठीक है तो मध्यप्रान्त विजयी हो सकते हैं। लमानों पर जुल्म कर सकते महान् वीर होंगे।

* *

बिहार के मुसलमानों वर्दी ने अपील की है। में तो स्वयं सहायता कर सकते अपील की आवश्यकता नहीं

* *

कुछ देशभक्त कांग्रेसजन कहते हैं कि कांग्रेस-कमेटियों के लिए स्थान सुरक्षित रहना वहाँ भी कोटा बन जाना हमारी राय में हर कमेटी में

चाँदनी रात

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

सरदी हल्की पड़ रही ढकी ओस से है मही,
मक्खन की सरिता बही अथवा फैला है दही;
अजब चाँदनी रात है,
मानो बरसा भात है।
रूई का संसार है या गंगा की धार है,
हिम का पारावार है चीनी का विस्तार है;
फैला कुमुद प्रसून है,
या यह छिड़का नून है।
धवलागिरि है सो गया कोई मोती बो गया,
अंधकार है खो गया जग चूने से धो गया;
धरती का शृङ्गार है,
पोता क्रीम अपार है।
घड़ा सुधा का फूटकर कीर्ति किसी की लूटकर,
तालमखाना कूटकर तारों का दल टूटकर;
धरती पर बिखरा पड़ा,
हास्य स्वयं है या खड़ा।
युग का नया विहान है या खद्दर का थान है,
अँगरेजों का यान है जो करता प्रस्थान है;
परछाईं है घाम की,
ठंडाई बादाम की।

बम्बई में यह कानून बन गया कि कोई एक से अधिक विवाह न करे। साथ ही यह भी नियम बन जाता कि एक से अधिक से प्रेम न करे तो और अच्छा होता।

* * *

लखनऊ के विद्यार्थी चाहते हैं कि हमें सिनेमा के लिए अधिक सुविधाएँ मिलनी चाहिए। विद्यार्थियों को सिनेमा के लिए

और पाँच मुसलमान रहें। इस कायदे आजम भी कमी कर आयें।

* *

महात्मा जी ने कहा है कि धर्म में जबरदस्ती मुसलमान लिखा है। आयतों में न लिखा टीका में लिखा है।

* *

श्रीमती विजयलक्ष्मी अमरीका में कहा है कि सरकार फासिस्ट है। महिला सुविधा है। वह सब कह सकती है।

* *

पता लगा है कि आजाद शासन में बड़ी लूट हुई है। सा रुपया खा गये। शासन नहीं है तो क्या संन्यास लेने

ध्यान देने के लिए सरकार ने कई यूनिवर्सिटियों को स्वयं सहायता करने और प्रान्तीय सरकार की सहायता दिलाने का [illegible] इन सब योजनाओं के [illegible] की शिक्षा भी देने [illegible] गई है। हम [illegible] स्वागत करते [illegible] सामूहिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...नकोर का निरंकुश शासन

...रियासती शासक तथा जनता में एक संघर्ष

लेखक, श्री महेन्द्रकुमार

...की आज भी वही स्थिति है जो युद्ध-पूर्व थी। उनके शासक यह नहीं ...देश की जनता की कमाई खाते हैं। वे जनता से सम्बन्ध को अपनी ...हैं। अँगरेजों से सम्पर्क रखना, उनकी एक एक आज्ञाओं का पालन ...में ब्रिटिश साम्राज्य को जीवित रखने को वे एक प्रकार के ठीकेदार हैं। ...यदि उन्हें जनता के ऊपर बम बरसाना भी पड़े तो करेंगे। ट्रावनकोर का ...चित्र है, जिसको लेखक ने इस लेख में वहाँ की स्थिति को चित्रित किया है। लेख पठनीय है।

...की लगभग सभी देशी रिया-...की अपूर्व लहर जनता को ...मोर्चे से संघर्ष करने के लिए ...रही है। ट्रावनकोर से लेकर ...—राजपूताने से लेकर उड़ीसा ...तक की जनता युगों से होते ...दमन और शोषण के ...तोड़ देने के लिए खड़ी हो ...साम्राज्यवादियों के बनाये ...भारत' में निरंकुश सामन्ती ...मिटाकर उत्तरदायित्वपूर्ण सर-...स्थापना। जनवादी अधिकारों ...का यह संघर्ष दावानल की ...रहा है।

...भारत का ट्रावनकोर राज्य ...और झरनों का सुन्दर ...प्रकृति ने इस प्रदेश को अपूर्व ...है—परन्तु सामन्ती शोषण ...में पिसती हुई रियासत की लग-...जनता की बुरी हालत है। ...और निरंकुश शासन के ...हुई जनता ने अपनी गरीबी, ...गुलामी की जड़ को पहचान ...जिन्दगी और आजादी ...और स्वाधीन जीवन की ...एक हो गई है।

...की प्रतिक्रिया

...योजना के अनुसार देशी रिया-...भारतीय विधान-निर्मात्री परिषद् ...को भेजने का अधिकार ...अपने सामन्ती शासन को ...लिए हर जगह छोटे-मोटे ...की घोषणा कर रियासतों ...जनता को भुलावे में डाल, ...और अन्य संस्थाओं से सम-...अपने प्रतिनिधियों को विधान-...भेजना चाहते हैं।

...के पीछे दो उद्देश्य हैं—

...परिषद् में ऐसे प्रतिनिधि ...निरंकुश शासन-प्रणाली ...आने दें और रियासत के ...नेताओं से समझौता कर जनता ...आन्दोलन को रोका जाय। ...छोटे-मोटे सुधारों के आधार ...नरमदली नेताओं और ...स्टेट कांग्रेस से हो जाता है ...संयुक्त आन्दोलन में दरार ...और फिर उसे दबाया जा

...सुधार—'अमेरिकन-विधान' ...में भी दीवान ने सुधारों ...है। सुधारों के नये विधान ...नमूने' का विधान कहते ...के अनुसार ऊपरी दृष्टि से तो ...का बहुमत है परन्तु अधिकार में असेम्बली शून्य के बराबर है। महाराजा जब चाहें असेम्बली को बर्खास्त कर सकते हैं। नये कानून बिना महाराजा की आज्ञा के लागू नहीं किये जा सकते। किसी प्रचलित कानून को रद्द करने या वापस लेने का अधिकार भी असेम्बली को नहीं होगा। असेम्बली सिर्फ राय प्रकट कर सकती है।

वास्तव में यह सुधार नहीं, सुधारों का उपहास है। जनता के हर हिस्से ने इस निस्सार विधान का विरोध किया है। लगभग सभी राजनैतिक संस्थाओं ने उत्तरदायित्वपूर्ण सरकार की माँग की है। ऐसी सरकार की जिसमें जनता द्वारा निर्वाचित लोग ही जा सकें और उसी के हाथ में वास्तविक शक्ति हो।

दीवान के अमेरिकन-विधान के विरुद्ध जनता का आन्दोलन संयुक्त रूप ले रहा था। रियासत की सबसे कड़ी जन-संस्था स्टेट कांग्रेस के अलावा ट्रेड यूनियन कांग्रेस, किसान-सभा कम्युनिस्ट पार्टी और विद्यार्थी संस्थाओं ने उत्तरदायित्वपूर्ण सरकार की माँग की। रियासत के दीवान को सचेत करने के लिए इतना ही काफी था। स्टेट ने आन्दोलन पर आक्रमण शुरू कर दिया—हर पार्टी को एक दूसरी से अलग कर पार्टियों के आपसी मतभेदों का फायदा उठाकर स्टेट ने कुठाराघात कर दिया।

जनता का साहस और संघर्ष

सितम्बर के आरम्भ से ही गिरफ़्तारियाँ होने लगीं और दमनकारी कानून लागू हो गये। साउथ इंडियन रेलवे हड़ताल की सहानुभूति में ५ सितम्बर को ट्रेड यूनियन कांग्रेस के आदेश पर सारे रियासत में हड़ताल हुई और एक सौ से अधिक मजदूर कार्यकर्त्ताओं और कम्युनिस्टों की गिरफ़्तारी हुई। ट्रेड यूनियन कांग्रेस के नेतृत्व में मजदूरों ने अल्लेपी, शेरथलाई, मुहम्मा, अरूर आदि प्रमुख नगरों में दमन का मुकाबला करने के लिए जंगी कौंसिलें बनाईं।

२० सितम्बर को अखिल ट्रावनकोर ट्रेड यूनियन कांग्रेस के मन्त्री आर० सुगाथन और वी० के० कारूनन को सजा देने के विरुद्ध अल्लेपी में हड़ताल हो गई। जुलूस पर लगे प्रतिबन्ध को तोड़ते हुए, दमन-विरोधी नारे लगाता हुआ मजदूरों का विशाल जुलूस सड़कों पर घूमा। २५ सितम्बर को सर सी० पी० ने एक विज्ञप्ति द्वारा घोषित किया कि अगर मजदूरों ने हड़ताल करने का साहस किया तो उन्हें सख्त सजा दी जायगी।

ट्रावनकोर ट्रेड यूनियन कांग्रेस—जैसा कि 'फ्री प्रेस जर्नल' ने बताया कांग्रेसजन, सोशलिस्टों और कम्युनिस्टों का संयुक्त संगठन है; रियासत के मजदूरों का अत्यन्त संगठित, शक्तिशाली और क्रान्तिकारी संगठन है। इस प्रकार ट्रेड यूनियन कांग्रेस रियासती जनता की अत्यन्त निर्णायक शक्तियों में से है।

दमन का नग्न रूप

रियासत में पिछले दो महीनों से दमन और गिरफ़्तारियाँ, नित्यप्रति बढ़ती जा रही हैं। किताबों पर प्रतिबन्ध, तलाशियाँ, गिरफ्तारियाँ और सभाबन्दी दमन के रूप थे। लगभग १५० कांग्रेसजन, कम्युनिस्ट और मजदूर किसान-कार्यकर्त्ता पहले ही गिरफ्तार किये जा चुके हैं। रियासत में खतरे की हालत का एलान कर गिरफ्तारियाँ की गईं। पहली अक्टूबर से 'एमरजेन्सी पावर्स एक्ट' सम्पूर्ण रियासत में लागू है। इस कानून के अनुसार हड़ताल, जुलूस-सभा, सिनेमा, नाटक और किताबों आदि पर प्रतिबन्ध लगाने तथा उन्हें गैर-कानूनी घोषित करने का अधिकार रियासत से मिल जाता है। अधिकारियों के साथ ही इस कानून के अनुसार सम्पत्ति के जब्त करने और लोगों को रियासत से निर्वासित करने का अधिकार भी प्राप्त है।

विद्यार्थियों पर इतने कड़े प्रतिबन्ध लगाये गये हैं कि शायद ही भारत में दमन के इतिहास में इसकी तुलना की जा सके। विद्यार्थियों को एक आर्डिनेंस के द्वारा न तो किसी सभा में शामिल होने का अधिकार है, न बोलने का और न किसी सभा या संस्था में वालंटियर का ही काम करने का अधिकार है। हड़ताल करना या अन्य राजनीतिक कार्यों में हिस्सा लेना तो दूर की बात है। अगर किसी ने इन प्रतिबन्धों के विरुद्ध कार्य किया तो किसी परीक्षा में बैठने नहीं दिया जायगा और सरकारी या सरकार द्वारा नियंत्रित उद्योग-धन्धों में नौकरी के अयोग्य घोषित कर दिया जायगा।

संघर्ष का आदेश

दमन की भी हद होती है। 'एमरजेन्सी पावर्स एक्ट' के लागू होते ही सरकार और उसके दमनकारी कानूनों के विरोध का तूफान उठ खड़ा हुआ। स्टेट कांग्रेस के प्रभावशाली नेता सी० केसवन ने जोरदार शब्दों में सर सी० पी० के कानूनों का विरोध कर कहा कि "नये कानून हवा और पानी को छोड़कर सभी मानवी आवश्यकताओं पर पाबन्दी लगा देते हैं—यह तो गला घोटना सा है।" सी० केसवन ने हर ट्रावनकोर-निवासी से अपील की कि जिसमें नागरिक आजादी की थोड़ी भी भावना है, संयुक्त रूप से अन्यायी का मुकाबला करे। इसके पश्चात् सी० केसवन को गिरफ्तार कर लिया गया। वे स्टेट कांग्रेस-वर्किङ्ग कमेटी के प्रमुख मेम्बरों में से हैं। 'फ्री प्रेस जर्नल' के अनुसार ३० अक्टूबर को श्री के० एस० पिल्ले जब कांग्रेस प्रतिनिधियों के बीच भाषण दे रहे थे, उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया गया। वे स्टेट कांग्रेस वर्किङ्ग-कमेटी के मेम्बर हैं और इस साल प्रेसीडेन्ट निर्वाचित होनेवाले हैं।

१७ अक्टूबर से निरंकुश शासन और दमन के विरुद्ध रियासत के तीस हजार मजदूरों ने आम हड़ताल घोषित कर दी। इस जबर्दस्त आन्दोलन से घबड़ाकर सर

शेष पृष्ठ ८ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीकन राष्ट्रपति का चुनाव

क्या वर्तमान राष्ट्रपति ट्रूमैन इस्तीफा देंगे ?

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

अमरीका में अभी हाल के चुनाव को देखकर संसार में एक नई चिन्ता पैदा हो गई है। राष्ट्रपति ट्रूमैन डेमाक्रेटिक पार्टी के नेता हैं; पर यह पार्टी इस चुनाव में बुरी तरह हार गई है। रिपब्लिक पार्टी काफी बहुमत से जीती है। इस चुनाव-फल को देखकर संसार में तरह-तरह की अटकलबाजियाँ हो रही हैं। लेखक ने वर्तमान अमरीकी राजनीति का अच्छा चित्रण किया है। लेख सुंदर और पठनीय है।

अमरीका के प्रेसिडेंट ट्रूमैन क्या अपने पद से इस्तीफा देंगे ?

संयुक्त-राष्ट्र अमरीका के जीवन में अमरीका के राष्ट्रपति-कार्य-काल के बीच होनेवाले चुनावों का बहुत महत्त्व है। मध्य कार्य-कालिक चुनाव इस बात को सूचित करते हैं कि दो साल बाद संयुक्त-राष्ट्र अमरीका का राष्ट्रपति किस पक्ष का होगा और भविष्य में अमरीका की क्या नीति होगी। इसलिए इस चुनाव का महत्त्व केवल अमरीका की दृष्टि से ही नहीं बल्कि शेष दुनिया की दृष्टि से भी होता है। यही कारण है कि ५ नवम्बर १९४६ को होनेवाले चुनावों के परिणाम के बारे में महीनों पहले से अनुमान लगाये जा रहे हैं। इस चुनाव का एक और कारण से महत्त्व है। अमरीका आज दुनिया की एक विश्व-शक्ति है। शेष संसार के समान वह भी संक्रमण-काल में से गुजर रहा है। उसका दृष्टिकोण बदल रहा है। वह भी ब्रिटेन और रूस के समान एक साम्राज्य-वादी देश हो रहा है। इसलिए उसके चुनाव-फल का विश्व-व्यापी परिणाम होना अनिवार्य है।

अमरीकी साम्राज्य

विमानों की उन्नति ने मि० चर्चिल के मुँह से कहलवाया कि ब्रिटेन की सीमा इँग्लिश चैनल नहीं; अपितु राइन नदी है। एटम बम ने—अमरीका में काफी एटम बम बनाये जाते हैं—अमरीका को अपनी सीमा कोरिया के अन्दर ४८वीं समानान्तर रेखा बनाने के लिए विवश किया है। अपनी इस सीमा को वह अत्यन्त खतरे में समझता है। इसमें वह ईरान की खाड़ी और सौदी अरेबिया को भी शामिल करता है क्योंकि उसका ख़याल है कि बीस साल में अमरीका का अपने देश का तेल-स्रोत सूख जायगा। यूरोप और उत्तरी ध्रुव भी शामिल है और अमरीका को भय है कि उस पर उत्तरीय ध्रुव के मार्ग से ही हमला किया जावेगा। संयुक्त-राष्ट्र अमरीका भी ब्रिटेन के समान इस बात के प्रयत्न में है कि यूरोप का कोई एक राष्ट्र प्रशान्त में प्रभुत्व न प्राप्त कर ले। अमरीकी नागरिक की मनोवृत्ति आक्रांता की नहीं है, पर वह एक ओर फेंक दिया जाना भी नहीं चाहता। अंकल साम अपने धन की कीमत चाहता है। वह आज यूरोप और चीन को बड़े पर्याप्त में कर्ज भेज रहा है।

जाने या सुदूर चीन के अमरीकी सामुद्रिक के कत्ल किये जाने का समाचार सुनते हैं। अमरीका आज पूछता हुआ मालूम देता है क्या अमरीका अपना स्वतन्त्र आर्थिक तन्द्रा बनाये रख सकेगा। इसके अभाव में अमरीका समझता है कि वैयक्तिक स्वतन्त्रता नहीं है। अधिक से अधिक मुनाफा कमाने का अवसर यदि अमरीकी नागरिक को नहीं मिलता तो वह समझता है कि उसकी वैयक्तिक स्वाधीनता हर ली गई है और इस मुद्दे पर वह रूस के साथ आदर्श और विचारों की लड़ाई लड़ता हुआ अपने को अनुभव करता है। इस प्रकार का आज का संयुक्त-राष्ट्र अमरीका; जो कि आज शक्तिशाली राष्ट्र होने की प्रसव-वेदना सह रहा है; संक्रमण काल के ऊँच-नीच में से गुजर रहा है। ट्रूमैन-शासन इस काल में अमरीकी आर्थिक तन्द्रा को युद्ध से शान्ति में परिणत करने में उसी तरह सफल नहीं हुआ, जैसी उससे अपेक्षा थी। फलतः नये चुनाव में ट्रूमैन-शासन को वोट मिलना कठिन है।

वर्तमान शक्ति

अमरीकी कांग्रेस के अन्दर 'हाउस आफ रिप्रेजेण्टेटिव' और सिनेट में दो सभाएँ हैं। हाउस आफ रिप्रेजेण्टेटिव का प्रति दो वर्ष के बाद चुनाव होता है। और सीनेट के एक तिहाई सदस्यों का हर दो साल के बाद चुनाव होता है। हाउस आफ रिप्रेजेण्टेटिव के सदस्यों की संख्या ४३५ है और जिस पार्टी के सदस्यों की संख्या २१८ होगी, उसका बहुमत हो जायगा। सीनेट में बहुमत पाने के लिए ४९ सीटें पाना आवश्यक है। १९३६ में डेमाक्रेटिक पार्टी अपनी शक्ति की चरम सीमा पर थी, जब उसके ३३३ रिप्रेजेण्टेटिव और ७५ सीनेटर थे। आज स्थिति इस प्रकार है—

डेमाक्रेटिक पार्टी	—	२३९
रिपब्लिकन	—	१९२
लेबर पार्टी	—	१
प्रोग्रेसिव	—	२
खाली सीटें	—	२

सीनेट में डेमाक्रेटिक पार्टी के सदस्यों की संख्या ५६ और रिपब्लिक पार्टी के सदस्यों की संख्या ४० है। यदि रिपब्लिक पार्टी हाउस आफ रिप्रेजेण्टेटिव में २६ सीटें और सीनेट में ९ सीटें प्राप्त कर ले तो पलड़ा एकदम बदल जायगा। ४८ स्टेटों में से २३ के गवर्नर आज भी रिपब्लिकन पार्टी के हैं।

डेमाक्रेटिक पार्टी [illegible] में प्रगतिशील है। उसकी घरेलू नीति उदार है और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में अधिकाधिक सहयोग करने की है। पर रिपब्लिकन पार्टी में वेण्डल विल्की सदृश अन्तर्राष्ट्रीयतावादी व्यक्ति हुए हैं और आज भी हैरल्ड ई० स्टैसन सदृश व्यक्ति हैं।

इस चुनाव में अमरीका की परराष्ट्र नीति विवाद का विषय नहीं है। इस विषय में दोनों पक्ष एक हैं। वायर्नेस-वैण्डनवर्ग द्विपक्षीय नीति को समस्त

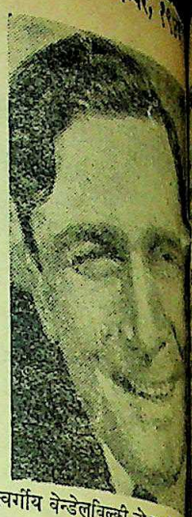

स्वर्गीय वेन्डेलविल्की जो अमरीकन [illegible] दल की ओर से प्रेसिडेंट-पद के [illegible] लिये खड़े हुए थे।

अमरीका का समर्थन प्राप्त है। [illegible] के समर्थक अँगुली पर गिने जा [illegible] 'न्यूजवीक' मेगजीन द्वारा लिये [illegible] लेखकों के मत से स्पष्ट मालूम होता [illegible] अमरीका के विभिन्न विचारों [illegible] वालेस की नीति के समर्थक नहीं [illegible] वायर्नेस-वाण्डेन-वर्ग द्वारा प्रतिपादित [illegible] बरती गई परराष्ट्र नीति के [illegible] ५० संवाददाताओं में से ३२ [illegible] सहमत हैं कि रिपब्लिक पार्टी [illegible] और ट्रूमैन के घरेलू शासन-नीति [illegible] कांग्रेस का रवैया विरोधी होगा, [illegible] और ट्रूमैन शासन परराष्ट्र नीति [illegible] में एक होंगे। २७ राजनीतिक [illegible] ने मत दिया है कि कांग्रेस ट्रूमैन [illegible] राष्ट्र नीति का समर्थन करेगी। [illegible] इस पक्ष में है कि कांग्रेस ट्रूमैन [illegible] वाण्डेन-वर्ग नीति का सर्वथा [illegible] कर देगी। यद्यपि रूस के प्रति [illegible] रखा जाय, इसमें सब सहमत होंगे।

घरेलू नीति

चुनाव इस बार अमरीका [illegible] नीति पर नहीं हो रहा है, बल्कि [illegible] शासन' की घरेलू नीति को मुद्दा [illegible] लड़ा जा रहा है। मांस, घरों की [illegible] चढ़ी कीमतें ये मुद्दे इस बार चुनाव [illegible] रिपब्लिकन वोटरों से पूछ रहे हैं कि [illegible] तुमको शाकाहारी बनाया है!' [illegible] वोटर का आज सवाल है कि किस [illegible] शासन में स्थानीय दूकानों के अन्दर [illegible] मांस और रसोई के लिए तेल [illegible] और साबुन होगा? रिपब्लिकन [illegible] नारा है, भूखे अमरीकनों को [illegible] खाना है, तो वे रिपब्लिक पार्टी [illegible] दें। डेमाक्रेटों का कहना है कि [illegible] पूर्व मांस पर्याप्त मात्रा में था [illegible] लागू होने के साथ अदृश्य हो [illegible] युद्धकालिक कन्ट्रोल के ३० [illegible] रहने देने के लिए रिपब्लिक [illegible] जिम्मेदार बताते हैं।

ट्रूमैन दोषी हैं

ट्रूमैन का प्रभाव और [illegible] दबदबा कम हो रहा है, यह [illegible] हो गया है। प्रेजीडेण्ट के अपने [illegible] में भी डेमाक्रेटिक पार्टी की पराजय [illegible] है। १९२० में प्रेजीडेण्ट [illegible] परराष्ट्र नीति के कारण [illegible] उनका साथ नहीं दिया था। [illegible] में ट्रूमैन का परित्याग परराष्ट्र [illegible] लगभग एक मत होते हुए भी [illegible] रहा है। 'यू एन ओ' का [illegible]

शेष पृष्ठ १६ पर

याद

लेखक, श्री गुलाबप्रसन्न शाखाल, एम० ए०

याद क्यों आती उन्हीं की
भूल जो हमको गये!
फूल पहिले प्यार के ही
शूल हमको हो गये!

सत्य था या स्वप्न—हम
कुछ भी न निर्णय कर सके
ढूँढ़ते ही ढूँढ़ते उनको
स्वयं हम खो गये!

थे कहीं प्याले छलकते
नयन थे प्यासे कहीं;
निज कथा सब कह रहे थे
खेल हर घर के नये!

जिन्दगी के बाग में अब
फिर न आयेगी बहार;
खिल न पायेंगे कभी
दो फूल थे गिर जो गये!

पंक्तियों [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूध-दही से सम्पन्न अमरीकी देश—विसकान्सिन

एक भारतीय छात्र ने राजधानी में क्या देखा ?

लेखक, डा० आनन्दस्वरूप श्रीवास्तव, डी० एस-सी०

अमरीकी देशों में विसकान्सिन न केवल कृषि-प्रधान देश है, प्रत्युत वहाँ का कृषि-विश्वविद्यालय भी संसार में अपने ढङ्ग का एक ही है। प्रस्तुत लेख में विसकान्सिन की राजधानी—मेडिसन—में प्रथम दिन इस लेख के लेखक महोदय ने जो कुछ देखा; उसका सजीव चित्रण किया है।

यह भी हो सकता है कि हम उसे पहचान लेने में असमर्थ रहे हों।

कुछ देर तक आफिस में ठहरने के बाद एक महिला-मन्त्री हमें डीन आफिस में लिवा ले गईं। हमें देखते ही डीन महोदय तत्क्षण खड़े हो गये और मुस्कराते हुए हमारा अभिवादन किया। धीमे स्वर में किन्तु स्पष्टता के साथ उन्होंने हमसे वार्त्तालाप भी किया। वह किसी भी बात को यथानुरूप समझनेवाले व्यक्ति हैं। वह स्पेनिश और पोर्तुगीज के प्रोफेसर और

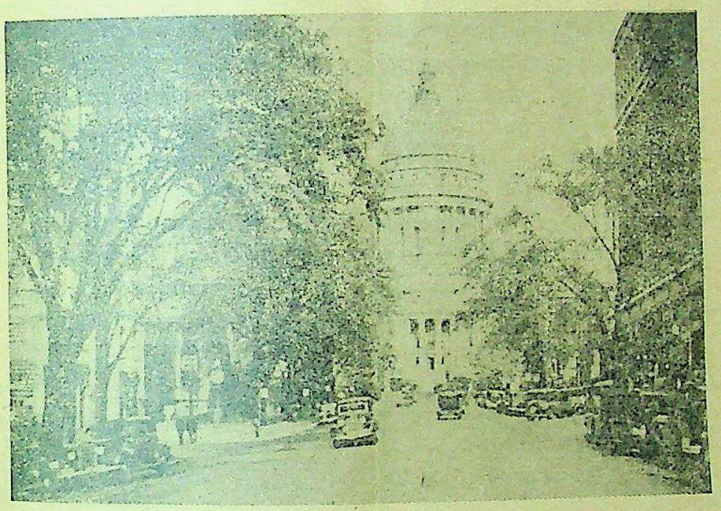

विसकांसिन की राजधानी—मेडिसन

अध्यक्ष हैं। कितनी ही अन्य भाषाओं के भी वह अच्छे ज्ञाता हैं।

अनेक निर्देशों की पूरी मात्रा ले लेने के बाद मैं अपने मित्र के साथ बाहर आ गया। हम दोनों ने अपने ओवरकोटों के बटन लगाये और चुपचाप कदम बढ़ाते हुए, बर्फ पर इधर-उधर डोलते और इधर-उधर की जानकारी हासिल करते हुए अन्त में एक बहुत बड़ी इमारत के सामने जा पहुँचे। यह बायोकैमिस्ट्री विभाग था। इसके भीतर पहुँच, हम लोगों ने पुनः कुछ गरमी का अनुभव किया। यहाँ कुछ भारतीय छात्रों से भी हम मिले-भेंटे। अपने देशवासियों के चेहरे देखकर सचमुच बड़ी प्रसन्नता हुई। एक नवीन स्फूर्ति का हमें अनुभव हुआ।

यह बायोकैमिस्ट्री डिपार्टमेण्ट, दुनिया भर में सम्पन्न और समस्त वांछनीय सामग्री से परिपूर्ण है। यहाँ पौष्टिक तत्त्वों, पौष्टिक भोजनों, घोल तत्त्वों और पेनीसिलिन के विशेषज्ञ हैं। पेनीसिलिन का एक विशेष पौधा है और नवीन जाति के पेनीसिलिन पौधों का आविष्कार किया जा चुका है, जो अधिक परिमाण में उत्पन्न किया जा सकता है।

यूनिवर्सिटी एवन्यु पर एक उपहार-गृह में थोड़ा-सा भोजन करने के बाद, मैं अपने मित्र श्री पी० एम० अग्रवाल के साथ किंग-हाल की तरफ़ आगे बढ़ा। प्राणिशास्त्र और वनस्पति-रोग-विज्ञान-सम्बन्धी आलीशान इमारतों को पथ पर छोड़ते हमलोग एकदम आगे कदम बढ़ाते हुए एक छोटी-सी पहाड़ी पर चढ़ गये। जहाँ कीर्ति-स्तम्भ-स्वरूप कृषि-कालेज के ठीक सामने जा पहुँचे। यह एक विशाल भवन है जिसमें जीव-विज्ञान-विभाग है। इसमें कृषि-सम्बन्धी बहुत बड़ा पुस्तक-भवन और अनेक दफ़्तर हैं। इस विशाल भवन का हमने परिभ्रमण किया। इसके पीछे किंग-हाल दिखलाई पड़ा। विश्वविद्यालय का यह मैदान बहुत प्राचीन है। यहाँ से मेंडोरा झील का दृश्य बहुत ही मनोरम दीखता है।

हम लोग शीघ्र ही किंग-हाल के आफिस में, जो नीचे के तल्ले में है, गये। हमने प्रोफेसर विल्सन के नाम एक परिचयात्मक पत्र महिला-मंत्री को दिया। अचानक मेरे मन में एक विचार आया—'यह एक पवित्र स्थल है जहाँ मुझे कुछ वर्षों तक अपने आपको उत्सर्ग करना है।' सहसा मन ने पलटा खाया और किसी गहन चिन्तन में उलझ गया। हृदय मानो अनियन्त्रित-सा हो गया। वाणी मूक हो गई। आत्मा में मानो पंख लग गये और वह कुछ खोजने लगी। धीरे-धीरे वहाँ के सभी सदस्यों से मैंने भेंट की।

दोपहर के काफी समय बाद महिला-मंत्री मुझे प्रोफेसर विल्सन के पास ले गईं। ज्यों ही मैंने उनके दफ़्तर में प्रवेश किया, एक भारी और पूज्य व्यक्तित्व को मुस्कराते हुए पाया। मैं यथास्थान धीरे से बैठ गया। उन्होंने मुझे स्नेहसिक्त दृष्टि से देखा और प्रसन्नतापूर्वक मुझसे बातचीत की। कुछ क्षणों तक मैं विस्फारित नेत्रों से उन्हें देखता रहा—मात्र चुम्बक की तरह आकर्षित करनेवाले उनके व्यक्तित्व और गहन अध्ययन के प्रति आश्वस्त होने की भावना से। मैंने उनके पांडित्य को नापने-जोखने का प्रयत्न करना चाहा, किन्तु अपने मानसिक फीते को बहुत छोटा—कम लम्बा—पाया।

धीरे-धीरे मैंने स्पष्ट अभिव्यक्ति के साथ अपना हृदय खोलकर रख दिया। प्रोफेसर विल्सन ने दत्तचित्त होकर मेरी बातें सुनीं। इस समय उनकी आँखें अधखुली थीं; मानो वह किसी गहन विचार-धारा में अवगाहन कर रहे थे। कुछ क्षणों के बाद उन्होंने अपना मस्तक ऊँचा किया और धीरे-धीरे उनका शब्द-प्रवाह बह

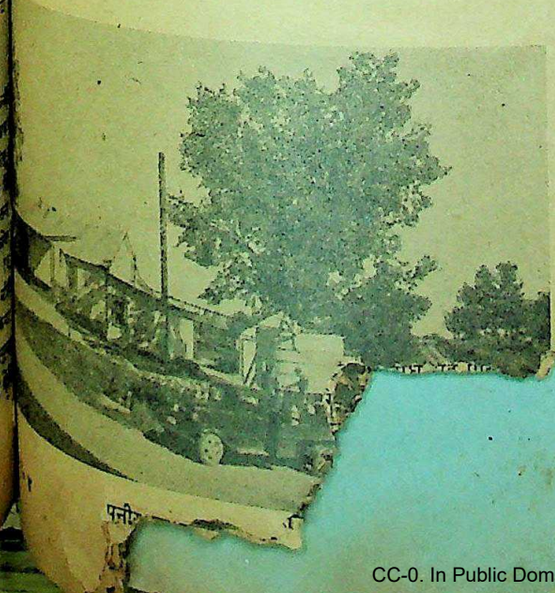

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

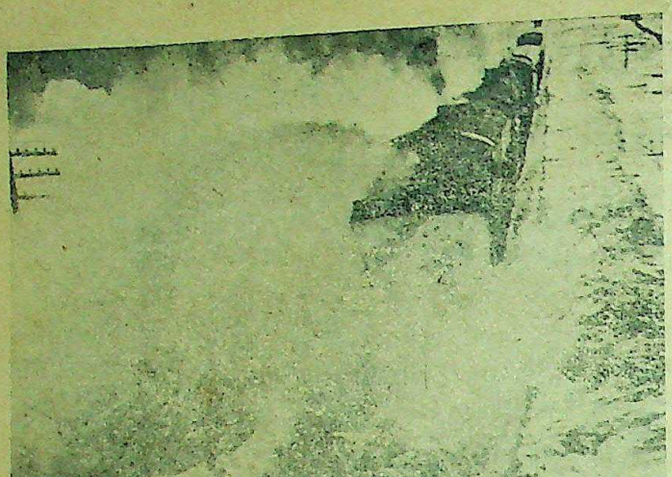

विसकांसिन की शीत ऋतु में एक रेलगाड़ी बर्फ में फँस गई है

चला—'इस प्रयोगशाला का उपयोग करने के लिए सदा आपका स्वागत है ।'

मैं उठ खड़ा हुआ और उन्हें अभिवादन किया। परन्तु इसी बीच उन्होंने हाल ही के कुछ अखबार दिये जिनमें कीड़ों को नाश किये जाने के सम्बन्ध में कुछ लेख थे। उसी क्षण मेरी नसों में आनन्द का ज्वार उमड़ उठा और मन में अगणित आशाओं का प्रादुर्भाव हुआ।

अपने मित्र के साथ उस हाल से हम बाहर निकले और उसी पथ पर चल पड़े, जिसे पहले नाप चुके थे। बर्फ की काफी मोटी चादर से यह पथ परिपूर्ण था। संध्या होने में देर नहीं थी। वृक्षों की नग्न चोटियाँ गतिहीन नजर आ रही थीं। इधर भूख हम लोगों को सताने लगी थी। 'रेनाबोम' ड्रग स्टोर (जिसका नामकरण उसके स्वामी के नाम पर हुआ है) में हमने आराम किया और जी भरकर रात्रि का भोजन (ब्यालू) किया।

ज्यों ही हम लोग बाहर निकले कि अचानक बर्फ गिरने लगी। हवा भी जोरों से चलने लगी थी। ठंड अब भी भयङ्करता प्रकट कर रही थी। लम्बा रास्ता तय करना था; लेकिन पैर जवाब दे रहे थे। हम लोग तुषार-पीड़ित व्यक्तियों की तरह श्वेत पृष्ठ-भूमि पर छाया-मूर्तियाँ बनकर चल रहे थे। बायोकैमिस्ट्री, बायोलाजी, भाषा और इंजीनियरिङ्ग विभागों को पार कर, हम लोग अपेक्षित पथ पर पहुँचे। हमारी श्वासोच्छ्वास क्रिया अपने औसत रूप में आ चुकी थी और कदम भी तीव्रता से बढ़ने लगे थे। चेहरों पर प्रसन्नता की रेखाएँ उभर आई थीं और शक्ति का संचार होने लगा था। हम लोग मटरगश्त करते और इधर-उधर की बातचीत करते हुए हानी स्ट्रीट पर पहुँचे और अपने घर—'फ्रेरडशिप लाज' में प्रवेश किया।

ठंड अब हमसे दूर भाग चुकी थी। शरीर के खड़े रोम पुनः झुक चुके थे और हम लोगों का स्वर भी स्वाभाविक रूप में फूटने लगा था। अपने-अपने बिस्तर पर हम लोग लेट गये और खुली आँखों शान्ति से बातचीत करते रहे।

दूध-दही से सम्पन्न अमरीकी देश विसकान्सिन की राजधानी मेडिसन में इस प्रकार मेरा पहला दिन बीता।

ट्रावनकोर का निरंकुश शासन

(पेज ५ का शेष)

सी० पी० ने ट्रेड यूनियन कांग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी को गैर-कानूनी घोषित कर दिया। इस हमले से विद्रोह की ज्वाला धधक उठी। १६ अक्टूबर को स्टेट कांग्रेस ने 'उत्तरदायित्वपूर्ण सरकार' दिवस मनाने का आदेश दिया। इसी दिन ट्रेड यूनियन कांग्रेस के नेतृत्व में २०,००० मल्लाहों ने भी हड़ताल कर दी। फिर तो हड़तालें बढ़ती गईं। किसानों में भी आन्दोलन फैल रहा है।

सर सी० पी० दीवान ही नहीं रहे बल्कि लैफ्टिनेंट जेनरल भी हो गये हैं। रियासत की सारी सेना उनके अधीन कर दी गई है। अल्लेपी और शेरथलाई में 'मार्शल ला' घोषित कर दिया गया है। हर गली, कूचे और पुलों पर सशस्त्र फौज का पहरा है। स्टेट कांग्रेस की वर्किङ्ग-कमेटी के चार मेम्बर गिरफ्तार किये जा चुके हैं। पाँचवें के नाम वारंट है। शेरथलाई ट्रेड यूनियन कांग्रेस के प्रेसीडेन्ट फरार हैं। उन्हें गोली से मार देने का हुक्म है।

सर सी० पी० की चाल

बम्बई में 'फ्री प्रेस जर्नल' के प्रतिनिधि से ३ नवम्बर को सर सी० पी० ने कहा कि यह विद्रोह कम्युनिस्टों ने करवाया है। दीवान की चाल स्पष्ट है। हमारे राजनीतिक मतभेदों का फायदा उठाकर देश की जनता की सहानुभूति और मदद को रोककर वे रियासत की जनता के आन्दोलन को कुचलना चाहते हैं। ४ नवम्बर को 'फ्री प्रेस जर्नल' में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार रियासत के प्रमुख कांग्रेसकर्मी [illegible] के स्थानों की स्थिति की जाँच [illegible] है कि सड़कों और पुलों पर [illegible] हर आने-जानेवाले से मस [illegible] तलाशी लेती है और [illegible] गिरफ्तार भी कर लेती है। पुलिस [illegible] में घुस जाते हैं, औरतों को [illegible] हैं। पुलिस और फौज का दमन [illegible] गड़बड़ी का कारण है। स्टेट [illegible] शीघ्र ही आन्दोलन शुरू करने [illegible] पास किया है।

ऐतिहासिक कदम

हिन्दुस्तान के इतिहास में [illegible] पहली बार एक लाख से अधिक [illegible] और क्रियाशील मजदूर अनिश्चित [illegible] तक के लिए आम हड़ताल पर [illegible] ६०,००० नारियल के उद्योग [illegible] २०,००० अलमोनियम और [illegible] खानों के मजदूर और २०,००० [illegible] शामिल हैं। उनकी लड़ाई [illegible] आजादी की लड़ाई है। उन्होंने [illegible] कर लिया है कि जब तक [illegible] के निरंकुश शासन का अन्त नहीं [illegible] लड़ाई जारी रहेगी। आज से [illegible] पहले सन् १९३७-३८ में भी [illegible] अन्याय के विरुद्ध उठ खड़ी [illegible] साहसपूर्ण संघर्ष में उसको देश की [illegible] और सहानुभूति प्राप्त हुई थी। [illegible] बार फिर ट्रावनकोर की जनता [illegible] हुई है, अन्याय और दमन [illegible] देने के लिए। उनका यह [illegible] ट्रावनकोर की जनता की [illegible] संघर्ष नहीं है—बल्कि तमाम देश [illegible] सतों की जनता की आजादी [illegible]

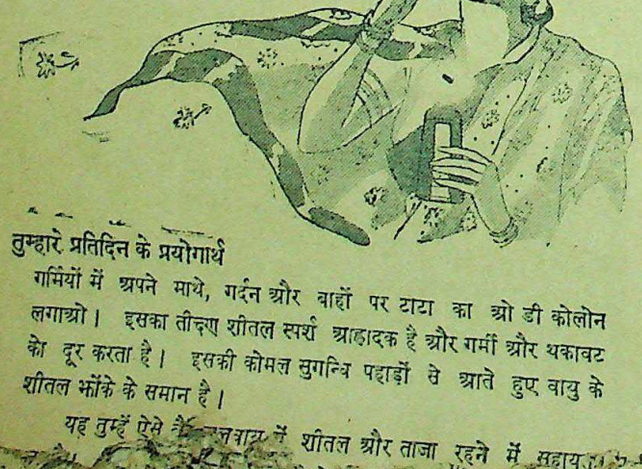

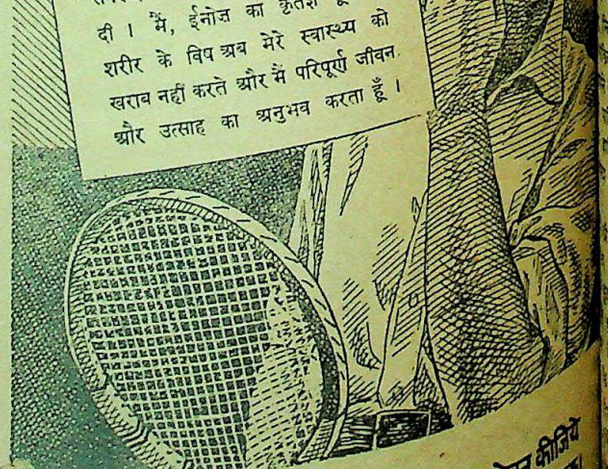

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

मानवता का पुजारी

लेखक, श्री राघवेन्द्र

कठमुल्लों के उभाड़ने पर गुंडों ने कलकत्ते में जो अत्याचार किये थे उनका एक चित्र इस कहानी में है। सभी मुसलमान धर्मान्ध नहीं होते। उनमें भी कुछ ऐसे धर्मात्मा होते हैं जो जान जोखिम में डालकर दीन-दुखी की सहायता करते हैं। कहानी के नायक शेख बुरहानुद्दीन ऐसे ही भलेमानस थे। उन्होंने मरते-मरते भी अपने धर्मबन्धुओं की आँखें खोलने के लिए भगवान् से प्रार्थना की।

लगी। इतने में कालेखाँ बिलकुल पास आ गया। उसने अन्नो की साड़ी का छोर पकड़ते हुए कहा, "अहा, यह तो अन्नो है। क्यों, आज इतनी देर करके कैसे लौट रही हो? क्या किसी से वादा किया था?" अब उसने इस तरह घूरकर अन्नो की तरफ देखा मानो उसे आँखों द्वारा पी जायगा। अन्नो पर वज्रपात हुआ। उसके हृदय में छिपा हुआ भय साकार होकर सामने आ गया। वह सहसा निश्चय न कर सकी कि अब क्या करे। उसका शरीर भय से थर-थर काँप रहा था।

"खुदा मुसलमानों को अक्ल दे जिससे वे अपना भला-बुरा सोच सकें।"

कुछ देर में उसने इतना ही कहा—उस्तादजी, क्यों एक दुखिया को सताते हो? मरे हुए को मारना कहाँ तक ठीक है? मुझे जाने दो।

* * *

कालेखाँ ने कहकहा लगाकर कहा—"जरूर जाने दूँगा घर, लेकिन थोड़ी देर बाद।" अब जैसे ही वह उसे पकड़ने के लिए आगे बढ़ा, सड़क पर पड़े हुए काँच का छोटा सा टुकड़ा उसके पैर में चुभा। वह उसे निकालने के लिए झुका तो अन्नो को अच्छा अवसर मिला। उसने झपटकर कालेखाँ को एक जोर का धक्का दिया। धक्का लगते ही [illegible] नाले में जा गि[illegible] भीतर से कुण्ड[illegible]

*

१६[illegible]

रात[illegible]

से ही गुण्डों ने सारे शहर में कहर मचा रखा था। जगह जगह सड़कों पर लाशें नजर आ रही थीं। जख्मी आदमियों को उठानेवाला भी कोई नहीं था। किसी को क्या गरज थी जो अपनी जान खतरे में डालकर घायलों की सेवा-शुश्रूषा के लिए आगे आता। गुण्डों की पाँचों घी में थीं। उनको रोकनेवाला कोई न था। कहीं पुलिस या फौज के सिपाही का नाम भी न था। उनकी छुट्टी जो थी आज। उस दिन कोई कुछ भी किया करे, वे अपनी छुट्टी का मजा किरकिरा क्यों करें। गुंडे अपने भीषण अत्याचार की आग में निरीह बालकों, असहाय औरतों और बेकस मर्दों को झोंक रहे थे। जगह-जगह से आग की लपटें उठ-उठकर उन बेगुनाह प्राणियों की करुण ध्वनि भगवान् के कानों तक पहुँचाने का निष्फल प्रयत्न कर रही थीं। अँधेरी रात गुंडों के साहस को चौगुना कर रही थी। लोग भीतर से दरवाजे बन्द किये, दम साधे, बैठे मृत्यु की घड़ियाँ गिन रहे थे। उन्हें विश्वास न होता था कि सुबह तक वे जीवित बचेंगे। दरवाजे पर जरा सी आहट [illegible] सबके कान खड़े हो जाते थे।

एक-दूसरे के खून के प्यासे हो रहे हैं। कल तक तो ऐसा कुछ भी न था। किसकी आज्ञा से यह सब हो रहा है? आज्ञा देनेवाला बहुत ही निर्दय होना चाहिए। क्या इतनी करुण पुकार सुनकर भी उसका हृदय नहीं पसीजता? सुना जाता है कि आजकल तो अपने द्वारा चुनी हुई सरकार का ही सब जगह बोलबाला है। फिर यह अन्धेर क्यों?

इससे अधिक उसकी समझ में नहीं आ रहा था। तीसरे-चौथे दर्जे तक पढ़ी स्त्री और सोच भी क्या सकती थी! इन्हीं विचारों में लीन वह अपने दरवाजे के सहारे लेट गई। थोड़ी देर बाद उसे नींद आ गई।

कालेखाँ उस्ताद शाम तक अपने बाड़े में बैठा अपने चेलों द्वारा की जा रही लूट-मार का हाल सुनता रहा। जब कलकत्ता महानगरी पर अँधेरे का पूर्ण अधिकार हो गया तब वह अपने बाड़े से निकला। एक बोतल हलकी शराब को वह खड़े-खड़े एक घूँट में पी गया। उसने अपने साथ चुने हुए चार गुंडे लिये जो बल और धूर्त्तता में उसकी जोड़ के थे। कालेखाँ अच्छी तरह जानता था कि ऐसे मौके बार-बार नहीं आते। इसलिए क्यों न इस मौके का पूरा-पूरा लाभ उठाया जाय। वह अन्नो के मकान के पास से गुजरा। सहसा वह ठिठककर खड़ा हो गया। उसे एक रात अन्नो से हुई मुलाकात की याद आई जब वह चालाकी से उसे नाले में गिराकर भाग गई थी। वह उसके रंग-रूप पर पहले ही फिदा था। अब वह चूकनेवाला कब था। उसने अपने साथी से कहा—रहीम, यह दरवाजा खुलवाओ।

दरवाजे की भड़भड़ाहट सुनकर अन्नो चौंक पड़ी। वह समझी कि अब खैर नहीं। फिर भी उसने साहस करके पूछा—कौन है?

रहीम ने धीमी आवाज से कहा—जल्दी दरवाजा खोल दो। गुंडे मेरा पीछा कर रहे हैं। थोड़ी देर बाद मैं चली जाऊँगी।

भोली अन्नो झाँसे में आ गई और "जल्दी अन्दर आ जाओ" कहते हुए उसने कुंडी खोल दी; परन्तु यह क्या! सामने पाँच भयंकर मूर्तियाँ दिखाई दीं। अन्नो एकदम पीछे हटी। कालेखाँ ने आगे बढ़ते हुए ठठाकर कहा—"क्यों, अब बचकर कहाँ जाओगी? उस दिन का बदला आज लेकर छोड़ूँगा।" अब उसने साथियों की ओर मुड़कर कहा। रहीम, तुम लोग अपना काम करो। मैं इससे निपट लूँगा।

वे लोग चले गये। अन्नो के मुँह से एक चीख़ निकली।

शेख साहब अभी सोये नहीं थे। अपने कमरे में टहलते हुए सोच रहे थे—ये लोग पागल हो गये हैं जो इस्लाम के नाम पर जुल्म कर रहे हैं। एक दिन आयेगा जब ये अपने किये पर पछतायेंगे। खुदा के सामने इन्हें जवाब देना पड़ेगा। हमारा [illegible] जुल्म करने की इजाजत [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानते थे और समय पड़ने पर पैसे से भी उसकी सहायता करते रहते थे। अब पिस्तौल उठाकर वे अन्नो के घर की ओर दौड़े। वहाँ पहुँचकर देखा कि नर-पिशाच कालेखाँ ने अन्नो को पकड़ रक्खा है और वह उसके पंजे से छूटने का प्रयत्न कर रही है। उन्होंने दूर से ही ललकारा—काले खाँ, अपनी जान की खैर चाहते हो तो फौरन यहाँ से चले जाओ वरना गोली मार दूँगा।

पिस्तौल की नली अपनी तरफ देखकर कालेखाँ ने अन्नो को छोड़ दिया और दरवाजे की ओर बढ़ते हुए कहा—शेख साहब, इस वक्त तो जाता हूँ लेकिन यह याद रखना कि मेरे मामले में दखल देने का नतीजा बुरा निकलेगा।

"कुछ भी हो, तुम यहाँ से चले जाओ।" शेख साहब ने उत्तर दिया।

कालेखाँ चला गया। शेख साहब अन्नो को अपने घर लिवा ले गये। उससे कहा—बेटी, जब तक यह झगड़ा-फसाद है, तुम यहीं रहो। इस घर को अपना ही घर समझो।

"शेख साहब, आप देवता हैं।" अन्नो ने इतना ही कहा।

* * *

१७ अगस्त की रात को कालेखाँ के गुर्गों ने शेख साहब के मकान में आग लगा दी। घर के सब आदमी बेखटके सो रहे थे। घरवालों को पता लगने से पहले आग आधे मकान में फैल चुकी थी। आग बुझाने के एंजिन समय पर नहीं पहुँच सके। चालीस-पचास हजार की लागत का मकान थोड़ी देर में ही जलकर खाक हो गया। शेख साहब और उनके घरवालों को मुश्किल से बचाकर सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया गया। शेख साहब बुरी तरह झुलस गये थे। उनकी लड़कियाँ और स्त्री बच गई थी। अन्नो तक आँच नहीं पहुँची थी। बहुत उपचार करने पर भी शेख साहब बच नहीं सके। अगले रोज वे इस संसार को छोड़ गये। मरते समय उन्होंने कहा था—ये नहीं समझते कि इस्लाम के नाम पर जितना कहर ये ढा रहे हैं उससे खुदा कभी खुश न होगा। कयामत के दिन इन्हें इसका जवाब देना होगा। इसमें हिन्दू और मुसलमान दोनों का नुकसान है। काश ये समझ सकें कि इन दो दिनों में ही ये इस्लाम से कितनी दूर जा पड़े हैं। मुझे सन्तोष है कि मरने से पहले मैंने एक नेक काम जरूर किया है।

मनोरंजक चुटकुले

एक सज्जन ने अपने मित्र से बातें करते हुए कहा—अस्थायी सरकार में लीग को शामिल करके वाइसराय ने कांग्रेस और लीग का मेल कराने का प्रयत्न किया है।'

"परन्तु लियाकतअली खाँ और गजनफरअली खाँ तो बिलकुल विरोधी वक्तव्य दे रहे हैं। इससे यह कहिए कि अस्थायी सरकार में कांग्रेस और लीग को लड़ाने ला रहे हैं।" दूसरे मित्र ने उत्तर दिया।

* * *

अस्थायी सरकार बनने के पहले लीग की माँग थी, पाँच मुसलमान लीग के कोटे में रहें, छठा न हो। पर जब अस्थायी सरकार कांग्रेस ने बना ली तो बेचारी क्या करे, कह दिया—'चाहे छठा मुसलमान हो चाहे सातवाँ, हमें पाँच जगहें दे दो।' गया धन आधा ही सही।

* * *

कांग्रेस के सामने एक प्रश्न था—अल्पसंख्यकों में से जो प्रतिनिधि लिये जायँ, दोनों दलों की राय से लिये जायँ। कांग्रेस ने अस्थायी सरकार बना ली। जब मुस्लिम लीग ने अस्थायी सरकार में शामिल होने की स्वीकृति दी तो कहने लगी 'अल्पसंख्यकों का झगड़ा निपटा लिया जाय।' कांग्रेस ने उत्तर दिया—इस समय तो प्रतिनिधि चुन लिये गये हैं। अब भविष्य में ऐसा ही होगा। बेचारी लीग ने वाइसराय से फरियाद की पर उन्होंने भी कांग्रेस का समर्थन किया। अब जल्दी काहे को जगह खाली होगी और काहे को लीग की सम्मति ली जायगी।

* * *

वाशिंगटन में अनुमान लगाया जा रहा था कि श्री राजगोपालाचारी अमेरिका में भारत के राजदूत नियुक्त होंगे।

बेचारे राजाजी को देशवालों ने मद्रास में प्रधान मंत्री नहीं होने दिया। अब विदेशवाले दिल्ली में भी मंत्री नहीं रहने देना चाहते।

* * *

मद्रास के एक भौतिक-विज्ञानवेत्ता को नोबुल पुरस्कार मिलना चाहिए क्योंकि उन्होंने अभी एक नई खोज की है—जर्मनी के एक सज्जन ने सिद्ध किया था कि मनुष्य बन्दरों की सन्तान है; परन्तु मद्रासी भौतिक-विज्ञानवेत्ता ने बतलाया है कि मनुष्य सुअर से अधिक सम्बन्ध रखता है।

* * *

'यू० पी० में जमींदारी का अन्त हो जायगा।'

इससे अब सारे जमींदार सचमुच समाजवादी हो जायँगे।

* * *

कहा जाता है—यदि कांग्रेस-लीग का समझौता हो जाय तो गान्धी और मिस्टर जिन्ना क्या करेंगे?

जहाँ तक गान्धीजी का सम्बन्ध है, वे सोमवार को मौन धारण करते हैं, सत्य की खोज करते हैं, राम-धुन लागी आदि रटकर दिन बिता देंगे; परन्तु मिस्टर [illegible] घरेलू चीजों से [illegible] जनका पेशा है।

* * *

[illegible] व्याचार हो [illegible] हैं; परन्तु [illegible]

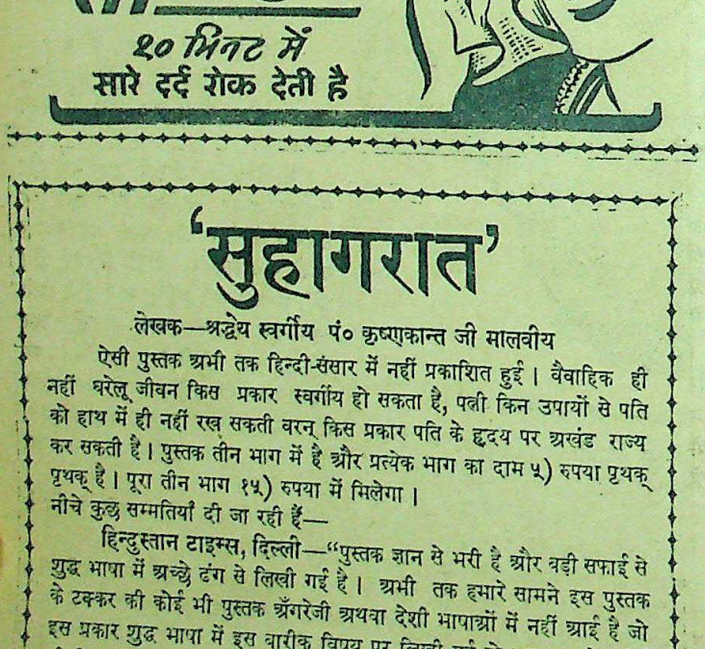

'सुहागरात'

लेखक—अद्वेय स्वर्गीय पं० कृष्णकान्त जी मालवीय

ऐसी पुस्तक अभी तक हिन्दी-संसार में नहीं प्रकाशित हुई। वैवाहिक ही नहीं घरेलू जीवन किस प्रकार स्वर्गीय हो सकता है, पत्नी किन उपायों से पति को हाथ में ही नहीं रख सकती वरन् किस प्रकार पति के हृदय पर अखंड राज्य कर सकती है। पुस्तक तीन भाग में है और प्रत्येक भाग का दाम ५) रुपया पृथक् पृथक् है। पूरा तीन भाग १५) रुपया में मिलेगा।

नीचे कुछ सम्मतियाँ दी जा रही हैं—

हिन्दुस्तान टाइम्स, दिल्ली—"पुस्तक ज्ञान से भरी है और बड़ी सफाई से शुद्ध भाषा में अच्छे ढंग से लिखी गई है। अभी तक हमारे सामने इस पुस्तक के टक्कर की कोई भी पुस्तक अँगरेजी अथवा देशी भाषाओं में नहीं आई है जो इस प्रकार शुद्ध भाषा में इस बारीक विषय पर लिखी गई हो। पुस्तक को कोई भी पिता बिना संकोच या भय के अपनी कन्या के हाथ में दे सकता है।"

अर्जुन, दिल्ली—"विषय की दृष्टि से यह पुस्तक केवल नव-विवाहिता दम्पतियों के ही नहीं बहुत से बालकों के माता-पिताओं तथा अन्य गृहस्थियों के लिए भी उपयोगी साबित होगी।"

एक सप्ताह में उस स्त्री का दर्द भाग गया

क्रुशेन की पहली मात्रा से ही होने लगा

अब वह क्रुशेन की छोटी प्रतिदिन पीती है

लोगों का कहना है—अस्थायी सरकार में असफलता नाई तो कांग्रेस अस्थायी सरकार हो जायगी। अलग क्यों होगा पाकिस्तान की हाकिम हिन्दुस्तान ही में है। फिर

* *

एक समाचार-पत्र में 'ब्रिटेन अपने जर्मन-अधिकृत शिक्षा को काफी सहायता परन्तु उसमें यह नहीं के नवयुवकों की संख्या बैठा है।

* *

जबलपुर के 'शुभचिन्तक' विशेषाङ्क में मध्यप्रान्त के सम्बन्ध में श्री राजेश्वर ने एक लेख लिखा है, जिसमें के सम्पादक श्री नर्मदाप्रसाद प्रशंसा के पुल बाँधते हुए उन्हें का पन्त' कहा है। इसके महोदय ने भी राजेश्वरजी की अपना एक सम्पादकीय नोट, पर नगीने की तरह मढ़ दिया है। प्रशंसा करने का यह मार्ग गले में ढोलक बाँध और चढ़कर अपनी प्रशंसा न की जानेगा कैसे?

—भटनागर

दर्द हुआ तब वह कठिनाई से पाती थी। अनेकों उपचार कोई लाभ नहीं हुआ। उसने सेवन किया और तत्क्षण लाभ केवल एक सप्ताह में उसके जाता रहा।

वह कहती है, "६ वर्ष हुए मैं दर्द से परेशान थी। मैं मासिक पाती थी। हमने अनेकों उपचार किन्तु व्यर्थ। तब मैंने क्रुशेन करना आरम्भ किया। पहली ही तुरन्त लाभ हुआ। एक सप्ताह में मैं चंगी हो गई। अब मैं प्रतिदिन क्रुशेन साल्ट एक प्याले गर्म जल में दूसरा काम करती हूँ। जब मैं चार वर्षों से विधवा हूँ और मेरे है अतः मैं कठिन श्रम करती हूँ। जीविका उपार्जन के लिए ११ बजे रात तक काम करना मेरी उम्र ५२ वर्ष की मालूम पड़ती में मैं ३२ वर्ष की मालूम पड़ती —(श्रीमती) एफ०

यदि आपको कूल्हे का दर्द है से अवश्य लाभ उठाइए। खनिज लवण का अनुपातिक जो दस्तावर तथा मूत्रवर्द्धक है। क्रिया से क्रुशेन सारे शरीर की देता है। क्रुशेन की नियमित आपकी सारी इन्द्रियाँ मुस्तैद तथा अपना कार्य सुचारु रूप रहती हैं। क्रुशेन साल्ट सभी लाखों में बिकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमण्डल

क्या स्त्रियों को सैनिक-शिक्षा न देनी चाहिए?

क्या स्त्रियों के बलवती होने से समाज का पतन होगा?

लेखक, श्री रामनरेश मिश्र

आजाद हिन्द-फौज की झाँसी की रानी रेजीमेंट की प्रधान कर्नल लक्ष्मी।

बहुत पहले ही हल हो जाना चाहिए था परन्तु, समय की गति ने इसे हल नहीं होने दिया। आज संसार सामन्त युग से उतरते-उतरते लोकतन्त्र की सीढ़ी तक पहुँच रहा है। इस दशा में स्त्रियों की शिक्षा-पद्धति और शिक्षा में भी परिवर्तन होना अत्यन्त आवश्यक है। इस ओर अभी तक विद्वानों ने ध्यान नहीं दिया था। परन्तु, द्वितीय युद्ध से संसार के सभी देशों में एक नवीन क्रान्ति के चिह्न दृष्टिगोचर होने लगे हैं। इस युद्ध के पहले स्त्रियों को प्रथम विश्व-युद्ध में बहुत थोड़ा कार्य करना पड़ा था। परन्तु, द्वितीय महायुद्ध प्रारम्भ होते ही हवाई बम-वर्षा और अन्य रण-कौशलों ने नारियों को युद्ध-सम्बन्धी कार्य करने के लिए विवश कर दिया। इँगलैंड में स्त्रियों से अनिवार्य सैनिक सेवाएँ ली जाने लगीं। जर्मनी तो इँगलैंड से पहले ही अगुवा हो चुका था। इस प्रकार संसार में स्त्रियों को भी सैनिक-कार्य के लिए अपनी कोमल और दयामयी भावनाओं को दबा देना पड़ा। अब जब वे सैनिक कार्यक्षेत्र से वापस हुई हैं तो उनके लिए गृहस्थी एक जंजाल मालूम होती होगी। परन्तु कर क्या सकती हैं—प्रकृति के नियमों का वे उल्लङ्घन तो कर नहीं सकतीं; उन्हें वैवाहिक जीवन का सामना करना ही पड़ेगा। वे अभी तक सैनिक बनकर देश की 'रक्षक' थीं, अब माता बनकर शिशुओं की सेवा करेंगी। विगत दिनों का स्वच्छंद जीवन अब बच्चों की सेवा और नागरिक जीवन के लिए गृहस्थी के जंजाल में बीतेगा। 'सैनिक' नारियों को इस कटुता का अनुभव अवश्य होता होगा। पर, ईश्वर की सृष्टि का अन्त करने में वे असमर्थ हैं। ऐसी दशा में संसार की राजनीतिज्ञ स्त्रियों से दुहरा काम लेना चाहें तो गड़बड़ होगी। वे फौजी काम भी उत्तमता से करें और घर-गृहस्थी भी सँभालें—यह कठिन काम है। एक बात आवश्यक है, आरम्भ में स्त्रियों को सैनिक-शिक्षा अवश्यक दी जाय। पुरुषों की शिक्षा-पद्धति और स्त्रियों की शिक्षा-पद्धति में अन्तर हो सकता है। पर, शिक्षा में सैनिक शिक्षा का होना अनिवार्य हो।

स्त्रियों की सैनिक-शिक्षा वैकल्पिक न हो। उनके अपने दैनिक कोर्स में एक या दो घंटे इस शिक्षा के लिए नियत हों। परन्तु, उनको मातृत्व की शिक्षा बड़े पैमाने पर दी जानी चाहिए। महिलाओं को सैनिक-शिक्षा के अतिरिक्त गृहस्थ-जीवन की सारी कठिनाइयाँ सँभालने योग्य बना दिया जा[illegible] तो उनका [illegible] हो जाय। [illegible] बनाने की [illegible] को [illegible] से प्र[illegible]

स्त्रियों को आदर्श बनाने में अवश्य सफल बन सकती है।

उपर्युक्त बातों के अतिरिक्त उनको देशानुराग की शिक्षा भी दी जाय, जब तक वे देशानुराग से ओत-प्रोत न होंगी, उनकी सारी शिक्षा किसी अन्य देश के काम आ सकती है। यह बुरा भी नहीं है। परन्तु यदि वे किसी शत्रु देश के पुरुष से शादी कर लेंगी तो उनकी उस शिक्षा का, जिसके लिए राष्ट्र को एक बड़ी सम्पत्ति खर्च करनी पड़ती है, उपयोग शत्रु-देश करेगा। अतः स्त्रियों की शिक्षा में देशानुराग भी एक मुख्य विषय हो। विश्व-बन्धुत्व की दृष्टि से यह विचार अच्छा नहीं है, पर एक संगठित समाज-द्वारा भी विश्व-कल्याण हो सकता है।

स्त्री-सैनिक-शिक्षा की उपयोगिता प्रतिक्षण रहती है। इसके विरुद्ध कौन कह सकता है कि स्त्रियों में वह शक्ति नहीं जो एक सैनिक में होनी चाहिए। स्त्रियों को अबला कहना ठीक नहीं। इस अबला शब्द ने आज तक भारतीय स्त्रियों को साहस और धैर्य से प्रायः दूर रक्खा है। फ्रांस की वीर रमणी 'जोन आफ आर्क' ने फ्रांस को शत्रुओं से बचाया था। भारत की अनेक नारियाँ जैसे—रानी दुर्गावती और रानी लक्ष्मीबाई ने अँगरेजों से डटकर लोहा लिया था। उनके हाथों खड्ग थे। वे युद्ध में अस्त्र चलाती थीं। फिर स्त्री-सैनिक-शिक्षा का महत्त्व क्यों न हो। देश की स्त्रियाँ स्वयं अपनी रक्षा के लिए पुरुषों पर अवलम्बित रहें यह तो ठीक नहीं है। इसके अतिरिक्त जो स्त्रियाँ सैनिक-शिक्षा से शिक्षिता होंगी वे अपनी सन्तानों को उस कला की प्रारम्भिक शिक्षा घर ही पर दे सकेंगी। इन आवश्यकताओं से प्रतीत होता है कि देश ही नहीं, वरन् संसार को स्त्री-सैनिक-शिक्षा की अत्यन्त आवश्यकता है। स्त्रियों को सैनिक-शिक्षा देने में किसी देश को उदासीन न रहना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक स्मृति

स्व० यतीन्द्रनाथ का अन्तिम स्वप्न

लेखक, श्री ओङ्कारशङ्कर विद्यार्थी एम० ए०

स्वर्गीय यतीन्द्रनाथ दास ने पंजाब के कारागार में ६७ दिनों का अनशन करके सिद्धान्तों की रक्षा के लिए अपनी जान दे दी थी। सारे संसार का ध्यान इस घटना से भारत की ओर आकृष्ट होगया था। अन्त में इस बलिदान से हृदयहीन नौकरशाही का आसन डोल गया था। उसने कुछ सुविधाएँ देना स्वीकार किया था। इस बलिदान से भारत की पीड़ित जनता को कुछ बल मिला था। लेखक ने उसी घटना पर लेख में प्रकाश डाला है।

६७ दिनों की भूख-हड़ताल के पश्चात् यतीन्द्रनाथ ने अपनी इहलीला की मंजिल समाप्त कर ली थी। इस नव-युवक ने अपनी भूख-हड़ताल द्वारा सहिष्णुता का जो परिचय दिया वह इतिहास में अनुपम है। बलिदान के पृष्ठों में यतीन्द्रनाथ का नाम सिहरते हुए, लाल अक्षरों से सदैव अंकित रहेगा।

स्व० यतीन्द्रनाथ दास भारतवर्ष के उन दुर्दम क्रान्तिकारियों में थे जो सरदार भगतसिंह के प्राथमिक साथियों में थे। लाहौर-षड्यन्त्र में यतीन्द्रनाथ का प्रमुख स्थान था। वे उन क्रान्तिकारियों में थे जो पीछे हटना नहीं जानते थे। अपने असीम जोश के साथ ही उनके अंदर गम्भीरता भी थी। सरदार भगतसिंह न केवल आग्नेय ज्वालापुंज थे, वरन् वे गम्भीर चिन्तक भी थे। सरदार के जो अन्तरंग मित्र थे उनमें यतीन्द्रनाथ का भी नाम आता है। कुछ उन क्रांतिकारियों ने जो आज दुर्भाग्यवश साम्यवादी हो गये हैं; यतीन्द्रनाथ का परिचय अपनी संस्मरण-पुस्तकों में दिया है। हम इन लेखकों की विचार-धारा से असहमत हो सकते हैं; परन्तु हमें तो अपने प्यारे यतीन्द्रनाथ से मतलब है। यतीन्द्रनाथ दास के सम्बन्ध में श्री अजय घोष ने लिखा है—"यतीन्द्रनाथ सरदार भगतसिंह की तरह हँसमुख नहीं थे। वे चुपचाप रहते थे और अध्ययनशील थे।" यतीन्द्रनाथ आगे बढ़कर व्यर्थ गरजनेवाले व्यक्ति नहीं थे। वे तो सदा गम्भीर रहनेवाले देशभक्त थे। अपने अनशन के पचासवें दिन तक उन्होंने उफ नहीं की। उनकी नाक में जबरदस्ती दूध की नलियाँ ठूँसी जाती थीं और जब तक यतीन्द्रनाथ में इस अत्याचार का प्रतिरोध कर सकने की जरा भी सामर्थ्य रही, वे हमेशा "न" करते रहे। उनके साथियों को भी होनेवाले वज्राघात का आभास नहीं था; परन्तु अन्त तो सहसा ही आता है। पवन की प्रबल इच्छा है कि दीपक के बुझने के पहले किसी को कुछ भी मालूम न हो।

* * *

हिन्दी के एक स्वर्गीय कथाकार ने ठीक ही लिखा है कि मृत्यु के पहले आँखों के सामने का धुंध हट जाता है। जिन परिस्थितियों में श्री यतीन्द्रनाथ की मृत्यु हुई, वे अत्यन्त दारुण थीं। वे जवानी में मरे। उन्होंने अपनी मौत को स्वयं ही प्रेम-आमंत्रण किया था। मौत को उन्होंने गले लगाया उस अवस्था में जब कामिनी और कांचन को गले लगाने के लिए, जब भोगपूर्ण जीवन के प्याले को अन्तिम बिन्दु तक पीने के [illegible] अभी आजादी से कितनी दूर खड़ा हुआ, धूमिल गति से मार्क टाइम कर रहा है? क्या उनकी बुझती हुई आँखों के सामने बंगाल की नदियों की लहरें फिर से जाग नहीं उठी होंगी, जिनके उमड़ते वक्षस्थल पर उन्होंने अपनी डोंगी चलाई होगी? और, क्या उनके हृदय में एक बार यह टीस नहीं उठी होगी कि वे अपनी माता की गोद में सर रखकर मर सकते? हाँ, उन्हें अवश्य ही अपने इहलोक-त्याग के पहले होनेवाली साँझ के घुलते हुए अंधकार में, बंगाल के किसी छोटे से कस्बे में बैठी हुई मा की, और अपने छोटे भाइयों की याद आई होगी और उनकी बुझती हुई आँखों के नीचे से भी पानी की एक धार निकल पड़ी होगी। उन्हें क्या याद आया होगा, आज यह कौन जान सकता है और कौन बता सकता है। परन्तु यह निश्चय है कि यतीन्द्रनाथ की मौत हमारी राष्ट्रीय जवानी की मौत थी। उन्होंने जो अनशन किया था, वही अनशन आज हमारा राष्ट्र कर रहा है। उनके जो अरमान थे, वे अधूरे रहे, और उन्होंने तो आयरलैण्ड के वीर मैक्स्विनी को, जो स्वयं जेल में अनशन करके मरा था, अनुपम नहीं रहने दिया। विश्व के इतिहास में मैक्स्विनी और यतीन्द्रनाथ, ये दो नाम हमेशा जगमगाते रहेंगे। हिन्दुस्तान के इतिहास में, ब्रिटिश साम्राज्यशाही जब तक यहाँ से निकल नहीं जाती, या निकाली नहीं जाती, तब तक सरदार भगतसिंह और यतीन्द्रनाथ की लाशें हमारे और उसके बीच तड़फड़ाती रहेंगी और अपने मौन स्वर से कहती रहेंगी कि अँगरेजों की हर एक बात का भरोसा मत करो—मत करो।

मधुस्रवा—लेखक, राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल्-एल० बी०। इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु बरसने की पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रस सिक्त बनाइए। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।
मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

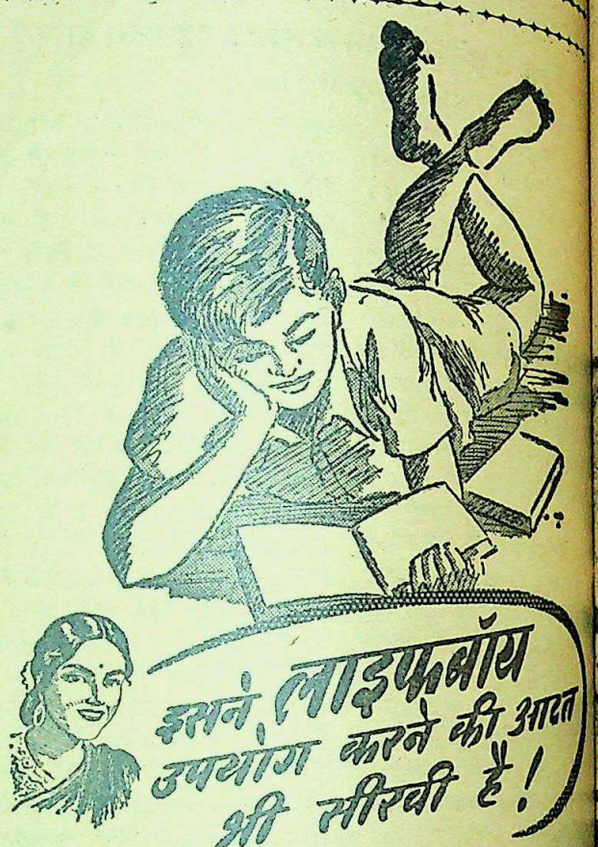

अभी से यह बहुत सी बातें सीख रहा है परन्तु सब से ज्यादा फायदेमंद लाइफबॉय साबुन के दैनिक उपयोग की आदत है। इसकी माँ को इस बात का गर्व और खुशी होती है कि उसकी दी हुई शिक्षा से उसके लड़के को 'गन्दगी के खतरे' से जो हर जगह हमला के लिए मौजूद है उससे रक्षा होती है।

लाइफबॉय का व्यवहार करना एक अच्छी आदत है

L 77-50 HI LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयां—
कीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

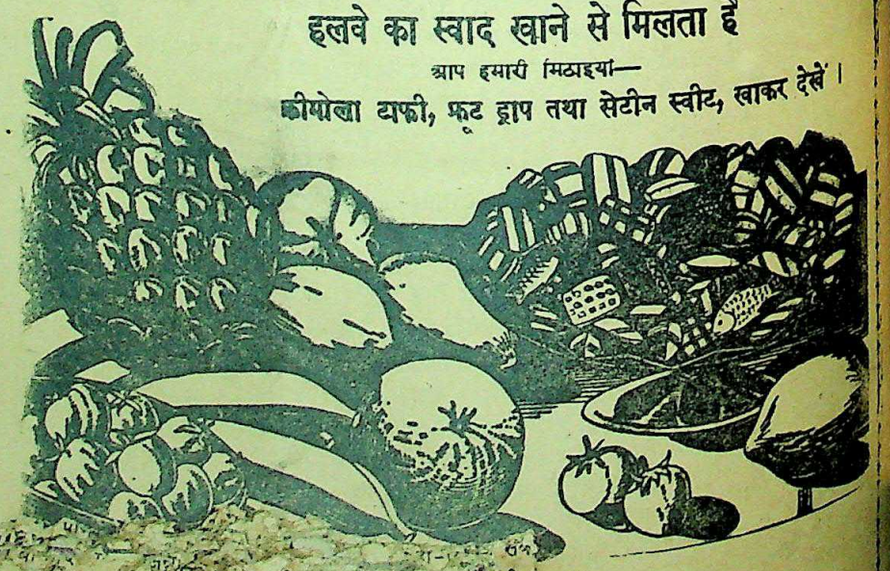

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

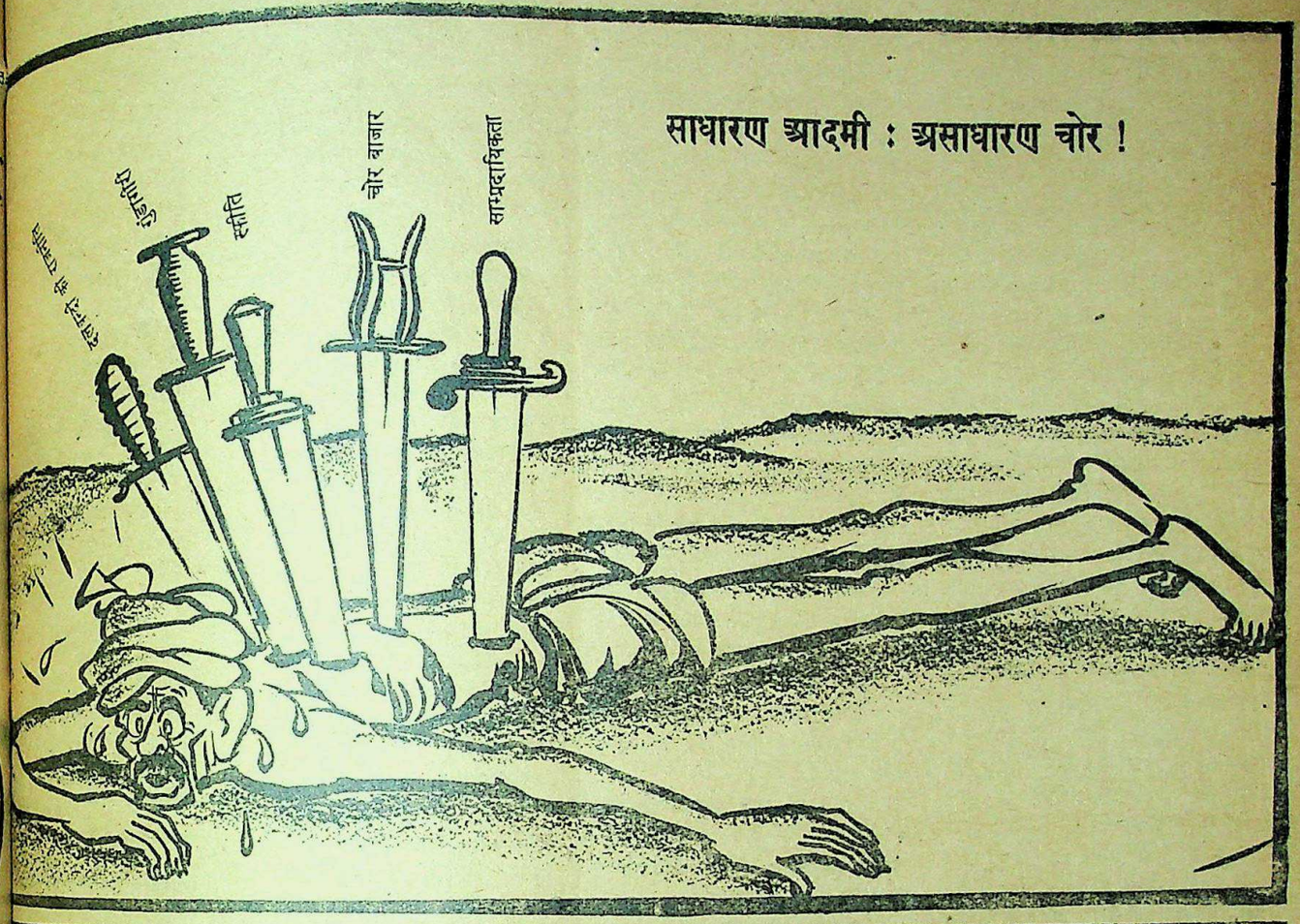

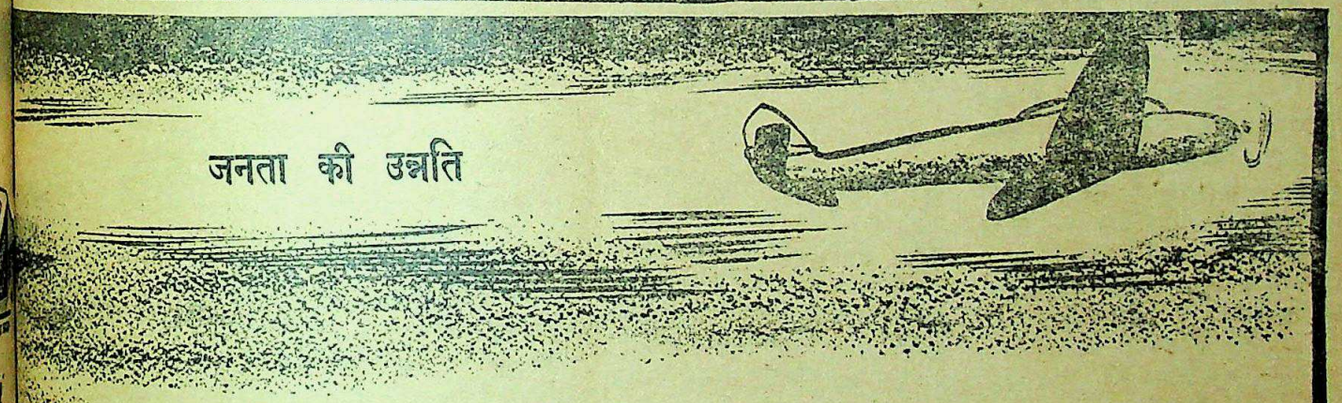

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

कोठी राज्यान्तर्गत मझगवाँ (जी० आई० पी०) में ता० ३०-१०-४६ को बाघेलखंड स्टेट्स ग्रूप प्रजा-परिषद् की बैठक हुई, जिसमें सोहावल, बरौंधा और कोठी रियासतों तथा कामता जागीर के कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। कोठी राज्य प्रजामंडल के अध्यक्ष श्री तीर्थराजसिंह बाघेल का स्टेशन पर शानदार स्वागत हुआ। स्टेशन पर प्रमुख व्यक्ति उपस्थित थे। सभापति को नोटों का हार पहनाया गया।

सार्वजनिक सभा में श्री बाबूलाल ने झंडोत्तोलन किया। सभापतित्व बाबू रघुवंशप्रतापसिंह ने किया। सर्वश्री राजेन्द्र बहादुरसिंह, मेजर सा०, पांडेय जी, व्रजभूषणसिंह बाघेल और महेश्वर मिश्रौलिया के भाषण हुए। विद्यार्थियों और जनता ने मिलकर ५६।) रु० की थैली कोठी राज्य प्रजा-मंडल के अध्यक्ष को भेंट की। दूसरी थैली ३५) रु० की दी गई। प्रस्ताव स्वीकृत हुए।

१—पोलिस तथा अध्यापक-मंडल ने हड़ताल कर दी है। बाकी महकमों के कर्मचारियों की इन लोगों से सहानुभूति है। राज्य की आन्तरिक स्थिति गम्भीर व चिन्तनीय है। इस स्थिति का अन्त किये जाने की ओर अधिकारियों का ध्यान आकर्षित किया जाता है।

२—वर्तमान संकट का सामना करने और शास्त्र-सम्बन्धी निपुणता लाने में बी० यस० ग्रूप असमर्थ है। ग्रूपिंग के विस्तार की आवश्यकता है जिसमें उत्तरदायित्वपूर्ण शासन हो।

३—देश की दशा में इस समय अव्यवस्था है। नगरों में लूटपाट, नृशंस नरहत्या और साम्प्रदायिक दंगों के भीषण दृश्य देखने में आते हैं। ग्रूप के अधिकारी सुरक्षा के मामले में असावधान नजर आ रहे हैं। ऐसी हालत में स्थिति से सामना करने का उपयुक्त हल एक संगठित सेवा-दल है।

कोठी पोलिस के १९ में से १८ कांस्टेबलों ने तनख्वाह बढ़ाने की माँग के सिलसिले में १ अक्टूबर से हड़ताल कर दी है। वे लोग मुअत्तल हैं। उनमें से चार पर दफा २९ के मुताबिक मुकदमा चल रहा है। खाली जगहों के लिए कोठी से आदमी नहीं मिले। थोड़े सिपाही रियासत सोहावल से लाये गये हैं। इस तरह पूरे एक माह से कोठी राज्य पोलिस की ओर से अरक्षित है। फौजदारी तथा अन्य उत्पातों के समाचार आ रहे हैं।

अध्यापक-मंडल में ग्रूप की अन्य रियासतों के भी अध्यापक सम्मिलित हैं। उसने तनख्वाह बढ़ाने की माँग मंजूर न होने पर १ नवम्बर से कार्य बन्द कर दिया है। कोठी-राज्य के तमाम स्कूल बन्द हैं। छात्र-मंडल की ओर से सड़कों पर प्रदर्शन होते हैं। अध्यापक-मंडल के सभापति लाल चन्द्रदेवसिंह और मंत्री पं० सूर्यप्रसाद मिश्र ऐडमिनिस्ट्रेटर [illegible] विचार किया जाय और हम लोगों को भी तरक्की दी जाय। —संवाददाता

* * *

सागर मध्यप्रान्त के शिक्षा-मंत्री मा० एस० पी० गोखले २ तारीख को सागर पधारे। आपने ३ तारीख को 'सागर विश्वविद्यालय' तथा महिला विद्यालय का निरीक्षण करके प्रगति पर हर्ष प्रकट किया। महिला-समाज ने आपको मान-पत्र दिया। ३ तारीख की रात्रि को साढ़े आठ बजे चकराघाट के फर्श पर एक सार्वजनिक सभा कृष्णानन्दजी के सभापतित्व में हुई। इसमें शिक्षा-मंत्री जी ने शिक्षाप्रसार पर जोर देते हुए देश की वर्तमान स्थिति में नगर में शान्ति-स्थापना के लिए जनता से अपील की। श्री जे० के० 'अटल' डिप्टी कमिश्नर ने आपको नगर की सुरक्षा का विश्वास दिलाया। पश्चात् डा० दीक्षित तथा श्री गिरिराजसिंह के भाषण और प्रो० बिहारीलाल व 'बेधड़क' जी का कविता-पाठ हुआ। डा० हेमचन्द्र पांडे के आभार प्रदर्शन के बाद सभा समाप्त हुई।

सागर तहसील व नगर-कांग्रेस चुनाव में क्रमशः पं० लक्ष्मीनारायण 'श्रीधर' व पं० रामसेवक दुबे अध्यक्ष चुने गये।

खबर मिली है कि रिश्वत के अभियोग में स्टेशन मास्टर गणेशगंज को, श्री एस० पी० प्रधान मजिस्ट्रेट ने १ वर्ष की सख्त सजा सुना दी।

सुना है, पुरब्याऊ मुहल्ले की एक महिला पर कुछ गुंडों ने आक्रमण किया। अन्य महिलाओं ने मिलकर एक गुंडे को कोतवाली में पकड़वा दिया।

जिलाधीश की आज्ञा से कटरा सड़क की दूकानों के टपरे ३-११-४६ को हट गये हैं। अब यहाँ पार्क बनने की खबर है। —संवाददाता

* * *

सागर प्रायमरी शिक्षकों का एक शिष्टमंडल श्रीमान् शिक्षा-मंत्री से मिला। शिक्षकों की स्थिति का हाल पढ़कर शिक्षा-मंत्री ने आश्वासन दिया कि ५) माहवार की विशेष सहायता सरकार शिक्षकों को दे रही है तथा प्रायमरी-शिक्षकों का न्यूनतम वेतन ३०) रहेगा। सरकार ने इसके लिए साढ़े १२ लाख की रकम मंजूर की है।

सर्वसम्मति से तहसील कांग्रेस कमेटियों का चुनाव हो गया।

खबर है कि प्रायमरी-शिक्षकों ने शत-प्रतिशत वेतन-वृद्धि तथा महँगाई गवर्नमेंट के अनुसार मिलने की माँग पर म्यु० कमेटी को १ माह का नोटिस दे दिया है।

पुलिस ने जनता को बकरीद के दो दिन पूर्व हथियार दाखिल करने तथा गाय-वध परमिट प्राप्त करने की सूचना दे दी थी। बकरीद शान्ति से मनाई गई।

सुना गया है, कि देवरी के सब-इंसपेक्टर पुलिस ने वहाँ के किसी व्यापारी पर भारत-रक्षा-कानून ८१ (४) का झूठा मामला चला दिया। उन्होंने मुस्तकिल होने की गरज से अमृतलाल [illegible]

प्रयाग जिला कांग्रेस कमेटी के प्रतिनिधि में इस साल देहात से बहुत से छोटे-छोटे कार्यकर्ताओं के चुनकर आने की सम्भावना है। कहीं-कहीं तो छोटे कार्यकर्ताओं ने जिले के बड़े-बड़े नेताओं तक को हराया है। यद्यपि अभी तक नतीजा नहीं मालूम हुआ पर जिनकी सम्भावना है उनमें सर्वश्री ठाकुर इकबालसिंह, पं० शिवकुमार पांडेय, लक्ष्मीनारायण, रघुराजसिंह, बाबू परमानन्द सिनहा, महादेव भट्ट, जगदीशप्रसाद, बिहारीलाल, ओंकारनाथ, नेवालसिंह, सरदार नर्मदाप्रसादसिंह, रामसुन्दर, बैजनाथ पांडेय, सूर्यदत्त बनकटा, भास्कर दुबे, महावीरप्रसाद शुक्ल, अर्जुनसिंह, माताम्बर द्विवेदी, गोपीनाथ हलवाई, रामनरेश मिश्र, दीनबन्धु पाठक, श्री वासुदेव यादव और गोकुलप्रसाद हैं। इनके अतिरिक्त और भी दो-एक सज्जन हैं जिनके चुने जाने की सम्भावना है, परन्तु कई जगह के चुनाव नहीं हुए और कुछ में बराबर-बराबर वोट पड़े हैं। जिनका चुनाव नहीं हुआ वह ता० १७ नवम्बर को हो जायगा इसके पश्चात् ता० १८ को चुनाव का फैसला श्री गोपालजी मेहरोत्रा सूबा अदालत के संयोजक सुनावेंगे।—महादेव भट्ट

* * *

प्रयाग जारी मंडल कांग्रेस-कमेटी के पदाधिकारियों में सभापति पं० शारदाप्रसाद शुक्ल शास्त्री, उपसभापति में ठाकुर मथुराप्रसादसिंह, शारदाप्रसाद पांडेय, पं० हरिप्रसाद दुबे, पं० श्रीनाथ जी, मंत्री पंडित व्रजमोहन शुक्ल; उपमंत्री पं० व्रजनन्दन जी, पं० रामनिधि, पं० सूर्यबली तथा कोषाध्यक्ष बाबू छेदीलाल जी गुप्त चुने गये हैं। मंडल से जिले के लिए प्रतिनिधि पं० रामनरेश मिश्र चुने गये। —व्रजमोहन शुक्ल मंत्री

* * *

इन्दौर मानपुर व महु परगने के ६५ गाँवों के भिलों ने मानपुर में जाति-सभा की इस सभा के समय मानपुर कचेहरी कोर्ट के सब आफिसर, राज्य कर्मचारी व इन्दौर प्रजामंडल के नेता व अन्य कई गाँव की प्रजा भी उपस्थित थी। सब ने सामने शपथ की कि आज से शराब न पीवेंगे और यह प्रण किया कि जो कोई भिल पीवे उसे जाति से बहिष्कृत कर दिया जाय उसकी लड़की से विवाह न करना व ५१) रु० दंड न उसके यहाँ पर मृतक उठाने न जाया जाय। यह कार्य प्रमाण-पत्र लेख बन्द कर सभा में सुनाया गया व अपनी बिरादरी और रियासतों में भी चिट्ठी पत्र दिये हैं इससे हमारे उच्च वर्णों के भाइयों को चाहिए कि वे भी शराब छोड़ने का प्रयत्न करेंगे।

* * *

एक नई योजना बनाई गई है जिसमें मेम्बरों को ४ साल तक खून देना होगा। जरूरत पड़ने पर २५ तोला खून लिया जायेगा। खून की कीमत १५ या २० रुपये दिये जावेंगे व इस खून से रोगियों की रक्षा की जायेगी यह लेख ३०-१०-४६ को श्रीमंत महाराजा इन्दौर के हुक्म से सेन्ट्रल इंडिया प्रि० वर्कस इन्दौर में इन्स्पेक्टर आफ [illegible] शित कराया है। [illegible] में पटवारियों के [illegible] कराया गया है। [illegible] २ मौजा [illegible] मैंने

देवप्रयाग (गढ़वाल) [illegible] आपसी बँटवारा सरगर्मी के [illegible] है। इसमें चौदह सौ आ[illegible] अपुत्र विधवाओं का प्रतिनि[illegible] सौ तीस आदमी करेंगे। [illegible] मुखिया पं० दयाराम जी के प्रयास [illegible] बँटवारा हो रहा है। गत कुछ [illegible] देवप्रयाग साहित्य विनोदिनी [illegible] हस्तलिखित मासिक पत्रिका [illegible] का प्रकाशन शुरू हो गया है। [illegible] में पुलिस ने विनोदिनी का प्रका[illegible] करवा दिया था।

* *

जयपुर राजस्थान के प्रसिद्ध [illegible] श्री अद्भुत शास्त्री ने बङ्गाल [illegible] सहायतार्थ ५०,०००) भेजने का [illegible] किया है। शास्त्री जी राजस्थान के [illegible] सियों एवं प्रवासियों से यह रकम [illegible] करेंगे और अ० भा० मारवाड़ी [illegible] प्रधान कार्यालय जयपुर की [illegible] बङ्गाल के प्राण बाबू शरच्चन्द्र [illegible] भेजेंगे। —महावीर जैन [illegible]

* *

बाँदा मानिकपुर पुरानी [illegible] रात को, तारीख ३०-१०-४६ [illegible] बजे एक तेली के मकान में [illegible] गई जिसके फलस्वरूप उसके [illegible] बनिये का मकान भी काफी [illegible] जल गया। कहारों ने बड़ी सतर्कता [illegible] किया वरना बहुत ज्यादा नुकसान [illegible] सम्भावना थी। आग लगने का [illegible] अज्ञात है। —संवाद[illegible]

क्यों!

ब्रिल्क्रीम

अपने आसपास देखिये और उन [illegible] का पता लगाइये जो ब्रिल्क्रीम [illegible] लाते हैं। स्वच्छ एवं स्वस्थ [illegible] उनका पता आसानी से लग [illegible] ब्रिल्क्रीम बालों को अपने स्थान [illegible] है और उन्हें सुन्दर चमक देता है। आज ही एक बोतल खरीदिये

ब्रिल्क्रीम

परिपूर्ण केश-शृंगार

BRYLCREEM THE PERFECT HAIRDRESS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

...की रक्षा के लिए हमारा कर्त्तव्य

...की अन्तिम सीढ़ी को ...लिया है—शक्ति-सत्ता हमारे ...आ गई है फिर भी हम एक ...को ही पा रहे हैं। सब कुछ ...विदित नहीं क्यों हमारी दृष्टि ...की ओर नहीं उठती। हमें ...का ही अधिकार नहीं ...हम केवल वक्तव्य निकाल- ...समस्त अनीतियों के मिटाने ...करें, वरन् हमें यह भी तो ...कि आततायियों को हर प्रकार ...होनेवाले अत्याचारों को ...मिटा दें, उन्हें नेस्त-नाबूद ...हमारा भविष्य उज्ज्वल बन ...निर्माण में भी सहायक होगा। ...का महान् दुःख होना ...शासन की बागडोर हमारे ...हुए भी हम इस प्रकार के ...के मिटाने का कोई भी ...करते—और साम्प्रदायिक दंगे ...देशव्यापी होते जा रहे हैं। ...के साथ घोर अत्याचार ...है!

...सरकार को भी क्या सरकार ...बन्धुओं के ऊपर विपत्तियों ...हुए देखे। आज हमारे ...हृदय भावहीन हो गये हैं या ...नहीं, शासन-सूत्र सँभा-...

...नोआखाली की हवाई ...करते-करते कुछ थक से गये हैं, ...कुछ प्रभाव उन आतताइयों ...। शायद वह नहीं के बरा-... ऐसी दशा में कांग्रेस-सर-... आशा रखना एक भारी भूल ...हमारी सरकार इस प्रकार की ...रोकने का भी कोई प्रयत्न

...रक्षा के लिए स्वयं संगठित ...और अपने नैतिक कर्तव्यों ...पालन करना चाहिए ...से बहिष्कृत कुमारियों का ...सके। जैसा कि अभी पिछले ...के अंक में प्रकाशित हो चुका ...विचारों से पूर्णरूपेण सहमत हूँ। ...व टिपरा की घटनाओं के ...के इस भ्रष्टाचारपूर्ण इति-...से भी इसका हल न ...के साथ हिन्दू-कन्याओं ...से भी यह प्रश्न हल न ...जिस कन्याओं अथवा स्त्रियों ...किया गया है उनके लिए ...द्वार सर्वदा खुला है। हमारी ...शुद्धियों से ही इस्लाम के ...मिट सकेंगे। छुआछूत के ...हमें मिटाना ही होगा। ...साहस के साथ सामना करने ...हममें आ गई तो हमारी ...करने की आवश्यकता ...जैसी कि महात्माजी की

—सुशीलादेवी

प्रान्तीय साहित्यिक मठाधीशों से

श्री राजेश्वर गुरु एम० ए० ने 'शुभ-चिन्तक' के दीपावली अंक में 'मध्य-प्रान्तीय काव्यसाधना' की गत दशाब्दि के सम्बन्ध में जो प्रकाश डाला है, उससे प्रान्त के प्रमुख साहित्यिक क्षेत्रों में एक असन्तोष और विक्षोभ की भावना फैल गई है। जहाँ आपको विगत दशाब्दी के कवियों के सम्बन्ध में विशेष रूप से चर्चा करनी थी, वहाँ आपने द्विवेदी-युग (भाषा-परिष्कार-युग) तथा राष्ट्रीय जागरण-युग की भी चर्चा कर दी है, जो आवश्यक है। लेखक ने प्रेमा के प्रकाशन-काल को 'नव-चेतना' का युग कहा है—यह बात यदि हम किसी सीमा तक मान लें तो उस युग के 'काव्य की प्रेरणा' 'तत्कालीन छायावाद' कैसे हो सकती है? 'छायावाद' तो एक अलग चीज है और उसके प्रवर्तक देश में पूर्वकाल से मौजूद थे। बड़े आश्चर्य की बात है, कि जहाँ इस युग में आप कुछ परिचित लोगों की चर्चा करते हैं, वहाँ सर्वश्री प्रभुदयाल अग्निहोत्री, नामदेव, 'वीरात्मा' 'विदग्ध' मुरलीधर दीक्षित, 'तरंगी' आदि को बिलकुल भुला देते हैं। गुटबंदी से दूर रहनेवाले इन कवियों का लेख में कहीं उल्लेख तक नहीं। यह एक असहनीय बात है। हिन्दी में आलोचना तथा इतिहास, गंभीर अध्ययन के विषय माने जाते हैं। इतिहास तो एक कटु सत्य है, जिसका पता लगाना निष्पक्ष इतिहासकार का कर्त्तव्य है। केवल कुछ नाम गिना देने से इतिहासकार के कर्त्तव्य की इतिश्री नहीं हो जाती।

आज की हिन्दी-कविता में वादों का विवाद है, किन्तु इसके यह मानी नहीं, कि प्रत्येक कवि एक नये वाद का बखेड़ा लेकर खड़ा हो जाय। इतिहास में केवल कुछ व्यक्तियों की प्रशंसा के हवाई पुल नहीं बाँधे जाते वरन् उसमें युगों की धारा-उपधाराओं तथा काल की गति-विधियों का उल्लेख करना आवश्यक होता है, अन्यथा इतिहास का महत्त्व ही नहीं रहता।

हमारे बीच में से सर्वश्री कुंजबिहारी चौबे, रहमान सागरी, शेख नईमुद्दीन, गोविन्ददास 'भारतीय' जैसे कवि इस गत दशाब्दी में चल बसे और न जाने कितने मरते जा रहे हैं। पर राजेश्वर उनका नाम भी नहीं लेते। सम्मेलन भी इन लोगों की ओर से उदासीन है। प्रान्त में साहित्यिकों को प्रोत्साहन देने के लिए एक अच्छी सी मासिक पत्रिका भी नहीं। हम प्रतिवर्ष प्रान्तीय सम्मेलन की दो दिन की अतिशबाजी में ८-१० हजार रुपया फूँक दिया करते हैं। हमारे प्रान्तीय साहित्यिक मठाधीश इस ओर ध्यान दें तो बड़ा अच्छा हो।

—लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

* * *

स्वतन्त्र किसान-सभाओं का संगठन

श्रीमान् सम्पादक ...

देश में बह... सभाएँ काम... कार्यकर्ता... में अ... आदि संस्थाओं में जा मिले। इसका अर्थ यह कि जो किसान कार्यकर्ता किसानों में कार्य करते उसका श्रेय उपर्युक्त संस्थाओं को मिल जाता था। परन्तु पिछले सन् १९४२ के आन्दोलन के बाद देश ही की नहीं वरन संसार की कायापलट हो गई है। अब किसान कार्यकर्ताओं का कर्तव्य है कि वे किसानों के अधिकारों की रक्षा के लिए अपना स्वतन्त्र संगठन करें।

गत सन् १९४५-४६ के प्रान्तीय और केन्द्रीय धारा-सभाओं में किसान कार्यकर्ता अथवा किसानों को शायद ही कोई जगह मिली है। जमींदारी तोड़ देना ही किसानों को सुखमय बनाना न होगा—फिर अभी उस प्रथा को टूटने में वर्षों लगेंगे। बिना ब्रिटिश सरकार के पैर उखड़े उसका अंत होना वैसा ही है जैसे भारत के राज्यों से राजा-महाराजाओं का हटना। इसके अतिरिक्त आज वही प्रतिक्रियावादी अथवा प्राचीन धारणावाले नेता विभिन्न दल के रूप में फिर से किसान-मजदूरों का नेतृत्व लेना चाहते हैं। परन्तु उन्होंने शायद यह ख़याल नहीं किया कि यू० पी० में पिछली अनाज-वसूली में किन कठोर उपायों से गल्ला वसूल किया गया था। स्वयं किसान कार्यकर्ताओं ने कितनी मेहनत से कार्य किया था परन्तु उनके परिश्रम की कोई कीमत नहीं। बड़े-बड़े नेताओं और एम० एल० ए० ने अपने भत्ते वसूल कर लिये पर किसान कार्यकर्ताओं के खर्च और भत्ते ज्यों के त्यों पड़े हैं। ऐसे ही अन्य प्रांतों में भी हो सकता है। छोटे किसान कार्यकर्ताओं की आवाज ही क्या है? केवल उनकी एक ही दवा है—स्वतन्त्र किसान संगठन। यदि ऐसे संकट उठाकर भी वे इस नव-जागरण में सोते रहेंगे तो उनका तो उतना हर्ज न होगा जितना कि देश की रीढ़ किसानों का। इसलिए देश के प्रत्येक किसान कार्यकर्ता का कर्त्तव्य कि वह स्वतंत्र किसान-संगठन में बँध जाय वरना भविष्य में भी किसानों की वही स्थिति रहेगी जो आज बनी है। इसके अतिरिक्त किसानों का भी कर्तव्य है कि वे अपने बीच कार्य करनेवाले व्यक्ति की सच्ची परख कर अपना नेता चुनें।

—लक्ष्मीनारायण

* * *

कांग्रेस-कार्यकर्ता कण्ट्रोल न लें

श्रीमान् सम्पादक जी,

आजकल ही क्या जब से कण्ट्रोल हुआ, तभी से कण्ट्रोल की चीजों के मिलने में बड़ा मुश्किल हो रहा है। अब तो कांग्रेस-वाले स्वयं कण्ट्रोल की दूकान लेने के चक्कर में पड़ रहे हैं। कट्रोल का प्रारम्भ से लेकर आज तक का इतिहास ब्लैक मार्केटिंग (चोर बाजारी) से भरा हुआ है। फिर कांग्रेस जैसी पवित्र संस्था के लोग क्यों इस काले सागर में डूबने जा रहे हैं? मुझे आशा है कि कांग्रेस-कमेटियाँ अपने कार्यकर्ताओं को आदेश करेंगी कि वे कण्ट्रोल की दूकान आदि के चक्कर में न पड़ें। जहाँ तक मुझे ज्ञात हुआ है मैं अपने व्यक्तिगत अनुभव से कह सकता हूँ कि दूकानदारों में शायद १ प्रतिशत ... ब्लैक मार्केटिंग न की दूकानदारों को ब्लैक मार्केटिंग पर डाट फटकार भी सकते थे। पर, जब वे स्वयं इस रोग में पीड़ित रहेंगे तो स्वयं को बचाने के प्रयत्न में लगेंगे कि दूसरों का दोष देखेंगे?

—राममनोहर

दही बिलोना

बहुत से घरों विशेषकर उनमें, जो कि नगरों के बाहर स्थित हैं—दही बिलोना एक आवश्यकता है इसलिए कि इससे ताजा मक्खन मिल सकता है जो अन्यथा नहीं मिलता। भारत की उन अनेक स्त्रियों के लिए जिन्हें बाहरी खेलों का लाभ प्राप्त नहीं हो सकता यह दैनिक आवश्यकता उन्हें पतला रखने के लिए उत्तम अवसर प्रदान करती है। दही बिलोते समय वे मीठे गीत गाती हैं जिनसे प्रातःकाल सारा घर संगीतमय हो जाता है।

इस प्रकार की दैनिक स्वास्थ्यप्रद क्रिया आवश्यकता को बोझा नहीं बनाती। इसी प्रकार दैनिक स्नान भी एक आवश्यकता है। स्वास्थ्य और स्वच्छता के लिए यह अनिवार्य है किन्तु हमाम साबुन की श्रमहारी सुगंधि इस दैनिक क्रिया को आनन्ददायी बना देती है।

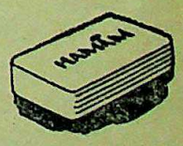

हमाम

भारत का प्रियतम साबुन

टाम्को सेल्स

A TATA PRODUCT

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीकन राष्ट्रपति का चुनाव

(पेज ६ का शेष)

अमरीका आज सेना और राजनीतिक स्रोतों द्वारा समर्थन करने के लिए तैयार है। अमरीकी जनता उसको सामयिक आवश्यकता नहीं मानती, बल्कि स्थायी साझीदार और सहयोगी मानती है। आज अमरीकनों का विचार है विश्व के जिस कोने में भी शान्ति भंग होती है, या शान्ति भंग होने का खतरा उत्पन्न होता है, उससे उनका सम्बन्ध है।

ट्रूमैन ने जीवन में कभी इस बात का स्वप्न भी नहीं देखा कि वह एक दिन ह्वाइट हाउस में बैठेगा और अमरीका का राष्ट्रपति बनेगा। इसलिए रूजवेल्ट के मरने पर सारे राष्ट्र की सहानुभूति हमदर्दी, सहयोग और शुभेच्छा के साथ ट्रूमैन ने कार्य आरम्भ किया। मगर ट्रूमैन ने शासन की बागडोर हाथ में लेते ही रूजवेल्ट-शासन और मन्त्रिमण्डल तथा नवीन योजना (न्यू डील) के सब आदमियों को अलग कर दिया। इसका आम जनता, छोटे दूकानदारों और लोगों पर काफी प्रभाव पड़ा और ट्रूमैन के शासन के प्रति असन्तोष बढ़ता गया। पार्टी के अनुभवी और बूढ़े राजनीतिज्ञों की भी उपेक्षा की गई। मिसूरी से ट्रूमैन अपने आदमी वाशिंगटन लाये। जो योग्य नहीं थे। फलतः ट्रूमैन की अपनी गलती के कारण डेमाक्रेटिक पार्टी आज हार रही है।

मिसूरी को अपने प्रिय पुत्र के प्रति सहानुभूति है। पर १४ साल के बाद मिसूरी भी डेमाक्रेट से रिपब्लिकन हो गया है। डेमाक्रेट ट्रूमैन का नाम चुनाव में कहीं नहीं ले रहे हैं। वे रूजवेल्ट के नाम पर चुनाव लड़ रहे हैं। सर्वत्र रूजवेल्ट की तसवीरें लगाई गई हैं। मिसूरी उत्तर और दक्षिण के स्टेटों के बीच सीमा की स्टेट है। दक्षिण के स्टेट प्रारम्भ से डेमाक्रेटिक रहे हैं और आज भी हैं और इसलिए उनको अमरीकी राजनीतिक परिभाषा में 'स्तालिड साउथ' कहा जाता है। मिसूरी ने १९३२ में ६४ प्रतिशत डेमाक्रेट कांग्रेस में भेजे थे और रूजवेल्ट के चौथी बार प्रेजीडेण्ट चुने जाने के लिए खड़े होने पर ५१ प्रतिशत वोट डेमाक्रेटों को दिये थे। १९४४ से रिपब्लिकन पार्टी का जोर बढ़ने लगा और मिसूरी ने रिपब्लिकन सीनेटर भेजा। अब यह निश्चय है कि दूसरा सीनेटर भी रिपब्लिकन पार्टी का होगा और हाउस आफ रिप्रेजेण्टेटिव में इस स्टेट से रिपब्लिकन पार्टी के चुने जावेंगे। इसलिए जो प्रेजीडेण्ट अपनी स्टेट को अपने साथ नहीं रख सकता, वह अपने देश को भी अपने साथ नहीं ले जा सकता।

प्रभाव और परिणाम

ट्रूमैन-शासन और डेमाक्रेटिक पार्टी के इस चुनाव में पराजय का क्या प्रभाव और परिणाम होगा, यह प्रश्न रह जाता है। अमरीका के इतिहास में देखा गया है कि जब प्रेजीडेण्ट के शासन के मध्यकाल के चुनाव में पार्टी हार गई है तो अगले चुनाव में उस पार्टी का प्रेजीडेण्ट भी हार गया और दुबारा राष्ट्रपति नहीं चुने गये।

२—कांग्रेस पहले की अपेक्षा अधिक अनुदार और प्रतिवादी होगी और ट्रूमैन को कांग्रेस के प्रबल विरोध का पग-पग पर सामना करना पड़ेगा।

३—परराष्ट्र-नीति को छोड़कर कांग्रेस और ट्रूमैन के बीच मत्यवरोध बना रहेगा बल्कि और अधिक बढ़ जावेगा। प्रेजीडेण्ट ट्रूमैन के नियामक प्रोग्राम का कांग्रेस गला घोंट देगी। सीनेट भी ट्रूमैन-विरोधी होगी।

४—१९४८ के चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी का उम्मीदवार अमरीका का राष्ट्रपति चुना जावेगा।

मतदान के पहले की स्थिति

डेमाक्रेटिक पार्टी जीतती है या रिपब्लिकन पार्टी जीतती है, इसमें निर्णायक मत बहुविचारों और पत्तों के ग्यारह स्टेट हैं। १५ स्टेट डेमाक्रेटिक पार्टी के दुर्ग हैं और उनमें उनको शत-प्रतिशत विजय पाने की आशा है। यही बात ११ स्टेटों के बारे में है, जो रिपब्लिकन पार्टी के अजेय दुर्ग हैं। टेनसी के प्रतिनिधियों में इस समय ८ डेमाक्रेट और दो रिपब्लिकन हैं। निर्णायक ग्यारह स्टेटें हैं—ओहियो, मिशिगन, इलिनोइस, विसकानसिन, मिन्नेसोटा, मोण्टाना, वाशिंगटन, कैलीफोर्निया, न्यूमैक्सिको, मिसूरी और केन्द्रकी। इन ग्यारह स्टेटों में से रिपब्लिकनों को कम से कम १४ सीटों की पूरी आशा है। रिपब्लिक पार्टी के अजेय दुर्ग समझे जानेवाले स्टेट हैं—कनेक्टीकट, डेलावार, इडाहो, इण्डियाना, मैरीलैंड, मैसाचुसट, न्यूजसी, न्यूयार्क, ओकला बोमा और पेन्सिलवेनिया। यहाँ पहले की अपेक्षा रिपब्लिकन पार्टी की शक्ति और अधिक बढ़ जायगी। हाउस आफ रिप्रेजेंटेटिव में १९४७ के प्रारम्भ में रिपब्लिक पार्टी के सदस्यों की संख्या कम से कम २३५ होगी। सीनेट के चुनाव की ३५ सीटों में से २२ पर डेमाक्रेटिक पार्टी का और १३ पर रिपब्लिकन पार्टी का अधिकार है। फ्लोरीडा, मिसिस्पी, वार्जेनिया, टेक्सस और टेनेसी कट्टर डेमाक्रेट हैं। शेष ११ स्टेटों में रिप्रेजेंटेटिव पार्टी विजय पाने की आशा करती है।

इस चुनाव के फलस्वरूप अमरीका की वैदेशिक नीति में कोई अन्तर नहीं आवेगा, मगर कांग्रेस और ट्रूमैन के बीच अगले दो सालों में मतभेद बढ़ेगा और मत्यवरोध भी उत्तरोत्तर बढ़ता जायगा। चौदह साल बाद राम-वनवास के भी चौदह साल हुए थे—अमरीका का शासन-सूत्र डेमाक्रेटिक पार्टी के हाथ से निकलकर रिपब्लिकन पार्टी के हाथ में जा रहा है। इससे लोगों को यह सन्देह करने का कारण होगा कि संयुक्त-राष्ट्र अमरीका ने साम्राज्यवाद की ओर तेजी से कदम बढ़ाया है, और वह आर्थिक ही नहीं राजनीतिक प्रभुत्व भी स्थापित करने की इच्छा रखता है। इसलिए चुनाव का अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से विशेष महत्व है।

मौलिकता—साहित्यिक मौलिकता की विशद व्याख्या। मूल्य।-) पाँच आने।

आल्हा—लेखक, चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा। इस पुस्तक में महोबे के प्रख्यात वीर आल्हा और

बिक्री

दूसरी सूची का नं० एम एम एच

लोहे तथा इस्पात की सारी चीज़ें जिनका उल्लेख उपरोक्त सूची में है आयरन तथा स्टील कण्ट्रोलर को बिक्री के लिए दी जा रही हैं। आयरन तथा स्टील कण्ट्रोलर कण्ट्रोलशुदा लोहे और इस्पात के फालतू सरकारी सामान की बिक्री के अधिकारी होंगे।

डाइरेक्टरेट जनरल आफ डिस्पोजल्स
शाहजहाँ रोड, नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंगमंच

...तीय सिनेमा-संसार में परिवर्तन की आवश्यकता
...निर्माताओं को समय की गति परखना चाहिए

लेखक, श्री शिवमूर्ति

...की स्थिति बदलती जाती है, ...तक हमारे फिल्म-निर्माताओं ...दृष्टिकोण वही बना रक्खा है जो ...प्रारम्भिक काल में था। आज ...का प्रेममयी होना ही कोई कला ...की बदलती स्थिति का भी ...रखना चाहिए। चारों ओर ...आ रही है—सामाजिक क्रांति! ...तो समाज का एक बहुत बड़ा ...यदि परिवर्तन न हुआ तो ...का परिवर्तन ही कैसा! हम ...हैं कि हमारे फिल्म-निर्माता ...में कुछ थोड़ा-सा इधर-...नई फिल्में बनाकर तैयार कर ...नवीनता और मौलिकता का ...है वह खटकता रहता है। ...फिल्म (खेल) को देखते ही ...लगता है कि शायद यह ...कभी देख लिया है। इस प्रकार ...सारी नवीनता पुरातनता में ...जाती है। मन खीझने लगता ...में इस फिल्म के पीछे पैसा ...नष्ट किया। आज की फिल्मों में ...अभाव देखने में खटकते हैं—

...मौलिकता और नवीनता में ...अभाव।

...वैज्ञानिक फिल्मों के निर्माण की ...का अभाव।

...सैनिक-शिक्षा अथवा सैनिक-...करने का अभाव।

मौलिकता और नवीनता में उन्नति का अभाव भारतीय फिल्मों में विशेष रूप से पाया जाता है। 'कञ्चन' में जो चित्रण है वही बन्धन में है। 'बन्धन' में कोई मौलिकता नहीं है; केवल पात्रों के चरित्र-चित्रण से सारा फिल्म सज गया है। सिनेमा-गृह से उठने के बाद पाठक के मानस-पटल पर फिल्मों की सच्ची अनुभूति नहीं रह जाती, बल्कि, कुछ पात्रों के चरित्र और उनकी कृतियाँ कुछ क्षण के लिए दिमाग में बनी रहती हैं, जैसे ही दूसरा दिन हुआ बस, उस फिल्म का ध्यान जाता रहता है। इसके अतिरिक्त फिल्मों में प्रेम-कहानियों को छोड़कर समाज के किसी अन्य विषय का चित्र ही नहीं। इसका खास कारण जान पड़ता है कि फिल्म-निर्माताओं में प्रेम का विशेष अध्ययन रखनेवाले ही व्यक्तियों की अधिकता है। ऐसे व्यक्ति प्रेम के चित्रण के सिवा अन्य विषय की बातों को क्या जानें? फिर प्रेम के ऊपर हजारों वर्षों से ग्रन्थ लिखे जा रहे हैं। इस विषय की प्रधानता केवल वे ही लोग दे सकते हैं जो भावुक होंगे। परन्तु, हमें तो केवल भावुकता से ही कार्य नहीं लेना है। आनेवाली परम्परा के लिए कोई नई चीज और कला प्रदान करनी चाहिए। इसलिए यह आवश्यक है कि हमारे फिल्म-निर्माता अपनी राष्ट्रीय फिल्मों की उन्नति के लिए अपनी मौलिकता और नवीनता का उपयोग करें। वह मौलिकता नहीं, जो प्रेम ही तक सीमित रहे।

दूसरा अभाव जो हमारे फिल्मों में है, वह है विज्ञान की कमी। आज का युग वैज्ञानिक युग कहा जाता है। आधुनिक सभ्यता उसी विज्ञान की देन है। फिर, यदि हम विज्ञान के विषय में बिलकुल मौन रहें तो इसका अर्थ यही है कि हम आधुनिकता से पीछे हैं। जब तक हम आधुनिक विज्ञान को अपने फिल्मों में स्थान न देंगे हमारा सिनेमा-संसार उन्नति नहीं कर सकता। यद्यपि युद्ध-काल में युद्ध के कुछ सामान और भिन्न-भिन्न प्रकार के शस्त्र खेल शुरू होने से पहले दिखलाये जाते थे; परन्तु फिल्मों में उनका उपयोग नहीं के बराबर था। आज विज्ञान ने जो उन्नति की है उसको देखकर साधारणतया अनुमान लगाया जा सकता है कि हम विज्ञान को केवल अपनी वैज्ञानिक मौलिकता के अभाववश स्थान नहीं देते। आज रैकेट चन्द्रलोक की तैयारी में है, अणु-बम-जैसे विनाशकारी बम की उपयोगिता को बन्द करने का प्रचार सिनेमा-द्वारा सरलता से हो सकता है। वायुयान, रेडियो तथा अन्य प्रसिद्ध वैज्ञानिक वस्तुओं को लेकर फिल्मों का कलेवर बढ़िया सजाया जा सकता है। परन्तु, फिल्म-निर्माता इस ओर उतने प्रयत्नशील नहीं जान पड़ते जितना कि प्रेम-भरी फिल्मों को दिखलाने में। यह हो सकता है कि दो-चार महीने अथवा दो-एक साल वैज्ञानिक फिल्मों को लोग कम पसन्द करें। परन्तु, ज्यों ही वह गति आगे बढ़ी, जनता उन फिल्मों को बड़े चाव से देखेगी। ऐसे फिल्मों से हमारी भावी सन्तानें विज्ञान की ओर आकर्षित होंगी और नये अनुसन्धान की ओर भारतीय भी अधिक दिलचस्पी लेंगे।

फिल्मों में तीसरा अभाव सैनिक मनोवृत्ति की कमी का है। किसी-किसी फिल्म में कुछ सैनिक अथवा पुलिस दिखलाये जाते हैं पर वे केवल बन्दूकधारी वेश में। आज जब कि वायुयान, टैंक, समुद्री पोत, पनडुब्बियाँ तथा रेडियो द्वारा अन्य वैज्ञानिक अस्त्र तैयार हो चुके हैं उन्हें दिखलाना चाहिए। वैज्ञानिक अस्त्रों से सुसज्जित सेना को कवायद करते दिखलाया जाय। महिला सैनिकों की कवायद, ट्रेनिंग और वायुयान-चालक अथवा तोपों से विमानों को गिराने में स्त्रियों को पुरुष सैनिकों की सहायता देते दिखलाया जा सकता है। हाई स्कूल, कालेज और यूनिवर्सिटियों में छात्र और छात्राओं की सैनिक ट्रेनिंग के फिल्म भी दिखाये जा सकते हैं। परन्तु, अभी तक फिल्म-निर्माताओं ने इन बातों की ओर शायद ध्यान ही नहीं दिया।

उपर्युक्त कमी की ओर हमारे फिल्म-निर्माताओं को अधिक ध्यान देना चाहिए। समाज बनाने की बहुत कुछ जिम्मेदारी फिल्मों पर भी है। यदि फिल्म-निर्माता सिनेमा को केवल मनबहलाव की चीज समझते रहेंगे तो वे फिल्म-व्यवसाय द्वारा भले ही कुछ आमदनी कर लें; परन्तु वे समाज और राष्ट्र की उन्नति नहीं कर सकते। यदि इस ओर फिल्म-निर्माता ध्यान न देंगे तो यह कलंक हमारे फिल्म-निर्माताओं के ऊपर रहेगा।

श्रीकृष्ण-चरित्र—लेखक, रावबहादुर काशीनाथ, एम० ए०, एम० बी० ई०। पतितपावन भगवान् श्रीकृष्ण का पावन चरित्र इस पुस्तक में महाभारत के अनुसार वर्णन किया गया है। जिसे पढ़ने पर उपन्यास का मज़ा आता है। भाषा प्रांजल और परिमार्जित है। कृष्ण की जीवनी पर विवेचनात्मक ढंग से प्रकाश डालनेवाली हिन्दी में अपने ढंग की यह प्रथम पुस्तक है। मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने।
मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड इलाहाबाद।

प्रमिला त्रिवेदी रजनी पिक्चर्स ...

फिल्मी जलतरंग
इस पुस्तक में फिल्मों के २६० प्रसिद्ध गीत छापे गये हैं। मूल्य एक रुपया पाँच आने।

फिल्मी अप्सरायें
इस पुस्तक में ५० प्रसिद्ध फिल्म-अभिनेत्रियों की तसवीरें और उनकी जिन्दगी के रंगीन हालात छापे गये हैं। मूल्य दो रुपये छः आने।

५० दिन में अँगरेजी
इस पुस्तक से आप ५० दिन में अँगरेजी बोलना सीख सकते हैं। मूल्य एक रुपया चौदह आने।

विवाहित मनोरंजन
इस पुस्तक को पढ़कर नवविवाहित दाम्पत्य सुख का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। मूल्य एक रुपया पाँच आने।

फिल्मी सितारे
इस पुस्तक में प्रसिद्ध अभिनेत... की जिन्दगी के रंगीन हालात छापे ...।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर उधर की

करघे से १६० करोड़ गज कपड़ा

कृषि के बाद करघा-उद्योग भारत का दूसरा सबसे बड़ा धन्धा है जिसके द्वारा लगभग १६० करोड़ गज कपड़ा प्रतिवर्ष तैयार होता है। इसमें लगभग २५ लाख आदमी काम करते हैं। हथ-करघे की बुनाई इन आदमियों का मुख्य रोजगार और देश के अनेक गाँवों तथा कस्बों में लोगों की आमदनी का मुख्य साधन है। देश में जितना कपड़ा खर्च होता है, उसका प्रायः २५-३० प्रतिशत करघा-उद्योग से प्राप्त होता है। इन बातों से स्पष्ट है कि यदि किसी कारण यह उद्योग टूट गया तो भारी संख्या में लोगों की रोजी मारी जायगी।

भारत-सरकार द्वारा १९४३ में प्रकाशित 'फैक्ट-फाइडिंग कमेटी' की रिपोर्ट के आधार पर गांधी जी ने बताया है कि देश में लगभग २० लाख हथ-करघे हैं। इनमें से १४ लाख अर्थात् ७२ प्रतिशत सूती बुनाई, ३,७१,००० अर्थात् १६ प्रतिशत रेशम की बुनाई, ९९ हजार अर्थात् ५ प्रतिशत ऊन की बुनाई, २५,००० अर्थात् १ प्रतिशत नकली रेशम की बुनाई तथा १,००,००० अर्थात् ६ प्रतिशत मिलावटी कपड़े की बुनाई में लगे हैं।

भारत से जो कपड़ा विदेशों को जाता है उसमें से २५ से ३३ प्रतिशत तक करघा-उद्योग से तैयार किया गया माल होता है। यह माल मुख्यतः बर्मा, मलाया, लंका और स्याम को—जहाँ भारतीयों की बस्तियाँ हैं, भेजा जाता है। अधिकांश निर्यात मद्रास से किया जाता है।

* * *

कोयले पर खोज

गत द्वितीय युद्ध में बड़े-बड़े जहाज कोयले के धुएँ के कारण अतल समुद्र में समा गये हैं। यद्यपि कोयले की कृपा से वे चलते थे। परन्तु धुएँ के कारण पनडुब्बियों द्वारा देखे जाने पर फिर वे उनसे बच न सके। कोयले को धुएँ से केवल इतनी ही हानि नहीं पहुँचती बल्कि इसका सफाई और स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ता है। कोयले के कण और धूल से साफ कपड़े, मकान और सड़कें गन्दी हो जाती हैं। लोग बीमार हो जाते हैं। इन सबसे बचत के लिए धुएँ को दूर करने का आविष्कार हो रहा है। जर्मनी के वैज्ञानिकों ने इस धुएँ को दूर करने का सर्वप्रथम प्रयास युद्धकाल में किया था। उन्होंने युद्ध में अपने जहाजों को क्षति से बचने के लिए ऐसा किया था। आज उनका वह प्रयत्न और भी सफलता की ओर जा रहा है। कोयले के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में कोयले की सफाई के लिए खोज हो रही है। ग्लासगो, न्यूकैसिल, चेस्टर, लीड्स, बकिंघम, वर्मिङ्घम आदि कोयले के क्षेत्रों में इस पर खोज हो रही है।

* * *

टाईफाइड (मियादी [illegible]) [illegible] के कीटाणु द्वारा तैयार की गई थी उसी के द्वारा अथवा गर्मी द्वारा बीमारी कम की जा सकती है।

* * *

देश में चीनी की स्थिति

कानपुर के 'इम्पीरियल इन्स्टीट्यूट आफ शुगर टेकनालोजी' के डाइरेक्टर ने १५ सितम्बर सन् १९४६ को समाप्त होनेवाले पखवारे के लिए भारत के केन्द्रीय चीनी के कारखानों में चीनी की पैदावार और संचित माल के सम्बन्ध में निम्न आँकड़े प्रकाशित किये हैं :—

	चालू पखवारे के आँकड़े (मन में)	पिछले साल के इसी पखवारे के आँकड़े (मन में)
१—प्रारम्भिक स्टाक (कारखानों में)	५६,३२,३२६	५२,१९,००८
२—चीनी की पैदावार (इस पखवारे में)	७,८३६	११,६९३
३—चीनी की निकासी (इस पखवारे में)	८,१२,३२४	१०,१७,४१९
४—बचा हुआ स्टाक (कारखानों में)	४८,२७,८०८	४२,१३,२८२

प्रतिवर्ष १० लाख टन खाद तैयार

भारत में प्रतिवर्ष लगभग १० लाख टन मिलवाँ खाद तैयार होती है। ३० जून १९४६ को समाप्त होनेवाली तिमाही में भारत के ४२२ म्युनिसिपल केन्द्रों ने कस्बों और शहरों के कतवार से ८४,६०० टन मिलवाँ खाद तैयार की, जिसमें से ५६,९४० टन किसानों के हाथ बेच दी गई। गाँवों के कतवार से भी कम्पोस्ट तैयार करने का काम होता है। १ वर्ष में ७ लाख टन ऐसी खाद तैयार जी जाती है और लगभग ५,००० गाँव इसयोजना में भाग ले रहे हैं।

* * *

किंकिणी में कवि की बढ़िया कविताओं का संग्रह है। भाषा मधुर और कल्पना इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षणों तक भावविभोर बना रहता है। मूल्य ।।।) बारह आने।

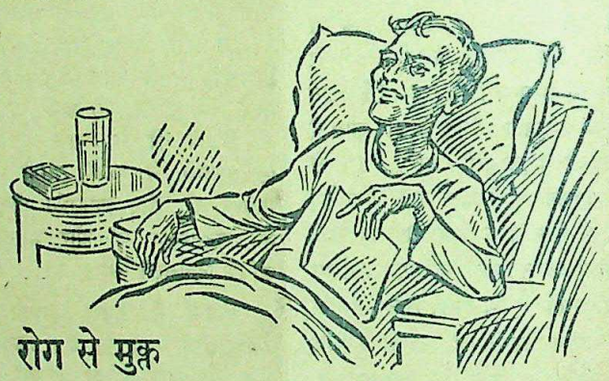

रोग से मुक्त
होने पर शीघ्र चंगा होइये !!
बाई न्युट्रीशनल रिसर्च सेक्शन
यह आरोग्यता प्रदान करता है
BA ESSENCE OF CHICKEN FOR ORAL USE
बी० आइ० एसेन्स आफ
चिकन्स

व्यापार

सन् १९४६ के आरम्भ से [illegible] व्यापारिक हवाई सर्विस ने ५४,९[illegible] मील की यात्रा की। इस लम्बी [illegible] हवाई सर्विस को बहुत कम [illegible] पड़ी। रिपोर्टों से पता चला है [illegible] २९ यात्री इस यात्रा में मरे।

* * *

इँगलैण्ड में हाल ही में [illegible] प्रदर्शिनी हुई थी। उस प्रदर्शिनी [illegible] विभिन्न देशों के प्रतिनिधि [illegible] युद्ध के पूर्व इँगलैण्ड के वायुयान [illegible] धन्धे के उत्पादन की आय [illegible] पौण्ड प्रतिवर्ष थी। इस [illegible] उत्पादन बढ़कर एक करोड़ [illegible] पौण्ड हो गया है। उस प्रदर्शिनी [illegible] इँगलैण्ड का जो सबसे नया [illegible] बनाकर दिखलाया गया था [illegible] यात्रियों अथवा १० टन [illegible] ले जा सकता है।

* * *

अक्टूबर १९४६ से ब्रिटेन के [illegible] टायरों के व्यवसाय में शुद्ध रबड़ [illegible] होने लगा है। कृत्रिम रबड़ का [illegible] बहुत पहले से बन्द कर दिया [illegible] अब युद्धकालीन वस्तुओं की [illegible] धोखा न होगा।

* * *

अखबारी कागज के मूल्य में [illegible]

उत्तरी अमेरिका से जो कागज [illegible] था वह अपर्याप्त था। अतः भारत-[illegible] ने यूरोपीय देशों से कागज मँगाने [illegible] निश्चय किया है। परन्तु यूरोपीय देशों [illegible] कागज का भाव महँगा है। इसके [illegible] रिक्त कागज प्राप्त करने के लिए [illegible] सरकार ने यूरोपीय देशों से [illegible] कागज का मूल्य एक आना प्रतिपौंड [illegible] दिया है। परन्तु कनाडा से [illegible] कागज का मूल्य पहले के समान [illegible]

अम्लता ?

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर [illegible] व्यापक ख्याति अम्लता, उदर-वायु, [illegible] दाह, पेट दर्द, वमन, पित्त-प्रकोप [illegible] पाचन-सम्बन्धी शिकायतों से पैदा [illegible] वाले अन्य रोगों में प्रभावशाली [illegible] मान्य प्रमाण है।

उदर-विकारों से उत्पन्न [illegible] उदासी, अनिद्रा और हृदय की [illegible] कन में भी यह अमूल्य है।

यदि आप इनमें से किसी [illegible] रोग से पीड़ित हैं तो आज ही [illegible] ब्रांड स्टमक पाउडर लीजिए और [illegible] प्रसिद्ध औषधि की शीघ्र सांत्वना [illegible] स्वयमेव अनुभव कीजिए।

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर [illegible] समय "एलेक्स सी० मेकलीन" के [illegible] पहचान लीजिए क्योंकि असली [illegible]

मेकलिन ब्रांड स्टमक पाउडर [illegible] सेवन कीजिए

MACLEAN Brand Stomach Powder
Alex. C. Maclean
Copyright

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐस्प्रो' आ गया है

भी नकली मालको मत
। हर टिकिया पर
खुदा हुआ देख लीजिये।

ऐस्प्रो' दस मिनट में
बुखार और दर्द रोकती
है। यह हृदय या पेटको
नुकसान नहीं पहुचातीं।

'ऐस्प्रो'
का नियंत्रित मूल्य
३ टिकियों की पैकेट का
दाम १ आना, ३० टिकियों
के डिब्बे का दाम १० आना
वितरक : जे. एल. मौरिसन, सन
एण्ड जोन्स (इण्डिया) लि:, पोष्टबक्स
३८७कलकत्ता.टेलीफोन-कलकत्ता७९६

'ऐस्प्रो'
हर जगह मिलता है

"लक्स टॉयलेट साबुन आपकी त्वचा को सतेज एवं मनोहर बनाता है"
हुस्न बानू
कहती है

फिल्मी स्टार्स का सौंदर्य-साबुन !

LTS. 141-111-40 HI
LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

'ओवल्टीन' के प्रत्येक
प्याले में आपके लिये
शक्ति और बल भरा है

भोजनके समय और रातमें शयनसे तुरन्त पहले स्वादिष्ट 'ओवल्टीन का एक प्याला पी लीजिये। इसके सौरभका आनन्द लेते हुए इसकी आश्चर्य-जनक पौष्टिकताका लाभ उठाइये। यह पूर्ण पौष्टिकता प्रदान करता है क्योंकि इसे पके जौ के गूदे तथा गायके ताजे मलाईदार दूधसे बनाया जाता है और साथमें प्रकृतिके मूल्यवान विटामिन तथा अन्य तत्व मिलाए जाते हैं जो आपके स्वास्थ्य, शक्ति और स्फूर्तिके लिये आवश्यक है।

'ओवल्टीन' एक सम्पूर्ण खाद्य है जो स्वास्थ्य, मस्तिष्क और स्नायुओंको सुदृढ़ बनाता है और शान्तिके साथ अच्छी नींद लाता है।

ओवल्
'OVALTINE शक्ति

सभी दूसरे
बालोंसे भिन्न

१. आप के दांतों को ६० प्रतिशत अधिक स्वच्छ करता है।
२. विकार-विरोधी शीशे में बन्द
३. जल-अभेद्य—नमी-विद्वेषक.
४. साल भर की गारन्टी

अब दुकानोंपर मिलता है—

-पशुओं के बालोंसे रहित !

व्यापारिक पूछ ताछ:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दमे से

मुक्त होना चाहें तो

ग्रिमौल्ट्स

स्टैमोनियम सिगरेट पीजिये

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे "वीर्यसंजीवनसत" ने मान पाया है और हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत १ डिब्बा ३।—) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों रोगियों पर परीक्षा किया हुआ "तिला मस्ताना" की मालिश कीजिए। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

मुफ्त— घर बैठे मुफ्त हिकमत, हो हान देकर सार्टीफिकेट मुफ्त मगवायें। ओल्ड इण्डियन मैडिकल

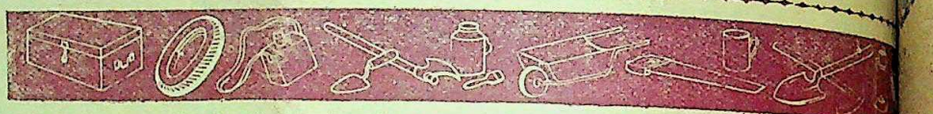

GOVERNMENT OF INDIA

DISPOSALS

(SECTION CPM OF 3rd CATALOGUE)

Following types of stores are available for sale:

Hand Tools: Eyed tools including agricultural implements, etc; All other types.

Machine Tools: Lathes; Drilling, shaping, slotting, planing and milling machines; Grinders; etc.

Engineering Workshop and Constructional Machinery and Plants: Air compressors and machinery driven by compressed air accessories; Workshop machinery and accessories; Lifting and transport machinery and accessories (cranes, travelling cranes, etc.); Electrical welding machinery and accessories; Gas welding and cutting machinery and accessories.

Engines: Internal combustion engines, other than M.T. Aero and large marine engines; Accessories other than electric equipment.

Other Plant and Machinery: Road making machinery—*Earth shifting, grading and surfacing machinery (Bulldozers, etc.), asphalting and surface treating machinery; tar sprayers (tar boilers, spreaders, etc.), stone crushers, concrete-mixers, premixed surfacing-mixers, etc.; Air compressors, etc.*; Agricultural; Refrigerating; Heating; Lighting (non-electric); Pumping machinery—water-works; Special industry machinery.

Bridges and Heavy Constructional Materials.

Structural Steel Works.

Survey and Optical Instruments: Watches, clocks and other time devices; Compasses; Drawing instruments.

Buildings: Sheds—timber, etc.; Hangars; etc.

Factories and Industrial Units.

Installations.

Full details giving description and condition of stores, quantity, location, etc. and the method of tendering are contained in Section CPM of the Third Catalogue which is available at Rs. 3/- on or about 15th November, 1946, from the addresses given below:

A. Regional Commissioner (Disposals) at

BOMBAY - Mercantile Chambers, Graham Road, Ballard Estate.
CALCUTTA - 6, Esplanade East.
LAHORE - G.P.O. Square, The Mall.
CAWNPORE - 15/159, Civil Lines.

B. Dy. Regional Commissioner (Disposals) at

KARACHI - Variawa Building, McLeod Road.
MADRAS - United India Life Building, Esplanade..

C. All important Chambers of Commerce and Trade Associations.

Mail orders for the catalogue must be accompanied by Money Order or Indian Postal Order.

NOTE: Watch for further announcement regarding Section CPM of Fourth Catalogue which will contain a further list of stores available for disposal.

ISSUED BY THE DIRECTORATE GENERAL OF DISPOSALS, DEPARTMENT OF INDUSTRIES & SUPPLIES, NEW

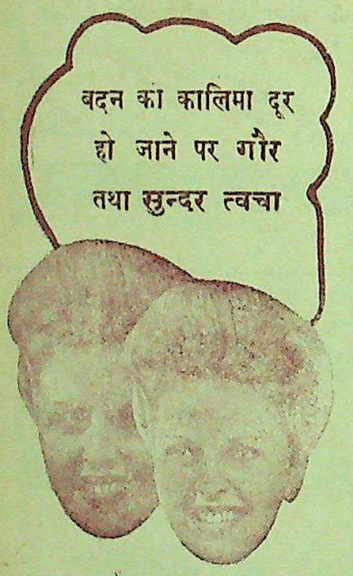

इस आश्चर्यजनक रहस्य को पढ़िए

जब चेहरे की कालिमा दूर हो जाती है तो नवीन गौर वर्ण की सुन्दरता निखर पड़ती है। वही कोमल एवम् मृदुल रूप जिसकी प्रत्येक स्त्री को चाह है और जिसकी प्रत्येक पुरुष प्रशंसा कर रहा है।

ह्वाइटेक्स आश्चर्यजनक तरल औषधि चेहरे की कालिमा को तुरन्त दूर करती है। इससे आपका रूप गौर तथा विशेष मृदु हो जाता है जिससे आपके सौन्दर्य, व्यक्तित्व, तथा आकर्षण में विशेष वृद्धि होती है।

ह्वाइटेक्स में विषचिकित्सा नहीं है, और न इससे किसी प्रकार के दूषित धब्बे ही रह जाते हैं। यह त्वचा में प्रवेश कर त्वचा को पोषता है। आज ही एक बोतल खरीदें।

वितरक: जी० अयरटन एण्ड कं० लि० २८, अपोलो स्ट्रीट, बम्बई, तथा ४ मिशन रो, कलकत्ता

मुद्रक तथा प्रकाशक | प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद निवेदित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDIWEEKLY
price 2 Annas

मूल्य ७॥)
=)

नवम्बर, १९४६ सचित्र हिन्दी साप्ताहिक Sunday, 24th November, 1946

श्री मदनमोहन मालवीय
नहीं रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हलवे का स्वाद खान से मिलता है

आप हमारा मिठाइयां—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें ।

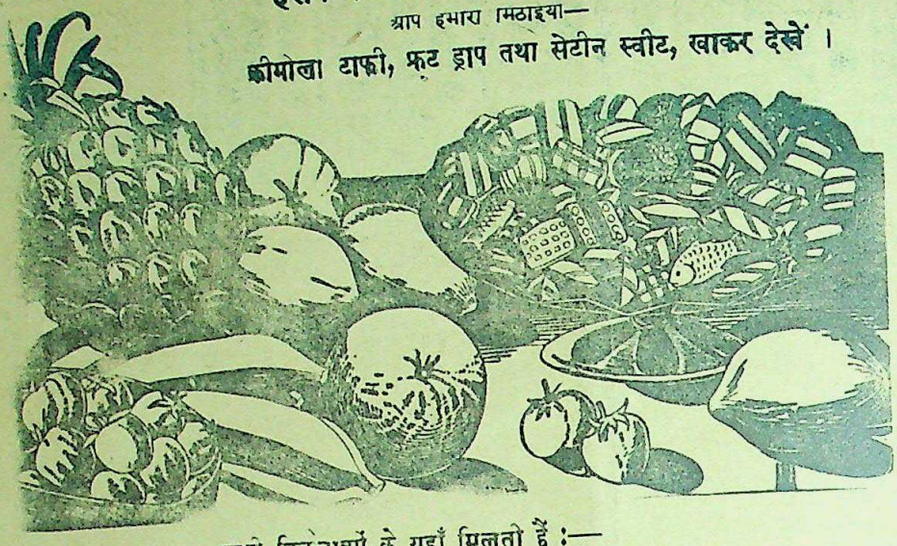

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद ।

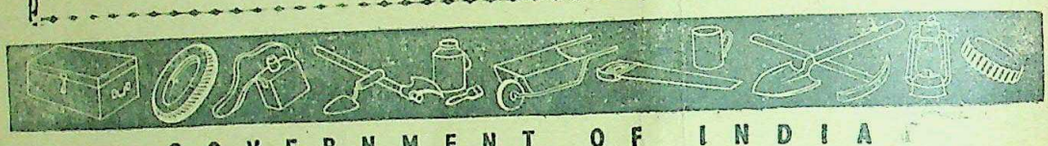

GOVERNMENT OF INDIA

DISPOSALS

(SECTION CPM OF 3rd CATALOGUE)

Following types of stores are available for sale:

Hand Tools: Eyed tools including agricultural implements, etc; All other types.

Machine Tools: Lathes; Drilling, shaping, slotting, planing and milling machines; Grinders; etc.

Engineering Workshop and Constructional Machinery and Plants: Air compressors and machinery driven by compressed air accessories; Workshop machinery and accessories; Lifting and transport machinery and accessories (cranes, travelling cranes, etc.); Electrical welding machinery and accessories; Gas welding and cutting machinery and accessories.

Engines: Internal combustion engines, other than M.T. Aero and large marine engines; Accessories other than electric equipment.

Other Plant and Machinery: Road making machinery—*Earth shifting, grading and surfacing machinery (Bulldozers, etc.), asphalting and surface treating machinery; tar sprayers (tar boilers spreaders, etc.), stone crushers, concrete-mixers, premixed surfacing-mixers, etc.; Air compressors, etc.*; Agricultural; Refrigerating; Heating; Light (non-electric); Pumping machinery—waterworks; Special industry machinery.

Bridges and Heavy Constructional Materials.

Structural Steel Works.

Survey and Optical Instruments: Watches, clocks and other time devices; Compasses; Drawing instruments.

Buildings: Sheds—timber, etc.; Hangars; etc.

Factories and Industrial Units.

Installations.

Full details giving description and condition of stores, quantity, location, etc. and the method of tendering are contained in Section CPM of the Third Catalogue which is available at Rs. 3/- on or about 15th November, 1946, from the addresses given below:

A. Regional Commissioner (Disposals) at

BOMBAY - Mercantile Chambers, Graham Road, Ballard Estate.
CALCUTTA - 6, Esplanade East.
LAHORE - G.P.O. Square, The Mall.
CAWNPORE - 15/159, Civil Lines.

B. Dy. Regional Commissioner (Disposals) at

KARACHI - Variawa Building, McLeod Road.
MADRAS - United India Life Building, Esplanade.

C. All important Chambers of Commerce and Trade Associations.

Mail orders for the catalogue must be accompanied by Money Order or Indian Postal Order.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

ई ६, संख्या १३] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, २४ नवम्बर, १९४६

गांधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

के लिए नियुक्त प्रथम ब्रिटिश
मिस्टर ट्रेंस शोन अपनी
पार्लियामेंटरी सेक्रेटरियों
पहुँच गये हैं। बधाई है!
भारत को नया स्वराज्य
वह तीसरी भेंट है। पहली
सरकार को जनता के
सौंपना, सो तो सौंप ही
दूसरी भेंट है विधान सम्मे-
। उसका भी अगले
अधिवेशन शुरू होगा और
मिस्टर शोन का हाई कमि-
पधारना। ब्रिटिश
भारत के लिए भेंटों
अभी तो शुरुआत है,
जब कि उपहारों का
आगे आगे देखिए होता है

* * *

ब्रिटिश फौजें जमा हो
इसलिए कि फिलिस्तीन
लादने की तैयारी की जा
समझ में भी यह
क्योंकि अरबों को यह
कि वह ब्रिटिश नीति के
कुलदन करें? यों तो
लादने की कला में बड़ी
वह लादने के लिए कसम
लादे नहीं मानती।
अफ्रीका में भारतीयों

के लाख चिल्लाने पर भी उसने 'काला बिल' लाद ही दिया। भारत पर तो वह कुछ न कुछ लादती ही आई है। इसलिए अरब राष्ट्र पर भी अगर वह अपनी साम्राज्यवादी लादी लादने की फिक्र में परेशान हो तो ताज्जुब की बात नहीं। क्योंकि ब्रिटिश सरकार तो लाद दो और लदवा दो और लदवा लो की नीति में विश्वास करती है। इसके खिलाफ कुछ हुआ कि फौजी थुक्का फजीहत!

* * *

मिस्टर मोहम्मदअली जिन्ना वाइसराय लार्ड वैवेल से खूब मिल-जुल रहे हैं। इससे जान पड़ता है कि फिर कोई नया शिगूफा छूटनेवाला है। ब्रिटिश राजनीति की कृपा से दाढ़ी-चोटी-सम्मेलन का शिगूफा तो छूट ही रहा है, आगे का शिगूफा क्या होगा इसे जिन्ना जी जाने या वैवेल जी!

* * *

लोग बड़ी तारीफ करते हैं कि वाइसराय लार्ड वैवेल बड़े ही भलेमानस हैं। कम से कम वैवेल ने भारत को कुछ दिलाया तो सही, दूसरे वाइसराय तो झाँसा ही देते रह गये और चले भी गये। अपने राम की समझ में भी यह बात आती है कि लार्ड वैवेल ने भारत के लिए स्वराज्य का एक चारा फेंका तो जरूर लेकिन डर यह लगता है कि कहीं ब्रिटिश चारे को चरते-चरते अन्तर्कालीन सरकार के नेताओं को बदहज्मी न हो जाये? और अगर हजम कर गये तब तो क्या कहना! सच तो यह है लार्ड वैवेल हैं कंजरवेटिव पार्टी के एक सुलझे सिपहसालार! लेकिन बीच में कूद पड़ी ब्रिटिश मजदूर पार्टी। इसलिए वह आजकल लटकन मंत्र का पारायण कर रहे हैं और उसी मंत्र का जादू आज भारत में व्याप्त है। लार्ड वैवेल के लटकन मंत्र की असली तसवीर आये दिन खूब अच्छी तरह दिखाई दे रही है।

* * *

हाँ, कहा जाता है कि लार्ड वैवेल केवल फौजी हैं राजनीतिज्ञ नहीं। लेकिन अपने राम ठीक इसका उलटा समझते हैं। लाट साहब केवल राजनीतिज्ञ नहीं कूटराजनीतिज्ञ भी हैं। लाट साहब की ही कृपा से मुस्लिम लीग अन्तर्कालीन सरकार में शामिल हुई है, क्या यह राजनीति नहीं है? पंडित जवाहरलाल नेहरू सीमाप्रांत गये। नेहरू जी लौटे नहीं कि लार्ड वैवेल भी वहाँ जा धमके! नेहरू जी ने पूरब कहा तो लाट साहब ने पश्चिम! क्या यह राजनीति नहीं है? अन्तर्कालीन कलकत्ता पहुँचे तो वहाँ पहुँचना जरूरी है कि लार्ड वैवेल तो कोई [illegible] वह अँगरेज़

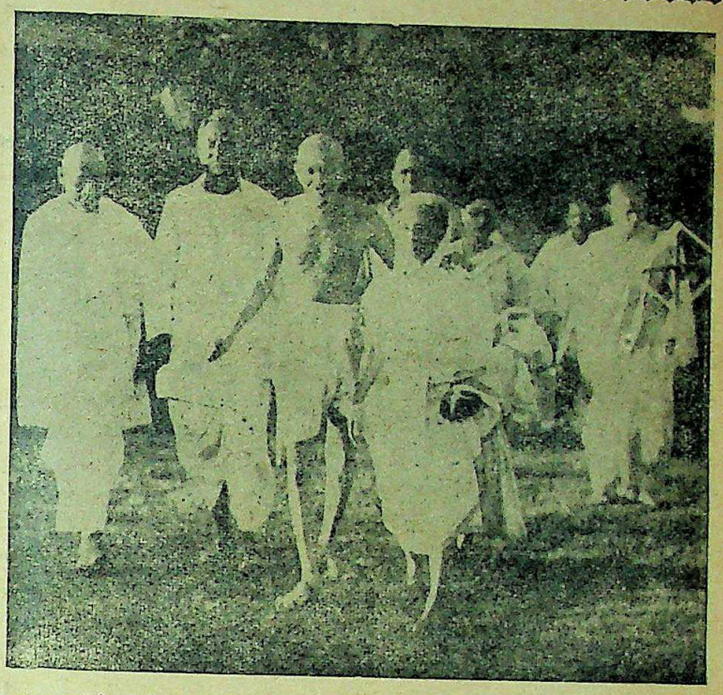

महात्मा गांधी पूर्वी बंगाल में आजकल दंगों से क्षतिग्रस्त स्थानों को देख रहे हैं। महात्मा जी कलकत्ता पहुँचने पर सोदेपुर खादी-प्रतिष्ठान आश्रम में ठहरे थे। यह चित्र सोदेपुर पहुँचने के समय पर लिया गया है। गांधी जी की दाईं ओर श्री सतीशचन्द्र गुप्त और श्री क्षितीशचन्द्र गुप्त और बाईं ओर श्रीमती हेमप्रभा देवी दिखाई दे रही हैं।

को ढलाई की मशीन न बना ले। मजदूर पार्टी का शासन है इसलिए लार्ड वैवेल की राजनीति भी थोड़ी मिठास और आरामतलबी लिये हुए है। जमाने को देख कदम उठाना बुद्धिमानी है और अनाप-शनाफ पैर फेंकना है भकुआपन!

क्या हम आधे रास्ते पर रुक जायँगे?

'साम्प्रदायिक उपद्रवों से कांग्रेस और महात्मा गांधी की अब तक की सफलता विनष्ट हो जायगी। ..... दिल्ली बहुत दूर हो गई है। महात्मा गांधी ने विदेशी सत्ता के भय से भारत की जनता को मुक्त करने का अथक परिश्रम किया है। अत्यन्त खेद की बात है कि इसके बदले अब स्वजनों से ही भय उत्पन्न होने लगा है। .....इस भय के वातावरण में कोई राष्ट्र प्रगति नहीं कर सकता।'

पंडित जवाहरलाल नेहरू

हमारी आखिरी मंजिल भारत की पूर्ण [illegible] है। भाई [illegible] आधे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

कांग्रेस-अधिवेशन

यह सौभाग्य की बात है कि अखिल भारतीय कांग्रेस का ५४वाँ अधिवेशन संयुक्तप्रांत के मेरठ शहर में बड़ी धूम-धाम और समारोह के साथ हो रहा है। एक जमाने के बाद कांग्रेस का अधिवेशन युक्त-प्रांत में हो रहा है। आशा तो अब तक यही थी कि यह अधिवेशन अपने ढङ्ग का निराला और बड़ी शान का होगा साथ ही यह आशा इसलिए और भी प्रबल हो उठी थी कि केन्द्रीय शासन लोकप्रिय सरकार के हाथ में आ गया तथा अन्य प्रान्तों में कांग्रेसी सरकारों ने शासन की बागडोर अपने हाथों में ले ली है; किन्तु समय की गति जानी नहीं जा सकती। पिछले कुछ महीनों से साम्प्रदायिक वातावरण काफी गन्दा और दुर्भावनापूर्ण हो गया है। अनेक स्थानों में जो साम्प्रदायिक घटनाएँ भयावह रूप में घटित हुई हैं, उससे वातावरण बड़ा क्षुब्ध हो गया है। भारत के लोकप्रिय शासक इस प्रकार के वातावरण को निर्मूल करने की ओर सचेष्ट हो रहे हैं। युक्तप्रान्त भी इस साम्प्रदायिक दुर्भावना का शिकार बन बैठा है। ऐसी दशा में और ऐसे क्षुब्ध वातावरण में होनेवाले कांग्रेस का अधिवेशन भी उतनी सरगर्मी से न हो सके तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इसी प्रकार के वातावरण के कारण ही मेरठ कांग्रेस के अधिवेशन में दर्शकों को सम्मिलित होने की मनाही कर दी गई है। सबसे अधिक दुख की बात तो यह है कि विश्ववन्द्य महात्मा गांधी भी नोआखाली में साम्प्रदायिक समस्या हल करने में लगे रहने के कारण कांग्रेस-अधिवेशन में शरीक नहीं हो रहे हैं। जिस कांग्रेस महासभा में लाखों का जन-समूह अपने नेताओं के दर्शनों तथा उनकी राष्ट्र-वाणियाँ सुनने के लिए उमड़ पड़ता था, वह आज अधीर है और उसे वह सौभाग्य नहीं प्राप्त हो रहा है। फिर भी कांग्रेस का अधिवेशन तो हो ही रहा है। सुप्रसिद्ध राष्ट्रकर्मी आचार्य कृपलानी सभापति के आसन पर विराजमान हैं। यद्यपि कहा गया है कि कांग्रेस का यह अधिवेशन केवल कार्यक्रम की पूर्ति के हेतु ही हो रहा है फिर भी राष्ट्र की भावी नीति निर्धारित करने में यह अधिवेशन नेतृत्व तो करेगा ही। हमें आशा है कि कांग्रेस अधिवेशन पूर्ण सफल होगा और राष्ट्र की भावी राजनीति में वह ऐसा क्रांतिकारी कदम उठायेगा जिससे कम से कम साम्प्रदायिक समस्या के सुलझने में सहायता प्राप्त होगी। आचार्य कृपलानी ऐसे तपे हुए और कर्मठ कर्णधार के हाथों में राष्ट्र की बागडोर आ जाने से उसे विशेष बल प्राप्त होगा, इसमें तनिक भी संदेह नहीं।

वास्तव में जरूरत है इस वक्त आन्तरिक दृष्टि से कांग्रेस के विशुद्ध संगठन की। हम देखते हैं कि कांग्रेस ऐसी पवित्र संस्था भी विभिन्न पार्टीबन्दियों के दाँव-पेंचों से परिपूर्ण है। काम कम और बातें लम्बी-चौड़ी हैं। आज की दशा देखकर एक बार यह अनुभव होता है कि कांग्रेस-विधान में क्रान्तिकारी परिवर्तन की आवश्यकता है। प्रत्येक कांग्रेसवादी के लिए यह समझने और सोचने की बात है। इस वक्त देश के सामने अनेक समस्यायें हैं, जिनका सुलझना आवश्यक है। कांग्रेस जनता की है इसलिए जनता की हित की दृष्टि से उसे क्रियात्मक रूप से कदम बढ़ाना चाहिए। सबसे बड़ी समस्या है साम्प्रदायिक भेद-भावना का निर्मूल। साथ ही वस्त्र और भोजन की। यद्यपि प्रान्तों पर लोकप्रिय सरकारों का शासन है और केन्द्रीय सरकार भी संयुक्त सरकार के हाथ में है, फिर भी कांग्रेस तथा कांग्रेसवादियों की जिम्मेदारी यहीं समाप्त नहीं हो जाती है। अभी तक तो केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारें पिछले शासन के निर्धारित कार्य-क्रम को पूरा करने में ही लगी हैं; किन्तु आगे क्या होगा, किस नीति के आधार पर राष्ट्रीय समस्यायें सुलझ सकती हैं, इस ओर ध्यान दिलाना कांग्रेस तथा कांग्रेसजनों का काम है। साम्प्रदायिक मनोमालिन्य का अन्त होना ही चाहिए। नेतृत्व की भूख का प्रवाह भी अबाध गति से चल पड़ा है। इसलिए जरूरत है कर्मठ क्रियाशीलता, त्याग तथा बलिदान की। नेतृत्व की झूठी लिप्सा तथा पार्टीबाजी का जितनी जल्दी खात्मा हो सके उतना ही अच्छा है। भारत के ७ लाख गाँवों की ओर विशेष ध्यान देना है। कांग्रेस को शहरों के दायरे से दूर गाँवों में बड़े वेग के साथ बढ़ना चाहिए। क्या हम आशा करें कि मेरठ-कांग्रेस में राष्ट्र की समस्याओं के सुलझाने तथा कांग्रेस के भावी तथा विशुद्ध संगठन की ओर भी ध्यान दिया जायेगा? क्योंकि कांग्रेस ही राष्ट्र की एकमात्र संस्था है जिसके आदेश पर ४० करोड़ उत्सर्ग होने के लिए इच्छुक रहते हैं। इसीलिए उसके अंतिम निर्णय की ओर जनता उत्सुक निगाह से देख रही है।

विज्ञापन

यह सूचित किया जाता है कि शिक्षा-प्रसार-विभाग निम्नलिखित पुरस्कार उन व्यक्तियों को देगा जो संयुक्तप्रान्त में निरक्षरता-निवारण-सम्बन्धी कार्यों पर प्रकाश डालनेवाले सुन्दर पोस्टर बनवाकर भेजेंगे :—

प्रथम पुरस्कार १२५)
द्वितीय पुरस्कार १००)
तृतीय पुरस्कार ७५)
[illegible] ७५)

हास्य परिहास

भंग की तरंग

बड़े लाट साहब भी सीमा-प्रान्त की सैर करने गये थे। जाना भी ठीक था। वह जवाहरलाल से किस प्रकार कम हैं?

* * *

दक्षिण अफ्रीका के विरोध में अमरीका का समर्थन भारतवर्ष को मिल रहा है। इँगलैंड को भारत का समर्थन नहीं करना चाहिए क्योंकि स्मटस् साहब इँगलैंड से नाराज हो जायँगे तो पूरब के लिए बड़ी कठिनाई होगी।

* * *

पन्त जी कहते हैं कि जमींदारी-प्रथा तोड़ना अनिवार्य है। सुना है जमींदारी की रक्षा के लिए जमींदार लोग एक बड़ी सेना एकत्र कर रहे हैं और अमीनाबाद पार्क में मोरचा लेंगे।

* * *

कहा जाता है कि सन् बयालीस में नौकरशाही सरकार ने अपने सहायकों को जो सुविधाएँ दी थीं उन्हें वर्तमान सरकार छीन लेगी। किन्तु वह सुविधाएँ किसी को तो मिलनी ही चाहिए। मुस्लिम लीग के मंत्रियों को दी जायँ तो कैसा हो?

* * *

दी इसलिए चार हजार मजदूर [illegible] नहीं गये। रेलवेवाले क्यों छुट्टी [illegible] मालवीय जी लाट साहब थे और [illegible] लीग के सदस्य।

* *

काहिरा में तीस हजार [illegible] बेविन के विरोध में प्रदर्शन [illegible] नहीं उन विद्यार्थियों का [illegible] भारत में ऐसा प्रदर्शन हुआ होता [illegible] चल गई होती।

* *

बिहार में पंडित जवाहरलाल [illegible] कुछ विद्यार्थियों ने विरोध [illegible] कितनी मूर्खता थी। जिस [illegible] छोड़ने का उपदेश दिया कि [illegible] छुट्टी ही रहे उसका विरोध [illegible]

* *

मेरठ, काशी आदि [illegible] घोषित कर दिये गये हैं। ठीक [illegible] मारशल्ला के बिना यह लोग [illegible] नहीं हैं। इन स्थानों में शीघ्र [illegible] जारी हो जाना चाहिए।

* *

बम्बई में अब कोई दुर्घटना [illegible] रही है। दंगा करनेवालों को भी [illegible] में आनन्द नहीं आता।

* *

बेढब की बहक

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

खार क्यों आप खाये बैठे हैं, फूल हम तो बिछाये बैठे हैं।
कांग्रेस राज में जबरदस्ती, वह मेरा दिल दबाये बैठे हैं।
यह सितम, यह गज़ब, यह बेदरदी, सर पे दुनिया उठाये बैठे हैं।
दिल ही होता तो कुछ गनीमत थी, वह मुझी को चुराये बैठे हैं।
खा के होटल में वह भगे झट से, और हम मुँह बनाये बैठे हैं।
उनकी धुन है कि हम न आयेंगे, हम भी धूनी रमाये बैठे हैं।
लाट साहब हैं खेलते ड्रामा, प्लाट कैसा बनाये बैठे हैं।
यह जमाना तो है नुमायश का, आप क्यों मुँह छिपाये बैठे हैं।
वह चलें चाल कितनी ही बेढब, हम तो दिल में बिठाये बैठे हैं।

दिल्ली में यह आज्ञा हुई है कि जहाँ लोग नारा लगायें वहाँ आँसू बहानेवाली गैस छोड़ी जाय। वहाँ तो ऐसी गैस छोड़नी चाहिए जिनसे लोग गूँगे हो जायँ। आँसू निकलने से क्या होगा?

* * *

वायुयान से हिन्दू-मुस्लिम मेल के लिए परचे गिराये जा रहे हैं। वह भी दोनों ओर छपा है। किसी ओर लिखने का काम भी नहीं हो सकता।

* * *

लखनऊ की म्युनिसिपैल्टी ने यात्रियों से टैक्स लेने का निश्चय किया है। अब [illegible] काफी होने की सम्भावना [illegible] देखो वह लखनऊ ही

*

बनारस राज में जेलों का [illegible] गया। ए क्लास के कैदियों को [illegible] चीनी इत्यादि भोजन के लिए [illegible] साल में एक-आध दिन [illegible] जाय तो क्या हर्ज है?

*

सुहरावर्दी महोदय [illegible] सैर को गये हैं। सभी को [illegible] रखने की इच्छा होती है। [illegible] सफल कीर्ति!

मौलिकता—साहित्यिक मौलिकता [illegible] विशद व्याख्या। मूल्य [illegible] आल्हा—लेखक, चतुर्वेदी [illegible] शर्मा। इस पुस्तक में महोबे [illegible] वीर आल्हा और ऊदल [illegible] चरित और समस्त लड़ाइयों [illegible] रोचक व सरस भाषा में दिया [illegible] सजिल्द पुस्तक का मूल्य [illegible] रुपये पाँच आने। [illegible] मैनेजर नकडिपो, इंडियन प्रेस [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी

मेरठ में होनेवाली ५४वीं कांग्रेस के सभापति कौन हैं ?

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

मेरठ में होनेवाली ५४वीं कांग्रेस के मनोनीत अध्यक्ष आचार्य कृपलानी राष्ट्र के उन तपे हुए और त्यागी नेताओं में हैं, जिन्होंने राष्ट्रीय स्वाधीनता-संग्राम में बड़ी वीरता से युद्ध किया और अनवरत गति से करते जा रहे हैं। इस लेख में आचार्य कृपलानी का कुछ जीवन-संस्मरण अंकित किया गया है। लेख सामयिक और नये राष्ट्रपति के सम्बन्ध में जानकारी से पूर्ण है।

पक थे तो एक अँगरेज इन्सपेक्टर से झड़प हो गई। मुआइने के समय लड़के "साहब" की उपस्थिति से डरा दिये गये थे, इससे वे कोई उत्तर न दे सके। आचार्य जी बच्चों की ओर मुड़कर सिंधी भाषा में कहने लगे—"तुम लोग डरे क्यों हो? क्या वह जंगली जानवर है जो तुमको हड़प जायगा? यह एक लज्जा की बात है कि तुम लोग अपना साहस खो रहे हो। इसका कारण यही है कि वह अँगरेज है?" इन्सपेक्टर ने पूछा, "आप लड़कों को क्यों बिगाड़ रहे हैं?" आचार्य ने उसे चिढ़ाते हुए उस कथन को पूरा पूरा सुना दिया। क्रोधी इन्सपेक्टर ने रुष्ट होकर हेडमास्टर को आचार्य जी के ऊपर कार्रवाई करने को लिखा। इस पर हेडमास्टर ने उत्तर दिया—"महोदय, हम ऐसे व्यक्ति के प्रतिकूल कोई कार्रवाई नहीं कर सकते। आप उन्हें जानते नहीं।"

कांग्रेस में भी वे सर्वदा स्पष्टवक्ता और निर्भीक रहे हैं। किसी भी कांग्रेस नीति को वे आँख मूँदकर स्वीकार नहीं करते थे। कितनी ही बार उन्होंने कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी से मतभेद के कारण इस्तीफा तक दिया। यह बहुत कम लोग जानते हैं कि उन्हें अपने प्रधान मंत्री के समय कांग्रेस नीति में मतभेद होने के कारण कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी से तीन बार इस्तीफा देना पड़ा है। यह क्यों? यही कारण है कि वे एक स्पष्टवक्ता और निर्भीक व्यक्ति हैं। वे किसी नेता के प्रस्ताव को आँख मूँदकर स्वीकार नहीं करते। अपने कितने ही भाषणों में वे कांग्रेस की स्पष्ट आलोचना करते हैं। एक बार जब वे लखनऊ की एक सभा में भाषण कर रहे थे, उन्होंने कहा—'यू० पी० में एक उद्योग-धन्धा बहुत समृद्धशाली है, वह है—नेता बनना।' सब लोग इस वाक्य से हँस पड़े।

प्रचार से घृणा

आचार्य कृपलानी, अन्य नेताओं की तरह अपने प्रचार के लिए इच्छुक नहीं। जब वे दौरे आदि का कार्यक्रम बनाते हैं तो कभी भी प्रेस या पत्र-प्रतिनिधि को इस सम्बन्ध में नहीं लिखते कि वे कहाँ जा रहे हैं? कब तक रुकेंगे? और कब लौटेंगे? अब भले ही उनके कार्यक्रम समाचारपत्रों में छपें क्योंकि आजकल वे राष्ट्रपति हैं। पत्र-प्रतिनिधि उनके कार्यक्रम को खोज-खोजकर पूछते फिरते हैं।

वक्तव्य देने में भी वे शान्त और ठोस हैं। आप न तो मौलाना आजाद की तरह अलंकृत भाषा और न जवाहरलाल नेहरू की तरह ऊँची सूझ की गोल-मटोल वक्तृता अथवा सरदार पटेल की तरह कड़ी भाषा का ही प्रयोग करते हैं। वरन्, आचार्य जी साधारण ढंग से बोलना प्रारम्भ करते हैं। इसके पश्चात् वे अपने विरोधी के ठीक सामने आते हैं। आपके वक्तव्य में विनोदी पुट अधिक रहता है।

व्यक्तिगत जीवन

आचार्य कृपलानी के आचरण की विशेषता है कि वे अपने सिद्धान्त के कट्टर अनुयायी हैं। वे पक्के गांधीवादी होकर भी गांधी जी की बातों को आँख मूँदकर नहीं स्वीकार कर लेते जब तक कि वह उसे न समझ लें। गांधी जी के अन्य भक्तों की तरह वे पग-पग पर गांधी जी के आदर्शों की नकल नहीं करते। यह स्वभाव अथवा गुण आपको अपने कुटुम्ब से मिला है। उनके और अन्य भाइयों ने जिस प्रकार अपने स्वतन्त्र विचारों से कार्य किया है ठीक उन्हीं की तरह आचार्य कृपलानी जी भी अपने स्वतन्त्र विचारों का अनुसरण करते हैं।

आचार्य कृपलानी का स्वभाव अध्ययनशील है। वे सर्वदा नियमित समय बिताते हैं। एक मिनट भी नष्ट नहीं करना चाहते; परन्तु जब उनके मित्र आ जाते हैं तो उनके साथ टहलने-घूमने भी जा सकते हैं। उनसे खूब दिल खोलकर मजाक भी करते हैं। ऐसे समय उन्हें यह नहीं ख्याल रहता कि संसार में और कुछ भी करना है। आचार्य कृपलानी का जीवन राजनीति से अधिक सम्बन्धित है; परन्तु उनके मित्र और अन्य साथी ऐसे भी हैं जो राजनीति से दूर रहते हैं। वे अच्छी मित्र-मंडली पसन्द करते हैं। एकान्तवास भी अधिक पसन्द करते हैं। सादा जीवन पसन्द करते हैं। 'अहिंसा' के उपासक हैं परन्तु गोश्त खाते हैं। गांधी जी के आश्रम में रहकर उन्होंने स्वावलम्बन सीखा है। घर पर वे अपने से भोजन पका लेते हैं, वस्त्र धोते हैं; परन्तु, जब सुचिता जी रहती हैं तो वे इन कार्यों में हाथ बँटाती हैं।

प्रातः वे उठकर १५ से २० मिनट तक मौन रहते हैं। इसके पश्चात् दैनिक कार्य में लग जाते हैं। आप बैडमिण्टन खेलना अधिक पसन्द करते हैं।

आचार्य कृपलानी कांग्रेस के ५४वें अधिवेशन के मनोनीत अध्यक्ष हैं। पूर्वी बंगाल में बर्बरता की जो सच्ची रिपोर्ट उन्होंने दी है उसने उनको आज संसार के सभ्य समाज में एक ऊँचे स्थान पर पहुँचा दिया है क्योंकि उन दुखमय दिनों में आचार्य कृपलानी के अतिरिक्त कोई भी सर्वमान्य नेता का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरंजक चुटकुले

नूरेम्बर्ग में नाजियों के प्राणदण्ड के समय एक मनोरञ्जक घटना हुई थी। कहते हैं, युद्धापराधियों की सूची के पहले अभियुक्त गोरिंग को फाँसी देनेवाले ने उसे बचा दिया है। वह विष खाकर मर गया परन्तु यह समझ पड़ता है कि गोरिंग मित्रराष्ट्रों की सजा से बच निकला।

कितनों ही की आशा पर पानी फिर गया। मित्रराष्ट्रों के चार बड़े देशों के कमीशन, चार देशों के आठ पत्रकार और सेना के चलचित्र-विभाग के केमरामैन गोरिंग को फाँसी पर लटकते देखना चाहते थे। पर सभी को निराश होना पड़ा। मित्रराष्ट्र उसे फाँसी पर लटकाने की सजा दे चुके थे पर, उसने उनकी सजा से अपने को बचा लिया।

* * *

गोरिंग के अतिरिक्त अन्य नाजी अपराधियों ने वीरता के साथ मृत्यु का आलिंगन किया। रिपोर्ट में कहा गया है कि अपराधियों ने जर्मनी और हिटलर को नमस्कार करते हुए फाँसियों की डोरियाँ गले में पहन लीं। मित्रराष्ट्र के चारों महादेशों के कमीशनों को ऐसी आशा न थी। फिल्म लेनेवालों ने उनके जो चित्र लिये हैं उनसे जर्मन काफी रुपये खर्च करके वे चित्र लेंगे। पर मित्रराष्ट्र जर्मनी को वे चित्र दें तो यह उनके लिए कहाँ तक हितकर हो सकता है?

मित्रराष्ट्रों के चार देशों के कमीशन समझते थे कि जर्मन अपराधी समझेंगे कि हम लोगों ने गलती की है। अब मित्रराष्ट्र हमारे देश को सुधारेंगे। पर रिबनट्राप ने फाँसी पर लटकते समय ईश्वर से प्रार्थना की—जर्मनी अपने ही बल पर अपनी रक्षा कर सकता है। अमरीका, ब्रिटेन और रूस द्वारा उसका भला नहीं हो सकता। बेचारे कमीशन सिर नीचा किये खड़े सुनते रहे।

* * *

कीटेल और जाड दोनों वीर सैनिक की तरह मरे। उन्होंने कहा—हम लोग किसी दूसरे देश के सैनिक बनने की अपेक्षा मृत्यु को अधिक पसन्द करते हैं।

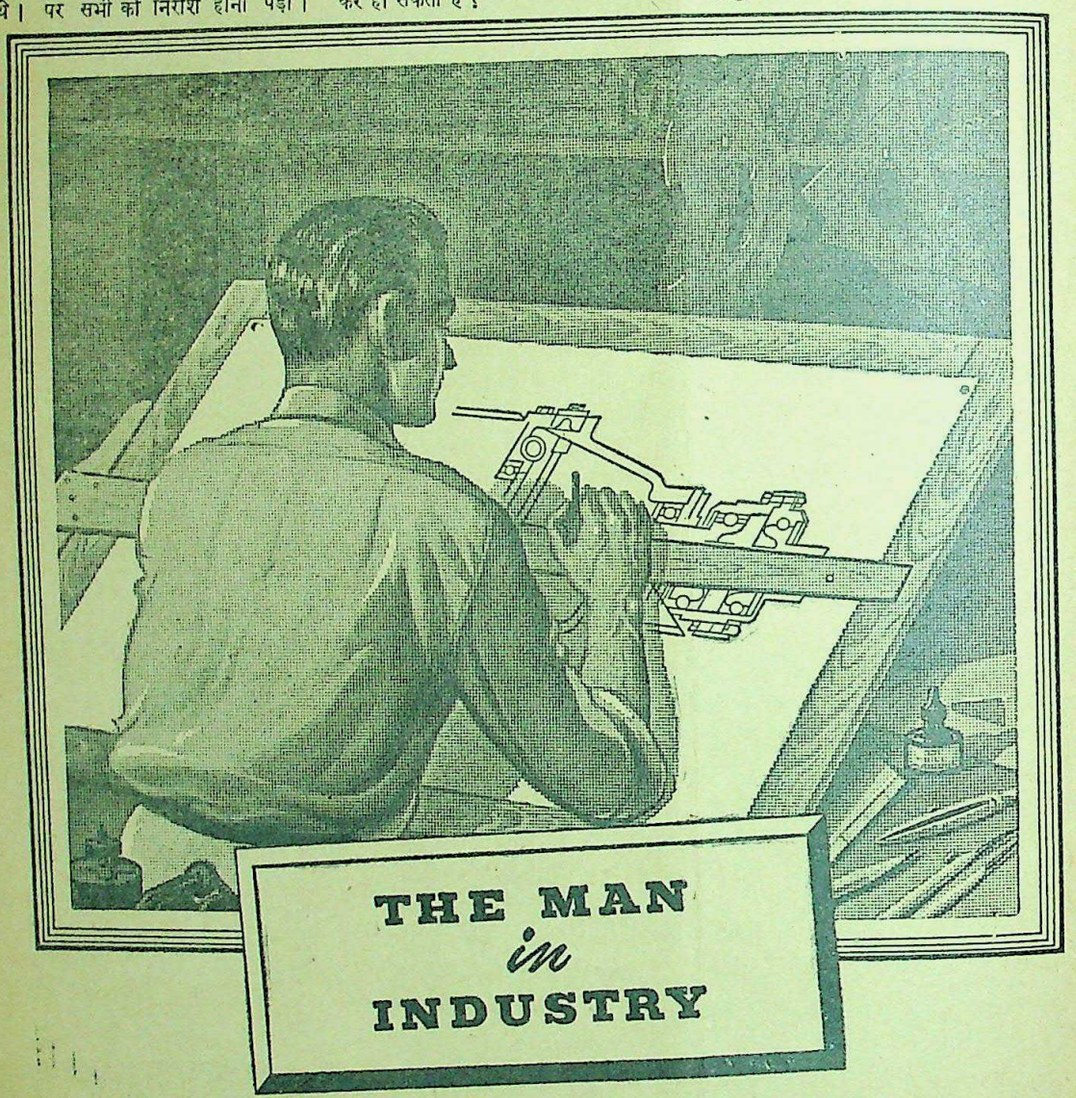

नक़्शानवीस

योजना बनाने वाले इंजीनियर और कारख़ाने में काम करने वाले श्रमिक के बीच वह जंजीर के समान है।

वह कला एवम् वैज्ञानिक ज्ञान के संयोग से इंजीनियर द्वारा संयोजित प्रारम्भिक रूप-रेखा के आधार पर उद्योग के लिये विस्तृत आकृति-विधान तैयार करता है, चाहे यह ढिबरी हो या महासागर में चलने वाला जलपोत।

अवयव पुर्जों को एक स्थान पर एकत्रित करने तथा इनके द्वारा निर्मित वस्तुओं को जनसाधारण तक पहुंचाने के लिए सड़कों की नितान्त आवश्यकता है। देश के एक भाग से दूसरे भाग तक सुविधापूर्वक माल ढोने के लिए हिन्दुस्तान में काफी सड़कें नहीं हैं। भारतवर्ष की औद्योगिक

डलियाना
भारत का मुख्य उद्योग खेती है। के समय फटकने का परिचित दृश्य सभी खेतों में देखने में आता है। जीवन का यह नियमित कार्य जिसमें समस्त परिवार के साथ मि सम्मिलित होकर सहायता देती है।
तब जैसे ही कोई गाँव की आगे बढ़ता है उसे ग्रामीणों की आवश्यकता की चीजों के साथ हमाम साबुन भी देखने को मिलेंगे।

हमाम
भारत का प्रियतम साबु
टाम्को सेल्स डिपार्टमेंट
जवाहर स्क्वायर
इलाहाबाद
दी टाटा आयल मिल्स कं लि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वी बङ्गाल में महात्मा गांधी

बहुमत का अल्पमतवालों पर यह अनाचार क्यों हुआ?

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

महात्मा गांधी इस वक्त पूर्वी बंगाल के अत्याचार-पीड़ित क्षेत्रों का दौरा कर रहे हैं। लेखक ने इस लेख में पूर्वी बंगाल के भीषण अत्याचार का वर्णन करते हुए यह बतलाया है कि महात्माजी के वहाँ जाने का क्या उद्देश्य है? लेख सामयिक और पठनीय है।

महात्मा गांधी आजकल अनाचार-पीड़ित पूर्वी बंगाल का दौरा कर रहे हैं।

...की स्थिति देख-सुनकर गांधी ...दय वेदना से भर गया। आह, ...कितना भयङ्कर आतङ्क और ...हाल के काल की घटनाओं को ...ने झूठा साबित कर दिया। ...और चंगेज खाँ के जुल्म मश... तक उन घटनाओं को पढ़कर ...खड़े हो जाते थे लेकिन गत ...से कलकत्ता और बंगाल में जो ...अत्याचार हिन्दुओं पर किया जा ...सुनकर सारा शरीर काँपने लगता ...दरक प्रश्न उठता है कि क्या ...इतने नीचे गिर सकता है? ...की तरफ सारा बंगाल देख ...जी ने कहा भी था "बंगाल ...अमानुषिक वर्ताव चल रहा है, ...स्वयं देखना चाहता हूँ। मेरा ...लगा है। मैं पीड़ितों से ...जवानी उनकी मुसीबत ...ऊपर कितना ही खतरा आये ...मुकाबला करूँगा।" आज ...अमानुषिक बंगाल में पहुँच

...मुसलमानों ने हिन्दुओं पर ...अत्याचार किया है। यह ...कहनेवाला नहीं है। फिर गांधी ...धर्म की बहुत सी बातें ...पहुँच गई हैं। बदला लेने की ...भी नहीं लायेंगे। महात्मा जी ...पर चलेंगे।

...में मुसलमान दोस्तों ने क्या ...नौजवानों को तो कत्ल ...छोटे-छोटे बच्चों और माँ-बहनों ...छोड़ा। अँगरेजी के एक ...में निकला था कि कई ...औरतों को मारकर दरवाजे ...दिया गया था। यह क्या ...में लाखों रुपयों की सम्पत्ति ...जला दी गई। कई अच्छे ...को जला दिया गया। तुलसी ...को बुरी तरह से नष्ट-भ्रष्ट कर ...। उस पुस्तकालय में हमारे ...भी बैठकर रोज अखबार ...जला दिया गया। ऐसी है ...।

...की घटना सूखने भी नहीं ...होने में पूर्वी बंगाल में लीगी मुसलमान दोस्तों ने व्यवस्थित ढंग से वहाँ के हिन्दुओं पर भीषण हमला बोल दिया। क्या इतना व्यवस्थित हमला अकेले गुंडे कर सकते हैं? कई पत्रकारों और हमारे माननीय नेताओं का कहना है कि इस भीषण हमले में हमारे मुस्लिम लीग के नेताओं और वहाँ के वर्तमान शासन का हाथ है। मनोनीत राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी अपनी जाँच के सम्बन्ध में एक बयान जाहिर करते हुए कहते हैं—"मुस्लिम लीग" के प्रचार के कारण इतना भीषण दंगा हुआ है। देहातों के प्रमुख लीगी नेताओं का काफी हाथ था। मुस्लिम अधिकारियों ने तैयारियों की ओर से अपनी आँखें बन्द कर ली थीं। कुछ लोगों ने हमला कर लोगों को बढ़ावा भी दिया है। मुसलमानों में आम खयाल था कि सरकार कोई कार्रवाई न करेगी।"

कृपलानीजी आगे कहते हैं कि "हिन्दुओं से जबर्दस्ती लीग के लिए चन्दा वसूल किया गया, उनके घरों को लूटा गया, आग लगाई गई। जबर्दस्ती इस्लाम कबूल कराया गया और मुकाबला करनेवालों को मार डाला गया।"

आचार्य कृपलानी ने दंगाइयों का विवरण देते हुए कहा—"दंगा करने के लिए ढंग यह अपनाया गया कि मुसलमान सैकड़ों की और कुछ स्थानों में हजारों की संख्या में इकट्ठे होते और हिन्दू गाँवों में या मिली-जुली आबादी के गाँवों में हिन्दू घरों पर जा धमकते। इस भीड़ के अपने नेता होते थे। ये पहले मुस्लिम लीग के दंगों के पीड़ितों के लिए चन्दा माँगते। यह जबर्दस्ती के चन्दे काफी भारी होते और उनकी तादाद कभी १०,००० या इससे भी अधिक पहुँच जाती। चन्दा वसूल कर लेने के बाद भी हिन्दू सुरक्षित नहीं थे। वही या दूसरी भीड़ बाद में घटनास्थल पर पहुँचती और हिन्दू-मकानों को लूट लेती। लूटे हुए घर ज्यादातर जला दिये जाते। सिर्फ नकद, जेवर और अन्य कीमती चीजों की ही लूट नहीं की जाती थी बल्कि गृहस्थी के काम की हर चीज जैसे अनाज, बर्तन, कपड़े वगैरह भी लूट लिये गये। कई जगह लुटेरे मवेशियों को खुद हँका ले गये। कभी-कभी घर को लूटने के पहले घरवालों को इस्लाम कबूल करने के लिए कहा जाता। किन्तु धर्म बदलने पर भी लूट और आग से बचने की गारंटी नहीं दी जाती।"

"हमलावर मुस्लिम भीड़ के नारे मुस्लिम लीग के नारे थे, जैसे "लीग जिन्दाबाद" "पाकिस्तान जिन्दाबाद", "लड़ के लेंगे पाकिस्तान", "मार के लेंगे पाकिस्तान।"

"एक परिवार के १० से लगाकर २० मनुष्य तक मार डाले गये। कुछ परिवारों में सबके सब मनुष्य कत्ल कर डाले गये।"

"लूट, अग्निकांड और हत्या के बाद भी हिन्दू उस वक्त तक सुरक्षित न थे, जब तक कि वे इस्लाम कबूल नहीं कर लेते। हिन्दुओं को अपनी रक्षा करने के लिए एक साथ इस्लाम स्वीकार करना पड़ा। धर्म-परिवर्तन की निशानी के तौर पर उन्हें सफेद टोपियाँ दी गईं जो बस्ती के मुसलमान पहनते हैं। अक्सर यह टोपियाँ नई थीं और उन पर पाकिस्तान का नकशा था और यह शब्द लिखे थे—पाकिस्तान।"

"हिन्दुओं को जुम्मा की नमाज में शामिल किया गया और उनसे कलमा और नमाज पढ़ाये गये। औरतों का भी धर्म-परिवर्तन किया गया; उनकी चूड़ियाँ तोड़ दी गईं, उनके माथे का सिन्दूर मिटा दिया गया और धर्म-परिवर्तन की निशानी के तौर पर उन्हें पीर द्वारा पवित्र किये हुए कपड़े को छूने के लिए कहा गया। उन्हें कलमा भी पढ़ना पड़ा।"

"हिन्दू मकानों में देवताओं की मूर्तियाँ नष्ट कर दी गईं और उपद्रवग्रस्त इलाकों के सब हिन्दू-मन्दिर लूट लिये गये।"

"एक जगह तो आततायियों ने औरतों को जमीन पर गिरा दिया और अपने पाँवों की एड़ियों से सिन्दूर की बिन्दियों को मिटाया।"

आचार्य जी की उपरोक्त बातें पढ़कर हर एक मनुष्य का हृदय दहल उठेगा। दहल ही नहीं उठेगा बल्कि पाकिस्तानी राज्य की आलंकपूर्ण कल्पना आ सकती है। कायदे आजम के पिट्ठुओं ने जैसा भयावह कार्य किया है उसकी काली कालिमा कभी मिट नहीं सकती। जैसे-जैसे समय व्यतीत होगा, वैसे-वैसे वह भयंकर कांड इतिहास के पृष्ठों में बढ़ता जायेगा। नादिरशाह और चंगेज खाँ ने भी ऐसी क्रूरता नहीं की थी। हजारों आदमियों को कभी नहीं कत्ल किया था। नोआखाली, चाँदपुर और फेनी आदि जगहों में हजारों हिन्दुओं

शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

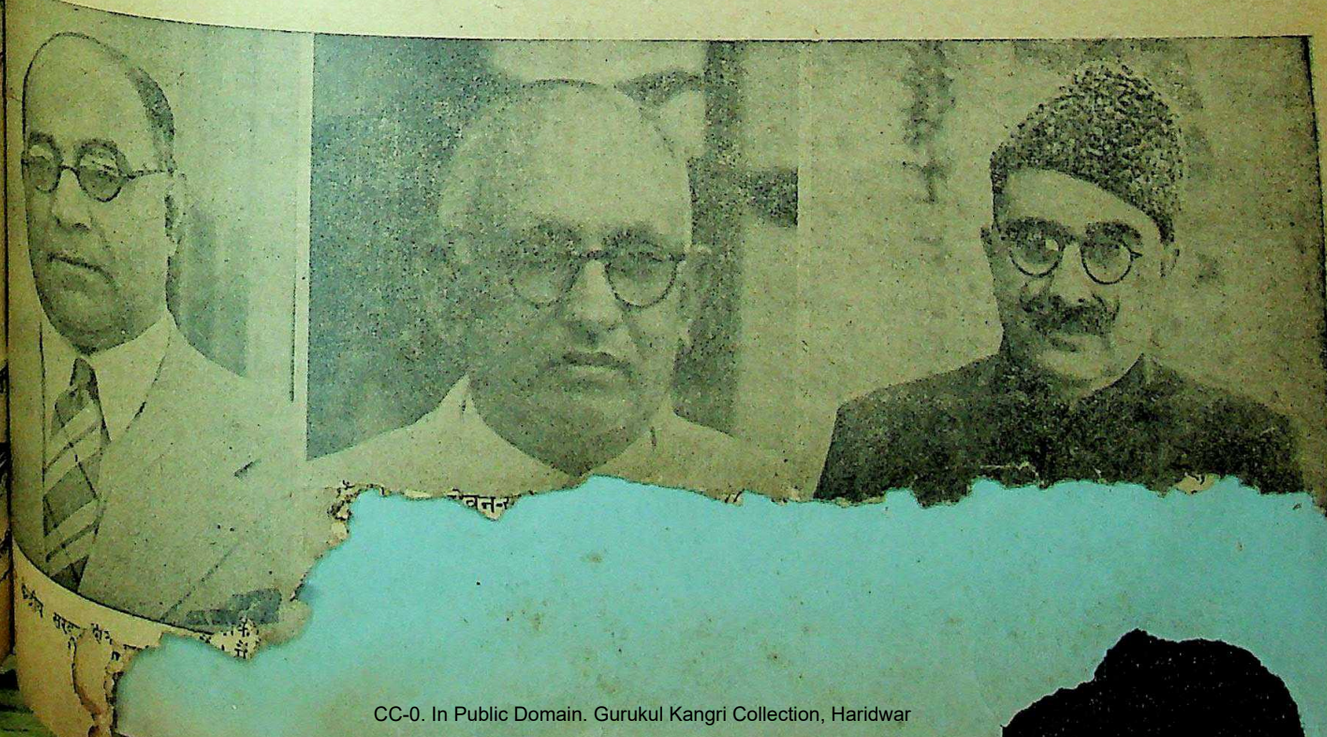

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमींदारी-प्रथा का अन्त क्यों हो?

क्या कांग्रेस मंत्रिमंडल मुआवज़ा देकर जमींदारियाँ खरीदेंगे?

लेखक, पं० वंशीधर मिश्र, एम० ए०, एम० एल० ए०

जब से प्रान्तों में कांग्रेसी मंत्रि-मंडलों की स्थापना हुई है तब से प्राचीन असेम्बलियों में ज़मीदारी-प्रथा के अंत तथा पूँजीवाद के नाश करने के प्रस्ताव स्वीकृत हो चुके हैं। इस लेख को कांग्रेस तथा प्रान्तीय असेम्बली के प्रमुख नेता श्री वंशीधर मिश्र ने ज़मीदारी-प्रथा के अंत का सकारण तर्कों और दलीलों द्वारा समर्थन किया है और इस बात पर जोर दिया है कि कांग्रेस-मंत्रिमंडलों को मुआवजा देकर ज़मीदारियाँ न खरीदनी चाहिए लेख अत्यन्त सामयिक और विचारणीय है।

संयुक्तप्रांतीय असेम्बली में जमींदारी-प्रथा के अन्त करने का प्रस्ताव उपस्थित करने वाले गृह-मंत्री श्री रफीअहमद किदवई।

जब से कांग्रेस ने जमींदारी-प्रथा का अन्त करने का निश्चय किया है, तब से इस प्रश्न पर काफी वाद-विवाद होने लगा है। प्रान्तीय असेम्बलियों में जमींदारी-प्रथा के अन्त तथा, पूँजीवाद के नाश करने के प्रस्ताव पास हुए हैं। जमींदारों में इससे काफी चहल-पहल उत्पन्न हो गई है। जमींदारों की ओर से संगठन करने, जमींदारी-रक्षार्थ हजारों लाखों रुपये खर्च करने और खून की नदियाँ बहाने की धमकियाँ भी दी जा

के शब्दों में 'ताँगेवालों' (जमींदारों) में जोश-खरोश दिखाई पड़ने लगा है।

जमींदारी-प्रथा के कायम करने के पक्ष में दलीलें कम दी जाती हैं। पर इस दलीलपर जोर अवश्य दिया जाता है कि पूँजीवाद का नाश भी किया जाना चाहिए। लोगों के यह समझने में कुछ देर लगती है कि पूँजीवाद का नाश जमींदारी-प्रथा के अन्त की तरह सुगम और सरल नहीं है। पूँजीवाद के नाश का प्रथम सोपान जमींदारी-प्रथा का अन्त है। जमींदारी-प्रथा के अन्त हो जाने पर ही पूँजीवाद के नाश की इमारत खड़ी की जा सकती है। जमींदारी-प्रथा के अन्त करने की माँग करनेवाले पूँजीवाद का नाश भी करेंगे।

जमींदारी प्रथा से हमें सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक और आर्थिक तथा राजनैतिक रूप से भी महान् हानि पहुँची है। देश में जमींदारी-प्रथा के कारण द्विविध संस्कृति की उपज हुई है। बिहार-सरकार के प्रधान मंत्री माननीय बाबू श्रीकृष्णसिंह जी के शब्दों में, समाज में धनियों की संस्कृति और दरिद्रों की

संस्कृति, दो संस्कृतियों की उत्पत्ति जमींदारी-प्रथा की देन है। समाज के कुछ सौ जमींदार लक्ष्मीदेवी की गोद में विहार करते हैं, अपने आचरण व व्यवहार से जनता के सम्मुख गलत आदर्श उपस्थित कर लोगों को पथभ्रष्ट और धनिकों की निर्जीव संस्कृति की उपज करते हैं।

संयुक्तप्रान्त में ११ और १२ लाख के बीच जमींदार हैं। इनमें से १० लाख से अधिक जमींदार १०० रुपये या उससे कम मालगुजारी देते हैं। ५ हजार रुपया वार्षिक मालगुजारी देनेवाले जमींदारों की संख्या १२ सौ के करीब है। जमींदार सिर्फ लगान वसूल करते हैं और उसमें से सरकार को मालगुजारी देते हैं। समाज में जमींदार लगान-वसूलयाबी और मालगुजारी अदायगी के अतिरिक्त और कोई उपयोगी काम नहीं करते हैं। शराबखोरी, रंडीबाजी, जोर-जुल्म, मारपीट, बेगार, नजराना, लूट-खसोट आदि के अनेक काम जमींदार करते रहते हैं। पर उनके ये सब काम उपयोगी नहीं कहे जा सकते हैं। लगान-वसूलयाबी और मालगुजारी अदायगी के काम के लिए जमींदारों ने मनमाना पारिश्रमिक लिया है। एक रुपया सरकार में पहुँचाने के लिए कानूनी तौर पर उन्होंने डेढ़ रुपया लिया तथा डेढ़ रुपया ही और गैर-कानूनी तौर पर लिया है। इस प्रकार उन्होंने एक रुपया सरकार में देने के लिए तीन रुपया अपनी जेब में रखा है। समाज में मान-प्रतिष्ठा, जनता के प्राकृतिक लीडर होने का गौरव मुफ्त में प्राप्त किया है।

हमारे माननीय मित्र बाबू श्रीप्रकाश जी ने जो एक समय विख्यात सोशलिस्ट लीडर थे और जिन्होंने समाजवाद का बिगुल बजाया था, एक लेख लिखा है। उन्होंने अपने उस लेख में अनेक लचर दलीलों का आश्रय लिया है। वे अन्य अनार्जित आयों की विद्यमानता पर और उनके नाश किये जाने पर जोर न देने पर जोर देते हैं। गवर्नमेण्ट सिक्योरटियों में लगाये गये धन, नगरों में खरीदी गई इमारतों और कम्पनियों के हिस्सों में लगाये हुए धन से उत्पन्न अनार्जित आयों की तुलना वे जमींदारी की अनार्जित आय से करते हैं। पर वे भूल जाते हैं कि जमींदार की तरह ये लोग समाज का [illegible]

जबरदस्ती उनसे जमीनें निकाल ली जाती हैं। मार-पीट का बाजार गर्म रहता है। अदालतों के चक्कर में डालकर बेचारे किसानों को तंग और परेशान करके बरबाद कर दिया जाता है।

माननीय बाबू श्रीप्रकाश जी ने अपने लेख में यह स्वीकार किया है कि जमींदार सरकार और काश्तकार के बीच अनावश्यक मिडिल मैन (दलाल) है। पर वे पर्याप्त मुआवजा दिये जाने पर जोर देते हैं। छोटे-छोटे जमींदारों के परिवार के लोगों के राष्ट्रीय कार्य में रत रहने की बात पर जोर देकर जमींदारी-प्रथा की कुछ उपयोगिता सिद्ध करने का प्रयास भी किया है। कांग्रेस ने मुआवजा देकर ही जमींदारी-प्रथा के अन्त करने का निश्चय किया है। पर यथार्थ में जमीदार किसी प्रकार मुआविजा पाने के अधिकारी नहीं हैं। यदि

बाबू श्रीप्रकाश एम० एल० ए० (केन्द्रीय), आप जमींदारी-प्रथा के अन्त में कुछ संतुलन चाहते हैं।

जमींदारों को पर्याप्त मुआवजा देने के बहाने अनुचित रूप से मुआवजा दिया जायगा तो जमींदारी-प्रथा के अन्त करने के अनेक लाभ बेकार से हो जावेंगे। सच बात तो यह है कि बहुत थोड़े जमींदार मुआवजा प्राप्त करने के मुस्तहक हो सकते हैं।

जमींदारी-प्रथा कायम रखने के पक्ष में दलील देते समय इस बात पर भी बड़ा जोर दिया जाता है कि जमींदारों ने स्कूलों, विश्वविद्यालयों तथा अन्य सार्वजनिक हितकर कार्यों के लिए दान दिये हैं। यह दलील देते समय यह भुला दिया जाता है कि धन का जो अपव्यय, नाश उन्होंने किया है, उसको देखते हुए उनका दान गंगा में से एक लोटा जल लेने के बराबर [illegible] है। प्रकार का व्यय [illegible] ाश के लिए वे [illegible] जमींदारियाँ [illegible] हैं,

इस लेख के लेखक और प्रसिद्ध [illegible] पंडित वंशीधर मिश्र एम० ए० [illegible] लोगों ने जमींदारियाँ धन देकर [illegible] हैं, उनमें से अधिकांश लोग [illegible] लगाये हुए धन से कई गुना [illegible] लाभ प्राप्त कर चुके हैं। जमींदारों [illegible] दारी-प्रथा के कारण जो जो [illegible] किये हैं, उन सबका आर्थिक लेखा [illegible] तैयार किया जाय, तो लोग विस्मित [illegible] जायँगे। केवल वे ही जमींदार थोड़ा [illegible] मुआवजा पाने का कुछ दावा कर [illegible] हैं जिन्होंने हाल में जमींदारियाँ [illegible]

जमींदारी-प्रथा के नाश से [illegible] देश के अन्नदाता, धनदाता किसानों [illegible] हित होगा, बल्कि सारे देश तथा [illegible] का कल्याण और हित होगा। [illegible] प्रथा के नाश से गाँवों में तो [illegible] क्रान्ति सी हो जायेगी। अभी [illegible] किसानों और जमींदारों को यह [illegible] नहीं होता है कि जमींदारी-प्रथा [illegible] होगा, उसका नाश सम्भव है। [illegible] बहुतों का यह ख़याल है कि [illegible] ने जमींदारी-प्रथा के नाश का [illegible] वोट लेने की गरज से उठाया है। [illegible] कुछ विचार-शील लोगों ने इस [illegible] ध्यान दिया है और वे इस परिणाम [illegible] पहुँचे हैं कि भारतीय समाज, [illegible] राष्ट्र के कल्याण के लिए जमींदारी [illegible] का अन्त नितान्त प्रयोजनीय और [illegible] श्यक है। हम विश्वास करते हैं कि [illegible] दारों के प्रभाव में आकर जमींदारों [illegible] अनुचित रूप से मुआवजा देना [illegible] मिनिस्ट्रियाँ तय न करेंगी।

खाँसिये मत
अगर खाँसी आये तो
ग्रिमौल्ट्स
सिरप की
[illegible] कीजिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

कवि की स्त्री

लेखक, श्री कन्हैयालाल साहू

यह कहानी अपने ढंग की अकेली है। कहानीकार अँगरेजी के विद्वान् और लेखक हैं। इसमें कवि तथा उसकी पत्नी के दो पहलुओं का सुंदर चित्रण किया गया है। समाज में अनेक ऐसी प्रतिक्रियाएँ होती रहती हैं, जो देखने में बेतुकी जान पड़ती हैं; किन्तु उनकी वास्तविकताओं पर पर्दा नहीं डाला जा सकता। जिस प्रकार पूर्व और पश्चिम में मेल नहीं हो सकता, उसी प्रकार दाम्पत्य जीवन में दो विभिन्न विचार-धाराओं का भी मेल असंभव है। यह कहानी विभिन्न विचार-धाराओं की वास्तविकता की एक छाया छोड़ जाती है।

कविता लिखने की तैयारी कर रहा है।

करता था यह कभी न सोचा था कि जीवन एक जिम्मेदारी भी हो सकती है।

जब बी० ए० में फेल हो गया तो बलवीर बड़ा खुश हुआ। कवि होने का दावा करना और डिग्री से अपना पीछा न छुड़ा सकना, यह तो बड़ी भद्दी, हास्यास्पद चेष्टा है। इसी सिद्धान्त पर बलवीर चलता और ईश्वर की कृपा से उसकी मनोकामना पूरी भी हुई।

बलवीर के पिता की दृष्टि में जो महत्त्व बलवीर के डिग्री हासिल करने में था उससे कहीं बढ़कर महत्त्व उसकी बुद्धिमत्ता, माता की राय में बलवीर के शादी करने में था। इसी कारण जब परीक्षा का नतीजा मालूम हो गया तो माँ का तकाजा बलवीर पर और भी जोरों से बढ़ा। वह अकसर कहती—"बलवीर, छोड़ कालेज के पचड़े को। क्या धरा है इसमें? तेरे बाबू जी कौन बी० ए० फी० ए० थे जो इतना रुपया और नाम कमाया। अरे ये तो अपने अपने भाग्य की बात है। कहीं कालेज की पढ़ाई से लोग राजा, रंक बना करते हैं? छोड़ इन बातों को बेटा, अब मेरी मान तू। शादी कर ले। मैं तेरे लिए ऐसी लड़की ढूँढ़ कर लाऊँ कि तू भी कहेगा वाह! माँ, क्या साक्षात् रंभा जैसी दुलहन है। बोल, करेगा न ब्याह?"

बलवीर के पास अब आगे का और क्या प्रोग्राम था? बस, कविता लिखना और जीवन के हर रंगीन पहलू से अपने मन को लुभाना, ललचाना और जब तबीअत में कुछ बेचैनी-सी आती तो बैठकर कविता में उस बुखार का 'ब्लू प्रिंट' उतारता। यह क्या कम काम था लाला जीवनराम के रसिक पुत्र के लिए?

माँ ने जल्द एक निहायत खूबसूरत, पढ़ी-लिखी लड़की का पता लगा ही लिया। कानपुर के करीब उन्नाव के रईस लाला बलभद्र की बड़ी लड़की सुभाषिनी, इसी साल कानपुर के गवर्नमेण्ट कालेज से इन्टर साइन्स पास हुई थी। लड़की और आगे पढ़ना चाहती थी। पर पिता पुराने खयालात के आदमी थे। इस प्रस्ताव को स्वीकार न कर सके। सुभाषिनी की माँ ने बल्कि जोर दिया था—"क्या हर्ज है, लड़की का दिल है तो पढ़ लेने दो उसे [illegible] और एक-दो साल [illegible] जो कालेज में [illegible] रखा था। बोले—"[illegible] लड़कि[illegible] में

बस, फैसला सुना दिया गया था। अपील तो थी ही नहीं। चुनांचे सुभाषिनी की कालेज की पढ़ाई इण्टर के बाद बिलकुल खत्म हो गई। इस नवयौवना के गुणों की लम्बी फेहरिस्त ने बलवीर के मन पर काफी असर किया। उसके हृदय में सुभाषिनी की स्पष्ट रूप-रेखा अपने-आप खिंच चली। अस्पष्टता का भी एक सुन्दर, मादक गुण है, वह अपनी जगह बड़ी चतुराई से काम कर जाती है। अतएव बलवीर ने अपनी माँ से लाला बलभद्र की लड़की के नाम और गुणों को सुनकर, अपनी कवि-वृत्ति के कारण कहिए, या अपनी स्वाभाविक रसिकता से, बहुत सा अनुराग, भावनाएँ और कौतूहल अपने हृदय में भर लिया। यहाँ तक कि वह अब उस लड़की को बगैर देखे ही शादी करने के लिए तैयार हो गया। एक रोज अपनी माँ से बोल उठा—"माँ, मैं दिसम्बर में कहीं सैर करने अपने दोस्तों के साथ जा रहा हूँ। यदि शादी-वादी की बात है तो उसके पहले ही निपट लो तो अच्छा है।" काफी चालाकी से इशारा किया गया था, माँ तो आजकल के लड़कों की मनोवृत्ति से भली भाँति परिचित थी। वह समझ बैठी थी कि बलवीर लड़की बगैर देखे हाँ, ना, कुछ न कहेगा, पर सुभाषिनी का चर्चा चलाने पर उसने तो देखने की बात मुँह से निकाली ही नहीं। उसे आश्चर्य हुआ, पर वह यह भी जानती थी कि पिता की बात एक बार बलवीर भले ही टाल दे, पर माँ की बात वह कभी नहीं टालेगा। अपने लड़के के शील-स्वभाव पर आज उसके मन में काफी प्रेम उमड़ आया। वह बोली:—

"वे लोग तो एक पैर पर खड़े हैं—तू कह तो मैं अगले माह में ही शादी रचा दूँ?"

बलवीर के दिल में गुदगुदी सी पैदा हुई, वह अपनी अँगूठी से खेलता हुआ बोला।

"मुझसे क्या पूछती हो—तुम्हें जो अच्छा लगे करो, मैंने तुम्हें कभी न कहा है?"

"माँ मुस्कराई, चुटकी लेना चाही,

सुभाषिनी जो अपने कवि-पति से परेशानी का अनुभव करती थी।

"मुझे क्या परी चाहिए? मुझे शक्ल से नहीं, स्वभाव से मतलब है।"

माँ खूब हँसी, बलवीर के गाल की फिर चुटकी लेती हुई बोली—

"सूरत, सीरत दोनों हैं इस लड़की में, तू देखकर कहेगा, "क्या अप्सरा जैसी दुलहन है!"

* * *

बलवीर की शादी इस चर्चा के दो माह बाद ही बड़ी धूम-धाम से हो गई। संयोग से, बलवीर की नई बीवी बलवीर जैसी ही कला-प्रेमी थी। उसके भी स्वभाव में भावनाओं की प्रबलता थी, बलवीर पर तो वह आते ही छा गई। वह भी जीवन को कला मानती थी। परन्तु कभी-कभी दाम्पत्य-जीवन में स्वभाव तथा रुचि की समानता ही दुःख का कारण बन बैठती है।

बलवीर की भावुकता पराकाष्ठा को पहुँच चुकी थी। कई क्षेत्रों में, कई दिशाओं में इसके विचार बहुत ही असाधारण तथा अनोखे थे, बलवीर को शंका भी न थी कि उसके विचारों में कुछ अस्वाभाविकता है, उनमें असत्य का अंश अधिक है। यह उसकी शिक्षा का दोष न था। यह उसकी मनोवृत्ति का विशेष विकार था।

बलवीर ने अपनी कुछ धारणाएँ बना ली थीं, इन धारणाओं में एक यह भी थी कि स्त्री-पुरुष-संभोग कवि के आदर्श का घातक है। अभिशाप है, इस घृणित व्यवहार से कवि के धर्म की हानि होती है, तथा उसकी सच्ची, सुन्दर भावुकता पर वह तुषार का काम करता है। वह वासना-युक्त प्रेम में विश्वास न करता था उसका विश्वास था सिर्फ आध्यात्मिक प्रेम में। वह कहता—स्त्री और पुरुष में वासना-रहित प्रेम होना असम्भव नहीं है। इस विचित्र आदर्श को बलवीर की मानसिक Idiosyncrsy ही कह सकते हैं, पर किसी भी नाम से यह पुकारी जाय इस चीज ने उसके जीवन में वही काम किया जो एक चिनगारी बाँस के बन में करती है।

सुहागरात को जब सुभाषिनी बलवीर के बेड-रूम में दाखिल हुई तो बलवीर ने उसे अपने आलिंगनपाश में कस लिया। कवि का साम्राज्य फैला। दुलहन ने अपना सारा उत्साह और उमङ्ग एकत्रित कर एक अनिर्वचनीय आत्मतुष्टि का अनुभव किया। सुभाषिनी बहुत खुश थी। उसके दिल में हजारों उमंगें और लाखों [illegible] थे। स्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महामना पूज्य महर्षि मालवीय जी का स्वर्गवास

स्वर्गवासी महामना मालवीय जी

राष्ट्र तथा हिन्दू-संसार का महान् स्तम्भ टूट गया

लेखक, श्री नारायणदत्त तिवारी बी० ए०

हा रे हतभाग्य भारत! भारतीयता के आकाशदीप, भारतवासियों में नरपुंगव, स्फूर्त्ति के महानतम स्रोत, मानवता के प्राण मालवीय जी की मृत्यु ने आज सारे देश को गौरवहीन कर दिया। जो धारावाही प्रवाहशील वाणी वर्षों तक—पूरी आधी शताब्दी से अधिक काल तक—भारत की पीड़ित पुकार का प्रतिनिधित्व करती रही थी, वह अब शान्त हो गई। आज बनारस हिन्दू-विश्वविद्यालय जैसे शिक्षा-मन्दिरों का निर्माण करनेवाले सरस्वती के प्रगाढ़ आराधक के देहावसान से देश की शिक्षा-व्यवस्था खँडहर-सी लगती है। गांधी जी के शब्दों में 'पंडित मालवीय जी की मृत्यु के परिणाम-स्वरूप भारत अपने सबसे पुराने और एक सबसे योग्य और अदम्य कार्य-कर्त्ता को खो बैठा। आखिरी समय तक भी वे भारत और उसकी स्वतन्त्रता के बारे में सोचते रहे।'

'वर्तमान समय के सबसे महान् हिन्दू और शताब्दियों में पैदा हुए किसी भी बड़े हिन्दू से भी महान् हिन्दू' महामना मालवीय जी का जन्म २५ दिसम्बर सन् १८६१ में प्रयाग में हुआ था। उनके पिता श्री व्रजनाथ मालवीय बड़े प्रसिद्ध पंडित थे। बचपन में मालवीय जी ने 'धर्मज्ञानोपदेश पाठशाला' नामक संस्कृत स्कूल में शिक्षा प्राप्त की। यह पाठशाला आज भी हरदेव जी की पाठशाला के नाम से भारती-भवन के दक्षिण भाग में स्थित है। उन्हीं दिनों एक गवर्नमेंट हाईस्कूल के खुल जाने पर मालवीय जी ने वहाँ अँगरेजी की भी शिक्षा प्राप्त की और सोलह वर्ष की आयु में वहीं से हाईस्कूल की परीक्षा पास की। उसी साल मिर्जापुर के पंडित नन्दराम जी की सुपुत्री से उनका विवाह भी [illegible]।

प्रचार करने के लिए बनी हुई एक 'मंडली' में प्रमुख भाग लिया और धीरे धीरे हिन्दी को आगे बढ़ाने के लिए एक जबर्दस्त आन्दोलन के प्रणेता हुए। उन्होंने 'हिन्दी प्रदीप' नामक एक मासिक पत्रिका का सम्पादन भी किया और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और राजा शिवप्रसाद जैसे साहित्यिकों से इनका काफी संसर्ग रहा। तीन साल के कठोर परिश्रम के बाद सन् १८९८ में एक चाय-पार्टी में मालवीय जी ने यू० पी० के गवर्नर श्री मैकडानल्ड से हिन्दी को भी कचहरियों में मानी जानेवाली भाषा के रूप में कानूनी करा लिया। इस प्रकार देवनागरी भाषा के प्रचार में मालवीय जी का हाथ सबसे महत्त्वपूर्ण रहा।

सन् १९०३ में मालवीय जी ने शिक्षा-प्रसार की ओर ध्यान दिया। उन्होंने सर्वप्रथम इलाहाबाद में मैकडानल्ड हिन्दू बोर्डिंग हाउस नामक एक होस्टल का निर्माण करवाया जिसके लिये उन्होंने डेढ़ लाख रुपया एकत्र किया। तत्पश्चात् बनारस हिन्दू-विश्वविद्यालय के निर्माण के लिए उन्होंने जो दिन-रात अथक परिश्रम किया, सारे भारतवर्ष का दौरा किया और इस प्रकार एक करोड़ साठ लाख रुपया इकट्ठा कर जो बनारस हिन्दू-यूनिवर्सिटी की विशाल इमारत खड़ी की, वह तो मानव-इतिहास में परिश्रम का अनुपमेय उदाहरण रहेगा। भारत की प्राचीन स्मृति—नालन्दा और तक्षशिला की भाँति, काशी विश्वविद्यालय भी परम्परा तक मालवीय जी के सतत परिश्रम और अथक लगन का नमूना बना रहेगा।

कांग्रेस के अन्दर रहकर मालवीय जी ने देश की जो अथक सेवा की, उसके परिणाम-स्वरूप आप पहले सन् १९०९ में [illegible]

क्षेत्र में 'हिन्दुस्तान' और 'अभ्युदय' नामक पत्रों का सम्पादन किया और बाद को 'लीडर' और 'हिन्दुस्तान टाइम्स' नामक समाचारपत्रों को जन्म दिया। प्रयाग की सेवा-समिति भी आपके ही द्वारा संगठित की गई थी।

सन् १९२६ में आपने असेम्बली में स्वराज्य-पार्टी की स्थापना की और सन् १९३० में 'तिलक जन्म-दिवस' के दिन पहली बार गिरफ्तार किये गये। आपकी दूसरी गिरफ्तारी सन् १९३२ में दिल्ली जाते समय हुई थी। बहुत अवस्था होने पर भी आप राउंड-टेबिल कान्फ्रेंस में शामिल होने के लिए लंदन गये और वहाँ पर राष्ट्रीय दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व किया। सन् १९३९ तक आप बनारस-हिन्दू-विश्वविद्यालय के वाइस-चांसलर भी रहे और अपने मृत्यु-काल तक भी उसके 'रैक्टर' के पद पर रहकर अनवरत परिश्रम किया।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि महामना मालवीय जी के जीवन का प्रत्येक क्षण जन-सेवा व मानवता की भलाई में व्यतीत हुआ। आप एक नेता ही नहीं थे, पर प्रत्येक भारतीय के दुःख-सुख के साथी भी थे। आप धनी व निर्धन, ऊँच या नीच, शिक्षित या अशिक्षित, प्रत्येक के मित्र व साथी रहे। आपमें मानवता का अंश, 'राजनीतिज्ञ' से भी अधिक कूट-कूटकर भरा हुआ था।

यह मेरा अहोभाग्य था कि मुझे भी साढ़े पाँच महीने मालवीय जी के चरणारविन्दों में सन् १९४४ में काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तभी मैंने उनकी "गौरी शंकर" सी धवल, उच्च व श्वेताभ पवित्रता से पूर्ण उज्ज्वल व्यक्तित्व का दर्शन किया। आपके किवाड़ प्रत्येक प्राणी के लिए खुले हुए थे। एक दिन मेरे ही [illegible] से पूछा, 'पूज्य [illegible] किसी को भी [illegible] को अपनी [illegible] मिल लेने [illegible] ने [illegible] मेश्वर

के लिए आप अपना 'दूध-पियो, [illegible] करो; बोलो हरि का नाम; [illegible] कारज करो, पूरेंगे सब काम।' [illegible] लेकर तैयार रहते थे। इधर कुछ [illegible] आप गो-सेवा की ओर बहुत [illegible] हुए थे और घंटों तक गो-सेवा [illegible] प्रत्येक लेख को ध्यानपूर्वक [illegible] आपके ही कहने से देश में कई [illegible] खुलीं। सन् ४५ के शुरू में [illegible] चिमूर' के बन्दियों के लिए [illegible] पसीज गया। आपने अपने [illegible] कुछ दिनों के लिए मुक्त कर [illegible] एकत्र करवाने के लिए कहा [illegible] से मुक्ति का प्रार्थना-पत्र भेजा [illegible] आपकी मानवता व सादगी, आपकी [illegible] धर्म में आस्था और परमेश्वर में [illegible] विश्वास के ही परिणाम थे। [illegible] अपनी पुस्तक 'ईश्वर' पढ़ने के लिए [illegible] आदेश देते हुए 'पितामह' ने [illegible] मुझसे कहे थे वे चिर-स्मरणीय हैं। [illegible] कहा 'इस पुस्तक को पढ़ो' और [illegible] है कि 'इसे पढ़कर व अपने दैनिक [illegible] में व्यक्त कर तुम्हें परमेश्वर की [illegible] अनुभूति प्राप्त होगी, और तुम [illegible] यदार्थवादी मनोवृत्तियों से अछूते [illegible]

भारत की सामाजिक कुरीतियों [illegible] विरुद्ध कुठाराघात 'करनेवाले' हिन्दू [illegible] व हिन्दुत्व का झंडा भारतीयता के [illegible] में उज्जवल रूप से सन्निहित कर [illegible] अपनी अमोघ गर्जती हुई वाणी से [illegible]

का प्रतिनिधित्व करनेवाले, [illegible] दुर्द्धर्ष सेनापति, भारतीय शिक्षा के [illegible] 'सान्दीपनि' महर्षि मालवीय जी [illegible] से रिक्त हुआ स्थान भरा जाना [illegible] है। आज प्रत्येक भारतीय और [illegible] हिन्दू और हिन्दुत्व, विद्यार्थी व [illegible] अपने को अकेला पाता है क्योंकि [illegible] निरन्तर स्फूर्ति प्रदान करनेवाला [illegible] प्रकाश कहाँ रहा। अब तो देश के [illegible] नर-नारी का यही कर्तव्य है कि [illegible] वीय जी की जीवन-साधना व [illegible] अनुसार चलकर भारतीयता, [illegible] मानवता की सेवा करे। महामना [illegible] [illegible] कार्यों को यहीं [illegible] करेगी।

हा ! महर्षि

महामना मालवीय जी के प्रति

लेखक, प्रोफेसर जगन्नाथ एम० ए०

तुम सूर्य-किरण, हम सब रजकण !
भूला वह स्वर्णप्रभात नहीं, जब चमक पड़े थे छूते ही
हम देव तुम्हारे दिव्य चरण !

तुम चले गये अब रात हुई,
फीकी हम सबकी बात हुई;
क्या चमका पायेंगे हमको
ये छोटे छोटे तारागण ?
तुम सूर्य-किरण, हम सब रजकण !

यद्यपि शशि अमृत पिला जाता,
पर कण को चमक न दे पाता;
इस मधुर ज्योत्स्ना के बदले
दो वही जलन, दो वही मरण !
तुम सूर्य-किरण, हम सब रजकण !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...न्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान के एक महान् नेता

...मना मालवीय जी कौन थे?

...तीयता तथा हिन्दुत्व के एक महान् सेवक

लेखक, श्री भोलानाथ 'भ्रमर'

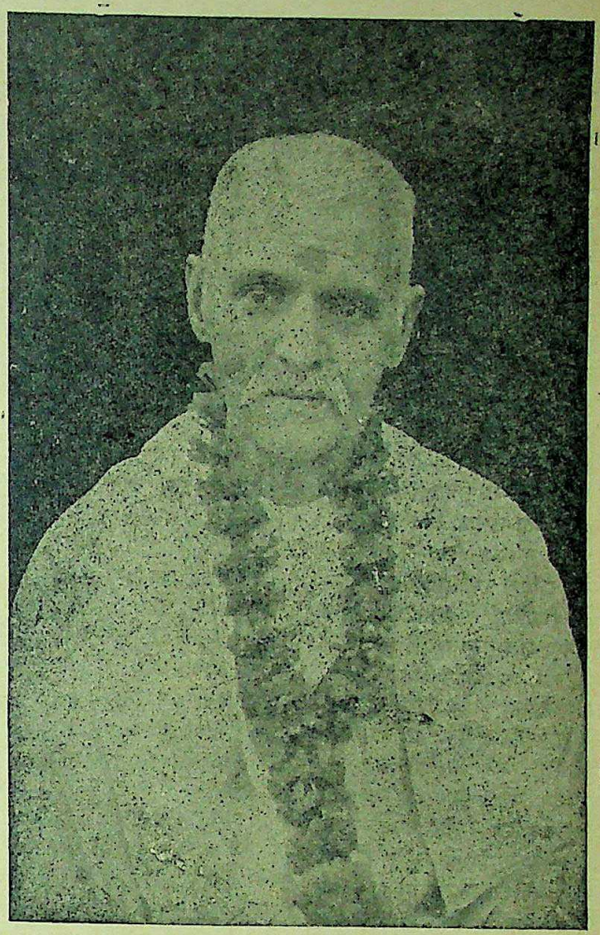

...१२ नवम्बर सन् १९४६ ई०, ...दिन का समय। प्रयाग-...का इतिहास-विभाग। मैं ...खड़ा हुआ सोच रहा था— ...दिन कितना खराब है! यह ...अगहन का महीना! काले ...! कभी कभी सर्द हवा के ...नहीं बूँदें! वास्तव में आज ...बहुत ही बुरा है।' परन्तु क्षुद्र ...! नहीं मालूम था कि ये ...वास्तव में विषाद के घन हैं। ...नहीं बूँदें वास्तव में आँसू की ...के झोंके वास्तव में उच्छ्वास ...का संसर्ग पाकर ठंडे हो ...नहीं मालूम था कि दुःख की आग ...हुई पृथ्वी की उच्छ्वासों से ...का भी मानस पिघल चुका है ...रहा है। नहीं मालूम था कि ...ही देर में वर्तमान हिन्दू-समाज ...बड़ा आघात होनेवाला है। ...था कि भारतमाता की गोद से ...बहुत ही प्यारा लाल छीना ...है। नहीं मालूम था कि यहाँ से ...के अन्दर ही अभी ऐसी दुर्घटना ...है जिससे न केवल काशी, न ...पी०, न केवल भारत बल्कि ...एवं आहत मानवता दहाड़ ...उठेगी!

...के अमूल्य रत्न, हिन्दू-धर्म और ...के प्राण तथा मानवता के एक ...महामना मदनमोहन माल-...सम्पूर्ण एवं वास्तविक परिचय ...के लेखों की शक्ति और ...के बाहर की बात है। यदि यह ...कि उनका जन्म २५ दिसम्बर ...ई० को प्रयाग में हुआ था, ...कहा जाय कि प्रयाग-विश्व-...बी० ए०, एल्-एल० बी० ...यदि यह कहा जाय कि वे एक ...सुयोग्य अध्यापक, लेखक, ...और हाईकोर्ट के वकील ...उनका वास्तविक परिचय ...हो सकता। इस झलक में ...म्युनिसिपैल्टी के वाइस चेयर-...यू० पी० लेजिस्लेटिव कौंसिल ...लेजिस्लेटिव के मेम्बर ...सन् १९१९ ई० से सन् ...तक बनारस विश्वविद्यालय ...रहने का गौरव और दो ...सभापति चुने जाने का गौरव ...भी हमें उनका वास्तविक ...हो सकता। हिन्दू-महासभा, ...हिन्दू बोर्डिङ्ग-हाउस, ...सेवा-समिति और ...महासभा उनका उचित अभि-...में असमर्थ हैं। सन् १९१५ ...ई० तक न्यूज पेपर्स ...का वास्तविक परिचय ...बहुत बड़ी ...

हिन्दू-विश्वविद्यालय' के जन्मदाता और जीवनदाता के परिचय के लिए बहुत बड़ी पुस्तक की आवश्यकता है·····और इतना सब होने पर भी मन में यह सन्देह बना ही रह जायगा कि हम मालवीय जी का वास्तविक दर्शन पूर्ण रूप से कदाचित् नहीं ही करा सके। इस प्यास की शान्ति के लिए अभी तो प्रतीक्षा करनी ही पड़ेगी।

आज तो जब हम अपने को और अपनी जाति को असहायावस्था में पाते हैं, आज तो जब हम इस बात का ध्यान करते हैं कि इस विपन्नावस्था में हमारा प्राण और हमारा बल हमसे छीन लिया गया है, तब चारों ओर विकलता ही विकलता दिखाई पड़ती है। पिछले मंगल के दिन हमारा इतना बड़ा अमंगल हुआ है कि उसकी कल्पना करके बिना रोये रहा भी नहीं जाता और रोया भी नहीं जाता। १२ नवम्बर को ऐसा बारहबाट हुआ है कि हिन्दू-सभ्यता और संस्कृति तड़प उठी है। आज सिक्खों की रक्षा के लिए तारासिंह की कृपाण है, आज मुसलमानों की ओर से बोलने के लिए जिन्ना की प्रतिभा और उनकी रक्षा के लिए उनकी कूट-नीति है। परन्तु हिन्दुओं की रक्षा के लिए अब केवल ईश्वर का ही सहारा रह गया है। हमारी स्वाभाविक प्रतिक्रिया के उत्तर में हमारे 'पंडित' जवाहरलाल नेहरू हम पर ही बम-वर्षा कराने के लिए तैयार हैं; हमारे ही 'महात्मा' सत्याग्रह करके हमें ही सदैव के लिए कलंकित कर जाने को उद्यत हैं। आज हमारे बीच में ऐसे लोग तो अवश्य हैं जो किसी 'बिहार' में जाकर हमसे यह कहें कि पहले हमको मार डालो फिर हमारे शव पर चढ़कर किसी मुसलमान को मारने जाओ, परन्तु किसी 'नोआखाली' या 'टिपरा' में जाकर मुसलमानों से यह कहनेवाले नहीं दिखाई पड़ते कि पहले हमें मार डालो तब हमारे शव पर चढ़कर किसी हिन्दू को मारने जाओ। आज 'हिन्दू सभ्यता और संस्कृति खतरे में' का निर्भय और गम्भीर घोष करनेवाला कोई नहीं दिखाई पड़ता।

मालवीय जी की मृत्यु साम्प्रदायिक विद्वेष रूपी बलिवेदी पर होनेवाला एक महान् बलिदान है। कलकत्ता की दानवीय लीला, नोआखाली और टिपरा आदि का लोमहर्षक विकराल ताण्डव और बिहार के पैशाचिक कृत्य ही मालवीय जी की मृत्यु के उत्तरदायी हैं। ८५ वर्ष के वृद्ध का भावुक हृदय भारत की राष्ट्रीयता और मानवता पर होनेवाला इतना बड़ा आघात सह न सका। उसका हृदय तड़प उठा; उसकी मानवता चीख उठी; उसकी भावुकता अचेत हो उठी। चेतना कभी-कभी फड़फड़ा उठती थी—'बंगाल में क्या हो रहा है? बिहार की क्या दशा है? महात्मा गांधी कैसे हैं?' सम्बोधित लज्जा से गड़ जाते थे। चेतना उड़ जाती थी दिव्यलोक को। लगता था कि ऋषि की आत्मा विधि-विधान से लड़ रही है। ब्रह्मा कहते हैं—'अभी आपके यहाँ आने का समय नहीं आया।' ऋषि की आत्मा कहती है—'परन्तु अब तो मेरा वहाँ रहना असम्भव हो गया है। वहाँ की लीला को तो देखकर दानव भी सकुचा जाते हैं। मैं वहाँ एक णक्ष भी नहीं ठहर सकती।' ब्रह्मा सोचने लगते हैं। उन्हें अपने विधान के सहित ऋषि की आत्मा के सम्मुख झुकना ही पड़ता है···और तब···तब···तब रो उठता है सारा भारत, सारी हिन्दू-जाति।

लगता है कि आकाश के सितारों में बैठकर वे अब भी भारत की दशा देख रहे हैं और रो रहे हैं। लगता है कि वे स्वर्ग में बैठे हुए भारत के दुर्भाग्य से लड़ रहे हैं। लगता है कि उनकी आत्मा जिन्ना के शैतान से लड़ रही है; लगता है कि उनकी शक्ति साम्प्रदायिक कटुता को पराजित कर रही है। लगता है कि उषा की दिव्य मुस्कान में वे भारत के स्वर्णिम भविष्य की झाँकी दिखा रहे हैं। लगता है कि प्रभात की स्वर्ण-रश्मियों द्वारा वे तपस्या, बलिदान, श्रद्धा और प्रेम की मधुमय ज्योति विकीर्ण कर रहे हैं।

Kashmir SNOW
The Charm... clear complexion!

शक्ति का
दशनसंस्कार चूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि की स्त्री

(पेज ९ का शेष)

उसकी अपनी परिभाषा थी; और उस परिभाषानुसार प्रेम का सम्बन्ध संभोग से कदापि न था। रात गुजर गई। बलवीर कवि था। कवि अपनी काल्पनिक सृष्टि को रचता, उसमें बसता, उसे मिटाता और उसके साथ आप मिटता। इस उधेड़-बुन में बलवीर ने उस रात सुभाषिनी को अपनी गोद में बिठाकर उसे न मालूम क्या-क्या कह डाला। कविता खत्म हो गई थी, सुभाषिनी का हृदय छलक रहा था—प्रेम से—वह हँसती और बड़ी चतुराई से अपने भावुक पति की ओर देखकर समझ लेती कि कविता ने आज बड़ी ढिठाई की है। प्रेम के सच्चे हकों को वह बरबस छीन लेना चाहती है।

बड़ी ही मीठी रात थी वह, कवि का प्याला छलक रहा था। वह सुख को भीतर ही भीतर अनुभव करता। सुभाषिनी ने उसे अपना पति बनाकर रंक से राव बना दिया था। माँ ने कहा था सुभाषिनी बड़ी सुन्दर है, मिठबोली है इत्यादि; पर वह निकली निहायत खूबसूरत और मनमोहनी, बलवीर तो उस पर कुर्बान हो गया।

पर सुभाषिनी कविता को न समझ पाई। वह समझती भी कैसे? वह तो केवल प्रेम जानती थी, वह प्रेम की उपासिका थी। जब दिन निकल आया तो वह कमरे से बाहर आई और मन ही मन खूब हँसी। पर उसके हृदय में दर्द था, टीस थी, एक कसक थी। 'कविता जरूर एक अजीब चीज है', वह कहती, 'वरना.....'

एक माह गुज़र गया, दो माह गुज़र गये—माह पर माह गुजरने लगे, कविता ने प्रेम को विजयी न होने दिया। बलवीर भावुकता की दलदल में पड़कर अपना पुरुषत्व खो बैठता था, सुभाषिनी को अब शंका होने लगी; 'कविता का साम्राज्य या नपुंसकता का?'

पर अभी वह निश्चित रूप से किसी अनुमान पर न पहुँच पाई थी, वह अपने अन्तःस्थल की वेदना को छिपाये हुए सोच में तत्पर रहती, और हर रात जब वह बलवीर के बेड-रूम में उसके साथ अकेली होती तो उसकी आँखें कवि के भीतर प्रवेश करने का निष्फल प्रयत्न करतीं। कवि अपनी भावुकता के प्रवाह में बहता जाता और मूर्खतावश वह अपने साथ अपनी हसरत भरी नई बीवी को भी बहाता।

शादी को अभी करीब एक साल हुआ ही था कि एक रोज सुभाषिनी ने अकेले में अपने शौहर से पूछा।

"क्यों जी, तुम कब तक गुमराह रहोगे?"

बलवीर चौंक गया—क्या पूछ रही है उसकी बीवी आज उससे? ख़्वाब देख रहा था—झट बोल उठा—

"इसी में तो लुत्फ है।"

सुभाषिनी ने देखा कि वह बहकी-बहकी बातें कर रहा है। क्या वह उसका उपहास तो नहीं कर रहा है? थोड़ी देर चुप रही, फिर उसने व्यंग कसा।

को सँभालने की क्षमता खो बैठी—उसके हृदय में प्रतिकार तथा घृणा के भावों ने घर बना लिया, कवि कविता ही में मग्न रहा।

दिवाली करीब थी, लाला जीवनराम के यहाँ दिवाली का उत्सव बड़े समारोह के साथ मनाया जाता था। सुभाषिनी, जो इसी अवसर पर कुछ करना चाहती थी, उपक्रम सोचने लगी।

एक दिन मौक़ा पाकर वह बलवीर से बोली—

"क्यों जी, तुम तो कवि हो न?"

"तुम्हारा क्या ख़याल है?" बलवीर ने पूछा। वह जानता था कि बाद के क्या 'डायलाग' होंगे। यही तो एक खासा मजाक इन दोनों के बीच हमेशा रहता।

"तुम सिर्फ कवि ही नहीं हो", वह बोली।

बलवीर सहसा तन बैठा।

"ऊँ! सिर्फ कवि नहीं—और क्या हूँ?"

"तुम·····", सुभाषिनी रुक गई। उसके मुँह से वह शब्द न निकल सका।

बलवीर हैरत में डूब गया। क्या कहना चाहती थी वह? क्यों चुप हो गई?

"कहो—कहो। मैं और क्या हूँ?"

"क्या फायदा कहने से?"

"लेकिन तुम कहना तो चाहती थी।"

"कह दूँगी किसी दिन।"

* * *

दिन गुजरने लगे। कवि और कवि की स्त्री आपस में हँसते-हँसाते, पर वे दोनों बहुत तेजी के साथ एक दूसरे से पृथक् बहे जा रहे थे—बलवीर कविता के प्रवाह में और उसकी स्त्री प्रतिरोध की धारा में। सुभाषिनी का जीना मुहाल हो गया। कवि को कल्पना तक न थी कि क्या होने जा रहा है।

दिवाली में लक्ष्मीपूजा के दिन सुभाषिनी अचानक घर से निकलकर विलियम सिमसन के लड़के जान सिमसन से उसके घर विवाह कर रही थी। विलियम सिमसन इसी जिले में तहसीलदार थे। सिमसन और सुभाषिनी दोनों गवर्नमेंट कालेज कानपुर में साथ-साथ पढ़ते थे। जान सिमसन अभी दिवाली की छुट्टी में अपने घर आया हुआ था।

बलवीर अपने कमरे में कुछ देर बाद जब सुभाषिनी को ढूँढ़ने गया तो टेबिल पर उसे एक खत पड़ा मिला। उसमें लिखा था—

"डियर पोइट,

"तुम कवि जरूर हो। लेकिन अपनी बीवी के शौहर नहीं हो सकते। मतलब यह है कि आप शायरी छोड़ दें और किसी नामी डाक्टर या हकीम से इलाज करायें।

"मैं आज जान सिमसन की [illegible] बनने जा रही हूँ। तुम तो [illegible] जानते हो। खुदा हाफिज। मेरा नाम [illegible] सुभाषिनी न होकर (सुभाषिनी [illegible] चुकी) रहेगा—

"मिसेज [illegible]

(लेखक-द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

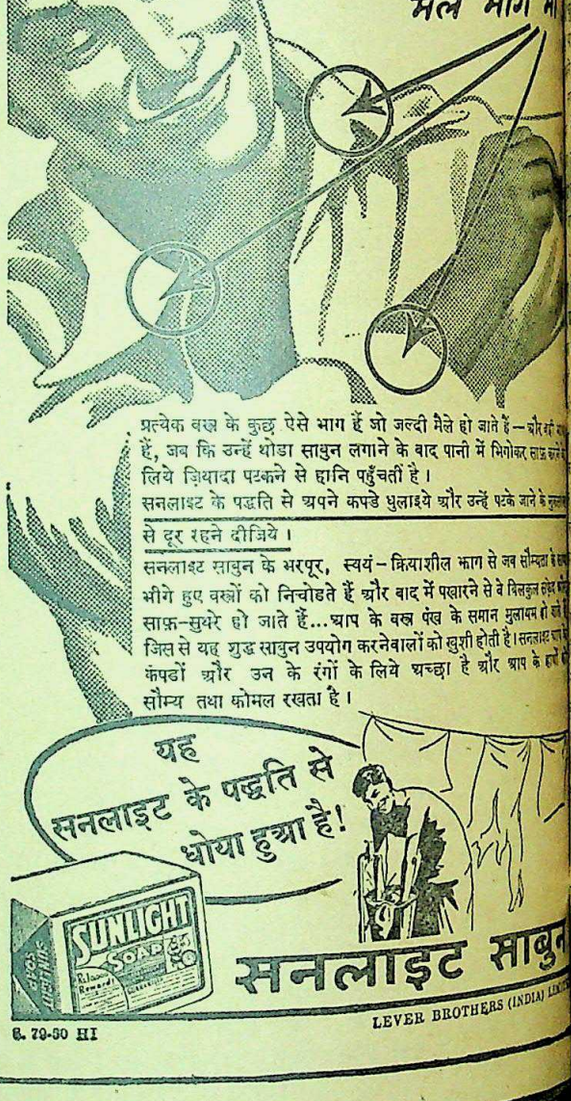

प्रत्येक वस्त्र के कुछ ऐसे भाग हैं जो जल्दी मैले हो जाते हैं—और [illegible] हैं, जब कि उन्हें थोड़ा साबुन लगाने के बाद पानी में भिगोकर लाड [illegible] लिये ज़िआदा पटकने से हानि पहुँचती है।

सनलाइट के पद्धति से अपने कपड़े धुलाइये और उन्हें पटके जाने के [illegible] से दूर रहने दीजिये।

सनलाइट साबुन के भरपूर, स्वयं-क्रियाशील झाग से जब सौम्यता के [illegible] भीगे हुए वस्त्रों को निचोड़ते हैं और बाद में पखारने से वे बिलकुल [illegible] साफ़-सुथरे हो जाते हैं...झाग के वस्त्र पंख के समान मुलायम हो [illegible] जिस से यह शुद्ध साबुन उपयोग करनेवालों को खुशी होती है। सनलाइट [illegible] कंपड़ों और उन के रंगों के लिये अच्छा है और आप के हाथों [illegible] सौम्य तथा कोमल रखता है।

B. 79-50 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIM[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमण्डल

विवाह की जिम्मेदारी लड़के और लड़कियों पर क्या विवाह-विज्ञापन के आधार पर दाम्पत्य-जीवन सुखी रह सकता है ?

लेखिका, श्रीमती दुर्गा बैजल

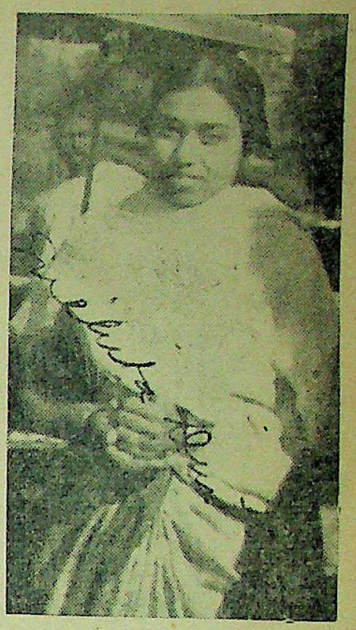

श्रीमती शुचिता कृपलानी पूर्वी बंगाल का दौरा कर रही हैं।

काम पर लगे नवयुवक की एक २० वर्षीया लम्बी, स्वस्थ, गेंहुए रंग की, बी० ए० की परीक्षा में सम्मिलित होनेवाली कायस्थ लड़की के लिए, जिसमें ८०००) के दहेज का प्रण है।" २० वर्ष की आयु-वाली को हम लड़की न कहकर तरुणी ही कहें तो अधिक अच्छा होगा। लड़की एवं तरुणी कह देने-मात्र से चाहे कोई अन्तर न हो; परन्तु यह अवश्य विचारणीय है कि उस बेचारी की आयु २० वर्ष हो गई है और उसने अपनी युवावस्था के कम से कम ५ अमूल्य वर्ष खो दिये हैं। २० वर्ष पश्चिम के लिए वहाँ के स्वतन्त्र ही नहीं स्वच्छन्द वातावरण में जिसके कारण अतृप्त इच्छाओं का संसार नहीं बसता, कदापि अधिक नहीं; परन्तु गर्म देश भारत के लिए जहाँ युवावस्था का आगमन ठंडे देशों की अपेक्षा कुछ शीघ्र होता है, बहुत अधिक है। इस अर्थ में बालक-बालिकाओं का विवाह उस अवस्था में होना चाहिए जब कि उसकी उनको आवश्यकता हो। दहेज की प्रथा कायस्थों, बंगालियों तथा अन्य वर्गों में घातक रोग के रूप में प्रचलित है। खेद का विषय है कि इस कुरीति पर ही जिसके कारण देश में न जाने कितने जीवन प्रतिवर्ष बलिवेदी पर अर्पण हो जाते हैं, इस २० वर्षीया का जीवन, अनुमान किया जा सकता है; बलिदान हो रहा है और ८०००) का दहेज न्यून सिद्ध हो रहा है।

"एक..घरेलू कार्यों में निपुण, संगीत में प्रवीण, नवीन तथा पुरातन विचार-धारावालों के योग्य, एक बड़े डाक्टर की पुत्री के लिए योग्य वर की जिसे कार्य-क्षेत्र में उतरने के लिए यथेष्ट सहायता दी जायगी, आवश्यकता है।" ऐसे विज्ञापन भी प्रायः दृष्टिगोचर होते हैं। कुछ नियम सा हो गया है कि अतिशयोक्ति का आश्रय लिये बिना काम ही नहीं चलता। फूटे ढोल की भाँति स्वर अलापनेवाली लड़कियों को ही संगीताचार्य कह देते हैं। सत्य यह है कि लड़कियों से बहुधा, लाड़-प्यार के कारण, घर का काम न लेकर अधकचरा बना देते हैं। जब वे पति के गृह में प्रवेश करती हैं और उन्हें उस घर को अपना समझकर सँभालना पड़ता है तो वे असफल हो जाती हैं। अपने तथा अपने सम्बन्धियों के लिए श्राप स्वरूप बन जाती हैं। स्कूलों और कालेजों में जो गार्हस्थ्य शास्त्र पढ़ाया [illegible] जीवन-[illegible] मात्र है। बड़े घर[illegible] की कमी [illegible] देख-भा[illegible] है कि [illegible]

सरल नहीं जितना कि कदाचित् वह सोचती हों। स्वभावों का मिलना भी दम्पति में एक प्रधान वस्तु है। ऊपर उद्धृत विज्ञापन में कहा गया है कन्या नवीन तथा पुरातन विचारधाराओं के अनुकूल है। एक ही समय में दोनों बातें कैसे हो सकती हैं ? यह समझना टेढ़ी खीर है। आजकल तो थोड़ी सी पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ भी प्रवाह में प्रतित और अपने अधिकारों के लिए प्रतिपल पागल रहती हैं। प्रत्येक मनुष्य अथवा स्त्री का स्वभाव विशेष प्रकार का होता है। वह उसी के अनुकूल कार्य करता या करती है। अब तक पाश्चात्य देशों में विचारान्तर के कारण न्यायालयों में विवाह-विच्छेद होते रहे हैं और अब भारत में भी वही समय आ गया है जब यदि हमने बिना समझे-सोचे अपने साथी चुने तो हमसे उन्नत पश्चिम भी मात खा जायगा।

अन्य विज्ञापनों का सार यही है कि छूटते ही फोटोग्राफ की, जिससे रूप-रंग, भाव-भंगी किसी का भी ठीक पता नहीं चलता माँग की जाती है; चरित्र को, जो सब कुछ है, कोई नहीं पूछता। स्वास्थ्य की जिस पर जीवन की भित्ति निर्भर है, कुछ चिन्ता नहीं की जाती। कुछ स्थानों पर लड़कियों के वजन पूछे जाते हैं—दूसरी जगहों पर उनकी लम्बाई पूछी जाती है। कुछ विज्ञापनों में कहा जाता है कि उन्हें केवल "लड़की ही" चाहिए। कुछ मनुष्य कभी-कभी जाति-पाति का प्रश्न दूर कर देते हैं जिसका यह अभिप्राय कदापि नहीं कि वे समाज-सुधारक हैं। वे ऐसा अपनी जाति में मनोनुकूल कन्याएँ न मिलने के कारण करते हैं। केवल "लड़की" की माँग अथवा जाति-पाँति का निवारण, खोज करने पर धोखा निकलता है।

सारांश यह है कि विवाह-विज्ञापनों में सच्चाई से काम नहीं हो रहा है। वे ही मनुष्य आज विज्ञापन कर रहे हैं जो किसी प्रकार की कठिनाई में हैं। लड़कियों के विज्ञापन उस दशा में छपते हैं जब कि उनके विवाह में देर हो जाती है अथवा वे किसी प्रकार से कुछ न कुछ अवगुणवाली हैं। लड़कों के विज्ञापन भी उस दशा में निकाले जाते हैं जब कि उनके पास-पड़ोस के स्रोत सूख जाते हैं और विवाह-सम्बन्धी [illegible] आना [illegible] दूर रहा, [illegible]

ओर दुख ही दुख देखना। हमें अपना गार्हस्थ्य जीवन शान्तिपूर्ण बनाने के लिए समाज में प्रचलित विवाह के नियमों को बदलना पड़ेगा। विवाह का दायित्व माता-पिता पर नहीं स्वयं लड़के और लड़कियों पर ही होना चाहिए। हम बाल-विवाह के सूत्र से बचें; परन्तु विवाह का असली अर्थ समझकर विवाह के योग्य हो जाने पर तत्काल विवाह करें। लड़के लड़कियों दोनों की शिक्षा-दीक्षा इस प्रकार होने की आवश्यकता है कि दोनों विवाह और गार्हस्थ्य जीवन के मर्म को भली भाँति समझें। जीवन वही है जो दम्पति को सुखी गृहस्थ और योग्य नागरिक बनावे और यह तभी सम्भव है जब हमारे विवाह-विज्ञापन अपनी नीति बदल दें और प्रत्येक लड़के तथा लड़की के लिए योग्य वर मिलना सहज हो जाय। क्या हम कभी उस आदर्श तक पहुँचेंगे ?

फिल्मी जलतरंग

इस पुस्तक में फिल्मों के २६० प्रसिद्ध गीत छापे गये हैं। मूल्य एक रुपया पाँच आने।

फिल्मी अप्सरायें

इस पुस्तक में ५० प्रसिद्ध फिल्म-अभिनेत्रियों की तसवीरें और उनकी जिन्दगी के रंगीन हालात छापे गये हैं। मूल्य दो रुपये छः आने।

५० दिन में अंग्रेजी

इस पुस्तक से आप ५० दिन में अँगरेजी बोलना सीख सकते हैं। मूल्य एक रुपया चौदह आने।

विवाहित मनोरंजन

इस पुस्तक को पढ़कर नवविवाहित दाम्पत्य सुख का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। मूल्य एक रुपया पाँच आने।

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वी बङ्गाल में महात्मा गांधी

(पेज ७ का शेष)

को वध कर दिया। बच्चों तक को जलते घरों में फेंककर मार डाला गया। औरतों पर बलात्कार किया गया। एक यात्री के जबानी मालूम हुआ है एक-एक औरतों पर कई-कई पाकिस्तानी सिपाहियों ने बलात्कार करके अपनी काम-वासनाएँ तृप्त कीं। कितनी ही बहनों को भगाकर दूसरे सूबों में भेज दिया गया। सैकड़ों बहनों का पता ही नहीं चल रहा है। कितने ही छोटे-छोटे बच्चे अपने माँ-बाप से अलग करके मारे गये।

यह सब वहाँ किया गया, जहाँ सबसे कम हिन्दू बसते हैं। यहाँ जनाब जिन्ना साहब की वह बात याद आ जाती है जब उन्होंने एक बार बड़े दावे के साथ कहा था कि अल्पमत के लोगों की रक्षा सबसे पहले की जायेगी। हम जनाब जिन्ना से यह जानना चाहते हैं कि क्या आपके पाकिस्तानी मुल्क में इसी तरह अल्पमत की रक्षा की जाती है? जहाँ की पुलिस तक मिलकर अल्पमतवालों को मार डालने में सहायता करती है। बङ्गाल की सरकार कितनी निकम्मी और बेकार है जो जान-बूझकर ऐसे भीषण दंगे की जिम्मेदार है। बङ्गाल के गवर्नर और उच्च पदाधिकारियों का भी कुछ फर्ज था कि अल्पमतवालों की रक्षा करते। लेकिन हवा की चाल से मालूम होता है कि सारा तन्त्र जान-बूझकर बङ्गाल के हिन्दुओं को खत्म करने पर तुला हुआ है। बङ्गाल के गवर्नर लम्बी तन-खाहें किस लिए लेते हैं? फिर भी वह कहते हैं कि हम अल्पमत के लोगों की रक्षा के लिए यहाँ हैं। बङ्गाल के अल्पमत के लोगों की रक्षा करने के वक्त उनकी सारी फौज कहाँ चली गई? वाइसराय का विशेषाधिकार कहाँ से रहा था? उपरोक्त घटना से साफ प्रतीत होता है कि अँगरेजी राज्य जान-बूझकर दोनों कौमों में भयंकर दीवाल खड़ी कर रही है। यदि आज यहाँ से अँगरेजी राज्य चला जाये तो सब थोड़ी देर में लड़-भिड़कर भाई-भाई की तरह रहने लगेंगे। समय समय पर अँगरेजों की भीतरी शह पाकर साम्प्रदायिक अग्नि भड़कती रहती है। सच तो यह है कि जब तक तीसरी ताकत यहाँ कायम है तब तक सच्ची एकता नहीं हो सकती।

अब मैं अपने मुसलमान साथियों या नेताओं से यह जानना चाहता हूँ कि उन लोगों ने पूर्वी बङ्गाल में जो कुछ किया है क्या वह उनके लिए अच्छा है? क्या वह नीचे उतरकर और मनुष्यता का धर्म छोड़कर राक्षसी काम से पाकिस्तानी राज्य की स्थापना कर सकते हैं? मालूम होता है बङ्गाल के राक्षसी काम से सदैव के लिए उन लोगों ने पाकिस्तान की जड़ पर कुठाराघात कर दिया। अपने ही हाथों से पाकिस्तान की कब्र खोद डाली।

मान लीजिए यही काम बहुमत प्रान्त के हिन्दू प्रजा ने किया होता तो जिन्ना साहब या अँगरेजी राज्य योंही शान्त रहते? तमाम तरह के आरोप लगाये जाते। दुनिया में तरह तरह की मनोकल्पनाएँ रचकर कहानी सुनाई जाती। हिन्दुओं को अत्याचारी, पापी कहकर पुकारा जाता। लेकिन बङ्गाल की कृति पर लोगों नेता क्यों चुप हैं? अँगरेजी राज्य की न्यायप्रियता कहाँ छिप गई है? गवर्नर जनरल क्या कर रहे हैं? इतना भीषण दंगा होने के बाद भी बङ्गाल के बदनाम मंत्री अब तक क्यों शासन कर रहे हैं? न्याय की खातिर आहत प्रजा की पुकार अँगरेजी राज्य क्यों नहीं सुन रही है? जिन आततायियों ने इतनी क्रूरता की है क्या वह छोड़ दिये जायेंगे?

भारत की पराधीनता क्या नहीं करा सकती? न मालूम अँगरेजी राज्य में अभी कितनी मुसीबतें सहनी होंगी? यह केवल मुसलमानों का ही काम नहीं है बल्कि इसमें अँगरेजों का भी दिमाग लगा हुआ प्रतीत होता है। यदि वे इन्साफपसन्द हैं तो पूर्वी बङ्गाल की घटना पर सही निर्णय करके वहाँ की प्रान्तीय सरकार को तुरन्त क्यों नहीं सजा देते?

महात्मा जी का दिल रोता है। अकेले क्या कर सकते हैं? वे अपने भाइयों से पूछते हैं—भाइयो तुम इस भूमि में और हमारा भाई कलकत्ता में फिर इतना क्रूर व्यवहार अपने बहनों और माताओं के साथ क्यों? इसके लिए वह भाई भाई में सौहार्द्र पैदा करने के लिये पूर्वी बंगाल का दौरा कर रहे हैं।

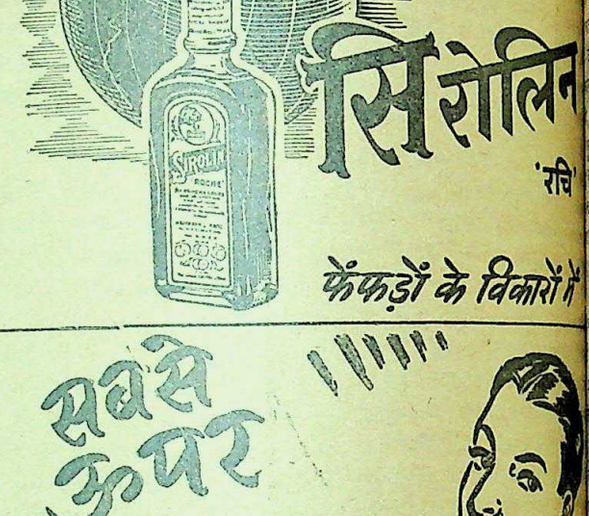

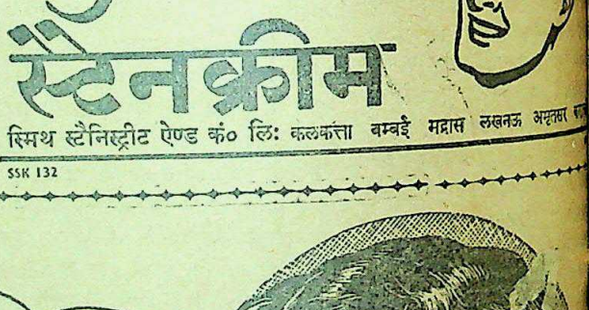

उस खांसी को रोक दीजिये

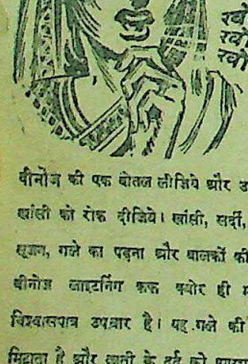

बीनोज की एक बोतल लीजिये और उस अविराम खांसी को रोक दीजिये। खांसी, सर्दी, फेंफड़ों की सूजन, गले का पड़ना और बालकों की खांसी का बीनोज लाइटनिंग कफ क्योर ही मान्यवर से विश्वासपात्र उपचार है। यह गले की खराश को मिटाता है और छाती के दर्द को आराम देता है।

क्योंकि रेक्सोना सक्रिय रूप से त्वचा के स्वास्थ्य को

रेक्सोना एक पारिवारिक साबुन

परिवार रेक्सोना के विशिष्ट गुणों की [illegible] चर्म-सौन्दर्य [illegible] के कारण प्रशंसा [illegible] रूप स्वस्थ त्वचा के [illegible] कारण। बालकों [illegible] लोना से श्रेष्ठ [illegible] जन्म नहीं है, [illegible] झाग [illegible] और [illegible]

★ रेक्सोना में मिश्रित कैसिल विरोधी पोषक तेलों का विशिष्ट रसायन त्वचा के स्वास्थ्य पर शक्तिशाली प्रभाव

रेक्सोना मरहम का प्रयोग कीजिए जख्म के और रगड़ के घावों, खुजली, हुँहासों, फफोलों, दाद, मसों, तथा अन्य सभी त्वचा की [illegible] पर रेक्सोना मरहम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

...विधान और खद्दर

(श्री संपादक 'देशदूत')

...के प्रवाह के साथ मनुष्य भी ...होता है। सन् १९२० ईसवी से ...के अन्दर गांधी-युग आरम्भ हुआ। ...के कार्यक्रम और योजनाएँ सभी ...की मौलिकता में रँग गईं। जो ...दादा भाई और सर ह्यूम जैसे ...के समय में थी वह बिलकुल ...नवीन युग आरम्भ हुआ। ...भारतीयों को नौकरी दिलाने ...से स्थापित हुई थी वही ...नौकरियों का बहिष्कार करने ...दफ्तर और सरकारी सहयोग ...की दृष्टि से देखा जाने लगा। ...यहीं तक सीमित नहीं था— ...कालेज और विश्व-विद्यालयों के ...ने अपनी अपनी पढ़ाइयाँ भी छोड़ ...तो ब्रिटिश सरकार के प्रति रुष्टता ...के अतिरिक्त ब्रिटिश जनता से भी ...शुरू हुआ। विदेशी माल का ...बहिष्कार; इसके प्रतिकूल विदेशों ...द्वन्द्विता में स्वदेशी आन्दोलन की ...ओर पकड़ा। परन्तु, उन आन्दो-...साधारण जनता का लाभ नहीं हुआ। ...पूँजीपति मिल-मालिक बनकर उस ...आन्दोलन का लाभ उठाने लगे। ...को इसका परिणाम मालूम हुआ। ...चरखे का आश्रय लिया और कांग्रेस ...में खादी के लिए एक धारा ...दी। राष्ट्रीयता और आर्थिक दृष्टि ...का महत्व अधिक था इससे ...धारा जोड़ना उस समय बहुत ...था। उस धारा से यह स्पष्ट हो ...कि राष्ट्र की यह संस्था देश के ...और निम्न वर्ग के लोगों के उत्थान ...के लिए कितनी चिन्तित है। ...उद्योग-धन्धों का पुनरुत्थान प्रारम्भ ...समय बीतता गया, देश उत्थान ...बढ़ता गया। आज देश ऐसी ...है कि सारे भारत में अपनी ...स्थापित हो गई है। हम जिन ...बहिष्कार करते थे उन्हीं चीजों ...रहे हैं। अतः अब कांग्रेस के ...खद्दर को हटाने की ओर भी ...आकर्षित हुआ है।

...का विचार है कि कांग्रेस को ...के लिए चरखा और खद्दर का ...अन्तर्गत रहना बहुत आवश्यक ...यह धारा निकल जायगी तो ...बड़े-बड़े पूँजीपति तथा अन्य ...अधिकार कर लेंगे। इसके ...के जन-साधारण की आय को ...लगेगा। घरेलू उद्योग-धन्धों ...के मार्ग बन्द हो जायँगे। इस ...हम छोटे-छोटे आदमियों के ...सकते हैं। यदि यह धारा निकल ...कांग्रेस भी नरमदल जैसी ...जायगी। हमारी समझ में यह ...युद्ध के पूर्व तक तो बहुत ठीक ...युद्ध ने पिछली स्थिति को ...दिया है। चरखा चलानेवाले ...आज कठिनता से २५ ...

की बदौलत ७५)—१००)—२००) रुपये तक कमा सकते हैं। फिर यह कहना ठीक नहीं कि छोटे आदमियों की आय कम हो जायगी या वह दाने-दाने को मुहताज हो जायँगे। आगे प्रश्न हो सकता है कि कातने और बुननेवालों के लिए इतनी नौकरियाँ कहाँ हैं जिनमें सबकी पूरी खपत हो जाय? स्त्रियाँ भी तो कातती हैं? उनको मिलों में स्थान कहाँ? इसके लिए क्या इतनी बड़ी मजदूर जन-संख्या को जो कात-बुनकर १६० करोड़ गज कपड़ा साल भर में तैयार करता है भूखों मारा जायगा? इसके लिए यह नहीं कहा जाता कि कातने और बुननेवाले अपना कार्य बन्द कर दें। उनके तैयार किये हुए कपड़े की देश के बाहर भी खपत है। विशेष बात तो यह है कि इस युद्ध में भारतीय सूती माल का निर्यात विदेशों में खूब किया गया है। आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, हिन्द महासागर के पूर्वी द्वीपसमूह, दक्षिणी अफ्रीका के सारे देश से लेकर उत्तरी अफ्रीका के मिस्र तथा एशिया के अरब, फारस, सीरिया, टर्की, ईराक, लेबनान और अन्य देशों में भारतीय सूती माल के बाजार स्थापित हो गये हैं। उधर जापान के पराजित हो जाने से पूर्वी एशिया में भी भारतीय माल के बाजारों की संख्या काफी बढ़ गई है। इन सब देशों और स्वदेश को यदि भारतीय चरखे और करघे कपड़े पहुँचाने की जिम्मेदारी लेना चाहें तो असम्भव है। इसके विपरीत अब ब्रिटेन और जापान युद्ध से मुक्त हो गये हैं इससे उनके सामान इन देशों में ही नहीं वरन् भारत को भी अपना बाजार बना लेंगे। फिर, जो भी उन्नति इस युद्ध में भारतीय सूती माल की हुई है उसका अन्त हो जायगा। सस्ते माल बिकने लगेंगे इससे देश के सूती माल के उद्योग-धन्धे को ऐसा धक्का लगेगा कि फिर शायद वह पनप न सके। लाखों आदमी बेकार हो जायँगे। रोजी की समस्या के लिए उन्हें परेशान होना पड़ेगा। अन्तर्कालीन सरकार (जिसमें कांग्रेस भी शामिल है) ने देश में १२५ कपड़े की नई मिलों के खोलने का निश्चय किया है। यह कदम ठीक उठाया जा रहा है; परन्तु मद्रास और मध्य-प्रांत की सरकारों ने अपने यहाँ चरखे के लिए जितना उत्साह दिखलाया है उतना मिलों के लिए नहीं। इसका अर्थ यह होगा कि भारतीय सूती माल के बढ़ते हुए उद्योग-धन्धे और व्यवसाय को गहरा धक्का लगेगा। इन मिलों में कितने ही लाख आदमी काम में लग जायँगे। परन्तु जब तक हम स्वयं मिल से बने हुए वस्त्र और माल का उपयोग न करेंगे देश के इस उद्योग-धन्धे को प्रोत्साहन न मिलेगा। अतः यह आवश्यक है कि हम चरखे और करघे से तैयार कपड़ा और मिल के कपड़ा का समान आदर करें और उनके इस्तेमाल में भेद-भाव त्या... ...वन-...

कुछ ला... खादी के... पर क... ना... चँ...

मुस्लिम एकता की बड़ी आवश्यकता है। और चूँकि खादी इन्हीं दोनों जातियों की देन है अतः हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित करने में खादी से विशेष सहायता मिलती है। यदि खादी विधान से निकल जायगी तो हम हिन्दू और मुसलमानों की एकता का कार्य जिस सुचारु रूप से करते हैं न कर पायेंगे। परन्तु यह धारणा भी गलत है। हमारी राय में नेता जी ने विदेशों में जाकर आजाद हिन्द-फौज बिना किसी रचनात्मक कार्य के ही स्थापित कर दी। जो प्रेम आजाद हिन्द-सेना के सिपाहियों में है वह प्रेम यहाँ के कोरी और जुलाहों में कांग्रेसवाले आज तक न कर सके। यह भी तो कहा जा सकता है कि खेती भी हिन्दू-मुसलमान दोनों करते हैं फिर उनमें क्या हिन्दू-मुस्लिम एकता नहीं पैदा की जा सकती? ऐसे ही पेशे की दृष्टि से तमाम उदाहरण हैं जिनमें यह संगठन कायम किया जा सकता है। यदि कुछ कोरी और जुलाहों के लिए भोजन की समस्या हल करना है तो अन्य देश-सेवियों के लिए हमारे पास कौन से साधन हैं जिनमें हम उन्हें जुटा दें? इससे यदि हमारे देश में कल-कारखाने न खोले जायँगे तो हमारा व्यवसाय तो बन्द ही होगा साथ ही देश-सेवियों की एक बड़ी संख्या भूखों मरने लगेगी। अतः मिल से तैयार वस्त्रों की खपत हम अपने में करें तभी उन भाइयों की रोजी लग सकती है जो बेकार हैं। इससे खादी और मिल के वस्त्रों में कोई दुराव न होना चाहिए।

यह भी कहा जा सकता है कि खादी देश-प्रेमियों का बाना हैं। उससे हृदय में देशप्रेम की मात्रा बढ़ती है; परन्तु विदेशों में जो देश-प्रेमी भारत के लिए लड़े हैं अथवा लड़ रहे हैं क्या वे देश-प्रेमी नहीं? वे तो विदेशी माल को पूर्ण रूप से इस्तेमाल करते हैं। इसके अतिरिक्त आजाद हिन्द-सेना के सैनिक जिन्होंने मातृभूमि की आजादी के लिए अपने प्राणों का मोह त्याग दिया था विदेशी अथवा मिल के वस्त्र पहनकर लड़े हैं। आज भी उनमें देश-प्रेम कूट-कूटकर भरा है। क्या वह देश-प्रेमी नहीं? अतः इन सबको दृष्टि में रखकर जब हम सोचते हैं कि क्या खादी को कांग्रेस-विधान की एक प्रधान धारा बनाये रखना चाहिए तब हमें वर्तमान स्थिति और समाज की अवहेलना ही दिखलाई देती है। अतः यदि देश को उत्थान की ओर ले चलना है तो हमें खादी और मिल के वस्त्रों को समान रूप से उपयोग करना चाहिए। कांग्रेस-विधान से खादी का बन्धन अब हट जाना चाहिए यही आज के समय की पुकार है।

प्रयाग —दीनबन्धु पाठक

मुफ्त— घर बैठे आयुर्वैदिक, यूनानी हिकमत, होम्युपैथिक के इम्तहान देकर सार्टीफिकट प्राप्त करने के नियम मुफ्त मगवायें।

ओल्ड इण्डियन मैडिकल कालिज,
कोटगढ़ शिमला।

अपने दान्तों के लिये
गिब्स
डेन्टिफ्रिस का उपयोग
कीजिये क्योंकि...
योग्य पद्धतिसे (दाँत)
किड़ने का निवारण होता है

आप का डॉक्टर आप से कहेगा कि, खराब दाँत बहुतसे रोगों के मूल हैं। कोयला या अन्य कठिण पदार्थ से दाँत साफ़ करने की पुरानी पद्धति से प्रायः दाँतो को ख़ुरुचने का खतरा रहता है...खुरुचा हुआ दाँत जल्द किड़ जाता है। गिब्स डेन्टिफ्रिस खुरुचे जाने के बग़ैर सुरक्षापूर्वक-दाँत-साफ़ करने के लिये खासकर बनाया गया है। गिब्स डेन्टिफ्रिस-द्वारा योग्य पद्धति से (दाँत) साफ़ किया करें और अपने दाँतो को किड़े जाने से सुरक्षित रखें। गिब्स जन्तुनाशक एवं स्वाद में मधुर है और (वह) आप के दाँत सफ़ेद और सुरक्षित रख, साफ़ करता है।

Gibbs Dentifrice

गिब्स
अधिक समय चलता है और
दाम... ...जाए,

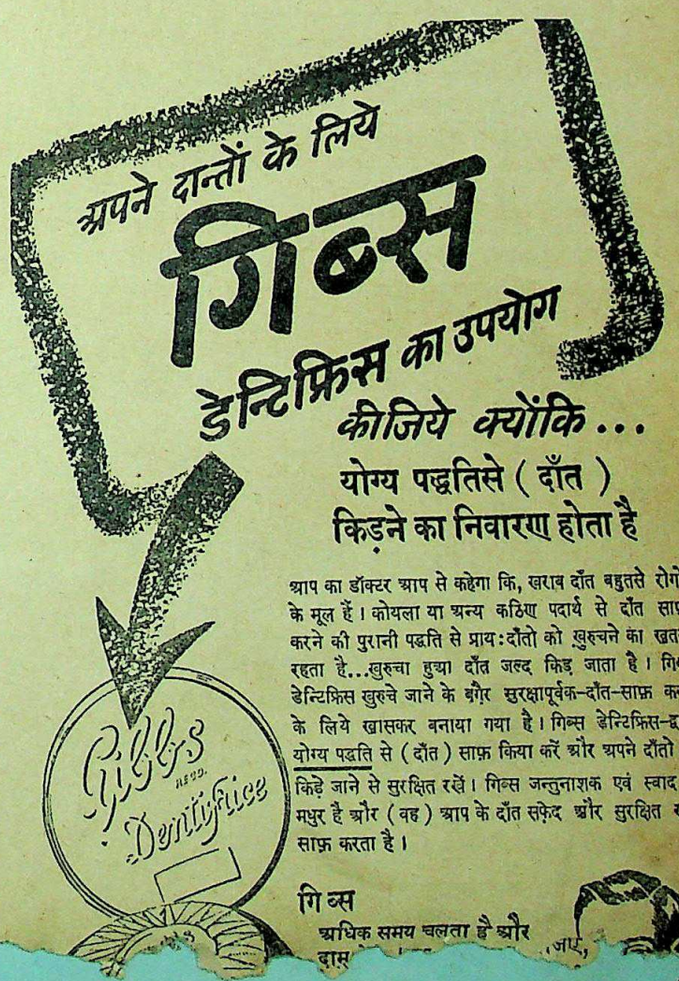

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

उदयपुर में तारीख ४ नवम्बर सन् १९४६ को सायंकाल साढ़े चार बजे 'मोहता औषधालय' में हिन्दी विद्यापीठ कुल, कार्यकारिणी और कार्यकर्ता सभा की सम्मिलित बैठक हुई। बैठक में श्री भगीरथजी ने औषधालय के गत वर्ष का विवरण पढ़कर सुनाया। औषधालय से १५,००० व्यक्तियों ने इलाज कराया और ८५००) रुपये खर्च हुए। इस समय औषधालय और रसायनशाला में २५,०००) रुपये की कीमत का सामान मौजूद है।

मोहता औषधालय और मोहता रसायनशाला के संचालक श्रीमान् सेठ श्री गोपालजी मोहता ने सभा को बतलाया कि इस औषधालय और रसायनशाला को किसी संस्था में मिला दिया जाय तभी यह सफल हो सकता है। अतः इस उद्देश्य से मैं इस औषधालय को हिन्दी-विद्यापीठ जैसी संस्था में मिलाये दे रहा हूँ। औषधालय और रसायनशाला में जो घटी होगी, मैं उसकी पूर्ति करूँगा। विद्यापीठ के प्रधान मन्त्री पं० जनार्दनराय जी नागर ने औषधालय को विद्यापीठ में मिला देने के लिए मोहताजी को धन्यवाद देते हुए कहा—यह औषधालय विद्यापीठ में एक संस्था की तरह विकसित होगा और जनता की सेवा में अधिक सचेष्ट रहेगा; साथ ही आयुर्वेद की उन्नति का अधिक प्रयत्न किया जायगा। मेवाड़ आयुर्वेदिक कालेज के प्रिन्सिपल श्री प्रेमशंकर जी ने मेवाड़ के वैद्यों से, इसमें पूरी सहायता देने की अपील की। राजपूत वैद्य-सभा के मन्त्री और मेवाड़ आयुर्वेदिक विभाग के अध्यक्ष श्री लक्ष्मी-नारायण जी ने भी मोहताजी की भूरि भूरि प्रशंसा की। —संवाददाता

* * *

इन्दौर में मध्य भारत की लगभग २० रियासतों के कार्यकर्ताओं की एक सभा में वर्किङ्ग कमेटी के सदस्य और प्रसिद्ध समाज-वादी नेता श्री जयप्रकाशनारायणजी और श्री द्वारिकाप्रसाद कचरू प्रधान मंत्री अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा-परिषद् पधारे। सभा में खिलचीपुर, दतिया, रीवाँ, भोपाल आदि रियासतों में जन-आन्दोलन को दबाने के लिए जो दमन किये जा रहे हैं उन पर प्रकाश डाला। इसके पश्चात् मध्य भारतीय लोक-परिषद् के अध्यक्ष श्री गोपीकृष्ण विजयवर्गीय ने लोक-परिषद् की प्रगति का इतिहास सुनाया। श्री कचरू ने कहा—विधान-परिषद् में रियासतों से जो प्रतिनिधि भेजे जायँ वे प्रजा के चुने हुए हों। यदि राजा लोग इस माँग को स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं तो संघर्ष होना अनिवार्य है।

मध्य भारतीय कार्यकर्ता शिक्षण-शिविर के संयोजक श्री कृष्णकान्तजी व्यास ने श्री जयप्रकाशनारायण से शिक्षण-शिविर का उद्घाटन करने की विनती की। सम्भवतः यह शिविर जनवरी के तृतीय सप्ताह में होगा और समाजवादी नेता श्री जयप्रकाश [illegible]

सहारनपुर महाविद्यालय, ज्वालापुर पूज्य मालवीय जी के स्वर्गवास का समा-चार पाते ही बन्द हो गया। सारे विद्यार्थी और आचार्य बड़े ही दुखी हुए। तारीख १३ को दोपहर २ बजे श्री पं० सत्यव्रत जी शास्त्री के सभापतित्व में शोक-सभा हुई, जिसमें सभी कुलवासी एकत्रित हुए तथा श्री स्वामी आनन्दप्रकाश जी तीर्थ, पं० काशीदत्त जी शर्मा, बाबू रामानन्द जी घोष बी० ए०, पं० चारननराम जी आदि वक्ताओं ने मालवीय जी के जीवन पर प्रकाश डाला। ईश्वर से प्रार्थना की गई कि उनको सद्गति दे। पं० गोविन्द मालवीय के पास संवेदना का तार भेजा गया। —संवाददाता

* * *

देवप्रयाग (गढ़वाल) में ७ नवम्बर को पंडा-पंचायत की एक आम सभा श्री दयाराम जी डंगवाल के सभापतित्व में हुई। सभा में पदाधिकारियों का चुनाव हुआ। सभापति श्री श्रीलाल थपलियाल, उपसभापति श्री धीरेन्द्रनाथ जी भट्ट, मंत्री श्री रामदयालु जी टोडरिया, उपमंत्री श्री नारायण जी, कोषाध्यक्ष सेठ शिवचरण जी चुने गये। एक दिन पहले ६ नवम्बर को श्री रघुनाथ ए० टीम और रघुनाथ सी० टीम का मैत्री फुटबाल टूर्नामेंट हुआ। उस टूर्नामेंट में रघुनाथ ए० टीम एक गोल से हार गई। —संवाददाता

सुलतानपुर राष्ट्रीय किसान-संघ खसरे का चुनाव इस प्रकार हुआ है—सभापति—पं० नरेश शुक्ल, उपसभापति—श्री रामसुमुख चौहान, मंत्री—श्री शिवप्रतापसिंह, उपमंत्री श्री छोटेलाल चौहान, आफिस-इंचार्ज श्री विन्धेश्वरीसिंह; श्री रामसुन्दर यादव और रामआसरेराम यादव संगठनकर्त्ता चुने गये हैं। —संवाददाता

* * *

फतेहपुर फारवर्ड ब्लाक के मन्त्री श्री दयाशङ्कर मिश्र 'सूर्य' इस वर्ष सरकार की ओर से गैर-सरकारी जेल-निरीक्षक नियुक्त हुए हैं। जिले के ग्राम मलाका में १० नवम्बर को कांग्रेस की एक विराट् सभा हुई जिसमें जिला-कांग्रेस-कमेटी के अध्यक्ष बाबू वंशगोपाल जी एम० एल० ए०, श्रीदयाशङ्कर मिश्र, श्री राजेन्द्रसहाय आदि नेताओं के भाषण हुए। सभा में किसानों ने ५१) की थैली भेंट की। श्री भगवतीप्रसाद द्विवेदी ने एक प्रीति-भोज दिया, जिसमें फतेहपुर देहात मंडल कांग्रेस-कमेटी के प्रधान मन्त्री श्री राजबहादुरसिंह और अध्यक्ष श्री गुरुप्रसाद पाण्डेय भी सम्मिलित थे। —संवाददाता

* * *

'गोलाघाट' हिन्दी-पुस्तकालय सन् १९४० ईसवी में स्थापित हुआ था। अगस्त-आन्दोलन के कारण यह पुस्तकालय बन्द हो गया था। अब पुनः [illegible] है। भारत के सभी [illegible] संस्था के उद्देश्य हैं। अँगरेजी, हिन्दी, अन्य भाषाओं के १६ समाचारपत्र हिन्दुस्तान, लोकमान्य, आसाम, देशदूत, हरिजन-सेवक, संसार, नवशक्ति, मासिक विशाल भारत, कर्मयोगी, कल्याण, उदय, माधुरी, आदि पत्र आते हैं। श्री नेमीचन्द्र बारी ने ३ कठा ६ लछा जमीन [illegible] है। पुस्तकों की संख्या ६०० है। भाषी इस संस्था से प्रयाग लाभ [illegible] हैं। राष्ट्रभाषा-प्रेमी सज्जनों से निवेदन कि इस संस्था में सहायता पहुँचाकर [illegible] प्रचार में हाथ बँटावें। —भगवतीप्रसाद

* * *

'बलिया' साहित्यसदन [illegible] बैठक हुई। जिसमें सभापति श्री [illegible] उपाध्याय जी के त्यागपत्र पर विचार किया गया। उनसे अनुरोध किया गया कि तक नया सभापति न चुना जाय, [illegible] कार्य को चलाते रहें। श्री [illegible] श्रीवास्तव प्रबन्ध-मन्त्री, श्री [illegible] उपाध्याय अर्थ-मन्त्री तथा पं० [illegible] उपाध्याय प्रचार-मन्त्री चुने गये। अतिरिक्त एक भोजपुरी साहित्य-[illegible] स्थापना करने का विचार यह [illegible] कर रहा है। —संवाद

GOVERNMENT OF INDIA

DISPOSALS

(SECTION ECS OF 3rd CATALOGUE)

Following types of stores are available for sale:

Electrical Machinery and Plant: Motors and Generators; Transformers and related equipment; Distribution and Control Apparatus; Batteries and Cells; Other electric appliances, including Refrigeration, Heating and Lighting equipment and fittings.

Electrical Wire, Cable and Fittings : Electric Wire—*(a) Domestic System (b) Transmission System;* Electric Cables; Electric Fittings—*(a) Domestic including lamps and fans (b) Transmission System.*

Bolts, Nuts, Rivets and Washers: Screws, etc.; Split Pins, etc.

Radio Equipment : Transmitters; Radio Parts excepting valves; Radio Valves; Radio Testing Sets; etc.

Searchlights, Floodlights and Signalling Lamps.

Full details giving description and condition of stores, quantity, location, etc. and the method of tendering are contained in Section ECS of the Third Catalogue which is available at Rs. 2/- on or about 20th November, 1946, from the addresses given below:

A. Regional Commissioner (Disposals) at

BOMBAY - Mercantile Chambers, Graham Road, Ballard Estate.

CALCUTTA - 6, Esplanade East.

LAHORE - G. P. O. Square, The Mall.

CAWNPORE-15/159, Civil Lines.

B. Dy. Regional Commissioner (Disposals) at

KARACHI - Variawa Building, McLeod Road.

MADRAS - United India Life Building, Esplanade.

C. All important Chambers of Commerce and Trade Associations.

काली त्वचा ४-६ अंश तक स्वच्छ हो गई

चर्म-सौन्दर्य बढ़ाने की आश्चर्यजनक [illegible]

कुरूप काली त्वचा से अपने सौन्दर्य को नष्ट न करें क्योंकि त्वचा की [illegible] तत्क्षण दूर करने की यह [illegible] तरल औषधि है। इससे नवीन [illegible] प्राप्त हो जाता है—वही कोमल [illegible] वर्ण जिसे प्रत्येक स्त्री चाहती है।

ह्वाइटेक्स की आज ही परीक्षा करें। देखें कि आपकी त्वचा कितनी [illegible] हो जाती है। आपके वर्ण "आपके [illegible] आपकी भुजाओं के लिए गौर मुख [illegible] ह्वाइटेक्स में चिपचिपाहट नहीं होती [illegible] त्वचा में सीधे प्रवेश कर जाती है। त्वचा को पोषती है।

ह्वाइटेक्स की एक बोतल का प्रयोग करके देखें। इसके परिणाम पर आपको [illegible] होगा।

वितरक: जी० अपरदत एण्ड कं० २८, अपोलो स्ट्रीट, बम्बई ४ मिशन रो, कलकत्ता

Whitex IS THE SAME

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...की रङ्गमञ्च

...दायिक तनातनी—पुलिस इन्स्पेक्टर जनरल की नई फुल-...—जमींदारी-प्रथा का उन्मूलन—हरिजनों में शिक्षा-प्रसार—...तथा म्युनिसिपल बोर्डों में परिवर्तन—प्रान्तीय किसान-संघ।

[...विशेष प्रतिनिधि द्वारा]

...के प्रान्त में साम्प्रदायिक दानवी ...ने इस प्रान्त के हिन्दू और ...दोनों को कलङ्कित कर दिया है। ...जिलों में विशेष तौर पर जो ...हिंसावृत्ति प्रदर्शित की गई है, वह ...का सम्मान बढ़ा सकती है ...हिन्दुत्व को ही ऊँचा उठा सकती ...मन्त्रिमंडल की अपूर्व सतर्कता ...है कि युक्तप्रांत में बिहार अथवा ...की पुनरावृत्ति न हुई।

* *

...पुट हमलों के समाचार लखनऊ ...प्रायः प्रत्येक नगर से आये ...प्रत्येक स्थान पर कड़ाई से काम ...। इलाहाबाद, बनारस आदि ...क्षेत्रों की भी घोषणा हो चुकी ...नगरों में काली और गोरी ...विशेष व्यवस्था कर दी गई है। ...की भी संख्या-वृद्धि हो गई है। ...नवीन शस्त्रास्त्र भी दे दिये गये ...क्षेत्रों में पुलिस को विशेष ...रहने को कहा गया है।

* *

...दमन-कार्य द्वारा ही नहीं, ...द्वारा भी मंत्रिमण्डल प्रान्त में ...कायम करने की चेष्टा कर रही ...किसान द्वारा ४५ लाख पर्चे प्रान्त ...गिराये गये हैं, जिनमें एकता और ...की अपील की गई है। प्रान्त ...सम्पादकों का एक सम्मेलन ...करके प्रधान मन्त्री एवं सूचना-...ने उनसे इस उद्देश्य में सहायक ...अपील की है। पत्र-सम्पादकों ने ...यह निश्चय किया है कि दंगों ...के प्रकाशन में यथेष्ट साव-...जाये तथा सनसनीखेज और ...समाचारों को यथाशक्ति रोका

* *

...के सभी विचारशील वर्ग जब ...के लिए निःस्वार्थ प्रयत्न कर रहे ...लीग उसका लाभ उठाकर ...की धुन में है। उसकी प्रान्तीय ...ने एक प्रस्ताव द्वारा माँग ...शान्ति-स्थापन तथा पत्र-संग्रह ...लीग का सहयोग प्राप्त करने के ...भी मन्त्रिमण्डल में लिया ...महीने पहले जब मौलाना ...आजाद ने चौधरी खलीकु-...प्रान्तीय मन्त्रिमण्डल में शामिल होने का निमन्त्रण दिया था, उस समय लीग ने उसे अस्वीकार कर दिया, था, पर आज तैयार हैं। परन्तु क्या इसी भाँति लीग बंगाल में भी कांग्रेस से मिल-कर संयुक्त मन्त्रिमण्डल बनाने के लिए प्रस्तुत है?

* * *

युक्तप्रान्त से विदा होने से पूर्व पुलिस के कुख्यात इंस्पेक्टर जेनरल फिलिप मीजर्स एक और फुलझड़ी छोड़े जा रहे हैं। आपने एक सर्क्यूलर द्वारा जिला पुलिस अधिकारियों को आदेश दिया है कि कांग्रेस-जनों को स्थानिक मामलों में हस्तक्षेप न करने दिया जाये और जिन मामलों में पुलिस किसी के विरुद्ध मुकदमा चला सकती हो, उनमें कांग्रेस-जनों द्वारा पञ्चायती फैसला न कराने दिया जाये। पुलिस का काम अपनी सतर्कता से अपराधों और मामले मुकदमों का कम करना है न कि उनकी संख्या बढ़ाना और यदि कोई मामला आपसी तौर पर ही सुलझता हो, तो मिस्टर फिलिप मीजर्स को क्यों दर्द होता है?

* * *

जमींदारी उन्मूलक समिति में भाषण करते हुए प्रधान मंत्री गोविन्दवल्लभ पन्त ने कहा है कि जमींदारी के नाश से स्वयं उस वर्ग का भी हितसाधन होगा, जो जमींदार कहलाता है। जमींदारों के नेता सर जगदीशप्रसाद का कहना है कि इससे किसानों की व्यापक हित-हानि होगी और पन्त जी यदि किसानों का हितसाधन करना चाहते हों, तो जमींदारी-प्रथा कायम रखें, अन्यथा किसानों की आर्थिक अवस्था बहुत बिगड़ जायेगी। जमींदारों ने एक नया नारा निकाला है, "जमींदार और किसान एक हैं।" आमीन !! यह तो वही हुआ, जैसे 'चर्चिल और नेहरू एक हैं।' पिछले सप्ताह उन्नाव तथा लखनऊ में सर जगदीश के उद्योग से दो जमींदार-सम्मेलन हुए, जिनमें कांग्रेस सरकार को धमकी दी गई कि यदि वह अपनी जमींदारी-विरोधी नीति पर अटल रही, तो प्रान्त के २२ लाख (!) जमींदार उसके विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह कर देंगे।

* * *

राजाओं और नवाबों के समवर्ग बन-कर बेचारे ठाकुर जी भी अपने भोग से वंचित होने जा रहे हैं। प्रान्त के अधिकांश मन्दिर तथा मठों का परिचालन उनमें लगी हुई धर्मार्थ प्रदत्त देवोत्तर अर्पित जमींदारियों द्वारा होता है। इन मन्दिरों के महन्तों का एक प्रतिनिधि दल सरकार के समक्ष अपनी भू-सम्पत्ति न छीने जाने की फरियाद लेकर आया था, किन्तु उसे कोरा लौटा दिया गया, परन्तु उसको यह आश्वासन अवश्य मिला है कि मन्दिरों की जमींदारी छिनने के बाद उनके परि-चालन की व्यवस्था का कुछ न कुछ उचित उपाय अवश्य किया जायगा।

* * *

हरिजनों में शिक्षा-प्रसार के लिए युक्तप्रान्तीय सरकार ने व्यापक कदम उठाया है, जिसके अन्तर्गत प्राथमिक शाला से लेकर यूनिवर्सिटी तक हरिजनों की शिक्षा निःशुल्क हो गई है। बल्कि प्राथ-मिक शालाओं में तो उन्हें कागज, कलम, दावात, पुस्तकें आदि भी सरकारी व्यय पर मिलेंगी। सरकार ने इसके लिए बजट में यथेष्ट धन रखा है।

* * *

जिला बोर्डों तथा म्युनिसिपल शासन में भी अभूतपूर्व परिवर्तन होने जा रहा है। इस सम्बन्ध में एक बिल एसेम्बली के आगामी अधिवेशन में आ रहा है और अप्रैल में नये विधान के अन्तर्गत स्थानिक बोर्ड संघटित हो जायँगे। जिला बोर्डों की सदस्य-संख्या बढ़ जायगी। किसी भी बोर्ड में ४० से कम और ६० से अधिक सदस्य न होंगे। औसतन प्रायः २०,००० की जनसंख्या को बोर्ड में एक प्रतिनिधि भेजने का अधिकार मिल जायेगा। जिला बोर्डों के अधिकार भी बढ़ा दिये जायेंगे। नये चुनाव के लिए नई वोटर लिस्टें बनाने का आदेश जिला-अधिकारियों को दे दिया गया है।

* * *

चोरबाजारी के विरुद्ध प्रान्त में एक भारी मामला चलने जा रहा है, जिसमें कम से कम १,००० अभियुक्त ही होंगे। यह लोहे और इस्पात की चोरबाजारी का मामला होगा और इसमें अनेक करोड़-पति व्यवसायियों, दलालों, दूकानदारों तथा सरकारी अफसरों के फँसने की सम्भावना है। इसके मुख्य अभियुक्तों में लोहे के उपकण्ट्रोलर श्री चारी भी हैं, जो आज-कल फरार बताये जाते हैं। मामला सम्भवतः कानपुर में चलेगा और उसके लिए विशेष अदालत बनाई जायेगी।

* * *

प्रान्तीय किसान-संघ ने निर्णय किया है कि प्रत्येक जिले में किसानों की वृद्ध रैलियाँ की जायें, जहाँ सरकार से अनुरोध किया जाये कि देहातों में नये चरागाह बनाये जायें, गन्ने की कीमत बढ़ाई जाये, बेदखल किसानों की भूमि वापस की जाये तथा एक किसान के लिए अधिकाधिक ५० एकड़ की खेती निर्धारित कर दी जाये। अन्तिम माँग का कारण यह बताया जाता है कि जमींदार लोग किसानों की ... मि...

Learn yoga
MESMERISM
& HYPNOTISM

...पुरुषों के लिए अपने घर पर उपर्युक्त क्रिया ... प्रसन्नता के लिए आनन्ददायिनी प्राण... के लिए मुफ़्त! कृपा कर शीघ्र लिखें।

उदर वायु ?

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर की व्यापक ख्याति अम्लता, उदर-वायु, हृदय-दाह, पेट दर्द, वमन, पित्त-प्रकोप तथा पाचन-सम्बन्धी शिकायतों से पैदा होने-वाले अन्य रोगों में प्रभावशाली होने की मान्य प्रमाण है।

उदर-विकारों से उत्पन्न सिरदर्द, उदासी, अनिद्रा और हृदय की तीव्र धड़-कन में भी यह अमूल्य है।

यदि आप इनमें से किसी कष्टकारी रोग से पीड़ित हैं तो आज ही कुछ मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर लीजिए और इस प्रसिद्ध औषधि की शीघ्र सांत्वना का स्वयमेव अनुभव कीजिए।

मेकलीन ब्रांड स्टमक पाउडर माँगते समय "एलेक्स सी० मेकलीन" के हस्ताक्षर पहचान लीजिए क्योंकि असली यही है।

मेकलिन ब्रांड स्टमक पाउडर सेवन कीजिए

मुफ़्त. मुफ़्त.

बेस्टोजेम

श्रेष्ठ बलवर्द्धक टानिक

स्वास्थ्य, शक्ति और सजीवता के लिए बेस्टोजेम एक बढ़िया टानिक (शक्तिवर्द्धक औषध) है। यह महान् शक्तिवर्द्धक और स्फूर्तिदायक आश्चर्यजनक टानिक मानव-शरीर पर बिजली के करेण्ट की चिनगारी की तरह असर करता है। **बेस्टोजेम** किसी भी स्त्री या पुरुष को उसकी यथार्थ उम्र से २० से २५ साल तक कम उम्र का बना देता है। इससे अच्छी भूख लगने लगती और एक सप्ताह में ही ३ से ५ पौंड तक वजन बढ़ जाता है। समस्त भारत में बेस्टोजेम को लोकप्रिय बनाने की गरज से, प्रत्येक नगर के उन कुछ पहले खरीदारों को कृष्णा फाउण्टेनपेन (इंग्लिश मेक) उपहार के रूप में मुफ्त भेजा जायगा, जो हमारे इश्तहार दवा के साथ अपने नगर में हमारी हिदायतों के माफिक बाँटेंगे ताकि बेस्टोजेम लोकप्रिय हो जाये। कीमत प्रतिशीशी सिर्फ ५) रु० है। पहले ग्राहक बनने के लिए कृपया आज ही लिखिए।

नोट :—दवा छुड़ाने के पहले वी० पी० पार्सल पर कृपया 'पहले ग्राहक'—यह ... लीजिए,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आज आपने मेक-लिन से दाँत साफ किए हैं ?

हाँ, यही उचित तरीका है

सभी केमिस्टों के पास व स्टोरों में मिलता है

Copyright JWT(E)LTD.

"उनके पास क्या है, जो हमारे पास नहीं है ?"

क्यों! बिल्क्रीम है न!

अपने आसपास देखिये और उन व्यक्तियों का पता लगाइये जो ब्रिल्क्रीम प्रयोग में लाते हैं। स्वच्छ एवं स्वस्थ बालों से उनका पता आसानी से लग सकता है। ब्रिल्क्रीम बालों को अपने स्थान पर रखता है और उन्हें सुन्दर चमक देता है।

आज ही एक बोतल खरीदिये

जयप्रकाश ... क्रीम

शपट लोशन
दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.
शपट अँड्रू कं. लि.
बम्बई नं. २

केवल सात रुपये में छः घड़ियाँ

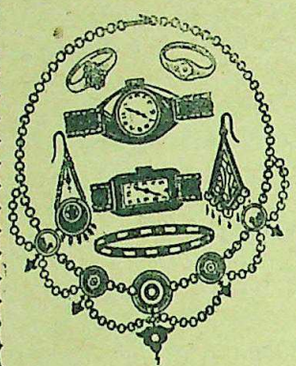

३ अदद डमीरिस्टवाच
३ अदद म्यूटरिस्टवाच
एक अदद फैन्सी रुमाल,
एक अदद १९४७ का विशेष उपहार तथा अन्य २५ विशेष एवं सुन्दर उपहार

हमने अमरीकन न्यू गोल्ड के आभूषणों को प्रसिद्ध करने के लिए अपनी कम्पनी की वर्षगाँठ की खुशी में ४ जोड़ी चूड़ियाँ डायमैण्ड कट, २ अदद अँगूठी बम्बई फैशन, एक जोड़ी कान के बुन्दे, एक अदद गले का लाकेट चेन, एक अदद फैन्सी रुमाल, एक अदद १९४७ का विशेष उपहार तथा अन्य २५ सुन्दर उपहारों का पूरा बक्स, केवल सात रुपये में देने का निर्णय किया है। डाक-व्यय तथा पैकिंग व्यय १।-) पृथक होगा। शीघ्रता करें अन्यथा पछताना पड़ेगा। नापन्द होने पर मूल्य वापस।

दी. क्रिस्टल कमर्शियल कम्पनी (D. A.) बटाला (पंजाब)

स्वाद में परिपूर्ण
त्वरित पाचन-योग्य
विशुद्ध
विटैमिन-युक्त

डालडा में तली हुई पूरीयाँ आप के मूँह में आसानी से घुल जाती हैं—और स्फूर्ति भी देती हैं!

डालडा आपका भोजन स्वादिष्ट करता है और इस के अतिरिक्त वह आप का स्फूर्ति-दायक अन्न है! आप के दैनिक आहार को प्रसिद्ध पौष्टिक गुणवाले इस त्वरित् पाचनयोग्य, विटैमिन्-युक्त रसोई-साधन-द्वारा सुधारिये। डालडा प्रत्येक गृहिणी के लिये एक देन है—वह उसके साधी रसोई को भी अपनी स्वादिष्ट मधुरता से परीपूर्ण करके, उसके परिवार को अधिक शक्ति प्रदान करता है।

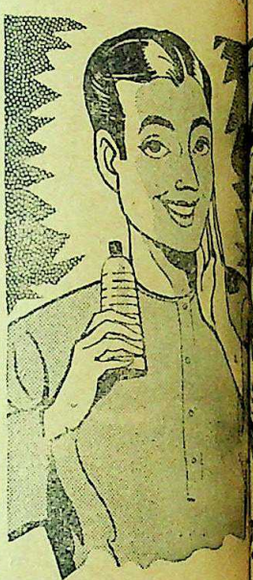

अपने आपको शीतल रखो

टाटा का ओ-डी-कोलोन दिन दिन पुरुषों के लिए नहाने के समय नहाने के पश्चात् के प्रयोग की आवश्यक वस्तु बन रही है। इसको नीचे दी विधियों से प्रयोग में लाइये और देखिये कि कैसे यह गर्मी से छुटकारा दिलाकर ठण्डक पहुँचा देगा।

(१) प्रातः नहाने के पानी में कुछ बूँदें डाल दीजिये—इससे पानी सुगन्धित हो जायेगा।

(२) दाढ़ी बनाने के पश्चात् और कपड़े पहनते समय अपने शरीर पर लगाइये। इसकी बर्फीली ठंडक आपका श्रमापहार करेगी। अपनी रूमाल को इससे सुगन्धित कर लीजिये।

(३) दफ्तर में कठिन काम सँभालते समय अपने माथे को ठंढक पहुँचाने के लिए एक शीशी अपने मेज़ पर रख लीजिये।

(४) यात्रा करते समय टाटा का ओ-डी-कोलोन पास रख लीजिये। यह आपकी थकावट को दूर करने और आप को स्वच्छ रखने में सहायता देगा।

सदैव अच्छा साथी

टाटा का

ओ डी कोलोन

टाटा आयल मिल्स कं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...र, २४ नवम्बर, १९४६

...ादूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
price 2 Annas

...ाहिक Sunday, 8th December, 1946

बिक्री

दूसरी सूची का नं० एम एम एच

...इस्पात की सारी चीज़ें जिनका उल्लेख उपरोक्त ... में ... स्टील कण्ट्रोलर को बिक्री के लिए दी जा रही हैं। अब ... तथा स्टील कण्ट्रोलर कण्ट्रोलशुदा लोहे और ... सरकारी सामान की बिक्री के अधिकारी

...रेक्टरेट जनरल आफ डिस्पोजल्स
शाहजहाँ रोड, नई दिल्ली

DGD

AC 168

गम-डिप्ड

...यरों को अवश्य खरीदिए

- क्यों कि लम्बी यात्रा
- मोटर चलने की सुरक्षा
- मोटर चलाने की परेशानियों से ये टायर मुक्त हैं।

Firestone

फायरस्टोन

एक मात्र गोंद में डुबाये टायर हैं।

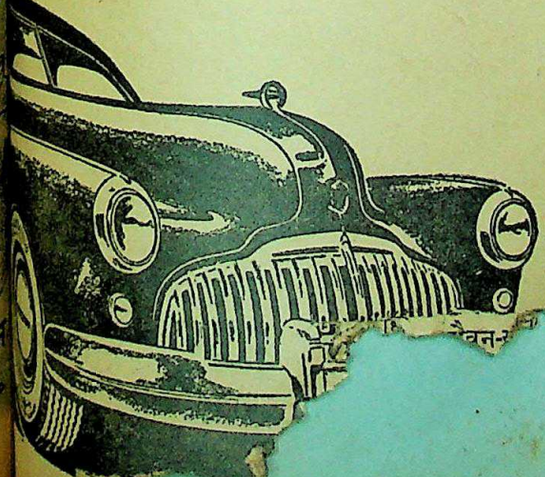

बाहरी सजावट ...

हमारी सिफ़ारिश : कम ... के लिए निम्न उत्तम श्रेणी के पेण्ट मिलते ... "१ छाता" (1 Umbrella) "२ छाता" (2 Umbrella) और "३ छाता" (3 Umbrella) प्रस्तुत पेण्ट। "छाता" (Umbrella) वारनिश वारनिश फिनिश के वास्ते।

"छाता" (Umbrella) वारनिश पेण्ट धातु या लकड़ी की छोटी चीज़ों के लिए जल्दी सूखनेवाला बहुत चमकीला।

JENSON & NICHOLSON

MAKERS OF PAINTS

हिन्दी में

अभूतपूर्व क्रान्तिकारी साहित्य

नेता जी श्री सुभाषचन्द्र बोस-सम्बन्धी प्रसिद्ध हिन्दी साप्ताहिक

'अभ्युदय'

के पाँच विशेषांक जिन्होंने भारत भर में हलचल मचा ...

पहला, दूसरा, तीसरा और चौथा विशेष... रुपया।

पाँचवाँ विशेषांक, जिसमें जियाउद्दीन के भे... अलभ्य चित्र भी उत्तमचन्द्र द्वारा लिखित उनके ... कहानी पूरी की पूरी, १०० से ऊपर अनमोल चित्र ... कवर पर माता भवानी द्वारा नेता जी को तलवार प्रदान क... चित्र है—तीन रुपया मात्र।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आज आपने मेक-लिन से दाँत साफ किए हैं ?

शप लो

दाद, खाज और खुजली की अनूपम

... ना" की मालिश कीजिए।
इसकी मालिश से ... प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है।
कीमत १ शीशी ३=), दो शीशी ५॥=) डाक-खर्च माफ़ पैकिंग खर्च अलग।
रूप विलास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

सावधानी से बचत बढ़ाइए

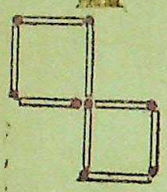

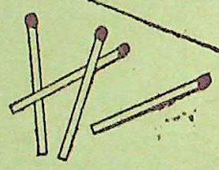

प्रश्न : दिया सलाई की चार तीलियों की सहायता से दो समकोण चर्तुभुजों को चार में पलटिए

उत्तर : इन चार तीलियों को ऐसे रखिये जैसे आकृति में दिखाया गया है।

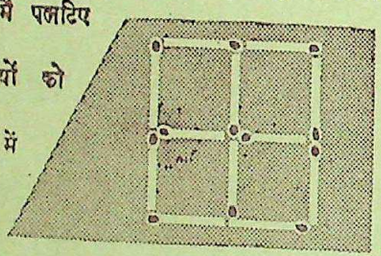

दियासलाई की चार तीलियों को उचित ढंग से रख कर इन से आठ तीलियों का काम लिया जा सकता है। इसी प्रकार यदि आप अपनी बचत को उचित ढंग से प्रयोग में लगाना जानते हैं तो गृहस्थी में अपनी आय से आप अधिक से अधिक लाभ उठा सकते हैं। नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिए। छोटी पूंजी वालों के हित के लिए ही यह मद प्रचलित की गई है।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

(१) आप ५, १०, ५०, १००, ५००, ...०००, रु० के मूल्य के ... सकते हैं।

अपने आसपास देखिये और उन व्यक्ति या का पता लगाइये जो ब्रिल्क्रीम प्रयोफ़िकेट्स लाते हैं। स्वच्छ एवं स्वस्थ ... १०,००० उनका पता आसानी से लग द सकते हैं। ब्रिल्क्रीम वालों को अपने स्थूल्य ५०% बढ़ है और उन्हें सुन्दर चमक ...॥) बन जाता है।

आज ही एक ... लगाने की मदों ... जाता है ... से जयप्रकाश ...

(४) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(५) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष पश्चात भी भुनाया जा सकता है)

(६) जिनकी बचत थोड़ी है वह १), ॥), ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं, ५ रु० के स्टाम्प्स जमा होने पर एक नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट मिल जायेगा।

(७) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकृत ...

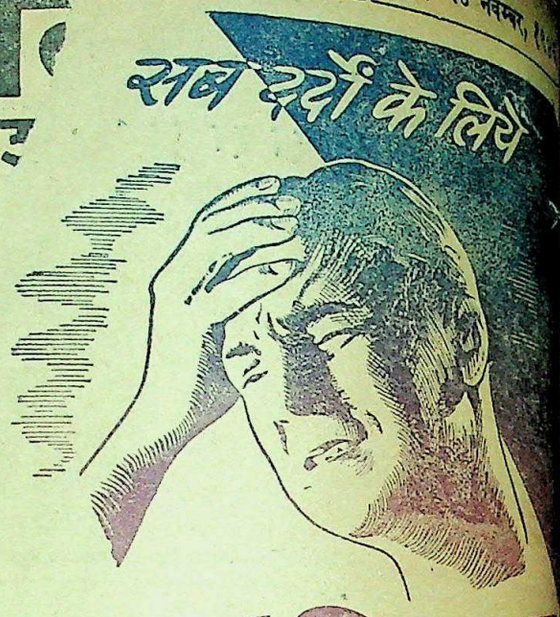
सब दर्दों के लिये

सारिडन

१० मिनट में अच्छा करता है

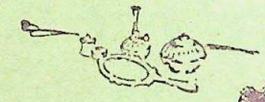

बनमाला
आप से कहती है कि,
लक्स
सौंदर्य साबुन ही
उस का निजी सौंदर्य का
कैसा सहज एवं
सरल उपाय है

मैं लक्स सौंदर्य साबुन का काफ़ी झाग बनाती हूँ और सौम्यता से त्वचा पर थपकती हूँ...

पश्चात् मैं साफ़सुथरे और शीतल पानी से धो डालती हूँ...

किस्म स्टार्स यह जानती हैं कि, लक्स सौंदर्य साबुन उन की त्वचा को निर्मल एवं पंखड़ी के समान कोमल बनाता है, वे उसपर निर्भर रहती हैं—उस का सौम्य और सरल झाग प्रत्येक त्वचा-रंध्रों में प्रवेश कर, रजःकण एवं अशुद्धता से ... कर देता है। आप स्वयं बनमाला के सहज सौंदर्य-साधन का ३० दिनों ... अनुभव कीजिये—आप उस के ... शुभिकारक गुणों से हर्षित

अन्त में मैं सौम्यता से अपना मुख नरम तौलिये से पोंछ लेती हूँ

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
price 2 Annas

८ दिसम्बर, १९४६ सचित्र हिन्दी साप्ताहिक Sunday, 8th December, 194

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुकाम सर्दीपर अक्सीर दवाय

आरोंदा

१८६६

नीलगिरि तेल

प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

सबसे ऊपर

स्टैनक्रीम

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं० लि: कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ अमृतसर कराची

SSK 132

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयां—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें ।

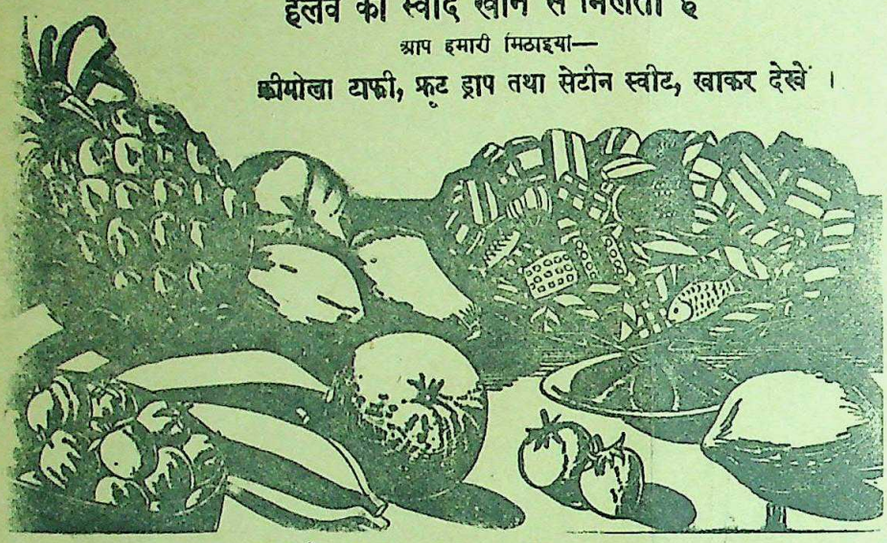

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद ।

रेक्सोना अर्थात्

चर्म-स्वास्थ्य

...स्वस्थ त्वचा

अर्थात् सौन्दर्य

चर्म-स्वास्थ्य यह मनोहर त्वचा का रहस्य है, और आप अपनी त्वचा आरोग्य-रहित हो तो, सौन्दर्य प्राप्त नहीं कर सकते। यहां वही रेक्सोना का विपुल शीघ्रोत्पादक झाग है से कैडील-[illegible] है, उसको (त्वचा को) शांति प्रदान करता है और सुंदर बनाता है। इस में लेशमात्र भी शंका नहीं कि, चर्म-स्वास्थ्य त्वचा-माधुर्य (सौन्दर्य) की नींव है, और उक्त रेक्सोना का औ[illegible] (मिश्रित) [illegible] की वृद्धि [illegible] रेक्सोना के कैडील की सम्पत्ति है, वह (कैडील) चर्म-स्वास्थ्य बनाये रखता है।

बच्चों के लिये रेक्सोना : रेक्सोना का संरक्षक

ज्वर, कमजोरी, सूतिका, वात के लिये
मृतसंजीवनी सुधा
रक्तप्रदर, मासिक धर्म की खराबी और जरायु की हरतरह की बीमारी के लिये
अशोकारिष्ट
खुजली, बिखाज, घाव, खून की खराबी, प्रमेह, श्वेतप्रदर और हरतरह चर्म रोग के लिये
सारिबाद्यासव

ढाका आयुर्वेदीय फार्मेसी लि.

युक्तप्रांत की शाखाएँ—

बनारस—दशाश्वमेध घाट और नीचीबाग, इलाहाबाद, कानपुर, आगरा, जौनपुर, गाजीपुर, बलिया, गोरखपुर, लखनऊ, वृन्दावन, गोंडा, बरेली, मिर्जापुर, पौड़ी, बाद, अलीगढ़, दिलदारनगर, आजमगढ़, बहराइच, जमानिया, सीतापुर, बस्ती, [illegible]रिया, पडरौना, सकलडीहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

संख्या १५] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, ८ दिसम्बर, १९४६

सप्ताह के समाचार

...र पेथिक लारेंस लंदन ...नेताओं से मिल कर ...सुलझा रहे हैं।

...लन्दन में

...के साथ पण्डित जवाहर-...सरदार बलदेवसिंह, मिस्टर ...लियामतअली खाँ लन्दन ...वायुयान से रवाना हुए थे। ...राजधानी बलेट्टा में वायु-...खराब हो जाने से उन्हें ...प्रधान मन्त्री मिस्टर एटली ...के स्वागत में एक ...का आयोजन किया था। ...समय से नहीं पहुँचे इस-...भोज स्थगित कर देना ...दिसम्बर को दोपहर २ ...पर (भारतीय समय) ...अड्डे पर उतरे।

* *

...लन्दन पहुँचने के कुछ ...तथा भारतीय नेता ...पर विचार करने के लिए ...मन्त्री तथा मन्त्रिदल के ...करने में जुट गये। ...लन्दन तक वायसराय ...फिर भी वह कार्य में ...प्रधान मन्त्री के पास ...उसी समय उन्होंने ...वार्ता आरम्भ कर दी ...ने कांग्रेस के नेता और ...के उपाध्यक्ष पंडित जवा-...निजी तौर पर बात-

*

...सरदार बल्देवसिंह ...एटली से मिले। ...मिस्टर लियाकत अली ...सदस्य मिस्टर अले-...हैं। इस बीच में ...नेताओं की सभी ...समझ रही है। मिस्टर ...लियाकत अली खाँ ...तथा अन्य ब्रिटिश ...हैं। प्रधान मंत्री इस ...करने के प्रयत्न में ...जवाहरलाल नेहरू ९ ...परिषद् का उद्घाटन

*

...क्षेत्र

विधान-परिषद् का अधिवेशन

विधान-परिषद् की प्रथम बैठक ९ दिसम्बर को दिल्ली में हो रही है। परिषद् के कांग्रेसी सदस्य दिल्ली पहुँच रहे हैं। उनके निवास तथा भोजन आदि का प्रबन्ध हो चुका है। कांग्रेस नेता भी इस समय दिल्ली में एकत्रित हो गये हैं। विधान-सम्मेलन के प्रथम दिन के अधिवेशन के सभापति के लिए बिहार के डाक्टर सच्चिदानंद सिनहा निमंत्रित किये जा चुके हैं!

* * *

भारत की शानदार जीत

संयुक्तराष्ट्र-संघ के भारतीय प्रतिनिधि दल को दक्षिण अफ्रीका के प्रश्न पर शानदार विजय प्राप्त हुई। संयुक्तराष्ट्र-संघ की राजनीतिक और कानूनी समितियों ने ३० नवम्बर को भारी बहुमत से दक्षिण

ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री मिस्टर एटली ने भारतीय नेताओं से लंदन में वार्ता किया।

अफ्रीका की सरकार के इस मत को मानने से इनकार किया कि जिस कानून का सम्बन्ध राज्य के आन्तरिक मामलों से हो उस पर संयुक्तराष्ट्र-संघ को विचार करने का अधिकार नहीं है। समितियों ने निर्णय किया है कि भारतीयों और दूसरे एशिया-वासियों के विरुद्ध दक्षिणी अफ्रीका की सरकार ने जो कानून बनाया है उसके द्वारा उसने मानव-अधिकारों को भङ्ग किया है।

* * *

कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक

कांग्रेस वर्किंग कमेटी की आवश्यक बैठक ८ दिसम्बर से दिल्ली में आरम्भ होगी और बाद के कई दिनों तक चलेगी। वर्किंग कमेटी के सदस्यों के अतिरिक्त कुमारी मृदुला साराभाई, डा० पट्टाभि सीतारमैया, डा० प्रफुल्ल घोष, पं० गोविन्दवल्लभ पन्त, श्री जयरामदास दौलत राम, मि० फकरुद्दीन अहमद तथा बाल-कृष्ण केसकर भी निमन्त्रित किये गये हैं।

* * *

भारतीय समस्या पर नेहरू जी

लन्दन में रायटर के राजनीतिक संवाददाता से बातें करते हुए पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि भारतीयों की समस्याएँ चाहे जो भी हों उन्हें तो हल कर ही लेना चाहिए। उनके हल करने का रास्ता शान्तिमय तथा सहयोग की भावना से पूर्ण होना चाहिए फिर चाहे वे एक दूसरे से कितना ही मतभेद क्यों न रखते हों। हमें अपना काम सहयोग की भावना तथा सहिष्णुता से

लन्दन में पंडित जवाहरलाल नेहरू और मिस्टर जिन्ना

प्रभात-गीत

लेखक, श्री आरसीप्रसादसिंह

पंछीगण चहक उठे, पूरब में फटी पौ!

मन्द-मन्द बात ...

...यौवन-...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय पृष्ठ

दक्षिणी अफ्रीका

यह आशा की जाती थी कि संसार के राष्ट्र अपने पिछले दिनों को न भूलें होंगे। सन् १९३९ से लेकर सन् १९४५ तक के ६ वर्ष संसार के लिए महान् संकट के दिन रहे हैं। उन संकटों से बचने के लिए दक्षिण अफ्रीका के प्रधान मंत्री जनरल स्मट्स ने संसार के राष्ट्रों का एक संघ बनाने की अपील की थी। वह अपील इसलिए नहीं थी कि शत्रुराष्ट्रों को विजित करके उन पर शासन किया जाये, बल्कि संसार में शान्ति स्थापित करने के लिये। एक सैनिक पुरुष की सम्मति संसार को मान्य हुई। राष्ट्रों ने एक नवीन संयुक्तराष्ट्र-संघ स्थापित किया। वह संघ किसी गुलाम देश में नहीं, वरन् संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे स्वतंत्र देश में स्थापित हुआ। संघ की ओर से सभी राष्ट्रों को स्वतंत्रता, रंग और वर्ण-भेद से घृणा, स्त्री-पुरुषों के बराबर अधिकारों की घोषणा हुई थी। परन्तु जिन जनरल स्मट्स ने ऐसी संस्था के स्थापित करने का स्वप्न देखा था वे स्वयं दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ ही नहीं, वरन्, एशिया-निवासियों के साथ जो व्यवहार कर रहे हैं उससे भारत को क्षुब्ध होना ही चाहिए। उनकी कट्टर नीति से संसार के अन्य राष्ट्र भी दुखित हो उठे हैं। उनके कुलों से संसार में नये युद्ध की सम्भावना हो गई है। इस रवैये को मिटाने के लिए भारत की ओर से कितना ही प्रयत्न किया गया, परन्तु सब बेकार रहा। दक्षिण अफ्रीका के भारतीय भारत और एशिया के सम्मान को ऊँचा उठाने में अपने प्राण-प्रण से लगे हुए हैं। उनके साथ स्मट्स की सरकार जो निन्दनीय कार्य कर रही है वह संसार के सम्मुख है। डाक्टर खरे जो भारत-सरकार से प्रवासी भारतीय-विभाग के सदस्य थे उन्होंने भी कुछ किया। पर, अन्त में वह परास्त हो गये क्योंकि भारत-सरकार भी तो स्मट्स की सहोदरी ही थी। अब पंडित नेहरू की सरकार ने दक्षिण अफ्रीका की सरकार के विरुद्ध क्रान्तिकारी कदम उठाया है। दक्षिण अफ्रीका के मामले को संयुक्त-राष्ट्र-संघ में पेश किया गया। संसार और भारत के लिए नया संघर्ष सामने आया। अभी तक पिछले राष्ट्र-संघ अथवा वर्तमान संयुक्तराष्ट्र-संघ में रङ्ग-भेद (श्वेताङ्गों) के विरुद्ध कोई ऐसा प्रस्ताव नहीं आया था। संसार की राजनीति में श्वेतांग लोग अपनी सर्वोच्चता बनाये चले आ रहे थे। उस परम्परा के विरुद्ध भारत की यह प्रथम आवाज संयुक्तराष्ट्र-संघ के सम्मुख आई और स्मट्स को मुँह की खानी पड़ी।

जनरल स्मट्स ने अपनी दलील में भारत के दलितवर्ग का जिक्र किया है। उसका अर्थ यह कि स्वयं भारत में ही वहाँ की अल्पसंख्यक जाति को स्थान नहीं दिया जाता। उनके अधिकारों की अवहेलना की जा रही है। फिर तो अफ्रीका दूसरा महाद्वीप और दक्षिण अफ्रीका के [illegible] पिछले सन् १९१४-१८ के युद्ध में जर्मनी के विरुद्ध आवाज उठाया था कि जर्मनी ने अफ्रीका-निवासियों के ऊपर अत्याचार किये हैं अतः उससे उसके उपनिवेश छीन लिये जायँ। आज अफ्रीका को वैभवशाली बनाने-वाले भारतीयों के अधिकारों को छीनने और अत्याचार करने वह वहाँ का देशीय झगड़ा बताते हैं। क्या उनके लिए जर्मनी के प्रति किये गये राष्ट्र-संघ के व्यवहार को क्षम्य कहा जा सकता है? यदि क्षम्य कहा जाय तो भारतीयों के प्रति दुर्व्यवहार के होते हुए भी उन्हें पश्चिमी अफ्रीका को अपने में मिलाने और दक्षिण अफ्रीका पर शासन करने का उन्हें हक ही क्या है?

अफ्रीका की समस्या को घरेलू मामला कहकर तरह देना अच्छा नहीं है। यदि यह प्रमाण लिया जाय तो जर्मनी, इटली और जापान सभी क्षम्य हैं। जो पार्टी युद्धकाल में उन देशों में शासन करती थी आज उसका नाश हो गया है फिर भी वहाँ के देशवासियों पर भारी जुर्माने क्यों लगाये जा रहे हैं। उस देश मे लम्बी सजायें और प्राणदंड क्यों दिये जा रहे हैं? इसी लिए न कि भविष्य में संसार के अन्य देश दूसरे देशों की स्वतन्त्रता छीनने के लिए किसी ऐसी पार्टी का संगठन न करें। जनरल स्मट्स और उनकी सरकार को भी पदच्युत कर देना चाहिए जिससे संसार के अन्य राष्ट्र जाति-भेद और मानवीय अधिकारों को हनन करने का साहस न कर सकें। परन्तु, संयुक्तराष्ट्र-संघ का कार्य ऐसा नहीं जान पड़ता। सुरक्षा-समिति (सेक्योरिटी कौंसिल) के लिए भारत भी एक उम्मीदवार था। चूँकि सुरक्षा-समिति में ही नहीं, वरन् असेम्बली में भी श्वेतांगों का बोलबाला है उन्होंने भारत को रंगभेद-विरोधी प्रस्ताव समझकर अपना वोट नहीं दिया। बेलजियम सदस्य चुन लिया गया। इससे संदेह और भी बढ़ जाता है कि रंग-भेद अभी मिट नहीं सकता! रूस भारत का समर्थन कर रहा है। इसके अतिरिक्त, असेम्बली में अपनी बाह्य और अन्तरदेशीय सेना की रिपोर्ट देने की जो माँग ब्रिटेन ने की है उससे रूस रुष्ट हो गया है। कुछ ही दिन बीते हैं, ऐसा अवसर आया था कि रूस दूसरा संयुक्तराष्ट्र-संघ स्थापित करना चाहता था परन्तु वह किसी प्रकार मान गया। यह निश्चित है कि 'अफ्रीका के भारतीय' अथवा गोरों का कालों पर शासन संसार को एक नये युद्ध की चुनौती दे रहा है। यद्यपि राष्ट्रसंघ में भारत की सुनवाई हुई है और स्मट्स सरकार की हार हुई है फिर भी ये श्वेतांग अपनी हरकतों से बाज न आयेंगे। संसार की अशान्ति के लिए यह सबसे जबर्दस्त कारण हो सकता है।

* * *

विधान-सम्मेलन और लीग

लन्दन में होनेवाली गोलमेज कान्फ्रेंस में सम्मिलित होने का निमन्त्रण कांग्रेस, मुस्लिम लीग और सिक्ख दलों के प्रति-निधियों ने स्वीकार कर लिया है। कांग्रेस की ओर से पंडित जवाहरलाल नेहरू, लीग की ओर से मिस्टर मोहम्मदअली जिन्ना, श्री लियाकतअली खाँ तथा सिक्खों की ओर से सरदार बलदेवसिंह लन्दन पहुँच गये हैं। आखिर ब्रिटिश सरकार यह नाटक क्यों रच रही है? इसलिए कि मुस्लिम लीग के प्रतिनिधि भारतीय विधान-परिषद् में शामिल हो जायें। हमें मालूम है कि इसी तरह का एक राजनैतिक प्रपञ्च वाइसराय लार्ड वैवेल ने कुछ दिन हुए रचा था, जब कि मुस्लिम लीग के अस्थायी भारत सरकार में इनकार कर रहे थे। उसी दूसरा राजनैतिक प्रपंच भारत-मंत्री पैथिक लारेंस द्वारा लन्दन में जिससे मुस्लिम लीग के सम्मेलन में सम्मिलित हो जाये। जानते हैं कि यह नया मुस्लिम लीग को प्रसन्न करने सहूलियत देने के लिए किया है और अन्त में लीग बिगड़कर अवश्य ही शरीक होगी। है कि ब्रिटिश सरकार आखिर तक इस प्रकार अपनी का सहारा लेती रहेगी? क्या के बीच-बिचाव के परिणाम वास्तविक स्वाधीनता राष्ट्र को सकेगी? क्या स्वतन्त्र भारत का विधान ब्रिटेन की इसी प्रकृति रता के सहारे निर्माण हो सकता है कि फिलहाल भारतीय दलों का एक क्षणिक मतभेद किन्तु इसमें कितना स्थायित्व भली भाँति समझने की चीज है कि जब तक तीसरी शक्ति भारत के राजनैतिक दलों में करने का ढोंग रचती रहेगी स्वतन्त्र भारत की भावी पानी फिरता रहेगा। इसलिए कि तीसरी शक्ति की वहिष्कार के राजनैतिक दल जब तक मिलकर कोई मार्ग नहीं भारतीय संकट न तो दूर हो न गुलामी से उसे छुटकारा सकेगा?

मिलकर रहोगे तो बन्धन से मुक्त होगे!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरठ-कांग्रेस के कुछ संस्मरण

६ वर्षों के बाद राष्ट्रीय कांग्रेस का महत्त्वपूर्ण अधिवेशन

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

साढ़े छः वर्षों की प्रतीक्षा के बाद संयुक्तप्रांत के मेरठ नगर में गत सप्ताह कांग्रेस का ५४वाँ अधिवेशन समारोहपूर्वक समाप्त हो गया। यद्यपि आजकल के साम्प्रदायिक वातावरण को ध्यान में रखकर अधिवेशन सीमित रूप में किया गया; किन्तु अनेक दृष्टियों से बड़ा ही महत्त्वपूर्ण था। इस लेख में कांग्रेस-अधिवेशन पर एक विहंगम प्रकाश डाला गया है जो रोचक, सामयिक और पठनीय है।

राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी

पत्र - प्रतिनिधि भी मौजूद थे। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का दफ़्तर अलग बना हुआ था। सभी विभाग अलग-अलग अपना कार्य चला रहे थे। विदेशी विभाग के इंचार्ज श्री सत्याचरण शास्त्री, आफिस के श्री सादिक अली, डेलीगेटों को पास देने के लिए कुछ कर्मचारी नियुक्त थे। प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियों के ब्रांच आफिस भी खुले हुए थे। प्रान्तों के प्रतिनिधि अपने अपने प्रान्तीय आफिसों से प्रमाणपत्र लाने पर अधिवेशन का पास पा सकते थे। प्रतिनिधि-कैम्पों से मिले हुए भोजनालय थे जिनमें हर प्रकार के भोजन मिल सकते थे। ऐसा जान पड़ता था कि कांग्रेस से उनको यह हिदायत थी कि किसी भी सम्प्रदाय के व्यक्ति को खाना देने से इनकार नहीं किया जा सकता था। शिकायत कही जा सकती थी तो दूध की। यद्यपि मेरठ दूध-प्रधान जिला है फिर भी दूध शुद्ध नहीं मिलता था।

कड़ाके का जाड़ा था। प्रबन्ध-विभाग से नहाने-धोने, कुल्ला-दातून के लिए गर्म पानी का खासा अच्छा प्रबन्ध था। पाखाने वहीं मेलों के इस्तेमाल जैसे बनाये गये थे। पेशावखाने होते हुए भी लोग इधर-उधर पेशाव करते देखे जाते थे। फिर भी प्रबन्ध-विभाग इस पर काफी ध्यान रखता था।

पंडाल को, गृह-रचना की दृष्टि से, मेरठ के अधिवेशन को ऐसे संकट में भी अच्छी तरह से सजाया गया था। खुले अधिवेशन के लिए जो तैयारी की जा रही थी वह बड़ी ही विपद थी, परन्तु साम्प्रदायिक दंगे के कारण पंडाल बिलकुल कोरा पड़ा रह गया। ऊँचे ऊँचे फाटक यद्यपि टाट के बनाये गये थे, परन्तु बनाने में प्रबन्धकों का कौशल प्रकट हो रहा था। दूर से देखनेवाला कोई यह नहीं कह सकता था कि ये दरवाजे सीमेंट के नहीं बने हैं। पहले जिस पंडाल में विषय समिति की बैठक होनेवाली थी उसमें खुला अधिवेशन हुआ। बोरे की चटाइयों द्वारा पंडाल बनाया गया था। कई गेट थे। नेता और प्रतिनिधियों का एक, दर्शकों का दूसरा, अन्य प्रतिनिधियों का तीसरा और चौथा गेट था स्वागत-समिति के सदस्यों के आने-जाने का। पाँचवाँ गेट नेताओं के पेशाव करने के लिए आने-जाने अथवा अन्य आवश्यक कार्यों के लिए था। मंच ऊँचा सजा था; परन्तु, अध्यक्ष के बैठने के लिए कोई उचित प्रबन्ध नहीं था। इससे पंडित जवाहरलाल जी नेहरू ने अध्यक्ष का आसन बनवाया।

सबसे महत्त्वपूर्ण जो मेरठ-अधिवेशन की विशेषता थी—वह थी—आजाद हिन्द - फौज, उसका अनुशासन और उसकी ट्रेनिंग। फौज का क्षेत्र बड़ा विस्तृत था। फौज के तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। आजाद हिन्द-सेना के ट्रेण्ड सैनिक, नई भरती के सैनिक, महिला सैनिक। इनके अतिरिक्त सीमाप्रान्त से बादशाह खान के साथ आये हुए १०० लाल कमीजवाले सैनिक थे। पुलिस का उस क्षेत्र में नामोनिशान न था। सारे गेटों पर आजाद हिन्द-सेना के सैनिक कार्य कर रहे थे।

अधिवेशन की कार्यवाही पर जब हम दृष्टि डालते हैं तो देखते हैं कि साढ़े छः वर्षों के बाद का यह अधिवेशन कितना महत्त्वपूर्ण था। अधिवेशन का कार्यक्रम (एजेंडा) बाँट दिया गया था। तारीख २१ नवम्बर को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई। वास्तव में यह अधिवेशन चिरस्मरणीय रहेगा। पंडित जवाहरलाल जी ने अन्तर्कालीन सरकार में सम्मिलित लीगी सदस्यों के कर्तव्यों का भंडाफोड़ किया। एक नया शब्द उनकी जबान से निकला। बड़ा ही उपयुक्त शब्द। शब्द था—किंग्स पार्टी। इस शब्द ने देश में चारों ओर तहलका मचा दिया। दूसरे ही दिन मिस्टर लियाकत अली खाँ ने इसी शब्द को लेकर कितनी बकवास सुनाई। दूसरे दिन से कांग्रेस का कार्य आरम्भ हुआ।

* * *

नवम्बर २२ को २ बजे दिन में विषय निर्धारिणी समिति की बैठक आरम्भ हुई। सभापति का आसन आचार्य कृपलानी ने ग्रहण किया। कांग्रेस के सारे कार्यक्रम को वर्किङ्ग कमेटी ने बनाया था। प्रस्तावक वक्ताओं में पंडित जवाहरलाल नेहरू, श्री एस० के० पाटिल, डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद, श्री शंकरराव देव और डाक्टर पट्टाभि आदि थे। विरोधी वक्ताओं में श्रीमती अरुणा आसफअली का नाम उस दिन के कार्यक्रम में विशेष उल्लेखनीय है। सभापति ने घोषित किया कि तारीख २३ नवम्बर को ९ बजे दिन को मैदान में झंडाभिवादन होगा।

२३ नवम्बर को ९ बजे दिन से लोग कांग्रेस नगर के मैदान में जमा होने लगे। तमाम रोक होने पर भी आस-पास के जिलों के दर्शक आ ही गये थे। सड़कें और मैदान भीड़ से ठसाठस भरा था। आजाद हिन्द सेना के सैनिकों की परेड बड़ी सुन्दर जँच रही थी। कैप्टन शाहनवाज ने राष्ट्रपति को सलामी दी। इसके बाद वन्दे मातरम् का गान हुआ। राष्ट्रपति ने झंडा फहराया। उपस्थित भीड़ के हृदय से जोश उमड़ा पड़ रहा था, आकाश राष्ट्रीय नारों से गूँज उठा। उस समय एक विशेष स्थिति देखने में आई। जय-जयकार से काम रुक जाता था इससे उसको काबू में कर लिया गया; अनुशासन से सारा कार्य हो रहा था। ज्यों ही झंडा फहराने लगा, लड़कियों ने झंडा-गान गाया। झंडा-गान के बहुत से पद उड़ा दिये गये केवल दो पद गाये गये—विजयी विश्व तिरंगा प्यारा... का पद और दूसरा 'शान न इसकी जाने पाये'। झंडा-गान के पश्चात् आजाद हिन्द-सेना के ओजस्वी गाने हुए। झांडिङ्ग के पश्चात् लोग तितर-बितर हो गये।

पौने दो बजे राष्ट्रपति का जुलूस

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

'नया रोजगार'*

लेखक, श्री गुलाबराय एम० ए०

आधुनिक हिन्दी-साहित्य के हास्यरस के प्रमुख कवि श्री गोपालप्रसाद व्यास जी का 'नया रोजगार' वास्तव में पुराना रोजगार है। केवल व्यास जी का नहीं वरन् सारी दुनिया का यही सफल रोजगार है। वह है एक-दूसरे की हजामत बनाना। व्यक्ति व्यक्ति में और राष्ट्र-राष्ट्र में यही व्यापार चल रहा है। पुस्तक का शीर्षक दुनिया के व्यवहार का एक संकेत-मात्र है। जो लोग युद्धोत्तर काल की बेकारी के शिकार हों वे इस पुस्तक को आँख खोलकर खरीदें।

व्यास जी के इस काव्य-संग्रह की कविताएँ सामयिक विषयों से सम्बन्ध रखती हैं तथापि उनका पत्नीवाद जिसके सहारे यह कविताएँ अग्रसर हुई हैं जीवन की एक शाश्वत समस्या है और लेखकों के साहित्यिक और पारिवारिक जीवन के संघर्ष का सुन्दर व्यङ्ग्य-चित्र है। यद्यपि घर-घर मिट्टी के चूल्हे हैं तथापि व्यास जी ने अपने को ही बलि का बकरा बनाया है। वे अपने ऊपर व्यंग्य करने में सिद्ध-हस्त हैं। वास्तव में कवि संसार का प्रतिनिधि होता है उसके अपने ऊपर किये हुए व्यंग्य संसार के ऊपर किये व्यंग्य होते हैं। (मैं समझता हूँ इस व्याख्या को पढ़कर उनकी देवी जी उनको क्षमा कर देंगी) आदिकाल से ही कवि लोग पत्नियों की डाँट-फटकार सहते आये हैं। कविकुल कालिदास ने विद्योत्तमा की फटकार सह-कर ही सरस्वती देवी की आराधना की। हिन्दी के कविताकानन केसरी गोस्वामी तुलसीदास जी भी रत्नावली के उपालम्भ से रामभक्त बने। व्यास जी हिन्दी भक्त हैं इसलिए उन्होंने एक कविता गोस्वामी जी को ही सम्बोधित करके लिखी है किन्तु उसमें भी एक राजनीतिक चुटकी ले ली है। देखिए—

हे कविकुल गुरु! पथ-निर्देशक,
मैं घड़ी-घड़ी प्रतिपल, प्रतिक्षण
चलकर तेरे ही चरणों पर
यह बाजी हारा जाता हूँ
मैं रोज-रोज अपनी उनसे
रह रह दुत्कारा जाता हूँ
मैं जितना ही गम खाता हूँ
उतना फटकारा जाता हूँ।

आगे चलकर आप एक मीठी राज-नीतिक चुटकी लेते हैं—

तुम जो आजादी चाह रहीं
मैं कभी नहीं सह सकता हूँ
मैं तो इस घर में भी केवल
बेबल बनकर रह सकता हूँ

कवि लोग तो आदर्शवादी होते हैं किन्तु स्त्रियाँ उनको कल्पना के प्रकाश-मान से नीचे वास्तविकता की कठिन भूमि [illegible]

शीर्षक कविता में अपने पत्नीवाद का प्रतिपादन करते हुए उसे एकदम एक अप्रत्याशित रूप से राजनीतिक झुकाव दे देते हैं। देखिए—

तुम उनके फौजी शासन में
चुपके राशन ले लिया करो
उनके चैकों पर सही सही
अपने दसखत कर दिया करो
तुम समझो उन्हें डिफेन्स एक्ट,
कब पता नहीं क्या कर बैठें?
यह भारत की सरकार, नहीं
उनसे सत्याग्रह किया करो
छै बजने से पहले से ही
उनका करफ्यू लग जाता है
बस हुई जरा भी चूक कि
झट ही आर्डिनेन्स बन जाता है
वे अल्टीमेटम दिये बिना ही
युद्ध शुरू कर देती हैं
उनको अपनी हिटलर समझो
चर्चिल सा डिक्टेटर जानो
पत्नी को परमेश्वर मानो।

हास्य की जान है अप्रत्याशित विपरीतता। कहाँ व्यास जी का हास्य सार्थक व्यंग्य है। उनके व्यंग्य प्राय: वर्तमान सरकार मि० जिन्ना और कन्ट्रोल की दुर्व्यवस्था पर है। वे व्यंग्य बड़े तीखे हैं यदि वे नहीं सुधरते हैं तो व्यास जी के शब्दों में यही उत्तर है—यद्यपि पाकिस्तान से वे भी काफी दूर हैं। लेकिन इसको क्या करें आदत से मजबूर हैं॥

व्यासजी ने जहाँ लेखक जीवन के ढोंग आडम्बर और चार सौ बीस पर प्रकाश डाला है वहाँ उन्होंने उसकी दयनीय स्थिति के भी सुन्दर चित्र खींचे हैं।

इतना ही क्या मुझको कम है।
एक पत्नी है दो बच्चे हैं,
पुस्तक भरकर अलमारी है,
दुनिया लेखक लेखक कहती,
करती सराहना प्यारी है॥
वे मुझे देख होते प्रसन्न,
मिलते ही पान खिलाते हैं।
वापिस आता हूँ दरवाजे तक,
आकर खुद पहुँचाते हैं।
रायल्टी भले देर से दें,
व्यवहार मगर सुन्दरतम,
इतना ही क्या मुझको कम है॥

बेचारी भारतीय पत्नी और कहाँ हिटलर, चर्चिल और ब्रिटिश सरकार? किन्तु इस विपरीतता के प्रयत्न-प्रलाप द्वारा तथ्य कथन निरापद रूप से कर दिया जाता है। यह अप्रत्याशित विपरीतता व्यास जी के परिहासात्मक अनुकरणों (Paradies) से अधिक स्पष्ट हो जाती है। दो-एक उदा-हरण लीजिए—

जाको राखै साइयाँ, मार सके ना कोय।
ज्यों-ज्यों चर्चिल कोसिये त्यों-त्यों मोटो होय
राम झरोखा बैठ कै, सबको मुजरा लेइँ।
सिकल देखिके ऊजरी, ऊनी कपरा देइँ॥
आवत ही हरखै नहीं, नयनन नहीं सनेह।
हम बोतल लैके खड़े, तैल न बनिया देइ॥
अरजी दै दै जग मुआ, नौकर हुआ न कोय।
पढ़े खुशामद को सबक, नौकर मालिक होय॥

व्यास जी ने अपना उदाहरण देकर भोजन-भट्ट ब्राह्मणों की [illegible]

क्या हमको नल के पानी से
ठण्डा कर हाय बुझा दोगी?
यह ज्वाला हक माँगती है
घी, गुड़, शक्कर, सूजी बादाम!
क्या आज नाश्ते में मुझको
मोदक भोग बना दोगी?

यद्यपि व्यास जी की कविताएँ सामयिक हैं तथापि यही उनका दोष भी है। इन कविताओं के एक दोष यह भी हैं कि वस्तुवाद कहीं कहीं अति उग्र हो गया है किन्तु व्यंग्य में अतिशयता क्षम्य हो जाती है। कंट्रोल उठ जाने पर उनका इतना महत्त्व न रहे किन्तु जब तक यह परिस्थिति है तब तक उसमें रस आवेगा ही। फिर भी उनका ऐतिहासिक महत्त्व रहेगा। पत्नी-वाद की शाश्वत समस्या मानव-मन को सदा अपील करेगी। इस संघर्षमय जीवन में यदि रस की दो बूँदें मिल जायँ तो 'इतना ही क्या मुझको कम है?' हास्य-व्यंग्य जीवन को सरस और जीवन योग्य बनाता है। हास्य से जीवन का भार दूर तो नहीं होता किन्तु हलका अवश्य हो जाता है। मुझे विश्वास है कि व्यास जी की ये कविताएँ जीवन का भार हलका करने में सहायक होंगी।

* नया रोजगार (हास्य काव्य-संग्रह) लेखक, श्री गोपालप्रसाद व्यास। प्रकाशक, नवयुग साहित्य-सदन, इन्दौर। मूल्य ३)

क्यों!
बिल्क्रीम है न!

अपने आसपास देखिये और उन व्यक्तियों का पता लगाइये जो ब्रिल्क्रीम प्रयोग में लाते हैं। स्वच्छ एवं स्वस्थ बालों से उनका पता आसानी से लग सकता है। ब्रिल्क्रीम बालों को अपने स्थान पर रखता है और उन्हें सुन्दर चमक देता है।
आज ही एक बोतल खरीदिये
ब्रिल्क्रीम

क्या आज आपने मेक-लिन से दाँत साफ़ किये हैं?

हाँ, यही उचित तरीक़ा

कमर के दर्द से उसका भार हो गया था
पीड़ा इतनी भयंकर थी कि [illegible]
कठिन था
केवल दो बोतल कृशोन से सब [illegible]
३ वर्ष की कठिन यातना [illegible]
एकदम आराम। यह श्री [illegible]
इतनी प्रसन्न है कि वह लोगों [illegible]
बतला देना चाहती है कि कृशोन [illegible]
कैसे स्वास्थ्य-लाभ हुआ। उसके [illegible]
प्रकार है :—
"मैं यह बतला देना [illegible]
समझती हूँ कि ३ वर्ष की [illegible]
के बाद नसों की जलन तथा [illegible]
से मुझे किस प्रकार छुटकारा [illegible]
सब रोग कृशोन की केवल दो [illegible]
जाता रहा जब कि अन्य उपचारों [illegible]
कोई भी लाभ नहीं हुआ। [illegible]
साल्ट के बारे में पढ़ा और [illegible]
उठाया। पहले मैं अपने घर में [illegible]
फिर नहीं सकती थी और घर में [illegible]
में तीन मील चल सकती हूँ। [illegible]
तो यह है कि इससे मुझमें [illegible]
गई है। कृशोन वास्तव में [illegible]
है। (श्रीमती) ए० एन०
मूत्राशय ही मनुष्य की [illegible]
छन्ना है। यदि यह दुरुस्त [illegible]
मल-विकार एकत्र होकर रक्त [illegible]
देता है। कृशोन के छः [illegible]
आपके मूत्राशय को सुचारु रूप [illegible]
आपके रक्त को जहरीला होने से [illegible]
कमर के दर्द से आपको [illegible]
मिल जायगा और यदि आप [illegible]
का सेवन करते रहेंगी तो यह [illegible]
कभी भी न होगी।
कृशोन साल्ट सभी [illegible]
ना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत का भावी शासन-विधान

इस समय मुस्लिम लीग अड़ंगा क्यों डाल रही है ?

लेखक, श्री श्यामबिहारी विरागी बी० ए०

भारतीय विधान-परिषद् का अधिवेशन शीघ्र ही होने जा रहा है। इस सम्मेलन में प्रमुख राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि भारत के भावी विधान का निर्माण करेंगे। इस लेख में विद्वान् लेखक ने भारत के भावी तथा अतीत के वैधानिक वितंडावाद तथा राजनीतिक प्रगति को कसौटी पर कसते हुए यह बतलाया है कि जब तक विदेशी सत्ता का यहाँ बोलबाला है तब तक स्वतन्त्र भारत का वास्तविक विधान नहीं बनाया जा सकता। लेख सामयिक, विचारपूर्ण तथा पठनीय है।

कोशिश, त्याग और परिश्रम का फल है कि ब्रिटिश हुकूमत आज झुकी है और भारतीयों को अवसर दे रही है कि वे स्वयं भारत का विधान बनावें।

मौजूदा विधान धोखे की टट्टी

विधान-परिषद् का काम बड़ा मुश्किल है। आचार्य कृपलानी के शब्दों में भारतवर्ष की स्वाधीनता की नौका अब अपने किनारे के काफी समीप है परन्तु नौका और किनारे तक का समुद्र बड़ा खतरनाक है। जगह जगह समुद्री बम बिछे हुए हैं जिनसे स्वाधीनता की नौका की रक्षा करते हुए आगे बढ़ना है। मौजूदा शासन-विधान भारत पर अँगरेजों द्वारा लादा गया है। हमारे प्रतिनिधि ऊपर से स्वतन्त्र मालूम पड़ते हैं पर वास्तव में उनके ऊपर इतने बन्धन हैं कि वे किसी काम को स्वतन्त्रतापूर्वक नहीं कर पाते। मौजूदा विधान धोखे की टट्टी है जिसकी आड़ में ब्रिटिश हुकूमत अपना शिकार कर रही है। अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में भी इस विधान से काफी गलतफहमी है। अँगरेज दुनिया को दिखाना चाहते हैं कि भारत का शासन भारत द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों से हो रहा है। यह विधान एक गुलामों का विधान है जिसके बनाने का मुख्य उद्देश्य भारत की गुलामी को जीवन-दान देना था। अँगरेज अपनी नीति में मेरा खयाल है काफी सफल भी हुए। इस विधान के निर्माण के बाद कांग्रेस के सम्मुख एक विचित्र उलझन पैदा हो गई थी। इस विधान के अन्तर्गत कांग्रेस सूबों की सरकारों में अपना प्रतिनिधि भेजे या न भेजे यह प्रश्न सन् १९३५ के बाद कांग्रेस हाईकमांड के सम्मुख आ खड़ा हुआ। बहुत बहस-मुबाहसे के बाद यह तय हुआ कि कांग्रेस सूबों के शासन में अपना प्रतिनिधि भेजे और सरकार में घुसकर ब्रिटिश हुकूमत की वैधानिक चालों को असफल करे।

अलग निर्वाचन जहरीला इंजेक्शन

अँगरेज अपनी कूटनीति के लिए काफी प्रसिद्ध हैं। भारत में अँगरेजी हुकूमत का इतिहास इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। संसार के हर देश में विभिन्न मजहब तथा श्रेणी के लोग रहते हैं परन्तु अलग निर्वाचन का कहीं नाम भी नहीं है। योरप के पिछले इतिहास पर यदि दृष्टि डाली जाय तो धर्म के नाम पर भयानक लड़ाइयाँ हुई हैं। इँगलैंड में ही प्राटेस्टेन्ट और कैथोलिक दो धार्मिक वर्गों में ऐसी विकट लड़ाइयाँ हुई हैं कि जिसे पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। फिर आज चर्चिल और एमरी के देश में इन दो विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों के लिए अलग निर्वाचन क्यों नहीं है? भारत को ही यह जहरीला इंजेक्शन क्यों लगाया गया? इँगलैंड के राजनीति के डाक्टर यह खुली बेईमानी करके आज हमारे सामने किस मुँह से हमारे शुभचिन्तक बनने का दावा करते हैं। राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी ने मेरठ-अधिवेशन में भाषण देते हुए ठीक ही कहा है, "ब्रिटिश साम्राज्यवाद का सबसे बड़ा बल यह रहा है कि स्वयं हिन्दुस्तानियों की सहायता से वह अपने कुचक्रों को अग्रसर करता रहा है। भारत भारतीय धन, भारतीय साधनों, भारतीय सैनिकों तथा बहुधा भारतीय मस्तिष्कों-द्वारा ही जीता गया था। हमारे मतभेद और हमारी विभिन्नता में हमारे विनाश के कारण रहे हैं। हमारी सबसे बड़ी दुर्बलता यह है कि हमें जो भक्ति समग्र के प्रति प्रकट करनी चाहिए उसे हम छोटी-छोटी इकाइयों के प्रति करते हैं।" हमारे ऊपर विदेशियों की हुकूमत हमारी कमजोरियों से आई। अँगरेजी हुकूमत भी न्याय का चोगा पहनकर अपनी शक्ति मजबूत करने के लिए हमारे साथ राजनीतिक बेईमानी करती रही है। हमारी पुरानी कमजोरियों को और बढ़ाना और नई कमजोरियों को पैदा करना अँगरेजों की मुख्य नीति रही है। पृथक् निर्वाचन अँगरेजों की कलुषित नीति का एक जीता-जागता नमूना है।

पृथक् निर्वाचन मुर्दाबाद

भारत का भावी विधान बहुत सँभलकर बनाना है। विधान-सम्मेलन के ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। अँगरेजों के दूषित इंजेक्शनों से भारत का शरीर जर्जर हो चुका है। हमें ऐसे विधान की आवश्यकता है जो पुरानी खराबियों को दूर कर भारतीयों के लिए ऐसा वातावरण पैदा करे जिससे राष्ट्रीय वातावरण का प्रसार हो। आचार्य कृपलानी ने ठीक ही कहा है, "कांग्रेस को अल्पसंख्यकों की माँगों के सामने अवश्य झुकना चाहिए, चाहे वे अल्पसंख्यक मुसलमान हों या अन्य कोई; किन्तु राष्ट्र के हित को खतरे में डालकर झुकना ठीक नहीं। अतीत में इस तरह का झुकना ही हमारी वर्तमान कठिनाइयों का कारण रहा है। जिस समय किसी सच्चाई के ऊपर विरोध तथा झंझट मालूम पड़े उस समय बुनियादी नैतिक सिद्धान्तों पर खड़ा होना ही सबसे उत्तम रास्ता होता है। सिद्धान्तों के ऊपर कोई समझौता उसी समय ठीक होता है जब कोई सच्चाई शंका के परे होती है। राष्ट्रीयता का स्थान साम्प्रदायिकता से ऊँचा है। अतएव राष्ट्रीयता का हनन कर हमें साम्प्रदायिकता को जगह नहीं देनी है। इस प्रकार विचार करने पर मुझे इस बात में कुछ भी सन्देह नहीं है कि पृथक् निर्वाचन की प्रणाली स्वीकार करके कांग्रेस ने गलती की है। पृथक् निर्वाचन अराष्ट्रीय तथा अलोक सत्तात्मक है। मेरा विश्वास है कि अगर हमने साहस के साथ पृथक् निर्वाचन को स्वीकार करने से इनकार कर दिया होता तो बहुत-सी मौजूदा कठिनाइयों से हम बचे रह सकते

शेष पृष्ठ १२ पर देखिए

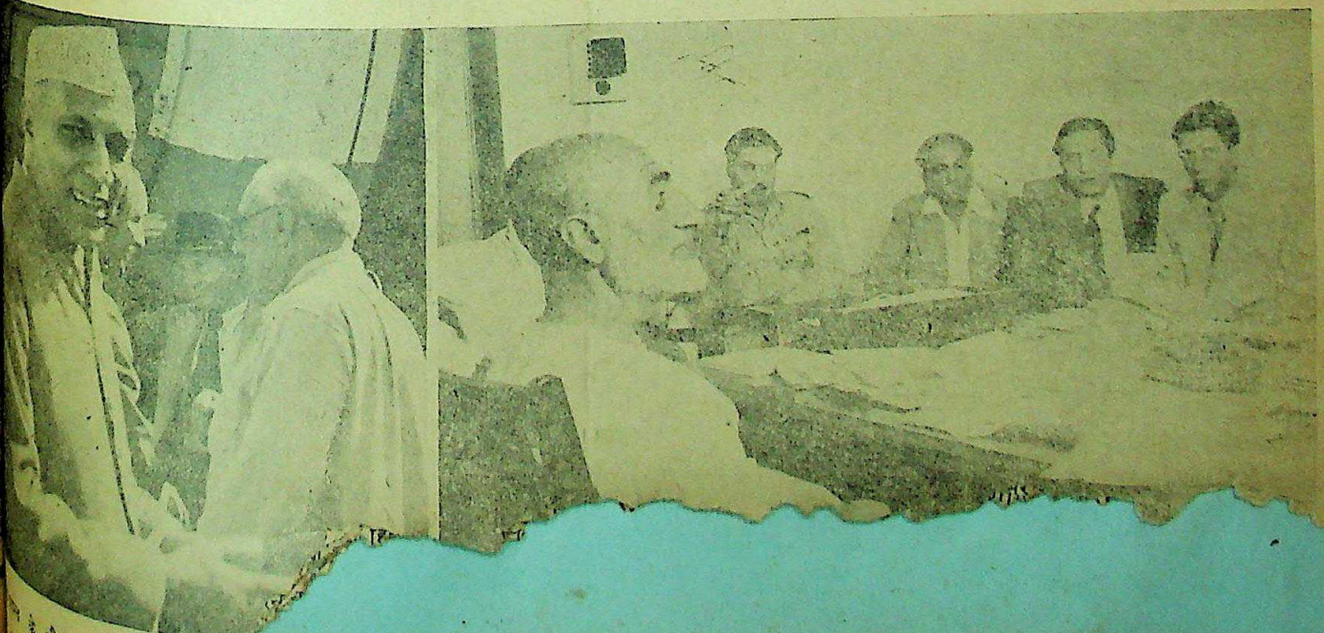

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार की पहली आहुति

सन् ४२ की अगस्त-क्रांति के अनाचार की एक झाँकी

लेखक, प्रोफेसर बलदेवनारायण (बिहार-विद्यापीठ)

सन् ४२ की अगस्त-क्रान्ति का इतिहास इतिहास-लेखक लिख रहे हैं। किन-किन प्रांतों में किस प्रकार की आँधी आई और उसका क्या परिणाम हुआ, उसका आँखों देखा और मार्मिक वर्णन बड़ा ही हृदयग्राही होगा। इस लेख में प्रोफेसर बलदेवनारायण ने बिहार की पहली आहुति का वर्णन किया है, जो वास्तविकता से पूर्ण तथा पठनीय है।

बिहार कांग्रेसी सरकार के प्रधान मंत्री माननीय श्री श्रीकृष्ण सिनहा।

सन् ४२ का ११ अगस्त मानो आन्दोलन की सारी गर्मी समेटकर आया। शिक्षण-संस्थाओं पर कसकर धरना दिया जाने लगा और छात्र-संघ के कार्यकर्त्ता घूम-घूमकर विद्यार्थियों का संगठन करने लगे। गांधी जी ने कहा था—इस आन्दोलन में जेल जाने के लिए आगे बढ़ना नहीं है। जेल जाना तो खेल हो गया है। मेरा तो इरादा है कि जितनी फुर्ती से हो सके, जितना कम समय लग सके, उतने में आन्दोलन जीत लेने का। गांधी जी की उक्ति आन्दोलनकारियों में गजब की फुर्ती ला रही थी। क्या पटना सिटी, क्या गुलजार बाग, क्या बाँकीपुर—सभी जगह सरकारी हलकों में बे हलचल मचा रहे थे।

स्कूल और कालेज के अनेक प्रोफेसर और टीचर सुबह के छः बजे से ही अपनी अपनी संस्था को से रहे थे। साइंस कालेज के दो प्रोफेसरों को तीस-तीस विद्यार्थियों की छाती पर पैर देकर भीतर जाना पड़ा था और कई को दीवार लाँघकर। इसलिए उनका वर्ग बड़ा सतर्क हो रहा था पर, उनकी सतर्कता विद्यार्थियों के आकर्षण की वस्तु न थी। विद्यार्थी तो सभी संस्थाओं पर जबर्दस्त धरना देकर उनका काम असम्भव कर देने के लिए सचेष्ट थे।

इसी समय उन्हें मालूम हुआ कि पुलिस ने बा० अनुग्रहनारायण सिंह को उनके डेरे पर से गिरफ़्तार कर लिया है। फिर तो बा० श्रीकृष्णसिंह का सन्देश पाने के लिए वे व्यग्र हो गये। तुरंत एक गाड़ी ली जिस पर बैठाकर उन्हें वे बी० एन० कालेज के हाते में ले आये। विद्यार्थियों की बड़ी तादाद इकट्ठी हो गई। श्रीकृष्ण बाबू ने धधकती आवाज में कहा कि महात्मा गांधी, राजेन्द्र बाबू और बड़े-बड़े नेताओं को

गिरफ्तार करके मदान्ध अँगरेजी सरकार ने देश को जो चुनौती दी है इसलिये उसका मुँहतोड़ जवाब देना ही पड़ेगा। देश की आँख विद्यार्थियों पर लगी हुई है, विश्वास है उसकी जंजीर तोड़ने में वे समर्थ हो सकेंगे। वे सरकार का, उसकी फौज का, उसकी पुलिस का डर छोड़ दें। हाँ, अहिंसा कभी न छोड़ें। हम तो न्याय माँगते हैं, हमारी जीत होगी ही। भाषण देकर आप लौटे ही थे कि पुलिस ने आपको भी गिरफ्तार कर लिया।

पर विद्यार्थी हतोत्साह नहीं हुए। यह क्रान्ति नेताओं की नहीं रह गई थी, यह तो जनता की हो गई थी—छात्रों की और साधारण कार्यकर्त्ताओं की। विद्यार्थी दूने उत्साह से धरना देने लगे। गुलजार बाग की बादशाह रिजवी कन्या पाठशाला पर जबर्दस्त धरना देकर अध्यापिका ने गाड़ीवालों से कहा कि लड़कियों को वापस घर पहुँचा आओ पर कितनी ही लड़कियाँ धरना देनेवालों के साथ नारा लगाने लगीं। कितनी संस्थाओं को अनिश्चित काल के लिए बन्द कर देना पड़ा।

बाँकीपुर कन्या हाईस्कूल के धरने को तोड़ने के लिए तो श्री भगवती देवी वहाँ पहुँचीं अनेक देश-सेविकाओं के साथ। देश-सेविकाओं को देखकर लड़कियों में काफी जोश पैदा हुआ और नारे लगाती हुई वे संस्था के बाहर हो गईं।

पटना सिटी से विद्यार्थियों का जुलूस निकला जिसकी एक टोली सेक्रेटेरियट की ओर बढ़ी, दूसरी बाँकीपुर लॉन को रवाना हुई, तीसरी निकली सिटी कोर्ट को अपने राष्ट्रीय झंडे से सुशोभित करने।

कोर्ट की हिफाजत में पुलिस थी, लठधर और हथियारबन्द और गोरखे भी थे। पर, यह निहत्थी टोली बढ़ती ही गई। हरिचरण वानप्रस्थी नारा बुलन्द करते फौज के देखते-देखते साथियों को लेकर कचहरी पहुँच गये। उनकी टोली ने झंडा फहरा दिया। फिर तो उत्साह का समुद्र उमड़ पड़ा। लोग सेक्रेटेरियट की ओर बढ़े। कई साथी गिरफ़्तार कर लिये गये थे पर गिरफ़्तारी की कौन परवाह कर सकता था?

दिन के लगभग तीन बजे से सभी टोलियों को सेक्रेटेरियट अपनी ओर खींचने लगा। जो टोली जहाँ थी वहीं से चल पड़ी। जिस टोली में जितने छोटे विद्यार्थी, वह टोली उतनी ही तेज। उधर रास्ते की नाकेबन्दी हो रही थी—लठधर,

टोलियों के कितनों को उन्होंने बुरी तरह पीटा, बहुत से घायल हुए और कुछ तो लदकर अस्पताल पहुँचे। पास ही पुलिस भी मौजूद थी, जो चुस्त-चालाक को चुन-चुनकर हिरासत में ले रही थी। पर टोली पर टोली उमड़ती आ रही थी। पत्थरों से पानी नहीं रुकता। फिर भला इन घुड़सवारों से आदमी क्या रुकते? घुड़सवारों से दबते-पिसते अगल-बगल से कितने आदमी निकल गये, आगे चल-कर टोलियाँ बनाईं और चल पड़े सेक्रेटेरियट की ओर।

लोगों ने धारा-सभा-भवन के सामने मोरचा बाँधा था। भवन के प्रवेशद्वार पर पुलिस की चौकसी थी। सामने, सड़क के अगल-बगल के बगीचों में लोग इकट्ठे हो रहे थे।

पहली टोली पहुँची स्कूल के विद्यार्थियों की। जनता भी शामिल थी। आते ही विद्यार्थियों ने प्रवेश-द्वार के पाये पर झंडा फहरा दिया और बगल से आड़ को फाँद हाते में घुस गये और भवन की ओर दौड़े। भवन के पहरेदार कड़े थे। उन्होंने अन्धा-धुन्ध हन्टर चला-चलाकर विद्यार्थियों को बाहर कर दिया। तब तक पुलिस ने पाये पर के झंडे को उतारकर अपने पास रख लिया था। कई छात्रों को गिरफ़्तार भी कर लिया था।

तत्काल दूसरी टोली पहुँची कालेज के छात्रों की। बालेश्वरसिंह, विद्यार्थी साइन्स कालेज के शब्दों में उसने देखा—"सभी गेट बन्द और सबों पर लाठीबन्द पुलिस और गोरा सर्जेन्ट मुस्तैद। फिर चारों ओर बाललड़ी का काँटा। भीतर कैसे जाया जाय? इसी बीच आवाज आई कि पीछे से तीन-चार सौ विद्यार्थी झंडा के साथ भीतर पैठ चुके हैं। फिर तो हम लोग जोश में आ गये। बाईं ओर के काँटों को तोड़-मरोड़ डेढ़ सौ की तादाद भीतर घुस गई। कुछ विद्यार्थी झंडे के साथ सीढ़ी पर चढ़े ही थे कि सर्जेन्ट ने हन्टर चलाना आरम्भ कर दिया। देखा-देखी पुलिस की लाठी चलने लगी। लोग मुड़े और आगे। इसी बीच एक लम्बी लाठी हम तीनों पर आ पड़ी। इन्द्रदेव (श्री जगलाल चौधरी के सुपुत्र जो पीछे शहीद हो गये) के सर में चोट आई। वह घायल होकर गिर गया। उसी लाठी से मेरे हाथ में और भवानन्द की पीठ पर चोट आई। इन्द्रदेव को झट से हम लोगों ने बाहर किया, उसे उठाकर अस्पताल ले गये। हम लोगों का बाहर निकलना था कि घुड़-

का एक दल वहाँ आ पहुँचा। वे लगे। फिर

वहाँ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रांडी

लेखिका, श्रीमती कमला सैटिन

संकट की घड़ियों में कभी-कभी साधारण उपाय तथा इलाज जादू का सा काम कर जाता है जिसकी ओर किसी का ध्यान भी नहीं जाता। इस कहानी में भी रोजमर्रा के जीवन की एक सुन्दर तसवीर है। धोबिन बच्चे के इलाज के लिये परेशान हो गई किन्तु ब्रांडी की चार बूँदों से उसका चेहरा खिल उठा। कहानी में जीवन के एक पहलू का करुण चित्रण किया गया है जो पठनीय है।

खाने की और एक मलने की है," धोबिन ने तुरन्त उत्तर दिया।

"चलो दो रुपये खर्च हो गये तो क्या हुआ बच्चे की जान तो बच जायेगी। पहले जान की चिन्ता करो तब दो रुपये और चार रुपये गिनना।"

"हाँ, यह तो सही बात है, बहू जी, इसी से तो झट दवा बनवा लाई", एक लम्बी साँस लेकर वह बोली। "इस महँगी के मारे यह आफत है। खाने को भी तो पूरा नहीं पड़ता, इधर यह लड़का हुआ उधर भा-बहनें और बहनोई आये। रूखी-सूखी करते भी सौ डेढ़ सौ का कर्जा हो गया। इधर छः दिन दूध भी पिया जायेंगी तो बिरादरीवाले शादी नहीं करेंगे। अभी जो देखता है वही टोकता है", धोबिन ने अपनी कठिनाई बताते हुए कहा।

बच्चा जो अब तक सो रहा था, एक जोर की साँस लेकर उठ पड़ा और हाथ-पैर फेंकने लगा। हालत उसकी ठीक नहीं थी इसलिए बहू जी ने धोबिन को सम्बोधितकर कहा—"ले जाओ इसे, यहाँ खुले में मत रक्खो। बेचैनी हो रही है उसे।"

धोबिन फिर चिन्तित मन से बच्चे की ओर देखती हुई उठ खड़ी हुई।

३

बहू जी अपने कमरे में बैठी बैठी सोच रही थीं कि दो रुपया उनके लिए

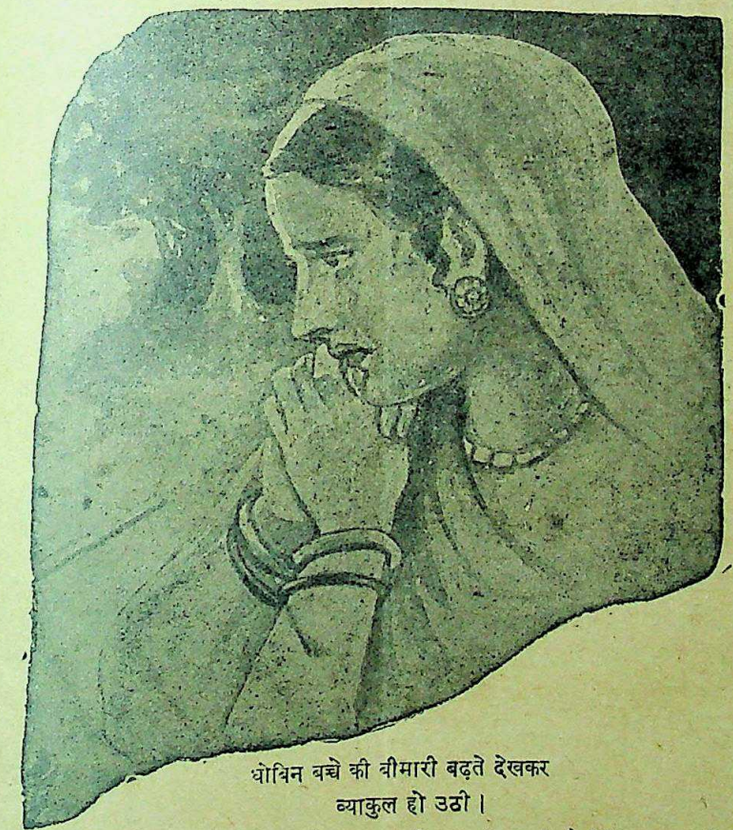

धोबिन बच्चे की बीमारी बढ़ते देखकर व्याकुल हो उठी।

सो तीन-चार उसके भी हो गये। एक जवान लड़की बैठी है मगर उसकी शादी की बात इसी डर से नहीं चलाती हूँ कि रुपये तो हैं ही नहीं।"

"सब चलता है, दो रुपया कोई बड़ी बात नहीं है। लड़कियाँ हैं तो काम ही तो कमाती रहती हैं। ऐसी क्यों भारी पड़ती हैं ? [illegible] ही क्या है [illegible] कर [illegible] अनुस[illegible]

कोई बड़ी चीज नहीं है लेकिन उस गरीब परिवार के लिए तो बहुत कुछ है जिसमें बच्चे से लेकर बड़े तक सबको बराबरी से काम करना पड़ता है। उस समय तो वह बड़े जोश में कह गईं कि 'दो रुपया कौन बड़ी बात है' लेकिन अब उन्हें अपनी गलती मालूम हुई।

घर के धन्धे ही उसके खेल हैं। बड़ा लड़का कल्लू अभी है तो नौ-दस साल का ही लेकिन बाप की बराबरी करनी पड़ती है। अभी से वह बाप के साथ जाकर ढेरों कपड़े धुलवाता है। घुटने तक पानी में खड़े होने की उसे काफी आदत पड़ गई है। सबसे बड़ी और उससे छोटी, दोनों लड़कियों की तो बात ही क्या है ? उन लोगों की गिनती तो अब बड़े आदमियों में है। उन्हें पूरी गृहस्थी तथा अपने धन्धे सबका भार सँभालना पड़ता है।

"बहू जी, आज मैं ढाई रुपये की दवा फिर लेकर आई हूँ। दूसरे डाक्टर को भी दिखाया है लेकिन मुझे कोई फर्क नहीं मालूम पड़ता। जरा आप भी देख लें", कहते हुए धोबिन ने कमरे में पैर रक्खा।

बच्चे की हालत सचमुच ठीक नहीं थी। बहू जी ने कुछ कहा नहीं लेकिन उसके चेहरे से घबराहट टपक रही थी। उन्हें अभी ऐसी बातों का कम अनुभव था इसलिए वह जल्दी ही घबरा जाती थीं।

"हाँ, फर्क तो कोई खास मुझे भी नहीं मालूम पड़ रहा है, पर तुम दवा मत छोड़ो।"

"दवा नहीं छोड़ रही साहब, इसी से तो आज कर्जा लेकर फिर ढाई रुपये की दवा ले आई हूँ। मुझे तो बड़ी चिन्ता लगी रहती है। न खाना खाया जाता है न नींद आती है। ईमान से कहती हूँ बहू जी, रात रात भर हम दोनों प्राणी दिया जलाये बैठे रहते हैं। इसका मुँह देख-देख पूरी रात काट देते हैं।" धोबिन की आँखों से आँसुओं की धारा बह चली।

"रोओ मत, सब ठीक हो जायेगा। आज दूसरे डाक्टर को दिखा दिया यह अच्छा किया। शायद उनकी दवा से अच्छा हो जाये", बहू जी ने उसे आश्वासन देते हुए कहा।

"यह लड़का जब से हुआ है तब से तो बस मुझे फुर्सत ही नहीं मिलती। पहले था तो मैं चारपाई पर पड़ी रहती थी न खाया जाय, न पिया; और जब से हुआ है तो इतना जतन रखने पर भी यह रोज ही बीमार रहता है। जो कभी नहीं किया सो अब करना पड़ता है", धोबिन परेशान होकर बोली।

"पहले बच्चे नहीं बीमार होते थे क्या ?" बहू जी ने आश्चर्य से पूछा।

"कहाँ, बस अफीम के नशे में पड़े रहते थे और मैं अपना धंधा सँभालती थी। अब इसकी बार तो मेरी समझ में ही नहीं आता कि क्या हो गया है। रात रात भर जगती हूँ, दिन में काम करने लायक नहीं रहती। धोबी का भी यही हाल है। धंधे की ओर ठीक से ध्यान न देने से पुराने पुराने कई घर भी छूट गये हैं। इसीलिए खर्च की भी तंगी है।"

"पर अफीम तो नुकसान करती है", फिर बहू जी ने अपना ज्ञान दिखाते हुए कहा।

"हम लोगों को नुकसान नहीं करती। जो हम लोग भी इन बातों का ख्याल करें तो मर जायँ, बहू जी, यह तो [illegible] लोगों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४

शाम को बच्चे की हालत कुछ ठीक थी इसलिए धोबिन बच्चे को दिखाने न आई सिर्फ हालत कहला दी। बहू जी भी काफी निश्चिन्त हो गईं।

पर रात में अचानक दो बजे दरवाजा टुकने की आवाज से बहू जी चौंककर उठीं। कोई आवाज भी लगा रहा है और आवाज से साफ प्रकट होता है कि कोई घबराकर चिल्ला रहा है। दौड़कर उन्होंने किवाड़ खोले। देखा सामने फिर वही धोबिन और धोबी। बच्चे को गोद में लिए दोनों रो रहे हैं।

"बहू जी, इसकी तो साँस न मालूम कैसी रुकरुक-कर आ रही है। रात में क्या करूँ यह सोचकर फिर आपकी ही शरण आई हूँ।" बड़ी मुश्किल से रुक-रुककर धोबिन बोली।

बहू जी, जो एकदम मूर्ति के समान खड़ी थीं कुछ होश में आईं। उन्होंने तो समझा था कि बच्चा खतम हो चुका है लेकिन धोबिन की बात से उन्हें कुछ चेतना हुई।

"देखो, मैं इसे दवा देती हूँ लेकिन मुझे डर लगता है ....."

"अब आप दे दें, मुझे तो अब आप की ही आस है। मैं तो कुछ मानती नहीं बहू जी, जी जायगा तो जनम भर आपकी गुलामी करूँगी मेरे जान में तो अब आप ही डाक्टर हैं।" इतना कहकर दोनों प्राणी हाथ जोड़ने लगे।

बहू जी ने बड़ी हिम्मत करके आधे चम्मच ब्रांडी दूध में मिलाकर बच्चे को पिलाई और सुबह फिर दिखाने को कहा।

सुबह तक बच्चे की हालत कुछ सुधर गई थी।

चार दिन बाद हँसती हुई धोबिन ने फिर बहू जी के कमरे में प्रवेश करते हुए कहा—"बहू जी, आपकी दवाई ने तो जादू का असर कर दिया। डाक्टरों को भी हरा दिया।"

"बच्चा ठीक है, जरा देखूँ। तेरे भाग्य से लड़का ठीक हो गया है। मेरी दवा क्या करती। बहू जी ने देखा बच्चा मजे में सो रहा है।"

इधर उधर की

संसार का सबसे बड़ा समुद्र—प्रशान्त ६,३९,८६,००० वर्ग मील।

* * *

संसार में सबसे बड़ी प्रस्तर-मूर्ति—लिबर्टी न्यूयार्क १५१ फुट।

* * *

संसार की सबसे लम्बी सुरंग—सिम्प्लन स्विट्जरलैंड १२ मील, ५६० फुट।

* * *

संसार का सबसे बड़ा घंटा—मास्को में २१ फुट ऊँचा, घेरा—२१ फुट, वजन ५,६०० मन।

* * *

संसार का सबसे बड़ा ग्रह—गुरु (जूपिटर)

* * *

संसार का सबसे बड़ा पुल—सैन-फ्रांसिस्को आकलैंड पुल ४॥ मील लम्बा।

* * *

संसार का सबसे बड़ा जहाज—एलिजाबेथ (८,५०,००० टन)

* * *

संसार का सबसे बड़ा रेलवे—ट्रांस-साइबेरियन रेलवे।

* * *

संसार की सबसे घनी आबादी—जावा ८०० जन प्रतिवर्ग मील।

* * *

संसार में सबसे लम्बी रेल-यात्रा—रिगासे ब्लाडीवास्टक ६ हजार मील।

* * *

संसार का सबसे बड़ा प्लेटफार्म—सोनपुर बिहार २४१५ फुट।

* * *

संसार में सबसे तेज चलनेवाली रेल-गाड़ी—स्टेट रेलवे (जर्मनी) ८३ मील प्रतिघंटा।

* * *

संसार का सबसे बड़ा स्टेशन—न्यूयार्क में ४७ प्लेटफार्म।

* * *

संसार में सबसे लम्बा रेल का पुल—जम्बेसी (अफ्रीका) १२,०६४ फुट।

* * *

संसार में सबसे बड़ा अजायबघर—ब्रिटिश म्यूजियम (लन्दन)

* * *

संसार का सबसे बड़ा हीरा—'क्यू-लिनन'!

* * *

संसार का सबसे बड़ा मोती—'ब्रसफोर्ड होप' (१८ सौ ग्राम)

* * *

संसार का सबसे बड़ा दूरबीन—कैलिफोर्निया में २०० इंच व्यास।

* * *

संसार में सबसे बड़ा पार्क—नेशनल पार्क संयुक्तराष्ट्र ३५० वर्गमील।

संसार का सबसे बड़ा द्वीप—ग्रीनलैंड (८,३७,३०० वर्गमील।

* * *

संसार में सबसे बड़ी मीनार—एफिल टावर फ्रांस ९८५ फीट।

* * *

संसार में सबसे तेज चलनेवाला वायुयान प्रतिघंटा ४६९·१ मील।

* * *

संसार का सबसे बड़ा पुरस्कार—नोबेल पुरस्कार (६ लाख वार्षिक)

* * *

संसार का सबसे बड़ा धनी-राकफेलर अमेरिका।

* * *

संसार का सबसे तेज घोड़ा—४१ मील प्रतिघंटा।

* * *

संसार की सबसे तेज मोटर ६८·८५ मील प्रतिघंटा।

* * *

संसार का सबसे बड़ा आरसन (८ सेर)

* * *

संसार का सबसे बड़ा [illegible] मान)—विडसर के ब्युक।

* * *

संसार का सबसे बड़ा पेड़—[illegible] ट्री, नैशनलपार्क कैलिफोर्निया, उ[illegible] हजार वर्ष। ऊँचाई २७,३०८ फु[illegible] १०१·६ फुट।

* * *

संसार में सबसे ऊँचा मकान [illegible] में है—१०२ मंजिल।

* * *

संसार में सबसे लम्बी सड़क [illegible] में है—३,२१९ मील।

* * *

संसार में समुद्र की सबसे [illegible] गहराई जापान के पास पैसिफिक [illegible] है—(१०,९९६ गज)

—प्रकाशचन्द्र [illegible]

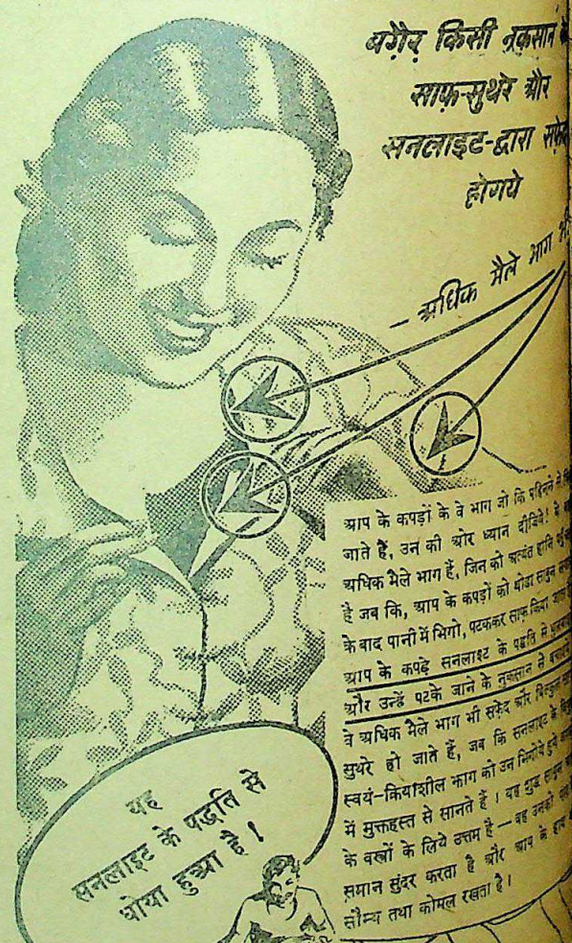

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंगमंच

...नेमा—हिन्दी और हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन
...दुनिया में हिन्दी लेखकों का कोई पुरसाहाल नहीं है

लेखक, श्री मोती बी० ए०, बम्बई

...स्टेशन का प्लेटफ़ार्म। गाड़ी से ...श्री भदन्तआनन्द कौसल्यायन ...की भाषा के सम्बन्ध में खेद ...हुए कहा कि हिन्दी-साहित्य-...का ध्यान इस ओर आकृष्ट होना ...आवश्यक है। इस समस्या पर ...करने के लिए सम्मेलन ने निश्चय ...। इसके पहले कि मैं कुछ कहूँ, गाड़ी ...और यह प्रश्न हम दोनों के ...दूरी की तरह विस्तार ग्रहण ...। मैं कौसल्यायन जी से अलग ...उनके प्रस्तुत किये गये प्रश्न पर ...कर रहा था।

...साहित्य-सम्मेलन और फिल्म ...दोनों के बीच कितना खोखला ...। पूँजीपतियों की पूँजी के दुर्भेद्य ...कम्पनियों में उन्हीं पूँजीपतियों ...विकास की गहरी छाया ...है, जिसका आश्रय कितने ...साहित्यिक ग्रहण किए हुए ...समझ में यह नहीं आ रहा है ...साहित्य-सम्मेलन को क्या पड़ी ...इन साहित्यिकों की दुम ...पीछे खींचना चाहता है, जब कि ...है कि सिनेमा की दुनिया में ...का चाहे जो मूल्य लगाया ...मूल्य कुछ भी नहीं है। ...में वे साहित्य-सेवा करने गये ...सेवा? ठोंक-पीटकर वैद्यराज ...उचित है? हिन्दी के क्षेत्र ...से फिल्मी दुनिया में आए ...एवं साहित्यकारों का एक-...अपने मालिक को किसी न ...खुश रखकर अपनी रोटी ...। मगर साहित्य सम्मेलन है कि ...सेवी और घोर संघर्षशील ...लेगा।

...नहीं सोचा कि हिन्दी-साहित्य-...और रेडियो के संघर्ष में हिन्दी ...सत्ता; किन्तु मैं यह अवश्य ...कि पराधीन देश की बहु-...किन किन मोरचों से लड़ेंगी ...अपने उद्देश्य को प्राप्त कर ...विभाग से लड़-झगड़कर ...बहुत हित साधन सम्मेलन ...हो, किन्तु फिल्मी दुनिया ...है। जब तक केन्द्र से या ...की आज की स्थिति ...तब तक किसी प्रकार ...सफल नहीं हो सकता। ...की विडम्बना को भी तो ...द्वारा प्रचारित भाषा का ...? किस प्रकार की ...प्रकार की हिन्दुस्तानी? ...साम्प्रदायिक प्रश्न हल हो ...के लिये सम्मेलन किसी ...प्रकार का सफल आयो... ...सिनेमा के क्षेत्र...

हिन्दी साहित्यिकों से किसी प्रकार की आशा करना व्यर्थ है। वे अपने जीवन के आगे ऐसे ऐसे प्रश्नों को कब तक महत्त्व देते रहेंगे?

इसी सिलसिले में मुझे याद आ गई एक दिन की बात। विष्णु लाज दादर में भेंट हो गई—अचानक श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी से जो डेढ़ दो साल से विष्णु सिनोटोन में बहैसियत कहानी-लेखक के काम कर रहे थे। मैंने बहुत चाहा कि पान से उनका स्वागत करूँ मगर अपनी, हिन्दी और सिनेमा-संसार की वास्तविकता उन्होंने इसी एक बात में व्यक्त कर दी कि कुछ गाने मैंने "भक्त-प्रह्लाद" में लिखे हैं, जब तक वे गीत परदे पर नहीं आते, तब तक मैं पान नहीं खाऊँगा। दो साल से कम्पनी में कहानी लेखक के पद पर वे थे, मगर उनसे काम नहीं लिया जाता। पता नहीं किस आकांक्षा से उन्होंने इस क्षेत्र में कदम उठाया, मगर आगे बढ़ने का अवसर नहीं मिलता। श्रीयुत भगवतीचरण वर्मा अपनी सफलताओं के बावजूद कोई सक्रिय साहित्यिक सेवा क्यों नहीं कर पाते? श्री नरेन्द्र शर्मा एवं श्री नेपाली भी कई फिल्मों के गाने लिखकर वह सेवा न कर सके, जो प्रदीप जी ने की। मगर जिन प्रदीप जी ने वस्तुतः कुछ सेवा की, वे आज क्यों स्वयं अन्धकार में पड़े हुए हैं? इसका रहस्य क्या है? सुदर्शन जी ने सेन्ट्रल स्टूडियो के माध्यम से क्यों ज्यादा न लिखकर वही लिखा जो उनसे लिखाया गया—'चोर चुरखे चलावे लोहे का भाला, पिया नयनवा के तीर चलावे'। क्रान्तिदूत श्री जोश मलीहाबादी ने भी क्या कम झखमारी है? नीलकण्ठ तिवारी, उपेन्द्रनाथ 'अश्क' हरीकृष्ण 'प्रेमी' इत्यादि के कार्य-कलाप के पीछे यथार्थताओं की जो गहरी मार है, वह हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन क्या जाने? सिनेमा-संसार की माया निराली है। दो प्रकार की चीजों से साहित्यिकों को सामना करना पड़ता है, पूँजी तथा पूँजीपतियों की व्यक्तिगत मानसिक, चारित्रिक, सांस्कृतिक विशेषताएँ। इन दो चीजों का मुकाबला कितना कठिन है यह साहित्य-सम्मेलन नहीं जानता। प्रेमचन्द जी की तरह वापस चला आना आसान है, मगर जमकर रहना, सफलता का झण्डा फहराना और हिन्दी का तथा अपना मान बनाए रखना सिनेमा-संसार में कठिन है।

अनुभूतियों के लिए प्रमाण की क्या आवश्यकता? ... समय और ... हूँ, जब ... ध्यान ... साहू...

कारदार प्रोडक्शन के प्रसिद्ध फिल्ल 'शाहजहाँ' की प्रमुख अभिनेत्री रागिनी।

इस तथ्य को स्वीकार किया कि सिनेमा के क्षेत्र में आए हुए हिन्दी के साहित्यिक सबसे पहले अहं (vanity) का भाव लेकर चलते हैं जिसे वे मन की उदारता से स्वाभिमान कहते हैं। उधर प्रोड्यूसर अपनी (vanity) अलग लिए रहते हैं। हिन्दी का अस्तित्व इन दो प्रकार की अहं भावनाओं के संघर्ष के परिणाम पर निर्भर रहता है। इस संघर्ष में प्रोड्यूसर की (vanity) निश्चित रूप से विजय प्राप्त करती है। फिर तो हिन्दी साहित्यिकों की सिनेमा-क्षेत्र में दूसरी अनिवार्य क्रमिक स्थिति आरम्भ होती है जिसे और लोग पतन कहते हैं, मगर वस्तुतः जो आत्मिक शक्ति का ह्रास (Demoralisation) कहलाता है। इस प्रकार के साहित्यिक से किसी प्रकार की आशा रखना व्यर्थ है। कारण अहं भाव रखते हुए सिनेमा-क्षेत्र में जमना या पनपना कठिन है ही, दूसरे अपनी शक्ति खोकर साहित्य का हित-साधन करना और भी कठिन है। वे तो वही नाच नाचेंगे, जैसा प्रोड्यूसर नचायेंगे। प्रोड्यूसर को अपने मनोनुकूल बनाकर हिन्दी-साहित्य की मर्यादा को बढ़ाना उनके लिए संभव नहीं। खरी खरी दो टूक। अहं भाव रखकर तो कुछ किया ही नहीं जाता। हिन्दी के क्षेत्र से सिनेमा-क्षेत्र में गए हुए साहित्यिकों की यही करुण कहानी है। मगर और क्षेत्रों से घुसे हुए साहित्यिकों ने ज़रा व्यावहारिकता से काम लिया है तो अच्छा बुरा सभी प्रकार का कार्य वे ... सफल ... मगर उनके

के साहित्यिक सदा हतोत्साह रहा करते हैं? निर्मल जी ने भी यह बात पसन्द की कि सिनेमा-क्षेत्र में प्रविष्ट हिन्दी के साहित्यिकों को बदले हुए दृष्टिकोण से कदम उठाना होगा, तभी हिन्दी का हित-साधन हो सकता है।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को इन बातों पर विचार करना चाहिए। प्रोड्यूसरों को हिन्दी से कोई प्रेम नहीं है। हिन्दी के साहित्यिक भी बेबस हैं—बड़ी विषम स्थिति है। उनका वहाँ पहुँच जाना ही कोई अर्थ नहीं रखता। फिर भी हिन्दी का और हिन्दुस्तान का जिससे भला हो, वह काम होना ही चाहिए। अतएव सम्मेलन को हिन्दी के इन साहित्यिकों से या उन साहित्यिकों को सम्मेलन से सम्पर्क स्थापित कर यथार्थताओं का अध्ययन करना चाहिए। एक दिन वह उद्देश्य भी पूर्ण होगा, जिसकी सबको प्रतीक्षा है। सिनेमा-क्षेत्र में हिन्दी की दयनीय स्थिति के बारे में किसी और लेख में कुछ विस्तार से प्रकाश डाला जायेगा। अभी इतना ही।

नारी-जीवन

हिन्दू का जीवन बिना गृहिणी के अपूर्ण रहता है और यदि गृहिणी अनुपयुक्त हुई तो गृहस्थी किसी काम की नहीं रहती। इस पुस्तक में लेखक ने वह विधि बतलाई है जिससे बहू-बेटियाँ गृहस्थी के उपयुक्त अपने जीवन का निर्माण ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत का भावी शासन-विधान

(पेज ७ का शेष)

थे।" भारत के भावी विधान में पृथक् निर्वाचन को स्थान देना राष्ट्रीयता का हनन करना है। "पृथक् निर्वाचन मुर्दावाद" की आवाज हमें बुलन्द करनी है ताकि यह जहरीला विष सदैव के लिए खतम हो जाय।

अल्पसंख्यकों के स्वार्थ की रक्षा

विधान-सम्मेलन में अल्पसंख्यकों के स्वार्थ की रक्षा पर उचित विचार सम्मेलन के सदस्यों को करना होगा। मुस्लिम लीग को छोड़कर भारत के तमाम अल्पसंख्यक कांग्रेस के साथ हैं। उनकी माँग धारा-सभाओं में जगहें सुरक्षित करने की होगी। एक आदर्श विधान में जगहें सुरक्षित रखनी भी ठीक नहीं। परन्तु इस माँग को मान लेने में किसी बुनियादी राष्ट्रीय सिद्धान्त का हनन नहीं होता। वास्तव में तो इस रिजर्वेशन् से अल्पसंख्यकों का ही नुकसान होता है। इस रिजर्वेशन के न रहने से अल्पसंख्यकों को अवसर मिलेगा कि वे अपनी कमजोरियों को दूर कर औरों के बराबर आवें तथा अपनी योग्यता, अपने काम तथा अपने चरित्र-बल से धारा-सभाओं में पहुँचें। परन्तु भारत की वर्त्तमान परिस्थिति को देखते हुए यह आवश्यक है कि अल्पसंख्यकों के लिए जगहें धारा-सभाओं में सुरक्षित की जायँ। "क्या स्वतन्त्र भारत के विधान में हरिजनों के लिए जगहें सुरक्षित होंगी?" यह प्रश्न एक बार एक हरिजन नेता ने महात्मा गांधी से पूछा था। "स्वतन्त्र भारत के विधान में किसी वर्ग विशेष के लिए विशेष सुविधा देने की आवश्यकता ही नहीं होगी। स्वतन्त्र भारत की व्यवस्था में सभी भारतीयों की सर्वमुखी उन्नति के लिए समान अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा की जायँगी।" महात्मा जी का स्पष्ट और सही उत्तर था।

जिन्ना का अन्तिम ट्रम्प कार्ड

अभी हाल ही में मुस्लिम लीग के तानाशाह कायदे आजम जिन्ना और वाइसराय में विधान-सम्मेलन के सम्बन्ध में पत्र-व्यवहार हुआ है। कायदे आजम ने विधान-सम्मेलन की बैठक टालने की कोशिश की; परन्तु वाइसराय राजी नहीं हुए। कायदे आजम जिन्ना विधान-सम्मेलन को क्यों टालना चाहते हैं इस सम्बन्ध में दो शब्द कह देना आवश्यक है। विधान-सम्मेलन में कांग्रेस का बहुमत है और जिन्ना साहब को पाकिस्तान से मुहब्बत। ऐसी परिस्थिति में जिन्ना साहब समझते हैं कि पाकिस्तानी किश्ती को विधान-सम्मेलन-रूपी समुद्र से निकालकर किनारे लगाना बड़ा मुश्किल है। इसके टालने में उनकी एक और दूसरी गहरी चाल है। वे कांग्रेस की शक्ति को कमजोर करना चाहते हैं। साम्प्रदायिक भावना को बढ़ाकर वे समझते हैं कि ब्रिटिश हुकूमत से कांग्रेस की संघर्ष-शक्ति को वे कम कर रहे हैं—और बात पड़ेगा। अतएव विधान-सम्मेलन में शरीक होना कायदे आजम जिन्ना और पाकिस्तान के लिए अपने ही हाथों कब्र खोदना है। भला इस परिस्थिति को वे कैसे आने देते। अतएव उनका निर्णय कि मुस्लिम लीग के सदस्य विधान-सम्मेलन से बायकाट करें स्वाभाविक है। जिन्ना साहब का यह निर्णय उनका अन्तिम ट्रम्प कार्ड था जिससे भारत की राजनीति में काफी खलबली मच गई है। वाइसराय लन्दन में बुलाये गये हैं। कांग्रेस तथा लीग के दो दो सदस्यों को भी लन्दन जाने का निमन्त्रण मिला है।

अँगरेजों की नेकनीयती की परीक्षा

मुस्लिम लीग तथा कांग्रेस में समझौता का होना उतना ही असम्भव है जितना आसमान और जमीन को एक में मिलाना। यह बात अब सबको जाहिर है। आज भारत की राष्ट्रीय प्रगति में मुस्लिम लीग सबसे बड़ा अड़ंगा है। दोनों की नीति में कोई समानता नहीं। ऐसी परिस्थिति में ब्रिटिश सत्ता का समझौता के लिए प्रयत्न बेकार है। देश के सामने इस समय विकट परिस्थिति है। क्या विधान-सम्मेलन सफल होगा? यह प्रश्न सबके मस्तिष्क में मुख्य हो रहा है? विधान-सम्मेलन की सफलता ब्रिटिश सरकार की नीति पर कायम है। इँगलैण्ड के प्रधान मन्त्री एटली ने कुछ महीनों पहले भारत के सम्बन्ध में एक वक्तव्य देते हुए कहा था कि बहुमत का निर्णय अल्पमत खतम नहीं कर सकता। आज कांग्रेस के साथ देश का बहुमत है जिसके निर्णय को मुसलमानों का अल्पमत खतम करना चाहता है। आज ब्रिटिश हुकूमत को अपनी नेकनीयती की परीक्षा देनी है। मेरा विश्वास है कि विधान-सम्मेलन सफल होगा और उसका निर्णय ब्रिटिश सरकार को मान्य होगा चाहे मुस्लिम लीग सम्मिलित हो या न हो। देश तथा विदेश की राजनीतिक परिस्थितियों का यही तकाजा है। कायदे आजम जिन्ना को आवश्यकता है आखिरी निमन्त्रण देने की। यदि वे विधान-सम्मेलन में शामिल होते हैं तो अच्छा वरना सम्मेलन का दरवाजा सदैव के लिए बन्द होना चाहिए।

भारत के विधान की रूपरेखा

राष्ट्रपति कृपलानी ने कांग्रेस के ५४ वें अधिवेशन में अध्यक्ष-पद से भाषण देते हुए भारत के भावी विधान के सम्बन्ध में प्रकाश डाला है। वे कहते हैं, "हम लोकतन्त्र से प्रतिज्ञाबद्ध हैं और हमारा स्वराज्य लोकतन्त्रवादी होगा। हमारा स्वराज्य किसी एक व्यक्ति का अथवा एक परिवार का नहीं होगा, वह व्यक्ति या परिवार चाहे जितना महान् हो। वह किसी एक जाति, धर्म या वर्ग का स्वराज्य भी नहीं होगा। वह जनता का राज होगा, उसमें जनता शासन करेगी और वह स्वराज्य जनता के लिए होगा।" राष्ट्रपति द्वारा सांकेतिक

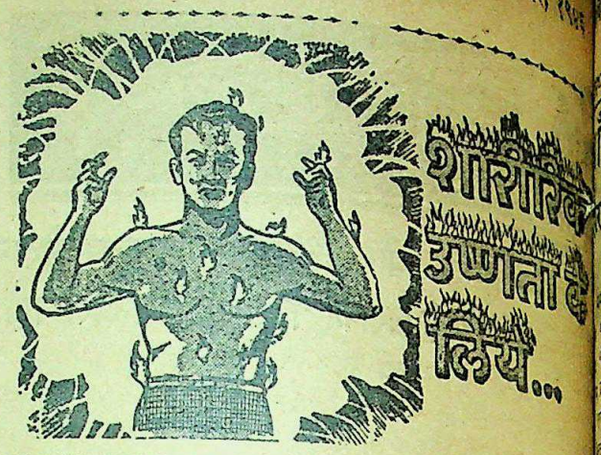

मशहूर अनुभूत इलाज

शीतल, शक्तिवर्धक, आरोग्यदायक

पर्ल काढ़ा

आज से ही शुरू कीजिए, सर्वत्र मिलता है।

जीर्णज्वर, शरीर के अन्दर, बाहर या इधेली वस्तुओं और आंखों की जलन, मूत्रभाग में आग सी जलन, भोजन के बाद पेट में जलन, मन्दाग्नि, संग्रहणी, कठिन अपच, नियमित कोष्ठशुद्धि, रक्तविकार, अशक्ति, नियमित शारीरिक एवं मानसिक थकावट एवं शिथिलता.

इन शिकायतों पर यह बहुत काल से परीक्षित, जड़ी बूटियों के योग से प्रस्तुत औषधि है। पर्ल काढ़ा बालक वृद्ध, पुरुष स्त्री सभी के लिये लाभदायक है तथा इस सीमा तक हानिरहित है कि कोमलांगी स्त्रियों को गर्भावस्था के समय निस्संकोच सेवन कराया जा सकता है। आप स्वयं इसके गुणों, पाचक और शक्तिवर्धक गुणों की परीक्षा कर लीजिए।

पर्ल काढ़ा चाहिए, बच्चों के लिए बिस्किट।

यू० पी० प्रतिनिधि दोसर एण्ड को०, विरहना रोड, कानपुर।

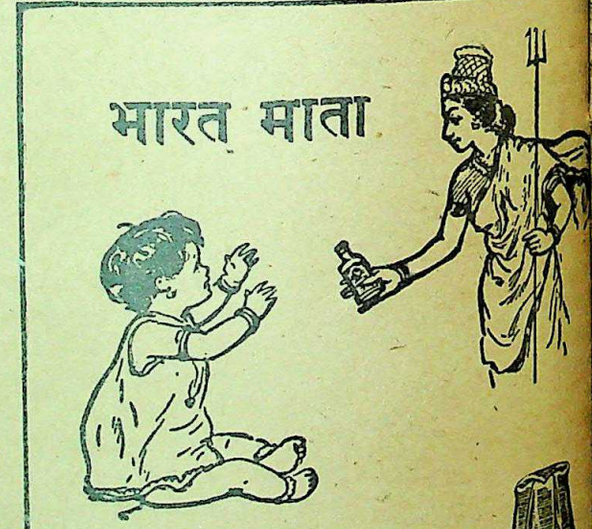

अपने बच्चों से कहो! कि
बुड वर्ड का ग्राइप वाटर
बच्चों को तंदुरुस्त रखता है

WOODWARD'S WATER

...well

...जक" ही असली बुड वर्ड ग्राइप ... अपने बालक के हित के लि...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य-चर्चा

आँवला—सस्ता, सात्विक रसायन

शरीर को सक्रियता, शक्ति तथा आयु प्रदान करनेवाला

लेखक, श्री रामेशवेदी आयुर्वेदालंकार

लक्ष्मी और लक्ष्मी एक बार तीर्थ-
लक्ष्मी से निकलीं। भगवती ने लक्ष्मी से
कि वे कहाँ चलीं? आज मैं स्वकल्पित किसी
रूप में हरि की पूजा करनी चाहती
हूँ। लक्ष्मी ने उत्तर दिया, 'त्रिलोचन को
छोड़ने के पदार्थ से पूजने की हमारी
इच्छा नहीं है। फिर दोनों की आँखों से निर्मल
जल पृथ्वी पर गिरा, उसी से माघ मास
के शुक्ल की एकादशी को आँवले की
उत्पत्ति हुई। इस वृक्ष को देखकर देवता
लोग आनन्दोल्लसित हो उठे। तुलसी
के समान ही यह पवित्र माना
गया है। इसके पत्तों से शिव और विष्णु
की पूजा होती है। माघ मास की
इस तिथि को इसकी उत्पत्ति होने से उस
दिन इसकी इससे पूजा करने से देव
संतुष्ट होते हैं।

पद्म पुराण गरुड़ पुराण के २१५वें
अध्याय में विस्तार से आई है। पुराणकार
ने माघ मास के साथ आँवले का
महत्त्व स्थापित किया है। मैंने इस
वैज्ञानिक दृष्टि से विचार किया और
इस में आँवले के विशेष महत्त्व को
पाया। आँवला अब बाजार में
आ रहा है। प्रायः मार्च के अन्त
तक मिलता रहेगा और उसके बाद हरे
का मौसम समाप्त हो जायगा।
फल के अन्तिम दिनों के आँवले को
बेदाना कहते हैं। इन दिनों जो
फल मिल रहा है वह रस और वीर्य से
बिल्कुल भरपूर नहीं है। माघ में जाकर
फल लगता है और आधे चैत तक
अच्छी अवस्था में रहेगा। यही काल है
फल के अन्दर रसायन और शक्ति
गुणों का बाहुल्य होता है। माघ
फल के अन्दर गुणों का परिपाक
होता है, हमारी सम्मति में इसी लिए
ऋषियों ने इस मास के साथ आँवले के
महत्त्व का प्रतिपादन किया है।
शीत स्वभाव होने से लोग इसको
खाना चाहेंगे जिससे फलों के
उत्तम पोषण उन्हें मिलता रहेगा।
रसायन के लिए जब आँवलों को
सुखाने के लिए सुखाना होता है
तो इसको माघ में फाल्गुन या चैत में
सुखाना चाहिए। अच्छी तरह
सुखाकर सूखे कनस्तरों में बन्द
करना चाहिए।

आँवला हरी अवस्था में
खाया जाता है उन दिनों हमें हरे
फल खाने की कोशिश करनी
चाहिए और खाद्योज (विटामिन)
प्रधान फलों के स्थान पर
हमें आँवले के ऊपर
निर्भर रहना है। स्कर्वी को रोकने के
लिए सन्तरियों और औषधों
में इसकी सिफारिश की जाती
है। यह कैसे सस्ता है! सहज
में मिलने वाली वस्तुओं की तरह
इसका भी सकता
है। इसको जो सकता
है। यह उ
तोले से

बड़ी विशेषता यह है कि ठीक तरह सुखा कर रखने के बाद भी इसमें प्रायः सब गुण सुरक्षित रखे जा सकते हैं। आँवले के चूर्ण से बनी टिकियाँ अब फौजी सिपाहियों को खाद्योज सी प्रदान करने के काम में आ रही हैं। १९१४-१८ की लड़ाई में मेसोपोटेमिया तथा अन्य क्षेत्रों में, जहाँ हरी साग-सब्जियों की कमी थी या जहाँ वे मिल ही नहीं सकती थीं, अनेक सिपाहियों को स्कर्वी रोग हो गया था। सन् १९४० में जब हिसार-प्रान्त में दुर्भिक्ष के समय स्कर्वी प्रचण्ड रूप धारण कर रहा था तब ताजा आँवला इस रोग का अचूक इलाज सिद्ध हुआ था।

अद्भुत पौष्टिक रसायन

पुराने चिकित्सकों ने ताज़े और सूखे आँवले के योग से ऐसी-ऐसी पौष्टिक रसायनें बनाई थीं जिनके गुणों को देखकर आश्चर्य होता है। ताजे आँवले के प्रसिद्ध योग च्यवनप्राश के लिए तो कहा जाता है कि इसके प्रयोग से बूढ़ा च्यवन ऋषि फिर से जवान बन गया। ब्राह्मरसायन, अमलकायक ब्राह्मरसायन आदि अनेक रसायनों का उल्लेख हमें मिलता है जिनके गुणों को बताते हुए कहा गया है कि इन रसायनों को सेवन करनेवाला सैकड़ों सालों की आयु को सुखी रहता हुआ भोगा करता है। इन रसायनों को बनाने की विधियाँ पेचीदी हैं, इसलिए उनके वर्णन से पाठकों को विशेष लाभ न होगा। चरक ने प्राणकामीय रसायन पाद में, अमयामलकीय रसायन पाद में ओट करप्रचितीय रसायन पाद में आँवले की कुछ ऐसी रसायनें भी लिखी हैं जो सरल हैं और उनसे सामान्य साधन सम्पन्न व्यक्ति भी लाभ उठा सकता है। इस प्रकार की रसायनों का हम यहाँ उल्लेख करेंगे।

आमलक चूर्ण रसायन

छः सेर बत्तीस तोले आँवले के चूर्ण को एक हजार ताजे आँवलों के रस से इक्कीस बार भावना दें। अर्थात् एक हजार ताजे आँवलों को कूटने से जितना रस निकले उसे थोड़ा-थोड़ा करके पिसे हुए सूखे आँवलों के अन्दर मिलायें और खरल में घोटें। यह रस सूख जाने पर और रस मिलायें और फिर घोटें। इस प्रकार एक हजार आँवलों के सारे रस को इसके अन्दर खपा दें। फिर, इसमें शहद और घी प्रत्येक बारह सेर तेरह छटाँक, पिप्पली का चूर्ण तिरसठ तोले और खाण्ड डेढ़ सेर आठ तोले मिलायें। घी पिलाई हुई हाण्डी में इसे रख छोड़ें। प्रावृट् ऋतु में इसे राख के ढेर के अन्दर गाड़ दें। वर्षा ऋतु समाप्त होने पर निकाल लें। ठीक सात्म्य भोजन करता हुआ मनुष्य इसे सेवन करे तो उसके पास बुढ़ापा नहीं आता और उस[illegible]

एक बरतन में भर दें। बरतन का ढक्कन भी ढाक की लकड़ी का बना हुआ हो और मुख पर ठीक बैठ जाता हो। ढक्कन इस तरह ठीक बैठना चाहिए कि पानी के वाष्प भी बरतन के अन्दर से बाहर न निकल सकें। हरे आँवलों से भरे बरतन को उपलों की आग में रखें। बरतन की गीली लकड़ी आँवले के जलीय भाग के वाष्प से आँवले पक जायँगे। पक जाने पर आग से उतारकर खोल लें और ठंडा हो जाने पर गुठली और रेशे निकाल फेंके। आँवलों को कुचलकर कपड़े में से हथेली से मलकर छानने से रेशे पृथक् हो जाते हैं। छने हुए आँवलों में छः सेर बत्तीस तोले पिप्पली का चूर्ण और इतना ही छिलके रहित वायविडंग का चूर्ण मिलाये। नौ सेर अड़तालीस तोले खांड और तिल का तेल, घी तथा शहद प्रत्येक बारह सेर चौंसठ तोले मिलाकर कलछी से खूब आलोड़ित कर लें। घी पिलाई हुई मजबूत हाण्डी में इक्कीस दिन पड़ा रहने के बाद इसे प्रयोग करें। यह भी उत्कृष्ट रसायन है। आधे से एक तोले की मात्रा में इस अवलेह के नियमित सेवन करने से बुढ़ापा दूर रहता है और सेवन करनेवाले की आयु सौ साल होती है।

केवलामलक रसायन

इस रसायन-प्रयोग में अकेला आँवला ही होता है इसलिए इसका नाम 'केवलामलकरसायन' रखा गया है। चिकित्सा स्थान के करप्रचितीय रसायन पाद में महर्षि चरक बताते हैं कि इस रसायन को सेवन करनेवाला एक साल तक केवल दूध पर निर्वाह करता हुआ गौओं के बीच में रहे और वहाँ जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी रहता हुआ मन में गायत्री मन्त्र का ध्यान करता रहे। एक साल बाद पौष, माघ व फाल्गुन की किसी शुभ तिथि में प्रयोग आरम्भ करे। प्रयोग से पूर्व तीन दिन उपवास करे। फिर स्थान आदि से शुद्ध होकर आँवले के वन में किसी बड़े फलवाले आँवले के वृक्ष पर चढ़कर शाखा में लगे हुए फल को हाथ से पकड़कर ओम् का जप करे। तब उस आँवले को तोड़कर खाये। जितने आँवले खायेगा उतने ही हज़ार साल युवा होकर जीवित रहेगा। यदि भर पेट खाकर तृप्त हो जाय तो वह अमर सदृश ही हो जाता है, अर्थात् उसकी आयु बहुत दीर्घ हो जाती है और कान्ति, लक्ष्मी, वेद और सरस्वती स्वयं उस मनुष्य के पास उपस्थित हो जाती है।

सात्विक रसायन

रसायन द्रव्य दो प्रकार के होते हैं। एक वे जिसके सेवन में शरीर की पुष्टि और सशक्तता के साथ-साथ तामसिक वृत्तियाँ बढ़ती हैं और दूसरे वे जो पोषण और शक्ति के साथ मन और बुद्धि को भी सात्विक बनाते हैं। भारतीय दिव्य दृष्टि ऋषियों का यह रसायनफल मनुष्य के अन्दर सात्विक प्रवृत्तियों को जागृत करनेवाला है। हमें भोजनों में इसका प्रयोग बढ़ाना चाहिए। हमारे घरों में और नगरों तथा देहातों के भोजनालयों में आमचूर, इमली, अनारदाना आदि का प्रयोग खटाई के रूप में बहुत किया जाता है। उसकी जगह इस सात्विक फल आँवले को दी जानी चाहिए। चरक के समय यह इस प्रयोजन के लिए और चटनियों के लिए बहुत प्रयुक्त होता रहा है। वर्तमान समय में हम इसका इस रूप में प्रयोग बहुत कम देखते हैं। सेवाग्राम आश्रम में तो मैंने प्रतिदिन हरे आँवले की चटनी बनते देखी है, परन्तु किसी दूसरे आश्रम में यह सार्वजनिक भोजनालय में नहीं। आँवले के अचार, मुरब्बे आदि के साथ-साथ इसकी चटनी बनाने का रिवाज भी बढ़ना चाहिए।

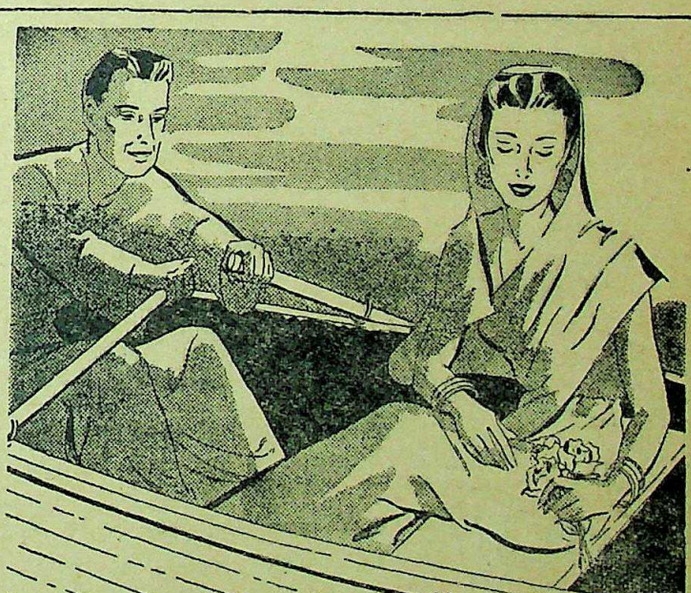

जब आप ताज़ा और सुन्दर भारतीय गुलाबों को शाम के सन्धिप्रकाश में सिर हिलाते देखते हैं, तब आप को अपना प्रिय साबुन विनोलिया व्हाइट रोज़ का स्मरण आयेगा। आप के सौन्दर्य-वर्धन के लिये इस से उत्तमोत्तम वा अत्युत्कृष्ट सुगन्धित साबुन नहीं हो सकता। मृदु एवं फेनदार विनोलिया अतिशय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार की पहली आहुति

(पेज ८ का शेष)

अत्यधिक विद्यार्थी भी लेटे, पड़े, बैठे देखते थे। कोई व्याख्यान दे रहा था, कोई आर्यर की नकल कर रहा था, कोई भुने भुट्टे खा रहा था। हाँ! फाटक की ओर से जब जरा जोर का नारा आता, सब उधर को देखते और कसकर नारे को दुहरा-तिहरा देते!

एकाएक उनमें खलबली मची। सत्याग्रहियों को तितर-बितर करते घुड़सवार बगीचों में आये और लगे सरपट घोड़े दौड़ाने। लोग गिरते-पड़ते, साथियों का धक्का खाते, पेड़ों से टकराते, इधर-उधर भागकर अपने को बचाने लगे। कितनों को चोट लगी, कितनों की कलम टूटी, घड़ी फूटी पर घुड़सवार के वापस होते ही अधिकांश हँसते, आह-ऊह करते जहाँ-तहाँ बैठ गये और कितने शहर की ओर लौट पड़े। और पहले से कहीं अधिक विद्यार्थी फाटक की ओर बढ़े। आर्यर साहब सामने खड़े थे। विद्यार्थियों की टोली के पीछे से उन पर ढेले चलने लगे। आर्यर मुरदाबाद! सन् ५७ याद करो—का शोर तो हो ही रहा था। ढेले हलके थे, पर नारे तीर जैसे चुभ रहे थे। मि० आर्यर ढेले को बेंत से रोकते हुए फाटक के भीतर आये, गोरखों को सामने किया और जब बिलकुल निहत्थे थके-माँदे विद्यार्थियों की टोली दस-बारह कदम के फासले पर पहुँची, कुछ बोले। धड़ाम की आवाज हुई। पीछे के लोग भागने लगे। अगली कतार ने ललकारा—झूठा फायर है, बढ़े चलो! पर उनकी ललकार लोगों तक पहुँच भी न पाई थी कि दूसरी आवाज हुई।

स्तम्भित आँखों ने देखा, बच्चों की लाशें तड़प रही हैं। हाँ! प्रायः सभी के सभी बच्चे, हाईस्कूल के छात्र, जिनके होंठों को जवानी रँग भी न पाई थी। घायल "पानी-पानी" चिल्लाने लगे। लोग जहाँ तहाँ ठिठके। पर आर्यर साहब दौड़-दौड़कर वहाँ गोरखे ले गये जिन्होंने राइफल दिखा-दिखाकर लोगों को भगा दिया। आर्यर हताहतों की क्यों फिक्र करते? अगस्त-आन्दोलन का बिहार की राजधानी में यह पहला प्रदर्शन था जिसको सरकार की कूवत का नृशंस प्रदर्शन करके वे इस तरह कुचल देना चाहते थे जिससे सारा बिहार थर्रा उठे। किन्तु उनकी और उनके गोरखों की सारी पैंतरेबाजी छात्रों को वहाँ से भगा न सकी। वे अपने हताहत साथियों को जैसे-तैसे अस्पताल में लाये।

इस गोली-काण्ड की खबर वन की आग जैसी शहर भर में फैल गई। शहीदों का खून सबके हृदय में जोर मारने लगा। कदमकुआँ की ओर से देश-सेविकाओं का जो जुलूस सेक्रेटेरियट की ओर बढ़ रहा था अपने हताहत बच्चों की सुध लेने अस्पताल की ओर मुड़ा। परन्तु साइन्स कालिज के विद्यार्थी आर्यर साहब की रक्तपिपासा को बिलकुल शान्त कर देना चाहते थे। उन्हें मालूम हुआ था कि उनके तीन छोटे-छोटे साथी घटनास्थल पर ही शहीद हो गये हैं और कितनों को सांघातिक गोली लगी है तो भी सेक्रेटेरियट पर आर्यर ने झंडा फहराने नहीं दिया है। वे लगभग दो सौ का जुलूस लेकर चल पड़े, प्रण करके कि फहरा कर ही रहेंगे या तो एक एक करके मर मिटेंगे। जुलूस गोविन्द मित्र रोड के पास पहुँचा था कि जिला कांग्रेस के पदाधिकारी सामने आये, विद्यार्थियों को समझा दिया कि घायलों की तीमारदारी उन्हें अस्पताल बुला रही है, उन्हें सेक्रेटेरियट की ओर न बढ़कर अस्पताल पहुँचना चाहिए और जल्द से जल्द। उस मय उन्हें यह भी मालूम हुआ कि एक विद्यार्थी [illegible] भवन के मुँडेरे पर चढ़ गया था [illegible] वहाँ अपने कुरते को फाड़ डाला था [illegible] आलपीन के सहारे एक छोटे 'राष्ट्रीय [illegible] को उसमें 'साँट' उसे एक बड़े राष्ट्रीय [illegible] का रूप देकर उड़ाया था। [illegible] उड़ाता हुआ वह कौमी नारे [illegible] था, सर्जेन्ट की आँख उधर गई [illegible] गिरफ्तार कर लिया गया। इस [illegible] पाकर जुलूस ने अस्पताल की ओर [illegible] ही मुनासिब समझा।

लेखक की शीघ्र ही (पुस्तक [illegible] सदाक़त आश्रम, पटना) से प्रकाशित [illegible] वाली रचना 'अगस्त-क्रान्ति' का एक [illegible] मूल्य ८) रु०।

स्वाद में परिपूर्ण
त्वरित पाचन-योग्य
विशुद्ध
विटैमिन-युक्त

डालडा में तली हुई पूरीयाँ आप के मूँह में आसानी से घुल जाती हैं—और स्फूर्ति भी देती हैं!

डालडा आपका भोजन स्वादिष्ट करता है और इस के अतिरिक्त वह आप का स्फूर्ति-दायक अन्न है! आप के दैनिक आहार को प्रसिद्ध पौष्टिक गुणवाले इस त्वरित् पाचनयोग्य, विटैमिन्-युक्त रसोई-साधन-द्वारा सुधारिये। डालडा प्रत्येक गृहिणी के लिये एक देन है—वह उसके साधी रसोई को भी अपनी स्वादिष्ट मधुरता से परीपूर्ण करके, उसके परिवार को अधिक शक्ति प्रदान करता है।

समस्या कठिन-निवृत्ति सरल

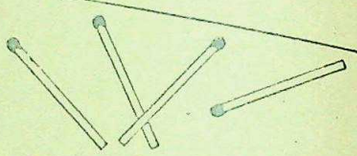

प्रश्न : दियासलाई की चार तीलियों से छोटे से छोटा समकोण चतुर्भुज बनाइए?

उत्तर : तीलियों के सिरों को ऐसे रखिये कि उनका संकेत उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम की ओर हो जैसा कि चित्र में दिखाया गया है।

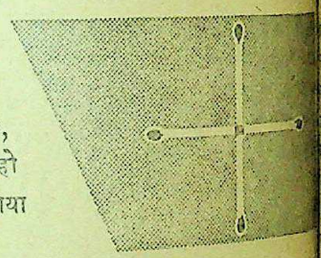

बच्चों की शिक्षा के निमित्त या विवाह में ख़र्च करने और नौकरी [illegible] अलग होने पर उपयोग में लाने के लिये रुपया बचाना बहुत से मनुष्यों के लिये इतना सरल नहीं। परन्तु उन मनुष्यों के लिये चिन्ता का [illegible] कारण नहीं जो थोड़ा रुपया लगाने वालों के हित के लिये प्रचलित नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स की योजना में सेविंग्ज़ ग्रूप के मैम्बर बन कर सम्मिलित हैं। नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स की मद पूर्णतया सुरक्षित है और इस [illegible] सब मदों से अधिक ब्याज मिलता है।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

(१) आप ५, १०, ५०, १००, ५००, १०००, या ५०००, रु० के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) कुटुम्ब का प्रत्येक व्यक्ति (वयस्क या अल्पवयस्क) ५००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकता है। दो व्यक्ति मिलकर १०,००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है। सरकार द्वारा प्रचलित रुपया लगाने की मदों [illegible] है यह सब से

(४) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स [illegible] लगता।

(५) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा [illegible] हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट १।१/[illegible] पश्चात भी भुनाया जा सकता है।

(६) जिनकी बचत थोड़ी है [illegible] ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद [illegible] ५ रु० के स्टाम्प्स जमा होने पर [illegible] सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट मिल जायेगा।

(७) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स [illegible] सरकार द्वारा अधिकृत एजेंटों अथवा [illegible] ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

कांग्रेस-विधान और खद्दर

...-विधान से खद्दर सम्बन्धी धारा ...के लिए श्री दीनबन्धु पाठक की ...नवम्बर के "देशदूत" में प्रकाशित ...का समर्थन करना असम्भव है। ...का सार यही है कि समय के ...के साथ प्रत्येक वस्तु में तदनुकूल ...होना चाहिए और देश की ...को देखते हुए मिलों द्वारा बना ...अवश्य प्रचलित होना चाहिए। ...सरकार को लेखक अपनी बतला ...वह किसी अर्थ में अपनी नहीं, ...पास कुछ अधिकार नहीं और न ...काफी समय तक स्थित रहने का ...है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि ...मिल मालिक बनकर विदेशी ...कपड़ा बनाकर आज भी स्वदेशी ...का लाभ उठा रहे हैं। यदि ...और चरखे का महत्त्व कम कर ...तो पूँजीपतियों की और भी ...बन आयेगी। जुलाहे और मजदूर ...में काम करनेवालों से अवश्य ...और आधा पैदा कर पाते हैं परन्तु ...हमें नहीं भूलती है वह यह है कि ...और चरखा चलानेवालों द्वारा ...हुआ धन देश का है और देश ...है परन्तु मिल मजदूरों की मेहनत ...विदेशों को कलों के मूल्य के रूप ...जाता है। देश को कल कारखानों ...निश्चय ही है और उनसे ...लाभों के विषय में भी दो मत ...सकते किन्तु खादी के अन्तर्गत ...धन देश में रहता है और मिल-...के द्वारा देश का धन विदेशों को ...है। अतएव हमें सर्वप्रथम अपने ...मिलें कारखाने और मशीनें ...चाहिए और उसके पश्चात् हम ...द्वारा बना हुआ कपड़ा बिना ...के अपना सकते हैं। खादी के ...बनाये रखना उसी समय वर्त-...और समाज की अवहेलना ...कि हमारे कल कारखाने मजदूरों ...और उनको पूरा लाभ मिलता ...इस समय है जब कि मजदूरों ...भी नहीं मिलती। अतएव ...पुकार यही है कि हमारा ध्यान ...भिन्न भिन्न प्रकार की मशीनें, ...अस्त्र-शस्त्र इत्यादि बनाने की

—कृष्णकुमार गुप्त

* * *

...हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

...भारतीय हिन्दी - साहित्य-...वार्षिक अधिवेशन सिन्ध-प्रान्त ...में हो रहा है। राष्ट्रभाषा ...सदैव महत्त्वपूर्ण रहा है ...के वातावरण में उसका ...बढ़ गया है। स्वतन्त्रता ...के साथ हमें अपनी भाषा ...बनी हुई संस्कृति की रक्षा ...के लिए भी सचेत ...हो गया है। ...सिन्ध-प्रान्त ...प्रान्तों ...

का लगना अधिक आवश्यक है। यहाँ पर हमारी मूल भाषा का स्वरूप भी बदल दिया गया है, और अरबी लिपि में उसे अब लिखा जाता है। गत कुछ वर्षों से उस भाषा के संस्कृत तथा तत्सम शब्दों को धीरे धीरे हटा कर फारसी तथा अँगरेजी शब्दों से भरने का यत्न निरन्तर हो रहा है। अतः यह आवश्यक है कि सिन्ध में सम्मेलन का अधिवेशन बड़ी धूम-धाम से हो, उसमें भारत भर के प्रतिनिधि अधिकाधिक संख्या में आयें तथा शक्तिशाली वाणी से सिन्ध-निवासियों को अपनी भाषा तथा संस्कृति के प्रति जागरूक करें।

सिन्ध भारत के एक कोने में है, तथा अधिकतर नगरों से सुदूर भी है किन्तु भारतीय संस्कृति का सबसे प्राचीन केन्द्र होने का सौभाग्य इसी बृहस्पति क्षेत्र को है। भारत के प्राचीन गौरव का स्मृति-चिह्न 'मोहन-जो-दड़ो', तथा सक्खर का महान् तीर्थ 'साधुबेला' कराँची से अधिक दूर नहीं है। सिन्धु-नद पर निर्मित सक्खर का विशाल सेतु एक दर्शनीय स्थल है। स्वयं कराँची नगर भारत के सबसे सुन्दर नगरों में एक है।

दिसम्बर की २६, २७, २८, २९, ३० तारीख को यहाँ सम्मेलन का अधिवेशन हो रहा है। हम अनेक परिषदों तथा मूल अधिवेशन के अतिरिक्त विराट् कवि-सम्मेलन, प्रदर्शनी, साहित्यिक नाटक, लेखक-सम्मेलन, प्रान्तीय भाषाओं का सम्मेलन आदि अनेक आयोजन कर रहे हैं। आशा है हिन्दी प्रेमी भारती की शुभ सेवा के विचार से यहाँ पधार कर हमें कृतार्थ करेंगे।

—प्रचार-मन्त्री

* * *

म्यूनिसिपल बोर्ड प्रयाग की आयुर्वेदिक सहायता

प्रयाग के म्यूनिसिपल बोर्ड द्वारा दारागंज में एक एलोपेथिक—औषधालय गत कई वर्षों से स्थापित है। उस औषधालय से केवल दारागंज की ही जनता का लाभ है। अलोपीबाग, मटिहरा, अल्लापुर और सुहबतिया बाग के निवासी उससे विशेष लाभ नहीं उठा पाते। इन मुहल्लों के निवासी विशेष रूप से साधारण स्थिति के हैं। यदि इनके लिए किसी दूसरे एलोपेथिक औषधालय की योजना की जाय तो उसमें बहुत व्यय लगेगा। आयुर्वेदिक औषधालय का व्यय किसी एलोपेथिक औषधालय की अपेक्षा कम होगा। कटरा में म्यूनिसिपल बोर्ड की ओर से एक एलोपेथिक औषधालय गत कई वर्षों से है। यदि प्रयाग का म्यूनिसिपल बोर्ड कटरा की तरह एक आयुर्वेदिक औषधालय अलोपीबाग में ... करा दे ... जनता का ... प्रयाग ...

हिन्दी के कवि और पैसा

मैं आपके पत्र द्वारा यह सुझाव पेश करना चाहता हूँ कि कविगण किसी भी कवि-गोष्ठी में जायें तो कविता के कवि बनकर जायें, पैसा के नहीं। हमारे कुछ कविगण, जिन पर हिन्दी को गर्व है; बिना दो सौ-पाँच सौ लिये किसी कवि-सम्मेलन में नहीं जाते। इससे हिन्दी-साहित्य को बहुत बड़ा धक्का लग रहा है। क्योंकि कवि-सम्मेलन में बहुत से लोग आते हैं, किन्तु अच्छे कवियों को न पाकर उदास मन चले जाते हैं। यदि अच्छे कवि जायें तो उनका जनता में प्रभाव पड़ता है और जनता हिन्दी की ओर झुकती है। क्या मैं आशा करूँ कि हमारे कविगण किसी के मुख से मेरे ऐसा हिन्दी के प्रचारकों से यह सुनने का अवसर न देंगे कि हिन्दी के कवि पैसा।

—वी० एन० उपाध्याय प्रधान मंत्री साहित्य-सेवासदन सोनबरसा बलिया

* * *

बलिया में अकाल

मैं आपके पत्र 'देशदूत' द्वारा माननीय प्रधान मंत्री पन्त जी का ध्यान बलिया की ओर दिलाता हूँ। विद्रोही बलिया आज अकाल-ग्रस्त है। सेर भर का चावल, दो सेर का चना तथा डेढ़ सेर का गेहूँ भी मिलना अत्यन्त मुश्किल है। जो कुछ भी गल्ला सरकार द्वारा बलिया भेजा जाता है वह भी उचित तौर पर नहीं मिल पाता। इसका कारण कुछ अवसरवादी जनों का—कुप्रबन्ध तथा गल्ले की कमी। चीनी तो वहाँ मिलती ही नहीं। बड़ी मुश्किलाहट से एक के दो देकर चीनी मिलती है।

कपड़े की कमी इतनी है कि कफन तक का कपड़ा मिलना मुश्किल है। क्या मैं आशा करूँ कि माननीय पन्त जी इस ओर ध्यान देंगे।

सोनबरसा बलिया —वीरेन्द्रनाथ उपाध्याय

श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी की रचनाएँ

सञ्चारिणी

इसमें लेखक के भक्तिकाल की अन्तर्चेतना, व्रजभाषा के अन्तिम प्रतिनिधि और शरत्साहित्य का औपन्यासिक स्तर आदि १० निबन्धों का संकलन है। निबन्ध परस्पर क्रमबद्ध हैं और हैं विविध युगों के प्रतीक-स्वरूप। नवीन ढंग के साहित्य में पुस्तक अपने ढंग की एक ही है। ढाई सौ से अधिक पृष्ठों की, अच्छे काग़ज़ पर छपी सजिल्द पुस्तक का मूल्य दो रुपये।

युग और साहित्य

इस पुस्तक में युगद्वन्द्वों और उससे उत्पन्न भावी सम्भावनाओं को, साहित्य के माध्यम से उपस्थित करने का प्रयत्न है। इसे वर्तमान साहित्य का संक्षिप्त इतिहास भी कह सकते हैं। साहित्यिक, राजनीतिक और सामाजिक गतिविधियों की जानकारी के लिए यह पुस्तक अनुपम है। अच्छे काग़ज़ पर छपी साढ़े तीन सौ से अधिक पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य दो रुपये ग्यारह आने।

मौलिकता—साहित्यिक मौलिकता की विशद व्याख्या। मूल्य ।-) पाँच आने।

...द्वारकाप्रसाद

चूड़ीवाली

चूड़ीवाली की 'चूड़ियाँ, चूड़ियाँ' ध्वनि गूँज उठती है और उसकी रंगीन चीजों के आस-पास स्त्रियों का एक समूह एकत्र हो जाता है। वे उत्सुकता से अपनी खरीद करती हैं तथा अन्य और चीजों को खरीदने के आनन्द-विनोद में आगे बढ़ जाती हैं।

हमाम को वे सर्वत्र देखती हैं। दैनिक स्नान में उसकी ताजगी और सुगन्धि गरीब और अमीर के मन में जाग्रत हो जाती है और इस प्रकार एक और वस्तु खरीद ली जाती है।

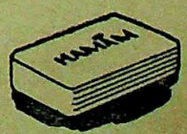

हमाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरठ-कांग्रेस के कुछ संस्मरण

(पेज ५ का शेष)

आजाद हिन्द-सेना के सैनिकों के साथ निकला। नेता-कैम्प से आकर मंच के पास समाप्त हो गया। ऐसा स्वागत हमारे कांग्रेस सभापति का पहले ही की भाँति था। हम साम्प्रदायिक दंगों से घिरे थे। ऐसी स्थिति में जो भी स्वागत हम कर सके उसी पर गर्व कर सकते हैं।

दो बजे से अधिवेशन आरम्भ हुआ। स्वागताध्यक्ष के भाषण के बाद राष्ट्रपति ने अध्यक्ष का आसन ग्रहण किया। आचार्य जी का भाषण आज की देश-विदेश की स्थिति का एक जीता-जागता सच्चा चित्र था। भाषण के पश्चात् ही पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कांग्रेस के साढ़े ६ वर्षों का क्रान्ति-मय इतिहास बतलाया और कांग्रेस के कार्यों की रूप-रेखा खींची। प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हो गया। उस दिन के वक्ताओं में सरदार पटेल के वक्तव्य की ओर उपस्थिति अधिक आकर्षित थी। कुछ मुसलमान सदस्य सरदार के भाषण को न समझ कर असंतुष्ट हो रहे थे परन्तु सरदार ने उत्तर देकर उन्हें संतुष्ट कर दिया। सरदार पटेल का वह शब्द 'तलवार का जवाब तलवार हो सकता है' आज भी उस मंच की याद दिलाता है। सरदार पटेल में लौह पुरुष का गुण वहीं देखने को मिला। विरोधियों में श्रीमती अरुणा आसफ अली, अच्युत पटवर्धन, अशोक मेहता आदि समाजवादी नेता थे। इनके विपरीत समाज-वादी नेता श्री जयप्रकाशनारायण जी कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी के प्रस्तावों के समर्थक बनकर खड़े हो रहे थे। पटेल ने कहा—'हम अस्थायी सरकार से नहीं हटेंगे। यदि हटेंगे तो अँगरेजों का मुँह काला करके।' सरदार के प्रस्ताव का विरोध एक पठान नेता ने भी किया। खान अब्दुल गफ्फार खाँ मौन देवता स्वरूप बैठे थे। प्रस्ताव समाजवादियों के विरोधी बहुमत से पास हुआ।

विधान-परिषद् का प्रस्ताव आचार्य नरेन्द्रदेव जी ने किया। समाजवादी लोग आचार्य जी के प्रस्तावक होने पर आश्चर्य कर रहे थे। मालूम होता था कि उस प्रस्ताव को आचार्य जी से जबरदस्ती पेश करने को कहा गया था। प्रस्ताव के मूल सिद्धान्तों को छोड़कर आचार्य जी इधर-उधर की बातें बोल रहे थे। श्रोताओं को वक्ता का भाषण रुचिकर नहीं जँचा। यद्यपि प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हो गया था पर था वह निर्जीव-सा।

२४ नवम्बर को ६॥ बजे दिन में पंडित प्यारेलाल शर्मा की मूर्ति का उद्घाटन पंडित जवाहरलाल नेहरू ने किया। उसी अवसर पर राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी और पंडित नेहरू को मेरठ म्युनिसिपल बोर्ड के सदस्यों और चेयरमैन की ओर से मानपत्र दिया गया। दोनों महानुभाव के गले में सोने के हार लटक रहे थे। उस स्थान पर भी आजाद हिन्द-सेना के सैनिक प्रबन्ध कर रहे थे। बड़ा ही मनोहारी दृश्य था। नेताओं का भाषण सुनने के लिए लोग उमड़े पड़ रहे थे। ऊँचे ऊँचे पेड़ों पर लोग दर्शन के लिए चढ़कर बीस बीस फीट उँचाई से भाषण सुन रहे थे।

दोपहर से अधिवेशन की कार्यवाही आरम्भ हुई। प्रस्ताव जो पेश थे उनमें एक के प्रस्तावक थे श्री जयप्रकाश नारायण। इनके दो अन्य प्रस्ताव भी थे। डाक्टर पट्टाभि भी एक प्रस्तावक थे। उन्हीं के समर्थन में खड़े हुए प्रोफेसर रंगा के अँगरेजी में भाषण पर एक सज्जन ने कहा—सभापति जी भाषण समझ में नहीं आया, कृपया अनुवाद कर दिया जाय। अध्यक्ष ने विनोदी पुट में कहा—'हमने भी नहीं समझा।' इसके आगे अध्यक्ष ने कहा आज तो सभी भाषण हिन्दी में हो रहे हैं। इसलिए साथ में चटनी भी होनी चाहिए। सभी लोग हँस पड़े। पंडित गोविन्दवल्लभ पन्त भी प्रस्तावकों में से एक थे।

अधिवेशन के अन्तिम वक्ताओं में मौलाना अबुलकलाम आजाद थे। मौलाना साहब ने हिन्दू-मुसलमान साम्प्रदायिक दंगे की तीव्र निन्दा की। अचकन, पायजामा और काली टोपी में मौलाना का वह लाल चेहरा और ऐंठी हुई मूँछें एक वीर सेनानी का चित्र खींच रही थीं।

अधिवेशन की विशेष घटना एक और थी—कांग्रेस-विधान में नया परिवर्तन। यद्यपि वह चीज साफ नहीं हुई फिर भी यह स्पष्ट हो गया है कि कांग्रेस से चार आने की मेम्बरी अधिक दिन नहीं चल सकती। मंच की ओर से मूल प्रस्ताव का विरोध समाजवादी लोगों ने किया। कुछ गांधीवादियों ने भी चार आने की मेम्बरी हटाने का विरोध किया। इस पर बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन के एक संशोधन से वह मामला अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सिपुर्द करा दिया गया।

मेरठ-कांग्रेस ने कांग्रेस के इतिहास में नवीन अध्याय आरम्भ किया है। उधर अन्तर्कालीन सरकार में कांग्रेस का बना रहना इधर निःशुल्क सदस्यता। कार्रवाई के प्रारम्भ में ही अध्यक्ष ने देश के सेवकों की मृत्यु पर शोक-प्रस्ताव पेश किया जिसको तमाम हाउस ने खड़े होकर सर्व-सम्मति से पास किया था। विदेशों से आनेवाले भारतीय कांग्रेस के प्रतिनिधियों में इँगलैण्ड, अफ्रीका, फिजी, सिंगापुर, मलाया आदि देशों से आये थे। सभी ने भारत के स्वतन्त्रता-संग्राम के लिए अपनी शुभ कामनाएँ और धन्यवाद दिये हैं। इससे मेरठ का वह चित्र आज देश ही का नहीं बल्कि संसार के भावी कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है। केवल दुखद समाचार जो वहाँ का हमें कह सकते हैं वह है महात्मा जी की अनुपस्थिति। [illegible] चित्र मानस-पटल से दूर नहीं हो [illegible] क्योंकि वह हमारी स्वतन्त्रता का [illegible] द्वार बन चुका है।

मैं भी आपका बहुत आभारी हूँ

पेट के दर्द का रोगी मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर की प्रशंसा करता है

यदि आप मंदाग्नि से पीड़ित हैं, और भोजन के बाद दर्द या अन्य कष्टदायी लक्षणों का अनुभव होता है तो मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर लीजिये। यह रोग का शीघ्र निराकरण कर देगा और पाचन-शक्ति को सुधार देगा।

प्रिय महोदय,

मैंने अभी एक दूसरे रोगी द्वारा की गई आपके स्टमक पावडर की प्रशंसा पढ़ी, और मैं अनुभव करता हूँ कि मैं भी आपका बहुत आभारी हूँ। आपके पावडर और गोलियों दोनों के नुस्खे वास्तविक वरदान हैं।

मैं पथ्य-भोजन पर आगया था.....किन्तु मैंने नियमित रूप से आपके पावडर का सेवन किया, और आज मैं अपनी रुचि की प्रत्येक चीज खा सकता हूँ और अपने को स्वस्थ अनुभव करता हूँ। मैं आपके प्रति आभार प्रदर्शन करता हूँ।

(हस्ताक्षर) जे. वी.

मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर की व्यापक ख्याति उसकी हृदय-दाह, उदर-वायु, जी मिचलाने एवं अपचन से होने वाले पेट के दर्दों के निवारण और आमवात एवं उदर-व्रण के विरुद्ध सुरक्षित रखने में वह प्रभावोत्पादकता का मान्य प्रमाण है।

"एलेक्स सी. मेकलीन" के हस्ताक्षरवाला मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर और गोलियाँ ही प्रामाणिक हैं।

MACLEAN Brand Stomach Powder

Alex. C. Maclean

गोलियों के रूप में भी

Copyright:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...का रंगमंच

जमींदारी-प्रथा को दूर करने की सरकारी योजना

...के एक्जीक्यूटिव अफसर और सेक्रेटरी—इंटरमीजिएट के बाद ...सेवा—मुस्लिम लीग में कुटकुट—सिन्ध के सैयद मोहम्मद मीरानशाह बैरंग वापस लौटे।

(अपने विशेष प्रतिनिध-द्वारा)

...प्रांत के कुछ प्रमुख व्यवसायी ...औद्योगिक पिछले सप्ताह राजधानी का ...काटते दिखाई पड़े। गवर्नमेंट ...तथा सेक्रेटेरिएट की प्रदक्षिणा करने ...ही साथ मन्त्रियों तथा कुछ उच्च ...से भी उन्होंने भेंट की, किन्तु उन्हें ...निराश ही जाना पड़ा। ये व्यव-...औद्योगिक वही हैं, जिन्होंने ...काल में जनता को खुले हाथ ...और चोर बाजारी में अपने बैङ्क ...करोड़ों तक बढ़ाये, किन्तु कांग्रेस ...ने अपने भ्रष्टाचार विरोधी ...द्वारा इन समाजद्रोहियों को रँगे ...और अब वे न्याय के समक्ष ...जायँगे।

* *

...जमींदारी-प्रथा का अन्त करने की ...योजना परिपक्व है। जमींदारी-...कमेटी का काम सफलता के साथ ...रहा है, यह आश्चर्य की बात ...मुस्लिम लीगी एम० एल० ए० जहाँ ...समितियों और कमेटियों में ...होते हैं, किन्तु जमींदारी-उन्मूलक ...को उनका सहयोग नहीं मिल रहा ...लीगियों का कहना है कि वे वर्तमान ...की साम्प्रदायिक नीति के ...में उससे असहयोग कर रहे हैं, ...कमेटियों से उनके सहयोग को ...स्पष्ट है कि वे केवल जमींदारी ...कमेटी से ही असहयोग करना ...ताकि जमींदारों के विनाश में ...हो।

* *

...ने यह भी निश्चय किया है ...जमींदारों को मुआवजा किस प्रकार ...। मुआवजे का ढंग प्रांत की ...स्थिति को देखते हुए ही तय ...। किन्तु यह निश्चित है कि ...छोटा जमींदार होगा, उतनी ही ...उसके मुआवजे की रकम भी ...रु० से कम मालगुजारी देने-...एक मुश्त मुआवजा दे दिया

* *

...के शोषण से ग्रामीणों को ...के अभिप्राय से सरकार ...बनाने भी जा रही है कि ...आबादी की भूमि में जितनी ...किसी किसान का मकान बना ...उसकी जमीन समझी जायगी। ...मकानों की भूमि पर भी जमीं-...समझा जाता था और वे ...अथवा पुनर्निर्माण के ...लिया करते थे। सर-...यह भी बना रही है कि ...के बीच में भी माल ...अधिकार होगा कि बन्दो-...आय से जिस जमींदार की ...हो जाय, उसकी मालगुजारी ...वृद्धि कर सके।

यह प्रयत्न कर रहे हैं कि उनकी नौकरी का प्रांतीयकरण कर दिया जाये। इसी प्रकार उनके सैनीटरी इंस्पेक्टर तथा उनके समकक्ष के कर्मचारी भी अपनी नौकरियों का प्रांतीयकरण चाहते हैं। नौकरी की सुरक्षा तथा योग्यता की वृद्धि के लिए यह कदम निश्चयतः सहायक होगा और सरकार उनके सम्बन्ध में सहानुभूतिपूर्वक विचार कर रही है। ख्याल किया जाता है कि नागरिक स्वायत्तशासन-सम्बन्धी नया कानून बनने पर जो प्रांतीय स्वायत्तशासन बोर्ड बनेगा, ये नौकरियाँ उसी के अन्तर्गत रखी जायेंगी।

* * *

युक्त-प्रान्तीय सरकार एसेम्बली के आगामी अधिवेशन में ही एक कानून का मसविदा पेश करेगी, जिसके अन्तर्गत उसे यह अधिकार मिल जायगा कि इंटर-मीजिएट परीक्षा पास करने के पश्चात् आगे पढ़ सकने से पूर्व प्रत्येक युवक के लिए समाज-सेवा अनिवार्य कर दी जाये। इन युवकों की इस कार्य के लिए जबरियाँ भर्ती हो सकेगी और उन्हें स्काउटिंग कवायद ग्रामसुधार आदि की शिक्षा देकर ग्रामीण क्षेत्रों में काम करने के लिए भेजा जायेगा। इससे न केवल ग्रामीणों की दशा ही सुधरेगी, बल्कि शहरवालों को भी ग्राम्यजीवन का व्यवहारिक अनुभव हो जायगा और प्रांत में जनसौहार्द्र की वृद्धि होगी।

* * *

मुस्लिम लीग में कुछ 'कुटकुट' हो रही है। लीग का एक प्रभावशाली दल कायदे आजम की नीति का समर्थक नहीं है। वह कांग्रेस से सहयोग करके शासन में हाथ बँटाना चाहता है तथा लीग और कांग्रेस के सहयोग को ही देश के लिए हितकर समझता है। इस दल का कहना है कि १६ मई के घोषणापत्र ने पाकिस्तान की कब्र तक ढक दी है और अब इस निरर्थक नारे से कोई लाभ नहीं है, अतएव भारतीय मुसलमानों के हित में अधिक अच्छा यही होगा कि वे सहयोग भावना से काम लें। इस दल का दावा है कि इस नीति पर अमल करने से मुसलमानों के लिए अधिकाधिक सुविधाएँ प्राप्त की जा सकती हैं।

* * *

युक्तप्रांत के मुसलमानों ने सैयद मोहम्मद मीरानशाह को बैरंग लौटा दिया है। सिन्ध एसेम्बली का यह भूतपूर्व स्पीकर यहाँ के मुसलमानों से यह कहने आया था कि वे यू० पी० को छोड़कर सिन्ध को हिजरत कर जायँ, जहाँ उनको सस्ते मूल्य पर भूमि मिल जायगी और वे सिन्ध की भूमि में ... मुसलम... ...

हमारी उत्तम उत्तम पुस्तकें

शासक—सुप्रसिद्ध राजनीति-विशारद निकोलो मेकियावली की 'प्रिंस' नामक पुस्तक का हिन्दी रूपान्तर। इसमें राजा के कर्त्तव्यों तथा राज्य-शासन-प्रणाली का बहुत ही विशद विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

गांधी-मीमांसा—लेखक पंडित रामदयाल तिवारी। गांधीजी के व्यक्तित्व और सिद्धान्तों की ऐसी तर्कपूर्ण विवेचना आज तक किसी ने नहीं की है। इसे एक बार आद्योपान्त पढ़ जाने पर गांधीवाद पूर्ण रूप से हृदयंगम हो जाता है। विद्वानों ने इसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। यह ८५० पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक है। मूल्य ४) चार रुपये।

राज्य-विज्ञान—राज्य की भिन्न भिन्न समस्याओं, उसके प्रति नागरिकों के कर्त्तव्य तथा उसकी सुव्यवस्था और शासन-प्रणाली आदि की इसमें विद्वत्तापूर्ण विवेचना की गई है। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

इंसाफ़-संग्रह—(तीन भागों में) इसमें प्राचीन राजाओं, बादशाहों और सरदारों के द्वारा किये गये बहुत ही जटिल मामलों के निर्णयों का संग्रह किया गया है। मूल्य प्रत्येक भाग का ॥≡) ग्यारह आने।

एक आत्म-कथा—उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के एक प्रतिष्ठित विद्वान् मुंशी लुत्फुल्ला की आत्मकथा का सारांश। इसमें विलायत-यात्रा तथा मार्ग में पड़नेवाले स्थानों का तत्कालीन वर्णन दिया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग।

बालकोपयोगी आदर्श प्रकाशन

पौराणिक कथाएँ

बाल भारत (दो भाग)	इसमें महाभारत की कथा सरल और संक्षिप्त भाषा में लिखी गई है। प्रति भाग	॥।-)
बाल रामायण	रामायण के सातों कांडों की कथा सरल भाषा में	॥।-)
बाल भागवत (दो भाग)	भागवत की संक्षिप्त कथा प्रति भाग	१॥।-)

उपदेश

बालोपदेश	प्रत्येक बालक को स्मरण रखने लायक कतिपय उपदेशों का संग्रह	॥)
बाल गीता	गीता के उत्साह-वर्द्धक श्लोकों का हिन्दी सारांश	१)
बाल हितोपदेश	हितोपदेश का मनोरंजक और उपदेश-पूर्ण कथाओं का सारांश	१)
बाल पंचतन्त्र	उपदेशपूर्ण और मनोरंजक कथाएँ	॥।-)
बाल कालिदास	कालिदास की बालकोपयोगी उपदेश-	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

कराची की स्वागत-समिति के मन्त्री नीचे मुद्रित विषयों में से किन्हीं पर निबन्ध माँगते हैं—

समाज-शास्त्र-परिषद्—सिन्ध की मूल संस्कृति और उसका विकास, सिन्धी भाषा का आर्य भाषाओं में स्थान, सिंध की अपनी लिपि और उसका तिरोभाव, सिंध के सामाजिक रीति-रवाज, सिंध का मध्यकालीन इतिहास, भारतीय वाणिज्य व्यवसाय में सिन्ध और कराची बन्दर का स्थान, भारतीय संघ राज्य में सिन्ध का स्थान, युद्धोत्तर निर्माण में भारत समाजवाद से क्या लाभ उठायेगा, विदेशी संस्कृति पर भारतीय छाप, मोहन-जोदड़ो, भारत में महिला-आन्दोलन की प्रगति, साम्यवाद, समाजवाद और गांधी-वाद, कला की परख—जीवन।

साहित्य - परिषद्—रहस्यवाद की जीवन में उपयोगिता, प्रगतिशील साहित्य और भारतीय सदाचार, हिन्दी नाट्य मन्च, रेडियो पर प्रसार योग्य हिन्दी नाटक, प्रहसन और भाण, फिल्म-गीतों में साहित्य का अंश कितना है, आधुनिक हिन्दी गीतों के लिए संगीत-निर्देश, हिन्दी में सम्पादन कला का विकास, सिंधी भाषा के काव्य, सिंध के ग्राम्य-गीत, भाषा-संस्कार क्यों, क्या, कैसे? कबीर का 'जीवन-चरित', लेखक, प्रकाशक और विक्रेता के सम्बन्ध, वर्तमान काल की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ।

दर्शन-परिषद्—साम्यवाद की दार्शनिक पृष्ठभूमि, हमारे समाज को नया दार्शनिक आधार चाहिए, आज के जगत के लिए वेदान्त दर्शन का उपयोग, सांख्य-दर्शन और अर्वाचीन विज्ञान, हिन्दी में दर्शन-साहित्य, सिंध के सूफी कवि अथवा कबीर और शाह अब्दुल लतीफ।

विज्ञान-परिषद्—भारतीय दर्शन का अणु और एटम, भारतीय दर्शन का पञ्च-तत्व और आधुनिक विज्ञान का अणुवाद, हिन्दी-साहित्य में ग्रामोपयोगी विज्ञान, भारतीय मनोविज्ञान और पाश्चात्य मनो-वैज्ञानिक विश्लेषण, पुरानी और नई भारतीय नारी की मनोवैज्ञानिक स्थिति, हिन्दी में सर्वजनोपयोगी विज्ञान-सम्बन्धी साहित्य।

राष्ट्रभाषा-परिषद्—राष्ट्रभाषा का एकमात्र सम्भवनीय रूप सरल हिन्दी है, राष्ट्रभाषा का प्रश्न और साम्प्रदायिकता, क्या एक राष्ट्रभाषा और दो लिपियाँ चल सकती हैं, राष्ट्रभाषा-प्रचार की प्रगति, राष्ट्र-भाषा और समाचारपत्र, नागरीलिपि संस्कार क्यों, क्या, कैसे? सिंध में हिन्दी प्रचार।

—संवाददाता

* * *

सागर में मांजरेकर महाकोशल प्रांतीय "कस्तूर बा स्मारक निधि" की प्रतिनिधि, व ग्रामसेविका विद्यालय नरसिंहपुर की मुख्याध्यापिका श्री सत्यवती वर्मा ता० २१ को सागर पधारीं। आपने ता० २२ को बलेह के मालगुजार श्री ओवेदुल्ला-महिला-विद्यालय तथा मल्लीमाता के मन्दिर में महिलाओं तथा बालिकाओं की सभा में श्रीमती मांजरेकर व सत्यवती वर्मा ने कताई-बुनाई, साक्षरता-प्रचार तथा शिशुपालन आदि महत्त्वपूर्ण विषयों पर अपने भाषण दिये। सागर-कस्तूर बा-ट्रस्ट की प्रतिनिधि श्री कस्तूरीबाई को नियुक्त किया गया।

गल्ला-व्यापारी संघ की ओर से ७४७ रु० पूर्वी बंगाल की सहायतार्थ आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के पास भेज दिये गये।

श्री गिरिराजसिंह, सागर-विश्वविद्यालय छात्रावास यूनियन के प्रेसीडेण्ट ने सूचित किया है, कि कार्य-समिति में बजट का प्रस्ताव पास हो गया।

देवरी के हेमचन्द्र हाईस्कूल के सुयोग्य अध्यापक तथा जिला कांग्रेस कमेटी के मन्त्री श्री बालाप्रसाद मिश्र को देवरी म्यु० कमेटी ने उनके कांग्रेस में रहने के कारण, चुनाव-प्रकरण को लेकर शिक्षकी या मन्त्रित्व से इस्तीफा देने को बाध्य किया। ज्ञात हुआ है, कि शिक्षकी से इस्तीफा न देने के कारण कमेटी ने उन्हें जबरदस्ती शाला से अलग कर दिया।

—लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

* * *

जयपुर वनस्थली विद्यापीठ की साहित्य-परिषद् 'प्रसाद आलोचनाञ्जलि' नामक पुस्तक के लेखन-प्रकाशन की योजना को कार्यरूप में परिणत कर रही है। एक नये दृष्टिकोण को लेकर प्रसाद के साहित्य का व्यक्ति परिस्थिति और सामयिक प्रभाव की पृष्ठ-भूमि में अनुशीलन, अध्ययन और आलोचन किया जा रहा है। यह आलोचन साहित्य-परिषद् के अधिकारी सदस्यों द्वारा किया जा रहा है। जिसमें प्रसाद के साहित्य का विभिन्न अंगों का व्यापक दृष्टि से मार्मिक तत्त्वपूर्ण विचार और विचारोत्तेजक विवेचन वैज्ञानिक प्रणाली से होगा। इस योजना को प्रसाद-स्मृति ग्रंथ के रूप में प्रतिफलित करना चाहते हैं।

गीत

लेखक, श्री ब्रह्मदत्त विद्यार्थी

मेरे साथी चाँद सितारे कैसे कहते मुझे अकेला ?
पाषाणों पर बहते निर्झर
मेरे मुख को धो जाते हैं;
पथ के काँटे तलुओं में चुभ
मेरे साथी हो जाते हैं।
मेरी आँखों का धुँधलापन ले आ जाती सन्ध्या-बेला।
अरमानों की पावस में जब
आशा के कण जगमग करते
पथ के निर्जन में तब जुगनू;
रजनी के तम को हैं हरते।
मग में पग-पग पर लग जाता असफलताओं का है मेला।
मैं अनन्त हूँ, पथ असीम है
मुझे थकाता है कब पथ-श्रम ?
चलते रहना अपना जीवन
चलना चाँद सितारों का क्रम।
मैं इस क्रम का मध्य-बिन्दु हूँ कैसे कहते मुझे अकेला ?

जिसमें साहित्य के विद्यार्थी को मार्गदर्शन विवेचन मिल सके। उक्त योजना की ही पुस्तकाकार प्रकाशित हो, वही कार्य हो रहा है।

—कमलाकांत पाठक

* *

प्रयाग (दारागंज) राधारमण इण्टर कालिज की हिन्दी-साहित्य-परिषद् ने आज माननीय बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन का अभिनन्दन किया। विद्यालय के कुलपति द्वारा बाबू जी के आगमन पर लड़कों को बधाई देने के उपरान्त उनका भाषण प्रारम्भ हुआ। हिन्दी की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दी-समस्या की धारा अब बहुत कुछ बदल चुकी है। इसका प्रमाण उन्होंने कांग्रेस में ५-६ हिन्दी में होनेवाले भाषणों से दिया। उन्होंने अँगरेजी भाषा की अप्राकृतिक बतलाया और कहा कि हमारी दुर्बलता है कि हम उसे व्यवहार-रूप दे रहे हैं।

विद्यार्थियों की जिम्मेदारियों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने जीवन में की निरर्थकता बतलाई।

अन्त में उन्होंने कहा कि "झण्डा का झण्डा लेकर हम बहुत आगे बढ़ चुके। परन्तु हमारे हाथ कमजोर चले हैं, वे काँप रहे हैं, बड़े लोग जा हैं। गांधी जी अधिक वृद्ध हो चले सब जिम्मेदारी तुम्हीं लोगों पर है। आशीर्वाद कामना है कि तुम्हारे हमारे हाथों से भी मजबूत रहें, और दृढ़ता के साथ रहें।"

—दीनानाथ विद्या मन्त्री

उदयपुर के रात्रि-विद्यालय में १ नवम्बर सन् ४६ को हाईस्कूल कक्षाएँ योग्यतम स्टाफ द्वारा चालू गई हैं। प्रवेशिका, विद्याविनोदिनी विदुषी की कक्षाएँ पूर्ववत् चलेंगी। व्यवस्था से विद्याविनोदिनी विद्यार्थिनियाँ हाईस्कूल में केवल विषय लेकर बैठ सकेंगी। अतः ज्या से ज्यादा बहनें भर्ती होकर सुविधा से लाभ उठावेंगी।

—संवाद

आपके बाल रेशम की तरह
मुलायम और फूल जैसे
खुशबूदार हो सकते हैं,
अगर आप
तानसेन हेयर आयल
(रजिस्टर्ड)
का लगातार इस्तेमाल करें।

तानसेन सेण्ट
की सुगन्ध अत्यन्त आकर्षक
और तबीयत को खुश करती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्मा पर भरोसा करो

विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य का पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि विकार दूर करने में हमारे **"वीर्यसंजीवनसत"** ने मान पाया है और प्रमाणपत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। कीमत ॥) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी गुप्तेन्द्रिय कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध हजारों परीक्षा किया हुआ **"तिला मस्ताना"** की मालिश कीजिए। इससे हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। शीशी २॥), दो शीशी ५॥=) डाक-खर्च माफ़ पैकिंग खर्च अलग।

वास कम्पनी, नं० ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

आन्तरिक सफाई स्वास्थ्यकी पहली सीढ़ी है!"

बाहरी सफाई इतनी आवश्यक, स्वाभाविक और उचित है कि इसके महत्व से सर्वसाधारण सपरिचित हैं। शरीरकी अन्दरूनी सफाई · कब्जियत और रोज रोजकी अन्य बीमारियोंको पैदा करने वाले पेटके दूषित पदार्थसे मुक्ति, उससे भी अधिक आवश्यक है। एण्डरूजका एक प्याला, आवश्यकता पड़नेपर आपके अभ्यंतर की अच्छी तरह सफाई करके स्वास्थ्यको सुन्दर बनाता है। देखिये :—

प्रथम...एण्डरूज मुंह और जीभको साफ करके तरोताजा बनाता है।

द्वितीय...एण्डरूज पेटको व्यवस्थित करके अम्ल को साफ करता है।

तब...एण्डरूज यकृतको ठीक रखता और पित्ताधिक्यको रोकता है।

अन्ततः...एण्डरूज अन्दरूनी सफाई कर कब्जियत दूर भगाता और रक्तको परिष्कृत और ठण्डा रखता है।

NDREW

सात की पुस्तकें सवा पाँच में

आजाद हिन्दुस्तान का इतिहास

अभ्युदय के ५ विशेष अंक

नेता जी ने जो आजाद सरकार कायम की थी उसे अभ्युदय के इन अंकों में अच्छी तरह दर्शाया गया है। देश में एकता कायम करने में ये अंक बड़े ही उपयोगी साबित होंगे, इसलिए हर एक की सुविधा का खयाल करके हमने इनका मूल्य सात रुपये से सवा पाँच रुपये कर दिया है। इस सुविधा से वही लोग लाभ उठायेंगे जो ५।) सवा पाँच रुपये का मनीआर्डर भेज देंगे। पूर्ण आजादी का ध्यान रखकर ये अंक निकाले गये थे। जल्दी कीजिए स्टाक में बहुत कम अंक बचे हैं खतम हो जाने पर पछताना पड़ेगा।

मैनेजर—अभ्युदय प्रेस, प्रयाग

GOVERNMENT OF INDIA

DISPOSALS

(SECTION TX OF 3rd CATALOGUE)

Following types of stores are available for sale:

Clothing (serviceable made-up garments): Outer; Inner; Hosiery and knitted wear; Headwear.

Textile Materials (Piecegoods) of cotton, wool, etc.: Cotton; Woollen.

Textile Materials and Manufacture of Jute, Sisal, Ramie, Coir and other fibres: Raw including waste; Woven Fabrics; Manufactured articles (gunny bags, sandbags, etc.); Proofed Fabrics.

Cordage and Twine.

Garniture: Buttons; Braids, Buckles, Slides; etc.

Heavy Textile Articles.

Footwear: Boots and Shoes; Chaplies and Slippers; Gym. Shoes, Galoshes and Rubber Footwear.

Harness, Saddlery and Leather equipment: Harness and Saddlery (other types); Other Leather equipment and accessories.

Other Leather Goods: Belting.

Leather: Leather buff; Other Leathers and Skins.

Tentage and connected stores: Tent and Tent components; Tent Pins; Tent

Full details giving description and condition of stores, quantity, location, etc. and the method of tendering are contained in Section TX of the Third Catalogue which is available at Re.1/- on or about 23rd Nov. 1946, from the addresses given below:

A. Regional Commissioner (Disposals) at

BOMBAY
Mercantile Chambers, Graham Road, Ballard Estate.

CALCUTTA
6, Esplanade East.

LAHORE
G.P.O. Square, The Mall.

CAWNPORE
15/159, Civil Lines.

B. Dy. Regional Commissioner (Disposals) at

KARACHI
Variawa Building, McLeod Road.

MADRAS
United India Life Building, Esplanade.

C. All important Chambers of Commerce and Trade Associations.

Mail orders for the catalogue must be accompanied by Money Order or Indian Postal Order.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Registered No. A—295
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
निशादन इलाहाबाद—रविवार, ८ दिसम्बर, मूल्य ७।

युगान्तरकारी प्रकाशन

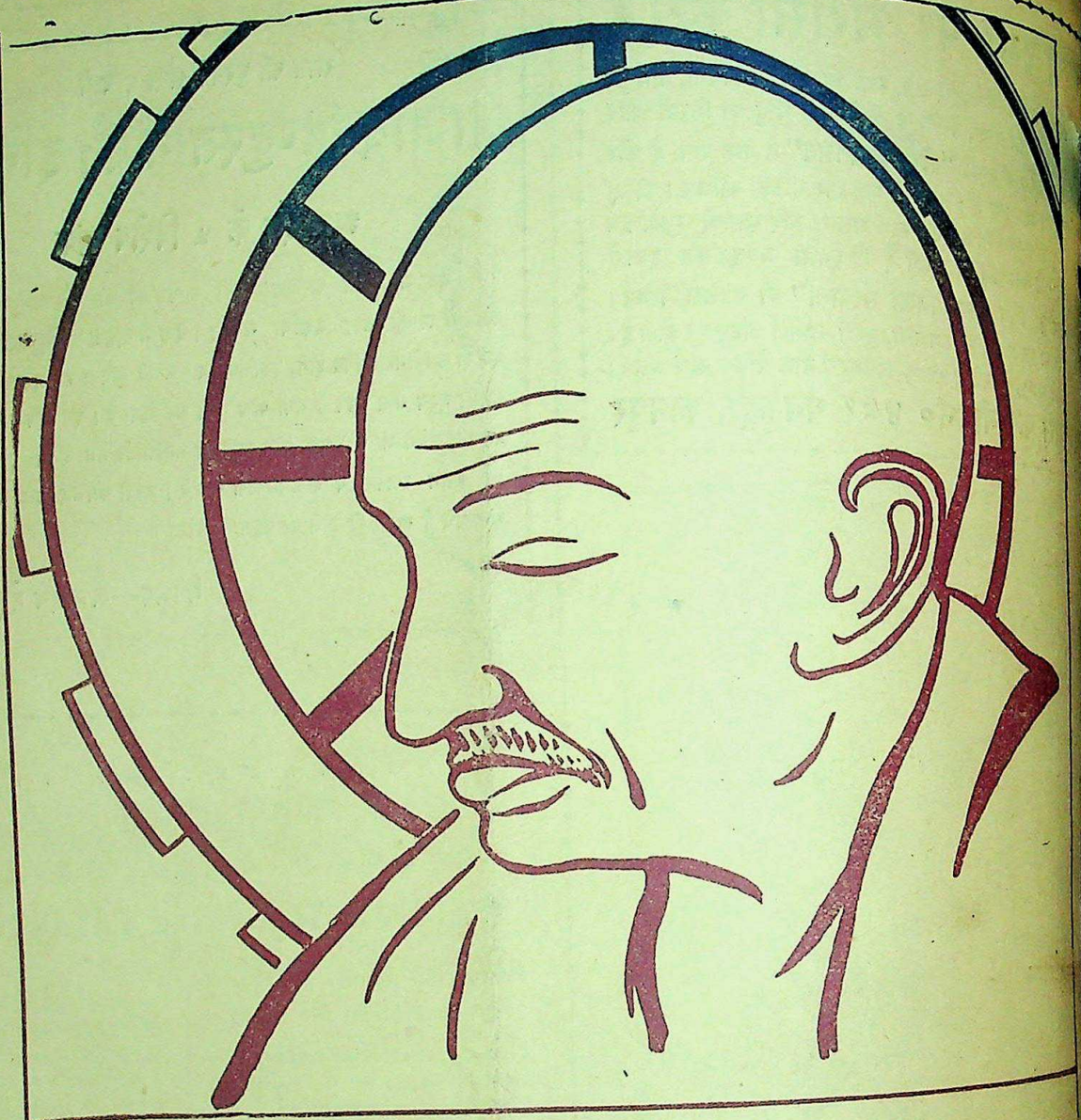

सेवाग्राम

गान्धीजी की ७७वीं वर्षगाँठ का उपहार-ग्रन्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
price 2 Annas

२२ दिसम्बर, १९४६ सचित्र हिन्दी साप्ताहिक Sunday, 22nd December, 194

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वर, कमजोरी, सूतिका, वात के लिये

मृतसंजीवनी सुधा

रक्तप्रदर, मासिक-धर्म्म की खराबी और जरायु की हरतरह की बीमारी के लिये

अशोकारिष्ट

खुजली, बिखाज, घाव, खुनकी खराबी प्रमेह, श्वेतप्रदर और हरतरह चर्म्म रोग के लिये

सारिवाद्यासव

ढाका आयुर्वेदीय फार्मेसी लि.

युक्तप्रांत की शाखाएँ—
बनारस—दशाश्वमेध घाट और नीचीबाग

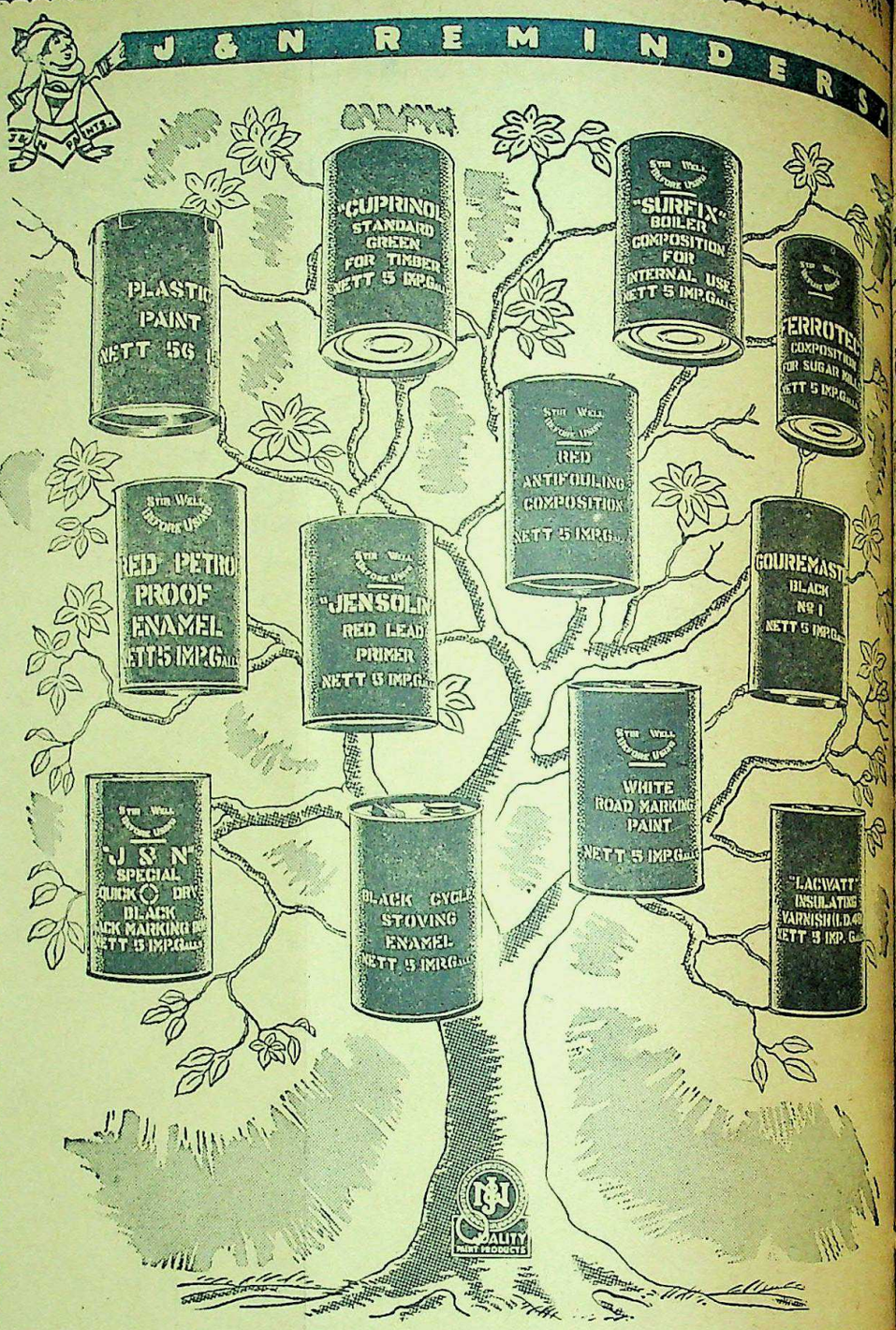

हिन्दुस्तान के उद्योग-धन्धों की अनेक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जिन उपादानो को बनाया गया है, उनमें से कुछ ये हैं।

JENSON & NICHOLSON
MAKERS OF PAINTS

रैपट लोशन

दाद, खाज और खुजली की अनूपम औषधि.

रैपट ऑइड कं. लि.

प्रो. खांडेलकर

उठाइये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक

[रविवार, २२ दिसम्बर, १९४६

[...] ९, संख्या १७]

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

[...] दिन भारत में गठबंधन होते ही [...] ब्याह-शादी में तो गठबंधन होता [...] जीवन के सभी कामों में जहाँ [...] हुआ और काम आगे बढ़ा कि [...] गुरू। भारतीय राजनैतिक जगत [...] की प्रभुता इतनी बढ़ गई [...] देखिये, इसी का बोलबाला है। [...] लीग, अल्पसंख्यक दल, [...] आदि में गठबंधन होता ही रहा [...] तलाक की भी नौबत आती [...] वक्त जरूरत पर फिर गठबंधन, [...] गठबंधन के फेर में ब्रिटिश [...] पड़ी हुई है। वह इस ताक [...] कि किसके सर पर हाथ फेरा [...] गठबन्धन करके ब्रिटिश सरकार [...] करने में सहायक बने।

* *

[...] ने आजकल भारतीय राजनैतिक [...] मुस्लिम लीग से गठबन्धन कर [...] खास करके ब्रिटिश टोरी पार्टी [...] लीग पर बेहद फिदा हो गई [...] के भाग्य विधाता मिस्टर [...] आवाज बुलंद की है कि हम [...] दलों के पिता जी बने बिना [...] यदि ज्यादा गड़बड़ होती [...] ब्रिटेन को भारत को एक [...] देना चाहिए या फिर बच्चों [...] लिए पाकिस्तान कायम कर [...] चाहिए। मुस्लिम लीग की [...] टोरी पार्टी कर रही है तो [...] कभी न कभी बनेगा ही, [...] जिन्ना को अभी से परेशानी [...] क्या जरूरत है? गठबंधन [...] न कुछ नतीजा तो निकलता

अछूत नेता डाक्टर अम्बेडकर ने भी टोरी-पार्टी से गठबंधन कर लिया है लेकिन अब जान पड़ता है कि कुछ दाल में काला है। मिस्टर चर्चिल ने हाउस आफ कामंस में जो व्याख्यान दिया था उसमें मुस्लिम लीग की तारीफ के पुल बाँधे गये लेकिन अम्बेडकर साहब के दल को यों ही हवा में उड़ा दिया गया। डाक्टर अम्बेडकर का टोरी-सरकार ने कहीं नाम तक नहीं लिया। इससे जान पड़ता है कि डाक्टर साहब कुछ बिगड गये है। इसीलिए शायद उन्होंने विधान-सभा में डाक्टर जयकर के प्रस्ताव का समर्थन किया है। डाक्टर अम्बेडकर ने बड़ी तेजी के साथ कहा है कि भारतीय समस्या जल्दी या देर में ज़रूर हल होगी। यही नहीं डाक्टर साहब ने लगे हाथों लीग पर एक दुलत्ती भी झाड़ दी है। कहावत है कि देर आयद दुरुस्त आयद। डाक्टर अम्बेडकर राह पर आ रहे हैं, इसकी तो हमें खुशी है लेकिन सबसे ज्यादा खुशी इसकी है कि अम्बेडकर दल के अछूत मुसलमान होने से बाल बाल बच गये क्योंकि यह दल मुसलमान होने की कसम खाने आ रहा था।

* * *

ब्रिटिश अधिकारियों के कहने सुनने का कुछ ठिकाना नहीं है। आज वह क्या कहते और कल वह क्या कहेंगे, इसे या तो वह जानें या भगवान। ब्रिटिश प्रधान मन्त्री पहले तो संघ आदालत के निर्णय की दुहाई देते रहे लेकिन जब उन्होने देखा कि कांग्रेस प्रांतों की गुट्टबाजी के सम्बन्ध में संघ आदालत का निर्णय लेने जा रही है तो लार्ड पेथिक लारेंस साहब बोल उठे कि संघ अदालत का निर्णय हमें अमान्य होगा। अपने राम की राय में विधान-सम्मेलन जारी रखना चाहिए। क्योंकि न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेंगी। कांग्रेस को अपना काम करते रहना चाहिए, ब्रिटेन को अपना। नतीजा तो कुछ न कुछ निकलेगा ही? अतिसय रगड़ करै जो कोई, अनल प्रगट चन्दन ते होई!

* * *

श्रीमती विजयालक्ष्मी पंडित संयुक्त राष्ट्र संघ में सम्मिलित होकर भारत वापस आ गई हैं।

ब्रिटेन के कई अँगरेज कह रहे हैं कि भारत में जो राजनैतिक दलबन्दी है वह वहाँ का घरेलू झगड़ा है। इसलिए ब्रिटिश अधिकारियों को उस बीच में न पड़ना चाहिए। अपने राम की समझ में बात तो ठीक है लेकिन टोरीदल तो मान न मान मैं तेरा मेहमान। वह भला कब सुननेवाला है? उसे तो मुस्लिमलीग को जबरदस्ती पाकिस्तान देकर दम लेना है। बकते रहें फ्रेनर-ब्राकवे और मजदूर नेता। मिस्टर चर्चिल की शरारत तो कभी न कभी रंग लायेगी।

* * *

मिस्टर जिन्ना को लन्दन में रहने से अब भरोसा हो गया है कि पाकिस्तान जरूर मिल जायेगा। अपने राम भी जानते हैं कि जरूर मिलेगा क्योंकि चर्चिल एण्ड कम्पनी इसकी आड़ में दोरंगी चाल चल रहे हैं।

सामयिकी

लेखक, श्री सोहनलाल द्विवेदी

तरुणाई का आज तक़ाज़ा, चुप रहना है पाप यहाँ,
जो जी में आवे न कह सके, वही दुसह संताप यहाँ,
तरुणाई का आज तक़ाज़ा, मृत्य रहे या जीवन हो,
कायरता से किन्तु कलंकित कभी न अपना यौवन हो,
तरुणाई का आज तक़ाज़ा, जब जग भय से मौन रहे,
शीश हथेली पर लेकर आगे बढ़कर तू सत्य कहे!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

ब्रिटिश सरकार और भारत

ब्रिटेन के राजनीतिज्ञ संसार में अपनी पैंतरेबाजी के लिए प्रसिद्ध हैं। उनकी चतुराई के आगे अभी तक प्रायः सभी राष्ट्रों को झुकना पड़ा है। भारतवर्ष में तो उनका प्रभुत्व अभी है ही। सर स्टैफर्ड क्रिप्स ने जो चर्चिल मंत्रिमंडल के एक सफल राजनीतिज्ञ थे भारत में सन् १९४२ में जो नाटक रचा वह सर्वविदित है। उस समय भारत की आवाज को कोई भी विदेशी सुन नहीं सकता था। कांग्रेस ने ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल की सारी चालाकियों का पर्दा फाश कर दिया। ब्रिटिश अधिकारियों ने उस समय भारत के साथ जो नीति बरती वह अगस्त सन् ४२ की जन-क्रान्ति से स्पष्ट हो गया। नेताओं को जेलों में अनन्त काल के लिए डाल दिया गया। अगस्त की जन-क्रान्ति के जन्म-दाता, महात्मा जी तथा अन्य नेताओं में जब कोई परिवर्तन नहीं दिखलाई पड़ा तो ब्रिटिश सरकार को अपना रुख बदलना पड़ा। ब्रिटेन में भी परिवर्तन हुआ। मजदूर सरकार शासनारूढ़ हुई। भारत में भी लहर फैली कि कुछ होनेवाला है। पार्लियामेण्ट का प्रतिनिधि मण्डल भारत आया। उसने लन्दन जाकर अपनी रिपोर्ट दी पर, देश के नेताओं को ऐसे प्रतिनिधि मण्डलों से कतई आशा नहीं थी।

मिस्टर एटली ने कामन्स में एक वक्तव्य दिया—भारत के बहुमत की उन्नति को अल्पमत की अड़चनों और अंड़गों के बावजूद भी नहीं रोका जायेगा। हम भारत को स्वतन्त्र देखना चाहते हैं। फिर क्या था, भारत में मन्त्रि-दल स्वराज्य देने आया। महीनों वार्ताएँ हुईं। मंत्रिदल को यह मालूम हो गया कि कौन सी संस्था प्रगतिशील और स्वतन्त्रता की समर्थक है, कौन प्रतिक्रियावादी और स्वतन्त्रता के मार्ग में बाधक है? सारी समस्याओं को ब्रिटिश मन्त्रिदल समझ गया। किसी तरह लार्ड वैवेल ने कांग्रेस अध्यक्ष को अस्थायी सरकार बनाने के लिए आमन्त्रित करने की अपनी जिम्मेदारी पूरी की। कांग्रेसी सरकार बनते ही केन्द्रीय सरकार संचालित होने लगी। लार्ड वैवेल ने पैंतरा बदला और मुस्लिम लीग के प्रतिनिधियों को बिना कांग्रेस की रजामन्दी के इसलिए शामिल कर दिया कि वे लीग के मञ्च से ब्रिटिश पक्ष का समर्थन करेंगे। बात भी ठीक ही थी। इसीलिए मेरठ में पंडित जवाहरलाल नेहरू को अस्थायी सरकार में लीगी दल को ब्रिटिश दल (किंग्स पार्टी) कहकर उसके कारनामों का भंडाफोड़ करना पड़ा। यहाँ तक का रवैया ब्रिटिश सरकार का अखंड भारत को स्वराज्य देने तक रहा। इसके बाद फिर नया अध्याय आरम्भ हुआ।

ब्रिटेन की प्रेमी संस्था लीग के नेता तुनुक गये। विधान-सभा में शरीक होने में आना-कानी की। उस समय कितने ही पत्रों में प्रकाशित हुआ कि मिस्टर जिन्ना ब्रिटेन के कंजरवेटिव नेता मि० चर्चिल से लिखा-पढ़ी कर रहे हैं और आज की घटनाओं से स्पष्ट हो गया है कि ब्रिटेन मि० जिन्ना को अपना राजनैतिक एजेंट मानता आया है। विधान-परिषद् सफल न हो; भारत का स्थायी विधान न बने; भारत की सच्ची आवाज संसार के सामने प्रकट न हो इसी उद्देश्य को लेकर ब्रिटिश राजनीतिज्ञ विधान-सम्मेलन नहीं होने देना चाहते थे। लीग और रियासतें उनकी सहायक बन बैठीं हैं।

लन्दन-कान्फ्रेंस की योजना की गई। लीग, सिक्ख और कांग्रेस नेता लन्दन पहुँचे। पंडित नेहरू ने स्पष्ट कर दिया कि भारत का मसला भारत ही में तय होगा। जिन्ना साहब इँगलैंड में टिके रहें। भारत का मामला कामन्स सभा में पेश हुआ। कामन्स में भारत के स्वतन्त्रता के लिये लड़नेवाले नेताओं के विपक्ष में व्यर्थ का बकवास किया गया। अस्थायी सरकार को हिन्दू सरकार आदि बुरे-भले शब्द कहे गये। आखिरकार वह मजदूर सरकार, जो अप्रैल में भारत की स्वतन्त्रता का वचन दे चुकी थी, उसमें उलट-फेर करने लगी। इसका स्पष्ट अर्थ है ब्रिटेन के कट्टर शासक अभी भारत को स्वतंत्रता नहीं देना चाहते। कुछ मजदूर नेता दुनिया के दिखाने के लिये समय समय पर लम्बा वक्तव्य दे देते हैं। पर, उस देश की वैदेशिक नीति चर्चिल के वक्तव्यों में निहित है। यही उसकी दूर-दर्शिता है। मजदूर सरकार ने चर्चिल की वाणी में उस देश का भारत के प्रति अनु-राग प्रकट किया है। पर, भारत के विधान-परिषद् ने उस वक्तव्य की जरा भी परवाह न करके भारत के पूर्ण स्वतन्त्रता का नया कदम उठाया है। मिस्टर जिन्ना जैसे लोग चर्चिल और ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की बातों से दहले पर यह तो मालूम ही था कि भारत के ब्रिटेन से सम्बन्ध-विच्छेद के समय ब्रिटिश की साम्राज्यवादी शक्तियाँ अपनी सारी शक्ति का उपयोग कर लेंगी। फिर इससे विशेष चिन्ता ही क्या!

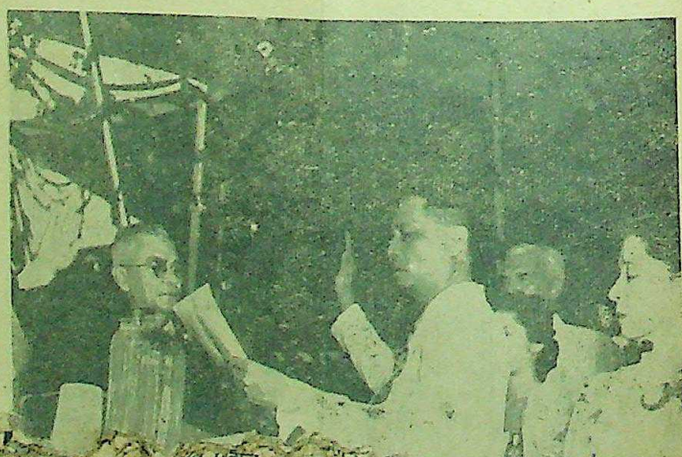

श्री जयप्रकाशनारायण

असाधारण व्यक्तित्व और जनता के एक आकर्षण

लेखक, श्री नारायणदत्त निवारी

भारतीय राजनीति के नैपथ्य में जिस असाधारण व्यक्तित्व ने अभी हाल ही में जनता के आकर्षण को अत्यन्त सरल गति से खींच लिया है, वह हैं बाबू जयप्रकाश-नारायण। लाखों के बीच में अकेले अपने से ही पहचाने जा सकनेवाले जय-प्रकाश बाबू, अपनी गम्भीरता, विचार-शील प्रवृत्ति से बरबस ही एक ऐसा अमिट प्रभाव डाल देते हैं कि उनके साक्षात्कार करनेवाला व्यक्ति बरबस उन्हें देखता ही रह जाता है। उन्हें देखकर कौन कह सकता है कि इस अद्वितीय प्रतिभाशाली पुरुष ने १९ वर्ष तक की अवस्था होने तक भी ट्रामगाड़ी के दर्शन न किये होंगे?

अपने इसी बाल्य और प्रारम्भिक-शिक्षा-कालीन जीवन में जयप्रकाश बाबू को ग्रामीण भारत की गोद में गरीबी, गुलामी और निःसहायता का क्रन्दन देखने को मिला। उन्होंने आबद्ध भारतीयता का सच्चा बन्दी और क्षुधित स्वरूप अवलोकन किया। जयप्रकाश बाबू का जन्म बिहार के सारन जिले में सिताबदियारा नामक गाँव में हुआ था। वहीं आपकी प्रारम्भिक शिक्षा भी हुई। सन् १९२१ में ही जय-प्रकाश बाबू को विद्यार्थी-जीवन में असह-योग-आन्दोलन में कूदना पड़ा और उन्होंने कालेज की पढ़ाई छोड़ दी। आन्दोलन-समाप्ति के बाद वे अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए अमेरिका चले गये। इसी बीच उनका विवाह बिहार के सबसे प्रमुख नेता बाबू ब्रजकिशोरप्रसाद, जिन्होंने कि चम्पारन सत्याग्रह के समय महात्मा गांधी के साथ उनके प्रमुख सेनापति का काम किया था, की पुत्री प्रभावती देवी से हो गया। इस विवाह के साथ गांधी जी का आशीर्वाद भी था। प्रभावती देवी तब से जयप्रकाश बाबू की अभिन्न सहायक रही हैं। साथ ही वे जयप्रकाश बाबू और गांधी जी को परस्पर जोड़नेवाली ग्रन्थि भी हैं।

अमेरिका में भी युवक जयप्रकाश ने सादगी तथा ग्रामीण जीवन को अपनाया। उन्होंने एक फल के बागीचे में काम करके मजदूरी की, और उसके फलस्वरूप कमाये गये रुपयों से पढ़ाई-लिखाई जारी रखी। कभी तो जयप्रकाश बाबू को लीची, आड़ू और अँगूर के पेड़ों के बीच में दस घंटा बिना किसी इतवार के मिले काम करना पड़ता था। आज भारतीय मजदूर उन्हें अपने के रूप में देखते और 'अमेरिका के मजदूर' के नाम से पुकारते हैं। बाबू कैलीफोर्निया, इओवा और न्सिन आदि पाँच अमेरिकन विश्वविद्यालयों में पढ़े और वहीं उन्हें समाजवादी आदर्शों में भी शिक्षा और दीक्षा मिली। आठ साल के निरन्तर पठन-पाठन के जयप्रकाश भारत लौटे और फौरन कार्य में जुट गये।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सम्पर्क स्थापित करते ही आपको 'लेबर-रिसर्च-विभाग' का चार्ज दे दिया। ही मास बाद १९३२ के असहयोग-आन्दोलन के समय जयप्रकाश बाबू ने स्थापना प्रधान मन्त्री का कार्य भी किया। होने पर वे नासिक जेल में रखे गये। पर उन्होंने श्री अच्युत पटवर्धन, मसानी, अशोक मेहता, गोरे और जोशी के साथ मिलकर कांग्रेस समाजवादी दल की स्थापना की बाद को प्रथम अधिवेशन आचार्य नरेन्द्रदेव अध्यक्षता में पटना में हुआ। प्रकार भारतीय राष्ट्रीय-आन्दोलन में वादी विचारधारा भी वांछनीय प्रभावित होती रही। जयप्रकाश अखिल भारतीय कांग्रेस समाजवादी के जनरल सेक्रेटरी चुने गये।

समाजवादी पार्टी के प्रधान पर रहकर जयप्रकाश बाबू ने क्रांतिकारी शक्तियों को एकत्र कर सराहनीय कार्य किया। उन्होंने एकता लाने की भी भरकस कोशिश लेकिन गद्दार भारतीय कम्युनिस्ट नियों के षडयन्त्रों के कारणवश हो सके। वे कांग्रेस कार्य-समिति के भी रहे पर बाद को उन्होंने ठुकरा दिया।

राजगढ़ कांग्रेस के अवसर पर पुर में एक आपत्तिजनक भाषण अपराध में जयप्रकाश बाबू को कर लिया गया। वे देवली-नजर कैम्प भेज दिये गये वहाँ। पर देवली की ऐतिहासिक भूख-हड़ताल नेतृत्व किया। ३१ दिन की भूख के बाद ब्रिटिश सरकार को जयप्रकाश के आगे झुकना ही पड़ा। इसी कार ने जयप्रकाश बाबू के एक छपवाया जिसे 'विद्रोह की तैयारी' के रूप में 'पायनियर' जैसे बड़े रेजी साम्राज्यवादी अखबारों ने यह पत्र जेल से लिखा गया था।

अगस्त-आन्दोलन के अवसर प्रकाश बाबू हजारीबाज जेल में थे। एक दिन सहसा अपने चार साथ भाग निकले। अगस्त क्रान्ति नाओं में से यह एक थी।

शेष पृष्ठ १७ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधान-सभा में प्रांतों की समस्या

भाषा के अनुसार प्रान्तों का निर्माण और उनका सीमा को उलझन

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

[२]

भारतीय विधान-सम्मेलन का अधिवेशन प्रारंभ हो गया है। सभा के सामने भारत के लिए भावी विधान-निर्माण के साथ ही एक प्रमुख समस्या का निर्णय करना है। वह है भाषा के अनुसार प्रान्तों का निर्माण और उनकी सीमा-सम्बन्धी उलझन को सुलझाना। इस लेख में विद्वान् लेखक ने बड़ी खोज से इस समस्या पर प्रकाश डाला है, जो सामयिक और विचारणीय है। लेख का पहला अंश 'देशदूत' के पिछले अंक में छप चुका है।

...हरलाल नेहरू विधान-सभा में ...तंत्रता का प्रस्ताव रख रहे हैं।

...ध्य-प्रांत

...ग्राही के अनुसार मध्य-प्रांत में ...भाषी प्रदेश निम्न हैं :—

	वर्गमील में
	१३,७०१
	१,४४४
	५४०
	१,०५५
	१,९६३
	८४२
...जमींदारी भाल-	२३३
...जोगीनी गाँव	१९,७७८

...लोग एक अलग महाराष्ट्र ...हैं। श्री शंकरराव देव की ...बृहत् महाराष्ट्र के निर्माण के ...कमेटी भी कार्य कर रही है। ...यूनिवर्सिटी की स्थापना ...अप्रैल से हो रही है। महा-...प्रांत के मराठी भाषा-...तक ही सीमित न होगा, ...प्रांत और बरार प्रांत से बरार ...साथ नागपुर आदि जिले भी ...हैं। मध्य प्रांत में ४०,८१८ ...प्रदेश मराठी भाषा-...विवरण इस प्रकार है :—

	वर्गमील
	१७,८०९
...डिवीजन में से	
	३,८३६
	९,२०५
	२,४३५
...डिवीजन में से	३,९१०
...जिला	

	वर्ग मील
नासिक और सुरगना	५,८८२
थाना और जवहर	३,४२२
कोलांबा और जंगीरा	२,१६६
बम्बई उपनगर	१५४
अहमदनगर	६,६११
पूना और भोर	५,३३२
रत्नागिरी	३,९८९
सतारा और फाल्टन	५,०५३
	वर्गमील
सावन्त वाड़ी	९२६
कोल्हापुर और एस० एम० सी० रियासतें	३,२१७
योग	३६,७५२

गुजरात

बम्बई प्रान्त तीन भागों में विभक्त होगा। महाराष्ट्र, गुजरात और कर्नाटक। महाराष्ट्र का भाग ऊपर हम देख आये हैं। बम्बई शहर को मराठे और गुजराती दोनों अपना बनाये हैं। यद्यपि गुजराती अहमदाबाद को और मराठे पूना को अपना केन्द्र मानते हैं और वहाँ विश्वविद्यलय स्थापित करके उस पर अपनी मोहर भी लगा रहे हैं। लक्षणों से मालूम होता है कि बम्बई अलग एक अन्तर्प्रान्तीय शहर रहेगा। कांग्रेसी प्रान्तों में उसकी एक स्वतन्त्र गणना है। गुजरात और महाराष्ट्र के विवाद को मिटाने का यही एक उपाय है। गुजरात प्रान्त में निम्न जिले होंगे :—

	वर्गमील
अहमदाबाद	३,८४६
भड़ोच	१,४६८
कैड़ा	१,६२०
पंचमहाल	१,६०८
सूरत	१,६५१
मही काला एजेन्सी	३,१२४
रेवाँकाला एजेन्सी	४,९६८
योग	१८,२८३

बड़ौदा और काठियावाड़ की रियासतें भी गुजरात के अन्तर्गत हैं। यदि ये अपने प्रभुत्व को सीमित करके गुजरात में सम्मिलित हो जावें तो गुजरात छोटा प्रान्त न रहेगा। श्री मुंशी की राजनीतिज्ञता की यही परीक्षा होगी।

कर्नाटक

कन्नड़ भाषा-भाषी इस समय बम्बई और मद्रास प्रान्तों और निज़ाम हैदरा... और मैसूर में ... पूर्णत... में ...

धारवाड़	४,६०६
कनारा	३,८४६
कोल्हापुर	३,२१४
शोलापुर	४,५६९
योग	२६,६६०

मद्रास प्रान्त के कांग्रेसी कर्नाटक प्रांत में जो जिले हैं वे और इसमें सम्मिलित किये जायँगे। वे जिले इस प्रकार हैं—

	वर्गमील
मंगलौर	
बेलारी	
करनल	
तंजौर जिले का कुछ भाग	

आन्ध्र

भाषानुसार प्रान्त बनाने के आन्दोलन का नेतृत्व इस समय आन्ध्र कर रहा है।

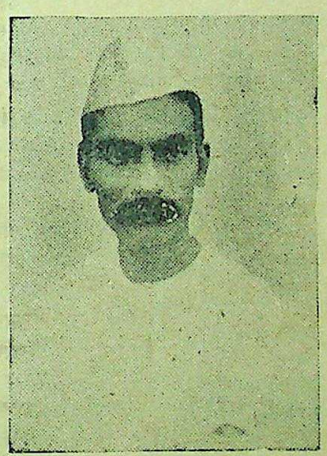

भारतीय विधान-सभा के अध्यक्ष डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद।

इसकी यह माँग बहुत पुरानी है। साइमन कमीशन ने इसकी माँग के औचित्य को स्वीकार किया था। ज्वाइण्ट पार्लमेण्टरी कमेटी ने अपनी रिपोर्ट के पहले भाग में ४४३ पृष्ठ पर लिखा है :—

कहा जाता है कि ६० लाख उड़ीसा के निवासियों में केवल ५० लाख उड़िया बोलते हैं, मगर झेलम भाषा-भाषी इलाका जिसको पहले ही आन्ध्र नाम दे दिया गया है, १८० लाख जनों से कम का नहीं है। वे तमिल से अपने को अलग करने को उत्सुक हैं। बंगाल से उड़िया भाषा भाषियों को बाहर रखने का कारण आन्ध्रों को ... करे...

मुस्लिम लीग के प्रेसिडेंट मिस्टर जिन्ना पाकिस्तान चाहते हैं।

विवरण हम ऊपर देख आये हैं। आन्ध्र प्रान्त का निर्माण इस प्रकार होगा :—

	वर्गमील
कृष्णा जिला	३,४६९
अनन्तपुर जिला	६,७३४
पश्चिमी गोदावरी	२,४३४
पूर्वीय गोदावरी	,३२०
विजगापट्टम मैदान	५,९९१
नेलौर	७,९४२
कुडुपा	५,९२२
त्रिचूर	५,९५१
योग	५०,५६१

तमिलनाड

तमिलनाड प्रान्त का निर्माण निम्न जिलों से होगा :—

	वर्गमीलों में
चिंधेपुर	३,०७४
उत्तरी अर्काट	४,६७१
दक्षिणी अर्काट	४,२०५
शलेम	७,०७३
त्रिचनापल्ली	४,३२९
तंजौर	३,७३८
तिनेवली	४,३४२
सयन	४,८५१
मदुरा	४,८८३
मद्रास	३०
कोयम्बटूर	७,१२१
योग	४८,३१७

मद्रास पर आन्ध्र और तमिल दोनों अपना अपना हक बताते हैं। सर राधाकृष्णन् सरीखे दार्शनिक ने तो आन्ध्रों की ओर से मद्रास को नवीन अन्ध्र प्रान्त की राजधानी बनाने का प्रस्ताव किया है ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काश्मीर-राज्य में जन-जागृति

ग्लेंसी कमीशन, धारा-सभा की स्थापना और राष्ट्रीय चेतना

[२]

लेखक, पंडित ब्रजबिहारीलाल काचरू, श्रीनगर (काश्मीर)

भारत के देशी राज्यों में काश्मीर की समस्याओं का राजनीतिक दृष्टि से प्रमुख स्थान है। पिछले कुछ महीने से काश्मीर की राजनीति भारत में व्यापक हो चुकी है, इसलिए इस राज्य के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने की इच्छा होना अनिवार्य है। श्रीनगर-निवासी श्री काचरू ने यह लेखमाला बड़े ही श्रम और छानबीन से लिखनी प्रारंभ की है जिससे वहाँ की सामाजिक और राजनैतिक स्थिति का कुछ अनुभव प्राप्त हो सके। इस लेखमाला का पहला लेख पिछले अंक में छप चुका है। हमारी समझ में यह सुन्दर लेखमाला पाठकों को पसंद आयेगी।

मानव सदा नवीनता का पुजारी रहा है। नवीनता के साथ-साथ वह स्वतन्त्रता चाहता है। स्वतंत्रता और नवीनता का वह जितना उत्सुक है, प्रकृति उससे कहीं बढ़कर परिवर्तन के लिए लालायित है। युग ने करवट बदली थी, वह समय बीत चला था जब विवाह आदि पवित्र प्रेम-सूत्र पर भी लोगों से कर लिये जाते थे। जनता बहुत सह चुकी थी, वह एक परिवर्तन चाहती थी एक ऐसा परिवर्तन जिससे वह आजादी की साँस ले सके। जब सहनशक्ति की हद होती है तो आन्दोलन आरम्भ होते हैं। आन्दोलन तब कहीं हो सकते हैं जब देश का, समाज का, एक एक मानव जागृत हो चुका हो। यह जागृति सन् १९२२-१९२४ तक हम देखते हैं। इस जागृति का श्रेय "शेर काश्मीर" को है।

आन्दोलन का पहला प्रभाव प्रान्तों के उन राज्याधिकारियों पर पड़ा जो सरकारी नौकरियों को बाप-दादा के काल से चलती बपौती माने हुए थे और गरीब जनता पर अत्याचार कर रहे थे। राज्याधिकारियों के लिए हर एक सुविधाएँ थीं, रिश्वत का बाजार जोरों पर था, शिक्षा का काफी प्रचार था और काफी जनता पढ़ी-लिखी कहलाने के योग्य थी। उनके लिए सरकारी नौकरियाँ मिलना कठिन था, वह भटक रहे थे, जीविका पाने के लिए। उन्होंने विदेशियों को निकालने के लिए माँग की जिससे उनके स्थान इन्हें पाने का सौभाग्य मिले। सन् १९२७ तक राज्याधिकारी किसी तरह जनता को आश्वासन देते रहे, उसे दबाते रहे। जनमात्र में जो चिनगारी स्थान पा गई थी वह आग बनाने के काम में लगी थी और वह आग 'विद्रोह' था, शासन के प्रति—उस शासन के प्रति—जिसने जनता से बहुत कुछ छीना था, उससे उनके अधिकार

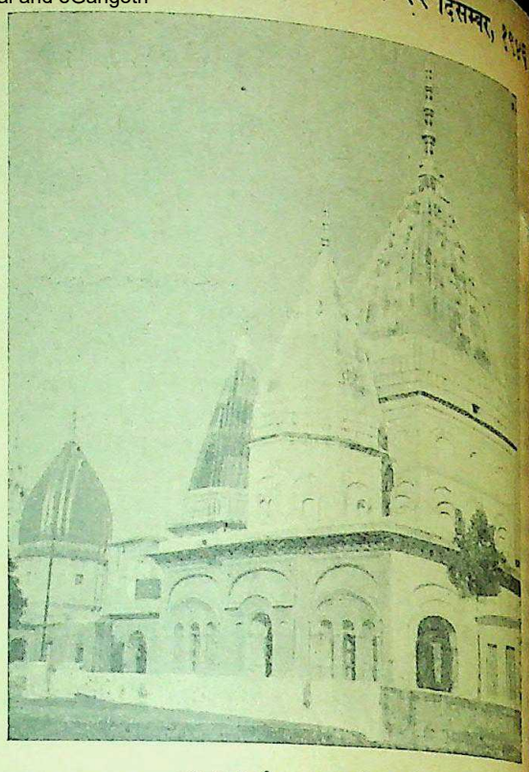

जम्मू का श्री रघुनाथ जी का मन्दिर।

इसी कमीशन ने प्रेस और प्लेटफार्म की सुविधाएँ दीं।

सन् ३१ का आन्दोलन वास्तविक रूप में शुद्ध जन-आन्दोलन नहीं कहलाया जा सकता। कारण यह कि इसके मूल में साम्प्रदायिकता का विष भरा था। यद्यपि यह आन्दोलन अत्याचार के विरुद्ध पुकार-स्वरूप था परन्तु इसका सारा नजला बेचारे हिन्दुओं पर गिरा। जो तब तक "अपने मुसलमान भाइयों" पर विश्वास करते आये थे। उनके विश्वास और उन पर जो अनुघात बैठे थे पीछे आकर छुरा भोंक दिया गया। यदि इससे पहले "कनिकूट" ग्राम में एक-मात्र घराने को नष्ट-भ्रष्ट किया था परन्तु फिर भी अपने मुसलमान भाइयों के प्रति हिंदुओं की सहृदयता अभिन्न रही। काश्मीर के इतिहास में यह एक कुपटना के नाम से सदा याद रहेगी। इस झगड़े से एक एक हिन्दू पर कितना अत्याचार हुआ यह सोचकर आज एक एक विवेकशील काश्मीरी इस साम्प्रदायिकता को धिक्कारता है। हिन्दुओं को लूटने-मारने की जो योजना बनी थी, यदि श्री कज्जा उसे दो-एक दिन पहले जनता के सामने न रखते तो शायद आज काश्मीर में दो-एक प्रतिशत हिन्दू ढूँढ़े भी न मिलते। तो भी अत्याचार कुछ कम नहीं हुए। ठीक कलकत्ते की याद आती है।

भंग किया गया। इसके अलावा बहुत कुछ हुआ यह तो एक प्रसंग है। विचारवान् काश्मीर के हिन्दुओं ने जो कुछ झेला उसका फल वह आज भी भोग रहे हैं। कई हिन्दुओं के मकान फिर न बन सके। कई मकानों के रहनेवाले फिर न बस सके।

इस साम्प्रदायिक झगड़े ने मुसलमानों में दो दल बना दिये। एक जो पीड़ित हिन्दू जनता से सहानुभूति रखते थे, उन पर किये गये अत्याचारों को घृणा की दृष्टि से देखते थे, जो देश में भ्रातृभाव से रहना चाहते थे और दूसरा दल अपने को काश्मीर में रहने का केवल-मात्र अधिकारी समझ रहा था। झगड़े से पहले मुसलमानों की सम्मिलित टोली की प्रतिनिधि "मुस्लिम कांफ्रेंस" थी। अब उसके रहते आजाद विचार-धारा दल के आदमियों का प्रतिनिधित्व नैशनल कांफ्रेंस (राष्ट्रीय सम्मेलन) करने लगी।

इससे पहले काश्मीर दारिद्र्य, अज्ञान, ध्यान नहीं था, अगर किसी का [illegible] तो उसमें शक्ति न थी, कहने की [illegible] को बेदार करने की। शिक्षितवर्ग की [illegible] ने साधारण जनता को जगाया। [illegible] दिनों आजाद गिरोह के मुख्य [illegible] शेख अब्दुल्ला ने राष्ट्रीय नीति को [illegible] कर, उसे घोषित कर अपने लिए [illegible] बना लिया। जागृति तो आई ही थी [illegible] सुव्यवस्था के रूप का सेहरा शेख [illegible] सिर बँधा। शेख से वह 'शेर [illegible] बने। कई नये दल के नेता भी [illegible] के आजाद फिजा से प्रभावित हो [illegible] घुसे। शेख की लोकप्रियता के [illegible] जनता तक पूरी तरह लाने के [illegible] पर अपनी सम्मतियों की बौछार [illegible] कइयों ने उन्हें "काश्मीर का गांधी" [illegible] लिख डाला। जनता कांग्रेस [illegible] जोरदार भाषणों से प्रभावित हुई [illegible] थी। शेख साहब गांधी जी, नेहरू [illegible] आदि से मिलने की कोशिश में [illegible] एक में 'शेर' का [illegible] स्थान पा गया [illegible] संदेश जिसने उन्हें [illegible] था। उनका दृढ़ [illegible] सहनशक्ति की [illegible] सीमा पर था कौन [illegible] था कि कब पढ़ [illegible] और शासकवर्ग के [illegible] भीषण रूप धारण [illegible] ले। सन् १९३५ में [illegible] भा० कांग्रेस का [illegible] अधिवेशन था, [illegible] अधिवेशन में [illegible] काश्मीरी युवक भी [illegible] लेने चले। वह [illegible] यता" के प्रेमी थे। [illegible] बार काश्मीर को [illegible] दायिकतासे दूर [illegible] कांग्रेस का [illegible]

करना चाहते थे। [illegible] साम्प्रदायिक भावना [illegible] [illegible] नैशनल कांफ्रेंस [illegible] अपने को "राष्ट्रीय" [illegible]

शेष पृष्ठ १६ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय विधान-सम्मेलन किधर?

क्या भारतीय स्वाधीनता का अन्तिम निर्णय यहीं होगा?

लेखक, श्री मन्मथनाथ गुप्त

दिल्ली में विधान-सभा का अधिवेशन हो रहा है। कांग्रेस-नेताओं ने घोषित किया है कि भारतीय स्वतन्त्रता का अंतिम निर्णय विधान-सभा द्वारा ही होगा। इस दृष्टिकोण को सामने रखकर प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री गुप्त ने विधान-सभा तथा उसकी उपयोगिता पर इस लेख में प्रकाश डाला है और यह भी स्पष्ट किया है कि यह सभा भारतीय स्वाधीनता के मार्ग में विशेष सहायक सिद्ध न होने दी जायेगी। लेख पठनीय, सामयिक तथा विचारणीय है।

सुप्रसिद्ध समाजवादी और विचारक नेता श्री मन्मथनाथ गुप्त।

दिखाने में समर्थ रहा कि कांग्रेस जो इस समय दिल्ली में बैठकर विधान बना रही है, सारी भारतीय जनता की प्रतिनिधि नहीं है। अब इस पर लीग के शामिल न होने से अवश्य ही, विधान-सम्मेलन का प्रचार-मूल्य बहुत घट गया है। इस समय जो विधान-सम्मेलन बैठ रहा है, वह तो एक दूसरे रूप में बैठी हुई कांग्रेस ही है। बाकी जो सिख तथा अन्य लोगों के प्रतिनिधि हैं, उनके होने से अवश्य विधान-सम्मेलन कांग्रेस से कुछ अधिक विस्तृत है, पर लीग के न होने से उसका बहुत बड़ा कोना कट गया है।

फिर जो प्रचार-कार्य का भरोसा हो, तो किन में प्रचार-कार्य? वहाँ दूध का धुला कौन बैठा है? रूस के अतिरिक्त सभी बड़ी शक्तियाँ ब्रिटेन की तरह साम्राज्यवादी हैं। अभी कुछ ही महीने हुए हम डच तथा फ्रेंच साम्राज्यवाद का तांडवनृत्य देख चुके हैं। कितनी बेरहमी से इन लोगों ने अपने साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोहियों को दबाने की कोशिश की? यह दूसरी बात है कि उन्हें पूरी तरह दबा नहीं पाये, यह उनकी भलाई के कारण नहीं बल्कि उन देशों की जागृति जन-शक्ति के कारण था।

अमेरिका भी साम्राज्यवादी है। उसका डालर आज यूरोप में प्रतिक्रांति का सबसे बड़ा अस्त्र है। वहाँ डालर के जरिये से जन-शक्ति को दबाने की चेष्टा [illegible] रही है और हि[illegible] समय [illegible] नाम [illegible] है।

यह चाहता है कि भारत पर से अँगरेजों का शिकंजा कुछ ढीला हो, पर यह स्वतन्त्रता के प्रति स्वाभाविक प्रेम के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि भारत की लूट-खसोट में उन्हें भी हिस्सा मिले।

अवश्य चीन आदि कुछ शक्तियाँ हैं जिन्हें भारतीय स्वतन्त्रता से खुशी होगी, पर दुनिया के रंगमंच में चीन को गिनता ही कौन है? चीन तो अपनी ही परेशानियों में मुबतिला है, वह तो अपनी ही बचत में लगा हुआ है।

रहा एक रूस। सो उसे दुनिया की सारी पराधीन जातियों से सच्ची सहानुभूति है और इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि उसका वश चलता तो वह सारी दुनिया को स्वतन्त्र करा देता, पर पूँजीवादी राष्ट्रों से घिरे हुए रूस को तो बड़ी चतुरता से अपनी रक्षा करनी पड़ रही है। यदि उसका जरा भी पैर फिसले तो दुनिया के पूँजीवादी राष्ट्र अपने अन्दर के इस काले भेड़ को फौरन मार डालने के लिए तैयार हैं। यह स्पष्ट है कि रूस को हमसे पूरी सहानुभूति है, पर हिटलर ने मरते-मरते उसकी हालत इतनी बिगाड़ दी है कि जब तक एक-आध पंचवार्षिक योजना वहाँ कार्यान्वित नहीं हो जाती, तब तक उसे अपना पूरा खतरा बना हुआ है। फिर उसके पास अगर एटम बम नहीं है, तब तो उसे पूरा खतरा है।

इन सब बातों से यह स्पष्ट है कि यदि [illegible] सम्मेलन को [illegible]-कार्य के [illegible]

यह जरूरी था कि जनता को संग्राम के लिए तैयार किया जाता। अवश्य ही ब्रिटिश सरकार शक्ति देने के लिए तैयार नहीं है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। कम से कम हमारे नेताओं को इतनी बात तो मानकर ही चलना चाहिए था। यदि विधान-सम्मेलन कोई विधान पास कर दे, तो सरकार उसे लागू करेगी, इसकी क्या गारंटी है? मुझे तो ऐसा मालूम पड़ता है कि सरकार सिर्फ समय ले रही है और इसमें लीग उनकी मदद कर रही है।

कर्त्तव्य स्पष्ट है। वह है क्रान्ति-संगठन।

निश्चय

लेखक, श्री गंगाप्रसाद पांडेय एम० ए०

मुखर कवि का गान!
ले अथक गति का कठिन व्रत चल पड़ेंगे अग्नि-पथ पर,
एक स्वर से कर निनादित विश्व-जीवन, अवनि-अम्बर;
अब न बन्दी रह सकेंगे एक क्षण भी प्राण!
लद गये वे दिन पुराने यातनाओं के भयंकर,
जानने हम भी लगे हैं दासता से मृत्यु बढ़कर;
सब स्वतंत्र समान होंगे अन्यथा बलिदान!
बढ़ चलेंगे पैर डगमग लक्ष्य तक चलना निरंतर,
हो न चाहे शक्ति बाहर किन्तु निर्बल है न अंतर;
हो न सकता है उपेक्षित राष्ट्र का आह्वान!
मुखर कवि का गान,
एक स्वर संधान!

बदन की कालिमा दूर हो जाने पर गौर तथा सुन्दर त्वचा

इस आश्चयजनक रहस्य को पढ़िये

जब चेहरे की कालिमा दूर हो जाती है तो नवीन गौर वर्ण की सुन्दरता निखर पड़ती है। वही कोमल एवम् मृदुल रूप जिसकी प्रत्येक स्त्री को चाह है और जिसकी प्रत्येक पुरुष प्रशंसा कर रहा है।

ह्वाइटेक्स आश्चर्यजनक तरल औषधि चेहरे की कालिमा को तुरन्त दूर करती है। इससे आपका रूप गौर तथा विशेष मृदु हो जाता है जिससे आपके सौन्दर्य, व्यक्तित्व, तथा आकर्षण में विशेष वृद्धि होती है।

ह्वाइटेक्स में चिपचिपाहट नहीं है। और न इससे किसी प्रकार के दूषित धब्बे ही रह जाते हैं। यह त्वचा में प्रवेश कर त्वचा को पोषता है। आज ही एक बोतल खरीदें।

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रिटिश सरकार की दो रंगी चाल

ब्रिटिश मजदूर सरकार की नीयत का पर्दाफाश हो रहा है

लेखक, श्री श्यामबिहारी विरागी, बी० ए०

ब्रिटिश मजदूर-दल की ओर से भारत के लिए विधान-निर्माण की जो घोषणा की जा चुकी है, धीरे-धीरे अब उसका रहस्य प्रकट हो रहा है। ब्रिटेन किस हद तक भारत के अल्पसंख्यक दलों की आड़ में भारतीय स्वाधीनता के मार्ग में बाधा पहुँचाना चाहती है, इसका पर्दाफाश मजदूर के प्रधान मंत्री मिस्टर एटली के वक्तव्य से हो जाता है। लेखक ने इसी विषय को इस लेख में स्पष्ट किया है जो विचारणीय और समझने योग्य है।

जब से इँगलैंड में मजदूर सरकार कायम हुई उसी समय से आश्वासन मिलने लगा कि एटली और उनकी सरकार भारत को स्वतन्त्र बनाना चाहती है। कांग्रेस जो इस देश की एकमात्र राष्ट्रीय संस्था है, सदैव से ही भारत के राजनीनिक अधिकारों के लिए ब्रिटिश हुकूमत से लड़ती आई है। मजदूर सरकार के आश्वासनों तथा नेकनीयती पर सहसा विश्वास कर लेना भारतीयों के लिए स्वाभाविक नहीं था क्योंकि दूध का जला मट्ठा फूँक-फूँकर पीता है। फिर भी मजदूर सरकार को अपनी नेकनीयती साबित करने के लिए उचित अवसर देना कांग्रेस ऐसी एक शरीफ संस्था के लिए उचित ही था। मजदूर सरकार यह भली भाँति जानती थी कि चर्चिल-सम्प्रदाय की नादिरशाही के कारनामों से जला हुआ भारत अँगरेजों की नेकनीयती पर जल्दी विश्वास नहीं कर सकता। अतएव उसके लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक था कि वह कांग्रेस के सामने इस रूप में आये कि आसानी से उस पर अविश्वास न किया जा सके। जिस समय कैबिनेट मिशन भारत में आया था उस समय मिशन के एक मेम्बर सर स्टेफर्ड क्रिप्स ने कहा था, "किसी भारतीय को एक क्षण के लिए भी हमारी नेकनीयती पर सन्देह नहीं करना चाहिए। ब्रिटिश मजदूर दल की नीति सदैव से ही भारत को आसानी तथा शीघ्रता के साथ स्वराज्य देने की रही है। आज हम उसी नीति को चरितार्थ करने के लिए इस देश में आये हैं और इतने दिन रुककर कठिन परिश्रम कर रहे हैं।"

मजदूर सरकार के प्रतिनिधि सर स्टेफर्ड क्रिप्स द्वारा दिया हुआ आश्वासन आज वास्तविकता की कसौटी की जाँच पर गलत साबित हो रहा है। १५ मई सन् १९४६ को ब्रिटेन के प्रधान मंत्री एटली ने ब्रिटिश पार्लियामेन्ट में भारत के सम्बन्ध में अपनी नीति की व्याख्या की थी। उन्होंने कहा था, "हमें अल्पसंख्यकों के अधिकारों का पूर्ण खयाल है और हम समझते हैं कि उनके लिए ऐसी परिस्थिति आवश्यक है जिसमें वे आजादी से भयहीन होकर रह सकें। दूसरी तरफ हम किसी भी अल्पसंख्यक को यह निषेधाधिकार नहीं देंगे कि वह बहुसंख्यक की उन्नति को रोके।" उस समय एटली के इन विचारों का राष्ट्र ने स्वागत किया था। कांग्रेस समझती थी कि इँगलैंड के प्रधान मंत्री एक जिम्मेदार व्यक्ति हैं जो अपनी नीति पर अटल रहेंगे; परन्तु हाल में लन्दन में कांग्रेस, सिख तथा मुस्लिम लीग के प्रतिनिधियों को बुलाकर जो राजनीतिक प्रपंच रचा गया था उसे देखकर यह आशा अब जाती रही। आज एटली के विचार बिलकुल दूसरे हैं। उन्होंने अभी हाल में दिये हुए अपने वक्तव्य में कहा है—"विधान सम्मेलन द्वारा बनाया हुआ कोई विधान जिसके बनाने में देश के एक बहुत बड़े दल के प्रतिनिधियों का हाथ नहीं है ब्रिटिश पालियामेन्ट को मान्य नहीं होगा और वह उन लोगों पर लादा नहीं जा सकेगा।" एटली के तब और अब के वक्तव्यों को तुलनात्मक दृष्टि से देखने पर पता चलता है कि वे एक-दूसरे के विरोधी हैं। आज एटली की इस नीति ने भारत में एक विकट राजनीतिक संकट उपस्थित कर दिया है। इस समय एटली ने १६ मई सन् १९४६ के मंत्रिदल के वक्तव्य के पैराग्राफ १९ (५) तथा १९ (८) के अर्थ पर जो निर्णय दिया है वह मक्कारी तथा कूटनीति से भरा हुआ है। उन्होंने स्पष्ट रूप से मिस्टर जिन्ना के हाथ में राष्ट्र की उन्नति रोकने का निषेधाधिकार दे दिया है। इसे समझने के लिए यह आवश्यक है कि मंत्रिदल के वक्तव्य के कुछ अंशों की जाँच की जाय।

वक्तव्य के पैराग्राफ १९ (i) के अनुसार मंत्रिदल ने भारत के भिन्न प्रान्तों को ३ भागों में विभाजित किया है। अ—ब—स। नीचे के आँकड़े में इन विभागों का विस्तृत स्वरूप दिया जा रहा है।

विभाग (अ)

प्रान्त	जेनेरल	मुस्लिम	योग
मद्रास	४५	४	४९
बम्बई	१९	२	२१
यू० पी०	४७	८	५५
बिहार	३१	५	३६
सी० पी०	१६	१	१७
उड़ीसा	९	०	९
योग	१६७	२०	१८७

विभाग (ब)

प्रान्त	जेनेरल	मुस्लिम	सिख	योग
पंजाब	८	१६	४	२८
सीमाप्रांत	०	३	०	३
सिन्ध	१	३	०	४
योग	९	२२	४	३५

विभाग (स)

प्रान्त	जेनेरल	मुस्लिम	योग
बंगाल	२७	३३	६०
आसाम	७	३	१०
योग	३४	३६	७०

पैराग्राफ १९ (५) के अनुसार उपरोक्त तीनों विभाग अपना अपना विधान बनाने के लिए अलग बैठेंगे और इस पर विचार करेंगे कि वे अपनी एक गुटबंदी बनायें अथवा नहीं। गुटबंदी का निर्णय किस तरह होगा इसका जिक्र इस पैराग्राफ में नहीं है। एटली साहब ने जो फतवा अभी हाल में दिया है उसके अनुसार हर एक विभाग गुटबंदी का फैसला बहुमत से करेगा। यदि किसी प्रान्त के प्रतिनिधियों का बहुमत गुटबंदी में शामिल होने का नहीं है फिर भी यदि उस विभाग के तमाम प्रतिनिधियों का बहुमत गुटबंदी के पक्ष में है तो यह निर्णय उस प्रान्त पर उसकी इच्छा के विरुद्ध भी लाद दिया जायेगा। एटली साहब के इस निर्णय को दृष्टि में रखते हुए यदि हम ऊपर के आँकड़ों को देखें तो पता चलेगा कि विभाग अ में कांग्रेस का बहुमत है। अतएव गुटबंदी का प्रश्न उसमें पैदा ही नहीं होता। विभाग ब के ३५ प्रतिनिधियों में १९ और विभाग स के ७० प्रतिनिधियों में २६ प्रतिनिधि मुस्लिम लीग के हैं। इस प्रकार इन दोनों विभागों में मुस्लिम लीग का बहुमत है। विभाग ब में सीमाप्रान्त के प्रतिनिधियों में बहुमत कांग्रेस का है और इसी प्रकार विभाग स में आसाम की स्थिति है। न्याय की दृष्टि से गुटबंदी करने या न करने का अधिकार हर सूबों को होना चाहिए परन्तु एटली के निर्णय के अनुसार यह हक अब उन प्रान्तों को नहीं होगा। दूसरे शब्दों में इस निर्णय से मुस्लिम लीग के तानाशाह कायदे आजम जिन्ना को बिना किसी परिश्रम के बहुत अंश में पाकिस्तान दे दिया जायेगा।

इधर एटली साहब ने जो वक्तव्य

मिस्टर चर्चिल

दिया है उससे उनके इरादे [illegible] मालूम होते। १६ मई सन् १९४ वक्तव्य को देखते हुए इधर जो उन्होंने कहा है उसमें साम्राज्यवादी की गंध है। पंडित जवाहरलाल जी ने ही कहा है कि एटली के वक्तव्य में पूर्ण प्रश्न उठाये गये हैं और १६ वक्तव्य में कुछ बातें जोड़ी गई हैं संशोधन किया गया है। आज इँगलैं प्रधान मंत्री इस हद तक पकिस्तान देने क्यों तैयार हो गये हैं जब कि मंत्रिमंडल के सदस्यों ने एक वक्तव्य में पाकिस्तान के सम्बन्ध में कहा था, "हम लोग इस निर्णय पर हैं कि साम्प्रदायिक गुत्थियाँ किसी में बड़ा या छोटा पाकिस्तान देने से सुलझेंगी। अतएव हम ब्रिटिश को यह कभी भी सलाह नहीं देंगे भारत का शासन जो अब तक हमारे में था दो हिस्सों में बाँट दिया जाय।

मजदूर सरकार की नीति में [illegible] समय जो परिवर्तन हुआ है उसके आश्चर्य नहीं। जिस गद्दी पर इस [illegible] एटली साहब हैं उस गद्दी की नीति से एक ही रही है। चर्चिल के स्थान एटली के आने से उस गद्दी की नीति परिवर्त्तन हुआ हो ऐसी बात दिखाई नहीं पड़ती। एटली के कंठ से चर्चिल की ही बोली आज सुनाई दे रही है पहले समझने में भ्रम होता था आज वह साफ सुनाई पड़ रही है। वर्ष अच्छी तरह जानता है कि उसे अपनी शक्ति से लेनी होगी। इँगलैंड सरकार की नीयत का पर्दाफाश हो है। इस समय देश को सजग हो ब्रिटिश हुकूमत हमारी शक्ति से ही झुकी थी। हमें और भी शक्ति का करना है ताकि हम उसे सदैव झुकाये

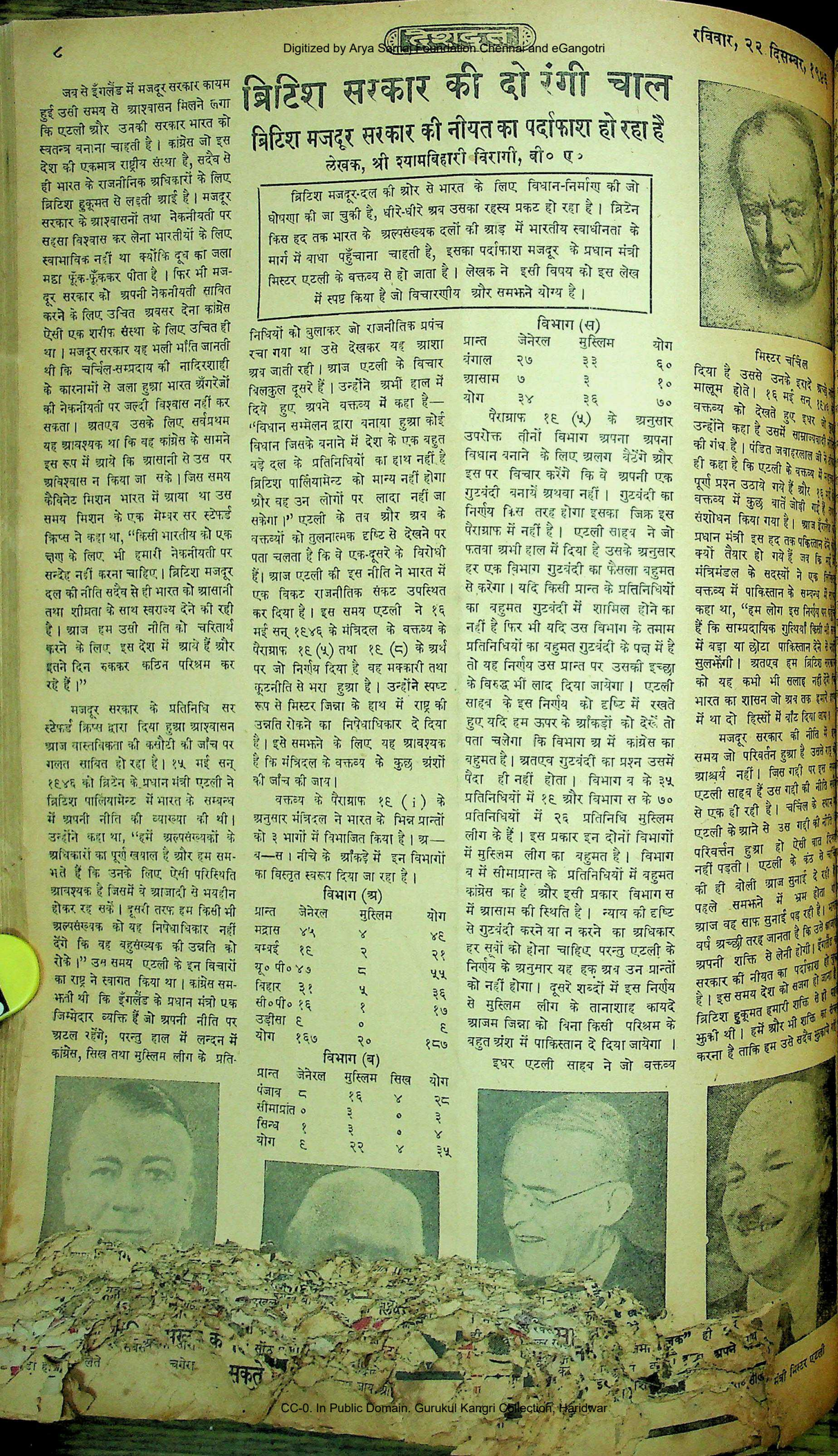

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह श्रमजीवी

लेखक, श्री रामकृष्ण

श्रमजीवियों की स्थिति सदा दयनीय रहती है, विशेष कर श्रमजीवी लेखक की। इस करुणा-पूर्ण कहानी में हर्ष ऐसे कलाकार का करुण चित्रण किया गया है, जिसे पढ़कर श्रमिक-जीवन के बलिदान की एक करुण तस्वीर हृदय-पटल पर अंकित हो जाती है। कहानी सुन्दर और रोचक है।

आज हमारे साहित्य-सृजकों को दाने-दाने के लिए तड़पना पड़ता?

ऐसी ही मेरी उसकी बातें होती रहतीं। वह मुझसे बहुत खुल गया था। अपने सुख-दुःख की समस्त बातें वह मुझसे निस्संकोच बता दिया करता था। मुझे उसकी दशा पर तरस आती। पर करता क्या? अपने पास इतना पैसा नहीं था कि उसकी आर्थिक सहायता कर पाता। मुझे रोष होता पुस्तक-प्रकाशकों पर। अब तक हर्ष की चार-पाँच पुस्तकें निकल चुकी थीं और उनकी बिक्री धड़ाधड़ हो रही थी। मुझे उसकी बातों पर हँसी आती। कुछ बातें करने का ढंग ही उसका ऐसा था। लोग उसे अर्द्ध विक्षिप्त कहते थे। वह भी अपने को कुछ ऐसा ही समझता था।

एक बार की बात है। मैं और हर्ष शाम को चाय पी रहे थे। दैनिक उषानाद का सायं संस्करण मेज पर पड़ा था। सहसा उसकी एक सम्पादकीय टिप्पणी पर बरबस ध्यान आकर्षित हो गया। मोटे-मोटे हरूफों में लिखा था—"हर्ष के नाम पर भीख।" नीचे जो लिखा था उसका सारांश यह है—"लखनऊ की सड़कों पर कुछ व्यक्ति

हर्ष भावुकता से सोचता हुआ आगे बढ़ता जा रहा था।

प्रसिद्ध साहित्यकार श्री "हर्ष" के नाम पर जनता से चन्दा वसूल कर रहे हैं। यह स्मरणीय है कि हर्ष जी की आर्थिक अवस्था [illegible] हैं। उनका आत्म-गौरव भीख माँगवाने पर नहीं प्रस्तुत हो सकता, इसका हमें पूर्ण विश्वास है और इसी से यह सन्देह करने का साहस हमें उत्पन्न हुआ। इस टिप्पणी द्वारा हम हर्ष जी का ध्यान इस ओर खींचना चाहते हैं और भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि वे उनके संकट शीघ्र ही दूर करें।"

मैंने हर्ष को यह खबर सुनाई। वह भौंचक्का रह गया। पूछने पर मालूम हुआ, उसे सचमुच इस चन्दे के सम्बन्ध में कुछ नहीं मालूम। मुझे उसकी बात पर आश्चर्य हुआ। भगवान् तो भूखे रहें और भगवान् के नाम पर उनके भक्तगण भीख माँगकर स्वयं अपना पेट भरें। मुझसे नहीं रहा गया। मैंने हर्ष से कहा—इस घटना का पूरा पता लगाकर जनता को सूचित कर दो कि तुमसे और चन्दे से कुछ सम्बन्ध नहीं। वह हँसा, बोला—भाई, यदि मेरे नाम के कारण कुछ आदमियों का पेट भरता है तो मैं क्यों उनके बीच पड़कर राहु बनूँ? मुझे क्या करना उनका एकत्रित चन्दा लेकर? जैसे हूँ, खुश हूँ। ईश्वर की इच्छा के आगे क्या हो सकता है? वह यही चाहता होगा। जब देना होगा। वह छप्पर फाड़कर स्वयं देगा, अपने को चिन्ता में डालकर एक कठिनाई और क्यों सिर पर लूँ?

अब मुझे उसके पागल होने में सन्देह न रहा। मैं उन दिनों बैरिस्टरी पास कर अपने नगर में प्रैक्टिस भी करने लगा था। ईश्वर की कृपा से वह चल भी अच्छी निकली थी। महीने में चार-पाँच सौ का डौल हो जाता था। मैंने सोचा, हर्ष को भी अपने यहाँ बुला लूँ। उसकी माँ की मृत्यु हो चुकी थी। पति-पत्नी और दो लड़के शेष थे। मैंने उसे अपनी योजना बताई। वह राजी नहीं हुआ। घरवालों ने भी समझाया, पर वह अपनी बात पर अटल रहा। किसी दूसरे की रोटी खाना उसके आत्म-सम्मान ने गवारा नहीं किया।

इन्हीं दिनों उसकी बातों से मुझे कुछ ऐसा लगा कि उसने अपने पुराने निश्चय को त्याग दिया है और अब वह कहीं नौकरी करना चाहता है। संयोग से नगर के एक हिन्दी दैनिक के सम्पादक मेरी जान-पहचान के थे। उनके पत्र के लिए एक सहायक सम्पादक की आवश्यकता थी। वेतन ५०) रु० था। मैंने उनसे हर्ष के सम्बन्ध में कहा। हर्ष ऐसे सुविख्यात साहित्यकार को वे पचास रुपये पर रखने को तैयार नहीं थे, पर उनके पत्र की आर्थिक स्थिति भी कुछ अच्छी नहीं थी और इसीलिए मजबूरी थी। अन्त में कहने-सुनने पर संकोच के साथ वे तैयार हो गये। हर्ष को मैंने वहीं रखवा दिया। उसे वहाँ नौकरी दिलवाकर मेरे ऊपर चिन्ता का जो एक बोझ सा था, वह उतर गया। मैंने समझा—मैंने अपना कर्त्तव्य कर दिया, अब हर्ष जाने और उसका काम।

इसके बहुत दिनों बाद [illegible] हम दोनों [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

देशदूत

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। तरह तरह की पुस्तकें वह मँगाया करती थी। एक दिन मैंने हर्ष की एक किताब उसके हाथों में देखी। वह उसे पढ़ने में इतनी तल्लीन थी कि उसके पास क्या हो रहा है, इसकी भी उसे खबर नहीं थी।

मैंने देखा, पुस्तक की कुछ खास पंक्तियों पर वह निशान भी बनाती जाती थी। पुस्तक के लेखक के नाम के स्थान पर हर्ष का नाम देखकर मुझे पुरानी स्मृतियाँ याद हो आईं। एक युग के बाद मुझे हर्ष की याद आई। रात को जब हम लोग खाने बैठे तो मैंने हेम से कहा कि हर्ष को मैं जानता हूँ। यह सुनते ही उसे जैसे एक निधि-सी मिल गई। उसे मैंने हर्ष के बारे में शुरू से आखीर तक पूरी कथा बताई। उसे यह सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई कि हर्ष से मेरी बहुत घनिष्टता है और हम दोनों साथ ही साथ पढ़े भी हैं। उसने मुझे उलाहना भी दिया—ऐसा श्रेष्ठ मित्ररत्न पाकर भी तुम उसे भूल जाते हो, यह तुम्हारी तीक्ष्ण दृष्टि की परिचायक नहीं। मैंने अपनी गलती महसूस की। मुझे हर्ष की चिन्ता ने फिर घेर लिया। मैंने सोचा, उसके दफ्तर में टेलीफोन कर उसे बुला लूँ। पर फिर ख्याल आया—हो सकता है, उसने नौकरी छोड़ दी हो। और हुआ भी यही। जब मैंने टेलीफोन किया तो पता चला कि वह तो नौकर होने के कुछ ही महीनों बाद वह जगह छोड़ किसी अन्य जगह चला गया। मुझे दुःख हुआ। अपने ऊपर ग्लानि हुई। रह-रहकर मेरे कानों में पत्नी के शब्द गूँजने लगे—ऐसा श्रेष्ठ मित्ररत्न पाकर भी तुम उसे भूल जाते हो, यह तुम्हारी तीक्ष्ण दृष्टि की परिचायक नहीं।

हर्ष को ढूँढ़ने के प्रयत्न में मैं अभी लगा ही हुआ था कि अचानक एक दिन वह मुझे बाजार में मिल गया। पहचाना नहीं जाता था। कपड़े तार तार हो गये थे, आखें गढ़ों में धँसी जा रही थीं, मुख की कान्ति विलीन हो चुकी थी। मैंने उसे पुकारा। उसने चौंककर मेरी ओर देखा। हम दोनों में आज लगभग पाँच वर्षों बाद भेंट हुई थी। मुझे देख उसकी आखों से आँसू निकल आये। बोला—भैया, क्या मुझे भूले नहीं हो अभी? मैं क्या जवाब देता? सच बात तो यह है कि मैं उसे सचमुच भूल चुका था। उसे घर लाया। नहा-धो, खा-पीकर जब वह स्थिर होकर बैठा तो मैंने उसका हाल-चाल पूछना शुरू किया। स्थानीय दैनिक की नौकरी छोड़ने के बाद वह कलकत्ते चला गया था। वहाँ वह एक छोटी-मोटी मासिक पत्रिका का सम्पादक था। बंगाल का अकाल, कलकत्ते में जापानियों की बम-बाजी सब उसकी आँखोंदेखी चीजें हैं। अकाल में ही उसने स्त्री-पुत्र सभी खो दिये। हर्ष ने कहा—भैया, वह दृश्य भूलनेवाला नहीं है, अनगिनत प्राणी फुटपाथों पर पड़े भूख-भूख चिल्लाया करते थे। बदन पर हड्डियाँ ही हड्डियाँ [illegible] लाखों [illegible] अपने स्त्री-बच्चों को भूख की तड़पन से मरते हुए देखा है। उन नरपिशाचों को भी देखा है जिन्होंने बोरे के बोरे चावल अपनी कोठियों में भर रक्खा था और बंगाल-सरकार के हाथ में बेच-बेच कर करोड़पति हो गये थे। उन्हें भी देखा है जो भूखों के नाम पैसा वसूल कर अपनी तिजोरियाँ भरते थे। क्या कहूँ तुमसे, जब वह दृश्य मेरी आँखों के सामने आता है तो मैं तड़प उठता हूँ। मेरी आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगती हैं और जी करने लगता है कि उन थैलीशाहों को कच्चा ही भूनकर चबा जाऊँ।

मैं उसे उत्तेजित होने से रोकता रहता। अब वह मेरे ही यहाँ रहता था। हेम और प्रभात (मेरे बच्चे का नाम) से उसका काफी परिचय हो गया था। हेम उसे अच्छी से अच्छी चीजें बनाकर खिलाया करती थी। हर्ष हेम का आदर करता था। हेम भी हर्ष से काफी हिलमिल गई थी। जब हम लोग बैठते, साहित्य-चर्चा चलती। मुझे सचमुच हर्ष का व्यापक ज्ञान देखकर आश्चर्य होता। इसके पहले कभी मुझे इसका अनुभव नहीं हुआ था। उसकी प्रतिभा सर्वतोमुखी थी।

हर्ष ने इन्हीं दिनों एक नई किताब लिखना शुरू कर दी थी। उसका कहना था कि वह पुस्तक उसकी सबसे महत्त्वपूर्ण कृति होगी। उसमें उसने अपना निजी जीवन अंकित करने का निश्चय किया था—एक उपन्यास के रूप में। उसने मुझसे यह भी कहा कि यह उसकी अन्तिम रचना होगी। आजकल वह दिन-रात उसी पुस्तक में रत रहता। मुझसे उससे दिन भर में अधिक से अधिक रात को खाते समय भेंट होती। मुझे लगा—अब वह कुछ उदास-सा रहता है। इसका कारण मैंने उससे दो-तीन बार पूछने का प्रयत्न किया, पर वह सदा हँसी में टाल गया। अधिक पूछकर उसकी एकान्त-साधना में विघ्न डालने की मेरी हिम्मत न पड़ी। मेरी धारणा से हेम भी सहमत थी। उससे भी हर्ष का साक्षात्कार अब बहुत कम होता था। पहले वह दिन भर प्रभात को खिलाया करता था, अब—जैसा कि हेम ने भी कहा—वह उससे भागा भागा सा रहता। हम लोगों ने सोचा, शायद वह अपनी कला की उपासना में तल्लीन हो, इसी से उसे हम लोगों से मिलने का अवकाश न मिलता हो। अस्तु, मैंने उससे इस सम्बन्ध में एक दो बार से अधिक कभी भी नहीं पूछा।

हर्ष ने अपनी ५०० पृष्ठ की पुस्तक खत्म करने में डेढ़-दो महीने से अधिक नहीं लगाया। जब पुस्तक पूरी हो गई, उसने मुझसे उसे पढ़ने का आग्रह किया। मैंने वह पुस्तक अपने पास रख ली। सचमुच में तो मुझे पुस्तकें पढ़ने के लिए एक क्षण का भी अवकाश न मिलता था। हाँ, कभी-कभी अँगरेजी दैनिक पत्रों पर एक सरसरी दृष्टि डाल लिया करता था। हर्ष से मैंने वादा किया था कि पुस्तक को अवश्य पढ़ूँगा और पढ़कर यदि कुछ [illegible] करने होंगे तो बताऊँगा। [illegible] लगी। वह मुझसे बहुत प्रेम करता था। मुझे लगा जैसे मेरे इस उत्तर ने उसके हृदय में मानसिक आघात पहुँचाया है।

दिन व्यतीत होते गये। मैं अपने पेशे में जुटा रहता और हर्ष अपनी पुस्तकों में। अपने अवलोकन में अब वह अरविन्द घोष, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी और स्वामी रामतीर्थ की पुस्तकों को अधिक स्थान देने लगा था। उसकी रुचि अब आध्यात्मिक साहित्य की ओर हो गई थी। मेरी प्रैक्टिस भी अपनी सीमा-रेखा पर पहुँच चुकी थी और दम मारने का भी अवकाश मुझे कठिनाई से प्राप्त होता था। घर-बाहर की भी मुझे याद नहीं रहती। हर्ष ने मुझसे एक-दो बार कहा कि भैया, इतनी मेहनत न किया करो। तन्दुरुस्ती बिगड़ जायेगी। पर मैं तो अपने रंग में सराबोर था। उसके अनुरोध पर मैंने कुछ भी ध्यान नहीं दिया।

समय बीतते देर नहीं लगती। आह! कैसे कहूँ? उस दिन बसन्त का त्योहार था। हम लोगों का प्रोग्राम बन गया था। वह दिन मैं बहुत कोशिश करने पर बचा पाया था। विचार था—उस दिन हम तीनों—मैं, हेम और हर्ष दूर गाँव पिकनिक में जायेंगे। सुबह ही उठकर मैं हर्ष के कमरे की ओर गया। दरवाजा खुला था और हर्ष का कहीं पता नहीं था। सोचा, मुझसे पहले उठकर नित्य-कर्म करने चला गया होगा। मैं अपने कमरे की ओर लौट आया। कुछ देर बाद हेम ने आकर कहा—हर्ष तो है ही नहीं, मैंने सब जगह ढूँढ़ डाला। उनके कमरे में केवल एक यह पत्र मिला है—यह कह उसने पत्र मेरे हाथों में पकड़ा दिया।

खत लेते समय मेरे हाथ काँप रहे थे। काँपते हाथों मैंने उसे पढ़ा। मेरे पैरों की धरती खिसक गई। क्या सचमुच हर्ष चला गया? मुझे तो पत्र पर विश्वास नहीं आया। पर पत्र स्वयं गवाही दे रहा था कि हर्ष चला गया है। वैसे तो मुझे स्वप्न में भी यह विचार नहीं आ सकता था कि हर्ष मेरे पास से जा सकता है। एक साँस में पूरा पत्र पढ़ गया। जो कुछ उसमें लिखा था वह ज्यों का त्यों यों है—

भैया सुनील,

मुझे घर पर न देखकर तुम्हें दुःख होगा। हेम बहन भी दुःखी होंगी। पर क्या करूँ? मेरी अन्तरात्मा मुझे जो आदेश दे रही है, उसे अस्वीकृत कैसे करूँ? तुम्हारे साथ रहने का सौभाग्य मुझे इतने ही दिनों के लिए था।

अपनी पुस्तक छोड़े जा रहा हूँ। उसे मैंने खास तौर से हेम बहन के लिए ही लिखा था। पुस्तक मेरी ओर से उन्हीं को भेंट दे देना। वह जैसे चाहें इसका उपयोग करें।

और क्या लिखूँ? तुम्हारे पास से मैं किसी विशेष कारणवश नहीं जा रहा हूँ। मुझे हेम ने हर तरह का आराम दिया, और मुझे चाहिए ही क्या था—परन्तु एक अज्ञान शक्ति मुझे अपनी ओर खींच रही है, अतः विवश हूँ। मैं आरामतलबी के जीवन से ऊब गया हूँ, अब मजदूरों का, [illegible] किसानों और भिखमंगों का अध्ययन [illegible] साथ अब [illegible] के बीच [illegible]

न देते, अतः मैंने दूसरा रास्ता [illegible] है। मेरी चिन्ता न करना। जहाँ [illegible] सानन्द रहूँगा। मैं असली साहित्यिक [illegible] चाहता हूँ, उसके लिए मुझे आसीस [illegible]

हेम बहन को तो मेरा प्रणाम [illegible] है। जिस उल्लास एवं उत्साह [illegible] उन्होंने मेरी सेवा की है, उसे मैं [illegible] नहीं भूल सकता। नटखटे प्रभात [illegible] ओर से चपत लगाकर आशीश [illegible]

अच्छा, विदा।

पत्र पढ़ हेम रुआँसी सी [illegible] उसकी अमूल्य विधि खो गई थी [illegible] याद हो आया वह दिन; जब मैंने [illegible] पहले पहल हर्ष का परिचय दिया [illegible] तब वह कितनी प्रसन्न हुई थी! [illegible] आज?

हर्ष को ढूँढ़ने की मैंने कोशिश [illegible] की, हाँ उसकी याद सदा बनी रही [illegible] उसे अब एक देवता मानता था।

एक दिन एक मित्र से पता चला [illegible] हर्ष की मृत्यु हो गई है। वह [illegible] भंगियों के मुहल्ले में रहने गया था। [illegible] की जलवायु उसके लिए अहितकर [illegible] हुई। पर उसने तो उसी मुहल्ले में [illegible] की प्रतिज्ञा-सी कर ली थी। वह [illegible] दूसरी जगह नहीं गया। उसकी [illegible] खराब रहने लगी और इतना [illegible] था कि दवा कर सके। कुछ ही [illegible] बाद वह मर गया।

समाचारपत्रों ने उसके मरने [illegible] संवाद मोटे-मोटे अक्षरों में छापा। [illegible] जगह शोक-सभाएँ हुईं और [illegible] अधिकारी विद्वानों ने हर्ष के प्रति [illegible] श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं। 'हर्ष स्मारक [illegible] भी खोला गया। बड़े-बड़े सेठ-साहूकार [illegible] ने उसमें पुष्कल धन देकर अपना [illegible] प्रकाशित किया।

अब 'हर्ष स्मारक' के अन्दर कई [illegible] विभाग हैं। विश्व हर्ष को देवता की [illegible] पूजता है।

पर जीते जी जब देवता का पेट [illegible] भरा तो मरने के बाद खाना देने से [illegible] लाभ?

और मैं सोचता हूँ, क्या यही [illegible] कार की परिभाषा है?

यह कहकर सुनील ने अपनी [illegible] जब पूरी की तो हमारी गाड़ी लखनऊ [illegible] प्लेटफार्म पर पहुँच रही थी।

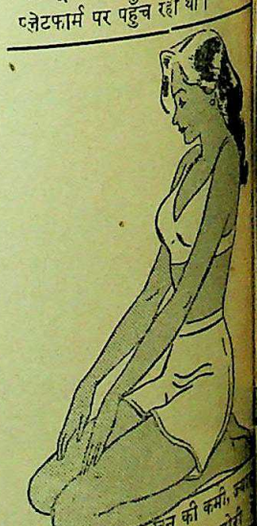

बीमारी के बाद, खून की कमी, [illegible] मेहनत पड़ना और कमजोरी [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमंदिर

...हिला-व्यायाम-शिक्षण-शिविर

...की एक जागृत संस्था

...के सिद्धान्तों को लेकर अनेक ...हैं, परन्तु इतना अवश्य है कि ...द्धिक, शारीरिक और आचारिक ...ओर अवश्य ले जाय। शिक्षा ...उन्नति चाहती है, केवल पुस्त-... शरीर को स्वास्थ्य प्रदान नहीं ...। स्फूर्ति, शक्ति और गठन शरीर ...करने में उत्साह प्रदान करता है ...शिक्षा की उपादेयता किसी अन्य ...अधिक नहीं तो कम महत्त्वपूर्ण ...है। आरोग्यता, सद्वृत्ति एवं ...की ओर ले जाती है। आधु-...में देश-रक्षा के नाते प्रत्येक राष्ट्र ...निरन्तर सक्रिय ध्यान दे रहा है। ...कि कई देशों में सैनिक-शिक्षण ...है। भारत अपनी चेतनाओं में ...गया अँगरेजों की गुलामी के ...शारीरिक निश्चेतनता के साथ-...चेतना भी शिथिल हो गई ...भारतीय महिलाएँ निरी अस्थि-...कंकाल-मात्र रह गईं। हममें इतनी ...शक्ति नहीं कि हम अपनी ...कर सकें। आये दिन हम दूसरों ...सकती हैं।

...का पुरुष-समाज भी इन प्रभावों ...नहीं रहा है, वह केवल दुर्बल ...काय रह गया है तो महिलाओं ...दशा जिन्हें अबला कहकर पुकारा ...संसार भूला हुआ है कि ये हमारी ...हैं। क्या पन्ना, पद्मिनी, चाँद ...और रानी लक्ष्मीबाई आदि

उदयपुर महिला मंडल की मंत्रिणी श्रीमती कमलाकुमारी श्रोत्रिय।

वीर महिलाएँ भुलाई जा सकती हैं? जिन्होंने लोमहर्षक एवं कायरों के खून में भी गर्मी ला दी थीं। ऐसे कृत्यों को करने-वाली अबला थीं या सबलाएँ! भारतीय स्वातन्त्र्य युद्ध में भाग लेनेवाली महिलाएँ किस चीज में पीछे रही हैं? आजाद हिन्द फौज के संगठन ने तो महिलाओं का आसन प्रत्येक दशा में ऊँचा कर दिया है। तथा महिला-इतिहास में नये अध्याय का भी श्री गणेश किया है।

आज की महिला का गन्तव्य स्थान क्या है। इस पर विचार करते हुए दिल काँपने लगता है। एक ओर महिला-समाज—पश्चिमीय सभ्यता में लिपट कर अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका है और दूसरी ओर अंधकार का नग्न तांडव!

महिला-मण्डल उदयपुर विगत ७ वर्ष से महिला-समाज की नम्र सेवाओं का प्रयत्न कर रहा है! मण्डल का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा देना है जिससे प्रौढ़ बहनें माताएँ ही न रहकर विचारवान् नागरिक बनकर देश-कल्याण में योग दें!

आज पूज्य बापू कह रहे हैं कि "यदि लक्ष्मी नहीं तो सीता बनिये"। इसको दृष्टि में रखते हुए मण्डल ने गत २५ अक्टूबर से श्री ब्रह्मचारी ओम्स्वरूप श्री भारद्वाज के निरीक्षण में 'महिला-व्यायाम-शिक्षण शिविर' आयोजित किया। इस व्यायाम-शिविर में ७५-१०० प्रौढ़ बहनों ने दैनिक उपस्थित होकर अदम्य उत्साह और असीम साहस का परिचय दिया।

नियमित रूप से शारीरिक अंग विकास और गठन के लिए सामुदायिक ड्रिल्स और अस्त्र-शस्त्र संचालन के लिए लाठी, तलवार, भाला, छुरा, और बन्दूक की शिक्षा दी गई। शस्त्रसंचालन के बचाव और परेड आदि करती हुई बहनें अपनी चुस्त पोशाक में आजाद हिन्द फौज की टुकड़ी की याद दिलाती थीं! समय समय पर अनुशासन और व्यायाम आदि के साथ सामयिक विषयों पर 'विद्वानों' के भाषणों ने बहनों में नवीन स्फूर्ति प्रदान कर दी। संगीत के साथ प्रयाण गीत का भी आह्वान करते थे।

इस शिविर के कार्यों का प्रदर्शन महिला-मण्डल के ७वें स्थापना दिवस पर सुश्री मन्नु बहन गांधी की अध्यक्षता में हुआ। हजारों दर्शकों की भीड़ में लगभग २००० बहनें उपस्थित थीं। उपस्थित महिला-समाज को इस प्रदर्शन ने प्रेरणाएँ दीं! आम रक्षा तथा व्यायाम के लिए सुन्दर वातावरण बनाया! प्रदर्शन में डेवल्स, लाठी, लेजिम, बनेठी सर्वांग सुन्दर, तलवार, भाला, छुरे और बन्दूक के कार्य अधिक रुचिकर रहे। जब बहनें आग की रिंगों में से बाहर निकलीं तो जनता ने करतल-ध्वनि द्वारा बहनों का साहस बढ़ाया। बहनों में आत्म-रक्षा के भाव जागे और उन्होंने अपनी शक्ति को पहचाना!

थोड़ी थोड़ी बचत बड़ी बड़ी समस्याओं की निवृत्ति करती है

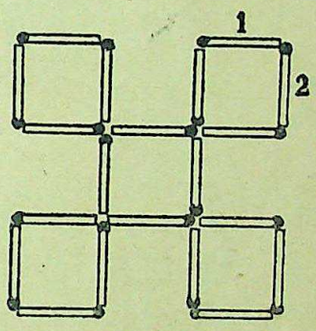

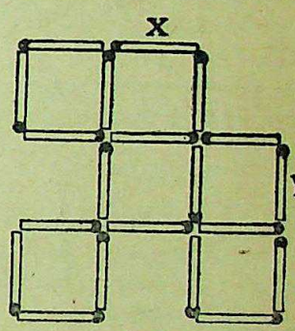

प्रश्न : दिया सलाई की २ तीलियों को दुबारा ऐसे रखिये कि ५ समकोण चतुर्भुज ६ बन जायें।

उत्तर : तीली नं० १ और २ को हटा दीजिये और एक एक तीली 'X' और 'Y' के चिन्ह पर रखिये। इस प्रकार ६ समकोण चतुर्भुज बन जायेंगे।

यदि आप जानते हैं कि "किस प्रकार" सब समस्याओं की निवृत्ति हो सकती है, तो थोड़ी बचत की स्कीम से आपकी आर्थिक समस्याओं की निवृत्ति हो सकेगी। प्रति सप्ताह अथवा प्रति मास थोड़ा बहुत बचाइए और उस बचत से नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिये।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

(१) आप ५, १०, ५०, १००, ५००, १०००, या ५०००, रु० के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) कुटुम्ब का प्रत्येक व्यक्ति (वयस्क या अल्पवयस्क) ५००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स खरीद सकता है। दो व्यक्ति मिलकर १०,००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स खरीद सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ ...

(४) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(५) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष पश्चात भी भुनाया जा सकता है)

(६) जिनकी बचत थोड़ी है वह १), ॥), ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते हैं, ५ रु० के स्टाम्प्स जमा होने पर एक ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर उधर की

'वॉकिङ्ग पहाड़ियाँ'

कॉलॉरेडो मरुस्थल के पूर्वीय भाग में पहाड़ियों की एक शृङ्खला है जो लगभग १०० मील लम्बी है, उसे 'वॉकिङ्ग पहाड़ियाँ' कहते हैं। इन पहाड़ियों की उँचाइयाँ, जो २०० और ३०० फीट ऊँची हैं, लगातार मैदान की ओर से बढ़ रही हैं। मरुभूमि इस स्थान पर करीब १०० मील चौड़ी है, और इसका अधिकतर भाग एक वनस्पति-रहित समतल मैदान है। इस मैदान पर से होकर निरन्तर तेज हवा बहती रहती है, जो सदैव एक ही दिशा में चलती है—पश्चिम से पूर्व को पहाड़ियाँ बराबर बढ़ रही हैं। हवा, जो नया सामान ला-लाकर पहाड़ियों की उँचाई में निरन्तर वृद्धि करती रहती है, पश्चिम की ओर से रेत भी काट लेती है और इसे पहाड़ी के ऊपर ला पटकती है जहाँ यह पूर्वीय ढाल पर जा पड़ता है, जिससे जितनी शीघ्रता से एक ओर कटाई होती है उतनी ही शीघ्रता से दूसरी ओर वृद्धि होती जाती है, और पहाड़ियाँ धीरे-धीरे पूर्व की ओर खिसकती हैं। चलनेवाली इन पहाड़ियों का वैज्ञानिक कारण है।

मिस्टर टी० एन० शोन

मिस्टर टिरेन्स शोन, जो दिल्ली में प्रथम ब्रिटिश हाई कमिश्नर हैं, अपने खून में कुछ भारतीयता रखते हैं। यह वहाँ ठीक ५१ वर्ष पूर्व उत्पन्न हुए थे। लॉर्ड वैवेल की भाँति, वह एक जनरल के पुत्र हैं। एक प्रसिद्ध फौजी 'पीटरबरो' डेली टेलीग्राफ में लिखता है—स्वर्गीय जनरल सर विलियम शोन, रॉबर्ट्स की अधीनता में द्वितीय अफगान-युद्ध में लड़े थे। तब उन्होंने किचनर और शाही लार्ड कर्जन के भारत में कई महत्त्वपूर्ण सेनापद विभूषित किये। देखने में मिस्टर शोन पुराने नीतिज्ञ हैं। हृदय के भीतर, किसी प्रकार, वह बिरले और अप्रत्याशित गुण रखते हैं। पहली बात तो यही है, कि वह हैं, एक ऐंग्लो-आइरिश मैन, जो ऐसा लोगों की जाति हैं जो राबर्ट्स से लेकर बाकी सबमें भारतीयों से असाधारणतया एक होकर रहने की हिकमत रखते हैं। उनके पितामह प्रसिद्ध आइरिश लतीफेबाज थे, जिनका नाम लार्ड जस्टिस फिट्ज गिबन था।

कैरो में मन्त्री रहकर जब लार्ड मोयेन का वध किया गया था और तदनन्तर बेरुत तथा डैमेस्कस में मन्त्री रहकर जहाँ वह सर एडवर्ड स्पियर्स के उत्तराधिकारी हुए थे, मिस्टर शोन ने दिखा दिया है कि वह दृढ़ता तथा रजामन्दी से किस प्रकार काम लेना जानते हैं। बहुत पहले से ही मुसलमान लोग उनकी पूरी तरह से इज्जत करते है।

उनका पद बिलकुल नया है। जो लोग मिस्टर शोन को जानते हैं, किसी प्रकार, उनको पूरा भरोसा है कि वह अपने कर्त्तव्यों का पालन भारत में उसी प्रकार पूरी सफलता से करेंगे जिस प्रकार सर जान मैफ्री ने युद्ध के कठिन वर्षों में अपाक्षिक डब्लिन में किया था।

* * *

मेरी चर्चिल का रोमान्स

ब्रूसेल के चर्चाकर्त्ताओं में मिस्टर विन्सटन चर्चिल की सुन्दरी कन्या मेरी तथा बेल्जियम के रीजेण्ट राजकुमार चार्ल्स के रोमान्स के विषय में [illegible] हो रही है! यह लन्दन [illegible] कहता है।

मिस्टर चर्चिल और मेरी [illegible] गए थे उसी के रहस्य के बारे [illegible] उड़ रही हैं।

बेल्जियम के समाचारपत्रों [illegible] गया है कि वे इस बारे में [illegible] छापें कि मिस्टर चर्चिल [illegible] पुत्री रीजेण्ट और उनकी [illegible] महारानी एलिजाबेथ से [illegible] गये हुए हैं।

सरकारी कर्मचारियों [illegible] कि वे इसके बारे में बिलकुल [illegible] पर यह समझ में आता है [illegible] इसलिए की गई है कि [illegible] मिस्टर चर्चिल के मध्य [illegible] बन्धन हैं। बहुत से बेल्जियम [illegible] याद कर रहे हैं कि गत [illegible] मिस्टर चर्चिल वहाँ सैर करने [illegible] रीजेण्ट और मेरी ने काफी [illegible] साथ बिताया। —ललित, [illegible]

तरुणाई में उसका स्वास्थ्य शोचनीय था

सिर-दर्द और अजीर्ण ने जीवन का मजा किरकिरा कर दिया था

लेकिन क्रुशेन साल्ट जब से खाती है, बिलकुल दुरुस्त है।

बहुत-सी स्त्रियों का यह दुर्भाग्य है कि तरुणाई में पहुँचते-पहुँचते स्वास्थ्य की खराबियाँ उन्हें जकड़ लेती हैं। ऐसा होना नहीं चाहिए। पढ़िए कि इस स्त्री को ऐसी परेशानियों पर किस तरह विजय प्राप्त हुई :—

क्रुशेन का सेवन करने से पहले" वह लिखती है—"मेरे सिर में भयंकर दर्द होता था, खून में गर्मी रहती थी, अजीर्ण सदा बना रहता था, और कभी-कभी तो मैं इतनी शून्य-सी हो जाती थी कि नितांत छोटी-सी बात भी मुझे चिड़चिड़ा देती थी—परेशान कर देती थी। इस हालत में तीन साल मुझे बिता देने पड़े।

"क्रुशेन साल्ट का उपयोग करने से आज मैं कितनी सुखी और प्रसन्न हूँ, शब्दों-द्वारा आपसे यह नहीं कहती। अठारह महीने से मैं इसका सेवन कर रही हूँ। एक दिन भी इसका सेवन करना मैं भूल नहीं सकती। जिस किसी को मेरी तरह शिकायतें हों, वह इसका सेवन कर सकता है; जादू की तरह इन रोगों की यह रामबाण औषध है। आज जैसा अच्छा मेरा स्वास्थ्य है, वैसा पहले कभी नहीं था। तीन सप्ताह तक क्रुशेन साल्ट के सेवन ने सिर-दर्द, सुस्ती और गर्म खून के दौरों से मेरा पिण्ड छुड़ा दिया था, अब मैं बहुत ही प्रसन्न और स्वस्थ हूँ। क्रुशेन से वजन नहीं बढ़ता, जैसा कि बहुत-सी स्त्रियों का तरुणाई में वजन बढ़ जाता है।" —श्रीमती जे० एम० अन्दरूनी सफाई कायम रखने के

दाय बढ़ाते ही मिल जाय

या पारी को, चाहे छोटा हो या बड़ा [illegible] काम करना पड़ता है—अध्ययन [illegible] हिसाब लगाना, चिट्ठियें लिखना, नई [illegible] करना, लोगों को अपने मुआफिक बनाना [illegible] उसका दिमाग हर वक्त कुछ न कुछ करता [illegible] रहता है। यह स्वाभाविक है कि वह [illegible] चश्मा उतार कर जरा उठँग जाय और [illegible] बढ़ा कर चाय का आनन्द ले। चाय पीने [illegible] उसमें ताकत, [illegible] और स्फूर्ति भर [illegible] और कठिन काम [illegible] हलका लगने लगता [illegible] अगर आपको ज्यादा मेहनत [illegible] रही हो या काम का दबाव ज्यादा हो [illegible] पीकर देखिये [illegible] स्फूर्ति और तरोता [illegible] मिलती है बशर्ते [illegible] अच्छी तरह बनी हो [illegible]

चाय बढ़िया कैसे बने

१ केतली में चाय न सिझाइये। सिझाने के लिये अलग बर्तन रखिये।

२ सूखी चाय डालते समय सिझाने का बर्तन सूखा व गर्म रहे। इससे चाय का रंग व स्वाद ठीक बनता है।

३ एक एक चम्मच हर प्याले के लिये और एक चम्मच बर्तन के लिये, सूखी चाय उसमें डालिये।

४ ताजा उबला पानी ही डालिये—पहले का उबला, कम या ज्यादा उबला पानी न डालिये। बुदबुदा उठने पर ही

चाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...दाताओं के पत्र

...में वासुदेव राव सूबेदार की ...तथा विद्यार्थी-कांग्रेस के तत्त्वा... शहीद साबूलाल का स्मारक ...के सम्बन्ध में एक बैठक ...श्री पंचमलाल गुप्ता ने स्मारक ...सार्वजनिक वाचनालय का रूप ...विशाल भवन निर्माण करने ...हजार की योजना रखी, जो ...पास हुई और तत्काल "साबू ...संगठित हुई। समिति में ...हैं—श्री वासुदेव राव सूबेदार, ...प्रसाद, श्री बालचन्द मलैया, ...दमोहवाले, सेन्ट्रल बैंक के ...सरदार जगतसिंह, सुश्री मोहनी ...राव खांडेकर, श्री सागरचंद ...शिवकुमार।

...कांग्रेस के मंत्री श्री पंचमलाल ...किया है कि शीघ्र ही श्री कुंज... ...के सम्पादकत्व में विद्यार्थी- ...मासिकपत्र "साधना के पथ ...। निम्न व्यक्ति प्रान्तीय ...गये—(१) श्री नारायण शंकर ...श्री सागरचन्द दिवाकर, (३) ...दुबे, (४) सुश्री सिन्धु लोकरस, ...प्रसाद अग्रवाल, (६) श्री ...जी, (७) श्री महेशदत्त पंडित, ...प्रसाद वर्मा, (९) कृष्णकुमार ...(१०) श्री मदनलाल दुबे।

...शिक्षक-संघ के आदेशानुसार ...म्युनिसिपल कमेटी की ...३० नवम्बर की जनरल ...में रखी ४० हजार की ...बाँटने के निर्णय से शिक्षकों ...फिलहाल स्थगित कर

...कवियों एवं साहित्यिकों ने ...सुप्रसिद्ध जानकीप्रसाद जी ...निधन पर शोक प्रकट किया। ...पाठक के सद्उद्योगों ...विद्यालय में श्री०प्रो० आनन्द- ...की अध्यक्षता में कबीर ...गई। सर्वप्रथम महन्त बाल- ...कबीर व उनके मिशन पर मार्मिक ...। आपने बताया कि—"कबीर ...विभिन्न संस्कृतियों का मेल ...श्रेणी-संघर्ष को मिटानेवाला ...देश में श्रेणी-संघर्ष तथा ...भेद-भाव दूर हो जायगा, ...स्वतन्त्र हो जायगा। प्रो० ...कहा—कबीर का साहित्य- ...देता है। उनकी कविता ...भावनाएँ हैं। परन्तु ...उनके साहित्य का अभी ...किया।"

...पश्चात् नगर के प्रमुख कवि ...लक्ष्मणसिंह 'निर्मम', ...गुलाबचंद कठल का ...हुआ। —संवाददाता

* * *

...स्वामी मुकुन्दानन्द, स्वामी ...गंगादास और स्वामी ...के उद्योग से २,११२ रु० ...आर्य-समाज रिलीफ ...के नाम नौ... ...हिन्दुओं ...

आश्रम भूपतवाला, ५००) रु० महन्त तीर्थानन्द जी कमलदास जी की कुटिया भूपतवाला, १०१ रु० सेठ गुरुप्रसाद जी गुरुभवन खरखड़ी, १०० रु० महन्त शम्भूदेव जी जगदीश आश्रम खरखड़ी, १०० रु० माता फूलवती जी सताश्रम खरखड़ी, ५१ रु० बख्शी धनराज जी मैनेजर पंजाब सिंधक्षेत्र, और पचीस पचीस रुपया प्रति महानुभाव स्वामी महानन्द अमृतसरी खरखड़ी, बलदेवसिंह मैनेजर गोकुलचन्द धर्मशाला, स्वामी गंगादास जी श्रीचन्द्र विद्यालय खरखड़ी, महन्त भगवानदास जी कोटी, महन्त किशनदास जी, महन्त सन्मुखसिंह जी निष्कलंकाश्रम खरखड़ी, स्वामी सदानन्द जी तृप्ति भवन भीमगोडा, स्वामी सच्चिदानन्द जी मोहन आश्रम भूपतवाला, १५ रु० सागरसिंह जी त्यागी, १५ रु० ला० बरकतराम हलवाई काली मन्दिर भीमगोडा, १० रु० ला० मोहनलाल हलवाई पंजाब सिंधक्षेत्र, १० रु० लाला कन्हैयालाल जी हलवाई खरखड़ी और १० रु० महन्त रामटहलदास जी खरखड़ी।

—संवाददाता

* * *

मथुरा ब्रज-साहित्य-मंडल का एक डेपुटेशन ता० ५ दिसम्बर को युक्तप्रान्त के प्रधान मंत्री श्री पंत और शिक्षा-मंत्री श्री सम्पूर्णानन्द जी ने अ० भा० ब्रज-साहित्य-मंडल के एक शिष्ट मंडल से भेंट की जिसमें डा० रामप्रसाद त्रिपाठी, डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, बाबू गुलाबराय, प्रो० सत्येन्द्र, श्री सिद्धेश्वरनाथ श्रीवास्तव, रामनारायण अग्रवाल व श्री राधाशरण सम्मिलित थे।

दोनों मंत्रियों ने मंडल के कार्यक्रम की सराहना की और प्रान्तीय सरकार द्वारा उसे आर्थिक और नैतिक सहायता प्रदान करने का वचन दिया।

प्रान्तीय सरकार के शिक्षा-विभाग ने ब्रज-साहित्य-मंडल को एक ऐसी सूची तैयार करने का कार्य सौंपा है जिसके द्वारा प्रान्त के उन सब स्थानों के नामों का पता लग सके जिन्हें अँगरेजी में गलत लिखा जाता है। प्रान्तीय सरकार इन नामों को शीघ्र सुधारेगी। इसलिए जिन सज्जनों के इस प्रकार के स्थानों के नाम ज्ञात हों जो अँगरेजी में ठीक रूप में नहीं लिखे जाते हों उनकी सूचना शीघ्र ही अ० भा० ब्रज-साहित्य-मंडल मथुरा को दे दें।

—रामनारायण अग्रवाल

* * *

जोधपुर राज्य ने राजपूताने के प्रसिद्ध पत्रकार श्री सुमनेश जोशी को 'रियासती' नाम के नये दैनिक पत्र के प्रकाशन की इजाजत दे दी है। यह पत्र जनवरी ४७ के प्रारम्भ में प्रकाशित होना शुरू हो जायेगा। पत्र का संचालन रियासती प्रकाशन लिमिटेड नामक एक संस्था द्वारा होगा। पत्र के व्यवस्थापक रियासती के लिए टेलीप्रिंटर, लाइनो-टाइप तथा एक विशाल प्रेस लगाने में संलग्न हैं। यह पत्र राजपूताना, मध्य-भारत, यू० पी० और पंजाब की देशी रियासतों की समस्याओं को देश-विदेशों के समाचारों के साथ साथ समान महत्त्व से प्रकाशित क... दृष्टिकोण ... अखिल ...

अमेठी राज्य के युवराज श्रीमान् राजकुमार जंगबहादुरसिंह महोदय एक्स-एम० एल० ए० का गत बृहस्पतिवार को ५३ वर्ष की अवस्था में हृदयगति बन्द हो जाने से लखनऊ की कोठी पर स्वर्गवास हो गया। आप हृदय-रोग एवं हाई ब्लड प्रेशर से पीड़ित थे। लगभग २½ मास पूर्व अपनी आदर्श पतिव्रता धर्मपत्नी महोदया के स्वर्गवास से अत्यधिक व्यथित हो गये थे।

श्रीमान् युवराज महोदय बड़े ही सरल चित्त तथा कृपालु थे। आपके निधन से न केवल आपके कुटुम्बी प्रत्युत समस्त परिचित सज्जन अत्यन्त दुखित हैं। सुल्तानपुर जिला की सरकारी कचहरियाँ तथा स्कूलादि सब शोक के कारण बन्द हो गये तथा बाजारों में हड़ताल हो गई।

माननीय गृहमंत्री श्री रफीअहमद किदवई, माननीय माल-मन्त्री ठा० हुकुम सिंह, बहुत से एम० एल० ए० तथा अन्य प्रतिष्ठित सज्जन शोक सहानुभूति के लिए स्वयं पधारे और दूर-दूर से अनेक सज्जन तार द्वारा अथवा आकर शोक सहानुभूति प्रकट कर रहे हैं। समस्त राजपरिवार विशेषतया श्रीमान् श्रद्धेय अमेठी-नरेश महोदय को इस वृद्धावस्था में परमात्मा ही धैर्य धारण की शक्ति प्रदान कर सकता है।

—संवाददाता

* * *

इटावा से श्री संयोजक, अखिल भारतीय पशु-चिकित्सक परीक्षा-समिति मल्हौसी सूचित करते हैं कि समिति द्वारा सन् १९४७ में होनेवाली "पशु-चिकित्सक रत्न" आदि परीक्षाओं के लिए प्रत्येक जिले में दो से पाँच तक नये केन्द्र खोलना निश्चित हुआ है। अतएव जो सज्जन अपने यहाँ किसी सार्वजनिक संस्था में केन्द्र खुलवाना चाहें वे ता० ३१ जनवरी १९४७ तक ।=) छः आने का पोस्टेज भेजकर नवीन और संशोधित नियमावली आदि मँगा लें।

—संयोजक

* * *

राँची में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की २०वीं बलिदान-जयन्ती समारोह पूर्वक ता० २२, २३ और २४ दिसम्बर १९४६ को राँची में मनाई जा रही है। जिसमें आर्य-जगत के प्रसिद्ध विद्वान् पं० हरिनारायण जी शर्मा, ठाकुर यशपाल जी भजनोपदेशक आदि पधार रहे हैं।

—संवाददाता

* * *

लखनऊ महमूदनगर मलीहाबाद के 'काव्य-समिति' की ओर से आगामी अप्रैल १९४७ ई० से 'झंकार' नामक कविता-प्रधान हस्तलिखित मासिकपत्रिका निकलेगी। कवियों से विनम्र निवेदन है कि वे प्रतिमास अपनी सुन्दर रचनाएँ भेजकर अनुग्रहीत करें।

—प्रधान मंत्री

* * *

हर समय सफ़ेद
— अधिक मैले भाग भी

अधिक मैले भाग किसप्रकार से धुलाये जाते हैं, उसपर आप के कपड़ों का भवितव्य अवलंबित है! याद रखिये, अधिक मैले भाग वही हैं जो कि, पहिनने से ज़ियादा घिस जाते जाते हैं और इसलिये उन को सर्व प्रथम हानि पहुँचती है जब कि आप के कपड़े थोड़ा साबुन लगाने के बाद पानी में भिगो, पटककर साफ़ किये जाते हैं।

आप के कपड़े सनलाइट के पद्धति से धुलवाइये और उन्हें पटके जाने के नुक़सान से बचाइये।

सनलाइट का विपुल, स्वयं-क्रियाशील झाग भिगोये हुये कपड़ों में से मुक्तहस्त से निचोड डालने से वह हर समय उन्हें सफ़ेद करता है—पूर्णतया एवं सुरक्षापूर्वक साफ़ करता है। यह शुद्ध साबुन पटके जाने के बग़ैर कपड़ों के मैलेपन को हटाता है; उन को पँख के समान मुलायम करता है और आप के हाथों को भी सौम्य तथा कोमल रखता है।

यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधान-सभा में प्रांतों की समस्या

(पेज ५ का शेष)

भाषी एक साथ न होंगे। क्योंकि निजाम हैदराबाद में लगभग ८० लाख लोग तेलगू भाषा-भाषी हैं। निजाम राज्य जब तक नहीं टूटता भाषानुसार प्रान्तों का निर्माण नहीं हो सकता।

केरल

सम्भवत: भावी भारत के राजनीतिक मानचित्र पर मलयालम भाषा-भाषियों का केरल प्रान्त सबसे छोटा होगा, यद्यपि शिक्षा की दृष्टि से सबसे आगे होगा। कोचीन-नरेश ने समय के अनुरूप त्याग कम करके केरल प्रान्त की प्रतिष्ठा को दृढ कर दिया है। इसका संगठन इस प्रकार होगा :—

	वर्गमील
मलाबार	५,७९०
कोचीन	१,४९३
त्रावनकोर	७,६६२
योग	१,९४४५

सर सी० पी० रामस्वामी अय्यर त्रावनकोर के दीवान-पद से अलग हो रहे हैं। वे केरल प्रान्त बनाने के विरोधी थे, वे सिद्धांततः विरोधी नहीं थे; मगर केरल की राजधानी त्रिकेन्द्रम को बनाना चाहते थे, कालीकट को नहीं। पर उनके अलग हो जाने से केरल प्रान्त के बनने में अब कोई प्रबल बाधा नहीं रही। वे तामिल हैं और त्रावनकोर राज्य की नौकरी के लोभ से बहुत से तामिल लोग बसे हुए हैं उनको यह सह्य न था कि ये तामिल केरल प्रान्त में रहें। उनके विरोध का मुख्य कारण यही था।

दिल्ली

दक्षिणी-पश्चिमी और पूर्वीय भारत का मानचित्र बदल रहा हो तब उत्तरीय भारत का न बदले यह सम्भव नहीं है। दिल्ली प्रान्त आज एक जिला भर है। इसका विस्तार करने के लिए पिछले बीस साल से आन्दोलन हो रहा है। गोलमेज कान्फरेन्स में भी इसका विस्तार करना सबने मान लिया था। मगर स्व० महामना मालवीय जी के विरोध के कारण यह प्रान्त बनने से रह गया। इसके बनने से पंजाब में हिन्दुओं का अनुपात घट जायगा। बस इसी कारण दिल्ली प्रान्त का विस्तार नहीं होने दिया गया। पर जब भाषा और संस्कृति के अनुसार प्रान्तों का निर्माण हो रहा है, तब दिल्ली प्रान्त का निर्माण आवश्यक है। दिल्ली भारत की राजधानी उस अवस्था में भी बनी रहेगी।

वाशिंगटन के समान नई दिल्ली को दिल्ली प्रान्त से अलग भारतीय यूनियन के सीधे नीचे रखा जा सकता है। आज भी नई दिल्ली की म्युनिसिपैलटी अलग है। नई दिल्ली की आबादी भी अधिकतर सरकारी वर्ग की है। अतः दिल्ली को भारत की राजधानी रखते हुए भी दिल्ली प्रान्त का [illegible] किया जा सकता है।

हिसार
रोहतक
गुड़गाँव

यू० पी० से मेरठ कमिश्नरी और आगरा कमिश्नरी और रुहेलखंड के तीन या चार जिले लिये जावेंगे। यथा—

	वर्गमील
मेरठ कमिश्नरी	९,२३०
मेरठ	
देहरादून	
सहारनपुर	
मुजफ़्फ़र नगर	
बुलन्दशहर	
आगरा कमिश्नरी	८,६४६
मथुरा	
आगरा	
मैनपुरी	
एटा	
अलीगढ़	
रुहेलखंड कमिश्नरी	६,१५१
बिजनौर	
मुरादाबाद	
बदायूँ	
दिल्ली	५७४

युक्तप्रान्त

इसप्रकार दिल्ली प्रान्त ३९,३५१ वर्गमील विस्तार में होगा। यदि बरेली को भी इसमें सम्मिलित कर लें तो यह ४०,००० वर्गमील का प्रदेश हो जायगा। बरेली को लखनऊ के साथ न रखकर दिल्ली में ही रखना चाहिए।

वर्तमान युक्तप्रान्त में इस समय दस कमिश्नरियाँ हैं। शासन की दृष्टि से संयुक्त-प्रान्त बहुत बड़ा प्रान्त है और इस कारण प्रान्त के सब भागों को समान रूप से विकास पाने का अवसर नहीं मिलता। इस समय संयुक्तप्रान्त का विस्तार १,१२,५६२ वर्गमील है। यदि मेरठ, आगरा और रूहेलखंड का कुछ भाग चला भी गया तब भी ८५,५३५ वर्गमील रह जायगा। इसलिए यदि बिहार की माँग स्वीकार करके गोरखपुर और बनारस की दो कमिश्नरियाँ बिहार में मिला दी जायँ तो जहाँ बिहार आर्थिक दृष्टि से स्वाश्रयी प्रान्त हो जायगा वहाँ ऐतिहासिक परम्परा और रीति-रवाज और जमीन-बन्दोबस्त की दृष्टि से भी समरस हो जावेगा। बिहार इन दोनों कमिश्नरियों को पिछले बीस साल से माँग रहा है। इसी प्रकार यू० पी० का बुन्देलखंड डिवीजन भी महाकोशल का भाग बनना चाहिए। इनके निकल जाने के बाद यू० पी० जो बचेगा, वह वस्तुतः एक प्रांत होगा और भारत का वस्तुतः दायाँ हाथ होगा। इस प्रान्त का नाम तब अन्तर्वेद ठीक होगा। आज के युक्तप्रान्त को अन्तर्वेद नहीं कहा जा सकता।

कोई बाधा नहीं

यह कहा गया है कि मंत्री मिशन-योजना के अन्तर्गत नये प्रान्त नहीं बनाये जा सकते और न प्रान्तों की वर्तमान सीमा में परिवर्तन किया जा सकता है। योजना के १९वें पैरा की पूर्वी उपधारा के आधार पर यह बात कही जाती है। जिसमें कहा गया है कि विधान-सभा ए० बी० सी० [illegible] में [illegible] कहा गया है—हमारा उद्देश्य विस्तार से विधान बनाना नहीं है, मैशीनरी को चालू कर देना है। जिससे भारतीय स्वतः भारत का विधान बना सकें।" विधान बनाने की मैशीनरी विधान-सभा चालू हो गई है। उस पर कोई बन्धन या प्रतिबन्ध लगाना उसके प्रभुत्व और क्षेत्र को सीमित करना होगा। इसलिए विधान-सभा इस कार्य को करने में पूर्ण समर्थ है।

इण्डिया ऐक्ट, १९३५ के २९०वें भाग में नये प्रान्तों के बनाने के सम्बन्ध में प्रक्रिया बनाई गई है। इसके अनुसार

(१) प्रान्तीय धारा-सभा अपने एक विशेष अधिवेशन के प्रस्ताव द्वारा अन्तर्कालीन गवर्नमेंट से अलग प्रान्त बनाने के लिए कह सकती है।

(२) अन्तर्कालीन प्रान्तों की माँग आ जाने पर उसको केन्द्रीय धारा-सभाओं के सामने रखेगी उनकी सहमति और सिफारिश को भारत-मंत्री के सम्मुख पेश करेगी।

(३) अन्तर्कालीन गवर्मेण्ट ब्रिटिश गवर्नमेंट से कह सकती है कि वह इस कार्य को जल्दी करे, जिससे विधान-सभा का काम समाप्त होने से पहले-पहल नये प्रान्त अस्तित्व में आ जायँ।

भारत-मंत्री का नियन्त्रण भारत सरकार पर से व्यवहार में न रहने के कारण अन्तर्कालीन गवर्नमेंट सीमा-कमीशन बिठाकर यह कार्य कर सकती है।

विधान-सभा के प्रस्ताव से हो, या अन्तर्कालीन गवर्नमेंट के स्वतः उपक्रम से हो, भाषानुसार प्रान्तों का निर्माण होना आवश्यक है और आन्ध्र महाराष्ट्र, कर्नाटक और दिल्ली की माँग की अब उपेक्षा नहीं की जा सकती।

(समाप्त)

क्यों!

ब्रिल्क्रीम

अपने आसपास देखिये और उन [illegible] का पता लगाइये जो ब्रिल्क्रीम [illegible] लाते हैं। स्वच्छ एवं स्वस्थ [illegible] उनका पता आसानी से लग [illegible] ब्रिल्क्रीम वालों को अपने स्थान [illegible] है और उन्हें सुन्दर चमक देता है।

आज ही एक बोतल खरीदिये

ब्रिल्क्रीम

परिपूर्णकेश-शृंगार

BRYLCREEM
THE PERFECT HAIRDRESS

Copyright

मैं भी आपका बहुत आभारी हूँ

पेट के दर्द का रोगी मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर की प्रशंसा करता है

यदि आप मंदाग्नि से पीड़ित हैं, और भोजन के बाद दर्द या अन्य कष्टदायी लक्षणों का अनुभव होता है तो मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर लीजिये। यह रोग का शीघ्र निराकरण कर देगा और पाचन-शक्ति को सुधार देगा।

प्रिय महोदय,
मैंने अभी एक दूसरे रोगी द्वारा की गई आपके स्टमक पावडर की प्रशंसा पढ़ी, और मैं अनुभव करता हूँ कि मैं भी आपका बहुत आभारी हूँ। आपके पावडर और गोलियों दोनों के नुस्खे वास्तविक वरदान हैं।

मैं पथ्य-भोजन पर आगया था.....किन्तु मैंने नियमित रूप से आपके पावडर का सेवन किया, और आज मैं अपनी रुचि की प्रत्येक चीज खा सकता हूँ और अपने को स्वस्थ अनुभव करता हूँ। मैं आपके प्रति आभार प्रदर्शन करता हूँ।

(हस्ताक्षर) जे. डी.

मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर की व्यापक ख्याति उसकी हृदय-दाह, उदर-वायु, जी मिचलाने एवं अपचन से होने वाले पेट के दर्दों के निवारण और आमवात एवं उदर-व्रण के विरुद्ध सुरक्षित रखने में वह प्रभावोत्पादकता का मान्य प्रमाण है।

"एलेक्स सी. [illegible]" के [illegible]

MACLEAN Brand Stomach

गोलियों के रूप में भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...पादक के नाम चिट्ठियां

...सभा में लीग शामिल होगी

...कल लोग अकसर यह सवाल पूछ ...कि क्या अब भी मुस्लिम लीग दिल्ली ...विधान-सभा में शामिल हो ...इसका जवाब बहुत ही माकूल ...शामिल हो सकती है क्योंकि ...में शामिल होने की वह ...रखती है। मन्त्रिदल की १६ ...घोषणा के अनुसार मुस्लिम ...अस्थायी सरकार में शामिल ...मंजिल तय कर चुकी है, अब ...में उसका शामिल होना ...लन्दन में बातचीत हो ही चुकी ...जिन्ना को मिस्टर चर्चिल और ...का आश्वासन मिल ही ...अब विधान-सभा में शामिल ...को हिचक नहीं होनी चाहिए। ...कुछ गड़बड़ होगा तो ब्रिटिश ...लेगी, बस, लीग अपना ...नारा सँभाले रहे। उधर कांग्रेस-...भी आशा है कि मुस्लिम लीग ...में आगे-पीछे जरूर शरीक ...लिए शायद अभी तक विधान-...केवल प्रेसिडेंट का ही चुनाव ...डिप्टी प्रेसिडेंट वगैरह की जगह ...रखी गई है। फिर यदि लीग ...में शामिल हुई होती तो भी ...नेता ही प्रेसिडेंट बनता ...जिन्ना के कथनानुसार हिन्दू ...का विधान-सभा में बहुमत है ...समितियाँ बन रही हैं, उसमें ...शामिल होते ही लीगी सदस्य ...लिये जायेंगे। सचमुच अभी ...बिगड़ा नहीं है। व्यर्थ में लीगी ...विधान-सभा में शामिल न ...मारा जा रहा है, यह अफ-...जरूर है। इसलिए अब ...को विधान-सभा में शामिल ...जाना चाहिए। दुनिया को ...के लिए मिस्टर जिन्ना की इतनी ...काफी है क्योंकि भारत के लिए ...विधान तभी बनेगा, जब ...विधान-सभा में शामिल होकर ...किसी एक दल द्वारा निर्मित ...स्वीकार नहीं करेंगे। ...होगा कि न तो 'पाकिस्तान' ...और न भारत को स्वतन्त्रता ...सकेगी। इन सभी बातों पर ...हुए अब उपयुक्त अवसर आ ...लीग विधान-सभा में शामिल ...और विधान बनाने का सिल-...चलने लगेगा।

—देवेन्द्रनारायण वाजपेयी
एम० ए०

* *

...द्वाबा का बलिदान

...द्वाबा बलिया जिला का एक ...है। यहाँ पर गंगा नदी तथा ...संगम होने के कारण, ...जिले के अन्य भागों की ...उपजाऊ है। अगस्त ...प्रसिद्ध समाज ...

निवासी हैं। किन्तु बिहार के समीप होने के नाते वे बिहारी कहलाते हैं। आठ अगस्त का संदेश भारतवर्ष में बिजली की तरह फैल रहा था। कहीं स्टेशन जलाये जा रहे थे, कहीं पर निहत्थे और पुलिस से लड़ाई हो रही थी। कहीं बड़ी शान से तिरङ्गा झंडा फहराया जा रहा था। 'भारत छोड़ो' के भीषण दहाड़ से ब्रिटिश सरकार काँप उठी थी। जनता सालों की गुलामी की जंजीर को क्षण भर में तोड़ देना चाहती थी। वह स्वयं अपना शासन अपने हाथों में लेना चाहती थी।

विद्रोही बलिया ने भी बड़े जोरों से 'भारत छोड़ो' का समर्थन किया। द्वाबा के नौजवान अगस्त का संदेश पाकर आजादी के नशे में मस्त हो गये। बूढ़े और बच्चे भी नौजवानों की टोली में शामिल हो गये। द्वाबा की जनता का—वह भीषण जन-समूह वीर सुदर्शनसिंह की कमान में तिरङ्गा को फहराते हुए, बैरिया थाने की ओर लपका। वीरों ने 'भारत छोड़ो' के नारों को दुहराते हुए झंडे को थाने की दूसरी मंजिल पर फहरा दिया। गोली चलानी शुरू हो गई। जन-समूह का नेता वीर सुदर्शनसिंह घायल हो चुका था। जनता को रास्ता दिखलानेवाला कोई नहीं था। निहत्थी जनता कर ही क्या सकती थी? किन्तु उन निहत्थी जनता में से एक भारतमाता का लाल वीर कौशल्या निकला। झंडे को कुचलते देखकर झट से मंजिल पर चढ़ गया। पर गोलियों के सामने वह न चढ़ सका। बेचारा एक गोली भी न सह सका। शाम हो चली थी। गगन में बादल नाच रहे थे। थोड़ी देर बाद ही पानी का प्रकोप भी बड़े जोरों से बह चला। जनता तितर-बितर हो गई। बैरिया थाना का समाचार बलिया के कोने-कोने में तूफान सा फैल गया। समस्त जिले में बगावत हो चली। दो दिन बाद बलिया—बलियावालों के हाथ में आ गया। बलिया को स्वाधीन बनाने का श्रेय द्वाबा ही को है। आज भी बैरिया थाना के पास द्वाबा के वीर शहीदों का स्मारक है जिसे 'द्वाबा शहीद स्मारक' कहते हैं। गत अक्टूबर में श्री जयप्रकाशनारायण 'द्वाबा शहीद-स्मारक' पर गये थे। स्मारक पर फूल चढ़ाते, रोते हुए श्री जयप्रकाशनारायण ने कहा था—"अपने भाइयों के स्मारक पर फूल चढ़ाते हुए मुझे एक भार का अनुभव हो रहा है। वह भार यह है कि जिस कार्य के लिए ये मेरे भाई शहीद हो गये हैं वह कार्य अभी अधूरा है। अतः उस कार्य को हमें पूरा करना है।"

सोनबरसा बलिया —वीरेन्द्रनाथ उपाध्याय

* * *

मध्यप्रान्तीय सम्मेलन जवाब दे

१—तीन साल होने को आये, अभी तक सागर-सम्मेलन की ... क्यों छपी?

२—... अभी त...

तक "सागर-सुषमा" ग्रन्थ क्यों नहीं छपा? क्योंकि जिन व्यापारियों से इस ग्रन्थ के लिए सामग्री व द्रव्य लिया था, उनमें असन्तोष की भावना फैल गई है।

५—नागपुर-सम्मेलन के बाद प्रान्तीय-सम्मेलन ने कितने सदस्य नये बनाये व प्रान्तीय सम्मेलन के कार्य में कितनी प्रगति हुई?

६—"मधुमंगल-ग्रन्थमाला" के लिए जो प्रतिवर्ष ५०००) सालाना पं० आनन्द-मंगल मिश्र ने दान दिया है, उसका क्या हुआ? अभी तक प्रकाशन-समिति क्यों सोती रही? उसने अभी तक एक भी ग्रंथ क्यों नहीं प्रकाशित किया? कम से कम मृत-साहित्यिकों के ग्रन्थ निकालने थे।

७—"गंगाबाई-पुरस्कार" को कायम क्यों नहीं किया गया?

८—प्रान्तीय साहित्य-सम्मेलन के पदाधिकारी यदि उचित रीति से काम नहीं सँभाल सकते तो वे क्यों पदों से चिपके हैं?

९—मासिक पत्र अभी तक क्यों नहीं निकला?

सागर —लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

* * *

स्वर्गीय पंडित चित्तू पांडेय

आदमी पैदा होते हैं, जवान होते हैं और मर जाते हैं। किन्तु उनके जीवन का मूल्य कुछ नहीं रहता। परन्तु कुछ आदमी ऐसे होते हैं कि उनका मूल्य उनके मरने के बाद निरख आता है, तथा एक अभाव सा ज्ञात होने लगता है। श्री चित्तू पाण्डेय भी ऐसे ही आदमियों में से थे, जिनके मरने के बाद एक अभाव मालूम हो रहा है। सन् ४२ में पाण्डेय जी को जेल में बहुत कष्ट झेलने पड़े थे। फलतः उनका शरीर कमजोर हो चला था। जेल के बाहर भी आपका स्वास्थ्य दिनों-दिन सुधरने के बजाय खराब ही होता गया। मरने के दो-चार सप्ताह शेष ही थे, तभी पाण्डेय जी लखनऊ चले गये थे। वहाँ पर भी कुछ लाभ नहीं हुआ। अचानक एक दिन पाण्डेय जी हम लोगों को छोड़कर चले गये। पाण्डेय जी के स्वर्गवास से तो बलिया अनाथ हो गया। माननीय किदवई साहब के शब्दों में तो "संयुक्त-प्रान्त पाण्डेय जी को खोकर गरीब हो गया"। पाण्डेय जी के शोकाकुल परिवार के साथ मैं सहानुभूति प्रगट करता हूँ। तथा परम परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि पाण्डेय जी की आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

सोनबरसा बलिया —वीरेन्द्रनाथ उपाध्याय

अपनी बात

मनुष्यों के चरित्र में जो दुर्बलताएँ होती हैं उन्हें दूर करके वह किस प्रकार जीवन को उन्नत बना सकता है, यही बात इस पुस्तक में ओजपूर्ण भाषा में, निजी अनुभव के आधार पर, लेखक ने लिखी है। यह पुस्तक प्रत्येक युवक को पढ़नी चाहिए। मूल्य ।।।) बारह आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

अपने दान्तों के लिये
गिब्स
डेन्टिफ्रिस का उपयोग
कीजिये क्योंकि...

वह आपके दाँत सुरक्षित रखता है—और इसलिये आप के स्वास्थ्य की रक्षा करता है

आप अपने दांत साफ़ करें, उन्हें सफ़ेद और सुरक्षित रखें तथा अपना स्वास्थ्य भी। कोयला व अन्य सख्त पदार्थ का उपयोग करने से, दाँतों को खुरोचे जाने का खतरा रहेगा और खुरोचा दांत जल्द किड़ जायेगा। इसीलिये गिब्स डेन्टिफ़्रिस से बदल करें। गिब्स डेन्टिफ़्रिस खुरोचे बग़ैर (दाँत) साफ़ करने के लिये बनाया गया है। वह मधुर स्वाद रखता है और जंतुनाशक भी है, नियेमित-रूप से उस का प्रयोग करें; वह आप के दाँत सुरक्षित रखेगा और आप के स्वास्थ को आरोग्यप्रद रखने में सहाय करता है।

Gibbs Dentifrice

गिब्स
समस्त दंतमंजनों से अ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काश्मीर-राज्य में जन-जागृति

(पेज ६ का शेष)

काश्मीर में राष्ट्रीय शब्द नये ही रूप में इस्तेमाल किया जाता है। गत वर्ष जब भारत के वर्त्तमान महामंत्री पंडित नेहरू आदि नेता काश्मीर आये थे तो उनसे मुसलमानों ने जो व्यवहार किया वह साफ दिखा रहा है कि भावना दबी नहीं है। हाँ, भावना को उद्वेलित करने के लिए साधन कम मिल रहे हैं, जब जब मिल रहे हैं उनका प्रयोग अच्छी तरह किया जा रहा है।

आज का काश्मीर शेख जी की कृपा से पहले से काफी उन्नत है। इस जागृति के लिए (चाहे वह जागृति कैसी ही क्यों न हो!) शेख जी ने जो कुछ किया श्लाघ्य है।

ग्लैंसी कमीशन

साम्प्रदायिक विप्लव के बाद महाराजा ने एक कमीशन बी० जी० ग्लैंसी की प्रधानता में नियुक्त किया जिसमें चार गैर सरकारी प्रतिनिधि जम्मू और काश्मीर के हिन्दू और मुसलमानों में से चुने गये थे। इन्हें भिन्न-भिन्न धर्मों की सामाजिक और धार्मिक माँगों पर अपने-अपने मत प्रकट करने की अनुमति दी गई। कमेटी ने कई सिफारिशें कीं जिन्हें काश्मीर नरेश ने स्वीकार किया। सिफारिशों में से आवश्यक सिफारिशें ये थीं :—(१) सारे धार्मिक स्थान जो कि सरकार के अधिकार में थे जनता को वापस दिये जायें। (२) भिन्न-भिन्न धर्मों के अनुयायियों को संख्या के अनुपातत: सरकारी नौकरियों में भर्त्ती किया जाये। (३) जिन-जिन जमींदारों की भूमि सरकार के हाथ में गई है उन्हें उनका स्वामित्व दिया जाये।

इन माँगों के सम्बन्ध में सरकार ने यह आज्ञाएँ जारी कीं—(१) जो जो धार्मिक स्थान लोग सँभाल सकें वह उन्हें वापस दिये जायें। (२) भिन्न भिन्न धर्मों के अनुयायियों तथा अल्पमत के लोगों के लिए सरकारी नौकरियों में चुने जाने के लिए उपाधियाँ रखी गईं जिससे हर एक जातियाँ नौकरियों में भाग ले सकती थीं। तीसरी माँग के सम्बन्ध में जमींदारों को न केवल स्वामित्व ही दिया गया बल्कि नज़राने की शर्तों को भी दूसरी बार टटोलकर उनमें आवश्यक परिवर्तन किया गया और जहाँ सम्भव हो सका वहाँ कमियाँ भी की गईं। यह सुविधा देने से सरकार को २० लाख के नुकसान का सामना करना पड़ा। यह सुविधा बाद में उन ग्रामों को भी दी गई जो महाराजा के "व्यक्तिगत" डिपार्टमेंट से सम्बन्ध रखते थे।

प्रजा-सभा

प्रेस और भाषण पर से प्रतिबन्ध हटाने के लिए काश्मीर में बहुत शोर हो रहा था। आखिर सरकार को उचित अवसर पर बात माननी पड़ी और इन चीजों से प्रतिबन्ध हटाया गया। प्रेस के [illegible] किये गये जो ब्रिटिश उम्मीदवारों सहित छः प्रतिशत प्रतिनिधित्व मिला। धारा-सभा में जन-प्रतिनिधियों को यह अधिकार मिले :—

(१) प्रश्न पूछना। (२) प्रस्ताव पास करना। (३) सरकारी बिलों आदि से परिचय करना, सरकारी बजट पर बहस करना। सभा में कुल ७५ उम्मीदवार होते थे जिनमें ६० गैर सरकारी और ३३ चुने हुए सदस्य।

११ फरवरी को महाराजा ने अपनी प्रसन्नता से जनता को कुछ और सुविधाएँ दीं :—

(१) चुने हुए सदस्य जो पहले ३३ थे उन्हें ४० तक बढ़ाया गया।

(२) सभा को यह सुविधा भी दी गई कि वह अपने गैर सरकारी सदस्यों में से डिप्टी प्रेजिडेंट चुन सकते हैं।

(३) प्रजा-सभा को कुछ वोट देने का अधिकार भी मिला। हाँ! उसमें ऐसे भी कुछ विषय थे जिन पर वोट देने का अधिकार मिल न सका। वह विषय सरकारी बजट से सम्बन्ध रखते थे।

(४) टैक्स और फीसों का प्रबन्ध भी सभा के अधीन ही रखा गया।

११ फरवरी को दी गई सुविधाओं के अनुसार महाराजा ने बाहरी कानूनी, शासनीय अधिकार अपने हाथ में लिये, एडवोकेट जनरल को भी कुछ अधिकार दिये गये। प्रजा-सभा में रियासत के लिए कोई भी कानून बनाया जा सकता है। प्रेसिडेंट प्रजा-सभा ने २ आक्टोबर १९४४ को एक घोषणा की यह घोषणा महाराजा की ओर से थी :—"जनता को सरकारी कामों में हिस्सा लेने का अधिकार देने के लिए सोच-विचार के बाद यह निर्णय किया है कि वे प्रजा-सभा के ६ मेम्बर (जिसमें ३ मुस्लिम होंगे)। उनका एक (पेंनल) बनाया जाये। वह 'पेंनल' केवल गैर सरकारी प्रतिनिधियों से ही चुना जायेगा। इसमें उनमें से दो मंत्रियों को जिनमें एक मुसलमान होगा मंत्री नियुक्त किया जायेगा। इनकी अवधि दो साल होगी, यदि यह फिर प्रजा-सभा के मेम्बर बने तो वह अपने पद पर सुरक्षित रहेंगे।" पेंनल चुना गया और दो मंत्री नियुक्त हुए इनके अधीन काश्मीर के महत्त्वपूर्ण डिपार्टमेंट रखे गये।

काश्मीर में यहीं एक [illegible] प्रजा की आवाज सरकार तक पहुँच यद्यपि सरकार उस आवाज पर गौर करती है तो भी हमें इतना है कि कभी न कभी जन-मंत्री उसे जोर से कहकर हमारी माँगें पूरी अभी तक जन-मंत्री हमें कोई दिखा सके। काश्मीर के तबदीली न ला सके। खैर.....

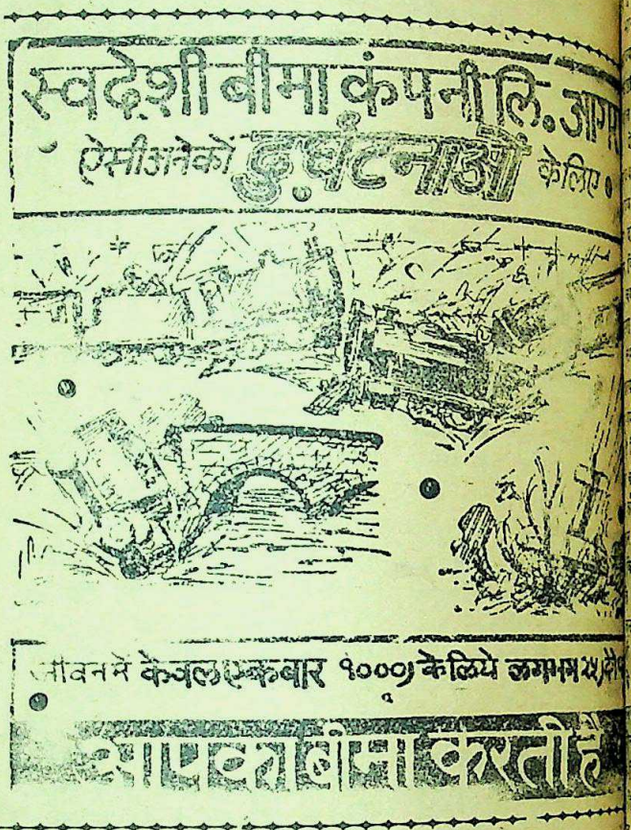

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...हित्य-चर्चा

...नगर-साम्राज्य का इतिहास

...श्री वासुदेव उपाध्याय एम० ...प्रकाशक—सस्ता साहित्य-मण्डल, ...दिल्ली। सजिल्द पृष्ठ-संख्या २७८, ...रुपये।

...में समय समय पर अनेक ...उपस्थित हुए हैं और उन्नति की ...पर पहुँचकर कालान्तर में काल ...में सदा के लिए विलीन हो गये ...ऐसे साम्राज्यों में विजयनगर का ...अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह वह ...है जिसने हिन्दू-धर्म की रक्षा की ...दक्षिण-भारत में हिन्दू संस्कृति का ...किया। इसके सम्राट् नाम के हिन्दू ...हृदय से हिन्दू थे और उन्होंने ...से हिन्दुओं की रक्षा की। अतएव ...में ऐसे साम्राज्य के इतिहास ...आवश्यकता है जब वह पुनः ...संकट में है। बड़ी प्रसन्नता की ...श्री वासुदेव उपाध्याय ने हिन्दू-...इस आवश्यकता को महसूस ...बड़े परिश्रम से यह इतिहास ...साहित्य के एक अंग का परि-...किया तथा हिन्दू-धर्म और हिन्दू ...के भूतकालीन वैभव की ओर ...का ध्यान आकृष्ट किया।

...वासुदेव उपाध्याय हिन्दी के उच्च ...लेखक और इतिहास के पंडित ...का अध्ययन गंभीर है और उनकी ...है। वह मंगलाप्रसाद पारि-...जेता भी हैं। प्रस्तुत पुस्तक भी ...हिन्दू-मंडल द्वारा पुरस्कृत है और ...के आचार्य डा० रामप्रसाद ...ने इसकी भूमिका लिखी है। ...है कि पुस्तक की सामग्री अधि-...है।

...ने इस पुस्तक में विजयनगर ...की सामग्री को बड़े क्रम से ...की चेष्टा की है और प्राचीन ...प्रमाण उपस्थित किये हैं। समस्त ...अध्यायों में विभाजित है और ...अध्याय विजयनगर-साम्राज्य के ...स्पष्ट करता है। प्रथम अध्याय ...नगर-साम्राज्य के सम्राटों का ...इत्यादि है। इसमें दिखाया ...कि किस प्रकार दक्षिण भारत में ...के स्थान पर हरिहर और ...१३३६ ई० में इस साम्राज्य ...। इस अध्याय के पश्चात् ...इति अन्य बारह अध्यायों ...सजीव और सरल भाषा में ...है। यह पुस्तक इतिहास के विद्या-...हिन्दू हितैषियों के लिए अत्यन्त ...। आशा है हिन्दू तथा हिन्दी ...इसका अच्छा प्रचार होगा और ...प्रेमी विद्यार्थी इससे पूरा लाभ ...प्रयत्न करेंगे। यदि परीक्षा लेने-...ऐसी पुस्तकों को अपने ...स्थान दें तो उससे हिन्दी के ...ही विद्यार्थियों का भी भला ...है। आशा है कि इस ओर ...आकृष्ट होगा।

* *

श्री हरिभाऊ उपाध्याय हिन्दी के विचारक और अनुभवी लेखक हैं। प्रस्तुत पुस्तक में आपने अपने "दीर्घकालीन अनुभवों" को जनता के लाभार्थ उपस्थित किया है। आपका कहना है—"मैं जीवन को खुली पुस्तक रखने के, जीवन की नग्नता के सिद्धान्त का हिमायती हूँ। जिस जगत् की मैं देन हूँ, उससे मेरा क्या परदा होना चाहिए।" आपके इस कथन में इस पुस्तक की महानता स्वयं स्पष्ट है। आपने इस पुस्तक में अपने हृदय को खोलकर जो बातें लिखी हैं उनमें एक विचारक की अनुभूति है। आप पाठक के मनोरंजन की ही सामग्री अपने साहित्य में नहीं देते वरन् चिन्तन के लिए भी यथोचित विषय उपस्थित करते हैं। जो लेखक इस दृष्टि से साहित्य का निर्माण करता है वह पाठक को साहित्य-निर्माण की ओर प्रोत्साहित भी करता है। श्री हरिभाऊ जी का समस्त साहित्य इसी प्रकार का है।

प्रस्तुत पुस्तक में उनके अनुभव के ५० विषय उपस्थित किये गये हैं। सभी विषय महत्त्वपूर्ण हैं और सब पर अहिंसा और त्याग की छाप है। आपके विषय आनन्द की वस्तुएँ नहीं चिन्तन की वस्तुएँ हैं। गांधी जी का प्रभाव आपकी विचार-धारा पर स्पष्ट है। आप बराबर महात्मा जी के साथ रहे हैं और उनके उपदेशों तथा प्रवचनों से आपने पूरा लाभ उठाया है। इसलिए प्रस्तुत पुस्तक का महत्त्व इस दृष्टि से अधिक सिद्ध होता है। इस पुस्तक के मूल प्रकरण अहिंसा—के अनुभव सम्बन्धी हैं। इनके अतिरिक्त सात्विक भोजन, आत्म-शुद्धि, मातृ-हृदय आदि विषयों पर भी आपने अपने अनुभव दिये हैं। पुस्तक के सभी विषय चिन्तनशील हैं और इससे साहित्य का महत्त्व प्रतिष्ठापित होता है। आशा है, हिन्दी-जनता में श्री उपाध्याय जी की इस पुस्तक का अच्छा प्रचार होगा।

—राजेन्द्रसिंह गौड़, एम० ए०

(पृष्ठ चार का शेष)

प्रकाश बाबू ने बाहर आकर श्री अच्युत पटवर्धन, डा० राममनोहर लोहिया, श्रीमती अरुणा आसफअली आदि फरार अखिल भारतीय नेताओं के साथ मिलकर जो अद्भुत संगठन किया वह ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध किये गये विद्रोह में अद्वितीय रहेगा। अगस्त क्रान्ति में अपने पराक्रम द्वारा जयप्रकाश बाबू सहज ही में जन-दृष्टि में अगस्त क्रांति के नायक हो गये। नैपाल में गिरफ़्तार होकर आपकी दुबारा भाग निकलने की कहानी तो और भी रोमांचकारी है, जिसका हाल अभी केवल थोड़े ही लोगों को मालूम है। पकड़े जाने पर लाहौर के किले में जयप्रकाश बाबू को जो तकलीफें झेलनी पड़ी, उन्हें जानकर बड़े-बड़े अँगरेज राजनीतिज्ञों के रोंगटे खड़े हो गये थे।

आज जयप्रकाश बाबू हमारे बीच में पुनः हमारा नेतृत्व करने के लिये मौजूद हैं। देश का नेतृत्व उनके हाथ में सुरक्षित है। वे आजकल युक्तप्रान्त का दौरा कर रहे हैं। जिस प्रकार का स्वागत युक्तप्रान्त-वासी उनको थैलियाँ देकर व स्वागत कर रहे हैं वह उनके ही उपयुक्त है। आज हम सभी के लिये श्रेयस्कर है कि हम अपने नये नेतृत्व को जयप्रकाश बाबू, उनके साथी तथा नये भारतीय नेताओं जैसे डा० लोहिया, अरुणाजी, अच्युत पटवर्धन, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, डा० केसकर के हाथ में देकर एक समाजवादी भारत का निर्माण करें।

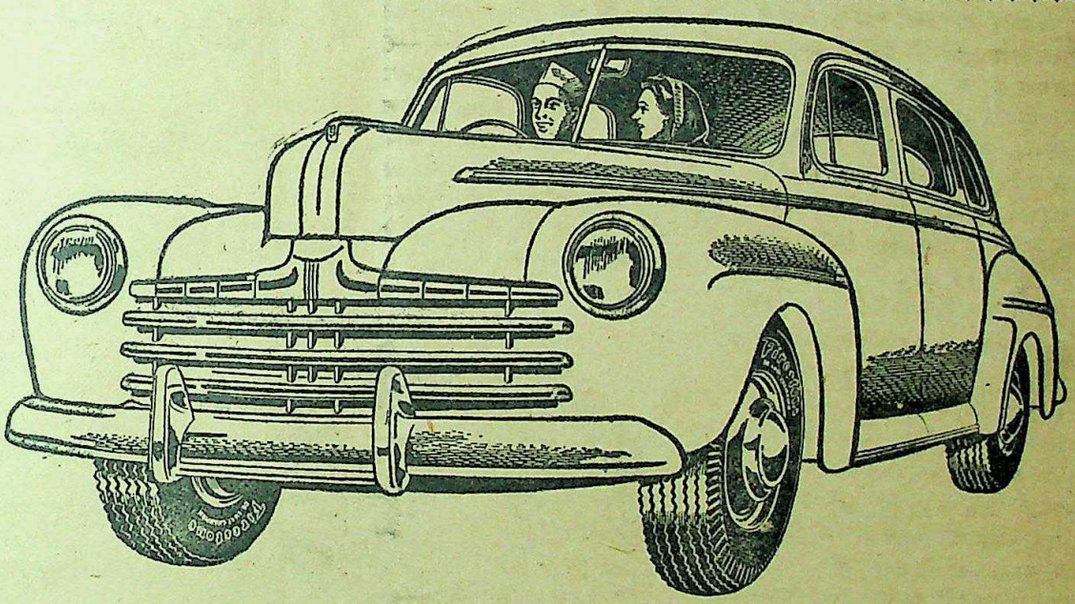

क्या आपने ध्यान दिया है कि कितनी नई मोटरकारों में

फायरस्टोन टायर्स लगाये गये हैं ?

कार रखनेवालों को अनुभव द्वारा यह मालूम हो चुका है कि 'गम डिप्ड' टायर्स अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षा और बिना झंझट के लम्बी यात्रा करनेवाले होते हैं।

Firestone

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास परिहास

भंग की तरंग

भारत के राजनीतिक विभाग ने कबीलों और पठानों में झगड़ा कराने की कोशिश की। राजनीति का काम ही है नीति की चाल चलना। वह झगड़ा कराने के लिए नहीं तो क्या शादी कराने के लिए है।

* * *

श्रीमती पंडित कहती हैं कि ईश्वर के नाम पर चर्चिल चुप रहें। चर्चिल शैतान के नाम पर चुप नहीं रह सकते ईश्वर तो बहुत बड़ी चीज है।

* * *

सिंध के चुनाव में सैयद साहब हार गये। यदि वह कायदे आजम के सामने जाकर क्षमा माँग लें तो वह फिर मन्त्री हो सकते हैं। सियाँ फजलुल लीग में फिर शामिल हो ही गये।

* * *

प्रांतीय सरकार ऐसा नियम बनानेवाली है कि शिक्षा-संस्थाओं के निकट सिनेमा-भवन न बनाया जाय। आशा है लखनऊ के विद्यार्थी इसका घोर विरोध करेंगे और इसके लिए हड़ताल करेंगे।

* * *

सिनेमा-भवन बनानेवालों को विद्यार्थियों से इस सम्बन्ध में समझौता कर लेना चाहिए। इससे विद्यार्थी उनके समर्थन में आंदोलन करेंगे और सरकार तो विद्यार्थियों की बात मान ही लेगी।

* * *

पंडित जवाहरलाल नेहरू के भारतीय प्रजातन्त्रवाली घोषणा के प्रस्ताव के सम्बन्ध में चालीस संशोधन प्राप्त हुए हैं। जान पड़ता है बाकी ढाई सौ सदस्य केवल सोने के लिए गये हैं। चालीस प्रस्ताव से चालीस दिन का ही प्रबन्ध सदस्यों ने किया है। ऐसा करने से तो विधान-परिषद् बहुत शीघ्र समाप्त हो जायगी।

* * *

महात्मा जी कहते हैं कि सभी धर्मों का मूल एक है। सभी धर्मों का वा और जो धर्म न हो उसका मूल तो दूसरा होगा।

* * *

लाहौर हाईकोर्ट ने श्री शफात अहमद के तथा कथित हत्यारों को छोड़ दिया। शफात अहमद साहब ने सर की उपाधि छोड़ दी। आशा है कोई भले आदमी उनके लिए अपनी जगह भी छोड़ देंगे।

कलकत्ते में करफ्यू हटनेवाला है। हमारी राय तो थी कि कायदे आजम भारत लौट आयें, उनका भाषण हो जाये, इसका परिणाम देख लिया जाय तब करफ्यू हटे तो बेहतर है।

* * *

चर्चिल साहब ने कहा कि नेहरू सरकार के कारण बीस हजार मनुष्य मरे। चर्चिल भूल गये कि उनकी सरकार के कारण इँगलैंड के कितने आदमी युद्ध में मरे। उसकी संख्या भी उन्हें बतानी चाहिये थी।

* * *

कहा जाता है कि ईरान और रूस में कोई गुप्त समझौता हुआ है। इसमें आश्चर्य क्या जब चर्चिल और जिन्ना में हो सकता है तब वह तो बड़े देश हैं।

* * *

धुलेकर साहब विधान-परिषद् में हिन्दी बोलने के लिए अड़ गये। उन्होंने यह नहीं समझा कि वहाँ ऐसे भी लोग हैं जो अँगरेजी के गड्ढे में गड़ गये हैं।

* * *

कुछ यूरोपियन चाकर भारत की वर्तमान सरकार से रुष्ट हो गये हैं। इस रोष पर हम उन्हें बधाई देते हैं। उन्हें रूठ कर रिजात करना चाहिए।

—अगड़धत्त शर्मा

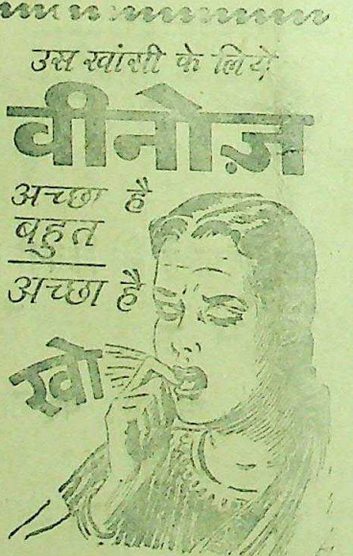

जैसे ही आपकी खांसी शुरू हो वीनोज़ का सेवन शुरू कर दीजिये। इसका विशुद्ध प्रभाव खांसी को रोकता है, गले की खराश को दूर करता है और छाती के दर्द को अच्छा कर देता है। खांसी सरदी, फेंफड़ों को सूजन, गला पड़ना, बालकों की खांसी आदि में वीनोज़ ... भाग से

बेढब की बहक

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

उनकी रट है रात-दिन हम जारजेट का थान लेंगे।
कायदे आजम का कहना है कि पाकिस्तान लेंगे।
हमसे सच पूछो तो यह दोनों बहुत ही नासमझ हैं,
हम तो इस कोशिश में हैं राशन कि एक दूकान लेंगे॥

* * *

दिल को, सीने को, जिगर को किस तरह से थाम लेंगे।
काम से लेंगे नहीं फिर भी अगर बेकाम लेंगे।
सोच सकते ही नहीं कुछ हाल हम उनके दिलों का,
आगेवाले कायदे आजम का कैसे नाम लेंगे॥

* * *

देखना हो जख्म तो नजरों की गोली देखिये।
देखना हो जहर तो चर्चिल की बोली देखिये।
भूल जायेंगे खुदा को याद रखिये आप लोग,
हजरते बेबेल की सूरत आप भोली देखिये॥

* * *

कोई चिल्ला रहा है जल्द हम ले लेंगे आजादी।
हमारे जख्म का छाया बनता है कोई खादी।
मगर ऐसे भी हैं कुछ लोग अपने देश में बेढब।
यही हैं धुन रहे किस तरह से बढ़ जाय आबादी॥

सत्रहवीं शताब्दी से, जब कि ब्रिटेन में चाय पान का रिवाज प्रारंभ हुआ था, यह इतिहास एक देश संसार के अन्य देशों की भाँति ब्रिटेन में भी बहुत लोकप्रिय रहा है।

अपनी ताजगी और मन को ठीक रखने के कारण ब्रुक बाण्ड चाय अधिकांश भारतीय घरों में बरती जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...आज आपने
...स से दांत साफ़
किये हैं ?

...तो रोज की
...नचर्या है।

...काम करनेवाली आधु-
...नारी ने उत्तम गुणों को
...सीख लिया है। वह
...करती है क्योंकि
...विकार - विरोध-
...अनुपम गुण हैं और
...सस्ता भी है। इसे
...का अंग बनाइये-
...का एक ट्यूब

सभी स्टोरों में व
केमिस्टों के यहां
बिकता है।

हलवे का स्वाद खान से मिलता है

आप हमारी मिठाइयां—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

गरीबों को लक्ष्मी, व्यापारियों को चांस, इज्जतदारों को इज्जत, नौकरों को उन्नति, सन्तानहीनों को सन्तान, आदि ही तो मनुष्य-जीवन का आनन्द और सच्चा स्वर्ग है।

वह जीवन ही क्या जहाँ सुख-सम्पत्ति न हो

शुभ महाचमत्कारी नवग्रह सिद्ध "यन्त्र" मँगाइये लाभ

प्रत्यक्ष गुण और शीघ्र फल देने की महान् शक्ति इसी यन्त्र में है। थोड़ा लिखना—यही इस यन्त्र की उत्तमता और सचाई का पक्का प्रमाण है। यह यन्त्र दुष्ट ग्रहों को शान्त कर रोजगार में लाभ, इम्तिहान में पास, मुकदमे में जीत, शत्रु पर विजय, राजदरबार में इज्जत, इच्छानुसार नौकरी मिलना, सन्तान लाभ, हर एक बीमारी से छुटकारा, खराब स्वप्न का नाश, दिल पसन्द शादी होना, अचानक आफतों से बचना, स्त्री-पुरुष वशीकरण, रेस-लाट्री में धन की प्राप्ति वगैरह जो सोचोगे वही कार्य सिद्ध होगा और हर सवाल का जवाब स्वप्न में विधि सहित बतायेगा। आप जिस काम का ध्यान करेंगे तुरन्त ही होगा। यदि विश्वास न हो तो कुछ प्रशंसा पत्र देखिये। फायदा न हो तो दाम वापस मँगा लो। शास्त्रोक्त न हो झूठा साबित करने से १०००) रु० इनाम। सन्तान के इच्छुक, दो सिद्ध नवग्रह यन्त्र मँगायें। स्त्री को दो नीलमणि या पुरुष को दो नीलमणि युक्त कम्पलीट एक नवग्रह सिद्ध यन्त्र का मूल्य २) रु०, चाँदी का ३) रु०, सोने का ६॥≡) रु० एक से अधिक चार कामों के लिए स्पेशल नम्बर २ मँगावें मूल्य ५॥≡) रु०, चाँदी का ६॥≡) रु०, सोने का १५॥≡) रु०। पाँच कामों से अधिक के लिए स्पेशल नम्बर १ मँगवावें मूल्य ६॥≡) रु०, चाँदी का १०॥≡) रु०, सोने का २६॥) रु०। यह बहुत शक्तिशाली है और सब काम पूर्ण होते हैं। डाक व्यय ।॥) आना अलग। ३ यन्त्र एक साथ मँगाने से डाकखर्च माफ। विदेशवालों से ५ शिलिङ्ग पेशगी। यन्त्र के लिए किसी प्रकार की पूजा-पाठ करनी न पड़ेगी। हर धर्मवाले के लिए समान लाभदायक है।

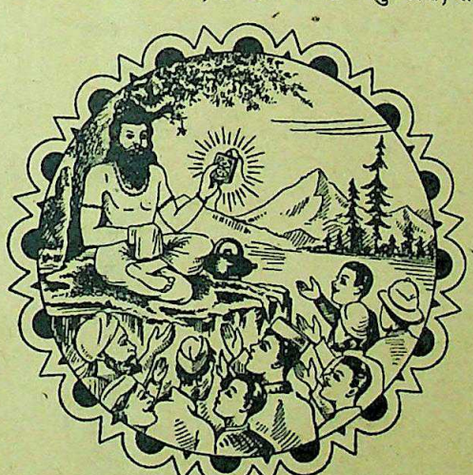

श्री आनन्द स्वामी जी की तीन अमूल्य सिद्धियाँ

विजय शक्ति—१२ से अधिक प्रत्येक कार्य अवश्य पूरे होंगे। कीमत :—साधारण १६॥≡), २३॥-) चाँदी, ३५।=) सोने का। डा० मनीआर्डर खर्च अलग। आश्चर्यजनक दैवी-शक्तियों से भरपूर।

ब्रह्म शक्ति—जगत् की सभी शक्ति, भक्ति, मुक्ति, माया, महामाया, महायोग, योगमाया, ऐश्वर्य, मृत्युञ्जय आदि का सम्मि-श्रण है। इसकी तारीफ करना मनुष्य-शक्ति के बाहर है। केवल इच्छा करने की देरी होती है। सफलता ... सन्देह नहीं। पूर्ण विश्वास ... विश्वास में मनुष्य सच्ची चीज को खो बैठता है। मूल्य ४५) ... और रत्नों से ... डाकखर्च ...

धन कव...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सात की पुस्तकें सवा पाँच में

आजाद हिन्दुस्तान का इतिहास

अभ्युदय के ५ विशेष अंक

नेता जी ने जो आजाद सरकार कायम की थी उसे अभ्युदय के इन अंकों में अच्छी तरह दर्शाया गया है। देश में एकता कायम करने में ये अंक बड़े ही उपयोगी साबित होंगे, इसलिए हर एक की सुविधा का खयाल करके हमने इनका मूल्य सात रुपये से सवा पाँच रुपये कर दिया है। इस सुविधा से वही लोग लाभ उठायेंगे जो ५।) सवा पाँच रुपये का मनीआर्डर भेज देंगे। पूर्ण आजादी का ध्यान रखकर ये अंक निकाले गये थे। जल्दी कीजिए स्टाक में बहुत कम अंक बचे हैं खतम हो जाने पर पछताना पड़ेगा।

मैनेजर—अभ्युदय प्रेस, प्रयाग

सारे संसार को प्रिय!

सिरोलि

'रोचे

फेंफड़ों के विकारों

दुनियाँ भर जिसे शुद्ध मा

ऐसी चीजें रातों रात नहीं बन

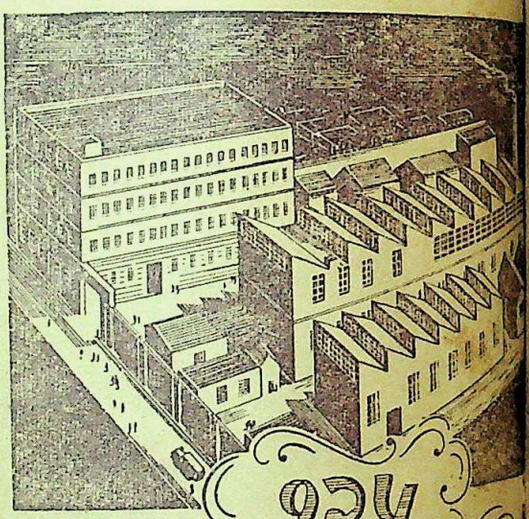

१२५

वर्षों से भारत में

औषधि निर्माण कर रहे

सवा सौ वर्षों से औषधियाँ तथा प्रसाधन सामग्रियाँ बनाते बनाते स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट कम्पनी को काफी अनुभव और ज्ञान हो चुका है—किस तरह के मनुष्यों द्वारा कौन से तरीकों से काम करने से स्टैनिष्ट्रीट का विशुद्धता का पैमाना यकसां बना स्टैनिष्ट्रीट का हर एक एक सा विशुद्ध और दिल होता है क्योंकि कुशल अपने और विज्ञान के भव का उपयोग इन्हें मे सर्वदा किया

स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट एण्ड कं०

१८२१ मे भारत मे स्थापित

बम्बई

GOVERNMENT OF INDIA

DISPOSALS

(SECTION MS OF 3rd CATALOGUE)

Following types of stores are available for sale:

Stationery Stores: Paper and Paper Products.

Drugs and Chemicals: Drugs; Biological Reagents; etc.

Dressing and Bandages.

Surgical and Dental Instruments: Anaesthetic Equipment; Ear, Nose and Throat Equipment; Orthopaedic Equipment; Ligatures; Nursing Appliances; Dispensary Appliances; Anti-malarial Equipment; Opthalmic Equipment; Gynaecological Equipment; Veterinary Instruments and Appliances; Other instruments including Hypodermic Syringes, Suture Needles, etc.

Other Medical and Veterinary Stores.

Amenity Stores.

Other Miscellaneous Stores: Glass Sheet and Holloware excluding bottles; Certain types of Rubber and Rubberised Goods.

Full details giving description and condition of stores, quantity, location, etc. and the method of tendering are contained in Section MS of the Third Catalogue which is available at Rs. 1/- on or about 16th December, 1946, from the addresses given below:

A. Regional Commissioner (Disposals) at

BOMBAY - Mercantile Chambers, Graham Road, Ballard Estate.

CALCUTTA - 6, Esplanade East.

LAHORE - G. P. O. Square, The Mall.

CAWNPORE-15/159, Civil Lines.

B. Dy. Regional Commissioner (Disposals) at

KARACHI - Variawa Building, McLeod Road.

MADRAS - United India Life Building, Esplanade.

C. All Important Chambers of Commerce and Trade Associations.

Mail orders for the catalogue must be accompanied by Money Order or Indian Postal Order.

NOTE: Watch for further announcement regarding Section MS of Fourth Catalogue which will contain a further list of

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्य ७॥)
या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
price 2 Annas

२९ दिसम्बर, १९४६ सचित्र हिन्दी साप्ताहिक Sunday, 29th December, 1946

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुहागरात

लेखक, स्वर्गीय पं० कृष्णकान्त जी मालवीय

इस पुस्तक को पंडित जी ने अपने पुत्र तथा पुत्रवधू के विवाह के उपलक्ष में भेंट किया था। मेरा दावा है, हर नवयुवक तथा नवयुवतियाँ इसे पढ़कर अपना भविष्य उज्ज्वल बना सकती हैं। ऐंटिक पेपर, दर्जनों चित्र से सुसज्जित, दाम सिर्फ ५), तीनों भाग का १५)। एक साथ तीनों भाग मँगानेवालों को १३), मनीआर्डर से भेजनेवालों को घर बैठे ये पुस्तकें प्राप्त हो सकेंगी।

पाँचवाँ सुभाष अंक

आजाद हिन्द-सरकार और नेता जी के जीवन-सम्बन्धी बातों से अंक पूर्ण हैं। सुन्दर जिल्द, सबका दाम ८) रुपया। जल्दी कीजिये, स्टाक में थोड़े ही बचे हैं।

मैनेजर—अभ्युदय प्रेस, प्रयाग

GOVERNMENT OF INDIA

DISPOSALS

(SECTION MS OF 3rd CATALOGUE)

Following types of stores are available for sale:

Stationery Stores: Paper and Paper Products.

Drugs and Chemicals: Drugs; Biological Reagents; etc.

Dressing and Bandages.

Surgical and Dental Instruments: Anaesthetic Equipment; Ear, Nose and Throat Equipment; Orthopaedic Equipment; Ligatures; Nursing Appliances; Dispensary Appliances; Anti-malarial Equipment; Opthalmic Equipment; Gynaecological Equipment; Veterinary Instruments and Appliances; Other instruments including Hypodermic Syringes, Suture Needles, etc.

Other Medical and Veterinary Stores.

Amenity Stores.

Other Miscellaneous Stores: Glass Sheet and Holloware excluding bottles; Certain types of Rubber and Rubberised Goods.

Full details giving description and condition of stores, quantity, location, etc. and the method of tendering are contained in Section MS of the Third Catalogue which is available at Rs. [illegible]/- on or about 16th December, 1946, from the addresses given below:

A. Regional Commissioner (Disposals) at

BOMBAY- Mercantile Chambers, Graham Road, Ballard Estate.

CALCUTTA - 6, Esplanade East.

LAHORE - G. P. O. Square, The Mall.

CAWNPORE-15/159, Civil Lines.

B. Dy. Regional Commissioner (Disposals) at

KARACHI - Variawa Building, McLeod Road.

MADRAS - United India Life Building, Esplanade.

C. All important Chambers of Commerce and Trade Associations.

Mail orders for the catalogue must be accompanied by Money Order or Indian [illegible] Order.

Watch for further announcement regarding Section MS of [illegible] which will contain a [illegible]

मैं भी आपका बहुत आभारी हूँ

पेट के दर्द का रोगी मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर की प्रशंसा करता है

यदि आप मंदाग्नि से पीड़ित हैं, और भोजन के बाद दर्द या अन्य कष्टदायी [illegible] का अनुभव होता है तो मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर लीजिये। यह रोग का [illegible] निराकरण कर देगा और पाचन-शक्ति को सुधार देगा।

प्रिय महोदय,

मैंने अभी एक दूसरे रोगी द्वारा की गई आपके स्टमक पावडर की प्रशंसा पढ़ी, और मैं अनुभव करता हूँ कि मैं भी आपका बहुत आभारी हूँ। आपके पावडर और गोलियाँ दोनों के नुस्खे वास्तविक वरदान हैं।

मैं पथ्य-भोजन पर आगया था.....किन्तु मैंने नियमित रूप से आपके पावडर का सेवन किया, और आज मैं अपनी रुचि की प्रत्येक चीज खा सकता हूँ और अपने को स्वस्थ अनुभव करता हूँ। मैं आपके प्रति आभार प्रदर्शन करता हूँ।

(हस्ताक्षर) जे. [illegible]

मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर की व्यापक ख्याति उसकी हृदय-दाह, उदर-वायु, [illegible] मिचलाने एवं अपचन से होने वाले पेट के दर्दों के निवारण और आमवात [illegible] उदर-व्रण के विरुद्ध सुरक्षित रखने में वह प्रभावोत्पादकता का मान्य प्रमाण है।

"एलेक्स सी. मेकलीन" के हस्ताक्षरवाला मेकलीन ब्रांड स्टमक पावडर और गोलियाँ ही प्रामाणिक हैं।

MACLEAN Brand Stomach Powder

गोलियों के रूप में भी

Alex. C. Maclean

Copyright:

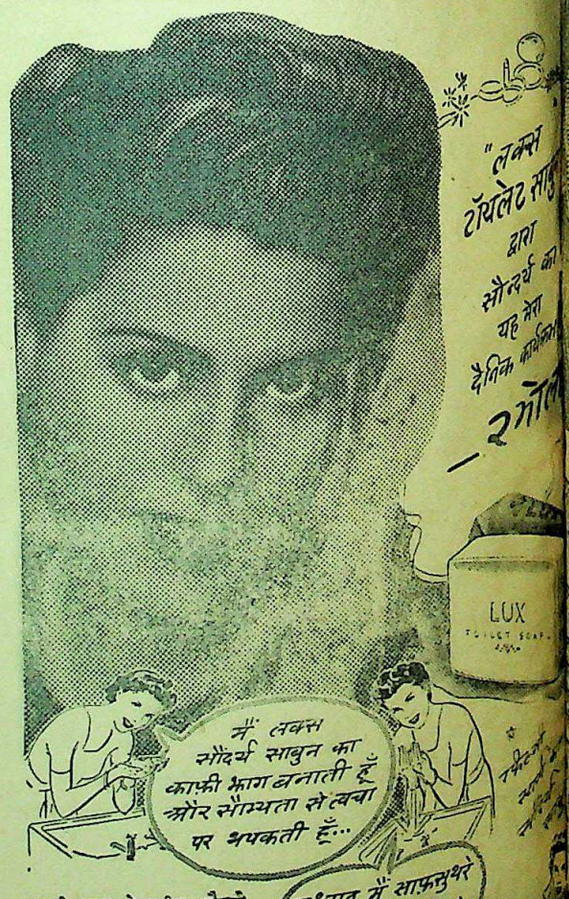

अपनी त्वचा को नवीन सौन्दर्य क्यों नहीं देते? ३० दिन के लिये रमोला का साधा सौन्दर्य-साधन [illegible]—आप लक्स टॉयलेट सा- [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...लेखका, श्रीमती तारा पाण्डेय। ...पुस्तक में श्रीमती तारा पाण्डेय की ...कविताओं का संग्रह किया गया ...इसमें संग्रहीत कविताओं में भावु... है और है सहृदयता का वेदनामय ...। मूल्य १) एक रुपया।

...प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

...या आज आपने ...लीन्स से दांत साफ़ किये हैं?

...तो रोज की ...दिनचर्या है।

...में काम करनेवाली आधु... ...नारी ने उत्तम गुणों को ...देना सीख लिया है। वह ...पसंद करती है क्योंकि ...एवं विकार-विरोध... ...में अनुपम गुण हैं और ...में वह सस्ता भी है। इसे ...चर्या का अंग बनाइये— ...मेकलीन्स का एक ट्यूब ...लीजिये।

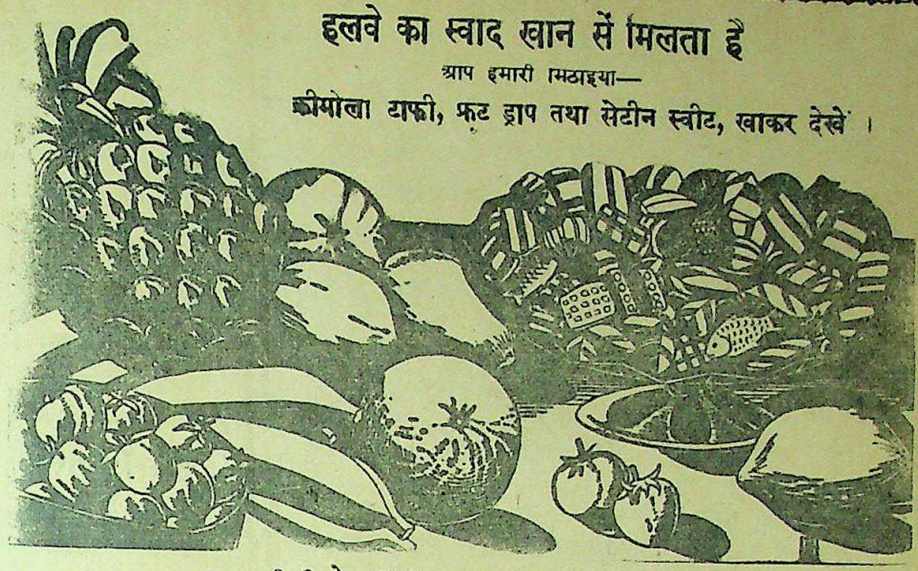

हलवे का स्वाद खान से मिलता है

आप हमारी मिठाइयां—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

गरीबों को लक्ष्मी, व्यापारियों को चांस, इज्जतदारों को इज्जत, नौकरों को उन्नति, सन्तानहीनों को सन्तान, आदि ही तो मनुष्य-जीवन का आनन्द और सच्चा स्वर्ग है।

वह जीवन ही क्या जहाँ सुख-सम्पत्ति न हो

शुभ महाचमत्कारी नवग्रह सिद्ध "यन्त्र" मँगाइये लाभ

प्रत्यक्ष गुण और शीघ्र फल देने की महान् शक्ति इसी यन्त्र में है। थोड़ा लिखना—यही इस यन्त्र की उत्तमता और सचाई का पक्का प्रमाण है। यह यन्त्र दुष्ट ग्रहों को शान्त कर रोजगार में लाभ, इम्तिहान में पास, मुकदमे में जीत, शत्रु पर विजय, राजदरबार में इज्जत, इच्छानुसार नौकरी मिलना, सन्तान लाभ, हर एक बीमारी से छुटकारा, खराब स्वप्न का नाश, दिल पसन्द शादी होना, अचानक आफतों से बचना, स्त्री-पुरुष वशीकरण, रेस-लाट्री में धन की प्राप्ति वगैरह जो सोचोगे वही कार्य सिद्ध होगा और हर सवाल का जवाब स्वप्न में विधि सहित बतायेगा। आप जिस काम का ध्यान करेंगे तुरन्त ही होगा। यदि विश्वास न हो तो कुछ प्रशंसा पत्र देखिये। फायदा न हो तो दाम वापस मँगा लो। शास्त्रोक्त न हो झूठा साबित करने से १०००) रु० इनाम। सन्तान के इच्छुक, दो सिद्ध नवग्रह यन्त्र मँगायें। स्त्री को दो नीलमणि या पुरुष को दो नीलमणि युक्त कम्पलीट एक नवग्रह सिद्ध यन्त्र का मूल्य २) रु०, चाँदी का ३) रु०, सोने का ६॥≡) रु० एक से अधिक चार कामों के लिए स्पेशल नम्बर २ मँगावें मूल्य ५॥≡) रु०, चाँदी का ६॥≡) रु०, सोने का १५॥≡) रु०। पाँच कामों से अधिक के लिए स्पेशल नम्बर १ मँगवावें मूल्य ६॥≡) रु०, चाँदी का १०॥≡) रु०, सोने का २६॥) रु०। यह बहुत शक्तिशाली है और सब काम पूर्ण होते हैं। डाक व्यय ।॥) आना अलग। ३ यन्त्र एक साथ मँगाने से डाकखर्च माफ। विदेशवालों से ५ शिलिङ्ग पेशगी। यन्त्र के लिए किसी प्रकार की पूजा-पाठ करनी न पड़ेगी। हर धर्मवाले के लिए समान लाभदायक है।

श्री आनन्द स्वामी जी की तीन अमूल्य सिद्धियाँ

विजय शक्ति—१२ से अधिक प्रत्येक कार्य अवश्य पूरे होंगे। कीमत :—साधारण १६॥।≡), २३॥-) चाँदी, ३५।=) सोने का। डा० मनीआर्डर खर्च अलग। आश्चर्यजनक दैवी-शक्तियों से भरपूर।

ब्रह्म शक्ति—जगत् की सभी शक्ति, भक्ति, मुक्ति, माया, महामाया, महायोग, योगमाया, ऐश्वर्य, मृत्युञ्जय आदि का स... श्रण है। इसकी तारीफ करना मनुष्य-शक्ति के बाहर है। केवल इच्छा करने की देरी होती है। सफल... सन्देह नहीं। पूर्ण विश्वास रखें, अविश्वास में मनुष्य सच्ची चीज को खो बैठता है। मूल्य ४५) ... इन... और रत्नों से जड़ी हुई ४१३) नवरत्नों से जड़ी हुई ७५१) डाकखर्च अलग। ...विरोध ...

धन कवच—द्वारा मनुष्य कुबेर जैसा धनवान् होने का शुभ अवसर प्राप्त करता है और लक्ष्मी उसकी ... उपस्थित ... घर में तमाम दुष्ट ... से घर में धन की वर्षा होती है ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीतल और सुरभित

तुम्हारे प्रतिदिन के प्रयोगार्थ

गर्मियों में अपने माथे, गर्दन और बाहों पर टाटा का ओ डी कोलोन लगाओ। इसका तीक्ष्ण शीतल स्पर्श आह्लादक है और गर्मी और थकावट को दूर करता है। इसकी कोमल सुगन्धि पहाड़ों से आते हुए वायु के शीतल झोंके के समान है।

यह तुम्हें ऐसे वैसे जलवायु में शीतल और ताजा रहने में सहायता करता है। सर्वदा टाटा के ओ डी कोलोन की एक शीशी पास रखकर प्रतिदिन प्रयोग करें।

टाटा का ओ डी कोलोन

दी टाटा आयल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

अध्यक्ष मथुरामोहन मुखोपाध्याय चक्रवर्ती
शक्ति औषधालय, ढाका के स्वनामधन्य संस्थापक

देशबन्धु सी० आर० दास की सम्मति—यह कारबार सुव्यवस्थित ढंग से चलाया जा रहा है। संचालकगण किसी प्रकार की भी त्रुटि नहीं होने देते।

सर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी की सम्मति—सोना, चाँदी, लोहा तथा अबरक आदि मूल्यवान् धातुओं के रस बहुत ही अनुभवी अधिकारियों की देख-रेख में तैयार किये जाते हैं।

सन् १९०१ ई० से जिन-जिन महान् व्यक्तियों ने अध्यक्ष मथुरा [illegible] शक्ति औषधालय को देखा है इसकी अद्भुत उपकारिता तथा [illegible]की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। संचालकों के साधुतापूर्ण [illegible] करने के [illegible]

परमात्मा पर भरोसा करो

और विश्वास करो कि धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, प्रमेह, निर्बलता, वीर्य [illegible] पानी के समान पतला होना, पेशाब के आगे-पीछे धातु का गिरना आदि को जड़ से नष्ट करने में हमारे **"वीर्यसंजीवनसत"** ने मान पाया है। हजारों प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। आप भी एक बार परीक्षा कीजिए। १ डिब्बा ३।–) डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग। यदि आपकी [illegible] में किसी प्रकार की कमजोरी या सुस्ती है तो हमारा जगत्प्रसिद्ध [illegible] रोगियों पर परीक्षा किया हुआ **"तिला मस्ताना"** की मालिश करें। इसकी मालिश से हर प्रकार की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी आदि दूर होती है। कीमत १ शीशी ३=), दो शी [illegible] डाक-खर्च माफ पैकिंग खर्च अलग।

रूप विलास कम्पनी, ४८१ धनकुट्टी, कानपुर

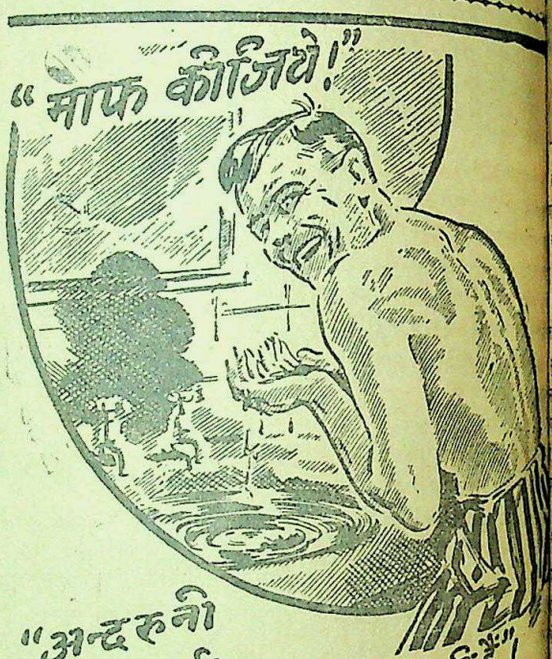

अधिकाधिक लोग यह अनुभव करने लगे हैं कि स्वास्थ्यके लिये एण्डरूजका सेवन कर अन्दरूनी सफाई अत्यावश्यक है। शरीरकी बाहरी सफाई जितनी आवश्यक है उतनी ही भीतरी। इसके लिये एण्डरूज का सेवन जरूरी है। एण्डरूज केवल रेचक ही नहीं, यह समस्त संस्थान को साफ कर विषाक्त मलको दूर करता है। इसका नियमित सेवन आपको पूर्णतः स्वस्थ बनाये रखता है।

इसका फल देखिये :—

प्रथम...एण्डरूज मुंह और जीभको साफ कर [illegible] तरोताजा बनाता है।

द्वितीय...एण्डरूज पेटको व्यवस्थित करके [illegible] को साफ करता है।

तब...एण्डरूज यकृतको ठीक रखता और [illegible] धिकत्यको रोकता है।

अन्ततः—एण्डरूज अन्दरूनी सफाई कर कब्जियत को दूर भगाता और रक्तको परिष्कृत और [illegible] रखता है।

ENO'S FRUIT SALT

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश दूत

वर्ष ६, संख्या १८] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, २६ दिसम्बर, १६४६

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

डाक्टर अमरनाथ झा। आपने प्रयाग विश्वविद्यालय के वाइसचांसलर के पद पर सफलतापूर्वक कार्य करने के बाद पद से त्यागपत्र दे दिया था। अब आप संयुक्तप्रान्तीय पब्लिक सर्विस कमीशन के सभापति नियुक्त हुए हैं।

मुस्लिम लीग के विधाता मिस्टर जिन्ना ने लौटते समय मिस्र और अरब में रुके। वहाँ भी उन्होंने अपना पाकिस्तान राग अलापा। मिस्टर जिन्ना ने कहा कि मुस्लिम राष्ट्र मेरा पाकिस्तानी मंत्र नहीं करते तो किसी न किसी हिन्दू साम्राज्य मध्यपूर्व को हड़प लेगा। अपने राम की समझ में अब यह आ रहा है कि ब्रिटिश साम्राज्य यहीं पर भविष्य में एक दूसरी आफत खड़ी करेगा। अब तक तो अँगरेजों को मुसलमान या हिन्दू साम्राज्य की परेशानी उठानी पड़ रही थी लेकिन जान पड़ता है कि मिस्टर जिन्ना पाकिस्तान की आड़ में मुस्लिम साम्राज्य की एक दूसरी आफत खड़ी करना चाहते हैं। और कोई समझे या न समझे लेकिन मिस्टर जिन्ना के इस कदम पर मिस्टर चर्चिल के समझने की दाद देनी पड़ेगी।

* *

यह बड़े अफसोस है कि मध्यपूर्व के अरबी देशों से मिस्टर जिन्ना खाली हाथ लौटे। मिस्र और अरब राष्ट्रों ने मिस्टर जिन्ना की पाकिस्तानी खंजरी के सुर में अपना सुर नहीं मिलाया। अपने राम जानते हैं कि मुस्लिम राष्ट्र स्वतन्त्र हैं, वहाँ अँगरेजी राज्य नहीं है कि वह पाकिस्तान की वाहवाही में शरीक हों। वह राष्ट्र अपने यहाँ से अँगरेजों का प्रभुत्व यों ही दूर कर रहे हैं, फिर उनके पाकिस्तान का समर्थन करने का अर्थ है ब्रिटिश साम्राज्य के साथ गठबन्धन।

* *

कहा जाता है कि महात्मा गांधी देशव्यापी सत्याग्रह आन्दोलन की तैयारी कर रहे हैं। हो सकता है क्योंकि ब्रिटेन अगर भारतीय विधान-सम्मेलन की गाड़ी नहीं चलने देगा और पकिस्तान का जू जू यों ही रेंगता रहेगा तो आखिर कांग्रेस के लिए भी तो कोई काम चाहिए न?

* *

नोआखाली

पण्डित सोहनलाल द्विवेदी

नोआखाली, तू हुई धन्य; उनके चरणों को चूम चूम,
जिनका महान् तप त्याग आज, तू नवजीवन में उठी झूम!
जल गये भवन, हो गये राख, है अंग अंग में रक्तधार,
यह भी तेरा है पुण्य आज, तुझको बापू का मिला प्यार!
तू आज देश की जटिल समस्या सुलझाने में उठी जगी,
है निखिल राष्ट्र की दृष्टि आज प्रतिपल तेरी ही ओर लगी।
तू आज बढ़ रही है करने उस नूतन युग का नवल सृजन,
निर्भय हों जिसके अधिवासी, हों स्नेह-सूत्र में बँधे स्वजन,
तू पथ-प्रदर्शिका बन नवीन, अन्यायों के आह्वानों पर,
हो आज विजयिनी तू अपने बल पर, अपने बलिदानों पर।

कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने यह निश्चय किया है कि प्रान्तों की गुटबन्दी के सम्बन्ध में संघ अदालत से निर्णय लेना बेवकूफी है। अपने राम भी समझते हैं कि फैसला बावन तोला पाव रत्ती ठीक है। महात्मा जी भी कहते हैं कि संघ-अदालत अपने मालिकों के खिलाफ कैसे जायेगी? विधान-परिषद् का अधिवेशन अभी स्थगित हो गया है इसलिए मुस्लिम लीग और ब्रिटिश सरकार सोच-समझ ले नहीं तो २० जनवरी से जहाँ विधान-सम्मेलन के अधिवेशन की रेलगाड़ी छूटी कि रुकना नामुमकिन है। इसलिए मुस्लिम लीग और ब्रिटिश सरकार को जल्दी से जल्दी कोई जंकशन स्टेशन तैयार कर लेना चाहिए।

* *

जिल्दसाजी का [illegible] करके ब्रिटिश भलेमानस [illegible] बुलाये जा रहे हैं। अपने राम की राय में यह अच्छा हो रहा है। चाय, टोस्ट, लंच, डिनर के साथ साथ अगर बरमा को स्वाधीनता भी ब्रिटिश मजदूरदल दे डाले तो बहुत बढ़िया है। लेकिन एटली साहब ने चर्चिल साहब से भी पूछ लिया है या नहीं? कहीं ऐसा न हो भारत की तरह बरमा को भी मजदूर-सरकार खटाई में डालने का रास्ता तैयार कर रही हो?

* *

हिन्दुस्तान में पाकिस्तान की हवा तो बह ही रही है लेकिन अब वह बरमा में भी बहनेवाली है। इसीलिए तो बरमा के एक देशभक्त ने पाकिस्तानपंथियों को ललकारा भी है। अपने राम की राय में बरमा के देशभक्त [illegible] जितना ललकारें [illegible]

बिहार के श्री सत्यनारायण सिनहा एम० एल० ए० विधान-सभा में कांग्रेस पार्टी के ह्विप चुने गये हैं।

स्थापना के लिए एक पत्र लिखा है। अपने राम की राय में अगर सोहरावर्दी साहब की बुद्धि दुरुस्त हो जाये तब तो बहुत ही अच्छा है, परन्तु उम्मीद कम है। क्योंकि एक होती है गुलामी, दूसरी होती है दर गुलामी। मिस्टर सोहरावर्दी पहले ब्रिटिश सरकार की सुनें और फिर जिन्ना साहब की। शान्ति स्थापना में कोई कसर नहीं लेकिन सुहरावर्दी साहब का दर गुलामी से पिंड तो पहले छूटे!

* *

बंगाल की मुस्लिम लीगी सरकार अपनी अलग खिचड़ी पकाने की कला में मशहूर है। भारत-सरकार आई० सी० एस० तथा अन्य सरकारी नौकरियों के सम्बन्ध में एक योजना बना रही है। बंगाल की लीगी सरकार भारत-सरकार से असहयोग करके सरकारी नौकरियों के लिये अपनी अलग लीला रचने जा रही है। बात सही भी है। जिन आई० सी० एस० वालों की बदौलत बंगाल को पाकिस्तान बनाने में अब तक कामयाबी मिलती रही है, उनको गुजर बसर के लिये तो कुछ होना ही चाहिए। लीगी सरकार बेवफाई कैसे कर सकती है?

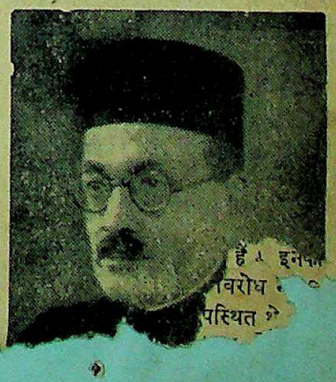

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

प्रान्तों की गुटबन्दी

ब्रिटेन की मजदूर-सरकार भी आजकल अपने वादे से मुकर गई है। गत ६ दिसम्बर की और १६ मई की उसकी भारत-सम्बन्धी घोषणा में आकाश-पाताल का अन्तर है। १६ मई को मन्त्रि-दल की घोषणा में संयुक्त भारत की एक स्पष्ट रूप-रेखा प्रस्तुत की गई थी, परन्तु ज्यों ही भारतीय विधान परिषद् अपना कार्य चलाने की ओर अग्रसर हुई, जिसमें स्वतन्त्र भारत का विधान तैयार किया जा रहा है त्योंही भयभीत होकर चर्चिल जैसे कंजरवेटिव नेता ने मजदूर-सरकार को वायदा-खिलाफी के लिए बाध्य कर दिया। प्रान्तीय गुटबन्दी—पाकिस्तान में वह प्रान्त भी जिनके निवासी पाकिस्तानी प्रान्त में (अथवा अलग) नहीं रहना चाहते जबर्दस्ती गुटबन्दी में शरीक कर दिये गये हैं। कांग्रेस गुटबंदी के मामले को संघ-न्यायालय में भेजने के लिये सोच रही थी, परन्तु महात्मा जी संघ-न्यायालय में जाने के पक्ष में नहीं हैं। उन्होंने एक वक्तव्य में कहा भी है—"संघ-न्यायालय पर कांग्रेस का जितना विश्वास है वह मेरी दृष्टि में भ्रम जान पड़ता है। ग्रूपों के मामले में संघ-न्यायालय वही रुख धारण करेगा जो उसके निर्माताओं ने किया है क्योंकि ब्रिटिश सरकार ही ने तो संघ-न्यायालय को बनाया है।" इसके अतिरिक्त अन्य विधान-मर्मज्ञ भी इस पक्ष में नहीं हैं कि ग्रूपों का मामला संघ-न्यायालय के सिपुर्द किया जाय। सर गोपाल स्वामी अयंगर ने कहा है—"संघ-न्यायालय को हमारी किसी समस्या से सम्बन्ध नहीं है। विधान-परिषद् पर न तो ब्रिटिश सरकार का कोई प्रतिबन्ध हो सकता है और न लीग की कोई अड़चन इसके कार्य में अड़ंगा डाल सकती है।" विधान-परिषद् के कुछ कांग्रेसी सदस्य इस पर भी कहते हैं कि 'ब्रिटिश सरकार का ६ दिसम्बर का वक्तव्य १६ मईवाले वक्तव्य पर कोई प्रभाव नहीं डालता' इन सब नई बातों को ऐसे समय में उठाना कितना भ्रमोत्पादक है। इसलिये कांग्रेस की दृष्टि में १६ मई का वक्तव्य सर्वदा अटल रहेगा क्योंकि लार्ड पेथिक लारेंस ने पहली जून को मास्टर तारासिंह के नाम जो पत्र लिखा था उसमें भी वे लिखते हैं—"मन्त्रिदल, वक्तव्य में न तो कुछ जोड़ना चाहता है और न नये विचार बढ़ायेगा।" इस वक्तव्य से भी स्पष्ट है कि १६ मई का वक्तव्य ज्यों का त्यों बना रहेगा, उसमें कोई संशोधन हो नहीं सकता है। फिर किसी को ६ दिसम्बर के वक्तव्य को लेकर नई नई टीका करना कहाँ तक न्याय-संगत है? [illegible] सब बातों पर विचार करके [illegible] मेटी ने अंत में यह निश्चय [illegible] की गुटबंदी के प्रश्न [illegible] हल [illegible] व्यर्थ है।

सरकार में सम्मिलित हुए हैं। यदि वे १६ मई के वक्तव्य को अमान्य ठहराते तो अस्थायी सरकार में वह क्यों बने रहते? इसके अतिरिक्त लीग कार्यकारिणी की बैठक भी बम्बई की बैठक के बाद नहीं हुई फिर कैसे कहा जा सकता है कि लीग संयुक्त भारत की माँग को नहीं स्वीकार करती? इसलिये ग्रूपों का नया प्रश्न ही नहीं उठाना चाहिए।

वास्तव में स्थिति यह है कि गुटबंदी का प्रश्न विधान-परिषद् में उठाया जाता तो शायद कुछ प्रान्त उसमें कतई न शामिल होते। आसाम तो बहुत पहले से ग्रूपों में सम्मिलित होने के विरुद्ध है। श्री बारदोलाई ने अपने दो प्रतिनिधियों को महात्मा गांधी के पास इसी उद्देश्य से भेजा था कि आसाम को क्या करना चाहिए जब कि उसके निवासी बंगाल के लीगी शासन को देखकर अभी से भयभीत हो रहे हैं। आसाम बंगाल के ग्रूप में रहना नहीं चाहता। महात्मा जी ने उन प्रतिनिधियों को अपनी राय दी है कि 'यदि आसाम नहीं चाहता तो उसको अपनी आत्मा का हनन न करना चाहिए। संसार की पूरी शक्ति का उसे विरोध करना चाहिए। उन्हें बंगाल का शासन तो किसी रूप में मानना ही पड़ेगा।' इसके अतिरिक्त डाक्टर खान साहब सीमाप्रान्तीय सरकार के प्रधान मंत्री ने भी कहा है—'सीमाप्रान्तीय जनता ग्रूपों से घबड़ाती नहीं, वह अपनी स्वतन्त्रता के लिए लड़ेगी। कोई भी शक्ति उसे जबर्दस्ती किसी दूसरे के साथ जोड़ने को बाध्य नहीं कर सकती।'

कुछ काल पूर्व सीमाप्रान्त पंजाब में सम्मिलित था और किसी प्रकार वह अलग हुआ। ब्रिटिश सरकार आज उसे फिर उसी में सम्मिलित करना चाहती है, परन्तु पठान उसे बर्दाश्त नहीं कर रहे हैं। सिन्ध भी तो बम्बई प्रांत में सम्मिलित था किन्तु सिन्ध के मुसलमान बम्बई में सम्मिलित रहना नहीं चाहते। सिन्ध स्वयं एक प्रान्त बन गया। फिर अन्य प्रान्तों को क्यों दूसरों के साथ शामिल करना चाहिए? यदि इसके प्रतिकूल कार्य किया जायगा तो प्रान्तीय स्वराज्य की स्पष्ट हत्या होगी।

कांग्रेस वर्किंग कमेटी अपने निर्णयों के अनुसार प्रान्तों को भाषा के अनुसार अलग प्रान्त बनाने को स्वीकार कर चुकी है। उसी आधार पर उसने पुनः घोषित किया है कि वह संघ-अदालत में नहीं जायेगी। उधर मिस्टर जिन्ना कैरो की सभा में घोषणा करते हैं कि यदि पाकिस्तान स्वीकार न किया गया तो भारतीय मुसलमान हिन्दू समाजवादियों के शिकार हो जायँगे। वह चीज तो दूर रही अभी वे उन प्रान्तों को जो पाकिस्तानी ग्रूपों में नहीं शामिल होना चाहते जबर्दस्ती अपने अधिकार (पाकिस्तान) में करना [illegible] चाहते हैं [illegible] यह [illegible]

सेवाग्राम

लेखक, डाक्टर अमरनाथ झा

किं कवेस्तस्य काव्येन, किं काण्डेन धनुष्मतः
परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः!

संस्कृत-साहित्य में विश्वप्रेम प्रचुर मात्रा में है, परन्तु स्वदेशप्रेम का चिह्न कम है। हमारे पूर्वजों का तो मत था "वसुधैव कुटुम्बकम्"। संसार-मात्र एक है, ईश्वर की समस्त सृष्टि एक है, मानव-जगत् एक है, ऐसी उनकी धारणा थी; परन्तु आधुनिक ऐतिहासिक घटनाओं के कारण सम्पूर्ण जगत् में राष्ट्रीयता का भाव फैल गया है। पहले अपना देश, फिर अन्य देश—यह आज का गान है। इसकी आवश्यकता भी है। पश्चिमीय सभ्यता के बाह्य आडम्बर से हमारे मन में यह भाव उत्पन्न हो गया है कि जो कुछ आज आविष्कार हो रहा है, जो कुछ हमको अन्य देश में देख पड़ता है, जो कुछ हम विदेशीय साहित्य, विदेशीय राजनीति, विदेशीय दर्शन में पाते हैं, वही अनुकरणीय है और अपने देश की परम्परागत सभ्यता, अपना दर्शन, अपना साहित्य, अपने आदर्श गर्हणीय हैं, तिरस्कार योग्य हैं। प्राचीनता और नवीनता का समन्वय उचित है। "पुराणमित्येव न साधु सर्वम्", परन्तु नवीन वस्तुओं का ग्रहण करना, केवल इसलिए कि वे नवीन हैं, उचित नहीं है। आज की परिस्थिति में हमें यह सोचना है कि हमारे देश के किन आदर्शों को हम सुरक्षित रक्खें जिनसे हमारा और विश्व का कल्याण हो। हमें यह शिक्षा अपने शास्त्रों से मिलती है कि हमारा प्रधान धर्म है कि अपने चित्त को शान्त रखकर आनन्द प्राप्त करें। हमारा प्रयास विश्व में शान्ति स्थापित करना, होना चाहिए। हम सबसे सुहृद् भाव रक्खें। हम पृथ्वी के जीवन को अपने आरम्भ और अन्त न समझें। हम आदर्शों और अपने कर्त्तव्य के पालन में अपने प्राण खोने से न घबराएँ। जिसने माया और ममता को छोड़कर राष्ट्रसेवा की है उसकी प्रशंसा करें, उसका अनुकरण करें। 'सेवाग्राम' में इसी आदर्श को सामने रखकर कवितायें लिखी गई हैं।

आज के कवियों में श्री सोहनलालजी द्विवेदी की कविताओं की राष्ट्रीयता तथा प्रभावोत्पादकता से साहित्य-मर्मज्ञ बहुत प्रभावित हैं। आपके काव्य बच्चे आनन्द से पढ़ते हैं, उनका मनोरंजन होता है। युवकों को इससे प्रोत्साहन मिलता है, नई चेतना मिलती है। प्रौढ़ पाठकों को इसमें विचार की गम्भीरता देख पड़ती है। सत्काव्य का लक्षण यह है कि वह सद्यः हृदयग्राही हो; अतः सोहनलालजी की कविता अवश्य उच्च कोटि की है। इसमें प्रत्येक रुचि को सन्तुष्ट करने की सामग्री है। देश-प्रेम और देश-भक्ति से तो पद-पद अनुप्राणित है। नवीनता के साथ-साथ प्राचीनता का सम्मिश्रण है। अहिंसात्मक जन-आन्दोलन की झलक इन कविताओं में है, [illegible] फिर भी कवि का दृष्टिकोण [illegible] प्रशंसनीय [illegible]

'सेवाग्राम' के कवि पं० सोहनलाल द्विवेदी [illegible] विशेष की इससे कोई क्षति हो अथवा [illegible] मान हो। द्विवेदी जी की कृति [illegible] रसपूर्ण तथा शक्तिपूर्ण है। [illegible] श्री सोहनलालजी की कविताओं [illegible] संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। [illegible] उपयुक्त झरना, शिशु-भारती, [illegible] बताशा, पाँच कहानियाँ [illegible] संग्रह हैं। इनको बच्चे पढ़कर [illegible] हो सकते हैं और शिक्षा ग्रहण [illegible] हैं। वासवदत्ता, हिन्दी-साहित्य [illegible] अनूठी रचना है। कुणाल में [illegible] अतीत भारत की स्मृति के साथ [illegible] चरित्रों का सुन्दर परिचय मिलता [illegible] भैरवी से स्वदेश-प्रेम जागृत होता [illegible] युगाधार, पूजागीत तथा प्रभाती [illegible] चेतना के काव्य-संग्रह हैं। इन [illegible] कवि को लोकप्रियता तथा प्रचुर [illegible] प्राप्त हुआ है। परन्तु इसमें सन्देह [illegible] 'सेवाग्राम' का स्थान इन सबसे ऊँचा [illegible]

उस खांसी को रोक दीजिये

वीनोज की एक बोतल लीजिये और [illegible] खांसी को रोक दीजिये। खांसी, सर्दी, [illegible] सूजन, गले का पड़ना और बालकों की [illegible] वीनोज लाइटनिंग कफ क्योर ही [illegible] विश्वासपात्र उपचार है। यह गले की [illegible] मिटाता है और छाती के दर्द को [illegible]

वीनोज खांसी के लिये अच्छा है अच्छा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय संस्कृति का आदर्श

संसार की शान्ति के लिए अहिंसा की क्यों जरूरत है?

लेखक, देशरत्न डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद

भारत-सरकार के खाद्य-सदस्य डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जी ने पिछले दिनों हिन्दू-विश्व-विद्यालय काशी के वार्षिकोत्सव के अवसर पर दीक्षांत भाषण दिया था। उस भाषण में राजेन्द्र बाबू ने विश्व-विद्यालयों के अधिकारियों का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित किया था कि शिक्षा का माध्यम हिन्दी होना चाहिए। इसके साथ ही भाषण में भारतीय संस्कृति के आदर्शों की ओर भी जनता का ध्यान आकर्षित किया गया था। यह लेख उसी भाषण का एक अंश है, जो सामयिक और विचारणीय है।

लेखक डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद।

हमारे ऋषि बहुत करके निर्जन स्थानों में रहकर तपस्या किया करते थे और ज्ञान और विद्या के चाहनेवाले वहाँ पहुँचा करते थे। राजाओं और भूपतियों के कुमार भी वहाँ ही जाकर सब प्रकार की विद्या प्राप्त किया करते थे। विद्या प्राप्त करके संसार के काम में सब लोग लग जाया करते थे। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि वहाँ केवल साधु फकीर ही तैयार होते थे, बल्कि योद्धा भी शस्त्र-विद्या वहाँ ही सीखा करते थे। श्री रामचन्द्र को महर्षि विश्वामित्रजी ने धनुर्विद्या का ज्ञान दिया था। श्रीकृष्ण को विद्याभ्यास के लिए सानुद्दीपन मुनि के यहाँ जाना पड़ा था। इन ऋषियों के विद्यार्थियों का जीवन आज के जीवन से बहुत भिन्न था। विद्या का क्रय-विक्रय नहीं हुआ करता था। गुरु-दक्षिणा समिधा और सेवा के रूप में ही दी जाती थी और कुलपति केवल विद्यादान ही नहीं देता था—बल्कि विद्यार्थियों को भोजन भी दिया करता था। इसका फल यह होता था कि समाज में विद्या की प्रतिष्ठा होती थी और विद्वान् की प्रतिष्ठा की माप उसकी सम्पत्ति नहीं, बल्कि विद्वत्ता हुआ करती थी। विद्यादान सबसे बड़ा दान समझा जाता था और विद्वान् निर्धन होने पर भी प्रतिष्ठा के पात्र समझे जाते थे। विद्या, बल और धन तीनों के लिए अलग अलग स्थान हमारे समाज में दिये गये थे और सबसे ऊँचा स्थान विद्या और ज्ञान को ही मिला था, उसके बाद बल को और तब धन को। आज के संसार में यह बात नहीं रही। आज तो किसी भी देश या व्यक्ति की प्रतिष्ठा धन अथवा बल से ही मापी जाती है। और इन दोनों का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध भी हो गया है। बल, धन उपार्जन के लिए प्रयोग में लाया जाता है और धन, बल उपार्जन के लिए। इसका नतीजा संसार में हम देख रहे हैं। विद्या, धन और बल की संचारिका अब नहीं रह गई अब उनकी सेविका बन गई और वह उसके द्वारा जो अनर्थ कराना चाहते हैं करा लेते हैं। आज इसीलिए संसार के बड़े से बड़े विद्वानों की शक्ति घातक शस्त्रों के आविष्कार और निर्माण में लगाई जा रही है। लोगों ने मान लिया है कि भौतिक समृद्धि और सुख ही मनुष्य का एकमात्र लक्ष्य है और उसके लिए जो कुछ भी किया जाय वह सराहनीय है। हमारे समाज के निर्माताओं ने तथा दूरदर्शी ऋषियों ने विद्या, बल और धन की मर्य्यादा बाँध रखी थी। विद्या और ज्ञान रखनेवाले को न तो बल और न धन हुआ करता था। बल रखनेवाले को धन नहीं और धन रखनेवाले को बल नहीं। सभी अपनी मर्य्यादा के अन्दर देश और मानव-मात्र का हित-साधन ही अपना परम कर्तव्य समझा करते थे। इसलिए ब्राह्मण गरीब हुआ करते थे, पर उनकी प्रतिष्ठा सबसे अधिक थी। क्षत्रिय बलवान् हुआ करते थे, पर अपना बल दूसरों को सताने में नहीं बल्कि उनकी रक्षा में लगाया करते थे। उनके पास धन विशेष करके नहीं हुआ करता था, पर वह एक ओर ब्राह्मण को यद्यपि वह निर्धन और अबल हुआ करता था, सर झुकाया करते थे और दूसरी ओर वैश्य के धन का लालच न करते हुए उसकी रक्षा किया करते थे। वैश्य अपने धन से सबकी सेवा किया करते थे और धन द्वारा किसी को खरीदने का प्रयत्न नहीं किया करते थे। इस चित्र की थोड़ी सी झलक आज भी जहाँ-तहाँ मिल सकती है और भारतवर्ष के मध्यकालीन युग में तो इसका अच्छा दर्शन हो सकता है। क्या इस समाज-संगठन का मौलिक तत्त्व सत्य और अहिंसा के सिवा और कुछ हो सकता है? आज हम मनुष्य के व्यक्तित्व पर भरोसा न करके बाहर के बन्धनों पर अधिक भरोसा करने लगे हैं और हम आशा करते हैं कि यदि व्यक्ति का सुधार न भी हो तो भी इन बाह्य बन्धनों के बल से हम समाज का सुधार कर सकते हैं। यह प्रयत्न पानी की दीवार खड़ी करने अथवा बालू की रस्सी बटने जैसा प्रयत्न है। यह विचारणीय है कि आखिर इन बाह्य बन्धनों का निर्माता कौन होगा? इनको कायम रखने का भार किस पर होगा? हम यदि आशा करें कि समाज में कुछ लोग ऐसे पैदा हुआ करेंगे जो उन बन्धनों के निर्माण में उन सब गुणों का ही व्यवहार किया करेंगे, जिनके बिना कोई भी समाज चल नहीं सकता और समाज के दूसरे व्यक्ति सबके सब इन बन्धनों के बिना कुछ कर ही नहीं सकते हमेशा इधर-उधर बहकते रहेंगे। उनको ठीक रास्ते पर रखने के लिए बंधन अनिवार्य है—तो हम एक अनहोनी बात की मृगतृष्णा में लगे रह जायँगे। समाज की उन्नति के लिए व्यक्ति की उन्नति आवश्यक है। उसके बिना समाज एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता और हमको फिर एक न एक दिन व्यक्तियों की उन्नति की ओर जाना पड़ेगा और यह रास्ता छोड़ना पड़ेगा। हमारे समाज का निर्माण इस तरह व्यक्ति के आधार पर ही हुआ है और हम इस आधार को छोड़ नहीं सकते। इसे छोड़ना हमारे लिए ही नहीं बल्कि संसार के लिए अत्यन्त भयंकर होगा। हमको चाहिए कि हम इस आदर्श को न भूलें। प्रत्येक विद्यार्थी के लिए उन व्रतों का पालन अनिवार्य होना चाहिए, जिनको आज के एक दूसरे अवतारी पुरुष ने अपने साथियों के लिए अनिवार्य बताया है।

महात्मा गांधी जी ने आश्रमवासियों और अपने सहकर्मियों के लिए नित्य की प्रार्थना में इन व्रतों को एक श्लोक द्वारा स्मरण कराते रहने का नियम बना लिया है :—

अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य्य असंग्रहः
शरीरश्रम अस्वादः
सर्वत्र भय वर्जनः
सर्व धर्मी समानत्वः
स्वदेशी स्पर्श भावना
ही एकादश सेवा मि
नम्रत्वे व्रत निश्चये।

ये वे ही व्रत हैं जो प्राचीन काल से माने जाते रहे हैं। इनका रूप आज। विरोध [illegible] अनुपस्थित [illegible]

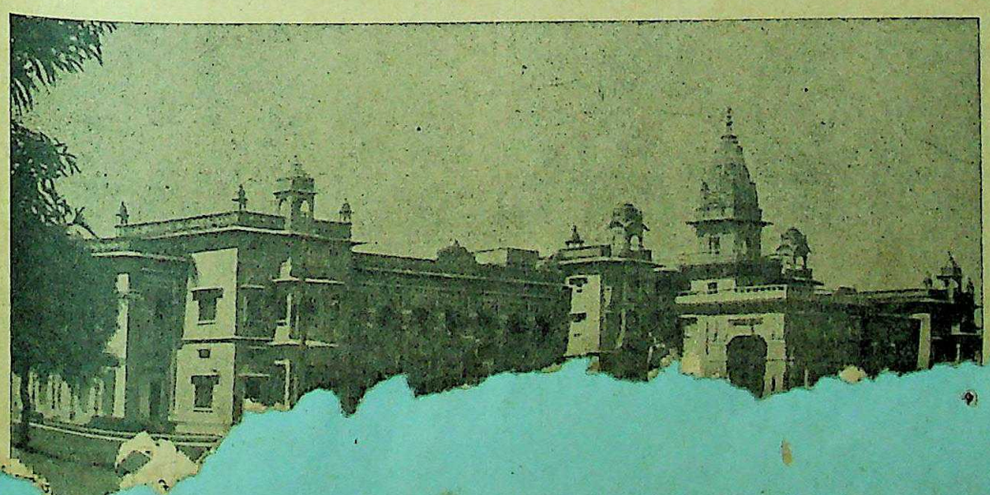

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूनान में आज का प्रजातंत्र

जनता की आर्थिक दासता से मुक्ति का मार्ग

लेखक, श्री चन्द्रोदय दीक्षित

यूनान में आज भी प्रजातन्त्र की सुरक्षा के लिए युद्ध हो रहा है। साम्राज्यवादी राष्ट्र यूनान पर अपना प्रभुत्व किसी न किसी रूप से बनाये रखना चाहते हैं। इस लेख में थोड़े में यूनान में घटित होनेवाली राजनैतिक घटनाओं का सिंहावलोकन किया गया है और आज की परिस्थिति का समर्थन किया गया है कि जन-तन्त्र की स्थापना ही राष्ट्र की जनता के लिये हितकर है।

यूनान अपनी प्राचीन संस्कृति और दर्शन के लिए सर्वत्र श्रेष्ठ समझा जाता है। गत महायुद्ध के बाद यूनान जर्मन-दासता से मुक्त हो गया—समाचार-पत्रों में आये हुए समाचारों से ज्ञात हुआ कि यूनान का आन्तरिक संघर्ष इतना तेज हो गया है कि वह गृह-युद्ध के रूप में परिवर्तित हो गया। ब्रिटेन की सेनाओं ने जो यूनान में शान्ति-रक्षा के लिए थीं, एक दल का साथ दिया और ई० ए० एम० दल का शत्रु की भाँति दमन किया। लेकिन साथ ही यह भी घोषणा हुई कि यूनान पूर्ण प्रजातांत्रिक रूप से अपने भाग्य का निर्णय करेगा। दोनों दलों को जनता के निर्णय की प्रतीक्षा करनी पड़ी। जनता ने अपना निर्णय दिया और प्रजातांत्रिक रूप से यह निर्णय दिया गया कि यूनान में राजा का राज्य होगा और यूनान की व्यवस्था में कोई आमूल परिवर्तन न होगा। आज के युग में किसी देश की जनता द्वारा यह माँग करना कि वह एक राजा के राज्य में रहना चाहती है, कम आश्चर्य की बात नहीं है।

यूनान को स्वतंत्र हुए करीब एक शताब्दी से अधिक हो गया है। इसके पहले वह तुर्की साम्राज्य का अंग था। यूनान का प्रथम राजा बवेरिया का ओटो था इसे सेना के अधिकारियों ने सिंहासन से हटा दिया। दूसरे राजा जार्ज प्रथम को १९१२ में कत्ल कर दिया गया इसके बाद कांस्टेन्टाइन तृतीय राजा हुआ इसे सन् १९१७ में मित्रराष्ट्रों ने गद्दी से उतार दिया। कांस्टेन्टाइन के बाद वर्तमान यूनान के राजा जार्ज के छोटे भाई एलेक्जेण्डर को राजा बनाया गया परन्तु उसकी शीघ्र ही मृत्यु हो गई। एलेक्जेण्डर की मृत्यु के बाद कांस्टेन्टाइन को पुनः गद्दी पर बैठाया गया। यूनान तुर्क-युद्ध के समय कांस्टेन्टाइन को देश छोड़ना पड़ा। इसके बाद वर्तमान राजा जार्ज के सिर पर यूनान का राजमुकुट रखा गया। प्रथम महायुद्ध के युद्धोत्तर काल में योरोप में जो क्रान्ति की लहर आई थी उससे यूनान अलग न रह सका और सन् १९२४ में यूनान ने अपने को जनतन्त्रात्मक राज्य घोषित कर दिया। सन् १९२४ से १९३५ तक यूनान की राजव्यवस्था जनतन्त्रात्मक रही। राजा जार्ज [illegible] ने को बाध्य हुए और [illegible] शासन को [illegible]

यूनान के राजा किंग जार्ज की

कुछ झुकाव हुआ होगा परन्तु राजा प्रजातन्त्र के सिद्धान्तों से प्रभावित हो यह बात ही विरोधाभास को प्रकट करती है। राजा जार्ज ने जनरल मेटाक्साज की तानाशाही स्थापित की। सन् १९४०-४१ में हिटलर के आक्रमण ने इस व्यवस्था को नष्ट करके यूनान में हिटलर के सैनिक-शासन का सूत्रपात किया। युद्ध के समाप्त हो जाने पर वहाँ की व्याकुल जनता ने जो निरन्तर हिटलर के विरुद्ध युद्ध में संलग्न रही थी देश में जनतन्त्र की स्थापना की चेष्टा की। परन्तु मित्रराष्ट्रों के विभाजन के अनुसार यह मान लिया गया था कि यूनान ब्रिटेन के प्रभाव-क्षेत्र में है।

बाल्कन राज्य योरोपीय कूटनीति के अखाड़े के रूप में है उसके दो कारण हैं एक तो औद्योगिक रूप से यह देश पिछड़े हुए हैं, इनकी सरकारें कमजोर हैं और यह एक संगठित आधुनिक राष्ट्र के रूप में संगठित नहीं है। दूसरा कारण इन देशों में सबसे ज्यादा तेल के कुएँ हैं। यूनान इन्हीं बाल्कन देशों का दरवाजा है इसीलिए प्रत्येक साम्राज्यवादी देश उसे लालायित नेत्रों से देखता है। ब्रिटेन का द्वितीय महायुद्ध से पहले यूनान पर कब्जा था और यूनान की स्थिति किसी भी औपनिवेशिक देश से अच्छी नहीं थी। ब्रिटेन की यह कदापि इच्छा नहीं हो सकती कि यूनान वास्तव में एक स्वतन्त्र राष्ट्र बन सके और यही कारण है कि यूनान में होनेवाले "प्रजातन्त्र" के नाटक के द्वारा यह प्रमाणित किया गया कि जनता जनतन्त्र नहीं चाहती; वह राजा के राज्य में रहना पसन्द करती है। आज प्रजातन्त्र का उपहास इससे अधिक और क्या हो सकता है। यूनान में जो निर्वाचन हुआ है वह कितना दोषयुक्त था इसके सम्बन्ध में कुछ कहना अनुपयुक्त न होगा। देश [illegible]

किया गया। प्रजातन्त्र के लिए मत माँगनेवाले और मत देनेवालों को अपराधियों की भाँति समझा जाने लगा और उन्हें प्रत्येक सुविधा से वंचित कर दिया गया। इन सब बातों के बावजूद जनता ने ३० प्रतिशत मत जनतन्त्र के लिए दिये। यूनान में जनतन्त्र समाप्त हो गया है लेकिन वहाँ की जनता का जनतन्त्र के लिए संघर्ष समाप्त नहीं हुआ।

यूनान की इन घटनाओं से हमें एक ऐतिहासिक पाठ मिलता है कि जनतन्त्र केवल कोरी कल्पना बनकर नहीं टिक सकता। आज की आवश्यकता के अनु- [illegible] आवश्यक है [illegible]

संयुक्तप्रान्तीय सरकार और श्रमजीवी पत्रकारों की जाँच

ज्योतिप्रसाद निर्मल

संयुक्तप्रान्तीय सरकार श्रमजीवी पत्रकारों की स्थिति की जाँच करने के लिए एक जाँच-समिति बनानेवाली है। श्रमजीवी पत्रकारों की स्थिति की ओर सरकार का ध्यान गया, वास्तव में यह प्रसन्नता की बात है। प्रान्त में कांग्रेसी सरकार स्थापित है इसलिए जनता के हित में रात-दिन मरने और पिसनेवाले श्रमजीवी पत्रकारों की स्थिति की ओर उसका ध्यान जाना अनिवार्य भी है। लोकप्रिय सरकार जहाँ प्रान्त के अन्य विभागों के श्रमजीवियों की हित-चिन्तना की ओर कदम बढ़ा रही है तो पत्रकारों की हित-चिन्तना की ओर से वह कैसे मौन धारण किये रह सकती थी? इसलिए सरकार इस नये कदम उठाये जाने के लिए बधाई की पात्र है।

श्रमजीवी पत्रकारों का यद्यपि जनता की सेवा की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण स्थान है किन्तु सरकारी दृष्टि से यह एक प्रकार से उपेक्षित वर्ग समझा जाता रहा है। श्रमजीवी पत्रकार एक प्रकार से सदा से विद्रोही करार दिये जाते रहे हैं, विशेषकर हिन्दी के श्रमजीवी पत्रकार तो सरकार की निगाह में सदा से गैर जिम्मेदार माने जाते रहे हैं। लेकिन आज प्रान्त में अपनी सरकार है, इसलिए वह इस उपेक्षित वर्ग की उपेक्षा कैसे कर सकती थी? क्योंकि वह अपनी तथा श्रमजीवी पत्रकारों की जिम्मेदारी का अनुभव करती है। इसीलिए वह अन्य श्रमजीवी जमातों की भाँति श्रमजीवी पत्रकारों की दशा सुधारने की ओर भी अपना नया कदम बढ़ाने जा रही है।

श्रमजीवी पत्रकारों की स्थिति के सुधार के लिए सरकार का क्या कर्तव्य है, वह किस प्रकार इस सार्वजनिक समस्या को सुलझा सकती है, इस पर हम फिर कभी प्रकाश डालेंगे किन्तु इस वक्त यह स्पष्ट करने की जरूरत है कि जो जाँच-समिति सरकार बनाने जा रही है, वह इस प्रकार बनाई जाये जिससे श्रमजीवी पत्रकारों की स्थिति की पूरी तरह जाँच-पड़ताल हो सके और वास्तविकता के आधार पर ही जाँच-समिति अपनी रिपोर्ट तैयार करके सरकार के सामने पेश कर सके। जाँच-समिति के संगठन में हिन्दी के [illegible] पत्रकारों का प्रतिनिधित्व अधिक [illegible] चाहिए क्योंकि उनकी स्थिति [illegible] श्रमजीवी पत्रकारों की स्थिति से [illegible] अधिक दयनीय और दुर्दशाग्रस्त [illegible] हिन्दी के श्रमजीवियों को परिश्रम [illegible] अँगरेजीवालों से तिगुना-चौगुना [illegible] पड़ता है फिर भी आर्थिक दृष्टि [illegible] बहुत गये बीते हैं। जाँच-समिति के [illegible] में सरकार अँगरेजी के श्रमजीवी पत्रकारों [illegible] प्रतिनिधित्व की उपेक्षा तो कर [illegible] सकती क्यों कि यह युग अँगरेजी का [illegible] हिन्दी के श्रमजीवी पत्रकारों के [illegible] की ओर विशेष ध्यान देने की [illegible] कता है। हमारी राय में केवल [illegible] प्रेस कान्फ्रेंस की स्थायी समिति [illegible] प्रेस परामर्शदात्री समिति के सदस्यों [illegible] ही जाँच-समिति के संगठन की [illegible] निर्धारित नहीं की जानी चाहिए। [illegible] पी० प्रेस कान्फ्रेंस भी अभी तक [illegible] प्रांत के सभी छोटे व बड़े पेशों [illegible] उनसे सम्बन्ध रखनेवाले कार्यकर्त्ताओं [illegible] एक-मात्र प्रतिनिधि संस्था नहीं [illegible] है। केवल श्रमजीवी पत्रकारों की [illegible] प्रमुख संस्था कहना तो और भी [illegible] स्पद है। इसमें नाना प्रकार के [illegible] पाये जाते हैं। यू० पी० प्रेस कान्फ्रेंस [illegible] ऐसा संगम है जिसमें प्रेस से [illegible] राजा से रंक तक गोता लगाकर [illegible] बनते तथा पत्रकार-पद प्राप्त करते [illegible] इसलिए हमारी स्पष्ट राय है कि [illegible] की ओर से स्वतन्त्र रूप से श्रमजीवी [illegible] कारों की जाँच-समिति का संगठन [illegible] चाहिए। समिति में पत्रों का प्रतिनिधित्व [illegible] नहीं वरन् पत्रकारों का हो और ऐसे [illegible] कारों का जो वास्तव में श्रमजीवी [illegible] हिन्दी-उर्दू के श्रमजीवी पत्रकारों [illegible] अधिक से अधिक समिति में स्थान [illegible] चाहिए। इस प्रकार के पत्रकारों से [illegible] समिति संगठित होगी वही [illegible] पत्रकारों की स्थिति की वास्तविक [illegible] जाँच-पड़ताल करके रिपोर्ट तैयार [illegible] सकेगी, जो स्वयं अपने में पूर्ण होगी [illegible] ऐसी समिति के सदस्यों के सामने [illegible] ध्येय होगा और अपनी समस्या को [illegible] की एक लगन होगी। समिति के [illegible] प्रान्त के प्रेसों तथा उनके अन्तर्गत [illegible] के काम करनेवालों की स्थिति की [illegible] लिए नहीं हो रहा है, बल्कि केवल [illegible] जीवी पत्रकारों (अँगरेजी, हिन्दी, [illegible] अन्य भाषा-भाषी) की स्थिति की [illegible] लिए; इसलिए केवल श्रमजीवी [illegible] का प्रतिनिधित्व समिति में होना [illegible] है। 'लीडर' और 'पत्रिका' होते [illegible] के पत्रों को छोड़कर इस प्रान्त में [illegible] हिन्दी के पत्र प्रकाशित होते हैं, [illegible] पत्रों के अनुपात की दृष्टि से ही [illegible] होना चाहिए। हमें आशा है कि [illegible] विभाग के मंत्री माननीय [illegible] तथा सूचना-विभाग के पार्लियामेन्टरी [illegible] पंडित केशवदेव मालवीय, यदि [illegible] संगठन [illegible] हमारे इस [illegible] की कृपा करेंगे [illegible] की पूर्ति के लिए [illegible] चाहती है, उसमें [illegible] हो सकेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ष्ट्र-संघ में भारत की विजय

...क्षिण अफ्रीका में गोरों के प्रभुत्व के विरुद्ध जहाद

लेखक, श्री श्यामबिहारी विरागी, बी० ए०

...र्क में होनेवाले संयुक्तराष्ट्र-संघ में दक्षिणी अफ्रीका की गोराशाही तथा ... और भारतीयों के साथ होनेवाले अन्याओं का तीव्र विरोध हुआ। संसार के ... भारत का पक्ष लिया और बहुमत से स्मट्स—सरकार की निंदा की गई। ... में लेखक ने इसी समस्या पर व्यापक दृष्टि से प्रकाश डालते हुए यह ... है कि भारत संसार के राष्ट्रों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है और गोरों की ...वादी नीति का अंत कभी न कभी होगा ही।

...संघ में दक्षिणी अफ्रीका के ... के पक्ष में आन्दोलन करनेवाली ...मती विजयलक्ष्मी पंडित।

...अफ्रीका में भारतीयों के साथ ... यूनियन सरकार की जो नीति ... भारतीयों से छिपी नहीं। यूनि... ...कार के कर्णधार जनरल स्मट्स ...नीति में काफी प्रसिद्ध हैं। ...यूनियन सरकार में काला और गोरा ...ना प्रचण्ड है कि सदैव से ही ...का विरोध करते आये हैं। यह ...न है जहाँ महात्मा गांधी को ... में भारतीयों के अधिकार की रक्षा ...इतिहास-प्रसिद्ध सत्याग्रह आन्दो... ...म करना पड़ा था। उस समय ... स्मट्स को महात्मा जी द्वारा ...सत्याग्रह की शक्ति के सामने ...था और बहुत से काले कानून ...ों के अधिकारों को सीमित ...र यूनियन सरकार द्वारा लागू ..., स्थगित हो गये थे।

...के नाम पर कलंक

...स्मट्स-द्वारा संचालित यूनियन ...नेवाले गोरों की भारतीय तथा ...म निवासियों के साथ जो ...थी और अब भी जारी है वह ...नाम पर एक ऐसा कलंक है ...से मिटाया नहीं जा सकता। ...गोरे अपने को अफलातून ... एक भारतीय रेलगाड़ी के ...डिब्बों में नहीं बैठ सकता। ...का बर्ताव भारतीयों के साथ ...है जिसे देखकर रोंगटे खड़े ...अभी हाल ही में मिस्टर ...मेडले के नेतृत्व में दक्षिण ...नई मजदूर का ... जन्म ...व्यक्तियों ...हुए मि० ...पार्टी से मेरा ...हुआ।

अफ्रीकन भारतीयों को मूलगत मताधिकार दिये जाने तथा उसका कोई विस्तार किये जाने का विरोध किया था। जनरल स्मट्स ने नेटाल के भारतीयों को सीमित मताधिकार प्रदान करने में अपनी राजनीतिक जीवन की सबसे भारी गलती की है। इस सीमित मताधिकार से भारतीय सदस्यों के वोटों पर भारतीय पूँजीपतियों का गोरों की आर्थिक उन्नति पर पूरी तौर से अंकुश रहेगा।" इस नई पार्टी के उद्देश्य क्या होने चाहिए इस सम्बन्ध में सुझाव पेश करते हुए मि० मेडले ने कहा, "इस नई पार्टी को सरकार से माँग करनी चाहिए कि ब्लैक मार्केटिंग करने और बेजा तौर से चीजें जमा कर रखने के अपराध में दण्डित समस्त एशियाइयों को देश से निर्वासित कर दिया जाय, भारतीयों के मताधिकार बढ़ाने का विरोध किया जाय और भारतीयों को अब तक जो मताधिकार प्रदान किये जा चुके हैं वे छीन लिये जाने तथा प्रवास-सम्बन्धी नियमों को और कड़ा बना दिये जाने की माँग की जाय।" यह है यूनियन सरकार के तानाशाह जनरल स्मट्स और उनके एजेण्टों की नीति। इस बीसवीं सदी में जब दुनिया में मानवता को समान अधिकार देने के लिए सर्वत्र क्रान्ति मची है, यूनियन सरकार में इस प्रकार की बेढंगी बातें की जा रही हैं।

यह सब सभ्यता के नाम पर

लन्दन में अभी हाल ही में संयुक्त-राष्ट्र-संघ की साधारण एसेम्बली में जानेवाले भारतीय प्रतिनिधि दल की नेत्री श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने एक प्रेस-कान्फ्रेंस में कहा, "दक्षिण अफ्रीका के प्रधान मंत्री जनरल स्मट्स ने कहा है कि पश्चिमी और ईसाई सभ्यता को सुरक्षित रखने के लिए यह आवश्यक है कि दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के विरुद्ध भेद-भाव का व्यवहार किया जाय।" क्या यही है पश्चिमी ईसाई सभ्यता का नमूना? यदि सचमुच पश्चिमी और ईसाई सभ्यता यही है जिसका नग्न रूप आज दक्षिणी अफ्रीका में जनरल स्मट्स की ठेकेदारी में दिखलाया जा रहा है तो मानवता को बचाने के लिए ऐसी सभ्यता का नाश शीघ्रातिशीघ्र हो जाना चाहिए। ऐसी सभ्यता जिसमें एक इन्सान दूसरे इन्सान पर शासन करने के लिए पैदा किया गया है और जिसमें एक इन्सान को दूसरे इन्सान से बराबरी का हक नहीं, एक मिनट भी इस दुनिया के पर्दे पर टिकने लायक नहीं। श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने उक्त प्रेस-कान्फ्रेंस में जनरल स्मट्स के उपरोक्त कथन को बिलकुल वाहियात बतलाए हुये ठीक ही कहा था, "यदि ईसा मसीह भी आज दक्षिण अफ्रीका में जाने का प्रयत्न करें तो उन्हें भी भारतीयों की तरह एक खराब आदमी समझकर दूर ही रक्खा जायेगा।" वास्तव में बात ठीक ही है। दक्षिण अफ्रीका के गोरे अत्यन्त अपाहिज और स्वार्थी हैं जो कानून-द्वारा अपने स्वार्थों की रक्षा करने का प्रयत्न करते रहते हैं। ऐसे स्वार्थी, अकर्मण्य तथा अन्यायी गोरों के बीच ईसा मसीह की भी बुरी हालत हो, इसमें कोई आश्चर्य नहीं।

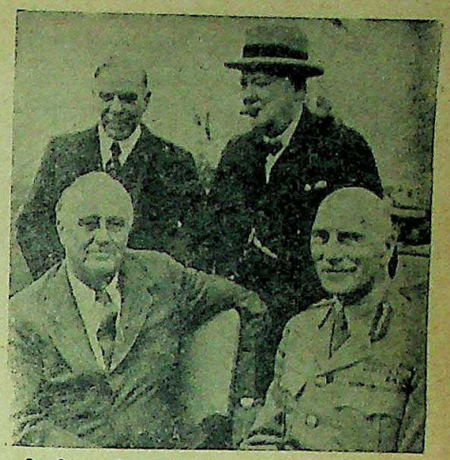

दक्षिणी अफ्रीका में गोराशाही के संस्थापक जनरल स्मट्स (बैठे हुए दाहनी ओर) मिस्टर चर्चिल के साथ।

संयुक्तराष्ट्र-सङ्घ में स्मट्स की पराजय

संयुक्तराष्ट्र-संघ में दक्षिण अफ्रीका के सम्बन्ध में दो प्रस्ताव पेश किये गये थे। एक भारत-सरकार और दूसरा दक्षिण अफ्रीका के यूनियन सरकार-द्वारा। भारत-सरकार-द्वारा प्रेषित प्रस्ताव में यूनियन सरकार की भारतीयों के साथ घातक नीति का विरोध करते हुए संयुक्तराष्ट्र से यह अपील की गई थी कि यूनियन सरकार के इस अन्याय को रोका जाय। भारत-सरकार के प्रस्ताव पर एक संशोधन फ्रांस और मेक्सिको के प्रतिनिधियों ने रखा जिसे भारत-सरकार के प्रतिनिधियों ने मान लिया। गत ९ दिसम्बर को संयुक्तराष्ट्र जनरल एसेम्बली में यह प्रस्ताव ३२ वोटों के विरुद्ध १५ वोटों से पास हो गया। ७ राष्ट्रों ने वोट नहीं दिये। इस प्रस्ताव-द्वारा यह मत व्यक्त किया गया है कि दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ व्यवहार अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धान्तों तथा दोनों देशों में किये समझौते तथा संयुक्तराष्ट्र-घोषणापत्र की धाराओं के अनुरूप होना चाहिए। प्रस्ताव में दोनों देशों (भारत तथा दक्षिण अफ्रीका) की सरकारों से प्रार्थना की गई है कि वे जनरल एसेम्बली के आगामी अधिवेशन में रिपोर्ट दें कि इस दिशा में क्या कार्रवाइयाँ की गई हैं।

दूसरा प्रस्ताव जनरल स्मट्स-द्वारा पेश किया गया था जिसमें प्रथम महायुद्ध के बाद कुछ जर्मन उपनिवेश जो अँगरेजों के शासन में थे उन्हें दक्षिण अफ्रीका की यूनियन-सरकार में मिला लेने की तजवीज थी। इस प्रस्ताव का श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने घोर विरोध किया और कहा कि इस प्रस्ताव में जनरल स्मट्स की साम्राज्यवादी नीति छिपी हुई है। यूनियन सरकार की इस माँग के विरुद्ध संयुक्तराष्ट्रों के साधारण अधिवेशन में १५ दिसम्बर १९४६ को डैनिश, अमेरिका तथा भारत ... पश्चिमी अफ्रीका-सम्बन्धी संयुक्त... ३६ मतों से पास हो गया। विरोध ... मत नहीं था। ९ राष्ट्र अनुपस्थित थे ...

अपने जवाहर से—

लेखक, श्री भरत व्यास

कहीं रुक न जाना वतन के सिपाही,
अभी दूर है, दूर मंज़िल तुम्हारी !!
अभी पूर्ण स्वातंत्र्य का दूर घर है,
अभी देश में 'दासता' का बसर है।
कहीं लक्ष का भ्रम न हो ऐ, मुसाफिर!
अभी बहुत लम्बी तुम्हारी सफर है॥

है काँटों से भरपूर मंजिल तुम्हारी !
अभी दूर है, दूर मंज़िल तुम्हारी !!

'किनारा' जिसे तुम समझ कर खिले थे, 'हमारा' जिसे तुम समझ कर हिले थे।
'किनारा' वही घोर 'मझधार' निकला, 'हमारा' वही शत्रु खूँखार निकला॥

हुई आज फिर चूर मंजिल तुम्हारी !
अभी दूर है, दूर मंजिल तुम्हारी !!

अभी रक्त की और प्यासी धरा है! अभी पाप का घंट न पूरा भरा है।
अभी भाइयों से निपटना जरा है, अभी शत्रु का रक्त-दामन हरा है॥

अभी क्रूर है क्रूर मंज़िल तुम्हारी !
अभी दूर है, दूर मंज़िल तुम्हारी !!

अभी "राम!" तुमने न वह बाण मारा, अभी घूमता है "विभीषण" कँवारा।
अभी एक क्षण में न "सीता" ... ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

देशदूत

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काश्मीर-राज्य में जन-जागृति

जन-आन्दोलन के जनक शेख अब्दुल्ला कौन हैं?

[३]

लेखक, पंडित ब्रजबिहारीलाल काचरू, श्रीनगर (काश्मीर)

भारत के देशी राज्यों में काश्मीर की समस्याओं का राजनीतिक दृष्टि से प्रमुख स्थान है। पिछले कुछ महीने से काश्मीर की राजनीति भारत में व्यापक हो चुकी है, इसलिए इस राज्य के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने की इच्छा होना अनिवार्य है। श्रीनगर-निवासी श्री काचरू ने यह लेखमाला बड़े ही श्रम और छानबीन से लिखनी प्रारंभ की है जिससे वहाँ की सामाजिक और राजनैतिक स्थिति का कुछ अनुभव प्राप्त हो सके। इस लेखमाला के दो लेख गत अंकों में छप चुके हैं। हमारी समझ में यह सुन्दर लेखमाला पाठकों को पसंद आयेगी।

काश्मीर के राजनैतिक आन्दोलन को जीवित करनेवाले पंडित नेहरू।

श्रीनगर से गांदरवल की ओर जाते हुए सड़क के एक किनारे शहर से पाँच मील की दूरी पर आप एक सुन्दर गाँव देखेंगे। गाँव सोबुरा नाम से प्रसिद्ध है। सोबुरा मुसलमानों की एक बस्ती है और साधारणतया मजदूरी यहाँ के लोगों का व्यवसाय है। इसी सोबुरा के एक साधारण घराने में जो पूर्वजों से रफूगरी का काम करते आये थे १५ दिसम्बर १४०५ को शेख मुहम्मद अब्दुल्ला का जन्म हुआ। शेख साहब के पिता शेख इब्राहिम एक साधारण ग्रामीण थे और ७ पुत्रों के पिता थे। शेख साहब आपके छठे पुत्र हैं।

बचपन से ही आप उदार, सहृदय और स्वतन्त्र विचारों के आदमी हैं आप बचपन से ही एक एक ग्रामीण की दशा देखकर दुःखी होते थे। बचपन का चुलबुल्लापन भी आप में काफी था किसी की थोड़ी सी बुरी बात आप सहने के लिये तैयार न थे। स्कूल की घटना है—अध्यापक ने आपको किसी बात पर फटकारा और आप इतने आपे से बाहर हुये कि गालियों और लाठियों से ही उसका जवाब दिया। किसी के परतन्त्र रहना आप न जानते थे और अब तक यही वृत्ति निभाते आये हैं। प्राइमरी आदि पास करने पर आप गवर्नमेंट हाईस्कूल में मैट्रिक के लिये आये और उतीर्ण होने पर आप श्री प्रताप कालिज श्रीनगर में चले। विज्ञान से आपकी बड़ी रुचि थी और कालिज में आप विज्ञान को छोड़ न सके और एफ० एस० सी० की पढ़ाई आरम्भ की। पढ़ाई में यदि आप अधिक प्रगतिशील न रहे परन्तु तो भी एफ० एस० सी० उतीर्ण हुए।

बी० एस० सी० के लिये आपको लाहौर जाना पड़ा और वहाँ से बी० एस० सी० उतीर्ण होने पर आप काश्मीर आये। काश्मीर में निश्चय किया गया कि भविष्य क्या होगा और सोच-विचार के बाद अलीगढ़ में एम० एस० सी० के लिये [illegible] आपने उपाधि प्राप्त की [illegible] चले।

[illegible] काश्मीर का शासन डाँवाडोल था, [illegible] एम० एस० सी० होकर काश्मीर [illegible]

जनता ऊबी थी, वह सहारा चाहती थी शेख साहब जनता के लिये सहारा बन के आये। आप काश्मीर आने पर यहाँ की दशा देखने पर व्यथित होकर भारतीय नेताओं से मिलने चले उनके भाषणों का आप पर इतना प्रभाव पड़ा कि आप एकदम काश्मीर आये और जन-जागृति के काम में जुटे।

खेद है इतने महान्, विद्वान् विवेकशील और बुद्धिमान् होने पर भी आप अपने हृदय को अधिक उदार नहीं बना सके हैं आप में हर एक चीज है लेकिन 'हिन्दू' शब्द से कुछ चिढ़ सी है शायद अलीगढ़ यूनिवर्सिटी के वातावरण ने आप पर यह प्रभाव डाला है जो अभी नहीं मिट सका है। आप 'राष्ट्रीयता' के बड़े प्रेमी हैं लेकिन उस व्रत को निभा नहीं सकते हैं।

हिन्दू जनता आपसे प्रेम करती हैं। हजारों हिन्दू आपको 'फखे काश्मीर' कहते हैं और श्री बजाज आपको 'काश्मीर का गांधी' तक कह गये। वह चाहते थे कि आपके विचार बदलें, जिस राष्ट्रीयता को आप राष्ट्रीय नाम तक ही सीमित रखना चाहते थे उसे अपने जीवन के साधारण से साधारण अंग में भी निभाना जानें। हिन्दू चाहते थे कि आप उसे अपना भी लें लेकिन आप उसे अपना न सके। हाल की घटना है—"औकाफ कमेटी" के स्टेज से आप भाषण दे रहे थे और आपका मुख सहसा बोल उठा:—"मुसलमान-धर्म सूरज है और बाकी धर्म तारे हैं; जब सूरज प्रकाश में आयेगा तो बाकी सभी तारे लुप्त हो जायेंगे।" यह आपका हृदय बोल रहा था, आपके हृदय का वह हिस्सा बोल रहा था जो काश्मीर में एक बार इस्लाम धर्म के प्रभुत्व को देखना चाहता है। आप बहुत कोशिश करते थे कि आपके साम्प्रदायिक विचार व्यक्त न हों। लेकिन क्या किया जाये? मनोभाव प्रकट होकर ही रहते हैं। यह शब्द "नैशनल कांफ्रेंस" की मुख पत्रिका में उनके मन्त्री द्वारा ही प्रकाशित कराये गये थे।

आप काश्मीर जन-आंदोलन के पिता हैं। आपने एक-एक आदमी के हृदय तक यह संदेश पहुँचाया कि वह परतन्त्र है, उसका देश परतन्त्र है। काश्मीरियों की [illegible]

को पाकिस्तान बनते हुए देखो, परतन्त्र देखो, तुम्हारे लिये इसके अलावा और कोई चारा नहीं कि तुम "मिलो, भागो, या मरो" (रॅलिव, चॅलिव या गॅलिव) रूपी चेतावनी के आपही प्रतिष्ठापक हैं। मुसलमानों के लिये आप फरिश्ते थे। फरिश्ते न होते तो वृक्ष की पत्तियों पर आपका नाम खुदा हुआ कैसे पाते? आपके कलाम में खुदा का नूर कैसे देखते? सच भी तो यही है, आपने उनके लिए, उनके समाज के लिए, उनकी धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक उन्नति के लिए क्या कुछ नहीं किया? उनके लिए आप दूत नहीं तो क्या? उनके लिए जिन्हें एक बार कहा गया :—"दुनिया बदलती है। काश्मीर के हिन्दू घरानों में जो स्थान पहले मुसलमानों (नौकरों) का था वही यहाँ और 'लोगों?' का होगा।"

शेख जी की बनाई 'औकाफ कमेटी' का उद्देश्य काश्मीर में मुसलमानों का उत्थान करना है। उनकी मसजिदें आदि ठीक करना हैं और नई बनाना है। इसी कमेटी के स्टेज पर आप इतने साम्प्रदायिक और विष से भरे हुए भाषण देते हैं कि एक-एक हिन्दू सहम जाता है इनके राष्ट्रीय नाम से।

इनके साथ इस समय कुछ हिन्दू हैं लेकिन वह यही चाहते हैं कि शेख जी को राष्ट्रीयता के मैदान में लायें वह गीदड़ को शेर की खाल पहनाकर उसका असली रूप छिपाना चाहते थे लेकिन शेर की खाल खिसक जाती है और वह अपने असली रूप में आता है। कितना संयम करे? बहुत संयम करने पर भी एक न एक दिन स्टेज पर अपने और गीदड़ भाइयों के साथ भौंक पड़ता है और सारी कलई खुल जाती है। एक-एक हिन्दू आपके राष्ट्रीय विचारों का स्वागत करने के लिए तैयार है। आपके उन भाषणों का हम स्वागत करते आये हैं जिनमें राष्ट्रीयता थी लेकिन ऐसे भाषण उसी वक्त छाँटे जाते हैं जिस समय हिन्दुओं के मदद की आवश्यकता हो। इन्होंने काश्मीर छोड़ो आन्दोलन से दिखाया कि वह काश्मीर को पाकिस्तान बनाना चाहते हैं। खेद है कि ऐसे विवेकशील पुरुष भी अपने को साम्प्रदायिकता से बाहर न ला सके। खैर हमारी यही कामना है कि शेख [illegible] हमारी काश्मीरी जनता के [illegible] 'फखे काश्मीर' [illegible] हने के लिए [illegible]

काश्मीर में राजनैतिक चेतना [illegible] करनेवाले शेख अब्दुल्ला

ऐसे तो शेख साहब-समय [illegible] जनता में राष्ट्रीयता की घोषणा [illegible] जाते थे। समय-समय पर आप [illegible] से कंधा मिलाकर चलने का आदेश [illegible] जाते थे। पहले-पहल आन्दोलन [illegible] के लिए नई-सी बात थी [illegible] समझाया कि शासक-वर्ग प्रजा [illegible] बनाने के लिए है और प्रजा का [illegible] कि अपनी माँगें आप माँगना, [illegible] करना और आन्दोलन को सफल [illegible] लिए राष्ट्रीयता के क्षेत्र में आवें। [illegible] यह शब्द बहुत ही प्रभावशाली हुए [illegible]

"काश्मीर के निर्धन मुसलमान [illegible] मातृ-भूमि की मुक्ति के इस संग्राम [illegible] से ही भारतवर्ष के विभिन्न भागों [illegible] स्वार्थियों की कटु आलोचना [illegible] होते आ रहे हैं·····समय आ [illegible] जब हमें पारस्परिक अविश्वास [illegible] को निर्मूल कर अपने बीच की [illegible] पाट देना होगा। गत तीन वर्षों [illegible] की धारा जिस गति से प्रवाहित [illegible] उससे निश्चित है कि संसार की [illegible] हमें न्याय अधिकारों से वंचित [illegible] सकती और राज्य की भविष्य में [illegible] श्रमिक और कृषक वर्ग को अधिकार [illegible] तरित करने ही पड़ेंगे। युग [illegible] इसकी माँग करती है। समय इसका [illegible] कर रहा है। तब क्या आपके, [illegible] समस्त देश के हित के लिए [illegible] नहीं है कि जब जागृति की बाधा [illegible] कंधे से कंधा लगाकर आगे बढ़ने [illegible] करें? जहाँ तक मुसलमानों का [illegible] वह आपको उन सभी अधिकारों [illegible] करने के लिए तत्पर हैं जिनका [illegible] विधान में अल्पसंख्यकों के [illegible] आवश्यक है। और ब्रिटिश [illegible] कांग्रेस जो अधिकार मुसलमानों [illegible] के लिए तैयार हैं। हम इससे [illegible] बनने के लिए तैयार हैं।" [illegible] में गांधी जी और नेहरू जी को [illegible] बनाना चाहते थे। हिन्दू आप पर [illegible] कर गये आप से कंधा मिलाकर [illegible] के लिए उद्यत हुए, परिणाम [illegible] रीत। जो हिन्दू आपको राष्ट्रीय [illegible] थे वह एकदम विपरीत हुए। [illegible] आपके आन्तरिक विचारों को [illegible] ढोंग को पहचानकर। जो आपको [illegible] का गांधी' कह गये थे उन्होंने [illegible] एकदम त्यागपत्र दिया।

एक पत्रकार से आपने लाहौर [illegible] था—'मैं कांग्रेस की रीति का [illegible] हूँ।' परन्तु [illegible] नाम को लज्जित [illegible] यह न नीति है और [illegible] काश्मीर में आपकी [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

खलबली

लेखक, श्री हशीम रज़ा अली बख़्त

जीवन में प्रायः ऐसी घटनायें घटित होती हैं जिनकी पहले से कल्पना तक नहीं की जाती। वह घटनाएँ मानव को आश्चर्य में डाल देती हैं। इस सुन्दर कहानी में भी लेखक ने जीवन की एक वास्तविक घटना का बड़ा रोचक वर्णन किया है जिससे निराशा के वातावरण में आशा का विष्फोट हो उठता है। कहानी रोचक और पठनीय है।

...मीम बैठी हुई अनवर के आने की प्रतीक्षा कर रही है।

दिसम्बर का प्रभात था। अत्यन्त कुहरा पड़ रहा था। समस्त वातावरण ...से आच्छादित था और गज भर की ...की वस्तुएँ भी बिल्कुल अदृश्य-सी ...। चारों ओर की झाड़ियाँ, शाहबतूल ...बड़ा वृक्ष, मीठी सुगंधि से भरी हुई ...टिका के पौदे जिनका रंग आकाश की ...लिमा के समान था, लाल रंग के ...से भरे हुए पौदे, दुग्धवत् उज्ज्वल ...और बैंगनी बनफशे आदि कुछ भी ...कहीं नहीं दिखाई पड़ रहे थे। ऊँचा, ...दार फाटक भी, जिसके द्वार उस ...के फिज़ूलखर्ची लड़के और लड़कियों ...स्वागत के हेतु सदैव खुले रहते थे— ...पूर्णतया अदृश्य था।

हाँ, वास्तव में कुछ भी तो नहीं ...ाई पड़ रहा था। इसे देखकर किसी ...भी अरब के 'एडेन' के बाग की याद ...सकती थी, वही बाग जो कि किसी ...न्त पथिक को अपनी लुभावनी सीमाओं ...ओर आकर्षित करने के बाद एक ...ाटकीय आकस्मिकता के साथ आँख से ...ोझल हो जाता है और अन्त में मरुस्थल ...अल्पकालीन पथिक के हृदय तक में ...ाशा का संचार करके, उसके सम्पूर्ण ...र को कम्पित करते हुए एक भीषण ...ा में छोड़कर विलीन हो जाता है।

बगलवाली झोपड़ियाँ भी न जाने ...विलीन हो गई थीं। बाहर के स्वच्छ ...पुते मिट्टी के घर, अत्यधिक धकापेल ...हलचल के दृश्य, नित्य के एकत्रित ...ले चमार बालकों का जमघट, जो ...गुल्ली डंडा और आँख-मिचौनी का ...लते और 'हटो बचो' की आवाज ...हुए काल्पनिक घुड़सवारी करते ...आपस में लड़ते-झगड़ते तथा धम- ...दिया करते—ये सब भी उस दिन ...के सामने से ओझल थे।

...ते हुए बरामदे में, जहाँ से घासवाले ...और बगलवाले मकान भली भाँति ...देते थे—खड़ी हुई शमीम संभवतः ...प्रतिक्रियाओं का अनुभव कर रही ...आठ बज चुके थे और उसे ऐसा ...रहा था जैसे उसकी हड्डियों में ...रहे हों। न तो वह प्रातः वायु- ...के लिए जा सकती थी और न ...कमरे ...और भिन-

सरल मोहनी दिखलाई पड़ रही थी। वह असाधारण गति से बरामदे में इधर से उधर टहल रही थी। शमीम के इस प्रकार गतिपूर्वक चलने से कोई भी स्पष्ट रूप से यह अनुमान कर सकता था कि अवश्य ही सोच, चिन्ता और अधीरता में वह मग्न है। सचमुच कोई वस्तु उसे परेशान कर रही थी।

धुँधलाहट अब साफ हो रही थी। प्रत्येक वस्तु अब कुछ कुछ दिखलाई पड़ने लगी थी। उद्यान में उत्फुल्लता आ गई थी, पुष्प मानो स्नान कर चुके थे और घास तुषारमाल से सजी थी। बागीचे और बरामदे में जाड़े के कुहरे की भयानक ठंड में मिली हुई एक मंद तरल सुगन्धि फैल रही थी। शमीम रसोईघर की ओर बढ़ी। नाश्ता का समय हो गया था। वह व्यस्त हो गई काम में। उसने रोटियों के टुकड़े बनाये। कढ़ाई में घी डाला। एक कड़कड़ की आवाज हुई। फिर कढ़ाई में अंडे डाले। उसने बच्चों को बुलाया। सब काम उसने चंचलताभरी शीघ्रता से कर लिया। उसके हाथ-पैर जो कि गृहकार्य में अभ्यस्त थे, कुछ घबड़ाहट से चल रहे थे। प्रत्यक्षतया वह एक झुँझलाहट का अनुभव कर रही थी। दूसरे ही क्षण शमीम अपनी छोटी बहन आजरा से गंभीर होकर बातें करने लगी।

शमीम ने कहा, "आज हम लोगों का भाग्य तराजू के पलड़े पर है। कोई नहीं जानता कि भैया उस 'आपरेशन' की पीड़ा को सहन कर सकेंगे कि नहीं।"

आजरा ने कहा, "हाँ, वह जन्म से ही कितना कमजोर है और उसकी आरोग्यता में तनिक सन्देह है।"

"मुझे तो लगता है कि मैं हत बुद्धि सी हो गई हूँ। अम्मी ने 'आपरेशन' के बाद तत्काल तार देने का वादा किया था और यह देरी तो मानो किसी अपशगुन की सूचना दे रही है। लेकिन नहीं, नहीं। मैं इसे नहीं सहन कर सकती। मैं अपने सबसे प्यारे भाई का बिछुड़न नहीं देख सकती।"

यह एक अत्यन्त कष्टदायक प्रतीक्षा थी। एक एक क्षण, अधीरता और व्याकुलता से व्यतीत हो रहा था। यह एक दारुण कष्ट था। उस रात को वे बिलकुल नहीं सो ...

*

तब की बात बिलकुल दूसरी थी। वे छोटी बच्चियाँ थीं। सब देख भाल, सोच और चिन्ता माँ के कन्धों पर थी। उसी ने दिन और रात व्याकुलता से बिताये थे और वही दुःख और कठिन दुविधा में रहा करती थी।

परन्तु इन्हीं वर्षों में वे बचपन से यौवन में प्रवेश कर गई थीं। वे शिक्षित और सभ्य हो चली थीं और उनमें प्यार और सहानुभूति भी आ गई थी। वे लखनऊ के एक उच्च और रईस खानदान की थीं, वही लखनऊ जो नवाबी युग के बुझने की अन्तिम ज्योति थी। फिर वे वहाँ से बनारस जिसे प्रसिद्ध पारसी कवि शेख अली हजीन ने 'ब्राह्मणों का शहर' कहकर पुकारा है चली आई थीं जहाँ गंगा अपने पूर्ण वैभव से बहती है और जहाँ के अगणित मन्दिर उस शहर की अनन्त महिमा का राग अलापते हैं। इसी शहर में उनके पितामह ने अपना निवास-स्थान बना लिया था और तब से वहीं पर हैं।

वे अत्यन्त धनी परिवार की थीं और उनके पास विपुल धन-राशि थी। शिक्षा के कारण उन लोगों के विचारों में एक नवीनता आ गई थी और उन्होंने युगों से आती हुई अनेकों घृणित रीति-रिवाजों का परित्याग कर दिया था। फिर भी पिछली पीढ़ियों की सहानुभूतियों से अपने को उन्होंने दूर नहीं कर लिया था जो कि उनके कार्यों और विचारों की सनातनता के साथ लगी हुई थीं। परन्तु उनके चरित्र की सबसे प्रत्यक्ष विशेषता यह थी कि उनमें उदारता और स्नेहयुक्त प्रकृति भी विद्यमान थी जिससे कि सब लोग उनके स्नेह के भाजन बन गये। दो भाई और दो बहनें—मानो यह ईश्वरीय देन थी।

परन्तु प्रकृति का ढंग निराला है और भाग्य के करतूत अनोखे हैं। भाग्य किसी न किसी प्रकार मनुष्यों के व्यवहारों में हस्ताक्षेप कर देता है और जीवन के एक ही समान चलते रहनेवाले रंगत में छेड़खानी पैदा कर देता है।

जीवन एक स्वच्छ सरिता की आभा के साथ चल रहा था जिसमें शान्ति और विनम्रता थी तथा जीवन के उलझानेवाली ऋतुओं में उलझी हुई रोक-टोक या अटकाव न था। केवल तीन ही महीने हुए ... भर का प्यारा हमीद

अनवर सवेरे की गरम चाय की प्रतीक्षा में बैठा है।

लखनऊ के लिए प्रस्थान किया। शमीम और आजरा को घर की बढ़ती हुई गृहस्थी के उत्तरदायित्व को सँभालने के लिए वहीं छोड़ दिया गया था।

* * *

'आपरेशन' के लिए मंगलवार का दिन निश्चित् था जिसका सम्पूर्ण परिवार के भाग्य के साथ अत्यधिक सम्बन्ध था। घर भर में बेचैनी फैल गई थी। सभी को बेचैनी और परेशानी थी। घर भर में चिन्ता छाई हुई थी। सभी भयानक शंकाओं और अनुमानों से पूर्ण थे। सदैव प्रसन्न रहनेवाले घर में गम के बादलों ने अपना घर बना लिया। भगन्दर वास्तव में एक भयानक रोग होता है और इसके कड़े पञ्जों से निकल जाना बहुत कठिन है। एक बार किसी आदमी पर जब यह आक्रमण करता है तो उसका सर्वनाश हो जाता है और स्वाभाविकतः घर के प्रिय सम्बन्धियों के हृदय में डर की भावना उत्पन्न करने के लिए यह सत्य ही काफी था। शमीम तो बिलकुल अश्रुपूर्ण थी और आजरा जो कि उन दोनों में अधिक गम्भीर थी शोकपूर्ण उदासी की मुद्रा में थी।

बुधवार के दिन दोपहर के बाद का समय था जब कि उन्हें एक ऊँची खटखटाहट सुनाई दी। काँपती हुई गति से आजरा दरवाजे की ओर गई। एक तार आया था, उन लोगों के लिए। उसने तार हाथ में ले लिया पर उसे खोल न सकी। वह हिलने लगी, उसकी उँगलियाँ काँपने लगीं और उसे एक झटका-सा लगा। वह अपना हस्ताक्षर करना भी भूल गई। डाकिया के कई बार कहने पर भी वह बहरी-सी रही।

अन्त में किसी तरह लिफाफा ... कर तार के कागज को निक... चेहरा खिल उठा। उदासी ... धुल गई। तीव्र गति से वह ... तार ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठे। जो भयानक उदासीनता उस घर के प्रसन्न वातावरण में एक कुस्वप्न की भाँति विराजमान थी वही अब वहाँ से भाग खड़ी हुई और वही खुशी का श्रोत आपसे आप बह पड़ा। वह भयानक कुस्वप्न समाप्त हो चुका था। ऐसा प्रतीत होता था कि सारे घर को आज रात में एक कष्टदायक कुस्वप्न दिखलाई पड़ा था जिसने सम्पूर्ण घर को कम्पायमान कर दिया था केवल जगने पर प्रतीक्षा में बैठे हुए एक बड़े, प्रसन्न और सूर्य की किरणों से उज्ज्वलित दिन को पा जाने के लिये।

* * *

शहीद को रात की गाड़ी से आना था। उसे लिवाने के लिए आजरा स्टेशन पर गई। गाड़ी एक घंटा 'लेट' थी। आजरा अधीर हो गई। वह रेलवे स्टेशन पर इधर से उधर टहलने लगी। वह 'व्हीलर बुकस्टाल' पर खड़ी होकर अपना दिल बहलाने लगी। वह उत्सुकतापूर्वक अगणित पुस्तकों की कतार पर अपनी दृष्टि गड़ाने लगी। कुछ तो तुच्छ उपन्यास थे जो कि सुन्दर ढंग से सजाकर रखे गये थे साधारण जनता को तथा उनके स्वाद और रुचि को आकर्षित करने के लिए। आगे-वाली कतार में अनेकों प्रकार के दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्र-पत्रिकाएँ चमक रही थीं। इन अल्पमूल्यवान साहित्य को छोड़कर आजरा दूकान के भीतरी भाग में प्रविष्ट हो गई। जहाँ कि प्रशंसनीय गुण से भरी हुई पुस्तकें थीं। उसने अपनी रुचि की एक पुस्तक उठाकर उसके पृष्ठों पर एक सरसरी दृष्टि डालकर उसे खरीद लिया। इस पुस्तक के खरीदने में उसे अधिक समय न लगा। केवल पन्द्रह मिनट मुश्किल से लगे होंगे। थोड़ी देर इधर-उधर व्यर्थ का चक्कर काटकर वह 'रेस्ट्रां' में चली गई। बाहर काफी ठंडक पड़ रही थी। उसने एक कप गरम काफी मँगवाया। उसे न वह पुस्तक न गरम काफी अच्छी लगी। वह बेखबर होकर बैठ गई और अपने में खो-सी गई।

गाड़ी अन्त में आ पहुँची। वह खचाखच भरी थी। आजरा को भीड़ से घृणा थी और अनेकों रेल के यात्रियों को देखकर वह क्रोधित-सी हो उठी। वह शहीद को ढूँढने में व्यस्त थी। पीछे से कई लोगों का धक्का उसे लगा जिन्हें वह शहीद ही समझ बैठी थी पर ऐसी पहचान से उसे हर बार निराशा होती। आधे घंटे के परिश्रम-रहित खोज के बाद उसे बिना शहीद के, अत्यन्त क्रुद्ध और निराश होकर लौटना पड़ा। केवल यही नहीं बल्कि मन में एक और चिन्ता लेकर वह लौटी।

आजरा, शमीम और घर के और लोगों ने रात का खाना खाया और बिस्तरे लेटे। उन्होंने फिर से एक बार परिजनों ... लेकिन किया और शहीद सन् १९२... के सम्बन्ध में जितने भी राजप्रश्न ... जा सकते थे किये। एक बार ... लोगों के व्यथित हृदय में ... बहुत अधिक चलने-फिरने के प्रतिक्रिया-स्वरूप शीघ्र ही उन्हें गहरी नींद आ गई।

* * *

शहीद अठारह वर्षीय उत्तम प्रकृति का एक तरुण था। वह यथोचित सुशिक्षित था परन्तु युवक होने और अत्यधिक पौरुष रखने के कारण उसमें मसखरापन कूट-कूट-कर भरा था। वास्तव में उसकी तुलना बिलकुल टामी लम्पकिन से की जा सकती थी अगर उसके दूसरे अवगुणों को छोड़ दिया जाय और शायद इस कारण सरल प्रकार की मजाक करने का उसे बड़ा शौक था और अनेकों लोगों के लिए वह प्रसन्नता का साधन था। अपने भाई की लगातार बीमारी से उसमें एक दुखमय प्रभाव पड़ा था और इस 'आपरेशन' के कारण उसके हास्य प्रकृति और प्रसन्नचित्त जीवन में कुछ न्यूनता आ गई थी। वह अब वास्तविक शहीद नहीं रह गया था।

परन्तु जब उसके भाई की तबियत अच्छी हो गई तो मानो उसे अपनी पूर्व प्रकृति प्राप्त हो गई और इसी कारण उसने सोचा कि अब की बार वह अपनी बहनों और घर के दूसरे सदस्यों को कोई एक बड़ा भारी आश्चर्य प्रदान करे। इस विचार को कार्यान्वित करने के लिए उसने जान-बूझकर जिस गाड़ी से उसे जाना था उसे छोड़ दिया। बाद में वह 'पञ्जाब मेल' से चला जो बनारस में तड़के, सुबह, बल्कि जब रात ठीक से समाप्त भी नहीं हो पाती, तभी पहुँचती है।

रात में साढ़े तीन बजे गाड़ी बनारस पहुँची। घना अँधेरा छाया हुआ था और सुनसान जाड़े की रात थी। शहीद ने धीरे से अपने घर का सदर दरवाजा खोला। लेकिन उसके घर के और अन्दर घुसने में रुकावट आ गई। रात भयानक थी। सर्दी इतनी थी कि मानो उसके हाथों को काटे खा रही थी। ठंडी हवा के कारण शहीद थर थर काँप रहा था जाड़े के कुहरे के धुँधलाहट, रात के समय के पक्षियों की चहचहाहट जो कि प्रातःकाल के आगमन की सूचना दे रहे थे और रात की विचित्र स्तब्धता से शहीद को एक अजीबता और मनहूसियत का अनुभव हो रहा था, जिससे उसके कम्पित होते हुए शरीर में एक तीर सा चुभ गया। वह वहीं मूर्तिवत् खड़ा रहा। चारों ओर की दीवाल की उँचाई सात फीट के लगभग थी। कैसे इसे पार किया जाय यह शहीद के लिए एक प्रश्न बनकर आ खड़ा हुआ। एकाएक उसे एक उपाय सूझा। वह धीरे से चल पड़ा। घर के बाहरवाले बरामदे में एक मेज रक्खी थी जिसे शायद घर के काहिल और लापरवाह नौकर ने बाहर ही रहने दिया था। उसके लिए अब समस्या अति सरल हो गई। शहीद देखते ही देखते दीवाल पार कर गया और घर के अन्दर के भाग में कूद पड़ा।

घर चारों ओर अत्यधिक घने अँधेरे से आच्छादित था। सब लोग चुपचाप गहरी नींद में सो रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था कि मानो घर के लोगों को किसी भया... शक्ति ने ... किसी दुखदायी मक्खी की आवाज है अथवा किसी चूहे की जो कि किसी खानी-पीनी वस्तु में हाथ लगा रहा था। पर शीघ्र ही उसे अपना विचार बदलना पड़ा। उसने अपनी आँख बन्द ही की थी कि उसे खटखटाहट का शब्द सुनाई पड़ा। आजरा ने अपने को इस सान्त्वनापूर्ण विचार से सन्तुष्ट कर लिया कि शायद घर की बिल्ली होगी। लेकिन नहीं। इसके अतिरिक्त कुछ और बात थी। पहले जो धीरे धीरे खटखटाहट की आवाज हो रही थी वह अब जोर जोर की खटखटाहट में बदल गई और ऐसा मालूम हो रहा था कि कोई बगल के कमरे में रखे हुए लोहे की 'सेफ' तोड़कर खोलने का प्रयत्न कर रहा था। आजरा हड़बड़ा उठी। उसने शमीम की बाँह पकड़कर उसे उठाया। उसने बिजली का 'स्विच' दबाया लेकिन रोशनी नदारद। भयंकर, भयानक, कितना साहसपूर्ण डाका था।

आवाजें और अधिक स्पष्ट और तेज हो गईं। दोनों बहनें चारपाई पर से उठकर दौड़ीं। वे नौकरों को जगाने लगीं। 'अनवर, अनवर, जल्दी उठो। कोई 'सेफ' को तोड़ रहा है।' आजरा ने अपने काहिल परन्तु माननीय नौकर के पैर पकड़कर खींचते हुए कहा।

एक बड़ा शोर-गुल मच गया और सारा घर जाग उठा। चोर का कहीं भी पता न था। उसकी बड़ी देर तक ढुँढ़ाई होती रही जिसमें घर के सब लोग और नौकर भी शामिल थे और वहीं डर और ठंड के कारण काँपती हुई आजरा और शमीम खड़ी थीं।

"अरे वह है, वह" अनवर ने शमीम की चारपाई की ओर लाठी बढ़ाते हुए कहा। पल भर में शमीम की चारपाई पर लेटी तथा काला ओवरकोट पहने हुई मूर्ति उठ खड़ी हुई और उसे सबने देखा। सुना, "अरे, अनवर, मैं हूँ मैं। नहीं पहचानते ?"

यह एक अत्यन्त रुचिकर और पसन्द आश्चर्यजनक घटना थी। काल की पहली किरणें दिखाई दे थीं। समस्त वातावरण सुबह की से आच्छादित था। प्रातः के पक्षी जोर से चहकने लगे मानो उन्हें का पता चल गया हो। वह ठंडी और चुभती हुई थी। गरम चाय पीते हुए सब लोगों से कर रहा था।*

* एक अँगरेजी कहानी—अनुवादक श्री 'स्वतन्त्र'।

बीमारी के बाद, खून की कमी जाती मेहनत पड़ना और कमजोरी

एमोल्ट का हिमोग्लोबिन

बच्चे
वुड वर्ड का ग्राइप वाटर
पसंद करते हैं
यह सब दर्दों को दूर करता है और
बच्चों को तंदुरुस्त व खुश रखता है।
WOODWARD'S WATER

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम चिट्ठियां

'प्रवासी'

इस समय प्रवासी भारतीयों के ...काश पर विपत्तियों के बादल ...रहे हैं; श्वेताङ्ग सत्ताधिकारियों की ...से उनके हक और अधिकार पर ...प्रहार हो रहे हैं और भारत की ...एवं अपने आत्म-सम्मान की रक्षा के ...दक्षिण अफ्रीका प्रवासी भारतीयों को ...का हथियार उठाना पड़ा है। ...दो साल से मैं निरन्तर रुग्ण-शैया पर ...कष्ट भोगता आ रहा हूँ, पर ...अफ्रीका की भीषण परिस्थिति से ...मानसिक व्यस्था की भी सीमा नहीं ...यदि मेरा भग्न स्वास्थ्य बाधक न ...तो आज मैं दक्षिण अफ्रीका में लड़ाई ...में अथवा नेटाल के किसी जेल ...ाई देता। दक्षिण अफ्रीका की ...समिति की भी यही राय है कि ...ग्रहियों की कमी नहीं है; अतएव ...में ही रहकर उनके संग्राम में ...देना चाहिए।

...से दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह ...है, मैं इस रुग्ण शरीर से भी ...आठ-दस घंटे काम ले रहा हूँ। भार-...में सत्याग्रह पर अनेक लेख ...करा चुका हूँ, पर मुझे ऐसा अनु-...रहा है कि प्रवासी भारतीयों के ...में एक खास पत्र की भारत में ...कता है। मुझे अपनी बीमारी और ...के कारण यह भार उठाने का ...नहीं होता है, पर प्रवासी भारतीयों ...बात से हित होता है उसकी ...करना भी मेरी शक्ति से बाहर की ...।

...इसलिए मैंने हिन्दी और अँगरेजी में ...नामक मासिक पत्र निकालने ...कर लिया है। इस विषय पर ...मैंने भारत की राष्ट्रीय सरकार के ...मन्त्री पं० जवाहरलालजी नेहरू को ...लिखकर सहायता की याचना की ...उन्होंने कृपाकर अपने कामन वेल्थ ...डिपार्टमेंट (प्रवास-विभाग) को ...आज्ञा दे दी कि इस काम में मुझे ...सहायता पहुँचाई जावे।

...पास न साधन है और न सम्पत्ति, ...वासी" के प्रकाशन के आवश्यक हैं, ...अपने देशवासियों के सहयोग और ...पर भरोसा है। इसलिए मैं उनसे ...करता हूँ कि वे "प्रवासी" के ग्राहक ...प्रवासी" में विज्ञापन देकर अथवा ...को आर्थिक सहायता देकर प्रवासी ...प्रति अपने स्नेह और सहानु-...क्रियात्मक परिचय देवें। प्रथम ...निमित्त "प्रवासी" का वार्षिक मूल्य ...दस रुपया और विदेशों के ...पाउण्ड होगा। साल भर के बाद ...मुद्रित करने की आज्ञा ...निश्चय ही मूल्य घटा दिया ...प्रवासी" हिन्दी और अँगरेजी ...रूप से सचित्र ...ट्रांसवाल, के... ...प्रदेश, केनिया, ...मोरिशस, फिजी... ...नाम आदि भि... ...प्रवासी भारतीयों ...

समाचार और उनके सम्बन्ध में प्रमाणिक लेख निकलते रहेंगे।

मैं तो यथा-सम्भव शीघ्र ही "प्रवासी" का प्रकाशन प्रारम्भ करना आवश्यक समझता हूँ। पर यह बात मेरे वश की नहीं है, देशवासियों की सहायता पर निर्भर है। जितनी जल्दी "प्रवासी" को ग्राहक रूप में, विज्ञापन के रूप में और दान के रूप में देश-बन्धुओं से सहायता मिलेगी, उतनी ही जल्दी वह प्रवासी भाइयों का सन्देश-वाहक बनकर देशवासियों की सेवा आशीर्वाद से यह शिव-संकल्प शीघ्र ही कार्यान्वित हो सकेगा। सब प्रकार की सहायता भेजने का पता—

प्रवासी-भवन —भवानीदयाल संन्यासी
अजमेर।

* * *

निराला जी की स्वर्ण-जयन्ती

हिन्दी-संसार तथा हिन्दी-प्रेमी मात्र को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि नवयुग के प्रमुख हिन्दी कवि और साहित्यिक श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' आगामी वसंत-पंचमी के दिन पचास वर्ष के पूरे होकर इक्यावनवें वर्ष में प्रवेश करेंगे। इस अवसर पर उनकी साहित्य-सेवा के प्रति सम्मान प्रगट करने के निमित्त हमने उनकी स्वर्ण-जयन्ती मनाने का निश्चय किया है।

निराला जी के व्यक्तित्व और उनके साहित्यिक कार्य का विस्तृत परिचय देने की यहाँ आवश्यकता नहीं है। वे पिछले पचीस-तीस वर्षों से निरन्तर साहित्य-साधना में संलग्न हैं। जिन परिस्थियों में उन्होंने साहित्य की श्री-वृद्धि की है और हिन्दी का आत्म-सम्मान सुरक्षित रखा है, वे सर्व-विदित हैं।

प्रमुखतः एक अभिनन्दन-ग्रन्थ-निर्माण की योजना की जा रही है, जिसमें हिन्दी-साहित्य और भारतीय संस्कृति के विभिन्न अंगों के गत २५।३० वर्षों के विकास का विवेचनात्मक विवरण दिया जायगा। इस ग्रंथ के प्रणयन में हिन्दी के प्रमुख लेखकों के अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रों के शीर्ष-स्थानीय भारतीय विद्वानों का योग रहेगा। विदेशों की साहित्यिक और सांस्कृतिक प्रगति पर विदेशी विद्वानों की चुनी हुई सामग्री देने की व्यवस्था की जा रही है। अभिनन्दन-ग्रन्थ सुचिन्तित और सुनिर्धारित योजना के आधार पर प्रणीत होगा, जिसमें नवयुग के बहुमुखी साहित्यिक और सांस्कृतिक क्रिया-कलापों का एक ही स्थान पर एकत्र संग्रह और विवेचन मिल सके।

जयन्ती-सम्बन्धी उत्सवों तथा अन्य योजनाओं की सूचना संयोजकों द्वारा यथा-समय दी जायगी। एक केन्द्रीय समारोह श्री राष्ट्र-भाषा-विद्यालय, काशी, के तत्त्वावधान में होगा। जिसका स्थान काशी-नागरी-प्रचारिणी ... गया है।

नार्थ सम्पादकमंडल नियुक्त किया गया है। लेख तथा लेखकों की प्रस्तावित सूची बन चुकी है।

निराला-स्वर्ण-जयन्ती अनुरूप समारोह के साथ प्रातिनिधिक रूप में मनायी जाय, इसके लिए हम प्रयत्नशील हैं। साथ ही, हम प्रत्येक हिन्दी-हितैषी से इस अनुष्ठान में सम्मिलित होने तथा सब प्रकार का समुचित सहयोग प्रदान करने का सादर अनुरोध करते हैं।

काशी —नन्ददुलारे वाजपेयी
—गंगाधर शास्त्री

* * *

मकानों की कठिनाइयाँ

आज जहाँ मध्यम श्रेणी के मनुष्यों के लिए अन्न-वस्त्र आदि की कठिनाइयाँ मौजूद हैं, मकानों की क़िल्लत भी बड़ी भारी है। मकान-मालिक मकानों का न केवल किराया ही बढ़ाते हैं और मकान खाली कराने की धमकी देते हैं, वे अपने मकानों से निःसीम लाभ उठाते हैं। साधारण स्थितिवाले चाहे वे दूकानदार हों चाहे सरकारी नौकर हों—स्क्वयमेव अपने लिए मकान बनवाने में असमर्थ हो अपने जीवन में किराये के रूप में एक या दो मकानों तक का मूल्य सहज में दे डालते हैं। ऐसे मनुष्यों की कमी नहीं और यदि उनके मकान हो जायँ तो उनसे होनेवाले लाभ प्रत्यक्ष हैं।

सभी बड़े-बड़े शहरों में लड़ाई के दिनों में जन-संख्या बढ़कर कई गुनी हो गई है। उस समय में मकानों का बनना ईंट, चूना तथा अन्य सामान तेज होने, न मिलने और नियन्त्रित होने के कारण बन्द रहा। आज भी प्रायः वही अवस्था है। मनुष्यों को भेड़ बकरियों की भाँति थोड़े स्थान में ही निर्वाह करना पड़ता है। शहरों में गंदगी भी इसी कारण बहुत बढ़ गई है। अतएव नये मकानों की इस समय महती आवश्यकता है। प्रयाग को ही लीजिये तो बहुत-सा स्थान शहर में ही मिल जायगा जहाँ मकान बन सकते हैं और बहुत से मकान शहर का विस्तार करके एक ओर बनाये जा सकते हैं। शहर से दारागंज जानेवाली सड़क के किनारे की भूमि यदि सरकार बेचना स्वीकार करले तो सम्भव है कि १००० मकान बन जायें और प्रायः आठ-नौ-हजार मनुष्यों के लिए काफी हों। मकान मध्यम वर्ग के होने चाहिये क्योंकि यदि पूँजी-पतियों अथवा उनके बनते हैं जिनके पास पहले से ही मकान हैं तो उनसे कुछ लाभ नहीं हो सकता। यह काम उन्हीं मकान बनानेवाली संस्थाओं द्वारा हो सकता है जो इसके लिए बड़ी पूँजी के साथ खुलें, एक बड़ी संख्या में छोटे पेशेवाले मजदूरों और सरकारी नौकरों के लिए मकान बनवाने में सहायक हों और किराये के रूप में नियुक्त समय में मकान का मूल्य वसूल हो जाने पर मकान रहनेवालों का कर दें। म्यूनिसिपल बोर्ड और डिस्ट्रिक्ट ... कुछ ...

कौन-सा दिन होगा जब भारत में भी समाजवाद का प्रादुर्भाव होगा और निर्धन मनुष्यों को अपनी मेहनत का पूरा फल मिलेगा साथ ही उन्हें सब प्रकार से, वही अधिकार प्राप्त होंगे जो धनवानों को सुलभ हैं। मकान बनवाने की योजनाओं का फौरन जन्म होना चाहिए और वे कार्यान्वित होनी चाहिये ताकि जिनकी इच्छा है कि बिना पैसे के ही मकान हों उनके मकान हो सकें और उनकी गाढ़ी कमाई का पैसा पूँजीपतियों के कोष में केवल कोषों को बढ़ाने के लिए न जाय। आशा है सरकार भी यथासंभव सहयोग प्रदान करेगी।

५ चाहचंद, —कृष्णकुमार गुप्त
प्रयाग

जुकाम सर्दी पर अक्सर उपाय
आरोंदा
१८६६
नीलगिरि तेल
प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

काली त्वचा ४-६ अंश तक स्वच्छ हो गई

चर्म-सौन्दर्य बढ़ाने की आश्चर्यजनक विधि

कुरूप काली त्वचा से अपने सौन्दर्य को नष्ट न करें क्योंकि त्वचा की कालिमा तत्क्षण दूर करने की यह आश्चर्यजनक तरल औषधि है। इससे नवीन सौन्दर्य प्राप्त हो जाता है—वही कोमल तथा गौर वर्ण जिसे प्रत्येक स्त्री चाहती है।

ह्वाइटेक्स की आज ही परीक्षा करें और देखें कि आपकी त्वचा कितनी जल्द कोमल हो जाती है। आपके वर्ण···आपके हाथ··· आपकी भुजाओं के लिए गौर मृदु सौंदर्य। ह्वाइटेक्स में चिपचिपाहट नहीं होती। यह त्वचा में सीधे प्रवेश कर ... है और त्वचा को पोषती है।

ह्वाइटेक्स की एक ... देखें। इसके ... होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

रायगढ़ स्टेट कांग्रेस जन-सेवा के व्रत को लेकर म्युनिसिपैलिटी में जाने के लिए चुनाव लड़ रही है। रायगढ़ म्युनिसिपैलिटी निर्वाचन की कुल १५ सीटें हैं। गंजवार्ड, सदरवार्ड, कैदीमूड़वार्ड तथा दारोगापारा वार्ड में किसी ने कांग्रेस का विरोध नहीं किया। पिछले निर्वाचनों में इन वार्डों में काफी लड़ाइयाँ हुई थीं किन्तु इस वर्ष इन वार्डों की जनता ने लोकप्रिय कांग्रेस को महत्त्व देते हुए सम्मान दिया है। ऐसी छः सीटों पर कांग्रेस का कब्जा हो चुका है। बाकी नौ सीटों के लिए रायसाहब श्री हरीलाल श्याम, पं० मुकुन्दनाथ तिवारी, श्री मुरलीधर मेहर, श्री रूपचंद फुरसेट, श्री रामशङ्करसहाय, श्री लछमन गुप्ता, श्री बोधराम मेहर, श्री पुरुषोत्तम दुबे, बाबू दासरथी घोष, श्री गुलामगोस और श्री बनवारीलाल शर्मा कांग्रेस के विरोध में खड़े हुए हैं। क्या ही अच्छा होता यदि ये महाशय लोग कांग्रेस का विरोध न करते?

* * *

उस दिन जब श्री मगनलाल जी बागड़ी का भाषण हुआ तब श्री दुलीचन्द जी सेठ ने सभापतित्व किया था। क्रान्ति-वीर बागड़ी जी ने अपने भाषण में रियासत के शासन के दोषों की निन्दा की लेकिन सभापति महोदय ने अपने भाषण में रियासत की ओर से जनता के सामने वकालत करते हुए सफाई पेश की। उन्होंने बागड़ी जी के कथन का खंडन किया। जिससे उपस्थित लोग उठ-उठकर चलते बने।

स्टेट कांग्रेस केन्द्रीय कार्यकारिणी-समिति के सदस्य श्री मुहम्मद हुसेन (बड़कू) संगीताचार्य का देहावसान हो गया। आप एक लोकप्रिय राष्ट्रीय मुसलमान थे। "दोनों का जब एक ही मकान। फिर क्या हिन्दू क्या मुसलमान" और "युग माँगता है रक्तदान नौजवान दे" का सामयिक संगीत जब आप गाते थे तब हजारों लोग झूम उठते थे। आपके निधन से नगर भर में शोक छा गया। दूसरे दिन बाबू दाशरथी घोष की अध्यक्षता में कांग्रेस-भवन में शोक-सभा हुई। कांग्रेस-अध्यक्ष श्री सिद्धेश्वर गुरु शोक-प्रस्ताव लेकर पढ़ने लगे किन्तु शोकाकुल होने के कारण आप उसे न पढ़ सके। अन्त में बाबू दाशरथी घोष ने स्वर्गीय के नन्हें-नन्हें चार नाबालिग बच्चों की शिक्षा और भरण-पोषण की व्यवस्था किये जाने के लिए एक प्रस्ताव रक्खा जो सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ। ईश्वर उनकी आत्मा को चिर शान्ति दे। —संवाददाता

* * *

जनेऊ [illegible] ने एक कार्ड गोस्वामी अद्वैत-सन् १९२[illegible] लोकन्[illegible] सन् ३१ को अपने राजप्रमुख के सम्बन्ध [illegible]लालजी के पास [illegible] जा सकते थे [illegible] उन्हें अब [illegible] लोगों के व्यथित [illegible] पिला है।

विद्यालय के ट्रस्टी लोग पुस्तकालय के इस नाम का विरोध कर रहे हैं।

राजा महेन्द्रप्रतापजी प्रेम महाविद्यालय को वृन्दावन से उठाकर प्रेमनगर (मथुरा वृन्दावन रोड) पर ले जाना चाहते हैं। विद्यालय की पुरानी इमारत में जो कि लाखों रुपये की है एक अच्छा होटल खोलने का विचार राजा साहब का है। उस होटल की आमदनी से प्रेम-मन्दिर पुस्तकालय का खर्च चलता रहेगा।

व्रज साहित्य-मण्डल तथा व्रज-साहित्य-परिषद् वृन्दावन ने स्थानीय म्युनिसिपल बोर्ड से ५००) की सहायता माँगी थी। वृन्दावन के राष्ट्रीय म्युनिसिपल बोर्ड ने पहले हाँ कहकर बाद में सहायता देने से मनाकर दिया, जब कि मथुरा म्युनिसिपल बोर्ड ने व्रज-साहित्य-मण्डल को ५००) की सहायता दी है।

मथुरा के राशन अफसर श्री खोसला ने जनता के नाम एक नोटिस साया की है कि अब प्रत्येक चीजों के दुकानदारों को अपने लाइसेंस फिर से नये करवाने होंगे। अन्य आदमी भी लाइसेंस के लिए दरख्वास्त दे सकते हैं। इससे जिले भर के दुकानदारों में काफी असन्तोष है। लोगों का खयाल है कि अब उन लोगों के लाइसेंस छीनकर दूसरे आदमियों को दिये जायँगे।

—संवाददाता

* * *

धार राज्य प्रजामण्डल के अध्यक्ष श्री शंकरराव जी दिघे अपने राज्यव्यापी दौरे के लिए रवाना हो गये।

ठीकरी (धार राज्य) में राज्य प्रजामण्डल के अध्यक्ष श्री दिघे यहाँ पधारे, रात्रि को आपके स्वागत में एक आम सभा हुई, जिसमें आपने प्रजामण्डल की नीति पर प्रकाश डालते हुए मण्डल के झंडे के नीचे संगठित होने की अपील की। सभा में उपस्थिति अच्छी थी और काफी संख्या में लोग सभा-स्थल पर हो प्रजामंडल के सदस्य बने। धार राज्य प्रजामंडल के प्रचार-मन्त्री श्री मदनलाल विजयवर्गीय खैरोद, अनारद आदि ग्रामों का दौरा करके वापस आ गये, इन ग्रामों की जनता में राज्य की कन्ट्रोल सम्बन्धी अव्यवस्था के कारण बहुत असन्तोष है।

—संवाददाता

* * *

देवप्रयाग (गढ़वाल) मंडल कांग्रेस-कमेटी के प्रयास से क्वापरेटिव सोसाइटी का निर्माण हुआ। जिले के सिविल सर्जन साहब तमाम गढ़वाल का दौरा कर यहाँ आये हुए हैं और दूर गाँवों से आये हुए गरीबों का आपरेशन कर रहे हैं। पंडा प्रतिनिधि सभा का विशेष अधिवेशन लगातार दस-बारह दिन तक होगा, जिसमें कई महत्त्वपूर्ण सामाजिक विषयों का निर्णय होगा। इस साल गढ़वाल प्रदर्शिनी गौचर गढ़वाल में बड़े समारोह के साथ हुई। —संवाददाता

देवप्रयाग (गढ़वाल) [illegible] कमेटी ने निश्चय किया था कि [illegible] जिला-राजनैतिक सम्मेलन [illegible] होगा, लेकिन अभी तक कुछ [illegible] हुआ कि सम्मेलन कब और [illegible] देवप्रयाग—ए० बी० मिडिल [illegible] आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। [illegible] शिक्षा-विभाग द्वारा गढ़वाल [illegible] हाईस्कूलों की मंजूरी हुई है। [illegible] माननीय शिक्षा-मंत्री इस ओर [illegible] की कृपा करेंगे।

—[illegible]

* * *

हरिद्वार के श्री स० [illegible] ऐंग्लो मिडिल स्कूल के हेडमास्टर [illegible] गणेशदत्तजी पाण्डेय की अध्यक्षता [illegible] स्कूल के छात्रों का एक स्वयंसेवक [illegible] तैयार हुआ है। चन्द्र-ग्रहण के [illegible] पर इस दल ने पंजाब महाविद्यालय [illegible] नायक श्री वटेश्वरदयाल की अध्यक्षता [illegible] गंगा-तट पर यात्रियों की सुविधा [illegible] की।

—[illegible]

* * *

लखनऊ में ग्रामसुधार [illegible] एसोसिएशन की कार्यसमिति की [illegible] ३ और ४ जनवरी ४७ को [illegible] पार्क में होनी निश्चित हुई है।

—भगवतशरण [illegible]

क्यों!

बिल्क्रीम है न!

अपने आसपास देखिये और उन व्यक्तियों का पता लगाइये जो बिल्क्रीम प्रयोग में लाते हैं। स्वच्छ एवं स्वस्थ बालों से उनका पता आसानी से लग सकता है। बिल्क्रीम बालों को अपने स्थान पर रख

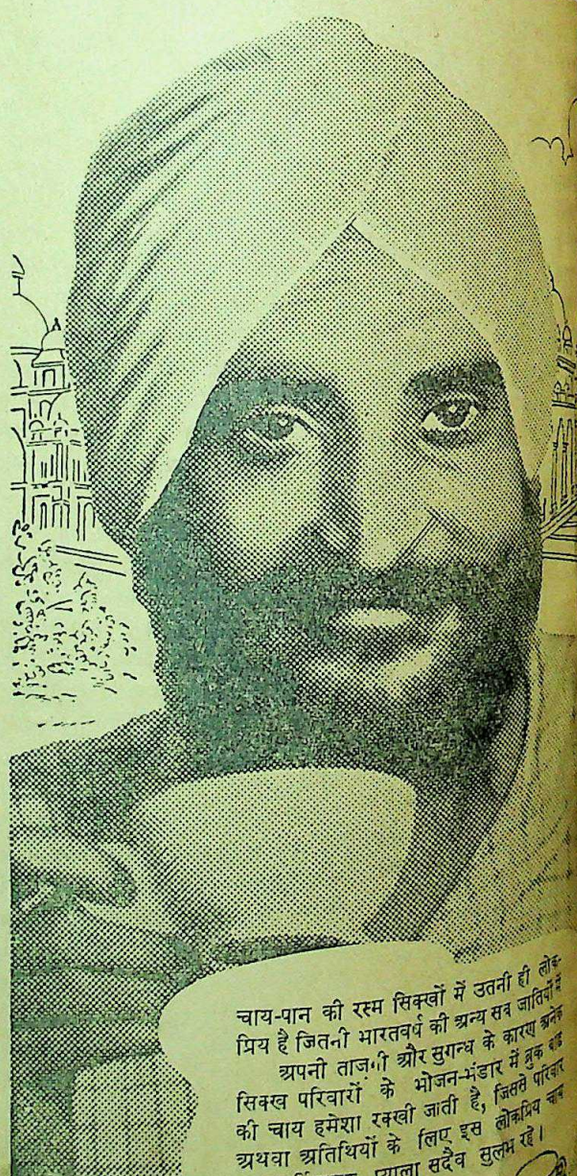

चाय-पान की रस्म सिक्खों में उतनी ही लोकप्रिय है जितनी भारतवर्ष की अन्य सब जातियों में

अपनी ताज़गी और सुगन्ध के कारण अनेक सिक्ख परिवारों के भोजन-भंडार में ब्रुक बंड की चाय हमेशा रक्खी जाती है, जिससे परिवार अथवा अतिथियों के लिए इस लोकप्रिय चाय का स्फूर्तिदायक प्याला सदैव सुलभ रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

तीन नाटक❀

लेखक, श्री 'नीरव' एम० ए०

उपन्यास और नाटक की धारा, उपन्यास और नाटक की धाराओं में प्रवाहित जीवनसलिल में स्नान कर साहित्य के तीर्थराज का निरन्तर दर्शन करनेवाले प्रौढ़ साहित्यकारों ने विगत वर्षों से जिस प्रकार का सृजन किया है उसमें उज्ज्वलता, गम्भीरता और सौन्दर्य का प्रशंसनीय संयोग हुआ है। इस वर्ष नाटक-लेखकों की प्रतिभा ने हिन्दी साहित्य-श्री को अधिक सुन्दर और सुहागिन बनाया है। कल्पना के आकाश से उतरी हुई नाटक की कला-परी भावुकता और तर्क दोनों के कन्धों पर हाथ रखकर साहित्य-जगत में पदार्पण करती है। उसकी अनुभूतियाँ स्वतः प्रखर और विचारोत्तेजिनी बन जाती हैं। यह 'तीन नाटक' हमारे यशस्वी नाटककार और श्री उदयशंकर भट्ट के ऐसे ही तीन नाटकों का संग्रह है। जिनकी कथावस्तु ऐतिहासिक सुदूर अतीत की कथा किंवदन्ती में ले ली गई है। उनके शृंगार, चरित्र-गति और उनके रूप-निर्माण से सम्बन्ध रखनेवाली कल्पना लेखक की मौलिक कल्पना है।

नाटक के क्षेत्र में लेखक की यह नवीन-कृति है। पुस्तक की छपाई सुन्दर है। मुखावरण-पृष्ठ आकर्षक है। लगभग सभी नाटकों में विभिन्न युगों की सांस्कृतिक चेतना से सम्बन्ध रखनेवाले—'आदिम युग और मानव' तथा 'कुमार-सम्भव' तीन नाटक संग्रहीत हैं। प्रारम्भ में नाटक और नाटकों की कथा से सम्बन्धित एक भूमिका है जिसमें लेखक ने अभिरुचि और विषय-विषयक कठिनाइयों की ओर संकेत किया है। नाटक ने मानव, मानव-सभ्यता और विकास की परम्परा पर एक प्रबुद्ध दार्शनिक और वैज्ञानिक की विचारशैली में व्याख्यान किया है। अतीत के विच्छिन्न तथ्यों के पारस्परिक सम्मिलन से जो असाधारण रुचि-ग्राह्यता उत्पन्न हुई है, उसमें लेखक की विचार-पूर्ण और जागृत कल्पना का भी सहयोग है। नाटकों के कथानक तर्कसम्मत, ओज-पूर्ण और सुबोध पाण्डित्य की ओज-प्रोत हैं जिनमें पौराणिकता का अन्ध अनुसरण नहीं है; स्वतन्त्र प्रतिभा का आलोक है। इतिहासपूर्ण आदिम युग की मूल वस्तु को कल्पनात्मक रूप देकर नाटक-रचना में प्रयुक्त बना लेना निस्सन्देह अति सुन्दर अनुभवसिद्ध प्रतिभा का कार्य है। लेखक ने 'आदिम युग' के रूप में हिन्दी को एक अपूर्व भेंट दी है। मानव-जीवन के विकास का एक चित्र है। लेखक का यह विश्वास कि आदि युगों की समस्याओं के [illegible] नाटक—लेखक [illegible] मुद्रक—यूनिव[illegible] रामशरण भट्ट | मू०

अथवा समय की निर्माण विनाश क्रियाओं के उत्तरोत्तर आघात सहते हुए उसकी आकृति और सभ्यता के वर्तमान रूप बने हैं। इस विषय को नाटककार ने एक प्रगतिशील इतिहासज्ञ की दृष्टि से देखा है। आदि काल से ही सृष्टि का प्रत्येक चेतन प्रगतिमय है और उसके विकास में उसी की शक्तियों का सहयोग है। उसने स्वर्ग में रहनेवाले देवताओं की ओर नहीं देखा और न निष्पाण प्रकृति का ही कुछ छीना है। जड़ प्रकृति-चेतना को उत्तेजित भले ही कर सके किन्तु उसमें जीवन-सृजन की शक्ति नहीं। मनुष्य और मनुष्य-समाज जिनकी सुकुमार अनुभूतियों और सूक्ष्म भावनाओं की जागृति एवं परिष्क्रिया में प्रकृति के प्रत्यक्ष साहचर्य का प्रभाव रहा है स्वतः ही शनैः शनैः मानवता के अद्य-युगीन स्तर तक पहुँचे हैं। नाटक की इस पृष्ठभूमि में जीवन के विकास की छाया है जिसके समीप पहुँचते ही उस युग की प्राकृतिक अवस्थाएँ अपने स्वाभाविक रूप में आप ही दृष्टिगत हो जाती हैं। रूप, आकार, चेष्टा, बुद्धि, रुचि और पारस्परिक मानसिक संस्थान की गति-विधियों से अपरिचित आदिम स्त्री एवं पुरुष जब संयोगवश एकत्र होकर एक दूसरे के प्रति अज्ञात प्रेरणाओं से आकृष्ट होते हैं तो भावाभिव्यक्ति की समस्या कुछ काल के लिए उन्हें उद्विग्न कर देती है। भावों की प्रेषणीयता के द्वार का यह परम प्रारम्भिक रूप क्या रहा होगा? इस प्रश्न का नाटककार ने बड़ी बुद्धिमत्ता से समाधान किया है। भाषा-विज्ञान के विभिन्न मतों के विवाद छोड़कर लेखक ने यही स्वीकार किया है कि मूलरूप में भाषण-शक्ति मनुष्य को अन्य शक्तियों के साथ ही प्राप्त हुई है और भाषा का निर्माण एवं परिष्कार उसने प्रकृति की चेष्टाओं के अनुकरण से किया है। अस्पष्ट और अल्हड़ भाषा जिसमें सांकेतिकता की प्रधानता थी उन दो आदिम हृदयों के संवादों का साधन बनी जिसमें धीरे धीरे भाव और रस अपने आप आते गये। वे धीरे धीरे एक-दूसरे की शक्तियों और दुर्बलताओं से अभिगत हुए और पुरुष एवं स्त्री में विभेद हो गया। दोनों की विवेक-शक्ति जगी और पशुता मनुष्यता से पृथक हो गई। इस नाटक की वस्तु का शृंगार देखने में नाटककार की कवि-सुलभ कल्पना और तत्त्ववादी तर्क दोनों की कला के दर्शन हो जाते हैं।

'मनु और मानव' इस संग्रह का दूसरा नाटक है। भारतीय साहित्य और प्राचीन भारतीय इतिहास के क्षेत्र में 'मनु और मानव' एक सर्वोपरि व्यापक महत्ता का विषय रहा है। पुराणों में मनु के सम्बन्ध की कुछ कथाएँ आती हैं जिनके आधार पर सृष्टि-रचना के विकास को चौदह मन्वन्तरों में, विभाजित किया गया है। प्रस्तुत नाटक में नाटककार ने वैवस्वत मनु के जीवन, उनके क्रिया-कलाप और उनके महत्त्व को अंकित किया है। इस नाटक की गति के साथ चलते चलते कितनी ही बार 'कामायिनी' [illegible] विषय और

ने मानव-समाज की आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक अवस्थाओं पर गम्भीर विचार करके मानव-समुदाय के लिए एक व्यापक विधान की रचना की जिसने भारत और भारत-मित्र विश्व में अपने प्रभाव की अमिट छाप छोड़ी है। मनु ने प्राचीन आर्यों को एकता के सूत्र में अनुस्यूत करके एक ऐसी वीरवाहिनी का निर्माण किया जिसके बल पर भारत के गौरव और भारत की संस्कृति की युगों से सुरक्षा होती आ रही है। उस महात्मा ने विवेक की दृष्टि से मानवता के भविष्य का अंधकार देखा और भारतीय सभ्यता की ओर बढ़ते हुए विनाश के सघन मेघों को चीरती हुई जो ज्ञानालोक की रेखा खींची उससे भारत ही क्या समस्त विश्व ज्योतिर्मय हो उठा। लेखक ने भारत की सभ्यता और शक्ति की वन्दना की है जिसका प्रत्येक अभिनय आज के भारतीय से मानो संकेत करता है कि वह एक बार अपनी शक्ति का अनुमान करे, एक बार मिटते हुए युगों की सैकत भूमि पर अंकित अपने प्रतिभावान् पूर्वजों के चरण-चिह्न देखे।

'कुमार सम्भव' इस संग्रह का तीसरा नाटक है। यह एकांकी है। कालिदास के जीवन की एक 'पार्वती-शृङ्गार वर्णन सम्बन्धिनी' किंवदन्ती के आधार को लेकर संस्कृत-साहित्य में 'कुमार सम्भव' की रचना पर एक विवाद खड़ा हुआ। नाटककार ने इस जनश्रुति का विरोध किया है। लेखक का विचार है कि कालिदास ने कुमार सम्भव चन्द्रगुप्त के पुत्र कुमारगुप्त के जन्मोत्सव के लिए लिखा था। इस नाटक में कल्पना का अंश अधिक है। विश्वसाहित्य का सर्वश्रेष्ठ नाटककार सिद्ध करने के विचार से लेखक ने जिस रूप में भूत एवं वर्तमान नाटककारों का सरस्वती के समक्ष आवाहन किया है वह अधिक कलापूर्ण प्रतीत नहीं होता।

तीनों नाटकों में संस्कृतगर्भित शुद्ध खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है इससे नाटकों की साहित्यिक महत्ता तो बढ़ गई है परन्तु जन-साधारण के उपयोग की हानि भी हुई है। भट्ट जी की अन्य रचनाओं की भाँति इन नाटकों में भी बौद्धिकता सर्वत्र व्यापक है यह उनके चिन्तन की दार्शनिकता का परिणाम है। तीनों नाटकों में 'त्रिसंचय' काल, स्थान और गति की एकता का विचार जान-बूझकर नहीं रक्खा गया है। चित्रपट के आधुनिक युग में नाटक की उत्कृष्टता का यह रूढ़िग्रस्त माप-दण्ड कुछ असंगत भी प्रतीत होता है। साधारण रूप से तीनों नाटकों के सफल रचना होने में कोई प्रश्न नहीं उठता। उनके कथानक गम्भीर एवं प्रभावपूर्ण हैं, संवाद मार्मिक और वाक्चातुरी से सजे हुए हैं। हिन्दी के नाटक-साहित्य में कला, कल्पना और तर्क का समवेत आलिंगन करते हुए ये नाटक अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व के मूल्य की दृष्टि से सदा मान्य रहेंगे।

कोठी राज्य का समाचार

कोठी राज्य सी० आई० के समस्त कर्मचारियों की हड़ताल जो महीनों से चल रही थी १६-१२-४६ से समाप्त हो गई। सरकार ने उनकी प्रायः सभी शर्तें मान लीं।

(१) हड़ताल के दिनों की पूरी तनख्वाह मिलेगी, (२) हड़तालियों पर से मुकदमा उठा लिया गया, (३) वेतन की वृद्धि हुई, (४) हड़तालियों की प्रतिनिधि कमेटी की माँग कि १५) या इससे कम पानेवालों की महँगाई के रूप में १) तरक्की हो स्वीकार की गई, (५) सोहावल राज्य के कर्मचारियों के साथ भी यही शर्तें लागू होंगी।

पोलिटिकल एजेन्ट ने, प्रजामंडल की ओर से संगठित किसान-कमेटी की शिकायत पर सेटिलमेंट अफसर को आज्ञा दी है कि वह कोठी में रहकर लगान और जमीन-सम्बन्धी किसानों की कठिनाइयों को सुने और समझे तथा दूर करने की कोशिश करें।

इस आंशिक सफलता से प्रजामंडल को सन्तोष नहीं क्योंकि उसकी माँग उत्तर-दायित्वपूर्ण शासन है। वह अपने आन्दोलन को तब तक जारी रखेगा जब तक वह अपने लक्ष्य की प्राप्ति न कर ले।

—गंगाप्रसाद पांडेय, प्रचार-मन्त्री

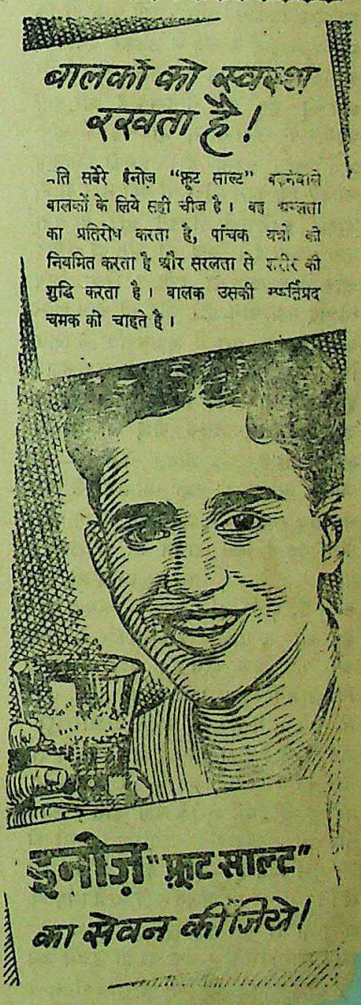

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय संस्कृति का आदर्श

(पेज ७ का शेष)

इन व्रतों के न पालन करने का ही परिणाम है कि एक का अर्थ दूसरे के लिए अनर्थ हो जाता है। एक का धर्म दूसरे के लिए अधर्म होता है, और जिससे एक संतुष्ट होता है उसी से दूसरा परितप्त। यदि हम इन व्रतों का ठीक-ठीक पालन करें तो वह संघर्ष जो आज हम देखते हैं और जिनका परिणाम देश-देश के बीच में और एक ही देश के भिन्न-भिन्न विभागों और वर्गों के बीच में भयंकर विवाद और मार-काट का रूप धारण करके उपस्थित होता है, हमें न देखना पड़े।

आज भारतवर्ष के सामने जितनी समस्याएँ हैं उन सबका कोई न कोई हल इन व्रतों में मौजूद है। यदि हम अस्तेय और असंग्रह के अर्थ को ठीक समझ लें और उन्हें जीवन में ग्रहण कर लें तो जो झगड़ पूँजीपति और मजदूर-जमींदार और किसान तथा अमीर और गरीब के बीच में हैं, खुद-बखुद दूर हो जायँ। यदि हम ब्रह्मचर्य के महत्त्व को मान लें और उसे जीवन में उतार लें तो बहुत प्रकार के झगड़े जो घरों में और दूसरों के साथ होते हैं, वह तो मिट ही जायँ, साथ ही मनुष्य की सारी शक्तियों का ऐसा विकास और ऐसी वृद्धि हो कि मनुष्य, मनुष्य के दर्जे से उठकर देवत्व के दर्ज तक पहुँच जाय। हमारे लोग शरीर श्रम को हेय दृष्टि से देखते हैं और इसी आधार पर ऊँच-नीच, छोटे-बड़े की भावनाएँ काम करती हैं। हमको जानना चाहिए कि काम छोटा या बड़ा नहीं होता, उसका करनेवाला ही उसे छोटा या बड़ा बना सकता है। कोई भी काम हो सचाई और लोक-संग्रह की दृष्टि से किया जाय तो वह बड़ा काम है। कोई भी काम लोभ और मोह के वश में स्वार्थपूर्ति के लिए किया जाय, तो वह महान् नहीं हो सकता। इसलिए काम का महत्त्व और लघुत्व जानने के लिए उसके पीछे जो भावना लगी होती है, जो नीयत होती है—उसे जानना चाहिए। सभी धर्मवालों के साथ समभाव रखना, हमारे देश में जो आग फैली हुई है उसे शमन कर सकता है। पर हम तो धर्म के नाम पर स्वार्थ की पूजा करते हैं, दूसरों को दबाने का प्रयत्न करते हैं—और न मालूम कितने प्रकार के अनर्थ और पाप किया करते हैं। यही कारण है कि आज हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच में इतने दंगे-फसाद, मार-काट और लूट-पाट हो रहे हैं। कौन धर्म है जो इनकी निन्दा नहीं करता और किस धर्म में ऐसे लोग नहीं हैं जो इनमें शरीक नहीं होते? आज तो हम मनुष्यत्व के साधारण नियमों को भी भूल जाते हैं—इतना ही नहीं जानवरों के नियमों का भी पालन नहीं करते। हिंसक जन्तु भी दो ही कारणों से दूसरों पर आक्रमण करते हैं—एक या तो उसने उन [illegible] आक्रमण किया हो या और किसी अन्य [illegible] पहुँचाया हो; दूसरा वह [illegible] पर हम तो आज [illegible] के सम्बन्ध देख करने से नहीं [illegible] जा सकते थे [illegible] बराई नहीं [illegible] लोगों के व्यथित [illegible]। हम [illegible] बैठते हैं। इसमें बच्चे और स्त्रियों का भी खयाल नहीं करते। इस प्रकार की बातें किसी धर्म और समाज में निहित नहीं हैं। बर्बर समाज भी इन्हें जायज नहीं बताता। यह सब सर्व धर्मों में समभाव के अभाव का फल है।

राष्ट्र-संघ में भारत की विजय

(पेज ९ का शेष)

प्रस्ताव के सम्बन्ध में बिना निर्णय हुए ही वापस लौट आये।

चोर चोर मौसेरे भाई

लोक सत्तात्मक सिद्धान्तों की डींग मारनेवाले अँगरेजों के प्रतिनिधियों ने संयुक्तराष्ट्र-संघ में भारतीयों का साथ नहीं दिया। वे जनरल स्मट्स के साथ हाँ में हाँ मिलाते रहे। "चोर चोर मौसेरे भाई" वाली कहावत को अँगरेज प्रतिनिधियों ने पूर्ण रूप से आज दुनिया के समस्त राष्ट्रों के सामने चरितार्थ किया है। रूस की सोवियट सरकार का प्रमुख पत्र "प्रवदा" ने जनरल स्मट्स की आलोचना करते हुए कहा है। "स्मट्स की नीति प्रजातन्त्र शासन-सिद्धान्त के बिलकुल विरुद्ध है और दक्षिणी-पश्चिमी अफ्रीका को यूनियन सरकार में मिलाने का उनका प्रयत्न यह जाहिर करता है कि वर्त्तमान संयुक्तराष्ट्र-संघ में भी उन्हें वही पुरानी लीग आफ नेशन्स की छाया दिखाई पड़ती है। दुःख तो इस बात का है कि स्मट्स और उनके हिमायती आज भी प्रजातन्त्र के नाम पर अपनी शोषण की नीति का परिचय दे रहे हैं।" अँगरेजों ने भारत का साथ न देकर दुनिया के सामने यह बतला दिया कि उनकी मजदूर सरकार की नीति वही है जो सदियों से आ रही है और उनकी वर्त्तमान मजदूर सरकार ठीक हाथी के दाँत की तरह है जो दिखाने के लिए और तथा खाने के लिए और है।

राष्ट्रों के सामने भारत का सर ऊँचा

अमेरिका से वापस आने के पहले संयुक्तराष्ट्र-संघ के भारतीय प्रतिनिधि दल के एक सदस्य डा० लंका सुन्दरम् ने न्यूयार्क में ठीक ही कहा है कि भारतीय प्रतिनिधि-दल इस गर्व तथा विश्वास के साथ अमेरिका से वापस लौट रहा है कि उसने न केवल ठोस कार्य किया है बल्कि उसके कार्य की सभी भारतीय सराहना करेंगे। उन्होंने कहा कि वे दिन अब [illegible] जब राष्ट्र-संघ जैसी अन्तर्राष्ट्रीय [illegible] भारतीय प्रतिनिधि-दल [illegible] की कठपुतली की भाँति काम [illegible] भारत ने संसार के राष्ट्रों में अपना [illegible] ग्रहण कर लिया है और [illegible] तथा भविष्य की विश्व राजनीति [illegible] अपना अधिकाधिक महत्त्व [illegible] लिया है। अमेरिका का एक [illegible] वार 'न्यूयार्क पोष्ट' ने भी [illegible] द्वारा भारत को इस शानदार [illegible] प्रचार किया है। कार्टून में [illegible] प्रतिनिधि श्रीमती विजयलक्ष्मी [illegible] में एक जलता हुआ दीपक [illegible] गई हैं जिसके प्रकाश में दक्षिणी [illegible] की यूनियन सरकार के [illegible] विश्व के सामने दिखाई पड़ रहे हैं। [illegible] वर्ष सदैव से प्रकाश का केन्द्र [illegible] स्वतन्त्र भारत से संसार को [illegible] आशा है। अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में [illegible] इस प्रथम शानदार विजय से उन [illegible] आँखें खुल जानी चाहिए जो [illegible] नाम पर अपने घृणित स्वार्थों को [illegible] रहे हैं और संसार की उन्नति-[illegible] बनकर अपना मुँह कलंकित कर [illegible]

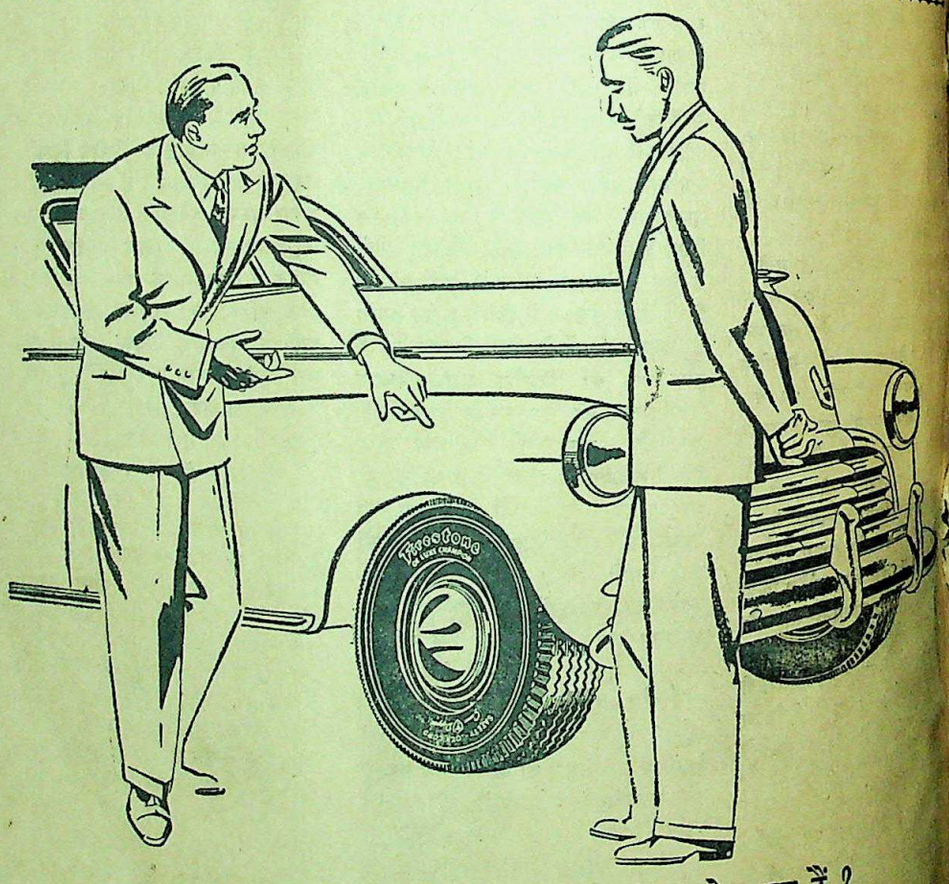

क्या आपकी मोटर के टायर गोंद में डुबोए हुए हैं?

यदि वे नहीं हैं, तो आप उनके भरोसे और उनके कार्यों द्वारा अपनी मोटर को पूर्ण शक्ति से चला सकते हैं। 'गोंद में डुबोने' की प्रणाली, जिसकी फायर स्टोन में आवश्यकता नहीं, भीतरी मजबूती को बढ़ाती और बाहरी पंचर आदि के खतरे से बचाती है। इस प्रणाली से बिना अधिक खर्च के बाधारहित लम्बी यात्रा कर सकते हैं।

Firestone

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रा रंग-मंच

'संग्राम'

सा-सम्बन्धी एक राज-नीक और सुन्दर फिल्म

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

ा में सिनेमा की ओर लोगों का धिक आकर्षित हो रहा है। प्रचार- का सिनेमा एक महत्त्वपूर्ण अंग इस प्रचार-द्वारा किसी भी छोटी को बड़ा बनाया जा सकता है। की अभिरुचि देश में बढ़ती जा है। कितनी ही फिल्म-कम्पनियाँ ा हो गई हैं। सभी एक दूसरे की ों कर रही हैं। बंगाली फिल्म- भी इस कला में पीछे नहीं, ही फिल्म जो इन दिनों दिखाये जा उनमें संग्राम सबसे अच्छा चित्र कहा ता है। विचारों और चित्रों की की दृष्टि से यह फिल्म बंगाली में एक नवीनतम उत्पादन कहा ता है। इस 'संग्राम' चित्र के न के लिए उसके डाइरेक्टर अर्द्धेन्दु और कहानीकार श्री निताई भट्टा- ने एक फिल्म के रूप में प्रस्तुत करने सिनेमा अभिलषित व्यक्ति उपर्युक्त नों के बहुत ही कृतज्ञ रहेंगे। संसार में ऐसे ही आदर्शमय चित्रों ावश्यकता है जिनकी रचना और में विरले ही कलाकार सफल

* *

हानीकार के विचार और उसके ी भावनाएँ ही उसकी रचना में व्याप्त रहती हैं। श्री भट्टाचार्य एक सच्चे कांग्रेसमैन हैं। उनका हृदय देश की स्वतंत्रता के लिए तड़पता रहता है। वे अपने देश को किस प्रकार स्वतन्त्र कर सकते हैं? इन सबका विश्लेषण चित्र में स्पष्ट रूप से झलकता है। भट्टाचार्य जी किन आदर्शों को लेकर स्वतन्त्रता के लिए संग्राम करने की इच्छा रखते हैं वह इस चित्र में स्पष्ट झलकता है। स्वतन्त्रता प्राप्त करने के भिन्न-भिन्न मार्ग हो सकते हैं। संग्राम सदैव तलवार अथवा लोहे से लड़ा गया है और लड़ा जाना चाहिए। परन्तु 'संग्राम' चित्र में वह बिलकुल भिन्न दिखलाई पड़ता है। अस्त्र और लोहे की अवहेलना की जाती है। संग्राम में जिन साधनों से सफलता मिलती है उनको पूर्ण रूप से घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। यह इसलिए कि श्री भट्टाचार्य अहिंसा-वादी हैं। महात्मा जी की अहिंसा में अटूट विश्वास रखते हैं। इस अहिंसा को वे जन-समूह में पहुँचाने का प्रयत्न करते दिखाई देते हैं। संग्राम करना बहुत आवश्यक है, परन्तु उनके लिए यह कितना भयङ्कर और दुःखमय हो सकता है जिनके पास दूसरों से मुकाबला करने का कोई साधन नहीं। जिनकी जबान को जबान नहीं कही जा सकती वे भला क्या संग्राम कर सकते हैं। परन्तु कहानीकार श्री भट्टाचार्य ने अपनी रचना में ऐसा अमोघ अस्त्र, दुखियों, असहायों और गुलामों के लिए बतलाया है जिसकी शिक्षा भारत के महान् नेता गांधी जी दे रहे हैं। उस शिक्षा में सत्य और अहिंसा पर अटल विश्वास रखना चाहिए। सत्य और अहिंसा पर जोर देते हुए कहानीकार ने अपने पात्रों को संग्राम के लिए तैयार किया है। हिंसा से वह घृणा करता है। डाइरेक्टर श्री मुकर्जी ने कहानी को रङ्गमञ्च के योग बनाने में काफी सफलता प्राप्त की है।

* * *

पुराने क्रान्तिकारी श्री राजन जो उस चित्र के एक पात्र हैं एक बड़े हिंसावादी व्यक्ति हैं। देश-प्रेम की भावना से वे आतङ्कवादी हो गये। वे राष्ट्र को गुलामी से मुक्त करना चाहते हैं। इसके पश्चात् उनका पुत्र 'सुव्रत' मंच पर आता है एक नये आदर्श के साथ, एक नवीन धारा के साथ। वह अहिंसा का अमोघ अस्त्र रखता है। दोनों पिता-पुत्र देशभक्त हैं परन्तु दोनों के मार्ग भिन्न-भिन्न हैं। दोनों के ढंग और कार्य बिलकुल एक-दूसरे के प्रतिकूल हैं। यही कहानी का मूल तत्त्व है।

* * *

सर विरजाप्रसाद जो फिल्म के एक चरित्र से स्पष्ट प्रकट होता है कि वे ठाकुर रवीन्द्रनाथ की पीढ़ी में से हैं, उनका दर्शन 'उमर खैयाम' के सूफी सिद्धान्तों से ओत-प्रोत है। वह स्वयं सुव्रत और उसके साथी दिव्येन्द्र के आदर्शों के आगे झुक जाते हैं। वह अपने आदर्शों को छोड़-कर नये आदर्शों के सामने झुक पड़ते हैं। इस प्रकार प्राचीनता के ऊपर नवीनता को विजय मिल जाती है। दिव्येन्द्र की माँ और युवक रशीद के कार्य-कुशलता से चित्रपट पर देखे जा सकते हैं। मनीशा अपने पति के साथ रहना पसन्द नहीं करती जब तक कि वह अहिंसा के प्रवाह में नहीं वह चलता।

* * *

चित्र में सारे ऐक्टरों ने बड़ी कुशलता से अपना कार्य किया है। छवि विश्वास, जीवन बोस, कमल मित्र, मलिना और सन्ध्यारानी के कार्य बड़े ही कुशलतापूर्वक हुए हैं। सुव्रत ने, जो कि चित्र के नायक हैं, बड़ी ही कुशलता से अपना पार्ट अदा किया है। विपिन मुकर्जी, सावित्री और रेवा के कार्य भी सराहनीय हुए हैं।

संगीत की दृष्टि से चित्र बहुत ही गिरी दशा में कहा जा सकता है।

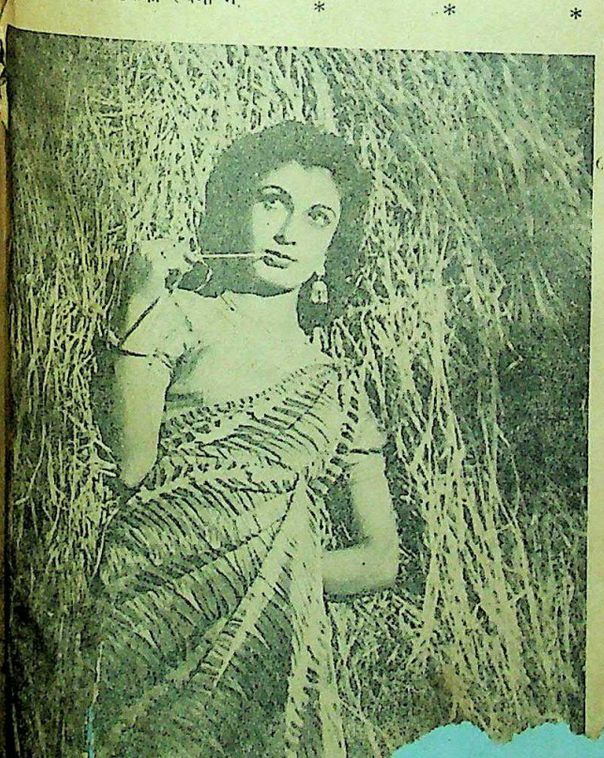

श्वेतकुष्ट वनौषधि

महात्माप्रदत्त श्वेतकुष्ट (सफेदी) की दवा से तीन दिन में पूरा फायदा। यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, विज्ञापन-दाताओं की दवा से निराश हो चुके हों तो इसे लगाकर आराम होवें। १५ दिन की दवा का मूल्य २॥)।

सफेद बाल काला

इस तेल से बालों का पकना रुककर और पका बाल काला पैदा होकर यदि ६० वर्ष तक काला न रहे तो दूना मूल्य वापिसी की शर्त लिखा लें। यह तेल सिर के दर्द व सिर में चक्कर आना आदि को आराम कर आँख की रोशनी बढ़ाता है। एक-आध बाल पका हो तो २), आधा पका हो तो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मँगवा लें। एजेण्टों की हर जगह आवश्यकता है।

स्तम्भक वटी

एक गोली शाम को खा लें और इसके अद्भुत चमत्कार को देखें। एक घण्टे तक स्तम्भन कर गजब ढा देगी। १६ गोली १), ५० का २॥), १०० का ५)।

पता—वैद्यराज अखिलकिशोर राम
No. 37 नं० ३७ पो० कतरीसराय (गया)

अधिक मैले भाग किसप्रकार से धुलाये जाते हैं, उसपर आप के कपड़ों का भवितव्य अवलंबित है! याद रखिये, अधिक मैले भाग वही हैं जो कि, पहिनने से ज़ियादा घिस जाते जाते हैं और इसलिये उन को सर्व प्रथम हानि पहुँचती है जब कि आप के कपड़े थोड़ा साबुन लगाने के बाद पानी में भिगो, पटककर साफ़ किये जाते हैं।

आप के कपड़े सनलाइट के पद्धति से धुलवाइये और उन्हें पटके जाने के नुक़सान से बचाइये।

सनलाइट का विपुल, स्वयं-क्रियाशील झाग भिगोये हुये कपड़ों में से मुक्तहस्त से निचोड डालने से वह हर समय उन्हें सफ़ेद करता है—पूर्णतया एवं सुरक्षापूर्वक साफ़ करता है। यह शुद्ध साबुन पटके जाने के बग़ैर कपड़ों के मैलेपन को हटाता है; उन को पँख के समान मुलायम करता है और ... के हाथों को भी सौम्य तथा कोमल रखता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर उधर की

संसार का सबसे अमीर आदमी

डाक्टर जान विलियमसन, जिनकी अवस्था ४० वर्ष की है और जो अविवाहित हैं, सचमुच संसार भर में सबसे धनवान् पुरुष हैं, लन्दन से ऐसी एक खबर मिली है।

अब यह पूर्ण रूप से निश्चय हो गया है कि उनकी म्यौदी की हीरे की खान, टैंगानीका, जो शिन्याङ्ग झील के पास है, दुनिया की किसी भी दूसरी खान से आठ गुनी अधिक बड़ी है। रिपोर्ट मिली है कि टैंगानीका में मशीन का प्रयोग होने से विलियमसन की खान की उपज में नित्य-प्रति के हिसाब से २०० टन की वृद्धि हो जायेगी।

विलियमसन के विषय में डी बियर्स खान के भूतत्त्वज्ञ प्रोफेसर बेन्क्रोफ्ट ने कहा है कि वह जगत् में सबसे होनहार भूतत्त्वज्ञाता है। विलियमसन १९३४ में टैंगानीका आये और उन्होंने २० से ६० मील के अर्द्धव्यास के अन्दर बहुत से स्थानों पर दावा कर लिया। कष्टदायक कार्य करने पर सात वर्ष बाद उन्होंने एक केन्द्रीय नल ढूँढ़ निकाला जहाँ से बिन्दु फेंके गये थे। युद्धकाल में उनके द्वारा निकाले गये हीरे ब्रिटिशों के युद्ध के लिए प्रयत्नों के लिए अमूल्य सिद्ध हुए।

* * *

एक विख्यात जनरल के पास, जो लड़ाई से लौटा था, एक भिखारी एक पुराना सिपाही होने का दावा करता हुआ पहुँचा।

'क्या, पुराने सिपाही?' जनरल भौंक पड़ा। 'अच्छा, इसका सबूत दो। टेन्शन। आईज़ राइट, आईज़ फ़ाम। अब, इसके बाद क्या होता है?'

'प्रेजेण्ट आम्स' (दान की भेंट दो), तत्काल उत्तर मिला।

* * *

साँड़ से लड़नेवाली लड़की

साँड़ों की लड़ाई करानेवाले घेरों में साँड़ से लड़नेवाली एक आकर्षक लड़की के बारे में बातचीत चल रही है। आप कन्चिटा साइट्रन हैं जो सैन सेबस्टियन में अकेली साँड़ से घोड़े पर चढ़कर लड़ती हैं। आप प्रवीण घुड़सवार हैं। यदि वह अपने फरसे से साँड़ को नहीं मार पातीं, तो उन्हें स्पेन के कानून के अनुसार उतरने की आज्ञा नहीं मिलती। पहले आप पीरू में उतरकर भी अपने पैरों तले उसे मार डालती थीं। इसके बजाय, एक साँड़ को मारनेवाला घटनास्थल में प्रविष्ट होता है और आपके निमित्त उसे मार डालता है। इसकी कभी-कभी ही आवश्यकता पड़ती है।

* * *

संयुक्तराष्ट्र अमेरिका की जन-संख्या

जन-संख्या की वृद्धि में जो यह कमी हो रही है उसका कारण है पैदाइश की संख्या में अत्यन्त कमी। यद्यपि युद्धकाल में १९४० के साल में पैदाइशों में काफ़ी बढ़ाव हुआ था, फिर से पैदाइश के अभाव की प्रवृत्ति प्रत्याशित है।

* * *

दयाराम घोड़े पर चढ़ा हुआ कहीं जा रहा था। मिट्ठनलाल ने पूछा—कहाँ जा रहे हो?

'फाफामऊ'

'मुझे भी मेहँदौरी चलना है। यहाँ से कितनी दूर पड़ेगा?'

दयाराम ने बताया—चार मील। और मिट्ठन को बिठाकर ले चला। जब फाफामऊ पहुँच गये, तो मिट्ठन ने प्रश्न किया—मेहँदौरी कितनी दूर रह गया?

दयाराम—वह तो एक मील पीछे रह गया।

मिट्ठन—तुमने मुझे बताया क्यों नहीं?

दयाराम—तुमने कहा [illegible] मुझे वहाँ उतार देना।

* * *

वे बरामदे में चन्द्रमा के [illegible] बैठे हुए थे। किन्हीं शब्दों ने [illegible] न भंग की। वह जँहाई लेने लगी [illegible]

'मैं कहती हूँ', वह, अचानक [illegible] उठी, 'मान लो कि तुम्हारे पास [illegible] तो तुम क्या करते?'

'यदि मेरे पास धन होता', [illegible] पूर्वक कहने लगा, 'तो मैं सैर [illegible]

उसने उसका छोटा हाथ [illegible] में ले लिया। उसने अपने नेत्र [illegible] प्रसन्नता से गहरी श्वासें [illegible] जब उसने दुबारा ऊपर को देखा [illegible] जा चुकी थी।

उसके हाथ में एक [illegible] हुई थी।

—ललित, [illegible]

दो समस्यायें

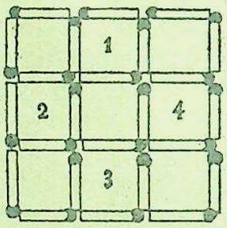

प्रश्न: दिया सलाई की ४ तीलियों को [illegible] हटाइए कि ५ समकोण चतुर्भुज शेष रह जायें।

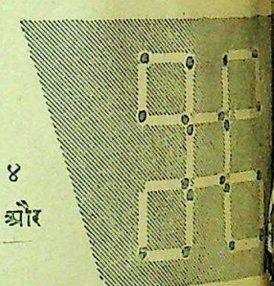

उत्तर: बाहर वाली तीलियों को जो नं० १, २, ३, और ४ समकोण चतुर्भुज बनाती हैं, हटाइए। ४ समकोण चतुर्भुज लुप्त हो जायेंगे और शेष ५ रह जायेंगे।

इस समस्या का निवारण कठिन नहीं था। "अपनी बचत का व्यय [illegible] किया जाय"—इस दूसरी समस्या की निवृत्ति भी कठिन नहीं है। अपनी बचत नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स में लगाइए।

डालडा आपके दिल्पसन्द भाजी को स्वादिष्ट करता है—और आप को स्फूर्ति भी देता है!

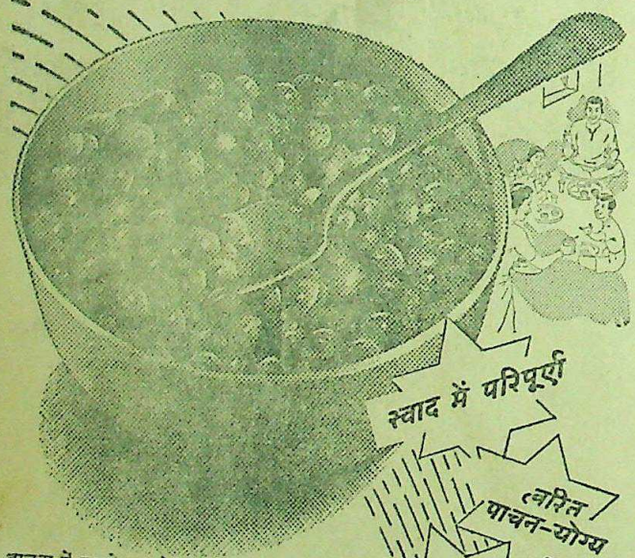

डालडा में पकाये हुए भोजन की "बचत" नहीं होगी! [illegible] त्वरित् पाचन-योग्य और विटैमिन्-युक्त डालडा [illegible] भोजन को भी अपने मधुर स्वाद से परिपूर्ण [illegible] आक्रमण किया [illegible] निक आहार की एकरूपता से आप [illegible] डालडा से पकावो और प्रसिद्ध [illegible] विशुद्ध रसोई-साधन-द्वारा [illegible] के सम्बन्ध [illegible] गे। और याद रखो, [illegible] जा सकते थे [illegible] नहीं—बल्कि [illegible] लोगों के व्यथित [illegible]। हमें [illegible]

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

(१) आप ५, १०, ५०, १००, ५००, १०००, या ५०००, रु० के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) कुटुम्ब का प्रत्येक व्यक्ति (वयस्क या अल्पवयस्क) ५००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स खरीद सकता है। दो व्यक्ति मिलकर १०,००० रु० तक के सर्टिफ़िकेट्स खरीद सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ [illegible] १॥) बन जाता है। [illegible] ाने की मदों [illegible] यह सब से [illegible]

(४) इस ब्याज पर इन्कम [illegible] लगता।

(५) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा [illegible] हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट [illegible] पश्चात भी भुनाया जा सकता है)

(६) जिनकी बचत थोड़ी है वह [illegible] ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्प्स ख़रीद सकते [illegible] ५ रु० के स्टाम्प्स जमा होने पर एक [illegible] सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट मिल जायेगा।

(७) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्प्स [illegible] सरकार [illegible] एजेंटों अथवा [illegible] है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

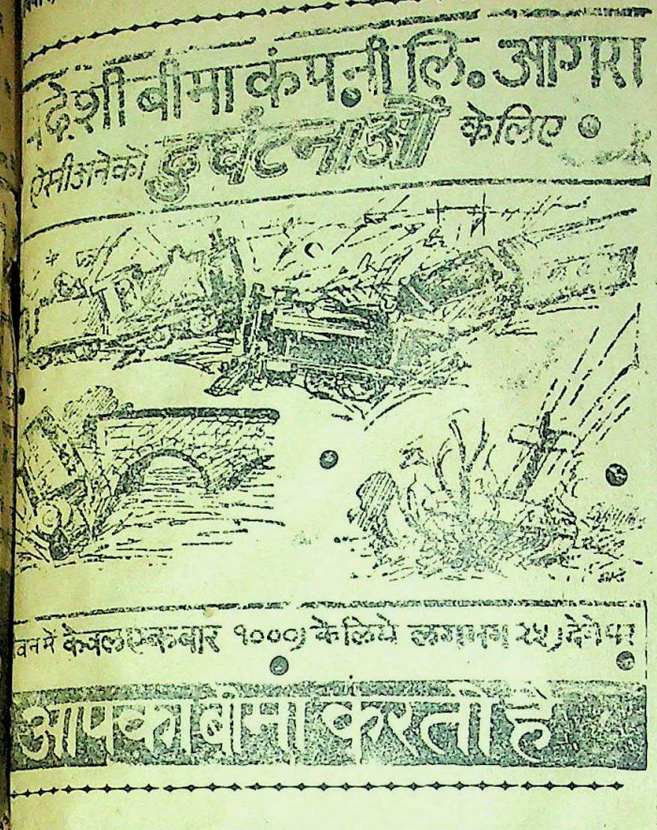

जीवन में केवल एक बार १०००) के लिये लगभग २५) देकर

आप बीमा करते हैं

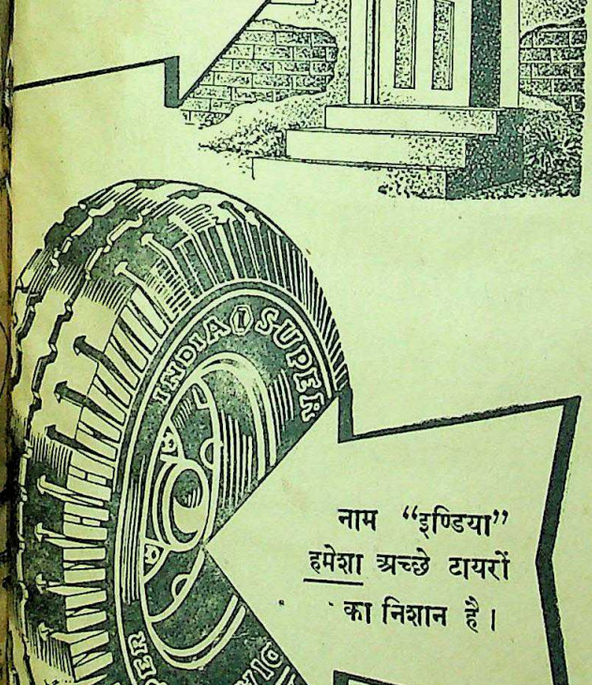

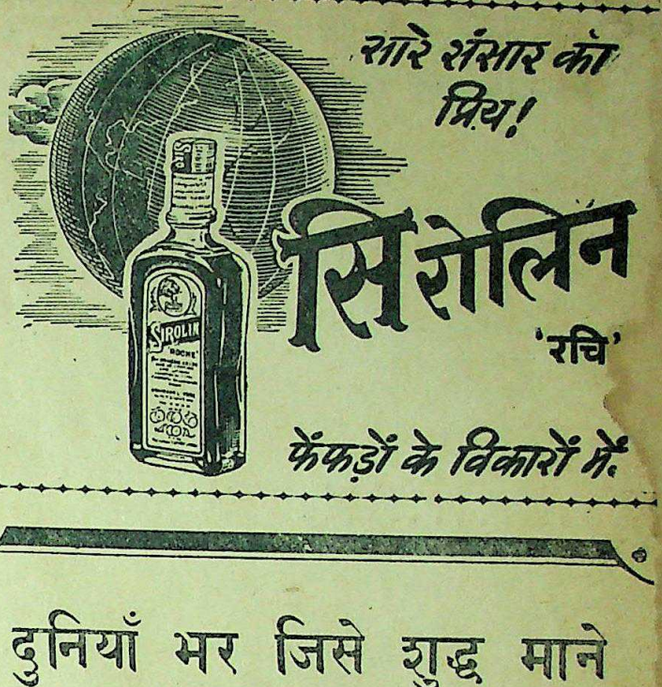

सारे संसार को प्रिय!

सिरोलिन

'रचि'

फेंफड़ों के विकारों में

दुनियाँ भर जिसे शुद्ध माने
ऐसी चीजें रातों रात नहीं बनतीं

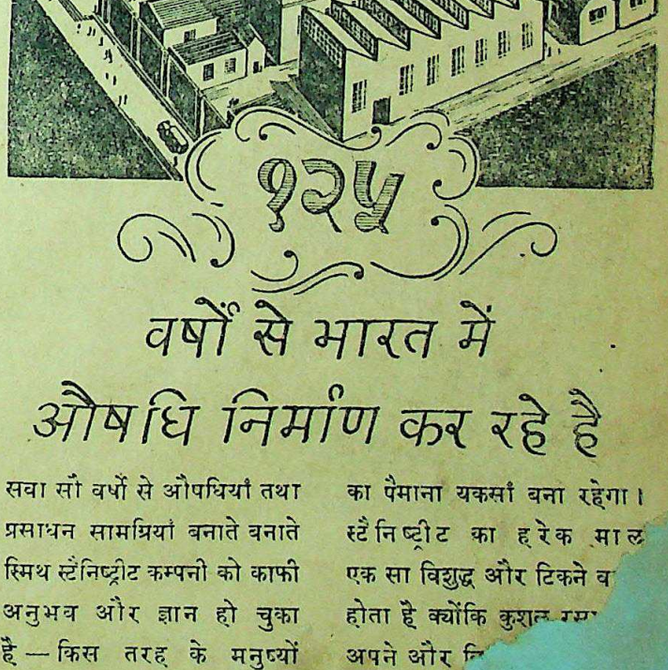

१२५

वर्षों से भारत में

औषधि निर्माण कर रहे है

सवा सौ वर्षों से औषधियाँ तथा प्रसाधन सामग्रियाँ बनाते बनाते स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट कम्पनी को काफी अनुभव और ज्ञान हो चुका है—किस तरह के मनुष्यों द्वारा कौन से तरीकों से काम करने से स्टैनिष्ट्रीट का विशुद्धता का पैमाना यकसाँ बना रहेगा। स्टैनिष्ट्रीट का हरेक माल एक सा विशुद्ध और टिकने व होता है क्योंकि कुशल रस अपने और वि भव का उप मे सर्वदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार क्यों पीड़ित हैं?

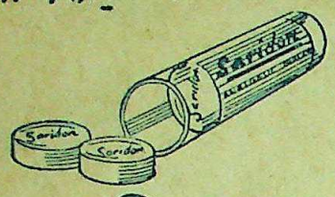

सारिडन

२० मिनट में सारे दर्द रोक देती है

'ऐस्प्रो' आ गया है

'किसी भी नकली मालको मत लीजिये। हर टिकिया पर 'ASPRO' खुदा हुआ देख लीजिये।

'ऐस्प्रो' दस मिनट में बुखार और दर्द रोकती है। यह हृदय या पेटको नुकसान नहीं पहुचातीं।

'ऐस्प्रो' का नियंत्रित मूल्य ३ टिकियों की पैकेट का दाम १ आना, ३० टिकियों के डिब्बे का दाम १० आना

वितरक: जे. एल. मौरिसन, एण्ड जोन्स (इण्डिया) लि., पोष्ट ३८७ कलकत्ता, टेलीफोन-कलकत्ता

'ऐस्प्रो' हर जगह मिलता

62

सावधानी से बचत बढ़ाइए

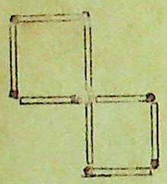

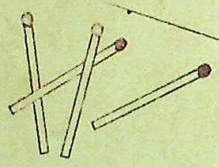

प्रश्न : दिया सलाई की चार तीलियों की सहायता से दो समकोण चतुर्भुजों को चार में पलटिए

उत्तर : इन चार तीलियों को ऐसे रखिये जैसे आकृति में दिखाया गया है।

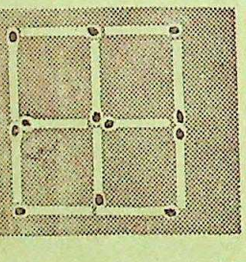

दियासलाई की चार तीलियों को उचित ढंग से रख कर इन से आठ तीलियों का काम लिया जा सकता है। इसी प्रकार यदि आप अपनी बचत को उचित ढंग से प्रयोग में लगाना जानते हैं तो गृहस्थी में अपनी आय से आप अधिक से अधिक लाभ उठा सकते हैं। नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स खरीदिए। छोटी पूंजी वालों के हित के लिए ही यह मद प्रचलित की गई है।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स

निम्न लिखित मुख्य लाभ यह हैं:—

डाल(१) आप ५, १०, ५०, १००, ५००, ज. त्वरित०, या ५०००, रु० के मूल्य के आक्रमण से भी सेविंग्ज़ सर्टिफिकेट्स खरीद सकते हैं। आक्रमण किया [illegible] व्यक्ति (वयस्क या [illegible] पहुँचा [illegible] तक के सर्टिफिकेट्स सन् १९[illegible] के सम्बन्ध [illegible] मिलकर १०,००० राजप्रणाल[illegible] जा सकते थे [illegible] खरीद सकते हैं। [illegible] लोगों के व्यथित [illegible] ५०% बढ़

(४) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(५) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं (५ रु० का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष पश्चात भी भुनाया जा सकता है)

(६) जिनकी बचत थोड़ी है वह १), ॥), ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्प्स खरीद सकते हैं, ५ रु० के स्टाम्प्स जरूर होने [illegible]

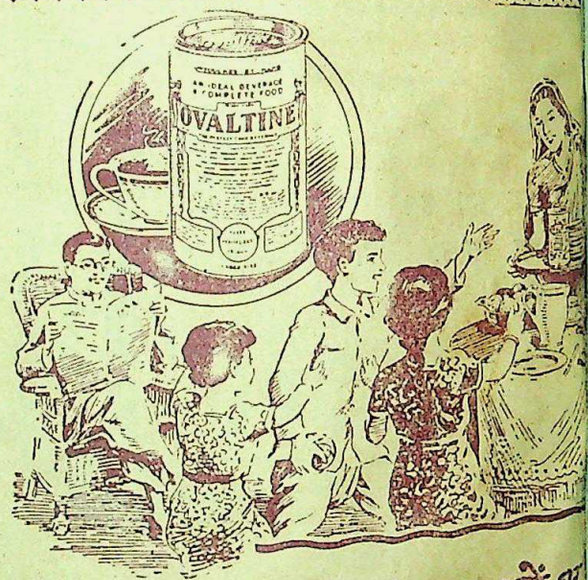

ओवल्टीन प्रतिदिन लाखों घर सुख शान्ति प्रदान करता है।

भारत, बर्म्मा और सीलोन तथा संसार के अन्य भागों के [illegible] घर में भी 'ओवल्टीन' नियमित रूप से व्यवहार किया [illegible] कारण परिवार के प्रत्येक व्यक्ति के स्वास्थ्य और जीवनी शक्ति बढ़ाता है।

बच्चे बूढ़े सभी इसे पसन्द करते हैं 'ओवल्टीन' में [illegible] शक्ति काफी परिमाण में है और पके जौ के गूदे, गाय के [illegible] ताजे दूध और अन्य सावश्यक प्राकृतिक विटामिन [illegible] किया गया है।

ओवल्टीन

OVALTINE

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

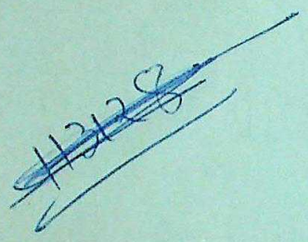

चमेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar